Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वामन शिवराम आप्टे

संस्कृत-हिन्दी कोश

(छात्र-संस्करण)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वामन शिवराम आप्टे

संस्कृत-हिन्दी कोश

(छात्र-संस्करण)

(लेखक द्वारा संकलित छन्द एवं साहित्यिक तथा भारत के प्राचीन साहित्य में प्राप्त भौगोलिक नामों के परिशिष्टों सहित)

NAG PUBLISHERS

नाग प्रकाशक

११ ए/ यू. ए., जवाहर नगर, दिल्ली-७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाग प्रकाशक :
(१) ११ ए/यू. ए. (पोस्ट आफिस बिल्डिंग) जवाहर नगर, दिल्ली-७
(२) संस्कृत भवन, १२, १५, संस्कृत नगर, सेक्टर-१४ रोहिणी, नई दिल्ली-११००८५
(३) जलालपुर माफी, (चुनार-मिर्जापुर) उ. प्र.।

पुनः मुद्रित पाँचवाँ संस्करण

१९९५

मूल्य : १४०-०० (रुपये एक सौ चालीस मात्र)

श्री सुरेन्द्र प्रताप द्वारा नाग प्रकाशक, ११ए, यू. ए., जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७ से प्रकाशित तथा जी. प्रिंट प्रोसेस ३०८/२, शहजादा बाग, दयाबस्ती, दिल्ली-११००३५ द्वारा मुद्रित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूमिका

[कोशकार का प्रथम प्राक्कथन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुलभ भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है यह हाई स्कूल अथवा कालिज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के पश्चवर्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदांत, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इस प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण हैं। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से गद्यकथा, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कालिज के अध्ययन काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह कोश भलीभांति-बल्कि कई अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के पश्चात् इसमें निहित शब्द योजना के विषय में यह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, संदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिन्हें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी को, विशेषतः आरंभकर्ता को, उपयुक्त पर्यायवाची या समानार्थक शब्द ढूंढने में ये निश्चय ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—अप्रस्तुत प्रशंसा, उपनिषद्, सांख्य, मीमांसा, स्थायिभाव, प्रवेशक, रस, वार्तिक आदि। जहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश का ही आश्रय लिया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुवलयानन्द और रसगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण शब्दत्रय, वाग्धारा, लोकोक्ति अथवा विशिष्ट अभिव्यंजनाओं को भी यथा स्थान रक्खा है, उदाहरण के लिए देखो—गम्, सेतु, हस्त, मयूर, दा, कृ आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः देखो—इंद्र, कार्तिकेय, प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विशिष्ट यथा अतिथि, पुत्र, जाया, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मंडल, मानव, वेद, हंस। कुछ आवश्यक लोकोक्तियाँ 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छन्दों के विषय में है—इसमें गण, मात्रा, तथा परिभाषा आदि सभी आवश्यक सामग्री रख दी गई है। इसके तैयार करने में मुख्यतः वृत्तरत्नाकर और छन्दोमंजरी का ही आश्रय लिया है। परन्तु उन छंदों को भी जो माघ, भारवि, दण्डी, अथवा भट्टि ने अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त किया है, इसमें रख दिया गया है। दूसरे परिशिष्ट में कालिदास, भवभूति और बाण आदि संस्कृत के महाकवियों की कृति, तथा जन्म विवरण आदि दिया गया है। इस विषय में मैंने मैक्समूलर की 'इंडिया' तथा वल्लभदेव की सुभाषितावली की भूमिका से जो कुछ ग्रहण किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। तीसरा परिशिष्ट भौगोलिक शब्दों का संग्रह है, इसमें मैंने कनिंगहम के 'एन्शेंट ज्याग्राफी' से तथा इंग्लिश संस्कृत डिक्शनरी में उपलब्ध श्री बोल्हे के निबंध से बड़ी सहायता प्राप्त की है तदर्थ मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

कोश के शब्दक्रम का ज्ञान आगे दिये गये "कोश के देखने के लिए आवश्यक निर्देश" से भली-भाँति हो सकेगा। मैं केवल एक बात पर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ कि मैंने इस कोश में सर्वत्र 'अनुस्वार' का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से चाहे यह प्रयोग सर्वथा सही न हो, तो भी छपाई की दृष्टि से सुविधाजनक है। और मुझे विश्वास है कि कोश की उपयोगिता पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाप्त करने से पूर्व मैं उन सब विविध कृतियों का कृतज्ञ हूँ जिनसे इसको तैयार करने में मुझे सहायता मिली। इसके लिए सबसे पहली रचना प्रोफ़ेसर तारानाथ तर्कवाचस्पति की 'वाचस्पत्य' है। इस कोश में दी गई सामग्री का अधिकांश उसी से लिया गया है, यद्यपि कई स्थानों पर संशोधन भी करना पड़ा है। वर्तमान संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरियों में जो शब्द, अर्थ और उद्धरण उपलब्ध नहीं हैं वे इसी कोश से लिये गये हैं। दूसरा कोश "दी संस्कृत-इंग्लिश-डिक्शनरी" प्रो० मोनियर विलियम्स का है जिनका मैं बहुत ऋणी हूँ। इस कोश का मैंने पर्याप्त उपयोग किया है। अतः मैं इस सहायता का आभारी हूँ। अन्त में मैं 'जर्मन बर्टरबुश' के कर्ता डा० रॉथ और बॉथलिंक को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। इनके कोश में अनेक उद्धरण और संदर्भ हैं—परन्तु अधिकांश वैदिक साहित्य से लिये गये हैं। इसके विपरीत मैंने अधिकांश उद्धरण अपने उस संग्रह से लिये हैं जो भवभूति, जगन्नाथ पंडित, राजशेखर, बाण, काव्य प्रकाश, शिशुपालवध, किरातार्जुनीय, नैषधचरित, शांकर-भाष्य और वेणीसंहार आदि की सहायता से तैयार किया गया है। इनके अतिरिक्त उन ग्रन्थकर्ताओं और सम्पादकों का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता यदा-कदा प्राप्त करता रहा हूँ।

अन्त में मुझे विश्वास है कि 'स्टुडेंट्स संस्कृत-हिन्दी कोश' केवल उन विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी जिनके लिए यह तैयार की गई है—बालक संस्कृत के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकेंगे। कोई भी कृति चाहे वह कितनी ही सावधानी से क्यों न तैयार की गई हो—सर्वथा निर्दोष नहीं होती। मेरा यह कोश भी कोई अपवाद नहीं है। और विशेष रूप से उस अवस्था में जबकि इसे छापने की शीघ्रता की गई हो। अतः मैं उन व्यक्तियों से, जो इस कोश को अपनाकर मेरा सम्मान करें, यह निवेदन करता हूँ कि जहाँ कहीं इसमें वे कोई अशुद्धि देखें, अथवा इसके सुधारने के लिए कोई उत्तम सुझाव देना चाहें, तो मैं दूसरे संस्करण में उनको समावेश करने में प्रसन्नता अनुभव करूँगा।

पूना, १५ फरवरी, १८९०। वी० एस० आप्टे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संकेत सूचि

अ०	अव्यय	पर०	परस्मैपद
अक०	अकर्मक	ज्या०	ज्यामिति
अलु० स०	अलुक् समास	कर्म० वा०	कर्म वाच्य
अव्य० स०	अव्ययीभाव समास	कर्तृ० वा०	कर्तृ वाच्य
आ०	आत्मने पद	ब० व०	बहु वचन
उदा०	उदाहरणतः	म० अ०	मध्यमावस्था
उप० स०	उपपद समास	अ० पु०	अन्यपुरुष
उभ०	उभयपदी	म० पु०	मध्यम पुरुष
कर्म० स०	कर्मधारय समास	उ० पु०	उत्तम पुरुष
त० स०	तत्पुरुष समास	ब० स०	बहुव्रीहि समास
तृ० त०	तृतीया तत्पुरुष समास	भवि०	भविष्यत्काल
दे०	देखो	इच्छा०	इच्छार्थक, सन्नन्त
द्व० स०	द्वन्द्व समास	भू० क० कृ०	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त (क्त)
द्वि० क०	द्विकर्मक		
द्वि० स०	द्विगु समास	सं० कृ०	संभाव्य कृदन्त (तव्यत्)
द्वि० त०	द्वितीया तत्पुरुष समास	वर्त० कृ०	वर्तमानकालिक कृदन्त (शतृन्त या शानजन्त)
ष० त०	षष्ठी तत्पुरुष समास		
न० स०	नञ् समास	विप०	विपरीतार्थक
तुल०	तुलनात्मक	करण०	करणकारक
नाम० धा०	नामधातु	कर्तृ०	कर्तृकारक
सम्प्र०	सम्प्रदान कारक	कर्म०	कर्मकारक
सम०	समस्त पद	आल०	आलंकारिक
तु०	तुलना करो	वार्ति०	वार्तिक
प्रेर०	प्रेरणार्थक	वे०	वैदिक
ज्यो०	ज्योतिष	अने० पा०	नाना पाठान्तर
उ० अ०	उत्तमावस्था	संबो०	संबोधन
ए० व०	एक वचन	यङ्०	यङ्लुगन्त
सा० वि०	सार्वनामिक (निर्देशक) विशेषण	संबं०	संबंध
		तद्०	तद्धित
वि०	विशेषण	श०	शब्दशः
बी० ग०	बीजगणित	अधि०	अधिकरण कारक
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	उप०	उपसर्ग
वर्त०	वर्तमानकाल	भ्वा०	भ्वादिगण
भूत०	भूत काल	अदा०	अदादिगण
प्रा० स०	प्रादि समास	जु०	जुहोत्यादिगण
न० ब०	नञ् बहुव्रीहि समास	स्वा०	स्वादिगण
न० त०	नञ् तत्पुरुष समास	दि०	दिवादिगण
पुं०	पुल्लिंग	तु०	तुदादिगण
नपुं०	नपुंसक लिंग	क्र्या०	क्र्यादिगण
स्त्री०	स्त्री लिंग	च०	चुरादिगण
सक०	सकर्मक	रु०	रुधादिगण
पृषो०	पृषोदरादित्वात्	तना०	तनादिगण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संकेताक्षर–सूचि

अ० पु०	अग्नि पुराण	कौशि०	कौशिकसूत्र
अ० प्र०	अन्यापदेश शतक	कौषी०	कौषीतकी उपनिषद्
अ० सं०	अगस्त्य संहिता	ग० ल०	गंगा लहरी
अथर्व०	अथर्व वेद	घोषाल०	Ghosal's System of Revenue
अनर्घ०	अनर्घराघव		
अन्न०	अन्नपूर्णाष्टक	चण्ड०	चण्ड कौशिक
अमर०	अमरकोश	गण०	गणरत्नमहोदधि—वर्धमान कृत
अमरु०	अमरुशतक		
अवि०	अविमारक	चन्द्रा०	चन्द्रालोक
आनन्द०	आनन्द लहरी	चाण०	चाणक्य शतक
आर्या०	आर्या सप्तशती	चात०	चातकाष्टक
आश्व०	आश्वलायनसूत्र	चोल०	चोल चम्पू
ईश०	ईशोपनिषद्	चौर०	चौरपंचाशिका
उ० दू०	उद्धव दूत	छं०	छन्दोमंजरी
उ० सं०	उद्धव संदेश	छा०	छान्दोग्योपनिषद
उणादि०	उणादि सूत्र	जानकी०	जानकीहरण
उत्त०	उत्तर रामचरित	जै०	जैमिनी सूत्र
ऋक्	ऋग्वेद	जै० न्या०	जैमिनीय न्यायमाला विस्तर
एकार्थ०	एकार्थनाममाला	ज्यो०	ज्योतिष
ऐत० उ०	ऐतरेय उपनिषद्	त० कौ०	तर्क कौमुदी
ऐत० ब्रा०	ऐतरेय ब्राह्मण	तारा०	तारानाथ वाचस्पत्यम्
कठ०	कठोपनिषद	तै० आ०	तैत्तिरीय आरण्यक
कथा०	कथासरित्सागर	तै० उ०	तैत्तिरीय उपनिषद
कनक०	कनकधारास्तव	त्रिका०	त्रिकाण्ड शेष
कर्पूर०	कर्पूर मंजरी	तै० सं०	तैत्तिरीय संहिता
कलि	कलिविडंबन	नं० ब्रा०	नंदवार्तिक
	नीलकंठ दीक्षित कृत	दाय०	दायभाग
कवि०	कविरहस्य	दु० स०	दुर्गासप्तशती
का०	कादम्बरी	दूत०	दूतवाक्यम्
कात्या०	कात्यायन	दे० म०	देवी महात्म्य
काम०	कामन्दकी नीति	नवरत्न०	नवरत्नमाला
काव्य०	काव्यप्रकाश	ना० भा०	नारायण भाष्य
काव्या०	काव्यादर्श	नागा०	नागानन्द
काशि०	काशिकावृत्ति	नाना०	नानार्थ मञ्जरी
कि०	किरातार्जुनीय	नाभ०	नारायण भट्ट
कीर्ति०	कीर्तिकौमुदी	नारा०	नारायणीय
कुमा०	कुमार संभव	निघ०	निघण्टु
कुव०	कुवलयानन्द	नी०	नीतिसार
कृष्ण०	कृष्णकर्णामृत	नीति०	नीति प्रदीप
केन०	केनोपनिषद्	नील०	नीलकण्ठ
को० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र	नैष०	नैषध
कोश०	कोशकल्पतरु	पंच०	पंचतन्त्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्च०	पञ्चदशी	मृच्छ०	मृच्छकटिक
पञ्च०	पञ्चरात्रम्	याज्ञ०	याज्ञवल्क्य स्मृति
पा०	पाणिनि की अष्टाध्यायी	याद०	यादवाभ्युदय
पा० यो०	पातंजल योगशास्त्र	योग०	योगसूत्र
पुष्प०	पुष्पदन्त	रत्ना०	रत्नावली
प्रताप०	प्रतापरुद्रीय	रघु०	रघुवंश
प्रति०	प्रतिमा	रस०	रसगंगाधर
प्रबोध०	प्रबोधचन्द्रोदय	रसम०	रसमंजरी
प्रस०	प्रसन्नराघव	रा०	रामायण
बं० शि०	बंगाल शिलालेख	रति०	रतिमंजरी
बाल०	बालचरित	राज०	राजप्रशस्ति
बाल० रा०	बालरामायण	राजत०	राजतरंगिणी
बु०	बुद्ध साहित्य (बुद्धिस्ट लेख)	राम०	रामचरितम्
बु० च०	बुद्धचरितम्	ललित०	ललित सहस्रनाम
बृ० उ० (बृहदा०)	बृहदारण्यक उपनिषद्	वन०	वनस्पतिशास्त्र
बृ० क०	बृहत् कथा	वराह०	वराहमिहिर की बृहत्संहिता।
बृ० सं०	बृहत्संहिता—वराहमिहिर-कृत	वाज०	वाजसनेयि संहिता
भ० पु०	भविष्योत्तर पुराण	वा० प०	वाक्पदीय
भग०	भगवद्गीता	वास०	वासवदत्ता
भट्टि०	भट्टिकाव्य	वि०	विक्रमोर्वशीयम्
भर्तृ०	भर्तृहरिशतकत्रयम् १. शृंगार, २. नीति ३. वैराग्य	वि० पु०	विष्णु पुराण
		विक्र०	विक्रमांकदेवचरित
		विश्व०	विश्व गुणादर्श चम्पू
भा०	भारत मञ्जरी	वे० दे०	वेदान्त देशिका
भा० प्र०	भावप्रकाश	वे० सा०	वेदान्त सार
भाग०	भागवत	वेणी०	वेणीसंहार
भामि०	भामिनी विलास	वेदपा०	वेदपादस्तव
भाषा०	भाषा परिच्छेद	वैज०	वैजयन्ती
भोज०	भोज चरित	श०	शकुन्तला नाटक
म० ना०	महानारायण उपनिषद्	शंकर०	शंकर दिग्विजय
म० पु०	मत्स्य पुराण	शब्दार्थ चि०	शब्दार्थ चिन्तामणि
मनु०	मनुस्मृति	शत०	शतपथ ब्राह्मण
मभा० (महाभा०)	महाभाष्य	शत श्लो०	शत श्लोकी
महा०	महाभारत	शार्ङ्ग०	शार्ङ्गधर
महावीर०	महावीर चरित	शब्द०	शब्दकल्पद्रुम
मा०	मालतीलीला	शारी० भा०	शारीर भाष्य
मान०	मानसार	शालि०	शालिहोत्र
मार्क०	मार्कण्डेय पुराण	शि०	शिशुपालवध
माल०	मालतीमाधव	शि० पु०	शिवपुराण
मालवि०	मालविकाग्निमित्र	शि० म०	शिवमहिम्न स्तोत्र
मी० सू०	मीमांसा सूत्र	शिव०	शिव भारत
मुंड०	मुंडकोपनिषद्	शिवान०	शिवानन्द लहरी
मूल०	मूलपञ्चशती	शिशु०	शिशुपालवध
मुग्ध०	मुग्धबोध	शुक्र०	शुक्रनीति
मेघ०	मेघदूत	शु०	शुल्वसूत्र
		शृंगार०	शृंगार तिलक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्याम०	श्यामलादण्डक	सु० (सुश्रु०)	सुश्रुत
श्रुत	श्रुतबोध	सुभा०	सुभाषित रत्नाकर
श्वेत० (श्वेता०)	श्वेताश्वतरोपनिषद	सुवासव०	सुबन्धु की वासवदत्ता
सर० कं०	सरस्वती कण्ठाभरण	सुभाषित०	सुभाषितरत्नभाण्डागार
सुधा०	सुधालहरी	सू० सि०	सूर्य सिद्धान्त
स्वप्न०	स्वप्नवासवदत्तम्	सौ०	सौन्दर्य लहरी
सर्व०	सर्वदर्शन संग्रह	हंस०	हंसदूत
सा० द०	साहित्य दर्पण	हनु०	हनुमन्नाटक
सा० का०	सांख्य कारिका	हर०	हरविजय
सा० प्र०	सांख्यप्रवचन भाष्य	हरि०	हरिविजयपुराण
सि०	सिद्धान्त कौमुदी	हला०	हलायुध
सि० मु०	सिद्धान्त मुक्तावली	हर्ष०	हर्षचरित
सां० सू०	सांख्य सूत्र	हि०	हितोपदेश
सि० सं०	सिद्धान्तलेश संग्रह	हेम०	हेमचन्द्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आप्टे

संस्कृत-हिन्दी-कोश

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर।

अः [अद्+ड] 1 विष्णु, पवित्र 'ओम्' को प्रकट करने वाली तीन (अ+उ+म्) ध्वनियों में से पहली ध्वनि —अकारो विष्णुरुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वरः। मकारस्तु स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु त्रयात्मकः॥ 2 शिव, ब्रह्मा, वायु, या वैश्वानर।

(अव्य०) 1 लैटिन के इन (in) अंग्रेजी के इन (in) या अन (un) तथा यूनानी के अ (a) या (un) के समान नकारात्मक अर्थ देने वाला उपसर्ग जो कि निषेधात्मक अव्यय नञ् के स्थान पर संज्ञाओं, विशेषणों एवं अव्ययों के (क्रियाओं के भी) पूर्व लगाया जाता है। यह 'अ' ही 'अच्छिन्' शब्द को छोड़कर शेष स्वरादि शब्दों से पूर्व 'अन्' बन जाता है।

'न' के सामान्यतया छः अर्थ गिनाये गये हैं:— (क) सादृश्य—समानता या सरूपता यथा 'अब्राह्मणः' ब्राह्मण के समान (जनेऊ आदि पहने हुए) परन्तु ब्राह्मण न होकर, क्षत्रिय वैश्य आदि। (ख) अभाव=अनुपस्थिति, निषेध, अभाव, अविद्यमानता यथा "अज्ञानम्" ज्ञान का न होना, इसी प्रकार, अकोपः, अनंगः, अकंटकः, अघटः' आदि। (ग) भिन्नता=अन्तर या भेद यथा 'अपटः' कपड़ा नहीं, कपड़े से भिन्न या अन्य कोई वस्तु। (घ) अल्पता=लघुता, न्यूनता, अल्पार्थवाची अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—यथा 'अनुदरा' पतली कमर वाली (कृशोदरी या तनुमध्यमा)। (च) अप्राशस्त्य=बुराई, अयोग्यता तथा लघूकरण का अर्थ प्रकट करना यथा 'अकालः' गलत या अनुपयुक्त समय; 'अकार्यम्' न करने योग्य, अनुचित, अयोग्य या बुरा काम। (छ) विरोध=विरोधी प्रतिक्रिया, वैपरीत्य यथा 'अनीतिः' नीतिविरुद्धता, अनैतिकता, 'अस्ति' जो श्वेत न हो, काला। उपर्युक्त छः अर्थ निम्नांकित श्लोक में एकत्र संकलित हैं तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः॥ दे० 'न' भी।

कुदन्त शब्दों के साथ इसका अर्थ सामान्यतः "नहीं" होता है यथा 'अदग्ध्वा' न जलाकर, 'अपश्यन्' न देखते हुए। इसी प्रकार 'असकृत्' एक बार नहीं।

कभी-कभी 'अ' उत्तरपद के अर्थ को प्रभावित नहीं करता यथा 'अमूल्य', 'अनुत्तम', यथास्थान।

2 विस्मयादि द्योतक अव्यय—यथा (क) 'अ अवद्यम्' यहाँ दया (आह, अरे) (ख) 'अ पचसि त्वं जाल्म' यहाँ भर्त्सना, निंदा (धिक्, छिः) अर्थ को प्रकट करता है। दे० 'अकरणि' 'अजीवनि' भी। (ग) संबोधन में भी प्रयुक्त होता है यथा 'अ अनन्त' (घ) इसका प्रयोग निषेधात्मक अव्यय के रूप में भी होता है। 3 भूतकाल के लकारों (लङ्, लुङ् और लृङ्) की रूपरचना के समय धातु के पूर्व आगम के रूप में जोड़ा जाता है यथा अगच्छत्, अगमत्, अगमिष्यत् में।

अच्छिन्न (वि०) [नास्ति ऋणं यस्य न० ब०] (यहाँ 'ऋ' को व्यंजन ध्वनि माना गया) जो कर्जदार न हो, ऋणमुक्त ('अनृणिन्' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।)

अंश् (चुरा० उभ० अंशयति-ते) बांटना, वितरण करना, आपस में हिस्सा बांटना, 'अंशाययति' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है। वि -1 बांटना 2 धोखा देना।

अंश [अंश्+अच्] 1 हिस्सा, भाग, टुकड़ा; सकृदंशो निपतति —मनु० ९।४७ रघु० ८।१६;—अंशेन दर्शितानुकूलता—का० १५९ अंशतः; 2 संपत्ति में हिस्सा, दाय · स्वतीयांशः—मनु० ८।४०८, ९।२०१; याज्ञ० २।११५; 3 भिन्न की संख्या, कभी-कभी भिन्न के लिए भी प्रयुक्त 4 अक्षांश या रेखांश की कोटि ५ कंधा (सामान्यतः 'कंधे' के अर्थ में, 'अंस' का प्रयोग होता है—दे०)। सम०—अंशः अंशावतार, हिस्से का हिस्सा;· अंशि (कि० वि०) हिस्सेदार;—अवतरणम् —अवतारः—पृथ्वी पर देवताओं के अंश को लेकर जन्म लेना, आंशिक अवतार, °तार इव धर्मस्य —दश० १५३; महाभारत के आदिपर्व के ६४–६७ तक अध्याय; · भाज्, हर, हारिन् (वि०) उत्तरा धिकारी, सहदायभागी—पिण्डदोंशहरत्वेषां पूर्वाभावे परः परः—याज्ञ० २।१३२–१३३ —संवर्तनम्—मिश्रों को एक समान हर में लाना;· स्वरः मुख्य स्वर, मूलस्वर।

अंशकः [अंश्+ण्वुल्, स्त्रियां -अंशिका] 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, संबंधी 2 हिस्सा, खण्ड, भाग,—कम् सौर दिवस।

अंशनम् [अंश्+ल्युट्] बांटने की क्रिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंशयितृ (पुं०) [अंश्+णिच्+तृच्] विभाजक, बाँटने वाला।

अंशल (वि०) [अंश लाति—ला+क] साझीदार, हिस्सा पाने का अधिकारी। 2=अंसल दे०

अंशिन् (वि०) (अंश्+इनि) 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, —(पुनर्विभागकरणे) सर्वे वा स्युः समांशिनः, याज्ञ० २।११४, 2 भागों वाला, साझीदार।

अंशुः [अंश्+कु] 1 किरण, प्रकाशकिरण, चंद्र°, घर्म° गरम किरणों वाला, सूर्य,—सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् —कु० १।३२, चमक, दमक 2 बिन्दु या किनारा 3 एक छोटा या सूक्ष्म कण 4 धागे का छोर 5 पोशाक, सजावट, परिधान 6 गति। सम० **उदकम्** ओस का पानी, **जालम्** रश्मिपुंज या प्रभामण्डल, **धरः**, **—पतिः**,—**भृत्**,—**वाणः**,—**भर्तृ** °**स्वामिन्** —**हस्तः**—सूर्य (किरणों को धारण करने वाला या उनका स्वामी), °**पट्टम्** एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, **माला** प्रकाश की माला, प्रभामण्डल, —**मालिन्** (पुं०) सूर्य।

अंशुकम् [अंश्+क—अंशवः सूत्राणि विद्यन्ते यस्य] 1 कपड़ा, सामान्यतः पोशाक। सितांशुका—विक्रम० ३।१२ —यत्रांशुकाक्षेपविलज्जितानाम्—कु० १।१४, श० १।३२: 2 महीन या सफेद कपड़ा —मेघ० ६४, प्रायः रेशमी कपड़ा या मलमल। 3 ऊपर ओढ़ा जाने वाला वस्त्र, लबादा, अधोवस्त्र भी, 4 पत्ता 5 प्रकाश की मंद लौ।

अंशुमत् (वि०) [अंश+मतुप्] 1 प्रभायुक्त, चमकदार, ज्योतिर्धरा रविरंशुमान् —भग० १०।२१ 2 नोकदार। —**मान्**(पुं०) 1 सूर्य, **-बालखिल्यैरिवांशुमान्** —रघु० १५।१०; 2 सगर का पौत्र, दिलीप का पिता और असमंजस का पुत्र।

अंशुमत्फला—केले का पौधा।

अंशुल (वि०) [अंशु प्रभां प्रतिभां वा लाति-ला+क] चमकदार, प्रभायुक्त स: चाणक्य मुनि।

अंस् (चु० पर० अंसयति-अंसापयति) दे० अंश्।

अंसः [अंस्+अच्] 1 भाग, खंड दे०अंश, 2 कंधा, असफलक, कंधे की हड्डी। सम० **-कूटः** बैल या सांड का डिल्ला अथवा कुब्ब, कंधों के बीच का उभार,—**त्रम्** 1 कंधों की रक्षा के लिए कवच 2 धनुष, **फलकः** रोढ़ का ऊपरी भाग **भारः** कंधे पर रखा गया भार या जूआ,—**भारिक**, —**भारिन्** (वि०) (असे) कंधे पर जूआ या भार ढोने वाला **विवर्तिन्** (वि०) कंधों की ओर मुड़ा हुआ,—**मुखमंसविवर्ति पश्यमलाक्ष्याः**,—श० ३।२४।

अंसल (वि०) [अंस्+लच्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली मजबूत कंधों वाला,—**युवा वृषभस्कन्धः पीनांसलः** —रघु० ३।३४।

अंह्, (स्वा० आ० अंहते, अंहितुं, अंहित) जाना, समीप जाना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, प्रेर० 1 भेजना 2 चमकना 3 बोलना।

अंहतिः ती (स्त्री०) [हन्+अति-अंहादेशश्च] 1 भेंट, उपहार 2 व्याकुलता, कष्ट, चिंता, दुःख, बीमारी (वेद०)।

अंहस् (नपुं०)—(अंह्—हसी आदि) [अम्+असुन् हुक् च] 1 पाप—सहसा संहृतिमंहसां विहन्तु...अलम् —कि० ५।१७ 2 व्याकुलता, कष्ट, चिन्ता।

अंहितिः ती (स्त्री०) [अंह्+क्तिन् ग्रहादित्वात् इट्] उपहार, दान।

अंहिः (अंह्+क्रिन्-अंहति गच्छत्यनेन) 1 पैर, 2 पेड़ की जड़ तु० अंघ्रि, 3 चार की संख्या। सम० **-पः** जड़ (पैर) से पीने वाला, वृक्ष, **स्कन्धः** पैर के तलवे का ऊपरी हिस्सा।

अक् (स्वा० पर० अकति, अकित) जाना, सांप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा चलना।

अकम् [न कम्—सुखम्] सुख का अभाव, पीड़ा, विपत्ति, पाप।

अकच (वि०) [न. ब.] गंजा—**चः** केतु (अवपतनशील शिरोबिंदु)।

अकनिष्ठ (वि०) [न कनिष्ठः—न० त०] जो सबसे छोटा न हो (जैसे **सबसे बड़ा मंझला**) बड़ा, श्रेष्ठ **ष्ठः** गौतम बुद्ध।

अकन्या [न. त.] ब. कुमारी न हो, जो अब कुमारी न रही हो।

अकर (वि०) (न. ब.) 1 लुला, अपाहिज 2 कर या चुंगी से मुक्त 3 अक्रिय, निकम्मा, अव्यर्थ्य।

अकरणम् [कृ भावे ल्युट् न. त.] अक्रिया, कार्य का अभाव अकरणात् मन्दकरणं श्रेयः —तु० अंग्रेजी की कहावतें 'सम थिंग इज़ बेटर दैन नथिंग'—(Something is better than nothing;) बेटर लेट दैन नैवर, (Better late than never) न होने से कुछ होना भला है; कभी न होने से देर में होना अच्छा है।

अकरणिः (स्त्री०) [नञ्+कृ+अनिः] असफलता, निराशा, अप्राप्ति, अधिकांशतः कोसने या शाप देने में प्रयुक्त, **-तस्याकरणिरेवास्तु**—सिद्धा० भगवान् करे उसकी आशा पूरी न हो, उसे असफलता मिले।

अकर्ण (वि०) [न. ब.] 1 जिसके कान न हों, बहरा 2 कर्णरहित - **र्णः** सांप।

अकर्तन (वि०) [नञ्+कृत+ल्युट् न. ब.] ठिगना।

अकर्मन् (वि०) (न. ब.) 1 निष्क्रिय, आलसी, निकम्मा 2 दुष्ट, पतित 3 (व्या०) अकर्मक —**र्म**(नपुं०) 1 कार्य का अभाव 2 अनुचित कार्य, दोष, पाप। सम० **-अन्वित** (वि०) 1 जिसके पास काम न हो, खाली, निठल्ला 2 अपराधी, **-कृत्** (वि०) कर्म से मुक्त या अनुचित कार्य करनेवाला,—**भोगः** कर्मफल भोगने से मुक्ति का अनुभव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकर्मक (वि०) [नास्ति कर्म यस्य, ब० कप्] वह क्रिया जिसका कर्म न हो (स्त्री०--अकर्मिका)।

अकल (वि०) [नास्ति कला अवयवो यस्य, न० ब०] अखंड, भागरहित, परब्रह्म की उपाधि।

अकल्क (वि०) [न० ब०] 1 तलछट रहित, शुद्ध 2 निष्पाप (स्त्री०—अकल्का) चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश।

अकल्प (वि०) [न० ब०] 1 अनियंत्रित, जिस पर कोई नियंत्रण न हो, 2 दुर्बल, अयोग्य 3 अतुलनीय।

अकस्मात् (अव्य०) [न कस्मात्—न० त०] अचानक, एकाएक, सहसा आकस्मिक रूप से—अकस्मादागतेना सह विश्वासो न युक्तः—हि० १।२; अकारण, बिना किसी कारण के, व्यर्थ ही ...नाकस्मात् शाण्डिली-माता चिक्कीर्षाति तिर्यक्तिलान्—पं० २।६५—कथं स्वा त्यजेदकस्मात्पतिरार्यवृत्तः—रघु० १४।५५, ७३।

अकाण्ड (वि०) [न० ब०] 1 आकस्मिक, अप्रत्याशित, —सहसा पुनरकाण्डविवर्तनदारुणः—उत्तर० ४।१५, मा० ५।३१, 2 जिसमें तना या डाली न हो। सम०—-जात (वि०) सहसा उत्पन्न या उत्पादित; —ताण्ड-वम् क्रोध पांडित्यादि का अप्रासंगिक प्रदर्शन पातः आकस्मिक घटना ...पातजात (वि०) जन्म होते ही मर जाने वाला,—शूलम् अचानक गुदे का दर्द।

अकाण्डे (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से, एकाएक, सहसा, —धर्माकूरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे तन्वीसि शंत्रा कतिचि-देव पदानि गत्वा -शं० २।१२।

अकाम (वि०) [न० ब०] 1 इच्छा, राग, या प्रेम से मुक्त 2 अनिच्छुक, अनभिलाषी, 3 प्रेम से अप्रभावित, प्रेम की अधीनता से मुक्त, सं० १।२३ 4 अचेतन,अनभिप्रेत।

अकामतः (क्रि० वि०) [अकाम-तसिल्] अनिच्छापूर्वक, बेमन से, बिना इरादे के, अनजानपने में—इतरे कृतवंतस्तु पापान्येतान्यकामतः—मनु० ९।२४२।

अकाय (वि०) [न० ब०] 1 शरीररहित, अशरीरी 2 राहु की एक उपाधि 3 परब्रह्म की उपाधि।

अकारण (वि०) [न० ब०] कारणरहित, निराधार, स्वतः-स्फूर्त,—क्रम् कारण प्रयोजन या आधार का अभाव—किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्याः रतये न दीयते—कु० ४।७ अकारणम्, अकारणात्, अकारणे—(क्रि० वि०) बिना कारण के, संयोगवश, व्यर्थ।

अकार्य (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त -र्यम् अनुचित या बुरा काम, अपराधपूर्ण कार्य। सम०--कारिन् बुरा काम करने वाला, जो बुरा काम करे, कर्तव्य विमुख।

अकाल (वि०) [न० ब०] असामयिक, प्राक्कालिक -लः गलत समय, अशुभ या कुसमय, (किसी बात के लिए) अनुपयुक्त समय --अत्याहृतो हि नारीणामकालशो मनोभवः--रघु० १२।३३। सम० -कुसुमम् -पुष्पम् असमय पर खिलने वाला फूल,—कृष्माण्डः बिना ऋतु के उपजा हुआ कुम्हड़ा (आलं०) व्यर्थ जन्म, —ज, —उत्पन्न,— जात (वि०) बिना ऋतु के उपजा हुआ, प्राक्कालिक; —जलदोदयः,—मेघोदयः 1 असमय में बादलों का उठना या इकट्ठा होना; 2 हुहुरा, घुंघ, —वेला ऋतु के विपरीत या अनुपयुक्त समय,—सह (वि०) 1 समय की हानि या देरी को सहन न करने वाला, अधीर, 2 गढ़ की भांति दृढ़ता के साथ अधिक समय तक न टिकने वाला।

अकिंचन (वि०) [नास्ति किंचन यस्य न० ब०] जिसके पास कुछ भी न हो, बिल्कुल गरीब, नितांत निर्धन-अकिंचनः सन् प्रभवः स सम्पदाम्—कु० ५।७७।

अकिंचित्कर (वि०) [अकिंचित्+ज्ञा+क] कुछ न जानने वाला, निपट अज्ञानी; भर्तृ० २।८८।

अकिंचित्करः (वि०) [उप० स०] 1 अर्थहीन,—परतंत्र-मिदमकिंचित्करं न वेणीः ३। 2 भोला, सीधा।

अकुण्ठ (वि०) [न० त०] 1 जो ठूँठा न हो, जिसकी गति अबाध हो ...आशस्त्रप्रहणादकुण्ठपरशोः ...वेणी० २।२; 2 प्रबल, काम करने योग्य 3 स्थिर 4 अत्यधिक।

अकुतः (क्रि० वि०) कहीं से नहीं (इसका प्रयोग केवल समस्तपदों में होता है)। सम०—-भयः शिव का नाम,...भय (वि०) सुरक्षित, जिसे कहीं से भी भय न हो मादृशानामपि अकुतोभयः संचारो जातः—उत्त० २, यानि श्रीण्यकुतोभयानि च पदान्यासस्खरायोधने (पाठान्तर) अपराद्धमुखाणि -उत्त० ५।३५।

अकुप्यम् (न०) [न० त०] 1 बिना खोट की धातु, सोना चाँदी, 2 कोई भी खोट की धातु।

अकुशल (वि०) [न० त०] 1 अशुभ, दुर्भाग्यग्रस्त, 2 जो चतुर या होशियार न हो,—लम् अमंगल, दुर्भाग्य।

अकूपारः [नञ्+कूप+अ+अण्] 1 समुद्र 2 सूर्य 3 कछुआ 4 कछुओं का राजा जिस पर पृथ्वी का भार है 5 पत्थर या चट्टान।

अकृच्छ्र (वि०) [न० ब०] कठिनाई से मुक्त,—च्छ्रम् कठिनाई का अभाव, सरलता, सुविधा।

अकृत (वि०) [नञ्+कृ+क्त] 1 जो किया न गया हो, 2 गलत या भिन्न तरीके से किया गया 3 अधरा, जो तैयार न हो (जैसे रसोई), 4 अनियमित 5 जिसने कोई काम न किया हो 6 अपक्व, कच्चा; —ता जो बेटी होने पर भी बेटी न मानी जाकर पुत्रों के समकक्ष समझी जाय; —त्व(नपुं०) कार्य जो किया न गया हो, काम का न किया जाना, जो काम कभी सुना न गया हो। सम०--अर्थ (वि०) असफल, ...अस्त्र (वि०) जिसे हथियार चलाने का अभ्यास न हो,---आत्मन् (वि०) 1 अज्ञानी, मूर्ख, असंतुलित मस्तिष्क का 2 परब्रह्म या ब्रह्मा के स्वरूप से भिन्न, -उद्वाह (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अविवाहित,—दशन् (वि०) अनपराधी,—ज्ञ (वि०) कृतघ्न—धी, —बुद्धि (वि०) अज्ञानी।

अहृष्ट (वि०) [नञ्+कृष्+क्त] जो जोता न गया हो। सम०—पच्य,—रोहिन् (वि०) बिना जुते खेत में बढ़ने वाला या पकने वाला, बहुतायत से बढ़ने वाला —अकृष्टपच्या इव सस्यसंपदः—कि० १।१७, रघु० १४।७७।

अकृता (स्त्री०) [अक्+कनिन्+टाप्] माता, माँ।

अक्त (वि०) [अक्+क्त] सना हुआ, अभिषिक्त, (इसका प्रयोग सामान्यतः समस्त पदों में होता है जैसे 'घृताक्त') —क्ता रात।

अक्तपृष्ठ [अक्त्+कत्र] कवच (बर्मनु)।

अक्रम (वि०) [नास्ति क्रमो यस्य—न० ब०] अव्यवस्थित —मः [न क्रमः—न० त०] 1 क्रम या व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अनियमितता 2 औचित्य का उल्लंघन।

अक्रिय (वि०) [नास्ति क्रिया यस्य—न० ब०] क्रिया शून्य, सुस्त—या [न० त०] क्रियाशून्यता, कर्तव्य की उपेक्षा।

अक्रूर (वि०) [न० त०] जो निर्दय न हो, —रः एक यादव जो कृष्ण का मित्र और चाचा था।

अक्रोध (वि०) [नास्ति कोधो यस्य—न० ब०] क्रोध रहित —धः [न०त०] क्रोध का अभाव या उसका दमन।

अक्लिष्ट (वि०) [नञ्+क्लिश्+क्त] 1 न पका हुआ, क्लेश रहित, अनथक 2. जो बिगड़ा न हो, अविकल या० ५।१९।

अक्ष् [म्वा० स्वा० पर० अक० सेट्] (अक्षति-अक्ष्णोति, अक्षित) 1 पहुँचना, 2 व्याप्त होना, पैठना 3 संचित होना।

अक्षः [अक्ष्+अच्—अक्ष्+सः वा] 1 धुरी, धुरा 2 गाड़ी के बीच में लगा लकड़ी का वह भाग जिसमें लोहे या लकड़ी की वह छड़ फंसाई हुई होती है जिस पर पहिया चलता है 3 गाड़ी, छकड़ा, पहिया 4 तराजू की डंडी 5 भौमिक अक्षांश 6 चौसर, चौसर का पासा 7 रुद्राक्ष 8 कर्ष नामक १६ माशे की एक तोल 9 बहेड़े (विभीतक) का पौधा 10 साँप 11 गरुड़ 12 आत्मा 13 ज्ञान 14 कानूनी कार्य विधि, मुकदमा 15 जन्मांध; —क्षं 1 इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषय 2 सामुद्रिक लवण 3 नीला थोथा। सम०—अग्रकीलः (—लकः) धुरे की कील —आवपनं चौसर का तख्ता,—आवापः जुआरी —कर्णः सम त्रिकोण में सामने की रेखा, —कुशल (वि०)—कोविद (वि०) जुआ खेलने में निपुण,—कूटः आंख की पुतली कोविद (वि०) —ज्ञ (वि०) चौसर खेलने में कुशल—ज्ञहृदः जुआ खेलना, चौसर खेलना—ज्ञं 1 प्रत्यक्षज्ञान, संज्ञान, 2 बज्र 3 हीरा—ज्ञः विष्णु; —तत्त्वं —विद्या जुआ खेलने की कला या विद्या; —दर्शकः—दृश् 1 न्यायाधीश 2 जुए का अधीक्षक; —देविन् जुआरी, जुएबाज; —द्यूतं चौसर का खेल, जुआ; —द्यूतः जुएबाज, जुआरी; —धूलिकः गाड़ी में जुता हुआ बैल या सांड—पदलं 1 न्यायालय 2 कानूनी दस्तावेजों के रखने का स्थान—पाटकः कानून का पंडित, न्यायाधीश; —पातः पासा फेंकना, —पादः गौतम ऋषि, न्यायदर्शन के प्रवर्तक या उसके अनुयायी; —भागः—अंशः अक्षरेखा, अक्षांश। —भारः गाड़ीभर बोझ; —मालाः—सूत्रं रुद्राक्षमाला, हार कृतोऽक्षसूत्रप्रणयी तया करः कु० ५।१२ —राजः जुए का व्यसनी, पाशों में प्रवीण, कलि नामक पासा; —वाटः—जुआ-खाना, जुए की मेज; —हृदयं जुए में पूर्ण दक्षता या निपुणता।

अक्षणिक (वि०) [न० त०] स्थिर, दृढ़, जो चंचल न हो, जो थोड़ी देर रहने वाला न हो, दृढतापूर्वक जमा हुआ; (ताक लगाने या टकटकी के समान)।

अक्षत (वि०) [नञ्+क्षण्+क्त—न० त०] (क) जिसे चोट न लगी हो स्वभनेगः कथमक्षता रतिः—कु० ४।९ (ख) जो टूटा न हो, सम्पूर्ण, अविभक्त—तः 1 शिव 2 कूट-फटक कर धूप में सुखाए गए चावल। —ताः (बहु०) कनटूटा अनाज, सब प्रकार के धार्मिक उत्सवों पर काम आने वाले पिछोड़े, कूटे तथा जल से धोये हुये चावल —साक्षतपात्रहस्ता—रघु० २।२१ 3 जौ, यव तं 1 धान्य, किसी भी प्रकार का अनाज 2 हिजड़ा (पुं०भी),—त्ता कुमारी, कन्या। सम०—योनिः (स्त्री०) वह कन्या जिसके साथ संभोग न किया गया हो —मनु० ९।१७६।

अक्षम (वि०) [न० त०] अयोग्य, असमर्थ, असहिष्णु, अधीर, रघु० १३।१६ —मा 1 अधैर्य, ईर्ष्या, 2 क्रोध, आवेश।

अक्षय (वि०) [न० ब०] जिसका नाश न हो, अनश्वर, अचूक;—त्रिसाधनाशक्तिरिवार्यमक्षयम्—रघु० ४।१३। सम०—तृतीया (स्त्री) वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तीज।

अक्षय्य (वि) [न० त०] जो क्षय न हो सके, अविनाशी —तपःषड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः—शि० २।१३।

अक्षर (वि०) [न० त०]। अविनाशी, अनश्वर—कु० ३।५०, भग० १५।१६ 2 स्थिर, दृढ़। —रः शिव 2 विष्णु। —रं। (क) वर्णमाला का एक अक्षर—अक्षराणामकारोऽस्मि—भग० १०।३३ व्यक्षर आदि। (ख) कोई एक ध्वनि,—एकाक्षरं परं ब्रह्म—मनु० २।८३ (ग) एक या अनेक वर्ण, समष्टिरूप से भाषा—प्रतिपेदाक्षरविन्यासाभिरामम्—शि० ३।२५ 2 दस्तावेज, लिखावट (बहु०), 3 अविनाशी आत्मा, ब्रह्म 4 पानी 5 आकाश 6 परमानन्द, मोक्ष। सम०—अर्थ शब्दों का अर्थ; —चं(चुं) चुः,—चक्रः (कः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिपिक, लेखक, नकलनवीस। इसी प्रकार °जीवकः °जीवी, °जीविकः पेशेवर लेखक। —व्युत्क्रम किसी अक्षर के लुप्त होने के कारण दूसरा ही अर्थ निकलना। —छन्दस् (नपु०) —वृत्त वर्णों की संख्या से बद्ध छंद या वृत्त —जननी —तूलिका सरकंडा या कलम। —(वि) न्यास 1 लिखना, वर्णक्रम 2 वर्णमाला 3 वेद —भूमिका तख्ती —रघु० १८।४६ —मुखः विद्वान्, विद्यार्थी। —व्रजित (वि०) अशिक्षित, बिना पढ़ा-लिखा। —शिक्षा (स्त्री) गुप्त अक्षरों की विद्या। —संस्थानं वर्णविन्यास, लिखना, वर्णमाला।

अक्षरक [स्वार्थे कन्] स्वर, अक्षर।

अक्षरशः [क्रि० वि०] [अक्षर+शस् (वीप्सार्थे)] एक एक अक्षर करके 2 शब्दशः, शब्द शब्द करके।

अक्षवती (स्त्री०) [अक्ष+मतुप्+ङीप्] खेल, पासे द्वारा खेल, जुए का खेल।

अक्षांतिः (स्त्री०) [न० त०] असहिष्णुता, स्पर्धा, ईर्ष्या।

अक्षार (वि०) [न० ब०] कृत्रिम लवणरहित।—रः प्राकृतिक लवण।

अक्षि (नपु०) [अश्नुते विषयान् -अश्+क्सि] (अक्षिणी, अक्षीणि, अक्ष्णा, अक्ष्णः आदि) 1 आँख 2, दो की संख्या। सम०—कंपः झपकी—रघु० १४।६७। —कूटः —कूटकः—गोलः तारा आँख का डेला, आँख की पुतली।—गत (वि०) 1 दृश्यमान, उपस्थित—शि० ९।८१, 2 आँख में रड़कने वाला, आँख का काँटा, घृणित—°तोऽहमस्य हास्यो जातः—दश० १५९।—पक्ष्मन्,—लोमन् (न०) पलक—पटलं 1 आँख की झिल्ली 2 झिल्ली से संबद्ध आँख का रोग विकूजितं,—विकूशितं तिरछी नजर, अधखुली आँखों से देखना।

अक्षुण्ण (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, अखण्ड 2 अर्जित, सफल,—अक्षुण्णोऽनुनयः वेणी० १।२, 3 जो कूटा पीटा न गया हो, असाधारण शि० १।३२।

अक्षेत्र (वि०) [न० ब०] खेतों से रहित, बिना जुता। —त्रं खराब खेत 2 (आलं०) बुरा विद्यार्थी, कुपात्र। सम० वाद् (वि०) आत्मज्ञान से विरहित।

अक्षोटः [अक्ष+ओट] अखरोट, (मरा० डोंगरी अकोड)।

अक्षोभ्य (वि०) [न० त०] स्थिर, धीर—रघु १७।७४।

अक्षौहिणी (स्त्री) [अक्षाणां रथानां सर्वेषामिन्द्रियाणां वा ऊहिनी—ष० त०] [अक्ष+ऊह+णिनि+ङीप्] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े तथा १०९३५० पदाति हों।

अखंड (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, संपूर्ण, समस्त - अखंड पुण्यानां फलमिव—श० २।१०—डम् (क्रि० वि०) निरन्तर, अविराम।

अखंडन (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, टूट न सके, पूरा, संपूर्ण;—न न टूटना, निराकरण न करना;—नः समय।

अखंडित (वि०) [न खंडितः—न० त०] 1 न टूटा हुआ, 2 विच्छेदरहित, बाधारहित। सम०—उत्सव (वि०) सदा आमोदप्रिय;—ऋतु: वह समय या ऋतु जिसमें सदा की भाँति पुष्पादि उत्पन्न हों; (वि०) फलदायी।

अखर्व (वि०) [न० त०] 1 जो बौना या छोटे कद का न हो, जिसकी शारीरिक वृद्धि न रुकी हो 2 अनल्प, बड़ा, —अखर्वेण गर्वेण विराजमानः—दश० 3।

अखात (वि०) [न० त०] न खुदा हुआ, न दफनाया हुआ तः, तं 1 प्राकृतिक झील 2 मंदिर के सामने का पोखर।

अखिल (वि०) [नास्ति खिलम् अवशिष्टम् यस्य—न० ब०] 1 संपूर्ण, समस्त, पूरा; इसका प्रयोग प्रायः 'सर्व' के साथ पाया जाता है: —एतद्धि मत्तोऽखिलं सर्वमेषोऽखिलं मुनिः -मनु० १।५१ °क्षेत्र (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से 2 भूमि जो परत की न हो, जुती हुई हो।

अखेटिकः (पुं०) [नञ्+खिट्+ठिकन् न० त०] 1 वृक्ष-मात्र 2 शिकारी कुत्ता।

अख्याति [न० त०] अपकीर्ति, अपयश। सम०—कर (वि०) अपकीर्तिकर, लज्जाजनक।

अग् (स्वा० पर० अक० सेट्) अगति, आगीत्, अगिष्यति, अगित) 1. सर्पिल गति से जाना, टेढ़े मेढ़े चलना, 2. जाना (अगति आगीत्-आदि)।

अग (वि०) [न गच्छतीति-गम्+ड, न० त०] 1. चलने में असमर्थ, अगम्य;—गः 1. वृक्ष 2. पहाड़, पत्थर 3. साँप 4. सूर्य 5. सात की संख्या। सम०—आत्मजा पर्वत की पुत्री, पार्वती।—ओकस् (पुं०) 1. पहाड़ी 2. पक्षी (वृक्षवासी) 3. 'शरभ' नामक जन्तु जिसको आठ टाँगें मानी जाती हैं 4. सिंह;—ज (वि०) पहाड़ों में घूमने वाला, जंगली,—जम् शिलाजीत।

अगच्छ (वि०) [गम्-आद्गुलकात् श-न० त०] न जाने वाला। -च्छः (पुं०) वृक्ष।

अगतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. आश्रय या उपाय का अभाव, आवश्यकता 2. प्रवेश न होना (स्था० और आलं०)।

अगति (त्री) क (वि०) [न० ब०] निस्सहाय, निरुपाय, निराश्रय,—बालमेनामगतिप्रादाय—दश ९; दंडस्त्वगति-का गतिः—स्था० १।३४६।

अगद (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ, रोगरहित।—दः 1. औषधि, दवाई 2, स्वास्थ्य 3. विषहरण विज्ञान।

अगदंकारः (पुं०) [अगदं करोति—अगद+कृ+अण् मुमागमश्च] वैद्य, चिकित्सक।

अगम्य (वि०) [न गन्तुमर्हति—गम्+यत् न० त०] 1. दुर्गम, न जाने योग्य, पहुँच के बाहर (स्था० और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलं०) योगिनाम्प्यगम्य: आदि 2. अकल्पनीय, अबोध्य—या: संपदस्ता मनसोऽप्यगम्या:—शि० ३।५९. 'गम्य' के अन्तर्गत भी देखिए। सम०—रूप (वि०) अकल्पनीय तथा अनतिक्रांत रूप या स्वभाव वाला ०°रूपा पदवी प्रपित्सुना—कि० १।६।

अगम्या (स्त्री०) वह स्त्री जिसके पास मैथुन के लिए जाना उचित नही, एक नीची जाति ०°गमन सैव जातिभ्रंशकराणि वा इत्यादि। सम०—गमन अनुचित मैथुन, व्यभिचार ०°गामिन् (वि०) अनुचित मैथुन करने वाला, व्यभिचारी।

अगरु (न०) [न गिरति; गृ+उ, न० त०] अगर—एक प्रकार का चंदन।

अगस्ति:, अगस्त्य: [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति; अस्+क्तिच्—शक०] [अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तम्भाति-स्त्यै+क, वा अग: कुंभ: तत्र स्थान: संहत: इत्यगस्त्य:] 1. 'कुम्भज' एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2. एक नक्षत्र का नाम।

अगस्त्य:=अगस्ति, दे० ऊपर।

अगाध (वि०) [न० ब०] अथाह, बहुत गहरा, अतल-अगाध-सलिलारसमुद्रात् हि० १।५२; (आलं०) गभीर, सविवेक, बहुत गहरा—°सत्व-रघु० ६।२१; —यस्य ज्ञानं दयासिंधोरगाधस्यानघा गुणा:—अमर०; अथाह, अबोध्य; ०ध:—धं गहरा छेद या दरार; सम०—जल: गहरा तालाब, गहरी झील।

अगारं [अगं न गच्छन्तम् ऋच्छति प्राप्नोति-अग्+ऋ+अण्] घर; शून्यानि चाप्यगाराणि—मनु० ९।२६५; °दाहिन् घरफूंक आदमी।

अगिर: [न गीर्यते दु:खेन—गृ बा० क—न० त०] स्वर्ग। सम०—ओकस् (वि०) स्वर्ग में रहने वाला (जैसे देवता)।

अगुण (वि०) [न० ब०] 1. निर्गुण (परमात्मा के संबंध में); 2. जिसमें अच्छे गुण न हों गुणहीन—अगुणो-ऽयमशोक:—मालवि० ३; —ष: दोष, अवगुण।

अगुरु (वि०) [न० त०] 1 जो भारी न हो, हल्का, 2. (छंद में) लघु 3. जिसका कोई शिक्षक न हो; —रु: (नपुं० भी) अगर की सुगन्धित लकड़ी और पेड़।

अगृध्नु (वि०) [न० ब०] बिना घर बार का घुमक्कड़, यायावर।

अगोचर (वि०) [नास्ति गोचरो यस्य—न० ब०] जो इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष न हो, अस्पष्ट; —वाङ्मनसगोचरं तुर्यातिरिक्तमस्पृशत्—दश० १६९; —र: 1. अतीन्द्रिय, 2. अदृश्य, अजेय 3. ब्रह्म।

अग्नायी (स्त्री०) [अग्नि+ऐङ्+ङीष्] 1. अग्नि की पत्नी, अग्निदेवी' स्वाहा 2. वेतायुग।

अग्नि: [अंगति ऊर्ध्वं गच्छति—अञ्ग्+नि नलोपश्च] आग 1. कोप°, चिता° आदि, 2. आग का देवता 3. तीन प्रकार की यज्ञीय अग्नि—गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण 4. जठराग्नि, पाचनशक्ति 5. पित्त 6. सोना 7. तीन की संख्या; द्वन्द्व समास में जब कि प्रथम पद में देवताओं के नाम या विशिष्ट शब्द हों तो 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' हो जाता है जैसे °विष्णु, °मरुतौ; 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' भी हो जाता है जैसे °पर्जन्यौ, °धरणौ, °षोमौ। सम०—अ (आ) गार—र:,—आलय:—गृहं अग्नि का मन्दिर ०°रघु ५।२५।—अस्त्र आग बरसाने वाला अस्त्र, रॉकेट, इसी प्रकार ०बाण:—आधानं अग्नि की प्रतिष्ठा करना, इसी प्रकार ०आहिति:,—आधेय: वह ब्राह्मण जो अग्नि को प्रतिष्ठित रखता है, दे० आहिताग्नि, —उत्पात: अग्निसंबंधी उत्पात, उल्का या धूमकेतु, आदि; —उपस्थानं अग्नि की पूजा, अग्निपूजा का सूक्त या मंत्र—कण:,—स्तोक: चिनगारी; —कर्मन् (नपुं०) 1. अग्नि क्रिया 2. अग्नि में आहुति, अग्नि को पूजा, इसी प्रकार ०कार्य; —निर्वर्तिताग्निकार्य: —क्रा० १६; —कारिका 1 पवित्र अग्नि को प्रतिष्ठित करने का साधन, 'अग्नीध्र' नामक ऋत्वा, 2. अग्नि कार्य; —काष्ठं अरणि; —कुक्कुट: अग्नि-शलाका; —कुंड अग्नि को स्थापित रखने के लिए स्थान, अग्नि पात्र; —कुमार: —तनय: —सुत: कार्तिकेय जो अग्नि से उत्पन्न हुए कहे जाते हैं, दे० कार्तिकेय; —केतु: धूआं; —कोण: —दिक् दक्षिण-पूर्वी कोना जिसका देवता अग्नि है; —क्रिया अन्त्येष्टिक्रिया, और्ध्वदैहिक संस्कार 2. दाह क्रिया; —क्रीड़ा आतिशबाजी, रोशनी; —गर्भ (वि०) आभ्यन्तर में आग रखते हुए, °र्भा शमीमिव-शं० ४।३. (—र्भ:) सूर्यकान्त मणि जिसे सूर्य की किरणों के स्पर्श से आग उगलने वाला माना जाता है; तु०-शं० २।७ (—र्भा) 1. शमीवृक्ष 2. पृथ्वी; —चित् (पु०) अग्नि को प्रज्वलित रखने वाला—यतिभि: साधमग्निमग्निचित्—रघु० ८।२५; —चय: —चयनं —क्रिया अग्नि को प्रतिष्ठित रखना, अग्न्याधान; —ज (वि०) अग्नि से उत्पन्न होने वाला; —ज: —जात: 1. कार्तिकेय 2. विष्णु; —जं—जातंसोना,, इसी प्रकार °जन्मन्; —जिह्व आग की लपट, अग्नि, की सात जिह्वाओं (कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च जिह्वाः सप्त विभावसो:॥ में से एक; —तपस् (वि०) बढ़ता आग आग के समान चमकने या चलने वाला; —त्रयं त्रेता (स्त्री०) तीन अग्नियां (अग्नि के अन्तर्गत देखिए); —द (वि०) 1 पौष्टिक, क्षुधावर्द्धक 2 दाहक; —दातु (पु०) मनुष्य का दाहकर्म करने वाला; —दीपन (वि०) क्षुधावर्द्धक, पौष्टिक; —दीप्ति:, —वृद्धि: बढ़ी हुई पाचन शक्ति, अच्छी भूख; —देव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृत्तिका नक्षत्र; —धानं पवित्र अग्नि को रखने का पात्र या स्थान, अग्निहोत्री का घर; —धारणं अग्नि को सदा प्रतिष्ठित रखना; —पारिक (त्रिक) या अग्नि-पूजा; —परिच्छदः यज्ञ के सारे उपकरण—मनु० ६।४; —परीक्षा (स्त्री०) अग्नि द्वारा परीक्षा; —पर्वतः ज्वालामुखी पहाड़; —पुराणं व्यास प्रणीत १८ पुराणों में से एक; —प्रतिष्ठा (स्त्री०) अग्नि की स्थापना, विशेष कर विवाह संस्कार की; —प्रवेशः —प्रवेशनं अग्नि में उतरना, अपने पति की चिता पर किसी विधवा का सती होना,—प्रस्तरः फलीता, बकमक पत्थर; —बाहुः धुआँ; —भं 1 कृत्तिका 2 सोना; —भु (नपु०) 1 जल 2 सोना; —भूः अग्नि से उत्पन्न कार्तिकेय; —मणिः सूर्यकान्त मणि, फलीता; —मंथः —मंथनं घर्षण या रगड़ द्वारा आग पैदा करना; —मांद्यं पाचनशक्ति का मंद होना, भूख न लगना; —मुखः 1 देवता 2 ब्राह्मणमात्र 3 मुंह में आग रखने वाला, जोर से काटने वाला, खटमल का विशेषण —पंचः १; —मुखी रसोई घर; —रक्षणं पवित्र गार्हपत्य या अग्निहोत्र की अग्नि को प्रतिष्ठित रखना; रजः —रजस् (पु०) 1 इंद्रगोप नामक एक सिंदूरी कीड़ा 2 अग्नि की शक्ति 3 लोक; —लोकः अग्नि का वह संसार जो मेरु शिखर के नीचे स्थित है,—वधू (स्त्री०) स्वाहा, दक्ष की पुत्री और अग्नि की पत्नी; —वर्धक (त्रि०) पौष्टिक —वाहः 1 घूआं 2 बकरी; —वीर्यं 1 अग्नि की शक्ति 2 सोना —शरणं-शाला—शालं अग्नि का मन्दिर, वह स्थान या घर जहां पवित्र अग्नि रक्खी जाय—°रक्षणाय रथागिलोऽहं त्रि० 3; —शिखः 1 दीपक राकेट, 2 अग्निमय बाण, 3 बाणमात्र 4 कुसुम या केसर का पौधा, 5 केसर; —शिखं 1 केसर 2 सोना; —स्तुत्, —स्तुभ्, —स्तोम आदि दे० °स्तुत्, —°स्तुभ् आदि—संस्कारः 1 अग्नि की प्रतिष्ठा 2 चिता पर शव को दाह क्रिया—नाड्य कार्याग्नि-संस्कारः— मनु० ५।९९, रघु० १२।५६, —सखः —सहायः 1 हवा 2 जंगली कबूतर 3 धुआं; —सात्किक (त्रि० या कि०वि०) अग्नि को साक्षी बनाना अग्नि के सामने; —सवनाभ° मालवि० ४।१२; —स्तुत् (पु०) एक दिन से अधिक चलने वाले यज्ञ का एक भाग; —स्तोमं (°ष्टोमः) वसन्त में कई दिन तक चलने वाला यज्ञीय अनुष्ठान या दीर्घकालिक संस्कार जो ज्योतिष्टोम का एक आवश्यक अंग है, —होत्रं 1 अग्नि में आहुति देना, 2 होम की अग्नि को स्थापित रखना और उसमें आहुति देना,—होत्रिन् (त्रि०) अग्निहोत्र करने वाला, या वह व्यक्ति जो अग्निहोत्र द्वारा होमाग्नि को सुरक्षित रखता है।

अग्निसात् (अव्य०) अग्नि की दशा तक, इसका प्रयोग समस्तपद में 'कृ' धातु (जलाना, भस्म करना) के साथ किया जाता है—'न चकार शरीरमग्निसात्—रघु० ८।७२; °भू जलाया जाना।

अग्र (वि०) [अञ्च्+रन् नलोपश्च] 1 प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख; °महिषी मुख्य रानी; 2 अत्यधिक; —ग्रं 1 (क) सर्वोपरि स्थल या उच्चतम बिन्दु (विप०—मूलम्, मध्यम्); (आल°) शीर्षतास्थि, प्रखरता, नासिका —नाक का अग्रभाग, समस्त एवं विद्या जिह्वाग्रेऽधदन्—का० ३४६—जिह्वा के अग्र भाग पर थी, (ख) चोटी, शिखर, सतह—कैलासाग्रं, पर्वत° आदि 2 सामने 3 किसी भी प्रकार में सर्वोत्तम 4 लक्ष्य, उद्देश्य 5 आरम्भ 6 आधिक्य, अतिरेक, समस्त पदों में जब यह प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है— 'पूर्वभाग' 'सामने' 'नोक' आदि; उदा० °पादः-चरणः। समः—अनी (नी) कः(कम्) सैन्यमुख—मनु० ७।१९३—आसनं प्रमुख आसन, मान-आसन— मुद्रा० १।१२,—करः —अग्रहस्तः—गः नेता, मार्गदर्शक, सबसे आगे चलने वाला —गण्य (वि०) श्रेष्ठ, प्रथम श्रेणी में रक्खे जाने योग्य; —ज पहले पैदा या उत्पन्न हुआ; —जः अग्रजन्मा, बड़ा भाई-अस्खेव मन्युर्भरताग्रजे मे—रघु० १४।७३ 2 ब्राह्मण—जा बड़ी बहन, इसी प्रकार °जात, °जातक, °जाति। जन्मन् (पु०) 1 पहले जन्मा हुआ, बड़ा भाई 2 ब्राह्मण दश०१३,—जिह्वा जिह्वा की नोक; —वासिन् (वि०) पतित ब्राह्मण जो मृतक श्राद्ध में दान लेता है;—दूतः आगे-आगे जाने वाला दूत—कृष्णाग्रोक्षाग्रदूतः—वेणी० १।२२, रघु० ६।१२,—नीः(नीः) प्रमुख नेता—अग्रगण्यैस्तत्प्रकृतामुखी-णाम्—रघु० ५।४; —पादः पैर का अगला हिस्सा, पैर का अगला पंजा,—पूजा आदर या सम्मान का सर्वोच्च या प्रथम चिह्न,—पेयं पीने में प्राथमिकता—भागः 1. प्रथम या सर्वोत्तम भाग 2. शेष, शेष भाग 3. नोक, सिरा; —भागिन् (वि०) (शेषभाग) को पहले प्राप्त करने का अधिकार प्रकट करने वाला; —भूः—°ज,—भूमिः (स्त्री०) महत्त्वाकांक्षा का लक्ष्य या उद्दिष्ट पदार्थ; —मांसं हृदय का मांस, हृदय—०मं वानीतम्—वेणी० ३; —यायिन् (वि०) नेतृत्व करना, सेना के आगे चलना, पुरस्य ते रणशिरस्य-ग्रयायी शि० ७।२६,—योधिन् (पु०) मुख्य वीर, मुख्य योद्धा, -संधानी यम द्वारा मनुष्यों के कार्यों का लेखा-जोखा रखने की बही; —संध्या (स्त्री०) प्रभात काल; कर्कन्धुनामुपरि तुहिनैः रंजयत्यग्रसंध्या —श० ४ (पाठ०),—सर=यायिन्—नेतृत्व करने वाला—रघु० ९।२३; ५।७१; —हस्तः (पु०) (—°करः,—°पाणिः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाथ या भुजा का अगला भाग, हाथी की सूंड का सिरा; कभी २ उंगली या उंगलियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है; दाहिना हाथ—अथाग्रहस्ते मुकुलीकृतांगुलौ कुमा० ५।६३।—हायनः (णः)—वर्षका आरम्भ, मार्गशीर्ष (मंगसिर) महीने का नाम;—हारः राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को जीवननिर्वाहार्थ दान में दी गई भूमि —कस्मिंश्चिदग्रहारे—दश० ८।९।

अग्रतः (क्रि० वि०, [अग्रे अद्याद्वा—तसिल्] (संबन्धकारक के साथ) 1. सामने, के आगे, के ऊपर; आगे 2. की उपस्थिति में, 3. प्रथम। सम०—सरः नेता।

अग्रिम (वि०) [अग्रे भवः—अग्र+डिमच्] 1. प्रथम (क्रम, श्रेणी आदि में); प्रमुख, मुख्य 2. बड़ा, ज्येष्ठ;—मः बड़ा भाई।

अग्रिय (वि०) [अग्रे भवः—अग्र+घ] प्रमुख आदि,—यः बड़ा भाई।

अग्रीय (वि०) [अग्रेभवः—अग्र+छ] प्रमुख, सर्वोत्तम आदि। दे० अग्रिम।

अग्रे (क्रि० वि०) 1. के सामने, पहले (काल और देश वाचक) 2. की उपस्थिति में, 3. के ऊपर 4. बाद में फलतः—एवमग्रे वक्ष्यते, एवमग्रेऽपि द्रष्टव्यम् आदि 5. सबसे पहले, पहले 6. औरों से पहले। सम०—गः नेता,—विधिषुः—पहले तीन वर्णों में से कोई एक पुरुष जो विवाहित स्त्री से विवाह करता है, (पुनर्भूविवाहकारी);—विधिषूः (स्त्री०) एक विवाहित स्त्री जिसकी बड़ी बहन अभी अविवाहित है—(ज्येष्ठाया यद्यनूढायां कन्यायामूढ्वतेऽनुजा, सा चाग्रेदिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा च दिधिषूः स्मृता); °पतिः अग्रेदिधिषू स्त्री का पति;—वर्त्म-र्त्मन् जंगल की सीमा या अन्तिम सिरा;—सर (वि०) आगे २ चलने वाला, नेता—मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९।

अग्र्य (वि० [अग्रे जातः—अग्र+यत्] 1. प्रमुख, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सर्वोच्च, प्रथम—तदग्र्यमद्यं मघवन् महाक्रतोः—रघु० ३।४६, °महिषी १०।६६, अधिकरण के साथ भी; मनु० ३।१८४,—र्यः बड़ा भाई।

अघ=अंघ्—दे० (चु० उभ०) बुरा करना, पाप करना।

अघं [अघ्+अच्] 1 पाप—अघौघविध्वंसविधौ पटीयसीः—शि० १।१८, २६. °मर्षण आदि 2. कुकृत्य, अपराध, दोष शि० ४।३७ 3. अपकृत्य, दुर्घटना, विपत्ति—क्रियादचानां मघवा विघातम्—कि० ३।५२; दे० अनघ 4. अपवित्रता, (अशौच) कि० ३।५२; —घः एक राक्षस का नाम, बक और पूतना का भाई जो कंस के यहां मुख्य सेनापति था। सम०—अमुरः दे० ऊपर 'अघ',—अहः (अहन्) अपवित्रता का दिन, अशौच दिन;—आयुस् (वि०) गर्हित जीवन बिताने वाला;—नाश—नाशन (वि०) परिमार्जक, पापनाशक;—मर्षण (वि०) विशोधक, पाप को हटाने वाला, ऋग्वेद के मन्त्र जिनका सन्ध्या-प्रार्थना के समय प्रायः ब्राह्मणों द्वारा पाठ होता है (ऋग्मं० १० सू० १९०) सर्वसमपर्वसि जप्यं त्रिऋचमघर्षणम्—अमर०,—विषः साँप; —शंसः दुष्ट आदमी जैसे चोर;—शंसिन् (वि०) किसी के पाप या अपराध को बतलाने वाला।

अघर्म (वि०) [न० ब०] जो गरम न हो, ठंडा, °अंशु, °धामन्-वन्हमा जिसकी किरणें ठण्डी होती हैं।

अघोर (वि०) [न० त०] जो भयानक न हो, भीषण न हो,—रः शिव या शिव का कोई रूप जिसमें अघोर =घोर हो। सम०—पथः—मार्गः शिव का अनुयायी,—प्रमार्ण भीषण शपथ या अग्नि परीक्षा।

अघोष (वि०) [नास्ति घोषो यस्य यत्र वा—न० ब०] ध्वनिहीन, निःशब्द,—षः प्रत्येक वर्ग के प्रथम दो अक्षर, श, ष, तथा स।

अङ्क (म्वा० आ०) टेढ़ा-मेढ़ा चलना, (चु०उभ०—अङ्कयति-ते, अङ्कयितुं, अङ्कित) 1. चिह्नित करना, छाप लगाना—स्वनामधेयाङ्कित—श० ४ नामाङ्कित—नयनोदबिन्दुभिः अङ्कितं स्तनांशुकम्—विक्रम० ४।७, 2. गिनना, 3. धब्बा लगाना, कलङ्कित करना—ततो नाम गुणो भवेत्सगुणानां तु दुर्जनैर्नीतिरङ्कितः—मर्तृ० नी० ५४ 4. चलना, इठलाना, जाना।

अङ्कः (पुं०) [अङ्क्+अच्] 1. गोद (नपुं० भी),—अङ्कावतारः अङ्कमुदीरितार्थाः—कु० ७।५; 2. चिह्न, संकेत—अलक्तकाङ्को पदवी ततान—रघु० ७।०; धब्बा, लांछन, कलङ्क, दाग—इन्दोः किरणेष्विवाङ्कः—कु० १।३,—कट्यां कृताङ्को निवास्यः—मनु० ८।२८१; 3. अङ्क, संख्या, ९ की संख्या 4. पार्श्व, पक्ष, सान्निध्य, पहुँच,—समुत्सुकेवाङ्कमुपैति सिद्धिः—कि० ३।४०—सिंहो जम्बुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वा निहन्ति द्विपम् · भर्तृ० नी० ३०, 5. नाटक का एक खंड 6. कँटिया या मुड़ा हुआ उपकरण 7. नाट्यरचना का एक प्रकार, रूपक के दस भेदों में से एक, दे० सा० द० ५।१९ 8. पंक्ति, मुड़ी हुई पंक्ति, सामान्यतः एक मोड़, भुजा में मोड़। सम०—अवतारः जब नाटक के आगामी अङ्क से सातत्य प्रकट करता हुआ, पूर्वाङ्क के अन्त में—अङ्कसंकेतः—क्रिया जाता है उसे अङ्कावतार कहते हैं जैसे कि शकुन्तला का छठा अङ्क अथवा मालविकाग्निमित्र का दूसरा अङ्क,—तंत्र संख्या-विज्ञान (अंकगणित या बीजगणित),—धारणं-णा (नपुं० स्त्री०) 1. चिह्न लगाना या संकेत करना 2. आकृति या मनुष्य को आंकने की रीति —परिवर्तः 1. दूसरी ओर मुड़ना 2. किसी की गोद में लुढ़कना या प्रेम के हाव-भाव दिखाना (आलिंगन के अवसर पर);—पालिः—पाली (स्त्री०) 1.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलिंगन-तावद्गाढं वितरसकृदप्यङ्कपालीं प्रसीद-मालवि० ८।२; 2. दाई, नर्स; —पाशः अंकगणित में एक प्रकार की प्रक्रिया जिसमें १–२ आदि संख्याओं के अदल-बदल से एक विचित्र शृंखला सी बन जाती है; —भाज् (वि०) 1. गोद में बैठा हुआ या लिया हुआ जैसे कि एक बच्चा 2. सुगम, निकटस्थ, सुलभ—कि० ५।५२; ... मुखं (या—आस्यम्) अङ्क का वह भाग जहाँ सब अङ्कों का विषय सूचित किया गया हो अङ्कमुख कहलाता है, इसी से बीज और फल का संकेत होता है—उदा० मालवि० १ में कामदकी और अवलोकिता उस अंश का संकेत करती हैं जिसका अभिनय भूरिवसु और अन्य पात्रों को करना है। इसमें कथावस्तु का क्रम भी संक्षेप में बतला दिया जाता है; —विद्या संख्या-विज्ञान, अंकगणित।

अङ्कन [अङ्क्+ल्युट्] 1. चिह्न, प्रतीक 2. चिह्नित करने की क्रिया 3. चिह्न लगाने के साधन, मुहर लगाना आदि।

अङ्कपालिः [अञ्च्+अलि, कुत्वम्–अञ्चेः को वा–अञ्चतिः अङ्कतिर्वा] 1. हवा, 2. अग्नि 3. ब्रह्मा 4. वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र करता है।

अङ्कुटः [अङ्क्+उटच्] ताली, कुंजी।

अङ्कुरः [अङ्क+उरच्] 1 अंखुवा, किसलय, कोंपल –दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षतः–शि० २।१०; समस्तपद के रूप में प्रायः इसका 'नुकीला' या 'तीक्ष्ण' अर्थ होता है–मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात्–भर्तृ० २।४ नुकीली दाढ़; (आलं०) कलम, संतान, प्रजा—अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण—श० ७।१९; 2. पानी 3. रुधिर 4. बाल 5. रसौली, सूजन।

अङ्कुरित (वि०) [अङ्कुर+इतच्] नवपल्लवित, उत्पन्न, ते मनसिजेनैव—विक्रम० १।१२ मानों काम ने किस लय पैदा कर दिये हैं।

अङ्कुशः [अङ्क्+उशच्] (लोहे का) काँटा या हांकने की छड़ी, (आलं०) नियंत्रक, संशोधक, प्रशासक, निदेशक, दबाव या रोक–निरङ्कुशाः कवयः; कवि नियंत्रण से मुक्त होते हैं या उन पर कोई बन्धन नहीं होता। सम०–ग्रहः पीलवान,–अन्वेतुकामोऽब्रमताङ्कुशग्रहः–शि० १२।१९; ... दुर्धरः दुर्दान्त; —धारिन् (पु०) हाथीवान।

अङ्कुशित (वि०) [अङ्कुश+इतच्] अङ्कुश से हांका गया।

अङ्कुशिन् (वि०) [अङ्कुश+णिनि] अङ्कुश रखने वाला।

अङ्कूरः अंखुवा–दे० 'अङ्कुर'।

अङ्कूषः=दे० अङ्कुश।

अङ्कोटः-ठः-लः [अङ्क+ओट-ठ-ल] पिस्ते का वृक्ष।

अङ्कोलिका [अङ्क+उल+क+टाप् या अङ्क–पालिका का अपभ्रंश] आलिंगन।

अङ्क्य (वि०) [अङ्क्+ण्यत्] दागने योग्य, चिह्नित या अंकित करने योग्य; —यः एक प्रकार का ढोल या मृदंग।

अङ्क् (चु० पर० अक० सेट्) [अङ्कयति-अङ्कित] 1. पेट के बल सरकना 2. चिपटना 3. रोकना।

अङ्ग् (भ्वा० पर० अक० सेट्) [अङ्गति, आनङ्ग, अङ्गितुम्, अङ्गित] जाना, चलना; (चु० पर०) 1. चलना, चक्कर काटना 2. चिह्न लगाना।

अङ्ग (अव्य०) [अङ्ग्+अच्] संबोधक अव्यय, जिसका अर्थ है "अच्छा" 'अच्छा, श्रीमान्' 'निस्सन्देह' 'सच' 'हाँ' (जैसा कि 'अङ्गीकृ' में); –अङ्ग कच्चित्कुशली तातः –का० २२१; 'किम्' जोड़ कर इसका अर्थ होता है 'कितना कम' 'कितना अधिक'–तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां किमङ्ग वाग्दत्तवता नरेण–पंच० १।७१। कोशकारों ने इसके निम्नांकित अर्थ बताये हैं–'क्षिप्रे च पुनरर्थे च सङ्क्रामसूययोस्तथा। हर्षे संबोधने चैव हयङ्गशब्दः प्रयुज्यते।' "संस्कृत-रचना-छात्र निर्देशिका" का § २४३ भी देखें। सं–1. शरीर 2. अंग या शरीर का अवयव–शेषाङ्गनिर्माण–विधौ विधातुः–कुमा० १।३३; 3. (क) किसी संपूर्ण वस्तु का प्रभाग या विभाग, एक खण्ड या अंश, जैसे सप्ताङ्गं राज्यम्–चतुरङ्गं बलम्; अतः (ख) संपूरक या सहायक खण्ड, पूरक (ग) अवयव, सारभूत घटक –तदङ्गमग्र्यं मघवन् महाक्रतोः—रघु० ३।४६; (घ) विशेषणात्मक या गौणभाग, गौण, सहायक या आश्रित अंग (जो मुख्य वस्तु का सहायक है), (इसका विप० है 'प्रधान' या 'अङ्गिन्')–अङ्गी रौद्ररसस्तत्र सर्वेऽङ्गानि रसाः पुनः—सा० द० ५१७ (च) सहायक साधन या युक्ति 4. (व्याक०) शब्द का मूल रूप 5. (क) नाटकों में पांचों सन्धियों के उपभाग (ख) गौण लक्षणों से युक्त समस्त शरीर 6. छः की संख्या के लिए आलंकारिक कथन 7. मन; —गाः (पु० ब० व०) एक देश का नाम, उस देश के वासी—यह प्रदेश बंगाल के वर्तमान भागलपुर के आस पास स्थित है। सम०—अङ्गि-अङ्गीभावः शरीर के अंगों का संबंध, गौण अंगों का मुख्य अंग से संबंध या पोष्य अंग का पोषक अंग से संबंध (गौणमुख्यभावः, उपकार्योपकारकभावश्च): अविश्रान्तजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु संकरः—का० प्र० १०; (अनुग्राह्यानुग्राहकत्वम्) —अधीपः–अधीशः अंगों का स्वामी, कर्ण (तु० °राजः, °पतिः, °ईश्वरः, °अधीश्वरः), —ग्रहः ऐंठन; —ज, —जात (वि०) 1 शरीर पर उपजा हुआ, या शरीर में जन्मा हुआ, शारीरिक 2 सुन्दर, अलंकृत; —(जः)—जन्मन् 1 पुत्र 2 शरीर के बाल (नपुं० भी), 3 प्रेम, काम, प्रेमावेश 4 शराबखोरी, मस्ती 5 एक रोग; —(जा) पुत्री; —(जं)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रधिर; —द्वीप: छोटे छः द्वीपों में से एक; —न्यासः उपयुक्त मंत्रों के साथ हाथ से शरीर के अंगों को स्पर्श करना; —पालिः (स्त्री०) आलिंगन, —पालिका=दे०, अंकपालि —प्रत्यङ्ग छोटे बड़े सब अंग; —भू: 1 पुत्र 2 कामदेव; —भङ्ग: 1 गात्रो-पघात, लकवा—विकल इव भूत्वा स्थास्यामि—श० २; 2 अंगड़ाई लेना (जैसा कि सोकर उठते ही मनुष्य करता है) —मंत्र: एक मंत्र का नाम,—मर्द: 1 जो अपने स्वामी के शरीर पर मालिश करता है, 2 मालिश करने की क्रिया, इसी प्रकार °मर्दकः या °मर्दिन्, —मर्म: गठिया रोग; —यज्ञ:,—याग: यज्ञ से संबद्ध गौण क्रिया,—रक्षकः शरीर रक्षक, व्यक्तिगत सेवक, पंच०,३—रक्षणं किसी व्यक्ति की रक्षा, —रक्षणी कवच, पोशाक — राग: 1 सुगन्धित लेप, शरीर पर सुगंधित उबटन का लेप, सुगन्धित उबटन, —रघु० १२।२७, ६।६० कुमा० ५।११, 2 लेपन क्रिया,— विकल (वि०) 1 अपाहज, लकवा मारा हुआ, 2 मूर्छित; —विकृतिः (स्त्री०) 1 शरीर में कोई विकार होना, अवसाद 2 मिरगी का दौरा, मिरगी —विकारः शारीरिक दोष,—विक्षेपः अंगों का हिलाना, शारीरिक चेष्टा;— विद्या 1 ज्ञान के साधनभूत व्याकरण आदि शास्त्र 2 अंगों की चेष्टा या चिन्हों को देखकर शुभाशुभ कहने की विद्या; बृहत्संहिता का ५१वां अध्याय जिसमें इस विद्या का पूर्ण विवरण निहित है —विधिः योग या सहायक अधिनियम जो कि मुख्य नियम का सहकारी है, —वीरः मुख्य या प्रधान नायक,—वैकृत 1 संकेत, इंगित या इशारा 2 सिर हिलाना, आँख झपकना, 3 परिवर्तित शारीरिक रूप; —संस्कारः, —संक्रिया शरीर को आभूषणों से सुशोभित करना, शारीरिक अलंकरण,—संहतिः (स्त्री०) अंगसम्पत्ति, अंगों का सामंजस्य, शरीर, देहयष्टि,—संगः शारीरिक संपर्क, मैथुन, संभोग; —सेवकः निजी नौकर,—हारः हाव भाव, लटका, —हारिः 1 हावभाव 2 रंग-भूमि; रंग-शाला; —हीन (वि०) 1 अपाहिज, विकलांग, 2 विकृत अंगवाला।

अङ्कः=अङ्क+अच्, स्वार्थे कन्] 1. अङ्क—अकृतमचुरु-रम्बाना मे कुतूहलमङ्ककैः—उत्त० २।२०, २४. 2. शरीर—शि० ४।६६।

अङ्कणं=दे० अङ्कनम्।

अङ्कतिः [अङ्क+अति] 1. सवारी, यान (स्त्री० भी), 2 अग्नि 3. ब्रह्मा 4. अग्निहोत्री ब्राह्मण।

अङ्कदं [अंगं दायति शोधति वा, दै—दो+क] आभूषण, कंकण जो कोहनी के ऊपर भुजा में पहना जाता है, बाजूबन्द,—सप्तधामीकराङ्गदः—विक्रम० १।१४; संघट्टयन्नङ्गदमङ्गदेन—रघु० ६।७३; —दः 1 किष्किंधा के वानरराज बालि का पुत्र; 2 ऊर्मिला से उत्पन्न लक्ष्मण का पुत्र—रघु० १५।९०, इसकी राजधानी का नाम अंगदीया था।

अङ्गनं-णं [अङ्ग्+ल्युट्] 1 टहलने का स्थान, आंगन, चौक, सहन, बगड़; गृह°, गगन° व्यापक अन्तरिक्ष; °भुवः केसरवृक्षस्य—मालवि० १; 2 सवारी 3 जाना, चलना आदि।

अङ्गना [प्रशस्तम् अङ्गम् अस्ति यस्याः—अङ्ग+न+टाप्] 1 स्त्रीमात्र, नृपं, गजं, हरिण° इत्यादि; 2 सुन्दर स्त्री 3 (ज्यो०) कन्या राशि। सम०—जनः 1 स्त्री जाति 2 स्त्रियां; —प्रिय (वि०) स्त्रियों का प्रिय, —प्रियः अशोकवृक्ष।

अङ्गनस् (पुं०) [अङ्ग+नस्, असुन् कुत्वम्] पक्षी।

अङ्गारः-रं [अङ्ग्+आरन्] 1 कोयला (जलता हुआ या बुझा हुआ, ठंडा); —उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्—हि० १।८०; —त्वया स्वहस्तेनाङ्गारः कर्षितः —पंच० १ तुमने स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी, तु० 'अपने लिए स्वयं खाई खोदना' 2 मंगल ग्रह,—रं लाल रंग। सम०—धानिका अंगीठी, कांगड़ी, —पात्री, —शकटी अंगीठी, कांगड़ी; —वल्लरी —वल्ली नाना प्रकार के पौधों का नाम विशेषतः पुंड्रा' पुष्पवंशी।

अङ्गारकः-र्कं [अङ्गार—स्वार्थे कन्] 1 कोयला 2 मंगल ग्रह —°विद्धस्य प्रश्नोत्तरं बृहस्पतेः—मृच्छ० ९।३३; —°वारः मंगल ग्रह का वार 3 मंगलवार (°दिनं, °वासरः), —र्कं एक छोटी चिनगारी। सम०—मणिः मूंगा।

अङ्गारकित (वि०) [अङ्गारक+इतच्] झुलसा हुआ, भूना हुआ।

अङ्गारिः (स्त्री०) [अंगार-मतर्थे इन्-पृषो० कलोपः] कांगड़ी, अंगीठी।

अङ्गारिका [अंगार-मतर्थे ठन्-कप् च] 1 कांगड़ी 2 गन्ने की पोरी 3 किंशुक वृक्ष की कली।

अङ्गारिणी [अंगार+इन्+ङीप्] 1 छोटी अंगीठी, 2 लता।

अङ्गारित (वि०) [अङ्गार+इतच्] झुलसा हुआ, भूना हुआ, अधजला —तः-तं पलाश वृक्ष की कली,—ता 1 —दे० अङ्गारधानी 2 कली 3 लता।

अङ्गारीय (वि०) [अङ्गार+छ] कोयला तैयार करने की सामग्री।

अङ्गिका [अङ्ग+क+टाप्] चोली, अंगिया।

अङ्गिन् (वि०) [अङ्ग+इन्] 1 शारीरिक, देहधारी,—धर्मार्थकाममोक्षाणामिवतार इवाङ्गवान्—रघु० १०।८४, ३८; 2 गौण अंगों वाला, सहायक, प्रधान—ये रसस्यां-गिनो धर्माः, एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा-मा० द०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अङ्गिरः, अङ्गिरस् (पुं०) [अङ्ग्+असु+इरुट्] ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि; —(ब० व०) अंगिरा ऋषि की सन्तान।

अङ्गीकरणम्, अङ्गीकारः, अङ्गीकृतिः (स्त्री०) [अङ्ग्+ च्वि+कृ+ल्युट्,—कृ+घञ्, कृ+क्तिन्] 1. स्वीकृति 2. सहमति, प्रतिज्ञा, जिम्मेदारी आदि।

अङ्गीय (वि०) [अङ्ग+छ] शरीर संबन्धी।

अङ्गुः [अङ्ग्+उन्] हाथ।

अङ्गुरिः-रीः-दे० अंगुलि।

अङ्गुलः [अङ्ग्+उलच्] 1. अंगुली 2. अंगूठा (नपुं० भी), 3. अंगुल भर की नाप (नपुं० भी) जो ८ जौ के बराबर होती है, १२ अंगुलियों की एक 'वितस्ति' या बालिश्त और २४ अंगुलियों का एक 'हाथ' का नाप होता है।

अङ्गुलिः-ली, अङ्गुरिः-री(स्त्री०) [अंग् + उलि] 1. अंगुली (पांचों अंगुलियों के नाम—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा या कनिष्ठिका हैं) पैर का पंजा-पाव की अंगुली कहलाती है 2. अंगूठा, पैर का अंगूठा 3. हाथी की सूंड की नोक 4. अंगुल,नाप विशेष। सम० **तोरणं** मस्तक पर चन्दन का अर्ध चन्द्राकार तिलक; **त्रं-त्राणं** अंगूठे की रक्षा के निमित्त बना एक प्रकार का दस्ताना जिसे धनुर्धर पहनते हैं; **मुद्रा, —मुद्रिका** मोहर लगाने की अंगूठी, **मोटनं-स्फोटनं** चुटकी बजाना, अंगुली चटकाना; **-संज्ञा** अंगुलियों से संकेत—**मुखानिर्तकाङ्गुलिसंज्ञयैव**-कुमा० ३।४१; —**संदेशः** अंगुलियों के इशारे से संकेत करना; —**संभूतः** नाखून।

अङ्गुलिका =अंगुलिः।

अङ्गुली-री यं,-कं-यकं [अंगुरि (लि)+छ-स्वार्थे कन्] अंगुली-तव सूचरितमङ्गुलीयं नूनं प्रतनु ममैव-श० ६।१०; —(पुं०भी)—काकुत्स्थस्याङ्गुलीयकः भट्टि० ८।११८।

अङ्गुष्ठः [अंग्+स्था+क] 1. अंगूठा, पैर का अंगूठा 2. अंगूठा भर का नाप विशेष जो अंगुल के समान होती है। सम०—**मात्र** (वि०) अंगूठे की लम्बाई के बराबर ऐसे पुरुषं निश्चकर्ष कृतान्तः—महा०।

अङ्गुष्ठ्यः [अङ्गुष्ठे भवः—यत्] अंगूठे का नाखून।

अङ्गूषः [अङ्ग्+ ऊषन्] 1. नेवला 2. तीर।

अङ्घ् (भ्वा० आ० अक० सेट्) [अङ्घते—अङ्घित] 1. जाना, 2. आरंभ करना 3. शीघ्रता करना 4. धमकाना।

अङ्घस् (न०) [अङ्घ्+असुन्] पाप-वेणी० १।१२, (पाठांतर)

अंघ्रिः-अंह्रिः—[अङ्घ्+क्रिन्] 1. पैर 2. वृक्ष की जड़ 3. श्लोक का चौथा चरण। सम०—**पः** वृक्ष **-दिक्षु व्यूढाङ्घ्रिपाङ्गः**-वेणी० २।१८, **-पान** (वि०) बच्चे की भांति अपने पैर का अंगूठा चूसने वाला—**स्कन्धः** ठसना।

अच् (भ्वा० उभ० इदित् अक० सेट्) [अचति—ते, अञ्चति, आनञ्च, अञ्चित,—अक्त] 1 जाना, हिलना; 2 सम्मान करना, प्रार्थना करना आदि; दे० 'अञ्च्' से संबद्ध —**च्** (पुं०) [व्या०] स्वरों के लिए प्रयुक्त शब्द।

अचक्षुस् (वि०) [न० ब०] नेत्रहीन, अंधा; °विषय (वि०) अदृश्य, (नपुं०) [न० त०] खराब आँख, रोगी आँख।

अचण्ड (वि०) [न० त०] जो क्रोधी स्वभाव का न हो, शान्त, सौम्य।

अचतुर (वि०) [न० ब०] 1 'चार' की संख्या से रहित 2 [न० त०] अनाड़ी।

अचर (वि०) [न० त०] स्थिर—चराचरं विश्वं—कुमा० २।५; —चराणामन्नमचराः—मनु० ५।२९।

अचल (वि०) [न० त०] दृढ़, स्थिर, निश्चित, स्थायी—चित्रन्यस्तमिवाऽचलं चामरम्—विक्रम० १।४,—**लः** 1 पहाड़, (कहीं २) चट्टान 2 काबला या कील 3 सात की संख्या, **-ला पृथ्वी, —लं ब्रह्म**। सम० **-कन्यका, —तनया, —दुहिता, —सुता** हिमालय पर्वत की पुत्री 'पार्वती'' **-कीला** पृथ्वी; **—ज, —जात** (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, **—जा, —जाता** पार्वती; **-त्विष्** (पुं०) कोयल, **—द्विष्** (पुं०) पर्वतों का शत्रु, इन्द्र का विशेषण जिसने पहाड़ों के पंख काट दिये थे।

अचापल्य —त्व (वि०) [न० ब०] चंचलतारहित, स्थिर, **-त्वं** [न० त०] स्थिरता।

अचित् (वि०) वैं० [नञ्+चित्+क्विप् न० त०] 1 समझदारी से रहित, 2 धर्मशून्य 3 जड़।

अचित (वि०) वैं० [न चित—इति न० त०] 1 गया हुआ 2 अविचारित 3 एकत्र न किया हुआ।

अचिन्त (वि०) [न० ब०] 1. अकल्पनीय 2. बुद्धिरहित, अज्ञान, मूर्ख 3. न सोचा हुआ।

अचिन्तनीय-अचिन्त्य (वि०) [नञ्+चिन्त्+अनीयर्, चिन्त्+यत्] जो सोचा भी न जा सके, समझ से परे, —°**यस्तव प्रभावः**—रघु० ५।२३, —**त्यः** शिव।

अचिन्तित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, आकस्मिक, पंच० २।३।

अचिर (वि०) [न० त०] 1. संक्षिप्त, क्षणिक, क्षणस्थायी, दे० °द्युति, °भास, °प्रभा आदि 2. नया—रघु० ८।२०; समस्त पदों में 'अचिर' का अर्थ है हाल में, अभी, कुछ ही पहले—**प्रवृत्ते ग्रीष्मसमयमधिकृत्य**—शा० १; अभी अभी, °**प्रसूता**—शा० ४—**अभी २ जिसने बच्चे को पैदा किया है** (यह एक हरिणी के विषय में कहा गया है जो प्रसवोपरान्त चल बसी है)—**अधवा गाय जिसने**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बछड़े को जन्म दिया है –रं [क्रि० वि०] [अचिरेण, अचिराय, अचिरात् और अचिरस्य भी इसी अर्थ के द्योतक हैं] 1. बहुत देर नहीं हुई, अभी कुछ पहले 2. हाल ही में, अभी, 3. शीघ्र, जल्दी, बहुत देर न करके। सम०– अंशु,– आभा,– द्युति,– प्रभा, – भास्,– रोचिस् (स्त्री०) बिजली– °शुविलासचंचला लक्ष्मीः– कि० २।१९, °भासां तेजसा चानुलिप्तैः–श० ७।७।

अचेतन (वि०)[न० ब०] 1 निर्जीव, अबोध,–चेतन °नेषु– मेघ० ५; 2. दोषरहित, अज्ञानी।

अच्छ (वि०)[नञ्+छो+क] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक, विशुद्ध–मुक्ताच्छदन्तच्छविदनुरेयम्–उत्त० ६।२७, मेघ० ५१;–कि रत्नमच्छा मतिः–भामि० १।१६; –च्छः 1. स्फटिक 2. भालू–तु० °भल्ल भी। सम०– उदन् [अच्छोद] (वि०) स्वच्छ जल वाला –दं कादम्बरी में वर्णित हिमालय पर्वत पर स्थित एक झील,–भल्लः रीछ।

अच्छ-कथा (अव्य०) वै०–की ओर, (कर्म कारक के साथ) की तरफ।

अच्छन्दस् (वि०) [न० ब०] 1. उपनीत न होने के कारण या शूद्र होने के कारण वेद को न पढ़ने वाला, 2. छंदरहित रचना।

अच्छावाकः [अच्छ+वद्+घञ्] सोमयाग का ऋत्विक् जो होता का सहायक होता है।

अच्छिद्र (वि०) [न० ब०] छिद्ररहित, अक्षत, निर्दोष, दोषरहित–अच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं श्राद्धकर्मणि, सर्वं भवतु मच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः;–दं [न० त०] निर्दोष कार्य या दशा, दोष का अभाव, °द्रेण, बिना रुके, आदि से अन्त तक।

अच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1. अटूट, लगातार चलने वाला, अनवरत 2. जो कटा न हो, अविभक्त, अक्षत, अखंड्य।

अच्छोदनम् [नञ्–छुद्+णिच्+ल्युट्] आखेट, शिकार।

अच्युत (वि०) [न० त०] 1 अपने स्वरूप से न गिरा हुआ, दृढ़, स्थिर, निर्विकार, अचल 2. अनश्वर, स्थायी, –तः विष्णु, सर्वशक्तिमान् प्रभु,–गच्छाम्यच्युतदर्शनेन–काव्य० ५ (यहां अ° का भी अर्थ है–दृढ़, जो वासनाओं का शिकार न हो)। सम०–अग्रजः बलराम या इन्द्र,–अंगजः,–आत्मजः,–पुत्रः कामदेव, कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र,–आवासः,–वासः पीपल का वृक्ष।

अज् (भ्वा० पर० अक० सेट्०–आर्धधातुक लकारों में विकल्प से 'गा' आदेश होता है) [अजति, आजीत्, अजितुम्, अजित–क्त] 1. जाना 2. हांकना, नेतृत्व करना 3. फेंकना (उपसर्गों के साथ इस धातु का प्रयोग केवल वेद में ही पाया जाता है)।

अज (वि०) [न० त०–न जायते नञ्–जन्+ड] अजन्मा, अनादि,–अजस्य गृह्णतो जन्म–रघु० १०।२४;–जः 1. 'अज' सर्वशक्तिमान् प्रभु का विशेषण, विष्णु, शिव,ब्रह्मा 2. आत्मा, जीव 3. मेंढा, बकरा 4. मेषराशि 5. अन्न का एक प्रकार 6. चन्द्रमा, कामदेव। सम०–अक्षी (स्त्री) कटीली काकमाची, घमासा,–अजिकं छोटा पशु,–अश्वं बकरे और घोड़े,–एडकं बकरे और मेंढे,–करः अजगर नामक भारी सांप जो, कहते हैं बकरियों को निगल जाता है;–(री) एक पौधे का नाम–पल दे० नी० 'अजागल';–जीवः,–जीविकः गडरिया, इसी प्रकार–°पः,–°पालः;–°मारः 1. कसाई, 2. एकप्रदेश का नाम (वर्तमान अजमेर),–मोदः 1. अजमेर नामक स्थान का नाम, 2. युधिष्ठिर की उपाधि,–मोदा,–मोदिका अजमोद–एक औषध का नाम जिसे मराठी में 'ओवा' कहते हैं,–शृंगी 'मेंढासिंगी' पौधे का नाम।

अजकवः–वं [अजं विष्णुं कं ब्रह्माणं वालीति–वा+क] शिव का धनुष।

अजका-प्रजिका [स्वार्थे कन्+टाप्] छोटी बकरी, बकरी का बच्चा।

अजकावः–वं [अजं विष्णुं कं ब्रह्माणम् अवति इति अव्+अण्] शिव का धनुष, पिनाक।

अजगवं [अजगो विष्णुस्तं वातीति–वा+क] शिव का धनुष, पिनाक।

अजगावः [अजगो विष्णुस्तमवतीति–अव्+अण्] शिव का धनुष, पिनाक।

अजड (वि०) [न० ब०] जो जड न हो, समझदार।

अजन (वि०) [न० ब०] जनशून्य, वियाबान।

अजनिः (स्त्री०) [अज्+अनि] पथ, मार्ग।

अजन्मन् (वि०) अनुत्पन्न, 'अजन्मा' प्रभु का विशेषण, (पुं०) परमानन्द, छुटकारा, अपमुक्ति।

अजन्य (वि०) [न० त०] उत्पन्न होने के अयोग्य, मानव-जाति के प्रतिकूल,–न्यं अपशकुनसूचक अशुभ घटना जैसे कि भूचाल।

अजपः [न० ब०] वह ब्राह्मण जो सन्ध्योपासना उचित रूप से नहीं करता है।

अजंभ (वि०) [न० ब०] दांत रहित,–भः 1. मेंढक, 2. सूर्य 3. बच्चे की वह अवस्था जब उसके दांत नहीं निकले हैं।

अजय (वि०) [न० ब०] जो जीता न जा सके, जो हराया न जा सके, नाथ;–यः हार, पराजय;–या भोग।

अजय्य (वि०) [नञ्+जि+यत् न० त०] जो जीता न जा सके, श० ६।२९, रघु० १८।८।

अजर वि० [न० त०] 1. जिसे कभी बुढ़ापा न आवे, सदा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जवान 2. जो कभी न मुर्झावे, अनश्वर; –पुराणमजरं विदुः–रघु० १०।१९—रः देवता,—रं परमात्मा।

अजर्यं [नञ्+जृ+यत् न० त०] (अभिहित या अध्याहृत 'संगतं' के साथ) मित्रता–मृगैरजर्यं जरसोपदिष्टम्–रघु० १८।७।

अजस्र (वि०) [नञ्+जस्+र न० त०] अविछिन्न, अनवरत, लगातार रहने वाला; –°दीक्षाप्रयतस्य–रघु० ३।४४; –स्रं (अव्य०) सदा, अनवरत, लगातार–तच्च धूनोत्यजस्रम्–उत्त० ४।२६।

अजहत्स्वार्था [न जहत् स्वार्थोऽत्र–हा+शतृ न० ब०] लक्षणा शक्ति का एक भेद जिसमें मुख्यार्थ पद-शून्यता के कारण नष्ट नहीं होता; जैसे कुंताः प्रविशंति=कुंत धारिणः पुरुषाः, इसे उपादान लक्षणा भी कहते हैं।

अजहल्लिंगं [न अहत् लिङ्गं यत्, हा+शतृ न० ब०] संज्ञा शब्द जिसका लिंग नहीं बदलता चाहे वह विशेषण की भांति ही क्यों न प्रयुक्त किया जाय–उदा०–वेदः (अथवा) श्रुतिः प्रमाणम् (प्रमाणः अथवा प्रमाणा नहीं)।

अजा (स्त्री०) [नञ्+जन्+ड+टाप्] 1 (सांख्य दर्शन के मतानुसार) प्रकृति या माया; 2 बकरी। सम०—**गलस्तनः** बकरियों के गल में लटकने वाला थन; (आलं०) किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने में इसका उपयोग होता है। धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते। °स्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्॥ —**जीवः**— **पालकः** गडरिया, दे० अजजीव आदि।

अजाजिः—**जी** (स्त्री०) [अजेन आजः त्यागः यस्याम्—अज+आज+इन्] सफेद या काला जीरा।

अजात (वि०) [न० त०] अनुत्पन्न–अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम्—पंच० ९. जो अभी उत्पन्न न हुआ हो, पैदा न किया गया हो, अविकसित हो; °ककुद्, °पक्ष इत्यादि। सम०—**अरि**, —**शत्रु** (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो, जो किसी का शत्रु न हो; (–रिः–त्रुः) 'युधिष्ठिर' की उपाधियाँ—हंत जातमजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा—शिशु० २।१०२; न द्वेक्षि यज्जनमतस्त्वमजातशत्रुः—वेणी० ३।१३; शिव तथा दूसरे अनेक देवताओं की उपाधि; —**ककुत्** —**द्** (पुं०) थोड़ी उम्र का बैल जिसका कुब्ब अभी न निकला हो; —**व्यंजन** (वि०) जिसके दाढ़ी आदि अभिज्ञान चिह्न न हों; —**व्यवहारः** अवयस्क, नाबालिग जिसको अभी तक वयस्कता न मिली हो।

अजानिः [नास्ति जाया यस्य–जायाया निङादेशः–न० ब०] जिसके स्त्री न हो, पत्नीहीन, विधुर।

अजानिक [अजेन आनो जीवनं यस्य–ठन्] गडरिया, बकरियों का व्यापारी।

अजानेय (वि०) [अजेऽपि आनेयः—यथास्थानं प्रापणीयः–इति अज्+अप–आ+नी+यत्] उद्दाम कुल का, निर्भय (जैसे घोड़ा)।

अजित (वि०) [नञ्+जि+क्त] 1. जो जीता न जा सके, अजेय, दुर्धर ०तं पुण्यं……महः–उत्त० ५।२७ 2. न जीता हुआ (देश आदि) अनियन्त्रित, अनिरुद्ध; ०आत्मन्, ०इन्द्रिय=जिसने अपने मन या इन्द्रियों का दमन नहीं किया है; —**तः** विष्णु, शिव, या बुद्ध।

अजिनं [अज्+इनच्] बाघ, सिंह या हाथी आदि, विशेषकर काले हिरन की रोएँदार खाल जिसके आसन बनते हैं या जो पहनने के काम आती है—अथाजिनाषाढधरः–कुमा०५।३०, ६७; कि० ११।१५. 2. चमड़े का थैला या धौंकनी। सम०—**पत्रा**,—**पत्री**,—**पत्रिका** चमगादड़, —**योनिः** हरिण, कृष्णसार मृग—**वासिन्** (वि०) मृगचर्म पहनने वाला,—**संधः** मृगचर्म का व्यवसाय करने वाला।

अजिर (वि०) [अज्+किरन्] शीघ्रगामी, स्फूर्तिवान्; –रं 1. आंगन, अहाता, अखाड़ा; उटजाजिरप्रकीर्ण–का० ३९; 2. शरीर 3. इन्द्रियगम्य पदार्थ 4. वायु, हवा 5. मेंढक,–रा 1. एक नदी का नाम 2. दुर्गा का नाम।

अजिह्म (वि०) [न० त०] 1. सीधा 2. सच्चा, खरा, ईमानदार; –०गामिभिः–शि० १।६३, बेलाग और खरा;—**ह्मः** मेंढक। सम०—**ग** (वि०) सीधा चलने वाला,–अजेह्मिशमजिह्मगः–मनु० ६।३१–**गः** तीर।

अजिह्मः [न० ब०] मेंढक।

अजीकवं [अज्या परक्षेपणेन कं ब्रह्माणं वाति प्रीणाति वा+क] शिव का धनुष।

अजीगर्तः [अज्यै गमनाय गर्तं यस्य–ब० स०] साँप।

अजीर्ण (वि०) [न० त०] न पचा हुआ, न सड़ा हुआ, —र्णं अपच।

अजीर्णिः (स्त्री०) [नञ्+जॄ+क्तिन्] 1 मन्दाग्नि—कैरजीर्णभयाद् भ्रातर्भोजनं परिहीयते–हि० २।५७ 2. बल, शक्ति, क्षय का अभाव।

अजीव (वि०) [न० ब०] निर्जीव, जीव रहित; —**वः** [न० त०] सत्ता का अभाव, मृत्यु।

अजीवनिः (स्त्री०) [नञ्+जीव्+अनि] मृत्यु, सत्ता का अभाव (अभिशाप के रूप में प्रयुक्त)–अजीवनिस्ते शठ भूयात्–सिद्धा०–अरे दुष्ट! भगवान् तुम्हें मृत्यु दे, भगवान् करे, तुम मर जाओ।

अजुष्कं 1. हाल 2. जलता हुआ कोयला।

अज्ञ (वि०) [नञ्+ज्ञा+क न० त०] 1. न जानने वाला, ज्ञान रहित, अनुभवहीन–अज्ञो भवति वै बालः–मनु० २।१५२ 2. अज्ञानी, असमझ, मूर्ख, मूढ, जड़ (मनुष्यों और पशुओं के विषय में भी कहा जाता है)–अज्ञः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखमाराध्यः-मर्तृ० २० 3. अज्ञान, समझ की शक्ति से हीन।

अज्ञात (वि०) [न० त०] न जाना हुआ,-अप्रत्याशित, अनजान-°पातं सलिलं समज्ज-रघु० १६।७२। सम०-चर्या,-वासः छिप कर रहना (पाण्डवों के विषय में-'अज्ञातवास' प्रसिद्ध है)।

अज्ञान (वि०) [न० ब०] अनजान, बेसमझ,-नं [न० त०] 1. अनजानपना, 2. विशेष करके आध्यात्मिक अज्ञान-अर्थात् अविद्या जिसके वशीभूत हो कर मनुष्य अपने आप को ब्रह्म से पृथक् समझता है तथा भौतिक संसार को वास्तविकता को मानता है। समस्तपदों में 'अज्ञान' का अनुवाद 'अनजाने में' 'अनवधानता में' 'बेखबरी में' किया जा सकता है। °आचरित, °उच्चारित इत्यादि।

अञ्च् (स्वा० उभ० सक० वेट्) [अञ्चति-ते, आनञ्च, अञ्चितुं, अञ्च्यात् -अंच्यात्, अक्त -अञ्चित] 1. झुकाना; शिरोऽञ्चिताः-भट्टि० ९।४० 2. जाना, हिलना, झुकाव होना-स्वतन्त्रा कथमञ्चसि-भट्टि० ४।२२, त्वं चेदञ्चसि लोभभ्-भामि० १।४६ लालायित होना 3. पूजा करना, सम्मान करना, आदर करना, सुशोभित करना, सम्मानित करना देo आगे 'अञ्चित' 4. प्रार्थना करना, इच्छा करना, 5. बड़बड़ाना, अस्पष्ट बोलना। प्रेर० या चु० उभ०-प्रकट करना, प्रकाशित करना,-मुदमञ्चय -गीत० १०। उपसर्गों के साथ प्रयोग, अप्-दूर करना, हटाना, हटजाना; आ-झुकाना; उत् 1. ऊपर उठना 2. उन्नत होना, प्रकट होना; उदञ्चनमात्मर्यं-यं० ल० ६, उप्-खींचना, (जल) ऊपर निकालना; नि-1. झुकाना, इच्छा करना 2. कम करना, अपेक्षा करना-न्यञ्चति वयसि प्रयते-भामि० २।४७ परा-मोड़ना, मुड़ना-यातास्त्वेन्न परावृत्ति द्विरदानां रदा इव-भामि० १।६५; परि-घुमाना, भंवर में डालना, मरोड़ना; वि खींचना, नीचे को झुकना, फैलाना, फैलाना; सम्-भीड़ करना, इकट्ठे हांकना, इकट्ठे झुकना।

अञ्चलः-लं [अञ्च्+अलच्] 1 वस्त्र का छोर या किनारा, गोट या झालर सौणाञ्चलमिव पीनस्तनजघनाया:-उद्भट. 2. कोना या आँख का बाहरी कोण-दृगञ्चलैः पश्यति केवलं मनाक्-उद्भट।

अञ्चित (भू० क० कृ०) [अञ्च्+क्त] 1 (क) मुड़ा हुआ, झुका हुआ, रघु० १८।५८; (ख) धनुषाकार, सुन्दर (जैसे कि भौंहें); °अञ्चितपक्ष्मन् रघु० ५।७६; छल्लेदार, घुंघराले (जैसे कि बाल); 2. सम्मानित, अलंकृत, सुशोभित, शोभायमान, सुन्दर; गतेषु लीलाञ्चित-विक्रमेषु-कु० १।३४, °ताभ्यां गताभ्याम् रघु २।१८, ९।२४, 3. सिला हुआ, बुना हुआ, व्यवस्थित-अर्धाञ्चिता सत्वरमुत्थितायाः (रचना)-रघु० ७।१०, अर्धगुंफित या पिरोया हुआ। सम०-भ्रूः धनुषाकार या सुन्दर भौंओं वाली स्त्री।

अञ्ज् (रुधा० पर० सक० अनिट्) [कहीं कहीं-आत्मनेपद] अभक्ति अंक्ते, अक्त) 1. लेपना, सानना, रंग पोतना 2. स्पष्ट करना, प्रस्तुत करना, चित्रण करना 3. जाना 4. चमकना 5. सम्मानित करना, समारंभ करना 6. सजाना; प्रेर० 1 सानना, 2 डोलना, चमकना उपसर्गों के साथ, अधि-उपकरण जुटाना, सुसज्जित करना; अभि-1. लीपना, सानना 2. कलुषित करना, मलिन करना, अभिव्यि-प्रकट करना, व्यक्त करना; आ- 1. लेप करना 2. सरल बनाना, तैयार करना, 3. सम्मानित करना, वि-प्रकट करना, व्यक्त करना, जाहिर करना-अंकिञ्चित्यं मावजं व्यभजिष्ट-रघु० ५।१६, शि० २६।

अञ्जनः [अञ्ज्+ल्युट्] (पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम दिशा के) रक्षक हाथी,-नं 1. लीपना पोतना, मिलाना 2. प्रकट करना, व्यक्त करना 3. काजल या सुरमा जो आँखों में लगाया जाता है;-विलोभनं दक्षिणमञ्जनेन सम्भाव्य-रघु० ७।८, अगुतं° उत्त० ४।१२, मुखं० १।३४; (आल० भी) अज्ञानतिमिरान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ शिक्षा० ४५, (तु०) दरिद्रस्य परमाञ्जनम् 4. उप.गोधूर्य-वर्धक उबटन 5. मसी 6. आग 7. रात्रि 8 (-नं, -ना) (सा० शा०) व्यभ्यार्थ. व्यंग्यार्थ के प्रकट होने की प्रक्रिया, अनेकार्थक शब्द का प्रयोग जिसका प्रसंगतः विशेष अर्थ होता है अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृदञ्जनमिष्यते॥ काव्य २, दे० 'व्यंजना' भी। सम०-अंभस् (नपु०) आँख का पानी,-शलाका सुरमा लगाने की सलाई।

अञ्जना (अञ्ज्+ल्युट्+टाप्) 1. उत्तर भारत की हथिनी 2. हनुमान् की माता।

अञ्जलिः [अञ्ज्+अलि] 1 दोनों खुले हाथों को मिलाकर बनाया हुआ कटोरा, करसंपुट, अंजलिभर वस्तु सुपूरो मुनिकाञ्जलिः-पंच० १।२५. प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम् वेणी० १।१, अंजलिभर फूल; इसी प्रकार-जलस्यांजलयो दश-या० ३।१०५, दस अंजलियां अर्थात् जल से तर्पण;-श्रवणाञ्जलिपुटपेयम् वेणी० १।४; अंजलि रघु०, -बंध, कृ या -आसे, हाथ जोड़कर नमस्कार करना 2. अत एव सम्मान या नमस्कार का चिह्न, रघु० ११।७८; 3 अनाज की माप=कुडव। सम०-कर्मन् (नपु०) हाथ जोड़ना, आदरयुत नमस्कार;-कारिका मिट्टी की गुड़िया,-पुटः-टं दोनों खुले हाथों को जोड़ने से बने कटोरे के आकार का गर्त, हाथ की खुली हथेलियाँ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अञ्जलिका [अञ्जलिरिव कायते प्रकाशते-कै+क+टाप्] एक छोटा चूहा।

अञ्जस (वि०) [स्त्रियाम् अञ्जसी, अञ्ज् + असच्] अकुटिल, सीधा, ईमानदार, खरा।

अञ्जसा (अव्य०) 1. सीधी तरह से 2. यथावत्, उचित रूप से, ठीक तरह से विद्वद्भिः शठ पलायनच्छलान्यञ्जसा-रघु० १९।३१ 3. शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

अञ्जिष्ठः-ष्णुः [अंज् + इष्ठच्, इष्णुच् वा] सूर्य।

अञ्जीरः-रं [अञ्ज् + ईरन्] अंजीर वृक्ष की जातियां और उसके फल।

अट् [स्वा० पर० अक० सेट्, आ० विरल] [अटति, अटित] इधर उधर घूमना (अभि० के साथ); (कई बार कर्म० के साथ), भी बड़ी भिक्षामटसिद्धा० 'भिक्षा मांगने आओ'- आट नैकटिकाश्चमान्-भट्टि० ४।१२; (वञ्चना) अटाट्यते, स्वभावतः इधर उधर घूमना जैसे कि कोई साधु संत घूमता है।

अट (वि०) [अट्+अच्] घूमने वाला; (समास-प्रयोग)।

अटनं [अट्+ल्युट्] घूमना, भ्रमण करना—भिक्षा°, रात्रि° आदि।

अटनिः-नी (स्त्री०) [अट्+अनि, ङीष् वा] घनुष का खांचेदार सिरा, निम्नतः स्थलनिवेशितात्तनी लीलयैव धनुषो अधिरुह्यताम् रघु० ११।१४।

अटा [अट्+अङ्+टाप्] साधु संतों की भांति इधर उधर घूमने की आदत, इसी प्रकार अट्या, अटाट्या।

अटरु (रू) षः [अट+रुष+क] अडूसा, वासक का पौधा।

अटवि:-वी (स्त्री०) [अट्+अवि ङीष् वा] वन, जंगल -आहिण्डयते अटव्यां अटवीम् श० २।

अटविकः [अटवि+ठन्] वन में काम करने वाला, दे० 'आटविक'।

अट्ट् (स्वा० आ०) 1. वध करना 2. अतिक्रमण करना, परे जाना (आलं० रूप से भी); -प्रेर० 1. घटाना, कम करना 2. घृणा करना, तिरस्कृत करना।

अट्ट (वि०) [अट्ट्+अच्] 1. ऊंचा, उच्चस्वरयुक्त 2. बार-बार होनेवाला, लगातार आने वाला 3. शुष्क, सूखा -ट्टः [अट्ट्+घञ्] 1. अटारी 2. कंगूरा, मीनार, बुर्ज नरेन्द्रमार्गाट्ट इव-रघु० ६।६७ 3. हाट, मंडी 4. महल, विशाल भवन,-ट्टं भोजन, भात, अट्टशूला जनपदाः-मेघ० (अट्टम् अत्रम् शूलं विक्रेयं येषां ते-नीलकंठ)। सम०-अट्टहासः ठहाका,-हासः-हसितं, -हास्यं जोर की हंसी या ठहाका, शिव का अट्टहास -त्र्यंबकस्य-मेघ० ५८; -हासिन् (पुं०) 1.शिव, 2, ठहाका लगाकर हंसने वाला।

अट्टकः [अट्ट+अच स्वार्थे कन्+टाप्] चौबारा, महल।

अट्टालः-अट्टालकः [अट्ट इव अलति अल्+अच् स्वार्थे कन्] अटारी, बालाखाना, चौबारा, महल।

अट्टालिका [अट्टाल+स्वार्थे कन्] महल, उत्तुंग भवन। सम०-कारः राज, चिनाई करने वाला, (राजमहलों का निर्माता)।

अट्टनं [अट्ट्+ल्युट्] ढाल।

अण् (स्वा० पर०) 1. शब्द करना 2. (दिवा० आ०) सांस लेना, जीना ('अन्' के स्थान पर)।

अण (न) क (वि०) [अण्—अन् कुत्साया कप् च] बहुत छोटा, तुच्छ, नगण्य, अवम इत्यादि, समास में-'ह्रास' और 'हीनावस्था' अर्थ को प्रकट करता है, 'कुलालः-सिद्धा० हेय कुम्हार'।

अणिः (स्त्री०-अणी) [अण्+इन् ङीष् वा] 1. सुई की नोक 2. धुरे की कील, कील या कांवला जो गाड़ी के बांक को रोकने के लिए लगाया जाय 3. सीमा।

अणिमन् (पुं०) **अणुता, अणुत्वं** [अणु+इमनिच्, अणु+ता, अण्+त्व] 1. सूक्ष्मता, 2. आणव प्रकृति 3. आठ सिद्धियों में से एक ईशीशक्ति जिसके बल से मनुष्य 'अणु' जैसा छोटा बन सकता है।

अणु (वि०) (स्त्री०-णु-ष्वी) [अण्+उन्] सूक्ष्म, बारीक, नन्हा, लघु, परमाणु-संबंधी-अणोरणीयान् -भग० ८।९; -णुः 1. अणु=अणु पर्वतीकृत-भर्तृ० 2, ७८, बड़ा बना-नु० "तिल का ताड़" से 2. समय का अंश 3. शिव का नाम। सम० भा बिजली, -रेणु आणव धूल, वाद अणु-सिद्धान्त. अणुवाद।

अणुक (वि०) [स्वार्थे कन्] 1. अतितुच्छ, अत्यन्तह्रस्व, 2. सूक्ष्म, अत्यंत बारीक 3. तीक्ष्ण।

अणीयस्, अणिष्ठ (वि०) (अण्+ईयसुन, अणु+इष्ठन्] तुच्छतर, तुच्छतम, अत्यंत तुच्छ; अणोरणीयांसम्-भग० ८।९।

अण्डः-ण्डं [अम्+ड] 1. अण्डकोष 2. फोता, 3. अंडा-ब्रह्मा के बीजभूत अंडे से उत्पन्न होने के कारण 'संसार' भी बहुधा 'ब्रह्माड' कहलाता है 4. मृगनाभि या कस्तूरीकोष 5. वीर्य. 6. शिव। सम० आकर्षणं बधिया करना, -आकार, -आकृति (वि०) अंडे के आकार का, अंडाकार, अंडवृत्ताकार, (-रः-तिः) अंडवृत्त-कोश(थ):-कोषकः फोते, ज (वि०) अंडे से उत्पन्न, (-जः) 1. पक्षी, पंखदार जन्तु कु० ३।४२ 2. मछली 3. सांप 4. छिपकली 5. ब्रह्मा, (-जा) कस्तूरी,-धरः शिव का नाम,-वर्धनं, वृद्धिः (स्त्री०) फोतों का बढ़ जाना,-घ्न (वि०) पंखदार जन्तु।

अण्डकः [अण्ड-स्वार्थे कन्] फोता,-कं छोटा अंडा-जगदंडकैकतरखंडमिव-शि० ९।९।

अण्डालुः [अण्ड+आलुच्] मछली।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अच्छीरः [अच्छ+ईरच्] पूर्ण विकसित पुरुष, बलवान् हृष्टपुष्ट पुरुष।

अट् (भ्वा० पर० अक० वेट्) [अटति, अट्त-अटित] 1. जाना, चलना, घूमना, लगातार चलते रहना 2. प्राप्त करना (बहुधा वै०) 3. बांधना।

अटट (वि०) [न० ब०] तटरहित, खड़ी ढाल वाला,—टः चट्टान, ढलवा चट्टान।

अटाटा (अव्य०) [नञ्+तत्+था] ऐसा नहीं, °उचित (वि०) अनधिकारी, अनभ्यस्त।

अटाट्यम् (अव्य०) [नञ्+तट्टर्हम् न० त०] अनुचित रूप से, अनधिकृत रूप से।

अतद्गुणः (सा० शा०) 'अतद्गुणाही', एक अलंकार का नाम जिसमें कि प्रतिपाद्य पदार्थ—कारण के विद्यमान रहते हुए भी दूसरे के गुण को ग्रहण नहीं करता—काव्य० १०।

अतन्त्र (वि०) [स्त्री० —त्री] [न० ब०] 1. बिना डोरी का, या बिना संगीत के तार का 2. बिना लगाम का 3. विचारणीय नियम की कोटि से बाहर की वस्तु जो अनिवार्य रूप से बंधन की कोटि में न हो—ह्रस्व-ग्रहणमतन्त्रम्—सिद्धा० 4. सूत्ररहित या अनुभव सिद्ध क्रिया।

अतन्द्र-अतन्द्रित-अतन्द्रिन्-अतन्द्रिल—(वि०) [नास्ति तन्द्रा यस्य—न० ब०, न तन्द्रितः न० त०, न० त०] सावधान, अम्लान, सतर्क, जागरूक; अतंद्रिता सा स्वयमेव वृक्षान्—कु० ५।१४, रघु० १७।३९।

अतपस्-अतपस्क वि० [न० ब०] धार्मिक तपश्चर्या की अवहेलना करने वाला।

अतर्क (वि०) [न० ब०] तर्कहीन, युक्तिरहित,—र्कः [न० त०] 1. युक्ति या तर्क का अभाव, बुरा तर्क 2. तर्कहीन बहस करने वाला।

अतर्कित (वि०) [न० त०] न सोचा हुआ, अप्रत्याशित,—तं (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से। सम०—आगत,—उपनत (वि०) अप्रत्याशित रूप से होने वाला, अकस्मात् होने वाला—°उपपन्न दर्शनम्—कु० ६।५४।

अतल (वि०) [न० ब०] तल रहित,—लं [न० त०] पाताल,—लः शिव। सम०—स्पर्श,—स्पर्श (वि०) तल रहित, बहुत गहरा, अथाह।

अतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1. इसकी अपेक्षा, इससे (बहुधा तुलनात्मक अर्थ वाला) किमु परमतो तर्तयसि मार्—भट्ट० ३, ६. 2. इस या उस कारण से, फलतः, सो, इस लिए ('यत्' 'यस्मात्' और 'हि' का सहसंबंधी—अभिहित या अध्याहृत) रघु० २।४३, ३।५०; कु० २।५. 3. यहाँ से, अब से या इस स्थान से; (—परम्,—ऊर्ध्वम्) इसके पश्चात्। सम०—अर्थ,—निर्दिष्ट इस कारण, फलतः, इस कारण से;—एव (अव्य०) इस ही लिए—ऊर्ध्वं अब से लेकर, इसके बाद;—परं (क्रि० वि०) इसके आगे, और फिर, (अपा० के साथ) इसके पश्चात् (ल०) इसके परे, इससे आगे; भाग्यायत्तमतः परम्—रा० ४।१६।

अतसः [अत्+असच्] 1. हवा, वायु 2. आत्मा 3. अलसी के रेशों से बना हुआ कपड़ा (यह शब्द बहुधा नपुं० होता है)।

अतसी [अत्+असिच् ङीप्] 1. सन 2. पटसन 3. अलसी।

अति (अव्य०) [अत्+इ] 1. विशेषण और क्रिया-विशेषणों से पूर्व प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग—बहुत, अधिक, अतिशय, अत्यधिक उत्कर्ष को भी यह शब्द प्रकट करता है, नातिदूरे अत्यधिक दूर नहीं; क्रिया और कृदन्त रूपों से पूर्व भी प्रयुक्त होता है—स्वभावो ह्यतिरिच्यते आदि 2. (क्रियाओं के साथ) ऊपर, परे; अति+इ—परे जाना, इसी प्रकार °क्रम, °चर् और °वह आदि, ऐसे अवसरों पर 'अति' उपसर्ग समझा जाता है। 3. (क) (संज्ञा व सर्वनामों के साथ) परे, पार करते हुए, श्रेष्ठतर, प्रमुख, पूज्य, उच्चतर, ऊपर, कर्मप्रवचनीय के रूप में द्वितीया विभक्ति के साथ; या बहुव्रीहि के प्रथम पद के रूप में, अथवा तत्पुरुष समास में सामान्यतः उत्कृष्टता और प्रमुखता के अर्थ को प्रकट करता है; अतिगौ, °गार्ग्यः—प्रशस्ता गौः, शोभनो गार्ग्यः, °राजन्—बढ़िया राजा; अथवा द्वितीय पद के साथ लग कर इसका अर्थ—'अतिक्रांत' होता है, परन्तु इस अवस्था में द्वितीय पद में दूसरी विभक्ति होती है, अतिमर्त्यः=मर्त्यमतिक्रान्तः, °मालः =अतिक्रान्तो मालाम्, इसी प्रकार अतिक्राय, दे० °केशर अति देवान् कृष्णः—सिद्धा० (ख) (कृदन्त शब्दों से पूर्व) अतिरंजित, अत्यधिक, अतिमात्र, उदा० °आदरः=अत्यधिक आदर, °आज्ञा=अतिरंजित आज्ञा, इसी प्रकार °भयम्, °तृष्णा, °आनन्द इत्यादि (ग) अयोग्य, अनुचित, असंप्रति (अयुक्तता) तथा क्षेप (निन्दा) के अर्थ में, यथा—अतिनिद्रम्=निद्रा संप्रति न युज्यते—सिद्धा०।

अतिकथा 1. अतिरंजित कहानी 2. निरर्थक भाषण।

अतिकर्षणं [अति+कृष्+ल्युट्] बहुत अधिक परिश्रम, अत्यधिक मेहनत।

अतिकश (वि०) [अतिक्रान्तः कशाम्—अ० स०] कोड़े को न मानने वाला, कोड़े की भांति वश में न आने वाला।

अतिकाय (वि०) [अत्युत्कटः कायो यस्य—ब० स०] भारी डील डौल वाला, विशालकाय।

अतिकृच्छ्र (वि०) [अत्युत्कटः कृच्छ्रः—प्रा० स०] अति कठिन,—च्छ्रः बहुत बड़ा कष्ट; १२ रात्रियों तक कठिन तपस्या करने का व्रत; मनु० ११।२१३—४।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिक्रमः [अति+क्रम्+घञ्] 1. सीमा या मर्यादा का उल्लंघन, हद से आगे बढ़ना 2. कर्तव्य या अपेक्षित का भंग, उल्लंघन, मर्यादा का अतिक्रमण, अवैध प्रवेश, अवज्ञा, चोट, विरोध, ब्राह्मण° त्यागो भवतामेव भूत्यै—महावीर० २।१०, 3. बीतना (समय का) गुजरना—अनेकसंवत्सरातिक्रमेऽपि—उत्त० ४, 4. जीत लेना, बढ़ जाना (बहुधा 'दूर' के साथ)—स्वजातिदूरातिक्रमा 5. उपेक्षा, भूल, अशिष्टता 6. भारी आक्रमण 7. आधिक्य 8. दुरवस्था 9. दुर्व्यवहार।

अतिक्रमण [अति+क्रम्+ल्युट्] आगे बढ़ जाना, समय का बीतना, आधिक्य, दोष, अपराध।

अतिक्रमणीय (वि०) [अति+क्रम्+अनीयर्] मर्यादा भंग करने के योग्य, उपेक्षा करने के योग्य अथवा उल्लंघन करने के योग्य 'पैं मे सुहृद्वत्क्रियम्—शा० २, ३, ६, ७।

अतिक्रान्त (वि०) [अति+क्रम्+क्त] आगे बढ़ा हुआ, आगे गया हुआ, परे पहुंचा हुआ आदि—सोऽतिक्रान्तः श्रवणविषयं—मेघ० १०२, बीता हुआ, गया हुआ, पहला, (—न्तं) अतीत विषय, अतीत की बात, अतीत।

अतिक्रूर (वि०) [अतिक्रान्तः क्रूरताम्—प्रा० स०] चारपाई रहित, चारपाई के बिना काम चलाने वाला।

अतिग (वि०) [अति+गम्+ड] (समास में) बढ़ने वाला, बढ़चढ़कर काम करने वाला, सर्वोत्कृष्ट रहने वाला सर्वश्रेष्ठ° मुद्रा० १।२, किमौषधपयोतिगैरुपद्रुतो महाव्याधिभिः—सुद्रा० ६, औषधियों के प्रभाव को अनादृत करने वाले रोगों के द्वारा।

अतिगन्ध (वि०) [अतिगन्धितो गन्धो यस्य—ब० स०] अत्यन्त तीक्ष्ण गंध वाला, —धः गंधक।

अतिगव (वि०) [गामतिक्रान्तः प्रा० स०] 1. अत्यन्त मूर्ख, बिल्कुल जड़ 2. वर्णनातीत।

अतिगुण (वि०) [गुणमतिक्रान्तः प्रा० स०] 1. बड़े बड़े गुणों वाला, 2. गुणरहित, निकम्मा, —णः अत्यंत अच्छे गुण।

अतिगो (स्त्री०) [गामतिक्रम्य तिष्ठति] अत्यंत बढ़िया गाय।

अतिग्रह (वि०) [ग्रहम् अतिक्रान्तः—प्रा० स०] दुर्बोध,—हः, —ग्राहः 1. ज्ञानेन्द्रियों के विषय—जैसे त्वचा का स्पर्श जिह्वा का रस आदि, 2. सत्य ज्ञान 3. आगे बढ़ जाना, दूसरों को पीछे छोड़ देना—आदि।

अतिचम् (वि०) [चमूमतिक्रान्तः—प्रा० स०] सेनाओं के ऊपर विजय प्राप्त करने वाला।

अतिचर (वि०) [अति+चर+अच्] बहुत परिवर्तनशील, क्षणभंगुर, —रा कमलिनी का पौधा, पद्मिनी, स्थलपद्मिनी, पद्मचारिणी लता।

अतिचरण [अति+चर्+ल्युट्] अत्यधिक अभ्यास, शक्ति से अधिक करना।

अतिचारः [अति+चर्+घञ्] 1. मर्यादा का उल्लंघन, 2. आगे बढ़ जाना 3. अतिक्रमण 4. ग्रहों की त्वरित गति, ग्रहों का एक राशि पर भोगफल समाप्त हुए बिना दूसरी राशि पर चले जाना।

अतिच्छत्रः, अतिछत्रा, अतिच्छत्रका [अतिक्रान्तः छत्रम्—प्रा० स०] कुकुरमुत्ता, खुंब; सोया, सौंफ का पौधा।

अतिजन (वि०) [अतिक्रान्तो जनम्] अनुचित, जो आबाद न हो।

अतिजात (वि०) [अतिक्रान्तः जातं—जाति जनकं वा] पिता से बड़ा हुआ।

अतिडीन [अति+डीङ्+क्त] (पक्षियों की) असाधारण उड़ान।

अतितराम्-अतितमाम् (अव्य०) [अति+तरप् (तमप्)+आम्] अधिक, उच्चतर (अपा० के साथ) 2, अत्यधिक, अत्यन्त, बहुत अधिक, बहुत।

अतितृष्णा [तृष्णामतिक्रम्य—प्रा० स०] गृध्नुता, अत्यधिक लालच या लालसा, °ष्णा न कर्तव्या—पंच० ५—अत्यधिक लालच नहीं करना चाहिए।

अतिथिः [अतति गच्छति, न तिष्ठति—अत्+इथिन्] मनु के अनुसार 'यात्री' का शब्दार्थ—एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः। अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते। मनु० ३।१०२, अभ्यागत (आलं० भी) अतिथिनैव निवेदितम्—श० ४, कुसुमलतापि यातिथेर्य इव ६—प्रिय अथवा स्वागत के योग्य अभ्यागत। समः—क्रिया,—पूजा,—सत्कारः,—सत्क्रिया,—सेवा अभ्यागतों का सत्कारयुक्त स्वागत, आतिथ्यक्रिया, अभ्यागतों की सेवा,—धर्मः अतिथ्य करने का अधिकार, अभ्यागतों का सत्कार।

अतिदानं [अति+दा+ल्युट्] बहुत अधिक दान, अत्यधिक उदारता,—अतिदाने बलिर्बद्धः—चाण० ५०।

अतिदेशः [अति+दिश्+घञ्] 1. हस्तान्तरण, समर्पण, सुपुर्द करना 2. (प्रा०) अन्यत्र लागू होने वाली प्रक्रिया, सादृश्य के कारण प्रक्रिया, एक वस्तु के धर्म का दूसरी वस्तु पर आरोपण—अतिदेशो नाम इतरधर्मस्य इतरस्मिन् प्रयोगाय आदेशः (मीमांसा), या, अन्यत्रैव प्रणीतायाः कृत्स्नायाः धर्मसंहतेः। अन्यत्र कार्यतः प्राप्तिरतिदेशः स उच्यते। "सोसदृशो गवयः" यह रूपादिदेश या सादृश्य का निदर्शन है।

अतिद्वय (वि०) [द्वयमतिक्रान्तः—प्रा० स०] दोनों से बड़ा हुआ, अद्वितीय, अनुपम, अतुलनीय, बेजोड़—धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा—का० ५—दोनों (बृहत्कथा और वासवदत्ता) से बढ़ी हुई।

अतिधन्वन् (पु०) [अत्युत्कृष्टं धनुर्यस्य] अप्रतिद्वन्द्वी धनुर्धर या योद्धा।

अतिनिद्र (वि०) [निद्रामतिक्रान्तः—प्रा० स०] 1. बहुत सोने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला, 2. निद्रा से वंचित, निद्रारहित,—अं निद्रा के समय से परे—आ बहुत अधिक सोना ।

अतिनु-अतिनी (वि०) [अतिक्रान्तः नावम्—प्रा० स०] नाव से उतरा हुआ, नाव से भूमि पर आया हुआ ।

अतिपञ्चवा [पञ्चवर्षमतिक्रान्ता प्रा० स०] पांच वर्ष से अधिक अवस्था की लड़की ।

अतिपतनं [अति+पत्+ल्युट्] उड़कर आगे निकल जाना, भूल, उपेक्षा, अतिक्रमण, अत्यधिक, सीमा से बाहर जाना ।

अतिपरिः [अति+पत्+क्तिन्] 1. सीमा से परे जाना, समय का बीतना, 2. कार्य का पूरा न होना, असफलता ।

अतिपत्रः [अतिरिक्तं बृहत् पत्रं यस्य—ब० स०] सागौन का वृक्ष ।

अतिपथिन् (पुं०) [पन्थानमतिक्रान्तः—प्रा० स०] सामान्य सड़कों को उपेक्षा अच्छा मार्ग, सन्मार्ग ।

अतिपर (वि०) [अतिक्रान्तः परान्—प्रा० स०] जिसने अपने शत्रुओं को पराजित कर दिया है, —रः वह शत्रु जो शक्ति में बड़ा चढ़ा हो ।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक जान पहचान या घनिष्टता—क्रिव० —अतिपरिचयादवज्ञा— (अतिपरिचय से होत है अरुचि अनादर भाय) ।

अतिपातः [अति+पत्+घञ्] 1. (समय का) बीत जाना 2. उपेक्षा, भूल, अतिक्रमण—न वेदन्यकार्यातिपातः श० १; (यदि इस प्रकार दूसरे कर्तव्य की उपेक्षा न की गई), सर्वसम्मत नियम या प्रथाओं का उल्लंघन, 3. आ पड़ना, घटना 4. दुर्व्यवहार या दुष्प्रयोग 5. विरोध, वैपरीत्य ।

अतिपातकः [अतिपात—स्वार्थे कन्] बड़ा जघन्य पाप, व्यभिचार ।

अतिपातिन् (वि०) [अति+पत्+णिच्+णिनि] गति में आगे बढ़ जाने वाला, क्षिप्रतर (समास में) रघु० ३।३० ।

अतिपात्य (वि०) [अति+पत्+णिच्+यत्] विलंबित या स्थगित करने योग्य—काममनतिपात्यं धर्मकार्यं देवस्य—श ५ ।

अतिप्रबंधः [अतिशयितः प्रबन्धः—प्रा० स०] अत्यंत सातत्य, बिल्कुल लगा होना; °प्रहितास्त्वदृष्टिभिः—रघु० ३।४,८ ।

अतिप्रगे (अव्य०) [अति+प्र+गै+के] प्रभात में बहुत तड़के, प्रभात काल में—मनु० ४।९२ ।

अतिप्रश्नः [अति—प्रच्छ्+नङ्] इन्द्रियातीत सत्यता के विषय में प्रश्न, तंग करने वाला तर्कहीन प्रश्न—उदा० बृहदारण्यक उपनिषद् में बालाकि का याज्ञवल्क्य के प्रति ब्रह्म विषयक प्रश्न ।

अतिप्रसङ्गः, अतिप्रसक्तिः (स्त्री०) [अति+प्र+संज्+घञ्, क्तिन् वा] 1. अत्यधिक लगाव, 2. घृष्टता 3. किसी (व्या०) नियम का व्यर्थ अधिक विस्तार अर्थात् अतिव्याप्ति 4. बहुत घना संपर्क 5. प्रपञ्च, अलमतिप्रसंगेन—मुद्रा० १ ।

अतिबल (वि०) [ब० स०] बहुत बलवान् या शक्तिशाली,—लः अगगण्य या बेजोड़ योद्धा; —लं बड़ा बल, भारी शक्ति,—ला एक शक्ति शाली मंत्र या विद्या जिसे विश्वामित्र ने राम को सिखाया ।

अतिबाला [अतिक्रान्ता बालां बाल्यावस्थाम्—प्रा० स०] दो वर्ष की अवस्था की गाय ।

अतिभ (भा) रः [प्रा० स०] अत्यधिक बोझ, भारी वजन; सा मुक्त कंठ व्यसनातिभारात् चकन्द—रघु० १४।६८ अत्यधिक रंजे के कारण । सम०—ग्रः सेक्चर ।

अतिभक्षः [अति+भू०+णिच्+अच्] उत्कण्ठता ।

अतिभी: (स्त्री०) [अति+भी+क्विप्] बिजली, इन्द्र के वज्र की कौंध ।

अतिभूमिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 आधिक्य, पराकाष्ठा, उच्चतम स्वर, °मिं गम्, या, आधिक्य या पराकाष्ठा तक पहुंचना—तत्र सर्वलोकस्य °मिगतः प्रवादः—माल०७, दूर तक प्रसिद्ध,—शि० ९।७८. १०।८० 2 साहसिकता, अनौचित्य, औचित्य की सीमाओं का उल्लंघन करना—शि० ८।२०, 3 प्रमुखता, उत्कण्ठता ।

अतिमतिः (स्त्री०)—मानः [प्रा० स०] अहंकार, बहुत अधिक घमंड, अतिमाने च कौरवाः—चाण० ५० ।

अतिमर्त्य-मानुष (वि०) अतिमानव ।

अतिमात्र (वि०) [अतिक्रान्तो मात्राम्—प्रा० स०] मात्रा से अधिक, अत्यधिक, अतिशय—°सुदुःसहानि—श० ४।३, जिसका बिल्कुल समर्थन न किया जा सके, —मुनिव्रतैस्त्वामतिमात्रकर्शिताम्—कु० ५।४८, —त्रं —त्रशः (अव्य०) मात्रा से अधिक, अतिशय, अत्यधिक ।

अतिमाय (वि०) [अतिक्रान्तो मायाम्—प्रा० स०] पूर्णतः मुक्त, सांसारिक माया से मुक्त ।

अतिमुक्त (वि०) [अतिशयेन मुक्तः—प्रा० स०] 1 पूर्णरूप से मुक्त 2 बजर 3 मोतियों (की माला) से बढ़ कर,—क्तः,—कम् एक प्रकार की लता (माधवी) जो आम की क्रिया के रूप में आम के वृक्ष पर लिपटी रहती है ।

अतिमुक्तिः (स्त्री०) अतिमोक्षः [प्रा० स०] (मृत्यु से) बिल्कुल छुटकारा ।

अतिरंहस् (वि०) [अतिशयितं रंहो यस्मिन्—ब० स०] बहुत फुर्तीला या क्षिप्रतर—सारंगेणातिरंहसा—श० १।५ ।

अतिरथः [अतिक्रान्तोरथम्—प्रा० स०] एक अद्वितीय योद्धा जो अपने रथ में बैठा हुआ ही युद्ध करता है (अभिसान्योधयेद्यस्तु संप्रोक्तोऽतिरथस्तु सः) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिरभसः [प्रा० स०] बड़ी चाल, द्रुत गमन, हड़बड़ी।
अतिराजन् (पुं०) [प्रा० स०] 1 असाधारण या उत्कृष्ट राजा 2 राजा से बढ़-चढ़ कर।
अतिरात्रः [प्रा० स०] 1 ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग 2 रात्रि का मध्य भाग।
अतिरिक्त (वि०) [अति+रिच्+क्त] 1 आगे बढ़ा हुआ 2 फालतू, 3 अत्यधिक 4 अद्वितीय, उत्तुंग।
अति (ती) रेकः [अति+रिच्+घञ्] 1 आधिक्य, अतिशयता, महत्ता, गौरव 2 समधिकता, अधिशेष, बाहुल्य 3 अन्तर।
अतिरुच् (पुं०) [अति+रुच्+क्विप्] 1 घुटना, (स्त्री०—क्) एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री।
अतिरो (लो) मशः (वि०) [अति+रो (लो) मन्+श] बहुत बालों वाला, बहुत रोम वाला,—शः 1 एक जंगली बकरा 2 बड़ा बन्दर।
अतिलंघनं [अति+लंघ्+ल्युट्] 1. अत्यधिक उपवास रखना 2. अतिक्रमण।
अतिलंघिन् (वि०) [अति+लंघ्+णिनि] गलतियां या भूलें करने वाला।
अतिवयस् (वि०) [अतिशयितं वयः यस्य—ब० स०] बहुत बूढ़ा, वृद्ध, अधिक आयु का।
अतिवर्णाश्रमिन् (पुं०) [प्रा० स०] जो वर्ण और आश्रमों की मर्यादा से परे हो।
अतिवर्तनं [अति+वृत्+ल्युट्] क्षम्य अपराध, सामान्य अपराध, दण्ड से मुक्ति—इस प्रकार के दस अपराधों का वर्णन मनु ने किया है—मनु० ८।२९०
अतिवर्तिन् (वि०) पार करने वाला, दूसरों से आगे निकलने वाला, आगे बढ़ने वाला, अतिक्रमण करने वाला, उल्लंघन करने वाला।
अतिवादः [अति+वद्+घञ्] अतिकठोर, गाली और अपमान युक्त वचन, भर्त्सना, झिड़की—अतिवादांस्तितिक्षेत मनु० ६।४७।
अतिवादिन् [अति+वद्+णिनि] बहुत बोलनेवाला, वाग्मी।
अतिवाहनं [अति+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. बिताना, यापन 2. बहुत अधिक परिश्रम करना या बहुत बोझा उठाना 3. प्रेषण, भेजना, छुटकारा पाना।
अतिविकट (वि०) [प्रा० स०] भीषण—टः वृद्ध हाथी।
अतिविषा [प्रा० स०] अतीस नामक विषैली औषधि का पौधा।
अतिविस्तरः [प्रा० स०] बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता।
अतिवृत्तिः (स्त्री०) [अति+वृत्+क्तिन्] आगे बढ़ जाना, अतिक्रमण, अतिरंजना।
अतिवृष्टिः (स्त्री०) [अति+वृष्+क्तिन्] अत्यधिक या भारी वर्षा, ऋतु विषयक ६ विपत्तियों में से एक; दे० ईति।
अतिवेल (वि०) [अतिक्रान्तो वेलां मर्यादां कूलं वा—प्रा० स०] अत्यधिक, फालतू, सीमारहित,—लं (क्रि० वि०) 1 अत्यधिकता से, 2 बिना ऋतु के, बिना मौसम के।
अतिव्याप्तिः (स्त्री०) [अति-वि+आप+क्तिन्] 1 किसी नियम या सिद्धान्त का अनुचित विस्तार 2 प्रतिज्ञा में अनभिप्रेत वस्तु का मिला लेना, 3 लक्षण में लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य अनभिप्रत वस्तु का भी आ जाना, (न्याय में) जिसके फलस्वरूप वह वस्तुएँ भी सम्मिलित हो जायँ जो लक्षण के अनुसार नहीं आनी चाहिए, लक्षण के तीन दोषों में से एक।
अतिशयः [अति+शी+अच्] 1 आधिक्य, प्रमुखता, उत्कृष्टता; दोषैः रघु० ३।६२; तस्मिन् विधानातिशये विधातुः रघु० ६।११; 2 श्रेष्ठता (गुण, पद और परिमाण आदि की दृष्टि से); समास में प्रायः विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर "अधिकता के साथ" अर्थ होता है—आसीदतिशयप्रेम्णः—रघु० १७। २५; (वि०) श्रेष्ठ, प्रमुख, अत्यधिक, बहुत बड़ा, बहुल। समः—उक्तिः (स्त्री०) 1 बढ़ाकर या अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कहे हुए वचन, अतिरंजना 2 अलंकार जिसके सा० द० कार ने ५ भेद तथा काव्य प्रकाशकार ने ४ भेद माने हैं।
अतिशयन (वि०) [अति+शी+ल्युट्] आगे बढ़ने वाला (समास में), बढ़ा, प्रमुख, बहुल—नं आधिक्य, बहुतायत, बहुलता।
अतिशयालु (वि०) [अति+शी+आलुच्] आगे बढ़ जाने या बढ़-चढ़ कर रहने की प्रवृत्ति वाला।
अतिशयिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] 1 श्रेष्ठ, बढ़िया, प्रमुख—इदमुत्तममतिशयिनि व्यर्थे वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः—काव्य० १, विक्रम० ५।२१, 2 अत्यधिक, बहुल।
अतिशायनं [अति+शी+ल्युट्] उत्कृष्टता, श्रेष्ठता।
अतिशायिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] आगे रहने वाला, आगे बढ़ जाने वाला 2 अत्यधिक।
अतिशेषः [अति+शिष्+अच्] अवशिष्ट भाग, बचा हुआ भाग (जैसे कि समय का), कुछ अवशेष।
अतिश्रेयसिः [श्रेयसीमतिक्रान्तः—प्रा० स०] सर्वोत्तम स्त्री से श्रेष्ठ पुरुष।
अतिश्व (वि०) [श्वानमतिक्रान्तः—प्रा० स०] 1 बल में कुत्ते से बढ़ा हुआ (जैसे कि सूअर) 2 कुत्ते से भी गया बीता; —श्वत्व सेवा।
अतिसक्तिः (स्त्री०) [अति+षंज्+क्तिन्] घनिष्ठ संपर्क या सान्निध्य, भारी आसक्ति।
अतिसंधानं [अति+सं+धा+ल्युट्] छल करना, धोखा देना,—परातिसंधान° शं० ५।२५, चालाकी, जालसाजी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिसरः [अति+सृ+अच्] 1 आगे बढ़ने वाला 2 नेता

अतिसर्गः [अति+सृज्+घञ्] 1 स्वीकार करना, देना—रघु० १०।४२, 2 अनुमति देना (जो इच्छा हो) 3 (नौकरी से) पृथक् करना, कार्यभार से मुक्त करना।

अतिसर्जनं [अति+सृज्+ल्युट्] 1 देना, स्वीकार करना, सौंपना-कु० ३।३२, 2 उदारता, दानशीलता 3 बध करना 4 वियोग।

अतिसर्व (वि०) [प्रा० स०] सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ,—यः परब्रह्म—अतिसर्वाय शर्वाय -मुण्ड०।

अति-(ती) - **सारः** [अति—सृ+णिच्+अच्] पेचिश, मरोड़ों के साथ दस्तों का आना।

अति(ती)सारिन् (पुं०) [अत्यंत सारयति भलं] अतिसार नाम का रोग जिसमें बारबार शौच जाना पड़ता है; (वि०) —**अति(ती)सारकिन्** (वि०) [अतिसारो ग्रस्थास्ति-इनि, कुक् च] अतिसार रोग से पीड़ित, पेचिश रोग से ग्रस्त।

अतिस्नेह [प्रा० स०] अत्यधिक अनुराग; °हः पाषंडी—शा० १; बुराई की आशंका में प्रवण होना है।

अतिस्पर्शः [प्रा० स०] अर्धस्वर तथा स्वरों के लिए पारिभाषिक शब्द।

अतीत (वि०) [अति+इ+क्त] 1. परे गया हुआ, पार गया हुआ 2. आगे बढ़ने वाला, परे जाने वाला, गत, बीता हुआ आदि; मृत, **संख्यातीत** या **संख्यातीत** अगण्य।

अतीन्द्रिय (वि०) [प्रा०स०] ज्ञानेन्द्रियों की पहुंच के बाहर, —यः आत्मा या पुरुष (सांख्य दर्शन); परमात्मा; —यं 1. प्रधान या प्रकृति (सां० द०) 2. मन (वेदान्त)।

अतीव (अव्य०) [अति+इव] खूब, अधिकता के साथ, बहुत अधिक, बिल्कुल, बहुत ही, °पीड़ित, °हृष्ट आदि।

अतुल (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, अतुलनीय, —लः 'तिल' का पौधा, तिल।

अतुल्य (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़।

अतुषार (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो। समः—करः सूर्य; इसी प्रकार अतुहिनकरः °रश्मि, °धामन्, °रुचि आदि।

अतृण्या [न० त०] थोड़ा सा घास।

अतेजस् (वि०) [न० ब०] 1. जो चमकीला न हो, धुंधला 2. दुर्बल, निर्बल 3. निरर्थक, इसी प्रकार **अतेजस्क, अतेजस्विन्**; —स् (पुं०) [न० त०] धुंधलापन, छाया, अंधकार।

अत्ता [अद्+तक्+टाप्] 1. माता 2. बड़ी बहन 3. सास।

अत्तिः (स्त्री०) **अत्तिका** [अद्+क्तिन्, स्वार्थे कन् च] बड़ी बहन आदि।

अत्नुः, अत्नुः [अतति सततं गच्छति—अत्+न, नु वा] 1. हवा 2. सूर्य।

अत्यग्निः [प्रा० स०] पाचन शक्ति की बहुत अधिकता।

अत्यग्निष्टोमः [प्रा० स०] ज्योतिष्टोम यज्ञ का दूसरा ऐच्छिक भाग।

अत्यङ्कुश (वि०) [प्रा० स०] निरंकुश, नियन्त्रण में रहने के अयोग्य, उच्छृंखल जैसे हाथी।

अत्यन्त (वि०) [अतिक्रान्तः **अन्तम्** सीमाम्—प्रा० स०] 1. अत्यधिक, अधिक, बहुत बड़ा, बहुत बलवान्; °**वैरम्**—बड़ी शत्रुता, इसी प्रकार °**मैत्री** 2. संपूर्ण, पूरा, नितांत 3. अनन्त, नित्य, चिरस्थायी; किं वा तवात्यन्तवियोगमोघे हृतजीविते—रघु० १४।६५; कस्यात्यन्तं सुखमुपनतम्—मेघ० १०९,—न्तं (अव्य०) 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, 2. हमेशा के लिए, आजीवन, जीवनभर। समः—**अभावः** नितान्त या पूर्ण सत्ताहीनता, नितान्त अनस्तित्व, -**गत** (वि०) सदा के लिए गया हुआ, जो फिर कभी न आवेगा, **कथमात्यन्तगतो न मां दहेः**-रघु० ८।५६,—**गामिन्** (वि०) 1 बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज या शीघ्र चलने वाला, 2. अत्यधिक, अधिक;—**वासिन्** (पुं०) जो विद्यार्थी की भांति लगातार अपने गुरु के साथ रहता है;—**संयोगः** 1. घनिष्ट सामीप्य, अबाध नैरन्तर्य; **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे**—; 2. अवियोज्य सहअस्तित्व।

अत्यन्तिक (वि०) [अत्यन्त+ठन्] 1. बहुत अधिक या बहुत तेज चलने वाला 2. बहुत निकट 3. जो समीप न हो, दूर,—कं घनिष्ट सामीप्य, अव्यवहित पड़ोस या अत्यंत समीप होना।

अत्यन्तीन (वि०) [अत्यंत+ख] 1. बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज चलने वाला—**लक्ष्मीं परंपरीणां त्वमत्यन्तीनतामुन्नय**—भट्टि०।

अत्ययः [अति+इ+अच्] 1. चला जाना, बीत जाना, काल° 2. समाप्ति, उपसंहार, अवसान, अनुपस्थिति, अन्तर्धान 3. मृत्यु, नाश 4. भय, चोट, बुराई—प्राणात्यये च संप्राप्ते—याज्ञ० १।१७९ 5. दुःख 6. दोष, अपराध, अतिक्रमण 7. आक्रमण, अभियान।

अत्ययिक=दे० आत्ययिक।

अत्यायित (वि०) [अत्यय+इतच्] 1. बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ, 2. उल्लंघन किया हुआ, जिस पर अत्याचार किया गया है।

अत्यायिन् (वि०) [अति+इ+णिनि] बढ़ने वाला, आगे निकलने वाला।

अत्यर्थ (वि०) [प्रा० स०] अत्यधिक, बहुत बड़ा, बेहद,—र्थं (क्रि० वि०) बहुत अधिक, निहायत, अत्यन्त।

अत्यह्न (वि०) [प्रा० स०] अवधि में एक दिन से अधिक रहने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्याकार: [प्रा० स०] 1. घृणा, कलंक, निन्दा, श्लाघायाग्याकारतदेवेतेषु पा० ५।१।१३४; 2. बड़ा डील डौल, विशाल शरीर।

अत्याचार (वि०) [आचार मतिं क्रान्तः] मानी हुई प्रथाओं और आचारों के विपरीत चलने वाला, उपेक्षक; -रः आचारानुमोदित कार्यों का न करना, धर्म के विपरीत आचरण।

अत्यादित्य (वि०) [प्रा० स०] सूर्य की ज्योति से अधिक चमकने वाला; -अत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः—मेघ० ४३।

अत्यानन्दा [प्रा० स०] मैथुन के प्रति उदासीनता।

अत्यायः [प्रा० स०] 1. अतिक्रमण, उल्लंघन 2. आधिक्य।

अत्यारूढ (वि०) [प्रा० स०] बहुत बढ़ा हुआ, -र्ढं,-र्ढिः (स्त्री०) बहुत ऊँची पदवी, अभ्युदय।

अत्याश्रमः [प्रा० स०] 1. जीवन का सबसे बड़ा आश्रम —संन्यास 2. इस आश्रम में स्थित - संन्यासिन्।

अत्याहितं [अति+आ+धा+क्त] 1. बड़ी विपत्ति भय, दुर्भाग्य, अनर्थ, दुर्घटना न किमप्यत्याहितम्—श० १; प्रायः विस्मयादिद्योतक के रूप में प्रयोग--हाय दई, हाय रे 2. उद्दंड तथा साहसिक कार्य--पांडुपुत्रैर्न किमप्यत्याहितमाचेष्टितं भवेत्—वेणी० २।

अत्युक्तिः (स्त्री०) [अति+वच्+क्तिन्] बढ़ा चढ़ा कर कहना, अतिशयोक्ति, अधिकृष्ट रंगीन चित्रण—अत्युक्तौ यदि न प्रकृष्यमि मृषावादं च नो मन्यसे—उद्भट०; दे० अतिशयोक्ति भी।

अत्युषः (वि०) [उपधामतिक्रान्तः—प्रा० स०] परीक्षित, विश्वस्त।

अत्यूहः [प्रा० स०] 1. गहन चिन्तन या मनन गंभीर तर्कना, 2. जलकुक्कुट।

अत्र (अव्य०) [इदम्+त्रल्-प्रकृतेः अशभावश्च] 1. इस स्थान पर, यहाँ--अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १; 2. इस विषय में, बात में, मामले में, इस संबंध में। सम० - अन्तरे (क्रि० वि०) इसी बीच में,—भवत् (पुं० - भवान्) सम्मानसूचक विशेषण जो 'आदरणीय' 'सम्माननीय' 'मान्यवर श्रीमान्' अर्थ को प्रकट करता है तथा उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है जो वक्ता के पास उपस्थित या निकट विद्यमान हो; दूरवर्ती या परोक्ष के लिए तत्रभवत् शब्द है; °भवती =आदरणीय श्रीमती; (पूज्यं तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि), अत्र भवान् प्रकृतिमापन्नः—श० २; वृक्षसेचनादेव परिश्रांतामत्रभवतीं लक्षये—श० १।

अत्रत्य (वि०) [अत्रभवः—अत्र+त्यप्] 1. इस स्थान का, या यहाँ से संबंध रखने वाला 2. यहां उत्पन्न, यहां पाया गया, या इस स्थान का, स्थानीय।

अत्रप (वि०) [न० ब०] निर्लज्ज, अविनीत, अशिष्ट।

अत्रिः(सं० अत्रि) [अद्+त्रिन्] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेद के कई सूक्तों के द्रष्टा हैं। सम०—ज:,-जातः,-पुत्रः, -नेत्रप्रसूतः,-प्रभवः,-भवः चन्द्रमा, तु०,—अथ नयन-समुत्थ ज्योतिरत्रेरिव द्यौः—रघु० २।७५।

अथ (अव्य०)[अर्थ्+ड पृषो० रलोपः] 1. मंगलसूचक शब्द जो किसी रचना के आरंभ में प्रयुक्त होता है—और जिसका अनुवाद 'यहां' 'अब'=मंगल, आरंभ, अधिकार, किया जाता है। परन्तु यदि सही रूप से देखा जाय तो 'अथ' का अर्थ 'मंगल' नहीं है, तो भी इस शब्द का उच्चारण या श्रवणमात्र 'मंगल' का सूचक समझा जाता है, क्योंकि यह शब्द ब्रह्मा के कण्ठ से निकला हुआ माना जाता है- ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कंठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेन मांगलिकावुभौ। और इसी लिए हम शांकरभाष्य में देखते हैं—अथानन्तरप्रयुक्तः अथशब्दः श्रुत्या मंगलमारचयति, अथ निर्वचनम्, अथ योगानुशासनम् (बहुधा अंत में 'इति' शब्द का प्रयोग पाया जाता है—इति प्रथमोऽङ्कः समाप्तः—आदि) 2. तब, उसके पश्चात्—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते जनाय गेतुं सुमोचः—रघु० २।१; प्रायः 'यदि' या 'चेत्' का सहसम्बन्धी 3. यदि, कल्पना करते हुए, अच्छा तो, ऐसी स्थिति में, परंतु यदि—अथ कौतुकमावेदयामि—का० १४४; अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुष्व्—वेणी० ४, 4. और, इसी से तो और भी, इसी भांति-भीमोऽथार्जुनः—गण० 5. प्रश्न आरंभ करते समय या पूछते समय, बहुधा प्रश्नवाचक शब्द के साथ—अथ सा तत्रभवती किमाख्यस्य राजर्षेः पत्नी- श० ७, 6. समष्टि, सम्पूर्णता, अथ धर्मं व्याख्यास्यामः--गण०, अब हम 'धर्म' की (विवरण सहित) पूरी व्याख्या करेंगे 7. संदेह, अनिश्चितता-शब्दो नित्योऽथानित्यः-गण०। सम०—अपि (अव्य०) और भी, और फिर आदि (='अथ' अधिकांश स्थानों पर),—किम् (अव्य०) और क्या, हाँ, ठीक ऐसा ही, बिल्कुल ऐसा ही, अवश्य ही,—च (अव्य०) और भी, इसी प्रकार, -वा (अव्य०) 1. या; 2. अधिकतर, क्यों, कदाचित्, पिछली बात को संशुद्ध करते हुए—गम्यिष्यामुपहास्यतां·····अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्—रघु० १।३-४; अथवा मृदु वस्तु हिंसितुम्—८।४५, दीर्घ कि न सहस्रवाहमथवा रामेण किं दुष्करम्—उत्त० ६।४०।

अथर्वन् (पुं०)[अथ+ऋ+वनिप्] 1. अग्नि और सोम का उपासक पुरोहित 2. अथर्वा ऋषि की सन्तान-ब्राह्मण, (ब० व०), अथर्वा ऋषि की सन्तान, अथर्ववेद के सूक्त, (पुं०—अथर्वा तथा नपुं०—अथर्व), °वेदः अथर्ववेद जो चौथा वेद माना जाता है, तथा जिसमें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शत्रु–नाश के लिए अनेक अमंगलप्रार्थनाएँ और अपनी सुरक्षा के लिए तथा विपत्ति, पाप, बुराई, एवं दुर्भाग्य से बचाव के लिए असंख्य प्रार्थनाएं पाई जाती हैं, इसके अतिरिक्त दूसरे वेदों की भांति इसमें भी धार्मिक एवं औपचारिक संस्कारों में प्रयुक्त होने वाले अनेक सूक्त हैं जिनमें प्रार्थनाओं के साथ-साथ देवताओं का अभिनन्दन किया गया है। सम० —निधिः,–विद् (पुं०) अथर्ववेद के ज्ञान का भंडार, अथवा अथर्व-ज्ञान से संपन्न—गुरुणा अथर्ववित्कृतक्रियः—रघु० ८।४, १।५९।

अथर्वणिः [अथर्वन्+इस्, न टिलोपः] अथर्ववेद में निष्णात अथवा इसमें निर्दिष्ट संस्कारों के अनुष्ठान में कुशल ब्राह्मण।

अथर्वार्चः [अथर्वन्+अच्–पृषो० दीर्घः] अथर्ववेद की अनुष्ठान पद्धति।

अथवा=दे० 'अथ' के अन्तर्गत।

अद् (अदा० पर० सक० अनिट्) [अत्ति, अत्त–जग्ध] 1. खाना, निगलना, 2. नष्ट करना 3. दे० 'अद्', प्रेरक खिलवाना, सन्नन्त० जिघत्सति—खाने की इच्छा करना।

अद्, अद (वि०) [अद्+क्विप्, अच् वा] (समास के अंत में) खाने वाला, निगलने वाला।

अदंष्ट्र (वि०) [न० ब०] दन्तहीन,—ष्ट्रः वह साँप जिसके जहरीले दांत तोड़ दिये गये हैं।

अदक्षिण (वि०) [न० त०] 1. जो दायां न हो अर्थात् बायां 2. जिसमें पुरोहितों को दक्षिणा न दी जाय, बिना दक्षिणा का (जैसे यज्ञ) 3. सरल, दुर्बलमना, मूर्ख 4. अनुपस्थित, अदक्ष या अपटु, गंवार, 5. प्रतिकूल।

अदण्ड्य (वि०) [न० त०] 1. दण्ड का अनधिकारी, 2. दण्ड से मुक्त या बरी।

अदत् (वि०) [न० ब०] दन्तरहित, बिना दांतों का।

अदत्त (वि०) [न० त०] 1. न दिया हुआ 2. अनुचित तरीके से दिया हुआ 3. जो विवाह में न दिया गया हो, –त्ता अविवाहित कन्या–तं वह दान जो रह कर दिया गया हो। सम०—आदायिन् (वि०) जो न दी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जाता है—जैसे कि चोर, —पूर्वा वह कन्या जिसकी सगाई न हुई हो—अदत्तपूर्वत्याणंक्यते—माल० ४।

अदन्त (वि०) [न० ब०] 1. दन्त रहित 2. वह शब्द जिसके अन्त में 'अत्' या 'अ' हो,—तः जोक।

अदन्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो दांतों से संबंध न रखता हो 2 दांतों के लिए अनुपयुक्त, दांतों के लिए हानिकारक।

अदभ्र (वि०) [न० ब०] अनल्प, प्रचुर, पुष्कल।

अदर्शनं [न० त०] 1. न दिखना, अनवलोकन, अनुपस्थिति, दिखाई न देना 2. (व्या०) अन्तर्धान, लोप, लुप्ति –अदर्शनं लोपः पा० १।१।६०।

अदस् (सर्व०) [पुं०-स्त्री०—असौ, नपुं०—अदः] वह (किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करना जो अनुपस्थित हो या वक्ता के समीप न हो)-इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्। अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्। 'यह' 'यहां' 'सामने' अर्थ को भी प्रकट करता है। 'यत्' के सहसंबंधी 'तत्' के अर्थ में भी प्रायः प्रयुक्त होता है। परन्तु जब कभी यह 'संबंध वाचक सर्वनाम' के तुरन्त बाद प्रयुक्त होता है (जोऽसौ, ये अमी आदि) तो इस का अर्थ होता है 'प्रसिद्ध' 'सुख्यात' 'पूज्य'; दे० तद् भी।

अदात् (वि०) [न० त०] 1 न देने वाला, कृपण 2 लड़की को विवाह न करने वाला।

अदादि (वि०) [न० ब०] दूसरे गण की धातुओं का समूह, जो 'अद्' से आरम्भ होता है।

अदाय (वि०) [नास्ति दायो यस्य—न० ब०] जो (संपत्ति में) हिस्से का अधिकारी न हो।

अदायाद (वि०) [न० त०] 1. जो उत्तराधिकारी न बन सके, 2. [न० ब०] जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो।

अदायिक (वि०) [स्त्री०—अदायिकी] [न दायमर्हति—नञ्+दाय+ठक् न० ब०] 1 जिसका कोई उत्तराधिकारी दावेदार न हो, जिसके कोई उत्तराधिकारी न हों,—अदायिके धनं राज्ञयागामि—कात्य० 2 [न० त०] उत्तराधिकार से संबंध न रखने वाला।

अदितिः (स्त्री०) [दातुं छेत्तुम् अयोग्या—दो+क्तिन्] 1 पृथ्वी 2 अदिति देवता, आदित्यों की माता, पुराणों में इसका वर्णन देवों की माता के रूप में किया गया है, 3 वाणी 4 गाय। सम० —अजः, —नंदनः देवता, दिव्य प्राणी।

अदुर्ग (वि०) [न० त०] 1 जो दुर्गम न हो, जहाँ पहुँचना कठिन न हो 2 [न० ब०] वह स्थान जहाँ किले न हों—°विषयः—एक दुर्गरहित देश।

अदूर (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न हो, समीप (काल और देश की स्थिति से),—रं सामीप्य, पड़ोस —बसन्तदूरे किल चन्द्रमौलेः—रघु० ६।३४; त्रिंशतो ऽदूरे वर्तते इति अदूरत्रिंशाः—सिद्धा०; अदूरे-भु-नः,-रात्,-रे-रेण (सम्प्रदान या संबंध के साथ), अधिक दूर नहीं, बहुत दूर नहीं।

अदृश् (वि०) [नास्ति दृग् अक्षि यस्य न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा।

अदृष्ट (वि०) [नञ्—दृश्+क्त] अदृश्य, अनदेखा, °पूर्व—जो पहले न देखा गया हो; 2 अननुभूत 3 अदृष्टपूर्व, अनवलोकित, बिना सोचा हुआ, अज्ञात 4

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अननुमत, अस्वीकृत, अवैध,—दं 1 अदृश्य 2 नियति भाग्य, प्रारब्ध (शुभ या अशुभ) 3 गुण तथा अवगुण जो कि सुख तथा दुःख के अनुवर्ती कारण हैं; 4 दैवी विपत्ति या भय (जैसा कि आग या पानी आदि से)। सम०—अर्थ (वि०) आध्यात्मिक या गूढ अर्थ वाला, आध्यात्मिक,—कर्मन् (वि०) अव्यावहारिक, अनुभवहीन —फल (वि०) जिसके परिणाम अदृश्य हों,—फलं शुभाशुभ कर्मों का आगे आने वाला फल।

अदृष्टिः (स्त्री०) [न० त०] बुरी या द्वेषपूर्ण दृष्टि, कुदृष्टि —ष्टि (वि०) [न० ब०] अंधा।

अदेय (वि०) [न० त०] जो देने के लिए न हो, जो दिया न जा सके या दिया न जाना चाहिए,—यम् जिसका देना न उचित है और न आवश्यक है, इस श्रेणी में पत्नी, पुत्र, धरोहर और कुछ अन्य वस्तुएं आती हैं।

अदेव (वि०) [न० त०] 1. जो देवताओं की भांति न हो, या दिव्य न हो 2. देवविहीन, अपवित्र, अधार्मिक—वः जो देवता न हो। सम०—मातृक (वि०) जहां वर्षा न हुई हो; माता की भांति दूध पिलाने या पानी देने के लिए जहां वर्षा का देवता काम न करता हो,—वित्तवति क्षेमंमदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्करवश्चकाशते—कि० १।१७।

अदेशः [न० त०] 1. अनुपयुक्त स्थान 2 बुरा देश। सम० —कालः अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त समय,—स्थ (वि०) अनुपयुक्त स्थान पर ठहरा हुआ, उपयुक्त स्थान से विरहित।

अदोष (वि०) [न० ब०] 1 दोष, बुराई और त्रुटि आदियों से मुक्त 2 अश्लीलता, ग्राम्यता आदि साहित्य के दोषों से मुक्त, दे० दोष,—अदोषौ शब्दार्थौ—काव्य० १, अदोषं गुणवत्काव्यम्—सर० कं० १।

अदोहः [न० ब०] 1 वह समय जो दोहने के लिये व्यावहारिक न हो 2 [न० त०] न दुहा जाना।

अद्धा (अव्य०) 1 सचमुच, बिल्कुल, अवश्य, निस्सन्देह—रघु० १३।६५; 2 प्रकटतः, स्पष्टरूप से—ज्वालाविषं च मतते परिरब्धुमद्धा—भामि० ११९५।

अद्भुत (वि०) [अद् + भू + क्त—न भूतम् इति वा] आश्चर्यजनक, विचित्र, °कर्मन्, °गंध, °दर्शन, °रूप; गूढ, अलौकिक; —तं 1 आश्चर्य, आश्चर्यजनक बात या घटना, विलक्षण घटना, चमत्कार 2 अचम्भा, अचरज, आश्चर्य (पुं०) भी; —तः आठ या नौ रसों में से एक, अद्भुत (अनोखा) रस। सम०—सारः —खदिर या खैर की आश्चर्यजनक राल,—स्वनः शिवका नाम।

अद्यनिः—[अद् + अनिन्] अग्नि।

अद्यर (वि०) [अद् + क्यरच्] बहुत अधिक खाने वाला, पेटू।

अद्य (वि०) [अद् + यत्] खाने के योग्य—द्यम् भोजन, खाने के योग्य पदार्थ, (अव्य०) आज, इस दिन—अद्य वा त्वरयति क्रूरः कृतान्तः—माल० ५।२५, °रात्रौ—आज की रात, यह रात। सम०—अपि अभी, अब तक, आज तक, अभी नहीं, —गृहः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु—वेणी० १।११; (चौरपंचाशिका के ५० श्लोक 'अद्यापि' से आरंभ होते हैं),—अवधि (अव्य०) 1 आज से लेकर, 2 आज तक—पूर्वम् पहले, अब,—प्रभृति (अव्य०) आज से, इस दिन से लेकर, अद्य प्रभृत्यवनतांगि तवास्मि दासः —कु० ५।८६,—श्वीना (वि०) आसन्नप्रसवा, वह स्त्री जिसका प्रसव काल निकट है—अद्यश्वीनाभवष्टब्धे —पा० ५।२।१३।

अद्यतन (वि०) (स्त्री० —नी) [अद्य + ष्टघु, तुट् च] आज से संबंध रखते हुए, संकेत करते हुए या विस्तृत होते हुए; 2 आधुनिक; —नः चालू दिन, यह दिन, चालू दिन की अवधि, दे० 'अनद्यतन' भी,—नी (अर्थात् वृत्तिः) लुङ् लकार का नाम (=°भूतः)।

अद्यतनीय=अद्यतन 1 आज का 2 आधुनिक।

अद्रव्यम्—[न० त०] तुच्छ वस्तु, निकम्मा पदार्थ; नाद्रव्ये विहिता काचित्क्रिया फलवती भवेत्—हि० प्र० ४३; निकम्मा या अकर्मण्य छात्र या विद्यार्थी।

अद्रिः—[अद् + क्रिन्] 1 पहाड़ 2 पत्थर 3 वज्र 4 बुद्ध 5 सूर्य 6 मेघ-राशि, बादल 7 एक प्रकार का माप 8 सात की संख्या। सम०—ईशः,—नाथः,—पतिः, —राजः आदि, 1 पर्वतों का स्वामी, हिमालय 2 शिव (कैलाशपति) —कीला पृथ्वी —कन्या,—तनया,—नंदिनी,—सुता आदि पार्वती, —जम् लाल खड़िया, —द्विष्, —भिद् (पुं०) पहाड़ों का शत्रु या उन्हें तोड़ने वाला, इन्द्र का विशेषण; —द्रोणि-भी (स्त्री०) 1 पहाड़ की घाटी 2 पर्वत से निकलने वाली नदी; —पतिः,—राजः आदि, देखिये °ईशः, —शय्यः शिव, —शृंगम्, —सानु पहाड़ की चोटी,—सारः पहाड़ों का सत्त्व, लोहा।

अद्रोहः—[न० त०] द्वेषराहित्य, बुराई का न होना परिमितता, मृदुता—मनु० ४।२।

अद्वय (वि०) [नास्ति द्वयं यस्य न० ब०] 1 दो नहीं, 2 अद्वितीय, अनुपम, एकमात्र,—यः बुद्ध का नाम, —यम् [न० त०] द्वैत का अभाव, एकता, तादात्म्य, विशेषतया ब्रह्म और विश्व का तादात्म्य या प्रकृति और आत्मा का तादात्म्य, परम सत्य। सम०—ज्ञानिन् (= अद्वैत°) 1 विश्व और ब्रह्म तथा प्रकृति एवं आत्मा के तादात्म्य का प्रतिपादक 2 बुद्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अद्वारम्—[न० त०] जो दरवाजा न हो, मार्ग या रास्ता जो नियमित रूप से द्वार न हो; —अद्वारेण न चातीयाद् ग्रामं वा वेश्म वा पुरम्—मनु० ४।७३ ।

अद्वितीय (वि०) [न० ब०] 1 जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेजोड़, लासानी, —न केवलं रूपे शिल्पेऽप्यद्वितीयासौ मालविका —मालवि० २; 2 बिना साथी के, अकेला, —यम् ब्रह्म ।

अद्वैत (वि०) [न० ब०] 1 द्वैत हीन, एकरूप, एकस्वभाव, समभाव, अपरिवर्तनशील, °तं सुखदुःखयोः—उत्त० १।३९; 2 बेजोड़, लासानी, एकमात्र, अनन्य, —तम् 1 द्वैत का अभाव, तादात्म्य, विशेषतया ब्रह्म का विश्व या आत्मा के साथ, या प्रकृति का आत्मा के साथ; दे० 'अद्वय' भी 2 परमसत्य या स्वयं ब्रह्म । सम०—वादिन्—अद्वयवादिन् दे० ऊपर, वेदान्त का अनुयायी ।

अधम (वि) [अद्+अम, वस्य स्थाने धादेशः] निम्नतम, जघन्यतम, अत्यंत कमीना, बहुत बुरा, नीच या निकृष्ट (गुण, योग्यता और पदादिक की दृष्टि से) (विप० उत्तम),—मः निर्लज्ज लम्पट; —धीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम् —काव्य० १; —मा निकम्मी गृहस्वामिनी । सम०—अङ्गम् पैर, —अर्धम् नाभि से नीचे का शरीर,—ऋणः, —ऋणिकः कर्जदार (विप० उत्तमर्णः),—भूतः, —भूतकः कुली, सादस ।

अधर (वि०) [नञ्+धृ+अच्] 1 नीचे का, अवर, निचला 2 नीच, कमीना, जघन्य, गुणों में नीचे दर्जे का, घटिया, 3 निकृष्टतर, दलित; —रः नीचे का (कभी ऊपर का) ओष्ठ, ओष्ठमात्र; —पल्लविताधरोऽयम्— मे० ८२; विवक्षसि रतिसर्वस्वमधरम्—श० १।२४; —रम् 1 शरीर का निकृष्टतर भाग 2 अभिभाषण, व्याख्यान (विप०—उत्तर), कभी २ उत्तर के लिए भी प्रयुक्त होता है । सम०—उत्तर (वि०) 1 उच्चतर और निम्नतर अच्छा और बुरा;—राज्ञः सप्तप्रकृतिवावावाः °व्यक्तिभेविध्यति—मालवि० १; 2 शीघ्र या विलम्ब से, 3 उलटे ढंग से, उलट-पलट 4 निकृष्टतर और दुष्टतर; —ओष्ठः नीचे का ओष्ठ,—कंठः ग्रीवा का निचला भाग, —पानम् चुम्बन, शाब्द० अधरोष्ठ को पीना, —मधु,—अमृतम् ओष्ठों का अमृत,—स्वस्तिकम् अधोबिन्दु ।

अधरस्मात्, °रतः, °रतात्, °रात्, °रात्, °रेण (अव्य०) नीचे, तले, निचले प्रदेश में ।

अधरीकृ (तना० उभ०) [अधर+च्वि+कृ] आगे बढ़ जाना, पटक देना, पराजित करना ।

अधरोष्ठ (वि०) [अधर+ख] 1 नीचे का 2 निंदित, कलंकित, तिरस्कृत ।

अधरेद्युः (अव्य०) [अधर+एद्युस्] 1 पहले दिन 2 परसों (जो बीत गया) ।

अधर्मः—[न० त०] 1 बेईमानी, दुष्टता, अन्याय; **अधर्मेण** अन्यायपूर्वक 2 अन्याय्य कर्म, अपराध या दुष्कृत्य, पाप । धर्म और अधर्म, न्यायशास्त्र में वर्णित २४ गुणों में दो गुण हैं और यह आत्मा से संबंध रखते हैं, ये दोनों क्रमशः सुख और दुःख के विशिष्ट कारण हैं, यह इन इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं है, परन्तु इनका अनुमान पुनर्जन्म तथा तर्कना के द्वारा लगाया जाता है 3 प्रजापति या सूर्य के एक अनुचर का नाम,—र्मा साकार बेईमानी,—र्मम् विशेषणों से रहित, ब्रह्म की उपाधि । सम०—आत्मन्, —चारिन् (वि०) दुष्ट, पापी ।

अधवा (न० ब०) विधवा स्त्री ।

अधस्, अधः (अव्य०) [अधर+असि, अधरशब्दस्य स्थाने अधादेशः] 1 तले, नीचे—पत्नयश्चोर्ध्वमाप्तानामधः विस्मारि सर्वतः—शि० १।२, निम्नप्रदेश में, नारकीय प्रदेशों में या नरक में (प्रकरण के अनुसार 'अधः' शब्द का अर्थ कर्तृकारक का होता है—'अधुक आदि; अपादान के साथ—अधो गृहे शेते), 2 संबंधकारक के साथ 'संबंधबोधक अव्ययों' की भाँति प्रयुक्त 'के नीचे' 'के तले' अर्थ को प्रकट करने हैं—तरूणाम्'—रघु० १।१४, (जब द्विरुक्ति की जाती है तो अर्थ होता है)—नीचे-नीचे, तले-तले—अधोऽधो गंगेव पदमुपगता स्तोकम्— भर्तृ० २० १०, (कर्मकारक के साथ) नीचे से नीचे ही नीचे—तवानयोऽधोवृहतः पयोधरान्—शि० १।६। सम० —अङ्गम् अधोवस्त्र, —अक्षजः, क्षिण्, —अधस् दे० ऊपर,—उपान्तम् मैथुन,—करः हाथ का निचला भाग (करम्),—करणम् आगे बढ़ जाना, हरा देना, आमंत्रित करना,—खननम् अंदर-अंदर सुरंग खोदना, —गतिः (स्त्री०), —गमनम्—पातः 1 नीचे की ओर गिरना या जाना, उतरना 2 अधःपतन, हार, —गर्भ (पुं०) चूहा,—चरः चोर, —जिह्विका उपजिह्वा (मराठी में 'पड़जीभ' कहते हैं)—दिश् (स्त्री०) अधोबिन्दु, दक्षिण की दिशा, —दृष्टिः (स्त्री०) नीचे की ओर देखना,—पातः—गतिः दे० ऊपर, —प्रस्तरः घास का बना आसन विलाप करने वाले व्यक्तियों के बैठने के लिए, भागः 1 शरीर का निचला भाग 2 किसी चीज का निचला हिस्सा—भुवनम्,—लोकः —पाताल लोक, निम्नतर प्रदेश,—मुख, —वदन (वि०) नीचे को मुख किये हुए, लंब, 1 पंगाल, साहूल 2 खड़ी सरल रेखा,—वायुः अपानवायु, अफारा, स्वस्तिकम् अधोबिन्दु ।

अधस्तन (वि०) [स्त्री० °नी] [अधस्+ट्युल्, तुट् च] निचला, निम्न स्थान पर स्थित ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधस्तात् (क्रि० वि० या सं० बो० अव्य०) नीचे, तले, अवर, के नीचे, के तले आदि (संबंधकारक के साथ) दे० अध, °गमन गमनमूर्ध्वं गमनमधस्ताद्भवत्यधर्मेण-सां० का०।

अधामार्गवः—अपामार्गः।

अधारणक (त्रि०) [स्वार्थे कन्] जो लाभदायक न हो—°क ममैतत्स्थानम्—पंच० २।

अधि (अव्य०) [आ+धा+कि पृषो० ह्रस्वः] 1 (धातु के साथ उपसर्ग के रूप में) ऊर्ध्व, ऊपर,—°रुह् अति उगना या ऊपर उगना; अधिकता के साथ भी 2 (पृथक् क्रि० वि० के रूप में) आगे बढ़ कर, ऊपर 3 (स० वो० अव्य० के रूप में) (कर्म० के साथ) (क) ऊपर, आगे, पर, में (ख) संकेत करते हुए, के संबंध में, के विषय में (ग) (अधि० के साथ) आगे, ऊपर (किसी वस्तु पर प्रभुता या स्वामित्व प्रकट करते हुए) अधिभूवि राम 4 (त० स० के प्रथम पद के रूप में) (क) मुख्य, प्रमुख, प्रधान,—°देवता प्रमुख देवता (ख) व्यतिरिक्त, फालतू,—°दन्तः—अध्यारूढः दंतः, अधिक; °अधिक्षेपः अत्यधिक परिनिन्दन।

अधिक (वि०) [अधि+क] 1 बहुत, अतिरिक्त, बृहत्तर (समास में संख्याओं के साथ) घन, से अधिक—अष्टाधिकं शतम् १००+८=१०८ 2 (क) परिमाण में बढ़कर, अधिक संख्यावाला, यथेष्ट, अधिक, बहुल—समास में षा करण कारक के साथ (ख) अतिमात्र, बढ़ा हुआ, से भरा हुआ, पूर्ण, कुशल—शिशुरधिकवयाः—वेणी० ३।३०, बड़ा, अधिक आयु का—°भवेषु रसाधिकेषु पूर्वम्—शि० ७।२०, 3 बहुत, अधिकतर, बलवत्तर ऊनं न सत्त्वेष्वधिको दधावे—रघु० २।१४, बलवत्तर जन्तु ने अपने से दुर्बल जन्तु का शिकार नहीं किया 4 प्रमुख, असाधारण, विशेष, विशिष्ट—इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य क्षत्रियस्य च, प्रतिग्रहोऽधिको विप्रे याजनाध्यापने तथा। या० १।११८, श० ७, 5 व्यतिरिक्त, फालतू,—°अंग अतिरिक्त अंग वाला—नोद्वहेत्कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम्—मनु० ३।८, °कर्म 1 अधिशेष, अधिक बहुतर—°भोधिक फलम्—अमर०, 2 व्यतिरिक्तता, फालतू होना 3 अतिशयोक्ति के समान अलंकार; (क्रि० वि०) 1 अधिकतर, अधिक मात्रा में रघु० ८।१, समास में—इयमधिकमनोज्ञा—श० १।२०, °सुरभि—मेघ० २।१, 2 अत्यन्त, बहुत अधिक। समः °अंग (वि०) [स्त्री०—गी] व्यतिरिक्त अंग रखने वाला; °अर्थ (वि०) बढ़ा कर कहा हुआ, °वचनं अतिशय कथन, अतिशयोक्त वक्तव्य या वचन (चाहे प्रशंसा के हों या निन्दा के), °ऋद्धि (वि०) प्रचुर पुष्कल—रघु० १९।५,-तिथिः (स्त्री०),-दिनम्, —दिवसः बढ़ा हुआ चांद दिवस,—वाक्योक्तिः (स्त्री०) बढ़ा चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति अलंकार।

अधिकरणम्—[अधि+कृ+ल्युट्] 1 प्रधान स्थान पर रखना, नियुक्ति 2 संबंध, उल्लेख, संपर्क 3 (व्या०) अनुरूपता, लिंग, वचन, कारक और पुरुष की समानता, अन्वय, कारक चिह्नों का इतर शब्दों से संबंध 4 आशय, विषय, उपस्तर 5 अधिष्ठान, स्थान, अधिकरण कारक का अर्थ—आधारोऽधिकरणम्—पा० १।४।४५, 6 प्रस्ताव, विषय, किसी विषय पर पूर्ण तर्क, (मीमांसकों के अनुसार पूर्ण अधिकरण के ५ अंग होते हैं—विषयो विशयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरम्, निर्णयश्चेति सिद्धान्त. शास्त्रेऽधिकरणं स्मृतम्।) 7 न्यायालय, कचहरी, न्यायाधिकरण,—स्वान्दोधान् कथयंति नाधिकरणे—मृच्छ० ९।३, 8 दावा 9 प्रभुता। समः—°मोजकः न्यायाधीश, -°मंडपः कचहरी या न्यायभवन,—°सिद्धान्तः ऐसा उपसंहार जिसका प्रभाव औरों पर भी पड़े।

अधिकरणिकः [अधिकरण+ठन्] 1 न्यायाधीश, दण्डाधिकारी मृच्छ० ९, 2 राजकोष अधिकारी।

अधिकर्मन् (न०) [प्रा० स०] 1 उच्चतर या बढ़िया कार्य 2 अधीक्षण,—(पुं०) जिसके ऊपर अधीक्षण का कार्य भार हो। समः—कर,-हृत् एक प्रकार का सेवक, कर्मचारियों का अध्यवेक्षक।

अधिकर्मिकः [अधिकर्मन्+ठक] किसी मंडी का अध्यवेक्षक जिसका कार्य व्यापारियों से कर उगाहने का हो।

अधिकाम (वि०) [अधिकः कामो यस्य] 1 उत्कट अभिलाषी, आवेशपूर्ण, कामातुर, -मः उत्कट अभिलाषा।

अधिकारः [अधि+कृ+घञ्] 1 अधीक्षण, देखभाल करना 2 कर्तृत्व, कार्यभार, सत्ताधिकार का पद, प्रभुत्व—द्वीपिनस्तालमूलाधिकारो दंतः पंच० १, स्वाधिकारात् प्रमत्तः—मेघ० १, अधिकारे मम पुत्रको नियुक्तः—मालवि० ५, 3 प्रभुसत्ता, सरकार या प्रशासन, न्यायक्षेत्र, शासन 4 हक, प्राधिकार, दावा, स्वत्व (धन, संपत्ति आदि का), स्वामित्व या कब्जे का अधिकार—अधिकारः फले स्वाम्ययधिकारी च तत्प्रभुः—सा० द० २९६ 5 विशेषाधिकार (राजा के) 6 प्रकरण, अनुच्छेद या अनभाग, प्रायश्चित्त—मिता०, दे० 'अधिकरण' 7 (व्या०) प्रधान या शासनात्मक नियम। समः—विधिः किसी विशेष कार्य को करने के लिए पात्रता का कथन,—स्थ,—आढ्य (वि०) पद पर विराजमान।

अधिकारिन्, अधिकारिवत् (वि०) [अधिकार+इनि, अधिकार+मतुप्] 1 अधिकार सम्पन्न, शक्तिसम्पन्न 2 स्वत्व सम्पन्न, हकदार, सर्वे स्युरधिकारिणः 3 स्वामी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मालिक 4 उपयुक्त (पुं०—री,—वान्) 1 राजपुरुष, पदाधिकारी कार्यकर्ता, अधीक्षक, प्रधान, निर्देशक, शासक 2 लही दावेदार, मालिक, स्वामी।

अधिकृतिः (स्त्री०) [अधि+कृ+क्तिन्] हक़, अधिकार, स्वामित्व, दे० अधिकार।

अधिकृत्य (अव्य०) [अधि+कृ+ (त्वा) ल्यप्] उल्लेख करके, के विषय में, के संबंध में—गीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १; शकुंतलामधिकृत्य ब्रवीति—श० २।

अधिक्रमः } [अधि+क्रम्+घञ्, ल्युट् च] हमला,
अधिक्रमणम् } चढ़ाई।

अधिक्षेपः—[अधि+क्षिप्+घञ्] 1 गाली, दोषारोपण, अपमान, भर्त्सनापूर्ण व्यंग्य 2 अतिक्रमण, उल्लंघन।

अधिगत (वि०) [अधि+गम्+क्त] 1 अर्जित, प्राप्त आदि—भर्तृ० २।१७, 2 अधीत, ज्ञात, सीखा हुआ, किमित्येवं पृच्छस्यनधिगतरामायण इव—उत्त०६।३०।

अधिगमः } [अधि+गम+घञ्, ल्युट् च] 1 अर्जन,
अधिगमनम् } प्राप्तण 2 पारंगति, अध्ययन, ज्ञान 3 व्यापारिक लाभ, लाभ, संपत्ति प्राप्त करना, निष्पादेः प्राप्तिः—मिता० या धनप्राप्ति, 4 स्वीकृति 5 मंथन।

अधिगुण (वि०) [अधिका गुणा यस्य] 1 श्रेष्ठ गुण रखने वाला, योग्य, गुणी—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६, 2 जिसकी डोरी कसकर खिंची हो (जैसे धनुष)।

अधिजरथम्—[अधि+चर्+ल्युट्] किसी के ऊपर चलना।

अधिजननम्—[अधि+जन्+ल्युट्] जन्म।

अधिजिह्मः—[ब० स०] सांप—ह्मा—जिह्मिका 1 तालजिह्वा 2 जिह्वा की सूजन (रोग)।

अधिज्य (वि०) [अध्यारूढा ज्या यत्र, अधिगतं ज्यां वा] धनुष की डोरी को कस कर खींचे हुए, या कस कर खिंची हुई डोरी वाला (जैसा कि धनुष)। सम०—धन्वन्—कार्मुक (वि०) धनुष की डोरी को ताने हुए—त्वयि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६।

अधित्यका [अधि+त्यकन्+टाप्] गिरिप्रस्थ (पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि) उच्चसमभूमि—स्थाणुं तपस्यन्तमधित्यकायाम्—कु० ३।१७, अधित्यकायामिव धातुमय्याम्—रघु० २।२९।

अधिदन्तः [अध्यारूढो दन्तः—प्रा० स०] दांत के ऊपर निकलने वाला दांत।

अधिदेवः, अधिदेवता [प्रा० स० अधिष्ठाता—त्री देवः देवता वा] इष्टदेव प्रधान देव, अभिरक्षक देवता, मयाचे पादुके पश्चात्कृत्य राज्याधिदेवते—रघु० १२।१७, १६।९, भाग्नि० ३।३

अधिदैवम्, अधिदैवतम् [अधिष्ठातृ दैवं दैवतं वा] किसी वस्तु की अधिष्ठात्री देवता।

अधिनाथः [प्रा० स०] परमेश्वर।

अधिनायः [अधि+नी+घञ्] गम्भ, सड़क।

अधिपः, अधिपतिः [अधि+पा+क, डति वा] स्वामी, शासक, राजा, प्रभु, प्रधान—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते—रघु० २।१ (अधिकतर समास में प्रयुक्त)।

अधिपत्नी [प्रा० स०] दैव—शासिका, स्वामिनी।

अधिपु (पू) ष्पः [प्रा० स०] पुरुषोत्तम, परमेश्वर।

अधिप्रज (वि०) [अधिका प्रजा यस्य ब० स०] बहुत संतान वाला (स्त्री या पुरुष)।

अधिभूः [अधि+भू+क्विप्] स्वामी, श्रेष्ठ, प्रमुख।

अधिभूतम् [अधि+भू+क्त प्रा० स०—भूतं प्राणिमात्रमधिकृत्य वर्तमानम्] परमेश्वर, परमात्मा या तत्संबंधी समस्त व्यापक प्रभाव।

अधिमात्र (वि०) [अधिका मात्रा यस्य ब० स०] मात्र से अधिक, बहुत अधिक, अपरिमित।

अधिमासः [प्रा० स०] लौंद का महीना, मलमास।

अधियज्ञः [प्रा० स०] 1 प्रधान यज्ञ 2 ऐसे यज्ञ का अभिकर्ता।

अधिरथ (वि०) [अध्यारूढो रथं रथिनं वा] रथारूढ,—थः—1 सूत, सारथि 2 सूत का नाम जो अंगदेश का राजा तथा कर्ण का पालक पिता था।

अधिराज्, (पुं०) **अधिराजः** [अधि+राज्+क्विप् राजन्+टच् वा] प्रभुसत्ता प्राप्त या परमशासक, सम्राट्, —अद्यास्मिंतु भुवनेष्वधिराजशब्दः—उत्त० ६।१६, राजा, प्रधान, स्वामी (मनुष्य और पशवादिकों का), हिमालयो नाम नगाधिराजः—कु० १।१, इसी प्रकार मृग°, नाग° आदि।

अधिराज्यम्, अधिराष्ट्रम् [अधिकृतं राज्यं राष्ट्रम् अत्र] 1 शाही हकूमत या सम्राट् का शासन, सर्वोच्चता, शाही मर्यादा 2 साम्राज्य 3 देश का नाम।

अधिरूढ (वि०) [अधि+रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ 2 बढ़ा हुआ।

अधिरोहः [अधि+रुह्+घञ्] 1 गजारोही 2 सवार होना, चढ़ना।

अधिरोहणम् [अधि+रुह्+ल्युट्] चढ़ना, सवार होना, चित्तं°—रघु० ८।५७—णी सीढ़ी, सीढ़ी का डंडा (लकड़ी आदि का)।

अधिरोहिन् (वि०) [अधि+रुह्+णिनि] चढ़ने वाला, सवार होने वाला, ऊपर उठने वाला,—णी सीढ़ी, जीने की पौड़ी या डंडा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिलोकम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 विश्व से संबंध रखने वाला 2 विश्व में।

अधिवचनम् [अधि-वच्+ल्युट्] 1 एक्सप्रमर्धन, पक्ष में बोलना, 2 नाम, उपनाम, अभिधान।

अधिवासः [अधि+वस्+णिच्+घञ्] 1 आवास, निवास, वास, तस्यापि च स एव गिरिरधिवासः--का० १।३७, वसति, बसना 2 धरना देना 3 यज्ञारंभ के पूर्व देवता का आवाहन पूजन आदि 4 पोशाक, परावरण, लबादा 5 सुवासित और सुगंधित उबटन लगाना, सुगंधयुक्त तथा महकदार पदार्थों का सेवन—अधिवासस्पृहयेव मारुतः—रघु० ८।३४ शि० २।२०।

अधिवासनम् [अधि+वस्+णिच्+ल्युट्] सुगंध से बसाना, मूर्ति की प्रारंभिक प्रतिष्ठा, मूर्ति में देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करना।

अधिविन्ना [अधि+विद्+क्त] वह स्त्री जिसके रहते हुए पति दूसरा विवाह कर ले, या० १।७३-४, मनु० ९।८०-८३।

अधिवेत्तृ (पुं०) [अधि+विद्+तृच्] एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह करने वाला।

अधिवेद्यः, अधिवेदनम् [अधि+विद्+घञ्, ल्युट् वा] एक स्त्री के रहते अतिरिक्त स्त्री से विवाह करना।

अधिश्रयः [अधि+श्रि+अच्] 1 आधार 2 उबालना, (आग पर रखकर) गर्म करना।

अधिश्रयणम्, अधिश्रपणम् [अधि+श्रि (श्री)+ल्युट्] गरम करना, उबालना,--णी [अधिश्रीयते पच्यतेऽत्र--आधारे ल्युट्+ङीप्] चूल्हा, अंगीठी।

अधिश्री (वि०) [अधिका श्रीर्यस्य] ऊँची प्रतिष्ठा वाला, सर्वश्रेष्ठ, बड़ा धनाढ्य, प्रभूतसत्तासम्पन्न स्वामी—इयं महेन्द्रप्रभृतीनधिश्रियश्चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनी--कु० ५।५३।

अधिष्ठानम् [अधि+स्था+ल्युट्] 1 निकट होना, पास में स्थित होना, पहुँच 2 पद, स्थान, आधार, आसन, जगह, नगर 3 निवास स्थान, आवास, 4 अधिकार, शक्ति, नियंत्रणशक्ति 5 सरकार, उपनिवेश 6 चक्र, (गाड़ी आदि का) पहिया 7 दृष्टांत, निर्दिष्ट नियम 8 आशीर्वाद।

अधिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त] 1 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) स्थित, विद्यमान (ख) अधिकृत (ग) निदेशन, प्रधानता करना 2 (कर्मवाच्य के रूप में) (क) व्यस्त, अधिकृत (ख) भरा हुआ, ग्रस्त, अधिभूत (ग) परिरक्षित, सुरक्षा प्राप्त, अधीक्षित (घ) नीत, संचालित, आदिष्ट, प्रधानता किया गया।

अधीकारः=दे० अधिकार; स्वागतं स्वानधीकारानवलंब्य-कु०--२।१८।

अधीतिन् (वि०) [अधीत+इनि] खूब पढ़ा लिखा, निष्णात—अधीती चतुर्वेदीनायेषु---दश० १२०, (वेद व्याकरण आदि में)।

अध्येतिः (स्त्री०) [अधि+इ+क्तिन्] 1 अध्ययन, अनुशीलन °बोधाचरणप्रचारणैः—नैष० १।३, 2 स्मरण, प्रत्यास्मरण।

अधीन (वि०) [अधिगतम् इनम् प्रभुम्—प्रा० स०] आश्रित, मातहत, निर्भर (बहुधा समस्त पदों में) स्थाने प्राणाः कामिनां हृत्यधीनाः—मालवि० ३।१४, त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम्—कु० ४।१०, इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः—रघु० १।७२।

अधीयानः (व० कृ०) [अधि+इ+शानच्] विद्यार्थी, वेदपाठी।

अधीर (वि०) [न० त०] 1 साहसहीन, भीरु 2 उद्विग्न, उत्तेजित, उतावला 3 अस्थिर 4 धैर्यरहित, चंचल, —रा 1. बिजली 2 सनकी या झगड़ालू स्त्री।

अधीवासः [अधि+वस्+घञ्]—उपसर्गस्य दीर्घत्वम्] एक लंबा कोट जिससे सारा शरीर ढक जाय, लबादा, दे० अधिवास भी।

अधीशः [प्रा० स०] स्वामी, सर्वोच्च स्वामी या मालिक, प्रभुसत्तासंपन्न राजा--अंग°, मृग°, मनुज° आदि।

अधीश्वरः [प्रा० स०] सर्वोच्च स्वामी या नियोक्ता।

अधीष्ट (वि०) [अधि+इष्+क्त] अवैतनिक, प्रार्थित —ष्टः अवैतनिक पद या कर्तव्य, ऐसा कार्य जिसमें सामर्थ्य का उपयोग हो सके, (अधीष्टः—सत्कार-पूर्वकी व्यापारः—सिद्धा०)।

अधुना (अव्य०) [इदमोधुनादेशः-पा० ५।३।१७] अब, इस समय--प्रमदानामधुना विडंबना—कु० ४।११।

अधुनातन (वि०) [स्त्री०-नी] [अधुना+टयुल्-तुट्च] वर्तमान काल से संबंध रखने वाला, आधुनिक।

अधृष्यकः [न० त०] जलती हुई आग।

अधृतिः (स्त्री०) [नञ्+धृ+क्तिन्] 1 दृढ़ता या संयम का अभाव शिथिलता 2 असंयम 3 दुःख।

अधृष्य (वि०) [न० त०] 1 अजेय, दुर्धर्ष, अनभिगम्य (विप० अभिगम्य) अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्ने-रिवार्णवः—रघु० १।१६, 2 लजीला, शर्मीला 3 घमंडी।

अधोक्ष, अधोक्षज, अधोऽक्षज—दे० "अक्ष" के नीचे।

अध्यक्ष (वि०) [अधिगतम् अक्षम् इन्द्रियम्—प्रा० स०, अध्यक्षणोति व्याप्नोति इति—अधि+अक्ष+अच्] गोचर, दृश्य,—यैरध्यक्षैरथ निजसखं नीरदं स्मार-यद्भिः—मालवि० ४।१७, २ निरीक्षक, अधिष्ठाता, —क्षः अधीक्षक, प्रधान, मुख्य—मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्—भग० ९।१०, प्रायः समस्त पदों में; गज°, सेना°, ग्राम°, द्वार°।

अध्यक्षरम् [प्रा० स०] रहस्यमय अक्षर 'ओम्'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्यग्नि (अव्य०) विवाह संस्कार की अग्नि के निकट या ऊपर, (नपुं०—न्नि) विवाह के अवसर पर अग्नि को साक्षी करके स्त्री को दिया जाने वाला उपहार, धन—विवाहकाले वत्सरोभ्यो दीयते ह्यग्निसन्निधौ, तदध्यग्निकृतं सद्भिः स्त्रीधनं परिकीर्तितम्।

अध्यधि (अव्य०) [अधि+अधि] ऊपर, ऊँचे (कर्म० के साथ) लोकम्—सिद्धा०।

अध्यक्षेपः [प्रा० स०] अत्यन्त अपशब्द या दुर्वचन, कुत्सित गालियां।

अध्यधीन (वि०) [प्रा० स०] नितान्त अधीन, बिलकुल वशीभूत, जैसे कि दास सेवक—या० ३।२२८।

अध्ययः [अधि+इ+अच्] 1 ज्ञान, अध्ययन, स्मरण 2= दे० अध्याय।

अध्ययनम् [अधि+इ+ल्युट्] सीखना, जानना, पढ़ना (विशेषतया वेदों का), ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक। वेदाध्ययन केवल प्रथम तीन वर्णों के लिए विहित है, शूद्र के लिए नहीं—मनु० १।८८-५१।

अध्यर्ध (वि०) [अधिकमर्धं यस्य] जिसके पास अतिरिक्त आधा हो—शतमध्यर्धमायत्तं—महा० अर्थात् १५०, °भोजनशतात्—पंच० २।१८।

अध्यवसानम् [अधि+अव+सो+ल्युट्] 1 प्रयत्न, दृढ़निश्चय आदि, दे० अध्यवसाय 2 (सा० शा० में) प्रकृत और अप्रकृत दोनों वस्तुओं का इस ढंग से एक रूप करना जिससे कि एक वस्तु दूसरी में विलीन हो जाय; निगीर्याध्यवसानं तु प्रकृतस्य परेण यत्—काव्य० १०, इसी प्रकार की एकरूपता पर आधारित अलंकार और साध्यवसाना लक्षणा आश्रित हैं।

अध्यवसायः [अधि+अव+सो+घञ्] 1 प्रयास, प्रयत्न, परिश्रम 2 दृढ़निश्चय, संकल्प, मानस प्रयत्न या विचारों का ग्रहण, 3 धैर्य, उद्यम, लगातार कोशिश।

अध्यवसायिन् (वि०) [अधि+अव+सो+णिनि] प्रयत्नशील, दृढ़संकल्प वाला, धैर्यशाली, उत्साही।

अध्यशनम् [अधि+अश्+ल्युट्] अधिक खाना, एक बार का खाना पचे बिना फिर खा लेना।

अध्यात्म (वि०) [आत्मनः संबद्धम्] आत्मा या व्यक्ति से संबंध रखने वाला,—त्मम् (अव्य०) आत्मा से संबद्ध —त्मम् परब्रह्म (व्यक्ति के रूप में प्रकट) या आत्मा और परमात्मा का संबंध। सम०—ज्ञानम्,—विद्या आत्मा या परमात्मा संबंधी ज्ञान अर्थात् ब्रह्म एवं आत्म-विषयक जानकारी (उपनिषदों द्वारा बताये गये सिद्धांत)—रति (वि०) जो परमात्मचिन्तन में सुख का अनुभव करे।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—की] अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला।

अध्यापकः [अधि+इ+णिच्+ण्वुल्] पढ़ाने वाला, गुरु, शिक्षक-विशेषतया वेदों का, व्याकरण°; न्याय°; भृतक अर्थार्थी अध्यापक। विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक दो प्रकार के हैं—एक तो 'आचार्य' जो कि बालक को यज्ञोपवीत पहनाकर वेद-पाठ में दीक्षित करते हैं, दूसरे 'उपाध्याय' जो अपनी जीविका कमाने के लिए अध्यापन कार्य करते हैं, दे० मनु० २।१४०-४१।

अध्यापनम् [अधि+इ+णिच्+ल्युट्] पढ़ाना, सिखाना, व्याख्यान देना, ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक, भारतीय स्मृतिकारों के अनुसार 'अध्यापन' तीन प्रकार का है 1धर्मार्थ किया जाने वाला 2 मजदूरी प्राप्त करने के लिए 3 की गई सेवा के बदले।

अध्यापयितृ (पुं०) [अधि+इ+णिच्+तृच्] अध्यापक, शिक्षक।

अध्यायः [अधि+इ+घञ्] 1 पढ़ना, अध्ययन, विशेषतः वेदों का, 2 पाठ या पढ़ने के लिए उचित समय 3 पाठ, व्याख्यान 4 खण्ड, किसी रचना के भाग, निम्नांकित कुछ ऐसे नाम हैं जो संस्कृत लेखकों ने 'खण्ड' या 'भाग' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये हैं—सर्गों वर्गः परिच्छेदोद्योताध्यायाह्निसंग्रहः, उच्छ्वासः परिवर्तश्च पटलः काण्डमानतम्, स्थानं प्रकरणं चैव पर्वोल्लासाह्निकानि च, स्कंधाशौ तु पुराणादौ प्रायशः परिकीर्तितौ।

अध्यायिन् (वि०) [अध्याय+णिनि] अध्ययन करने वाला, अध्ययनशील।

अध्यारूढ (वि०) [अधि+आ—रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ, 2 ऊपर उठा हुआ, उन्नत 3 ऊँचा, श्रेष्ठ; नीचा, निम्नतर।

अध्यारोपः [अधि—आ+रुह्+णिच्+घञ्] 1 उठना, उन्नत होना आदि 2 (वे० द० में) भ्रमवश एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम के कारण एक वस्तु के गुण दूसरी वस्तु में जोड़ना, भ्रमवश रस्सी को सांप समझना—असर्पभूतरज्जौ सर्पारोपवत्, अजगद्रूपे ब्रह्मणि जगद्रूपारोपवत्, वस्तुनि अवस्त्वारोपोऽध्यारोपः वे० सा०, 3 भ्रान्तिपूर्ण ज्ञान।

अध्यारोपणम् [अधि+आ+रुह+णिच्+ल्युक्+ल्युट्] 1 उठना आदि 2 (बीज) बोना।

अध्यावापः [अधि+आ+वप्+घञ्] 1 बीजादिक बखेरना या बोना 2 वह खेत जिसमें बीजादिक बो दिया गया हो।

अध्यावाहनिकम् [अध्यावाहनं (पितृगृहात्पतिगृहगमनम्) लक्ष्यार्थे ठन्] छः प्रकार के स्त्रीधनों (वह सम्पत्ति जो एक स्त्री अपने पिता के घर से पति के घर को विदा होते समय प्राप्त करती है) में से एक—यत्पुनर्लभते नारी नीयमाना तु पैतृकात् (गृहात्) अध्यावाहनिकं नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्यासः, अध्यासनम् [अधि+आस्+घञ्, ल्युट् वा] 1 ऊपर बैठना, अधिकार में करना, प्रधानता करना 2 आसन, स्थान।

अध्यासः [अधि+अस्+घञ्] 1 मिथ्या आरोपण, मिथ्या ज्ञान, दे० 'अध्यारोप' को भी 2 परिशिष्ट 3 कुचलना –पादाध्यासे शतं दमः—या० २।२१७।

अध्याहारः, अध्याहरणम् } [अधि+आ+हृ+घञ्, ल्युट् वा] 1 न्यूनपदों को पूरा करना 2 तर्क करना, अनुमान करना, नई कल्पना, अन्दाजा या अनुमान।

अध्युष्टः [अधिगतः उष्ट्रं वाहनत्वेन] ऊँटगाड़ी।

अध्यूढः [अधि+वह्+क्त] उठा हुआ, उन्नत, —ढः शिव—ढा वह स्त्री जिसके पति ने उसके रहते हुए दूसरा विवाह कर लिया हो दे० अधिविन्ना।

अध्येषणम् [अधि—इष्+ल्युट्] किसी कार्य को करने की प्रेरणा देना, विशेषतः आचार्य के द्वारा, अर्थात् आदर पूर्वक किसी कार्य में प्रवृत्त करना, —णा निवेदन, याचना।

अध्रुव (वि०) [न० त०] 1 अनिश्चित, सन्दिग्ध 2 अस्थिर, चंचल, पृथक्करणीय, —वम् अनिश्चितता, यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते, ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च।

अध्वन् (पुं०) [अद्+क्वनिप् दकारस्य धकारः] 1 रास्ता, सड़क, मार्ग, नक्षत्र मार्ग २(क) दूरी, स्थान (चलकर पार किया गया और पार करने के निमित्त)—अपि लंघितमध्वानं दयुर्ये न यथोपमः—रघु० १।४७, उल्लंघिताध्वा—मेघ० ४५ (ख) यात्रा, भ्रमण, प्रसरण, प्रस्थान —नैकः प्रपेदेताध्वानम् मनु० ४।६०, 3 समय (काल), मूर्तकाल 4 आकाश, अन्तरिक्ष 5 उपाय साधन, प्रणाली 6 आक्रमण। सम०—गः 1 मार्ग चलने वाला, यात्री, बटोही—सन्तानकतरुच्छाया-सुप्तोद्विग्नाध्वराध्वगम्—कु० ६।४६ (°गामिन्) 2 ऊँट 3 खच्चर 4 सूर्य, —गा गंगा, —पतिः सूर्य, —रथः 1 यात्रा करने के लिए गाड़ी 2 हरकारा जो चलने में चतुर हो।

अध्वनीन } (वि०) [अध्वन्+ख, यत् वा] यात्रा पर जाने
अध्वन्य } के योग्य, तेज़ चलने वाला—क्षिप्रं ततोऽध्वन्य-तुरंगयात्री—भट्टि० २।४८,—नः, —न्यः तेज चलने वाला यात्री, बटोही।

अध्वरः [अध्वानं सत्यर्थं राति—इति अध्वन्+रा+क अथवा न ध्वरति कुटिलो न भवति नच्+ध्वृ+अच्, ध्वरतिर्हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधो निपातः अहिंस्र—निरु०] यज्ञ, धार्मिक संस्कार, सोमयाग, तमध्वरे विश्वजिति —रघु० ५।१, —रः, —रम् आकाश या वायु। सम०—दीक्षणीया अध्वर संबंधी संस्कार, इसी प्रकार °प्रायश्चित्तिः—प्रायश्चित्त, पापनिष्कृति, —मीमांसा जैमिनि की पूर्वमीमांसा।

अध्वर्युः [अध्वर+क्यच्+युच्] 1 ऋत्विक्, पुरोहित, पारिभाषिक रूप से 'होतृ' 'उद्गातृ' तथा 'ब्रह्मन्' से अतिरिक्त ऋत्विक्, 2 यजुर्वेद। सम०—वेदः यजुर्वेद।

अध्वातिग—अध्वग।

अध्वान्तम् [न० त०] संध्या, अन्धकार।

अन् (अदा० पर० सेट्) [अनिति, अनित] 1 सांस लेना, 2 हिलना, जीना, प्रेर० आनयति, सन्नन्त० अनिनिषति। (दिवा० आ०) जीना, 'प्र' उपसर्ग के साथ—जीवित रहना—यदहं पुनरेव प्राणिमि—का० ३५, प्राणिमस्तव मानार्थं—भामि० ४।३८।

अनः [अन्+अच्] सांस, प्रश्वास।

अनंश (वि०) [न० व०] जिसका पैतृक सम्पत्ति पर कोई अधिकार न हो।

अनकदुंदुभिः = दे० आनकदुंदुभिः।

अनक्षः (वि०) [न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा।

अनक्षरः (वि०) [न० ब०] 1 बोलने में असमर्थ, मूक, गूंगा 2 अशिक्षित 3 बोलने के अयोग्य, —रम् दुर्वचन गाली, निन्दा या अपशब्द, (क्रि० वि०) बिना शब्दों के—°व्यंजित दौर्हृदं देन रघु० १४।२६।

अनग्नि: [न० त०] 1 अग्नि का न होना, अग्नि के बजाय कोई दूसरी वस्तु—यदयीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते, अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्। नि० 2 अग्नि का अभाव, (वि०) [न० ब०] 1 जिसे अग्नि की आवश्यकता न हो—विदधे विधिमस्य वैष्ठिकं यतिभिः साधमनग्निमग्निचित्—रघु० ८।२५, 2 अग्निहोत्र न करने वाला, 3 श्रौतस्मार्त कर्म से विरहित, अधार्मिक 4 अग्निमांद्य रोग से ग्रस्त 5 अविवाहित।

अनघ (वि०) [न० ब०] 1 निष्पाप, निरपराध—अवैमि चैनामनघेति—रघु० १४।४०, 2 निर्दोष, सुन्दर, —रूपमनघम्—दश० २।१३, यस्य ज्ञानदयासिधोरगाधस्यानघा गुणाः—अमर० 3 सकुशल, घातरहित, अक्षत, सुरक्षित—कच्चिन्मृगीणामनघा प्रसूतिः—रघु० ५।७, मृगवध्रूर्यदा अनघप्रसवा भवति—श० ४, जिसका प्रसव सकुशल हो चुका हो या जो प्रसव के पश्चात् सकुशल शय्या पर लेटी हो 4 पवित्र, निष्कलंक,—घः 1 सफेद सरसों, 2 विष्णु या शिव का नाम।

अनङ्कुश (वि०) [न० ब०] 1 उद्दंड, उच्छृंखल 2 (कवि की भांति) स्वच्छन्द।

अनङ्ग (वि०) [न० ब०] देहरहित, अशरीरी, आकृतिहीन त्वमनंगः कथमसतां रतिः—कु० ४।९, —गः (देहरहित), कामदेव —गम् 1 आकाश, वायु, अन्तरिक्ष, 2 मन। सम०—क्रीडा कामकेलि, —लेख=मदन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेख, प्रेमपत्र, °लेखक्रिययोपयोगं (वजन्ति) कु० १।७, °धनुः, °असुहृत् आदि—शिव जी के नाम।

अनञ्जन (वि०) [न० ब०] बिना अंजन, वर्णक या काजल के—नेत्रे दूर मनञ्जने—सा० द०, —नम् 1 आकाश, वातावरण 2 परब्रह्म विष्णु या नारायण (पुं० भी)।

अनड्वह् (पुं०) [अनः शकटं वहति—नि०] [अनड्वान्, °ड्वाही, °ड्डुहाम् आदि०] 1 बैल, साँड 2 वृषराशि,—ही (अनड्वाही) गाय।

अनति (अव्य०) [न० त०] बहुत अधिक नहीं, 'अनति' से आरम्भ होने वाले समस्त पदों का विश्लेषण 'अति' से आरम्भ होने वाले शब्दों की भाँति किया जा सकता है।

अनतिविलंबिता—विलम्ब का अभाव, व्याख्यानदाता का एक गुण धाराप्रवाहिता, ३५ वाग्गुणों में से एक।

अनद्यतन वि० [स्त्री०—नी] [न० त०] आज या चालू दिन से संबंध न रखने वाला, पाणिनि का एक पारिभाषिक शब्द जो लुङ् और लुट् लकार के अर्थ को प्रकट करता है, —नः जो चालू दिन न हो, अतीतायां रात्रेः पश्चार्धेन आगामिन्या रात्रेः पूर्वार्धेन सहितो दिवसोऽनद्यतनः—सिद्धा०, तद्विन्नः कालः।

अनधिक (वि०) [न० त०] 1 जो अधिक न हो, 2 असीम पूर्ण।

अनधीनः [न० त०] अपनी इच्छा से कार्य करने वाला स्वाधीन बढ़ई, कौटलीय।

अनध्यक्ष (वि०) [न० त०] 1 अप्रत्यक्ष, अदृश्य 2 शासक हीन।

अनध्यायः } [न० त०] न पढ़ना, पढ़ाई में विराम, वह
अनध्ययनम् } समय जब कि इस प्रकार का विराम होना है या होना चाहिए, एक अवकाश का दिन ('दिवसः) अद्य शिष्टानध्यायः —उत्तर० ४ किसी पूज्य अतिथि के सम्मान में दिया गया अवकाश।

अनन्तम् [अन्+ल्युट्] साँस लेना, जीना।

अनन्वयावृक् (वि०) जो समझने के अयोग्य हो।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य न० ब०] अन्तरहित, अपरिमित, निस्सीम, अक्षय,—°रत्नप्रभवस्य यस्य—कु० १।३,—तः 1 विष्णु की शय्या शेषनाग, कृष्ण, बलराम, शिव, नागों का पति वासुकि 2 बादल 3 कहानी, 4 चौदह ग्रन्थियों से युक्त रेशमी डोरा जो अनंत चतुर्दशी के दिन दक्षिण भुजा पर बांधा जाता है;—ता 1 पृथ्वी (अन्तहीन) 2 एक की संख्या 3 पार्वती 4 शारिवा, अनंतमूल, दूर्वा आदि पौधे; —तम् 1 आकाश, वातावरण 2 असीमता 3 मोक्ष 4 परब्रह्म। सम०—तृतीया वैशाख, भाद्रपद और मार्गशीर्ष मास की शुक्लपक्ष की तीज—दृष्टिः शिव, इन्द्र,—देवः 1 शेषनाग 2 नारायण जो शेषनाग के ऊपर सोता है,—पार (वि०) असीम विस्तारयुक्त, निस्सीम, —°रं किल शब्दशास्त्रम्—पंच० १,—रूप (वि०) अगणित रूपवाला, विष्णु,—विजयः युधिष्ठिर का बांख—भग० १।२६।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अंतरं यस्य—न० ब०] 1 अन्तररहित, सीमारहित 2 जिसके बीच देश काल का कोई अन्तर न हो, सटा हुआ, लगा हुआ 3 संसक्त, पड़ोस का, बिल्कुल मिला हुआ, निकटवर्ती (अपादान के साथ) ब्रह्मावतिदनन्तरः—मनु० २।१९, 4 अनुवर्ती, सन्निहित होना (समास में) 5 अपने से ठीक नीचे के वर्ण का,—रम् 1 संसक्तता, सन्निकटता 2 ब्रह्म, परमात्मा,—रम् (अव्य०) तुरन्त बाद, परचात् 2 (संबंधवाचकता की दृष्टि से) बाद में, (अपादान के साथ) पुराणपत्र्यापगमानन्तरम्—रघु० ३।७, गोदानविधेरनन्तरम्—३।३३ ३६,२,७१। सम०—ज यः—जा 1 क्षत्रिय या वैश्य माता में, अपने से ठीक ऊपर के वर्ण के पिता के द्वारा उत्पन्न सन्तान—मनु० १०।४ 2 'तत्परिणय' भाई बहन, (-जा) छोटी या बड़ी बहन—अनुष्ठितानंतरजाविवाहः—रघु० ७।२२ इसी प्रकार °जात।

अनन्तरीय (वि०) [अनंतर+छ] वंशक्रम में ठीक बाद का।

अनन्य (वि०) [न० त०] 1 अभिन्न, समरूप, वही, अद्वितीय 2 एकमात्र, अनुपम, जिसके साथ और दूसरा न हो 3 अविभक्त, एकाग्र, अन्य की ओर न जाने वाला, —अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते—भग० ९।२२, समास में 'अनन्य' शब्द का अनुवाद किया जा सकता है 'दूसरे के द्वारा नहीं' और किसी ओर लगा या निर्देशित नहीं 'एकाश्रयी'। सम०—गतिः (स्त्री०) एकमात्र सहारे वाला- अनन्यगतिके जने विगतपालके बालके—उद्भट; —चित्त,—चित,—चेतस्,—मनस्, —मानस,—हृदय (वि०) एकाग्रचित्त, जिसका मन और कहीं न हो; —जः,—जन्मन् (पुं०) कामदेव, प्रेम का देवता—भा पुमुहूल्लु भवंतमनन्यजन्मा—मा० १।३२, —पूर्वः वह पुरुष जिसके और कोई स्त्री न हो; (—र्वा) कुमारी, विनब्याही स्त्री—रघु० ४।७; —भाज् (वि०) किसी और व्यक्ति की ओर लगाव न रखने वाला; —अनन्यभाजं पतिमाप्नुहि—कु० ३।६३; —विषय (वि०) किसी और से संबंध न रखने वाला, —वृत्ति (वि०) 1 वैसे ही स्वभाव का 2 जिसकी दूसरी जीविका न हो 3 एकनिष्ठ मनोवृत्ति वाला; —सामान्य,—साधारण (वि०) दूसरे से न मिलने वाला, असाधारण, ऐकान्तिक रूप से लगा हुआ, बेलाग, —अनन्यनारी सामान्यो दासस्त्वस्याः पुरूरवाः—विक्रम० ३।१८ °राजशब्दः—रघु० ६।३८; —सदृश (वि०) [स्त्री०—शी] बेजोड़, अनुपम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनन्वयः [न० त०] 1. संबंध का अभाव 2 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की तुलना उसी से की जाय—और उसको ऐसा बेजोड़ सिद्ध किया जाय जिसका कोई और उपमान ही न हो। जैसे गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः, रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ॥

अनप (वि०) [न० ब०] जलहीन (जैसे क्षुद्रजलाशय)।

अनपकारणम् } [न० त०] 1 चोट न पहुंचाना 2 सुपुर्दगी
अनपकर्मन् } का अभाव 3 (कानून में) ऋण न
अनपक्रिया } चुकाना।

अनपकारः (न० त०) अहित का अभाव **-कारिन्** (वि०) अहित न करने वाला, निर्दोष।

अनपत्य (वि०) [न० ब०] सन्तानहीन, निस्सन्तान, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

अनपत्रप (वि०) [न० ब०] धृष्ट, निर्लज्ज।

अनपभ्रंशः [न० त०] वह शब्द जो भ्रष्ट न हो, व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध शब्द।

अनपसर (वि०) [न० ब०] जिसमें से निकलने का कोई मार्ग न हो, अन्यायोचित, अक्षम्य,—रः बल पूर्वक अधिकार करने वाला।

अनपाय (वि०) [न० ब०] 1 हानि या क्षय से रहित, 2 अनश्वर, अक्षीण, अक्षयी—प्रणमन्त्यनपायमृत्तिमं (चन्द्रम्) कि० २।११,—यः [न० त०] 1 अनश्वरता, स्थायिता 2 शिव।

अनपायिन् (वि०) [अनपाय+णिनि] अनश्वर, दृढ़, स्थिर, अचूक, सतत टिकाऊ, अचल—प्रसादाभिमुखे तस्मिन् श्रोरासीदनपायिनी—रघु० १७।६५, ८।१७, अनपायिनि संशयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी—कु० ४।३१।

अनपेक्ष-क्षिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] 1 असावधान 2 लापरवाह, परवाह न करने वाला, उदासीन 3 स्वतंत्र, दूसरे की अपेक्षा न रखने वाला, 4 निष्पक्ष 5 असंबद्ध;—क्षा [न० त०] असावधानी, उदासीनता—क्षम् (क्रि० वि०) बिना ध्यान के, स्वतंत्र रूप से, परवाह न करते हुए, बेपरवाही से।

अनपेत (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न गया हो, बीता न हो 2 विचलित न हुआ हो (अपा० के साथ) अर्थादनपेतम् अर्थ्यम्—सिद्धा० 3 अविरहित, सम्पन्न—ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४।

अनभिज्ञ (वि०) [न० त०] अनजान, अपरिचित, अनभ्यस्त (प्रायः संब० के साथ) ज्ञः कैतवस्य—भ० ५, ज्ञः परमेश्वरगृह्याचारस्य—महा० २।

अनभ्यावृत्ति (स्त्री०) [न० त०] पुनरुक्ति का अभाव—मनागनभ्यावृत्त्या वा काम क्षाम्यतु यः क्षमी—शि० २।४३

अनभ्याशः—स (वि०) [न० ब०] जो निकटस्थ न हो, दूरस्थ आदि °समिप्य (वि०) दूर से ही बिदकने वाला सिद्धा०।

अनभ्र (वि०) [न० ब०] बिना बादलों के, इयमनभ्रा वृष्टिः—यह तो बिना ही बादलों के आकाश से वृष्टि होने लगी—अर्थात् अप्रत्याशित या आकस्मिक घटना।

अनमः [न० त०] वह ब्राह्मण जो दूसरों को न तो नमस्कार करता है और न उनके नमस्कार का उत्तर देता है।

अनमितपत्र (=मितपत्र) (वि०) [न० त०] कंजस, मक्खीचूस।

अनम्बर (वि०) [न० ब०] वस्त्र न पहने हुए, नंगा—रः बौद्धभिक्षु।

अनयः [न० त०] 1 दुर्व्यवस्था, दुराचरण, अन्याय, अनीति 2 दुर्नीति, दुराचार, कुमार्ग 3 विपत्ति, दुःख, मनु० १०।९५, 4 दुर्भाग्य, बुरी किस्मत 5 जूआ खेलना।

अनर्गल (वि०) [न० ब०] स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित—तुरगमुत्सृष्टमनर्गलम्—रघु० ३।३९ 2 जिसमें ताला न लगा हो।

अनर्घ (वि०) [न० ब०] अनमोल, अमूल्य, जिसके मूल्य का अनुमान न लगाया जा सके,—र्घः गलत या अनुचित मूल्य।

अनर्घ्य (वि०) [न० त०] अमूल्य, सर्वाधिक सम्माननीय।

अनर्थ (वि०) [न० ब०] 1 अनुपयुक्त, निकम्मा 2 भाग्यहीन, सुफलरहित 3 हानिकारक 4 अर्थहीन, निरर्थक,—र्थः [न० त०] 1 उपयोग या मूल्य का न होना 2 निकम्मी या अनुपयुक्त वस्तु 3 विपत्ति, दुर्भाग्य—रक्षोपनिषातिनोऽर्थाः—श० ६, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति 4 अर्थ का न होना, अर्थ का अभाव। **समः कर** (वि०) [स्त्री०-री] अनिष्टकर, हानिकर।

अनर्थ्य, अनर्थक (वि०) [न० त०] 1 अनुपयुक्त, निरर्थक 2 सारहीन 3 अर्थ हीन 4 लाभरहित 5 दुर्भाग्यपूर्ण, **-कम्** अर्थहीन या असंगत बात।

अनर्ह (वि०) [न० त०] 1 अनधिकारी, अयोग्य 2 अनुपयुक्त (संब० के साथ या समास में)।

अनलः [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य-न० ब०] 1 आग 2 अग्नि या अग्निदेवता 3 पाचनशक्ति 4 पित्त। **समः द** (वि०) [अनलं ददाति] 1 गर्मी या आग को नष्ट करने वाला, 2=दे० अग्निद **दीपन** (वि०) जठराग्नि या पाचनशक्ति को बढ़ाने वाला, **प्रिया** अग्नि की पत्नी स्वाहा,—**सादः** क्षुधा का नाश, अग्निमांद्य।

अनलस (वि०) [न० त०] 1 आलस्यरहित, चुस्त, परिश्रमी 2 अयोग्य, असमर्थ।

अनल्प (वि०) [न० त०] 1 बहुसंख्यक 2 जो थोड़ा न हो, उदाराशय, उदार (जैसा कि मनु आदि) अधिक,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जल्पत्यनल्पाक्षरम् –पंच० १।१३६ विकसितवदनानलल्पजल्पेपि –भामि० १।१००, २।१३८।

अनवकाश (वि०) [न० ब०] 1 अनाहूत, 3 अप्रयोज्य 2 जिसके लिए कोई गुंजायश या मौका न हो,—शः [न० त०] स्थान या कार्यक्षेत्र का अभाव।

अनवग्रह (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके –सुकुमारकायमनवग्रहः स्मरः (अभिहंति) मा० १।३९।

अनवच्छिन्न (वि०) [न० त०] । सीमांकन रहित, अनुपकृत 2 सीमारहित, अधिक 3 अनिर्दिष्ट, अविच्छिन्न, अविकृत 4 अबाधित।

अनवद्य (वि०) [न० त०] निर्दोष, कल्मषरहित, अनिंद्य रघु० ७।७०। सम० अंग, रूप (वि०) निर्दोष या नितान्त सुन्दर अंगों वाला (–गी) रूपवती स्त्री।

अनवधान (वि०) [न० ब०] निरपेक्ष, ध्यान न देने वाला, —नम् [न० त०] प्रमाद, असावधानता, लापरवाही।

अनवधि (वि०) [न० ब०] असीमित, अपरिमित।

अनवम (वि०) [न० त०] जो नीच या तुच्छ न हो, बड़ा, श्रेष्ठ, सुधर्मानिवमें सभाम् -रघु० १६।२७, ९।१४।

अनवरत (वि०) [न० त०] अविराम, निरंतर—'धनुर्ज्या-स्फालनकरपुवेम् शा० २।४,—तम् (क्रि० वि०) बिना रुके, लगातार।

अनवरार्ध्य (वि०) [अवरम्मिन् अर्थे भवः—इत्यर्थे नञ्+अवरार्ध+यत् न० त०] मुख्य, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

अनवलंब बन (वि०) [न० त०] अवलंबहीन, निराश्रित-बः,–बनम् स्वतंत्रता।

अनवलोभनम् [न० त०] गर्भ के तीसरे मास किया जाने वाला एक संस्कार।

अनवसर (वि०) [न० ब०] 1 व्यस्त 2 निरवकाश, रः [न० त०]। अवकाश का अभाव, कुसमय होना, असामयिकता, कं यादे यत्र यत्र ध्रुवमनवसरग्रस्त एवाधिभावः—मा० ९।३०।

अनवस्कर (वि०) [न० ब०] मलरहित, स्वच्छ, साफ।

अनवस्थ (वि०) [न० त०] अस्थिर, -स्था [न० त०] 1 अस्थिरता 2 अनिश्चित अवस्था 3 चरित्रभ्रष्टता, लम्पटता 3 (दर्शन० में) किसी अन्तिम निर्णय पर न पहुँचना, कार्य-कारण की ऐसी परंपरा जिसका अन्त न हो, तर्क का एक दोष —एवमप्यनवस्था स्याद्या मूलक्षतिकारिणी –काव्य० २ एव च प्रसंगः–शा०।

अनवस्थान (वि०) [न० ब०] अस्थायी, अस्थिर, चंचल, —नः वायु—नम् [न० त०] 1 अस्थिरता, 2 आचारभ्रष्टता, लम्पटता।

अनवस्थित (वि०) [न० त०] 1 अस्थिर, अस्थिरचित्त 2 परिवर्तित 3 आवारा।

अनवेक्षक (वि०) [न० त०] असावधान, बेपरवाह, उदासीन।

अनवेक्ष-क्षा=दे० अनपेक्ष-क्षा।

अनवेक्षणम् [नञ्+अव्+ईक्ष+ल्युट्] लापरवाही, अनवधानता।

अनशनम् [नञ्+अश्+ल्युट्] उपवास, आमरण उपवास।

अनश्वर (वि०) [स्त्री०–री] [न० त०] अविनाशी।

अनस् (पुं०) [अन्+असुन्] 1 गाड़ी 2 भोजन, भात 3 जन्म, 4 प्राणी 5 रसोईघर।

अनसूय-क (वि०) [न० ब०] द्वेष रहित, ईर्ष्यारहित, -या [न० त०] 1 ईर्ष्या का अभाव, 2 अत्रि की पत्नी, स्त्रियोचित पतिभक्ति और सतीत्व का ऊँचा नमूना।

अनहन् (नपुं०) [न० त०] दुर्दिन, दुर्दिन।

अनाकालः [न० त० नि०] 1 कुसमय 2 दुर्भिक्ष (संभवतः "अनाकाल" शब्द का अनियमित रूप)। सम० —भृतः—जो व्यक्ति दुर्भिक्ष में भूखे से अपने आपको बचाने के लिए स्वयं दूसरे का दास बन जाता है।

अनाकुल (वि०) [न० त०] 1 शान्त, प्रकृतिस्थ, स्वस्थ 2 अटल।

अनागत (वि०) [न० त०] 1 न आया हुआ, न पहुँचा हुआ तावद्भयस्य भेतव्यं यावद्भयमनागतम्—हि० १।५७, 2 अप्राप्त, जो न मिला हो 3 भविष्यत्, आने वाला, दे० नीचे समः को 4 अज्ञात,—तम् भविष्यत्काल, भविष्य। सम०—अवेक्षणम् भविष्य की ओर देखना, आगे की ओर दृष्टि रखना,—आबाधः आने वाला भौतिक कष्ट या विपत्ति,—आर्तवा वह कन्या जिसका मासिक स्राव अभी आरम्भ न हुआ हो, अरजस्का,—विधातृ (पुं०) आने वाले अनिष्ट को पहले ही से निराकरण करने वाला, भविष्य के विषय में सावधान, दूरदर्शी (पंच० १।३२८ तथा हि० ४।५ में इस नाम की एक मछली)।

अनागमः [न० त०] । न आना 2 अप्राप्ति।

अनागस् (वि०) [न० ब०] निरपराध, निर्दोष—आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १।११।

अनाचारः [न० त०] अनुचित आचरण, दुराचरण, कुरीति।

अनातप (वि०) [न० ब०] धूप या घर्मी से युक्त, ताप रहित, ठंडा।

अनातुर (वि०) [न० त०] 1 अकुण्ठक, उदासीन 2 न थका हुआ, अक्लांत—भेजे घर्मशनातुरः—रघु १।२१ 3 अच्छा, स्वस्थ।

अनात्मन् (वि०) [न० ब०] 1 आत्मा या मन से रहित 2 अनात्मिक 3 जिसने अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रक्खा है,—(पुं०) जो आत्मिक न हो, आत्मा से भिन्न अर्थात् नश्वर शरीर। सम०—ज्ञ,—वेदिन् (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने आपको न जानने वाला, मूर्ख, जड़—सा तावदनात्मज्ञो—श० ६,—संपन्न (वि०) मूर्ख।

अनात्मनीन (वि०) [नञ्+आत्मन्+ख] जो अपने ही लाभ के लिए कार्य करने का अभ्यस्त न हो, निःस्वार्थ, स्वार्थ रहित।

अनात्मवत् (वि०) [आत्मा वश्यत्वेन नास्ति इत्यर्थे-नञ्+आत्मन्+मतुप् न० त०] असंयमी, इन्द्रिय परायण।

अनाथ (वि०) [न० ब०] असहाय, निर्धन, त्यक्त, मातापितृहीन, बिना माँ—बाप का बच्चा, विधवा स्त्री, सामान्यतः जिसका कोई रक्षक न हो—नाथवन्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे उत्तर० १।४३। सम०—सभा अनाथालय।

अनादर (वि०) [न० त०] उदासीन, उपेक्षावान्, —रः [न० त०] अवहेलना, तिरस्कार, अवज्ञा—ष्ठी-चानादरे—पा० २।३, ३८।

अनादि (वि०) [न० ब०] आदि रहित, नित्य, अनादिकाल से चला आता हुआ,—जगदादिरनादित्व—कु० २।६। सम०—अनन्त,—अन्त (वि०) आदि और अन्त रहित, नित्य (—तः) शिव,—निधन (वि०) जिसका आरंभ और समाप्ति न हो, शाश्वत,—मध्यान्त (वि०) जिसका आदि, मध्य और अन्त कुछ भी न हो, नित्य।

अनादीनव (वि०) [न० त०] निर्दोष,—यद्गामुदेवेनादीनमनादीनवमीरितम्—शि० २।२२।

अनाद्य (वि०) [न० त०] 1 अदे० अनादि, 2 अभक्ष्य, खाने के अयोग्य।

अनानुपूर्व्यम् [न० त०] 1 दूसरे पदों के बीच में आ जाने के कारण समास के विभिन्न पदों का पृथक्करण 2 नियत क्रम में न आना।

अनाप्त (वि०) [न० त०] 1 अप्राप्त 2 अयोग्य, अकुशल 3 तः अजनबी।

अनामक (वि०) [न० ब० स्वार्थे कन्] बिना नाम का,

अनामन् [अप्रसिद्ध, —(पुं०) 1 मध्यमा 2 कनिष्ठिका तथा मध्यमा के बीच की अंगुली दे० नीचे 'अनामिका'।—(नपुं०) बवासीर।

अनामय (वि०) [नास्ति आमयः रोगो यस्य न० ब०] स्वस्थ, तंदुरुस्त,—यः, —यम् स्वास्थ्य अच्छा होना—महाश्वेता कादम्बरीमनामयं पप्रच्छ—का० १९२, उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की,—यः विष्णु (कहयों के मत में 'शिव')।

अनामा, अनामिका [नास्ति नाम अन्यांगुलिवत् यस्याः—स्वार्थे कन्] कानी तथा बिचली अंगुली के बीच की अंगुली—इसका यह नाम इस लिए पड़ा कि दूसरी अंगुलियों की भाँति इसका कोई नाम नहीं; पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा, अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव। सुभा०।

अनायत्त (वि०) [न० त०] जो दूसरे के वशीभूत न हो, °तो रोषस्य का० ४५ जो क्रोध के वशीभूत न हो, स्वतंत्र—एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता—हि० २।२२, स्वतंत्र जीविका।

अनायास (वि०) [न० त०] जो कष्टप्रद या कठिन न हो, आसान,—मसाध्येकस्मिन् °से कर्मणि त्वया सहायेन भवितव्यम् —श० २, सः 1 सरलता, कठिनाई का अभाव,—°सेन=आसानी से, बिना किसी कठिनाई के।

अनारत (वि०) [न० त०] 1 अनवरत, निरन्तर, अबाध 2 नित्य, —तम् (अव्य०) लगातार, नित्यरूप से —अनारतं तेन पदेषु लंभिता: —कि० १।१५, ४०।

अनारम्भः [न० त०] आरम्भ न होना विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वा ° भः प्रतीकारस्य—श० ३।

अनालंब (वि०) [न० त०] कुटिल, बेईमान—दम् 1 कुटिलता, कपट 2 रोग।

अनालंब (वि०) [स्त्री०-बी] [न०त०] असामयिक—वा वह कन्या जो अभी तक रजस्वला न हुई हो।

अनार्य (वि०) [न० त०] अप्रतिष्ठित, नीच, अधम —र्यः 1 जो आर्य न हो, 2 वह देश जहाँ आर्य न हों, 3 शूद्र 4 म्लेच्छ 5 कामीना।

अनार्यकम् [अनार्य देशे भवम् -अनार्य+क] अगर की लकड़ी।

अनार्य (वि०) [न० त०] 1 जो ऋषियों से सम्बन्ध न रखता हो, अवैदिक -संबद्धो शाकल्पस्येतौ अनार्यो—पा० १।१।१६, (=अवैदिके—सिद्धा०) 2 जो ऋषिप्रोक्त न हो।

अनालंब (वि०) [न० ब०] असहाय, अवलंबहीन —बः अवलंब का अभाव, नैराश्य, —श्री शिव की वीणा।

अनालंबु (भू) का [न० त०] रजस्वला स्त्री।

अनावर्तिन् (वि०) [न० त०] फिर न होने वाला, फिर न लौटने वाला।

अनाविद्ध (वि०) [न० त०] न बिंधा हुआ, जिसमें छिद्र न किया गया हो।

अनावृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 फिर न लौटना 2 फिर जन्म न होना, मोक्ष।

अनावृष्टिः (स्त्री०) [न० त०] सूखा पड़ना, 'ईति' का एक भेद।

अनाश्रमिन् (पुं०) [न० त०] जो जीवन के चार आश्रमों में से किसी को न मानता हो, न किसी से सम्बन्ध रखता हो। अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु क्षणमेकमपि द्विजः—स्मृ०।

अनाश्रव (वि०) [नञ्+आ+श्रु+अच्] जो किसी की न सुने, ढीठ, किसी की बात पर कान न दे—मिथजामनाश्रवः रघु० १९।४९।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनाश्वस् (वि०) [नञ्+अश्+क्वसु नि०] जिसने भोजन न किया हो, उपवास रखने वाला !

अनास्था [न० त०] उदासीनता, तटस्थता, आस्था का अभाव—अनास्था बाह्यवस्तुषु—कु० ६।६३, पिङ्गेष्वनास्था खलु भौतिकेषु—रघु० २।५७, स्त्री पुमानित्यनास्थैषा वृत्तं हि महिलं सताम् —कु० ६।१२, २ श्रद्धा या विश्वास का अभाव, अनादर।

अनाहत (वि०) [न० त०] 1 आघातरहित, 2 कोरा या नया।

अनाहार (वि०) [प० ब०] बिना भोजन के रहने वाला, उपवास करने वाला —रः [न० त०] भोजन न करना, उपवास रखना।

अनाहुतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 होम का न होना, कोई होम जो होम कहलाने के भी योग्य न हो 2 एक अनुचित आहुति।

अनाहूत (वि०) [न० त०] न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित। सम०—उपजल्पिन् बिना बुलाया बक्ता, —उपविष्ट (वि०) अनिमंत्रित अभ्यागत के रूप में बैठा हुआ।

अनिकेत (वि०) [न० ब०] गृहहीन, आवारागर्द, जिसका कोई नियत वासस्थान न हो (जैसे संन्यासी)।

अनिगीर्ण (वि०) [न० त०] 1 न निगला हुआ 2 (सा० शा० में) जो गुप्त या छिपा हुआ न हो, प्रस्तुत, व्यक्त।

अनिच्छ-लुक्क } (वि०) [नास्ति इच्छा यस्य न० ब०,
अनिच्छु-लुक्क } नञ्+इच्छुक, नञ्+इष्+शतृ न०
अनिच्छत् } त०] न चाहता हुआ, इच्छारहित, बिना इच्छा के।

अनित्य (वि०) [न० त०] 1 जो नित्य न हो, सदा रहने वाला न हो, क्षणभंगुर, अशाश्वत, नश्वर 2 क्षणस्थायी आकस्मिक, जो नियमतः अनिवार्य न हो, विशेष, 3 असाधारण, अनियमित, 4 अस्थिर, चंचल, ५ अनिश्चित, संदिग्ध—विजयस्य ह्यनित्यत्वात्—पंच० ३। २२, —त्यम् (क्रि० वि०) कदाचित्, अकस्मात्। सम० —कर्मन्, —क्रिया आकस्मिक कार्य जैसा कि किसी विशेष निमित्त से किया जाने वाला यज्ञ, ऐच्छिक या सामयिक अनुष्ठान,—दत्तः, —दत्तकः, —दत्रिमः, माता पिता के द्वारा अस्थायी रूप से किसी को दिया गया पुत्र,—भावः क्षणभंगुरता, क्षणभंगुर स्थिति —समासः वह समास जो प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य न हो (जिसका भाव अलग-अलग विशिष्ट पदों द्वारा भी समान रूप से प्रकट किया जाय)।

अनिद्र (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागने वाला, (आलं०) जागरूक।

अनिन्द्रियम् [न० त०] 1 तर्क 2 जो इन्द्रिय का विषय न हो, मन।

अनिभृत (वि०) [न० त०] 1 सार्वजनिक, प्रकाशित, जो छिपा न हो, 2 धृष्ट, साहसी 3 अस्थिर, अदृढ़। दे० 'निभृत' भी।

अनिमकः [अन्+इमन्—अनिमः=जीवनं तेन कायते प्रकाशते के+क] 1 मेंढक 2 कोयला 3 मधुमक्खी।

अनिमित्त (वि०) [न० ब०] निष्कारण, निराधार, आकस्मिक,—आलक्ष्यदंत मुकुलाननिमित्तहासैः—श० ७।१७, —लभ् 1 पर्याप्त कारण का अभाव 2 अपशकुन, बुरा शकुन—समानिमित्तानि हि खेदयंति—मृच्छ० १०,—(क्रि० वि०) °तः—अकारण, बिना हेतु के। सम० —निराकिया अपशकुनों का निराकरण।

अनिमि (मे) ष (वि०) [न० ब०] टकटकी लगाये एक स्थान पर जमा रहने वाला, बिना आँख झपके—शतैस्तमक्ष्णामनिमेषवृत्तिभिः—रघु० ३।४३, —षः 1 देवता 2 मछली 3 विष्णु। सम०—दृष्टि,—लोचन (वि०) टकटकी लगा कर या स्थिर दृष्टि से देखने वाला।

अनियत (वि०) [न० त०] 1 अनियंत्रित 2 अनिश्चित, संदिग्ध, अनियमित (रूप भी) °वेलम् आहारोऽश्यते —श० २, 3 कारणरहित, आकस्मिक 4 नश्वर। सम०—अंक: अनिश्चित अंक (गणित में),—आत्मन् (वि०) जिसका मन अपने वश में न हो,—पुंश्चली दुश्चरणशील स्त्री, व्यभिचारिणी,—वृत्ति (वि०) 1 ईर्षा काम करने वाला, (शब्द) जिसका प्रयोग निश्चित न हो, जिसकी आय नियत न हो।

अनियंत्रण (वि०) [न० ब०] असंयत, अनियंत्रित, स्वतंत्र °अनुयोगो नाम तपस्विजनः—श० १।

अनियमः [न० त०] 1 नियम का अभाव; नियंत्रण; अनियियम या निश्चित क्रम का अभाव, निदेश या व्यवस्थित नियम का अभाव—पंचमे लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः, षष्ठे पादे गुरुज्ञेयं शेषेष्वनियमो मतः। छं० मं० 2 अनिश्चितता, निश्चयाभाव, संदेह 3 अनुचित आचरण।

अनियुक्त (वि०) [न० त०] 1 स्पष्ट रूप से न कहा हुआ 2 स्पष्ट रूप से व्याख्या न किया हुआ, जिसकी परिभाषा स्पष्ट न दी गई हो, असंपृक्त निर्वचन सहित।

अनिरुद्ध (वि०) [न० त०] बिना रोकटोक वाला, स्वतंत्र, अनियंत्रित, स्वच्छंद, उच्छृंखल, उद्दाम,—द्धः 1 गुप्तचर 2 प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। सम०—पथम् 1 ऐसा मार्ग जहाँ कोई रोक न हो, 2 आकाश, अन्तरिक्ष,—भाविनी अनिरुद्ध की पत्नी उषा।

अनिर्णयः [न० त०] अनिश्चितता, निर्णय का अभाव।

अनिर्दशाह } (वि०) [न निर्गतानि दशाहानि यस्य] बच्चे
अनिर्दशाह } के जन्म या मरण के फलस्वरूप अशौच के दस दिन जिसके न बीते हों।

अनिर्देशः [न० त०] निश्चित नियम या निदेश का अभाव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनिर्वेद्य (वि०) [न० त०] अपरिभाषणीय, अवर्णनीय —र्यं परब्रह्म की उपाधि।

अनिर्धारित (वि०) [न० त०] जिसका कोई निर्णय या निश्चय न हुआ हो।

अनिर्वचनीय (वि०) [न० त०] 1 कहने के अयोग्य, अवर्णनीय 2 वर्णन करने के अयोग्य—श्चम् (वेदान्त में) 1 माया, भ्रम, अज्ञान, 2 संसार।

अनिर्वाण (वि०) [न० ब०] अनधुला, जिसने अभी स्नान नहीं किया।

अनिर्वेदः [न० त०] अनवसाद, विषाद या नैराश्य का अभाव, स्वावलंबन, उत्साह।

अनिर्वृत्त (वि०) [न० त०] खिन्न, अशान्त, दुःखी।

अनिर्वृतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 बेचैनी, विकलता 2 निर्धनता—अनिर्वृतिशाचरी सम गृहांतराल गता—उद्भट।

अनिलः [अन् + इलच्] 1 वायु 2 वायुदेवता 3 उपदेवता, जो संख्या में ४९ हैं तथा वायु की श्रेणी में आते हैं 4 शरीर में रहने वाली वायु—त्रिदोषों में से एक—वात 5 गठिया या और कोई रोग जो वातप्रकोप के कारण उत्पन्न माना जाता है। सम०—अयनम् वायु का मार्ग,—अशन, —आशिन् (वि०) वायुभक्षी, उपवास करने वाला (पुं०—न्) साँप—आत्मजः वायु का पुत्र, हनुमान् और भीम की उपाधि,—आत्मयः 1 वातरोग 2 गठिया,—सखः अग्नि (वायु का मित्र), इसी प्रकार °बंधुः।

अनिलोद्धित (वि०) [न० त०] जो सुविचारित न हो, सुनियोजित न हो—°कार्यस्य वाग्जाल वाग्मिनो वृथा—शि० २।२७।

अनिशम् (अव्य०) [न० ब०] लगातार, निरन्तर—अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन्नभिमतो मे—श० ३।४, भामि० २।१६२।

अनिष्ट (वि०) [न० त०] 1 न चाहा हुआ, जिसकी इच्छा न हो, अननुकूल 2 अनर्थ 3 बुरा, दुर्भाग्यपूर्ण, अमंगलसूचक 4 यज्ञ द्वारा असम्मानित, —ष्टम् 1 बुराई, दुर्भाग्य, विपत्ति, 2 असुविधा, अहित। सम०—आपत्तिः (स्त्री०)—आपादनम् अवांछित पदार्थ का प्राप्त करना, अवांछित घटना—ग्रहः बुरा या हानिकारक ग्रह, —प्रसंगः 1 अनीप्सित घटना 2 सदोष पदार्थ, तर्क या नियम से संबंध, —फलम् बुरा परिणाम —शंका बुराई की आशंका, —हेतुः अपशकुन।

अनिष्पन्नम् (अव्य०) [न० त०] इस प्रकार जिससे कि तीर का धनुयुक्त पक्ष दूसरी ओर न निकले—अर्थात् बहुत बलपूर्वक नहीं।

अनिस्तीर्ण (वि०) 1 जो पार न किया गया हो, जिससे छुटकारा न मिला हो 2 जिसका उत्तर न दिया गया हो, जिसका निराकरण न किया गया हो (दोषारोपण की भांति)।

अनीकः-कम् [अन् + ईकन] 1 सेना, सैन्यपंक्ति, सैनिक दस्ता, दल, दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकम्—भग० १।२; 2 समूह, वर्ग 3 संग्राम, लड़ाई, युद्ध 4 पंक्ति, श्रेणी, चलती हुई सेना की टुकड़ी 5 अग्रभाग, प्रधान, मुख्य। सम०—स्थः 1 योद्धा 2 सिपाही (सुसज्जित), पहरेदार, 3 महावत या हाथी का प्रशिक्षक 4 युद्धभेरी या बिगुल 5 संकेतक, चिह्न, संकेत।

अनीकिनी [अनीकानां संघः—अनीक+इनि+ङीप्] 1 सेना, सैन्यदल, सैन्यश्रेणी 2 तीन सेनाएँ या पूर्ण सेना (अक्षौहिणी) का दशम भाग।

अनील (वि०) [न० त०] जो नीला न हो, श्वेत,—वाजिन् (पुं०) श्वेत घोड़े वाला, अर्जुन।

अनीश (वि०) [न० त०] 1 प्रभुत्व, सर्वोच्च 2 स्वामी या नियंता न होना (संबं० के साथ) गात्राणामनीशोऽस्मि संवृत्तः—श० २, —शः विष्णु।

अनीश्वर (वि०) [न० त०] 1 जिसके ऊपर कोई न हो, अनियंत्रित 2 असमर्थ—शयिता सविधेष्वनीश्वरा सफली कर्तुमहो मनोरथान्—भामि० २।१८२; 3 जो ईश्वर से संबंध न रक्खे 4 नास्तिक। सम०—वादः नास्तिक वाद, ईश्वर को सर्वोच्च शासक न मानने वाला, नास्तिक।

अनीह (वि०) [न० त०] उदासीन, इच्छारहित,—हा अवहेलना, उदासीनता।

अनु (अव्य०) [अव्ययीभाव समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है, या क्रिया अथवा कृदन्त शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, अथवा स्वतंत्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में कर्मकारक के साथ प्रयुक्त होता है और कर्म प्रवचनीय माना जाता है] 1 पश्चात्, पीछे, सर्वं नारदमनु उपविशति—विक्रम० ५; क्रमेण सुप्तानु संविवेश सुप्तोत्थितां प्रातरनुदतिष्ठत्—रघु० २।२४; अनुविष्णु=विष्णोः पश्चात् सिद्धा० 2 साथ-साथ, पास-पास; जलानि सा तीरनिखातयूपा बहत्ययोध्यामनुराजधानीम्—रघु० १३।६१; अनुगंगं वाराणसी=गंगा के साथ-साथ स्थित या बसी हुई; 3 के बाद, फलस्वरूप, संकेत किया जाता हुआ—जपमनु प्रावर्तत 4 के साथ, साथ ही, संबद्ध—नदीमनु अवसिता सेना—सिद्धा० 5 घटिया या निम्न दर्जे का; अनुहरि सुराः=हरेर्हीनाः; 6 किसी विशेष स्थिति या संबंधमें—भक्तो विष्णुमनु सिद्धा० 7 भाग, हिस्सा, या साझा रखने वाला—लक्ष्मीर्हरिमनु, 8 पुनरावृत्ति; अनुदिवसम्—दिन-ब-दिन, प्रति दिन 9 की ओर, दिशा में, के निकट, पर,—अनुवनमग्निर्गतः—सिद्धा०—°नदि—दि शि० ७।२४; नदी के निकट 10 क्रमानुसार, के अनुसार, अनुक्रमम्, नियमित क्रम में, अनुज्येष्ठम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(छोटे बड़े की दृष्टि से) 11 की भांति, के अनुकरण में—सर्व भ्रातृन् ते प्रियाविरहजा त्वं तु व्यथां मानुभूः—विक्रम० ४।२५; इसी प्रकार अनुगर्ज=बाद में गरजना, गर्जने की नकल करना, 12 अनुरूप=तथैव सोऽभूदन्धर्यो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२, (अनुशतोऽस्य)।

अनुक (वि०) [अनु+कन्] 1 लालची, लोलुप 2 कामुक, विलासी।

अनुकथनम् [अनु+कथ्+ल्युट्] 1 बाद का कथन 2 संबंध, प्रवचन, वार्तालाप।

अनुकनीयस् (वि०) [अनु+अल्प (युवन्)+ईयसुन् कनादेशः] छोटे से बाद का, सबसे छोटा।

अनुकंपक (वि०) [अनु+कंप्+ण्वुल्] दयालु, करुणा करने वाला।

अनुकंपनम् [अनु+कंप+ल्युट्] करुणा, तरस, दयालुता, सहानुभूति।

अनुकंपा (स्त्री०) [अनु+कंप्+अच्+टाप्] करुणा, दया। **कंप्य** (वि०) [अनुकंप्+यत्] दयनीय, सहानुभूति का पात्र;—कि तेन येनासि समानुकंप्या—रघु० १४।७४; कु० ३।७६-प्यः हरकारा, द्रुतगामी दूत।

अनुकरणम्—**लीः** (स्त्री०) [अनुकृ+ल्युट्, क्तिन् वा] 1 नकल करना, प्रतिलिपि, अनुरूपता, समानता; **लङ्कानुकरणम्**=एक अलंकार।

अनुकर्षः—**कर्षणम्** [अनु+कृष्+अच्, ल्युट् वा] 1 खिंचाव, आकर्षण, 2 (ब्या०) पूर्व नियम में आगे वाले नियम का प्रयोग 3 गाड़ी का तला या धुरे का लट्ठा 4 कर्तव्य का विलंब से पालन, अनुकर्षण भी।

अनुकल्पः [अनु+कल्प्+अच्] गुरु का गौण अनुदेश जो आदेश्यकता होने पर उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब कि मुख्य निदेश का प्रयोग संभव नहीं—प्रभुः प्रथम कल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३०, ३।१४७।

अनुकामीन (वि०) [अनुकाम+ख] अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला;—अनुकामीनतां त्यज—भट्टि०।

अनुकारः=दे० अनुकरणम्।

अनुकाल (वि०) समयोचित, सामयिक।

अनुकीर्तनम् [अनु+कृत्+ल्युट्] कथन, प्रकाशन।

अनुकूल (वि०) [अनु+कूल्+अच्] 1 मनोवांछित, अभिमत, जैसे कि वायु, भाग्य आदि 2 मित्रतापूर्ण कृपापूर्ण 3 अनुरूप,—लः निष्ठावान तथा कृपालु पति, (एकरतिः—सा० द० या, एकनिरतः एकस्यामेव नायिकायां आसक्तः) नायक का एक भेद—लम् अनुग्रह, कृपा—कारीषमनुकूलतामाचरमि वेत्—काव्य० ९।

अनुकूलयति (ना० धा०) अनुकूल या मुआफिक होना, अनुरूप होना।

अनुकरूक्ष (वि०) [प्रा० स०] दंतुरित, 'दांतेदार' जैसा कि आरा।

अनुक्रमः [अनु+क्रम्+अच्] 1 उत्तराधिकार, क्रम, तांता, क्रमस्थापन, क्रमबद्धता, उचितक्रम—प्रचक्रमे वक्तुमनुक्रमज्ञता—रघु० ६।७०, त्वयाऽनुजं सर्वमनुक्रमेण—१४।६०; 2 विषय सूची, विषयतालिका।

अनुक्रमणम् [अनु+क्रम+ल्युट्] 1. क्रम पूर्वक आगे बढ़ना, 2 अनुगमन—णी, —णिका (स्त्री०) विषय सूची विषयतालिका जो किसी ग्रन्थ के क्रमबद्ध विषयों का दिग्दर्शन कराय।

अनुक्रिया—दे० अनुकरणम्।

अनुक्रोशः [अनु+क्रुश्+घञ्] दया, करुणा, दयालुता (अधि० के साथ) भगवत्कामदेव न ते मय्यनुक्रोशः—रा० ३, मेघ० ११५।

अनुक्षणम् (अव्य०) प्रतिक्षण, लगातार, बारबार।

अनुक्षत्तृ (पु०—त्री) [प्रा० स०] द्वारपाल या सारथि का दहलुआ।

अनुक्षेत्रम् [प्रा० स०] उड़ीसा के कुछ मन्दिरों में पुजारियों को दी जाने वाली वृत्ति।

अनुक्ष्यातिः (स्त्री०) [अनु+ख्या+क्तिन्] 1 पता लगाना; 2 विवरण देना, प्रकट करना।

अनुग (वि०) [अनु+गम्+ड] (समा०) पीछे चलने वाला, फिसान करने वाला,—गः=अनुचर, आज्ञाकारी सेवक, साथी तद्भूतनाथानुगः—रघु० २।५८, ९।१२।

अनुगतिः (स्त्री०) [अनु+गम्+क्तिन्] पीछे चलना—गतानुगतिको लोकः—पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला—दे० 'गत' के अन्तर्गत।

अनुगमः, **मनम्** [अनु+गम्+अप् ल्युट् वा] 1 अनुसरण 2 सहमरण, अपने स्वर्गीय पति की चिता पर विधवा स्त्री का सती होना 3 नकल करना, समीपतर आना 4 समरूपता, अनुरूपता।

अनुगर्जित (वि०) [अनु+गर्ज्+क्त] दहाड़ा हुआ, —तम् दहाड़।

अनुगवीनः [अनु+गो+ख] गोपाल, ग्वाला।

अनुगामिन् (पु०) [अनु+गम्+णिच्+णिनि] अनुयायी, सहचर।

अनुगुण (वि०) [ब० स०] समान गुण रखने वाला, उसी स्वभाव का, अनुकूल या रुचिकर, उपयुक्त, अनुरूप, समानशील; —णः (णा) उत्कण्ठितस्य हृदयानुगुणा वयस्या—मृच्छ० ३।३ मन को सुखकर, अभिमत, मनोनुकूल / ता० वा० के अनुसार यहाँ णा से अभिप्राय 'तंत्रीयुक्त वीणा' से है)—क्षम् (क्रि० वि०) 1. अनुकूल रूप से या के समरूप 2 अभिमतिपूर्वक या समरूपता के साथ (समा० में) 3 स्वभावतः।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुग्रहः—हणम् [अनु+ग्रह्+अप्, ल्युट् वा] 1 प्रसाद, कृपा, उपकार, आभार—निग्रहानुग्रहकर्ता—पंच० १ पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्—रघु० २।३५; 2 स्वीकृति 3 सेना के पृष्ठभाग की रक्षा करने वाला दल।

अनुघासकः [प्रा० स०] कौर, निवाला।

अनुचरः [अनु+चर्+ट] 1 सहचर, अनुयायी, नौकर, सेवक—तेनानुचरेण धेनोः—रघु० २।४, २६।५२; —रा,—री (स्त्री०) दासी, सेविका।

अनुचारकः [अनु+चर्+ण्वुल्] अनुचर, सेवक,—रिका दासी सेविका।

अनुचित (वि०) [न० त०] 1 गलत, अनुपयुक्त 2 निराला, अयोग्य।

अनुचिन्ता, चिन्तनम् [अनु+चित्+अ+टाप्, ल्युट् वा] 1 याद करना, सोचना, मनन करना 2 प्रत्यास्मरण, फिर से ध्यान में लाना, 3 अनवरत सोच, चिन्ता।

अनुच्छादः [अनु+छद्+णिच्+घञ्] साड़ी या धोती का वह छोर जो कंधे के ऊपर होकर छाती पर लटकता रहता है।

अनुच्छित्तिः,(स्त्री०)—च्छेदः[अनु+छिद्+क्तिन्, घञ्, वा] कट कर अलग न होना, नाश न होना, अनश्वरता।

अनुज—जात (वि०) [अनु+जन्+ड, क्त वा] बाद में उत्पन्न, पीछे जन्मा हुआ, छोटा भाई—असौ कुमार स्तमजोऽनुजातः रघु० ६।७८; —जः,—जातः छोटा भाई, —जा,—जाता छोटी बहन।

अनुजन्मन् (पुं०) [ब० स०] छोटा भाई—जनयाय तदानुजन्मनाम्—कि० २।१७।

अनुजीविन् (वि०) [अनुजीव+णिनि] आश्रित परोपजीवी—(पुं०—वी) परावलबी, सेवक, अनुचर-अवंचनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः—कि० १।४, १०।

अनुज्ञा—ज्ञानम् [अनु+ज्ञा+अङ्, ल्युट् वा] 1 अनुमति, सहमति, स्वीकृति 2 जाने की अनुमति या छुट्टी 3 बहाना 4 आज्ञा, आदेश।

अनुज्ञापकः [अनु+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] आज्ञा देने वाला, हुक्म देनेवाला।

अनुज्ञापनम्—ज्ञप्तिः (स्त्री०) [अनु+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, क्तिन् वा] 1 अधिकृत बनाना 2 आज्ञा या आदेश जारी करना।

अनुज्येष्ठम् (अव्य०) ज्येष्ठता की दृष्टि के अनुसार।

अनुतर्षः [अनु+तृष्+घञ्] 1 प्यास—सोपचारमुपशातविचारं सानुतर्षमनुतर्षदेव—शि० १०।२ (प्यास और सुरा), 2 कामना, इच्छा 3 जल पीने का पात्र 4 मद्य।

अनुतापः [अनु+तप्+घञ्] पश्चात्ताप, संताप—जातानुतापेव सा—विक्रम० ४।३८ संताप से पीड़ित।

अनुतर्षणम्—अनुतर्षः 3 और 4।

अनुतिलम् (अव्य० स०) दाना दाना करके अर्थात् कण कण करके, अत्यन्त सूक्ष्मता से।

अनुत्क (वि०) [न० त०] जो अधिक उत्सुक न हो, जो पश्चात्तापकारी या खेदयुक्त न हो।

अनुत्तम (वि०) [न० त०] 1 जिससे अच्छा कोई और न हो, जिससे बढ़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया, प्रमुख रूप से सर्वोपरि—सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्—हि० प्र० ४; —कांक्षन् गतिमुत्तमाम्—मनु० २।२४२; 2 (व्या० में) जो उत्तम पुरुष में प्रयुक्त न किया जाय।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] 1 प्रधान, मुख्य 2 बढ़िया, सर्वोत्तम 3 बिना उत्तर का, मूक, उत्तर देने में असमर्थ —भवत्यवज्ञा च भवत्यनुत्तरात्—नै० 4 निश्चित, स्थिर 5 निम्न, घटिया, खोटा, कमीना 6 दक्षिणी, —रम् उत्तर का अभाव, (टालमटूल या आनाकानी का उत्तर अनुत्तर समझा जाता है) —रा दक्षिण दिशा।

अनुत्तरंग (वि०) [न० ब०] स्थिर, अनुद्वेलित, अविक्षुब्ध —अपामिवाधारमनुत्तरंगम्—कु० ३।४८।

अनुत्थानम् [न० त०] प्रयत्न या सरगर्मी का अभाव।

अनुत्सूत्र (वि०) [न० त०] पाणिनि या नैतिकता के सूत्रों से अविरुद्ध, अविश्रृंखल, नियमित—°पदन्यासासदृनिः सन्निबंधना—शि० २।११२।

अनुत्सेकः [न० त०] घमंड या अहंकार का अभाव °कोलक्ष्म्यां—भग० २।६३, शालीनता।

अनुत्सेकिन् (वि०) [अनुत्सेक+णिनि] जो घमंड के कारण फूला हुआ न हो—भाग्येषु °नी भव—रा० ४। १७।

अनुदर (वि०) [न० ब०] पतली कमर वाला, पतला, कृश, क्षीण (दे० 'अ')

अनुदर्शनम् [अनु+दृश्+ल्युट्] निरीक्षण।

अनुदात्त (वि०) [न० त०] गुरुस्वर, जो उदात्तस्वर की भाँति उच्च स्वर से उच्चरित न होता हो, स्वराघात हीन—त्तः गुरुस्वर।

अनुदार (वि०) अनु [न० त०] 1 जो उदार (दानशील) न हो, कंजूस, अनुत्तम, अभद्र 2 जो अपनी पत्नी के अनुकूल चलने वाला हो या वह जिसकी पत्नी पति के अनुकूल चलने वाली हो—यस्मिन्प्रसीदसि पुनः स भवत्यदारोऽनुदारश्च—काव्य० ४; ('अदाता' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 3 उपयुक्त और योग्य पत्नी वाला।

अनुदिनम्—दिवसम् (अव्य० स०) प्रतिदिन, दिन-ब-दिन।

अनुदेशः [अनु+दिश्+घञ्] 1 पीछे संकेत करना, नियम या निर्देश जो पीछे किसी पूर्व नियम की ओर संकेत करे—यथासंख्यमनुदेशः समानाम्—पा० १।३।१०; 2 निर्देश, आदेश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुद्धत (वि०) [न० त०] जो अहंकारी या गर्वयुक्त न हो—ैताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः—शा० ५।१२ ।

अनुद्भट (वि०) [न० त०] 1 जो साहसी न हो, विनीत, सौम्य 2 जो उन्नत या बहुत ऊँचा न हो ।

अनुद्यत (वि०) [अनु+उद्+यत+क्त] 1 अनुगत, पीछा किया गया (कई बार कर्तृ० में प्रयुक्त) 2 भेजा हुआ या लौटाया हुआ (जैसे कि ध्वनि)—सम् संगीत में काल की माप=आघा द्रुत ।

अनुद्वाहः [न० त०] विवाह न होना, ब्रह्मचर्य पालन ।

अनुधावनम् [अनु+धाव्+ल्युट्] 1 पीछे जाना या भागना, पीछा करना, अनुसरण करना—तुरग° कंडितसंभ्रमैः—शि० २; 2 किसी पदार्थ का अत्यंत पीछा करना, अनुसंधान, गवेषणा 3 किसी स्त्री को पाने का असफल प्रयत्न करना 4 सफाई, पवित्रीकरण ।

अनुध्यानम् [अनु+ध्या+ल्युट्] 1 विचार, मनन, धार्मिक चिंतन 2 सोचविचार, ध्यान,—या नः प्रीतिविरूपाक्ष त्वदनुध्यानसंभवा—कु० ६।२१; 3 हितचिन्तन, स्निग्धचिन्तन ।

अनुनयः [अनु+नी+अच्] 1 मनावन, प्रार्थना प्रकृतिरूक्ष स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति—श० ४; 2 शालीनता, शिष्टता, सादरतायुक्त आचरण, 3 नम्रनिवेदन, मिन्नत, प्रार्थना, °आमंत्रणम्—विनीत संबोधन 4 अनुशासन, प्रशिक्षण, आचरण के अधिनियम ।

अनुनादः [अनु+नद्+घञ्] शब्द, कोलाहल, गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुनामक (वि०) [अनु+नी+ण्वुल्] सुशील, विनम्र, विनीत ।

अनुनायिक (वि०) [अनु+नय+ठक्] मैत्रीपूर्ण,—का नाटक की मुख्य पात्र नायिका की अनुचरी जैसे कि सखी, धात्री या दासी आदि;—सखी प्रव्रजिता दासी प्रेष्या धात्रेयिका तथा । अन्याश्च शिल्पकारिण्यो विज्ञेया ह्यनुनायिकाः ।

अनुनासिक (वि०) [अनु+नासा+ठ] 1 नासिक्य, नासिका से उच्चरित,—कम् गुनगुनाना । सम०—आदिः अनुनासिक वर्ण (ञ ञ् ण न् म्) से आरंभ होने वाला संयुक्त व्यंजन ।

अनुनिर्देशः [अनु+निर्+दिश्+घञ्] पूर्ववर्ती अनुक्रम के अनुसार वर्णन,—भूयसामुपदिष्टानां क्रियाणामयं कर्मणाम् । क्रमशो योऽनुनिर्देशो यथासंख्यं तदुच्यते । सा० द० ।

अनुनीतिः=नु० अनुनयः

अनुपघातः [न० त०] उपघात या क्षति का अभाव, °—अजित बिना किसी क्षति के प्राप्त किया ।

अनुपतनम्—तातः [अनु+पत्+ल्युट्, घञ् वा] 1 ऊपर पड़ना, एक के बाद दूसरे का गिरना 2 पीछा करना, अनुसरण 3 भाग 4 वैराशिक—तम् (अव्य०) [पत्+णमुल्] क्रमिक अनुसरण, अनुगमन;—लतानुपातं कुसुमान्यगृह्णात्—भट्टि० २।११; (लतामनुपात्य—एक लता से दूसरी लता पर जाकर, या लताओं को झुका कर) ।

अनुपथ (वि०) [प्रा० स०] मार्ग का अनुसरण करने वाला,—थम् (क्रि० वि०) सडक के साथ साथ ।

अनुपद (वि०) [प्रा० स०] नितान्त कदम कदम अनुसरण करता हुआ,—दम् सन्निलिल गायन, गीत का टेक, (अव्य०) 1 कदम के साथ-साथ, पैरों के निकट; 2 कदम कदम करके, प्रति पद; 3 शब्दशः 4 एड़ियों पर, बिल्कुल पीछे, तुरन्त बाद—गच्छतां पुरो भवन्तौ, अहमप्यनुपदमागत एव—श० ३ (प्रायः संब० के साथ, या समास में इसी अर्थ में); (तौ) आश्रिधामनुपदं समस्पृशत् पाणिना—रघु० ११।३१;—अमोघाः प्रतिगृह्णंतावर्घ्यानुपदमाशिषः—१।४४ ।

अनुपदवी [प्रा० स०] मार्ग, सड़क ।

अनुपदिन् (वि०) [अनुपद+णिनि] अनुसरण करनेवाला ढूंढने वाला अर्थात् अन्वेषक, या पृच्छक-अनुपदमन्वेष्टा गवामनुपदी सिद्धा० ।

अनुपदीना [अनुपद+स्त्री+टाप्] जूता, बूट, ऊँची एड़ियों का जूता, या पम्प्स ।

अनुपधः [न० ब०] उपधा रहित, ऐसा अक्षर जिसके पूर्व कोई दूसरा अक्षर न हो ।

अनुपधि (वि०) [न० ब०] छल रहित, कपट रहित—रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते—उत्त० २।२ ।

अनुपन्यासः [न० त०] 1 वर्णन न करना, बयान न देना 2 अनिश्चितता, सन्देह, प्रमाणाभाव ।

अनुपपत्तिः (स्त्री०) [न० अ०] 1 असफलता, असिद्धि,—लक्षणा शक्यसंबंधस्तात्पर्यानुपपत्तितः—भाषा० ८२, तात्पर्य° उद्दिष्ट या किसी संबद्ध अर्थ को प्राप्त करने में असफलता; 2 अव्यावहारिकता, व्यावहारिक न होना 3 अकूरीयुक्ति, तर्कयुक्त कारण का अभाव ।

अनुपम (वि०) [न० ब०] अतुलनीय, बेजोड़, सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ—मा दक्षिण पश्चिम प्रदेश की हथिनी (कुमुद की सखी) ।

अनुपमित (वि०) [नञ्+उप+मा+क्त, अनुपमा+यच्] बेजोड़, अतुलनीय ।

अनुपलब्धिः (स्त्री०) [न० त०] पहचान न होना, प्रत्यक्ष न होना, मीमांसकों की दृष्टि में ज्ञान का एक साधन, परन्तु नैयायिकों की दृष्टि में नहीं ।

अनुपलंभः [नञ्+उप+लभ्+णिच्+घञ्] बोध का अभाव, अप्रत्यक्ष होना ।

अनुपवीतिन् [न० त०] अपने वर्ण के अनुसार यज्ञोपवीत धारण न करने वाला ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुपशयः [न० त०] रोग को उभाड़ने या भड़काने वाली परिस्थिति।

अनुपसंहारिन् [न० त०] न्यायशास्त्र में हेत्वाभास का एक भेद जिसके अन्तर्गत पक्षसंबंधी सभी ज्ञात बातें आ जाती हैं, और दृष्टान्त द्वारा, चाहे वह विधेयात्मक हो या निषेधात्मक, कार्यकारण-सिद्धांत के सामान्य नियम का समर्थन नहीं हो पाता—यथा सर्व नित्यं प्रमेयत्वात्।

अनुपसर्गः [न० त०] 1 उपसर्ग की शक्ति से विरहित शब्द [निपात आदि] 2 (न० ब०) जिसमें कोई उपसर्ग न हो।

अनुपस्थानम् [अनुप+स्था+ल्युट्] अभाव, निकट न होना।

अनुपस्थित [नञ्+उप+स्था+क्त] जो उपस्थित नहीं, अप्रस्तुत।

अनुपस्थितिः (स्त्री०) [अनुप+स्था+क्तिन्] 1 गैर-हाजरी 2 याद करने की अयोग्यता।

अनुपहत (वि०) [न० त०] 1 जिसे चोट नहीं लगी 2 अप्रयुक्त, कोरा, नया (कपड़ा)।

अनुपाल्य (वि०) [न० ब०] जो स्पष्ट रूप से दिखलाई न दे या पहचाना न जा सके।

अनुपातः=तु० अनुपतनम्।

अनुपातकम् [अनु+पत्+णिच्+ण्वुल्] जघन्य पातक जैसे चोरी, हत्या, अभिचार आदि, विष्णुस्मृति में ऐसे ३५ तथा मनुस्मृति में ३० पातक गिनाये गये हैं।

अनुपानम् [अनु+पा+ल्युट्] दवा के साथ या पीछे पी जाने वाली वस्तु; औषधि लेने की मात्रा।

अनुपालनम् [अनु+पाल्+ल्युट्] प्ररक्षण, सुरक्षण, आज्ञा-पालन।

अनुपुत्रः [प्रा० स०] अनुयायी।

अनुपूर्व (वि०) [प्रा० स०] 1 नियमित, उपयुक्त मान रखने वाला, क्रमबद्ध—वृत्तानुपूर्व च न चातिदीर्घं—कु० १।३५ °केश जिसके बाल यथाक्रम हैं, °गात्र जिसके अंग सुगठित हैं, इसी प्रकार °दंष्ट्र, °नाभि, °पाणि 2 क्रमबद्ध सिलसिलेवार 1 सम०—ज (वि०) नियमित परम्परा में उत्पन्न,—वत्सा नियमित रूप से बच्छे देने वाली गाय।

अनुपूर्वशः, अनुपूर्वेण (क्रि० वि०) नियमित क्रम में, क्रमागत रीति से।

अनुपेत (वि०) [न० त०] 1 विरहित २ यज्ञोपवीत धारण न किये हुए।

अनुप्रज्ञानम् [अनु+प्र+ज्ञा+ल्युट्] पदचिह्नों का अनुसरण, टोह लगाना।

अनुप्रपातम्, प्रपातम्—[अव्य० स०] क्रमागत रीतिपूर्वक—गेहं °तम्-दम् आस्ते, गेहम् अनुप्रपातम्-दम् सिद्धा०।

अनुप्रयोगः [प्रा० स०] अतिरिक्त उपयोग, आवृत्ति।

अनुप्रवेशः [अनु+प्र+विश्+घञ्] 1 दाखला—रघु० ३।२२, १०।५१; 2 अनुकरण—अपने को दूसरे की इच्छा के अनुकूल ढालना।

अनुप्रश्नः [प्रा० स०] बाद में किया जाने वाला प्रश्न। (अध्यापक के पूर्व कथन से संबद्ध)।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+सञ्+क्तिन्] 1 प्रगाढ़ संबंध 2 शब्दों का अत्यधिक तर्क संगत सम्बन्ध।

अनुप्रसादनम् [अनु+प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] आराधन, संराधन।

अनुप्राप्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+आप्+क्तिन्] प्राप्त करना, पहुँचना।

अनुप्लवः [अनु+प्लु+अच्] अनुयायी, सेवक—सानुप्लवः प्रमुरपि क्षणदाचराणाम्—रघु० १३।७५।

अनुप्रासः [अनु+प्र+अस्+घञ्] एक समान ध्वनियों अक्षरों या वर्णों की पुनरावृत्ति—वर्णसाम्यमनुप्रासः—काव्य०; परिभाषा और उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ६३३–३८, और काव्य० ९वाँ उल्लास।

अनुबद्ध (वि०) [अनु+बंध्+क्त] 1 बँधा हुआ, जकड़ा हुआ; 2 यथा क्रम अनुसरण करने वाला, फल स्वरूप आने वाला 3 संबद्ध 4 अनवरत क्रियाशील, लगातार।

अनुबंधः [अनु+बंध्+घञ्] 1 बंधन, कसना, संबंध, आसक्ति, बंधान (शब्द० आलं) 2 अबाध परम्परा, सातत्य, श्रेणी, शृंखला—बाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबंधम्—श० ४।१४; दैव°, मत्सर°; सानुबंधाः कथं न स्युः संपदो मे निरापदः—रघु० १।६४; 3 अनुक्रम, फल (शुभ या अशुभ) 4 इरादा, योजना, प्रयोजन, कारण—अनुबंधं परिज्ञाय देश-कालौ च तत्त्वतः। सारापराधौ चालोक्य दण्डं दंडधरो पातयेत्—मनु० ८।१२६; 5 संबंध जोड़ने वाला, गौण 6 आरंभिक तर्क (वेदान्त के आवश्यक तत्त्व) 7 (व्या०) एक संकेतक अक्षर जो कि इस शब्द के स्वर या विभक्ति में कुछ विशेषता का द्योतक हो जिसके साथ वह जुड़ा हो—जैसे कि 'गम्' में 'ल' 8 बाधा, रुकावट 9 आरंभ, उपक्रम 10 मार्ग, अनुगमन।

अनुबंधनम् [अनु+बंध्+ल्युट्] संबंध, परम्परा, सिलसिला आदि।

अनुबंधिन् (वि०) [अनुबंध+इनि] [प्रायः समस्त पद के अन्त में] 1 संबद्ध, संसक्त, संयुक्त 2 क्रम, परिणामी, फलस्वरूप-दुःख दुःखानुबंधि-विक्रम०; ४ एक दुःख के बाद दूसरा दुःख या दुःख कभी अकेला नहीं आता 3 फलता फूलता हुआ, सम्पन्न, अबाध—ऊर्ध्वं गतं यस्य न चानुबंधि—रघु० ६।६७, अबाध या सर्व व्यापक।

अनुबंध्य (वि०) [अनु+बंध्+ण्यत्] 1 प्रधान, मुख्य; 2 मारे जाने के लिए (जैसे बैल)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुबलम् [प्रा० स०] पीछे स्थित सैन्यदल, मुख्य सेना की रक्षा के लिए पीछे आती हुई सहायक सेना।

अनुबोधः [अनु+बुध्+घञ्] 1 बाद का विचार, प्रत्यास्मरण, 2 कर्म पड़ी हुई सुगंध को पुनर्जीवित करना।

अनुबोधनम् [अनु+बुध्+ल्युट्] प्रत्यास्मरण, पुनःस्मरण।

अनुभवः [अनु+भू+अप्] 1 साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान, व्यक्तिगत निरीक्षण और प्रयोग से प्राप्त ज्ञान, मन के संस्कार जो स्मृतिजन्य न हों ज्ञान का एक भेद, दे० तर्क० ३४, (नैयायिक ज्ञान प्राप्ति के प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द नामक चार साधन मानते हैं; वेदान्ती और मीमांसक इनमें अर्थापत्ति और अनुपलब्धि नामक दो साधन और जोड़ देते हैं); 2 तजुर्बा—अनुभवं वचसा संक्षि लुम्पसि --नै० ४।१०५; 3 समझ 4 फल, परिणाम। सम०-सिद्ध (वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात।

अनुभावः [अनु--भू+णिच्+घञ्] 1 मर्यादा, व्यक्ति की मर्यादा या गौरव राजसी चमक दमक, वैभवशक्ति, बल, अधिकार, --(परिमेयपुरः सरौ)। अनुभाव, विशेषरूप सेनापरिवृत्ताविव--रघु० १।३७;--संभावनीयानुभावा अस्याकृतिः -- श० ७; २. (सा० शा० में) दृष्टि, संकेत आदि उपयुक्त लक्षणों द्वारा भावना का प्रकट करना,—भाव मनोगतं साक्षात् स्वगतं व्यंजयति ये तेऽनुभावा इति स्मृताः, यथा भ्रूभंगः कोपस्य व्यंजकः—दे० सा० द० १६२; 3 दृढ़ संकल्प विश्वास।

अनुभावक (वि०) [अनु+भू+णिच्+ण्वुल्] अनुभव कराने वाला, द्योतक।

अनुभावनम् [अनु+भू+णिच्+ल्युट्] संकेत और इंगितों द्वारा भावनाओं का द्योतक।

अनुभाषणम् [अनु+भाष्+ल्युट्] 1 कही हुई बात को खंडन के लिए फिर से कहना; 2 कही हुई बात की पुनरावृत्ति।

अनुभूतिः (स्त्री०) =नु० अनुभव।

अनुभोगः—[अनु+भुज्+घञ्] [उपभोग 2 की हुई सेवा के बदले मिलने वाली माफी जमीन।

अनुभ्रातृ (पुं०) [प्रा० स०] छोटा भाई।

अनुमत (वि०) [अनु+मन्+क्त] 1 सम्मत, अनुज्ञात, इजाजत दिया हुआ, स्वीकृत, °गमना--श० ४।१, जाने के लिए अनुरुद्ध 2 चाहा हुआ, प्रिय, --तः प्रेमी --तम् स्वीकृति, अनुमोदन, अनुज्ञप्ति।

अनुमतिः (स्त्री०) [अनु+मन्+क्तिन्] 1 अनुज्ञा, स्वीकृति, अनुमोदन 2 चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा। सम०—पत्रम् स्वीकृति सूचक पत्र या लेख।

अनुमननम् [अनु+मन्+ल्युट्] 1 स्वीकृति, रजामंदी 2 स्वतंत्रता।

अनुमंत्रणम् [अनु+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] मंत्रों द्वारा आवाहन या प्रतिष्ठा।

अनुमरणम् [अनु+मृ+ल्युट्] पीछे मरना—तन्मरणे चानुमरणं करिष्यामीति मे निश्चयः—हि० ३; विधवा का सती होना।

अनुमा [मा+अङ] अनुमिति, दिये हुए कारणों से अनुमान, दे० अनुमिति।

अनुमानम् [अनु+मा+ल्युट्] 1 अनुमिति के साधन द्वारा किसी निर्णय पर पहुँचना, दिये हुए कारणों से अनुमान लगाना, अनुमान, उपसंहार, न्याय शास्त्र के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार साधनों में से एक 2 अटकल, अन्दाजा 3 सादृश्य 4 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें प्रमाण निर्धारित वस्तु का भाव अनोखे ढंग से प्रकट किया जाता है— सा० द० ७११—यत्र पतत्यबलानां दृष्टिर्निशिता पतन्ति तत्र शराः; तच्चापरोपितशरो धावत्यासां पुरः स्मरो मन्ये ॥ दे० काव्य० १०;। सम०—क्षमः (स्त्री०) तर्कना, तर्क संगत अनुमान।

अनुमापकः (वि०) [स्त्री० —पिका] अनुमान कराने वाला, जो अनुमान करने का आधार बन सके।

अनुमासः [प्रा० स०] आगामी महीना; --सम् (अव्य०) प्रतिमास।

अनुमितिः (स्त्री०) [अनु+मा+क्तिन्] दिये हुए कारणों से किसी निर्णय पर पहुँचना, वह ज्ञान जो निगमन द्वारा या न्यायसंगत तर्क द्वारा प्राप्त हो।

अनुमेय (वि०) [अनु+मा+यत्] अनुमान के योग्य, अनुमान किया जाने वाला--फलानुमेयाः प्रारम्भाः—रघु० १।२०।

अनुमोदनम् [अनु+मुद्+ल्युट्] सहमति, समर्थन, स्वीकृति, सम्मति।

अनुयाजः [अनु+यज्+घञ्] यज्ञीय अनुष्ठान का एक अंग, गौण या पूरक यज्ञानुष्ठान, [प्रायः 'अनूयाजः' लिखा जाता है 'अनुयाग' भी]।

अनुयातृ (पुं०) [अनु+या+तृच्] अनुगामी।

अनुयात्रम्---त्रा [अनु+यातृ+अण् स्त्रियां टाप्] परिजन, अनुचरवर्ग, सेवा करना, अनुसरण।

अनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठन्] अनुचर, सेवक; श० १।२।

अनुयानम् [अनु+या+ल्युट्] अनुसरण।

अनुयायिन् (वि०) [अनु+या+णिनि] अनुगामी, सेवक, अनुवर्ती,—(पुं०) पीछे चलने वाला (श० आलं०) —राजानुजानुयायिनः—परावलंबी या सेवक,—एषेति शेषोऽप्यनुयायिवर्गः—रघु० २।४, १९।

अनुयोक्तृ (पुं०) [अनु+युज्+तृच्] परीक्षक, जिज्ञासु, अध्यापक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुयोगः [अनु+युज्+घञ्] 1 प्रश्न, पृच्छा, परीक्षा 2 निंदा, शिकवा 3 याचना 4 प्रयास 5 धार्मिक चिन्तन टीका-टिप्पण । सम०—कृत् (पुं०) 1 प्रश्नकर्ता 2 अध्यापक, अध्यात्म गुरु ।

अनुयोजनम् [अनु+युज्+ल्युट्] प्रश्न, पृच्छा ।

अनुयोज्यः [अनु+युज्+ण्यत्] सेवक ।

अनुरक्त (वि०) [अनु+रंज्+क्त] 1 लाल किया हुआ, रंगीन 2 प्रसन्न, संतुष्ट, निष्ठावान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु+रंज्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति, अनुराग, स्नेह ।

अनुरंजक (वि०) [अनु+रंज्+ण्वुल्] प्रसन्न करने वाला, संतुष्ट करने वाला ।

अनुरंजनम् [अनु+रंज्+ल्युट्] संराधन, संतुष्ट करना, मुख देना, प्रसन्न करना, संतुष्ट रखना ।

अनुरणनम् [अनु+रण्+ल्युट्] 1 अनुरूप लगना, नूपुर या घुंघरुओं की आवाज से उत्पन्न अनवरत प्रतिध्वनि, 2 'ध्वंजना' नामक शब्द शक्ति, तु०, वास्तविक कथन से व्यंजित होने वाला अर्थ व्यंग्य—क्रमलक्ष्यरसादेवानुरणनरूपो यो व्यंग्यः—सा० द० ४ ।

अनुरतिः (स्त्री०) [अनु+रम्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति ।

अनुरथ्या [प्रा० स०] पगडंडी, उपमार्ग ।

अनुरवः,—रितम् [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुरहस (वि०) [प्रा० स०] गुप्त, एकान्तप्रिय, निजी, —सं (क्रि० वि०) एकान्त में ।

अनुरागः [अनु+रंज्+घञ्] 1 लालिमा 2 भक्ति, आसक्ति, निष्ठा, (विप० अपरागः) प्रेम, स्नेह (अधि० के साथ या समास में) कंठकितेन प्रथयति मय्यनुरागं कपोलेन—श० ३।१५, रघु० ३।१०, °इंगित संकेत या प्रेम को प्रकट करने वाला एक बाह्यसंकेत ।

अनुरागिन् } (वि०) [अनुराग+णिनि, मतुप् वा] आसक्त,
अनुरागवत् } प्रेम से उत्तेजित ।

अनुरात्रम् [क्रि० वि०] [अव्य० स०] रात में, हर रात, प्रति रात्रि ।

अनुराधा [प्रा० स०] २७ नक्षत्रों में से सतरहवां नक्षत्र, यह चार नक्षत्रों का समूह है ।

अनुरूप (वि०) [प्रा० स०] 1 सदृश, मिलता-जुलता, तदनुरूप, योग्य, अनुरूप वरम्—श० १, 2 उपयुक्त या योग्य, अनुकूल, (संब० के साथ या समास में) —भव पितुरनुरूपस्त्वं गुणैर्लोककांतैः—विक्रम० ५।२१ ।

अनुरूपम्,—पतः } (क्रि० वि०) समनुरूपता या अभिप्रति—पेण,—पशः } पूर्वक ।

अनुरोधः—धनम् [अनु+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 विनय, आराधना, इच्छापूर्ति करना 2 समरूपता, आज्ञापालन, लिहाज, विचार- °धर्मानुरोधात्—का० १६०, १८०, १९२; 3 आग्रहपूर्वक प्रार्थना, याचना, निवेदन 4 नियम का पालन ।

अनुरोधिन्—क (वि०) [अनुरोध+णिनि, अनिरुध्+ण्वुल्] विनयी ।

अनुल्बणः [अनु+लप्+घञ्] आवृत्ति, पुनरुक्ति ।

अनुलातः,—स्थः [अनुलस्+घञ्, यत् वा] भोर ।

अनुलेपः लेपनम् [अनु+लिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अभिषेक, तेलमर्दन 2 सुगंधित लेप, उबटन—सुरभिकुसुमधूपानुलेपनानि—का० ३२४ ।

अनुलोम (वि०) [प्रा० स०] 1 'बालों में'—ऊपर से नीचे की ओर आने वाला—नियमित, स्वाभाविक क्रमानुसार (विप० प्रतिलोम), (अतः) अनुकूल—°कृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षति—सिद्धा०, नियमित दिशा में हल चलाया हुआ; 2 मिश्रित (जैसे कि जाति)—मम् (क्रि० वि०)स्वाभाविक या नियमित क्रम में—वाः (ब० व०) मिश्रित जातियां । सम०—अर्घ (वि०) पक्ष में बोलने वाला,—जैजातिप्यनुलोमायान् प्रजावः कृतिनां मिरः—शि० २।२५,—ज,—जन्मन् (वि०) ठीक क्रम में उत्पन्न, उच्चवर्ण के पिता तथा नीचवर्ण की माता से उत्पन्न संतान, मिश्रित जाति का ।

अनुलवण (वि०) [न० त०] 1 अधिक नहीं, न कम न अधिक 2 स्पष्ट या साफ नहीं ।

अनुवंशा [प्रा० स०] वंशतालिका ।

अनुवक्र (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत टेढ़ा, कुछ टेढ़ा या तिरछा ।

अनुवचनम् [अनु+वच्+ल्युट्] आवृत्ति, सस्वर पाठ, अध्यापन ।

अनुवत्सरः [प्रा० स०] वर्ष ।

अनुवर्तनम् [अनु+वृत्+ल्युट्] 1 अनुगमन (आलं० भी), अनुवर्तिता, आज्ञाकारिता, अनुरूपता 2 प्रसन्न करना, अनुग्रह करना 3 स्वीकृति 4 फल, परिणाम 5 पूर्वसूत्र से पूर्तिकरना ।

अनुवर्तिन् (वि०) [अनु+वृत्+णिनि] 1 अनुगामी, आज्ञाकारी 2 अनुरूप (कर्म० के साथ या समास में) ।

अनुवश (वि०) [प्रा० स०] दूसरे की इच्छा के अधीन, आज्ञाकारी—शः अधीनता, आज्ञाकारिता ।

अनुवाकः [अनु+वच्+घञ्] 1 आवृत्ति करना 2 वेद के उपभाग, अनुभाग, अध्याय ।

अनुवाचनम् [अनु+वच्+णिच्+ल्युट्] 1 सस्वर पाठ कराना, अध्यापन, शिक्षण 2 स्वयं पाठ करना, दे० 'वच्' अनु के साथ ।

अनुवातः [प्रा० स०] वह दिशा जिस ओर की हवा हो ।

अनुवादः [अनु+वद्+घञ्] 1 सामान्य रूप से आवृत्ति 2 व्याख्या, उदाहरण, या समर्थन की दृष्टि से आवृत्ति 3 व्याख्यात्मक आवृत्ति या पूर्वकथित बात का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उल्लेख, विशेष रूप से ब्राह्मण ग्रन्थों का वह भाग जिसमें पूर्वोक्त निदेश या विधि की व्याख्या, चित्रण या उसके टीका-टिप्पण निहित हैं और जो स्वयं कोई विधि या निदेश नहीं है 4 समर्थन 5 विवरण, अफवाह।

अनुवादक, वादिन् (वि०) [अनु+वद्+ण्वुल्—णिनि वा] 1 व्याख्यापरक 2 समरूप, समस्वर।

अनुवाद्य (वि०) [अनु+वद्+णिच्+यत्] 1 व्याख्येय, उदाहरणसापेक्ष 2 (व्या०) वाक्य में किसी उक्ति का कर्ता, 'विधेय' का विपरीतार्थक जो कि कर्ता के विषय में कुछ विधि या निषेध करता है, वाक्य में पहले से ज्ञात अनुवाद्य या कर्ता की पुनरुक्ति विधेय के साथ संबंध जतलाने के लिए की जाती है, अतः उसे वाक्य में पहले रक्खा जाता है—अनुवाद्यमनूद्यैव विधेयमुदीरयेत्।

अनुवारम् (अव्य०), समय समय पर, बार बार, फिर दोबारा।

अनुवासः—**सनम्** [अनु+वास्+घञ्, ल्युट् वा] 1 सामान्यतः धूप आदि सुगंधित द्रव्यों से सुवासित करना 2 कपड़ों के किनारे डुबोकर सुगंधित बनाना 3 (°नः भी) पिचकारी, तेल का एनिमा करना, या स्निग्ध बनाना।

अनुवासित (वि०) [अनु+वास्+क्त] धूपित, धूनी दिया हुआ, सुगंधित किया हुआ।

अनुविप्तिः (वि०) [अनु+वि+क्तिन्] लिप्तकर्ण, प्राप्ति।

अनुविद्ध (वि०) [अनु+व्यध्+क्त] 1 छिदा हुआ, सूराख किया हुआ, कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन काश्यता—सा० द० 2 ऊपर फैला हुआ, अन्तर्जटित, पूर्ण, व्याप्त, मिश्रित, मिलावट वाला, अन्तर्मिश्रित—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, 3 संयुक्त, संबद्ध 4 स्थापित, जड़ा हुआ, चित्रित—रत्नानुविद्धार्णवमेखलाया दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः—रघु० ६।६३।

अनुविधानम् [अनु+वि+धा+ल्युट्] 1 आज्ञाकारिता 2 आदेशादि के अनुरूप कार्य करना।

अनुविधायिन् (वि०) [अनु+वि+धा+णिनि] आज्ञाकारी, विनीत।

अनुविनाशः [अनु+वि+नश्+घञ्] बाद में नष्ट होना।

अनुविष्टंभः [अनु+वि+स्तंभ्+घञ्] फलस्वरूप बाधा का होना।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्+क्त] 1 आज्ञाकारी, अनुगामी 2 अबाध, निरन्तर।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु+वृत्+क्तिन्] 1 स्वीकृति 2 आज्ञाकारिता, अनुरक्तता, अनुगामिता, नैरन्तर्य 3 अनुकूल या उपयुक्त कार्य करना, आज्ञापालन, मौन सहमति, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना-कांता° चातुर्यमपि शिक्षितं वत्सेन—उत्त० ३, मा० ९, 4 (व्या०) आगामी नियम में पिछले नियम की पुनरुक्ति या पूर्ति, पिछले नियम का आगामी नियम पर निरन्तर प्रभाव 5 पुनरुक्ति—वर्णानामनुवृत्तिरनुप्रासः।

अनुवेधः=तु० अनुव्यधः।

अनुवेलम् [अव्य०] [प्रा० स०] कभी-कभी, बारबार, इति स्म पृच्छत्यनुवेलमादृतः—रघु० ३।५।

अनुवेशः—**शनम्** [अनु+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अनुगमन, बाद में दाखिल होना; 2 बड़े भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का विवाह।

अनुव्यंजनम् [अनु+वि+अंज्+ल्युट्] गौण लक्षण या चिन्ह।

अनुव्यवसायः [अनु+वि+अव+सै+घञ्] (न्या० में) प्रत्यक्ष का बोध या चेतना; (वेदा० में) मनोभाव या निर्णय का प्रत्यक्षीकरण।

अनुव्याधः—**धेधः** [अनु+व्यध्+घञ्, विध्+घञ् वा] 1 चोट पहुँचाना, छेदना, सूराख करना—न हि कीटानुवेधादयो रत्नस्य रत्नत्वं व्याहन्तुमीशाः—सा० द० १, 2 संपर्क, मेल मुखामोदं मदिरया कृतानुव्याधमद्रमन्—शि० २।२०, 3 मिश्रण 4 दाग़ा डालना।

अनुव्याहरणम्—**व्याहारः** [अनुव्या+हृ—ल्युट्, घञ् वा] 1 पुनरुक्ति, बारबार कथन 2 अभिशाप, कोसना।

अनुव्रजनम्-व्रज्या [अनु+व्रज्+ल्युट्, क्यप् वा] अनुसरण, अनुगमन, विशेषतया विदा होता हुआ अभ्यागत।

अनुव्रत (वि०) [प्रा० स०] भक्त, निष्ठावान्, संलग्न (कर्म० या संब० के साथ)।

अनुव्रतिक (वि०) [अनु+शत+ठन्] सौ के साथ या सौ में मोल लिया हुआ।

अनुशयः [अनु+शी+अच्] 1 पश्चात्ताप, मनस्ताप, खेद, रंज,—नन्वनुशयस्थानमेतत्—मा० ८,—इतो गतस्यानुशयो मा भूदिति—विक्रम० ४, शि० २।१४; 2 अंतर वैर या क्रोध—शिशुपालोऽनुशयं परं गतः—शि० १६। २; —यस्मिन्समुक्तानुशया सदैव जागर्ति भुजंगी—मा० ६।१; 3 घृणा 4 गहरा संबन्ध, जैसा कि कषायत, (किसी पदार्थ से) गहन आसक्ति 5 (वेदा० में) दुष्कर्मों का परिणाम या फल जो कि उनके साथ संयुक्त रहता है और पुनर्जन्म से अस्थायी मुक्ति का उपभोग कराके फिर जीव को शरीरों में प्रविष्ट करता है; 6 क्षय के मामलों में खेद जिसे पारिभाषिक रूप में 'उत्सादन' कहते हैं दे० कीर्तानुशय।

अनुशयान (वि०) [अनु+शी+शानच्] खेद प्रकट करता हुआ,—ना नायिका का एक भेद, यह नायिका अपने प्रेमी के वियोग का खयाल करके उदास और खिन्न रहती है।

अनुशयित (वि०) [अनुशय+णिनि] 1 अनुरक्त, भक्त,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रद्धालु 2 पश्चात्ताप करने वाला, पछताने वाला 3 अत्यधिक घृणा करने वाला 4 मानों किसी फल के कारण संबद्ध।

अनुशरः [अनु+श्+अच्] भूत प्रेत, राक्षस।

अनुशासक,-शासिन् (वि०) [अनु+शास्+ण्वुल्, णिनि] **शास्तृ,-शासितृ**] तृच् वा] निदेशक, शिक्षक, शासन करने वाला, दंड देने वाला—कवि पुराणमनुशासितारम्—भग० ८।९, शासन कर्ता,-एष चोरानुशासो राजेति भयादुत्पतितः—विक्रम० ४।

अनुशासनम् [अनु+शास्+ल्युट्] आदेश, प्रोत्साहन, शिक्षण नियमों विधियों का बनाना—भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्—कि० १।२८; आदेश या शिक्षा के शब्द; —तन्मनोरनुशासनम्—मनु० ८।१३९; **नामलिंग°** संज्ञाओं के लिंग संबंधी नियमों का निर्धारण तथा व्याख्या—शब्दानुशासनम्—सिद्धा०।

अनुशिक्षिन् [अनुशिक्ष्+णिनि] क्रियाशील, सीखने वाला।

अनुशिष्टिः (स्त्री०) [अनुशास्+क्तिन्] शिक्षण, अध्यापन, आदेश, आज्ञा।

अनुशीलनम् [अनु+शील्+ल्युट्] अभिप्रेत तथा श्रमपूर्ण प्रयोग, सतत प्रयत्न या अभ्यास, सतत या बारंबार अभ्यास या अध्ययन।

अनुशोकः,-शोचनम् [अनु+शुच्+घञ्, ल्युट् वा] रंज, पश्चात्ताप, खेद, इसी अर्थ में **अनुशु** (शो) **चितम्**।

अनुश्रवः [अनु+श्रु+अच्] वैदिक परंपरा।

अनुषक्त (वि०) [अनु+षञ्+क्त] 1 संबद्ध 2 संलग्न या संसक्त।

अनुषंगः [अनु+षंज्+घञ्] 1 गहन लगाव, संबंध, संयोग, साहचर्य, 2 मेल 3 शब्दों का पारस्परिक संबंध 4 आवश्यक परिणाम 5 दया, तरस, करुणा।

अनुषंगिक (वि०) [अनुषंग—ठ] अनिवार्य फलस्वरूप, सहवर्ती।

अनुषंगिन् (वि०) अनु+षंज्+णिनि] 1 संबद्ध, अनुरक्त, संसक्त 2 अनिवार्य परिणाम के रूप में आने वाला, 3 व्यावहारिक, सामान्य, छा जाने वाला—विभूतानुषंगि भयमेति जनः—कि० ६।३५।

अनुषंजनीय (वि०) [अनु+षंज्+अनीय] (शब्द की भांति) पूर्ववाक्य से ग्राह्य।

अनुषेकः,—सेचनम् [अनु+सिच्+घञ्, ल्युट् वा] दोबारा पानी देना, फिर से जल छिड़कना।

अनुष्टुतिः (स्त्री०) [अनु+स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, सिफारिश (क्रमानुसार)।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) [अनु+स्तुभ्+क्विप्] 1 प्रशंसा में अनुगमन, वाणी 2 सरस्वती 3 बत्तीस अक्षरों का एक छंद जिसमें आठ २ अक्षरों के चार २ पाद होते हैं।

अनुष्ठातृ,—ष्ठायिन् (वि०) [अनु+स्था+तृच्, णिनि वा] कार्य करने वाला, अनुष्ठान करने वाला।

अनुष्ठानम् [अनु+स्था+ल्युट्] 1 कार्य करना, धर्मकृत्य करना, कार्य में परिणत करना, कार्यनिष्पादन, आज्ञापालन, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्—श० ४; धार्मिक तपश्चर्याओं का प्रयोग 2 आरंभ, उद्यतदायित्व, कार्य में व्यस्तता 3 आचरणपद्धति, कार्यपद्धति, 4 धार्मिक संस्कारों या कृत्यों का प्रयोग।

अनुष्ठापनम् [अनु+स्था+णिच्+ल्युट्] कार्य कराना।

अनुष्ण (वि०) [न० त०] 1 जो गर्म न हो, ठंडा 2 वीत-राग, सुस्त, शिथिल—ष्णः शीतस्पर्श,—ष्णम् कुमुद, नील कमल।

अनूच्यंदः [अनु+स्यन्द्+घञ्] पिछला पहिया।

अनुसंधानम् [अनुसम्+धा+ल्युट्] 1 पृच्छा, गवेषण, गहन निरीक्षण या परीक्षण, जांच 2 उद्देश्य 3 योजना, क्रमबद्ध करना, तत्पर होना 4 उपयुक्त संयोग।

अनुसंहित (वि०) [अनु+सम्+धा+क्त] पूछताछ किया गया, जांच पड़ताल किया गया,—तम् (क्रि० वि०) संहिता-पाठ में, संहिता-पाठ के अनुसार।

अनुसमयः [प्रा० स०] नियमित और उचित संयोग जैसे कि शब्दों का।

अनुसमापनम् [अनु+सम्+आप्+ल्युट्] नियमितरूप से किसी कार्य की समाप्ति।

अनुसंबद्ध (वि०) [अनु+सम्+बंध्+क्त] संयुक्त।

अनुसरः [अनु+सृ+अच्] अनुगामी, साथी, अनुचर।

अनुसरणम् [अनु+सृ+ल्युट्] 1 अनुगमन, पीछा करना, पीछे जाना 2 समनुरूपता।

अनुसर्पः [अनु+सृप्+अच्] सर्पसदृश जन्तु, सरीसृप।

अनुसवनम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 यज्ञ के पश्चात् 2 प्रत्येक यज्ञ में 3 प्रतिक्षण।

अनुसाम (वि०) [प्रा० स०] मनाया हुआ, मित्र सदृश, अनुकूल।

अनुसायम् (अव्य०) [प्रा० स०] प्रति सायंकाल।

अनुसूचनम् [अनु+सूच्+ल्युट्] संकेत करना, इशारा करना।

अनुसारः [अनु+सृ+घञ्] 1 पीछे जाना, अनुगमन (आलं० भी), पीछा करना शब्दानुसारेण अवलोक्य—श० ७; जिधर से आवाज आ रही थी उस ओर देखते हुए 2 समनुरूपता, के अनुसार, प्रयोग के अनुरूप, 3 प्रथा, रिवाज, रस्म 4 माना हुआ अधिकार।

अनुसारक,—सारिन् (वि०) [अनु+सृ+ण्वुल् णिनि वा] 1 अनुगामी, पीछा करने वाला, पीछे जाने वाला, सेवा करने वाला मृगानुसारिणं पितरकिनम्—श० १।६; —कृपणानुसारि च धनम्—पंच० १।२७८; 2 के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुकूल या समनुरूप, बाद में आने वाला—यथाशास्त्रं° मनु० ७।३१; 3 तलाश करना, ढूंढना, खोजना, जाँच करना।

अनुसारणा [अनु+सृ+णिच्+अच्+टाप्] पीछे जाना, पीछा करना—तस्मात्सायमानावां कुर्यान्नित्यनुसारणाम् - महा०।

अनुसूचक [वि०] [अनु+सूच्+ण्वुल्] संकेत करने वाला, इशारा करने वाला।

अनुसृतिः (स्त्री०) [अनु+सृ+क्तिन्] पीछे जाना, अनुगमन, अनुरूप होना, अनुसार होना।

अनुसैन्यम् [प्रा० स०] सेना का पिछला भाग, अनुरक्षक सेना।

अनुस्कंदम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः प्रविष्ट होकर क्रमानुसार अन्दर जाकर—गेहं गेहमनुस्कंदम्—सिद्धा०।

अनुस्तरणम् [अनु+स्तृ+ल्युट्] चारों ओर बखेरना या फैलाना, —नी गाय, विशेषतया वह गाय जिसका बलिदान अंत्येष्टि संस्कार के समय किया जाय।

अनुस्मरणम् [अनु+स्मृ+ल्युट्] 1 फिर से ध्यान में लाना, स्मरण करना, 2. बारंबार स्मरण करना।

अनुस्मृतिः (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्तिन्] 1 वह स्मृति या स्मरण जो प्रिय हो 2. अन्य विषयों को छोड़कर केवल एक ही बात का चिन्तन करना।

अनुस्यूत (वि०) [अनु+सिव्+क्त—ऊठ्] 1 नियमित तथा निर्बाध रूप से मिला कर बुना हुआ 2 सिला हुआ, बंधा हुआ, 3 सुबद्ध और सुशृंखलित।

अनुस्वानः [अनु+स्वन्+घञ्] 1 अनुरूप शब्द करना 2 बाद में शब्द करना, गूंज, वे० 'अनुरणन'।

अनुस्वारः [अनु+स्वृ+घञ्] नासिक्य ध्वनि जो पंक्ति के ऊपर एक बिन्दु लगा कर प्रकट की जाती है और जो सदैव पूर्ववर्ती स्वर से संबद्ध होती है।

अनुहरणम्, -हारः [अनु+हृ+ल्युट्, घञ् वा] नकल, मिलना-जुलना, समानता।

अनूकः,-कम् [अनु+उच्+क, कुत्वम् नि०] 1 कुल, वंश 2 मनोवृत्ति, स्वभाव, चरित्र, वंश की विशेषता।

अनूचान (वि०) या —नः [अनु+वच्+कान नि०] 1 अध्ययनशील, विद्वान् विशेषतया वेद, वेदांगों में ऐसा पारंगत विद्वान् जो उन्हें सुना सके और पढ़ा सके,—इदमृषूरनूचानाः—कु० ६।१५; 2 सुशील।

अनूढ (वि०) [न० त०] 1 न ले जाया गया, 2 अविवाहित, —ढा अविवाहित स्त्री। सम०—भाव (वि०) लज्जालु,—गमनम् (°ढा°) कुमारी कन्या से संभोग, —भ्राता (पुं०) (°ढा°) 1 अविवाहित स्त्री का भाई 2 राजा की उपपत्नी का भाई।

अनूदकम् [उदकस्य अभावः न० त०] जल का अभाव, सूखा पड़ना।

अनूद्देशः [अनु+उत्+दिश्+घञ्] 'सापेक्ष क्रम' एक अलंकार का नाम जिसमें कि क्रमा क्रम पूर्ववर्ती शब्दोंका उल्लेख होता है; —यथासंख्यमनूद्देश उद्दिष्टानां क्रमेण यत्—सा० द० ७३२।

अनून (वि०) [न० त०] 1 जो घटिया न हो, कम न हो, अभाव वाला न हो—वृन्दावने चैत्ररथानुने—रघु० ६।५०—गुणैरनूनां—रघु० ६।३७; 2 पूर्ण, समस्त, सकल, बड़ा, महान् शि० ४।११।

अनूप (वि०) [अनुगताः आपः यस्मिन्—अनु+अप्+अच्—ऊदनोर्देशे इति ऊ] जलीय, जलबहुल अथवा दलदल वाला प्रदेश—पः, पम् 1 जलबहुल स्थान या देश 2 एक देश का नाम (—पाः ब० व०)—रघु० ६।३७; 3 दलदल, कीचड़ 4 पानी का तालाब 5 नदी का किनारा, पर्वत का पहलू 6 भैंस 7 मेंढक 8 एक प्रकार का तीतर 9 हाथी। सम०—जम् आर्द्र, अदरक, —प्राय (वि०) दलदल वाला, कीचड़ से भरा हुआ।

अनूपाज, अनूराधा=अनूयाज, अनुराधा।

अनूरु (वि०) [न० ब०] जिसके जंघा न हो,—रुः सूर्य का सारथि अरुण (जिसका जंघारहित होने का वर्णन पाया जाता है) उषा, दे० अरुण। सम०—सारथि सूर्य (अनूरु जिसका सारथि है); —यतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः—शि० १।२।

अनूर्जित (वि०) [न ऊर्जितः—न० त०] 1 अशक्त, दुर्बल, शक्तिहीन 2 दर्पहीन।

अनूषर (वि०) [न ऊषरः—न० त०] 1. रेहीला, बंजर जैसी (भूमि) दे० उत्तम और अनुत्तम 2 जिसमें रेह न हो।

अनृच्—च् (वि०) [न० ब०] 1 बिना ऋचा का 2 जो ऋग्वेद का ज्ञाता न हो, या ऋग्वेद का अध्येता न हो, यज्ञोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार न हो—अनृची याजकः—मुच्छ०।

अनृजु (वि०) [न० त०] जो सरल न हो, कुटिल (आलं), अयोग्य, दुष्ट, बेईमान।

अनृण (वि०) [न० ब०] जो कर्जदार न हो—एनामनृणां करोमि—शं० १; —प्राणैर्देशरयमप्रीतेरनृणं (गृध्रं)—रघु० १२।५४; प्रत्येक द्विज को तीन ऋणों से उऋण होना पड़ता है—ऋषिऋण, देवऋण और पितृऋण। जो व्यक्ति वेदाध्ययन करके यज्ञ में देवताओं का आवाहन करता है, और फिर गृहस्थाश्रम में रह कर पुत्र प्राप्त करता है वही 'अनृण' कहलाता है दे० रघु०८।२०।

अनृणिन् (वि०) [न० त०]=अनृण।

अनृत (वि०) [न० त०] 1 जो सत्य न हो, मिथ्या (शब्द) प्रियं च नानृतं ब्रूयात्—मनु० ४।१३८, —तम् असत्यता, झूठ बोलना, धोखा, जालसाजी 2 कृषि (विप० 'सत्य') मनु० ४।५, । सम०—वचनम्, —भाषणम्,—अभिधानम् झूठ कहना, मिथ्या भाषण,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वादिन्,—वाच् (वि०) झूठ बोलने वाला,—व्रत (वि०) अपने वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करने वाला।

अनृतुः [न० त०] अनुपयुक्त ऋतु, अनुचित समय, असमय। सम०—कन्या वह कन्या जो अभी रजस्वला न हुई हो।

अनेक (वि०) [न० त०] 1 जो एक न हो, एक से अधिक, बहुत से,—अनेकपित्वकाणां तु पितृतो भागकल्पना—या० २।१२०; कि० १।१६; कई, कई एक 2 अलग-अलग, भिन्न भिन्न। सम०—अक्षर,—अच् (वि०) एक से अधिक अक्षर या स्वर वाला, नाना अक्षर सहित,—अंत (वि०) 1 अनिश्चित, सांदिग्ध—अस्थिर—स्याद्वित्यव्ययमनेकांतयोपाचकम् 2—तुः अनैकांतिक (—तः) 1 अनिश्चित अवस्था, स्थायित्व का अभाव 2 अनिश्चितता, अनावश्यक अंश, जैसे कि कई 'अनुबंध' °वादः संशयवाद, स्याद्वाद, °वादिन् (पु०) स्याद्वादी, जैनियों के स्याद्वाद को मानने वाला,—अर्थ (वि०) 1 एक से अधिक अर्थ वाला, समनाम जैसे कि गो, अमृत, अक्ष आदि अनेकार्थस्य शब्दस्य-काव्य० २; 2 'अनेक' शब्द के अर्थ वाला 2 बहुत से प्रयोजन या उद्देश्य रखने वाला (—र्थः) पदार्थों का बाहुल्य, विषयों की विविधता,—आश्रय,—आश्रित (वि०) (वैशे०) एक से अधिक स्थानों (जैसा कि 'संयोग' या 'सामान्य') पर रहने वाला,—गुण (वि०) बहुत प्रकार का, विविध प्रकार का, विभिन्न भेदों का,—गोत्र (वि०) दो कुलों से संबंध रखने वाला, एक तो अपने कुल से (जब तक कि गोद न लिया गया हो), तथा गोद लिये जाने पर गोद लेने वाले पिता के कुल से,—चित्त (वि०) चंचलमना,—ज (वि०) एक से अधिकबार उत्पन्न, —जः पक्षी,—पः हाथी तु० 'द्विप' से, —तन्त्रेतरानेकपदर्शनेन—रघु० ५।४७; शि० ५।३५, १२।७५; —मुख (वि०) [स्त्री०—खी] (वि०) 1 बहुत मुंह वाला 2 तितर बितर, बहुत सी दिशाओं में फैलने वाला—(बलानि) जगाहिरेऽनेकमुखानि मार्गान्-मट्टि० २।५४; —युद्धविजयिन्, —विजयिन् (वि०) बहुत से युद्धों का विजेता, —रूप (वि०) 1 नाना रूपों का, बहुत रूपों वाला, 2 नाना प्रकार का 3 चंचल, परिवर्तनीय विविध स्वभाव वाला —वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा पंच० १।४२५; —लोचनः शिवजी, इन्द्र, —वचनम् बहुवचन, द्विवचन, —वर्ण (वि०) एक से अधिक रांगियों वाला —विध (वि०) विविध, विभिन्न,—शफ (वि०) फटे हुए खुरों वाला, —साधारण (वि०) बहुतों के लिए सामान्य।

अनेकधा (अव्य०) [नञ्+एक+धा] विविध रीति से, नाना प्रकार से; —अगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा—भग० ११।१३।

अनेकशः (अव्य०) 1 कई बार, बारंबार—अनेकशो निर्जितराजकस्त्वम्—भट्टि २।५२; 2 विविध रीति से, 3 बड़ी संख्या में या बड़े परिमाण में—पुत्रा अनेकशो मृता दाराश्च हि० १।

अनेडः [न एडः—न० त०] मूर्ख पुरुष, अज्ञानी व्यक्ति, मूढ़। सम०—मूक (वि०) गूंगा और बहरा °भूकताडैश्च यतु दोषैरसम्मतान्—का० ७ 2 अंधा 3 बेईमान दुष्ट, दुःशील।

अनेनस् (वि०) [न० ब०] निष्पाप, कलङ्करहित।

अनेहस् (पु०) [न हन्यते—हन्+असि धातोरेहादेशः—नञ्+एह+अस्] (हा० हसौ आदि) समय, काल।

अनैकांत (वि०) [न० त०] परिवर्त्य, अनिश्चित, अस्थिर, सामयिक।

अनैकांतिक (वि०) [नञ्+एकांत+ठक्—न० त०] (स्त्री० —की) 1 अस्थिर, जो बहुत आवश्यक न हो 2 (तर्क० में) हेत्वाभास के मुख्य पांच भागों में से एक, अन्यथा यह 'सव्यभिचार' कहलाता है, और तीन प्रकार का है:—(क) 'साधारण' जहाँ कि हेतु दोनों ओर—स्वपक्ष, तथा विपक्ष में—पाया जाय, फलतः तर्क अतिसामान्य हो जाय, (ख) 'असाधारण' जहाँ हेतु केवल पक्ष में ही पाये जायें फलतः तर्क अतिसामान्य न हो, (ग) 'अनुपसंहारी' जहाँ पक्ष में प्रत्येक ज्ञात बात तो सम्मिलित है, परन्तु तर्कों की अभी समाप्ति नहीं हुई है।

अनैक्यम् [न० त०] 1 एकता का अभाव, बहुवचनता 2 एकत्व की कमी, अव्यवस्था 3 अशान्ति, अराजकता।

अनैतिह्यम् [न० त०] परंपरागत प्रामाणिकता का अभाव, या जहां इस प्रकार की स्वीकृति अपेक्षित है।

अनो (अव्य०) [न० त०] नहीं, न।

अनोकशायिन् (पु०—यी) [न० त०] घर में न सोने वाला, भिक्षुक।

अनोकहः [अनसः शकटस्य अकं गतिं हन्ति-हन्+ड] वृक्ष, —अनोकहा कम्पितपुष्पगंधी—रघु० २।१३, ५।६९।

अनौचित्यम् [नञ्+उचित—ष्यञ्] अनुपयुक्तता, अनुचितता—अनौचित्यादृते नान्यद्रसभंगस्य कारणम्—का० ७।

अनौजस्यम् [नञ्+ओजस्+ष्यञ्] शक्ति सामर्थ्य या बल का अभाव; सा० द०—दौर्मनस्याद्यैरनौजस्यं दैन्यं मलिनतादिकृत्।

अनौद्धत्यम् [नञ्+उद्धत+ष्यञ्] 1 अहंकार से मुक्ति, शालीनता, विनय; 2 शान्ति, —नदीरनौद्धत्यमपक्षुता महीं—कि० ४।२२।

अनौरस (वि०) [न० त०] जो औरस—अर्थात् विवाहिता पत्नी से उत्पन्न न हो, अपना भी न हो, (पुत्र के रूप में) गोद लिया हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंत (वि०) [अम्+तन्] 1 निकट 2 अन्तिम 3 सुन्दर, मनोहर,—मेघ० २३, शि० ४।४० (इसका सामान्य अर्थ—'सीमा' या 'छोर' है, यद्यपि 'शब्दार्णव' का उद्धरण देते हुए मल्लिनाथ इसका अर्थ 'रम्य' करते हैं) 4 नीचतम, निकृष्टतम 5 सबसे छोटा, —तः (कुछ अर्थों में नपुं०) 1 (वि०) छोर, मर्यादा, (देश-काल की दृष्टि से) सीमा, चरम सीमा, अन्तिम बिन्दु या पराकाष्ठा,—स सागरांतां पृथिवीं प्रशास्ति —हि० ४।५०,—दिगंते श्रूयते —भामि० १।२; 2 छोर, सरहद, किनारा, परिसर, सामान्य रूप से स्थान या भूमि,—यत्र रम्ये वनांतः, उत्त० २।२५,—ओदकांतात् स्निग्धो जनोऽनुगंतव्यः—श० ४, रघु० २।५८: 3 बुनी हुई किनारी का पल्ला—वस्त्रं, पटं; 4 सामीप्य, सन्निकटता, पड़ोस, विद्यमानता (गंगा प्रवाहांतविच्छेदाश्यं (गङ्गा-रम्) रघु० २।३६, पुंसो यमांते व्रजतः —पंच० २।११५; 5 समाप्ति, उपसंहार, अवसान,—रोकांते—रघु० ११।१, दिनांते निहितम् —रघु० ४।१, 6 मृत्यु, नाश, जीवन का अन्त, —राज्ञा प्रवेश्स्वस्तिमतीं त्वदंते—रघु० २।४८, अद्य कांतः कृतांतो वा दुःखस्यान्तं करिष्यति—उद्भट 7 (व्या० में) शब्द का अन्तिम अक्षर 8 समास में अंतिम शब्द 9 (प्रश्न का) निश्चय, निर्णीत या अंतिम निश्चय—उभयोरपि दृष्टोंऽतस्त्वदन्ययोस्तत्त्वदर्शिभिः भग० २।१६; 10 अंतिम अंश, अवशेष —यथा निशांत, वेदांत 11 प्रकृति, दशा, प्रकार, जाति 12 वृत्ति, तत्त्व शुद्धांतः। **सम०—अवशायिन्** (पुं०) चांडाल, **अवसायिन्** (पुं०) 1 नाई 2 चांडाल, नीच जाति का, **कर**, —**करण**, —**कारिन्** (वि०) घातक, मारक, संहारक, —**कर्मन्** (नपुं०) मृत्यु, —**काल**:, —**वेला** मृत्यु का समय, —**कृत्** (पुं०) मृत्यु,—**ग** (वि०) किनारे तक जाने वाला, पूरी तरह से जानकार या परिचित, (समास में) **गति**, —**गामिन्** (वि०) नाश होने वाला, —**गम-नम्** 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 मृत्यु, —**ग्रोपकम्** सा० शा० में एक अलंकार, —**पाल**: 1 सीमा की रक्षा करने वाला, 2 द्वारपाल —**लीन** (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, —**लोप**: शब्द के अंतिम अक्षर को निकाल देना,—**वासिन्** ("तै") (वि०) सीमांत प्रदेश के निकट रहने वाला, निकट ही रहने वाला, (—पुं०) विद्यार्थी (जो शिक्षा ग्रहण करने के निमित्त सदैव गुरु के निकट रहता है), चांडाल (जो गांव के किनारे रहता है) —**वेला**,—तु० "कालः,—**शय्या** 1 भूमिशय्या 2 अंतिम शय्या, मृत्युशय्या 3 कब्रिस्तान या श्मशान भूमि, —**संक्रिया** अन्त्येष्टि संस्कार, —**सद** (पुं०) विद्यार्थी, तमुपासते गुरुमिवांतसदः—कि० २।३४।

अन्तक (वि०) [अन्तयति—अन्तं करोति —ण्वुल्] मारने वाला, नाश करने वाला, घातक—रघु० ११।२१, —**कः** 1 मृत्यु 2 साकार मृत्यु, संहारक, यम, मृत्यु का देवता,—ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुम् रघु० २।६२।

अंतत: (अव्य) [अन्त+तसिल्] 1 किनारे से 2 आखिर कार, अन्त में, अंततोगत्वा, निदान 3 अंशतः, कुछ 4 भीतर, अन्दर 5 अधम रीति से ('अंत' के सभी अर्थ 'अंततः' में समा जाते हैं)

अन्ते (अव्य०) ['अन्त' का अधि०, कि० वि० में प्रयोग] 1 अन्त में, आखिरकार 2 भीतर 3 (की) उपस्थिति में, निकट, पास ही। सम० —**वासः** 1 पड़ोसी, साथी, 2 छात्र —शि० ३।५५, वेणी० ३।६ —**वासिन्**—तु० अंतवासिन्।

अंतर् (अव्य०) [अम्+अरन् तुडागमश्च] 1 [क्रियाओं के साथ उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होता है तथा संबंध बोधक अव्यय समझा जाता है] (क) बीच में, के मध्य में, के अन्दर "हन्, "घा, "गम्, "भू, "इ, "ली आदि (ख) के नीचे 2 (क्रि० वि० प्रयोग) (क) के मध्य, के बीच, के दरम्यान्, के अन्दर, मध्य में या अंदर, भीतर (विप० बहिः) अदह्यतांतः रघु० २।३२, अन्तर्यच्च मृग्यते—विक्रम० १।१; आंतरिक रूप से, मन में (ख) ग्रहण करके या पकड़कर —अंतर्हत्वा गतः (हृत परिगृह्य) 3 (वियुक्त होने योग्य सम्बन्ध-बोधक के रूप में) (क) में, के मध्य, बीच में, के अन्दर (अधि० के साथ)—निवसन्तंतर्गृहेषु लक्ष्यो वह्नि,—पंच० १।३१; अप्स्वंतरमृतमप्सु—ऋग् १।२३ (ख) के मध्य (कर्म० के साथ) वेद०—हिरण्मय्यौर्हं कुप्यौरंतरवहित आस—शत० (ग) में, के अन्दर, भीतर, बीच में (संब० के साथ) प्रतिबिंब जलधेरंत-रौर्वायमाणे वेणी० ३।५, अंतः कंचुकिकंचुकस्य —रत्न० २।३; —रूपवृत्तिता भिदां गतं बहिरंतश्च नृपस्य मंडलम् —कि० २।५३; 4 समस्त शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो बहुधा निम्नांकित अर्थ होते हैं: -आंतरिक रूप से, के अन्दर, भीतर, भीतर रह कर, भरा हुआ, अन्दर की ओर, आंतरिक, गुप्त, तत्पुरुष तथा बहुव्रीहि समास के क्रियाविशेष-णात्मक रूप बनाने वाला (नोट—समस्त पदों में 'अन्तर' का र् वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स् से पूर्व विसर्ग का रूप धारण कर लेता है जैसे अन्तःकरण, अन्तःस्थ आदि)। सम०—**अग्नि**: आन्तरिक आग, वह अग्नि जो पाचन शक्ति को उत्तेजित करे, —**अंग** (वि०) 1 अंदर की ओर, आन्तरिक, अन्तर्गत (अधः के साथ), त्रयमंतरंगं पूर्वेभ्यः-पातंजल० 2 शब्द के मूलरूप या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या उसका उल्लेख करने वाला, 3 प्रिय, प्रियतम (—गम्) 1 अंतस्तम अंग,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हृदय, मन 2 घनिष्ठ मित्र, या विश्वस्त व्यक्ति; —**आकाशः** तेजोमह तत्त्व या वह्नि जो मनुष्य के हृदय में रहता है (उपनिषदों में प्रायः यह शब्द पाया जाता है) —**आकृतम्** गुप्त और छिपा हुआ प्रयोजन, **आत्मन्** (पु०—स्मा) 1 अन्तरतम प्राण या आत्मा, मन या आत्मा, आन्तरिक भावना, हृदय, जीवात्मा—तरात्मनः · मनु० १२।१३, भग० ६।४७, 2 (दर्श० में) अन्तर्हित सर्वोपरि प्राण या आत्मा (मानव के भीतर रहने वाला) अंतरात्मानि देहिनाम् कु० ६। २१; —**आराम** (वि०) अपने आप में मस्त, अपने आत्मा या हृदय में ही सुख ढूढने वाला; योगः तृप्तोंतरारामस्तथांतर्ज्योतिरेव सः—भग० ५।२४, —**इन्द्रियम्** आन्तरिक अंग या आनेन्द्रिय, —**करणम्** हृदय, आत्मा, विचार और भावना का स्थान, विचार शक्ति, मन, चेतना—प्रमाणं० प्रवृत्तयः —श० १।२२, —**कुटिल** (वि०) अन्दर से कपटी (अलं०) (—लः) सीप,—**कोणः** अन्दर का कोण, **कोपः** गुप्त क्रोध, अन्दरूनी गुस्सा, —**गड** (वि०) व्यर्थ, अनावश्यक, निष्फल—किमनेनांतगडुना सर्व० · —**गम्**, —**गत** दे० 'अन्तर्गम्' के नीचे, —**गर्भ** (वि०) पेट वाली, गर्भवती, - **गिरम्**, **गिरि** (अव्य०) पहाड़ों में, —**गुड** (वि०) अन्दर से छिपा हुआ, °**विषः** हृदय में जहर छिपाए हुए · **गृहम्**, —**गेहम्**, —**भवनम्** घर का भीतरी भाग, —**घणः**, —**घणम्** घर के अन्दर की खुली जगह, —**चर** (वि०) शरीर में व्याप्त, —**जठरम्** पेट, - **ज्वलनम्** जलन या सूजन, —**ताप** (वि०) अन्तर्दाह से युक्त (—पः) अन्दरूनी ज्वर या गर्मी, —श० ३।१३, —**दहनम्**, —**दाहः** 1 अन्दरूनी जलन 2 सूजन **देशः** परिधि के बीच का प्रदेश, —**द्वारम्** घर के अंदर निजी या गुप्त दरवाजा, —**धि** —**हित** आदि दे० शब्द के नीचे —**पटः**, —**पटम्** दो व्यक्तियों के बीच में कपड़े का परदा —**पवम्** (अव्य०) पद (विभक्तियुक्त शब्द) के भीतर, —**परिधानम्** सबसे नीचे पहना जाने वाला कपड़ा, —**पातः**, —**पात्यः** 1 (स्या०) बीच में अक्षर रखना 2 यज्ञभूमि के मध्य में जमाया हुआ स्तंभ (संस्कार विधियों में प्रयुक्त), —**पातित**, —**पातिन्** (वि०) 1 बीच में समाविष्ट 2 सम्मिलित या समाविष्ट, अन्तर्गत होने वाला, —**पुरम्** 1 महल का अन्दरूनी भाग जो महिलाओं के उपयोग के लिए नियत किया गया हो, स्त्रियों के रहने का कमरा, रनवास,—**कन्यांतःपुरे कश्चित् प्रविशति**—पंच० १; 2 रनवास में रहने वाली स्त्रियां, रानी या रानियां, स्त्रियों का समुदाय—°**विरहपर्युत्सुकस्य राजर्षेः** श० ३, °**अध्यक्षः**, °**रक्षकः**, °**वर्ती** अन्तःपुर का अधीक्षक या संरक्षक, °**चरः**—कञ्चुकी, °**जनः** महल की स्त्रियां रनवास की महिलाएँ, °**प्रचारः** अन्तःपुर की गपें, कदाचिदस्मत्प्रार्थनामतःपुरेभ्यः कथयेत् —श० २; °**सहायः** अन्तःपुर से संबंध रखने वाला, —**पुरिकः** कञ्चुकी—°**चरः**, —**प्रकृतिः** (स्त्री०) 1 मनुष्य का शरीर या उसका आंतरिक स्वभाव 2 राजा का मंत्रालय या मंत्रिमंडल 3 हृदय या आत्मा, - **प्रकोपनम्** आंतरिक विरोध जमाना,—**प्रतिष्टानम्**—भीतरी आवास,—**प्राप्त** (वि०) 1 जिसने आसुओं को रोका हुआ हो ·अन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ—मेघ० ३; 2 जिसके आंसू अन्दर ही अन्दर निकल रहे हों, · **भावः**, **भावना** दे० 'अंतर्' के अन्तर्गत, —**भूमिः** (स्त्री०) भूमि का भीतरी भाग,— **भेदः** वैमनस्य, आन्तरिक विरोध, · **भौम** (वि०) भूमि के नीचे रहने वाला **मनस्** (वि०) उदास, व्याकुल, **मृत** (वि०) गर्भ में ही मर जाने वाला,—**यामः** वाणी और श्वास को रोकना, **लीन** (वि०) 1 निहित, गुप्त, अन्दर छिपा हुआ, °**नस्य दुःखाग्नेः** उत्तर० ३।९ 2. अन्तर्निहित,— **वंशः**—°**पुरम्**, तु०,—**वंशिकः**, · **वासिकः** अन्तःपुर का अधीक्षक,—**वस्त्री** गर्भवती स्त्री,—**वस्त्रम्**, · **वासस्** (नपुं०) अधोवस्त्र,—**वाणि** (वि०) बड़ा विद्वान्,—**वेगः** आन्तरिक बेचैनी या चिन्ता, आन्तरिक ज्वर, · **वेदिः**-दी गंगा और यमुना के बीच का भूभाग,—**वेश्मन्** (न०) घर के अन्दर का कमरा, भीतरी कोठा,—**वेश्मिकः** कंचुकी,—**शरीरम्** मनुष्य का आन्तरिक या आत्मिक भाग, शरीर का भीतरी भाग, **शिला** विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली नदी, · **संज्ञ** (वि०) अन्तश्चेतन,—**सत्त्वा** गर्भवती स्त्री, -- **संतापः** आन्तरिक पीड़ा, शोक, खेद,—**सलिल** (वि०) जिसका पानी भूमि के अन्दर बहता हो,—नदीमिवान्तःसलिलां सरस्वतीम्—रघु० ३।९,—**सार** (वि०) अन्दर से भरा हुआ, या शक्तिशाली, बलवान् भारी और जटिल—°**र घन तुलयितु नालिनः** शक्नुयात्त्वाम्— मेघ० २० (—रः) आन्तरिक कोष या भंडार, आन्तरिक निधि या तत्त्व, **सेनम्** (अव्यय) सेनाओं के बीच में,—**स्थः** ('अंतस्थ' भी) अर्धस्वर, क्योंकि वे स्वर और व्यंजनों के बीच में स्थित हैं, और वागिन्द्रिय के जरा से संपर्क से बोले जाते हैं,- **स्वेदः** मस्त हाथी,—**हासः** गुप्त या दबाई हुई हँसी,— **हृदयम्** हृदय का भीतरी भाग ।

अन्तर (वि०) [अन्तरादिदमादि-रा + क] 1 अंदर होने वाला, भीतर का, (विप० बाह्य) 2. निकट, समीप 3. सबद्ध, घनिष्ठ, प्रिय-अयमत्यन्तरो मम-भारत 4. समान ('अन्तरतम' भी) (ध्वनि और शब्दों के विषय में)-स्थानेऽन्तरतमः-पा० १।१।५० 5. से भिन्न, अन्य (अपा० के साथ) 6. बाहर का, बाह्यस्थित, बाहर रहने वाला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(इस अर्थ में इसके रूप विकल्प से कर्ता० ब० व०, अपा० और अधि० एक व० में 'सर्व' की भांति होते हैं) इसलिए-अन्तरायां पुरि, अन्तरायै नगर्यै,—रघु 1. (क०) भीतर का, अन्दर का —लीयन्ते मुकुलान्तरेषु--रत्न० १।२६, (ख०) छिद्र, सूराख 2. आत्मा, हृदय, मन—सदशं पुरुषान्तरविदौ महेन्द्रस्य —विक्रम० ३, 3. परमात्मा, 4. अन्तराल, मध्यवर्ती काल या देश—अलकुचान्तरा—विक्रम ४।२६, बृहद्भुजान्तरम्—रघु० ३।५४, 'अन्तरे' का बहुधा अनुवाद किया जाता है - मध्य में, बीच में—न मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे श० ६।१७, 5. स्थान, जगह, देश--मृणालसूत्रान्तरमध्यलम्यम् कु० १।४०, पौरुषं श्रय शोकस्य नान्तरं दातुमर्हसि—रा० शोक मत करो,—अन्तरम्-अन्तरम्-मूच्छ० रास्ता छोड़ो, 6. पहुंच, अन्दर जाना, प्रवेश, कदम रखना —लेभेऽन्तरं चेतसि नोपदेशः—रघु० ९।६६ लब्धान्तरा सावरणेऽपि गेहे ·· १६।७, 7. अवधि (काल की), निर्दिष्ट अवधि,—मासान्तरे देयम् —अमर०, इति तौ निरहान्तरमासौ—रघु० ८।५६, 8. अवसर, संयोग, समय—यावत्त्वामिन्द्रगुरवे निवे:. अनुभन्तरात्वेषी भवामि—श०, ७, 9. भेद (दो वस्तुओं के बीच) (सर्व० के साथ या समास में)—तद मनं च समुदपद्यलयोरिवान्तरम्—मालवि० १, यदन्तरं सर्षपशैलराजयोर्यदन्तरं वायसवैनतेययो:—रा०, दुष्प्रापालनुमता किमन्तरम्—रघु० ८।९०, 10. (गणित) भिन्नता, शेष, 11. (क०) भेद, अन्य, दूसरा, परिवर्तित, बदला हुआ (रीति, प्रकार, ढंग आदि) (ध्यान रखिये इस अर्थ में 'अंतर' सदैव समस्तपद का उत्तर पद रहता है तथा इसका लिंग वही बना रहता है—अर्थात् नपु० चाहे पूर्वपद का कुछ भी लिंग हो—कन्यान्तरम् (अन्याकन्या), राजान्तरं (अन्यो राजा), गृहान्तरम् (अन्यद् गृहम्), इसका अनुवाद बहुधा 'अन्य' शब्द से किया जाता है)—इदमवस्थान्तरमारोपिता—श० ३, परिवर्तित दशा, (ख) विविध, विभिन्न (ब० व० में प्रयुक्त)—लोकी नियम्यत इवात्मदेशान्तरेषु-श० ४।२, 12. विशेषता, (विशिष्ट) प्रकार, विभेद, या किस्म—प्रीक्षान्तरेऽप्पण:--ज्ञि०, मौनो राज्यन्तरे-तद० 13. दुर्बलता, आलोच्य स्थल, असफलता, दोष, सदोष स्थल,—प्रहरेऽन्तरे रिपुं-शब्द०, सुजय: खलु तादृगन्तरे-कि. २।५२, 14. जमानत, प्रत्याभूति, प्रतिभूति, 15. सर्व श्रेष्ठता,—गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातु:-मालवि० १।६ (यह अर्थ ११ संख्यान्तर्गत से भी जाना जा सकता है), 16. वस्त्र (परिधान) 17. प्रयोजन, आशय (मल्लि०—रघु० १६।८२) 18. प्रतिनिधि, स्थानापत्ति, 19. हीन होना। सम०—अवस्था गर्भवती स्त्री,—ज्ञ (वि०) अन्दर का रहस्य जानने वाला, प्राज्ञ. दूरदर्शी,—तान्तरज्ञा: स्त्रियो जातु प्रियैरासां न भूयते—कि० ११।२४,—दिशा (अन्तरा दिक्) परिधि का मध्यवर्ती प्रदेश या दिशा,—पु (पू) रुष: आन्तरिक मानव, आत्मा (मानव के अन्दर निवास करने वाला देवता जो कि उसके सब कार्यों को देखता है)--प्रभव: मिश्रित जाति में जन्म लेने वाला,—स्थ —स्थायिन्,—स्थित (वि०) 1. आभ्यन्तरिक, आंतरिक, अन्तर्हित 2. अन्तःक्षिप्त:, अन्तर्वर्ती।

अन्तरत: (अव्य०) [अन्तर+तसिल्] 1. भीतर, आंतरिक रूप में, मध्य, 2. के अन्दर (संब० के साथ)।

अन्तरतम (वि०) [अन्तर+तमप्] अत्यन्त निकट, आंतरिक, निकटतम, घनिष्ठतम, सदृशतम —म: उसी श्रेणी का अक्षर।

अन्तरय:—रायः [अन्तर+अय्+अच्] अवरोध, बाधा, रुकावट.-स चेत् स्वमन्तरायो भवसि च्युतो विधि: · रघु० ३।४५, १४।६५, अस्य ते बाणपथवर्तिन: कृष्णसारस्य अन्तरायो तपस्विनौ संवृत्तौ—रा० (पाठ०)

अन्तरयति [ना० धा०—पर०] 1. बीच में डालना, हटाना, स्थगित करना, भवतु तावदन्तरयामि—उत्तर० ६, 2. विरोध करना, 3. दूर हटाना. पीछे से धकेलना।

अन्तरयण=अन्तरय

अन्तरा (अव्य०) [अन्तरेति -इण्+डा] 1' (क्रि० वि० के रूप में) (क) भीतर, अन्दर, भीतर की ओर (ख) मध्य में, बीच में, त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ -श० २, रघु० १५।२०, (ग) मार्ग में, बीच में विलंबेथां च मांतरा -महावीर० ७।२८ (घ) पड़ोस में, निकट ही, लगभग (ङ) इसी बीच में (च) समय समय पर, यहाँ वहाँ, कभी कभी, कुछ समय तक, अब, अभी —अन्तरा पितृसक्तस्तरा मातृसक्तस्तरा शुकनासमयं कुर्वन्नालापं --का० ११८, 2. (कर्म के साथ स० अव्य० की भांति) (क) अन्तरा त्वां मां च कमण्डलु:—महा० (ख) के बिना, सिवाय- -न च प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते—मुद्रा० ३। सम०—अंस: छाती,—भवदेह:,—भवसत्त्वम्—आत्मा या जीवात्मा, जो जन्म और मरण की अवस्थाओं के बीच में रहता है, दिश् दे०—अन्तर्दिश —वेदि-दी (स्त्री) 1.स्तंभाश्रित बरांडा, दहलीज, ड्योढ़ी 2. एक प्रकार की दीवार--रघु० १२।९३,—भूंगम् (अव्य०) झींगों के बीच में।

अन्तराय:=अंतरय: तु०

अन्तरालम्] [अन्तरं व्यवधानसीमाम् आराति गृह्णा।
अन्तरालकम्] अन्तर+आ+रा+क रस्य लत्वम्] 1. मध्यवर्ती प्रदेश, स्थान, या काल, अवकाश —दक्षिणस्याः पूर्वसंयास्त्र दिशोरन्तराले दक्षिणपूर्वा—सिद्धा०, अंतराले बीच में, के मध्य, के बीच, अवकाश के समय, बाष्पाभ: परिपतनोद्गमान्तराले—उत्तर० १।३१,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. भीतर, अन्दर, भीतरी या मध्यभाग 3. मिश्रित जाति या सम्प्रदाय।

अन्तरि(री)क्षम् [अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते—इति—अन्तर्+ईक्ष+घञ्, पृषो० ह्रस्वः वा] आकाश और पृथ्वी के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश, वायु, वातावरण आकाश। सम० -उदरम् वातावरण का मध्य,—गः, —चरः पक्षी,—जलम् ओस,- लोकः मध्यवर्ती प्रदेश जो कि एक स्वतंत्र लोक समझा जाता है।

अन्तरित (वि०) [अन्तः+इ+क्त] 1. बीच में गया हुआ, अन्तर्वर्ती, 2. अन्दर गया हुआ, गुप्त, ढका हुआ, पृथक् किया हुआ, अदृश्य, पार्श्वान्तरित एव विश्वस्तामेनां पश्यामि -श० १, लता के पीछे छिपा हुआ,—सारसेन स्वदेहान्तरितो राजा— हि० ३, पर्दे के पीछे छिपा हुआ 3. अंदर गया हुआ. प्रतिबिम्बित—स्फटिकभित्त्यन्तरितान् मृगशावकान् (क) अवरुद्ध, बाधित, रोका गया—स्वद्वाञ्छान्तरितानि साध्यानि मुद्रा० ४।१५, नोपालभ्यः देवान्तरितपौरुषः -पंच० २।१३, (ख) पृथक्कृत, अदृश्य, अदृष्ट, मुहूर्तान्तरितमाधवा दुर्मनायमाना माल० ८, मेघैरन्तरितः प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी—सा० द० (ग) डूबा हुआ, तिरोहित 4. ओझल, नष्ट, वियुक्त, सहृत—अन्तरिते तस्मिन् शवरसेनाधिपौ का० ३३. 5. अतिक्रांत, भूला हुआ।

अन्तरीपम् [अन्तरं मध्ये गता आपो यस्य ब० स०, आत् दीर्घत्वम्] भूमि का टुकड़ा जो समुद्र के भीतर चला गया हो, भूखण्डिका, द्वीप।

अन्तरीयम् [अन्तर+छ] अधोवस्त्र।

अन्तरेण (अव्य०) [अन्तर+इण्+ण] 1. [कर्म० के साथ सं० अव्यय के रूप में] (क) सिवाय, के बिना, क्रियान्तरान्तरायमन्तरेण आर्य दृष्टुमिच्छामि—मुद्रा० ३. न राजापराधमन्तरेण प्रजास्वकालमृत्युश्चरति - उत्तर० २, मार्मिकः को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम् भामि० १।११७, (ख) के विषय में, संबंध करते हुए, के संबंध में—अथ भवन्तमन्तरेण कोदृशोऽस्या दृष्टिरागः - श० २, तदस्या देवी वसुमतीमन्तरेण महत्पालम्भनं गतोऽस्मि —श० ५, (ग) के बीच में, त्वा मां चान्तरेण कमण्डलुः—महा० 2. (क्रि० वि०) (क) के बीच में, के मध्य (ख) हृदय में।

अन्तर्गत } (वि०) [अन्तः+गम्+क्त, णिनिर्वा] 1. बीच
अन्तर्गामिन् } में मध्य में, गया हुआ, (तुरे शब्द की भांति) बीच में आया हुआ, 2. अन्तःस्थित, अन्तःसम्मिलित, विद्यमान, संबद्ध 3. गुप्त, आन्तरिक, अन्दर की ओर, रहस्य, गूढ़,—अन्तर्गतमपास्तं मे रजसोऽपि परं तमः—कु० ६।६०, सौमित्रिरन्तर्गतबाष्पकण्ठः—रघु० १४।५३ नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः—पंच० १।४४, 4. स्मृतिपथ से गया हुआ, भूला हुआ, 5. नष्ट हुआ हुआ, ओझल, 6. अदृष्ट। सम०—उपमा गुप्त उपमा,—मनस्=अंतर्मनस् तु०।

अन्तर्धा [अन्तर्+धा+अङ्] आच्छादन, गोपन, —अन्तर्धामुपयुयुक्षुलावलीषु—शि० ८।१२।

अन्तर्धानम् [अन्तर्+धा+ल्युट्] अदृश्य होना, ओझलपना, दृष्टि से चूक जाना—व्यमनरसिका रात्रिका पालिकीयम्—काव्य० १०; °गम् या इ—अदृश्य होना, ओझल होना।

अन्तर्धिः (स्त्री०) [अन्तर्+धा+कि] ओझल होना, गोपन।

अन्तर्भवः (वि०) [अन्तर् भवतीति—भू+अच्] अन्दर की ओर, आन्तरिक।

अन्तर्भावः [अन्तर्+भू+घञ्] 1 अन्तर्भूत या अन्तर्मिलित होना, अन्तर्गत होना,—तेषां गुणानामभोऽस्यन्तर्भावः—काव्य० ८, 2. अन्तर्हित भाव।

अन्तर्भावना [अन्तर्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. सम्मिलित करना, 2. अन्तश्चिन्तन या चिन्ता।

अन्तर्य (वि०) [अन्तर+यत्] आन्तरिक, बीच में।

अन्तर्हित (वि०) [अन्तर्+धा+क्त] 1. बीच में रक्खा हुआ, पृथक्कृत, दृष्टिरुद्ध, गुप्त, छिपा हुआ—अन्तर्हिता शकुंतला वनराज्या श० ४, 2. ओझल हुआ, नष्ट, अदृश्य—अन्तर्हिते शशिनि—श० ४।२; । सम०—आत्मन् (पुं०) शिव।

अन्ति (अव्य०) [अन्त+इ] पास में (संबं० के साथ), (स्त्री०—तिः) बड़ी बहन (नाटकों में)।

अन्तिका [अन्त+द स्वार्थे कन् टाप्] 1. बड़ी बहन 2. चूल्हा, अंगीठी, 3. एक पौधे का नाम (सातलाख्य या शातलाख्य औषधि)।

अन्तिक (वि०) [अन्तः सामीप्यमस्यातीति—अन्त+ठन्] 1. निकट, समीप (संबं० या अपा० के साथ), 2 पहुंचने वाला, 3. टिकाऊ, सख्त,—कम् निकटता, सामीप्य, पड़ौस, उपस्थिति, न त्यजन्ति ममान्तिकम्—हि० १।४६, °न्यस्त—रघु० २।२४ कर्ण—°चर—श० १।२४, (क्रि० वि०) (संबं० और अपा० के साथ अथवा समास के अन्त में] निकट, पड़ौस में,—अन्तिकं ग्रामात् ग्रामस्य वा—सिद्धा०, सामीप्य या सन्निधि में, अन्तिकेन—निकट (संबं० के साथ) अन्तिकात्—निकट, पास से, से (अपा० या संबं०) °कादागत,—अंतिके निकट, —दमयन्त्यास्तदान्तिके निषेतुः नल० १।२२। सम० -आश्रयः पास की वस्तु का सहारा लेने वाला, लगातार सहारा (जैसा कि वृक्ष के द्वारा लता को दिया जाता है)।

अन्तिम (वि०) [अन्त+डिमच्] 1. तुरन्त बाद आनेवाला, 2 आखरी, अन्त का, चरम--अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यो न चान्तिमः—हि० १, । सम०—अंकः आखरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक, गो की संख्या,—अङ्गुलिः—छोटी (कनिष्ठिका) अंगुली।

अन्ती [अन्त+ङ+ङीप्] चूल्हा, अंगीठी।

अन्से—दे० "अन्तः" के नीचे।

अन्त्य (वि०) [अन्त+यत्] 1. अन्तिम, चरम (अक्षर या शब्द आदि) अन्त में (समय, क्रम या स्थान की दृष्टि से) जैसे कि अक्षरों में 'ह्', नक्षत्रों में 'रेवती', अन्तिम वयसि-बूढ़ी अवस्था में-रघु० १।७२, अन्त्यम् ऋणम्-रघु० १७१ अन्तिम ऋण, 'मदनं ८।७१, कु० ४।२२, 2. तुरन्त बाद में, (समा०) 3. निम्नतम, अधम, घटिया, नीच, -त्यः 1. अधम जाति का मनुष्य, 2. शब्द का अंतिम अक्षर 3. अंतिम चांद्र मास अर्थात् फाल्गुन 4. म्लेच्छ, -त्या अधम जाति की स्त्री, -त्यम् 1. सौ नील की संख्या (१०००००००००००००००००) 2. मीन राशि 3. प्रगति का अंतिम अंग। सम०—अवसायिन् (पुं०-यी, स्त्री-यिनी) अधम जाति की स्त्री या पुरुष, निम्नांकित सात इसी श्रेणी से शब्द रखने वाले समझे जाते हैं,-चांडालः श्वपचः श्वना सूना वैदेहकस्तथा, मागधायोगवौ चैव सप्तैतेऽन्त्यावसायिनः। —आहुतिः,—इष्टिः (स्त्री०)—कर्मन्,—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार की आहुतियाँ या और्ध्वदैहिक संस्कार, —ऋणम् तीन ऋणों में अंतिम जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को उत्पन्न होना है अर्थात् सन्तानोत्पत्ति करना, दे० अनृण,—ज,—जन्मन् (पुं०) 1. शूद्र 2. सात नीच जातियों (चांडाल आदि) में से एक; जन्मन्,—जाति,—जातीय (वि०) 1. नीच जाति में उत्पन्न होने वाला, 2. शूद्र 3. चांडाल भम् अंतिम चान्द्र नक्षत्र-रेवती,—युगम् अन्तिम अर्थात् कलियुग,—योनि (वि०) नीच वंश का मनु० ८।६८, -लोपः शब्द के अन्तिम अक्षर का लोप करना,—वर्णः,—वर्णा नीच जाति का पुरुष या स्त्री, शूद्र, या शूद्रा।

अन्त्यकः [अन्त्य एवेति स्वार्थे कन्] नीच जाति का पुरुष।

अन्त्रम् [अन्त्+ष्ट्रन्-अम्+क्त वा] आंत, अंतड़ी-अन्त्र-भेदनं क्रियते प्रश्नवश्च-महावीर० ३। सम०-कूजः, —कूजनम्,—विकूजनम्—आंतों में होने वाली गड़-गड़ाहट की आवाज़, —वृद्धिः (स्त्री०) आंत उतरने की बीमारी, हरणिया, अंडकोश बढ़ने का रोग, —शिला विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली एक नदी, —सज् (स्त्री०) अंतड़ियों की माला (जिसको नृसिंह ने धारण किया)।

अन्त्रंभिः (स्त्री०) अजीर्ण, अफारा।

अन्त्रुः—ङ्गः (स्त्री०) } [अन्त्र+कु पक्षे ऊङ्, स्वार्थे कन् च]
अन्त्रु (ङ्गु) कः } 1. शृंखला, या हथकड़ी बेड़ी, 2. हाथी के पैरों को बांधने के लिए जंजीर, 3. गूगुर।

अन्दोलनम् [अन्दोल्+ल्युट्] झूलना, घुमाऊ, कंपनशील ...द्राक् चामरान्दोलनात्—उद्भट०।

अन्ध् (चु० उभ०) 1. अंधा बनाना, अंधा करना—अंधयन् भृंगमालाः शि० ११।१९, 2. अंधा होना।

अन्ध (वि०) [अन्ध्+अच्] 1. अंधा (शब्द० और आलं० प्रयोग) दृष्टिहीन, देखने में असमर्थ (किसी विशिष्ट समय पर), अंधा किया हुआ, सजलमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तो धुनोत्यहिभीरुया—शा० ७।२४, **सदान्धः**- नदी में अंधा, इसी प्रकार दर्पान्धः, **क्रोधान्धः**, 2. अंधा बनाने वाला, दृष्टि को रोकने वाला, नितांत पूर्ण अंधकार; सोदन्वान्धे तमसि-उत्तर० ३।३८ -न्धम् 1. अंधकार 2. जल, पंकिल जल। सम०-कारः अंधेरा (शब्द० और आलं०), कारे, मदन्ते अन्धकारतामुपयाति चक्षुः का० ३६, घूमिल हो जाती है, -कूपः 1. कुआँ जिसका मुंह ढंका हुआ होता है, ऐसा कुआँ जिसके ऊपर घास उगा हुआ हो 2. एक नरक का नाम, —तमसम्,-तामसम्, अन्धातमसम्—गहन अंधकार, पूरा अंधेरा—रघु० ११।२४,—तामिस्रः—स्रः (तामिस्रम्) नितांत गहन अंधकार,—धी (वि०) मानसिक रूप से अंधा,—पूतना राक्षसी जो बच्चों में रोग फैलाने वाली मानी जाती है।

अन्धकरण (वि०) [अन्धक्+ल्युट्] अंधा करने वाला।

अन्धंभविष्णु,—भावुक (वि०) [अन्धंभू+इष्णुच्, उकञ् वा] अंधा होने वाला।

अन्धक (वि०) [अन्ध+कन्] अंधा,—कः कश्यप और दिति का पुत्र जो राक्षस था और शिव के हाथों मारा गया था। सम०-अरिः,—रिपुः,—शत्रुः,—घाती, —असुहृद् अंधक को मारने वाला, शिव की उपाधि, -वर्तः पहाड़ का नाम, -वृष्णि (पुं० ब० व०) अंधक और वृष्णि के वंशज।

अन्धस् (न०) [अद्+असुन् नुम् धश्च] भोजन,-द्विजाति-शेषेण यदेतदन्धसा- कि० १।३९।

अन्धिका [अन्ध्+ण्वुल् इत्वम् टाप् च] 1 रात्रि, 2. एक प्रकार का खेल, आंखमिचौनी, जूआ 3. आँख का रोग।

अन्धुः [अन्ध्+कु] कुआँ।

अन्धाः [अन्ध्+र, ब० व०] 1 एकदेश तथा उसके निवासी 2. एक राजवंश का नाम 3. संकर वर्ण का पुरुष।

अन्नम् [अद्+क्त, अन्+नन् वा] 1. सामान्यतः भोजन, 2. अन्नमयकोश 3. भात—न्नः सूर्य। सम०—अन्नम् उपयुक्त आहार, सामान्य भोजन —आच्छादनम्, —वस्त्रम् भोजन वस्त्र, —कालः भोजन करने का समय, —किट्टः=°मलं तु०, —कूटः भात का बड़ा ढेर, —कोष्ठकः 1. डोली, बनाज की कोठी 2. विष्णु 3. सूर्य, —गंधिः पैंचिश दस्तों की बीमारी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—**जलम्** अन्न और जल,—**दासः** भोजन मात्र पाकर सेवा करने वाला दास या नौकर, —**देवता** आहार की सामग्री की अधिष्ठात्री देवी, —**दोषः** निषिद्ध भोजन के खाने से उत्पन्न पाप, —**द्वेषः** भोजन में अरुचि, भूख का अभाव, **पूर्णा** दुर्गा देवी का एक रूप (अर्थात् सम्पन्नता की देवी) —**प्राशः**, —**प्राशनम्** १६ संस्कारों में से एक संस्कार जबकि नवजात बालक को पहली बार विविधवत् भोजन देने की क्रिया सम्पादित की जाती है, यह संस्कार ५ से ८ महीने के मध्य (प्रायः छठे मास में मनु० २।३४) किया जाता है, —**ब्रह्मन्**, —**आत्मन्** (पुं०) आहार का प्रतिनिधित्व करने वाला ब्रह्म, —**भुज्** (वि०) भोजन करने वाला, शिव की उपाधि, —**मय** (वि०) दे० नीचे, **मलम्** 1. बिष्ठा, 2. मंदिरा, **रक्षा** भोजन करने में सावधानी, —**रसः** आहार का सत्, एक जाने पर अन्न के भीतरी गूदे से बना रस, —**वस्त्रम्**=**आच्छादनम्** तु० **व्यवहारः** खानपान संबंधी प्रथा या विधि अर्थात् दूसरों के साथ मिलकर खाना या न खाना, —**शेषः** जूठन, उच्छिष्ट —**संस्कारः** देवताओं के निमित्त अन्न का समर्पण।

अन्नमय (वि०) (स्त्री०—यी) [अन्न+मयट्] अन्न वाला या अन्न से बना पदार्थ; **°कोशः**—**वः** भौतिक शरीर, स्थूलशरीर, जो अन्न पर ही आधारित है तथा जो कि आत्मा का पाचनी वस्त्र या परिधान है, भौतिक संसार, स्थूलतम तथा निम्नतम रूप जिसके द्वारा ब्रह्म अपने आपको सांसारिक सत्ता के रूप में प्रकट करने वाला माना जाता है, —**यम** अन्न की बहुतायत।

अन्य (वि०) [नञ्० **अन्यत्**] 1. दूसरा, भिन्न, और; साधान्यतः दूसरा, और स एव तस्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् भर्तृ० नी० ४०. 2. अपेक्षाकृत दूसरा, से भिन्न, की अपेक्षा और (अपा० के साथ अथवा समास में अन्तिम पद) नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह सर्वजन्तूनाम् —का० ३५, उत्सिक्त दहशेऽन्यच्च रुरुधेभ्यो न किंचन रघु १२।४९ 3. अनोखा, असाधारण, विशेष —**अन्या** जगद्वितमयी मनसः प्रवृत्तिः—भामि० १।६९, **अन्या** मृदवैव सा—सा० द०, 4. तुच्छ, नीच 5 अतिरिक्त, नया, अधिक, **अन्यच्च** —इसके अतिरिक्त, इसके साथ ही, तो फिर (वाक्यों को संयुक्त करने वाला); **एक-अन्य** एक-दूसरा-भेद० ७८, दे०, एक के नीचे भी **अन्य-अन्य** और और, **अन्यत्मूले अन्याश्रिवंहणे**—मुद्रा० ५, **अन्यदुच्छलं सत्त्व-मन्यच्छास्त्रनिपत्रितम्**—शि० २।६२, **अन्य-अन्य-अन्य आदि**, पहला, दूसरा, तीसरा चौथा आदि। सम०— —**असाधारण** (वि०) जो दूसरों के प्रति सामान्य न हो, विशेष, —**उदर्य** (वि०) दूसरे से उत्पन्न (—औ) सौतेली माता का पुत्र, अर्धभ्राता (—र्या) अर्ध-भगिनी, —**ऊढा** (वि०) दूसरे से विवाहित, दूसरे की पत्नी, —**क्षेत्रम्** 1. दूसरा खेत 2. दूसरा देश या विवेश 3. दूसरे की पत्नी, —**ग**, —**गामिन्** (वि०) 1. और के पास जाने वाला, 2. व्यभिचारी, लम्पट, —**गोत्र** (वि०) दूसरे कुल या वंश का, —**चित्त** (वि०) किसी और पदार्थ पर ध्यान लगाने वाला, दे० **°मनस्**, —**ज**, —**जात** (वि०) भिन्न कुल में उत्पन्न, **जन्मन्** (नपुं०) दूसरा जीवन, पुनर्जन्म, आवागमन, —**तुवंह** (वि०) जो दूसरे को सहन न कर सके—**देवत**, —**देवत्य** (वि०) दूसरे किसी देवता को संबोधित करने वाला या मंत्र द्वारा उल्लेख करने वाला,—**नाभि** (वि०) किसी दूसरे कुल से संबंध रखने वाला, **पदार्थः** 1. दूसरी वस्तु 2. दूसरे शब्द का भाव, °**प्रवत्नो बहुवंहिः**—बहुव्रीहि **समास** निश्चित रूप से **अन्यपदप्रधान** होता है,—**पर** (वि०) 1. दूसरों का भक्त 2. किसी दूसरे का उल्लेख करने वाला, —**पुष्ट**, —**भृत**,—**ता** दूसरे से पाला हुआ या पाली हुई, कोयल की उपाधि, जो कि कौवे के द्वारा पाली हुई समझी जाती है अतः एव 'अन्यभृत्' कहलाती है अन्यान्यपुष्टा प्रतिकूलशब्दा कु० १।४५, कलमन्य-भृतामु भाषितम् रघु० ८।५९, —**पूर्वा** 1. वह स्त्री जिसका वाग्दान किसी और के साथ हो चुका है 2. पुन-र्विवाहित विधवा, **बीज**, —**बीजसमुद्भवः**,—**समुत्पन्नः** गोद लिया हुआ पुत्र (दूसरे माता पिताओं से उत्पन्न), वह जो कि औरस पुत्र के अभाव में गोद लिया जा सके, —**भृत** (पुं०) कौवा (दूसरों को पालने वाला), **मनस्**, —**मनस्क**, **मानस** (वि०) 1. अवधानहीन 2. चंचल, अस्थिर,—**मातृजः** अर्धभ्राता (दूसरी मां से उत्पन्न), **रूप** (वि०) परिवर्तित या बदले हुए रूप वाला, —**लिंग**, —**वक** (वि०) दूसरे शब्द के लिंग वाला अर्थात् नामशब्द, विशेषण, —**वापः** कोयल, —**विवाहित** (वि०) =**पुष्ट** कोयल,—**संगम**, दूसरी स्त्री से रति क्रिया, अवैध मैथुन, —**साधारण** (वि०) बहुतों के लिए सामान्य, —**स्त्री** दूसरे की पत्नी, जो अपनी पत्नी न हो (साहित्य शास्त्र में वह तीन मुख्य नायिकाओं—स्वीया, अन्या, साधारणी – में से एक है, 'अन्या' या तो किसी दूसरे की पत्नी होती है अथवा अविवाहित कन्या जो युवती तथा लज्जाशील होती है, दूसरे की पत्नी आमोद-प्रमोद तथा उत्सवों के लिए उत्सुक रहती है तथा अपने कुल के लिए कलंक एवं नितान्त निर्लज्ज होती है—सा० द० १०८-११०) —**गः** व्यभिचारी।

अन्यक = अन्य।

अन्यतम (वि०)[अन्य+इतम](संज्ञा शब्द की भांति कारक के रूप) बहुतों में से एक, बड़ी संख्या में से कोई एक, **अन्यतर** (वि०) [अन्य+तरप्](सर्वनाम की भांति रूप),

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो में से (पुरुष या पदार्थ) एक, दोनों में से कोई सा एक (संब० के साथ), सतः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते—मालवि० १।२, **अन्यतरस्याम्** (°रा का अधि० ए० ब०) किसी तरह, दोनों तरह, **इच्छानुरूप**।

अन्यतरतः (क्रि० वि०) [अन्यतर+तसिल्] दो में से एक ओर।

अन्यतरेद्युः (अव्य०) [अन्यतरस्मिन्नहनि—अन्यतर+एद्युस् नि०] दो में से किसी एक दिन, एक दिन, दूसरे दिन।

अन्यतः (अव्य०) [अन्य+तसिल्] 1. दूसरे से 2. एक ओर, **अन्यतः—अन्यतः, एकतः—अन्यतः**—एक ओर—दूसरी ओर, **सपनमण्डलदीपितमेकतः सततनैश-तमोवृतमन्यतः**—कि० ५।२, 3. किसी दूसरे कारण या प्रयोजन से।

अन्यत्र (अव्य०) [अन्य+त्रल्] (प्रायः = अन्यस्मिन्—संज्ञा या विशेषण के बल से) 1. और जगह, दूसरे स्थान पर 2. किसी दूसरे अवसर पर 3. सिवाय, के बिना 4. अन्यथा, दूसरी अवस्था में।

अन्यथा (अव्य०) [अन्य+थाल्] 1. वरना, दूसरी रीति से, भिन्न तरीके से—यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा—हि० १, **अन्यथा-अन्यथा** एक प्रकार से—दूसरे ढंग से, **अन्यथाकृ** दूसरी तरह करना, परिवर्तन करना, बदलना, बिगाड़ना, मिथ्या करना—त्वया कदाचिदपि मम वचनं नान्यथाकृतम् पंच० ४, 2. नहीं तो, वरना, इसके विपरीत—**अस्ति नास्ति** कथमन्यथा वास्तव्यपि तां न पश्येत्—उत्तर० ३, 3. इसके विपरीत 4. मिथ्यापन से, झूठपने से—किमन्यथा भटिटनी मया विज्ञापितपूर्वा—विक्रम० २, 5. गलती से, भूल से, बुरे ढंग से जैसा कि **अन्यथा सिद्ध** दे० नीचे। सम० —**अनुपपत्तिः** (स्त्री०) दे० अर्थापत्ति,—**कारः** परिवर्तन, बदल बदल,(—**रम्**) [क्रि० वि०] भिन्न तरीके से, भिन्न ढंग से—पा० ३।४।२७,—**ख्यातिः** (स्त्री०) शक्ति की गलत अवधारणा, सामान्य रूप से (दर्शन-शास्त्र में) मिथ्या अवधारणा,—**भावः** बदलबदल, परिवर्तन, भिन्नता,—**वादिन्** (वि०) भिन्न रूप से या मिथ्या बोलने वाला, (विधि में) अपलापी साक्षी —**वृत्ति** (वि०) 1. परिवर्तित 2. बदला हुआ 3. भावा-विष्ट, सबल संवेगों से विक्षुब्ध,—**मेयः** ३,—**सिद्ध** (वि०) जो मिथ्या ढंग से प्रदर्शित या प्रमाणित किया गया हो, (न्याय में) उस कारण को कहते हैं जो सत्य न हो, तथा जो केवल मात्र आकस्मिक एवं दूरगामी परिस्थितियों का उल्लेख करे,—**सिद्धत्वम्**,—**सिद्धिः** (स्त्री०) मिथ्या प्रदर्शन, अनावश्यक कारण, आक-स्मिक या केवल मात्र सहवर्ती परिस्थिति—माचा० प० १६,—**स्तोत्रम्**—व्यंग्योक्ति, ताना, व्यंग्य।

अन्यथा (अव्य०) [अन्य+था] 1. किसी दूसरे समय, दूसरे अवसर पर, किसी दूसरे मामले में—अन्यदा भूषणं पुंसां क्षमा लज्जेव योषिताम् शि० २।४४, रघु० ११।७३, 2. एक बार, एक समय पर, एक अवसर पर, 3. किसी समय।

अन्यदीय (वि०) [अन्यदा+छ] 1. किसी दूसरे से संबंध रखने वाला 2. दूसरे में रहने वाला।

अन्यर्हि (अव्य०) [अन्य+हिल्] किसी दूसरे समय (= अन्यदा)।

अन्यादृश् —श —श (वि०) [अन्य इव पश्यति—अन्यदृश्+क्स, क्विन्, क्र्ञ् वा आत्वम् च] परिवर्तित, असा-धारण, अनोखा।

अन्याय (वि०) [न० ब०] न्यायरहित, अनुपयुक्त,—यः 1. कोई न्याय रहित या अवैधकृत्य—दे० 'न्याय', **अन्यायेन** अन्याय के साथ, अनुचित ढंग से 2. न्याय का अभाव, औचित्य का अभाव 3. अनियमितता।

अन्यायिन् (वि०) [अ न्याय+णिनि] न्यायरहित, अनुचित।

अन्याय्य (वि०) [न० त०] 1. न्याय रहित, अवैध 2. अनु-चित, अशोभनीय 3. अप्रामाणिक।

अन्यून (वि०) [न० त०] दोषरहित, त्रुटिहीन, पूर्ण, समस्त सकल,—°**अधिक** न त्रुटिपूर्ण न आवश्यकता से अधिक। सम०—**अंग** (वि०) निर्दोष अंगों वाला।

अन्येद्युः (अव्य०) [अन्य+एद्युस् नि०] 1. दूसरे दिन, अगले दिन, **अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं जिज्ञासमाना**—रघु० २।२९, 2. एक दिन, एक बार।

अन्योन्य (वि०) [अन्य—कर्मव्यतिहारे द्वित्वम्, पूर्वपदे सुरुच] एक दूसरे को, परस्पर (सर्वनाम की भांति) प्रायः समस्त पदों में, °**कलहः** पारस्परिक झगड़ा, इसी प्रकार °**घातः**, —**श्रयम्** (अव्य०) आपस में। सम० —**अभावः** पारस्परिक सत्ता का न होना, अभाव के दो प्रकारों में से एक, ('भेद' का समानार्थक),—**आश्रय** (वि०) आपस में एक दूसरे पर निर्भर,(—**यः**) आपस में या बदले की निर्भरता, कार्यकारण का (न्याय में) इतरेतर संबंध,—**उक्तिः** (स्त्री०) वार्तालाप,—**भेदः** पारस्परिक द्वेष या शत्रुता,—**विभागः** साझीदारों द्वारा रिक्थ का पारस्परिक विभाजन (बिना किसी और पक्ष के सम्मिलित हुए),—**वृत्तिः** (स्त्री०) किसी वस्तु का एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव,—**व्यतिकरः**, —**संश्रयः** इतरेतर क्रिया या प्रभाव, कार्य कारण का पारस्परिक संबंध।

अन्वक्ष (वि०) [अनुगतः अक्षम् इन्द्रियम्—ब० स०] 1. दृश्य 2. तुरन्त बाद में आने वाला,—**क्षम्** (अव्य०) 1. बाद में, पश्चात् 2. तुरंत बाद में, सामने, सीधे—या० ३।२१।

अन्वक् (अव्य०) [अनु+अञ्च्+क्विप् नपुं० ए० व०] 1. बाद में, 2. पीछे से 3. मंत्रीभाव से व्यवहृत, अनुकूल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूप में, अन्वाभूत्वा,—भावम्,—आस्तै मित्रतापूर्वक व्यवहृत होना 4. (कर्म० के साथ) पश्चात् ताम्···अन्वगमयौ मध्यमलोकपालः—रघु० २।१६।

अन्वञ्च् (वि०) [अनु+अञ्च्+क्विप्] पीछे जाने वाला, पीछा करने वाला, अनुचि पीछे की ओर, पीछे से।

अन्वयः [अनु+इ+अच्] 1. पीछे जाना, अनुगमन, अनुगामी, परिजन, सेवकवर्ग—का त्वमेकाकिनी भीरु निरन्वयजने वने-भट्टि० ५।६६, 2. साहचर्य, मेलजोल, संबंध, 3. वाक्य में शब्दों का स्वाभाविक क्रम या संबंध, व्याकरण विषयक क्रम या संबंध, तात्पर्यार्थ। वृत्तिमाहुः पदार्थान्वयबोधने—सा० द०; शब्दों का युक्तियुक्त संबंध 4. तात्पर्य, अभिप्राय, प्रयोजन 5. जाति, कुल, वंश—रघुणामन्वयं वक्ष्ये···रघु० १।९, १२।६, 6. वंशज, सन्तति, बाद में आने वाली सन्तान—ताम्य ऋते अन्वयः—या० १।११७, 7. कार्यकारण का तर्कसंगत संबंध, तर्कसंगत नैरन्तर्य, जन्मादास्य यतोऽन्वयादितरतः—भाग० ८, (न्या० में) [हेतुसाध्ययोर्व्याप्तिरन्वयः]—भारतीय अनुमितिवाद में साध्य और हेतु की सतत तथा अपरिवर्त्य सहवर्तिता का वर्णन। सम०—आगत (वि०) आनुवंशिक, —कः वंशावली प्रणेता, रघु० ६।८,—व्यतिरेकः (°को या °कम) 1. विधायक और निषेधात्मक प्रतिज्ञा, सहमति और वैपरीत्य अर्थात् भिन्नता 2. नियम और अपवाद, —व्याप्तिः (स्त्री०) स्वीकारात्मक प्रतिज्ञा या सहमति, अंगीकारसूचक सामान्यपद।

अन्वर्थ (वि०) [अनुगतः अर्थम्—प्रा० स०] शब्द की व्युत्पत्ति के द्वारा ही जिसका अर्थ आसानी से जाना जा सके, भाव के अनुकूल, सार्थक—तुर्यश्चतुर्भिरन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२, अन्वर्था तैर्यमुत्सुका—कि० ११।६४। सम०—ग्रहणम् शब्द के अर्थ को शब्दशः स्वीकार करना, (विप० रूढ़), -संज्ञा 1. उपयुक्त नाम, एक पारिभाषिक नाम जो अपना अर्थ स्वयं प्रकट करता है, 2. यथार्थ नाम जिसका अर्थ स्पष्ट है।

अन्ववकिरणम् [अनु+अव+कृ+ल्युट्] क्रमपूर्वक चारों ओर बखेरना।

अन्ववसर्गः [अनु+अव+सृज्+घञ्] 1. शिथिल करना 2. इच्छानुसार व्यवहार करने देना, कामचारानुज्ञा, 3. स्वेच्छाचारिता।

अन्ववसित [अनु+अव+सो+क्त] (वि०) संयुक्त, संबद्ध, बँधा हुआ।

अन्वयः [अनु+अव+अय्+घञ्] जाति, कुल, वंश।

अन्ववेक्षः [अनु+अव+ईक्ष्+अङ+टाप्] लिहाज, विचार।

आन्वष्टका [अनुगता अष्टकाम्—प्रा० स०] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा के पश्चात् आने वाले पौष, माघ और फाल्गुन के कृष्णपक्ष की नवमी।

आन्वष्टक्यम् [अन्वष्टका+यत्] अन्वष्टका के दिन होने वाला श्राद्ध या ऐसा ही कोई दूसरा अनुष्ठान।

आन्वष्टमिशम् [अव्य०] [प्रा० स०] उत्तर पश्चिम दिशा की ओर।

आन्वहम् (अव्य०) [अनु+अहन्—प्रा० स०] दिन-ब-दिन, प्रति दिन।

आन्वाख्यानम् [अनु+आ+ख्या+ल्युट्] बाद में उल्लेख करना, या गिनना, पूर्वोक्त का उल्लेख करते हुए व्याख्या करना।

आन्वाचयः [अनु+आ+चि+अच्] 1. प्रधान कार्य का कथन करके गौण कार्य की उक्ति, मुख्य पदार्थ के साथ गौण पदार्थ का जोड़ना, 'च' निपात का एक अर्थ—भो भिक्षामट गां चानय—यहां पर भिक्षुक के प्रधान कार्य--(भिक्षार्थ बाहर जाने) के साथ एक गौणकार्य (गाय का ले आना) भी जोड़ दिया गया है 2. इस प्रकार का स्वयं एक पदार्थ।

आन्वाजे (अव्य०) [अनु+आजि+ङे] ('उपजे' की भांति इसका प्रयोग 'कृ' के साथ होता है) दुर्बल की सहायता करना, (यह विकल्प से उपसर्ग समझा जाता है) °कृत्य, या °कृत्वा।

आन्वादिष्ट (वि०) [अनु+आ+दिश्+क्त] 1. बाद में या के अनुसार, कहा हुआ, पुनः काम पर लगाया हुआ 2. घटिया, गौण महत्व का।

आन्वादेशः [अनु+आ+दिश्+घञ्] एक कथन के पश्चात् दूसरा कथन, पूर्वोक्त की पुनरुक्ति।

आन्वाधानम् [अनु—आ+धा+ल्युट्] अग्निहोत्र की अग्नि में समिधाएँ रखना।

आन्वाधिः [अनु+आ+धा+कि] (व्यवहारविधि में) 1. जमानत, किसी तीसरे व्यक्ति के पास धरोहर या प्रतिभूति जमा करना जिससे कि समय पर वह यथार्थ स्वामी को सौंपा जा सके 2. दूसरी धरोहर 3. अनवरत चिन्ता, खेद, पश्चात्ताप।

आन्वाधेयम्-यकम् [अनु+आ+धा+यत् स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का स्त्री-धन जो विवाह के पश्चात् पितृकुल या पतिकुल की ओर से या उसके अपने संबंधियों की ओर से उपहार स्वरूप दिया जाय—विवाहाग्नेरतो यच्च लब्धं भर्तृकुलात्स्त्रिया, आन्वाधेयं तु तद्द्रव्यं लब्धं पितृ (बन्धु) कुलात्तथा।

आन्वारम्भः—भणम् [अनु+आ+रभ्+घञ्, ल्युट् वा मुम् च] स्पर्श, संपर्क, विशेषतया यजमान (यज्ञ का अनुष्ठाता) को पूर्वोत्तर संस्कार के सफल का अधिकारी बनाने के लिए स्पर्श करना।

आन्वारोहणम् [अनु+आ+रुह्+ल्युट्] स्त्री का अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्वासनम् [अनु+आस्+ल्युट्] 1. सेवा, परिचर्या, पूजा 2. दूसरे के पीछे आसनग्रहण करना 3. खेद, शोक।

अन्वाहार्यः (-र्यम्), -र्यकम् [अनु+आ+हृ+ण्यत् स्वार्थे कन्] पितरों के सम्मान में अमावस्या के दिन किया जाने वाला मासिक श्राद्ध।

अन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—की] दैनिक, प्रतिदिन का।

अन्वाहित=तु० अन्वाधेय।

अन्वित (वि०) [अनु+इ+क्त] 1. अनुगत, अनुष्ठित, सहित, युक्त, 2. अधिकार प्राप्त, रखने वाला, आहृत, प्रभावित (करण के साथ या समास में) 3. संयुक्त, जोड़ा हुआ, क्रमागत 4. व्याकरण की दृष्टि से संयुक्त। सम०—अर्थ (वि०) प्रकरण से ही जिसके अर्थ आसानी से समझ में आ सकें,—**अर्थवादः**—**अभिधानवादः** मीमांसकों का एक सिद्धांत जिसके अनुसार वाक्य में शब्दों का अर्थ सामान्य या स्वतंत्र रूप से नहीं होना, बल्कि किसी विशेष वाक्य में एक दूसरे से संबद्ध होकर शब्द का जो अर्थ निकलता है, वही होता है। दे० काव्य० २, **अभिहितान्वयवाद** भी यही सिद्धान्त है।

अन्वीक्षणम्—क्षा [अनु+ईक्ष्+ल्युट्, अच् वा] 1. खोज, ढूंढना, गवेषणा 2. प्रतिबिंब।

अन्वीत=तु० अन्वित।

अन्शुचम् (अव्य०) [प्रा० स०] एक ऋचा के पश्चात् दूसरी ऋचा।

अन्वेषः—**षणम्**—**णा** [अनु+इष्+घञ्, ल्युट् वा, स्त्रियां टाप्] ढूंढना, खोजना, देखभाल करना—वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हताः—श० १।२४, रंध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषां रघु० १२।११।

अन्वेषक, अन्वेषिन्, अन्वेष्टृ (वि०) [अनु+इष्+ण्वुल्, णिनि, तृच् वा] ढूंढने वाला, खोजने वाला, पूछ ताछ करने वाला।

अप् (स्त्री० [आप्+क्विप्] हमेशा (परिशिष्ट भाग में केवल ब० व० में ही रूप होते हैं यथा आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः २, आपस्, अप्सु, परन्तु वेद में एक वचन और द्विवचन भी होते हैं) पानी, स्वर्गीय तरल पदार्थ—मनु० २।६७ पानी बहुधा सृष्टि के पांच तत्त्वों में सब से पहला तत्त्व समझा जाता है यथा—अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्—मनु० १।८, श० १।१ परन्तु मनु० १।७८ में बतलाया गया है कि मन, आकाश, वायु और ज्योति अथवा अग्नि के पश्चात् तेजस् या ज्योतिस् से जलों की उत्पत्ति हुई। सम०—**चरः** जलचर, जलीय जन्तु, **पतिः** 1. जल का स्वामी वरुण 2. समुद्र, दूसरे समस्त पदों को शब्दों के अन्तर्गत देखो।

अप (अव्य०) 1. (धातु के साथ जुड़कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है)—(क) से दूर, अपगति अपनयन (ख) ह्रास,—अपकरोति-बुरी तरह से या गलत ढंग से करता है (ग) विरोध, निषेध, प्रत्याख्यान—अपकर्षति अपचिनोति (घ) वर्जन—**अपवह, अपसृ** (प्रेर०), 2. त० और ब० स० का प्रथम पद होने पर इसके उपर्युक्त सभी अर्थ होते हैं—**अपयानम्, अपशब्दः**—एक बुरा या भ्रष्ट शब्द,—"भी निडर, **अपरागः** असन्तुष्ट (विप० अनुराग), अधिकांश स्थानों पर 'अप' की निम्न प्रकार से अनूदित कर सकते हैं—'बुरा' 'घटिया' 'भ्रष्ट' 'अशुद्ध' 'अयोग्य' आदि 3. पृथक्करणीय अव्यय (अपा० के साथ) के रूप में—(क) से दूर—**पत्तं-प्रत्यपलोक्येयं लंकायां वसतिर्भवेत्**—भट्टि० ८।८७ (ख) के बिना, के बाहर—अपहरेः संसारः—सिद्धा० (ग) के अपवाद के साथ, सिवाय—अप त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः—सिद्धा०,—के बाहर, को छोड़कर, इन वाक्यों में 'अप' के साथ कि० वि० (अव्ययीभाव समास) भी बनते हैं—"विष्णु संसारः—बिना विष्णु के, "त्रिगर्तवृष्टो देवः—अर्थात् त्रिगर्त को छोड़कर अप निषेध और प्रत्याख्यान को भी जतलाता है—"कामं, "शंकम्।

अपकरणम् [अप+कृ+ल्युट्] 1. अनुचित रीति से कार्य करना 2. अनुपयुक्त काम करना, चोट पहुंचाना, दुर्व्यवहार करना, कष्ट पहुंचाना।

अपकर्तृ (वि०) [अप+कृ+तृच्] हानिकारक, कष्टदायक, (पुं०—र्त्ता) शत्रु।

अपकर्मन् [प्रा० स०] 1. ऋण से निस्तार 2. ऋणपरिशोध, —देवस्यानपकर्मे च—मनु० ८।५, 2. अनुचित, अनुपयुक्त कार्य, दुष्कर्म, दुष्कृत्य 3. दुष्टता, हिंसा, उत्पीडन।

अपकर्षः [अप+कृष्+घञ्] 1. (क) नीचे की ओर खींचना, कम करना, घटाना, हानि, नाश—तेजोपकर्षः—वेणी० १, ह्रास (ख) अनादर, अपमान (सभी अर्थों में विप० उत्कर्ष) 2. बाद में आने वाले शब्दों का पूर्वविचार (व्या० काव्य और मीमांसा आदि में)।

अपकर्षक (वि०) [अप+कृष्+ण्वुल्] कम करने वाला घटाने वाला, से निकालने वाला—दोषास्तस्य (काव्यस्य) अपकर्षकाः—सा० द० १।

अपकर्षणम् [अप+कृष्+ल्युट्] 1. दूर करना, खींचकर दूर करना या नीचे ले जाना, वञ्चित करना, निकाल देना 2. कम करना, घटाना 3. दूसरे का स्थान ले लेना।

अपकारः [अप+कृ+घञ्] 1. हानि, चोट, आघात, कष्ट (विप० उपकार) उपकारिणा सधिनं मित्रेणापकारिणा, उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः—शि० २।३७, अपकारोऽप्युपकारायैव संवृत्तः 2. दूसरे का बुरा चिन्तन, दूसरे को चोट पहुंचाना 3. दुष्टता,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिंसा, उत्पीडन 4. गिरा हुआ, नीच कर्म। सम०—अधिन् (वि०) द्वेषी, दुरात्मा,—गिर् (स्त्री०—गीः) —शब्दः गालियाँ, भर्त्सना दायक तथा अपमानजनक शब्द।

अपकारक,—कारिन् (वि०) [अप+कृ+ण्वुल् णिनिर्वा] क्षति पहुँचाने वाला, अनिष्टकारी, कष्टप्रद, अहितकारी, पच० १।९५, हि० २।३७—कः,—री बुरा करनेवाला।

अपकृतिः=नु० अपकार, इसी प्रकार अपक्रिया—आघात, चोट, अनिष्ट, कुकृत्य, ऋणपरिशोध।

अपकृष्ट (वि०) [अप+कृष्+क्त] 1. खींच कर बाहर किया गया, दूर हटाया गया 2. नीच, कमीना, अधम (विप० उत्कृष्ट) न कश्चिद्गुणानामपथमपकृष्टोऽपि भजते—श० ५।१०—ष्टः कौवा।

अपकौशली—समाचार, सूचना

अपक्तिः (स्त्री०) [नञ्+पच्+क्तिन्] 1. कच्चापन, परिपक्वता का अभाव 2. अपच, अजीर्ण।

अपक्रमः [अप+क्रम्+घञ्] 1. दूर चले जाना, पलायन, पीठ दिखाना, 2. (समय का) बीतना,—(वि०) 1. क्रमरहित 2. अनियमित, गलत क्रम वाला।

अपक्रमणम् कामः [अप+क्रम्+ल्युट्, घञ् वा] पीछे मुड़ना, हटना, उड़ान, भागना।

अपक्रोशः [अप+क्रुश्+घञ्] गाली, भर्त्सना।

अपक्ष (वि०) [न० ब०] 1. पंखों से या उड़ान की शक्ति से रहित, 2. किसी पक्ष या दल से संबंध न रखने वाला 3. जिनके मित्र समर्थक न हों 4. निष्पक्ष, पक्षरहित। सम०—पातः निष्पक्षता,—पातिन् वि० पक्षपात रहित।

अपक्षयः [अप+क्षि+अच्] क्षीजना, ह्रास, नाश।

अपक्षेपः —क्षेपणम् [अप+क्षिप्+घञ् ल्युट् वा] 1. दूर करना या नीचे फेंकना 2. फेंक देना, नीचे रखना, वैशेषिक दर्शन में निर्दिष्ट पांच कर्मों में से एक कर्म, द० कर्मन्।

अपखंडः [अपगिः (वैद्य) कर्मणि खंडल्याच्यः] जिसने वयस्कता प्राप्त कर ली है, द० अपोखंड।

अपगमः—नम् [अप+गम्, अप् ल्युट् वा] 1. दूर जाना, हट जाना, वियोग, समागमाः सापगमाः—हि० ४।६५, 2. गिरना, हटना, ओझल होना—पुराणयत्रापगमादन्तरं रघु० ३।७, 3. मृत्यु, मरण।

अपगतिः (स्त्री०) [अप+गम्+क्तिन्] दुर्भाग्य।

अपगरः [अप+गृ+अप्] 1. निंदा, भर्त्सना 2. निन्दक, भर्त्सक।

अपगर्जित (वि०) [अप+गर्ज+क्त] (बादल की भांति) गर्जनारहित।

अपगमः [अप+चि+अच्] 1. स्खलन, कमी, ह्रास, छीजन, गिरावट (आलं० भी)—कफापचयः—दश० १६०, 2. नाश, असफलता, दोष।

अपचरितम् [अप+चर्+क्त] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म—आहोस्वित् प्रसवो ममापचरितैर्विष्टम्भितो दीक्ष्यताम्—श० ५।९।

अपचारः [अप+चर्+घञ्] 1. प्रस्थान, मृत्यु—सिंहयोरपचः कातकापचारं निर्भिद्य—दश० ७२, 2. कमी, अभाव 3. दोष, अपराध, दुष्कर्म, दुराचरण, जुर्म—राजस्पजासु ते कश्चिदपचारः प्रवर्तते—रघु० १५।४७ 4. हानिकर या कष्टप्रद आचरण, क्षति 5 दोष या कमी—तापचारमगमन् ववचित्क्रियाः—शि० १४।३२, 6. अस्वास्थ्यकर या अपथ्य—कृतापचारोऽपि परैरनादिष्कृतविक्रियः, असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा। शि० २।८४, (यहाँ अ० भी आघात या क्षति का अर्थ रखता है)।

अपचारिन् (वि०) [अप+चर्+णिनि] कष्ट पहुँचाने वाला, दुष्कर्म करने वाला, दुष्ट, बुरा।

अपचितिः (स्त्री०) [अप+चि+क्तिन्] 1. हानि, छीजन, नाश 2. व्यय 3. प्रायश्चित्त, सम्पूर्ति, पाप का प्रायश्चित्त 4. सम्मान, पूजन, आदर प्रदर्शन, पूजा—विहितापचितिर्महीभृता—शि० १६।९ (इसका अर्थ 'हानि' और 'नाश' भी है)।

अपच्छत्र (वि०) [ब० स०] बिना छाते के, छतरी के बिना।

अपच्छाय (वि०) [ब० स०] 1. छायारहित 2. चमकरहित, धुंधला—यः जिसकी छाया न होती हो, अर्थात् परमात्मा; तु० कै० १४।२१, श्रिये भजन्तां किमपेक्ष्य देवाश्छायां नलस्याश्रित तथापि नैषाम्, इतीरयन्तोव तया निरैक्षि सा (छाया) नैषधेन त्रिदशेषु तेषु।

अपच्छेदः—छेदनम् [अप+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 काट कर दूर कर देना, 2. हानि 3. बाधा।

अपजयः [अप+जि+अच्] हार, पराजय।

अपजातः [अप+जन्+क्त] कुपुत्र, जो गुणों की दृष्टि से माता पिता से हीन हो—मातृतुल्यगुणो जातस्त्वनुजातः पितुः सपः, अतिजातोऽधिकस्तस्मादपजातोऽधमाधमः—सुभा०।

अपज्ञानम् [अप+ज्ञा+ल्युट्] मुकरना, गुप्त रखना।

अपञ्चीकृतम् [न० त०] जिसका पंचीकरण न हुआ हो, पंचमहाभूतों का सूक्ष्म रूप।

अपटी [अल्पः पटः पटी—न० त०] 1. कपड़े का पर्दा या दीवार विशेष रूप से 'कनात' जो तम्बू को चारों ओर से घेर लेती है 2. पर्दा। सम०—क्षेपः (अपटक्षेपः) पर्दे के एक ओर गायन, °क्षेपेण (= अकस्मात्) जल्दी से पर्दे को एक ओर करके, (यह शब्द बहुधा रंगमंच के निर्देशार्थ प्रयुक्त होता है तथा भय, उतावली या घबराहट के कारण हड़बड़ाहट के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथ पात्र के प्रवेश को प्रकट करता है जैसा कि बिना किसी भूमिका (ततः प्रविशति आदि) के, पात्र अकस्मात् पर्दे को उठा कर प्रविष्ट होता है)।

अपटु (वि०) [न० त०] 1. अनिपुण, अदक्ष, मंदबुद्धि, भोंदू, 2. जो बोलने में चतुर न हो 3. रोगी।

अपठ (वि०) [न० त० नञ्+पठ्+अच्] पढ़ने में असमर्थ, न पढ़ने वाला, दुष्पाठक तु०, 'अपर्व'।

अपण्डित (वि०) [न० त०] 1. जो विद्वान् या बुद्धिमान् न हो, मूर्ख, अनाड़ी—विभूषणं मौनमपण्डितानाम्—भर्तृ० नी० ७, 2. जिसमें कुशलता, रुचि तथा गुणों की सराहना करने का अभाव हो।

अपण्य (वि०) [न० त०] जो बिक्री के लिए न हो, —जीविकार्थे जागर्त्यपण्ये—पा० ५।३।९९।

अपतर्पणम् [अप+तृप्+ल्युट्] 1. उपवास रखना (रुग्णावस्था में) 2. तृप्ति का अभाव।

अपतानकः [अप+तन्+ण्वुल्] एक प्रकार का रोग जिसमें अकस्मात् मूर्छा आती है, दाँते पड़ते हैं तथा पेशियों में सिकुड़न होती है।

अपति, -तिक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वामी न हो, जिसका पति न हो, अविवाहित।

अपत्नीक (वि०) [न० ब०] जिसकी पत्नी न हो।

अपतीर्थम् [प्रा० स०—अप्रकृष्टं तीर्थम्] बुरा तीर्थस्थान।

अपत्यम् [न पतन्ति पितरोऽनेन—नञ्+पत्+यत्] 1. सन्तान, बच्चे, प्रजा, संतति (मनुष्यों की और पशुओं की), बेटा या बेटी; एक ही कुल में उत्पन्न पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र आदि—अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्—पा० ४।१।१६२,—अपत्यैरिव नीवारशाबगर्भोचितैर्मृगैः—रघु० १।५०, 2. अपत्यवाचक प्रत्यय। सम०—काम (वि०) सन्तान का इच्छुक,—पथः योनि, —प्रत्ययः अपत्यवाची प्रत्यय, —विक्रयिन् (वि०) सन्तान का विक्रेता, वह पिता जो धन के लालच में अपनी कन्या को भावी जामाता के हाथ बेच देता है; —शत्रुः 1. केंकड़ा 2. साँप।

अपत्रप (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेहया, —पा, —पणम् लज्जा, हया।

अपत्रपिष्णु (वि०) [अप+त्रप्+इष्णुच्] शर्मीला, लजीला।

अपत्रस्त (वि०) [अप+त्रस्+क्त] डरा हुआ, अपभीत, तरंगापत्रस्तः—तरंगों से किंचित भीत।

अपथ (वि०) [न० ब०] मार्गरहित, बिना सड़क के, —थम् (अपन्थाः) [न० त०] जो मार्ग न हो, मार्ग का अभाव, कुमार्ग (शाब्द०), (आलं०) नैतिक अनियमितता या स्खलन, दुराचार या कुमार्ग—अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः—रघु० ८।७४,। सम०—गामिन् (वि०) कुमार्ग पर चलने वाला, विधर्मगामी।

अपथ्य (वि०) [न० त०] 1 अयोग्य, अनुचित, असंगत, घृणित—अकार्यं कार्यसंकाशमपथ्यं पथ्यसंमितम्—रा० 2. (आयु० में) अस्वास्थ्यकर, रोगजनक (जैसा कि भोजन, पथ्यापथ्य) सन्तापयति कमपथ्यभुजं न रोगाः—हि० ३।११७, 3. बुरा दुर्भाग्यपूर्ण। सम०—कारिन् (वि०) कष्टप्रद।

अपदः [न० ब०] बिना पैर का, —दम् [न० त०] 1. आवास या स्थान का अभाव, 2. सदोष स्थान या अनुपयुक्त आवास 3. ऐसा शब्द जिसके साथ अभी विभक्ति-चिह्न न जुड़ा हो 4. अन्तरिक्ष। सम०—अंतर (वि०) संलग्न, संसक्त, समीपस्थ (-रम्) सामीप्य, संसक्तता।

अपदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] बाईं ओर।

अपदम (वि०) [ब० स०] आत्मसंयम से हीन।

अपदश (वि०) [ब० स०] दस की संख्या से दूर।

अपदानम् दानकर्म [अप+दा+ल्युट् स्वार्थे कन् च] 1 पवित्रीकरण, मान्य जीवनचर्या 2. उत्तम कार्य, सर्वोत्तम कार्य (कदाचित् 'अवदानम्' के स्थान पर) 3. भली-भाँति पूर्ण रूप से किया गया कार्य, निष्पन्न कार्य।

अपदार्थः [न० त०] 1. कुछ नहीं, सत्ता का अभाव 2. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ न होना—अपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसति-काव्य० 2. ।

अपदिशम् (अव्य०) [अव्य० स०] मध्यवर्ती प्रदेश में, परिधि के दोनों प्रदेशों के बीच।

अपदेवता [प्रा० स०] पिशाच, भूत प्रेत।

अपदेशः [अप+दिश्+घञ्] 1. संकेत, उपदेश, नाम का उल्लेख करते हुए संकेत करना -नैष न्यायो यद्दातुरुपदेशः—दश० ६०, हेत्वपदेशात् प्रतिज्ञायाः पुनर्वचनं निगमनम् -न्या० सा० 2. बहाना, छल, कारण, व्याज—केनापदेशेन पुनराश्रमं गच्छामः—श० २, रक्षापदेशान्मुनिहोमधेनोः रघु० २।८, 3. कारणों का वर्णन, तर्क प्रस्तुत करना, भारतीय न्याय-वाद के पाँच अंगों में से दूसरा -हेतु—(वैशे० के अनुसार) 4. निशाना, चिह्न 5. स्थान, दिशा 6. अस्वीकृति 7. प्रसिद्धि, यश 8 छल।

अपद्रव्यम् [प्रा० स०] बुरा द्रव्य, बुरी वस्तु।

अपद्वारम् [प्रा० स०] बगल का दरवाजा, असली द्वार के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रवेश द्वार।

अधूम (वि०) [ब० स०] जिसमें धूआं न हो, धूमरहित।

अपध्यानम् [प्रा० स०] बुरे विचार, अनिष्ट चिन्तन, मन हो मन कोसना।

अपध्वंसः [प्रा० स०] अधःपतन, गिरावट, लाछन। सम०—ज, —जा मिश्रित पतित तथा निन्द्य जाति में उत्पन्न—मनु० १०।४१, ४६।

अपध्वस्त (वि०) [अप+ध्वंस्+क्त] 1. क्षिप्त किया गया,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिशप्त, घृणित 2. अपूर्ण रूप से या बुरी तरह पीसा हुआ, 3. त्यक्त, —स्तः दुष्ट, पाजी, जिसमें बुरे भले की समझ न हो।

अपनयः [अप+नी+अच्] 1. ले जाना, हटाना, निराकरण करना 2. दुर्नीति या दुराचरण 3. क्षति, अपकार—ततः सपत्नापनयस्मरणानुशयस्फुरा —शि० २।१४।

अपनयनम् [अप+नी+ल्युट्] 1. ले जाना, हटाना—तोषितश्रमापनयनाय —श० ५।९, 2. आरोग्य देना, इलाज करना 3. ऋण परिशोध, कर्तव्य का निर्वाह।

अपनस (वि०) [ब० स०] बिना नाक का,—असिकौक्षेयमुशम्य चक्रारापनसं मुखम्—भट्टि० ४।३१।

अपनृत्तिः (स्त्री०) } [अप+नृद्+क्तिन्, घञ्, ल्युट्
अपनोदः-दनम् } वा] हटाना, ले जाना, नष्ट करना, प्रायश्चित्त, (पाप का) परिशोधन—पापानामपनुत्तये —मनु० ११।२१५।

अपपाठः [प्रा० स०] अशुद्ध पठन, बुरी तरह पढ़ना, पढ़ने में अशुद्धि,—ह्रादशापपाठा अस्य जाताः।

अपपात्र (वि०) [ब० स०] सामान्य पात्रों के उपयोग से वंचित, नीची जाति का।

अपपात्रितः [पात्रमिवाचरति बहिष्कृतः—अपपात्र+इतच्] किसी बड़े पाप या अपराध के कारण जाति से बहिष्कृत होकर जो अपने संबंधियों के साथ सामान्य पात्रों में स्नान-पान के योग्य नहीं है।

अपपानम् [अप+पा+ल्युट्] अपेय, बुरा पेय।

अपपूत (वि०) [ब० स०] जिसके नितंबों या कूल्हों को बनावट सुडौल न हो—तौ बेढंगे कूल्हे।

अपप्रजाता [अपगतः प्रजातो यस्याः ब०स०] वह स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपप्रदानम् [अप+प्र+दा+ल्युट्] घूस, रिश्वत।

अपभय —भी (वि०) निडर, निर्भय, निश्शंक—रघु० ३।५१।

अपभरणी [अप—भृ+ल्युट्+ङीप्] अन्तिम नक्षत्रपुंज।

अपभाषणम् [अप+भाष्+ल्युट्] भर्त्सना, अपयश।

अपभ्रंशः [अप+भ्रंश्+घञ्] 1. नीचे गिरना, पतन,—अत्यारूढिर्भवति महतामप्यधःपातनिष्ठा—श० ४ 2. भ्रष्ट शब्द, भ्रष्टाचार (अतः) अशुद्ध शब्द चाहे वह व्याकरण के नियमों के विपरीत हो और चाहे वह ऐसे अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो जो संस्कृत न हो 3. भ्रष्ट भाषा, (काव्य में) गढ़रियों आदि के द्वारा प्रयुक्त प्राकृत बोली का निम्नतम रूप, (शास्त्र में) संस्कृत से भिन्न कोई भी भाषा—आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः, शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम्—काव्यादर्श १।

अपभः (ज्यो० में) [अपकृष्टं भायते—भा+क बा०] कुतुबनुमा में सुई का उत्तर से ठीक पूर्व या पश्चिम की ओर घुमाव, क्रान्तिवलय।

अपमर्दः [अप+मृद्+घञ्] जो बुहारा जाता है, धूल, गर्दा।

अपमर्शः [अप+मृश+घञ्] छूना, चरना।

अपमानः [अप+मन्+घञ्] अनादर, सम्मान का न होना लांछन—लब्धते बुद्धयवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्—पंच० १।६३।

अपमार्गः [अप+मृग्+घञ्] छोटा रास्ता, बगल का मार्ग बुरा रास्ता।

अपमार्जनम् [अप+मार्ज्+ल्युट्] 1. बोहर साफ करना, मांजना, साफ करना, 2. हजामत बनवाना, नाखून कटाना।

अपमुख (वि०) [ब० स०] 1. औंधे मुंह वाला 2. विरूप, कुरूप।

अपमूर्धन् (वि०) [ब० स०] जिसके सिर न हो, °कलेवर-अमर०।

अपमृत्युः [प्रा० स०] 1. आकस्मिक या असामयिक मरण, दुर्घटना के कारण मृत्यु, 2. कोई भारी भय या रोग जिससे कि रोगी (जिसके जीने की आशा न रही हो) आशा के विपरीत स्वस्थ हो जाता है।

अपमृष्ट (वि०) [अप+मृष्+क्त] 1. जो समझ में न आ सके, अस्पष्ट जैसे कि कोई वाक्य या वक्तृता 2. जो सहृय न हो, जिसे कोई पसन्द न करे—विहितं मयाद्य सदसीदमपमृष्टिमभ्युतार्जनम्, यस्य—शि० १५।४६।

अपयशस् (न०—शः) [प्रा० स०] बदनामी, कलंक, अपकीर्ति—अपयशो यदस्ति किं मृत्युना—भर्तृ० नी० ५५।

अपयानम् [अप+या+ल्युट्] दूर जाना, वापिस मुड़ना, भागना।

अपर (वि०) [न० ब०] (कुछ अर्थों में 'सर्वनाम' की भांति प्रयुक्त होता है) 1. अनिष्टहीन, बेजोड़, तु० अनुत्तम, अनुत्तर 2. [न० त०] (क) दूसरा, अन्य (वि० व नाम की भांति प्रयुक्त) (ख) और, अतिरिक्त (ग) दूसरा, और (घ) भिन्न, अन्य—मनु० १।८५, (ङ) तुच्छ, मध्यम 3. किसी और से संबंध रखने वाला, जो अपना निजी न हो (विप० स्व) 4. पिछला, बाद का, दूसरा, बाद में (काल और देश की दृष्टि से) (विप० पूर्व), अन्तिम—राघवेपरः कालः निरु०, जब षष्ठीतत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तब 'पिछला भाग' 'उत्तरार्ध' अर्थ होता है;—°पक्षः मास का उत्तरार्ध, °हेमंतः सर्दियों का उत्तरार्ध, °कायः शरीर का पिछला भाग, आदि, °वर्षा, °शरद् बरसात या पतझड़ का उत्तरार्ध, 5. आगामी, अगला 6. पश्चिमी—शि० ९।१, कु० १।१, 7. घटिया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निम्नतर, 8. (न्या० में) अविस्तृत, अधिक न ढकने वाला; जब 'अपर' शब्द एक वचन में 'एक' (एक, पहला) के सहसंबंधी के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है 'दूसरा, बाद का'—एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान्—रघु० ५।६०, जब यह ब० व० में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'दूसरे' और इसके सहसंबंधी शब्द प्रायः 'एके' 'केचित्' 'काश्चित्' 'अपरे' 'अन्ये' आदि हैं—एके समुद्भूर्बलरेणुसंहतिं शिरोभिराजामपरे महीभृतः—शि० १२।४५, कुछ और,—शास्त्रिनः केचिदध्यक्ष्यन्त्यमाक्षुरपरेऽम्बुधौ, अन्ये स्वलंधिषुः शैलान् गुहास्वन्ये व्यलेषत, केचिदाशिषत स्तम्बा भयात्केचिदचूषिषुः। उदतारिषुरम्बोधिं वानराः सेतुनापरे—भट्टि० १५।३१-३३,—रः 1. हाथी का पिछला पैर 2. शत्रु,—रा 1. पश्चिमी दिशा 2. हाथी का पिछला भाग 3. गर्भाशय, गर्भ की झिल्ली 4. गर्भावस्था में रुका हुआ रजोधर्म, —रम् 1. भविष्य 2. हाथी का पिछला हिस्सा,—रम् (क्रि० वि०) पुनः, भविष्य में, अपरंच इसके अतिरिक्त, अपरेण पीछे, पश्चिम में, के पश्चिम में (कर्म० या संब० के साथ)। सम०—अग्नि (अग्नि—द्वि० व०) दक्षिण और पश्चिमी अग्नियां (दक्षिण और गार्हपत्य), —अंगम् काव्य के द्वितीय प्रकार गुणीभूतव्यंग्य के आठ भेदों में से एक भेद, काव्य० ५, इसमें व्यंग्यार्थ किसी और का गौण अर्थ है,उदा०—अयं स रसनोत्कर्षी पीनस्तनविमर्दनः, नाभ्यूरुजघनस्पर्शी नीवीविस्रंसनः करः। यहां शृंगाररस करुण का अंग है; —अंत (वि०) पश्चिमी सीमा पर रहने वाला, (स्तः) 1. पश्चिमी सीमा या किनारा, अन्तिम छोर, पश्चिमी तट 2. (ब० व०) सह्य पर्वत का निकटवर्ती पश्चिमी सीमा प्रदेश या वहां के निवासी—अपरान्तजयोद्यतैः (अनीकैः) रघु० ४।५३, पश्चिमी लोग 3. इस देश के राजा 4. मृत्यु —अन्तः=°अन्तः (ब० व०)—अपराः,—रे,—रात्रि दूसरे और दूसरे, कई, बहुत—अर्धम् उत्तरार्ध, —अह्नः दोपहर बाद, दिन का अन्तिम या समापक पहर,—इतरा पूर्वदिशा,—काल: बाद का समय,—जनः पश्चिम देश का वासी, पश्चिमी लोग,—दक्षिणम् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम में,—पक्षः 1. मास का दूसरा या कृष्णपक्ष, 2. दूसरी या विपरीत दिशा, प्रतिवादी (विधि में),—पर (वि०) कई एक, बहुत से, विविध,—अपरपरा: सार्धाः गच्छन्ति-पा० ६।१।१४४ सिद्धा०—कई समुदाय जा रहे हैं,—पाणिनीया: पश्चिम के निवासी पाणिनि के शिष्य,—प्रणेय (वि०) जो दूसरों के द्वारा आसानी से प्रभावित हो सके, विधेय, —रात्रः रात्रि का उत्तरार्ध या रात का अन्तिम पहर, —लोकः दूसरी दुनिया, अगला लोक, स्वर्ग,—स्वस्तिकम् क्षितिज में पश्चिमी बिन्दु,—हैमन (वि०) सर्दी के उत्तरार्ध से संबंध रखने वाला।

अपरक्त (वि०) [अप+रञ्ज्+क्त] 1. रंगहीन, रुधिर-रहित, पीला,—श्वासापरक्ताधर.—श० ६।५, 2. असन्तुष्ट, सन्तोषरहित।

अपरता-त्वम् [अपर+तल्, त्वलदा] दूसरा या भिन्न होना, (२४ गुणों में से एक), भिन्नता, विपर्यय, आपेक्षिकता।

अपरांतः (स्त्री०) [अप+रम्+क्तिन्] 1. विच्छेद (= अवरति तु०) 2. असन्तोष।

अपरत्र (क्रि० वि०) [अपर+त्रल्] दूसरे स्थान पर, और कहीं, **एकत्र** या **क्वचित्**—**अपरत्र** एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर।

अपरवः [प्रा० स०] 1. झगड़ा, विवाद (संपत्ति के भोग के विषय में) °**उज्झित** बिना झगड़े के, बिना विवाद के (किसी वस्तु को अधिकार में करते समय), 2. बदनामी।

अपरस्पर (वि०) [द्व० स०—अपरंच परं च, पूर्ववदे सुच्च] एक के बाद दूसरा, निर्बाध, अनवरत, °रा: सार्धाः गच्छन्ति सततमविच्छेदेन गच्छन्तीत्यर्थः—सिद्धा०।

अपरागः (वि०) [ब० स०] रंगहीन,—गः [न० स०] 1. असंतोष, संतोष का अभाव, अनुराग का अभाव—अपरागसमीरणे रतः—कि० २।५०, 2. विराग, शत्रुता।

अपराङ्मुख (वि०) [अपर+अञ्च्+क्विप्] (°राङ्, °राची, °राक्) दूर न किया गया, मुंह न फेरा हुआ, संमुख होने वाला सामने होनेवाला, (अव्य०) (—राक्) के सामने। सम०—मुख (वि०) (स्त्री०—खी) 1. मुंह न मोड़े हुए, मुंह सामने किये हुए, 2. साहसपूर्ण रुख रखते हुए।

अपराजित (वि०) [न० त०] जो जीता न गया हो, अजेय —सः 1. विश्वेदा जन्तु 2. विष्णु, शिव—ता दुर्गादेवी जिसकी पूजा विजया दशमी के दिन की जाती है, एक प्रकार की औषधि जो कि ताबीज के रूप में भुजा में बांधी जाती है, 3. उत्तर-पूर्व दिशा।

अपराद्ध (भू० क० कृ०) [अप+राध्+क्त] 1. जिसने पाप किया है, किसी को कष्ट दिया है, अपराध का करने वाला, कष्ट देने वाला, (कर्तरि भी प्रयुक्त)—कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला—श० ४, 2. जो चूक गया हो, निशाने पर न लगने वाला (तीर की भांति) —निमित्तादपराद्धेषोर्लक्ष्यलक्षणमेव वलीयः—शि० २।२६ 3. जिसने उल्लंघन किया है, अतिक्रान्त,—द्धम् अपराध, कष्ट।

अपराद्धिः (स्त्री) [अप+राध्+क्तिन्] 1. दोष, अपराध, 2. पाप।

अपराधः [अप+राध्+घञ्] अपराध, दोष, जुर्म, पाप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—कमपराधलवं भवि पश्यसि—विक्र० ४।२९,—यथापराध-दंडानाम्—रघु० १।६ ।

अपराधिन् (वि०) [अप+राध्+णिनि] कष्टकर, दोषी ।

अपरिग्रहः [न० ब०] जिसके पास न कोई सामान हो, न नौकर चाकर; जो सब प्रकार से हीन हो—निराशीरपरिग्रहः—हः 1. अस्वीकृति, इंकारी 2. दरिद्रता, गरीबी ।

अपरिच्छद (वि०) [न० ब०] गरीब, दरिद्र ।

अपरिच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1. जिसका अंतर न पहचाना गया हो, 2. सीमा रहित ।

अपरिणयः [न० त०] चिरकौमार्य, ब्रह्मचर्य ।

अपरिणीता [न० त०] अविवाहित कन्या ।

अपरिसंख्यानम् [न० त०] असीमता, असंख्यता ।

अपरीक्षित (वि०) [न० त०] 1. बिना परीक्षा लिया हुआ बिना जांचा हुआ, अप्रमाणित 2. अविचारित, मूर्खतापूर्ण, विचारहीन (पुरुष या वस्तु) °कारकं नाम पंचमं तन्त्रम्···पंच ५, जो कर्ता विचारशील न हो, 3. जो स्पष्ट रूप से स्थापित या सिद्ध न हुआ हो ।

अपरुष् (वि०) [न० त०] क्रोधशून्य ·अपरुषापरुषाक्षरमौरिता रघु० ९।८ ।

अपरूप (वि०) [स्त्री०—पा,—पी] [ब० स०] कुरूप, विरूप, ढंढंगी शक्ल वाला·—पम् [प्रा० स०] विरूपता ।

अपरेद्युः (अव्य०) [अपर+एद्युस्] अगले दिन ।

अपरोक्ष (वि०) [न० त०] 1. दृश्य 2. प्रत्यक्ष 3. जो दूर न हो—क्षम् (कि० वि०) की उपस्थिति में (सब० के साथ), अपरोक्षात् प्रत्यक्ष रूप से, दृश्यतापूर्वक ।

अपरोधः [अप+रुध्+घञ्] वर्जन, निषेध ।

अपर्ण (वि०) [न० ब०] बिना पत्तों का,—र्णा पार्वती या दुर्गादेवी, कालिदास इस नाम का कारण बतलाते हुए कहते हैं :—स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः, तदप्यपाकीर्णमिति प्रियंवदा बदन्यपर्णेति च तां पुराविदः—कु० ५।२८ ।

अपर्याप्त (वि०) [न० त०] 1. जो यथेष्ट या काफी न हो, अपूर्ण, जो पर्याप्त न हो 2. असीमित 3. अयोग्य, असमर्थ,—अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् —भग० १।१० ।

अपर्याप्तिः (स्त्री०) [नञ्+परि+आप्+क्तिन्] यथेष्टता का अभाव ।

अपर्याप्य (वि०) [न० ब०] क्रमरहित, —यः क्रम या प्रणाली का अभाव ।

अपर्युषित (वि०) [नञ्+परि+वस्+क्त] जो रात का रक्खा हुआ न हो, ताजा, नूतन ।

अपर्वन् (वि०) [न० ब०] जिसमें जोड़ न लगा हो, (नपुं०) [न० त०] 1. जोड़ या संयोग बिन्दु का अभाव 2. जो पर्व का दिन न हो—अर्थात् अनुपयुक्त समय या ऋतु ।

अपल (वि०) [न० ब०] बिना मांस का, —लम् कोल या कुंडी ।

अपलपनम्-अपलापः [अप+लप्+ल्युट्, घञ् वा] 1. छिपाना, गोपन 2. छिपाव या जानकारी से मुकर जाना, टालमटोल,—न हि प्रत्यक्षसिद्धस्यापलापः कर्तुं शक्यते—शारी० 3. सत्यता, विचार व भावनाओं को छिपाना, घटाकर बतलाना । सम० —क्षमः (विधि में) उस व्यक्ति पर किया जाने वाला जुर्माना जो कि दोष सिद्ध होने पर भी अपने दोष को स्वीकार नहीं करता ।

अपलापिन् (वि०) [अप+लप्+णिनि] मुकरने वाला, दोष को स्वीकार न करने वाला, छिपाने वाला ।

अपलाषिका [अप+लप्+ण्वुल् स्त्रियां टाप्] अत्यधिक प्यास या इच्छा, या सामान्य तृषा (कई बार इसी अर्थ में 'अपलाषिका' शब्द भी प्रयुक्त होता है, परन्तु उसे अशुद्ध समझा जाता है) ।

अपलाषिन्-काषुक (वि०) [अप+लष्+णिनि, उकञ् वा] 1. प्यासा 2. प्यास या इच्छा से रहित - प्रलापिनो भविष्यन्ति कदा त्वेतेऽपलाषुकाः—महाभा० ।

अपवन (वि०) [न० ब०] बिना वायु या हवा के, हवा से सुरक्षित—नम् [प्रा० स०] नगर के निकट लगाया हुआ बाग वाटिका या उपवन ।

अपवरकः-कं [अप+वृ+वुन् स्त्रियां टाप्] 1. भीतर का कमरा, शयनागार 2. वातायन, मोखा—ततश्चकस्मादपवरकात्—मुद्रा० ।

अपवरणम् [अप+वृ+ल्युट्] 1. आच्छादन, पर्दा 2. पोशाक, वस्त्र ।

अपवर्गः [अप+वृज्+घञ्] 1. पूर्ति, समाप्ति, किसी कार्य की पूर्णता या निष्पन्नता—अपवर्गे तृतीया—पा० २।३।६, क्रियापवर्गेष्वनुजीविसारकृताः—कि० १।१४, अपवर्गे तृतीयेति भणतः पाणिनेरपि—वै० १७।६८, कि० १६।४९, 2. अपवाद, विशिष्ट नियम—अभिव्याप्यापवर्गेणमपवर्गः—सुश्रु० 3. मोक्ष, परमगति, —अपवर्गमहोदयार्थयोर्भुवमशास्त्रविद धर्मयोर्गतिः—रघु० ८।१६, 4. उपहार, दान 5. त्याग 6 छोड़ना (जैसे बाण का) ।

अपवर्जनम् [अप+वृज्+ल्युट्] 1. त्याग, (प्रतिज्ञा) पालन, (ऋणादि) परिशोध, 2. उपहार या दान 3. परमगति ।

अपवर्तः [अप+वृत्+घञ्] 1. निकाल लेना, दूर करना 2. (गणि०) सामान्यविभाजक जो दोनों साम्यराशियों में व्यवहृत होता है ।

अपवर्तनम् [अप+वृत्+ल्युट्] 1. दूर करना, स्थानं स्थानान्तरण 2. निकाल लेना, वञ्चित करना, न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्यागोऽस्ति स्त्रियस्यावच न च दायापवर्तनम्—मनु० ९।७९।

अपवादः [अप+वद्+घञ्] 1. निन्दा, भर्त्सना, कलंक —लोकापवादो बलवान्मतो मे—रघु० १४।४०, आक्षेप लोकनिन्दा,—देव्यामपि हि वैदेह्यां साध्वादो बतो जनः —उत्तर० १।६, 2. सामान्य नियम को बाधित करने वाला विशेष नियम (विप० उत्सर्ग)—अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः—कु० २।२७, रघु० १५।७, 3. आदेश, आज्ञा—ततोपवादेन पताकिनीपतेश्चचाल निर्ह्लादवती महाचमूः—कि० १४।२७, 4. निराकरण, (वेदान्त०) मिथ्यारोपण या मिथ्याविश्वास का निराकरण,—रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववत्, वस्तुभूतब्रह्मणो विवर्तस्य प्रपञ्चादेः वस्तुभूतरूपतोऽपदेशः अपवाद—तारा० 5. भरोसा 6. प्रेम, घनिष्ठता।

अपवादक } (वि०) [अप+वद्+ण्वुल्, णिनि वा] 1.
अपवादिन् } कलंक लगाने वाला, निन्दक, बदनाम करने वाला—मृगयापवादिना माद्र्येण श० २, 2. विरोध करने वाला, एक ओर रखने वाला, मिसाल देने वाला।

अपवारणम्] अप+वृ+णिच्+ल्युट्] 1. आच्छादन, छिपाव, 2. ओझल होना।

अपवारित (भू० क० कृ०) [अप+वृ+णिच्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, —तम्, **अपवारितकम्** छिपा हुआ या गुप्त ढंग, —तम्, **अपवारितकेन,, अपवार्य** (अव्य०) (नाटकों में बहुधा प्रयुक्त) 'पृथक्' 'एक ओर' अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय (विप० प्रकाशम्) यह इस ढंग से बोलने को कहते हैं कि केवल वही सुने जिसे कहा गया है—तद्भवेदपवारितं रहस्यं तु यदन्यस्य परावृत्य प्रकाश्यते, त्रिपताकैकरेणान्यमपवार्यान्तरां कथाम्—सा० द० ६।

अपवाहः-हनम् [अप+वह्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. दूर ले जाना, हटाना 2. घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि को निकालना।

अपविद्ध (वि०) [ब० स०] निर्बाध, बाधारहित—रघु० २।३८

अपविद्ध (भू० क० कृ०) [अप+व्यध+क्त] 1. दूर फेंका हुआ, त्यक्त, अस्वीकृत, उपेक्षित, दूरीकृत, मुक्त, विरहित 2. नीच, कमीना—द्धः, °पुत्रः माता या पिता या दोनों से त्यागा हुआ पुत्र जिसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने गोद ले लिया हो, हिन्दुओं में १२ प्रकार के पुत्रों में से एक—मनु० ९।१७१, याज्ञ० २।१३२।

अपविद्या [प्रा० स०] अज्ञान, आध्यात्मिक अज्ञान, माया या भ्रम (अविद्या),—तत्त्वस्य संवित्तिरिवापविद्याम् कि० १६।३२।

अपवेष (वि०) [ब० स०] जिसके पास वीणा न हो, या खराब वीणा हो—णा [प्रा० स०] खराब वीणा।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] पूर्णता, निष्पन्नता, पूर्ति।

अपवृतिः (स्त्री०) [अप+वृ+क्तिन्] सूराख, छिद्र, रंध्र।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] अन्त, समाप्ति।

अपवेषः [प्रा० स०] गलत जगह या बुरे ढंग से (मोती आदि में) छेद करना।

अपव्ययः [प्रा० स०] अत्यधिक खर्च, अपव्यय।

अपशकुनम् [प्रा० स०] असगुन, बुरा सगुन।

अपशब्दक (वि०) [ब० स०] निर्भय, निश्शंक, —कम् (क्रि० वि०) निडरता के साथ।

अपशदः = तु० अपसद।

अपशब्दः [प्रा० स०] 1. अशुद्ध शब्द (व्या० की दृष्टि से), भ्रष्ट शब्द (रूप और अर्थ की दृष्टि से),—त एव शक्तिवैकल्यप्रमादालसतादिभिः, अन्ययोच्चारिताः शब्दाः अपशब्दा इतीरिताः। अपशब्दशतं मार्घे—सुभा० 2. ग्राम्य शब्द 3. व्या० की दृष्टि से अशुद्ध भाषा 4. झिड़की वाला शब्द, गाली, दुर्वचन, निंदा।

अपशिरस् } (वि०) [अपगतं शिरः शीर्षं वा यस्य—
अपशीर्ष-र्षन् } ब० स०] सिर रहित, बे सिर का।

अपशुद्ध (वि०) [ब० स०] शोकरहित, (पुं) आत्मा।

अपशोक (वि०) [ब० स०] शोकरहित,—कः अशोकवृक्ष।

अपश्चिम (वि०) [न० त०] 1. जिसके पीछे कोई न हो, अंतिम (अधिकतर 'पश्चिम' शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है—तु० उत्तम और अनुत्तम, उत्तर और अनुत्तर),—अयमपश्चिमस्ते रामस्य शिरसि पादपङ्कजस्पर्शः—उत्तर० १. प्रसीदतु महाराजो मयानेनापश्चिमेन प्रणयेन—वेणी० ६, 2. अन्तिम, प्रथम, सर्वप्रथम 3. चरम, —अपश्चिमामिमां कष्टामापदं प्राप्तवत्यहम् रामा०।

अपश्रयः [अप+श्रि+अच्] गद्दी, तकिया।

अपश्री (वि०) [ब० स०] सौन्दर्य से वञ्चित—शि० ११।५४।

अपश्वासः=दे० अपान।

अपष्ठम् [अप+स्था—क] हाथी के अंकुश की नोक।

अपसद (वि०) [अप+स्था+कु] 1. विरुद्ध, विपरीत, 2. अननुकूल, प्रतिकूल 3. वार्या,—दः (क्रि० वि०) 1. विरुद्ध, 2. असत्यतापूर्वक, 3. निर्दोषता के साथ भलीभांति, ठीक तरह से।

अपसद्य—स (वि०) [अप+स्था+कुरच्, कुलच् वा] विरुद्ध, विपरीत।

अपसदः [अप+सद्+अच्] 1. जाति से बहिष्कृत, नीच पुरुष, प्रायः संगास के अन्त में प्रयुक्त होकर अर्थ होता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है—दुष्ट, पाजी, अभिशप्त,—कापालिक° मा० ५, रे रे क्षत्रियापसदाः—वेणी० ३, 2. छः प्रकार की अनुलोम सन्तान—अर्थात् पहले तीन वर्णों के मनुष्यों द्वारा अपने से नीचे वर्ण की स्त्री में उत्पन्न सन्तान—विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोः द्वयोः, वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन् षडेतेऽपसदाः स्मृताः। मनु० १०।१०।

अपसरः [अप+सृ+अच्] 1. प्रस्थान, पलायन 2. उचित कारण।

अपसरणम् [अप+सृ+ल्युट्] जाना, वापिस मुड़ना, पलायन।

अपसर्जनम् [अप—सृज्+ल्युट्] 1 त्याग, उत्सर्ग, 2. उपहार या दान 3. मोक्ष।

अपसर्पः—र्पकः [अप+सृप्+घञ्, ण्वुल्, स्वार्थे कन् च] गुप्तचर, जासूस, भेदिया, —सांपसर्पैर्जगाद यथाकालं स्वपन्निव रघु० १७।५४; १४।३१।

अपसर्पणम् [अप+सृप्+ल्युट्] पीछे हटना, लौटना, जासूसी करना।

अपसव्य, —सव्यक [ब० स०] 1. जो बायां न हो, दायां —अपसव्येन हस्तेन,—मनु० ३।२१४, 2. विरुद्ध, विपरीत, —व्यम् (अव्य०) दाईं ओर, दाहिने कंधे के ऊपर से जनेऊ को शरीर के वाम भाग पर लटकाना (विप० सव्यम्—जब कि वह बायें कंधे के ऊपर से लटकता है) °व्यं कृ दाहिनी ओर रखते हुए किसी की परिक्रमा करना, जनेऊ को दायें कंधे से लटकाना।

अपसव्यवत् (वि०) [अपसव्य+मतुप्] दाहिने कंधे पर से यज्ञोपवीत पहनने वाला।

अपसारः [अप—सृ+घञ्] 1. बाहर जाना, लौटना 2. निर्गमस्थान निकास।

अपसारणम्-णा [अप—सृ+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] हटाकर दूर करना, हांकना, बाहर निकालना—किमर्थमपसारणा क्रियते—मुद्रा०, स्थान देना।

अपसिद्धान्तः [प्रा० स०] गलत या भ्रमयुक्त निर्णय।

अपसृप्तिः (स्त्री०) [अप+सृप्+क्तिन्] दूर चले जाना।

अपस्करः [अप+कृ+अप् मुडागमः] 1. पहिये को छोड़कर गाड़ी का कोई भाग (—रम् भी) 2. विष्ठा, मल 3. योनि 4. गुदा।

अपस्नानम् [अप+स्ना+ल्युट्] 1. किसी संबंधी की मृत्यु के उपरांत किया जाने वाला स्नान 2. मृतक स्नान, स्नान किये हुए पानी में स्नान करना।

अपस्पश (वि०) [ब० स०] जिसके पास भेदिये न हों, —शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा—शि० २।११२।

अपस्पर्श (वि०) [ब० स०] संज्ञाहीन।

अपस्मारः—स्मृतिः (स्त्री०) [अपस्मृ+घञ्, क्तिन् वा] 1. स्मरण शक्ति का अभाव 2. मिरगी रोग, मूर्छा रोग।

अपस्मारिन् (वि०) [अप+स्मृ+णिनि] मिरगी रोग से ग्रस्त।

अपस्मृतिः (वि०) [ब० स०] विस्मरणशील।

अपहः (वि०) [अप+हा+ड] (समास के अन्त में) दूर हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —स्तियं यदि जीवितापहा—रघु० ८।४६।

अपहृतिः (स्त्री०) [अप+हृ+क्तिन्] दूर करना, नष्ट करना।

अपहनम् [अप+हन्+ल्युट्] दूर हटाना, निवारण करना।

अपहरणम् [अप+हृ+ल्युट्] 1. दूर ले जाना, उड़ा ले जाना, दूर करना 2. चुराना।

अपहसितम्—हासः [अप+हस्+क्त, घञ् वा] अकारण हँसी, मूर्खता पूर्ण हँसी, ऐसी हँसी जिससे आंखों में आंसू आ जायें (गोचनामपहसितम्)।

अपहस्तित (वि०) [अपहस्त+इतच्] दूर फेंका हुआ, रद्दी किया हुआ, परित्यक्त।

अपहानिः (स्त्री०) [अप+हा+क्तिन्] 1. त्याग, छोड़ देना 2. रुक जाना, ओझल होना 3. अपवाद, निकाल देना।

अपहारः [अप+हृ+घञ्] 1. उड़ा ले जाना, दूर ले जाना, चुरा लेना, नष्ट कर देना,—निद्रापहार, विष° 2. छिपाना, मालूम न पड़ने देना,—कथमात्मापहारं करोमि—शं० १, अपने आप को, अपने नाम को और अपने चरित्र को भी किस प्रकार छिपाऊँ ?

अपह्नवः [अप+हनु+अप्] 1. छिपाव, गोपन, अपनी भावना ज्ञान आदि को छिपाना, 2. सचाई से मुकर जाना, दुराव—°वे ज्ञः—पा० १।३।४४, 3. प्रेम, स्नेह।

अपह्नुतिः (स्त्री०) [अप+हनु+क्तिन्] 1. सत्य को छिपाना, मुकरना 2. एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु के वास्तविक चरित्र को छिपा कर कोई और काल्पनिक या असत्य स्थापना की जाय—नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिः, नैतास्तव तारा: नवफेनभङ्गयाः। काव्य०, १० वाँ समुल्लास तथा दे० सा० द० ६८३।८४ पृष्ठ।

अपाकृतः [अप+हस्+घञ्] घटाना, कमी करना।

अपाक् (अव्य०) दे० अपाच्।

अपाकः [न० त०] 1. अपच, अजीर्णता 2. अपरिपक्वता।

अपाकरणम् [अप+आ+कृ+ल्युट्] 1. दूर कर देना, हटाना 2. अस्वीकृति, निराकरण 3. अदायगी, कारबार का समेट लेना।

अपाकर्मन् (न०—र्म) [अप+आ+कृ+मनिन्] चुकता कर देना, कारबार उठा देना।

अपाकृतिः (स्त्री०) [अप+आ+कृ+क्तिन्] 1. अस्वीकृति, दूर करना, 2. क्रोध से उत्पन्न संवेग, भय आदि—वि० १।२७।

अपाक्ष (वि०) [अपगतः अक्षमिन्द्रियम्] 1. विद्यमान, प्रत्यक्ष 2. [ब० स०] नेत्रहीन, खराब आंखों वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपाङ्क्त, अपाङ्क्तेय, अपाङ्क्तेय (वि०) [न०त०] जो समान पंक्ति में न हो, विशेषतः वह व्यक्ति जो बिरादरी में अपने बन्धु-बान्धवों के साथ एक पंक्ति में बैठने का अधिकारी न हो, जाति बहिष्कृत।

अपाङ्ग—**गः** [अपाङ्च्यते तिर्यक् गच्छति नेत्रं यत्र अप+अञ्च् घञ्, कन् च] 1. आँख की बाहरी कोर, या आँख की कोण—चलापाङ्गां दृष्टि—श० १।२४, 2. सम्प्रदाय सूचक माथे का तिलक 3. कामदेव, प्रेम का देवता। सम० **दर्शनम्,—दृष्टिः** (स्त्री०)—**विलोकितम्,—वीक्षणम्** तिरछी चितवन, कनखियों से देखना, पलक झपकना, **—देशः** आंख की कोर, **—नेत्र** (वि०) सुन्दर कनखियों से युक्त आँखों वाला (यह प्रायः स्त्रियों का विशेषण है) यदियं पुनरध्यापाङ्गनेत्रा परिदत्तार्घमुखी मयाद्य दृष्टा विक्रम० १।१७।

अपाच्] [अपाञ्चति-अञ्च्+क्विप्] 1. पीछे की ओर
अपाच] जाने वाला, या पीछे स्थित, 2. अमुक्त, अस्पष्ट 3. पश्चिमी 4. दक्षिणी—क् (अव्य०) 1. पीछे, पीछे की ओर 2. पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर।

अपाची [अप+अञ्च्+क्विन् स्त्रियां ङीप्] दक्षिण या पश्चिम दिशा, इतरा उत्तर दिशा।

अपाचीन (वि०) [अपाची+ख] 1. पीछे की ओर स्थित, पीछे की ओर मुड़ा हुआ 2. अदृश्य, अप्रत्यक्ष—ऋक् ७।६।४ 3. दक्षिणी 4. पश्चिमी 5. विरोधी।

अपाच्य (वि०) [अपाची+यत्] पश्चिमी और दक्षिणी।

अपाणिनीय (वि०) [न० त०] 1. जो पाणिनि के नियमों के अनुकूल न हो 2. जिसने पाणिनि-व्याकरण को भली भाँति नहीं पढ़ा हो, पल्लवग्राही विद्वान्, संस्कृत का अल्पज्ञान रखने वाला।

अपात्रम् [न० त०] 1. निकम्मा बर्तन 2. (आलं०) अयोग्य या अनधिकारी पुरुष, दान लेने के लिए अयोग्य 3. कुपात्र, जो उपहार दान आदि का अधिकारी न हो। सम० **—कृत्या, अपात्रीकरणम्** अनुचित तथा निर्मर्याद कर्म करना, अपात्रता, दे० मनु० ११।७०, **—वासिन्** अयोग्य पुरुषों को देने वाला, **—भृत्** (वि०) अयोग्य और निकम्मे व्यक्तियों का भरणपोषण करने वाला—आयेणापात्रभृद्भूपति राजा—पंच० १।

अपादानम् [अप+आ+दा+ल्युट्] 1. ले जाना, दूर करना, अपसरण 2. (व्या० में) अपा० का अर्थ—ध्रुवमपायेऽपादानम्—पा० १।४।२४।

अपाध्वन् (पुं०) [अपकृष्टः अध्वा प्रा० स०] कुमार्ग, बुरा मार्ग।

अपानः [अप+अन्+अच्, अपानयति पूर्वादिकम्—अप+आ+नी+ड वा] श्वास बाहर निकालना, श्वास लेने की क्रिया, शरीर में रहने वाले पाँच पवनों में से एक जो कि नीचे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है; **—नः, —नम्** गुदा। सम० **—द्वारम्** गुदा, **—पवनः, —वायुः** प्राणवायु- जिसे अपान कहते हैं।

अपानृत (वि०) [ब० स०] मिथ्यात्व से रहित, सत्य।

अपाप-पिन् (वि०) [ब० स०, णिनि वा] निष्पाप, पवित्र पुण्यात्मा।

अपाम् (अप्-जल-का संबं० ब० व०) [समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त]—**ज्योतिस्** (न०) बिजली, **—नपात्** अग्नि और सावित्री की उपाधि, **—नाथः, —पतिः** 1. समुद्र 2. वरुण, **—निधिः** 1. समुद्र 2. विष्णु, **—पायस्** (नपुं०) भोजन, **—पित्तम्** अग्नि **—योनिः** समुद्र।

अपामार्गः [अप+मृज्+घञ् कुत्वदीर्घौ] चिचड़ा, एक बूटी।

अपामार्जनम् [अप+मृज्+ल्युट्] सफाई करना, शुद्धि करना, (रोग पापादिक) को दूर करना।

अपायः [अप+इ+अच्] 1. चले जाना, बिदाई 2. वियोग—ध्रुवमपायेऽपादानम्—पा० १।४।२४, येन जातं प्रियापाये क्वदद हंसकोकिलम्—भट्टि० ६।७५, 3. ओझल होना, लोप, अभाव 4. नाश, हानि, संहार करणापायविभिन्नवर्णया—रघु० ८।४२, 5. अनिष्ट, दुर्भाग्य, विपत्ति, भय (विप० उपाय) कायः संनिहितापायः—हि० ४।६५, 6. हानि, क्षति।

अपार (वि०) [न० त०] 1. जिसका पार न हो 2. असीम, सीमारहित 3. जो समाप्त न हो, अत्यधिक 4. पहुँच के बाहर 5. जिसे पार करना कठिन हो, जिस पर विजय न पाई जा सके, **—म्** नदी का दूसरा तट।

अपार्क (वि०) [अप+अर्च्+क्त] 1. दूरस्थ, दूरवर्ती, 2. निकटस्थ।

अपार्थ] (वि०) [अपगतः अर्थः यस्मात्-ब० स०]
अपार्थक] 1. व्यर्थ, अलाभकर, निकम्मा, 2. निरर्थक, अर्थहीन, **-र्थम्** अर्थहीन, या असंगत बात या तर्क (सा० शा० की दृष्टि से रचना संबंधी दोष तु० काव्य० ३।२८, समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते)।

अपावरणम्] [अप+आ+वृ+ल्युट्, क्तिन् वा]
अपावृतिः (स्त्री०)] 1. उद्घाटन 2. ढकना, लपेटना, घेरना 3. छिपाना, गोपन करना।

अपावर्तनम्] [अप+आ+वृत्+ल्युट्, क्तिन्]
अपावृत्तिः (स्त्री०)] वा] 1. लौटना, पीछे हटना, अपकर्षण 2. घूमना।

अपाश्रय (वि०) [ब० स०] आश्रयहीन, निरवलंब, असहाय, **—यः** शरण, सहारा, जिसका सहारा लिया जाय 2. चंदोवा, शामियाना, 3. सिरहाना।

अपाशंसः [अप+आ+शंस्+घञ्] तस्कर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपासनम् [अप+अस्+ल्युट्] 1. फेंक देना, रद्दी कर देना 2. छोड़ देना 3. वध करना।

अपासरणम् [अप+आ+सृ+ल्युट्] विदाई, लौटना, दूर हटना—दे० 'अपसरण'।

अपासु (वि०) [ब० स०] निर्जीव, मृत।

अपि (अव्य०) [कई बार भासुरि के मतानुसार 'अ' का लोप—वल्लि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः पिधा, पिधानम् आदि] 1. (संज्ञा और धातुओं के साथ प्रयुक्त होकर) निकट या ऊपर रखना, की ओर ले जाना, तक पहुँचाना, सामीप्य सन्निकटता आदि 2. (पृथक् क्रि० वि० या संयो० अव्य० के रूप में) और, भी, एवम्, पुनश्च, इसके अलावा, इसके अतिरिक्त—अस्ति मे सोदरस्नेहोऽपीतेषु —श० १, अपनी ओर से तो, अपनी बारी आने पर—विष्णुशर्मणापि राजपुत्राः पाठिताः—पंच० १; **अपि अपि, आपि च**, भी, और भी,—अपि स्तुहि, अपि खिल —सिद्धा० **न नापि न चैव, न वापि, नापि वा, न चापि न**—न, 3. 'भी' 'अति' 'बहुत' शब्दों के अर्थ पर बल देने के लिए भी बहुधा इसका प्रयोग होता है, अद्यापि —आज भी, इदानीमपि—अब भी, यद्यपि—अगर्चे, चाहे, तथापि —तो भी, कई बार केवल 'तथापि' शब्द के प्रयोग से ही 'यद्यपि' का अध्याहार कर लिया जाता है—उदा० कि० १।२८, 4. अगर्चे (भी, चाहे)—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, चाहे ऊपर से ढका हुआ; इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० चाहे वल्कल वस्त्र में 5. (वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होकर 'प्रश्न सूचक') अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १, अपि क्रियार्थसुलभं समित्कुशम्.....अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे—कु० ५।३३, ३४, ३५, 6. आशा, प्रत्याशा (प्रायः क्रियाविशेषण के साथ) कृतं रामसदृशं कर्म, अपिजीवेत्स ब्राह्मणशिशुः —उत्तर० २ मुझे आशा है कि ब्राह्मण बालक जी उठेगा। विशे० इस अर्थ में 'अपि' बहुधा 'नाम' के साथ जुड़ कर निम्नांकित भाव प्रकट करता है (क) संभावना 'शक्यता' (ख) शायद, संभवतः (ग) 'क्या ही अच्छा हो यदि', 'मेरी आंतरिक इच्छा या आशा है कि—अपि नाम कुलपतेरियमसदृक्षेत्र-संभवा स्यात्, श० १, श० ७, तदपि नाम मनागवतीर्णोसि रतिरमणदाणगोचरम् मा० १, शायद, सम्भवतः—अपि नामाहं पुरूरवा भवेयम् विक्रम०—क्या ही अच्छा होता यदि मैं पुरूरवा होता 7. (प्रश्नवाचक शब्दों के साथ जुड़ कर 'अनिश्चितता' के अर्थ को बतलाता है) कोई, कुछ, **कोपि**—कोई, **किमपि**—कुछ, **कुत्रापि**—कहीं; इस शब्द को 'अज्ञात' 'अवर्णनीय' 'अनभिधेय' अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है—व्यतिवजति पदार्थानान्तरः कोपि हेतुः—उत्तर० ६।१२, 8. (संख्या वाचक शब्दों के पश्चात् प्रयुक्त होने पर 'कात्स्न्यं' और 'समस्तता' का अर्थ होता है) चतुर्णामपि वर्णानाम्—चारों वर्णों का, 9. (यह शब्द कभी २ 'संदेह' 'अनिश्चितता' और 'शंका' भी प्रकट करता है)—अपि चौरो भवेत्—गण० शायद वहाँ चोर है 10. (विधिलिङ् के साथ 'संभावना' अर्थ होता है)—अपि स्तुयाद्विष्णुम्, 11. घृणा, निन्दा अपि जायां त्यजसि जातु गणिकामाश्रयसे गर्हितमेतत्—सिद्धा०, लज्जा की बात है, धिक्कार है—धिग्जालमं देवदत्तमपि सिंचेत्पल्लांडुम्, 12. लोट् लकार के साथ प्रयुक्त होकर 'वक्ता की उदासीनता' प्रकट करता है और दूसरे को यथारुचि कार्य करने देना है—अपि स्तुहि—सिद्धा० (आप चाहें तो) स्तुति करें,—अपि स्तुत्वापि सेधारसास्तिष्ठ्यमुक्तं नरासन —भट्टि० ८।८२ 13. कभी विस्मयादि द्योतक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त होता है 14. 'इसलिए' 'फलतः' (अत एव) के अर्थ में कभी २ प्रयुक्त होता है 15. सर्व के साथ प्रयुक्त होकर 'अध्याहार' के भाव को प्रकट करता है—उदा० सर्पिषोऽपि स्यात्,—यहाँ (बिन्दुरपि—जरा सा, एक बूंद) जैसा कोई शब्द अध्याहृत किया जाता है, संभवतः 'एक बूंद घी' अभिप्रेत है।

अपिगोर्ण (वि०) [अपि+गु+क्त] 1. स्तुति किया गया, यशस्वी 2. कथित, वर्णित।

अपिच्छिल (वि०) [न० त०] 1. जो गदला न हो, स्वच्छ अपंकिल 2. गहरा।

अपितृक (वि०) [न० ब०] 1. जिसका पिता जीवित न हो, 2. अपैतृक।

अपितृव्य (वि०) [न० त०] अपैतृक।

अपिधानम्, पिधानम् [अपि+धा+ल्युट्, भागुरि के मत में विकल्प से 'अ' लोप] 1. ढकना, छिपाना 2. चादर, ढक्कन, आच्छादन (आलं० भी)।

अपिधिः (स्त्री०) [अपि+धा+कि] छिपाव।

अपिनद्ध (वि०) [ब० स०-अपि संपृक्त दृत भोजनं नियमो वा यस्य] धार्मिक कृत्य का सहभागी, रक्त द्वारा संबद्ध।

अपिहित, पिहित [अपि+धा+क्त—भागुरिमतेन अकार लोपः] 1. बंद, बंद किया हुआ, ढका हुआ, छिपाया हुआ (आलं० भी) बाष्पापिहित—आँसुओं से ढका हुआ 2. जो छिपा न हो, सरल, स्पष्ट,—अर्थो गिरामपिहितः पिहितश्च किंचित् सत्यं चकास्ति मरहट्टवधूस्तनाभः—सुभा०।

अपीतिः (स्त्री०) [अपि+इ+क्तिन्] 1. प्रवेश, उपागम 2. विघटन, नाश, हानि 3. प्रलय—अपीतौ तद्वत् प्रसंगादसमञ्जसम्—ब्रह्म०।

अपीनसः [अपीनाय, अपीनत्वाय सीयते कल्पते कर्मकर्तरि क—तारा०] नाक की शुष्कता, जुकाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपुंस्का (स्त्री०) [नास्ति पुमान् यस्याः—न० ब०] बिना पति की स्त्री—नापुस्कामीति मे मतिः—भट्टि० ५।७०।

अपुत्रः [न० त०] जो पुत्र न हो, (वि०)—**पुत्रक**(वि०) (स्त्री०—त्रिका) जिसके कोई पुत्र या उत्तराधिकारी न हो।

अपुत्रिका (स्त्री०) [न० ब० कप्, टाप् इत्वं च] पुत्रहीन पिता की ऐसी कन्या जिसके कोई पुत्र न हो; जो पुत्रा-भाव की स्थिति में पिता द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए नियत न की गई हो, तु० 'अकृता'।

अपुनर् (अव्य०) [न० त०] फिर नहीं, एक ही बार, सदा के लिए। सम०—**अन्वय** (वि०) न लौटने वाला, मृत,—**आदानम्** फिर न लेना, वापिस न लेना; **आवृत्तिः** (स्त्री०) फिर न लौटना, परम गति, —**प्राप्य** (वि०) जो फिर प्राप्त न हो सके, **भवः** 1. जो फिर उत्पन्न न हो (रोगादिक भी), 2. मोक्ष या परमगति।

अपुष्ट (वि०) [न० त०] 1. जिसका पोषण ठीक तरह से न हुआ हो, दुबला पतला, जो स्थूल न हो 2. (स्वर) जो ऊँचा या भीषण न हो, मृदु, मन्द 3. (सा०शा०) जो (अर्थ का) पोषक या सहायक न हो; असंबद्ध, अर्थदोषों में से एक—उदा० सा० द० ५७५—विलोक्य वितते व्योम्नि विधुं मृगं रुषं प्रिये—यहाँ आकाश का विशेषण 'वितत' शब्द कौथ को शान्ति में कोई सहा-यता नहीं करता इसलिए असंबद्ध है।

अपूपः [न पूयते विशीर्यते—पू+प, न० त० तारा०] माल-पुआ, शर्करादिक डाल कर बनाया गया रोटी से मोटा पदार्थ, इसे 'पूड़ा' कहते हैं।

अपूपीय, अपूप्य (वि०) [अपूपाय हितम् —छ, यत् च] अपूप संबन्धी,—**पम्** —आटा, भोजन।

अपूरणी (स्त्री०) [न० त०] सेमल का पेड़।

अपूर्ण (वि०) [न० त०] जो पूरा या भरा न हो, अधूरा; असम्पन्न—**अपूर्णमेकेन शतं क्रतूनाम्**—रघु० ३।४८; अपूर्ण एवं पंचरात्रे दोहदस्य—मालवि० ३।

अपूर्व (वि०) [न० ब०] 1. जैसा पहले न हुआ हो, जो पहले विद्यमान न था, बिल्कुल नया,—अपूर्वमिदं नाटकम्—श० १।२, 2. अनोखा, असाधारण, अद्भुत; —अपूर्वो दृश्यते वह्निः कामिन्याः स्तनमंडले, दृश्यते बहुलोवांगं हृदि लग्नस्तु शीतलः—शृंगार० १७, निराला, अनुपम, अभूतपूर्व—**अपूर्वकर्मचाण्डालमणि** मुग्धे विमुंच माम्—उत्तर० १।४६, अप्रतिम नशंसता करने वाली 3. अज्ञात 4. अप्रथम, —**वम्** 1. किसी कार्य का दुरवर्ती फल जैसा कि सत्कार्यों के फलस्वरूप स्वर्ग-प्राप्ति 2. इष्ट और अनिष्ट जो भावी सुख दुःख के अन्तिम कारण हैं;—**वः** परब्रह्म। सम०—**पतिः** (स्त्री०) जिसे अभी तक पति प्राप्त नहीं हुआ, कुमारी कन्या,—**विधिः** नया आधिकारिक निदेश या आज्ञा।

अपृथक् (अव्य०) [न० त०] अलग से नहीं, साथ-साथ, समष्टि रूप से।

अपेक्षणम्, अपेक्षा } [अप+ईक्ष्+ल्युट्, अप+ईक्ष+अ] 1. प्रत्याशा, आशा, चाह, 2. आवश्यकता, जरूरत, कारण प्रायः समास में स्फुरितादर्शवा वह्निरेधापेक्ष इव स्थितः—शा० ७।१५, जलने की प्रतीक्षा में 3. विचार उल्लेख, लिहाज —कर्म के साथ अधि० में, प्रायः समास में; करण० या कभी-कभी अधि० में, (अपेक्षया, अपेक्षाया) समास में बहुधा प्रयुक्त का अर्थ—'का उल्लेख करते हुए' 'लिहाज करके' 'के निमित्त' निदानापेक्षया रघु०।४९, प्रथमकृताप-क्षया—भेष० १७; अत्र त्वयं गुणीभूतं तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्—काव्य० १, इसकी तुलना में 4. मेलजोल, संपर्क 5. देखभाल, ध्यान, सावधानी देशापेक्षास्तथा यत्नः दाक्षिण्यलीपकरा—भट्टि० ७।४९, 6. सम्मान, संमादर 7. (व्या० में)=आकांक्षा।

अपेक्षणीय, अपेक्षितव्य, अपेक्ष्य } (वि०) [अप+ईक्ष+अनीयर्, तव्यत्, ण्यत् वा] अपेक्षा करने के योग्य, जिसकी आवश्यकता या आशा हो, जिसको प्रत्याशा या विचार किया जा सके; वाञ्छनीय।

अपेक्षित (भू० क० कृ०) [अप+ईक्ष्+क्त] जिसकी तलाश की गई हो, जिसकी आशा की गई हो, जिसकी आवश्यकता हो, जिसका विचार किया गया हो, —**तम्** चाह, इच्छा, लिहाज, उल्लेख।

अपेत (भू० क० कृ०) [आप+इ+क्त] 1. गया हुआ, ओझल हुआ, अपेतबुद्धाभिनिवेशसौम्याः—शि० ३।१, 2. विचुत या विचलित, विरुद्ध (अपा० के साथ) अर्थादनपेतम् अर्थ्यम्—सिद्धा०, 3. मुक्त, वंचित (अपा० के साथ या समास में) सुखादपेतः—सिद्धा०, उदवहदवनद्धा तामवद्यादपेतः रघु० ७।१०, निर्दोष।

अपेहि (लोट् म० पु० ए० व०) (मयूरव्यंसकादि श्रेणी से संबद्ध समासों के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त) 'करो, दिखाओ, स्थापना आदि जहाँ इस शब्द का अर्थ होता है "के बिना" "निकाल कर" "सम्मिलित न करके" उदा० **वाणिजा**—इस प्रकार का समारोह जहाँ व्यापारियों को सम्मिलित न किया जाय,—इसी प्रकार 'द्वितीया आदि'।

अपोगंडः [अपगिते (वैधकर्मणि) गंडः त्याज्यः तारा०] 1. अधिक अंगों वाला, या कम अंगों वाला 2. जो सोलह वरस से कम आयु का न हो, मनु० २।१४८ 3. शिशु 4. अतिभीरु 5. हरीदार।

अपोढ (वि०) [अप+वह्+क्त] दूर हटाया गया (अपा० के साथ); कल्पनापोढः=कल्पनायाः अपोढः; दे० **अपपूर्वक 'वह्'**।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपोह: [अप ।-वह् । घञ्] 1. हटाना, दूर करना, विरोपण 2. तर्क शक्ति के प्रयोग द्वारा शङ्कानिवारण 3. तर्क देना, युक्ति देना 4. निषेधात्मक तर्कना (विप० ऊह: आगर्कनिरासाय कृतो विपरीतस्तर्क:),—स्वयमूहापोहासमर्थ:—महाभा०, ऊहापोहमिमं सरोजनयना यावद्विधत्तेतराम्—भामि० २।७४, अत: ऊहापोह = किसी प्रश्न से संबद्ध पूर्ण चर्चा 5. प्रसंगानुकूल वर्ग के अन्दर न आने वाली बातों को विचार-कोटि से निकाल देना; --तद्वानपोहो वा शब्दार्थ: (यहाँ माहेश्वर 'अपोह' का अर्थ 'अतद्व्यावृत्ति:' अर्थात् 'तद्भिन्नत्याग:' करते हैं)।

अपोहनम् [अप + वह् + ल्युट्] 1. हटाना = अपोह, 2. तर्कशक्ति —मत्त: स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च—भग० १५।१५।

अपोहनीय } (वि०) [अप + वह् + अनीयर्, ण्यत् वा]
अपोह्य } दूर हटाने या ले जाने के योग्य; प्रायश्चित्त (पाप का) करने के योग्य; तर्क द्वारा स्थापित करने के योग्य।

अपौरुष-अपौरुषेय (वि०) [नास्ति पौरुष यस्मिन् न० ब० न पौरुषेय:—न० त०] 1. पुरुषार्थहीन, कायर, भीरु 2. अलौकिक, अपुरुषोचित, ईश्वरकृत अपौरुषेया वेदा: अपौरुषेयप्रतिष्ठ: सुवर्णबिन्दुरित्याख्यायते—मा० ९, जो मनुष्य द्वारा न स्थापित किया गया हो। —त्वम्, —येत्व् 1. कायरता 2. ईश्वरीय शक्ति।

अप्तोर्यामः,—मन् [अप्तो: शरीरस्य पावकत्वात् याम इव—अलुक् समास:] एक यज्ञ का नाम, सामवेद के एक मंत्र का नाम जो उक्त यज्ञ की समाप्ति पर बोला जाता है; ज्योतिष्टोम यज्ञ का अंतिम या सातवाँ भाग।

अप्ययः [अपि इ + अच्] 1. उपागमन, सम्मिलन 2. (नदियों का) उमड़ना, 3. प्रवेश, नष्ट होना, अन्तर्धान, लय, किसी एक में लीन हो जाना 4. नाश।

अप्रकरणम् [न० त०] जो मुख्य या प्रधान विषय न हो, अप्रासंगिक या असंबद्ध विषय।

अप्रकाश (वि०) [न० ब०] 1. न चमकने वाला, अंधकारपूर्ण, प्रकाशरहित (आलं० भी)—प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचल:—रघु० ११६८, 2. स्वत: प्रकाशित 3. गुप्त, रहस्य,—शम्,—शे (अव्य०) गुप्तरूप से, अप्रकट।

अप्रकृत (वि०) [न० त०] 1. जो मुख्य या प्रधान न हो, आनुषंगिक 2. अप्रस्तुत, विषय से असंबद्ध, दे० प्रकृत, प्रस्तुत, **अप्रकृतमनुसंधा**—इधर-उधर की (विषय से बाहर की) बातें बनाना, विषयानुकूल बात न करना, —तम् (सा० शा० में) उपमान अर्थात् तुलना का मानक (विप० उपमेय)।

अप्रगम (वि०) [न० ब०] इतनी तेजी से जाने वाला कि दूसरे जिसका अनुसरण न कर सके।

अप्रगल्भ (वि०) [न० त०] साहसहीन, शर्मीला, विनीत (विप० धृष्ट) —धृष्ट: पार्श्वे वसति नियतं दूरतश्चाप्रगल्भ:—हि० २।२६।

अप्रगुण (वि०) [न० ब०] विस्मित, व्याकुल।

अप्रज (वि०) [न० ब०] 1. निस्संतान, संतान रहित 2. अजात 3. जहाँ बस्ती न हो, बिना बसा।

अप्रजस् } (वि०) [न० ब०] संतान रहित, जिसके कोई
अप्रजात } बच्चा या संतान न हो—अतीतायामप्रजसि वांधवास्तदवाप्नुयु:—पाज० २।१४४,—ता निस्संतान स्त्री, बाँझ स्त्री।

अप्रतिकर्मन् (वि०) [न० ब०] 1. अनुपम कार्य करने वाला, 2. अनिवार्य।

अप्रति (ती) कार (वि०) [न०ब०] लाइलाज, असहाय।

अप्रतिघ (वि०) [न० ब०] 1. जिसे हराया न जा सके, अजेय 2. जिसे रोका न जा सके 3. अक्रुद्ध।

अप्रतिद्वन्द्व (वि०) [न०ब०] 1. युद्ध में जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो, अप्रतिरोध्य 2. अनठा, लाजवाब।

अप्रतिपक्ष (वि०) [न० ब०] 1. अप्रतियोगी, विपक्षशून्य 2. अनुपम।

अप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [न० ब०] 1. कार्य का सम्पन्न न होना, अस्वीकृति, 2. उपेक्षा, अवहेलना 3. समझदारी का अभाव 4. निश्चय का अभाव, अव्यवस्था, विह्वलता—°विह्वल आदि का० १५९ (अप्रतिपत्तिर्जडता स्यादिष्टानिष्टेदर्शनश्रुतिभि:) °त्तिसाध्वसजडा—का० २४० 5. (अत:) स्मृति का अभाव,—उत्तरस्याप्रतिपत्तिरप्रतिभा—मालवि० १।

अप्रतिबन्ध (वि०) [न० ब०] 1. निर्बाध, बेरोकटोक 2. बिना झगड़े के जन्म से प्राप्त, जिसमें किसी दूसरे का भाग न हो (उत्तराधिकार की भाँति)।

अप्रतिबल (वि०) [न० ब०] अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, अनुपम बलशाली।

अप्रतिभ (वि०) [न० ब०] 1. विनीत, सलज्ज 2. अप्रत्युत्पन्नमति, मंदबुद्धि।

अप्रतिभट (वि०) [न० ब०] **अप्रतिद्वन्द्वी—ट:** बेजोड़ योद्धा।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अतुलनीय, बेजोड़, **अप्रतिद्वन्द्वी** इसी प्रकार **अप्रतिमान**।

अप्रतिरथ (वि०) [न०ब०] ऐसा वीर पुरुष जिसके मुकाबले का योद्धा और कोई न हो, बेजोड़, **अप्रतिद्वन्द्वी** योद्धा—दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेद्य—श० ४।२०, ७।३३।

अप्रतिरव (वि०) [न० ब०] निर्विरोध, निर्विवाद—वर्षशताधिकभोग: सन्ततोऽप्रतिरव: स्वत्वं गमयति—मिता०।

अप्रतिरूप (वि०) [न० ब०] 1. अननुरूप, अयोग्य 2. अनुपम रूप वाला 3. अनूठा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अप्रतिघैर्य (वि०) [न० ब०] अनुकूलशक्तिशाली।

अप्रतिशासन (वि०) [न० ब०] जिसका प्रतिद्वन्द्वी शासक न हो, जहाँ एक ही व्यक्ति का राज्य हो—रघु० ८।२७।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० ब०] 1. अस्थिर, अदृढ़, अस्थायी 2. अलाभकर, अर्थ 3. व्रतनाम।

अप्रतिष्ठानम् [न० त०] अस्थिरता, दृढ़ता का अभाव (आल० भी)—तत्काप्रतिष्ठानादप्यस्थायानुगेयम्—शारी०।

अप्रतिहत (वि०) [न० त०] 1. निर्बाध, बाधा रहित, अप्रतिरोध्य -अस्मदगृहे °गतिः—पंच० १; जृम्भता-मप्रतिहतप्रसरमार्यस्य क्रोधज्योतिः—वेणी० १; °शक्ति बेजोड़ शक्तिसम्पन्न 2. अक्षुण्ण, अक्षत, अप्रभावित; —सा बुद्धिरप्रतिहता—भर्तृ० २।४० पंच० ४।२६, इसी प्रकार °चित्त, °मनस् 3. जो निराश न हो। सम० —नेत्र (वि०) स्वस्थ आँखों वाला।

अप्रतीत (वि०) [न० त०] 1. अप्रसन्न, अप्रहृष्ट 2. (सा० शा० में) जो स्पष्ट रूप से न समझा जा सके, एक प्रकार का शब्ददोष (उस शब्द को 'अप्रतीत' कहते हैं जो किसी विशिष्ट स्थान पर ही प्रयुक्त होता हो, सामान्य प्रयोग का शब्द न हो)। दे० काव्य० ७।

अप्रत्ता [न० त०] कुमारी कन्या, जिसका दान न किया गया हो।

अप्रत्यक्ष (वि०) [न० ब०] 1. अदृश्य, अगोचर 2. अज्ञात अनुपस्थित।

अप्रत्यय (वि०) [न० ब०] 1. आत्मविश्वास रहित, अविश्वासी—(अधि० के साथ) बलवदपि शिक्षितानामात्म-न्यप्रत्यय चेतः—शा० १।२ 2. अनभिज्ञ 3. (व्या० में) प्रत्यय रहित,—यः 1 आशंका, अविश्वास, विश्वास का अभाव—क्षीणप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१ 2. समझ में न आने वाला 3. जो प्रत्यय न हो—अर्थवदधातुर-प्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।

अप्रदक्षिणम् (अव्य०) [न० त०] बाएँ से दाहिनी ओर।

अप्रधान (वि०) [न० त०] अधीन, गौण, घटिया आदि तावदप्रधानो हि० २,—नम् (°ता °त्वम्) 1. अधीनता, गौणस्थिति, घटियापन 2. गौण या अनुरूप कार्य ('अप्रधान' शब्द प्रायः नपुं० में प्रयुक्त होता है चाहे वह अकेला प्रयुक्त हो या समास में)।

अप्रभुष्य (वि०) [न० त०] जो जीता न जा सके, अजेय —यदाश्रौषं भीष्ममत्यन्तशूरं हतं पार्थेनाहवेष्वप्रधृष्यम्—महा०, मालवि० ५।१७।

अप्रभु (वि०) [न० त०] 1. शक्तिहीन, अशक्त 2. अ-मर्म, अयोग्य, अक्षम: (संब० या अधि० के साथ)।

अप्रमत्त (वि०) [न० त०] जो प्रमादी न हो, खबरदार, सावधान, जागरूक।

अप्रमद (वि०) [न० ब०] आमोद-प्रमोद से विरत, उदास, अप्रसन्न।

अप्रमा [न० त०] भ्रांत ज्ञान (विप० प्रमा)।

अप्रमाण (वि०) [न० ब०] 1. असीमित, अपरिमित 2. अनधिकृत 3. अप्रामाणिक, अविश्वसनीय—श० ५।२५ —णम् [न० त०] जो किसी कार्य में प्रमाण रूप से प्रस्तुत न किया जा सके; अर्थात् वह कार्य जो अपरिहार्य न समझा जाय 2. अमर्यादता।

अप्रमाद (वि०) [न० ब०] खबरदार, जागरूक व: [न० त०] खबरदारी, अवधान, जागरूकता।

अप्रमेय (वि०) [न० त०] 1. अपरिमित, असीमित, सीमारहित, 2. जिसका भलीभाँति निश्चय न किया जा सके, न समझा जा सके; अज्ञेय—अचिन्त्यस्या-प्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभुः मनु० १।३ —यम् ब्रह्म।

अप्रयाणिः (स्त्री०) [नञ्+प्र+या+अनि] न जाना, प्रगति न करना, (केवल कोलने के लिए ही प्रयुक्त होता है)—अप्रयाणिस्ते पथः भूयात्—सिद्धा० (भगवान् करे, तुम प्रगति न कर सको) दे० अजीवनि,

अप्रयुक्त (वि०) [न० त०] 1. जो इस्तेमाल न किया गया हो, जो काम में न लाया गया हो, अव्यवहृत, 2. गलत तरीके से काम में लाया गया शब्द 3. विरल, असामान्य (सा० आ० में), (शब्द के रूप में किसी विशेष अर्थ या लिंग में प्रयुक्त चाहे वह कोश-कारों से सम्मत ही क्यों न हो,—तथा भव्ये दैवतोऽस्या पिशाचो राक्षसोऽथवा काव्य० ७, यहाँ 'दैवत' शब्द "अमरकोष" द्वारा सम्मत होने पर भी कवियों के द्वारा पुंलिंग में प्रयुक्त नहीं किया जाता—अतः यह 'अप्रयुक्त' है)।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. कार्य में न लगना, प्रगति न करना, किसी बात का न होना 2. आलस्य, क्रियाशून्यता, उत्तेजन या प्रोत्साहन का अभाव।

असंसङ्गः [न० त०] 1. आसक्ति का अभाव 2. संबंध का अभाव 3. अनुपयुक्त समय या अवसर,—असंसङ्गा-भिधाने न श्रोतुः श्रद्धा न जायते।

असिद्ध (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, तुच्छ,—कुः ३।१९, 2. असाधारण, असामान्य।

असंस्तावक (वि०) [स्त्री०—की०] [न० त०] विषय से संबंध न रखने वाला, असंगत (—असंस्तावकि दे०)।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] 1. जो संगत या विषय के उप-युक्त न हो, जो प्रसंगानुकूल न हो, असंगत 2. बेहूदा, मुक्तताहीन 3. आकस्मिक, असंबद्ध। सम०—प्रशंसा—एक अलंकार जिसमें विषय से भिन्न अर्थात् अप्रस्तुत का वर्णन करने से प्रस्तुत अर्थात् विषय का संकेत हो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाता है -अप्रस्तुतप्रशंसा सा या सैव प्रस्तुताश्रया—काव्य० १०, इसके ५ भेद हैं -कार्ये निमित्ते सामान्ये विशेषे प्रस्तुते सति, तदन्यस्य वचस्तुल्ये तुल्यस्येति च पंचधा --अर्थात् जबकि प्रस्तुत विषय पर (क) कार्य के रूप में दृष्टिपात किया जाय -जिसकी सूचना कारण बतलाकर दी जाती है, (ख) जब कार्य को बतलाकर कारण पर दृष्टिपात किया जाय। (ग) जब कोई विशेष निदर्शन देकर सामान्य बात पर दृष्टि डाली जाय (घ) जब किसी सामान्य बात का कथन करके विशेष निदर्शन पर दृष्टिपात किया जाय, अथवा (ङ) जब कि समान बात का कथन करके समान बात पर दृष्टिपात किया जाय, उदा० के लिए का० १० और सा० द० ७०६।

अप्रहत (वि०) [न० त०] 1. जिसे चोट न लगी हो 2. परत की भूमि, अनजुती 3. नया या कोरा कपड़ा।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1. जो प्रकरण से संबंध न रखता हो,—अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुत प्रशंसा—काव्य० १०।

अप्राकृत (वि०) [न० त०] 1. जो संस्कृत न हो 2. जो मौलिक न हो 3. जो साधारण न हो, असाधारण 4. विशेष।

अप्राग्र्य (वि०) [न० त०] गौण, अधीन, घटिया।

अप्राप्त (वि०) [न० त०] 1. जो प्राप्त न किया गया हो, -अप्राप्तयोस्तु या राशिः सैव संयोग ईरितः—भाषा० 2. जो न पहुँचा हो या जो न आया हो, 3. नियमतः अनधिकृत, अननुयायी 4. न आया हुआ, न पहुँचा हुआ। समः —अवसर, —काल (वि०) बुरे समय का, असामयिक, जो ऋतु के अनुकूल न हो,—'कालं वचनं बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, लभते बुद्धयवज्ञानमपमानं न पुरुकलम्'- पंच० १।६३, —यौवन (वि०) अवयस्क, नाबालिग, —व्यवहार, —वयस (वि०) (विधि में) अल्पवयस्क, सार्वजनिक कार्यों में अपने उत्तरदायित्व के भरोसे भाग लेने के लिए जिस की आयु न हो, अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का) -अप्राप्तव्यवहारांस्तु यावत् पोडशवार्षिकः—दक्ष०।

अप्राप्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. न मिलना,—तदप्राप्तिमहादुःखविलीनाशेषपातकाः - काव्य० ४, 2. जो किसी नियम में मिट्ठा का स्थापित न हुआ हो; —विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति -मीमां० 3. किसी बात का न होना, किसी घटना का घटित न होना।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1. जो प्रामाणिक न हो, अविश्वसनीय, इस वचनमप्रामाणिकम्—2. अविश्वसनीय, जिस पर भरोसा न किया जा सके।

अप्रिय (वि०) [न० त०] 1. नापसंद, अनभिमत, अरुचिकर,—अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः—रामा०, मनु० ४।१३८, 2. निष्ठुर, अमित्र, —यः शत्रु, दुश्मन,—यम् शत्रुतापूर्ण या अनिष्टकर कर्म,—पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री नाचरेत्किंचिदप्रियम्—मनु० ५। १५६, । समः —कर, —कारिन् —कारक, (वि०) अनिष्टकर, अहचिकर —वक्तृ (प्रिय), —वादिन् (वि०) निष्ठुर और कठोर शब्द बोलने वाला, —अन्यार्थमन्यप्रियंवदा —मा० १।७३, भार्या यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी—चाण० ४४।

अप्रीतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. नापसंदगी, अरुचि 2. शत्रुता।

अप्रौढ़ (वि०) [न० त०] 1. जो ढीठ न हो 2. भीरु, नम्र, असाहसी 3. जो वयस्क न हो, —ढा 1. अविवाहित कन्या 2. वह कन्या जिसका विवाह तो हो गया हो, परन्तु अभी तक वयस्क न हुई हो।

अप्लुत (वि०) [न० त०] वह स्वर जो आवाज की दृष्टि से लंबा न किया गया हो।

अप्सरस् (स्त्री०) (रः, राः) [अद्भ्यः सरन्ति उद्गच्छन्ति-अप्+सृ+असुन्] [त० रामा० अप्सु निर्मथनादेव रसात्तस्माद्धरस्त्रियः, उत्पेतुर्मनुजश्रेष्ठ तस्मादप्सरसोऽभवन्]। आकाश में रहने वाली देवांगनाएँ जो गन्धर्वों की पत्नियां समझी जाती हैं, उन्हें जलक्रीड़ा बड़ी रुचिकर है, वह अपना रूप बदल सकती हैं तथा दिव्य प्रभाव से युक्त हैं, वह प्रायः इन्द्र की नर्तकियाँ हैं और 'स्वर्वेश्याः' कहलाती हैं। बाण ने इस प्रकार की परियों के १४ कुलों का वर्णन किया है—दे० का० १३६; यह शब्द बहुधा बहुवचन में (स्त्रियां बहुष्वप्सरसः) प्रयुक्त होता है, परन्तु एक वचन में प्रयोग तथा 'अप्सरा' रूप कई बार देखने में आता है- नियमविघ्नकारिणी मेनका नाम अप्सराः प्रेषिता—शं० १, एकाप्सराः आदि०—रघु० ७।५३,। समः —तीर्थ अप्सराओं के नहाने के लिए पवित्र तालाब, यह संभवतः किसी स्थान का नाम है —दे० रा० ६, —पतिः अप्सराओं का स्वामी इन्द्र की उपाधि।

अफल (वि०) [न० ब०] 1 निष्फल, फलरहित, बंजर (रा० और आलं०) 'ला ओषधयः, 'लकार्य आदि 2. अनुवरा, निरर्थक, व्यर्थ,—यथा षंढोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला, यथा यज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रेऽनृचोऽफलः। मनु० २।१८। पुरुषत्व से हीन, बधिया किया हुआ,—अफलोद्भूं कृतस्तेन क्रौधाद्रसा च निराकृता —रामा०। समः—आकांक्षिन्, —प्रेप्सु (वि०) जो पारिश्रमिक पाने की इच्छा नहीं रखता, स्वार्थरहित, —अफलाकांक्षिभिर्यज्ञः क्रियते ब्रह्मवादिभिः—महा०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अफेन (वि०) [न० ब०] बिना झाग का, झाग रहित —नम् अफीम ।

अबद्ध-मूक (वि०) [न० त०] 1. स्वच्छन्द, न बंधा हुआ, बेरोक 2. अर्थहीन, बेमतलब, बेहूदा, विरोधी— उदा० यावज्जीवमहं मौनी ब्रह्मचारी च मे पिता, माता तु मम वंध्यासीदपुत्रश्च पितामहः । (विरोधी)-जरद्गवः कंबलपादुकाभ्यां द्वारि स्थितो गायति मङ्गलानि—अमर० रायमुकुट । सम०—मूक (वि०) दुर्मुख, गाली से युक्त, बदजबान ।

अबन्धु-बान्धव (वि०) [न० ब०] मित्रहीन, एकाकी ।

अबल (वि०) [न० ब०] 1. दुर्बल, बलहीन, 2. अरक्षित,—ला स्त्री (अपेक्षाकृत बलहीन होने के कारण);—नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधा ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम्, गाम्भीर्यविलोलतरतारकदृष्टिपातैः शक्नादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ताः भर्तृ० १।११, °जनः स्त्री, —त्वम् निर्बलता, बल की कमी, दे० बलाबलम् भी ।

अबाध (वि०) [न० ब०] 1. अनियन्त्रित, बाधारहित, 2. पीड़ा से मुक्त,—धः [न० त०] 1. बाधाहीनता 2. निराकरण का अभाव ।

अबाल (वि०) [न० त०] 1. जो बालक न हो, जवान, 2. छोटा नहीं, पूर्ण (जैसा कि चन्द्रमा) ।

अबाह्य (वि०) [न० त०] 1. जो बाहरी न हो, भीतरी 2. (आल०) परिचित, जानकार ।

अबिन्धनः [आपः इन्धनं यस्य—ब० स०] बड़वाग्नि, (जो समुद्री पानी पर पलती है)-अबिन्धनं वह्निमसौ बिभर्त्ति रघु० १३।४ ।

अबुद्ध (वि०) [न० त०] मूर्ख, नासमझ—अपवादमात्रमबुद्धानां सा० मु० ।

अबुद्धि (स्त्री०) [न० त०] 1. समझ की कमी, 2. अज्ञान, मूर्खता । सम०—पूर्व, —पूर्वक (वि०) अनभिप्रेत (—र्वं, र्वकम्) (कि० वि०) अनजानपने में, अज्ञात रूप से ।

अबुध-बुध (वि०) [न० त०] मूर्ख, मूढ़, (पुं०) जड़, (स्त्री०—अबुधा) अज्ञान, बुद्धि का अभाव ।

अबोध (वि०) [न० ब०] अनजान, मूर्ख, मूढ़, धः [न० त०] 1. अज्ञान, जड़ता, समझ का अभाव—°बोधप्रहाणाज्ञान्ये—भर्तृ० ३।२, निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः - कि० १।६, 2. न जानना, जानकारी न होना । सम०—गम्य (वि०) जो समझ में न आ सके, अकल्पनीय ।

अब्ज (वि०) [अप्सु जायते—अप्+जन्+ड] जल में पैदा हुआ या जल से उत्पन्न,—ब्जम् 1. कमल २. एक अरब की संख्या (१०००००००००) । सम०—कर्णिका कमल का छत्ता, —ज;—भवः,—भूः, —योनिः ब्रह्मा के विशेषण,—बान्धव कमलों का मित्र सूर्य,—वाहनः शिव की उपाधि ।

अब्जा [स्त्रियां टाप्] सीपी ।

अब्जिनी [अब्ज+इनि, स्त्रियां ङीप्] 1. कमलों का समूह 2. कमलों से पूर्ण स्थान 3. कमल का पौधा । सम० - पतिः सूर्य ।

अब्दः [अपो ददाति—दा+क] 1. बादल 2. वर्ष (इस अर्थ में नपुं० भी) 3. एक पर्वत का नाम । सम०—अर्धम् आधा वर्ष, —वाहनः शिव, —शतम् शताब्दी, —सारः एक प्रकार का कपूर ।

अब्धिः [आपः धीयन्ते अत्र —अप्+धा+कि] 1. समुद्र, जलाशय, (आल० भी) दुःख°, कार्य°, ज्ञान° आदि किसी चीज का भंडार या संग्रह 2. ताल, झील, 3. (गण० में) सात की संख्या । सम०—अग्निः बाडवाग्नि, —कफः, —फेनः समुद्रझाग,—जः 1. चन्द्रमा, 2. शंख, (—जा) 1. वारुणी (समुद्र से उत्पन्न), 2. लक्ष्मीदेवी, —द्वीपा पृथ्वी,—नगरी कृष्ण की राजधानी द्वारका, —नवनीतकः चन्द्रमा,—मंथनी मोती की सीप, —शयनः विष्णु, —सारः रत्न ।

अब्रह्मचर्य (वि०) [न० ब०] जो ब्रह्मचारी न हो,—र्यम्, र्यकम् [न० त०] लम्पटता, कामुकता, 2. मैथुन ।

अब्राह्मण्य (वि०) [न० त०—नञ्+ब्राह्मण+यत्] 1. जो ब्राह्मण के लिए उपयुक्त न हो,—अब्राह्मण्यमवर्णं स्यात् ब्रह्मण्यं ब्रह्मणो हितम् हला० 2. ब्राह्मणों के लिए अभवत्,—ण्यम् अब्राह्मणोचित कार्य, या जो ब्राह्मण के लिये योग्य न हो । नाटकों में प्रायः यह शब्द 'दुहाई देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है—अर्थात् 'रक्षाकरो' 'सहायता करो' 'एक अत्यन्त भीषण और जघन्य कर्म हो गया है' - अथेदृश योगनन्दस्य व्याडिनाक्रन्दितं पुरा, अब्राह्मण्यमनुत्क्रान्तजीवो योगस्थितो द्विजः—बृह० क० ।

अब्रह्मन् (वि०) [न० ब०] ब्राह्मणों से वियुक्त या विरहित—नाब्रह्मक्षत्रमूध्नोति—मनु० ९।३२२ ।

अभक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. भक्ति या आसक्ति का अभाव 2. अविश्वास, सन्देहशीलता ।

अभक्ष्य (वि०) [न० त०] 1. जो खाने योग्य न हो । 2. खाने के लिये निषिद्ध,—क्ष्यम् खाने का निषिद्ध पदार्थ ।

अभग (वि०) [न० ब०] अभागा, बदकिस्मत ।

अभद्र (वि०) [न० त०] अशुभ, कुत्सित, दुष्ट,—द्रम् 1. दुष्कर्म, पाप, दुष्टता 2. शोक ।

अभय (वि०) [न० ब०] निर्भय, सुरक्षित, भयमुक्त, —वैराग्यमेवाभयम् -भर्तृ० ३।३५, —यम् 1. भय का अभाव, भय से दूर रहना, 2 सुरक्षा, बचाव, भय या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डर से रक्षा,—मया तस्याभयं दत्तम्- पंच० १, १ सभ०—कृत् (वि०) 1. जो भयानक न हो, मृदु, 2. सुरक्षा देने वाला,—दिक्षिण: 1. सुरक्षा या विश्वसनीयता का डिंडोरा, 2. युद्धभेरी, —द, —दायिन्,—प्रद (वि) सुरक्षा का वचन देने वाला,—दक्षिण, दानम्, —प्रदानम् भय से मुक्ति का वचन या सुरक्षा की गारंटी —सर्वप्रदानेष्वभयप्रदानं (प्रधानम्)- पंच० १।२९०, —पत्रम् सुरक्षा का विश्वास दिलाने वाला लिखित पत्र, तु० आधुनिक 'सुरक्षा आचरण'—मानना रक्षा के लिए प्रार्थना,—वचनम् वाच् (स्त्री) सुरक्षा का वचन या भय से मुक्त कर देने की प्रतिज्ञा।

अभयंकर कृत (वि०) [न० त०] 1. जो भयानक न हो 2. सुरक्षा करने वाला

अभव: [न० त०] 1. अविद्यमानता, मत्त एव भवाभवौ महान्, 2. छुटकारा मोक्ष,—प्राक्तनमभवमभिवाञ्छति वा—कि० १२।३०, १८।२७, 3. समाप्ति या प्रलय —भवाय सर्वभूतानामभवाय च रक्षसाम् रामा०।

अभव्य (वि०) [न० त०] 1. जो न होना हो 2. अनुपयुक्त, अशुभ 3. दुर्भाग्यपूर्ण, अभागा, उपनतमवधीरयन्त्यभव्याः कि० १०।५१।

अभाग (वि०) [न० ब०] 1. जिसका संपत्ति में कोई हिस्सा न हो, 2. अविभक्त।

अभाव: [न० त०] 1. न होना, अनस्तित्व,—गतो भावोऽभावम्-मच्छक० १ (अन्तर्धान हो गया) 2. अनुपस्थिति, कमी, असफलता,—सर्वेषामप्यभावे तु ब्राह्मणा किमधभागिनः—मनु० ९।१८८, अधिकतर समास में, —सर्वाभावे हरेन्नृपः १८९, सब कुछ विफल हो जाने पर 3. सर्वनाश, मृत्यु, विनाश, सत्तानुन्मत्तता, —नाभाव उपलब्धेः—शारी० 4. (दर्शन में) लोप, असत्ता, अविद्यमानता या निषेध, कणाद के मतानुसार सातवां पदार्थ या वर्ग, (इसके दो भेद हैं—संसर्गाभाव और अन्योन्याभाव, पहले के फिर तीन उपभेद हैं प्रागभाव प्रध्वंसाभाव, और अत्यंताभाव)।

अभावना [न०त०] 1. सत्यविवेचन या निर्णय का अभाव 2 धार्मिक ध्यान का अभाव।

अभावित (वि०) [न० त०] न कही हुआ। सम० - पूर्वक: वह शब्द जो कर्मो० या स्त्री० में प्रयुक्त न होता हो अर्थात् विशेषणीय।

अभि (अव्य०) [नि०+भा+कि] (धातु और शब्दों से पूर्व लगाया जाने वाला उपसर्ग) अर्थ —(क) 'की ओर', 'की दिशा में', **अभिगम** की ओर जाना, **अभिया**, गमनम्, °यानम् आदि (ख) 'के लिए' 'के विरुद्ध' °लष्, °पत् आदि (ग) 'पर' 'ऊपर' °सिच् पर छिड़कना आदि (घ) 'ऊपर से' 'ऊपर' 'परे' °भू हावी हो जाना, °तन् (ङ) 'अधिकता से' 'बहुत' °कंप 2. (विशेषण तथा स्वतन्त्र संज्ञा शब्दों से पूर्व लगने वाला उपसर्ग) अर्थ —(क) तीव्रता और प्राधान्य, °धर्म:—प्रधान कर्तव्य, °ताम्र—अत्यंत लाल °नव-बिलकुल नया (ख) 'की ओर' 'की दिशा में', अव्ययीभाव समास बनाना °चंद्रम्, °मुखम्, °दूति आदि 3. (कर्म० के साथ संब० अव्य० के रूप में) (क) 'की ओर' 'की दिशा में' 'के विरुद्ध' (कर्म के साथ या इसी अर्थ में समास के साथ) **अभ्यग्नि** या **अग्निमभि** शलभाः पतंति, वृक्षमभिवर्षति विद्युत्—सिद्धा० (ख) 'निकट' 'पहले' 'सामने' 'उपस्थिति में' (ग) पर ऊपर, संकेत करते हुए, के विषय में—साधु देवदत्तो मातरमभि—सिद्धा० (घ) पृथक् पृथक्, एक-एक करके (विभाग द्वारा) -वृक्षं वृक्षमभिषिंचति —सिद्धा०।

अभि (भी) क (वि०) [अभि+कन्] कामी, लंपट, विलासी,—सोऽधिकारमभिकः कुलोचितं कांचन स्वयमवर्तयत्समाः रघु १९।४, अपि स्विदेः कृशानौ त्वं दर्पं समर्पयिष्यसि भभिकः भट्टि० ८।९२।

अभिकांक्षा [अभि+कांक्ष्+अङ्+टाप्] कामना, इच्छा, लालसा।

अभिकांक्षिन् (वि०) [अभि+काक्ष्+णिनि] लालसा रखने वाला, कामना करने वाला।

अभिकाम (वि०) [अभिवृद्ध: कामो यस्य—अभि+कम्+अच् ब० स०] स्नेही, प्रेमी, इच्छुक, कामनायुक्त, कामुक (कर्म० में या समास में): यांचे त्वामभिकामाहम्—महा०,—म: (प्रा० स०) 1. स्नेह, प्रेम 2. कामना, इच्छा।

अभिक्रम: [अभि+क्रम्+घञ्, अवृद्धि:] 1. आरम्भ, प्रयत्न, व्यवसाय,—नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते भग० २।४०, 2 निश्चित आक्रमण या धावा, अभियान, हमला 3. आरोहण, सवार होना।

अभिक्रमण-क्रांति: (स्त्री०) [अभि+क्रम्+ल्युट्, क्तिन् वा] उपागमन, आक्रमण करना—दे० ऊ० अभिक्रम।

अभिक्रोश: [अभि+क्रुश्+घञ्] 1. पुकारना, चिल्लाना 2. अपशब्द कहना, निंदा करना।

अभिक्रोशक: [अभि+क्रुश्+ण्वुल्] पुकारने वाला, गाली देने वाला, कलंक लगाने वाला।

अभिख्या [अभि+ख्या+अङ्+टाप्] 1. चमक-दमक, शोभा कांति,—काव्यसिद्ध्या तयोरासीद् व्रजतोः शुद्धवेषयोः रघु० १।४६, गुर्यापायेऽपि न खलु कमलं पुष्पाति स्वामभिख्याम्- मेघ०, ८० कु० १।४३, ७।१८, 2. कहना, घोषणा करना, 3. पुकारना, संबोधित करना 4. नाम, अभिधान 5. शब्द, पर्याय 6. प्रसिद्धि, यश, कुख्याति, महाख्या।

अभिख्यानम् [अभि+ख्या+ल्युट्] ख्याति, यश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिगमः-गमनम् [अभिगम्+अप्, ल्युट् वा] 1. (क) उपागमन, पास जाना या आना, दर्शनार्थ गमन, पहुँचना,—तवार्हतो नाभिगमेन तृप्तम्—रघु० ५।११, १७।७२, ज्येष्ठाभिगमनात्पूर्वं तेनाप्यनभिनन्दिता—१२।३५, 2. संभोग (स्त्री या पुरुष के साथ)—परदाराभिगमनम्—का० १४७, प्रसह्य दारयभिगमे—या० २।२९१।

अभिगम्य (सं० कृ०) [अभिगम्+यत्] 1. उपागम्य, दर्शनीय अन्विष्य, कु० ६।५६, 2. प्राप्य, आमन्त्रक,—भीमकान्तैर्नृपगुणैः·····अधृष्यश्चाभिगम्यश्च—रघु० १।१६,।

अभिगर्जनम् } [अभिगर्ज्+ल्युट्, क्त वा] जगली तथा
अभिगर्जितम् } भीषण दहाड़, चीत्कार।

अभिगामिन् (वि०) [अभि+गम्+णिनि] निकट जाने वाला, संभोग करने वाला।

अभिगुप्तिः (स्त्री०) [अभि+गुप्+क्तिन्] संरक्षण, बचाव।

अभिगोप्तृ (पुं०) [अभि+गुप्+तृच्] बचाने वाला, संरक्षक।

अभिग्रहः [अभि+ग्रह्+अच्] 1. छीन लेना, ठगना, लूटना 2. धावा, हमला 3. ललकार 4. शिकायत 5. अधिकार, प्रभाव।

अभिग्रहणम् [अभि+ग्रह्+ल्युट्] लूटना, छीन लेना।

अभिघर्षणम् [अभि+घृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना, झगड़ना, 2. बुरी भावना से अधिकार करना।

अभिघातः [अभि+हन्+घञ्] 1. आघात करना, मारना चोट पहुँचाना, प्रहार,—तटाभिघातादिव लम्बपद्धे—कु० ७।४९, 2. विध्वंस, पूर्ण नाश, समूलोच्छेदन—दुःखत्र्याभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ—सां० का० १, —तम् कठोर उच्चारण (सन्धि नियमों की उपेक्षा के कारण)।

अभिघातक (वि०) [स्त्री० —तिका] (मारकर) पीछे हटाने वाला, दूर कर देने वाला।

अभिघातिन् (पुं०) [अभि+हन्+णिनि] शत्रु।

अभिघारः [अभि+घृ+णिच्+घञ्] 1. घी 2. यज्ञ में घी की आहुति,—प्रणीतपृषदाज्याभिघारश्चोरस्तनूनपात्—महावी० ३।

अभिघारणम् [अभि+घृ+णिच्+ल्युट्] घी छिड़कना।

अभिघ्राणम् [अभि+घ्रा+ल्युट्] सिर सूंघना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिचरः [अभि+चर्+अच्] अनुचर, सेवक।

अभिचरणम् [अभि+चर्+ल्युट्] 1. झाड़ना-फूंकना, जादू टोना, बुरे कामों के लिए मंत्र पढ़ कर जादू करना, इन्द्रजाल 2. मारना।

अभिचारः [अभि+चर्+घञ्] 1. (मंत्रादि द्वारा) झाड़ फूंक करना, मंत्रमुग्ध करना, जादू के मंत्रों का बुरे कामों के लिए प्रयोग करना, जादू, करना 2. हत्या करना। सम०—स्वरः जादू के मंत्रों द्वारा किया गया बुलावा,—मंत्रः जादू का गुर, जादू करने के लिए मंत्र-फूंकना,—शि० ७।५८,—यज्ञः,—होमः जादू टोने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, होम।

अभिचारक } (वि०) (स्त्रियाम्—रिकी,—रिणी)[अभि
अभिचारिन् } +चर्+ण्वुल्, णिनि वा] अभिचार करने वाला, जादू टोना करने वाला,—कः,—री ऐन्द्रजालिक, आवुरार।

अभिजनः [अभि+जन्+घञ्, अवृद्धिः] 1. (क) कुटुम्ब, वंश, अन्वय (ख) जन्म,उत्पत्ति, कुल 2. उत्तम कुल में जन्म, उत्तम कुटुम्ब में उत्पत्ति;—स्तुत्यं तन्महाहार्यं यदभिजनतो यच्च गुणतः··मा० २।१३, शीलं शीलतटात्पतत्यभिजनः संदह्यतां वह्निना—भर्तृ० २, ३९, 3. जन्मभूमि, मातृभूमि, बापदादाओं की जन्मभूमि (विप० निवास), यत्र पूर्वैरुषितं सोऽभिजनः—सिद्धा० 4. ख्याति, प्रतिष्ठा 5. घर का मुखिया या कुलभूषण (श्रेष्ठव्यक्ति), 6. अनुचर, परिजन।

अभिजनवत् (वि०) [अभिजन+मतुप्] उच्च कुल का, उत्तम वंश में उत्पन्न,—वतीभर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणी पदे—श० ४।१८।

अभिजयः [अभि+जि+अच्] जीत, पूर्ण विजय।

अभिजात [भू० क० कृ०] [अभि+जन्+क्त] 1. (क) उत्पन्न, भग० १६।३।५, (ख) सर्वथा विकसित (ग) योग्य 2. जन्मा हुआ, पैदा हुआ 3. कुलीन, उच्चकुल में उत्पन्न, उच्च वंश में जन्म लेने वाला,—आत्मस्तेनाभिजातेन शूरः शौर्यवता कुशः—रघु० १७।४, शिष्टः, नम्र—अभिजातं खल्वस्य वचनम्—विक्रम० १, 4. योग्य, उचित उपयुक्त 5. मधुर, सुश्राव्य,—प्रजल्पितायामभिजातवाचि—कु० १।४५, 6. मनोहर, सुन्दर 7. विद्वान्, बुद्धिमान्, विवेकशील,—संकीर्णं नाभिजातेषु नाप्रबुद्धेषु संस्कृतम् (वदेत्)।

अभिजातिः (स्त्री०) [अभि+जन्+क्तिन्] उत्तम कुल में जन्म।

अभिजिघ्रणम् [अभि+घ्रा+ल्युट् जिघ्रादेशः] नाक से सिर का स्पर्श करना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिजित् (पुं०) [अभि+जि+क्विप्] 1. विष्णु 2. एक नक्षत्र का नाम।

अभिज्ञ (वि०) [अभि+ज्ञा+क] 1. जानने वाला, जानकार, अनुभवशील, कुशल (संब० या अधि० के साथ अथवा समास में)—यद्धा कौशलमिन्दसूनुदमने तत्राप्यभिज्ञो जनः—उत्तर० ५।३४, अभिज्ञाश्छेदयातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः—कु० २।४१, मेघ० १६, रघु० ७।६४, अनभिज्ञो भवान्सेवाधर्मस्य—१, 2. कुशल, दक्ष, चतुर, —ज्ञा 1. पहचान 2. याद, स्मृति चिह्न।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिज्ञानम् [अभि-ज्ञा+ल्युट्] 1. पहचान,—तदभिज्ञानहेतोर्हि दत्तं तेन महात्मना—रामा० 2. स्मरण, प्रत्यभिज्ञा स्मरण 3. (क) पहचान का चिह्न (पुरुष या वस्तु), —वत्स योगिन्यस्मि मालत्यभिज्ञानं च धारयामि —मा० ९, भट्टि० ८।११८, १२४ इसी प्रकार शाकुन्तलं 4. चन्द्रमण्डल में काला चिह्न। सम०—आभरणम् पहचान का भूषण, अंगूठी श० ४।

अभितः (अव्य०) [अभि+तसिल्] (क्रि० वि० के रूप में अथवा कर्म० के साथ संब० अव्य० के रूप में प्रयुक्त) 1. निकट, की ओर, सब ओर से,—अभितस्तं पृथामृतुस्नेहेन परिवस्तरे—कि० ११।८, 2. (क) निकट मिला हुआ, समीप में, —तनौ राजार्हवीद्धत्वं सुभगमभितः स्थितम् रामा० (ख) के सामने, की उपस्थिति में,—अभ्यस्तसिद्धमभितो गुरुशुश्रूषालम्—कि० २।५९, 3. सम्मुख, मुंह के आगे, सामने कि० ६।१, ५, १४, 4. दोनों ओर, चूताचुम्बितकंकपत्रमभितस्मेरं गौडं पृष्ठतः —उत्तर० ४।२०, भट्टि० ९।१२७, 5. पहले और पीछे 6. सब ओर से, चारों ओर से, (कर्म० या सब० के साथ) —परिजनो यथाव्यापारं राजानमभितः स्थित. —मालवि० १।७, 7. पूर्ण रूप से, पूरी तरह से, सर्वत्र 8. शीघ्र ही।

अभितापः [अभितप्+घञ्] अत्यंत गर्मी—चाहे शरीर की हो या मन की, भावावेश, कष्ट, अधिक दुःख या पीड़ा —शि० ९।१, कि० ९।४, बलवानुष्मभिर्मनसोऽभितापः —विक्रम० ३।

अभितास्र (वि०) [प्रा० स०] बहुत लाल, लालसुर्ख —रघु० १५।४९।

अभिदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] दक्षिण की ओर (=तु० प्रदक्षिणम्)।

अभिद्रवः द्रवणम् [अभिद्रु+अप्+ल्युट् वा] आक्रमण, हमला।

अभिद्रोह [अभि+द्रुह्+घञ्] 1. चोट पहुंचाना, षड्यंत्र रचना, द्रोह करना 2. गाली, निन्दा।

अभिधर्षणम् [अभि+धृष्+ल्युट्] 1. भूत प्रेतादि से आविष्ट होना 2. अत्याचार।

अभिधा [अभि+धा+अङ्+टाप्] 1. नाम, संज्ञा (प्रायः समास में) कुसुम वसन्ताभिधः—मा० द० २ 2. शब्द, ध्वनि 3. शाब्दिक शक्ति या शब्दार्थ, संकेतन, शब्द की तीन शक्तियों में से एक,—शब्दार्थौ सहितौ भिधया बोध्यः—सा० द० २ (अभिधा —शब्द के संकेतित अर्थ को बतलाती है) स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते —काव्य० २ । सम० —वृत्तिः (वि०) अपने नाम को तत्र करने वाला —मूल (वि०) शब्द के संकेतित या मुख्यार्थ पर आधारित।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] 1. कहना, बोलना, नाम रखना, संकेत करना,—एतावतामर्थानामिदमभिधानम् विक्र० 2. प्रकथन, वचन दे० पा० २।३।२ सिद्धा० 3. नाम, संज्ञा, पद,—अभिधाने तु पश्चात्तस्याहमश्रवम्—का० ३२, तवाभिधानान् व्यथते ननाननः किं० १। ऋणाभिधानात् २४, (समस्तपद के अन्त में) पुकारा गया, नाम लिया गया—ऋणाभिधानात् बंधनात् —रघु० ३।२०, 4. भाषण, व्याख्यान 5. कोश, शब्दावली, लुप्त (अंतिम दो अर्थों में पुं० में भी) 1. सम०—कोशः,—माला शब्दकोश।

अभिधायकः (त्रो० °यिका, °यित्री) [अभि+धा+ण्वुल्, तृच् वा] (वि०) 1. नाम रखने वाला, वाचक,—कर्तुः कुल्याभिधायिनी -अमर०,—संकेत करता है, अर्थ बतलाता है, भाव रखता है, 2. कहने वाला, बोलने वाला, बतलाने-वाला,—लक्ष्मीमित्यभिधायिनि प्रियतमे—अमरु० २३, वाच्याभिधायी पुरुषः पृष्ठमांसाद उच्यते—विक्रा०।

अभिधावनम् [अभि+धाव्+ल्युट्] आक्रमण, पीछा करना।

अभिधेय (सं० कृ०) [अभि+धा+यत्] 1. नाम दिये जाने योग्य, कथनीय, वाच्य 2. नाम के योग्य (तर्क० में) अभिधेया: पदार्थाः,—यम् 1. सार्थकता, अर्थ, भाव, तात्पर्य —कि० १४।५, 2. भावाशय 3. विषय, —इहाभिधेयं सम्प्रयोजनम्—काव्य० १, इति प्रयोजनाभिधेयसंबंधाः —मुग्ध० 4. मुख्यार्थ (=अभिधा) —अभिधेयाविनाभूतप्रतीतिर्लक्षणोच्यते- काव्य० २।

अभिध्या [अभि+ध्यै+अङ्+टाप्] 1. दूसरे की संपत्ति के लिए ललचाना, 2. प्रबल कामना, चाह, सामान्य इच्छा,—अभिध्यालक्षितात्—याज्ञ० 3. ग्रहण करने की इच्छा।

अभिध्यानम् [अभि+ध्यै+ल्युट्] 1. चाहना, प्रबल इच्छा करना, ललचाना, कामना करना 2. मनन करना, चिंतन।

अभिनन्दः [अभि+नन्द्+घञ्] 1. प्रहर्ष, प्रफुल्लता, प्रसन्नता 2. प्रशंसा, सराहना, अभिवादन, बधाई देना, 3. कामना, इच्छा, 4. प्रोत्साहन, कार्य में प्रेरणा।

अभिनन्दनम् [अभि+नन्द्+ल्युट्] 1. प्रहर्षण, अभिवादन, स्वागत करना, 2. प्रशंसा करना, अनुमोदन करना 3. कामना, इच्छा।

अभिनन्दनीय (सं० कृ०) [अभि+नन्द्+अनीय, यत् वा] प्रहृष्ट होना, प्रशंसित होना, सराहा जाना,—कामयेतदभिनन्दनीयम् —श० ५, रघु० ५।३१।

अभिनम्र (वि०) [प्रा० स०] झुका हुआ, विनीत,—स्तनाभिरामं नवकाभिनम्रम् रघु० १३।३२।

अभिनयः [अभि+नी+अच्] 1 नाटक खेलना, अंग विक्षेप, नाटकीय प्रदर्शन (किसी मनोभाव या आवेश को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दृष्टि, संकेत या मुद्रादि से प्रकट करने वाला) —नृत्याभिनयक्रियाव्यग्रम्—कु० ५।७९, अभिनयान् परिवेत्तुमिवोद्यता- —रघु० ९।३३, नर्तकीरभिनयान्तिलङ्घिनीः, १९।१४ 2. नाटकीय प्रदर्शनी, स्वांग, मंच पर प्रदर्शन करना,—ललिताभिनयं तमत्र भर्ता मरुतां दृष्टुमना: सलोकपालः—विक्रम० २।१८, सा० द० अभिनय का निरूपण इस प्रकार करता है:—भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः स चतुर्विधः,आङ्गिको वाचिकश्चैवमाहार्यः सात्विकस्तथा। १७४। अभिनय—किसी दशा का अनुकरण करना है, यह चार प्रकार का है:—(१) आंगिक—शारीरिक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त होने वाला (२) वाचिक—शब्दों द्वारा प्रकट होने वाला (३) आहार्य—वेशभूषा, अलंकार, सजावट आदि से व्यक्त होने वाला (४) सात्विक—स्वेद, रोमांच आदि के द्वारा आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने वाला।

अभिनव (वि०) [प्रा० स०] 1. बिल्कुल नया या ताजा (सर्वथा) पदपङ्क्तिर्दृश्यतेऽभिनवा—श० ३।८, ५।१, °वा वधूः का० २, नवोढ़ा 2. बहुत छोटा, अनुभवहीन। सम०—यौवन—वयस्क, नौ जवान, बहुत छोटा।

अभिनहनम् [अभि+नह् ल्युट्] आँख पर बाँधने की पट्टी, अंधा।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+नि+युज्+क्त] काम में लगा हुआ, व्यस्त।

अभिनिर्मुक्त (वि०)[अभि+निर्+मुच्+क्त] 1 सूर्यास्त होने के कारण छूटा हुआ कार्य या छोड़ा हुआ कार्य 2 सूर्यास्त के समय सोया हुआ।

अभिनिर्याणम् [अभि+निर्+या+ल्युट्] 1. प्रयाण 2. आक्रमण, किसी शत्रु के सामने अभिप्रस्थान।

अभिनिविष्ट [भू० क० कृ०] [अभि+नि+विश्+क्त] 1. तुला हुआ, लीन, जुटा हुआ 2. दृढ़ता पूर्वक जमा हुआ सावधान, लगा हुआ 3. सम्पन्न, अधिकार युक्त,—गुरुभिरभिनिविष्टं (गर्भं) लोकपालानुभावैः—रघु० २।७५, 4. दृढ़निश्चयी, कृतसंकल्प 5. (कदर्थ०) हठी, दुराग्रही।

अभिनिविष्टता [अभिनिविष्ट+तल्+टाप्] दृढ़संकल्पता, दृढ़निश्चय, निदाक्षेपापमानादेरमर्षोऽभिनिविष्टता— सा० द०—अर्थात् निंदा, बदनामी या अपमान की परवाह न करते हुए अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से आगे बढ़ते जाना।

अभिनिवृत्तिः (स्त्री०) [अभि+नि+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्ति।

अभिनिवेशः [अभि+नि+विश्+घञ्] 1 लगन, आसक्ति एकनिष्ठता, दृढ़ विनियोग (अधि० के साथ या समास में), कतमस्मिंस्ते भावाभिनिवेशः—विक्रम० ३, अहो निरर्थकव्यापारेष्वभिनिवेशः का० १२०, बलीयान्खलमेऽभिनिवेशः—श० ३, असत्यभूते वस्तुन्यभिनिवेशः —मित० २. 2. उत्कट अभिलाष, दृढ़ प्रत्याशा 3. दृढ़संकल्प, दृढ़ निश्चय, धैर्य,—जनकात्मजायां नितान्तरक्षाभिनिवेशमोक्षम् —रघु० १४।४३, अनुरूपं शतोषिणा कु० ५।७, 4. (योगदर्शन में) एक प्रकार का अज्ञान जो मृत्यु के भय का कारण हो, सांसारिक विषय-वासनाओं तथा शारीरिक आमोदप्रमोद में व्यस्त रहना साथ ही यह भय भी लगा रहे कि मृत्यु के द्वारा इन सब से वियोग हो जाना है।

अभिनिवेशिन् (वि०) [अभि+नि+विश्+णिनि] 1. आसक्त, संसक्त 2. जमा रहने वाला, अनन्यचित्त, 3. दृढ़ निश्चयी, कृतसंकल्प।

अभिनिष्क्रमणम् [अभि+निस्+क्रम्+ल्युट्] बाहर निकलना।

अभिनिष्टानः [अभि+नि+स्तन्+घञ्+सस्य षत्वम्] वर्णमाला का अक्षर।

अभिनिष्पतनम् [अभि+निस्+पत्+ल्युट्] टूट पड़ना, निकल पड़ना।

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+निस्+पद्+क्तिन्] पूर्ति, समाप्ति, निष्पन्नता, पूर्णता।

अभिनिह्नवः [अभि+नि+हन्+अप्] मुकरना, छिपाना।

अभिनीत (भू० क० कृ०) [अभि+नी+क्त] 1. निकट लाया गया, पहुंचाया गया 2. किया गया, नाटक के रूप में खेला गया 3. सुसज्जित, अलंकृत, अत्यन्त श्रेष्ठ 4. उपयुक्त, उचित, योग्य, अभिनीतस्तव वाक्यमित्युवाच युधिष्ठिरः—महा० 5. सहनशील, दयालु, समचित्त 6 क्षुद्र 7 कृपालु, मित्र सदृश।

अभिनीतिः (स्त्री०) [अभि+नी+क्तिन्] 1. इंगित, भावपूर्ण अंग विक्षेप, 2. कृपालुता, मित्रता, सहिष्णुता, —सान्त्वपूर्वमभिनीतिहेतुकम् कि० १३।३६।

अभिनेतृ (पुं०) नाटक का पात्र,—श्री नाटक की पात्री।

अभिनेय } (सं० कृ०) [अभि+नी+यत्, तव्यत् वा]
अभिनेय } नाटक के रूप में खेले जाने योग्य,—दृश्य तत्राभिनेयं तद्रोपारोपात्तु रूपकम् -सा०द० २७३, तस्य (प्रबन्धस्य) एकदेशः अभिनेयार्थः कृतः—उत्तर० ४, इसका एक अंश रंग मंच के उपयुक्त बना दिया गया।

अभिन्न (वि०) [न० त०] 1. न टूटा हुआ, अनकटा 2. अविकृत 3. अपरिवर्तित, 4. जो अलग न हो, वही, एकरूप (अपा० के साथ), —जगन्मियोभिन्नमभिन्नमीश्वरात् -प्रबोध०।

अभिपतनम् [अभि+पत्+ल्युट्] 1. उपागमन 2. टूट पड़ना, आक्रमण करना, चढ़ाई करना 3. कूच करना, रवानगी।

अभिपत्तिः (स्त्री०) [अभि+पद्+क्तिन्] 1. उपागमन, निकट जाना 2. पूर्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिपन्न (भू० क० कृ०) [अभि+पद्+क्त] 1. समीप गया हुआ या आया हुआ, उपागत, की ओर दौड़ा हुआ या गया हुआ 2. भागा हुआ, भगोड़ा शरणार्थी, 3. पराभूत, पराजित, पीडित, गिरफ्तार किया हुआ, पकड़ा हुआ,—कालाभिपन्नाः सीदन्ति मिकतासेतवो यथा—रामा०, दोष°, कर्मज°, व्याध्य° आदि 4. भाग्यहीन, संकटग्रस्त, 5. स्वीकृत 6. दोषी।

अभिपरिप्लुत (वि०) [अभि+परि+प्लु+क्त] डूबा हुआ, भरा हुआ, बाढ़ग्रस्त, उखड़ा हुआ,—शोक, क्रोध आदि से।

अभिपूरणम् [अभि+पृ+ल्युट्] भरना, काव्य में लाना।

अभिपूर्वम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः।

अभिप्रणयनम् [अभि+प्र+नी+ल्युट्] वेदमंत्रों के द्वारा संस्कार करना।

अभिप्रणयः [अभि+प्र+नी+अच्] प्रेम, कृपादृष्टि, अनुरंजन।

अभिप्रणीत (भू०क०कृ०) [अभि+प्र+नी+क्त] 1. संस्कार किया हुआ,—जज्वाल लोकस्थितय स राजा यथाध्वरे वह्निरभिप्रणीतः—भट्टि० १।४, 2. लायाहुआ।

अभिप्रयतनम् [अभि+प्रयत्+ल्युट्] फैलाना, विस्तार करना, ऊपर से डालना।

अभिप्रवक्षिणम् [अव्य०] [अव्य० स०] दाहिनी ओर।

अभिप्रवर्तनम् [अभि+प्र+वृत्+ल्युट्] 1. आगे बढ़ना 2. प्रयत्न, आचरण 3. बहना, बाहर आना जैसे पसीने का निकलना।

अभिप्राप्तिः =दे० प्राप्तिः।

अभिप्रायः [अभि+प्र+इ+अच्] 1. लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य, आशय, कामना, इच्छा,—अभिप्राया न सिध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत्—पंच० १।१५८, साभिप्रायाणि वचांसि—पंच २, गम्भीर शब्द, भावः कवेरभिप्रायः 2. अर्थ, भाव, तात्पर्य, या शब्द अथवा किसी परिच्छेद का उपलक्षितभाव, तेषामयमभिप्रायः—इस प्रकार का उनका आशय है, तात्पर्य (परिच्छेद का) 3. सम्मति, विश्वास, 4. संबंध, उल्लेख।

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि+प्र+इ+क्त] 1. अर्थपूर्ण, उद्दिष्ट, साशय, आकलित,—अन्यार्थमर्थाभिप्रेतः; निवेदयाभिप्रेतम् -पंच० १, 2. इष्ट, अभिलषित, -यथाभिप्रेतमनुष्ठीयताम् —हि० १ 3. सम्मत, स्वीकृत 4. प्रिय, रुचिकर।

अभिप्रोक्षणम् [अभि+प्र+उक्ष्+ल्युट्] छिड़कना, छिड़काव।

अभिप्लवः [अभि+प्लु+अप्] 1. कष्ट, बाधा 2. बाढ़, उतरा कर बहना।

अभिप्लुत (भू० क० कृ०) [अभि+प्लु+क्त] पराभूत, व्याकुल (शा० तथा आलं०)।

अभिबुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] बुद्धीन्द्रिय या ज्ञानेन्द्रिय (विप० कर्मेंद्रिय), आंख, जिह्वा, कान, नाक और त्वचा।

अभिभवः [अभि+भू+अप्] 1. हार, पराभव, दमन; —स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोभिभवाद्वहन्ति —श०२।७, (जब दूसरी शक्ति के द्वारा आक्रान्त, अवरुद्ध या पराभूत हो)—अभिभवः कुत एव संपत्स्यते—रघु० ९।४, 2. पराभूत होना,—अपराभिभवविच्छाय—का० ३४६, आक्रान्त या प्रभावित होना, (ज्वरादिक से) पूछित होना 3. तिरस्कार, अपमान,—निरभिभवसाराः परकथाः—भर्तृ० २।६४, 4. निरादर, मानभंग,—अलभ्यशोकाभिभवेषमाकृतिः—कु० ५।४९, 5. प्रबलता, उद्भव, विस्तार,—अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः—भग० १।४१, कि० २।३७।

अभिभवनम् [अभि+भू+ल्युट्] हानी होना, पराजित करना, जीतना, पराभूत होना।

अभिभावनम् [अभि+भू+णिच्+ल्युट्] विजयी कराना, पराजित करने वाला बनाना।

अभिभाविन्-भावुक (इ) क (वि०) [अभि+भू+णिनि, उकञ् वा] 1. पराजित करने वाला, हराने वाला, जीतने वाला 2. दूसरों से आगे बढ़ने वाला, परमोत्कृष्ट, श्रेष्ठ होने वाला,—सर्वतेजोऽभिभाविना—रघु० १।१४, कि० ११।६।

अभिभाषणम् [अभि+भाष्+ल्युट्] सम्बोधित करते हुए बोलना, भाषण देना।

अभिभूतिः (स्त्री०) [अभि+भू+क्तिन्] 1. प्रधानता, प्रभुत्व 2. जीतना, हराना, पराभव,—अभिभूतिभयादसूनतः सुखमुज्झन्ति न धाम मानिनः—कि० २।२०, 3. अनादर, अपमान।

अभिमत (भू० क० कृ०) [अभि+मन्+क्त] इष्ट, अभीष्ट, प्रिय, प्यारा, रुचिकर, वाञ्छनीय—नास्ति जीवितादप्यभिमततरमिह जगति सज्जनानां—३५, ५८, अभिमतफलशंसी चारु पुस्फोर बाहुः—भट्टि० १।२७, 2. सम्मत, स्वीकृत, माना हुआ,—न किल भवतां स्थानं देव्या गृहेऽभिमतं ततः—उत्तर० ३।३२, प्रसिद्धमाहात्म्याभिमतानामपि फलिकगवभुक्प्रभृतीनां —शारी०, सम्मानित, आदृत,—तम् कामना, इच्छा; —तः प्रियव्यक्ति, प्रेमी।

अभिमनस् (वि०) [प्रा० स०] 1. तुला हुआ, इच्छुक, आतुर, उत्कंठित,—भवतोऽभिमनाः समीहते सरयः कर्तुमुशत्य माननम्—शि० १६।२, (यहाँ अभि "निश्शंक" अर्थ को प्रकट करता है)।

अभिमन्त्रणम् [अभि+मन्त्र+ल्युट्] विशेष मंत्रों को पढ़कर संस्काररयुक्त करना, या पवित्र करना,—याज्ञ० १।२३७, 2. सुहावना, मनोहर 3. संबोधित करना, आमंत्रित करना, परामर्श देना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिमरः [अभि+मृ+अच्] 1. हत्या, नाश, वध करना 2. युद्ध, संघर्ष 3. अपने ही पक्ष द्वारा विश्वासघात, अपने ही पक्ष वालों से भय 4. बंधन, कैद, बेड़ी या हथकड़ी।

अभिमर्दः [अभि+मृद्+घञ्] 1. मलना, रगड़, 2. कुचलना, लूटखसोट, (शत्रु द्वारा) देश का उच्छेद, उजाड़ना 3. युद्ध, संग्राम 4. मदिरा, शराब।

अभिमर्दन (वि०) [अभि+मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला, दमन करने वाला,—नम् कुचलना, दमन करना।

अभिमर्दाः-र्दनम् } [अभि+मृश् (ष्)+घञ्, ल्युट् वा]

अभिमर्षः-र्षणम् } 1. स्पर्श, संपर्क 2. अभ्याघात, हिंसा, बलात्कार, संभोग,—कृताभिमर्शामन्यमानाः—भट्ट० ५।२०, इन्द्रियासक्ति के कारण किया गया आलिंगन अथवा सतीत्व भ्रष्ट करना या बलात्कार,—पराभिमर्शो न तवास्ति कुछ ५।४३ (मल्लि०=परिवर्षणम्) मनु० ८।३५२, याज्ञ० २।२८४।

अभिमर्शक-र्षक } (वि०) [अभिमृश् (ष्)+ण्वुल्, ण्वि]

अभिमर्शिन्-र्षिन् } वा] 1. स्पर्श करने वाला, संपर्क में आने वाला, 2. बलात्कार करने वाला, - त्वत्कलत्राभिमर्शी वैरास्पदं धनंजयः—दश० ६३।

अभिमादः [अभि+मद्+घञ्] नशा, मादकता।

अभिमानः [अभि+मन्+घञ्] 1. गौरव, स्वाभिमान, सम्मानीय या योग्य भावना, -सदाभिमानैकधनाः हि मानिनः—शि० १।६७, 2. अहंकार, घमंड, दर्प, अहम्मन्यता, °वत् घमंडी, गर्वीला 3. सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित करना, अहंकार की क्रिया, व्यक्तित्व, 4. कल्पना, अवधारणा, अटकल, विश्वास, सम्मति 5. स्नेह, प्रेम 6. इच्छा, कामना 7. चोट पहुँचाना, हत्या करना, चोट पहुँचाने का प्रयत्न करना। मग० °शालिन् (वि०) घमंडी—शून्य (वि०) गर्व या घमंड से रहित, विनीत।

अभिमानिन् (वि०) [अभि+मन्+णिनि] 1. आत्माभिमानी 2. अहंमन्य, घमंडी, गर्वीला, दम्भी 3. सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित मानने वाला।

अभिमुख (वि०)[स्त्री०—खी] 1. जो किसी की ओर मुख किये हुए हो, की ओर, किसी की ओर मुड़ा हुआ, सामने, —अभिमुखे मयि सहसमीक्षिनम् शि० २।११, 2. पास आने वाला, समीप जाने वाला, निकट पहुँचने वाला, —विक्रम० २।९ 3. विचार करते हुए, ध्यान, उद्यत (कुछ करने के लिए)—अस्त्राभिमुखे सूर्ये—मृदा० २।१९, प्रसादाभिमुखो वेधाः प्रत्युत्तारं लिखोकसः कुछ १।१६, ५।६०; उत्तर० ७।४, मा० १०।१३, 4. अनुकूल, अनुकूलतापूर्वक सम्पन्न 5. मुंह ऊपर को उठाये हुए, -खं-खे (अव्य०) की ओर, दिशा में सामना करते हुए, के सामने, की उपस्थिति में, के निकट (कर्म० या सप्त० के साथ अथवा समास में) —आसीदाभिमुखं गुरोः—मनु० २।१९३, शिष्यस्मुनेरभिमुखं स विकीर्णेक्षत्स्तः—शि० २।५९, मेघव्यभिमुखमवलोक्य.—शा० १, कर्णं ददाभिमुखं मयि भाषमाणे —शा० १।३१।

अभियाचनम्-याच्ञा [अभि+याच्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च्] मांगना, प्रार्थना, अनुरोध, नम्र निवेदन।

अभियातिः, यातिन् (पु०—ता) शत्रुता की भावना के साथ पहुँचने वाला- शत्रु, दुश्मन, रघु० १२।४३।

अभियातृ—यायिन् (वि०) [अभि—या—तृच्, णिनि वा] निकट जानेवाला, आक्रमण करने वाला।

अभियानम् [अभि+या—ल्युट्] 1. उपागमन 2. चढ़ाई करना, धावा बोलना,आक्रमण करना,- रणाभियानेन —दश० १०, युद्ध के लिए प्रस्थान।

अभियुक्त (भू० क० कृ०) (वि०) [अभि + युज्—क्त] 1.(क) बध्यस्त, लगा हुआ, लीन, जुटा हुआ (ख) परिश्रमी, धैर्यवान्, दृढ़संकल्प वाला, लगा हुआ, दत्तचित्त, सावधान, इसे शिव पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा —उत्तर० ३।३०, 2. सूचित, दक्ष,- याज्ञवल्क्याभियुक्तानां पुरुषाणां कुमारिल 3. (अत:) विद्वान्, सुप्रतिष्ठित, सुयोग्य व्यक्तियों में, पण्डित (पु०- इसी अर्थ में) न हि शक्यते दैवमन्यथा कर्तुमभियुक्तेनापि —कथा० ६२, 4. आक्रान्त, जिस पर हमला कर दिया गया हो,—अभियुक्तं स्वर्गेण सन्नद्धरथमायान्तं परि—शि० २।१०१, मुद्रा० ३।२५, 5. जिस पर अभियोग लगाया गया हो, जिस पर दोषों का आरोपण किया गया हो, अभ्यारोपित, मनु० ९।१९, अभियोजित, प्रतिवादी,—अभियुक्तोऽभियोक्तारं यदि कुर्यान्न तत्त्वम्—नारद० 6. सिद्धहस्त।

अभियोक्तृ (वि०) [अभि+युज्+तृच्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला शोषणकारक करने वाला, (पु०—क्ता) 1 राज्य, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2. (विधि में) आरोपक, वादी, मुद्दई, अभियोक्ता, मनु० ८।५२, ५८, याज्ञ० २।९५, 3. शिकायतियों।

अभियोगः [अभि+युज्+घञ्] 1. लगाव, लगन, मेलजोल, -परदारेषु-कस्तस्याभियोगः—भामि०१।५१, चौर० ११, 2. लगा लगाव, धीरज, प्रयत्न, प्रयास, श्रम, स्वयं परिक्लेशं कृताभियोगाम् —भट्ट० २।७३, 2. (क) किसी चीज की खोज की लगन, -कलाभियोगेषु भवान्हि. मालवि० ५,(ख) सीखना, विद्वत्ता,—अभियोगस्तु शास्त्रेऽस्मिन्नास्माकं भवतां हृदम् अभियोगश्चेत्कर्त्तव्यः शास्त्रस्यास्मै ३. आक्रमण हमला, चढ़ाई (किसी देश या नगर पर), धावा बनतोऽभियोगात् किरा० १३।१७, २।४६, 5. (विधि में) आरोप, दोषारोपण, पूर्वपक्ष -अभियोगमनिस्तीर्य नैव प्रत्यभियोजयेत्—याज्ञ० २।५।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभियोगिन् (वि०) [अभि+युज्+णिनि] मनोयोग पूर्वक लगा हुआ, तुला हुआ, 2. आक्रमणकारी, हमलावर 3. दोषारोपण करने वाला (पु०) वादी, मुद्दई।

अभिरक्षणम् } [अभि+रक्ष्+ल्युट्, अङ् वा] सब ओर
अभिरक्षा } से बचाव, पूरा २ बचाव,—प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया कि० १।१८।

अभिरतिः (स्त्री०) [अभि+रम्+क्तिन्] आनन्द, हर्ष, संतोष, आसक्ति, लगन,—न मृगयाभिरतिं दुराद्रम् (तमपहरत्) रघु० ९।७, कि० ६।४४।

अभिराम (वि०) [अभि०+रम्+घञ्] 1. आनन्दकर, हर्षपूर्ण, मधुर, रुचिकर—मनोभिरामाः (वंकाः) रघु० १।३०, २।७२, 2. सुन्दर, सुहावना, मनोहर, मनोरम, —स्यादस्थानोपगतयमुनासङ्गमेवाभिरामः—मेघ०५३, राम इत्यभिरामेण वपुषा तस्य चोदितः—रघु० १०।६७,—म् (अव्य०) सुन्दर रीति से शोभा-भङ्गाभिरामं—शं० १।७।

अभिरुचिः (स्त्री०) [अभि+रुच्+इन्] 1. इच्छा, शौक, पसन्दगी, रस, हर्ष, आनन्द,—यद्यसि चाभिरुचिः—भर्तृ० २।६३, परस्परानभिरुचिनिरुप्रो विवाहः—का० २६७, 2. यश की इच्छा, महत्त्वाकांक्षा।

अभिरुचितः [अभि+रुच्+क्त] प्रेमी,—तः वि० १०।९८।

अभिरुतम् [अभि+रु+क्त] ध्वनि, चिल्लाहट, कोलाहल।

अभिरूप (वि०) [अभि+रूप्+अच्] 1. अनुरूप, समनुरूप, उपयुक्त—अभिरूपमस्या वयसो वत्सलम्—शं० १. पाठ०, 2. सुन्दर, हृदयपूर्ण,—उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च (कन्यां दद्यात्) मनु० ९।८८, 3. प्रिय, प्यारा, इष्ट, कृपापात्र 4. विद्वान्, बुद्धिमान्, समझदार, —अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्—शं० १,—पः 1 चन्द्रमा, 2 शिव 3 विष्णु 4 कामदेव। सम०—पतिः 'रुचि के अनुकूल सुन्दर पति प्राप्त करना', नाम का एक संस्कार जो परलोक में अच्छा पति पाने की इच्छा से किया जाता है—मृच्छ० १।

अभिलङ्घनम् [अभि+लङ्घ्+ल्युट्] कूद कर पार करना, छलांग लगाना।

अभिलषणम् [अभि+लष्+ल्युट्] इच्छा करना, चाहना।

अभिलषित (भू० क० कृ०) [अभि+लष्+क्त] इच्छित चाहा हुआ, उत्कंठित,—तम् इच्छा, कामना, संकल्प।

अभिलापः [अभि+लप्+घञ्] 1. कथन, शब्द, भाषण 2. घोषणा, वर्णन, विशेष विवरण, 3. किसी धार्मिक कर्तव्य या किसी उद्देश्य की प्रतिज्ञा को उद्घोषणा।

अभिलाबः [अभि+लू+घञ्] काटना, कटाई, लवन।

अभिलाषः [कई बार 'षः] [अभि+लष्+घञ्] इच्छा, कामना, उत्कंठा, अनुराग, प्रियतम से मिलने की उत्कंठा, प्रेम (प्रायः अधि० के साथ)—अलोऽभिलाषे प्रथम तथाविधे मनो बबंध—रघु० ३।४, न खलु सत्यमेव शकुन्तलायां ममाभिलाषः—शा० २, पंच० ५।९७।

अभिलाषक,—लाषि (षिन्) } (वि०) [अभि+लष्+
—लाषुक } ण्वुल्, णिनि, उकञ् वा] कामना या इच्छा करने वाला, (कर्म० अधि० के साथ या समास में) चाहने वाला, लालायित, लालची, —व्यर्थमस्याभिलाषि मे मनः—शं० १।२२, अयमत्र-भवान् नूनमरातिरभिलाषुकः—कि० ११।१८, शि० १५।५९।

अभिलिखित (वि०) [अभि+लिख्+क्त] लिखा हुआ, खुदा हुआ—सम, अभिलेखनम्, 1. लिखना, खोदना 2. लेख।

अभिलीन (वि०) [अभि+ली+क्त] 1. चिपटा हुआ, सटा हुआ, आसक्त,—रघु० ३।८ 2. आलिंगन किये हुए, झुकते हुए—मेघ० ३९।

अभिलुलित (वि०) [अभि+लुड्+क्त इत्व लः] 1. क्षुब्ध, बाधायुक्त 2. क्रीडा युक्त, अस्थिर।

अभिलूता (प्रा० स०) एक प्रकार की लकड़ी।

अभिवदनम् [अभि+वद्+ल्युट्] 1. संबोधन 2. नमस्क्रिया।

अभिवन्दनम् [अभि+वन्द्+ल्युट्] सादर नमस्कार, पार्श्व० श्रद्धा और भक्ति के साथ दूसरों के चरण स्पर्श करना, नीचे दे० 'अभिवादन'।

अभिवर्षणम् [अभि+वृष्+ल्युट्] बारिश होना, बरसना, पानी पड़ना।

अभिवादः—**वादनम्** [अभि+वद्+घञ्, ल्युट् वा] सस-म्मान नमस्कार, छोटों के द्वारा बड़ों को प्रणाम, शिष्य के द्वारा गुरु को प्रणाम इसमें तीन बातें निहित हैं—(१) प्रत्युत्थान—अपने स्थान से उठना (२) पादोप-संग्रहः—पैर पकड़ना या छूना (३) अभिवाद—'प्रणाम' शब्द मुँह से कहना—जिसमें अभिवाद्य व्यक्ति की उपाधि तथा अभिवादक का नाम—वर्ण्य है।

अभिवादक (वि०) [स्त्री—विका] 1. नमस्कार करने वाला, 2. नम्र, सम्मान पूर्ण, विनीत।

अभिविधि [अभि+वि+धा+कि] 1. पूरा सम्मिलन या संयोग, 'आ' का एक अर्थ—आङ् मर्यादाभिविध्योः —पा० २।१।१३ आरंभिक सीमा ('अन्तिम सीमा' का विरोधी), इसका अनुवाद 'से' 'के साथ' 'मिलाते हुए' शब्दों से किया जाता है उदा०—आबालम्= आबालेभ्यः हरिभक्तिः, 2. पूर्ण प्रसार।

अभिविख्यात (वि०) [अभि+वि+ख्या+क्त] सुविख्यात, सुप्रसिद्ध।

अभिवृद्धिः (स्त्री०) [अभि+वृध्+क्तिन्] बढ़ना, विकास, योग, सफलता, सम्पन्नता।

अभिव्यक्तः (भू० क० कृ०) [अभि०+वि+अंज्—क्त] 1. प्रकट किया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित 2. विविक्त, स्पष्ट, साफ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिव्यक्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+अञ्ज्+क्तिन्](कारण का कार्य रूप में) प्रकट होना, वैशिष्ट्य, दिखावा, प्रदर्शन,—सर्वांगसौष्ठवाभिव्यक्तये—मालवि० १. दूतीसंप्रेषणैर्नार्या भावाभिव्यक्तिरिष्यते—सा० द० ६।

अभिव्यञ्जनम् [अभि+वि+अञ्ज्+ल्युट्] प्रकट करना, प्रकाशन करना, ।

अभिव्यापक,—**व्यापिन्** (वि०) [अभि+वि+आप्+ण्वुल्, णिनि वा] सम्मिलित करने वाला, समझने वाला, प्रसार करने वाला ।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+आप्+क्तिन्] सम्मिलित करना, सबोध, सर्वत्र फैलाव ।

अभिव्याहरणम्,—**व्याहारः** [अभि+वि+आ+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1. बोलना, उच्चारण करना, कहना 2. प्रांजल तथा सार्थक शब्द, संज्ञा, नाम ।

अभिशंसक,—**शंसिन्** (वि०)[अभि+शंस्+ण्वुल्, णिनि वा] दोषारोपक, कलंक लगाने वाला, अपमान करने वाला ।

अभिशंसनम् [अभि+शंस्+ल्युट्] दोषारोपण, दोष लगाना (चाहे सत्य हो या मिथ्या) **मिथ्या**°—याज्ञ० २।८९, गाली, अपमान, निरादर,—पंचाशद् ब्राह्मणो दण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने—मनु० ८।२६८ ।

अभिशङ्का [अभि+शङ्क्+अ+टाप्] संदेह, आशंका, भय, चिन्ता ।

अभिशापनम्,—**शापः** [अभि+शप्+ल्युट्, घञ् वा] 1. शाप, किसी का बुरा मनाना 2. गंभीर आरोप, दोषारोपण—याज्ञ० २।९९, अभिशापः पातकाभियोगः—मि० 3. लांछन, मिथ्या आरोप । सम०—**उच्चारः** शाप के उच्चारण से उत्पन्न होने वाला बुखार ।

अभिशाखित (वि०) [अभि+शब्द्+क्त] उद्घोषित, प्रकाशित, कथित, नाम लिया हुआ ।

अभिशस्त (भू० क० कृ०)[अभि+शंस्+क्त]1. कलंकित, अभिशप्त, अपमानित—मनु० ८।११६, ३७२, याज्ञ० १।१६१, 2. चोट पहुंचाया हुआ, क्षतिग्रस्त, आक्रान्त ('अभिशस्' से बना समझा गया),—देवि ! केनाभिशस्तासि केन वासि विमानिता—रामा० 3. अभिशप्त 4. दुष्ट, पापी ।

अभिशस्तक (वि०)[अभिशस्त+कन्] मिथ्या दोषारोपित, बदनाम ।

अभिशस्तिः (स्त्री०) [अभि+शंस्+क्तिन्] 1. अभिशाप, 2. दुर्भाग्य, अनिष्ट, संकट 3. निंदा, लांछन, बदनामी, अपमान 4. पूछना, मांगना ।

अभिशापनम् [अभि+शप्+णिच्+ल्युट्] शाप देना, कोसना ।

अभिशीत (वि०) [अभि+शी+क्त] शीतल, ठंडा जैसा कि वायु ।

अभिशोचनम् [अभि+शुच्+ल्युट्] अत्यंत शोक या पीडा, कष्ट ।

अभिश्रवणम् [अभि+श्रु+ल्युट्]श्राद्धके अवसर पर बैठे हुए ब्राह्मणों द्वारा वेदमन्त्रों का पाठ ।

अभिषङ्गः-**ङ्गम्** [अभि+संज्+घञ्] 1. पूरा संपर्क या मेल, आसक्ति, संयोग 2. हार, वैराग्य, पराजय,—जातोभिषङ्गो नृपतिः—रघु० २।३०, 3. अचानक आया हुआ आघात, शोक, दुःख, संकट या दुर्भाग्य—ततोऽभिषङ्गानिलविप्रविद्धा—रघु० १४।५४, ७७, °जेऽजे विजृम्भिवान्—रघु० ८।७५, 4. भूत प्रेतादिक से आविष्ट होना,—अभिघातामिषङ्गाभ्यामभिचाराभिशापतः—माघ० 5. शपथ 6. आलिंगन, संभोग 7. अभिशाप, कोसना, दुर्वचन कहना 8. मिथ्या दोषारोपण, बदनामी या लांछन 9. घृणा, अनादर ।

अभिषङ्गवत् =तृ० अभिषयः ।

अभिषवः [अभि+षु+अप्] 1. सोमरस निचोड़ना, 2. शराब खींचना 3. धार्मिक कृत्यों या संस्कारों से पूर्व किया जाने वाला स्नान या, आचमन 4. स्नान या आचमन 5. यज्ञ,—**वत्** कांजी ।

अभिषवणम् [अभि+षु+ल्युट्] स्नान ।

अभिषिक्त (भू०क०कृ०) [अभि+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ, आर्द्र किया हुआ, सङ्गे पुनर्वहतरामभूतामिषिक्ताम्—चौर० २९, 2. जिसका अभिषेक हो चुका हो, प्रतिष्ठापित, पदारूढ़ ।

अभिषेकः [अभि+सिच्+घञ्] 1. छिड़कना, पानी के छींटे देना 2. राज्याभिषेक करना, राजा या मूर्ति आदि का जलसिंचन द्वारा प्रतिष्ठापन, 3. (**विशेषतः**) राजाओं का सिंहासनारोहण, प्रतिष्ठापन, पदारोहण, राज्यतिलक संस्कार,- अथाभिषेकं रघुवंशकेतोः—रघु० १४।७, 4. प्रतिष्ठापन के अवसर पर काम आने वाला पवित्र जल,- रघु० १७।१४, 5. स्नान, आचमन, पवित्र या धर्मस्नान,- अभिषेकोत्तीर्णया काश्यपाय—शा० ४, अग्राभिषेकाय तपोधनानाम्—रघु० १३।५१ 6. उस देवता पर जल छिड़कना जिसकी पूजा की जा रही है । सम०—**अहः** राजतिलक का दिवस, - **शाला** राज्याभिषेक का मंडप ।

अभिषेचनम् [अभि+सिच्+ल्युट्] 1. जल छिड़कना 2. राजतिलक, राज्यप्रतिष्ठापन ।

अभिषेणनम् [सेनया सह यायीः अभिमुखं यानम्-इनि—अभि+सेना+णिच्—ल्युट्] शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए कूच करना, शत्रु का मुकाबला करना ।

अभिषेणयति (ना० धा०) (सेना के साथ) कूच करना, आक्रमण करना, सेना द्वारा शत्रु का मुकाबला करना,- कः सिंधुराजमभिषेणयितुं समर्थः-वेणी० २।२५, शि० ६।६४ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अप्] प्रशंसा, स्तुति ।

अभिष्यं (स्यं)दः [अभि+स्यन्द्+घञ्] 1. स्राव, बहाव, टपकना 2. आंख आना 3. अतिवृद्धि, अतिरेक, आधिक्य, अतिरिक्त भाग, —स्वर्गाभिष्यन्दबर्धन कृत्स्नेवोषधिनिवेशितम् (ओषधिप्रस्थम्) कु० ६।३७, अतिरिक्त जनसंख्या को दूर करके, अर्थात् उत्प्रवासन द्वारा—तु० रघु० १५।२९ ।

अभिष्वङ्गः [अभि+स्वञ्ज्+घञ्] 1. संपर्क 2. अत्यधिक आसक्ति, प्रेम, स्नेह, —विद्यास्त्वभिष्वंगः—दश० १५५, अहो अभिष्वङ्गः—मा० १ ।

अभिसंश्रयः [अभि+सम्+श्रि+अच्] शरण, आश्रय ।

अभिसंस्तवः [अभि+सम्+स्तु+अप्] बहुत प्रशंसा ।

अभिसंतापः [अभि+सम्+तप्+घञ्] युद्ध, संग्राम, संघर्ष —अन्यं स्यादभिसन्तापः—हला० ।

अभिसन्देहः [अभि+सम्+दिह्+घञ्] 1. विनिमय, 2. जननेन्द्रिय ।

अभिसन्धः-धकः [अभि+सम्+धा+क, स्वार्थे कन् च] 1. धोखा देने वाला, वंचक, 2. निन्दक, लोछन लगाने वाला ।

अभिसन्धा [अभि+सम्+धा+अङ्+टाप्] 1. भाषण, उद्घोषणा, शब्द, कथन, प्रतिज्ञा, —तेन सत्याभिसन्धेन त्रिवर्गमनुतिष्ठता—रामा०, वचन का पालन करने वाला, 2. धोखा ।

अभिसन्धानम् [अभि+सम्+धा+ल्युट्] 1. भाषण, शब्द, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, सा हि सत्याभिसन्धाना—रामा०, 2. ठगना, धोखा देना परामिसन्धानपरं यद्यप्यस्य विचेष्टितम्—रघु० १७।७६ 3. उद्देश्य, इरादा, प्रयोजन—अन्याभिसन्धानेनान्यवादित्वमन्यकर्तृत्वं च—मिता० 4. सन्धि करना ।

अभिसन्धायः = अभिसंधि ।

अभिसन्धिः [अभि+सम्+धा+कि] 1. भाषण, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा 2. इरादा, लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य 3. निहितार्थ, अभिप्रेत अर्थ, जैसा कि—अयमभिसंधिः (व्याख्यात्मक सूचियों में बहुधा प्रयुक्त) 4. सम्मति, विश्वास 5. विशेष अनुबंध, अनुबंध की शर्तें, प्रतिबंध, करार ।

अभिसमग्रायः [अभि+सम्+अय+इ+अच्] एकता ।

अभिसम्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+सम्+पद्+क्तिन्] पूर्ण रूप से प्रभावित होना, अपने मत को बदल देना, परिवर्तन, बदल जाना ।

अभिसम्परायः [अभि+सम्+परा+इ+अच्] भविष्यत् काल ।

अभिसम्पातः [अभि+सम्+पत्+घञ्] 1. इकट्ठे मिलना, समागम, संगम 2. युद्ध, संग्राम, संघर्ष, 3. अभिशाप ।

अभिसम्बन्धः [अभि+सम्+बन्ध्+घञ्] संबंध, रिश्ता, संयोजन, संपर्क, मैथुन—मनु० ५।६३ ।

अभिसम्मुख (वि०) [ष० व०] संमुख होने वाला, सामने खड़ा हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला ।

अभिसरः [अभि+सृ+अच्] 1. अनुगामी, अनुचर, 2. साथी ।

अभिसरणम् [अभि+सृ+ल्युट्] 1. उपागमन, मुकाबला करने के लिए जाना, 2. सम्मिलन, संकेतस्थान, नायक या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना—त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती—गीत० ६ ।

अभिसर्गः [अभि+सृज्+घञ्] सृष्टि, रचना ।

अभिसर्जनम् [अभि+सृज्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. हत्या ।

अभिसर्पणम् [अभि+सृप्+ल्युट्] उपागमन, मुकाबला करने के लिए शत्रु के निकट जाना ।

अभिसा (शा)स्वः, -स्वनम् [अभि+सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] सुलह, समझौता, ढाढस, तसल्ली ।

अभिसायम् (अव्य०) [अव्य०स०] सूर्यास्त के समय, संध्या-समय—श्रितोदयाद्रेरभिसायमञ्चकैः—शि० १।१६ ।

अभिसारः [अभि+सृ+घञ्] प्रिय से मिलने के लिए जाना, (मिलन स्थान) नियत करना या स्थिर करना, —रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम्-गीत० ५. २. वह स्थान जहां नायक नायिका नियत समय पर मिलते हैं, संकेतस्थल,—त्वरितमुदेति स कथमभिसारम्-गीत० ६, ३. हमला, आक्रमण, —त्वोऽभिसारः पुरस्य नः—रामा० ७ सम०—स्थानम् मिलने के लिए उपयुक्त स्थान, दे० 'अभिसारिका' के नीचे ।

अभिसारिका [अभि+सृ+ण्वुल्+टाप्] वह स्त्री जो अपने प्रिय से मिलने जाती है, या उसके द्वारा नियत संकेत का पालन करती है कु० ६।४३, रघु० १६।१२, —कान्तार्थिनी तु या याति स्वयं सांकेतमभिसारिका—अमर० सा० द० निम्नांकित ८ स्थान नायक नायिकाओं के मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) खेत (२) बाग (३) भग्न मंदिर (४) दूती का घर (५) जंगल (६) तीर्थ स्थान (७) श्मशानभूमि (८) नदीतट, क्षेत्रं वाटी भग्नदेवालयो दूतीगृहं वनम्, मालयं च श्मशानं च नद्यादीनां तटी तथा ।

अभिसारिन् (वि०) [अभि+सृ+णिनि] मिलने, दर्शन करने, आक्रमण करने, जाने वाला; जल्दी से बाहर जाने वाला—युद्धाभिसारिणः—उत्तर० ५,—जो =दे० ऊपर अभिसारिका ।

अभिस्नेहः [अभि+स्निह्+घञ्] आसक्ति, अनुराग, प्रेम, इच्छा, यः सर्वत्राप्यभिस्नेहः—भग० २।५७ ।

अभिस्फुरित (वि०) [अभि+स्फुर्+क्त] पूर्ण रूप से फैला हुआ, पूर्ण विकसित (जैसे कि फूल) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिहत (वि०) [अभि+हन्+क्त] प्रहृत (आलं० से भी) पीटा गया, आहत, घायल किया गया—धारा-भिरातप इवाभिहत सरोज मालवि० ५, अमरु० २, 2. जिस पर प्रहार किया गया है, अभिभूत, पराभूत, शोक°, काम°, दुःख° 3. बाधायस्त 4. (गण०) गुणित।

अभिहनिः (स्त्री०) [अभि+हन्+क्तिन्] 1. प्रहार करना, पीटना, चोट पहुँचाना 2. (गण०) गुणन, गुणा।

अभिहरणम् [अभि+हृ+ल्युट्] 1. निकट लाना, आकर लाना—रघु० ११।४३, 2. लूटना।

अभिहरः [अभि+हृ+अप्] 1. आवाहन, आमंत्रण 2. पूर्ण रूप से यजनाहुति 3. यज्ञ, बलिदान।

अभिहारः [अभि+हृ+घञ्] 1. छे जाना, लूट लेना, चुरा लेना 2. हमला, आक्रमण 3. शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, अस्त्र ग्रहण करना।

अभिहासः [अभि+हस्+घञ्] खिल्ली, मज़ाक़, विनोद।

अभिहित (भू० क० कृ०) [अभि+धा+क्त] 1. कहा गया, बोला गया, घोषित किया गया. 2. संबोधित किया गया, पुकारा गया। समः—अन्वयवादः, —वादिन् (पुं०) नैयायिकों का एक विशेष प्रकार का सिद्धान्त (या उस सिद्धांत के अनुयायी)। इस सिद्धान्त के अनुसार नैयायिकलोग मानते हैं कि शब्द स्वतंत्र रूप से अपना अर्थ रखते हैं, जो वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक संयुक्त विचार को अभिव्यक्त करते हैं, दूसरे शब्दों में कहा सकते हैं कि वह वाक्य के शब्दों का तर्कसंगत संग्रह ही है जो वाक्य के अभीष्ट अर्थ को प्रकट करता है न कि शब्दों का केवल अपना भाव। अतः वे 'तात्पर्यार्थ' में विश्वास रखते हैं जो कि वाच्यार्थ से भिन्न है—काव्य० २।

अभिहोमः [प्रा० स०] घी की आहुति देना।

अभी (वि०) [न० ब०] निर्भय, निडर, रघु० ३।६२, १५।८८।

अभीरु (वि०) [अभि+कन् दीर्घः] 1. प्रबल इच्छा रखने वाला, आतुर 2. कामुक विषयासक्त, विलासी—भेदस्त्वेनः संरम्भोत्पतनमभीरूणाम् —भि० ५।६४, 3. निर्भय, निडर।

अभीक्ष्ण (वि०) [अभि+क्ष्णु+ड, दीर्घः] 1. दुहराया हुआ, बार २ होने वाला 2. सतत, निरन्तर 3. अत्यधिक, —क्ष्णम् (अव्य०) 1. बारंबार, पुनः पुनः 2. लगातार 3. अत्यंत, बहुत अधिक।

अभीक्षात=नु० अभिघात।

अभीप्सित (वि०) [अभि+आप्+सन्+क्त] चाहा हुआ अभीष्ट,—तम् कामना, इच्छा।

अभीप्सिन् } (वि०) [अभि+आप्+सन्+णिनि, इत्वं]
अभीप्सु } इच्छुक, प्राप्त करने की इच्छा वाला।

अभीरः [अभिमुखो क्रूरत्व ईष्टेति वा, अभि+ईर्+अच्] 1. अहीर, गोपाल, गड़रिया 2. ग्वाला, (दे० आभीर)। समः० पल्ली ग्वालों का गाँव।

अभीक्षापः [अभि+आप्+घञ्] कोसना, दे० अभिशाप।

अभीषुः—षुः [अभि+अञ्+उन् पृषो० अत इत्वम्—अभि+इष्+कु वा] 1. बागडोर, लगाम—तेन हि सुग्रस्तामभीशवः—श० १, 2. प्रकाशकिरण—प्रफुल्लनाभिच्छविनिभैरभीषुभिः—शि० १।२२, मनु० अत्युज्ज्वल, अत्युत्तम 3. इच्छा 4. आसक्ति।

अभीषङ्ग=नु० अभिषंग।

अभीष्ट (भू० क० कृ०) [अभि+इष्+क्त] 1. चाहा हुआ, इच्छित 2. प्रिय, कृपापात्र, प्रियतम ष्टः प्रियतम, इष्ट गृहस्वामिनी, प्रेमिका—ष्टम् 1. अभीष्ट पदार्थ 2. हार्दिक पदार्थ—अन्यस्मै हृदयं देहि नाभीष्टे घटामहे भट्टि० २०।२४।

अभुज्य (वि०) [न० त०] 1. जो झुका हुआ या टेढ़ा मेढ़ा न हो, सीधा 2. स्वस्थ, रोगमुक्त।

अभुज (वि०) [न० ब०] बाहुरहित, लूला।

अभुजिष्या [न० त०] जो दासी या सेविका न हो, स्वतन्त्र स्त्री।

अभूः [न० त०] विष्णु, जो पैदा न हुआ हो।

अभूत (वि०) [न० त०] सत्ताहीन, जो हुआ न हो, अविद्यमान, अवास्तविक, मिथ्या। समः—आहरणम् अवस्तु कथन, कपटपूर्ण या व्यंगमय बात कहना, —तद्भावः जो पहले विद्यमान न हो उसका होना, या बनना, या बदलना। अभूततद्भावे क्विः, अकृष्णः कृष्णः संपद्यते तं करोति कृष्णीकरोति सिद्धा० नु० पयोधरीभूतचतुःसमुद्रम्—रघु० २।३, —पूर्व (वि०) जो पहले न हुआ हो, जिससे आगे कोई न बढ़ा हो—अभूतपूर्वो राजा चिन्तामणिर्नाम, वास्तव० १, देखो० ३।२, प्रादुर्भावः जो पहले न हुआ हो उसका प्रकट होना, —शत्रु (वि०) शत्रुहीन, जिसका कोई शत्रु न हो।

अभूतिः (स्त्री०) [न०त०] 1. सत्ता होनता, अविद्यमानता 2. निर्धनता।

अभूमिः (स्त्री०) [न० त०] 1. भूमि का न होना, भूमि को छोड़कर अन्य कोई पदार्थ, 2. अनुपयुक्त स्थान या पदार्थ, अनुचित स्थान, अप्सूमिरियमनियम्य प० ७, स नाथ मनोरथानामप्यभूमिर्विभवेनावसरसंस्कारः—न० मेरी आशाओं से बहुत अधिक आगे बढ़ा हुआ—शि० १।४२।

अभृत, अभृतिम (वि०) [न० त०] 1. जिसका भाड़ा न दिया गया हो 2. जिसको समर्थन प्राप्त न हो।

अभेद (वि०) [न० ब०] 1. अविभक्त 2. समरूप, वही —दः [न० त०] 1. भिन्नता का अभाव, सदृशता या समानता का होना,—तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमे-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थयोः—का०य० १०, 2. घनिष्ट एकता- दृक्तितां सह वधूभिरभेदम्—कि० ९।१३, द्वि० ३।७९. आत्मभेदे विग्रहयोरभेदम् —नलं० १।२४ ।

अभेद्य } (वि०) [न० त०] 1. जो भेदा न जा सके 2.
अभेदिक } अविभाज्य,—ख्न् हीरा ।

अभोज्य (वि०) [न० त०] 1. खाने के अयोग्य, भोजन के लिए निषिद्ध, धार्मिक—अन्न (वि०) जिसका भोजन दूसरों के लिये खाने के अनुपयुक्त हो ।

अभ्यग्र (वि०) [य० स०] 1. निकट, समीप 2. लाया, नया हुआ शीतलसम्भारे संग्रहीरभ्यग्रतां गतो:—शि०, अभ्यग्रमाहेय, साहित्य ।

अभ्यङ्क (वि०) [प्रा० स०] झाल हो का चिह्नित ।

अभ्यङ्ग: [अभि + अञ्ज्—घञ्] 1. किसी तेल या चिकने पदार्थ को शरीर पर मलना, तेल की मालिश—अभ्यङ्गनेषध्यमलञ्चकार—कु० ७।७, 2. मालिश, लेप, 3. उबटन ।

अभ्यञ्जनम् [अभि—अञ्ज्—ल्युट्] 1. चिकने पदार्थों को शरीर पर मलना, 2. मालिश करना 3. आँखों में काजल डालना 4. चिकना पदार्थ, तेल, उबटन ।

अभ्यधिक (वि०) [प्रा० स०] 1 अपेक्षाकृत अधिक 2. बढ़ चढ़ कर, गुण या परिमाण में अपेक्षाकृत अधिक, अधिक ऊँचा, अधिक बड़ा तत्वत्यभीऽभ्यधिकम्बिकः कुलीऽभ्यः भग० ११।४३, (कई बार अप० और करण० के साथ): यान्यं दशभ्य: कुम्भेभ्यो द्वरलोऽभ्यधिकं वधः मनु० ८।३२०, 3 सामान्य से अधिक, असाधारण, प्रमुख—अब पंचाभ्यधिकः भा० ६।२ ।

अभ्यनुज्ञा—आभम् [अभि—अनु—ज्ञा—अङ्—टाप्, ल्युट् वा] 1. स्वीकृति, 2. सहमति, अनुमति कुलाभ्यनुज्ञा गुणा सदीनता कु० ५।७, रघु० २।६९ 2. आज्ञा, आदेश 3. छुट्टी स्वीकार करना, बर्खास्त करना 4. तर्क को स्वीकार करना ।

अभ्यन्तर (वि०) [अत० स०] 1. भीतरी भाग, आन्तरिक, अन्दरूनी (विप० बाह्य) रघु० १७।४५, का० ६६, माल० ३।२९३, 2. अन्तर्गत होना, किसी समूह या शरीर का एक अंग—देवी परिजनाभ्यन्तर: मालवि० ५, 3. दीक्षित, परिचित, कुशल (अधि० के साथ या समास में)—सङ्गीतकेऽभ्यन्तरे स्व:—मालवि० ५, अहो प्रयोगाभ्यन्तर: प्राधिनक:—मालवि० २, 4. निकटतम, घनिष्ट, अत्यन्त संबद्ध —त्वकताश्चाभ्यन्तरा मेन—पंच० १।२५९,—रम् 1. भीतर का, भीतरी, अन्दर का, (किसी वस्तु का) अन्दरूनी भाग, भीतरी स्थान शर्मामिवाभ्यन्तरलीनपावकाम्—रघु० ३।९, भग० ५।२७, 2. सम्मिलित किया हुआ स्थल, समय या स्थान का अवकाश—एषमासाभ्यन्तरे पंच० ४, 3. मन । सम० —करण (वि०) अन्दर ही अन्दर गुप्त अंगों वाला, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति को अन्दर रखने वाला, चित्तम० ४, - कला गुप्त कला, प्रेम लीला या हावभाव प्रदर्शित करने की कला ।

अभ्यन्तरङ्ग: [अभ्यन्तर + कन्] घनिष्ट मित्र ।

अभ्यन्तरीकृ [अभ्यन्तर + चि + कृ] (तना० उभ०) 1. दीक्षित करना, परिचित करना—प्रागभ्यङ्कृतु-शिल्पिनि मन्त्रेवाभ्यन्तरीकृता:—राजा० 2. परिचय कराना—सर्वविद्येषु अभ्यन्तरीकरणीया: का० १०१, दश० १९९, १९२. 3. किसी को निकटमित्र बनाना—प्रागभ्यन्तरीकृता: —पंच० १।२५९ ।

अभ्यन्तरीकरणम् [अभ्यन्तर + चि + कृ + ल्युट्] दीक्षित करना, परिचय कराना—सजीवनिर्जीवा [ज सूतकला-स्वन्न तारीकरणम्—दश० ३९ ।

अभ्यनन्द् [अभि + अन्द्—ल्युट्] 1. प्रहार, क्षति २. भोग ।

अभ्यमित-अभ्यन्त (भू० क० कृ०) [अभि + अम् + क्त] 1. रोगी, बीमार 2. चोट खाया हुआ, घायल ।

अभ्यमित्रम् [भक्त० स०] शत्रु के ऊपर आक्रमण (कि० वि०) शत्रु की ओर या शत्रु के विरुद्ध चढ़ाई करना ।

अभ्यमित्रीय:-यः } [अभि + अमित्र + छ, घ, यत् वा]
अभ्यमित्रिय: } वह योद्धा जो वीरतापूर्वक शत्रु का सामना करता है—उद्योगमभ्य-मित्रीणो पर्वतं स्व च सेतुं—भट्टि० ५।४७, मारीचो-ऽनुचरोऽभ्यमित्रियां भवामि ते- ४६ ।

अभ्यय: [अभि + इ + अच्] 1. आना, पहुचना 2. (सूर्य का) अस्त होना ।

अभ्यर्चनम्-र्च्या [अभि + अर्च् + ल्युट्, अङ् + टाप् वा] पूजा, सजावट, समादर ।

अभ्यर्ण (वि०) [अभि + अर्च् + क्त] निकट, समीप, स्थान के निकट या समीप होने वाला, समीप आने वाला—अभ्यर्णमागतफलम्—शिशु० २।२२,—र्णम् सामीप्य, सान्निध्य अभ्यर्णकारिणि जनाभ्यर्णं किमुद्यम्यते—गीत० ७, अभ्यर्णे परिरभ्य निर्भरमरं प्रेमान्धया राधया —गीत० १, शि० ३।२१ ।

अभ्यर्थना [अभि + अर्थ् + ल्युट्, स्त्रियां टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, दरख्वास्त, नालिश शिरोऽङ्गभेदन—कु० १५२ ।

अभ्यर्थित् (वि०) [अभि + अर्थ् + णिनि] याचना या प्रार्थना करने वाला ।

अभ्यर्हणा [अभि + अर्ह् + युच्, स्त्रियां टाप्] 1. पूजा, 2. आदर, सम्मान, समादर ।

अभ्यर्हित (वि०) [अभि + अर्ह् + क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, अभ्यर्हितीय 2. योग्य, सुहावना, उपयुक्त, —अभ्यर्हिता बन्धुषु तुल्यरूपा वृत्तिर्विशेषेण तपोधना-नाम्—कि० ३।११ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभ्यवकर्षणम् [अभि+अव-√कृष्+ल्युट्] निकालना, खींचकर बाहर करना।

अभ्यवकाशः [अभि+अव+काश्+घञ्] खुली जगह।

अभ्यवस्कन्दः -दनम् [अभि+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. झट कर शत्रु का मुकाबला करना, शत्रु पर चढ़ाई करना 2. शत्रु को निरुशस्त्र करने के लिए प्रहार करना 3. आघात।

अभ्यवहरणम् [अभि+अव+हृ+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देना 2. भोजन ग्रहण करना, गले के नीचे उतारना (कण्ठादधोनयनम्—मल्लि०)।

अभ्यवहारः [अभि+अव+हृ+घञ्] 1. भोजन ग्रहण करना, आहार लेना, खाना पीना आदि 2 आहार — जन्मप्रभृत्यभ्यवहारार्थवाची—काशी०, संवादाशेषी —मालवि० ४।

अभ्यवहार्य (वि०) [अभि+अव+हृ+ण्यत्] खाने के योग्य, भोज्य,—र्यम् आहार, —सर्वत्रौदरिकस्य अभ्यवहार्यमेव विषयः—विक्रम० ३।

अभ्यासनम् [अभि+अस्+ल्युट्] 1. बार-बार करना, बार-बार किया गया अभ्यास 2. निरन्तर अध्ययन, अनुशीलन—(ताम्) विद्याभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि—रघु० १।८८।

अभ्यासूयक (वि०) [स्त्री-यिका] [अभि+असू+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, डाहभरा, निन्दक, कलंक लगाने वाला, —मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्योऽभ्यसूयकः—भग० १६।१८।

अभ्यसूया [अभि+असु+यक्+अ+टाप्] डाह, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध,—शक्राभ्यसूयार्विनिवृत्तये यः—रघु० ६।७४, रूपेषु वेगेषु च गाभ्यसूयाः—७।२, ९।६४।

अभ्यस्त (भू० क० कृ०) [अभि+अस्+क्त] 1. बार बार दोहराया गया, बार बार अभ्यास किया गया, —नयनयोरभ्यस्तमामीलनम्—अमरु० ९२, प्रयोग में लाया गया, आदत डाली हुई,—अनभ्यस्तरथचर्या — उत्तर० ५, 2. सीखा हुआ, पढ़ा हुआ,—शैशवेऽभ्यस्त-विद्यानां—रघु० १।८, भर्तृ० ३।८९, 3. (गण०) गुणा किया गया 4. (व्या० में) द्वित्व किया गया।

अभ्याकर्षः [अभि+आ+कृष्+घञ्] हाथ से छाती ठोक कर ललकारना (जैसे पहलवान कुश्ती के लिए)।

अभ्याकाङ्क्षितम् [अभि+आ+काङ्क्ष्+क्त] 1. मिथ्या आरोप, निराधार शिकायत 2. इच्छा।

अभ्याख्यानम् [अभि+आ+ख्या+ल्युट्] मिथ्या आरोप, लाञ्छन, निन्दा, बदनामी।

अभ्यागत (भू० क० कृ०) [अभि+आ+गम्+क्त] 1. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 2. अतिथि के रूप में आया हुआ,—सर्वत्राभ्यागतो गुरुः हि० १।१०८,—तः अतिथि, दर्शक।

अभ्यागमः [अभि+आ+गम्+घञ्] 1. निकट आना या आना, पहुँच, दर्शनार्थ गमन—तपोधनाभ्यागमसंभवा मुदः—शि० १।२३, कि वा मदभ्यागमकारणं ते—रघु० १६।८, महावी० २।२२, 2. सामीप्य, पड़ोस, 3. मुकाबला, हमला 4. युद्ध, संग्राम 5. शत्रुता, विद्वेष।

अभ्यागमनम् [अभि+आ+गम्+ल्युट्] उपागमन, पहुँच, दर्शनार्थ गमन, हेतु तदभ्यागमने परीप्सुः—कि० ३।४।

अभ्यागारिकः [अभि+आगार+ठन्] परिवार के पालन में यत्नशील।

अभ्याघातः [अभि+आ+हन्+घञ्] हमला, आक्रमण।

अभ्यादानम् [अभि+आ+दा+ल्युट्] उपक्रम, प्रारम्भ, सूत्रपात करना।

अभ्याधानम् [अभि+आ+धा+ल्युट्] रखना, डालना (जैसा कि इंधन)।

अभ्यान्त (वि०) [अभि+आ+अम्+क्त] बीमार रुग्ण, रोगी।

अभ्यापातः [अभि+आ+पत्+घञ्] संकट, दुर्भाग्य।

अभ्यामर्दः-मर्दनम् [अभि+आ+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] युद्ध, संग्राम, संघर्ष, आक्रमण।

अभ्यारोहः-रोहणम् [अभि+आ+रुह्+घञ्, ल्युट् वा] चढ़ना, सवार होना, ऊपर तक जाना।

अभ्यावृत्तिः (स्त्री०) [अभि+आ+वृत्+क्तिन्] दोहराना, बार-बार होना, दे० 'अनभ्यावृत्ति' भी।

अभ्याश (वि०) [अभि+अश्+घञ्] निकट, समीप —शः 1. पहुँचना, व्याप्त होना 2. समीपस्थ पड़ोस, आस पास का (दे० 'अभ्यास'),—वृत्तसाभ्याशे समुपविष्टः —पंच० २, सहमाभ्यागता भैमीमभ्याशपरिवर्तिनीम्—महा०, दश० ९२, 3. परिणाम, फल 4. अभ्युदय, प्रत्यागंसा, अतः 'शीघ्रता' के अर्थ में प्रायः प्रयुक्त।

अभ्यासः [अभि+आ+अस्+घञ्] आवृत्ति, व्याख्याता-व्याख्याता इति पदाभ्यासोऽध्यायपरिसमाप्ति द्योतयति—आरो०, तान्यासक्तमनीक्षते-पंच १।१५१, 2. बार-बार किसी कार्य को करना, लगातार किसी कार्य में लगे रहना,—अविरतश्रमाभ्यासात्—का० ३०, अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते—भग० ६।३५, ४४ अनवरत अभ्यास के द्वारा, (पवित्र और अविकृत रहना) १२।१२, °निगृहीतेव मनसा—रघु० १०।२३, इसी प्रकार शर,° अस्त्र° आदि 3. आदत, प्रथा, चलन, अभ्यासकुलास्यासरनिम्—कु० ५।६५, या० ३।६८, 4. शस्त्रास्त्र विषयक अनुशासन, कलापद, सैनिक कवायद 5. पाठ करना, अध्ययन करना,—काव्यज्ञ-शिक्षयाभ्यासः काव्य० १ 6. आसपास का, सामीप्य, पड़ोस (अभ्यास' के लिए)—वृत्तयष्टिरिवाभ्यासे (शे) मधो परभृतोन्मुखी —कु०६।२, ('अभ्यासे-शे मधो का यही अर्थ 'मधु' को संबोधित करना है जो कि उसके निकट है—अर्थात् अपने आपको पूर्ण रूप से उसके सामने प्रकट करके।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यहाँ पार्वती की उपमा पूर्णतः सुरक्षित है—अर्थात् स्वयं चुप रहते हुए अपनी सखी को संबोधित करने के बहाने अपने प्रियतम से बात करना); अर्पितेयं तवाभ्यासे सीता पुण्यवता वधूः -उत्तर० ७।१७, आपको सौंपी हुई; अभ्यासो (शा०) बगतः—सिद्धा० (अलुक् समास के रूप में) 7. (व्या० में) द्वित्व होना 8. द्वित्व हुए मूलशब्द का प्रथम अक्षर, द्वित्व अक्षर 9. (गणo में) गुणा 10. सम्मिलित गान, गीत की टेक। समo ---गत (विo) उपागत, निकट गया हुआ,—योगः अनवरत गहन चिंतन से उत्पन्न मनोयोग,—अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय—भगo १२।९,—लोपः द्वित्व किये हुए अक्षर को हटा देना,—व्यवायः द्वित्व अक्षर से उत्पन्न अन्तराल।

अभ्यासादनम् [अभि+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] शत्रु का सामना करना या उस पर हमला करना।

अभ्याहननम् [अभि+आ+हन्+ल्युट्] 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, हत्या करना 2. रोक लगाना, बाधा डालना।

अभ्याहारः [अभि+आ+हृ+घञ्] 1. निकट लाना, ले जाना 2. लूटना।

अभ्युक्षणम् [अभि+उक्ष्+ल्युट्] 1. (जल) छिड़कना, तर करना,—परस्पराभ्युक्षणतत्परााणाम् (तासाम्) रघु० १६।५७, 2. अभिषेक द्वारा संस्कार।

अभ्युक्षित (विo) [प्रा० स०] प्रचलित, प्रथा के अनुकूल।

अभ्युच्चयः [अभि+उत्+चि+अच्] 1. वृद्धि, आगम 2. सम्पन्नता।

अभ्युत्क्रोशनम् [अभि+उत्+क्रुश्+ल्युट्] ऊँचे स्वर से चिल्लाना।

अभ्युत्थानम् [अभि+उद्+स्था+ल्युट्] 1. (अपने आसन से) सत्कारार्थ उठना, किसी के सम्मान में खड़े होना 2. रवाना होना, प्रस्थान करना, कूच करना 3. उठना (शा० आलo), उन्नति, सम्पन्नता, मर्यादा,-(तस्य) तवाभ्युत्थानदक्षिण्यो ननन्दुः सप्रजाः प्रजाः-रघु० ४।३, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्- भगo ४।७।

अभ्युत्पतनम् [अभि+उत्+पत्+ल्युट्] किसी पर उछलना, कूदना; अकस्मात् झपटना, हमला करना—अलक्षितोभ्युत्पतनो नृपेण—रघु० २।२७।

अभ्युदयः [अभि+उद्+इ+घञ्] 1. सूर्य चन्द्रादि का निकलना, सूर्योदय 2. उन्नति, सम्पन्नता, सौभाग्य, ऊँचा उठना, सफलता—स्पृशति नः स्वामिनमभ्युदयाः-रत्न० १, भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्-रघु० ३।१४, 3. उत्साव, उत्सव का अवसर 4. उपक्रम, आरम्भ।

अभ्युदाहरणम् [अभि+उद्+आ+हृ+ल्युट्] विपरीत बात के द्वारा उदाहरण या निदर्शन देना।

अभ्युदित (भूo कo कृo) [अभि+उद्+इ+त] 1. निकला हुआ 2. उन्नत 2. सूर्योदय के अवसर पर सोया हुआ।

अभ्युद्गमः-गमनम् } [अभि+उद्+गम्+घञ्, ल्युट्,
अभ्युद्गतिः (स्त्री०) } क्तिन् वा] 1. किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अतिथि के सम्मानार्थ उठकर चलना 2. निकलना, होना, उत्पन्न होना।

अभ्युद्गत [भू० कo कृo] [अभि+उद्+गम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊपर उठाया हुआ, जैसा कि [1]आयुध, [2]शस्त्र 2. तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील (तुमुन्नन्त सम्प्र० अधि० के अर्थवा समास में) 3. आगे गया हुआ, निकला हुआ, सामने दिखाई देने वाला, निकट आने वाला, -कुलमभ्युद्गतनूतनेश्वरम्- रघु० ८।१५, 4. अयाचित दिया हुआ या लाया हुआ।

अभ्युन्नत (विo) [अभि+उद्+नम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊँचा किया हुआ,ग० ३, 2. ऊपर को उभरा हुआ, बहुत ऊँचा—कु० १।३३।

अभ्युन्नतिः (स्त्रीo) [अभि+उद्+नम्+क्तिन्] बड़ी उन्नति या समृद्धि।

अभ्युपगमः [अभि+उप+गम्+घञ्] 1. उपागमन, पहुँच 2. स्वीकार करना, मानना, सत्य समझना, (दोष) मान लेना 3. जिम्मेदारी, प्रतिज्ञा करना, निर्णय[3] मालवि० १, संविदा, करार, प्रतिज्ञा। समo—सिद्धांतः मानी हुई प्रस्तावित योजना या सूक्ति।

अभ्युपपत्तिः (स्त्रीo) [अभि+उप+पद्+क्तिन्] 1. सहायतार्थ निकट जाना, दया करना, कृपा करना, अनुग्रह, कृपा,—अनयाभ्युपपत्त्या—दश० ४, 2. ढाढ़स, तसल्ली 3. रक्षा, बचाव, ब्राह्मणाभ्युपपत्तौ च यत्पापं नास्ति पातकम्—मनु० ८।११२, 4. इकरार नामा, स्वीकृति, प्रतिज्ञा 5. स्त्री का गर्भवती होना (विशेषतः भाई की विधवा पत्नी का नियोग द्वारा)।

अभ्युपायः [अभि+उप+इ+अच्] 1. प्रतिज्ञा, वादा, इकरार 2. साधन, युक्ति, उपचार,—अस्मिन्पुराणार्थविजयाभ्युपाये—कु० ३।१९।

अभ्युपायनम् [अभि+उप+अय्+ल्युट्] सम्मानसूचक उपहार, प्रलोभन, रिश्वत।

अभ्युपेत (भू० कo कृo) [अभि+उप+इ+क्त] 1. निकट आया हुआ, उपागत 2. प्रतिज्ञात, स्वीकृत, अंगीकृत—मेघ० ३८।

अभ्युपेत्य (अव्य०) [अभि+उप+इ+ल्यप् (क्त्वा)] पहुँच कर, स्वीकार करके, प्रतिज्ञा करके। समo—अशुश्रूषा—हिन्दूधर्मशास्त्र के १८ अधिकारों में से एक, स्वामी और सेवक के मध्य की हुई संविदा का भंग।

अभ्युषः, अभ्यूषः } [अभितः उष्यते अग्निना दह्यते—उ-
अभ्योषः } ऊष् बाहुo क] एक प्रकार की रोटी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाटी।

अभ्यूह: [अभि-+ऊह्+घञ्] 1. तर्क करना, दलील देना, विचार विमर्श करना 2. आगमन (घटना), अनुमान, अटकल.—पराभ्यूहस्वानाव्यपि तन्तुरणि स्वयंयति —मा० १।१८, 3. अध्याहार करना, 4. समझना।

अभ्र (भ्वा० पर०) [अभ्रति, आनभ्र, अभ्रित] जाना, इधर उधर घूमना—वनेष्वाभ्रध निर्भयः -भट्टि० ४।११, १४।११०।

अभ्र [अभ्र+अन् या अभ्+भू अपो विभक्ति—भृ+क] 1. बादल 2. वायुमंडल, आकाश-परितो विषण्ण दधदभ्रधीरः- शि० ९।३, दे० अभ्रंलिह आदि 3. चिल-चिल, अबरक 4. (गण०) शून्य। सम०—**अवकाशः** बचाव के लिए केवलमात्र बादल, बारिश होना,—**अवकाशिक,—अवकाशिन** (वि०) बारिश में रहकर (तपस्या करने वाला), बारिश से बचाव का कोई उपाय न करने वाला,—**उत्थः** आकाश में उत्पन्न इन्द्र का वज्र,—**नागः** ऐरावत नाम का हाथी जो धरती को धारण किये हुए है,—**पथः** 1. वायुमंडल 2. गुब्बारा,—**पिशाचः,—पिशाचकः** राहु की उपाधि, गेघा-सुर,—**पुष्पः** एक प्रकार की बेंत,—**पुष्पम्** 1. पानी 2. असंभव बात, हवाई किला, **मातंगः** इन्द्र का हाथी ऐरावत, **मालः,—वृन्दम्** बादलों की पंक्ति या समूह।

अभ्रंलिह (वि०) [अभ्र+लिह्+खश् मुमागमः] 'बादलों को चूमने वाला' लाक्षणिक प्रयोग करने वाला अर्थात् बहुत ऊँचा; अभ्रंलिहाग्राः प्रासादाः मेघ०६२, प्रासादमभ्रंलिह-मारुरोह—रघु० १४।२१; -हः वायु, हवा।

अभ्रकम् [अभ्र+कन्] चिलचिल, अबरक। सम०—**भस्मन्** (नपुं०) अबरक का कुश्ता, अबरक की भस्म —**सत्त्वम्** इसका।

अभ्रकुक्ष (वि०) [अभ्र+कुक्+क्त मुमागमः] बादलों को छेने वाला, बहुत ऊँचा,- -आदायाभ्रकुक्षं प्रायः-मलयं फलभालिनम्—भट्टि०, **क्षः** 1 वायु, हवा 2. पहाड़।

अभ्रमुः (स्त्री०) [अभ्र+मा+डु] इन्द्र के हाथी ऐरावत की महचरी, पूर्वदिशा के दिग्गज की हथिनी। सम०—**प्रियः,—वल्लभः** ऐरावत।

अभ्रि-श्री (स्त्री०) [अभ्र+इन् ङीष् वा] 1. लकड़ी की बनी हुई नोकदार फरही जिससे नाव की सफाई की जाती है, 2. कुदाल, खुरपी।

अभ्रित (वि०) [अभ्र+इतच्] बादलों में आच्छादित, बादलों से घिरा हुआ -रघु० ३।१२।

अभ्रिय (वि०) [अभ्र+घ] बादलों से संबंध रखने वाला, आकाश या मुख्या अथवा बादलों से उत्पन्न,—**यः** बिजली, —**यम्** गरजने वाले बादलों का समूह।

अभ्रेषः [न० त०] अव्यत्यय, योग्यता, उपयुक्तता।

अम् (अव्य०) [अम्+क्विप्] 1. जल्दी, शीघ्र 2. जरा, थोड़ा।

अम् (भ्वा० प०) [अमति, अमितुम्, अमित] 1. जाना, की ओर जाना 2. सेवा करना, सम्मान करना 3. शब्द करना 4. खाना, (चु० प० या प्रेर०) [आमयति] 1. टूट पड़ना, आक्रमण करना, रोग से कष्ट होना, किसी व्याधि से पीड़ित होना 2. रोगी होना, कष्टग्रस्त या रोगग्रस्त होना।

अम (वि०) [अम्+घञ् अपृद्धिः] कच्चा (जैसा कि फल),—**मः** 1. ज्ञाता, 2. शत्रुता, रोग 3. सेवक, अनुचर 4. यह, स्वयम्।

अमङ्गलन्य (वि०) [ब० स०, न० त०] 1. अशुभ, बुरा, अकल्याणकर—रघु० १२।४३, 'अन्यामरंनिम् कु० ५।६५, अमङ्गलस्य शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्—पुष्प० 2 भाग्यहीन, दुर्भाग्य पूर्ण, **क्षः** एरण्ड का वृक्ष,- **क्षम्** अशोभनीयता, दुर्भाग्य, अकल्याण प्रायः नाट्य-शास्त्र में प्रयुक्त, - शांतं पापं प्रतिहत-मम ङ्गलम्—तु० भगवान् कल्याण करें!

अमण्ड (वि०) [न० ब०] 1. बिना सजावट का, अलंकार रहित 2. बिना जल का, या बिना माड़ का (उबला हुआ चावल),—**डः** एरण्ड का वृक्ष।

अमत (वि०) [न० त०] 1. अनजाना, मन के लिए अगोचर्य, अज्ञात 2. नापसन्द, अमान्य,—**तः** 1. समय 2. शत्रुता, रोग, 3. मृत्यु।

अमति (वि०) [न० ब०] दुर्मना, दुष्ट, दुश्चरित्र, —**तिः** 1. धृष्टे, कपटी 2. चोर 3. समय,—**तिः** (स्त्री०)] न० त०] अज्ञान, समझहीनता, ज्ञान का अभाव, अदूरदर्शिता अनात्मवानि पदं जरन्ता —मनु० ५।२०, ४।२८२, । सम० **पूर्व** (वि०) संज्ञाहीन, विचारहीन।

अमत्र (वि०) [न० त०] जो नशे में न हो, सही दिमाग का।

अमत्रम् [अमति भुक्ते अत्तमत्र—अम्+आधारे अत्रन्] 1. बर्तन, जहाज, पात्र 2. सामर्थ्य, शक्ति।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्यालु या डाहयुक्त न हो, उदार।

अमनस् (वि०) [न० ब०, कप् च] 1. बिना मन या ध्यान के 2. बुद्धिहीन (जैसे कि बालक) 3. ध्यान न देने वाला, 4. जिसका अपने मन के ऊपर कोई नियंत्रण न हो 5. स्नेहहीन (नपुं० **नः**) 1. जो इच्छा का अंग न हो, प्रत्यक्षज्ञान का अभाव 2. ध्यानशून्य (ए०—नाः) परमेश्वर। सम० **गत** (वि०) अज्ञात, अविचारित,—**ज्ञ**,—**नीत**, नापसंद, रद्द किया गया, विस्मृत, **योगः** ध्यान न देना,—**स्क** (वि०) जो सुखकर न हो, जो रुचिकर न हो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमताक (अव्य०) [न० त०] थोडा नहीं, बहुत, अत्यधिक।

अमनुष्य (वि०) [न० ब०] 1. अमानुषिक, जो मनुष्योचित न हो 2. जहाँ मनुष्य का आना जाना बहुत कम हो, ब्यः [न० त०] 1 जो मनुष्य न हो, 2 राक्षस।

अमन्त्र,-त्रक (वि०) [न० ब० कप् च] 1. वैदिक मंत्रों से रहित, वह संस्कार जिसमें वेदमंत्रों के पाठ की आवश्यकता न हो 2. जिसे वेद के पढ़ने का अधिकार न हो जैसे शूद्र या स्त्री 3. जो वेदपाठ से अनभिज्ञ हो, -अज्ञानामामन्त्र्याणाम्—मनु० १२।११४, 4. रोग की वह चिकित्सा जिसमें जादुमंत्र की क्रिया न की जाती हो, अनया कथमन्त्रत्वालोक्या न हि जीवन्ति जन्तवो गतागतन्त्राः -भामि० १।११११।

अमन्द (वि०) [न० त०] 1. जो सुस्त या मंद न हो, फुर्तीला, चढ़ियात् 2. तेज, प्रबल, प्रचण्ड (वायु आदि) 3. अनल्प, अति. अधिक, बहुत, तीव्र, अमन्दमदयन्निव—उत्तर० ५।५, अमन्दमिलदिन्दिरे निखिलभावसंमन्दिरे भामि० ४।१।

अमम (वि०) [न० ब०] बिना अहंकार के, स्वार्थ या सांसारिक आसक्ति से शून्य, ममतारहित, -शरणेष्वमसर्वेषु वक्षःस्थलनिकेतनः—भट्ट० ६।२६।

अममता-त्वम् [न० त०] उदासीनता, स्वार्थराहित्य।

अमर (वि०) [न० त० मृ+अच्] जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो, न मरने वाला, अविनाशी, -अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च साधयेत् हि० पंच० ३, मनु० ७।१४८, २. देव. देवता 2. पारा 3. सोना 4. तेरीस की संख्या (क्योंकि जितनी में इतने ही देवता हैं) 5. अमरसिंह 6. हड़ताल का क्षार -रा 1. इन्द्र का आवासस्थान (नु० अमरावती) 2. ताल 3. मेनसिल 4. गूलर-क्षम्, -री 1. देवाङ्गना, देवकन्या 2 इन्द्र की राजधानी। सम० -अङ्गना, स्त्री दिव्य अप्सरा, देवकन्या-भ्रमात् स्मरन्ति स्वप्नेऽपि स्वममरङ्गनाः। वि० १।५१, -अद्रिः देवपर्वत अर्थात् सुमेरु पहाड़ -अधिपः, -इन्द्रः, -ईशः, -ईश्वरः, -पतिः, -भर्ता,-राजः देवताओं का स्वामी, इन्द्र की उपाधि, कई बार विष्णु और शिव को भी उपाधि -आचार्यः, -गुरुः, -पूज्यः देवताओं के गुरु, बृहस्पति की उपाधि, -आपगा, तटिनी, सरित् (स्त्री) स्वर्गीय नदी, गंगा की उपाधियाँ, -तरुसिरीषोपमेयमनुः भर्तृ० ३।१२३, -आलयः देवताओं का आवासस्थान, स्वर्ग, -कंटकम् विष्कम्भपर्वतश्रेणी के उस भाग का नाम जहाँ नर्मदा नदी का उद्गम स्थान के निकट है -कोशः, -कोषः अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत भाषा का एक सुप्रसिद्ध कोश -तरुः, दारुः 1. दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष,- अमरतरुकुसुमसौरभसेवनसंपूर्णसकलकामस्य--भामि० १।२८ 2. -देव दारु 3. कल्पवृक्ष, —द्विजः देवल ब्राह्मण जो मंदिर या मूर्ति संबंधी कार्य करता हो, मन्दिर का अधीक्षक,- पुरम्, देवताओं का आवासस्थान, दिव्य स्वर्ग,—पुष्पः,—पुष्पकः कल्पवृक्ष, —प्रभु, -प्रभ (वि०) देवताओं जैसा,—रत्नम् स्फटिक,-लोकः देवताओं की दुनियाँ, स्वर्ग, °ता स्वर्गीय सुख, -तेषु सम्भावनमात्रो गच्छत्यमरलोकताम्—मनु० ४।५,—सिंहः अमरकोश के रचयिता का नाम, वह जैन धर्मावलम्बी थे, कहा जाता है कि विक्रमादित्य महाराज के नवरत्नों में एक रत्न थे।

अमरता-त्वम् [अमर+तल्, त्व] देवत्व।

अमरावती [अमर+मतुप्, दीर्घः] देवताओं का आवासस्थान, इन्द्र का घर,—ससंभ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गला निमीलिताशीव भियाऽमरावती। शिशु०।

अमर्त्य (वि०) [न० त०] जो मरणधर्मा न हो, दिव्य, अविनाशी,- °भावेऽपि रघु० ७।५३, °भुवनम्—स्वर्ग, °ता अविनश्वरता, त्यः देवता, । सम०—आपगा देवनदी, गंगा की उपाधि -विक्रमांक० १८।१०४।

अमर्मन् (नपुं०) [न० त०] शरीर का वह अंग जो मर्मस्थल न हो। सम०—वेधिन् मर्मस्थल को न बींधने वाला, मृदु, कोमल।

अमर्याद (वि०) [न० ब०] 1. उचित सीमाओं को पार करने वाला, सीमा को उल्लंघन करने वाला, अनादर करने वाला, अनुचित,—मर्यादायाममर्यादाः स्त्रियस्तिष्ठन्ति सर्वदा—पञ्च० १।१४२, तादृशं त्वममर्यादं कर्म कर्तुं चिकीर्षसि -रामा०, 2. सीमारहित, असीम—दा [न० त०] उचित सीमा का उल्लंघन करना, आचरणहीनता, अप्रतिष्ठा, उचित सम्मान की अवहेलना।

अमर्ष (वि०) [न० ब०] असहनशील, र्षः [न० त०] 1. असहिष्णुता, असहनशीलता, धैर्यशून्यता, -अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः—कि० १।२३, ईर्ष्या, ईर्ष्यायुक्त क्रोध, किंनु भवत्तातप्रणामोपेक्षाऽस्मदमर्षः—उत्तर० ५, सा० शा० में ३३ व्यभिचारी भावों में से एक। अमर्ष दे० सा० द०; सम० निस्सहनिर्भाषा वचनाः हैं—परकृतावज्ञादिनानाप्रकारजन्यो मौनवाकपारुष्यादिकारणभूतविचित्रवृत्तिविशेषोऽमर्षः 2. क्रोध, आवेश, कोप,—पूत्रबधामर्षोद्दीपितक्षत्रियविद्या— वेणी० २, सामर्ष क्रुद्ध, कुपित, सामर्षम् क्रोधपूर्वक 3. तीव्रता, प्रचण्डता। सम० ज (वि०) क्रोध या असहनशीलता से उत्पन्न, हासः क्रोधपूर्ण हंसी, खिल्ली उड़ाना।

अमर्षण,-र्षित, अमर्षिन्,-र्षिवत् (वि०) [न० ब०, न० त०] धैर्यहीन, असहनशील, क्षमा न करने वाला--र्षिव०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१।३२६, २. क्रुद्ध, कुपित, प्रचण्ड स्वभाव का —हृदि क्षतो गोत्रभिदप्यमर्षणः –रघु० ३।५३—अभिमन्यु-धामर्षितैः पाण्डुपुत्रैः—वेणी० ४, 3. प्रचण्ड, दृढ़-संकल्प ।

अमल (वि०) [न० ब०] 1. मलरहित, मलमुक्त, पवित्र, निष्कलंक, विमल,—अमलाः सुहृदः—पंच० २।१७१, विशुद्ध, निष्कपट 2. श्वेत उज्ज्वल,—कर्णाविवर्कतामल-दन्तपत्रम्—कु० ७।२३, रघु० ६।८०,—श्री 1. लक्ष्मी देवी 2. नाल 3. आंवले का वृक्ष,—लम् 1. पवित्रता 2. अबरक, 3. परब्रह्म । सम०—पतत्रिन् [पुं०—स्त्री] जंगली हंस, —रत्नम्, —मणिः स्फटिक पत्थर ।

अमलिन (वि०) [न० त०] स्वच्छ, बेदाग, पवित्र, (नैतिक रूप से भी)—कुलमलिनं नत्वेवाद्य जनो न च जीवितम्—मा० २।२, ।

अमसः [अम्+असच्] 1. रोग 2. मूर्खता 3. मूर्ख 4. समय ।

अमा (वि०) [न० त०] अपरिमित—(अव्य०) 1. से, निकट, पास 2. के साथ, से मिलकर, जैसा कि **अमात्य**, अमावस्या (स्त्री) नूतन चन्द्रमा का दिन, सूर्य और चन्द्र के संयोग का दिन, -अमायां तु सदा सोम ओषधीः प्रतिपद्यते—व्यास 2. चन्द्रमा की सोलहवीं कला, पुं०—आत्मा । सम०—अन्तः नूतन चन्द्रमा के दिन की समाप्ति,—पर्वन् (नपुं०) अमा का पवित्र काल, नूतन चन्द्रमा का दिवस ।

अमांस (वि०) [न० ब०] 1. बिना मांस का, मांस रहित, 2. दुबला-पतला, बलहीन, -सम् [न० त०] जो मांस न हो, मांस को छोड़ कर और कोई वस्तु । सम०—**ओदनिक** (वि०)[स्त्री०—**की**] मांसयुक्त बने हुए चावलों से संबंध न रखने वाला ।

अमात्यः [अमा+ण्यक्] राजा का सहचर, या अनुयायी मंत्री, अमात्यपुत्रैः सत्रयोभिरन्वितः—रघु० ३।२८ ।

अमात्र (वि०) [न० ब०] 1. सीमारहित, अपरिमित अपूर्ण, असमस्त 3. जो आरम्भिक न हो,—त्रः परब्रह्म, ।

अमानभम्-ना [न० त०] अनादर, अपमान, अवज्ञा ।

अमानस्यम् [न० त०] पीड़ा ।

अमानिन् (वि०) [न० त०] विनम्र, विनीत ।

अमानुष (वि०) [स्त्री०—**षी**] [न० त०] अमानवी, मनुष्य से संबंध न रखने वाला, अलौकिक, अपार्थिव, अपौरुषेय, —आकृतिरेवानुमापयत्यमानुषताम् —का० १३२ ।

अमानुष्य (वि०)[न० त०] अमनुष्योचित, अपौरुषेय आदि ।

अमाव (मा) स्त्री=अमावसी या अमावस्या ।

अमाय (वि०) [न० ब०] 1.अकुटिल, पारखी, मायारहित, निष्कपट 2. जो मापा न जा सके; —यः 1. कपट-शून्यता, ईमानदारी, निष्कपटता 2. (वेदा० में) भ्रम का अभाव, परमात्मा का ज्ञान - यम् परब्रह्म ।

अमायिक,—मायिन् (वि०) [न० त०] मायारहित, निश्छल, ईमानदार ।

अमावस्या, -वास्या } [अमा+वस्+यत्, ष्यत् वा; अमा
अमावसी, -वासी } +वस्+अप्, ङीप् वा] नूतन
(अमामसी, -मासी) } चन्द्रमा का दिन, वह समय जब कि सूर्य और चन्द्रमा दोनों संयुक्त रहते हैं, प्रत्येक चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन—सूर्याचन्द्रमसोः यः परः सन्निकर्षः साऽमावस्या—गोभिल० ।

अमित (वि०) [न० त०] 1. जो मापा न गया हो, असीम, सीमारहित, विशाल-मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुतः, अमितस्य हि दातारं भर्तारं का न पूजयेत्—रामा० 2. उपेक्षित, अनादृत 3. अज्ञात 4. असंस्कृत । सम०—**अक्षर** (वि०) गद्यात्मक, -**आभ** (वि०) अतिकांतियुक्त, असीम प्रभायुक्त,—**ओजस्** (वि०) असीम तेजोयुक्त, अखिल शक्तिसंपन्न, सर्वशक्तिमान् —**तेजस्**,—**द्युति** (वि०) असीम तेज या कांतियुक्त —**विक्रमः** 1. असीम बल शाली, 2. विष्णु ।

अमित्रः [अम+इत्र] जो मित्र न हो, शत्रु, विरोधी, वैरी, प्रतिद्वंद्वी, विपक्षी,—स्यातामेमित्रौ मित्रे च सहजप्राकृता, वर्गि—शि० २।३६, तस्य मित्राण्यमित्राश्च—१०१, प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः - कि० १४।२१, । सम० —**घात, -घातिन्,—घ्न, हन्** शत्रुओं को मारने वाला, —**जित्** (वि०) अपने शत्रुओं को जीतने वाला, अमित्रजित्मित्रजितौ जगा च यत्—नै० १।१३ ।

अमिथ्या (कि० वि०) [न० त०] जो मिथ्या न हो, सचमुच, —तामुचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्या –रघु० १४।६ ।

अमिन् (वि०) [अम्+णिनि] बीमार, रोगी ।

अमिषम् [अम्+इषन्] 1. सांसारिक सुख के पदार्थ, विलास की सामग्री 2. ईमानदारी, निश्छलता, निष्कपटता, 3. मांस ।

अमीवा [अम्+वन् ईडागमः] 1. कष्ट, बीमारी, रोग 2. दुःख, त्रास —वम् कष्ट, दुःख, पीड़ा, चोट ।

अमुक (नि० वि०) [अदस्-हेरकच् उत्वमत्वे—तारा०] कोई व्यक्ति या पदार्थ, फला २, ऐसा-ऐसा (जब व्यक्ति को नाम से संबोधित न किया जाए), मत्तं मेऽमुकपुत्र-स्य यत्तत्रोपरि लेखितम्—याज्ञ० २।८६, ८७. उभयाभ्य-धितेनैतस्मया हामुकसूनुना, लिखितं हामुकेनेति लेखको ऽन्ते ततो लिखेत् -८८ ।

अमुक्त (वि०) [न० त०] 1. जिसके बंधन खोले न गये हों, जो जाने में स्वतंत्र नहीं 2. जन्ममरण के बंधन से जिसे छुटकारा न मिला हो, जिसे मोक्ष प्राप्त न हुआ हो,—क्तम् एक हथियार (चाकू या तलवार आदि) जो सदैव पकड़ा जाता है, फेंका नहीं जाता । सम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—हस्त (वि०) मितव्ययी, कंजूस (कदर्थना के लिए) अल्पव्ययी, परिमितव्ययी,—सदा प्रहृष्टया भाव्यं व्यये चामुक्तहस्तया—मनु० ५।१५०।

अमुक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. स्वातंत्र्यशून्यता 2. स्वतंत्रता या मोक्ष का भाव।

अमुतः (अव्य०) [अदस्+तसिल् उत्व-मत्व] 1. वहां से, वहां से 2. उस स्थान से, ऊपर से अर्थात् परलोक से या स्वर्ग से 3. इस पर, ऐसा होने पर, अब से आगे।

अमुत्र (अव्य०) [अदस्+त्रल् उत्व-मत्व] (विप० इह) 1. वहां, उस स्थान पर, वहां पर, अमुत्रासन् यवनाः—दश०१२७ 2. वहां, (जो कुछ पहले हो चुका है या कहा गया है) उस अवस्था में 3. वहां, ऊपर, परलोक में, आगामी जन्म में—यावज्जीवं च तत्कुर्याद्येनामुत्र सुखं वसेत् 4. वहां—अनेनैवामंका सर्वे नगरेऽमुत्र भक्षिताः—कथा०।

अमुथा (अव्य०) [अदस्+थाल् उत्व-मत्व] इस प्रकार, इस रीति से।

अमुष्य (अदस्-संब०) ऐसे का (केवल समास में)। सम०—कुल [अलक् स०] (वि०) ऐसे कुल से संबंध रखने वाला (—लम्) प्रसिद्ध घराना,—पुत्रः,—पुत्री ऐसे प्रसिद्ध कुल का पुत्र या पुत्री, दे० आमुष्यायण।

अमृदुश्, —श, क्ष (वि०) [स्त्री०—शी,—क्षी] [अदस्+दृश्+क्विन्, कञ्, क्स वा स्त्रियां ङीप्] ऐसा, इस प्रकार का, इस रूप या ढंग का।

अमूर्त (वि०) [न० त०] आकारहीन, अशरीरी, शरीर रहित (विप० —मूर्त-मूर्तत्वम्=अवच्छिन्नपरिमाणवत्त्वम्—तर्क०),—तः शिव। सम०—गुणः (वैशे०में) धर्म, अधर्म जैसे गुणों को अमूर्त या अशरीरी समझा जाता है।

अमूर्ति (वि०) [न० ब०] आकार हीन, रूपरहित,—तिः विष्णु,—तिः (स्त्री०) [न० त०] रूप या आकार का न होना।

अमूल—लक (वि०) [न० ब०] 1. निर्मूल (शा०), (आलं०) बिना किसी आधार के, निराधार, आधार रहित 2. बिना किसी प्रमाण के, जो मूल में न हो —नामूलं लिख्यते किंचित्—मल्लि०, 3. बिना किसी भौतिक कारण के जैसा कि सांख्य का 'प्रधान'।

अमूल्य (वि०) [न० ब०] अनमोल, बहुमूल्य।

अमूलालम् [सादृश्ये न० त०] एक सुगन्धित घास की जड़, (खस या उशीर) जिस के परदे या टट्टियां बनती हैं।

अमृत (वि०) [न० त०] 1. जो मरा न हो 2. अमर 3. अविनाशी, अनश्वर,—तः 1. देव, अमर, देवता, 2. देवों के वैद्य धन्वन्तरि,—तम् 1. मादक शराब 2. नाना प्रकार के पौधों के नाम,—तम् 1. (क) अमरता (ख) परममुक्ति, मोक्ष—मनु० १२।१०४, स श्रिये चामृताय च—अमर०, 2 देवों का सामूहिक शरीर 3 अमरता की दुनिया, स्वर्गलोक 4. सुधा, पीयूष, अमृत (विप० विष) जो समुद्र मंथन के फल स्वरूप प्राप्त समझा जाता है—देवासुरैरमृतमन्वधिमंथमन्थे—किं० ५।३०, विषादप्यमृतं ग्राह्यम्—मनु० २।२३९, विषमप्यमृतं क्वापि क्वचिद्धत्ते विषमीश्वरेच्छया—रघु० ८।४६, (प्रायः वाक्, वचनम्, वाणी आदि शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है) कुमारजन्मामृतसंमितोक्षरम्—रघु० ३।१६ 5. सोमरस 6. विष नाशक औषध 7 यज्ञशेष—मनु० ३।२८५, 8 अयाचितभिक्षा (दान), बिना मांगे दान मिलना—मृतं स्याद्याचितं भैक्ष्यममृतं स्यादयाचितम्—मनु० ४।४, ५, 9 जल—अमृताद्भवात जीमूत—उत्तर० ६।२१, तु० भोजन के पूर्व या अन्त में आचमन करते हुए ब्राह्मणों के द्वारा पढ़े जानेवाले मंत्र (अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, अमृतापिधानमसि स्वाहा) 10 औषधि 11 घी,—अमृतं नाम यत्सन्तो मन्त्र जिह्वेषु जुह्वति—वि० २।१०७, 12 दूध 13 आहार 14 उबले हुए चावल, भात 15 मिष्ट पदार्थ, कोई भी मधुर वस्तु 16 सोना 17 पारा 18 विष 19 परब्रह्म। सम०—अंशुः,—करः,—दीधितिः,—द्युतिः,—रश्मिः चन्द्रमा के विशेषण,—अमृतदीधितिरेव विदग्धजे—नै० ४।१०४, —अन्धस्,—अशनः,—आशिन् (पुं०) वह जिसका भोजन अमृत है, देवता, अमर,—आहरणः गरुड़ जिसने एक बार अमृत चुराया था,—उत्पत्ना—मक्षी (—अम्), —उद्भवम् एक प्रकार का सुर्मा,—कुंभः वह बर्तन जिसमें अमृत रक्खा हो,—क्षारम् नौसादर,—गर्भ (वि०) अमृत या जल से भरा हुआ, अमृतमय (—भः) 1. आत्मा 2. परमात्मा,—तरंगिणी ज्योत्स्ना, चांदनी, —द्रव (वि०) 'चन्द्रकिरण जो अमृत छिड़कती है' (—वः) अमृत प्रवाह,—धारा 1. एक छन्द का नाम 2. अमृत का प्रवाह,—पः, 1 अमृत पान करने वाला, देव या देवता 2. विष्णु 3 शराब पीने वाला,—ध्रुवममृतपानायबाच्छागसावधरमसुं मघुपरुतबाजिहीते—शि० ७।४८, (यहां अं का 'अमृत पीनेवाला' भी अर्थ है) —फलः अंगूरों का गुच्छा, अंगूरों की बेल, दाख, द्राक्षा,—बंधुः 1 देव, देवता 2 घोड़ा, चन्द्रमा,—भुज् (पुं०) अमर, देव, देवता जो यज्ञशेष का स्वाद लेता है,—भू (वि०) जन्ममरण से मुक्त,—मंथनम् अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र का मथन,—रसः 1 अमृत, पीयूष,—काव्यामृतरसास्वादः—हि०, 2 विविधकाव्यामृतरसान् पिबामः—भर्तृ० ३।४०, 2 परब्रह्म,—लता, —लतिका अमृत देने वाली बेल,—वाक् अमृत जैसे मधुर वचन बोलने वाला,—सार (वि०) अमृतमय (—रः) घी,—सूः—सूतिः 1 चन्द्रमा (अमृत चुवाने वाला) 2 देवताओं की माता,—सोदरः अमृत का भाई, "उच्चैः-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रवाः" नामक घोड़ा,—स्रवः अमृत का प्रवाह,—स्रुत् (वि०) अमृत चुवाने वाला—कु० १।४५।

अमृतकम् [अमृत+कन्] अमृत, अमरतत्व प्रदायक रस।

अमृतता—त्वम् [अमृत+तल्, त्वल् वा] अमरत्व, अमरता।

अमृतोदधिः [अलुक् स०] विष्णु (क्षीर सागर में सोने वाला)।

अमृषा (अव्य०) [न० त०] झूठपने से नहीं, सचमुच।

अमृष्ट (वि०) [न० त०] न मसला हुआ, न रगड़ा हुआ। सम०—भुज (वि०) अशुद्ध पवित्रता वाला।

अमेखल्क (वि०) [न० ब० कप् च] जिसमें चर्बी न हो, दुबला-पतला।

अमेधस् (वि०) [न० ब०] बुद्धिहीन, मूर्ख, जड़।

अमेध्य (वि०) [न० त०] 1. जो यज्ञ के योग्य, या अनुमत न हो 2. यज्ञ के अयोग्य नामेध्य प्रक्षिपेदग्नौ — मनु० ४।५३, ५६, ५।५, १३२, 3. अपवित्र, मलयुक्त, मैला, गंदा, अस्वच्छ—भग० १७।१०, भर्तृ० ३।१०६, ध्यम् 1. विष्ठा, लीद समुत्सृजेद्राजमार्गे वस्त्वमेध्यमनापदि — मनु० ९।२८२, ५।१२६ 2. अपशकुन, अशुभशकुन—अमेध्यं दृष्ट्वा तूर्ष्णीमपक्रामेत् —कात्या०। सम० —कुणपाशिन् (वि०) मुर्दा खाने वाला, —युक्त, —लिप्त (वि०) मलयुक्त, मैला, मलिन, गंदा।

अमेय (वि०) [न० त०] 1. अपरिमेय, सीमारहित —अमेयो मितलोकस्त्वम्—रघु० १०।१८ 2. अज्ञेय। सम० —आत्मन् अपरिमेय आत्मा को धारण करने वाला, महात्मा, महामना। (पुं०) विष्णु।

अमोघ (वि०)[न० त०] 1. अचूक, ठीक निशाने पर लगने वाला—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम् कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।९७, कामिलक्ष्येऽमोघैः -मेघ० ७३, 2. निर्भ्रान्त, अचूक (शब्द, वरदान आदि) —अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमार्पिषः—रघु० १।४४, 3. अव्यर्थ, सफल, उपजाऊ -यदमोघमयाप्तव्यं बीजमज्ञ त्वया—कु० २।५, इसी प्रकार 'बलम्, °शक्ति, °वीर्य, °क्रोध आदि, घः 1. अचूक 2. विष्णु। सम०—दर्शः देर देने में अटल, शिव, —दर्शिन् —दृष्टि (वि०) निर्भ्रान्त मन वाला, अचूक नजर वाला, —बल (वि०) अटूट शक्ति सम्पन्न, —वाच् (स्त्री०) वाणी जो व्यर्थ न जाय, वाणी जो अवश्य पूरी हो, (वि०) जिसके शब्द कभी व्यर्थ न हों —वांछित (वि०) जो कभी निराश न हो, —विक्रमः अटूट शक्तिशाली, शिव।

अम्ब् (भ्वा० पर०) 1. जाना 2. (आ०) शब्द करना।

अम्बः [अम्ब्+घञ्, अच वा] पिता, —म् 1. आंख, 2. जल, —न (अव्य०) स्वीकृति बोधक 'हां' 'बहुत अच्छा' अव्यय।

अम्बकम् [अम्ब्+ण्वुल्] 1. आंख ('त्र्यम्बक' में) 2. पिता।

अम्बरम् [अम्बः शब्द. तं राति धत्ते इति—अम्ब+रा+क] 1. आकाश, वायुमंडल, अन्तरिक्ष तावतजंयदम्बरे—रघु० १२।४१, 2. कपड़ा, वस्त्र, परिधान, पोशाक-दिव्यमाल्यांबरधरम्—भग० ११।११, रघु० ३।९, दिगंबर, साम्राम्बरा मही- समुद्र की परिधि से युक्त पृथ्वी 3. केसर 4. अबरक 5. एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। सम०- अन्तः 1. वस्त्र की किनारी 2. क्षितिज, - ओकस् (पुं०) स्वर्ग में रहने वाला, देवता, - (भस्मराजः) विलिप्यते मौलिभिरंबरौकसाम् - कु० ५।७९, -- डम्बः कपास,—मणिः सूर्य, लेखिन् (वि०) गगनचुंबी रघु० १३।२६।

अम्बरीषम् [अम्ब+अरिष् नि० दीर्घः] [कुछ अर्थों में 'अम्बरीषम्' भी] 1. भाड़, कड़ाही 2. घी, दूध 3. युद्ध, संग्राम 4. नरक का एक भेद 5. छोटा जानवर, केंचुआ 6. सूर्य 7. विष्णु 8. शिव।

अम्बष्ठः [अम्ब+स्था+क] 1. ब्राह्मण पिता तथा वैश्य माता से उत्पन्न सन्तान - ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते—मनु० १०।८, याज्ञ० १।९१, 2. महावत 3. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम, —ष्ठा कुछ पौधों के नाम—(क) गोपकन्या, वृश्चिका (जूही), (ख) पाठा (ग) चूचिका (च) अंबाड़ा, —ष्ठ, —ष्ठी अम्बष्ठ जाति की स्त्री।

अम्बा [अम्ब्+घञ्—टाप्] (वैदिक संबोधन 'अंबे; बाद की संस्कृत में—अम्ब) 1. माता। (स्नेह अथवा आदर पूर्ण संबोधन में भी इसका प्रयोग होता है) - भद्र महिला, भद्र माता—किमम्बाभिः प्रेषितः, अम्बानां कार्यं निर्वर्तय श० २, कृतोऽञ्जलिस्तत्र सदश्रु सस्वरं रघु० १४।६९, 2. दुर्गा, भवानी 3. पांडु की माता, काशिराज की कन्या [यह और इसकी दो बहनें भीष्म के द्वारा सत्यवती विचित्रवीर्य के लिए आहूत की गई थी। क्योंकि अम्बा की सगाई पहले ही शाल्व के राजा से हो चुकी थी, अतः इसे उसके पास भेज दिया गया। परन्तु दूसरे के घर में रही होने के कारण शाल्व के राजा ने उसे ग्रहण नहीं किया, अतः वह वापिस आई और उसने भीष्म से प्रार्थना की कि वह अब उसे स्वीकार करें, परन्तु उन्होंने अपना आजन्मब्रह्मचर्य भंग करना उचित नहीं समझा, फलतः वह जंगल में जाकर भीष्म से प्रतिशोध लेने की तपश्चर्या करने लगी। शिव उस पर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके दूसरे जन्म में अमोघ प्रतिशोध दिलाने की प्रतिज्ञा की। बाद में वह द्रुपद के घर शिखण्डिनी के रूप में पैदा हुई, और शिखंडी कहलाने लगी, और अंत में वही भीष्म की मृत्यु का कारण बनी]।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अम्बाड़ा-ला [अम्बा+ला+क+टाप्] उलयोरभेदात् अम्बाडा अपि | माता ।

अम्बालिका [अम्बाला+क+टाप् ह्रस्वः] 1. माता, भद्र महिला, (सम्मान तथा स्नेहसूचक शब्द) 2. अंबाडा नामक पौधा 3. काशिराज की सबसे छोटी पुत्री · विचित्रवीर्य की पत्नी, (जब राज्यश्री ने निस्सन्तान विचित्रवीर्य के लिए एक पुत्र पैदा करने के लिए व्यास का आवाहन किया · तब व्यास के द्वारा उत्पन्न 'पांडु' की यह माता बनी) ।

अम्बिका [अम्बा+कन्+टाप् ह्रस्वः] 1. माता, भद्र महिला, ('अम्बा' की भांति स्नेह और आदर सूचक शब्द), अतिके अम्बिके प्रथम सम विजन्तिम · मृच्छ० १, 2. शिव की पत्नी पार्वती, · आशीर्भिरेवंभावासु पुरःपाकाभिरभिनन्दितः कु० ६।९०, 3. काशिराज की दूसरी पुत्री, तथा विचित्रवीर्य की उपेक्षित पत्नी, अपनी छोटी बहन की भांति उसके भी कोई संतान नहीं हुई, फिर व्यास के द्वारा इसमें उत्पन्न पुत्र 'धृतराष्ट्र' कहलाये ऊपर दे० 'अम्बा' । सम० -पतिः, -भर्ता शिव, -पुत्रः, -सुतः धृतराष्ट्र ।

अम्बिकेयः, -यकः [अम्बिका+ढक्] [अधिक शुद्ध रूप 'आम्बिकेय' है] गणेश या कार्तिकेय, या धृतराष्ट्र ।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब्+उण्] 1. जल · गाम्भस्याम्बु सितमम्बु गाहन कार्ष्ण्य १०, 2. कबिर के अन्तर्गत जलीय उद्भेद । सम० -कणः पानी की बूंद, -कणकः (छोटी नाक वाला) घड़ियाल, किरातः घड़ियाल, -कीशः, -कूर्मः कछुवा, -केशरः नीलू का पेड़, -क्रिया पितृ तर्पण, पितरों को जलदान, -ग, -चर, -चारिन् (वि०) जल में रहने वाला, जलचर, -धनः ओला, -चत्वरम् झील, -ज जल में उत्पन्न, जलज (वि० स्यलज)--सुगंधीनि च माल्यानि स्थल-जान्यम्बुजानि च--रामा० (जः) 1. चन्द्रमा, 2. कपूर 3. सारस पक्षी 4. शंख, (जम्) 1. कमल, -इंदीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन भृंगार० ३, 2. इन्द्र का वज्र, °भूः, °आसनः कमल से उत्पन्न देवता, ब्रह्मा, °आसना लक्ष्मीदेवी, -जन्मन् (नपुं०) कमल, (पुं०) 1. चन्द्रमा 2. शंख 3. सारस पक्षी, -तस्करः जलचोर, मुर्ख, -द (वि०) जल देने वाला (-दः) बादल—नवाम्बुदानोकमुहेलिलंघने --रघु० ३।५३,—धरः 1. बादल -वनिताश्चाम्बुधरोद्भव योनयः- कु० ४।४३, शरत्पयोदाम्बुपरिग्रहोपरांधः रघु० ९।४४, 2. अबरक, -धिः 1. पानी का आशय, जलपात्र, -अम्बुधिफेनः -सिद्ध०, 2. समुद्र, क्षारः° भर्तृ० २।६, 3. चार की संख्या, -निधिः पानी का खजाना, समुद्र, देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्मथस्थ किं० ५।३०, -प (वि०) पानी पीने वाला (-पः) 1. समुद्र 2. वरुण—जल का स्वामी, पातः जलधारा, जलप्रवाह, नदी या झरना गङ्गाम्बुपातप्रतिमा मुहेभः---भट्टि० १।८, —प्रसादः, ---प्रसारणम् कनक, निर्मली का पेड़—फले कतकवृक्षस्य यद्यम्बुप्रसादकम्, न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति 1. -भवम् कमल, -भूत् (पुं०) 1. जलवाहक, बादल 2. समुद्र 3. अबरक,—मात्रज (वि०) जो केवल जल में ही उत्पन्न हो (-जः) शंख—मुच् (पुं०) बादल, -ध्वनितसूचितदम्भुचा जयम् किं० ५।१२,—राजः 1. समुद्र 2. वरुण,—राशिः जलाशय या पानी का भंडार, समुद्र · स्वयि ज्वलत्यवैमिवाम्बुराशौ · शि० ३।३, चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशेः कु० ३।६७, रघु० ६।५७, ९।८२, रुह् (नपुं०) 1. कमल 2. मोरंग, · रुहः, -रुहम् कमल-बिपूलिनाम्बुरुहा न सरिद्भुवः- किं० ५।१०,—रोहिणी कमल,—वाहः 1. बादल -तडिल्वन्तमिवाम्बुवाहम्-कि० ३।१, मनोभिमं प्रियमिवाम्बिवं विदि मामम्बुवाहम् मेघ० १०१, 2. क्षील 3. जलवाहक, -वाहिन् (वि०) पानी ले जाने वाला (-नी) बादल, -वाहिनी काठ का डोल, एक प्रकार का पानी उलीचने का बर्तन-विहारः जल क्रीड़ा, वेतसः एक प्रकार का बेंत, सरणम् जलप्रवाह, जलधारा, सर्पिणी जोंक · सेचनी जल छिड़कने का पात्र ।

अम्बुमत् (वि०) [अम्बु+मतुप्] पनीला, जिसमें जल हो, -ती एक नदी का नाम ।

अम्बुकृत (वि०) [अम्बु+च्वि+कृ+क्त] बढ़ बढ़ाया हुआ, होठों को बन्द करके अस्पष्ट रूप से कहा हुआ, मुंह में ही कहा हुआ, मुंह से थूक उछालते हुए कहा हुआ । —तम् बड़बड़ाने का शब्द, झाग के गुर्राने का शब्द—दधति कुटरभाजामत्र भल्लकूर्यनामुखरिल-मुरुणि स्यानम्बुकृतानि—उत्तर० २।२१, मा० ९।६ महावी० ५।४१ ।

अम्भ् (स्वा० आ०) [अम्भते, अम्भित] शब्द करना, आवाज करना ।

अम्भस् (नपुं०) [आप्(अम्भ्)+असुन्] 1 जल—कथमप्य-म्भसामन्तरात्मिपत्तेः प्रतीक्षते—कु० २।२७, स्वेदसा-मम्बरे प्राज्ञः कोऽम्भसां परिधिरित्यति—शि० २।४५, अम्भसाकृतम्—जल द्वारा किया हुआ, पा० ६।३।३, 2. आकाश 3. जन्मकुंडली में लग्न से चौथा स्थान । सम०, -ज (वि०) जल में उत्पन्न (-जः) 1. चन्द्रमा 2 सारस पक्षी, (-जम्) कमल—बाले तव मुग्धा-ब्जोजे कथमिदीवरद्वयम्—शृंगार० १७, इसी प्रकार पाद°, नेत्र°, खंडः-डम् कमलों का समूह—कूजद्व नमधश्चि श्रीमदम्भोजषण्डम्—शि० १।६४, °जन्मन् (पुं०), —जनिः,-योनिः कमलोत्पन्न देवता, ब्रह्मा की उपाधि,—जन्मन् (नपुं०) कमल,—दः-धरः बादल,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—धिः,—निधिः,—राशिः जल का भंडार, समुद्र—संभूयाम्भोधिमस्येति महान्तो नयापगा—शि० २।१००, यादवाम्भोनिधीनस्थे देवेव भवतः क्षमा —५८, इसी प्रकार—अम्भसां निधिः, शिखाभिराश्लिष्टः इवाम्भसां निधिः—शि० १।२०, °वल्लभः भृंगा,—गृह् (नपुं०-द्) —गृहम् कमल·· हेमाम्भोरुहसस्यानां तद्वाप्यो वास सांप्रतम—कु० २।४४, (पुं०) सारस पक्षी,—सारम् मोती,—सूः धूआं, अंधकार।

अम्भोजिनी[1] [अम्भोज+इनि+ङीप्] 1. कमलका पौधा, कमलों का समूह, ··°वननिवासविलासम्—भर्तृ० २।१८, 2. कमलों का समूह 3. वह स्थान जहां कमल बहुतायत से हों।

अम्मय (वि०) [स्त्री०—यी] [अप्+मयट्] जलीय, या जल से बना हुआ।

अम्र=तु० आम्र।

अम्ल (वि०) [अम्+कल्+अच्] 1. खट्टा, तीखा,—कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः (आहाराः) भग० १७।९, ··म्लः खटास, तीखापन, ६ प्रकार के रसों में से एक, 2. सिरका 3. लोनिया साग, इमली, 4. नींबू का वृक्ष 5. उद्गम ।. समः···अक्त (वि०) खट्टा किया हुआ, उद्गारः खट्टी डकार,—केशरः चकोतरे का वृक्ष,—गंधि (वि०) खट्टी गंध वाला, गोरसः खट्टी छाछ, · जंबीरः,—निंबकः नींबू का वृक्ष,—पित्तम् एक रोग जिसमें आहार आमाशय में पहुंच कर अम्ल हो जाता है, खट्टा पित्त,—फलः इमली का वृक्ष, (—लम्) इमली,··· रस (वि०) खट्टे स्वाद वाला (—सः) खटास, तेजाबी अंश,—वृक्षः इमली का वृक्ष, ··सारः नींबू का पौधा,—हरिद्रा आर्द्रहल्दीका पौधा।

अम्लकः [अम्ल+कन् (अल्पार्थे)] लकुच, बडहर।

अम्लान (वि०) [न० त०] 1. जो मुर्झाया न हो (पुष्पादिक) 2. स्वच्छ, साफ उज्ज्वल (चेहरा), निर्मल, बिना बादलों का,—पदार्थन्यायवादेषु कणोऽभ्यम्लानदर्शनः, —नः बाणपुष्पवृक्ष, दुपहरिया।

अम्लानि (वि०) [न० ब०] सशक्त, न मुर्झाने वाला,—निः (स्त्री०) [न० त०] 1. शक्ति 2. ताजगी, हरियाली।

अम्लानिन् (वि०) [न० त०] स्वच्छ, साफ, · नी बाणपुष्पवृक्षों का समूह।

अम्लि (म्ली) का [अम्ला+कन् टाप् इत्वम्, अम्ल+ङीष्+क+टाप् वा] 1. मुंह का खट्टा स्वाद, खट्टी डकार 2. इमली का वृक्ष।

अम्लिनत् (पुं०) [अम्ल+इमनिच्] खटास, खट्टापन।

अय (स्वा०आ०) कई बार भी, प०, विशेषतः उद् उपसर्ग के साथ) [अयते, अयांचक्रे, अयितुम्, अयित] जाना। अन्तर्° अन्तःप्रवेश करना, हस्तक्षेप करना,—इदृक्च उपसृत्यान्तरयति—मृच्छ० २, अभ्युद्° 1. निकलना (जैसा कि चन्द्रमा, सूरज) 2. फलना-फूलना, समृद्ध होना, उद्° 1. निकलना, उगना (जैसा कि सूर्य)—उदयति हि शशाङ्कः कामिनीगण्डपाण्डुः—मच्छ० १।५७, 2. प्रकट होना, दिखलाई देना—मुहूर्तं यज्ञियः प्राप्तश्चोदयत्सौम्ये याजकाः—महा० 3. फूलना, उदय होना, जन्म लेना, उत्पन्न होना—तदोदयेदन्यवधूनिषेधः—नै० ३।९२, यथाग्नेर्धूम उदयते—शत०, परा° (रात को लौ हो जाने पर) भागना, वापिस होना, भाग जाना।

अयः [इ+अच्] 1. जाना, चलना, फिरना (अधिकतर समास में—अस्तमयः), 2. पूर्वजन्म के अच्छे कृत्य 3. अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत—शुद्धपाणिरयान्वितः ····रघु० ४।२६, 4. खेलने का पासा। सम०—अन्वित, अयवत् (वि०) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला, —सुलभैः सदा नयवताऽध्यवता—कि० ५।२०।

अयक्ष्मम् स्वास्थ्य का होना, नीरोगता।

अयज्ञ (वि०) [न० ब०] यज्ञ न करने वाला··ज्ञः [न० त०] यज्ञ का न होना, बुरा यज्ञ।

अयज्ञिय (वि०) [न० त०] 1. जो यज्ञ के योग्य न हो (जैसा कि उड़द) 2. जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (जैसा कि यज्ञोपवीत से हीन बालक) 3. लौकिक, गंवारू।

अयत्न (वि०) [न० ब०] बिना ही यत्न किये होनेवाला —°पटवासतां—रघु० ४।५५,—त्नः [न० त०] श्रम या उद्योग का अभाव, अयत्नेन, —त्नतः—त्नात्, अनायास, बिना परिश्रम के, आसानी से, तत्परता के साथ।

अयथा (अव्य०) [न० त०] जिस प्रकार होना चाहिए वैसे न होना, अनुपयुक्त रूप से, अनुचित ढंग से, गलत तरीके से। सम०···अर्थ (वि०) 1. जो नितांत भाव के अनुकूल न हो, अर्थहीन, भावरहित 2. असंगत, अयोग्य, मिथ्या श० ३।२, अशुद्ध, गलत—अनुभवो द्विनिधो यथार्थोऽयथार्थश्च—तर्क सं०, °अनुभवः अशुद्ध या असत्य ज्ञान, गलत भाव,—इष्ट (वि०) 1. जो इच्छानुकूल न हो, नापसंद 2. अपर्याप्त, नाकाफी —उचित (वि०) अयुक्त, अनुपयुक्त,—त्व (वि०) 1. जो जैसा होना चाहिए वैसा न हो, अयुक्त, अनुपयुक्त, अयोग्य,—इदमयथातथं स्वामिनश्चेष्टितम्—वेणी० २, 2. अर्थहीन, व्यर्थ, लाभरहित (—थम्) (अव्य०) 1. अयुक्तता के साथ, अनुपयुक्तता के साथ, 2. व्यर्थ, अकारण, बेकार,—तद्गच्छति अ°···मनु० ३।२४०, —त्व्यम् अनुपयुक्तता, असंगतता, व्यर्थता,—दोतगम् आशातीत घटना का होना,—पूर्व, पूर्वं (वि०) जो पहले कभी न हुआ हो, अभूतपूर्व, अनुपम,—वृत्त (वि०) गलत तरीके से कार्य करने वाला, ···शास्त्रकारिन् (वि०) शास्त्रानुकूल कार्य न करने वाला, अधार्मिक, —अयथाशास्त्रकारी च न विभागे पिता प्रभुः—नारद०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अयथावत् (अव्य०) गलती से, अनुचितरीति से।

अयनम् [अय्+ल्युट्] 1. जाना, हिलना, चलना, जैसा कि रामायणम्' में 2. राह, पथ, मार्ग, सड़क -अगस्त्यवीथीमनुवंशदयनात्-- रघु० १६।४४, 3. स्थान, जगह, घर, 4. प्रवेशद्वार, व्यूह में प्रवेश करने का मार्ग--अपनेयु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः-- भग० १।११ 5. सूर्य का मार्ग, सूर्य की विषुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर गति, 6. (अत एव) इस मार्ग का अवधि-काल, छः मास, एक अयनबिंदु से दूसरे अयनबिंदु तक जाने का समय--दे० उत्तरायण, दक्षिणायन, 7. विषुव और अयनसंबंधी बिन्दु, **दक्षिणम् अयनम्**-शिशिरऋतु का अयन; **उत्तरम् अयनम्**-ग्रीष्म अयन 8. अन्तिममुक्ति -न्यायः पन्था विदुषेऽप्यनायन--श्वेता०। समः--कालः दोनों अयनों के मध्य की अवधि (दोनों अयनों का संधिकाल),--वृत्तम् ग्रहणरेखा।

अयन्त्रित (वि०) [न० त०] अनियंत्रित, जिसको रोका न जा सके, स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला।

अयाचित (वि०) [न० त०] 1. अनियंत्रित, 2. जिस पर प्रतिबंध न लगा हो 3. जिसकी काट-छांट न की गई हो, असज्जित (जैसा कि नाखून आदि), --मेघ० ९।२।

अयशस् (वि०) [न० ब०] यशोहीन, बदनाम, अपकीर्तिकर ('अयशस्कर' भी इसी अर्थ में, (नपुं०--शः) बदनामी, अपकीर्ति, कुख्याति, अपमान, निन्दा--अयशो महदाप्नोति मनु० ८।१२८, किमयशः नन् घोरमतः परम्--उत्तर० ३।२७, स्वभावलोलेऽयशः प्रमृष्टम्--रघु० ९।४१, । समः--कर (वि०) (स्त्री०--री) बदनाम, कलंकी।

अयशस्य (वि०) [न० त०] बदनाम, कलंकी।

अयस् (नपुं०) [इ+असुन्] 1. लोहा, -अभिजातमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु -रघु० ८।४३, 2. इस्पात, 3. सोना, 4. धातु, 5. अगर नामक लकड़ी। (पुं०) अग्नि। समः--अग्रम्,--अग्रकम् हथौड़ा, मूसल,--कांडः 1. लोहे का खाग 2. बड़िया लोहा 3. लोहे का बड़ा परिमाण,--कान्तः (अयस्कान्तः) 1. चुंबक, चुंबक पत्थर,--लब्धोऽयस्कान्तमाकृष्टुमयस्कान्तेन लोहवत्,--कुं० १।५१, न चकर्ष परस्मात्तदयस्कान्त इवायसम् --रघु० १७।६३, उत्तर० ४।२१, 2. मूल्यवान् पत्थर, °मणिः चुंबक पत्थर--अयस्कान्तमणिशलाकेव लोहधातुमन्तःकरणमाकृष्टवती--मा० १,--कारः लोहार, लोहे का काम करने वाला,--कीटम् लोहे का जंग या मर्चा--कुंभः लोहे का बर्तन, इंजिन का बायलर आदि, इसी प्रकार --दारम्, घनः लोहे का हथौड़ा अयोघनेनाग्नेः इवाभितप्तम् रघु० १।३३, चूर्णम् लोहे का चूरा, --जालम् लोहे की जाली,--दंडः लोहे की मुद्गर,--धातुः लोहधातु--उत्तर० ४।२१, प्रतिमा लोहे की मूर्ति, -मलम् लोहे का जंग, इसी प्रकार °रजः, °रसः, --मुखः लोहे की नोक लगा हुआ बाण--भेत्स्यत्यजः कुंभमयोमुखेन रघु० ५।५५,--शंकुः 1. लोहे की बर्छी 2. लोहे की कील, नोकदार लोहे की छड़--रघु० १२।९५, -शूलम् 1. लोहे का भाला 2. प्रबल साधन, तीक्ष्ण उपाय-सिद्धांः, (तु० आय शूलिकः काश्य० १०, अयःशूलेन अन्विच्छतीत्यायःशूलिकः),--हृदय (वि०) लोह-हृदय, कठोर, निष्ठुर, -मुहृदयो हृदयः प्रतिमर्जताम् रघु० ९।९।

अयस्मय (अयोमय) (नपुं०) [स्त्री०--यी] [अयस्+मयट्] लोहे या और किसी धातु का बना हुआ।

अयाचित (वि०) [न० त०] न मांगा हुआ, अप्रार्थित (भिक्षा, आहार आदि) --अमृतं स्यादयाचितम्--मनु० ४।५, -तम् अप्रार्थित भिक्षा। समः -उपनत, --उपस्थित बिना निमंत्रण या प्रार्थना के पहुंचा हुआ,--अयाचितोपस्थितमंबु केवलम्-- कु० ५।२२, -वृत्तिः बिना मांगी या अप्रार्थित भिक्षा पर जीवित रहना।

अयाज्य (वि०) [न० त०] 1. (व्यक्ति) जिसके लिए यज्ञ नहीं करना चाहिए, या जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (शूद्रादिक), 2. (अत एव) जाति-बहिष्कृत, पतित 3. यज्ञ करने का अनधिकारी। समः--याजनम्,--संयाज्यम् उस व्यक्ति के लिए यज्ञ करना जिसके लिए किसी को यज्ञ नहीं करना चाहिए -मनु० ३।६५, ११।६०।

अयात (वि०) [न० त०] न गया हुआ, । समः--याम (वि०) जो बासी न हो, ताजा, जो उपयोग में आने के कारण जीर्ण-शीर्ण न हुआ हो,--°मं च यौवनम् दश० १०३, ताजा, खिला हुआ।

अयाथार्थिक (वि०) [स्त्री० --की] [न० त०] 1. जो सत्य न हो, न्याय विरुद्ध, अनुचित 2. अवास्तविक, अयथार्थ, वेतुका।

अयाथार्थ्यम् [न० त०] 1. अयोग्यता, अशुद्धता 2. बेतुकापन, असंगतता।

अयानम् [न० त०] 1. न जाना, न हिलना-डुलना, ठहरना, टिकना 2. स्वभाव।

अयि (अव्य०) [इ+इवि] 1. मित्रादिकों के प्रति लघु संबोधन, ओह, ए, अरे आदि सामान्य संबोधन बोधक अव्यय, --अयि विधेकविधांतमभिप्रेतम् मालवि० १, अयि भो महर्षिपुत्र भग० ७, अयि विद्युन्मदानां स्वमपि न दृश्यं न जानासि मुच्छ० ५।२२,दे० भामि० १।५, ११,४४। 2. प्रार्थना या अनुरोध बोधक अव्यय --अयि संप्रति देहि दर्शनम् कु० ४।२८, प्रोत्साहन तथा अनुनय के अर्थ में भी--अयि मन्थरमन्थरं वहन् तन्वंगि यदि मनाक्कृशस्ततः भामि० २।१५०, 3. सामान्य सानुग्रह-पृच्छा द्योतक अव्ययत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—अपि जीवितनाथ जीवसि— कु० ४।३,—अयोदमेवं परिहासः— ५।६२ ।

अयुक्त (वि०) [न० त०] 1. जो जुता न हो, या जिस पर जीन न कसा गया हो, 2. जो मिला हुआ न हो, संबद्ध या संयुक्त न हो 3. जो भक्त या धार्मिक न हो, ध्यान रहित, उपेक्षाशील 4. अभ्यासमपेक्ष, अनभ्यस्त, जो नियुक्त न हुआ हो, °बुद्धि, °चार 5. अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त---अयुक्तोऽयं निर्देशः-- पा० ४।२।६४, महा० 6. झूठ, गलत । सम०- कृत् अनुचित या गलत काम करने वाला,— पदार्थः शब्द का वह अर्थ जो दिया न गया हो, जैसे कि 'अपि' शब्द, रूप (वि०) अगायत, अनुपयुक्त,—अवृक्तरूप किमतः परं वद— कु० ५।५९ ।

अयुग—गल (वि०) [न० त०] 1. पृथक्, अकेला 2. ऊबड़-खाबड़, विषम । सम०- अक्षि (पुं०) आग,—नेत्रः— नयनः, —शरः देo अयुग्म के अन्तर्गत, —सप्तिः सात घोड़ों वाला, सूर्य ।

अयुगपद् (अव्य०) [न० त०] 1. सब एक साथ नहीं, क्रमशः यथाक्रम, । सम०- ग्रहणम् क्रमपूर्वक ग्रहण-ज्ञानं,—भावः अनुक्रम, आनुक्रमिकता ।

अयुग्म (वि०) [न० त०] 1. अकेला, न्यारा 2. निराला, विषम, (संख्या) । सम०- छदः, पत्रः सप्तपर्ण नामक पौधा, -नयनः,—नेत्रः,—लोचनः विषम (३) आँखों वाला, शिव—कु० ३।५१।६९,— बाणः,- शरः विषम (५) बाणों वाला, कामदेव, -वाहः,—सप्तिः सात घोड़ों वाला सूर्य ।

अयुज् (वि०) [न० त०] निराला, विषम (विप० युज् =सम) । सम०- इषुः, -बाणः, -शरः पांच बाणों वाला, कामदेव, -छदः=सप्तपर्णः—वसुरयुक्छदः गुच्छसुगन्धयः— शि० ६।५०, -पलाशः, सप्तपलाशः, —पाद,—यमक्रम पहले और तीसरे पाद में भिन्न अर्थों वाले एक से अक्षर रखने वाला अनुप्रास का एक भेद,—नेत्रः, -लोचनः, अक्षः, शबित शिव ।

अयुत (वि०) [न० त०] न मिला हुआ, पृथक्कृत, असंबद्ध, तम दस हजार, दस सहस्र की संख्या । सम०- अध्यापकः अच्छा अध्यापक, सिद्ध (वि०) (केवल० में) अपृथक्करणीय, अन्तर्निहित,- सिद्धिः (स्त्री०) ऐसा प्रमाण जिसमें निश्चय हो कि कुछ वस्तुएं तथा मान्यताएं अपृथक्करणीय, तथा अन्तर्हित हैं ।

अये (अव्यय) [इ+एच्] 1. संबोधनात्मक अव्यय या संबोधन का नम्र प्रकार (--अयि) अये गौरीनाथ विपूरहर शंभो त्रिनयन--भर्तृ० ६।१२३ 2. विस्मयादि द्योतक अव्यय- (क) ओह, अये आदि अर्थों में अनूदित आश्चर्य तथा विस्मय की भावना,—अये मालविः--श० ६ (ख) उदासी, चिन्ता—अये देव-पादपद्मोपजीविनोऽस्थेयम्- मुद्रा० २, शोक (ग) क्रोध (घ) सत्यवली, क्षोभ (ङ) प्रत्याहरण (च) भय (छ) थकावट ।

अयोगः [न० त०] 1. अलगाव, वियोग, अन्तराल 2 अयोग्यता, अनौचित्य, असंगति 3. अनुचित सबंध 4. विवुर, अनुपस्थित प्रेमी या पति 5. हथौड़ा (अयोघ तथा अयोघन) 6. अरुचि ।

अयोगवः (स्त्री० वा, -वी) [अन् इव कठिना गौर्वाणी यस्य ब० स० निo अच्] शूद्र पिता और वैश्य माता की सन्तान दे० आयोगव ।

अयोग्य (वि०) [न० त०] जो योग्य न हो, अनुपयुक्त, निरर्थक ।

अयोध्य (वि०) [न० त०] जिस पर आक्रमण न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके, —अयोध्यां महाबाहो अयोध्यां प्रतिभाति मः रामा०, --क्या सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या नगरी, रघुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी ।

अयोनिः (वि०) [न०ब०] 1. अजन्मा, नित्य,—जगद्योनिरयोनिस्त्वम् कु० २।९ 2. जो कारण से उत्पन्न न हो, अपमें अथवा अवैध रूप से उत्पन्न, निः (स्त्री०) [न० त०] जो योनि न हो, निः ब्रह्मा, शिव, सम०,—ज,—जन्मन् (वि०) जो अपने से न जन्मा हो, सामान्य जन्मपद्धति के अनुसार जिसने जन्म न लिया हो—तनयाम् अयोनिजाम् रघु० ४८, कन्या-रत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते महावी० १।३०, °ईशः ईश्वरः शिव, (--जा)--संभवा जनक की पुत्री सीता जो कि खेत के खूह से उत्पन्न हुई थी ।

अयौगपद्यम् [न० त०] समकालीनता का अभाव ।

अयौगिक (वि०) [स्त्री० की] [न० त०] व्याकरण के नियमानुसार जो शब्द व्युत्पन्न न हो ।

अरः [ऋ+अच्] पहिये के अरे या पहिये का अर्धव्यास (रेमी)— अरैः संधार्यते नाभिः नाभौ चाराः प्रतिष्ठिताः पंच० १।८१, । सम० अंतर (ब० व०) अरों का अन्तराल -त्रिक्रम० १।६, -घट्टः, -घट्टकः 1. रहट जिसके द्वारा कूएं से पानी निकाला जाता है, °घटी रहट में प्रयुक्त किया जाने वाला डोल, -कर्मन् सासाद्य टोमसर्गेण संपरेतेवनीतिः—पंच० ४, 2. गहरा कुआं ।

अरजस्, अरज, अरजस्क (वि०) [न० ब०] 1 धूल या गर्द से रहित, साफ स्वच्छ (अरजः भी) 2, रंज या वासना से मुक्त 3. जिसे मासिक धर्म न होता हो, (स्त्री०- जाः) वह कन्या जिसे अभी रजोधर्म आरंभ नहीं हुआ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरज्जु (वि०) [न० ब०] जिसमें रस्सियां न लगी हों, रस्सियों से विरहित; (पशु०) कारागार।

अरणिः (पु०,स्त्री०) [स्त्री०-णी] शमी की लकड़ी का टुकड़ा, जिसके घर्षण से यज्ञ के अवसर पर अग्नि जलाई जाती है, आज उत्पन्न करने वाली लकड़ी— गु०, पञ्च० ११२१६, **णी** (द्वि० व०) यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने के लिए लकड़ी की दो समिधाएं, —**णिः** 1. सूर्य, २ आग 3. फलीता, चकमक पत्थर।

अरण्यम् (कई बार पुं० भी) [अर्यते गम्यते ऽसौ अरण्यम्—ऋ+अन्य] जंगल, वन, उजाड़, —प्रियानासो कृतस्नं किल जगदरण्यं हि भवति उत्तर० ६।३०, माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी, अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम् हि० प्रस्ता० ४४, जंगली, जंगल में उत्पन्न (यदि समस्त पद का प्रथम खण्ड हो), **बीजम्** जंगली बीज, इसी प्रकार **मार्जारि, मूषकः** । मप० - **अध्यक्षः** वन की देख रेख करने वाला, राजिक; **अयनम्,—यानम्** जंगल में चले जाना, वानप्रस्थ लेना,—**ओकस्, सद्** (वि०) 1. अरण्यवासी, जंगल में रहने वाला— वैक्लव्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः—शा० ४।५, 2. विशेषतः वह जिसने अपना परिवार छोड़ दिया हो और वानप्रस्थी हो गया हो, जंगल में रहने वाला,—**कदली** जंगली केला,— **गजः** जंगली हाथी (जो पालतू न हो),—**चटकः** जंगली चिड़िया —**चन्द्रिका** (या०) जंगल में चन्द्रमा का प्रकाश (आलं०) निरर्थक श्रृंगार या आभूषण, ऐसा कृत्रिम-सिंगार जिसे कोई देखने-सराहने वाला न हो, इसी लिए, मल्लिनाथ स्त्रीणां प्रियालीफलेषु हि वेष.— कु० ७।२२, पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं— अन्यथा-ऽरण्यचन्द्रिका स्यादिति भावः; **चर** (°ण्येचर भी), **-जीव** (वि०) जंगली, ज (वि०) वन्य, **धर्मः** जंगली अवस्था या प्रथा, जंगली स्वभाव, —तथारण्य-धर्माद्धियोज्य ग्राम्यधर्म नियोजित पञ्च० १, **-नृपतिः -राज्** (द्व) राजः जंगल का स्वामी, सिंह या व्याघ्र का विशेषण, इसी प्रकार—अरण्यानी पतिः,—**पंडितः** वन में विद्वान् (आलं०) मूर्ख पुरुष जो वन में ही (जहां कोई सुनने-टोकने वाला नहीं होता) अपना पाण्डित्य प्रकट कर सके; **भव** (वि०) जंगल में उत्पन्न, जंगली, **मक्षिका** डांस, **-यानम्** जंगल में चले जाना, **रक्षकः** अरण्यपाल, **-रुदितम्** (°ण्ये) जंगल में रोना, अरण्यरोदन, (आलं०) ऐसा रोना जिसे कोई सुनने वाला न हो, निष्फल कथन —अरण्ये मया रुदितम् प्र० २, प्रोक्तं श्रद्धाविहीनस्य अरण्यरुदितोपमम्—पञ्च० १।३६३, **-वदलमयूरारण्यरुदितैः** अमरु० ७६, **-वायसः** जंगली कौवा, पहाड़ी कौवा, **-वासः,—समाश्रयः** जंगल में चले जाना, जंगल में आवास,—**वासिन्** (वि०) जंगल में रहने वाला (पुं०) अरण्यवासी, वानप्रस्थी,—**विलपितम्, -विलापः** (°प्ये°) = °रुदितम् —**श्वन्** (पुं०) जंगली कुत्ता, भेड़िया, —**सभा** जंगल की कचहरी।

अरण्यकम् [अरण्य+कन्] जंगल, वन।

अरण्यानिः-नी (स्त्री०) [अरण्य+आनुक् ङीप् च] एक बड़ा जंगल, या बीहड़ मरुभूमि, विस्तृत उजाड़।

अरत (वि०) [न० त०] 1. मन्द, विरक्त, अनासक्त 2. असन्तुष्ट, तुष्टिरहित, पराङ्मुख,—**तम्** अमैथुन।

समः—**व्रत** (वि०) मैथुन करने में न लजाने वाला (—**तः**) कुत्ता (गलियों में बिना किसी प्रकार की लज्जा के मैथुन करने वाला)।

अरतिः (वि०) [न० त०] 1. असन्तुष्ट 2. सुस्त, निठल्ला, —**तिः** (स्त्री०) [न० त०] 1. आमोद-प्रमोद का अभाव (प्रेम की प्रबल उत्कण्ठा से पैदा होने वाला), स्वाभीष्टवस्त्वलोभेन चेतसो या ऽवस्थितिः अरतिः सा—सा० द० 2, पीड़ा, कष्ट 3. चिन्ता, खेद, बेचैनी, क्षोभ, संश्लेषे भूशमरतिर्हि सङ्विियोगः किं० ५।५१, 4. असन्तोष, संतोषाभाव, 5. निठल्लापना, सुस्ती 6. एक पैत्तिक रोग।

अरत्निः (पु० स्त्री०) [ऋ+कनि—रत्निः, न रात्निः यस्य] 1. कुहनी, कई बार मुक्का, 2. एक हाथ की माप, कुहनी से कानी उंगली के छोर तक की माप, लंबाई नापने का पैमाना - अरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना—अमर०, सप्त्यगुलिकपर्वस्थैर्मध्ये प्रामाणिकः करः, बद्धमुष्टिकरो रत्निररत्निः सकनिष्ठिकः। हला०, कि० १८।६, ।

अरत्निकः [अरत्नि+कन्] कुहनी।

अरम् (अव्य०) [ऋ+अम्] 1. तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित 2. तत्परता के साथ।

अरमण, अरमाण (वि०) [न० त०] 1. जो सुखकर न हो, असन्तोषजनक, अरुचिकर 2. अविराम, अनवरत।

अररम् [ऋ+अरन्] किवाड़ का दिला—सरभसमररावि दारणावात्य महावी० ६।२७, (—**रः-री**, भी)—चञ्च्-कोटिविपाटितारपट्टो मास्याण्हें पञ्जरात्—भामि० १।५८, 2. ढक्कन, म्यान, —**रः** आरी।

अररे (अव्य०) [अर !-रा -के] (क) बड़े उतावलेपन (ख) तथा घृणा और अवज्ञा को प्रकट करने वाला संबोधन द्योतक अव्यय—अररे महाराज प्रति कुतः क्षत्रियपा. गण० १

अरविन्दम् [अराः चक्राङ्गानीव पत्राणि विन्दते—अर+विन्द्+अ] 1. कमल (कामदेव के पांच बाणों में से एक—दे० 'पंचबाण' के नीचे)—शक्यमरविन्दसुरभिः—शा० ३।६, यह सूर्य-कमल है —तुल० सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम्—कु० १।३२; स्थल°, चरण°, मुख° आदि 2. लाल या नील कमल,—**दः** 1. सारस पक्षी, 2.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तांबा। सम०—अक्ष (वि०) कमल जैसी आंखों वाला, विष्णु की उपाधि,—दलप्रभम् तांबा,—नाभिः, —भः विष्णु,—हृदयो मदीये देवश्चकास्तु भगवानरविन्दनाभः—भामि० ४।८,—सद् (पुं०) ब्रह्मा।

अरविन्दिनी [अरविन्द+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा - प्रपीतमधुकृद्भृङ्गैः सुविदेवारविन्दिनी —भट्टि० ५।७०, 2. कमल फूलों का समूह 3. वह स्थान जहां कमल बहुतायत से होते हों।

अरस (वि०) [न० ब०] 1. रसहीन, नीरस, फीका 2. मंद, बुद्धिहीन 3. निर्बल, बलहीन, अयोग्य।

अरसिक (वि०) [न० त०] 1. रूखा, रसहीन, फीका, बिना स्वाद का, 2. भावना या स्वाद से विरहित, मन्द, काव्यादि का रस लेने में असमर्थ, कविता के मर्म को न जानने वाला, —अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख, मा लिख, मा लिख-उद्भट०।

अराग, अरागिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] शान्त, वासना रहित,—तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे—वेणी० १।४।

अराजक (वि०) [न० ब०] बिना राजा का, जहां राजा न हो—नाराजके जनपदे रामा०, मनु० ७।३, अराजक-के जीवलोके दुर्बला बलवत्तरैः, पीड्यन्ते न हि वित्तेषु प्रभुत्वं कस्यचित्तदा। महा०, शौच्य राज्यमराजकम्—चाण० ५७।

अराजन् (पुं०) [न० त०] जो राजा न हो। सम०—भोगिन (वि०) राजा के काम के अनुपयुक्त,—स्थापित (वि०) जो किसी राजा द्वारा प्रतिष्ठित न किया गया हो, अवैध, गैरकानूनी।

अरातिः [न० त०] 1. शत्रु, दुश्मन, —देशः सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन् हृदाः पूरिताः—वेणी० ३।३१, 2. छः की संख्या। सम०—भंगः शत्रुओं का नाश।

अराल (वि०) [ऋ-विच् अरम् आलाति, ला+क] मुड़ा हुआ, टेढ़ा, -यादवरालाङ्गनाः—मालवि० २।३, —लः 1. वक्र भुजा 2. मतवाला हाथी,—ला पुच्छली, वेश्या, वारांगना। सम०—केशी घुंघराले बालों वाली स्त्री, —भित्त्वा निराकामदरालकेश्याः—रघु० ६।८१, —पक्ष्मन् (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला—कु० ५।४९।

अरिः [ऋ+इन] 1. शत्रु, दुश्मन, -विजितारिगुरुस्मरः—रघु० १।५९, ६१, ४।४ 2. मनुष्य जाति का शत्रु (मनुष्य के मन को व्याकुल करने वाले ६ शत्रु बताये गये हैं—कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः; —कुर्वारियद्वर्गमजेयम् - कि० १।९ 3. छः की संख्या 4. गाड़ी का भाग 5. पहिया। सम०—कर्षण (वि०) शत्रुओं को पीड़ित या पराभूत करने वाला, —कुलम् 1. शत्रुओं का समूह, 2. शत्रु, —घ्नः शत्रुओं का नाश करने वाला, —चिन्तनम्,—चिंता शत्रुओं के नाश के लिए बनाई हुयी योजनाएँ, चिदेश विभाग का प्रशासन, —नन्दन (वि०) शत्रु को प्रसन्न करने वाला, शत्रु को विजय दिलाने वाला, —भद्रः बड़ा शक्तिशाली शत्रु—रघु० १४।३१,—सूदनः,—हन्,—हिंसकः शत्रुओं का नाश करने वाला—रघु० ९।१८।

अरिक्थभाज्, अरिक्थीय (वि०) [न० त०] जो पैतृक संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी न हो (जैसे कि कोई नपुंसकता आदि अवगुणों के कारण अनधिकृत कर दिया गया हो)।

अरित्रम् [ऋ+इत्र] 1. डांड, -लोलैरस्त्रिदेवचरणैरिवाभितः—शि० १२।७१, 2. पतवार, लंगर।

अरिन्दम (वि०) [अरि+दम्+खच्, मुमागमः] शत्रुओं का दमन करने वाला, शत्रु-विजयी, शत्रु को जीतने वाला।

अरिष्म् [न० त०] लगातार वर्षा होना, —षः एक प्रकार का गुदारोग।

अरिष्ट (वि०) [न० त०] अक्षत, पूर्ण, अविनाशी, निरापद —ष्टः 1. बगुला, 2 जंगली कौवा 3. शत्रु 4. नाना प्रकार के पौधों के नाम (क) रीठे का वृक्ष (ख) नीम का वृक्ष 5 लहसुन, —ष्टम् 1. दुर्भाग्य, अनिष्ट, बदकिस्मती 2. दुर्भाग्यसूचक अनिष्टसूचक घटना, अपशकुन 3. प्रतिकूल लक्षण-विशेषतः मृत्युसूचक रोगिणो मरणं यस्मादवश्यं भावि लक्षणं, तल्लक्षणमरिष्टं स्याद्विष्टम्प्यभिधीयते 4. सौभाग्य, अच्छी किस्मत, सुख 5. सौरी 6. छाछ 7. मादक शराब —शि० १८।७७, । सम०—गृहम् सूतिकागृह,—तातिः (वि०) सौभाग्यशाली या सुखी बनाने वाला, शुभ, —तिः (स्त्री०) सुरक्षा, सौभाग्य का उत्तराधिकार, अनवरत सुख, तदन्नभवता निष्पन्नानिषां कामभरिष्टतातिमाशास्महे —महावी० १, -मथनः शिव, विष्णु,- शय्या प्रसूता का पलंग अरिष्टशय्या परितो विसारिणा- -रघु० ३।१५, -सूदनः, -हन् (पुं०) अरिष्टनाशक, विष्णु की उपाधि।

अरुचिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अनिच्छा, किसी वस्तु का अच्छा न लगना,-क्व सा भोगानामुपरुणद्धि चेतः-का० १४६ 2. भूख न लगना, स्वादु न लगना, उक्तिः जाना—सन्निपातक्षयश्वासकासहिक्कारुचिप्रणुत्-सुश्रु० 3. संतोषजनक व्याख्या का अभाव।

अरुचिर, अरुच्य (वि०) [न० त०] भला न लगने वाला अरुचिकर, उकताहट पैदा करने वाला।

अरुज् (वि०) [न० त०] रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग।

अरुज (वि०) [न० त०] स्वस्थ, नीरोग।

अरुण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [ऋ+उनन्] 1. अधरक्त या कुछ २ लाल, भूरा, पिंगल, लाल, गुलाबी (सांध्य लालिमा के विपरीत प्रभातकालीन सूर्य का रंग) —नयनान्यरुणानि घूर्णयन्—कु० ४।१२, 2. विस्मित,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्याकुल 3. मूक—ण: 1. लाल रंग, उषा का रंग या प्रात: कालीन संध्यालोक, 2. सूर्य का सारथि—मूर्त कृपा, —आविष्कृतारुण पुरःसरःएकतोऽर्क:—श० ४।१, ७।४ विभावरी यद्यरुणाय कल्पते—कु० ५।४४, रघु० ५।७१, 3. सूर्य—रागेण बालारुणकोमलेन कु० ३।३०, संसृज्यते सरसिजैरुणांशुभि:···रघु० ५।६९,—णम् 1 लाल रंग, 2. सोना 3. केसर। सम०—अग्रज: गरुड़,—अनुज:,—अवर: अरुण का छोटा भाई, गरुड़, —अक्षि (पुं०) सूर्य,—आत्मज: 1. अरुण का पुत्र अटायु, 2. शनि, सावर्णि मनु, कर्ण, सुग्रीव, यम और अश्विनीकुमार (—जा) यमुना, तापती,—ईक्षण (वि०) लाल आंखों वाला—उदय: दिन निकलना, उषा, —चतस्रो घटिका प्रातरुणोदय उच्यते,—उपल: लाल, कमलम् लाल कमल,— ज्योतिस् (पुं०) शिव,— प्रिय: लाल फूल या कमलों का प्यारा, सूर्य (—या) 1. सूर्य पत्नी 2. छाया,—लोचन (वि०) लाल आंखों वाला (—न:) कबूतर,—सारथि: जिसका सारथि अरुण है, सूर्य।

अरुणल, अरुणीकृत (वि०) [अरुण+क्विप् (ना० धा०)+ क्त, अरुण+च्वि+कृ+क्त इत्वम्] लाल किया हुआ, लालरंग में रंगा हुआ, पिंगल रंग का किया हुआ स्तनाङ्गरागारुणिताच्च कन्दुकात्—कु० ५।११।

अरुन्तुद (वि०) [अरुषि मर्माणि तुदति—इति-अरुस्+तुद्+ खश् मुम् च] मर्मस्थानों को छेदने वाला, घायल करने वाला, पीड़ाजनक, दुःखद, मर्मभेदी—अरुन्तुदमिवालान-मनिर्वाणस्य दन्तिन:—रघु० १।७१, कि० १४।५५, 2. तीक्ष्ण, उग्र कटुस्वभाव।

अरुन्धती [न रुन्धती प्रतिरोधकारिणी] 1. वशिष्ठ की पत्नी—अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम्—रघु० १।५६, 2. प्रभात कालीन तारा, वशिष्ठ की पत्नी, सप्तर्षिमंडल का एक तारा (पुराणों के अनुसार वशिष्ठ सप्तर्षियों में एक हैं तथा अरुन्धती उनकी पत्नी। अरुन्धती, कर्दम प्रजापति की (देवहूति से उत्पन्न) ९ पुत्रियों में से एक थी। वह दाम्पत्य-महत्ता का सर्वश्रेष्ठ नमूना है, भार्योचित भक्ति के कारण विवाह संस्कारों में वर के द्वारा उसका आवाहन किया जाता है। स्त्री होते हुए भी उसको वही सम्मान दिया गया है, जो सप्तर्षियों को तु० कि० ६।१२, अपने पति की भांति वह भी रघुवंश के अपने निजी विभाग की निर्देशिका और नियन्त्रिका रही, राम से परित्यक्त सीता का निर्देशन देवदूत के रूप में उसी ने किया। कहते हैं कि जिनका मरण-काल निकट हो, उन्हें अरुन्धती तारा दिखलाई नहीं देता—हि० १।७६)। सम०—आनि:,—नाथ:—पति: वशिष्ठ, सप्त-र्षिमंडल का एक तारा,—दर्शनन्याय: देo 'न्याय' के नीचे।

अरुष्ट (वि०) [न० त०] अक्षुब्ध, शान्त।

अरुष (वि०) [न० त०] 1. अक्षुब्ध, 2. चमकीला, उज्ज्वल।

अरुष् (वि०) [ऋ+उसि] घायल, चोट खाया हुआ,—(पुं—ष:) 1. आक का पौधा, मदार 2. लाल लदिर,—(नपुं०) 1. मर्मस्थल, घाव, व्रण (पुं० भी)। सम०—कर (वि०) क्षतविक्षत करने वाला, घायल करने वाला।

अरूप (वि०) [न० ब०] 1. रूप रहित, आकार शून्य 2. कुरूप, विरूप 3. विषम, असम,—पम् 1. एक बुरी या भद्दी आकृति 2. सांख्यों का प्रधान तथा वेदान्तियों का ब्रह्म। सम०—हार्य (वि०) जो सौन्दर्य से आकृष्ट या वशीभूत न किया जा सके, अरूपहार्य मदनस्य निग्रहात्—कु० ५।५३।

अरूपक (वि०) [न० ब०] बिना किसी आकृति या रूपक के, जो आलंकारिक न हो, शाब्दिक।

अरे (अव्य०) [ऋ+ए] एक संबोधनात्मक अव्यय—(क) छोटों को बुलाने के लिए—आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्य:, न वा अरे पत्य: कामायाय: पति: प्रियो भवति—शत० (याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा) (ख) क्रोधावेश में—अरे महाराज प्रति कृत: क्षत्रियाः—उत्तर० ४ (ग) ईर्ष्या प्रकट करने के लिए।

अरेपस् (वि०) [न० ब०] 1. निष्पाप, निष्कलंक 2. निर्मल पवित्र।

अरे रे (अव्य०) [अरे-अरे इति द्वीप्सायां द्विरुक्तम्] विस्मयादि द्योतक अव्यय (क) क्रोध पूर्वक बुलाना —अरे रे दुर्योधनप्रमुखा: कुरुबलसंदाप्रभव:—वेणी० ३, अरे रे चाटु—त० (ख) अपने से छोटों को संबोधित करना या घृणापूर्वक बुलाना—अरे रे राधागर्भभारभूत सूतापसद—त०।

अरोक (वि०) [न० ब०] कान्तिहीन, मलिन, धुंधला।

अरोग (वि०) [न० ब०] रोगमुक्त, नीरोग, स्वस्थ अच्छा,—अरोगा: सर्वसिद्धार्थाश्चतुर्वर्षशतायुष:—सुश्रु०,—ग: अच्छा स्वास्थ्य न नाममात्रेण करोत्यरोगम्—हि० १।१६७।

अरोगिन्, अरोग्य (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ।

अरोचक (वि०) [स्त्री० -चिका] [न० त०] 1. जो चमकीला न हो 2. भूख मंद करने वाला, क: भूख का कम लगना, अरुचिकर, जुगुप्सा।

अर्क् (चु० प०) 1. गर्व करना 2. स्तुति करना।

अर्क: [अर्क्+घञ्—कुत्वम्] 1. प्रकाशकिरण, बिजली की चमक 2. सूर्य,—आविष्कृतारुणपुरःसर: एकतोऽर्क:—शं० ४।१, 3. अग्नि 4. स्फटिक 5. ताम्र 6. रविवार 7. आक का पौधा, मदार,—अर्कस्यापरि शिथिल च्युत-मिव नवमल्लिकाकुसुमम्—श० २।९, यमाश्रित्य न विश्राम्यं क्षुधार्ता यान्ति सेवका:, सोऽर्कवल्मृगतिस्त्याज्य:

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदाशुष्कफलोद्गि सत्—पंच० १।५१, 8. इन्द्र, 9. आहार 10 बारह की संख्या। समः -अहस् (पुं०) -उपलः सूर्यकान्तमणि,—आह्वः मदार, आक,—इन्दुसङ्गमः सूर्य और चन्द्रमा का संयोग,(दर्श, या अमावस्या), -कान्ता सूर्यपत्नी, -चन्दनः एक प्रकार का रक्तचन्दन, -जः कर्ण की उपाधि, यम, सुग्रीव (--जी) स्वर्ग के वैद्य अश्विनीकुमार, तनयः सूर्य पुत्र कर्ण का विशेषण, यम और शनि देo 'अरुणात्मज' (—या) यमुना और ताप्ती नदियाँ, त्विष् (स्त्रीo) सूर्य की ज्योति, दिनम्, वासरः रविवार, तन्दनः, पुत्रः,—सुतः, सुनुः शनि, कर्ण और यम के नाम, -बन्धुः, बान्धवः कमल (सूर्य-कमल), -मण्डलम् सूर्यमंडल, -विवाहः मदार से विवाह (सीधा विवाह करने वाले पुरुष के लिए पहले मदार से विवाह करने का विधान किया गया है, ताकि सौभाग्य पत्नी चौथी हो जाय); -चतुर्थीविवाहार्थं तृतीयेऽह्नि समुद्वहेत् -काश्यप०।

अर्गलः—लम्
अर्गला—ली { अर्ज्+कलच् खजकवाटि० कुत्व—ताराo } अंगड़ी, किल्ली या मूसल (वह दरवाजे को बन्द करके रोकने के लिए लकड़ी के बने यन्त्र हैं) खोड़ा, खिड़की, आगल, --पुरार्गलार्दलधभुजो बभोज- रघु० १८।४, १६।६, अलाघवार्गलम् मृच्छ० २, सर्वप्रवेश्य द्रुतपातितार्गला निमीलितालोक भियाऽमरावती -शि० १, आलo से यह शब्द बाधा, रोक या अवरोध के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होता है--ईप्सित सत्कवाताद्विद्धि मार्गेऽर्गलाम्-मालवि० -रघु० १।७९, वांछित कार्यसंपादनस्य इव प्रवृत्तः ५।४५, कंठे केवलमर्गलेव निहिता जातश्रमं निगेच्छतः-काव्य० ८, दे० अनर्गल भी. 2. तर्क या झाल।

अर्गलिका | अर्गला+कन्+टाप् इत्वम् | छोटी आगल, छोटी चटखनी।

अर्घ् (स्वाo पराo) | अर्घति, अर्घित | मूल्यवान् होना मूल्य रखना, मूल्य लगाना,--परीक्षेतां यत्न न मणिक देवी नार्घित्वं स्वनामि समुद्रजातेन शुभाषि०।

अर्घः | अर्घ्+घञ् | 1. मूल्य, क्रीमत -कुर्यर्घ्यं यथापण्यं —मनु० ८।३९८ याज्ञ० २।२५१, कुन्त्या, स्वकुशीलकता हि मणयो वैदूर्यस्य फल्गिता.—भर्तृ० २।१५, वास्तविक मूल्य से घटी हुई अवमानित इतिप्रकार अनर्घ अमूल्य, महार्घे मूल्यवान् 2. पूजा की सामग्री, देवताओं या सम्माननीय व्यक्तियों को गादर आहुति या उपहार, —कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै पुर० ८ (इस आहुति का सामान्य विश्लेषित है आम और कुशाग्र घ दीप अक्षत नवपल्लव, तत्र शिवार्घ०,त्रैव अष्टाङ्गैश्चार्घः प्रकीर्तितः । दे० अर्घ नीचे. समः --अर्ह (विo) साधारण उपहार के योग्य, अलावलम् मूल्य को दर, उचित मूल्य, मूल्यों में घटत बढ़त, -कारणम्, -संस्थापनम् मूल्यांकन, वस्तुओं का मूल्यनिर्धारण करना, कुर्वन्ति चार्घा (वणिजाम्) प्रत्यक्ष धर्ममस्थापनं नृप – मनु० ८।४०२।

अर्घीशः (पुं०) शिव।

अर्घ्य (वि०) [अर्घ+यत् अर्घमर्हति] 1. मूल्यवान्, अनर्घ्य—अनर्घ्यतां दर्शय गच्छ मार्गणं-कु० ६।२७, शि० १।१४,- ष्यम् किसी देवता या सम्मान्य व्यक्ति को सादर आहुति या उपहार, अर्घ्यसंज्ञैः विक्रम० ५, ददतु ददतु पूर्णरिक्त फलेभ्यः गच्छत्युत उत्तर ३।२४, अर्घ्यमर्घार्हमिति चाहिते नृपम् रघु० १२।९२, कु० १-५८, ६।५० ।

अर्च् (भ्वाo उभo) [अर्चति-ते, अर्चित] 1. (क) पूजा करना, अभिवादन करना, सत्कार करना रघु० १।६, ३०; २।२१, ४।८४, १२।८९, मनु० ३।२०२ आर्चद्विजातीन् परमार्थविन्मुनिः भट्टि० १।२५, १८।६३, १३।५ (ख) सम्मान करना आदर करना, सराहना -उत्तर० २।५, 2. स्तुति करना, (कर०), (चु० पर० या प्रेर०) सम्मान करना, अलंकृत करना, पूजा करना स्त्रीणां पतिर्देवतमर्चितोऽयं —कु० १।५१, अभि, समभि पूजा करना, अलंकृत करना, सम्मान करना, आर्चीभिरभ्यर्चत देवमेनं भट्टि० १।२४, भग० १८।४६ प्र 1. स्तुति करना, स्तुतिगान करना 2. सम्मान करना पूजा करना, प्रेम्णाभ्यर्च्य जगद्गुरोर्मुखं -भट्टि० २।२०।

अर्चक (वि०) | अर्च्+ण्वुल् | पूजा करने वाला, आराधना करने वाला, रूपकं कुरुदेवेद्धिजार्चकः मनु० ११।२२५।

अर्चन (वि०) | अर्च्+ल्युट् | पूजा करने वाला, स्तुति करने वाला, -नम्, ना पूजा, अपने से बड़ों का आदर व सम्मान।

अर्चनीय, अर्च्य (वि० कृ०) [अर्च्+अनीय, ण्यत् वा] पूजा या आराधना करने के योग्य, सम्माननीय, आदरणीय—रघु० २।२०, भट्टि० ६।३०।

अर्चा [अर्च्+अ+टाप्] 1. पूजा, आराधना 2. वह प्रतिमा या मूर्ति जिसकी पूजा की जाय, -मोर्चाहिरण्यादिविनिर्मिते प्रतिमासु -गङ्गा०।

अर्चिः (स्त्री०) [अर्च्+इस] किरण, (आग की) लपट या ज्वाला (प्रातःकालीन या सायं) उषासि, आसीदाग्नेयमस्त्रमर्चिष्मद्भृगुपतिगृहात् -रघु० १२।१, सैतस्याश्चिरमनुभूतं इव हिमसलिलसुखं विक्रम०।

अर्चिष्मत् [वि०] [अर्चिस्+मतुप्] प्रकाशवाला, उज्ज्वल चमकदार-विक्रम० ३।२, (पुं०) 1. अग्नि, 2. सूर्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्चिस् (न०) (-र्चिः) [अर्च्+इसि] 1. प्रकाशकिरण, ज्वाला, -प्रदीप्तानार्चिर्विवराददे--रघु० ३।१४, 2. प्रकाश, चमक, -प्रभावदर्चिषाम्—कु० २।२०, रत्न० ४।१६, (स्त्री० भी), (पुं०) 1. प्रकाशकिरण 2. अग्नि ।

अर्ज् (भ्वा० प०) [अर्जति, अर्जित] 1. उपार्जन करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, कमाना - अगः प्रेर०, इस अर्थ में—पितृद्रव्यविरिंचनेन मदन्यस्त्वर्थमर्जितम्--या० २।१२८, 2. ग्रहण करना—आनर्जुनेभुजोऽस्त्राणि भट्टि० १४।७४, (चु० प० - या प्रेर०) उपार्जन करना, अधिकार में करना, प्राप्त करना -स्वयमर्जित, स्वार्जित, अपने आप कमाया हुआ। उप -- प्राप्त करना या उपार्जन करना ।

अर्जक (वि०) [स्त्री० --र्जिका] [अर्ज्--ण्वुल्] उपार्जन करने वाला, अधिकार में करने वाला, प्राप्त करने वाला ।

अर्जनम् [अर्ज्+ल्युट्] प्राप्त करना, अधिग्रहण करना अर्थानामर्जने दुःखम् - पंच० १।१६३, अर्जयित्र्यापारोऽर्जनम्- शाय० ।

अर्जुन (वि०) [स्त्री० - ना, - नी] [अर्ज+उनन्, णित्कुक् च] 1. सफेद, चमकीला, उज्ज्वल, दिन जैसा रंगीन,-पिशङ्गमौर्ज्वीयुजमर्जुनच्छवि म्--शि० ११६, 2. रुपहला,---तः 1. श्वेतरंग 2. मोर 3. गुणकारी छाल वाला अर्जुन नामक वृक्ष 4. इन्द्र द्वारा कुन्ती से उत्पन्न तृतीय पांडव (इसीलिए इसे 'ऐन्द्रि' भी कहते हैं) [अपने कार्यों में पवित्र और विशुद्ध होने के कारण- -वह अर्जुन कहलाया। द्रोणाचार्य से उसने शस्त्रास्त्र की शिक्षा ली, अर्जुन द्रोण का प्रिय शिष्य था। अपने शस्त्र-कौशल के द्वारा ही उसने स्वयंवर में द्रौपदी को जीता। अनिच्छापूर्वक किसी नियम का उल्लंघन हो जाने के कारण उसने अल्पकालिक निर्वासन ग्रहण किया तथा इसी बीच परशुराम से शस्त्रविज्ञान का अध्ययन किया। उसने मागधराजकुमारी पौरवी से विवाह किया - जिससे इरावत् नामक पुत्र पैदा हुआ। उसके पश्चात् उसने मणिपुर के महाराज की कन्या चित्रांगदा से विवाह किया—इससे बभ्रुवाहन का जन्म हुआ। इसी निर्वासन-काल में वह द्वारका गया और वहाँ कृष्ण के परामर्शानुसार सुभद्रा से विवाह करने में सफलता प्राप्त की। सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ। उसके पश्चात् उसने खाण्डव-वन को जलाने में अग्नि की सहायता की जिससे कि उसने 'गांडीव' धनुष प्राप्त किया। जब उसके ज्येष्ठ भ्राता धर्मराज ने जूए में राज्य खो दिया और पांचों भाई निर्वासित कर दिए गए तो वह देवताओं का अनुरंजन करने के लिए हिमालय पर्वत पर गया जिससे कि कौरवों के साथ होने वाले युद्ध में उपयोग करने के लिए उसने दिव्य शस्त्रास्त्र प्राप्त कर सके। वहाँ उसने किरातवेशधारी शिव से युद्ध किया, परन्तु जब उसे अपने विपक्षी के वास्तविक चरित्र का ज्ञान हुआ तो उसने उनकी पूजा की, शिव ने भी प्रसन्न होकर अर्जुन को पाशुपतास्त्र दिये। इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर ने भी अपने-अपने अस्त्र उसे उपहारस्वरूप दिए। अपने निर्वासनकाल के तेरहवें वर्ष में पांडव राजा विराट् की नौकरी करने लगे—अर्जुन कैकयी के रूप में नृत्यगान का शिक्षक बना। कौरवों के साथ महायुद्ध में अर्जुन ने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया। उसने कृष्ण की सहायता प्राप्त की, उसे अपना सारथि बनाया। जिस समय युद्ध के पहले ही दिन अर्जुन ने अपने बंधु-बांधवों के विरुद्ध धनुष उठाने में संकोच किया—उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'भगवद्-गीता' का उपदेश दिया। उस महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने कौरव सेना के जयद्रथ, भीष्म तथा कर्ण आदि अनेक दुर्दान्त योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। जिस समय युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राज्यसिंहासन पर आसीन हुआ -तो उसने अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया -फलतः अर्जुन को संरक्षकता में एक घोड़ा छोड़ा गया। अर्जुन ने अनेक राजाओं से युद्ध किया तथा अनेक नगर और देशों में घोड़े का अनुसरण किया। मणिपुर पहुंचने पर उसे अपने ही पुत्र बभ्रुवाहन से युद्ध करना पड़ा। फलतः अर्जुन, जब इस प्रकार बभ्रुवाहन से लड़ता हुआ युद्ध में मारा गया तो अपनी पत्नी उलूपी द्वारा दिये गए जादू-तन्त्र से वह पुनर्जीवित किया गया। उसने इस प्रकार सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया। जब नाना प्रकार की भेंट, उपहार तथा आहुत संपत्तियों के साथ वह हस्तिनापुर वापिस आया तो उस समय अश्वमेध यज्ञ किया गया। उसके पश्चात् कृष्ण ने उसे द्वारका में बुलाया—और जब पारस्परिक गृह-युद्ध में यादवों का अन्त हो गया तो अर्जुन ने वसुदेव और कृष्ण की अन्त्येष्टि-क्रिया की। इसके बाद शीघ्र ही पांडवों ने अभिमन्यु के एक मात्र पुत्र परीक्षित को हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बिठा दिया तथा स्वयं स्वर्ग की यात्रा को चल दिये। पाँचों पांडवों में अर्जुन सबसे अधिक पराक्रमी, उदार, गंभीर, सुंदर और उच्च विचारों का मनुष्य था—अपने सब भाइयों में वही प्रमुख व्यक्ति था] 5. कार्तवीर्य—जिसे परशुराम ने मौत के घाट उतारा था -दे० कार्तवीर्य, 6. अपनी माता का एक मात्र पुत्र, -नौ 1. दूनी, कुटजी 2. गौ 3. एक नदी जिसे 'करसोआ' कहते हैं, --नम घास। सम०-उपमः सागवान का वृक्ष, -छवि (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उज्ज्वल, उज्ज्वल रंग वाला, —ध्वज श्वेत-ध्वजा वाला, हनुमान् ।

अर्णः [ऋ+नि] 1. सामवेद का वृक्ष 2 (वर्णमाला का) एक अक्षर ।

अर्णवः [अर्णासि सन्ति यस्मिन् ...अर्णस्+व, सलोपः] (फेनयुक्त) समुद्र, सागर (आलं० भी) **शोक** शोक का समुद्र, इसी प्रकार **चिंता**, **जल** जलसमुद्र, **संसारार्णवलंघन** भर्तृ० ३।१० । सम० —अन्तः सागर की सीमा,—**उद्भवः** चन्द्रमा (—**वा**) लक्ष्मी, (—**वम्**) अमृत,—**पोतः**,—**यानम्** किश्ती या जहाज,—**मंदिरः** 1. सागर वासी वरुण, जलों का स्वामी 2. विष्णु ।

अर्णस् (नपुं०) [ऋ+असुन् नुट् च] जल । सम०—**दः** बादल,—**भवः** शंख ।

अर्णस्वत् (वि०) [अर्णस्+मतुप्] बहुत अधिक पानी रखने वाला, (पुं०) सागर ।

अर्तनम् [ऋत्+ल्युट्] निन्दा, कटकार, अपशब्द या गाली ।

अर्तिः (स्त्री०) [अर्द्+क्तिन्] 1. पीड़ा, शोक, दुःख —**शिरोऽर्तिः** सिर-दर्द 2. वस्तुप का किनारा ।

अर्तिका [ऋत्+ण्वुल्] बड़ी बहन (नाटय साहित्य में) ।

अर्थ् (चु० आ०) [अर्थयते, अर्थित] 1. प्रार्थना करना, याचना करना, गिड़गिड़ाना, मांगना, अनुरोध करना, दीन भाव से मांगना (द्विकर्मक)—त्वामिममर्थमर्थयते —दश० ७१, तमभिकाम्य सर्वेऽपि वयं चार्थमिहे वयम् महा०, ग्रहस्तमर्थयांचक्रे योद्धुम् भट्टि० ५४।५२, 2. प्राप्त करने की प्रयत्न करना, चाहना, इच्छा करना, **अभि**—मांगना, गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना—दूसं सारङ्ग प्रियाप्रवृत्तिनिमित्ताभ्यर्थये—विक्रम० ४, अवकाश किलोदन्वान् रोषाच्चापश्चितो ददौ—रघु० ४।३८, **अभिप्र** ·1. मांगना, प्रार्थना करना 2. चाहना, **प्र**—1. मांगना, प्रार्थना करना, याचना, प्रार्थना —नैव भवन्तं प्रार्थयते—मृ० २, 2. चाहना, अवश्यकता होना, इच्छा करना, प्रबल अभिलाषा रखना, —अहो विस्मरणीय. प्रार्थितार्थसिद्धयः —शं० २, स्वर्गति प्रार्थयन्ते —भग० ९।२०, भट्टि० ७।४८, रघु० ७।५९, ६४, 3. ढूंढना, तलाश करना, खोज करना —प्रार्थयध्वं तथा सीताम्—भट्टि० ७।४८, 4. आक्रमण करना, टूट पड़ना—असौ अदत्वालोकेन यकवायां प्रार्थितः —मालवि० ५, दूतयो लक्ष्मणः क्रुद्धो विशल्यः प्रार्थयेदिति —रघु० १५।५, ९।५६, **प्रति** 1. (युद्ध के लिए) ललकारना, पुकारना, शब्दवत् व्यवहार करना—एते सीतार्थदूतः संक्ष्यै प्रत्यर्थयन्त रामवत् भट्टि० ६।२५, 2. किसी को वधू बनाना, **सम्** · 1. विश्वास करना सोचना, ख्याल रखना, चिन्तन करना—समर्थये यत्प्रथमं प्रियां प्रति—विक्रम० ४।३९, मया न साधु समर्थितम्...विक्रम० २, अनुयुक्तमिदात्मानं समर्थये—श० ७, 2. समर्थन करना, सहायता करना, **प्रमाणद्वारा सिद्ध करना**—उक्तभेदार्थमुदाहरणेन समर्थयति, **समभि**—, **संप्र**—याचना करना, प्रार्थना करना आदि ।

अर्थः [ऋ+थन्] 1. आशय, प्रयोजन, लक्ष्य, उद्देश्य, अभिलाष, इच्छा—ज्ञातार्थो ज्ञातसंबन्धः श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते, गिद्ध परिणयी —मुद्रा० ५, समास के उत्तर पद के रूप में प्रायः इसी अर्थ में प्रयुक्त होता तथा निम्नांकित अर्थों में अनुदित किया जाता है :—'के लिए' 'के निमित्त' 'की खातिर' 'के कारण' 'के बदले में'; सज्ञाओं को विशेषित करने के लिए विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है—सन्तानार्थाय विधये · रघु० १।३४ तां देवताभित्रितिथिक्रियार्थां (धेनुम्) २।१६, द्विजार्थी यवागूः सिद्धा०, यज्ञार्थत्वात्कर्मणोऽन्यत्र—भग० ३।९; किसी विशेषण के रूप में भी यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है यथा—**अर्थम्, अर्थे** या **अर्थाय; किमर्थम्**—किस प्रयोजन के लिए, वेलोपलक्षणार्थम् ...सू० ४, तदूर्ध्वमनादभुच्छ्भोर्नृसान्दारार्थमादरः—कु० ६।१३, मवार्थं ब्राह्मणार्थं च ...पंच० १।४२०, मदर्थं व्यक्तजीवितान्तः—भग० १।९, प्रस्थास्यतो मया तत्र नलस्यार्थाय देवताः—नल० १३।१९, ऋतुपर्णस्य चार्थाय—२३।९, 2. कारण, प्रयोजन, हेतु, साधन अनुवर्तत इमं किमर्थं—रघु० २।५५, साधन या हेतु 3 अभिपाय, तात्पर्य, सार्थकता, आशय -अर्थ तीन प्रकार का है :-वाच्य (अभिव्यक्त), लक्ष्य (संकेतित या गौण) और व्यंग्य (ध्वनित) · तदेतौ शब्दार्थौ —काव्य० १, अर्थो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यङ्ग्यश्चेति त्रिधामतः—सा० द० २, 4. वस्तु या विषय, पदार्थ, सारांश—अर्थो हि कन्या परकीय एव—श० ४।२१, जो ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जाना जा सके, ज्ञानेन्द्रिय की वस्तु; इंद्रिय[2]— हि० १।१४९, कु० ७।७१ इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः—कठ० (ज्ञानेन्द्रियों के विषय पांच हैं· रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द) 5. (क) मामला, व्यापार, दान, कार्य,—प्राक् प्रतिपत्तोरप्रमर्थार्थाङ्कुराद्याय —वेणी० ३, अर्थोऽयमभ्यन्तरमाद्य एव— कु० ३।१८, अर्थोऽर्थानुबन्धी —दश, ६७, संप्रयोगार्थः— मेघ० ५६, गायन-व्यापार अर्थात् समवेत गान (गायनोपकरण), नन्दयार्थाः—मेघ० ५, संदेश की बातें अर्थात् संदेश (ख) हित. इच्छा (स्वार्थसाधनतत्परः— मनु० ४।१९६; दुरन्वयार्थं सान्त्वनम् ...रघु० ११९, दुरापेऽर्थे १।७२, सर्वार्थचिन्तक —मनु० ७।१२१, मालविकाया न मे कश्चिदन्यः प्रार्थयितव्यः मालवि० (ग) विषय-सामग्री, विषय-सूची —त्वामवगतार्थं करिष्यति—मुद्रा० (मैं आपको विषय-सामग्री से परिचित कराऊंगा),

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेन हि अस्य गृहीतार्था भवामि—विक्रम० २, (यदि ऐसी बात है तो मुझे इस विषय की जानकारी होनी चाहिए), 6. दौलत, धन, सम्पत्ति, रुपया त्यागाय संभृतार्थानाम्—रघु० १।७, धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः—पंच० १।१६३, 7. धन या सांसारिक ऐश्वर्य का प्राप्त करना, जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक—अन्य तीन हैं :-धर्म, काम और मोक्ष; अर्थ, काम और धर्म मिलकर त्रिसिद्ध त्रिक बनता है, तु० कु० ५।३८,- अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिणः—रघु० १।२५, 8. (क) उपयोग, हित, लाभ, भलाई, —तथा हि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणाः -रघु० १।२९, यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके -भग० २।४६, दे० व्यर्थ और निरर्थक भी (ख) उपयोग, आवश्यकता, जरूरत, प्रयोजन—करण० के साथ; —कोऽर्थः पुत्रेण जातेन—पंच० १ (उस पुत्र के पैदा होने से क्या लाभ ?) कश्च तेनार्थः -दश० ५९, कोऽर्थस्त्रिदशैर्न गुणैः —पंच० २।३३, कः व्यक्ति गुणों की क्या परवाह करते हैं ? भर्तृ० २।४८; -यौक्तेनार्थः करय न स्याज्जनेन--शि० १८।६६, नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन भग० ३।१८, ९. मांगना, याचना, प्रार्थना. दावा, याचिका 10. कार्यवाही, अभियोग (विधि०) 11 वस्तुस्थिति, याथार्थ्य, जैसा कि यथार्थ, और अर्थतः मे -°तत्त्वविद् 12. रीति, प्रकार, तरीका 13. रोक, दूर रखना--मप्रकाशों घूमः, प्रतिषेध, उन्मूलन 14. विष्णु. सम० —अधिकारः रुपये-पैसे का कार्यभार, कोषाध्यक्ष का पद०, °रे न नियोक्तव्यो—हि० २, —अधिकारिन् (पुं०) कोषाध्यक्ष,--अन्तरम् 1. अन्य अभिप्राय या भिन्न अर्थ 2. दूसरा कारण या प्रयोजन—अर्थोऽप्रमर्थान्तिरभाव्य एव -कु० ३।१८ 3. एक नई बात या परिस्थिति, नया मामला 4. विरोधी या विपरीत अर्थ, अर्थ में भेद, °न्यासः एक अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष या विशेष से सामान्य का समर्थन होता है, यह एक प्रकार का विशेष से सामान्य अनुमान है अथवा इसके विपरीत--उक्तिरर्थान्तिरन्यासः स्यात सामान्यविशेषयोः । (१) हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम् । (२) गुणवद्वस्तुसंसर्गाद्याति नीचोऽपि गौरवम्, पुष्पमालानुषङ्गेण सूत्रं गिरसि धार्यते ॥ कुवल०, तु० काव्य० १० और सा० द० ७०९, —अन्वित (वि०) 1. धनवान्, दौलतमंद 2. सार्थक, —अन्विष् (वि०) जो अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए या धन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है, —अलंकारः साहित्यशास्त्र में वह अलंकार जो या तो अर्थ पर निर्भर हो, या जिसका निर्णय अर्थ से किया जाय, शब्द से नहीं (विप० शब्दालंकार), —आगमः 1. धन की प्राप्ति, आय 2. किसी शब्द के अभिप्राय को बतलाना,—आपत्तिः (स्त्री०) 1. परिस्थितियों के आधार पर अनुमान लगाना, अनुमानित वस्तु, फलितार्थ, ज्ञान के पाँच साधनों में से एक अथवा (मीमांसकों के अनुसार) पाँच प्रमाणों में से एक, प्रतीयमान असंगति का समाधान करने के लिए यह एक प्रकार का अनुमान है, इसका प्रसिद्ध उदाहरण है :—पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते, यहाँ देवदत्त के 'मोटेपन' और 'दिन में न खाने' की असंगति का समाधान 'वह रात्रि को अवश्य खाता होगा' अनुमान से किया जाता है; 2. एक अलंकार (कुछ साहित्यशास्त्रियों के अनुसार) जिसमें एक संबद्ध उक्ति से ऐसे अनुमान का सुझाव मिलता है जो प्रस्तुत विषय से कोई संबंध नहीं रखता—या इसके ठीक विपरीत है; यह कैमुतिकन्याय या दण्डापूपन्याय से मिलता जुलता है; उदा०—तारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, मुक्तानामप्यवस्थेयं के यं स्मरकिङ्करः । अमरु० १००, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिणु - रघु० ८।४३,—उत्पत्तिः (स्त्री०) धन प्राप्ति, इसी प्रकार °उपार्जनम्; —°उपक्षेपकः (नाटकों में) एक परिचायात्मक दृश्य—अर्थोपक्षेपकाः पंच—सा० द० ३०८,—उपमा जो उपमा अर्थ पर निर्भर रहे, शब्द पर नहीं दे० 'उपमा' के नीचे—उष्मन् (पुं०) धन की चमक या गर्मी -अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव- भर्तृ० २।४०,—ओघः -राशिः कीर्य, धन का भंडार,—कर (स्त्री०—री),—कृत् (वि०) 1. धनी बनाने वाला 2. उपयोगी, लाभदायक, -काम (वि०) धन का इच्छुक. (- मी-द्वि० व०) धन और चाह या भूख, रघु० १।२५,—कृच्छ्रम् 1. कठिन बात 2. आर्थिक कठिनाई—न मुहोदर्थकृच्छ्रेषु -नीति०—कृत्यम् किसी कार्य का सम्पन्न करना—अभ्युपेतार्थकृत्याः =मेघ० ३८, -गौरवम् अर्थ की गहराई—गाम्भीर्यमर्थ-गौरवम्-उद्भट०, कि० २।२७,—ज्ञ (वि०) (स्त्री० ज्ञी) अतिव्ययी, अपव्ययी. फिजूलखर्च,—ज्ञात (वि०) अर्थ से परिपूर्ण (—तम्) 1. वस्तुओं का संग्रह 2. धन की बड़ी रकम. बड़ी सम्पत्ति,—तत्त्वम् 1. वास्तविक सचाई, यथार्थता, 2. किसी वस्तु की वास्तविक प्रकृति या कारण,- द (वि०) 1. धन देने वाला, 2. लाभदायक, उपयोगी 3. उदार,—दूषणम् 1. अतिव्यय, अपव्यय 2. अन्यायपूर्वक किसी की संपत्ति ले लेना, या किसी का उचित पावना न देना, —दोषः (अर्थ की दृष्टि से) साहित्यिक त्रुटि या दोष, साहित्य-रचना के चार दोषों में से एक—दूसरे तीन हैं :-पद दोष, पदांशदोष और वाक्य दोष, इनकी परिभाषाओं के लिए दे० काव्य० ७,—निबंधन (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धन के ऊपर आश्रित, –निश्चयः निर्धारण, निर्णय, –पतिः 1 'धन का स्वामी', राजा,–किंचिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे—रघु० १।५९, २।४६, ९।३, १८।१, पंच० १।७४, 2. कुबेर की उपाधि,—पर,—लुब्ध (वि०) 1 धन प्राप्त करने पर जुटा हुआ, लालची 2. कंजूस, –प्रकृतिः (स्त्री०) नाटक के महान् उद्देश्य का प्रमुख साधन या अवसर, (इन साधनों की संख्या पांच है, बीजं बिन्दुः पताका च प्रकरी कार्यमेव च, अर्थप्रकृतय पञ्च ज्ञात्वा योज्या यथाविधि –सा० द० ३।७), –प्रयोगः व्याजचोरी,—बंधः शब्दों का यथाक्रम रखना, रचना, पाठ, श्लोक, चरण शं० ७।५ ललितार्थबंधम् विक्रम० २।१४,—बुद्धि (वि०) स्वार्थी, बोधः वास्तविक आशय का संकेत,—भेदः अर्थों में भेद –अर्थभेदेन शब्दभेदः,—मात्रम्, —त्रा सम्पत्ति, धन-दौलत, —युक्त (वि०) सार्थक, लाभः धन की प्राप्ति,–लोभ, लालच,–वादः 1. किसी उद्देश्य की घोषणा, 2. निश्चयात्मक घोषणा, घोषणाविषयक प्रत्यक्षज्ञान, व्याख्यात्मक टिप्पणी, किसी आशय की उक्ति या कथन, वाक्य (इसमें उचित अनुष्ठान के करने से उत्पन्न फलों का वर्णन करते हुए किसी विधि की अनुशंसा की जाती है, साथ ही अपने पक्ष के समर्थन में ऐतिहासिक निदर्शन देकर यह बतलाया जाता है कि इसका उचित अनुष्ठान न करने से अनिष्ट फल मिलता है) 3. प्रशंसा, स्तुति; –अर्थवाद एषः, दोषं तु मे कंचिदकथयः–उत्तर० १,—विक्लवः 1 सचाई से इधर-उधर होना, तथ्यों का तोड़-मरोड़, 2. अपलाप, वैकल्यम् भी, —वृद्धिः (स्त्री०) धन-संचय, –व्ययः धन का खर्च करना, श (वि०) रुपये-पैसे की बातों का जानकार—शास्त्रम् 1 धन-विज्ञान (सार्वजनिक अर्थशास्त्र) २. राजनीति-विज्ञान, राजनीतिविषयक शास्त्र, राजकाज –श २।०. इह खलु अर्थशास्त्रकारास्त्रिविधा सिद्धिभुपवर्णयंति –मुद्रा० २. व्यवहारिन् राजनीतिज्ञ, 3. व्यावहारिक जीवन का शास्त्र, शौचम् रुपये-पैसे के मामले में ईमानदारी या खरापन सर्वेषां चैव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्—मनु० ५।१०६, —संचयनम् 1. धन का संचय 2. कोष, —संबंधः वाक्य या शब्द से अर्थ का संबंध, –सारः बहुत धन– पंच० २।४२,—सिद्धिः (स्त्री०) अभीष्ट सिद्धि, सफलता।

अर्थतः (अव्य०) [अर्थ+तसिल] 1. अर्थ या किसी विशेष उद्देश्य का उल्लेख करते हुए, –व्यचचार्थतो गौरवम् –मा० १।७, अर्थ की गहराई, 2. वस्तुतः, वास्तव में, सचमुच,–न नामतः केवलमर्थतोऽपि –शि० ३।५६, 3. धन के लिए, लाभ या प्राप्ति के लिए–ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरभयं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४, 4. के कारण।

अर्थना [अर्थ्+युच्+टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, नालिश, याचिका—नै० ५।११२।

अर्थवत् (वि०) [अर्थ+मतुप्] 1. धनवान् 2. सार्थक, अभिप्रायः या अर्थ से परिपूर्ण,–अर्थवान् खलु मे राजशब्दः—पा० ५, 3. अर्थ रखने वाला अर्थवद्ग्रहानुग्रहप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५, 4. किसी प्रयोजन को सिद्ध करने वाला, सफल, उपयोगी।

अर्थवत्ता [अर्थ+मतुप्+तल्+टाप्] धन-दौलत, सम्पत्ति।

अर्थात् (अव्य०) [अर्थ का अपा० का रूप] 1. सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह, वस्तुतः मृगिकेण दष्टो भक्षित इत्यनेन तत्प्रहननिमित्तमूपमक्षणमर्थादायातं भवति—सा० द० १०, 2. परिस्थिति के अनुसार, तथ्यानुसार 3. कहने का भाव यह है कि, नामों के अनुसार।

अर्थिकः [अर्थाय ते इत्यर्थी+कन्] 1. चिल्लाने वाला, चौकीदार, 2 विदूषक; भाट जिसका कर्तव्य दिन के विभिन्न निश्चित समयों की (जैसा कि जागने का, सोने का, या भोजन करने का) घोषणा करना है।

अर्थित (भू० क० कृ०) [अर्थ्+क्त] प्रार्थित, याचित, इच्छित—तम् याचा, इच्छा, नालिश।

अर्थिता-त्वम् [अर्थिन्+तल् टाप्, त्वल् वा] 1. मांगना, प्रार्थना करना, 2. चाह, इच्छा।

अर्थिन् (वि०) [अर्थ+इनि] 1. प्राप्त करने की चेष्टा करने वाला, अभिलाषी, इच्छुक—करण० के साथ अथवा समास में कोपदण्डाय्यामि मुद्रा० ५, की वर्णन ममार्थी स्वान् –महा०, अर्थार्थी –गंच० १।४।९, 2. अनुरोध करने वाला, या किसी से कुछ मांगनेवाला (संब० के साथ)–अर्थी वरुचिर्मेन्तु–कथा० 3. मनोरथ रखने वाला, (पुं०) 1. याचक, प्रार्थियता, भिक्षुक, दीन याचक, निवेदक, विवाहार्थी–यथाकामार्चितार्थिना रघु० १।९, २।६४, ५।३१, ९।२७, कोऽर्थी गतो गौरवम् –पंच० १।१४६, कन्याश्लाघ्यभयोर्जिनजन्म भवनामास्ते वयं चार्थिनः महावी० १।३०, 2. (विधि में) वादी, अभियोक्ता, प्राभियोजक, स धर्मस्थसमक्षं शब्दवधिप्रत्ययितां स्वयं, ददर्श संप्रयच्छेत्यान् व्यवहारानलन्निजः– रघु० १७।३९, 3. सेवक अनुचर। शम०

भावः याचना, मांगना, प्रार्थना –मा० ९।३०, –त्वम् (क्रि० वि०) भिखारियों के अधिकार में करके – विभेजुः मेरुर्न गदयिसाहतुः– नै० १।१६।

अर्थीय (वि०) [अर्थ+छ] 1. पूर्वनिर्दिष्ट, अभिप्रेत, कष्ट उठाना भाग्य में बदा था–शरीरं पातनार्थीयं–मनु० १२।१६, 2. संबंध रखने वाला–कर्म चैव तदर्थीयं– भग० १७।२७।

अर्ध्य (वि०) [अर्थ+ण्यत्] 1. जिससे सर्वप्रथम याचना की जाय, 2. योग्य, उचित 3. उपयुक्त, आशय से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इधर उधर न होने वाला, सार्थक -स्तुत्यै स्तुतिभिरर्थाभिरमन्तस्यै सरस्वती --रघु० ४।६, कु० २।३, 4. यती, दीक्षानंद 5. समझदार, बुद्धिमान्, -व्यंम् गेह।

अर्द (भ्वा० पर०) [अर्दति, आर्दित] 1. दुःख देना, व्यथित करना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना—रक्षः सहस्राणि चतुर्दशार्दीत्—भट्टि० १२।५६ दे० नीचे प्रेर०, 2. मांगना, प्रार्थना करना, निवेदन करना --निर्गलितबृगर्भ शरदूर्धनं नार्दति चातकोऽपि—रघु० ५।१७, (प्रेर० या चु० पर०) 1. (क) सताना, पीड़ित करना, दुःखाना—कामार्दित, क्रोध°, भय° आदि (ख) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, वध करना मैनादित्त देव्यपुरं पिनाकी—भट्टि० २।४६, अति--अधिक सताना, आक्रमण करना, टूट पड़ना-अत्यार्दीत् बालिनः पुत्रम्—भट्टि० १५।११५, अभि—दुःखाना, सताना, पीड़ित करना।

अर्दन (वि०) [अर्द+ल्युट्] दुःखाने वाला, सतानेवाला, -नम् पीड़ा, कष्ट, चिन्ता, उत्तेजना, क्षोभ,—नम् 1. जाना, हिलना 2. पूछना, मांगना 3. वध करना, चोट पहुंचाना, पीड़ा देना।

अर्ध (वि०) [ऋध्+णिच्+अच्] आधा, आधा भाग बनाने वाला, -र्धम्, र्धः 1. आधा, आधा भाग --सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः; गतमर्धं दिवसस्य --विक्रम० २, यदर्धं विच्छिन्नं --प्र० १।९, आधा-आधा बँटा हुआ (अर्ध शब्द को लगभग सब संज्ञा व विशेषण शब्दों के साथ जोड़ा जा सकता है—संज्ञा के साथ समास में प्रथमपद के रूप में इसका अर्थ है: 'आधा' काय --अर्धकायस्य, विशेषणों के साथ इसका अर्थ क्रियाविशेषणात्मक है; 'लगभग--आधा काल, क्रमसूचक संख्याओं के साथ 'संख्या का आधा' अर्थ होता है, 'नृतीयम्--दो और आधा तीसरा अर्थात् अढ़ाई। सम० अक्षि (नपुं०) अपांगदृष्टि, आँख का झपकना -मृच्छ० ८।४२, --अङ्गम् आधा शरीर --अंशः, आधा भाग, आधा हिस्सा, -अंशिन् (वि०) आधे का हिस्सेदार, —अर्धः, —अर्धम् 1. आधे का आधा, चौथाई—चरार्धभागस्था तामयोऽयत्नामुर्ने -रघु० १०।५६, 2. आधा और आधा,—अवभेदकः आधासीसी, आधे सिर की पीड़ा,—अवशेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष बचे, -आसनम् 1. आधा आसन --अर्धमिनं गोत्रभिदोऽधितष्ठौ रघु० ६।७३, मम हि दिवौकसां समक्षमर्धासनोपवेशितस्य—श० ७ (आपत्तुक अतिथि को अपने ही आसन पर अर्धासन देना अत्यधिक सम्मान का चिह्न समझा जाता था) 2. सम्मानपूर्वक अभिवादन करना 3. निन्दा से मुक्ति -इन्दुः 1. आधा चाँद, दूज का चाँद, 2. अंगुली के नाखून की अर्धवर्तुलाकार छाप, बालेन्दु के आकार की नख-छाप—नै० ६।२५, 3. बालचन्द्र के आकार के समान सिर वाला बाण (=अर्धचन्द्र नी०), °मौलि शिव, मेघ० ५६,—उक्त (वि०) आधा कहा हुआ, -रामभद्र इति अर्धोक्तं महाराज—उत्तर० १, उदितः (स्त्री०) भरतवाणी, अन्तर्धायित वाणी,

उदयः 1. अर्ध चन्द्रमा का निकलना 2. आंशिक उदय, °आसनम् समाधि में बैठने का एक प्रकार का आसन,—ऊरुकम् स्त्रियों के पहनने का अन्तर्वस्त्र, पेटीकोट, —कृत (वि०) आधा किया हुआ, अपूर्ण, —खारभ्, -री एक प्रकार का माप, आधी खारी —गंगा कावेरी नदी, इसी प्रकार जाह्नवी,—गुच्छः २४ लड़ियों का हार, —गोलः गोलार्द्ध, —चंद्र (वि०) बालेन्दु के आकार वाला, (—न्द्रः) 1. आधा चन्द्रमा, बालेन्दु —सार्धचन्द्र विभर्ति यः—कु० ६।७५, 2. मोर की पूंछ पर अर्धवर्तुलाकार चिह्न, 3. बालचन्द्र के आकार के सिरे वाला बाण --अर्धचन्द्रमुखैर्वाणैश्चिच्छेद कदलीमुखम्—रघु० १२।९६, 4. बालचन्द्र के आकार की नख-छाप 5. अर्धवृत्त के रूप में झुका हुआ हाथ, जो कि किसी वस्तु को पकड़ने के लिए मोड़ा गया हो. -द्वं वा - गर्दनिया देकर बाहर निकालना—दीयतामेतस्यार्धचन्द्रः—पंच० १, —चन्द्राकार,—चन्द्राकृति (वि०) आधे चन्द्रमा के आकार वाला, -चोलकः अंगिया,—दिवसम् दिवसः 1. आधा दिन, दिन का मध्यभाग, 2. १२ घण्टे का दिन,—नाराचः बालचन्द्र के आकार का लोहे की नोक वाला बाण,—नारीशः, —नारीश्वरः शिव का एक रूप (आधा पुरुष तथा आधी स्त्री), —नारम् आधी किस्ती, -निशा मध्यरात्रि, आधी रात -पञ्चाशत् (स्त्री०) पच्चीस,—पणः आधे पण की माप, पथम् आधा मार्ग (—थे) मार्ग के मध्य में, —प्रहरः आधा पहरा, डेढ़ घण्टे का समय,—भागः आधा, आधा भाग या हिस्सा, -तदर्धभागेन लभस्व काङ्क्षितम्—कु० ५।५०, रघु० ७।४५,—भागिक (वि०) आधे भाग का साझीदार,—भाज् (वि०) 1. आधे भाग का हिस्सेदार, आधे भाग का अधिकारी, 2. साथी, साझीदार, -भास्करः दिन का मध्यभाग, दोपहर,—माणवकः,—माणवः १२ लड़ियों का हार, (माणवक २४ लड़ियों का होता है), -मात्रा 1. आधी मात्रा, 2. व्यंजन वर्ण,—मार्गं (अव्य०) मार्ग के बीच में—विक्रम० १।३,—मासः आधा महीना, एक पक्ष,—मासिक (वि०) 1. प्रत्येक पक्ष में होने वाला 2. एक पक्ष तक रहने वाला, -मुष्टिः (स्त्री०) आधा भिंचा हुआ हाथ,—यामः आधा पहर,—रथः किसी दूसरे के साथ रथ पर बैठ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर युद्ध करने वाला योद्धा (जो कि स्वयं 'रथी' के समान कुशल नहीं होता)–रथे रथेऽभिमानी च विमुखश्चापि दृश्यते, घृणी कर्णः प्रमादी च तेन मेऽर्धरथो मतः महा०, —रात्रः आधीरात –अर्धरात्रे स्तिमितप्रदीपे —रघु० १६।४, —विसर्गः,—विसर्जनीयः क् लु तथा प् फ् से पूर्व दिसर्गध्वनि, —वीक्षणम् तिरछी चितवन, कनखी, —वृद्ध (वि०) अधेड़ उम्र का, —वैनाशिकः कणाद का अनुयायी (अर्धविनाश का तार्किक) –वंशसम् आधा या अपूर्णवंश कु० ४।३१, —व्यासः वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी, —शतम् पचास,—शेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष रहा है,—श्लोकः आधाश्लोक या श्लोक के दो चरण,—सीरिन् (पु०) 1. बटाईदार, अपने परिश्रम के बदले आधी फसल लेने वाला किसान —याज्ञ० १।१६६, 2. =वे० अधिक, हारः ६४ लड़ियों का हार,—ह्रस्वः लघु स्वर का आधा।

अर्धक (वि०) [अर्ध+कन्] आधा, दे० 'अर्ध'।

अर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्धमर्हति—अर्ध+ठन्] 1. आधी नाप रखने वाला 2. आधे भाग का अधिकारी,—कः वर्णसंकर,—वैद्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः, अर्धिकः स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः—पराशर०।

अर्धिन् (वि०) [अर्ध+इनि] आधे भाग का साझीदार।

अर्पणम् [ऋ+णिच्+ल्युट् पुकागमः] 1. रखना, स्थिर करना, जमाना, पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठस्—रघु० २।३५, 2. बीच में डालना, रखना, 3. देना, भेंट करना, त्यागना,—स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण—रघु० २।५५, मुखार्पणेषु प्रकृतिप्रगल्भाः—१३।९, तेकुरुस्व मदर्पणम्—भग० ९।२७, 4. वापस करना, देना, लौटा देना त्याग° अमर० 5. छेदना, गोदना—तीक्ष्णतुण्डापैर्णयीनां नखैः सर्वा व्यदारयत्—रामा०।

अर्पितः [ऋ+णिच्+क्त पुकागमः] हृदय, हृदय का मांस।

अर्ब् (भ्वा० पर०) [अर्बति, आनर्ब, अर्बितुम्] 1. को ओर जाना, 2. वध करना, चोट मारना।

अर्बुद (दु) दः—दम् [अर्ब्+उदच्—इ+द] 1. सूजन, (नाना प्रकार की) रसौली 2. दस करोड़ की संख्या 3. भारत के पश्चिम में स्थित आबू पहाड़, 4. साँप, 5. बादल 6. मांस पिंड 7. साँप जैसा राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था।

अर्भकः (वि०) [अर्भ+कन्] 1. छोटा, क्षुद्र्य, थोड़ा 2. दुबला, पतला 3. मूर्ख 4. बच्चा, छौना,—कः 1. बालक, बच्चा—अतस्य यायादयमन्तमर्भकः—रघु० ३।२१, २५; ७।६७, 2. किसी जानवर का बच्चा 3. मूर्ख बड़।

अर्य (वि०) [ऋ+यत्] 1. श्रेष्ठ, बढ़िया 2. आदरणीय,—र्यः 1. स्वामी, प्रभु 2. तीसरे वर्ण का व्यक्ति, वैश्य, र्या वैश्य की स्त्री। सम०—अर्थः सम्मान्य वैश्य।

अर्यमन् (पुं०) [अर्यं श्रेष्ठं मिमीते - मा+कनिन् नि०] 1. सूर्य 2. पितरों के प्रधान—पितृणामर्यमा चास्मि —भग० १०।२९, 3. मदार का पौधा।

अर्याणी [अर्य+ङीष्, आनुक्] वैश्य जाति की स्त्री।

अर्वन् (पुं०) [ऋ+वनिप्] 1. घोड़ा, हलधीकृतग्रहसर्वता वजाः—शि० १२।३१, 2. चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक 3. इन्द्र 4. गोकर्णपरिमाण—ती 1. घोड़ी 2. कुटनी, दूती।

अर्वाच् (वि०) [अवरे काले देशे वा अञ्चति अञ्च+क्विन् पृषो० अवादेशः] 1. इस ओर आते हुए (विप० परञ्च्) 2. की ओर मुड़ा हुआ, किसी से मिलने के लिए आता हुआ 3. इस ओर होने वाला 4. नीचे या पीछे होने वाला 5. बाद में होने वाला, बाद का —क् (अव्य०) 1. इस ओर, इधर की तरफ 2. किसी एक स्थान से पहले (समय या स्थान की दृष्टि से) - यत्तूष्टेरर्वाक् सलिलमयं ब्रह्माण्डमभूत् -का० १२५ अर्वाक् संवत्सरात्स्वामी हरेत परतो नृपः—याज्ञ० २।१७३, ११३, १।२५४, 4. नीचे की ओर, पीछे, नीचे (विप० ऊर्ध्वं) 5. बाद में, पश्चात् 6. (अधिः के साथ) के अन्दर, निकट—एते चावर्गुपवनभुवि छिन्नदर्भाङ्कुरायाम् —श० १।१५। सम०—कालः बाद में आने वाला समय, कालिक (वि०) आसन्नकाल से संबंध रखने वाला, आधुनिक, °ता आधुनिकता, उत्तरकालीनता,—कूलम् नदी का निकटस्थ तट।

अर्वाचीन (वि०) [अर्वाच्+ख] 1. आधुनिक, हाल का 2. उलटा, विरोधी,—नम् (अव्य०) (अपा० के साथ) 1. इस ओर 2. के बाद का -शतूर्ध्वं पृथिव्या अर्वाचीनमन्तरिक्षात्—शत०।

अर्शस् (नपुं०) [ऋ+असुन् आधौ शुट् च] बवासीर। सम०—घ्न (वि०) बवासीर को नष्ट करने वाला (—घ्नः) सूरण, जिमीकंद (क्योंकि कहते हैं कि यह बवासीर नाशक है)।

अर्शस (वि०) [अर्शस्+अच्] बवासीर से पीड़ित।

अर्ह् (स्वा० पर०) [अर्हति, आर्हीत्, आनर्ह, अर्हितुम्] (आर्ष प्रयोग—आ०, रावणो नार्हते पूजाम्—रामा०) 1. अधिकारी होना, योग्य होना (कर्म० तथा तुमुन्नन्त के साथ)–किमिव नायुष्मानरेरैरान्नार्हति —श० ७, 2. अधिकार रखना, अधिकारी बनना–नवु गर्भः पित्र्यं रिक्थमर्हति—श० ६, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति—मनु० ९।३ 3. योग्य होना, पात्र बनना —अर्थना मयि भवद्भिः कर्तुमर्हति—नै०५।११३, दश०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३७, 4. समान होना, योग्य होना—न ते गात्राण्युत्पाद्यमर्हन्ति—शं० ३।१८, सर्वं ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्—मनु० २।८६, 5. योग्य होना, अनुवाद 'सकता'—न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति—य० ४ 6. पूजा करना, सम्मान करना नीचे प्रेर० दे० 7. (मध्यम पुरुष के साथ—कभी-कभी अन्यपुरुष के साथ भी —तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है), 'अर्ह्' धातु मृदु आदेश, शिष्ट प्रार्थना तथा परामर्श के लिए प्रयुक्त होता है - इसका अनुवाद होता है :- कृपा करना, अनुग्रह करना, प्रसन्न होना द्विजोह्यहान्यर्हसि सोढुमर्हन्—रघु० ५।२५, कृपया प्रतीक्षा कीजिए; —नार्हसि मे प्रणय विहन्तुम् - २।५८, [प्रेर० या चु० पर०] सम्मान करना, पूजा करना, —राजार्जिहत्तं मधुपर्कपाणिः—भट्टि० १।१७, मनु० ३।११९ ।

अर्ह (वि०) [अर्ह्+अच्] 1. आदरणीय, आदर योग्य, पात्र, अधिकारी-अर्हाविभीषयन् विप्रो दण्डमर्हति मानवः कम्—मनु० ८।३९२, 2. योग्य, दावेदार, अधिकारी, (कर्म०, तुमुन्नन्त, तथा समास में) - नैवार्हः पैतृक रिक्थं पतितोत्पादितो हि सः—मनु० ९।१४४, संस्कारार्हत्वं न च लप्स्यसे—रामा०, तस्माच्छ्राद्धं वयं हन्तु धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान्—भग० १।३७, इसी प्रकार मान° वध° दंड° आदि 3. सुहावना, उचित, उपयुक्त —केवलं यानमर्हं स्यात्—पंच० ३, (संबं० के साथ भी)—स भूयोऽर्हो महीभुजाम् पंच० १।८७-९२, 4. उचित मूल्य का, कीमत का, दे० नीचे,—र्हः 1. इन्द्र 2. विष्णु 3. मूल्य (जैसा कि 'महार्हं में)—महार्हशय्यापरिवर्तनच्युतैः—कु० ५।१२, (महानर्हो यस्याः —मल्लिनाथ)—र्हा पूजा, आराधना ।

अर्हणम्-णा [अर्ह्+भावे ल्युट्] पूजा, आराधना, सम्मान, आदर तथा सम्मान के साथ व्यवहार करना—अर्हणामर्हते चक्रुर्मुनयो नयचक्षुषे—रघु० १।५५, शि० १५।२२ ।

अर्हत् (वि०) [अर्ह्+शतृ] योग्य, अधिकारी, पूजनीय—(पुं०) 1. बुद्ध 2. बौद्धधर्म की पुरोहिताई में उच्चतम पद 3. जैनियों के पूज्य देवता, तीर्थंकर—सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः, यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः ।

अर्हन्त (वि०) [अर्ह्+झ वा०] योग्य, अधिकारी,—तः 1. बुद्ध 2. बौद्धभिक्षु ।

अर्हन्ती (स्त्री०) पूजा के योग्य होने का गुण, सम्मान, पूजा, श्रोत्रार्हन्तीचर्णगुणैः—सिद्धा० ।

अर्ह्य (स० कृ०) [अर्ह्+ण्यत्] 1. योग्य, आदरणीय, 2. प्रशंसा के योग्य ।

अल् (भ्वा० उभ०) [अलति-ते, अलितुम्, अलित] 1. सजाना, 2. योग्य या सक्षम होना 3. रोकना, दूर रखना, दे० अलम् ।

अलम् [अल्+अच्] 1. विष्णु का इंक जो उसकी पूंछ में होता है 2. पीली हरताल ।

अलकः [अल्+क्वुन्] 1. घुंघराले बाल, जुल्फें, बाल—ललाटिका चन्दनघूसरालकाः—कु० ५।५५, अलके बालकुन्दानुविद्धम्—मेघ० ६७, (यह शब्द नपुं० भी है जैसा कि मल्लिनाथ केउद्धरण—स्वभावकाव्यलकानि तासाम् —से प्रकट होता है) 2. मस्तक के घूंघर 3. शरीर पर मला हुआ केसर,—का 1. आठ से दस वर्ष तक की आयु की कन्या 2. यक्षों के स्वामी कुबेर की राजधानी—विभाति यस्यां ललितालकायाः मनोहरा वेश्रवणस्य लक्ष्मीः—भामि० २।१०, गत्वाध्वा ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्—मेघ० ७। समः - अधिपः,—ईश्वरः,—पतिः अलका का स्वामी, कुबेर—अत्यजीवदमरालकेश्वरौ—रघु० १९।१५, —अन्तः घूंघर का किनारा या लट,—नन्दा 1. गंगा, गंगा में गिरने वाली नदी, 2. आठ से दस वर्ष के बीच की आयु की लड़की,—प्रभा कुबेर की राजधानी, —संहतिः घुंघरों की पंक्तियां—शि० ६।३ ।

अलक्तः-क्तकः [न रक्तोऽस्मात्, यद्वा लक्ष्म्—स्वार्थे कन्—तारा०] कुछ वृक्षों से निकलने वाली राल, लाल रंग की लाख महावर (प्राचीन काल में स्त्रियों द्वारा शरीर के कुछ अंग इसके द्वारा रंगे जाते थे—विशेषकर से पैरों के तल और ओष्ठ) —(दन्तवासस्ता) चिरोज्झितालक्तकपाटलेन—कु० ५।३४, मालविं० ३।५, अलक्तकाङ्का पदवी तनाम—रघु० ७।७, स्त्रियो हतार्थं पुरुषं निरर्थं निष्पोडितालक्तकवस्यजन्ति—मृच्छ० ४।१५ । समः—रसः महावर, लाक्षारस—अलक्तरसरक्ताभाबलक्तरसवर्जिता, अद्यापि चरणौ तस्याः पद्मकोशसमप्रभौ—रामा०,—रागः महावर का लाल रंग ।

अलक्षण (वि०) [न० त०] 1. चिह्नरहित 2. परिभाषारहित, चिह्न से हीन, परिभाषारहित, 3. जिसमें कोई अच्छा चिह्न न हो, अशुभ, अपशकुन—वलेशावाहा भर्तुरलक्षणाहम् - रघु० १४।५, -णम् 1. बुरा या अशुभ चिह्न 2. जो परिभाषा न हो, बुरी परिभाषा ।

अलक्षित (वि०) [न० त०] अदृष्ट, अनवलोकित—अलक्षितोत्पतनो नृपेण—रघु० २।२७ ।

अलक्ष्मीः (स्त्री०) [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत, निर्धनता ।

अलक्ष्य (वि०) [न० त०] 1. अदृश्य, अज्ञात, अनवलोकित 2. चिह्नरहित, 3. जिस पर कोई विशिष्ट चिह्न न हो 4. देखने में नगण्य 5. जिसमें कोई बहाना न हो, छल-कपट से रहित 6. अर्थों की दृष्टि से गौण । समः - गति (वि०) अदृश्य रूप से घूमने वाला, जन्मता अज्ञात जन्म, अप्रकटक जन्म

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—वर्षाविरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता—कु० ५।७७,—लिंग (वि०) जो वेश बदले हुए हो, जिसका नाम पता छिपा हो,—वाच् (वि०) किसी अदृश्य वस्तु को संबोधित करके बोलने वाला—कु० ५।५७।

अलगर्दः [लगति स्पृशति इति लग्+क्विप्, लग् अर्दयति इति अर्द्+अच्, स्पृशन् सन्, अर्दा न भवति] पानी का साँप।

अलघु (वि०) [स्त्री० घ्वी] [न० त०] 1. जो हल्का न हो, भारी, बड़ा 2. जो छोटा न हो, लम्बा (छंद: शास्त्र में) 3. संगीन, गंभीर 4. गहन, प्रचण्ड, बहुत बड़ा। सम०—उपल: चट्टान,—प्रतिज्ञ (वि०) गंभीर प्रतिज्ञा करने वाला।

अलङ्करणम् [अलम्+कृ+ल्युट्] 1. सजावट, सजाना 2. आभूषण (शा० तथा आल०)—सृजति तावदशेष-गुणाकरं पुरुषरत्नमलङ्करणं भुवः—भर्तृ० ११९२।

अलङ्करिष्णु (वि०) [अलम्+कृ+इष्णुच्] 1. आभूषणों का शौकीन, 2. सजाने वाला, सजाने की क्रिया में कुशल।

अलङ्कारः [अलम्+कृ+घञ्] 1. सजावट, सजाने या अलंकृत करने की क्रिया 2. आभूषण (आलं० से भी) —अलङ्कार: स्वर्गस्य-विक्रम० १, 3. अलंकार जिसके शब्द°, अर्थ° तथा शब्दार्थ° के अनुसार तीन भेद हैं 4. काव्य के गुण दोष बताने वाला शास्त्र। सम०—शास्त्रम् काव्य कला तथा साहित्य शास्त्र,—सुवर्णम् आभूषण घड़ने के लिए सोना।

अलङ्कारकः [अलम्+कृ+ण्वुल्, स्वार्थे कन्] आभूषण, सजावट मनु० ७।२२०, [अलम्+कृ+ण्वुल्] सजाने वाला।

अलङ्कृतिः (स्त्री०) [अलम्+कृ+क्तिन्] 1. सजावट 2. आभूषण, कर्णालङ्कृतिः—अमर० १३, 3. साहित्यिक आभूषण, अलंकार—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावन-लङ्कृती पुनः क्वापि—काव्य० १; यो विद्वान्मन्यते काव्य शब्दार्थावनलङ्कृती, असौ न मन्येत कस्मादनुष्ण-मनलं कृती—चन्द्रा० सालङ्कृतिः श्रवणकोमलवर्ण-राजिः—भामि० ३।६, (यहाँ अ' द्वितीय तथा तृतीय अर्थ प्रकट करता है)

अलङ्क्रिया [अलम्+कृ+णि+टाप्] अलंकृत करना, आभूषित करना, सजाना। (आलं० भी)।

अलङ्घनीय (वि०) [न० त०] जो लांघा न जा सके, पार न किया जा सके, जहाँ पहुँचा न जा सके, पहुँच के बाहर।

अलज्जः [अल+जन्+ड] एक प्रकार का पक्षी।

अलञ्जरः, -जूरः [अल सामर्थ्यं जृणाति—जृ+अच् पृषो० उत् तारा०] मिट्टी का बर्तन, मर्तबान, घड़ा।

अलम् (अव्य०) [अल्+अम् वा०] 1. (क) पर्याप्त, यथेष्ट, काफी (संप्र० या तुमुन्नन्त के साथ)—तस्यालमेषा क्षुधितस्य तृप्त्यै रघु० २।३९, अन्यथा प्रात-राशाय कुर्याम त्वामलं वयम्—भट्टि० ८।९८, (ख) समकक्ष, तुल्य (संप्र० के साथ) दैवेक्ष्यो हरिरलम् सिद्धा०, अलं मल्लो मल्लाय-महाभा० 2. योग्य, सक्षम (तुमुन्नन्त के साथ)—अल भीकुम्—सिद्धा०, वरेण शमितं लोकानलं दग्धुं हि तेजसः—कु० २।५६, (अधि० के साथ भी)—त्रयाणामपि लोकानामलमस्मिन निवारणे—रामा० 3. बस, बहुत हो चुका, कोई आवश्यकता नहीं, कोई लाभ नहीं (निषेधात्मक बल रखना), करण० या क्रियान्त के साथ, अलमन्यथा गृहीत्वा—मालवि० ११२०, आलप्यालमिदं ब्रह्मोर्गत्स दारानपाहरत्—शिव० २।४०, अलं महीपाल तव श्रमेण—रघु० २।३४, कु० ५।८२. अलमियद्धि: कुसुमैः—श० ४, इतने फूल पर्याप्त हैं, 4. (क) पूर्ण-रूप से, पूरी तरह से—अहंस्येनं शमयितुमलं वारि-धारा सहस्रैः—मेघ० ५३, त्वयापि विततमज्ञः स्वगिणः प्रीणयितव्यः—श० ७।३४, (ख) बहुत, अत्यधिक, बहुत ही अधिक,- नुदन्ति अलम् का० २, यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति—अमर०। सम०—कर्मीण (वि०) कार्य करने में सक्षम, दक्ष, कुशल, -कृ दे० 'कृ' के नीचे,—जीविका (वि०) जीविका के लिए यथेष्ट,—धन (वि०) यथेष्ट धन रखने वाला, धनवान्,—निरा-दिष्टधनधेषु प्रतिभू: स्यादलंधनः—मनु० ८।१६२, —धूमः अधिक धुआं, धूमपुंज, धुएँ का अंबार,-पुरुषीण (वि०) 1. जो मनुष्य के योग्य हो, मनुष्य के लिए पर्याप्त हो, -बल (वि०) पर्याप्त बल शाली, यथेष्ट शक्तिशाली,- बुद्धिः पर्याप्त समझ,- भूरण (वि०) योग्य, सक्षम विनाप्यरमदलंभूष्णुरिज्यायै तपसः सुतः—शि० २।९।

अलम्पट (वि०) [न० त०] जो लंपट या विषयी न हो, शुद्ध चरित्र वाला, -टः अन्तः पुर।

अलम्बुषः [अल पुरुणाति इति-पुष्+क पृषो० पस्य वः] 1. वमन, छर्दि, 2. खुले हुए हाथ की हथेली।

अलय (वि०) [न० व०] 1. गृहहीन, आवारा 2. नाश न होने वाला, अविनश्वर, यः [न० त०] 1. अन-स्थिरता, स्थायित्व 2 जन्म, उत्पत्ति।

अलर्कः [अलम् अर्क्यते अर्च्यते वा अर्क्+अच्, अर्च्+घञ् वा शक० पररूपम्] 1. पागल कुत्ता या मदोन्मत्त श्वापद 2. सफेद मदार।

अलले (अव्य०) [अर+रा+क रस्य लः] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त होने वाला पैशाची बोली का शब्द जिसका कोई अपना तात्पर्य नहीं।

अलवालम् [न० त०] वृक्ष में पानी देने के लिए जड़ में बना हुआ स्थान दे० 'आलवाल'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलस् (वि०) [न० त० लस्+विच्] न चमकने वाला।

अलस (वि०) [न लसति व्याप्नोति - लस्+अच्] 1. अक्रिय, स्फूर्तिहीन, सुस्त, आलसी 2. थका हुआ, श्रान्त, क्लान्त,—मार्गश्रमादलसशरीरे दारिके—मालवि०, ५, अमरु० ४।९०, विक्रम० ३।२, मगन-मलसम्—या० १।१७, 3. मृदु, कोमल 4. धीला, मन्द (गति में)—श्रोणीभारादलसगमना—मेघ० ८२। सम०—**ईक्षणा** वह स्त्री जिसकी मदभरी दृष्टि हो।

अलसक (वि०) [अलस+कन्] अकर्मण्य, सुस्त, —**कः** सफारा, पेट का एक रोग।

अलाबुः-बु: तम् [न० त०] अंगार, अधजली लकड़ी —निर्वाणालातलाघवम् कु० २।२३।

अलाबुः—बूः (स्त्री) [न—लम्बते; न+लम्ब्+उ—णित् नलोपश्च वृद्धिः—तारा०] लंबी लौकी—**बु** (नपु०) 1. तुमड़ी का बना पान-पात्र 2. तुमड़ी का हलका फल जो पानी पर तैरता है—किं हि नाभैतत् लम्बुनि मज्जत्यलाबूनि धारयति प्लवन्त इति—महावी० १, मनु० ६।५४। सम०—**कटम्** लौकी का कसा हुआ चूरा,—**पात्रम्** तुमड़ी का बना बर्तन।

अलारम् [ऋ—अड, लुक्+अच् रस्य लः] दरवाजा।

अलिः [अल्+इन्] 1. भौंरा 2. बिच्छू 3. कौवा 4. कोयल 5. मदिरा। सम०—**कुलम्** भौंरों का झुंड, °**संकुल** मक्खियों के झुंड से भरा हुआ—अलिकुल सङ्कुलकुसुमसमरनिराकुलनवदलमालतिमाले—गी० °**सङ्कुल कुञ्ज** नामक पौधा,—**जिह्वा,-जिह्वक** गले के भीतर का कौवा, घांटी, कोमल तालु—प्रिय जो भौंरों को अच्छा लगे (—यः) लाल कमल, (—या) बिसूल जैसा फूल,—**माला** भौंरों का समूह,—**विराजः**, —रुतम् भौंरों का गुंजार,—**वल्लभः**=°**प्रियः** तुः।

अलिकम् [अल्यते भूष्यते—अल्+कर्मणि इकन्] मस्तक, -अलिकेन च हेमकान्तिना भामि० २।१७१, विद्धाल० ३।६.।

अलिन् (पुं०) [अल् + इनि] 1. बिच्छू 2. भौंरा, - **नि**-निमज्जिनि माधवयोषितास्—शि० ६।४, —नी भौंरों का झुंड, - अरमतालिनी शिलीन्ध्रे—शि० ६।७२, अलिनीक्षिणः कवाना चयः - भर्तृ० १।५।

अलिन्दः [दे० 'अलर्दः'] एक प्रकार का सांप।

अलिङ्ग (वि०) [न० ब०] 1. जिसका कोई विशिष्ट चिह्न न हो, चिह्न रहित 2. बुरे चिह्नों वाला 3. (व्या० में) जिसका कोई लिंग न हो।

अलिञ्जरः [अलम्+अञ्+अरः पृषो० मुम्] जलपात्र, दे० 'अलंजर'।

अलिन्दः [अल्यते भूष्यते, अल्+कर्मणि किदच्] 1. घर के दरवाजे के सामने का चबूतरा—मत्तालिन्दतोरणम् —मालवि० ५, 2. दरवाजे पर बनी चौकोर जगह।

अलिपक्षः [न० त०] 1. कोयल 2. भौंरा 3. कुत्ता।

अलिमकः=दे० अनिमकः।

अलिम्पक—क=दे० अनिमक।

अलीक (वि०) [अल्+चीकन्] 1. अप्रिय, अरुचिकर 2. असत्य, मिथ्या, मनगढ़न्त -अलीकोपकान्तेन—का० १४७, °**वचन**—अमरु० २३, ३८, ४३,—**कम्** 1. मस्तक 2. मिथ्यात्व, असत्यता।

अलीकिन् (वि०) [अलीक+इनि] 1. अरुचिकर, अप्रिय 2. मिथ्या, छलने वाला।

अलुः [अल्+उन्] छोटा जल-पात्र।

अलुक्, °**समासः** [नास्ति विभक्तेः लुक् लोपो यत्र] एक समास जिसमें पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता, उदा० - सरसिजम्, आत्मनेपदम्।

अले, अलेले (अव्य०) [अरे, अरेरे इत्येव रस्य लः] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त निरर्थक शब्द जो पिशाची बोली में पाये जाते हैं।

अलेपक (वि०) [न० ब० कप्] बेदाग—**कः** परछा।

अलोक (वि०) [न० ब०] 1. जो दिखाई न दे—जैसा कि—लोकालोक इवाचलः—रघु० १।६८ [न लोक्यत इति अलोकः—मल्लि०] 2. जिसमें लोग न हों 3. (अच्छे कर्म न होने के कारण) जो मृत्यु के उपरांत किसी दूसरे लोक में नहीं जाता,—**कः**—**कम्** [न० त०] 1. जो लोक न हो, 2. संसार की समाप्ति या नाश, लोगों का अभाव—रक्ष सर्वानिमाल्लोकान् नालोकं कर्तुमर्हसि—रामा०। सम०—**सामान्य** असाधारण, असामान्य।

अलोकनम् [न० त०] अदृश्यता, दिखाई न देना, अंतर्धान होना।

अलोल (वि०) [न० त०] 1. शान्त, क्षोभरहित 2. दृढ़, स्थिर, 3. अचंचल 4. जो प्यासा न हो, इच्छा रहित।

अलोलुप (वि०) [न० त०] 1. इच्छाओं से मुक्त 2. जो लालची न हो, विषयों के उदासीन।

अलौकिक (वि०) [स्त्री०—**की**] [न० त०] 1. जो लोक में प्रचलित न हो, असाधारण, लोकोत्तर 2. जो सामान्य भाषा में प्रचलित न हो, धर्म-लेखों के लिए विशिष्ट, श्रेष्ठ साहित्य में अप्रयुक्त, वैदिक 4. प्राकाल्पनिक, °**त्वम्** किसी शब्द का विरल प्रयोग—अलौकिकत्वादमरः स्वकोषे न यानि नामानि समुल्लिलेख, विलोक्य तैरप्यधुना प्रचारमयं प्रयत्नः पुरुषोत्तमस्य—विक्रा०।

अल्प (वि०) [अल्+पप्] 1. तुच्छ, महत्त्वहीन, नगण्य (विप० महत् या गुरु) मनु० ११।३६, 2. छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म, जरा सा (विप० बहु)—अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७, १, २, 3. मरणशील जो थोड़ी देर जीवे 4. कभी-कभी होने वाला, विरल,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—स्पर्श,—स्पर्शन,—स्पात् (क्रि० वि०) 1. जरा 2. जरा से कारण से,—प्रीतिरल्पेन भिद्यते—रामा० 3. अनायास, बिना किसी कष्ट या कठिनाई के। सम०—अल्प (वि०) बहुत ही जरा सा, सूक्ष्म; थोड़ा-थोड़ा करके, —अम्बु=°प्राण देo,—आकांक्षिन् (वि०) थोड़ा चाहने वाला, संतुष्ट, थोड़े से ही संतुष्ट,—आयुस् (वि०) थोड़ी देर जीने वाला मेघ० ४।१५७, (—युः पुं०) 1. छोटी आयु का. बच्चा, 2. बकरी,—आहार, —आहारिन् (वि०) मिताहारी, खाने में औसतदर्जे का (—रः) परिमितता, भोजन में संयम—इतर (वि०) 1. जो छोटा न हो, बड़ा 2. जो कम न हो, बहुत. जैसे °राः कल्पनाः, नाना प्रकार के विचार,—ऊन (वि०) ईषद्दोषी, अधूरा,—उपायः छोटे साधन,—गंध (वि०) थोड़ी गंध वाला (—धम्) लाल कमल, —चेष्टित (वि०) क्रियाशून्य,—छद, —छाद (वि०) थोड़े वस्त्र धारण किये हुए मृच्छ० १।३७,—ज्ञ (वि०) थोड़ा जानने वाला, उथले ज्ञान वाला, मोटी जानकारी रखने वाला,—तनु (वि०) 1. ठिगना, छोटे कद का 2. दुर्बल, पतला,—दृष्टि (वि०) जिसका मन उदार न हो, अदूरदर्शी,—धन (वि०) जो धनवान् न हो, धनहीन,—मनु० ३।६६, ११।४०,—धी (वि०) दुर्बलमना, मूर्ख, प्रज्ञ (वि०) थोड़ी संतान वाला, —प्रमाण,—प्रमाणक (वि०) 1. थोड़े वजन का, थोड़ी माप का, 2. थोड़े प्रमाणों वाला, थोड़े से साक्ष्य पर निर्भर रहने वाला,—प्रयोग (वि०) विरलता से प्रयुक्त, कभी-कभी प्रयुक्त,—प्राण,—असु (वि०) थोड़ा श्वास रखने वाला, दमे का रोगी (—णः) 1. थोड़ा श्वास लेना, दुर्बल श्वास 2. (व्या० में) वर्णमाला के महा प्राणताहीन अक्षर—उदा० स्वर, अर्धस्वर, अनुनासिक तथा क् च् ट् त् प् ग् ज् ड् द् ब् अक्षर; —बल (वि०) दुर्बल, बलहीन, कम शक्ति रखने वाला, —बुद्धि, —मति (वि०) दुर्बलबुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी —मनु० १२।७४, —भाषिन् (वि०) वाक्—कृपण, थोड़ा बोलने वाला, —मध्यम (वि०) पतली कमर वाला,—मात्रक (वि०) थोड़ा सा, जरा सा,—मूर्ति (वि०) छोटे कद का, ठिगना (—तिः—स्त्री०) छोटी आकृति या वस्तु, —मूल्य (वि०) थोड़ी कीमत का सस्ता,—मेधस् (वि०) थोड़ी समझ का, अज्ञानी, मूर्ख, —वयस् (वि०) थोड़ी आयु का, कमसिन, —वादिन् (वि०) अल्पभाषी, —विद्य (वि०) अज्ञानी, अशिक्षित, —विद्यम् (वि०) सीमित पैमाने या धारिता से युक्त, —संचालपविधया मतिः—रघु० १।२, —शक्ति (वि०) कमजोर, दुर्बल, —सरस् (नपुं०) पोखर, छोटा जोहड़ (जो गर्मियों में सूख जाता है)।

अल्पक (वि०) [स्त्री० —ल्पिका] [अल्प+कन्] 1. छोटा, थोड़ा 2. क्षुद्र, नीच।

अल्पभक्ष (वि०) [अल्प+भक्ष्+खश्—मुम्] (थोड़ा खाने वाला) लालची, कंजूस, मक्खीचूस;—क्षः कृपण।

अल्पशः (अव्य०) [अल्प+शस्] 1. थोड़े अंश में, जरा, थोड़ा—बहुशो ददाति आभ्युदयिकेषु, अल्पशः श्राद्धेषु —पा० ५।४।४२, टीका, 2. कभी-कभी, यदा कदा।

अल्पित (वि०) [अल्प कृतमिति णिच् कर्मणि—क्त] 1. घटाया हुआ, 2. सम्मान की दृष्टि से नीचा, तिरस्कृत —मृषा न चक्रेऽल्पितकल्पपादपः—नै० ११।५

अल्पिष्ठ (वि०) [अतिशयेन अल्पः—इष्ठन्] न्यूनातिन्यून, छोटे से छोटा, अत्यन्त छोटा।

अल्पीकृ (तना० उभ०) छोटा बनाना, घटाना, संख्या में कमी करना।

अल्पीयस् (वि०) [अतिशयेन अल्पः—ईयसुन्] अपेक्षाकृत छोटा, दूसरे से कम, बहुत थोड़ा।

अल्ला [अल्यते इति अल्+विच्प, अले भूपदेि लाति गृह्णाति—ला+क] माता (संबोधन—अल्ले)।

अव् (भ्वा० पर०) [अवति, अवित या ऊत] 1. रक्षा करना, बचाना,—यमवतामवतां च धुरि स्थितः—रघु० ९।१, प्रत्यग्रदानाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्त्राभिरष्टाभिरीशः—पा० १।१, 2. प्रसन्न करना, संतुष्ट करना, सुख देना, विकत्थन्ते न मामवति लज्जिते त्वयि—रघु० ११।७५, न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी—११।६५, 3. पसन्द करना, कामना करना, इच्छा करना 4. कृपा करना, उन्नत करना (धातुपाठ में इस धातु के और अनेक अर्थ दिये गये हैं, परन्तु श्रेष्ठ साहित्य में उनका प्रयोग विरल होता है)।

अव (अव्य०) [कई बार आरंभिक 'अ' को लुप्त कर दिया जाता है जैसा कि "पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य" कु० १।१ में] [अव्+अच्] 1. (सं० बो० अव्य० के रूप में) दूर, परे, फासले पर, नीचे, 2. (क्रिया से पूर्व उपसर्ग के रूप में) यह प्रकट करता है (क) संकल्प, दृढ़ निश्चय—अवधृ (ज्ञ) विस्मरण, परिव्याप्ति—अवकृ (ग) अनादर—अवज्ञा (घ) थोड़ा पन, दीहीनवहन्ति (ङ) आश्रय लेना, सहारा लेना अवलम्ब् (च) पवित्रीकरण—अवदात (छ) अवमूल्यन, पराजय—अवहन्ति शत्रून् (झ) विसरण, परिव्याप्ति—अवकृ (ग) अनादर—अवज्ञा (घ) थोड़ा पन, दीहीनवहन्ति (ङ) आश्रय लेना, सहारा लेना अवलम्ब् (च) पवित्रीकरण—अवदात (छ) अवमूल्यन, पराजय—अवहन्ति शत्रून् (झ) विसरण, परिवर्तन (ज) आदेश देना—अवनम्र (ञ) अवसाद, नीचे झुकना—अवतृ, अवगाह् (ञ) ज्ञान—अवगम्, अवह, 3. तत्पुरुष समास के प्रथम खण्ड के रूप में इसका अर्थ होता है:—अवकूट, उदा० अवकोकिलः—अवकुष्टः कोकिलया निहतः।

अवकट (वि०) [अव—स्वार्थे—कटच्] 1. नीचे की

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओर, पीछे की ओर 2. विपरीत, विरोधी, —दम् विरोध, वैपरीत्य ।

अवकरः [अव + कृ + अप्] धूल, बुहारन ।

अवकर्तः [अव + कृत् + घञ्] टुकड़ा, घज्जी ।

अवकर्तनम् [अव + कृत् + ल्युट्] काटना, घज्जियां करना ।

अवकर्षणम् [अव + कृष् + ल्युट्] 1. बाहर निकालना, खींचना 2. निष्कासन ।

अवकलित (वि०) [अव + कल् + क्त] 1. दृष्ट, अवलोकित 2. ज्ञात 3. लिया हुआ, गृहीत ।

अवकाशः [अव + काश् + घञ्] 1. अवसर, मौका,—ताते चापाद्वितीये वहति रघुधुरां को भयस्यावकाशः—वेणी० ३।७, लभ् के साथ प्रयुक्त होकर इसका अर्थ होता है—कार्य के लिए क्षेत्र या अवसर प्राप्त करना, —लब्धावकाशोऽविष्यन्मां तज्ज दग्धो मनोभवः—कथा० १।४१ 2. (क) स्थान, जगह, ठौर—अवकाशं किलोदन्वान्रामायाभ्यर्थितो ददौ रघु० ४।५८ इसी प्रकार —अन्यमवकाशमन्वयाहे—विक्रम० ४, यथावकाशं नौ उचित स्थान पर ले जाना —रघु० ६।१४,—अस्माकप्रस्ति न कथंचिदिहावकाशः—पंच० ४।८, अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्योः समागमे—रामा० (ख) पदार्पण, प्रवेश, पहुंच, अन्तर्गमन (छाया) सूढे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२, लभ् के साथ बहुधा इन्हीं अर्थों में प्रयोग—लब्धावकाशो मे मनोरथः—श०१, शोकावेगदूषिते मे मनसि विवेक एव नावकाशं लभते प्रबो०, कु या दा से पूर्व लगकर भी अर्थ होता है 'स्थान देना' 'प्रवेश कराना' 'मार्ग देना'—असौ हि दत्त्वा तिमिराववाशम् -मृच्छ० ३।९, तस्माद्देशो विपुलमनिभिन्नदिकाशोऽधमानाम्-पंच० १।३६६; अवकाशं रुध् = रोकना, छाया डालना —नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशा (निद्रा)— मेघ० ९१, 3. अन्तराल, बीच का स्थान या समय 4. द्वारक, विवर ।

अवकीर्णिन् (वि०) [अवकीर्ण + इनि] संयम का उल्लंघन करने वाला, ब्रह्मचर्य व्रत को तोड़ देने वाला, (पुं०—र्णी) धर्मनिष्ठ विद्यार्थी जिसने मैथुनादिक करके अपने ब्रह्मचर्य व्रत को तोड़ा और संयमशीलता का परिचय दिया; —अवकीर्णी भवेद्गत्वा ब्रह्मचारी तु योषितम्, गर्दभं पशुमालभ्य नैर्ऋतं स विशुध्यति—याज्ञ० ३।२८०, मनु० ३।१५५ ।

अवकुञ्चनम् [अव + कुञ्च् + ल्युट्] झुकाव, मोड़, सिकुड़न ।

अवकुण्ठनम् [अव + कुण्ठ् + ल्युट्] 1. घेरना, घेरा डालना 2. आकृष्ट करना, कस के पकड़ना ।

अवकुण्ठित (वि०) [अव + कुण्ठ् + क्त] 1. घेरा हुआ, परिवेष्टित 2. आकृष्ट ।

अवकृष्ट (भू० क० कृ०) [अव + कृष् + क्त] 1. खींचकर नीचे किया हुआ, 2. दूर हटाया हुआ 3. निष्कासित, बाहर निकाला हुआ 4. घटिया, नीच, पतित, बहिष्कृत (विप० उत्कृष्ट या प्रकृष्ट) —ष्टः वह नौकर जो झाड़-बुहारु आदि का काम करता है (संभवतः शूद्रान्तर्गत विनियुक्त); —पणो देयोऽवकृष्टस्य, षड्कृष्टस्य वेतनम्—मनु० ७।१२६ ।

अवकल्पः (स्त्री०) [अव + कल्प् + क्तिन्] 1. संभव समझना, संभावना, संभाव्यता—क्वैव भोक्ष्यसे अनवकल्प्तावेव—सिद्धा० (अनवकल्प्तिरसम्भावना) 2. उपयुक्तता ।

अवकेशिन् (वि०) [अवच्युतं कं सुखं यस्मात्—अवकम् (फलशून्यता) तदरीशितुं शीलमस्य इति अवक + ईश् + णिनि] फलहीन, बंजर (जैसा कि वृक्ष) ।

अवकोकिल (वि०) [अवकुष्टः कोकिलया] कोयल द्वारा तिरस्कृत ।

अवक्र (वि०) [न० त०] जो टेढ़ा न हो, (आलं०) ईमानदार, सच्चा ।

अवक्रन्द (वि०) [अव + क्रन्द् + घञ्] शनैः २ रुदन करने वाला, दहाड़ने वाला, हिनहिनाने वाला,—दः चिल्लाना, चीख, चीत्कार ।

अवक्रन्दनम् [अव + क्रन्द् + ल्युट्] जोर से चिल्लाना, ऊंचे स्वर से रोना ।

अवक्रमः [अव + क्रम् + घञ्] नीचे उतरना, उतार ।

अवक्रयः [अव + क्री + अच्] 1. मूल्य 2. मजदूरी, किराया, खेत का भाड़ा 3. किराये पर देना, पट्टे पर देना 4. (राजा को दिया जाने वाला) कर या राजस्व, शुल्क (राजग्राह्यं द्रव्यम् सिद्धा०) ।

अवक्रान्तिः (स्त्री०) [अव + क्रम् + क्तिन्] 1. उतार 2. उपागम ।

अवक्रिया [अव + कृ + श + टाप्] भूल, चूक ।

अवक्रोशः [अव + क्रुश् + घञ्] 1. बेमेल ध्वनि 2. कोसना 3. दुर्वचन, निन्दा ।

अवक्लेदः [अव + क्लिद् + घञ्] 1. टपकना, ओस पड़ना 2. कचलहू, पीप ।

अवक्लेदनम् [अव + क्लिद् + ल्युट्] बूंद २ टपकना, ओस या कुहरे का गिरना ।

अवक्वणः [अव + क्वण् + अच्] बेसुरा अलाप ।

अवक्वाथः [अव + क्वथ् + घञ्] अधूरा पचन या अधूरा उबालना ।

अवक्षयः [अव + क्षि + अच्] नाश, बरबादी, ध्वंस, तबाही ।

अवक्षयणम् [अव + क्षि + ल्युट्] (आग आदि को) बुझाने के साधन ।

अवक्षेपः [अव + क्षिप् + घञ्] 1. लांछन, निन्दा 2. आक्षेप ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवक्षेपणम् [अव+क्षिप्+ल्युट्] 1. नीचे की ओर फेंकना, कर्म के पांच प्रकारों में से एक, दे० 'कर्म' 2. घृणा, नफ़रत 3. बदनामी, लांछन 4. पराजित करना, दमन करना--जी बागडोर, लगाम।

अवखण्डनम् [अव+खण्ड्+ल्युट्] बांटना, नष्ट करना।

अवखातम् [प्रा० स०] गहरी खाई।

अवगणनम् [अव+गण्+ल्युट्] 1. अवज्ञा, तिरस्कार, अवहेलना 2. निंदा, लांछन 3. अपमान, मानभंग।

अवगण्डः [प्रा० स०] फोड़ा फुंसी जो गाल पर होती है।

अवगतिः (स्त्री०) [अव+गम्+क्तिन्] 1. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण, समझ, तत्व और निश्चित ज्ञान—ब्रह्मावगतिहि पुरुषार्थः ब्रह्मावगतिस्त्वप्रतिबाधा—शत०।

अवगमः—गमनम् [अव+गम्+घञ्, ल्युट् वा] 1. निकट जाना, नीचे उतरना 2. समझना, प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान।

अवगाढ (भू० क० कृ०) [अव+गाह्+क्त] 1. डुबकी लगाया हुआ, घुसा हुआ, डूबा हुआ,—अमलहृदावगाढावगाढोऽस्मि—शं० ७. 2. नीचे दबाया गया,—नीचा, गहरा (शा० आलं०) अभ्युन्नता दुरारूढवगाढा जघनगौरवादाच्चात्—श० ३।७, 3. घनीभूत, जमा हुआ (जैसे रक्त)।

अवगाहः—गाहनम् [अव+गाह्+घञ्—ल्युट् वा] 1. स्नान, —सुभगसलिलावगाहाः—श० १।३ सदावगाहक्षमधारिसंचयः—ऋतु० १।१ 2. डुबकी लगाना, डुबाना, यमुना— परदेशावगाहनात्—हि० ३।२५, जलावगाहक्षणमात्रशान्ता—रघु० ५।४७, दरावगाढदवगाहनाय त्रिधिना रम्यं सरो निर्मितम्—भृंगार० १, 3. (आलं०) निष्णात होना, सीख लेना 4. स्नानागार।

अवगीत (भू० क० कृ०) [अव+गै+क्त] 1. बेसुरे स्वर से गाया हुआ, बुरी तरह से गाया हुआ 2. घनीकाया हुआ, गाली दिया हुआ, कोसा गया 3. डांट बतलाया 4. गान द्वारा व्यंग्यात्मक ढंग से चोट किया गया; --तम् 1. व्यंग्यगान, परिहास 2. धिक्कार, लांछन।

अवगुणः [प्रा० स०] अपराध, दोष, बुराई—अन्यदोषं परावगुणम्—मल्लि० कि० १३।४८।

अवगुण्ठनम् [अव+गुण्ठ्+ल्युट्] 1. घूंघट निकालना, छिपाना, बुर्का ओढ़ना 2. पर्दा (मुंह के लिए) (आलं० भी)—अवगुण्ठनवतीनां कुलजाभिसरेदादि—सा० द०—कुलवधूर्धार्यावगुण्ठनः—मुद्रा० ६, 3. घूंघट, बुर्का।

अवगुंठनवत् (वि०) [अवगुण्ठन+मतुप्] घूंघट से ढका हुआ, पर्दे से आवृत, जैसे नारी—शं० ५।

अवगुण्ठिका [अव+गुण्ठ्+ण्वुल्+टाप्] 1. घूंघट, पर्दा 2. आवरण 3. चिक या पर्दा।

अवगुण्ठित (भू० क० कृ०) [अव+गुण्ठ्+क्त] पर्दा पड़ा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ—रजनीतिमिरावगुण्ठितैः—कु० ४।११।

अवगुरणम्,—गोरणम् [अव+गुर्+ल्युट्] घुड़कना, धमकाना, मार डालने के इरादे से प्रहार करना, शस्त्रों से आक्रमण करना।

अवगूहनम् [अव+गूह्+ल्युट्] 1. छिपाना, प्रच्छन्न रखना 2. आलिंगन करना।

अवग्रहः [अव+ग्रह्+घञ्] 1. समस्त पद के घटक शब्दों को अलग अलग करना, सन्धिच्छेद करना 2. इस प्रकार की पृथकता को द्योतन करने वाला चिह्न 3. विराम, सन्धि का न होना (जैसा कि—त्रिः ता च तं च गदनं च इमां च मां च—इसमें च+इमां=चेमां सन्धि नहीं हुई) 4. ए और ओ से परे 'अ' का लोप हो जाने पर ऽ चिह्न 5. वर्षा का न होना, सूखा पड़ना, अनावृष्टि—वृष्टिर्भवति सस्यानामवग्रहविशोषिणाम्—रघु० १।६२, १०।४८, नभोनभस्ययोर्वृष्टिमवग्रह इवान्तरे—१२।२९, रूपेव सीतां नवदावग्रहक्षताम् कु० ५।६१, 6. बाधा, रोक 7. हाथियों का समूह 8. हाथी का मस्तक 9. प्रकृति, मूलस्वभाव 10. दण्ड (विप० अनुग्रह) 11. कोसना गाली देना।

अवग्रहणम् [अव+ग्रह्+ल्युट्] 1. बाधा, रुकावट 2. अनादर, अवहेलना

अवग्राहः [अव+ग्रह्+घञ्] 1. टूटना, वियोजन 2. अड़चन 3. शाप दे० 'अवग्रह'।

अवघट्टः [अव+घट्ट्+घञ्] 1. बिल, गुहा, मांद 2. छिलका, चक्की (अनाज पीसने के लिए), 3. जोर से हिलाना।

अवघर्षणम् [अव+घृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना 2. मलना 3. पीसना।

अवघातः [अव+हन्+घञ्] 1. प्रहार करना 2. चोट पहुंचाना, मारना 3. प्रचण्ड आघात, तीव्र आघात—कर्णावसानविपुणेन च ताड्यमाना दूरीकृताः करिवरेण (भृंगाः) -नीति० २, 4. धान आदि को ओखल में डालकर मूसल से कूटना।

अवघूर्णनम् [अव+घूर्ण्+ल्युट्] घुमेरी आना, चक्कर आना।

अवघोषणम् -णा [अव+घुष्+ल्युट्] 1. घोषणा करना 2. उद्घोषणा।

अवघ्राणम् [अव+घ्रा+ल्युट्] सूंघने की क्रिया।

अवचन (वि०) [न० स०] न बोलने वाला, चुप, वाणी रहित—अकुलस्य साध्वसादवचना तिष्ठति—श० १, नम् 1. उक्ति का अभाव, चुप्पी, मौन 2. निन्दा, लांछन, भर्त्सना—कर (वि०) आज्ञा न मानने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवचनीय (वि०) [न० त०] 1. जो कहने के या उच्चारण करने के योग्य न हो, अश्लील या अशिष्ट (भाषा) —वादेष्ववचनीयेषु सदैव द्विगुणं भवेत्-मनु० ८।२६९, 2. जो निन्दा या लाछन के योग्य न हो, निन्दा से मुक्त—लोकैरवचनीया भवति—मुच्छ० २, 'ता कहने में अनौचित्य, निन्दा से मुक्ति -सर्वथा व्यवहर्तव्ये कुतो ह्यवचनीयता - उत्तर० १।५ ।

अवचय (चा) **यः** [अव+चि+अच्, घञ् वा] चयन करना (फल फूल आदि का)—ततः प्रविशतः कुसुमावचयम-भिनयन्त्यौ सख्यौ— श० ४, अविरतकुसुमावचायखे-दात् —शि० ७।७१ ।

अवचारणम् [अव+चर्+णिच्+ल्युट्] किसी काम पर नियुक्त करना, प्रयोग, प्रगमन की पद्धति ।

अवचूडः-लः [अवनता चूडा अग्रं यस्य वा डो लः] रथ के ऊपर लहराता हुआ कपड़ा, ध्वजा के शिरोभाग में बंधा हुआ (चौरी जैसा) अधोमुख वस्त्रखंड, पिच्छा-वचूडमनुमाधवधाम जग्मुः—शि० ५।१३, दिवसकर-वारणस्यावचूलचामरकलापः - का० २६ ।

अवचूर्णनम् [अव+चूर्ण्+ल्युट्] 1. चूरा करना, पीसना, चूर्ण बनाना 2. चूरा बुरकाना विशेषकर कोई सूखी दवा घाव पर बुरकाना ।

अवचूल दे० अवचूड ।

अवचूलकः-कम् [अवनता चूडा यस्य, इश्च लत्वम्—संज्ञायां कन्] मक्खियों को उड़ाने के लिए बुरी या चवर ।

अवच्छ (च्छा) **दः** [अव+छद्+क] आवरण, ढक्कन—कांचनावच्छदात् (स्वरान्)— रामा० ।

अवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [अव—छिद्+क्त] 1. काटा हुआ 2. अलगाया हुआ, बंटा हुआ, पृथक् किया हुआ 3. (तर्कशास्त्र में) अपने विहित विशिष्ट गुणों द्वारा दूसरी सब वस्तुओं से पृथक् की गई वस्तु 4. सीमित, विकृत, निश्चित—दिक्कालाद्यनवच्छिन्न-भर्तृ० २।१, 5. किसी विशेषण से युक्त, विशिष्ट, विवेचित तथा उपलक्षित ।

अवच्छुरित (वि०) [अव+छुर्+क्त] मिश्रित तस् अट्टहास ।

अवच्छेदः [अव+छिद्+घञ्] 1. खंड, अंश 2. सीमा, मर्यादा 3. निच्छेद 4. भेद, विवेचन, (विशेषणों द्वारा) विशिष्टीकरण 5. दृढ़ निश्चय, निर्णय, फैसला—शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः—वाक्य० ६, 6. पदार्थ का वह गुण जो उसे औरों से अलग कर दे, लक्षणदर्शी गुण 7. सीमा बांधना, परिभाषा करना ।

अवच्छेदक (वि०) [अव+छिद्+ण्वुल्] 1. विशेषक 2. निवारक, निर्णायक 3. सीमा बांधने वाला 4. विवेचक, विशिष्टीकारक 5. विशेष लक्षण—कः 1. जो विवेचन करे 2. विधेय, लक्षण, गुण ।

अवजयः [अव+जि+अच्] पराजय, दूसरों पर विजय, —येनेन्द्रलोकावजयाय दृप्तः—रघु० ६।६२ ।

अवजितिः (स्त्री०) [अव+जि+क्तिन्] विजय, पराजय ।

अवज्ञा [अव+ज्ञा+क] अनादर, तिरस्कार, अवमति, अवहेलना (कर्म०, करण०, अधि० या संब० के साथ) —अनभ्यवज्ञा शिक्षितैर्लक्षितेषु—रघु० २।४१, ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञाम् -मा० १।६ । सम०—उपहत तिरस्कृतपीडित, नीचा दिखाया गया—दुःखम् नीचा दिखाये जाने की वेदना—या जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति—शि० २।४५ ।

अवज्ञानम् [अव+ज्ञा+ल्युट्] अनादर, तिरस्कार ।

अवटः [अव्+अटन्] 1. विवर, गुफा 2. गर्त—अवटे चापि मे राम प्रक्षिप्तेमं कलेवरं, अवटे वे निधीयंते—रामा० 3. कुआं 4 शरीर का कोई दबा हुआ या नीचा भाग, लाड़वण, - अवटस्नैवमेतानि स्थानान्यत्र शरीरके— याज्ञ० ३।९८ 5. बाजीगर । सम०—कच्छपः गढ़े में घुसा हुआ कछुआ (आलं०) अनुभवशून्य, जिसने संसार का कुछ न देखा हो ।

अवटिः-टी (स्त्री०) [अव्+अटि पक्षे ङीष्] 1. विवर 2. कुआं ।

अवटीट (वि०) [नासिकायाः नतं अवटीटम्, अव+टीटन् नासिकायाः संज्ञायाम् नासिकाध्वटीटा, पुरुषोऽप्यव-टीटः] जिसकी नाक चपटी है, चपटी नाक वाला ।

अवटु [अव+नीक्+डुः] 1. बिल 2. कुआं 3. गरदन का पृष्ठभाग, ४ शरीर का दबा हुआ अंग—टुः (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग,—टु (नपुं०) विवर, दरीर ।

अवडीनम् [अव+डी+क्त] पक्षी की उड़ान, नीचे की ओर उड़ना ।

अवतंसः-सम् [अव+तंस्+घञ्] 1. हार 2. कर्णाभूषण, अंगूठी के आकार का आभूषण, कान का गहना (आलं० भी)—गणा नमेरुप्रसवावतंसाः—कु० १।५५, स्ववाहन-क्षंभचलावतंसाः—७।३८, रघु० १३।४९, 3. शिरो-भूषण, मुकुट (आलं०) आभूषण का काम देने वाली कोई भी वस्तु—तामरसावतंसाः जलसंनिवेशाः— वात० २।३, पुंडरीकावतंसाभिः परिखाभिः—रामा० —पुष्पावतंसं सलिलम्—सुभ्रु० ।

अवतंसकः [अव+तंस्—ण्वुल्] कर्णाभूषण, आभूषण ।

अवतंसयति (ना० धा० पर०) कर्णाभूषण के रूप में प्रयुक्त करना, कानों की बालियाँ बनाना—अवतंसयन्ति स्तमानाः प्रमदाः शिरोरुकुसुमानि—श० १।४ ।

अवततिः (स्त्री०) [अव+तन्+क्तिन्] फैलाव, प्रसार ।

अवतप्त (भू० क० कृ०) [अव+तप्+क्त] गरम किया हुआ, चमकाया हुआ—अवतप्ते नकुलस्रिधतम्—आबेटी नेवले का गर्म भूमि पर खड़ा होना, (रूपक के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढंग से इस प्रकार मनुष्य की अस्थिरता के विषय में कहा जाता है)—अवतले नकुलस्थितं त एतत्—सिद्धा० ।

अवतमसम् [प्रा० स०] घुटपुटा, अल्पान्धकार—क्षीणेऽवतमसं तमः—अमर०, अंधकार—अवतमसमिदायै भास्वताम्बुदगतेन—शि० ११।५७, (यहाँ मल्लि० कहता है :—यद्यपि क्षीणेऽवतमसं तम इत्युक्तं तथापि इह विरोधाद्विशेषतादरेण सामान्यमेव ग्राह्यम्) ।

अवतरः [अव+तृ+अप्] उतार, नै० ३।५३, शि० १।४३ ।

अवतरणम् [अव+तृ+ल्युट्] 1. स्नान करने के लिए पानी में नीचे उतरना, उतार, नीचे आना 2. अवतार दे० 'अवतार' 3. पार करना 4. स्नान करने का पवित्र स्थान 5. एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना 6. परिचय 7. उद्धृत किया हुआ, उद्धरण ।

अवतरणिका [अवतरणी+कन् ह्रस्वः टाप्] 1. ग्रन्थ के आरम्भ में किया गया मंगलाचरण, जो कि, कहते हैं, सबोधित किये गये देवताओं को स्वर्ग से नीचे उतार लाता है, 2. प्रस्तावना, भूमिका ।

अवतरणी [अवतरति ग्रन्थोऽनया—अवतृ+करणे ल्युट्] भूमिका ।

अवतर्पणम् [अव+तृप्+ल्युट्] शान्ति देने वाला उपचार ।

अवताडनम् [अव+ताड्+णिच्+ल्युट्] 1. कुचलना, रौंदना,—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि—उत्तर० १।१४ 2. मारना ।

अवतानः [अव+तन्+घञ्] 1. फैलाव 2. धनुष का तनाव 3. आवरण, चंदोवा ।

अवतारः [अव+तृ+घञ्] 1. उतार, उदय. आरंभ—वसन्तावतारसमये—श० १, 2. रूप, प्रकट होना—मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतावतावसुरक्षम्—शंकर० 3. देवता का भूमि पर पदार्पण, अवतार लेना—कोऽप्येष संप्रति नरः पुरुषावतारः उत्तर० ५।३२ धर्मार्थकामामोक्षाणामवतार इवाङ्गवान्—रघु० १०।८४, 4 विष्णु का अवतार—विष्णुर्येन दशावतारसहने क्षिप्तो महासंकटे—भर्तृ० ३।९५, (विष्णु के दस अवतार नीचे लिखे श्लोक में बताये गये हैं :—वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते, दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते, म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः, रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश ॥ गीत०) 5. नया दर्शन, विकास, जन्म—नवावतारं कमलादिवोत्पलम्—रघु० ३।३६, ५।२४, 6. तीर्थ स्थान 7. (जहाज से) उतरने का स्थान 8. अनुवाद 9. जोहड़, तालाब 10 प्रस्तावना, भूमिका ।

अवतारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [अव+तृ+णिच्+ण्वुल्] 1. किसी को जन्म देने वाला 2. अवतार लेने वाला ।

अवतारणम् [अव+तृ+णिच्+ल्युट्] 1. उतारना 2. अनुवाद 3. किसी भूत प्रेत का आवेश 4. पूजा, आराधना 5. भूमिका या प्रस्तावना ।

अवतीर्ण (भू० क० कृ०) [अव+तृ+क्त] 1. नीचे आया हुआ, उतरा हुआ 2. स्नात 3. पार गया हुआ, पार किया हुआ—अपि नाभावतीर्णोसि वाणगोचरम्—मा० १ ।

अवतीर्णा [अवपतितं तोकम् अस्याः, प्रा० ब०] स्त्री या गाय जिसका किसी दुर्घटना के कारण गर्भ गिर गया हो ।

अवतृन् (वि०) [अव+दो+इनि] जो विभाजन करता है, काटकर पृथक् करता है; पंच° पांच भागों में बाँटने वाला ।

अवदंशः [अव+दंश+घञ्] ऐसा चरपरा भोजन जिसके खाने से प्यास लगे, उत्तेजक ।

अवदाघः [अव+दह्+घञ् ह्रस्वः घः] 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु ।

अवदात (वि०) [अव+दै+क्त] 1. सुन्दर—अवदातकांतिः—दश० १०७, 2. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, परिष्कृत—सर्वविद्यावदातचेताः—का० ३६, 3. उज्ज्वल, श्वेत—रजनिकरकलावदातं कुलम्—का० २३३, कुंदावदाताः कलहंसमालाः—भट्टि० २।१८, 4. गुणी, सद्गुणी अन्यस्मिन् जन्मनि न कृतमवदातं कर्म—का० ६२, 5. पीला—तः श्वेत या पीला रंग ।

अवदानम् [अव—दो+ल्युट्] 1. पवित्र एवं मान्यता प्राप्त वृत्ति 2. सम्पन्न कार्य 3. शौर्य सम्पन्न या कीर्तिकर कार्य, पराक्रम, शूरवीरता, प्रशस्त सफलता, सतीत्वमान विपुरावदानः—कु० ७।४८, प्रापदस्त्रमवदानतोषितात्—रघु० ११।२१, 4. कथावस्तु 5. काट कर टुकड़े २ करना ।

अवदारणम् [अव—दृ+णिच्—ल्युट्] 1. फाड़ना, बाँटना, खोदना, काट कर टुकड़े २ करना 2 कुदाल, खुर्पा ।

अवदाहः [अव—दह्—घञ्] गर्मी, जलन ।

अवदीर्ण (भू० क० कृ०) [अव+दृ+क्त] 1. बाँटा हुआ, टूटा हुआ 2. पिघलाया हुआ, खंडित 3. हड़बेड़ाया हुआ ।

अवदोहः [अव+दुह्—घञ्] 1. दूहना, 2. दूध ।

अवद्य (वि०) [न० त०] त्याज्य, निंद्य, प्रशंसा के अयोग्य—न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्—मालवि०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१।२, 2. सदोष, दोष दूषित, निन्दार्ह, अरुचिकर, अप्रिय– उदवहदनवद्यां तामवद्यादपेतः—रघु० ७।७०, 'अनवद्य' भी 3. चर्चा के अयोग्य, 4. नीच, अधम, —द्यम् 1. अपराध, दोष, खोट 2. पाप, दुर्व्यसन 3. लांछन, निन्दा, झिड़की - उदवहदनवद्यां तामवद्यादपेतः-रघु० ७।७०।

अवद्योतनम् [अव+द्युत्+ल्युट्] प्रकाश।

अवधानम् [अव+धा+ल्युट्] 1. ध्यान- अवधानपरे चकार सा प्रलयान्तोन्मिषिते विलोचने कु० ४।२, एकाग्रता, सावधानी दत्तावधानः शृणोति -सावधानतापूर्वक सुनता है 2. लगन, सतर्कता, चौकसी; **अवधानात्** सतर्कतापूर्वक, ध्यानपूर्वक, शृणुत जना अवधानात् क्रियामिमां कालिदासस्य विकटा० १।२, (पाठ०)।

अवधारः [अव+धृ+णिच्+घञ्] सही निश्चय, सीमा।

अवधारक (वि०) [अव+धृ+णिच्+ण्वुल्] सही निश्चय करने वाला।

अवधारण (वि०) [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] प्रतिबन्धक, सीमाबन्धन करने वाला, णम्, -णा 1. निश्चय, निर्धारण 2. एष्टीकरण, बल 3. सीमा निश्चत करना (शब्दों के अर्थों की)— यावद्वधारणे, एवाद्यर्थारणे, मात्र कात्स्न्यैंऽवधारणे —अमर० 4. किसी एक निर्दिष्ट तक –वा सबसे पृथक् करके -प्रतिबंध लगाना।

अवधिः [अव+धा+कि] 1. प्रयोग, ध्यान 2. सीमा, मर्यादा---अन्तर्भूतकारी या एकान्तिक -- (स्थान और समय की दृष्टि से), सिरा, समाप्ति - स्मरशापावधिर्दा सरस्वती—कु० ४।४३, उपसंहार, प्रायः समास के अन्त में अर्थ होता है - के साथ समाप्त होते हुए 'यथासंभव' 'तक' एवं से जीवितावधिः प्रवाहः—उत्तर० १, 3. नियतकाल, समय -रघु० १६।५२, षोडशान् मासान् विरहदिनसंख्यावधिवर्त्ता —मेघ०८९, **यदवधि**—तदवधि जबसे-तबसे, जबतक —तबतक 4. पूर्वनियुक्ति 5. नियुक्ति 6. प्रभाग, जिला, विभाग 7. विवर, गर्त।

अवधीर् (चु० पर०) अवहेलना करना, अनादर करना, नीचा दिखाना,—अवधीरितमुद्दृच्चनस्य—हि० १, घृणा करना, तिरस्कार करना।

अवधीरणम् [अव+धीर्+ल्युट्] अनादर पूर्वक वर्ताव करना।

अवधीरणा [अव+धीर्+ल्युट्+टाप्] अनादर, तिरस्कार,—कृतवत्यसि नावधीरणामपरार्द्धेऽपि यदा चिर मयि—रघु० ८।४८, मालवि० ३।१९, अयं स ते तिष्ठति संक्रमोत्सुको विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम्—श० ३।१४।

अवधूत (भू० क० कृ०) [अव+धू+क्त] 1. हिलाया हुआ, लहराया हुआ 2. त्यागा हुआ, अस्वीकृत, घृणित - रघु० १९।४३, 3. अपमानित, तिरस्कृत, -तः वह संन्यासी जिसने सांसारिक बन्धनों तथा विषय-वासनाओं को त्याग दिया है--यो विलंघ्याश्रमान् वर्णानात्मन्येव स्थितः पुमान्, अनिवर्णाश्रमी योगी सवधूतः स उच्यते। या - अक्षरत्वात् वरेण्यत्वात् धूतसंसार-बन्धनात्, तत्त्वमस्यर्थसिद्धत्वादवधूतोऽभिधीयते।

अवधूनन [अव+धू+ल्युट्] 1. हिलाना, लहराना 2. कांपना, कंपकंपी 3. अवहेलना।

अवध्य (वि०) [न० त०] मारने के अयोग्य, पवित्र, मृत्यु से मुक्त।

अवध्वंसः [प्रा० स०] 1. परित्याग, उन्मोचन 2. चूरा, राख 3. अनादर, निंदा, लांछन, 4. गिर कर अलग होना 5. बुरकना।

अवनम् [अव+ल्युट्] 1. रक्षा, प्रतिरक्षा—नलो० १।४, 2. तृप्तिकर, प्रसन्नतादायक 3. कामना, इच्छा 4. हर्ष, संतोष।

अवनत (भू० क० कृ०) [अव+नम्+क्त] 1. नीचे झुका हुआ, खिन्न, विनय, प्रश्रय 2. डूबता हुआ झुकता हुआ, नीचे गिरता हुआ।

अवनतिः (स्त्री०) [अव+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, मस्तक झुकाना, झुकाव, --अवनतिमवनेः -मुद्रा० १।२, शि० ९।८, 2. पश्चिम में छिपना, डूबना 3. प्रणाम, दंडवत् 4. झुकाव (जैसे धनुष का)–धनुषामवनतिः का० (यहाँ अ का अर्थ 'अवनमन' भी होता है) 5. शालीनता, विनम्रता।

अवनद्ध (भू० क० कृ०) [अव+नह्+क्त] 1. निर्मित, बना हुआ 2. स्थिर, बैठाया हुआ, बांधा हुआ, जुड़ा हुआ, एक जगह रक्खा हुआ, -द्धम् ढोल।

अवनस (वि०) [प्रा० स०] अवनत, झुका हुआ–पर्याप्त-पुष्पस्तबकावनम्रा --कु० ३।५४, पाद' पैरों पर गिरा हुआ।

अवनी (ना) य. [अव+नी+अच्, ङीष् वा] 1. नीचे ले जाना 2. नीचे उतारना।

अवनाट (वि०) [नतं नासिकायाः, अव+नाटच्, दे० अवटीट] चपटी नाक वाला।

अवनामः [अव+नम्+घञ्] 1. झुकना, नमस्कार करना, पैरों पर गिरना 2. नीचे झुकाना।

अवनाहः [अव+नह्+घञ्] बांधना, पेटी लगाना, कसना।

अवनिः—नी (स्त्री०) [अव+अनि, पक्षे ङीप्] 1. पृथ्वी 2. आकृति 3. नदी। सम०—ईशः,—ईश्वरः, —नाथः,—पतिः,—पालः भूस्वामी, राजा —पतिरवनिपतीनां तैश्चकाशे चतुर्भिः रघु०—१०।८६, ११।९३,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- चर (वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला, आवारागर्द, घुमक्कड़,—धरः पहाड़,—तलम् पृथ्वीतल,—मंडलम् भूमंडल,—रुहः वृक्ष।

अवनेजनम् [अव+निज्+ल्युट्] 1. प्रक्षालन, मार्जन -न कुर्यादग्न्युपस्थस्य पादयोश्चावनेजनम् मनु० २।२०१, 2. धोने के लिए पानी, पैर धोना 3. श्राद्ध में पिंडदान की वेदी पर बिछाये हुए कुशों पर जल छिड़कना।

अवन्तिः स्त्री (स्त्री०) [अव+झिच् कर्तरि इन्, पक्षे ङीष्] 1. एक नगर का नाम, वर्तमान उज्जयिनी, हिन्दुओं के सात पवित्र नगरों में से एक, कहा जाता है कि यहां मरने से शाश्वत सुख मिलता है -अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चिरवन्तिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः। अवन्ती की खिली काव्य-कला में अत्यन्त कुशल होती है, तु० आवन्त्य एव निपुणा सुदृशो रतकर्मणि-योलि० १०।८८; 2 एक नदी का नाम, -[पु० ब० व०] एक देश का नाम जिसे आजकल मालवा कहते हैं, तथा वहां के निवासी. इसकी राजधानी सिप्रा नदी के तट पर स्थित उज्जयिनी नगरी है इसके नगरांचल में महाकाल का एक मन्दिर भी है; अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहुः -रघु० ६।३४, असौ महाकालनिकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः -६।३४, ३५, प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान् मेघ० ३०, अवन्तीपूज्जयिनी नाम नगरी - का० ५२। सम०—पुरम् अवन्ती नामक नगर, उज्जयिनी।

अवन्ध्य (वि०) [न० त०] जो बेजार न हो, उर्वर, उपजाऊ।

अवपतनम् [अव+पत्+ल्युट्] उतरना, नीचे आना।

अवपाक (वि०) [अवकृष्टः पाको यस्य -ब० स०] बुरी तरह पकाया हुआ, -कः बुरी तरह से पकाना।

अवपातः [अव+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना-अधश्चरणावपातम् मनु० २।३१, पैरों पर गिरना, (आदर०) चापलूसी 2. उतरना, नीचे आना 3. विवर, खड्ड 4. विशेषकर हाथियों को पकड़ने के लिए बनाया गया बिल या गर्त अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्तः छन्ने तृणादिना—चारवः संधिविन्यस्तवपातास्तान् करीव देक्षत परयं त्रासम् -रघु० १६।३८।

अवपातनम् [अव+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, ढुरकाना, नीचे फेंकना।

अवपात्रित (वि०) [अवपात्र (ना० धा०)+क्त] जातिबहिष्कृत, ऐसा व्यक्ति जिसको बिरादरी के लोग अपने पात्र में भोजन कराने के लिए अनुमति न देते हों।

अवपीडः [अव+पीड्+घञ्] 1. नीचे दबाना, दबाव 2. एक प्रकार की औषधि जिसके सूंघने से छींकें आती हैं, नस्य।

अवपीडनम् [अव+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. दबाने की क्रिया 2. नस्य, ना क्षति, आघात।

अवबोधः [अव+बुध्+घञ्] 1. जागना, जागरूक होना (वि० स्वप्न) -यो तु स्वप्नावबोधौ तौ भूतानां प्रलयोदयौ कु० २।८, भग० ६।१७, 2. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण स्वभूतिसमग्रहणाद्भव सादृश्ये रजस्यान्मगवावबोधः - रघु० ७।४१, ५।६४, प्रतिकूलेषु दैवेष्वाद्यवबोधः क्रोध दृश्यते -सा० द०, 3. विवेचन, निर्णय 4. शिक्षण, संसूचन।

अवबोधकः (वि०) [अव+बुध्+ण्वुल्] संकेतक, दर्शाने वाला, कः 1. सूर्य, 2. भाट 3 अध्यापक।

अवबोधनम् [अव+बुध्+ल्युट्] ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण।

अवभञ्जः [अव+भञ्ज्+घञ्] पीछा दिखाना, जीतना, हराना।

अवभासः [अव+भास्+घञ्] 1. चमक-दमक, कान्ति, प्रकाश 2. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण 3 प्रकट होना, प्रकाशन, अर्थ. प्रेषणा 4. स्थान, पहुंच, क्षेत्र 5 मिथ्याज्ञान।

अवभासकः (वि०) [अव+भास्+ण्वुल्] प्रकाशक, कम् पारब्रह्म।

अवभुग्न (वि०) [अव+भुज्—क्त] झिकुड़ा हुआ, झुका हुआ, टेढ़ा किया हुआ।

अवभृथः [अव—भृ+कथन] 1 मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर शुद्धि के लिए किया जाने वाला स्नान—भृव कोणेन कुण्डोत्थां मेध्येनावभृथादपि -रघु० १।८४, ९।१२, ११।३१, १३।६१, 2. मार्जन के लिए जल 3. अतिरिक्त यज्ञ जो पूर्वकृत मुख्य यज्ञ की त्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाता है, सामान्य यज्ञानुष्ठान -स्नातव्रत्यवभृथे तत्स्थयि—शि० १४।१०। सम० -स्नानम् यज्ञानुष्ठान की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान।

अवभृः अपहरण, उठाकर ले जाना।

अवभ्रट (वि०) [नतं नासिकायाः -अव+भ्रट्] चपटी नाक वाला।

अवम (वि०) [अव्+अप्] 1. पापपूर्ण 2. घृणित, कमीना 3 खोटा, नीच, घटिया (विप० परम) -अनलकानलकानवमों पुरीम्- रघु० ९।१४, दे० 'अनवम' 4. आखिरी, घनिष्ट 5. पिछला, सबसे छोटा।

अवमत (भू० क० कृ०) [अव+मन्+क्त] घृणित, कुत्सित। सम० अङ्कुशः अंकुश को न मानने वाला हाथी, मदमत्त -अनंकुशमाविष्कृतांकुशग्रहं-शि० १२।१६।

अवमतिः (स्त्री०) [अव+मन्+क्तिन्] 1. अवहेलना, अनादर 2 अरुचि, नापसंदगी।

अवमर्दः [अव+मृद्+घञ्] 1 कुचलना, 2. बर्बाद करना, अत्याचार करना।

अवमर्शः [अव+मृश्+घञ्] स्पर्श, संपर्क।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवमर्षः [अव—मृष्+घञ्] 1. विचारविमर्श, आलोचना, 2 नाटक की पाँच मुख्य सन्धियों में से एक एवं मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः, शापाद्यैः सान्तरायश्च सोऽवमर्ष इति स्मृतः। सा० द० ३६६; 'त्रिमर्ष' भी इसी को कहते हैं, 3. आक्रमण करना।

अवमर्षणम् [अव+मृष्+ल्युट्] 1. असहनशीलता, असहिष्णुता 2. मिटा देना, मिटा डालना, स्मृतिपथ से निरस्कासन।

अवमानः [अव+मन्+घञ्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना।

अवमाननम्-ना [अव+मन्+णिच्+ल्युट् युच् वा] अनादर, तिरस्कार।

अवमानिन् [अव+मन् ' णिच्+इनि] तिरस्कार करने वाला, घृणा करने वाला, अपमान करने वाला धिङ्मामधर्मस्थितमर्थयोऽवमानिनम् श० ६, अपि आत्म-गुणावमानिनि श० ३।

अवमूर्धन् (वि०) [अवनतो मूर्धा यस्य] सिर झुकाये हुए। सम० शय (वि०) सिर को नीचे लटका कर लेटा हुआ, जैसे कि मनुष्य (तिर्य० देव)- उत्तानशया देवा अवमूर्धशया मनुष्याः।

अवमोजनम् [अव+मुच्-ल्युट्] स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, ढीला करना।

अवयवः [अव+यु—अच्] 1. (शरीर का) अंग मुख्यावयवलूनां ताम्- रघु० १२।८३ अमर० ४०, ४६; सदस्य,—कश्चिदिदमेवेति नीतिनिष्णातबुद्धयोऽवयवे—मुद्रा० १ 2. भाग, अंश 3. तर्कसंग्रह दर्शित या अनुमान का घटक या अंग (यह पाँच हैं:- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन) 4. शरीर 5. घटक, संविधायी, उपादान (जैसे किसी संमिश्रण के)। सम०- अर्थः शब्द के संविधायी अंशों का आशय।

अवयवशः (अव्य०) [अवयव+शस्] अंश अंश करके, अलग २, टुकड़े टुकड़े करके।

अवयविन् (वि०) [अवयव+इनि] अवयव, अंश या उपभागों से बना हुआ, (पु०—पी) 1. पूर्ण 2. अनुमानवाक्य या कोई तर्कसंगत संधि।

अवर (वि०) [न वरः इति अवरः न०त०, वृ+अप् वा०] 1. (क) आयु में छोटा,- मासेनावरः=मासावरः सिद्धा० (ख) बाद का, पश्चवर्ती, पिछला (समय और स्थान की दृष्टि से)—यदवरं कौशाम्ब्याः, यदवरमाग्रहायण्याः सिद्धा० 2. अनुवर्ती, उत्तरवर्ती 3. नीचे, अपेक्षाकृत नीचा, घटिया, कम 4. नीच, महत्त्वहीन, सबसे बुरा, निम्नतम (विप० उत्तम) अज्ञस्त्वन्यवरं स्मृतम्—काव्य० १, दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय—भग० २।४९, श्रद्दधानः शुभां विद्यामाददीतावरादपि—मनु० २।२३८ 5. अन्तिम (विप० प्रथम) सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम्- कु० ७।४४, 6. न्यूनातिन्यून, (प्रायः समास के उत्तरपद के रूप में अंकों के साथ)—श्रवरैः साक्षिभिर्भाव्यः—मनु० ८।६०, श्रवरा परिषद् लेया—१२।११२, याज्ञ० २।६०, 7 पश्चिमी, रम् हाथी की पिछली जांघ (रा भी)। सम०- अर्धः 1. थोड़े से थोड़ा भाग, न्यूनातिन्यून 2. उत्तरार्ध 3. शरीर का पिछला भाग, —अवर (वि०) नीचतम, सबसे घटिया न हि प्रकृष्टान् प्रेषयितुं प्रेषयेश्वरावरान् रामा० उक्त (वि०) अन्त में कहा हुआ, ज (वि०) अपेक्षाकृत छोटा, कनीयान् (नः) छोटा भाई- विश्वंभरराजावरजा रघु० ६।५८, ८४, १२।३२, वर्ण (वि०) नीच जाति का (र्णः) 1. शूद्र 2. अन्तिम या चौथा वर्ण. वर्णैरवरवर्णजः शूद्र—अत:- सूर्य,—शैलः पश्चिमी पहाड़ (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ समझा जाता है)।

अवरतः (अव्य०) [अवर+तसिल्] पीछे, बाद में, पिछला, पश्चवर्ती।

अवरतिः (स्त्री०) [अव—रम्+क्तिन्] 1. ठहरना, रुकना 2. विराम, विश्राम, आराम।

अवरोण (वि०) [अवर+ख] 1. पदावनत, खोट मिला हुआ 2. घृणित।

अवरुग्ण (वि०) [अव—रुज्+क्त] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ 2. रोगी।

अवरुद्धिः (स्त्री०) [अव—रुध्+क्तिन्] 1. रुकावट, प्रतिबन्ध 2. घेरा 3. प्राप्ति।

अवरुष्य (वि०) [व० स०] कुरूप, विकलांग।

अवरोधः [अव+रुध्—घञ्] 1. बाधा, रुकावट 2. प्रतिरोध अन्तःप्राणावरोधः मृच्छ० १।१, 3 अन्तःपुर, जनानखाना, रनवास निन्ये विलीवैरवरोधदक्षैः कु० ७।७३, गृहेषु राज्ञः श० ५।३, ६।११, 4. राजा की रानियाँ (सामूहिक रूप से) (प्रायः ब० व०); - अवरोधे भवतश्चिरं रघु० ११।३२, ४।६८, ८७, ६।४८, १६।५८, 5. घेरा, बन्दीकरण 6. किलाबंदी, नाकेबंदी, 7 टक्कर 8. बाड़ा, गोठ 9. चौकीदार 10. हलकापन, खोखलापन।

अवरोधकः (वि०) [अव+रुध्+ण्वुल्] 1 बाधा डालने वाला, 2. घेरा डालने वाला, —कः पहरेदार,—कम् रोक, बाड़।

अवरोधनम् [अव+रुध्+ल्युट्] 1. किलाबंदी, नाकेबंदी 2. बाधा, 3. रुकावट, अड़चन 4. राजा का अंतःपुर राजावरोधनबधूरसतास्त्वयन्तः— शि० ५।१८।

अवरोधिक (वि०) [अवरोध+ठन्] 1. बाधाजनक, अड़चन डालने वाला 2. घेरा डालने वाला।—कः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंतःपुर का पहरेदार, का अंतःपुर की पहरेदार-स्त्री—ययुस्तुरङ्गाधिरूढोऽवरोधिकाः - शि० १२।२०।

अवरोधिन् (वि०) [अवरोध+इनि] 1. रुकावट डालने वाला, बाधा डालने वाला, 2. घेरा डालने वाला।

अवरोपणम् [अव+रुह्+णिच्+ल्युट्] पुकारना। 1. उन्मूलन 2. नीचे उतारना 3. ले आना, वञ्चित करना, घटाना।

अवरोहः [अव+रुह्+घञ्] 1. उतार 2. नीचे से चोटी तक वृक्ष के ऊपर लिपटने वाली लता 3. आकाश 4. लटकती हुई शाखा (जैसे-बड़ की) — अवरोहशताकीर्णं वटमासाद्य तस्थतुः- रामा० 5. (संगीत में) स्वरों का ऊपर से नीचे आना।

अवरोहणम् [अव+रुह्+ल्युट्] 1. उतरना, नीचे आना 2. चढ़ना।

अवर्ण (वि०) [न० ब०] 1. रंगहीन 2. बुरा, नीचा, -र्णः 1. लोकापवाद, अपकीर्ति, कलंक, बट्टा, -सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे रघु० १४।३८, 2. लांछन, निन्दा -न चावदद्भूर्तुरवर्णभाषां ५७, कोई दुर्वचन नहीं कहा।

अवलक्ष (वि०) [अव-लक्ष्+घञ्] ['वलक्ष' भी लिखा जाता है] श्वेत, -क्षः श्वेत वर्ण।

अवलग्न (वि०) [अव+लग्+क्त] चिपका हुआ, लगा हुआ, सटा हुआ, -ग्नः कमर।

अवलम्ब [अव+लम्ब्+घञ्] 1. नीचे लटकना 2. सहारे लटकना, सहारा (आल० भी) - अस्तूत्तुङ्गालावलम्बाः- मेघ० ७०, कुसुमति भवदग्रे सेवां भर्तुः १।६७, 3. स्तंभ, आड़, आश्रय (शा० तथा आल०) —सावलम्बगमता—रघु० १९।५०, दूसरों के सहारे चलने वाली,—सन्ततिविच्छेदनिरवलम्बानाम् - श० ५, दैवे-नेत्थं इस्तहस्तावलम्बे--रत्न० १।८, 4. अंत: बैसाखी या छड़ी जो सहारे के लिए रक्खी जाती है।

अवलम्बनम् [अव+लम्ब्+ल्युट्] 1. स्तंभ, सहारा, आड़ - अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि शि० ९।६, ग्रन्थानविकेऽवगतैरवलम्बनार्थं—श० ५।३, मम पुच्छे करावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ—हि० १, 2. सहायता, मदद।

अवलिप्त (भू० क० कृ०) [अव+लिप्+क्त] 1. घमंडी, उद्धत, अभिमानी 2. लिपा पुता, सना हुआ।

अवलीढ (भू० क० कृ०) [अव+लिह्+क्त] 1. खाया हुआ, चबाया हुआ—दर्भरुचिलीढैः—श० १।७, 2. चाटा हुआ, लप लप करके पीया हुआ, सृपत (आल० भी) —नवयौवनावलीढावयवा—दश० १७, जवानी से व्याप्त, -अस्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेरन्तरौर्वीयमाणे—वेणी० ३।५, चारों ओर से घिरा हुआ 3. निगला हुआ, नष्ट किया हुआ।

अवलीला [अवरा लीला—प्रा० स०] 1. क्रीडा, खेल, प्रमोद 2. तिरस्कार।

अवलुञ्चनम् [अव+लुञ्च्+ल्युट्] 1. काटना, फाड़ना, उखाड़ना, - केशं 2. उन्मूलन।

अवलुण्ठनम् [अव+लुण्ठ्+ल्युट्] 1. भूमि पर लोटना या लुढ़कना 2. लूटना।

अवलेखः [अव+लिख्+घञ्] 1. तोड़ना, खरोंचना, छीलना 2. खुरची हुई कोई वस्तु।

अवलेखा [अव+लिख्+अ+टाप्] 1. रगड़ना 2. किसी को सुसज्जित करना।

अवलेपः [अव+लिप्+घञ्] 1. अहंकार, घमंड - प्रियसंगमेऽवनवलेपमदः - शि० ९।५१, (यहां अ० का अर्थ 'लेप करना' भी हो सकता है),—व्यक्तमानावलेपाः मुद्रा० ३।२२, 2. अत्याचार, आक्रमण, अपमान, बलात्कार- किं भवतीनामसुरावलेपेनापराद्धम्—विक्रम० १, ददृशे पवनावलेपजं सृजति वाष्पमिवाऽञ्जनाविलम् - रघु० ८।३५ 3. लीपना पोतना, 4. आभूषण 5. संघ, समाज।

अवलेपनम् [अव+लिप्+ल्युट्] 1. लीपना पोतना 2. तेल, कोई चिकना पदार्थ 3. संघ 4. घमंड।

अवलेहः [अव+लिह्+घञ्] 1. चाटना, लपलपाना 2. अंकें 3. चटनी।

अवलेहिका - अवलेहः (३)।

अवलोकः [अव+लोक्+घञ्] 1. देखना, दृष्टि डालना, 2. दृष्टि।

अवलोकनम् [अव+लोक्+ल्युट्] 1. अवलोकन करना, दृष्टि डालना, देखना,—नो बन्धुरवलोकनक्षमाः रघु० ११।९०, 2. दृष्टि में रखना, गवेषण करना दीर्घिकावलोकनव्याकुलानाः मालवि० १, 3. दृष्टि, आंख 4. नजर, झांकी योगनिद्रामवाप्तविशदैः पावनैरवलोकनैः रघु० १०।१४, 5. खोज करना, पूछताछ।

अवलोकित (भू० क० कृ०) [अव+लोक्+क्त] देखा हुआ, दृष्ट, झांकी।

अववरकः [अव+वृ+अप् ततः संज्ञायां कन्] 1. रन्ध्र, छिद्र 2. खिड़की, दे० 'अपवरक'।

अववादः [अव+वद्+घञ्] 1. निन्दा 2. विश्वास, भरोसा 3. अवहेलना, अनादर 4. सहारा, आश्रय 5. बुरी रिपोर्ट 6. आदेश।

अववश्चः [अव+वश्च्+अच्] छिपटी, लपची।

अवश (वि०) [न० त०] 1. स्वतंत्र, मुक्त 2. जो वश या आज्ञाकारी न हो, अवज्ञाकारी, स्वेच्छाचारी 3. जो किसी के अधीन न हो—अवशो विषयाणाम्—का० ४५, 4. लाचार, इन्द्रियों का दास कु० ६।९५, 5. पराश्रित, असहाय, शक्तिहीन - कार्यते ह्यवशः—भग० ३।५, कथमवशो ह्यवशेषिकं पिबामि—मृच्छ०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०।१३। समः **इन्द्रियचित्त** (वि०) जिसका मन और इन्द्रियां किसी दूसरे के अधीन न हों।

अवशङ्गमः [नि० त०] जो दूसरे की इच्छा के अधीन न हो।

अवशातनम् [प्रा० स०] 1. नष्ट करना 2. काटना, काट गिराना 3. मुर्झाना, सूख जाना।

अवशेषः [अव+शिष्+घञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी, -वृत्तांत°—माल वि० ५, कथा का शेष भाग, अर्थ या नाम° जिसका केवल नाम ही जीवित हो या कथा कहानी में ही जिसका वर्णन हो अथवा जिसका केवल नाम ही शेष रहा हो, आलं० रूप से मृत गुरुष के लिए प्रयुक्त, -सावशेषमिव भट्टिन्या वचनम् -मालवि० ४, **असमाप्त**- शृणु मे सावशेषं वचः श० २, मेरी बात सुनो, मुझे अपनी बात पूरी करने दो।

अवश्य (वि०) [न० त०] 1. जो वश में न किया जा सके, जिसको नियन्त्रण में न लाया जा सके 2. अनिवार्य अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः वेणी० ४।४, 3. अनुपेक्ष्य, आवश्यक। सम०—**पुत्र**: ऐसा बेटा जिसको सिखाना या शासन में रखना असंभव हो।

अवश्यम् (अव्य०) [अव+श्यै+डमु ताारा०] 1. आवश्यकरूप से, अनिवार्य रूप से त्वामप्यन्नं नवजलमयं मोचयिष्यत्यवश्यम्—मेघ० १५, 2. निश्चय से, चाहे कुछ भी हो, सर्वथा, यकीनन, निस्संदेह -अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषया:-भर्तृ० ३। १६, तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नीम् [दिवसगिः] मेघ०, १०।६३, **अवश्यमेव** अत्यन्त निश्चयपूर्वक, यदि इसे म० कु० के साथ जोड़ा जाता है तो इसका अन्य अनुत्तासिकत्व लुप्त हो जाता है **अवश्यपाठ्य** -जो निश्चित रूप से पढ़ाया जाय, **अवश्यकार्य**—जो निश्चित रूप से किया जाता है।

अवश्यम्भाविन् (वि०) [अवश्यम् भू+इनि] अवश्य होने वाला, अनिवार्य -अवश्यम्भाविनो भावा भवन्ति महतामपि -हि० प्र० २८।

अवश्यक (वि०) [अवश्य+कन्] आवश्यक, अनिवार्य, अनुपेक्ष्य।

अवश्या [अव+श्यै+क+टाप्] कुहरा, पाला, धुंद।

अवश्यायः [अव+श्यै+घञ्] 1. कुहरा, ओस 2. पाला, सफेद ओस-अवश्यायासक्तिनस्य पुण्डरीकस्य चारुताम् -उत्तर० ६।२९, 3. एमंड।

अवश्यायणम् [अव+श्रि+ल्युट्] आग के ऊपर से कोई वस्तु उतारना (वि० 'अधिश्रयणम्')—अधिश्रयणावश्रयणान्तादिपूर्वापरीभूतो व्यापारविशेषः पाकादिशब्द वाच्यः—सा० द० २।

अवष्टब्ध (भू० क० कृ०) [अव+स्तम्भ्+क्त] 1. सहारा दिया गया, थामा गया, पकड़ा गया 2. से पर लटका हुआ 3. निकटवर्ती, संसक्त 4. बाधायुक्त, झुका हुआ 5. बांधा हुआ, बंधा हुआ।

अवष्टम्भः [अव+स्तम्भ्+घञ्] 1. टेक लगाना, सहारा लेना 2. आश्रय, आधार—पक्षाभ्यामीषत्कृतावष्टम्भः—का० ३४, स्तनगलितावष्टम्भनिश्चलः—मा० ३, तत्कथमहं धैर्यावष्टम्भं करोमि—पंच० १, 3. अहंकार, घमंड 4. थूनी, स्तंभ 5. सोना 6. उपक्रम, आरम्भ 7. ठहराना, रोक 8. साहस, दृढ़ निश्चय 9. पक्षाघात, स्तब्धता।

अवष्टम्भनम् [अव+स्तम्भ्+ल्युट्] 1. टिकना, सहारा लेना 2. थूनी, स्तम्भ।

अवष्टम्भमय (वि०)[स्त्री०—यी] [अवष्टम्भ+मयट्] सुनहरी, सोने का बना हुआ, अथवा खंभे के बराबर लंबा,—रघोरवष्टम्भमयेन पत्रिणा—रघु० ३।५३ (अ° का अर्थ उपर्युक्त ढंग से किया जाता है, परन्तु प्रस्तुत प्रसंग में इसका अर्थ होगा 'ओजस्वी, साहसी')।

अवसक्त (भू० क० कृ०)[अव+सञ्ज्+क्त] 1. स्थगित, प्रस्तुत 2. संपर्कशील, स्पर्शी।

अवसक्थिका [अवबद्धे सक्थिनी यस्यां कप्+टाप्] 1. कपड़े की पट्टी जो घुटनों के नीचे पैरों में लपेटी जाती है, इस प्रकार पट्टी या पट्टके से बांधना या पट्टका बांध कर विशेष मुद्रा में होना—शयानः प्रौढपादश्च कृत्वा चैवावसक्थिकाम्—मनु० ४।११२, 2. अतः वेष्टन, पट्टका या पट्टी।

अवसक्थीनम् [अव+सम्+डी+क्त] पक्षियों के झुंड की नीचे की ओर उड़ान।

अवसथः [अव+सो+कथन्] 1. आवासस्थान, घर 2. गाँव 3. विद्यालय या महाविद्यालय, दे० 'आवसथ'।

अवसथ्यः [अवसथ+यत्] महाविद्यालय, विद्यालय।

अवसन्न (भू० कृ० कृ०) [अव+सद्+क्त] 1. उदास (आलं० भी) शिथिल 2. समाप्त, अवसित, बीता हुआ -अवसन्नायां रात्रौ—हि० १, 3. खोया हुआ, वंचित रघु० २।७७।

अवसरः [अव+सृ+अच्] 1. मौका, सुयोग, समय —नास्यावसरं दास्यामि श० २, भवदङ्गिरामवसरप्रदानाय वचांसि नः शि० २।७, विगर्जन्तं साकारः श० ७, प्राप्तम् मौके के मुताबिक—मालवि० १, २ (अतः) उपयुक्त सुयोग शशंस सेवावसरं सुरेभ्यः कु० ७।४०, अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम् श० १, दे० 'अनवसर' भी 3. स्थान, जगह, क्षेत्र 4. अवकाश, लाभप्रद अवस्था 5. वत्सर 6 वर्षण 7. उत्तर 8. गुप्त परामर्श।

अवसर्गः [अव+सृज्+घञ्] 1 मुक्त करना, ढीला करना 2. स्वेच्छानुसार कार्य करने देना 3. स्वतंत्रता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवसर्पः [अव+सृप्+घञ्] भेदिया, गुप्तचर ।

अवसर्पणम् [अव+सृप्+ल्युट्] नीचे उतरना, नीचे जाना ।

अवसादः [अव+सद्+घञ्] 1 उदासी, मूर्च्छा, सुस्ती 2. बर्बादी, विनाश विपदेति तावदवसादकरी—कि० १८।२३, ६।३१, 3. अन्त, समाप्ति 4. स्फूर्ति का अभाव, थकान, थकावट 5. (विधि में) अभियोग का खराब होना, पराजय, हार ।

अवसादक (वि०) [अव+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1. उदास करने वाला, मूर्छित करने वाला, असफल बनाने वाला 2. खिन्नता लाने वाला, थकान पहुंचाने वाला ।

अवसादनम् [अव+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. गलन, नाश, 2. उत्पीडन 3. समाप्त कर देना ।

अवसानम् [अव+सो+ल्युट्] 1. ठहरना 2. उपसंहार, समाप्ति, अन्त, दोहावसाने पुनरेव दोग्धीम् रघु० २।२३, तच्छिष्याध्ययनावसानसमये शिष्यानुपेत्याब्रवीत् १।९५, 3. मृत्यु, रोग—वेणी० ५।३८, मुखुत्थावसाने सेपंदः परमुपतिष्ठन्ति—श० ६, 4. सीमा, मर्यादा 5. (व्या० में) किसी शब्द या अवधि का अन्तिम अंश (विप० आदि) 6. विराम 7. स्थान, विश्रामस्थल, आवासस्थान ।

अवसायः [अव+सो+घञ्] 1. उपसंहार, अन्त, समाप्ति 2. अवशिष्ट, 3. पूर्ति 4. संकल्प, दृढ़निश्चय, निर्णय ।

अवसित (भू० क० कृ०) [अव+सो+क्त] 1. समाप्त, अन्त किया गया, पूरा किया गया,—यूपबन्धेऽवसिते क्रियाविधौ—रघु० ११।३७, अवसितश्च पशुरसौ—दश० ९१, उस पशु का काम तमाम हो चुका है,—वक्तव्येऽवसिते तस्मिन्सर्गज गिरमाददे—कु० २।५३, 2. ज्ञात, अवगत 3. प्रस्तावित, निर्धारित, निश्चय किया गया 4. जमा किया हुआ, एकत्र किया हुआ (जैसा कि अन्न), 5. बंधा हुआ, नत्थी किया हुआ, बांधा हुआ ।

अवसेकः [अव+सिच्+घञ्] 1. छिड़काव, भिगोना देशः को नु जलावसेकदयितः—मृच्छ० ३।१२ ।

अवसेचनम् [अव+सिच्+ल्युट्] 1. छिड़कना 2. छिड़कने के लिए पानी - पादे"—मनु० ४।१५१ 3. रुधिर निकालना ।

अवस्कन्दः-दनम् [अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. आक्रमण करना, आक्रमण, हमला 2. उतार 3. शिविर ।

अवस्कन्दिन् (वि०) [अव+स्कन्द+णिनि] आक्रमणकारी, हमलावर, बलात्कार करने वाला ।

अवस्करः [अवकीर्यते इति-अवस्करः, कृ+अप्, सुट्] 1. विष्ठा, मल 2. गुह्यदेश (योनि, लिंग, गुदा आदि) 3. गर्त, बुहारन ।

अवस्तरणम् [अव+स्तृ+ल्युट्] बिछौना, बिछावन ।

अवस्तात् (अव्य०) [अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरमित्यर्थे अवर+अस्तातिं अवादेशः] 1. नीचे, नीचे से, नीचे की ओर 2. अधस्तात् नीचे ।

अवस्तारः [अव+स्तृ+घञ्] 1 पर्दा, 2. चादर, कनात 3. चटाई ।

अवस्तु (नपुं०) [न० त०] 1. निकम्मी वस्तु, तुच्छ बात अवस्तुनिबन्धादरे कथं नु ते - कु० ५।६६, 2 अवास्तविकता. सारहीनता - वस्तुन्यवस्तुबुद्धिरवीक्षानम् ।

अवस्था [अव+स्था+अङ्] 1. हालत, दशा, स्थिति - स्वामिनो महदवस्था वर्तते पंच० १, विषम दशा, तुल्यावस्थः स्वसुः कृतः—रघु० १२।८०, तां तामवस्थां प्रतिपद्यमानम् —१३।५, ईदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५. कु० २।६ (प्रायः समास में) —तदवस्थः पंच ५. उस दशा को पहुंचा हुआ, 2. हालत, परिस्थिति -3. काल, दशाक्रम, यौवन", वयोऽवस्था तस्याः शृणुत - मा० १।२९. 4. रूप, छवि 5. दर्जा, अनुपात 6. स्थिरता, दृढ़ता जैसा कि 'अनवस्थ' में दे० 7. न्यायालय में उपस्थित होना । समा० अन्तरम् बदली हुई दशा,— चतुष्टय मानवजीवन की चार दशाएँ (बाल्य, कौमार, यौवन और वार्धक्य), त्रयम् तीन अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न, तथा सुषुप्ति),— द्वयम् जीवन के दो पहलू सुख और दुःख ।

अवस्थानम् [अव+स्था+ल्युट्] 1. खड़ा होना, रहना, बसना 2. स्थिति, हालत 2. आवासस्थान, घर, ठहरने का स्थान 3. ठहरने का समय ।

अवस्थायिन् (वि०) [अव+स्था+णिनि] ठहरने वाला, रहने वाला ।

अवस्थित (भू० क० कृ०) [अव+स्था+क्त], 1. रहा हुआ, ठहरा हुआ, - एवमवस्थिते—का० १५८, इन परिस्थितियों में, 2. उद्देश्य में स्थिर, दृढ़ 3. टिका हुआ, सहारा लिये हुए ।

अवस्थितिः (स्त्री०) [अव+स्था+क्तिन्] 1. निवास करना, बसना 2. निवासस्थान, आवास ।

अवस्पन्दनम् [अव+स्पन्द्+ल्युट्] बूंद २ टपकना, रिसना ।

अवस्रंसनम् [अव+स्रंस्+ल्युट्] नीचे टपकना, नीचे गिरना. अधःपात ।

अवहृतिः (स्त्री०) [अव+हृ+क्तिन्] पीटना, कुचलना ।

अवहननम् [अव+हन्+ल्युट्] 1. चावल कूटना, पीटना — अवहननायोलूखलम् -महा० 2. फेंकड़े वपावसावहननम् -खाश० ३।९४, (अवहननम् — फुफ्फुसः - मिता०) ।

अवहरणम् [अव+हृ+ल्युट्] 1. ले जाना, हटाना 2. फेंक देना 3. चुराना, लूटना 4. युद्धनीति 5. युद्ध का अस्थायी स्थगन, संन्धि ।

अवहस्तः [अवरं हस्तस्य इति -ए० त०] हथेली की पीठ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवहर्तृ [प्रा० स०] खो जाना, घाटा ।

अवहार [अव+हृ+ण] 1. चोर, 2. शार्क नाम की मछली 3. अस्थायी युद्धविराम, सन्धि, 4. बुलावा, आमंत्रण 5. धर्मत्याग 6. सुपुर्दगी, वापस लेना ।

अवहारक [अव+हृ+ण्वुल्] शार्क मछली ।

अवहार्य (सं० कृ०) [अव+हृ+ण्यत्] 1. ले जाने के योग्य, हटाने के योग्य 2. दंड के योग्य, सजा दिये जाने के योग्य, 3. पुनः प्राप्त करने योग्य, फिर मोल लेने के योग्य ।

अवहालिका [अव+हल्+ण्वुल्+टाप् इत्व] दीवार ।

अवहासः [अव+हस्+घञ्] 1. मुस्कराना, मुस्कान 2. दिल्लगी, मजाक, उपहास—यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि—भग० १।४२ ।

अव (अ) **हित्था-त्थम्** [न बहिः तिष्ठति इति स्था+क पृषो०] 1. पाखंड, 2. आन्तरिक भावगोपन, ३३ व्यभिचारिभावों में से एक-भयशोकक्लमजादेर्यत्किंचिदाकार-गुप्तिरवहित्था सा० द० ; रस० के अनुसार व्रीडा-दिना निमित्तेन हर्षादनुभावानां गोपनाय जनितो भाव-विशेषोऽवहित्थम्—उदा० कु० ६।८४, भामि० २।८० ।

अवहेलः -ला [अव+हेल्+क, स्त्रियां टाप्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना—अवहेला कुटजे मधुकरे मागाः भामि० १।६ ।

अवहेलनम् ना [अव+हेल्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] अवज्ञा ।

अवाक् (अव्य०) [अव+अच्+क्विन्] 1. नीचे की ओर 2. दक्षिणी, दक्षिण की ओर । सम०—आननम् अनादर,- भव (वि०) दक्षिणी, मुख (वि०) (स्त्री० -खी) 1. नीचे की ओर देखने वाला अवाङ्-मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः—रघु० ३।९०, १५।७८, 2. सिर के बल - शिरस् (वि०) नीचे को सिर लटकाये हुए, सिर मुड़ो नरकं याति कालसूत्रमवाक्शिराः - मनु० ३।२४९, ८।५४ ।

अवाक्ष (वि०) [अवतान्यक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य—ब० स०] अभिभावक, संरक्षक ।

अवाग्र (वि०) [अवनतमग्रमस्य ब० स०] नीचे को सिर किये हुए, नीचे को झुके हुए ।

अवाच् (वि०) [न० ब०] वाणीरहित, मूक (नपुं०) वचः ।

अवाच्) (वि०) [अव+अञ्च् + क्विन्] 1. नीचे की

अवाञ्च) ओर झुका हुआ, मुड़ा हुआ-कुर्वेत्तन्मित्यनिभरेण मनसावाचः क्रियः ६।७९, 2. नीचे की ओर स्थित, अपेक्षाकृत नीचा 3. सिर के बल 4. दक्षिणी (पुं० नपुं०) ब्रह्म, जो 1. दक्षिणदिशा, 2. निम्नप्रदेश ।

अवाचीन (वि०) [अवाच्+ख] 1. नीचे की ओर, सिर के बल 2. दक्षिणी 3. उत्तरा हुआ ।

अवाच्य (वि०) [न० त०] 1. जिसे संबोधित करना उचित न हो,—अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना यवीयानपि यो भवेत् मनु० २।१२८, 2. बोले जाने के अयोग्य, निकृष्ट, दुष्ट - अवाच्यं वदतो जिह्वा कथं न पतिता तव -रामा०, भग० २।३६ 3. अस्पष्ट उक्ति, शब्दों द्वारा अकथनीय । सम० -देशः बोलने के अयोग्य स्थान, योनि ।

अवाचित (वि०) [अव+अञ्च्+क्त] झुका हुआ, नीचा ।

अवानः [अव+अन्+अच्] सांस लेना, श्वास अंदर की ओर ले जाना ।

अवान्तर (वि०) [प्रा० स०] 1. बीच में स्थित या खड़ा हुआ—दे० समास 2. अंतर्गत, सम्मिलित 3. अधीन, गौण 4. घनिष्ट संबंध से रहित, असंबद्ध, अतिरिक्त । सम०—दिश्-दिशा मध्यवर्ती दिशा (जैसा कि - आग्नेयी, ऐशानी, नैर्ऋती और वायवी),—भेदः दो स्थानों का मध्यवर्ती स्थान, अन्तःप्रवेश ।

अवाप्तिः (स्त्री०) [अव+आप्+क्तिन्] प्राप्त करना, ग्रहण करना -तपः फलेदं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४ ।

अवाप्य (सं० कृ०) [अव+आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य ।

अवारः-रम् [न वार्यते जलेन—वृ+कर्मणि घञ्] 1. नदी का निकटस्थ किनारा 2. इस ओर । सम० - पारः समुद्र,—पारीण (वि०) 1. समुद्र से संबंध रखने वाला 2. समुद्र को पार करने वाला ।

अवारीणः [अवार+ख] नदी को पार करने वाला ।

अवावटः प्रथम पति को छोड़कर उसी जाति के किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ किसी स्त्री का पुत्र—क्षितीश्वेन तु यः पित्रा सवर्णायां प्रजायते, अवावट इति ख्यातः शूद्रधर्मा स जातितः ॥

अवावन् (पुं०) [ओण् (यङ्) + क्वनिप्] चोर, चुराकर ले जाने वाला ।

अवासस् (वि०) [न० ब०] वस्त्र न पहने हुए, नंगा (पुं०) बुद्ध ।

अवास्तव (वि०) [स्त्री०-वी] 1. अवास्तविक 2. निराधार, विवेक शून्य ।

अविः [अव्+इन्] 1. मेष [इसी अर्थ में—स्त्री० भी] जोनकामुकवस्तावीन्—मनु० ११।१३८, ३।६, 2. सूर्य 3. पहाड़ 4. वायु, हवा 5. ऊनी कंबल, 6. शाल 7. हीरा, बाड़ा 8. चूहा, -विः (स्त्री०) 1. भेड़ 2. रजस्वला स्त्री । सम०-कटः रेवड़,—कटोरणः एक प्रकार का उपहार (जो भेड़ों के रूप में दिया जाता है) -क्षीरम् दूसरा,- मरोसम्,—सोडम् भेड़ का दूध, पटः भेड़ की खाल, ऊनी कपड़ा,—पालः गडरिया,—स्थलम् भेड़ों का स्थान, एक नगर का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम—अविस्थलं वृकस्थलं माकन्दी वारणावतम् —महाभा०।

अविकः [अवि+कन्] भेड़ा,—का भेड़, —कम् हीरा।

अविका [अवि+कन्+टाप्] भेड़, भेड़ी।

अविकत्थ (वि०) [न० ब०] जो शेखी न मारता हो, अभिमान न करता हो।

अविकत्थन (वि०) [न० ब०] जो शेखी न बघारे, जो अभिमान न करे—विद्वांसोऽविकत्थना भवन्ति—मुद्रा० ३।

अविकल (वि०) [न० त०] 1. अक्षत, समस्त, पूरा, सम्पूर्ण, सारा—तानीन्द्रियाण्यविकलानि—भर्तृ० २।४०, °लं फलम् —मेघ० २४।३४, °शरच्चन्द्रमधुरः—मा० २।११, पूर्ण, पूर्णगोलाकार 2. नियमित, सुव्यवस्थित, सुसंगत, शान्त—कलमविकलताल गायकैर्बोधहेतोः शि० ११।१०।

अविकरण (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनीय, —स्थः 1 संदेह का अभाव 2. इच्छा या विकल्प का अभाव 3. विधि या नियम,—स्थम् (अव्य०) निस्सन्देह, निस्संकोच।

अविकार (वि०) [न० ब०] निर्विकार—रः अविकृति, अपरिवर्तनशीलता।

अविकृतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. परिवर्तन का अभाव 2. (सांख्य द० में) अचेतन सिद्धान्त जिसे प्रकृति कहते हैं और जो इस विश्व का भौतिक कारण है,—मूल-प्रकृतिरविकृतिः—सां० का०।

अविक्लव (वि०) [न० ब०] शक्तिहीन, दुर्बल, —वः कायरता।

अविक्रियः (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनशील, निर्विकार, —यम् ब्रह्म।

अविक्षत (वि०) [न० त०] अक्षत, पूर्ण, समस्त—विकेतुः प्रतिदेयं तत्तस्मिन्नेवालूपविक्षतम् स्मृति।

अविग्रह (वि०) [न० त०] शरीररहित, परब्रह्म का विशेषण,—हः (व्या० में) नित्यसमास—जिसके विग्रहवाक्य के खंडों से पृथक्-पृथक् अर्थ की अभिव्यक्ति न हो सके।

अविघात (वि०) [न० ब०] बाधारहित, बिना रुकावट के, °गति (वि०) अपने मार्ग में निर्बाध।

अविघ्न (वि०) [न० ब०] निर्बाध, -घ्नम् बाधा या रुकावट से मुक्ति, कल्याण (यह शब्द नपुंसक लिंग है, यद्यपि 'विघ्न' पुं० है)—साधवाम्यूहमविघ्नमस्तुते—रघु० ११।१९ अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणाम्—१।९१।

अविचार (वि०) [न त०] विचारशून्य, विवेकरहित- रः [न० त०] अविवेक, नासमझी।

अविचारित (वि०) [न० त०] बिना विचारा हुआ, जो भली-भांति विचारा न गया हो। सम०—**निर्णयः** पक्षपात, पक्षपातपूर्ण सम्मति।

अविचारिन् (वि०) [न० त०] 1. उचित अनुचित का विचार न करने वाला, विवेकहीन 2. आपत्तिकारी।

अविज्ञात् (वि०) [न० त०] अनजान (पुं० ता) परमेश्वर।

अविडीनम् [न० त०] पक्षियों की सीधी उड़ान।

अवितथ (वि०) [न० त०] 1. जो झूठा न हो, सच्चा —तदवितथमवादीर्यन्मयेऽप्रियेति—शि० ११।३३, अवितथा वितथा सखि सा गिरः ६।१८, 2. पूरा किया हुआ, सफल,—थम् [न० त०] सचाई, अवितथमाह प्रियंवदा० श० ३ प्रियंवदा ठीक (सही) कहती है, —थम् (अव्य०) जो मिथ्या न हो, सचाईपूर्वक० मनु० २।१४४।

अवित्थजः-जम् [न० त०] पारा।

अविदूर (वि०) [न० त०] जो दूर न हो, निकटस्थ, समीपस्थ० रम् सामीप्य रम् (अव्य०) निकट, दूर नहीं, इसी प्रकार—अविदूरेण, अविदूरात्,—दूरतः,—दूरे।

अविद्या (वि०) [न० त०] अशिक्षित, मूर्ख, नासमझ,० —द्या [न० त०] 1. अज्ञान, मूर्खता, ज्ञान का अभाव 2. आध्यात्मिक अज्ञान 3. भ्रम, माया (यह शब्द वेदान्त में बहुधा प्रयुक्त होता है, इसी माया के द्वारा व्यक्ति विश्व को (जिसका वस्तुतः कोई अस्तित्व नहीं) ब्रह्म में अन्तर्हित कर देता है, यह ब्रह्मा ही सत् है)।

अविद्यामय (वि०) [अविद्या मयट्] जो अज्ञान या भ्रम के द्वारा उत्पन्न हो।

अविधवा [न० त०] जो विधवा न हो, विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो—भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि मामम्बुवाहम् मेघ० ९९।

अविधा (अव्य०) विस्मयादिद्योतक अव्यय जो भय के अवसर पर सहायतार्थ बुलाने के लिए "सहायता, सहायता" बोला जाता है।

अविधेय (वि०) [न० त०] जिसे वश में न किया जा सके, विपरीत, विधेरविधेयतास् - मुद्रा० ४।२।

अविनय (वि०) [न० ब०] अविनीत, दुर्विनीत, अशिष्ट—यः [न० त०] 1. शिष्टता या शालीनता का अभाव 2. दुर्व्यवहार, उजड्डपन, अशिष्ट या उजड्डव्यवहार अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु श० १।२५, अभद्रता, आचरण का अनौचित्य, 3. अशिष्टाचार, अनादर 4. अपराध, जुर्म, दोष 5. घमंड, अहंकार, धृष्टता अविनयमपनय विष्णो - श०।

अविनाभावः [न०त०] 1. वियोग का अभाव 2. अन्तर्हित या अनिवार्य चरित्र, वियुक्त न होने योग्य संबंध 3. संबंध अविनाभावोऽयं सम्बन्धाभावे न तु तात्तरीयकत्वम्—काव्य० २।

अविनीत (वि०) [न० त०] 1. विनयशून्य, दुःशील 2. धृष्ट, उजड्ड।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अविभक्त (वि०)[न० त०] 1. न बंटा हुआ, अविभाजित, संयुक्त (जैसे कि पारिवारिक सम्पत्ति) 2. जो टूटा न हो, समस्त ।

अविभाग (वि०) [न० ब०] जो बांटा न गया हो, अविभक्त--गः [न० त०] 1. बंटवारा न होना 2 बिना बंटा दायभाग ।

अविभाज्य (वि०) [न० त०] जो बांटा न जा सके —ज्यम् 1. न बांटा जाना, 2. जो बेटवारे के योग्य न हो (कुछ ऐसी वस्तुएँ होती हैं जो बँटवारे के समय भी बांटी नहीं जाती)--उदा० वस्त्रं पात्रमलंकारः कृतान्नमुदकं स्त्रियः, योगक्षेमं प्रचारश्च न विभाज्यं प्रचक्षते – मनु० ९।२१९, ³ना न बाँटा जाना, बँटवारे की अयोग्यता ।

अविरत (वि०) [न० त०] विरामशून्य, न रुकने वाला, सतत, निरन्तर: अविरतोत्कण्ठमुत्थिष्ठेत मेघ० १०२, लो० मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदैव विजयी भवेत् 'करतर२ अभ्यास के जहमति होत सुजान' -तम् (अव्य०) नित्यतापूर्वक, लगातार अविरतं परकार्यकृता सताम् भामि० १।११३ ।

अविरति (वि०) [न० ब०] निरन्तर ति: (स्त्री०) [न० त०] 1. सातत्य, निरन्तरता 2. कामातुरता ।

अविरल (वि०) [न० त०] 1. घना, सघन, ³वारिधारा —उत्तर० ६, तेज बौछार 2. सटा हुआ 3. स्थूल, मोटा, ठोस 4. निर्बाध, लगातार, लम् (अव्य०) 1. घनिष्ठतापूर्वक--अविरलमालिङ्गितुं पवनः- श० ३।७, 2. निर्बाधरूप से; लगातार ।

अविरोधः [न० त०] सुसंगतता, अनुकूलता सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये भर्तुः २।७४, अपने स्वार्थ के अनुकूल ।

अविलम्ब (वि०)[न० ब०] आशुकारी बः [न० त०] बिलंब का अभाव, आशुकारिता बम्, अविलम्बेन (अव्य०) बिना देर किये, शीघ्र ही ।

अविलम्बित (वि०) [न० त०] बिना देर किये, शीघ्रकारी, क्षिप्र, आशुकारी, तम् (अव्य०) शीघ्रतापूर्वक, बिना देर किये ।

अविला [अव्—इलच्] भेड़ ।

अविविक्षित (वि०) [न० त०] 1. अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट - भ्रातरः दृश्यन्त एकमेवपयग्रहणमविवक्षितम् 2. जो बोलने या कहने के लिए न हो ।

अविवित (वि०) [न०त०] 1. जिसकी छानबीन न की गई हो, जो भली-भांति विचारा न गया हो 2. जो विशेषता या भेद न जानता हो, अिज्ञ 3. सार्वजनिक ।

अविवेक (वि०) [न० ब०] विचारशून्य, विवेकशून्य-- कः [न० त०] 1. भेदक ज्ञान या विचार का अभाव, अविचार--अविवेकः परमापदां पदम्---कि० २।३० 2. जल्दबाजी, उतावलापन ।

अविशङ्कु (वि०) [न० ब०] भयरहित, संदेहशून्य, निडर —का संदेह या भय का प्रभाव, बेरोसा,— कम्, अविशङ्कं (अव्य०) निस्संदेह, निस्संकोच ।

अविशङ्कित (वि०)[न० त०] 1. निःशंक, निडर 2. निस्संदेह, विश्वासी, - गृध्रवाक्यवत्तस्य मूढास्त्यजध्वमविशङ्किताः काव्य० ।

अविशेष (वि०) [न० ब०] बिना किसी अन्तर या भेद के, बराबर, समान,--षः,--षम् 1. अन्तर का अभाव, समानता 2. एकता, समता । सम०— ज्ञ चीजों के अन्तर को न समझने वाला, अविभेदक ।

अविष (वि०) [न० ब०] 1. जो जहरीला न हो,- षः 1. समुद्र 2. राजा की 1. नदी 2. पृथ्वी 3. आकाश ।

अविषय (वि०) [न० ब०] अगोचर, अदृश्य षः [न० त०] 1. अभाव 2. अविद्यमानता--रवेरविषये किं न दीपस्य प्रकाशनम् हि० २।७९, 3. निर्विषय, जो पहुंच के अन्दर न हो, परे, बहुबढ़कर— न कश्चिद्दीमतामविषयो नाम श० ४, सकल वचनानामविषयः--मा० १।३०, शब्दों की शक्ति से बाहर, 3. इन्द्रियार्थों की उपेक्षा ।

अवी [अवत्यात्मानं लज्जया इति--अव्+ई] रजस्वला स्त्री ।

अवीचि (वि०) [न० ब०] तरंगशून्य---चिः नरक-विशेष ।

अवीर (वि०) [न० ब०] 1. जो वीर न हो, कायर 2. जिसके कोई पुत्र न हो,—रा वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति हो (विप० 'वीरा' जिसकी परिभाषा यह है: पतिपुत्रवती नारी वीरा प्रोक्ता मनीषिभिः) अनर्चितं वृथा मांसमवीरायाश्च योषितः—मनु० ४। २१३ ।

अवृत्ति (वि०) [न० ब०] 1. जिसकी सत्ता न हो, जो विद्यमान न हो 2. जिसकी कोई जीविका न हो, -त्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. वृत्तिका अभाव, जीविका का कोई साधन न होना, अपर्याप्त आश्रय--अवृत्तिकर्षिता हि स्त्री प्रदुष्येत् स्थितिमत्यपि---मनु० ९।७४, १०।१०१, आददीतामयेवात्मादवृत्तावेकरात्रिकम्---४। २२३, 2. पारिश्रमिक का अभाव, ³त्वं अनस्तित्व ।

अवृथा (अव्य०) [न० त०] व्यर्थ नहीं, सफलता पूर्वक । सम०— अर्थ (वि०) सफल ।

अवृष्टि (वि०) [न० ब०] वारिश न करने वाला,—ष्टिः (स्त्री०) [न० त०] वृष्टि का अभाव, अनावृष्टि ।

अवेक्षक (वि०) [अव+ईक्ष्+ण्वुल्] निरीक्षण करने वाला, देखरेख करने वाला, अधीक्षक ।

अवेक्षणम् [अव+ईक्ष्+ल्युट्] 1. किसी ओर देखना, नजर डालना 2. रखवाली करना, देखरेख रखना, सेवा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, अधीक्षण, निरीक्षण—वर्णाश्रमावेक्षणजागरूकः —रघु० १४।८५, 3. ध्यान, देखरेख, पर्यवेक्षण 4. खयाल करना, ध्यान रखना—दे० 'अनवेक्षण'।

अवेक्षणीय (सं० कृ०) [अव+ईक्ष्+अनीयर्] देखने के योग्य, आदर करने के योग्य, ध्यान रखने के योग्य, विचार किये जाने के योग्य—तपस्विसामान्यमवेक्षणीया—रघु० १४।६७।

अवेक्षा [अव+ईक्ष्+अङ+टाप्] 1. देखना, दृष्टि डालना 2. ध्यान, देखरेख, खयाल।

अवेद्य (वि०) [न० त०] 1. न जानने योग्य, गुप्त 2. प्राप्त करने के योग्य,—द्यः बछड़ा।

अवेल (वि०) [न० ब०] 1. असीम, सीमारहित, निस्सीम 2. असामयिक,—लः [न० त०] जानकारी का छिपाव, —ला प्रतिकूल समय।

अवैद्य (वि०) [स्त्रियाम् धी] [न० त०] 1. अनियमित, जो नियम या कानून के अनुसार न हो—अवैद्यं पञ्चमं कुर्वन् राज्ञो दण्डेन शुध्यति 2. जो शास्त्रविहित न हो।

अवैधत्वम् [न० त०] एकता।

अवोक्षणम् [अव+उक्ष्+ल्युट्] झुके हुए हाथ से छिड़काव करना उत्तानैव हस्तेन प्रोक्षणं परिकीर्तितम्, न्यञ्चताप्युक्षणं प्रोक्तं तिरश्चावोक्षणं स्मृतम्॥

अवोक्षः [अव+उन्द्+घञ्, नि० न लोपः] छिड़काव करना, गीला करना।

अव्यक्त (वि०) [न० त०] 1. अस्पष्ट, अप्रकट, अदृश्यमान अनुच्चरित—°वर्ण अस्पष्ट भाषण—शं० उ।१७, 2. अदृश्य, अप्रत्यक्ष, 3. अनिश्चित—अव्यक्तोयमचिन्त्योऽयम्—भग० २।२५, ८।२०, 4. अविकसित, अरचित 5 (बीज० में) अज्ञात,—क्तः 1. विष्णु 2. शिव 3. कामदेव 4. मूल प्रकृति 5 मूल,—क्तम् (वेदान्त० में) 1. ब्रह्म, 2. आध्यात्मिक अज्ञान, (सां० द० में) सर्व कारण, प्रजनात्मक नियम का मूलतत्त्व जिससे भौतिक संसार के सारे तत्त्व विकसित हुए हैं—बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति—रघु० १३।६०, महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः कठ० 3. आत्मा, °तम् (अव्य०) अप्रत्यक्षरूप से, अस्पष्ट रूप से। सम० —अनुकरणम् अनुच्चरित तथा निरर्थक ध्वनियों की नकल करना,—आदि (वि०) जिसका आरम्भ अगाध हो,—क्रिया बीजगणित का एक हिसाब, पद (वि०) अनुच्चरित शब्द, -मूलप्रभवः सांख्यिक अस्तित्व रूपी वृक्ष (सां० में),—राग (वि०) हलका लाल, गुलाबी (गः) ऊषा का रंग, अव्यक्त रागस्तवर्णः —अमर०, राशिः (बीजगणित में) अज्ञात अंक या परिमाण, लक्षणः, व्यथतः शिव, वर्त्मन्, मार्ग (वि०) जिसके मार्ग अगाध और अभेद्य हैं, वाच् (वि०) अस्पष्ट रूप से बोलने वाला,—साम्यम् अज्ञात परिमाणों की समीकरण राशि।

अव्यग्र (वि०) [न० त०] 1. अक्षुब्ध, अनाकुल, स्थिर, शान्त 2. किसी काम में न लगा हुआ।

अव्यङ्ग (वि०) [न० त०] जो क्षतविक्षत या दोषयुक्त न हो, सुनिर्मित, ठोस, पूरा।

अव्यञ्जन (वि०) [न० ब०] 1. चिह्नरहित, लक्षणरहित, (जैसे कि लिंगभेदक) °ना कन्या 2. अस्पष्ट,—नः बिना सींग का पशु (सींग आने की आयु होने पर भी)।

अव्यथ (वि०) [न० ब०] पीड़ा से मुक्त,—थः साँप।

अव्यथिषः [नि-व्यथ्+क्विसन्] 1. सूर्य, 2. समुद्र, षी 1. पृथ्वी 2. आधीरात, रात।

अव्यभि (भी) चारः [न० त०] वियोग का अभाव अन्योन्यस्याव्यभीचारो भवेदामरणान्तिकः मनु० ९।१०१ 2. एकनिष्ठता, वफादारी।

अव्यभिचारिन् (वि०) [न० त०] 1. अविरोधी, अप्रतिकूल, अनुकूल कु० ६।८६, 2. अपवादरहित, यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये न रूपमित्यव्यभिचारि तद्वचः—कु० ५।३६, रंध्रोपनिपातिनोऽनर्था इति यदुच्यते तदव्यभिचारिवचः शं० ६, 3. सद्गुणी, सदाचारी, ब्रह्मचारी (सती), 4. स्थिर, स्थायी, श्रद्धालु।

अव्यय (वि०) [न० ब०] 1. (क) अपरिवर्तनशील, अविनश्वर, अखंडित वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्—भग० २।२१, विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति—१७ (ख) नित्य, शाश्वत अश्वत्थं प्राहुरव्ययम् भग० १५।१, अकीर्तिं कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्—२।३४, 2. जो खर्च न किया गया हो, जो व्यर्थ नष्ट न किया गया हो 3. चिरस्थायी 4. शाश्वत फल देने वाला,—यः 1. विष्णु 2. शिव,—यम् 1. ब्रह्म, 2. (व्या० में) वह शब्द जिसके रूप में वचन लिंग आदि के कारण कोई विकार नहीं होता सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्। सम० आत्मन् (वि०) अविनश्वर या नित्य (—त्मा) आत्मा या ब्रह्म वर्गः अव्ययों की सूची।

अव्ययीभावः [अनव्ययमव्ययं भवत्यनेन, अव्यय+च्वि+भू+घञ्] 1. संस्कृतभाषा के चार मुख्य समासों में से एक, क्रियाविशेषण समास (अव्यय से बना हुआ अर्थात् अव्यय अथवा क्रिया विशेषण तथा संज्ञा के मेल से बना हुआ) अधिहरि, मधुलम् आदि 2. व्यय का अभाव (दरिद्रता के कारण)—द्रव्यैर्विहीनाः पुरुषाः सजीवा मृतास्तु ते नित्यमव्ययीभावाः, तत्पुरुष कर्मधारय येनाहः स्यां बहुव्रीहिः। उद्भट० (जो संस्कृत के समासों को आँखों के सामने रख देता है) 3. अनश्वरता।

अव्यलीक (वि०) [न० त०] 1. जो झूठा न हो, सच्चा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. प्रिय, अरुचिकर भावनाओं से रहित, -हृत्थं गिरः प्रियतमा इव सोऽध्यलोकाः शुभ्रात्र सूततनयश्च तदा व्यलोकाः शि० ५।१।

अव्यवधान (वि०) [न० ब०] 1. मिला हुआ, पास का, अन्तररहित 2. खुला हुआ 3. जो ढका न हो, नंगा 4. असावधान, लापरवाह. **-नम्** लापरवाही।

अव्यवस्थ (वि०) [न० ब०] 1. जो नियत न हो, हिलने-डुलने वाला, अस्थिर *स्थलारविंदश्रियमव्यवस्थाम्* कु० १।३३ 2. अनिश्चित, विशृंखल, अनियमित—**स्था** 1. अनियमितता, मान्यता-प्राप्त नियम से स्खलन 2. शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था।

अव्यवस्थित (वि०) [न० त०] 1. जो प्रचलित व्यवस्था या कानून के अनुरूप न हो 2. विनियमरहित, चंचल, अस्थिर—अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः नीति० ९, 3. जो क्रमबद्ध न हो, विधिपूर्वक न हो।

अव्यवहार्य (वि०) [न० त०] 1. जो अपने जातिबन्धुओं के साथ खाने पीने का अधिकारी न हो, जातिबहिष्कृत 2. जो मुकदमे का विषय न बनाया जा सके, व्यवहार के अयोग्य।

अव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधानरहित, साथ मिला हुआ।

अव्याकृत (वि०) [न० त०] 1. अविकसित, अस्पष्ट —तद्वेद तर्ह्यव्याकृतमासीत् इदं नामरूपाभ्यामव्याकृतम्— शत० 2. प्रारंभिक, **सम्** (वेदान्त०) 1. प्रारंभिक तत्व ब्रह्म के समनुरूप—इससे संसार की सभी वस्तुएँ बनी 2. (सांख्य० में) प्रधान या प्रकृति का प्राथमिक अणु।

अव्याजः —**जम्** [न० त०] 1. छल-कपट का अभाव, ईमानदारी 2. सादगी, अकृत्रिमता—बहुधा समास में 'सुन्दर' और 'मनोहर' के साथ—प्राकृतिकता या अकृत्रिमता के अर्थ में प्रयुक्त इदं किलाव्याज-मनोहरवपुः श० १। १८।

अव्यापक (वि०) [न० त०] 1. जो बहुत विस्तीर्ण न हो 2. जिसने समस्त को न व्याप्त हो, विशेष।

अव्यापार (वि०) [न० ब०] जिसके पास कोई कार्य न हो, काम में न लगा हुआ. -रः [न० त०] 1. काम से विराम 2. ऐसा काम जो न तो किया जा सके, न समझ में आवे 3. जो अपना निजी व्यापार न हो. —अव्यापारेषु व्यापारम्—दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करना।

अव्याप्तिः (स्त्री) [न० त०] 1. अपर्याप्त विस्तार, या प्रतिज्ञा पर अधूरी व्याप्ति 2. परिभाषा में दिये गये लक्षण का घटित न होना, परिभाषा के तीन दोषों में से एक लक्ष्यैक देशे लक्षणाभावर्तनमव्याप्तिः।

अव्याप्य (वि०) [न० त०] जो सारी स्थिति के लिए लागू न हो, समस्त विस्तार पर छाया हुआ न हो -वह्निर्धूमस्यात्र व्याप्यः। **सम०—वृत्तिः** (स्त्री)[वैदे० द० में] सीमित प्रत्योग की एक श्रेणी, देशकाल की स्थिति से आंशिक विद्यमानता -जैसे सुख-दुःख अव्याप्यवृत्तिः क्षणिको विशेषगुण इष्यते—**भाषा०** २७।

अव्याहत (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, बाधारहित, निर्बाध; मानी हुई (आज्ञा) भर्तुरव्याहताज्ञा— रघु० १९। ५७।

अव्युत्पन्न (वि०) [न० त०] 1. अकुशल, अनुभवशून्य, अव्यवहृत, अनाड़ी अव्युत्पन्नो बालभावः—का० १०६, 2. (शब्द) जिसकी व्युत्पत्ति निर्णीत न हो, —**नः** भाषा के व्याकरण तथा शास्त्रादि के ज्ञान से शून्य व्यक्ति, पल्लवग्राही शास्त्रादि।

अव्रत (त्रि०) [न० ब०] जो धार्मिक संस्कार तथा अन्य धर्मानुष्ठान का पालन न करता हो अव्रतानाम-मन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम्. सहस्रशः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते। मनु० १२। ११४, ३। १७०।

अश् 1. (स्वा० आ०) [अश्नुते, अशित—अष्ट] 1. व्याप्त होना, पूरी तरह से भरना, प्रविष्ट होना—**अं** प्रावृषेण्यैरिव चानशेऽद्रैः -भट्टि० २।३०'कि० १२।२१, 2. पहुंचना, जाना या आना, उपस्थित होना, प्राप्त करना सर्वमान्यत्वमश्नुते या० १।२६१, 3. प्राप्त करना, ग्रहण करना, आनंद लेना, अनुभव प्राप्त करना—अत्यल्पकैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८७, रघु० ९।९. न वेदफलमश्नुते—मनु० १।१०९. फलं दुर्योधनशिरे महिष्यः—वेणी० १।४३। **उप**—प्राप्त करना, उपभोग करना, ग्रहण करना—न च लोकानुपाश्नुते—महा०, क्रियाफलमुपाश्नुते —मनु० ६।८२ **वि**—पूर्ण रूप से भरना, व्याप्त होना, स्थान ग्रहण करना—प्रतापस्तस्य भानोश्च युगपद् व्यानशे दिशः रघु० ४।१५, भट्टि० ९।४, १४।९६।

अश् 2. (क्या० पर०) [अश्नाति,अशित] 1. खाना, उपभोग करना निवेद्य गुरवेऽनीश्यात् मनु० १।५१. अश्नीमहि वयं भिक्षाम् भर्तुः ३।११७, 2. स्वाद लेना, रस लेना—यद्दाति यदश्नासि तदेव धनिनो धनम् - हि० १।१६८-६५. अश्नन्नि दिव्यान् दिवि देवभोगान्—भग० ९।२०, प्रत्यक्षं फलमश्नन्ति कर्मणाम् महा०, (प्रेर०—**आशयति**) खिलाना, भोजन कराना, खिलवाना पिलवाना (कर्म० के साथ)—आशयच्चामृतं देवान् सिद्धा०, **प्र** 1. पीना. न प्राज्ञोत्तंसकर्मणि महा०, 2. खाना. निगलना प्राशनन्नय सुरामिषम् भट्टि० १७।३, १।१३, १५।२९. **सम्** —**1.** खाना. -नक्तं चान्नं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समश्नीयात्-- मनु० ६।१९, ११।२१९, 2. स्वाद लेना, अनुभव लेना, रस लेना - यया फलं समश्नाति —महा० ।

अशकुनः—नम् [न० त०] अशुभ या बुरा शकुन ।

अशक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. कमजोरी, शक्तिहीनता 2. अयोग्यता, अक्षमता—अक्षमत्वं—श्रमेण तदधिक्रया वा न गुणानामियत्तायाः—रघु० १०।३२

अशक्य (वि०) [न० त०] असंभव, अशक्यवहार्य ।

अशङ्क, अशङ्कित (वि०) [न० ब०, न० त०] 1. निर्भय निश्शंक-- प्रविशत्यशङ्कः हि० १।८१, 2. सुरक्षित, सन्देह रहित ।

अशनम् [अश् + ल्युट्] 1. व्याप्ति, प्रवेशन 2. खाना, खिलाना 3. स्वाद लेना, रस लेना 4. आहार -अशनं धात्रा महत्क्षिप्तं व्यालानाम् भर्तृ० ३।१०, (बहुधा विशेषण (बहुव्रीहि) समास के अन्त में 'खाने वाला' 'जिसका भोजन है....') फलमूलाशन, हुताशन, पवनाशन आदि ।

अशना [अशन मिच्छति: अशन + यच् + क्विप्] खाने की इच्छा, भूख ।

अशनाया [अशनमिच्छति- अशन + क्यच् स्त्रियां भावे अ] भूख, क्षुत्ताडनायाः फलवद्विभूत्या—भट्टि० ३।४०, अन्नाद्याऽशनाया निवर्तते पानाल्पिपासा शत० ।

अशनायित, अशनायुक (वि०) [अशन + क्यच् (ना० धा०) + क्त, पक्षे उकञ्] भूखा ।

अशनिः (पु० स्त्री०) [अश्नुते संहति- अश् + अनि] 1. इन्द्र का वज्र. शक्रस्य सहाशनिध्वजम् रघु० ३।५६ 2. बिजली की चमक—अनुवनमशनिर्गर्जितः सिद्ध०, अशनिः कल्पित एव वेधसा रघु० ८।४३, अशनेरमृतस्य चोभयोर्वर्षिणश्चाब्दगणस्य योनयः—कु० ४।४३, 3. फेंक कर मारेजाने वाला अस्त्र 4. अस्त्र की नोक **निः** (पु०) 1. इन्द्र, 2. अग्नि 3. बिजली से पैदा हुई आग ।

अशब्द (वि०) [न० ब०] जो शब्दों में न कहा गया हो —किमर्थमशब्दं रुद्यते—का० ६०, जो सुनाई न दे.—**शब्दम्** 1. अव्यक्त अर्थात् ब्रह्म 2. (सां० द० में) प्रधान या प्रकृति का आरम्भिक अणु ईक्षतेर्नाशब्दम्—शारी० १।१ ।

अशरण (वि०) [न० ब०] असहाय, परित्यक्त, शरणरहित —बलवदशरणोऽस्मि— श० ६, इसी प्रकार 'अशरण' ।

अशरीर (वि०) [न ब०] शरीररहित, बिना शरीर का —**रः** 1. परमात्मा, ब्रह्म, 2. कामदेव, प्रेम का देवता 3. संन्यासी जिसने अपने सांसारिक संबंध त्याग दिये हैं ।

अशरीरिन् (वि०) [न० त०] शरीररहित, अपार्थिव, स्वर्गीय (प्रायः वाणी, वाक् आदि शब्दों के साथ) ।

अशास्त्र (वि०) [न० ब०] जो धर्मशास्त्र के अनुकूल न हो, पाखंड । सम०—**विहित,—सिद्ध** जो धर्मशास्त्र से अनुमोदित न हो ।

अशास्त्रीय (वि०) [न० त०] शास्त्रविरुद्ध, विधि-विरुद्ध, अनैतिक ।

अशित (भू० क० कृ०) [अश् + क्त] 1. खाया हुआ, तृप्त 2. उपभुक्त ।

अशितङ्भवीन (वि०) [अशितास्तृप्ताः गावोऽत्र] वह स्थान जहाँ पहले मवेशी चरा करते थे, पशुओं के चरने का स्थान । दे० "आशितङ्भवीन" ।

अशित्रः [अश् + इत्र] 1. चोर 2. चावल की आहुति ।

अशिरः [अश् + इरच्] 1. आग 2. सूर्य 3. वायु 4 पिशाच, राक्षस, रुद्र होरा ।

अशिरस् (वि०) [न० ब०] बिना सिर का— (पुं०) बिना सिर का शरीर, कबंध, धड़, तना ।

अशिव (वि०) [न० ब०] 1. अशुभ, अमंगलकारी —अशिवा दिशि दीप्तायां शिवास्तत्र भयावहाः (रुरुः) राक्षस 2. अभागा, बदकिस्मत, **वम्** 1. दुर्भाग्य, बदकिस्मती 2. उपद्रव । सम०— **आचारः** 1. अनुचित व्यवहार, आचरण की अशिष्टता 2. दुराचरण ।

अशिष्ट (वि०) [न० त०] 1. शिष्टताहीन, उजड्ड, 2. असंस्कृत, असभ्य, अयोग्य 3. नास्तिक, भक्तिशून्य 4. जो किसी प्रामाणिक ग्रन्थ द्वारा सम्मत न हो 5 जो किसी प्रामाणिक शास्त्र द्वारा विहित न हो ।

अशीत (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म । सम० **करः,—रश्मिः** सूर्य ।

अशीतिः (स्त्री०) [निपातोऽयम्] अस्सी (यह शब्द सदैव स्त्रीलिंग एक व० में प्रयुक्त होता है चाहे इसका विशेष्य कुछ ही हो) ।

अशीर्षक (वि०)—दे० अशिरस् ।

अशुचि (वि०) [न० ब०] 1. जो साफ न हो, गंदा, मलिन, अपवित्र,—सोऽशुचिः सर्वकर्मसु,- विलाप या मातम के अवसर पर 2. काला, **चिः** (स्त्री०) [न० त०] 1. अपवित्रता 2. अधः पतन ।

अशुद्ध (वि०) [न० त०] 1. अपवित्र 2. अशुद्ध, गलत ।

अशुद्धि (वि०) [न० ब०] 1. अपवित्र, मलिन 2. दुष्ट, —**द्धिः** (स्त्री०) [न० त०] अपवित्रता, मलिनता ।

अशुभ (वि०) [न० ब०] 1. अमंगलकारी 2. अपवित्र, मलिन (विप० शुभ) 3. अभागा, बदकिस्मत,- **भम्** 1. अमंगलता, 2. पाप 3. दुर्भाग्य, विपत्ति—नार्थे कुलस्यास्यशुभं प्रजानाम् रघु० ५।१३, । सम० **उदयः** अशुभ शकुन ।

अशून्य (वि०) [न० त०] 1. जो रिक्त या शून्य न हो 2. परिचर्या किया गया, पूरा किया गया, निष्पादित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

-स्वनियोगमशून्यं कुरु (नाटकों में प्रायः प्रयुक्त) अपना कार्य सम्पन्न करो।

अशृत (वि०) [न० त०] बिना पकाया हुआ, कच्चा, अनपका।

अशेष (वि०) [न० ब०] जिसमें कुछ बाकी न बचा हो, सम्पूर्ण, समस्त, पूरा, समग्र अशेषशेमुषीमोष मायमदनामि केवलम्-उद्भट०, क्रतोरशेषेण फलेन युज्यता- रघु० ३।६५, ४८. **षः** [न० त०] जो बाकी न बचा हो,--**षम्, अशेषेण, अशेषतः** (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से,-तथाविधस्तादृददोषमस्तु सः कु० ५।८२, येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि भग० ४।३५, १०।१६, मनु० १।५९।

अशोक (वि०) [न० ब०] जिसे कोई रंज न हो, जो किसी प्रकार के रंज या शोक का अनुभव न करता हो, **कः** १. लाल फूलों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष (कविसमय है कि स्त्रियों के चरणस्पर्श से इसमें फूल खिल जाते हैं) तृ० अमृत सतः कुसुमान्यशोकः पादेन नापेक्षत सुन्दरीणां सपल्लवाभिर्जितपल्लवेन कु० ३।२६, मेघ० ७८, रघु० ८।६२, मालवि० ३।१२, १६, २. विष्णु ३. मौर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा, --कम् १. अशोक वृक्ष का फूलना (कामदेव के पाँच बाणों में से एक) २. पारा। सम० **अरिः** कदंबवृक्ष,- **अष्टमी** चैत्र कृष्णपक्ष की अष्टमी, **तरुः**,-**नगः**,—**वृक्षः** अशोकवृक्ष,—**शिरोरुहः**, **ह्वः** एक उत्पल का नाम जो तीन रात तक रहता है,--**वनिका** अशोक वृक्षों का उद्यान, **°न्याय** दे० 'न्याय' के नीचे।

अशोच्य (वि०)[न० त०] जिसके लिए शोक करना उचित नहीं--अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे--भग० २।११।

अशौचम् [न० त०] 1. पवित्रता, मैलापन, मलिनता-पंच० १।१९५ 2. (किसी बच्चे के जन्म के कारण जननाशौच) सूतक, (किसी बंधु की मृत्यु के कारण – मृताशौच) पातक—अहोरात्रमुपासीरन्नशौचं बान्धवैः सह --मनु० ११।१८३।

अश्नया—भूख।

अश्नीतपिबता [अश्नीत पिवत इत्युच्यते यस्यां निदेशक्रियायां —पा० २।१।७२] खाने पीने के लिए निमन्त्रण, दावत जिसमें खाने पीने के लिए लोग आमन्त्रित किये जाते हैं अश्नीतपिबतीयंती प्रसृता स्मरकर्मणि भट्टि० ५।९२।

अश्मक (ब० व०) [अश्मैव स्थिरः, इवार्थे कन्] 1. दक्षिण में एक देश 2. उस देश के निवासी।

अश्मन् (पुं०) [अश्+मनिन्] 1. पत्थर -- नाराचक्षेपणीयाश्मनिष्पेषोत्पतितानलम्—रघु० ४।७७ 2. फलीता, चकमक पत्थर 3. बादल 4. वज्र। सम०—**उदश्मन्** १६ शिलाजीत,—**कुट्ट,—कुट्टक** (वि०) पत्थर पर रखकर चीज तोड़ने वाला (**कुट्टकः**) भक्तों का समुदाय, वानप्रस्थ याज्ञ० ३।४९, मनु० ६।१७,- **गर्भः,-गर्भम्,-गर्भजः, जम्, योनिः** पन्ना,—**जः,—तम्** 1. गेरू, 2. लोहा, -**जतु**(नपुं०), **जतुकम्** – शिलाजीत, --**जातिः** पन्ना, **दारणः** पत्थर तोड़ने के लिए हथौड़ा, -**पुष्पम्** शिलाजीत, -**भालम्** पत्थर की खरल या लोहे की इमामदस्ता, **सार** (वि०) पत्थर या लोहे जैसा (**रः, रम्**) 1. लोहा 2. नीलमणि।

अश्मन्तम् [अश्मनोऽन्तोऽत्र शक्० परंरूपम्] 1 अंगीठी, अलाव 2. खेत, मैदान 3. मृत्यु।

अश्मन्तकः-- **कम्** [अश्मानमन्तयति इति–अश्मन्+अंत्+णिच्+ण्वुल्] अलाव, अंगीठी,—**कः** एक पौधे का नाम जिसके रेशों से ब्राह्मण की तगड़ी बनाई जाती है।

अश्मरी (आयु० में)[अश्मान राति इति रा+क+ङीष्] (मूत्राशय में) एक रोग का नाम जिसे पथरी कहते हैं, मूत्रकृच्छ्र।

अश्रम् [अश्नुते नेत्रेण -अश्+रक्] 1. आँसू, 2. रुधिर (प्रायः 'असृ' लिखा जाता है),—**श्रः** किनारा (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त होता है)। सम०--**पः** रुधिर पीने वाला, राक्षस, नरभक्षक।

अश्रवण (वि०) [न० ब०] बहरा, जिसके कान न हों, —**णः** साँप।

अश्राद्ध [न० त०] श्राद्ध का अनुष्ठान न करने वाला,- **द्धः** श्राद्ध का अनुष्ठान न करना। सम० —**भोजिन्** (वि०) जिसने श्राद्ध-अनुष्ठान में भोजन न करने का व्रत ले लिया है।

अश्रान्त (वि०) [न० त०] 1. न थका हुआ, अथक 2. अनवरत, लगातार—**तम्** (अव्य०) निरन्तर, लगातार।

अश्रिः—**श्री** (स्त्री०) [अश्+क्रि पक्षे ङीष्]। 1. (कमरे का या घर का) किनारा, कोण समास के अन्त में चतुर्, त्रि, षट् तथा और कुछ शब्दों के साथ बदल कर 'अस्र' हो जाता है–दे० चतुरस्र] 2. (शस्त्र की) तेज धार–वृक्षस्य हन्तुः कुलिशं कुण्ठिताग्रेव लक्ष्यते कु० २।३०, 3. किसी वस्तु का तेज किनारा, धार।

अश्रीक--**कः** (वि०) [न० ब० कप्, रस्य लः] 1. श्रीहीन, असुन्दर, विवर्ण, निः० १५।९६ 2. भाग्यहीन, जो सम्पन्न न हो।

अश्रु (नपुं०)[अश्नुते व्याप्नोति नेत्रमदर्शनाय–अश्+क्रुन्] आँसू - पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः – रघु० ३।६१। सम० - **उपहत** (वि०) आँसुओं से ग्रस्त, आँसुओं से ढका हुआ,-**कला** आँसू की बूंद, अश्रुबिंदु,-**परिपूर्ण** (वि०) आंसुओं से भरा हुआ, °**अश्रु** आंसुओं से भरी हुई आँखों वाला, **परिप्लुत** (वि०) आँसुओं से भरा हुआ अश्रुस्नात, **पातः** आँसू गिरना, आँसुओं का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिराना. --पूर्ण (वि०) आसुओं से भरा हुआ, °आकुल आँसुओं से भरा हुआ तथा व्याकुल-- रघु० २।१. --मुख (वि०) आँसुओं से युक्त, अचानक आँसू गिराने वाला, -लोचन.- नेत्र (वि०) आँसुओं से भरी हुई आँखों वाला. जिसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई हों।

अश्रुत (वि०) [न० त०] 1. न सुना हुआ. जो सुनाई न दे 2. मूर्ख, अशिक्षित।

अश्रौत (वि०) [न० त०] अवैदिक, जो वेदों के द्वारा अनुमोदित न हो।

अश्वघस् (वि०) [न० त०] 1. अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो, घटिया (नपुं० स्) बुराई, दुःख।

अश्लील (वि०) [न श्लिष् लाति—ला+क] 1. भद्दा कुरूप 2. ग्राम्य गन्दा. अकलड़. - अश्लीलप्रायान् कल-कलान्—दश० ४९, °पन्विवाद-याज्ञ० १।३३. 3. अप-भाषित, -लम् 1. देहाती या गंवारू भाषा. शाली 2. (सा० शा० में) रचना का एक दोष जिसमें ऐसे शब्द प्रयुक्त किये जायँ जिनसे श्रोता के मन में शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा हो—उदा० साधन सुमहद्दृश्य, मुग्धा कुट्टमितानना न वदती वायुं स्थिता तत्र सा, तथा —मृदुपवनविचिन्नो मल्लिकायाः विनाशात्—में साधन, वायु और विनाश शब्द अश्लील हैं और क्रमशः शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा करते हैं—'साधन' शब्द तो लिंग (पुरुष की जननेन्द्रिय). 'वायु' शब्द अपान (गुदा से निकलने वाली दुर्गन्धयुत वायु) तथा 'विनाश मृत्यु को प्रकट करता है।

अश्लेषा [न श्लिष्यति यत्रोत्पन्नेन शिशुना, श्लिष्+घञ् तारा०] 1. नवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं 2. अनैक्य, वियोग। सम०—ज, —भव, —भू: केतुग्रह अर्थात् उतार का शिरोबिन्दु।

अश्वः [अंश्+क्वन्] 1. घोड़ा 2. सात की संख्या का प्रकट करने वाला प्रतीक 3. (घोड़े जैसा बल रखने वाले) मनुष्यों की दौड़. काष्ठलुप्तस्वपुष्टश्च मिथ्याचारश्च निर्भयः, द्वादशगुलमेढ्रश्च दरिद्रस्तु हयो मतः।— स्त्री (द्वि० व०) घोड़ा और घोड़ी। सम०—अजनी हंटर, —अधिक (वि०) जो अश्वारोहियों में प्रबल हो. जिसके पास घोड़े अधिक हों, - अध्यक्ष: अश्वारोहियों का सेनापति,—अनीकम् अश्वारोहियों की सेना,—अरिः भैंसा,—आयुर्वेदः अश्वचिकित्सा-विज्ञान- -आरोह (वि०) घोड़े पर चढ़ा हुआ (- हः) 1. घुड़सवार, अश्वारोही 2. घुड़सवारी, - उरस् (वि०) घोड़े की भांति चौड़ी छाती वाला,- कर्णः,—कर्णकः 1. एक वृक्ष 2. घोड़े का कान, - कुटी घुड़शाल, - कुशल, —कोविद (वि०) घोड़ों को सधाने में चतुर, खरः: लच्चर,—खुरः घोड़े का सुम,—गोष्ठम् घुड़साल, अस्त-बल, - ग्रासः घोड़े की दरायाह,—चलनशाला घोड़ों को घुमाने का स्थान,—चिकित्सकः,—वैद्यः शालिहोत्री, पशुओं का डाक्टर,—चिकित्सा घोड़े की चिकित्सा, पशुचिकित्साविज्ञान, —जघनः नराश्व (जिसका शरीर घोड़े का, तथा गर्दन मनुष्य की होती है), —दूतः घुड़-सवार दूत.—नाथः घोड़ों को चराने वाला, घोड़ों का समूह, —निबन्धिकः घोड़ों का साइस, घोड़ों को बांधने वाला,—पः साइस.—पालः —पालकः,—रक्षः घोड़ों का साइस.—बंधः साइस, - -भा बिजली, - महिषिका भैंसे और घोड़े के बीच रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता, —मुख (वि०) जिसका मुंह घोड़े जैसा है (—खः) घोड़े के मुँह वाला पशु, किन्नर, देवदूत (—खी) किन्नर स्त्री,-मिन्दन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः-कु० १।११, —मेधः एक यज्ञ जिसमें घोड़े की बलि चढ़ाई जाती है—यश्चाश्वमेधः क्रतुराट् सर्वपापापनोदनः - मनु० ११।२६१.—मेधिक.—मेधीय (वि०) अश्वमेध के उपयुक्त या अश्वमेध से संबंध रखने वाला (—कः—यः) अश्वमेध के उपयुक्त घोड़ा.—युज् (वि०) जिसमें घोड़े जुते हुए हों (जैसे कि घोड़ागाड़ी). (स्त्री०) 1. एक नक्षत्रपुञ्ज,अश्विनी नक्षत्र 2. मेष राशि 3. अश्वि-नासस, रक्षः अश्वारोही या घोड़े का रखवाला, साइस, -रथः घोड़ागाड़ी (-थी) गंधमादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी, -रत्नम्, राजः बढ़िया घोड़ा, या घोड़ों का स्वामी -अर्थात् उच्चैः श्रवाः, - शाला एक प्रकार का सांप. -वक्त्र -अश्व-मुख, देo किन्नर और गंधर्व. वडवम् साँड घोड़ों की जोड़ी, - वहः अश्वारोही,—वारः,- वारकः अश्वारोही, साइस, - वाहः, - वाहकः घुड़सवार, विद् (वि०) 1. घोड़ों को सधाने में कुशल 2. घोड़ों का दलाल (पुं०) 1. पेशेवर घुड़सवार 2. बल का विद्रोपण, —शः बीजाश्व, साँडघोड़ा,—वैद्यः घोड़ों का चिकि-त्सक, शाला अस्तबल, - शावः बछेरा, बछेरी, -शास्त्रम् शालिहोत्र, पशु चिकित्सा-विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक, -शृंगालिका घोड़े और गीदड़ की स्वाभाविक शत्रुता.—साद:,- सादिन् (पुं०) घुड़सवार, अश्वारोही अश्वसैनिक रघु० ७।४७. सारथ्यम् कोचवानी, सारथिपना, घोड़ों और रथों का प्रबंध - सूतानामश्व-सारथ्यम् मनु० १०।४७, स्थान (वि०) अस्तबल में उत्पन्न (-नम्) घुड़साल, तबेला, हारकः घुड़चोर, घोड़ों को चराने वाला, हयम् 1. घोड़े को डल्हा 2. अश्वारोहिता।

अश्वक (वि०) [अश्व +कन्] घोड़े जैसा— कः 1. छोटा घोड़ा, 2. भाड़े का टट्टू 3. सामान्य घोड़ा।

अश्वकिनी [अश्वस्य कं मुखं तत्सदृशाकारोऽस्यस्य इनि ङीप् तारा०] अश्विनी नक्षत्र।

अश्वतरः (स्त्री०—री) [अश्व+ष्टरच्] खच्चर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अश्वत्थः [न श्वस्तिष्ठं शाल्मलीवृक्षादिवत् तिष्ठति—स्था + क पृषो० तारा०] पीपल का पेड़, ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः—कठ०, भग० १५।१।

अश्वत्थामन् (पुं०) [अश्वस्येव स्थाम बलमस्य, पृषो० तु० महा०—अश्वस्येवास्य यत्स्थाम नदतः प्रदिशो-गतम्, अश्वत्थामेव बालोऽयं तस्मात्साम्ना भविष्यति] द्रोण और कृपी का पुत्र, कुरुराज दुर्योधन की ओर से लड़ने वाला ब्राह्मण योद्धा व सेनापति (यह अत्यन्त शूरवीर, प्रचण्डक्रोधी, युवक योद्धा था, इसका ब्रह्मतेज कर्ण के साथ वाग्युद्ध में प्रकट हुआ, जब कि द्रोणाचार्य के पश्चात् कर्ण को सेनापतित्व दिया गया)—दे० वेणी० तृतीय अंक, यह सात चिरंजीवियों में से एक है)।

अश्वस्तन, ...स्तनिक (वि०) [न श्वो भवः इति- श्वस् + ट्युल् तुट् च, न० त०] [श्वस्तन + ठन् च न० त०] 1, जो आगामी कल का न हो, आज का 2 जो आगामी कल का प्रबंध नहीं रखता है—मनु० ४।७, ।

अश्विक (वि०) [अश्व + ठन्] जो घोड़ों से खींचा जाय।

अश्विन् (पुं०) [अश्व—इन्] 1. अश्वारोही, घोड़ों को सधाने वाला नौ (द्वि० व०) देवताओं के दो वैद्य जो कि सूर्य के द्वारा घोड़ी के रूप में एक अप्सरा से जुड़वें पैदा हुए थे। समः—कुमारौ,—पुत्रौ—सुतौ सूर्यकी पत्नी अश्विनी के यमज पुत्र।

अश्वीय (वि०) [अश्व + छ] घोड़ों से संबंध रखनेवाला घोड़ों का प्रिय, ...यम् घोड़ों का समूह, अश्वारोही सेना—शि० १८।५।

अषडक्षीण (वि०) [न सन्ति षडक्षीणि यत्र—न० ब०, ततः—ख] जो छः आंखों से न देखा जा सके, जो केवल दो व्यक्तियों के द्वारा निश्चित या निर्णीत किया जाय,—यम् रहस्य।

अषाढः [अषाढया युक्ता पौर्णमासी आषाढी सा अस्ति यत्र मासे अण् वा ह्रस्वः] अषाढ़ का महीना (प्रायः 'आषाढ़' लिखा जाता है)।

अष्टक वि० [अष्टन् + कन्] आठ भागों वाला, आठ तह वाला, कः जो पाणिनि निर्मित आठों अध्यायों का जानकार है, या उनका अध्ययन करता है,—कम पूर्णिमा के पश्चात् सप्तमी से आरंभ करके आने वाले तीन (सप्तमी, अष्टमी और नवमी) दिन 2. उन तीन महीनों की अष्टमियां, जबकि पितरों का तर्पण होता है, 3. उपर्युक्त दिनों में किया जाने वाला श्राद्धानुष्ठान, कम् 1. आठ अवयवों की बनी कोई समूची वस्तु 2. पाणिनिसूत्रों के आठ अध्याय 3. ऋग्वेद का एक खंड (ऋग्वेद ८ अष्टक या दस मंडलों में विभक्त है) 4. आठ वस्तुओं का समूह—यथा धानाष्टकम्, ताराष्टकम्, गणाष्टकम् आदि 5. आठ की संख्या। समः—अंगः, —गम् एक प्रकार का फलक या कपड़ा जिस पर आठ खाने बने होते हैं और जो पासा खेलने के काम आता है।

अष्टन् (सं० वि०) [अंश्नुते—कनिन्, तुट् च] (कर्तृ०, कर्म०—अष्ट—ष्टा) आठ, कुछ संज्ञाओं तथा संख्यावाचक शब्दों से मिलकर इसका रूप समास में 'अष्टा' रह जाता है, उदा० अष्टादशन्, अष्टाविंशतिः, अष्टापद आदि। समः—अंग वि० जिसके आठ खंड या अवयव हों गम् 1. शरीर के आठ अंग जिनसे अति नम्र अभिवादन किया जाता है, 'पातः,—प्रणामः साष्टाङ्गनमस्कारः शरीर के आठों अंगों से किया जाने वाला नम्र अभिवादन—जानुभ्यां च तथा पद्भ्यां पाणिभ्यामुरसा धिया, शिरसा वचसा दृष्ट्या प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः ॥ 2. योगाभ्यास अर्थात् मन की एकाग्रता के आठ भाग 3. पूजा की सामग्री, 'अर्घ्यम् आठ वस्तुओं का उपहार. 'धूपः आठ औषधियों से बनी एक प्रकार की ज्वर उतारने वाली धूप, 'मैथुनम् आठ प्रकार का संभोग-रस, प्रणय की प्रगति में आठ अवस्थाएं—स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्, संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च ।,—अध्यायी पाणिनि मुनि का बनाया व्याकरणग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं,—अस्रम् अष्टकोण,—अस्रिय अष्टकोणीय —अह्न् (नपुं०) आठ दिन तक होने वाला, ...कर्ण (वि०) आठ कानों वाला, (—र्णः) ब्रह्मा की उपाधि,—कर्मन् (पुं०),—गतिकः राजा जिसने अपने आठ कर्तव्य पूरे करने हैं (आठ कर्तव्य—आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषनिषेधयोः, पंचमे चार्यवचने व्यवहारस्य वेक्षणे, दंडशुद्धयो सदा रक्तस्तेनाष्टगतिको नृपः।—कृत्वस् (अव्य०) आठ बार, कोणः आठ कोण वाला, अठपहलू,—सवम् आठ गौओं का लहँडा; —गुण (वि०) आठ तह वाला,—दाप्योऽष्टगुणमत्ययम् मनु० ८।४००, (—गम्) वह आठ गुण जो ब्राह्मण में अवश्य पाये जाने चाहिए— दया सर्वभूतेषु, क्षांतिः, अनसूया, शौचम्, अनायासः, मंगलम्, अकार्पण्यम्, अस्पृहा चेति- मौ०। 'आश्रय (वि०) इन आठ गुणों से युक्त,—ष्ट (ष्टा) चत्वारिंशत् (वि०) अड़तालीस, तय (वि०) आठ तहों वाला,—त्रिंशत् (—ष्टा) (वि०) अड़तीस, —त्रिकम् चौबीस, —दलम् 1. आठपंखड़ियों वाला कमल, 2. अठकोन, —दशन् (ष्टा) नीचे दे०, दिश् (स्त्री०) आठ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिग्विदु—पूर्वाग्नेयी दक्षिणा च नैर्ऋती पश्चिमा तथा, वायवी चोत्तरैशानी दिशः अष्टादिशाः स्मृताः। °करिण्यः आठ दिग्विदुओं पर स्थित आठ हथिनियाँ, °पालाः आठों दिशाओं के आठ दिशापाल "इन्द्रो वह्निः पितृपतिः (यमः) नैर्ऋतो वरुणो मरुत् (वायुः), कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्—अमर०, °गजाः आठों दिशाओं की रक्षा करने वाले आठ हाथी—ऐरावतः पुंडरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः, पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः—अमर०, °धातुः आठ धातुओं का समुदाय—स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रङ्गु यशदमेव च, सीसं लोहं रसश्चेति धातवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः।—**पद, द** (°ष्ट° या °ष्टा°) वि० 1. आठ पैरों वाला, 2. कथा में वर्णित शरभ नाम का जन्तु, 3. सिटकिनी 4. कैलास पर्वत (—दः, —दम्) 1. सोना—आवर्जिताष्टापदकुम्भयोनेः—कु० ७।१०, शि० ३।२८, 2. पासा खेलने के लिए बिसात या एक फलक, फट्टा, —°**पत्रम्** सोने की पट्टी, —**मङ्गलः** एक घोड़ा जिसका मुंह, पूंछ, अयाल, छाती तथा सुम सफेद हों (°लम्) आठ सौभाग्यसूचक वस्तुओं का संग्रह, कुछ के मतानुसार वे ये हैं—मृगराजो वृषो नागः कलशो व्यजनं तथा, वैजयन्ती तथा भेरी दीप इत्यष्टमङ्गलम्। दूसरों के मतानुसार- लोकेऽस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः, हिरण्यं सर्पिरादित्य आपो राजा तथाष्टमः। —**मानम्** एक 'कुडव' नामक माप,—**सात्त्विक** (वि०) आठ सद्गुणों में एक बार होने वाला, **मूर्तिः** अष्टरूप, शिव का विशेषण—आठ रूप हैं - पाँच तत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), सूर्य, चन्द्रमा, तथा यज्ञ करने वाला पुरोहित— तु०, श० १।१, या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्। यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः, प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ या संस्कृत में संक्षेप से कहे गये निम्नांकित क्रमानुसार नामः—जल वह्निस्तथा यष्टा सूर्यश्चन्द्रमसौ तथा, आकाशं वायुरवनी मूर्तयोऽष्टौ पिनाकिनः। °**धरः** आठ रूपों वाला, शिव, - **रत्नम्** समष्टि रूप से ग्रहण किये गये आठ रत्न, **रसाः** नाटकों में प्रयक्त आठ रस - शृंगारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः, बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः। काव्य० ४, (इनमें नवाँ रस 'शान्त' भी जोड़ दिया जाता है : निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः-तु०) °**आढ्य** (वि०) आठ रसों से सम्पन्न, या आठ रसों को प्रदर्शित करने वाला—विक्रम० २।१८,—**विधि** (वि०) आठ तह वाला, या आठ प्रकार का,—**विंशतिः** (स्त्री०) (°ष्टा°) अठाईस, —**श्रवस्** (°श्रवाः), (आठ कान या चार सिर रखने वाला)।

अष्टतय (वि०) [अष्टन्+तयप्] आठ खंड या आठ अंगों वाला - **यम्** सब मिलाकर आठ वाला।

अष्टधा (अव्य०) [अष्टन्+धा] 1. आठ तह वाला, आठ बार 2. आठ भागों या अनुभागों में—भिन्ना प्रकृतिरष्टधा म० ७।४, भिन्नोऽष्टधा विप्रसरात् बंश. -रघु० १६।३।

अष्टम (वि०) [स्त्री० °मी] [अष्टन्+डट् मट् च] आठवाँ, -**मः** आठवाँ भाग, **मी** चांद्रमास के दोनों पक्षों का आठवाँ दिन। सम०—**अंशः** आठवाँ भाग, -**कालिक** (वि०) जो व्यक्ति सात समय (पूरे तीन दिन तथा चौथे दिन का प्रातः काल) भोजन न करके आठवें समय पर ही भोजन ग्रहण करता है मनु० ६।१९।

अष्टमक (वि०) [अष्टम+कन्] आठवाँ, योगाष्टक हरेत् याज्ञ० २।२४४।

अष्टमिका [अष्टमी+कन् ह्रस्वः, टाप्] चार तोले का बजन।

अष्टादशन् (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह। सम० -**उपपुराणम्** गौण या छोटे पुराण, अष्टादशपुराणानि मुनिभिः कथितानि तु, आद्य सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परम्, तृतीयं नारदं प्रोक्तं कुमारेण तु भाषितम्, चतुर्थं शिवधर्माख्यं साक्षान्नन्दीशभाषितम्, दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदोक्तमतः परम्, कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितम्, ब्रह्माण्डं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च, माहेश्वरं तथा साम्बं सौरं सर्वार्थसञ्ज्ञयम्, पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतद्वयम्। इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं कौर्मसंज्ञितम्, चतुर्थं सप्तितं पुण्यं संहितानां प्रभेदतः—हेमाद्रि। **पुराणम्** अठारह पुराण, —**ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा, तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्, आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यन्नवमं तथा, दशमं ब्रह्मवैवर्तं लिङ्गमेकादशं तथा, वाराहं द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्, चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पञ्चदशं तथा, मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डाष्टादशं तथा। **विषादपदम्** मुकदमेबाजी के अठारह विषय (झगड़े के कारण)- दे० मनु० ८।४७।

अष्टिः (स्त्री०) [अस्+क्तिन् पृषो० पत्वम्] 1. खेल का पासा 2. सोलह की संख्या 3. बीज 4. गुठली।

अष्ठीला [अष्ठिस्तुल्यकठिनोऽवयवः रात्रि-रा; क स्वार्थे लः दीर्घः तारा०] 1. गोल मटोल शरीर, 2. गोल कंकरी या पत्थर 3. मिरी, गुठली 4. बीज का अनाज।

अस् 1. (अदा० पर०) [अस्ति, आसीत्, अस्तु, स्यात्; आर्धधातुक लकारों में सदोष रूपरचना अर्थात् भू

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धातु से] 1. होना, रहना, विद्यमान होना (केवल सत्ता) नासदासीन्नो सदासीत् ऋग्० १०।१२९, —नत्वेवाहं जातु नासम्—भग० २।१२, आसीद्राजा नलो नाम· नल० १।१, 2. होना (अपूर्ण विधेयक की क्रिया या विधेयक शब्द के रूप में प्रयुक्त, बाद में संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण या और कोई समानार्थक शब्द आता है) अग्निके सति राजनि मनु० ११।११, आचार्ये संस्थिते सति ५।८०, 3. संबंध रखना, अधिकार में करना (अधिकर्ता में सप्त०)—यन्मयास्ति हस्व तत् पद० ६।७६, यस्य सास्ति स्वयं प्रज्ञा · ५।७०, 4. भागी होना—तस्य श्रेय्य फलं नास्ति मनु० ३।१३९ 5. उदय होना, घटित होना—आसीच्च मम मनसि—का० १४२, 6. होना 7. नेतृत्व करना, हो जाना, प्रमाणित होना (संप्र० के साथ) स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः —विक्रम० ११।१, 8. पर्याप्त होना (संप्र० के साथ) सा तेषां पावनाय स्यात् मनु० ११।८६, अन्वेषणीयो परिदीयमान आकाश वा स्यात् लवणाय वा स्यात् —जगन्नाथ, 9. ठहरना, बसना, रहना, बसना, आवास करना,—हा पितः क्वासि हे सुभ्रु —भट्टि० ६।११, 10. विशेष संबंध रखना, प्रभावित होना (अधि० के साथ) किं नु खलु वयं वयमस्यामेवमियमप्यस्मान् प्रति स्यात् श० १, अस्तु—अच्छा, होने दो, एवमस्तु, तथास्तु—ऐसा ही होवे, स्वस्ति, अव्यय तूष्णं भूतकालिक क्रिया का रूप बनाने के लिए धातु से पूर्व जोड़ा जाने वाला "आस्" कई बार धातु से पृथक् करके लिखा जाता है · तं पात्रया प्रथममास पपात पश्चात्—रघु० ९।६१, १६।८६, अति - समाप्त होना, श्रेष्ठ होना, बढ़ चढ़ कर होना, अभि संबंध रखना, अपने भाग का हिस्सेदार बनना यन्मयाभिध्यात—सिद्धा०, आविस्—निकलना, उभरना, दिखाई देना— आचार्यकं विजयि मान्यमाविरासीत् · मा० १।२६, प्रादुस्—प्रकट होना, ऊपर को उभरना, · प्रादुरासीत्समोनुद. · मनु० १।६, रघु० ११।१५, व्यति - (आ० व्यतिहे, व्यतिसे, व्यतिस्ते) बढ़ जाना, बढ़ चढ़ कर होना, श्रेष्ठ या बढ़िया होना, मात कर देना—अन्यो व्यतिस्ते तु ममापि धर्मः· भट्टि० २।३५ ।

अस् (दिवा० पर०) [अस्यति, अस्त] 1. फेंकना, छोड़ना, जोर से फेंकना, (बन्दूक) दागना, निशाना लगाना, ('निशाना' में अधि०) तस्मिन्नास्यदिषोकास्त्रम् रघु० १२।२३, भट्टि १५।९१, 2. फेंकना, ले जाना, जाने देना, छोड़ना, छोड़ देना, जैसा कि 'अस्तमान' 'अस्तशोक' और 'अस्तकोष' में, दे० अस्त; अति—, निशाने से परे (तीर गोली आदि) फेंकना, हावी होना; अत्यस्त दूर परे निशाना लगाकर, बढ़ चढ़ कर, (द्वि० त० स० में जुड़ कर,) अधि , 1. एक के ऊपर दूसरी वस्तु रखना 2. जोड़ना, 3. एक वस्तु की प्रकृति को दूसरी में घटाना,—ग्राह्यधर्मात्मान्यध्यस्यति—शारी०, अप—1. फेंक देना, दूर करना, छोड़ना, त्याग देना, रद्दी में डालना, अस्वीकार करना—किमित्यपास्याभरणानि यौवने—कु० ५।४४, सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु —पंच० १, द्वि० ११५५, संगरमपास्य— वेणी० ३।४, इत्यादीनां काव्यलक्षणत्वमपास्तम् स० द०, अस्वीकृत, निराकृत 2. हांक कर दूर कर देना, तितर बितर करना, अभि —, 1. अभ्यास करना, मश्क करना—अभ्यस्यतीव दृतमासिवारम् रघु० १३।६७, मा० ९।३२ 2. किसी कार्य को बार-बार करना, दोहराना· मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु·· श० २।६, कु० २।५०, 3. अध्ययन करना, मस्वर पढ़ना, पढ़ना—वेदमेव सदाऽभ्यस्येत् मनु० २।१६६, ४।१४७, उद् —, 1. उठाना, ऊपर करना, सीधा करना· पुच्छमुदस्यति सिद्धा०, 2. मुड़ जाना, 3. निकाल देना, बाहर कर देना, उपनि—1. निकट रखना, धरोहर रखना 2. कहना, संकेत करना सुव्रात देवा, प्रस्तुत करना—किमिदमुपन्यस्तम्—श० ५, सदुपन्यस्यति कृत्यवत्यं यः—कि० २।३, 3. सिद्ध करना, 4. किसी को देख रेख में देना, सुपुर्द करना 5. संविवरण वर्णन करना, नि - 1. उपक्रम करना, रखना, नीचे फेंकना - शिखरिषु पदं न्यस्य मेघः १३; दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं · मनु० ६।४६, 2. एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, परित्याग करना, तिलांजलि देना· स न्यस्तचिह्नामपि राजलक्ष्मीं रघु० २।७, न्यस्तशस्त्रेषु वेणी० ३।१८, इसी प्रकार प्राणान् न्यस्यति 3. अन्दर रखना, किसी वस्तु पर रखना (अधि० के साथ) · शिरस्याधा न्यस्ता अमरु ८२, चित्रन्यस्त चित्र में उतारा हुआ· विक्रम० १।४, स्तनन्यस्तोक्षोरम —श० २।९, लगाया हुआ—अयोग्ये न मद्विधो न्यस्यति भारमग्र्यम् भट्टि० १।२२, मेघ० ५२, 4. सौंपना, हवाले करना, देखरेख में रखना —अहमपि तव सूनौ न्यस्तराज्यः· विक्रम० ५।१७, भ्रातरि न्यस्य मां—भट्टि० ५।८२, 5. देना, प्रदान करना, वितरण करना—रामे श्रीन्यस्यतामिति —रघु० १२।२, 6. कहना, सामने रखना, प्रस्तुत करना—अर्थान्तरं न्यस्यति· मल्लि० वि० १।१७ पर, निस् · 1. निकाल फेंकना, फेंक देना, छोड़ना, छोड़ देना, वापिस मोड़ देना, निरस्तगाम्भीर्यमपास्तपुष्पकम् वि० १।५५, ९।६३ 2. नष्ट करना, दूर करना, हराना, मारना, मिटाना—अहोय तावदरुणेन तमो निरस्तम् ·· रघु० ५।७१, रक्षांसि वेदी परितो निरास्थत्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–भट्टि० १।१२, २।३६, 3. निकालना, निष्कासन, निर्वासित करना –गृहान्निरस्ता न तेन वैदेहसुता मनस्तः -रघु० १४।८४, 4 बाहर फेंकना, (तीर) छोड़ना 5. अस्वीकार करना, (सम्मति आदि का) निराकरण करना 6. ग्रहण लगना, छिप जाना, पृथ्वीभूमि में गिर पड़ना –भट्टि० १।३, **परा** –, छोड़ना, त्यागना, त्याग देना, छोड़ देना- परास्तवसुधो मुखाधिवसति कि० ५।२७, 2. निकाल देना 3. अस्वीकार करना, निराकरण करना, प्रत्याख्यान करना इति यदुक्तं तदपि परास्तम् - सा० द० १, **परि** - 1. चारों ओर फेंकना, सब ओर फैलाना, प्रसार करना 2. फैला देना, घेरना –ताम्रौष्ठपर्यस्त-रुचः स्मितस्य कु० १।४४, 3. ओढ़ लेना –पर्यस्त विलोचनेन कु० ३।६८, 4. (आँसू) गिराना, नीचे फेंकना रघु० १०।३६, मनु०११।८३ 5. उलट देना, पलट देना, 6. बाहर फेंकना- रघु० १३।१३, ५।४९, **परिनि**—, फैलाना, बिछाना, **पर्युद्**- , 1. अस्वीकार करना, निकाल देना 2. निर्णय करना, आक्षेप करना, **प्र**—,फेंकना, फेंक देना, उछाल देना, **वि** - ,उछालना, बखेरना, अलग-अलग फेंकना, फाड़ देना, नष्ट करना – भट्टि० ८।११९, ९।३१, 2. खंडों में विभक्त करना, पृथक्कृत करना, क्रम से रखना स्ववर्ं वेदान् व्यस्यन् - पंच० ४।५०, विव्याय वेदान् यस्मात्स तस्माद् व्यास इति स्मृतः, -महा०. रघु० १०।४५, 3. अलग-अलग लेना, एक-एक करके लेना तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने कु०५।७२, 4. उलट देना, पलट देना 5. निकाल देना, हटा देना **क्षिति** - –, 1. रखना, जमा करना, रख देना विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः -मेघ० ८८, भट्टि० ३।३, 2. जमा देना, किसी की ओर निर्देश करना –रामे विन्यस्तमानसाः- रामा०, 3. सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, किसी के जिम्मे कर देना,–सुत-विन्यस्तपत्नीकाः - याज्ञ० ३।४५, 4. क्रम में रखना, सँवारना, **विपरि** –, 1. उलट देना, पलट देना, औंधा कर देना, 2. बदलना, परिवर्तन करना - उत्तर० १. 3. भ्रमयस्त होना, गलत समझना,–प्रतीकाशं व्यामोः सुखमिति विपर्यस्यति जमः -भर्तृ० ३।९२, 4. परिवर्तित होना(अक०) **सम्** - 1. मिलना, एकत्र करना, मिलाना, जोड़ देना- -मनु० ३।८५, ७।५७, 2. समास में जोड़ देना, समासकरना 3. सामुदायिक रूप से ग्रहण करना समस्तैरथवा पृथक्–मनु० ७।१९८, संयुक्त रूप से या अलग अलग, **संनि** - , 1. रखना, सामने लाना, जमा करना, 2 एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, छोड़ देना—मन्यस्तशस्त्रः -रघु० ५।५९, संन्यस्ताभरणं गात्रम्– मेघ० ९२, कु० ७।९७, 3. दे देना, सौंपना, सुपुर्द करना, हवाले करना –भग० ३।३०, 4. (अक० के रूप में प्रयुक्त) संसार को त्यागना, सांसारिक बंधन तथा सब प्रकार की आसक्तियों को त्याग कर विरक्त हो जाना संदृश्य क्षणभङ्गुरं तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति भर्तृ० ३।१३२, ३

अस् (स्वा० उभ०) [अस्ति ते, असित] 1. जाना, 2. लेना, ग्रहण करना, पकड़ना 3. चमकना (इस अर्थ को दर्शाने के लिए प्रायः निम्नांकित उदाहरण दिये जाते हैं निष्प्रभश्च तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति भर्तृ० ३।१३२, ३।८१, तेनाप लोकः पितृमान् विवेद रघु० १४।२३, लावण्य उत्पाद्य दवाय यस्तः कु० १।३५, वामन ने यहाँ 'विदीप्त' (चमका) अर्थ को माना है चाहे वह दुरूह ही है: उपर्युक्त उदाहरणों में 'आस' को 'जभ्य' का समानार्थक **मान** लेना अधिक उपयुक्त है –चाहे इसे शाकटायन की भांति तिङन्तप्रतिरूपकमव्ययम् अव्यय मानें, या वल्लभ की भांति इसे व्याकरणविरुद्ध प्रामादिक प्रयोग – ई० मल्लि० कु० १।३५ पर)।

असंयत (वि०) [न० त०] संयमरहित, अनियन्त्रित 2. वस्त्रहीन, जैसे असंयतोऽपि मोक्षार्थी में।

असंयमः [न० त०] संयम हीनता, नियन्त्रण का अभाव, विशेषतः ज्ञानेन्द्रियों के ऊपर।

असंव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधान रहित, अनवकाश रहित (समय और काल का)।

असंशय (वि०) [न० ब०] संदेह से मुक्त, निश्चयवान् **यम्** (अव्य०) निस्सन्देह, असन्दिग्धरूप से, निश्चय ही, असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा शा० १।२२।

असंश्रव (वि०) [न० ब०] जो सुनने से बाहर हो, जो सुनाई न दे, **असंश्रवे** - सुनने के क्षेत्र से बाहर मेघ० २।२०३।

असंसृष्ट (वि०) [न० त०] 1. अमिश्रित, अयुक्त 2. जो भेदके साथ मिल कर न रहता हो, सम्पत्ति का बँटवारा होने के पश्चात् जो फिर न मिला हो (उत्तराधिकारी के रूप में)।

असंस्कृत (वि०) [न० त०] 1. संस्कारहीन, अपरिष्कृत, अपरिमार्जित 2. जो सँवारा न गया हो, सजाया न गया हो 3. जिसका कोई सांघनात्मक या परिष्कारात्मक संस्कार न हुआ हो,- तः व्याकरणविरुद्ध, अपशब्द।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, अनजाना, अपरिचित—असंस्तुत इव परित्यक्तो बांधवो जनः का० १७३, कि० ३।२, 2. असाधारण, विचित्र 3. सामञ्जस्य रहित- वार्तापि पश्चादसंस्तुत चेतः– कु० १।३४।

असंस्थानम् [न० त०] 1. संगठित का अभाव 2. अव्यवस्था, गड़बड़ 3. कमी, दरिद्रता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असंस्थित (वि०) [न० त०] 1. अव्यवस्थित, क्रमरहित । 2. असंगृहीत ।

असंस्थितिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अव्यवस्था, गड़बड़ ।

असंहत (वि०) [न० त०] 1. न जुड़ा हुआ, असंयुक्त, बिखरा हुआ, 2. तः पुरुष या आत्मा (सां०द० में) ।

असकृत् (अव्य०) [न० त०] एक बार नहीं, बार-बार, बहुधा असकृदेकरथेन तरस्विना – रघु० ९।२३, मेघ० ९२, १३, । सम० **समाधिः** –बारंबार चिंतन, मनन,– **गर्भवासः** बारंबार जन्म ।

असक्त (वि०) [न० त०] 1. अनासक्त, बेलगाव, उदासीन– अमक्तः सुलमन्वभूत् रघु० १।२१, 2. न फँसा हुआ– श० २।१२, 3. सांसारिक भावनाओं तथा संबंधों के प्रति अनासक्त, **क्तम्** (अव्य०) 1. अनासक्तिपूर्वक, 2. अनवरत, बिना रुके ।

असकृय (वि०) [न० ब०] जंघारहित ।

असखिः [न० त०] शत्रु, विरोधी ।

असगोत्र (वि०) [न०त०] जो एक ही गोत्र या कुलका न हो ।

असङ्कुल (वि०) [न०त०] जहाँ भीड़-भड़क्का न हो, खुला हुआ, चौड़ा (जैसे कि सड़क) – **लः** चौड़ी सड़क ।

असङ्ख्य (वि०) [न० ब०] गिनती से परे, गणनारहित, अनगिनत, मनु० १।८०, १२।१५, **–त्वम्** अनंतता ।

असङ्ख्यात (वि०) [न० त०] गणनारहित, अनगिनत ।

असङ्ख्येय (वि०) [न० त०] अनगिनत,–**यः** शिव की उपाधि ।

असङ्ग (वि०) [न० ब०] 1. अनासक्त, सांसारिक बंधनों से मुक्त 2. बाधारहित, निर्बाध, अकुण्ठित 3. असंयुक्त अकेला, निर्लिप्त,- **गः** [न० त०] 1. अनासक्ति – मनु० ६।७५, 2. पुरुष या आत्मा (सां० द०) ।

असङ्गत (वि०) [न०त०] 1. न जुड़ा हुआ, न मिला हुआ 2. अनुचित, बेमेल 3. उजड्ड, अशिष्ट, अपरिष्कृत ।

असङ्गतिः (स्त्री०) [न०त०] 1. मेल का न होना 2. असंबद्धता, अनौचित्य 3. (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें कार्य और कारण की स्थानीय अनुकूलता न पाई जाय –जहाँ कारण और कार्य के प्रतीयमान संबंध का उल्लंघन हो ।

असङ्गम (वि०) [न० ब०] न मिला हुआ,–**मः** 1. वियोग, अलगाव 2. असंबद्धता ।

असङ्गिन् (वि०) [न० त०] 1. न मिला हुआ, असबद्ध 2. सांसारिक विषयों में अनासक्त ।

असंज्ञ (वि०) [न० ब०] संज्ञाहीन,– **ज्ञा** वियोग, असहमति, अशामंजस्य ।

असत् (वि०) [न० त०] 1. अविद्यमान, जिसका अस्तित्व न हो– असति त्वयि–कु० ४।१२, मनु० ९।१५४, 2. सत्ताहीन, अवास्तविक,–आत्मनो ब्रह्मणश्छेदमसन्तं कः करिष्यति 3. बुरा (विप० सत्) सदसद्व्यक्तिहेतवः –रघु० १।१०, 4. दुष्ट, पाजी, निंद्य जैसे 'विचार 5. अव्यक्त 6. गलत, अनुचित, मिथ्या, असत्य इति यदुक्तं तदसत् (प्रायः विवादास्पद रचनाओं में प्रयुक्त)– (पुं० न्) इन्द्र, (नपुं० त्) 1. अनस्तित्व, असत्ता 2. झूठ, मिथ्याभाषण तो दुश्चरित्रा स्त्री– असती भवति सलज्जा–पंच० १।४१८ । सम० **-अध्येतृ** (पुं०) वह ब्राह्मण जो पाखंडयुक्त रचनाओं को पढ़ता है, जो अपनी वेदशाखा की उपेक्षा करके दूसरी शाखा का अध्ययन करता है शाखारंडं कहलाता है– **-स्वशाखां** यः परित्यज्य अन्यत्र कुरुते श्रमम्, शाखारंडः स विज्ञेयो वर्जयेत्तं क्रियासु च । **–आगमः** 1. धर्मविरुद्ध शास्त्र या सिद्धांत 2. अनुचित साधनों से (धन की) प्राप्ति 3. बुरा साधन– **आचार** (वि०) दुराचारी, बुरा आचरण करने वाला, दुष्ट (रः) अशिष्ट-आचरण, **कर्मन्**,– **क्रिया** 1. बुरा काम 2. बुरा व्यवहार, **कल्पना** 1. गलत कार्य, 2. मिथ्या प्रपंच,–**ग्रः** (ग्राहः) 1. बुरा दाँव 2. बुरी राय, पक्षपात 3 बच्चों जैसी इच्छा,– **चेष्टितम्** क्षति, आघात – प्राणिवधसन्धेष्टितम्–श० ५।५,– **दृश्** (वि०) बुरी दृष्टि वाला –**पथः** 1. बुरा मार्ग 2. अनिष्ट-आचरण या सिद्धांत; –नाशो ह्यन्त सतामसत्पथजुषामापुः समानां शतम्–भा० ४।२६, – **परिग्रहः** बुरे मार्ग को ग्रहण करना,– **प्रतिग्रहः** 1. बुरी वस्तुओं का उपहार 2. (तिल आदि) अनुपयुक्त उपहार ग्रहण करना या अनुचित व्यक्तियों से लेना,– **भावः** 1. अनस्तित्व, अभाव 2. बुरी राय या दुर्गति 3. अहितकर स्वभाव,– **वृत्ति**, व्यवहार (वि०) अनिष्टकर आचरण करने वाला, दुष्ट –**तिः** (स्त्री०) 1. नीच या अपमानजनक पेशा 2. दुष्टता,– **-शास्त्रम्** 1. गलत सिद्धांत, 2. धर्मविरुद्ध सिद्धांत,– **संसर्गः** बुरी संगति **हेतुः** बुरा या आभासी कारण, दे० 'हेत्वाभास' ।

असत्यवो दुष्टता ।

असत्ता [न० त०] 1. अनस्तित्व, 2. जो सचाई न हो 3. दुष्टता, बुराई ।

असत्त्व (वि०) [न० ब०] 1. शक्तिहीन, सत्त्वरहित 2. जिसके पास कोई पशु न हो, **त्वम्** [न० त०] 1. अनस्तित्व, 2. अवास्तविकता, असत्यता ।

असत्य (वि०) [न० त०] 1. झूठ, मिथ्या 2. काल्पनिक, अवास्तविक **त्यः** झूठा,–**त्यम्** मिथ्यात्व, झूठ बोलना, झूठ । सम० **वादिन्** (वि०) झूठ बोलने वाला,– **संध** (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहने वाला, झूठा, कमीना, धोखेबाज; ये जने भवी गई कांक्षिता–श० ।

असदृश (वि०) [स्त्री० –शी] [न० त०] 1. अनमात, बेमेल 2. अयोग्य, अनुपयुक्त, असंबद्ध, संयोगकारिन्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--का० १२, अयोध्य मातः किमन्यसदृशं विकृतं वचस्ते---वेणी० ५।३ ।

असद्यस् (अव्य०) [न० त०] तुरन्त नहीं, देरी करके ।

असन् (नपुं०) (केवल 'असृज्' शब्द की रूपरचना में द्वि० ब० के एच्चात् प्रयुक्त) रुधिर ।

असनम् [अस् + ल्युट्] फेंकना, (बन्दूक) दागना, (तीर) चलाना, जैसा कि 'इष्वसन' - धनुष में, नः पीलसाल नाम का वृक्ष–निरसनैरसनैरवधार्यता शि० ६।४७ ।

असन्दिग्ध (वि०) [न० त०] 1. जिसमें सन्देह न हो, स्पष्ट, साफ 2. निश्चित, शंकारहित, -ग्धम् (अव्य०) निश्चय ही, निस्सन्देह ।

असन्धि (वि०) [न० ब०] 1. जिनका जोड़ न हुआ हो (जैसे कि शब्द), 2. बंधनरहित, अबद्ध, स्वतन्त्र, - धिः संधि का अभाव ।

असन्नद्ध (वि०) [न० त०] 1. जो शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित न हो 2. धूर्त, घमंडी, पंडितमन्य ।

असन्निकर्षः [न० त०] 1. पदार्थों का दृष्टिगोचर न होना, मन को वस्तुओं का बोध न होना 2. दूरी ।

असन्निवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] वापिस न मुड़ना --असंनिवृत्यै तदलीकमेव – शि० ६।९, योद्धा गया सदा के लिए रघु० ८।४९ ।

असपिण्ड (वि०) [न० त०] जो पिण्डदान से संबद्ध न हो, जो रुधिर-संबंध से संयुक्त न हो, जो अपने वंश या कुल का न हो ।

असभ्य (वि०) [न० त०] सभा में बैठने के अयोग्य, गँवार, नीच, अश्लील, अशिष्ट (शब्द) ।

असम (वि०) [न० त०] 1. जो बराबर न हो, विषम (जैसा कि संख्या) 2. असमान (स्थान, संख्या और मर्यादा की दृष्टि से) असमैः समीयमानः --शिव० १।७८, 3. असदृश, बेजोड़, अनूठा । सम० --इषुः, --बाणः, सायकः विषम संख्या के तीरों को धारण करने वाला, कामदेव जिसके पांच बाण हैं, --नयन, --नेत्र, --लोचन (वि०) विषम संख्या की आँखों वाला, शिव जिसके तीन आँखें हैं ।

असमञ्जस (वि०) [न० त०] 1. अस्पष्ट, जो बोधगम्य न हो स्खलदसमञ्जसमृग्यजल्पितं ते— उत्तर० ४।४, मा० १०।२, 2. अयुक्त, अनुचित, - यद्यपि न कापि हानिर्दीक्षामान्यस्य रोषभे चरति, असमञ्जसमिति मन्वा तथापि तरलायते चेतः उद्भट० 3. बेतुका, निरर्थक, मूर्खतापूर्ण ।

असमवायिन् (वि०) [न० त०] जो घनिष्ट या अन्तर्हित न हो, आनुषंगिक, विच्छेद्य । सम० –कारणम् (तर्कशास्त्र में) आनुषंगिक कारण, अन्तर्हित या घनिष्ट संबन्ध न होना, गुणकर्मसामान्यवृत्तिर्जेयमसमवाय्यसमवायिहेतुरू---भाषा० यथा तन्तुयोगः पटस्य ।

असमस्त (वि०) [न० त०] 1. अपूर्ण, आंशिक, अधूरा 2. (व्या० में०) समास से युक्त न हो जिसमें समास न हुआ हो 3. पृथक्, वियुक्त, असंबद्ध (विप० व्यस्त) - स्तम् बिना समास की रचना (समास के विग्रह को प्रकट करने वाला वाक्य) ।

असमाप्त (वि०) [न० त०] 1. जो अभी पूरा न हुआ हो, अधूरा रहा हुआ, रघु० ८।७६, कु० ४।१९, 2. जो पूरी तरह अवगत न किया गया हो, अपूर्ण ।

असमीक्ष्य (अव्य०) बिना भली भांति विचार किये । सम०—कारिन् (वि०) बिना विचारे काम करने वाला, अविवेकी, असावधान ।

असम्पत्ति (वि०) [न० ब०] दरिद्र, दुःखी–त्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. दुर्भाग्य 2. कार्य का पूरा न होना, असफलता ।

असम्पूर्ण (वि०) [न० त०] 1. जो पूरा न हो, अधूरा 2. जो सारा न हो 3. अपूर्ण, आंशिक—जैसा कि चाँद ... चन्द्रमसम्पूर्णमण्डलमिदानीम् – मुद्रा० १।६ ।

असम्बद्ध (वि०) [न० त०] 1. जो जुड़ा हुआ न हो, असंगत 2. निरर्थक, बेतुका, अर्थहीन, °आ (प्र) लापिन् निरर्थक बातें करने वाला–असम्बद्धः खल्वसि - मृच्छ० ९, बेहूदा व्यक्ति 3. अनुचित, गलत--मनु० १२।६, —ग्रम् बेतुका वाक्य, निरर्थक या अर्थहीन भाषण जैसे कोई कहे --यावज्जीवमहं मौनी- आदि --देo 'अबद्ध' भी ।

असम्बन्ध (वि०) [न० ब०] जिसका कोई सम्बन्ध न हो, किसी से सम्बन्ध न रखने वाला—धः [न० त०] संबन्ध का न होना, संबन्ध का अभाव—यद्वा साध्यवदन्यस्मिन्संबन्धः उदाहृतः -भाषा० ६८ ।

असम्बाध (वि०) [न० ब०] 1. जो संकीर्ण न हो, विस्तृत 2. जहाँ लोगों की भीड़-भाड़ न हो, अकेला, एकान्त 3. खुला हुआ, सुगम ।

असम्भव (वि०) [न० त०] जो संभव न हो, असंभाव्य —वः 1. अनस्तित्व, 2. असंभाव्यता 3. असंभावना ।

असम्भव्य, असम्भाविन् (वि०) [न० त०] 1. अशक्य 2. अबोध्य ।

असम्भावना [न० त०] संपन्न होने की कठिनाई या अशक्यता, असंभाव्यता ।

असम्भृत (वि०) [न० त०] जो कृत्रिम उपायों से प्रकाशित न किया गया हो, अकृत्रिम, प्राकृतिक,–असम्भृतं मण्डनमङ्गयष्टेः—कु० १।३१, 2. जो भलीभांति पाला पोसा न गया हो ।

असम्मत (वि०) [न० त०] 1. अननुमोदित, अननुज्ञात, अस्वीकृत 2. नापसंद, अरुचिकर 3. अनहमत, भिन्न मत रखने वाला, - तः शत्रु, द्वेषरसम्मतात् काव्य० ७ । सम० - आदायिन् (वि०) स्वामी की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वीकृति के बिना उसकी चीज उठा ले जाने वाला, चोर।

असम्मतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. विमति, असहमति 2. अस्वीकृति, नापसंदगी।

असम्मोहः [न० त०] 1 मोह का अभाव 2. अचलता, स्थैर्य, शान्तचित्तता 3. वास्तविक ज्ञान, सच्ची अन्तर्दृष्टि।

असव्य (वि०) [स्त्री० **सव्यी**] [न० त०] 1. बुरा, अनुचित, अशुद्ध 2. अपूर्ण, अधूरा।

असंसम् [अस्+कलच्] 1. लोहा 2. अस्त्र छोड़ते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र 3. हथियार।

असवर्ण (वि०) [न० त०] भिन्न जाति या वर्ण का अपि नाम कुलदेरित्यसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात् या० १।

असह (वि०) [न० ब०] 1. जो सहा न जाय, असह्य, अधीर 2. असहिष्णु, (प्रा० संब० के साथ कर्म० के रूप में)—या स्त्रीसखीवादसहा भरस्य—मुद्रा० ३।१३।

असहन (वि०) [न० ब०] असहिष्णु, असहनशील, ईर्ष्यालु, न० शत्रु, नम् [न० त०] असहिष्णुता, अधीरता, परगुणासहनम् असूया।

असहनीय, असहितव्य } (वि०) [न० त०] जो सहा न जाय, दुःसह, असहनीय-असह्य-पीड़ा भगवन्नृणमत्यमर्हति मे—रघु० १।३१, १८।२५, कु० ४।१।

असहाय (वि०) [न० ब०] 1. निस्त्रौन, अकेला, एकाकी 2. बिना संगी साथियों के मनु० ७।३०, ५५, ८।, स्त्रम् अकेलापन, एकाकीपन।

असाक्षात् [अव्य०] [न० त०] 1. जो आँखों के सामने न हो, अदृश्य रूप से, अप्रत्यक्ष रूप से।

असाक्षिक (वि०) [स्त्री०- की] [न० ब०] 1. जिसका कोई गवाह न हो, बिना साक्ष्य के, जिसका कोई साक्षी न हो अमाक्षिकेषु स्वयंवृ मिथो विवदमानयोः—गौत० ८।१०९।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] 1. जो चश्मदीद गवाह न हो 2. जिसका साक्ष्य कानूनी दृष्टि से ग्राह्य न हो 3. जो किसी कानूनी दस्तावेज को प्रमाणित करने का अधिकारी न हो।

असाधनीय } (वि०) [न० त०] 1 जो सम्पन्न न किया
असाध्य } जा सके, या पूरा न किया जा सके 2. जो प्रमाणित होने के योग्य न हो 3. जिसकी चिकित्सा न हो सके (रोग या रोगी)—असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा—शि० २।८४।

असाधारण (वि०) [न० त०] 1. जो सामान्य न हो, असामान्य, विशेष, विशिष्ट, 2. (तर्क शास्त्र में) जो सपक्ष या विपक्ष किसी में भी हेतु के रूप में विद्यमान न हो—यदुभयसमाद् व्यावृत्तः स असाधारणो मतः, 3. निजी, जिसका कोई और दावेदार न हो -णः तर्कशास्त्र में हेत्वाभास, अनैकान्तिक के तीन भेदों में से एक।

असाधु (वि०) [न० त०] 1. जो अच्छा न हो, बुरा, स्वादरहित, अप्रिय, -अवोचन्निक्ष्वाकुसमाजे साधु वा—कि० १।४, 2. दुष्ट 3. दुश्चरित्र (अधि० के साथ) असाधुर्मातरि—सिद्धा० 4. भ्रष्ट, अपभ्रंश (शब्द)।

असामयिक (वि०) [स्त्री० की] [न० त०] बिना अवसर का, जो ऋतु के अनुकूल न हो—कि० २।२४०।

असामान्य (वि०) [न० ब०] 1. जो साधारण न हो, विशेष—रघु० १५।३९, 2. असाधारण- न्यम् विशेष या विशिष्ट संगति।

असाम्प्रत (वि०) [न० त०] 1. अनुपयुक्त, अशोभन, अनुचित,- तम (अव्य०) अनुचित रूप से, अयोग्यतापूर्वक [क्रियाविशेषण के रूप में बहुधा प्रयुक्त] —असाम्प्रतं किंवदन्तीषु संश्रुत्य स्वयं छलम्—सम्प्रतम्—कु० २।५५, संश्रुत्यसाम्प्रतं वक्तुमुक्तं मुखलवाणिना—शि० २७१, रघु० ८।२०।

असार (वि०) [न० ब०] 1. नीरस, स्वादहीन 2. (क) रसहीन, निरर्थक (ख) निकम्मा, अशक्त, सारहीन —असारे संसारे परिसुपितरन्तं विभुतया—मा० ५।३०, उत्तर० १, असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्—धर्म० १२।१३, 3. व्यर्थ, अलाभकर 4. निर्बल, कमजोर, बलहीन, बहूनामप्यसाराणां समूहस्तिः कार्यसाधिका (समवायो हि दुर्जयः) पंच० १।३३१, शि० २।५०, -रः, -रम् [न० त०] 1. अनावश्यक, या महत्त्वहीन भाग 2. एरंड वृक्ष 3. अगर की लकड़ी।

असारता [असार+तल्-टाप्] 1. नीरसता, 2. निकम्मापन, 3. सारहीन प्रकृति, क्षणभंगुर अवस्था —धिगियां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५९।

असाहसम् [न० त०] बलप्रयोग का अभाव, मुलीलता।

असिः [अस्+इन्] 1. तलवार 2. एशुओं की हत्या करने वाला चाकू—सि (अव्य०) तू, तुम् अस्मि। सम०- -गंडः गालों के नीचे रखा जाने वाला छोटा तकिया,- जीविन् तलवार ही जिसकी जीविका का साधन है, वेतन पाने वाला सैनिक योद्धा, -दंष्ट्रः, -दंष्ट्रकः मगरमच्छ, घड़ियाल, -दंतः घड़ियाल, —धारा तलवार की धार—मुरजज इव दन्तैर्भीमदैत्यासिधारैः—रघु० १७।८६, ४१,- धारावतम् 1. (किन्हीं के मतानुसार) तलवार की धार पर खड़े होने की प्रतिज्ञा (दूसरों के मतानुसार) युवती पत्नी के साथ रह कर भी उसके साथ मैथुन की इच्छा को दृढ़ता पूर्वक रोकना; यत्रैकरात्रमपि रात्रिषु प्रमदा लोभ-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुज्यते, असिधाराव्रतं नाम वदन्ति मुनिपुंगवाः। अथवा—युवा युवत्याः सार्धं यत्सञ्चरेत्, असिधारावतं हि तत् यादव 2. (अत आलं०) कोई भी अत्यन्त कठिन कार्य —सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधारावतमिदम् भर्तृ० २।२८, ६४,—धावः,—धावकः अस्त्रकार, सिकलीगर या शस्त्र-परिष्कारक,—धेनुः,—धेनुका चाकू—विकर्णकांक० ४।६९, **पत्र** (वि०) जिसके पत्ते तलवार की आकृति के हैं। रघु० १४।४८, (—त्रः) 1. गन्ना। ईख 2. एक प्रकार का वृक्ष जो कि निचले संसार में उगता है, (—त्रम्) 1. तलवार का फल 2. स्थान विशेष एक प्रकार का नरक जहां वृक्षों के पत्ते ऐसे तीक्ष्ण होते हैं जैसे कि तलवार, —पत्रकः गन्ना, ईख, **पुच्छः**, —**पुच्छक** सेंस, जिंगुआर, **मकुची मञ्जरी पुत्रिका**, —**पुत्री** छुरी, **भेदः** विट्खदिर, —**हस्तम्** तलवार या छुरियों से लड़ना, —**हेतिः** खड्गधारी पुरुष, तलवार रखने वाला।

असिक्नम् [असि+क्नु] ठोड़ी और निचले ओठ के बीच का भाग।

असिक्नी [सिता केशादौ शुक्ला जरसी तद्विद्धा अवृद्धा असित -तकारस्य कगदेशः ङीष् च] 1. अन्तः पुर की युवती परिचारिका 2. पंजाब देश की एक नदी।

असिधेनिका [संज्ञायां कन् ह्रस्वः] युवती सेविका।

असित (वि०) [न० त०] जो सफेद न हो, काला, नीला, गहरे रंग का,—असिता मोहरजनी—शा० ३।४, याज्ञ० ३।१६६, **लोचना**, नयना आदि,—तः 1. गहरा नीला रंग 2. चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष 3. शनिग्रह, 4. काला साँप,—ङी 1. नील का पौधा, 2. अन्तः पुर की दासी (जिसके बाल अधिक आयु के कारण सफेद न हुए हों) दे० 'असिक्नी' 3. यमुना नदी। **सम०—अंबुजम्**—**उत्पलम्** नील कमल,—**अक्षिन्** (पुं०) अग्नि, —**अश्मन्** (पुं०),—**उपलः** गहरा नीला पत्थर,—**केशा** काले बालों वाली स्त्री,—**केशांत** (वि०) काली जुल्फों वाला,—**गिरिः**,—**नगः** नील गिरि, **गोत्र** (वि०) काली गर्दन वाला (—त्रः) अग्नि,—**नयन** (वि०) काली आँखों वाला —**मेघः** ११२,—**पक्षः** कृष्ण पक्ष, —**फलम्** मीठा नारियल —**मृगः** काला हरिण।

असिद्ध (वि०) [न० त०] 1. जो पूरा या संपन्न न हो 2. अपूर्ण, अधूरा 3. अप्रमाणित 4. अनपका, कच्चा 5. जो अनुमेय न हो,—**त्वः** हेत्वाभास के पाँच मुख्य भागों में से एक, यह तीन प्रकार का है (1) **आश्रयासिद्ध** —जहाँ गुण के आश्रय की सत्ता सिद्ध न हो (2) **स्वरूपासिद्ध** जहाँ निर्दिष्ट स्वरूप पक्ष में न पाया जाय तथा (3) **व्याप्यत्वासिद्ध**—जहाँ सहवर्तिता की उक्त स्थिरता वास्तविक न हो।

असिद्धिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अपूर्ण निष्पन्नता, विफलता। 2. परिपक्वता की कमी 3. निष्पत्ति का अभाव (योग० में) 4. (तर्क० में) वह उपहार जो प्रतिज्ञा से सम्मोदित न हो।

असिः [अस्+किन्] 1. तलवार, किरण 2. तीर, सिरकिनी।

असुः [अस्+उन्] 1. श्वास, प्राण, आध्यात्मिक जीवन 2. मृतात्माओं का जीवन 3. (ब० व०) शरीर में रहने वाले पाँच प्राण **असुभि**. स्थानम् यशश्चिवीपतेः—कि० २।१९, (नपुं० **सु**) शोक, दुःख। **सम०** **धारणम्** या जीवन धारण, जीवन, अस्तित्व, **भंगः** 1. जीवन का नाश, जीवहानि मलिनमसुभङ्गेष्वसुकरम् भर्तृ० २।२८, 2. जीवन का भय या आशंका, **भृत्** (पुं०) जीवित जन्तु, प्राणी, —**सम** (वि०) प्राणों के समान प्यारा (—**मः**) पति, प्रेमी।

असुमत् (वि०) [असु+मतुप्] 1. जीवित, प्राणी—(पुं०) 1. जीवित प्राणी ४।२९, 2. जीवन।

असुर (वि०) [न० ब०] 1. अप्रसन्न, दुःखी 2. जिसका प्राप्त करना आसान न हो, कठिन **-सम्** [न० त०] दुःख, पीड़ा। **सम०** **आवह** (वि०) दुःख से पीड़ित,—**आविष्ट** (वि०) अत्यन्त पीड़ाकर, **उदय** (वि०) अप्रसन्नता पैदा करने वाला मनु० ११।१०, **जीविका** विपण्य जीवन।

असुलिन् (वि०) [न० त०] अप्रसन्न, दुःखी।

असुत (वि०) [न० ब०] निस्सन्तान, पुत्रहीन।

असुरः [असु+र, न सुरः इति न० त० वा] 1 दैत्य, राक्षस रामायण में नरों का कारण बतलाया गया है गुरावनिग्रहादेवाः सुरा इत्यभिविश्रुता, अप्रतिग्रहणात्तस्या दैतेयाश्चासुरास्तथा। 2. देवताओं का शत्रु, दैत्य, दानव 3. भूत, प्रेत 4. सूर्य 5. हाथी 6. राहु, 7. बादल —**रा** 1. रात्रि 2. राक्षसियों का संकेत 3. वेश्या -री दानवी, असुर की पत्नी। **सम०** —**अधिपः**,—**राजः**—**राजः** 1. असुरों का स्वामी 2. बलि की उपाधि, प्रह्लाद का पौत्र, आचार्यः, —**गुरुः** 1. असुरों के गुरु शुक्राचार्य 2 लूकग्रह, —**आयसम्** तांबे और टीन की मिश्रित धातु, —**क्षयण**, —**क्षिति** (वि०) राक्षसों का नाश करने वाला,—**द्विष्** (पुं०) राक्षसों का शत्रु अर्थात् देवता,—**माया** राक्षसी जादू, **रिपुः**,—**सूदनः** राक्षसों का हन्ता, **विध्** —**हन्** (पुं०) 1. राक्षसों का नाश करने वाला, अग्नि इन्द्र आदि 2. विष्णु।

असुरसा [न० ब० न मूलं रसो यस्याः] एक प्रकार का पौधा, तुलसी का एक भेद।

असुर्य (वि०) [असुराय हितः गवा० यत्] राक्षसी, आसुरी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असुलभ (वि०) [न० त०] जो आसानी से उपलब्ध न हो सके, प्राप्त करने में कठिन विक्रम० २। ९।

असुषु [अस्+क्विप्, सु आदेशः] तीरः म सामिः सामुसूः सासां येऽग्रेयायाद्यायः—कि० १५। ५।

असुहृद् (पु०) [न० त०] शत्रु- शि० २। ११७।

असूक्षणम् [मूल० आदरे-ल्युट्, न० त०] अपमान, अनादर।

असूत, असूतिक (वि०) [न० त०, न० ब० कप्] जिसने कुछ पैदा नहीं किया है, बांझ।

असूति[स्त्री०] [न० त०] 1 पैदा न करना, बांझपना 2 अदहन, स्थानान्तरण।

असूयति (ना० धा० पर०) 1. डाह करना, ईर्ष्यालु होना कथं त्रिनयनो भगी मया दयितः मारलिव० २. मान घटाना, अप्रसन्न होना, घृणा करना, असन्तुष्ट होना, क्रुद्ध होना (संप्र० के साथ) असूयन्ति सचिवोपदेशाय का० १०८, असूयन्ति महत्यं प्रकृतयः विक्रम० ४. भग० ३। ३१।

असूयक (वि०) [असूय+ण्वुल्] 1. ईर्ष्यालु, मान घटाने वाला, निंदक 2. असन्तुष्ट, अप्रसन्न, क अपमान करने वाला, ईर्ष्यालु व्यक्ति, मनु० २। ११८, याज्ञ० ३।६, याज्ञ० १। २८।

असूयनम् [असूय+ल्युट्] 1. अपमान, निन्दा 2. ईर्ष्या, डाह।

असूया [असूय्+अङ्+टाप्] 1. ईर्ष्या, असहिष्णुता, डाह -कृपदहेयां सूयार्थानां यं प्रति कोपः पा० १।४। ३६, सासूयम् ईर्ष्या के साथ, 2. निन्दा, अपमान असूया परगुणेषु दोषाविष्करणम् सिद्धा०, रघु० ४। २३, 3 क्रोध, रोष वधूर सूयाकुटिलं ददर्श -रघु० ६। ८२।

असूयु [असूय+उ] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2. अप्रसन्न।

असूर्य (वि०) [न० ब०] सूर्यरहित।

असूर्यम्पश्य (वि०) [सूर्यमपि न पश्यति दृश्+खश् मुम् च] सूर्य को भी न देखने वाला (अन्तःपुर की रानियों के विषय में कहा जाता है कि उन्हें सूर्य देखना भी दुर्लभ था) असूर्यम्पश्या राजदारा, सिद्धा० 2. - या सती पतिव्रता स्त्री।

असृज् (नपुं०) [न सज्यते इतररागवत् संसृज्यते सहज त्वात्—न+सृज्+क्विन्-तारा०] 1. रुधिर 2. मंगल यह 3. केसर। सम०—**करः लसिका,** -**धरा** त्वचा, चमड़ी- **धारा** 1. रुधिर की धार 2. चमड़ी, प. —**पः** लोहू पीने वाला राक्षस -**पातः** रुधिर का गिरना, **वहा** रक्त वाहिका, नाड़ी, -**विमोक्षणम्** रुधिर का बहना, **स्रा(स्रा)वः** रुधिर का बहना।

असेचन,—नक (वि०) [न० त०] जिसे देखते २ जी न भरे, मनोहर, सुन्दर।

असौष्ठव (वि०) [न० ब०] 1. सौन्दर्यविहीन, लावण्यरहित, जो सजीला न हो -शरीरमसौष्ठवम् मा० १। १७, 2. कुरूप, विकलांग -वम् 1. निकम्मापन, गुणों की हीनता 2. विकलांगता, कुरूपता।

अस्खलित (वि०) [न० त०] 1. अटल, दृढ़, स्थायी 2. अक्षत 3. अविचलित, सावधान -रघु० ५।२७।

अस्त (भू० क० कृ०) [अस्+क्त] 1. फेंका हुआ, क्षिप्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ अस्मयं यस्त्वयास्तोऽभिमानः -वेणी० ६, 2 समाप्त 3. भगा हुआ। सम०—**करण** (वि०) दयारहित -धी (वि०) मूर्ख, **व्यस्त** (वि०) दूर उधर बिखरा हुआ अव्यवस्थित, क्रमरहित, -**सत्त्व** (वि०) अनर्गनत।

अस्तः [अस्यन्ते सूर्यकिरणा यत्र—अस्+आधारे क्त] अस्ताचल या पश्चिमाचल (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ माना जाता है) -अधिरोढुमस्तगिरमभ्युपतत् शि० ९।१; विद्रुमच्छायतस्तनिभमनसूर्यम्-रघु० १६।११; शि० ४।१; 2. सूर्य का डूबना 3. डूबना, (आलं०) गिरना, पतन-दे० नीचे, **अस्तं गम्, -या, इ, प्राप्** (क) डूबना, पश्चिमी क्षितिज में गिरना, गतोऽस्तमर्कः-सूर्य डूब गया (ख) रुकना नष्ट होना, दूर हटना, अंतर्धान होना, समाप्त होना—विपर्यिणः कस्यापदोऽस्तं गताः —पंच० १।१४६; धृतिरस्तमिता रघु० ८।६६; (ग) मरना अथ वास्तमिता त्वमात्मना रघु० ८।५१, १२।११। सम०—**अचलः, -अद्रिः,—गिरिः, पर्वतः,** अस्तांचल पहाड़ या पश्चिमी पहाड़, —**अवलम्बनम्** क्षितिज के पश्चिमी भाग पर आकाशस्थित सूर्य चन्द्रादिक का डूबते समय आराम करना **उदयौ** (द्वि० व०) डूबना और निकलना, उदय और पतन, —**अस्तोदयावदिशदप्रविभिन्नकालम्** मुद्रा० ३।१७, -**ग** (वि०) डूबने वाला, तारे की भांति अदृश्य हो जाने वाला, **गमनम्** 1. डूबना, छिपना 2. मृत्यु, जीवन के सूर्य-प्रदीप का बुझना। मा० ९।

अस्तमनम् [अस्+ल्युट्] अस्त्+अप् (वा०) अस्तम्=अदर्शनस्य अनम् =गतिः] (सूर्य का) डूबना।

अस्तमयः [अस्यमीयते गम्यतेऽस्मिन् इति अस्त+इ+अच्] 1. (सूर्य का) डूबना करोत्यकालास्तमयं विवस्वतः कि० ५।३५, (विप० उदयः) 2 नाश, अन्त, पतन, हानि 3. पात, अभिभव —उदयमस्तमयं च रघु-दृहतः-रघु० ९।९, 4. तिरोधान, अन्धकार ग्रस्त होना, प्रभाभरोहास्तमयं रजांसि -रघु० ६।३३, 5. (किसी यह का) सूर्य से संयोग।

अस्ति (अव्य०) [अस्+क्तिप्] 1. होना, सत्, विद्यमान, जैसा कि अस्तिक्षीरा में, °काय, 2. प्रायः किसी घटना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या कहानी के आरंभ में या तो केवल "अनुपूरक" अर्थ में प्रयुक्त होता है, अथवा 'अतः यह है कि' अर्थ को प्रकट करता है—अस्ति सिंहः प्रतिवसति स्म पंच० ४। **सम०** **कायः** वर्ग या अवस्था (जैन मतानुसार) **नास्ति** (अव्य०) संदिग्ध, आंशिक रूप से सत्य।

अस्तित्वम् [अस्ति + त्व] सत्ता, विद्यमानता।

अस्तेयम् [न० त०] चोरी न करना।

अस्त्यानम् [न० त०] झिड़की, कलंक।

अस्त्रम् [अस्+ष्ट्रन्] 1. फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार, प्रयुक्तमन्यस्मिंतो वृथा स्यादस्त्रमुच्यते रघु० २।३४, प्रत्याहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात् २।४१, ३।५८, अशिक्षितास्त्रं पितुरेव—२।१० ३।३१, आयुर्विज्ञान 2. तीर, तलवार 3. धनुष। **सम०** **-ग्र** (आ) **गारम्** शस्त्रशाला, तोपखाना, **-आघातः** व्रण, घाव, **-कंटकः** तीर, **-कारः,-कारकः,** **कारिन्** हथियार बनाने वाला, **-चिकित्सकः** चीरफाड़ या शल्य क्रिया करने वाला, जर्राह, **-चिकित्सा** चीरफाड़ या शल्य क्रिया, जर्राही, **-जीवः-जीविन्** (पुं०) **-धारिन्** (पुं०) सैनिक, योद्धा, **निवारणम्** हथियार के वार को रोकना, **-मंत्रः** अस्त्रचालन या प्रत्याहरण के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र, **-मार्जः, मार्जकः** सिकलीगर, **युद्धम्** हथियारों से लड़ना, **-लाघवम्** अस्त्रधारण या चालन में कुशलता, **-विद्** (वि०) आयुध विज्ञान में दक्ष, **-विद्या,-शास्त्रम्,** **-वेदः** अस्त्रचालन विज्ञान या कला, आयुधविज्ञान, **वृष्टिः** (स्त्री०) अस्त्रों की बौछार, शिक्षा सैनिक अभ्यास, अस्त्र चालन व प्रत्याहरण की शिक्षा।

अस्त्रिन् (वि०) [अस्त्र+इन्] अस्त्र से युद्ध करने वाला, धनुर्धारी।

अस्त्री [न० त०] 1. जो स्त्री न हो 2. (व्या० में) पुंल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग।

अस्थान (वि०) [न० ब०] बहुत गहरा, **-नम्** [न० त०] 1. बुरा स्थान, 2. अनुचित स्थान, पदार्थ या अवसर।

अस्थाने (अव्य०) बिना ऋतु के, उपयुक्त स्थान से बाहर, बिना अवसर के, गलत जगह पर, अयोग्य वस्तु पर—अस्थाने भयाशंकी स्थानः क्रियते मुद्रा० ३।

अस्थावर (वि०) [न० त०] 1. नर, जंगम, अस्थिर 2. (विधि में) निजी चल वस्तु जैसे कि संपत्ति, पशु, धन आदि (=जंगम)।

अस्थि (नपुं०) [अस्यते—अस्+क्थिन्] 1. हड्डी (कई समस्त पदों के अंत में बदल कर 'अस्थ' रह जाता है—दे० अनस्थ, पुरुषास्थ) 2. फल की गिरी या गुठली—न कार्पासास्थि न तुषान् मनु० ४।७८। **सम०** **-कृत्,** **तेजस्** (पुं०), **-संभवः,-सारः,** **-स्नेहः** चर्बी, वसा,—**ज्ञः** 1. चर्बी, 2. वज्र,—**तुण्डः** एक पक्षी,—**धन्वन्** (पुं०) शिव,—**पंजरः** हड्डियों का ढांचा, कंकाल, **-प्रक्षेपः** मृतक की हड्डियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना, **-भक्षः,—भक्** हड्डियों को खाने वाला, कुत्ता **भंगः** हड्डी का टूट जाना, **माला** 1. हड्डियों का हार 2. हड्डियों की पंक्ति,—**मालिन्** (पुं०) शिव,—**शेष** (वि०) ठठरी मात्र, **संचयः** 1. शवदाह के पश्चात् उसकी हड्डियों और भस्मावशेष को एकत्र करना, 2. हड्डियों का ढेर, **संधिः** जोड़, जोड़बन्दी,—**सम्पंणम्** मृतक की अस्थियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना, **स्थूणः** हड्डियों को स्तम्भ के रूप में धारण करने वाला, शरीर।

अस्थिति: (स्त्री०) [न० त०] 1. दृढ़ता या जमाव का अभाव (आलं० भी) 2. मर्यादा या शिष्ट व्यवहार का अभाव।

अस्थिर (वि०) [न० त०] जो स्थिर या दृढ़ न हो, डावांडोल, चंचल।

अस्पर्शनम् [न० त०] संपर्क का न होना, (किसी चीज़ के) स्पर्श को टालना—प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनम् वरम् तुं० 'लजाज गे बचाव अच्छा'।

अस्पष्ट (वि०) [न० त०] 1. जो स्पष्ट न हो, स्फुट रूप से दिखाई न देता हो 2. धुंधला, जो साफ समझ में न आवे, संदिग्ध अस्पष्टश्चासि द्वाभ्यां वेदान्तवाक्यानि —शारी०।

अस्पृश्य (वि०) [न० त०] 1. जो छूने के योग्य न हो 2. अशुचि, अपावन।

अस्फुट (वि०) [न० त०] दुरूह, अस्पष्ट, **-टम्** दुर्बोध भाषण। **सम०** **फलम्** धुंधला या दुरूह परिणाम, **-वाच्** (वि०) तुतला कर बोलने वाला, अस्पष्टभाषी।

अस्मद् (सर्व०) [अस्+मदिक्] सर्वनामरूपिवयक प्रतिपादिक जिससे कि उत्तमपुरुषसंज्ञायी पुरुषवाचक सर्वनाम के अनेक रूप बनते हैं, यह अपि० का ब० व० का रूप भी है, पुं० प्रत्यगात्मा, जीवात्मा। **सम०** **—विध, अस्मादृश** (वि०) हमारे समान या हम जैसा।

अस्मदीय (वि०) [अस्मद्+छ] हमारा, हम सब का, —यदस्मदीयं न हि तत्परेषाम्—पंच० २।१०५, भग० १२।२५।

अस्मार्त (वि०) [न० त०] 1. जो स्मृति के भीतर न हो, स्मरणातीत 2. अवैध, आर्य-धर्मशास्त्रों के विपरीत 3. स्मार्त संप्रदाय से संबद्ध न रखने वाला।

अस्मि (अव्य०) [अस्+मिन्] ('अस्'—होना धातु का वर्तमान काल, उत्तम पुरुष, एक वचन) मैं—अहम्; —आसंसतेरस्मि जगत्सु जातः—कि० ३।६, अन्यद् यूयं कुसुमावचाय कुरुध्वमत्रास्मि करोमि सख्यः—काव्य० २।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्मिता | अस्मि + तल् + टाप्] अहंकार ।

अस्मृतिः (स्त्री०) [न० त०] स्मृति का अभाव, भूलना ।

अस्रः [अस् + रन्] 1 किनारा, कोण 2. सिर के बाल, —**अम्** 1. आँसू 2 रुधिर । सम०—**कंठः** बाण, - **जम्** मांस,—**पः** रुधिर पीने वाला राक्षस,—**पा** जोंक **मालूका** अन्नरस, आमरस, आँव ।

अस्व (वि०) [न० ब०] 1. अकिंचन, निर्धन 2. जो अपना न हो ।

अस्वतंत्र (वि०) [न० त०] 1. आश्रित, अधीन, पराधीन - -अस्वतंत्रा स्त्री पुरुषप्रधाना —वशिष्ठ 2. विनीत ।

अस्वप्न (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागरूक, **प्नः** 1. देवता 2. अनिद्रा ।

अस्वरः [न० त०] 1. मन्द स्वर 2. व्यंजन,— **रम्** (अव्य०) ऊँचे स्वर से नहीं, धीमी आवाज से ।

अस्वर्ग्य (वि०) [न० त०] जो स्वर्ग प्राप्त करने के योग्य न हो अस्वर्ग्य लोकविद्विष्टं धर्ममप्याचरेत्तु—या० १।१५६ ।

अस्वस्थ (वि०) [न० त०] 1. जो नीरोग न हो, रोगी बलवत् अस्वस्थ—मनु० ३, अतिरुग्ण ।

अस्वाध्यायः [न स्वाध्यायो वेदाध्ययनमत्र - न० त०] 1. जिसने अभी अध्ययन आरंभ नहीं किया. जिसका अभी यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो 2. अध्ययन में व्यवधान (जैसे कि अष्टमी, ग्रहण आदि के कारण अनध्याय) ।

अस्वामिन् (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु का अधिकारी न हो, जो स्वामी न हो । सम० - **विक्रयः** बिना स्वामी वाले किसी वस्तु का बेचना ।

अह् (भ्वा० आ० या परा० उभ०) —तु० **अहे** ।

अह (अव्य०) [अह् + घञ् पृषो० न लोपः] निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला निपात या अव्यय (क) स्मृति (ख) विशोक (ग) दृढ़संकल्प या विश्वास (घ) अस्वीकृति (च) प्रेषण तथा (छ) पद्धति या प्रथा को अवहेलना ।

अहंयु (वि०) [अहम् + युप्] घमंडी, अहंकारी, स्वार्थी —भट्टि० १।२० ।

अहत (वि०) [न० त०] 1. क्षत, अनाहत 2. बिना धुला, नया, - **तम्** बिना धुला (कपड़ा), जो नया कपड़ा, तु० अक्षत ।

अहन् (नपुं०) [न जहाति त्यजति सर्वथा प्रसिद्धिमिति, न + हा + कनिन् न० त०] (कर्ता० अह्नः, अह्नौ-अहानी, अहानि अह्नः अहोभ्याम् आदि) 1. दिन (दिन और रात दोनों को मिलाकर) अहोरात्रानि मनु० ५। ८४, 2. दिन का समय - मध्याह्नमहनि न तथा पीडयेन्मोहितोऽपि सन् ९।७, - **अह्नः कृत्ये** तृतीया— दिन में, (समास के अन्त में 'अहन्' बदल कर 'अह्न' - अह्न् या अह्ने रह जाता है परन्तु समस्त पद के आदि में यह 'अहस्' या अहर्' बन जाता है यथा अहःपति या अहर्पति आदि) । सम०—**आगमः** (अहर्) दिन का आना, **आदिः** उषःकाल,—**करः** सूर्य,— **गणः** (अहर्) 1. यज्ञ के दिनों का सिलसिला, 2. महीना,—**दिवम्** (अव्य०) प्रतिदिन, हर रोज, दिन प्रति दिन,- **दिवम्** दिन-रात,—**पतिः** सूर्य, —**बांधवः** सूर्य, **मणिः** सूर्य,- **मुखम्** दिन का आरंभ, प्रभात, उषःकाल त्रिंशत्कला मुहूर्तः स्यादहोरात्रं तु तावतः—मनु० १। ६४, ६५, - **शेषः**,— **षम्** सायंकाल ।

अहम् (सर्व०) ['अस्मद्' शब्द का कर्तृ कारक ए० व०] मैं । सम०—**अधिका** श्रेष्ठता के लिए होड़, प्रतिद्वन्द्विता, —**अहमिका** 1. होड़, प्रतियोगिता, अपनी श्रेष्ठता का दावा—अहमहमिकया प्रणामलालसानाम् का० १४, 2. अहंकार 3. सैनिक अहमन्यता,—**कारः** 1. अभिमान, आत्मश्लाघा, वेदान्त दर्शन में 'आत्मप्रेम' अविद्या का आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है,—भग० २। ७१, ७। ४, मनु० १। १४, 2. घमंड, स्वाभिमान, गर्व 3. (सां० द० में) सृष्टि के मूलतत्त्व या आठ उत्पादकों में से तीसरा अर्थात् आत्माभिमान या अपनी सत्ता का बोध, **कारिन्** (वि०) घमंडी, स्वाभिमानी, **कृतिः** (स्त्री०) अहंकार, घमंड, **पूर्व** (वि०) होड में प्रथम रहने का इच्छुक, - **पूर्विका**, **प्रथमिका** 1. होड़ के साथ सैनिकों की दौड़, होड, प्रतियोगिता जवादवहपूर्विकया धियासुभिः किरा० १४। ३२, 2. डींग मारना, आत्मश्लाघा, - **भद्रम्** स्वाभिमान, अपनी श्रेष्ठता का दृढ़ विचार, - **भावः** 1. घमंड, अहंकार—भाग० ४।१०, २०।३० गति तु०—**मतिः** (स्त्री०) 1 आत्मरति या स्वानुराग जो आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है (वेदा०) 2. दम्भ, घमंड, अहंकार ।

अहरणीय, अहार्य (वि०) [न० त०] 1. जो चुराये जाने के योग्य न हो, या हटाये जाने अथवा दूर ले जाये जाने के योग्य न हो अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञा नित्यमिति स्थितिः मनु० ९। १८९, 2. अक्षुब्ध, निश्चलात्मा 3. दृढ़, अविचल, अनतुनेय कुछ० ५। ८, - **यः** पहाड़ ।

अहल्य (वि०) [न० त०] बिना जोता हुआ, स्त्री गौतम की पत्नी (रामायण के अनुसार अहल्या सबसे सुन्दर स्त्री थी जिसे ब्रह्मा ने पैदा किया और गौतम को दे दिया, इन्द्र ने उसके पति का रूप धारण करके उसे सतीत्व से फुसलाया इस प्रकार उसे धोखा दिया। दूसरे कथानक के अनुसार वह इन्द्र को जानती थी और उसके अनुराग तथा नम्रता के वशीभूत हो वह उसकी वासनाओं का शिकार बन गई थी। इसके अतिरिक्त एक और कहानी है जिसके अनुसार इन्द्र ने चन्द्रमा को सहायता प्राप्त की। चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर आधी रात को ही बांग दे दी। इस बांग से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गौतम को अपने प्रातःकालीन नित्यकृत्य करने के लिए जगा दिया। इन्द्र ने अन्दर प्रविष्ट होकर गौतम का स्थान ग्रहण किया। जब गौतम को अहल्या के पथभ्रष्ट होने का ज्ञान हुआ तो उसने उसे आश्रम से निर्वासित कर दिया और शाप दिया कि वह पत्थर बन जाय तथा तब तक अदृश्य अवस्था में पड़ी रहे जब तक कि दशरथ के पुत्र राम का चरण-स्पर्श न हो, जो कि अहल्या को फिर पूर्वरूप प्रदान करेगा। उसके पश्चात् राम ने उस दीन-दशा से उसका उद्धार किया और तब उसका अपने पति से पुनर्मिलन हुआ। अहल्या प्रातःस्मरणीय उन पांच सतीं तथा विशुद्ध चरित्र महिलाओं में एक है जिनका प्रातःकाल नाम लेना श्रेयस्कर है- अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा मंदोदरी तथा, पंचकन्या. स्मरेन्नित्यं महापातक नाशिनीः। सम० जारः इन्द्र,—नन्दनः शतानन्द मुनि, अहल्या का पुत्र।

अहह (अव्य०) [अहं जहाति हनि—हा+क पृषो०] विस्मयादि द्योतक निपात निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होता है :—(क) शोक, खेद—अहह कष्टमपण्डितता विधेः—भर्तृ० ०।९२, ३।११, अहह ज्ञानरागविनिष्टः—मुद्रा० २ (ख) आश्चर्य, विस्मय—अहह महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतयः—भर्तृ० २।३५, ३६, (ग) दया, तरस भामि० ४।३९ (घ) बुलाना (ङ) धिक्कारना।

अहिः [आहन्ति—आ+हन्+इण् स च डित् आङो ह्रस्वश्च] 1. साँप, अजगर—अहयः सर्पिणाः सर्वे निर्विषाः दुडुमाः स्मृताः कथा० १४।८४, 2. सूर्य 3. राहुग्रह 4. वज्रासुर 5. धोखेबाज, बदमाश 6. बादल। सम०—कोतः वायु, हवा, कांचुः साँप की केंचुली—छत्रकम् कुकुरमुत्ता,—जित् (पुं०) 1. कृष्ण (कालिय नाग को मारने वाला) 2. इंद्र —तुंडिकः साँप पकड़ने वाला, सपेरा, बाजीगर, —द्विष्,—द्वेषिन्,—मार, रिपु, विद्विष् (पुं०) 1. गरुड़ 2. नेवला 3. मोर 4. इन्द्र 5. कृष्ण—किं० ४।२७, शि० १।३१, नकुलम् साँप और नेवले, —नकुलिका साँप और नेवले के मध्य स्वाभाविक वैर, —निर्लोकः साँप की केंचुली,— पतिः 1. साँपों का स्वामी, वासुकि 2. कोई बड़ा साँप, अजगर साँप —पुत्रकः साँप के आकार की बनी किश्ती,—फेनः, —नम् अफीम,— भयम् किसी छिपे हुए साँप का भय, बिलों की शङ्का, अपने-मित्रों की ओर से भय,—भुज् (पुं०) 1. गरुड़ 2. मोर 3. नेवला भृत् (पुं०) शिव।

अहिंसा [न० त०] 1. अनिष्टकारिता का अभाव, किसी प्राणी को न मारना, मन वचन कर्म से किसी को पीड़ा न देना—अहिंसा परमोधर्मः—भग० १०।५, मनु० १०।६३, ५।४४, ६।७५, 2. सुरक्षा।

अहिंस्र (वि०) [न० त०] अनिष्टकर, निर्दोष, अहिंसक —मनु० ४।२४६।

अहिकः एक अंधा साँप।

अहित (वि०) [न० त०] 1. जो रखा न गया हो, धरा न गया हो, जमाया न गया हो 2. अयोग्य, अनुचित मनु० ३।२०, 3. क्षतिकर, अनिष्टकर 4. अनुपकारक 5. अपकारी, विरोधी,— तः शत्रु अहितानिलोढ्रनैस्वर्ज्यमिव केतुभिः रघु० ४।२८, २।१७, ११।६८,— तम् हानि, क्षति।

अहिम (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म। सम० -अंशुः,—करः, -तेजस्, -द्युतिः,—रुचिः, सूर्य।

अहीन (वि०) [न० त०] 1. अक्षुण्ण, पूर्ण, समस्त 2. जो छोटा न हो, बड़ा— अहीनबाहुर्वृषभः प्रशास -रघु० १८।१४, 3. जो वञ्चित न हो, अधिकार प्राप्त—मनु० २।१८३ 4. जातिबहिष्कृत न हो, दुश्चरित्र न हो,—नः कई दिनों तक होने वाला यज्ञ, (नम्-नी)। सम० —वादिन् (पुं०) गवाही देने में असमर्थ, अयोग्य गवाह।

अहीरः [आभारी+पृषो० साधुः] ग्वाला, अहीर।

अहुत (वि०) [न० त०] जो यज्ञ न किया गया हो, जो (आहुति के रूप में) हवन में प्रस्तुत न किया गया हो—मनु० १२।८८,— तः धर्मविषयक चिन्तन, मनन, प्रार्थना और वेदाध्ययन (पांच महायज्ञों और कर्तव्यों में से एक) मनु० ३।७३, ७४।

अहे (अव्य०) [अह+ए] (क) झिड़की, भर्त्सना (ख) खेद तथा (ग) विस्मय को प्रकट करने वाला निपात।

अहेतु (वि०) [न० ब०] निष्कारण, स्वतः स्फूर्त अहेतुः पक्षपातो यः— उत्तर० ५।१७।

अहे (हैं) तुक (वि०) [न० ब० कप्] निराधार, निष्कारण, निष्प्रयोजन भाम० १८।२२।

अहो (अव्य०) [हा+डो न० त०] निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला अव्यय—(क) आश्चर्य या विस्मय बहुधा सचिकर अहो कामी स्वतां पश्यति श० २।२, अहो मधुरमासां दर्शनम् श० १, अहो वकुलावलिका—मालवि० १, अहो रूपमहो धैर्यमहो सत्त्वमहो द्युतिः—रामा० (अहो उसका रूप आश्चर्य जनक है -आदि) (ख) पीडाजनक आश्चर्य—अहो ते विगत चेतनत्वम्—श० १।९, 2. शोक या खेद—अहो दुष्यन्तस्य संशयमारूढाः पिडभाजः श० ६, विधिरहो बलवानिति मे मतिः -भर्तृ० २।९१, 3. प्रशंसा (शाबास, बहुत खूब) अहो देवदत्तः पचति शोभनम्—सिद्धा० 4. झिड़की (धिक्) 5. बुलाना, संबोधित करना 6. ईर्ष्या, डाह 7. उपभोग, तृप्ति 8. यकायक 9. कई बार केवल अनुपूरक के रूप में—अहो नु खलु (भोः), सामान्य रूप से आश्चर्य जो रोचक हो—अहो नु खलु ईदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, अहो नु खलु भोस्तेदेत-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लौकिकालीय नाम---सा० ५, 'अहो बत' प्रकट करता है (क) दया, तरस तथा खेद -अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्-भग० १।४४, (ख) संतोष-अहो बतानि स्पृहणीयवीर्यः-कु० ३।२० (मल्लि० यहाँ 'अहो बत' को संबोधन के रूप में ग्रहण करता है (ग) संबोधित करना, बुलाना (घ) एकावट। समा० -पुरुषिका=स्त्री० आहोपुरुषिका।

अह्नाय (अव्य०) [हन्+घञ्, वृद्धि, पृषो० वस्य वत्वम्] तुरन्त, शीघ्र, फौरन -अह्नाय सा नियमस्य कल्पमुत्सृजे -कु० ५।८६, अह्नाय तावदरुणेन तमो निरस्तम् रघु० २।७१ किं० २६।१६।

अह्नीक[वि०][न० व० का] निर्लज्ज, ढीठ---क: बौद्ध भिक्षुक।

आ

आ देवनागरी वर्णमाला का द्वितीय अक्षर।

आ 1. विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) स्वीकृति 'हाँ' (ख) दया 'आह' (ग) पीड़ा या खेद (बहुधा---आस् या आः लिखा जाता है) 'हा' 'हेत' (घ) प्रत्यास्मरण 'अहो-ओह' आ एव किलासीत् उत्तर० ६ (च) कई बार केवल अनुपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है आ एवं मन्यसे 2. (संज्ञा और क्रियाओं के उपसर्ग के रूप में) (क) 'निकट' 'पार्श्व' की ओर' 'सब ओर' में 'सब ओर' (कुछ क्रियाओं को देखो) (ख) गत्यर्थक नयनार्थक, तथा स्थानान्तरणार्थक क्रियाओं से पूर्व लगकर विपरीतार्थ का बोध कराता है---यथा गम्=जाना, आगम्=आना, दा---देना, आदा---लेना 3. (अपा० के साथ) विभक्ति निपात के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है: (क) आरम्भिक सीमा, (अभिविधि), 'से', 'से लेकर' 'से दूर' 'में से'---आमूलात् शीर्षमिच्छामि भग० १, आ जन्मनः श०५।२५ (ख) पृथक्करणीय या उपसंहारक सीमा (मर्यादा) को प्रकट करता है 'तक' 'जबतक कि नहीं' 'पर्यवसित' 'जबतक कि' आ परितोषाद्विदुषां भ० १।२, कैलासात्---मेघ० ११, कैलास तक (ग) इन दोनों अर्थों को प्रकट करने में 'आ' या तो अव्ययीभाव समास में अथवा सामासिक विशेषण का रूप धारण कर लेता है---आबालम् (आबालेभ्यः) हरिभक्तिः, कई बार इस प्रकार का बना हुआ समस्त पद अन्य समासों का प्रथम खण्ड बन जाता है---सोऽहमाजन्म शुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्, आ समुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्---रघु० १।५, आगण्ड विलम्बि---श० ७।१७ 4. विशेषणों के साथ (कई बार संज्ञाओं के साथ) लग कर 'आ' अत्यर्थवाची हो जाता है---आपाटुर---ईषत्पटेत्, कुछ सफेद, आलक्ष्य---श० ७।१७, आकरः---मृद् करणम्, इसी प्रकार 'आनील' 'आरक्त'।

आं---तु० आम्।

आः 1.---तु० आम् 2. लक्ष्मी (आ)।

आकरणम् [आ+कृ+ल्युट्] डींग मारना, शेखी बघारना।

आकम्पः [आ---कम्प्---घञ्] 1. मृदु कंप 2. हिलना, काँपना।

आकम्पनम् [आ---कम्प्+ल्युट्] कंपयुक्त गति, हिलना।

आकम्पित, आकम्प्य [आ+कम्प्---क्त, ण्यत्] हिलता हुआ, काँपता हुआ, हिला-डुला, विक्षुब्ध।

आकरः [आकूर्यन्तेऽस्मिन् आ+कृ+घ] 1. खान ---मणिराकरोद्भवः रघु० ३।१८, आकरे पद्मरागाणां जन्मकाचमणेः कुतः ---हि० प्र० ४४ (आल०) खान या किसी वस्तु का समृद्ध भाण्डार---मासो नु पृथ्वाकरः विक्रम० १।९, अशेषगुणाकरम् भर्तृ० २।६५ कु० २।२९, 3. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

आकरिक (वि०) [आकर+ठन्] (राजा के द्वारा) नियत व्यक्ति जो खान का अधीक्षण करता है।

आकरिन् (वि०) [आकर+इनि] 1. खान में उत्पन्न, खनिज 2. अच्छी नस्ल का दंतनाकरिभिः करिभिः क्षतैः कि० ५।७, ।

आकर्णनम् [आ | कर्ण | ल्युट्] सुनना, कान लगा कर सुनना।

आकर्षः [आ---कृष्---घञ्] 1. खिंचाव या (अपनी ओर) खींचना, 2. खींच कर दूर ले जाना. पीछे हटाना 3. (धनुष) तानना 4. प्रलोभन, सम्मोहन 5. पासे से खेलना 6. पासा या चौसर 7. पासों से खेलने का फलक, बिसात 8. ज्ञानेन्द्रिय 9. कमोटी।

आकर्षक (वि०) [आ+कृष्+ण्वुल्] खिंचाव करने वाला, प्रलोभक---कः चुंबक, लोहचुंबक।

आकर्षणम् [आ+कृष्---ल्युट्] 1. खींचना, खींच लेना, सम्मोहन 2. एषणाष्ट करने के लिए फुसलाना, जी बूटों से फल फूल आदि उतारने के लिए किनारे पर से मुड़ी हुई लकड़ी, लग्गी।

आकर्षिक (वि०) [स्त्री०---की] [आकर्ष+ठन्] चुंबकीय, सम्मोहक।

आकर्षिन् (वि०) [आ+कृष्+णिनि] खींचने वाला (जैसे कि दूर की गंध)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आकलनम् [आ+कल्+ल्युट्] 1. हाथ रखना, पकड़ना --मेखलाकलन का० १८२, बन्दीग्रह में रहना 2. गिनना, हिसाब लगाना, 3. चाह इच्छा 4. पूछ ताछ 5. समझ-बूझ ।

आकल्पः [आ+कृप्+घञ्] 1. आभूषण, अलंकार – आकल्पसारो रूपाजीवाजनः - दश० ६३, रघु० १७।२२, १८।५२. 2. वेशभूषा 3. रोग, बीमारी ।

आकल्पकः [आ+कृप्+णिच्+ण्वुल्] 1. दूरदर्शिपूर्ण स्मृति, स्मृति की लोप 2. सूझी 3. हर्ष या प्रसन्नता 4. अंधकार गांठ या जोड़ ।

आकषः [आ+कष्+अच्] कसौटी ।

आकषिक (वि०) [आकर्षण चरति-इति आकर्ष+ठक्] परखने वाला, कसौटी पर कसने वाला ।

आकस्मिक (वि०) (स्त्री०-की)[अकस्मात्+ठक् टिलोपः] 1. अचानक होने वाला, आकस्मिक, अप्रत्याशित, सहसा 2. निष्कारण, निराधार-- नन्वदृष्टानिष्टौ जगदीचिभ्य-माकस्मिक स्यात्-- मारी० ।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अ+टाप्] 1. इच्छा, चाह-भक्त'--मुद्रा०, अमर ४१, 2. (व्या० में) अर्थ को पूरा करने के लिए आवश्यक शब्द की उपस्थिति, किसी विचार या वाक्य के भाव को पूरा करने के लिए तीन आवश्यक तत्वों में से एक (दूसरे दो हैं--योग्यता और आसत्ति) आकाङ्क्षा प्रतीतिपदसंसर्गविरहः- सा० द० २. अर्थ की पूर्ति का अभाव 3. किसी की ओर देखना 4. प्रयोजन, इच्छा 5. पूछ ताछ 6. शब्द की यथार्थता ।

आकाशः [आ+चि+कर्मणि घञ्] चिती कुल्लम्] 1. चिता पर रखी हुई अस्थि, 2. चिता ।

आकारः [आ+कृ+घञ्,] 1. रूप, शक्ल, आकृति-दिधा दो रूपों का या दो प्रकार की 2. पहलू, सूरत, मुखाकृति, चेहरा आकारसदृशप्रज्ञः रघु० १।१५, १६।७, 3. (विशेषतः) चेहरे का रंग ढंग-जिससे मनुष्य के आन्तरिक विचार तथा मनोवृत्ति का पता लग सके-तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च रघु० १२।१, भवानपि संवृताकार मास्तां-विक्रम० २, 4. इशारा, संकेत, निशानी। यमः - मूर्तिः (स्त्री०),--गोपनम्,--मूहनम् छिपाव, मन के भावों को छिपाना ।

आकार (क) रण,-णा [आ+कृ+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. आमंत्रण, बुलावा-भवदाकारणाय -दश० १७५, 2. आह्वान ।

आकारः [आ+कृ+अल्+अच् कोः कादेशः] ढोक भमर ।

आकालिक (वि०) (स्त्री०--की) [अकाल+ठक्] 1. क्षणिक, अल्पकालिक - मनु० ४।१०३, 2. वैमौसिम, अकालपक्व, असामयिक--आकालिकी वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम् - कु० ३।३४, गच्छ० ५।१, की बिजली ।

आकाशः-शम् [आ+काश्+घञ्] 1. आसमान --आकाशभवा सरस्वती- कु० ४।३२, 'व, 'चारिन् आदि 2. अन्तरिक्ष (पाँचवां तत्व) 3. सूक्ष्म और वायविक द्रव्य जो समस्त विश्व में व्याप्त है, वैशेषिक द्वारा माने हुए ९ द्रव्यों में से एक, यह 'शब्द' गुण का आधार है -शब्दगुणकमाकाशम् - तुल० अनिवियय-गुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्-सा० १। १, अशास्त्रज्ञः शब्दगुणं गुणज्ञः पदम् (सामतः आकाश) विभावेन विगाहमानः--रघु० १३। १, ५. मुक्त स्थान 5. स्थान--सर्वतनवताकाशं पृथिवीम्--महा०, भवनाकाश-मजायताम्बुराशिः भामि० २। १६५, 6. ब्रह्म (अन्तरिक्ष स्वरूप) आकाशस्तल्लिंगात्' ब्रह्म० -यावानय-माकाशस्तावानयमन्तर्हृदयाकाशः - छा० 7. प्रकाश, स्वच्छता, 'वायु में' अर्थ को प्रकट करने वाला आकाशे' शब्द नाटकों में प्रयुक्त होता है जब कि रंग-मंच पर स्थित पात्र प्रश्न किसी ऐसे व्यक्ति से पूछता है जो वहाँ उपस्थित न हो, और ऐसे काल्पनिक उत्तर को सुनता है जो कि 'वदोगि,' 'कि कथयसि' आदि शब्दों से आरम्भ होता है दूरस्थाभाषणं यत्स्यादप्रवेशनिवेदनम्, परोक्षान्तरितं वाक्य तदाकाशे त्रिधा मतम् ।। भरत नृ० निम्नांकित आकाशभाषित की --(आकाशे) शिवदेवे कथमेवमुत्तरमेव, भगा-लवत्ति च नक्षिणोपजाणि नीयते । (प्रविश्यापरिभवी) कि ब्रवीषि -आदि०- द्र० ३। समः --ईशः 1. इन्द्र 2. (विधि में) असहाय व्यक्ति (जैसे कि बच्चा, स्त्री, दरिद्र) जिसके पास बाधु के अतिरिक्त और कोई बन्धु नहीं है --कक्षा क्षितिज, --कक्ष्यः वह गः पक्षी (गा) आकाशस्थित गंगा,-गङ्गा दिव्य गंगा --तदाकाशगंगा इवाग्रे संवन्धुनिरीक्षते रघु० १० ७८, चक्षुसः सूर्यमा, -जनित् (पुं) झरोखा, आलोक में बना छोप का झरोखा, बन्दूक या तोप आदि चलाने के लिए भित्ति में बना छिद्र 1. --दीपः --प्रदीपः 1 कार्तिक मास में दिवाली के अवसर पर लक्ष्मी या विष्णु का स्वागत करने के लिए झरोखे पर रक्खा हुआ दीपक, 2. बाँस के सिरे पर बांध कर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन, प्रकाशस्तम्भ पर रक्खा हुआ दीया या लैम्प, भाषितम् 1. रंग-मंच पर अनुपस्थित व्यक्ति से भाषण करना, एक काल्पनिक भाषण जिसका उत्तर इस प्रकार दिया जाय मानो यह बात वस्तुतः कही और सुनी गई है- कि ब्रवीषीति यत्तादृशे विना पात्रं प्रयुज्यते, अदृश्य-वाचनं तत्स्यादाकाशभाषितम्--सा० द० ५६५, 2. आकाश में कही गई या उच्चरित, --मंडलम् व्योम, --यानम् 1. हवाई जहाज, एरोप्लेन 2. आकाश में घूमने वाला, रक्षित् (पुं०) किले की बाहरी दिवारों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की रक्षा करने वाला, **वचनम्** °भाषितम् दे० **वर्त्मन्** (नपुं०) 1. अन्तरिक्ष 2. वायुमंडल, वायु, **वाणी** आकाश में आई हुई आवाज़, अशरीरिणी वाणी, **सलिलम्** वर्षा, **ओस—स्फटिकः** ओला।

आकिञ्चनम्, आकिञ्चन्यम् [अकिञ्चन—अण्, ष्यञ् वा] गरीबी, धन का अभाव।

आकीर्ण (भू० कृ० कृ०) [आ+कृ+क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ भरा हुआ, व्याप्त, संकुल—खचाखच भरा हुआ, परिपूर्ण, भरपूर—जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव श० ५। १७, आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वारोधिभिः—रघु० १।५०।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] 1. झुकाना, सिकोड़ना, संकोचन 2. पाँच कर्मों में से एक—सिकुड़न 3. एकत्र करना, ढेर लगाना 4. टेढ़ा होना।

आकुल (वि०) [आ+कुल—क] 1. भरपूर, भराहुआ—प्रलयदुर्गमालाकुलं (समुद्रम्)—भर्तृ० २।४, वाष्पाकुलां वाचं नल० ४।१८, आलापकुतूहलाकुलतरैः श्रोत्रैः अमरु ८१, 2. प्रभावित, प्रभावग्रस्त, पीड़ित, आहत हर्ष°, शोक°, विरस°, स्नेह° आदि 3. व्यस्त, लीन 4. घबराया हुआ, विक्षुब्ध, उद्विग्न—अभिचेष्टं प्रतिपालयन्नरपतेरागाद्वनान्तं शिशुः ३।२, विस्मित किंकर्तव्यविमूढ़, अनिर्धारित, °आकुल, अत्यन्त क्षुब्ध 5. बिखरे बाल वाला, अव्यवस्थित 6. असंगत, विरोधी, छल आदि आगत।

आकुलित (वि०) [आ+कुल+क्त] 1. दुःखी, उद्विग्न, विक्षुब्ध—मार्गाचलव्यतिकरा कुलितेव सिन्धुः—कु० ५।८५, 2. फैला हुआ, 3. मलिन, धूमिल, धूमधूम्रैः—ऋ० ४, 4. अभिभूत, पीड़ित,—शोकैः, पिपासा° आदि।

आकूजित (वि०) [आ—कूज्+क्त] कुछ संकुचित—मदन गरुत्मदवलम्बितोत्तरितकायमाकूजितं—का० १६६, ८१।

आकूतम् [आ+कू—क्त] 1. अर्थ, इरादा, प्रयोजन—इतीङ्गिताकूतमनोऽभिनिन्ये—कि० १४।२६, 2. भावना, हृदय की स्थिति, संवेग, चेष्टामण्डल बन्धनं तरलयत्याकूतजो वेगयुः उत्तर० ५।३६, भावाकूत° अमरु ४ मा० २।१६, शाकुतम् भावनापूर्वक, साभिप्राय (प्राय. साइडा से रंगमंच के निर्देश के रूप में) 3. आश्चर्य या जिज्ञासा 4. चाह, इच्छा।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1. रूप, प्रतिमा, शक्ल सौदर्यमेत्यकृतिरित्यकारि कि० ३।४, 2. शरीर काया—किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—शि० १।२०, विकृताकृतिं—मनु० ११।५३ इस प्रकार जो° 3. दर्शन, सुन्दर रूप, भद्ररूप, न त्याकृतिः मुनइति विज्ञातेति वृत्तम्—मच्छ० ९।१६, यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति—सुभाषित० 4. नमूना, लक्षण 5. कबीला, जाति। सम०—**गणः** व्याकरण के किसी विशेष नियम से संबंध रखने वाले शब्दों की सूची—जो केवल नमूनों की सूची है (बहुधा गणपाठ में अंकित) यथा अदादिगण, स्वरादिगण, चादिगण आदि,—**छत्रा** घोषातकी नाम की लता।

आकृष्टिः (स्त्री०) [आ—कृष्+क्तिन्] 1. आकर्षण 2. खिंचाव, गुरुत्वाकर्षण (गणित ज्योतिष); —आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत्खस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या, आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् क्व पतत्वियं खे। गोलाध० १, 3. धनुष का खींचना या झुकाना, ज्या°—अमर० ।

आकेकर (वि०) [आके अन्तिके कीर्यते इति आ+कृ+अच् +टाप्—आकेकरा दृष्टिः सा अस्ति अस्य इति —आकेकरा+अच्] अधमुंदा, अर्धनिमीलित (आँखें) —निमीलिदाकेकरलोलचक्षुषा कि० ८।५३,मु० ३।२१, दृष्टिराकेकरा किंचित्स्फुटापांगे प्रसारिता, मौलितार्धपुटालोके तारान्यावर्तनोत्तरा।

आकोकेरः (ग्रीक शब्द) मकर राशि।

आक्रन्दः [आ+क्रन्द्+घञ्] 1. रोना, चिल्लाना 2. पुकारना, आह्वान करना, 3. शब्द, चिल्लाहट 4. मित्र, रक्षक 5. भाई 6. रोने का स्थान 7. वह राजा जो अपने मित्र राजा को दूसरे की सहायता करने से रोके वह राजा जिसकी राजधानी मिलती हुई किसी दूसरे राजधानी के पास है। °मनु० ७।२०७।

आक्रन्दनम् [आ+क्रन्द्+ल्युट्] 1. विलाप, रुदन 2. ऊँचे स्वर से पुकारना।

आक्रन्दिक (वि०) [आक्रन्दं धावनि इति आक्रन्द—ठक्] वह व्यक्ति जो किसी दुखिया के रोने को सुनकर दौड़ कर उसके पास आता है।

आक्रन्दित (भू० क० कृ०) आ+क्रन्द्+क्त] 1 दहाड़ने वाला, या फूट २ कर रोने वाला, 2. आहूत, बुलाया हुआ—°तम् चिल्लाना, दहाड़ना।

आक्रमः—**क्रमणम्** [आ—क्रम्+घञ्, ल्युट् वा] 1. निकट आना,—उपायमक 2. टूट पड़ना, आक्रमण करना, हमला 3. पकड़ना, ढकना, कब्जे में करना, 4. पार करना, प्राप्त करना 5. विस्तार करना, चक्कर लगाना, बढ़ चढ़ कर होना 6. शक्ति से अधिक बोझा लादना।

आक्रान्त (भू० क० कृ०) [आ+क्रम्+क्त] 1. पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, पराजित, पराभूत —आक्रान्तविद्यात्मभार्गम् रघु० १३।७७, तक पहुँचना, भरपूर, अधिकृत, ढका हुआ—अशुभ्रे तेन चाक्रान्ते मङ्गलायतनं महत्—रघु० १७।२९, बलिभिर्भुवमाक्रान्तुम् भर्तृ० ३।१४, इसी प्रकार मदन°, भय°, शोक° आदि, 2. लदा हुआ (मानों बोझ से) 3. बढ़ा हुआ, ग्रहण लगा हुआ, आगे बढ़ा हुआ—रघु०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०।३८, मालवि० ३।५, 4. प्राप्त किया हुआ, अधिकार में किया हुआ।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ + क्रम् + क्तिन्] 1. ऊपर रखना अधिकार में करना, पददलित करना—आक्रान्ति-संभावितपादीठम्—कु० २।१२ 2. पराक्रम करना, दबाना, लादना 3. आरोहण, आगे बढ़ जाना 4. शक्ति, शौर्य, बल।

आक्रामकः [आ + क्रम् + ण्वुल्] आक्रमणकर्ता, हमलावर।

आक्रीडः-डम् [आ + क्रीड् + घञ्] 1. खेल, क्रीडा, आमोद 2. प्रमदवन, क्रीडोद्यान आक्रीडपर्वतान्तेन कल्पिताः स्वेषु वेश्मसु—कु० २।४३, कमप्याक्रीडमासाद्य तत्र विश्रिश्रमुः—दश० १२।

आक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [आ + क्रुश् + क्त] 1. डांट-डपट किया हुआ, निन्दित, तिरस्कृत, कलंकित—शि० १२। २७, 2. ध्वनित, चीत्कारपूर्ण 3. अभिशप्त, ष्टम् 1. जोर की पुकार 2. घोर शब्द या रुदन, गालीगलौज-युक्त भाषण मार्गाश्रमविकिसपर्शः आक्रुष्टे कोकिलसंघैः—काव्या० ।

आक्रोशः-शनम् [आ + क्रुश् + घञ्, ल्युट् वा] 1. पुकारना या जोर से चिल्लाना, उच्चस्वर से रोना या शब्द 2 निन्दा, कलंक, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना—यात्रा० २।३०२ 3. अभिशाप, कोसना 4. शपथ लेना।

आक्लेदः [आ—क्लिद्—घञ्] आर्द्रता, गीलापन, छिड़काव।

आक्षद्यूतिक (वि०) (स्त्री० की) [अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम् इति—ठक्] जूए से प्रभावित या समाप्त किया हुआ।

आक्षपणम् [आ + क्षप् + ल्युट्] 1. उपवास रखना, उपवास या व्रत द्वारा आत्मशुद्धि, संयम।

आक्षपाटिकः [अक्षपट + ठक्] 1. द्यूतक्रीडा का निर्णायक, द्यूतगृह का अधीक्षक 2. न्यायाधीश।

आक्षपाद (वि०) (स्त्री० दी) [अक्षपाद + अण्] अक्षपाद या गौतम का शिष्य,—दः न्यायशास्त्र का अनुयायी, नैयायिक, तार्किक।

आक्षारः [आ + क्षर् + णिच् + घञ्] कलंक लगाना, (व्यभिचारादिकका) दोषारोपण करना।

आक्षारणम्-णा [आ + क्षार् + णिच् + ल्युट्] कलंक, दोषारोपण (विशेषतः व्यभिचार का)।

आक्षारित (भू० क० कृ०) [आ + क्षर् + णिच् + क्त] 1. कलंकित 2. दोषी, अपराधी।

आक्षिक (वि०) (स्त्री० की) [अक्षेण दीव्यति जयति जितं वा- अक्ष + ठक्] 1. पासों से जुआ खेलने वाला, 2. जुए से जीता हुआ 3. जुए से संबंध रखने वाला—आक्षिकं कृणम् मनु० ८। १५२. जुए में किया हुआ कर्जा,—कम् 1. जुए में जीता हुआ धन 2. जूए का ऋण।

आक्षिप्तिका [आ + क्षिप् का + टाप्, क, इत्वम्] रंगमंच पर आते हुए किसी पात्र के द्वारा गान विशेष—विक्रम० ४।

आक्षीब (वि०) [आ + क्षीब् + क्त निठ] 1. जिसने कुछ मद्यपान किया हुआ हो 2. मस्त, नशे में चूर।

आक्षेपः [आ—क्षिप्—घञ्] 1. दूर फेंकना, उछालना, खींचकर दूर करना, छीन लेना - अंशुकाक्षेपविलज्जिता-नाम्—कु० १।१४, पीछे हटना 2. भर्त्सना, झिड़कना, कलंक लगाना, अपशब्द कहना, अवज्ञापूर्ण निन्दा प्रियंवदतया—उत्तर० ५।२९, विरुद्धमाक्षेपवचांस्तितिक्षितम्- कि० १४।२५ 3. मन को उचाट, मन का खिन्नता विषयाक्षेपपर्यस्तबुद्धेः—भर्तृ० २।४७, २३, 4. प्रयुक्त करना, लगाना, भरना (जैसे कि रंग) —गोरोचनाक्षेपनिताननश्रीः कु० ७।१७, 5. संकेत करना, (किसी दूसरे शब्दार्थ को) भान लेना, समझ लेना—स्वसिद्धये पराक्षेपः—काव्य० २, 6. अनुमान 7. संशोधन करना, अशांति या संदेह 9. (ना० शा० में) एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तु को एक विशेष अर्थ जतलाने के लिए प्रकटतः दबा दिया जाय या निषिद्ध कर दिया जाय काव्य० १०, सा० द० ७।१४, और रसगंगाधर का आक्षेपप्रकरण।

आक्षेपकः [आ—क्षिप् + ण्वुल्] 1. फेंकनेवाला, 2 उचाट करने वाला, कलंक लगाने वाला, दोषारोपण करने वाला 3. शिकारी।

आक्षेपणम् [आ + क्षिप् + ल्युट्] फेंकना, उछालना।

आक्षोटः-डः [आ + अक्ष् + ओट् (ड्) + अण्] अखरोट की लकड़ी। दे० 'अक्षोट'।

आक्षोदनम् [आच्छोदनम्] आखेट, शिकार।

आखः, आखनः [आ + खन् + ड, घ वा] फावड़ा, खुर्पा।

आखण्डलः [आखण्डयति भेदयति पर्वतान् आ + खण्ड् + डलच्, ह्रस्य नेत्वम् + तारा०] इन्द्र—आखण्डलः काम-मिदं बभाषे, -कु० ३।११, तमीशः कामरूपाणामत्या-खण्डलविक्रमम् रघु० ४।८३, मेघ० ४५।

आखनिकः [आ + खन् + ठक्] 1. खोदने वाला, खनिक 2. चूहा या मूसा 3. सूअर 4. चोर 5. कुदाल।

आखरः [आ + खन् + अर] 1. फावड़ा 2. खोदने वाला, खनिक।

आखातः-तम् [आ + खन् + क्त] प्राकृतिक तालाब, या जलाशय, खाड़ी।

आखानः [आ—खन् + घञ्] 1. चारों ओर से खोदना 2. फावड़ा 3. कुदाल, बेलदार।

आखुः [आ + खन् + कु डिच्च] 1. मूषिक, चूहा, छछूंदर, - अत्तु वांछति शासनो गणपतेरस्यं क्षुधार्तः फणी पंच० १।१५९, 2. चोर, 3. सूअर 4. फावड़ा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

5. कंजूस- विभवे सति नैवात्ति न ददाति जुहोति न; तेमाहुरार्यम् । सम० - उत्करः वल्मीक, वर्मा,—उत्थ (वि०) चूहों से उत्पन्न (-स्थम्) चूहों का निकलना, चूहों का समूह; - गः, -पत्रः, -रथः, वाहनः गणेश जिसका वाहन चूहा है,—घातः शूद्र, नीचजाति का पुरुष. (आ०) चूहों को पकड़ने और मारने वाला, चूहड़ा,—पाषाणः चुम्बक पत्थर,—भुज्, -भुजः बिल्ला. ।

आखेटः [आखिट्यन्ते आस्यन्ते प्राणिनोऽत्र - आ + खिट् + घञ्, तारा०] शिकार करना, पीछा करना । सम० -शौण्डकम् 1. शिकार खेलने में 2 खान, गुफा ।

आखेटक (वि०) [आखेट -कन्] शिकार करने वाला -कः शिकारी, - कम् शिकार ।

आखेटिकः [आखेटे कुशलः ठक्] 1. शिकारी 2. शिकारी कुत्ता ।

आखोटः [आखः खनित्रमिव उत्तनि पर्णानि अस्य - ब० स०] अखरोट का वृक्ष ।

आख्या [आख्यायतेऽनया आख्या+अङ] 1. नाम, अभिधान कि वा शकुन्तलेत्यस्य मानुराख्या शo ७।७, ३३, पञ्चाद्रिमाख्या सुमतौ जगाम - कु० ६।२६, तदाख्यया भवि पश्यै रघु० १५।१०१; बहुधा समास के अन्त में जब प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'नामक' या 'नाम वाला' अथ किमाख्यस्य राजर्षेः सा धर्मपत्नी शo ७ रत्नवत्याख्य काव्यम् आदि ।

आख्यात (भू० क० कृ०) [आ-ख्या-क्त] 1. कहा हुआ, बताया हुआ, घोषणा किया हुआ 2. गिना हुआ, पाठ किया हुआ, उच्चारित हुआ 4. नामपद या क्रियापद, तम् क्रिया, भावप्रधानमाख्यातम्- सि०, धात्वर्थेन विशिष्टस्य विधेयत्वेन बोधने, समर्थ. स्वार्थ-प्रत्ययः शब्दो वाख्यातमुच्यते ॥

आख्यातिः (स्त्री०) [आ-ख्या + क्तिन्] 1. कहना, समाचार, प्रकाशन 2. यश 3. नाम ।

आख्यानम् [आ + ख्या + ल्युट्] 1. बोलना, घोषणा करना, जतलाना, समाचार 2. किसी पुरानी कहानी की ओर निर्देश करना - आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः सा० द० (उदा० - देशः सोऽयमगस्तिशैलतिलकज्यैर्यस्मिन् हृता पुरिताः - वेणी० ३।३१) 3. कथा, कहानी विशेषरूप से काल्पनिक या पौराणिक, उपाख्यान -अप्सरा पुरूरवसं चकम इत्याख्यानविद आचक्षते —सा० २, मनु० ३।२२३, 4. उत्तर -प्रश्नाख्यानयोः पा० ८।२।१०५, 5. भेदक धर्म ।

आख्यानकम् [आख्यान + कन्] कथा, छोटी पौराणिक कहानी, कथानकः - -आख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन का० ७ ।

आख्यायक (वि०) [आ + ख्या + ण्वुल्] कहने वाला, सूचना देने वाला,— कः 1. दूत, हरकारा - आख्यायकेभ्यः श्रुतसूनृवृत्तिः - भट्टि० २।४४, 2. अग्रदूत, संदेशवाहक ।

आख्यायिका [आख्यायक + टाप् इत्वम्] सद्य रचना का नमूना, सुसंगत कहानी,—आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशादिकीर्तनम्, अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं गद्यं क्वचित् पद्यं क्वचित्, कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते । आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसां येन केनचित् । अन्यापदेशनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम् - सा० द० ५६८, (साहित्य शास्त्र के लेखक 'गद्यरचना' को प्रायः दो (कथा और आख्यायिका) भागों में बांटते हैं, वह बाण के हर्षचरित को 'आख्यायिका' तथा कादम्बरी को 'कथा' के नाम से पुकारते हैं । दण्डी इस प्रकार के भेद को स्वीकार नहीं करता —काव्या० १।२८ - तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयांकिता ॥

आख्यायिन् (वि०) [आ-ख्या-णिनि] जो व्यक्त कहता है, सूचना या समाचार देता है - रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुकर्णान्तिकचरः - श० १।२४ ।

आख्येय (स० कृ०) [आ + ख्या + यत्] कहने या समाचार देने के योग्य, शब्द शब्दों में कहने के योग्य, मौलिक रहस्य मेघ० १०३ ।

आगतिः (स्त्री०) [आ+गम्-क्तिन्] 1. पहुंचना, आगमन -लोकस्यास्य गतागतिम्—रामा०, इति निश्चित प्रियतमागतयः शि० ९, ४३ 2. अधिग्रहण 3. वापसी 4. उद्गम ।

आगन्तु (वि०) [आ-गम् + तुन्] 1. आने वाला, पहुंचनेवाला, 2. भटका हुआ, 3. बाहर से आने वाला, बाह्य (कारण आदि) 4. नैमित्तिक, आनुषंगिक, आकस्मिक, तुः नवागंतुक, अजनबी, अतिथि । सम० —ज (वि०) आनुषंगिक रूप से या अकस्मात् उत्पन्न होने वाला ।

आगन्तुक (वि०) (स्त्री०- का, की) 1. अपनी इच्छा से आने वाला, बिना बुलाये आने वाला - आगन्तुका वयम्—दूर्त० 2. भूला-भटका (जैसे कि जानवर) -याज्ञ० २। १६३ 3. आनुषंगिक आकस्मिक, नैमित्तिक इत्यागन्तुका विकाराः - आत्म० 4. प्रक्षिप्त, क्षेपक (पाठ) - अत्र गन्धवद्गन्धमादनमित्यागन्तुकः पाठः मल्लि० कु० ६। ४६ पर,— कः 1. अन्तःक्षेपक, हस्तक्षेपक 2. अजनबी, अतिथि, नवागंतुक ।

आगमः [आ+ गम् - घञ्] 1 आना, पहुंचना, दर्शन देना-- लतायां पूर्वलतायां प्रसूनस्यागमः कुतः—उत्तर० ५।२०, अव्यक्तादू व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे, रात्र्यागमे प्रलीयन्ते—भग० ८। १८, रघु० १४। ८०, पंच० ३। ४८, 2. अधिग्रहण- एषोऽस्या मुद्राया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगमः -मुद्रा० १, प० ६, विद्यागमनिमित्तम् -विक्रम० ५, 3. जन्म, मूल, उत्पत्ति -आगमापायिनोऽनित्यास्तास्तिसिक्तस्य भारत भग० २।१४, 4. संकलन, संचय (धनका) अर्थ, धन आदि 5. प्रवाह, जलमार्ग, धारा (पानी की) रक्त,° फेरी 6. बीजक या प्रमाणक- दे० अनागम 7. ज्ञान - शिष्यप्रदेयागमा. भर्तृ० २।१५ प्रज्ञया तदुपागमः, आगमः सदृशारम्भः रघु० १।१५ 8. आय, राजस्व 9. किसी वस्तु का बोध अभिग्रहण- आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो -याज्ञ० २। २७ 10. संपत्ति की वृद्धि, 11. परंपरागत सिद्धांत या उपदेश, धार्मिक लेख, धर्मग्रन्थ, शास्त्र—अनुमानेन न चागमः क्षतः कि० २। २८, परिशुद्ध आगमः--३३. 12. शास्त्राध्ययन, वेदाध्ययन 13. विज्ञान, दर्शन, -बहुयाज्यागमौभिस्तः पश्चात् सिद्धिहेतवः--रघु० १०। २९, 14. वेद, धर्मग्रन्थ न्यायनिर्णीतसारवाक्तिरपेक्षमिवागमे- कि० ११। ३९ 15. चार प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम जिसे नैयायिक 'शब्द' या 'आप्तवाक्य' कहते हैं (वेद ही ऐसे प्रमाण समझे जाते हैं) 16. उपसर्ग या प्रत्यय 17. (शब्द साधन में) वर्ण की वृद्धि का अन्तःक्षेप 18. वृद्धि - इहागमः 19. सिद्धान्त का ज्ञान (विप० प्रयोग)। सम०—ज्ञ (वि०) अभीज्ञ, पंडित, परीक्षित, वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ बहुत विद्वान् पुरुष प्रतीप इत्यागमवृद्धशंसी रघु० ६।४१, वेदिन् (वि०) 1. वेदों को जानने वाला 2. शास्त्रविज्ञाता सापेक्ष (वि०) प्रमाणकतापेक्षी, प्रमाणक से संबंधित।

आगमनम् [आ+गम+ल्युट्] 1. आना, उपागमन, पहुँचना -रघु० १२। २४, 2. लौटना 3. अधिग्रहण 4. मैथुनेच्छा के लिए किसी स्त्री के पास पहुँचना।

आगमिन्, आगामिन् (वि०) [आगम्+णिनि, वा ह्रस्वः] 1. आने वाला, आती 2. आसन्न, पहुंचने वाला।

आगस् (नपुं०) [इ-अगुन्, आगादेशः] 1. दोष, अपराध, उच्छृंखल व्यवहार, शास्त्रविरुद्ध आचरण इति यदवधा -शि० २। १०८ ही रिपू मम मनो नेमागसौ -रघु० ११। ७४, कृतागाः -मुद्रा० ३। ११ 2. पाप। सम० कृत् (वि०) अपराध करने वाला, अपराधी, बुरे कर्म करने वाला-अकर्णमामकृतागस्यभूद्विधिः -रघु० ८-३२।

आगस्ती [अगस्तस्य इयम्, अण्—ङीष्] दक्षिण दिशा।

आगस्त्य (वि०) [अगस्त्यस्येदम्, यञ्—ञ्लोपः] दक्षिणी।

आगाध (वि०) [अगाध एव स्वार्थे अण्] बहुत गहरा, अथाह (आलं० भी)।

आगामिक (वि०) (स्त्री०—की) [आगाम+ठक्] 1. भविष्यकाल से सम्बन्ध रखने वाला -मतिरागामिका ज्ञेया बुद्धिस्तत्कालदर्शिनी -हैम० 2. आसन्न, आने वाला।

आगामुक (वि०) [आ+गम्+उकञ्] 1. आने वाला, 2. पहुँचने वाला 3. भावी।

आगारम् [आगम्यतेऽत्र—ऋ+अण्] घर, आवास। सम०—दाहः घर को आग लगा देना, दाहिन् (वि०) घर फूंक व्यक्ति, गृहदाहक (वन आदि), -धूमः किसी घर से निकलने वाला धुआं।

आगुर् (स्त्री०) [आ+गुर्+क्विप्] स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा।

आगू (गू) रणम् [आ+गुर्+ल्युट्] गुप्त सुझाव।

आगूः (स्त्री०) सहमति, प्रतिज्ञा।

आग्निक (वि०) (स्त्री०—की) [अग्नेरिदं वा०- ठक्] अग्नि से संबंध रखने वाला, यज्ञाग्नि से सम्बद्ध।

आग्नीध्रम् [अग्निमिन्धे अग्नीत्, तत्र शरणम्, एष् अल्लोपश्च] --तलम्, यज्ञाग्नि जलाने का स्थान, हवनकुंड, --ध्रः यज्ञाग्नि जलाने वाला पुरोहित।

आग्नेय (वि०) (स्त्री०—यी) 1. आग से संबंध रखने वाला, प्रचंड 2. अग्नि को अर्पित,-यः 1 स्कंद या कार्तिकेय की उपाधि 2. दक्षिण-पूर्वी (आग्नेय कोण) दिशा,—यम् 1. कृत्तिका नक्षत्र 2. सोना 3. रुधिर 4. घी 5 आग्नेयास्त्र।

आग्नेयोजनिकः [अग्नेयोजनं नियतं दैवतं अस्मै -ठक्] भोज में गर्वप्रथम या सर्वप्रथम आसन ग्रहण करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आग्रयणः [अग्रे अयनं शस्यदेर्देयेन कर्मणा पृषो० ह्रस्वः दीर्घः अत्ययः] अग्निष्टोम याग में सोम की प्रथम आहुति, —णम् वर्षा ऋतु के अन्त में नये अन्न तथा फलादिक से युक्त इष्टि।

आग्रहः [आ+ग्रह्+अच्] 1 पकड़ना, ग्रहण करना 2. आक्रमण 3. दृढ़ संकल्प, दृढ़भक्ति, दृढ़ता चलेऽपि कालस्य पदादागाग्रहः सं० कु० ५।७ पर मल्लि०, 4. कृपा, संरक्षण।

आग्रहायणः [अग्रहायण+अण्] मार्गशीर्ष का महीना, --णी 1. मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा 2. मृगशिरस् नाम का नक्षत्र-पुंज।

आग्रहायणी (णि) कः [आग्रहायणी पौर्णमास्यस्मिन् मासे --ठक्] मार्गशीर्ष का महीना।

आग्रहारिक (वि०) (स्त्री०—की) अग्रहार (ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि) प्राप्त करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आघट्टना [आ—घट्ट+णिच्+ल्युट्+टाप्] 1. हिलाना-डुलाना, कंपना, किसी के रुदन्ना -णाद्विरागघट्टनया मनस्वन- शि० १।२० 2. घर्षण, रगड़।

आघर्षः,-र्षणम् [आ+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] मालिश

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, रगड़, किसी से रगड़ना-गंडस्थलाघर्षणलग्न-दोर्दण्डवल्मीकगत निलयनिर्गच्छत्य: हि० १७।२४।

आघातः [आ + हन् + घञ्] हत्या, मौत।

आघातः [आ + हन्-घञ्] 1. प्रहार करना, मारना, 2. चोट, प्रहार, घाव,—नीराघातप्रतिहतलतास्कन्धलग्नैः कदल्यः श० १।३३, अभ्यस्यन्ति लताघातम्—कु० २।५०, 3. दुर्घटनामनी, विपत्ति 4. कसाई-खाना -आघात नेपथ्यमानय्य हि० ४।६३।

आघारः [आ + घृ + घञ्] 1. छिड़कना 2. विशेषकर यज्ञ की अग्नि में घी डालना 3. घी।

आघूर्णनम् [आ-घूर्ण + ल्युट्] 1. लौटना 2. उछालना, घुमना, चक्कर खाना, घूमना।

आघोषः [आ + घुष् + घञ्] बुलावा, आवाहन।

आघोषणम्-णा [आ + घुष् + ल्युट्, स्त्रियां टाप्] उद्घोषणा, ढिंढोरा, एवमाघोषणाद्वारा कृतान्तादेष पच्यते ५।

आङ्गणम् [आ + अङ्ग + ल्युट्] 1. संघना 2. संतोष, तृप्ति।

आङ्गारम् [अङ्गारेण संस्कृतः- अण्] अंगारों का समूह।

आङ्गिक (वि०) (स्त्री० की) 1. शारीरिक, कायिक 2. हाव-भाव से युक्त, शारीरिक चेष्टाओं से व्यक्त —आङ्गिकाभिनयः, दे० 'अभिनय'—कः चालचलन या शीलविधा।

आङ्गिरसः [अङ्गिरस् + अण्] बृहस्पति, अङ्गिरा की संतान (पुत्र)।

आचक्षुस् (पुं०) [आ—चक्ष् + उसि वा०] विद्वान् पुरुष।

आचमः [आ + चम + घञ्] कुल्ला करना, आचमन करना (हथेली पर जल लेकर पीना)।

आचमनम् [आ + चम् + ल्युट्] कुल्ला करना, धार्मिक अनुष्ठानों से पूर्व तथा भोजन के पूर्व और पश्चात् हथेली में जल लेकर घूंट-घूंट करके पीना दत्ताद्याचमनं ततः याज्ञ० १।२४५।

आचमनकम् [स्वार्थे आशारे वा कन्] पीकदान।

आचयः [आ—चि + अच्] 1. इकट्ठा करना, बीनना 2. समूह।

आचरणम् [आ + चर् + ल्युट्] 1. अभ्यास करना, अनुकरण करना, अनुष्ठान-धर्मं, मंगल° आदि 2. चाल-चलन, व्यवहार,—अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः —मेघ० १।४, उदाहरण (विष० उपदेश) 3. प्रथा, परिपाटी 4. संस्था।

आचान्त (वि) [आ + चम—क्त] 1. जिसने कुल्ला करके मुंह शुद्ध कर लिया है, या जिसने आचमन कर लिया है 2. आचमन के योग्य।

आचामः [आ—चम्-घञ्] 1. आचमन करना, कुल्ला करके मुंह साफ करना 2. पानी या गर्म पानी के साथ।

आचारः [आ—चर् + घञ्] 1. आचरण, व्यवहार, काम करने की रीति, चालचलन 2. प्रथा, रिवाज, प्रचलन यस्मिन्देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः मनु० २।१८, 2. लोकाचार, प्रथा संबंधी कानून (विप० व्यवहार) समाज में प्रथम पद के रूप में और प्रयुक्त हो तो अर्थ होता है : 'प्रथासंबंधी', 'पूर्वसत् व्यवहार या प्रचलन के अनुसार' दे० धूम, लेख 4. रूप, उपचार, आचार हत्यर्हितेन मया गृहीता—श० ५।३, महावी० ३।२९, रिवाजों या रूढ़ उपचार आचार प्रतिषेधस्य का० ४। समः दोषः आत्मा उठाने का दोष,—धर्मपरुषम् संत के द्वारा धर्मों ग्रहण करने का संस्कार—विशेष जो कि यज्ञानुष्ठान के समय किया जाता है;—रघु० ७।३७, कु० ७।८२, —पूत (वि०) सुशीलधारी—रघु० २।१२,—भेदः आचरण संबंधी नियमों का अन्तर,—भ्रष्ट, पतित (वि०) चरित्र भ्रष्ट, जिसका आचार -व्यवहार बिगड़ गया हो, या जो आचरण से पतित हो गया हो,—लाजः (पुं० ब० व०) धान की खीलें जो कि सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किसी राजा या प्रतिष्ठित महानुभाव पर फेंकी जाती हैं रघु० २।१०, —वेदी पुण्यभूमि आर्यावर्त।

आचारिक (वि०) [आचार + ठक्] प्रचलन या नियम के अनुरूप, आचरित।

आचार्यः [आ—चर्—ण्यत्] 1. सामान्यतः अध्यापक या गुरु 2. आध्यात्मिक गुरु (जो उपनयन कराता है तथा वेद की शिक्षा देता है) -उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः, सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते। -मनु० २।१४०, दे० 'अध्यापक' शब्द भी 3. विशिष्ट सिद्धान्त का प्रस्तोता 4. जिस व्यक्ति को धार्मिक संस्कारों से पूर्व लगाता है) विद्वान्, पंडित (अंग्रेजी के 'डाक्टर' शब्द का कुछ समानार्थक), र्या गुरु (स्त्री), आध्यात्मिक गुरुआनी। समः - उशनस् धार्मिक गुरु की सेवा करना, - मिश्र (वि०) प्रतिष्ठित, सम्मानार्ह।

आचार्यकम् [आ + चर्+ण्वुल्] 1. शिक्षण, अध्यापन, (पाठशाला का) पढ़ाना लङ्घिताश्चाणा पुनर्वचके विद्यापात्रार्यकं प्रति -रघु० १२।३८, -आचार्यकं विदुषि मान्यधामविरामोत् -मा० १।२९, 2. आध्यात्मिक गुरु की कुशलता।

आचार्यानी [आचार्य + ङीप्—आनुक्] आचार्य या धर्म गुरु की पत्नी, शंभुमलंचक्रुराचार्य न पुनर्देवमुन्नहे, सर्वथा देवमाचार्यमाचार्यानी च पार्वतीम् महावी० ३।९।

आचित (भू० क० कृ०) [आ + चि—क्त] 1. पूर्ण, भरा हुआ, ढका हुआ -कचाचितो विश्वगवाग्जी गजी —कि० १।१६, आचितनक्षत्रा द्यौः—भाषि 2. बँधा हुआ, गुथा हुआ, बुना हुआ—अधोचिता स्तरकमुच्चितायाः रघु० ७।१० कु० ७।६१, 3. एकत्रित, संचित, ढेर किया हुआ, तः 1 गाड़ी भर बोझ 2. (नपुं०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी) दस भार या गाड़ी भर की तोल (८०,००० तोला)।

आचूषणम् [आ + चूष् + ल्युट्] 1. चूसना, चस लेना 2. वृक्ष कर बाहर निकाल देना, (आयु० में) सिरा लगाना।

आच्छादः [आ + छद् + घञ्] कपड़ा, पहनने का वस्त्र।

आच्छादनम् [आ + छद् + णिच् + ल्युट्] 1. ढकना, छिपाना 2. ढक्कन, म्यान 3. कपड़ा, वस्त्र भूषणाच्छादनाशनैः —भाग० १।८२, 4. छाजन।

आच्छुरित (वि०) [आ + छुर् + क्त] 1. मिश्रित, मिलाया हुआ 2. सूचा हुआ, खुजलाया हुआ, तम् 1. लकड़ी को आपस में एक दूसरे से रगड़ कर एक प्रकार का शब्द पैदा करना, नखवाद्य 2. ठट्ठाका मार कर हँसना, अट्टहास।

आच्छुरितकम् [आच्छुरित + कन्] 1. नाखून की खरोंच 2. अट्टहास।

आच्छेदः—**दनम्** [आ + छिद् + घञ् + ल्युट् वा] 1. काट देना, अपच्छेदन 2. जरा सा काटना।

आच्छोटनम् [आ + स्फुट् + ल्युट् पृषो०] अँगुलियाँ चटकाना।

आच्छोदनम् [आ + छिद् + ल्युट् पृषो० दस ओत्] शिकार करना, पैंचा करना।

आजनम् [अजानां समूहः अज + वुञ्] भेड़ों का झुंड।

आजगवम् [अजगव + अण्] शिव का धनुष।

आजननम् [आ + जन् + ल्युट्] ऊँचे कुल में जन्म होना प्रसिद्ध या विख्यात कुल।

आजानः [आ + जन् + घञ्] जन्म, कुल,—**नम्** जन्मस्थान।

आजानेय (वि०) (स्त्री० - यी) 1. अच्छे विशेषतः आनेय अश्ववाही यथाऽऽजानेयमश्व ब० स०] 1. अच्छी नस्ल का (जैसे घोड़ा) 2. निर्भय, निश्शंक,—यः अच्छी नस्ल का घोड़ा क्षतिक्षिभिन्नहृदयाः स्खलन्त्योऽपि पदे पदे, आजानन्ति यत्र सभामाजानेयास्तत्तः स्मृताः - शब्दक०।

आजिः [अज्यतेऽस्याम्, अज् + इण्] 1. युद्ध, लड़ाई, संघर्ष ते तु यावत्त एवाजौ तावान स दृदर्श हैः—रघु० १२।४५, 2. कुश्ती या दौड़ की प्रतियोगिता 3. रणक्षेत्र -शस्त्राण्याजौ नयनसलिलं वापि तुल्यं मुमोच —विक्रम० ३।१९।

आजीवः—**वनम्** [आ + जीव् + घञ्, ल्युट् वा] 1. जीविका, जीवननिर्वाह का साधन, भरण -भवेत्याजीवनं तस्मात् पंच० १।४८,तु० रूपाजीव, अजाजीव, शस्त्राजीव आदि शब्दों की 2. पेशा, वृत्ति,—वः जैन-भिक्षुक।

आजीविका [आ + जीव् + अ + कन् + टाप्, अत इत्वम्] पेशा, जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति।

आजुर - **आजु** (स्त्री०) [आ + जुर् + क्विप्, आ + जू + क्विप् च] 1. बेगार, बिना पारिश्रमिक प्राप्त किये काम करना 2. बेगार में काम करने वाला 3. नरक वास।

आज्ञप्तिः (स्त्री०) [आ + ज्ञा + णिच् + क्तिन्, पुकागमः, ह्रस्वश्च] आदेश, हुकुम, आज्ञा।

आज्ञा [आ + ज्ञा + अङ + टाप्] 1. आदेश, हुकुम तथेति शेषामिव भर्तुराज्ञाम् कु० ३।२७ 2. अनुज्ञा, अनुमति। सम० **अनुग**,—**अनुगामिन्**,—**अनुवर्तिन्**,—**अनुसारिन्**,—**संपादक**, **वह** [वि०] आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती, **कर**, **कारिन्** (वि०) आज्ञा मानने वाला, आदेश का पालन करने वाला, आज्ञाकारी, (रः) सेवक, **करणम्**, **पालनम्** आज्ञा मानना, आदेश का पालन करना, —**पत्रम्** हुकुमनामा, लिखित आदेश, **प्रतिघातः**, —**भंगः** आज्ञा न मानना, आज्ञा के विरुद्ध कार्य करना, नाज्ञाभङ्गे महत्त्वं तूचर नृपतेयस्त्वद्वाक्यः सार्वभौमः —सुभा० ३।१२।

आज्ञापनम् [आ + ज्ञा + णिच् + ल्युट् पुकागमः] 1 आदेश देना, हुक्म देना 2. जतलाना।

आज्यम् [आज्यते - आ + अञ्ज् + क्यप्] 1. पिघलाया हुआ घी, सर्व्योह्यहमेवाज्यम् भ० ९ 'यह बहुधा घृत से भिन्न समझा जाता है -सर्पिर्विशेषनाम्न्यस्मादृचोभूत घृत भवेत्]। सम० **पात्रम्** स्थाली घिसे हुए घी को रखने का बर्तन, **भुज्** (पुं०) 1. अग्नि का विशेषण 2. देवता।

आञ्चनम् [आ + अञ्च् + ल्युट्] मींग, तीर या किसी ऐसे ही और शस्त्र को खींच कर शरीर से बाहर निकालना।

आञ्छ (स्वा० पर०) [आञ्छति, आञ्छित] 1. लंबा करना, विस्तार करना, 2 विनियमित करना, (हड्डी या टांग आदि को) ठीक बैठाना।

आञ्छनम् [आञ्छ् + ल्युट्] (हड्डी या टांग का) ठीक बैठाना।

आञ्जनम् [अञ्जनस्येदम् - अण्] 1. मरहम, विशेषतः आँखों के लिए 2. चर्बी,—**नः** मांसाहारी या हनुमान्, दामरधिबलैरिवाञ्जननीलनलपरियतप्रभैः—का० ५८।

आञ्जनी [अञ्जनस्येदम् अण्, स्त्रियां ङीप्] आँखों में डालने का मरहम या अंजन। सम०—**कारी** लेप या उबटन आदि तैयार करने वाली स्त्री।

आञ्जनेयः [अंजना + ढक्] हनुमान्।

आटविकः [अटव्यां चरति भवो वा—ठक्] 1. धनुर्धारी जंगल में रहने वाला पुरुष 2. भागदुष्ट, अगुआ।

आटिः [आ + अट् + इण्] 1. एक प्रकार का पक्षी (सारिका)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आटीकनम् [आटीक्+ल्युट्] बउई को उखल-कूद ।

आटीकरः [आटी + कृ + अप्] साँड ।

आटोपः [आ + तुप् + घञ् , पृषो० टस्वम्] 1. घमंड, स्वाभिमान, हेकड़ी, **साटोपम्**—घमंड के साथ, राजकीय या शाही ढंग से (रंगमंच के निर्देश के रूप में प्रायः प्रयुक्त) 2. भूजन, फैलाव, विस्तार, फूलाना —ओ०—छाटोपो भवद्भुः—शि० २।७४ ।

आडम्बरः [आ + डम्ब् + अरन्] 1. घमंड, हेकड़ी 2. दिखावा, सपरिा, बाहरी ठाट-बाट—विरचितवारणैरहरुपाडम्बरम्—का० ५, निर्मुक्तः शोभते नैव विद्युल्लाडम्बरो यथा वा—भामि० २।१२५, 3. आक्रमण के संकेत-स्वरूप विगुल का बजना 4. आरंभ 5. प्रचण्डता, रौब, आवेश 6. हर्ष, प्रसन्नता 7. बादलों की गरज, हाथियों की चिंघाड़ 8. युद्धभेरी 9. युद्ध का कोलाहल या शोर-गुल ।

आडम्बरिन् (वि०) [आडम्बर + इनि] हेकड़, घमंडी ।

आढकः · कम् [आ + ढौक् + घञ् , पृषो०] अनाज की माप, चौथाई द्रोण · अष्टमुष्टिभवेत्कुंचिः कुचयोऽष्टौ तु पुष्कलम्, पुष्कलानि च चत्वारि आढकः परिकीर्तितः ।

आढ्यः (वि०) [आ + ऋध् + क, पृषो०—तारा०] 1. धनी, धनवान्- आढ्यो भिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया—भग० १६।१५, पद्म ५।८, 2. (क) संपन्न, समृद्ध, सम्पन्नतायुक्त, (कर्म० या समास के अंतिम पद के रूप में) सत्यं पद्म ३।९, बिल्कुल सच्चा —वसासवलावण्यद्रुधाम्नः · रघु० १८ (ख) मिश्रित, सिञ्चित, गन्धाढ्यः, स्रज उत्तमगन्धाढ्याः—महा० 3. प्रचुर, पर्याप्त । सम० · वर (वि०) [स्त्री० री] जो कभी पेटभरैयाशाली रहा हो ।

आढ्यंकरण (वि०) [स्त्री० —णी] समृद्ध करना,— पण्य समृद्ध करने का साधन, धन ।

आढ्यंभविष्णु,— भावुक (वि०) [आढ्यं भू + इष्णुच्, उकञ् वा] धन संपन्न या प्रतिष्ठित होने वाला ।

आणक (वि०) [अणक+अण्] नीच, ओछा, अधम— कर्म विशेष आसन में होकर मैथुन करना, रतिबंध—आणकं सुरतं नाम दम्पत्योः पार्श्वसंस्थयोः ।

आणव (वि०) (स्त्री०—वी) [अणु—अण्] अत्यन्त छोटा, —वम् अत्यंत छोटापन या सूक्ष्मता ।

आणिः (पुं० स्त्री०) [अण्+इन्] 1. गाड़ी के घुरे की कील, अक्षकील 2. घुटने के ऊपर का भाग 3. हद, सीमा 4. तलवार की धार ।

आण्ड (वि०) [अण्डे भवः अण्] अंडे से पैदा होने वाला (जैसे कि पक्षी),— डः हिरण्यगर्भ या ब्रह्मा की उपाधि · डम् 1. अंडों का ढेर, पक्षी-पक्षियों का समूह, पक्षिशावक 2. अंडकोष, फोता ।

आण्डीर (वि०) [आण्डोऽस्ति अस्य ईरच्] 1. बहुत अंडे रखने वाला, 2. वक्रक, गूणवत्यक (जैसे कि साड़) ।

आतङ्कः [आ + तङ्क + घञ्, कुत्वम्] 1. रोग, शरीर की बीमारी— दीर्घतीव्राभयग्रस्ते ब्राह्मणे साध्वपि वा, दृष्ट्वा पथि निरातङ्कं कुर्वा वा ब्रह्मदर्शनम्—याज्ञ० ३।२४५, 2. पीड़ा, आधि, व्यथा, वेदना- क्षितिर्नितोऽयमातङ्कः शि० २. आतङ्कदुरितकठोरगर्भ-गुर्वी —उत्तर० १।४९, विक्रम० ३।३, डर, आशंका पुरुषायुषजीवित्वं हि मनुष्याणां चलाचलं विज्ञेयम्—रघु० १।९२, भीति, त्रास 4 ढोल या तबले की आवाज ।

आतञ्चनम् [आ + तञ्च् + ल्युट्] 1. जमाना, गाढ़ा करना, 2. जमा हुआ दूध 3. एक प्रकार की छाछ 4. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 5. भय, संकट 6. गति, वेग ।

आतत (वि०) [आ + तन् + क्त] 1. फैलाया हुआ, विस्तारित 2. ताना हुआ (जैसे कि धनुष की डोरी) ।

आततायिन् [वि० पा०—गाला] [अततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलमस्य ताराट०] 1. किसी का वध करने के लिए प्रयत्नशील, सामने मुख या ब्राह्मवृद्धी या ब्राह्मण वा बहुधन, आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । मनु० ८।३५०-१, भग० १।३६, 2. जघन्य पाप करने वाला जैसे कि चोर, अपहरणकर्ता, हत्यारा, आग लगाने वाला महापातकी आदि—अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो धनापहः क्षेत्रदारहरश्चैवान् षड् विद्यादात्तायिनः—याज्ञ० ।

आतपः [आ · तप्+घञ्] 1. गर्मी (सूर्य, अग्नि आदिकी) धूप, आतपायोज्झित धान्य —भग०, धूप में डाला हुआ; प्रचंड—ऋतु० १।११ 2. प्रकाश । सम०—अत्ययः सूर्य की गर्मी (धूप) का गुजरना, या बीत जाना, सूर्यास्त —आतपात्ययसंक्षिप्तशीतवासः—रघु० १।९२ ·अभावः छाया, उदकम् मरीचिका, भ्रम,—अकम् छाता —तमातपत्रलाभेनमनायत्र—रघु० २।१३, ४७, पद्म ४।५ राज्यं स्वहरणधृतदण्डसिवातपत्रम् शि० ५।६, · लङ्घनम् गर्मी या धूप में रहना, लू लग जाना —आतपलङ्घनाढ्यलवदस्वस्थशरीरा शकुन्तला— शि० ३, वारणम् छाता छतरी नृपतिकुटुं दत्त्वा चूने सितातपवारणम्—रघु० ३।७०, ९।१५, · शुष्क (वि०) धूप में सुखाया हुआ ।

आतपनः [आ + तप् + णिच् + ल्युट्] शिव ।

आत (ता) रः [आतरति अनेन आ + तृ + अप्, घञ् वा] दरिया की उतराई, मार्गव्यय, भाड़ा ।

आतर्पणम् [आ + तृप् · ल्युट्] 1. सन्तोष 2. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, 3. दीवार या कर्ण पर सकेती करना (उत्सव आदि के अवसर पर) ।

आतापि (पि) न् [आ + तप् (ताप्) + णिनि] एक पक्षी, चील ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आतिथेय (वि०) [स्त्री० —यी] [अतिथिषु साधुः—ढक्] अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथियों के उपयुक्त - प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेयः रघु० ५।२, १२।२५, तमातिथेयी बहुमानपूर्वया —कु० ५।३१, 2. अतिथि के उचित या उपयुक्त - आतिथेयः सत्कारः श० १, —यम् अतिथि-सत्कार - आतिथेयमनिवारितातिथिः शि० १४।३८, सज्जातिथेया वयं—मा० २।५०,—यी सत्कार, मेहमान नवाजी - भामि० १।८५।

आतिथ्य (वि०) [अतिथि + ष्यञ्] सत्कारशील, अतिथि के लिए उपयुक्त —थ्यः अतिथि, —थ्यम् सत्कारपूर्वक स्वागत, अतिथि-सत्कार - तदातिथ्यक्रियाशक्तेरथ-स्त्रीभवन्निश्चयम् रघु० ११।८८।

आतिदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [अतिदेश - ठक्] (व्या० में) अतिदेश से सम्बद्ध—तु०।

आतिरे (रे) क्यम् [अतिरिक्त + ष्यञ्, पदे उभयपद वृद्धिः] फालतूपन, अधिकता, बहुतायत।

आतिशय्यम् [अतिशय—ष्यञ्] अधिकता, कृतापत, कृतः परिमाण।

आतुः [अत्—उण्] लट्ठों का बना बेड़ा, बन्नई (घड़ों को बांध कर बनाई गई नौका)।

आतुर (वि०) [ईषदर्थे आ—अत्—उरच्] 1. चोटिल, घायल 2. (रोग से) ग्रस्त, प्रभावित, पीड़ित—रावणाचरजा तस्य सर्वथैव भवेदातुरा —रघु० १२।३२; कार्य, भय आदि 3. क्षुब्ध (मन या शरीर से), आकांक्षाशास्तु विक्षिप्ता बालबद्धकुशातुराः; मनु० ४।१८३. 4. उत्सुक, उतावला 5. दुर्बल, कमजोर: रः रोगी। सम०- शाला हस्पताल।

आतोद्यम्, तकम् [आ + तुद्—घञ्, स्वार्थे कन् ब] एक प्रकार का वाद्ययंत्र - आतोद्यनिस्वनासक्तिर्मृगाणां विषयः - वेणी० १ लज्जमालोक्यशिरोनिवेशितम् —रघु० ८।३४, १५।८८. उत्तर० ७।

आत्त (भू० क० कृ०) [आ-दा+क्त] 1. लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, गृहीत हुआ, स्वीकार किया हुआ—एवमात्तरतिः - रघु० ११।५७, मालवि० ५।१, 2. अंगीकार किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ 3. आकृष्ट 4. खींचा हुआ, निस्सारित—गोमायुसाराद्रात्तरघुस्पर्धेव्य - रघु० ५।२६ इसी प्रकार आत्तबल ११।७६, ले जाया गया। सम०—गन्ध (वि०) 1 जिसका घमंड निकाल दिया गया हो, आक्रान्त, पराजित - केनात्तगन्धो मातंगः श० ६ 2. सूंघा हुआ (जैसे कि फूल) - आत्तगन्धमदेभस्य शत्रुभिः - शि० १४।८४ (यहाँ आ० तं० 1 में क्तान्त अर्थ भी रखता है), गर्व (वि०) अवमानित, तिरस्कृत, अनादृत,—दण्ड (वि०) राजकीय दण्ड को धारण करने वाला, —मनस्क (वि०) जिसका मन (हर्ष आदि के कारण) स्थानान्तरित हो गया हो।

आत्मक (वि०) [आत्मन् + कन्] (समास के अन्त में) से बना हुआ, से रचा हुआ, स्वभाव का, लक्षण का, पंच° पाँच तत्त्वों वाला, संघात° = सन्दिग्ध स्वभाव का, इसी प्रकार द्वन्द्व°, दहन°।

आत्मकीय, आत्मीय (वि०) [आत्मक (नु) + छ] अपनों से सम्बन्ध रखने वाला, अपना सगा, कान्तिमात्मीयं पश्यति श० २, स्वामिनमात्मीयं करिष्यामि - वि० २, जीत लेना, - यदादमत्सीत्प्रथमाहिजात्यदर्पः रघु० ७।६८, कु० २।१३, बन्धु, सम्बन्धी, बान्धव।

आत्मन् (पु०) [अत् + मनिन्] 1. आत्मा, जीव किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत्—वि० १, आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु —कठ० ३।३, 2. रय, आत्म इस अर्थ में प्रातः यह शब्द सीनों पुरुषों में तथा पुल्लिंग के एक वचन में प्रयुक्त होता है चाहे उस लिंग शब्द का लिंग, वचन कुछ हो जो जिसका यह उल्लेख करता है - आत्मानमेवेनं आत्मना पुनीमह - श० १, पृष्ठ दुरात्मानमात्मा सर्वः स्वप्नेषु दामनैः रघु० १०।६०, देखो ..... प्राप्तप्रसवसम्भारमात्मानमवसादयन् विभुश्चचार —उत्तर० ७।२, गोप्तारमात्मनः कुरुषेय आत्मानमात्मना मघोनः, 3. परमात्मा, ब्रह्म तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः संभूतः - उप० उत्तर० ११।१, 4 सार, प्रकृति देo 'आत्मन्' ऊपर 5. चरित्र, विशेषता 6. नैसर्गिक प्रकृति या स्वभाव 7. शरीर या अमरत शरीर स्थितः सर्वभूतेषूहो शान्त्या मरिष्यामहात्मा - रघु० १।२४, मनु० १२।१२, 8 मन, बुद्धि संघातस्य महात्मस्थ आदि 9 संयत पु० आत्मसम्पन्न, आत्मवत् आदि 10. विचारणशक्ति विचार और तर्कशक्ति 11. सम्पत्ति, भोग, साहस 12. रूप, प्रतिमा 13. पुत्र - आत्मा वै पुत्रनामासि 14. देखभाल, प्रयत्न 15. सूर्य 16. अग्नि 17. वायु - से बना या से युक्त अर्थ को प्रकट करने के लिए 'आत्मन्' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है देo आत्मक। सम०- अधीन (वि०) अपने ऊपर आश्रित, स्वाश्रित, निराश्रित (—नः) 1. पुत्र 2. साला, पत्नी का भाई 3. मस्खरा या विदूषक (नाटक साहित्य में), - अनुयमनम् व्यक्तिगत सेवा, अपहारः अपने आप को छिपाना—कथ वा आत्मापहारं करोमि श० १, - अपहारकः छछूंदर, कनडी, आराम (वि०) ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील (जैसे कि कोई योगी), आत्मज्ञान का अन्वेषक—आत्मारामा विहिरन्तर्यो निर्विकल्पे समाधौ- - वेणी० १।२३, 2. अपने आप में प्रसन्न, आत्मिन् (पु०) मछली (ऐसा समझा जाता है कि मछली अपने बच्चों को या अपनी जाति के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सबसे कमजोर जीवों को खाकर पलती है) तु०—मत्स्या इव जना नित्यं भक्षयन्ति परस्परम्—रामा०,—**आश्रयः** अपने ऊपर निर्भर करना,—**ईश्वर** (वि०) आत्मसाक्षात्कृत, अपना स्वामी आप—आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्नाः समाधिभेदभ्रमको भवन्ति— कु० ३।४०, —**उद्भवः** 1. पुत्र 2. कामदेव (—वा) पुत्री,— **उपजीविन्** (पुं०) 1. जो अपने परिश्रम पर निर्भर करता है, श्रमिक 2. मजदूर 3. जो अपनी पत्नी के ऊपर आश्रित रहता है (मनु० ८।३६२ पर कुल्लूक), 4. पात्र, सार्वजनिक अभिनेता, —**काम** (वि०) 1. अपने आप को प्रेम करने वाला, अभिमान से युक्त, घमंडी 2 ब्रह्म या परमात्मा को प्रेम करने वाला, सत (वि०)मन में उपजा हुआ,—तो मनोरथः—श० १, (—त्तम्) (अव्य०) एक ओर, जो मन में कहा हुआ समझा जाय (विप० **प्रकाशम्**—और से) (यह बहुधा रंगमंच के निर्देश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त होता है) —यह स्वगत' का ही पर्याय है जिसकी परिभाषा यह है: —अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगत मतम् —सा० द० ६,—**गुप्तिः** (स्त्री०) गुफा, किसी जानवर के छिपने का स्थान,—**घातिन्** (वि०) स्वार्थी, लालची, —**घातः** 1. आत्महत्या, 2 नास्तिकता,—**घातकः**, —**घातिन्** (पुं०) 1. आत्महत्यारा अपने आप को स्वयं मारनेवाला, व्यापारेण व्यवहारात स्वयं योऽन्युदकादिभिः, अवैदेनैव मार्गेण आत्मघाती स उच्यते ॥ 2. नास्तिक,—**घोषः** 1. मुर्गा 2. कौवा —**ज**—**जन्मन्** (पुं०), —**जातः**,—**प्रभवः**, **सम्भवः** 1. पुत्र —तमात्मजन्मानमजं विकर्त्रे—रघु० ५।३६, तस्यात्मात्मानुरूपाद्यमात्मजन्मसमुत्सुकः—रघु० ११३३, मा० १, कु० ६।२८, 2 कामदेव, —**जा** 1. पुत्री नैवं युग चरणयोर्जनकात्मजायाः —रघु० १३। ७८, तु० नगात्मजा आदि 2. तर्कशक्ति, समझ, —**जयः** अपने ऊपर विजय प्राप्त करना, आत्मत्याग, आत्मोत्सर्ग, —**ज्ञः**,—**विद्** (पुं०) ऋषि, जो अपने आप को जानता है, **ज्ञानम्** 1. आत्मा या परमात्मा को जानकारी, 2. अध्यात्म ज्ञान, **तत्त्वम्** आत्मा या परमात्मा की वास्तविक प्रकृति,—**त्यागः** 1. स्वार्थत्यागन 2. दूसरे के भले के लिए अपनी हानि करना, आत्महत्या,— **त्यागिन्** (पुं०) 1. आत्महत्या करने वाला: आत्मत्यागिनो नाशौचोदकभाजनाः— याज्ञ० ३।६, 2. नास्तिक —**त्राणम्** 1. आत्मरक्षा 2. शरीर-रक्षक, **दर्शः** आईना प्रसादमात्मीयमिवाभिमर्शनं, —रघु० ७।६९, —**दर्शनम्** 1. अपने आपको देखना 2. आध्यात्मिक ज्ञान,—**द्रोहिन्** (वि०) 1. अपने आपको पीड़ित करने वाला 2. आत्महत्या करने वाला— **निन्द्य** (वि०) लगातार हृदय में होने वाला, अपने आपको अति प्रिय, —**निन्दा** अपनी निंदा, —**निवेदनम्** अपने आपको प्रस्तुत करना (जैसे किसी प्राणी का किसी देवता के प्रति बलिदान)—**निष्ठ** (वि०) आत्मज्ञान का अनवरत अन्वेषक,—**प्रभ** (वि०) स्वयं प्रकाशवान् —**प्रभवः**—भूः,—**प्रशंसा** अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना,—**बन्धुः**,—**बान्धवः** अपना निजी संबंधी—आत्ममातुः स्वसुः पुत्रा आत्मपितुः स्वसुः सुताः, आत्ममातुलपुत्राश्च विज्ञेया ह्यात्मबान्धवाः—शब्दक० अर्थात् बुआ का पुत्र, मौसी का पुत्र, और मामा का पुत्र,— **बोधः** 1. आध्यात्मिक ज्ञान 2. आत्मा का ज्ञान, —**भूः**, —**योनिः** 1. ब्रह्मा,—वनस्पतयसिते तस्मिन् सस्रुर्गिरिमात्मभूः कु० २।५३, 2. विष्णु 3. शिव —श० ७। ३५ 4. कामदेव, प्रेम का देवता 5. पुत्र (स्त्री०—भूः) 1. पुत्री 2. बुद्धिदैभव, समझ,—**मात्रा** परमात्मा का अंश, —**मानिन्** (वि०) 1. स्वाभिमानी, आदरणीय 2. घमंडी, —**याजिन्** (वि०) अपने लिए यज्ञ करने वाला, (पुं०) विद्वान् पुरुष जो शाश्वत आनन्द प्राप्त करने के लिए अपने तथा दूसरे व्यक्तियों की आत्मा का अध्ययन करता है, जो सब प्राणियों को अपने समान समझता है —सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि, समं पश्यन्नात्मयाजी स्वाराज्यमधिगच्छति —मनु० १२।९१, —**योनिः**—भूः (पुं०), कु० ३।७७ —**रक्षा** अपना बचाव, —**लाभः** जन्म, उत्पत्ति, मूल —मैत्रात्मलाभस्त्वया लब्धः—मुद्रा० ३।१,५।२३, कि० ३।२३ १७।१९, —**वंचक** (वि०) अपने आपको धोखा देने वाला, —**वंचना** आत्म-भ्रम, अपने को धोखा देना, —**वध्या**,—**हत्या** अपनी हत्या स्वयं करना, —**वश** (वि०) अपनी इच्छा पर आश्रित रहने वाला (—**शः**) 1. आत्मनियन्त्रण, आत्म-प्रशासन 2. अपना नियन्त्रण, अधीनता, 'हाँ जी, 'वशीकृ अधीन करना, विजय प्राप्त करना,—**वश्य** (वि०) अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला, आत्मसंयमी, अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखने वाला, —**विद्** (पुं०) बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि, जैसा कि 'नरहि लोकमात्मवित्' में, —**विद्या** आत्मा का ज्ञान, अध्यात्म-ज्ञान, —**वीरः** 1. पुत्र 2. पत्नी का भाई 3. विदूषक (नाटकों में), —**वृत्ति** (वि०) आत्मा में रहने वाला (**तिः**—स्त्री०) 1. हृदय की अवस्था, अपने से संबंध रखने वाली चेष्टाएँ, अपनी निजी अवस्था या परिस्थिति विस्मापयन् विस्मितमात्मवृत्तौ—रघु० २।३३,—**शक्तिः** (स्त्री०) अपनी निजी सामर्थ्य या योग्यता, अन्तर्हित शक्ति या बल —दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१, अपनी शक्ति के अनुसार,—**श्लाघा**,—**स्तुतिः** (स्त्री०) अपनी प्रशंसा स्वयं करना, शेखी बघारना, डींग मारना,—**संयमः** अपनी इन्द्रियों पर काबू रखना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—संभवः—समुद्भूतः 1. पुत्र—त्वकार नाम्ना रघुरात्मसंभवम्—रघु० ३।२१, ११।५७, १७।८ 2. प्रेम का देवता, कामदेव 3. ब्रह्मा की उपाधि, शिव, विष्णु (—वः) 1. पुत्री 2. सगा, सपिण्ड (वि०) 1. स्वस्थचित्त, 2. बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली,—हन् = घातिन्, —हननम्,—हत्या आत्मघात,—हित (वि०) अपने लिए हितकर,(—तम्) अपना निजी भला या कल्याण।

आत्मना (अव्य०) ['आत्मन्' का करण० ए० व०] आत्मवाची कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—अथ खल्वितरा स्वमात्मना—रघु० ८।५१, तुम स्वयम्, यह प्रायः क्रमिक संख्यासूचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—उदा०—°द्वितीयः आप सहित दूसरा अर्थात् वह तथा स्वयं।

आत्मनीन (वि०) [आत्मन्+ख] 1. अपने से संबंध रखने वाला, अपना निजी, कस्यैष आत्मनीनः—मालवि० ४, 2. अपने लिए हितकर—आत्मनोनमतिष्ठेत्—कि० १३।६९,—नः 1. पुत्र 2. पत्नी का भाई 3. विदूषक (नाटकों में)।

आत्मनेपदम् [आत्मने आत्मार्थं फलव्याधनाय पदम्—अलुक् स०] 1. आत्मवाची क्रियापद, दो प्रकार के क्रियापदों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से एक जिनमें कि संस्कृत भाषा की धातु-रूपावली पाई जाती है, 2. आत्मनेपद के प्रत्यय।

आत्मंभरि (वि०) [आत्मानं बिभर्ति इति—आत्मन्+भृ+खि, मुम् च] स्वार्थी, लालची, (जो केवल अपनी ही उदरपूर्ति करता है)—आत्मम्भरिरक्ष पिशितेन-राणाम्—भट्टि० २।३३, हि० ३।१२१।

आत्मवत् (वि०) [आत्मन्+मतुप्—मस्य वः] 1. स्वस्थचित्त, 2. शान्त, दूरदर्शी, बुद्धिमान्—किमिवाद्यसाद-करमात्मवताम्—कि० ६।१९।

आत्मवत्ता [आत्मवत्+तल्+टाप्] स्वस्थचित्तता, स्वनियंत्रण, बुद्धिमत्ता—प्रकृतिष्वात्मजमात्मवत्तया—रघु० ८।१०, ८४।

आत्मसात् (अव्य०) [आत्मन्+साति] अपने अधिकार में, अपना निजी, [प्रायः 'कृ' और 'भू' के साथ]—दुरितैरपि कर्तुमात्मसात् · रघु० ८।२।

आत्यंतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अत्यन्त+ठञ्] 1. सतत, अनवरत, अनन्त, स्थायी, नित्यस्थायी -स आत्यन्तिकी भविष्यति—मुद्रा० ४, विष्णुपदात्तत्कस्यात्यन्तिकश्रेयसे—२।१५, भग० ६।२१, 2. अत्यधिक, प्रचुर, सर्वाधिक 3. सर्वोच्च, पूर्ण—आत्यन्तिकी स्वत्वनिवृत्तिः—मिता०।

आत्यविक (वि०) [स्त्री०—की] [अत्यय+ठक्] 1. नाशकारी, सर्वनाशकर 2. पीड़ाकर, अमंगलकर, अशुभसूचक 3. अत्यावश्यक, अपरिहार्य, आपाती।

आत्रेय (वि०) (स्त्री०—यी)[अत्रि+ढक्] अत्रि से संबंध रखने वाला, या अत्रि की संतान,—यः अत्रि का वंशज, यी 1. अत्रि की पुत्री 2. अत्रि की पत्नी 3. रजस्वला स्त्री।

आत्रेयिका [आत्रेयी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] रजस्वला स्त्री।

आथर्वण (वि०) (स्त्री०—णी) [अथर्वन्+अण्] अथर्ववेद या अथर्वा ऋषि से संबंध रखने वाला,—णः 1. अथर्ववेद का अध्येता या ज्ञाता ब्राह्मण 2. यज्ञ का पुरोहित जिसने संबद्ध यज्ञ कर्म पढ़ति का विधान अथर्ववेद में निहित है 3. स्वयं अथर्ववेद 4. गृहपुरोहित।

आथर्वणिकः [अथर्वन्+ठक्] अथर्ववेद का अध्येता ब्राह्मण।

आदंशः [आ—दंश्+घञ्] 1. डंक, डंक मारने से पैदा हुआ घाव, 2. डंक, दांत।

आदरः [आ+दृ+अप्] 1. आदर, पूज्यभाव, सम्मान, निर्माणमेव हि नरादरलालनीयम् -मा० ९।४९, न जातहार्देन न विदियादरः—किं० १।३३, कु० ६।२० 2. अवधान, सावधानी, सम्मान्य व्यवहार, कु० ६।९१, 3. उत्सुकता, इच्छा, स्नेह—भूयात्कथाश्वादरः कु० ६।९३, यत्किञ्चनकारिताप्यादरः का० १२२, 4. प्रयत्न चेष्टा—गृह्यप्रयुक्ताकाशीरपौरादरनिर्मिता · कु० ६।४१, 5. उपक्रम, आरंभ 6 प्रेम, आसक्ति।

आदरणम् [आ+दृ+ल्युट्] सत्कार, इज्जत, सम्मान।

आदर्शः [आ+दृश्+घञ्] 1. आईना, मुंह देखने का शीशा, दर्पण -आत्मानमालोक्य च शीघ्रमात्मादर्शविम्बे निमिषान्तराक्षी कु० ६।२२, 2. मूल पांडुलिपि जिससे प्रतिलिपि तैयार की जाय, (आलं०) नमूना, प्रतिकृति, प्रकार, आदर्शः शिक्षितात्मा मुच्छ० १।४८; आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् का० ५, इसी प्रकार,—गुणानाम् आदि 3. कार्य की एक प्रति लिपि 4. टीका, भाष्य।

आदर्शकः [आदर्श+कन्] दर्पण, आईना।

आदर्शनम् [आ+दृश्+ल्युट्] 1. दिखलावा, प्रदर्शन 2. दर्पण।

आदहनम् [आ। दह्+ल्युट्] 1. जलन 2. चोट पहुँचाना, हत्या करना 3. खरी-खोटी सुनाना, घृणा करना 4. श्मशान।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] 1. लेना, स्वीकार करना, पकड़ना—कुशाङ्कुरादानपरिक्षताङ्गुलिः—कु० ५।११, आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, 2. उपार्जन, प्राप्तण 3. (रोग का) लक्षण।

आदायिन् (वि०) [आ+दा+णिनि] ग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला।

आदि (वि०) [आ+दा+कि] 1. प्रथम, प्राथमिक, आदिम —दिनानां स्वादिकारणम्—,अमर०, 2. मुख्य,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहला, प्रधान, प्रमुख --प्रायः समास के अन्त में--इसी अर्थ में नी० वे० 3. समय की दृष्टि से प्रथम, दि: 1. आरंभ, उपक्रम (विप० 'अन्त') अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्- मनु० १।८, भग० २।४१, जगदादिरनादिस्त्वम् -कु० २।९, समास के अन्त में प्रयुक्त होकर बहुधा निम्नांकित अर्थों में अनूदित किया जाता है--'आरंभ करके' 'वगैरा' २ 'इसी प्रकार और भी (उसी प्रकृति और प्रकार के), 'ऐसे --इन्द्रादयो देवाः इन्द्र तथा अन्य देवता, या भू आदि से आरंभ होने वाले शब्द धातु कहलाते हैं और पाणिनि के द्वारा वह प्रायः व्याकरण के शब्द-समूह को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये गये हैं अदादि, दिवादि, स्वादि इत्यादि, 2. पहला भाग या खंड, 3. मुख्य कारण। सम० अन्त (वि०) जिसका आरंभ और समाप्ति दोनों हो (-- तम्) आरंभ और अन्त; °वत्--सान्त, समाप्तिका,—उदात्त (वि०) वह शब्द जिसके आरम्भिक अक्षर पर स्वराघात हो, करः,--कर्तृ, कृत् (पुं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा का विशेषण· भग० ११।३७ कविः प्रथम कवि, ब्रह्मा की उपाधि क्योंकि उसी ने संसार की सर्वप्रथम रचना की तथा वेदों का ज्ञान दिया, वाल्मीकि की उपाधि क्योंकि उसी ने सर्वप्रथम कवियों का पथप्रदर्शन किया—जब कि उसने क्रौंच दम्पती के एक पक्षी को व्याध के द्वारा मारा जाता हुआ देखा, उसने उस दुष्ट व्याध को शाप दिया और उसका वही शोक अपने आप कविता के रूप में प्रकट हुआ (इत्यौकन्वमापद्यत यस्य शोकः), इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वाल्मीकि को राम का चरित्र लिखने के लिए कहा, फलस्वरूप संस्कृत साहित्य में प्रथम काव्य 'रामायण' के रूप में प्रकट हुआ,—काण्डम् रामायण का प्रथम खण्ड, -कारणम् (विश्व का) प्रथम या मुख्य कारण, जो कि वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है, तथा नैयायिकों विशेषतः वैशेषिकों के अनुसार विश्व का प्रथम या भौतिक कारण 'अणु' है, परमात्मा नहीं; -काव्यम् प्रथम काव्य अर्थात् वाल्मीकि रामायण दे० आदि कवि,'—देवः 1. प्रथम या सर्वोच्च परमात्मा पुरुषं शाश्वतं दिव्यं आदिदेवमजं विभुम् - भग० १०।१२, ११।३८, 2. नारायण या विष्णु 3. शिव 4. मूर्ति, -दैव्यः हिरण्यकशिपु की उपाधि, -पर्वन् महाभारत का प्रथम खंड, -पुः (पुं) रुषः 1. सर्वप्रथम या आदिम प्राणी, सृष्टि का स्वामी 2. विष्णु, कृष्ण या नारायण—ते च प्रापुरुदन्तं बुद्धे रादिपुरुषः - रघु० १०।६७ तमर्घ्य-मध्यादिकयादिपुरुषः--शि० १।१४--बलम् जननात्मक शक्ति, प्रथम वीर्य,—भवः,—भूत (वि०) 1. सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ,(—वः,—तः) 'आदिजन्मा' आदिम प्राणी, ब्रह्मा की उपाधि. 2. विष्णु—रसातलादादिभेदेन पुंसा—रघु० १३।८, 3. बड़ा भाई,—सूक्ष्मम् पहली नींव, आदिम कारण,—वराहः 'प्रथमशूकर' विष्णु की उपाधि—उसके तृतीय अवतार (वराहावतार) की ओर संकेत—शक्तिः (स्त्री०) 1. माया की शक्ति 2. दुर्गा की उपाधि,—सर्गः प्रथम सृष्टि।

आदितः, आदौ (अव्य०) [आदि+तसिल्, अदि० ए० व०] आरंभ से लेकर, सबसे पहले—तदेवेनादितो हतम् - उत्तर० ५।२०।

आदितेयः [अदिति+ढक्] 1. अदिति का पुत्र 2. देवता, सामान्य देव।

आदित्यः [अदिति+ण्य] 1. अदिति का पुत्र, देव, देवता 2. बारह आदित्यों (सूर्य के भाग) का समुदायवाचक नाम-- आदित्यानामहं विष्णुः—भग० १०।२१, कु० २।२४ (यह बारह आदित्य केवल प्रलयकाल में उदित होते हैं)--तु० वेणी० ३।६, दग्धं विश्वं दहनकिरणैर्भीतोदित्तर द्वादशार्कैः 3. सूर्य 4. विष्णु का पाँचवाँ अवतार, वामनावतार। सम० - मंडलम् सूर्यमंडल,—सुतः सूर्य का पुत्र, सुग्रीव, यम, शनि, कर्ण।

आदि (दी) नवः—वम् [आ+दी+क्त=आदीनस्य वानम्--वा+क] 1. दुर्भाग्य, कष्ट, 2. दोष—दे० 'अनादीनव'।

आदिम (वि०) [आदौ भवः—आदि+डिमच्] प्रथम, पुरातन, मौलिक।

आदीनव—दे० 'आदिनव'।

आदीपनम् [आ+दीप्+ल्युट्] 1. आग लगाना 2. भड़काना, संवारना 3. उत्सवादिक अवसर पर दीवार फर्श आदि को चमकाना।

आदृत (भू० क० कृ०) [आ+दृ+क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, 2. (कर्तव्य के रूप में) (क) उत्साही, परिश्रमी, दत्तचित्त, सावधान, (ख) सम्मान युक्त।

आदेवनम् [आ+दिव्+ल्युट्] 1. जूआ खेलना 2. जूआ खेलने का पासा 3. जूआ खेलने की बिसात, खेलने का स्थान।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] 1. हुक्म, आज्ञा—आतुरादेशमादाय—रामा०, आदेशं देशकालज्ञः प्रतिजग्राह - रघु० ११।९२, राजद्विष्टादेशकृतः--याज्ञ० २।३०४, राजा के द्वारा निषिद्ध कार्यों को करने वाला 2. सलाह, निर्देश, उपदेश, नियम 3. विवरण, सूचना, संकेत 4. भविष्यकथन- विप्रतिषेधादेशश्चवचनानि—का० ६४, 5. (व्या०) स्थानापन्न—धातोः स्थान इवादेशः सुधियं संन्यवेशयत्—रघु० १२।५८।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदेशिन् [आ+दिश्+णिनि] 1. आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला 2. उत्तेजक, भड़काने वाला—रघु० ६८, —(पुं०) 1. सेनापति, आज्ञप्ता 2. ज्योतिषी ।

आद्य (वि०) [आदौ भवः—यत्] 1. प्रथम, आदि कालीन 2. मुख्यिा, प्रमुख, आगुआ—आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११ 3.(समास के अन्तमें) आरंभ करके, वगैरा २, दे० आदि,—द्यः 1. दुर्गा की उपाधि 2. मास का पहला दिन,—द्यम् 1. आरंभ 2. अनाज, आहार । सम०—कविः 'आदिकवि' ब्रह्मा या वाल्मीकि की उपाधि, दे० 'आदिकवि' । —बीजम् विश्व का मूल्य या भौतिक कारण जो सांख्य मतानुसार 'प्रधान' या जड़नियम कहलाता है ।

आद्यून (वि०) [आ+दिव्+क्त, ऊठ् नत्वं च, 'अद' खाना से व्युत्पन्न प्रतीत होता है] बहुभोजी, पाटमर्ष, पेटू, भुक्खड़—कि० ११।५ ।

आद्योतः [आ+द्युत्+घञ्] प्रकाश, चमक ।

आधमर्ण्य [ऋणमर्ण+ष्यञ्] कर्जदारी ।

आधमर्णिक (वि०) [अधमर्ण+ठक्] अन्यायी, बेईमान ।

आधर्षः [आ+धृष्+घञ्] 1. घृणा 2. बलात् चोट पहुँचाना ।

आधर्षणम् [आ+धृष्+ल्युट्] 1. दोष या अपराध का निश्चय, दण्डादेश 2. निराकरण 3. चोट पहुँचाना, सताना ।

आधर्षित [भू० क० कृ०] [आ+धृष्+क्त] 1. चोट पहुंचाया हुआ, 2. तर्क द्वारा निराकृत 3. दण्डादिष्ट, सिद्ध-दोष ।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] 1. रखना, ऊपर रख देना 2. लेना, भार लेना, प्राप्त करना, वापिस लेना, 3. यज्ञाग्नि को स्थापित करना (अग्न्याधान)—पुनर्दारक्रियां कुर्यात् पुनराधानमेव च—मनु० ५।१६८, 4. करना, कार्य में परिणत करना, निष्पन्न करना 5. बीच में रखना, रख देना,=गुणो विशेषाधानहेतुः सिद्धो वस्तुधर्मः—सां० द० २, प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि —रघु० १।२४ 6. बीजारोपण, उत्पादन—कीर्तुकाधानहेतोः—मेघ० ३, गर्भाधानलक्षणपरिणामात्—९, 7. निक्षेप, धरोहर—याज्ञ० २।२३८, २४७ ।

आधानिकः [आधान+ठञ्] सहवास के पश्चात् गर्भाधान के निमित्त किया जाने वाला संस्कार ।

आधारः [आ+धृ+घञ्] 1. आश्रय, स्तंभ, टेक 2. (अतः) सँभाले रखने की शक्ति, सहायता, संरक्षण, मदद—त्वमेव चातकाधारः—भर्तृ० २।५०, 3. भाजन आधार—तिष्ठत्स्वाप इवाधारे—पंच० १।६७, चराचराणां भूतानां कुक्षिराधारतां गतः—कु० ६।६७, कु० २।४८, ह० १।१४, 4. आलवाल, —आधारबन्धप्रशमैः प्रयत्नैः —रघु० ५।६, 5. पुलिआ, बाँध, पुश्ता, (तटबन्ध) 6. नहर 7. अधिकरण कारक का भाव, स्थान—आधारोधिकरणम् ।

आधिः [आ+धा+कि] 1. मानसिक पीड़ा, वेदना, चिन्ता (विप० व्याधि=शारीरिक पीड़ा)—न लेभामापदः सन्ति नाधयो व्याधयस्तथा—महा०, —मनोगतमाधिहृतम् —श० ३।११, रघु० ८।२७, ९।५४, भर्तृ० ३।१०५, भामि० ४।११, 2. विपत्ति, अभिशाप, सन्ताप—यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः—श० ४।१७, महावी० ६।२८, 3. निक्षेप, धरोहर, गिरवी, रेहन —याज्ञ० २।२३, मनु० ८।१४३, 4. स्थान, आवास 5. अवस्थान, ठिकाना 6. परिवार के भरण-पोषण के लिए चिन्तातुर । सम०—ज्ञ (वि०) पीड़ाग्रस्त, —भोगः धरोहर की चीज़ का उपयोग (जैसे घोड़े गाय आदि का),—स्थैर्यः स्वामी से पूछे बिना धरोहर की राशि को खर्च करने वाला व्यक्ति ।

आधिकरणिकः [अधिकरण+ठक्] न्यायाधीश—मृच्छ० ९ ।

आधिकारिक (वि०) [स्त्री०—की] 1. सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ 2. अधिकारी ।

आधिक्यम् [अधिक+ष्यञ्] अधिकता, बहुतायत, प्राचुर्य ।

आधिदैविक (वि०) (स्त्री०—की) [अधिदेव+ठञ्] 1. अधिदेव या इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देव से सम्बन्ध रखने वाला (जैसा कि एक मन्त्र) मनु० ६।८३, 2. दैवकृत, भाग्य में लिखी हुई—(पीड़ा आदि), सुश्रुत के अनुसार पीड़ा तीन प्रकार की है—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक ।

आधिपत्यम् [अधिपति+यक्] 1. सर्वोपरिता, शक्ति, प्रभुसत्ता - राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यं (अवाप्य)—भग० २।८, 2. राजा का कर्तव्य -पाण्डोः पुत्रं प्रकुरुष्वाधिपत्ये—महा० ।

आधिभौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अधिभूत+ठञ्] 1. प्राणियों—पशुपक्षियों-से उत्पन्न (पीड़ा आदि) 2. प्राणियों से सम्बन्ध रखने वाला 3. प्रारम्भिक, भौतिक ।

आधिराज्यम् [अधिराज+ष्यञ्] अधिराज का पद या अधिकार, प्रभुसत्ता, सर्वोपरि प्रभुत्व—बभौ भूयः कुमारस्त्वादधिराज्यमवाध्य सः—रघु० १७।३० ।

आधिवेदनिकम् [अधिवेदनाय हितं -ठक्, तत्र काले दत्तं -ठञ् वा] सम्पत्ति, उपहार आदि जो दूसरा विवाह करने पर पहली पत्नी को सन्तोषार्थ दिया जाय;

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—यच्च द्वितीयविवाहार्थिना पूर्वस्त्रियै पारितोषिकं धनं दत्तं तदाधिवेदनिकम्—विष्णु०, तु० याज्ञ० २।१४३, १४८।

आधुनिक (वि०) (स्त्री०—की) [अधुना+ठञ्] नया, आजकल का, अब का, हाल का।

आधोरणः [आ+धोर्+ल्युट्—धोरृ गतिचातुर्ये] महावत, पीलवान,—आधोरणानां मजसन्निपाते—रघु० ७।४६, ५।४८, १८।३९।

आध्मानम् [आ+ध्मा+ल्युट्] 1. फूंक मारना, फुलाव (आल०) वृद्धि 2. शेखी बघारना 3. बांकपी 4. पेट का फूलना, शरीर का फुलाव, जलोदर।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्यात्म+ठञ्] 1. परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाला 2. आत्मा सम्बन्धी, पवित्र 3. मन से सम्बन्ध रखने वाला 4. मन से उत्पन्न (पीड़ा, दुःख आदि) दे० "आधिदैविक"।

आध्यानम् [आ+ध्यै+ल्युट्] 1. चिन्ता 2. दुःख पूर्ण प्रत्यास्मरण 3. मनन।

आध्यापकः [अध्यापक+अण्] शिक्षक, धर्मोपदेष्टा, दीक्षागुरु।

आध्यासिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्यास+ठक्] अध्यास द्वारा उत्पन्न अर्थात् (वेदान्त० में) एक वस्तु के गुण व प्रकृति को दूसरी वस्तु पर आरोप करके।

आध्वनिक (वि०) (स्त्री०=की) [अध्वन्+ठक्] यात्रा पर, यात्री—कान्तारेष्वपि विश्रामो जनस्याध्वनिकस्य वै—महा०।

आध्वर्यव (वि०) (स्त्री०—वी) [अध्वर्यु+अञ्] अध्वर्यु या यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला,—वम् 1. यज्ञ में किया जाने वाला कार्य 2. विशेषतः अध्वर्यु नायक पुरोहित का कार्य।

आनः [आ+अन्+क्विप्, ततः अण्] 1. वायु भीतर खींचना 2. श्वास लेना, फूंक मारना।

आनकः [आनयति उत्साहयतिः करोति अण्+णिच्+ण्वुल्-तारा०] 1. बड़ा सैनिक ढोल—नगाड़ा—पणवानकगोमुखाः सहस्रैराभ्यहन्यन्त- भग० १।१३, 2. गरजने वाला बादल। समः—युधुभिः कृष्ण के पिता वासुदेव की उपाधि (—भिः,—भी (स्त्री०)) बड़ा ढोल, नगाड़ा।

आनतिः (स्त्री०) [आ+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, नमस्कार करना, झुकाव (आल०-भी)—गुणवन्मित्रमिवानतिः प्रवेदे—किं० १३।१५, 2. नमस्कार या अभिवादन 3. श्रद्धांजलि, सत्कार, श्रद्धा।

आनद्ध (वि०) [आ+नह्+क्त] 1. बांधा हुआ, मढ़ा हुआ 2. बद्धकोष्ठ, अवरुद्धमल (जैसा कि उदर) —द्धः 1. ढोल 2. वस्त्रों का पहनना, बनाव-सिंगार।

आनन्दः [आ+अन्+घञ्] 1. मुँह, चेहरा—रघु० ५।१, —नृपस्य कांतं पितरः सुतागमे—१७, 2. किसी ग्रन्थ या पुस्तक के बड़े २ खण्ड (उदा० रसगंगाधर के दो आनन)।

आनन्तर्यम् [अनन्तर+ष्यञ्] 1. अव्यवहित उत्तराधिकार 2. व्यवधान रहित आसन्नता।

आनन्त्यम् [अनन्त+ष्यञ्] 1. असमाप्तकता, अनन्तता (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से)—आनन्त्याद् व्यभिचाराच्च—काव्य० २, 2. असीमता 3. अक्षयता, नित्यता 4. ऊर्ध्वलोक, स्वर्ग, भावी सुख—अस्तु नित्यं कृतमतिर्धर्ममेवाभिपद्यते, अक्षयमानः कल्याणि सोऽमुत्रानन्त्यमश्नुते—महा०।

आनन्दः [आ+नन्द्+घञ्] 1. प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, सुख,—आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् बिभेति कदाचन, 2. ईश्वर, परमात्मा (नपुं० भी इसी अर्थ में) 3. शिव। समः—कानना,—वनम् काशी,—पदः दुःखहीन के वस्त्र,—पूर्ण (वि०) आनन्द से ओतप्रोत (—र्णः) परमात्मा,—प्रभवः वीर्य।

आनन्दथु (वि०) [आ+नन्द्+अथुच्] प्रसन्न, हर्षोत्फुल्ल, —थुः प्रसन्नता, हर्ष, सुख।

आनन्दन (वि०) [आ+नन्द्+ल्युट्] सुखकर, प्रसन्न करने वाला,—नम् 1. सुख करना, प्रसन्न करना 2. प्रणाम करना 3. मित्र या अतिथियों के साथ, मिलने पर अथवा बिदा होते समय सम्योचित व्यवहार, सौजन्य, शिष्टता।

आनन्दमय (वि०) [आनन्द+मयट्] 1. आनन्द से परिपूर्ण, सुख या हर्ष सहित,—यः परमात्मा, कोश अर्थात् सूक्ष्म आवरण या शरीर का परिधान।

आनन्दिः [आ+नन्द्+इन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. जिज्ञासा।

आनन्दिन् (वि०) [आ+नन्द्+णिनि] 1. प्रसन्न, सुखी 2. सुखकर।

आनर्तः [आ+नृत्+घञ्] 1. रंगमंच, नाट्यशाला, नाचघर 2. युद्ध, लड़ाई 3. देश का नाम (सौराष्ट्र भी इसी देश का नाम है)।

आनर्थक्यम् [अनर्थस्य भावः—ष्यञ्] 1. अनुपयुक्तता, निरर्थकता—अत्यानर्थक्यमितिचेत्—शास्त्रा०, वाक्यानामस्य क्रियार्थत्वाधानर्थक्यमतदर्थानाम्—जै० भा० 2. अयोग्यता।

आनायः [आ+नी+घञ्] जाल।

आनायिन् (पुं०) [आनाय+इनि] मछुआ, धीवर —आनायिभिस्तामपकृष्टनक्राम्—रघु० १६।५५, ७५।

आनाय्य (वि०) [आ+नी+ण्यत्, आयादेशः] निकट लाने के योग्य,—यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई संस्कृत अग्नि ('दक्षिणाग्नि' भी कहलाती है)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनाहः [आ+नह्+घञ्] 1. बन्धन 2. मलावरोध कब्ज 3. लम्बाई (विशेषतः कपड़े की) ।

आनिल (वि०) (स्त्री०—ली) [अनिल+अण्] वायु से उत्पन्न,—लः, —आनिलिः हनुमान्, भीम ।

आनील (वि०) [प्रा० स०] हल्का काला या नीला,—लः काला घोड़ा ।

आनुकूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुकूल+ठक्] हितकर, अनुरूप ।

आनुकूल्यम् [अनुकूल+ष्यञ्] 1. हितकारिता, उपयुक्तता —यत्रानुकूल्यं दम्पत्योस्त्रिवर्गस्तत्र वर्धते—याज्ञ० १। ७४, 2. कृपा, अनुग्रह ।

आनुगत्यम् [अनुगत+ष्यञ्] ज्ञान-पहचान, परिचय ।

आनुगुण्यम् [अनुगुण+ष्यञ्] हितकारिता, उपयुक्तता, अनुरूपता ।

आनुग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुग्राम+ठञ्] देहाती, ग्रामीण, गँवार ।

आनुनासिक्यम् [अनुनासिक+ष्यञ्] अनुनासिकता ।

आनुपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुपद+ठक्] अनुसरण करने वाला, पीछा करने वाला, पदचिह्न या लीक के सहारे पीछा करने वाला, अध्ययन करने वाला ।

आनुपूर्व्य,—र्व्यं—र्वी [अनुपूर्वस्य भावः ष्यञ्, ततो वा ङीपि य—लोपः] 1. क्रम, परम्परा, सिलसिला मनु० २।४१ 2. (विधि में) वर्णों का नियमित क्रम—षड़ानुपूर्व्या विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान्—मनु० ३।२३ ।

आनुपूर्वे,—र्व्ये,—र्व्ये (अव्य०) एक के बाद दूसरा, ठीक क्रमानुसार ।

आनुमानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुमान—ठक्] 1. उपसंहार से सम्बन्ध रखने वाला 2. अनुमान प्राप्त, —क्रम सांख्यों का 'प्रधान'—आनुमानिकमप्येकेषामिति चेन्न—ब्रह्म० ।

आनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठक्] अनुयायी, सेवक, अनुचर ।

आनुरक्तिः [आ+अनु+रञ्ज्+क्तिन्] राग, स्नेह, अनुराग ।

आनुलोमिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुलोम+ठक्] 1. नियमित, क्रमबद्ध 2. अनुकूल ।

आनुलोम्यम् [अनुलोम+ष्यञ्] 1. नैसर्गिक या सीधा क्रम, उपयुक्त व्यवस्था—आनुलोम्येन संभूता जात्या तेयास्त एव ते—मनु० १०।५, १३ 2. नियमित सिलसिला या परंपरा 3. अनुकूलता ।

आनुवेश्यः [अनुवेश+ष्यञ्] वह पड़ोसी जिसका घर अपने घर से एक छोड़कर हो प्रातिवेश्यानुवेश्यौ च कल्याणे विशति द्विजे—मनु० ८।३९२ (इस पर कुल्लूक कहता है :—निरन्तरं गृहवासी प्रातिवेश्यः —तदनन्तरगृहवास्यानुवेश्यः) यह शब्द 'अनुवेश्य' लिखा भी पाया जाता है ।

आनुषङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुषङ्ग+ठक् स्त्रियां ङीप्] 1. सैरदृश्य, सहवर्ती 2. ध्वनित 3. अनिवार्य, आवश्यक 4. अप्रधान, गौण—अमुष्मिः स्यात्स्तु यशश्चिचीषतः ·····ननु लक्ष्मो. फलमानुषङ्गिकम्· कि० २।१९, अन्यतरस्यानुषङ्गिकलेऽन्वाचयः—सिद्धा० ३० 'अन्वाचय' 5. संलग्न, सौकीन 6. आपेक्षिक, आनुपातिक 7. (व्या०) अध्याहार्य ।

आनूप (वि०) (स्त्री० पी) [अनूपदेशे भवः—अण्] 1. जलीय, दलदलीय, आर्द्र 2. दलदल—भूमि में उत्पन्न, —पः दलदली भूमि में घूमने वाला पशु (जैसे भैंस) ।

आनृण्यम् [अनृण+ष्यञ्] ऋणपरिशोध, दायित्व निभाना, उऋणता, दे० अनृणता ।

आनृशंस्य (वि०) [अनृशंस+अण् (स्वार्थे) ष्यञ् वा] मृदु, कृपालु, दयालु, —सं, स्यम् 1. मृदुता 2. कृपा —मनु० १।१०१, ८।४११, 3. करुणा, दया, अनुकम्पा ।

आनैपुण्यम्-ण्यम् [अनिपुण+अण्, ष्यञ् वा] भद्दापन, जाड्य ।

आन्त (वि०) (स्त्री०—न्ती) [अन्त+अण् स्त्रियां ङीप्] अन्तिम, अन्त का,—न्तम् (अव्य०) पूर्णरूप से, अन्त तक ।

आन्तर (वि०) [आन्तर+अण्] 1. आंतरिक, गुप्त, छिपा हुआ—उत्तर० ६।१२, मा० १।२४, 2. अन्ततम, अन्तर्वर्ती,—रम् अन्ततम स्वभाव ।

आन्तरि(री)क्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) [अन्तरिक्ष+अण् —स्त्रियां ङीप्] 1. वायव्य, स्वर्गीय, दिव्य 2. वायु में उत्पन्न,—क्षम् व्योम, पृथ्वी और आकाश के बीच का प्रदेश ।

आन्तर्गणिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्तर्गण+ठक्] सम्मिलित (जैसे श्रेणी में, सेना में) ।

आन्तर्गेहिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्तर्गेह+ठक्] घर में रहने वाला, या घर में उत्पन्न ।

आन्तिका [अन्तिका+अण्+टाप्] बड़ी बहन ।

आन्दोल् (भ्वा० पर०) [दोलयति, दोलित] 1. झूलना, इधर से उधर या उधर से इधर स्पन्दन 2. हिलाना, कंपकंपाना ।

आन्दोलः [आ+दोल्—घञ्] 1. झूलना, झूला 2. हिलना डुलना ।

आन्दोलनम् [आन्दोल्+ल्युट्] 1. झूलना 2. हिलना-डुलना, स्पंदन, कंपित होना; —कित्वासामरविन्दमुन्दरदृशां द्रक् चामरान्दोलनात्—उद्भट० 3. कांपना ।

आन्धसः [अन्धस्+अण्] मांड ।

आन्धसिकः [अन्धस्+ठक्] रसोइया ।

आन्ध्यम् [अन्ध+ष्यञ्] अंधापन ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आन्ध्र (वि०) [आ+अद्+रन्] आंध्र देश की (जैसे कि भाषा)—प्रः (ब० व०) तेलुगू देश, वर्तमान तेलंगाना; दे० अंध्र ।

आन्वयिक (वि०) (स्त्री०—की) [अन्वय+ठक्] 1. अच्छे कुल में उत्पन्न, सुजात, अभिजात 2. क्रमबद्ध ।

आन्वाहिक (वि०) (स्त्री० की) [अन्वह+ठञ्] प्रतिदिन होने वाला, प्रतिदिन किया जाने वाला—पञ्चकिं चान्वाहिकीम्—मनु० ३।६७ ।

आन्वीक्षिकी [अन्वीक्षा+ठञ्, - ङीप्] 1. तर्क, तर्कशास्त्र 2. आत्मविद्या—आन्वीक्षिकस्त्रयीवार्तायां स्यादीक्षणात्सुखदुखयोः, ईक्षमाणस्तया तत्त्व हर्षशोकौ व्युदस्यति; —काम० २।११, आन्वीक्षिकी श्रवणाय मा० १, मनु० ७।४३ ।

आप् [स्वा० पर०] [आप्नोति, आप्त] 1. प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना—पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि—रा० १।१२, अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्नुयाद्यदि सः—रघु० ३।३८, इसी प्रकार फल, कीर्ति, सुख आदि के साथ 2. पहुँचना, जाना, पकड़ लेना, मिलना—भट्टि० ६।५९ 3 व्याप्त होना, जगह घेरना । 4. भुगतना, कष्ट भोगना, कठिनाइयों का सामना करना—दिष्टान्तमाप्स्यन्ति भवान्—रघु० ९।६५ । अनुप्र—, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, 2. पहुँचना, जाना, पकड़ लेना—गंगामदीमनुप्राप्ताः -महा०, 3. आ पहुँचना, आना; अप—, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना- पुत्रं त्वमपि सम्प्राप्य सेव पूरुषमवाप्नुहि—रा० ४।६, रघु० ३।३३, अवाप्तोत्कण्ठानाम्—मा० २।१२ 2. पहुँचना, पकड़ लेना, परि—, (प्रायः 'कान्त' रूप प्रयोग में आता है) 1. समर्थ होना- पर्याप्तं शिवमेतेषां बलं भीष्माभिरक्षितम्—भग० १।१०, मनु० ११।७, 2. योग्य होना 3. पूरा होना जैसा कि 'पर्याप्तकल' और 'पर्याप्तदक्षिण' में है 4. बचाना, रक्षा करना, परिरक्षण करना इमा परीप्सुर्जगतः—मालवि० ५।११, 5. काम तमाम करना, समाप्त करना, प्र—, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, 2. जाना, पहुँचना: यथा महाह्रद प्राप्य क्षिप्तं लोष्टं विनश्यति मनु० ११।२६४, रघु० १।४८, भट्टि० १५।१०६ इसी प्रकार आश्रमं, नदीं, वनम आदि के साथ 3. मिल जाना, पकड़ लेना भट्टि० ५।९६, दे० प्राप्त, वि—, 1. पूरी तरह से भर देना, व्याप्त हो जाना—श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्—श० १।१, इसी प्रकार विक्रम० १।१, भग० १०।१६, रघु० १८।४०, भट्टि० ७।५६, सम्—, 1 हासिल करना, प्राप्त करना, 2. समाप्त करना, पूरा (प्रेरणार्थक रूप भी) करना -यावतीर्यां समाप्येरन् वज्राः पर्याप्तदक्षिणाः—रघु० १७।१७, २४, समाप्य सान्त्यं च विधिं—२।२३ ।

आपकर (वि०) (स्त्री० -री) [अपकर+अण्, अञ् वा, स्त्रियां ङीप्] अनिष्टकर, अमैत्रीपूर्ण, बुराई करने वाला ।

आपक्व [वि०+आ+पच्+क्त] अनपका, अधपका—व्यक्तम् चपाती, रोटी ।

आपगा [आपां समूहः आपम्, तेन गच्छति-गम्+ड] दरिया, नदी —केनापगानां पतिमप्यपागाम्—शि० ३।७२ ।

आपगेयः [आपगा+ढक्] दरिया का पुत्र, भीष्म या कृष्ण की उपाधि ।

आपणः [आपण्+घञ्] मंडी, दुकान ।

आपणिक (वि०) (स्त्री०—की) [आपण्+ठक्] 1. व्यापार या मंडी से सम्बन्ध रखने वाला, व्यापारिक 2. मंडी से प्राप्त किया हुआ,—कः दुकानदार, सौदागर, बितरक या विक्रेता ।

आपतनम् [आ—पत्—ल्युट्] 1. निकट आना, टूट पड़ना 2. घटित होना, घटना 3. प्राप्त करना, 4. ज्ञान -क्वचित्प्रकरणिकादर्थात्प्रकरणिकस्यार्थस्यापतनम् सा० द० १०, 5. नैसर्गिक क्रम, स्वाभाविक परिणाम ।

आपत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [आपत्+ठक्] आकस्मिक, अदृष्ट, दैवी—कः ब्राह्मण, ज्योतिषी ।

आपत्ति (स्त्री०) [आ+पद्+क्तिन्] 1. बदलना, परिवर्तित होना 2. प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना 3. मुसीबत, संकट 4. (दर्शन० में) अवांछित उपसंहार या अनिष्ट प्रसंग ।

आपद् (स्त्री०) [आ+पद्+क्विप्] 1. संकट, मुसीबत, खतरा—दैवीना मानुषीणां च प्रतिहर्तां त्वमापदाम् -रघु० १।६०, अविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३०, १४—प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव वान्त्यापदः - भर्तृ० २।९० । सम०—काल: विपत्ति के दिन, कष्ट का समय, -गत,—ग्रस्त,—प्राप्त (वि०) 1. मुसीबत में पड़ा हुआ 2. दुर्भाग्य-ग्रस्त, पीड़ित, —धर्मः अत्यन्त कष्ट या संकट के समय अनुमति दिए जाने योग्य आचरण या वृत्ति, या कोई कार्य विधि जो प्रायः किसी वर्ण या जाति के लिए उपयुक्त न हो ।

आपदा [आपद्—टाप्] मुसीबत, संकट ।

आपनिक [आ—पन्—ढक्] 1. पन्ना, नीलम 2. किरात या असभ्य व्यक्ति ।

आपन्न (भू० क० कृ०) [आ—पद्+क्त] 1. लब्ध, प्राप्त —जीविकायन्नः 2. गया हुआ, कम हुआ, ग्रस्त—कष्टां दशामापन्नोऽपि —मर्तृ० २।२९ इसी प्रकार दुःख°

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीड़ित, कष्टग्रस्त, कठिनाई में फँसा हुआ —आपन्नभयसत्त्वेषु दीक्षिताः खलु पौरवाः—श० २।१६, मेघ० ५३। सम०—सत्त्वा गर्भवती, गर्भगुर्वी, गर्भवती स्त्री —संभावनसत्त्वास्तां रेजुरापांडुरविग्रहः—रघु० १९।५९।

आपत्सिक्य (वि०) [अपत्सिद्ध परिवर्त्य निर्वृत्तम्—कक्] विनिमय द्वारा प्राप्त,—कम् विनिमय द्वारा प्राप्त वस्तु या सम्पत्ति।

आपराह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [अपराह्ण+ठञ्] तीसरे पहर होने वाला।

आपस् (नपुं०) [आप्+असुन्] 1. जल- आपोभिर्मार्जनं कृत्वा 2 पाप।

आपातः [आ+पत्+घञ्] 1. टूट पड़ना, गिर पड़ना, हमला करना, आ धमकना, उतरना—सदापातभयास्पदि—कु० २।४५, गरुडापातविश्लिष्टभोगिबन्धनादास्त्रबन्धनः—रघु० १२।७६ 2. उतरना, गिरना, नीचे डालना 3. (क) वर्तमान क्षण या काल—आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः किं० ११।१२, आपातसुरसे भोगे निमग्नाः किं न कुर्वते—सा० द० भाग० १। ११५, मा० ५ (ख) प्रथम दर्शन—दे० 'आपाततः' 4. घटित होना, प्रकट होना।

आपाततः (अव्य०) [आपात+तसिल्] पहली निगाह में, हमला करते ही, तुरत।

आपादः [आ+पद्+घञ्] 1. अवाप्ति, प्राप्ति 2. पारितोषिक, पारिश्रमिक।

आपादनम् [आ+पद्+णिच्+ल्युट्] पहुँचाना, प्रकाशित करना, सुकर होना—द्रव्यस्य संस्थान्तरापादने—सिद्धा०।

आपानम् नकम् [आ+पा+ल्युट्] 1. मद्यपों की मंडली, पानगोष्ठी मुच्छ० ८, आपान पानकलिता देवनाभिप्रणीदिताः—महा०, 2. मद्यशाला, मदिरालय—ताम्बूलीना दलस्तत्र रचितापानभूमयः—रघु० ४।४२, कु० ६।४२, आपानकभुवस्तदः - का० ३२।

आपालिः [आ+पा+क्विप् = आपा, तदर्थमलति - अल्+इन्] जूँ।

आपीडः [आ+पीड्+घञ्, अच् वा] 1. पीड़ा देना, चोट पहुँचाना 2. निचोड़ना, भींचना 3. कण्ठहार, माला - चूडापीडकपोलमंडकुलनालन्मन्दाकिनीवारयः—मा० १।२, 4. (अतः) मुकुटमणि, तस्मिन्कुलापीडनिभे विपोडम्—रघु० १८।२९ मा० १।६, ७।

आपीन (भू० क० कृ०) [आप्+पी+क्त] बलवान्, मोटा, सबल,—नः कुर्वा,—आपीनोऽभ्युद्गतप्रयत्नात्—सिद्धा०,—नम् ऐन, थन का अग्रभाग—आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात्—रघु० २।१८।

आपूपिक (वि०) (स्त्री०—की) [अपूप+ठक्] 1. अच्छे पूए बनाने वाला 2. जिसे पूए अधिक पसंद हों, —कः पूए बनाने वाला, हलवाई, —कम् पूओं का ढेर।

आपूप्यः [अपूपाय साधुः वा० य, अपूप+ण्य वा] आटा।

आपूरः [आ+पृ+घञ्] 1. प्रवाह, धारा, परिमाण —स्वेदापूरो युवतिसरितां व्याप गण्डस्थलानि—शि० ७।७४, 2. भरना, पूरा भरना।

आपूरणम् [आ+पृ+ल्युट्] भरना, भर कर पूरा करदेना, गर्तेः कृतम् पंच० १।

आपूपम् [आ+पूप्+घञ्] धातु की एक प्रकार (संभवतः 'टीन')।

आप्रच्छा [आ+प्रच्छ्+अङ्+टाप्] 1. समालाप 2. निंदा करना, 3. जिज्ञासा।

आप्रोशनः [आपसा जलेन अशानम् इति—अश्+आनच्] भोजन से पूर्व और पश्चात् आचमन करने के मंत्र (क्रमशः अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, और अमृतापिधानमसि स्वाहा) याज्ञ० १।३१, १०६,—नम् भोजन के लिए स्थान बनाना, तथा भोजन को ढक देना।

आप्त (भू० क० कृ०) [आप्+क्त] 1. हासिल किया, प्राप्त किया, उपलब्ध किया—°कामः, °शापः आदि 2. पहुँचा हुआ, जो पकड़ा हुआ, 3. विश्वास योग्य, विश्वसनीय, प्रामाणिक (समाचार आदि), 4. विश्वस्त, गोपनीय, निष्ठावान् (पुरुष)—रघु० ३।१२, ५।३९, 5. घनिष्ट, सुपरिचित 6. तर्कसंगत, समझदारों से सम्मत,—प्तः 1. विश्वासयोग्य, विश्वसनीय, योग्य व्यक्ति, विश्वस्त पुरुष या साधन,—आप्तः यथार्थवक्ता—तर्क सं०, 2. संबंधी, मित्र, —निग्रहात्त्वमुराप्तानां वधाच्च सदृशानृजः—रघु० १२।५२ कथमाप्तवर्गाय्य भवत्या. -भालवि० ५, प्तम् 1. लब्धि 2. आप्तासाध्य। सम० काम (वि०) 1. जिसने अपनी इच्छा पूर्ण करली है 2. जिसने सांसारिक इच्छाओं और आसक्तियों का त्याग कर दिया है (—मः) परमात्मा,—गर्भा गर्भवती स्त्री, वचनम् किसी विश्वास योग्य या विश्वस्त व्यक्ति के शब्द—रघु० ११।४२, १५।४८,—वाक् विश्वास के योग्य, जिसके शब्द प्रामाणिक और विश्वसनीय होते हैं—एवमिन्द्रवानमवोचते यदिवेदिति ते सन्तु किलाप्तवाचः—श० ५।२५,(—स्त्री०) 1. किसी मित्र या विश्वसनीय पुरुष की सलाह 2. वेद, श्रुति, प्रामाणिक वचन (यह शब्द स्मृति इतिहास और पुराणों पर भी लागू होता है जो कि प्रामाणिक समझे जाते हैं)—आप्तवागनुमानाद्यां साध्य स्वां प्रति का कथा—रघु० १०।२८, श्रुतिः (स्त्री०) 1. वेद 2. स्मृतियाँ आदि।

आप्तिः (स्त्री०) [आप्+क्तिन्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना, लाभ, अधिगम 2. जा पहुँचना, (दुर्घटना में) ग्रस्त होना 3. योग्यता, अभिवृत्ति, औचित्य 4 सम्पत्ति, पूरा करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आप्य (वि०) [अपाम् इदम्—अण्, ततः स्वार्थे ष्यञ्] 1. जलमय 2. [आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य, प्राप्य ।

आप्यान (भू० क० कृ०) [आ+प्याय्+क्त] 1. मोटा, बलवान्, हृष्टपुष्ट, ताकतवर 2. प्रसन्न, संतुष्ट,—नम् 1. प्रेम 2. वृद्धि, बढ़ना ।

आप्यायनम् नम् [आ+प्याय्+ल्युट्, युक् वा] 1. पूरा भरना, मोटा करना, 2. संतोष, तृप्ति—देवस्याप्यायना भवति—पंच० १, 3. आगे बढ़ना, पदोन्नति करना 4. मोटापा 5. बल-वर्धक औषधि ।

आप्रच्छनम् [आ+प्रच्छ्+ल्युट्] 1. विदा करना, विदा माँगना 2. स्वागत करना, सत्कार करना ।

आप्रपदीन (वि०) [आप्रपदं आप्नोति—ख] पैरों तक पहुँचनेवाला (वस्त्र आदि) ।

आप्लवः, -प्लवनम् [आ+प्लु+अप्, ल्युट् वा] 1. स्नान करना, पानी में डुबा देना 2. चारों ओर पानी का छिड़काव करना । सम०—वतिन् या आप्लुतव्रतिन् (पुं०) दीक्षित गृहस्थ (जिसने ब्रह्मचर्य अवस्था पार करके गार्हस्थ्य अवस्था में पदार्पण किया है) तु० 'स्नातक' ।

आप्लावः [आ+प्लु+घञ्] 1. स्नान 2. छिड़काव 3. बाढ़, जल-प्लावन ।

आफूकम् [ईषत्फूत्कार इव फेनोऽत्र—पृषो०] अफीम ।

आबद्ध (भू० क० कृ०) [आ+बन्ध्+क्त] 1. बाँधा हुआ, बँधा हुआ 2. जमाया हुआ—रघु० १।४० 3. निर्मित, बना हुआ—आबद्धमंडला तापसपरिषद्—का० ४९, मंडलाकार बैठी हुई, 4. प्राप्त 5. बाधित,—द्धम् (क्ली० भी) 1. बाँधना, जोड़ना 2. जूता 3. आभूषण 4. स्नेह ।

आबन्धः—धनम् [आ+बन्ध्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बन्धन, बन्धान (आलं०)—प्रेमाबन्धविवर्धितः—रत्न० ३।१८, अमरु ३८, 2. जूवे की रस्सी 3. आभूषण, सजावट 4. स्नेह ।

आबर्हः [आ+बर्ह्+घञ्] 1. फाड़ डालना, खींचकर बाहर निकालना 2. मारडालना ।

आबाधः [आ+बाध्+घञ्] 1. कष्ट, चोट, तकलीफ, सताना, हानि—न प्राणाबाधमाचरेत्—मनु० ४।५४, ५१, या 1. पीड़ा, दुःख 2. मानसिक वेदना, आधि ।

आबुस्=दे० आवुस ।

आबोधनम् [आ+बुध्+ल्युट्] 1. ज्ञान, समझदारी 2. शिक्षण, सूचन ।

आब्द (वि०) (स्त्री० —ब्दी) [अब्द+अण्] बादल संबंधी या बादलों से उत्पन्न ।

आब्दिक (वि०) (स्त्री०—की) [अब्द+ठञ्, स्त्रियां ङीप्] वार्षिक, सालाना—आब्दिकः करः—मनु० ७।१२९, ३।१।

आभरणम् [आ+भृ+ल्युट्] 1 आभूषण, सजावट (आलं०)—किमित्थंप्रस्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४, प्रशमाभरणं पराक्रमः—कि० २।३२ 2. पालन पोषण करना ।

आभा [आ+भा+अङ्] 1. प्रकाश, चमक, कान्ति,—दीपाभां शलभा यथा—पंच० ४, 2. वर्ण, आभास, रूप —प्रशान्तमिव शुद्धाभम्—मनु० १२।२७ 3. सादृश्य, मिलना-जुलना—इन्हीं दो अर्थों को प्रकट करने के लिए यह शब्द प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त होता है—यम-दूताभम्—पंच० १५८, मरुत्सखाभम्—रघु० २।१० 4. प्रतिबिम्बित प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब ।

आभाषकः [आ+भाष्+ण्वुल्] कहावत, लोकोक्ति ।

आभाषः [आ+भाष्+घञ्] 1. सम्बोधन 2. प्रस्तावना, भूमिका ।

आभाषणम् [आ+भाष्+ल्युट्] 1. सम्बोधित करना, सम्बोधन 2. समालाप—सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः —रघु० २।५८ ।

आभासः [आ+भास्+अच्] 1. चमक, प्रकाश, कान्ति 2. प्रतिबिम्ब—तत्राजानं धिया नश्येदाभासास्तु घटः स्फुरेत्—वेदान्त, 3. (क) मिलना-जुलना, समानता (प्रायः समास के अन्त में)—नभश्च रुधिराभासम् —रामा० (ख) आकृति, छायापुरुष—तत्साहसाभा-सम् भा० २, सनकीपन की भांति दिखाई देता है, 4. अवास्तिक या आभासी रूप (जैसा कि 'हेत्वाभास' में) 5. हेत्वाभास, तर्क का रूप दे० 'हेत्वाभास' 6. आश्रय, प्रयोजन ।

आभास्वः (स्व) र (वि०) 1. शानदार, उज्ज्वल,—रः ६४ उपदेवताओं का समुदाय वाचक नाम ।

आभिचारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिचार+ठक्] 1. जादू संबंधी 2. अभिशापात्मक, अभिशापपूर्ण, —कम् अभिचार, इन्द्रजाल, जादू ।

आभिजन (वि०) (स्त्री० नी) [अभिजन+अण्, स्त्रियां ङीप्] जन्म से संबन्ध रखने वाला, कुलसूचक (नाम आदि)—तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना—कु० १।२६, —नम् कुलीनता, उच्च कुल में जन्म ।

आभिजात्यम् [अभिजात+ष्यञ्] 1. जन्म की श्रेष्ठता —रत्न० ३।१८ 2. कुलीनता 3. पांडित्य 4. सौंदर्य ।

आभिधा [अभिधा+अण्] 1. ध्वनि, शब्द 2. नाम, वर्णन—दे० 'अभिधा' ।

आभिधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिधान+ठक्] जो किसी शब्द-कोश में हो,—कः कोशकार ।

आभिमुख्यम् [अभिमुख+ष्यञ्] किसी के समुख होना -ख्यं याति—सामना करने या मिलने के लिए जाता है 2. के सामने होना, आमने सामने—नीताभि-मुख्यं पुनः—रत्न० १।२, 3. अनुकूलता ।

आभिरूप्यम्, आभिरूप्यम् [अभिरूप+वुञ्, ष्यञ् वा] सौंदर्य, लावण्य ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आभिषेचनिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिषेचन+ठञ्] राजतिलक से संबन्ध रखने वाला ··आभिषेचनिक मत्ते रामार्थमुपकल्पितम्—रामा०, महावी० ४।

आभिहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिहार—ठञ्] उपहार के रूप में देय,—कम् भेंट, उपहार।

आभीक्ष्ण्यम् [अभीक्ष्णस्य भावः—ष्यञ्] अनवरत आवृत्ति, बहुलमाभीक्ष्ण्ये—पा० ३।२।८१।

आभीरः [आ समन्तात् भियं राति-रा+क तारा०] ग्वाला, —आभीरवामनयनाहृतमानसाय दत्तं मनो यदुपते तदिदं गृहाण—उद्भट 2. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी,—री 1. ग्वाले की पत्नी 2. आभीरजाति की स्त्री। सम०—पल्लिः,—पल्ली (स्त्री०),—पल्लिका ग्वालों का आवासस्थान, ग्वालों के रहने का गाँव।

आभील (वि०) [आभियं लाति ददाति—ला+क] भयानक, भीषण,—लम् चोट, शारीरिक पीडा।

आभुग्न (वि०) [आ+भुज्+क्त] कुछ मुड़ा हुआ या झुका हुआ।

आभोगः [आ+भुज+घञ्] 1. घेरा, परिधि, विस्तार, विस्तारण (दीर्घीकरण), परिसर, पर्यावरण—अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोगस्तथोन्नतस्येति—श० १, गगनाभोगः नभो विस्तार 2. लंबाई-चौड़ाई, परिणाह—गंडाभोगात् —मेघ० ६२, विस्तृत गाल से 3. प्रयत्न 4. साँप का विस्तृत फण (जिसे वरुण छतरी के रूप में प्रयुक्त करता है) 5. उपभोग, तृप्ति-विषयाभोगेषु नैवादरः—शान्ति०।

आभ्यन्तर (वि०) (स्त्री०—री) [अभ्यन्तर+अण्] भीतरी, आन्तरिक, अंदरूनी।

आभ्यवहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभ्यवहार+ठक्] भोज्य, खाने के योग्य (आहारादिक)।

आभ्यासिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभ्यास+ठक्] 1. अभ्यासजनित 2. अभ्यास करने वाला, दोहराने वाला 3. निकटस्थ, पड़ोस में रहने वाला, संलग्न (आभ्यासिकः)।

आभ्युदयिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभ्युदय+ठक] 1. मङ्गलोन्मुख, समृद्धिजनक—अनाभ्युदयिकं श्रमणकदर्शनम्—मृच्छ० ८, 2. उन्नत, गौरवशाली, महत्त्वपूर्ण, —कम् श्राद्ध या पितरों की भेंट या उपहार, हर्ष का अवसर।

आम् (अव्य०) [अम्+णिच्—वा० ह्रस्वाभावः ··ततः क्विप्] निम्नांकित भावनाओं को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय—(क) अंगीकरण, स्वीकृति —'ओह'—'हाँ'—आं कुर्मः ··मालवि० १ (ख) प्रत्यस्मरण—आं ज्ञातम्—श० ३—ओह,—अब पता लगा (ग) निश्चयेन 'निश्चय ही' 'अवश्य ही'—आं चिरस्य खलु मतिर्बुद्धोऽस्मि (घ) उत्तर।

आम (वि०) [आम्यते ईषत् पच्यते—आ+अम्+कर्मणि घञ्,—तारा०] 1. कच्चा, अनपका, अपक्व (विप० 'पक्व') आमात्मम् मनु० ४।२२३ 2. हरा, अपरिपक्व 3. आधे में न पकाया हुआ (बर्तन आदि) 4. अनपचा,—मः 1. रोग, बीमारी 2. अजीर्ण, कच्चा 3. भूसी से अलग किया हुआ अनाज। सम०··आशयः अनपचे भोजन का पेट में) स्थान, उदर का ऊपरी भाग, पेट,—कुंभः कच्ची मिट्टी का घड़ा··हि० ४। ६६,—गंधि (नपुं०) कच्चे मांस या शव के जलने की दुर्गंध,—ज्वरः एक प्रकार का बुखार—तु०—स्वेदमामजूरं प्राज्ञः कोऽभ्यसा परिषिञ्चति—शि० २।५४, —त्वच् (वि०) कोमल त्वचा वाला,—पात्रम् बिना तपाया हुआ बर्तन,—विनाशं व्रजति क्षिप्रमामपात्रमिवांभसि—मनु० ३।१७९,—रक्तम् पैत्तिज,—रसः आमाशय में बनने वाला भोजन का अम्ल,—वातः कूबड़, —शूलः अजीर्ण की पीड़ा, गुर्दे का दर्द।

आमञ्जु (वि०) [प्रा० स०] प्रिय, मनोहर।

आमंडः [प्रा० स०] एरंड का पौधा।

आम (मा) यस्यम् [अमनस्+ष्यञ्] पीडा, शोक।

आमन्त्रण-णा [आ+मन्त्र+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. संबोधित करना, बुलाना, आवाज देना 2. विदा लेना, विदा होना 3. अभिवादन 4. निमन्त्रण ··अनिच्छामन्त्रणादृते—याज्ञ० १।११२ 5. अनुमति 6. समालाप, —अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम् सा० द० ६, 7. संबोधन कारक।

आमन्द्र (वि०) [आ+मन्द्+अच्] कुछ गम्भीर स्वर वाला, गड़गड़ाहट करने वाला—आमंद्राणां फलमविकलं लप्स्यते गर्जितानां—मेघ० ३४,—द्रः जरा •गभीर स्वर, गड़गड़ाहट।

आमयः [आ+मी+करणे अच्—तारा०, आमेन वा अयते इति आमयः] 1. रोग, बीमारी, मनोव्यथा -दर्शमयः— महावी० ४।२२, आमयस्तु रतिरागसंभवः—रघु० १९।४८, शि० २।१०, 2. हानि, क्षति।

आमयाविन् (वि०) [आमय+विन् नि०] बीमार, संदा-निपीडित, अतिसार रोग से ग्रस्त, ।

आमरणान्त, तिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रा० स० —आमरणं अन्तो यस्य · ब० स०] मृत्यु पर्यंत रहने वाला, आजीवन· आमरणान्ताः प्रणयाः कोपास्तत्क्षणभङ्गुराः ··हि० १।११८, अन्योन्यस्याव्यभिचारी भवेदामरणान्तिकः··मनु० ९।१०१,

आमर्दः [आ+मृद्+घञ्] 1. कुचलना, मसलना, निचोड़ना 2. विषम व्यवहार।

आमर्श [आ+मृश्+घञ्] 1. स्पर्श करना, रगड़ना 2. सलाह, परामर्श।

आमर्षः,—र्षणम् [आ+मृष्+घञ्, ल्युट् वा] क्रोध, कोप, असहनशीलता दे० 'अमर्ष'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमलकः,—की [आ+मल्+वुन्—स्त्रियां ङीप्] आंवले का वृक्ष,—कम् आंवला (फल),—हरामलकाभ्यां दार्ढिमानां—भाम० २।८

आमात्यः [अमात्य+अण्] मंत्री, परामर्शदाता—दे० 'अमात्य'।

आमानस्यम् [अमानस+ष्यञ्] पीड़ा, शोक।

आमिक्षा [आमिक्ष्यते सिच्यते ··मिष्+सक्—टाप्०] जमा हुआ दूध व छाछ, उबले और फटे दूध का मिश्रण, छेना।

आमिषम् [अम+टिषच्, दीर्घश्च] 1. मांस—उपानयत् पिङ्गमिवामिषस्य—रघु० २।६९ 2. (आलं०) शिकार, बलि, उपभोग्य वस्तु (राज्यम्)···रत्नान्वेषणदक्षाणां दृष्टामामिषता ययौ—रघु० १२।११ शिकार को गया, दश० १६४, 3. आहार, शिकार के लिए चारा 4. रिश्वत, 5. इच्छा, लालसा 6. उपभोग, सुखद और प्रिय वस्तु।

आमीलनम् [आ+मील्+ल्युट्] आंखों का बन्द करना या मूंदना।

आमुक्तिः (स्त्री०) [आ+मुच्+क्तिन्] पहनना, धारण करना (वस्त्र, कवचादिक)।

आमुखम् [प्रा० स०] 1. आरंभ 2. (नाटकों में) प्रावक्थन, प्रस्तावना (संस्कृत का प्रत्येक नाटक 'आमुख' से आरंभ होता है) सा० द० में दी गई परिभाषा—नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा, सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते। चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुतार्क्षेपिभिर्मिथः, आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा ॥ २८७,—खम् (अव्य०) मुंह के सामने।

आमुष्मिक (वि०) (स्त्री०—की) परलोक से संबंध रखने वाला—आमुष्मिकं श्रेयः—सुश्रुत, नैवालोच्य गरीयसीरपि चिरादामुष्मिकीयतिनाः···सा० द० ।

आमुष्यायण (वि०)—णः (स्त्री०—णी) [अमुष्य ख्यात्स्यापत्यं नडा° फक् अलुक्] सत्कुल में उत्पन्न, ऐसे उच्चवंशीय व्यक्ति का पुत्र या सुविख्यात कुल में उत्पन्न,—आमुष्यायणो वै त्वमसि—शत०, तदामुष्यायणस्य तत्रभवतः सुगृहीतनाम्नो भट्टगोपालस्य पौत्रः—मा० १, महावी० १।

आमोचनम् [आ+मुच्+ल्युट्] 1. ढीला करना, स्वतंत्र करना 2. उत्सर्जन, निकालना, सेवामुक्त करना 3. धारण करना, सांटना।

आमोटनम् [आ+मुट्+ल्युट्] कुचलना—प्रा० ३।

आमोदः [आ+मुद्+घञ्] 1. हर्ष, प्रसन्नता, खुशी 2. सुगंध (व्यापी), सौरभ—आमोदमुपजिघ्रन्ती स्वनिः-श्वासानुकारिणम् ··रघु० १।४३ आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते मृद्गन्धं न हि कुसुमानि धारयन्ति—सुभाषित, शि० २।२०, मेघ० ३१।

आमोदन (वि०) [आ+मुद्+ल्युट्] खुश करने वाला प्रसन्न करने वाला—नम् 1. खुशी, प्रसन्नता 2. सुगन्धित करना।

आमोदिन् (वि०) [आ+मुद्+णिनि] 1. प्रसन्न, 2. सुगन्धित भट्ट० १।३५।

आमोषः [आ+मुष्+घञ्] चोरी, डाका।

आमोषिन् (पुं०) [आ+मुष्+णिनि] चोर।

आम्नात (भू० क० कृ०) [आ+म्ना+क्त] 1. विचार किया हुआ, सोचा हुआ, कथित—समो हि शिष्टैराम्नातो वर्त्स्यन्त्यावामयः स (शत्रुः) च—शि० २।१०, 2. अधीत, आवृत्त 3. प्रत्यासृत 4. परम्पराप्राप्त,—तम् अध्ययन।

आम्नानम् [आ+म्ना+ल्युट्] 1. वेद या धर्म ग्रंथों का सस्वर पाठ या अध्ययन 2. उल्लेख, आवृत्ति।

आम्नायः [आ+म्ना+घञ्] 1. (क) पुण्य-परम्परा (ख) अतः वेद, सांगोपांग वेद (ब्राह्मण, उपनिषद् तथा आरण्यक सहित)—अधीती चतुष्वम्नायेषु—दश० १२०, आम्नायवचनं सत्यमित्यर्थं लोकसंग्रहः, आम्नायेभ्यः पुनर्वेदाः प्रसृताः सर्वतोमुखाः। महा० 2. परम्परा प्राप्त प्रचलन, कुल या राष्ट्रीय प्रथाएँ 3. आदर्श सिद्धान्त, 4. परामर्श या शिक्षण।

आम्बिकेयः [अम्बिका···ढक्+] धृतराष्ट्र और कार्तिकेय की उपाधि।

आम्भसिक (वि०) (स्त्री०—की) जलीय,—कः मछली।

आम्रः [अम्+रन्, दीर्घः] आम का वृक्ष—म्रम् आम का फल। सम०—कूटः एक पहाड़का नाम—सानुमानाम्रकूटः—मेघ० १७, पेशी अमचूर, अमावट, —वनम् आमों का बाग, अमराई सोहमाम्रवणं छित्त्वा—रामा०।

आम्रातः [आम्रं आम्ररसं अतति—अत्+अच् तारा०] 1. अमरे का पेड़,—तम्—अमरे का फल (अमरा आम जैसा एक खट्टा फल होता है)।

आम्रातकः [आम्रात+कन्] 1. अमरे का वृक्ष 2. अमावट।

आम्रेडनम् [आ+म्रिड्+णिच्+ल्युट्] पुनरुक्ति, शब्द या ध्वनि की आवृत्ति।

आम्रेडितम् [आ+म्रिड्+णिच्+क्त] 1. शब्द या ध्वनि की आवृत्ति 2. (व्या०) द्वित्व होना, (द्वित्व हुए शब्दों में से) दूसरा शब्द।

आम्लः—म्ला [आ सम्यक् अम्लो रसो यस्य—ब० स० स्त्रियां टाप्] इमली का पेड़—म्लम् खटास, अम्लता।

आम्लिः (म्ली)का [आम्ल+कन्+टाप्, इत्वम्, पक्षे पृषो० दीर्घः] 1. इमली का वृक्ष 2. पेट की अम्लता (खटास)।

आयः [आ+इ+अच्, अयः+घञ् वा] 1. पहुँचना, आ जाना 2. धनागम, धनार्जन (विप० 'व्ययः') 3. आमदनी, राजस्व, प्राप्त द्रव्य—सामेषु स्वामिग्राह्यो भाग आयः—सिद्धा०, याज्ञ० १।३२२, ३२६, मृच्छ० २।६,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनु० ८।४१९, आयाधिकं व्ययं करोति—अपनी आमदनी से अधिक खर्च करता है, 4. नफा, लाभ 5. अन्तःपुर का रक्षक। सम०—व्ययौ (द्वि० व०) आय और व्यय।

आयःशूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [अयःशूल+ठक्] सक्रिय, परिश्रमी, अथक,—कः जो अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए सबल उपायों का सहारा लेता है (तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको जनः) तु० काव्य० १०, अयःशूलेन अन्विच्छति इति आयःशूलिकः।

आयत (भू० क० कृ०) [आ+यम्+क्त] 1. लम्बा—शतमप्यार्ध (योजनम्) आयता महा० 2. विकीर्ण, अतिविस्तृत 3. बड़ा, विस्तृत, गम्भीर 4. खींचा हुआ, आकृष्ट 5. संयत, नियन्त्रित,—तः आयताकार (रेखागणित में)। सम०—अक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी)—ईक्षण,—नेत्र,—लोचन (वि०) बड़ी आंखों वाला,—अपांग (वि०) लम्बी कोर की आंखों वाला,—आयतिः (स्त्री०) दीर्घ निरंतरता, बहुत देर बाद आने वाला भविष्य—शि० १४।५,—कदली केले का पौधा (पेड़),—लेख (वि०) दीर्घवक्राकार—कु० १।४७,—स्तूः (पुं०) चारण, भाट।

आयतनम् [आयत-तेऽत्र आयत्+ल्युट्] 1. स्थान, आवास, घर, विश्रामस्थल (आलं० भी)—शूलायतनाः—मुद्रा० ७, अल्लाद, स्नेहस्तदेकायतनं जगाम—कु० ७।५, उसमें केन्द्रित हो गया, रघु० ३।२६, सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनम्—का० १०३, (अतः) आश्रय, घर 2. यज्ञ अग्नि का स्थान, वेदी 3. पवित्र स्थान, पुण्यभूमि—जैसा कि—देवायतनं, महायतनम् आदि में 4. मकान बनाने का स्थान।

आयतिः (स्त्री०) [आ+या+क्तिन्] 1. लम्बाई, विस्तार 2. भावी समय, भविष्यत्, °भंगः—का० ४४—भूयसी तव यदायतिः वि० १४।५, रहस्यत्यापदुपेतमायतिः—कि० २।१४, 3. भावी फल या परिणाम—आयतिं सर्वकार्याणां तदादौ च विचारयेत्—मनु० ७।१७८, कि० १।१५, २।४३, 4. महिमा, प्रताप 5. हाथ फैलाना, स्वीकार करना, प्राप्त करना 6. कर्म—यथाभिमं ध्रुवं लब्ध्वा कृशमप्यायतिक्षमम्—मनु० ७।२०८ (कर्मक्षमम्—कुल्लूक) 7. नियन्त्रण, (मन का) निग्रह।

आयत्त (भू० क० कृ०) [आ+यत्+क्त] 1. अधीन, आश्रित, सहारा लिए हुए (अधि० के साथ या समास में)—दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्—वेणी० ३।३३, भाग्यायत्तमतः परम्—या० ४।१६, 2. वश्य, विनीत।

आयत्तिः (स्त्री०) [आ+यत्+क्तिन्] 1. आश्रय, अधीनता 2. स्नेह 3. सामर्थ्य, शक्ति 4. हद, सीमा 5. युक्ति, उपाय 6. महिमा, प्रताप 7. आचरण की स्थिरता।

आयत्यातिक्यम् [अयत्यातेव+ष्यञ्] अयोग्यता, अनुपयुक्तता अनौचित्य=शि० २।५६।

आयमनम् [आ+यम्+ल्युट्] 1. लम्बाई, विस्तार 2. नियंत्रण, निग्रह 3. (धनुष की भांति) तानना।

आयल्लकः [आयल्लिव लीयते अत्र ली+ड (बा०) संज्ञायां कन्] धैर्य का अभाव, प्रबल लालसा।

आयस (वि०) (स्त्री०—सी) [आयसो विकारः अण्] लोहे निर्मित, लोहा धातुनिर्मित—आयसं दण्डमेव वा—मनु० ८।३१४, सखि मा जल्प तवायसी रसज्ञा—भामि० २।५९,—सी कवच, बख्तर,—सम् 1. लोहा, मूढ बुद्धिमिवात्मानं हैमीभूतमिवायसम्—कु० ६।५५, स चकर्ष परस्मात्तदयस्कान्त इवायसम् रघु० १७।६३, 2. लौहनिर्मित वस्तु 3. हथियार।

आयस्त (भू० क० कृ०) [आ+यस्+क्त] 1. पीड़ित, दुःखी 2. चोट खाया हुआ 3. क्रुद्ध, नाराज 4. तीक्ष्ण।

आयानम् [आ+या+ल्युट्] 1. आना, पहुँचना 2. नैसर्गिक मनोभाव, स्वभाव।

आयामः [आ+यम्+घञ्] 1. लम्बाई—तिर्यगायामशोभी—मेघ० ५७, 2. प्रसार, विस्तार—कि० ७।६, 3. फैलाना, विस्तार करना 4. निग्रह, नियंत्रण, रोकथाम—प्राणायामपरायणाः—भग० ४।२९, प्राणायामः परं तपः—मनु० २।८३।

आयामवत् (वि०) [आयाम+मतुप्] विस्तारित, लम्बा—विक्रम० १।४, शि० ११।६५।

आयासः [आ+यस्+घञ्] 1. प्रयत्न, प्रयास, कष्ट, कठिनाई, श्रम—बहुलायास—भग० १८।२४, तु० 'अनायास' 2. थकावट, थकन, स्नेहमूलानि दुःखानि देहजानि भयानि च, शोकहर्षौ तथायासः सर्वस्नेहात् प्रवर्तते। महा०।

आयासिन् (वि०) [आ+यस्+णिनि] 1. परिश्रान्त, थका हुआ 2. प्रयास करने वाला, प्रबल उपयोग करने वाला—मनस्तु तद्भवदर्शनायासि—श० २।१, ५।१।

आयुक्त (भू० क० कृ०) [आ+युज्+क्त] 1. नियुक्त, कार्यभार-युक्त (सर्व० या अधि०) भट्टि० ८।११५, 2. संयुक्त, प्राप्त,—क्तः मंत्री, अभिकर्ता या कमिश्नर।

आयुधः घम्- [आ+युध्+घञ्] हथियार, ढाल, शस्त्र (यह तीन प्रकार के हैं—(क) प्रहरण—खड्गादिक (ख) हस्तयुक्त—चक्रादिक (ग) यंत्रमुक्त—बाणादिक;—न मे त्वदन्येन विलोढमायुधम्—रघु० ३।६३। सम०—अ(आ)गारम् शस्त्रागार, हथियार गोदाम—अङ्गमप्यायुधागारं प्रविश्यायुधसहायो भवामि—वेणी० १, मनु० ९।२८०,—जीविन् (वि०) शस्त्रास्त्र से जीवन-निर्वाह करने वाला, (—पुं०) योद्धा, सिपाही।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयुधिक (वि०) [आयुध+ठञ्] शस्त्रास्त्रों से सम्बन्ध रखने वाला—**कः** सिपाही, सैनिक।

आयुधिन्, आयुधीय (वि०) [आयुध+इनि. छ वा] हथियारों को धारण करने वाला, (पुं०—**धी**)—**धीयः**, योद्धा।

आयुष्मत् (वि०) [आयुस्+मतुप्] 1. जीवित, जीता हुआ 2. दीर्घायु (नाटकों में प्रायः वृद्ध पुरुष सत्कुलोद्भव व्यक्तियों को इसी नाम से सम्बोधित करते हैं; उदा० एक सारथि राजा को 'आयुष्मन्' कह कर सम्बोधित करता है; ब्राह्मण को भी अभिवादन करने के लिए इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है तु० मनु० ४।१२५,—आयुष्मन्, भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने) 3. दीर्घजीवी, चिरंजीवी।

आयुष्य (वि०) [आयुस्+यत्] लम्बा जीवन करने वाला, जीवनप्रद, जीवनसंधारक—इदं यशस्यमायुष्यमिदं निः श्रेयसं परम्—मनु० १।१०६, ३।१०६,—**ष्यम्** जीवन प्रद शक्ति।

आयुस् (नपुं०) [आ+इ+उस्] 1. जीवन, जीवनावधि —दीर्घमायुः—रघु० ९।६२, तक्षकेणापि दष्टस्य आयुर्मणिं रक्षति हि २।१६, शतायुर्वै पुरुषः—ऐत० 2. जीवन दायक शक्ति 3. आहार (वाक्य रचना में 'आयुस्' का अन्तिम 'स्' बदलकर अघोष व्यंजनों से पूर्व 'ष्' तथा घोष व्यंजनों से पूर्व 'र्' बन जाता है)। **सम०—कर** (वि०) (स्त्री०—री) दीर्घजीवन करने वाला,—**काम** (वि०) दीर्घायु या स्वास्थ्य की कामना करने वाला,—**ज्ञेयम्** 1. औषधि 2. घी, —**वृद्धिः** (स्त्री०) लम्बा जीवन दीर्घायु,—**वेदः** स्वास्थ्य या औषधि-विज्ञान—**वेदवृत्**, —**वेदिक्**, —**वेदिन्** (वि०) औषध से सम्बन्ध रखने वाला, (—पुं०) वैद्य, डाक्टर,—**शेषः** जीवन का शेष भाग, °**शेषतया**—**पंच०** १।२, जीवन का ह्रास या अवसान, —**स्तोमः** (आयुष्टोमः) दीर्घायु पाने के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

आये (अव्य०) [प्रा० स०] स्नेहबोधक सम्बोधनात्मक अव्यय।

आयोगः [आ+युज्+घञ्] 1. नियुक्ति 2. क्रिया, कार्यसम्पादन 3. पुष्पोपहार 4. समुद्रतट या नदी किनारा।

आयोगवः [अयोगव+अण्] शूद्र द्वारा वैश्य स्त्री से उत्पन्न पुत्र (इसका व्यवसाय बढ़ईगिरी है °नु० मनु० १०।४८),—**वी** इस जाति की स्त्री।

आयोजनम् [आ+युज्+ल्युट्] 1. सम्मिलित होना 2. पकड़ना, ग्रहण करना 3. प्रयास, प्रयत्न।

आयोधनम् [आ+युध्+ल्युट्] 1. युद्ध, लड़ाई, संग्राम —आयोधने क्रूरगतिं सहाय—रघु० ६।४२, आयोधनाभसरतां स्थिति वीर याते ५।७१, 2. युद्धभूमि।

आरः—**रम्** [आ+ऋ+घञ्] 1. पीतल 2. अशोधित लोहा 3. कोण, किनारा, —**रः** 1. मंगल ग्रह 2. शनिग्रह,—**रा** 1. मोची की रांपी, 2. चाकू, क्षत-शलाका। सम०—**कूटः**,—**टम्** पीतल, उत्तर० ५।१४।

आरक्ष (वि०) [आ+रक्ष्+अच्] परिरक्षित,—**क्षः**, —**क्षा** 1. प्ररक्षण, परिरक्षण, रक्षक (पहरेदार, सन्तरी)—आरक्षे मध्यमे स्थितान्—रामा०, शा० ३।५, मनु० ३।२०४ 2. हाथी की कुंभसंधि, 3. सेना।

आरक्ष (क्षि) **क** (वि०) [आ+रक्ष्+ण्वुल, आरक्ष+ठञ् वा] 1. पहरेदार, सन्तरी 2. देहाती या पुलिस का दण्डाधिकारी (मैजिस्ट्रेट)।

आरटः [आ+रट्+अच्] नट, नाटक का पात्र।

आरणिः [आ+ऋ+अनि] भँवर, जलावर्त।

आरण्य (वि०) (स्त्री०—**ण्या**,—**ण्यी**) [अरण्य+अण्, स्त्रियां टाप्, ङीप् वा] जंगली, जंगल में उत्पन्न।

आरण्यक (वि०) [अरण्य+वुञ्] वन संबंधी, वन में उत्पन्न, जंगली, जंगल में उत्पन्न,—**कः** जंगल में रहने वाला, जंगली, वनवासी,—तपः प्रदुग्धगमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः—शा० २।१३,—**कम्** आरण्यक ग्रंथ, (यह ब्राह्मणग्रंथों से संबद्ध धार्मिक तथा दार्शनिक रचनाओं का एक समुदाय है जो या तो जंगल में रचे गये हैं या वहाँ उनका अध्ययन किया गया है) —अरण्येऽनूच्यमानत्वात् आरण्यकम्—बृहद०, अरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम्।

आरतिः (स्त्री०) [आ+रम्+क्तिन्] 1. विराम, रोक 2. प्रतिमा के सामने दीप-दान, या कपूर-दीपक घुमाना, आरती उतारना।

आरनालम् [आ+ऋ+अच्, नल्+घञ्] आरो नालों पचो यस्य ब० स०] माँड, चावल का पसाव।

आरब्धिः (स्त्री०) [आ+रभ्—क्तिन्] आरम्भ, शुरू।

आरभटः [आरभ्+अट] उपक्रमशील या साहसी पुरुष, —**टः**—**टी** दिलेरी, विश्वास, —**टौ** 1. नाट्यकला की शैली, दे० सा० द० ४२० तथा आगे 2. साहित्य की एक शैली 3. विशेष नृत्यशैली।

आरम्भः [आ+रभ्+घञ्, मुम् च] 1. आरम्भ, शुरू; °**उपायः** प्रारंभिक योजना—नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छाम् मेघ० ९९, 2. प्रस्तावना 3. कार्य, व्यवसाय, कृत्य, काम—आरम्भैः सदृशारंभः—रघु० १।१५, ७।८१, भग० १२।१६, 4. त्वरा, वेग 5. प्रयास, प्रयत्न—भग० १४।१२, 6. द्रव्य, कर्म—चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे—रघु० २।३१, 7. मार डालना, हत्या करना।

आरम्भणम् [आ+रभ्+ल्युट् मुम् च] 1. क्रीड़ा में करना, पकड़ना 2. पकड़ने का स्थान, दस्ता, हैंडा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर (रा) वः [आ + रु+अप्, घञ् वा] 1. आवाज़ 2. चिल्लाना, गुर्राना ।

आरस्यम् [अरस+ष्यञ्] नीरसता, स्वादहीनता ।

आरा=दे० 'आरे' के नीचे ।

आरात् (अव्य०) [आ+रा वा० आति—तारा० 'आर' का अपा० ए० व०] 1. निकट, के पास (अपा० के साथ या स्वतन्त्र)—तमर्ज्यमारादभिवर्तमानं—रघु० २। १०, ५।३ 2. से दूर, (कर्म० के साथ इन दोनों अर्थों में) भि० ३।३१, दूर, दूरस्थ 3. फासले पर, दूरी से उत्तर० २।२४ ।

आरातिः [आ+रा+क्तिच्] शत्रु ।

आरातीय (वि०) [आरात्+छ] 1. निकट आसन्न 2. दूर का ।

आरात्रिकम् [अरात्रावपि निर्वृत्तम् ठञ्] 1. रात के समय भगवान् की मूर्ति के सामने आरती उतारना—सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारान् आरात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् 2. आरती उतारने का दीपक—भिरसि निहितभारं पात्रमारात्रिकस्य भ्रमयति मयि भूयस्ते कृपाईः कटाक्षः—शंकर ।

आराधनम् [आ+राध्+ल्युट्] 1. प्रसन्नता, सन्तोष, सेवा (खातिर)—येषामाराधनाय—उत्तर० १, यदि वा जानकीमपि आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा—१।१२ 2. सेवा, पूजन उपासना, अर्चना, (देवता की), - आराधनायास्य सखीसमेताम्—कु० १।५८, भग० ७।२२ 3. प्रसन्न करने के उपाय—इदं तु ते भक्तिनम्रं सतामाराधनं वपुः—कु० ६।७३ 4. सम्मान करना, आदर करना—उत्तर० ४।१७ 5. पकाना 6. पूर्ति, दायित्व निभाना, निष्पत्ति,—ना सेवा, —नी (देवता की) पूजा, उपासना, अर्चना ।

आराधयित् (वि०) [आ+राध्+णिच्+तृच्] उपासक, विनम्र सेवक, पूजक ।

आरामः [आ+रम्+घञ्] 1. खुशी, प्रसन्नता - इन्द्रियारामः—भग० ३।१६, आत्मारामाः—वेणी० १।३१, एकारामः—याज्ञ० ३।५८ 2. बाग, उद्यान प्रियारामा हि वैदेह्यासीत्—उत्तर० २, आरामाधिपतिर्विवेकविकलः—भामि० १।३१ ।

आरामिकः [आराम+ठक्] माली ।

आरालिकः [अराल+ठक्] रसोइया ।

आरुः [ऋ+उण्] 1. सुअर 2. केंकड़ा ।

आरुक् (वि०) [ऋ+ऊ+क्तिन्] भूरे रंग का ।

आरूढ (भू० क० कृ०) [आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ, ऊपर बैठा हुआ—आरूढो वृक्षो भवता सिद्धा०, प्रायः कर्तृवाच्य में प्रयुक्त—आरूढमद्रीन्—रघु० ६।७७ ।

आरूढिः (स्त्री०) [आ+रुह्+क्तिन्] चढ़ाव, ऊपर उठना, उन्नयन (आलं० व या०)—अत्यारूढिर्भवति महतामप्यधश्चंशनिष्ठा—श० ४, ५।१ ।

आरेकः [आ+रिच्+घञ्] 1. रिक्त करना, 2. संकुचित करना ।

आरेचित [आ+रिच्+णिच्+क्त] भींची हुई या सिकोड़ी हुई (आँख की भौंहें) ।

आरोगणम् [अरोग+ष्यञ्] अच्छा स्वास्थ्य ।

आरोपः [आ+रुह्+णिच्+घञ्, पुकागमः] 1. एक वस्तु के गुणों को दूसरी वस्तु में आरोपित करना—वस्तुव्यवस्थारोपोऽप्यारोपः वे० सू०, गले मढ़ना —दोषारोपो गुणेष्वपि—अमर० 2. मान लेना (जैसा कि 'सारोपा लक्षणा' में) 3. अभ्यारोपण 4. बोझा लादना, दोषारोपण करना, इलज़ाम लगाना ।

आरोपणम् [आ+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. ऊपर रखना या जमाना, रखना—आन्वीक्षिकीमारोपणमन्वभूताम् रघु० ७।२०, कु० ७।५८ (आल) संस्थापन, जमा देना—अधिकारारोपणम्- नृ० २, 2. पौधा लगाना, 3. धनुष पर चिल्ला चढ़ाना ।

आरोहः [आ+रुह्+घञ्] 1. चढ़ने वाला, सवार, जैसा कि 'अश्वारोहः' तथा 'स्यंदनारोह' 2. चढ़ाव, ऊपर जाना, सवारी करना 3. ऊपर उठी हुई जगह, उभार, ऊँचाई 4. हेकड़ी, घमंड 5. पहाड़, ढेर 6. स्त्री की छाती, नितम्ब,—सा रामा न दरारोहाः—उद्भट, आरोहैर्निबिडघृहन्नितम्बविवरैः—शि० ८।८, 7. लम्बाई, 8. एक प्रकार की माप 9. स्नान ।

आरोहकः [आ+रुह्+ण्वुल्] सवार, चालक (हाँकने वाला) ।

आरोहणम् [आ+रुह्+ल्युट्] 1. सवार होने, ऊपर चढ़ने या उदय होने की क्रिया—आरोहणार्थं नवमौर्वनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम्—कु० १।३९, 2. (घोड़े की) सवारी करना 3. जोना, सोढ़ी ।

आर्किः [अर्कस्यायत्यम्—इञ्] अर्क का पुत्र, यम की उपाधि, शनि ग्रह, कर्ण, सुग्रीव, वैवस्वत मनु ।

आर्क्ष (वि०) (स्त्री०—र्क्षी) [ऋक्ष+अण्] तारकीय, तारों द्वारा व्यवस्थित अथवा तारों से सम्बद्ध ।

आर्घ्य [आ—अर्घ्+अच्—टाप्] एक प्रकार की पीली मधु-मक्खी ।

आर्घ्यम् [आर्घी+यत्] जंगली शहद ।

आर्च (वि०) (स्त्री०—र्ची) [अर्चा अस्त्यस्य अण्] भक्त, पूजा करने वाला, पुण्यात्मा ।

आर्चिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऋच्+ठञ्] ऋग्वेद संबंधी, या ऋग्वेद की व्याख्या करने वाला,—कम् सामवेद का विशेषण ।

आर्जवम् [ऋजु+अण्] 1. सरलता 2. स्पष्टवादिता, सद्भाव, खरापन, ईमानदारी, निष्कपटता, उदारहृदय होना- अहिंसा क्षान्तिरार्जवं—भग० १३।७, क्षेत्रमार्जवस्य—का० ४५—3. सादगी, विनम्रता ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्जुनिः [अर्जुनस्यापत्यम्-इञ्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।

आर्त (वि०) [ऋ+क्त] 1. कष्ट प्राप्त, उपहत, पीड़ित, प्रायः समास में —कामार्त, क्षुधार्त, तृषार्त, आदि 2. बीमार, रोगी —आर्तस्य यथौषधम्—रघु० १।२८, मनु० ४।२३६ 3. दुःखित, कष्टग्राप्त, संकटग्रस्त, अत्याचार-पीड़ित, अप्रसन्न- आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि श० १।११, रघु० २।२८, ८।३१, १२।१०, ३२ । सम० नादः, —ध्वनिः, —स्वरः दर्दभरी आवाज, बन्धुः, —साधुः दुःखियों का मित्र।

आर्तव (वि०) (स्त्री०—वा,— वी) [ऋतुरस्य प्राप्तः—अण्] 1. ऋतु के अनुरूप ऋतुसम्बन्धी, मौसमी —अभिभूय विभूतिमार्तवीम् -रघु० ८।३६, कु० ४।६८, वसन्तकालीन —रघु० ९।२८, 2. मासिक स्राव सम्बन्धी, —वः वर्ष का अनुभाग, वर्ष 3. घोड़ी—वम् 1. (स्त्रियों का) मासिक स्राव —तोयगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमार्तवदर्शने मनु० ४।४०, ३।४८ 2. मासिक-स्राव के पश्चात् गर्भाधान के लिए उपयुक्त दिन 3. फूल।

आर्तवेयी रजस्वला स्त्री।

आर्तिः (स्त्री०) [आ+ऋ+क्तिन्] 1. दुःख, कष्ट, व्यथा पीड़ा, क्षति (शारीरिक या मानसिक)-आर्ति न पश्यसि पुरुषस्तस्यार्थे—विक्रम० २।१६, आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्—मेघ० ५३ 2. मानसिक वेदना, दारुण दुःख —उत्कण्ठार्ति—अमरु २९, 3. बीमारी, रोग 4. धनुष की नोक 5. विनाश, विध्वंस।

आर्त्विजीन (वि०)(स्त्री०—नी) [ऋत्विजं तत्कर्मार्हति खञ्] ऋत्विज् के पद के उपयुक्त।

आर्त्विज्यम् [ऋत्विज्+ष्यञ्] ऋत्विज् का पद, मर्यादा।

आर्घ (वि०) (स्त्री०—र्घी) 1. किसी वस्तु या पदार्थ से सम्बन्ध रखने वाला 2. अर्थ सम्बन्धी, अर्थान्वित, (विप० शाब्द) आर्थी उपमा आदि।

आर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्ध+ठक्] 1. सार्धक 2. बुद्धिमान् 3. धनवान् 4. तथ्यपूर्ण, वास्तविक।

आर्द्र (वि०) [अर्द्+रक् दीर्घश्च] 1. गीला, नमीदार, सीला तन्त्रीमार्द्रा नयनसलिलैः—मेघ० ८०, ४३, 2. अशुष्क, हरा, रसीला 3. ताजा, नया -कामीवार्द्रापराधः—अमरु २, कान्तमार्द्रापराधम्—मालवि० ३। १२, 4. मृदु, कोमल —प्रायः स्नेह, दया, तथा करुणा जैसे शब्दों के साथ क्रमशः "खिला हुआ" "पसीजा हुआ" "पिघला हुआ" अर्थ प्रकट करता है —स्नेहार्द्र-हृदय—दया से पिघले हुए दिल वाला,—र्क छठा नक्षत्र। सम०—काष्ठम् हरी लकड़ी,—पृष्ठ(वि०) सीधा हुआ, विश्रांत किया हुआ आर्द्रपृष्ठाः क्रियन्तां वाजिनः—श० १,—शाक ताजा अदरक।

आर्द्रकम् [आर्द्रा+वुन्] हरा अदरक, गीला अदरक।

आर्द्रयति (ना० धा०—पर०) गीला करना, तर करना —भट्टि० २।५१।

आर्ध (वि०) [अर्ध+अण्] (समास के आरम्भ में ही प्रयुक्त) आधा। सम०—धातुक (वि०) (स्त्री०—की) (व्या० में) आधी धातुओं में लागू होने वाला, —(कम्) आर्धधातुक छः गणों से सम्बन्ध रखने वाली विभक्तियाँ व प्रत्यय (विप० 'सार्वधातुक') —मासिक (वि०) (स्त्री०—की) आधे महीने रहने वाला।

आर्धिक (वि०) (स्त्री० की) [अर्ध+ठक्] आधे का साझीदार, आधे से संबंध रखने वाला, —कः जो आधी फसल के लिए खेत जोतता है, वैश्य स्त्री से उत्पन्न सन्तान जिसका पालन-पोषण ब्राह्मण के द्वारा होता है, दे० उद्धरण, 'अधिक' के नीचे।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्यन, या अर्य के योग्य 2. योग्य, आदरणीय, सम्माननीय, कुलीन, उच्चपदस्थ यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः—श० १।२२, यह शब्द प्रायः नाटकोपयोगी भाषा में सम्मान सूचक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, संबोधन की आदरपूर्ण पद्धति है, आर्य सम्माननीय या आदरणीय श्रीमान् जी। आर्य आदरणीय या सम्माननीय श्रीमती जी। लोगों को संबोधित करने के लिए 'आर्य' शब्द के प्रयोग के निम्नांकित नियम हैं—(क) बाह्मणों नटीसूत्रधारावार्याणामाचार्याणां परस्परम् (ख) अवस्थेष्वतमर्यादाच्वो मध्येऽर्येति चापरः (ग) (वक्तव्यः) अमात्य आर्येति चेतरैः (घ) स्वेच्छया नार्याभिर्विप्रैः आर्येति चेतरैः सा० द० ४३१, 3. अत्युत्कृष्ट, मनोहर, श्रेष्ठ,— र्यः 1. ईरान के लोग, हिन्दूजाति जो अनार्य, दस्यु तथा दास से भिन्न है। 2. जो अपने देश के नियम तथा धर्म के प्रति निष्ठावान् है—कर्तव्यमाचरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्, तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृतः। 3. पहले तीन वर्ण (विप० शूद्र) 4. सम्माननीय या आदरणीय पुरुष प्रतिष्ठित व्यक्ति 5. सत्कुलोत्पन्न पुरुष 6. सच्चरित्र पुरुष 7. स्वामी, मालिक 8. गुरु, अध्यापक 9. मित्र 10. वैश्य 11. श्वसुर (जैसा कि "आर्यपुत्र" में) 12. बुद्धभगवान्,—र्या 1. पार्वती 2. श्वश्रू 3. आदरणीय महिला 4. छन्द, दे० परिशिष्ट। सम०—आवर्तः श्रेष्ठ और उत्तम (आर्य) लोगों का आवास, विशेषतः वह भूमि जो पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक फैली हुई है तथा जिसके उत्तर में हिमालय एवं दक्षिण में विन्ध्य पर्वत है -तु० मनु० २।२२, आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्, तयोरेवान्तरं गिर्योः (हिमविन्ध्ययोः) आर्यावर्तं विदुर्बुधाः। १०।३४ भी—भूमृत् (वि०) 1. श्रेष्ठ पुरुषों से सम्मानित, श्रेष्ठ पुरुषों का मित्र, सम्मा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ननीय व्यक्तियों के पास जिसकी पहुंच अनायास होती है,—तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनुः रघु० २।३२, 2. आदरणीय, भद्र,—देशः वह देश जहां आर्य लोग बसे हुए हैं,—पुत्रः 1. सम्माननीय व्यक्ति का बेटा 2. आध्यात्मिक गुरु का पुत्र 3. बड़े भाई के पुत्र का सम्मान सूचक पद, पत्नी का पति के लिए तथा सेनापति का राजा के लिए सम्मानसूचक पद 4. श्वसुर का पुत्र अर्थात् पति (प्रत्येक नाटक में, बहुधा संबोधन के रूप में, अन्तिम दो अर्थों के लिए प्रयुक्त), - प्राय (वि०) 1. जहां आर्य लोग बसे हों 2. जहां प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते हों,—मिश्र (वि०) आदरणीय, योग्य, पूज्य (—श्रः) सज्जनपुरुष, गौरवशाली पुरुष, (ब० व०) 1. योग्य और आदरणीय व्यक्ति, सभ्य या सम्माननीय व्यक्ति—आर्यमिश्रान् विज्ञापयामि—विक्रम० १, 2. श्रद्धेय, मान्यवर (आदरयुक्त संबोधन) —नन्वार्यमिश्रैः प्रथममेव आज्ञप्तम्—श० १, - लिंगिन् (पुं०) पाखंडी —वृत्त (वि०) सदाचारी, भद्र—रघु० १४।५५—वेश (वि०) अच्छी वेशभूषा में, आदरणीय वेश धारण किये हुए,—सत्यम् अत्युत्कृष्ट और अलौकिक सत्य —हृद्य (वि०) जो श्रेष्ठ व्यक्तियों को रुचिकर हो।

आर्यकः [आर्य+स्वार्थे कन्] 1. सम्माननीय या आदरणीय पुरुष, 2. बाबा, दादा।

आर्यकर्म, आर्यिका [आर्या+कन् ह्रस्वः, पक्षे इत्वम् | आदरणीय महिला।

आर्द (वि०) (स्त्री०—र्दी) [ऋषेरिदम्—अण्] 1. केवल ऋषि द्वारा प्रयुक्त, ऋषिसंबंधी, आर्ष, वैदिक (विप० 'लौकिक या श्रेष्ठ') आर्षः प्रयोगः, संवृद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे- सिद्धा० 2. पवित्र, पावन: अतिमानव, - षः विवाह का एक प्रकार, आठभेदों में से विवाह का एक भेद जिसमें दुलहिन का पिता वर महोदय से एक या दो जोड़ी गाय प्राप्त करता है- आदायार्षस्तु गोद्वयम्- याज्ञ० १।५९, मनु० ९।१९६, विवाह के आठ प्रकारों के नामों के लिए दे० 'उद्वाह', —यंत्र पावन पाठ, वेद।

आर्षभ्यः [ऋषभ+ष्यञ्] बछड़ा जो पर्याप्त बड़ा हो गया हो, काम में लाया जा सके या सांड बनाकर छोड़ा जा सके।

आर्षेय (वि०) (स्त्री०—यी) [ऋषि+ढक्] 1. ऋषि से संबंध रखने वाला 2. योग्य, महानुभाव, आदरणीय।

आर्हत (वि०) (स्त्री० ती) [अर्हत्+अण्] जैनधर्म के सिद्धांतों से संबंध रखने वाला, - तः जैन, जैनधर्म का अनुयायी,— तम् जैनधर्म के सिद्धान्त।

आर्हन्ती,—त्यम् [अर्हत्+ष्यञ्, नुम् च] योग्यता।

आलः—लम् [आ+अल्+अच्] 1. अंडों का ढेर, मछली आदि के अंडे, 2. पीला संखिया।

आलगर्दः [अलगर्द+अण्] पनिया सांप।

आलभनम् [आ+लभ्+ल्युट्] 1. पकड़ना, कब्जा करना 2. छूना 3. मार डालना।

आलम्बः [आ+लम्ब्+घञ्] 1. आश्रय 2. थूनी, टेक (जिसके सहारे मनुष्य खड़ा होकर विश्राम करता है) —इह हि पततां नास्त्यालंबो न चापि निवर्तनम् - शा० ३।२, 3. सहारा, रक्षा—तवालम्बादम्ब स्फुरदलघुगर्वेण सहसा - जग० 4. आशय।

आलम्बनम् [आ+लम्ब्+ल्युट्] 1. आश्रय, 2. सहारा, थूनी, टेक—कि० २।१३, सहारा देते हुए—मेघ० ४, 3. आशय, आवास 4. कारण, हेतु 5. (सा० शा० में) जिस पर रस आश्रित रहता है, वह पुरुष या वस्तु जिसके उल्लेख से रस की निष्पत्ति होती है, रस को उत्तेजित करने वाले कारण का रस से नैसर्गिक और अनिवार्य संबंध, रस की निष्पत्ति के कारण (विभाव) के दो भेद हैं—आलंबन और उद्दीपन, उदा० बीभत्स में दुर्गंधयुक्त मांस रस का आलंबन है, तथा दूसरी प्रस्तुत परिस्थितियां जो मांसगत कीड़े आदि की घिनौनी भावनाओं को उत्तेजित करती हैं इसके उद्दीपन हैं, दूसरे रसों के विषय में—दे० सा० द० २१०-२३८।

आलम्बिन् (वि०) [आ+लम्ब्+णिनि] 1. लटकता हुआ, सहारा लेता हुआ, झुकता हुआ 2. सहारा देने वाला, बनाये रखने वाला, थामने वाला 3. पहने हुए।

आलम्भः-भनम् [आ+लभ्+घञ्, मुम् च, पक्षे ल्युट्] 1. पकड़ना, कब्जा करना, स्पर्श करना 2. फाड़ना 3. मार डालना (विशेषतः यज्ञ में पशु -बलि देना) अश्वालम्भ, गवालम्भ।

आलय-यम् [आ+ली+अच्] 1. आवास, घर, निवास गृह—न हि दुष्टात्मनामार्या निवसत्यालये चिरम्- रामा०—सर्वाऽऽजनस्थानकृतालयान्- रामा० जो जनस्थान में रहा 2. आशय, आसन या जगह—हिमालयो नाम नगाधिराजः—कु० १, इसी प्रकार देवालयम्, विद्यालयम् आदि।

आलर्क (वि०) [अलर्कस्येदम्-अण् | पागल कुत्ते से संबंध रखने वाला या उससे उत्पन्न - आलर्क विषमिव सर्वतः प्रसृतम्—उत्तर० १।४०।

आलवण्यम् [अलवणस्य भावः—ष्यञ्] 1. फीकापन, स्वादहीनता 2. कुरूपता।

आलवालम् [आसमन्तात् लवं जललवम् आलाति—आ+ला+क तारा०] (वृक्ष की जड़ के चारों ओर) पानी भरने का स्थान, खाई,—°पूरणे नियुक्ता—श० १—विश्वासाय विहगानामालवालाम्बुपायिनाम्—रघु० १।१५।

आलस (वि०) (स्त्री०—सी) [आलसति ईषत् व्याप्रियते —अच्] सुस्त, काहिल, ढीला-ढाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलस्य (वि०) [अलसस्य भावः - ष्यञ्] सुस्त ढीला-ढाला, काहिल,—स्यम् सुस्ती, शिथिलता, स्फूर्ति का अभाव शक्तस्य चा-यनुत्साहः कर्मस्वालस्यमुच्यते —सुश्रुत; आलस्य (स्फूर्ति का अभाव) ३३ व्यभिचारिभावों में से एक है—उदा० न तथा भूयस्यत्यङ्कृत तथा भाषते राजीम् जृम्भते मुहुरासीना बाला गर्भभरालसा—सा० द० १८३।

आलातम् [अलात + अण्] जलती हुई लकड़ी।

आलानम् [आ + ली + ल्युट्] 1. वह स्तंभ जिससे हाथी बांधा जाय, बांधे जाने वाला खंभा, रस्सा भी जिससे हाथी बांधा जाता है—अरुत्तुदमिवालानमनिवर्तिष्णयं दन्तिनः—रघु० १।७१, ४।२९, ८१, आलाने गृह्यते हस्ती—मच्छ० १।५०, 2. हथकड़ी, बेंड़ी 3. जंजीर, रस्सा 4. बंधना, बांधना।

आलानिक (वि०) (स्त्री० की) [आलान + ठक्] उस यूथी का काम देने वाली वस्तु जिसके सहारे हाथी बांधा जाता है,—आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः—रघु० १४।३८।

आलापः [आ + लप् + घञ्] 1. बातचीत, भाषण, समालाप—अयं दक्षिणेन दृश्यवादिकामालाप इव श्रूयते —शा० १, 2. कथन, उल्लेख।

आलापनम् [आ + लप् + णिच् + ल्युट्] बोलना, बातचीत करना।

आलाबु-बू (स्त्री०) घीया, पेठा कद्दू, कुम्हड़ा। दे० 'अलाबु'।

आलावर्तम् [आलं पर्याप्तमावर्त्यते इति—आल + आ + वृत् + णिच् + अच्] कपड़े का बना पंखा।

आलि (वि०) [आ + अल् + इन्] 1. निकम्मा, सुस्त 2. ईमानदार—लिः 1. विल्ली 2. मजबूत रस्सी,—लिः, —ली (स्त्री०) 1. (किसी स्त्री की) सहेली निवार्यतामालि किमप्ययं वटुः—कु० ५।८३, ७।६८, अमर २३, 2. पंक्ति. परास, अविच्छिन्न रेखा (तु० आवलि)—तोयान्तर्भास्करालीव रेजे मणिपरम्परा— कु० ६।४१, रघ्यालि अमर ८२, 3. रेखा, लकीर 4. फूल 5. पुलिया, बांध।

आलिङ्गनम् [आ + लिङ्ग् + ल्युट्] परिरंभण, गले लगाना, गलबाही देना -(सः प्राप) आलिङ्गनविवृतिम् -रघु० १२।६५।

आलिङ्गिन् (वि०) [आ + लिङ्ग् + इनि] गलबाहीं देने वाला, (पुं०-गी), **आलिङ्ग्यः** जौ के दाने के आकार जैसा बना छोटा डोल।

आलिञ्जरः [आलिञ्जर एव स्वार्थे अण्] मिट्टी का बड़ा घड़ा।

आलिन्द्यः—क: [आलिन्द + अण्, स्वार्थे कन् च] 1. घर के सामने बना चौतरा, चबूतरा 2. सोने के लिए ऊँचा बनाया हुआ स्थान।

आलिम्पनम् [आ + लिप् + ल्युट्, मुम् च] उत्सवों के अवसर पर दीवारों पर सफेदी करना, फर्श लीपना आदि; तु० 'आदीपनम्'।

आलीढम् [आ - लिह् + क्त] बल्लूक से निशाना लगाते समय दाहिने घुटने को आगे बढ़ा कर और बायें पैर को मोड़ कर बैठना, अतिष्ठदालीढविशेषशोभिना रघु० ३।५२, दे० कु० ३।७० पर मल्लि०।

आलुः [आ + लु + डु] 1. उल्लू 2. आबनूस, काला आबनूस, लुः (स्त्री०) घड़ा, - लु (नपुं०) लट्ठों को बांध कर बनाया गया बेड़ा, घन्नई (दो घड़ों को बांध कर बनाई गई नौका)।

आलुञ्चनम् [आ + लुञ्च् + ल्युट्] फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।

आलेखनम् [आ + लिख् + ल्युट्] 1. लिखना 2. चित्रण करना 3. खुरचना, -नी कूंची, कलम।

आलेख्यम् [आ + लिख् + ण्यत्] 1. चित्रकारी, चित्र—इति संरम्भिणो वाणीबलस्यालेख्यदेवताः—शि० २।६७, रघु० ३।१५, 2. लिखना। सम०—लेखा बाहुरी रूपरेखा, चित्रण,—शेष (वि०) चित्र को छोड़ कर जिसका और कुछ शेष न रहा हो अर्थात् मृत, मरा हुआ —आलेख्यशेषस्य पितुः—रघु० १४।१५,

आलेपः-पनम् [आ + लिप् + घञ्, ल्युट् वा] 1. तेल या उबटन आदि का मलना, लीपना, पोतना 2. लेप।

आलोकः-कनम् [आ + लोक् + घञ्, ल्युट् वा] 1. दर्शन करना, देखना 2. दृष्टि, पहलू, दर्शन—प्रबालोके सुकुमम्—श० १।९, कु० ७।२२, ४६, सुख°—विक्रम० ४।२४, 3. दृष्टि-परास—आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा—मेघ० ८५, रघु० ७।५ कु० २।४५, 4. प्रकाश, प्रभा, कान्ति—निरालोकं लोकं—मा० ५।३० ९।३७, 5. भाट, विशेषतः भाट द्वारा उच्चरित स्तुति-शब्द (जैसे 'जय, आलोकय') —ययावुदीरितालोकः -- रघु० १७।२७, २।९, कु० १४।

आलोचक (वि०) [आ + लोच् + ण्वुल्] आलोचना करने वाला, देखने वाला, - कम् दर्शन-शक्ति, दृष्टि का कारण।

आलोचनम्-ना [आ + लोच् + ल्युट्, युच् वा] 1. दर्शन करना, देखना, सर्वेक्षण, समीक्षा 2. विचार करना, विचार-विमर्श।

आलोडनम्—ना [आ + लुड् + णिच् + ल्युट्] 1. बिलोना हिलाना, क्षुब्ध करना 2. मिश्रण करना।

आलोल (वि०) [प्रा० स०] 1. कुछ कांपता हुआ, (आँखों को) घुमाता हुआ 2. हिलाया हुआ, विक्षुब्ध—अमर ३, मेघ० ६१।

आवन्त्यः [अवन्ति + ठक्] भूमिपुत्र, मंगल ग्रह की उपाधि।

आवन्त्य (वि०) [अवन्ति + ष्यञ्] अवन्ति से आने वाला, या संबन्ध रखने वाला,—स्यः अवन्ती का राजा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवन्ती का निवासी, पतित ब्राह्मण की सन्तान --दे० मनु० १०।२१।

आवपनम् [आ + वप् + ल्युट्] 1. बोना, फैंकना, बखेरना 2. बीज बोना 3. हजामत करना 4. बर्तन, मर्तबान, पात्र।

आवरकम् [आ + वृ + ण्वुल्] ढक्कन, पर्दा।

आवरणम् [आ + वृ + ल्युट्] 1. ढकना, छिपाना, मूँदना, —सूर्यं तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा —रघु० ५।१३, १०।४६, १६।१६, 2. बंद करना, घेरना 3. ढकना 4. बाधा 5. बाड़ा, अहाता, चहार-दीवारी—रघु० १६।७, कि० ५।२५, 6. कपड़ा, वस्त्र 7. ढाल। सम०—**शक्ति**: मानसिक अज्ञान (जिससे वास्तविकता पर पर्दा पड़ा रहता है)।

आवर्तः [आ + वृत् + घञ्] 1. चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2. जलावर्त, भँवर—नृपं समावर्तमनोज्ञनाभिः —रघु० ६।५२, दर्शितावर्तनाभिः - मेघ० १८, आवर्तः संशायानाम् —पंच० १।१२१, 3. पर्यालोचन, (मनमें) घूमना 4. बालों के पट्टे, अयाल 5. घनीवल्ली (जहाँ बहुत पुरुष इकट्ठे रहते हों) 6. एक प्रकार का रत्न।

आवर्तकः [आवर्त + कन्] 1. मूसलाधार बादल का एक प्रकार —जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्- मेघ० ६, कु० २।५० 2. जलावर्त 3. क्रान्ति, घुमाव 4. घुंघराले बाल।

आवर्तनम् [आ + वृत् + ल्युट्] 1. चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2. वृत्ताकार गति, घूर्णन 3. (धातुओं का) पिघलाना, गलाना 4. आवृत्ति करना, -नः विष्णु, -नी कुठाली।

आवलिः—ली (स्त्री०) [आ + वल् + इन् पक्षे ङीप्] 1. रेखा, पंक्ति, परास - अरावलीम्- विक्रम० १।४, इसी प्रकार अलक° दंत°, हार° रत्न° आदि 2 सिलसिला, अविच्छिन्न लकीर।

आवलित (वि०) [आ + वल् + क्त] जरा सा मुड़ा हुआ।

आवश्यक (वि०) (स्त्री० -की) [अवश्य + कुञ्] अनिवार्य, जरूरी—एतेष्वावश्यकस्त्वासौ भागः २२, —कम् 1. जरूरत, अनिवार्यता, कर्तव्य 2 अनिवार्य फल।

आवसथिः (स्त्री०) [प्रा० स०] रात्रि (विश्राम करने का समय), आधीरात।

आवसथः [आ + वस् + अथच्] 1. आवास, आवास-स्थान, घर, निवास--निवसन्नावसथे पृथादृक्षदृष्टिः--रघु० ८।१४ 2. विश्राम करने का स्थान, विश्रामस्थल 3. छात्रावास, संन्यासाश्रम।

आवसथ्य (वि०) [आवसथ + ष्यञ्] गृही, घर में विद्यमान, —थ्यः (अग्निहोत्र की) पावन अग्नि जो घर में रक्खी जाती है, यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली पंचाग्नियों में से एक, दे० 'पंचाग्नि,'—थ्यः —थ्यम् छात्रावास, संन्यासाश्रम, थ्यम् घर।

आवसित (वि०) [आ + अव + सो + क्त] 1. समाप्त, पूर्ण किया गया 2. निर्णीत, निर्धारित, निश्चित, -तम् पका हुआ अनाज (खलिहान से लाया हुआ)।

आवहः (वि०) [आ + वह् + अच्] (समास के अन्तिम पद) उत्पन्न करने वाला, राह दिखाने वाला, देखभाल करने वाला, लाने वाला,—क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाऽहम् —रघु० १४।५, इसी प्रकार दुःख°, भय°।

आवापः [आ + वप् + घञ्] 1. बीज बोना 2. बखेरना, फैंकना 3. आलबाल 4. बर्तन, अनाज रखने का मटका 5. एक प्रकार का पैर 6. कंकण 7. ऊबड़-खाबड़ भूमि।

आवापकः [आवाप + कन्] कंकण।

आवापनम् [आ + वप् + णिच् + ल्युट्] करछा, खड़डी।

आवालम् [आ + वल् + णिच् + अच्] थांवला, आलबाल।

आवासः [आ + वस् + घञ्] 1. घर, निवास 2. शरण-स्थान, भक्तान आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि - रघु० २।१७।

आवाहनम् [आ + वह् + णिच् + ल्युट्] 1. बुलवाना, निमंत्रण, पुकारना 2. देवता का (यज्ञ में उपस्थित होने के लिए) आवाहन करना (विप० **विसर्जन**) 3. अग्नि में आहुति डालना—याज्ञ० १।२५१।

आविक (वि०) (स्त्री० -की) [अवि + ठक्] 1. भेड़ से संबंध रखने वाला,—आविकं क्षीरम्- मनु० ५।८, २।४१ 2. ऊनी, कम् ऊनी कपड़ा।

आविग्न (वि०) [आ - विज् + क्त] दुःखी, कष्टग्रस्त।

आविद्ध (भू० क० कृ०) [आ + व्यध् + क्त] 1. बिंधा हुआ, छेदा हुआ 2. मुड़ा हुआ, टेढ़ा 3. बलपूर्वक फेंका हुआ, गति दिया हुआ।

आविर्भावः [आविस् + भू + घञ्] 1. अभिव्यक्ति, उपस्थिति, प्रकट होना 2. अवतार।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टिं स्तृणाति- विल् + क तारा०] 1. पंकिल, मैला, गदला - स्वच्छेऽच्छः फलस्येव निकषेणाविलं पयः—मालवि० २।८, तस्याविलाम्भः परिशुद्धिहेतोः—रघु० १३।३६, 2. अपवित्र, दूषित (आलं० भी), —स्वदोषैश्चरितैरसाविलैः--कु० ५।५७, 3. काले रंग का, हलके काले रंग का 4. धुंधला, निष्प्रभ—आविलां मृगलेखाम् - रघु० ८।४२।

आविलयति (ना० धा० पर०) धब्बा लगाना, कलंक लगाना।

आविष्करणम्, आविष्कारः [आविस् + कृ + ल्युट् + घञ् वा] अभिव्यक्ति, दर्शन देना, प्रकट करना—असूया गुणेषु दोषाविष्करणम्—अमर०।

आविष्ट (भू० क० कृ०) [आ + विश् + क्त] 1. प्रविष्ट 2. (भूत प्रेतादिक से) ग्रस्त 3. संपन्न, भरा हुआ, वशीकृत,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काबू पाया हुआ, भय° क्रोध° 4. निमग्न, लीन अधिकार में किया हुआ, जुटा हुआ।

आविस् (अव्य०)[आ+अव्+इस्] निम्नांकित अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय 'आखों के सामने' 'खुले रूप में' 'प्रकटत.' (प्रायः यह अव्यय -अस्, भू और कृ धातु से पूर्व लगता है)—आविर्भाव विजयि मान्मथमाविर्गमीत्—मा० १।२६, (याति) आविष्कृतारुणपुरस्सर एकतोऽर्कः शि० ४।१, तेषामाविरभूद्ब्रह्मा—कु० २।२ रघु० १।५६।

आवीतम् [आ+व्ये+क्त] यज्ञोपवीत (चाहे किसी प्रकार मध्य, अपसव्य पहना हुआ हो)।

आवृक: (नाटकों की भाषा में) पिता।

आवृत्त[आ+वृत्+क्त] 1. मुड़ा हुआ, चक्कर खाया हुआ, लौटा हुआ 2. दोहराया हुआ, —द्विरावृत्ता दश द्विरशः सिद्धा० 3. बाद किया हुआ, अध्ययन किया हुआ।

आवृत्तिः (स्त्री०) [आ+वृत्+क्तिन्] 1. मुड़ना, लौटना, वापिस आना, तपोधनागमनिमित्तम् रघु० २।१८, भग० १।२३, 2. प्रत्यावर्तन, प्रतिनिवर्तन 3. चक्कर खाना, चारों ओर जाना 4. (सूर्य का) उसी स्थान पर फिर लौटना उदगावृत्तिपथेन नारदः रघु० ८।३३, 5. जन्म-मरण का बार २ होना, सांसारिक जीवन,—अनावृत्तिभयम् कु० ६।७७ 6. आवृत्ति, दोहराना, सस्करण (आधुनिक प्रयोग), 7. दोहराया हुआ पाठ, अध्ययन—आवृत्तिः सर्वशास्त्राणां बोधादपि गरीयसी उद्भट०।

आवृष्टिः (स्त्री०) [आ+वृष्+क्तिन्] बरसना, वारिश की बौछार।

आवेगः [आ+विज्+घञ्] 1. बेचैनी, चिन्ता, उत्तेजना, विक्षोभ, घबड़ाहट अलमावेगेन शि० ६, अमर० ८३ 2. उतावली, हड़बड़ी 3. क्षोभ---(३३ व्यभिचारि-भावों में से एक समझा जाता है)।

आवेदनम् [आ+विद्+णिच्+ल्युट्] 1. समाचार देना, सूचना देना 2. अभ्यावेदन 3. अभियोग का वर्णन (विधि० में) 4. अभिभाषण, अर्जीदावा।

आवेशः [आ+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना, प्रवेश 2. अधिकार में करना, प्रभाव, अभ्यास, स्मय° अभिमान का प्रभाव—रघु० ५।१९ 3. एकनिष्ठता, किसी पदार्थ के प्रति अनुरक्ति 4. घमंड, हेकड़ी 5. हड़बड़ी, क्षोभ, क्रोध, प्रकोप 6. आसुरी भूतबाधा 7. लकवे की बेहोशी या मिरगी की मूर्छा।

आवेशनम् [आ+विश्+ल्युट्] 1. प्रविष्ट होना, प्रवेश 2. आसुरी प्रेतबाधा 3. प्रकोप, क्रोध, प्रचण्डता 4. निर्माणी, कारखाना—मनु० ९।२६५, 5. घर।

आवेशिक (वि०) (स्त्री०-की) 1. विशिष्ट, निजी 2. अन्तर्हित—क: अतिथि, दर्शक।

आवेष्टकः [आ+वेष्ट्+णिच्+ण्वुल्] दीवार, बाड़, अहाता।

आवेष्टनम् [आ+वेष्ट्+णिच्+ल्युट्] 1. लपेटना, बँधना, बाँधना 2. ढकना, लिफाफा 3. दीवार, बाड़, अहाता।

आश (वि०) [अश्+अण्] खानेवाला, भोक्ता (बहुधा समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है) उदा० हुताश, आश्वयाश,—शः [अश्+घञ्] खाना (जैसा कि 'प्रातराश' में)।

आशंसनम् [आ+शंस्+ल्युट्] 1. प्रत्याशा, इच्छा—इष्टाशंसनमाशीः—सिद्धा० 2. कहना, घोषणा करना।

आशंसा [आ—शंस्+अ] 1. इच्छा, अभिलाष, आशा निदर्शे विजयाशंसा चापे सीतां च लक्ष्मणे—रघु० १२।४४, भट्टि० १९।५, 2. भाषण, घोषणा 3. कल्पना आशंसापरिकल्पितास्वपि भवत्यानन्दसान्द्रो लयः मा० ५।७।

आशंसु (वि०) [आ+शंस्+उ] इच्छुक, आशावान्।

आशङ्कः [आ+शङ्क्+अ] 1. भय, भय की सम्भावना, नष्टाशङ्काहरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१६, आशङ्कया मुक्तम् भर्तु० ३।५, 2. सन्देह, अनिश्चयात्मकता,—इत्याशङ्क्यामाह—गदाधर 3. अविश्वास, शक।

आशङ्कित (भू० क० कृ०) [आ+शङ्क्+क्त] 1. भीत, डरा हुआ,—तम् 1 भय, 2 सन्देह 3 अनिश्चयात्मकता।

आशयः [आ+शी+अच्] 1. शयनकक्ष, विश्रामस्थल, शरणागार 2. निवास-स्थान, आवास, आसन, आश्रय-स्थान—वायुर्गन्धाशयात्—भग० १५।८, अपृथक्° —उत्तर० १।४५, 3. पात्र, आधार—विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृतरत्नैर्यदि पयसामिवाशयः—कि० २।३, तु० जलाशय, आमाशय, रक्ताशय आदि 4. वेष 5. अर्थ, इरादा, प्रयोजन, भाव---इत्याशयः, एवं कवेराशयः (टीकाकारों के द्वारा बहुधा प्रयुक्त दे० 'अभिप्राय') 6. भावनाओं का स्थान, मन, हृदय—अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः—भग० १०।२०, महावी० २।३७, 7. सन्पत्नता 8. कोठार 9. मन, इच्छा 10. भाग्य, किस्मत 11. (जानवरों को पकड़ने के लिए बनाया गया) गर्त—वास्ते परमसंतप्तो नूनं सिंह इवाशये—महा०। सम०—आशः अग्नि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशरः [आ+शृ+अच्] 1. अग्नि 2. असुर, राक्षस 3. वायु ।

आशवम् [आशोर्भावः—अण्] 1. वेग फुर्ती 2. खींची हुई शराब, अरिष्ट (अधिकतर 'आसव' लिखा जाता है) ।

आशा [आ+अश्+अच्] 1. (क) उम्मीद, प्रत्याशा, भविष्य—तामाशां च सुदुश्चिताम्—रघु० १२।९६, आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्—सुभाष०, क्षमाशीः मोघाशे 2. मिथ्या आशा या प्रत्याशा 3. स्थान, प्रदेश, दिग्देश, दिशा—अगस्त्यो जरिताभिराशामनाशास्यजयौ ययौ—रघु० ४।४४, कि० ७।९ । सम०—अन्वित,—अनल (वि०) आशावान्, आशा बढ़ाने वाला,—गज दिग्गज दे० 'अष्टदिग्गज',—तन्तुः आशा की डोर, क्षीण आशा—मा० ४।३, ९।२६ • पालः दिक्पाल दे० 'अष्टदिक्पाल',—पिशाचिका आशा की कल्पना-सृष्टि,—बन्धः 1. आशा का बन्धन, विश्वास, भरोसा, प्रत्याशा—गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति—श० ४।१५, मेघ० १०, 2. तसल्ली 3. मकड़ी का जाला,—भंगः निराशा, नाउम्मीद,—हीन (वि०) निराश, हताश ।

आशाकः दे० 'अ(आ)शाकः' ।

आशात्रय (स० कृ०) [आ+शास्+ण्यत्] 1. वरदान द्वारा प्राप्य 2. अभिलषणीय, वांछनीय—रघु० ४।४४, —स्यम् वाञ्छनीय पदार्थ, चाह, इच्छा,—मालविं० ५।२०, 3. आशीर्वाद, मंगलाचरण—आशास्यमन्यत्पुनरस्य भूतम्—रघु० ५।३४ ।

आशिक्षित (वि०) [आ+शिक्ष्+क्त] सनकार (आभूदर्शी की) कु० ३।२६ ।

आशित (वि०) [आ+अश्+क्त] 1. भुक्त, खाया हुआ 2. खाकर तृप्त,—तम् भोजन करना ।

आशितंभूषीण (वि०) [आशिता अशनेन तृप्ता गावो यस्य, —खञ्, निपातनात् मुम्] पहले पशुओं द्वारा चरा हुआ ।

आशितंभव (वि०) [आशित+भू+खच्, मुम्] तृप्त होने वाला, संतृप्त होने वाला (भोजन के रूप में) • वम् 1. आहार, भोज्य पदार्थ 2. अघाना, तृप्ति (पु० भी) —फलैर्यदाशितंभवम्—भट्टि० ४।११ ।

आशिर (वि०) [आ+अश्+हरच्] भोजनभट्ट,—रः 1. अग्नि 2. सूर्य 3. राक्षस ।

आशिस् (स्त्री०) (°षः, °शीर्भ्यां-आदि) [आ+शास्+क्विप्, इत्वम्] 1. आशीर्वाद, मंगलकामना (परिभाषा—वास्तस्याशंसन मान्येन कनिष्ठस्याभिधीयते, इष्टाविधारक वाक्यमाशीः सा परिकीर्तिता ।) 'आशिस्' और 'वर' भिन्नार्थक शब्द हैं, आशीर्वाद तो केवलमात्र किसी की मंगलकामना या सद्भावना की अभिव्यक्ति है—वह चाहे पूरी हो या न हो, इसके विपरीत 'वर' शब्द की भावना अधिक स्थायी और पूर्णता की निश्चायक है—तुल०—वरः खल्वेष नाशीः—श० ४, आशिसो गुरुजनविदीर्णा वरत्वमापद्यन्ते—का० २९१, अमोघाः प्रतिगृह्णन्त्यवर्ध्यानपदमाशिषः—रघु० १।४४, जयाशीः कु० ७।४७, 2. प्रार्थना, चाह, इच्छा-कु० ५।७६, भग० ४।२१, 3. सांप का विषैला दांत (तु० 'आशीविष') । सम०—आढ्यः,—वचनम् (आशीर्वादः आदि), आशीर्वाद, मंगलाचरण, किसी प्रार्थना या सद्भावना की अभिव्यक्तिः—आशीर्वचनसंयुक्ता नित्यं यस्मात् प्रयुज्यते—रा० द० ६, मनु० २।३३,—विषः (आशीविषः) सांप ।

आशी [आशीर्यते अनया आ+शृ+क्विप्—पृषो०,] 1. सांप का विषैला दांत, 2. एक प्रकार का सर्पविष 3. आशीर्वाद, मंगलाचरण । सम०—विषः 1. सांप, —गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः—रघु० ३।५७, 2. एक विशेष प्रकार का सांप—कर्णाशीविषभोगिनि प्रशमिते —वेणी० ६।१ ।

आशु (वि०) [अश्+उण्] वेग, फुर्ती,—शुः,-शुम् (नपुं०) चावल (जो बरसात में ही शीघ्रतापूर्वक पक जाते हैं) —शु (अव्य०) तेजी से, जल्दी से, तुरन्त, सीधा —वस्यं भानोस्यशाशु—मेघ० ३९।२१ । सम०—कारिन्, —कृत् (वि०) जल्दी करने वाला, चुस्त, फुर्तीला —कोपिन् (वि०) गुस्सैला, चिड़चिड़ा,—ग (वि०) फुर्तीला, तेज (—गः) 1. वायु 2. सूर्य 3. बाण—पपावनास्वादितपूर्वमाशुगः—रघु० ३।५४, ११।८२, १२।९१ —तोय (वि०) अनायास प्रसन्न होने वाला (—यः) शिव की उपाधि,—धीहिः बरसात में ही पक जाने वाले चावल ।

आशुशुक्षणिः [आ+शुष्+सन्+अनि] 1. वायु, हवा 2. अग्नि - मंत्रपूतानि हवींषि प्रतिगृह्णात्येतदग्नेरप्याशुशुक्षणिः—४४ ।

आशोकपुटिम् (पुं०) [आशोतेऽस्मिन् इति—आ+शी+विच् स इव कुटति इति णिनि] पहाड़ ।

आशोषणम् [आ+शुष्+णिच्+ल्युट्] सुखाना ।

आशौचम् [अशौच+अण्] अपवित्रता—दे० 'अशौच' दशाहम् शावमाशौचं ब्राह्मणस्य विधीयते—मनु० ५।५९, ६१, ६२, याज्ञ० ३।१८

आश्चर्य (वि०) [आ+चर्+ण्यत् सुट्] चमत्कारपूर्ण, विलक्षण, असाधारण, आश्चर्यजनक, अद्भुत—आश्चर्यो गवां दोहोऽयोपेन—सिद्धा०, तदनु ववृधुः पुण्यमाश्चर्यमेघाः—रघु० १६।८७ आश्चर्यदर्शनो मनुष्यलोकः—श० ७,—र्यम् 1. अचम्भा, चमत्कार, कौतुक —किमाश्चर्यं भारतेऽस्मिन् प्राणदा यमदूतिका—उद्भट, कर्मविश्चर्याणि—उत्तर० १—आश्चर्यजनक काम—भग० ११।६, १२।९ 2. अचरज, विस्मय, अचम्भा 3.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(विस्मयादि द्योतक अव्य० के रूप में प्रयुक्त) आश्चर्य (कितना अचम्भा है, कितनी अजीब बात है)—आश्चर्यं परिपीडितोऽभिरमते यच्चातकस्तृष्णया—चात० २।४।

आश्ची (श्च्यौ) नस्य [आ+श्चि+ल्युट्] 1. सिंचन, छिड़काव 2. पलकों के घी चुपड़ना।

आश्म (वि०) (स्त्री० श्मी) [अश्मन्+अण्] पत्थर का बना हुआ, पथरीला।

आश्मन (वि०) (स्त्री० नी) [अश्मनो विकारः—अण्] पथरीला, पत्थर का बना हुआ,—नः 1. पत्थर की बनी कोई वस्तु 2. भूमि का सार्थक अरुण।

आश्मिक (वि०) (स्त्री० की) [अश्मन्+ठण्] 1. पत्थर का बना हुआ 2. पत्थर ढोने वाला।

आश्यान (भू० क० कृ०) [आ+श्यै+क्त] 1. जमा हुआ, सघनित—कि० १६।१०, 2. कुछ सूखा—पयश्चाश्यानकर्दमान् रघु० ४।२४, कु० ७।९, घृएँ के सहारे सुखाये हुए (जैसे बाल)—रघु० १७।२२।

आश्यानम् [आ+श्या+निच्+ल्युट्] पकाना, उबालना।

आश्रव् [अश्रमेव—स्वार्थेऽण्] आँसू।

आश्रम—नम् [आ+श्रम्+घञ्] 1. पर्णशाला, कुटिया, कुटी, झोंपड़ी, संन्यासियों का आवास या कक्ष 2. अवस्था, संन्यासियों का धर्मसंघ, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास), क्षत्रिय और वैश्य भी पहले तीन आश्रमों में पदार्पण कर सकते हैं, तु० ग० ७।२०, विक्रम० ५, कुछ लोगों के विचारानुसार वह चौथे आश्रम में भी प्रविष्ट हो सकते हैं (तु०—स किलाश्रममन्त्यमाश्रितः—रघु० ८।१४) 3. महाविद्यालय, विद्यालय 4. जंगल, झाड़ी (जहाँ संन्यासी लोग तपस्या करते हैं)। सम०—गुरुः धर्मसंघ के प्रधान, प्रशिक्षक, आचार्य,—धर्मः 1. जीवन के प्रत्येक आश्रम के विशिष्ट कर्तव्य 2. वानप्रस्थों के कर्तव्य य इहाश्रमधर्मं नियुङ्क्ते—रघु० १, —पदम्, मण्डलम्, —स्थानम् संन्यासाश्रम (आस-पास की भूमि समेत), तपोवन —शान्तमिदमाश्रमपदम्—श० १।१६ भ्रष्ट (वि०) धर्मसंघ से बहिष्कृत, स्वधर्मच्युत, —वासिन्, आलयः, —स्थ (पुं०) संन्यासी, वानप्रस्थ।

आश्रमिक, आश्रमिन् (वि०) [आश्रम+ठन्, इनि वा] धार्मिक जीवन के चार काल या पदों में किसी एक से सम्बन्ध रखने वाला।

आश्रयः [आ+श्रि+अच्] 1. विश्रामस्थल, सदन, अधिष्ठान —सौहृदादुपधिराश्रयामियाम् उत्तर० १।४५, ५।१, 2. जिसके ऊपर कोई वस्तु आश्रित रहती है 3. ग्रहण करने वाला, भाजन—तमाश्रयं दुष्प्रसहस्य तेजसः —रघु० ३।५८ 4. (क) शरणस्थान, शरणगृह, भर्ता वै स्त्राश्रयः स्त्रीणाम् वेता०, तदहमाश्रयान्मूलनेनेव स्वामकामां करोमि—मुद्रा० २, (ख) आवास, घर 5. सहारा लेने वाला (प्रायः समास में) 6. निर्भर करना (प्रायः समास में) 7. पालक, प्रतिपोषक —बिनाश्रयं न तिष्ठन्ति पण्डिता वनिताः लताः—उद्भट 8. धूनी, स्तम्भ—रघु० ९।६० 9. तरकस—बाणाश्रयमुखात् समुद्धरन् रघु० ११।२६ 10. अधिकार, संमोदन. प्रमाण, अधिकार पत्र 11. मेलजोल, संबन्ध, साहचर्य 12. दूसरे का संश्रय लेने वाला, छः गुणों में से एक। सम०—असिद्धः, —द्धिः (स्त्री०) हेत्वाभास का एक प्रकार, असिद्ध के तीन उपभागों में से एक, —आसः, —भुज् (वि०) संपर्क में आने वाली वस्तुओं का उपभोग करने वाला (—क्षः, —क्षी) अग्नि, —दुर्नयः क्रियते धूर्तैः श्रीमानात्मविवृद्धये, किं नाम खलसंसर्गः कुरुते नाश्रयाशयम्—उद्भट,—लिङ्गम् विशेषण (अपने विशेष्य के अनुरूप अपना लिंग रखने वाला शब्द)।

आश्रयणम् [आ+श्रि+ल्युट्] 1. दूसरे के संरक्षण में रहना, शरण लेना 2. स्वीकार करना, छोड़ना 3. शरण, शरणस्थान।

आश्रयिन् (वि०) [आश्रय+इनि] 1. सहारा लेने वाला, निर्भर करने वाला 2. संबद्ध, विषयक—विक्रम० ३।१०।

आश्रव (वि०) [आ+श्रु+अच्] आज्ञाकारी, आज्ञापालक —भिषजामनाश्रवः—रघु० १९।४९, नै० ३।८४, —वः 1. नदी, दरिया 2. प्रतिज्ञा, वादा 3. दोष, अभिक्रमण—दे० 'आस्रव' भी।

आश्रिः (स्त्री०) [आ० स०] तलवार की धार।

आश्रित [भू० क० कृ०] [आ+श्रि+क्त] (कर्म० के साथ कर्तृवाच्य में प्रयुक्त) 1. सहारा लेते हुए—कृष्णाश्रितः कृष्णाश्रितः—सिद्धा० 2. रहने वाला, वास करने वाला, किसी स्थान पर स्थिर रहने वाला 3. काम में लाने वाला, सेवा में रखने वाला 4. अनुसरण करने वाला, अभ्यास करने वाला, पालन करने वाला —कु० ६।६, भट्टि० ७।४३, 5. निर्भर करने वाला 6. (कर्मवाच्य के रूप में प्रयुक्त) सहारा लिया हुआ, दबा हुआ, —तः पराधीन, सेवक, अनुचर;—मध्यमाश्रितानाम् —हि० १, प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु कु० ३।१।

आश्रुत [भू० क० कृ०] [आ+श्रु+क्त] 1. सुना हुआ, 2. प्रतिज्ञात, सहमत, स्वीकृत,—तम् पुकार जो दूसरा सुन सके।

आश्रुतिः (स्त्री०) [आ+श्रु+क्तिन्] 1. सुनना 2. स्वीकार करना।

आश्लेषः [आ+श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, परिरम्भण. कोला-कोली —आश्लेषलोलपवधूस्तनकार्कश्यसालिनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—शि० २।१७, अमर, १५।७२, ९४, कण्ठश्लेष-प्रणयिनि जने—मेघ० ३।१०६, 2. सपर्क, घनिष्ट संबंध, संबंध, ---वा ९वाँ नक्षत्र।

आश्व (वि०) (स्त्री०—श्वी) [अश्व+अण्] घोड़े से सम्बन्ध रखने वाला, घोड़े के पास से आने वाला, —श्वम् घोड़ों का समूह।

आश्वत्थ (वि०) (स्त्री० त्थी) [अश्वत्थ—अण्] पीपल के वृक्ष से संबंध रखने वाला, या पीपल से बना हुआ,—त्थम् पीपल का फल, बरबटें।

आश्वयुज (वि०) (स्त्री०—जी) [अश्वयुज्+अण्] आश्विन मास से संबंध रखने वाला,—जः आश्विन मास—मनु० ६।१५,—जी आश्विन की पूर्णिमा का दिन।

आश्वलक्षणिकः [अश्वलक्षण—ठक्] सलोतरी, अश्व-चिकित्सक, साइस, (घोड़े की देखभाल करने वाला)।

आश्वासः [आ+श्वस्+घञ्] 1. सांस लेना, मुक्त श्वास लेना, चेतना लाभ 2. तसल्ली, प्रोत्साहन 3. रक्षा और सुरक्षा की गारंटी 4. रोकथाम 5. किसी पुस्तक का पाठ या अनुभाग।

आश्वासनम् [आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] प्रोत्साहन, दिलासा, तसल्ली—तदिदं द्वितीयं हृदयाश्वासनम् —श० ७।

आश्विकः [अश्व+ठञ्] घुड़सवार।

आश्विनः [अश्व्+विनि ततः अण्] मास का नाम (जिसमें चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र के निकट होता है)

आश्विनेयौ (द्वि० व०) [अश्विनी+ढक्] 1. दो अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य) 2. नकुल और सहदेव के नाम, पाँच पाण्डवों में से अन्तिम दो।

आश्विन (वि०) (स्त्री०—नी) घोड़े द्वारा व्याप्त (यात्रा आदि) °नौऽब्धा—सिद्धा०।

आषाढः [आषाढी पूर्णिमा अस्मिन्मासे अण्] 1. हिन्दुओं का एक महीना (जून और जुलाई में आने वाला), —आषाढस्य प्रथमदिवसे—मेघ० २, शेते विष्णुः सदाषाढे कार्तिके प्रतिबोध्यते—वि० पु० 2. ढाक की लकड़ी का दण्ड जिसे संन्यासी धारण करते हैं—अथाजिनाषाढधरः प्रगल्भवाक्—कु० ६।३०,—ढा २०वाँ या २१ वाँ नक्षत्र—पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा,—ढी आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आषाढः [अष्टम+ञ] आठवां भाग।

आस् आः (अव्य०) निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय (क) प्रत्यास्मरण —आः उपनयतु भवान् भूजंपत्रम्—विक्रम० २ (ख) क्रोध—आः कथमद्यापि राक्षसस्यासः—उत्तर० १—आः पापे तिष्ठ तिष्ठ—मा० ८ (ग) पीड़ा—आः शीतम् —काव्य १० (घ) अपाकरण (सरोष विरोध) —आः कः एष मयि स्थिते मुद्रा० १ आ वृषा-मंगलपाठक वेणी० १ (ङ) शोक, खेद—विद्यामा-तरमाः प्रदर्श्य नृपसूनुं भिक्षामटेति निस्त्रपाः उद्भट।

आस् (अदा० आ०) (आस्ते, आसित) 1. बैठना, लेटना, आराम करना, एतदासनमास्यताम् विक्रम० २ —आस्यतामिति चोक्तः सन्नासीताभिमुखं गुरोः मनु० २।१९३ 2. रहना, वास करना—तावद्गणोऽस्यासते देव-लोके—महा०, यत्रास्मै रोचते तत्रायमास्ताम् का० १९६—कुरूनास्ते—सिद्धा० 3. चुपचाप बैठे रहना, शत्रुतापूर्ण व्यवहार न करना, बेकार बैठना आसीनं त्वामुत्थापयति हृदयम्—शि० २।५७, 4. होना, अस्तित्व या विद्यमानता होना, 5. स्थित होना, रुकना होना —जगन्ति यस्यां सविकाशमासते—शि० १।२३ 6. मानना, टिके रहना, किसी अवस्था में ठहरना या निरन्तर रहना (अनवरत या निर्बाध क्रिया को प्रकट करने के लिए बहुधा वर्तमान कालिक कृदन्त प्रत्ययों के साथ इस धातु का प्रयोग होता है—विदारयन्प्रगर्जंश्चास्ते —पंच० १, फाड़ता रहा और गरजता रहा 7. परिणत होना, परिणाम होना (सप्तम्० के साथ)—आस्तां मानसमुत्पत्त्यै सुकृतिनां नीतिर्नवोल्लेख वः हि० १।२१२ 8. जाने देना, एक ओर कर देना या रख देना,—आस्तां तावत् रहने दो, जाने दो, प्रेर०—बिठाना, बिठला-वाना, स्थिर करना—आसयत्सलिले पृथ्वीम् सिद्धा०, अधि—लेटना, बसना, अधिकार करना, प्रविष्ट होना (स्थान में कर्म० के साथ) निादष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य—रघु० १।९५, २।१७, ४।७६, ६।१०, भगवत्या प्राप्तिकपदमध्यासितव्यम्—मालवि० १, अनु—1. निकट बैठाया जाना 2. सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना मत्सौभ्यामन्वास्यते—श० ३, अन्वासितमरुन्धत्या रघु० ११५६ 3. घरना देना —तामन्वास्य—रघु० २।२४, उद् उदासीन या बेलाग होना, निश्चिन्त या निरपेक्ष होना, निष्क्रिय या अकर्मण्य होना—तत्किमित्युदासते भरताः—मा० १—विधाय वैरं सामर्षं नरोत्तरौ य उदासते शि० २।७२, भग० ९।९, मुद्रा० १, उप—1. सेवा में प्रस्तुत होना, सेवा करना, पूजा करना अम्बामुपास्य सदयाम् अस्व० १३, उद्यानपालसामान्यमुतत्रैलमुपासते कु० २।३६ 2. उपागमन करना, की ओर जाना—उपासांचक्रिरे द्रष्टुं देवयन्त्रवंकिन्नराः भट्टि० ५।१०७, ७।८९, 3. भाग लेना, (पुण्य कृत्यों का) अनुष्ठान करना 4. (समय) बिताना उपास्य रात्रिशेषं तु—रामा० 5. भोगना, झेलना अलं ते पाण्डुपुत्राणां भक्त्या क्लेश-मुपासितुं—महा०, मनु० ११।१८४ 6. आश्रय लेना, काम में लगाना, प्रयोग करना—लक्ष्मोपास्ते यस्य कृते—सा० द० २, 7. धनुर्विद्या का अभ्यास करना 8.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, **पर्युप**--1. उपासना करना, पूजा करना, अर्चना करना—पर्युपास्यन्त लक्ष्म्या --रघु० १०।६२, कु० २।३८, मनु० ७।३७, 2. (रक्षा के लिए) पहुँचना, शरण लेना, या संरक्षण में आना — अशक्ता एव सर्वत्र नरेन्द्र पर्युपासते—पंच० १।२४१, 3. घेरना, घेरा डालना 4. भाग लेना, हिस्सा लेना 5. आश्रय लेना, **सम्** -1. बैठ जाना- प्रत्यवाच समासीनं वसिष्ठम्—रामा० 2. मिल कर बैठना, **समुप** 1. सेवा के लिए प्रस्तुत रहना, पूजा करना, सेवा करना—समुपासत पुत्रभोग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रियः श्रियः -रघु० ८।१४, 2. अनुष्ठान करना—तेत्रयः संध्यां समुपासत रामा०।

आसः [आस्+घञ्] 1. आसन 2. धनुष (—सम्, भी) स सासिः सा सुसूः सासः— कि० १५।५।

आसक्त (भू० क० कृ०) [आ+सञ्ज्+क्त] 1. अत्यनुरक्त, कृतसंकल्प, जुटा हुआ, लगा हुआ—(प्रायः अधि० के साथ या समास में) 2. स्थिर, टिका हुआ— शिखरासक्तमेधाः—कु० ६।४०, 3. निरन्तर, अनवरत, शाश्वत। सम०- **चित्त,— चेतस्,— मानस** एकनिष्ठ, एकाग्र।

आसक्तिः (स्त्री०) [आ+सञ्ज्+क्तिन्] 1. अनुराग, भक्ति, लगाव—बालिशचरितेष्वासक्तिः -का० १२०, 2. उत्सुकता, लगाव।

आसङ्गः [आ—सज्+घञ्] 1. अनुराग, भक्ति—सुखासङ्गलुब्धः—का० १७३, 2. सम्पर्क, अनुरक्ति, चिपकाव —(पङ्कजं) स शैवलासङ्गमपि प्रकाशते— कु० ५।९, ३।४६ 3. साहचर्य, संयोग, सम्मिलन,---त्यक्त्वेदं कर्मफलासङ्गं—भग० ४।२०, इसी प्रकार 'कान्तासङ्गम्' —आदि 4. स्थिरीकरण, बन्धन।

आसङ्गिनी [आसङ्ग+इनि--ङीप्] चक्रवात, बगूला, हूला।

आसञ्जनम् [आ+सञ्ज्+ल्युट्] 1. बाँधना, जमाना, (शरीर पर) धारण करना 2. फँस जाना, चिपकना —व्रतविलवासञ्जनात्—श० १।३३. ५।१। 3. अनुराग, भक्ति 4. सम्पर्क, सामीप्य।

आसत्तिः [आ+सद्+क्तिन्] 1. मिलन, संयोग 2. अंतरंग मेल, घनिष्ठ सम्पर्क, किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगात्—उत्तर० १।२७, 3. उपलब्धि, लाभ, उपार्जन, 4. (तर्क० में) सामीप्य दो या दो से अधिक निकटस्थ राशियों का सम्बन्ध और उनके द्वारा अभिव्यक्त भाव—कारणं सन्निधानं हु पदस्यासत्तिरुच्यते —भाषा० ८३।

आसन् (नपुं०) मुख (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् सभी विभक्तियों में 'आस्य' के स्थान में विकल्प से आदेश होने वाला शब्द)।

आसनम् [आस्+ल्युट्] 1. बैठना, 2. आसन, स्थान, स्टूल —स वामपेनासनमंनिकृष्टम्—कु० ३।२, **आसनं भुज्** - अपना आसन छोड़ना, उठना—रघु० ३।११, 3. एक विशेष अंगविन्यास या बैठने का ढंग- तु० पद्म० वीर० 4. बैठ जाना या ठहरना 5. रतिक्रिया की विशेष विधि 6. शत्रु के विरुद्ध किसी स्थान पर डटे रहना (विप० **यानम्**), कैदेशनीति के ६ प्रकारों में से एक- संधिर्नविग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः—अमर० मनु० ७।१६०, याज्ञ० १।३४६ 7. हाथी के शरीर का अगला भाग, घोड़े का कन्धा,—ना 1. आसन, तिपाई जिस पर बैठा जाय, टेक 2. बैठने का एक छोटा स्थान स्टूल 3. दुकान, आपणिका। सम०- **बंधधीर** (वि०) बैठने के लिए दृढ़ संकल्पवाला, अपने आसन पर दृढ़, —निवेदयीमासनबन्धधीरः --रघु० २।६।

आसन्दी [आसद्यतेऽस्याम्—आ+सद्+ट, नुम् नि० ङीप्] तकियेदार आराम कुर्सी।

आसन्न (भू० क० कृ०) [आ+सद्+क्त] 1. उपागत (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से) निकट, —आसन्नविंशाः— बीस के लगभग या निकट 2. निकटवर्ती, सन्निहित—आसन्नपतने कूले —शारी०। सम०- **कालः** 1. मृत्यु का समय 2. जिसकी मृत्यु निकट हो,—**परिचारकः**—चारिका व्यक्तिगत सेवक, शरीर रक्षक।

आसम्बाध (वि०) [आसमन्तात् सम्बाधा यत्र ब० स०] 1. सम्यवरुद्ध, रोका हुआ, (चारों ओर से) घेरा हुआ —आसम्बाधा भविष्यन्ति पन्थानः शरवृष्टिभिः— रामा०।

आसवः [आ+सु+अप्] 1. अर्क, 2. काढ़ा 3. मदनिष्कर्ष —अनासवाख्यं करणं मदस्य—कु० १।३१, द्राक्षा० आदि।

आसादनम् [आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. प्राप्त करना, उपलब्ध करना 2. आक्रमण करना।

आसारः [आ+सृ—घञ्] 1. (किसी वस्तु की) मूसलाधार बौछार—आसारसिक्तक्षितिवाप्यपायोगात्—रघु० १३। २९, मेघ० १७. पुष्पासारैः—४३, इसी प्रकार तुहिन०, रुधिर० आदि—धारासारैर्वृष्टिर्दभूव—हि० ३, मूसलाधार बारिश हुई 2. शत्रु का घेरा डालना 3. आक्रमण, अचानक हमला 4. अपने किसी मित्र राजा की सेना 5. रसद, आहार पंच० ३।४१।

आसिकः [असि+ठक्] खड्गधारी, तलवार लिए हुए।

आसिधारम् [असिधारा इव अस्त्यत्र अण्] एक प्रकार का व्रतविशेष अभ्यस्तीव व्रतमासिधारम्--रघु० १३।६७. व्याख्या के लिए दे० असि के नीचे 'असिधारा' शब्द।

आसुतिः (स्त्री०) [आ+सु+क्तिन्] 1. अर्क, 2. काढ़ा।

आसुर (वि०) (स्त्री०—री) [असुर+अण्] (विप०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दैवी) 1. असुरों से संबन्ध रखने वाला 2. भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला, -आसुरी माया, आसुरी रात्रिः आदि 3. नारकीय, राक्षसी-आसुरं भावमाश्रितः भग० ७।१५, (आसुर-आचरण के पूर्ण विवरण के लिए दे० भग० १६। ७-२४)-रः 1. राक्षस, 2. आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कि वर, वधू को उसके पिता या पैतृकबांधवों से खरीद लेता है (दे० उद्वाह)- -आसुरो द्रविणादानात्—याज्ञ० १।६१, मनु० ३।३१, -री 1. शल्यचिकित्सा, जर्राही 2. राक्षसी - संभ्रमादासुरीभिः—वेणी० १।३।

आसूत्रित (वि०) [आ+सूत्र+क्त] 1. माला पहने हुए या माला के रूप में, 2. अंतर्ग्रथित।

आसेकः [आ+सिच्+घञ्] गीला करना, खींचना, ऊपर से उँडेलना।

आसेचनम् [आ+सिच्+ल्युट्] ऊपर से उँडेलना, गीला करना, छिड़कना।

आसेधः [आ+सिध्+घञ्] गिरफ्तारी, हिरासत, कानूनी प्रतिबंध यह चार प्रकार का है:- स्थानासेधः कालकृतः प्रवासात् कर्मणस्तथा -नारद।

आसेवा -वनम् [प्रा० स०] 1. सोत्साह अभ्यास, किसी क्रिया का सतत अनुष्ठान, 2. बारबार होना, आवृत्ति —पा० ८।३।१०२, आसेवनं पौनःपुन्यम् सिद्धा०।

आस्कन्दः—दनम् [आ+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. आक्रमण, हमला, सतीत्वनाश; परवनिता प्रगल्भस्य -वेणी० २, 2. चढ़ना, सवारी करना, रौंदना, 3. भर्त्सना, दुर्वचन 4. घोड़े की सरपट चाल 5. लड़ाई, युद्ध।

आस्कन्दितम् -तकम् [आ+स्कन्द्+क्त, स्वार्थे कन् वा] घोड़े की चाल, घोड़े की सरपट चाल।

आस्कन्दिन् (वि०) [आ+स्कन्द्+णिनि] चढ़ बैठने वाला, टूट पड़ने वाला -रघु० १७।५२।

आस्तरः [आ+स्तृ+अप्] 1. चादर, ओढ़ने का वस्त्र 2. दरी, बिस्तरा, चटाई, शा० २।२० 3. बिस्तरण, फैलाव (वस्त्रादि)।

आस्तरणम् [आ+स्तृ+ल्युट्] 1. बिस्तरण, बिछावन 2. बिस्तरा, तह, कुसुम° फूलों की क्यारी—कु० ४।३५, तमालपत्रास्तरणासु रन्तुम्—रघु० ६।६४ 3. गद्दा, रजाई, बिस्तर के कपड़े 4. दरी 5. हाथी की जीन-पोश, साज-सामान, रंगीन झूल।

आस्तारः [आ+स्तृ+घञ्] फैलाना, बिछाना, बखेरना। सम०—पङ्क्तिः छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

आस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [अस्ति+ठक्] 1. जो ईश्वर और परलोक में विश्वास रखता है 2. अपनी धर्म-परंपरा में विश्वास रखने वाला 3. पवित्रात्मा, भक्त, श्रद्धालु—आस्तिकः श्रद्दधानश्च—याज्ञ० १।२६८।

आस्तिकता, त्वम्, आस्तिक्यम् [आस्तिक+तल् त्वल् ष्यञ् वा] 1. ईश्वर और परलोक में विश्वास 2. पवित्रता, भक्ति, श्रद्धा—भग० १८।४२ आस्तिक्यं श्रद्दधानता परंपार्थेष्वागमार्थेषु शंकर०।

आस्तीकः एक प्राचीन मुनि, जरत्कारु का पुत्र (जरत्कारु के बीच में पड़ने से ही जनमेजय ने तक्षक नाग को छोड़ दिया था, जिसके कारण कि सर्पयज्ञ रचा गया था)।

आस्था [आ+स्था+अङ्] 1. श्रद्धा, देखभाल, आदर, विचार, ध्यान रखना (अधि० के साथ) मय्यपास्था न ते चेत् -भर्तृ० ३।३०, दे० 'अनास्था' भी 2. स्वीकृति, दावा 3. धूनी, सहारा, टेक 4. आशा, भरोसा 5. प्रयत्न 6. दशा, अवस्था 7. सभा।

आस्थानम् [आ+स्था+ल्युट्] 1. स्थान, जगह 2. नींव, आधार 3. सभा 4. देखभाल, श्रद्धा, दे० 'आस्था' 5. सभागृह 6. विश्रामस्थान,—नी सभा-भवन। सम०—गृहम्,—निकेतनम्, मंडपः सभाभवन।

आस्थित (भू० क० कृ०) (कर्तृवाच्य के रूप में प्रयुक्त) रहने वाला, बसने वाला, आश्रय लेने वाला, काम में लगने वाला, अभ्यास करने वाला, अपने आपको डालने वाला।

आस्पदम् [आ, पद्+घञ् सुट् च] 1. स्थान, जगह, आसन, ठौर—तस्यास्पदं श्रीयुवराजसंज्ञितम् —रघु० ३।२६, स्थानास्पदं भुवपतेर्विवेश -कु० ३।४३, ५।१०, ४८, ६९, 2. (अलं०) आवास, स्थल, आश्रय—करिष्यः कारुण्यास्पदम् भामि० १।२, 3. श्रेणी, दर्जा, केन्द्र-स्थान 4. मर्यादा, प्रामाणिकता, पद 5. व्यवसाय, काम 6. धूनी, आश्रय।

आस्पन्दनम् [आ+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कना, काँपना।

आस्पर्धा [प्रा० स०] होड़, प्रतिद्वंद्विता।

आस्फालः [आ+स्फल्+घञ्, अच्] 1. मारना, रगड़ना, अनै: २ चलाना 2. फड़फड़ाना 3. विशेष रूप से हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

आस्फालनम् [आ+स्फल्+णिच्+ल्युट्] 1. रगड़ना, दबा कर रगड़ना, (पानी आदि का), हिलना फड़फड़ाना अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम् -श० २।४, आसां जलास्फालनेतत्परत्वात् रघु० १६।६२, ३।५५, ६।७३, अमरु ५४, ऐरावत° कर्कशेन हस्तेन कु० ३।२२ 2. घमंड, शेखी।

आस्फोटः [आ+स्फुट्+अच्] 1. आक या मदार का पौधा 2. ताल ठोकना,- टा नवमल्लिका का पौधा, जङ्गली चमेली।

आस्फोटनम् [आ+स्फुट्+ल्युट्] 1. फटकना 2. काँपना 3. फूक मारना, फुलाना 4. सिकोड़ना, बन्द करना 5. ताल ठोकना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आस्माक (वि०) (स्त्री० - की), आस्माकीन (वि०) [अस्मद्+अण्, खञ्, अस्माक आदेशः] हमारा, हम सब का -आस्माकदन्तिसान्निध्यात् -शि० २।६३, ८।५०।

आस्यम् [अस्यते प्रक्षोऽत्र -अस्—ण्यत्] 1. मुँह, जबड़ा -आस्यकुहरं विवृतास्यः 2. चेहरा, आस्यकमलम् 3. मुख का वह भाग जिससे वर्णोच्चारण में काम लिया जाता है, 4. मुँह, बिवर-व्रणास्यम्, अङ्कास्यम् आदि। सम०-आसवः लार, लुआब,—पत्रम् कमल,-लाङ्गूलः 1 कुत्ता, 2 सूअर लोमन् (नपुं०) दाढ़ी।

आस्यन्दनम् [आ+स्यन्द्+ल्युट्] बहना, रिसना।

आस्यन्धय (वि०) [आस्य धयति-धे+ख मुम्] मुखचुम्बन करने वाला।

आस्था -[आस्+क्यष्] दे० आसना।

आस्रम् [असृ+अण्] रुधिर। सम०-पः खून पीने वाला, राक्षस।

आस्रवः [आ+स्रु—अप्] 1. पीडा, कष्ट, दुःख 2. बहाव, स्रवण 3. (मवाद आदि का) बहना, निकलना, 4. अपराध, अतिक्रमण 5. उबलते हुए चावलों का माड़।

आस्रावः [आ+स्रु-घञ्] 1. घाव 2. बहाव, निकास 3. लार 4. पीड़ा, कष्ट

आस्वादः [आ+स्वद्+घञ्] 1. चखना, खाना-चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः- कु० ३।३२, हि० १।१५२ 2. स्वाद लेना ज्ञानास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः भर्तृ० ४१, सुखास्वादपरः- हि० ४।७६ 3. सुखोपभोग करना, अनुभव करना, °वत् (वि०) स्वादिष्ट, रसीला आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानाम् रघु० २।५,

आस्वादनम् [आ+स्वद्+णिच्+ल्युट्] चखना, खाना।

आह (अव्य०) [आ+हन्+ड] 1. निम्नांकित भावनाओं को द्योतन करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय-(क) झिड़की (ख) कटोरता (ग) आज्ञा (घ) फेंकना, भेजना 2. 'कहना' 'बोलना' अर्थ को प्रगट करने वाली सदोष क्रिया के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एक वचन का अनियमित रूप (भारतीय वैयाकरणों के मतानुसार यह रूप 'ब्रू' धातु का है तथा पाश्चात्य विद्वान् इसको 'अह्' से बना हुआ मानते हैं, संस्कृत भाषा में इस धातु के वर्तमान रूप-आह, आहतुः, आहुः आत्थ, और आहथुः हैं)।

आहत (भू० क० कृ०) [आ+हन्+क्त] 1. जिस पर प्रहार या आघात किया गया हो, पीटा गया (ढोल आदि) 2. रौंदा गया - पादाहतं यदुत्थाय मूर्धलिमधिरोहति शि० २।४६ 3. घायल, मारा हुआ 4. गुणित (गणित में) 5. लुढ़काया हुआ (पासा) 6. मिथ्या कहा हुआ,—तः ढोल,—तम् 1. नई पोशाक, नया वस्त्र 2. भावहीन या निरर्थक भाषण, असम्भावना की दृढ़ोक्ति -उदा० एष वन्ध्यासुतो याति—सुभा०। सम०—लक्षण (वि०) = आहितलक्षण।

आहतिः (स्त्री०) [आ+हन्+क्तिन्] 1. हत्या करना 2. प्रहार, चोट, मारना, पीटना 3. यष्टि, छड़ी।

आहर (वि०) [आ+हृ+अच्] (समास के अन्त में) लाने वाला, ले आने वाला, ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला—समित्कुशफलाहरैः -रघु० १।४९,—रः 1. ग्रहण करना, पकड़ना 2. पूरा करना, सम्पन्न करना 3. यज्ञ करना।

आहरणम् [आ+हृ+ल्युट्] 1. ले आना, (निकट) लाना —समिदाहरणाय प्रस्थिता वयम्-श० १ 2. पकड़ना, ग्रहण करना 3. हटाना, निकालना 4. सम्पन्न करना, (यज्ञादिक) पूरा करना 5. विवाह के समय दुलहिन को उपहार के रूप में दिया जाने वाला धन, दहेज, -सत्त्वानुरूपाहरणक्रियाश्रीः- -रघु० ७।३२।

आहवः [आ+हू—अप्] 1. युद्ध, संग्राम, लड़ाई—एवं विधाहवचेष्टितेन—रघु० ७।६७, हृत्वा स्वजनमाहवे -भग० १।३१ 2. ललकार, चुनौती, आह्वान, °काम्या लड़ने की इच्छा 3. यज्ञ -तत्र नाभवदसौ महाहवे - शि० १४।४४।

आहवनम् [आ—हु+ल्युट्] 1. यज्ञ—दृष्ट्वा माहवनमग्रजन्मनाम् शि० १४।३८ 2. आहुति।

आहवनीय (स० कृ०) [आ+हु+अनीयर्] आहुति देने के योग्य,—यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई अभिमन्त्रित अग्नि, तीन अग्नियों में से एक (पौधें) जो यज्ञ में प्रज्वलित की जाती है। दे० 'अग्नित्रेता' शब्द 'अग्नि' के नीचे।

आहारः [आ+हृ+घञ्] 1. लाना, ले आना, या निकट लाना 2. भोजन करना 3. भोजन -°वृत्तिमकरोत् पंच० १, भोजन किया। सम०—पाकः भोजन का पचना,—विरहः भोजन की कमी, भूखों मरना,—सम्भवः शरीर का रस, लसीका।

आहार्य (स० कृ०) [आ+हृ+ण्यत्] 1. ग्रहण करने या पकड़ने के योग्य 2. लाने या ले आने के योग्य 3. कृत्रिम, नैमित्तिक, बाह्य -आहार्यशोभारहितैरमायैः -भट्टि० २।१४, न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्—कि० ४।२३, कु० ७।२० पर मल्लि० भी, 4. साभिप्राय, अभिप्रेत,—उदा० रूपक में उपमेय या उपमान का आरोप जिसके विषय में वक्ता पूर्ण रूप से जानकार होता है। 5. शृंगार या आभूषा से संप्रेषित या प्रभावित, अभिनय के चार प्रकारों में से एक।

आहावः [आ+हे+घञ्] 1. पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएँ के पास बनी कूंड 2. संग्राम, युद्ध 3. आह्वान, ललकार 4. अग्नि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आहिण्डिकः [आहिण्ड+ठक्] निषाद पिता और वैदेही माता से उत्पन्न वर्णसंकर,—आहिण्डिकी निषादेन वैदेह्यामेद जायते—मनु० १०।३७।

आहित (भू० कृ० कृ०) [आ+धा+क्त] 1. स्थापित, जडा गया, जमा किया गया (धरोहर के रूप में रक्खा गया) 2. अनुभूत, संस्कृत 3. सम्पन्न, किया गया। सम०—अग्निः ब्राह्मण जो यज्ञ की पावन अग्नि को अभिमंत्रित करता है,—अंक (वि०) चिह्नित, चित्तीदार,—लक्षण (वि०) परिचायक चिह्न वाला, —ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणोऽभूत्—रघु० ६।७१ (मल्लि० के अनुसार—अच्छे गुणों के कारण प्रख्यात)।

आहितुण्डिकः [आहितुण्डेन दीव्यति ठक्] बाजीगर, सपेरा, ऐन्द्रजालिक या जादूगर—अहं खल्वाहितुण्डिको जीर्णविषो नाम—मुद्रा० २।

आहुतिः (स्त्री०) [आ+हु+क्तिन्] 1. किसी देवता को आहुति देना, पुण्यकृत्यों के उपलक्ष्य में किये जाने वाले यज्ञों में हवनसामग्री हवन कुंड में डालना —होतुराहुतिसाधनम्—रघु० १।८२, 2. किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (हवनसामग्री)।

आह्वतिः (स्त्री०) [आ+हे+क्तिन्] चुनौती, ललकार, आह्वान।

आहेय (वि०) [अहि+ढक्] साँपों से संबंध रखने वाला —पंच० १।१११।

आहो (अव्य०) निम्नांकित भावनाओं को व्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय, (क) सन्देह या विकल्प, प्रायः 'किम्' का सहसंबंधी—किं वैखानसं व्रतं नियेवितव्यम्.....आहो नियतस्थिति सर्वं हरिणाभिः—श० १।२७, दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुलः—श० ५।२६ (ख) प्रश्नवाचकता —। सम०—पुरुषिका 1. अत्यधिक अहंमन्यता या घमंड—आहोपुरुषिकया दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि —अमर०, आहोपुरुषिकां पश्य मम सहस्रकान्तिभिः —भट्टि० ५।२७, 2. सैनिक आत्मश्लाघा, शेखी बघारना 3. अपने पराक्रम की डींग मारना—निजभुजबलाहोपुरुषिकाम्—भामि०१।८४,—स्वित् (अव्य०) 'संदेह' 'संभावना' 'संभाव्यता' आदि भावनाओं को प्रकट करने वाला अव्यय ('किम्' का सहसंबंधी) —आहोस्वित्प्रसवो यमापचरितैर्विष्टम्भितो वीरुधाम् —श० ५।९, कि द्विजः पतति आहोस्विद् गच्छति —सिद्धा०।

आह्नम् [अह्नां समूहः—अञ्] दिनों का समूह, बहुत दिन।

आह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [अह्नि भवः, अह्नो निर्वृत्तः साध्यः—ठञ्] 1. दैनिक, प्रति दिन का, प्रति दिन किया गया, दिन भर किया गया धार्मिक संस्कार या कर्तव्य जो प्रति दिन नियत समय पर किया जाने वाला है, प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य, जैसे कि भोजन करना, स्नान करना आदि —कृताह्निकः संवृत्तः—विक्रम० ४, 2. दैनिक भोजन 3. दैनिक कार्य या व्यवसाय।

आह्लादः [आ+ह्लाद्+घञ्] खुशी, हर्ष—साह्लादं वचनम्—पंच० ४।

आह्लादनम् [आ+ह्लाद्+ल्युट्] प्रसन्न करना, खुश करना।

आह्वः (वि०) [आ+ह्वे+ड] 1. जो पुकारता है, बुलाता है, बुलाने वाला—ह्वा [आ+ह्वे+अङ्+टाप्] 1. बुलाना, पुकारना 2. नाम, अभिधान (प्रायः समास के अन्त में)—अमृताह्वः, शताह्वः, आदि।

आह्वयः [आ+ह्वे+श—वा०]—1. नाम, अभिधान (समास का अन्तिम पद) काव्यं रामायणाह्वयम् —रामा० 2. एक कानूनी अभियोग जो मुर्गों की लड़ाई जैसे पशु-खेलों में होने वाले झगड़ों से पैदा हो (कानून के १८ नामों में से एक)—पणपूर्वक पक्षिमेषादियोधनं आह्वयः—मनु० ८।७ पर राघवानन्द की व्याख्या।

आह्वानम् [आ+ह्वे+णिच्+ल्युट्] नाम, अभिधान।

आह्वानम् [आ+ह्वे+ल्युट्] 1. ललकार, आमन्त्रण 2. बुलावा, निमन्त्रण, आमन्त्रित करना, सुहृदाह्वानं प्रकुर्वीत—पंच० ३।४७, 3. कानूनी आमंत्रण (कचहरी या सरकार से किसी न्यायाधिकरण के सम्मुख उपस्थित होने के लिये बुलावा) 4. देवता का संबोधन मनु० ९।१२६, 5. चुनौती 6. नाम, अभिधान।

आह्वायः [आ+ह्वे+घञ्] 1. बुलावा 2. नाम।

आह्वायकः [आ+ह्वे+ण्वुल्] 1. दूत, संदेशवाहक —आह्वायकान् भूमिपतेरयोध्याम्—भट्टि० २।४३।

इ

इ [अ+इञ्] कामदेव (अव्य०) (क) क्रोध (ख) पुकार (ग) करुणा (घ) झिड़की तथा (ङ) आश्चर्य की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इ (क) (अदा० पर०) (एति, इतः) 1. जाना, की ओर जाना, निकट आना—अशिनं पुनरेति शर्वरी- रघु० ८।५६ 2. पहुँचना, पाना, प्राप्त करना- चले जाना —निर्बुद्धिः क्षयमेति— मृच्छ० १।१४, नष्ट हो जाता है, बर्बाद होता है, इसी प्रकार वश, शूद्रत्वं, शूद्रताम् आदि, (ख) (स्वा० उभ०)=दे० अय् (ग) (दिवा० आ०) 1. आना, आ धमकना 2. भागना घूमना 3. शीघ्र जाना, बार बार जाना। अति—1. परे चले जाना, पार करना, ऊपर से चले जाना—अवादतीये हिमवान्नगाधिपः- कि० १४।५४,—स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः—मेघ० ३४, दृष्टि से ओझल हो जाता है 2. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, पछाड़ देना,—सत्यमतीत्य हरितो हरीश्च वर्तन्ते वाजिनः --श० १, विस्रोतसः कान्तिमतीत्य तस्थौ— कु० ७।१५, शि० २।२३ 3. पास से निकल जाना, पीछे छोड़ देना, भूल जाना, उपेक्षा करना — श० ६।१६, रघु० १५।३७ 4. बिताना, बीतना (समय का)- अत्येति रजनी या तु—रामा०, अतीते दशरात्रे, दे० 'अतीत', अधि 1. याद रखना, चिन्तन करना, खेद पूर्वक याद करना (संब० के साथ) --रामस्य दयमानोमाबध्येति तव लक्ष्मण: भट्टि० ८।११, १८।३८, कि० ११।७४ 2. (अधीते' इस अर्थ में सदैव 'आत्मनेपद') शिक्षा प्राप्त करना, अध्ययन करना, पढ़ना- उपाध्यायादधीते—सिद्धा०, सोऽध्येष्ट वदान्—भट्टि० १।२, (प्रेर० अध्यापयति, इच्छा०--अधिजिगांसते) अनु , 1. अनुसरण करना, पीछे चलना—प्रयता प्रातरन्वेतु –रघु० १।९० 2. सफल होना 3. अनुगमन (व्या० या रचना में) 4. आज्ञा मानना, अनुरूप होना, अनुकरण करना, अन्तर्—, पीछे जाना, अनुसरण करना, अन्तर्— 1. बीच में जाना, हस्तक्षेप करना 2. रोकना, बाधा डालना 3. छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना दे० 'अन्तरित', अप 1. चले जाना, विदा होना, पीछे हटना, लौट पड़ना, अपेहि दूर हो जाओ, दूर हटो 2. वंचित होना, मुक्त होना दे० 'अपेत' 3. मरना, नष्ट होना, अभि—, 1. जाना, पहुँचना, निकट जाना --अभ्यानतृप्तिरोऽभ्येति भट्टि० ७।८४ 2. अनुसरण करना, सेवा करना 3. प्राप्त करना, मिलना, भुगतना, (अच्छी बुरी बातें) भोगना, अभिप्र- –, की ओर जाना, इरादा करना, अर्थ रखना, उद्देश्य बना कर—कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्—पा० १।४।३२ अभ्या -- पहुँचना, अभ्युद् , 1. उठना, ऊपर जाना 2. (आलं०) फलना-फूलना, समृद्ध होना, अभ्युप-– 1. निकट जाना, पहुंचना अभ्युपेत्य-व्यतीतकालस्त्वहमभ्युपेतः—रघु० ५।१४, १६।२२, 2. विशिष्ट दशा को पहुँच जाना, प्राप्त करना—सत्यं न तच्छ्रलमभ्युपैति—हि० ३।९१, 3. जिम्मेवारी लेना, सहमत होना, स्वीकार करना, (कोई काम करने की) प्रतिज्ञा करना;- -मन्वाधत्ते न खलु सुहृदाम्स्युपेतार्थकृत्याः--मेघ० ३८ 4. मानलेना, अपना लेना, स्वीकार करना, 5. आज्ञा मानना, अधीनता स्वीकार करना, अव—, जानना, ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञानकार होना —अदेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः—रघु० २।३५, कु० ३।१३, ४।९, आ—, आना, निकट खिसकना, उद्—1. (तारे आदि का) उदय होना, (आलं० भी) आना, ऊपर उठना —उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—श० ७।३०, उदेति सविता ताम्रः—आदि 2. उठना, उछलना, पैदा किया जाना 3. फलना-फूलना, समृद्ध होना, उप –, 1. पहुंचना, निकट खिसकना, पास जाना-- योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्—भग० ८।२८ 2. निकट जाना, में से निकलना, प्राप्त करना, (किसी दशा को) पहुंच जाना,—उपैति सस्यं परिणामरम्यताम्—कि० ४।२२, 3. आ पड़ना, निर्—, विदा होना, प्रस्थान करना, परा–, 1. चले जाना, दौड़ जाना, भाग जाना, वापिस मुड़ना,—यः परैति स जीवति—पंच० ५।८८ 'भागने वाला अपनी जान बचा लेता है', तु०, 'जान बचाने के लिए भागना, 2. पहुँचना, प्राप्त करना—कि० १।३९ 3. इस संसार से कूच करना, मरना, दे० परेत, परि—,1. परिक्रमा करना, प्रदक्षिणा करना,-- चरणन्यासं भक्तिनम्रः परीयाः--मेघ० ५५, मनु० २।४८, 2. घेरना, चारों ओर चक्कर लगाना—हुतवहपरीतं गृहमिव--श० ५।१०, विषवल्लिभिः परीताभिर्महौषधिः-रघु० १२।६१, इसी प्रकार 'कोपपरीत' 3. पास जाना, (चीजों का) चिन्तन करना 4. बदलना, रूपान्तरित होना, प्र—,1. निकल जाना, विदा होना, -धीरः प्रेत्यास्मात्लोकादमुता भवन्ति-- केन० २. (अतः) जीवन से विदा लेना, मरना, प्रेत्य — मर कर—न च तत्प्रेत्य नो इह—मग० १७।२८ मनु० २।९, २६, प्रति—, 1. वापिस जाना, लौट जाना, -प्रतीयाय गुरोः सकाशम्—रघु० ५।३५, भट्टि० ३।१९ 2. विश्वास करना, भरोसा करना—क: प्रत्येति संवेयसिति—उत्तर० ४, 3. ज्ञान प्राप्त करना, समझना, जानना प्रतीयते चातुरिखेहितं फलैः—कि० १।२०, शि० १।६९ 4. विख्यात होना, प्रसिद्ध होना—सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः—रघु० १३।५३ 5. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना— रघु० ३।१२, १६।२१ (प्रेर०—प्रत्याययति) विश्वास दिलाना, भरोसा पैदा करना बलवन्तु दुश्यन्तं प्रत्याययतीव मे हृदयम् श० ५।२१, ताः स्वचारित्र्यमुद्दिश्य प्रत्याययु मैथिलीं—रघु० १५।७३, प्रत्युद् , स्वागत या सत्कार करने के लिए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उठ कर अगवानी करना —सपर्यया प्रत्युदियाय पार्वती —कु० ५।३१, वि—, 1. चले जाना, विदा होना —तस्यामहं त्वयि च संप्रति वीतचिन्तः—श० ५।१२, इसी प्रकार वीतभय, वीतक्रोध 2. परिवर्तित होना ···सदृशं त्रिषु लिंगेषु यन्न व्येति तदव्ययम्- सिद्धा० 3. खर्च करना—दे० व्यय, विपरि—, बदलना (बुराई के लिये) दे० विपरीत, व्यति—, 1. बाहर जाना, पथविचलित होना, अतिक्रमण करना—रेखामात्रमपि क्षुण्णादा मनोर्वर्त्मनः परम्, न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः । रघु० १।१७, 2. (समय का) गुजरना, व्यतीत होना सप्तव्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु० २।२५, व्यतीते काले-आदि 3. परे चले जाना, पीछे छोड़ना—रघु० ६।६७, व्यप— 1. विदा होना, विचलित होना, मुक्त होना —व्यपेतमदमत्सरः—याज्ञ० १।२६७. स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेण —२।५, 2. चले जाना, जुदा होना, अलग-अलग होना —समेत्य च व्यपेयातां—हि० ४।६, मनु० ९।१४२, ११।९७, सम्—, इकट्ठे आना, इकट्ठे मिलना, समनु-, साथ चलना, अनुसरण करना, समव—, 1. एकत्र होना, इकट्ठे आना—समवेता युयुत्सवः—भग० १।१, 2. संबद्ध होना, संयुक्त होना दे० समवाय, समा—, इकट्ठे आना या मिलना—समेत्य च व्यपेयातां—हि० ४।६९, समुद्—, एकत्र होना, संचित होना—अर्थ समुदितः सर्वो गुणानां गणः—रत्न० १।६, समुप—, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, संप्रति—, निर्णय करना, निश्चित करना, निर्धारित करना, अनुमान लगाना —कि तत्कर्म वेत्युपलब्धसंज्ञा विकल्पयन्तोऽपि न संप्रतीयुः—भट्टि० ११।१०।

इक्षवः (ब० व०) गन्ना, ईख, ऊख ।

इक्षुः [इष्यतेऽसौ माधुर्यात्- इष्+क्सु] गन्ना, ईख । सम०—**काण्डः**, -**दम्** गन्ने की दो जातियाँ—काश और मृञ्जतृण, -**कुटकः** गन्ने इकट्ठे करने वाला —**गा** एक नदी का नाम,—**पाकः** गुड़, शीरा, राब, —**भक्षिका** गुड़ और शक्कर से बना भोज्य पदार्थ, —**मती**,—**मालिनी**,—**मालवी** एक नदी का नाम, —**मेहः** मधुमेह,—**यन्त्रम्** गन्ना पेलने का कोल्हू, —**रसः** 1. गन्ने का रस 2. गुड़, राब या शक्कर, —**वनम्** गन्ने का खेत, गन्ने का जंगल,—**वाटिका**, —**वाटी**, गन्नों का उद्यान,—**विकारः** शक्कर, गुड़ या राब,—**सारः** गुड़ या राब ।

इक्षुलः [स्वार्थे कन्] गन्ना, ईख, दे० इक्षु ।

इक्षुलिका [इक्षुक+ह स्त्रियां टाप्] गन्नों की क्यारी ।

इक्षुरः [इक्षुम् रांति -इति रा+क] गन्ना, ईख ।

इक्ष्वाकुः [इक्षुम् इच्छाम् आकरोति इति इक्षु-आ- कृ +डु] अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं का पूर्व पुरुष, यह वैवस्वत मनु का पुत्र था—और सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुरुष था।—इक्ष्वाकुवंशोऽभिगतः प्रजानाम्—उत्तर० १।४४ 2. इक्ष्वाकु की सन्तान —गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम् —रघु० ३।७० ।

इङ्, ईङ्क्ष् (भ्वा० पर०) (एषति, इङ्क्षति) जाना, हिलना-डुलना, (प्रायः 'प्र' के साथ) हिलना-डुलना, काँपना—मा० ६ ।

इङ्ग् (भ्वा० उभ०) (इङ्गति ते, इङ्गित) 1. हिलना, काँपना, क्षुब्ध होना यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते —भग० ६।१९, १४।२३ 2. जाना, हिलना-डुलना ।

इङ्ग (वि०) [इङ्ग्+क] 1. हिलने डुलने योग्य 2. आश्चर्य जनक, विस्मयकारी,—गः 1. इशारा या संकेत 2. इंगित द्वारा मनोभाव का संकेत देना ।

इङ्गनम् [इङ्ग्+ल्युट्] 1. हिलना-डुलना, काँपना 2. ज्ञान, दे० इंग ।

इङ्गितम् [इङ्ग्+क्त] 1. धड़कना, हिलना 2. आन्तरिक विचार, इरादा, प्रयोजन—°आकारवेदिभि.—का० ७, पंच० १।४३, अगडदत्तद्रादमितोङ्गितज्ञया -कु० ५।६२, रघु० १।२०, शि० ९।६९ 3. इशारा, संकेत, अंगविक्षेप- पंच० १।४४. 4. विशेषतः शरीर के विभिन्न अंगों की चेष्टा जो आन्तरिक इरादों का आभास दे देती हैं. अंगविक्षेप आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने में समर्थ है आकारैरिङ्गितैर्गत्या····· गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः—मनु० ७।२६, । सम०—**कोविद**, —**ज्ञ** (वि०) बाहरी अंगचेष्टाओं के द्वारा आन्तरिक मनोभावों की व्याख्या करने में कुशल, संकेतों को जानने वाला ।

इङ्गुदः,-दी [इङ्ग्+उ=इङ्गुः तं खादति खण्डयति इति-दो-क] एक औषधि का वृक्ष, हिंगोट का वृक्ष, भल्लातकवनो —इङ्गुदीपादपः सोऽयम्—उत्तर० १।१८, —**बम्** इंगुदी का फल ।

इच्छा [इष्+श+टाप्] 1. कामना, अभिलाष, रुचि,— **इच्छया**—रुचि के अनुसार 2. (गणित में) प्रश्न या समस्या 3. (व्या० में) सन्नन्त का रूप । सम०— **वानम्** अभिलाषा की पूर्ण होना,—**निवृत्तिः** (स्त्री०) कामनाओं की शान्ति, सांसारिक इच्छाओं के प्रति उदासीनता, —**फलम्** किसी प्रश्न या समस्या का समाधान -**रत्नम्** अभिलषित खेल- मेघ० ८१, —**वसुः** कुबेर -**संपद्** (स्त्री०) किसी की कामनाओं का पूर्ण होना ।

इज्यः [यज्+क्यप्] 1. अध्यापक 2. देवों के अध्यापक बृहस्पति की उपाधि ।

इज्या [इज्य+टाप्] 1. यज्ञ—जगत्प्रकाशां तदधीनमिज्यया —रघु० ३।४८ १।६८, १५।२, 2. उपहार, दान 3.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमा 4. कुट्टिनी, दूतिका, गाय। सम० --शीलः सदा यज्ञ करने वाला।

इदूचरः [इदम् कामेन चरति -इदम्+चर्+खिच्-इट्+चर्+अच्] बैल या बछड़ा जो स्वच्छन्दता पूर्वक घूमने के लिए छोड़ दिया जाय।

इडा-ला [इल्+अच्, लस्य डत्वम्] 1. पृथ्वी 2. भाषण 3. आहार 4. गाय 5. एक देवी का नाम, मनु की पुत्री 6. बुध की पत्नी तथा पुरूरवा की माता।

इडिका [इडा+क, इत्वम्] पृथ्वी।

इतर (सा० वि०) (स्त्री० रा, नपुं० रत्) [इना कामेन तरः—इति -नृ+अप्] 1. अन्य, दूसरा, दो में से अवशिष्ट--इतरो दहने स्वकर्मणाम् रघु० ८।२०, अने० पा० 2. शेष या दूसरे (ब० व०) 3. दूसरा, से भिन्न (अपा० के साथ)--इतरतापशतानि यमेच्छया वितर तानि सहे चतुरानन--उद्भट, इतरो रावणादेव राघवान्नचरो यदि--भट्टि० ८।१०६ 4. विरोधी, या तो अकेला स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है अथवा विशेषण के साथ, या समास के अन्त में --अङ्गमानीतराणि च--रामा०, विजयायेतराय वा—महा० इसी प्रकार दक्षिण° (बायां) वाम° (दायां) आदि 5. नीच अधम, गंवार, सामान्य—इतर इव परिभूय शान्तं मन्मथेन जडीकृतः-का०-१५४। सम०—इतर(सा० वि०) पारस्परिक, स्व-स्व, अन्योन्य--°आश्रयः—पारस्परिक निर्भरता, अन्योन्य संबंध °योगः 1. पारस्परिक संबंध या मेल, शि० १०।२४, 2. द्वन्द्व समास का एक प्रकार (विप० समाहार द्वन्द्व) जहाँ कि प्रत्येक अंग पृथक् रूप से देखा जाता है।

इतरतः, इतरत्र (अव्य०) [इतर+तसिल्, त्रल् वा] अन्यथा, उससे भिन्न, अन्यत्र --दे० अन्यतः, अन्यत्र।

इतरथा (अव्य०) [इतर+थाल्] 1. अन्य रीति से, और ढंग से 2. प्रतिकूल रीति से 3. दूसरी ओर।

इतरेद्युः (अव्य०) [इतर+एद्युस्] अन्य दिन, दूसरे दिन।

इतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1. अतः, यहाँ से, इधर से, 2. इस व्यक्ति से, मुझ से—इतः स दैत्यः प्राप्तश्रीर्नेत एवाहंति सत्यम्--कु० २।२५ 3. इस दिशा में, मेरी ओर, यहाँ—इतो निषीदेति विसृष्टभूमिः—कु० ३।२, प्रयुक्तमध्यस्त्रमितो वृथा स्यात् —रघु० २।३४, इत इतो देवः—इधर इस ओर महाराज! (नाटकों में) 4. इस लोक से, 5. इस समय से, इतः—इतः—एक ओर—दूसरी ओर या एक स्थान में--दूसरे स्थान पर, यहाँ—वहाँ।

इति (अव्य०) [इ+क्तिन्] 1. यह अव्यय प्रायः किसी के द्वारा बोले गये, या बोले समझे गये शब्दों को वैसा का वैसा ही रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिसको कि हम अंग्रेजी में अवतरणांश चिन्हों द्वारा प्रकट करते हैं, इस प्रकार कही गई बात हो सकती है (क) एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया गया हो (शब्दस्वरूपद्योतक)--राम रामेति रामेति कूजन्तं मधुराक्षरैः--रामा०, अतएव गविन्याहः- भर्तृ०, (ख) या कोई प्रातिपदिक जो कि अपने अर्थों को संकेतित करने के लिए कर्तृकारक में प्रयुक्त होता है (प्रातिपादिकार्थद्योतक) -चयस्त्रिवयास्त्रिवयसंबारितं पुरा·····कमादयं नारद इत्यबोधि सः -शि० १।३, अवैमि चैनामनघेति --रघु० १४।४०, दिलीप इति राजेंदुः—रघु० १।१२, (ग) या पूरा वाक्य जब कि 'इति' शब्द वाक्य के केवल अंत में ही प्रयुक्त किया जाता है (वाक्यार्थद्योतक), --आस्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणांक इति —शि० १।१३, 2. इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त 'इति' के निम्नांकित अर्थ हैं (क) 'क्योंकि', 'यतः' 'कारण यह कि' आदि शब्दों से व्यक्तीकरण--वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि—उत्तर० १ पुराणमित्येव न साधु सर्वम् —मालवि० १।२, प्रायः 'किम्' के साथ (ख) अभिप्राय या प्रयोजन—रघु० १।३७ (ग) उपसंहार द्योतक (विप० 'अथ'), ये इति प्रथमोऽङ्कः —यहाँ प्रथम अंक का उपसंहार होता है (घ) अतः, इस प्रकार, इस रीति से—इत्युक्तवन्तं परिरभ्य दोर्भ्याम्—कि० ११।८० (ङ) इस स्वभाव या विचरण वाला—गौरश्च पुरुषो हस्तीतिजातिः (च) जैसा कि नीचे है, नीचे लिखे परिणामानुसार--रामाभिधानो हरिरित्युवाच—रघु० १३।१ (छ) जहाँ तक···, की हैसियत से, के विषय में (धारिता और संबंध प्रकट करते हुए)--पितेति स पूज्यः, अध्यापक इति निन्द्यः, शोधमिति सुकरम्, निभृतमिति चिन्तनीयं भवेत्—श० ३. (ज) निदर्शन (प्रायः 'आदि' के साथ) इन्दुरिन्दुरिव श्रीमानित्यादौ तवनन्वयः-चन्द्र० गौः शुक्लश्चलो डित्थ इत्यादौ-काव्य० २, (झ) मानी हुई सम्पति या उद्धरण—इति पाणिनिः, इत्यापिशलिः, इत्यमरः विग्रहः आदि (ञ) स्पष्टीकरण। सम० —अर्थः भावार्थ, सार,—अर्थम् (अव्य०) इस प्रयोजन के लिए, अतः,—कथा अर्थहीन या निरर्थक बात, —कर्तव्य,-करणीय (वि०) नियमतः उचित या आवश्यक (व्यु,-यम्) कर्तव्य, दायित्व, °ता,—कार्यता, —कृत्यता कोई भी उचित या आवश्यक कार्य,-कर्तव्यतामूढः किं कर्तव्य विमूढ, असमंजस में पड़ा हुआ, व्याकुल, हतबुद्धि,-काम (वि०) इतने विस्तार वाला, या ऐसे गुण का,-वृत्तम् 1. घटना, बात 2. कथा, कहानी।

इतिह (अव्य०) [इति एवं ह किल—ह्रस्व०] ठीक इस प्रकार, बिल्कुल परंपरा के अनुरूप।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इतिहासः [इति-+-ह-+-आस (अस् धातु, लिट् लकार, अन्य पु०, ए० व०)] 1. इतिहास (परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह) —धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्, पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते। 2. वीर-गाथा (जैसा कि महाभारत) 3. ऐतिहासिक साक्ष्य, परंपरा (जिसको पौराणिक एक प्रमाण मानते हैं)। सम०—**निबन्धनम्**- उपाख्यानयुक्त या वर्णनात्मक रचना।

इत्थम् (अव्य०) [इदम् + थमु] इस लिए, अतः, इस रीति से--इत्थं रतेः किमपि भूतमदृश्यरूपम्—कु० ४।४५, इत्थं गते—इन परिस्थितियों के कारण। सम०—**कारम्** (अव्य०) इस प्रकार,—**भूत** (वि०) 1. इस प्रकार परिस्थितियों में फंसा हुआ, ऐसी दशा में ग्रस्त—कु० ६।२६ कथमित्थंभूता मालवि० ५, का० १४६, 2. **सच्चा**, यथातथ्य, सही (जैसे कि कहानी),--**विध** (वि०) 1. इस प्रकार का 2. इस प्रकार के गुणों से युक्त।

इत्य (वि०) [इण् + क्यप्, तुक्] जिसके पास जाया जाय, जहाँ पहुँचना उपयुक्त हो--इत्यः शिष्येण गुरु-वत्,—त्या 1. जाना, मार्ग 2. डोली, पालकी।

इत्वर (वि०) (स्त्री० **-री**) [इण्-+क्वरप्, तुक्] 1 जाने वाला, यात्रा करने वाला, यात्री 2. क्रूर, कठोर 3. नीच, अधम 4. क्षणिक, नित्य 5. निर्धन,-**रः** हिजड़ा, **-री** 1. व्यभिचारिणी, कुलटा 2. अभिसारिका।

इदम् (सा० वि०)[पुं०-**अयम्**, स्त्री०-**इयम्**, नपुं०-**इदम्**] [इन्द् + कमिन्] 1. यह--जो यहाँ है (वक्ता के निकट की वस्तु की ओर संकेत करते हुए--इदमस्तु संनिकृष्टं रूपम्) इदं तत्... इति वदुच्यते श० ५, यह है कथन की सत्यता 2. उपस्थित, वर्तमान ('यहाँ' की भावना को प्रकट करने के लिए कर्तृवाचक के रूप प्रयुक्त किये जाते हैं: इयमस्मि - यह रही मैं, इसी प्रकार,-इमे स्मः, अयमागच्छामि—यह मैं आता हूँ) 3. यह शब्द तुरन्त ही बाद में आने वाली वस्तु की ओर संकेत करता है जब कि 'एतद्' शब्द पूर्ववर्ती वस्तु की ओर अनुकूलपरस्त्यं अयः सदा सञ्ज्ञिरनुष्ठितः मनु० ३।१४७. (अयम्=वक्ष्य-माणः—कुल्लू०) श्रुत्वैतदिदमब्रवीत्- 4. किसी वस्तु को अधिक स्पष्टतया या बलपूर्वक बतलाने या कई बार शब्दाधिक्य प्रकट करने के लिए यह शब्द यत्, तत्, एतद, अदस्, किम् अथवा किसी पुरुष वाचक सर्वनाम के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है—कोऽयमा-चरत्यविनयम् –श० १।२५. सेयम्, सोऽयम्—यह यहाँ, ...ऽयमहं भोः ...श०, ४, अरे यहाँ तो मैं हूँ।

इदानीम् (अव्य०) [इदम्+दानीम्, इश् च] अब, इस समय, इस विषय में, अभी, अब भी—वत्से प्रतिष्ठ-स्वेदानीम् श० ४, आर्यपुत्र इदानीमसि—उत्तर० ३, **इदानीमेव** अभी, **इदानीमपि**--अब भी, इस विषय में भी।

इदानीन्तन (वि०) (स्त्री० **नी**) वर्तमान, क्षणिक, वर्तमान कालिक।

इद्ध (भू० क० कृ०) [इन्ध्+क्त] जला हुआ, प्रकाशित —**द्धम्** 1. धूप, गर्मी 2. दीप्ति, चमक 3. आश्चर्य।

इध्मः—**ध्मम्** [इध्यतेऽग्निरनेन इन्ध्-+ मक्] ईंधन, विशेषकर वह जो यज्ञाग्नि में काम आता है - रघु० १४।७०. । सम०—**जिह्वः** अग्नि,—**प्रवचनः** कुल्हाड़ी, कुठार (परशु)।

इध्या [इन्ध्-+ क्यप्-+ टाप्] प्रज्वलन, प्रकाशन।

इन (वि०) [इण् + नक्] 1. योग्य, शक्ति शाली, बलवान् 2. मालिक, --नः 1. स्वामी २. सूर्य- शि० २।६५ 3. राजा न न नहीनमहीनपराक्रमम्--रघु० ९।५.।

इन्दिन्दिरः [इन्द्-+ किरच् ति०] बड़ी मधु-मक्खी लंभा-दिन्दिन्दिरो निपतत्सु - भामि० २।८३।

इन्दिरा [इन्द्-+ किरच्] लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी। सम० -**आलयम्** इन्दिरा का आवास, नील कमल, **मन्दिरः** विष्णु का विशेषण (—**रम्**) नील-कमल।

इंदीवरिणी [इन्दीवर+इनि+ङीप्] नील-कमलों का समूह।

इन्दीवरः [इंद्राः वारो वरणम् अस्य—ब० स०] नील कमल।

इन्दुः [उनत्ति क्लेदयति चन्द्रिकया भुवनम्- उन्द्--उ आदेरिच्च] 1. चंद्रमा--दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव--रघु० १।१२, 2. (गणित में) 'एक' की संख्या 3. कपूर। सम० -**कमलम्** सफेद कमल, **कला** चन्द्रमा की कला या अंश (यह कलाएं गिनती में १६ हैं, पौराणिक कथाओं के आधार पर इनमें से प्रत्येक कला क्रमशः १६ देवताओं के द्वारा निगली जाती है)—**कलिका** 1. केतकी का पौधा 2. चन्द्रमा की एक कला,— **कान्तः** चन्द्रकान्तमणि (— न्ता) रात, **क्षयः** 1. चन्द्रमा का प्रतिदिन घटना 2. नूतन-चन्द्र दिवस, प्रतिपदा,— **जः**,— **पुत्रः** बुधग्रह (—**जा**) रेखा या नर्मदा नदी,— **जनकः** समुद्र,—**द्रः** चन्द्रमा की कला, अर्धचन्द्र,—**भा** कुमुदिनी, **भृत्**,— **शेखरः**, —**मौलिः** मस्तक पर चन्द्र को धारण करने वाला देवता, शिव,— **मणिः** चन्द्रकान्तमणि,—**मंडलम्** चन्द्रमा का परिवेश, चन्द्र मण्डल, —**रत्नम्** मोती,— **ले** (**रे**) **खा** चन्द्रमा की कला,—**लोहकम्**,—**लौहम्** चाँदी,— **वतम्** छन्द का नाम द० परिशिष्ट,— **वासरः** सोमवार।

इन्दुमती [इन्दु+मतुप्+ङीप्] 1. पूर्णिमा 2. 'अज' की पत्नी, 'भोज' की बहन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्दूरः [इन्दु+र पृषो० ऊत्वम्] चूहा, मूसा।

इन्द्रः [इन्द्+रन्, इन्दतीति इन्द्रः, इदि ऐश्वर्ये--मल्लि०] 1. देवों का स्वामी 2. वर्षा का देवता, वृष्टि 3. स्वामी या शासक (मनुष्यादिक का), प्रथम, श्रेष्ठ (पदार्थों के किसी वर्ग में), सदैव समास के अन्तिम पद के रूप में, तरक्कद:--मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा इसी प्रकार मृगेन्द्रः-शेर; --गजेन्द्रः, गोयीन्द्रः, कपीन्द्रः;--इन्द्र की पत्नी, इन्द्राणी (अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र भारतीय आर्यों का वृष्टि-देवता है, वेदों में प्रथम श्रेणी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता है, परन्तु पुराणों की दृष्टि से यह द्वितीय श्रेणी के देवता माने जाते हैं। यह कश्यप और अदिति के एक पुत्र है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश के विरुद्ध से यह निम्नतर है, परन्तु यह और दूसरे देवताओं में प्रमुख हैं और सामान्यतः इन्हें सुरेश या देवेन्द्र आदि नामों से पुकारा जाता है। जैसा कि वेदों में वर्णित है उसी प्रकार पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष तथा पूर्व दिशा के अधिष्ठातृ देवता माने जाते हैं, इनका लोक स्वर्ग कहलाता है। यह वज्र धारण करते हैं, बिजली को भेजते हैं और वर्षा करते हैं, यह असुरों के साथ प्रायः युद्ध में लगे रहते हैं और उनको भयभीत करते रहते हैं, परन्तु कई बार उनसे परास्त भी हो जाते हैं। पुराणों में वर्णित इन्द्र कामुकता और व्यभिचार के लिए प्रख्यात हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण उनके द्वारा गौतम की पत्नी अहल्या का सतीत्वहरण है जिसके कारण इन्द्र अहल्या-जार कहलाता है। गौतम ऋषि के शाप से इन्द्र के शरीर पर स्त्री-योनि जैसे हजार चिह्न बन जाते हैं इसीलिए उसे सयोनि कहते हैं, परन्तु बाद में यह चिह्न 'आँख' के रूप में बदल जाते हैं इस लिए यह सहस्रनेत्र, सहस्र-योनि या सहस्राक्ष कहलाने लगते हैं। रामायण में वर्णन आता है कि रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को परास्त कर दिया तथा वह उसे उठा कर लंका में ले गया, इसी साहसिक कार्य करने के उपलक्ष में मेघनाद को 'इन्द्र-जित्' की उपाधि मिली। ब्रह्मा तथा दूसरे देवताओं के बीच में पड़ने पर कहीं इन्द्र का छुटकारा हुआ। इन्द्र के विषय में बहुधा वर्णन मिलता है कि वह सदैव राजाओं को १०० यज्ञ पूरा करने से रोकता रहता है, क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि जो कोई १०० यज्ञ पूरा कर लेगा, वही इन्द्र का पद प्राप्त कर लेगा, यही कारण है कि वह सगर और रघु के यज्ञीय घोड़ों को उठा कर ले गया, दे० रघु० तृतीय सर्ग। यह सदैव घोर तपश्चर्या करने वाले ऋषि-मुनियों से भयभीत रहता है और अप्सराएं भेज कर उनके मार्ग में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है (दे० अप्स-रस्)। कहा जाता है कि उसने पर्वत के पंख काट डाले जब कि वह काट देने लगे थे। उसी समय उसने बल तथा वृत्र की हत्या कर दी। इनकी पत्नी पुलोमा राक्षस की पुत्री है, इनके पुत्र का नाम जयन्त है। यह अर्जुन के पिता भी कहे जाते हैं)। सम०--अनुजः, --अवरजः विष्णु और नारायण की उपाधि,--अरिः एक राक्षस,--आयुधम् इन्द्र का शस्त्र, इन्द्रधनुष् रघु० ७।४, --कीलः --1. 'मंदर' पर्वत का नाम 2. चट्टान (--लम्) इन्द्र की ध्वजा,--कुञ्जरः इन्द्र का हाथी, ऐरावत, --कूटः एक पर्वत का नाम --कोशः (शः), --ध्वजः 1. कौंच, सोफा 2. प्लैटफार्म या समतल बना चबूतरा 3. खूंटी या बैकेट जो दीवार के साथ लगी हो,--गिरिः महेन्द्र पर्वत,--गुरुः, आचार्यः इन्द्र का अध्यापक, अर्थात् बृहस्पति,--गोपः, --गोपकः एक प्रकार का कीड़ा जो सफेद या लाल रंग का होता है, --चापम्,--धनुस् (नपु०) 1. इन्द्रधनुष् 2. इन्द्र की कमान,--जालम् 1. एक शस्त्र जिसे अर्जुन ने प्रयुक्त किया था, युद्ध का दाँव-पेंच 2. जादूगरी, बाजीगरी--स्वप्नेन्द्रजालसदृशः खलु जीवलोकः --शि० २।२, जालिकः (वि०) छद्मपूर्ण, अदास्तविक, भ्रामात्मक (--कः) बाजीगर, जादूगर, --जित् (पुं०) इन्द्र को जीतने वाला, रावण का पुत्र जो लक्ष्मण के द्वारा मारा गया [रावण के पुत्र मेघनाद का दूसरा नाम 'इन्द्रजित्' है। जब रावण ने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से युद्ध किया तो मेघनाद उसके साथ था --वह बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा। 'शिव' से अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण मेघनाद ने अपनी इस जादू की शक्ति का उपयोग किया, फलतः इन्द्र को बांध कर वह उसे लंका में उठा लाया। ब्रह्मा तथा अन्य देवता उसे मुक्त कराने के लिए आये और उन्होंने मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि दी, परन्तु मेघनाद इन्द्र को मुक्त करने के लिए राजी न हुआ जब तक कि उसे 'अमरता' का वरदान न दिया जाय। ब्रह्मा ने उसकी इस अनुचित माँग को मानने से इंकार कर दिया, परन्तु मेघनाद अपनी मांग का निरन्तर आग्रह करता रहा और अन्त में अपना अभीष्ट प्राप्त कर लिया। रामायण में लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का सिर काटे जाने का वर्णन है जब कि वह यज्ञ कर रहा था] °हन्तु,--विजयिन् (पुं०) लक्ष्मण,--तुलम्,--तुलकम् रुई का गद्दा,--दारुः देवदारु का वृक्ष,--नीलः नीलकान्तमणि,--नीलकः पन्ना, --पत्नी इन्द्र की पत्नी शची,--पुरोहितः बृहस्पति, --प्रस्थम् यमुना के किनारे स्थित एक नगर जहाँ पांडव रहते थे (यही नगर आज कल वर्तमान दिल्ली है)।--इन्द्रप्रस्थगमस्तावत्कारि मा सन्तु वेदयः--शि० २।६३,--प्रहरणम् इन्द्र का शस्त्र, वज्र,--मेढ्रजम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोंठ,—**महः** 1. इन्द्र के सम्मान में किया जाने वाला उत्सव 2. बरसात,— **लोकः** इन्द्र का संसार, स्वर्गलोक, —**वज्रः**,— **वल्गा** दो छंदों के नाम दे० परिशिष्ट, —**शत्रुः** 1. इन्द्र का शत्रु या इन्द्र को मारने वाला (जब कि स्वराघात अन्तिम स्वर पर है), प्रह्लाद की उपाधि,— रघु० ७।३५, 2. इन्द्र जिसका शत्रु है, वृत्र का विशेषण (जब कि स्वराघात प्रथम स्वर पर है) [यह घटना शतपथ ब्राह्मण के एक उपाख्यान की ओर संकेत करती है, यहाँ बतलाया गया है कि वृत्र के पिता ने अपने पुत्र को इन्द्र के मारने वाला बनाने का विचार किया और उसे "इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व" बोलने को कहा, परन्तु भूल से उसने प्रथम स्वर पर बलाघात किया और इन्द्र के द्वारा मारा गया—तु० शिक्षा—५२—मंत्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह, स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेंद्रशत्रुः स्वरतोपराधात् ।]—**शलभः** एक प्रकार का कीड़ा, **वीरबहूटी**,— **सुतः**,—**सूनुः** (क) जयन्त का नाम (ख) अर्जुन का नाम (ग) वानरराज वालि का नाम, —**सेनानीः** इन्द्र की सेनाओं का नेता, कार्तिकेय की उपाधि ।

इन्द्रकम् [इन्द्रस्य राज्ञः कं सुखं यत्र—तारा०] सभा-भवन, बड़ा कमरा ।

इन्द्राणी [इन्द्रस्य पत्नी आनुक्+ङीप्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

इन्द्रियम् [इन्द्र+घ—इय] 1. बल, शक्ति (वह गुण जो इन्द्र में विद्यमान था) 2. शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, ऐसे अवयव (इन्द्रियां) दो प्रकार के हैं (क) ज्ञानेन्द्रियां या बुद्धीन्द्रियां—श्रोत्र त्वक्चक्षुर्षी जिह्वा नासिका चैव पंचमी (कुछ के अनुसार 'मन' भी) (ख) कर्मेन्द्रियां—पायूपस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता मनु० २।९१, 3. शारीरिक या पुरुषोचित शक्ति, ज्ञानशक्ति 4. वीर्य 5. पांच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति । सम०—**अगोचर** (वि०) जो दिखलाई न दे सके,—**अर्थः** 1. इन्द्रियों के विषय (वह विषय ये हैं:—रूपं शब्दो गंधरसस्पर्शाश्च विषया अमी—अमर०), भग० ३।३४, रघु० १४।२५,—**आयतनम्** इन्द्रियों का आवास अर्थात् शरीर,—**गोचर** (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा देखा या जाना जा सके (—**रः**) ज्ञान का विषय,—**ग्रामः**,—**वर्गः** इन्द्रियों का समूह, समष्टि रूप से ग्रहण की गई पांच ज्ञानेन्द्रियां —अलब्धानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५, निर्व्वारं मधुनीन्द्रियवर्गः—शि० १०।३, —**ज्ञानम्** चेतना, प्रत्यक्ष करने की शक्ति,—**निग्रहः** ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण,—**त्वम्** अजेयता,—**विप्रतिपत्तिः** (स्त्री०) इन्द्रियों का उन्मार्गगमन,—**सन्निकर्षः** ज्ञानेन्द्रिय का संपर्क (चाहे वह बाह्य विषयों से हो या मन से)—**स्वापः** अजेयता, अचेतना, जडिमा ।

इन्ध् (रुं० आ०) (इद्धे या इंधे, इद्ध) प्रज्वलित करना, जलाना, आग लगाना, (कर्मवा०—इध्यते) जलाया जाना, प्रदीप्त होना, लपटें उठना, सम्—, प्रज्वलित करना ।

इन्धः [इन्ध्+घञ्] इंधन, (लकड़ी कोयला आदि) ।

इन्धनम् [इन्ध्+ल्युट्] 1. प्रज्वलित करना, जलाना 2. इंधन (लकड़ी आदि) ।

इभः [इ+भन्, किच्च] हाथी,—**भी** हथिनी । सम०—**अरिः** सिंह,—**आननः** गणेश तु० 'भजानन' **निभौलिका** चतुराई, बुद्धिमत्ता, सतर्कता,—**शावकः** महावत, **–पोतः** अल्पवयस्क हथिनी,– **पोतः** अल्पवयस्क हाथी, हाथी का बच्चा, —**युवतिः** (स्त्री०) हथिनी ।

इभ्य (वि०) [इभं गजमर्हति - यत्] धनाढ्य, धनवान् —**भ्यः** 1. राजा 2. महावत,—**भ्या** हथिनी ।

इभ्यक (वि०) [स्वार्थे कन्] धनाढ्य, धनी ।

इयत् (वि०) [इदम्+वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने विस्तार का—**इयत्तायुः**—दश० ९३, **इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रम्** रघु० १३।६७, **इतने वर्ष**—**इयं नीतिरितीयती**—शि० २।३०, इतनी ।

इयत्ता, इयत्त्वम् [इयत्+तल्+टाप्, त्वल् वा] 1. (क) इतना, निश्चित मान या परिमाण—**इदंतया रूपमियत्तया वा**—रघु० १३।५, न ·····**यशः परिच्छेत्तुमियत्तयालम्**—६।७७ (ख) सीमित संख्या, सीमा —**न गुणानामियत्ता** रघु० १०।३२, 2. सीमा, मानक ।

इरण्यम् [ऋ+अण् पृषो०] 1. मरुस्थल 2. रेहाली या लुनई भूमि, बंजर भूमि, तु० 'इरिण' ।

इरम्मदः [इरया जलेन माद्यति वर्धते इति –इरा-मद्+खश्, ह्रस्वः मुम्] 1. बिजली की कौंध, बिजली के गिरने से पैदा हुई आग, 2. बाडवानल ।

इरा [इ+रन्, इ काम इति रा+क वा तारा०] 1. पृथ्वी 2. वक्तृता 3. वाणी की देवता सरस्वती 4. जल 5. आहार 6. मदिरा । सम०—**ईशः** वरुण, विष्णु, गणेश,—**चरम्** ओला, इसी प्रकार 'इराचरम्' ।

इरावत् (पुं०) [इरा+मतुप्] समुद्र ।

इरिणम् [ऋ—इनच्, किदिच्च] लुनई भूमि, रिहाली जमीन ।

इरीरः–**लु** (वि०) [उर्व+आरु, पृषो०] नाशक, हिंसक —**लुः** (पुं० स्त्री०) ककड़ी ।

इल् (तु० पर०) (इलति, इलित) या (चु० उभ०) 1. जाना, चलना-फिरना 2. सोना 3. फेंकना, भेजना, डालना ।

इला [इल्+क+टाप्] 1. पृथ्वी 2. गाय 3. वक्तृता —दे० 'इडा' । सम०—**गोलः**—**लम्** पृथ्वी, धरती भूमंडल,—**धरः** पहाड़ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इलिका [इल्+कन्+टाप्] पृथ्वी, धरती ।

इल्वकाः -लाः (ब० व०) [इल्+वल, इल्+क्विप्+वलच् वा] मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर स्थित पाँच तारे ।

इव (अव्य०) [इ+क्वन् वा०] 1. की तरह, जैसा कि (उपमा दर्शाते हुए) —वाग्र्थाविव संपृक्तौ - रघु० १।१, 2. मानों, (उत्प्रेक्षा को दर्शाते हुए) —पश्चात्सीव तिमिरैरिनम्—श० १।६, लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः मृच्छ० १।३४ 3. कुछ, थोड़ा सा, कदाचित् कदाचर इवायम्, गण०, 4. (प्रश्नवाचक शब्दों से जुड़े हुए) 'संभवतः' 'अनलाइये तो' 'निस्सन्देह'—विना सीतां देवा किमिव हि न दुःखं रघुपतेः उत्तर० ६।३०, क इव—किस प्रकार का, किस भांति का, मुहूर्तमिव—केवल क्षण भर के लिए, किंचिदिव—जरा सा, थोड़ा सा; इसी प्रकार ईषदिव, नाचिरादिव आदि ।

इषीका -षिका ।

इष् (क) (तु० पर०) (इच्छति, इष्ट) 1. कामना करना, चाहना, प्रबल इच्छा होना—इच्छामि संवर्तितभाजना ते—कु० ३।३, 2. छाँटना, 3. प्राप्त करने का प्रयत्न करना, तलाश करना, ढूंढना, 4. अनुकूल होना 5. हाँ करना, स्वीकृति देना—(भा० आ०) 1. चाहा जाना 2. निकट किया जाना—हस्तच्छेदनमिष्यते मनु० ८।३२२, अनु —, ढूंढना, कोशिश करना, प्रयत्न करना, अभि —, जी करना, चाहना, परि —, ढूंढना, प्रति —, प्राप्त करना, स्वीकार करना । -देवता शासनं प्रतीष्य श० ६, (ख) (दि० पर०) (इष्यति, इषित) 1. जाना, चलना-फिरना 2. फैलाना 3. डालना, फेंकना, अनु -ढूंढना, ढूंढते के लिए जाना —न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् - कु० ५।४५, प्र —(प्राय. 'प्रेर०') 1. भेज देना, डाल देना, फेंक देना —भट्टि० १५।७७ 2. भेजना, प्रेषण करना —क्रियर्थमुपपदं प्रेषितादयः स्युः श० ५, (ग) (भ्वा० उभ० (एषति) जाना, चलना-फिरना अनु—, अनुसरण करना ।

इषः [इष् -अच्] 1. बलशाली, शक्ति सम्पन्न 2. आश्विन मास, -श्वासनिमिषेतनिमिषेक्षणमन्नतः -शिव० ६।४९ ।

इषि (षी) का [इष् गत्यादौ क्वुन् अत इत्वम्] 1. सरकंडा, नरकुल, °अस्त्रम् रघु० १२।२३ 2. बाण ।

इषिरः [इष्—किरच्] अग्नि ।

इषुः [इष्—उ] 1. बाण 2. पाँच की संख्या । सम० -अग्रम् —अनीकम् बाण की नोक, -असनम्, - -अस्त्रम् धनुष, रघु० ११।३७, आसः 1. धनुष 2. धनुर्धर, योद्धा, भग० १।४, १७, -कारः,—कृत् (पुं०) बाण बनाने वाला, धरः भृत् धनुर्धर, -पथः, - त्रिक्षेपः तीर जाने का स्थान, बाण का परास, --प्रयोगः बाण छोड़ना, तीर चलाना ।

इषुधिः [इषु - धा - कि] तरकस ।

इष्ट (भू० क० कृ०) [इष् -क्त] 1. कामना किया गया, चाहा गया, जो मैं चाहा हुआ, अभिलषित 2. प्रिय, पसंद किया गया, अनुकूल प्यारा 3. पूज्य, आदरणीय 4. प्रतिष्ठित, सम्मानित 5. उत्पन्न, यज्ञों से पूजा गया -ष्टः प्रेमी, पति,—ष्टम् 1. चाह, इच्छा 2. संस्कार 3. यज्ञः (अप०) स्वेच्छापूर्वक । सम०—अर्थः अभीष्ट पदार्थ, -आपत्तिः (स्त्री०) चाही हुई बात का होना, दादी का वक्तव्य जो प्रतिवादी के भी अनुकूल हो —इष्टापत्तौ दोषान्तरमाह—अप०, गन्ध (वि०) सुगंध युक्त (—धः) सुगंधित पदार्थ (—धम्) रेत,—देवः,—देवता अनुकूल देव, अभिभावक देव ।

इष्टका [इष् -तकन्] ईंट-मृच्छ० ३ । सम०--गृहम् ईंटों का घर,—चित (वि०) ईंटों से बना (इष्टकाचित भौ), —न्यासः घर की नींव रखना,—पथः ईंटों से बना मार्ग ।

इष्टापूर्तम् [समाहार द्व० स० पूर्वपददीर्घः] यज्ञादिक पुण्यकार्यों का अनुष्ठान, कूएँ खोदना तथा दूसरे धर्मकार्यों का सम्पादन—इष्टापूर्तविधेः संपत्तशमनात्—महावी० ३।१।

इष्टिः (स्त्री०) [इष्+क्तिन्] 1. कामना, प्रार्थना, इच्छा 2. इच्छुक होना या कोशिश करना 3. अभीष्ट पदार्थ 4. अभीष्ट नियम या आवश्यकता को पूर्ति (भाष्यकार द्वारा कात्यायन के वार्तिकों अथवा पंतजलि के भाष्य में कुछ अतिरिक्त जोड़ना—इष्ट्यां भाष्यकारस्य) नृ० 'उपसंख्यानम्' 5. आवेग, शीघ्रता 6. आमंत्रण, आदेश 7. यज्ञ । सम०- पशुः यज्ञ में बलि दिया जाने वाला जानवर ।

इष्टिका [इष्ट+तिकन्+टाप्] ईंट आदि, दे० 'इष्टका' ।

इष्मः [इष्-मक] 1. कामदेव 2. वसन्त ऋतु ।

इष्यः [इष्-क्यप्] वसन्त ऋतु ।

इस् (अव्य०) [ईं कामं स्यति—सो+क्विप् नि० ओलोपः] क्रोध, पीड़ा और शोक की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय ।

इह (अव्य०) [इदम्+हु इशादेशः] 1. यहाँ (काल, स्थान या दिशा की ओर संकेत करते हुए), इस स्थान पर, इस दशा में 2. इस लोक में (विप० परत्र या अमुत्र) । सम०—अमुत्र (अव्य०) इस लोक में और परलोक में, यहाँ और वहाँ,—लोकः यह संसार या जीवन, —स्थ (वि०) यहाँ विद्यमान ।

इहस्थ (वि०) [इह+स्थ] यहाँ रहने वाला, इस स्थान का, इस लोक का ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ई

ई- (पुं०) [ई+क्विप्] कामदेव (अव्य०) (क) खिन्नता (ख) पीडा (ग) शोक (घ) क्रोध (ङ) अनुकंपा (च) प्रत्यक्षज्ञान या चेतना (छ) तथा संबोधन की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

ईं (क) (दिवा० आ०) (ईयते) जाना (ख) (अदा० पर०) 1. जाना 2. चमकना 3. व्याप्त होना 4. चाहना, कामना करना 5. फेंकना 6. खाना 7. प्रार्थना करना (आ०) 8. गर्भवती होना।

ईक्ष् (भ्वा० पर०) (ईक्षते, ईक्षित) 1. देखना, ताकना, आलोचना करना, अवलोकन करना, टकटकी लगा कर देखना या घूरना 2. खयाल रखना, विचारना, समझना—सर्वभूतस्थमात्मानं·····ईक्षते योगयुक्तात्मा —भग० ६।२९, 3. हिसाब में लगाना, परवाह करना —नाभिजनमीक्षते—को० १०४, न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते—कु० ५।८२ 4. सोचना, विचार करना —तत्तेज ऐक्षत बहुस्यां प्रजायेय - छा० 5. सावधान रहना या किसी के भले बुरे का ध्यान करना (सम्प्र० के साथ)—कृष्णाय ईक्षते गर्गः—सिद्धा० (शुभाशंसं पर्यालोचयति इत्यर्थः) **अधि**—, आशंका करना कुहूकचकिती लोकः सत्येऽपापमधीक्षते—हि० ४।१०२, **अनु**—ध्यान में रखना, खोज करना, ढूंढना, पूछ-ताछ करना, अप—, 1. प्रतीक्षा करना, इंतजार करना—न कालमपेक्षते स्नेहः मृच्छ० ७, कु० ३।२६ 2. आवश्यकता होना, जरूरत होना, कमी होना—शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते - शि० २।८६, **विक्रम**० ४।१२, कु० ३।१८ 3. सावधान रहना, खयाल रखना, ध्यान रखना—किमपेक्ष्य फलम् किं० २।२१, यतः शब्दोऽयं व्यक्तकत्वेऽर्थान्तरमपेक्षते —सा० द० ४, हिसाब में लगाना, सोचना, विचार करना, आदर करना (प्रायः 'न' के साथ)—तदानपेक्ष्य स्वज्ञारोत्मार्दवम्—कु० ५।१८, **अभि वि**—, की ओर देखना, **अव**—, 1. दृष्टि डालना, प्रेक्षण करना, अवलोकन करना 2. निशाना लगाना, ध्यान में रखना —पोत्स्यमानानवेक्षेऽहम्—भग० १।२८, सम्मान करना—रघु० ३।२१, विदितोत्सुकयाप्यवेक्ष्य माम् —८।६०, मेरे सम्मान की खातिर 3 रखवाली करना, रक्षा करना—बलाध्यां दुर्हितरमवेक्षस्व- उत्तर० १, 4. सोचना, विचारना—यदवोचत्तवैक्ष्य मानिनी—कि० २।३, **उद्**—, 1. ढूंढना, खोजना, देखना—सप्रणयमुदीक्षिताः—कु० ६।७, ७।९७, 2. प्रतीक्षा करना —तीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती—मनु० ९।९०, **उत्प्र**—, 1. आशा करना, भविष्य में देखना, उत्प्रेक्षमाणा जघनाभिघातम्—मृद्रा० २, 2. अनुमान लगाना, अंदाज करना—किमुत्प्रेक्षसे कुतस्त्योऽयमिति —उत्तर०४, 3. विश्वास करना, सोचना—उत्प्रेक्षामो वयं तावन्मनिमन्तं विभोरपराधम्- रामा०, **उद्धि**—, मुंह ताकना, उप—, 1. अवहेलना करना, नजर अंदाज करना, परवाह न करना; —उत्प्रेक्षते यः खलयत्नमिन्नीजंटाः—कु० ५।४७, रघु० १४।३४, 2. भाग जाने देना, जाने देना, टालमटोल करना; - नोपेक्षेत क्षणमपि राजा साहसिकं नरम्- मनु० ८।३४४. 3. ध्यान से देखना, विचारना, **निर्**—, 1. टकटकी लगाकर देखना, पूरी तरह से देखना, —धेन्वा·····निरीक्षमाणः सुतरां दयालुः —रघु० २।५२, भग० १।२२, मनु० ४।३८, 2. ढूंढना, खोजना -निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कंटकजालमेव—विष्कमांक०, **परि**—, 1. जांच करना, ध्यानपूर्वक जांच पड़ताल करना अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषोऽस्मिन्न संगते रहः— श० ५।२४, मालवि० १।२, मनु० ५।१४, 2. परीक्षण करना, जांच करना, परीक्षा लेना- मायां मयोद्भूतमपरीक्षितोऽसि— रघु० २।६२, यत्नात्परीक्षितः पुरस्ते—याज्ञ० १।५५, **पौरुष** के विषय में ध्यानपूर्वक जाँचा गया, प्र—, देखना, ताकना, प्रत्यक्ष करना तमात्मानं प्रेक्ष्य—पंच० १, रघु० १२।४४, कु० ६।४७ मनु० ८।१४७ **प्रति**—, इन्तजार करना —संपत्स्यते वः कामोऽयं कालः कंचिच्चिरप्रतीक्ष्यताम्—कु० २।५४ मनु० ९।७७, **प्रतिवि**—, प्रत्यवलोकन करना, **वि**—, देखना, ताकना,—तं वीक्ष्य वेपथुमती—कु० ५।८५, व्यय—, ध्यान करना, खयाल रखना, सम्मान करना (प्रायः 'न' के साथ)—न व्यपेक्षन्त समुत्सुकाः प्रजाः—रघु० १९।६, **सम्**—, 1. देखना, ताकना 2. चिन्तन करना, विचार करना, हिसाब में लगाना —तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते- रघु० ११।१, कु० ५।१६, 3. ध्यानपूर्वक जांचना —असमीक्ष्यकारिन्, **समव**—, 1. देखना, निरीक्षण करना, 2. सोचना **समुप**—, अवहेलना करना, निरादर करना -दे० 'उप' ऊपर।

ईक्षकः [ईक्ष+ण्वुल्] दर्शक।

ईक्षणम् [ईक्ष्+ल्युट्] 1. देखना, ताकना 2. दृष्टि, दृश्य 3. आँख -इत्यदिशोभाप्रहितेक्षणेन- रघु० २।२७, इसी प्रकार 'अलसेक्षण'।

ईक्षणिकः [ईक्षण+ठन्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता।

ईक्षतिः [ईक्ष्+क्तिप्] देखना, दृष्टि—ईक्षतेर्नाशब्दम् ब्रह्म०।

ईक्षा [ईक्ष्+अ+टाप्] 1. दृश्य 2. नजर डालना, विचार करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईक्षिका [ईक्ष्+ण्वुल्, ईक्षा+कन्+टाप् का इत्वम्] 1. आँख 2. झाँकना, झलक।

ईक्षित (भू० क० कृ०) [ईक्ष्+क्त] देखा हुआ, ताका हुआ, खयाल किया हुआ,—तम् 1. दृष्टि, दृश्य 2. आँख —अभिमुखे मयि सहृतमीक्षितम्—शा० २।११।

ईक्ष, ईक्ष् (भ्वा० पर०) (ईक्षति, ईक्षित) 1. जाना, हिलना-डुलना, डाँवाडोल होना, प्रे०—झुलाना, घुमाना 2. हिलना, प्र—हिलाना, डगमगाना—प्रेङ्खद्भ्रूभिर्युग्म मा० ६।५, अमर १।

ईज्, इज्ज् (भ्वा० आ०) 1. जाना 2. निंदा करना, कलंक लगाना।

ईड् (अदा० आ०) (ईळे, ईडित) स्तुति करना—अग्निमीडे पुरोहितम्—ऋक्—१।१।१ शालीनतामव्रजदीड्यमानः—रघु० १८।१७, भट्टि० ९।५७, १८।१५।

ईडा [ईड्+अ+टाप्] स्तुति, प्रशंसा।

ईड्य (सं० कृ०) [ईड्+ण्यत्] प्रशंसनीय, श्लाघ्य—भक्तगीर्भिः मीडयं भवतः पितेव—रघु० ५।३४

ईति: (स्त्री०) [ईः+क्तिच्] 1. महामारी, दुर्भिक्ष, मौसम संकट, ईति बहुधा ६ कही जाती हैं १. अतिवृष्टि २. अनावृष्टि ३. टिड्डीदल ४. चूहे ५. तोते और ६. बाहर से आक्रमण—अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभाः मूषकाः शुकाः, प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः। —निरातंका निरीतयः—रघु० १।६३, 2. संक्रामक रोग 3. (विदेश में) घूमना विदेश यात्रा 4. दंगा।

ईदृक्ता [ईदृश्+तल्+टाप्] गुण (त्रि० 'इदत्ता')—विष्णोरिवास्यानवधारणीयम् ईदृक्तया रूपमितत्थया वा —रघु० १३।५।

ईदृश—श (वि०) (स्त्री०-शी-शी) [ईदृश भी]—ऐसा, इस प्रकार का, इस पहलू का, ऐसे गुण से युक्त।

ईप्सा [आप्तुमिच्छा—आप्+सन्+अ] 1. प्राप्त करने की इच्छा 2. कामना, इच्छा।

ईप्सित (वि०) [आप्+सन्+क्त] इच्छित, अभिलषित, प्रिय—तम् इच्छा, कामना।

ईप्सु (वि०) [आप्+सन्+उ] प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाला, ग्रहण करने की कामना या इच्छा करने वाला (कर्म० और तुमुन् के साथ परन्तु प्रायः समान में) —सौरभ्यमीप्सुरिव ते मुखमारुतस्य—रघु० ५।६२।

ईर् (अदा० आ०) (ईर्ते, ईर्ण) (भ्वा० पर० भी) (क्तान्त ईरित) 1. जाना, हिलना-डुलना, हिलाना (सक० भी) 2. उठना, निकलना, उगना; (चुरा०—उभ०) या प्रेर० (ईरयति, ईरित) 1. फेंकना, छोड़ना, (तीर) चलाना, झलना—ऐरिरच्च महादूतम्—भट्टि० १५।५२ 2. कहना, उच्चारण करना, दोहराना—इतीरयन्तीव तया विरेफिः—नै० १४।२१, शि० ९।६९, कि० १।२६, रघु० ९।८, मा० १।२५ 3. चलाना, हिलना-डुलना, हिलाना—वातेरितपल्लवांगुलिभिः—श० १, 4. नियुक्त करना, काम लेना, उद्—, उठना (प्रेर०) 1. कहना, उच्चारण करना, कथन करना, बोलना, उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते —पंच० १।४३, रघु० २।९, 2. आगे प्रस्तुत करना —प्रदर्शको यमुदीरयिष्यति रघु० ८।९२ 3. फेंकना, (पासा आदि) लुढ़काना रघु० ६।१८, 4. (धूलि आदि) उठना 5. प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, प्र 1. डालना, फेंकना—श० २।२ 2. प्रेरित करना, धकेलना—रघु० ८।४, 3. उकसाना, भड़काना, चलाना, सम्—, 1. कहना 2. हिलाना, हिलना-डुलना, समुद्—, कहना, बोलना।

ईरणः [ईर्+ल्युट्] वायु,—णम् 1. क्षुब्ध करने वाला, हिलाने वाला, चलाने वाला, 2. जाने वाला 3.=ईरण।

ईरिण (वि०) [ईर्+इनन्] मरुस्थल, बंजर,—णम् ऊसर, बंजर भूमि मुहूर्तमिव निःशब्दमासीदीरिणसन्निभम् —रामा०।

ईर्ष्य्—ईर्ष्य्।

ईर्मम् [ईर्+मक्] वात।

ईर्या [ईर्+ण्यत्+टाप्] (धार्मिक भिक्षु के रूप में) इधर उधर घूमना।

ईर्वारुः (पुं० स्त्री०) [ईरु ऋ+उण् वा०] ककड़ी।

ईर्षा—ईर्ष्या।

ईर्ष्य्, ईर्षय् (भ्वा० पर०) (ईर्ष्यति, ईर्ष्यित) डाह करना, ईर्ष्यालु होना, दूसरों की सफलता को देखकर असहिष्णु होना, (सप्र० के साथ)—हरये ईर्ष्यति—सिद्धा०, शि० ८।३६।

ईर्ष्यु, ईर्षुय्, ईर्ष्यक (वि०) [ईर्ष्य्+अच्, उण्, ण्वुल् वा] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु।

ईर्ष्या, ईर्षा [ईर्ष्य्+आ, ईर्ष्य्+घञ्, यलोपः] डाह, जलन, दूसरों की सफलता को देखकर जलन पैदा होना।

ईर्ष्यी (र्षी) नु, **ईर्ष्युः (र्षुः)** (वि०) [ईर्ष्य्+आलुच्, उ वा] डाह करने वाला, असहिष्णु।

ईलिः (ली) (स्त्री०) [ईल्+कि डस्य लः] एक हथियार, डंडा, छोटी तलवार।

ईश् (अदा० आ०) (ईष्टे, ईशित) 1. राज्य करना, स्वामी होना, शासन करना, आदेश देना (सं० के साथ) —अर्थानामीशिषे त्वं वयमपि च गिरामीश्महे यावदर्थम्—भर्तृ० ३।३० 2. योग्य होना, शक्ति रखना, ('तुम्' के साथ) माधुर्यमीष्टे हरिणान् ग्रहीतुम् —रघु० १८।१३, 3. स्वामी होना, अधिकार में करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईश (वि०) [ईश्+क] 1. अपनाने वाला, स्वामी, मालिक, दे० नीचे 2. शक्तिशाली 3 सर्वोपरि,—शः 1. मालिक, स्वामी (सर्व० के साथ या समास में); कथंचिदीशा मनसा बभूवुः -कु० ३।३४ इसी प्रकार ; जगदीश और सुरेश आदि 2. पति 3. ग्यारह 4. शिव, —शा 1. दुर्गा 2. ऐश्वर्यशालिनी स्त्री, धनाढ्य महिला। समः -कोणः उत्तर पूर्वी दिशा,—पुरी, —नगरी बनारस, वाराणसी, सखः कुबेर का विशेषण।

ईशानः [ईश् ताच्छील्ये चानश्] 1. शासक, स्वामी, मालिक 2. शिव—कु० ७।५६ 3. सूर्य (शिव के रूप में) 4. विष्णु,—नी दुर्गा।

ईशिता-त्वम् [ईशितुः भावः—ईशितृ+तल्+टाप्, त्व वा] सर्वोपरिता, महत्व, शिव की आठ सिद्धियों में एक, दे० 'अणिमन्' या 'सिद्धि'।

ईश्वर (वि०) (स्त्री० रा—री) 1. शक्तिसम्पन्न, योग्य, समर्थ (तुमुन् के साथ) कु० ४।११, 2. धनाढ्य, दौलतमंद,—रः 1 मालिक, स्वामी ईश्वरं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४ 2. राजा, राजकुमार, शासक 3. धनाढ्य या बड़ा आदमी - मा प्रयच्छेश्वरे धनम् हि० १।१५, तु० 'उलटे बांस बरेली को' 4. पति—कि० ९।३९, 5. परमेश्वर 6. शिव—विक्रम० ११।१ 7. कामदेव, -रा, री दुर्गा। समः -निषेधः परमात्मा के अस्तित्व को न मानना, नास्तिकता, —पूजक (वि०) पृथ्वीपाल, भक्त,—सदन् (नपुं०) मन्दिर, -सभम् राजकीय दरबार या सभा।

ईष् (स्वा० उभ०) (ईषति-ते, ईषित) 1. उड़ जाना 2. देखना, नजर डालना 3. देना 4. मार डालना।

ईषः [ईष्+क] आश्विन मास, तु० 'ईष्'।

ईषत् (अव्य०) [ईष्+अति] 1. जरा, कुछ सीमा तक, थोड़ा सा—ईषत् चुम्बितानि—शं० १।३। समः—उष्ण (वि०) गुनगुना -कर (वि०) 1. थोड़ा करने वाला अनायास पूरा हो जाने वाला, —जलम् उथला पानी, -पाण्डु (वि०) हल्का पीला, कुछ सफेद, —पुरुषः अधम और घृणित व्यक्ति,—रक्त (वि०) पीला लाल, हल्का लाल,—लभ,—प्रलभ (वि०) थोड़े से में सुलभ,—हासः थोड़ी हंसी, मुस्कराहट।

ईषा [ईष्+क+टाप्] 1. गाड़ी की कड़, 2. हलस।

ईषिका [ईषा+कन्, इत्वम्] 1. हाथी की आँख की पुतली 2. रंगसाज की कूंची 3. हथियार, तीर, बाण।

ईषिः [ईष्+किरच्] अग्नि, आग।

ईषीका [ईष्+क्वनुप्, इत्वम्, दीर्घश्च] 1. रंगसाज की कूंची, 2. ईंट 3. इषीका।

ईक्षः,-क्षः इक्षः, इक्षः।

ईह् (स्वा० आ०) (ईहते, ईहित) 1. कामना करना, चाहना, सोचना (कर्म० या तुमुन् के साथ)—भग० १६।१२, भट्टि० ११।१ 2. प्राप्त करने का प्रयत्न करना 3. लक्ष्य बनाना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, कोशिश करना,—साधर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षारा-म्बुधेरीहते—भर्तृ० २।६, याज्ञ० २।११६, तम् - 1. कामना करना, इच्छा करना, 2. करने का प्रयत्न करना, कोशिश करना -प्रियाणि वाञ्छत्यसुभिः समीहितुम्—कि० ११।९।

ईहः [ईह्+अ] 1. कामना, इच्छा 2. प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा मनु० ९।२०५। समः -मृगः 1. भेड़िया 2. नाटक का एक खंड जिसमें ४ अंक होते हैं, परिभाषा के लिए दे० सा० द० ५१८, वृकः भेड़िया।

ईहित (भू० क० कृ०) [ईह्+क्त] चाहा हुआ, खोजा हुआ, प्रयत्न किया हुआ,—तम् 1. कामना, इच्छा 2. प्रयत्न, प्रयास, 3. अध्यवसाय, कार्य, कृत्य—कि० १।२२।

उ

उः [अत्+डु] शिव का नाम, ओम् के तीन अक्षरों (अ+उ+म्) में से दूसरा दे० अ, -(अव्य०) 1. पूरक के रूप में काम में आने वाला अव्यय—उ उमेश. —सिद्धा० 2. निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय, (क) पुकार,—उ मेति माता तपसी निषिद्धा पश्चादुमाख्या सुमुखी जगाम— कु० १।२६(ख) क्रोध (ग) अनुकम्पा (घ) आदेश (ङ) स्वीकृति (च) प्रश्न वाचकता या केवल (छ) पूरणार्थक; श्रेष्ण साहित्य में मुख्य रूप से अथ (अयो), न (नो) और किम् (किमु) के साथ प्रयुक्त होता है, दे० शब्दों को।

उक्त (भू० क० कृ०) [वच्+क्त] 1. कहा हुआ, बोला हुआ 2. कथित, बताया हुआ (विप० अनुक्त या संभावित) 3. बोला हुआ, संबोधित— असावनुक्तोऽपि सहाय एव—कु० ३।२६ 4. वर्णन किया गया, व्याख्यात किया हुआ,—क्तम् भाषण, शब्दसमुच्चय, वाक्य। समः—अनुक्त कहा और बिना कहा आ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

-उपसंहारः संक्षिप्त वर्णन, सारांश, इतिश्री,—निर्वाहः कही बात का निर्वाह करना, पुंस्कः ऐसा शब्द (स्त्री० या नपुं०) जो पुं० भी हो, और जिसका पु० से भिन्न अर्थ लिङ्ग की भावना से ही प्रकट होता है,—प्रत्युक्त भाषण और उत्तर, व्याख्यान।

उक्तिः (स्त्री०) [वच् | क्तिन्] 1. भाषण, अभिव्यक्ति, वक्तव्य उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः, चन्द्रा० ५।१२०, मनु० ८।१०४ 2. वाक्य 3. अभिव्यक्त करने की शक्ति, शब्द की अभिव्यञ्जनाशक्ति —जैसा कि एकयोक्त्या पुणवती दिवाकरनिशाकरौ - अमर०।

उक्थम् [वच् + थक्] 1. कथन, वाक्य, स्तोत्र 2. स्तुति, प्रशंसा 3. सामवेद।

उक्ष् (भ्वा० उभ०) (उक्षति, उक्षित) 1. छिड़कना, गीला करना, तर करना, अभ्युक्षणं शोणितमस्य भोक्तुः -भट्टि० १७।९, ३।५, शि० ५।३०, रघु० ११।५, २०, कु० १।५४ 2. निकालना, बिखेरना, अभि—, पवित्र तथा अभिमंत्रित जल छिड़कना, -शिरसि शकुन्तलामभ्युक्ष्य शा० ४, परि - इधर-उधर छिड़कना, प्र , पवित्र जल के छींटे देकर अभिमंत्रित करना,—प्राणान्यस्य तथा श्राद्धे प्रोक्षितं द्विजकाम्यया—याज्ञ० १।१७९, मनु० ५।२७, संप्र—, जल के छींटों से अभिमन्त्रित करना—याज्ञ० १।२४।

उक्षणम् [उक्ष्+ल्युट्] 1. छिड़काव 2. छींटे देकर अभिमंत्रित करना—वसिष्ठमन्त्रोक्षणजात् प्रभावात्—रघु० ५।२७।

उक्षन् (पुं०) [उक्ष्+कनिन्] बैल या साँड—कु० ७।७० (कुछ समासों में उक्षन् का 'उक्ष' रह जाता है —महोक्षः, वृद्धोक्षः आदि)। समः तरः छोटा बैल नु० वत्सतर।

उक्ष, उक्ष्ण् (भ्वा० पर०) (ओक्षति, उक्ष्णुति, ओक्षित) जाना, हिलना-डुलना।

उक्षा [उक्ष्+कः+टाप्] पतीली, डेगची।

उक्ष्य (वि०) [उक्षायां संस्कृतम् यत्] 1. पतीली में उबाला हुआ—शूल्यमुक्ष्यं च होमबाह्यं- भट्टि० ४।९,

उक्ष (वि०) [उच्+त्स्न् गच्छन्तोदेशः] 1. भीषण, क्रूर, हिंस्र, जंगली (दृष्टि आदि में) दर्शनः 2. प्रबल, डरावना, भयानक, भयंकर- निरुक्षणमुक्षम्—रघु० ३।६०, मनु० ७।७५, १२।५५, 3. शक्तिशाली, यज्ञवृत, दारुण, तीव्र—उक्षा तपो वेलाम्—भा० ३, अत्यन्त गर्म उक्षाणाम्—मेघ० ११३, अने० पा० 4. तीक्ष्ण, प्रचण्ड, गर्म 5. ऊँचा, भद्र, रः 1. शिव या रुद्र 2. वर्णसंकर जाति—क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की संतान 3. केरल देश (वर्तमान मलाबार) 4. रोद्ररस। समः—गंध (वि०) तीक्ष्ण गंध वाला (—धः) 1. चम्पक वृक्ष 2. लहसुन,—चारिणी, —चंडा दुर्गा देवी,—जाति (वि०) नीच वंश में उत्पन्न, जारज,—दर्शनरूप (वि०) घोर दर्शन वाला, भयानक दृष्टि वाला,—धन्वन् (वि०) मजबूत धनुष को धारण करने वाला; (पुं०) शिव, इन्द्र, —शेखरा शिव की चोटी, गंगा,—सेनः मथुरा का राजा और कंस का पिता (कंस ने अपने पिता को गद्दी से उतार कर कारागार में डाला था, परन्तु कृष्ण ने कंस को मार कर उसके पिता को कारागार से मुक्त कर सिंहासनासीन किया)।

उग्रंपश्य (वि०) [उग्र+दृश्+खश्, मुमागमः] भीषण दृष्टिवाला, डरावना, विकराल।

उद् (दिवा० पर०) (उच्यति, उचित या उग्र—अधिकांश में भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त) 1. संचय करना, एकत्र करना, 2. शौकीन होना, प्रसन्नता अनुभव करना 3. उचित या योग्य होना, अभ्यस्त होना।

उचित (भू० क० कृ०) [उच्+क्त] 1. योग्य, ठीक, सही, उपयुक्त—उचितस्तदुपालम्भः—उत्तर० ३, प्रायः तुमुन् के साथ—उचित न ते मङ्गलकाले रोदितुम् - श० ४ 2. प्रचलित प्रथानुरूप,—उचितेषु करणीयेषु - भा० ४ 3. अभ्यस्त, प्रचलित (समास में)—नीवारभागधेयोचितैः—रघु० १।५०, २।२५, ३।५४, ६०, ११।९, कि० १।३४, 4. प्रशंसनीय।

उच्च (वि०) [उद्+चित्+ड] 1. (सभी बातों में) ऊँचा, लम्बा - क्षितिधारणोच्चम्—कु० ७।६३, उन्नत, उत्कृष्ट (परिवार आदि) 2. ऊँचा, ऊँची आवाज वाला—उच्चाः पक्षिगणाः—शि० ४।१८ 3. तीव्र, दारुण, घोर। समः—तरु नारियल का पेड़, —तालः ऊंचा संगीत, नृत्य आदि,—नीच (वि०) 1. ऊँचा नीचा 2. विविध, —ललाटा,—टिका, ऊँचे मस्तक वाली स्त्री, -संस्थ (वि०) ऊँचा पद ग्रहण करने वाला (नक्षत्रादिक) रघु० ३।१३, दे० इस पर मल्लि०।

उच्चकैः (अव्य०) [उच्चैस्+अकच्] 1. ऊँचा, ऊँचाई पर, उन्नत, (आल० भी)—श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैः —शि० ११।६, १६।४६ 2. ऊँचे स्वर वाला।

उच्चक्षुस् (वि०) [ब० स०] 1. ऊपर को आँखें किए हुए, ऊपर की ओर देखते हुए 2. जिसकी आँखें निकाल दी गई हों, अंधा।

उच्चण्ड (वि०) [प्रा० स०] 1. भीषण, भयानक, उग्र 2. फुर्तीला 3. ऊँची आवाज वाला 4. क्रोधी, चिड़चिड़ा।

उच्चन्द्रः (उच्छिष्टः चंद्रो यत्र—अत्या० स०) रात का अन्तिम पहर।

उच्चयः [उद्+चि+अच्] 1. संग्रह, राशि, समुदाय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—रूपोच्चयेन—शा० २।९, तु० 'शिलोच्चय' भी 2. एकत्र करना, संचय करना (फूल आदि) —पुष्पोच्चयं नाटयति—शा० ४, कु० ३।६१, 3. स्त्री के ओढ़ने की गांठ 4. समृद्धि, अभ्युदय ।

उच्चरणम् [उद्+चर्+ल्युट्] 1. ऊपर या बाहर जाना 2. उच्चारण करना ।

उच्चल (वि०) [उद्+चल्+अच्] हिलने-डुलने वाला, —लम् मन ।

उच्चलनम् [उद्+चल्+ल्युट्] चले जाना, कूच करना ।

उच्चलित (भू० क० कृ०) [उद्+चल्+क्त] चलने के लिए तत्पर, प्रस्थान करने वाला—रघु० २।६ ।

उच्चाटनम् [उद्+चट्+णिच्+ल्युट्] 1. हांक कर बाहर करना, निकाल देना 2. वियोग 3. दूर हटाना, (पौधे का) उन्मूलन 4. एक प्रकार का जादू-टोना 5. वाममंत्र चलाना, शत्रु का नाश करना ।

उच्चार [उद्+चर+णिच्+घञ्] 1. कथन, उच्चारण, उद्घोषणा 2. विष्ठा, गोबर—मानुरुच्चार एव सः—हि० प्र० १६, मनु० ४।५० 3. छोड़ना ।

उच्चारणम् [उद्+चर्+णिच्+ल्युट्] 1. बोलना, कथन करना,—वाचः-शिक्षा० २, वेद° 2. उद्घोषणा, उदीरणा ।

उच्चावच (वि०) [मयूरव्यंसकादिगण —उदक् च अवाक् च] 1. ऊँचा, नीचा, अनियमित—मनु० ६।७३ 2. विविध, विभिन्न—मनु० १।३८, शि० ४।४६ ।

उच्चूडः—क: [उद्गता चूडा यस्य -ब० स०] ध्वजा पर फहराने वाला झंडा, ध्वज ।

उच्चैः (अव्य०) [उद्+चि+ऐस्] 1. उत्तुंग, ऊँचा, ऊँचाई पर, ऊपर (विप० नीचैः—नीचैः)—विपक्षपुञ्जैः स्थेयम्—भर्तृ० २।२८, उच्चैरुदातः—पा० १।२।२९ 2. ऊँची आवाज से, कोलाहलपूर्वक 3. प्रबलता से, अत्यन्त, अत्यधिक—विदधति भयमुच्चैर्वीक्ष्यमाणा वनान्ताः—रघु० १।२२ 4. (समास में विशेषण के रूप में प्रयुक्त) (क) उन्नत, कुलीन—जनोऽयमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुकः—कु० ५।६४, शा० ४।१५, रत्ना० ४।१९ (ख) पूज्य, प्रमुख, प्रसिद्ध—उच्चैरुच्चैःश्रवास्तेन—कु० २।४७ । समः—घुष्टम् 1. हंगामा, हल्लागुल्ला, गुलगपाड़ा 2. ऊँची आवाज में की गई घोषणा,—वादः बड़ी प्रशंसा,—शिरस् (वि०) उदाराशय, महानुभाव —कु० १।२२,—श्रवस्,—स (वि० 1. बड़े कानों वाला 2. बहरा; (पुं०) इन्द्र का घोड़ा (जो 'समुद्र-मन्थन से प्राप्त'—कहा जाता है) ।

उच्चैस्तमाम् (अव्य०) [उच्चैस्+तमप्+आम्] 1. अत्यंत ऊँचा 2. बहुत ऊँचे स्वर से ।

उच्चैस्तरम्—राम् (अव्य०) [उच्चैस्+तरप्+आम् च] 1. ऊँचे स्वर से 2. अत्यन्त ऊँचा—कु० ७।९८ ।

उच्छ् (तुदा० पर०) (उच्छति, उष्ट) 1. बांधना 2. पूरा करना 3. छोड़ देना, त्यागना ।

उच्छन्न (वि०) [उद्+छद्+क्त] 1. नष्ट किया हुआ, उखाड़ा हुआ (कदाचित् 'उत्सन्न') दे० उच्छिन्न 2. लुप्त (रचना आदि) ।

उच्छलत् (शतृन्—वि०) [उद्+शल्+शतृ] 1. चमकता हुआ, इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ 2. हिलता-डुलता, चलता-फिरता 3. ऊपर को उड़ता हुआ, ऊपर ऊँचाई पर जाता हुआ ।

उच्छलनम् [उद्+शल्+ल्युट्] ऊपर को जाना, सरकना या उड़ना ।

उच्छादनम् [उद्+छद्+णिच्+ल्युट्] 1. चादर, ढकना 2. तेल मलना, लेप या उबटन से शरीर पोतना ।

उच्छासन (वि०) [उत्क्रान्तः शासनम्] नियंत्रण में न रहने वाला, निरंकुश, उद्दंड ।

उच्छास्त्र, °वर्तिन् [उद्गतः शास्त्रात्—ग० स०] 1. शास्त्र (नागरिक और धार्मिक—विधि-ग्रन्थ) के विरुद्ध आचरण करने वाला 2. विधि-ग्रंथों का उल्लंघन करने वाला ।

उच्छिख (वि०) [उद्गता शिखा यस्य] 1. शिखा युक्त 2. चमकीला, जिसकी ज्वाला ऊपर की ओर जा रही हो—रघु० १६।८७ ।

उच्छित्तिः (स्त्री०) [उद्+छिद्+क्तिन्] मूलोच्छेदन, विनाश । कोसल°—रत्ना० ४ ।

उच्छिन्न (भू० क० कृ०) [उद्+छिद्+क्त] 1. मूलोच्छिन्न, विनष्ट, उखाड़ा हुआ · उच्छिन्नाश्रयकातरेव कुलटा गोत्रान्तरं श्रीर्गता—मृद्रा० ६।५ 2. नीच, अधम ।

उच्छिरस् (वि०) [उन्नतं शिरोऽस्य—ब० स०] 1. ऊँची गर्दन वाला (शा०) 2. उन्नत 3. (अतः) कुलीन, श्रेष्ठ, महानुभाव—वीलात्मजापि पितुरुच्छिरसोऽभिलाषम्—कु० ३।७५, ६।७० ।

उच्छिलीन्ध्र (वि०) [ब० स०] कुकुरमुत्ता (सांप की छतरी) से भरा स्थान,—कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्राम-वन्ध्याम् मेघ० ११,—भ्रम् कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी ।

उच्छिष्ट (भू० क० कृ०) [उत्+शिष्+क्त] 1. शेष, बचा हुआ, 2. अस्वीकृत, त्यक्त—रघु० १२।१५ 3. वासी, °कल्पना, पुराने विचार या आविष्कार, —ष्टम् 1. जूठन, खंड, अवशिष्ट (विशेषतः यज्ञ या आहार का)-नोच्छिष्टं कस्यचिद्ब्याद्-मनु० २।५६ । सम०—अन्नम् जूठन, भुक्तावशेष—भोक्तव्यम् भोग ।

उच्छीर्षकम् [उत्थापितं शीर्षं यस्मिन्] 1. तकिया 2. सिर ।

उच्छुल्क (वि०) [उद्+शुल्+क्त तस्य कः] सूखा, मुर्झाया हुआ ।

उच्छून (वि०) [उद्+श्वि+क्त] 1. सूजा हुआ —प्रबल-रुदितोच्छूननेत्रं प्रियायाः—मेघ० ८६, उत्तानोच्छून-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मण्डूकपाटितोदरसंनिभम्–काव्य० ७, अनवरतरुदितो-च्छूनतानम्रदृष्टम्–दश० ९५ 2. मोटा 3. ऊँचा, उत्तुंग।

उच्छ्रूल (वि०) [उद्गतः शूलात्:--ब० स०] 1. बेलगाम्, अनियंत्रित, निरंकुश–°वाला–पच० ३, अन्यदुच्छ्रूङ्कुलं सत्त्वमन्त्र्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्–शि० २।६२ 2. स्वेच्छाचारी 3. अनियमित, क्रमहीन।

उच्छेदः वनम् [उद्+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. काट कर फेंक देना 2. मूलोच्छेदन, उखाड़ देना, काम तमाम कर देना–सतां भवेच्छेदकरः पिता ते—रघु० १४।७४ 3. अपच्छेदन।

उच्छेषः—षणम् [उद्+शिष्+घञ्, ल्युट् वा] अवशेष।

उच्छोषण (वि०) [उद्+शुष्+णिच्+ल्युट्] 1 सुखाने वाला, मुर्झा देने वाला–यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् भग० २।८ 2. जलना,—णम् सुखा देना, कुम्हलाना, मुर्झाना।

उच्छ्रय (च्छ्रा) यः [उद्+श्रि+अच्+घञ् वा] 1. (तारों आदि का) उदय होना 2. उठाना, उत्थापन 3. ऊँचाई, उत्तेच (शारीरिक और नैतिक)–शृङ्गोच्छ्रायैः कुसुमविशदैर्यो वितत्य स्थितः खम्– मेघ० ६०, कि० ७।२७, ८।२३, 4. विकास, वृद्धि, गहनता, गुण°–कि० ८।२१ नीतोच्छ्रायम्–५।३१, 5. घमंड।

उच्छ्रयणम् [उद्+श्रि+ल्युट्] उन्नयन, उत्थापन।

उच्छ्रित (भू० क० कृ०) [उद्+श्रि+क्त] 1. उठाया हुआ, उत्थापित 2. ऊपर गया हुआ, उद्गत 3. ऊँचा, लंबा, उत्तुंग, उन्नत 4. पैदा किया हुआ, जात 5. वर्धमान, समृद्ध, बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 6. अभिमानी।

उच्छ्रितिः=उच्छ्रयः

उच्छ्वसनम् [उद्+श्वस्+ल्युट्] 1. सांस लेना, आह भरना 2. गहरी सांस लेना।

उच्छ्वसित (भू० क० कृ०) [उद्+श्वस्+क्त] (कर्तरि प्रयोग) 1. गहरी सांस लेना, सांस लेना 2. मुंह से भाप बाहर निकालना 3. पूरा खिला हुआ, विकसित 4. तरोताजः–मेघ० ४२, 5. आश्वसित–उत्कंठोच्छ्वसितहृदया— मेघ० १००,—तम् 1. सांस, प्राण —सा कुलपतेरुच्छ्वसितमिव–श० २, 2. प्रफुल्ल, फूंक मारना 3. सांस बाहर निकालना–रघु० ८।३, 4. गहरी सांस लेना, उभार, धड़कन 5. शरीर में रहने वाले पांच प्राण।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. सांस, सांस अन्दर खींचना, सांस बाहर निकालना—मुखोच्छ्वासगन्धम् —विक्रम० ४।२२, ऋतु० ११३, मेघ० १०२ 2. प्राणों का आश्रय 3. आह भरना 4. आश्वासन, प्रोत्साहन –अमरु ११, 5. फूंकनी 6. पुस्तक का खंड या भाग (जैसे हर्षचरित का) तु० अध्याय।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उच्छ्वास+इनि] 1. सांस लेने वाला 2. गहरी सांस लेने वाला, आह भरने वाला 3. मिटने वाला, मुर्झानेवाला।

उज्जयि (यी) नी [प्रा० स०] एक नगर का नाम, मालवा प्रदेश में वर्तमान उज्जैन, हिन्दुओं की सात पुण्यनगरियों में से एक, (तु० अवन्ति)—सौधोत्संङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः--मेघ० २७।

उज्जासनम् [उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] मारना, हत्या करना– चौरस्योज्जासनम्--सिद्धा०।

उज्जिहान (वि०) [उद्–हा+शानच्] ऊपर जाता हुआ, (सूर्य की भांति) उदय होता हुआ–उज्जिहानस्य भानोः--मुद्रा० ४।२१ 2. विदा होता हुआ, बाहर जाता हुआ, °जीविता वराकीम्—मा० १०।

उज्जृम्भ (वि०) [ब० स०] 1. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ–उज्जृम्भयुवदनाम्भोजा भिनस्यङ्गानि सङ्गमा—मा० ९ 2. दरारदार, खुला हुआ,—भः 1. बिखर, फुलाव, फूंक मारना 2. तोड़ कर टुकड़े करना, जुदा२ करना

उज्जृम्भा-भणम् [उद्+जृम्भ्+अ, ल्युट् वा] 1. जम्हाई लेना 2. मुंह बाना, फैलाना, वृद्धि।

उज्ज्य (वि०) [उद्गता ज्या यस्य—ब० स०] वह धनुष जिसके धनुष की डोरी खुली हुई हो।

उज्ज्वल (वि०)[उद्+ज्वल्+अच्] 1. उजला, चमकीला, कांतियुक्त—उज्ज्वलकपोलं मुखम्--शि० ९।४८ 2. प्रिय, सुन्दर—सर्गो निसर्गोज्ज्वलः—नै० ३।१३६ 3. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ 4. अनियंत्रित,—लः प्रेम, राग,—लम् सोना।

उज्ज्वलनम् [उद्+ज्वल्+ल्युट्] 1. जलना, चमकना 2. कान्ति, दीप्ति।

उज्झ् (तुदा० पर०) (उज्झति, उज्झित) 1. त्यागना, छोड़ना, तिलांजलि देना–सपदि विगतनिद्रस्तत्यमुज्झाचकार—रघु० ५।७५, १।४०, ५१ आतपायोज्झितं छायम्—महा०, धूप में डाला हुआ 2. टालना, बचना —उदये मदवाच्यमुज्झता—रघु० ८।८४ 3. उत्सर्जन करना, बाहर निकालना –अविरतोज्झितवारिविपाण्डुभि—कि० ५।६, शि० ४।६३।

उज्झकः [उज्झ्+ण्वुल्] 1. बादल 2. भक्त।

उज्झनम् [उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, दूर करना, छोड़ना।

उञ्छ (तुदा० पर०) (उञ्छति, उञ्छित) बालें इकट्ठी करना, बीनना (एक-एक करके)—शिलानप्युञ्छतः --मनु० ३।१००

उञ्छः [उञ्छ्+घञ्] बालें इकट्ठी करना या अनाज के दाने बीनना, तान्युञ्छपराङ्मुखैरकतानि—रघु० ५।८, मनु० १०।११२,—छम् बालें इकट्ठी करना। सम० —वृत्ति,—शील (वि०) जो शिलोञ्छन से अपनी जीविका चलाता है, खेत में बचे अनाज के कणों को चुन कर पेट भरने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उच्छ्यनम् [उच्छ्+ल्युट्] खेत में पड़े अनाज के दानों को एकत्र करना ।

उटम् [उ+टक्] 1. पत्ता 2. घास । समः ज:- जम् -(उटेम्यो जायते) झोंपड़ी, कुटिया, आश्रम (पर्णशाला)—उलद्वारयिरुद्धं नीवारग्रन्थिं विलोकयतः—शा० ४।२०, रघु० १।५०, ५२ ।

उडुः (स्त्री०) **उडू** (नपुं०) [उड्+कु वा०] 1. नक्षत्र, तारा—इन्दुप्रकाशान्तरितोडुतुल्याः—रघु० १६।६५, 2. जल (केवल नपुं० में) । समः -चक्रम्—राशिचक्र, -पः,-पम् लट्ठों का बना बेड़ा,-तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्—रघु० १।२, केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३ (-पः) चन्द्रमा —मृच्छ० ४।२४—पतिः,-राज् चन्द्रमा -जितमुडुपतिना—रत्ना० १।५, रसाभ्यकरयोडुपतेश्च रश्मयः—कु० ५।२२—पथः आकाश, अन्तरिक्ष ।

उडुम्बरः [उं शम्भुं वृणोति--उ+वृ+क्विप्, मुम् उत्कृष्टः उम्बरः—प्रा० स० दस्य हस्वम्] 1. गूलर का वृक्ष (औदुम्बर), 2. घर की देहली या ड्योढ़ी 3. हिजड़ा 4. एक प्रकार का कोढ़ (—रम् भी),—रम् 1. गूलर का फल 2. ताँबा ।

उडुपः=**उडुपः** ।

उड्डयनम् [उद्+डी+ल्युट्] ऊपर उड़ना, उड़ान लेना -गतो विरुद्धोड्डयने निराशताम्—नै. १।१२५ ।

उड्डामर (वि०) [प्रा० स०] 1. रुचिकर, श्रेष्ठ 2. प्रबल, भयावह -उड्डामरस्वप्नसविस्तरिदोःखण्डपर्याप्तिताश्वाधारम् -मा० २।२३ ।

उड्डीन (भू० क० कृ०) [उद्+डी+क्त] उड़ा हुआ, ऊपर उड़ता हुआ, -नम् 1. ऊपर उड़ना, उड़ान लेना 2. पक्षियों की एक विशेष उड़ान ।

उड्डीयनम् [उड्डः स इव आचरति—यङ्लु, उड्डीय+ल्युट्] उड़ान ।

उड्डीशः [उद्+डी+क्विप् -उड्डी तस्य ईशः] शिव ।

उड्रः [उड्+रक्] देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा, दे० ओड्र ।

उड्वेरकः [?] आटे का लड्डू, गोला, रोटी -वर्षवोड्वेरकव्रजः—याज्ञ० १।१२८ ।

उत् (अव्य०) [उ+क्विप्] (क) सन्देह (ख) प्रश्न वाचकता (ग) सोचविचार और (घ) तीव्रता ।

उत (अव्य०) [उ+क्त] 1. निम्नांकित भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय - (क) सन्देह, अनिश्चितता अनुमान (या),—तत्किमयमातपदोषः स्यादुत यथा मे मनसि वर्तते- श० ३, स्थाणूरयमुत पुरुषः गण० (ख) विकल्प, प्रायः 'कि' का सहवर्ती (या),—किमिदं गुरुभिरुपदिष्टमुत धर्मशास्त्रेषु पठितमुत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्—का० १५५, कु० ६।२३, 'उत' के स्थान में 'आहो' या 'आहोस्वित्' भी प्रयुक्त होता है, कई बार तो 'आहो' 'आहोस्वित्' या 'स्वित्' को 'उत' से जोड़ दिया जाता है (ग) साहचर्य, संयोग ('और' 'भी' शब्दों द्वारा समुच्चयात्मकता का बोध कराने वाला) -उत बलवानुतावधः (घ) प्रश्नवाचकता -उत दण्डः पतिष्यति 2. प्रति—इसके विपरीत, दूसरी ओर, बल्कि- सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः - शि० २।५५ 3. किम् -कितना अधिक, कितना कम दे० किम्, उत -उत गाथा-एकश्लोक दर्शमात्रं राज्यमृताश्रयः -गण० ।

उतथ्यः (?) अंगिरा का पुत्र, तथा बृहस्पति का बड़ा भाई ।—अनुजः,- अनुजन्मन् (पुं०) बृहस्पति, देवताओं का गुरु,- तथ्यमुतथ्यानुजवञ्चनादाय गंदायजम्- शि० २।६९ ।

उत्क (वि०) [उद्-स्वार्थे कन्] 1 इच्छुक, लालायित, उत्कंठित (समास में)-अद्रिसुतासमागमोत्कः---कु० ६।९५ मानसोत्काः-मेघ० ११, कई बार तुमुन् के साथ--शि० ४।१८. 2. विद्यमान, दुःखी, शोकान्वित 3. उन्मना ।

उत्कञ्चुक (वि०) [ब० स०] बिना अंगिया पहने या बिना कवच धारण किये हुए ।

उत्कट (वि०) [उद्+कटच्] 1. बड़ा, प्रशस्त—उत्तर० ४।२९ 2. शक्तिशाली, ताकतवर, भीषण 3. अत्यधिक, ज्यादह -अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते-हि० १।८५, 4. भरपूर, समृद्ध 5. मदिरासेवी, मदमत्त, उन्मत्त, मदोत्कट 6. श्रेष्ठ, उत्तम 7. विषम,—टः 1. हाथी के मस्तक से बहनेवाला मद 2. मदयुक्त हाथी ।

उत्कण्ठ (वि०) [उन्नत कण्ठो यस्य] 1. गर्दन ऊपर को उठाये हुए, (अतः) तत्पर, तैयार, करने के लिए उत्सुक (समास में)- आज्ञापनोत्कण्ठः -रा० २, रथस्वनोत्कण्ठमयं बालमीकीये तपोवने --रघु० १५।११ 2. (अतः) चिन्तातुर, उत्सुक,-ठः, ठा संभोग करने की एक रीति ।

उत्कण्ठा [उद्+कण्ठ्+अ+टाप्] 1. चिन्तातुरता, बेचैनी--यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया --श० ४।५, 2. प्रिय वस्तु या प्रियतम पाने की लालसा —दृष्टिरधिकं सोत्कण्ठमुद्वीक्षते अमरु २४, 3. खेद, शोक, किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना गाढोत्कण्ठा -मा० १।१५, मेघ० ८३ ।

उत्कण्ठित (भू० क० कृ०) [उद्+कण्ठ्+क्त] 1. चिन्तातुर, व्यथित होनेवाला, शोकान्वित 2. किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के लिए लालायित, ता अपने अनुपस्थित प्रेमी या पति से मिलने की प्रबल लालसा रखने वाली नायिका, आठ नायिकाओं में से एक—सा० द० १२१ में दी गई परिभाषा -आगन्तु कृतचित्तोऽपि दैवान्नायाति यत्प्रियः, तदनागमदुःखार्ता विरहोत्कण्ठिता तु सा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्कन्धर (वि०) [उन्नतः कन्धरोऽस्य—ब० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए, उद्ग्रीव—उत्कन्धरं दारुकमित्युवाच—शि० ४।१८।

उत्कम्प (वि०) [ब० स०] काँपता हुआ, —पः,—पनम् काँपना, कंपकंपी, क्षोभ—किमधिकमासोत्कम्पं दिशः समुदीक्षसे - अमरु २८, मालवि० ७२।

उत्करः [उद्+कृ+अप्] 1. ढेर, समुच्चय 2. अम्बर, चट्टा 3. मलवा मृच्छ० ३।

उत्कर्करः [ब० स०] एक प्रकार का वाद्य-उपकरण, बाजा।

उत्कर्तनम् [उद्+कृत्+ल्युट्] 1. काट देना, फाड़ देना 2. उखाड़ देना, मूलोच्छेदन।

उत्कर्षः [उद्+कृष्+घञ्] 1. ऊपर को खींचना 2. उन्नति, प्रभुता, उदय, समृद्धि—निनीषुः कुलमुत्कर्षम् -मनु० ४।२४४,९।२४ 3. वृद्धि, बहुतायत, अधिकता—पंचानामपि भूतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः—रघु० ४।११ 4. उत्कृष्टता, सर्वोपरि गुण, यश - उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २, 5. अहंमन्यता, शेखी 6. प्रसन्नता।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1. ऊपर खींचना, ऊपर लेना, ऊपर करना।

उत्कलः [उद्+कल्+अच्] 1. एक देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा या उस देश के निवासी (ब० व०), जगन्नाथ-प्रान्तदेश उत्कलैः परिकीर्तितं—दे० 'ओड्र' उत्कलादर्शित पथः—रघु० ४।३८ 2. बहेलिया, चिड़ीमार 3. कुली।

उत्कलाप (वि०) [ब० स०] पूंछ फैलाये हुए और सीधी उठाये हुए रघु० १६।५४।

उत्कलिका [उद्+कल्+वुन्] 1. चिन्तातुरता, बेचैनी —जाता नोत्कलिका—अमरु ७८, 2. लालसा करना, खेद प्रकाश करना, किसी वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना 3. काम क्रीडा, हेला, 4. कली 5. तरंग —क्षुभितमुत्कलिकातरलं मनः- तरंगों द्वारा क्षुब्ध—मा० ३।१०, (यहाँ स्वयं 'उत्कलिका' का अर्थ 'चिन्तातुरता' है) शि० ३।७०। सम०-प्रायम् गद्यरचना का एक प्रकार जिसमें समास बहुत हों तथा कठोर वर्ण हों—भवेदुत्कलिकाप्रायं समासाढ्यं दृढाक्षरम्—छं०।

उत्कषणम् [उद्+कष्+ल्युट्] 1. फाड़ना, ऊपर को खींचना 2. जोतना, (हल आदि), खींच कर ले जाना - सद्यः सीरोत्कषणसुरभिं क्षेत्रमारुह्य मालम्—मेघ० १७, 3. रगड़ना —भामि० १।७३।

उत्कारः [उद्+कृ+घञ्] 1. अनाज फटकना 2. अनाज की ढेरी लगाना 3. अनाज बीनने वाला।

उत्कासः, नम्, उत्कासिका [उत्+कास्+अप्, ल्युट्, ण्वुल् वा] खखारना, गले को साफ करना।

उत्किर (वि०) [उद्+कृ+श] हवा में उड़ता हुआ, ऊपर को बिखरता हुआ, धारण करता हुआ—कु० ५।२६, ६।५, रघु० १।३८।

उत्कीर्तनम् [उद्+कृ+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना, कीर्तिगान करना 2. घोषणा करना।

उत्कुब्जम् [उन्नतः कुब्जो यत्र ब० स०] ऊपर को मुंह करके लेटना या सोना, चित लेटना।

उत्कुणः [उत्+कुण्+क] 1. खटमल 2. जूं।

उत्कुल (वि०) [उत्क्रान्तः कुलात् -अत्या० स०] पतित, कुल को अपमानित करने वाला—यदि यथा ददति क्षितिपस्तया, दमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया—श० ५।२७।

उत्कूजः [प्रा० स०] (कोयल की) कूक।

उत्कूटः [उन्नतं कूटमस्य—ब० स०] छाता, छतरी।

उत्कूर्दनम् [उद्+कूर्द्+ल्युट्] कूदना, ऊपर को उछलना।

उत्कूल (वि०) [उत्क्रान्तः कूलात्—अत्या० स०] किनारे से बाहर निकल कर बहने वाला।

उत्कूलित (वि०) [उद्+कूल्+क्त] किनारे तक पहुँचने वाला—शि० ३।७०।

उत्कृष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+कृष्+क्त] 1. उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ, उन्नत 2. श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम, सर्वोच्च -मनु० ५।१६३, ८।२८१ बल°—पंच० ३।३६, बलवत्तर 3. जोता हुआ, हल चलाया हुआ।

उत्कोचः [उत्कुच्+घञ्] रिश्वत—उत्कोचमिव दर्शती —का० २३२ याज्ञ० १।३३८।

उत्कोचकः [उत्कोच्+कन्] 1. घूस, रिश्वत 2. (वि०) [उद्+कुच्+ण्वुल्] रिश्वतखोर, घूस लेने वाला —मनु० ९।२५८।

उत्क्रमः [उद्+क्रम्+घञ्] 1. ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2. क्रमोल्लंघन 3. विचलन, अतिक्रमण, उल्लंघन।

उत्क्रमणम् [उद्+क्रम्+ल्युट्] 1. ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2. चढ़ाई 3. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना 4. (शरीर में से) आत्मा का पलायन अर्थात् मृत्यु—मनु० ६।६३।

उत्क्रान्तिः (स्त्री०) [उद्+क्रम्+क्तिन्] 1. बाहर निकलना, ऊपर जाना, कूच करना 2. आगे बढ़ जाना 3. उल्लंघन, अतिक्रमण।

उत्क्रामः [उद्+क्रम्+घञ्] 1. ऊपर या बाहर जाना, प्रस्थान करना 2. आगे बढ़ जाना 3. उल्लंघन अतिक्रमण।

उत्क्रोशः [उद्+क्रुश्+घञ्] 1. हल्ला-गुल्ला, गुलगपाड़ा 2. घोषणा 3. कुररी।

उत्क्लेदः [उद्+क्लिद्+घञ्] आर्द्र या तर होना।

उत्क्लेशः [उद्+क्लिश्+घञ्] 1. उत्तेजना, अशान्ति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. शरीर का ठीक हालत में न रहना 3. रोग, विशेषकर सामुद्रिक रोग।

उत्क्षिप्त (भू० क० कृ०) [उद्+क्षिप्+क्त] 1. ऊपर को फेंका हुआ, उछाला हुआ, उठाया हुआ 2. पकड़ा हुआ, सहारा दिया हुआ, 3. ध्वस्त, अभिभूत, आहत—विस्मय°—रत्ना०, 4. सिराया हुआ, ध्वस्त, —प्तः घतूरा, धतूरे का पौधा।

उत्क्षिप्तिका [उत्क्षिप्त+कन्—टाप् इत्वम्] चन्द्रकला के आकार का कान का आभूषण।

उत्क्षेपः [उद्+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना —पक्ष्मोत्क्षेप—मेघ० ४९, 2. जो ऊपर फेंका या उछाला जाय—बिन्दूत्क्षेपान् पिपासुः—मालवि० २।१३ 3. भेजना, प्रषित करना 4. वमन करना।

उत्क्षेपक (वि०) [उद्+क्षिप्+ण्वुल्] ऊपर फेंकने या उछालने वाला, उत्तत करने वाला या ऊपर उठाने वाला—याज्ञ० २।२७४,—कः 1. कपड़े आदि धोने वाला—वस्त्रादयुत्क्षिप्यस्पन्दहरतीत्युत्क्षेपकः -मिता० 2. भेजने वाला या आदेश देने वाला।

उत्क्षेपणम् [उद्+क्षिप्+ल्युट्] 1. ऊपर फेंकना, उछालना या उछालना—अतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात् —शृ० १।३० 2. वैशेषिकों के मतानुसार पाँच कर्मों में से एक कर्म 'उत्क्षेपण' 3. वमन करना 4. भेजना, प्रेषित करना 5. (अनाज साफ करने के लिए) छाज 6. पंखा।

उत्खचित (वि०) [उद्+खच्+क्त] मिलाकर गूंथा हुआ, बुना हुआ या जड़ा हुआ—कुंभोत्खचितान् वलीभृतः—रघु० ८।५३, १३।५४।

उत्खला [उद्+खल्+अच्+टाप्] एक प्रकार का सुगन्ध।

उत्खात (भू० क० कृ०) [उद्+खन्+क्त] 1. खोदा हुआ, खोद कर निकाला हुआ 2. उद्धृत, बाहर निकाला हुआ—उत्तर० ३ 3. जड़ से उखाड़ा हुआ, जड़ समेत तोड़ा हुआ (शा०)—लोलाः उत्तर० ३।१६ 4. (आलं०) (क) उन्मूलित, बिलकुल नष्ट किया हुआ, ध्वस्त—किमुत्खात नन्दवंशस्य मुद्रा० १, लक्ष्मणो मधुरेश्वरः प्राप्तः—उत्तर० ७, (ख) पदच्युत, अधिकार या शक्ति से वंचित किया हुआ—फलैः संवर्धयामासुरुत्खातप्रतिरोपिताः—रघु० ४।३७ (यहाँ 'उत्खात' का अर्थ 'उन्मूलित' भी है),—तम् एक गर्त, खड्ड, ऊबड़-खाबड़ भूमि। सम०—केलिः (स्त्री०) खेल-खेल में सींग या दांत से धरती खोदना—उत्खातकेलिः शृंगार्द्रवप्रक्रीडा निगद्यते।

उत्खातिन् (वि०) [उत्खात+इनि] विषम, ऊँची-नीची, विषम (विप० 'सम')—उत्खातिनी भूमिरिति मया गजिगमयमतान्नस्य मन्दीकृतो वेगः—श० १।

उत्त (वि०) [उन्द्+क्त] आर्द्र, गीला।

उत्तंसः [उद्+तंस+अच्] 1. शिखा, मोर का चूड़ा, मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण —उत्तंसानहरत वारि मूर्धजेभ्यः—शि० ८।५७ तु० 'कर्णोत्तंस' 2. कान का आभूषण—मा० ५।१८, भामि० २।५५।

उत्तंसित (वि०) [उत्तंस+इतच्] 1. कानों में आभूषण पहने हुए 2. शिखा में धारण किया हुआ—भर्तृ० ३।१२९।

उत्तट (वि०) [उत्क्रान्तं तटम्—अत्या० स०] किनारे के बाहर निकल कर बहने वाला—रघु० ११।५८।

उत्तप्त (भू० क० कृ०) [उद्+तप्+क्त] जलाया हुआ, गरम किया हुआ, झुलसाया हुआ °कनक —का० ४३,—प्तम् भुना मांस।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] 1. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ (बहुधा समास में) द्विजोत्तम—इसी प्रकार सुर° आदि—आर्येणाधमकर्मणोऽभिगुणः संजायते जायते—भर्तृ० २।६७, 2. प्रमुख, सर्वोच्च, उच्चतम, 3. उन्नततम, मुख्य, प्रधान 4. सबसे बड़ा, प्रथम, मुख्य २।२४९, —मः 1. विष्णु 2. अन्तिम पुरुष (अंग्रेजी में इसी 'उत्तम पुरुष' का प्रथम पुरुष कहते हैं),—मा श्रेष्ठ महिला। सम०—अङ्गम् शरीर का श्रेष्ठ अंग, सिर, —खचित° त्रिपथगाङ्गहरीलिमाङ्गः—रघु० ७।९१, मनु० ११।३३, ८।७०० कु० ७।९२, भग० ११।२७, **अधम** (वि०) ऊँचा-नीचा **°अधम**, अच्छा, बीच के दर्जे का, और बुरा,—**अर्धः** 1. बढ़िया आधा 2. अन्तिम आधा, **अह्नः** अन्तिम या बाद का दिन, अच्छा दिन, भाग्यशाली दिन,—**ऋणः,—ऋणिकः** (उत्तमर्णः) उधार देने वाला, **साहसकार** (विप० **°अधमर्ण**), **पदम्** ऊँचा पद, **पु(पुं)रुषः** 1. क्रिया के रूपों में अन्तिम पुरुष (अंग्रेजी वाक्यरचना के अनुसार प्रथम पुरुष) 2. परमात्मा 3. श्रेष्ठ पुरुष,—**श्लोक** (वि०) उत्तम ख्याति का, श्रीमान्, यशस्वी, सुविख्यात,—**संग्रह** (स्त्री०) पर-स्त्री के साथ साठ-गाठ अर्थात् प्रेम संबंधी बातें करना,—**साहसः,—सम्** उच्चतम आर्थिक दण्ड, १००० पण का दण्ड (कुछ औरों के मतानुसार ८००००)।

उत्तमीय (वि०) [उत्तम+छ] सर्वोच्च, उच्चतम, सर्वश्रेष्ठ, प्रधान।

उत्तम्भः,—भनम् [उद्+तम्भ्+घञ्, ल्युट् वा] 1. संभालना, थामे रखना, सहारा देना भुवनोत्तम्भनस्तम्भान्—का० २६०, 2. थूनी, टेक, सहारा 3. रोकना, निरुपाय करना।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1. उत्तर दिशा में पैदा होने वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति रूप रचना) 2. उच्चतर, अपेक्षाकृत ऊँचा (विप० **अधर**)—अवनतोत्तरं कायम्—रघु० ९।६० 3. (क) बाद का, दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० **पूर्व**) पूर्व मेघः —उत्तर मेघः—°मीमांसा, उत्तरार्धः आदि—°राम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चरितम् (ख) आगामी, उपसंहारात्मक 4. बायां (विप० दक्षिणं) 5. वढ़िया, मूल्य, श्रेष्ठ 6. अपेक्षाकृत अधिक, से अधिक (बहुधा संख्याओं से युक्त समस्त पदों में अन्तिम खंड के रूप में प्रयुक्त)—षड्नवतिः छियानवे—२६, अष्टोत्तर शतम् १०८, 7. से युक्त या सहित, पूर्ण, मुख्यतया से युक्त, से अनुगत (समास के अन्त में)—राजां तु चरितार्थता दुःखोत्तरैव श० ५, अक्षोत्तरमीक्षितां— कु० ५।६१ 8. पार किया जाना,—रः 1. आगामी समय, भविष्यत्काल 2. विष्णु 3. शिव 4. विराट राजा का पुत्र,—रा 1. उत्तर दिशा—अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा—कु० १।१ 2. एक नक्षत्र 3. विराट राजा की पुत्री और अभिमन्यु की पत्नी,—रम् 1. जवाब,—प्रत्यक्षमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम् —रघु० ८।४७, —उत्तराद्दत्तरं वाक्यं वदतां संप्रजायते —पंच० १।६० 2. (विधि में) प्रतिवाद, प्रत्युक्ति 3. समास का अंतिम पद 4. (मीमांसा में) अधिकरण का चौथा अंग 5. उत्तर 5. उपसंहार 6. अवशेष, अवशिष्ट 7. अधिकता, आवश्यकता से ऊपर, दे० ऊपर उत्तर (वि०) 8. अवशेष, अन्तर (गणित में), -रम् (अव्य०) 1. ऊपर 2. बाद में -तत उत्तरम्, इत उत्तरम् आदि। समा०—अधर (वि०) उच्चतर और निम्नतर (आलं० भी), —अधिकारः, रिता, स्वम् सम्पत्ति में अधिकार, बरासत, बपौती —अधिकारिन् (पुं०) किसी के बाद उसकी संपत्ति पाने का हकदार, -अयनम् (ण्यण् न को म हो गया) 1. सूर्य की (भूमध्य रेखा से) उत्तर की ओर गति भाग० ८।२४ 2. मकर से कर्क संक्रान्ति तक का काल, —अर्धम् 1. शरीर का ऊपरी भाग 2. उत्तरी भाग 3. दूसरा आधा—उत्तरार्धं (विप० 'पूर्वार्धं'),—अहः आगामी दिन,—आभाषः मिथ्या उत्तर, आशा उत्तर दिशा, -अधिपतिः, पतिः कुबेर का विशेषण,—आषाढा २१ वां नक्षत्र जिसमें तीन तारों का पुंज है, आसंगः ऊपर पहनने का वस्त्र—कृतोत्तरासंगं का० ४३, शि० २।१९, कु० ५।१६, इतर (वि०) उत्तर से भिन्न अर्थात् दक्षिणी,(—रा) दक्षिण-दिशा, उत्तर (वि०) 1. अधिक और अधिक, उच्चतर और उच्चतर 2. क्रमागत, लगातार दर्घशीलः स्नेहेन दृष्टिः —पंच० १, यात्रा० २।१३६ (-रम्) प्रत्युत्तर, उत्तर का उत्तर—अलमुत्तरोत्तरेण मुद्रा० ३, -ओष्ठः ऊपर का होठ(उत्तरो-ष्ठः),—काण्डम् रामायण का सातवां काण्ड,—कायः शरीर का ऊपरी भाग—रघु० ९।६०, —कालः भविष्यत्काल,—कुरु (पुं० ब० व०) संसार के ९ भागों में से एक, उत्तरी कुरुओं का देश,—कोसलाः (पुं० ब० व०) उत्तरी कोशल देश-पितुरनन्तरमुत्तर-कोसलान्—रघु० ९।१,—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदेहिक श्राद्धादिक कर्म,—छदः बिस्तर की चादर, बिछावन (सामान्य)— रघु० ५।६५, १७।२१,—ज (वि०) बाद में पैदा होने वाला,—ज्योतिषः (पुं० ब० व०) उत्तरी ज्योतिष प्रदेश,—दायक (वि०) जो आज्ञाकारी न हो, जवाब देने वाला, धृष्ट,—दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा 'ईशः,—पालः उत्तर दिशा का पालक या स्वामी कुबेर,—पक्षः 1. उत्तरी कक्ष 2. चांदमास का कृष्ण पक्ष 3. किसी विषय का द्वितीय पक्ष—अर्थात् उत्तर, उत्तर में प्रस्तुत तर्क बहस का जवाब सिद्धान्त पक्ष (विप० 'पूर्वपक्ष')—प्राणयन् पवन व्याघेर्गिरयुत्तरपक्षताम्—शि० २।१५ 4. प्रदर्शन की गई सचाई या उपसंहार 5. अनुमान की प्रक्रिया में गौण उक्ति 6. (मी० में) अधिकरण का पाँचवाँ अंग (सदस्य),—पदः 1. ऊपर पहनने का वस्त्र 2. बिछावन या उत्तरच्छद,—पथः उत्तरी मार्ग, उत्तर दिशा को ले जाने वाला मार्ग,—पदम् 1. समास का अन्तिम पद 2. समास में दूसरे शब्द के साथ जोड़ा जाने वाला शब्द,—पश्चिमा उत्तर-पश्चिम दिशा,—पादः कानूनी अभियोग का दूसरा भाग, दावे का जवाब,—पुरुषः —उत्तम पुरुषः,—पूर्वा उत्तर-पूर्व दिशा,—प्रच्छदः रजाई का खोल या उच्छादन, रजाई,—प्रत्युत्तरम् 1. तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, प्रत्यारोप 2. कानूनी मुकदमें में पक्ष-समर्थन,—फ (फा) ल्गुनी १२ वां नक्षत्र जिसमें दो तारों का पुंज होता है,—भाद्रपद्—दा २६ वां नक्षत्र जिसमें दो तारे रहते हैं,—मीमांसा वाद में प्रणीत मीमांसा—वेदान्त दर्शन (मीमांसा—जिसे प्रायः पूर्व मीमांसा कहते हैं—से भिन्न),—लक्षणम् वास्तविक उत्तर का संकेत,—वयसं,-स् (नपुं०) वृद्धावस्था, जीवन का ह्रासमान काल,—वस्त्रं—वासस् (नपुं०) ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र, दुपट्टा, चोगा या अंगरखा, -वादिन् (पुं०) प्रतिवादी, मुद्दालह,—साधक सहायक, मददगार।

उत्तरङ्ग (वि०) [ब० स०] 1. तरंगित, जलप्लावित, क्षुब्ध मुद्रा० ६।३, 2. उछलती हुई लहरों वाला—रघु० ७।३६, कु० ३।४८।

उत्तरतः -रात् (अव्य०)[उत्तर+तस्, आति वा] 1. उत्तर से, उत्तर दिशा तक 2. बाईं ओर को (विप० दक्षिणतः) 3. पीछे 4. बाद में।

उत्तरत्र (अव्य०) [उत्तर+त्रल] पश्चात्, बाद में, फिर, नीचे (किसी रचना में), अन्तिम रूप में।

उत्तराहि (अव्य०) [उत्तर+आहि] उत्तर दिशा की ओर, (अपा० के साथ) के उत्तर में,—भट्टिः ८।१०७।

उत्तारीयम्—यकम् [उत्तर+छ, वा कप्] ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तरेण (अव्य०) [उत्तर+एनप्] (संब० कर्म० के साथ अथवा समास के अन्त में) उत्तर की ओर, ···के उत्तर दिशा की ओर—तत्रागारं धनपतिगृहान्युत्तरेणा-स्मदीयम्—मेघ० ७७ अने० पा०, मा० ९।२४।

उत्तरेद्युः (अव्य०) [उत्तर+एद्युस्] अगले दिन, आगामी दिन, कल।

उत्तर्जनम् [उद्+तर्ज्+ल्युट्] जबरदस्त झिड़की।

उत्तान (वि०) [उद्गतस्तानो विस्तारो यस्मात्—ब० स०] 1. पसारा हुआ, फैलाया हुआ, विस्तार किया हुआ, प्रसृत किया हुआ—उत्तर० ३।२३, 2. (क) चित लेटा हुआ—मा० ३,—उत्तानोच्छ्वसमंडूकपाटिताोदर संनिभे—काव्य० ७, (ख) सीधा, खड़ा 3. खुला 4. स्पष्ट, निष्कपट, खरा—स्वभावोत्तानहृदयं श० ५, स्पष्टवक्तृता 5. नतोदर 6. छिछला। सम०—पादः एक राजा, ध्रुव का पिता, °अः ध्रुव (उत्तानपाद का पुत्र), ध्रुव तारा, —शय (वि०) पीठ के बल सोता हुआ, चित लेटा हुआ—कदा उत्तानशयः पुत्रकः जनयिष्यति मे हृदयाह्लादम् —का० ६२, (—यः, —या) छोटा बच्चा, दूध-पीता या दुधमुँहा बच्चा, शिशु।

उत्तापः [उद्+तप्+घञ्] 1. भारी गर्मी, जलन 2. कष्ट, पीड़ा 3. उत्तेजना, जोश।

उत्तारः [उद्+तॄ+घञ्] 1. परिवहन, बहन 2. घाट उतरना 3. तट पर लगना, तट पर उतारना 4. मुक्ति पाना 5. वमन करना।

उत्तारकः [उद्+तॄ+णिच्+ण्वुल्] 1. उद्धारक, बचाने वाला 2. शिव।

उत्तारणम् [उद्+तॄ+णिच्+ल्युट्] उतारना, उद्धार करना, बचाना,—णः विष्णु।

उत्ताल (वि०) [अत्या० स०] 1. बड़ा, मजबूत 2. प्रबल, घोर—शि० १२।३१ 3. दुर्धर्ष, भयानक, भीषण—उत्तालास्ते हमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमाः—उत्तर० २।३०, शि० २०।६८, मा० ५।११, २३, 4. दुष्कर, कठिन 5. उन्नत, उत्तुंग, ऊँचा—शि० ३।८,—लः लंगूर।

उत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] उच्च, ऊँचा, लंबा—करप्रचेयान्युत्तुङ्गः प्रभृशक्ति प्रथीयसीम्—शि० २।८१, हैम-पीठानि २।५।

उत्तुषः [उद्गतः तुषोऽस्मात्—ब० स०]—भूसी से पृथक् किया हुआ या भुना हुआ (लाजा) अन्न।

उत्तेजक (वि०) [उद्+तिज्+णिच्+ण्वुल्] 1. भड़काने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक - क्षुध्°, काम° आदि।

उत्तेजनम्—ना [उद्+तिज्+णिच्+ल्युट्, यज् वा] 1. जोश दिलाना, भड़काना, उकसाना—ममैवैते स्वाकैः—मुद्रा० ४, महावी० २, 2. ढकेलना, हाँकना 3. भेजना, प्रेषित करना 4. तेज करना, धार लगाना, (शस्त्रादिक) चमकाना 5. बढ़ावा देना, प्रोत्साहन देना।

उत्तोरण (वि०) [ब० स०] उठी हुई या खड़ी मेहराबों आदि से सजा हुआ—उत्तोरणं राजपथं प्रपेदे—कु० ७। ६३, रघु० १४।१०।

उत्तोलनम् [उद्+तुल्+णिच्+ल्युट्] ऊपर उठाना, उभारना।

उत्त्यागः [उद्+त्यज्+घञ्] 1. तिलांजलि देना, छोड़ देना 2. फेंकना, उछालना 3. सांसारिक वासनाओं से संन्यास।

उत्त्रासः [उद्+त्रस्+घञ्] अत्यन्त भय, आतंक।

उत्थ (वि०) [उद्+स्था+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1. से पैदा या उत्पन्न, उदय होने वाला, जन्म लेने वाला—दरीमुखोत्थेन समीरणेन कु० १।८, ६।५१, रघु० १२।८२ 2. ऊपर उठता हुआ, ऊपर आता हुआ।

उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1. उदय होने या ऊपर उठने की क्रिया, उठना—शत्रैर्यदुत्थानम्—भट्टि० ३।९, 2. (नक्षत्रादिक का) उदय होना—रघु० ६।३१ 3. उद्गम, उत्पत्ति 4. मनोत्थान 5. प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा- मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः श० २।५, यद्युत्थानं भवेन्मह्यम्—मनु० ९।२५९, (धन के लिए) प्रयत्न, सम्पत्ति-अभिग्रहण 6. पौरुष 7. हर्ष, प्रसन्नता 8. युद्ध, लड़ाई 9. सेना 10. आंगन, वासमंडप 11. अवधि, सीमा, हद 12. जागरण,—एकादशी देव-उठनी कार्तिक-सुदी एकादशी, विष्णुप्रबोधिनी।

उत्थापनम् [उद्+स्था+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. उठाना खड़ा करना, जगाना 2. उभारना, उन्नत करना, 3. उत्तेजित करना, भड़काना 4. जगाना, प्रबुद्ध करना (आलं० भी) 5. वमन करना।

उत्थित (भू० क० कृ०) [उद्+स्था+क्त] 1. उदित, या (अपने आसन से) उठा हुआ—वत्सो निताम्बो-त्थितमुन्मिषन्तः सन्—रघु० २।६१, ७।१०, ३।६१, कु० ७।९१, 2. उठाया हुआ, ऊपर गया हुआ शि० ११।३, 3. जात, उत्पन्न, उद्गत,—उदितवत्सः—रघु० २।६१; फूट पड़ा (जैसा कि आग) 4. बढ़ता हुआ, वर्धनशील (बल में), प्रगति करता हुआ 5. सीमा-बद्ध 6. विरत, प्रसृत—श० ४।४। सम०—अंगुलिः फैलाई हुई हथेली।

उत्थितिः (स्त्री०) [उद्+स्था+क्तिन्] उन्नति, ऊपर उठना।

उत्पक्ष्मन् (वि०) [ब० स०] उठती पलकों वाला—उत्पक्ष्मणोन्नमयोरुदञ्चदनिमम्—श० ४।१५, विक्रम० २।

उत्पतः [उद्+पत्+अच्] पक्षी।

उत्पतनम् [उद्+पत्+ल्युट्] 1. ऊपर उड़ना, उछलना 2. ऊपर उठना या जाना, चढ़ना।

उत्पताक (वि०) [उत्क्षिप्ता पताका यत्र—ब० स०] झंडा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊपर उठाए हुए, जहां झंडे फहरा रहे हों—पुरंदरश्रीः पुरमुत्पताकम् · रघु० ७।७४।

उत्पतिष्णु (वि०) [उद्+पत्+इष्णुच्] उड़ता हुआ, ऊपर जाता हुआ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. जन्म विपदुत्पत्तिमपास्यितां—रघु० ८।८३, 2. उत्पादन,—कुसुम कुसुमोत्पत्तिः श्रूयते न तु दृश्यते—शृंगार० १७, 3. स्रोत, मूल—उत्पत्तिः साधुतायाः का० ४५, 4. उठना, ऊपर जाना, दिखाई देना 5. लाभ, उपजाऊपन, पैदावार। सम० **व्यंजकः** जन्म का एक प्रकार (उपनयन संस्कार करके या यज्ञोपवीत पहना कर छात्र को दीक्षित करना), द्विजत्व का चिह्न—मनु० २।६८।

उत्पथः [उत्क्रान्तः पन्थानम् · प्रा० स०] कुमार्ग (आल० भी) मूरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः, उत्पथप्रतिपन्नस्य न्याय्यं भवति शासनम्। महा०, (परित्यागे विधीयते— पंच० १।३०६.) शि० १२।२४, —थम् (अव्य०) कुमार्ग पर, पथभ्रष्ट (भूला-भटका)।

उत्पन्न (भू० क० कृ०) [उद्+पद्+क्त] 1. जात, पैदा हुआ, उदित 2. उठा हुआ, ऊपर गया हुआ 3. अवाप्त।

उत्पल (वि०) [उत्क्रान्तः पलं मांसम् · उद् · पल्+अच्] मांसहीन, शीर्ण, दुबला-पतला, · लम् 1. नीला कमल, कमल, कुमुद—तवावतारे कमलादिवोत्पलम्—रघु० ३।३६, १२।८६, मेघ० २६, नीलोत्पलपत्रधारया—श० १।१८, इसी प्रकार—रक्त · 2. सामान्यतः पौधा। सम०—**अक्षः**—**चक्षुस्** (वि०) कमल जैसी आंखों वाला, **पत्रम्** 1. कमल का पत्ता 2. किसी स्त्री के नाखून से की गई खरोंच, नखक्षत।

उत्पलिन् (वि०) [उत्पल+इनि] कमलों से भरपूर, नी 1. कमलों का समूह, 2. कमल का पौधा जिसमें कमल लगे हों।

उत्पवनम् [उद्+पू+ल्युट्] मार्जन करना, शोधन करना —मनु० ५।११५।

उत्पाटः [उद्+पट्+घञ्] 1. मूलोच्छेदन, उन्मूलन 2. बाह्य कान में शोथ।

उत्पाटनम् [उद्+पट्+णिच्+ल्युट्] उखाड़ना, मूलोच्छेदन, उन्मूलन।

उत्पाटिका [उद्+पट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] वृक्ष की छाल।

उत्पाटिन् (वि०) [उद्+पट्+णिच्+णिनि] (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त) मूलोच्छेदन करने वाला, फाड़ने वाला—कौलीप्राटीव वानरः—पंच० १।२१।

उत्पातः [उद्+पत्+घञ्] 1. उड़ान, छलांग, कूदना —एकोत्पातेन · एक छलांग में 2. उलट कर आना, ऊपर उठना (आल० भी)—करनिहतकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम्—हि० १, अने० पा० 3. अनहोनी, संकटसूचक अशुभ या आकस्मिक घटना, · उत्पातेन ज्ञापिते च—वाति०, वेणी० १।२२, सापि सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरंपरा केयम्—का०व० १० 4. कोई सार्वजनिक संकट (ग्रहण, भूचाल आदि), **केतु** —का० ५, **धूमलेखाकेतु**—मा० ९।४८। सम० —**पवनः**,—**वातः**,—**वातालिः** अनिष्टसूचक या प्रचण्ड वायु, बवंडर या आंधी—रघु० १५।२३।

उत्पाद (वि०) [ब० स०] जिसके पैर ऊपर उठे हों,— **दः** जन्म, उत्पत्ति, प्रादुर्भावः दुःखे च शीर्णिलोत्पादे शाखाच्छेदने तथा—शब्द० २।२२५, **भङ्गुरम्** पंच० २।१७३। सम०—**शमः**,—**शनः** 1. बच्चा 2. एक प्रकार का तीतर।

उत्पादक (वि०) (स्त्री०—**दिका**) [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् ह्रस्वश्च] उपजाऊ, फलोत्पादक, पैदा करने वाला, **-कः** पैदा करने वाला, जनक पिता, —**कम्** उद्गम, कारण।

उत्पादनम् [उद्+पद्+णिच्+ल्युट्] जन्म देना, पैदा करना, जनन—उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम् मनु० ९।२७।

उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का कीड़ा, दीमक 2. माता।

उत्पादिन् (वि०) [उद्+पद्+णिच्+णिनि] पैदा हुआ, जात—सर्वमुत्पादि भङ्गुरम्— हि० १।२०८।

उत्पालो [उद्+पल्+घञ्+ङीष्] स्वास्थ्य।

उत्पिञ्जर-ल (वि०) [अव्या० स०] 1. मुक्त, जो पिंजड़े में बन्द न हो 2. ऋणहीन, अव्यवहित।

उत्पीडः [उद्+पीड्+घञ्] 1. दबाव 2. (क) धाराप्रवाह, धाराप्रवाही बहाव—बाष्पोत्पीडः—का० २९६ —उत्पीड इव धूमस्य मौर्व्याः प्रागावृणोति माम्—उत्तर० ३।१, नयननलिलोत्पीडरुद्धः प्रकाशम्—मेघ० ९१ (ख) उत्प्रवाह, आधिक्य, —पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया—उत्तर० ३।२९ 3. झाग, फेन।

उत्पीडनम् [उद्+पीड्+णिच्—ल्युट्] 1. दबाना, निचोड़ना 2. पेलना, आघात करना · का० ८२।

उत्पुच्छ (वि०) [ब० स०] जिसकी पूंछ ऊपर उठी हो।

उत्पुलक (वि०) [ब० स०] 1. रोमांचित, जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों 2. हर्षोत्फुल्ल, प्रसन्न।

उत्प्रभ (वि०) [ब० स०] प्रकाश बखेरने वाला,—भा प्रभापूर्ण,—भः दहकती हुई आग।

उत्प्रवसः [उद्—प्र+वस्+अच्] गर्भपात।

उत्प्रासः-सनम् [उद्—प्र+प्रस्—घञ्, ल्युट् वा] 1. फेंकना, पटकना 2. मजाक, मखौल 3. अट्टहास 4. खिल्ली उड़ाना, उपहास करना, व्यंग्योक्ति।

उत्प्रेक्षणम् [उद्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. दृष्टिपात करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 2. ऊपर की ओर देखना 3. अनुमान, अटकल 4. तुलना करना।

उत्प्रेक्षा [उद्+प्र+ईक्ष+अ] 1. अटकल, अनुमान 2. उपेक्षा, उदासीनता 3. (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय को कई बातों में समान समझने की कल्पना की जाती है, और उस समानता के आधार पर उनके एकत्व की संभावना की ओर स्पष्ट रूप से या किसी तात्पर्यार्थ के द्वारा संकेत किया जाता है—उदा० लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः —मुद्रा० १।३४ स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः —कु० १।१, तु० सा० द० ६८६-९२, और उत्प्रेक्षा के प्रसंग में रस०।

उत्प्लवः [उद्+प्लु+अप्] उछल-कूद, छलांग,—वा किश्ती।

उत्प्लवनम् [उद्+प्लु+ल्युट्] कूदना, उछलना, ऊपर से छलांग लगाना।

उत्फलम् [प्रा० स०] उत्तम फल।

उत्फालः [उद्+फल्+घञ्] 1. कूद, छलांग, द्रुतगति मृच्छ० ६, 2. कूदने की स्थिति।

उत्फुल्ल (भू० क० कृ०) [उद्+फुल्+क्त] 1. खुला हुआ, (फूल की भांति) खिला हुआ 2. खब खुला हुआ, प्रसारित, विस्फारित (आंखें) 3. सूजा हुआ, शरीर में फूला हुआ 4. पीठ के बल सोया हुआ, तु० उत्तान,—ल्लम् योनि, भग।

उत्सः [उनत्ति जलेन, उन्द्+स किच्च नलोपः] 1. झरना, फौवारा 2. जल का स्थान।

उत्सङ्गः [उद्+सञ्ज्+घञ्] 1. गोद,—पुत्रपूर्णोत्सङ्गा —उत्तर० १, विक्रम० ५।१० न केवलमुत्सङ्गशिचरा-न्मनोरथोऽपि मे पूर्णः—उत्तर० ४, मेघ० ८७ 2. आलिंगन, संपर्क, संयोग—मा० ८।६, 3. भीतर, पड़ोस —दरीगृहोत्सङ्गनिषक्तभासः—कु० १।१०, शय्योत्सङ्गे —मेघ० ९३ 4. सतह, पार्श्व, ढाल—वृषदो वाभितोत्सङ्गाः —रघु० ४।७४, १४।७६ 5. नितंब के ऊपर का भाग या कूल्हा 6. ऊपरी भाग, शिखर 7. पहाड़ की चढ़ाई—तुङ्गं नगोत्सङ्गमिवारुरोह—रघु० ६।३ 8. घर की छत।

उत्सङ्गित (वि०) [उत्सङ्ग+इतच्] 1. संयुक्त सम्मिलित, संपर्क में लाया हुआ—शि० ३।७९, 2. गोद में लिया हुआ।

उत्सञ्जनम् [उद्+सञ्ज्+ल्युट्] ऊपर को फेंकना, ऊपर उठाना।

उत्सन्न (भू० क० कृ०) [उद्+सद्+क्त] 1. सड़ा हुआ 2. नष्ट, बर्बाद, उखाड़ा हुआ, उजाड़ा हुआ —उत्सन्नोऽस्मि—का० १६४, बर्बाद—मकरध्वज इवोत्सन्नविग्रहः—का० ५४, भग० १।४४ निद्रा—का० १७१, 3. अभिशप्त, आफत का मारा 4. व्यवहार में न आने वाला, विलुप्त (पुस्तकादिक)।

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1. एक ओर रख देना, छोड़ देना, तिलांजलि देना, स्थगन—कु० ७।४९, 2. उंडेलना, गिरा देना, निकालना—तोयोत्सर्गद्रुततरगतिः मेघ० १९।३७ 3. उपहार, दान, प्रदान मनु० ११।९४ 4. व्यय करना 5. ढीला करना, खुला छोड़ देना—जैसा कि 'वृषोत्सर्ग' में 6. आहुति, तर्पण 7. विष्ठा, मल आदि—पुरीष°, मलमूत्र° 8. पूर्ति (अध्ययन या वेदादिक की) तु०—उत्सृष्टा वै वेदाः 9. सामान्य नियम या विधि (विप० अपवाद—एक विशेष नियम)—अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः—कु० २।२७. अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः—रघु० १५।७ 10. गोदा।

उत्सर्जनम् [उद्+सृज्+ल्युट्] 1. त्याग, तिलांजलि देना, ढीला करना, मुक्त करना आदि 2. उपहार, दान 3. वेदाध्ययन का स्थगन 4. इस स्थगन से संबद्ध एक षाण्मासिक संस्कार वेदोत्सर्जनाख्यं कर्म करिष्य —श्रावणी मंत्र—मनु० ४।९६।

उत्सर्पः,—सर्पणम् [उद्+सृप्+घञ्, ल्युट् वा] 1. ऊपर को जाना या सरकना 2. फूलना, हांकना।

उत्सर्पिन् (वि०) [उद्+सृप्+णिनि] 1. ऊपर को जाने या सरकने वाला, उठने वाला—रघु० १६।६२, 2. उड़ने वाला, प्रोन्नत—उत्सर्पिणी खलु महता प्रार्थना—श० ७।

उत्सवः [उद्+सू+अप्] 1. पर्व, हर्ष या आनन्द का अवसर, जयन्ती, रत्न° शा० ६।१९, तांडव आनन्द या हर्षनृत्य, उत्तर० ३।१८ मनु० ३।५९ 2. हर्ष, प्रमोद, आमोद—स कृत्वा विरतोत्सवान् रघु० ४।१७, १६।१०, पराभवोत्सुक एव मानिनाम् —कि० १।४१, 3. ऊँचाई, उन्नति 4. रोष 5. कामना, इच्छा। सम०—संकेताः (पु० ब० व०) एक जाति, हिमालय स्थित एक जंगली जाति—शरैरुत्सवसंकेतान् स कृत्वा विरतोत्सवान्—रघु० ४।७८।

उत्साहः [उद्+सह्+घञ्] नाश, अपक्षय, बर्बादी, हानि—शीतमुत्साहकारि मृगाणाम् —का० ३२।

उत्साहनम् [उद्+सह्+णिच्+ल्युट्] 1. नाश करना, उखेल देना—उत्साहनार्थं लोकानां—महा०, भग० १७।१९ 2. स्थगित करना, बाधा डालना 3. शरीर पर सुगंधित पदार्थ मलना—मनु० ३।२०९, २११, 4. घाव भरना 5. ऊपर जाना, चढ़ना, उठना 6. उन्नत होना, उठाना 7. खेत को भली-भांति जोतना।

उत्साहकः [उद्+सह्+णिच्+ण्वुल्] 1. आरक्षी 2. पहरेदार 3. कुली, उठाईवाला।

उत्सारणम् [उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. हटाना, दूर रखना, मार्ग में से हटा देना 2. अतिथि का स्वागत करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्साह: [उद्+सह्+घञ्] 1. प्रयत्न, प्रयास—धृत्युत्साह-समन्वित:—भग० १८।२६ 2. शक्ति, उमंग, इच्छा —स-दोत्साहकृतोऽपि मृगयाव्यादिना माद्रवेन श० २, मर्मोत्साहभङ्ग मा कृथा:—हि० ३, मेरे उत्साह को मत तोड़ो 3. धैर्य, ऊर्जा या तेज, राजा की तीन शक्तियों में से एक (प्रभाव और मंत्र दो शक्तियां और हैं) कु० १।२२, 4. दृढ़ संकल्प, दृढ़ निश्चय —क्रमितेन भावि मरणोत्साहमभया सूचित:—अभि० १०, 5. सामर्थ्य, योग्यता—मनु० ५।८६ 6. दृढ़ता, साहस-शक्ति, बल 7 (अलं० शा० में) बढ़ता और सज्जन-शक्ति वह भावना समझी जाती है जिससे वीर रस का उदय होता है—कार्यारम्भेषु संरम्भ: स्थैर्यमन्याह उच्यते —सा० द० ३, गर्भनाटकमानादिनिर्मूलनेऽभया औन्त्यरूप उत्साह:, रस० 8 प्रसन्नता । सम०—**वर्धन:** वीररस (**नम्**) ऊर्जा या तेज को बढ़ाना, धैर्य, **-शक्ति** (स्त्री०) दृढ़ता, तेज, ३० (३) ऊपर, **- हेतुक:** (वि०) कार्य करने की दिशा में प्रोत्साहन देने वाला या उत्तेजित करने वाला।

उत्साहनम् [उद्+सह्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रयत्न, अध्यवसाय 2. उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना देना ।

उत्सिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. घमण्डी, अहंकारी, उद्धत 3. बाढ़ग्रस्त, उमड़ता हुआ, अत्यधिक ३० सिक्त (उद्-पूर्वक) 4. चंचल, अशान्त—जानीयादस्थिरा वाचमुत्सिक्तमनसां तथा मनु० ८।३१।

उत्सुक (वि०) [उद्+सु+क्विप्+कन् ह्रस्व:] 1. अत्यन्त इच्छुक, उत्कण्ठित, प्रवृत्तशील (करण या अधिकरण के साथ अथवा समास में) निद्रया निद्रायां वोत्सुक: सिद्धा०, धनोमिप्रोणाक्रियथोत्सुक मे रघु० २।४५, मेघ० ९९, संगम°—श० ३।१४ 2. बेचैन, उद्विग्न, आतुर रघु० १२।२४, 3. बहुत चाहने वाला, आसक्त -वन्मोहात्सुकापि—रघु० २।२२, 4. खिद्यमान, कुढ़वाने वाला, शोकान्वित ।

उत्सूत्र (वि०) [उत्क्रान्त सूत्रम्- अव्या० स०] 1. डोरी से न बंधा हुआ, ढीला, (रस्सी के) बंधन से मुक्त —शि० ८।६३, 2. अनियमित 3. (पाणिनि के नियम के) विपरीत—शि० २।११२ ।

उत्सूर: [उत्क्रान्त: सूर:=सूर्यं—अव्या० स०] सायंकाल, सन्ध्या ।

उत्सेक: [उद्+सिच्+घञ्] 1. छिड़काव, उड़ेलना 2. फुहार छोड़ना, बौछार करना 3. उमड़ना, वृद्धि आधिक्य—रविरोत्सेका-महावी० ५।३३ दर्प, बल आदि 4. घमण्ड, अहंकार, धृष्टता—उपदा विविशु: शस्त्रमोत्सेका: कोसलेश्वरम्—रघु० ४।७०, अनुत्सेको लक्ष्यताम्—मनु० २।५४ ।

उत्सेकिन् (वि०) [उत्सेक+इनि] 1. उमड़ने वाला, अत्यधिक 2. घमंडी अहंकारी, उद्धत—भाग्येष्वनुत्सेकिनी—श० ४।१७ ।

उत्सेचनम् [उद्+सिच्+ल्युट्] फुहार छोड़ना या बौछार करना ।

उत्सेध: [उद्—सिध्—घञ्] 1. ऊँचाई, उन्नतता (अलं० भी)—पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति (बलकलम्) कु० ५।८, २४, ऊँची या उभरी हुई छाती 2. मोटाई, मोटापा 3. शरीर,- **धर्म मारना**, वश करना ।

उत्स्मय: [उद्+स्मि+अच्] मुस्कराहट ।

उत्स्वन (वि०) [ब० स०] ऊँची आवाज करने वाला, **न:** [प्रा० स०] ऊँची आवाज ।

उत्स्वप्नायते (ना० धा० आ०) [उद्+स्वप्न+क्यङ्] सुप्तावस्था में डोलना, बड़बड़ाना, उद्विग्नता के कारण स्वप्न आना ।

उद् (उप०) [उ+क्विप्, तुक्] नाम और धातुओं से पूर्व लगने वाला उपसर्ग, गण० में निम्नांकित अर्थ उदाहरणसहित बतलाये गये हैं: -1. स्थान, पद, या शक्ति की दृष्टि से ऐंठना, उच्च, उद्गत, ऊपर, पर, अतिशय, ऊँचाई पर (उद्वल) 2. पार्थक्य, वियोजन, बाहर, से बाहर, से, अलग अलग आदि (उद्गच्छति) 3. ऊपर उठना (उत्तिष्ठति) 4. अभिग्रहण, उपलब्धि -(उत्सर्जति) 5. प्रकाशन (उच्चरति) 6. आश्चर्य, चिन्ता (उत्सुक) 7. मुक्ति -(उद्गत) 8. अनुपस्थिति (उत्पथ) 9 फूंक मारना, फुलाना, खोलना—(उत्फुल्ल) 10. प्रमुखता—(उद्दिष्ट) 11. शक्ति—(उत्साह) —संज्ञाओं के साथ लगकर इससे विशेषण और अव्ययीभाव समास बनाये जाते हैं —उदधिस, उच्छिल, उद्वाह, उन्निद्रम्, उत्पथम् और उद्दामम् आदि ।

उदक् (अव्य०) [उद्+अञ्च्+क्विन्] उत्तर की ओर, के उत्तर में, ऊपर (अपा० के साथ) ।

उदकम् [उन्द्+ण्वुल् नि० गलोप:] पानी, अमीवा पदार्थ या धूलिमर्दक नाविलिछले—शि० २।३४, । सम०—**अन्त:** पानी का किनारा, तट, तीर—ओदकान्तास्त्रिषधो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रुतेव -श० ४, **—अर्थिन्** (वि०) प्यासा, **—आधार:** जलाशय, हौज, कुआं, **—उन्दजन:** पानी का बर्तन, सुराही, **उदरम्** जलोदर (एक रोग जिसमें पेट में पानी भर जाता है), **—कर्मन्, कार्य्य, —क्रिया,—दानम्** मृत पूर्वजों या पितरों को जल से तर्पण करना- **-वृकोदरस्यौदक-क्रिया** कुरु- वेणी० ६, याज्ञ० ३।४, **—कुंभ:** पानी का घड़ा- **—गाहू:** पानी में घुसना, स्नान करना, **—ग्रहणम्** पानी पीना, **—दायिन्, दानिक** जल देने वाला (**- द:**) 1. पितरों को जल-दान करने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला 2. उत्तराधिकारी, बन्धु-बांधव, —दानम् = °कर्मन्,—धरः बादल, —भारः,—बीवधः पानी ढोने की बहंगी,—वज्रः गरज के साथ बौछार,—शाकम् कोई भी वनस्पति जो जल में पैदा होती है, —शान्तिः (स्त्री०) ज्वर दूर करने के लिए रोगी के ऊपर अभिमंत्रित जल छिड़कना—तु० शान्त्युदकम्, —स्पर्शः शरीर के विभिन्न अंगों पर जल के छींटे देना, —हारः पानी ढोने वाला कहार।

उदक (कि) ल (वि०) [उदक+लच्, इलच् वा] पनीला, रसेदार, जलमय।

उदकेचरः [अलुक् स०] जलचर, जल में रहने वाला जन्तु।

उदक्त (वि०) [उद्+अञ्च्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर को उभारा हुआ,—उदक्तमूदकं कूपात्—सिद्धा०।

उदक्य (वि०) [उदकमर्हति दण्डा०—उदक+यत्] जल की अपेक्षा करने वाला,—क्या ऋतुमती स्त्री, रजस्वला स्त्री।

उदग्र (वि०) [उद्गतमग्रं यस्य—ब० स०] 1. उन्नत शिखर वाला, उभरा हुआ, ऊपर की ओर संकेत करता हुआ, यथा —°दंत 2. लंबा, उत्तुंग, ऊँचा, उन्नत, उच्छ्रित (आलं०)—उदग्रदशनांशुभिः—शि० २।२१, ४।१९. उदग्रः क्षत्रस्य शब्दः रघु० २।५३, उदग्रप्लुतत्वात्—श० १।७, ऊँची छलांगें 3. विपुल विशाल, विस्तृत बड़ा अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहुः— रघु० ६।३३ 4. बयोवृद्ध 5. उत्कृष्ट, पूज्य, श्रेष्ठ, अभिवृद्ध, वर्धित —स मगधोदयनरश्मिभावः—रघु० २।७१, १।६४, १३।५० 6. प्रखर, असह्य (तापादिक), 7. भीषण, भयावह—संदधे दृगमुदग्रतारकाम्—रघु० ११।६९, 8. उत्तेजित प्रचण्ड, उल्लसित—मदोद्ग्राः ककुभन्तः —रघु० ४।२२।

उदङ्कः [उद्+अञ्च्+घञ्] (तेल आदि रखने के लिए) चमड़े का बर्तन, कुप्पा।

उदच् उदञ्च् [उद्+अञ्च्—क्विन्] (पुं०—उदङ्, नपुं०—उदक्, स्त्री०—उदीची) 1 ऊपर की ओर मुड़ा हुआ, या जाता हुआ, 2. ऊपर का, उच्चतर 3. उत्तरी, उत्तर की ओर मुड़ा हुआ 4. बाद का। समः —अद्रिः उत्तरी पहाड़, हिमालय, —अयनम् (=उत्तरायण), भूमध्यरेखा से उत्तर की ओर सूर्य की प्रगति —आवृत्तिः (स्त्री०) उत्तर दिशा में लौटना,—उदगावृत्तिपथेन नारदः रघु० ८।३३, —पथः उत्तरी देश, —प्रवण (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर झुका हुआ,—मुख (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर मुंह किये हुए—उत्पतोदङ्मुखाग्रः खम्—मेघ० १४।

उदञ्जनम् [उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1. बोका, डोल,—उदञ्चनं सरज्जु पुरः क्षिपंश्च दशः १३०, 2. उदय होता हुआ, चढ़ता हुआ 3. हकना, डकार।

उदञ्जलि (वि०) [ब० स०] दोनों हथेलियों को मिला कर संपुट बनाये हुए।

उदण्डपालः [अलुक् स०] 1. मछली 2. एक प्रकार का साँप।

उदधिः दे० 'उदन्' के नीचे।

उदन् (नपुं०) [उद्+कनिन्=उदक गुणस्य उदन् आदेशः] जल, (यह शब्द प्रायः समास के आरंभ या अन्त में प्रयुक्त होता है, और कर्म० के द्वि० व० के पश्चात् —'उदक' के स्थान में विकल्प से आदेश होता है, सर्वनाम-स्थान में इसका कोई रूप नहीं होता, समास में अन्तिम न् का लोप हो जाता है उदा० उदधि, अम्बोद, क्षीरोद आदि)। समः—कुंभः जल का घड़ा—मनु० २।१८२, ३।६८,—ज (वि०) जलीय, पनीला,—धानः 1. पानी का बर्तन 2. बादल,—धिः 1. पानी का आशय, समुद्र उदधेरिव निम्नमाशातेरवभवत्तस्य विमानना क्वचित् —रघु० ८।८, 2. बादल, 3. झील, सरोवर 4. पानी का घड़ा —°कन्या, °तनया, °सुता गंगा की पुत्री लक्ष्मी, °मेखला पृथ्वी, °राजः जलों का राजा अर्थात् महासागर,—सुता लक्ष्मी, द्वारका (कृष्ण की राजधानी), पात्रम्,—शी पानी का घड़ा, बर्तन,—पातः—नम् कूएँ के निकट का जोहड़ या कुंआ, मंडूकः (शा०) कुएँ का मेंढक, (आलं०) अनुभवहीन, जो केवल अपने आस-पास की वस्तुओं का ही सीमित ज्ञान रखता है तु० कूप-मंडूक, पेयम् लेग, लेई, पेस्ट,—बिन्दुः जल की बूंद कु० ५।२४, भारः जल धारण करने वाला अर्थात् बादल, मन्थः जौ का पानी, यानः—नम् ओढक का पंचासवां भाग,—मेघः पानी बरसाने वाला बादल, लावणिक (वि०) नमकीन या खारी, वज्रः बादल की गरज के साथ बौछार, पानी की फुआर, —वासः जल में रहना या बसति,—सहस्रयात्रीयदवासतत्परा—कु० ५।२७,—वाह (वि०) पानी लाने वाला (हः) बादल,—वाहनम् पानी का बर्तन,— शरावः पानी से भरा कसोरा,—क्षिप्त [उदकेन जलेन क्षयति] छाछ, मट्ठा (जिसमें दो भाग पानी तथा एक भाग मट्ठा हो)—हरणः पानी निकालने का बर्तन।

उदन्तः [उद्गतोऽन्तो यस्य—ब० स०] 1. समाचार, गुप्तबातें, पूरा विवरण, वर्णन, इतिवृत्त—भूत्वा रामः प्रियोदन्तः—रघु० १२।६६, कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः संकथाकेलिरेव मेघ० १०० 2. पक्षिशास्त्र, साधु।

उदन्तकः [उदन्त+कन्] समाचार, गुप्त बातें।

उदन्तिका [उद+अन्त+निच्+ध्वुल्+टाप् इत्वम्] संताप, संतप्ति।

उदन्य (वि०) [उदक—क्यच् नि० उदन् आदेशः+क्विप्] प्यासा, —न्या प्यास, निर्वन्यतामुदन्यापतीकारः —वेणी० ६, भट्टि० ३।४०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदन्वत् (पुं०) [उदक + मतुप्, उदन् आदेशः, मस्य वः] समुद्र,—उदन्वज्जलराशीनाम् बालरा० १।८, रघु० ४।५९, ५८, १०।६, कु० ७।७३।

उदयः [उद् + इ—अच्] 1. निकलना, उगना (आल० भी)—चंद्रोदय इवोदयैः रघु० १२।३६, २।७३ ऊपर जाना 2. आविर्भाव, उत्पादन ध्वनोदयः प्राक्—शा० ७।३०, फलोदय रघु० १।५, फल का निकलना या निष्पन्न होना—कु० ३।१८ 3. सृष्टि (विप० प्रलय) कु० २।८ 4. पूर्वाद्रि (**उदयाचल** जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना माना जाता है)—उदयगूढशशाङ्कमरीचिभिः—विक्रम० ३।६ 5. प्रगति, समृद्धि, उदय (विप० **व्यसन**) तेजोऽहरय्य युगपच्चसतीदयाभ्याम् ८।७ ४।१, रघु० ८।८४, ११।७३, 6. उन्नयन, उत्कर्ष, उदय, वृद्धि—उदयमस्तमयं च रघुद्वहात्—रघु० ९।४५, 7. फल, परिणाम 8. निष्पन्नता, पूर्णता उपरिश्चतोदयम् रघु० ३।१. प्रारम्भसदृशोदयः १।१५, 9. लाभ, नफा 10. आय, राजस्व 11. व्याज 12. प्रकाश, चमक। सम० **अचलः, अद्रिः, गिरिः, पर्वतः**,—शैलः पूर्व दिशा में होने वाला उदयाचल, जहां से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होना माना जाता है उदयगिरिदनालीबालमन्दारपुष्पम्—उद्भट, श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैः—शि० १।१६, तत उदयगिरेरिवैक एव मा० २।१०, **ग्रन्थः** उदयाचल का पठार जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना समझा जाता है।

उदयनम् [उद् + इ—ल्युट्] 1. उगना, चढ़ना, ऊपर जाना 2. परिणाम,—नः 1. अगस्त्य मुनि 2. वत्सदेश का राजा प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, (उदयन प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा था, यह वत्सराज के नाम से विख्यात है। उदयन कौशाम्बी में राज्य करता था। उज्जयिनी की राजकुमारी वासवदत्ता ने उसे स्वप्न में देखा, तथा देखते ही वह उस पर मोहित हो गई। चण्ड महासेन ने उदयन को धोखे से पकड़ लिया और कारागार में डाल दिया, परन्तु बाद में मन्त्री के द्वारा मुक्त किये जाने पर वह वासवदत्ता को उसके पिता तथा अपने प्रतिद्वन्द्वी से निकाल कर ले भागा। रत्नावली नामक नाटिका का नायक भी उदयन है। इसके जीवन की घटनाओं के आधार पर और कई रचनाएँ हो चुकी हैं) दे 'वत्स' भी।

उदरम् [उद् + ऋ + अप्] 1. पेट, दुष्पूरोदरपूरणाय—भर्तृ० २।११९, तु० कृशोदरी, उदरभरि आदि 2. किसी वस्तु का भीतरी भाग, गह्वर, तड़ाग पंच० २।१५० रघु० ५।७०, त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्—श० ६।१९, १।१९, अमरु ८८, 3. जलोदर रोग के कारण पेट का फूल जाना—तस्य होदरं जज्ञे ऐतं० 4. वध करना। सम० **आध्मानः** पेट का फूलना,—**आमयः** पेचिश, अतिसार,- **आवर्तः** नाभि, —**आवेष्टः** केचुआ, फीताकृमि,—**आवणः** 1. वक्षस्त्राण या अँगिया, कवच या जिरहबख्तर जो केवल छाती पर पहना जाय 2. पेट को कसने वाली पट्टी,—**पिशाचः** (वि०) पेटू, खाऊ, (बहुभोजी जिसकी भूख राक्षसों जैसी होती है),—**भरः** भोजनभट्ट,—**भूरम्** (अव्य०) जब तक पूरा पेट न भर जाय उदरपूरं भुक्ते —सिद्धा०, पेट भर कर खाता है,—**पोषणम्**,—**भरणम्** पेट भरना, पालन पोषण करना,—**अय** (वि०) पेट के बल लेट कर सोने वाला (—यः) भुजंग,—**सर्वस्वः** पेटू, बहुभोजी, स्वादलोलुप, (जिसके लिए पेट ही सब कुछ है)।

उदरिः [उद् + ऋ + इञ्] 1. समुद्र 2. सूर्य।

उदरंभरि (वि०) [उदर + भृ + इन्, मुमागमः] 1. केवल अपना पेट भरने वाला, स्वार्थी 2. पेटू, बहुभोजी।

उदरवत्,— उदरिक—**ल** (वि०) [उदर + मतुप् मस्य वः, उदर + ठन्, इलच् वा] बड़ी तोंद वाला, स्थूलकाय, मोटा।

उदरिन् (वि०) [उदर + इनि] बड़ी तोंद वाला, मोटा, स्थूलकाय, **णी** गर्भवती स्त्री।

उदर्कः [उद् + अर्क् (अर्च्) + घञ् उद् + ऋच् + घञ्] 1. (क) अन्त, उपसंहार, —सुखोदर्कम्—का० ३२८, (ख) फल, परिणाम, किसी क्रिया का भावी फल - विन्तु कल्याणोदर्कं भविष्यति—उत्तर० ४, प्रयतः सफलोदर्कं एव—मा० ८, मनु० ४।१७६, ११।१० 2. भविष्यत्काल, उत्तरकाल।

उदर्चिस् [वि०] [ऊर्ध्वमर्चिः शिखाऽस्य ब० स०] चमकने वाला, ऊपर की ओर ज्वाला विकीर्ण करने वाला, ज्योतिर्मय, उज्ज्वल— स्फुरदुदर्चिः सहसा तृतीयादक्षणः कृशानुः किल निष्पपात कु० ३।७१, ७।७९, रघु० ७।२४, १५।७६,—(पुं०) 1. अग्नि प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शैरते तेऽभिमारुतम् शि० २।४२ २०।५५, 2. कामदेव 3. शिव।

उदवसितम् [उद् + अव + सो + क्त] घर, आवास।

उदश्रु (वि०) [उद्गतान्यश्रूणि यस्य—ब० स०] फूट-फूट कर रोने वाला, जिसके अविरल आँसू बह रहे हों, रोने वाला—रघु० १२।१४, अमर ११।

उदसनम् [उद् + अस् + ल्युट्] 1. फेंकना, उठाना, सीधा खड़ा करना 2. बाहर निकाल देना।

उदात्त (वि०) [उद् + आ + दा + क्त] 1. उच्च, उन्नत —अन्वर्थैः—का० ९२, वेणी० १, 2. भद्र, प्रतिष्ठित 3. उदार, वदान्य 4. प्रसिद्ध, विख्यात, महान् ललितोदात्तमहिमा भामि० १।७९, 5. प्रिय, प्रियतम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

6. उच्च स्वराघात दे० नी०, स: 1. उच्च स्वर में उच्चरित—उच्चैस्तरां वा०—पा० १।३।२९, तालव्यादिषु स्थानेषूर्ध्वभागे निष्पन्नोऽनुदात्तः—सिद्धा०, अनुदात्त के नीचे भी दे०, निहत्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिद—शि० २।९५, 2. उपहार, दान 3. एक प्रकार का वाद्य -उपकरण, बड़ा ढोल,- त्तम् (अलं० शा०) एक अलंकार—सा० द० ७५२, तृ० काव्य० १०, उदात्त वस्तुनः संपन्महतां चोपलक्षणम् ।

उदात्तः [उद्+अन्+घञ्] 1. ऊपर को सांस लेना 2. सांस लेना, श्वास, 3. पांच प्राणों में से एक जो कण्ठ से आविर्भूत होकर सिर में प्रविष्ट होता है अन्य चार हैं:—प्राण, अपान, समान और व्यान;—स्पन्दयत्यधरं वक्त्रं गात्रनेत्रप्रकोपनः, उद्वेजयंति मर्माणि उदानो नाम मारुतः । 4. नाभि ।

उदायुध (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र उठा लिया है, शस्त्र ऊपर उठाये हुए - मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः, वेणी० ३।२२; उदायुधानापततस्तान्मृगेन्द्रताल्पेक्ष्य राघवः—रघु० १२।४४ ।

उदार (वि०) [उद्+आ+रा+क] 1. दानशील, मुक्तहृदय, दानी 2. (क) भद्र, श्रेष्ठ—स तथेति विनेतुरुदारमतेः -रघु० ८।९१ ५।१२, भग० ७।१८ (ख) उच्च, विख्यात, पूज्य,—°कीर्तेः—कि० ११।८, 3. ईमानदार, निष्कपट, खरा 4. अच्छा, बढ़िया, उमदा —उदारः कल्पः श० ५ 5. वाग्मी 6. बड़ा, विस्तृत, विशाल, शानदार—रघु० १३।७९,—उदारनेपथ्यभूताम्—६, 6. मूल्यवान् वस्त्र पहने हुए 7. सुन्दर, मनोहर, प्यारा—कु० ७।१४, शि० ५।२१,—रम् (अव्य०) जोर से—शि० ४।३३ । सम० आत्मन्, —चेतस् -चरित,—मनस्—तत्त्व (वि०) विशालहृदय, महामना—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्—हि० १, °धी (वि०) उदात्त प्रतिभाशील, अत्यन्त बुद्धिमान्—रघु० ३।३०,—°र्शन (वि) जो देखने में सुन्दर है, बड़ी आंखों वाला—कु० ५।३६ ।

उदारता [उदार+तल्+टाप्] 1. मुक्तहस्तता, 2. समृद्धि (अभिव्यक्ति की)—वचसाम्—मा० १।७ ।

उदास (वि०) [उद्+अस्+घञ्] तटस्थ, वीतराग, वैराग्य,—सः, 1. निःस्पृह, दार्शनिक 2. तटस्थता, अनासक्ति ।

उदासिन् (वि०) [उद्+आस्+णिनि] 1. निःस्पृह, 2. तत्त्ववेत्ता ।

उदासीन (वि०) [उद्+आस्+शानच्] 1. तटस्थ, वैराग्य, निष्क्रिय -तदहिनमुदासीनं त्वामेव पुरुषं विदुः—कु० २।१३, (भौतिक संसार की रचना में कोई भाग न लेते हुए) दे० सांख्य 2. (विधि में) अभियोग से असंबद्ध व्यक्ति 3. निष्पक्ष (जैसा कि राजा या राष्ट्र),—नः 1. अजनबी 2. तटस्थ -भग० ६।९ 3. सामान्य परिचय ।

उदास्थितः [उद्—आ+स्था+क्त] 1. अधीक्षक 2. द्वारपाल 3. भेदिया, गुप्तचर 4. तपस्वी जिसका व्रत भङ्ग हो गया है ।

उदाहरणम् [उद्—आ+हृ+ल्युट्] 1. वर्णन, प्रकथन, कहना 2. वर्णन करना, पाठ करना, समालाप आरंभ करना—अथाग्निरसमग्र्यमुदाहरणवस्तुनः-कु० ६।५५, 3. प्रकथनात्मक गीत या कविता, एक प्रकार का स्तुतिगान जो 'जयति' जैसे शब्द से आरंभ हो तथा अनुप्रास से युक्त हो चरणैरभ्रस्तवदेयं जयोदाहरणं यथा—विक्रम० १, जयोदाहरणं बाह्वीर्गापयामास कित्तिराट् रघु० ४।७८, विक्रम० २।१४, (येन केनापि तालेन गद्यपद्यमयेन वा, जयस्यपकर्म मालिन्यादिप्रासविचित्तिम् तदुदाहरणं नाम विभक्त्यष्टाङ्गसंयुतम् प्रतापरुद्र । 4. निदर्शन, मिसाल, दृष्टांत—समूलघातमध्नन्तः परात्रोद्यन्ति मानिनः, प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणं रवेः । शि० २।३३ 5. (न्याय में) अनुमानप्रक्रिया के पांच अंगों में से तीसरा 6. (अलं० शा०) 'दृष्टान्त' जो कुछ अलंकारशास्त्रियों द्वारा अलंकार माना जाता है—यह अर्थालंकारों से मिलता जुलता है उदा० अमितगुणोऽपि पदार्थो दोषेणैकेन निन्दितो भवति, निखिलरसायनराजो गन्धेनोग्रेण लशुनं इव । रस०, (शेषो अलंकारों में भेद स्पष्ट करने के लिए 'उदाहरण' के नी० दे० रस०) ।

उदाहारः [उद्+आ+हृ+घञ्] 1. मिसाल या दृष्टांत 2. किसी भाषण का आरम्भ ।

उदित [भू० क० कृ०] [उद्+इ+क्त] 1. उगा हुआ, चढ़ा हुआ -उदितमुषिरः -मा० १, भाग० २।८५ 2. ऊंचा, लंबा, उत्तुंग 3. बढ़ा हुआ, आविर्भूत 4. उत्पन्न, पैदा हुआ, 5. कथित, उच्चरित (वद् का यङ्लुक् रूप) । सम०- -उदित (वि०) -स्त्रों में पूर्ण-शिक्षित ।

उदीक्षणम् [उद् +ईक्ष्+ल्युट्] 1. ऊपर की ओर देखना 2. देखना, दृष्टिपात करना ।

उदीची [उद्+अञ्च्+क्विन्+ङीप] उत्तर दिशा, —तेनोदीचीं दिशमनुसरेः - मेघ० ५७ ।

उदीचीन (वि०) [उदीची+स्न] 1. उत्तर दिशा की ओर मुड़ा हुआ 2. उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला ।

उदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तर दिशा में होने या रहने वाला,—च्यः 1. सरस्वती नदी के पश्चिमोत्तर में स्थित एक देश 2. (ब० व०) इस देश के निवासी -रघु० ४।६६, च्यम् एक प्रकार की सुगन्ध ।

उदीपः उद्गता आपो यत्र -उद्+अप् (ईप्) ब० स०] बहुत पानी, जलप्लावन बाढ़ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदीरणम् [उद्+ईर्+ल्युट्] 1. बोलना, उच्चारण, —अभिव्यंजना उदीरणा प्रणवो यासा स्यास्त्रिभिरुदीरणम् कु० २।१२, 2. बोलना, कहना 3. फेंकना, (शस्त्रादिक का) चलाना।

उदीर्ण (भू० क० कृ०) [उद्+ईर्+क्त] 1. बढ़ा हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, उन्नत 3. बर्धित, गहन।

उदुम्बरः दे० उडुम्बर।

उदूखल = उलूखल।

उदूढा [उद्+वह्+क्त+टाप्] विवाहित स्त्री।

उद्वेजय (वि०) [उद्+एज्+णिच्+खश्] हिलाने वाला, कंपाने वाला, भयंकर—उद्वेजकान् मृगगणान् न्यवेधीत्—भट्टि० १।२५।

उद्गतिः (स्त्री०) [उद्+गम्+क्तिन्] 1 ऊपर जाना, उठना, चढ़ना 2. आविर्भाव, उदय, जन्मस्थान 3. वमन करना।

उद्गन्धि (वि०) [उद्गतो गन्धोऽस्य—ब० स० इन्दम्] 1. सुगंधयुक्त, सुश्वदार—विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु रघु० २६।४७ 2. तीव्र गंध वाला।

उद्गमः [उद्—गम्+घञ्] 1. ऊपर जाना, (तारों आदि का), उगना चढ़ना—आज्यधूमोद्गमत्रस्त० १।१५, 2. (बालों का) सीधे खड़े होना रोमोद्गमः प्रादुरभूदुमायाः—कु० ७।७७, मालवि० ४।१ अमर० ३६, 3. बाहर जाना, विदा 4. जन्म, उत्पत्ति, रचना पारिजातस्योद्गमः मा० २, आविर्भाव—फलेन सहकाराय्र्य तुणोद्गम इव प्रजाः—रघु० ४।२, कलिंगाय—कुसुमोद्गम कदम्बः उत्तर० ३।२०, अमर० ८१, 5. उभार, उन्नयन 6. (किसी पौधे का) अंकुरण हरितृणोद्गमशङ्कया मृगीभिः किं० ५।३८, 7. वमन करना, उगलना।

उद्गमनम् [उद्+गम्+ल्युट्] उगना, दिखाई देना।

उद्गमनीय (स० कृ०) [उद्+गम्+अनीयर्] ऊपर जाने या चढ़ने के योग्य, यम धुले कपड़ों का जोड़ा (तत्स्थादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्)—धौतोद्गमनीयवासिनी दश० ४२, गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा—कु० ७।११ (यहाँ मल्लि० 'उ' का अनुवाद 'धौतवस्त्र' करते हैं और कहते हैं कि 'युगग्रहणं तु नायिकाभिप्रायम्' दे० वही)।

उद्गरढ (वि०) [उद्+गाह्+क्त] गहरा, गहन, अत्यधिक, अत्यंत—उद्गाढगाढदयाः मा० ५।७, ६।६, —ढम् आधिक्य, (अव्य०) अत्यधिक, अत्यन्त।

उद्गातृ (पुं०) [उद्+गै+तृच्] यज्ञ के मुख्य चार ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है।

उद्गारः [उद्+गृ+घञ्] 1. (क) निष्कासन, थूकना, वमन करना, कह डालना, उत्सर्जन—खर्जूरीस्कन्धनद्धानां मदोद्गारसुगन्धिषु—रघु० ४।५७, भर्तृ० २।३६, मेघ० ६३,६९, शि० १२।९, (ख) क्षरण, प्रवाह दिल में भरी हुई बात का बाहर निकालना—रघु० ६।६७, महावी० ६।३३, 2. बार बार कहना, बर्जन—मा० २।१३, 3. थूक, लार 4. डकार, कंठगर्जन।

उद्गारिन् (वि०) [उद्+गृ+णिनि] 1 ऊपर जाने वाला, उगने वाला 2. वमन करने वाला, बाहर भेजने वाला—रघु० १३।४७।

उद्गिरणम् [उद्+गृ+ल्युट्] 1. वमन करना 2. थूक या लार गिराना 3. डकारना 4. उन्मूलन।

उद्गीतिः (स्त्री०) [उद्+गै+क्तिन्] 1. ऊँचे स्वर से गान करना 2. सामवेद के मन्त्रों का गान 3. आर्या छंद का एक भेद—दे० परिशिष्ट।

उद्गीथः [उद्+गै+थक्] 1. सामवेद के मंत्रों का गायन (उद्गाता का पद) 2. सामवेद का उत्तरार्ध—मृगयांस उद्गीथविदो वसन्ति—उत्तर० २।३, 3. 'ओम्' जो परमात्मा का तीन अक्षरों का नाम है।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गृ+क्त] 1. वमन किया हुआ 2. उगला हुआ, बाहर उडेला हुआ।

उद्गूर्ण (वि०) [उद्+गूर्+क्त] ऊँचा किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ—वेणी० ६।१२।

उद्ग्रन्थः [उद्+ग्रन्थ्+घञ्] अनुभाग, अध्याय।

उद्ग्रन्थि (वि०) [ब० स०] बन्धनमुक्त (आलं० भी)।

उद्ग्रहः,—हणम् [उद्+ग्रह्+अच् ल्युट् वा] 1. लेना, उठाना, 2. ऐसा कार्य जो धार्मिक अनुष्ठान अथवा अन्य कृत्यों से सम्पन्न हो सकता है 3. डकार।

उद्ग्राहः [उद्+ग्रह्+घञ्] 1. उठाना या लेना, 2. वाद का उत्तर देना, प्रतिवाद।

उद्ग्राहणिका [उद्+ग्रह्+णिच्+युच्+टाप्+क, इत्वम्] वाद का उत्तर देना।

उद्ग्राहित (भू० क० कृ०) [उद्+ग्रह्+णिच्+क्त] 1. ऊपर उठाया हुआ या लिया हुआ 2. हटाया हुआ 3. श्रेष्ठ, उन्नत 4. न्यस्त, मुक्त किया गया 5. बद्ध, नद्ध 6. प्रत्याख्यात, वाद किया गया।

उद्ग्रीव, उद्ग्रीविन् (वि०) [उन्नता ग्रीवा यस्य—ब० स०, उन्नता ग्रीवा—प्रा० स०—उद्ग्रीवा+इनि] गर्दन ऊपर उठाये हुए—उद्ग्रीवैर्मयूरैः मालवि० १।२१, अमर ६३।

उद्घः [उद्+हन्+ड] 1. श्रेष्ठता, प्रमुखता (समास के अन्त में) ब्राह्मणोद्घः—एक श्रेष्ठ ब्राह्मण—उद्घादयश्च निपतलिङ्गा न तु विशेष्यलिङ्गाः—सिद्धा०, तु० मतल्लिकामवधिका प्रकाण्डमूद्घतल्लजौ, प्रशस्तवाचकान्यमूनि—अमर० 2. प्रसन्नता 3. अंजलि 4. अग्नि 5. नमूना 6. शरीरस्थित आंतरिक वायु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्घनः [उद्+हन्+अप्] लकड़ी का तख्ता जिस पर बढ़ई लकड़ी रख कर अड़ता है, आगडी -लौहोद्घन-घनस्कन्धं ललिताघघनां स्त्रियम् भट्टि० ७।६२ ।

उद्घट्टनम्-ना [उद्+घट्ट+ल्युट्, युच् वा] रगड़, ...से टकराना—मेघ० ६१ ।

उद्घर्षणम् [उद्+घृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना, घोटना-यस्योद्घर्षणलोष्टकैरपि सदा पृष्ठे न जातः क्रिणः—मृच्छ० २।११, 2. लोटा ।

उद्घाटः [उद्+घट्+घञ्] चौकीदार या चौकी (जिसमें सैन्य संरक्षक दल ठहरे) ।

उद्घाटकः [उद्+घट्+णिच्+ण्वुल्] 1. कुंजी 2. कुएँ की रस्सी और डोल, कुएँ की चर्खी (-कम् भी) ।

उद्घाटन (वि०) (स्त्री०—नी) [उद्+घट्+णिच्+ल्युट्] खोलना, ताला खोलना-धर्म यो न करोति निन्दितमतिः स्वर्गैर्गलोद्घाटनम्-हि० १।१५३,—नम् 1. प्रकट करना—वेणी० १ 2. उन्नत करना, ऊपर उठाना 3. कुंजी 4. कुएँ पर की रस्सी व डोल, पानी निकालने की चर्खी ।

उद्घातः [उद्+हन्+घञ्] 1. आरंभ, उपक्रम—उद्घातः प्रणवो यासाम्—कु० २।१२, आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः—रघु० ४।२० 2. संकेत, उल्लेख 3. प्रहार करना, घायल करना 4. प्रहार, थप्पड़, आघात 5. हुचकोला, झकझोरना, (गाड़ी आदि का) धचका-शि० १२।२, रघु० २।७२, वेणी० २।२८, 6. उठना, उन्नत होना 7. मुद्गर 8. शस्त्र 9. पुस्तक भाग, अध्याय, अनुभाग, परिच्छेद ।

उद्घोषः [उद्+घुष्+घञ्] 1. ऊँची आवाज में कहना ढिंढोरा पीटना 2. सर्वजन प्रिय बात, सामान्य विचरण ।

उद्घ्नः [उद्+दंश्+अच्] 1. खटमल 2. जूं 3. मच्छर ।

उद्घ्न (वि०) [अस्या० स०] 1. जिसका तना, डंठल या ध्वज उठा हुआ हो—उद्घ्नदण्डां गृहदीधिकाणाम्-रघु० १६।४६, °धवलातपत्राः मा० ६, 2. मजबूत, भयानक। सम०—पाल्: 1. दंड देने वाला 2. एक प्रकार की मछली 3. एक प्रकार का सांप ।

उद्घ्नुर (वि०) [ग्रा० स०] 1. जिसके दाँत लंबे, या बाहर निकले हुए हों 2. ऊँचा, लंबा 3. भयानक, मजबूत ।

उद्दामन् [उद्+दो+ल्युट्] 1. बंधन, कैद -उद्दामे क्रियमाणे तव रज्जुभिः—महा० 2. पालतू बनाना, वश में करना 3. मध्यभाग, कटि 4. चूल्हा, अंगीठी, 5. बड़वानल ।

उद्दान्त (वि०) [उद्+दम्+क्त] 1. ऊर्जस्वी 2. विनीत ।

उद्दाम (वि०) [ग० सं०] 1. निर्बंध, अनियंत्रित, निरंकुश, मुक्त—शि० ४।१० 2. (क) सबल, सशक्त—पद्य ३।१४८ (ख) भीषण, नशे में चूर—स्रोतस्युद्दाम-दिग्गजे—रघु० १।७८—शि० ११।१९ 3. भयावह 4. स्वेच्छाचारी 5. अतिबहुल, विशाल, बड़ा, अत्यधिक —मेघ० २५, रत्ना० २।४, **मः** 1. यम 2. वरुण, **मम्** (अव्य०) प्रचण्डता के साथ, भीषणतापूर्वक, बलपूर्वक अद्योहाम ज्वलियत्यः—उत्तर० ३।९ ।

उद्दालकम् [उद्+दल्+णिच्+अच्+कन्] एक प्रकार का शहद, लसोड़े का फल ।

उद्दित (वि०) [उद+दो+क्त] बंधा हुआ, बद्ध ।

उद्दिष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+दिश्+क्त] 1. बताया हुआ, विशिष्ट, विशेष रूप से कहा गया 2. इच्छित 3. चाहा हुआ 4. समझाया गया, सिखाया गया ।

उद्दीपः [उद्+दीप्+घञ्] 1. प्रज्वलित करने वाला, जलाने वाला 2. प्रज्वालक ।

उद्दीपक (वि०) [उद्+दीप्+णिच्+ण्वुल्] 1. उत्तेजक 2. प्रकाशक, प्रज्वालक ।

उद्दीपनम् [उद्+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. जलाने वाला, उत्तेजना देने वाला 2. (अलं० शा०) जो रस को उत्तेजित करे, दे० 'आलंबन' 3. प्रकाश करना, जलाना 4. शरीर को भस्म करना ।

उद्दीप्र (वि०) [उद्+दीप्+रन्] चमकता हुआ, दहकता हुआ,—प्रः,—प्रम् गुग्गुल ।

उद्दृत्त [उद्+दृ+क्त] घमंडी, अभिमानी ।

उद्देशः [उद्+दिश्+घञ्] 1. संकेत करने वाला, निर्देश करने वाला 2. वर्णन, विशिष्ट वर्णन 3. निदर्शन, व्याख्यान, दृष्टान्त 4. निश्चयन, पृच्छा, सम-वेषण, खोज 5. संक्षिप्त वक्तव्य या वर्णन-—एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया—भग० १०।४०, 6. दत्त-कार्य 7. अनुबन्ध 8. अभिप्राय, प्रयोजन 9. स्थान, प्रदेश, जगह—अहो प्रवातसुभगोऽयमुद्देशः—श० ३, मालवि० ३ ।

उद्देशकः [उद्+दिश्+ण्वुल्] 1. निदर्शन, दृष्टांत 2. (गणित में) प्रश्न, समस्या ।

उद्देश्य (सं० कृ०) [उद्+दिश्+ण्यत्] 1. उदाहरण देकर स्पष्ट करने या समझाये जाने के योग्य 2. अभिप्रेत, लक्ष्य,—श्यम् 1. लक्ष्यार्थ, प्रोत्साहक 2. किसी उक्ति (क्रिया) का कर्ता, (विप० विधेय) दे० 'अनुवाद्य' भी ।

उद्द्योतः [उद्+द्युत्+घञ्] 1. प्रकाश, प्रभा (शा० और आलं०)-त्रिभिर्नेत्रैः कृतोद्द्योतम्—महा०, कुलोद्द्योत-करी सदा—रामा० अलंकृत करते हुए 2. किसी पुस्तक के प्रभाग, अध्याय, अनुभाग या परिच्छेद ।

उद्द्रावः [उद्+द्रु+घञ्] भागना, पीछे हटना ।

उद्धत (भू० क० कृ०) [उद्+हन्+क्त] 1. ऊँचा किया हुआ, उन्नत, ऊपर उठाया हुआ—लाङ्गलमुद्धतं धुन्वन् —भट्टि० ९।७ आत्मोद्धतैरपि रजोभिः—श० १।८, उठाई हुई, रघु० ९।५० हांका हुआ—कि० ८।५३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. अतिशय, अत्यन्त, अत्यधिक 3. अभिमानी, निरर्थक, व्यर्थ फूला हुआ—अक्षवधोद्धतः—रघु० १२।६३ 4. कठोर 5. उत्तेजित, भड़काया हुआ, प्रचंड °मनोभव-रागा—कि० ९।६८, ६९, मदोद्धताः प्रत्यनिलं विचेरुः कु० ३।३१ 6. शानदार, राजसी—घोरोद्धता नमयतीव गतिर्धरित्रीम्—उत्तर० ६।१९, अक्खड़, अशिष्ट,—तः राज-मल्ल। सम० -मनस्,—मनस्क (वि०) दम्भी, अहंकारी, घमंडी।

उद्धतिः (स्त्री०) [उद्+हन्+क्तिन्] 1. उच्चयन 2. घमंड, अभिमान,-शि० ३।२८, 3. अक्खड़पना, धृष्टता 4. प्रहार।

उद्धमः [उद्+धमा+श] घमादेशः] 1. आवाज निकालना, बजाना 2. घोर सांस लेना, हाँफना।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] 1. निकालना, बाहर करना, (बस्त्रादिक) उतारना 2. निचोड़ना, निस्सारण, उखाड़ लेना,—कंटक° मनु० ९।२५२, चक्षुरुद्धरणम्—भिता०, 3. उद्धार करना, मुक्त करना, अभय करना—दीनोद्धरणोचितस्य—रघु० २।२५, स बन्धुर्यो विपन्नानामापदुद्धरणक्षमः—हि० १।३, 4. उन्मूलन, ध्वंस, पदच्युति 5. उठाना, ऊपर करना 6. वमन करना 7. मोक्ष 8. ऋणपरिशोध।

उद्धर्तृ-उद्धारक (वि०) [उद्+(हृ)धृ+तृच्, ण्वुल् वा] 1. ऊपर उठाने वाला 2. साझीदार, संपत्ति का हिस्सेदार।

उद्धर्षः (वि०) [उद्+हृष्+घञ्] खुश, प्रसन्न,—र्षः 1. बहुत प्रसन्नता 2. किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए उत्तरदायित्व लेने का साहस 3. उत्सव (धार्मिक पर्व)।

उद्धर्षणम् [उद्+हृष्+ल्युट्] 1. प्राण फूंकना 2. रोमांच होना, पुलक।

उद्धवः [उद्+हु+अच्] 1. यज्ञाग्नि 2. उत्सव, पर्व 3. इस नाम का यादव जो कृष्ण का चाचा तथा मित्र था (जब अक्रूर द्वारा कृष्ण मथुरा ले जाये गये, तो गोकुल वासियों ने उद्धव से मथुरा जाने और वहां से कृष्ण को वापिस लिवा लाने की प्रार्थना की। यादवों के अवश्य-भावी विनाश को देख कर उद्धव कृष्ण के पास गये और पूछा कि अब क्या करें, कृष्ण ने तब उद्धव को बतलाया कि वह बदरिकाश्रम जाकर तपस्या करें तथा स्वर्गलाभ करें। 'उद्धवदूत' और 'उद्धवसंदेश' की रचना का विषय 'उद्धव' है)।

उद्धस्त (वि०) [ब० स०] हाथ आगे पसारे हुए या उठाये हुए।

उद्धानम् [उद्+धा+ल्युट्] 1. चूल्हा, अंगीठी, यज्ञकुण्ड 2. उगल देना, वमन करना।

उद्धान्त (वि०) [उद्+हा+क्त बा०] उगला हुआ, वमन किया हुआ, -तः हाथी जिसके मस्तक से मद चूना बन्द हो गया हो।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. खींचकर बाहर निकालना, निस्सारण 2. मुक्ति, त्राण, बचाव, अपमोचन, छुटकारा 3. उठाना, ऊपर करना 4. (विधि में) पैतृक सम्पत्ति में से पृथक् किया गया वह भाग जिसका लाभ केवल ज्येष्ठ पुत्र ही उठा सके, छोटे भाइयों को दिय जाने वाले भाग के अतिरिक्त वह अंश जो कानूनन बड़े भाई को ही मिले—मनु० ९।११२, 5. युद्ध की लूट का छठा भाग जिसका स्वामी राजा होता है—मनु० ७।९३, 6. ऋण, 7. सम्पत्ति का फिर से प्राप्त हो जाना 8. मोक्ष।

उद्धारणम् [उद्+हृ(धृ)+णिच्+ल्युट्] 1. उठाना ऊँचा करना 2. बचाना, भय से निकाल लेना, छुटकारा, मुक्ति।

उद्धुर (वि०) [उद्+धुर्+क] 1. अनियन्त्रित, निरंकुश, युक्त 2. दृढ़, निश्चय 3. भारी, भरपूर—शि० ५।६४ 4. मोटा, फूला हुआ, स्थूल 5. योग्य, सक्षम—मालवि० ४।४०।

उद्धूत (भू० क० कृ०) [उद्+धू+क्त] 1. हिलाया हुआ, गिरा हुआ, उठाया हुआ, ऊपर फेंका हुआ—मारुत-भरोद्धतोऽपि धूलिवज्रः- धन० 2. उन्नत, ऊँचा।

उद्धूनम् [उद्+धू+ल्युट्, नुगागमः] 1. ऊपर फेंकना, उठाना 2. हिलाना।

उद्धूपनम् [उद्+धूप्+ल्युट्] धूनी देना, धुपाना।

उद्धूलनम् [उद्+धूल्+णिच्+ल्युट्] चूरा करना, पीसना; धूल या चूरा बुरकना—भस्मोद्धूलन —काव्य० १०।

उद्धृष्णुः [उद्+धृष्+ल्युट्] रोंगटे खड़े होना, पुलकना, रोमांचित होना।

उद्धृत (भू० क० कृ०) [उद्+हृ (धृ)+क्त] 1. बाहर खींचा हुआ, निकाला हुआ, निचोड़ कर निकाला हुआ 2. उठाया हुआ, उन्नत, ऊँचा किया हुआ 3. उखाड़ा हुआ, उन्मूलित—उद्धृतारिः—रघु० २।३०।

उद्धृतिः (स्त्री०) [उद्—हृ (धृ)+क्तिन्] 1. खींच कर बाहर निकालना, निचोड़ना 2. निचोड़, चुना हुआ संदर्भ 3. मुक्त करना, बचाना 4. विशेषतः पाप से मुक्ति दिलाना, पवित्र करना, मोक्ष—तत्यस्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ—गंगा० २८।

उद्धमानम् [उद्+धमा+ल्युट्] अंगीठी, चूल्हा, स्टोव।

उद्धमः [उज्झत्युदकमिति मल्लि०—उद्+उज्झ्+क्यप्, नि० उज्झेर्धत्वम्] एक दरिया का नाम -तोयदागम इवोद्धमभिद्यथोः—रघु० ११।८।

उद्बन्ध (वि०) [अन्या० स०] हीला किया गया—धः,-न्धनम् 1. बँधना, लटकना 2. स्वयं फांसी लगा लेना।

उद्बन्धकः [उद्+बन्ध्+ण्वुल्] वर्णसंकर जाति जो धोबी का काम करती है—तु०—उशना—आयोगवेन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विप्रायां जातास्ताम्रोपजीविनः, तस्यैव नृपकन्यायां जातः सूनिक उच्यते। सूनिकस्य नृपायां तु जाता उद्बन्धकाः स्मृताः, निर्णेजयेयुर्वस्त्राणि अस्पृशाश्च भवन्त्यतः।

उद्बल (वि०) [ब० स०] तबल, सशक्त।

उद्बाष्प (वि०) [ब० स०] अश्रुपरिपूर्ण, अश्रुपरिप्लावित कि० ३।५९।

उद्बाहु (वि०) [ब० स०] भुजाएं ऊपर उठाये हुए, भुजाओं को फैलाये हुए—शंखुलम्बे फले लोमादुद्बाहुरिव वामनः—रघु० १।३।

उद्बुद्ध (भू० क० कृ०) [उद्+बुध्+क्त] 1. जागा हुआ, जगाया हुआ, उत्तेजित 2. खिला हुआ, फैला हुआ, पूर्ण विकसित—मा० १।४०, 3. याद दिलाया गया 4. प्रत्यास्मृत।

उद्बोधः,—धनम् [उद्+बुध्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. जगाना, ध्यान दिलाना 2. प्रत्यास्मरण करना, उठाना—ननु कथं रामादिरत्यःशुद्बोधकारणैः सीतादिभिः सामाजिकाना रत्युद्बोधः—सा० द० ३, इसी प्रकार—रस°।

उद्बोधक (वि०) [उद्+बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1. ध्यान दिलाने वाला, 2. उत्तेजना देने वाला, —कः सूर्य।

उद्भट (वि०) [उद्+भट्+अप्] 1. श्रेष्ठ, प्रमुख—पदे पदे सन्ति भटा रणोद्भटाः— नै० १।१३२ 2. उत्कृष्ट, महानुभाव,—टः 1. अनाज फटकने के लिए छाज 2. कछुवा।

उद्भवः [उद्+भू+अप्] 1. उत्पत्ति, रचना, जन्म, प्रसव (शा० तथा आल०) इति हेतुस्तदुद्भवे- काव्य० १, याज्ञ० ३।८०, बहुधा समास के अन्त में "से उत्पन्न" अर्थ को प्रकट करता है—ऊरूद्भवा- विक्रम० १।३ मणिराकरोद्भवः—रघु० ३।१८ 2. स्रोत, उद्गमस्थान 3. विष्णु।

उद्भावः [उद्+भू+घञ्] 1. उत्पत्ति, सन्तति 2. औदार्य।

उद्भावनम् [उद्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. चिन्तन, कल्पना 2. उत्पत्ति, उत्पादन, सृष्टि 3. अनवधान, उपेक्षा, अवहेलना।

उद्भावयितृ (वि०) [उद्+भू+णिच्+तृच्] ऊपर उठाने वाला, उत्कृष्ट बनाने वाला।

उद्भासः [उद्+भास्+घञ्] चमक, प्रभा।

उद्भासिन्, उद्भासुर (वि०) [उद्भास्+इनि, घुरच् वा] देदीप्यमान, चमकीला, उज्ज्वल; —विभूषणोद्भासि घिनद्धभोगि वा—कु० ५।७८ मृच्छ० ८।३८, अमरु ८१।

उद्भिद् (वि०) [उद्+भिद्+क्विप्] उगने वाला, अंकुर फूटने वाला—(पुं०) 1. पौधे का अंकुर—अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि—अमर० 2. पौधा 3. झरना, फौवारा। सम०—ज (वि०) (उद्भिज्ज) फूटने वाला, (पौधे की भांति) उगने वाला- (—ज्जः) पौधा, विद्या वनस्पति विज्ञान।

उद्भेदः [उद्भिद्+क] फूटने वाला, उगने वाला।

उद्भूत (भू० क० कृ०) [उद्+भू+क्त] 1. जात, उत्पन्न, प्रसूत 2. (शा० तथा आल०) उत्तम 3. गोचर जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाना जा सके (गुणादि)।

उद्भूतिः (स्त्री०) [उद्+भू+क्तिन्] 1. प्रजनन, उत्पादन 2. उन्नयन, उत्कर्षण, समृद्धि - वरः शम्भुरलं ह्यस्य त्वत्कुलोद्भूतये विधिः -कु० ६।८२।

उद्भेदः -दनम् [उद्+भिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. फूट पड़ना, बेधना, दिखाई देना, आविर्भाव, प्रकट होना, उगना—उमास्तनोद्भेदमनुप्रवृद्धः—कु० ७।२४,तं यौवनोद्भेदविशेषकान्तं—रघु० ५।३८ शि० १८।३६ 3. निर्झर, फौवारा 4. रोमांच जैसा कि 'पुलकोद्भेदः में।

उद्भ्रमः [उद्+भ्रम्+घञ्] 1. आघूर्णन, चक्कर देना, (तलवार आदि का) घुमाना 2. घूमना, 3. खेद।

उद्भ्रमणम् [उद्+भ्रम्+ल्युट्] 1. इधर-उधर हिलना-जुलना, घूमना 2. उगना, उठना।

उद्यत (भू० क० कृ०) [उद्+यम्+क्त] 1. उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ —°असिः, °पाणिः आदि 2. संभाल कर रखने वाला, परिश्रमी, चुस्त 3. तुला हुआ, तना हुआ (धनुष आदि)-कि० १।२१ 4. आमादा, तैयार, तत्पर, उत्सुक, तुला हुआ, लगा हुआ, व्यस्त (संप्र०, अधि० तथा तुमुन्प्रत्यय के साथ या बहुधा समास में)—उद्यतः स्वेषु कर्मसु—रघु० १७।६१, हन्तुं स्वजनमुद्यताः—भग० १।४५ जय°, वध° आदि०।

उद्यमः [उद्+यम्+घञ्] 1. उठाना, उन्नयन 2. सतत प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, धैर्य —निशम्य चैनां तपसे कृतोद्यमाम् कु० ५।३—शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् —५ दृढ़ संकल्प- उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः-- पंच० २।१३१ 3. तैयारी, तत्परता। सम०—भृत् (वि०) घोर परिश्रम करने वाला—भर्तृ० २।७४।

उद्यमनम् [उद्+यम+ल्युट्] उठाना, उन्नयन।

उद्यमिन् (वि०) [उद्+यम्+णिनि] परिश्रमी, सतत प्रयत्नशील।

उद्यानम् [उद्+या+ल्युट्] 1. भ्रमण करना, टहलना 2. बाग, बगीचा प्रमोदवन,- वाप्युद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या— मेघ० ७, २६, ३३ 3. अभिप्राय, प्रयोजन। सम०—पालः, -पालकः,—रक्षकः माली, बाग का रखवाला।

उद्यापकम् [उद्+या+णिच्+ण्वुल्+कन्] बाग, बगीचा।

उद्यापनम् [उद्+या+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] व्रतादिक का पारण, समाप्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्योगः [उद्+युज्+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, काम-धंधा —तदर्दैवमिति सचिन्त्य त्यजेन्नोद्योगमात्मनः—पंच० २।१४० 2. कार्य, कर्तव्य, पद- तुल्योद्योगस्तव दिलकृतश्चाधिकारो मतो नः--विक्रम० २।१, धैर्य, परिश्रम।

उद्योगिन् [उद्+युज्+घिनुण्] सुस्त, उद्यमी, उद्योगशील।

उद्रः [उन्द्+रक्] एक प्रकार का जल जन्तु।

उद्वयः [उद्गतो रथो यस्मात्—ब० स०] 1. रथ के धुरे की कील, सकेल 2. मृगा।

उद्वायः [उद्+रु+घञ्] शोरगुल, कोलाहल।

उद्विक्त (भू० क० कृ०) [उद्+रिच्+क्त] 1. बढ़ा हुआ अत्यधिक, अतिशय 2. विशद, स्पष्ट।

उद्वृज (वि०) [उद्+रुज+क] नष्ट करने वाला, जड़ खोदने वाला (तट—आदि) यथा 'कूलमुद्वृज' में।

उद्रेकः [उद्+रिच्+घञ्] वृद्धि, आधिक्य, प्राबल्य, प्राचुर्य —ज्ञानोद्रेकाद्विघटितमोहग्रन्थेः सत्त्वनिष्ठात् वेणी० १।२३, सरवोद्रेक जघनपुलिने—शि० ७।७४।

उद्वत्सरः [उद्+रुस्+सरन्] वर्ष।

उद्वपनम् [उद्+रुप्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. उड़ेलना, उखाड़ना।

उद्वमनम्,-उद्वान्तिः (स्त्री०) [उद्+रुम्+ल्युट्, क्तिन् वा] वमन करना, उगलना।

उद्वर्तः [उद्+रुवृत्+घञ्] 1. अवशेष, आतिशय्य 2. आधिक्य, बाहुल्य 3. (तेल, उबटन आदि) सुगंधित पदार्थों की मालिश।

उद्वर्तनम् [उद्+रुवृत्+ल्युट्] 1. ऊपर जाना, उठना 2. उगना, बाढ़ 3. समृद्धि, उन्नयन 4. करवट बदलना, उछाल लेना -चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि —मेघ० ४० 5. पीसना, चूरा करना 6. सुगंधित उबटन आदि पदार्थों का शरीर पर लेप करना, या पीड़ा आदि को दूर करने के लिए सुगंधित लेप।

उद्वर्धनम् [उद्+रुवृध्+ल्युट्] 1. वृद्धि, 2. दबाई हुई हँसी।

उद्वह (वि०) [उद्+रुवह्+अच्] 1. ले जाने वाला, आगे बढ़ने वाला 2. जारी रहने वाला, निरन्तर रहने वाला (वंश आदि), कुल[2]—उत्तर० ४, इसी प्रकार रघु०३[2] ४।२२, रघु० ९।९, ११।५४,—हः 1. पुत्र 2. वायु के सात स्तरों में से चौथास्तर, 3. विवाह,—हा —पुत्री।

उद्वहनम् [उद्+रुवह्+ल्युट्] 1. विवाह करना 2. सहारा देना, संभाले रखना, उठाये रखना—भुजः प्रयुक्तोद्वहनक्रियायाः रघु० १३।१, १४।२०, रघु० २।१८, कु० ३।१३ 3. ले जाया जाना, सवारी करना मनु० ८।३७०।

उद्वान्त (वि०) [उद्+रुवम्+क्त] वमन किया हुआ, उगला हुआ,—न्तम् 1. उगलना, वमन करना, 2. अंगीठी, स्टोव।

उद्वान्त (वि०) [उद्+रुवम्+क्त] 1. वमन किया हुआ 2. मद रहित (हाथी)।

उद्वापः [उद्+रुवप्+घञ्] 1. उगलना, बाहर फेंकना 2. हजामत करना 3. (तर्क० में) पूर्व पद के अभाव में पश्चवर्ती उत्तरांग के अस्तित्व का अभाव (विलम्बन)।

उद्वासः [उद्+रुवस्+घञ्] 1. निर्वासन 2. तिलांजलि देना 3. वध करना।

उद्वासनम् [उद्+रुवस्+णिच्+ल्युट्] 1. बाहर निकालना, निर्वासित कर देना 2. तिलांजलि देना 3. (आग से) निकालकर दूर करना 4. वध करना।

उद्वाहः [उद्+रुवह्+घञ्] 1. संभालना, सहारा देना 2. विवाह, पाणिग्रहण —असवर्णास्वयं जैयो विधिरुद्वाहकर्मणि —मनु० ३।४३ (स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन है - ब्राह्मो दैवस्तथा चार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गांधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमः स्मृतः)।

उद्वाहनम् [उद्+रुवह्+णिच्+ल्युट्] 1. उठाना 2. विवाह, —नी 1. बंधनी, रस्सी 2. कौड़ी, बराटिका।

उद्वाहिक (वि०) [उद्वाह+ठन्] विवाह से संबंध रखने वाला, विवाह विषयक (मन्त्रादिक) मनु० ९।९५।

उद्वाहिन् (वि०) [उद्+रुवह्+णिनि] 1. उठाने वाला, खींचने वाला 2. विवाह करने वाला,—नी रस्सी, डोरी।

उद्विग्न (भू० क० कृ०) [उद्+रुविज्+क्त] संतप्त, पीड़ित, शोकग्रस्त, चिंतित।

उद्वीक्षणम् [उद्+रुवि+ईक्ष्+ल्युट्] 1. ऊपर की ओर देखना 2. दृष्टि, आँख, देखना, नजर डालना—सखीजनोद्वीक्षणकौमुदीमुखम्—रघु० ३।१।

उद्वीजनम् [उद्+रुवीज्+ल्युट्] पंखा झलना।

उद्वृंहणम् [उद्+रुवृंह्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

उद्वृत्त (भू० क० कृ०) [उद्+रुवृत्+क्त] 1. उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2. उभड़कर बहता हुआ, उमड़ा हुआ—उद्वृत्तः क इव सुखादः परेषाम्—शि० ८।१८ (यहाँ 'उद्वृत्त' का अर्थ 'विचलित, दुर्वृत्त' है)।

उद्वेगः [उद्+रुविज्+घञ्] 1. कांपना, हिलना, लहराना 2. क्षोभ, उत्तेजना—भग० १२।१५ 3. आतंक, भय - शान्तोद्वेगस्तिमितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्या—मेघ० ३६, रघु० ८।७ 4. चिन्ता, खेद, शोक 5. विस्मय, आश्चर्य, —गम् सुपारी।

उद्वेजनम् [उद्+रुविज्+ल्युट्] 1. क्षोभ, चिन्ता 2. पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना—उद्वेजनकरैर्दण्डैश्चिह्नयित्वा प्रवासयेत्—मनु० ८।३५२, 3. खेद।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्वेधि (वि०) [उन्नता वेदिर्यत्र ब० स०] जहाँ आसन या गद्दी ऊँची हो—विमानं नवमुद्वेदि—रघु० १७।९ ।

उद्वेपः [उद्+वेप्+अच्] हिलना, काँपना, अत्यधिक कम्पकंपी ।

उद्वेल (वि०) [उत्क्रान्तो वेलाम्—अव्या० स०] 1. अपने तट से बाहर उमड़ कर बहने वाला (नदी आदि) —रघु० १०।३४, का० ३३३ 2. उचित सीमा का उल्लंघन ।

उद्वेल्लित (भू० क० कृ०) [उद्+वेल्ल्+क्त] हिलाया हुआ, उछाला हुआ,—तम् हिलाना, झकझोरना ।

उद्वेष्टन (वि०) [ग० स०] 1. ढीला किया हुआ—कयाचिदुद्वेष्टनदान्तमाल्यः—रघु० ७।६, कु० ७।५७, 2. बन्धनमुक्त, बन्धनरहित,—नम् 1. घेरा डालना, 2. बाड़ा, बाड़ 3. पीट या कूल्हों में पीड़ा ।

उद्वेदु (पुं०) [उद्+वह्+तृच्] पति ।

उधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन्] ऐनं, औड़ी दे० 'ऊधस्' ।

उन्द् (स्वा० पर०) (उनत्ति, उत्त—उन्न) आर्द्र करना, तर करना, स्नान करना—याः पृथिवीं पयसोन्दन्ति ।

उन्दनम् [उन्द्+ल्युट्] तर करना, आर्द्र करना ।

उन्दयः, उन्दुरः, उन्दूरः [उन्द्+उरच्-उरच् वा] मूसा, चूहा ।

उन्नत (भू० क० कृ०) [उद्+नम्+क्त] 1. उठाया हुआ, उन्नत किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ (आलं० भी)—भर्तृ० ३।२४, शि० ९।७९, नतोन्नतभ्रूभिरागे —श० ४।१४ 2. ऊँचा (आलं० भी) लम्बा, उत्तुंग, बड़ा, प्रमुख —रघु० १।१४, विक्रम० ५।२२, कि० ५। १५, १४।२३, 3. मांसल, भरा-पूरा (स्त्री का वक्षस्थल आदि), तः अजगर,—तम् 1. उन्नयन 2. उत्थान, ऊँचाई । सम०—आनत (वि०) उन्नत और दलित, विषम—अन्धुरं तुन्नतानतम्—अमर०, —चरण (वि०) दुर्दान्त,—शिरस् (वि०) अहंमन्य, बड़ा घमंडी ।

उन्नतिः (स्त्री०) [उद्+नम्+क्तिन्] 1. उन्नयन, ऊँचाई (आलं० भी) नीचे दे० 'उन्नतिमत्' 2. उत्कर्ष, मर्यादा, अभ्युदय, समृद्धि—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्—पंच० १।१५०, शि० १६।२२, भामि० १। ४०—महाजनस्य संपर्कः कस्य नोन्नतिकारकः हि० ३ 3. उठाना । सम० —ईशः गरुड़, (उन्नति का स्वामी) ।

उन्नतिमत् (वि०) [उन्नतिः-मतुप्] उन्नत, उभरता हुआ, फूला हुआ (जैसे कि स्त्री का वक्षस्थल)—सा पीनोन्नतिमत्पयोधरयुगं धत्ते—अमरु २०, शि० ९।७२ ।

उन्नयनम् [उद्+नम्+ल्युट्] 1. ऊपर उठाना, ऊँचा करना 2. ऊँचाई ।

उन्नस (वि०) [उद्+नस्+रन्] लड़ा, सीधा, उत्तुंग, ऊँचा (आलं० भी) —उन्नसताम्रपटमण्डलमण्डितम् तत्—शि० ५।३१ ।

उन्नयः, उन्नायः [उद्+नी+अच्, घञ् वा] 1. उठाना, ऊँचा करना 2. ऊँचाई उन्नयन 3. सादृश्य, समता 4. अटकल ।

उन्नयनम् [उद्+नी+ल्युट्] 1. उठाना, ऊँचा करना, ऊपर उठाना 2. पानी खींचना 3. पर्यालोचन, विचार-विमर्श 4. अटकल ।

उन्नस (वि०) [उन्नता नासिका यस्य ब० स०] ऊँची नाक वाला,—उन्नसं दधती वक्त्रम् —भट्टि० ४।१८ ।

उन्नादः [उद्+नद्+घञ्] चिल्लाहट, दहाड़, गुंजन, चहचहाना ।

उन्नाभ (वि०) [उन्नता नाभिर्यस्य—ब० स०] जिसकी नाभि उभरी हुई हो, तुंदिल, तोंद वाला ।

उन्नाहः [उद्+नह्+घञ्] 1. उभार, स्फीति 2. बाँधना, बंधनयुक्त करना,—हम् चावलों के माँड़ से बनी काँजी ।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्य—ब० स०] 1. निद्रा रहित, जागा हुआ—तामुन्निद्राभवनिशयना सौधवातायनस्थः—मेघ० ८८ विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः- शि० ६।४, मुद्रा० ४ 2. प्रसृत, पूर्णविकसित मुकुलित (कमल आदि)—उन्निद्रपुष्पाधिसहस्रभाजा - शि० ४। १६, ८।२८ ।

उन्नेतृ [उद्+नी+तृच्] उठाने वाला (पुं०) यज्ञ के १६ ऋत्विजों में से एक ।

उन्मज्जनम् [उद्+मज्ज्+ल्युट्] बाहर निकलना, पानी से बाहर निकलना ।

उन्मत्त (भू० क० कृ०) [उद्+मद्+क्त] 1. मदयुक्त, नशे में चूर 2. विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल- द्रावयन्नात्मनो --विक्रम० २, मनु० ९।७९, 3. फूला हुआ, उच्छृंखल, बहकी- पंच० १।१६१, शि० ६।३१ 4. भूत या प्रेत से आविष्ट - याज्ञ० ३।२६, मनु० ३।१६१, (वात-पित्तश्लेष्म सन्निपातग्रहसंभवेनोपसृष्टः—मिता०), तः धतूरा । सम०—कौतिः,—वेशः शिव,—गंगम् एक देश का नाम (यहाँ गंगा भीषण कल्लोल करती हुई बहती है) —दर्शन,—रूप (वि०) देखने में पागल,—प्रलपित (वि०) पागल की बहक (—तम्) पागल के शब्द ।

उन्मथनम् [उद्+मथ्+ल्युट्] 1. खोदना, फेंक देना 2. नष्ट करना, —अन्योन्यमूलोन्मथनाद्- रघु० ७।५२ ।

उन्मद (वि०) [उद्गतो मदो यस्य—ब० स०] 1. नशे में चूर, शराबी, रघु० २।९, १६।५४ 2. पागल, कोधोद्दीप्त, उद्धत- शि० १०।४, १६।६९ 3. नशा करने वाला, मदक-मधुकराङ्गनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृतान्तरमुज्जगे - शि० ६।२०,—दः 1. विक्षिप्ति 2. नशा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उन्मदन (वि०) [उद्भूतो मदनोऽस्य - ब० स०] प्रेम-पीड़ित, प्रेमोद्दीप्त—तदाप्रभृत्युन्मदना पितुर्गृहे—कु० ५।५५।

उन्मदिष्णु (वि०) [उद्+मद्+इष्णुच्] 1. पागल 2. नशे में चूर, जिसने मदिरा पी हुई हो 3. जिसे मद चूता हो (हाथी)।

उन्मनस्-नस्क (वि०) [उद्भ्रान्तं मनो यस्य --ब० स०, कप् च] 1. उत्तेजित, विक्षुब्ध, चञ्चल, बेचैन २ष० ११।२२, कि० १४।४५ 2. खेद प्रकट करना, किसी मित्र के बिछोह से उदास 3. आतुर, उत्सुक, उत्कण्ठित।

उन्मनायते (ना० धा०, आ०--उन्मनीभू) बेचैन होना, मन में क्षुब्ध होना।

उन्मन्थः [उद्+मन्थ्+घञ्] 1. क्षोभ 2. वध करना, हत्या करना।

उन्मन्थनम् [उद्+मन्थ्+ल्युट्] 1. हिलाना, क्षुब्ध करना 2. वध करना, हत्या करना, मारना 3. (लकड़ी आदि से) पीटना।

उन्मयूख (वि०) [ब० स०] प्रकाशमान, चमकीला--रघु० १६।६९।

उन्मर्दनम् [उद्+मृद्+ल्युट्] 1. रगड़ना, मलना 2. मालिश करने के लिए सुगन्धित (तैलादिक)।

उन्मायः [उद्+मथ्+घञ्] 1. यातना, अतिपीडा 2. हिला देना, क्षुब्ध करना 3. वध करना, हत्या करना 4. जाल, पाश।

उन्माद (वि०) [उद्+मद्+घञ्] 1. पागल, विक्षिप्त 2. अनवस्थित, ः 1. पागलपन, विक्षिप्ति— अहो उन्मादः उत्तर० २ 2. तीव्र संवेग 3. विक्षिप्तता, सनक (मानसिक विकार) 4. (अलं० शा० में) ३३ संचारिभावों में से एक -चिन्तासमोह उन्मादः कामशोकभयादिभिः--सा० द० 3, या विप्रलम्भमहापरिप्लवानन्दादिजन्मनः तस्मिन्नालम्बनाभास उन्मादः स्मृतः रस० 5. खिलना- उन्मादं बीजरः प्रयाताम् शा० ३० २।

उन्मादन (वि०) [उद्+मद्+णिच्+ल्युट्] पागल बना देने वाला, भादक, नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मानम् [उद् + मा+ल्युट्] 1. तोलना, मापना 2. माप, तौल 3. मूल्य।

उन्मार्ग (वि०) [उत्क्रान्तः मार्गात्--प्रा० स०] कुमार्गगामी, —गः 1. कुमार्ग, गलत मार्ग से विचलन (आलं० भी) 2. अनुचित आचरण करना चाल चलन, उन्मार्गप्रस्थितानि इन्द्रियाणि—का० १६९, प्रवर्तते १०३,—गम् (अव्य०) कुमार्ग से, गलत रास्ते पर।

उन्मार्जनम् [उद्+मृज्+णिच्+ल्युट्] रगड़ना, पोंछना, मिटाना।

उन्मितिः [उद्+मा+क्तिन्] नाप, तौल, मूल्य।

उन्मिश्र (वि०) [प्रा० स०] मिला-जुला, चित्र-विचित्र।

उन्मिषित (भू० क० कृ०) [उद्+मिष्+क्त] खुला हुआ (आँख आदि), खिला हुआ, फूलाया हुआ, —तम् दृष्टि, अवलोकन कु० ५।२५।

उन्मीलः -लनम् [उद्+मील्+घञ् ल्युट् वा] 1. (आखों का) खोलना, जागृति 2. प्रकाशित करना, खोलना --उत्तर० ६।३५ 3. फुलाना, फूंक मारना।

उन्मुख (वि०) (स्त्री० -खी) [उद् -ऊर्ध्वं मुखं यस्य —ब० स०] 1. मुंह ऊपर की ओर उठाये हुए, ऊपर देखते हुए—अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिः—मेघ० १४,१००, रघु० १।३९, ११।२६, आश्रमे १।५३ 2. तैयार, तुला हुआ, निकटस्थ, उद्यत- तमरण्यसमाश्रयोन्मुखम्—रघु० ८।१२, वन में चले जाने के लिए तत्पर—१६।९, ३।१२ 3. उत्सुक, प्रतीक्षक, उत्कंठित—तस्मिन् संयमिनामाद्ये जाते परिणयोन्मुखे—कु० ६।३४, रघु० १२।२६, ६।२१, ११।२३ 4. शब्दायमान, शब्द करता हुआ —कु० ६।२।

उन्मुखर (वि०) [प्रा० स०] ऊँचा शब्द करने वाला, कोलाहलमय।

उन्मुद् (वि०) [उद्गता मुद्रा यस्मात्— ब० स०] 1. बिना मुहर का 2. खुला हुआ, खिला हुआ, (फूल की भाँति) फूला हुआ।

उन्मूलनम् [उद्+मूल्+ल्युट्] जड़ से फाड़ लेना, उखाड़ना, मूलोच्छेदन करना—न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः -रघु० २।३४।

उन्मेदा [प्रा० स०] स्थूलता, मोटापा।

उन्मेषः षणम् [उद्+मिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. (आखों का) खोलना, पलक मारना—मुहुः ३।२१, 2. खिलना, खुलना, फूलना—उन्मेषं यो मम न सहते जातिं—वैरी निशायाम्—काव्य० १०, दीर्घिकाकमलोन्मेषः कु० २।३३ 3. प्रकाश, कौंध, दीप्ति सतां प्रज्ञोन्मेषः - भर्तृ० २।११४ विद्युदुन्मेषदृष्टिम्—मेघ० ८१ 4. आग जलना, उठना, दिखलाई देना, प्रकट होना, ज्ञान°--शा० ३।१३।

उन्मोचनम् [उद्+मुच्+ल्युट्] खोलना, ढीला करना।

उप (उप०) 1. यह उपसर्ग क्रिया या संज्ञाओं से पूर्व लग कर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है --(क) निकटता, संसक्ति-- उपविशति, उपगच्छति (ख) शक्ति, योग्यता --उपकरोति (ग) व्याप्ति-उपकीर्ण (घ) परामर्श, निक्षेप (जो आघात द्वारा प्राप्त हो) उपदिशति, उपदेश (ङ) मृत्यु, उपरति-- उपरत (च) दोष, अपराध-उपघात (छ) देना उपनयति, उपहरति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ज) चेष्टा, प्रयत्न—उपत्वा नेष्य (झ) उपक्रम, आरम्भ—उपक्रमते, उपक्रमः (ञ) अध्ययन—उपाध्यायः, (ट) आदर, पूजा—उपस्थानम्, उपचरति पितरं पुत्रः 2. जिस समय यह उपसर्ग क्रियाओं से संबद्ध न होकर संज्ञा शब्दों से पूर्व लगता है तो उस समय—सामीप्य, समता, स्थान, संख्या, काल और अवस्था आदि को संसक्ति, तथा अधीनता की भावना आदि अर्थों को प्रकट करता है। **उपकनिष्ठिका**—कनिष्ठिका के पास वाली अंगुली, **उपपुराणम्**—अनुवंशी पुराण, **उपगुरुः**—सहायक अध्यापक, **उपाध्यक्षः**—उपप्रधान, अव्ययीभाव समासों में भी इन्हीं अर्थों में इसका उपयोग होता है :- उपगङ्गम्—गंगायाः समीपे, **उपकूलम्**, [2]वनम् आदि 3. संख्यावाचक शब्दों के साथ लग कर संख्याबहुत्वोहि बन जाता है और 'लगभग' 'प्रायः' 'तकरीबन' अर्थ को प्रकट करता है, —**उपत्रिंशाः**—लगभग तीस 4. पृथक् रहता हुआ भी यह (क) कर्म के साथ हीनता को प्रकट करता है —उपहरि सुराः—सिद्धा० देवता हरि के निकट हैं (ख) अधि० के साथ यह 1. 'अधिकता' और 'उत्कृष्टता' को—उपनिषदे काव्यंणम्, **उपरार्धं हरेर्गुणाः** 2. तथा योग या जोड़ को प्रकट करता है।

उपकण्ठः—कण्ठम् [उपगतः कण्ठम् -अव्या० स०] 1. सामीप्य, सान्निध्य, पड़ोस—प्राप तालीवनराजामभुपकण्ठं महोदधेः—रघु० ४।३४, १३।४८ कु० ७।५१, मा० ९।२ 2. ग्राम या उसकी सीमा के पास का स्थान—(अव्य०) 1. गर्दन के ऊपर, गले के निकट 2. के निकट, नजदीक।

उपकथा [प्रा० स०] छोटी कहानी, किस्सा।

उपकनिष्ठिका कनिष्ठा अंगुली के पास वाली अंगुली।

उपकरणम् [उप+कृ+ल्युट्] 1. सेवा करना, अनुग्रह करना, सहायता करना 2. सामग्री, साधन औजार, उपाय—उपकरणीभावमायाति—उत्तर० ३।१, परोपकारोपकरणं शरीरम्—का० २०३, याज्ञ० २।२७६, मनु० ९।२७० 3. जीविका का साधन, जीवन को सहारा देने वाली कोई बात 4. राजचिह्न।

उपकर्णनम् [उप+कर्ण्+ल्युट्] सुनना।

उपकर्णिका [उपकर्ण (अव्य०)+कन्+टाप् इत्वम्] अफ़वाह, जनश्रुति।

उपकर्तृ (वि०) [उप+कृ—तृच्] उपकार करने वाला, अनुग्रहकर्ता, उपयोगी, मित्रवत् हीनान्यनुपकर्तृणि प्रवृद्धानि विकुर्वते—रघु० १७।५८—उपकर्त्री रसादीनाम्—सा० द० ६२४, शि० २।२७।

उपकल्पनम् ना [उप+कृप्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. तैयारी 2. कपोलकल्पित (तथ्यों का) सृजन करना, गढ़ना।

उपकारः [उप+कृ+घञ्] 1. सेवा, सहायता, मदद, अनुग्रह, आभार (विप० 'अपकार') उपकारापकारौ हि लक्ष्यलक्षणमेतयोः—शि० २।२७, शस्त्रेणैवप्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४० ३।७३, याज्ञ० ३।२८४ 2. तैयारी 3. आभूषण, सजावट,—**रो** 1. राजकीय तंबू 2. महल 3. सराय, धर्मशाला।

उपकार्य (वि०) [उप+कृ+ण्यत्] सहायता करने के उपयुक्त,—र्या राजभवन, महल रूपार्या रघुप्रतिनिधिः स नयोपकार्यां बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास —रघु० ५।६३, शाही सेवा—५।४१, ११।९३, १३।७९, १६।५५, ७३।

उपकुञ्चिः—**ञ्चिका** [उप+कुञ्च्+कि, कन् टाप् च] छोटी इलायची।

उपकुम्भ (वि०) [अव्या० स०] 1. निकटस्थ, संसक्त 2. अकेला, निर्जन, एकान्त।

उपकुर्वाणः [उप+कृ+शानच्] ब्राह्मण ब्रह्मचारी जो गृहस्थ बनना चाहता है।

उपकुल्या [उप+कुल+यत्+टाप्] नहर, खाई।

उपकूपम्—पे (अव्य०) [अव्या० स०] कुएं के निकट, जलाशयः कुएं के पास बना चुबच्चा जिसमें गाय भैंस पानी पीते हैं।

उपकृतिः (स्त्री०)—उपक्रिया [उप+कृ+क्तिन्, श वा] अनुग्रह, आभार।

उपक्रमः [उप+क्रम्+घञ्] 1. आरंभ, शुरू—रामोपक्रममारण्यौ रक्षःपरिभवं तयम् रघु० १२।४२ राम के द्वारा आरम्भ किया गया 2. उपागमन, साहस' बल पूर्वक आगे बढ़ना मा० ७, इसी प्रकार—योषितः सुकुमारोपक्रमाः—त० 3. उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय, कार्य, जोखिम का काम 4. भोजना, उपाय, तरकीब, युक्ति, उपचार—सामादिभिरुपक्रमैः मनु० ७।१०७, १५९, रघु० १८।१५, याज्ञ० १।३४५, शि० २०।७६, 5. परिचर्या, चिकित्सा 6. ईमानदारी की जांच दे० 'उपधा'।

उपक्रमणम् [उप+क्रम्+ल्युट्] 1. उपागमन 2. उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय 3. आरम्भ 4. चिकित्सा, उपचार।

उपक्रमणिका [उपक्रमण+ङीप्, कन्, टाप् ह्रस्व] भूमिका, प्रस्तावना।

उपक्रीड़ा [अव्या० स०] खेल का मैदान, खेलने का स्थान।

उपक्रोशः—**शनम्** [उप+क्रुश्+घञ्, ल्युट्] निन्दा, झिड़की, अपकर्ष—प्राणैरुपक्रोशमलोभसंज्ञा—रघु० २।५३।

उपक्रोष्टृ (पुं०) [उप+क्रुश्+तृच्] (जोर से रेंगता हुआ) गधा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपक्व (स्वा)णम् [उप+क्वण्+अप् घञ् वा] वीणा की झंकार।

उपक्षयः [उप+क्षि+अच्] 1. रह करना, ह्रास, हानि 2. व्यय।

उपक्षेपः [उप+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना 2. उल्लेख, इंगित, संकेत, सुझाव—कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।३—दारुणः खलूपक्षेपः पापस्य—वेणी० ५ 3. धमकी, विशेष दोषारोपण।

उपक्षेपणम् [उप+क्षिप्+ल्युट्] 1. नीचे फेंकना, डाल देना 2. दोषारोपण, दोषी ठहराना।

उपग (वि०) [उप+गम्+ड] (केवल समासान्त में) 1. निकट जाने वाला, पीछे चलने वाला, सम्मिलित होने वाला 2. प्राप्त करने वाला—मनु० १।४६, शि० १६।६८।

उपगणः [प्रा० स०] अप्रधान श्रेणी।

उपगत (भू० क० कृ०) [उप+गम्+त] 1. गया हुआ, निकट पहुँचा हुआ 2. घटित 3. प्राप्त 4. अनुभूत 5. प्रतिज्ञात, सहमत।

उपगतिः (स्त्री०) [उप+गम्+क्तिन्] 1. उपागमन, निकट जाना 2. ज्ञान, जानकारी 3. स्वीकृति 4. उपलब्धि, अवाप्ति।

उपगमः-मनम् [उप+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1. जाना, आकृष्ट होना, निकट जाना—सीमन्तो च रघुदुपगमज्ञं यत्र नीपं वधूनाम्—मेघ० ६५, तुम्हारा आना—व्यावर्तान्योपगमात्कुमारी रघु०६।६९, ९।५० 2. ज्ञान, जानकारी 3. उपलब्धि, अवाप्ति विश्वासोपगमाद-भिन्नगतयः -श० १।१४ 4. संगीत (स्त्री-पुरुष का) 5. समाज, मण्डली —न पुनरघमानामुपगमः हि० १।१३६ 6. क्रीडना, भुगतना, अनुभव करना 7. स्वीकृति 8. करार, प्रतिज्ञा।

उपगिरि-रम् (अव्य०) [अव्य० स०—टच् (सेनकस्य सतेन)] पहाड़ के निकट, रिः उत्तर दिशा में पहाड़ के समीप स्थित देश।

उपगु (अव्य०) गौ के समीप, -गुः ग्वाला।

उपगुरुः [प्रा० स०] सहायक अध्यापक।

उपगूढ (भू० क० कृ०) [उप+गूह्+क्त] गुप्त, आलिंगित,—ढम् आलिंगन—उपगूढालि सवेपथूनि च -कु० ४।१७, शि० १०।८८, कण्ठाश्लेषोपगूढम् —भर्तृ० ३।८२, मेघ० ९७।

उपगूहनम् [उप+गूह्+ल्युट्] 1. गुप्त रखना, छिपाना 2. आलिंगन 3. आश्चर्य, अचम्भा।

उपग्रहः [उप+ग्रह्+अप्] 1. कैद, पकड़ 2. हार, भगदौड़—मुद्रा० ४।२ 3. कैदी 4. सम्मिलित होना, जोड़ना 5. अनुग्रह, प्रोत्साहन 6. लघु ग्रह (राहु, केतु आदि)।

उपग्रहणम् [उप+ग्रह+ल्युट्] 1. पकड़ना (नीचे से) सँभाले रखना, (जैसा कि 'पादोपग्रहणम्' में) 2. पकड़, गिरफ्तारी 3. सहारा देना, बढ़ावा देना 4. वेदाध्ययन -वेदोपग्रहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः—रामा०।

उपग्राहः [उप+ग्रह्+घञ्] 1. उपहार देना 2. उपहार।

उपग्राह्यः [उप+ग्रह्+ण्यत्] 1. भेंट या उपहार 2. विशेष रूप से वह भेंट जो किसी राजा या प्रतिष्ठित व्यक्ति को दी जाय, नजराना।

उपघातः [उप+हन्+घञ्] 1. प्रहार, चोट, अधिक्षेप -मनु० २।१३९, याज्ञ० २।२५६ 2. विनाश, बर्बादी 3. स्पर्श, संपर्क 4. संग्रहार, उत्पीडन 5. रोग 6. पाप।

उपघोषणम् [उप+घुष्+ल्युट्] ढिंढोरा पीटना, प्रकाशित करना, विज्ञापन देना।

उपघ्नः [उप+हन्+क] 1. अनवरत सहारा—छेदादिदोषघ्न-तरोरुपत्यकायाः—रघु० १४।१ 2. शरण, सहारा, संरक्षण।

उपचक्रः [प्रा० स०] एक प्रकार का लाल हंस।

उपचक्षुस् (नपुं०) [प्रा० स०] चक्षुताल, चश्मा।

उपचयः [उप+चि+अच्] 1. इकट्ठा होना, जोड़, अभिवृद्धि 2. वृद्धि, बाढ़, आधिक्य—बल° का० १०५, स्वशक्त्युपचये शि० २।५७, ९।३२ 3. परिमाण, ढेर 4. समृद्धि, उत्थान, अभ्युदय।

उपचारः [उप+चर्+अच्] 1. इलाज, चिकित्सा 2. निकट जाना।

उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट या समीप जाना।

उपचाय्यः [उप+चि+ण्यत्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1. सेवा, शुश्रूषा, सम्मान, पूजा, सत्कार—अस्खलितोपचाराम्—रघु० ५।२० 2. शिष्टता, नम्रता, सौजन्य, नम्र व्यवहार (सौजन्य का बाह्य प्रदर्शन) °परिश्रान्तः -हि० १।१३३, °विधिमनवद्यिनाम्—मालवि० ३।३, °पदं न चेदिदं —कु० ४।९ केवल सम्मान सूचक उक्ति, चाटुकारितापूर्ण अभिनन्दन 3. अभिवादन, प्रयानुकूल नमस्कार, श्रद्धांजलि—नोपचारमर्हति—श० ३।१८, °यंत्रणया —मालवि० ४ °अंजलिः—रघु० ३।११, नमस्कार करते समय दोनों हाथ जोड़ना 4. संबोधन या अभिवादन की रीति का एक रूप,—रामभद्र इत्येव मां प्रत्युपचारः शोभते तातपरिजनस्य —उत्तर० १, यथा गुरुस्त्वंपीपचारेण—६ 5. बाह्य प्रदर्शन या रूप, संस्कार, —प्रायुक्तैर्व्यवहारैश्च लिङ्गैर्मम राजोपचारः —विक्रम० ४ 6. चिकित्सा, उपचार, इलाज या चिकित्सा का प्रयोग, शिशिर° -वशा० १५ 7. अभ्यास, अनुष्ठान, संचालन, प्रबंध—व्रतचर्या° —मनु० १।१११, १०।३२, कामोपचारेषु—दश० ८१, प्रेम—वार्ता के संचालन में 8. श्रद्धांजलि अर्पित करने या सम्मान प्रदर्शित करने के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधन—प्रकीर्णाभिनवोपचारम् (राजमार्गम्) रघु० ७।४१, ९. अतः (पूजा, उत्सव या सजावट आदि की) कोई भी आवश्यक वस्तु—सन्मालोपचाराणाम् —रघु० १०।७७, कु० ७।८८, रघु० ६।१, पूजा की वस्तुओं या उपचारों की संख्या भिन्न-भिन्न (५, १०, १६, १८ या ६४) बतलाई गई है 10. व्यवहार, शील, आचरण—वैश्य-शूद्रोपचारं च—मनु० १।११६ 11. काम में आना, उपयोग 12. धर्मानुष्ठान, संस्कार —प्रयुक्त पाणिग्रहणोपचारौ—कु० ७।८६, महावी० १।२४ 13. (क) आलंकारिक या लाक्षणिक प्रयोग, गौण प्रयोग (विप० 'मुख्य' या 'प्राथमिक भाव') —अचेतनेऽपि चेतनवदुपचारदर्शनात्—शारी०, न चास्य करधृतत्वं तत्त्वतोऽस्ति इति मुख्येऽपि उपचार एव शरण स्यात्—काव्य० १० (ख) समता के आधार पर बना काल्पनिक अभिज्ञान—उभयरूपा चेयं शुद्धा उपचारेणामिश्रितत्वात्—काव्य० २ 14. रिश्वत 15. बहाना—शि० १०।२ 16. प्रार्थना, याचना 17. विभक्ति के स्थान में स या ष का होना

उपचितिः (स्त्री०) [उप+चि+क्तिन्] इकट्ठा करना संचय करना, वर्धन, वृद्धि ।

उपचुल्लनम् [उप+चुल्+ल्युट्] गरम करना, जलाना ।

उपच्छदः [उप+छद्+णिच्+घ] ढकना, चादर ।

उपच्छन्दनम् [उप+छन्द्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रलोभन देकर मनाना या फुसलाना, समझा बुझा कर किसी कार्य के लिए उकसाना—उपच्छन्दनेव स्वं ते दापयितुं प्रवर्तिष्ये—दश० ६५ 2. आमंत्रण देना ।

उपजनः [उप+जन्+अच्] 1. जोंक, वृद्धि 2. परिशिष्ट 3. उगना, उद्गमस्थान ।

उपजल्पनम्-पित्रम् [उप+जल्प्+ल्युट्, घञ्] बात, बातचीत ।

उपजापः [उप+जप्+घञ्] 1. चुपचाप कान में फुस-फुसाना या समाचार देना—परकृत्यं मुद्रा० २ 2. शत्रु के मित्रों के साथ गुप्त बातचीत, फूट के बीज बोकर विद्रोह के लिए भड़काना—उपजापः कृतस्तेन तानाकोपवतस्त्वयि शि० २।२५, उपजापमहान् विलङ्घयन् स विधत्ते नृपतीन्मदोद्धतः—कि० २।४७, १६। ४२ 3. अनैक्य, वियोग ।

उपजीवक,-विन् (वि०) [उप+जीव्+ण्वुल्, णिनि वा] किसी दूसरे के सहारे रहने वाला, से जीविका करने वाला (करण० के साथ या समास में)—वृत्ति-मात्रोपजीविनाम्- मनु० १२।११४, ८।२०, नाना-पण्योपजीविनाम् —९।२५७, सर्वाण्युपजीव्यानि भवियति- महा०, —ज्यः 1. संरक्षक 2. स्रोत या प्रामाणिक ग्रंथ (जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे) - इत्यलमुपजीव्यानां मान्यानां व्याख्यानेन कटाक्षनिक्षेपेण- सा० द० २ ।

उपजोषः,-षणम् [उप+जुष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्नेह 2. सुखोपभोग 3. बार-बार करना ।

उपज्ञा [उप+ज्ञा+अङ्] 1. अन्तःकरण में अपने आप उपजा हुआ ज्ञान, आविष्कार (प्रायः समास में जहाँ नपुं० समझा जाता है) पाणिनेरुपज्ञा पाणिन्युपज्ञं ग्रन्थः सिद्धा०, प्राचेतसोपज्ञं रामायणम्- रघु० १५।६३ 2. व्यवसाय जो पहले कभी न किया गया हो- लोकेऽपि भूयदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः - रघुवंश पर मल्लि० ।

उपढौकनम् [उप+ढौक्+ल्युट्] सम्मानपूर्ण भेंट या उपहार, नजराना ।

उपतापः [उप+तप्+घञ्] 1. गर्मी, आँच 2. कष्ट, दुःख, पीड़ा, शोक-सर्वथा न कञ्चन न स्पृशन्त्युपतापाः — का० १३५ 3. संकट, मुसीबत 4. बीमारी 5. शीघ्रता, हड़बड़ी ।

उपतापनम् [उप+तप्+णिच्+ल्युट्] 1. गरम करना 2. कष्ट देना, सताना ।

उपतापिन् (वि०) [उप+तप्+णिनि] 1. तपाने वाला, जलाने वाला 2. गर्मी या पीड़ा को सहन करने वाला, बीमार रहने वाला ।

उपतिष्यम् [अव्या० स०] 1. आरोपा नक्षत्रपुंज 2. पुनर्वसु नक्षत्र ।

उपत्यका [उप+त्यकन्, पर्यन्तस्थानम् स्थूलमुपत्यका सिद्धा०] पर्वत की तलहटी, निम्नभाग —मलयाद्रेरुपत्यका —रघु० ४।४६, एते स्म हिमवतोऽस्मिन्नुपत्यकाराण्यवासिनः सम्प्रताः - शा० ५ ।

उपदेशः [उप—दिश्+घञ्] 1. भक्ष्य या पेय पदार्थ वाली वस्तु, चाट, चटनी अचार आदि द्विरात्रानुपदेशानुपपाठ—दश० १३२, अन्नमानोपदेशं पिच्च नवशालिना-सदम्—वेणी० ३ 2. कौतुक, इच्छा मात्रता 3. आनन्दक रोग ।

उपदर्शकः [उप+दृश्+णिच्+ण्वुल्] 1. मार्गदर्शक, निर्देशक 2. द्वारपाल, साक्षी, गवाह ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपदश (वि०) [ब० व० -ब० स०] लगभग दस।

उपदा [उप+दा+अङ्] 1. उपहार, किसी राजा या महापुरुष को दी गई भेंट, नजराना,—उपदा विविधैः शश्वन्नोदसेकाः कोशलेश्वरम् रघु० ४।७०, ५।४१, ७।३० 2. रिश्वत, घूस।

उपदानम्, -नकम् [उप+दा+ल्युट्, कन् च] 1. आहुति, उपहार 2. संरक्षा या अनुग्रह प्राप्त करने के लिए दी गई भेंट, जैसे कि रिश्वत।

उपदिश (स्त्री०), **उपदिशा** [प्रा० स०] मध्यवर्ती दिशा, जैसे कि ऐशानी, आग्नेयी, नैर्ऋती और वायवी।

उपदेवः,-देवता [प्रा० स०] छोटा देवता, घटिया देवता।

उपदेशः [उप+दिश्+घञ्] 1. शिक्षण, अध्ययन, नसीहत, निर्देशन—सुशिक्षितोऽपि सर्वं उपदेशेन निपुणो भवति—माल० १, स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रोदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः—कु० १।३०, मालवि० २।१०, श० २।३ मनु० ८।२७२, अमरु० २६, रघु० १२।५७ परोपदेशे पाण्डित्यम्—हि० १।१०३ 2. विशिष्ट निर्देश, उल्लेख 3. व्यपदेश, बहाना 4. दीक्षा, दीक्षा-मन्त्र देना—चन्द्रसूर्यग्रहे तीर्थे सिद्धक्षेत्रे शिवालये, मन्त्राम्भ-प्रकथनमुपदेशः स उच्यते।

उपदेशक (वि०) [उप+दिश्+ण्वुल्] शिक्षण प्रदान करने वाला, अध्यापन करने वाला,—कः शिक्षक, निर्देशक, गुरु या उपदेष्टा।

उपदेशनम् [उप+दिश्+ल्युट्] नसीहत करना, शिक्षण देना।

उपदेशिन् (वि०) [उप+दिश्+णिनि] नसीहत करने वाला, शिक्षण देने वाला।

उपदेष्टृ (वि०) [उप+दिश्+तृच्] नसीहत या शिक्षण देने वाला, (पुं०—ष्टा) अध्यापक, गुरु, विशेषकर अध्यात्म गुरु,—चत्वारो वेदमन्त्रिज्ञः सो भगवान्कर्मोपदेष्टा हरिः—वेणी० १।२३।

उपदेहः [उप+दिह्+घञ्] 1. मलहम 2. चन्दन, उबटन।

उपदोहः [उप+दुह्+घञ्] 1. गाय के स्तनों का अग्रभाग 2. दूध दुहने का पात्र।

उपद्रवः [उप+द्रु+अप्] 1. दुःखद दुर्घटना, मुसीबत, संकट 2. चोट, कष्ट, हानि—पुंसामसमर्थानामुपहसनीयतामात्मनो भवेत्कोपः—पंच० १।३२४, निरुपद्रवं स्थानम् —पंच० १ 3. बलात्कार, उत्पीडन 4. राष्ट्र-संकट (राजा, दुर्भिक्ष या ऋतु के प्रकोप से) 5. राष्ट्रीय अशान्ति, विद्रोह 6. लक्षण, अकस्मात् आ टपकने वाला रोग।

उपधर्मः [उप+धृ+मन्] उपविधि, एक अप्रधान या तुच्छ धर्म-नियम (विप० 'पर')—मनु० २।२३७, ४।१४७।

उपधा [उप+धा+अङ्] 1. छल, जालसाजी, धोखा-देही, कपट—मनु० ८।१९३ 2. ईमानदारी की जाँच या परीक्षण (—धर्मोपधापरीक्षणम्—यह चार प्रकार | निष्ठा, निश्चिन्तता, संयम तथा साहस | का कहा गया है); (शोधयेत्) धर्मोपधाभिर्विप्रांश्च सर्वाभिः सचिवान् पुनः—कथासरित् प्र० 3. उपाय, तरकीब-अयशोभिरुपहतलोके कोपना मरणादृते—शि० १९।५८ 4. (व्या० में) अन्त्याक्षर से पहला, । समः० भूतः वर्तमान सेवक, शुद्धि (वि०) परीक्षित, निष्ठावान्।

उपधातुः [प्रा० स०] 1. घटिया धातु, अर्धधातु—यह गिनती में सात हैं: सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिक तारमाक्षिक-कम्, तुत्थं कांस्यं च रातिश्च सिन्दूरं च शिलाजतु। सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, कांसा, मुर्दासींख, सिंदूर और शिलाजीत। 2. शरीर के अप्रधान खाद्य जो गिनती में छः हैं- स्तन्यं रजो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्तथैव च, ओजस्यं सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः—(दूध, रज, चर्बी, पसीना, दांत, बाल और ओज)।

उपधानम् [उप+धा+ल्युट्] 1. ऊपर रखना या आराम करना 2. तकिया, गद्देदार आसन—विपुलमुपधानं भजलता भर्तुः ३।७९ 3. विशेषता, व्यक्तित्व 4. स्नेह, कृपा 5. धार्मिक अनुष्ठान 6. श्रेष्ठता, श्रेष्ठ गुण—सोपधाना स्त्रियं धीराः स्थैर्यसौ खट्वयन्ति ये—शि० २।७७, (यहाँ 'उपधान' का अर्थ तकिया भी है)।

उपधानीयम् [उप+धा+अनीयर्] तकिया।

उपधारणम् [उप+धृ+णिच्+ल्युट्] 1. संचिन्तन, विचार-विमर्श 2. खोजना, (अकूड़ो द्वारा) विचार।

उपधिः [उप+धा+कि] 1. धोखादेही, बेईमानी,—अरिणु हि विजयाधिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूष-णानि कि० १।४५, दे० 'अनुपधि भी 2. (विधि में) सचाई को दबाना, झूठा सुझाव—मनु० ८।१६५, 3. त्रास, धमकी, वञ्चना, मिथ्या फुसलाहट—बलोपधिविनिर्दग्धान् व्यवहारान्विवर्तयेत् याज्ञ० २।३१, ८९ 4. पहिये का वह भाग जो नाभि और पुट्ठी के बीच का स्थान है, पहिया।

उपधिकः [उपधि+ठन्] धोखेबाज, प्रवञ्चक—(दे० औपधिक' अधिक शुद्ध रूप)।

उपधूपित [वि०] [उप+धूप्+क्त] 1. धूनी दिया गया 2. मरणासन्न, अत्यन्त पीड़ा-ग्रस्त,—तः मृत्यु।

उपधृतिः (स्त्री०) [उप+धृ+क्तिन्] आकाश की किरण।

उपध्मानः [उप+ध्मा+ल्युट्] ओष्ठ,—नम् फूँक मारना, साँस लेना।

उपध्मानीयः [उप+ध्मा+अनीयर्] प और फ् से पूर्व रहने वाला महाप्राण विसर्ग—उपूपध्मानीयानामोष्ठौ—सिद्धा०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपनक्षत्रम् [प्रा० स०] गौण नक्षत्र पुंज, अप्रधान तारा (ऐसे तारे गिनती में ७२९ बतलाये जाते हैं)।

उपनगरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपनत (भू० क० कृ०) [उप+नम्+क्त] आया हुआ, पहुँचा हुआ, प्राप्त, आ टपका हुआ आदि।

उपनतिः (स्त्री०) [उप+नम्+क्तिन्] 1. पास जाना 2. झुकना, नति, नमस्कार।

उपनयः [उप+नी+अच्] 1. निकट लाना, ले जाना 2. उपलब्धि, अवाप्ति, खोज लेना 3. काम पर लगाना 4. उपनयन संस्कार-- जनेऊ पहनाना, वेदाध्ययन की दीक्षा देना गृह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः, बालो वेदाय तद्योगात् बालस्योपनयं विदुः। 5. तर्कशास्त्र में भारतीय अनुमान प्रक्रिया के पांच अंगों में से चौथा--प्रस्तुत विशिष्ट तर्क का प्रयोग--व्याप्तिविशिष्टस्य हेतोः पक्षधर्मता प्रतिपादकं वचनमुपनयः—तर्क०।

उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] 1. निकट ले जाना 2. उपहार, भेंट 3. जनेऊ-संस्कार आसमावर्तनात्कुर्याद्- स्कूतोपनयनो द्विजः- मनु० २।१०८, १७३।

उपनागरिका [प्रा० स०] वर्त्यनुप्रास का एक भेद, यह माधुर्य-व्यंजक वर्णों के योग से बनता है, उदा० तु० काव्य० ९ में दिये गये उदाहरण की--अपसारय घनसारं कुरु हार दूर एव किं कमलैः, अलयलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला।

उपनायः,—नायनम्=दे० उपनय।

उपनायकः [उप+नी+ण्वुल्] 1. नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायक का प्रधान सहायक हो, उदा० रामायण में लक्ष्मण, मालतीमाधव में मकरन्द आदि 2. उपपति, प्रेमी।

उपनायिका [प्रा० स०] नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायिका की प्रधान सखी या सहेली हो जैसे मालतीमाधव में मदयन्तिका।

उपनाहः [उप+नह्+घञ्] 1. गठरी 2. किसी घाव पर लगाई जाने वाली मलहम 3. वीणा की खूंटी जिसको मरोड़ने से खिंचाव के तार कसे जाते हैं।

उपनाहनम् [उप+नह्+णिच्+ल्युट्] 1. उबटन आदि का लेप 2. मालिश करना, लेप करना।

उपनिक्षेपः [उप+नि+क्षिप्+घञ्] 1. धरोहर या न्यास के रूप में रखना 2. खुली धरोहर, कोई वस्तु जिसका रूप, परिमाण आदि बता कर उसे दूसरे को संभाल दिया जाता है-- याज्ञ० २।२५, (इस पर मिता० कहती है-- उपनिक्षेपो नाम रूपसंख्याप्रदर्शनेन रक्षणार्थं परस्य हस्ते निहितं द्रव्यम्)।

उपनिधानम् [उप+नि+धा+ल्युट्] 1. निकट रखना 2. जमा करना, किसी की देख-रेख में रखना 3. धरोहर।

उपनिधिः [उप+नि+धा+कि] 1. धरोहर, अमानत 2. (विधि में) मुहरबंद अमानत - याज्ञ० २।२५, मनु० ८।१४५, १४९, तु० मेधातिथि यत्प्रदर्शितरूपं सच्चिह्नवस्त्रादिना पिहितं निक्षिप्यते-तु० याज्ञ० २।६५, और मिता० में उल्लिखित नारद।

उपनिपातः [उप+नि+पत्+घञ्] 1. निकट पहुँचना, निकट आना 2. आकस्मिक तथा अप्रत्याशित आक्रमण या घटना।

उपनिपातिन् (वि०) [उप+नि+पत्+णिनि] अचानक आ टपकने वाला, रन्ध्रोपनिपातिनोऽनर्थाः शि० ६।

उपनिबन्धनम् [उप+नि+बन्ध्+ल्युट्] 1. किसी कार्य को सम्पादित करने का उपाय 2. बंधन, जिल्द।

उपनिमन्त्रणम् [उप+नि+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] आमन्त्रण, बुलाना, प्रतिष्ठापन, उद्घाटन।

उपनिवेशित (वि०) [उप+नि+विश्+णिच्+क्त] रक्खा गया, स्थापित किया गया, बसाया गया कु० ६।२७, रघु० १५।२९।

उपनिषद् (स्त्री०) [उप+नि+सद्+क्विप्] 1. ब्राह्मण ग्रन्थों के साथ संलग्न कुछ रहस्यवादी रचना जिनका मुख्य उद्देश्य वेद के गूढ अर्थ का निश्चय करना है --भामि० २।४०, मा० १।७ (निम्नांकित व्युत्पत्तियाँ उसके नाम की व्याख्या करने के लिए दी गई हैं --(क) उपनीय तमात्मानं ब्रह्मापास्तद्वयं यतः, निहत्यार्तिमविद्यां तज्ज्ञं तस्मादुपनिषद्भवेत्। या (ख) निहत्यानर्थमूलं स्वाविद्यां प्रत्यक्तया परम्, नयत्यपास्त-संभेदमतो वेपनिषद्भवेत्। या (ग) प्रवृत्तिहेतूनिः शेषांस्तन्मूलोच्छेदकस्वतः, यतोवसादयेद्विद्या तस्मादुपनिषद्भवेत्। मुक्तिकोपनिषद् में १०८ उपनिषदों का उल्लेख है, परन्तु इस संख्या में कुछ और वृद्धि हुई है 2. (क) एक गूढ या रहस्यमय सिद्धान्त (ख) रहस्यवादी ज्ञान या शिक्षा --महावी० २।२ 3. परमात्मा के संबंध में सत्य ज्ञान 4. पवित्र एवं धार्मिक ज्ञान 5. गोपनीयता, एकान्तता 6. समीपस्थ भवन।

उपनिष्करः [उप+निस्+कृ+घ] गली, मुख्यमार्ग, राजमार्ग।

उपनिष्क्रमणम् [उप+निस्+क्रम्+ल्युट्] 1. बाहर जाना, निकलना 2. एक धार्मिक अनुष्ठान या संस्कार जिसमें बच्चे को सर्वप्रथम बाहर खुली हवा में निकाला जाता है (यह संस्कार प्रायः चार मास की आयु होने पर मनाया जाता है) तु० मनु० २।३४ 3. मुख्य या राजमार्ग।

उपनृत्यम् [ब० स०] नाचने का स्थान, नृत्यशाला।

उपनेतृ (वि०) [उप+नी+तृच्] जो नेतृत्व करता है, या निकट लाता है, ले आने वाला—कु० १।६०,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मालव्यभिज्ञानस्योपनेत्री—भा० ९, (पु०- ता) उपनयन संस्कार को करने वाला गुरु।

उपन्यासः [उप+नि+अस्+घञ्] 1. निकट रखना, अगल बगल रखना 2. धरोहर, अमानत 3. (क) वक्तव्य, सुझाव, प्रस्ताव - पाणि. खलु एष वचनोपन्यासः—श० ५ (ख) भूमिका, प्रस्तावना निर्यातः शनकैरलीकवचनोपन्यासगलीलोजनः अमरु २३ (ग) संकेत, उल्लेख—आत्मन उपन्यासपूर्वम् यः ३ 4. शिक्षा, विधि।

उपपतिः [प्रा० स०] प्रेमी, जार—उपपतिरिव नीचैः पश्चिमामाश्रयेन्द्रः—शि० ११।६५ १५।६३, मनु० ३।१५५, ४।२१६, २१७।

उपपत्तिः (स्त्री०) [उप+पद्+क्तिन्] 1. होना, घटित होना, आविर्भाव, उत्पत्ति, जन्म - शि० १।९९, भग० १३।९ 2. कारण, हेतु, आधार - कि० ३।५२ 3. तर्क, युक्ति उपपत्तिमद्भिर्जितं वचः - कि० २।१, युक्तियुक्त 4. योग्यता, औचित्य 5. निश्चयन, प्रदर्शन, प्रदर्शित उपसंहार- उपपत्तिरुद्धाहृता वलात् कि० २।२८ 6. (अंकगणित या ज्यामिति में) प्रमाण, प्रदर्शन 7. उपाय, तरकीब 8. करना, अमल में लाना, प्राप्त करना, सम्पन्न करना—स्वार्थोपपत्तिं प्रति दुर्बलाशाः - रघु० ५।१२, नात्मार्थानुपपत्तिमाशंसते भाया० दे० अनुपपत्ति 9. अवाप्ति, प्राप्ति—असंशयं प्राक्तनकोपपत्तेः— रघु० १४।७८ कि० २।१।

उपपदम् [प्रा० स०] 1. वह शब्द जो किसी से पूर्व लगाया गया हो या बोला गया हो धनुरुपपदं वेदम् कि० १८।४४, (धनुर्वेदं)—तस्या रा राजोपपदं निशान्तम्- रघु० १६।४७ 2. पदवी, उपाधि, सम्मान-सूचक विशेषण यथा आर्य, शर्मन्—कथं निरुपपदमेव चाणक्यमिति न आर्य चाणक्यमिति मुद्रा० ३ 3. वाक्य का गौणशब्द, किसी क्रिया या क्रिया से बने संज्ञा (कृदन्त) शब्दों से पूर्व लगाया गया उपसर्ग, निपात आदि शब्द।

उपपन्न [भू० क० कृ०] [उप+पद्+क्त] 1. प्राप्त, सेवित, सहित, युक्त 2. ठीक, योग्य, उचित, उपयुक्त (संब० या अधि० के साथ) - उपपन्नमिदं विशेषणं वायोः—विक्रम० २, उपपन्नमेतदस्मिन् राजनि —श० २।

उपपरीक्षा,-क्षणम् [उप+परि+ईक्ष्+अङ्, ल्युट् वा] अनुसंधान, जाँच पड़ताल।

उपपातः [उप+पत्+घञ्] 1. अप्रत्याशित घटना 2. संकट, मुसीबत, दुर्घटना।

उपपातकम् [प्रा० स०] तुच्छ पाप, जघन्य, महापातकतुल्यानि पापान्युक्तानि यानि तु, तानि पातकसंज्ञानि तान्यूनानुपपातकम्। याज्ञ० २।२१०।

उपपादनम् [उप+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. कार्यान्वित करना, अमल में लाना, संपन्न करना 2. देना, सौंपना, प्रस्तुत करना 3. प्रमाणित करना, प्रदर्शन, तर्क द्वारा स्थापना 4. परीक्षा, निश्चयन।

उपपापम्—उपपातकम।

उपपार्श्वः-र्श्वम् [अव्या० स०] 1. कंधा 2. पार्श्वांग, पार्श्व 3. विरोधी पक्ष।

उपपीडनम् [उप+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. पेलना, निचोड़ना, दबाना, करना, उजाड़ना 2. प्रपीडित करना, चोट पहुँचाना व्याधिभिश्चोपपीडनम्—मनु० ६।६२, १२।८० 3. पीड़ा, वेदना।

उपपुरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपपुराणम् [प्रा० स०] गौण या छोटा पुराण (इनके नामों को जानने के लिए दे० 'अष्टादश')

उपपुष्पिका [अव्या० स०—सजायां कन्, टाप्, इत्वम्] जम्हाई लेना, झाँकना।

उपप्रदर्शनम् [प्रा० स०] निर्देश करना, संकेत करना।

उपप्रदानम् [प्रा० स०] 1. दे देना, सौंप देना 2. दिखत, उपायन—उपप्रदानैर्मालाजिरो हितकृत्प्रार्थ्यते जनैः पंच० १।२५ 3. उपहार।

उपप्रलोभनम् [प्रा० स०] 1. बहकाना, फुसलाना 2. दिखत, फुसलाहट, ललचाव—उल्लाघवान्युपप्रलोभनानि दश० ४८।

उपप्रेक्षणम् [प्रा० स०] उपेक्षा करना, अवहेलना करना।

उपप्रेषः [प्रा० स०] आमन्त्रण, बुलावा।

उपप्लवः [उप+प्लु+अप्] 1. विपत्ति, दुष्कृत्य, संकट, दुःख, आपदा—अथ मदनबधूपप्लवान्तं परीयाः—वभूव कु० ४।४६ जीवन्पुनः शश्वदुपप्लवेभ्यः प्रजाः पासि-रघु० २।४८ 2. (क) दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना, आघात, कष्ट - वज्रविक्लव बान्धवादिषूपप्लवो वः—रघु० ५।१६ मेघ० १७ (ख) बाधा, रुकावट 3. उत्पीडन, सताना, कष्ट देना - उपप्लवाय लोकानां धूमकेतुरिवोत्थितः कु० २।३२ 4. डर, भय, दे० नी० 'उपप्लविन्' 5. अपशकुन, अतिष्टकर दैवी उत्पात 6. विशेषकर सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण 7. राहु 8. अराजकता।

उपप्लविन् [वि०] [उपप्लव+इनि] 1. दुःखी, कष्टग्रस्त 2. अत्याचार से पीड़ित नृपा इवोपप्लविनः परेभ्यः —रघु० १३।७।

उपबन्धः [उप+बन्ध्+घञ्] 1. संबंध 2. उपसर्ग 3. रतिक्रिया का आसन विशेष।

उपबर्हः-र्हणम् [बर्ह्+घञ्, ल्युट् वा] तकिया।

उपबृंह [वि०] [प्रा० स०] कुछ, थोड़े बहुत।

उपबाहुः [अव्या० स०] कोहनी से नीचे का हाथ का भाग।

उपभक्तृः [उप+भंज्+घञ्] 1. भाग जाना, पलायनभग्न 2. (कविता का) एक भाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपभाषा [प्रा० स०] बोलचाल की गौण भाषा ।

उपभृत् (स्त्री०) [उप+भृ+क्विप्, तुकागम.] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला गोल प्याला ।

उपभोगः [उप+भुज्+घञ्] 1. (क) रसास्वादन. खाना, चखना न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति- मनु० २।९४, याज्ञ० २।१७१, काम°-भग० १६।११ (ख) उपयोग, प्रयोग- शा० ६।४ 2. रतिसुख, स्त्रीसहवास रघु० १४।२४ 3. फलोपभोग 4. आनन्द, संतृप्ति ।

उपमन्त्रणम् [उप+मन्त्र्+ल्युट्] 1. सबोधित करना, आमंत्रण, बुलावा 2. उकसाना, उपच्छंदन ।

उपमन्थनी [उप+मन्थ्+ल्युट्+ङीप्] अग्नि को उद्दीप्त करने वाली लकड़ी ।

उपमर्दः [उप+मृद्+घञ्] घर्षण, रगड़, दबाव, बोझ के नीचे कुचल जाना, -अभ्यासः तासदुपमर्दभयेषु भृङ्गलोल विनोदय मनः सुमनोलतासु- मा० ६० (यहाँ 'उपमर्द' का अर्थ है --उद्वत व्यवहार या संभोगजन्य रतिसुख) 2. नाश, आघात, वध करना 3. झिड़कना, दुर्वचन कहना, अपमानित करना 4. भूखों अलग करना 5. आरोप का निराकरण ।

उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] 1 समरूपता, समता साम्य- -स्फुटैरसंभूतिसितैन शम्भुना- शि० १।४, १७।६९, 2. (अल० शा०) एक दूसरे से भिन्न दो पदार्थों की तुलना, तुल्यता, तुलना- -साधर्म्यमुपमा भेदे- काव्य० १०, सादृश्यं सुंदरं वाक्यार्थोपस्कारकमुपमालक्षणम् रस०, या-उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मीरुल्लसति द्वयोः, हंसीव कृष्णतत्ते कोटिः स्वर्गङ्गाभवगाहते। चन्द्रा०, ५।३, उपमा कालिदासस्य -सुभा० 3. तुलना का मापदण्ड- -उपमान, वस्तु जो तुलनास्थों नेगते सोपमा स्मृता -भग० ६।१९ ३० 'इव' गो०, बहुधा समासान्त में 'की भाँति' 'जैसे-जुलते' बुद्धिर्न बुधोपमः-रघु० १।४७, इसी प्रकार अंगरोपम, अनुपम आदि 4. समानता (चित्र, मूर्ति आदि की) । सम० -द्रव्यम् तुलना के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला पदार्थ—सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन—कु० १।४९ ।

उपमातृ (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. दूसरी माता, दूध पिलाने वाली धाय 2. निकट संबंधिनी स्त्री- -मातुश्चसा मातुलानी पितृव्यस्त्री पितृष्वसा, श्वश्रूः पूर्वजपत्नी च मातृतुल्याः प्रकीर्तिताः—शब्द० ।

उपमानम् [उप+मा+ल्युट्] 1. तुलना, समरूपता—जातास्तदूर्वोरुपमानवाह्याः—कु० १।३६ 2. तुलना का मापदण्ड जिससे किसी की तुलना की जाय (विप० उपमेय) उपमा के चार अपेक्षित गुणों में से एक- -उपमानमभूद्विलासिनाम्- -कु० ४।५, उपमानस्यापि सख्ये प्रत्युपमानं वपुस्तस्याः—विक्रम० २।३, शि० २०।४९ 3. (न्या० दर्शन में) सादृश्य, समानता की मान्यता, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो यथार्थ ज्ञान तक पहुंचाने में सहायक होता है इसकी परिभाषा - प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनम्, या, उपसितिकरणमुपमानं तच्च सादृश्यज्ञानात्मकम्—तर्क० ।

उपमितिः (स्त्री०) [उप+मा+क्तिन्] 1. समरूपता, तुलना, समानता—पल्वलोपगिसिताम्बुसस्पृश्य मा० ६० 2. (न्या० द० में) सादृश्य, नियमतः सादृश्य से प्राप्त वस्तुज्ञान, उपमान के द्वारा निगमित उपसंहार —प्रत्यक्षमप्यनुमितिस्तथोपमितिरप्यदः—भाषा० ५२ 3. एक अलंकार=उपमा ।

उपमेय [सं० कृ०] [उप+मा+यत्] समानता या तुलना करने के योग्य, तुल्य (करण० के साथ या समास में) भूमिष्ठासादुपमेयकान्तिः गुहेन-रघु० ६।४, १८।३४, ४७, कु० ७।२, यम् तुलना करने का विषय, तुलनीय (विप० उपमान) उपमानोपमेयत्वं वैकस्यैवं कान्तम्.—चन्द्रा० ५।३, ९ । सम० उपमा एक अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान की तुलना इस दृष्टि से की जाती है कि उनके समान कोई और वस्तु है ही नहीं,-विपर्यय उपमेयोपमानयोः—काव्य० १० ।

उपयन्तृ (पुं०) [उप+यम्+तृच्] पति अर्थात् वरः मूले समाधिना कु० -५।४५, रघु० ७।१, शि० १०।४५ ।

उपयन्त्रम् [प्रा० स०] चौरफाड़ का एक छोटा उपकरण ।

उपयमः [उप+यम्+अप्] 1. विवाह, विवाह करना - कन्या स्वजातीयेभ्यः सलक्षणा नावहेत्ता सा० द० 2. प्रतिबंध ।

उपयमनम् [उप+यम्+ल्युट्] 1. विवाह करना 2. प्रतिबंध लगाना 3. अग्नि को स्थापित करना ।

उपयष्टृ (पुं०) [उप+यज्+तृच्] यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से 'उपयज्' का पाठ करने वाला पुरोहित-प्रस्थाता नामक ऋत्विक् ।

उपयाचक (वि०) [उप+याच्+ण्वुल्] मांगने वाला, प्रार्थी, भिक्षाहार्थी, भिक्षुक ।

उपयाचनम् [उप+याच्+ल्युट्] निवेदन करना, मांगना, प्रार्थना करने के लिए किसी के निकट जाना ।

उपयाचित (भू० क० कृ०) [उप+याच्+क्त] जिससे मांगा गया हो, या प्रार्थना की गई हो,—तम् 1. विनय या प्रार्थना 2. मनौती, अपनी अभीष्टसिद्धि हो जाने पर देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रतिज्ञात भेंट (चाहे वह कोई पशु हो या वनस्पति) निक्षेपो न्यियते तुभ्य प्रदाम्याम्युपयाचितम् पंच० १।१४, अद्य मया भगवत्यां करालायाः प्रागुपयाचितं स्त्रीरत्नमुपहर्तव्यम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

-मा० ५ 3. अपनी इष्टसिद्धि के लिए देवता के प्रति प्रार्थना या निवेदन ।

उपयाचितकम्—ऊपर दे०, उपयाचित-निद्रारात्रानि कृत-विभिन्नदेवतोपयाचितकानि--का० ६४ ।

उपयाजः | उप |-यज् |-घञ् | यज्ञ के अतिरिक्त यज्-वैधिक मंत्र ।

उपयानम् [उप-|-या |-ल्युट्] पहुँचना, निकट आना, दरबार में स्वागत करना—कु० ७।२२ ।

उपयुक्त (भू० क० कृ०) [उप |-युज् |-क्त] 1. संलग्न 2. योग्य, सही, उचित 3. सेवा के योग्य, काम का ।

उपयोगः [उप |-युज्—घञ्] 1. काम, लाभ, प्रयोग, सेवन ...अनङ्गलेखक्रियोपयोगम्—कु० १।७ 2. औषधि तैयार करना या देना 3. योग्यता, उपयुक्तता, औचित्य 4. संपर्क, आज्ञप्तता ।

उपयोगिन् [वि०] [उप |-युज् | घिनुण्] 1. काम में आने वाला, लाभदायक 2. सेवा के योग्य, काम का 3. योग्य, उचित ।

उपरक्त (भू० क० कृ०) [उप |-रञ्ज् |-क्त] 1. कष्ट-ग्रस्त, संकटग्रस्त, दुःखी 2. ग्रहण-ग्रस्त 3. रंजित, रंगीन शि० २।१८, क्त ग्रहणग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा ।

उपरक्षः [उप |-रक्ष् |-अच्] अंग रक्षक ।

उपरक्षणम् [उप |-रक्ष् |-ल्युट्] पहरेदार, गार्द, चौकी ।

उपरत (भू० क० कृ०) [उप |-रम् | क्त] 1. निवृत्त, विरक्त ...अनवरतं गतः ५।६६ 2. मृत अधः दशमा मासाद्वानरपोपरतस्य—मुद्रा० ६ । समं०—कर्मन् (वि०) सांसारिक कार्यों पर ध्यान न देने वाला, ...रघु० (वि०) इच्छा से शून्य, सांसारिक आसक्ति और सम्पत्तियों के प्रति उदासीन ।

उपरतिः (स्त्री०) [उप |-रम् |-क्तिन्] 1. विरक्ति, निवृत्ति 2. अन्त 3. नित्य-कर्मों से विरक्ति, 4. उदासीनता 5 सद्गति विहित कर्मों से विरक्ति, प्रत्याचरण के हेतु किये जाने वाले कर्मकाण्ड में अविश्वास ।

उपरत्नम् [प्रा० स०] अपधातु या घटिया रत्न,—उपरत्नानि काचकर्परशैलाश्मा सर्वत्र च, मूल्या क्षतिस्तथा पात्र इत्यादीनि तद्गुणाः । गुणा गरीब रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा, किन्तु किंचितानी होना विशेषोऽत्रमुदाहृतः ।

उपर (रा) मः [उप-|-रम् |-घञ्] 1. विरक्ति, निवृत्ति 2. परित्यजन, त्याग 3. मृत्यु ।

उपरमणम् [उप-|-रम |-ल्युट्] 1. रति सुख से विरक्ति 2. प्रधानकर्म-कर्मकाण्ड से निवृत्ति 3. विरक्ति, निवृत्ति ।

उपरसः [प्रा० स०] 1. अप्रधान खनिज धातु 2. गौण भाव या अवस्था 3. अप्रधान रस ।

उपरागः [उप |-रञ्ज् | घञ्] 1. सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण ९७

—उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणीं योगम् -श० ७।२२, शि० २०।५५ 2. राहु या शिरोबिंदु की ओर चढ़ने वाला 3. लाली, लाल रंग, रंग 4. संकट, कष्ट, आघात, -मृणालिनी हैममिवोपरागम् रघु० १६।७ 5. झिड़की, निन्दा, दुर्वचन ।

उपराजः [प्रा० स०] बादशाह, राजप्रतिनिधि, उपशासक ।

उपरि (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिल् , उप आदेशः] पृथक्करण से प्रयुक्त होने वाला संबंधबोधक अव्यय (बहुधा षष्ठ० के साथ; कर्म० तथा अधि० के साथ विरल प्रयोग). निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है- (क) ऊपर, अधिक, परे, पै, की ओर (विप० अधः) (संब० के साथ—गगनमुपरि घनानाम्—श० ७।७, अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात—रघु० २।६०, अर्कस्योपरि ...श० २।८, बहुधा समास के अंत में, रथो०, तरुवरो० (ख) समाप्ति पर, -सिर पर, सर्वानन्दानामुपरि वर्तमानः- का० १५८ (ग) परे, अतिरिक्त,—याज्ञ० २।२५३ (घ) के संबंध में, के विषय में, की ओर, पर -परस्परस्योपरिपर्यवोचत -रघु० ३।२४-शा० ३।२३, तवोपरि प्रायोपवेशनं करिष्यामि—तुम्हारे कारण (ङ) के बाद, -मुहूर्तादुपरि उपाध्यायश्चेदागच्छेत् -पा० ३।३।९ सिद्धा० । समं०—उपरि (उपर्युपरि) 1. (कर्म० और संब० के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जरा ऊपर, -लोकान्तर्ध्यपर्यन्ते मारुतः-वेणी० (ख) उच्च से उच्चतर, कहीं ऊँचा, ऊपर, ऊँचाई पर—उपर्युपरि सर्वेषामात्मा विज्ञेय एव तेजसा—मनु० 2. (क्रियाविशेषण के रूप में) अर्थ है (क) अत्यन्त ऊँचाई पर, पर, ऊपर की ओर (विप० अधः)-उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति —हि० ४।२, बहुधा समास में--स्वमुद्गोपरिचिह्नितम् -याज्ञ० १।३१९ (ख) इसके सिवाय, इसके अतिरिक्त, अधिक, और--शतान्युपरि वैवाहो तथा भूयश्च सप्तति. --महा० (ग) बाद में--यदा पूर्वं नरसीदूपरि च तथा नैव भविता--मा० २।७, सपि पीत्वोपरि पयः पिबेत् सुभृत.—चर (वि०) ऊपर विचरने वाला (पक्षी आदि)—तल, -स्थ (वि०) अधिक ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा, -भागः ऊपर का अंश या पार्श्व, -भावः ऊपर या अपेक्षाकृत ऊँचाई पर होना -भूमिः (स्त्री०) ऊपर वाली मंजिल ।

उपरिष्टात् (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिष्टातिल्, उप आदेशः] 1. क्रियाविशेषण के रूप में इसका अर्थ है: (क) अधिक, ऊपर, ऊँचे -भर्तृ० ३।१३१. याज्ञ० १।१०६ (ख) इसके आगे, बाद में, इसके पश्चात्—कल्याणावर्तमाहि कल्याणसंपदुपरिष्टाद्भवति--मा० ५, इदमुपरिष्टात् व्याख्यातम्. अन्त में (ग) के पीछे (विप० पुरस्तात्)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. संबंधबोधक अव्यय के रूप में इसका अर्थ है:—(क) अधिक, पर (संब० के साथ, कर्म० के साथ विरल प्रयोग,) शि० ११।३ (ख) सिर से पैर तक (ग) के पीछे (संब० के साथ)।

उपरीतकः [उपरि+इ+क्त+कन्] रतिक्रिया का आसन विशेष ('विपरीतक' भी कहलाता है)—करावेकपदं कृत्वा द्वितीयं स्कन्धसंस्थितं, नारी कामयते कामी बन्धः स्यादुपरीतकः। शब्द०।

उपरूपकम् [उपगतं रूपकं दृश्यकाव्यं सादृश्येन—प्रा० स०] घटिया प्रकार का नाटक, इसके निम्नांकित १८ भेद गिनाये गए हैं:—नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम्, प्रस्थानोल्लाप्य काव्यानि प्रेंखणं रासकं तथा, संलापकं श्रीगदितं शिल्पक च विलासिका, दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च। सा० द० २७६।

उपरोधः [उप+रुध्+घञ्] 1. अवरोधा, रुकावट, रोक —रघु० ६।४४ शि० २०।७४ 2. बाधा, कष्ट—तपोवननिवासिनामुपरोधो मा भूत्—श० १, अनुग्रहः खल्वेष नोपरोधः—विक्रम० ३ 3. आच्छादित करना, घेरा डालना, अवरुद्ध करना 4. संरक्षा, अनुग्रह।

उपरोधक (वि०) [उप+रुध्+ण्वुल्] 1. अवरोधक 2. आड़ करने वाला, घेरा डालने वाला,—कम्, भीतर का कमरा, निजी कमरा।

उपरोधनम् [उप+रुध्+ल्युट्] अवरोधा, रुकावट आदि दे० उपरोध।

उपलः [उप+ला+क] 1. पत्थर, पाषाण उपलक्षकलमेतद्धूकं गोमयानाम्—मुद्रा० ३।१५ —कान्ते कर्म घटितवानुपलेन चेतः—भृंगार० ३, मेघ० १९, भ० १।१४ 2. मूल्यवान् पत्थर, रत्न, मणि।

उपलकः [उपल+कन्] पत्थर,—ला 1. रेत, बालुका 2. परिष्कृत शर्करा।

उपलक्षणम् [उप+लक्ष्+ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि डालना, अंकित करना —वेलोपलक्षणार्थम्—श० ४ 2. चिह्न, विशिष्ट या भेदक रूप—विक्रम० ४।३३ 3. पद, पदवी 4. किसी ऐसी बात का ध्वनित होना जो वस्तुतः कही न गई हो, किसी अतिरिक्त वस्तु की ओर या अन्य किसी समरूप पदार्थ की ओर संकेत जबकि केवल एक का ही उल्लेख किया गया हो, समस्त वस्तु के लिए उसके किसी एक भाग का कथन, पूरी जाति को प्रकट करने के लिए व्यक्ति की ओर संकेत आदि (स्वप्रतिपादकत्वे सति स्वेतरप्रतिपादकत्वम्)—मन्त्रग्रहणं ब्राह्मणस्योपलक्षणम् पा० ११।४।८० सिद्धा०।

उपलब्धिः (स्त्री०) [उप+लभ्+क्तिन्] 1. प्राप्ति, अवाप्ति, अभिग्रहण—वृथा हि मे स्यात्स्वपदोपलब्धिः—रघु० ५।५६, ८।१७ 2. पर्यवेक्षण, प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान —नाभाव उपलब्धेः—तु० न्या० सू० २।२।८ 3. समझ, मति 4. अटकल, अनुमान 5. सलक्ष्यता, आविर्भाव (मीमांसकों में 'उपलब्धि' को प्रमाण का एक भेद माना है) दे० 'अनुपलब्धि'।

उपलभ्भः [उप+लभ्+घञ्, नुम्] 1. अभिग्रहण—अस्माद्दण्डगुलीयोपलम्भात्स्मृतिरुपलब्धा—श० ७ 2. प्रत्यक्षज्ञान, अभिज्ञान, स्मृति से भिन्न संवेदन (अर्थात् अनुभव) प्राक्तनोपलम्भ भा० ५ जातौ सुतरूपदर्शनोपलम्भात्—रघु० १४।२ 3. निश्चय करना, जानना—अविच्छिन्नक्रियोपलम्भाय—श० १।

उपलालनम् [उप+लल्+णिच्+ल्युट्] लाड प्यार करना।

उपलालिका [उप+लल्+ण्वुल्, इत्वम्] घास।

उपलिङ्गम् [प्रा० स०] अपशकुन, दैवी घटना जो अनिष्ट सूचक हो।

उपलिप्सा [उप+लभ्+सन्+अ+टाप्] प्राप्त करने की इच्छा।

उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] 1. लेप, मालिश 2. सफाई करना, सफेदी पोतना 3. अवरोधा, जड होना, (ज्ञानेन्द्रियों का) सुन्न होना।

उपलेपनम् [उप+लिप्+ल्युट्] 1. मालिश, लेप, पोतना 2. मलहम, उबटन।

उपवनम् [प्रा० स०] बाग, बगीचा, लगाया हुआ जंगल —पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नैः—मेघ० २३, रघु० ८।७२, १३।७९, विक्रम० उद्यान की बलि।

उपवर्णः [उप+वर्ण्+घञ्] सूक्ष्म या ब्योरेवार वर्णन।

उपवर्णनम् [उप+वर्ण्+ल्युट्] सूक्ष्म वर्णन, ब्योरे वार चित्रण—अतिशयोपवर्णनं व्यासज्योनम्—सुश्रुत, याज्ञ० १।३२०।

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] 1. ज्वालामुखी 2. जिला या परगना 3. राज्य, 4. कीचड़, दलदल।

उपवसथः [उप+वस्+अथ] गाँव।

उपवस्तम् [उप+वस् (स्तम्भे)+क्त] उपवास, व्रत।

उपवासः [उपवस्+घञ्] 1. व्रत —सोपवासस्त्र्यहं वसेत् —याज्ञ० १।१७५, २।१९०, मनु० १११।१९६ 2. यज्ञाग्नि का प्रदीप्त करना।

उपवाहनम् [उप+वह्+णिच्+ल्युट्] ले जाना, निकट लाना।

उपवाह्यः,-ह्या [उप+वह्+ण्यत्, स्त्रियां टाप्] 1. राजा की सवारी का हाथी या हथिनी, वन्द्यगुल्फोपवाह्यां गजवधूं—मुद्रा० २ 2. राजकीय सवारी।

उपविद्या [प्रा० स०] सांसारिक ज्ञान, घटिया ज्ञान।

उपविषः-षम् [प्रा० स०] 1. कृत्रिम जहर 2. निद्राजनक, मूर्छाकारी नशीली औषध अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथैव कलिकारिका, धत्तूरः करवीरश्च पंच क्षीरविषाः स्मृताः।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपवीयति (ना० धा० पर०) (किसी देवता के आगे) वीणा या सारंगी बजाना—उपवीणयिन्तु यथा स्वैरदेवा-वृत्तिपयेन नारदः रघु० ८।३३, वे० ६।६५, कि० १०।३८।

उपवीतम् [उप+वे+क्त] 1. जनेऊ संस्कार, उपनयन संस्कार 2. जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसको हिन्दू जाति के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं—पित्र्यमंशमुपवीत-लक्षणं मातृकं च धनुरूर्जितं दधत् रघु० ११।६४, कु० ६।६, शि० १।७, मनु० २।४४, ६४, ४।३६।

उपवृंहणम् [उप+बृंह्+ल्युट्] वृद्धि, सञ्चय।

उपवेदः [प्रा० स०] घटिया ज्ञान, वेदों से निचले दर्जे का ग्रन्थसमूह। उपवेद गिनती में चार हैं, और प्रत्येक वेद के साथ एक एक उपवेद संलग्न है—उदा०, ऋग्वेद के साथ आयुर्वेद (सुश्रुत आदि विद्वानों के मतानुसार आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है) यजुर्वेद के साथ धनुर्वेद या सैनिक शिक्षा, सामवेद के साथ गांधर्ववेद या संगीत और अथर्ववेद के साथ स्थापत्य-शास्त्रवेद या यान्त्रिकी।

उपवेशः-शनम् [उप+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बैठना, आसन जमाना जैसा कि प्रायोपवेशन में 2. संस्थित होना 3. मलोत्सर्ग।

उपवेशवम् [उप+वेणु+अण्] दिन के तीन काल - अर्थात् प्रातः काल, मध्याह्नकाल और सायंकाल — त्रिसंध्या।

उपव्याख्यानम् [प्रा० स०] बाद में जोड़ी हुई व्याख्या या टीका।

उपव्याधः [प्रा० स०] एक छोटा शिकारी चीता।

उपशमः [उप+शम्+घञ्] 1. शान्त होना, उपशान्ति, सान्त्वना- कुतोऽस्या उपशमः—वेणी० ३, मन्युर्न सह एष वाग्युपशमं वा मान्यवादैः स्फुटम्—अमरु ६, निवृत्ति, रोक, परिसमाप्ति 2. विश्राम, छुट्टी, विराम 3. शान्ति, स्थैर्य, धैर्य 4. ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण।

उपशमनम् [उप—शम्+णिच्+ल्युट्] 1. शान्त करना, शान्ति रखना, चुप करना 2. लघूकरण, 3. बुझाना, विराम।

उपशयः [उप+शी+अच्] 1. पास लेटना 2. माँद, घात का स्थान -शि० २।८०।

उपशल्यम् [अव्या० स०] ग्राम या नगर के बाहर का खुला स्थान, नगरोपकण्ठ, उपनगर—अर्थिसार्थ्यो रिपु-भानपत्यः रघु० १६।३७, १५।५०, शि० ५।८।

उपशाखा [प्रा० स०] गौण शाखा, अप्रधान शाखा।

उपशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. विराम, शमन, प्रशमन रघु० ८।३१, अमर० ६५ 2. आश्वासन, अभिशमन।

उपशायः [उप+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना, दूसरे पहरेदारों के साथ रात को सोने की बारी।

उपशालम् [अव्या० स०] घर के निकट का स्थान, घर के आगे का सहन, -लम् (अव्य०) घर के निकट।

उपशास्त्रम् [प्रा० स०] लघु विज्ञान या ग्रन्थ।

उपशिक्षा-क्षणम् [उप+शिक्ष्+अ, ल्युट् वा] अधिगम, सीखना, प्रशिक्षण।

उपशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य - शिष्योपशिष्यै-रुपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम—उद्भट।

उपशोभनम्-शोभा [उप+शुभ्+ल्युट्, अ वा] सजाना, अलंकृत करना।

उपशोषणम् [उप+शुष्+णिच्+ल्युट्] सूखना, मुर्झाना।

उपश्रुतिः (स्त्री०) [उप+श्रु+क्तिन्] 1. सुनना, कान देना 2. श्रवण-परास 3. रात को सुनाई देने वाली मूर्तिमती तिरादेवी की भविष्यसूचक देववाणी—नक्तं निर्गम्य पश्चिच्छ्रुभाशुभकर वचः, श्रूयते तद्विदुर्धीरा देवश्रवणमुपश्रुतिम्। हरि०, परिजनोऽपि चास्याः सततमुपश्रुत्यै निर्जगाम का० ६५ 4. प्रतिज्ञा, स्वीकृति।

उपश्लेषः,-षणम् [उप+श्लिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. पास पास रखना, संपर्क 2. आलिंगन।

उपश्लोकयति (ना० धा० पर०) कविता में स्तुति करना, प्रशंसा करना।

उपसंयमः [उप+सम्+यम्+अप्] 1. दमन करना, रोकना, बाँधना 2. सृष्टि का अंत, प्रलय।

उपसंयोगः [उप+सम्+युज्+घञ्] गौण संबंध, सुधार।

उपसंरोहः [उप+सम्+रुह्+घञ्] एक साथ उगना, ऊपर उगना, अंगूर आना (जख्म भरना)।

उपसंवादः [उप+सम्+वद्+घञ्] करार, संविदा।

उपसंख्यानम् [उप+सम्+ख्ये+ल्युट्] अन्तः पट,—अन्तरं बहिर्योगोपसंख्यानयोः— पा० १। १।३६।

उपसंहरणम् [उप+सम्+हृ+ल्युट्] 1. हटा लेना, वापिस लेना 2. रोक रखना 3. बाहर निकालना 4. आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारः [उप+सम्+हृ—घञ्] 1. एक स्थान पर कर देना, सिकोड़ देना 2. वापिस लेना, रोक रखना 3. संचय, संघात 4. बटोरना, समेटना, समाप्ति 5. (किसी भाषण की) इति श्री 6. भारसंग्रह, संक्षिप्त विवरण 7. संक्षेप, संहति 8. पूर्णता 9. विनाश, मृत्यु 10. आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारिन् (वि०) [उप+सम्+हृ+णिनुष्] 1. समा-विष्ट करने वाला 2. नक्षत्रिक, आवर्जी।

उपसंक्षेपः [उप+सम्+क्षिप्+घञ्] सार, सारांश, संक्षिप्त विवरण।

उपसंख्यानम् [उप+सम्+ख्या+ल्युट्] 1. जोड़ना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. बाद में जोड़ा हुआ, वृद्धि, अतिरिक्त निर्देशन (यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिकों के लिए प्रयुक्त होता है, जिनका आशय पाणिनि के सूत्रों में रही छूट व भूलों को सुधारना है, अतः ये परिशिष्ट का काम देते हैं) उदा०—जुगुप्सादिरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् तु० इष्टि 3. (व्या० में) रूप और अर्थ की दृष्टि से प्रत्यादेश।

उपसंग्रहः,-हणम् [उप+सम्+ग्रह्+अप्,ल्युट् वा] 1. प्रसन्न रखना, सहारा देना, निर्वाह करना 2. सादर अभिवादन (चरण स्पर्श करते हुए) स्फुरति रभसात्पाणिः पादोपसंग्रहणाय च -महावी० २।३० 3. स्वीकरण, दत्तक लेना 4. विनम्र संबोधन, अभिवादन 5. एकत्रीकरण, मिलाना 6. ग्रहण करना, (पत्नी के) अंगीकार करना रूप में)—दारोपसंग्रह -याज्ञ० १।५६ 7. (बाहरी) परिशिष्ट, कोई ऐसी वस्तु जो या तो उपयोगी हो, अथवा सजावट के काम आवे, उपकरण।

उपसत्तिः (स्त्री०) [उप+सद्+क्तिन्] 1. संयोग, मेल 2. सेवा, पूजा, परिचर्या 3. भेंट, दान।

उपसदः [उप+सद्+क] 1. निकट जाना 2. भेंट, दान।

उपसदनम् [उप+सद्+ल्युट्] 1. निकट जाना, समीप पहुँचना 2. गुरु के चरणों में बैठना, शिष्य बनना —तत्रोपसदनं चक्रे द्रोणस्येक्ष्वस्त्रकर्मणि -महा० 3. पास-पड़ोस 4. सेवा।

उपसंतानः [उप+सम्+तन्+घञ्] 1. अव्यवहित संयोग 2. संतति।

उपसंधानम् [उप+सम्+धा+ल्युट्] जोड़ना, मिलाना।

उपसंन्यासः [उप+सम्+नि+अस्+घञ्] डाल देना, छोड़ देना, त्याग देना।

उपसमाधानम् [उप+सम्+आ+धा+ल्युट्] एकत्र करना, ढेर लगाना—उपसमाधानं राशीकरणम् —सिद्धा०।

उपसंपत्तिः (स्त्री०) [उप+सम्+पद्+क्तिन्] 1. समीप जाना, पहुँचना 2. किसी अवस्था में प्रविष्ट होना।

उपसंपन्न (भू० क० कृ०) [उप+सम्+पद्+क्त] 1. उपलब्ध 2. पहुँचा हुआ, 3. उपस्कृत, अन्वित 4. यज्ञ में बलि दिया गया (पशु), बलि दिया गया—मनु० ५।८१,—न्नम् मसाला।

उपसंभाष,-षा [उप+सम्+भाष्+घञ्, अ वा] 1. वार्तालाप—कि० ३।३ 2. मैत्रीपूर्ण अनुरोध—उपसंभाषा उपसांत्वनम्-पा० १।३।४७ सिद्धा०।

उपसरः [उप+सृ+अप्] 1. (सांड का गाय की ओर) अभिगमन 2. गाय का प्रथम गर्भ-गवामुपसरः—सिद्धा०।

उपसरणम् [उप+सृ+ल्युट्] 1. (किसी की ओर) जाना 2. जिसकी शरण ग्रहण की जाय।

उपसर्गः [उप-सृज्+घञ्] 1. बीमारी, रोग, रोग से उत्पन्न कृशता आदि विकार—क्षीणं हन्युश्चोपसर्गाः प्रभूताः- सुश्रुत 2. मुसीबत, कष्ट, संकट, आघात, हानि—रत्न० १।१० 3. अपशकुन, अनिष्टकर प्राकृतिक घटना 4. ग्रहण 5. मृत्यु का लक्षण या चिह्न 6. धातु के पूर्व लगने वाला उपसर्ग—निपाताश्चादयो ज्ञेयाः प्रादयस्तूपसर्गकाः, द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकावद्वयवहृताः शुभे। गिनती में उपसर्ग २० हैं -तद्यथाहि प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस् या निर्, दुस् या दुर्, वि, आ (ङ) नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप; या २२ यदि निस्-निर् और दुस्-दुर् को अलग २ शब्द समझा जाय। इन उपसर्गों की विशेषता के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त हैं। एक सिद्धान्त के अनुसार तो धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं (अनेकार्था हि धातवः), जब उपसर्ग उन धातुओं के पूर्व जोड़े जाते हैं तो वह केवल धातुओं में पहले से विद्यमान परन्तु गुप्त पड़े हुए—अर्थ को प्रकाशित कर देते हैं, वह स्वयं अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करते क्योंकि वह है ही अर्थहीन। दूसरे सिद्धान्त के अनुसार उपसर्ग अपना स्वतंत्र अर्थ प्रकट करते हैं, वह धातुओं के अर्थों में सुधार करते हैं, बढ़ाते हैं, और कई उनके अर्थों को बिल्कुल बदल देते हैं—तु० सिद्धा० —उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते, प्रहाराहार-संहारविहारपरिहारवत्। और तु० धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते, तमेव विशिनष्टयन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा।

उपसर्जनम् [उप+सृज्+ल्युट्] 1. उड़ेलना 2. धूमकेतु, संकेत (ग्रहण आदि), अपशकुन 3. छोड़ना 4. ग्रहण लगना 5. अधीनस्थ व्यक्ति या वस्तु, प्रतिनिधि 6. (व्या० में) वह शब्द जिसका अपना मूल स्वतंत्र स्वरूप व्युत्पत्ति के कारण या रचना में प्रयुक्त होने के कारण नष्ट हो गया हो और जब कि वह दूसरे शब्द के अर्थ का भी निर्धारण करे (विप० प्रधान)।

उपसर्पः [उप+सृप्+घञ्] समीप जाना, पहुँच।

उपसर्पणम् [उप+सृप्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना, अग्रसर होना।

उपसर्या [उप-सृ+यत्+टाप्] गर्भाधी हुई या ऋतुमती गाय जो साँड के उपयुक्त हो।

उपसुन्दः [प्रा० स०] एक राक्षस, निकुंभ का पुत्र तथा सुंद का भाई।

उपसूर्यकम् [उपसूर्य+कन्] सूर्यमण्डल या परिवेश।

उपसृष्ट (भू० क० कृ०) [उप+सृज्+क्त] 1. मिलाया हुआ, संयुक्त, संलग्न 2. भूत-प्रेताविष्ट, या भूत-प्रेतग्रस्त—उपसृष्टा इव शून्यागारधिष्ठितभवनाः—का० १०७ 3. कष्टग्रस्त, अभिभूत, क्षतिग्रस्त—रोगोपसृष्टतनुदुर्ब-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सति मुमुक्षुः रघु० ८।९४ 4. ग्रहण-ग्रस्त 5. उपसर्ग-युक्त (धातु) —कृधद्वहोरुपसृष्टयोः कर्म—पा० १।४।३८, ष्टः ग्रहण से ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा,—ष्टम् मैथुन, संभोग ।

उपसेक-उपसेचनं [उप—सिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. उंडेलना, छिड़कना सींचना 2. भोगना, रस, -नी कड़ाही या कटोरी जिससे उंडेला जाय ।

उपसेवनम्, -सेवा [उप-सेव्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. पूजा करना, सम्मान करना, आराधना 2. उपासना —राज° मनु० ३।९४ 3. लिप्त होना —विषय° 4. काम लेना, (स्त्री का) उपभोग करना -परदार° —मनु० ४।१३४ ।

उपस्करः [उप+कृ+अप्, सुट्] 1. जो किसी दूसरी वस्तु को पूरा करने के काम आवे, सघटक, अवयव 2. (अतः) (सरसों, मिर्च आदि) मसाला जो भोजन को स्वादिष्ट बनाये 3. सामान, उपबन्ध, उपांग, उपकरण —शि० १८।७२ 4. घर-गृहस्थी के काम की वस्तु (जैसे झाड़ू) याज्ञ० १।८३, २।१९३, मनु० ३।६८, १२।६६, ५।१५० 5. आभूषण 6. निन्दा, बदनामी ।

उपस्करणम् [उप+कृ+ल्युट्, सुट्] 1. वध करना, क्षत-विक्षत करना 2. संचय 3. परिवर्तन, सुधार 4. अध्याहार, 5. बदनामी निन्दा ।

उपस्कारः [उप+कृ+घञ्, सुट्] 1. अतिरिक्तक, परि-शिष्ट, 2. अध्याहार —(न्यून पद की पूर्ति)—साकाङ्क्षमनुपस्कारं विश्वयप्तिनिराकुलम् किं० ११।३८ 3. सुन्दर बनाना, सजाना, शोभायुक्त करना —उक्तमे-वार्थं सोपस्कारमाह रघु० ११।४७ पर मल्लि० 4. आभूषण 5. प्रहार 6. संचय ।

उपस्कृत (भू० क० कृ०) [उप-कृ+क्त, सुट्] 1. तैयार किया हुआ 2. सज्जित 3. सजाया गया, अलंकृत किया गया 4. अध्याहृत 5. सुधारा गया ।

उपस्कृतिः (स्त्री०) [उप+कृ+क्तिन्, सुट्] परिशिष्ट ।

उपस्तम्भः-भनम् [उप+स्तम्भ्+घञ्, ल्युट् वा] 1. टेक, सहारा 2. प्रोत्साहन, उकसाना, सहायता 3. आधार, नींव, प्रयोजन ।

उपस्तरणम् [उप—स्तृ+ल्युट्] 1. फैलाना, बिछाना, ढकना 2. चादर), 3. बिस्तरा 4. कोई बिछाई हुई (चादर आदि)—अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

उपस्त्री (स्त्री०) [प्रा० स०] रखैल ।

उपस्थः [उप+स्था+क] 1. गोद 2. (शरीर का) मध्य भाग, पेडू, -स्थः -स्थम् 1. (स्त्री या पुरुष की) जनने-न्द्रिय, विशेषतः योनि स्त्रियां मैथुनोपयोग्येऽवा स्वा-ङ्गयोरुपस्थनिर्देशः —याज्ञ० ३।३१४ (पुरुष का लिंग) स्थूलोपस्थस्थलीषु—भर्तृ० १।२० (स्त्री की योनि); हस्तौ पायुरुपस्थश्च—याज्ञ० ३।९२ (यहाँ यह शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त है) 2. गुदा 3. कूल्हा । सम०—निग्रहः इन्द्रियदमन, संयम —याज्ञ० ३।३१४,—वृक्षः, पीपल का वृक्ष (क्योंकि इसके पत्ते स्त्री-योनि के आकार के समरूप होते हैं) ।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] 1. उपस्थिति, सामीप्य 2. पहुंचना, आना, प्रकट होना, दर्शन देना 3. (क) पूजा करना, प्रार्थना, आराधना, उपासना—सूर्योपस्था-नात्प्रतिनिवृत्तं पुरूरवस मामुपेत्य— विक्र० १, सूर्यस्यो-पस्थानं कुर्वः—विक्रम० ४, याज्ञ० १।२२, (ख) अभिवा-दन, नमस्कार 4. आवास 5. देवालय, पुण्यस्थल, मन्दिर 6. स्मरण, प्रत्यास्मरण, स्मृति— याज्ञ० ३। १६० ।

उपस्थापनम् [उप+स्था+णिच्+ल्युट्] 1. निकट रखना, तैयार होना 2. स्मृति को जगाना 3. परिचर्या, सेवा ।

उपस्थायकः [उप+स्था+ण्वुल्] सेवक ।

उपस्थितिः (स्त्री०) [उप+स्था+क्तिन्] 1. पास जाना 2. सामीप्य, विद्यमानता 3. अवाप्ति, प्राप्ति 4. सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना 5. स्मरण, प्रत्यास्मरण 6. सेवा, परिचर्या ।

उपस्नेहः [उप+स्निह्+घञ्] गीला होना ।

उपस्पर्शः-र्शनम् [उप+स्पृश्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्पर्श करना, सम्पर्क 2. स्नान करना, संक्षालन, धोना 3. कुल्ला करना, आचमन करना, मार्जन करना, (अंगों पर जल के छींटे देना —एक धार्मिक कृत्य) ।

उपस्मृतिः (स्त्री०) [प्रा० स०] लघु धर्मशास्त्र या विधि ग्रन्थ (यह संख्या में १८ हैं) ।

उपस्नवणम् [उप—स्नु+ल्युट्] 1. रज का मासिक स्राव होना 2. बहाव ।

उपस्वत्वम् [प्रा० स०] राजस्व, लाभ (जो भूमि अथवा पूंजी से प्राप्त हो) ।

उपस्वेदः [उप—स्विद्+घञ्] गीलापन, पसीना ।

उपहत (भू० क० कृ०) [उप+हन्+क्त] 1. क्षत-विक्षत, जिस पर आघात किया गया हो, क्षीण, पीड़ित, चोट लगा हुआ कु० ५।७६ 2. अभिभूत, आबद्ध, आहत, पराभूत -दारिद्र्य°, लोभ°, दर्प°, काम°, शोक° आदि 3. सर्वथा विनष्ट—कथमत्रापि दैवेनो-पहता वयम् मुद्रा० २, दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा पूर्वं विपर्यस्यति-मुद्रा० ६।८ 4. निंदित, भर्त्सना किया गया, उपेक्षित 5. दूषित, कलुषित, अपवित्रीकृत —शारीरै-र्मलैः सुरामिमर्शैर्वा यदुपहतं तदत्यल्पोपहतम् - विष्णु । सम०—आत्मन् क्षुब्धमना, उद्विग्नमना, —दृश् (वि०) चौंधियाया हुआ, अंधा किया गया:—कि० १२।१८, —धी (वि०) मूर्ख ।

उपहतक (वि०) [उपहत+कन्] हतभाग्य, अभागा ।

उपहतिः (स्त्री०) [उप+हन्+क्तिन्] 1. प्रहार 2. वध, हत्या ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपहत्या [प्रा० स०] आँखों का चौंधियाना।

उपहरणम् [उप+हृ+ल्युट्] 1. निकट लाना, जाकर लाना 2. ग्रहण करना, पकड़ना 3. देवता आदि को भेंट प्रस्तुत करना 4. बलिपशु देना 5. भोजन परोसना या बाँटना।

उपहसित (भू० क० कृ०) [उप+हस्+क्त] मजाक उड़ाया गया, भर्त्सना किया गया,—तम् व्यंग्यपूर्ण अट्टहास, हंसी उड़ाना।

उपहस्तिका [उपहस्त+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] पान-दान, —उपहस्तिकायास्ताम्बूलं कर्पूरसहितमुद्वृत्य-- दश० ११६।

उपहारः [उप+हृ+घञ्] 1. आहुति 2. भेंट, उपहार —रघु० ४।८४ 3. बलि-पशु, यज्ञ, देवता का नजराना —रघु० १६।३९ 4. सम्मान-सूचक भेंट, अपने बड़ों को उपहार देना 5. सम्मान 6. शांति के मूल्य स्वरूप क्षति पूरक उपहार--हि० ४।११० 7. अभ्यागतों में परोसा गया भोजन।

उपहारिन् (वि०) [उपहार+णिनि] देने वाला, उपहार प्रस्तुत करने वाला, लाने वाला।

उपहालकः [?] कुन्तल देश का नाम।

उपहासः [उप+हस्+घञ्] 1. मजाक उड़ाना, हंसी-दिल्लगी —रघु० १२।३७ व्यंग्यपूर्ण अट्टहास 3. हंसी मजाक, खेलकूद। सम०—आस्पदम्--पात्रम् उपहास की सामग्री, भांड, उपहास्य।

उपहासक (वि०) [उप+हस्+ण्वुल्] हंसी-मजाक उड़ाने वाला,---कः विदूषक, दिल्लगी बाज़।

उपहास्य (वि०, सं० कृ०) [उप+हस्+ण्यत्] मजाकिया —तां गम् या या···हंसी मजाक की वस्तु बनना, ठिठोलिया –गमिष्यामुपहास्यताम् रघु० १।३।

उपहित (वि०) [उप+धा+क्त] रक्खा गया, दे० उपपूर्वक 'धा'।

उपहूतिः (स्त्री०) [उप+हे+क्तिन्] बुलावा, आह्वान, निमंत्रण, --शि० १४।३०।

उपह्वरः [उप+हृ+व] एकान्त या अकेला स्थान, निजी जगह---उपह्वरे पुनरित्थंशिक्षयं धनमित्रम् --दश० ५४ 2. सामीप्य।

उपह्वानम् [उप+ह्वे+ल्युट्] 1. बुलाना, निमंत्रित करना 2. प्रार्थना मंत्रों के साथ आवाहन करना।

उपांशु (अव्य०) [उपगता अंशवो यत्र] 1. मन्द स्वर से, कानाफूसी 2. चुपके से, गुप्तरूप से–परिक्वेतुमुपांशु-धारणाम्—रघु० ८।१८–शुः मन्द स्वर में की गई प्रार्थना, मंत्रों का जप करना तु०, मनु० २।८५।

उपाकरणम् [उप+आ+कृ+ल्युट्] 1. आरंभ करने के लिए निमंत्रण, निकट लाना 2. तैयारी, आरम्भ, उपक्रम 3. प्रारंभिक अनुष्ठान करने के पश्चात् वेद-पाठ का उपक्रम -तु० उपाकर्मन्,—वेदोपाकरणाख्यं कर्म करिष्ये—श्रावणी मंत्र।

उपाकर्मन् (नपु०) [उप+आ+कृ+मनिन्] 1. तैयारी, आरम्भ, उपक्रम 2. वर्षारंभ के पश्चात् वेदपाठ के उपक्रम से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान (तु० श्रावणी) याज्ञ० १।१४२, मनु० ४।११९।

उपाकृत (भू० क० कृ०) [उप+आ+कृ+क्त] 1. निकट लाया हुआ 2. यज्ञ में बलि दिया गया 3. आरब्ध, उपक्रांत।

उपाक्षम् (अव्य०) [अव्य० स०] आँखों के सामने, अपने समक्ष।

उपाख्यानम्-नकम् [उप+आ+ख्या+ल्युट् पक्षे कन् च] छोटी कथा, गल्प या आख्यायिका– उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः महा०।

उपागमः [उप+आ+गम्+अप्] 1. निकट जाना, पहुँचना 2. घटित होना 3. प्रतिज्ञा, करार 4. स्वीकृति।

उपाग्रम् [प्रा० स०] 1. चोटी या किनारे के निकट का भाग 2. गौण अंग।

उपाग्रहणम् [उप+आ+ग्रह्+ल्युट्] दीक्षित होकर वेदाध्ययन करना।

उपाङ्गम् [प्रा० स०] 1. उपभाग, उपशीर्षक 2. कोई छोटा अंग या अवयव 3. परिशिष्ट का पूरक 4. घटिया प्रकार का अतिरिक्त कार्य 5. विज्ञान का गौण भाग —वेदांगों के परिशिष्ट स्वरूप लिखा गया ग्रन्थ समूह (ये चार हैं पुराण-न्यायमीमांसाधर्मशास्त्राणि)।

उपाचारः [उप+आ+चर+घञ्] 1. (वाक्य में शब्द का) स्थान 2. कार्यविधि।

उपाजे (अव्य०) (केवल 'कृ' धातु के साथ प्रयोग) - सहारा देना--उपाजेकृत्य या कृत्वा सहारा देकर —पा० १।४।७३ सिद्धा०।

उपाञ्जनम् [उप+अञ्ज्+ल्युट्]– मलना, लीपना (गोबर आदि से) पोतना (सफेदी, चूना आदि)–मनु० ५।१०५, १२२।१२४, मठादेः (सुधागोमयादिना समार्जनानुलेपनम्—मेधातिथि)।

उपात्ययः [उप+अति+इ+अच्] उल्लंघन करना, (प्रचलित प्रथा से) विचलन।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] 1. लेना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, अवाप्त करना—विश्रब्धं ब्राह्मणः शूद्रात् द्रव्योपादानमाचरेत्–मनु० ८।४१७, विशा०—का० ७५ 2. उल्लेख, वर्णन 3. समादेश, मिलाना 4. सांसारिक पदार्थों से अपनी ज्ञानेन्द्रियों व मन को हटाना 5. कारण, प्रयोजन, प्राकृतिक या तात्कालिक कारण—पाटवोपादानो भ्रमः—उत्तर० ३, अने० पा० 6. सामग्री जिनसे कोई वस्तु बने, भौतिक कारण—निमित्तमेव ब्रह्म स्यादुपादानं च

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेक्षणम्—अधिकरणमाला 7. अभिव्यंजना की एक रीति जिसमें अपने वास्तविक अर्थ को प्रकट करने के अतिरिक्त न्यूनपद की पूर्ति भी अध्याहार द्वारा कर ली जाती है—स्वसिद्धये पराक्षेपः···उपादानम्-काव्य० २। सम०—कारणम् भौतिक कारण—प्रकृतिरुपादानकारणं च ब्रह्मण्युपगन्तव्यम्—शारी०,—लक्षणा—अजहत्स्वार्था, दे० काव्य० २, सा० द० १४ भी।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1. जालसाजी, धोखा, दाँव 2. प्रवंचना, (वेदान्त में) छद्मवेष धारण करना 3. विवेचक या विभेदक गुण, विशेषण, विशेषता—तदुपाधावेव सङ्केतः—काव्य० २, यह चार प्रकार का है—जाति, गुण क्रिया, तथा संज्ञा 4. पद, उपनाम (भट्टाचार्य, महामहोपाध्याय, पंडित आदि) 5. सीमा, (देश काल आदि की) अवस्था (बद्धधा वेदान्तदर्शन में) 6. प्रयोजन, संयोग, अभिप्राय 7. (तर्क में) किसी सामान्य बात का विशेष कारण 8. जो व्यक्ति अपने परिवार का भरण-पोषण करने में सावधान है।

उपाधिक (वि०) [अस्या० सं०] अधिक, अधिसंख्य, अतिरिक्त।

उपाध्यायः [उपेत्याधीयतेऽस्मात् उप+अधि+इ+घञ्] 1. अध्यापक, गुरु 2. विशेषतः अध्यात्मगुरु, धर्मोपदेशक (उपदेशक जो वेद के किसी भाग को केवल पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए पढ़ाता है—आचार्य से निम्न पदवी का) नि०—मनु० २।१४१, एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः, योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते। दे० 'अध्यापक' और 'आचार्य' के नीचे भी, **या** स्त्री-अध्यापिका, **श्री** 1. अध्यापिका 2. गुरुपत्नी।

उपाध्यायानी [उपाध्याय+ङीप्, आनुक्] गुरुपत्नी।

उपानह् (स्त्री०) [उप+नह्+क्विप्] उपसर्गशोषः] जूता—उपानद्गूढपादस्य सर्वा चर्मावृतेव भूः—हि० १।१२२, मनु० २।२४६, श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम्—हि० ३।५८।

उपान्तः [प्रा० स०] 1. किनारी, छोर, गोट, पल्ला, सिरा उपान्तवानिङ्गुदिपिण्डकैः—रघु० ७।५०, कु० ३।३९, ७।३३, अमरु २३, उत्तर० १।२६ वल्कल का० १०६ 2. आँख की कोर—रघु० ३।२६ 3. अव्यवहित सान्निध्य, पड़ोस—त्र्यक्षस्योपान्तस्थित सिद्धसैनिकम् रघु० ३।५७, ७।२४, १६।२१, मेघ० २४ 4. पार्श्वभाग, नितम्ब मेघ० १८।

उपान्तिक (वि०) [प्रा० स०] निकटस्थ, समीपी, पड़ौसी, कम पड़ोस, सामीप्य।

उपान्त्य (वि०) [उपान्त+यत्] अन्तिम से पूर्व का—उत्तमपदमुपान्त्यस्योल्लक्षणार्थम्—भिक्षु०,—म्यः आँख की कोर,—म्यम् पड़ोस।

उपायः [उप+इ+घञ्] 1. (क) साधन, तरकीब, युक्ति—उपायं चिन्तयेत्प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्—पंच० १।४०६, अमरु २१, मनु० ७।१७७ ८।४८, (ख) पद्धति, रीति, कूटचाल 2. आरम्भ, उपक्रम 3. प्रयत्न, चेष्टा—भग० ६।३६, मनु० ९।२४८, १०।२ 4. शत्रु पर विजय पाने का साधन (यह चार हैं—सामन्, समझौता-वार्ता, दानम्—रिश्वत, भेदः—फूट डालना और दंडः—सजा देना (सोधा धावा बोलना), कुछ लोग तीन और जोड़ देते हैं—माया—धोखा, उपेक्षा—दाँव-पेंच, अवहेलना, इंद्रजाल—जादू-टोना करना, इस प्रकार कुल संख्या सात हुई),—चतुर्योपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया—शि० २।५४, सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः—मनु० ७।१०९ 5. सम्मिलित होना (गायन आदि में) 6. पहुँचना। सम०—चतुष्टयम्, शत्रु के विरुद्ध की जाने वाली चार तरकीबें—दे० ऊ०,—ज्ञ (वि०) तरकीब निकालने में चतुर—तृतीयः चौथी तरकीब अर्थात् दंड,—योगः साधन या युक्ति का प्रयोग—मनु० ९।१०।

उपायनम् [उप+अय्+ल्युट्] 1. निकट जाना पहुँचना 2. शिष्य बनना 3. किसी धार्मिक संस्कार में व्यस्त रहना 4. उपहार, भेंट—मालविकेत्युपायनं प्रेषिता—मालवि० १, तस्योपायनयोग्यानि वस्तूनि सरिता पतिः—कु० २।३७, रघु० ४।७९।

उपारम्भः [उप+आ+रभ्+घञ्, नुम्] आरंभ, उपक्रम, शुरू।

उपार्जनम्—**ना** [उप+अर्ज्+ल्युट्, युच् वा] कमाना, लाभ उठाना।

उपार्ध (वि०) [ब० स०] थोड़े मूल्य का।

उपालम्भः—**भनम्** [उप+आ+लभ्+घञ्, नुम्, ल्युट् वा] 1. दुर्वचन, उलाहना, निन्दा अस्था महत्युपालम्भने गतोऽस्मि श० ५, तवोपालम्भे पतिताऽस्मि—मालवि० १, तुम्हारा उलाहना सिर-माथे पर 2. विलंब करना, स्थगित करना।

उपावर्तनम् [उप+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापिस आना या मुड़ना, लौटना—स्वदुपावर्तनशङ्कि मे मनः (करोति) रघु० ८।५३ 2. घूमना, चक्कर काटना 3. पहुँचना।

उपाश्रयः [उप+आ+श्रि+अच्] 1. अवलंब, आश्रय, सहारा—भर्तृ० २।४८ 2. पात्र, पाने वाला 3. भरोसा, निर्भर रहना।

उपासकः [उप+आस्+ण्वुल्] 1. सेवा में उपस्थित, पूजा करने वाला 2. सेवक, अनुचर 3. शूद्र, निम्न जाति का व्यक्ति।

उपासनम्—**ना** [उप+आस्+ल्युट्, युच् वा] 1. सेवा, हाजरी, सेवा में उपस्थित रहना 2. शिल खलोपास-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नात् (विनश्यति) पंच० १।१६९, उपासनामेत्य पितुः स्म सृज्यते - नै० १।३४, मनु० ३।१०७, भग० १२।७, याज्ञ० २।१५६ 2. व्यस्त, तुला हुआ, जुटा हुआ --संगीत० मृच्छ० ६, मनु० २।६९ 3. पूजा, आदर, आराधना, शरीराभ्यास 5. धार्मिक मनन 6. गार्हपत्य अग्नि।

उपासा [उप+आस्+अ+टाप्] 1. सेवा, हाजरी 2. पूजा, आराधना 3. धार्मिक मनन।

उपास्तमनम् [प्रा० स०] सूर्य छिपना।

उपास्तिः (स्त्री०) [उप+आस्+क्तिन्] 1. सेवा, सेवा में उपस्थित रहना (विशेषतः देवता की) 2. पूजा, आराधना।

उपास्त्रम् [प्रा० स०] गौण या छोटा हथियार।

उपाहारः [प्रा० स०] हल्का जलपान (फल, मिष्टान्न आदि)।

उपाहित (भू० क० कृ०) [उप+आ+धा+क्त] 1. रक्खा गया, जमा किया गया, पहना गया आदि 2. संबद्ध, सम्मिलित, -तः आग से भय, या आग से होने वाला विकार।

उपेक्षणम्=उपेक्षा।

उपेक्षा [उप+ईक्ष्+अ+टाप्] 1. नजर-अंदाज करना, लापरवाही बरतना, अवहेलना करना 2. उदासीनता, घृणा, नफरत -कुर्युरपेक्षां हतजीवितेऽस्मिन् रघु० १४।६५ 3. छोड़ना, छुटकारा देना 4. अवहेलना, दाँव पेंच, मक्कारी (युद्ध में विहित ७ उपायों में से एक)।

उपेत (भू० क० कृ०) [उप - इ +क्त] 1. समीप आया हुआ, पहुँचा हुआ 2. उपस्थित 3. युक्त, सहित (करण० के साथ या समास में) -शुभमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि—अ० १।१२।

उपेन्द्रः [उपगत इन्द्रम् अनुजत्वात्] विष्णु या कृष्ण, (इन्द्र के छोटे भाई के रूप में अपने पाँचवें अवतार (वामन) के अवसर पर) देo इन्द्र, उपेन्द्र इत्याहुरपि दारुणोऽसि -गीत० ५, यदुपेन्द्रस्यहमतीन्द्र एव सः—शि० ११।७०।

उपेयः (सं० कृ०) [उप+इ+यत्] 1. पहुँचने के योग्य 2. प्राप्त कर लेने के योग्य 3. किसी भी साधन से प्रभावित होने के योग्य।

उपोढ (भू० क० कृ०) [उप+वह्+क्त] 1. संचित, एकत्र किया हुआ, जमा किया हुआ 2. निकट लाया हुआ, निकटस्थ 3. युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध 4. आरूढ 5. विवाहित।

उपोत्तम (वि०) [अत्या० स०] अन्तिम से पूर्व का, -मम् (अक्षरम्) अन्तिम अक्षर से पूर्व का अक्षर।

उपोद्घातः [उप+उद्+हन्+घञ्] 1. आरम्भ 2. प्रस्तावना, भूमिका, 3. उदाहरण, समुपयुक्त तर्क या दृष्टान्त 4. सुयोग, माध्यम, साधन -तत्प्रतिच्छन्दकमुपोद्घातेन माधवानिकमुपेयात् -मा० १ 5. विश्लेषण, किसी वस्तु के तत्त्वों का निश्चय करना।

उपोद्बलकः (वि०) [उप+उद्+बल्+ण्वुल्] पुष्ट करने वाला।

उपोद्बलनम् [उप+उद्+बल्+ल्युट्] पुष्ट करना, समर्थन करना।

उपोषणम्--**उपोषितम्** [उप+वस्+ल्युट्, क्त वा] उपवास रखना, व्रत।

उप्तिः (स्त्री०) [वप्+क्तिन्] बीज बोना।

उब्ज् (तुदा० पर०) (उब्जति, उब्जित) 1. भींचना, दबाना 2. सीधा करना।

उभ्, उम्भ् (तुदा० ऋधा० पर०) (उभति या उम्भति, उभ्नाति, उम्भित) 1. संमीलित करना 2. संक्षिप्त करना 3. भरना —जलकुम्भमुम्भितरसं सपदि सरस्याः समानयन्त्यास्ते—भामि० २।१४४ 4. आच्छादित करना, ऊपर बिछाना —सर्वममंसु काकुत्स्थमौन्मत्तीदृशैः शिलीमुखैः भट्टि० १७।८८।

उभ (सर्व० वि०) (केवल द्विवचन में प्रयुक्त) [उ+भक्] दोनों, उभौ तौ न विजानीतः भग० २।१९, कु० ७।४३ मनु० २।१४, वि० ३।८।

उभय (सर्व० वि०) (स्त्री० यी) [उभ्+अयट्] (यद्यपि अर्थ की दृष्टि से यह शब्द द्विवचनांत है, परन्तु इसका प्रयोग एक वचन और बहुवचन में भी होता है, कुछ वैयाकरणों के मतानुसार द्विवचन में भी) दोनों (पुरुष या वस्तुएँ) उभयमप्यपरिणामि समर्थये श० ७, उभयमानयिरे वसुधाधिपाः रघु० ९।१, उभयी सिद्धिमुभावबापतुः ८।२३, १७।३८, अमरु ३०, कु० ७।३८, मनु० २।५५, ४।२२४, ९।३४। समo -चर (वि०) जल, स्थल या आकाश में विचरण करने वाला, जल स्थल चारी, **विद्या** दो प्रकार की विद्याएँ, परा और अपरा, अर्थात् अध्यात्म विद्या और लौकिक ज्ञान, -विध (वि०) दोनों प्रकार का, **वेतन** (वि०) दोनों स्थानों से वेतन ग्रहण करने वाला, दो स्वामियों का सेवक, **विश्वावसवौ**, -**अंजन** (वि०) (स्त्री और पुरुष) दोनों के चिह्न रखने वाला, -**संभवः** उभयजाति, दुविधा।

उभयतः (अव्य०) [उभय—तसिल्] 1. दोनों ओर से, दोनों ओर, (कर्म० के साथ)—उभयतः करणं संधाः —सिद्धा० याज्ञ० १।५८, मनु० ८।३१५ 2. दोनों दशाओं में 3. दोनों रीतियों से- मनु० १।४७। समo -**बल**, -**दन्त** (वि०) दोनों ओर (नीचे और ऊपर) दाँतों को पकिन वाला, -**मुख** (वि०) 1. दोनों ओर देखने वाला 2. दुमुंहा (मकान आदि) (स्त्री०) बुनी हुई गाय- -याज्ञ० १।२०६-७।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उभयत्र (अव्य०) [उभय--त्रल्] 1. दोनों स्थानों पर, 2. दोनों ओर 3. दोनों अवस्थाओं में यमु० ३।१२५, १६७।

उभयथा (अव्य०) [उभय+थाच्] 1. दोनों रीतियों से -उभयथापि घटते-विक्र० ३ 2. दोनों दशाओं में।

उभय (वे) वा. (अव्य०) [उभय+ञुन्, एषुस् वा] 1. दोनों दिन 2. आजकल दोनों दिन।

उम् (अव्य०) [ऊह+डुम्] (क) क्रोध (ख) प्रश्नवाचकता (ग) प्रतिज्ञा या स्वीकृति और (घ) पश्चात्ताप या सान्त्वना को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

उमा श्री० शिवजी की अर्धांगिनी, उ इति रक्षति, मा+क+टाप् या उमया तपसे विधिज्ञा या उमामाह्वे मुनीनां जगाम--कु० १।२६, उमायामर्द्धं रराज० ७।२३ 2. प्रकाश, आभा 3. यज्ञ, स्थानि च भाषिन, प्रकाशनता 5. रात 6. हल्दी, 7. दान। -गात्र० गात्रः उनका हिमालय पर्वत (उमा का पिता होने के नाते), पति शिव महेश्वरस्त्वमसि शंकर एव तस्मात्त्रैलोक्य- - शि० ५।२८, इसी प्रकार ईश, धवलेश, नाथ आदि, -सुतः कार्तिकेय का विशेषण।

उम्ब (बु) रः [उन्द्+क, बस्य वः पृषो० साधुः] हाथ की कलाई की ऊपरी वाली लकीर।

उर [उर्+क, भेदः]

उरः (स्त्री० रो) [उरस्+ङीष्, उरस्+ङी] 1. गाय, भैंस, हथिनी आदि मादा पशु 2. स्त्री -उरोऽनेकपतिका- रघु० १।८८, १४।२८, ६१ 3. मादा या मुकदमे में वादिनी मादा मुख्य वादी 4. स्त्री-वे अन्तर्वत्नी वारस्त्रसहस्राणि--रघु० १७८, भट्ट० ३।१०३ 5. नीलकंठ या एक नगर का नाम--रघु० ६।३१। -गत० प्राप्त, आगत, वृत्त 1. गर्भवती (स्त्री) 2. गौ, हथिनी, राजः वायुकोण का लोकपाल, प्रतिमा (स्त्री०) किसी--भट्टिका के स्थान में सोना उगने वाला, भूषणः शिव (माँसों से युक्त होने के नाते), -सारवत्त्वम्, तम् एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, स्थानम् लगभग का भागवानस्थान अर्थात् पालव।

उरङ्गः गमः [उरस्+गम्+डः, रुत्वोपः, गुणागमश्च] साँप।

उरणः (स्त्री० णी) [ऋ+कनिन्, ईप्, रुत्वम्, णत्वम्] 1. भेड़, भेड़ की ओर मुख्यतया मन्यते अज० 2 एक स्थान जिसे उसने मारे जाने पर पाया था।--णी भेड़ी।

उरणकः [उरण+कन्] 1. भेड़ा, मेढ़ा 2. बादल।

२८

उरभ्रः [उरु उत्कटं भ्रमति इति- उरु+भ्रम्+ड पृषो० उलोपः] भेड़, मेष।

उररी (अव्य०) [उर्+अरीक् या०] 1. सहमति या स्वीकृति द्योतक अव्यय (इस अर्थ में यह शब्द कृ, भू और अस् धातुओं के साथ प्रयुक्त होता है--तथा गतिसंज्ञक या उपसर्ग समझा जाता है, इसी लिए 'उररीकृत्य' न बनकर 'उररीकृत्य' बनता है, इस शब्द के रूपान्तर हैं- उरी, उररी, उरी और ऊररी) 2. विस्तार (**उररीकृ** [तना० उभ०] सहमति देना, अनुमति देना, स्वीकार करना--गिरं न कां काममुररीचकार भामि० २।१३, शि० १०।१४)

उरस् (नपुं० उरः) [ऋ+असुन्, उत्वं रपरश्च] छाती, वक्षःस्थल --व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः- रघु० १।१३, कु० ६।५१, **उरसि कृ** छाती से लगाना। सम० **क्षतम्** छाती की चोट,--**गदः -घातः** छाती का रोग, फेफड़े की पिल्ली की सूजन, प्लूरिसी, -**छदः** चोली, अँगिया, --**त्राणम्** कवच, तीनावन्द -शि० १५।८०,-ज, भू, **उरसिजः, उरसिरुहः** स्त्री की छाती, स्तन, रेजाते रुचिरद्वयामुरोजकुम्भौ--शि० ८।५३, २५, ५१, **भूषणम्** छाती का आभूषण, **सूत्रिका** मोतियों का हार जो छाती के ऊपर लटक रहा हो, **स्थलम्** छाती, वक्षःस्थल।

उरस्थिल (वि०) [उरस्+इलच्] विशाल वक्षःस्थल वाला।

उरस्य (वि०) [उरस्+यत्] 1. औरस सन्तान 2. एक ही वर्ण के विवाहित दम्पती का पुत्र या बेटी 3. उत्तम, -स्यः पुत्र।

उरस्वत् (वि०) [उरस्+मतुप्, मस्य वः] विशाल वक्षःस्थल वाला, चौड़ी छाती वाला।

उरी स्त्रीकृतिवाचक अव्यय--कृ० उररी (**उरीकृ** अनुमति देना, सहमति देना, स्वीकृति देना -दर्शनेनोरीकृतं त्वया भट्टि० ८।११, रघु० १५।७७ 2. अनुकरण करना, आदर करना, अक्षि रोषमुरीकरोषि नोचेत् --भामि० १।४४।

उरु (त्रि०) [ऋ+कु, ऊ] नु० (वरीयस्, ज्य० अव० वरिष्ठ) 1. विस्तृत, प्रशस्त 2. महान्, बड़ा -रघु० ९।३१ 3. अधिक, अधिक, प्रचुर 4. श्रेष्ठ, मूल्यवान् कीमती। सम०- **कीर्ति** (वि०) प्रख्यात, सुविख्यात --रघु० १४।७४, **क्रमः** वामनावतार के रूप में विष्णुभगवान्, **गाय** (वि०) उत्तम व्यक्तियों द्वारा जिसका स्तुतिगान किया गया हो--अस्य० ९१, -**मायः** लंबा सड़क, **विक्रम** (वि०) पराक्रमी, बलशाली, स्वन (वि०) ऊँची आवाज वाला, अत्युच्च शब्द-स्वरी,--**हारः** मूल्यवान् हार।

उरुरी उररी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उरुकः=उलूकः ।

उर्णनाभः [उर्णेव सूत्रं नाभौ गर्भेऽस्य—ब० स०] मकड़ी, तु० ऊर्णनाभ ।

उर्णा [ऊर्ण्+ड हृस्वः] 1. ऊन, नमदा या ऊनी कपड़ा 2. भौंवों के बीच केशवृत्त—दे० ऊर्णा ।

उर्वटः [उर्व+अट्+अच्] 1. बछड़ा 2. वर्ष ।

उर्वरा [उरु शस्यादिकमृच्छति—ऋ+अच्] 1. उपजाऊ भूमि—शि० १५।६६ 2. भूमि ।

उर्वशी [उरून् महतोऽपि अश्नुते वशीकरोति—उरु+अश्+क गौरा० ङीष्—तारा०] इन्द्रलोक की एक प्रसिद्ध अप्सरा जो पुरूरवा की पत्नी बनी; (उर्वशी का ऋग्वेद में बहुत उल्लेख मिलता है; उसकी ओर दृष्टि डालते ही मित्र और वरुण का वीर्य स्खलित हो गया—जिससे अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म हुआ [दे० अगस्त्य] मित्र और वरुण द्वारा शाप दिये जाने पर वह इस लोक में आई और पुरूरवा की पत्नी बनी, जिसको कि उसने स्वर्ग से उतरते हुए देखा था तथा जिसका उसके मन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। वह कुछ समय तक पुरूरवा के साथ रही, परन्तु शाप की समाप्ति पर फिर स्वर्गलोक चली गई। पुरूरवा को उसके वियोग से अत्यन्त दुःख हुआ, परन्तु वह एक बार फिर उसे प्राप्त करने में सफल हो गया। उर्वशी से 'आयुस्' नाम का पुत्र पैदा हुआ—और फिर वह सदा के लिए पुरूरवा को छोड़ कर चली गई। विक्रमोर्वशीय में दिया गया वृत्त कई बातों में भिन्न है, पुराणों में उसको नारायण मुनि की जंघा से उत्पन्न बताया गया है)। सम०—रमण वल्लभः, सहायः, पुरूरवा ।

उर्वारुः [उरु+रू+उण्] एक प्रकार की ककड़ी, दे० 'इर्वारु' ।

उर्वी [ऊर्ण्+कु, नलोपः, हृस्वः, ङीप्] 1. विस्तृत प्रदेश भूमि—स्तोकमुर्व्या प्रयाति—श० १।७, जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम् रघु० २।३, १।१४, ३०, ७५, २।६६ 2. पृथ्वी, धरती 3. खुली जगह, मैदान। सम०—ईशः,—ईश्वरः,—धवः,—पतिः राजा,—धरः 1. पहाड़ 2. शेषनाग,—भृत् (पुं०) 1. राजा 2. पहाड़, —रुहः वृक्ष—शि० ४।७।

उलपः [वल्+कपच्, संप्रसारणं] 1. लता, बेल 2. कोमल तृण—गोरूपिणीप्रियतमोलपमात्रसल्यो पकण्ठविषिनाबलयो भवन्ति—मा० ९।२, शि० ४।८ ।

उलूप=दे० उलप ।

उलूकः [वल्+ऊक संप्रसारणं] 1. उल्लू नोलूकोध्वलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्—भर्तृ० २।९३, त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः शि० ११।६४ 2. इन्द्र ।

उलूखलम् [ऊर्ध्वं खम् उलूखम्, पृषो० ला+क] ओखली (जिसमें धान कूटे जाते हैं)—अवहननायोलूखलम् महा०, मनु० ३।८८, ५।११७।

उलूखलिकम् [उलूखल+कन्] खरल ।

उलूखलिक (वि०) [उलूखल+ठन्] खरल में पीसा हुआ ।

उलूतः [उल्+ऊतच्] अजगर, शिकार को दबोच कर मारने वाला विषहीन सर्प ।

उलूपी [?] नाग कन्या (यह कौरव्य नाग की पुत्री थी, एक दिन जब वह गंगा में स्नान कर रही थी, उसकी दृष्टि अर्जुन पर पड़ी। वह उसके रूप पर मुग्ध हो गई, फलतः उसने अर्जुन को अपने घर पाताल लोक में लिवा लाने का प्रबन्ध किया। वहाँ पहुँचने पर उसने अर्जुन से अपने आपको पत्नीरूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की जिसे अर्जुन ने बड़े संकोच के साथ स्वीकार किया। 'इरावान्' नाम का एक पुत्र उलूपी से पैदा हुआ। जब बभ्रुवाहन के तीर से अर्जुन का सिर कट गया था तो उस समय उलूपी की सहायता से ही उसे पुनर्जीवन मिला)।

उल्का [उष्+कक्+टाप् पस्य लः] 1. आकाश में रहने वाला दाहक तत्त्व, लूक शि० १५।९१, मनु० १।३८, याज्ञ० १।१४५ 2. जलती हुई लकड़ी, मशाल 3. अग्नि, ज्वाला—मेघ० ५३। सम०—धारिन् (वि०) मशालची पातः उल्कापिंड का टूट कर गिरना, मुखः एक राक्षस या प्रेत (अग्निया वैताल)—मनु० १२।७१, मा० ५।१२।

उल्कुषी [उल्+कुष्+क+ङीप्] 1. केतु, उल्का 2. मशाल ।

उल्बम्,—बम् [उच्+ब (व) न् चस्य लः बम्] 1. भ्रूण 2. योनि 3. गर्भाशय ।

उल्ब (व) ण (वि०) [उल्+ब (व) ण—अच् पृषो०] 1. गाढ़ा, जमा हुआ पर्याप्त, प्रचुर (हरिः अद्रिं) 2. अधिक, अतिशय, तीव्र शि० १०।५४, कु० ३।८४ 3. दृढ़, बलशाली, बड़ा—शि० २०।४१ 4. स्पष्ट, साफ तस्यासोदुल्वणो मार्गः रघु० ४।३३ ।

उल्मुकः [उष्+मुक् पस्य लः] जलती लकड़ी, मशाल ।

उल्लङ्घनम् [उद्+लङ्घ्+ल्युट्] 1. छलांग लगाना, लांघना 2. अतिक्रमण, तोड़ना ।

उल्लल (वि०) [उद्+लल्+अच्] 1. डावाडोल, कंपनशील 2. घने बालों वाला लोमश ।

उल्लसनम् [उद् लस्+ल्युट्] 1 आनन्द, हर्ष 2. रोमांच ।

उल्लसित (भू० क० कृ०) [उद्+लस्+क्त] 1 चमकीला, उज्ज्वल, अभ्युक्त 2. आनन्दित, प्रसन्न ।

उल्लाघ (वि०) [उद्+लाघ्+क्त] 1. रोग से मुक्त,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वास्थ्योन्मुख 2. दक्ष, चतुर, कुशल 3. पवित्र 4. आनन्दित, प्रसन्न ।

उल्लापः [उद्+लप्+घञ्] 1. भाषण, शब्द,- श्रुता मयायुत्रस्योल्लापाः—उत्तर० ३ 2. अपमानजनक-शब्द, सोपालंभ भाषण, उपालभ—खल्लोल्लापाः सोढाः ··भर्तृ० ३।६ 3. ऊँची आवाज से पुकारना 4. संवेग या रोग आदि के कारण आवाज में परिवर्तन 6. संकेत, सुझाव ।

उल्लाप्यम् [उद्+लप्+णिच्+यत्] एक प्रकार का नाटक—दे० सा० द० ५४५ ।

उल्लासः [उद्+लस्+घञ्] 1. हर्ष, खुशी- सोल्लासम् उत्तर० ६, सकौतुकोल्लासम्—उत्तर० २, उल्लासः फुल्लप्रकृष्टहृष्टलपत्तन्मत्तायुष्मन्धयानाम्- -सा० द० 2. प्रकाश, आभा 3. (अलं० शा० में) एक अलंकार—परिभाषा—अन्यदीययुणदोषप्रयुक्तमन्यस्य गुण दोषयोरानमुल्लासः ··रस०, उदाहरणों के लिए दे०, रस०, या चन्द्रा० ४।१३१, १३३ 4. पुस्तक के प्रभाग-अध्याय, अनुभाग, पर्व, कांड आदि, जैसे कि काव्य के दस उल्लास ।

उल्लासनम् [उद्+लस्+णिच्+ल्युट्] आभा ।

उल्लिङ्गित (वि०) [उद्+लिंग्+क्त] प्रसिद्ध, विख्यात ।

उल्लीढ (वि०) [उद्+लिह्+क्त] रगड़ा हुआ, जिला किया गया ··मणिः शाणोल्लीढः ··भर्तृ० २।४४ ।

उल्लुञ्चनम् [उद्+लुञ्च्+ल्युट्] 1. तोड़ना, कतरना --पादकेशशुकरोल्लुञ्चनेषु पणान् दश (दमः) —याज्ञ० २।२१७ 2. बालों को नोचना, उखाड़ना ।

उल्लुण्ठनम् उल्लुण्ठा [उद्+लुण्ठ्+ल्युट्, अ वा] व्यंग्योक्ति ··धीरा-धीरा तु सोल्लुण्ठभाषणैः खेदयेदमुम्--सा० द० १०५—सोल्लुण्ठनम्- व्याजस्तुतिपूर्वक; नाटकों में प्रायः मञ्चनिर्देश के रूप में प्रयुक्त ।

उल्लेखः [उद्+लिख्+घञ्] 1. संकेत, जिक्र 2. वर्णन उक्ति 3. सूराख करना, खुदाई 4. (अलं० शा० में) एक अलंकार —बहुभिर्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते, स्त्रीभिः कामोर्जयभिः स्वर्द्रः कालः शत्रुभिरीक्षि सः —चन्द्रा० ५।१९, नु०, सा० द० ६८२ 5. रगड़ना, खुरचना, फाड़ना, ··खरमुखोल्लेख-का० १२१, कुट्टिम० २३२ ।

उल्लेखनम् [उद्+लिख्+ल्युट्] 1. रगड़ना, खुरचना, छीलना आदि 2. सोदना—याज्ञ० १।१८८, मनु० ५।१२४ 3. वमन करना 4. लिख, संकेत 5. लेख, चित्रण ।

उल्लोचः [उद्+लोच्+घञ्] वितान या शामियाना चंदोआ,तिरपाल ।

उल्लोल (वि०) [उद्+लोड्+घञ्, दस्य लत्वम्] अति चंचल, अत्यन्त कंपनशील—मा० ५।३,—लः एक बड़ी लहर या तरंग ।

उल्व, उल्वण –दे० उल्ब, उल्बण ।

उशनस् (पुं०) [वश्+कनसि—संप्र०] (कर्तृ०, ए० व०—उशना, संबो० ए० व० उशनन्, उशन, उशनः) शुक्र-ग्रह का अधिष्ठातृ देवता, भृगु का पुत्र, राक्षसों का गुरु, वेद में इनका नाम 'काव्य' संभवतः इनकी बुद्धिमत्ता की ख्याति के कारण मिलता है—तु० कवीनामुशना कविः; भग० १०।३७, ये गूढ़ व धर्मशास्त्र के प्रणेता माने जाते हैं—याज्ञ० १।४, नागरिक राज्य व्यवस्था पर भी वह प्रमाणस्वरूप समझे जाते हैं—शास्त्रमुशनसा प्रणीतम्—पंच० ५, अध्यापितस्योशनसापि नीतिम्—कु० ३।६ ।

उशी [वश्+ई, संप्र०] कामना, इच्छा ।

उशी (शी) रः,—रम्, उशी (शी) रकम् [वश्+ईरन्, कित्, सम्प्र०, उष्+कीरच् वा, स्वार्थे कन् च] वीरण-मूल, खस—स्तनन्यस्तोशीरम्—श० ३।९ ।

उष् (म्वा० पर०) (ओषति, ओषित-उषित-उष्ट) 1. जलाना, उपभोग करना, खपाना,—ओषांचकार कामाग्निर्दश-वक्त्रमहर्निशम्- भट्टि० ६।१, १४।६२, मनु० ४।१८९ 2. दण्ड देना, पीटना-- दण्डेनैव तमप्योषेत्—मनु० ९।३७३ 3. मार डालना, चोट पहुँचाना ।

उषः [उष्+क] 1. प्रभात काल, पौ फटना 2. लम्पट 3. रिहाली धरती ।

उषणम् [उष्+ल्युट्] 1. काली मिर्च 2. अदरक ।

उषः [उष्+कपन्] 1. अग्नि 2. सूर्य ।

उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] 1. पौ फटना, प्रभात--प्रदीपार्चिरिवोषसि—रघु० १२।१, **उषसि उत्थाय**—प्रभात काल में उठकर 2. प्रातः कालीन प्रकाश 3. सांध्यकालीन (प्रातः और सायं) अधिष्ठातृदेवी (द्वि० व० में प्रयोग) ।—**सी** दिन का अवसान, सायंकालीन संध्या । सम०— **बुधः** अग्नि—उत्तर० ६ ।

उषा [ओषत्यन्धकारम्—उष्+क] 1. प्रभात काल, पौ फटना 2. प्रातः कालीन प्रकाश 3. संध्या 4. रिहाली धरती 5. डेगची, बटलोही 6. बाण राक्षस की पुत्री तथा अनिरुद्ध की पत्नी (उषा ने अनिरुद्ध को स्वप्न में देखा, और उस पर मोहित हो गई । उसने अपनी सखी चित्रलेखा की सहायता माँगी—चित्रलेखा ने उसे परामर्श दिया कि वह आस पास रहने वाले सभी राजकुमारों के चित्र अपने साथ ले ले । जब ऐसा किया गया, तो उसने अनिरुद्ध को पहचान लिया और उसे अपने नगर में लिवा ले गई, जहाँ कि उसका अनिरुद्ध से विवाह हो गया—दे० 'अनिरुद्ध' भी) । सम०— **ईशः** उषा का स्वामी अनिरुद्ध,—**कालः** मुर्गा, —**पतिः**,—**रमणः** अनिरुद्ध, उषा का पति ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उषित [वि०] [वस् (उष्)+क्त] 1. बसा हुआ 2. जला हुआ। **उषीर**—दे० उशीर।

उष्ट्र [उष्+ट्रन्, किच्च] 1. ऊँट, -- अथोष्ट्रवामीशतवाहितार्थम्—रघु० ५।३२, मनु० ३।१६२, ४।१२०, ११। २०२ 2. भैंसा 3. ककुद्मान् साँड, -- ब्रह्मी ऊँटनी।

उष्ट्रिका [उष्ट्र+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. ऊँटनी 2. ऊँट को शराब की मिट्टी की बनी मदिरा रखने की सुराही --शि० १२।२६।

उष्ण [वि०] [उष्+नक्] 1. तप्त, गर्म -- अंशु:, -कर, आदि 2. तीक्ष्ण, स्थिर, फुर्तीला—आददे नातिशीतोष्णो नभस्वानिव दक्षिण:—रघु० ४।८, [यहाँ 'उष्ण' का अर्थ 'गर्म' भी है) 3. रिक्त, तीखा, चरपरा 4. चतुर, प्रवीण 5. क्रोधी, -ष्ण:, -ष्णम् 1. ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. धूप। सम०--अंशु:,—कर:,--रश्मि:,—रुचि: गर्म किरणों वाला, सूर्य—रघु० ५।४ ८।३०, कु० ३।२५ **अधिगम:**, **आगम:**,—**उपगम:** गर्मी का निकट आना, ग्रीष्म ऋतु,—**उदकम्** गर्म या तप्त पानी, **काल:**, -या: गर्म ऋतु --**वाष्प:** 1. आँसू 2 गर्म भाप, -वारणम्--म् छाता छतरी, -यदर्थमम्भोजमिवोष्णवारणम्,- -कु० ५।५२।

उष्णक [वि०] [उष्ण+कन्] 1. तेज, फुर्तीला, सक्रिय 2. ज्वरग्रस्त, पीड़ित 3. गर्मी पहुँचाने वाला, गर्म करने वाला,--क: 1. ज्वर 2. निदाघ, ग्रीष्म ऋतु।

उष्णालु [वि०] [उष्ण—आलुच्] गर्मी न सह सकने योग्य, दाघ, संतप्त, -उष्णालु: शिशिरे निषीदति तरोर्मूलालवाले शिखी विक्रम० २।२३।

उष्णिका [अस्+कन्, नि० उष्ण आदेश:, टाप्--इत्वम्] साँड।

उष्णिमन् (पु०) [उष्ण+इमनिच्] गर्मी।

उष्णीष:, -षम् [उष्णमीयते हिंस्यते—इष्+क नारा०] 1. जो सिर के चारों ओर बाँधी जाय 2. अतः पगड़ी, साफा, शिरोवेष्टन, मुकुट—बलाकापाण्डुरोष्णीषम् —मृच्छ० ५।१९ 3. प्रभेदक चिह्न।

उष्णीषिन् [वि०] [उष्णीष+इनि] शिरोवेष्टन पहने हुए या राजमुकुट धारण किए हुए -का० २२९, -(पुं०) शिव।

उष्म:,--ष्मक: [उष्+मक्, कन् च] 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. क्रोध 4. सरगरमी, उत्सुकता, उत्कण्ठा। सम०--**अन्वित** (वि०) क्रुद्ध, -**भास्** (पुं०) सूर्य, --**स्वेद:** वफारा, भाप से स्नान।

उष्मन् (पु०) [उष्+मनिन्] 1. ताप, गर्मी—अर्थोष्मन् --भर्तृ० २।४०, मनु० २।२३१, २।२३, कु० ५।४६, ७।१४ 2. वाष्प, भाप--कु० ५।२३ 3. ग्रीष्म ऋतु 4. सरगरमी, उत्सुकता 5. (व्या० में) श् ष् स् और ह् अक्षर दे० 'ऊष्मन्'।

उस्र: [वस्+रक्, संप्र०] 1. (प्रकाश की) किरण, रश्मि सर्वस्रोतः समर्पयन्विभव नृगुणोदयोक्षते सप्तसप्ति: —मालवि० ३।१३, रघु० ४।६६ कि० ५।३१ 2. साँड 3. देवता,--स्रा 1 प्रभात काल, पौ फटना 2. प्रकाश 3. गाय।

उह् [भ्वा० पर०] (ओहति, ऊढ) 1. चोट मारना, पीड़ित करना 2. मार डालना, नष्ट करना—अप या व्यप के साथ -दे० 'ऊह्'।

उह्, उहह (अव्यय०) बुलाने या पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

उह्य: [वह्+क्यप्, संप्र०] साँड।

ऊ

ऊ: [अवतीति -अव्+क्विप् ऊठ्] 1. शिव 2. चन्द्रमा --(अव्यय०) 1. आरम्भ-सूचक अव्यय 2. (क) बुलाना (ख) करुणा (ग) तथा संज्ञा को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

ऊढ (वि०) [वह्+क्त संप्र०] 1. ढोया गया, ले जाया गया (बोझ आदि) 2. लिया गया 3. विवाहित, -ढ: विवाहित पुरुष,--ढा विवाहिता लड़की। सम० -**कंकट** (वि) कवचधारी, -**भार्य** (वि०) जिसने विवाह कर लिया है, **वयस:** नवयुवक।

ऊढि: (स्त्री०) [वह्--क्तिन्] विवाह।

ऊति: (स्त्री०) [अव्+क्तिन्] 1. बुनना, सीना 2. सरक्षा 3. उपभोग 4. क्रीड़ा, खेल।

ऊधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन्, ऊध आदेश:] ऐन, औड़ी (बहुधैर्हि समास में बदल कर 'ऊधन्' हो जाता है)।

ऊधस्य, ऊधस्य [ऊधस् (न्)+यत्] दूध (औड़ी से उत्पन्न) ऊधस्यमिव्वागि तवोपयोक्तुम् रघु० २।६६।

ऊन [वि०] [ऊन् अव्+क] 1. अभावग्रस्त, अपूर्ण, कम --किंचिदूनन्यूनपूर्वे चन्द्रामृत उयौ -रघु० १०।१ अपूर्ण अपर्याप्त 2 (संख्या, आकार या अंश में) अपेक्षाकृत कम ऊनद्विवर्षं नियतेर: यात्र० ३।१, दो वर्ष से कम आयु का 3. अपेक्षाकृत दुर्बल, घटिया--ऊन न सत्त्वमधिका बबाधे रघु० २।२४ 4. घटा कर (संख्याओं के साथ इसी अर्थ में) **एकोन**=एक घटा कर, --**विंशति:** एक घटाकर बीस=१९।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊम् (अव्य०) [ऊय् + मुक्] (क) प्रश्नवाचकता (ख) क्रोध (ग) भर्त्सना, दुर्वचन (घ) धृष्टता और (ङ) ईर्ष्या को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

ऊय् (स्वा० आ०) (ऊयते, ऊत) बुनना, सीना।

ऊररी=दे० उररी।

ऊरव्य (स्त्री० **व्या**) [ऊरु + यत्] वैश्य तृतीय वर्ण का पुरुष (ब्रह्मा या पुरुष की जंघाओं से पैदा होने के कारण) तु०, मनु० १।३१, ८७।

ऊरुः (पु०) [ऊर्णु+कु, नुडागमः] 1. जंघा—ऊरू तदस्य गद्देश्यः —ऋक् १०।९०।१२। सम०—**अरुोद्भव** जंघा और घुटना,—**उद्भव** (वि०) जंघा से उत्पन्न—**ज, जन्मन्, -संभव** (वि०) जंघा से उत्पन्न—(पु०) वैश्य,—**बन्ध,—द्वयस,**—**मात्र** (वि०) जंघाओं तक पहुंचने वाला, घुटनों तक,—**पर्वन्** (पुं०) (नपुं०) घुटना, **फलकम्** जांघ की हड्डी, कूल्हे की हड्डी।

ऊररी=दे० उररी।

ऊर्ज (स्त्री०) [ऊर्ज् + क्विप्] 1. सामर्थ्य, बल 2. सत्व, भोजन।

ऊर्ज् ऊर्ज् + णिच् + अच्] 1. कार्तिक का महीना शि० ६।५० 2. स्फूर्ति 3. शक्ति, सामर्थ्य 4. प्रजननात्मक शक्ति 5. जीवन, प्राण,—र्जा 1. भोजन, 2. स्फूर्ति 3. सामर्थ्य, सत्व 4. वृद्धि।

ऊर्जस् (नपुं०) [ऊर्ज्—असुन्] 1. बल, स्फूर्ति 2. भोजन।

ऊर्जस्वत् (वि०) [ऊर्जस् + मतुप्] 1. भोज्य-समृद्ध, रसीला 2. शक्तिशाली।

ऊर्जस्वल (वि०) [ऊर्जस् + वलच्] बड़ा शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर— रघु० २।५०, भट्टि० ३।५५।

ऊर्जस्विन् (वि०) [ऊर्जस्—विन्] ताकतवर, दृढ़, बड़ा।

ऊर्जित (वि०) [ऊर्ज् + क्त] 1. शक्तिशाली, बृढ़, ताकतवर मानुकं च धनरूर्जितं दधत् रघु० ११।६४, बलशाली, दृढ़ (बाणौ)-शि० १६।३८ 2. पुष्ट, बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर श्रीः- शि० १६।८५, मकरोर्जित केतनम् रघु० ९।३९ 3. उच्च, भव्य, तेजस्वी —°आश्रय वपुः—कि० २।१ जोशीला या शानदार,—**तम्** 1. सामर्थ्य, ताकत 2. स्फूर्ति।

ऊर्णम् [ऊर्ण् + ड] 1. ऊन 2. ऊनी वस्त्र। सम०—**नाभः, -नाभिः**,—**पटः** मकड़ी—**भव, -वस्** (वि०) ऊन की भांति नरम।

ऊर्णा [ऊर्ण+टाप्] 1. ऊन— रघु० १६।८७ 2. भौंहों का मध्यवर्ती केशपुंज। सम० **पिंडः** ऊन का गोला।

ऊर्णायु (वि०) [ऊर्णा + यु] ऊनी,—**युः** 1. मेंढा 2. मकड़ी —°भामि० १।९० 3. ऊनी कंबल।

ऊर्णु (अदा० उभ०) (ऊर्णोति (र्णौति), उर्णुते ऊर्णित) ढकना, घेरना, छिपाना—भट्टि० १४।१०३, शि० २०।१४ (घेरे०) ऊर्णायति, (इच्छा०) ऊर्णुनूषति, उर्णुनु षिपति; **प्र**—ढकना, छिपाना आदि।

ऊर्ध्व (वि०) [उद् + हा+ड पृषो० ऊर् आदेशः] 1. सीधा, खड़ा, ऊपर का, ऊँचे आदि, ऊपर की ओर उठता हुआ 2. उठाया हुआ, उन्नत, सीधा खड़ा —°हस्तः, °पादः आदि 3. ऊँचा, बढ़िया, अपेक्षाकृत ऊँचा या ऊपर का 4. खड़ा हुआ (विप० **आसीन**) 5. फटा हुआ, टूटा हुआ (**बाल** आदि), **र्ध्वम्** उन्नतता, ऊँचाई, **र्ध्वम्** (अव्य०) 1. ऊपर की ओर, ऊँचाई पर, ऊपर 2. बाद में (=उपरिष्टात्) 3. ऊँचे स्वर से जोर से 4. बाद में, पश्चात् (अपा० के साथ) —ते व्यहादूर्ध्वमाख्याय—कु० ६।९३, रघु० १४।६६। सम० **-केश, -केशा** (वि०) 1. खड़े बालों वाला 2. जिसके बाल टूट गये हों (—**चः**) केतु, **कर्मन्** (नपुं०) **क्रिया** 1. ऊपर की गति 2. ऊँचा पद प्राप्त करने के लिए चेष्टा (—पुं०) विष्णु,—**काय**ः,—**कायम्** शरीर का ऊपरी भाग, **गः,—गामिन्** (वि०) ऊपर जाने वाला, चढ़ा हुआ, उठता हुआ,—**गति** (वि०) ऊपर की ओर जाने वाला (स्त्री० **तिः**) **गमः,—गमनम्** 1. चढ़ाव, उन्नतता 2. स्वर्ग में जाना, **चरण, -पाद** (वि०) ऊपर को पैर किये हुए (**-गः**) शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु,—**जानु, -ज्ञ**,—**ज्ञु** (वि०) 1. घुटने उठाये हुए, घुटनों के बल बैठा हुआ—शि० ११।११ 2. उकड़ूं बैठा हुआ, **दृष्टि,—नेत्र** (वि०) 1. ऊपर को देखता हुआ 2. (आलं०) उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी (स्त्री० **टिः**) भौंओं के बीच में अपनी दृष्टि को संकेन्द्रित करना (यो० द०), **—देह** अन्त्येष्टि संस्कार,—**पातनम्** ऊपर चढ़ाना, परिष्करण (जैसे सोने का), **—पात्रम्** यज्ञीय पात्र—याज्ञ० १।१८२, **मुख** (वि०) ऊपर को मुंह किये हुये, उन्मुख -कु० १।१६, रघु० ३।५७,- **मौहूर्तिक** (वि०) थोड़ी देर के पश्चात् होने वाला, **रेतस्** (वि०) अनवरत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्त्री-समागम से सदैव विरत रहने वाला,-(पुं०) 1. शिव 2. भीष्म, **लोकः** ऊपर की दुनिया, स्वर्ग, **-वतमन्** (पु०) पर्यावरण, **-वातः,—वायुः** शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाली वायु,—**शायिन्** (वि०) ऊपर को मुंह (बच्चे की भांति) करके चित सोया हुआ—(पुं०) शिव,—**शोधनम्** वमन करना,—**श्वासः** सांस छोड़ना, प्राण त्यागना,—**स्थितिः** (स्त्री०) 1. अश्व पालन 2. घोड़े की पीठ 3. उन्नतता, श्रेष्ठता।

ऊर्मिः (पु०, स्त्री०) [ऋ्+मि, आर्तेरुच्च] 1. लहर, झाल- पयोवेत्रवत्यारुहत्तोर्मि—मेघ० २४ 2. धारा प्रवाह 3. प्रकाश 4. गति, वेग 5. वस्त्र की शिकन या चुन्नट 6. पंक्ति, रेखा 7. कष्ट, बेचैनी, चिन्ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम० --मालिन् (वि०) तरंग मालाओं से विभूषित --(पुं०) समुद्र ।

ऊर्मिका [ऊर्मि+कन्+टाप्] 1. लहर 2. अंगूठी (लहर की भांति चमकीली) 3. खेद, खोई वस्तु के लिए शोक 4. मक्खी का भिनभिनाना 5. वस्त्र में पड़ी शिकन या चुन्नट ।

ऊर्व (वि०) [ऊर्+अ] विस्तृत, बड़ा,—र्वः वडवानल ।

ऊर्वरा [उर्वः शस्यादिकमृच्छति—ऋ+अच्+टाप्] उपजाऊ भूमि ।

ऊलूपिन् [दे० उलूपिन्] शिशुक, सूंस ।

ऊलूक—दे० उलूक ।

ऊष् (स्वा० पर०) (ऊषति) रुग्ण होना अस्वस्थ होना, बीमार होना ।

ऊषः [ऊष्+क] 1. रिहाली धरती 2. अम्ल 3. क्षार, तरेड़ 4. कर्णविवर 5. मलय पर्वत 6. प्रभात, पौ फटना, कुछ लोगों के मतानुसार (षस्) भी ।

ऊषकम् [ऊष+कन्] प्रभात, पौ फटना ।

ऊषणम्-णा [ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. काली मिर्च, 2. अदरक ।

ऊषर (वि०) [ऊष्+रा+क] नमक या रेहकणों से युक्त, रः, रम् बंजर भूमि जो रिहाल हो शि० १४।४६ ।

ऊषवत्=दे० (वि०) ऊषर ।

ऊष्मः [ऊष् + मक्] 1. ताप 2. ग्रीष्म ऋतु ।

ऊष्मण, ष्य (वि०) [ऊष्म + न] [ऊष्मन् + यत्] गर्म, भाप निकालने वाला ।

ऊष्मन् (पुं०) [ऊष्+मनिन्] 1. ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म-ऋतु, निदाघ 3. भाप, वाष्प, उच्छ्वास 4. सरगरमी, जोश, प्रचण्डता 5. (व्या० में) श, ष, स और ह की ध्वनियां । सम० -उपगमः ग्रीष्म ऋतु का आगमन, --य: 1. अग्नि 2. पितरों की (ब० व० में) एक श्रेणी ।

ऊह् (स्वा० उभ०) (ऊहति ते, ऊहित) 1. ढांकना, अंकित करना, अवेक्षण करना 2. अटकल लगाना, अंदाज करना, अनुमान लगाना अनुक्तमप्यूहति पण्डिता जनः पंच० १।४३ 3. समझना, सोचना, पहचानना, आशा करना—ऊहाञ्चक्रे जयं न च—भट्टि० १४।७२ 4. तर्क करना, विचार करना-- (प्रेर०) तर्क या चिन्तन करवाना, अनुमान या अटकल लगवाना --किं० १६।१९, अप-, 1. हटाना, दूर करना-- महि विज्ञानमपोहति पं० ३।१ 2. तुरन्त अनुकरण करना, अपवि—, रोकना, हटाना, अभि-, अटकल लगाना अंदाज लगाना 2. ढकना, उप-, निकट लाना, निवि--, सम्पन्न करना, प्रकाशित करना (दे० निर्व्यूढ) परिसम् --, इधर-उधर छिड़कना, प्रति—, 1. विरोध करना, बाधा डालना, रुकावट डालना 2. मुकरना (दे० प्रत्यूह) प्रतिवि--, शत्रु के विरुद्ध सैनिक मोर्चा लगाना, वि—, युद्ध के अवसर पर सेना की व्यवस्था करना सूच्या वज्रेण चैवेतान् व्यूहेत व्यूह्य योधयेत् -- मनु० ७।१९१, सम्-, एकत्र करना, इकट्ठे होना ।

ऊहः [ऊह्+घञ्] 1. अटकल, अंदाज 2. परीक्षण, निर्धारण 3. समझ-बूझ 4. तर्कना, युक्ति देना 5. अध्याहार (न्यूनपद की पूर्ति) करना । सम० -अपोहः पूरी चर्चा, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियों पर पूरा सोच-विचार,-- शक्ति० २।७४ दे० अपोह ।

ऊहनम् [ऊह्+ल्युट्] अनुमान लगाना, अटकलबाजी ।

ऊहनी [ऊहन +ङीप्] आड़, बुहारी ।

ऊहिन् (वि०) [ऊह्+इनि] तर्क करने वाला, अनुमान लगाने वाला,—नी 1. सघन, संदल 2. क्रम, क्रमबद्ध समुदाय (तु० 'अक्षौहिणी')

ऋ

ऋ (अव्य०) (क) बुलाना (ख) परिहास और (ग) निन्दा या अपशब्दसूचक विस्मयादिबोधक अव्यय ।

ऋ i (भ्वा० पर०) (ऋच्छति, ऋत) प्रेर० अर्पयति, इच्छा० अरिरिषति) 1. जाना, हिलना-डुलना—अभ्रच्छायामच्छामृच्छति शि० ४।४४ 2. उठाना, उन्मुख होना ।

ii (जु० पर०) (इर्यति, ऋत) (बहुधा वेद में प्रयुक्त) 1. जाना 2. हिलना-डुलना, डगमग होना 3. प्राप्त करना, अवाप्त करना, अधिगत करना, भेंट होना, 4. चलायमान करना, उत्तेजित करना ।

iii (स्वा० पर०) (ऋणोति, ऋण) 1. चोट पहुंचाना, घायल करना 2. आक्रमण करना--प्रेर० - (अर्पयति, अर्पित) 1. फेंकना, डालना, स्थिर करना या जमाना --रघु० ८।८७ 2. रखना, स्थापित करना, स्थिर करना, निर्देश देना या (आंख आदि को) फेरना 3. रखना, सम्मिश्रित करना, देना, बैठा देना, जमा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देना 4. सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, हवाले कर देना इति सुतस्याभरणान्यर्पयति शi० १।४, १९।

ऋकण (वि०) [ऋच्छ्+क्त पृषो० वलोपः] घायल, क्षत-विक्षत, आहत।

ऋक्थम् [ऋच्+थक्] 1. धन-दौलत 2. विशेषकर सम्पत्ति, हस्तगत सामग्री या सामान (मृत्यु हो जाने पर छोड़ा हुआ), दे० 'रिक्थ' 3. सोना। सम० - **ग्रहणम्** प्राप्त करना या उत्तराधिकार में (संपत्ति) पाना,—**ग्राहः** उत्तराधिकारी या संपत्ति का प्राप्तकर्ता, - **भागः** 1. संपत्ति का बंटवारा, विभाजन 2. अंश, दाय, - **भागिन्, हर, -हारिन्** (पुं०) 1. उत्तराधिकारी 2. सह उत्तराधिकारी।

ऋक्षः [ऋष्+स किच्च] 1. रीछ– मनु० १२।६७ 2. पर्वत का नाम, **क्षः, - क्षम्** 1. तारा, तारकपुंज, नक्षत्र मनु० २।१०१ 2. राशिमाला का चिह्न, राशि, - **क्षाः** (पु०ब० व०) हस्तिका-मंडल के सात तारे, जो बाद में सप्तर्षि कहलाये रघु० १२।२५, —**क्षा** उत्तर दिशा, - **क्षी** रीछनी, मादा भालू। सम० —**चक्रम्** तारामंडल,—**नाथः,—ईशः** 'तारों का स्वामी' चन्द्रमा,—**भेदिः** विष्णु. **राज्,** - **राजः** 1. चन्द्रमा 2. रीछों का स्वामी, जाम्बवान्, - **हरीश्वरः** रीछों और लंगूरों का स्वामी रघु० १३।७२।

ऋक्षरः [ऋष् + क्सरच्] 1. ऋग्विज् 2. काँटा।

ऋक्षवत् [ऋक्ष+मतुप्-मस्य वः] नर्मदा के निकट स्थित एक पहाड़,—वप्रक्रियामृक्षवतस्तटेषु - रघु० ५।४४; ऋक्षवन्त गिरिश्रेष्ठमध्यास्ते नर्मदा शिवम्—रामा०।

ऋच् (तुदा० पर०) (ऋचति) 1. प्रशंसा करना, स्तुति गाना करना 2. ढकना, पर्दा डालना 3. चमकना।

ऋच (स्त्री०) [ऋच्+क्विप्] 1. सूक्त 2. ऋग्वेद का मंत्र, ऋचा (विप० **यजुस्** और **सामन्**) 3. ऋक्संहिता (ब० व०) 4. दीप्ति ('रुच्' के लिए) 5. प्रशंसा 6. पूजा। सम०- **विधानम्** ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करके कुछ संस्कारों का अनुष्ठान,—**वेदः** चारों वेदों में सबसे पुराना वेद, हिन्दुओं का अत्यंत पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ,—**संहिता** ऋग्वेद के सूक्तों का क्रमबद्ध संग्रह।

ऋचीषः [ऋच्+ईषन्] चण्टी,- **षम्** कड़ाही।

ऋच्छ् (तुदा० पर०) (ऋच्छति) 1. कड़ा, या सख्त होना 2. जाना 3. क्षमता का न रहना।

ऋच्छका [ऋच्छ+कन्+टाप्] कामना, इच्छा।

ऋज् I (स्वा० आ०) (अर्जते, ऋजित) 1. जाना 2. प्राप्त करना, हासिल करना 3. खड़े होना या स्थिर होना 4. स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट होना।

II (स्वा० पर०) अवाप्त करना, उपार्जन करना, तु० 'अर्ज्'।

ऋजीषः - दे० 'ऋचीषः'।

ऋजु, ऋजुक (वि०) [अर्जयति गुणान्, अर्ज्+उ] (स्त्री० -जु-ध्वी) (म० अ०-ऋजीयस्, उ० अ० ऋजिष्ठ) 1. सीधा (आलं० भी)–उमां स पश्यन् ऋजुनैव चक्षुषा - कु० ५।३२ 2. खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी—पंच० १।४१५ 3. अनुकूल, अच्छा। सम० - **यः** 1. व्यवहार में ईमानदार 2. तीर, **रोहितम्** इन्द्र का सीधा लाल धनुष।

ऋज्वी [ऋजु+ङीप्] 1. सीधीसादी सरल स्त्री 2. तारों की विशेष गति।

ऋणम् [ऋ+क्त] 1. कर्जा (तीनों प्रकार का ऋण, दे० अनृण), **अंशयं ऋणं** (पितृणम्) पितरों को दिया जाने वाला अन्तिम ऋण - अर्थात्—पुत्रोत्पादन 2. कर्तव्यता, दायित्व 3. (बीजगo में) नकारात्मक चिह्न या प्रमाण, घटा-चिह्न (विप०-धन) 4. किला, दुर्ग 5. पानी 6. भूमि। सम० **अन्तकः** मंगल ग्रह, - **अपनयनम्,-अपनोदनम्,-अपाकरणम्,-दानम्,** —**मुक्तिः, मोक्षः, - शोधनम्** ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना, **आदानम्** कर्जा समूल करना, उधार दिया हुआ द्रव्य वापिस लेना, **ऋणभृत्** (ऋणार्णभृत्) एक कर्ज के लिए दूसरा कर्ज, एक ऋण चुकाने के लिए दूसरा ऋण ले लेना,—**ग्रहः** 1. रुपया उधार लेना 2. उधार लेने वाला,—**दासः,—वाहिन्** (वि०) जो ऋण दे देता है,—**दासः** वह क्रीत दास जिसका ऋण परिशोध करके उसे लिया गया है—**ऋणमोचनेन दास्यत्वमस्योपगतः** ऋणदासः—मिता०,—**मत्कुणः, — मार्गणः** प्रतिभूति, जमानत,—**मुक्त** (वि०) ऋण से मुक्त, - **मुक्तिः** आदि दे० 'ऋणापनयनम्', —**लेख्यम्** 'ऋण-बन्धपत्र' तमस्सुक जिसमें ऋण की सर्वकृति दर्ज हो (विधि में)।

ऋणिकः [ऋण+ठन्] कर्जदार याज्ञ० २।५६, ९२।

ऋणिन् (वि०) [ऋण+इनि] कर्जदार, ऋणग्रस्त, अनुगृहीत (किसी भी बात से)।

ऋत (वि०) [ऋ+क्त] 1. उचित, सही 2. ईमानदार, सच्चा—भग० १०।१४ 3. पूजित, प्रतिष्ठाप्राप्त - **तम्** (अव्य०) सही ढंग से, उचित रीति से, - **तम्** (लौकिक साहित्य में इसका प्रयोग प्रायः नहीं मिलता) 1. स्थिर और निश्चित नियम, विधि (याज्ञिक) 2. पावन प्रथा 3. दिव्य नियम, दिव्य सचाई 4. जल 5. सचाई, अधिकार 6. खेतों में उञ्छवृत्ति द्वारा जीविका (विप० **कृषि**), ऋतमुञ्छशिलं वृत्तम्-मनु० ४।४। सम० - **भाषिन्** (वि०) सच्चे या पवित्र स्वभाव वाला,-(पुं०) विष्णु।

ऋतीया [ऋत+ईयङ्+टाप्] निन्दा, भर्त्सना।

ऋतु [ऋ+तु, कित्] 1. मौसम, वर्ष का एक भाग, **ऋतुर्**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिनती में छः हैं : शिशिरश्च वसन्तश्च ग्रीष्मो वर्षा शरद्धिमः - कभी कभी ऋतुएँ पाँच समझी जाती हैं (शिशिर और हिम या हेमन्त एक गिने जाने पर) 2. युगारंभ, निश्चित काल 3. आर्तव, ऋतुस्राव, माहवारी 4. गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल —वरमृतुषु वैवाभिगमनम् - पंच० १, मनु० ३।४६, याज्ञ० १।११ 5. उपयुक्त मौसम या ठीक समय 6. प्रकाश, आभा 7. छः की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०—काल: , --समय:, --वेला 1. गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुस्राव से लेकर १६ रातें, दे० उ० ऋतु 2 मौसम की अवधि,—कर्म: ऋतुओं का समुदाय, --गामिन् (गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय पर अर्थात् मासिकधर्म के पश्चात्) स्त्री से संभोग करने वाला,—पर्ण: अयोध्या के एक राजा का नाम, अलर्क का पुत्र, इक्ष्वाकु की संतान, (अपना राज्य छिन जाने पर निषध देश का राजा नल जब आवारा दशा में वह राजा ऋतुपर्ण की सेवा में आया। द्यूतक्रीडा में बड़ा कुशल था। अतः उस राजा ने नल से द्यूतक्रीडा सीखी तथा बदले में उसे अश्वसंचालन का काम सिखाया। फलतः इसी की बदौलत राजा ऋतुपर्ण, इससे पूर्व कि दमयन्ती अपना दूसरा पति चुनने के विचार को कार्य में परिणत करे, नल को कुण्डिनपुर पहुँचाने में सफल हुआ),—पर्याय: , — वृत्ति: ऋतुओं का आना-जाना, - मुखम् ऋतु का आरम्भ या पहला दिन —राज: वसन्त ऋतु, -लिंगम् 1. रजःस्राव का लक्षण या चिह्न (जैसे की वसन्त ऋतु में आम के बौर आना) 2. मासिक स्राव का चिह्न, संधि: दो ऋतुओं का मिलन, —स्नाता रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करके विशुद्ध हुई, और इसीलिए संभोग के लिए उपयुक्त स्त्री - धर्मकर्मण्यधिकारो मे मा फलेषु कदाचन - भग० २।४७, स्नानम् रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करना।

ऋतुमती [ऋतु + मतुप् + ङीप्] रजस्वला स्त्री।

ऋते (अव्य०) सिवाय, बिना (अपा० के साथ) — ऋते क्रीर्योसमायातः —भट्टि० ८।१०५ अवेहि मां प्रीतमृते तुरङ्गमात्—रघु० ३।६३ यापादने —शं० ६।२२, कु० १।५१, २।५७, (कभी-कभी कर्म० के साथ) ऋतेऽपि त्वां न मविष्यन्ति सर्वे—भग० ११।३२ (करण० के साथ विरल प्रयोग)।

ऋत्विज् (पु०) [ऋतु + यज् + क्विन्] यज्ञ के पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला, चार मुख्य ऋत्विज—होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा हैं, बड़े २ संस्कारों में ऋत्विजों की संख्या १६ तक होती है।

ऋद्ध (भू० क० कृ०) [ऋध् + क्त] 1. समृद्ध, फलता-फूलता, धनवान्—रघु० १४।३०, २।५०, ५।४० 2. वृद्धि-प्राप्त, वर्धमान 3. जमा किया हुआ (अन्नादिक), —द्धः विष्णु, द्धम् 1. वृद्धि, विकास 2. प्रदर्शित उपसंहार, स्पष्ट परिणाम।

ऋद्धिः (स्त्री०) [ऋध् क्तिन्] 1. विकास, वृद्धि 2. सफलता, समृद्धि, बढ़ोतरी 3. विस्तार, विस्तृति 4. आध्यात्मिक शक्ति, सर्वसिद्धि 5. सम्पन्नता।

ऋध् (दिवा० स्वा० पर० [ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध) 1. समृद्ध होना, समृद्ध होना, फलना-फूलना, सफल होना 2. विकसित होना, बढ़ना (आत्मने० भी) 3. संतुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, मनाना भ्वा० प० ५। २९, सम् - फलना-फूलना।

ऋभुः | अरि स्वर्गे अरिते वा भवरि इति ऋ : ऊ : डु | देवता, विद्वान्। पं०।

ऋभुक्षः [ऋभवो देवा विद्यन्ति यस्मिन् अवेति ऋभु + क्षि-क्विप्] इन्द्र 2. (उत्तर का) स्वर्ग।

ऋभुक्षिन् (पुं०) [ऋभु + क्षि + क्विप्, ऋभवः, यस्य० ब० व० ऋभुक्षा] इन्द्र, बड़े स्वर्गों वाला-इति | इन्द्र।

ऋल्लकः [ ] एक प्रकार के बाजपक्षी या बाज जैसा चोला।

ऋश्यः [ऋश् + क्यप्] सफेद पैरों वाला काला-चित्ता हरिण, —दंष्ट्र हरण। सम० केतु, नयन: 1. अग्निदेव, प्रद्युम्न का पुत्र 2. व्याध।

ऋष् [तुदा० पर० ऋषति, ऋष्ट] 1 जाना, पहुँचना 2. मार डालना, चोट पहुँचाना।

ऋष् (स्वा० पर०—अर्षति) 1 जाना 2 किसकना।

ऋषभः [ऋष् + अभक्] 1. साँड़ 2. श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट (समास के अन्तिम पद के रूप में) यथा पुरुषर्षभः, भरतर्षभः, आदि 3. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा ऋषभोऽत्र गीयते इति-आर्या० ९।२१ 4. सूअर की पूँछ 5. गन्धरस्पिच्छ की पूँछ, भी 1. पुरुष के आकार-प्रकार की स्त्री (जैसे कि दाढ़ी आदि का होना) 2. शाल 1. विष्णु। सम०—कूटः एक पहाड़ का नाम, —ध्वजः शिव।

ऋषिः [ऋष्—इन्, किच्] 1. एक असाधारण कवि या मुनि, मंत्र द्रष्टा 2. पुण्यात्मा मुनि, संन्यासी, विरक्त योगी 3. प्रकाश की किरण। सम० कुल्या पवित्र नदी,—तर्पणम् ऋषियों की सेवा में प्रस्तुत किया गया तर्पण — (अध्यादिक), - पंचमी भाद्रपदकृष्णा पंचमी को होने वाला (स्त्रियों का) एक पर्व, - लोकः ऋषियों का संसार,—स्तोमः 1. ऋषियों का स्तुति-गान, 2. एक दिन में समाप्त होने वाला एक विशेष यज्ञ।

ऋष्टिः (पु० - स्त्री०) [ऋष् + क्तिन्] 1. दुधारी तलवार 2. (सामान्यतः) तलवार, कृपाण 3. शस्त्र (बर्छी, भाला आदि)।

ऋष्यः [ऋष्—क्यप्] सफेद पैरों वाला बारहसिंघा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिण। सम०—अंकः,—क्षेतनः,—केतुः अनिरुद्ध,—मुकः पंपा सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहां कुछ दिनों तक राम वानरराज सुग्रीव के साथ रहे थे ऋष्यमूकस्तु पम्पायाः पुरस्तात्पुष्पितद्रुमः;—शृङ्गः एक मुनि का नाम (यह विभाण्डक का पुत्र था, इसके पिता ने जंगल में ही इसका पालन-पोषण किया, जब तक यह वयस्क न हुआ तब तक इसने किसी दूसरे मनुष्य को नहीं देखा। जब अनावृष्टि के कारण अंगदेश बर्बाद सा हो गया तो उसके राजा लोमपाद ने, ब्राह्मणों के परामर्शानुसार ऋष्यशृंग को कुछ कन्याओं द्वारा बुलाया, और अपनी पुत्री शान्ता (यह दत्तक पुत्री थी, इसके वास्तविक पिता राजा दशरथ थे) का विवाह इनसे कर दिया। ऋष्यशृंग ने इस बात से प्रसन्न होकर उसके राज्य में पर्याप्त वर्षा कराई। यही वह ऋषि था जिसने राजा दशरथ के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान किया—जिसके फलस्वरूप राम और उनके तीन भाइयों का जन्म हुआ)।

ऋष्यकः [ऋष्य+कन्] चित्तीदार सफेद पैरों वाला बारहसिंगा हरिण।

ऋ

ऋ (अव्य०) (क) त्रास (ख) दुरदुराना (ग) भर्त्सना, निन्दा (घ) करुणा तथा (ङ) स्मृति का व्यंजक विस्मयादिद्योतक अव्यय (पुं०—ऋः) 1. भैरव 2. एक राक्षस।

ऋ (क्र्या० पर० -ऋणाति, ईर्ण) जाना, हिलना-डुलना।

ए

एः (पुं०) [इ+क्विप्] विष्णु, (अव्य०) (क) स्मरण (ख) ईर्ष्या (ग) करुणा (घ) आमन्त्रण और (ङ) घृणा तथा निन्दा व्यंजक (विस्मयादि द्योतक) अव्यय।

एक (सर्व० वि०) [इ+कन्] 1. एक, अकेला, एकाकी, केवल मात्र 2. जिसके साथ कोई और न हो 3. वही, बिल्कुल वही, समरूप—मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्—हि० १।१०१ 4. स्थिर अपरिवर्तित 5. अपनी प्रकार का अकेला, अद्वितीय, एक वचन 6. मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख, अनन्य—एको राशिर्यु राजते—भर्तृ० ३।१२१ 7. अनुपम, बेजोड़ 8. दो या बहुत में से एक—मेघ० ३०।७८ 9. बहुधा अंग्रेजी के अनिश्चयवाचक निपात (a या an) की भांति प्रयुक्त—ज्योतिरेकं—श० ५।३०, एक, दूसरा; 'कुछ' अर्थ को प्रकट करने के लिए बहुवचनांत प्रयोग: अन्ये, अपरे इसके सहसम्बन्धी शब्द हैं। सम०—अक्ष (वि०) 1. एक धुरी वाला 2. एक आंख वाला (-क्षः) 1. कौवा 2. शिव,—अक्षर (वि०) एक अक्षर वाला (—रम्) 1. एक अक्षर वाला 2. प्रणव अक्षर 'ओम्'—अग्र (वि०) 1. केवल एक पदार्थ या बिन्दु पर स्थिर 2. एक ही ओर ध्यान में मग्न, एकाग्रचित्त, तुला हुआ,—रघु० १५।६६, मनुमेकाग्रमासीनम्—मनु० २९ १।१ 3. अव्यय, अचंचल,—अग्र=°अग्र (—ग्रम्) एकायता,—अंगः 1. शरीर रक्षक 2. मंगलग्रह या बुध ग्रह,—अनुदिष्टम् अन्त्येष्टि संस्कार जो केवल एक ही पूर्वज (सद्यो मृत) को उद्देश्य करके किया गया हो, अंत (वि०) 1. अकेला 2. एक ओर, पार्श्व में 3. जो केवल एक ही पदार्थ या बिन्दु की ओर निर्दिष्ट हो 4. अत्यधिक, बहुत—कु० १।३६ 5. निरपेक्ष, अचल, सतत—स्थायत्तमेकान्तगुणम्—भर्तृ० २।७, मेघ० १०९, (-तः) एकमात्र आश्रय, निश्चित नियम—तेजः क्षमा वा नैकान्तं कालज्ञस्य महीपतेः—शि० २।८३, (—तम्, तेन,—ततः,—तो) (अव्य०) 1. केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत 2. अत्यन्त, बिल्कुल, सर्वथा—श्रयमप्येकान्ततो निःस्पृहः—भर्तृ० ३।२४, दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९,—अन्तर (वि०) अगला, जिसमें केवल एक का ही अन्तर रहे, एक के बाद एक को छोड़ कर -श० ७।२७,—अंतिक (वि०) अन्तिम निर्णायक,—अयन (वि०) 1. जहां से केवल एक ही जा सके, (जैसे कि पगडंडी या बटिया) 2. नितान्त ध्यानमग्न, तुला हुआ दे० एकाग्र (—नम्) 1. एकान्त स्थल या विश्राम स्थली 2. मिलने का स्थान, संकेत-स्थल 3. अद्वैतवाद 4. केवलमात्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देश्य—सा स्मेहस्य एकायनीभूता—मालवि० २।१५, —अर्थः 1. वही वस्तु, वही पदार्थ या वही आशय 2. वही भाव,—अहन् (हः) 1. एक दिन का समय 2. एक दिन तक चलने वाला यज्ञ,—आतपत्र (वि०) एकछत्र से विशिष्टीकृत (विश्वभर को प्रभुता को दर्शाने वाला)—एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम् रघु० २। ४७, शि० १२।३३ विक्रम० ३।१९, आदेशः दो या दो से अधिक अक्षरों का एक स्थानापन्न (या तो एक स्वर का लोप करके या दोनों को मिला कर प्राप्त किया गया) जैसे कि 'एकायन' में आ,—आवलिः, —ली (स्त्री०) मोतियों की या अन्य मनकों की एक लड़, -एकावली कण्ठविभूषणं वः—विक्रमांक० १।३०, लतावितपे एकावली लम्बा—विक्रम० १।२. (अलं० शा० में) ऐसी उक्तियों की पंक्ति जिसमें कर्ता का विधेय और विशेष का कर्ता के रूप में नियमित संक्रमण पाया जाय—व्यत्यपेतप्रोहाते वापि यथापूर्वं परस्परम्, विशेषणतया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा —काव्य० १०,—उदकः (सबंधी) जो एक ही मृत पूर्वज से जल के तर्पण द्वारा संबद्ध हो। —उदरः,—रा सगा (भाई या बहन), -उद्दिष्टम् श्राद्धकृत्य जो केवल एक ही मृत व्यक्ति को (दूसरे पूर्वजों को सम्मिलित न करके) उद्देश्य करके किया गया हो, -ऊन (वि०) एक कम, एक घटाकर, -एक (वि०) एक एक करके, व्यष्टिरूप से, एक अकेला—रघु० १७।४३, (-कम्)—एककः (अव्य०) एक२ करके, व्यक्तिशः, पृथक्-पृथक्, —ओघः एक सतत धारा,—कर (वि०) (स्त्री० —री) 1. एक ही कार्य करने वाला 2. (-रा) एक ही हाथ वाली 3. एक किरण वाली,—कार्य (वि०) मिलकर काम करने वाला, सहयोगी, सहकारी (—र्यम्) एक मात्र कार्य, वही कार्य,—कालः 1. एक समय 2. उसी समय, -कालिक,—कालीन (वि०) 1. केवल एक बार होने वाला 2. समवयस्क, समसामयिक,—कुडलः कुबेर, बलभद्र, शेषनाग,—गुड, —गुडक (वि०) एक ही गुरु वाला (—कः,—कम्) गुरुभाई,—चक्रः (वि०) 1. एक ही पहिये वाला 2. एक ही राजा द्वारा शासित, (—क्रः) सूर्य का रथ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) इकतालीस,—चर (वि०) 1. अकेला घूमने या रहने वाला—कि १२।३, 2. एक ही अनुचर रखने वाला 3. असहाय रहने वाला —चारिन् (वि०) अकेला, (—णी) पतिव्रता स्त्री, —चित्त (वि०) केवल एक ही बात को सोचने वाला (—त्तम्) 1. एक ही वस्तु पर चित्त की स्थिरता 2. ऐकमत्य—एकचित्तीभूय - हि० १—एक मत से, —चेतस्,—मनस् (वि०) एक मत, दे० °चित्त, —जन्मन् (पुं०) 1. राजा 2. शूद्र, दे० नी०, °जाति —जात एक ही माता-पिता से उत्पन्न,—जातिः शूद्र (विप० द्विजन्मन्) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः, चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः —मनु० १०।४, ८।२७०,—जातीय (वि०) एक ही प्रकार का या एक ही परिवार का, -ज्योतिस् (पुं०) शिव,—तान (वि०) केवल एक पदार्थ पर स्थिर या केन्द्रित, नितान्त ध्यानमग्न—ब्रह्मैकतानमनसो हि वशिष्ठमिश्राः—महावी० ३।११,—तालः संगति, गीतों का यथार्थ समंजन, नृत्य, वाद्य यंत्र (तु० तौर्यत्रिकम्) —तीर्थिन् (वि०) 1. उसी पावन जल में स्नान करने वाला 2. एक ही धर्मसंघ से संबंध रखने वाला—याज्ञ० २।१३७,—(पुं०) सहपाठी, गुरुभाई, -त्रिंशत् (स्त्री०) इकतीस,—दंष्ट्रः,- दन्तः 'एक दांत वाला', गणेश का विशेषण,—दंडिन् (पुं०) सन्यासियों या भिक्षुओं की एक समुदाय, (जो 'हंस' कहलाते हैं) इनके चार भेद हैं:—कुटीचरो बहूदकी हंसश्चैव तुरीयकः, चतुर्थः परमहंसश्च यो यः पश्चात्स उत्तमः। हारीत",--दृश्, दृष्टि (वि०) एक आंख वाला, -(पुं०) 1. कौवा 2. शिव 3. दार्शनिक,—देवः परब्रह्म, —देशः 1. एक स्थान या स्थल 2. (समग्र का) एक भाग या अंश,—एक पार्श्व—तत्पश्चेदेषः -उत्तर ०४, विभाषितैकदेशेन दैवं चेदभियुज्यते— विक्रम० ४।१७, जिस अंश का दावा किया जाता है, वह उसी व्यक्ति के द्वारा दिया जाना चाहिए जो उसके एक अंश का प्राप्तकर्ता प्रमाणित हो जाय (इसी बात को कभी-कभी 'एकदेशविभावितन्याय' कहते हैं) -धर्मन्, -धर्मिन् 1. एक ही प्रकार के गुणों को रखने वाला, या एक ही प्रकार की संपत्ति को रखने वाला 2. एक ही धर्म को मानने वाला, --धुर्,—धुराधह,—धुरीण (वि०) 1. जो एक ही प्रकार कर सके 2. जो एक ही प्रकार से जुत सके (जैसे कि विशेष बोझ के लिए कोई पशु) —पाo ४।४।७९,—नंदः नाटक में प्रधान पात्र, सूत्रधार जो नान्दीपाठ करता है,— नदतिः (स्त्री०) इक्यानवे,—पक्षः एक पक्ष या दल—°आश्रय विस्लब्धत्वात्—रघु० १४।३४,—पत्नी 1. पतिव्रता स्त्री (पूर्णतः सती साध्वी) 2. सपत्नी, सौत —सर्वासामेकपत्नीनामेका चेत्पुत्रिणी भवेत्— मनु० ९।१८३,—पदी पगडंडी,—पदे (अव्य०) अकस्मात्, एकदम, अचानक—निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव—शि० २।९५, रघु० ८।४८,--पाद: 1. एक या अकेला पैर 2. एक या वही चरण 3. विष्णु, शिव, —पिंगः, -पिंगलः कुबेर,—पिंड (वि०) अन्त्येष्टि पिंड-दान के द्वारा संयुक्त,— भार्या एक पतिव्रता और सती स्त्री, (—र्यः) केवल एक पत्नी रखने वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--भाव (वि०) सच्चा भक्त, ईमानदार, --यष्टिः, यष्टिका मोतियों की एक लड़ी, योनि (वि०) 1. सहोदर 2. एक ही कुल या जाति के—मनु० ९।१४८, --रसः 1. उद्देश्य या भावना की एकता 2. केवल मात्र रस या आनन्द, --राज्,---राजः (पुं०) निरंकुश या स्वेच्छाचारी राजा,---रात्रः एक पूरी रात तक रहने वाला पर्व ,रिक्थिन्(पुं०)सह-उत्तराधिकारी,- रूप (वि०) 1. एक सा, समान 2. समरूप,—लिंगः 1. एक ही लिंग रखने वाला शब्द 2. कुबेर. वचनम् एक संख्या को प्रकट करने वाला शब्द,---वर्णः एक जाति, --वर्णिका एक वर्ण की धड़िया -वाक्यता अर्थ की संगति, ऐकमत्य, विभिन्न उक्तियों का सामंजस्य, --वारम्,- बारे (अव्य०) 1. केवल एक बार 2. तुरन्त, अकस्मात् 3. एक ही समय, विंशतिः (स्त्री०) इक्कीस,— विलोचन (वि०) एक आँख वाला दे० एकदृष्टि,—विधयिन् (पु०) प्रतिद्वन्द्वी,---वीरः प्रमुख योद्धा या सूरवीर महावी० ५।४८, वेणिः, ---णी (स्त्री०) बालों की एक मात्र चोटी (जिसे स्त्री पति-वियोग के चिह्न स्वरूप धारण करती है) गण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण---मेघ० ९३, शा० ७।२९,--शफ (वि०) अखंड खुर वाला (-फः) ऐसा पशु जिसके खुर या सुम फटे हुए न हों जैसे घोड़ा गधा आदि,—शरीर (वि०) रक्तसंबद्ध एक खून का, °अन्वयः एक ही गोत्र की सन्तान °अवयवः एक रक्त के बन्धु बान्धव,--शाखः एक ही शाखा या विचार का ब्राह्मण,—शृङ्ग (वि०) केवल एक सींग धारी (—गः) 1. अश्वघोड़ा, गेंडा 2. विष्णु,- शेषः 'एकशेष' द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमें केवल एक ही पद अवशिष्ट रहता है-- उदा० 'पितरौ' माता और पिता (--मातापितरौ) इसी प्रकार 'श्वसुरौ' 'भ्रातरः' आदि,—श्रुत (वि०) एक ही बार सुना हुआ °धर (वि०) एक बार सुनी हुई बात को ध्यान में रखने वाला,- श्रुतिः (स्त्री०) एकरूपता,--सप्ततिः (स्त्री०) इकहत्तर,--सर्ग (वि०) निर्जात ध्यानमग्न, ---साक्षिक (वि०) एक व्यक्ति द्वारा देखा हुआ, --हायन (वि०) एक वर्ष की आयु का --या० ४।८, उत्तर० ३।२८, (- नी) एक वर्ष की बछिया।

एकक (वि०) [एक+कन्] 1. इकहरा, अकेला, एकाकी, बिना किसी सहायक के --उत्तर० ५।५ 2. वही, समरूप।

एकतम (वि०) [नपुं०—तमत्, स्त्री० तमा) [एक + इनमच्] 1. बहुतों में से एक 2. एक (अनिश्चयवाचक रूप में प्रयुक्त)।

एकतर (नपुं०—तरम्) [एक+इतरच्] 1. दो में से एक, कोई सा 2. दूसरा, भिन्न 3. बहुतों में से एक।

एकतः (अव्य०) [एक+तसिल्] 1. एक ओर से, एक ओर 2. एक एक करके, एक एक, एकतःअन्यतः एक ओर, दूसरी ओर—रघु० ६।८५, कि० ५।२।

एकत्र (अव्य०) [एक+त्रल्] 1. एक स्थान पर 2. इकट्ठे, सब इकट्ठे मिल कर।

एकदा (अव्य०) [एक+दा] 1. एक बार, एक दफा, एक समय 2. उसी समय, सर्वथा एक बार, साथ ही साथ—हि० ४।९३।

एकधा (अव्य०) [एक+धा] 1. एक प्रकार से 2. अकेले 3. तुरन्त, उसी समय 4. मिलकर, साथ साथ।

एकाल (वि०) [एक+ला+क] अकेला, एकाकी---उत्तर० ४।

एकशः (अव्य०) [एक+शस्] एक एक करके, अकेले।

एकाकिन् (वि०) [एक+आकिनच्] अकेला, केवल एक।

एकादशन् (सं० वि०) [एकेन अधिका दश इति] ग्यारह।

एकादश (वि०) (स्त्री० शी) ग्यारहवाँ,—शी चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, विष्णु संबंधी पुनीत-दिवस। सम०—द्वारम् शरीर के ग्यारह छिद्र दे० 'ख', रुद्राः (ब० व०) ११ रुद्र--दे० रुद्र।

एकीभावः [एक+च्वि+भू+घञ्] 1. संहति, साहचर्य 2. सामान्य स्वभाव या गुण।

एकीय (वि०) [एक+छ] एक का या एक से—यः तरफदार, सहकारी।

एज् (भ्वा० आ० [म० का० में पर०) एजते, एजित) 1. कांपना 2. हिलना-डुलना, 3. चमकना (पर०), अप --, दूर हाँक देना, उद्—, उठना, ऊपर को होना।

एजक (वि०) [एज्+ण्वुल्] कांपता हुआ, हिलता हुआ।

एजनम् [एज्+ल्युट्] कांपना, हिलना।

एठ् (भ्वा० आ०--एठते, एठित) छेदना, रोकना, विरोध करना।

एड (वि०) [इल्+अच्, इलयोरभेदः] बहरा,—डः एक प्रकार की भेड़, सम०—मूक (वि०) 1. बहरा और गूंगा—तु० अनेडमूक 2. दुष्ट, कुटिल।

एडकः [एड--कन्] 1. भेड़ा, 2. जंगली बकरा,—का, भेड़ी।

एणः, एणकः [एति वृत्तं गच्छति इति—इ+ण, एण+कन् च] एक प्रकार का काला बारासिंघा हरिण, निम्नांकित श्लोक में अनेक प्रकार के हरिणों का उल्लेख है: ---अनूचो माणको ज्ञेय एणः कृष्णमृगः स्मृतः, हरीगौरः मृतः प्रोक्तः शंबरः शोण उच्यते। सम०—अजिनम् मृगचर्म,—तिलकः,—भृत् चन्द्रमा, इसी प्रकार °अंकः, °लांछनः आदि,--दृश् (वि०) हरिण जैसी आँखों वाला,-(पुं०) मकर राशि।

एणी [एण+ङीष्] काली हरिणी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एल (वि०) (स्त्री०—एला, एली) रंगबिरंगा, चमकीला —ल: हरिण या बारासिंघा।

एतद् (सर्व० वि०) (पुं०—एषः, स्त्री०—एषा, नपुं० —एतद्) [इ+अदि, तुक्] 1. यह, यहाँ, सामने (वक्ता के निकटतम वस्तु का उल्लेख करना—समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्), इस अर्थ में 'एतद्' शब्द कई बार पुरुषवाचक सर्वनाम पर बल देने के लिए प्रयुक्त होता है,—एषोऽहं कार्यवशादायोध्यिकरत्तदानीन्तनश्च संवृत्तः—उत्तर० १ 2. यह प्रायः अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है, विशेषकर जबकि यह 'इदम्' या किसी और सर्वनाम के साथ समुक्त किया जाय —एष वै प्रथमः कल्पः—मनु० ३।१४७, इति यदुक्तं तदेतदचिन्त्यम् 3. यह संबंधबोधक वाक्यखंड में भी प्रायः प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में—संबंधबोधक बाद में आता है—मनु० ९।२५७, (अव्य०) इस रीति से, इस प्रकार, अतः, व्यान दो, —'एतद्' शब्द उन समासों में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है—जो प्रायः निगदव्याख्यात या स्वतः स्पष्ट हों—उदा० —°अनन्तरम् इसके तुरन्त बाद, °अंत—इस प्रकार समाप्त करते हुए। सम०—द्वितीय (वि०) जो किसी कार्य को दोबारा करे, —प्रथम (वि०) जो किसी को पहली बार करे।

एतदीय (वि०) [एतद्+छ] इसका, के, की।

एतनः [आ+इ+ल्युट्] श्वास, साँस छोड़ना।

एतर्हि (अव्य०) [इदम्+र्हिल्, एत आदेशः] अब, इस समय, वर्तमान समय में।

एतादृश्,—दृक्ष,—दृक्ष, (वि०) [स्त्री० शी, क्षी] 1. ऐसा, इस प्रकार का—सर्वेपि नैतादृशाः—भर्तृ० २। ५१ 2. इस प्रकार का।

एतावत् (वि०) [एतद्+वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना विस्तृत, इतनी दूर, इस गुण का या ऐसे प्रकार का—एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे—रघु० २।५१, कु० ६।८९ एतावान्मे विभवो भवन्तं सेवितुम्—मालवि० २, (अव्य०) इतनी दूर, इतना अधिक, इतने अंश में, इस प्रकार।

एध् (भ्वा० आ०—एधते, एधित) 1. उगना, बढ़ना-पच० २।१६४ 2. फलना-फूलना, सुख में जीवन बिताना द्वावेतौ सुखमेधेते—पंच० १।३१८, प्रेर० उगाना, बढ़ाना, अभिवादन करना, सम्मान करना —कु० ६।९०।

एधः [इन्ध्+घञ्, नि०] इंधन,—स्फुलिङ्गावस्थया वह्निरेधोपेक्ष इव स्थितः—रा० ७।१५, शि० २।९९।

एधस् [एध्+चतु] 1. मनुष्य 2. अग्नि।

एधस् (नपुं०) [इन्ध्+असि] इंधन—वर्धयंसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन —भग० ४।३७ अनलायगुरुचन्दनैधसे —रघु० ८।७१।

एधा [एध्+अ+टाप्] फलना-फूलना, हर्ष।

एधित (भू० क० कृ०) [एध्+क्त] 1. विकसित, बढ़ा हुआ 2. पाला पोसा —मृगशावैः समेधितो जनः—शि० २।१८।

एनस् (नपुं०) [इ+असुन्, नुडागमः] 1. पाप, अपराध, दोष शि० १४।३५ 2. कुचेष्टा, जुर्म 3. खिन्नता 4. निन्दा, कलंक।

एनस्वत्, एनस्विन् (वि०) [एनस्+मतुप्, व आदेशः, विनि वा] दुष्ट, पापी।

एरण्डः [आ—ईर्+अण्डच्] अरंडी का पौधा (बहुत मोटे पत्तों वाला एक छोटा वृक्ष) —अत एव लो०—निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते।

एलकः [इल्+अच्+कन्] मेढ़ा, दे० 'एडक'।

एलवालुक (नपुं०), **एलवालुकम्** [एला—वल्+उण् ह्रस्वः, कन् च] 1. केंच वृक्ष की सुगंधयुक्त छाल 2. एक रवेदार या दानेदार द्रव्य (जो औषधि या सुगंध के रूप में प्रयुक्त होता है)।

एलविलः [इलविला+अण्] कुबेर, दे० 'एलविल'।

एला [इल्+अच्+टाप्] 1. इलायची का पौधा—एलानां फलरेणवः, रघु० ४।४७, ६।६४ 2. इलायची (इलायची के बीज)। सम०—पर्णी लाजवन्ती जाति का एक पौधा।

एलोका [आ+ईल्+ईकन्+टाप्] छोटी इलायची।

एव (अव्य०) [इ+वन्] किसी शब्द द्वारा कहे गये विचार पर बल देने के लिए बहुधा इस अव्यय का प्रयोग होता है 1. ठीक, बिल्कुल, सही तौर पर —एवमेव —बिल्कुल ऐसा हो, ठीक इसी प्रकार का 2. वही, सही, समरूप—°अर्थोपमाणा विरहितः पुरुषः स एव· भर्तृ० २।४० 3. केवल, अकेला, मात्र (बहिष्करण की भावना रखते हुए)—सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन—कु० ३।६३, केवलमात्र सचाई, सचाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं 4. पहले ही 5. कठिनाई से, उसी क्षण, ज्यूंही (मुख्यतया कृदन्तों के साथ)· उपस्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्· रघु० १। ८७ 6. की भांति, जैसे कि (समानता प्रकट करते हुए) —श्रीस्त एव मेऽस्तु—गण० (=तव इव) और 7. सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए· भवितव्यमेव तेन—उत्तर० ४, यह बात निश्चित रूप से होगी, निम्नांकित अर्थ भी इस शब्द द्वारा प्रकट होते हैं 8. अपयश 9. न्यूनता 10. आज्ञा 11. नियंत्रण तथा 12. केवल पूर्ति के लिए।

एवम् (अव्य०) [इ+वमु (वा०)] 1. अतः, इसलिए, इस रीति से—अस्त्येवम्—पंच० १, यह इस प्रकार है,—एवंवादिनि देवर्षौ—कु० ६।८४; कथं एवम्—मेघ० १०१ (जो कुछ बात में आता है)—एवमस्तु—ऐसा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ही हो,—स्वस्ति, **यद्येवम्** —यदि ऐसा है 2. बिल्कुल ऐसा ही (स्वीकृति रखते हुए) —एवं यदाह भगवान् —कु० २।३१। **समo**—**अवस्थ** (वि०) इस प्रकार स्थित, या ऐसी परिस्थितियों में फँसा हुआ,—**आदि**, —**आद्य** (वि०) ऐसा और इस प्रकार का,—**कारम्** (अव्य०) इस रीति से,—**गुण** (वि०) ऐसे गुणों वाला —श० १।१२, —**प्रकार**, —**प्राय** (वि०) इस प्रकार का—उत्तर० ५।२९, श० ७।२४,—**भूत** (वि०) इस प्रकार के गुणों का, ऐसा, इस ढंग का,—**रूप** (वि०) (वि०) इस प्रकार का, ऐसे रूप का,—**विध** (वि०) इस प्रकार का, ऐसा।

एष् (स्वा० उभ०—एषति—ते, एषित) 1. जाना, पहुँचना 2. शीघ्रता से जाना, दौड़ कर जाना, परि—, ढूँढना।

एषणः [एष्+ल्युट्] लोहे का तीर,—**क्षु** 1. ढूँढना 2. कामना करना,—**णा** कामना, इच्छा।

एषणिका [इष्+ल्युट्+कन्, टाप्, इत्वम्] सुनार का काँटा तोलने की तराजू।

एषा [इष्+अ+टाप्] इच्छा, कामना।

एषिन् (वि०) [इष्+णिनि] इच्छा करते हुए, कामना करते हुए (समास के अन्त में), —यौवन विषयैषिणाम् रघु० १।८।

ऐ

ऐः (पु०) [आ+इ+क्विन्] शिव, (अव्य०) (क) बुलाने (ख) स्मरण करने, या (ग) आमंत्रण को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ऐकद्यम् (अव्य०) तुरन्त।

ऐकध्यम् [एकस्या धियमुष्ट् (वास्यति)] समय या घटना की ऐकान्तिकता।

ऐकपत्यम् [एकपति+ष्यञ्] परम प्रभुता, सर्वोपरि-शक्ति।

ऐकपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [एकपद+ठक्] एक पद से संबंध रखने वाला।

ऐकपद्यम् [एक पद+ष्यञ्] 1. शब्दों की एकता 2. एक शब्द बनना।

ऐकमत्यम् [एकमत+ष्यञ्] एकमतता, सहमति—रघु० १८।३६।

ऐकागारिकः [एकागार+ठक्] चोर,—केनचित् हस्तवर्त-कागारिकेण—दश० ६७, शि० १९।१११ 2. एक घर का मालिक।

एकाग्र्यम् [एकाग्र+ष्यञ्] एक ही पदार्थ पर जुट जाना, एकाग्रता।

ऐकाङ्गः [एकाङ्ग+अण्] शरीर रक्षक दल का एक सिपाही—राजत० ५।२४९।

ऐकात्म्यम् [एकात्मन्+ष्यञ्] 1. एकता, आत्मा की एकता 2. समरूपता, समता 3. परमात्मा के साथ एकता या तादात्म्य।

ऐकाधिकरण्यम् [एकाधिकरण+ष्यञ्] 1. संबंध की एकता 2. एकही विषय में व्याप्ति, (तर्क० में) —सह विस्तृतिः साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते —भाषा० ६९।

ऐकान्तिक (वि०) (स्त्री० की) 1. पूर्ण, समग्र, पूरा 2. विश्वस्त, निश्चित 3. अनन्य।

ऐकान्यिकः [एकान्य+ठक्] वह शिष्य जो वेद का सस्वर पाठ करने में एक अशुद्धि करे।

ऐकार्थ्यम् [एकार्थ+ष्यञ्] 1. उद्देश्य या प्रयोजन की समानता 2. अर्थों की संगति।

ऐकाह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [एकाह+ठक्] 1. आह्निक 2. एक दिन का, उसी दिन का, दैनिक।

ऐक्यम् [एक+ष्यञ्] 1. एकपना, एकता 2. एकनतता, 3. समरूपता, समता 4. विशेष कर मानव आत्मा की समरूपता, या विश्व की परमात्मा से एकरूपता।

ऐक्षव (स्त्री०—वी) [इक्षु+अण्] गन्ने से बना या उत्पन्न, —वम् 1. चीनी 2. मादक शराब।

ऐक्षव्य (वि०) [इक्षु+ष्यञ्] गन्ने से बना पदार्थ।

ऐक्षक (वि०) [इक्षु+ठक्] 1. गन्ने के लिए उपयुक्त 2. गन्ने वाला,—कः गन्ने ले जाने वाला।

ऐक्षुभारिक (वि०) [इक्षुभार+ठक्] गन्ने का बोझा ढोने वाला।

ऐक्ष्वाक (वि०) [इक्ष्वाकु+अ] इक्ष्वाकु से संबंध रखने वाला,—कः, कुः 1. इक्ष्वाकु की सन्तान,—सत्यमैक्ष्वाकाः खल्वसि—उत्तर० ५. २. इक्ष्वाकु वंश के लोगों द्वारा शासित देश।

ऐङ्गुद (वि०) [स्त्री०—दी] [इङ्गुदी+अण्] इंगुदी वृक्ष से उत्पन्न,—दम् इंगुदी वृक्ष का फल।

ऐच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इच्छा पर निर्भर, इच्छापरक 2. मनमाना।

ऐडक (वि०) (स्त्री०—की) भेड़ का,—कः भेड़ की एक जाति।

ऐड (ल) **विडः** (लः) [इडविडा+अण् पक्षे डलयोरभेदः] कुबेर।

ऐण (वि०) (स्त्री०—णी) काले सिंघा हरिण की (त्वचा, ऊन आदि) याज्ञ० १।२५९।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐणेय (वि०) (स्त्री०—यी) [एणी+ढक्] काली हरिणी या तत्संबंधी किसी पदार्थ से उत्पन्न,—यः काला हरिण, —यम् रतिबंध, रतिक्रिया का एक प्रकार।

ऐतदात्म्यम् [एतदात्मन्+ष्यञ्] इस प्रकार के गुण या विशिष्टता को रखने की अवस्था।

ऐतरेयिन् [ऐतरेय+इनि] ऐतरेय ब्राह्मण का अध्येता।

ऐतिहासिक (वि०) (स्त्री०—की) [इतिहास+ठक्] 1. परम्परा प्राप्त 2. इतिहास संबंधी,—कः 1. इतिहासकार 2. वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्यानों को जानता है या उनका अध्ययन करता है।

ऐतिह्यम् [इतिह+ष्यञ्] परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन,—ऐतिह्यमनुमानं च प्रत्यक्षमपि चागमम्—रामा०, किलेत्यैतिह्य (पौराणिक 'ऐतिह्य' को प्रत्यक्ष, अनुमान आदि के साथ प्रमाण का एक भेद मानते हैं—दे० 'अनुभव')।

ऐदम्पर्यम् [इदम्पर+ष्यञ्] आशय, क्षेत्र, संबंध (शा० इदंपर होने की अवस्था अर्थात् अर्थ, आशय या क्षेत्र रखना)—इह स्वैदम्पर्यम्—मा० २।७।

ऐनसम् [एनस्+अण्] पाप।

ऐन्द्र (वि०) (स्त्री०—न्द्री) [इन्दु+अण्] चंद्रमा संबंधी,—द्रः चांद्रमास।

ऐन्द्र (वि०) (स्त्री०—ऐन्द्री) [इन्द्र+अण्] इन्द्र संबंधी या इन्द्र के लिए पवित्र,—रघु० २।५०,—द्रः अर्जुन और वाली,—न्द्री 1. ऋग्वेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को संबोधित किया गया है—इत्यादिका काचिदैन्द्री समाम्नाता—जै० न्या० 2. पूर्व दिशा (इस दिशा का अधिष्ठातृदेवता इन्द्र है) कि० ९।१८ 3. मुसीबत, संकट 4. दुर्गा की उपाधि 5. छोटी इलायची।

ऐन्द्रजालिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रजाल+ठक्] 1. धोखे में डालने वाला, 2. जादू-टोना विषयक 3. मायावी, भ्रान्ति जनक 2. जादू-टोने का जानकार, —कः बाजीगर—शि० १५।२५।

ऐन्द्रलुप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रलुप्त+ठक्] गंजरोग से पीड़ित, गंजा।

ऐन्द्रशिरः [इन्द्रशिर+अण्] हाथियों की एक जाति।

ऐन्द्रिः [इन्द्रस्यापत्यम्-इन्द्र+इञ्] 1. जयन्त, अर्जुन, वानरराज वालि 2. कौवा—ऐन्द्रिः किल नखैस्तस्या विददार स्तनौ द्विजः—रघु० १२।२२।

ऐन्द्रिय,—यक (वि०) [इन्द्रिय+अण्, वुञ् वा] 1. इन्द्रियों से संबंध रखने वाला, निकरी 2. विद्यमान, ज्ञानेन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रियगोचर,—यम् ज्ञानेन्द्रियों का विषय।

ऐन्धन (वि०) (स्त्री०—नी) [इन्धन+अण्] जिसमें इन्धन विद्यमान हो,—नः सूर्य।

ऐयत्तम् [इयत्+ष्यञ्] परिमाण, संख्या।

ऐरावणः [इरा आपः ताभिः वनति शब्दायते—इरा+वन्+अच् इरावणः—ततः अण्] इन्द्र का हाथी।

ऐरावतः [इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्यापत्यम्: अण्] 1. इन्द्र का हाथी 2. श्रेष्ठ हाथी 3. पाताल निवासी नागजाति का एक मुखिया 4. पूर्व दिशा का दिग्गज 5. एक प्रकार का इन्द्रधनुष,—ती 1. इन्द्र की हथिनी 2. बिजली 3. पंजाब में बहने वाली नदी, रावी (इरावती)।

ऐरेयम् [इरायाम् अत्रे भवम्—इरा+ढक्] मदिरा (जो भोज्य पदार्थ से तैयार की जाय)।

ऐलः [इलाया अपत्यम्—अण्] 1. पुरूरवा (इला और बुध का पुत्र) 2. मंगलग्रह।

ऐलबालुकः [एलबालुक+अण्] एक सुगंध-द्रव्य।

ऐलविलः [इलविला+अण्] 1. कुबेर—शि० १३।१८ 2. मंगलग्रह।

ऐलेयः [इला+ढक्] 1. एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य 2. मंगल ग्रह।

ऐश (वि०) (स्त्री०—शी) [ईश+अण्] 1. शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० २।७५ 2. सर्वोपरि, राजकीय।

ऐशान (वि०) [ईशान+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला,—नी 1. उत्तरपूर्वी दिशा 2. दुर्गादेवी।

ऐश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [ईश्वर+अण्] 1. शानदार 2. शक्तिशाली, ताकतवर 3. शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० ११।७६ 4. सर्वोपरि, राजकीय 5. दिव्य,—री दुर्गादेवी।

ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] 1. सर्वोपरिता, प्रभुता—एकैश्वर्यस्थितोऽपि—मालवि० १।१ 2. ताकत, शक्ति, आधिपत्य 3. उपनिवेश 4. विभव, धन, बड़प्पन 5. सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ।

ऐषमस् (अव्य०) [अस्मिन् वत्सरे इति नि० साधुः] इस वर्ष में, चालू वर्ष में।

ऐषमस्तन, -मस्त्य (वि०) [ऐषमस्+तनप्, ष्यञ् वा] चालू वर्ष से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [इष्टि+ठक्] यज्ञसम्बन्धी, संस्कार विषयक। सम०—पूर्तिक (वि०) इष्टापूर्त (यज्ञ अथवा अन्य धार्मिक कृत्य) से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐहलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [इहलोक+ठञ्] इस संसार से सम्बन्ध रखने वाला, या इस लोक में घटित होने वाला, ऐहिक, दुनियावी (विप० पारलौकिक)।

ऐहिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इस लोक या स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, सांसारिक, दुनियावी, लौकिक 2. स्थानीय,—कम् व्यवसाय (इस संसार का)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओ

ओ (पुं० औः) [उ+विच्] ब्रह्मा (अव्य०) 1. सम्बोधनात्मक (ओः) अव्यय 2. (क) बुलावा (ख) स्मरण करना और (ग) करुणा बोधक विस्मयादि द्योतक चिह्न ।

ओकः [उच्+क नि० सम्प्र० कः] 1. घर 2. शरण, आश्रय 3. पक्षी 4. गृद्र ।

ओकणः (पि.) [ओ+कण् | अच् इन् वा] खटमल, इसी प्रकार 'ओकोदनी' ।

ओकस् (नपुं०) [उच्+असुन्] 1. घर, आवास—जैसा कि दिवौकस् या स्वर्गौकस् (देवता) में 2. आश्रय, शरण ।

ओख् (स्वा० पर०—ओखति, ओखित) 1. सूख जाना 2. योग्य होना, पर्याप्त होना 3. सजाना, सुशोभित करना 4. अस्वीकृत करना, 5. रोक लगाना ।

ओघः [उच्+घञ्, पृषो०] 1. जलप्लावन, नदी, धारा —पुनरोघेन हि वृज्यते नदी—कु० ४।४४ 2. जल की बाढ़ 3. राशि, परिमाण, समुदाय 4. समग्र 5. सातत्य 6. परम्परा, परम्पराप्राप्त उपदेश 7. एक प्रमुख नृत्य ।

ओंकारः [ओम्+कारः] दे० 'ओम्' के नीचे ।

ओज् (स्वा० चुरा० उभ० ओजति, ओजयति—ते, ओजित) समर्थ या योग्य होना ।

ओज (वि०) [ओज्+अच्] विषम, असम, -जम्—= ओजस् ।

ओजस् (नपुं०) [उज्ज्+असुन् वलोपः, गुणश्च] 1. शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति 2. वीर्य, जननात्मक शक्ति 3. आभा, प्रकाश (आलं० शा० में) 4. शैली का विस्तृत रूप, समास की बहुलता (दण्डी के अनुसार यही गद्य की आत्मा है) ओजः समासभूयस्त्वमेतद्-, गद्यस्य जीवितम् —काव्या० १।८०, रसगंगाधर में इसके पाँच भेद बतलाये गये हैं 5. पानी 6. धातु की चमक ।

ओजसीन, ओजस्य (वि०) [ओजस्—ख, यत् वा] मजबूत, शक्तिशाली ।

ओजस्वत्, ओजस्विन् ओजस्—मतुप्, विनि वा] मजबूत, वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली ।

ओड्रः (पुं० बं० ब०) एक देश का तथा उसके निवासियों का नाम, (आधुनिक उड़ीसा)—मनु० १०।४४, —द्रम् जवाकुसुम ।

ओत (वि०) [आ+वे+क्त] बुना हुआ, धागे से एक सिरे से दूसरे तक मिला हुआ । सम० -प्रोत (वि०) 1. लम्बाई और चौड़ाई के बल आर-पार सिला हुआ 2. सब दिशाओं में फैला हुआ ।

ओतुः [अद्—तुन्, ऊठ्, गुणः] बिलाव (स्त्री० भी) बिल्ली—जैसा कि 'स्थूलो (लौ) तुः' में ।

ओदनः—नम् [उन्द्+घञ्] 1. भोजन, भात,—उदा० दध्योदन और घृतौदन 2. दलिया बना कर दूध में पकाया हुआ अन्न ।

ओम् (अव्य०) [अव्+मन्, ऊठ्, गुणः] 1. पावन अक्षर 'ओम्' वेद-पाठ के आरम्भ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण, या मंत्र के आरम्भ में बोला जाने वाला 2. अव्यय के रूप में यह (क) औपचारिक पुष्टीकरण तथा सम्माननीय स्वीकृति (एवमस्तु, तथास्तु) (ख) स्वीकृति, अंगीकरण (हाँ, बहुत अच्छा)—ओमित्युच्यतामार्यः—मा० ६, ओमित्युक्त-वतीयशाङ्गिरव इति शि० १।७५, द्वितीयश्चेदोमिति वूमः—सा० द० १ (ग) आदेश (घ) मांगलिकता (ङ) दूर करना या रोक लगाना की भावना को प्रकट करने वाला अव्यय 3. ब्रह्म । सम०—कारः 1. पवित्र ध्वनि 'ओम्' 2. पवित्र उद्गार 'ओम्' ।

ओरभ्रः [?] गहरी खरोंच—मा० ७ ।

ओल (वि०) [आ+उन्द्+क पृषो०] आर्द्र, गीला ।

ओलंड (स्वा० पर०, चुरा० उभ०—ओलंडति, ओलंडयति, ओलंडित) ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उछालना ।

ओल्ल (वि०) [ओल-पृषो०] आर्द्र, गीला,—ल्लः प्रतिभू, आगतः प्रतिभू या जामिन के रूप में आया हुआ (यह शब्द एक दो बार विद्धशालभञ्जिका में आया है) ।

ओषः [उष्+घञ्] जलन, संवाह ।

ओषणः [उष्+ल्युट्] तिक्तता, तीक्ष्णता, तीखा रस ।

ओषधिः—धी (स्त्री०) [ओष—धा+कि, स्त्रियां ङीष्] 1 जड़ीबूटी, वनस्पति 2. औषधि का पौधा, ओषधि 3. फसली पौधा या जड़ी बूटी जोकि पक कर सूख जाती है । सम०—ईशः—शंभुः,—नाथः चन्द्रमा (वनस्पतियों का अधिदेवता तथा पोषक)—ज (वि०) वनस्पति से उत्पन्न,—धरः,—पतिः 1. ओषधि-विक्रेता 2. वैद्य 3. चन्द्रमा,—प्रस्थः हिमालय की राजधानी —तत्प्रयातौषधिप्रस्थं स्थितये हिमवत्पुरम्—कु० १। ३३, ३६ ।

ओष्ठः [उष्+थन्] होंठ (ऊपर का या नीचे का) । सम० —अधरौ-रम्, ऊपर और नीचे का होंठ,—ज (वि०) ओष्ठस्थानीय,—जाहः होंठ की जड़,—पल्लवः,—पम् किसलय जैसा, कोमल ओष्ठ—पुटम् होंठों को खोलने पर बना हुआ गड्ढा ।

ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] 1. होंठों पर रहने वाला 2. ओष्ठ—स्थानीय (ध्वनि आदि) ।

ओष्ण (वि०) [ईषद् उष्णः—ग० स०] थोड़ा गरम, गुनगुना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री

औ [आ+अव्+क्विप्, ऊठ] (क) आमंत्रण (ख) संबोधन (ग) विरोध तथा (घ) शपथोक्ति अथवा संकल्पद्योतक अव्यय।

औक्थ्यम् [उक्थ+ठक्+ष्यञ्] उक्थ का पाठ; सामवेद।

औक्थ्यम् [उक्थ+अण्] पाठ करने की विशेष (उक्थ' अंग से संबंध रखने वाली) रीति।

औक्षकम्,—औक्षम् [उक्षणां समूहः इत्यर्थे उक्षन्+अण्, टिलोपः वुञ् वा] बैलों का झुण्ड—शि० ५।६२।

औग्र्यम् [उग्र+ष्यञ्] दृढ़ता, भीषणता, भयंकरता, क्रूरता आदि।

औघः [ओघ+अण्] बाढ़, जलप्लावन।

औचित्यम्, औचितो [उचित+ष्यञ्, त्रित्रां ह्रीष्, यलोपश्च] 1. उपयुक्तता, योग्यता, उचितपना 2. संगति या योग्यता, वाक्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्णय करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक —सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः—सा० द० २।

औच्चैःश्रवसः [उच्चैः श्रवस्+अण्] इन्द्र का घोड़ा।

औजसिक (वि०) (स्त्री०—की) [ओजस्+ठक्] ऊर्जस्वी, बलवान्। —कः नायक शूरवीर।

औजस्य (वि०) [ओजस्+ष्यञ्] बल और स्फूर्ति का संचारक,—स्यम् सामर्थ्य, जीवनशक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति।

औज्ज्वल्यम् [उज्ज्वल+ष्यञ्] उज्ज्वलता, कान्ति।

औडुपिक (वि०) (स्त्री०—की) [उडुप+ठक्] किश्ती में बैठ कर पार करने वाला,—कः किश्ती या लट्ठे का यात्री।

औडुम्बर [उडुम्बर+अञ्]=दे० औदुम्बर।

औड्रः [ओड्र+अण्] ओड्र (वर्तमान उड़ीसा) देश का निवासी या राजा।

औत्कण्ठ्यम् [उत्कण्ठा+ष्यञ्] 1. इच्छा, लालसा 2. चिन्ता।

औत्कर्ष्यम् [उत्कर्ष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, उत्कृष्टता।

औत्तमिः [उत्तम+इञ्] १४ मनुओं में से तीसरा।

औत्तर (वि०) (स्त्री०—री, —रा) उत्तरी। समः —पथिक उत्तर दिशा की ओर जाने वाला।

औत्तरेयः [उत्तरा+ढक्] अभिमन्यु और उत्तरा का पुत्र परीक्षित्।

औत्तानपादः,—पादिः [उत्तानपाद+अण्, इञ् वा] 1. ध्रुव 2. उत्तर दिशा में वर्तमान तारा।

औत्पत्तिक (वि०) (स्त्री—की) [उत्पत्ति+ठक्] 1. अन्तर्जात, सहज 2. एक ही समय पर उत्पन्न।

औत्पात (वि०) [उत्पात+अण्] अपशकुनों का विश्लेषक।

औत्पातिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पात+ठक्] अमंगलकारी, अलौकिक, संकटमय—रघु० ४४, ५३, —कम् अपशकुन या अमंगल।

औत्संगिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्संग+ठक्] कूल्हे पर रखा हुआ, या कूल्हे पर धारण किया हुआ।

औत्सर्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्सर्ग+ठञ्] 1. सामान्य विधि (जैसे कि व्याकरण का नियम) जो अपवाद रूप में ही त्यागने के योग्य हो 2. सामान्य (विप० विशेष), प्रतिबन्धरहित, सहज 3. व्युत्पन्न, यौगिक।

औत्सुक्यम् [उत्सुक+ष्यञ्] 1. चिन्ता, बेचैनी 2. प्रबल इच्छा, उत्सुकता, उत्साह—औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा ५।६, औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना हिया—रत्न० १।२।

औदक (वि०) (स्त्री०—की) [उदक+अण्] जलीय, पनीला, जल से संबंध रखने वाला।

औदञ्चन (वि०) (स्त्री०—नी) [उदञ्चन+अण्] डोल या घड़े में रखा हुआ।

औदनिकः (दम्भ) [ओदन+ठञ्] रसोइया।

औदरिक (वि०) (स्त्री०—की) [उदर+ठक्] बहुभोजी, पेटू, लाऊ सर्वत्रौदरिकस्यागम्यवर्हायमेव विषयः—विक्रम० ३, मालवि० ४।

औदर्य (वि०) [उदरे भवः यत्] 1. गर्भस्थित, 2. गर्भान्तःप्रविष्ट।

औदश्वित्यम् [उदश्वित्+अण्] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा।

औदार्यम् [उदार+ष्यञ्] 1. उदारता, कुलीनता, महत्ता 2. बड़प्पन, श्रेष्ठता 3. अर्थापत्तिभेद (अर्थसंपत्ति) —स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी निनिश्चितार्थामिति वाचमाददे—कि० १।३, दे० कि० ११।४० पर मल्लि० और 'उदार' के नी० उदारता।

औदासीन्यम्, औदास्यम् [उदासीन+ष्यञ्, उदास+ष्यञ्] 1. उपेक्षा, निःस्पृहता—पर्याप्तोसि प्रजाः पालयितुमौदासीन्येन वर्तितुम्—रघु० १०।२५, इदानीमौदास्यं यदि भजसि भागीरथि गंगा० ४ 2. एकाकिपना, अकेलापन 3. पूर्ण विराम (सांसारिक विषयों से), वैराग्य।

औदुंबर (वि०) (स्त्री०—री) [उदुम्बर+अञ्] गूलर के वृक्ष से बना या उससे प्राप्त,—रः ऐसा प्रदेश जहाँ गूलर के वृक्ष बहुतायत से हों,—री गूलर की शाखा, —रम् 1. गूलर की लकड़ी 2. गूलर का फल 3. तांबा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औद्गात्यम् [उद्गातृ+अञ्] उद्गाता ऋत्विज का पद या कार्य।

औद्दालकम् [उद्दाल+अण्, संज्ञायां कन्] मधु जैसा एक पदार्थ जो तीखा और कड़वा होता है।

औद्देशिक (वि०) (स्त्री० -की) [उद्देश+ठक्] प्रकट करने वाला, निर्देशक, संकेतक।

औद्धत्यम् [उद्धत+ष्यञ्] 1. हेकड़ी, ढीठपना 2. साहसिकता, जोखिमवाले कार्यों में हिम्मत—औद्धत्यमायोजितकामसूत्रम्—मा० १।४।

औद्धारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्धार+ठञ्] पैतृक सम्पत्ति में से घटाया हुआ, विभक्त करने योग्य, दाययोग्य,—कम् (पैतृक सम्पत्ति में से घटाया गया) एक अंश या दायभाग।

औद्भिदम् [उद्भिद्+अण्] 1. झरने का पानी 2. सेंधा नमक।

औद्वाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्वाह+ठञ्] 1. विवाह से संबंध रखने वाला 2. विवाह में प्राप्त —याज्ञ० २।११८, मनु० ९।२०६. कम् विवाह के अवसर पर वधू को दिये गये उपहार, स्त्रीधन।

औधस्यम् [ऊधस्+ष्यञ्] दूध (औड़ी से प्राप्त) रघु० २।६६ अनेक पा०।

औन्नत्यम् [उन्नत+ष्यञ्] ऊँचाई, ऊँचा उठना (तैत्तिक रूप में भी)।

औपकर्णिक (वि०) (स्त्री० —की) [उपकर्ण+ठक्] कान के निकट रहने वाला।

औपकार्यम्, र्या [उपकार्य+अण्, स्त्रियां टाप् च] आवास, तम्बू।

औपग्रस्तिकः, ग्रहिकः [उपग्रस्त—ठञ्, उपग्रह+ठञ्] 1. ग्रहण 2. ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।

औपचारिक (वि०) (स्त्री० -की) [उपचार+ठक्] लाक्षणिक, आलंकारिक, गौण (विप० मुख्य),—कम् आलंकारिक प्रयोग।

औपजानुक (वि०) (स्त्री०—की) [उपजानु+ठक्] घुटनों के पास होने वाला।

औपदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपदेश+ठक्] 1. अध्यापन या उपदेश द्वारा जीविका कमाने वाला 2. शिक्षण द्वारा प्राप्त (जैसे कि धन)।

औपधर्म्यम् [उपधर्म+ष्यञ्] 1 मिथ्या सिद्धान्त, धर्मद्रोह 2. घटिया गुण या गुण का अपकृष्ट नियम।

औपधिक (वि०) (स्त्री० -की) [उपाधि+ठञ्] धूर्त, धोखेबाज।

औपधेयम् [उपाधि+ढञ्] रथ का पहिया, रथांग।

औपनायनिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनयन+ठक्] उपनयन संम्बन्धी, या उपनयन (जनेऊ के साथ दीक्षा देने का संस्कार) के काम का—मनु० २।६८।

औपनिधिक (वि०) (स्त्री० -की) [उपनिधि ठक्] धरोहर से सम्बन्ध रखने वाला,—कम् धरोहर या अमानत जो वस्तु धरोहर या अमानत के रूप में रक्खी जाय याज्ञ०—२।६५।

औपनिषद (वि०) (स्त्री०—दी) [उपनिषद्+अण्] 1. उपनिषदों में बताया हुआ या सिखाया हुआ, वेद विहित, आध्यात्मिक 2. उपनिषदों पर आधारित, स्थापित या उपनिषदों से गृहीत औपनिषदं दर्शनम् (वेदा० द० का दूसरा नाम)—दः 1. परमात्मा, ब्रह्म 2. उपनिषदों के सिद्धान्तों का अनुयायी।

औपनीविक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनीवि+ठक्] —स्त्री या पुरुषों की धोती की गांठ या डोरे के निकट रक्खा हुआ,—औपनीविकमरुन्द किल स्त्री (करम्) -शि० १०।६०, भट्टि० ४।२६।

औपपत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपपत्ति+ठक्] 1. तैयार, निकट 2. योग्य, समुचित 3. प्राक्कालपनिक।

औपमिक (वि०) (स्त्री० -की) [उपमा+ठक्] 1. तुलना या उपमान का काम देने वाला 2. उपमा द्वारा प्रदर्शित।

औपम्यम् [उपमा+ष्यञ्] तुलना, समरूपता, सादृश्य —आत्मौपम्येन भूतेषु दयां कुर्वन्ति साधवः—हि० १।१२।

औपयिक (वि०) (स्त्री० -की) [उपाय+ठक्] 1. समुचित, योग्य, यथार्थ 2. प्रयत्नों द्वारा प्राप्त,—कः,—कम् उपाय, तरकीब, युक्ति—सिक्तमौपयिकं गरीयसीम् कि० २।३५।

औपरिष्ट (वि०) (स्त्री०—ष्टी) [उपरिष्ट+अण्] ऊपर होने वाला, ऊपर का।

औपरो (रौ)धिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपरोध—ठक्] 1. अनुग्रह सम्बन्धी, कृपा सम्बन्धी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप 2. विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला —कः पीलु वृक्ष की लकड़ी का डंडा।

औपल (वि०) (स्त्री०—ली) [उपल+अण्] प्रस्तरमय, पत्थर का।

औपवस्त्य [उपवस्त+अण्] उपवास रखना, उपवास।

औपवस्त्रम् [उपवस्त्र+अण्] 1. उपवास के उपयुक्त भोजन, फलाहार 2. उपवास करना।

औपवास्यम् [उपवास+ष्यञ्] उपवास रखना।

औपवाह्य (वि०) [उपवाह्य+अण्] 1. सवारी के काम आने वाला,—ह्यः 1. राजा का हाथी 2. कोई राजकीय सवारी।

औपवेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपवेश+ठञ्] पूरी लगन के साथ काम कर के अपनी आजीविका कमाने वाला।

औपसङ्ख्यानिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसङ्ख्यान+

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठक्] 1. जिसका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो 2. परिशिष्ट ।

औपसर्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसर्ग+ठञ्] 1. विपत्ति का सामना करने योग्य 2. अमङ्गल सूचक ।

औपस्थिक (वि०) [उपस्थ+ठक्] व्यभिचार द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला ।

औपस्थ्यम् [उपस्थ+ष्यञ्] सहवास, स्त्रीसंभोग ।

औपहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपहार+ठक्] उपहार या आहुति के काम आने वाला,—कम् उपहार या आहुति ।

औपाधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठञ्] 1. विशेष परिस्थितियों में होने वाला 2. उपाधि या विशेष गुणों से सम्बन्ध रखने वाला, फालतू कार्य ।

औपाध्यायक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाध्याय+वुञ्] अध्यापक से प्राप्त या आने वाला ।

औपासन (वि०) (स्त्री०—नी) [उपासन+अण्] गृह्याग्नि से सम्बन्ध रखने वाला,—नः गार्हस्थ्य पूजा के लिए प्रयुक्त अग्नि, गृह्याग्नि ।

ओम् (अव्य०) शूद्रों के लिए पावनध्वनि (क्योंकि 'ओम्' का उच्चारण शूद्रों के लिए वर्जित है) ।

औरभ्र (वि०) (स्त्री०—भ्री) [उरभ्र+अण्] भेड़ से सम्बन्ध रखने वाला, या भेड़ से उत्पन्न,—भ्रम् 1. भेड़ या बकरे का मांस 2. ऊनी वस्त्र, मोटा ऊनी कम्बल (°भ्रः भी) ।

औरभ्रकम् [उरभ्राणां समूहः—वुञ्] भेड़ों का झुण्ड ।

औरभ्रिकः [उरभ्र+ठञ्] भेड़रिया ।

औरस (वि०) (स्त्री०—सी) 'उरसा निर्मितः—अण्] कोख से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैध—रघु० १६। ८८,—सः,—सी वैध पुत्र या पुत्री—याज्ञ० २।१२८ ।

औरस्य=औरस ।

और्ण, और्णक, और्णिक (वि०) (स्त्री०—र्णी,—की) [ऊर्णा+अञ्, वुञ्, वा] ऊनी, ऊन से बना हुआ ।

और्ध्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) ऊर्ध्वकाल+ठञ्] पिछले समय से सम्बद्ध या बाद का ।

और्ध्वदेहम् [ऊर्ध्वदेह—अण्] अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म ।

और्ध्वदैहिक (वि०) (स्त्री०—की) ऊर्ध्वदेहाय साधु—ठञ्] मृत व्यक्ति से सम्बद्ध, अन्त्येष्टि, °क्रिया प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार,—कम् अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म ।

और्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [ऊरु+अण्] 1. धरती से सम्बन्ध रखने वाला 2 जंघा से उत्पन्न,—र्वः एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह भृगुवंश में उत्पन्न हुआ था। महाभारत में वर्णन मिलता है कि भृगु के वंशजों का नाश करने की इच्छा से कार्तवीर्य के पुत्रों ने गर्भस्थित बालकों को भी मौत के घाट उतार दिया। उस वंश की एक स्त्री ने अपने गर्भ की रक्षा के लिए उसे अपनी जंघा में छिपा लिया—इसीलिए जंघा से जन्म होने के कारण वह और्व कहलाया। उसको देख कर कार्तवीर्य के पुत्र अंधे हो गये, उसके क्रोध से उठी ज्वाला ने समस्त संसार को भस्म कर देना चाहा। परन्तु अपने पितरों—भार्गवों—की इच्छा से उसने अपनी क्रोधाग्नि को समुद्र में फेंक दिया जहां वह घोड़े के रूप में गुप्त पड़ा रहा—तु० वडवाग्नि। बाद में और्व अयोध्या के राजा सगर का गुरु हुआ) 2. वडवाग्नि,—र्वम् ज्वलत्यूर्वं इवाम्भ्राशौ शि० ३।३, इसी प्रकार °अनलः ।

और्णनाभम् [ऊर्णनाभानां समूहः—अण्] ऊर्णनाभों का झुंड ।

और्लूकम् [उलूकानां समूहः—अण्] उल्लुओं का झुंड ।

और्लूक्यः [उलूकस्यापत्यं—यञ्] वैशेषिक दर्शन के निर्माता कणाद मुनि (दे० सर्व० में औलूक्यदर्शन) ।

और्व्यध्यम् [ऊरुणा+ष्यञ्] आधिक्य, बहुतायत, प्राबल्य ।

औशन, औशनस (वि०) (स्त्री०—नी,—सी) उशना अर्थात् शुक्राचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उशना से उत्पन्न या उशना में पढ़ा हुआ,—नम् उशना का धर्मशास्त्र (नागरिक शास्त्र व्यवस्था पर लिखा गया ग्रन्थ) ।

औशीनरः [उशीनरस्यापत्यम्—अञ्] ऊशीनर का पुत्र,—री राजा पुरूरवा की पत्नी ।

औशीरम् [उशीर+अण्] 1. पंखे या चंवर की डंडी 2. बिस्तरा—औशीरे कामचारः कृतोभूत्—दश० ७२ 3. आसन (कुर्सी, स्टूल आदि) 4. खस का लेप 5. खस की जड़ 6. पंखा ।

औषणम् [उषण+अण्] 1. तीक्ष्णता, तीखापन 2. काली मिर्च ।

औषधम् [औषधि+अण्] 1. जड़ी-बूटी, जड़ी बूटियों का समूह 2. दवादारू, सामान्य औषधि 3. खनिज ।

औषधिः, धी (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. जड़ी-बूटी, वनस्पति—दे० ओषधि 2. रोगनाशक जड़ी-बूटी—अश्विन्यौ हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः—रत्न० २ 3. आग उगलने वाली जड़ी—विरमन्ति न ज्वलितुमौषधयः—कि० ५। २४, (तृ०ज्योतीषि—मल्लि०) तु० कु० १।१० 4. वर्षभर रहने वाला या सालाना पतझड़ वाला पौधा, °धिपतिः सोम, औषधियों का स्वामी ।

औषधीय (वि०) [औषध+छ] औषधि संबन्धी रोगनाशक, जड़ी-बूटियों से युक्त ।

औदरम्, —रकम् [उदरे भवम्—अण्, ततः कन्] सेंधा नमक, पहाड़ी नमक ।

औषस (वि०) (स्त्री०—सी) [उषस्+अण्] उषा या प्रभात से सम्बन्ध रखने वाला—सी पौ फटना, प्रभात काल ।

औषसिक, औषिक (वि०) (स्त्री०—की) [उषस्+ठञ्, वा+ठञ्, वा] जिसने प्रभातकाल में जन्म लिया है, उषः काल में उत्पन्न ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओष्ठ् (वि०) (स्त्री०—ष्ठ्री) [उष्ठ्+अण्] 1. ऊँट से उत्पन्न या ऊँट से सम्बन्ध रखने वाला 2. जहाँ ऊँटों की बहुतायत हो,—ष्ठ्रम् ऊँटनी का दूध।

औष्ट्रकम् [उष्ट्र+वुञ्] ऊँटों का झुंड—वि० ५।६५।

औष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] होंठ से सम्बद्ध, ओष्ठ स्थानीय। सम०—वर्णः ओष्ठस्थानीय अक्षर—अर्थात् उ ऊ, प् फ् ब् भ् म् और व्,—स्थान (द्वारा) होठों द्वारा उच्चरित,—स्वरः ओष्ठस्थानीय स्वर।

औष्ण्यम् [उष्ण+अण्] गर्मी, ताप।

औष्ण्यम्, औष्म्यम् [उष्ण+ष्यञ्, उष्म+ष्यञ्] गर्मी —रघु० १७।२३।

क

कः [कच्+ड] 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. कामदेव 4. अग्नि 5. वायु 6. यम 7. सूर्य 8. आत्मा 9. राजा या राज कुमार 10. गाँठ या जोड़ 11. मोर 12. पक्षियों का राजा 13. पक्षी 14. मन 15. शरीर 16. समय 17. बादल 18. शब्द, ध्वनि 19. बाल,—कम् 1. प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द (जैसा कि स्वर्ग में) 2. पानी—सत्येन माभिरक्ष त्वं वरुणैत्यभिराप्य कम्—भाग० २।१०८ केशवं पतितं दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भराः—सुभा० (यहाँ 'केशव' में श्लेष है) 3. सिर —जैसा कि 'कंधरा' (=कं शिरो धारयतीति) में।

कंसः—सम् [कस्+अच्] 1. जल पीने का पात्र, प्याला, कटोरा 2. कांसा, सफेद ताँबा 3. 'आढक' नाम की एक विशेष माप, —सः मथुरा का राजा, उग्रसेन का पुत्र, कृष्ण का शत्रु (कंस की कालनेमि नामक राक्षस से समता की जाती है, कृष्ण के प्रति शत्रुता का व्यवहार करते करते यह कृष्ण का घोर शत्रु बना। जिन परिस्थितियों में इसने ऐसा किया वह निम्नांकित हैं, "देवकी का वसुदेव के साथ विवाह हो जाने के बाद जब कि कंस अपना सुखसम्पन्न दाम्पत्यजीवन बिता रहा था, उसे आकाशवाणी सुनाई दी जिसने उसे सचेत किया कि देवकी का आठवाँ पुत्र उसका मारनेवाला होगा। फलतः उसने दोनों को कारागार में डाल दिया, मजबूत हथकड़ी और बेड़ियों से जकड़ दिया, और उनके ऊपर सख्त पहरा लगा दिया। ज्यूँही देवकी ने बच्चे को जन्म दिया त्यूँही कंस ने उसे छीन कर मौत के घाट उतार दिया, इस प्रकार उसने छः बच्चों का काम तमाम कर दिया। परन्तु सातवाँ और आठवाँ (बलराम और कृष्ण) बच्चा इतनी सावधानी रखते हुए भी सकुशल नन्द के घर पहुँचा दिया गया। भविष्यवाणी के अनुसार कंसहन्ता कृष्ण नन्द के यहाँ पलता रहा। जब कंस ने सुना तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ, उसने कई राक्षस कृष्ण को मारने के लिए भेजे, परन्तु कृष्ण ने उन सबको आसानी से मार गिराया। अन्त में उसने उन बालकों को मथुरा लिवा लाने के लिए अक्रूर को भेजा। फिर कंस और कृष्ण में घोर मल्लयुद्ध हुआ जिसमें कृष्ण के हाथों कंस मारा गया) सम०—अरिः,—अरातिः,—जित्,—हन्,—द्विष्,—हन् (पुं०) कंस का मारने वाला अर्थात् कृष्ण—स्वसृ संधिकारिणी कंसारिणा दूतेन—वेणी० १, निषेदिवान् कंसकृषः स विष्टरे—शि० १।१६,—अस्थि (नपुं०) कांसा,—कारः (स्त्री०—री) 1. एक वर्णसंकर जाति, कसेरा—कंसकारशंखकारौ ब्राह्मणात्संभवतुः—याज्ञ० 2. जस्ता या सफेद पीतल के बर्तन बनाने वाला, कांसे की ढलाई का काम करने वाला।

कंसकम् [कंस+कन्] कांसा, कसीस या फूल।

कक् (म्वा० आ०—ककते, ककित) 1. कामना करना 2. अभिमान करना 3. अस्थिर हो जाना, दे० कक्।

ककुंजलः [कं जलं कूजयति याचते—क+कूज्+अलच् पृषो० नुम् ह्रस्वश्च] चातक, पपीहा।

ककुद् (स्त्री०) [कं सुखं कौति सूचयति—क+कु+क्विप्, तुकागमः, तस्य दः] 1. चोटी, शिखर 2. मुख्य, प्रधान—दे० नी० 'ककुद' 3. भारतीय बैल या सांड के कंधे के ऊपर का कूबड़ या उभार 4. सींग 5. राजचिह्न (छत्र, चामर आदि) (पाणिनि सूत्र ५।४।१४६-७ के अनुसार 'ककुद' के स्थान में बहुव्रीहि समास में 'ककुद्' आदेश होता है—उदा० त्रिककुद्)। सम०—स्थः इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजा शशाद का पुत्र पुरंजय,—इक्ष्वाकुवंश्यः ककुदं नृपाणां ककुत्स्थ इत्याहृतलक्षणोऽभूत्—रघु० ६।७१ (पौराणिक कथा के अनुसार राक्षसों के साथ देवों के युद्ध में जब देवों को मुँहकी खानी पड़ी तो वह इन्द्र के नेतृत्व में पुरंजय के पास गये और उनसे युद्ध में साथ देने के लिये प्रार्थना की। पुरंजय ने इस शर्त पर स्वीकार किया कि इन्द्र उसे अपने कंधे पर उठा कर चले। फलतः इन्द्र ने बैल का रूप धारण किया और पुरंजय उसके कंधे पर बैठा—इस प्रकार पुरंजय ने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राक्षसों का सफाया कर दिया। इसीलिए पुरंजय 'ककुत्स्थ'—'कूबड़ पर बैठा हुआ' कहलाता है)।

ककुदः—दम् [कस्य देहस्य सुखस्य वा कुं भूमिं ददाति —दा+क] 1. पहाड़ का शिखर या चोटी 2. कूबड़ या डिल्ला (भारतीय बैल के कंधे का उभार) 3. मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख—ककुदं वेदविदां तपोधनश्च —मृच्छ० १।५, इक्ष्वाकुवंशस्य ककुदं नृपाणाम् रघु० ६।७१ 4. राजचिह्न—नृपतिककुदं रघु० ३।७०, १७।२७।

ककुदत् (वि०) [ककुद+मतुप्] 1. कूबड़ या डिल्ले से युक्त—(पुं०) पहाड़ (जिसके शृंग हों) 2. भैंसा —महोदयाः ककुदन्तः—रघु० ४।२२, कूबड़ वाला बैल १३।२७, कु० १।५६, —नी कूल्हा और नितंब।

ककुद्मिन् (वि०) [ककुद्+मिनि] शिखरधारी, कूबड़ युक्त (पुं०) 1. कूबड़धारी बैल 2. पहाड़ 3. राजा रैवतक का नाम, —कन्या—सुता बलराम की पत्नी रेवती—शि० २।२०।

ककुद्वत् (पुं०) [ककुद्+मतुप् वत्वम्] कूबड़धारी भैंसा।

ककुदन्नम् [कस्य शरीरस्य कुम् अवयव दणाति ककु | दृ +क्त, मुम्] नितंबों का गड्ढा, जघनकूप —आश्व० २।१६।

ककुभ् (स्त्री०) [क+स्कुभ्+क्विप्] 1. दिशा, भू-परिधि का चतुर्थ भाग—दिवृत्ताः कान्तेव स्त्रिय इव न राजंति ककुभः मृच्छ० ५।२६, शि० ९।२५ 2. आभा, सौन्दर्य 3. चम्पक पुष्पों की माला 4. शास्त्र 5. शिखर, चोटी।

ककुभः [कस्य वायोः कुः स्थानं भाति अस्मात् ककु+भा+क पृषो० वा कं वातं स्कुम्नाति विस्तारयति-क+स्कुभ्+क] 1. वीणा के सिरे पर मुड़ी हुई लकड़ी 2. अर्जुनवृक्ष ककुभसुरभिशीलः—उत्तर० १।३६,— भम् कुटज वृक्ष का फूल मेघ० २२।

ककुलः [कक्+उलच्] बकुल वृक्ष।

ककेकीलः, लो [कक्+क्विप्, कुल् | च—कक् च कोल-यत्येति कर्म० स० स्त्रियां ङीप्] फलदार वृक्ष ककेकोली फलश्रेणि—मा० ६।१९ अने० पा०,—लम्, —लकम् 1. ककोल का फल 2. इसके फलों से तैयार किया गया गन्धद्रव्य।

कक्खट (वि०) [कक्ष्य—अटन्] 1. कठोर, ठोस 2. हंसने वाला।

कक्खटी [कक्खट+ङीष्] खड़िया।

कक्षः [कक्ष्+स] 1. छिपने का स्थान 2. नीचे पहने जाने वाले वस्त्र का सिरा, कच्छे का सिरा 3. बेल, लता 4. घास, सूखी घास—यतस्तृणं कक्षस्तत एव वह्निः —रघु० ७।५५, ११।७५, मनु० ७।११० 5. सूखे वृक्षों का जंगल, सूखी लकड़ी 6. कांख—प्रक्षिप्योर्दक्षिणं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्—शि० २।४२ 7. राजा का अन्तःपुर 8. जंगल का भीतरी भाग—आशु निर्गत्य कक्षात्—कुछ० १।२७ कक्षान्तरेतीव वायुः—रामा० 9. (किसी वस्तु का) पार्श्व 10. भैंसा 11. द्वार 12. दलदली भूमि,—क्षा 1. ककरौली या काल का फोड़ा जिसमें पीड़ा होती है 2. हाथी को बांधने की रस्सी, हाथी का तंग 3. स्त्री की तगड़ी, कटिबन्ध, करधनी, कटिसूत्र शि० १७।२४ 4. चहारदीवारी की दीवार 5. कमर, मध्यभाग 6. आंगन, सहन 7. बाड़ा 8. भीतर का कमरा, निजी कमरा, सामान्य कमरा—कु० ७।७०, मनु० ७।२२४, गृहकलहंसकानतुसरन् कक्षांतरप्रचावितः—का० ६३, १८२ 9. रनिवास 10. समानता 11. उत्तरीय वस्त्र 12. आपत्ति, सतर्क उत्तर (तर्क० में) 13. प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्द्विता 14. लांग 15. लांग बांधना 16. कलाई,—क्षम् 1. तारा 2. पाप। सम०—अग्निः जंगली आग, दावाग्नि—रघु० ११।९२,—अन्तरम् भीतर का या निजी कमरा, —अधिक्षकः 1. अन्तःपुर का अधीक्षक 2. राजोद्यानपाल 3. द्वारपाल 4. कवि 5. लम्पट 6. खिलाड़ी, चित्रकार 7. अभिनेता 8. प्रेमी 9. रस या भावना की शक्ति,—धरम् कन्धों का जोड़,—पः कछुवा,—(क्षा) पटः लंगोट,—पुटः कांख,—शायः, युः कुत्ता।

कक्ष्या [कक्ष—यत्+टाप्] 1. घोड़े या हाथी का तंग 2. स्त्री की तगड़ी या करधनी—शि० १०।६२ 3. उत्तरीय वस्त्र 4. वस्त्र की किनारी 5. महल का भीतरी कमरा 6. दीवार, घेर या बाड़ा 7. समानता।

कक्ष्या [कक्ष्+यत्+टाप्] घेर या बाड़ा, विशाल भवन का प्रभाग या खण्ड।

कङ्कः [कङ्क्+अच्] 1. बगुला 2. आम का एक प्रकार 3. यम 4. क्षत्रिय 5. बनावटी ब्राह्मण 6. विराट के महल में युधिष्ठिर द्वारा रक्खा गया अपना नाम। सम०—पत्र बगले के परों से सुसज्जित (—त्रः) बगले के पंखों से युक्त बाण—रघु० २।३१, उत्तर० ४।२० महावी० ११८,—पत्रिन् (पुं०)=ककपत्र, —मुखः चिमटा—वेणी० ५।१, —शायः कुत्ता (बगले की भांति सोता हुआ)।

कङ्कटः, कङ्कटकः [कङ्क्+अटन्, कंच वापि] 1. कवच, रक्षात्मक जिरह बख्तर, सैनिक साज-सामान—वेणी० २।२६, ५।१, रघु० ७।५९ 2. अंकुश।

कङ्कणः, —णम् [कम् ङति कणति, कम्+कण-अच्] 1. कड़ा—दक्षेन पाणिं नै तु कङ्कणेन विभाति भर्तृ० २।७१, इदं सुवर्णैकगुणं सुगन्धानाम् हि० १ 2. विवाह-सूत्र, कंगना (कलाई के चारों ओर बंधा हुआ) —उत्तर० १।१८, मा० ९।९, देव्याः ककुणमोक्षाय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलिता राजन् वरः श्रेष्यताम्—महावी० २।५० 3. सामान्य आभूषण 4. कलशी, -णः पानी को फुहार -नितंबे हारावली नवन यगले कङ्कणभरम्—उद्भट,—णी, कङ्कणिका 1. घूघरू 2. घूंघरु-जड़ा आभूषण।

कङ्कतः,--लम्, कङ्कती,--तिका [कङ्क्+अतच्] कंघी, बाल बाहने की कंघी- शि० १५।३३।

कङ्कटम् [कं मुखं किरति क्षिपति—कृ+अच्] मट्ठा (पानी मिला हुआ)।

कङ्कालः--लम् [कं शिरः कालयति क्षिपति—कम्+काल्+णिच्—अच्] अस्थिपंजर - मा० ५।१४, । सम०--पालिन् (पुं०) शिव, - शेष (वि०) कमजोर होकर जो हड्डियों का ढाँचा रह गया हो -उत्तर० ३।४३।

कङ्कालयः [कंकाल+या - क] शरीर।

कङ्केल्लः, -ल्लि: [कङ्क्+एल्लः, एल्लि: वा] अशोक वृक्ष।

कङ्केली [कंक्+ओलच्+ङीप्]—दे० कंककेली।

कङ्कुसः [कंकु—ला+क] हाथ।

कच् 1 (भ्वा० पर०--कचति, कचित) चिल्लाना, रोना।

2 (भ्वा० उभ०) 1. बाँधना, जकड़ना (आप्रपूर्वक), स्वस्य वाहकचे वरम् भट्टि० १४।१४ 2. चमकना।

कचः [कच्--अच्] 1, बाल (विशेषकर सिरके)—कचेषु च निगृह्णीतान् महा०, दे० नी० 'ग्रह्'—अलिनीलिग्णः कचानां चयः भर्तृ० १।५ 2. सूखा या भरा हुआ घास, क्षतजिल्ल या किण 3. बंधन, पट्टी 4. कपड़े की गोट 5. बादल 6. बृहस्पति का एक पुत्र (राक्षसों के साथ लंबे युद्ध में देवता बहुधा हारा करते थे और असहाय हो जाते थे, परन्तु जो राक्षस युद्ध में मारे जाते थे, उनको फिर उनका गुरु शुक्राचार्य अपने गुप्तमंत्र (यह मंत्र केवल शुक्राचार्य के पास ही था) द्वारा पुनर्जीवित कर देता था। देवों ने इस मन्त्र को, यथा शक्ति, प्राप्त करने का संकल्प किया और कच को शुक्राचार्य के पास उसका शिष्य बन कर मंत्र सीखने के लिए फुसलाया। फलतः कच शुक्राचार्य के पास गया, परन्तु राक्षसों ने उसको दो बार इसलिए हत्या की कि कहीं यह इस ज्ञान में पारंगत न हो जाय परन्तु दोनों ही बार, शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री देवयानी के (जिसका कि कच से प्रेम हो गया था) बीच में पड़ने से उसे फिर जिला दिया। इस प्रकार परास्त हो राक्षसों ने उसकी तीसरी बार हत्या करके, उसके शव को जला दिया और उसकी राख शुक्राचार्य की मदिरा में मिला दी। परन्तु देवयानी ने उस युवक को पुनर्जीवित करने की अपने पिता से फिर प्रार्थना की। उसके पिता ने उसे फिर जिला दिया। तब से लेकर देवयानी उसको और भी अधिक प्रेम करने लगी, परन्तु कच ने उसके प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि तुम मेरी छोटी बहन हो। इस बात पर देवयानी ने युवक को शाप दे दिया कि वह महामंत्र जो उसने सीखा है शक्तिहीन हो जायगा। बदले में कच ने भी उसे शाप दिया कि उससे कोई ब्राह्मण विवाह नहीं करेगा, और उसे क्षत्रिय की पत्नी बनना पड़ेगा), या हथिनी। सम०--अग्रम् घूंघट, अलकें,—आचित बिखरे बालों वाला -कि० १।३६, ग्रहः बाल पकड़ना, बालों से पकड़ने वाला—रघु० १०।४७, १९।३१, ——पक्षः, -पाशः, हस्तः चित्रविचित्र या अलंकृत बाल (अमर कोश के अनुसार यह तीन शब्द समूह को व्यक्त करते हैं 'पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचादरे), माल्यः धूआं।

कचङ्गणम् [कचस्य जनरवस्य अङ्गनम् -ष० त०, शक० परुरूपम्] वह मंडी जहाँ सभाल पर किसी प्रकार का कोई शुल्क न देना पड़े।

कचग्रहः [कच्यते इष्यते वेलया -कच्+अङ्गलच्] समुद्र।

कचाकचि (अव्य०) [कचेषु कचेषु गृहीत्वेदं युद्धं प्रवृत्तम् ब० स० इच्, पूर्वपददीर्घः] बाल के बदले एक दूसरे के बाल पकड़ कर (खींच कर, नोच कर) युद्ध करना।

कचाटुरः [कचवत् मेघ इव शून्ये अटति—कच+अट+उरच्] जलकुक्कुट।

कचूर (वि०) [कुत्सितं चरति कुः+चर+अच्] 1. बुरा, मलिन 2. दुष्ट, नीच, अधम।

कच्चित् (अव्य०) [कम्+क्विप्, चि+क्विप् पृषो० मध्यदीर्घम्--कच्च चिच्च द्वयोः समाहारः द्वं० स०] (क) प्रश्नवाचकता (मुझे आशा है' प्रायः ऐसा अनुवाद)--कच्चित् अहमिव विस्मृतवानसि त्वं—श० ६, कच्चिन्मृगीणामनघा प्रसूतिः रघु० ५।७, ५, ६, ८ व ९ भी (ख) हर्ष तथा (ग) माङ्गलिकता-सूचक अव्यय।

कच्छः [कच्छम् [केन जलेन छणाति दीप्यते छादयते वा क+छो+क] 1. तट, किनारा, गोट, सीमावर्ती प्रदेश (चाहे पानी के निकट हो या दूर)—यमुनाकच्छमवर्तीर्णः —पंच० १, गन्धमादन कच्छोऽध्यासितः विक्रम० ५, शि० ३।८० 2. दलदल, कीचड़, पंकभूमि 3. अधोवस्त्र की गोट या झालर जो लांग का काम दे--दे० कक्षा 4. किश्ती का एक भाग 5. कछुवे का अंग विशेष (जैसा कि 'कच्छप' में), लच्छा जीरा। सम० अंतः झील या नदी का किनारा पः (स्त्री० —पी) 1. कछुवा, कछुवी,—केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे- गीत० १, मनु० १।४४, १२।४२ 2. मल्लयुद्ध में एक स्थिति 3. कुबेर की नौ निधियों में से एक (—पी) 1. कछुवी 2. एक प्रकार की वीणा सरस्वती की वीणा,—भूः (स्त्री०) दलदली भूमि, पंकभूमि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कच्छ (च्छा) टिका, कच्छाटी (कच्छ+अट्+अच्+कन्, इत्वम्, शक० पररूपम्, पररूपाभावे 'कच्छाटिका' ळीषि कुते 'कच्छाटी' [घोती का छोर जो शरीर पर चारों ओर लपेटने के बाद इकट्ठा करके लाँग की भाँति पीछे टाँग लिया जाता है।

कच्छुः, कच्छू (स्त्री०) [कच्+ऊ, छ आदेशः, विकल्पेन ह्रस्वश्च] खुजली, खाज।

कच्छुर (वि०) [कच्छू+र ह्रस्वश्च] 1. खाज वाला, खुजली की बीमारी वाला 2. कामुक, लम्पट।

कज्जलम् [कुत्सितं जलमस्मात्प्रभवति--कोः कदादेशः] दीपक की कालिमा जो औषध के रूप में आँखों में आँजी जाती है, काजल--यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति—का० १०५, अद्यापि ता विधूतकज्जल-लोलनेत्राम्—चौर० १५, °कालिमा--अमरु ८८ 2. सुर्मा (जो अंजन की भाँति प्रयुक्त किया जाता है) 3. स्याही, मसी। सम०--ध्वजः दीपक, लैम्प, ---दीपकः, --कम् दीवट, (लकड़ी का बना दीपक का स्टैण्ड)।

कञ्च् (स्वा० आ०) 1. बाँधना 2. चमकना।

कञ्चारः [कम्+चर्+णिच्+अच्] 1. सूर्य 2. मदार का पौधा।

कञ्चुकः [कञ्च्+उकन्] 1. बख्तर, कवच 2. साँप की त्वचा, केंचुली--पंच० १।१६६ 3. पोशाक, वस्त्र, कपड़ा - धर्मे प्रवेशितः—श० ५ 4. अंगरखा, चोगा —अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः —रत्न० २।३, पंच० २,६४ 5. चोली, अंगिया —क्वचिदिवेभदृगजाजिनकञ्चुकाः--शि० ६।५१, १२।२० अमर ८१, (उक्ति—निर्दति कञ्चुकारं प्रायः शुष्कस्तनी नारी—सु० 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा')।

कञ्चुकालुः [कञ्चुक+आलुच्] साँप।

कञ्चुकित (वि०) [कञ्चुक+इतच्] 1. बख्तर से सुसज्जित, कवच धारण किये हुए 2. पोशाक पहने हुए —कथाः --भर्तुः ३।१३०।

कञ्चुकिन् (वि०) [कञ्चुक+इनि] कवच या जिरहबख्तर से सुसज्जित,—(पुं०) 1. अन्तःपुर का सेवक, जनानी ड्योढ़ी का द्वारपाल (नाटकों में आवश्यक पात्र --अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः, सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते) 2. लम्पट, व्यभिचारी 3. साँप 4. द्वारपाल 5. जौ।

कञ्चुलिका, कञ्चुली कञ्च्+उलच्+ङीप्+ [कत, ह्रस्वः] चोली--त्वं मय्यक्षि विनैव कञ्चुलिकां धत्से मनोहारिणीं लक्ष्मीम्--अमरु २७।

कञ्जः [कम्+जन्+ड] 1. बाल 2. ब्रह्मा,--जम् 1. कमल 2. अमृत, सुधा। सम०—ज: ब्रह्मा,—नाभः विष्णु।

कञ्जकः, कौ कञ्जः केश इव कायति—कञ्ज+कै+क] एक प्रकार का पक्षी।

कञ्जनः [कम्+जन्+अच्] 1. कामदेव 2. एक प्रकार का पक्षी (कोयल)।

कञ्जरः, कञ्जारः [कम्+ज+अक्, अण् वा] 1. सूर्य 2. हाथी 3. पेड़ 4. ब्रह्मा की उपाधि।

कञ्जलः [कञ्ज+कलच्] एक प्रकार का पक्षी।

कट् (स्वा० पर० --कटति, कटित) 1. जाना 2. ढकना। प्र - 1. प्रकट होना 2. चमकना (प्रेर०—कटयति) प्रकट करना, प्रदर्शित करना, दिखलाना, स्पष्ट करना —औज्ज्वल्यं परमागतः प्रकटयत्यालोगभीमं तमः —मा० ५।११, सुहृदिव प्रकटय्य मुखप्रदा प्रथममेक-रसामनुकूलताम् उत्तर० ४।१५, रत्न० ४।१६,

कटः [कट्+अच्] 1. चटाई मनु० २।२०४ 2. कूल्हा 3. कूल्हा और कटिदेश, कूल्हे के ऊपर का गर्त 4. हाथी का गंडस्थल --कपूरमानेन कटं कदाचित् —रघु० २।३७, ३।३७, ४।४७ 5. एक प्रकार का घास 6. शव 7. शववाहन, अरथी 8. पासे का विशेष प्रकार से फेंकना --निन्दितदर्शितमार्गः कर्तन विनिपातितो यामि मृच्छ० २।८ 9. आधिपत्य (जैसा कि 'उत्कट' में) 10. बाण 11. प्रथा 12 श्मशानभूमि, कब्रिस्तान। सम०—अक्षः नजर, निरखी निगाह, दृक्षेप—गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्ष:- मा० १।२९, २५, २८, मेघ० ३५,—उत्कम् 1. (मृत पितरों को) तर्पण के लिए जल 2. मद, (हाथी के मस्तक से बहने वाला तरल पदार्थ),—कारः 1. संकर जाति (निम्न सामाजिक अवस्था की) (शूद्रायां वैश्य-तश्चायोगे कटकार इति स्मृतः- उशना) 2. चटाई बुनने वाला,— कोलः पीकदान,— खादकः 1. गोदड़ 2. कीड़ा 3. शीशे का बर्तन, —छोषः गोपालपुरी,—पूतनः, —ना एक प्रकार के प्रेतात्मा —अमेध्यकुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः,—मत्स० १२।७१, उत्पालः कटपूतना-प्रभृतयः सोपविघ्नं कुर्वते--मा० ५।१२, (°पूतन—अनं० पा०) २३ भी,—भूः 1. शिव 2. भूत या, पिशाच 3. क्रीड़ा,—प्रोषः, --यम् नितंब, - भंगः 1. हाथों से दाने एकत्र करना (शिलाञ्छन) 2. राज-संकट, - शालिनी शराब।

कटकः--कम् [कट्+वुन्] 1. कड़ा--आबद्धहेमकटकां रहसि स्मरामि—चौर० १५ 2. मेखला, करधनी 3. रस्सी 4. शृंखला की एक कड़ी 5. चटाई 6. खारी नमक 7. पर्वत पाइलें प्रफुल्लवृक्षैः कटकैरिव स्वैः कु० ७।५२, रघु० १६।३१ 8. अधित्यका - शि० ४।६५ 9. सेना, शिविर--गुहा० ५।१० 10. राजधानी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

11. घर या आवास 12. वृत्त, पहिया ।

कटकिन् (पुं०) [कटक+इनि] पहाड़ ।

कटकूटः [कट+कट्+खच् बा०, मुम्] 1. आग 2. सोना 3. मर्मज्ञ —वाच० १।२८५ ।

कटनम् कट्+ल्युट् घर की छत या छप्पर ।

कटारः [कट+आ+हन्+ड] 1. कढ़ाई 2. कछुवे की कड़ी खाल 3. कूआं 4. पहाड़ी मिट्टी का टीला 5. दूध बर्तन का खंड शि० ५।३७, दे० २२।३२ ।

कटिः, —टी (स्त्री०) [कट्+इन्, कटि+ङीष् वा] 1. कमर 2. नितंब (साहित्य शास्त्री इस बात को 'ग्राम्य' समझते हैं, इसका उदाहरण सा० द० ५७४ पृष्ठ पर —कटिस्ते हरते मनः) 3. हाथी का गंडस्थल । सम० **तटम्** कूल्हा **कटीतटनिवेशिनम्**— मृच्छ० १।२७, **त्रम्** 1. धोती 2 मेखला, करधनी, **प्रोथः** नितंब, **मालिका** स्त्री की तगड़ी या करधनी, **रोहकः** महावत, पीलवान, **शृंखलः** कूल्हा, शृंखला घुघरू जड़ी करधनी, **सूत्रम्** करधनी या मेखला ।

कटिका [कटि+कन्+टाप्] कूल्हा, कमर ।

कटीरः, —रम् [कट्+ईरन्] 1. गुफा, खोखर 2. कूल्हों का गर्त, —रम् कूल्हा ।

कटीरकम् [कटीर+कन्] नितम्ब, चूतड़ ।

कटु (वि०) (स्त्री०—टु या टवी) कट्+उ] 1. तिक्त, कड़वा, चरपरा (रस का एक भेद माना जाता है, रस छः हैं:—कटु, अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय और लवण) —भग० १७।९ 2. गंधयुक्त, तीक्ष्ण गंध वाला—रघु० ५।४३ 3. दुर्गन्धियुत, बदबूदार 4. (क) कटु, व्यंग्यात्मक (शब्द), याज्ञ० ३।१४२ (ख) अरुचिकर, अप्रिय —श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवक्षुः रघु० ६।८५ 5. ईर्ष्यालु 6. गरम, प्रचण्ड,—टुः तीक्ष्णपन, तिक्तता, कड़ुवापन, (६ रसों में से एक)।—टु (नपुं०) 1. अनुचित कार्य 2. लोकापवाद, दुर्वचन, निन्दा । सम० **कोटः**—कीटक: डांस, मच्छर, —**क्वाणः** ठठिहिरी, —**गंधि** (नपुं०) सोंठ, इसी प्रकार **भंगः, भद्रम्** सोंठ या अदरक,—**निष्पावः** अनाज जो जल की बाढ़ में न आया हो,—**मोदम्** एक सुगन्धित द्रव्य,—**रवः** मेंढक ।

कटुक (वि०) [कटु+कन्] 1. तीक्ष्ण, चरपरा 2. प्रचंड, गरम 3. अप्रिय, अरुचिकर,—कः तीक्ष्णपन, खटास (६ रसों में से एक) दे० ऊ० 'कटु' ।

कटुकता [कटुक+तल्] अशिष्ट व्यवहार, अक्खड़पना ।

कटोरम् [कट+उरच्] पानी मिला हुआ मट्ठा ।

कठोरम् [कट्+ओलच् रलयोरभेदः] मिट्टी का कसोरा ।

कटोलः [कट्+ओलच्] 1. चरपरा स्वाद 2. नीच जाति का पुरुष, जैसा कि चाण्डाल ।

कठ् (स्वा० पर०) कठिनाई से रहना—दे० 'कण्ठ्' ।

कठः [कठ्+अच्] एक मुनि का नाम, वैशम्पायन का शिष्य यजुर्वेद की कठ शाखा का प्रवर्तक,—ठः कठ मुनि के अनुयायी । सम०— **भूतः** यजुर्वेद की कठ शाखा में निष्णात ब्राह्मण, **श्रोत्रियः** यजुर्वेद की कठ शाखा में पारंगत ब्राह्मण ।

कठभर्दः [कठ+भृद्+अण्] शिव ।

कठर (वि०) [कठ्+अरन्] कड़ा, सख्त ।

कठिका [कठ्+वुन् वा०] खड़िया ।

कठिन (वि०) [कठ्+इनच्] 1. कड़ा, सख्त कठिन विषमासिकेषणी साध्यस्तीव्रम्—मेघ० ९२. अमर० ७२ इसी प्रकार 'रेतसी 2. कठोर-हृदय, क्रूर, निर्दय—न विद्मैर्यं कठिना: खलु स्त्रियः—कु० ४।५ पंच० १।६४ अमरु० ६, इसी प्रकार 'हृदय 3. कठोर, अनम्य 4. तीक्ष्ण, प्रचंड, उग्र (पीड़ा आदि) नितान्तकठिनां रुजं मम न वेद सा भानसीम् विक्रम० २।११ 5. पीड़ा देने वाला, —नः शूरमूट,—ना 1. साफ की हुई शक्कर से बनी मिठाई 2. खाना बनाने के लिए मिट्टी की हांडी (—इस अर्थ में नपुं० भी) ।

कठिनिका, कठिनी [कठिन+ङीष्, कन्+टाप्, इत्वम्] 1. खड़िया 2. कत्रो अंगुली ।

कठोर (वि०) [कठ्+ओरन्] 1. कड़ा, ठोस कठोरास्थिग्रंथि—मा० ५।३४ 2. क्रूर, कठोर-हृदय, निर्दय- अयि कठोर यशः किल ते प्रियम्—उत्तर० ३।२७, इसी प्रकार 'हृदय, 'चित्त 3. तीक्ष्ण, चुभने वाला, 'अंकुशः— शा० १।२२ 4. पूर्ण विकसित, पूर्ण, पूरा उगा हुआ,—कठोरगर्भा जातकी विमुच्य—उत्तर० १।१. ४९, इसी प्रकार कठोरतारगर्भिपलाल्हचच्छविः शि० ११२० 5. (आलं०) परिपक्व, परिष्कृत—कलाकलापालोचनकठोरमतिभिः—का० ७ ।

कड = दे० कंड ।

कड (वि०) [कड्+अच्] 1. नंगा 2. कर्कश 3. अनजान, मूर्ख ।

कडङ्ग (क)रः [कड+ङ(गृ वा)+खच्, मुम्] तिनका ।

कडंग (क)रीय (वि०) 'कडङ्ग (क)र+छ] जिसको तिनका खिलाया जाय,—यः घास खाने वाला पशु (गाय, भैंस आदि) रघु० ५।९ ।

कडञ्चम् [गडञ्चते सिध्यते जलादिकम् अत्र—गड्+अञ्चन्, गकारस्य ककारः] एक प्रकार का बर्तन ।

कडल्लिका [कलंडिका] विज्ञान, शास्त्र ।

कडु (लं) स्वः कड्+अम्बच्, डस्य लः] डंठल, (साग भाजी का) ।

कडार (वि०) [गड्+आरन् कडादेशः] 1. भूरे रंग का 2. घमंडी, अभिमानी, ढीठ,—रः 1. भूरा रंग 2. सेवक ।

कडिसुलः [कट्यां तोलनं ग्रहणं यस्य, पृषो० टस्य डः] तलवार, खड्ग ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कण् i (भ्वा० पर०--कणति, कणित) 1. शब्द करना, चिल्लाना, (दुःख में) कराहना 2. छोटा होना 3. जानना।
ii (चुरा० पर० या प्रेर०) आँख झपकना, पलक बन्द करना।

कणः [कण्+अच्] 1. अनाज का दाना—तण्डुलकणान् -हि० १, मनु० ११।९२ 2. अणु या (किसी वस्तु का) लव 3. बहुत ही थोड़ा परिणाम [द्वित्रिकणाः शा० १।१२, ३।५ 4. धूल का जर्रा· रघु० १।८५, पराग —विक्रम० २।७ 5. (पानी की) बूंद या फुहार कणवाही मालिनीतरङ्गाणाम्—श० ३।५, अणु°, अश्रु°, —मेघ० २६, ४५, ६९, अमरु ५४ 6. अनाज की बाल 7. (आग की) चिनगारी। सम० अरः, —भक्षः, —भुज् (पुं०) वैशेषिक दर्शन के निर्माता का नाम (जिसे अणुवाद का सिद्धांत कह सकते हैं)—जीरकम् सफेद जीरा,—भक्षकः एक प्रकार का पक्षी,—लाभः भंवर, जलावर्त।

कणयः [कण्+घा+क] लोहे का भाला या छड़,—लोहस्तम्बस्तु कणयः वैजं० चापिचक्रकणपकर्षणम्—आदि० दश०।

कणशः (अव्य०) [कण+शस्] छोटे २ अंशों में, दाना-दाना, थोड़ा-थोड़ा, बूंद-बूंद तद्दिवं कणशो विकीर्यते (भस्म) कु०—४।२७।

कणिकः [कण्—कन्, इत्वम्] 1. अनाज का दाना 2. एक छोटा कण 3. अनाज की बाल 4. भूने हुए गेहूं का भोजन।

कणिका [कण+टन्+टाप्] 1. अणु, एक छोटा अथवा सूक्ष्म जर्रा 2. (पानी की) बूंद· मेघ० ९८ 3. एक प्रकार का अन्न या चावल।

कणिशः -शम् [कण्+शो+ड] अनाज की दाल।

कणीक (वि०) [कण्+ईकन्] छोटा, नन्हा।

कणे (अव्य०) [कण्+ए] इच्छा-सन्तुष्टि का अभिव्यायक अव्यय (श्रद्धाप्रत्ययोधातः)।—कणेहत्य पयः पित्वति—सिद्धा० 'वह मन भर कर दूध पीता है'।

कणेरा—रः (स्त्री०) [कणेर+टाप्, कण्+एरक] 1. हथिनी 2. वेश्या, रंडी।

कण्टकः,—कम् [कण्ट्+घञ्] 1. कांटा,—पादलग्नं करस्थेन कण्टकेनेव कण्टकम् (उद्धरेत्) —चाण० २२ 2. फांस, टंक याज्ञ० ३।५३ 3. (आलं०) ऐसा दुःखदायी व्यक्ति जो राज्य के लिए कांटा तथा अच्छे प्रशासन एवं शान्ति का शत्रु हो· उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽरि —रघु० १४।७३, छिद्दिवभुङ्नतदानवकण्टकम्—श० ७।३, मनु० ९।२६० 4. (अतः) सताने या क्लेश पहुँचाने का मूल-कारण, उत्पात· मनु० ९।२५३ 5. रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना 6. अंगुली का नाखून 7. कष्ट पहुंचाने वाला भाषण,—कः 1. बांस 2. कारखाना, निर्माणी। सम० अशनः,—भक्षकः भुज् (पुं०) ऊँट,—उद्धरम् 1. (शा०) कांटा निकालना, नलाई करना 2. (आलं०) जनसाधारण को सताने वाले तथा चोर आदि उत्पातकारियों को दूर करना,—कण्टकोद्धरणे नित्यमातिष्ठेत्तत्समुत्थम · मनु० ९।२५२

द्रुमः 1. कांटा, झाड़ी भवन्ति नितरां रक्षीताः सुखेन कण्टकद्रुमाः · मृच्छ० ९।७ 2. सेमल का वृक्ष,—फलः कटहल, गोखरू, रेंड़ या धतूरे का पेड़, मर्दनम् उत्पात शास्त्र करना, विशोधनम् सब प्रकार क्लेशों के स्रोतों का उन्मूलन करना, राज्यकण्टकविशोधनोद्यतः··· विक्रमांक० ५।१।

कण्टकित (वि०) [कण्टक+इतच्] 1. कांटेदार 2. खड़े हुए रोंगटों वाला, पुलकित, रोमांचित··प्रीतिकण्टकितनत्वचः · कु० ६।१५, रघु० ७।२२।

कण्टकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कण्टक+इनि] 1. कांटेदार, कंटीला, कण्टकिनो वनान्ताः··विक्रमांक० १।११६ 2. सताने वाला, कष्टदायक। सम० फलः कटहल।

कण्टकिलः [कण्टक+इलच्] कांटेदार बांस।

कण्ट्(भ्वा० चुरा० उभ०—कण्टति-ते, कण्टयति-ते, कण्टित) 1. विलाप करना, शोक करना 2. चकना, आतुर होना, लालायित होना, खेद के साथ स्मरण करना (इस अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु के पूर्व 'उद्' उपसर्ग लगा कर संवे०, अधि० या सम्प्र० की संज्ञा के साथ उस क्रिया का प्रयोग करते हैं)· परिष्वङ्क्ष्व वामलम्बोदयमत्कण्ठते जनः · उत्तर० ६।२१, यथा स्वर्गाय लोत्कण्ठते—विक्रम० २, सुरतकलापारलीलाविधौ चेतः समुत्कण्ठते—काव्य० १।

कण्ठः,—ण्ठम् [कण्ठ्+अच्] 1. गला,—कण्ठे निगीडयन्त मारयति —मृच्छ० ८, कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः श० ४।५, कण्ठेषु स्खलितं गतेषु शिशिरे पुंस्कोकिलानां शतम् ६।३ 2. गर्दन कण्ठाश्लेष प्रणयिषु जने किं पुनर्दूरसंस्थे मेघ० ३।९७ ११२. अमर १९।५७, कु० ५।५७ 3 स्वर आवाज या युक्तकण्ठं चक्रन्द · रघु० १४।६५, किन्नरकण्ठि ८।६३, आर्णवुरोपि प्रमुक्तकण्ठं रोदिति · उत्तर० ३ 4 वर्तन की गर्दन या किनारा 5. पड़ोस, अविच्छिन्न सामीप्य (जैसा कि 'उपकण्ठ' में)। सम०

आभरणम् गले का आभूषण·· परीक्षितं काव्यमुभौ मेतल्लोकस्य कण्ठाभरणत्वमेतु—विक्रमांक० १।२४ तुं० सरस्वती कण्ठाभरण जैसे नाम,—कणिका भारतीय वीणा,

गत (वि०) गले में रहने वाला, गले में आने वाला अर्थात् वियुक्त होने वाला, न वर्देज्ञावनो मायां प्राणैः कण्ठगतैरपि—सुभा०, तटः, टम्, टी गले का पार्श्व या भाग, —दघ्न (वि०) गर्दन तक पहुँचने वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—नीडकः चोल,—नीलकः बड़ा लैप या मशाल, —पाशकः 1. हाथी की ग्रीवा के चारों ओर बंधी हुई रस्सी 2. रोकने वाला,—मुक्ता छोटा हार—विदुषां कण्ठभूषा-त्वमेतु-विक्रमांक० १८।१०२, —मणिः 1. गले में पहनने का मणि 2. प्रिय वस्तु,—रुज्जु 1. पट्टा 2. घोड़े को रोकने वाला,—वर्तिन् (वि०) गले में होने वाला अर्थात् विद्या होने वाला—प्राणैः—रघु० १२।५४, —शोषः (शा०) 1. गले का सूख जाना, खुश्क हो जाना 2. (अलं०) निष्फल प्रतिवाद, —सञ्जनम् गर्दन के सहारे लटकना, —सूत्रम् एक प्रकार का आलिंगन —यत्कुर्वते वक्षसि बलभस्य स्तनाभिघातं निबिडोपगूहात्, परिश्रमार्थं शमकैर्विदग्धास्तत्कण्ठसूत्रं प्रवदंति संतः, कण्ठ-सूत्रमादिश्य योषितः—रघु० १९।२२ ('स्तनालिंगन' भी कहलाता है), स्थ (वि०) 1. गले में होने वाला 2. कंठस्थानीय।

कण्ठतः (अव्य०) [कण्ठ+तसिल्] 1. गले से 2. स्पष्ट रूप से, स्फुटरूप से।

कण्ठालः [कण्ठ+आलच्] 1. किसी 2. फावड़ा, कुदाली 3. युद्ध 4. ऊँट, -ला बर्तन जिसमें दूध बिलोया जाय।

कण्ठिका [कण्ठ+ठन्+टाप्, इत्वम्] एक लड़का हार या माला।

कण्ठी (स्त्री०) [कण्ठ+ङीष्] 1. गर्दन, गला 2. हार, गट्टी 3. घोड़े की गर्दन के चारों ओर बंधी रस्सी। सम०—रवः 1. सिंह 2. मदमाता हाथी-कंठीरवो मत्त-ग्रहेण न्यपतत्—दश० ७ 3. कुबेर 4. स्पष्ट घोषणा या उल्लेख (इति कण्ठीरवेणोक्तम्)।

कण्ठीलः कण्ठ—ईलच् । ऊँट।

कण्ठेकालः [कण्ठे कालो विषपानजो नीलिमा यस्य अलु० स०] शिव।

कण्ठ्य (वि०) [कण्ठ+यत्] 1. गले से संबन्ध रखने वाला गले के उपयुक्त, या गले में होने वाला 2. कंठस्थानीय। सम०—वर्णः कण्ठस्थानीय अक्षर—तामतः, अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह, —स्वरः कण्ठस्थानीय स्वर (अ और आ)।

कण्ड् (भ्वा० उभ०) 1. प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना 2. घमंडी होना 3. कूटकर भूसी अलग करना, (चुरा० उभ० —कण्डयति-ते, कण्डित) 1. (अनाज), गाहना दाने अलग करना 2. रक्षा करना, बचाना।

कण्डनम् [कण्ड्+ल्युट्] 1. फटकना, दानों से भूसी अलग करना —अजान्तार्थं तत्सर्वं (अध्ययनम्) तुषाणां कण्डनं यथा 2. भूसी,—नी 1. ओखली 2. मूसल।

कण्डरा [कंड्+अरन्] नस।

कण्डिका [कंड्+ण्वुल्+टाप्] छोटा अनुभाग, छोटे से छोटा अनुच्छेद (जैसा कि शुक्ल यजुर्वेद में)।

कण्डुः (पुं० स्त्री०), **कण्डूः** (स्त्री०) [कण्ड्+कु, कण्ड्+यक्+क्विप्, अलोपः यलोपः] 1. खुरचना 2. खुजाना —कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुम्—कु० १।९, शा० ४।१७।

कण्डूतिः (स्त्री०) [कण्ड्+यक्+क्तिन्] 1. खुरचना 2. खुजली, खुजाना।

कण्डूयति—ते (ना० धा०, उभ०) (भू० क० कृ०—कण्डू-यित) 1. खुरचना, शनैः २ मसलना—कण्डूयमानेन कटं कदाचित्—रघु० २।३७, मृगीयकण्डूयत कृष्णसारः कु० ३।३६, मृगैः कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूय-मानां मृगीम्—शा० ६।१६, मनु० ४।४२।

कण्डूयनम् [कण्डू+यक्+ल्युट्] खुरचना, मसलना -कण्डू-यनैर्दंशनिवारणैश्च—रघु० २।५,—नी मसलने के लिए बुश।

कण्डूयनकः [कण्डूयन+कन्] खुजली पैदा करने वाला, गुदगुदी करने वाला -पंच० १।७१।

कण्डूया [कण्ड्+यक्+अ+टाप्] 1. खुरचना 2. खुजलाना।

कण्डूल (वि०) [कण्ड्+लच्] जिसे खुजली का विकार हो, जो खुजली अनुभव करता हो, या खुजलाहट पैदा करने वाला -कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकणोत्कर्षेण संपातिभिः उत्तर० २।९।

कण्डोलः [कण्ड्+ओलच्] 1. (बेत या बाँस की बनी) टोकरी जिसमें अनाज रखा जाय 2. डोली, भण्डार-गृह 3. ऊँट,—ली चांडाल की वीणा।

कण्डोषः [कण्ड्+ओषन्] झांझा, एक तरह का फुलगा।

कण्वः [कण्+ण्वन्] एक ऋषि का नाम, शकुन्तला का धर्मपिता, काण्व ब्राह्मणवंश का प्रवर्तक। सम० —दुहितृ,—सुता शकुन्तला, कण्व की पुत्री।

कतः, कतकः [कं जलं शुद्धं तनोति—तन्—ड—तारा०] निर्मली का पौधा (इसका फल गदले पानी को स्वच्छ कर देने वाला बतलाया जाता है) रीठा—फलं कतक-वृक्षस्य यद्यप्यंबुप्रसादनम्, न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति। मनु० ६।६७, तम्—तकम् इस वृक्ष का फल, रीठा, दे० 'अंबुप्रसादन' भी।

कतम (सर्व० वि०) (तपु०—मत्) [किम्+डतमच्] कौन या कौन सा—अपि ज्ञायते कतमेन दिग्भागेन गतः स जालम इति—विक्रम० १, अथ कतमं पुनर्ऋतुमधि-कृत्य गास्यामि—शा० १, कतमे ते गुणास्तत्र यानुदाहर-स्यार्यमिश्राः—मा० १, (कभी कभी 'किम्' के स्थान में बलप्राप्त प्रत्यादेश के रूप में प्रयुक्त होता है)।

कतर (सर्व० वि०) (तपु०—°रत्) [किम्+डतरच्] कौन, दो में से कौन सा, नैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः—भग० २।६।

कतमालः [कस्य जलस्य तमाय शोषणाय अलति पर्याप्नोति अल्+अच्] अग्नि, तु० खतमाल।

कति (सर्व० वि०) [किम् डति] (सदैव ब० व० में प्रयुक्त—कति, कतिभिः) 1. कितने—कत्यग्नयः, कति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूर्यास्त'—ऋक्० १०।८८।१८ 2. कुछ (जब 'कति' के साथ चिद्, चन या अपि जोड़ दिया जाता है, तो शब्द की प्रश्नवाचकता नष्ट हो जाती है, और वह अनिश्चयार्थक बन जाता है—अर्थ होता है कुछ, कई, थोड़े से—तन्वो स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा—श० २।१२, कत्यपि दासराणि—अमरु २५, तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी नीत्वा मासान् मेघ० २)।

कतिकृत्वः (अव्य०) [कति+कृत्वसुच्] कितनी बार।

कतिधा (अव्य०) [कति+धा] 1. कई बार 2. कितने स्थानों पर, या कितने भागों में।

कतिपय (वि०) [कति+अयच्, पुक् च] कुछ, कई, कई एक—कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बैः—उत्तर० ३।२०, मेघ० २३, कतिपयदिवसापगमे कुछ दिनों के बीत जाने पर—वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव शि० २।७२।

कतिविध (वि०) [ब० स०] कितने प्रकार का।

कतिशः (अव्य०) [कति+शस्] एक बार में कितना।

कत्थ् (स्वा० आ० अक० कत्थते, कत्थित) 1. शेखी बघारना, इतरा कर चलना।—कुत्रा कत्थित्थने न कः—भट्टि० १६।४, कुत्रैतत्कर्मणा सर्वं कत्थेथाः—महा० 2. प्रशंसा करना, प्रमिद्ध करना 3. गाली देना, दुर्वचन कहना। वि —, 1. शेखी मारना, का स्वश्लाघा प्रार्थ्यमाना विकत्थते—विक्रम० २ 2. डाम घटाना, तुच्छ करना, उपेक्षित करना—सदा भवान् फाल्गुनस्य गुणैरस्मान् विकत्थते—महा०।

कत्थनम्,—ना [कत्थ्+ल्युट्, युच् वा] डींग मारना, शेखी बघारना।

कत्थवरम् [कत्थ+वृ+अप्] कंघा।

कथ् (चुरा० उभ०—कथयति, कथित) 1. कहना, समाचार देना, (प्रायः सम्प्र० के साथ)—रामभिषवसनदर्शनोत्सुकं मैथिलाय कथयांबभूव सः—रघु० ११।३७ 2. घोषणा करना, उल्लेख करना—भग० २।३४, रघु० ११।१५ 3. वार्तालाप करना, बातें करना, बातचीत करना—कथयित्वा सुमन्त्रेण सह—रामा० 4. संकेत करना, निर्देश करना, दिखलाना—विक्रम० १।७, आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति—श० ७ 5. वर्णन करना, बयान करना,—किं कथ्यते श्रीरुभयस्य तस्य—कु० ७।७८ कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते—हि० १।१, 6. सूचना देना, सूचित करना, शिकायत करना—मृच्छ० ३।

कथक (वि०) [कथ्+ण्वुल्] कहानी कहने वाला, वर्णन करने वाला,—कः 1. मुख्य अभिनेता 2. अगड़ाकू 3. कहानी सुनाने वाला।

कथकम् [कथ्+ल्युट्] कहानी कहना, वर्णन करना, बयान करना।

कथम् (अव्य०) [किम्-प्रकारार्थे थम् कादेशश्च] 1. कैसे किस प्रकार, किस रीति से, कहाँ से—कथं मात्मनि विश्वासः हि० १, सानुबन्धाः कथं न स्युः सन्देहा निरागदः—रघु० १।६४, ३।६४, कथमात्मानं निवेदयामि कथं वात्मापहारं करोमि—श० १ (यहाँ बोलने वाले को अपने कथन के औचित्य में सन्देह है) 2. यह बहुधा आश्चर्य प्रकट करता है—(अहो,) कथं मामेवोद्दिशति—श० ६ 3. यह प्रायः 'इव, नाम, नु, वा, स्विद्' के साथ जोड़ दिया जाता है जब कि इसका अर्थ होता है 'क्या, सचमुच,' 'क्या सम्भावना है' 'मुझे बतलाइए तो' (यहाँ प्रश्न का सामान्यीकरण कर दिया जाता है)—कथं वा शक्यते उत्तर० ३, कथं नामैतत्—उत्तर० ६ 4. जब यह 'चिद्, चन या अपि' के साथ जोड़ दिया जाता है तो इसका अर्थ हो जाता है 'इस प्रकार से' 'किसी तरह से हो' 'किसी न किसी प्रकार' 'बड़ी कठिनाई से' या 'बड़े प्रयत्नों से'—नम्र स्त्रि-वा कथमपि पुरः—मेघ० ३, कथमप्यनिमिषं न चुम्बितं नु—श० ३।२५, न लोकवृत्तं वर्तेत वृत्तिहेतोः कथंचन—मनु० ४।११, ५।१४३, कथंचिदीक्षा मनसा बभूव ३।३४, कथं कथमपि उच्चित्य—पंच० १, विसृज्य कथमप्युमाम् कु० ६।३, मेघ० ३२, अमरु १२, ३९, ५०, ७३। सम०—कथिक: जिज्ञासु, पूछ-ताछ करने वाला, —कारम् (अव्य०) किस रीति से, कैसे कथंकारमनालब्धा कीर्तिर्ममिरोहति शि० २।५२, कथंकारं भुञ्जते—सिद्धा०, नैं० १७।१२६,

-प्रमाण (वि०) किस माप तोल का,—भूत (वि०) किस स्वभाव का, किस प्रकार का (प्रायः टीकाकारों द्वारा प्रयुक्त),—रूप (वि०) किस शक्ल सूरत का।

कथन्ता [कथम्+तल्] क्या प्रकार, क्या रीति।

कथा [कथ्+अङ्+टाप्] 1. कथा, कहानी 2. कल्पित या मनगढ़ंत कहानी, कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते हि० १।१ 3. वृत्तान्त, संदर्भ, उल्लेख—कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः हि० २।४० 4. बातचीत, वार्तालाप, वक्तृता 5. गद्यमयी रचना का एक भेद जो आख्यायिका से भिन्न है—(प्रबन्धकल्पना श्लोकसन्यां प्राज्ञाः कथां विदुः, परंसराश्रया या स्यात् सा भवाख्यायिका बुधैः) 'आख्यायिका' के नीचे भी देखें। का कथा, या प्रति पूर्वक कथा (कथा कहना) 'क्या कहने की आवश्यकता है' 'कहना नहीं' 'कुछ नहीं कहना' 'और कितना अधिक' 'और कितना कम' आदि अर्थों को प्रकट करते हैं का कथा बाणसन्धाने ध्यानशब्देनैव दूरतः, हुंकारेणैव धनुषः किं हि विघ्नापोहति—श० ३।१, अस्तिक्षतामपीयं भार्या भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, आप्तवागनुमानाभ्यां साध्ये त्वां प्रति का कथा—१०।२८, वेणी० २।२५, ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम०—**अनुरागः** वार्तालाप करने में आनन्द प्राप्त करना,—**अन्तरम्** 1. वार्तालाप के मध्य में—स्मर्तव्योस्मि कथान्तरेषु भवता—मृच्छ० ७।७ 2. दूसरी कहानी, —**आरम्भः** कहानी का आरम्भ,—**उद्घातः** कहानी की शुरुआत,—**उद्घातः** 1. प्रस्तावना के पाँच भेदों में से दूसरा प्रकार जब कि चुपके से सुनने के बाद प्रथम पात्र सूत्रधार के शब्दों या भाव को दोहराता हुआ रंगमंच पर आता है—द० सा० द० २६०, उदा० रत्न०, वेणी० या मुद्रा० 2. किसी कहानी का आरम्भ - आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यां जगुर्यशः—रघु० ४।२०, **उपाख्यानम्** वर्णन करना, बयान करना,—**छलम्** 1. कथा के बहाने 2. मिथ्या वृत्तांत बनाते हुए,—**नायकः**, —**पुरुषः** (कहानी का) नायक, **पीठम्** कथा या कहानी का परिचयात्मक भाग,—**प्रबन्धः** कहानी, बनावटी कहानी, कपोलकल्पित कहानी,—**प्रसङ्गः** 1. वार्तालाप, बातचीत या बातचीत के दौरान में—नाना कथा प्रसंगावस्थितः हि० १,—**भिदः** कथाप्रसङ्गेन विवादं किल चक्रतुः—कथा० २२, १८१, नै० १।३५, 2. विषचिकित्सक -कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतात्—कि० १।२४ (यहाँ शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है), —**प्राणः** अभिनेता,—**मुखम्** कहानी का परिचयात्मक भाग,—**योगः** बातचीत के मध्य,—**विपर्यासः** कहानी का मार्ग बदलना,—**शेष, अवशेष** (वि०) जिसका केवल 'वृत्तांत' ही बाकी रह गया है अर्थात् 'मृत (कथाग्रंथेषु गतः - मृत, मृतक) (—कः) कहानी का बचा हुआ भाग।

कथानकम् [कथ्+आनक वा०] छोटी कहानी- उदा० वेतालपञ्चविंशति ।

कथित (भू० क० कृ०) [कथ्+क्त] 1. कहा हुआ, वर्णित, बयान किया हुआ 2. अभिहित, वाच्य। सम०—**पदम्** पुनरुक्ति, दोहराना, ('पुनरुक्तवत्'—जाव्य में एक प्रकार का रचना विषयक दोष है जब कि एक शब्द का बिना किसी विशिष्ट अभिप्राय के दोबारा प्रयोग किया जाता है) काव्य० ७, सा० द० ५७५, एत०।

कद् i. (दिवा० आ०—**कद्यते**) हतबुद्धि हो जाना, घबरा जाना, मन में दुःखी होना, ii (स्वा० आ० कदते, भ्वा० पर० भी) 1. चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना 2. शोक करना 3. बुलाना 4. मारना, प्रहार करना —दे० कंद्।

कद् (अव्य०) [कद्+क्विप्] (समास में 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होने वाला अव्यय) बुराई, अल्पता, ह्रास, निरर्थकता, तथा दोष आदि को प्रकट करने वाला अव्य०। सम०—**अक्षरम्** 1. बुरा अक्षर 2. बुरी लिखाई,—**अग्निः** थोड़ी आग,—**अध्वन्** बुरा मार्ग, —**अन्नम्** बुरा भोजन,—**अपथ्यम्** बुरा अच्चा,—**अभ्यासः** बुरी आदत, बुरी प्रथा,—**अर्थ** (वि०) निरर्थक, अर्थहीन, —**अर्थनम्**, —**ना** कष्ट देना, दुःखी करना, सताना, —**आकार** (वि०) विकृतरूप, कुरूप, **आचार** (वि०) दुराचारी, दुष्ट, दुश्चरित्र (—**रः**) दुराचरण,—**उष्णः** बुरा ऊँट,—**उष्ण** (वि०) गुनगुना, थोड़ा गरम (—**ष्णम्**) गुनगुनापन, **रथः** बुरा रथ या गाड़ी—युधि कदश्वयद्भिर्मम बर्भुजे ध्वजशालिनम्- भट्टि० ५।१०३, —**वद** (वि०) 1. दुर्वचन कहने वाला, अयथार्थ या अस्पष्ट कहना—येन जातं प्रियापाये कवद हंसकोकिलम् भट्टि० ६।७५, वाग्विदां वरमकद्वदो नृपः—शि० १४।१ 2. दुष्ट, घृणायोग्य।

कदकम् [कद+कै+क] शामियाना, चंदोआ।

कदनम् [कद्-ल्युट्] 1. विनाश, हत्या, तबाही 2. युद्ध 3. पाप।

कदम्बः, **-दम्बकः** [कद्+अम्बच्] 1. एक प्रकार का वृक्ष (बादलों की गरज के साथ इसकी कलियों का खिलना प्रसिद्ध है)—कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः —उत्तर० ३।२०, मा० ३।७, उत्तर० ३।४१ मेघ० २५, रघु० १२।९९ 2. एक प्रकार का घास 3. हलदी, —**कम्** 1. समुदाय—छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।६ 2. कदंब वृक्ष का फूल—पृथूकदम्बकदम्बकराजितम्—कि० ५।९। सम०—**अनिलः** (कदंब पुष्पों की सुगन्ध से युक्त) सुगन्धित वायु; ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः—काव्य० १ 2. वसंत,—**कोरकन्यायः** न्याय के नी० दे०,—**वायुः** सुगंधित पवन=°**अनिलः**।

कदरः [कं जलं दारयति नाशयति—क+दृ+अच्] 1. आरा 2. अंकुश, —रम् जमा हुआ दूध।

कदलः,—**कदलकः** [कद्+कलच्, कन् च] केले का पेड़, —**ऊरुद्वयं मृगदृशः कदलस्य काण्डौ**—अमरु ९५,—**लौ** 1. केले का वृक्ष—कि यासि बालकदलीव विकम्पमाना—मृच्छ० १।२०, शश्वत्प्रहृष्टः सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम्—मेघ० ९६, ७७, कु० १।३६, रघु० १२।९६, याज्ञ० ३।८ 2. एक प्रकार का मृग 3. हाथी के द्वारा वहन की जा रही ध्वजा 4 ध्वजा या झंडा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कदा (अव्य०) [किम्+दा] कब, किस समय— कदा गमिष्यसि— एष गच्छामि, कदा कथयिष्यसि आदि, अपि जोड़ने पर यह शब्द 'कभी-कभी' 'किसी समय' 'समय निकाल कर' अर्थ प्रकट करता है; न अपि कभी नहीं, यदि 'चन' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है 'किसी समय' 'एक दिन' 'एक बार' 'एक दफ़ा'—आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् बिभेति कदाचन — मनु० २।५४, १४४, ३।२५, १०१; यदि 'चित्' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है 'एक बार' 'एक दफ़ा' 'किसी समय' अथ कदाचित्=एक बार —रघु० २।३७, १२।२१, नाक्षैः क्रीडेत्कदाचित्तु— मनु० ४।७४, ६५, १६९—कदाचित्-कदाचित् 'अब-अब' कभी-कभी कदाचित् काननं जगाहे कदाचित् कमलवनेषु रेमे—का० ५८, अमरु०।

कदु (वि०) (स्त्री० द्वु या दू) [कद्+उ] भूरे रंग का, —द्वुः,—दूः (स्त्री०) कश्यप की पत्नी तथा नागों की माता। सम०—पुत्रः,—सुतः सांप।

कनकम् [कन्+क्वनिप्] सोना—कनकवलयं ध्रस्तं ध्रस्तं मया प्रतिसार्यते—शा० ३।१३, मेघ० २, ३७, ६७,—कः 1. ढाक का वृक्ष 2. धतूरे का वृक्ष 3. पहाड़ी आबनूस। सम०—अंगदम् सोने का कड़ा,—अचलः,—अद्रिः, —गिरिः,—शैलः सुमेरु पहाड़ के विशेषण,—अधना कुचौ तै स्पर्धते किल कनकाचलेन सार्धम्— भा० २।९ —आलुका सोने का कड़ा या फूलदान,—आह्वयः धतूरे का पौधा,—उद्भवः सोने की कुल्हाड़ी—दण्डम्,—दण्डकम् (सोने के डंडे वाला) राजछत्र,—पत्रम् सोने का बना कान का आभूषण—जीवेति मंगलवचः परिहृत्य कोपात् कर्णे कृतं कनकपत्रमनालपन्त्या—चौर० १०,—परागः सुनहरी रज,—रसः 1. हड़ताल 2. पिघला हुआ सोना, —सूत्रम् सोने का हार,—काव्या कनकसूत्रेण कृष्णसर्पो विनाशितः—पंच० १।२०७,—स्थली स्वर्णभूमि, सोने की खान।

कनकमय (वि०) [कनक+मयट्] सोने का बना हुआ, सुनहरी।

कनखलम् [?] एक तीर्थस्थान (हरद्वार) का नाम तथा उसके साथ-लगी पहाड़ियाँ, (तीर्थं कनखलं नाम गङ्गाद्वारेऽस्ति पावनम्)—तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां जह्नोः कन्याम्—मेघ० ५०।

कनत् (वि०) [कन्+शतृ] एक आँख का हो० 'काण'।

कनयति (ना० धा० पर०) कम करना, घटाना, छोटा करना, न्यून करना—कीर्तिं नः कनयन्ति च—भट्टि० १८।२५।

कनिष्ठ (वि०) [अतिशयेन युवा अल्पो वा—कनादेशः —कन्+इष्ठन्] 1. सबसे छोटा, कम से कम 2. आयु में सबसे छोटा।

कनिष्ठिका [कनिष्ठ+कन्+टाप्] सबसे छोटी अंगुली —कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा— सुभा०।

कनीनिका, कनीनी [कनीन+कन्+टाप्, ह्रस्वम्—कन्+ ईन्+ङीष्] 1. छोटी अंगुली— करौ 2. आँख की पुतली।

कनीयस् (वि०) (स्त्री०— सी) [अयमनयोरतिशयेन युवा अल्पो वा कनादेशः, कन्+ईयसुन्, स्त्रियां ङीप्] 1. दो में से छोटा, अपेक्षाकृत कम 2. आयु में छोटा—कनीयान् भ्राता, कनीयसी भगिनी आदि।

कनेरा [कन्+एरन्+टाप्] 1. वेश्या 2. हथिनी (तु० कणेरा)।

कन्दुः [कन्+दु] 1. कामदेव, 2. हृदय (विचार और भावना का स्थान) 3. अनाज की खत्ती।

कन्था [कन्+थन्+टाप्] भेंगली लगा वस्त्र, गुदड़ी, झोली (जिसे संन्यासी धारण करते हैं)— जीर्णा कन्था ततः किम्—भर्तृ० ३।७४, १९।८६, शा० ४।५, १९,। सम०—धारणम् भेंगली लगे कपड़े पहनना जैसा कि कुछ योगी करते हैं,—धारिन् (पुं०) धर्म-भिक्षु, योगी।

कन्दः,—दम् [कन्द्+अच्] 1. गांठदार जड़ 2. गांठ— भर्तृ० ३।६९ (आलं० भी)—ज्ञानकन्दः 3. लहसुन 4. ग्रन्थि, —दः 1. बादल 2. कपूर। सम०—मूलम् मूली, —सारम् नन्दन-कानन, इन्द्र का उद्यान।

कन्दट्टम् [कन्द्+अटन्] श्वेत कमल— तु० कन्दोट।

कन्दरः,-रम् [कम्+दृ+अच्] गुफा, घाटी— कि कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगताः— भर्तृ० ३।६९ वसुधाधरकन्दराभिसर्पी—विक्रम० १।१९, मेघ० ५६,—रः अंकुश, रा, —री गुफा, घाटी, खोखला स्थान। सम०—आकारः पहाड़।

कन्दर्पः [कं कुत्सितो दर्पो यस्मात्— ब० स०] 1. कामदेव —प्रजनद्दर्पाग्नि कंदर्पः—भग० १०।२८, कन्दर्प इव रूपेण—महा० 2. प्रेम। सम०—कूपः योनि,—ज्वरः काम ज्वर, आवेश, प्रबल इच्छा,—बहनः शिव,—मूषलः मूसलः पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग,—भूषणम् 1. मेहन 2. रतिक्रिया का विशेष प्रकार, रतिबंध।

कन्दलः,—लम् [कन्द्+अलच्] 1. नया अंकुर या अँखुवा उत्तर० ३।४० 2. झिड़की, निन्दा 3. गाल, गाल और कनपटी 4. अपशकुन 5. मधुर स्वर 6. केले का पेड़ —कन्दलदलोल्लासाः पयोबिन्दवः— अमरु ४८,— लः 1. सोना 2. युद्ध, लड़ाई 3. (अतः) वाग्युद्ध, वादविवाद, —लम् कन्दल का फूल— विदलकन्दलकल्पनलालितः —शि० ६।३०, रघु० १३।२९।

कन्दली [कन्दल+ङीष्] 1. केले का पेड़— आरक्तराजिभिरिव कुसुमैर्नवकन्दली सलिलगर्भैः कोपादन्तर्बाष्पे स्मरयति मां लोचने तस्याः। विक्रम० ४।५, मेघ० २१, ऋतु० २।५ 2. एक प्रकार का मृग 3. अंडा 4. कमलगट्टा या कमल का बीज। सम०—कुसुमम् कुकुरमुत्ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कन्दुः (पुं० स्त्री०) [स्कन्द्+उ, सलोपश्च] पतीली, तंदूर।

कन्दुकः,—कम् [कम्+दा+डु—कन्] खेलने के लिए गेंद, —पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः—भर्तृ० २।८५, कु० १।२९, ५।११, १९, रघु० १६।९३। सम०—क्रीडा गेंद का खेल।

कन्दोटः (ट्टः) [कन्द+ओटन्] 1. श्वेत कमल, 2. नील कमल, (नीलोत्पल का प्रान्तीय रूप) — मोहमुकुलाय-माननेत्रकन्दोट्यु गलः मा० ७।

कन्धरः [कं शिरो जलं वा धारयति—कम्+धृ+अच्] 1. गर्दन 2. 'जलधर' बादल,—रा—गर्दन—कन्धरा समपहाय क धरां प्राप्य संगति जहास कस्यचित्—यात्रा० २। २२०, अमरु १६, दे० 'उत्कंधर' भी।

कन्धिः [कं शिरो जलं वा धीयतेऽत्र—कम्+धा+कि] समुद्र; (स्त्री०) गर्दन।

कन्नम् [कद्+क्त] 1. पाप 2. मूर्छा, बेहोशी का दौरा।

कन्यका [कन्या+कन्, ह्रस्वता] 1. लड़की—संबद्धदैवज्ञानस-कन्यकानि—रघु० १४।२८, ११।५३ 2. अविवाहित लड़की, कुमारी, कुँआरी या (अपरिणीता) तरुणी —गृहे गृहे पुरुषा कुलकन्यकाः समुद्वहन्ति—मा० ७, याज्ञ० १।१०५ 3. दशवर्षीय कन्या (अष्टवर्षा भवे-द्गौरी नववर्षा च रोहिणी, दशमे कन्यका प्रोक्ता अत ऊर्ध्वं रजस्वला शब्द०) 4. (अलं० शा० में) अनेक प्रकार की नायिकाओं में से एक, कुमारी कन्या (जो किसी काव्यकृति में मुख्य पात्र समझी जाती है) दे० 'अन्य स्त्री' के नी० 5. कन्या राशि। सम०—छलः फुसलाना-पैशाचः कन्यकाच्छलात्—याज्ञ० १।६१,—जनः कुमारियाँ, —विशुद्धयुगः कुलकन्याजनः मा० ७।१,—जातः कुमारी कन्या का पुत्र—याज्ञ० २।१२९ (=कानीन)।

कन्यसः [कन्य+सो+क] सबसे छोटा भाई—सा कानी उँगली,—सी सब से छोटी बहन।

कन्या [कन्+यक्+टाप्] 1. अविवाहित लड़की या पुत्री —रघु० १।५१, २।१०, ३।३३, मनु० १०।८ 2. दश-वर्षीय कन्या 3. अक्षतयोनि, कुमारी—मनु० ८।३६७, ३।३३ 4. (सामान्य) स्त्री 5. छठी राशि अर्थात् कन्या राशि 6. दुर्गा 7. बड़ी इलायची। सम०—अन्तः पुरम् रनिवास,—सुरक्षितेऽपि कन्यान्तःपुरे कश्चिन्प्रविशति—पंच० १, महावी० २।५०, —आढ (वि०) युवती लड़कियों का पीछा करने वाला (—ढः) 1. घर का भीतरी कमरा 2. जो तरुणी कन्याओं के पीछे फिरता रहता है, —कुब्जः एक देश का नाम (—जम्) भारत के उत्तर में एक प्राचीन नगर जो कि गंगा की सहायक नदी के किनारे स्थित है, वर्तमान कन्नौज,—गतम् कन्या राशि में गया हुआ नक्षत्र, —ग्रहणम् विवाह में कन्या को स्वीकार करना,—दानम् कन्या का विवाह करना,—दूषणम् कौमार्य भंग करना, —दोषः कन्या में दोष का होना, बदनामी (जैसे कि किसी रोग के कारण),—धनम् दहेज,—पतिः पुत्री का पति, दामाद, जामाता,—पुत्रः कुँआरी कन्या का पुत्र ('कानीन' कहलाता है),—पुरम् जनान-खाना,—भर्तृ (पुं०) 1. जामाता 2. कार्तिकेय,—रत्नम् अत्यन्त सुंदरी कन्या—कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते —महावी० १।३०,—राशिः कन्याराशि,—वेदिन् (पुं०) दामाद (जामाता)—याज्ञ० १।२६२,—शुल्कम् कन्या के मूल्य के रूप में कन्या के पिता को दिया गया धन, कन्या का क्रयमूल्य,—स्वयंवरः किसी कुमारी कन्या के द्वारा अपना पति चुनना,—हरणम् कौमार्य-भंग के विचार से किसी तरुणी कन्या को फुसलाना —मनु० ३।३३।

कन्याका, कन्यिका [कन्या+कन्+टाप्, इत्वं वा] 1. तरुणी लड़की 2. कुमारी (अपरिणीता लड़की)।

कन्यामय (वि०) [कन्या+मयट्] कन्याओं वाला, कन्या-स्वरूप रघु० ६।११, १६।८६,—यम् अन्तःपुर (जिसमें अधिकांश लड़कियाँ ही हों)।

कपटः,—टम् [कं मूर्धानं पटति आच्छादयति] जालसाजी, धोखादेही, चालाकी, प्रवंचना—कपटशतमयं क्षेत्रम-प्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१, कपटानुसारकुशला —मृच्छ० ९।५। सम०—तापसः पाखण्डी संन्यासी, बनावटी साधु,—पटु (वि०) धोखा देने में चतुर, छलपूर्ण—छलयन् प्रजास्तस्मन्नृतेन कपटपटुरेन्द्रजालिकः —शि० १५।३५, —प्रबन्धः छल से भरी हुई चाल —हि० १,—लेख्यम् जाली दस्तावेज,—वचनम् धोखे की बात,—वेशः (वि०) बनावटी भेस वाला, नकाब-पोश (—शः) कपटवेशधारी।

कपटिकः [कपट+ठन्] बदमाश, छलिया।

कपर्दः,—र्दकः [पर्व+क्विप्, बलोपः पर्, कस्य गंगा-जलस्य परा पूरणेन दापयति शुध्यति—क+पर्+दैप्+क, कपर्दं+कन् वा] 1. कौड़ी 2. जटा (विशेषतः शिव का जटाजूट)—गंगा० २२।

कपर्दिका [कपर्दक+टाप्, इत्वम्] कौड़ी (जो सिक्के के रूप में प्रयुक्त होती है)—मित्राण्यमित्रतां यान्ति गस्य न स्युः कपर्दाः (दें) का:—पंच० २।९८।

कपर्दिन् (पुं०) [कपर्द+इनि] शिव की उपाधि।

कपाटः,—टम् [कं वातं पाटयति तद्गतिं रुणद्धि—तारा०, क+पट्+णिच्+अण्] 1. किवाड़ का फलक या दिला —कपाटवक्षाः परिघदृढबाहुः—रघु० ३।३४, स्वर्ग-द्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपि नोपासितः—भर्तृ० ३।११ 2. दरवाजा—शि० ११।६०। सम०—उद्घाटनम् दरवाजा खोलना, —घ्नः सेंध लगाने वाला, चोर, —सन्धिः किवाड़ों के दिलों का जोड़।

कपालः,—लम् [कं शिरो जलं वा पालयति—क+पाल्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

+अण्] 1. खोपड़ी, खोपड़ी की हड्डी--चूडापीड कपालसङ्कुलगलन्मन्दाकिनीवारयः मा० १।२, हड्डी येन कपालेपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः--भर्तृ० २।९५ 2. टूटे बर्तन का खंड, ठीकरा, कपालेन भिक्षार्थी -- मनु० ८।९३ 3. समुदाय, संचय 4. भिक्षुक का कटोरा--मनु० ६।४४ 5. प्याला, बर्तन--पंचकपाल: 6. हथकन । सम०--पाणिः, भृत्,--मालिन्, ---शिरस् (पुं०) शिव की उपाधि,--मालिनी दुर्गादेवी ।

कपालिका [कपाल+कन्+टाप्, इत्वम्] ठीकरा--मनु० ४।७८, ८।२५० ।

कपालिन् (वि०) [कपाल+इनि] 1. खोपड़ी रखने वाला, -- याज्ञ० ३।२४३ 2. खोपड़ी पहने हुए --कपालि वा स्यादथवेन्दुशेखरम् (वपुः)--कु० ५।७८; (पुं०) 1. शिव का विशेषण,--करं कर्णे कुर्वत्यपि किल कपालिप्रभृतयः---गंगा० २८ 2. नीच जाति का पुरुष (ब्राह्मण माता तथा मछवे पिता की सन्तान) ।

कपिः [कम्प्+इ, नलोपः] 1. लंगूर, बन्दर---कपेरवासिः खनितुः--भट्टि० ९।११ 2. हाथी । सम० - आख्यः घृत, लोबान आदि, इज्यः 1. राम का विशेषण, 2. सुग्रीव का विशेषण, इन्द्रः (बन्दरों का मुखिया) 1. हनुमान का विशेषण· नख्यति ददर्श वृंदानि कपीन्द्र —भट्टि० १०।१२ 2. सुग्रीव का विशेषण--व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे --उत्तर० ३।४५ 3. जांबवान् का विशेषण, · कक्ष्यः (स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, केवांच,---केतनः,---ध्वजः अर्जुन का नाम, भग० १। २०,--ज्यः · तैलम्,- नामन् (नपुं०) शिलाजीत, गुग्गुल, · प्रभुः राम का विशेषण, लोहम् पीतल ।

कपिञ्जलः [क+पिञ्ज्+कलच्] 1. पपीहा 2. टिटिहिरी ।

कपित्थः [कपि+स्था+क] कैथ का वृक्ष,---स्थम् कैथ का फल । सम०---आस्यः एक प्रकार का बन्दर ।

कपिल (वि०) [कम्प्+इलच्, पादेशः] 1. भूरे रंग का, आरक्त--वाताय कपिला विद्युत् महा० 2. भूरे बालों का--मनु० ३।८ (कुल्लू०=कपिलकेशा),---लः 1. एक ऋषि का नाम (सगर के साठ हजार पुत्र थे, अपने पिता के यज्ञीय घोड़े को ढूंढते हुए ये कपिलमुनि से लड़ पड़े और उन पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाया इससे क्रुद्ध हो कपिल ने इन सब को भस्म कर दिया--दे० उत्तर० १।२३) यह सांख्य दर्शन का प्रवर्तक समझा जाता है 2. कुत्ता 3. लोबान 4. घृत 5. अग्नि का एक रूप 6. भूरा रंग,---ला 1. भूरी गाय 2. एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य 3. एक प्रकार का शहतीर 4. जोंक । सम०---अश्वः इन्द्र की उपाधि, · स्मृतिः सूर्य,---धारा गंगा की उपाधि,---स्मृतिः (स्त्री०) कपिल मुनि का सांख्य-सूत्र ।

कपिश (वि०) [कपि+श] 1. भूरे रंग का, सुनहरी 2. आरक्त--(छायाः) संध्यायपयोदकपिशाः पिशिताशनानाम् --शं० ३।२७, तीव्रे कांचनपद्मरेणुकपिशे ७।१२, विक्रम० २।७, मेघ० ३१, रघु० १२।२८, शः 1. भूरा रंग 2. शिलाजीत या लोबान,---शा 1. माधवी लता 2. एक नदी का नाम ।

कपिशित (वि०) [कपिश+इतच्] भूरे रंग का- शि० ६।५ ।

कपुच्छलम्, कपुच्छिका [कस्य शिरसः पुच्छमिव लाति---क +पुच्छ+ला+क---कस्य शिरसः पुष्टयै पोषणाय कायति--क+पुष्टि+कै+क+टाप्] 1. मुण्डन-संस्कार 2. सिर के दोनों ओर रक्खे हुए केशसमूह ।

कपूय (वि०) [कुत्सितं पूयते--कु+पूय्+अच्, पृषो० उलोपः] अधम, निकम्मा, कपोना, नीच ।

कपोतः [को वातः पांत इव यस्य---ब० स०] 1. पारावत, कबूतर 2. पक्षी । सम० - अद्रिः एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, अञ्जनम् सुर्मा,· अरिः बाज, शिकरा, · चरणः एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, पालिका, · पाली (स्त्री०) चिड़ियाघर, कबूतरों का दड़बा, कबूतरों की छतरी,---राजः कबूतरों का राजा,· सारम् सुर्मा, हस्तः, डर या अनुनय-विनय के अवसर पर हाथ जोड़ने का ढंग ।

कपोतक [कपोत+कन्] छोटा कबूतर,---कम् सुर्मा ।

कपोलः [कपि+ओलच्] गाल · क्षामक्षामकपोलमाननम् · शं० ३।१०, ६।४, रघु० ४।६८ । सम० - काचः जिससे गाल मसले जायें कि० ५।३६,· फलकः चौड़े गाल, · भित्ति (स्त्री०) कनपटी और गाल, चौड़ा गण्डस्थल, तु० गण्डभित्ति, रागः गालों की लाली ।

कफः [कैन जलेन फलति--फल्+क तारा०] 1. बलगम, कफ या श्लेष्मा (शरीर के तीन रसों में से एक---शेष दो हैं वात और पित्त) कफापचयादारण्यैकमृगलभा-शयानिदीप्तिः---दश० १६०, प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते--उद्भट 2 रसौली आम, कैन । सम०--अरिः सोंठ,---कृच्छिका लार, थूक,- क्षयः कफके का क्षय रोग,--घ्न, · नाशन, --हर (वि०) कफ को दूर करने वाला, कफ नाशक, ज्वरः बलगम अधिक हो जाने से उत्पन्न बुखार ।

कफणिः, कफोणिः (स्त्री०---णी) [कैन मुखेन फणति स्फुरति--क+फण्+इन्, क+फण् (स्फुर्)+इन् पृषो० कफोणि+ङीप्] कोहनी ।

कफल (वि०) [कफ+लच्] जिसे बलगम अधिक आता हो, कफप्रकृति ।

कफिन् (वि०) (स्त्री० नी) [कफ+इनि] कफ की अधिकता से पीड़ित, कफग्रस्त ।

कबन्धः,--धम् [कं मुखं बध्नाति क+बन्ध्+अण्] सिर-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहित धड़ (विशेषतः जब कि उसमें प्राण बाकी हों) (स्त्री) नृत्यत्कबन्धं समरे ददर्श --रघु० ७।५१, १२।४९,—धः 1. पेड़ 2. बादल 3. धूमकेतु 4. राहु 5. जल (इस अर्थ में यह शब्द नपुं० भी होता है) --शि० १६।६७ 6. रामायण में वर्णित बलवान् राक्षस (जब राम और लक्ष्मण दण्डक वन में रहते थे तो एक बार कबन्ध राक्षस ने इन पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में मारा गया कहते हैं कि इन्द्र द्वारा शाप दिये जाने से उसे राक्षस का रूप धारण करना पड़ा और जब तक कि राम और लक्ष्मण ने नहीं मारा वह राक्षस बना रहा)।

कबर,—री (प्रायः कबर, --री लिखे जाते हैं)।

कबित्थः [कपित्थः पृषो० साधुः] कैथ का वृक्ष।

कम् (चुरा० आ०—कामयते, कामित, कान्त) 1. प्रेम करना, अनुरक्त होना, प्रेम करने लगना - कन्ये कामयमानं मां न त्वं कामयसे कस्मम् कथ्या०, १।६३, (आसक्तता का एक उदाहरण)—कलहंसकी मन्दारिका कामयते - मा० १ 2. प्रबल लालसा करना, कामना करना, इच्छा करना --न दोस्मू शब्दमकामयेताम् -रघु० १४।४, त्रिकूटमुद्यं चकमे कुबेरात् -५।२६, ४।२८, १०।५३, भट्टि० १४।८२, अभि- 1. प्रेम करना 2. चाहना, नि ,प्र- अधिक चाहना, प्रबल इच्छा करना।

कमठः [कम्+अठन्] 1. कछुवा संप्राप्तः कमठः स चापि निधनं नष्टस्तवादेशतः - पंच० ३।१८४ 2. बाँध 3. जल का घड़ा,—ठी कछुवी या छोटा कछुवा। सम० -पतिः कछुवों का स्वामी।

कमण्डलुः - लु [कस्य जलस्य मण्डं लाति ला+कु] (लकड़ी या मिट्टी का) जलपात्र जो संन्यासी रखते हैं,—कमण्डलुपमोऽप्यालयः सतामहो बहुपदः- हि० २।६१, कमण्डलुजोदकं निकाचा—मनु० ३।६४, याज्ञ० १।१३३। सम० -तरुः गेंद वृक्ष जिसके कमंडलु बनते हैं,—धरः शिव का विशेषण।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] 1. विषयी, कामुक 2. मनोहर सुन्दर, नः 1. कामदेव 2. अशोक वृक्ष 3. ब्रह्मा।

कमनीय (वि०) [कम्+अनीयर्] 1. जो चाहा जाय, चाहने के योग्य,—अनन्यनारीकमनीयमङ्कम् -कु० १।३७ 2. मनोहर, सुहावना, सुन्दर—ज्ञातवासमकरं कमनीयपरिच्छदानां -कि० ७।४०, तदपि कमनीयं वपुरिदम्—श० ३।९, अने० पा०।

कमर (वि०) [कम्+अरच्] विषयी, इच्छुक।

कमलम् [कं जलमलति भूषयति कम+अल्+अच्] 1. कमल कमलमनल्पमिति कमले न कुवल्ये तोमि कनकलतिकायाम् -काव्य० १०, इसी प्रकार हस्त°, नेत्र°, चरण° आदि 2. जल 3. ताँबा 4. दवाद्दारु, औषधि 5. सारस पक्षी 6. मूत्राशय,—लः 1. सारस पक्षी 2. एक प्रकार का मृग। सम०—-अक्षी (स्त्री) कमल जैसी आँखों वाली स्त्री,—आकरः 1. कमलों का समूह 2. कमलों से भरा सरोवर, —आलया लक्ष्मी को उपाधि —मुद्रा० २, आसनः कमल पर स्थित, ब्रह्मा -कान्तिनि पूर्व कमलासनेन—कु० ७।३०, —ईक्षणा कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री, - उत्तरम् कुसुंभ का फूल, - खण्डम् कमलों का समूह,—जः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. रोहिणी नाम का नक्षत्र, - जन्मन् (पुं०)—भवः, - योनिः,--संभवः कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को उपाधि।

कमलकम् [कमल+कन्] छोटा कमल।

कमला [कमल+अच्+टाप्] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. श्रेष्ठ स्त्री। सम०—पतिः, -सखः विष्णु की उपाधि।

कमलिनी [कमल+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा; --साऽभ्रेरिवेन्द्रोः स्थलकमलिनी न प्रबृद्धां न सुप्ताम् - मेघ० ९०, रघ्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः --श० ४।१०, रघु० ९।३०, १९।११ 2. कमलों का समूह 3. कमल-स्थली (जहाँ कमल बहुतायत से हों)।

कमा [कम्+णिङ्+अ+टाप्] सौंदर्य, मनोहरता।

कमित् (वि०) (स्त्री०—त्री) [कम्+तृच्] विषयी, लम्पट।

कम्प् (भ्वा० आ० - कम्पते, कम्पित) हिलना-डुलना, काँपना, इधर-उधर आना-जाना (आल० भी)-कम्पते तीर्णनौरिवास्ये तस्मिन् प्राणयोनिषेशवरः --रघु० ४।८१ मृच्छ० ४।८, भट्टि० १४।३१, १५।७०,अनु---तरस खाना, करुणा करना--नोपयाना भुजिष्यात्वं कम्पसे नानुकम्पसे - मृच्छ० ४।८, कि दरार्का नानुकम्पसे मा० १०, (प्रेर०), तरस खाना--कु० ४।३९, आ—हिलाना-डुलना, काँपना; (प्रेर०) हिलाना-डुलाना, काँपाना --अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी --रघु० २।१३, ऋतु० ६। २२, प्र हिलना, काँपना -प्राकम्पत भुजः सव्यः ---रामा०, प्राकम्पत महाशैलः--महा०, (प्रेर०) हिलाना, चलाना—भट्टि० १५।२२, वि हिलना, काँपना,—कि यासि दलकदलीव विकम्पमाना--मृच्छ० १।२०, स्फुरति नयनं वामः बाहुर्मुहुश्च विकम्पते—९।३० भग० २।३१; (प्रेर०) हिलाना-डुलाना--रघु० ११।१९, ऋतु० २।१७, समनु -तरस खाना, करुणा करना - रघु० ९।१४।

कम्पः [कम्प+घञ्] 1. हिल-जुल, थरथराहट—कम्पेन किंचित्प्रतिगृह्य मूर्धनः—रघु० १३।४४ जरा सा सिर हिला कर या मोड़ कर, १३।२८, कु० ७।४६ भयकम्पः, विद्युत्कम्पः आदि 2. स्वरित स्वर का रूपान्तर, - वा हिलाना, चलायमान करना, थरथराहट। सम० —अन्वित (वि०) कम्पायमान, क्षुब्ध,- लक्ष्मन् (पुं०) वायु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कम्पन (वि०) [कम्प्+युच्] कम्पायमान, हिलने वाला, —नः शिशिर ऋतु (नवम्बर, दिसम्बर)—नम् 1. हिलना, कंपकंपी 2. लड़खड़ाता उच्चारण।

कम्पाकः [कम्पया चलनेन कायति—कम्पा+कै+क] वायु।

कम्पिल्ल=कांपिल्ल।

कम्प्र (वि०) [कम्प्+र] हिलने वाला, कम्पायमान, चलायमान, हलचल पैदा करने वाला—विधाय कम्प्राणि मुखानि कं प्रति - नै० १।१४२ कम्प्रा शाखा —सिद्धा०।

कम्प्र (भ्वा० पर०—कम्बति, कम्बित) जाना, चलना—फिरना।

कम्बर (वि०) [कम्ब्+अरन्] रंगबिरंगा,—रः चित्र-विचित्र रंग।

कम्बलः [कम्+कल, बुकागमः] 1. (ऊनी) कंबल—कम्बल-वस्त्रं न बाधते शीतम् सुभा०, कम्बलावृतेन तेन—हि० ३ 2. सास्ना, गाय बैल के गले में नीचे लटकने वाली खाल 3. एक प्रकार का मृग 4. ऊपर से पहनने का ऊनी वस्त्र 5. दीवार,—लम् जल। सम०—वाह्याकम् बहली (चारों ओर मोटे कपड़े से ढकी हुई गाड़ी जिसमें बैल जुते हों)।

कम्बलिका [कम्बल-+ई+कन्+ह्रस्वः, टाप्] 1. एक छोटा कंबल 2. एक प्रकार की मृगी।

कम्बलिन् (वि०) [कंबल+इनि] कम्बल से ढका हुआ, —(पुं०) बैल, बलीवर्द। सम०—वाह्याकम् बहली (मोटे कंबल से ढकी गाड़ी जिसमें बैल जुते हों), बैलगाड़ी।

कम्बी (वी) (स्त्री०) [कम्+विन् वा० ङीप्] कड़छी, चम्मच।

कम्बु (वि०) (स्त्री०—बू या बी) चितकबरा, रंगबिरंगा, —बुः, -बु (पुं०, नपुं०) शंख, सीपी स्मरस्य कम्बुः किमयं चकास्ति दिवि त्रिलोकी जयदादनीयः नै० २२।२२,—बुः 1. हाथी 2. गर्दन 3. चित्रविचित्र रंग 4. शिरा, शरीर की नस 5. कड़ा 6. नलोनुमा हड्डी। सम०—कंठी शंख जैसी गर्दन वाली स्त्री, —ग्रीवा 1. शंखनुमा गर्दन (अर्थात् शंख की भांति तीन रेखाओं से युक्त—यह चिह्न सौभाग्यसूचक समझा जाता है) 2. स्त्री जिसकी गर्दन शंख जैसी हो।

कम्बोजः [कम्ब्+ओज] 1. शंख 2. एक प्रकार का हाथी 3. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी—कम्बोजाः समरे सोढुं तस्य वीर्यमनीश्वराः—रघु० ४।६९ अनें० पा०।

कम्र (वि०) [कम्+र] मनोहर, सुन्दर।

कर (वि०) (स्त्री०—रा, —री) [प्रायः समास के अंत में] [करोति, कीर्यते अनेन इति, कृ (कृ)+अप्] जो करता है या कराता है, दुःख°, सुख°, भय°, —रः 1. हाथ —करं व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् —श० १।२४ 2. प्रकाश-किरण, रश्मिमाला—यमुद्वर्तुं पूर्वा व्यवसित इवालम्बितकरः—विक्रम० ४।३४, प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता, अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि शि० ९।६ (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3. हाथी की सूंड़,—सेकः सीकरिणा करेण विहितः—उत्तर० ३।१६ भर्तृ० ३।२० 4. लगान, शुल्क, भेंट—युदा कराक्रान्तमहीभृदुच्चकैरसंशयं संप्रति तेजसा रविः—शि० १।७० (यहाँ 'कर' का अर्थ 'किरण' भी है) (दंडी) अपरान्तमहीपाल-व्याजेन रघवे करम् - रघु० ४।५८ मनु ७।१२८ 5. ओला 6. २४ अंगूठे की माप 7. हस्त नाम नक्षत्र। सम०—अग्रम् 1. हाथ का अगला भाग 2. हाथी के सूंड़ की नोक, आघातः हाथ से की गई चोट,—आरोटः अंगूठी,—आलम्बः हाथ से सहारा देना, सहायक बनना - आस्फोटः 1. छाती 2. थप्पड़,—कंटकः, - कम् नाखून, —कमलं,—पङ्कजम्, पद्मम् कमल जैसा हाथ, सुन्दर हाथ—करकमलवितीर्णैरम्बुनीवारशाल्यैः—उत्तर० ३।२५, —कलशः,—शम् हाथ की अंजलि (पानी लेने के लिए), - किसलयः,—यम् 1. कोंपल जैसा हाथ, कोमल हाथ -करकिसलयतालैर्मुग्धया नर्त्यमानम् —उत्तर० ३।१९, ऋतु० ६।३० 2. अंगुलि, -कोषः हथेली का गर्त, हस्तांजलि °पेयमंबु -घट० २२, ग्रहः, -ग्रहणम् 1. लगान या शुल्क लेना 2. विवाह में हाथ पकड़ना 3. विवाह, ग्राहः 1. पति 2. शुल्क लेने वाला,—ज: नाखून —तीक्ष्णकरजक्षुण्णात्—वेणी० ४।१, इसी प्रकार अमरु ८५, (जम्) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य,—जालम् प्रकाश की धारा,—तलः हथेली —वनदेवताकरतलैः- श० ४।४, करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति—पंच० २।१२४, °आमलकम् (शा०) हथेली पर रक्खा हुआ आँवला—(आमलं) प्रत्यक्षीकरण की सुगमता तथा स्पष्टता जैसा कि हथेली पर रक्खे फल के विषय में स्वाभाविक है - तृ० करतलामलकफलवदखिलं जगदालोकयताम्—का० ४३, °स्थ (वि०) हथेली पर रक्खा हुआ,—तालः, ताल-कम् 1. तालियाँ बजाना—स जहास ददत्करताल-मुच्चकैः - शि० १५।३९ 2. एक प्रकार का वाद्य-यंत्र, संभवतः झांझ,—तालिका, ताली 1. तालियाँ बजाना —उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीमिरेयः —नै० ३।७ 2. तालियाँ बजा कर समय बिताना, —तोया एक नदी का नाम,—द (वि०) 1. लगान या शुल्क देनेवाला 2. सहायक - करदीकृतात्रिलिङ्गनृपां मेदिनीम—वेणी० ६।१८,—पत्रम् आरा,—पत्रिका स्नान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या जल-क्रीड़ा करते समय जल उछालना,—**पल्लवः** 1. कोमल हाथ 2. अंगुलि—तु० °किसलय,—**पालः**, —**पालिका**, 1. तलवार 2. कुदाली,—**पीडनम्** विवाह तु० पाणिपीडन,—**पुटः** दोनों हाथ मिला कर (दोनों की भांति) बनाई हुई अंजलि,—**पृष्ठम्** हथेली की पीठ,—**बालः**,—**वालः** 1. तलवार—अवोरुहटः करवालपाणिर्व्यापादितः—मा० ९, म्लेच्छानिवहनिधने कलयसि करवालम्—गीत० १ 2. नाखून,—**भारः** लगान या शुल्क की भारी राशि, **भूः** नाखून, · **भूषणम्** कड़ा या कंकण आदि कलाई में पहनने का गहना,—**मालः** धूआं, · **मुसलम्** बड़ा हथियार—दे० आयुध,—**रुहः** 1. नाखून—अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः—श० २।२०, मेघ० ९६ 2. तलवार,—**वीरः**,—**वीरकः** 1. तलवार या खड्ग 2. कब्रिस्तान 3. चोदि देश का एक नगर 4. कनेर, · **शाखा** अंगुलि, —**शोकरः** हाथी की सूंड द्वारा फेंका हुआ पानी, · **शूकः** नाखून,—**सादः** - किरणों का मंद पड़ जाना,—**सूत्रम्** कंगना या विवाह-सूत्र जो कलाई में बांधा जाता है,—**स्थालिन्** (पुं०) शिव,—**स्वनः** तालियां बजाना ।

करकः, -**कम्** [किरति करोति वा जलमत्र कृ (कृ) + वुन्] (संन्यासी का) जलपात्र—का० ४१,—**कः** अनार का वृक्ष,—**कः**, **कम्**, का ओला, - तान्कुर्वीयास्तुमुलकरकावृष्टिपातावकीर्णान्-मेघ० ५४, भामि० १।३५, । सम० - **अम्भस्** (पुं०) नारियल का पेड़, —**आसारः** ओलों की बौछार,—**अम्भः** पानी,—**पालिका** संन्यासियों का जलपात्र ।

करङ्कः [कस्य रङ्कः इव ष० त०] 1. अस्थिपंजर 2. खोपड़ी · प्रेत-रङ्कुः करङ्कादङ्कुरयादस्थिसंस्थं स्थपुटमतमपि ऋध्नमत्यग्रमत्ति—मा० ५।१६, ५।१९ 3. (नारियल का बना) छोटा पात्र,छोटा **बक्स** या डिब्बा- जैसा कि 'ताम्बूलकरङ्कवाहिनी' (कादम्बरी में प्रयुक्त) ।

करञ्जः [कं शिरोजलं वा रञ्जयति—तारा०] एक वृक्ष का नाम (इससे औषधियाँ तैयार की जाती हैं) ।

करटः [किरति मदम्—कृ—अटन्] 1. हाथी का गंडस्थल 2. कुसुम्भ का फूल 3. कौवा या० ४।१९ 4. नास्तिक, ईश्वर और वेद में विश्वास न रखने वाला 5. पतित ब्राह्मण ।

करटकः [करट+कन्] 1. कौवा मुच्छ० ७ 2. चौर्य कला व विज्ञान का प्रवर्तक कर्णीरथ 3. हिं० और पच० में गीदड़ का नाम ।

करटिन् (पुं०) [करट+इनि] हाथी—दिग्गन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः भामि० १।२. ।

करः (रे) टुः [कृ+अटु, के जले वापौ वा रेटति क+रेट्+कु] एक प्रकार का पक्षी, सारस ।

करणम् [कृ+ल्युट्] 1. करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, परहित°, संध्या°, प्रिय° आदि 2. कृत्य, कार्य 3. धार्मिक कृत्य 4. व्यवसाय, धंधा 5. इन्द्रिय—वपुषा करणोज्झितेन सा निपतन्ती पतिमभ्यपातयत्—रघु० ८।३८, ४२, पटुकरणैः प्राणिभिः—मेघ० ५, रघु० १४।५० 6. शरीर—उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया—कु० ४।५ 7. कार्य का साधन या उपाय—उपमितिकरणमुपमानम्—तर्क सं० 8. (तर्क० में) साधनविषयक हेतु जिसकी परिभाषा है—व्यापारवदसाधारणं कारणं करणम् 9. कारण या प्रयोजन 10. (व्या० में) करण कारक द्वारा अभिव्यक्त अर्थ—साधकतमं करणम्—पा. १।४।४२ या क्रियायाः परिनिष्पत्तिर्यद्व्यापारादनन्तरम्, विवक्ष्यते यदा यत्र करणं तत्तदा स्मृतम् 11. (विधि में) दस्तावेज, तमस्सुक, लिखित प्रमाण—मनु० ८।५१,५२, १५४ 12. लघात्मक विरामचिह्न, समय काटने के लिए ताली बजाना—कु० ६।४० 13. (ज्योतिष में) दिन का एक भाग (यह करण गिनती में ११ हैं) । सम०—**अक्षिः** आत्मा,—**ग्रामः** इन्द्रियों का समूह · **ग्रामम्** सिर ।

करण्डः [कृ+अण्डन्] (बांस की बनी) छोटी डलिया या टोकरी · करण्डपीडितततोः भोगिनः—मृच्छ० २।८४, सर्वमायाकरण्डम् १।७७ 2. मधुमक्खियों का छत्ता 3. तलवार 4. एक प्रकार की बत्तख, कारण्डव ।

करण्डिका, करण्डी (स्त्री०) [करण्ड+कीष्, टाप्, ह्रस्व] बांस का बना छोटा सन्दूक, बांस की पिटारी ।

करण्डय (वि०) [कर+धे—खश्, मुम्] हाथ चूमने वाला ।

करभः [कृ+अभच्] 1. हाथ की पीठ (कलाई से लेकर नाखूनों तक)—मृदुलहस्तः, जैसा कि 'करभोपमोरुः रघु० ६।८३ में, दे० नी० करभोरु 2. हाथी की सूंड 3. हाथी का बच्चा 4. ऊँट का बच्चा 5. ऊँट 6. एक सुगंधित द्रव्य । सम० —**ऊरुः** (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जंघाएँ हाथ के अग्रभाग की पीठ से मिलती जुलती हैं—अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते—श० ३।२१, शि० १०।६९—अमर ६९, (दूसरों व्याख्या के अनुसार) —जिसकी जंघाएँ हाथी के सूंड से मिलती जुलती हैं ।

करभकः [करभ+कन्] ऊँट ।

करभिन् (पुं०) [करभ+इनि] हाथी ।

करम्ब, करम्बित (वि०)[कृ+अम्बच्, करम्ब+इतच् ब] 1. मिश्रित, मिला-जुला, चित्रविचित्र, रंगबिरंगा,—प्रकाम-मादित्यमवाप्य कण्टकैः करम्बिता मोदभर विधुवती—नैं० १।११५, स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् गीत० ११ 2. बेढंगा हुआ जड़ा हुआ ।

करम्भः (बः) [क+रम्भ+घञ्] 1. दही मिला आटा या अन्य भोज्यपदार्थ 2. कोचड़—करम्भबालुकाता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पान्—मनु० १२।७६, (यहाँ इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गई हैं, परन्तु मेधातिथि इसका अर्थ 'कौंचड़' ही मानते हैं)।

करहाटः [कर+हट्+घञ्+अण्] 1. एक देश का नाम (संभवतः सतारा जिले का वर्तमान कर्हाद),—करहाटः पतेः पुत्री शिवगन्धेक्रमंणम् विक्रमांक० ८।२ 2. कमल का डंठल या रेशेदार जड़।

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] 1. भयानक, भीषण, डरावना, भयंकर—उत्तर० ५।५, ६।१, मा० ३, भग० ११।२३, २५, २७, रघु० १२।९८, महावी० ३।४८ 2. जंभाई लेता हुआ, पूर्णतया खोलता हुआ —उत्तर० ५।६ 3. बड़ा, विस्तृत, ऊँचा, उत्तुंग 4. असम, जिसमें झटका या हचकोला लगे, नोकदार —वेणी० १।६, मा० १।३८,—ला दुर्गा का प्रचण्ड रूप, °आयतनम्, न करालोपहाराढ्य फलमन्यद्विभाव्यते मा० ४।३३, । सम०—दंष्ट्र डरावने दाँतों वाला,—वदना दुर्गा की उपाधि।

करालिकः [करालां करसदृशशाखानाम् आलिः श्रेणी यत्र —ब० स० कप्] 1. वृक्ष 2. तलवार।

करिका [कर+अच्—ङीष्+कन्, टाप् ह्रस्वः] खरौंच, नखाघात से हुआ घाव।

करिणी (स्त्री०) [कर+इनि+ङीप्] हथिनी कथमेत्य मलिविषयंयं करिणी पङ्कमिवावसीदति —कि० २।६, भामि० १।२।

करिन् (पुं०) [कर+इनि] 1. हाथी 2. (गण०) आठ की संख्या। सम०—इन्द्रः, ईश्वरः,—वरः बड़ा हाथी, विशालकाय हाथी—सदादानः पश्चिणः शास्त्र एवं करीश्वरः—पंच० २।७०, दूरीकृताः करिवरेण मदान्धबुद्ध्या —नीति० २,—कुंभः हाथी के मस्तक का अग्रभाग —भामि० २।१७७,—गजितम् हाथी की चिंघाड़, (बृंहितं करिराजितम् —अमर०),—दंतः हाथी दाँत, —पः महावत, —पोतः,—शावः, शावकः हाथी का बच्चा, —बंधः स्तंभ जिससे हाथी बाँधा जाय —मालः सिंह, —मुखः गणेश का विशेषण, —वरः= °इन्द्रः, —वैजयन्ती (पुं०) झंडा जो हाथी के द्वारा ले जाया जा रहा हो,—वृंदः हाथियों का समूह।

करीरः [कृ+ईरन्] 1. बांस का अंकुर 2. अंकुर आनिन्यिरे वेशकरीरनीलैः —शि० ४।१४ 3. काँटेदार वृक्ष जो मरुस्थल में पैदा होता है तथा जिसे ऊंट खाते हैं, —पत्रं नैव यदा करीरविषटे दोषो वसन्तस्य किम् —भर्तृ० २।९३, तु० किं पुष्पैः किं फलैस्तस्य करीरस्य दुरात्मनः, येन वृद्धिं समासाद्य न कृतः पत्रसंग्रहः। —सुभा०, 4. पानी का घड़ा।

करीषः,—षम् [कृ+ईषन्] सूखा गोबर। सम०—अग्निः सूखे गोबर या कंडों की आग।

करीषवृष्टिः [करीष+कृ+क्त, मुम्] प्रबल वायु या आँधी।

करीषिणी [करीष+इनि+ङीप्] संपत्ति की अधिष्ठात्री देवी।

करुण (वि०) [करोति मनः आनुकूल्याय, कृ+उनन् —तारा०] कोमल, मार्मिक, दयनीय, करुणाजनक, शोचनीय—करुणध्वनिः— उत्तर० १, शि० ५।६७, विफलकरुणैरार्यचरितैः—उत्तर० १।२८,—णः 1. दया, अनुकम्पा, दयालुता 2. करुण रस, शोक, रंज (आठ या नौ रसों में से एक)—पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः—उत्तर० ३।१, १३, विलपन्नुच्चैः करुणार्थरुषितं प्रियां प्रति—रघु० ८।७०।। सम०—मल्ली मल्लिका का पौधा,—विप्रलम्भः (अलं० शा० में) वियुक्तावस्था में प्रेम-भावना।

करुणा [करुण+टाप्] अनुकंपा, दया, दयालुता—प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा · मेघ० ९३, इसी प्रकार 'सकरुण=सदय' तथा 'अकरुण=निर्दय'। सम०—आर्द्र (वि०) कोमल-हृदय, दया से पसीजा हुआ, संवेदनशील,—निधिः दया का भण्डार,—पर, —मय (वि०) अत्यन्त कृपालु,—विमुख (वि०) निर्दय, क्रूर—करुणाविमुखेन मृत्युना— रघु० ८।९७।

करेटः [करे+अट्+अच्, अलुक् स०] अंगुली का तालून।

करेणुः [कृ+एणु—अथवा के मस्तके रेणुरस्य तारा०] 1. हाथी, —करेणुरारोहपते निषादिनम्—शि० १२।५, ५।४८ 2. कर्णिकार वृक्ष, —णुः (स्त्री०) 1. हथिनी —ददौ रसात्पंकजरेणुगन्धि गजाय गण्डूषजलं करेणुः कु० ३।३७, रघु० १६।१६ 2. पालकाव्य की माता। सम०—भूः,—सुतः हस्तिविज्ञान का प्रवर्तक पालकाव्य।

करोटम्, करोटिः (स्त्री०) [कृ+रुट्+अच्, इन वा] 1. खोपड़ी—महावी० ५।१९ 2. कटोरा या पात्र।

कर्कः [कृ+क] 1. केंकड़ा 2. कर्क राशि, चतुर्थराशि 3. आग 4. जलकुंभ 5. दर्पण 6. सफ़ेद घोड़ा।

कर्कटः,—टकः [कर्क+अटन्, स्वार्थे कन् च] 1. केंकड़ा 2. कर्कराशि, चतुर्थराशि, 3. वृत्त, घेरा।

कर्कटिः,—टी (स्त्री०) [कर+कट+इन्, शक० पररूपम्, ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

कर्कन्धुः,—धूः [कर्कं कण्टकं दधाति -धा+कु] 1. उन्नाव का पेड़—कर्कन्धूफलपाकमिश्रपचनामोदः परिस्तीर्यते —उत्तर० ४।१, कर्कन्धूनामुपरि तृहिनं रञ्जयत्यूधसंध्या —श० ४, अने० पा० 2. इस वृक्ष का फल—याज्ञ० १।२५०।

कर्कर (वि०) [कर्क+रा+क] 1. कठोर, ठोस 2. दृढ़, —रः 1. हड्डी 2. दर्पण 3. हड्डी, (खोपड़ी का) भग्न टुकड़ा, खंड,—मा० ५।१९ 4. फीता या चमड़े को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पेटी । सम० --अक्षः हिलती पूंछ वाला (खंजन) पक्षी, अंगः खंजन पक्षी, --अंधुकः अंधा कुआँ, तु०, अंधकूप ।

कर्करादुः [कर्क हासं रटति प्रकाशयति, कर्क+रट्+कुञ्] तिरछी दृष्टि, कनखी, कटाक्ष ।

कर्करालः [कर्कर+अल्+अच्] घुंघराले बाल, चूर्णकुन्तल ।

कर्करी [कर्कर+ङीप्] ऐसा जलपात्र जिसकी तली में चलनी की भाँति छिद्र हों ।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1. कठोर, कड़ा (विप० कोमल या मृदु) सुदृढ़पाष्फालनकर्कशाङ्गुलौ—रघु० ३।५५, ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन पस्पर्श तदङ्गमिन्द्रः --कु० ३।२२, १।३६, शि० १५।१० 2. निष्ठुर, क्रूर, निर्दय (शब्द, आचरण आदि) 3. प्रचण्ड, प्रबल अत्यधिक तस्य कर्कशविहारसंभ्रमं --रघु० ९।६८ 4. निराश 5. दुराचारी, दुश्चरित्र, स्वामिभक्ति से हीन (जैसा कि कोई स्त्री) 6. समझ में न आने योग्य, दुर्बोध --तर्के वा भृशकर्कशे मम समं लीलायते भारती --प्रस० ४,—शः तलवार ।

कर्कशिका, कर्कशी [कर्कश+कन्--टाप्, इत्वम्, ङीप् वा] जङ्गली बेर, झड़बेर ।

कर्किः [कर्क्+इन्] कर्क राशि, चतुर्थ राशि ।

कर्कोटः, —टकः [कर्क्+ओट्, स्वार्थे कन्] आठ प्रधान साँपों में से एक (जब राजा नल को कलि के दुष्प्रभाव से नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करनी पड़ीं तो उस समय कर्कोट ने, जिसे नल ने एक बार आग से बचाया था, ऐसा विकृत कर दिया कि विपत्काल में भी उसे कोई पहचान न सके) ।

कर्कूरः [कर्क्+ऊर, पृषो० च आदेशः] एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष,—रम् 1. सोना 2. हरताल ।

कर्ण् (चुरा० उभ०—कर्णयति-ते, कर्णित) 1. छेद करना सुराख करना 2. सुनना (प्रायः 'आ' उपसर्ग के साथ) आ --, समा--, सुनना, ध्यान से सुनना --सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति --श० १, आकर्णयशुस्मुकहंसनादान् --भट्टि० ११।७ ।

कर्णः [कर्ण्यते आकर्ण्यते अनेन—कर्ण्+अप्] 1. कान --अहो खलभुजङ्गस्य विपरीतवधक्रमः, कर्णं लगति चास्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते । पंच० १।३००, ३०५, **कर्णं दा** ध्यान से सुनना, **कर्णागतम्** कान तक आना, ज्ञात होना—रघु० ११९, **कर्णे कृ** कान में डालना, --चौर० १०, **कर्णे कथयति** कान में कहता है, दे० षट्कर्ण, चतुष्कर्ण 2. गंगाल का कड़ा 3. नाव की पतवार 4. त्रिभुज के समकोण के सामने की रेखा 5. महाभारत में वर्णित कौरव पक्ष का एक महारथी (जब कुन्ती अपने पिता के घर रहती थी, उस समय सूर्य देव के संयोग से कुन्ती की अविवाहितावस्था में कर्ण का जन्म हुआ । (दे० कुंती) बालक उत्पन्न होने पर कुन्ती ने अपने बन्धु-बान्धवों की निन्दा तथा लोक-लज्जा के कारण उसे नदी में फेंक दिया । धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ ने उसे नदी से निकाल कर अपनी पत्नी राधा को दे दिया । उसने उसे पालपोस कर बड़ा किया, इसी लिए कर्ण को सूतपुत्र या राधेय कहते हैं । बड़ा होने पर दुर्योधन ने कर्ण को अङ्ग देश का राजा बना दिया । अपनी दानशीलता के कारण वह दानवीर कर्ण कहलाया । एक बार इन्द्र (जो अपने पुत्र अर्जुन पर अनुग्रह करने के लिए आतुर रहता था) ने ब्राह्मण का वेश धारण किया और कर्ण को झांसा देकर उसके दिव्य कवच व कुंडल हथिया लिये, बदले में उसे एक शक्ति या बरछी दे दी । युद्ध की कला में अपने आप को दक्ष बनाने की इच्छा से कर्ण ब्राह्मण बन कर परशुराम के पास गया, वहाँ उसने परशुराम से अस्त्र-संचालन की शिक्षा प्राप्त की । परन्तु यह भेद बहुत दिन तक छिपा न रहा । एक बार जब परशुराम अपना सिर कर्ण की जंघा पर रख कर सो रहे थे, तो एक कीड़ा (कई लोगों के मतानुसार इन्द्र ने कर्ण को विफल करने की दृष्टि से 'कीड़े' का रूप धारण किया था) कर्ण की जंघा को खाने लगा, उसने जंघा में गहरा घाव कर दिया, परन्तु उस पीड़ा से भी कर्ण टस से मस न हुआ । इस अनुपम सहन शक्ति से परशुराम को कर्ण की असलियत का पता लग गया, फलतः उसने कर्ण को शाप दे दिया कि आवश्यकता के समय उसकी विद्या—काम नहीं आवेगी । एक दूसरे अवसर पर उसे एक ब्राह्मण ने (जिसकी गौएँ अनजाने में पीड़ा करते हुए कर्ण द्वारा मारी गई थी) शाप दे दिया कि संकट आ पड़ने पर उसके रथ का पहिया पृथ्वी खा लेगी । इस प्रकार की कठिनाइयों के होते हुए भी कर्ण ने भीष्म और द्रोण के पतन के पश्चात् कौरव सेना के सेनापति के रूप में कौरव-पाण्डवों के युद्ध में अपना युद्ध कौशल खूब दिखाया । तीन दिन तक वह पाण्डवों के सामने रणक्षेत्र में डटा रहा । परन्तु अन्तिम दिन जब कि उसके रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया था, वह अर्जुन के द्वारा मारा गया । कर्ण, दुर्योधन का अत्यन्त घनिष्ठ मित्र था, पाण्डवों का नाश करने के लिए शकुनि से मिल कर जो योजनाएँ या षड्यन्त्र दुर्योधन ने किये, उन सब में कर्ण उसके साथ था) । सम०—**अंजलिः** बाहरी कान का श्रवण-मार्ग,— **अनुजः** युधिष्ठिर,— **अन्तिक** (वि०) कान के निकट--स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः—श० १।२४,—**अन्वुः**—**ङ्** (स्त्री०) कान का आभूषण, कान की बाली,— **अपणम्**, कान देना, ध्यान से सुनना,— **—आस्फालः** हाथी के कानों की फड़फड़ाहट,— **उत्पल**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कान का आभूषण या (कइयों के मतानुसार) केवल आभूषण, (मम्मट कहता है कि यहाँ 'कान' का अर्थ 'कान में स्थिति' है—तु० उसका एत० टिप्पण - कर्णावतंसादिपदे कर्णोदिश्वनिनिमित्तः. लम्बिधानार्थवोधार्थं स्थितेश्चेतत्समर्थनम् । काव्य० ७),—**उपकर्णिका** अफवाह (शा० 'एक कान से दूसरे कान तक'),···**घेडः** (आयु० में) कान में लगातार गूंज होना,—**गोचर** (वि०) जो कानों को सुनाई पड़े,—**ग्राहः** कर्णचार, —**जप** (वि०) (**कर्णेजपः** भी) रहस्य की बात बतलाने वाला, पिशुन, मुखबिर, - **जपः**,—**जापः** झूठी निन्दा करना, चुगली करना, कलंक लगाना, - **जाहः** कान की जड़—**अपि कर्णजाहविनिवेशितानतः**—भा० ५।८,—**जित्** (पुं०) **कर्णजिदेता**, अर्जुन, तृतीय पांडव, —**तालः** हाथी के कानों की फड़फड़ाहट, या उससे उत्पन्न आवाज—विस्तारितः कुंजरकर्णतालैः—रघु० ७।३९, ९।७१, शि० १३।३७,—**दारः** मल्लाह, चालक —**अकर्णधारा जलधौ विपत्तेर्हि नौरिव**—हि० ३।२, **अविनयनदीकर्णधारकर्ण**—वेणी० ४,—**धारिणी** हथिनी —**पटः** श्रवणपरास,—**परम्परा** एक कान से दूसरे कान, अनुश्रुति—इति कर्णपरम्परया श्रुतम्—रत्न० १, —**पालिः** (स्त्री०) कान की लौ, **पाशः** सुन्दर कान, —**पूरः** 1. (फूलों का बना) कान का आभूषण, कान की बाली—इदं च करतलं किमिति कर्णपूरतामारोपितम् । का० ६० 2. अशोकवृक्ष,—**पूरकः** 1. कान की बाली 2. कदम्ब वृक्ष 3. अशोक वृक्ष 4. नील कमल, —**प्रान्तः** कान की पाली,—**भूषणम्**, **भूषा** कान का गहना,—**मूलम्** कान की जड़—रघु० १२।२,—**पोटी** दुर्गा का एक रूप,—**वंशः** बाँसों से बना ऊँचा मचान, —**वर्जित** (वि०) बिना कानों का, (—**तः**) साँप, —**विवरम्** कान का श्रवण-मार्ग,—**विष्** (स्त्री०) घूंघ, कान का मैल,—**वेधः** (बालियाँ पहनने के लिए) कानों का बींधना,—**वेष्टः**,—**वेष्टनम्** कान की बाली, —**शष्कुली** (स्त्री०) कान का बाहरी भाग (श्रवण मार्ग पर ले जाने वाला) नै० २।८,—**शूलः**,—**लम्** कानों में पीड़ा,—**श्वघ** (वि०) जो सुनाई दे, ऊँचा (स्वर) —**कर्णश्वेडनिलो**—मनु० ४।१०२,—**स्रावः**,—**संभवः** कानों का बहना, कान से मवाद निकलना,—**सूः** (स्त्री०) कर्ण की माता, कुन्ती,—**होड** (वि०) कर्णरहित (—**नः**) साँप ।

कर्णकर्णि (वि०) [कर्णे कर्णे यद्दोन्दा प्रवृत्तं कथनम् —व्यतिहारे इच्, पूर्वस्य दीर्घश्च] कानों कान, एक कान से दूसरे कान ।

कर्णाटः [कर्ण+अट्+अच्] भारत प्रायोद्वीप के दक्षिण में एक प्रदेश—(काव्यं) कर्णाटेन्दोर्जगति विदुषां कण्ठभूषास्वभेतु—विक्रमांक० १८।१०२,—**टी** (स्त्री०) उपर्युक्त देश की स्त्री—**कर्णाटी चिकुराणां ताण्डवकरः**—विद्ध० १।२९ ।

कर्णिक (वि०) [कर्ण+इकन्] 1. कानों वाला 2. पतवार धारी,—**कः** केवट,—**का** 1. कानों की बाली 2. गाँठ, गोल गिल्टी 3. कमल का फल, कंवलगट्टा 4. एक छोटी कूची या कलम 5. मध्यमा अंगुली 6. फल का डंठल 7. हाथी के सूंड की नोक 8. खड़िया ।

कर्णिकारः [कर्णि+कृ+अण्] 1. कनियार का वृक्ष—निभिद्योपरि कर्णिकारमुकुलान्योलयेत षट्पदः—विक्रम० २।२३, ऋतु० ६।६, २० 2. कमल का फल, कंवलगट्टा —**रम्** कनियार का फूल, अमलतास का फूल (यद्यपि यह फूल बड़े सुन्दर रंग का होता है, परन्तु सुगन्ध न होने के कारण इसे कोई पसन्द नहीं करता—तु० कुं० ३।२८,—**वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म चेतः**, प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः ।

कर्णिन् (वि०) [कर्ण+इनि] 1. कानों वाला 2. लम्बे कानों वाला 3. फल लगा हुआ (जैसे तीर) (पुं०) 1. गधा 2. मल्लाह 3. गाँठों से सम्पन्न बाण ।

कर्णी (स्त्री०) [कर्ण+ङीप्] 1. पुंखदार या विशेष आकार का बाण 2. चौंसठ कला व विज्ञान के पिता मूलदेव की माता । सम०—**रथः** बन्द डोली, स्त्रियों की सवारी, पालकी—कर्णीरथस्थां रघुवीरपत्नीम्—रघु० १४। १३,—**सुतः** चौंसठकला व विज्ञान के जन्मदाता मूलदेव—**कर्णीसुतप्रहिते च पथि मतिमकरवम्**—दश० ।

कर्तनम् [कृत+ल्युट्] 1. काटना, कतरना—याज्ञ० २। २२९, २८६ 2. रूई कातना (तकुः कर्तनसाधनम्) ।

कर्तनी (स्त्री०) [कर्तन+ङीप्] कैंची ।

कर्तरिका, कर्तरी (स्त्री०) 1. कैंची 2. चाकू 3. खड्ग, छोटी तलवार ।

कर्तव्य (सं० कृ०) [कृ+तव्यत्] 1. जो कुछ उचित हो या होना चाहिए,—हीनसेवा न कर्तव्या कर्तव्यो महदाश्रयः—हि० ३।११, मया प्रातर्नि.सत्त्वं वनं कर्तव्यम् —पंच० १ 2. जो काटना या कतरना चाहिए, नष्ट करने योग्य· पुत्रः सखा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गुरुः, रिपुस्थानेषु वर्तन्ते कर्तव्या भूतिमिच्छता —महा०,—**व्यम्, कर्तव्यता**, जो होना चाहिए, धर्म, आचार—कर्तव्यं वो न पश्यामि—कु० ६।८१, २।६२, याज्ञ० १।३३० ।

कर्तृ (वि०) [कृ+तृच्] 1. करने वाला, कर्ता, निर्माता, सम्पादक—व्याकरणस्य कर्ता=रचयिता, ऋणस्य कर्ता —कर्ज करने वाला, हितकर्ता=भला करने वाला, सुवर्णकर्ता=सुनार 2. (व्या० में) अभिकर्ता (करण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारक का अर्थ) 3. परब्रह्म 4. ब्रह्मा का विशेषण 5. विष्णु या शिव

कर्णी (स्त्री०) [कर्तृ+ङीप्] 1. आकू 2. कैंची।

कर्दः, कर्दटः [कर्द्+अच्, कर्द+अट्+अच्, पररूपम्] कीचड़।

कर्दमः [कर्द्+अम] 1. कीचड़, दलदल, पंक—पादौ नूपुर लग्नकर्दमधरौ प्रक्षालयन्ती स्थिता पृच्छ० ५।३५, पशुचाङ्गयानकर्दमान्- रघु० ४।२४ 2. कूड़ा, मल 3. (आलं०) पाप, मम् मांस। सम०—आटकः मलपात्र, मलमार्ग आदि।

कर्पटः, —टम् [कृ+विच्=कर्, स च पटश्च कर्म० स०] 1. पुरानापन, जीर्ण-शीर्ण का खेगली लगा कपड़ा 2. कपड़े का टुकड़ा, धज्जी 3. मटियाला या लाल रंग का कपड़ा।

कर्पटिक, न् (वि०) [कर्पट+ठन्, इनि वा] जीर्ण शीर्ण कपड़ों (चिथड़ों) से ढका हुआ।

कर्पणः [कृप्+ल्युट्] एक प्रकार का हथियार—चापचक्र-कणाकर्पणप्रासपट्टिश आदि—दश० ३५।

कर्परः [कृप्+अरन् वा०] 1. कड़ाह, कड़ाही 2. बर्तन 3. ठीकरा, टूटे बर्तन का टुकड़ा—जैसा कि घट कर्पर में -जीयेत येन कविना यमकैः परेण तस्मै लवेयमुदकं घटकर्परेण—घट० २२ 4. खोपड़ी 5. एक प्रकार का हथियार।

कर्पासः, —सम्, सी [कृ+पास, स्त्रियां ङीष्] कपास का वृक्ष।

कर्पूरः, —रम् [कृप्+ऊर] कपूर। सम०—खंडः 1. कपूर का खेत 2. कपूर का टुकड़ा, -तैलम् कपूर का तेल।

कर्फरः [कृ+विच्=कर्, फल्+अच्, रस्य लः, कीर्यमाणः फलः प्रतिबिम्बो यत्र ब० स०] दर्पण।

कर्बु (वि०) [कर्ब्+उन्] रंगविरंगा, चित्तीदार —याज्ञ० ३।१६६।

कर्बुर (वि०) [कर्ब्+उरच्] 1. रंगविरंगा, चित्र-कबरा—क्वचिच्चलत्सद्धनगिङ्कराम्बदकर्बुरः—शि० १७।५६ 2. कबूतर के रंग का, सफेद सा, भूरा—पवनर्भस्म-कपोतकर्बुरम् कु० ४।२७. रः चित्रविचित्र रंग 2. पाप 3. भूत, पिशाच 4. चतूरे का पौधा, —रम् 1. सोना, 2. जल।

कर्बुरित (वि०) [कर्बुर—इतच्] रंगबिरंगा—उत्तर० ६।४।

कर्मठ (वि०) [कर्मन्+अटच्] 1. कार्यप्रवीण, चतुर 2. परिश्रमी 3. केवल धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न, —ठः यज्ञ निर्देशक।

कर्मण्य (वि०) [कर्मन्+यत्] कुशल, चतुर,—न्या मजदूरी, —न्यम् सक्रियता।

कर्मन् (नपुं०) [कृ+मनिन्] 1. कृत्य, कार्य, कर्म 2. कार्यान्वयन, सम्पादन 3. व्यवसाय, पद, कर्तव्य—संप्रति विश्ववैद्यानां कर्म- मालवि० ४ 4. धार्मिक कृत्य (यह चाहे, नित्य हो, नैमित्तिक हो या काम्य हो) 5. विशिष्ट कृत्य, नैतिक कर्तव्य 6. धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान (कर्मकाण्ड) जो ब्रह्मज्ञान या कल्पना प्रवण धर्म का विरोधी है (विप० ज्ञान)—रघु० ८।२० 7. फल, परिणाम 8. नैसर्गिक या सक्रिय सम्पत्ति (धरती के आश्रय के रूप में) 9. भाग्य, पूर्वजन्म के किये हुए कर्मों का फल- भर्तृ० २।४९, 10 (व्या०) कर्म का उद्देश्य—कर्तुरीप्सिततमं कर्म— पा० १।४।४९ 11. (वैशे० द० में) गति या कर्म जो सात द्रव्यों में एक माना जाता है, (परिभाषा इस प्रकार है:- एकद्रव्य-मगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणं कर्म— वैशे० सू०, कर्म पाँच प्रकार का है—उत्क्षेपणं ततोऽवक्षेपणमाकुञ्चनं तथा, प्रसारणं च गमनं कर्माण्येतानि पञ्च च—भाषा० ६। सम०—अक्षम (वि०) कार्य करने में असमर्थ, —अङ्गम् कार्य का अंश, यज्ञीय कृत्य का भाग (जैसा कि दर्श यज्ञ का प्रयाज)—अधिकार धर्मकृत्यों को सम्पन्न करने का अधिकार,—अनुरूप (वि०) 1. किसी विशेष कार्य या पद के अनुसार 2. पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार, —अन्तः 1. किसी कार्य या व्यवसाय की समाप्ति 2. कार्य, व्यवसाय, कार्य सम्पादन 3. कोष्ठागार, धान्यागार—मनु० ७।६२, [कर्मान्तः इक्षुधान्यादिसंग्रहस्थानम्—कुल्लू०] 4. जुती हुई भूमि, —अन्तरम् 1. कार्य में भिन्नता या विरोध 2. तपस्या, प्रायश्चित्त 3. किसी धार्मिक कृत्य का स्थगन,—अन्तिक (वि०) अन्तिम (कः) सेवक, कार्मिक,—आजीवः किसी पेशे से (जैसे शिल्पकार का) अपनी जीविका चलाने वाला,—आरब्धन् (वि०) कार्य के नियमों से युक्त, सक्रिय—मनु० १।२२,२३; (पुं०) आत्मा,—इन्द्रियम् काम करने वाली इन्द्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न हैं (वे यह हैं—वाक्पाणिपादपायूपस्थानि- मनु० ११।९।१, 'इन्द्रिय' शब्द के नी० भी देख,—उदारम् साहसिक या उदार कार्य, उच्चाशयता, शक्ति,—उद्युक्त (वि०) व्यस्त, संलग्न, सक्रिय, सोत्साह,—करः 1. भाड़े का मजदूर (वह सेवक जो दास न हो)- कर्मकराः स्वपत्यादयः—पंच १, शि० १४।१६ 2. यम,—कर्तृ (पुं०) (व्या० में) कर्ता जो साथ ही साथ कर्म भी है—उदा० पच्यते ओदनः, इसकी परिभाषा यह है:—क्रियमाणं तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति, सुकरैः स्वैर्गुणैः कर्तुः कर्मकर्तेति तद्विदुः। —काण्डः,—ण्डम् वेद का वह विभाग जो यज्ञीय कृत्यों, संस्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान से उत्पन्न फल से सम्बन्ध रखता है,—कारः 1. जो किसी व्यवसाय को करता है, कारीगर, शिल्पकार (जो भाड़े पर काम करने वाला न हो) 2. कोई भी मजदूर (चाहे भाड़े

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का हो या बिना भाड़े का) 3. लुहार, -हरिणाक्षि कटाक्षेण आत्मानमवलोकय, न हि खड्गो विजानाति कर्मकारं स्वकारणम् । उद्भट 4. साँड़, -कारिन् (पुं०) मज़दूर कारीगर,—**कार्मुकः**—**कम्** एक मज़बूत धनुष, --**कोलकः** धोबी, ··**क्षम** (वि०) कोई कार्य या कर्तव्य सम्पादन करने के योग्य,—आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः- ··रघु० ११३,-- **क्षेत्रम्** धार्मिक कृत्यों की भूमि अर्थात् भारतवर्ष, तु० कर्मभूमि,—**गृहीत** (वि०) कार्य करते समय पकड़ा हुआ (जैसे कि चोर),—**घातः** कार्य को छोड़ बैठना या स्थगित कर देना, **चं (चां) डालः** 1. काम करने में नीच, नीच या निकृष्ट कर्म करने वाला व्यक्ति, वशिष्ठ उनके प्रकारों का उल्लेख करता है —अनुयकः पिशुनश्च कुलघ्नो दीर्घरोषकः, चत्वारः कर्मचाण्डालाः जन्मतश्चापि पञ्चमः । 2. जो अत्याचार पूर्ण कार्य करता है ··उत्तर० १।४६ 3. राहु,—**चोदना** 1. यजानुष्ठान में प्रेरित करने वाला प्रयोजन 2. धार्मिक कृत्य की विधि,—**ज्ञः** धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित,—**त्यागः** सांसारिक कर्तव्य और धर्मानुष्ठान को छोड़ देना,--**दुष्ट** (वि०) कार्य करने में भ्रष्ट, दुष्ट, दुराचारी अनादरणीय,—**दोषः** 1. पाप, दुर्व्यसन —मनु० ६।६१, ९५ 2. त्रुटि, **दोष**, (कार्य करने में) भारी भूल—मनु० ११०४ 3. मानवी कृत्यों के दुष्परिणाम 4. निंद्य आचरण, **धारयः** समास, तत्पुरुष का एक भेद (इसमें प्रायः विशेषण व विशेष्य का समास होता है), तत्पुरुष कर्मधारय येनाह स्यां बहुव्रीहिः ··उद्भट, · **ध्वंसः** 1. धर्मानुष्ठानों से उत्पन्न फल का नाश 2. निराशा,—**नाम** (स्त्री० में) कुरुक्षेत्र संज्ञा, —**नाशा** काशी और बिहार के मध्य बहने वाली एक नदी, ··**निष्ठ** (वि०) धर्मानुष्ठान के सम्पादन में संलग्न, ··**पथः** 1. कार्य की दिशा या क्षेत्र 2. धर्मानुष्ठान का (कर्म) मार्ग (विप० ज्ञान मार्ग),—**पाकः** कार्यों की परिपक्वावस्था, पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का फल,--**प्रवचनीय** कुछ उपसर्ग तथा अव्यय जो क्रियाओं के साथ संबद्ध न होकर केवल संज्ञाओं का शासन करते हैं उदा० 'आ मुक्ते संसारः' में 'आ' **कर्मप्रवचनीय** है, इसी प्रकार 'जपमनु प्रावर्षत् में 'अनु', तु० उपसर्ग, गति या निपात, **न्यासः** धर्मानुष्ठानों के फलों का परित्याग, **फलम्** पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल या पारितोषिक (दुःख, सुख),--**बन्धः**, **बन्धनम्** जन्म-मरण का बन्धन, धर्मानुष्ठानों के फल चाहे शुभ हों या अशुभ (इनके कारण आत्मा सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त रहता है),-- **भूः**, —**भूमिः** (स्त्री०) 1. धर्मानुष्ठान की भूमि—अर्थात् भारतवर्ष 2. जुती हुई भूमि,—**मीमांसा** संस्काराद्रिक अनुष्ठानों का विचारविमर्श या मीमांसा,—**मूलम्** कुश नामक पवित्र घास, **युगम्** चौथा (वर्तमान) युग, अर्थात् कलियुग,—**योगः** 1. सांसारिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का सम्पादन 2. सक्रिय चेष्टा, उद्योग,—**वशः** भाग्य जो पूर्व जन्म में किये गये कार्यों का अनिवार्य परिणाम है,—**विपाकः**=कर्मपाक,—**शाला** कारखाना, —**शील**,—**शूर** (वि०) कर्मवीर, उद्योगी, परिश्रमी, · संग सांसारिक कर्तव्य तथा उनके फलों में आसक्ति । ··—**सचिवः** मंत्री,—**संन्यासिकः**,—**संन्यासिन्** (पुं०) 1. अमात्या पुरुष जिसने प्रत्येक सांसारिक, कार्य से विरक्ति पा ली है 2. वह संन्यासी जो कर्म फल का ध्यान न करते हुए धर्मानुष्ठानों का सम्पादन करता है,

साक्षिन् (पुं०) 1. आँखों देखा गवाह, प्रत्यक्षदर्शी साक्षी ··कु० ७।८३ 2. जो मनुष्य के शुभाशुभ कर्मों को प्रत्यक्ष देखता रहता है (इस प्रकार के नौ देवता है जो मनुष्य के समस्त कार्यों को प्रत्यक्ष देखते हैं · तथाहि—सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च, एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ।—**सिद्धिः** (स्त्री०) अभीष्ट कार्य की सिद्धि, सफलता ··कु० ३।५७,—**स्थानम्** सार्वजनिक कार्यालय, काम करने का स्थान ।

कर्मंदिन् [कर्मन्द+इनि] संन्यासी, धार्मिक भिक्षु ।

कर्मारः [कर्मन्+कृ+अण्] लुहार याज्ञ० १।१६३, मनु० ४।२१५ ।

कर्मिन् (वि०) [कर्मन्+इनि] 1. कार्य करने वाला, क्रियाशील, कार्यरत 2. किसी कार्य या व्यवसाय में व्यापृत 3. जो फल की इच्छा से धर्मानुष्ठान करता है—कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन · भग० ६।४६; (पुं०) कारीगर, शिल्पकार -याज्ञ० २।२६५ ।

कर्मिष्ठ (वि०) [कर्मिन्+इष्ठन्, इनो लुक्] व्यापारकुशल, चतुर, परिश्रमी ।

कर्वटः [कर्व्+अटन्] बाजार, मंडी या किसी ज़िले (जिसमें २०० से ४०० तक गाँव हों) का मुख्य नगर ।

कर्षः [कृष्+अच् घञ् वा] 1. रेखा खींचना, घसीटना, खींचना—याज्ञ० २।२१७ 2. आकर्षण 3. हल जोतना 4. हल-रेखा, खाई 5. खरोंच,—**र्षः**,—**र्षम्**--चाँदी या सोने का १६ माशों का वजन । **सम०**—**आपणः**= कार्षापण ।

कर्षक (वि०) [कृष्+ण्वुल्] खींचने वाला, **कः** किसान, खेतिहर—याज्ञ० २।२६५ ।

कर्षणम् [कृष्+ल्युट्] 1. रेखा खींचना, घसीटना, खींचना, सुखाना, (धनुष का)··भज्यमानमतिमात्रकर्षणात् रघु० ११।८६ ७।६२ 2. आकर्षण 3. हल जोतना, खेती करना 4. क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, पीड़ित करना··मनु० ७।११२ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्षिणी [कृष्+णिनि+ङीष्] लगाम का दहाना ।

कर्षूः (स्त्री०) [कृष्+ऊ] 1. हल-रेखा, खुड 2. नदी 3. तहर (पु०) 1. सूखे कुंडों की आग 2. कृषि, खेती 3. जीविका ।

कांहिचित् (अव्य०) [किम्+हिल, कादेशः+चित्] किसी समय, (प्रायः 'न' के साथ प्रयोग) मनु० २।४, ४०, ९७; ४।७७, ६।५० ।

कल् i (भ्वा० आ०—कलते, कलित) 1. गिनना, 2. शब्द करना ।

ii (चुरा० उभ० - कलयति-ते, कलित) 1. धारण करना, रखना, ले जाना, संभालना, पहनना, करालकरकन्दली-कलितशस्त्रजालंबलैः उत्तर० ५।५, म्लेच्छनिवह-निधने कलयसि करवालम्—गीत० १, कलितललित-वनमालः; हलं कलयते त०, कलयवलयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरौ १२, शा० ४।१८ 2. गिनना, हिसाब लगाना—काल: कलयतामहम्—भग० १०।३० 3. धारण करना, लेना, रखना, अधिकार में करना —कलयति हि हिमांशोर्निष्कलङ्कस्य लक्ष्मीम्—मा० १।२२, शि० ४।३६, ९।५९ 4. जानना समझना, पर्यवेक्षण, ध्यान देना, सोचना—कलयन्नपि सव्यघो-ऽवस्थे—शि० ९।८३, कोपितं विरहदेहदित्तिचित्ता कान्त-मेव कलयन्त्यनुनिस्थे १०।२२, नै० २।६५, ३।१२ मा० २।९ 5. सोचना, आदर करना, खयाल करना —कलयेदमानमनसं सखि माम् - शि० ९।५८, ६।५४, शा० ४।१५, व्यालोलनिर्मिलनेन सरलमिव कलयति मलयसमीरम्—गीत० ४।७ 6. सहन करना, प्रभा-वित होना - मदलीलाकलितकामपाल—मा० ८, धन्वः कोऽपि न विक्रियां कलयति प्राप्ते नवे यौवने—भर्तृ० १।७२ 7. करना, सम्पादन करना 8. जाना 9. आसक्त होना, लेटजाना, सुसज्जित होना, । आ—० 1. पकड़ना, ग्रहण करना—शि० ७।२१,-कुतूहलाकलित-हृदया—का० ४९ 2. खयाल करना, आदर करना, जानना, ध्यान देना -स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति —का० १०८, खिन्नमसूयया हृदयं तदाकलयामि —गीत० ३ 3. बांधना, जकड़ना, बंधन युक्त होना, रोकना या इकट्ठे पकड़ना शि० १।६, ९।४५, का० ८४, ९९ 4. प्रसार करना, फैंकना—शि० ३।७३ 5. हिलाना, परि -, 1. जानना, समझना, खयाल करना, आदर करना 2. जानकार होना, याद करना वि -, अपांग करना, विकलांग करना- विकृत करना, सम्--, 1. जोड़ना, एकत्र करना तु० संकलन 2. खयाल करना, आदर करना ।

iii (चुरा० उभ०—कालयति -ते, कलित) प्रोत्सा-हित करना, हौंकना, प्रेरणा देना ।

कल (वि०) [कल् (कड्)+घञ्, अबुद्धिः, डलयोरभेदः] 1. मधुर, और अस्पष्ट (अस्पष्टमधुर)—कर्णे कलं किमपि रौति—हि० १।८१, सारसैः कलनिर्ह्रादैः—रघु० १।४१, ८।५९, मालवि० ५।१, 2. मन्द मधुर (स्वर) 3. कोलाहल करने वाला, लगभगाता हुआ, टनटन करता हुआ—भास्वत्कलनूपुराणां—रघु० १६।१२, कलकिंकिणी-रवम्- शि० ९।७४, ८२, कलमेखलाकलकल: ६।१४, ४।५७ 4. दुर्बल 5. अनपका, कच्चा, - लः मन्द या मृदु और अस्पष्ट स्वर, —लम् वीर्य । सम०—अङ्कुरः सारस पक्षी,—अनुवादिन् (पुं०) 1. चिड़िया 2. मधु-मक्खी 3. चातक पक्षी, अविकलः चिड़ा, आलापः 1. मधुर गुंजार 2 मधुर और रुचिकर प्रवचन—स्फुर-त्कलालापविलासकोमलां करोति रागं हृदि कौतुका-धिक्यम् का० २ 3. मधुमक्खी,—उत्ताल (वि०) ऊँचा, तीक्ष्ण,—कण्ठ (वि०) मधुर कंठ वाला (—ण्ठः) (स्त्री०—ण्ठी) 1. कोयल, 2. हंस, राजहंस 3. कबूतर, कलः 1. भौंरे की मर्मरध्वनि या भनभनाहट 2. अस्पष्ट या संयुक्त ध्वनि—चलिताया विदधे कलमेख-लाकलकलोलकलोलदुराशया शि० ६।१४, नेपथ्ये कलकलः (नाटकों में), भर्तृ० १।२७, ३७, अमरु २८ 3. शिव, -कलिका: —कलिका छिताल स्त्री, घोतः कोयल, -तूलिका लम्पट या छिनाल स्त्री, धौतम् 1. चाँदी—शि० १३।५१।४।४१ 2. सोना—विमलकल-धौतस्रगणा खड्गेन वेणी० ३ लिपिः (स्त्री०) 1. सुलझी हुई लिपि की जगमगाहट 2. स्वर्णाक्षर —मरकतशकलकलितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् —गीत० ८, ध्वनिः 1. मन्दमधुर ध्वनि 2. कबूतर 3. मोर 4. कोयल, -नादः मन्द मधुर स्वर, -भाषणम् तुतलाना, -बालकलरव—बचपन की चहक, -रवः 1. मन्द मधुर ध्वनि 2. कबूतरी 3. कोयल,—हंसः 1. हंस, राजहंस —वधूदुकूल कलहंसलक्षणम् —कु० ५।६७ 2. बनत्व, पुंकारण्डव, भट्टि० २।१८, रघु० ८।५९ 3. परमात्मा ।

कलङ्कः [कल्+क्विप्, कल् खासौ अङ्कश्च कर्म० स०] 1. धब्बा, चिह्न, काला धब्बा (शा०) रघु० १३।१५, 2. (आल०) दाग, बट्टा, गहाँ, बदनामी -अपनयतु कलङ्कं स्वस्वभावेन सैव मृच्छ० १०।३४, रघु० १४।३७, इसी प्रकार—कुल० 3. अपराध, दोष - भर्तृ० ३।४८ 4. लोहे का जंग, मोर्चा ।

कलङ्कषः (स्त्री० - षी) [करेण कषति हिनस्ति—कल+कष्+खच्, मुम्] सिंह, शेर ।

कलङ्कित (वि०) [कलङ्क+इतच्] 1. धब्बेदार, लांछित, बदनाम ।

कलङ्कुरः [कं जलं लङ्कयति भ्रामयति, क+लङ्क+णिच् +उरच्] जलावर्त, भंवर ।

कलञ्जः [कं लञ्जयति - क+लञ्ज्+अण्] 1. पक्षी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. विशेषे शस्त्र से आहत मृग आदि जन्तु,— जम् ऐसे जन्तु का मांस ।

कलत्रम् : गड्+अत्रन्, गकारस्य ककारः, डलयोरभेदः] 1. पत्नी,—वसुमत्या हि नृपाः कलत्रिणः—रघु० ८।८३, १।३२, १२।३४, यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् भर्तृ० २।६८ 2. कूल्हा या नितम्ब—इन्दुमतिमिवोहामनन्मय विलासगृहीतगुरुकलत्रम् —का० १८९ (यहाँ 'कलत्रम्' के दोनों अर्थ हैं) कि० ८।९, १७ 3. राजकीय दुर्ग ।

कलत्रम् | कल्+ष्ट्रन्] 1. धब्बा, चिह्न 2. विकार, अपराध, दोष 3. ग्रहण करना, पकड़ना, थामना—कलत्रान्तर्भूतानां स कालः परिकीर्तितः 4. जानना, समझना, बोध पाना 5. ध्वनि करना,—आ 1. लेना, पकड़ना, थामना—काल कलना आन० २९ 2. करना, क्रियान्वयन 3. वश्यता 4. समझ, समवबोध 5. पहनना, वसन-धारण करना ।

कलत्रिका [कल+त्रा+क+कन्+टाप्, इत्वम्, पृषो० मुम्] बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा ।

कलभः (स्त्री०—भी) [कल्+अभच्, करेण शुण्डया भाति भा+क रस्य लत्वम्—तारा०] 1. हाथी का बच्चा, वन पशु-शावक—ननु कलभेन यूथपते रनुकृतम् —मालवि० ५, द्विपेन्द्रभावं कलभः श्रयन्निव —रघु० ३।३२, ११।३९, १८।३७ 2. तीस वर्ष का हाथी 3. ऊँट का बच्चा, जन्तु शावक ।

कलमः [कल्+अम्] 1. मई-जून में बोया हुआ चावल जो दिसम्बर-जनवरी में एक जाता है—सुतेन पाण्डोः कलमस्य गोपिकाम्—कि० ४।९, ३४, कु० ५।४७, रघु० ४।३७ 2. लेखनी, कानेकी कलम 3. चोर 4. दुष्ट, बदमाश ।

कलम्बः [कल्+अम्बच्] 1. तीर 2. कदम्ब वृक्ष ।

कलम्बुदम् [क+लम्ब्+उदन्] (ताजा) मक्खन नवनीत ।

कलसः,—लम् [कल्+कलच्] भ्रूण, गर्भाशय ।

कलविङ्कः,—गः [कल+बङ्क+अच्, पृषो० इत्वम्] 1. चिड़िया, मनु० ५।९२, याज्ञ० १।१७४ 2. धब्बा, दाग या लांछन ।

कलशः,—शः [केन जलेन लश(स)ति—तारा०] (—शम्, —सम्) घड़ा जलपात्र, करवा, तस्तरी—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ - भर्तृ० ३।२०, १।९७ स्तनकलसः—अमरु ५४ °जन्मन्, °उद्भवः अगस्त्य मुनि ।

कलशी (सी) (स्त्री०) [कलश(स)+ङीष्] घड़ा, करवा । सम०—सुतः अगस्त्य ।

कलहः,—हम् [कलं कामं हन्ति—हन्+ड तारा०] 1. झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई—ईर्ष्याकलहः—भर्तृ० १।२, लीला० शृंगार० ८, इसी प्रकार शुष्ककलहः, प्रणयकलहः आदि 2. संग्राम, युद्ध, 3. दाँव, धोखा, मिथ्यापन 4. हिंसा, ठोकर मारना, पीटना आदि—मनु० ४।१२१ (यहाँ मेधातिथि और कुल्लूक, कलह शब्द की व्याख्या क्रमशः 'दंडादिनेतरेतरताडनम्' और 'दंडादंडधादि' करते हैं) । सम०—अन्तरिता अपने प्रेमी से झगड़ा हो जाने के कारण उससे वियुक्त (जो कुछ भी है साथ ही अपने किये पर लज्जिताभी), सा० द० इस प्रकार परिभाषा करता है चाटुकारमपि प्राणनाथं रोषादपास्य या, पश्चात्तापमवाप्नोति कलहान्तरिता तु सा । ११७,—अपहृत (वि०) बलपूर्वक अपहरण किया गया, प्रिय (वि०) जो लड़ाई-झगड़ा कराने में प्रसन्न होता है—ननु कलहप्रियोऽसि मालवि० १, (—यः) नारद की उपाधि ।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1. किसी वस्तु का छोटा खण्ड, टुकड़ा, लवमात्र,—कलामप्यकुतपरिलम्बः—का० ३०४ सर्वे ते मित्रगात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्—पंच० २।५९, मनु० २।८६, ८।३६ 2. चन्द्रमा की एक रेखा (यह १६ अंश हैं) जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः—या० १।३६ कु० ५।७२, मेघ० ८९ 3. मूलधन पर ब्याज (लिये हुए धन के उपयोग के विचार से)—धनवीथिवीथिमवतीर्णवतो निधिरम्भसामुपचयाय कलाः—शि० ९।३२, (यहाँ कला का अर्थ रेखा भी है) 4. विविध प्रकार से आकलित समय का प्रमाण (एक मिनट, ४८ सैकण्ड या ८ सैकण्ड) 5. राशि के तीसवें भाग का साठवाँ अंश, किसी कोटि का एक अंश 6. प्रयोगात्मक कला (शिल्पकला, ललित कला) इस प्रकार की ६४ कलाएँ हैं, जैसे कि संगीत, नृत्य आदि 7. कुशलता, मेधाविता 8. जालसाजी, धोखादेही 9. (छन्दःशास्त्र में) मात्रा छंद 10. किश्ती 11. रजः—लाव । सम०—अन्तरम् 1. दूसरी रेखा 2. ब्याज, लाभ—मासे शतस्य यदि पञ्चकलान्तरं स्यात्—लीला०, —अगः कलाबाज, नट, तलवार की तीक्ष्ण धार पर नाचने वाला,—आकुलम् भयंकर विष, —केलि (वि०) छबीला, विलासी (—लिः) काम का विशेषण,—क्षयः (चन्द्रमा का) क्षीण होना—रघु० ५।१६,—धरः,—निधिः —पूर्णः चन्द्रमा,—अहो महत्त्वं महतामपूर्वं विपत्तिकालेऽपि परोपकारः, ययास्यमध्ये पतितोऽपि राहोः कलानिधिः पुष्यमयं ददाति । उद्भवः,—भूत् (पुं०) चन्द्रमा, इसी प्रकार कलावत् (पुं०)—कु० ५।७२ ।

कलादः,—दकः [कला+आ—दा+क] सुनार ।

कलापः [कला+आप्+अण्, घञ्] 1. जत्था, गठरी —मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य कु० १।४३, मोतियों का हार—रचनाकलापः—चुचुरूदार मेखला 2. वस्तुओं का समूह या संचय—अखिलकलाकलापालोचन—का० ७ 3. मोर की पूँछ- तं मे जातकलापं प्रेक्ष्य मणिकण्ठकं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिखिनम्– विक्रम० ५।१२, पंच० २।८० ऋतु० १।१६, २।१४ 4. स्त्री की मेखला या करधनी (प्रायः 'काञ्ची' और 'रशना' आदि के साथ) भर्तृ० १।५७, ६७, ऋतु० ३।२०, मृच्छ० ११२७ 5. आभूषण 6. हाथी के गले का रस्सा 7. तरकस 8. बाण 9. चन्द्रमा 10. चलता-पुरजा, बुद्धिमान् 11. एक ही छंद में लिखी गई कविता,—पी घास का गट्ठर ।

कलापकम् [कलाप+कन्] एक ही विषय पर लिखे गये चार श्लोकों का समूह (जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य हो) [चतुर्भिस्तु कलापकम्] उदाहरण के लिए दे०, कि० ३।४१, ४२, ४३, ४४ 2 वह ऋण जिसका परिशोध उस समय किया जाय जब मोर अपनी पूँछ फैलावे, क० 1. एक जत्था या गट्ठर 2. मोतियों की लड़ी 3. हाथी को गर्दन के चारों ओर लिपटने वाला रस्सा 4. मेखला या करधनी (=कलाप) शि० ९।४५ 5. (संप्रदायबोधक) मस्तक पर तिलकविशेष ।

कलापिन् (पुं०) [कलाप+इनि] 1. मोर -कलाविलासिनि कलापिनेदम्वकम् शि० ६।३१, पंच० २।८०, रघु० ६।९ 2. कोयल 3. अजीर का वृक्ष (प्लक्ष) ।

कलापिनी [कलापिन्+ङीप्] 1. रात 2. चाँद ।

कलाप्य: [कला+अप्य] मटर, शि० १३।२१ ।

कलाविक: [कलम् आजिकायति विशेषेण रौति—कल+आ+वि+कै+क] मुर्गा ।

कलाहक: [कलम् आहन्ति -कल+आ+हन्+ड+कन्] एक प्रकार का बाजा ।

कलि: [कल्+इनि] 1. झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई, असहमति, मतभेद शि० ७।५५, कलिकामयित्—रघु० ९।३३, अमरु १९ 2. संग्राम, युद्ध 3. सृष्टि का चौथा युग, कलियुग (इस युग की आयु ४३२००० मानव वर्ष है तथा ईसापूर्व ३१०२ वर्ष की १३ फरवरी को इसका आरंभ हुआ था) मनु० १।८६, ९।३०१,—कलिवर्ज्यानि इमानि आदि० 4. मूर्तरूप कलियुग (इसने नल को यातना दी थी) 5. किसी वर्ग का निकृष्टतम व्यक्ति 6. विभीतक या बहेड़े का वृक्ष 7. पासे का पहलू जिस पर एक का अंक अंकित है 8. नायक 9. बाण —(स्त्री०) बिना खिला फूल । सम०- कार:, -कारक:,—क्रिय: नारद का विशेषण, -द्रुम:, —वृक्ष: विभीतक या बहेड़े का वृक्ष,—युगम् कलिकाल, लौहयुग -मनु० ११८५ ।

कलिका, कलि: (स्त्री०) [कलि+कन्+टाप्] 1. अनखिला फूल कली,—चूतानां चिरनिगतापि कलिका बध्नाति नं स्वं रजः— शि० ६।६, किमाकलिकाभवद्भारमसे—शि० ६, ऋतु० ६।१७, रघु० ९।३३ 2. अंक, रेखा ।

कलिङ्ग: (ब० व०) [कलि+गम्+ड] एक देश और उसके निवासियों का नाम;—दत्तलोदार्शितपथः कलिङ्गाभिमुखो ययौ—रघु० ४।३८, (तेरी में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—जगन्नाथात्समारभ्य कृष्णातीरान्तमः प्रिये, कलिङ्गदेशः संप्रोक्तो वामभागंपरायणः ।

कलिञ्ज: [कल+अञ्ज्] अण् नि० साधु० चटाई, परदा ।

कलित (वि०) [कल्+क्त] थामा हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ, दे० कल् ।

कलिन्द: [कलि+दा+क, नुम्] 1. वह पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है 2. सूर्य । सम०—कन्या, -जा,—तनया, नन्दिनी यमुना नदी की उपाधियाँ कलिन्दकन्या मथुरां गताप्सि रघु० ६।४८, कलिन्दजानीर -भामि० २।१२०, गीत० ३, —गिरिः कलिन्द नाम का पर्वत, °जा, °तनया, °नंदिनी यमुना नदी की उपाधियाँ -भामि० ४।३, ४ ।

कलिल (वि०) [कल्+इलच्] 1. ढका हुआ, भरा हुआ 2. मिला, घुला-मिला- लत एवाक्रन्दकलिलः कलकलः—महावी० १ 3. प्रभावित, ग्रस्त कि, अकल्ककलिलः शि० १९।९८ 4. अभेद्य, अछेद्य,—लम् 1. बड़ा ढेर, अव्यवस्थित राशि —विशसि हृदय क्लेशकलिलं—भर्तृ० ३।३४ 2. गड़बड़, अव्यवस्था—यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति— भग० २।५२ ।

कलुष (वि०) [कल्+उषच्] मलिन, गन्दा, कीचड़ से भरा हुआ, मैला—गंगा रोधःपतनकलुषा गृह्णतीव प्रसादम्– विक्रम० १।८, कि० ८।३२, घट० १३ 2. श्वासावरुद्ध, बेसुरा, भर्राया हुआ—कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।६ 3. नशाग्रस्त, भरा हुआ ६।४ 4. क्रुद्ध, अप्रसन्न, उत्तेजित- भावावबोधकलुषा दयितेव रात्रौ - रघु० ५।६४ (मल्लि० 'कलुष' का अर्थ 'अपोग्य' और 'अज्ञ' मानता है) 5. दुष्ट, पापी, बुरा 6. क्रूर, निन्दनीय रघु० १४।७३ 7. अन्धकार युक्त, अन्धकारमय 8. निठल्ला, आलसी, द: भैंसा, —षम् 1. गन्दगी, मैल, कीचड़—विगतकलुषमम्भः —ऋतु० ३।२२ 2. पाप 3. क्रोध । सम०—योनिज हरामी, वर्णसंकर—मनु० १०।५७, ५८ ।

कलेवर:,—रम् [कले शुक्ले वरं श्रेष्ठम्— अलुक् स०] शरीर, -यावत्स्वस्थमिदं कलेवरगृहम्—भर्तृ० ३।८८, हि० १।४७, भग० ८।५, भामि० १।१०३, २।४३ ।

कल्क:,—कम् [कल्+क] 1. चिपचिपी गाद जो तेल आदि के नीचे जम जाती है, कीट 2. एक प्रकार की लेई या पेस्ट—याज्ञ० १।२७७ 3. (अतः) गंदगी, मैल 4. लीद, विष्ठा 5. नीचता, कपट, दंभ शि० १९।९८ 6. पाप 7. घुटा पिसा चूर्ण—तां लोध्रकल्केन हृताङ्गदीप्तिम्—कु० ७।९ । सम०—फल: अनार का पौधा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्पनम् [कल्प्+णिच्+ल्युट्] धोखा देना, प्रतारणा, मिथ्यापना ।

कल्किः, कल्किन् (पुं०) [कल्क्+णिच्+इन्, कल्क+इनि] विष्णु का अन्तिम और दसवाँ अवतार (संसार का उसके शत्रुओं से उद्धार करने वाला तथा दुष्टों का हनन करने वाला) [विष्णु के अवतारों का उल्लेख करते हुए जयदेव कल्कि नामक अन्तिम अवतार का इस प्रकार निर्देश करता है म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्, धूमकेतुमिव किमपि करालम्, केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे—गीत० १।१० ।]

कल्प (वि०) [कृप्+अच्, घञ् वा] 1. व्यवहार में लाने योग्य, सशक्त संभव 2. उचित, योग्य, महो 3. समर्थ, सक्षम (संबं०, अधिकुमुन्नन्त के साथ अथवा समास के अन्त में)—धर्मस्य, यशसः कल्पः—भाग० अपना कर्तव्य आदि करने में समर्थ,—स्वकियायामकल्पः त०, अपना कर्तव्य पूरा करने में असमर्थ, इसी प्रकार —स्वभरणाकल्पः आदि,—ल्पः 1. धार्मिक कर्तव्यों का विधि-विधान, नियम, अध्यादेश 2. विहित नियम, विहित विकल्प, ऐच्छिक नियम—प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३० अर्थात् उस विहित विधि का अनुसरण करने में समर्थ जिसको दूसरे सब नियमों की अपेक्षा अधिमान्यता दी जाती है, प्रथम कल्पः—मालवि० १, अर्थात् बहुत अच्छा विकल्प,—एष वै प्रथमः कल्पः प्रदाने हव्यकव्ययोः—मनु० ३।१४७ 3. (अतः) प्रस्ताव, सुझाव, निश्चय, संकल्प—उदारः कल्पः—श० ७ 4. कार्य करने की रीति, कार्य विधि, रूप, तरीका, पद्धति (धर्मानुष्ठानों में)—श्रौत्रेण कल्पेनोपनीय—उत्तर० २, कल्पविकल्पग्रामास वन्यामेवास्य संविधाम् —रघु० १।९४, मनु० ७।१८५ 5. सृष्टि का अन्त, प्रलय 6. ब्रह्मा का एक दिन या १००० युग, मनुष्यों का ४३२०००००० वर्ष का समय, तथा सृष्टि की अवधि का माप; श्वेतवाराह कल्पे (वह कल्प जिसमें अब हम रहते हैं)—कल्प स्थितं तनुभृतां तनुभिस्ततः किम्—शा० ४।२ 7. रोगी की चिकित्सा 8. छः वेदाङ्गों में से एक—नामतः —जिसमें यज्ञ का विधि-विधान निहित है तथा जिसमें यज्ञानुष्ठान एवं धार्मिक संस्कारों के नियम बतलाये गये हैं, दे० 'वेदांग' के नी० 9. संज्ञा और विशेषणों के अंत में जुड़ कर निम्नांकित अर्थ बतलाने वाला शब्द —"अपेक्षाकृत कुछ कम" 'प्रायः ऐसा ही' 'लगभग बराबर' (हीनता की अवस्था के साथ २ समानता को प्रकट करना)—कुमारकल्पं मृगयुवे कुमारम्—रघु० ५।३६, उपपन्नमेतदस्मिन्विधिकल्पे राजनि—श० २, प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी—रघु० ३।२, इसी प्रकार मृतकल्पः, प्रतिपन्नकल्पः आदि । सम०—अन्तः सृष्टि की समाप्ति, प्रलय —अर्तृ० २।१९, °स्थायिन् (वि०) कल्प के अन्त तक ठहरने वाला, आदिः सृष्टि में सभी वस्तुओं का पुनर्नवीकरण, °कारः कल्पसूत्र का रचयिता, क्षयः सृष्टि का नाश, प्रलय °उदा०—पुरा कल्पक्षये वृत्ते जाते जलमये जगत्—कथा० २।१०, °तरुः, द्रुमः, °पादपः, वृक्षः 1. स्वर्गीय वृक्षों में से एक या इन्द्र का स्वर्ग, रघु० १।७५, १७।२६, कु० २।३२, ६।४१ 2. इच्छानुरूप फल देने वाला काल्पनिक वृक्ष कामना पूरी करने वाला वृक्ष—नाबद्ध कल्पद्रुमतां विहाय जातं तमात्मन्यसिपत्रवृक्षम्—रघु० १४।४८, नै० १।१५ 3. (आलं०) अत्यन्त उदार पुरुष—सकलार्थिसार्थकल्पद्रुमः—पंच० १, °पालः शराब बेचने वाला, लता,—लतिका 1. इन्द्र की नन्दन-कानन की लता—भर्तृ० १।९०, 2. सब प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली लता सामान्यफलैः फलैरकल्पलतेव भूमिः—भर्तृ० २।४६, तु० ऊ० 'कल्पतरु' से,—सूत्रम् सूत्रों के रूप में यज्ञ-पद्धति ।

कल्पकः [कल्प् + ण्वुल्] 1. संस्कार 2. नाई ।

कल्पनम् [कल्प्+ल्युट्] 1. रूप देना, बनाना, क्रमबद्ध करना 2. सम्पादन करना, कराना, कार्यान्वित करना 3. छंटाई करना, काटना 4 सिलाई करना 5. सजावट के लिए एक दूसरी पर रक्खी हुई वस्तु,—ना 1. जमाना, स्थिर करना—अनेकपिण्डकाणां तु पित्ततो भागकल्पना- याज्ञ० २।१२०, २४७, मनु० ९।१६ 2. बनाना, अनुष्ठान करना, करना 3. रूप देना, व्यवस्थित करना—मृच्छ० ३।१४ 4. सजाना, विभूषित करना 5. संरचन 6. आविष्कार 7. कल्पना, —विचार कल्पनापोढः—सिद्धा०—कल्पनाऽपोढ अर्थात् 8. विचार, उत्प्रेक्षा, प्रतिभा (मन में कल्पना की हुई) शा० २।७ 9. बनावट, निर्माण रचना 10. जालसाजी 11. कपट-योजना, कूटयुक्ति 12. (मीमां० द० में)—अर्थापत्ति ।

कल्पनी [कल्पन+ङीप्] कैंची ।

कल्पित (वि०) [कृप्+णिच्+क्त] व्यवस्थित, निर्मित, संरचित, बना हुआ, दे० कल्पृ (प्रेर०) ।

कल्मष (वि०) [कर्म शुभकर्म स्यति नाशयति—स्यो० सापु:] 1. पापी, दुष्ट 2. मलिन, मैला, °षः, °षम् 1. लांछन, गन्दगी, उच्छिष्ट 2. पाप, स हि गगनविहारी कल्मषध्वंसकारी—हि० १।२१, भग० ४।३०, ५।१६, मनु० ४।२६०, १२।१८, २२ ।

कल्माष (वि०) (स्त्री०—षी) [कलयति, कल्+क्विप्, तं माषयति अभिभवति, माष्+णिच् –अच्, कल् चासौ माषश्च—कर्म० स०] 1. रंगबिरंगा, चित्तीदार, काला और सफेद),—षः 1. चित्रविचित्र रंग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. काले और सफ़ेद का मिश्रण 3. पिशाच, भूत,—सी यमुना नदी। सम०—कण्ठ: शिव की उपाधि।

कल्य (वि०) [कल्+यत्] 1. स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त —सर्वं कल्ये वर्तमि यतते लब्धुमर्थान्कुटुम्बी—विक्रम० ३, याज्ञ० १।२८, यावदेव भवेत्कल्य: तावच्छ्रेय: समाचरेत्—महा० 2. तत्पर, सुसज्जित—कथयस्व कथामेतां कल्या: स्म: श्रवणे तव महा० 3. चतुर 4. रुचिकर, मङ्गलमय (जैसा कि प्रवचन) 5. बहरा और गूंगा 6. शिक्षाप्रद,—ल्यम् 1. प्रभात, पौ फटना 2. आने वाला कल 3. मादक शराब 4. बधाई, मंगल कामना 5. शुभ समाचार। सम०—आश: -आशिन् (स्त्री०) सवेरे का भोजन, कलेवा,—पाल:,—पालक: कलवार, शराब खींचने वाला—वर्त: सवेरे का भोजन, कलेवा (तम्) (अत:) कोई भी हल्की चीज, तुच्छ या महत्त्वहीन, मामूली—ननु कल्यवर्तमेतत्—मृच्छ० २, क्षुद्र वस्तु—स्त्रीकल्यवर्तस्य कारणेन ४, स इदानीमयकल्यवर्तस्य कारणादिदमकार्यं करोति ९।

कल्या [कलयति मादयति कल्+णिच्+यक्+टाप्] 1. मादक शराब 2. बधाई। सम०—पाल:,—पालक: शराब खींचने वाला, कलवार।

कल्याण (वि०) (स्त्री० -णा, -णी) [कल्ये प्रात: अण्यते शब्द्यते - अण्—घञ्] 1. आनन्ददायक, सुखकर, सौभाग्यशाली, भाग्यवान्—स्वमेव कल्याणि तयोस्तुतीया—रघु० ६।२९, मेघ० १०९ 2. सुन्दर, रुचिकर, मनोहर 3. श्रेष्ठ, गौरवयुक्त 4. शुभ, श्रेयस्कर, मंगलप्रद, भद्र—कल्याणानां त्वमसि महतां भाजनं विश्वमूर्ते —मा० १।३,—णम् 1. अच्छा भाग्य, आनन्द, भलाई समृद्धि—कल्याणं कुरुता जनस्य भगवांश्चन्द्रार्धचूड़ामणि:—हि० १।१८५, तद्रक्ष कल्याणपरम्परायाः भोक्तारपूर्जस्वलमात्मदेहम्—रघु० २।५०, १७।१, मनु० ३।६० इसी प्रकार °अभिनिवेशी—का० १०४ 2. गुण 3. उत्सव 4. सोना 5. स्वर्ग। सम०—द्रुम (वि०) 1. सुखकर, लाभदायक, हितकर—भग० ६। ४० 2. मंगलप्रद, भाग्यशाली 3. गुणी, -धर्मन् (वि०) गुणसम्पन्न,—वचनम् मित्रवत् भाषण, शुभ कामना।

कल्यावक (वि०) (स्त्री०—विका) [कल्याण+कन्] शुभ, समृद्धिशाली, आनन्ददायक।

कल्याणिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कल्याण+इनि] 1. प्रसन्न, समृद्धिशाली 2. सौभाग्यशाली, भाग्यवान्, आनन्ददायक 3. मंगलप्रद, शुभ।

कल्याणी [कल्याण+ङीष्] गाय—रघु० १।८७।

कल्ल (वि०) [कल्ल्+अच्] बहरा।

कल्लोल: [कल्ल्+ओलच्] 1. बड़ी लहर, ऊर्मि,—आयु: कल्लोललोलम् -भर्तृ० ३।८२, कल्लोलमालाकुलम् —भामि० १।५९ 2. शत्रु 3. हर्ष, प्रसन्नता।

कल्लोलिनी [कल्लोल+इनि+ङीष्] नदी—स्वर्लोककल्लोलिनि त्वं पापं तिरयाधुना मम भवश्यालावलोडात्मन: —गंगा० ५०, इसी प्रकार—विपुलपुलिना: कल्लोलिन्य: ।

कव (भ्वा० आ०—कवते, कवित) 1. स्तुति करना 2. वर्णन करना, (कविता) रचना करना 3. चित्रण करना, चित्र बनाना।

कवक: [कव्+अच्+कन्] मुट्ठीभर,—कम् कुकुरमुत्ता —विद्मजानि कवकानि च - याज्ञ० १।१७१, मनु० ५। ५, ६।१४।

कवच:—चम् [कु+अच] 1. लोहे की जिरह बख्तर, वर्म, रक्षाकवच, तावीज, रहस्यपूर्ण अक्षर (हुं, हूं) जो कि रक्षाकवच की भांति प्रयुक्त समझे जाते हैं 3. घौंसा, ताशा। सम०—पत्र: भोजपत्र का पेड़, पाकर का वृक्ष, -सर (वि०) 1. कवचधारी 2. कवच धारण करने योग्य आयु का कवचहर: कुमार:—पा० ३।२। १० पर सिद्धा०, तु० वर्महर रघु० ८।९४।

कवटी [कु+अटन्+ङीष्] दरवाजे का दिला या पल्ला।

कव (ब) र (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [कु+अरन्] 1. मिश्रित, अन्तर्मिश्रित शि० ५।१९ 2. जटित, खचित, जड़ा हुआ 3. चित्रविचित्र रंगबिरंगा, -र:,—रम् 1. नमक 2. खटास, अम्लता,—र: चोटी, जूड़ा।

कव (ब) री [कवर+ङीष्] चोटी, जूड़ा—दधती विलोलकबरीकमाननम् - उत्तर० ३।४, शि० ९।२८ अमरु ५।९। सम०—भर: -भार: गुथी हुई चोटी—घटय जघने काञ्चीमंच लज्जा कबरीभरम्—गीत० १२।

कवल:,—लम् [कैव जलेन वलते चलति—वल्+अच् तारा०] 1. मुट्ठीभर—आस्वादद्विड्: कवलेस्तृणानाम् —रघु० २।५,९।५९, कवलच्छेदेषु सम्पादिता:-उत्तर० ३।१६।

कवलित (वि०) [कवल+इतच्] 1. खाया हुआ, निगला हुआ (मुट्ठीभर) 2. पचाया हुआ 3. (अत:) लिया हुआ, पकड़ा हुआ—जैसा कि 'मृत्युना कवलित:'।

कवाट [कल शब्दम् अटति, कु+अप, अट्+अच्] दे० 'कपाट'।

कवि (वि०) [कु+इ] 1. सर्वज्ञ—भग० ८।९, मनु० ४।२४ 2. प्रतिभाशाली, चतुर, बुद्धिमान् 3. विचारवान्, विचारशील 4. प्रशंसनीय,—वि: 1. बुद्धिमान् पुरुष, विचारक ऋषि—कवीनामुशना कवि: भग० १०। ३७, मनु० ७।४९, २।१५१ 2. काव्यकार—तद् बूहि रामचरितं आद्य: कविरसि—उत्तर० २, मन्द: कवियश:— प्रार्थी—रघु० १।३, इदं कविभ्य: पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे- उत्तर० १।१ शि० २।८६ 3. असुरों के आचार्य शुक्र की उपाधि 4. वाल्मीकि, आदिकवि 5. ब्रह्मा 6. सूर्य—(स्त्री०) लगाम का दहाना—दे० कवि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का। सम०—व्यपेक्ष: आदिकवि वाल्मीकि की उपाधि, —पुत्र: शुक्राचार्य की उपाधि,—राज: 1. महाकवि —(श्रीहर्ष कविराजराजिमुकुटालंकारहीर:सुतम्—यह वाक्य नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में पाया जाता है) 2. कवि का नाम, 'राघवपाण्डवीय' नामक काव्य का रचयिता,—रामायण: वाल्मीकि की उपाधि।

कविक:,—का [कवि+कन्, स्त्रियां टाप् च] लगाम का दहाना।

कविता [कवि+तल्+टाप्] काव्य,—मुकविता यदास्ति राज्ञ्यैव किम् भर्तृ० २।२१।

कवि (वी) यम् [कवि+छ] लगाम का दहाना।

कवीय्य (वि०) [कुत्सितम् ईषत् उष्णम् कर्म० स०, को: कवादेश:] कुछ थोड़ा गर्म, गुनगुना—रघु० १।६७, ८४।

कव्यम् [कूयते हीयते पितृभ्य: यत् अन्नादिकम्—कु+यत्] (विप० हव्यम्) मृत पितरों के लिए अन्न की आहुति —एवं मे प्रथम: कल्प: प्रदाने हव्यकव्ययो:—मनु० ३।१४७, ९७, १२८,—व्य: पितरों का समूह। सम०—वाह, (पुं०),—वाह:,—वाहन: अग्नि।

कश: [कष्+अच्] फीता (प्राय: बहुवचनान्त),—शा चाबुक —इदानीं सुकुमारेऽस्मिन् निःशंकं कर्कशा:, कशा:, तव गात्रे पतिष्यन्ति सहस्राणि मनोरथै:। मृच्छ० ९।३५ (यहाँ कशा शब्द स्त्रीलिंग और पुंल्लिंग दोनों में हो सकता है) 2. कोड़े लगाना 3. डोरी, रस्सी।

कशिपु (पुं० या नपुं०) [कशति दु:खं करोति वा, मृगव्याविस्वात् निपातनात् साधु:] 1. चटाई 2. तकिया 3. बिस्तरा,—पु: 1. भोजन 2. वस्त्र 3. भोजन-वस्त्र (विश्वकोश के अनुसार)।

कशेरु (रू) क (पुं०, नपुं०) [के देहे शीर्यते, कं जलं वा शृणाति, क+शृ+उ, एरुआदेश:, कस्+एरुन् वा] 1. रीढ़ की हड्डी 2. एक प्रकार का घास।

कश्मल (वि०) [कश्+अल, मुट्] मैला, गन्दा, अकीर्तिकर, कलंकी—मत्सम्बन्धात्कथमला किंवदन्ती स्याच्चेदस्मिन्हन्त धिङ्क मामवन्ध्यम्—उत्तर० १।४२,—ल्म् मन की खिन्नता, उदासी, अवसाद—कश्मलं मह्यदाविशत्—महा०, कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्—भग० २।२ 2. पाप 3. मूर्छा।

कश्मीर (ज० व) [कश्+ईरन्, मुट्] एक देश का नाम, वर्तमान कश्मीर (तन्त्र ग्रन्थों में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—शारदामठमारभ्य कुंकुमादितटान्तक:, तावत्कश्मीरदेश: स्यात् पंचाशद्योजनात्मक:) सम०—ज:,—ज्म्,—जन्मन् (पुं० नपुं०) केसर, जाफरान—कश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या—मालवि० १।७१।

कश्य (वि०) [कशामर्हति—कशा+य] कोड़े या चाबुक लगाये जाने के योग्य—पम् मादक शराब।

कश्यप: [कश्य+पा—क] 1. कछुवा 2. एक ऋषि, अदिति और दिति के पति, अत: देवता और राक्षस दोनों के पिता। (ब्रह्मा का पुत्र मरीचि था, मरीचि का पुत्र कश्यप हुआ, सृष्टि के कार्य में कश्यप ने बड़ा योग दिया। महाभारत तथा दूसरे ग्रंथों के अनुसार उसका विवाह अदिति तथा दक्ष की अन्य १३ पुत्रियों के साथ हुआ। अदिति से उसके द्वारा १२ आदित्यों का जन्म हुआ—अपनी दूसरी १२ पत्नियों से उसके अनन्त और विविध प्रकार की सन्तान हुई—साँप, रेंगने वाले जन्तु, पक्षी, राक्षस, चन्द्रलोक का नक्षत्रपुंज तथा परियाँ। इस प्रकार वह देव, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी और सरीसृप आदिकों का वस्तुत: सभी जोखवारी प्राणिमात्र का पिता था। इसी लिए उसे बहुधा प्रजापति कहा जाता है)।

कष् (स्वा० उभ०—कर्षति ते, कर्षित) 1. फिसलना, खुरचना, कसना समूलकाषं कर्षति—सिद्धा०, भट्टि० ३।४९ 2. परीक्षा करना, जाँच करना, कसौटी पर कसना (सोना आदि)—छदहेम कषत्रिवालसत्कषपाषाणनिभे नभस्तले—नै० २।६९ 3. चोट मारना, नष्ट करना 4. खुजाना।

कष (वि०) [कष्+अच्] 1. रगड़ने वाला, कसने वाला, —ष: रगड़ कसना 2. कसौटी—छदहेम कषत्रिवालसत्कषपाषाणनिभे नभस्तले—नै० २।६९, मृच्छ० ३।१७।

कषणम् [कष्+ल्युट्] रगड़ना, चिह्नित करना, खरचना —करुलेढ्यिपगण्डपिण्डकषणोत्कर्षेण संपातिभि:—उत्तर० २।९, कषणकल्पनिरस्तमहाहिभि:—कि० ५।४७ 2. कसौटी पर कस कर सोने की परखना।

कष्य=कशा।

कषाय (वि०) [कषति कण्ठम्—कष्+आय] 1. कसैला —श० २ 2. सुगंधित—स्फटिकमलामोदमैत्रीकषाय:—मेघ० ३१, उत्तर० २।२१ महावी० ५।४१ 3. लाल, गहरा लाल—चूतांकुरस्वादकषायकण्ठ:—कु० ३।३२ 4. (अत:) मधुर-स्वर वाला—मा० ७ 5. भूरा, 6. अनुपयुक्त, मैला—य:,—यम् 1. कसैला स्वाद या रस (६ रसों में से एक) वै० कटु 2. लाल रंग 3. एक भाग औषधि, चार आठ या १६ भाग पानी में मिलाकर बनाया हुआ (सब को मिलाकर उबालना जब तक कि चौथाई न रह जाय), काढ़ा —मनु ११।१५४ 4. लेप करना, पोतना—कु० ७।१७, चुभड़ना 5. उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करना—ऋतु० १।४ 6. गोंद, राल, वृक्ष का निःस्रवण 7. मैल, अस्वच्छता 8. मन्दता, जड़िया 9. सांसारिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषयों में आसक्ति,—यः 1. आवेश, संवेग 2. कलियुग।

कषायित (वि०) कषाय+इतच्] 1. हलके रंग वाला, लाल रंग का, रंगीन—अमुनैव कषायितस्तनी—कु० ४।३४, शि० ७।११ 2. ग्रस्त।

कषि (वि०) [कर्षति हिनस्ति कष्+इ] हानिकारक, अनिष्टकर, पीडाकर।

कषे (से) एका [कष् (स)+एरक्, उत्वम्, कन्+टाप्] रोड़ की हड्डी मेरुदण्ड।

कष्ट (वि०) [कष्+क्त] 1. बुरा, अनिष्टकर, रोगी, गलत—रामहस्तमनुप्राप्य कष्टात् कष्टतरं गता—रघु० १५।४३, अर्थात् अधिक बुरी अवस्था हो गई (दुर्दशाग्रस्त हो गई) 2. पीडामय, संतापकारी—मोहादभूत्कष्टतरः प्रबोधः · रघु० १४।५६, कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः—रत्न० १, चिन्ताओं से भरा हुआ—मनु० ७।५०, याज्ञ० ३।२९, कष्टा वृत्तिः पराधीना कष्टो वासो निराश्रयः, निर्धनो व्यवसंश्चापि सर्वकष्टा दरिद्रता। चाण० ५९ 3. कठिन—स्त्रीषु कष्टोऽधिकारः—विक्रम० ३।१ 4. दुर्गम (शत्रु की भाँति) मनु० ७।१८६, २१० 5. अनिष्टकर, पीडाकर, हानिकर 6. गर्हित, —ष्टम् 1. दुष्कर्म, कठिनाई, संकट, व्यथा, यन्त्रणा, पीडा—कष्टं खल्वपरायत्ता · शं० ६, धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः—पंच० १।१६६ 2. पाप, दुष्टता 3. कठिनाई, प्रयास, **कष्टेन** किसी न किसी प्रकार,—ष्टम् (अव्य०) हाय! —हा धिक् कष्टं, हा कष्टं जय्याभिभूतपुरुषः पुरैरवज्ञायते—पंच० ४।७८, सम०—आगत (वि०) कठिनाई से आया हुआ, पहुँचा हुआ,—कर (वि०) पीडा कर, दुःखदायी—तपस् (वि०) घोर तपस्या करने वाला—शं० ७,—साध्य कठिनाई से पूरा किये जाने के योग्य—स्थानम् बुरा स्थान, अनिष्टकर या कठिन जगह।

कष्टि (स्त्री०) [कष्+क्तिन्] 1. परख, जाँच 2. पीडा, कष्ट।

कस् i (म्वा० पर०—कसति, कसित) हिलना-डुलना, जाना, पहुँचना, निस्—, (प्रेर०) 1. निकालना, बाहर खींचना 2. बोहना, बाहर हाँक देना, निर्वासित करना, निष्कासन करना—निरकासयद्रविमपेतवसुं वियदालवादघरद्गिणिका—शि० ९।१० येनाहं जीवलोकान्निष्काशयिष्ये · मुद्रा० ६, प्र—, खोलना, प्रसार करवाना—धनमुत्तावुलवप्रकाशितैः (कुसुमैः)—घट० १९, वि—, खुलना, प्रसृत होना (आल० भी) विकसति हि पतगस्योदये पुण्डरीकम्—मा० १।२८, शि० ९।४७, ८२ कु ७।५५, निजहृदि विकसन्तः—भर्तृ० २।७८ (प्रेर०) खोलना, प्रसार करवाना—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७३, शि० १५। १२, अमर ८४।

ii (अदा० आ०—कस्ते, कंस्ते) 1. जाना 2. नष्ट करना।

कस्तु (स्तू) रिका, कस्तूरी [कसति गन्धोऽस्याः—कस्+ऊर+ङीष्, तुद्, कन्+टाप् ह्रस्वः] मृगक, कस्तूरी—कस्तूरिकातिलकमालि विधाय सायम्—भामि० २।४, १।१२१, चौर० ७। सम०—मृगः कस्तूरीमृग —(वह हरिण जिसकी नाभि से कस्तूरी नामका सुगन्धित द्रव्य निकलता है)।

कह्लारम् [के जले ह्लादते—क+ह्लाद्+अच् पृषो० दस्य रः] श्वेत कमल—कह्लारपद्मकुसुमानि मृद्नविधुन्वन् —ऋतु० ३।१५।

कहवः [के जले ह्लयति शब्दायते स्पर्धते वा—क+ह्वे+क] एक प्रकार का सारस।

कांसीयम् [कांसाय पानपात्राय हितम्—कांस+छ+अण्] जस्ता।

कांस्य: (वि०) [कंसाय पानपात्राय हितं कंसीयं तस्य विकारः —यञ् लुप्तोपः] कांसे या जस्त का बना हुआ मनु० ४।५,—स्यम् 1. कांसा, या जस्ता—मनु० ५।११४, याज्ञ० १।१९० 2. कांसे का बना बढ़िया बर्तन—स्यः,—स्यम् जल पीने का बर्तन (पीतल का) प्याला—शि० १५।८१। सम०—कारः (स्त्री०—री) कसेरा, ठठेरा,—तालः झाँझ, करताल,—भाजनम् पीतल का बर्तन,—लोहम् ताम्रमल, तांबे का जंग।

काकः [कै+कन्] 1. कौवा—काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते—पंच० १।२४ 2. (आल०) घृणित व्यक्ति, नीच और ढीठ पुरुष 3. लंगड़ा आदमी 4. केवल सिर को भिगाकर स्नान करना (जैसा कि कौवे करते हैं),—को कौवी, · कम् कौवों का समूह। सम०—अक्षिगोलकन्याय देo 'न्याय' के नीचे,—अरिः उल्लू,—उदरः साँप,—काकोदरो येन विनीतदर्पः —कविराज,—उलूकिका,—उलूकीय सु, कौवे और उल्लू की नैसर्गिक शत्रुता (काकोलूकीय—पंचतन्त्र के दूसरे तंत्र का नाम है),—चिञ्चा गुंजा या घुंघची का पौधा (रत्नों), छदः,—छर्दिः खजनपक्षी 2. अलर्क —देo नी० 'काकपक्ष',—जातः कोयल,—तालीय (वि०) जो बात अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से हो दुर्घटना—अहो नु खलु भोः तदेतत् काकतालीयं नाम —मा० ५, काकतालीयवदाप्तं दृष्ट्वापि निधिमग्रतः —हि० प्र० ३५, कभी कभी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'संयोग से' अर्थ को प्रकट करता है —फलन्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति—वेणी० २।१४,—°न्याय, देo 'न्याय' के नीचे,—तालुकिन् (वि०) घृणित, निंद्य,—दन्तः (शा०) कौवे का दाँत, (आल०) असंभव बात जिसका अस्तित्व न हो, °गवेषणम् असंभव बातों की खोज करना (व्यर्थ और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलाभकर कार्यों के संबंध में कहा जाता है),—**ध्वजः** वाडवानल, —**निद्रा** हल्की नींद या झपकी जो आसानी से टूट जाय,—**पक्षः,—पक्षकः** (विशेष कर क्षत्रियों के) बालकों और तरुणों की कनपटियों के लंबे बाल या अलकें -काकपक्षधरमेत्य याचितः—रघु० ११।१, ३१, ४२, ३।२८, उत्तर० ३,—**पद्मं** हस्तलिखित पुस्तक या लेखों में चिह्न (^) जो यह प्रकट करता है कि यहाँ कुछ छूट गया है,—**पदः** संगीत की एक विशेष रीति,—**पुच्छः,—पुच्छः** कोयल,—**पेय** (वि०) छिछला- -काकपेया नदी—सिद्धा०,—**भोजः** उल्लू,—**मद्गुः** जलकुक्कुट,—**यवः** अन्न का वह पौधा जिसकी बाल में दाने न हों- यथा काकयवाः श्रोक्ता यथारण्यभवास्तिलाः, नाममात्रा न सिद्धौ हि धनहीनास्तथा नराः । पंच० २।८६,—तथैव पांडवाः सर्वे यथा काकयवा इव—महा०(काकयवाः=निष्फलतुषधान्यम्), —**रुतम्** कौवे की कर्कश ध्वनि (काँव काँव) जिससे परिस्थिति के अनुसार भावी शुभाशुभ का ज्ञान होता है —शि० ६।७६,—**वन्ध्या** ऐसी स्त्री जिसके एक पुत्र होने के पश्चात् फिर कोई सन्तान न हो, —**स्वरः** कर्कश ध्वनि (जैसे कि कौवे की काँव काँव) ।

काकट (क) क[वि०)1. डरपोक, कायर 2. नंगा 3. गरीब, दरिद्र,—**कः** 1. औरत का गुलाम, पत्नीभक्त 2.(स्त्री०—**की**) 2. उल्लू 3. जालसाजी, धोखा, दाँवपेंच ।

काक (का) लः [का इत्येवं कलो यस्य ब० स०] पहाड़ी कौवा,- -लम् कंठमणि ।

काकलिः,—ली (स्त्री०)[कल+इन=कलिः, कुं ईषत् कलिः, कौ: कादेशः, स्त्रियां ङीष् च] 1. मन्द मधुर स्वर —अनुबद्धमुग्धकाकलीसहितम्—उत्तर० ३, ऋतु० १।८ 2. एक प्रकार का मन्द स्वर का बाजा जिसके द्वारा चोर यह पता लगाते हैं कि लोग सोये हैं या नहीं—फणिमुखकाकलीसदंशक'''प्रभृत्यनेकोपकरणयुक्तः -दश० ४९ 3. कँची 4. घुंघची का पौधा । सम०—**रवः** कोयल ।

काकिणी, काकिणिका [कक्+णिनि+ङीप्=काकिणी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. सिक्के के रूप में प्रयुक्त होने वाली कौड़ी 2. एक सिक्का जो २० कौड़ी या चौड़ाई पण के बराबर होता है 3. चौथाई माशे के बराबर वजन 4. माप का एक अंश 5. तराजू की डंडी 6. हस्त, (एक प्राचीन माप जिसको लम्बाई एक हाथ के बराबर होती है) ।

काकिनी (स्त्री०) [कक्+णिनि+ङीप्] 1. पण का चौथाई 2. माप का चौथाई 3. कौड़ी- -हि० ३।१२३।

काकुः (स्त्री०) [कक्+उण्] 1. भय, शोक, क्रोध आदि संवेगों के कारण स्वर में परिवर्तन—भिन्नकण्ठध्वनिर्घैरैः काकुरित्यभिधीयते—सा० द०, अलीककाकुकरुणकुशलतां—का० २२२ (अतः) 2. निषेधात्मक शब्द जो इस ढंग से प्रयुक्त किया जाय कि विरुद्ध (स्वीकारात्मक) अर्थ को प्रकट करे (इस प्रकार के अवसरों पर स्वर की विकृति से ही अभीष्ट अर्थ प्रकट किया जाता है) 3. दुहराना, गुनगुनाना 4. जिह्वा ।

काकुत्स्थः [ककुत्स्थ+अण्] ककुत्स्थवंशी, सूर्यवंशी राजाओं की उपाधि, काकुत्स्थमालोकयतां नृपाणाम्—रघु० ६।२, १२।३०, ४६, दे० 'ककुत्स्थ' ।

काकुवम् [काकुं ध्वनिभेदं ददाति-काकु+दा+क] तालु।

काकोलः [कक्+णिच्+ओल] 1. पहाड़ी कौवा- याज्ञ० १।१७४ 2. साँप 3. सूअर 4. कुम्हार 5. नरक का एक भाग -याज्ञ० ३।२२३ ।

काक्षः [कुत्सितम् अक्षं यत्र—कोः कादेशः] तिरछी चितवन, कनखियों से देखना, क्षम त्यौरी चढ़ना, असमंजता की दृष्टि, द्वेषपूर्ण निगाह—काक्षेणानादरेक्षितः भट्टि० ५।२८ ।

काकः (पुं०) कौवा, तु० 'काक' ।

काङ्क्ष् (भ्वा० पर० (महाकाव्यों में आ०भी) काङ्क्षिति, काङ्क्षित) 1. कामना करना, चाहना, लालायित होना—यत्काङ्क्षति तपोभिरन्यमुनयस्तस्मिंस्त्वयस्यन्यमी —श० ७।१२, न शोचति न काङ्क्षति - भग० १२।७, न काङ्क्षे विजयं कृष्ण—१।३२, रघु० १२।५८, मनु० २।२४२ 2. प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, अभिलालायित होना, कामना करना, आ -1. चाहना, लालसा करना, कामना करना,-प्रत्याद्यस्तं रिपुराचकाङ्क्ष रघु० ७।४७, ५।२८, मनु० २।१६२, मेघ० ९१, याज्ञ० १।१५३ 2 अपेक्षा करना आवश्यकता होना,—**प्रत्या**-, घात में रहना, सेवा में उपस्थित रहना वि—कामना करना, चाहना लालसा करना, **सम्**—कामना करना, चाहना ।

काङ्क्षा [काङ्क्ष+अ+टाप्] 1. कामना, इच्छा 2. रुचि, अभिलाषा जैसा कि 'भक्तकांक्षा' में ।

काङ्क्षिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [काङ्क्ष+णिनि] कामना करने वाला, इच्छुक, दर्शन[7], जल[7] आदि—भग० ११।५२ ।

काच: [कच्+घञ्] 1. शीशा, स्फटिक—आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः -हि० प्र० ४४, काचमूल्येन विक्रीतो हंत चिंतामणिर्मया- शा० १।१२ 2. फटा, लटकता हुआ (अलमारी का) तख्ता, जुए से बंधी हुई रस्सी जो बोझ को सहार ले 3. आंख का एक रोग, आंख की नाड़ी का रोग जिससे दृष्टि धुंधली हो जाय । सम०—**घटी** शीशे की झारी या जग, -**भोजनम्** शीशे का पात्र,—**मणिः** स्फटिक, बिल्लौर,—**मलम्,—लवणम्,—संभवम्** काला नमक या सोडा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काञ्चनम्, काञ्चनकम् [कच्+णिच्+ल्युट्, कन् च] डोरी या फीता जिसमें कागजों का बण्डल या हस्तलिखित पत्र बाँधे जाते हैं तु० कवेल।

काञ्चनिकः (पुं०) [काञ्चनक+इनि] हस्तलिखित ग्रन्थ, लेख।

काञ्चुकः [कच्+ऊकञ् वा०] 1. मुर्गा 2. चकवा।

काञ्जलम् [ईषत् कुत्सितं जलम् -कोः कादेशः] 1. थोड़ा पानी 2. स्वादहीन पानी।

काञ्चन (वि०) (स्त्री०—नी) [काञ्च्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] सुनहरी, सोने का बना हुआ -तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टिः मेघ० ७९, काञ्चनं वलयम् श० ६।५, मनु० ५।११२, नम् 1. सोना -- (ग्राह्यम्) अमेध्यादपि काञ्चनम्- मनु०२।२३९ 2. प्रभा, दीप्ति 3. सम्पत्ति, धन-दौलत 4. कमल तन्तु. -नः 1. धतूरे का पौधा 2. चम्पक का पौधा। सम० -अङ्गी सुनहरी रंगरूप की स्त्री--भामि० २।७२, —कन्दरः सोने की कान, -गिरिः मेरु नामक पहाड़, -भूः (स्त्री०) 1. सुनहरी (पीली) भूमि 2. स्वर्णरज, सन्धिः समता के आधार पर दो दलों में हुई सुलह। तु० हि० ४।११३।

काञ्चनारः (लः) [काञ्चन+ऋ (अल्)+अण्] कचनार का पेड़।

काञ्ची, -ची (स्त्री०)[काञ्च्+इन्—कांचि+ङीष्] स्त्री की छोटे २ घुंघरुओं युक्त) मेखला या करधनी। एतावता तन्वनुभवशोभि काञ्चीगुणस्थानमनिन्दिताभाः -कु० १।३७, ३।५५, मेघ० २८ शि० ९।३२, रघु० १।४३ 2. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जो हिन्दुओं का एक पावन नगर समझा जाता है (सात नगरों के नामों के लिए दे० 'अवन्ति')। सम० -पुरी, नगरी 1. कांची (नगर) 2. पद्म कूल्हा, नितम्ब।

काञ्जिकम्, काञ्जिका [कुत्सिका अञ्जिका प्रकाशो यस्य-कु+अञ्ज्+ण्वुल्; टाप् इत्वम् को: कादेशः] खटास से युक्त एक प्रकार का पेय, कांजी।

काटुक्यम् [कटुकस्य भावः—अण्] खटास, अम्लता।

काठः [कठ्+घञ्] चट्टान, पत्थर।

काठिन्यम्— न्यम् [कठिन+अण्, ष्यञ् वा] 1. कठोरता, कड़ापन---काठिन्यमुत्कस्तनम्- श० ३।११ 2. निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता।

काण (वि०) [कण्+घञ्] 1. एक आंख वाला –अहणा काणः सिद्धा०, काणेन चक्षुषा हि सः हि० प्र० १२, मनु० ३।१५५ 2. छिद्रवाला, फटा हुआ (जैसे कि कौड़ी)-- प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च माम्-- भर्तृ० ३।४, फूटी कौड़ी।

काणेयः, -यी [काणा+ढक्, ढक् वा] कानी स्त्री का पुत्र।

काणेली [काण+इल्+अच्+ङीष्] 1. असती या व्यभिचारिणी स्त्री 1. अविवाहिता स्त्री। सम०—मातृ (पुं०) अविवाहिता माता का पुत्र, हरामी (तिरस्कार सूचक शब्द जो केवल सम्बोधन में प्रयुक्त होता है) -काणेलीमातः अस्ति किंचिच्चिह्नं यदुपलक्षयसि —मृच्छ० १।

काण्डः,—ण्डम् [कण्+ड, दीर्घः] 1. अनुभाग, अंश, खंड 2. पौधे का एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक का भाग, पोरी 3. डंठल, तना, शाखा -लीलोत्खातमृणालकाण्डकवलच्छेदेषु—उत्तर० ३।१६, अमर ९५, मनु० १।४६, ४८ 4. ग्रन्थ का भाग, जैसे कि किसी पुस्तक का अध्याय, जैसे रामायण के सात काण्ड 5. एक पृथक् विभाग या विषय---उदा० ज्ञान०, कर्म० आदि 6. झुंड, गट्ठर, समुदाय 7. बाण 8. लम्बी हड्डी, भुजाओं या पैरों की हड्डी 9. बेत, सरकण्डा 10. लकड़ी, लाठी 11. पानी 12. अवसर, मौका 13. निजी जगह 14. अनिष्ट कर, बुरा, पापमय (केवल समास के अन्त में) सम०—कारः बाणों का निर्माता,—गोचरः लोहे का बाण,—घटः,—घटकः कनात, परदा शि० ५।२२,—घातः तीर की मार, बाण का परास,—पृष्ठः 1. शस्त्रजीवी, सैनिक 2. वैश्य स्त्री का पति 3. दत्तक पुत्र, औरस से भिन्न कोई अन्य पुत्र 4. (तिरस्कार सूचक शब्द) अधम कुल, जाति-धर्म या अपने व्यवसाय को कलंक लगाने वाला, कमीना, नमकहराम, महावी० ३ में परशुराम जामदग्न्य को 'काण्डपृष्ठ' नाम से सम्बोधित किया है (स्वकुलं पृष्ठतः कृत्वा यो वै परकुलं व्रजेत्, तेन पुरुषरितेनासौ काण्डपृष्ठ इति स्मृतः),—भंगः किसी अंग या हड्डी का टूटना- भोजा चाण्डाल की बीणा, —सन्धिः पन्थि, जोड़ (जैसे कि पौधे की कलम लगाना), - स्पर्शः शस्त्रजीवी, योद्धा, सैनिक।

काण्डवत् (पुं०) [काण्ड+मतुप् मस्य वः] धनुर्धारी।

काण्डीरः [काण्ड+ईरच्] धनुर्धारी (कई अवसरों पर यह शब्द 'काण्डपृष्ठ' शब्द की तरह तिरस्कार सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है तु० महावी० ३)

काण्डोलः [काण्डोल्+अण्] नरकुल की बनी टोकरी, दे० 'कण्डोल'।

कात् (अव्य०) [कुत्सितम् अतति अनेन कु+अत्+क्विप् को: कादेशः] तिरस्कार सूचक उद्गार, प्रायः कु के साथ, कात्कु अपमानित करना, तिरस्कार करना -यन्मयैरयमसत्तेन गृहः सदसि कात्कृतः---भाग०।

कातर (वि०) [ईषत् तरति स्वकार्यसिद्धिं गच्छति—तृ+अच् को: कादेशः—तारा०] 1. कायर, डरपोक, हतोत्साह—वर्जयन्ति च कातरान्—पंच० ४।४२, अमर ७, ३०, ७५, रघु० ११।७८ मेघ० ७७ 2. दुःखी, शोकान्वित, भयभीत—किमेवं कातरासि श० ४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. विक्षुब्ध, विस्मित, उद्विग्न—भर्तृ० १।६० 4. भय के कारण कांपने वाला (जैसे आँख का फरकना) रघु० २।५२, अमर० ७९ ।

कातर्यम् [कातर+ष्यञ्] कायरता,—कातर्यं केवलं नीतेः शौर्यं स्वापदचेष्टितम्—रघु० १७।४७ ।

कात्यायनः [कतस्य गोत्रापत्यम्, कत+यञ्+फक्] 1. एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिसने पाणिनि के सूत्रों पर अनुपूरक वार्तिक लिखे हैं 2. एक ऋषि जिसने श्रौतसूत्र व गृह्य सूत्र की रचना की है—याज्ञ० १।४ ।

कात्यायनी [कात्यायन+ङीष्] 1. एक प्रौढ़ा या अधेड़ विधवा (जिसने लाल वस्त्र पहने हुए हों) 2. पार्वती । सम०—पुत्रः,—सुतः कार्तिकेय ।

कादाचित्कः (वि०) (स्त्री०—की) [कदाचित्+ठक्] किसी न किसी प्रकार (कठिनाइयों के साथ) सम्पन्न ।

काधिकः [कथा+ठक्] कहानी सुनाने वाला, कहानी-लेखक, कहानीकार ।

कादम्बः [कदम्ब+अण्] 1. कलहंस,—रघु० १३।५५, ऋतु० ४।९ 2. बाण:—शि० १८।२९ 3. ईख, गन्ना 4. कदम्ब वृक्ष,—म्बम् कदम्ब वृक्ष का फूल—रघु० १३।२७ ।

कादम्बरम् [कादम्ब+ला+क, लस्य रः] कदम्ब के फूलों से खींची हुई शराब—नियेक्ष्यत मधु माधवाः सरसमत्र कादम्बरम्—शि० ४।६६,—री 1. कदम्ब वृक्ष के फूलों से खींची हुई शराब 2. शराब—कादम्बरीसाधिकां प्रथम सौहृदमिप्यते—शृं० ६ या कादम्बरीमदविघूर्णितलोचनस्य युक्तं हि लाङ्गलभृतः पतनं पृथिव्याम् —उद्भट 3. मदमाते हाथी की कनपटियों से बहने वाला मद 4. सरस्वती की उपाधि, विद्यादेवी 5. मादा कोयल ।

कादम्बिनी (स्त्री०) [कादम्ब+इनि+ङीप्] बादलों की पंक्ति—मदीयमचिरभविनी भवतु कापि कादम्बिनी—रस०, भामि० ४।९ ।

कादाचित्क (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कदाचित्+ठञ्] सायोगिक, आकस्मिक ।

काद्रवेयः [कद्रोः अपत्यम्—कद्रु+ढक्] एक प्रकार का सांप ।

काननम् [कन्+णिच्+ल्युट्] 1. जङ्गल, बाग—रघु० १२।२७, १३।१८ मेघ० १८, ४२, काननान्तर्वनं—जङ्गल की भूमि 2. घर, मकान । सम०—अग्निः जंगली आग, दावानल,—ओकस् (पुं०) 1. जंगलवासी 2. बन्दर ।

कानिष्ठिकम् [कनिष्ठिका+अण्] हाथ की सबसे छोटी (कनी) अंगुली, ।

कानिष्ठिनेयः,—यी [कनिष्ठा+अपत्यार्थे ठक्, इनङ् च] सबसे छोटी लड़की की सन्तान ।

कानीनः [कन्यायाः जातः—कन्या+अण्, कानीन् आदेश] अविवाहिता स्त्री का पुत्र—कानीनः कन्यकाजातो मातामहसुतो मतः—याज्ञ० २।१२९, मनु० ९।१७२ में दी गई परिभाषा भी देखिए 2. व्यास 3. कर्ण ।

कान्त (वि०) [कन्(म्)+क्त] 1. इष्ट, प्रिय, अभीष्ट, —अभिमतकान्तं कृतं चाक्षुषं—मालवि० १, ४ 2. सुखकर, रुचिकर—मौमकान्तैर्गुणगुणैः—रघु० १।१६ 3. मनोहर, सुन्दर—सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति—श० २,—न्तः 1. प्रेमी 2. पति—कान्तोऽन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किंचिदूनः—मेघ० १००, शि० १०।३, २९ 3. प्रेमपात्र 4. चन्द्रमा 5. वसन्त ऋतु 6. एक प्रकार का लोहा 7. रत्न (समास में सूर्य, चन्द्र और अयस् के साथ) 8. कार्तिकेय की उपाधि,—न्तम् केसर, जाफरान, सम० - आयसम्, चुम्बक, अयस्कान्त ।

कान्ता [कम्+क्त+टाप्] 1. प्रेमिका या लावण्यमयी स्त्री 2. गृह स्वामिनी, पत्नी - कान्तासखस्य शयनीयशिलातलं ते उत्तरः ३।२१, मेघ० १९, शि० १०, ७३ 3. प्रियङ्गु लता 4. बड़ी हलायची 5. पृथ्वी । सम०—अङ्घ्रिद्रोहिन् अशोक वृक्ष—दे० अशोक ।

कान्तारः,—रम् [कान्त+ऋ+अण्] 1. विशाल विषाक्त जङ्गल, —गुरुं तु गृह्णिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते —पंच० ४।८१, भर्तृ० १।८६ याज्ञ० २।६८ 2. खराब सड़क 3. सूखा, छिद्र, —रः 1. लाल रंग की जाति का गन्ना 2. पहाड़ी आबनूस ।

कान्तिः (स्त्री०) [कम्—क्तिन्] 1. मनोहरता, सौन्दर्य —मेघ० १५, अविलब्धकान्तिः—श० ५, १९ 2. चमक, प्रभा, दीप्ति—मेघ० ४४ 3. व्यक्तिगत सजावट या शृङ्गार 4. कामना, इच्छा 5. (अलं० शा० में) प्रेमोद्दीप्त सौन्दर्य (मा० द० शोभा और दीप्ति से कान्ति को इस प्रकार भिन्न बताता है, रूपलावण्यलालित्यं भोगार्हत्वं कुभूषणम्, शोभा प्रोक्ता सैव कान्तिर्मन्मथाप्यायिता द्युतिः, कान्तिरेवाति विस्तीर्णा दीप्तिरित्यभिधीयते -१३०, १३१) 6. मनोहर या कमनीय स्त्री 7. दुर्गा की उपाधि । सम०—कर (वि०) सौन्दर्य बढ़ाने वाला, शोभा बढ़ाने वाला, —द (वि०) सौन्दर्य देने वाला, अलंकृत करने वाला (दम्) 1. घृत 2. घी, —द,—दायक,—दायिन् (वि०) अलंकृत करने वाला,—भृत् (पुं०) चन्द्रमा ।

कान्तिमत् (वि०) [कान्ति+मतुप्] मनोहर, सुन्दर, भव्य कु० ४।५, ५।७१, मेघ० ३० —(पुं०) चन्द्रमा ।

कान्दवम् [कन्द+अण्] लोहे की कड़ाई या चूल्हे में घुनी हुई कोई वस्तु ।

कान्दविक (वि०) [कान्दव+ठक्] नानबाई, हलवाई ।

कान्दिशीक (वि०) [कां दिशां यातीत्येवं वादिनीर्ये ठक्, पृषो० साधु] 1. उड़ने वाला, भागने वाला, भगोड़ा —मृगजनः कान्दिशीकः संवृत्तः पंच० १।२, (अतः) त्रस्त, भयभीत - भामि० २।१७८ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कान्यकुब्जः [कन्या कुब्जा यत्र—कन्याकुब्ज+अण् पृषो० । साधु:] एक देश का नाम दे० 'कन्याकुब्ज' ।

कापटिक (वि०) (स्त्री० की) [कपट+ठक्] 1. जाल-साज, डेढ़ीमान 2. दुष्ट, कुटिल, —क: चापलूस, चाटुकार, पिछलग्गू ।

कापट्यम् [कपट+ष्यञ्] दुष्टता, जालसाजी, धोखा-देही ।

कापथः [कुत्सितः पन्थाः] खराब सड़क (शा० और आल०) ।

कापाल:, कापालिकः [कपाल+अण्, ठक् वा] शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत विशिष्ट सम्प्रदाय का अनुयायी (वामाचारी) जो मनुष्य की खोपड़ियों की माला धारण करते हैं और उन्हीं में खाते पीते हैं, पंच० १।२१२ ।

कापालिन् (पु०) [कपाल+अण्+इनि] शिव ।

कापिक (वि०) (स्त्री० की) [कपि+ठक्] बन्दर जैसी शक्ल सूरत का या बन्दरों की भांति व्यवहार करने वाला ।

कापिल (वि०) (स्त्री०—ली) [कपिल+अण्] 1. कपिल से सम्बन्ध रखने वाला या कपिल का 2. कपिल द्वारा शिक्षित या कपिल से व्युत्पन्न,—ल: कपिल मुनि द्वारा प्रस्तुत सांख्यदर्शन का अनुयायी 2. भूरा रंग ।

कापुरुष: [कुत्सितः पुरुषः —कोः कादेशः] नीच घृणित व्यक्ति, कायर, नराधम, पापी, 'सुखन्तुष्ट: कापुरुष: स्वल्पकेनापि तुष्यति पंच० १।२५, ३६१ ।

कापेयम् [कपि+ठक्] 1. बन्दर की जाति का 2. बन्दर जैसा व्यवहार बन्दर जैसे दांव पेंच ।

कापोत (वि०) (स्त्री० ती) [कपोत+अण्] भूरे रंग का, धूसर रंग का, तम् 1. कबूतरों का समूह 2. सुर्मा, —त: भूरा रंग । सम० —अंजनम् आंखों में आंजने का सुर्मा ।

काम् (अव्य०) आवाज देकर बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय ।

कामः [कम्+घञ्] । कामना, इच्छा, सन्तानकामाय—रघु० २।६५, ३।६७, (प्रायः तुमन्नन्त के साथ प्रयुक्त) गन्तुकामः —जाने का इच्छुक —भग० २।६२, मनु० २।९४ 2. अभीष्ट पदार्थ —सर्वान् कामान् समश्नुते —मनु० २।५ 3. स्नेह, अनुराग 4. प्रेम या विषम भोग की इच्छा जो जीवन के चार उद्देश्यों (पुरुषार्थ) में से एक है—तु० अर्थ और अर्थ काम 5. विषयों से तृप्ति की इच्छा, कामुकता मनु० २।२१४ 6. कामदेव 7. प्रद्युम्न 8. बलराम 9. एक प्रकार का आम्र 1. विषय, इच्छित पदार्थ 2. वीर्य, धातु (हिन्दू पौराणिकता के अनुसार काम ही कामदेव है —वही कृष्ण व रुक्मिणी का पुत्र है। उसकी पत्नी रति है, जिस समय देवताओं को तारक के विरुद्ध युद्ध करने के निमित्त अपनी सेनाओं के लिए सेनापति की आवश्यकता हुई तो उन्होंने कामदेव से सहायता मांगी जिससे कि शिव का ध्यान पार्वती की ओर आकृष्ट हो, यही एक बात थी जो राक्षसों का काम तमाम कर सकती थी। कामदेव ने इस बात का बीड़ा उठा लिया परन्तु शिव ने अपनी तपस्या के विघ्न से क्रुद्ध हो अपने तृतीय नेत्र की अग्नि से काम को भस्म कर दिया। उसके पश्चात् रति की प्रार्थना पर शिव ने कामदेव को प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेने की अनुमति दे दी। उसका घनिष्ठ मित्र वसन्त ऋतु और पुत्र अनिरुद्ध है, वह धनुर्बाण से सुसज्जित है भ्रमरपंक्ति ही उसके धनुष की डोरी है—और पांच विविध पौधों के फूल ही उसके बाण हैं)। सम—अग्नि 1. प्रेम की आग, प्रचंड प्रेम 2. उत्कट इच्छा, कामोन्माद, °संदीपनम् 1. कामाग्नि को प्रज्वलित करना 2. कोई कामोद्दीपक पदार्थ,—अङ्कुशः 1. अंगुली का नाखून 2. पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग—अङ्गः आम का वृक्ष, —अधिकारः प्रेम या इच्छा का प्रभाव,—अधिष्ठित (वि०) प्रेम के वशीभूत,—अन्धः देखो 'कामान्ध', —अंधः (वि०) प्रेम या कामोन्माद के कारण अन्धा, (—धः) कोयल', —अंधा वस्तूरी,—अग्निन् (वि०) अधिक इच्छा हो तभी भोजन पाने वाला,—अभिकाम (वि०) कामुक, कामासक्त,—अरक्षम् प्रमोद वन या सुहावना उद्यान,—अरि शिव की उपाधि,—अर्थिन् (वि०) शृंगार प्रिय, विषयी, कामासक्त,—अवतारः प्रद्युम्न,—अवस्थाः प्रणयोन्माद या काम का दमन, वैराग्य, —अशनम् 1. जब चाहे तब भोजन करना, इच्छानुकूल खाना 2. अनियन्त्रित सुखोपभोग, —आतुर (वि०) प्रेम का रोगी, काम वेग के कारण रुग्ण —कामानुरागों न भयं न लज्जा—सुभा०, —आत्मजः प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का विशेषण—आत्मन् (वि०) विषयी, कामुक, आसक्त—मनु० ७।२७,—आयुधम् 1. कामदेव का बाण 2. जननेन्द्रिय (पुं:) आम का वृक्ष,—आयुः (पु०) 1. गृद्ध 2. गरुड़,—आर्त (वि०) प्रेम का रोगी, कामाभिभूत —कामार्ता हि प्रकृति-कृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५,—आसक्त (वि०) प्रेम या इच्छा के वशीभूत, कामोन्मत्त, कामासक्त, —ईप्सु (वि०) अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करने के लिए सचेष्ट,—ईश्वरः 1. कुबेर का विशेषण 2. परमात्मा, —उदकम् 1. जल का ऐच्छिक तर्पण 2. विधि द्वारा विहित अधिकारियों को छोड़ कर दिवंगत मित्रों का जल से तर्पण—याज्ञ० ३।४, उपहत (वि०) कामोन्माद के वशीभूत, या प्रणय रोगी,—कला काम की पत्नी रति,—काम कामिन् (वि०) प्रेम या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामोन्माद के अधिदेशों का अनुयायी, **कार** (वि०) इच्छानुकूल काम करने वाला, अपनी कामनाओं में लिप्त रहने वाला (**—रः**) 1. ऐच्छिक कार्य, स्वतः स्फूर्त कर्म-- मनु० ११।४१, ४५ 2. इच्छा, इच्छा का प्रभाव--भग० ५।११,—**कृत्** (वि०) 1. इच्छानुसार समय पर कार्य करने वाला, इच्छानुकूल कार्य करने वाला 2. इच्छा को पूरी करने वाला, (पु०) परमात्मा, —**केलि** वि०) कामासक्त (**लिः**) 1. प्रेमी 2. संभोग —**कीडा** 1. प्रेम की रंगरेली, शृंगारी खेल 2. संभोग, —**ग** (वि०) इच्छानुकूल जाने वाला, इच्छानुसार आने जाने या कार्य करने के योग्य (**—गा**) असली तथा कामुक स्त्री--याज्ञ० ३।६,--**गति** (वि०) अभीष्ट स्थान पर जाने के योग्य—रघु० १३।७६,— **गुणः** 1. प्रणयोन्माद का गुण, स्नेह 2. संतृप्ति, भरपूर सुखोपभोग 3. विषय, इन्द्रियों को आकृष्ट करने वाले पदार्थ, **चर —चार** (वि०) बिना किसी प्रतिबंध के स्वतंत्र रूप से घूमने वाला, इच्छानुकूल भ्रमण करने वाला -कु० १।५०, **चार** (वि०) अनियन्त्रित, प्रतिबंधरहित (**—रः**) 1. अनियन्त्रित गति 2. स्वतंत्र या स्वेच्छापूर्वक कार्य, स्वेच्छाचारिता न कामचारो मयि शङ्कनीयः रघु० १४।६२ 3. अपनी इच्छा या अभिलाषा, स्वतंत्र इच्छा, कामचारानुज्ञा -सिद्धा०, मनु० २।२२० 4. विषयासक्ति 5. स्वार्थ, **—चारिन्** (वि०) 1. बिना किसी प्रतिबंध के घूमने वाला --मेघ० ६३ 2. कामासक्त, विषयी 3. स्वेच्छाचारी (पु०) 1. गरुड़ 2. चिड़िया, --ज (वि०) इच्छा या कामोन्माद से उत्पन्न—मनु० ७।४६, ४७, ५०, --**जित** (वि०) कामोन्माद या प्रेम को जीतने वाला —रघु० ९।३३, (पुं०) 1. स्कंद की उपाधि 2. शिव, **तालः** कोयल, --**द** (वि०) इच्छा पूरी करने वाला, प्रार्थना स्वीकार करने वाला, --**दा**--कामधेनु, --**दर्शन** (वि०) मनोहर दिखाई देने वाला,—**दुघ** (वि०) अपनी इच्छाओं को दोहने वाला, अभीष्ट पदार्थों को देने वाला –प्रीता कामदुघा हि सा—रघु० १।८०, २।६३, मा० ३।११, **—दुघा दुह्** (स्त्री० सब इच्छाओं को पूरा करने वाली काल्पनिक गाय--भग० १०।२८, **—दूतो** मादा कोयल, **देवः** प्रेम का देवता, —**धेनु** (स्त्री०) समृद्धि की गौ, सब इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय,—**ध्वंसिन्** (पुं०) शिव की उपाधि,—**पति,—पत्नी** (स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति,—**पालः** बलराम,—**प्रवेदनम्** अपनी इच्छा, कामना या आशा को अभिव्यक्त करना कच्चित् कामप्रवेदने अमर०,—**प्रसवः** अनियन्त्रित या मुक्त प्रजन—**फलः** आम के वृक्ष की एक जाति,—**भोगाः** (ब.व.) विषयोपभोग में तृप्ति,—**महः** चैत्रपूर्णिमा को मनाया जाने वाला कामदेव का पर्व,—**मूढ— मोहित** (वि०) प्रेमप्रभावित या प्रेमाकृष्ट—उत्तर० २।५, **रसः** दीर्घपात, **रसिक** (वि०) कामासक्त, कामातं क्षणमपि युवा कामरसिकः भर्तृ० ३।११२,- **रूप** (वि०) 1. इच्छानुकूल रूप धारण करने वाला, जातासि त्वं प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः मेघ० ६ 2. सुन्दर, सुहावना (**पाः**) (ब० व०) बंगाल के पूर्व में स्थित एक जिला (आसाम का पश्चिमी भाग) --रघु० ४।८०, ८४,-- **रेखा**,—**लेखा** वेश्या, रंडी, **लता** पुरुष की जननेंद्रिय, लिंग,— **लोल** (वि०) कामोन्मत्त, प्रेम का रोगी, **—वरः** इच्छानुकूल चुना हुआ उपहार,--**वल्लभः** 1. वसंत ऋतु 2. आम का वृक्ष (**भा**) ज्योत्स्ना, चांदनी,—**वश** (वि०) प्रेम-मुग्ध, (**शः**) प्रेम के वशीभूत होना,—**वश्य** (वि०) प्रेमासक्त, --**वाद** (वि०) इच्छानुसार कुछ भी कहना, मनमाना कहना,—**विहत** (वि०) इच्छाओं का हनन करने वाला, **वृत्त** (वि०) विषय वासना में लिप्त, स्वेच्छाचारी, व्यसनासक्त- मनु० ५।१५८, **वृत्ति** (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, स्वेच्छाचारी, स्वतंत्र - न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२, (स्त्री०- त्ति-) 1. मुक्त अनियंत्रित कार्य 2. मन की स्वतंत्रता, **बुद्धिः** (स्त्री०) कामेच्छा में वृद्धि, **वृन्तम्** शृंगवल्ली का फूल,—**शर** 1. प्रेम का बाण 2. आम का वृक्ष, **शास्त्रम्** प्रेमविज्ञान रतिशास्त्र,-- **संयोगः** अभीष्ट पदार्थों की प्राप्ति, **सखः** वसन्त ऋतु,—**सू** (वि०) इच्छा को पूरा करने वाला –रघु० ५।३३, ---**सूत्रम्** वात्स्यायनमुनिकृत रतिशास्त्र, - **हेतुक** (वि०) बिना वासनिक कारण के केवल इच्छामात्र से उत्पन्न--भग० १६।८

कामतः (अव्य०) [काम+तसिल्] 1. स्वेच्छा से, इच्छा-पूर्वक 2. अपनी इच्छा से, जानपूर्वक, इरादतन, जानबूझ कर मनु० ४।१३०, --पदास्पृष्टं च कामतः -याज्ञ० १।१६८ 3. प्रेमावेश में, भावनावश, कामुक-तावश—मनु० ३।१७२ 4. इच्छापूर्वक, स्वतन्त्रता से, बिना किसी नियन्त्रण के।

कामन (वि०) [कम+णिच्+ल्युट्] कामासक्त, कामा-तुर, **नम्** चाहू, कामना, --**ना** कामना, इच्छा।

कामनीयम् [कमनीयस्य भावः अण्] सौन्दर्य, आकर्ष-कता।

कामन्यभिन् (पुं०) [काम यथेष्टं धमति काम+ध्मा +णिनि, धमादेशः मुम् च नि०] कसेरा, ठठेरा।

कामम् (अव्य०) [कम्+णिच्+अम्] 1. कामना या रुचि के अनुसार, इच्छानुसार, कामक्रामो 2. सहमतिपूर्वक चाहना--मुद्रा० १।२५ 3. मन भर कर-- उत्तर०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३।१६ 4. इच्छापूर्वक, प्रसन्नता के साथ—शा० ४।४ 5. अच्छा, बहुत अच्छा (स्वीकृतिबोधक अव्यय), ऐसा हो सकता है कि मनागनभ्यादृत्या वा कामं क्षाम्यतु यः क्षमी -शि० २।४३ 6. मान लिया (कि) यह सच है कि, निस्सन्देह (प्रायः इसके पश्चात् 'तु' 'तथापि' का प्रयोग होता है) कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः शा० १।३१, २।१, रघु० ४।१३, ६।२२, १३।७५, मा० ९।३४ 7. बेशक, सचमुच, वास्तव में—रघु० २।४२ (बहुधा अनिच्छा या विरोध निहित रहता है) 8. अधिक अच्छा, चाहे (प्रायः 'न' के साथ)—कामममरणान्तिष्ठेद् गृहे कन्यार्तुमत्यपि, न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्—मनु० ७।८९।

कामयमान, कामयान, कामयितृ (वि०) [कम्+णिच्+शानच्, पक्षे मुक्, तृच् वा] कामासक्त, कामुक रघु० १९।५० शा० ३।

काम्बल (वि०) [कम्बलेन आवृतः- कम्बल+अण्] ऊनी कपड़े या कंबल से ढकी हुई गाड़ी।

काम्बलिक [कम्बल+ठक्] शंख या सीपी के बने आभूषणों का विक्रेता, शंख या सीपी का व्यापारी।

काम्बोजः [कम्बोज+अण्] 1. कंबोज देश का निवासी -मनु० १०।४४ 2. कंबोज का राजा 3. पुंनाग वृक्ष 4. कंबोज देश के घोड़ों की एक जाति।

काम्य (वि०) [कम्+णिच्+यत्] वांछनीय, इच्छा के उपयुक्त—सुधा विष्ठा च काम्याशनम्—वा० २।८ 2. ऐच्छिक, किसी विशेष उद्देश्य से किया गया (विप० नित्य)— अन्ते काम्यस्य कर्मणः—रघु० १०।५०, मनु० २।२, १२।८९, भग० १८।२ 3. सुन्दर, मनोहर, लावण्यमय, खूबसूरत—नासौ न काम्यः—रघु० ६। ३०, उत्तर० ५।१२,—म्या कामना, इच्छा, इरादा, —प्रार्थना ब्राह्मणकाम्या—मृच्छ० ३, रघु० १।३५, भग० १०।१। सम०—अभिप्रायः स्वार्थनिहित प्रयोजन, कर्मन् (नपुं०) किसी विशेष उद्देश्य तथा भावी फल की दृष्टि से किया गया धर्मानुष्ठान, गिर् (स्त्री०) रुचि के अनुकूल भाषण,—दानम् 1. स्वीकार करने योग्य उपहार 2. स्वतंत्र इच्छा से दिया गया उपहार, ऐच्छिक भेंट, -व्रतम् स्वेच्छापूर्वक मन्नत, आत्महठ्या, -व्रतम् ऐच्छिक व्रत।

काम्ल (वि०) [कु ईषत् अम्लः- कोः कादेशः] कुछ थोड़ा खट्टा, ईषदम्ल।

कायः, यम् [चीयतेऽस्मिन् अस्थ्यादिकमिति कायः, चि+घञ्, आदेः ककारः] 1. शरीर—विभाति कायः करुणापराणां परोपकारैर्न तु चन्दनेन भर्तृ० २।७१, कायेन मनसा बुद्ध्या -भग० ५।११ इसी प्रकार कायेन, वाचा, मनसा आदि 2. वृक्ष का तना 3. वीणा का शरीर (तारों को छोड़कर वीणा का ढांचा) 4. समुदाय, जमघट, संचय 5. मूलधन, पूंजी 6. घर, आवास, वसति 7. कुंदा, चिल्ह 8. नैसर्गिक स्वभाव —यम् ('तीर्थ' के साथ या 'तीर्थ' के बिना) अंगुलियों से नीचे का हाथ का भाग, विशेषकर कनिष्ठा अंगुली (यह अंगुली प्रजापति के लिए पावन मानी जाती है-- और 'प्रजापति तीर्थ' कहलाती है—तु० मनु० २।५८,५९),—यः आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसे 'प्राजापत्य' कहते हैं— याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३८। सम०—अग्निः पाचनशक्ति,—क्लेशः शरीर का कष्ट या पीड़ा, चिकित्सा आयुर्वेद के आठ विभागों में से तीसरा, समस्त शरीर में व्याप्त रोगों की चिकित्सा,—मानम् शरीर की माप,—वलगम् कवच,—स्थः 1. लेखक जाति (क्षत्रियपिता और शूद्र माता की संतान) 2. इस जाति का पुरुष—कायस्थ इति लघ्वी मात्रा—मुद्रा० १, याज्ञ० १।३३६ मृच्छ० ९,

काम्पिल्लः, काम्पीलः [कम्पिला नदी विशेषः तस्याः अदूरे भवः -कम्पिला+अण्=काम्पिल+अरम् नि० साधुः कम्पिला+अण् नि० दीर्घः,] एक वृक्ष का नाम—मा० ९।३१।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(स्त्री०—स्था) 1. कायस्थ जाति की स्त्री 2. आंवले का वृक्ष (स्त्री०—स्थी) कायस्थ की पत्नी, —स्थित (वि०) शरीरगत, शारीरिक।

कायक (स्त्री०—यिका), कायिक (स्त्री०—की) (वि०) [काय—वुञ्, स्त्रियां टाप्, इत्वम् -काय+ठक् स्त्रियां ङीप्] शरीर संबंधी, शारीरिक, शरीर विषयक—कायिकतपः—मनु० १२।८,—का व्याज (धन के उपयोग के बदले में जो कुछ दिया जाय)। सम०—बुद्धिः (स्त्री०) धरोहर रक्खे हुए किसी पशु या वाणिज्य-सामग्री के उपयोग के बदले मुजरा दिया गया ब्याज 2. ऐसा ब्याज जिसकी अदायगी से मूलधन पर कोई प्रभाव न पड़े, धरोहर रक्खे हुए पशु को उपयोग में लाना।

कार (वि०) (स्त्री०—री) [कृ—अण्, घञ् वा] (समास के अन्त में) बनाने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, कार्य करने वाला, निर्माता, कर्ता, रचयिता —ग्रंथकारः=रचयिता, कुंभकारः, स्वर्णकारः आदि, —रः 1. कृत्य, कार्य जैसा कि 'पुरुषकार' में 2. किसी ऐसी ध्वनि या शब्द को प्रकट करने वाला पद जो विभक्ति चिह्न से युक्त न हो जैसा कि अकार,—मनु० २।७६, १२६, ककार, फूत्कार आदि 3. प्रयास, चेष्टा —वि० १९।२७ 4. धार्मिक कृत्य 5. पति, स्वामी, मालिक 6. संकल्प 7. शक्ति, सामर्थ्य 8. कर या चुंगी 9. हिम का ढेर 10 हिमालय पर्वत। सम०—अवरः एक मिश्रित या नीचजाति का पुरुष जो निषाद पिता व वैदेही माता से उत्पन्न हुआ—नु० मनु० १०।३६, —कर (वि०) कार्य करने वाला, अभिकर्ता, —भूचुंगीघर।

कारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [कृ+ण्वुल्] (प्रायः समास के अन्त में) 1. बनाने वाला, अभिनय करने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, रचने वाला, कर्ता आदि—स्वप्नस्य कारकः—याज्ञ० ३।१५०, २।१५६, वर्णसंकरकारकैः—भग० १।४२, मनु० ७।२०४ पंच० ५।३६ 2. अभिकर्ता—कम् 1. (व्या० में) संज्ञा और क्रिया के मध्य रहने वाला संबंध (या संज्ञा और उससे संबद्ध अन्य शब्द) इस प्रकार के कारक गिनती में छः हैं जो संबंधकारक को छोड़कर शेष विभक्तियों में संबद्ध हैं 1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान और 6. अधिकरण 2. व्याकरण का वह भाग जो इसके व्यवहार को बतलाता है—अर्थात् वाक्य रचना या कारक-प्रकरण। सम०—दीपकम् (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें एक ही कारक इतरोतर अनेक क्रियाओं से संयुक्त हो—उदा० —स्निह्यति कूर्दति वल्गति विचलति निमिषति विलोकयति नियंक्, अन्तर्नेदति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणया वधूः शयने—काव्य० १०, —हेतुः क्रियात्मक या क्रियापरक कारण (विप० ज्ञापक हेतु)।

कारणम् [कृ+णिच्+ल्युट्] 1. हेतु, तर्क —कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः—मालवि० १।२८, रघु० १।७४, भग० १३। २१ 2. आधार, प्रयोजन, उद्देश्य—किं पुनः कारणम्—महा०, याज्ञ० २।२०३, मनु० ८।३४७, कारणमानुषी तनूम्—रघु० १६।२२ 3. उपकरण, साधन—याज्ञ० ३।२० ६५ 4. (न्या० द० में) वह कारक जो निश्चित रूप से किसी फल का पूर्ववर्ती कारण हो, या 'मिल' के मतानुसार—पूर्ववर्ती कारण या उनका समूह जिन पर कार्य निश्चित रूप से, बिना किसी लागलपेट के निर्भर करता है; नैयायिकों के मतानुसार इसके तीन भेद हैं:—(क) समवायि (घनिष्ठ और अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े का कारण तन्तु,—धागे (ख) असमवायि (जो न तो घनिष्ठ हो न अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े के लिए तन्तुओं का संयोग (ग) निमित्त (उपकरणात्मक) जैसा कि कपड़े के लिए जुलाहे की खड्डी 5. जननात्मक कारण—सृष्टिकर्ता, पिता,—कुः ५।८१ 6. तत्त्व, तत्त्व-सामग्री—याज्ञ० ३।१४८, भग० १८।१३ 7. किसी नाटक या काव्य का मूल या कथावस्तु आदि 8. इन्द्रिय 9. शरीर 10 चिह्न, दस्तावेज, प्रमाण या अधिकार-पत्र—मनु० ११।८४ 11 जिसके ऊपर कोई मन या व्यवस्था निर्भर करती है। सम०—उत्तरम् विशेष तर्क, अभियोग के कारण को मुकरना (स्वीकार न करना), आरोप को सामान्यतः मान लेना परन्तु वास्तविक (वैध) तथ्य को अस्वीकृत कर देना,—कारणम् प्रारंभिक या प्राथमिक कारण, अणु, गुण, कारण का गुण, —भूत (वि०) 1. जो कारण बना हो 2. कारण बनने वाला,—माला एक अलंकार 'कारणों की शृंखला'—यथोत्तरं वेत्पूर्वस्य पूर्वस्यार्थस्य हेतुता, तदा कारणमाला स्यात्—काव्य० १०—उदा० भग० २।६२, ६३, सा० द० ७२८,—वादिन् (पुं०) अभियंक्ता, वादी, —वारि (नपुं०) सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न मूल जल,—विहीन (वि०) बिना कारण के,—शरीरम् (वेदान्त द०) शरीर का आन्तरिक बीजारोपण, मूलसूत्र, या कारणों की रूपरेखा।

कारणा [कृ+णिच्+युच्+टाप्] 1. पीड़ा, वेदना 2. नरक में डालना।

कारणिक (वि०) [कारण+ठक्] 1. परीक्षक, निर्णायक 2. कारण परक, नैमित्तिक।

कारण्डवः [रम्+इ+रण्डः, ईषत् रण्डः=कारण्डः तं वाति वा+क] एक प्रकार की बतख 'तप्ते वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते'—विक्रम० २।२३।

कारन्धमिन् (पुं०) [कर एव कारः, तं यमति, कार+यम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

+इनि पृषो०] 1. कसेरा 2. खनिज विद्या को जानने वाला।

कारवः [का इति रवो यस्य ब० स०] कौवा।

कारस्करः [कारं करोति-कर+कृ+ट, मुट्] किपाक वृक्ष।

कारा [कीर्यते क्षिप्यते दण्डार्हो यस्याम्—कृ+अड्, गुण०, दीर्घः नि०] 1 कारावास, बन्दीकरण 2. जेलखाना, बन्दीगृह 3. वीणा का गर्दन के नीचे का भाग, तूंबी 4. पीड़ा, कष्ट 5. दूती 6. सोने का काम करने वाली स्त्री। सम०- अगारम्,—गृहम्-वेश्मन् बन्दीघर, जेलखाना - कारागृहे निजितवासवेन लङ्केश्वरेणोषित-मापसादात् - रघु० ६।४०, शा० ४।१०, भर्तृ० ३।२१, सुतः बन्दी, कैदी, पालः बन्दीगृह का रखवाला, कारागार का अधीक्षक।

कारिः (स्त्री०) [कृ+इञ्] कार्य, कर्म, (पुं०-स्त्री०) कलाकार, शिल्पकार।

कारिका [कृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. नवंकी 2. व्यवसाय, धंधा 3. व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से संबद्ध काव्य, या पद्य संग्रह—उदा०, (व्या० पर) भर्तृहरि की कारिका, सांख्यकारिका 4. यन्त्रणा, यातना 5. ब्याज।

कारीषम् [करीष+अण्] सूखे गोबर की करसियों का ढेर।

कारु (वि०) (स्त्री०-रू) [कृ+अण्] 1. निर्माता, कर्ता, अभिकर्ता, नौकर 2. कारीगर, शिल्पकार, कलाकार कारवि: कारितं तेन कृत्रिमं स्वप्नदेवने - -विद्धश० १।१३, इति स्म सा कारुतरेण लेखिता नलस्य च स्वस्य च सख्यपीक्षते—नै० १।३८, याज्ञ० २।२४९, १।१८७, मनु० ५।१२८, १०।१२, (वे ये हैं—तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा, पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः।)—रुः-देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा 2. कला, विज्ञान। सम०-चौरः सेंध मारने वाला, डाकू -जः 1. शिल्प से बनी कोई वस्तु, शिल्पकर्म द्वारा निर्मित वस्तु 2. युवा हाथी या हाथी का बच्चा 3. पहाड़ी, बर्मी 4. फेन, झाग।

कारुणिक (वि०) (स्त्री०—की) [करुणा+ठक्] दयालु, कृपालु, सदय—नागा० १।१।

कारुण्यम् [करुणा+ष्यञ्] दया, कृपा, रहम—कारुण्यमातन्वते—गीत० १, करिष्यः कारुण्यास्पदम्—भामि० १।१।

कार्कश्यम् [कर्कश+ष्यञ्] 1. कठोरता, रूक्षापन 2. दृढ़ता 3. ठोसपन कड़ापन, शि० २।१७ पंच० १।१९० 4. कठोरहृदयता, सख्ती, क्रूरता—कार्कश्यं गमितेऽपि चेतसि—अमरु २४।

कार्तवीर्यः [कृतवीर्यस्य+अण्] कृतवीर्य का पुत्र, हैहय देश का राजा, जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी (पूजा के फलस्वरूप उसने दत्तात्रेय से कई वर प्राप्त किये जैसे कि हजार भुजायें, स्वर्णमय रथ जो इच्छानुसार जहाँ चाहे जा सकता था, न्याय द्वारा अनिष्ट निवारण की शक्ति, दिग्विजय, शत्रुओं द्वारा अपराजेयता आदि (तु० रघु० ६।३९)। वायुपुराण के अनुसार धर्म तथा न्याय पूर्वक उसने ८५,००० वर्ष तक राज्य किया तथा १०००० यज्ञ किए। वह रावण का समकालीन था, उसने रावण को अपनी नगरी के एक कोने में पशु की भाँति बन्दीखाने में डाल दिया —तु० रघु० ६।४०, कार्तवीर्य को परशुराम ने मार डाला, क्योंकि वह परशुराम के पूज्य पिता जमदग्नि की कामधेनु को उड़ा कर ले गया था। कार्तवीर्य को सहस्रार्जुन भी कहते हैं)।

कार्तस्वरम् [कृतस्वर+अण्] सोना, स तप्तकार्तस्वर-भासुराम्बरः - -शि० १।२०, °दंडेन—का० ८२।

कार्तान्तिकः [कृतान्त+ठक्] ज्योतिषी, भाग्यवक्ता—कार्तान्तिको नाम भूत्वा भूत्व ब्राह्मम्—दश० १३०।

कार्तिक (वि०) (स्त्री० की) [कृत्तिका+अण्] कार्तिक मास से संबंध रखने वाला—रघु० १९।३९,—कः 1. वह महीना जब कि पूरा चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के निकट रहता है (अक्तूबर-नवम्बर महीना) 2. स्कन्द का विशेषण, (—की) कार्तिक मास की पूर्णिमा।

कार्तिकेयः [कृत्तिकानामपत्यं ढक्] स्कन्द (क्योंकि उसका पालन-पोषण छः कृत्तिकाओं द्वारा हुआ था) भारतीय पौराणिकता के अनुसार कार्तिकेय युद्ध का देवता है, शिव जी का पुत्र है, (परन्तु उसके जन्म में किसी स्त्री का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं है) उसके जन्म के विषय में बहुत सी परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है। शिव ने अपना वीर्य अग्नि में फेंका (जो कि कबूतरी के रूप में शिव के पास गई जब कि वह पार्वती के साथ सहवास का सुखोपभोग कर रहे थे) जिसने इसे सहन न करने के कारण गंगा में फेंक दिया (इसीलिए स्कन्द को अग्निभू या गंगापुत्र भी कहते हैं)। उसके पश्चात् वह छः कृत्तिकाओं (जब वह गंगा में स्नान करने गई) में संक्रांत कर दिया गया। फलस्वरूप वह सब गर्भवती हुई और प्रत्येक ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु बाद में इन छः पुत्रों को बड़े रहस्यमय ढंग से जोड़ कर एक कर दिया गया, इस प्रकार वह छः सिर, बारह हाथ तथा बारह आँखों वाला असाधारण रूप का व्यक्ति बना (इसीलिए उसे कार्तिकेय, षडानन या षण्मुख कहते हैं)। दूसरी कहानी के अनुसार गंगा ने शिव के वीर्य को सरकंडों में फेंक दिया, इसी कारण उसे शर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दनभव मा दारजन्मा कहते हैं। कहते हैं कि उसने क्रौंच पहाड़ को विदीर्ण कर दिया इसीलिए वह क्रौंच-दारण कहलाता है। एक शक्तिशाली राक्षस तारक के विरुद्ध युद्ध में वह देवताओं की सेना का सेनापति था—जिसमें उसने राक्षसों को परास्त करके तारक को मार डाला, इसीलिए उसका नाम सेनानी और तारकजित् है, उसका चित्रण मयूरारोही के रूप में किया जाता है)। सम०—प्रसू (स्त्री०) पार्वती, कार्तिकेय की माता।

कार्त्स्न्यम् [कृत्स्न+ष्यञ्] पूर्णता, समग्रता, समूचापन —तान्त्रिकोक्त कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान् पङ्क्तिपावनान् —मनु० ३।१८३।

कार्दम (वि०) (स्त्री०—मी) [कर्दम+अण्] कीचड़ से भरा हुआ, मिट्टी से सना हुआ या गारे से लथपथ।

कार्पट: [कर्पट+अण्] 1. आवेदक, अभियोक्ता, अभ्यर्थी 2. विषड़ा 3. लाक्षा।

कार्पटिक: [कर्पट+ठक्] 1. तीर्थयात्री 2. तीर्थों के जलों को ढोकर अपनी आजीविका कमाने वाला 3. तीर्थ-यात्रियों का दल 4. अनुभवी पुरुष 5. पिछलग्गू।

कार्यच्युम् [कृयण —च्यञ्] 1. गरीबी, दरिद्रता, गरीबी-व्यक्तकार्पण्या 2. दया, रहम 3. कंजूसी, बुद्धिदौर्बल्य —भग० २।७ 4. लघुता, हल्कापन।

कार्पास (वि०) (स्त्री०—सी) [कर्पास+अण्] रूई का बना हुआ,—स:,—सम् रुई की बनी हुई कोई वस्तु —मनु० ३८।३२६, १२।६४ 2. कपास, —सी रूई का पौधा, बाड़ी। सम०—अस्थि (नपु०) कपास का बीज बिनौला,—नासिका तकुआ,—सौत्रिक (वि०) रूई के सूत से बना हुआ—याज्ञ० २।१७९।

कार्पासिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्पास+ठक्] कपास का या रूई से बना हुआ।

कार्पासिका, कार्पासी [कार्पासी+कन्+टाप् ह्रस्व, कार्पास +ङीष्] रूई या कपास का पौधा, बाड़ी।

कार्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [कर्मन्+अण्] 1. काम को पूरा करने वाला 2. कार्य को पूर्ण रूप से भलीभांति करने वाला,—णम् जादू, अभिचार निखिलनयना-कर्षणे कार्मणज्ञा—भामि० २।७९, विक्रमांक० २।१४, ८।२।

कार्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन्+ठक्] 1. हस्तनि-र्मित, हाथ से बना हुआ 2. बेलबूटों से युक्त, रंगीन धागों से अन्तर्मिश्रित 3. रंगबिरंगा या बेलबूटेदार वस्त्र।

कार्मुक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन्+उकञ्] काम करने योग्य, मनोभीति और पूर्णत: काम करने वाला, —कम् धनुष—त्वयि चाधिज्यकार्मुके —श० १।६ 2. बाँस।

कार्य (सं० कृ०) [कृ+ण्यत्] जो किया जाना चाहिए, बनना चाहिए, सम्पन्न होना चाहिए, कार्यान्वित किया जाना चाहिए आदि,—कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतो-वहा मालिनी—श० ६।१६, साक्षिण: कार्या—मनु० ८।१६, इसी प्रकार दण्ड:, विचार: आदि,—र्य: 1. काम, मामला, बात—कार्यं वक्ष्या न: प्रतिपत्तिकल्प्यम् —कु० ३।१४, मनु० ५।१५० 2. कर्तव्य—शि० २।१ 3. पेशा, जोखिम का काम, आकस्मिक कार्य 4. धार्मिककृत्य या अनुष्ठान 5. प्रयोजन, उद्देश्य, अभिप्राय—शि० २।३६, हि० ४।६१ 6. कमी, आव-श्यकता, प्रयोजन, मतलब (करण० के साथ)—किं कार्यं भवतो हृतेन दयिताश्लेषोत्सवोत्सुकेन मे विक्रम० २।२०, तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्—पंच० १।७१, अमर० ३१ 7. शासन, विभाग 8. कानूनी अभियोग, व्यावहारिक मामला, झगड़ा आदि बहिर्निकाय्या ज्यायां क: क: कार्यार्थीति—मृच्छ० ९, मनु० ८।४३ 9. फल, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (विप० कारण) 10 (व्या० में) क्रियाविधि, विभक्तिकार्य—रूपनिर्माण 11. नाटक का उपसंहार—कार्योपक्षेपमादो तनुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।३ 12. स्वास्थ्य (आयु०) 13. मूल। सम०—अक्षम (वि०) अपना कार्य करने में असमर्थ अक्षम,—अकार्यविचार: किसी वस्तु के औचित्य से संबंध रखने वाली चर्चा, किसी कार्यप्रणाली के अनुकूल या प्रतिकूल विचारविमर्श,—अधिप: 1. किसी कार्य या विषय का अधीक्षक 2. वह ग्रह या नक्षत्र जो ज्योतिष में किसी प्रश्न का निर्णायक होता है,—अर्थ: किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2. सेवानियुक्ति के लिए आवेदनपत्र 3. उद्देश्य या प्रयोजन,—अर्थिन् (वि०) 1. प्रार्थना करने वाला 2. अपना उद्देश्य या प्रयोजन सिद्ध करने वाला 3. सेवा नियुक्ति की खोज करने वाला 4. न्यायालय में अपने पक्ष का समर्थन करना, न्यायालय में जाने वाला—मृच्छ० ९—आसनम् किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए बैठने का स्थान, गद्दी, ईक्षणम् सरकारी कार्यों की देखभाल—मनु० ७।१४१,—उद्धार: कर्तव्य को पूरा करना,—कर (वि०) अचूक, गुण-कारी,—कारणे (द्वि० व०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन, ० भाव कारण और कार्य का संबंध,—काल: काम करने का समय, मौसम, उपयुक्त समय या अवसर,—गौरवम् किसी कार्य की महत्ता, —चिन्तक (वि०) 1. दूरदर्शी, सावधान, सतर्क, (—क:) किसी व्यवसाय का प्रबन्धकर्ता, कार्यकारी अधिकारी मात्र० २।१९१, —च्युत (वि०) कार्यरहित, बेकार, किसी पद से बर्खास्त,—दर्शनम् 1. किसी कार्य का निरीक्षण करना 2. सार्वजनिक मामले की पूछताछ —निर्णय: किसी बात का फैसला,—मुढ: 1. निरर्थक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम करने वाला आदमी 2. पागल, सनकी विक्षिप्त 3. आलसी व्यक्ति, **प्रद्वेषः** काम करने में अरुचि, आलस्य, सुस्ती, —**प्रेप्यः** अभिकर्ता, दूत, **वस्तु** (न०) लक्ष्य और उद्देश्य,—**विपत्तिः** (स्त्री०) असफलता, प्रतिकूलता, दुर्भाग्य,—**शेषः** 1. बचा हुआ कार्य—मनु० ७।१५३ 2. कार्य की पूर्ति 3. किसी कार्य का अंश, —**सिद्धिः** (स्त्री०) सफलता,— **स्थानम्** काम करने की जगह, कार्यालय,—**हंतु** 1. दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला, -हिं० १।७७ 2. दूसरे के हितों का विरोधी।

कार्यतः (अव्य०) [कार्य—तसिल्] 1. किसी उद्देश्य या प्रयोजन के कारण 2. फलतः, अनिवार्यतः।

कार्पण्यम् [कृप्+ष्यञ्] 1. पतलापन, दुर्बलता, दुबलापन —मेघ० २९ 2. छोटापना, अल्पता, कमी—रघु० ५।२१।

कार्पः [कृपि+ण] किसान, खेतीहर।

कार्षापणः, -णम् (या पणकः) [कर्ष्+अण्—कार्षः, आ+कृष्+घञ्=आपणः, कार्षश्चासौ आपणः इ० स०] भिन्न भिन्न मूल्य का सिक्का या बट्टा—मनु० ८।१३६, ९।२८८, (=कर्षः)...णम् धन।

कार्षापणिक (वि०) (स्त्री० —की) [कार्षापण+ठिठन्] एक कार्षापण के मूल्य का।

कार्षिक—कार्षापण।

कार्ष्ण (वि०) (स्त्री० र्ष्णी) [कृष्ण—अण्] 1. कृष्ण या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला, रघु० १५।२४ 2. व्यास से सम्बन्ध रखने वाला 3. काले हरिण से सम्बन्ध रखने वाला —मनु० २।४१ 4. काला।

कार्ष्णायस (वि०) (स्त्री० —सी) [कृष्णायस्+अण्] काले लोहे से बना हुआ,—**सम्** लोहा।

कार्ष्णिः [कृष्णस्य अपत्यम्- कृष्ण+इञ्] कामदेव की उपाधि—शि० १९।१०।

काल (वि०) (स्त्री० ली) [कु ईषत् कृष्णत्वं लाति ला+क, को: कादेशः] 1. काला, काले या काले-नीले रंग का 2. समय—विलयितफलैः कालं निनाय स मनोरथैः—रघु० १।३६, तस्मिन् काले-उस समय, काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्—हि० १।१, बुद्धिमान् अपना समय बिताते हैं 3. उपयुक्त या समुचित समय (किसी कार्य को करने के लिए) उचित समय या अवसर (सर्व०, अधि०, सप्त० तथा तुमुन्नंत के साथ)—रघु० ३।१२, ४।६, १२।६९, पर्जन्यः कालवर्षी—मृच्छ० १०, ६० 4. काल का अंश या अवधि (दिन के घण्टे या पहर) षष्ठे काले दिवसस्य —विक्रम० २। मनु० ५।१५३ 5. ऋतु 6. वैशेषिकों के द्वारा नौ द्रव्यों में से 'काल' नामक एक द्रव्य 7. परमात्मा जो कि विश्व का संहारक है, क्योंकि वह संहारक नियम का मूर्तरूप है—कालः कालया भुवनफलके क्रीडति प्राणिसारैः—भर्तृ० ३।३९ 8. मृत्यु का देवता यम,—कः कालस्य न गोचरान्तरगतः - पञ्च० १।१४६ 9. भाग्य, नियति 10. आँख की पुतली का काला भाग 11. कोयल 12. शनिग्रह 13. शिव 14. काल की माप (संगीत और छन्दः शास्त्र में) 15. कलाल, शराब बेचने तथा बेचने वाला 16. अनुभाग, खण्ड, **लम्** लोहा 2. एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। समः—**-अक्षरिकः** साक्षर, पढ़ा लिखा,—**अगुरुः** एक प्रकार का चन्दन का वृक्ष, काला अगर भाप्रि० १।७०, रघु० ४।८१ (नपुं०) उस वृक्ष की लकड़ी, ऋतु० ४।५, २।५,—**अग्निः**, **अनलः** सृष्टि के अन्त में प्रलयाग्नि,—**अंग** (वि०) काले नीले शरीर वाला, (जैसे कि काली नीली धारवाली तलवार),—**अजिनम्** काले हरिण की खाल,—**अञ्जनम्** एक प्रकार का अंजन या—सुर्मा कु० ७।२०, ८२,—**अण्डजः** कोयल,—**अतिरेकः** समय की हानि, विलंब, —**अत्ययः** 1. विलंब 2. समय का बीतना 3. काल के बीत जाने के कारण हानि, —**अध्यक्षः** 1. 'समय का प्रधायक' सूर्य की उपाधि 2 परमात्मा,—**अनुनादिन्** (पुं०) 1. मधुमक्खी 2. चिड़िया 3 चातक पक्षी, **-अन्तकः** समय जो मृत्यु का देवता माना जाता है, सर्वसंहारक, **अन्तरम्** 1. अन्तराल 2.समय की अवधि 3. दूसरा समय या अवसर, **-आवृत्त** (वि०) काल के गर्भ में छिपा हुआ, **-क्षम** (वि०) विलम्ब को सहन करने के योग्य—अकालक्षमा देव्याः शरीरावस्था का० २६२, श० ४, **-खिनः** चूहे की भाँति केवल कोशिश किये जाने पर ही जहरीला जन्तु, —**अभ्रः** काला जल से भरा हुआ बादल,—**अयसम्** लोहा,—**अवधिः** नियत किया हुआ समय,—**अशुद्धिः** (स्त्री०) शोक मनाना, सूतक या पातक या जन्म-मरण से पैदा होने वाला अशौच, देo अशौच,—**आयसम्** लोहा, -**उप्त** (वि०) ऋतु आने पर बोया हुआ, —**कञ्जम्** नीलकमल,—**कटम्**,—**कटः** शिव की उपाधि, -**कण्ठः** 1. मोर 2. चिड़िया 3. शिव की उपाधि —उत्तर० ६,—**करणम्**, समय का नियत करना —**कणिका**,—**कणी** दुर्भाग्य, मुसीबत,—**कर्मन्** (न०) मृत्यु,—**कोलः** कोलाहल,—**कूटः** यम, -कूटः, -टम् (क) हलाहल विष (ख) समुद्र मन्थन से प्राप्त तथा शिव द्वारा पिया गया- -अलापि नोज्झति हरः किल कालकूटम्—चौर० ५०,—**कृत्** (पुं०) 1. सूर्य 2. मोर 3. परमात्मा,—**क्रमः** समय का बीतना, समय का अनुक्रम—कालक्रमेण—समय पाकर, समय के अनुक्रम या प्रक्रिया में, कु० १।१९,—**क्षिप** 1. समय नियत करना 2. मृत्यु,—**क्षेपः** 1. विलंब, समय की हानि —मेघ० २२, मरणे कालक्षेपं मा कुरु—पंच० १ 2. समय बिताना,—**क्षेपणम्**,—**क्षेपम्** यकृत्, जिगर,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

– गंगायमुनादी, – धन्वि: एकार्थ, —चक्रम् 1. समय का चक्र (समय सदैव घुमते हुए, पहिए के रूप में वर्णित किया जाता है) 2. चक्र 3. (अत:) (आल०) संपत्ति का चक्र, जीवन की परिस्थितियां, – चिह्नम् मृत्यु के निकट आने का समय, – चोदित (वि०) यम-दूतों के द्वारा बुलाया हुआ- ज्ञ (वि०) (किसी कार्य के) उचित समय या अवसर को जानने वाला—अस्या-रूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभव:—रघु० १२।३३, शि० २।८३– ज्ञ: 1. ज्योतिषी 2. मुर्गा, अयम् तीन काल, भूत, भविष्य और वर्तमान – दर्शी –का० ४६, – दण्ड: मृत्यु,—धर्म:,– धर्मन् (पु०) 1. किसी विशेष समय के लिए उपयुक्त आचरण रेखा 2. निर्दिष्ट काल, मृत्यु – न पुनर्जीवित्रः कश्चित्कालधर्ममुपागतः: –महा०, परीता: कालधर्मणा–आदि,—धारणा समय-वृद्धि,– नियोग: भाग्य या नियति का समादेश, भाग्य-निर्णय कि० ९।१३,– निरूपणम् समय का निर्धा-रण करना, कालविज्ञान,—नेमि: 1. समय चक्र का घेरा 2. एक राक्षस जो रावण का चाचा था और जिसे हनुमान् को मारने की काम सौंपा गया था 3. सौ हाथों वाला राक्षस जिसे विष्णु ने मारा था,– पक्व (वि०) अपने समय पर पका हुआ- अर्थात् स्वत: स्फूर्त – मनु० ६।१७, २१, याज्ञ० ३।४९, – परिवास: थोड़े समय तक पड़े रहने वाला जिससे कि बासी जाय,– पाश: यम या मृत्यु का जाल,– पाशिक: जल्लाद,– पृष्ठम् 1. काले हरिण की जाति 2. दगला (कम्) 1. कर्ण का धनुष—वेणी० ४ 2. सामान्य धनुष, —प्रभातम् शरत्काल (वरसात के पश्चात् आने वाले दो मास का समय सर्वोत्तम समझा जाता है), —भक्ष: शिव की उपाधि,—मानम् समय का मापना, – मुख: लंगूरों की एक जाति,—मेधी मंजिष्ठा पौधा, —यवन: यवनों का राजा कृष्ण का शत्रु, यादवों के कृष्ण के लिए अपराजेय शत्रु, युद्ध क्षेत्र में उसका मारना असम्भव समझ कर कृष्ण ने उसको कपट से मुचुकुन्द की गुफा में धकेल दिया जिसने उसको भस्म करके उसका काम तमाम कर दिया। —यापः,–यापनम् टालमटोल करना, देर लगाना, स्थगित करना, —योग: भाग्य, नियति,—योगिन् (पु०) शिव की उपाधि,—रात्रि:,—रात्री (स्त्री०) 1. अन्धेरी रात 2. विश्व की समाप्तिसूचक महाप्रलय की रात (दुर्गा के साथ समरूपता दिखाई गई है),—लोहम्—स्टील, इस्पात,—विप्रलम्भ: काल की वृद्धि,—वृद्धि: (स्त्री०) सामयिक ब्याज (मासिक त्रैमासिक या वर्षे समय पर देय)—मनु० ८।१५३,—वेला शनिकाल, अर्थात् दिन का विशिष्ट समय (प्रतिदिन आधा पहर) जब कि किसी भी प्रकार के धर्मकृत्य का करना उचित समझा जाता है,—संरोध: 1. बहुत देर तक काम में हाथ न डालना- मनु० ८।१४३ 2. किसी लम्बे समय का क्षय होना,– सदृश (वि०) उपयुक्त, सामयिक, सर्प: काले और अत्यन्त विषैले सांप की जाति,– सार: काला हरिण, – सूत्रम्, सूत्रकम् 1. समय या मृत्यु की डोरी 2. एक विशेष नरक का नाम –याज्ञ० ३।२२२, मनु० ४।८८,—स्कन्ध: तरुण का पेड़, स्वरूप (वि०) मृत्यु जैसा भयंकर,—हर: शिव की उपाधि,—हरणम् समय की हानि, विलम्ब—श० ३, उत्तर० ५,—हानि: (स्त्री०) विलम्ब—रघु० १३।१६।

कालकम् [काल+कन्] यकृत्, जिगर, – क: 1. मक्खी, माई 2. पत्नीला सांप 3. आंख की पुतली का काला भाग।

कालञ्जर: [कालं जरयति-काल+जृ+णिच्+अच्] 1. एक पहाड़ तथा उसका समीपवर्ती प्रदेश (वर्तमान कलिंजर 2. धार्मिक भिक्षुओं या साधुओं की सभा 3. शिव की उपाधि।

कालशेयम् [कालशि+अण्] छाछ, मट्ठा (मन्थन के द्वारा जो कलशी में उत्पन्न होता है)।

काला [काल+अच्+टाप्] दुर्गा की उपाधि।

कालाप: [कालो मृत्यु: आप्यते यस्मात्-काल+आप्+घञ्] 1. सिर के बाल 2. सांप का फण 3. राक्षस, पिशाच, भूत 4. 'कलाप' व्याकरण का विद्यार्थी 5. 'कलाप' व्याकरण का वेत्ता।

कालापक: [कालाप+वुन्] 1. 'कलाप' के विद्यार्थियों का समूह 2. कलाप की शिक्षा या उसके सिद्धांत।

कालिक (वि०) (स्त्री०–की) [काल+ठक्] 1. काल संबंधी 2. कालोचित विशेष: कालिकोऽस्य अमर० 3. मौसम के अनुकूल, सामयिक,–क: 1. सारस, 2. दगला, –का 1. कालापन, काला रंग 2. मसी, स्याही, काली मसी 3. कई किस्तों में दिया जाने वाला मूल्य 4. निर्दिष्ट समय पर दिया जाने वाला सामयिक ब्याज 5. बादलों का समूह, घनघोर घटा जिसके बरसने का डर हो—कालिकेव निबिडा बलाकिनी रघु० ११।१५ 6. सोने में मिलाया जाने वाला खोट 7. यकृत्, जिगर 8. कौवी 9. बिच्छू 10. मदिरा 11. दुर्गा,—कम् काले चन्दन की लकड़ी।

कालिङ्ग (वि०) (स्त्री०–गी) [कलिङ्ग+अण्] कलिंग देश में उत्पन्न या उस देश का,—ग: कलिंग देश का राजा —प्रतिजग्राह कालिङ्गस्तमस्त्रैगंजसाधनः—रघु० ४।४० 2. कलिंग देश का सांप 3. हाथी 4. एक प्रकार की ककड़ी,– गा: (ब० व०) कलिंग देश –देव० कलिंग, –गम् तरबूज।

कालिन्द (वि०) (स्त्री०–न्दी) [कलिन्द+अण्+कलिन्द पहाड़ या यमुना नदी से प्राप्त या संबद्ध– कालिन्द्याः पुलिनेषु केलिकुपिताम्—वेणी० १।२, रघु० १५।२८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शा० ४।१२। सम० **कवंध**:,—**सेवन**: दक्षराम का विशेषण, **सुः** (स्त्री०) सूर्य की पत्नी संज्ञा, **सोदर**: महु० ब० देवता यम।

कालिभन् (वि०) [काल+इमनिच्] कालापन अमर० ८८ शिव० ४.५७।

कालिय [के काले काटीलिये क+काल+छ] [क] अगस्त विशाखापत्तन नगर जो गोदावरी नदी की तलहटी में स्थित है। इस स्थान पर श्रीकृष्ण के पाद के कारण सांपों के राजा कालिय के सिर निशिह्न थे। कृष्ण ने जब कि अभी वह बालक ही था उस को कुचल दिया था० ४।४५। सम० दमन, मर्दन कृष्ण के विशेषण।

काली [काल+ङीष्] 1. कालिमा 2. स्याही, काली मसी 3. पार्वती की उपाधि, शिव की पत्नी 4. काले बादलों की पंक्ति 5. काले नाग की मादा 6. दुर्गा की सात पत्नियों में से एक 7 रात, अन्धेरी रात।

कालीज: [के जले अलर्क कालीजोवि क+अल+इजन्+ङीष्] एक प्रकार का वृक्ष, कीकर पेड़।

कालीन (वि०) [काल+ख] 1. किसी विशिष्ट समय में घटित होने वाला 2. ऋतु के अनुकूल।

कालीयक, **कम्** [काल+छ, ङीष्] एक प्रकार का चन्दन की लकड़ी।

कालुष्यम् [कलुष+ष्यञ्] 1. मैलापन, स्याहीपन, गन्दलापन (पानी आदि का) (साहित्य में भी) —कालुष्यमुपकीर्णा बुद्धिः का० १०३, मलिनता या गन्दगी हो जाती है 2 पाप, दोष 3 अपवित्रता।

कालेय (वि०) [कलि+ढक्] कालेयुक्त से सम्बन्ध रखने वाला, **यम्** 1. चिराय 2. अगरु चन्दन की लकड़ी —कुरु० ४।१२, 3. केसर, जाफ़रान।

कालेयक (पु०) 1. कुश 2. चन्दन की जाति।

कालवनिक (वि०) [कल्पेन—कॉ] [कल्पना+ठक्] 1. केवल विचारों की, मन, हृदय—कालपनिकी व्यथामिव—2. सोचा, बनावटी (किसी वस्तु से)।

काल्य (वि०) [काल+यत्] 1. समय पर, ऋतु के अनुकूल, उचित, सुहावना शुभ 2. दक्ष की पत्नी, प्रभातकाल होना।

काल्यालकम् [कल्याण+कन्] मांगल्य, शुभ।

कावचिक (वि०) [कवच+ठक्] जिरह बख्तर या कवच धारी, —कम् कवचधारी व्यक्तियों का समूह।

कावुक [कुत्सितो वाक् शब्द, या स्त्रियं वृक आदेशः को: कादेशः] 1. दुर्गा 2. चक्रवाक पक्षी।

कावेरम् [कवि+अण्] एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण, केसर, जाफ़रान।

कावेरी [के जलमये वेरं शरीरमस्या: क+वेर+अण्+ङीष्] दक्षिणभारत में बहने वाली एक नदी—कावेरीसरिदम्भसि स्नात्वा शकुन्तलीयमिवाकरोत् रघु० ४।४५ 2. कुत्सितं वेरं शरीरमस्याः। वेरपर, रंडी।

काव्य (वि०) [कवि+ष्यञ्] 1. ऋषि या कवि के गुणों से युक्त 2. मंत्रद्रष्टाविषयक या पैगम्बरी, प्रेरणा-प्राप्त, छन्दोबद्ध,—व्यः शुक्रग्रहों के गुरु शुक्राचार्य,- **व्या** 1. प्रज्ञा 2. सखी,—**व्यम्** 1. कविता, महाकाव्य,—मेघदूतं नाम काव्यम् 2. काव्य, कविता, कवितात्मिकी रचना (काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्य की भिन्न भिन्न परिभाषाएं दी हैं—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि काव्य० १, वाक्यं रसात्मकं काव्यम् - सा० द० १, रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् - रस०, शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली —काव्या० १।१०, दे० चन्द्रा० १।७ भी 3. प्रगल्भता, कल्याण 4. बुद्धिमत्ता, अन्तः प्रेरणा। सम० **अर्थः** कविताभम्बन्धी चिन्तन या विचार, **चौरः** दूसरे कवि के विचारों का चोर, काव्य चौर, यदस्य दैवेन इव लूष्यनाय काव्यार्थचौरः प्रणुतीमवाप्ति —विक्रम० १।११,—**चौरः** दूसरे व्यक्तियों की कविताओं को चुराने वाला, - **मीमांसकः** साहित्यशास्त्री, विवेचक,—**रसिक** (वि०) जो काव्य के सौन्दर्य को समझ सके या काव्यरस रखता हो, **लिंगम्** एक अलंकार, उसकी परिभाषा --काव्यहिंतुर्हेतोर्वाक्यपदार्थता —काव्य० १०, उदा०—जितोऽसि मन्द कन्दर्प अच्चिरेणेति त्रिलोचनः - चन्द्रा० ५।११९।

काश् [भ्वा०, द्विा० आ०—काशते-शित, कांशित] 1. चमकना, उज्ज्वल या सुन्दर दिखाई देना—रघु० १०।८६, ७।२४, कु० १।२४, भट्टि० २।२५, शि० ६।७४ 2. प्रकट होना, दिखाई देना, दैवीभूमिर्न दिश: प्रदिशो वा चकाशिरे भट्टि० 3. प्रकट होना, की भांति दिखाई देना, **निस्** , (प्रेर०) 1. निकल देना, निर्वासित करना, ठेल देना, बाहर निकालना दे० निस् पूर्वक कस् , खोलना 2. प्रकाशित करना 3. दृष्टि के सामने प्रस्तुत करना, प्र- ,चमकना, उज्ज्वल दिखाई देना 2. दिखाई देना, प्रकट होना एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते कठ० 3. की भांति दिखाई देना या प्रकट होना (प्रेर०) 1. दिखाना, प्रदर्शित करना, आविष्कार करना, उद्घाटित करना व्यक्त करना --स्वसरोऽप्रात्मानं प्रकाशयिष्यन्—श० १, सा० का० ५९, 2. प्रकाश में लाना, प्रकाशित करना, उद्घोषणा करना कटाक्षविक्षेपैः प्रियं सर्वदोष प्रकाशयेत् चाण० ३०, 3. मुद्रित करवाना, प्रकाशित करना (पुस्तक आदि)—प्रशीलः न तु प्रकाशितः उत्तर० ४ 4. रोशनी करना, (दीपक) जलाना —यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोक-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिमं रविः—भग० १३।३३, ५।१६, **प्रति**—, 1. की तरह प्रकट होना 2. शिरोरेखा या विषमतास्वरूप चमकना, **वि** —, 1. खिलना, खुलना (फूल की भांति) 2. चमकना,—**सम्** —, की भांति दिखाई देना ।

काशः,—शम् [काश्+अच्] छत में या चटाइयों के बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का घास —ऋतु० ३।१ २,—**शम्** 'काश नामक घास का फूल—कु० ७।११, रघु० ४।१७, ऋतु० ३।२८,—**शः** =कासः ।

काशि (पुं० ब० व०) [काश्+इक्] एक देश का नाम ।

काशिः,—शी (स्त्री०) [काश्+इन्, काश्+अच्+ङीष्] गंगा के किनारे स्थित एक प्रसिद्ध नगरी, वर्तमान वाराणसी, सात पावन नदियों में से एक—दे० कांची । सम०—**पः** शिव की उपाधि,—**राजः** एक राजा का नाम, अंबा, अंबिका और अंबालिका के पिता ।

काशिन् (वि०) (स्त्री० —**नी**) (प्रायः समास के अंत में) [काश्+इनि, स्त्रियां ङीप्] दीप्यमान, किसी का रूप धारण किये हुए दिखाई देने वाला या प्रकट होने वाला, उदा० जितकाशिन्—जो काशि के जितेता की भांति व्यवहार करता है—दे० ।

काशी—दे० काशि । सम०—**नाथः** शिव की उपाधि, —**यात्रा** वाराणसी की तीर्थयात्रा ।

काश्मरी [काश्+मनिप, र, ङीप्, पृषो० मस्वम्] एक पौधा जिसे लोग बहुधा गांभारी के नाम से पुकारते हैं,—काश्मर्याः कृतमालमुद्गतदलं को यष्टिकाट्टीकते —मा० ९।७ ।

काश्मीर (वि०) (स्त्री०—**री**) [कश्मीर+अण्] काश्मीर में उत्पन्न, काश्मीर का या काश्मीर से आने वाला, —**राः** (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम —दे० कश्मीर भी, —**रम्** 1. केसर, जाफरान —काश्मीरगन्धसृगनाभिकृताङ्गरागम् चौर० ८, भर्तृ० १, ४८, काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणाम् —गीत० ११. १ भी 2. वृक्ष की जड़ । सम०—**जम्, —जन्मन्** (नपुं०) केसर, जाफरान—भामि० १।७१, शि० ११।५३ ।

काश्यम् [कुत्सितम् अश्यं यस्मात् ब० स०] मदिरा । सम० —**पम्** मांस ।

काश्यपः [कश्यप+अण्] 1. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2. कणाद । सम०—**नन्दनः** 1. गरुड़ की उपाधि 2. अरुण का नाम ।

काश्यपिः [कश्यप्+इञ्] गरुड़ और अरुण का विशेषण ।

काश्यपी [काश्यप+ङीप्] पृथ्वी, तानपि दधासि मातः काश्यपि यातस्तवापि च विवेकः—भामि० १।६८ ।

काष्ठः [कष्+घञ्] 1. रगड़ना, खुरचना—पयिष् विटपिनां स्कन्धकाष्ठैः स घूमः—वेणी० २।१८ 2. जिससे कोई वस्तु रगड़ी जाय (जैसे कि वृक्ष का तना) —लीनालिःसुरकरिणां कपोलकाष्ठः— कि० ५।२६, दे० 'कपोलकाष्ठ' ।

काषाय (वि०) (स्त्री०—**यी**) [कषाय+अण्] लाल, गेरुए रंग में रंगा हुआ—काषायवसनाधरा—अमर०, —**यम्** लाल कपड़ा या वस्त्र—इमे काषाये गृहीते मालवि० ५, रघु० १५।७७ ।

काष्ठम् [काश्+क्थन्] 1. लकड़ी का टुकड़ा, विशेषकर ईंधन की लकड़ी मनु० ४।४९, २४१, ५।६० 2. लकड़ी, शहतीर लकड़ी का लट्ठा या टुकड़ा—यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ—हि० ४।६९, मनु० ४।४० 3. लकड़ी याज्ञ० २।२१८ 4. लम्बाई मापने का उपकरण । सम०—**अगारः, अगारम्** लकड़ी का घर या घेरा,—**अम्बुवाहिनी**—लकड़ी का डोल, **कदली** जंगली केला,—**कीटः** घुण, एक छोटा कीड़ा जो सूखी लकड़ी में पाया जाता है,—**कूटः**, —**कूटः** खुदाई, कटफोड़वा—पक्ष० १।३३२, (जंगल में पाया जाने वाला जन्तु), **कुद्दालः** लकड़ी की बनी एक कुदाल जो किस्सी में से पानी उलीचने या उसकी नली को खुरचने और साफ करने के काम आती है,—**तक्षन्** (पुं०)—**तक्षकः** बढ़ई, **तन्तुः** शहतीर में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा, —**दारु** देवदारु का वृक्ष,—**द्रुः** पलाश (ढाक) का वृक्ष, —**पुत्तलिका** कठपुतली, काठ की बनी प्रतिमा, —**भारिकः** लकड़हारा,—**मठी** (स्त्री०) चिता, **मलम्** अर्थी, लकड़ी का चौखटा जिस पर मुर्दे को रख कर ले जाते हैं,—**लेखकः** लकड़ी में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा, काष्ठकृट,—**लोहिन्** (पुं०) लोहा जड़ा हुआ सोटा, **वाटः**, —**टम्** लकड़ी की बनी दीवार ।

काष्ठकम् [काष्ठ+कन्] अगर की लकड़ी ।

काष्ठा [काश्+क्थन्+टाप्] 1. संसार का कोई भाग या प्रदेश दिशा, प्रदेश—कि० ३।५५ 2. सीमा, हद स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परं हि काष्ठा तपसः—कु० ५।२८ 3. अन्तिम सीमा, चरम सीमा, आधिक्य -काष्ठागतस्नेहरसानुविद्धम्—कु० ३।३५ 4. घुड़दौड़ का मैदान, मैदान 5 चिह्न, निर्दिष्ट चिह्न 6. अन्तरिक्ष में बादल और वायु का मार्ग 7. काल की माप= $\frac{1}{30}$ कला ।

काष्ठिकः [काष्ठ+ठन्] लकड़हारा ।

काष्ठिका [काष्ठिक+टाप्] लकड़ी का छोटा टुकड़ा ।

काष्ठीला (स्त्री०) [कुत्सितः ईषत् वा अष्ठीलेव, कोः कादेशः] केले का पेड़ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कास् (म्वा० ख्या० —कासते, कासित) 1. चमकना, दे० काश् 2 खांसना, किसी रोग को प्रकट करने वाली आवाज करना।

कासः,-सा [कास्+घञ्] 1. खांसी, जुकाम 2. छींक आना, सम० -कुच्छ्र (वि०) खांसी से पीड़ित,- घ्न, हृत् (वि०) खांसी दूर करने वाला, कफ निकालने वाला।

कासर (स्त्री०—री) [के जले आसरति—क+आ+सृ+अच्] भैंसा।

कासार:,-रम् [कास्+आरन्, कस्य जलस्य आसारो यत्र ब० स०] जोहड़, तालाब, सरोवर - भाग० १।४२, भट्टि० १।३२, गीत० २।

कासु (शू) (स्त्री०) [कास्+ऊ] 1. एक प्रकार का भाला 2. अस्पष्ट भाषण 3. प्रकाश, प्रभा 4. रोग 5. भक्ति।

कासूतिः (स्त्री०) [कुत्सिता सरणिः कोः कादेशः] पगडंडी, गुप्त मार्ग।

काहल (वि०) [कुत्सित हलं वाक्यं यत्र ब० स०] 1. शुष्क, मुर्झाया हुआ 2. शरारती 3. अत्यधिक, प्रकाशवान् विशाल,—लः 1. बिल्ला 2. मृगी 3. कौवा 4. साभिप्राय ध्वनि,—लम् अस्पष्ट भाषण,—ला बड़ा ढोल (सैनिक), —ली (स्त्री०) तरुण स्त्री

किंवत् (वि०) [किम्+वतुप्, मस्य वः] निर्धन, तुच्छ, नगण्य।

किंशारुः [किम्+शृ+आरुच्] 1. अनाज की बाल का अग्रभाग, बाल का सूत, सस्यशूक 2. बगला, 3. तीर।

किंशुकः [किंचित् शुकः शुकावयवविशेष इव —] ढाक का पेड़ जिसके फूल बड़े सुन्दर परन्तु निर्गन्ध होते हैं (विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः—चाण० ७, रघु० ६।२०, रघु० ९।३१,—कम् ढाक का फूल, टेसू,—कि किंशुकं. शुकमुपच्छन्दिभिर्दन्तैः ऋतु० ६।२१।

किंशुलकः [किंशुक नि० साधुः] ढाक का वृक्ष, दे० किंशुक।

किंकिः [कृ+इन् पृषो० ह्रस्वम्] 1. नारियल का पेड़ 2 नीलकण्ठ पक्षी 3. चातक, पपीहा। इस पक्षी को किकिन, किकिदिवि, और किकीदिवि भी कहते हैं)।

किंकिणी, किंकिणिका, किंकिणी, किंकिणीका [किंचित् कणति कण्+इन्+ङीप्, पृषो० साधुः—किंकिणी+कन्—टाप्, ह्रस्वश्च] घुंघरूदार आभूषण, कञ्चनी -वेणारंकनकिंकिणी झणझणायितस्पन्दनैः उत्तर० ५।५, ६।१, वि० १।७४, कु० ७।४९।

किंकिरः [किम् +कृ+क] 1. घोड़ा 2. कोयल 3. मधुमक्खी, 4. कामदेव 5. लाल रंग,—रम् गजकुंभ, —रा रुधिर।

किंकिरातः [किंकिर+अत्+अण्] 1. तोता 2. कोयल, 3. कामदेव 4. अशोक वृक्ष।

किंकिल्कः,—**किञ्जल्कः** [किंचित् जलं यत्र ब० स०, किंचित् जलम् अपहारयति—किम्+जल+क] कमल का सूत या फूल या कोई दूसरा पौधा—आकर्षद्भिः पद्मकिञ्जल्कगन्धान् - उत्तर० ३।२, रघु० १५।५२।

किंटिः [किट्+इन्—किच्च] सूअर।

किंटिभः [किंटि+भा+क] 1. जूं, लीख 2. खटमल।

किंडुभः, किंडुकम् [किंट+क्त, स्वार्थे कन् च] लाख या कीट, विष्ठा, गाद, मैल —अन्त°।

किंदलः [किंदु+अल्+अच्] 1. तांबे का पात्र 2. लोहे का जंग या मुर्चा।

किंपः [कम्+अच् पृषो० ह्रस्वम्] 1. अनाज, घटिया, चकत्ता, घाव का चिह्न,—जास्यसि किंपथुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्कं इति—श० १।१३, मृच्छ० २।११, रघु० १६। ८४, १८।४७, गीत० १ 2. चर्मकील, तिल या मस्सा 3. घृण।

किंपचम् [कम्+कचन्, ह्रस्वम्] पाप ख:,-ख्यम् मदिरा के निर्माण में खमीर उठाने वाला बीज, या औषधि मनु० ८।३२६।

किंत् (म्वा० पर०—केतति) 1. चाहना 2. रहना 3. (चिकित्सति) स्वस्थ करना, चिकित्सा करना।

कितवः (स्त्री० वी) [कि+क्तः=कित+वा+क] 1. धूर्त, झूठा, कपटी—अहंति किल कितव उपद्रवम् - मालवि० ४, अमरु १७, ४१, मेघ० १११ 2. चतुरे का पौधा 3. एक प्रकार का पक्षी।

किंधिन् (पुं०) [कि कुत्सितो धीर्बुद्धिरस्य—किधी +इनि] घोड़ा।

किंनर—दे० 'किम्' के नीचे।

किम् (अव्य०) [कु—डिमु क्वा०] 'बुराई', 'हास' 'दोष' 'कलंक' और निन्दा के भाव को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के आदि में केवल 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है -उदा०—किंसखा बुरा मित्र, किंश्वः —बुरा या विकृत पुरुष आदि, नीचे के समस्त पदों को देखो। सम० - दासः बुरा गुलाम या नौकर, —नरः बुरा या विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का—जयो दाहरणं वाह्लगणियामास किंनरान्—रघु० ४।७८—कु० १।८, ईशः 'ईश्वर' कुबेर का विशेषण (स्त्री० - री) 1. किन्नरी —मध० ५६ 2. एक प्रकार की वीणा, —पुरुषः घृणा के योग्य नीच पुरुष, किंश्वर—कु० १। १४, 'ईश्वरः कुबेर का विशेषण, —प्रभुः बुरा स्वामी या राजा हिताऽनुरूपः सम्भृत्यते स किंप्रभुः,—कि० १।५, —राजन् (वि०) बुरे राजा वाला, (पुं०) बुरा राजा, —सखि (पुं०) (कर्तृ०, ए० व०,—किंसखा) बुरा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मित्र,—स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम्—कि० १।५।

किम् (सर्व० वि०) (कर्तृ० ए० व०, पु०—कः) [स्त्री० —का] [नपु० —किम्] 1. कौन, क्या, कौनसा (प्रश्नवाचक के रूप में)—प्रजासु कः केन पथा प्रयातीत्यशंसतो देहिनुमस्ति शक्तिः शि० ६।२६, करुणाविमूढेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम्—रघु० ८।६७, का खल्वनेन प्रार्थ्यमानात्मना विकत्थते विक्रमः २, कः कोऽत्र भोः, सर्वनाम के रूप में यह शब्द कभी कभी 'कार्य करने की शक्ति या अधिकार' को जताने के लिए प्रयुक्त होता है—उदा० के आश्रमं परिव्राट् दुष्यन्तमाकारयः—श० १, 'हम कौन हैं ?' अर्थात् 'हममें क्या शक्ति है ?' आदि 2. नपु० (किम्) सत्ता शब्दों के करण० के साथ प्रयुक्त होकर बहुधा अर्थ होता है, क्या लाभ है ? किं स्वामिचेष्टानिरूपणेन—हि० १, 'लोभश्चेदगुणेन किम्' आदि भर्तृ० २।५५, 'कि तया दृष्टया' श० ३, कि कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्—मृच्छ० ९।७, प्रायः 'अनिश्चय' अर्थ को प्रकट करने के लिए, 'किम्' के साथ 'अपि' 'चित्' 'चन' 'चिदपि' या 'स्वित्' जोड़ दिया जाता है—विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम् · कु० ५।३० कोई तपस्वी''''; कापि तत एवागतवती —मा० १, कोई स्त्री; कस्यापि कोपीति निवेदितं च— १।३३, किमपि किमपि ''' जल्पतोरक्षमेण - ३. १।२७; कस्मिंश्चिदपि महाभागमेयजन्मनि मन्मथविकारमुपलक्षितवानस्मि—मा० १. **किमपि, किंचित्** 'थोड़ा सा' 'कुछ'—याज्ञ० २।११६, उत्तर० ६।३५, 'किमपि' का अर्थ 'अवर्णनीय' भी है, दे० अपि, 'संभावना' के अर्थ को जतलाने के लिए कभी कभी 'किम्' के साथ 'इव' भी जोड़ दिया जाता है (अधिकतर काल के साथ जब और सौदर्य को जोड़ने वाला) —विना सीतादेव्या किमिव हि न दुःखं रघुपतेः—उत्तर० ६।३०, किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—मा० १।२०, 'इव' को भी दे०, (अव्य०) 1. प्रश्नवाचक निपात,—जातिमात्रेण कि कश्चिदन्यते पूज्यते क्वचित्—हि० १।५८, 'मारा जाता है या पूजा जाता है' आदि, ततः किम्—तो फिर क्या 2. 'क्यों' 'किसलिए' अर्थ को प्रकट करने वाला अव्यय · किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रत्नये न दीयते—कु० ४।७ 3. क्या, प्रश्नवाचक या 'हा' की भावना को प्रकट करने वाले सहसंबंधी शब्द—किम्, उत, उताहो, आहोस्वित्, वा, किंवा, अथवा, इन शब्दों को देखो) । समः—**अपि** (अव्य०) 1. कुछ अंश तक, कुछ, बहुत अंशों तक 2. वर्णनातीत रूप से, अवर्णनीय रूप से (गुण, परिमाण व प्रकृति आदि) 3. अत्यधिक, कहीं अधिक,—किमपि कमनीयं वपुरिदम्—श० ३, किमपि भीषणं किमपि करालम्—आदि,—**अर्थ** (वि०) किस उद्देश्य या प्रयोजन वाला किमर्थोऽयं यत्नः,—**अर्थम्** (अव्य०) क्यों, किसलिए,—**आख्य** (वि०) किस नाम वाला —किमाख्यस्य राजर्षेः सा पत्नी, श० ७,—**इति** (अव्य०) क्यों निस्सन्देह, किस लिए निश्चयार्थ, किस प्रयोजन के लिए (प्रश्न पर बल देने वाला), तत्किमित्यसासते भरताः · मा० १, किमित्यास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम् कु० ५।४४, · उ, —**उत** 1. क्या, या (सन्देह या अनिश्चय को प्रकट करने वाला); —किमु विषयिणः किमु मदः —उत्तर० १।३५, अमरु ९ 2. क्यों (निस्सन्देह), **गिरमुद्गृह्णीमः** किमु लज्यते 3. और कितना अधिक, कितना कम, · यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता, एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् । हि० प्र० ११, सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः का० १०३, रघु० १४।६५, कु० ७।६५ **कर** नौकर, सेवक, दास अतेवहि सां किङ्करमष्टमूर्तेः—रघु० २।३५, (रा) सेविका, नौकरानी (री) सेवक की स्त्री, **कर्तव्यता कार्यता** वह अवस्था जब कि मनुष्य अपने मन में सोचता है कि अब क्या करना चाहिए, किंकर्तव्यतामूढः (वह सम्मान में असमर्थ या घबराया हुआ कि अब क्या करना चाहिए), **कारण** (वि०) क्या कारण या क्यों तर्क रखने वाला, **किल** (अव्य०) कैसी दयनीय अवस्था (असंतोष या दुःख को अभिव्यक्त करने वाला पा० ३।३।१५१), न सभावयामि न सर्गयामि तवभवान् कि किल वृषल याजयिष्यति—सिद्धा०, **क्षण** (वि०) जो कहता है कि 'एक मिनट का है तो क्या', एक आलसी पुरुष जो अपनी की परवाह नहीं करता है

हि० २।९१,—**गोत्र** (वि०) किस परिवार से सम्बन्ध रखने वाला, —**च** (अव्य०) इसके अतिरिक्त और फिर, आगे, · **चन** (अव्य०) कुछ दर्जे तक, थोड़ा सा, **चित्** (अव्य०) कुछ दर्जे तक, कुछ, थोड़ा सा किंचिदूनान्तशाखी—रघु० १५।३३, २।४६, १२।२१, °**ज्ञ** (वि०) थोड़ा सा जानने वाला, पल्लवग्राही, °**त्तर** (वि०) कुछ करने वाला, उपयोगी, —°**काल**ः कुछ समय, थोड़ा सा समय °**प्राणः** थोड़ा सा जीवन रखने वाला, °**मात्र** (वि०) थोड़ा सा, —**छन्दस्** (वि०) किस वेद से अभिज्ञ,—**तर्हि** (अव्य०) तो फिर क्या, परन्तु, तथापि, · **तु** (अव्य०) परन्तु, तो भी, तथापि, इतना होते हुए भी · अवैमि चैनामनघेति किन्तु लोकापवादो बलवान्मतो मे - रघु० १४।४०, ११।५५,—**दैवत** (वि०) किस देवता से सम्बद्ध,—**नामधेय**,—**नामन्** (वि०) किस नाम वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—निमित्त (वि०) किस कारण या हेतु को रखने वाला, किस प्रयोजन वाला,—**निमित्तम्** (अव्य०) क्यों, किस लिए, - नु (अव्य०) 1. क्या—किन्नु मे मरणं श्रेयो परित्यागो जनस्य वा - मल० १०।१० 2. और भी अधिक, और भी कम—अपि वैलोक्यराज्यस्य हेतोः किन्नु महीकृते भग० १।३५ 3. क्या, निस्सन्देह—किन्नु मे राज्यमनार्यः,—**नु खलु** (अव्य०) 1. किस प्रकार से, सम्भवतः, कैसे है कि, क्या निस्सन्देह, क्या, सचमुच किन्नु खलु गीतार्थमाकर्ण्य इष्टजनविरहदहनेऽपि बलवदुरुकण्ठितोऽस्मि —मा० ५ 2. ऐसा न हो कि - किन्नु खलु यथा वयमस्यामेवमियमप्यस्मान् प्रति स्यात् - मा० १, -**पक्व,—पचान** (वि०) कञ्जूस, कृपण, **पराक्रम** (वि०) किस शक्ति या स्फूर्ति से युक्त, **पुनर्** (अव्य०) कितना और अधिक या कितना और कम—स्थानं रक्षितेषु तरुष्वपयाते स्नेहः कि पुनरङ्गसम्भवेष्वपत्येषु—का० २९१, मेघ० ३, १७, विक्रम ३, -**प्रकारम्** (अव्य०) किस प्रकार से, - **प्रभाव** (वि०) किस शक्ति से सम्पन्न, भूत (वि०) किस प्रकार का या किस स्वभाव का,—**रूप** (वि०) किस शक्ल का, किस रूप का, **वदन्ति,** - ती (स्त्री०) जनश्रुति, अफवाह सम्बन्धात् कथला किंवदन्ती - उत्तर० १।४२, उत्तर० १।४, - **वराटकः** अमितव्ययी, खर्चीला, **वा** (अव्य०) 1. प्रश्नवाचक अव्यय - किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या यः ७ 2. या (किम् (क्या) का सहसम्बन्धी) ---राजपुत्रि सुप्ता किं वा जागर्षि पंच० १, तर्कि मार्ग्यायं किं वा विषं प्रवच्छामि किं वा पशुध्यर्थेन क्षणादहयामि त०, मृच्छ० ७, - **विद** (वि०) क्या जानने वाला, - **व्यापार** (वि०) किस कार्य को करने वाला, - **शील** (वि०) किस आदत का, - **स्वित्** (अव्य०) क्या, किस तरह अदेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिः मेघ० १४।

कियत् (वि०) [किं परिमाणमस्य किम् +वतुप्, च, किमः कि आदेशः] [कति० पू० रू०, पु० --कियान्, स्त्री० --कियती, नपु० कियत्] 1. कितना बड़ा, कितनी दूर, कितना, कितने विस्तार का, किन गुणों का (प्रश्नवाचकता का भाव रखने वाला) —क्रियाफलान्यवेक्षन्ते नोपायाः पुरुषं क्वचित्—पंच० ५, नै० १।१२०, अयं भुजायां विभुना कियती स्थास्नि न दक्षसे— मा० १।२५, ज्ञास्यति कियद्भुजो मे स्थानि—श० १।१३, कियदधिष्ठितं रक्षन्यः—श० ४ 2. किस सिलसिले का अर्थात् किसी अर्थ का नहीं, निकम्मा राजेति कियती मात्रा पंच० १।४०, मातः कियन्नोऽयम्, देवी० २।१, 3. कुछ, थोड़ा सा, थोड़ी संख्या, चन्द (अनिश्चित बल रखने वाला) निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः—भर्तृ० २।३८, त्वदभिसरणरभसेन बलन्तो गणयति दशनि कियन्ति बलन्ती—गीत० ६ । सम०—**एतिका** प्रयास, शक्तिशालीन **यैयंयुक्त** चेष्टा, - **कालः** (अव्य०) 1. कितनी देर 2. कुछ थोड़ा समय, -**चिरम्** (अव्य०) कितनी देर तक—कियच्चिरं श्राव्यसि भीरु कुं० ५।५०,-**दूरम** (अव्य०) 1. कितनी दूर, कितनी दूरी पर, कितने फासले पर —कियदूरं ग्रं जलाशयः पंच० १, नै० १।१३७ 2. थोड़ी देर के लिए जरा भी दूर ।

किर [कृ+क] सूअर ।

किरक [कृ+वुल्] 1. लिपिक 2. [किर +कन्] सूअर

किरण [कृ - क्यु] 1. प्रकाश की किरण, सूर्य, चन्द्रमा या किसी दीप्यमान ज्योति की) किरण - रविकिरणसहिष्णु—श० ७।४, एकां हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः—कु० १।३, शा० ४।६, रघु० ५।७४, शि० ४।५८, मेघ० 1. समकदार, उज्ज्वल 2. रजकण । सम०, - **मालिन्** (पु०) सूर्य ।

किरातः [किर पर्यन्तभूमिम् अतति गच्छतीति किरातः] एक पर्वतीय पहाड़ी जाति जो शिकार करके अपनी जीविका चलाती है, पहाड़ी,—वैयाकर्णाकिरातादपशब्दमृगाः क्व यान्तु सदस्ताः, यदि नटधणकीचिकित्सकवैतालिकवदनकन्दरा न स्युः । ३ मुभा०,कु० १।६, १५, रत्न० २।३ 2. बहुत्री, जलजी 3. बोना 4. साईस, अश्वपाल 5 किरातवेशधारी शिव, - **ताः** (ब० व०) एक देश का नाम,—**सम०—आशिन्** (पु०) गरुड की उपाधि ।

किराती [किरात + ङीप्] 1. किरात जाति की स्त्री, 2. चंवर डुलाने वाली स्त्री --रघु० १६।५७ 3. कुटटिनी, दूती 4. किरात के वेश में पार्वती 5. स्वर्गंगा ।

किरि [कृ + इ] 1. सूअर, वराह 2. बादल ।

किरीट -टम् [कृ+कीटन्] मुकुट, ताज, चूड़ा, शिरोवेष्टन—किरीटवद्धाञ्जलयः कु० ७।९२ 2. व्यापारी । सम० - **धारिन्** (पु०) राजा । - **मालिन्** (पु०) अर्जुन का विशेषण ।

किरीटिन् (वि०) [किरीट + इनि] ताज या मुकुट पहनने वाला,—भग० ११।१७, ४६, पंच० ३,—(पु०) अर्जुन,—भग० ११।३५, [महाभारत में इस नामकरण की व्याख्या इस प्रकार है—पुरा क्रुद्धेन शक्रेण स्वमूर्धतो विनिर्मितौ, किरीटे मूर्ध्नि तूर्णमेतेनाहुर्मां किरीटिनम् ।

किर्मीर [कृ+ईरन् पृषो०] चित्रविचित्र रंग का, चितकबरा, चितौड़ार,—रः 1. एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था देखो० ६ 2. शबल या बहुरंगी रंग । सम० —**जित्,—निषूदनः,—सूदनः** भीम के विशेषण ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किल: [किल्+क] क्रीडा, तुच्छ, खेलखेल में हो जाने वाला। सम०—**किञ्चित्तम्**, प्रेमी-मिलन के अवसर पर शृंगारी उत्तेजन, रदन, हास, रोष आदि भाव।

किल (अव्य०) [किल्+क] निश्चय ही, बेशक, निस्संदेह, अवश्य—अर्हति किल कितव उपद्रवम् —मालवि० ४, इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः - श० १।१८ 2. जैसा कि लोग कहते हैं, जैसा कि बतलाया जाता है (विवरण या परंपरा दर्शाने वाला) --बभ्रुं योगी किल कार्तवीर्यः—रघु० ६।३८, जघान कंसं किल वासुदेवः—महा० 3. झूठमूठ का कार्य, प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष रघु० २।२७, कि० ११।२ 4. आशा, प्रत्याशा, संभावना पार्थः किल विजेष्यते कुरून् —गण० 5. असंतोष, अरुचि,—एवं किल केचिद्वदन्ति —गण० 6. घृणा—एवं किलं योस्त्यसे - गण० 7. कारण, हेतु—(अत्यंत विरल)—स किलैवमुक्तवान् —गण० 'क्योंकि उसने ऐसा कहा'।

किलकिल:,ला [किल्+क, प्रकारे वीप्सायां वा द्वित्वम्, पक्षे टाप्] किलकारी, हर्ष और प्रसन्नतासूचक बोल।

किलकिलायते (ना० धा० आ०) किलकारी मारना, कोलाहल करना—भट्टि० ७।१०२।

किलिञ्जम् [किलि+जन्+ड] 1. चटाई 2. हरी लकड़ी का पतला तख्ता, फलक।

किलिञ्चिल् (पुं०) [किल्+क्विप्, किल्+विनि] घोड़ा।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, वुक्] 1. पाप, मनु० ४।२४३, १०।११८, भग० ३।१३, ६।४५ 2. त्रुटि, अपराध, क्षति, दोष —मनु० ८।२३५ 3. रोग, बीमारी।

किशलय:, —यम् [किंचित् शलति —किम्+शल्+कयन् वा०, पृषो० साधुः] पल्लव, कोंपल, अंकुर, अंखुआ —दे० 'किसलय'।

किशोर: [किम्+शु+ओरन्] 1. बछेरा, वन्य पशु-शावक, किसी जानवर का बच्चा - केसरिकिशोरः—आ० 2. तरुण, बालक, १५ वर्ष से कम आयु का, अवयस्क (विधि में) 3. सूर्य -,री एक नवयुवती, तरुणी।

किष्किन्धः, न्धम् [किं किं दधाति—कि+कि+धा+क, पूर्वस्य किमो मलोपः, षुट्, धत्वम्, —किष्किन्ध+यत्] एक देश का नाम 2. उस प्रदेश में स्थित एक पहाड़ का नाम—,धा,—ध्या एक नगरी, किष्किन्धा की राजधानी।

किच्छु (वि०) [कै+कु नि० साधुः] दुष्ट, निन्द्य, बुरा, —च्छुः (पुं० स्त्री०) 1. कोहनी से नीचे भुजा 2. एक हस्त परिमाण, हाथ भर की लम्बाई, एक बालिश्त।

किसलः, —लम्, } [किञ्चित् शलति—किम्+शल्+क
किसलयः, —यम्, } (कयन्) वा०, पृषो० साधुः] पल्लव, कोमल अंकुर या कोंपल—अधरः किसलयरागः, श० १।२१, किसलयमलूनं कररुहैः—२।१०, किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः—रघु० ९।३५।

किंकट (वि०) (स्त्री०—टी) [को शब्दं दूतं वा कटति गच्छति—की+कट्+अच्] 1. गरीब, दरिद्र 2. कञ्जूस,—टः घोड़ा,—टाः (ब० व०) एक देश का (विहार) नाम।

किंकस (वि०) [की कुत्सितं यथा स्यात्तथा कसति—की +कस्+अच्] कठोर, दृढ़, - सम् हड्डी।

किंचक: [चीकयति शब्दायते—चीक्+वुन्, आडागमविपर्ययः] 1. लोखला बांस 2. हवा में सनसनाते या सीं सीं करते हुए बांस—शब्दायन्ते मधुरमनिलैः किंचकाः पूर्यमाणाः—मेघ० ५६, रघु० २।२२, ४।७३, कु० १।८ 3. एक जाति का नाम 4. विराट राज का सेनापति (जब द्रौपदी, सैरिन्ध्री के वेश में, भेस बदले हुए अपने पाँचों पतियों के साथ राजा विराट के दरबार में रह रही थी, उस समय एक बार कीचक ने उसे देखा, द्रौपदी के सौन्दर्य से उसके हृदय में कामाग्नि प्रज्वलित हुई; तब से लेकर उसकी पाप दृष्टि द्रौपदी पर लगी रही और उसने अपनी बहन (राजा विराट की पत्नी) की सहायता से उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा की। द्रौपदी ने अपने प्रति उसके अशिष्ट व्यवहार की शिकायत राजा से की, परन्तु जब राजा ने हस्तक्षेप करने में आनाकानी की तो उसने भीम से सहायता मांगी, और उसके सुझाव को मानकर उसने कीचक के प्रस्ताव के प्रति अनुकूलता दर्शाई। तब यह निश्चय किया गया कि वे दोनों आधी रात के समय महल के नाच घर में मिलें, फलतः कीचक वहाँ गया और उसने द्रौपदी का आलिङ्गन करने का प्रयत्न किया, परन्तु अन्धेरा होने के कारण वह दुष्ट द्रौपदी के बजाय भीम के भुजपाश में फंस गया—और उसके बलवान् हाथों से वह वहीं कुचला जाकर मौत का शिकार हुआ)। सम०—**जित्** (पुं०) द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण।

कीट: [कीट्+अच्] 1. कीड़ा, कृमि—कीटोऽपि सुमनः —सङ्गादारोहति सतां शिरः हि० प्र० ४५ 2. तिरस्कार व घृणा को व्यक्त करने वाला शब्द (बहुधा समास के अन्त में) द्विपकीटः—अधम हाथी, इसी प्रकार पक्षिकीटः आदि। सम०—**ज:**- गंधक,—**जम्** रेशम,—**जा** लाख,—**मणिः** जुगनू।

कीटक: [कीट+कन्] 1. कीड़ा 2. मगध जाति का भाट।

कीदृक्ष (स्त्री० - क्षी) } [किम्+दृश्+क्त, क्विन्,
कीदृश, कीदृक्ष (स्त्री—शी) } कञ् वा, किमः की आदेशः] किस प्रकार का, किस स्वभाव का,— तद्धीः कीदृक्षी विवेकविभवः कीदृक् प्रबोधोदयः—प्रबो० १, नै० १।१३७।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीनाश (वि०) [क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च] 1. भूमिधर 2. गरीब, दरिद्र 3. कृपण 4. लघु, तुच्छ,—शः मृत्यु के देवता यम की उपाधि 2. एक प्रकार का बन्दर ।

कीरः [की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति—की+ईर्+अच्] 1. तोता—एवं कीरवरं मनोरथमयं पोतमासवादति—भामि० १।५८,—रा. (ब० व०) काश्मीर देश तथा उसके निवासी,—रम् मांस । सम०—द्रुमः आम का वृक्ष (इसे तोते बहुत पसन्द करते हैं) । —वर्णकम् सुगन्धी का शिरोमणि ।

कीर्ण (वि०) [कृ+क्त] 1. छितराया हुआ, फैलाया हुआ, फेंका हुआ, बखेरा हुआ 2. ढका हुआ, भरा हुआ 3. रक्खा हुआ, धरा हुआ 4. क्षत, चोट पहुँचाया गया—दे० कृ ।

कीर्णिः (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1. बखेरना 2. ढकना, छिपाना, गुप्त कर देना 3. घायल करना ।

कीर्तनम् [कृत्+ल्युट्] 1. कथन, वर्णन 2. मन्दिर,—ना 1. कीर्तिवर्णन 2. सस्वर पाठ 3. यश, कीर्ति ।

कीर्तय—कृत् ।

कीर्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1. यश, प्रसिद्धि, कीर्ति —इह कीर्तिमवाप्नोति—मनु० २।९, वशस्य कर्तारः मनस्तकीर्तिम् —रघु० २।६४, मेघ० ४५ 2. अनुग्रह, अनुमोदन 3. मैल, कीचड़ 4. विस्तृति, विस्तार 5. प्रकाश, प्रभा 6. ध्वनि । सम०—भाज् (वि०) यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध (पुं०) द्रोण का विशेषण जो कि कौरवों और पांडवों का सैन्य-शिक्षाचार्य था, —शेष: केवल यश के रूप में जीवित रहना, यश के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ना अर्थात् मृत्यु—पु० नामशेष, आलेख्यशेष ।

कील् (स्वा० पर०) 1. बांधना 2. नत्थी करना 3. कील गाड़ना ।

कीलः [कील्+घञ्] 1. फन्नी, खूंटी—कीलोत्पाटीव वानरः -पंच० १।२१ 2. भाला 3. बल्ली, खंभा 4. हथियार, 5. कोंहनी 6. कोहनी का प्रहार 7. ज्वाला 8. परमाणु 9 शिव का नाम ।

कीलकः [कील+कन्] 1. फन्नी या खूंटी 2. खंभा, स्तंभ -दे० कील ।

कीलालः [कील+अल्+अण्] 1. अमृतोपम स्वर्गीय पेय, देवताओं का पेय 2. मधु 3. हवन,—लम् 1. रुधिर 2. जल । सम०—धिः समुद्र,—पः पिशाच, भूत ।

कीलिका [कील+कन्+टाप्, इत्वम्] खूंटी की कील ।

कीलित [वि०] [कील्+क्त 1. बंधा हुआ, बद्ध 2. स्थिर कील से गड़ा हुआ, कील ठोक कर जड़ा हुआ—तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितम् - गीत० ७, सा नश्चेतसि कीलितेव—मा० ५।१० ।

कीश (वि०) [क+ईश्+क] नंगा,—शः 1. लंगूर, बन्दर 2. सूर्य 3. पक्षी ।

कुः (स्त्री०) [कु+डु] 1. पृथ्वी 2. त्रिभुज या सपाट आकृति की आधार-रेखा, सम०—पुत्रः मंगलग्रह ।

कु (अव्य०) 'खराबी', ह्रास, अवमूल्यन, पाप, भर्त्सना, ओछापन, अभाव, त्रुटि आदि भावों को संकेत करने वाला उपसर्ग; इसके स्थानापन्न अनेक हैं, उदा० कद् (कदश्वः), कव (कवोष्ण), का (कोष्ण), कि (किप्रभुः) -पंच० ५।१७ । सम०—कर्मन् (नपुं०) बुरा कार्य, नीच कर्म,—ग्रहः अमंगल-ग्रह,—ग्रामः छोटा गाँव या पुरवा (जहाँ राजा का अधिकारी, अग्निहोत्री, डाक्टर या नदी न हो),—चेल (वि०) फटे पुराने वस्त्र पहने हुए,—चर्या दुष्टता, अशिष्टाचरण, अनौचित्य,—जात्यन् (वि०) नीच कुल में उत्पन्न,—तन् (वि०) विकृतकाय, कुरूप (नुः) कुबेर का विशेषण—तर्कः 1. कुतर्कात्मक, हेत्वाभासरूप 2. धर्मविरुद्ध सिद्धान्त स्वतंत्र चिन्तन—कुतर्कैरवभ्यासः सततपरपैशुन्यमननम् —गंगा० ३१, पथः तर्क करने की झूठी रीति —लोर्यम् खराब अध्यापक दृष्टिः (स्त्री०) 1. कमजोर नजर 2. पापदृष्टि, कुटिल आँख (आलं०) 3. वेदविरुद्ध सिद्धान्त, धर्मविरुद्ध सिद्धान्त—मनु० १२।९५,—देशः 1. बुरा देश या बुरी जगह 2. वह देश जहाँ जीवन की आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो, या जो अत्याचार से पीड़ित हो,—देह (वि०) कुरूप, विकृतकाय (हः) कुबेर का विशेषण,—धी (वि०) 1. मूर्ख, बुद्धू, बेवकूफ 2. दुष्ट,—नदः बुरा पात्र, —नदिका छोटी नदी, क्षुद्र नदी, लघु स्रोत— सुपूरा स्यात्कुनदिका—पंच० १।२५,—नाथः बुरा स्वामी, —नामन् (पुं०) कंजूस,—पथः 1. कुमार्ग, बुरा रास्ता (आलं० भी) 2. धर्मविरुद्ध सिद्धान्त,—पुत्रः बुरा या दुष्ट पुत्र,—पुरुषः नीच या दुष्ट पुरुष,—पूय (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय,—प्रिय (वि०) अरुचिकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम,—फलः बुरी किस्मत—कुफलैः संतरन् जलम्—मनु० ९।१६१, —बंधुः कुलघ्न पतित ब्राह्मण, —भंगः 1. बुरा उपदेश 2. बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न मंत्र,—योगः अशुभ संयोग (ग्रहों का),—रस (वि०) बुरे रस या स्वाद वाला, (सः) एक प्रकार की मदिरा, रूप (वि०) कुरूप, विकृत रूप, पंच० ५।१९,—रूप्यम् टीन, जस्ता,—वंगः सीसा,—वचस् वाक्य (वि०) गाली देने वाला, अश्लील भाषी, दुर्वचन या कुभाषा बोलने वाला (नपुं०) दुर्वचन, कुभाषा,—वर्षः आकस्मिक प्रचंड बौछार,—विवाहः विवाह का भ्रष्ट या अनुचित रूप—मनु० ३।६२,—वृत्तिः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(स्त्री) वरा व्यवहार, - वैश्यः छोटा वैश्य, कठवैश, नीच कर्मीस,-- शील (वि०)अक्खड़, दुष्ट, अशिष्ट, दुष्ट स्वभाव, - स्थलम् बुरी जगह,-- सरित् (स्त्री०) क्षुद्र नदी, छोटा स्रोत - उच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः प्रीप्मे कुसरितो यथा--पंच० २।८५ - सूतिः (स्त्री०) 1. दुराचरण, दुष्टता 2. जादू दिखाना 3. धूर्तता,--स्त्री छोटी स्त्री।

कु i (स्वा० आ० कवते) ध्वनि करना।

ii (तुदा० आ० -कुवते) 1. बड़बड़ाना, कराहना 2. चिल्लाना, क्रंदन करना।

iii (अदा० पर०--कौति) भिनभिनाना, कूजना, गुंजन करना (मधुगन्धी की भांति)।

कुकभम् [कुकेन आदानेन पानेन भाति -कुक+भा+क] एक प्रकार की तीक्ष्ण मदिरा।

कुकीलः [को पृथिव्या कीलः इव] पहाड़।

कुकु (क्) वः [कुक् वा कु इत्यव्ययम्- अलकृता कन्या तां सत्कृत्य पात्राय ददाति कुकु (कु)+दा+क] उपयुक्त भृंगारी से सुसज्जित (अलकृत) कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला।

कुकुन्द (डु) रः [स्कन्दते कामिना अत्र, नि० साधु] जघन-कूप, कूल्हे के दो गर्त जो नितम्ब के ऊपरी भाग में होते हैं, दे० 'कुकुन्दर'।

कुकुरा (ब० व०) [कु+कुर+क] एक देश का नाम, इसे 'दशार्हा' भी कहते हैं।

कुकूलः, लम् [कु ऊष्मा कुत्सितः गमः] 1. कोयला, भूसी -कुकूलाग्नौ यथा तप्तं हृदयं पच्यते इव उत्तर० ३। ४७ 2. भूसी से बनी आग। - लम् [को: कुत्सितं पं० त०] 1 छिद्र, खाई (खुदे स्थानादिकों में भरी हुई) 2 बबूल, उसर।

कुकुरः [कुक्+र-विषए, तेन कूजति, कुक्+कुर्+क] 1 सर्प, अंगोला सर्प। 2. अग्नि हुए भूसे की चिनगारियां, जलती हुई लकड़ी 3 आग की चिनगारी।

कुकुरिः, टी (स्त्री०) [कुकुर+इन्, पक्षे ङीप्] दम्भ, पाखण्ड, धार्मिक आडम्बरों से स्वार्थसिद्धि।

कुकुभः [कुकुभ शब्दं भाषते कुकुभ+भाष+ड घञ्] 1 जंगली मुर्गा 2. मुर्गा 3. बगीचा।

कुकूरः [कुक्+ऊरच्] कोकले आदमी -कुक्, विदग्, कुक् (कुकूरति) शब्द करना, दुष्टता करना, ठगना-कुक् (कुकते) 1. शब्द करना 2. ठगना-कुकेरुकस्य न कुकुरैरहर्जङ्घालतरं, शाकैर्मेध्यं मरुज० २।१२ । सम० वाच् (पुं०) हिरणों की एक जाति।

कुक्कुः [कुक्+कु] घर।

कुक्षिः [कुक्ष्+इन्] 1. पेट जिह्वेन्द्रियमातकुक्षि, (भूतग्रामं भुनक्ति) मुच्छ० ९।१२ 2. गर्भाशय, पेट का बड़ा भाग। जिसमें भ्रूण रहता है-कुक्षौसन्धोश्च कुक्षिजः स्मृ० १५।१५, शि० १३।४० 3. किसी चीज का भीतरी भाग--रघु० १०।६५ (यहां शब्द द्वितीय अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. गर्त 5. कुहर, कन्दरा रघु० २। ३८, ६७ 6. तलवार का म्यान 7. खाड़ी। सम० -अम्भरि (वि०)[कुक्षि+भृ+इन्, मुम्] अपना पेट भरने की चिन्ता करने वाला- साथी, दे० कुक्षिंभरी।

कुङ्कुमम् [कुक्+कुमच्, पि० मुम्] केसर, जाफरान-लग्न-कुङ्कुमकेसरान् (स्थलान्)--रघु० ४।६७, ७।६०, ५।६, भर्तृ० ११२०, २५, । सम० अद्रिः एक पहाड़ का नाम।

कुच् i (तुदा० पर० कुचति, कुचित) 1. (पक्षी की भांति) कर्कश ध्वनि करना 2 जाना 3. चमकाना 4. सिकोड़ना, झुकाना 5. सिकुड़ना 6. बाधा उपस्थित करना 7. लिखना, अंकित करना. सम् - , 1. टेढ़ा होना, 2. संकुचित करना, 3 संचुचितोरू-तथा-गाढ संकुचितं मृगपतेरपि कोपात् सङ्कुचत्पुलपतिष्णुः पंच० ३।४३ 3. बन्द करना मुद्रोभौ--हस्तलवनाति समकुचन्--रत्न० (प्रेर०) बन्द करना, सिकोड़ना, घटाना।

ii(भ्वा०पर०(कुञ्च् भी)-कोचति, कुञ्चति, कुञ्चित) 1. कुटिल बनाना, झुकाना या टेढ़ा करना 2. टेढ़ी तरह से चलना 3. ओछा करना, घटाना 4. सिकुड़ना, संकुचित होना 5. को अंश जाना, आ - , सिकोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना (प्रेर० भी) कुच ३।७० रघु० ९।१५, भट्टि० १।३, -वि--, सिकोड़ना, टेढ़ा करना।

कुचः [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूचुक--अपि स्तनादस्रमपि क्षरन्मुखम्-विक्रम० ४।२६। सम० अग्रम्, मुखम्, चूचुकम्, - हरम् लहँगा (स्त्रियों के) स्तन का उतार, फलः अनार का वृक्ष।

कुचर (वि०)[कुच्+अच्+र, रो] 1. जो टेढ़ी चाल चलता है, कपटी, धोखेबाज 2. दुष्ट, नीच, दुश्चरित्र 3. अपमानित करने वाला, लज्जाजनक, स्त्रियः स्त्रियो नाम कुचरा भवन्ति--पंच० १।३२७।

कुच्छम् [कुच्+छ+क] कमल की एक जाति, कुमुद।

कुजः [कुज्+क] 1. वृक्ष 2. मंगल ग्रह 3. एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मार गिराया था ('नरक' भी इसी का नाम है)। जा सीता।

कुजम्भलः कुजृम्भलः [कौ पृथिव्यां जम्भलमिव दन्तवत्, कौ पृथिव्यां जृम्भलमिव] 1. नाई 2. बढ़ई। स० त० [सेंध लगाकर घर में घुसने वाला चोर।

कुज्झटिः, कुज्झटिका, कुज्झटी [कुत् पृथिवी, झट् + इन्, कुत् यानी अतिरिक्त कर्म० स०, कुज्झटिः-टी] कुहरा, धुन्ध।

कुञ्च् --देo कुच् i।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुब्जनम् कुब्ज्+ल्युट्] टेढ़ा करना, झुकाना, मिकोड़ना।

कुब्जिः [कुब्+इन्] आठ मुट्ठियों या अंजलियों की मात्रा का माप अष्टमुष्टिर्भवेत्कुब्जिः।

कुब्जिका [कुब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. कुंजी, चाबी —भर्तृ० १।६३ 2. बांस का अंकुर।

कुब्जित (वि०) [कुब्+क्त] सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ झुकाया हुआ।

कुब्जः—जम् [कु+जन्+ड, पृषो०साधुः] 1. लताओं तथा पौधों से आच्छादित स्थान, लतावितान, पर्णशाला, -चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलम् -गीत० ५, वंजुलतातकुंजे -१२, मेघ० १९, रघु० ९।६४ 2. हाथी का दांत। सम० **कुटीरः** लतामण्डप, लताओं तथा पौधों से परिवेष्टित स्थान-शुञ्जत्कुञ्ज-कुटीरकौशिकगद्दा उत्तर० २।२९, मा० ५।१२. कोकिलकूजितकुंजकुटीरे गीत० १।

कुञ्जरः [कुञ्जो दन्तितुल्यत्वं सोऽस्यास्ति-कुञ्ज+र] 1. हाथी 2. (समास के अन्त में) कोई सर्वोत्तम या श्रेष्ठ वस्तु अमरकोश इस प्रकार के निम्नांकित प्रयोग द्रष्टव्य हैं नरकुञ्जरः इस प्रकार के निम्नांकित प्रयोग द्रष्टव्य हैं नरकुञ्जरः, सिंह नाहकुञ्जरः पुरुषश्रेष्ठार्थवाचकाः। 3. पीपल का वृक्ष (अश्वत्थ) 4. हस्त नामक नक्षत्र। सम० **अनीकम्** सेना का एक प्रमाण जिसमें हाथी हों, हस्ति-सेना, **अशनः** अङ्कुशस्थ वक्र,—**अरातिः** 1. शेर 2. शरभ (आठ पैरों का एक काल्पनिक जन्तु),—**ग्रहः** हाथी पकड़ने वाला।

कुट् 1 (भ्वा० पर० —कुटति, कुटित) 1. कुटिल या वक्र होना 2. टेढ़ा करना या झुकाना 3. बेईमानी करना, छल करना, धोखा देना।

2 (दिवा० पर० कुट्यति) तोड़ कर टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ देना, विभक्त करना, विदलित करना।

कुटः, टम् [कुट्+क] जलपात्र, कलश, कमण्डलु,—टः 1. किला, दुर्ग 2. हथौड़ा 3. वृक्ष 4. घर 5. पहाड़। सम० **जः** 1. एक वृक्ष का नाम मेघ० ४, रघु० १९।३७, ऋतु० ३।१३, भर्तृ० १।४२ 2. अगस्त्य 3. द्रोण हारिलता वेल्लिका, नीलकण्ठी।

कुटकम् [कुट—कन्] पिता हलका का हल।

कुटङ्गः [कुट्+टङ्ग+घञ्] छल, छप्पर।

कुटङ्गकः [कुटस्य अङ्गकः ष०त०] 1. वृक्ष के ऊपर फैली हुई लताओं से बना लतामण्डप 2. छोटा घर, झोंपड़ी कुटिया।

कुटपः [कुट+पा+क] 1. अनाज की माप (=कुडव) 2. घर के निकट वाटिका 3. ऋषि, संन्यासी, यम, रुमण्वत्।

कुटरः [कुट्+करच् वा०] वह बर्तन जिसमें मथते समय दही को रस्सी लिपटी रहती है।

कुटलम् [कुट्+कलच्] छत, छप्पर।

कुटिः [कुट्+इन्] 1. शरीर 2. वृक्ष (स्त्री०) 1. कुटिया, झोंपड़ी 2. गांठ, झुकाव। सम०—**चरः** सूअर, शिशुक।

कुटिरम् [कुट्+इरच्] कुटिया, झोंपड़ी।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] 1. टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा हुआ, घुंघरदार—केशेषु कुटिलेषु: —श० ५।२३, रघु० ६।४२, १९।१७ 2. घुमावदार, वलखाती हुई—कोसं कुटिला नदी—सिद्धा० 3. (आलं०) कपटी, जालसाज, बेईमान। सम० **आशय** (वि०) दुराशय, दुर्गति,—**पक्ष्मन्** (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला, —**स्वभाव** (वि०) कुटिल प्रकृति, बेईमान, दुर्गति।

कुटिलिका [कुटिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. दबे पाँव आना (जिस प्रकार कि शिकारी आदमी शिकार पर आते हैं) दबक कर चलना, 2. अहार की भट्टी।

कुटी [कुट्+ङीष्] 1. मांद 2. कुटिया, झोंपड़ी—प्रासादीकृतिं कुटयाम्—सिद्धा०—मनु० ११।७२, पर्ण०, अश्व० आदि 3. कुट्टिनी, दूती। सम०—**चक्रः** किसी संघश्रिशेष का संन्यासी -चतुर्विधा भिक्षवस्ते कुटीचक-बहूदकौ, हंसः परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः। —महा०,—**चरः** एक संन्यासी जो अपने परिवार को अपने पुत्र को देख रेख में छोड़कर अपना आपको पूर्णतया धर्मानुष्ठान एवं तपश्चर्या में लगा देता है।

कुटीरः, रम्] [कुटी+र, कुटीर+कन्] झोंपड़ी, कुटिया,
कुटीरकः] उत्तर० २।२९, अमरु ४८।

कुट्टनी [कुट्+ल्युट्+ङीष्] कुट्टिनी, दूती दे० कुट्टनी।

कुटुम्बम्, कुटुम्बकम् [कुटुम्ब+अच्, कुटुम्ब+कन्] 1. गृहस्थी, परिवार—इदानीमेतावत् तु वसुधैव कुटुम्बकम् —हि० १।३७, याज्ञ० १।४५ मनु० ११।१२, २७, ८।१६६ 2 परिवार के कर्तव्य और चिन्तएँ—तदुपहित-कुटुम्ब—रघु० ७।७१,—**बः,—बम्** 1. बंधु, वंश या विधाह के फलस्वरूप संबंध 2. बालबच्चे, संतान 3. नाम 4. वंश। सम० **कलहः,—हम्** घरेलू झगड़े —भरः परिवार का भार, भत्रा नदीपतिकुटुम्बभरेण सार्धम् - श० ७।१९, **व्यापृत** (वि०) (वह पिता) जो पालन पोषण करता है, तथा परिवार की भलाई का ध्यान रखता है।

कुटुम्बिकः, कुटुम्बिन् (पुं०) [कुटुम्ब—ठन्, इनि वा] गृहस्थ, कुल पिता, जिसे परिवार का भरण पोषण करना पड़ता है, या जो देखभाल करता है प्रायेण गृहिणीनेत्रा कन्यावैद्यः कुटुम्बिनः—कु० ६।८५, विक्रम० ३।१, मनु० ३।८०, याज्ञ० २।४५ 2. परिवार का एक सदस्य, -नी 1. गृहपत्नी, गृहिणी (गृह स्वामिनी), भवतु कुटुम्बिनीमाहूय पृच्छामि—मुद्रा० १, प्रभवन्त्योऽपि हि भर्तृषु कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः मालवि० १। १७, रघु० ८।८६, अमरु ४८ 3. स्त्री।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुट्ट (चुरा० उभ०—कुट्टयति, कुट्टित) 1. काटना, बांटना 2. पीसना, चूर्ण करना 3. दोष देना, निन्दा करना 4. गुणा करना।

कुट्टकः [कुट्ट्+ण्वुल्] कूटने वाला, पीसने वाला।

कुट्टनम् [कुट्ट्—ल्युट्] 1. काटना 2. कूटना 3. दुर्वचन कहना, निन्दा करना।

कुट्टः (ट्टि) नी [कुट्टयति नाशयति स्त्रीणां कुलम् - कुट्ट्+णिच्+ल्युट्+ङीप्, कुट्ट+इनि वा] कुटनी, दूती, दल्ली।

कुट्टमित्तम् [कुट्ट्+घञ्, तेन निर्वृत्तं इत्यर्थे कुट्ट्+इमप्+इतच्] प्रियतम के प्यार का दिखावटी तिरस्कार (झूठमूठ ठुकराना) (नायिका के २८ हावभाव तथा अनुनय, में से एक) सा० द० परिभाषा देता है—केशस्तनाधरादीनां ग्रहे हर्षेपि संभ्रमात्, प्राहुः कुट्टमितं नाम शिरःकम्पविधननम्, १४२।

कुट्टाक (वि०) (स्त्री०—की) [कुट्ट्+पाकन्] जो विभक्त करता है या काटता है—सारङ्गसङ्गरविघाटविभक्तकुम्भकूटकुट्टाकपाणिकुलिशस्य हरेः प्रभावः—मा० ५।३२।

कुट्टारः [कुट्ट्+आरन्] पहाड़, -रम् 1. मैथुन 2. ऊनी कंबल 3. एकान्त।

कुट्टिमः, -मम् [कुट्ट्+इमप्] 1. खड़ंजा, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्श, पक्का फर्श —कांतेन्दुकान्तोपलकुट्टिमेषु—शि० ३।४०, रघु० ११।९ 2. भवन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि 3. रत्नों की खान 4. अनार 5. झोंपड़ी, कुटिया, छोटा घर।

कुट्टिहारिका—[कुट्टि मत्स्यमांसादिकं हरति इति -कुट्टि+हृ+ण्वुल् +टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी।

कुट्मल=कुड्मल।

कुटः [कुटयते छिद्यते—कुट्+क] वृक्ष।

कुटर=दे० 'कुटर'।

कुठारः (स्त्री०- री) [कुठ्+आरन्] कुल्हाड़ा (परशु), कुल्हाड़ी -मानुः केवलमेव यौवनवनच्छेदे कुठारा वयम् - -भर्तृ० ३।११।

कुठारिकः [कुठार+ठन्] लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला।

कुठारिका [कुठार+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] छोटा कुल्हाड़ा, फरसा।

कुठारः [कुठ्+आरु] 1. वृक्ष 2. लंगूर, बन्दर।

कुठिः [कुठ्+इन्+कित्] 1. वृक्ष 2. पहाड़।

कुडङ्गः (पुं०) कुंज, लतागृह।

कुडवः (पः) [कुड्+कवन्, कपन् वा] एक चौथाई प्रस्थ के बराबर या बारह मुट्ठी (अंजलि) अनाज की तौल।

कुड्मल (वि०) [कुड्+कल, मुट्] खुलता हुआ, पूरा खिला हुआ, लहराता हुआ (जैसे खिला हुआ फूल) —रघु० १८।३७,—लः खुलना, कली - विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु—रघु० १६।४७, उत्तर० ६।१७, शि० २।७,—लम् एक प्रकार का नरक—मनु० ४।८९, याज्ञ० ३।२२२।

कुड्मलित (वि०) [कुड्मल+इतच्] 1. कलीदार, खिला हुआ 2. प्रसन्न, हंसमुख।

कुड्यम् [कुड्+यक्, दुगागमः] 1. दीवार—भेदे कुड्यावपातने—याज्ञ० २।२२२, शि० ३।४५ 2. (दीवार पर) पलस्तर करना, लीपना, पोतना 3. उत्सुकता, जिज्ञासा। सम०—छेदिन् (पुं०) घर में सेंध लगाने वाला, चोर,—छेदः खोदने वाला, (दम्) खाई, गड्ढा, (दीवार में) दरार।

कुण् (तुदा० पर०—कुणति, कुणित) 1. सहारा देना, सहायता देना 2. शब्द करना।

कुणकः [कुण्+क+कन्] किसी जानवर का अभी पैदा हुआ बच्चा।

कुणप (वि०) (स्त्री०—पी) [कुण्--कपन्] 1. मुर्दे जैसी दुर्गंध देने वाला, बदबूदार—पः, -पम् मुर्दा, शव--शामनीयः कुणपभोजनः—विक्रम० ५ (गिद्ध),—अमेध्यः कुणपाशी च—मनु० १२। ७१, जीवित जन्तुओं के प्रति घृणा व तिरस्कार का द्योतक शब्द, - प: 1. वर्षा 2. दुर्गंध, बदबू।

कुणिः [कुण्+इन्] लंजा, जिसकी एक बांह सूख गई हो।

कुण्टक (वि०) (स्त्री०—की) [कुण्ट्+ण्वुल्] मोटा, स्थूल।

कुण्ठ (भ्वा० पर०—कुण्ठति, कुण्ठित) 1. कुण्ठित, कुण्ठा या मन्द हो जाना 2. लज्जा, और विकलांग होना 3. मंदबुद्धि या मूर्ख होना, सुस्त होना 4. ढीला करना (प्रेर० या चुरा० पर०) छिपाना।

कुण्ठ (वि०) [कुण्ठ्+अच्] 1. ठूंठा, सुस्त, वक्र तथा तीक्ष्णधार-महत्सु कुण्ठम्- कु० ३।१२, प्रभावरहित हो गया, कुण्ठीभवत्यूषुलादिषु क्षुराः--शारी० 2. मन्द, मूर्ख, जड़ 3. आलसी, सुस्त 4. दुर्बल।

कुण्ठकः [कुण्ठ्+ण्वुल्] मूर्ख।

कुण्ठित (भू० क० कृ०) [कुण्ठ्--क्त] 1. ठूंठा, मन्दीकृत (आलं० भी)- बिभ्रतोऽस्त्रमपलेष्कुण्ठितम्-- रघु० ११।७४, भामि० २।७८, कु० २।२०, शास्त्रेष्वकुण्ठितबुद्धिः - रघु० १।१९, निर्बोध रही 2. जड़ 3. विकलांग।

कुण्डः,-डम् [कुण्ड्+ड] 1. प्याले की शक्ल का बर्तन, चिलमची, कटोरा 2. हौज 3. कुंड, कुंड-- अग्निकुण्डम् 4. पीपल या पत्थल—विशेषतः जो किसी देवता के नाम पर धर्मार्थ समर्पित कर दिया गया हो 5. कमंडलु या

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिक्षापात्र, -डः (स्त्री०—डी) पति के जीवित रहते व्यभिचार द्वारा किसी दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान- पत्यौ जीवति कुंडः स्यात् · मनु० ३।१७४, याज्ञ० १।२२२। सम०—आजिन् (पुं०) भड़ुवा, विट, अपनी जीविका के लिए जो कुण्ड पर निर्भर करता है अर्थात् वर्षाकर, जारज,—मनु० ३।१५८ याज्ञ० १।२२४,—ऋषभ (कुम्भोध्नी) 1. वह गाय जिसका ऐन या ओड़ी भरी हुई हो 2. भरे पूरे स्तनों वाली स्त्री,—क्षीरः 1. रखली स्त्रियाँ रखने वाला 2. चार्वाकमतावलंबी, नास्तिक, जारज ब्राह्मण,-क्षीलः नीच या दुश्चरित्र व्यक्ति,—गोलम्—गोलकम् 1. कांजी 2. कुण्ड और गोलक का समुदाय।

कुण्डलः,-लम् [कुण्ड+कलच् ल] 1. कान की बाली, कान का आभूषण-श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन-भर्तृ० २।७१, चौर० ११, ऋतु० २।२०, ३।१९, रघु० ११।१५ 2. कड़ा 3. रस्सी का गोला।

कुण्डलना [कुण्डल+णिच्+युच्+टाप्] घेरा डालना (शब्द को गोल घेरे में रखना) यह प्रकट करने के लिए कि यह भाग छोड़ देना या इस पर विचार नहीं करना है; -नदीजसस्तदशसः स्थितावियो वृणीते चित्ते कुरुते वदा वदा, ततोनि भानोः परिवेषकैतवात्तदा विधिः कुण्डलनां विधारयि। वै० १।१४, तु० २।९५ से भी।

कुण्डलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुण्डल+इनि] 1. कुण्डलों से विभूषित 2. गोलाकार, सर्पिल 3. घुमावदार, कुण्डली मारे हुए (साँप की भाँति) —पुं० 1. साँप 2. मोर 3. वरुण की उपाधि।

कुण्डिका [कुण्ड—कन्+टाप्, इत्वम्] 1. घड़ा 2. कमंडलु।

कुण्डिन् (पुं०) [कुण्ड्+इनि] शिव की उपाधि।

कुण्डिनम् [कुण्ड्+इनच्] एक नगर का नाम, विदर्भदेश की राजधानी।

कुंडि (डी) र (वि०) [कुण्ड्+इ (ई) रन्] बलवान्, —रः मनुष्य।

कुतः (अव्य०) [किम्+तसिल्] 1. कहाँ से, किधर से -कस्य त्वं वा कुत आयातः—मोह० ३ 2. कहाँ, और कहाँ, और किस स्थान पर आदि -ईदृग्विनोदः कुतः—श० २।५ 3. क्यों, किस लिए किस कारण से, किस प्रयोजन से -कुत इदमुच्यते—श० ५ 4. कैसे, किस प्रकार -स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य-श० १।१५ 5. और अधिक, और कम—न वत्सलमोस्त्यस्मदधिकः कुतोऽन्यः—भग० ११।४३, ४।३१, न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो ··न स्वैरी स्वैरिणी कुतः··· छा० 6. क्योंकि, कभी कभी कुतः' केवल 'किम्' शब्द के अपादान के रूप में ही प्रयुक्त होता है—कुतः कालात्समुत्पन्नम्—वि० पु० (=कस्मात् कालात्), जब 'कुतः' के आगे 'चित्' 'चन' या 'अपि' जोड़ दिया जाता है तो यह अनिश्चयबोधक बन जाता है।

कुतपः [कु+तप्+अच्] 1. ब्राह्मण 2. द्विज 3. सूर्य 4. अग्नि 5. अतिथि 6. बैल, साड 7. दोहरा 8. भानजा 9. अनाज 10 दिन का आठवाँ मुहूर्त—अह्नो मुहूर्ता विख्याता दश पंच च सर्वदा, तत्राष्टमो मुहूर्तो यः स कालः कुतपः स्मृतः।— पम् 1. कुश घास 2. एक प्रकार का कंबल।

कुतस्त्य (वि०) [कुतस्+त्यप्] 1. कहाँ से आया हुआ 2. कैसे हुआ।

कुतुकम् [कुत्+उकञ्] 1. इच्छा, रुचि 2. जिज्ञासा (कौतुक) 3. उत्सुकता, उत्कण्ठा, उत्कटता-केलिकला-कुतुकेन च काचिदम् यमुनाजलकूले, मंजुलवंजुलकुंजगतं विचकर्ष करेण दुकूलं— गीत० १।

कुतुपः, कुतूः (स्त्री०) [कुत्+उपच् पृषो०, कु+तन्+कू टिलोपः वा०] कुप्पी (तेल डालने के लिए चमड़े की बनी)।

कुतूहल (वि०) [कुतू+हल्+अच्] 1. आश्चर्यजनक 2. श्रेष्ठ सर्वोत्तम 3. प्रशंसाप्राप्त, प्रसिद्ध,—लम् 1. इच्छा, जिज्ञासा—उज्झितताप्रबोधं जनितं नः कुतूहलम्—श० १, यदि विलासकलासु कुतूहलम्· ·गीत० १, (गर्वो) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम्· ·रघु० ३।५४, १३।२१, ५।६५ २. उत्सुकता 3. जिज्ञासा को उत्तेजित करने वाला, सूहावना, मनोरंजक, कौतुक या जिज्ञासा।

कुत्र (अव्य०) [किम्+त्रल्] 1. कहाँ, किस बात में,—कुत्र मे शिष्टः—पंच० १, प्रवृत्तिः कुत्र कर्तव्या—हि० १ 2. किस विषय में ···तेजसा सह जातानां वयः कुतोपयुज्यते ··पंच० १।३२८ (कभी कभी 'कुत्र' का प्रयोग 'किम्' शब्द अधि० एक० व० के लिए किया जाता है), जब 'कुत्र' के साथ चित्, चन, या अपि, जोड़ दिया जाता है तो वह अर्थ की दृष्टि से अनिश्चयात्मक बन जाता है, कुत्रापि, कुत्रचित् किसी जगह, कहीं, न कुत्रापि—कहीं नहीं; कुत्रचित्-कुत्रचित्—एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर, यहाँ-यहाँ—मनु० ९।३४।

कुत्रत्य (वि०) [कुत्र+त्यप्] कहाँ रहने वाला या कहाँ वास करने वाला।

कुत्स् (चुरा० आ०-कुत्सयते, कुत्सित) गाली देना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना, मनु० २।५४, याज्ञ० १।३१, शा० २।२८।

कुत्सनम्, कुत्सा [कुत्स्+ल्युट्, कुत्स्+अ+टाप्] दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना-देवतानां च कुत्सनम्—मनु० ४।१६३।

कुत्सित (वि०) [कुत्स्+क्त] 1. घृणित, तिरस्करणीय 2. नीच, अधम, दुश्चरित्र।

कुथः [कु+थक्] कुशा नामक घास।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुथः,-थम्,-था 1. छोटे की बनी हाथी की झूल 2. दरी।

कुदारः,-लः,-लकः [कु+दृ+घञ्+अण्, पृषो०, कु+दल्+णिच्+अण् पृषो०, कुदाल+कन्] 1. कुदाली, खुर्पा 2. कांचन वृक्ष।

कुद्दालम् =कुदालम्।

कुद्रुङ्गः [कुद्+कै+क नि० साधुः, कु+द्रुङ्+घञ्] 1. चौकी 2. मकान पर बना मकान।

कुनकः [?] कौवा।

कुन्तः [कु—उन्द्+क्त, बा० शाक० पररूपम्] 1. भाला, पक्षदार बाण, बर्छी—कुन्ताः प्रविशन्ति—काव्य० २ (अर्थात्—कुन्तधारिणः पुरुषाः); विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकिदन्तुरितासे—गीत० १ 2. छोटा जन्तु, कीड़ा।

कुन्तलः [कुन्त+ला+क] 1. सिर के बाल, बालों का गुच्छा, —प्रतनुवितरैः प्रान्तोत्पीलन्यनीहरकुन्तलैः—उत्तर० १।२०, चौर० ४, ६, गीत० २ 2. कटोरा 3. हल,—लाः (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम।

कुन्तयः ('कुन्त' का ब० व०, पुं०) एक देश और उसके निवासियों का नाम।

कुन्तिः [कम्+क्तिच्] एक राजा का नाम, कथ का पुत्र। सम०—भोजः एक यादव राजकुमार, कुन्तिदेश का राजा, जिसने निस्सन्तान होने के कारण कुन्ती को गोद ले लिया था।

कुन्ती [कुन्ति+ङीप्] 'सूर' नामक यादव की पुत्री पृथा जिसको कुंतिभोज ने गोद लिया। (यह पांडु की पहली पत्नी थी, किसी शाप के कारण पांडु से संतान न हुई, उसने इसी लिए कुंती को अनुमति दे दी कि वह दुर्वासा ऋषि से प्राप्त अपने मंत्र का प्रयोग करे। जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन करके उससे पुत्र प्राप्त कर सकती है। फलतः उसने धर्म, वायु और इन्द्र का आवाहन किया और उससे क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को प्राप्त किया। वह कर्ण की भी माता थी उसने अपनी कौमार्य-अवस्था में मंत्र का परीक्षण करने के लिए सूर्य का आवाहन किया और उसके सम्पर्क से उसने कर्ण को प्राप्त किया)

कुन्थ् (म्वा०-चु०प० सक० कुन्थति, कुन्थयति, कुन्थित) 1. कष्ट सहन करना 2. चिपकना 3. आलिंगन करना 4. चोट पहुंचाना।

कुन्द,-दम् [कुन्द्+ड (दो) अच्, नि० गुणः, या कु+दन्+मुम्] चमेली का एक भेद, मोतिया (सफेद और कोमल) कुन्दाङ्घ्रयोताः कलश्रमजलाः—भट्टि० २।१८, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः मेघ० ११३, —दम् इस पौधे का फूल—अलके बालकुन्दानुविद्धम् —मेघ० ६५, ७७,—दः 1. विष्णु की उपाधि 2. खैरात। सम०—करः खैरादी।

कुन्दमः [कुन्द+मा+क] बिल्ली।

कुन्दिनी [कुन्द+इनि+ङीप्] कमलों का समूह।

कुन्दुः [कु+दु+डु बा० नुम्] चूहा, मूसा।

कुप् (दिवा० पर० कुप्यति, कुपित) 1. क्रुद्ध होना (प्रायः उस व्यक्ति के लिए सम्प्र० जिस पर क्रोध किया जाय, परन्तु कभी कभी कर्म० या संबं० भी प्रयुक्त होते है) कुप्यन्ति हितवादिनः का० १०८, मालवि० ३। २१, उत्तर० ७, चुकोप तस्मै स भृशम्—रघु० २।५६ 2. उत्तेजित होना, सामर्थ्य ग्रहण करना प्रचंड होना, जैसा कि—दोषाः प्रकुप्यन्ति सुश्रु० अति , क्रुद्ध होना, भट्टि० १५।५५, परि-, क्रुद्ध होना, प्र-, 1. क्रुद्ध होना,—निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति- पंच० १।२८३, 2. उत्तेजित होना, बल प्राप्त करना, बढ़ना (घेरु०) उभारना, चिढ़ाना खिझाना।

कुपिन्द=देः कुविंद।

कुपिनिन् (पुं०) [कुपिनी मत्स्यधानी अस्ति अस्य—कुपिनी+इन्] मछुआ।

कुपिनी [कुप्+इनि+ङीप्] छोटी-छोटी मछलियां पकड़ने का एक प्रकार का जाल।

कुपूय (वि०) [कु+पूय्+अच्] घृणित, नीच, अधम, विरस्करणीय।

कुप्यम् [पुप्+क्यप्, कुत्वम्] 1. अपधातु 2. चांदी और सोने को छोड़ कर और कोई धातु कि० १।३५, मनु० ७।९६, १०।११३।

कुबे (वे) रः [कुत्सितं बेरं (वे) रं शरीरं यस्य सः] धन दौलत और कोष का स्वामी, उत्तरदिशा का स्वामी —कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ गन्तुं प्रवृत्ते समये विलंघ्य —कु० २।२५ (इस पर मल्लि० की टीका के अनुसार) [कुबेर इडविडा में उत्पन्न विश्रवा का पुत्र है, और इसीलिए वह रावण का आधा भाई है। धन और उत्तर दिशा का स्वामी होने के अतिरिक्त वह यक्ष और किन्नरों का राजा तथा रुद्र का मित्र है, इसका वर्णन विकृत शरीर के रूप में पाया जाता है, इसके तीन टांगें और आठ दांत थे, और एक आंख के स्थान में एक पीला चिह्न था]। अचलः—अद्रिः कैलास पर्वत की उपाधि, दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा।

कुब्ज (वि०) [कुं ईषत् उच्चमञ्चेव यत्र शाक० मागं०] कुबड़ा, कुटिल, ब्जः 1. मुड़ी हुई तलवार 2. पीठ पर निकला हुआ कूबड़, ब्जा कंस की एक सेविका, कहते हैं कि इसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था (कृष्ण और बलराम ने, जब वह मथुरा जा रहे थे राजमार्ग पर कुब्जा को देखा, वह कंस के लिए उबटन ले जा रही थी। उन्होंने उससे से कुछ उबटन मांगा, कुब्जा ने जितना वे चाहते थे, उबटन उनको दे दिया। कृष्ण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसके इस अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उसने उसका कुष मिटाकर उसे पूरी तरह सीधा कर दिया, तब से वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री लगने लगी)।

कुब्जकः [कुब्ज+कन्] एक वृक्ष का नाम; -मनु० ८।२४३, ५।२।

कुब्जिका [कुब्जक+टाप्, इत्वम्] आठवर्ष की अविवाहित लड़की।

कुभृत् (पुं०) [कु+भृ+विवप्, तुकागमः] पहाड़।

कुमारः [कुम्+आरन्, उपधायाः उत्वम्] 1. पुत्र, बालक, युवा-रघु० ३।४८ 2. पाँच वर्ष से कम आयु का बालक 3. राजकुमार, युवराज (विशेषतः नाटकों में)-विप्रोषितकुमार नद्याज्यमस्तमितेश्वरम् रघु० १२।१२. कुमारस्यायुधो बाणः-विक्रम० ५, उपवेष्टुमर्हति कुमारः-मुद्रा० ४ (मलयकेतु ने राक्षस को कहा) 4. युद्ध के देवता कार्तिकेय,-कुमारकल्प सुपुत्रं कुमारम् रघु० ५।३६, कुमारोऽपि कुमारविक्रमः-३।५५ 5. अग्नि 6. तोता 7. सिन्धु नदी। समः -पालन 1 बच्चों की देखरेख रखने वाला 2. राजा शालिवाहन, भृत्या 1. छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख 2. गर्भावस्था में स्त्री की देखरेख, प्रसूति विद्या-रघु० ३।१२, -वाहन्-वाहनः सोरः सूः (स्त्री०) 1. पार्वती का विशेषण 2. गंगा का वि०।

कुमारकः [कुमार+कन्] 1. बच्चा, युवा 2. आँख का तारा।

कुमारयति (ना० धा० पर०) खेलना, क्रीडा करना (बच्चे की तरह)।

कुमारिक (वि०) (स्त्री० की) } कुमारी+ठन्,
कुमारिन् (वि०) (स्त्री० णी) } कुमारी+इनि] जिसके लड़कियाँ हों, जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो।

कुमारिका, कुमारी [कुमारी+कन्+टाप्, कुमार+ङीप्] 1. दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की 2. अविवाहिता तरुणी, कन्या-त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती मनु० ९।९०, ११।५८, व्याहर्तुतान्योपगमात्कुमारी रघु०६।६९ 3. लड़की, पुत्री 4. दुर्गा 5. कुछ पौधों के नाम। समः पुत्रः अविवाहिता स्त्री का पुत्र, श्वशुरः विवाह से पूर्व भ्रष्ट लड़की का श्वसुर।

कुमुद् (वि०) [कु+मुद+विवप्] 1. कृपाशून्य, अभिन्न 2. लोभी (नपुं०) 1. सफ़ेद कुमुदिनी 2. लाल कमल।

कुमुदः,-दम् [की मोदते इति कुमुदम्] 1. सफ़ेद कुमुदिनी, जो कहते हैं कि चन्द्रोदय के समय खिलती है नोच्छ्वसिति तपनकिरणैश्चन्द्रस्यैवांशुभिः कुमुदम्-विक्रम० ३।१६, इसी प्रकार ऋ० ५।२८, ऋतु० ३।२, २१, २३, मेघ० ४० 2. लाल कमल, -दम् चाँदी,-दः 1. विष्णु का विशेषण 2. दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम 3. कपूर 4. बन्दरों की एक जाति 5. एक नाग जिसने अपनी छोटी बहन कुमुद्वती को राम के पुत्र कुश को प्रदान किया.-दे० रघु० १६।७५-८६। सम० -आकरः, चांदी.-आकरः, आवासः कमलों से भरा हुआ सरोवर, ईशः चन्द्रमा.-खण्डम् कमलों का समूह, नाथः, पतिः,-बन्धुः, बान्धवः,-सुहृद् (पुं०) चन्द्रमा।

कुमुदवती [कुमुद+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] कमल का पौधा।

कुमुदिनी [कुमुद+इनि] 1. सफ़ेद फूलों की कुमुदिनी -वयेन्दावनन्दं व्रजति ममपांडे कुमुदिनी-उत्तर० ५।२६, शिव० २।३४ 2. कमलों का समूह 3. कमलस्थली। सम० नायकः, पतिः चन्द्रमा।

कुमुद्वत् (वि०) [कुमुद्+मतुप्, वत्वम्] जहाँ कमलों की बहुतायत हो कुमुद्वन्तं न तारिणः-रघु० ७।१९,- ती 1. सफ़ेद फूलों की कुमुदिनी (जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है)-अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती में दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा-श० ४।२, कुमुद्वती भानुमतीव भावं (न ययौ)-रघु० ६।३६ 2. कमलों का समूह 3. कमलस्थली, ईशः चन्द्रमा।

कुमोदकः [कु+मुद्+णिच्+ण्वुल्] विष्णु का विशेषण।

कुल्या [कुल्+टाप्] वेश्यागमन का अड्डा।

कुम्भः [कु भूमि कुम्भिव से उत्पन्नि पृषोदरादि उम्भ+अच् डित्] 1. घड़ा, जलपात्र, कलश-द्वौ सुरतनी मत्तकुम्भस्तुकुम्भा जग०, वज्रमेतादृशं मिथं त्रिपकुम्भं पयोमुखम्-हि० १।३७, रघु० २।३४ इसी प्रकार कुम्भौ स्तनौ 2. हाथी के मस्तक का ललाट स्थल -हभकुम्भ-मा० ५।३२, मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूरा-भर्तृ०१।५९, 3. राशिचक्र में सत्रहवीं राशि कुम्भ 4. २० द्रोण के बराबर अनाज की तौल-मनु० ८।३२० 5. (योग दर्शन में) श्वास को नथिरा करने के लिए नाक तथा मुखविवर को बन्द करना 6. वेश्या का पेशा। सम०-कर्णः 'घड़े के सदृश कान वाला' एक महाकाय राक्षस जो रावण का भाई था तथा राम के हाथों मारा गया था (कहते हैं कि इस राक्षस ने हजारों प्राणी, ऋषि तथा स्वर्गीय अप्सराओं को अपने मुँह का ग्रास बना लिया, देवता उत्सुकतापूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे, जब कि इस शक्तिशाली राक्षस से मुक्ति मिले। इन्द्र और उसके हाथी ऐरावत के दैन्यभाव के कारण ब्रह्मा ने इसे शाप दिया। तब से कुम्भकर्ण अत्यन्त घोर तपस्या करने लगा। ब्रह्मा प्रसन्न हुआ, और उसे वरदान देने ही वाला था कि देवों ने सरस्वती से प्रार्थना की कि वह कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर उसे बदल दे। तदनुसार जब वह ब्रह्मा के पास गया तो 'इन्द्रपद' माँगने के बजाय उसके मुँह से 'निद्रापद' निकला, जो उसी समय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वीकार कर लिया गया। कहते हैं कि वह छः महीने सोता था और फिर केवल एक दिन के लिए जागता था। जब लंका को राम की वानरसेना ने घेर लिया तो रावण ने बड़ी कठिनाई के साथ कुंभकर्ण को जगाया जिससे कि वह उसकी प्रबल शक्ति का उपयोग कर सके। २००० कलश सुरा पीने के पश्चात् कुम्भकर्ण ने हजारों बन्दरों को अपना मुखग्रास बनाने के अतिरिक्त सुग्रीव को बन्दी बना लिया। अन्त में कुंभकर्ण राम के हाथों मारा गया),—कार: 1. कुम्हार—याज्ञ० ३।१४६ 2. वर्ण संकर जाति (वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात्कुम्भकारः स उच्यते— उशना, या मालाकारात्कर्मकरयां कुम्भकारो व्यजायत पराशर), -घोणः एक नगर का नाम,—ज:,-जन्मन् (पुं),—योनिः,- संभवः 1. अगस्त्य मुनि के विशेषण—प्रसमादोदयादभ्रः कुम्भयोनेर्महौजसः —रघु० ४।२२, १५।५५ 2. कौरव और पाडवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण, —वासी कुट्टिनी, दूती (कभी कभी यह शब्द गाली के रूप में प्रयुक्त होता है)- लग्नम् दिन का वह समय जब कि राशि चक्र क्षितिज के ऊपर उदय होता है,—संधिः हाथी के सिर पर ललाटस्थलियों के बीच का गर्त।

कुम्भकः [कुम्भ+कन्+क+क वा] 1. स्तंभ का आधार 2. (योगदर्शन में) प्राणायाम का एक प्रकार जिसमें दाहिने हाथ की अंगुलियों से दोनों नथुने और मुख बंद करके सांस रोका जाता है।

कुम्भा [कुत्सितम् उम्भति पूरयति इति—उम्भ्+अच्+टाप् शक्यं परुषम्] वेश्या, वारांगना।

कुम्भिका [कुम्भ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटा बर्तन 2. वेश्या।

कुम्भिन् [कुम्भ+इनि] 1. हाथी भामि० १।५७ 2. मगरमच्छ। सम०—नरकः एक विशेष प्रकार का नरक, —मदः हाथी के मस्तक से बहने वाला मद।

कुम्भिलः [कुम्भ+इलच्] 1. सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर, 2. काला चोर, लेख चोर 3. साला, पत्नी का भाई 4. गर्भ पूरा होने से पहले ही उत्पन्न बालक।

कुम्भी [कुम्भ+ङीष्] पानी का छोटा पात्र, घड़िया। सम०, —नसः एक प्रकार का विषैला सांप—उत्तर० २।२९, पाकः (ए० व० या द० व०) एक विशेष प्रकार का नरक जिसमें पापी जन कुम्हार के बर्तनों की भांति पकाये जाते हैं—याज्ञ० ३।२२५, मनु० १२।७६।

कुम्भीकः [कुभी+कै+क] पुन्नागवृक्ष। सम०—मक्षिका एक प्रकार की मक्खी।

कुम्भीरः [कुम्भिन्+ईर्+अण्] घड़ियाल।

कुम्भीरकः, कुम्भीलः, कुम्भीलकः [कुम्भीर+कन्, रस्य लः, ततः कन् च] चोर - लोप्त्रेण मृद्गीतस्य कुम्भीरकस्यास्ति वा प्रतिवचनम्— विक्रम० २, कुम्भीलकैः कामुकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४।

कुर (तुदा० पर०—कुरति) शब्द करना, ध्वनि करना

कुरकुरः, कुरकुरः [कुरम् इति अव्यक्तशब्दं करोति—कुरम्+कृ+ट, कुरम्+कुर्+अच् च] सारस पक्षी।

कुरंगः (स्त्री०—गी) [कु+अङ्गच्] 1. हरिण— तस्मै बूहि कुरंगः कुत्र भवतां कि नाम तत्तं तपः—भाव० १।१४, ४।६ लंबगी कुरंगी दृगंगीकरोतु—जग० 2. हरिण की एक जाति (कुरंग ईषन्नाभ्रः स्याद्धरिणाकृतिको महान्)। सम०—अक्षी,—नयना, —नेत्रा हरिण जैसी आंखों वाली स्त्री,- नाभिः कस्तूरी।

कुरंगमः [कुर+गम्+खच्, मुम्] दे० 'कुरंग'।

कुरचिल्लः [कुर+चिल्ल्+अच्] केकड़ा।

कुरटः [कुर्+अटन्+कित्] जूता बनाने वाला, मोची।

कुरंटः, कुरंटकः, कुरंटिका [कुर्+अण्टक्, कुरण्ट+कन्, स्त्रियां टाप् इत्वम्] पीला सदाबहार, कटसरैया।

कुरंडः [कुर्+अण्डच्] अण्डकोश की वृद्धि, एक रोग जिसमें पोते बड़ जाते हैं।

कुररः (लः) [कु+कुरच्, रलयोरभेदः] क्रौंच पक्षी, समुद्री उकाब।

कुररी [कुरर+ङीष्] 1. मादा क्रौंच, —चक्रन्द विस्ना कुररीव भूयः—रघु० १४।६८ 2. भेड़। सम०- गणः क्रौंच पक्षियों का झुंड।

कुरबः (बः), कुरवः (वः) कम् [ईषत् रवो यत्र इति, कुरव+कन्] सदाबहार या कटसरैया की जाति, कुरबकाः रक्तकरणटा यथाः रघु० ९।२९, मेघ० ७८, ऋतु० ६।१८ - बं (बं), - वः (वः) कम् सदाबहार का फूल —चूडापाशे नवकुरबकम्—मेघ० ७।५, प्रत्याख्यातविलेपनकम् कुरबकं श्यामाधिवासनाकारणम्—मालवि० २।५।

कुरीरम् [कुर्+ईरन्, उकारादेशः] स्त्रियों का एक प्रकार का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा।

कुरुः (ब०व०) [कु—कु उकारादेशः] 1. वर्तमान दिल्ली के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश—श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्—कि० १।१, चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते—१।१७ 2. इस देश के राजा—रुः 1.पुरोहित 2. भात। सम०—क्षेत्रम् दिल्ली के निकट एक विस्तृत क्षेत्र जहां कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था - धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता: युयुत्सवः भग० १।१, मनु० ७।१९,—जाङ्गलम्=कुरुक्षेत्रम्- राज (पु०)—राजः दुर्योधन का विशेषण,- वित्तः ७०० ड्राय ग्रेन के बराबर (४ तोले) सोने का तोल। —वृद्धः भीष्म का विशेषण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुण्टः (पुं०) लालरंग का सदाबहार, टी काठ की गुड़िया पुत्तलिका।

कुलः (पुं०) बालों का गुच्छा, विशेषकर माथे पर बिखरी हुई जुल्फ।

कुलवक=कुरबक।

कुलिंदः,-दम् [कुल+विद्+अ, मुम्] लालमणि—दम् 1. काला नमक 2 दर्पण।

कुलिटः [कुल+कुट्+क] 1. मुर्गा 2. कूड़ा-करकट।

कुलीरः [कुर्+कुर्+क | कुला,+उपकर्णमपि प्राप्तं निःस्वं मन्यति कुलीरम् पच० २।९०, अने० पा०।

कुल्किका=कुक्किका।

कुर्द,कुर्दन=दे० कुर्द, कुर्दन।

कु (कू) पंरः [कुर्+किरच्, कुर् ।-पृ ; अच् पक्षे दीर्घः नि०] 1. घुटना 2. कोहनी।

कु (कू) पांसः, कु (कू) पांसकः [कुपंर ।-अस् ।-घञ्, पृषो०, कुपांस (कूपांस) ।-कन्] स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अँगिया या चोली 1. मर्दानकूपांसकपोडितस्तनाः-घटु० ५।८, ४।१६ अने० पा०।

कुबंत (शतृ०त) [कु -शतृ] करता हुआ (पुं०) 1. नौकर 2. जूते बनाने वाला।

कुलम् [कुल ।-क] 1. वंश, परिवार निदानविष्वाकुकुलस्य मन्महे-रघु० ३।१ 2. पारिवारिक आवास, आसन घर, गृह-वंसत्रविकुलेषु भ.-रघु० १२।२५ 3. उत्तमकुल, उच्च वंश, भला घराना -कुले जन्म-पंच० ५।२, कुलशीलसमन्वित- मनु० ७।५४, ६२, इसी प्रकार कुलजा, कुलकन्यका आदि 4 रेवड़, दल, झुंड, संग्रह, समूह -मृगकुल रोमन्थमभ्यस्यतु-श० २।५ अलिकुलसङ्कुल- -गीत० १, शि० ९।७१, इसी प्रकार गो,° कृमि° मक्षिका° आदि 5. वृद्ध. टीला, दल (वृक्ष अर्थ में) 6. शरीर 7. सामने का या अगला भाग. -लः किसी निगम या संघ का अध्यक्ष। सम०-अकुल (वि०) 1. निम्न चरित्रबल का 2. मध्यम श्रेणी का, °तिथिः (पुं०-स्त्री०) चंद्रमास के पक्ष की द्वितीया, पष्ठी और दशमी, °वारः बुधवार,—अङ्गना आदरणीय तथा उच्च वंश की स्त्री,—अङ्गारः जो अपने कुल को नष्ट करता है,—अचलः, -अद्रिः, पर्वतः,—औलः मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं उन सात पहाड़ों में से एक, उनके नाम ये हैं: महेन्द्रो मलयः सह्यः शक्तिमान् ऋक्षपर्वतः, विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः। अन्वित (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न, अभिमानः कुल का गौरव,—आचारः किसी परिवार या जाति का विशेष कर्तव्य या रिवाज, -आचार्यः 1. कुलपुरोहित या कुलगुरु 2. वंशावलीप्रणेता,—आलम्बिन् (वि०) परिवार का पालन पोषण करने वाला,—ईश्वरः 1. परिवार का मुखिया 2. शिव का नाम,—उत्कट (वि०) उच्चकुलोद्भव (ट:) अच्छी नस्ल का घोड़ा= उत्पन्न, उद्गत, उद्भव (वि०) भले कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव,—उद्वहः कुटुंब का मुखिया या उसे अमर बनाने वाला दे० उद्वहि,—उपदेशः खानदानी नाम,—कज्जलः कुलकलंक, -कण्टकः जो अपने कुटुंब के लिए कांटे की भांति कष्टदायक हो, -कन्यका,—कन्या उच्चकुल में उत्पन्न लड़की विशुद्धवृत्तः कुलकन्यकाजनः—मा० ७।१, गृहे-गृहे पुरुषाः कुलकन्यका समुद्वहन्ति—मा० ७, करः कुलप्रवर्तक, कुल का आदिपुरुष,—कर्मन् (नपुं०) अपने कुल की विशेष रीति,—कलङ्कः जो अपने कुल के लिए अपमान का कारण हो, -क्षयः 1. कुटुंब का नाश 2. कुल की परिसमाप्ति, -गिरिः, भृत (पुं०) -पर्वतः दे० कुलाचल ऊपर,— घ्न (वि०) कुल को बर्बाद करने वाला दोषैरेतैः कुलघ्नानाम् भग० १।४२,—ज,—जात (वि०) 1. अच्छे कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव 2. कुलक्रमागत, आनुवंशिक नि० १।३१ (दोनों अर्थों में प्रयुक्त),—जनः उच्चकुलोद्भव या सम्माननीय पुरुष, तत्त्वः जो अपने कुल को बनाये रखता है, -तिथिः (पुं० स्त्री०) महत्त्वपूर्ण तिथि, नामतः चांद्र पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी और चतुर्दशी,—तिलकः कुटुंब की कीर्ति, जो अपने कुल की सम्मानित करता है, दीपः—दीपकः जिससे कुल का नाम उजागर हो,—दुहितृ (स्त्री०) दे० कुलकन्या, -देवता अभिभावक देवता, कुल का संरक्षक देवता -कु० ७।२७—धर्मः कुल की रीति, अपने कुल का कर्तव्य या विशेष रीति—उद्धरन्ति कुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन - भग० १।४३ मनु० १।११८, ८।१४,—धारकः पुत्र, -धुर्यः परिवार का भरणपोषण करने में समर्थ (पुत्र), वयस्क पुत्र- न हि सति कुलधुर्ये सूर्यस्यंशा गृहाय—रघु० ७।७१,—नन्दन (वि०) अपने कुल को प्रसन्न तथा सम्मानित करने वाला, -नायिका वाममार्गी शाक्तों की तान्त्रिकपूजा के उत्सव के अवसर पर जिस लड़की की पूजा की जाय, —नारी उच्चकुलोद्भव सती साध्वी स्त्री,—नाशः 1 कुल का नाश या बरबादी 2. विधर्मी, आचारहीन, बहिष्कृत 3. ऊँट, परम्परा वंश को बनाने वाली पीढ़ियों की श्रेणी, -पतिः 1. कुटुंब का मुखिया 2. वह ऋषि जो दस सहस्र विद्यार्थियों का पालनपोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है -परिभाषा—मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्, अध्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः। -अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात् श० १, रघु० १।९५, उत्तर० ३।४८, पांसुला कुलटा स्त्री जो अपने कुल को कलंक लगावे, व्यभिचारिणी स्त्री, -पालिः—पालिका,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—पाली (स्त्री०) उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री,—पुत्रः अच्छे कुल में उत्पन्न बेटा—इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रसमाद्गमाः मृच्छ० ४।१०, —पुरुषः 1. सम्मान के योग्य तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुरुष—कदाचिद्वर्तते कुलपुरुषो वेश्याग्रहफलकं मनोज्ञमपि—भर्तृ० १।९२ 2. पूर्वज,—पूर्वजः पूर्व पुरुष,—भार्या सती साध्वी पत्नी, भूत्या गर्भवती स्त्री की परिचर्या, मर्यादा कुल का सम्मान या प्रतिष्ठा, —मार्गः कुल की रीति, सर्वोत्तमरीति या ईमानदारी का व्यवहार, योषित्, —वधू (स्त्री०) अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री, —वारः मुख्य दिन (अर्थात् गंगलवार और शुक्रवार) —विद्या कुलक्रमागत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान, —विधः कुलपुरोहित, —वृद्धः परिवार का बूढ़ा तथा अनुभवी पुरुष, —व्रतः,—तम् कुल का व्रत या प्रतिज्ञा —शालिनयगामिन्यावाकूपामिदं हि कुलव्रतम् रघु० ३।३०, श्रिय्वसिमन्वधुनाऽन्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः —भामि० १।१३,—श्रेष्ठिन् (पुं०) किसी कुटुंब या श्रमिकसंघ का मुखिया 2. उच्चकुल में उत्पन्न शिल्पकार, —संस्था 1. कुल की प्रतिष्ठा 2. सम्मानित परिवारों में गणना—मनु० ३।६६, —सन्ततिः (स्त्री०) संतान, वंशज, वंशपरम्परा मनु ५।१५९, —संभव (वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न, —सेवकः श्रेष्ठ नौकर,—स्त्री उच्च कुल की स्त्री, कुलवधुओं,—अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः भग० १।४१, —स्थितिः (स्त्री०) कुटुंब की प्राचीनता या समृद्धि।

कुलक (वि०) [कुल + कन्] अच्छे कुल का, अच्छे कुल में उगा हुआ, क: 1. शिल्पियों की श्रेणी का मुखिया 2. उच्च कुल में उत्पन्न शिल्पकार 3. चौथी, —कम् 1. संग्रह, समूह 2. व्याकरण की दृष्टि से सम्बद्ध श्लोकों का समूह, (पाँच से पन्द्रह तक के श्लोकों का समूह जो एक वाक्य बनाते हों) उदा० ३० शि० १।२—१०, रघु० १।५—९, इसी प्रकार कु० १।११—६।

कुलटा [कुल + अट् + अच् + टाप् शक० पररूपम्] व्यभिचारिणी स्त्री—मुद्रा० ३।५, याज्ञ० १।२१५। सम०—पतिः भ्राता या जारिणी स्त्री का स्वामी।

कुलतः (अव्य०) कुल से—तमिल्] जन्म से।

कुलत्थः [कुल—स्था + क पृषो० साधु:] कुलथी, एक प्रकार की दाल।

कुलन्धर (वि०) [कुल + धृ + खच्, मुम्] अपने कुल का सिलसिला चलाने वाला।

कुलम्भरः,—लः [कुल + भृ + खच्, मुम्] चोर।

कुलवत् [कुल + मतुप्, मस्य वत्वम्] कुलीन, अच्छे घराने में उत्पन्न।

कुलायः,-यम् [कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र—कुल—अय् + घञ्] पक्षियों का घोंसला,—कृजत्कलत्रकलीन-कुक्कुटकुलाः कले कुलायद्रुमाः उत्तर० २।९, वै० १। १४१ 2. शरीर 3. स्थान, जगह 4. बना हुआ वस्त्र, जाला 5. वस्त्र या पात्र। सम०—निलयः घोंसले में बैठना, अंडे सेना, अंडों में से उनके निकलने के लिए अंडों के ऊपर बैठना। —स्थः पक्षी।

कुलायिका [कुलाय + ठन् + टाप्] पक्षियों का पिंजड़ा, चिड़ियाघर, कबूतरखाना, दड़बा।

कुलालः [कुल् + कालन्] 1. कुम्हार, प्रजा वै कुलालचक्रमिदं ब्रह्माण्डभाण्डोदरं—भर्तृ० २।९५ 2. जंगली मुर्गा।

कुलिः [कुल् + इन्, किच्] हाथ।

कुलिक (वि०) [कुल + ठन्] अच्छे कुल का, उत्तम कुल में उत्पन्न, कः 1. स्वजन—याज्ञ० २।२३३ 2. शिल्पिसंघ का मुखिया 3. उच्चकुलोद्भव कलाकार। सम०—वेला दिन का वह समय जबकि कोई शुभ कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए।

कुलिङ्गः [कु—लिङ्ग + अच्] 1. पक्षी 2. चिड़िया।

कुलिन (वि०) (स्त्री०—नी) [कुल—इनि] कुलीन, उच्चकुलोद्भव, (पुं०) पहाड़।

कुलिन्दः (ब० व०) [कुल् + इन्द] एक देश तथा उसके शासकों का नाम।

कुलिरः,—रम् [कुल—इरन्, किच्] 1. केकड़ा 2. राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि।

कुलिश (क्ली) श., शम् [कुलि + शी + ड, पृषो० पधो० दीर्घः] इन्द्र का वज्र बलस्य हन्तुः कुलिशं कुण्ठितं शीर्ण मस्यले—कु० २।२०, भेदनाज्ञे कुलिशक्षतानाम् —१।२०, रघु० ३।६८, ४।८८, आघरे ६६ 2. वज्र का सिरा या फलक 3. गोघ० ६१। सम०—धरः,—पाणिः इन्द्र का विशेषण, नायकः मैथुन की विशेष रीति, रतिसंबंध।

कुली [कुलि + ङीष्] पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साली।

कुलीन (वि०) [कुल—खञ्] ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का, उत्तम परिवार में जन्म हुआ, दिष्ट्यायोषितमिवाकुलीनाम्—का० ११,—नः अच्छी नसल का घोड़ा।

कुलीनसम् [कुलीनं भूमिलम्बं द्रव्यं स्यति—कुलीन—सो + क] पानी।

कुलीरः,—रकः [कुल—ईरन्, किच्; कुलीर + कन्] 1. केकड़ा 2. राशिचक्र में चौथी राशि, कर्क राशि।

कुलत्कगुञ्जा [की पक्षियों की लुकाछिपी गुञ्ज इव] लुकाठी, जलती हुई लकड़ी।

कुलूतः (ब० व०) एक देश और उसके शासकों का नाम।

कुल्माषम् [कुल् + क्विप्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० व०] कांजी, षः एक प्रकार का अनाज। सम०—अभिषुतम् कांजी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुल्य (वि०) | कुल | यत् | 1. कुटुंब, वंश या निगम से संबंध रखने वाला 2. सत्कुलोद्भव, -ल्यः प्रतिष्ठित मनुष्य, -ल्यम् 1. कौटुंबिक विषयों में मित्रों की भांति पूछताछ (समवेदना, बधाई आदि) 2. हड्डी—महावी० २।१९ 3. मांस 4. छाज,—ल्या 1. शालवी स्त्री 2. छोटी नदी, नहर, सरिता—कुल्याम्भोभिः श्वपचपल्वैः शान्तिनो भीतमूकैः शि० १।१५, कुल्यैर्दोग्धानपादपान् -रघु० १२।३ ७।४९ 3. परिखा, खाई 4. आठ द्रोण के बराबर अनाज की तौल।

कुवस् [कु+वा+क] 1. फूल 2. कमल।

कुवर—दे० तुवर।

कुवलम् [कु+वल्+अच्] 1. कुमुद 2. मोती 3. पानी।

कुवलयम् [कोः पृथिव्याः वलयमिव—उप० स०] 1. नीला कुमुद कुवलयदलस्निग्धैरन्तर्दृशां तपनोत्सवम्—उत्तर० ३।२२ 2. कुमुद 3. पृथ्वी (पुं० भी)।

कुवलयिनी [कुवलय+इनि+ङीप्] 1. नीली कुमुदिनी का पौधा 2. कमलों का समूह 3. कमलसंबंधी 4. कमल का पौधा।

कुवाद (वि०) [कु+वद्+अच्] 1. मान घटाने वाला, साख कम करने वाला, निन्दक 2. नीच, कुत्सित, अधम।

कुविकः (ब० व०) एक देश का नाम।

कुवि (वि०) स्तुत्य [कु, विद्+इ, मुम्, कुप्+क्विन्] 1. बुनकर कुविन्दरचितं नानापट्टांशु गुणग्रामगर्भितः -कथा० ७ 2. जुलाहा जाति का नाम।

कुवेणी [कु—वेण्+ङीष्] 1. मछलियां रखने की टोकरी [कुत्सिता वेणी] 2. बुरी तरह बंधी हुई मिर की चोटी।

कुवेलम् [कुवेषु जलजपुष्पेषु ई लीनो लाति-कुवे+ई+ला+क] कमल।

कुशः [कुश्+घञ्] 1. एक प्रकार का घास (इसे) जो पवित्र माना जाता है और बहुत से धर्मानुष्ठानों में जिसका होना आवश्यक समझा जाता है—दर्भिकायैः क्षेम कुनाः शाद्वलगन्धं—कुशकृत प्रवाताम्बु दिष्टस्य—रघु० ८।२८, १।४९, ९५ 2. राम के दो पुत्र का नाम (वह राम के जुड़वां पुत्रों में से एक था, जब रामने सीता को निष्ठुरतापूर्वक जंगल में छोड़ दिया था, उसके बाद शोध ही जुड़वां पुत्रों का जन्म हुआ जिनमें कुश बड़ा था क्योंकि उसने संसार को पहले देखा; कुश और लव दोनों भाइयों का पालन पोषण वाल्मीकि ने किया, उन्हें आदिकवि के महाकाव्य रामायण का पाठ करना सिखाया गया। राम ने कुश को कुशावती का राजा बना दिया और वह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक वहां रहा। परन्तु अयोध्या की पुरानी राजधानी को अधिष्ठात्री-देवी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और कहा कि उसे इस प्रकार देवी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, तब कुश अयोध्या को लौट आया दे० रघु १६।३—४२),—शम् पानी जैसा कि 'कुशेशय' में। समः—अग्रम् कुशघास के पत्ते का तेज किनारा, इसीलिए समास में यह शब्द प्रायः 'तीक्ष्ण' 'तेज' और 'तीव्र' अर्थ प्रकट करता है जैसाकि 'बुद्धि (वि०) तीव्रबुद्धि, तेजबुद्धि वाला, तीक्ष्णबुद्धि; —(अग्रि) कुशाग्रबुद्धे कुशली गुरुस्ते- रघु० ५।४, अङ्गुलीयम् (वि०) लोहे, तांबे,—अङ्गुरीयम् कुशघास की बनी अंगूठी जो धर्मानुष्ठान के अवसर पर पहनी जाती है, आसनम् कुशा का बना हुआ आसन या चटाई, स्थलम् उत्तर भारत में एक स्थान का नाम वेणी० १।

कुशल (वि०) [कुशान् लातीति—कुश+ला+क] 1. सही, उचित, मंगल शुभ—शि० १६।४१, भग० १८।१० 2. प्रसन्न, समृद्ध 3. योग्य, दक्ष, चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ (अधि० के साथ या समास में)—दण्डनीत्यां च कुशलम् याज्ञ० १।३१३, २।१८१, मनु० ७।१९० रघु० ३।१२, लम् 1 कल्याण, प्रसन्न तथा समृद्ध अवस्था, प्रशस्तता, -पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रमपदेषु च मुनिः -रघु० १।५८, अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वाम् मेघ० १०१ अपि कुशलं भवतः 'आप अच्छी तरह से हैं ?' 2. गूण 3. चतुराई, योग्यता। समः—काम (वि०) प्रसन्नता का इच्छुक,—प्रश्नः किसी से कुशलमंगल पूछना (मित्रों की भांति),—बुद्धि (वि०) बुद्धिमान्, समझदार, तीव्रबुद्धि, तीक्ष्णबुद्धि।

कुशलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुशल+इनि] प्रसन्न, राजी खुशी, समृद्ध- अथ भगवल्लोकानुग्रहाय कुशली काश्यपः- श० ५, रघु० ५।४, वेष० ११२।

कुशा [कुश+टाप्] 1. रस्सी 2. लगाम।

कुशावती [कुश+मतुप्, मस्य वः, दीर्घः] इस नाम की एक नगरी, राम के पुत्र कुश की राजधानी, दे० 'कुश'।

कुशिक (वि०) [कुश+ठन्] भेंगी आंख वाला,- कः 1. विश्वामित्र के दादा का नाम, (कुछ दूसरे वर्णनों के अनुसार- विश्वामित्र के पिता का नाम) 2. फाली (हल की) 3. तेल की गाद।

कुशी [कुश+ङीष्] हल की फाली।

कुशीलवः [कुत्सितं शीलमस्य—कुशील+व] 1. भाट, गवैया—मनु० ८।६५, १०२ 2. (नाटक का) पात्र, नर्तक तत्सर्वं कुशीलवाः सङ्गीतप्रयोगेण मत्प्रमोदित-समादलाय प्रवर्तन्ताम् -मा० १, तत्क्रियते नारम्भयसि कुशीलवैः सह सङ्गीतकम्- वेणी० १ 3. समाचार फैलाने वाला 4. वाल्मीकि का विशेषण।

कुशुम्भः [कु+शुम्भ्+अच्] संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुशूलः [कुस्+ऊलच्, पृषो० सम्प्र० शत्वम्] 1. अन्नागार (खत्ती), कोठी, भंडार--को धन्यो बहुभिः पुत्रैः कुशूलापूरणावधेः--हि० प्र० २० 2. भूसी से बनाई हुई आग ।

कुशेशयम् [कुशे+शी+अच्, अलुक् स०] कुमुद, कमल --मृणालकुशशायरजोनुदुरुरुस्थाः(परुषाः)--शि० ४।१०, रघु० ९।१८,—यः सारस पक्षी ।

कुष् (कषा० पर० —कृष्णाति, कुषित) 1. फाड़ना, चिथड़ा-उना, खींचना, निकालना--शिरा कुष्णन्ति मांसानि --भट्टि० १८।१२, १७।१०, ७।९५ 2. जाँचना, परीक्षा लेना 3. चमकना, निस्- निचोड़ना, फाड़ना, निकालना--उपान्त्यवोनिकुषित विहङ्गैः रघु० ७।५७, भट्टि० ९।३०, ५।४२, इसी प्रकार --काकैर्निकुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लोहितम् - गंगाष्टक ।

कुषाकुः [कुष्+काकु] 1. सूर्य 2. अग्नि 3. लोहार, बढ़ई ।

कुष्ठः,-ष्ठम् [कुष्+क्थन] कोढ़ (कोढ़ १८ प्रकार का होता है) —गलत्कुष्ठाभिभूताय च—भर्तृ० १।१०० । सम०--अरिः 1. गंधक 2. कुछ पौधों के नाम ।

कुष्ठिन (वि०) [कुष्ठ+इनच्] कोढ़ से पीड़ित, कोढ़-ग्रस्त ।

कुष्ठिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुष्ठ+इनि] कोढ़ी ।

कुष्माण्डः [कु ईषत् उष्मा अण्डेऽस्मिन् गर्भे--ब० स० शकं० पररूपम्] एक प्रकार की लौकी, तुमड़ी, कुम्हड़ा ।

कुस् (दिवा० पर०- कुस्यति, कुसित) 1. आलिंगन करना 2. घरना ।

कुसितः [कुस्+क्त] 1. आवाद देश 2. जो सूद से जीविका चलाता है, दे० 'कुसीद' नी० ।

कुसी (सि) द [कुस् + ईद] (इसे 'कुसीद' या 'कुसीद' भी लिखते हैं) साहूकार, मुनाफोर— दम् 1. वह कर्जा या वस्तु जो ब्याज सहित लौटाली जाय 2. उधार देना, सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय —कुसीदाद् दारिद्र्यं परकरगतन्यन्यिशमनात् पंच० १।११, मनु० ९।९०, ८।१४०, याज्ञ० १।१५९ । सम०— पथः सूदखोरी, सूदखोर (पठान) का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक ब्याज — वृद्धिः (स्त्री०) घर पर मिलने वाला ब्याज, · कुसीदवृद्धिर्देयेष्वन्यत्र नात्यधिकं सकृद्दाहता --मनु० ८।१५१ ।

कुसीदा [कुसीद+टाप्] सूदखोर स्त्री ।

कुसीदायी [कुसीद ' डीए, ऐ आदेशः] सूदखोर की पत्नी ।

कुसीदिकः - कुसीदिन् (पु०) [कुसीद+ठन्, इनि वा] सूदखोर ।

कुसुमम् [कुस् + उम] 1. फूल,— उदेति पूर्व कुसुमं ततः फलम्,--शि० ७।३० 2. ऋतुस्राव 3. फल । सम० —अञ्जनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भांति प्रयुक्त होती है, · अञ्जलिः मुट्ठी भर फूल, · अधिपः, — अधिराज् (पु०) चम्पक वृक्ष (इसके फूल पीले रंग के सुगंधयुक्त होते हैं), · अवचायः फूलों का चुनना · अन्यत्र यूयं कुसुमावचायं कुरुध्वमस्मिन् करोमि सख्यः कालव० ३,--अवशिष्टकम् फूलों का गजरा, · अस्त्रः, आयुधः,--इषुः,—बाणः, · शरः 1. पुष्प-मय बाण 2. कामदेव, · अभिनवः कुसुमेषुव्यापारः भा० १ यहाँ 'कुसुमेषु व्यापारः' भी पढ़ा जा सकता है) तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय—भर्तृ० १।१, ऋतु० ६।३३, वीर० २०, २३, रघु० ७।६१, शि० ८।७०, ३।२ कुसुमशरबाणभावेन-गीत० १०,—आकरः 1. उद्यान 2. फूलों का गच्छा 3. अमल क्रतु ऋतुना कुसुमाकरः--भग० १०।३५, इसी प्रकार भामि० १।४८, —आस्तरकम् केसर, जायफल, —आसवम् 1. शहद 2. एक प्रकार की सादक मदिरा (फूलों से तैयार की गई), उज्ज्वल (वि०) फूलों से चमकीला, कार्मुकः, ···चापः,—धन्वन् (पु०) कामदेव के विशेषण कुसुम-चापमनेनवयंसमीः - रघु० ९।३९, ऋतु० ६।२७, · चित (वि०) फूलों का अम्बार हो गया है जहाँ पुरम् पाटलीपुत्र (पटना) का नाम कुसुमपुराभि-योग प्रत्यनन्दासीनो राक्षस मुद्रा० २, लता खिली हुई लता, · शयनम् फूलों की शय्या - विक्रम० ३।२०, · स्तवकः फूलों का गच्छा, मुलस्तवः कुसुमस्तवैक-स्नेह हे गती स्त्री मनस्विनाम् - भर्तृ० २।३३ ।

कुसुमवती [कुसुम—मतुप्—ङीप्, सम्प्र० क] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री ।

कुसुमित (वि०) [कुसुम—इतच्] फूलों से युक्त, फूलों से सुसज्जित ।

कुसुमास्त्रः [कुसुमवत् योग्यतानि द्रव्याणि अस्त्राणि इति कुसुम—अस्त्र+अच्] कामदेव ।

कुसुम्भः,-भम् [कुस्+उम्भ] 1. कुसुम्भा, —कुसुम्भारण्य चारु केलि वनानाम्—रघु०, रघु० ९।६ 2. केसर 3. सन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु,—भम् सोना,—भः वाह्य रसेह (कुसुम्भी रंग से तुलना की गई है) ।

कुसूलः [कुस्+ऊलच्] 1. अन्नागार (खत्ती), भण्डार, गृह (अनाज आदि के लिए) ।

कुसृतिः (स्त्री०) [कुत्सिता सृतिः] जालसाजी, ठगी, धोखा-देही ।

कुस्तुभः [कुस्+स्तुभ्+क] 1. विष्णु 2. समुद्र ।

कुहः [कुह, +क्विप्+अच्] कुहेर, इन्द्रजाल ।

कुहकः [कुह,+ण्वुल्] छली, ठग, चालाक (मिथ्याचिक), ··कम्,—का चालाकी, धोखा । सम०—कार (वि०) कपटी, छलिया, · चकित (वि०) दोषपेज से डरा हुआ, शक करने वाला, सावधान, गजग—हि० ४।१०२, ·स्वनः,· स्वरः मुर्गा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुहनः [कु+हन+अच्] 1. मूसा 2. सांप—नम् 1. छोटा मिट्टी का बर्तन 2. सीपी का बर्तन।

कुहना, कुहनिका [कुह्+ यु, कुहन+क+टाप्, इत्वम्] स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक कट्टी साधनाओं का अनुष्ठान, दंभ।

कुहरम् [कुह्+क—कुहं राति, रा+क] 1. गुफा, गड्ढा —जैसा कि 'नाभिकुहर' या आस्य में 2. कान 3. गला 4. मार्मोद्य 5. मैथुन।

कुहरितम् [कुहर+इतच्] 1. ध्वनि 2. कोयल की कुक 3. मैथुन के समय सी, सी का शब्द।

कुहूः, कूहूः (स्त्री०) [कुह्+कु, कुह्+ऊह्] 1. नया चंद्र-दिवस अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन—(अमावस्या) जब कि चन्द्रमा अदृश्य होता है कण्वतैव गता यदियं कुहूः—नै० ४।५७ 2. इस दिन की अधिष्ठात्री देवी —मनु० ३।८६ 3. कोयल की कुक सिनीवाली कुहूरिति ब्रूयाद्दर्शे पूर्णेन्दुदर्शने—याज्ञ० १।२७२, उत्तरार्धे कुहूः सिनीवाली स्यात्प्रतिपद्युक्तलक्षणा—मिता० 4. मैथुन 5. कोयल की कुक 6. एक प्रकार का रोग 7. एक नदी का नाम—कुहूरिव ज्योत्स्नाम्—भट्ट० १४।२०, १३०, १४।५, १५।६६, १६।२९।

कूः (अव्य०) [कु+क्विप्] पृथिवी, धरती।

कूकः [कू+घञ्] स्त्री का गर्भ (विशेष कर उत्थान या अविवाहित स्त्री का) दे० कुमारी।

कूकिका, कूकी [कूक+ण्वुल्—कन्+टाप्, इत्वम्, ह्रस्व ईत्व] 1. थाली का बना छोटा ढक्कन, कटोरी 2. सारी।

कूज् [भ्वा० प० से०—कूजति, कूजित] अस्पष्ट ध्वनि करना, गूंजना, कूजना, कलरव करना, कूजन राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्—रामा०, पुरंध्रीणां कलापेषु कामयूरं चकर्ष कुः २।३७, भट्ट० ६।, ७७, रघु० १।२२, नै० २।१०५ वि, परि, वि, कूजना, कुक की अस्पष्ट ध्वनि करना।

कूजः, कूजनम्, कूजितम् [कूज्+अच्, ल्युट्, क्त] 1. कूजना, कुक की ध्वनि करना 2. पक्षियों की घरघराहट।

कूट [वि०] [कूट्+अच्] 1. मिथ्या, जैसा कि 'कूटसाक्ष्य, पूर्वसाक्षिणः' में याज्ञ० २।८० 2. अकल्याण, शिव, दुष्ट, —टम् 1. जालसाजी, छल, धोखा 2. चोरी, जालसाजी से चोरी हुई वस्तुएं 3. जटिल प्रश्न, पहेली या उलझनदार स्थल जैसा कि कूटश्लोक और कूटाख्यायिका 4. मिथ्यात्व, असत्यता (प्राय. समास में विशेषण के बल के साथ प्रयोग) **वचनम्**, झूठे या धोखे में डालने वाले शब्द °तुला, °मानम् आदि 5. पहाड़ का शिखर या चोटी—वर्षत्यसौ बलवानिन्द्रगोपारुणैर्मुनिभिः—रघु० ४।३१, मेघ० ११३ 6. उभार या उत्सुकता 7. अपने उभारों समेत माथे की हड्डी, सिर का शिखा 8. सींग 9. सिरा, किनारा—याज्ञ० ३।९६ 10. प्रधान, मुख्य 11. राशि, ढेर, समूह; अभ्रकूटम् बादलों का समूह, इसी प्रकार अन्नकूटम् - अनाज का ढेर 12. हथौड़ा, घन 13. हल की फाली, कुदाली 14. हरिणों को फंसाने का जाल 15. गुप्ती, जैसे इसी स्थान में बर्छी, या हाथ की यष्टिका में कृपाण 16. जालकपट, द्यूत 1. घर, आवास 2. आरम्भ की उपाधि। सम०—अक्षः छल का पासा (सोना या पारा भरा हुआ जिसमें फेंकने पर वह स्वाभाविक बल पर ही गिरे)—कूटाक्षोपविदेविनः—याज्ञ० २।२०२,—अगारम् छत पर बनी कोठरी, —अर्थः अर्थों की सन्दिग्धता **°भाषिता** कहावतों, उपन्यासों, —उपायः जालसाजी से भरी योजना, कूटचाल, कूटनीति —कारः धोखेबाज, छली गवाह, —कृत् (वि०) दगाबाज, धोखा देने वाला 2 जाली दस्तावेज बनानेवाला —याज्ञ० २।७० 3. घन देने वाला (पुं०) 1. कायस्थ 2. शिव का विशेषण,—कार्षापणः जाली **कार्षापण**,—खड्गः गुप्ती, छड़ी (पुं०) ठग. **तुला** समय वाली तराजू, **धर्म** (वि०) जाली झूठ (मिथ्यात्व) कर्तव्य कर्म समझने वाला (शिव स्थान, घर, और देश आदि), पाकलः पिप्पलादपक्वत्व ज्वर जिसमें हाथी ग्रस्त होता है, द्रुमिवातिजवेन अचिरेण वैकुण्ठोधवतेदाहणः काश्मं फलेन पुरं कृष्णपाक्लः (अभिज्ञा)—मा० १।३९, (किसी कभी इसी शब्द को 'कूटपालक' भी लिख देते हैं)—**पालकः** कुम्हार, कुम्हार की आवा,—पाशः, —बन्धः जाल, फंदा,—रचु० १४।३९,—मानम् झूठी माप या वजन,—मोहनः स्कन्द का विशेषण,—यन्त्रम् हरिण एवं पक्षियों को फंसाने का जाल या फंदा,—युद्धम् छल और धोखे की लड़ाई, अधर्मयुद्ध रघु० १७।६९, —शाल्मलिः (ष० स्त्री०) 1 सेमल वृक्ष की एक जाति, 2. तेज कांटों से युक्त वृक्ष (एक उपकरण—यदा—जिससे समनाम पक्षियों को दाना देता है)—दे० रघु० १२। ५, और इस पर मल्लि० की टीका,—शासनम् जाली आज्ञापत्र या फरमान,—साक्षिन् (पुं०) झूठा गवाह, —स्थ (वि०) शिखर पर खड़ा हुआ, सर्वोच्च पद पर अधिष्ठित (वेणीसंहारे द्रौपदीकञ्चुकिकेन नालिका में प्रधान पद पर अधिष्ठित)—स्थः पर्वतशृङ्गः (अचल, अपरिवर्तनीय, तथा शाश्वत) भग० ६।८, १२।३,—**स्वर्णम्** खोटा सोना।

कूटकम् [कूट+कन्] 1. जालसाजी, धोखाधड़ी, चालाकी 2. उन्नत्व, उन्नतता 3 कुदाली, हल की फाली। सम० —आख्यानम् गढ़ी हुई कहानी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूटशः (अव्य०) [कूट+शस्] ढेरों या समूहों में।

कूडधम :-कुड्य ।

कूण् (चुरा० उभ०—कूणयति—ते, कूणित) 1. बोलना, बातचीत करना 2. सिकोड़ना, बंद करना (इस अर्थ में आ० माना जाता है)।

कूणिका [कूण्+ण्वुल्-टाप्, इत्वम्] 1. किसी पशु का सींग 2. बीणा की खूँटी।

कूणित (वि०) [कूण्+क्त] बन्द, मुंदा हुआ।

कूताल [कु+दल्+अण्, पृषो०] पहाड़ी आबनूस।

कूपः [कुवन्ति मण्डूका अस्मिन्—कु+पक् दीर्घश्च] 1. कूआँ—कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम् ...भर्तृ० २।४९, इसी प्रकार—नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप मा कञ्चपि कृथाः, अत्यन्तसरसहृदयो मतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९ 2. छिद्र, रन्ध्र, गढ़ा, गर्त जैसा कि 'जघनकूप' में 3. चमड़े की बनी तेल रखने की कुप्पी 4. मस्तूल—क्षोणीनौकूपदण्डः—दश० १। सम०—अङ्कुरः—अङ्कुरः रोमांच,—कच्छपः, मण्डूकः—की (शा०) कूएँ का कछुवा या मेंढक, (आल०) अनुभवशून्य मनुष्य, जो सांसारिक अनुभव नहीं रखता, सीमित जानकारी रखने वाला मनुष्य जो केवल पास पड़ोस को ही जानता है, (प्राय: 'तिरस्कारद्योतक' शब्द),—यन्त्रम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र 'यन्त्रघटिका, °यन्त्रघटी रहट में पानी निकालने के लिए लगी डोलचियाँ। °यन्त्रघटिका न्याय—दे० 'न्याय' के नीचे।

कूपकः [कूप+कन्] 1. कुआँ (अस्थायी या कच्चा) 2. छिद्र, रंध्र, गर्त 3. कूल्हों के नीचे का गड्ढा 4. खूँटा जिसके सहारे किश्ती का लंगर बाँध दिया जाता है 5. मस्तूल 6. चिता 7. चिता के नीचे का छिद्र 8. चमड़े की बनी तेल-कुप्पी 9. नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष।

कूपा (वा) रः [कुत्सितः पारः तरणम् अस्मिन्—ब० स०] समुद्र, सागर।

कूपी [कूप+ङीष्] 1. छोटा कुआँ, कुइया 2. पलिघ, बाँवल 3. नाभि।

कूब (ब) र (वि०) (स्त्री०—री) [कु+ब (व) रच्] 1. सुन्दर, रुचिकर 2. कुबड़ा,—रः,—रम् गाड़ी की बल्ली या स्थूण-भुजा जिसमें जूआ बाँधा जाता है, —री 1. कम्बल या किसी दूसरे कपड़े के पर्दे से ढकी हुई गाड़ी 2. गाड़ी की बल्ली जिससे जूआ बाँधा जाय—वेणी० ४।

कूरः,-रम् [वे+क्विप्=ऊः, को भूनौ उर्वं वपनं लाति —ला+कः, ररयोरभेदः] भोजन, भात—इतश्च कूरच्युतैलमिश्रं पिण्डं हस्ती प्रतिग्राह्यते मात्रपुरुषैः —मृच्छ० ४।

कूर्चः,-र्चम् [कुर्+चट् नि० दीर्घः] 1. गुच्छा, गठरी 2. मुट्ठीभर कुश घास 3. मोरपंख 4. दाढ़ी—आगतमनध्यायकारणं सविशेषभूतमद्य जीर्णकूर्चानाम्—उत्तर० ४, या पूरयतिव्यमनेन चित्रफलकं लंबकूर्चानां तापसानां कदम्बैः ...शा० ६ 5. चूतड़ों के मांस का ऊपरी भाग, दोनों भौंवों के बीच का भाग 7. कूंची, ब्रुश 8. धोखा, जालसाजी 9. झेली बघारना, डींग मारना 10. दम्भ, —र्चः 1. सिर 2. भण्डार। सम०—शीर्षः—शेखरः नारियल का पेड़।

कूर्चिका [कूर्चक+टाप्]-इत्वम्] 1. चित्रकारी करने की कूंची, ब्रुश या पैंसिल 2. चाबी 3. कली, फूल 4. जमाया हुआ दूध 5. सुई।

कूर्द् (भ्वा० उभ०—कूर्दति-ते, कूर्दित) 1. छलांग लगाना, कूदना 2. खेलना, बालकेलि करना—वयंकुराजचूर्णुश्च स्यैमुरुच्चकूर्दिरे तथा—भट्टि० १४।७७, ७९, १५।४५, उद्—, कूदना, उछलना।

कूर्दनम् [कूर्द्+ल्युट्] 1. उछलना 2. खेलना, क्रीडा करना, नी 1. चैत्र की पूर्णिमा को कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला पर्व 2. चैत्रमास की पूर्णिमा।

कूर्परः [कुर्+पा+क, दीर्घः] दोनों भौंवों के बीच का भाग।

कूर्परः [कुर्+क्विप्, कुर्-पृ+अच्, दीर्घः नि०] 1. कोहनी—त्रि० २०।१९ 2. घुटना।

कूर्मः [को जले ऊर्मिः वेगोऽस्य पृषो० तारा०] 1. कछुवा —गृहेष्वकूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः मनु० ७। १०५, भग० २।५८ 2. विष्णु का दूसरा (कूर्मावतार) अवतार। सम० -अवतारः विष्णु का कूर्मावतार —तु० गीत० १ -क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे, केशव धृतकच्छपरूप, जय जगदीश हरे।- पृष्ठम्,—पृष्ठकम् 1. कछुवे की कमर या पीठ 2. तश्तरी का ढकना, -राजः द्वितीय अवतार के समय कछुवे के रूप में विष्णु।

कूलम् [कूल्+अच्] 1. किनारा, तट—राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः—गीत० १, तरीवाभियकूलभाक्—रघु० १२।३५, ६८ 2. ढलान, उतार 3. छोर, कोर, किनारी, सन्निकटता कुलायकूलेषु विलुठ्य तेषु ते—नै० १।१४१ 4. तालाब 5. सेना का पिछला भाग 6. ढेर, टीला। सम० चर (वि०) नदी के किनारे चरने वाला, या विचरने (घूमने) वाला -चूः (स्त्री०) तटस्थित भूखंड,—हृष्टकः,—हृष्टकः भँवर।

कूलङ्कष (वि०) [कूल+कष्+खच्, मुम्] तट को काटने वाला, या अन्दर ही अन्दर जड़ खोखली करने वाला—कूलङ्कषेव प्रसन्नमम्भस्तटरुं च—शं० ५।२१, —षः नदी की धारा, या प्रवाह,—षा नदी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूलम्भय (वि०) [कूल+भे+खश्, मुम्] चूमता हुआ अर्थात् नदी के तट को सीमा बनाने वाला।

कूलमुब्ज (वि०) [कूल+उद्+रुज्+खश्, मुम्] किनारों को तोड़ने वाला (जैसे नदियाँ, हाथी)—रघु० ७।२२।

कूलमुद्वह् (वि०) [कूल+उद्+वह्+खश्, मुम्] किनारे को फाड़ डालने तथा बहा कर ले जाने वाला—मा० ५।१९।

कूलाङ्कषः [कु ईषत् ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य] पेठा, कुम्हड़ा, तूमड़ी।

कूहा [कु ईषत् उच्चारेऽत्र, कु+उह्+क+टाप्] कुहरा, धुंद।

कृ I (स्वादि० उभ०—कृणोति, कृणुते) प्रहार करना, घायल करना, मार डालना II (तना० उभ०—करोति, कुरुते, कृत) 1. करना तान कि करवाव०हम् 2. बनाना गणिकामवरोधमकरोत्—दश०, गुणेन चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।४५, युवराज कृत० आदि 3. निर्माण करना, गढ़ना, तैयार करना कुम्भकारो घटं करोति, घटं करोति आदि 4 बनाना, रचना करना—गुरु कुरु, क्षमा कुरु भदर्थं भो: 5 पैदा करना, निमित्तभूत होना, उत्पन्न करना—रतिसाधनप्रार्थना कुरुते—शं० २।१ 6. बनाना, क्रमबद्ध करना,—अञ्जलिं करोति कपोलहस्तकं कुरुवा 7. लिखना, रचना करना चकार सुमतेरर्थं शास्त्रम् पञ्च० १।४ 8. सम्पन्न करना, स्वस्थ होना पूजा करोति 9. कहना, वर्णन करना,—इति बहुविधा: कथा: कृत्वैनं आदि 10 पालन करना, कार्यान्वित करना, आज्ञा मानना, एवं क्रियते भूयदाज्ञेदं: मा० १, या करिष्यामि वचनत्व या आमने में कृत्वा आदि 11. प्रकाशित करना, पूरा करना, काव्य में परिणत करना तत्सम्बृत्तिः कथम् किं न करोति एषाम् भर्तृ० ३।७३ 12 फेंकना, निकालना, उत्सर्ग करना, छोड़ना मूत्र कृ—मूत्रोत्सर्गं करना, पेशाब करना, इसी प्रकार पुरीष कृ टट्टी फिरना 13 धारण करना, पहनना, ग्रहण करना —स्त्रीरूपं कृत्वा, नानारूपाणि कुर्वाणः याज्ञ० ३।१६२ 14. मुँह से निकालना, उच्चारण करना —मातृघ्नी गिरं कृत्वा, कलत्रं कृत्वा आदि 15. रखना, पहनना (अधि० के साथ)—कण्ठे हारमकरोत् कथा० २।२, पाणिमूर्ध्नि कृत्वा आदि 16. सहना (कोई कर्तव्य), निश्चय करना अध्यक्षाधिविधा-कृपोत्तम तत्र विपश्चित्, मनु० ७।४१ 17. पकाना (भोजन) जैसा कि 'कृतान्न' में 18. सोचना, अंदर करना, खयाल करना दृष्टिरनुकूलकृतप्रणयप्रसरा वशात्—उत्तर० ६।१२, 19. ग्रहण करना (हाथ में)—कुरु करे गुरुमेकमयंधनम् वेणी० ४।५२, 20. ध्वनि करना —यथा स्वाकृत्य, फूत्कृत्य भुङ्क्ते, इसी प्रकार थथट् कृ, स्वाहा कृ आदि 21. गुजारना (समय) बिताना - वर्षाणि दश चक्रुः—बिताये, क्षण कुरु— जरा ठहरिए 22. की ओर मुड़ना, ध्यान मोड़ना, दृढ़ निश्चय करना (अधि० या सम्प्र० के साथ)—नाद्यमें कुरुते मनः—मनु० १२।११८, नगरमभिगमाय मतिं न करोति —शं० २ 23. दूसरे के लिए कोई काम करना (चाहे लाभ के लिए हो या हानि पहुँचाने के लिए); —यदनेन कृतं मयि, अमी किं मे करिष्यन्ति आदि 24. उपयोग करना, काम में लगाना, उपयोग में लाना—किं तया क्रियते धेन्वा—पञ्च० १ 25 विभक्त करना, टुकड़े टुकड़े करना ('या' पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषण के साथ) द्विधा कृ दो टुकड़े करना, शतधा कृ, सहस्रधा कृ आदि 26. अर्थात् बनाना, ('सात्' पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषणों के साथ) पूर्ण रूप से किसी विशेष अवस्था को प्राप्त कराना आत्मसात् कृ, अर्थात् करना अपने में लीन करना—रघु० ८।२, भस्मसात् कृ आदि बना देना, यह धातु बहुधा संज्ञा, विशेषण और अव्ययों के साथ उनको क्रिया बनाने के लिए कुछ कुछ अंग्रेजी के प्रत्यय 'ize' या 'ify' की भाँति प्रयुक्त होता है और अर्थ होता है किसी व्यक्ति या वस्तु को यह बना देना जो वह पहले नहीं है' उदा० कृष्णीकृ इस वस्तु को जो पहले से काली नहीं है काली करना अर्थात् Blacken, इसी प्रकार श्वेतीकृ—सफेद करना (whiten), धनीकृत इस धन बना देना (Solidify); विरलीकृ दूर दूर कहीं कहीं करना (Rarify), आदि। कभी कभी इस प्रकार की रूप रचना दूसरे अर्थों में भी होती है—उदा० कोटीकृ—छाती से लगाना, आलिङ्गन करना, भस्मीकृ राख कर देना, प्रणयीकृ रुचि पैदा करना, शुकृदा, तृणीकृ—तिनके की भाँति तुच्छ एवं हीन समझना, मंदीकृ—शिथिल करना, चाल धीमी करना, इसी प्रकार शूलीकृ—लोहदार लोहे की सलाखों के सिरे पर रख कर भूनना, सुखीकृ—प्रसन्न करना, समयीकृ समय बिताना आदि। विशे०—यह धातु उपसर्गों से, परन्तु निम्नलिखित अर्थों में आत्मनेपदी हो जाती है—(क) क्षति पहुँचाना (ख) निन्दा करना, कलंकित करना (ग) काम देना और (घ) बलात्कार करना, हिंसात्मक कार्य करना (ङ) तैयारी करना, दवा बटोरना, मंडाना (च) सस्वर पाठ करना (छ) काम में लगाना, प्रयोग में लाना—दे० पा० १।३।६२, विशे० कृ धातु का संस्कृत साहित्य में बहुत प्रयोग मिलता है, इसके अर्थ भी नाना प्रकार से अदलते बदलते रहते हैं या सम्यक् संज्ञा के अनुसार प्रायः अनेक अर्थ हो जाते हैं—उदा० पदं कृ,—कदम रखना —आश्रमं पदं कृत्वासि—श० ४।१९, क्रमेण कृतं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मम वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १४१, मनसाकृ—सोचना, मध्यस्थता करना, मनसि कृ—सोचना—दृष्ट्वा मनस्येवमकरोत् का० १३६, दृढ़ निश्चय करना संकल्प करना,—सख्य, मैत्री कृ मित्रता करना, अस्त्राणि कृ—अस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास करना, दंड कृ—दंड देना, हृदये कृ—ध्यान देना, कालं कृ—मरना, मति, बुद्धि कृ—सोचना, इरादा करना, अभिप्राय होना —उदकं कृ—पितरों को जल का तर्पण करना, चिरं कृ—देर करना,वर्दुरं कृ—वीणा बजाना, नखानि कृ—नाखून साफ करना, कन्यां कृ— सतीत्वभ्रष्ट करना, कौमार्य भंग करना, विना कृ—अलग करना, छोड़ा जाना जैसा कि 'मदनेन विनाकृतिः रतिः' कु० ४।२१ में, मध्य कृ बीच में रखना, संकेत करना—मध्येकृत्य स्थितं क्षयः कैरिकाम्—मालवि० ५।२, वशे कृ जीतना, बस में करना, दमन करना, चमत्कृ आश्चर्य पैदा करना, प्रदर्शन करना, सत्कृ सम्मान करना, सत्कार करना, तिर्यक् कृ—एक ओर रख देना,—प्रेर० (सारयति-ते) करवाना, सम्पन्न करवाना, बनवाना, कार्यान्वित करवाना —आज्ञा कारय रक्षीभिः—भट्टि० ८।८४, भृत्यैः भृत्यैव वा कटं कारयति—सिद्धा०—, इच्छा० (चिकीर्षति-ते) करने की इच्छा करना, अञ्जौ—1. स्वीकार करना, अपनाना—लक्ष्मीं कुरङ्गी दृगङ्गीकरोतु—जग०, दक्षिणामाशामङ्गीकृत्य—का० १२१ 2. मान लेना, स्वीकृति देना, अपनाना मान लेना 3. करने की प्रतिज्ञा करना, विश्वेदेवाः शेलमङ्गीकृतमुत्सृजन्त्यकृपणबन्धुलाभाः जनो लज्जते—मुद्रा० २।१८ 4. दमन करना, अपना बनाना, अनुग्रह करना—अमरु ५२, अति—बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अधि०, 1. अधिकारी होना, हकदार बनना, अधिकृत बनना, किसी कर्तव्य के लिए पात्रीकरण,—नैवाध्यक्षकारिमहि वेदवृत्ते—भट्टि० २।३४, कि० ४।२५ 2. लक्ष्य बनाना, उल्लेख करना, ('विषय पर' 'के विषय में' 'के लिए' 'संकेत करके' 'उल्लेख करते हुए' अर्थों के लिए 'अधिकृत्य' शब्द का प्रयोग होता है—गीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १, शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि—श० २, रघु० ११।६२) 3. धारण करना—अधिचकर्त नयं हरिः—भट्टि० ८।२० 4. अभिभूत करना, दबा लेना, श्रेष्ठ बनना 5. रोकना, रुकना, हाथ खींचना। अप—, सूरत शकल में मिलना, अनुसमन करना. विशेषतः नकल करना (कर्म व संव० के साथ)—शैलाधिपस्यातुचकार लक्ष्मीम्—भट्टि० २।८, मनु० २।१९९, श्यामतया हरेरिवानुकुर्वतीम्—का० १०, अनुकरोति भगवतो नारायणस्य —६, अप— 1. खींचकर दूर करना, हटाना, दूर खींचकर अनादर करना, योऽपचक्रे वनास्त्रीताम्—भट्टि० ८।२० 2. प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, बुरा करना, हानि पहुँचाना, हानि या क्षति पहुँचाना (संव० के साथ) न किंचिन्मया तस्यापकर्तुं शक्यम्—पंच० १, अपा 1. दूर करना, त्याग देना, हटाना, मिटाना —तन्नैव तिमिरमपाकरोति चन्द्रः श० ६।२९, न पूर्वापराल्पमपाकरिष्यति – कु० ५।१४ 2. फेंक देना, अस्वीकार करना, एक ओर रख देना, छोड़ देना। शिवा भुजच्छदमपाचकार रघु० ७।५०, अभ्यन्तरी - 1. दीक्षित करना 2. मित्र बनाना (अभ्यन्तर के नी० दे०) अलम्—, विभूषित करना, सजाना, शोभा बढ़ाना—उभावलञ्चक्रतुरङ्गनाभ्यां तपोवनावृत्तिपथं गताभ्याम्—रघु० ११। १८, कतमो वंशोऽलङ्कृतो जन्मना श० १, आ , (प्रेर०) 1. पुकारना, बुलाना, निमंत्रित करना, आकारयैनमत्र 2. निकट लाना, आविस् - प्रकट करना, दर्शनीय बनना, जाहिर करना, प्रदर्शन करना ('आविस्' के नी० दे०) उप ,(वर्त० उपकरोति) 1. (क) मित्र बनाना, सेवा करना, सहायता करना, अनुग्रह करना, उपकृत करना (प्रायः सर्व०, कभी-कभी अधि० के साथ)—सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम् भट्टि० ८।१८, आत्मनश्चोपकर्तुम् -मेघ० १०१, शि० २०।७४, मनु० ८।३९४ (ख) 1. हाजरी में खड़े रहना, सेवा करना 2. (वर्त० उपस्करोति) (क) विभूषित करना, शोभा बढ़ाना, सजाना (ख) प्रयत्न करना। (संव० के साथ) भट्टि० ८।१९ ११९ (ग) तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, पूरा करना, निर्मल करना,—उपा 1. सौपना, देना 2. प्रारंभिक संस्कार सम्पन्न करना मनु० ४।९५ दे० उपाकर्मन् 3. उठा लाना, लाना 4. आरंभ करना, उरो—, उररी , उररी–, ऊरी–, या ऊररी–स्वीकार करना, दे० अंगीकृ० ऊपर, रघु० १५।७० दे० उरी भी, तिरस्–1. अपशब्द कहना, बुरा भला कहना, अनादर करना, घृणा करना 2. पीछे छोड़ना, आगे बढ़ना, जीतना, दे० 'तिरस्' के नीचे०, स्वम्–नू. कोई (तिरस्कार सूचक) दक्षिणी–, या प्रदक्षिणी–, किसी वस्तु के चारों ओर घूमना (अपना दक्षिण पार्श्व उसकी ओर करके), प्रदक्षिणीकुरुष्व सद्योहुतान्सोन् - श० ४, प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशमनन्तरंभूर्नरुरुन्धती च, रघु० २।७१, दुस् - , बुरे ढंग से करना, धिक् , झिड़कना, बुरा भला कहना, अनादर करना दे० धिक् के नी०, नमस् - , नमस्कार करना, पूजा करना—मुनित्रयं नमस्कृत्य–सिद्धा० - दे० नमस् के नी०, नि , क्षति पहुँचाना, बुरा करना, निस् 1. हटाना, हाँक कर दूर कर देना मनु० ११।५३ 2. तोड़ देना, निकम्मा कर देना– भट्टि० १५।५४, निरा - 1. निकाल देना, परे कर देना, निकाल बाहर करना भट्टि०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६।१००, रघु० १४।५७ 2. निराकरण करना (मत आदि का) 3. छोड़ना, त्यागना 4. पूर्ण रूप से नष्ट कर देना, ध्वंस करना 5 बुरा भला कहना, नीच समझना, तुच्छ समझना, **त्यज्** , अपमान करना, अनादर करना, **परा**—, (परा०) अस्वीकार करना, अवहेलना करना, निरादर करना, ख्याल नहीं करना

ता हनूमान् पराकुर्वंस्तमस्तं पुष्पकम् प्रति भट्टि० ८।५०, **परि** (परिष्करोति) 1. घेरना 2. (परिष्करोति) विभूषित करना, सजाना स्त्री हेमपरिष्कृत- भर्तृ०, (आलं०) निर्मल करना, चमकाना, शुद्ध करना (शब्दों का), **पुरस्** -, सम्मुख रखना - राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वर्तते०- श० ४, इसे उदाहरण गान्धर्वे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् वेणी० २।१८—वह पुरुष के नीचे, **प्र**— 1. करना, सम्पन्न करना आरंभ करना (अधिकतर उसी अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसमें 'कृ')—जानाति नरो वैशाख्यप्रकरोति विगर्हितम् पंच० ४।३५, भट्टि० २।३६, ऋतु० १।६ मनु० ८।५१, ६०, ८।२७, अमर १३ 2. बलात्कार करना, अत्याचार करना, अपमान करना, भट्टि० ८।१९ 3. सम्मान करना, पूजा करना, **प्रति**- 1. बदला देना, वापिस देना, लौटाना - पूर्व कृतार्थो मित्रार्थं प्रतिकरोति यः - रामा० 2. उच्चार करना,—व्याधिमिच्छामि ते ज्ञातु प्रतिकर्तुं हि तत्र वै - महा०. 3. वापिस देना, ज्यों का त्यों कर देना, पुनः स्थापित करना- मनु० ९।२८५ 4. प्रतिशोध करना रघु० १२।९४, **प्रमाणी** - 1 भरोसा करना, विश्वास करना 2. प्रमाण रूप मानना, आज्ञा मानना शास्त्रं तदभिप्रेत्य प्रमाणीकृतम् श० ६ 3. आँख गड़ाना, विवरण करना, वर्णित करना या व्यवहार करना

देवेन प्रभुणा रक्ष्य जगति प्रमाणीकृतम् - भर्तृ० २।१२१, **प्रादुस्** -, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, खिलाना, अभिनय करना—देवः पादुल् के नी०, **प्रत्यूष** - 1. प्रतिशोध देना, (आभार) प्रदर्शन करना, **वि** -, बदलना, परिवर्तन करना, प्रभावित करना- विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः कु० १।५९, रघु० १३।४२ 2. आकृति बिगाड़ना, विरूप करना विकृताकृति. मनु० ९।५२ 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सम्पन्न करना मनु० १।७५, नाम्ना बिल्व विकुर्वीत दानजा—महा० 4 हिंसा डालना, हानि पहुँचाना, क्षति पहुँचाना (आ०) —दीनान्यनुकृतानि विकुर्वते रघु० १७। ५८ 5. उच्चारण करना -विकुर्वाणः स्वरानन्त —भट्टि० ८।२० 6. (पत्नी को भोग) विश्रामदायक होना, **विनि** -, प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, **विप्र**- 1. सताना, कष्ट देना, तंग करना, हानि पहुँचाना —किं सत्त्वानि विप्रकरोषि –श० ७, कु० २।१ 2. दूरा करना, दुर्व्यवहार करना श० ४, १७ 3. प्रभावित करना, परिवर्तन लाना,—कामपरमवशं न विप्रकुर्युः कु० ६।९५. **व्या**— 1. प्रकट करना, साफ करना नामरूपे व्याकरवाणि छा० 2. प्रतिपादन करना, व्याख्या करना 3. कहना, वर्णन करना - तस्मै सर्वं भगवान् व्याकरोतु महा०, **सम्** -, (संकुरुते) (क) करना (पाप, अपराध)—वे पञ्चापराध्यदोषमहिनाः शपथानि शकुर्वते –मृच्छ० ९।४ (ख) निर्माण करना, तैयार करना (ग) करना संपन्न करना 2. (संस्कुरुते) (क) अलंकृत करना, शोभा बढ़ाना—कङ्कुमं समस्कुरुत माधवनीम्—शि० ९।२५ (ख) निर्मल करना, चमकना—वाग्येका समलङ्करोति पुरुष या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९, शि० १४।५० (ग) वैदिमंत्रों के उच्चारण से अभिमंत्रित करना—मनु० ५।७६. (घ) वैदिकविहित संस्कारों से (किसीपुरुष को) पवित्र करना, शुद्ध करने वाले आवश्यक विधियों का अनुष्ठान करना,— संस्कारोभयलोक्यां मैथिलेयी यथाविधि रघु० १५।३१, पाश० २।१२४, **साच्ची** —, एक ओर मुड़ना, परोक्ष रूप से पूछना—साचीकृता चारुतरेण तस्थौ –कु० ३।६८, रघु० ६।१४ ।

कृकः [कृ+कक्] गला ।

कृकणः (र.) [कृ+कण्+अच्, कृ+कृण्+ड] एक प्रकार का तीतर ।

कृक (कृ) **लासः** [कृक+लस्+अण्] छिपकली, गिरगिट ।

कृकवाकुः [कृक+वच्+ण्वुल् क आदेशः] 1. मुर्गा 2. मोर 3 छिपकिली सम०—ध्वजः कार्तिकेय का विशेषण ।

कृकाटिका [कृक+अट्+अण्+कृकाट+कन्+टाप्] इयम् 1. गरदन का पिछला भाग 2. गर्दन का पिछला भाग ।

कृच्छ्र (वि०) [कृती+रक्] आदेशः] 1. कष्ट देने वाला, पीड़ाजनक -मनु० ६।७८ 2. क्रूर, विद्वेषपूर्ण, अनिष्टकर 3. दुष्ट, पापी 4 संकटग्रस्त, पीड़ित, —च्छ्रः,—च्छ्रम् 1. कठिनाई, कष्ट, कठोरता, विपद्, संकट, भय -कृच्छ्रं महत्तीर्णः—रघु० १४।६, १३।७७ 2. प्रायश्चित्त का, तपस्या, प्रायश्चित्त मनु० ४।२२७, ५।२२, ११।१०५ - च्छ्रम्, **कृच्छ्रेण**, **कृच्छ्रात्** बड़ी कठिनाई के साथ, दुःख पूर्वक, बड़े कष्ट के साथ—लब्धः कृच्छ्रेण रक्षितः हि० १।१८५, । सम०—आप्य (वि०) 1. जिसका जीवन खतरे में है 2. कष्टपूर्वक साँस लेने वाला 3. कठिनाई से जीवनयापन करने वाला, **साध्य** (वि०) 1. कठिनाई से ठीक हो सके, (रोगी या रोग) 2. कष्टसाध्य ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृत् (तुदा० पर०--कृन्तति, कृत्त) 1. काटना, काट कर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ना, धज्जियाँ उड़ाना, टुकड़े २ करना, नष्ट करना --प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्--उत्तर० ३।३१, ३५ भट्टि० २।४२ १५।९७ १६।१५, मनु० ८।१२, **अव**—, काट फेंकना, विभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, **उद्**—, 1. काटना या काट फेंकना, फाड़ना --रघु० १२।४९, मनु० ११।१०५ 2. खण्ड खण्ड करना, टुकड़े काटना —उत्कृत्यौत्कृत्य कृत्ति—मा० ५।१६ **वि**— 1. काटना, फाड़ना, टुकड़े २ करना—विश्वासाद्रुपमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति --पंच० २।३९, निकृन्तन्निव मानसम् --भट्टि० ७।११ भल्लनिकृत्तकण्ठैः--रघु० ७।५८।

ii (क्र्या० पर०--कृणाति, कृत्त) 1. काटना, 2. घेरना।

कृत् (वि०) [कृ+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) निष्पादक, कर्ता, निर्माता, अनुष्ठाता, उत्पादक, रचयिता आदि पापकृत्, पुण्यकृत्, प्रतिमाकृत् आदि, (पुं०) 1. प्रत्ययों का समूह जिनको धातु के साथ जोड़ने से (संज्ञा, विशेषण आदि) बनते हैं 2. इस प्रकार बना हुआ शब्द।

कृत (वि०) [कृ+क्त] किया हुआ, अनुष्ठित, निर्मित, क्रियान्वित, निष्पन्न, उत्पादित आदि (भू० क० कृ० --कृ--तना० उभ०)—तम् 1. कार्य, कृत्य, कर्म—मनु० ७।१९७ 2 सेवा, लाभ 3. फल, परिणाम 4. लक्ष्य, उद्देश्य 5. पासे का वह पहलू जिस पर चार बिन्दु अंकित हैं 6. संसार के चार युगों में पहला युग जो मनुष्यों के १७२८००० वर्षों के बराबर है—दे० मनु० १।७९, और इस पर कुल्लूक की टीका, परन्तु महाभारत के अनुसार यह युग मनुष्यों के ४८०० वर्षों से अधिक वर्षों का है, चार की संख्या। सम०--**अकृत** (वि०) किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया, पूरा नहीं किया गया,—**अक्षः**(वि०) 1. चिह्नित, दागी —मनु० ८।३८१, 2. संस्कारित, (क्षः) पासे का वह भाग जिस पर चार बिन्दु अंकित हों,—**अञ्जलि**(वि०) विनम्रता के कारण दोनों हाथ जोड़े हुए --भग० ११।१४, मनु० ४।१५४, **अनुकर** (वि०) किये हुए कार्य का अनुकरण करने वाला, अनुसेवी,—**अनुसारः** प्रथा परिपाटी, **अन्त** (वि०) समाप्त करने वाला, अवसायी, (तः) 1. मृत्यु का देवता यम--द्वितीयं कृतान्तस्त्रिभिर्वाहनं व्यायच्छत --हि० १ 2. भाग्य, प्रारब्ध --क्रूरस्तस्त्रिभिरेव न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः मेघ० १०५ 3. प्रदर्शित उपसंहार, रूढि, प्रेमांकित सिद्धान्त 4. पापकर्म, अशुभ कर्म 5 शनि ग्रह का विशेषण 6. शनिवार, --**जनः** सूर्य,—**अन्नम्** 1. पकाया हुआ भोजन,—**कृतान्नभुदकं स्त्रियः**—मनु० ४।२१९ ११।३ 2. पचा हुआ भोजन 3. मल,—**अपराध**(वि०)अपराधी दोषी, मुजरिम, **अभय** (वि०) भय या खतरे से सुरक्षित,-- **अभिषेक** (वि०) राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ,—**अभ्यास** (वि०) अभ्यस्त,--**अर्थ** (वि०) 1. जिसने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया है, सफल 2. संतुष्ट, प्रसन्न, परितृप्त,—कृतार्थोऽस्मि निवर्तिताहारः मि० १।२९, रघु० ८।३, कि० ४।९, 3. धनुर्, (**कृतार्थीकृ**) 1. सफल बनाना 2. भरपाई होना---कान्त प्रत्युपचारतश्चतुरयं कोषः कृतार्थीकृतः--अमरु १५, **अवधान** (वि०) होशियार, सावधान, --**अवधि** (वि०) 1. निश्चित, नियत 2. हदबन्दी किया हुआ, सीमित,—**अवस्थ** (वि०) 1. बुलाया हुआ, प्रस्तुत कराया हुआ 2. निश्चित, निर्धारित, —**अस्त्र** (वि०) 1. हथियारबन्द 2. शस्त्र या अस्त्र विज्ञान में प्रकाशित रघु० १७।६२,—**आगस** (वि०) पापी, अपराधी, मुजरिम, पापी,—**आत्मन्** (वि०) 1. संयमी, स्वसन्तुलित, स्थिरात्मा 2. पवित्र मन वाला, --**आयास** (वि०) परिश्रम करने वाला, सहन करने वाला, —**आह्वान** (वि०) ललकारा हुआ, --**उत्साह** (वि०) परिश्रमी, प्रयत्नशील, उद्योगी, **उद्वाह** (वि०) 1. विवाहित 2. हाथ ऊपर उठा कर ताल्लुक करने वाला, —**उपकार** (वि०) 1. अनुगृहीत, मित्रवत् आचरित, सहायता प्राप्त --कु० ३।७३ 2. मित्रभद्रुश--**उपभोग** (वि०) बरता हुआ, उपभुक्त,—**कर्मन्** (वि०) 1. जिसने अपना काम कर लिया है—रघु० १।३ 2. दक्ष चतुर (पुं०) 1. परमात्मा 2. संन्यासी,- **काम**(वि०) जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं, **काल** (वि०) 1. समय की दृष्टि से जो स्थिर है, निश्चित 2. जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की है (लः) नियत समय याज्ञ० २।१८,—**कृत्य** (वि) कृतार्थ, भग० १२।२० 3. सन्तुष्ट परितृप्त --शा० ३।१९ 3. जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है, **क्रय**: खरीदार, **क्षण** (वि०) 1. निश्चित समय की अत्युत्सापूर्वक प्रतीक्षा करने वाला, --**क्षं** सर्वं सोत्सुका. कृतक्षणश्चित्रऽमः —पञ्च० १ 2. जिसे कोई अवसर उपलब्ध हो गया है,—**ज्ञ** (वि०) 1. अकृतज्ञ, मनु० ४।२१४, ८।१९ 2. जो पहले किये हुए उपकारों को नहीं मानता है, --**ज्ञः** 1. जिस बालक का मुण्डनसंस्कार हो गया है -- मनु० ५।५८, ६७ —**ज्ञ** (वि०) 1. उपकार मानने वाला, आभारी मनु० ७।२०९, २१०, याज्ञ० १।३०८ 2. शुद्धाचारी (**तः**) कुला, **तीर्थ** (वि०) 1. जिसने तीर्थों के दर्शन किए हैं 2. जो (अध्यापनविधि के) अध्यापक से अध्ययन कर चुका हो 3. जिसे न-कोई खेद मुसीबी हो 4. पथ प्रदर्शक, **दासः** किसी निश्चित समय के लिए रक्खा हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवक,—**ची** (वि०) 1. दूरदर्शी, लिहाज रखने वाला (दूरदर्शी) 2. विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्—मुद्रा० ५।२०,—**निर्ज्वर**—पश्चात्तापी,—**निश्चय** (वि०) कृतसंकल्प, दृढ़प्रतिज्ञ,—**पुंस** (वि०) धनुर्विद्या में निपुण,—**पूर्व** (वि०) पहले किया हुआ,—**प्रतिकृतम्**, आक्रमण और प्रत्याक्रमण, धावा बोलना और प्रतिरोध करना—रघु० १२।९४,—**प्रतिज्ञ** (वि०) 1. जिसने किसी से कोई करार किया हुआ है 2. जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है,—**बुद्धि** (वि०) विद्वान्, शिक्षित, बुद्धिमान्—मनु० ११९७, ७।३०, —**मुख** (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान्,—**लक्षण** (वि०) 1. मुद्रांकित, चिह्नित 2. दागी—मनु० ९।२३९ 3. श्रेष्ठ, सुशील परिभाषित, विवेचित,—**वर्मन्** (पुं०) कौरवपक्ष का एक योद्धा जो कृप और अश्वत्थामा के साथ महाभारत के युद्ध में जीवित रहा, बाद में वह सात्यकि के हाथों मारा गया,—**विद्य** (वि०) विद्वान्, शिक्षित—पुरोऽरि कृतविद्योऽसि—पञ्च० ४।४३, गुणपुष्पिता पृथ्वी विचिन्वन्ति नरा नयाः, शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्—पञ्च० १।४५, **वेतन** (वि०) वैतनिक, तनखादार (नौकर आदि)—याज्ञ० २।१६४,—**वेदिन्** (वि०) आभारी देo कृतज्ञ, **-वेश** (वि०) सुवेशित, विभूषित—यतवति कृतवेशे केशवे कुञ्जशय्याम्—गीत० ११,—**शोभ** (वि०) 1. शानदार 2. सुन्दर 3. पटु, दक्ष,—**शौच** (वि०) पवित्र किया हुआ,—**श्रमः**—**परिश्रमः** अध्येता, जिसने अध्ययन कर लिया है —कृतपरिश्रमोऽस्मि ज्योतिःशास्त्रे —मुद्रा० १, (मैंने अपना समय ज्योतिःशास्त्र के अध्ययन में लगाया है),—**संकल्प** (वि०) कृतनिश्चय, दृढ़संकल्प,—**संकेत** (नि०) (समय आदि का) नियत करने वाला—नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम् —गीत० ५, **संज्ञ** (वि०) 1. पुनः चेतना प्राप्त, होश में आया हुआ 2. उद्बोधित,—**संनाह** (वि०) कवचधारी, —**सापत्निका** वह स्त्री जिस के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विद्यमान हो,—**हस्त**, **हस्तक** (वि०) 1. दक्ष, चतुर, कुशल, पटु 2. धनुर्विद्या में कुशल,—**हस्तता** 1. कौशल, दक्षता 2. धनुर्विद्या या शस्त्रविद्या में कुशल—कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यया चारिणी—वेणी० ६।१२, महावी० ६।४१।

कृतक (वि०) [कृत + कन्] 1. किया हुआ, निर्मित, सज्जित (विप० वैस्रसिक) यद्यत्कृतं तत्तदनित्यम्—न्यायसूत्र 2. कृत्रिम, बनावटी ढंग से किया हुआ, —अकृतकविधिसिद्धाक्लीष्टमाकल्पजातं रघु० १८।५२ 3. झूठा, व्यपदिष्ट या बहाना किया हुआ, मिथ्या, दिखावटी, कल्पित—कृतकलहे कृतवा—मुद्रा० २, कि० ३।८ ८।४६ 4. दत्तक (पुत्र) (बहुधा समास के अन्त में भी)—वत्सोपांते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे (बाल मन्दारवृक्षः)—मेघ० ७५, सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते (जहाति)—श० ४।१३।

कृतम् (अव्य०) [कृत् + कम् वा०] पर्याप्त और अधिक नहीं, बस करो अथवा मत करो (करण० के साथ) अथवा कृतं सन्देहेन—श० १, अथवा —गिरा कृतम् —रघु० ११।४१, कृतमश्वेन - उत्तर० ४।

कृतिः (स्त्री०) [कृ + क्तिन्] 1. करनी, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान 2. कार्य, कृत्य, कर्म 3. रचना, काम, संरचना (तो) स्वकृतिं गापयामास कविप्रथमपद्धतिम् —रघु० १५।३३, ६४,६९, नै० २२।१५५ 4. जादू, इन्द्रजाल 5. क्षति पहुँचाना, मार डालना 6. बीस की संख्या। समo **करः** राजण का विशेषण।

कृतिन् (वि०) [कृत-इनि] कृतकार्य, कृतार्थ, सन्तुष्ट, परितृप्त, प्रसन्न, सफल—यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च—उत्तर० १।३२, न खल्वनिर्जित्य रघुं कृती भवान् —रघु० ३।५१, १२।६४ 2. (अतः) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मतवाला, भाग्यवान् - श० १।२४, श० ७।१९ 3. चतुर, सक्षम, योग्य, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान्, विद्वान्; —तं क्षत्रप्रशकलीकृतं कृती —रघु० ११।२९, कु० २।१०, कि० २।९ 4. अच्छा, गुणी, पवित्र, पावन—तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः—भर्तृ० १।५६ 5. अनुवर्ती, आज्ञाकारी, आदेशानुसार करने वाला।

कृते, कृतेन (अव्य०) [संबo के साथ या समास में] के लिए, के निमित्त, के कारण—अमीषां प्राणानां कृते भर्तृ० ३।३६, काव्यं यशसेऽर्थकृते—काव्य० १, भग० १।३५, याज्ञ० १।२१६, श० ६।

कृत्तिः (स्त्री०) [कृत् + क्तिन्] 1. चमड़ा, खाल 2. (विशेषतः) मृगचर्म जिसपर (धर्मशिक्षा का) विद्यार्थी बैठता है 3. (लिखने के लिए) भोजपत्र 4. भोजवृक्ष 5. कृत्तिका नक्षत्र, कृत्तिका मंडल। समo—**वासस्** —**वासस्** (पुं०) शिव का विशेषण—स कृत्तिवासास्तपसे यतात्मा—कु० १।५४, मालवि० ११।

कृत्तिका (ब० व०) [कृत् + क्तिकन्, क्वित्] 1. २७ नक्षत्रों में से तीसरा कृत्तिका नक्षत्र (६ तारों का पुंज) 2. छः तारे जो युद्ध के देवता कार्तिकेय की परिचारिका का कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में वर्णित हैं। समo —**सनयः**,—**पुत्रः**,—**सुतः** कार्तिकेय का विशेषण,—**भवः** चांद।

कृत्नु (वि०) [कृ + क्त्नु] 1. भली भाँति करने वाला, करने के योग्य शक्तिशाली 2. चतुर, कुशल,—**त्नुः** कारीगर, कलाकार।

कृत्य (वि०) [कृ + क्यप्, तुक्] 1. जो किया जाना चाहिए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सही, उचित, उपयुक्त 2. युक्तिपुक्त, व्यवहार्य 3. जो राजभक्ति से पथभ्रष्ट किया जा सके, विश्वासघाती —राजत० ५।२४७,—स्थम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य, कार्य—मनु० २।२३७ ७।६३ 2. कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार— बन्धुकृत्यम् मेघ० ११४, अन्योन्यकृत्यैः—श० ७।२४ 3. प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य —कृजद्धिरापादितजगत्कृत्यम्—रघु० २।१२, कु० ४। १५ 4. मंशा, कारण,—स्थः कर्मवाच्य के कृदन्त के संभावनार्थक प्रत्ययों का समूह -नामतः—क्त्य, अनीय य और एलिम,—त्या 1. कार्य, करनी 2. जादू 3. एक देवी जिसकी यज्ञादि के द्वारा पूजा इसलिए की जाती है कि विनाशकारी और जादू टोनों के कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो।

कृत्रिम (वि०) [कृत्या निर्मितम् -कृ+क्त-इमप्] 1. बनावटी, काल्पनिक, जो स्वतः स्फूर्त या मनमाना न हो, अर्जित °मित्रम्, °शत्रुः आदि, रघु० १३।७५, १४।३७ 2. गोद लिया हुआ (बेटा) —दे० नी०, —मः, °पुत्रः नकली या गोद लिया हुआ पुत्र, हिन्दूधर्म में माने हुए १२ पुत्रों में से एक, गोद लिया हुआ ऐसा बयस्क पुत्र जिसके पिता की स्वीकृति गोद लेते समय न ली गई हो, तु० कृत्रिमः स्यात्स्वयं दत्तः —याज्ञ० २।१३१, तु० मनु० ९।१६९ से भी,—मम् 1. एक प्रकार का नमक 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम०—पुत्रः, -धृतकः, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, धूप,—पुत्रः दे० कृत्रिमः: पुत्रकः दे० कृत्रिमः: गुड्डा, पुत्तलिका कु० १।२९,—भूमिः (स्त्री) बनाया हुआ फर्श,- वनम् वाटिका, उद्यान।

कृत्वस् (अव्य०) एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के साथ 'तह' और 'गुणा' अर्थ को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है —उदा० अष्टकृत्वः आठगुणा, आठ तह का, इसी प्रकार दश°, पंच° आदि।

कृत्सम् [कृत्+स, कित्] 1. जल 2. सन्देह,—स्सः पाप।

कृत्स्न (वि०) [कृत्+स्नन्] सारे, समूचा, समस्त एकः कृत्स्ना नगरारिप्राप्तुंबाहुर्भुनक्ति शं० २।१५, भग० ३।२९, मनु० १।१०५, ५।४२।

कृत्स्नशस् [कृत्स्न+शस्] इत्यादि।

कृन्तनम् [कृत्+ल्युट्] काटना, काट कर फेंक देना, बिभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना।

कृपः [कृप्+अच्] अश्वत्थामा का मामा (कृप और कृपी दोनों भाई बहन शरद्वत् ऋषि की सन्तान थे, इनकी माता जानपदी नाम की अप्सरा थी। कृप का पालन पोषण शन्तनु ने किया था। कृप धनुर्विद्या में बड़ा निपुण था, महाभारत के युद्ध में वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा और अन्त में मारा गया। पाण्डवों ने उसे शरण दी। वह सात चिरंजीवियों में से एक है)

कृपण (वि०) [कृप्—क्युन् न रणत्वम्] 1. गरीब, दयनीय, अभागा, असहाय—राजन्यापत्य रामस्ते पाल्याश्च कृपणाः प्रजाः —उत्तर० ४।२५ 2. विवेकशून्य, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के प्रयोजन तथा अभिलाषा से रहित, कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५, इसी प्रकार अकाण्डपाण्डित्यकृपण, भर्तृ० ३।१७ 3. नीच, खोटा, दुष्ट -भग० २।४९ सुदा० २। १८, भर्तृ० २।४९ 4. पुंस, कंजूस, - णम् दुर्दशा, पुंस्त्व, कृपणेन समो दाता भुवि कोऽपि न विद्यते, अनल्पस्नेहविक्लिन्नं यः संरक्षति याचते —सुभा०। सम० -धी,- बुद्धि, छोटेदिल का, नीच मन का,—वत्सल (वि०) दीनदयालु।

कृपा [कृप्+भिदा० अङ्—टाप्, संप्र०] स्नेह, दयालुता, करुणा - चक्रेश्वरस्यः पुरां विवृतेः मिथुने कृपावती कु० ५।२६, श्रा० ४।१२, **सकृपम्** कृपा करके।

कृपाणः [कृपां राहतिं नयति -कृपा+नी+ड संज्ञायां णत्वम्] 1. तलवार, स पातु वः कंसरिपोः कृपाणः विक्रम० १।१, कृपाणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः —सुभा० 2. चाकू।

कृपाणिका [कृपाण+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी, छुरी।

कृपाणी [कृपाण+ङीष्] 1. कैंची 2. छोटी।

कृपालु (वि०) [कृपां लाति- कृपा+ला+आदाने कि० डु] दयालु, करुणापूर्ण, सदय।

कृपी [कृप+ङीष्] कृप की बहन तथा द्रोण की पत्नी, । सम०—पतिः द्रोण का विशेषण,-सुतः अश्वत्थामा का विशेषण।

कृपीटम् [कृप्+कीटन्] 1. तरुवाड़ियाँ, जंगल की लकड़ी 2. वन, जलाने की लकड़ी 3. पानी 4. पेट। सम० -पालः 1. पतवार 2. समुद्र 3. वायु, हवा। सम० -योनि अग्नि।

कृमि (वि०) [कृम्+इन्, अन् इत्वम् संप्र०] 1. कीड़ों से भरा हुआ, कोटयुक्त—कृमिकुलचितम्- भर्तृ० २।९ 2. कीड़े (रोग) 3. मक्खी 4. लकड़ी 5. लाख (रंग)। सम० -कोशः कीड़ा, रेशम का कीड़ा, 'उत्तमं कृमिकोशजं वस्त्रं' मनु० ५।११४, -जम्, -जाग्रम् लाख की लकड़ी, जा लाल कीड़ों द्वारा उत्पादित लाल रंग,—जलजः, -वारिरुहः घोंघा, सीपी में रहने वाला कीड़ा,—पर्वतः, -शैलः बांबी,—कलः गुलर का पेड़,- शङ्खः शंख के भीतर रहने वाली गलगली, -सुतिः (स्त्री०) 1. दोहरी पीठ वाला घोंघा 2. सीपी में रहने वाला कीड़ा 3. घोंघा।

कृमिण, कृमिल (वि०) [कृमि+न, ल वा, णत्वम्] कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त।

कृमिला [कृमि+ला+क+टाप्] बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री।

कृश् (दिवा० पर०—कृश्यति, कृश) 1. दुर्बल या क्षीण होना 2. (चन्द्रमा की भांति) उत्तरोत्तर ह्रास होना (प्रेर०) दुर्बल करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृश (वि०) (सप्त० **कृशीयस्**, उत्त० **कृशिष्ठ**) [कृश्+क, नि०] 1. दुबला पतला, दुर्बल, शक्तिहीन, क्षीण --कृशानुः कृशोदर्या आदि 2. छोटा, पीड़ा, सूक्ष्म (आकार या परिमाण में)--सूक्ष्मेऽपि न ग्राह्यः कृशधनः भर्तृ० २।२८ 3. दरिद्र, निर्धन --मनु० ७।२०८। सम०—**अक्षः** मकड़ी, **अङ्ग** (वि०) दुबला, पतला, (**गी**) 1. तन्वंगी 2. प्रियंगु लता,- **उदर** (वि०) पतली कमर वाला --विक्रम० ५।१६ ।

कृशाला [कृश+ला+क+टाप्] (सिर के) बाल ।

कृशानुः [कृश्+आनुक्] आग, सूर्य: कृशानुप्रतिमाद्विभेषि--रघु० २।४९, ७।२४, १०।७४, कु० १।५१, भर्तृ० २।१७७। सम०-**रेतस्** (पुं०) शिव की उपाधि ।

कृशाश्विन् (पुं०) [कृशाश्व+इनि] नाटक का पात्र ।

कृष् i (तुदा० उभ० --कृषति-ते, कृष्ट) हल चलाना, खेत बनाना।

ii (भ्वा० पर०- कर्षति, कृष्ट) 1. खींचना, घसीटना, चीरना, खींच देना, फाड़ना प्रमथ्य सिंहः किल तां चकर्ष रघु० २।२७, विक्रम० ५।२९ 2. किसी की ओर खींचना, आकृष्ट करना--भट्टि० १५।४७, भग० १५।७ 3. (सेना आदि का) नेतृत्व या संचालन करना --स सेनां महतीं कर्षन्--रघु० १८।३२ 4. सुखाना (धनुष आदि का)--नाप्यातकृष्टशार्ङ्गः--रघु० ५।५० 5. स्वामी होना, दमन करना, परास्त करना, अभिभूत करना --बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति--मनु० २।२१५, नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति --पंच० २।४६, 6. हल चलाना, खेती करना अनुलोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षति--सिद्धा० 7. प्राप्त करना, हासिल करना-- कुलसंख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः--महा० 8. किसी से ले लेना, किसी को वंचित करना (द्विकर्म०) **अप**--पीछे खींचना, खींच ले जाना, घसीट कर दूर करना, लंबा करना, निचोड़ना दन्तावभिग्रमप्यकृष्य निर्दहेत्तौ च --ऋतु० ४।१४, रघु० १६।५५ 2. हटाना उत्तर० १।८ 3. कम करना, घटाना, **अव**--खींचना, खींच लेना, **आ**--खींचना, समीप पहुँचना, धकेलना, खींच लेना, निचोड़ना (आत्म०)--क्षोभयित्वाकृष्य चुम्बति हि० १।१०९, श० १।३३ दूरमपसारणेन वयमाकृष्टा, श० १, अमरु २।७२, कु० २।५९, रघु० १।२२ 2. (धनुष आदि का) सुकाना श० ३।५, शि० ९।४० 3. निचोड़ना, उधार लेना - हि० प्र० ९।४, 4. छीनना, बलपूर्वक ग्रहण करना—भट्टि० १६।३० 5. किसी दूसरे नियम या वाक्य से शब्द ला देना, **उद्**---, 1. ऊपर खींचना, उखाड़ना--अङ्गदकोटिलग्नं प्रालम्बमुत्कृष्य--रघु० ६।१४, शि० १३।६० 2. बढ़ाना, वृद्धि करना **नि**—,डुबोना, कम करना, घटाना **निस्**---, 1. बाहर खींचना 2. खींचतान कर निकालना, बलपूर्वक निकालना, छीनना या जबरदस्ती लेना —निष्कृष्टुमर्थं चक्रमे कुबेरात्--रघु० ५।२६, **परि**---,खींचना, निकालना, घसीटना, **प्र**—, 1. खींच लेना, खींचना, अंकुरित करना 2. (सेना का) नेतृत्व करना 3. (धनुष का) झुकाना 4. बढ़ाना, **वि**—, 1. खींचना 2. (धनुष का) झुकाना -शरासनं तेषु विकृष्यतामिदम् श० ६।२८, **विप्र**--,हटाना, **सं**नि—,निकट लाना ।

कृष्कः [कृष्+क्वन्] 1. हलवाहा, हाली, किसान 2. फाली 3. बैल ।

कृषाणः, कृषिकः [कृष्+आनक्, किकन् वा] हलवाहा, किसान ।

कृषिः (स्त्री०) [कृष्+इक्] 1. हल चलाना 2. खेती, काश्तकारी--चोयते वालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः--मुद्रा० ३, कृषिः क्लिष्टाऽनुष्ठ्या-पंच० १।११, मनु० ११।७०, ३।६४, १०।७९, भग० १८।४४। सम० **कर्मन्** (नपुं०) खेती का काम,-**जीविन्** (वि०) खेती से निर्वाह करनेवाला किसान, -**फलम्** खेती से होने वाली उपज, या लाभ-मेघ० १६,—**सेवा** खेती करना, किसानी ।

कृषीवलः [कृषि+वलच्, दीर्घः] जो खेती से अपनी जीविकार्जन करे, किसान,--कृषिं चापि कृषीवलः--राज० १।२७६, मनु० ९।३८ ।

कृष्करः [कृष+कृ=टक् पृषो०] शिव की उपाधि ।

कृष्ट (वि०) [कृष्+क्त] 1. खींचा हुआ, उखाड़ा हुआ, घसीटा हुआ, आकृष्ट 2. हल चलाया हुआ ।

कृष्टिः [कृष्+क्तिन्] विद्वान् पुरुष-(स्त्री) 1. खींचना, आकर्षण 2. हल चलाना, भूमि जोतना ।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक्] 1. काला, श्याम, गहरा नीला 2. दुष्ट, अनिष्टकर,--ष्णः 1. काला रंग 2. काला हरिण 3. कौआ 4. कोयल 5. चान्द्रमास का कृष्णपक्ष, 6. कलियुग 7. आठवाँ अवतारधारी विष्णु (भारतीय पुराणशास्त्र के अनुसार कृष्ण अत्यंत प्रसिद्ध नायक हैं, देवताओं में सर्वप्रिय है। वसुदेव और देवकी का पुत्र होने के कारण कृष्ण कंस का भाग्जा है, पर व्यवहारतः वह नन्द और यशोदा का पुत्र है, उन्होंने ही इसका पालन-पोषण किया और वहीं कृष्ण ने अपना बचपन बिताया। जब उसने कंस द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये पूतना और बक आदि क्रूर राक्षसों को मार गिराया तथा शूर-वीरता के अनेक आश्चर्यजनक कर्तव्य किये तो क्रमशः उसका दिव्य लक्षण प्रकट होने लगा। युवावस्था के उसके मुख्य साथी थे गोकुल के ग्वालों की बधूएँ तथा गोपियाँ जिनमें राधा उनको विशेष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रिय थी (तु० जयदेव के गी० की)। कृष्ण ने कंस, नरक, केशि, अरिष्ट तथा अन्य अनेक राक्षसों को मार गिराया। यह अर्जुन का घनिष्ठ मित्र था, महाभारत के युद्ध में उसने अर्जुन का रथ हांका, पांडवों के हितार्थ दी गई कृष्ण की सहायता ही कौरवों के नाश का मुख्य कारण थी। संकट के कई अवसर आये, परन्तु कृष्ण की सहायता और उनकी कल्पनाप्रवण मति ने पांडवों को कोई आंच न आने दी। यादवों का प्रभासक्षेत्र में सर्वनाश हो जाने के पश्चात् वह जरस नामक शिकारी के बाण का, मृग के धोखे में, शिकार हो गये। कहते हैं कृष्ण के १६००० स्त्रियां थी, परन्तु रुक्मिणी, सत्यभामा (राधा भी) उनको विशेष प्रिय थी। कहते हैं उसका रंग सांवला या बादल की भांति काला था —तु० बर्हिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम्—गीत० ८, उसका पुष्प प्रद्युम्न था)। 8. महाभारत का विख्यात प्रणेता व्यास 9. अर्जुन 10. अगर की लकड़ी,—**ष्णम्** 1. कालिमा, कालापन 2. लोहा 3. अंजन 4. काली पुतली 5. काली मिर्च 6. सीसा। सम०—**अगुरु** (नपुं०) एक प्रकार के चंदन की लकड़ी,—**अचलः** रैवतक पर्वत का विशेषण,—**अजिनम्** काले हरिण का चर्म,—**अयस्** (नपुं०)—**अयसम्**,—**आमिषम्** लोहा, कच्चा या काला लोहा,—**अम्बनू**,—**अग्निः** (पुं०) आग,—**अष्टमी** भादपद कृष्णपक्ष का आठवां दिन, यही कृष्ण का जन्म दिन है, इसे गोकुलाष्टमी भी कहते हैं, —**आवासः** अश्वत्थ वृक्ष,—**उदरः** एक प्रकार का सांप,—**कन्दम्** लाल कमल,—**कर्मन्**(वि०)काली करतूत वाला, मूजरिम, दुष्ट, दुश्चरित्र, दोषी,—**काकः** पहाड़ी कौआ,—**कायः** भैंसा,—**काष्ठम्** एक प्रकार की चंदन की लकड़ी, काला अगर,—**कोहलः** जुआरी,—**गतिः** आग, —**आयोधने कृष्णगति सहायम्**—रघु० ६।४२, **शौचः** शिव का नाम,—**तारः** काले हरिणों की एक जाति,—**तेजः** मधुमक्खी,—**धनम्** बुरे तरीकों से कमाया हुआ धन, पाप की कमाई,—**द्वैपायनः** व्यास का नाम,—**तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायन वन्दे**—वेणी० १।३.—**पक्षः** चांदमास का अंधेरा पक्ष,—**मृगः** काला हरिण—**मृगस्तु कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगीम्**—श० ६।१६,—**मुखः**,—**वक्त्रः**, —**वदनः** काले मुंह का बन्दर,—**यजुर्वेदः** तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद,—**लोहः** चुम्बक पत्थर,—**वर्णः** 1. कालारंग 2. राहु 3. शूद्र,—**वर्त्मन्** (पुं०) 1. आग,—रघु० ११। ४२, मनु० २।९४ 2. राहु का नाम 3. नीच पुरुष, दुराचारी, लुच्चा,—**वेणा** नदी का नाम,—**शकुनिः** कौवा, **शारः**,—**सारः** चितकबरा कालामृग—**कृष्णसारे ददच्चक्षुः त्वयि चाधिज्यकार्मुके**—श० १।६,—**भृङ्गः** भैंसा,—**सर्पः**, —**सारथिः** अर्जुन का विशेषण।

कृष्णकम् [कृष्ण+कन्] काले मृग का चमड़ा।

कृष्णतः [कृष्ण+ला+क] घुंघची का पौधा, गुंजा-पौधा, —**तम्** घुंघची, चहुटली।

कृष्णा [कृष्ण+टाप्] 1. द्रौपदी का नाम, पांडवों की पत्नी —कि० १।२६ 2. दक्षिण भारत की एक नदी जो मसुलीपट्टम् में समुद्र में गिरती है।

कृष्णिका [कृष्ण+ठन्+टाप्] काली सरसों।

कृष्णिमन् (पुं०) [कृष्ण+इमनिच्] कालिमा, कालापन।

कृष्णी [कृष्ण+ङीष्] अंधेरी रात।

कृ i (तुदा० पर०—किरति, कीर्ण) 1. बखेरना, इधर-उधर फेंकना, उडेलना, डालना, तितर-बितर करना —समरशिरसि चञ्चत्पञ्चचञ्चद्दृषध्वजनामुपरि शरतुषारं कोऽप्यपूर्वो वीरपोतः, किरति—उत्तर० ५।२, ६।१, दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् गीत० ४, श० १।७, अमरु ११ 2. छितराना, ढकना, भरना—भट्टि० ३।५, १७।४२। **अप**—, 1. बखेरना, इधर-उधर डालना, —अपकिरति कुसुमम्—सिद्धा० 2. पैरों से खरचना (भोजन या आवास आदि के लिए), पूरा हर्ष, (चौपायों और पक्षियों में) (इस अर्थ में क्रिया का रूप अपस्किरने बनता है) अपस्किरते वृषो हृष्टः, कुक्कुटो भक्षार्थी इवा आश्रयार्थी च—सिद्धा०, **अपा**—, उतार फेंकना, अस्वीकार करना, निराकरण करना, **अव**—, बखेरना, फेंकना —अवाकिरन्खालिलताः प्रसूनैः —रघु० २।१०, **आ**—, 1. चारों ओर फैलाना 2. खोदना, **उद्**—, 1. ऊपर को बखेरना, ऊपर को फेंकना रघु० १।४२ 2. खोदना, खोदकर खोलना 3. उत्कीर्ण करना, खुदाई करना, मूर्ति बनाना —उत्कीर्णा इव वासयष्टिषु निशानिद्रालसा बर्हिणः —विक्रम० ३।२, रघु० ४।५९, **उपः** —, (उपस्किरति) काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, **परि** —, 1. घेरना—**परिकीर्णा परिवादिनी मुनेः**—रघु० ८। ३५ 2. सौंपना, देना, बांटना—**महीं महेच्छः परिकीर्य सूनौ**—रघु० १८।३३, **प्र**—, 1. बखेरना, फेंकना उडेलना—**प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम्** —वेणी० १।२ 2. (बीज आदि) बोना, **प्रति**—, (प्रतिकिरति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, फाड़ना —उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः शि० १।४७, **वि**—, बखेरना, इधर-उधर फेंकना, छितराना, फैलाना —कु० ३।६१, कि० २।५९, भट्टि० १३।१४, २५, **विनि**—, फेंकना, छोड़ना, उतार फेंकना —कु० ४।६, **सम्**—, मिलाना, सम्मिश्रण करना, एक स्थान पर गड्डमड्ड करना, **समुद्**—छेदना, सूराख करना, बींधना रघु० १।४।

ii (क्रया० उभ०—कृणाति, कृणीते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

कृत् (चुरा० उभ०—कीर्तयति-ते, कीर्तित) 1. उल्लेख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, दोहराना, उच्चारण करना—गाम्नि कीर्तित एव–रघु० १।८७, मनु० ७।१६७, २।१२४ 2. कहना, सस्वर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना —मनु० ३।३६, ९।४२ 3. नाम लेना, पुकार करना 4. स्तुति करना, यशोगान करना, स्मरणार्थ उत्सव मनाना—अपप्रथत् गुणान् भानुरचिकीर्तंच्च विक्रमं –भट्टि० १५।७२, पंच० १।४ ।

कल्प् (भ्वा० आ०—कल्पते, कल्पत) 1. योग्य होना, यथेष्ट होना, फलना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा करना, डुलकना (सप्र० के साथ)–कल्पसे रक्षणाय–शं० ५।५, पश्चात्पुत्रैरपहृतभरः कल्पते विश्वभाय—विक्रम० ३।१, विभावरी यद्यरुणाय कल्पते कु० ५।४४, ६।२९, ५।७९, मेघ० ५५, रघु० ५।१३, ८।४०, शं० ६।२३, भट्टि० २२।२१ 2. सुघटित तथा विनियमित होना, सफल होना 3. होना, घटित होना, घटना—कल्पिष्यते हरेः प्रीतिः—भट्टि० १६।१२, ९।४४, ४५ 4. तैयार होना, सज्जित होना—चकल्पे चाश्वकुञ्जरम्–भट्टि० १४।८९ 5. अनुकूल होना, किसी के काम आना, अनुसेवन करना 6. भाग लेना, (प्रेर०) 1. तैयार करना, क्रम से रखना, संवारना 2. निश्चित करना, स्थिर करना 3. बाँटना 4. सामान जुटाना, उपस्कृत करना 5. विचार करना, अव—, फलना, झुकना, सम्पन्न करना (सप्र० के साथ) आ—, (प्रेर०) अलंकृत करना, सजाना, उप—, 1. फलना, परिणाम निकालना, (सप्र० के साथ) मनु० २।२०२ 2. तैयार होना, तत्पर होना—मनु० ३।२०८, ८।३३३, परि—, (प्रेर०) 1. फैसला करना, निर्धारण करना, निश्चित करना 2. तैयार करना, तैयार होना 3. गुणयुक्त करना—शं० २।९ प्र—, होना, घटित होना 2. सफल होना (प्रेर०) 1. आविष्कार करना, उपाय निकालना, (योजनाएँ) बनाना 2. तैयार होना, तैयार करना, वि—, संदेह करना, संदिग्ध होना (प्रेर०) संदेह करना, सम्—, (प्रेर०) 1. दृढ़ निश्चय करना, दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना 2. इरादा करना, प्रस्ताव रखना, समुप—, तैयार होना ।

कल्पः (भू० क० कृ०) [कल्प्+क्त] 1. तैयार किया हुआ, किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित—कल्पविवाहवेषा —रघु० ६।१० विवाहवेष में सुभूषित 2. काटा हुआ, छीला हुआ—कल्पकेशनखश्मश्रु—मनु० ४।३५ 3. उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ 4. स्थिर किया हुआ, निश्चित 5. सोचा हुआ, आविष्कृत । सम०—कीला अधिकार पत्र, दस्तावेज, भूपः लोधान ।

कल्पिः (स्त्री०) [कल्प्+क्तिन्] 1. निष्पत्ति, सफलता 2. आविष्कार, बनावट 3. क्रमबद्ध करना ।

कल्पितक (वि०) [कल्प्त+कन्] खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ ।

केकयः (ब० व०) एक देश और उसके निवासी मगध-कोसलकेकयशासिनां दुहितरः रघु० ९।१७ ।

केकर (वि०) (स्त्री० -री) के मूर्ध्नि नेत्रवारा कर्तुं शीलमस्य—कृ+अच् अलुक् तारा०] भेंगी आंख वाला, रम् भेंगी आंख; तु० आकेकर । सम० अक्ष (वि०) वक्रदृष्टि, भेंगी आंख वाला ।

केका [के+कै+ड+टाप्, अलुक् स०] मोर की बोली —केकाभिर्नीलकण्ठस्तिरयति वचनं ताण्डवादुच्छिखण्डः –मा० ९।३०, षड्जसंवादिनी: केकाः रघु० १।३९, ७।६९, १३।२७, १६।६४, मेघ० २२, भर्तृ० १।३५ ।

केकावलः, केकिकः, केकिन् (पुं०) [केका+वलच्, केका +ठन्, केका+इनि] मोर इतः केकिकीडाकलकल-रवः पक्ष्मलदृशां भर्तृ० १।३७ ।

केणिका [के मूर्ध्नि कुलिसः अणकः—टाप्] तम्बू ।

केतः [कित्+घञ्] 1. घर, आवास 2. रहना, बस्ती 3. झंडा 4. इच्छा शक्ति, इरादा, चाह ।

केतकः [कित्+ण्वुल्] एक पौधा –प्रतिशाखश्च वनानि केतकानाम्–घट० १५ 2. झण्डा,—कम् केवड़े का फूल – केतकैः सूचिभिन्नैः मेघ० २४, २३, रघु० ६।१७, १३।१६, की एक पौधा–केवड़ा (=केतक)–हसित-मिव विघटे सूचिभिः केतकीनाम् ऋतु० २।२३ 2. केतकी का फूल—ऋतु० २, २०, २४ ।

केतनम् [कित्+ल्युट्] 1. घर, आवास अकलितमहिमानः केतनं मङ्गलानां– मा० २।९, मम शरणमेव दरमति वितथकेतना– गीत० ७ 2. निमंत्रण, बुलावा 3. स्थान, जगह 4. पताका, झंडा—भग्नं भीमेन गुरुता भवतो रथकेतनम्—वेणी० २।२३, शि० १४।२८, रघु० ९।३९ 5. चिह्न, प्रतीक जैसाकि मकरकेतन 6. अनिवार्य कर्म (धार्मिक भी)–तिवाघाज्जलिदानेन केतनैः श्राद्धकर्मभिः, तस्योपकारे शक्तस्त्व किं जीवन् किमुतान्यथा वेणी० ३।१६ ।

केतित (वि०) [केत+इतच्] 1. बुलाया गया, आमंत्रित 2. आबाद, बसा हुआ ।

केतुः [चाय्+तु, को आदेशः] 1. पताका, झंडा चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य– शं० १।३४ 2. मुख्य, प्रधान, नेता, प्रमुख, विशिष्ट व्यक्ति (बहुधा समास के अन्त में) –मनुष्यवाचा मनुषेयकेतुम्—रघु० २।३३, कुलस्य केतुः स्फीतस्य (राघवः)– रामा० 3. पुच्छलतारा, धूमकेतु—मनु० १।३८ 4. चिह्न, अंक 5. उज्ज्वलता, स्वच्छता 6. प्रकाश की किरण 7. सौर-मंडल का नवाँ ग्रह जो पुराणों के अनुसार सैंहिकेय राक्षस का कबंध है तथा जिसका सिर राहु है–क्रूर-ग्रहः सकेतुश्चन्द्रमसं पूर्णमण्डलमिदानीम्–मुद्रा० १।६ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम० ग्रहः अवरोही शिरोबिन्दु (जहाँ ग्रहमार्ग व क्रांतिमार्ग एक दूसरे को काटते हैं)—भ्रमणम्, यष्टिः (स्त्री०) ध्वज का दंड ।०५० १२५।२३, वस्त्रम् नीलम. बैदूर्य वस्त्रम् ध्वजा, पताका ।

केदारः [के मिमि दारोऽस्य—ब० स०] 1. एक ओर भरा हुआ खेत, चरागाह 2. क्यारी, अलबाल 3. पहाड़ 4. केदार नामक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है 5. शिव का नाम । सम० खण्डः मिट्टी का बना एक छोटा सा थाँव जो पानी को रोके, शाखः शिव का विशेष रूप ।

केनारः [के मूर्धनि नारः अलु० स०] 1. सिर 2. खोपड़ी 3. गाल 4. जोड़ ।

केनिपातः [के जले निपातयतीति के, नि+पत्+णिच् +अच्] पतवार, डांड, चप्पू ।

केन्द्रम् (नपुं०) 1. वृत्त का मध्य बिंदु 2. वृत्त का प्रमाण 3. जन्मकुंडली में लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवां स्थान ।

केयूरः, रम् [के बाहौ शिरसि वा याति, या+ऊर किच्च, अलु० स०, तारा०] डाढ़, विजायठ, बाजूबंध केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हाराः न चन्द्रोज्ज्वलाः—भर्तृ० २।९९, रघु० ६।६८, कु० ७।९९, २ एक रतिबंध ।

केरलः (ब० व०) दक्षिण भारत का एक देश (वर्तमान मलाबार) और उसके निवासी —मा० ५।१९, रघु० ४।५४, **ली** (स्त्री०) 1. केरल देश की स्त्री 2. ज्योतिर्विज्ञान ।

केल् (भ्वा० पर० —केलति, केलित) 1. हिलाना 2. खेलना, खिलाड़ी होना, क्रीडा परायण या केलिप्रिय होना ।

केलकः [केल्+ण्वुल्] नर्तक, कलाबाजी करने वाला नट ।

केलासः [केला विलासः सौदर्यमस्यास्ति—केला+मत्—डः] स्फटिक ।

केलिः (पुं०—स्त्री०) [केल्+इन्] 1. खेल, क्रीडा 2. आमोद-प्रमोद, मनोविनोद —केलिकिलञ्जमणिकुण्डल आदि —गीत० १, हरिन्ति मुग्धवनितासु विलासिनि विलासिनि केलिषु—भर्तृ०, सायमाधवयोर्वायति यमुनाकूले रहः केलयः—भर्तृ० ३।२५, मा० ८।२५, ऋतु० ४।१७ 3. संभोग, रति०, दुर्योधनकेलिः,—लिः (स्त्री०) पक्षी 1. नर्तकी—कला केलिरिव प्रिय कला विलासिनां, शेक्सपीयर सर्वोत्तम 2. मनोरंजनी की वीणा,—किलः नाटक में नायक का विदूषक सहचर (एक प्रकार का विदूषक), —किलासली रति, कामदेव की पत्नी,—कोपः छेड़,—कुंचिका पत्नी की छोटी बहन,—कुपित (वि०) खेल में रुष्ट—वेणीः १।२ —कोविद नाटक का पात्र, नर्तक, तर्कीया, गृहम्, निकेतनम् मन्दिरम् सदनम् आगारासन, दिर्श, केलिका, अदर्श ८, नागरः दासीपुत्र, परः (वि०) क्रीडापर, विलासी, आमोद ।

प्रिय, —सखः परिहास, क्रीडा, मनोरंजन, वृक्षः कदंब-वृक्ष की जाति, शयनम् विलासशय्या, कुसुमशय्या, कौच —शैलः क्रीडापर्वतम् मालव० ११,—स्थलिः (स्त्री०) पत्नी, सचिवः आमोदप्रिय सखा, विदूषक मित्र ।

केलिः—र: केलि+कल्] अशोक वृक्ष ।

केली [केलि+ङीष्] 1. खेल, क्रीडा 2. आमोद-क्रीडा । सम० विलः एरण्डवृक्ष, रुकी हुई क्रीडा,—वनी प्रमोद-वाटिका, केलिकानन, के शयनम्,—शुकः मनोरंजनार्थ पाला हुआ तोता ।

केवल (वि०) [कं सुखमेति प्राप्नोति+कल] 1. विशिष्ट, एकाधिपत्य 2. अकेला, साथ, एकाकी, एकान्त, 3. अनन्य, सर्वस्व या केवल प्रिय प्रतिज्ञेदं सकलं मुधेति—रघु० ८।९, न केवलानां पयसां प्रसूतिः—कुमार० १।२६, कामदुघा प्रसन्नाम् ४।३३, ५।१, कु० ७।३४ 3. पूर्ण, समस्त, पूरा 4. नग्न, अनावृत [मूर्धन आदि] कु० ५।१२ 5 खालिस, सरल, अमिश्रित, विमल —कार्यं केवलं नीतिः —रघु० १७।७३, —लम् (अव्य०) केवल, सिर्फ, एकमात्र, पूर्ण रूप से, नितान्त, सर्वथा —केवलमिहमेव पृच्छामि-का० १५५, न केवलम् अपि न सिर्फ यह कि, सु तस्य विभोर्न केवलं गुणयन्तीह परेष्वपि जनाः रघु० ८।२१, भू० ३।१९, ७०३५ । सम०—आत्मन् (वि०) परम एकता ही जिसका सार है कु० २।४, नैयायिकः विशुद्ध तार्किक (जो ज्ञान को किसी और शास्त्र में प्रवीण न हो), इसी प्रकार वैयाकरण ।

केवलतः (अव्य०) [केवल+तसिल्] केवल, सिर्फ, सर्वथा, बिल्कुल, सिर्फ ।

केवलिन् (वि०) (स्त्री० नी) [केवल—इनि] 1. अकेला एकाकार 2. अन्यों की सहायता के बिना सिद्धता का पक्षपाती ।

केशः [कित्+घञ् किच्च+घञ् वा कित्+अच्, कांशांशवत्] 1. बाल जिन्हींकितांशु परेष्वभिलाषः कु० ५।६८ 2. सिर के बाल—केशैरु गुंठिता—या—केशकैः यान्तो गिरः० ३, सकेशिनी गी० ७।९, केशव्यवहितेनापि चित्रं ३।२६, ६।९६, ७।८ 3. घोड़े या शेर की अयाल 4. प्रकाश की किरण 5. बरगद का विशेषकर 6. एक पौधा का सुगन्धित द्रव्य । सम० अन्तः 1. बाल का सिरा 2. सीधे लटकते हुए लम्बे बाल, वाली का गुच्छा 3. गृहस्थ संस्कार मनु० २।६५, उच्चयः अधिक या सुन्दर बाल, कर्मन् (नपुं०) (सिर के) बालों को संवारना,—रुहाणः दाढ़ी का बाल, —कीटः जूं, गर्भः बालों की सीढ़ी, गृहीत (वि०) बालों से पकड़ा हुआ, —ग्रहः—ग्रहणम् बालों का पकड़ना, बालों से पकड़ना केशग्रहः स्वल्प नदा दुष्टदासजायाः—वेणी० ३।१२,७०, मेघ० ५०, इसी प्रकार यत्र स्तेषु केशग्रहः—का० ८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

-दन्तम् मूर्खित संज्ञापन, -छिद् (रु०) नाई, हज्जाम, -जीविन् जीविका वाले लोग, -पक्षः, -पञ्चः, -हस्तः बहुत अधिक अथवा लंबे हुए बाल जो केशपाश प्रसाधनेऽव कुर्वन्धिभिर्न शिथिल चमर्यः--कु० १।४८,७।१७, रघु० कथयत कबरहस्त आदि -वन्य जूड़ा, -भृत्--भूमिः सिर या शरीर का अन्य कोई अंग जहां बाल उगते हैं

प्रसाधनी, माजेकम्,- माजेनम् कंघी, रदनी बालों को संवारना, वेणु- कबरी-बन्धन ।

केशटः [केश + अट्+अच्, ककि० पररूपम्] 1. इन्द्र का विशेषण 2. विष्णु का नाम 3. सूर्य का 4. भाई ।

केशव (वि०) [केशाः प्रशस्ताः सन्त्यस्य. केश + अ] बड़ा या सुन्दर बालों वाला, -वः विष्णु का विशेषण-केशव अब जगदीश हरे मौनं १, केशवं पतितं दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भराः -सुभा० । सम० आयुधः आम का वृक्ष (-धम्) विष्णु का शस्त्र, -आलयः,-आवासः अश्वत्थ वृक्ष ।

केशाकेशि (अव्य०) [केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तं युद्धम् ...पूर्वपदस्य आकारः उत्वम् च] एक दूसरे के बाल खींच कर, नोच कर की जाने वाली लड़ाई झोंटा-झोंटी केशाकेशिमवर्तयुद्धं रक्षसां वानरैः सह - महा०, याज्ञ० २।२८३ ।

कैशिक (वि०) [केशानां हन्] सुन्दर या अलंकृत बालों वाला ।

केशिन् (पु०) [केश+इनि] 1. सिंह 2. एक राक्षस जिसको कृष्ण ने मार दिया था 3. एक और राक्षस जो देव सेना को उठा कर ले गया और बाद में इन्द्र द्वारा मारा गया था 4. कृष्ण का विशेषण 5. सुन्दर बालों वाला । सम० निषूदनः,--सूदनः कृष्ण के विशेषण -भाग० १०।१ ।

केशिनी [केशिन् +ङीप्] सुन्दर जूड़े वाली स्त्री 2. घिनौनी स्त्री, राक्षसी और कुलटा स्त्री की माता ।

केस (श) र.,--रस् [कि--सु (रु) +अस्, अन्यतः स०] 1. (सिंह आदि की) अयाल न हन्त्यदेरेति गजान्पुंश्चीश्वरो सिंहोलज्जिहजटचलिताकेसरः -कथा० १।१४, प० ७।१४ 2. फूल का रेशा या तन्तु--नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढैः--मेघ० २१. भा० ६।१७, मालवि० ५।११, रघु० ४।६७ शि० ९।४७ 3. बकुल का पेड़ 4. (आम आदि का) रेशा या सूत्र, --रसः बकुल वृक्ष का फूल- रघु० ९।२६ । सम० -अचलः मैसूर पहाड़ का विशेषण, -पत्रम् केसर, जाफरान ।

केसर (श) रिन् (पु०) [केसर + इनि] 1. सिंह अनुहंकुरुते पतत्रिणं न हि सोमाश्वतरादि केसरी - शि० १६। २५, अनुधेरः केसरिणं शशकः--रघु० ३।३५, भा० ७।३ 2. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अपने वर्ग का प्रधान (समास के अन्त में--तु० कुंजर, सिंह आदि) 3. घोड़ा 4. नींबू या गलगल का पेड़ 5. बकुल वृक्ष 6. हनुमान् के पिता का नाम । सम०—सुतः हनुमान् का विशेषण ।

कं (स्वा० पर० कायति) चमकना, कान्ति करना ।

केकम् [कि+कन्] केतकी वृक्ष का फूल ।

केकयः [केकय--अण्] केकय देश का राजा, देo केकयी ।

केकरः [कीकस + अच्] रास्ता, पिशाच ।

कैकेयः [केकयस्य राजा -अण्] केकय देश का राजा या राजकुमार, यौ केकय देश के राजा की बेटी, राजा दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता (जब राम को राजगद्दी मिलने वाली थी, तो कैकेयी को कौसल्या से कुछ असूया न थी, परन्तु उसकी दासी मन्थरा बड़ी दुष्ट थी, उसे राम से पुराना द्वेष था; इस अवसर का लाभ लेने का अच्छा अवसर समझकर मन्थरा ने कैकेयी का मन इतना अधिक पलट दिया कि वह अन्धेरा मचाने के लिए उद्यत हो गई जो उन्होंने पहले कभी देने की प्रतिज्ञा की थी। एक वर से उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी तथा दूसरे वर से राम के लिए १४ वर्ष का निर्वासन माँगा। रोषान्ध दशरथ ने कैकेयी को उसके दूषित प्रस्तावों के लिए बहुत बुरा भला कहा परन्तु अन्ततः उन्हें उसकी हठ के आगे झुकना पड़ा। इस दुष्कृत्य के कारण कैकेयी की नाम बदनाम हो गया)।

कैटभः [कीट+भा+क [अण्] राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मार गिराया (यह बड़ा बलवान् राक्षस था, कहा जाता है कि यह और मधु दोनों राक्षस विष्णु के कान से निकले जब कि वे सोये हुए थे, परन्तु जब राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिए दौड़ा तो विष्णु ने उसको मार गिराया) । सम०—अरिः, जित् (पु०)-रिपुः-हन् विष्णु के विशेषण ।

कैतकम् [कैतकी+अण्] केतकी का फूल ।

कैतवम् [कितवस्य भावः] 1. जुए में लगाया गया दाँव 2. जुआ खेलना 3. झूठ, धोखा, चालसाजी, चालबाजी, चालाकी --हृदये पाशयिष्यन्ति यदवोचस्तदवैमि कैतवम्--कु० ४।९, -वः 1. छली, चालबाज 2. जुआरी 3. चतुरे का पौधा । सम० प्रयोगः चालाकी, छल, -वाद: झूठ, चालबाजी ।

कैदारः [केदार- अण्] चावल, अनाज, -रम् खेतों का समूह, 'कैदारं' भी इसी अर्थ में ।

कैमुतिकः [किमुत + ठक्] (न्याय) 'और किसका अधिक' न्याय, एक प्रकार का तर्क (किमुत 'और किसका अधिक' से व्युत्पन्न) ।

कैरवः [कि जले रौति कैरव: इव: तस्य विवं कैरव +अण्] 1 जुआरी, धोखा देने वाला, चालबाज 2. शंख, --वम् श्वेत कुमुद जो चन्द्रोदय के समय खिलता है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७३। सम०—बन्धुः चन्द्रमा का विशेषण।

कैरविन् (पुं०) [कैरव+इनि] चन्द्रमा।

कैरविणी [कैरविन्+ङीप्] 1. श्वेत फूल वाला कुमुद का पौधा 2. वह सरोवर जिसमें श्वेत कमल खिले हों 3 श्वेत कमलों का समूह।

कैरवी [कैरव+ङीप्] चाँदनी, ज्योत्स्ना।

कैलासः [के जले लासो दीप्तिरस्य - केलास+अण्] पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान—मेघ० ११, ५८ रघु० २।३५। सम०—नाथः 1. शिव का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण —कैलासनाथ तरसा जिगीषुः—रघु० ५।२८, कैलासनाथयुपसत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।२।

कैवर्तः [के जले वर्तते—वृत्+अच्, कैवर्तः तत्र स्वार्थे अण् तारा०] मछवा —मनोभूः कैवर्तः क्षिपति परितस्त्वां प्रति मुहुः (तनुजालो जालम्) शा० ३।१६, मनु० ८।२६०, (इसके जन्म के विषय में दे० मनु० १०।३४)।

कैवल्यम् [केवल+ष्यञ्] 1. पूर्ण पृथक्ता, अकेलापन, एकान्तिकता 2. व्यक्तित्व 3. प्रकृति से आत्मा का पार्थक्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता 4. मुक्ति, मोक्ष।

कैशिक (वि०) (स्त्री० -की) [केश+ठक्] बालों के समान, बालों की भाँति सुन्दर,—कः शृंगार रस, विलासिता,—कम् बालों का गुच्छा,—की नाट्य शैली का एक प्रकार (अधिक शुद्ध 'कौशिकी' शब्द है)।

कैशोरम् [किशोर+अञ्] किशोरावस्था, बाल्यकाल, कौमार आयु (पन्द्रह वर्ष से नीचे की) —कैशोरमापंचदशात्।

कैशम् [केश+ष्यञ्] सारे बाल, बालों का गुच्छा।

कोकः [कुक् आदाने अच्+तारा०] 1. भेड़िया वनचर-परिभ्राष्टा मृगी कोकैरिवादिता रामा० 2. गुलाबी रंग का हंस (चक्रवाक), कोकाना करुणस्वरेण सदृशी दीर्घा मदस्यर्थना -गीत ५ 3. कोयल 4. मेंढक 5. विष्णु का नाम। सम०—देवः 1. कबूतर, 2. सूर्य का विशेषण।

कोकनदम् [कोकात् चक्रवाकात् नदति नादयति नद्+अच्] लाल कमल - किंचित्कोकनदच्छदस्य सदृशे नेत्रे स्वयं रज्यतः उत्तर० ५।३६, नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनदरूपम् -गीत० १०, शि० ४।४६।

कोकाहः [कोक+आ+हन्+ड] सफेद घोड़ा।

कोकिलः [कुक्+डलच्] 1. कोयल—पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज-कु० ३।३२, ४।१६, रघु० १२।३९ 2. जलती हुई लकड़ी। सम०—आम्रासः,—उत्सवः आम का वृक्ष।

कोङ्कः, कोङ्कूमः (ब०व०) एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखंड।

कोङ्कूमा [कोङ्कूम+टाप्] रेणुका, जमदग्नि की पत्नी। सम०—भृत्यः परशुराम का विशेषण।

कोजागरः [को जागर्ति इति लक्ष्म्या उक्तिरत्र काले पृषो० तारा०] आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जानेवाला आमोदपूर्ण उत्सव।

कोटः [कुट्+घञ्] 1. किला 2. ओंपड़ा, छप्पर 3. कुटिलता 4. दाढ़ी।

कोटरः-रम् [कोटं कौटिल्यं राति रा+क ता०] वृक्ष की खोखर नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः - श० १।१४, कोटरमकालवृष्ट्या प्रबलपुरोवातया गमिते-मालवि० ४।२ ऋतु० १।२६।

कोटरी, कोटवी [कोट+रीर्(वी)+क्विप्] 1. तंगी स्त्री 2. दुर्गादेवी का विशेषण (वृद्ध रूप में वर्णन)।

कोटिः,-टी (स्त्री०) [कुट्+इन्, कोटि+ङीष्] 1. धनुष का मुड़ा हुआ सिरा-भ्रूमिनिहितैककोटिकार्मुकम्-रघु० ११।८१ उत्तर० ४।२९ 2. चरमसीमा का किनारा, लोक या धार-सहचरी दन्तस्य कोट्या लिप्तम्-मा० ९।३२, अङ्गदकोटिप्रलम्बम् रघु० ६।१४, ७।४६, ८।३६ 3. शस्त्र की धार या नोक 4. उच्चतम बिन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष-परां कोटिमानन्दस्याध्यगच्छत्-का० ३६९, इसी प्रकार कांपकोटिमापन्ना-पंच० ४, अत्यन्त कुपित 5. चन्द्रमा की कलाएँ -कु० २।२६ 6. एक करोड़ की संख्या-रघु० ५।२१, १२।८२, मनु० ६।६३ 7. (गणित) ९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा 8. समकोण त्रिभुज की एक भुजा (गणित) 9. श्रेणी, विभाग, राज्य-मनुष्य०, प्राणि० आदि 10. विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प। सम०—ईश्वरः करोड़पति,—जित् (पुं०) कालिदास का विशेषण,—ज्या (गणित) समकोण त्रिभुज में एक कोण की कोज्या,—द्वयम् दो विकल्प,—पाश्रम् एतवार,—पालः दुर्ग रक्षक,—वेधिन् (वि०) (शा०) नियत बिन्दु पर प्रहार करने वाला, (आल०) अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला।

कोटिक (वि०) [कोटि+कै+क] किसी वस्तु का उच्चतम सिरा।

कोटिरः [कोटिं राति रा+क ता०] सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बनी सींग के रूप की बालों की चोटी 2. नेवला 3. इन्द्र का विशेषण।

कोटि (टी) शः [कोटि(टी)+शस् +क] मैदा, पतेला।

कोटिशः (अव्य०) [कोटि+शस्] करोड़ों, असंख्य।

कोटीरः [कोटिमीरयति ईर्+अण्] 1. मुकुट, ताज 2. शिखा 3. सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बाँधी गई बालों की चोटी जो सींग जैसी दिखाई देती है, जटा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–कोटीरबन्धनबन्धुगुणयोगपटटष्यापारपारगमम् भज भूतभर्तुः–नै० ११।१८।

कोट्टः [कुट्ट+घञ्] नि० गुणः] दुर्ग, किला।

कोट्टवी [कोट्टं वाति दधा] क, गौरा० ङीप् तारा०] 1. नग्न स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों 2. दुर्गादेवी 3. बाण की माता का नाम।

कोट्टारः [कुट्ट+आरक् पृषो०] 1. किलेबन्दी वाला नगर, दुर्ग 2. तालाबकी सीढ़ियां 3. कुआं, तालाब 4. लम्पट, दुराचारी।

कोणः [कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा नारा०] 1. किनारा, कोना–भवेन कोणे क्वचन स्थितस्य–विक्रमांक० १।९९, (युक्तमेतत्तु पुनः कोणं नयनयोरयोः –भामि० २। १७३ 2. वृत्त का अन्तर्वर्ती बिन्दु 3. वीणा की कमानी, सारंगी बजाने का गज 4. तलवार या शस्त्र की तेज धार 5. लकड़ी, लाठी, गदा 6. ढोल बजाने की लकड़ी 7. मंगल ग्रह 8. शनिग्रह। सम०–आघातः ढोल, दुन्दुभि बजाना (विविध वाद्यस्वरों की मिश्रित ध्वनि)–कोणाघातेषु गर्जत्प्रलयघटघटान्योन्यसंघट्टचण्डः –वेणी० १।२२, (भरत द्वारा दी गई परिभाषा–उक्काशतसहस्राणि भेरीशतानि च, एकदा यत्र हन्यंते कोणाघातः स उच्यते),–कृणः खटमल।

कोणपः दे० कौणप।

कोणाकोणि (अव्य०) एक कोण से दूसरे कोण तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, तिरछे, आड़े।

कोदण्डः,–ण्डम् [कुं–दित्=कोः शब्दायमानो दण्डो यस्य ब०स०] धनुष,–रे कन्दर्पं करं कदर्थयसि किं कोदण्डटङ्कारवैः–भर्तृ० ३।१००, कोदण्डपाणिनिदशप्रतिरोधकानाम्–मालवि० ५।१०. –ङः भौं।

कोद्रवः [कु+विच्=कु, द्रु–अच्=द्रव, कर्म० स०] कोदों का अनाज जिसे गरीब लोग खाते हैं–स्थिवा कर्पूरखण्डान् बृसिहि कुरुते कोद्रवाशां श्रमन्तात्–भर्तृ० २।१००।

कोपः [कुप्+घञ्] 1. क्रोध, गुस्सा, रोष–कोपं न गच्छति नितान्तबलोऽपि नागः–पञ्च० १।१२२, न त्वया कोपः कार्यः–क्रोध मत करो 2. (आयुर्वेद) शारीरिक विशेष विकार–अर्थात् पित्तलोल, वातलोप, कफकोप। सम०–अकुल–आविष्ट (वि०) क्रुद्ध, प्रकुपित, –कृत् 1. क्रोधी या रुष्ट पुरुष 2. क्रोध का मार्ग,–पदम् 1. क्रोध का कारण 2. बनावटी क्रोध, –वशः क्रोध की वश्यता, –वेगः क्रोध की प्रचण्डता, तीक्ष्णता।

कोपन (वि०) [कुप्+ल्युट्] 1. रोषशील, चिड़चिड़ा, क्रोधी 2. क्रोध पैदा करने वाला 3. प्रकोपी, त्रिदोष के त्रिदोषों में प्रबल विकार उत्पन्न करने वाला, ना रोषशील या क्रोधी स्त्री–क्वयाति रमिन् सुरतापरा-धात् पादानतः कोपनयावधूतः– कु० ३।८, अमरु ९५।

कोपिन् (वि०) [कोप+इनि] 1. क्रोधी, चिड़चिड़ा सत्यमेवमपि यदि सुलभे मयि कोपिनी–गीत० १० 2. क्रोध उत्पन्न करने वाला 3. चिड़चिड़ा, शरीर में त्रिदोष विकारों को उत्पन्न करने वाला।

कोमल (वि०) [कु+फलच्, मुट् च नि० गुणः] 1. सुकुमार, मृदु, नाजुक (आलं० से भी)–बन्धुरकोमलाङ्गुलि (करम्)–श० ६।१२, कोमलविटपानुकारिणौ बाहू– १।२१, संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् –भर्तृ० २।६६ 2. (क) मृदु, मन्द–कोमलं गीतम् (ख) रुचिकर, सुहावना, मधुर रे रे कोकिल कोमलैः कलरवैः किं त्वं वृथा जल्पसि· भर्तृ० ३।१० 3. मनोहर, सुन्दर।

कोमलकम् [कोमल+कन्] 1. कमलडंडी के रेशे।

कोयष्टिः, कोयष्टिकः [कं जलं यष्टिरिवास्य ब० स० पृषो० अकारस्य उकारः –कोयष्टि+कन्] टिटहिरी, कुररी–काश्मर्या कृतमालमृद्वगतदलं कोयष्टिकण्ठीकृते–मा० ९।७, मनु० ५।१३, याज्ञ० १।१७३।

कोरकः-कम् [कुर+वुन्] 1. कली, अनखिला फूल, संनद्धं शरपि रिपोः कुरवकं तत्कोरकावस्थया–श० ६।३ 2. (आलं०) कली के समान कोई वस्तु–अर्थात् अधखिला फूल, अविकसित फूल,–राधायाः स्तनकोरकोपरि चलन्नेत्रो हरिः पातु वः–गीत० १२ 3. कमलडंडी के रेशे 4 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

कोरदूषः=कोद्रवः।

कोरित (वि०) [कोर+इतच्] 1. कलीयुक्त, अङ्कुरित 2. सिला हुआ, चूरा किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

कोलः [कुल्+अच्] 1. सूअर, वराह–शि० १४।४३ 2 लट्ठों का बना बेड़ा, नाव 3. स्त्री की छाती 4. निचले प्रदेश. कूल्हा, गोद 5. आलिङ्गन 6. शनिग्रह 7. बहिष्कृत, पतित जाति का व्यक्ति 8. जंगली लम् 1. एक तोले का भार 2. काली मिर्च 3. एक प्रकार का बेर। सम० अध्वः कलिंग देश का नाम पुष्पः बगला।

कोलम्बकः [कुल्+अम्बच्+कन्] द्रोणा का ढांचा।

कोला,–लिः,–ली (स्त्री०) [कुल्+ण+टाप्, कुल्+इन्, कुल्+अच्+ङीप् वा] दे० बदरी।

कोलाहलः,–लम् [कोल्+आ+हल्+अच्] एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा।

कोविद (वि०) [कु+विच्, तं वेत्ति–विद्+क] अनुभवी, विद्वान्, कुशल, बुद्धिमान्, प्रवीण (संब० या अधि० के साथ, परन्तु बहुधा समास में)–गुणदोषकोविदः–शि० १४।५३, ६९ प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्–मेघ० ३०, मनु० ७।२६।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोविदारः,-रम् [कु+वि+दृ+अण्] एक वृक्ष का नाम, कचनार चिनं विदारयति कस्य न कोविदारः--ऋतु० ३।६। **कोशः(श)-शम्** [कुश् (पृ)--घञ्, अच् वा] 1. तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी 2. डोल, कटोरा 3. पात्र 4. संदूक, डोली, दराज, टूक 5. म्यान, आवरण 6. पेटी, ढक्कन, ढक्कन 7. भाण्डार, कुंड--मनु० ७।९९ 8. भाण्डारगृह 9. खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान --मनु० ८।४१९, 10. निधि, रुपया, वैभव निःशेषविश्राणितकोशजातम् रघु० २।१ (आलं०) कोशस्तपस्--का० ४५, 11. माला, चांदी 12. शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली 13. अनखिला फल, कली सुजातयोः पयःकोशयोः श्रियम् रघु० ३।८. १३।२९, इत्थं विचिन्त्यति कोशगते द्विरेफे हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार--सुभा० 14. किसी फल की गिरी 15. फली 16. जायफल, कठोरत्वचा 17. रेशम का कोया--या० ३।१४७ 18. छिल्ली, गर्भाशय 19. अण्डा 20. अण्डकोष, फोते 21. लिंग 22. पेंद, गोला 23. (वेदांत० में) पांच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि 24. (विधि में) एक प्रकार की अपराधियों की अग्नि परीक्षा तु० याज्ञ० २।११६। समः- **अधिपतिः,-अध्यक्षः** 1 खजानची, वेतनाध्यक्ष (तु० आधुनिक वित्तमंत्री) 2. कुबेर, **-आगारः** खजाना, भाण्डागार, गृह, **-कारः** 1. म्यान बनाने वाला 2. शब्दकोश का निर्माता 3. कोये के रूप में रेशम का कीड़ा 4. कोशाधीश, **कारकः** रेशम का कीड़ा, **कृत्** (पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, रेशम का कीड़ा, **चक्षुस्** नाखून, **नाथकः** पालः खजानची, कोशाध्यक्ष,-**पेटकः,-फलम्** वस्त्र रखने का संदूक, बिजौरी **वासिन्** (पुं०) सीपों में रहने वाला कीड़ा, कोशशायी, **वृद्धिः** 1. धन की वृद्धि 2. फोतों का बढ़ जाना, **-शायिका** म्यान में रक्खा हुआ चाकू, बन्द किया हुआ चाकू,-**स्थ** (वि०) पेटी में बन्द, म्यान में बंद (स्थः) कोशकीट, कोशशायी,—**हीन** (वि०) धनहीन, निर्धन।

कोशालिकम् [कुशाल+ठञ्] रिक्तव, घूस (अधिक शुद्ध रूप =कौशालिक)।

कोशातकिः (पुं०) [कोश+अत्+इनि] 1. वाणिज्य, व्यापार 2. व्यापारी, सौदागर 3. बढ़ईलता।

कोशि (शि) न् (पुं०) [कोश(प)+इनि] आम का वृक्ष।

कोष्ठः [कुष्+थन्] 1. हृदय, फेफड़ा आदि शरीर के भीतरी अंग या आशय 2. पेट, उदर 3. अन्नागार कक्ष 4. अन्नभाण्डार, अन्न का कोठा,-**ष्ठम्** 1. जहाजदीवारी 2. किसी फल का कड़ा छिलका। समः **अगारम्** भाण्डार, भाण्डारघर पर्याप्तभित्तिकोष्ठागार मांसशोणितैर्मम गृहं भविष्यति वेणी० ३, मनु० ६।२८०, **अग्निः** पाचन शक्ति, आमाशय का रस **-पालः** 1.कोषाध्यक्ष, भंडारी 2. चौकीदार, पहरेदार 3. सिपाही (आधुनिक नगरपालिकाधिकारी से मिलता-जुलता), **-वाटिः** मलोत्सर्ग।

कोष्ठकः [कोष्ठ+कन्] 1. अन्नभाण्डार 2. जहाजदीवारी, **-कम्** ईंट चूने से बनाया गया पशुओं के पानी पीने का स्थान (बोलचाल की भाषा में 'रेवला' कहते हैं)।

कोष्ण (वि०) [ईषदुष्णः को: कादेशः] 1. थोड़ा गरम, गुनगुना- रघु० १।८४, ष्णम् गर्मी।

कोस (श) ल: (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम-लिङ्गस्तत्तद्रमणकोसलान्-रघु० ९।१, ३५, ६।७१, मगधकोसलकेकयवशासित दुहितरः ९।१७।

कोस (श) ला अयोध्या नगर।

कोहलः [की हलति स्पर्धते अच् पृषो० ताराः] 1. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 2. एक प्रकार की मदिरा।

कौक्कटिकः [कुक्कुट+ठक्] 1. मुर्गे पालने वाला, या मुर्गों का व्यवसाय करने वाला 2. वह साधु जो चलते समय अपना ध्यान नीचे जमीन पर रखता है जिससे कि कोई कीड़ा आदि पैरों के नीचे न दब जाय 3. (अतः) दंभी।

कौक्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) [कुक्षि+अण्] 1. कोख से पैदा हुआ, या कोख पर होने वाला 2. पेट से सम्बन्ध रखने वाला।

कौक्षेय (वि०) (स्त्री०-यी) [कुक्षि—ढक्] 1. पेट में होने वाला 2. म्यान में स्थित—असि कौक्षेयमुद्यम्य चक्रायासन्न मुद्यमम् भट्टि० ४।३१।

कौक्षेयकः [कुक्षौ भवोऽसि-ढक्] तलवार, यद्भि वामपार्श्वावलम्बिता कौक्षेयकेन का० ८, किरा० १।९०।

कौङ्कुः, कौङ्कुणः (ब० व०) [कुङ्कु+अण्, कौङ्कुण+अण्] एक देश तथा उसके निवासी शासकों का नाम (दे० कोंकण)।

कौट (वि०) (स्त्री० टी) [कूट+अञ्] 1. अपने निजी घर में रहने वाला, (अतः) स्वतन्त्र, मुक्त 2. गालू, घरेलू, घर में पला हुआ 3. जालसाज, बेईमान 4. जाल में फँसा हुआ, ठः 1. जालसाजी, बेईमानी 2. झूठी गवाही देने वाला। समः-**जः** कुटज वृक्ष-**तक्षः** (विप० ग्रामतक्षः) स्वतन्त्र बढ़ई जो अपनी इच्छानुसार अपना कार्य करता है, गाँव का कार्य नहीं,— **साक्षिन्** (पुं०) झूठा गवाह,- **साक्ष्यं** झूठी गवाही।

कौटकिकः, कौटिकः [कूट+कन्, कूटक-ठञ्, कूट+ठक्] 1. बहेलिया, जिसका व्यवसाय पक्षियों को पकड़ पिंजरे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में बन्द कर बेचना है 2. पक्षियों के मांस का विक्रेता, बलाई, शिकारचोर।

कौटलिकः [कुटिलिकया हरति मृगान् अङ्गारान् वा—कुटिलिका+अण्] 1. शिकारी 2. लुहार।

कौटिल्यम् [कुटिल+ष्यञ्] 1. कुटिलपना (शा० तथा आल०) 2. दृढ़ता 3. बेईमानी, जालसाजी, ०ख्यः 'चाणक्य नीति' नामक नीतिशास्त्र का प्रख्यात प्रणेता चाणक्य, चन्द्रगुप्त का मित्र और मन्त्रकार, मुद्राराक्षस नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र कौटिल्य कुटिलमतिः स एष येन क्रोधात्नन्दा प्रसभमुदाहि तन्नवंशः मुद्रा० १.७ त्यजति मां भृत्यगणेन कौटिल्यविशिष्यः—मुद्रा० ७।

कौटुम्ब (वि०) (स्त्री० बी) [कुटुम्ब तद्भरणं भोजनमस्य कुटुम्ब+अण्] किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक, ब्रम् पारिवारिक सम्बन्ध।

कौटुम्बिक (वि०) (स्त्री० की) [कुटुम्बे तद्भरणे प्रभुतः कुटुम्ब+ठक्] परिवार का पालन पोषण करने वाला,—कः किसी परिवार का पिता या स्वामी।

कौणपः [कुणप+अण्] पिशाच, राक्षस। सम० दन्तः भीष्म का विशेषण।

कौतुकम् [कुतुक+अण्] 1. इच्छा, कुतूहल, कामना 2. उत्सुकता, आवेग, आतुरता 3. आश्चर्यजनक वस्तु 4. वैवाहिक कंगना—रघु० ८।१ 5. विवाह में पूर्व वैवाहिक कंगना बांधने की प्रथा 6. पर्व, उत्सव 7. विशेषकर विवाह आदि शुभ उत्सव कु० ७।२५ 8. खुशी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता भर्तृ० ३।१४० 9. खेल, मनोविनोद 10. गीत, नृत्य, तमाशा 11. हँसी, मजाक 12. दवाई, अभिदंशन। सम० आगारः, ०रम् गृहम् आमोद-भवन कौतुकागारमागतम् कु० ७। ९४, क्रिया मङ्गलम् 1. महान् उत्सव 2. विशेषतः विवाह-संस्कार रघु० ११।५३,—तोरणः-णम् उत्सव के अवसरों पर बनाये गये मंगलसूचक विजय द्वार।

कौतूहलम् (स्वयं) [कुतूहल+अण्, स्वार्थे वा] 1. इच्छा, जिज्ञासा, रुचि—अभिज्ञानशाकुन्तलकौतूहलः—विक्रम० १।९, श० ६ 2. उत्सुकता, उत्कण्ठा 3. कुतूहलवर्धक, आश्चर्यजनक।

कौन्तिकः [कुन्त+ठक्] भाला चलाने वाला, नेजाबरदार।

कौन्तेयः [कुन्त्याः अपत्यं ढक्] कुन्ती का पुत्र, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण।

कौप (वि०) (स्त्री० पी) [कूप+अण्] कूएं से सम्बन्ध रखने वाला या कूएं में आता हुआ (जल आदि)।

कौपीनम् [कूप+खञ्] 1. योनि, उपस्थ 2. मूत्राङ्ग, गुह्येन्द्रिय 3. लंगोटी—कौपीनं शतखण्डजर्जरतरं कन्था पुनस्तादृशी—भर्तृ० ३।१०१ 4. चिथड़ा 5. पाप, अनुचित कर्म।

कौम्भ्यम् [कुम्भ+ष्यञ्] 1. टेढ़ापन, कुटिलता 2. कुबड़ापन।

कौमार (वि०) (स्त्री० री) [कुमार+अण्] 1. तरुण, युवा, कन्या, कुंवारी (स्त्री और पुरुष दोनों) कौमारः पतिः, कौमारी भार्या 2. मृदु, कोमल,—रम् 1. बचपन (पाँच वर्ष तक की अवस्था) कुंवारीपना (१६ वर्ष की आयु तक) कुमारीपन—पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने मनु० ९।३, देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा भग० २।१३। सम० ०भृत्यम् बच्चों का पालनपोषण व चिकित्सा,—हर (वि०) विवाह करने वाला, कन्या को पत्नी रूप में ग्रहण करने वाला, यः कौमारहरः स एव हि वरः—काव्य १।

कौमारकम् [कौमार+कन्] बचपन, तारुण्य, किशोरावस्था कौमारकेऽपि विरिचिद्गुरुतां दधानः—उत्तर० ६। १९।

कौमारिकः [कुमारी+ठक्] वह पिता जिसको सन्तान लड़कियाँ ही हों।

कौमारिकेयः [कुमारिका+ढक्] अविवाहिता स्त्री का पुत्र।

कौमदः [कुमुद+अण्] कार्तिक का महीना।

कौमुदी [कौमुद+ङीप्] 1. चाँदनी—शशिना सह याति कौमुदी कु० ४।३३, शशिनम्पगतेयं कौमुदी मेघमन्तम् रघु० ६।८५, (शब्द की व्युत्पत्ति—की मोदन्ते जना यस्या तेनासौ कौमुदी मता) 2. चाँदनी का काम देने वाली कोई चीज अर्थात् प्रमत्तता देने वाली तथा ठण्डक पहुँचाने वाली—त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी कु० ५।७१, या कौमुदी नयनयोर्भवतः मृणन्मां मा० १।३४, तु० चन्द्रिका 3. कार्तिक मास की पूर्णिमा 4. अनाश्विन मास की पूर्णिमा 5. उत्सव 6. विशेषतः वह उत्सव जब घरों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है 7. (पुस्तकों के नामों के अन्त में) व्याख्या, स्पष्टीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालने वाली उदा० तर्ककौमुदी, सांख्यतत्त्वकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी आदि। सम० ०पतिः चन्द्रमा—वृक्षः दीवट।

कौमोदकी, कौमोदी [कोः पृथिव्याः मोदकः=कुमोदकः+अण्+ङीप् कुं पृथिवीं मोदयति=कुमोद+अण्+ङीप्] विष्णु की गदा।

कौरव (वि०) (स्त्री० वी) [कुरु+अण्] कुरुओं से संबंध रखने वाला क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भूयोऽपि —मेघ० ४८,—वः 1. कुरु की सन्तान—मन्यामि कौरवशतं समरे न कोपात् वेणी० १।२५ 2. कुरुओं का राजा।

कौरव्यः [कुरु+ष्यञ्] 1 कुरु की सन्तान कौरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते वेणी० १।१९, २५, कौरव्ये कृतहस्तता पुनरिये यथा सौरिणि—६।१२ 2. कुरुओं का शासक।

कौर्पासः [ग्रीक भाषा का शब्द] वृश्चिक राशि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौल (वि०) (स्त्री०—ली) [कुल+अण्] 1. परिवार से संबंध रखने वाली, पैतृक, आनुवंशिक 2. अच्छे घराने का, सुजात,—ल: वाममार्गी सिद्धांतों के अनुसार 'शक्ति' की पूजा करने वाला,—लम् वाममार्गी शाक्तों के सिद्धान्त और व्यवहार।

कौलकेय: [कुल+ढक्, कुक्] व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र, हरामी, वर्णसंकर।

कौलटिनेय: [कुलटा+ढक्, इनङादेश:] 1. सती भिखारिणी का पुत्र 2. वर्णसंकर।

कौलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+ठक्] 1. किसी वंश से संबंध रखने वाला 2. कुल में प्रचलित, पैतृक, वंशपरंपरागत,—क: 1. जुलाहा—कौलिकी विष्णुरूपेण राजकन्यां निषेवते—पंच० १।२०२ 2 विधर्मी 3. वाममार्गी, शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी।

कौलीन (वि०) [कुल+खञ्] खदानी, कुलीन,—न: 1. भिखारिणी स्त्री का पुत्र 2. वाममार्गी शाक्त सिद्धांतों का अनुयायी,—नम् लोकापवाद, कुत्सा मालविकागतं किमपि कौलीनं श्रूयते—मालवि० ३, तदेव कौलीनमिव प्रतिभाति—विक्रम० २, मेघ० ११२, कौलीनमात्माश्रयमाचचक्षे—रघु० १४।३६, ८४ 2. अनुचित कर्म, दुराचरण—त्वाते तस्मिन् वितमसि कुले जन्म कौलीनमेतत्—वेणी० २।१० 3. पशुओं की लड़ाई 4. मुर्गों की लड़ाई 5. संग्राम, युद्ध 6. उच्च कुल में जन्म 7. गुप्तांग, योनि।

कौलीन्यम् [कुलीन+ष्यञ्] 1. कुलीनता 2. वंश की कुलता।

कौलूत: [कुलूत+अण्] कुलूतों का राजा—कौलूतश्चित्रवर्मा—मुद्रा० १।२०।

कौलेयक: [कुल+ढक्+क] कुत्ता, शिकारी कुत्ता।

कौल्य (वि०) [कुल+ष्यञ्] उच्च कुल में उत्पन्न, खान्दानी।

कौबे (बे) र (वि०) (स्त्री०—री) [कुबे (बे) र+अण्] कुबेर से संबंध रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला—यानं संस्मार कौबेरम्—रघु० १५।४५,—री उत्तरदिशा; —तत: प्रतस्थे कौबेरीं भास्वानिव रघुदिशम्—रघु० ४।६६।

कौश (वि०) (स्त्री०—शी) [कुश+अण्] 1. रेशमी 2. कुश घास का बना हुआ।

कौशलम् (व्यस्) [कुशल+अण्, ष्यञ् वा] 1. कुशलक्षेम, प्रसन्नता, समृद्धि 2. कुशलता, दक्षता, चतुराई —किमकौशलादुपप्रभो जनापेक्षितया—भट्टि० ३, हृदयहारि हसितं वचनानां कौशलं दृशि विकारविशेषा:—शि० १०।१३।

कौशलिकम् [कुशल+ठक्] घूस, रिश्वत।

कौशलिका, कौशली [कौशलिक+टाप्, कुशल+अण्+ङीप्] 1. उपहार, चढ़ावा 2. कुशल प्रश्न पूछना, अभिवादन।

कौशल्य: [कौशल्या+ढक्, यलोप:] राम का विशेषण, कौशल्या का पुत्र।

कौशल्या [कोशलदेशे भवा—छ्य] दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता।

कौशल्यायनि: [कौशल्या+फिञ्] कौशल्या का पुत्र राम, भट्टि० ७।९०।

कौशाम्बी [कुशाम्ब+अण्+ङीप्] गंगा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर (जिसे कुश के पुत्र कुशांब ने बसाया था—यह नगर ही वत्स देश की राजधानी थी)।

कौशिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुशिक+अण्] 1. डब्बे में बन्द, म्यान में रक्खा हुआ 2. रेशमी,—क: 1. विश्वामित्र का विशेषण 2. उल्लू—उत्तर० २।२९ 3. कोशकार 4. गूदा 5. गुग्गुल 6. नेवला 7. सपेरा 8. शृंगार रस 9. जो गुप्तधन को जानता है 10. इन्द्र का विशेषण, —का प्याला, पानपात्र,—की 1. बिहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम 2 दुर्गादेवी का नाम 3. चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक—सुकुमारार्थसंदर्भा कौशिकी तामु कथ्यते—दे०, सा० द०, ४११, तथा आगे पीछे। सम०—अरातिः,—अरिः कौवा,—फलः नारियल का वृक्ष,—प्रियः राम का विशेषण।

कौशे (शे) यम् [कोशस्य विकारः—ढञ्] 1. रेशम —पंच० १।९४ 2. रेशमी कपड़ा—मनु० ५।१२० 3. रेशम का बना स्त्री का पेटी कोट—निर्नाभि कौशेयमुपासञ्जनमध्यजूनेपथ्यमलङ्कारः—कु० ७।९, विद्युद्गुणं कौशेयः—मृच्छ० ५।३, ऋतु० ५।९।

कौसीद्यम् [कुसीद+ष्यञ्] 1. ब्याज लेने का व्यवसाय 2. आलस्य, अकर्मण्यता।

कौसृतिक: [कुसृति+ठक्] 1. ठग, बदमाश 2. बाजीगर।

कौस्तुभ: [कुस्तुभो जलधिस्तत्र भवः—अण्] एक विख्यात रत्न जो समुद्रमन्थन के फलस्वरूप १३ अन्य रत्नों के साथ समुद्र से प्राप्त हुआ तथा जिसको विष्णु ने अपने वक्षस्थल पर धारण किया हुआ है—संकल्पभुवं हृदयतीव कृष्णम्—रघु० ६।४९, १०।१०। सम०—लक्षणः —वक्षस् (पुं०)—हृदयः विष्णु के विशेषण।

क्रूय् [भ्वा० आ० क्रूयते] 1. चूं चूं शब्द करना 2. डूबना 3. गीला होना।

क्रकच: [क इति कचति शब्दायते—क+कच्+अच्] आरा। सम०—वक्रः केतक वृक्ष, पत्रः सागौन वृक्ष, —पादः (पुं०)—पाद: छिपकली।

क्रकर: [क इति शब्दं करोति शीलमस्य—क+कृ+अच्] 1. एक प्रकार का तीतर 2. आरा 3. निर्धन व्यक्ति 4. रोग।

क्रतु: [कृ+क्तु] 1. यज्ञ—क्रतोरनेन फलेन युज्यताम्—रघु० ३।६५, शतं क्रतूनामपविघ्नमाप स:—३।३८,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मालवि० १।४, मनु० ७।७९ 2. विष्णु का विशेषण | 3. दस प्रजापतियों में एक—मालवि० १।३५ 4. प्रज्ञा, बुद्धि 5. शक्ति, योग्यता। सम० —उत्तमः राजसूय यज्ञ,—द्विष् (पुं०) राक्षस, पिशाच,—द्विषित् (पुं०) शिव का विशेषण (शिव ने ही दक्ष के यज्ञ को नष्ट किया था), —क्रतिः यज्ञ का अनुष्ठाता, —पशुः यज्ञीय घोड़ा, पुरुषः विष्णु का विशेषण, भुज् (पुं०) देवता, देव,—राज् (पुं०) 1. यज्ञों का स्वामी यथा-श्वमेधः क्रतुराट्—मनु० ९।२६० 2. राजसूय यज्ञ।

क्षप् (म्वा० पर०—क्षपति, क्षपित) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

क्षपकशिकः (ब० व०) एक देश का नाम—अपेक्षरेणव क्षपकशिकानाम्—रघु० ५।३९, मनु० ५।१२।

क्षपणम् [क्षप्+ल्युट्] वध, हत्या।

क्षपनकः [क्षपन+कन्] ऊँट।

क्षप् (म्वा० पर०—क्रन्दति, क्रन्दित) 1. चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना—कि क्रन्दसि दुराक्रन्द स्वपक्षक्षयकारक—पंच० ४।२९, करुणः करुणमरुरसां गणीयसम्—विक्रम० १।२, चक्रन्द विना कुरुवीर भूयः—रघु० १४।६८, १५।४२, भट्टि० ३।२८, ५।५ 2. पुकारना, दया की पुकार करना (कर्म० के साथ) क्रन्दयन्विव साश्रु भ्रातृजातुतानय—मार्क० (चुरा० पर० या प्रेर०) 1. लगातार चिल्लाना 2. रुलाना। आ—, चिल्लाना, चीखना, चरचराना, चीत्कार करना—पक्षा-वलानेस्तुहिनैः पतद्भिराक्रन्दतीवोपमिता शीतकाले—ऋतु० ४।७, भट्टि० १५।५० 2. पुकार करना (प्रेर०) एवंवादिनि शिखण्डिनि पटुतरैः कंकाभिराक्रन्दितः—मृच्छ० ५।३३।

क्रन्दनम्, क्रन्दितम् [क्रन्द्+ल्युट्,क्त वा] 1. आर्तनाद, रोना, विलाप करना—ज्ञातातिर्ति क्रन्दितमाक्रन्दे विगणणः—रघु० ९।७५ 2. पारम्परिक ललकार, चुनौती।

क्रम् (भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—क्रामति—क्रमते, क्राम्यति, क्रान्त) 1. चलना, पदार्पण करना, जाना—क्रामन्त्यदृष्टिं सूर्ये वाली व्युत्पत्तिक्रमः—रामा०, गम्यमाने न तेनासीदगतं क्रमता पुरः—भट्टि० ८।२५ 2. चले जाना, पहुँचना (कर्म० के साथ)—देवा इमान् लोकानक्रमन्त—शत० 3. जाना, पार करना, पार जाना—मुखं योजनपञ्चाशत्क्रमेयम्—रामा० 4. कूदना, छलांग मारना—क्रमं वचस्य क्रमितु सकोपः (हरिः)—भट्टि० २।९, ५।५१, 5. ऊपर जाना, चढ़ना 6. अधिकार में रखना, वश में करना, अधिकार में लेना, भरना—क्रान्ता यथा चेतसि विक्रमेण—रघु० १४।१७ 7. आगे बढ़ना, आगे निकल जाना—स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वी क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना—रघु० १।१४ 8. उत्तरदायित्व लेना, संप्रयास करना, योग्य या सक्षम होना, शक्ति दिखलाना (सं०प्र० या तुमुन्नन्त के साथ)—व्याकरणाध्ययनाय क्रमते—सिद्धा०, धर्माय क्रमते साधुः—वेप० व्युत्पत्तिरादाजितकोविदापि न रञ्जनाय क्रमते जडानाम्—विक्रमांक० १।१६, हृत्वा रक्षांसि लवितुमक्षमीन्नाहतिः पुनः, अशोकवनिकामेव—भट्टि० ९।२८ 9. बढ़ना या विकसित होना, पूरा क्षेत्र मिलना, स्वस्थ होना (अधि० के साथ)—कृत्येषु क्रमते—दश० १७०, क्रमन्तेऽस्मिञ्छास्त्राणि—या—ऋषु क्रमते बुद्धिः—सिद्धा०, क्रममाणोऽरिसंसदि—भट्टि० ८।२२ 10. पूरा करना, निष्पन्न करना 11. मैथुन करना, (पा० १।३।३८ क्रम्—आ० में 'सातत्य' 'विघ्नों का अभाव' 'शक्ति या प्रयास' 'विकास, वृद्धि' तथा 'जीतना, पार पहुँचना' आदि अर्थ को प्रकट करती है) अति—, 1. पार करना, पार जाना—सप्तकक्षान्तराण्यतिक्रम्य—का० ९२ 2. परे जाना, लांघना—मेघ० ५७, ४० 3. बढ़ जाना, आगे निकल जाना—मनु० ८।१५१ 4. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, आगे कदम रखना—अतिक्रम्य सदाचारम्—का० १६० 5. अवहेलना करना, पृथक् करना, उपेक्षा करना—प्रथितयशसां प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, किं वा परिजनमतिक्रम्य भवान्सन्दिष्टः—मालवि० ४, यां कथं ज्येष्ठानतिक्रम्य यवीयान् राज्यमहति—मृच्छ० 6. गुजरना, (समय का) बीतना—अतिक्रान्ते ह्याहि—मनु० ५।७६, यथा यथा यौवनमतिचक्राम—का०५९, अधि—, चढ़ना, अध्यारूढ़—अधिकार करना, भरना, ग्रहण करना—अध्यारूढा वसतिरमुनाथाश्रमं सर्वभोग्ये—श० २।१४ अनु—, 1. अनुगमन करना 2. घूमना, भ्रमण करना 3. आक्रमण करना अव—, वापिस हटना आ—, 1. पहुँचना, की ओर जाना 2. आक्रमण करना, दमन करना, जीतना, परास्त करना—पक्षिशावकनाकम्य—हि० १, पौरस्त्यानेवमाक्रामन्—रघु० ४।३४, भर्तृ० १।७० 3. भरना, प्रविष्ट होना, अधिकार में करना—स्व केशवोऽपर इवाक्रमितुं प्रवृत्तः—मृच्छ० ५।२१।१२ 4. आरम्भ करना, शुरू करना 5. उन्नत होना, उदय होना (आ०) यावत्प्रतापनिधिराक्रमते न भानुः—रघु० ५।७१ 6. चढ़ना, सवारी करना, अधिकार में करना, उद्—, 1. ऊपर होना, परे जाना, ऊपर जाना—ऊर्ध्वं प्राणान्हयुत्क्रामन्ति—मनु० २।१२० 2. अवहेलना करना, उपेक्षा करना—अपि प्रमाणमुत्क्रम्य धर्मं न प्रतिपालयन्—महा०, धर्ममुत्क्रम्य 3. परे कदम रखना—रघु० १५।३३, उप—, 1. की ओर जाना, पहुँचना 2. बातें बोलना, आक्रमण करना 3. वर्ताव करना, उपचार करना, (वैद्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की मांति) चिकित्सा करना, स्वस्थ करना, 4. प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना–सर्वोपायैरुपक्रम्य सीताम् –रामा० 5. अनुष्ठान करना, प्रस्थान करना 6. (आ) आरम्भ करना, शुरू करना – प्रसभं दक्तुमुपक्रमेत का –कि० २।२८, रघु० १७।३३, विसू–, 1. चले जाना, चल देना, विदा होना 2. निकलना, प्रकाशित होना –भट्टि० ७।७१, परा–, (आ०) 1. साहस प्रदर्शित करना, शक्ति या शूरवीरता दिखाना, बहादुरी के साथ करना–बकबच्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत् –मनु० ७।१०६, भट्टि ८।२२,९३ 2. वापिस मुड़ना 3. चढ़ाई करना, आक्रमण करना, परि–, 1. इधर उधर घूमना, चक्कर लगाना–परिक्रम्याबलोक्य च (नाटकों में) 2. पकड़ लेना, प्र–(आ०) 1. आरम्भ करना, शुरू करना–प्रचक्रमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम्–रघु० ३।४७, २।१५, कु० ३।२ 2. कुचलना, ऊपर पैर रख कर चलना–भट्टि० १५।२३ 3. जाना, प्रस्थान करना, प्रति– , वापिस आना वि–(आ०) 1. मैं से चलना, विष्णुस्त्रेधा विचक्रमे–तीन पग रक्खे–भट्टि० ८।२४ 2. छापा मारना, पराजित करना, जीतना 3. फाड़ना, खोलना (पर०), व्यति–, 1. उल्लंघन करना 2. समय बिताना, व्युद्–दे० उत्–, सम्–, 1 आना या एकत्र होना 2. पार जाना, पार करना, में से जाना 3. पहुँचना, जाना 4. पार चले जाना, स्थानान्तरित होना 5. दाखिल होना, प्रविष्ट होना कालो ह्ययं संक्रमितुं द्वितीय सर्वोपकारक्षममाश्रयं ते रघु० ५।१०, समा–, 1. अधिकार करना, कब्जे में लेना, भरना समग्रमेव समाक्रान्तं द्वयं द्विरदगामिना, तेन सिंहासनं पित्र्यमखिलं चारिमंडलम्– रघु० ४।४ 2. छापा मारना, जीतना, दमन करना

क्रमः [कम्+घञ्] 1. कदम, पग त्रिक्रमः, सागरः–लङ्घयेद्वीर्न्य क्रमेणैकेन लम्बितः–भट्टा० 2. पैर 3. गति, प्रगमन. मार्ग,**क्रमात्** क्रमेण दौरान में, क्रमशः, **कालक्रमेण** समयांतरांतर, समय पाकर, भाग्यक्रमः, भाग्य का उलट जाना– रघु० २।७, ३०, ३२ 4. प्रदर्शन, आरंभ —इत्यमत्र विनतक्रमे कृतौ शि० १४।५३ 5. नियमित मार्ग, क्रम, श्रेणी, उत्तराधिकारिता, निमित्तनैमित्तिकमोरयं क्रमः– शा० ७।३० मनु० ७।२४, २।८५ २।१७३, ३।६९ 6. प्रणाली, रीति नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम् – रघु० ७।३९ 7. व्यसना, पकड़ क्रमगता पशोः कन्यका मा० ३।१६ 8. (दूसरे जन्तु पर आक्रमण करने से पूर्व की जानवर की) स्थिति 9. तैयारी, तत्परता भट्टि० २।९ 10. व्यवसाय, साहसिक कार्य 11. कर्म या कार्य, कार्योंविधि–कौप्येष कान्तः क्रमः—अमरु ४३।३३ 12. वेदमंत्रों को सस्वर उच्चारण करने की विशेष रीति–क्रमपाठ 13. शक्ति, सामर्थ्य,– मम् गारा । सम० अनुसारः, अन्वयः, नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था, आगत, आयात (वि०) वंशपरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक, ज्या ग्रह की लंबरेखा, क्षय,– भंगः अनियमितता ।

क्रमक (वि०) [कम्+वुन्] क्रमबद्ध, प्रणाली के अनुसार, —कः वह विद्यार्थी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है ।

क्रमणः [कम+ल्युट्] 1. पैर 2. घोड़ा, णम् 1. कदम 2. पग रखना 3. आगे बढ़ना 4. उल्लंघन

क्रमतः (अव्य०) [कम्+तसिल्] क्रमशः, उत्तरोत्तर ।

क्रमशः (अव्य०) [क्रम+शस्] 1. ठीक क्रम में, नियमित रूप से उत्तरोत्तर, क्रमानुसार 2. क्रम से, मात्रा के अनुसार रघु० १२।५७, मनु० १।६८, ३।१२ ।

क्रमिक (वि०) [क्रम+ठन्] 1. उत्तरोत्तर, सिलसिले वार 2. वंशपरंपरागत, पैतृक, आनुवंशिक ।

क्रमुः, क्रमुकः [कम्+उ, कन् च] सुपारी का पेड़–आस्वादितार्द्रक्रमुकः समुद्राद्– शि० ३।८१, विक्रमांक० १८।९८ ।

क्रमेलः, क्रमेलकः [कम्+एल्+अच्, कन् च] ऊँट —निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव विक्रमांक० १।२९, शि० १२।१८, नै० ६।१०४ ।

क्रयः [क्री+अच्] खरीदना, मोल लेना । सम०–**आरोहः** मंडी, मेला,—**क्रीत** (वि०) मोल लिया हुआ,–**लेख्यम्** —वैनाशा, विक्रयनामा, दानपत्र (गृहं क्षेत्रादिकं क्रीत्वा तुल्यमूल्याक्षरान्वितम्, पत्रं कार्यते यत्तु क्रयलेख्यं तदुच्यते बृहस्पतिः), **विक्रयी** (द्वि० व०) व्यापार, व्यवसाय, खरीद-फरोख्त मनु० ८।५ ७।१२७, –**विक्रयिकः** व्यापारी सौदागर ।

क्रयणम् [क्री+ल्युट्] खरीदना, मोल लेना ।

क्रयिकः [क्रय+ठन्] 1. व्यापारी, सौदागर 2. क्रेता, मोल लेने वाला ।

क्रय्य (वि०) [क्री+यत्, निo] मंडी में विक्रय के लिए रक्खी हुई वस्तु, बिकाऊ (विप० 'क्रय,' जिसका अर्थ है 'मोल लिये जाने के उपयुक्त' ।

क्रव्यम् [क्रूय+यत्, रस्य लः] कच्चा मांस, मुरदार (शव या लाश)– स्वपुत्रगात्रमपि क्रव्यमव्ययमत्ति- मा० ५।१६ । सम०—**अद्**–अद, भुज् (वि०) कच्चा मांस खाने वाला, मनु० ५।१३१, (पुं०) 1. शेर, चीता आदि मांसभक्षी जन्तु. उत्तर० १।४९ 2. राक्षस, पिशाच–रघु० १५।१६ ।

क्रशिमन् (पुं०) [कृश+इमनिच्] पतलापन, कृशता, दुबलापतलापन ।

क्राकचिकः [क्रकच+ठक्] आराकश ।

क्रान्त (वि०)[क्रम्+क्त] गया हुआ, आरपार गया हुआ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(भू० क० कृ०),—**तः** 1. घोड़ा 2. पैर, पग। सम० **-दर्शिन्** (वि०) सर्वज्ञ।

क्रान्तिः (स्त्री०) [क्रम्+क्तिन्] 1. गति, प्रगमन 2. कदम, पग 3. आगे बढ़ने वाला 4. आक्रमण करने वाला, अभिभूत करने वाला 5. नक्षत्र की कोणीय दूरी 6. क्रान्तिवलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग। सम० **कक्षः,-मण्डलम्,-वृत्तम्** सूर्य का भ्रमण मार्ग, —**पातः** वह बिंदु जहाँ क्रान्तिवलय विषुवत् रेखा से मिलता है, **वलयः** 1. सूर्य का भ्रमण मार्ग 2. उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र, उष्ण कटिबंध।

क्रायिः (त्रि) **कः** [क्री+ण्वुल् कम्+ठक्] 1. केता, खरीददार 2. व्यापारी, सौदागर।

क्रिमिः [कम्+इन्, इत्वम्] 1. कीड़ा 2. कीट-दे० कृमि। सम० —**ज्ञम्** अगर की लकड़ी, —**शैलः** बांबी।

क्रिया [कृ+श, रिङ् आदेशः, इयङ्] 1. करना, कार्यान्विति, कार्य-सम्पादन, निष्पादन करना, उपचार[2], धर्म[3]—प्रत्यृतं हि प्रणयिषु सतामाशिषार्थक्रियैव मेघः ११४ 2. कर्म, कृत्य, व्यवसाय, जिम्मेदारी प्रणधिक्रिया—विक्रम० ४।१५, मनु० २।४ 3. चेष्टा, शारीरिक चेष्टा, श्रम 4. अध्यापन, शिक्षण—क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति—रघु० ३।२१ 5. (नृत्य गायन आदि), किसी कला पर आधिपत्य, ज्ञान —शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था मालवि० १।१६ 6. आचरण (विप० शास्त्र-सिद्धान्त) 7. साहित्यिक रचना —भूतैर्यत मनोभिरहितैः क्रियाभिमां कालिदासस्य —विक्रम० १।२. कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः- मालवि० १ 8. शुद्धि-संस्कार, धार्मिक संस्कार 9. प्रायश्चित्तस्वरूप संस्कार, प्रायश्चित्त 10. (क) श्राद्ध (ख) और्ध्वदेहिक संस्कार 11. पूजन 12. **औषधोपचार**, चिकित्सा-प्रयोग. इलाज —शीतक्रिया- मालवि० ४, शीतल उपचार 13. (व्या० में) क्रिया के द्वारा अभिहित कर्म 14. चेष्टा या कर्म 15. विशेषतः वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित सात द्रव्यों में से एक-दे० कर्मन् 16. (विधि में) साध्यादिक मानवसाधनों से तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा अभियोग की छानबीन करना 17. प्रधान-भार। सम० **अन्वित** (वि०) शास्त्रोक्त कर्मों को करने वाला, **अर्थवत्**: 1. किसी कार्य की सम्पूर्ति या इतिश्री, कार्यसम्पादन—क्रियार्थवत्त्वाज्जीविसात् कृताः कि० १।४८ 2. कर्मकाण्ड से मुक्ति, छुटकारा, **अभ्युपगमः** विशेष प्रकार का करार या प्रतिज्ञा-पत्र, —क्रियाभ्युपगमास्त्वेतत् बीजार्थं यत्नप्रदीयते —मनु० ९।५३, **अवसन्न** (वि०) गवाहों के बयान के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति,- **इन्द्रियम्** दे० 'कर्मेन्द्रिय', **कलापः** 1. हिन्दू-धर्मशास्त्र द्वारा विहित समस्त कार्य 2. किसी व्यवसाय के समस्त विवरण,—**कारः** 1. अभिकर्ता, कार्यकर्ता 2. शिक्षारंभ करने वाला, नौसिखिया, नवच्छात्र 3. इकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र,—**द्वैविध्** (पुं०) (पाँच प्रकार के साक्षियों में से एक) वह साक्षी जिसका साक्ष्य पक्षपातपूर्ण हो, —**निर्देशः** गवाही, साक्ष्य, **-पटु** (वि०) कार्यदक्ष, **पथः** औषधोपचार की रीति,- **पदम्** क्रियावाचक शब्द, **पर** (वि०) अपने कर्तव्य-पालन में परिश्रम शील, **-पादः** अभियोक्ता या वादी के द्वारा अपने दावे की पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियाँ आदि जो कानूनी अभियोग का तीसरा अंग है,—**भोगः** 1. क्रिया के साथ संबंध 2. तरकीब और साधनों का प्रयोग,- **लोपः** आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परित्याग, **विशारद**,**पारग** वही**रवेत्तृ**ः मनु० १०।४३, —**वशात्** आवश्यकता, क्रियाओं का अवश्यभावी प्रभाव, -**वाचक**,-**वाचिन्** (वि०) कर्म को प्रकट करने वाला, क्रिया से बना संज्ञा शब्द,—**वादिन्** (पुं०) वादी, अभियोक्ता,—**विधिः** कार्य करने का नियम, किसी धर्मकृत्य को सम्पन्न करने की रीति—मनु० ९।२२०. **विशेषणम्** 1. क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द 2. विधेय विशेषण, **संक्रान्ति** (स्त्री०) दूसरों को ज्ञान देना, अध्यापन— मालवि० १।१९.— **समभिहारः** किसी कार्य की आवृत्ति।

क्रियावत् (त्रि०) [क्रिया+मतुप्] कर्म में व्यस्त, किसी कार्य के व्यवहार को जानने वाला—**वस्तु क्रियावत्** पुरुषः स विद्वान्- हि० १।६७।

क्री (क्रया० उभ०—क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीत) 1. खरीदना मोल लेना,- -महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनीस्वयम् —शा० ३।१, क्रीणीध्व मज्जीविनमेव पण्यमन्यत्र केवलित तदस्तु पुण्यम्- नै० ३।८७ ८८, पंच० १।१३ मनु० ९।१३४ 2. विनिमय, अदलाबदली-**क्रियन्तेसह-स्रैर्मूल्यानामंक** क्रीणासि पण्डितम् महा०, **आ**—, खरीदना, **निस्** , कुछ देकर सिर छुड़ाना, दाम देकर फिर से खरीद लेना, निस्तार करना, **परि** -, (आ०) 1. मोल लेना-संभोगाय परिक्रीतः कलत्रमिव तत्र नाप्रियम् —भट्टि० ८।७२ 2. किराये पर लेना, कुछ समय के लिए मोल लेना (निर्धारित मूल्य में **करण०** तथा सम्प्र० के साथ)-शतेन शतायं वा परिक्रीतः - सिद्धा० 3. बाजि करना, बदला देना, चुकाना—कृतेनोपकृतं वायोः परिक्रीणाः सुधिसम्—भट्टि० ८।८, **वि** , 1. बेचना (इस अर्थ में आ०) गवां शतसहस्रेण विक्रीणीषे सुतं यदि—रामा०, विक्रीणीत निलात् शुद्धान् —मनु० १०।९७, ८।९७, २२२, शा० १।१२ 2. विनिमय, अदलाबदली—नाकसम्पच्छिाडलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्—पंच० २।६५।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रीड् (स्वा० पर०—क्रीडति, क्रीडित) 1. खेलना, मनोरंजन करना—कानरा: क्रीडितुमारब्धा. —पंच० १, एष क्रीडति कूपस्थघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः—मृच्छ० १०।५९ 2. जूआ खेलना, पासों से खेलना: बहुविध द्यूतं क्रीडत:—मृच्छ० २, नार्की: क्रीडेत्कदाचिद्वि—मनु० ४।७४, याज्ञ० १।१३८ 3. हँसी दिल्लगी करना, मजाक करना, खिल्ली उड़ाना—गाढ्वस्तस्तनमण्डलस्तव-कथं प्राणैर्मम क्रीडति—गीत० २, क्रीडिष्यामि ततोऽहंनया—विक्रम० ३, एवमाशाग्रहग्रस्तैः क्रीडन्ति धनिनोऽर्थिभिः—हि० २।२३, पंच० १।१८७, मृच्छ० ३, अनु— (आ०) खेलना, किलोल करना, जी बहलाना—साध्वनुक्रीडमानानि पश्य वृन्दानि पक्षिणाम्—भट्टि० ८।१०, आ—, परि—, सम्—, (आ०) खेलना, कौतुक करना—संक्रीडन्ते मणिभिर्यत्र कन्याः—मेघ० ७०, परन्तु सम् पूर्वक क्रीड (पर०) 'कोलाहल करने' के अर्थ को प्रकट करता है—संक्रीडन्ति शकटानि—महा० 'गाड़ियाँ चूँ-चूँ करती हैं'।

क्रीड: [क्रीड्+घञ्] 1. किलोल, मनबहलाव, खेल, आमोद 2. हँसी दिल्लगी, मजाक।

क्रीडनम् [क्रीड्+ल्युट्] 1. खेलना, किलोल करना 2. खेलने की चीज, खिलौना।

क्रीडनक:,-कम्, क्रीडनीयम्,-एकम् [क्रीडन !-कन्, क्रीड+अनीयर्, क्रीडनीय+कन्] खेलने की चीज, खिलौना।

क्रीडा [क्रीड्+अ+टाप्] 1. किलोल, जी बहलाना, खेलना, आमोद—तोयक्रीडानिरतयुवतिस्नानतिक्तैर्मरुद्भि—मेघ० ३३।६१ 2. हँसी, दिल्लगी। समः गृहम् आमोद भवन, —शैलः आमोद —निवास का काम देने वाला एक बनावटी पहाड़, आमोदगिरि,—क्रीडाशैलः कनकक-दलीवेष्टनप्रक्षणीयः—मेघ० ७७, नारी देखो,—कोपः झूठमूठ का क्रोध—अमरु १२, —मयूरः मनोरंजन के लिए पाला गया मोर—रघु० १६।१४, रत्नम् कामकेलि, मैथुन।

क्रीत (वि०) [क्री+क्त] मोल लिया हुआ—दे० क्रीः, —तः हिन्दुधर्मशास्त्र में प्रतिपादित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, अपने सैगोत्रिक माता पिता से मोल लिया हुआ पुत्र—क्रीतश्च ताभ्यां विक्रीतः याज्ञ० २।१३१, मनु० १७४। समः अनुग्रहः किसी वस्तु को मोल लेकर पछताना, किये का निराकरण करना, खरीदी हुई वस्तु को वापिस करना (कुछ बातों में धर्मशास्त्रों से अनुमोदित)।

क्रुञ्च् (पुं०) **क्रुञ्चः** [क्रुञ्च्+क्विन् अच् वा] जलकुक्कुटी, बगला।

क्रुध् (दिवा० पर०—क्रुध्यति, क्रुद्ध) गुस्से होना (क्रोध के पात्र में सम्प्र०) हरये क्रुध्यति, कभी कभी 'उपरि' 'प्रति' आदि शब्दों के भी साथ—मयोपरि स क्रुद्धः, न मां प्रति क्रुद्धो गुरुः, प्रति —, बदले में कुपित होना—क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येत्—मनु० ६।४८, सम्—, कुपित होना—संक्रुध्यसि मृषा किं त्वं दिदृक्षुं मां मृगेक्षणे—भट्टि० ८।७६।

क्रुध् (स्त्री०) [क्रुध्+क्विप्] क्रोध, कोप।

क्रुश् (भ्वा० पर०—क्रोशति, क्रुष्ट) 1. चिल्लाना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना—क्रोशन्त्यस्तं कपिस्त्रियः—भट्टि० ६।१२४ 2. चीखना, किलकिलाना, कूका देना, चीत्कार करना, पुकारना—अतीव चुक्रोश जीवनाशं ननाश च—भट्टि० १४।३१, अनु—, दया करना, करुणा करना, अभि—, विलाप करना, आ—, 1. चिल्लाना, जोर से पुकारना—अये गौरीनाथ त्रिपुर—हर शम्भो त्रिनयन प्रसीदेत्याक्रोशत्—भर्तृ० ३।१२३ 2. खरीखोटी सुनाना, गालियाँ देना—शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य क्षत्रियो दण्डमर्हति—मनु० ८।२६७, भट्टि० ५।३९, परि—, विलाप करना, प्रत्या—, गाली के उत्तर में गाली देना, वि—, 1. चीखना, चिल्लाना—आक्रोशं विक्रोशं लपाविचिक्रुश्म् मृच्छ० १।४१, भट्टि० १४।४२, १६।३२ 2. उच्चारण करना (कर्म० के साथ) 3. पुकारना (कर्म० के साथ) 4. गूंजना, व्या—विलाप करना, शोक मनाना।

क्रुष्ट (वि०) [क्रुश्+क्त] 1. चिल्लाया हुआ 2. पुकारा हुआ, —ष्टम् चिल्लाना, चीखना, रोना।

क्रूर (वि०) [कृत्+रक् शोर्लोपः कृ] 1. निर्दय, निष्ठुर, कठोरहृदय, निरुकरुण—तस्याभिषेकसम्भारं क्रूरेणेव कृतिक्रियां—रघु० १२।४, मेघ० १०५, मनु० १०।९ 2. कठोर, कड़ा 3. दारुण, भयंकर, भीषण 4. नाशकारी, अनिष्टकर 5. घायल, चोट लगा हुआ 6. खूनी 7. कच्चा 8. मजबूत 9. गरम, तेज, अकविकर—मनु० २।३३,—रः बाज, बगला, —रम् 1. घाव 2. हत्या, क्रूरता 3. भीषण कृत्य। समः आकृति (वि०) डरावनी सूरत वाला (त्रिः) रावण का विशेषण, —आचार (वि०) क्रूर और बदचलन आचरण करने वाला, -आशय (वि०) 1. भयानक जीवजन्तुओं से भरा हुआ (जैसे कि कोई नदी) 2. क्रूर स्वभाव का, —कर्मन् (नपुं०) 1. रक्तरंजित करतूत 2. कठोर श्रम, —कृत् (वि०) भीषण, क्रूर, निर्मम, —कोष्ठ (वि०) कड़े कोठे वाला जिस पर मृदु विरेचन का असर न हो, —गन्धः गन्धक, —दृश् (वि०) 1. बुरी दृष्टि वाला, कुदृष्टि डालने वाला 2. खल, दुष्ट, —दृश् (पुं०) पहाड़ी कौवा,—लोचनः शनिग्रह का विशेषण।

क्रेतृ (पुं०) [क्री+तृच्] क्रेता, खरीददार, —याज्ञ० २।१६८।

क्रोञ्चः [क्रुञ्च्+अच्, वा० गुणः] एक पहाड़ का नाम दे० 'क्रौञ्च'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रोडः [कुट्+घञ्] 1. सूअर 2. वृक्ष की खोडर, गढ़ा —हा हा हन्त तथापि जन्मविटपिक्रोडे मनो धावति—उद्भट 3. सीना, वक्षः स्थल, छाती, **क्रोडीकृ** छाती से लगाना —भर्तृ० २।३५ 4. किसी वस्तु का मध्यभाग—विक्रमांक० ११।७५—दे० 'क्रोड' (नपुं०) 5. शनिग्रह का विशेषण,—**कम्**—**वा** 1. छाती, सीना, कन्धों के बीच का भाग 2. किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गढ़ा, कोटर। सम०—**अङ्कः**,—**अङ्कभिः**,—**पादः** कछुवा,—**पत्रम्** 1. प्रान्तवर्ती लेख 2. पत्र का पश्चलेख 3. सम्पूरक 4. **वसीयतनामे** का परवर्ती उत्तराधिकार-पत्र।

क्रोडीकरणम् [क्रोड+च्वि+कृ+ल्युट्] आलिंगन करना, छाती से लगाना।

क्रोडीमुखः [क्रोडस्य: मुखमिव मुखमस्य:—ब० स०] गैंडा।

क्रोधः [क्रुध्+घञ्] 1. कोप, गुस्सा—कामात्क्रोधोऽभिजायते—भग० २।६२, इसी प्रकार **क्रोधान्धः**, **क्रोधानलः** 2. (सा० शा० में) क्रोध एक प्रकार की भावना है जिससे रौद्ररस का उदय होता है। सम०—**उज्झित** (वि०) क्रोध से मुक्त, शान्त, स्वस्थ, **मूर्छित** (वि०) क्रोध से अभिभूत या क्रोधोन्मत्त।

क्रोधन (वि०) [क्रुध्+ल्युट्] गुस्से से भरा हुआ, क्रोधाविष्ट, क्रुद्ध, चिड़चिड़ा— यद्गामेण कृत तदेव कुरुते द्रौणायनि: क्रोधनः—वेणी० ३।३१,—**नम्** क्रुद्ध होना, कोप।

क्रोधालु (वि०) [क्रुध्+आलुच्] क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा, गुस्सैल।

क्रोशः [क्रुश्+घञ्] 1. चिल्लाना, चीख, चीत्कार, कूका देना, कोलाहल 2. चौथाई योजन, एक कोस—**क्रोशार्ध** प्रकृतिपुरःसरेण गत्वा—रघु० १३।७९, समुद्रात्पुरी क्रोशौ या—क्रोशयो: । सम०—**तालः**,—**ध्वनिः** एक बड़ा ढोल।

क्रोशन (वि०) [क्रुश्+ल्युट्] चिल्लाने वाला, —**नम्** चीख चिल्लाहट।

क्रोष्टु (पुं०) (स्त्री० —**ष्ट्री**) [क्रुश्+तुन्] गीदड़ (इस शब्द की रूप रचना में यह शब्द सर्वनाम स्थान में अनिवार्यतः क्रोष्टु बन जाता है, तथा अन्यत्र क्रोष्टु, एवं क्रोष्टरि में द्वि० तथा षष्ठी ब० व० को छोड़कर सर्वत्र विकल्प से)।

क्रौञ्चः [क्रुञ्च्+अण्] जलकुक्कुटी, कुरली, बगला—मनोहरक्रौञ्चनिनादिताभि सीमान्तराणम्युपयस्ति चेत: ऋतु० ४।८, मनु० १२।६४ 2. एक पर्वत का नाम (कहते हैं कि यह महान् हिमालय का पोता है, तथा कार्तिकेय एवं परशुराम ने इसे बीच चिरा है)—हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम् मेघ० ५७। सम०—**अदनम्** कमलेडडो के रेशे, **अरातिः**,—**अरिः**,—**रिपुः** 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण —**दारणः**,—**सूदनः** 1. कार्तिकेय और 2. परशुराम के विशेषण।

क्रौर्यम् [क्रूर+ष्यञ्] क्रूरता, कठोरहृदयता।

क्लन्द् [भ्वा० पर०—क्लन्दति, क्लन्दित] 1. पुकारना, चिल्लाना 2. रोना, विलाप करना, (भ्वा० आ० —क्लन्दते या क्लदते) घबड़ा जाना।

क्लम् [भ्वा०—दिवा०, पर०—क्लामति, क्लाम्यति, क्लान्त] थक जाना, थक कर चूर होना, अवसन्न होना—न चक्लाम न विव्यथे—भट्टि० ५।१०२, १४।१०१, वि—, थक जाना।

क्लमः, क्लमथः [क्लम्+घञ्, अथच् वा] थकावट, क्लान्ति अवसाद—विनोदितदिनक्लमाः कृतरुचश्च जाम्बूनदैः —शि० ४।६६, मनु० ७।१५१, शं० ३।२१।

क्लान्त (वि०) [क्लम्+क्त] 1. थका हुआ, थक कर चूर हुआ,—समातपक्लान्तम्—रघु० २।१३, मेघ० १८, ३६, विक्रम० २।२२ 2. मुर्झाया हुआ, म्लान—**क्लान्तो** मन्मथलेख एष नलिनीपत्रे नखैरर्पित:—श० ३।३६, रघु० १०।४८ 3. दुबला-पतला।

क्लान्ति (स्त्री०) [क्लम्+क्तिन्] थकावट। सम०— **छिद्** (वि०) थकावट दूर करने वाला, बलदायक।

क्लिद् [दिवा० पर०—क्लिद्यति, क्लिन्न] गीला होना, आर्द्र होना, तर होना—प्रेर० तर करना, गीला करना —न चेत्ते क्लेदयन्त्यापः—भग० २।२३, भट्टि० १८। ११।

क्लिन्न (वि०) [क्लिद्+क्त] गीला, तर। सम०—**अक्ष** (वि०) चौंधियाई आँखों वाला।

क्लिश् I [दिवा० आ०—(कुछ के मत में) पर०, क्लिश्यते क्लिष्ट, क्लिशित] 1. दुःखी होना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना—अभ्युपेदेशग्रहणं नातिक्लिशते वः शिष्या: —मालवि० १, त्रय: परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिण: प्रतिभू: कुलम्—मनु० ८।१६९ 2. दुःख देना, सताना, II (क्रया० पर०—क्लिश्नाति, क्लिष्ट, क्लिशित) दुःख देना, पीड़ित करना, सताना, कष्ट देना,—क्लिश्नाति लब्धपरिपालनवृत्तिरेव—श० ५।६, एवमाराध्यमानोऽपि क्लिशनाति भुवनत्रयम्—कु० २।४०, रघु० ११।५८।

क्लिशित, क्लिष्ट (वि०) [क्लिश्+क्त] 1. दुःखी, पीड़ित, संकट ग्रस्त 2. कष्टग्रस्त, सताया हुआ 3. मुर्झाया हुआ 4. असंयत, विरोधी—उदा० माता मे बन्ध्या 5. परिष्कृत, कृत्रिम (रचना आदि) 6. लज्जित।

क्लिष्टिः (स्त्री०) [क्लिश्+क्तिन्] 1. कष्ट वेदना, दुःख, पीड़ा 2. सेवा।

क्लीब (वं) (वि०) [क्लीब्+क] 1. हिजड़ा नपुंसक, बधिया किया हुआ—मनु० ३।१५०, ४।२०५, याज्ञ० १।२२३ 2. पुरुषार्थहीन, भीरु, दुर्बल, दुर्बलमना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--रघु० ८।८४, **क्लीबात्** पालयिता—मृच्छ० ९।५ 3. कायर 4. नीच अधम 5. सुस्त 6. नपुंसक लिंग का, —**बः**,—**बम्** (—**बः**,—**बम्**) 1. नामर्द, हिजड़ा,—न मूत्र फेनिलं यस्य विष्ठा चाप्सु निमज्जति. मेढ्रे चोन्मादशुक्राभ्यां होनं क्लीबः स उच्यते—दायभाग में उद्धृत कात्यायन 2. नपुंसक लिंग।

क्लेदः [क्लिद्+घञ्] गीलापन, आर्द्रता, तरी, नमी —शा० १।२९, रघु० ७।२१ 2. बहने वाला, घाव से निकलने वाला मवाद 3. दुःख, कष्ट -रघु० १५।३२, (=उपद्रव, मल्लि०)।

क्लेशः [क्लिश्+घञ्] पीड़ा, वेदना, कष्ट, दुःख, तकलीफ—किमारभ्य क्लेशाय्य पदमुपनीतः—श० १, क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते—कु० ५।८६, भग० १२।५ 2. गुस्सा, क्रोध 3. सांसारिक कामकाज। सम०—**क्षम** (वि०) कष्ट सहने में समर्थ।

क्लैब्यं (व्यम्) [क्लीब (व)+ष्यञ्] 1. नामर्दी (शा०) —वरं क्लैब्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम्—पंच० १ 2. पुरुषार्थहीनता, भीरुता, कायरता—क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ—भग० २।३ 3. अनुपयुक्तता, नामर्दी, शक्तिहीनता -रघु० १२।८६।

क्लोमन् [क्लू+मनिन्] फेफड़े।

क्व (अव्य०) [किम्+अत्, कु आदेशः] 1. किधर, कहाँ - **क्व तेऽयोग्यं रत्नाः क्व च तनु गृहनाः कीतुकरसाः**—उत्तर० ६।३३, **क्व**—**क्व** (जब किसी समास वाक्य खंड में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है- 'भारी अंतर' 'असंगति'- **क्व** रुजा हृदयप्रमाथिनी **क्व** च ते विश्वसनीयमायुधम्—मालवि० ३।२, **क्व** सूर्यप्रभवो वंशः **क्व** चाल्पविषया मतिः—रघु० १।२, कि० १।६, शि० २।१८ 2. कभी कभी 'क्व' का प्रयोग 'किम्' शब्द के अधिक का होता है—**क्व** प्रदेशे—अर्थात् कस्मिन् प्रदेशे (क)—**अपि** 1. कहीं, किसी जगह 2. कभी कभी (ख),—**चित्** 1. कुछ स्थानों पर -प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः - श० १।१४, ऋतु० १।२, रघु० १।४१ 2. कुछ बातों में -क्वचिद् गोचरः क्वचिन्न गोचरोऽयं, **क्वचित्**- **क्वचित्** (क) एक जगह—दूसरी जगह, यहाँ-वहाँ -क्वचिद्वीणावाद्यं क्वचिदपि च हा हेति रुदितम्—भर्तृ० ३।१२५ १।४, (ख) कभी-कभी (समय सूचक) क्वचित्पथा संचरते मुराणाम्, क्वचित् वनानां पतनां क्वचिच्च- -रघु० १३।१९।

क्वण् (स्वा० पर०—क्वणति, क्वणित) 1. अस्पष्ट शब्द करना, झनझन शब्द, टनटन शब्द- इति घोषयतीव डिण्डिमः करिणां हस्तिपकाहतः क्वणन्-शि० २।८६, **क्वणन्मणिनूपुरौ** -अमरु २८, ऋतु० ३।३६, मेघ० ३६ 2. भिनभिनाना, (भौंरों का) गुंजन, अस्पष्ट गायन —कु० १।५४, उत्तर० ३।२४, भट्टि० ६।८४।

क्वणः, क्वणनम्, क्वणितं, क्वाणः [क्वण्+अप्, ल्युट् क्त, घञ् वा] 1. सामान्य शब्द 2. किसी भी वाद्ययंत्र की ध्वनि।

क्वत्य (वि०) [क्व+त्यप्] किस स्थान से संबंध रखने वाला, कहाँ पर होने वाला।

क्वथ् (भ्वा० पर०—क्वथति, क्वथित) 1. उबालना, काढ़ा बनाना 2. पचाना।

क्वथः [क्वाथ्+अच्, घञ् वा] काढ़ा, लगातार मंदी आँच में तैयार किया गया घोल।

क्वाचित्क (वि०) [स्त्री०—**त्की**] अकस्मात् घटित, विरल, असाधारण,—इति क्वाचित्कः पाठः।

क्षः [क्षि+ड] 1. नाश 2. अन्तर्धान, हानि 3. बिजली 4. खेत 5. किसान 6. विष्णु का नरसिंहावतार 7. राक्षस।

क्षण् (तना० उभ०—क्षणोति, क्षणुते, क्षुत) 1. चोट पहुंचाना, क्षति पहुँचाना—हृदां हृदि व्यायतपातमक्षणोत्—कु० ५।५४ 2. तोड़ना, टुकड़े २ करना—(घनः) रवं किलानमितं पूर्वं भक्षणोतिः—रघु० ११।७२, उप-, परि-वि उसी अर्थ में प्रयोग जो 'क्षण्' का मूल अर्थ है।

क्षणः,—**णम्** [क्षण्+अच्] 1. लमहा, निमेष, एक सैकंड से ४।५ भाग के बराबर समय की माप, —क्षणमात्रमवस्थितस्थो मुनर्मानव इव ह्रदः -रघु० १।७३, २।६०, मेघ० २६, - क्षणमवतिष्ठस्व- कुछ देर ठहरो 2. अवकाश—अहमपि उत्क्षणाः स्वयंहं गच्छामि—मालवि० १, गृहीतः क्षणः—श० २, मेरा अवकाश आपके सुपुर्द है अर्थात् आपका कार्य कर देने का मैं आपको वचन देता हूं 3. उपयुक्त क्षण या अवसर—रहो नास्ति क्षणो नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः—पंच० १।१३८ मेघ० ६२, अधिगतक्षणाः—दश० १४७ 4. उत्सव, हर्ष, खुशी 5. आश्रय, दासता 6. केन्द्र, मध्यभाग। सम०- -**अन्तरे** (अव्य०) दूसरे क्षण, कुछ देर के पश्चात्, -**क्षेपः** क्षणिक विलंब, -**दः** ज्योतिषी (—**दम्**) पानी (—**दा**) 1. रात-क्षणादर्धेक्षणदापतिप्रभः- -नै० १।६७, रघु० ८।७४, १६।४५, शि० ३।५३ 2. हल्दी °**करः** पक्षिः चाँद, शि० ९।७०, °**चरः** रात में घूमने वाला, राक्षस, -सानुत्लवः प्रभुरपि क्षणदाचरणाम्-रघु० १३।७५, °**आत्ययम्** रात्रि में अन्धेरा, रतौंधी, -**द्युतिः** (स्त्री०) -**प्रकाशा**,-**प्रभा** बिजली, -**निश्वासः** शिशुक, -**भङ्गुर** (वि०) क्षणरुत्पायी, चंचल, नश्वर शि० ४।१३० -**मात्रम्** (अव्य०) क्षणभर के लिए, -**रागिन्** (पुं०) कबूतर -**विध्वंसिन्** (वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला (पुं०) नास्तिक दार्शनिकों का सम्प्रदाय जो यह मानता है कि प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होकर नया बनता रहता है।

क्षणतुः [क्षण्+अतु] घाव, फोड़ा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षणतम् [क्षण्+क्त] क्षति पहुँचाना, मार डालना, घायल करना।

क्षणिक (वि०) [क्षण+ठन्] क्षणस्थायी, अचिरस्थायी —स्वप्नेषु क्षणिकसमागमोत्सवेषु—रघु० ८।९२, एकस्य क्षणिका प्रीतिः—हि० १।६६,—का बिजली।

क्षणिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [क्षण+इनि] 1. अवकाश रखने वाला 2. क्षणस्थायी, —नी बिजली।

क्षत (वि०) [क्षण्+क्त] घायल, चोट लगा हुआ, क्षतिग्रस्त, काटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, तोड़ा हुआ, दे० क्षण् रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाश्च—वेणी० १।७, रघु० १।२८, २।५६, ३।५३,—तम् 1. खरोंच 2. घाव, चोट, क्षति—क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८ 3. भय, विनाश, खतरा—क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः—रघु० २।५३। सम०—अरि (वि०) विजयी, —उदरम् पेचिश,—कासः आघात से उत्पन्न खांसी, —जम् 1. रुधिर—स छिन्नमूलः क्षतजेन रेणुः—रघु० ७।४३, वेणी० २।२७ 2. पौष, मवाद,—यौनिः (स्त्री०) भ्रष्ट स्त्री, वह स्त्री जिसका कौमार्य भंग हो चुका हो,—विक्षत (वि०) विक्षतांग, जिसका शरीर बहुत जगह से कट गया हो, तथा घावों से भरा हो,—वृत्तिः (स्त्री०) दरिद्रता, जीविका के साधनों से वंचित,—व्रतः वह विद्यार्थी जिसने अपनी धार्मिक प्रतिज्ञा या व्रत भंग कर दिया हो।

क्षतिः (स्त्री०) [क्षण्—क्तिन्] 1. चोट, घाव 2. नाश, काट, फाड़—विलम्ब्य क्रियतां वराहतिभिः मुस्ताक्षतिः पल्वले श० २।६ 3. (आल०) बर्बादी, हानि, नुकसान—मुखं सजायते तेन्यः सर्वेभ्योऽपीति का क्षतिः सा० द० १७ 4. ह्रास, क्षय, न्यूनता—प्रतापक्षतिशीतलाः कु० २।२४, हि० ११११४।

क्षत्तृ (पुं०) [क्षद् +तृच्] 1. जो काटने और रूपरेखा खोदने का काम करता है—(मतिकार या लगत्तराश) 2. परिचारक, द्वारपाल 3. कंचुकी, सारथि 4. शूद्रपिता तथा क्षत्रिय माता से उत्पन्न संतान—तु० मनु० १०।९ 5. दासी का पुत्र (उदा० विदुर) 6. ब्रह्मा, 7. मछली।

क्षत्र:, त्रम् [क्षण्+क्विप्=क्षत्, ततः त्रायते—त्रै+क] 1. अधिराज्य, शक्ति, प्रभुता, सामर्थ्य 2. क्षत्रिय जाति का पुरुष —क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ़ः रघु० २।५३, ११।९९, ७१—असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा— श० १।२१, मनु० ९।३२२। सम०—अन्तकः परशुराम का विशेषण, धर्मः 1. बहादुरी, सैनिक शूरवीरता 2. क्षत्रिय के कर्तव्य,—पः राज्यपाल, उपशासक,—बन्धुः 1. क्षत्रिय जाति का पुरुष—मनु० २।३८ 2. क्षत्रिय मात्र, अपक्षत्रिय, घृणित या निकम्मा क्षत्रिय, तु० ब्रह्मबंधु।

क्षत्रियः [क्षत्रे राष्ट्रे साधुः तस्यापत्यं जातौ वा यः तारा०] दूसरे वर्ण या सैनिक जाति का पुरुष—ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णाः द्विजातयः—मनु० १०।४। सम०—हृदः परशुराम का विशेषण।

क्षत्रियका, क्षत्रिया, क्षत्रियिका [क्षत्रिया+कन्+टाप्, ह्रस्वः—क्षत्रिय+टाप्—क्षत्रिया+कन्+टाप् इत्वम् वा] क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्रियाणी [क्षत्रिय+ङीप्, आनुक्] 1. क्षत्रिय जाति की स्त्री 2. क्षत्रिय की पत्नी।

क्षत्रियी [क्षत्रिय+ङीष्] क्षत्रिय की पत्नी।

क्षंतृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [क्षम्+तृच्] प्रशान्त, सहिष्णु, विनम्र।

क्षप् [भ्वा०—क्षपति—ते, क्षपित] उपवास करना, संयमी होना—मनु० ५।९९, (प्रेर० या चुरा० उभ०—क्षपयति—ते, क्षपित) 1. फेंकना, भेजना, डालना 2. चूक जाना।

क्षपणः [क्षप्+ल्युट्] बौद्धभिक्षु,—णम् 1. अपवित्रता, अशौच 2. नाश करना, दबाना, निकाल देना।

क्षपणक: [क्षपण+कन्] बौद्ध या जैनसाधु—नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति —चाण० ११०, कथं प्रथममेव क्षपणकः— मुद्रा० ४।

क्षपणी [क्षप्+ल्युट्+ङीप्] 1. चप्पू 2. जाल।

क्षपण्यु: [क्षप्+अन्यु, णत्वम्] अपराध।

क्षपा [क्षप्+अच्+टाप्] 1. रात—विगमयत्यूर्ध्वनिद्र एव क्षपाः—श० ६।४, रघु० २।२०, मेघ० ११० 2. हल्दी। सम०—अटः 1. रात में घूमने वाला 2. राक्षस, पिशाच —ततः क्षपाटैः पृथुपिंगलाक्षैः—भट्टि० २।३०, —करः, —नाथः 1. चन्द्रमा 2. कपूर—घनः काला बादल, चरः राक्षस, पिशाच।

क्षम् (भ्वा०, आ० क्षमते, क्षाम्यति, क्षान्त या क्षमित) 1. अनुमति देना, इजाजत देना, चलने देना—अतो नृपाहवक्षमिरे समेताः स्त्रीरत्नलाभं न तदात्मजस्य —रघु० ७।३४, १२।४६ 2. क्षमा करना, माफ कर देना (अपराध आदि)—क्षान्तं न क्षमया भर्तुः ३।१३, क्षमस्व परमेश्वर, निष्ठुरस्य मे भर्तुर्निदेशरोक्ष्यं देवि क्षमस्वेति बभूव नग्नः रघु० १४।५८ 3. धैर्यवान् होना, चुप होना, प्रतीक्षा करना—रघु० १५।४५ 4. सहन करना, गम खा जाना, भुगतना- अधिक्षमन्तेऽस्मदुपजापं प्रकृतयः—मुद्रा० २, राजाभङ्गकरान् राजा क्षमेते स्वमुतानपि—हि० २।१०७ 5. विरोध करना, रोकना 6. सक्षम या योग्य होना—ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः—शि० १।३८, २।६५।

क्षम (वि०) [क्षम्+अच्] 1. धैर्यवान् 2. सहनशील, विनम्र 3. पर्याप्त सक्षम, योग्य (समास में या सं०,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधि० अथवा तुमुन्नंत के साथ)—मलिनो हि यथादर्शो रूपालोकस्य न क्षमः—पञ्चा० ३।४१, सः हि रक्षण-विधौ तयोः क्षमा—रघु० ११।५, हृदयं न त्वलंलिंतुं क्षमाः—रघु० ८।५९—गमनक्षम, निर्मूलनक्षम आदि 4. समुपयुक्त, योग्य, उचित, उपयुक्त—तथो यदुक्त-मश्विवं न हि तत्क्षमं ते—उत्तर० १।१४, आत्मकर्म क्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः—रघु० १।१३, श० ५।२६ 5. योग्य, समर्थ, अनुरूप—उपभोगक्षमे देहे —विक्रम० २, तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति—शा० १।१८ 6. सहने योग्य, सह्य 7. अनुकूल, मित्रवत् ।

क्षमा [क्षम्+अङ्+टाप्] 1. धैर्य, सहिष्णुता, माफी —क्षमा खलो च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्—हि० २, रघु० १।२२, १८।९, तेजः क्षमा वा नैकान्तं फालक्रम्य महीपतेः—शि० २।८३ 2. पृथ्वी 3. दुर्गा का विशेषण । सम०—ज: मंगलग्रह,—भुज्—भुजः राजा ।

क्षमित् (वि०) (स्त्री० —त्री), क्षमिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [क्षम+तृच्, क्षम्+घिनुण्, स्त्रियां ङीप् च,] धैर्यवान्, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव वाला—कामं क्षाम्यतु यः क्षमी—शि० २।४३, याज्ञ० २।२००, १।११३ ।

क्षयः [क्षि+अच्] 1. घर, निवास, आवास—यातनाश्च यमक्षये—मनु० ६।६१, निर्जगाम पुनस्तस्मात्क्षयाल्ला-रायणस्य हृ—महा०, 2. हानि, ह्रास, छीजन, घटाव, पतन, न्यूनता—आयुःक्षयः—रघु० ३।६९, धनक्षय वर्धति जाठराग्निः—पंच० २।१७८ इसी प्रकार चन्द्रक्षय, क्षयपक्ष आदि 3. विनाश, अंत, समाप्ति—निशाक्षये यांति हिमेव पाण्डुताम्—ऋतु० १।९, अमर० ६० 4 आर्थिक क्षति—मनु० ८।४०१ 5. (मूल्य आदि का) गिरना 6. हटाना 7. प्रलय 8. तपेदिक 9. रोग 10. निर्गुणता, (बीजगणित में) ऋण । सम०—कर (क्षयंकर भी) (वि०) नाश या तबाही करने वाला, बर्बादी करने वाला,—कालः 1. प्रलयकाल 2. अवनति का समय, —कासः तपेदिक की खांसी,—पक्षः कृष्णपक्ष, अंधेरापक्ष,—युक्तिः (स्त्री०),—योगः नाश करने का अवसर,—रोगः तपेदिक, राजयक्ष्मा,—वायुः प्रलयकाल की हवा,—संवर्त (स्त्री०) सर्वनाश, बर्बादी ।

क्षयथु [क्षि+अथुच्] तपेदिक के रोगी को खांसी, तपेदिक ।

क्षयिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [क्षय+इनि] 1. ह्रास-मान, मुर्झाने वाला—आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण —भर्तृ० २।६०, ह्रासोन्मुख, क्षीयमाण—न चाभूतोदिव क्षयी—रघु० १७।७१, मनु० ९।३१४ 2. क्षयरोगग्रस्त 3. नश्वर, भंगुर —(पुं०) चन्द्रमा ।

क्षयिष्णु (वि०) [क्षि+इष्णुच्] 1. बरबाद करने वाला, नाश कारी 2. नश्वर, भंगुर ।

क्षर् (स्वा० पर०—क्षरति, क्षरित) (इसका प्रयोग अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार से होता है) 1. बहना, सरकना 2. भेज देना, नदी की भांति बहना, उडेलना, निकालना—रघु० १३।७४, भट्टि० ९।८ 3. बूंद-बूंद करके गिरना, टपकना, रिसना 4. नष्ट होना, घटना, मिटना 5. क्षयं होना, प्रभाव न होना—यशोऽनृतेन क्षरति तपः क्षरति विस्मयात्—मनु० ४।२३७ 6. खिसकना, वञ्चित होना (अप० के साथ) (प्रेर० —क्षारयति) आरोप लगाना, बदनाम करना (प्रायः 'आ' उपसर्ग के साथ), वि—, पिघलना, घुल जाना ।

क्षर (वि०) [क्षर्+अच्] 1. पिघलने वाला 2. जंगम 3. नश्वर—क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते —भग० १५।१६, —रः बादल, —रम् 1. पानी 2. शरीर ।

क्षरणम् [क्षर्+ल्युट्] 1. बहने, टपकने, बूंद-बूंद गिरने और रिसने की क्रिया 2. पसीना आ जाना—अङ्गु-लिक्षरणसन्नवर्तिकः—रघु० १९।१८ ।

क्षरित् (पुं०) [क्षर—इनि] बरसात का मौसम ।

क्षल् (चुरा० उभ०—क्षालयति—ते, क्षालित्र) 1. धोना, धो देना, पवित्र करना, साफ करना—क्षते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः —शि० १।३८, हि० ४।६० 2. मिटा देना—(अपयशः) तेषामनुग्रहेणाहं राजन् प्रक्षालयाम्यहम्—महा०, वि—, धोकर साफ करना—रघु०—५।४४ ।

क्षत्रः क्षत्रपुः [क्षद्+अप्, अधुच् वा] 1. छींक 2. खांसी ।

क्षात्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [क्षत्र+अण्] सैनिक जाति से संबंध रखने वाला—क्षात्रो धर्मः स्थित इव ननु ब्रह्मघोषस्य गुप्त्यै उत्तर० ६।९, रघु० ११।३, —त्रम् 1. क्षत्रिय जाति 2. क्षत्रिय के गुण गीता इस प्रकार बतलाती है 'शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्, दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभाव-जम्—भग० १८।४३ ।

क्षान्त (भू० क० कृ०) [क्षम्+क्त] 1. धैर्यवान्, सहन-शील, सहिष्णु 2. क्षमा किया गया, ता पृथ्वी ।

क्षान्तिः (स्त्री०) [क्षम्+क्तिन्] 1. धैर्य, सहनशीलता, क्षमा—क्षान्तिश्चेद्वचनेन किम्—भर्तृ० २।२१, भग० १८।४२ ।

क्षाम्नु (वि०) [क्षम्+नुन्, वृद्धि] धैर्यवान्, सहनशील, —नुः पिता ।

क्षाय (वि०) [क्षै—क्त] 1. दग्ध, झुलसा हुआ 2. क्षीण, पतला, परिक्षीण, कृश, दुबला-पतला क्षामक्षाम कपोलमाननम्—भट्ट० ३।१०, मध्ये क्षामा—मेघ० ८२, क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनम्—८०, ८९ 3. क्षुद्र, तुच्छ, अल्प 4. दुर्बल, निःशक्त ।

क्षार (वि०) [क्षर्+ण वा०] संक्षारणशील, क्षारक या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाहक, तिक्त, चरपरा, कटु, खारी, -रः 1. रस, अर्क 2. शीरा, राब 3. कोई क्षारीय या खट्टा पदार्थ—क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८. (क्षारं क्षते क्षिप् - एक लोकोक्ति बन गया है - इसका अर्थ है 'पीड़ा को जो पहले से ही असह्य है और बढ़ा देना' 'घुटे को और अधिक घुरा कर देना' 'जले पर नमक छिड़कना' 4. सोडा 5. बदमाश, ठग, -रम् 1. काला नमक 2. पानी। सम० अच्छम् समुद्री नमक, -अङ्गजनम् सज्जी का लोन, -अम्बु खारी रस या खारा पानी,—उदः, उदकः, उदधिः,—समुद्रः खारा समुद्र, -अयं, त्रितयम् सज्जी, शोरा, सुहागा,-नदी नरक में खारे पानी की नदी, -भूमिः (स्त्री०), -मृत्तिका रिंहाली भूमि-किमात्रत्वं क्षारभूमौ प्राणदा यमदूतिका उद्धृत, -मेलकः खारा पदार्थ, -रसः खारा रस।

क्षारकः [क्षार+कन्] 1. क्षार, रेह 2. रस, अर्क 3. पिंजरा, पक्षियों के रहने की टोकरी या जाल 4. घोड़ा 5. मंजरी, कलिका।

क्षारणम्,-णा [क्षर्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] दोषारोपण, विशेषकर व्यभिचार का।

क्षारिका [क्षर्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] भूख।

क्षारित (वि०) 1. खारे पानी में से टपकाया हुआ 2. जिस पर (व्यभिचार) का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो।

क्षालनम् [क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1. धोना, (पानी से धोकर) साफ करना 2. छिड़कना।

क्षालित (वि०) [क्षल—णिच्+क्त] 1. धोया हुआ, साफ़ किया हुआ, पवित्र किया हुआ 2. पोंछा हुआ, प्रतिदत्त (बदला चुकाया हुआ)—उत्तर० १।२८।

क्षि i (भ्वा० पर०—क्षयति, क्षित या क्षीण) 1. मुखाना, छीजना 2. राज्य करना, शासन करना, स्वामी होना।

ii (भ्वा०, स्वा०, क्र्या०—पर०—क्षयति, क्षिणोति, क्षिणाति) 1. नष्ट करना अस्त कर लेना, बर्बाद करना, भ्रष्ट करना न तद्यशः शस्त्रभृता क्षिणोति—रघु० २।४०. 2. न्यून करना, बर्बाद करना—रघु० १९।४८ 3. मार डालना, क्षति पहुँचाना—(कर्मवाच्य—क्षीयते) 1. बर्बाद होना, घटना, नष्ट होना, न्यून होना (आलं० भी)—प्रतिक्षणमयं कायः क्षीयमाणो न लक्ष्यते—हि० ४।६६, प्रत्यासन्न-विपत्तिमूढमनसां प्रायो मतिः क्षीयते—पंच० २।४, अमरु ९३, भर्तृ० २।१६, (प्रेर०—क्षपयति या क्षपयति) 1. नष्ट करना, दूर हटा देना, समाप्त कर देना—ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगत-शक्तिरात्मभूः—श० ७।३५, रघु० ८।४७, मेघ० ५३ 2. समय बिताना, अप—, घटना, क्षीण होना, न्यून होना, परि—, प्र—, सम्—, 1. कम होना, क्षीण होना 2. कृश होना, दुबला-पतला होना।

क्षितिः (स्त्री०) [क्षि+क्तिन्] 1. पृथ्वी 2. निवास, आवास, घर 3. हानि, विनाश 4. प्रलय। सम०—ईशः, —ईश्वरः राजा—रघु० १।५, ३।३, ११।१, कणः धूल, कम्पः भूचाल,—क्षित् (पुं०) राजा, राजकुमार, —जः 1. वृक्ष 2. मंडोला, केंचुआ 3. मंगल ग्रह 4. विष्णु के द्वारा मारा गया नरक नाम का राक्षस (—जम्) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं, (—जा) सीता का विशेषण, -तलम् पृथ्वी की सतह, -देवः ब्राह्मण,—धरः पहाड़ कु० ७।९४ —नाथः,—पः,—पतिः, -पालः,—भुज् (पुं०) -रक्षित् (पुं०) राजा, प्रभु—रघु० २।५१, ५।७६, ६।८६, ७।३, ९।७५,—पुत्रः मंगल ग्रह,—प्रतिष्ठ (वि०) पृथ्वी पर रहने वाला, -भृत् (पुं०) 1. पहाड़—सर्व-क्षितिभृतां नाथः विक्रम० ४।२७ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'राजा' भी है) कि० ५।२०, ऋतु० ६।२६ 2. राजा,—मण्डलम् भूमंडल,—रन्ध्रम् खाई, खोदर, रुहः (पुं०) वृक्ष, -वर्धनः (पुं०) शव०, मुर्दा शरीर, —वृत्तिः (स्त्री०) पृथ्वी की गति, वैयधुक्तव्यवहार, -व्याडालः गुफा, बिल।

क्षिद्रः [क्षिद्+रक्] 1. रोग 2. सूर्य 3. सींग।

क्षिप् (तुदा० उभ०—अभि, प्रति या अति पूर्व होने पर पर०—, दिवा० पर० क्षिपति -ते, क्षिप्यति, क्षिप्त) 1 फेंकना, डालना, भेजना, प्रेषित करना, विसर्जन, जाने देना (अधि० या कभी कभी सम्प्र० के साथ) —मरुद्भ्य इति तु द्वारि क्षिप्तेष्वक्षुद्भ्य इत्यपि— मनु० ३।८८, शिलां वा क्षेप्स्यते मयि—महा०, का० १२, ९५. प्रतिपूर्वक भी, भर्तृ० ३।६७ 2. रखना, पहनना, लगाना—लज्जामपि शिरस्यन्यः क्षिप्त्वा धूनोत्यहिंसालुप्ता —श० ७।२४, याज्ञ० १।२३०, भग० १६।१९ 3. आरो-पित करना, लगाना (कलंक आदि)—भृत्ये दोषान् क्षिपति—हि० २ 4. फेंक देना, डाल देना, उतार देना, मुक्त होना—कि कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष मत्—मुद्रा० २।१८ 5. दूर करना, नष्ट करना—मा० १।१७ 6. अस्वीकार करना, घृणा करना 7. अपमान करना, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, झकाना—मनु० ८।२१२, २७०, याज्ञ० ३।१०, अधि—, 1. निन्दा करना, कलंक लगाना 2. नाराज करना, अपवाद करना 3. आगे बढ़ जाना, अव—, 1. उतार फेंकना, छोड़ना, त्यागना 2. तिरस्कार करना, भर्त्सना करना, आ—, 1. फेंकना, डाल देना, प्रहार करना 2. सिकोड़ना 3. वापिस लेना, छीनना, खींचना, ले लेना—अग्रपादमाक्षिप्य—रघु० ७।७,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भर्तृ० १।४३, मेघ० ६८ 4. संकेत करना, इशारा करना 5. परिस्थितियों से अनुमान लगाना: जात्या व्यक्तिराक्षिप्यते 6. (तर्क के रूप में) आक्षेप करना 7. अवहेलना करना, उपेक्षा करना 8. तिरस्कार करना, **उद्—**, उछालना- ऋतु० १।२२, **उप—**, 1. डालना, फेंकना वपुषि वधाय तव तव शस्त्रमुपक्षिपतः—मा० ५।३१ 2. संकेत करना, इशारा करना **निष्कर्ष** निकालना - **छद्म** कार्यमुपक्षिपन्ति—मृच्छ० २।२ 3. आरम्भ करना, शुरू करना 4. अपमान करना, डाँटना-फटकारना, **नि**—, 1. नीचे रखना, स्थापित करना, धर देना याज्ञ० १।१०३, अमर० ८० 2 सौंपना, देख रेख में सुपुर्द करना, —मनु० ६। ३, ३।१७९, १८० 3. शिविर में रखना 4. फेंक देना अस्वीकार करना 5. प्रदान करना, **परि** , 1. घेरना, गङ्गास्रोतःपरिक्षिप्तम्—कु० ६।३८ 2. आलिंगन करना, **पर्या**— , बाँधना, (बालों को) एकत्र करना - (केशान्तं) पर्याक्षिप्तं काञ्चिदुदारबन्धम्—कु० ७।१४, **प्र** -, 1. रखना, डालना नाभेरध्वं प्रक्षिपेदञ्जलिं —मनु० ४।५३, क्षारं क्षते प्रक्षिपन् —मृच्छ० ५।१८ 2. बीच में डालना, अन्तर्हित करना—इति सूत्रे कैश्चित्प्रक्षिप्तं—कैयट, **वि**—, 1. फेंकना, डालना 2. मन मोड़ना 3. ध्यान हटाना, **सम्** , 1. संचय करना, ढेर लगाना —आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु निषादिभिः —रघु० १।५२, भट्टि० ५।८६ 2. पीछे हटना, नष्ट करना 3. छोटा करना, कमी करना, संक्षिप्त करना संक्षिप्यंते क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा मेघ० १०८, मनु० ७।३४।

क्षपणम् [क्षिप्+ल्युट् वा०] 1. भेजना, फेंकना, डालना 2. झिड़कना, दुर्वचन कहना।

क्षिपणिः, -णी (स्त्री०) [क्षिप्+अनि, क्षिपणि+ङीष्] 1. चप्पू 2. जाल 3. हथियार, **णिः** प्रहार:।

क्षिपश्चुः [क्षिप्+कन्यूच्] 1. शरीर 2. वसंत ऋतु।

क्षिप्रा [क्षिप्+अङ्—टाप्] 1. भेजना, फेंकना, डालना 2. रात्रि।

क्षिप्त (भू० क० कृ०) [क्षिप् + क्त] 1. फेंका हुआ, बिखेरा हुआ, उछाला हुआ, डाला हुआ 2. त्यागा हुआ 3. अवज्ञात, उपेक्षित, अनादृत 4. स्थापित 5. ध्यान हटाया हुआ, पागल (दे० क्षिप्)।—**त्नम्** गोली लगने से बना घाव। सम० **कुक्कुरः** पागल कुत्ता,- **चित्त** (वि०) उचाट मन, विभ्रमी,—**देह** (वि०) प्रसृतशरीर, लेटा हुआ।

क्षिप्तिः (स्त्री०) [क्षिप्+क्तिन्] 1. फेंकना, भेज देना 2. (पहेलियाँ आदि के) कूट अर्थ को प्रकट करना।

क्षिप्र (वि०) [क्षिप्+रक्] (म० अ०—क्षेपीयस्, उ० अ० क्षेपिष्ठ) सजीव, आशुगामी,—**प्रम्** (अव्य०) जल्दी, फुर्ती से, तुरन्त—विनाशं व्रजति क्षिप्रमामपात्रमिवाम्भसि —मनु० ३।१७९, शा० ३।६, भट्टि० २।४४। सम० —**कारिन्** (वि०) आशुकारी, अविलम्बी।

क्षिप्रा [क्षि+अङ्+टाप्] 1. हानि, विनाश, बर्बादी, ह्रास 2. अनौचित्य, सर्वसम्मत आचार का उल्लंघन —उदा० स्वयमहरयेन यानि उपाध्याय पदानि गमयति— सिद्धा०।

क्षीजनम् [क्षीज्+ल्युट्] पोले नरकुलों में से निकली हुई सरसराहट की ध्वनि।

क्षीण (वि०) [क्षि+क्त, दीर्घः] 1. पतला, कृश, क्षयप्राप्त, निर्बल, घटा हुआ, थका हुआ या समाप्त, खर्च कर डाला हुआ···भार्या क्षीणेषु वित्तेषु (ज्ञानीयात्)—हि० १।७२, इसी प्रकार **क्षीण**: शशी, क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति 2. मुकुमार, नाजुक 3. थोड़ा अल्प 4. निर्धन, सकटग्रस्त 5. अभिहीन, दुर्बल। सम० - **चन्द्रः** घटता हुआ अर्थात् कृष्णपक्ष का चन्द्रमा **धन** (वि०) जिसके पास पैसा न रहा हो, निर्धन - **पाप** (वि०) जो अपने पाप कर्मों का फल भुगत कर निष्पाप हो गया हो,- **पुण्य** (वि०) जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो, तथा अगले जन्म के लिए जिसे और पुण्य कार्य करने चाहिएँ, —**मध्य** (वि०) जिसकी कमर पतली हो,- **वासिन्** (वि०) खंडहर में रहने वाला,— **विक्रान्त** (वि०) साहसहीन, पौरुषहीन - **वृत्ति** (वि०) जीविका के साधनों से वञ्चित, बेरोजगार।

क्षीव्, क्षीब दे० क्षीव्, क्षीब।

क्षीर: रम् [क्षरत्यत्र अद्यमे घस्] दूध, उपपालोपः, धन्य ककारः पत्वं च] 1. दूध,—हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः पा० ६।२७ 2. वृक्ष का दूधिया रस —ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रयुताः—मेघ० १०३, कु० १।९ 3. जल। सम०—**अब्धिः** शिशु, दूधपीता बच्चा, **धिः** दुग्धसागर °**जः** 1. चन्द्रमा 2. शंखी, °**जम्** समुद्री नमक, °**जा—तनया** लक्ष्मी का विशेषण,—**आह्वः** सलोबर का वृक्ष, —**उदः** दुग्धसागर —क्षीरोदवेलेव सफेनपुञ्जा—कु० ७।२६, °**तनयः** चन्द्रमा, °**तनया, °सुता** लक्ष्मी का विशेषण,—**उदधिः** क्षीरोद, **ऊर्मिः** दुग्धसागर की लहर रघु० ४।२७, —**ओदनः** दूध में उबाले हुए चावल, **कण्ठः** दूधपीता बच्चा (कण्ठ में दूध रखने वाला) स्वयं तत्क्षीरकण्ठेन प्राप्तमात्रण्यकं व्रतम् महावी० ४।२८, ५।११, — **जम्** जमा हुआ दूध,—**द्रुमः** अश्वत्थवृक्ष, **धात्री** दूध पिलाने वाली नौकरानी, धाय, **धिः**,— **निधिः** दुग्धसागर इन्दुः क्षीरनिधाविव—रघु० १।१२,—**धेनुः** (स्त्री०) दूध देने वाली गाय,— **नीरम्** 1. पानी और दूध 2. दूध जैसा पानी 3. गाढ़ालिंगन, **पः** बच्चा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वारिः,— वारिधिः, दुग्ध सागर,— विकृतिः जमा हुआ दूध, —वृक्षः 1. कठ, गूलर, पीपल और सपक्ष नाम के वृक्ष 2. अंजीर, शरः मलाई, दूध की मलाई, —समुद्रः दुग्धसागर,— सारः मक्खन,—हिंडोरः दूध के झाग या फेन।

क्षीरिका [क्षीर+ठन्+टाप्] दूध से बना भोज्य पदार्थ।

क्षीरिन् (वि०) [क्षीर+इनि] दूधिया दुधार दूध देने वाला।

क्षीव् (भ्वा०-दिवा०, पर०—क्षीवति, क्षीव्यति) 1. मतवाला होना, मदोन्मत्त होना, नशे में होना 2. थूकना, मुँह से निकालना।

क्षीव (वि०) [क्षीव+क्त वि०] उत्तेजित, मतवाला, मदोन्मत्त ध्रुवं जये यस्य जयाभूतेन क्षीवः क्षमाभर्तृरभूत्कृपाणः-- विक्रमांक० १।९६, क्षीवो दुःशासनसृजा -- वेणी० ५।२७।

क्षु (अदा० पर० क्षौति, क्षुत) 1. छींकना – अवयाति क्षवथुमिवत निरस्ते कृपाकं कामिनि चुक्षुवे मृगाक्ष्याः शि० ९।८३, वीर० १०, भट्टि० १४।७५ 2. खाँसना।

क्षुण्ण (भू० क० कृ०) [क्षुद्+क्त] 1. कूटा हुआ, कुचला हुआ – रघु० १।१७ 2. (आल०) अभ्यस्त, अनुगत —क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः-- का० १४६ 3. पीसा हुआ —दे० क्षुद्। सम०—मनस् (वि०) पश्चात्तापी, पछतावे वाला।

क्षुत् (स्त्री०), क्षुत्स्, --त्ता [क्षु+क्विप्, तुगागमः; क्षु+क्त, क्षुत+टाप्] छींकने वाली, छींक।

क्षुद् (रुधा०, उभ० - क्षुणत्ति, क्षुत्ते, क्षुण्ण) 1. कुचलना, घिसना, (पैरों से) कुचल डालना, रगड़ना, पीस देना -- दृणद्धि सर्पान् पाताले भट्टि० ६।३६, ते तं श्रान्तिपतत्पादैर्दन्तैस्तमाच्छिदन्-- १५।४३, १६।६६ 2. उत्तेजित करना, क्षुब्ध होना (आ०), प्र—, कुचलना, खरोंचना, पीसना-- मित्रघ्नस्य प्रभुक्षोद गदयोग्र विभीषणः--भट्टि० १४।३३।

क्षुद्र (वि) [क्षुद्+रक] (म० अ०- क्षोदीयस्, उ० अ०--क्षोदिष्ठ) 1. सूक्ष्म, अल्प, छोटा सा, तुच्छ, हलका 2. कमीना, नीच, दुष्ट, अधम -- क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने--कु० १।१२ 3. दुष्ट 4. क्रूर 5. गरीब, दरिद्र 6. कृपण, कंजूस--मेघ० १७,—द्रा 1. मधुमक्खी 2. अगड़ालू स्त्री 3. अपाहज या विकलांग स्त्री 4. बेश्या --उपसृष्टा इः क्षुद्राग्निष्ठिनभवनाः--का० १०७। सम०—अञ्जनम् कुछ रोगों में आँखों में लगाया जाने वाला अंजन या लेप,—अन्त्रः हृदय के भीतर का छोटा सा रंध्र,— कम्बुः छोटा शंख,-- कुष्ठम् एक प्रकार का हल्का कोढ़,—घण्टिका 1. घुँघरू 2. घुंघरू वाली करधनी,—चन्दनम् लाल चंदन की लकड़ी, - जन्तुः कोई भी छोटा जीव,-- वंशिका बाँस, गो मक्खी,-- बुद्धि (वि०) ओछे मन का, कमीना, - रसः शहद,—रोगः मामूली बीमारी (सुश्रुत में ४४ रोगों का उल्लेख है),-- शंखः छोटा शंख या घोंघा (सीपी),—सुवर्चस् हल्का या खोटा सोना अर्थात् पीतल।

क्षुद्रल (वि०) [क्षुद्र+ला+क] सूक्ष्म, हल्का (विशेष कर रोगों के जंतुओं के लिए प्रयुक्त)।

क्षुध् (दिवा० पर० -क्षुध्यति, क्षुधित) भूखा होना, भूख लगना--भट्टि० ५।६९, ९।४४, ९।३९।

क्षुध् (स्त्री०) क्षुधा [क्षुध्+क्विप्, क्षुध्+टाप्] भूख, सोदति क्षुधा—मनु० ७।१३४, ४।१८७। सम० आर्त, आविष्ट क्षुधापीडित,—आर्त (वि०) भूखा होने से दुर्बल--भट्टि० २।२९,—पिपासित (वि०) भूखा प्यासा,- निवृत्तिः (स्त्री०) भूख शान्त होना।

क्षुधालु (वि०) [क्षुध्+आलुच्] भूखा

क्षुधित (वि०) [क्षुध्+क्त] भूखा

क्षुपः [क्षुप्+क] छोटी जड़ों के वृक्ष, झाड़, झाड़ी।

क्षुभ् (स्वा० आ०, दिवा०, कृधा० पर०—क्षोभते, क्षुभ्यति, क्षुभ्नाति, क्षुभित, क्षुब्ध) 1. हिलाना, कंपित करना, क्षुब्ध करना, आंदोलित करना,— महाह्रद इव क्षुभ्यन् भट्टि० ९।११८, रघु० ४।२१, शि० ८।२४ 2. अस्थिर होना 3. लड़खड़ाना (आल० भी), प्र—, वि, -- सम् कांपना, क्षुब्ध होना, आंदोलित होना।

क्षुभित (वि०) [क्षुभ्+क्त] 1. हिलाया हुआ, आंदोलित आदि०- महाप्रलयमारुतक्षुभितपुष्करावर्तक-- वेणी० ३।२ 2. डरा हुआ 3. कुद्ध।

क्षुब्ध (वि०) [क्षुभ्+क्त] 1. आन्दोलित, चंचल, अस्थिर 2. डाँवाडोल 3. डरा हुआ, स्व० मन्थन करने का दण्डा -शंभौव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताम्भोधिवर्धना -- शि० २।१०७ 2. रति क्रिया का विशेष आसन, रतिबन्ध।

क्षुभ्र [क्षुभ्+रक] अलसी,एक प्रकार का सन।

क्षुर् (तुदा० पर० - क्षुरति, क्षुरित) 1. काटना, खुरचना 2. रेखाएँ खींचना, हल से खेत में खूड बनाना।

क्षुरः [क्षुर्+क] 1. उस्तरा रघु० ७।४६, मनु० ९। २६२ 2. उस्तरे जैसी नोक जो तीर में लगाई जाय 3. गाय या घोड़े का सुम 4. बाण। सम०—कर्मन् (नपुं०)- क्रिया हजामत बनाना,—चतुष्टयम् हजामत करने की आवश्यक चार चीजें,—धानम्, - भाण्डम् उस्तरे का खोल,—धार (वि०) उस्तरे जैसा तेज, —प्रः बाण जिसकी नोक घोड़े की नाल जैसी हो -तं क्षुरप्रमकलीकृत कृती रघु० ११।२९, ९।६२ 2. खुर्पी, घास खोदने का खुर्पा,—मणिन्, - मुण्डिन् (पुं०) नाई।

क्षुरिका, क्षुरी [क्षुर+ क्रोष्, +कन्+टाप् ह्रस्वः क्षुर +क्रोष्] 1. चाकू, छुरी 2. छोटा उस्तरा।

क्षुरिणी [क्षुर+इनि+क्रोष्] नाई की पत्नी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षुरिन् (पुं०) [क्षुर+इनि] नाई।

क्षुल्ल (वि०) [क्षुद्रं लाति गृह्णाति—क्षुद्+ला+क] छोटा, स्वल्प। समः—तातः पिता का छोटा भाई —तु० क्षुल्ल।

क्षुल्लक (वि०) [क्षुल्ल+कन्] 1. स्वल्प, सूक्ष्म 2. नीच, दुष्ट 3. नगण्य 4. निर्धन 5. दुष्ट, द्वेषयुक्त 6. बच्चा।

क्षेत्रम् [क्षि+ष्ट्रन्] 1. खेत, मैदान, भूमि —धीयते वालिसस्यादि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः—मुद्रा० १।३ 2. भूसंपत्ति भूमि 3. स्थान, आवास, भूखण्ड, गोदाम—कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१, भर्तृ० १।७७, मेघ० १६ 4. पुण्यस्थान, तीर्थस्थान—क्षेत्रं क्षत्रप्रचण्डिशुनं कौरवं तद्भजेथाः—मेघ० ४६, भग० १।१, 5. बाड़ा 6. उर्वरा भूमि 7. जन्मस्थान 8. पत्नी अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्—श० १, मनु० ३।१८५ 9. कायक्षेत्र शरीर (आत्मा का कर्म क्षेत्र) —योगिनो यं विचिन्वन्ति क्षेत्रात्क्षेत्रान्तरवर्तिनम् —कु० ६।७७, भग० १३।१,२,३ 10. मन 11. घर, नगर 12. सपाट आकृति जैसे कि त्रिभुज 13. रेखाचित्र। समः—अधिदेवता किसी पुण्य भूस्थल की अधिष्ठात्री देवता,—आजीवः—करः, कृषक, खेतिहर, —गणितम् ज्यामिति, रेखागणित,—गत (वि०) ज्यामितीय °उपपत्तिः (स्त्री०) ज्यामितीय प्रमाण, —ज्ञ (वि०) 1. खेत में उत्पन्न 2. शरीर से उत्पन्न (जः) हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, अपने पति के निमित्त संतानोत्पत्ति करने के लिए विधिवत् नियत किए गए किसी बन्धुजी द्वारा उसकी पत्नी में उत्पादित संतान—मनु० ९।१६७, १८० याज्ञ० १।६८, ६९, २।१२८, जात (वि०) दूसरे पुरुष की पत्नी में उत्पादित संतान, —ज्ञ (वि०) 1. स्थानीयता को जानने वाला 2. चतुर, दक्ष (ज्ञः) 1. आत्मा —तु० भग० १३।१-३, मनु० १२।१२ 2. परमात्मा 3. व्यभिचारी 4. किसान,—पतिः भूस्वामी भूमिधर, —पद्मम् देवता के लिए पवित्र स्थान,—पालः 1. खेत का रखवाला 2. क्षेत्र की रक्षा करने वाला देवता 3. शिव का विशेषण,—फलम् (गणित में) आकृति को लम्बाई चौड़ाई का गुणनफल, —भक्तिः (स्त्री०) खेत का बँटवारा,—भूमिः (स्त्री०) भूमि जिसमें खेती की जाय,—राशिः ज्यामितीय आकृतियों द्वारा प्रकट किया गया परिमाण,—विद् (वि०) =क्षेत्रज्ञ (पुं०) 1. किसान 2. ऋषि, जिसे आध्यात्मिक ज्ञान हो—कु० ३।५० 3. आत्मा,—स्थ (वि०) पुण्य भूमि में रहने वाला।

क्षेत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [क्षेत्र+ठन्] खेत से सम्बन्ध रखने वाला,—कः 1. एक किसान—मनु० ८।२४१, ९।५३ 2. पति—मनु० ९।१४५।

क्षेत्रिन् (पुं०) [क्षेत्र+इनि] कृषक, काश्तकार, खतिहर —याज्ञ० २।१६१ 2. नाममात्र का पति—दा० ५ 3. आत्मा 4. परमात्मा भग० १३।३३।

क्षैत्रिय (वि०) [क्षेत्र+घ] 1. खेत से संबंध रखने वाला 2. असाध्य रोग, जिसका उपचार देहान्तर प्राप्ति पर ही हो अथवा इस जीवन में जिसका उपचार न हो सके—दण्डोऽयं क्षेत्रियो येन सम्यगातीत साऽग्रजोत्-भट्टि० ४।३२, —यम् 1. आंशिक रोग 2. चरागाह, गोचरभूमि,—यः व्यभिचारी, परदारारत।

क्षेपः [क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना, डालना, इधर उधर हिलाना (अंगों की) गति कन्दर्पोपानुगम - मेघ० ४७, भ्रूक्षेपभाजानुमतप्रवेशाम्—कु० ३।६० 2. फेंकना, डालना 3. भेजना, प्रेषित करना 4. आघात 5. उल्लंघन 6. समय बिताना, कालक्षेप 7. विलम्ब, देरी 8. अपमान, दुर्वचन क्षेपं करोति चेदुद्यः —याज्ञ० २।२०४, किंक्षेपैः 9. अनादर, घृणा 10 घमंड, अहंकार 11. फूलों का गुच्छा, कुसुमस्तवक।

क्षेपक (वि०) [क्षिप्+ण्वुल्] 1. फेंकने वाला, भेजने वाला 2. मिलाया हुआ, बीच में घुसाया हुआ 3. श्लोकों से युक्त, अनादरपूर्ण,—कः बनावटी या बीच में मिलाया हुआ।

क्षेपणम् [क्षिप्+ल्युट्] 1. फेंकना, डालना, भेजना, निर्देश आदि देना 2. (समय) बिताना 3. भूलना 4. गाली देना 5. गोफन,—णिः, णी (स्त्री०) 1. चप्पू 2. मछली फंसाने का जाल 3. गोफन या ऐसा उपकरण जिसमें रखकर कंकड़ फेंके जायें।

क्षेम (वि०) [क्षि+मन्] 1. प्रसन्नता सुख और आराम देने वाला, शुभ, उत्तर, राजोचुश्चो वार्तारार्ट्रा रणे ह्यस्तस्मे क्षेमतरं भवेत् भग० १।४५ 2. समृद्ध, आराम में, सुखी 3. सुरक्षित, प्रसन्न,—मः, —मम् 1. शान्ति, प्रसन्नता, आराम, कल्याण, कुशलता क्षितिरक्षति क्षेममदेवमातृकाश्चिरराय तस्मिन् कुरवश्चकासते—कि० १।१७, दैवं क्षेमं समानाम्य (पृच्छेत्) मनु० २।१२७, अधुना सर्वजन्तूनां क्षेम भविष्यति—पंच० १।२ 2. सुरक्षा, बचाव,—क्षेमेण व्रज बान्धवान्—मृच्छ० ७।७, सकुशलं-पंच० १।१४६ 3. संरक्षण करने वाला, प्रदान करने वाला—रघु० १५।६ 4. अवाप्त की सुरक्षित रखना—तु० योगक्षेम 5. मुक्ति, शाश्वत आनन्द,—मः एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। समः —कर (क्षेमंकर भी) (वि०) मंगलप्रद शान्ति और सुरक्षा करने वाला।

क्षेमिन् (वि०) (णी) [क्षेम+इनि] सुरक्षित, आक्रमण से रक्षित, प्रसन्न।

क्षै (भ्वा० पर० क्षायति, क्षाम) क्षीण होना, नष्ट होना, कृश होना, ह्रास होना, मुर्झाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षैण्यम् [क्षीण+ष्यञ्] 1. दिनाश 2. दुबलापन, सुकुमारता।

क्षेत्रम् [क्षेत्र+अण्] 1. खेतों का समूह 2. खेत।

क्षैरेय (वि०) (स्त्री० यी) [क्षीर+ढक्] दूधिया, दूध जैसा।

क्षोडः [क्षोद्+घञ्] हाथी बांधने का खंभा।

क्षोणिः,क्षोणी (स्त्री) [क्षै+क्विप्, क्षोणि+ङीष्] 1. पृथ्वी 2. एक (गणित में)।

क्षोत्तृ (पु०) [क्षुद्+तृच्] मूसली, बटदा।

क्षोदः [क्षुद्+घञ्] 1. चूरा करना, पीसना 2. सिल (जिस पर रखकर कोई चीज पीसी जाती है) 3. धूल, कण कोई छोटा या सूक्ष्मकण—उत्तर० ३।२। समः -(वि०) जो जांच पड़ताल या अनुसंधान में ठहर सके।

क्षोदिमन् (पुं०) [क्षोद+इमनिच्] सूक्ष्मता।

क्षोभः [क्षुभ्+घञ्] 1. डोलना, हिलना, लोटपोट होना -मेघ० २८, ९५, इसी प्रकार कानक्षोभः 2. हलचल होना -रघु० १।५८, विक्रम० ३।११ 3. (क) आन्दोलन, हौआडोल होना, उत्तेजना, संवेग- स्वयंवर क्षोभकृतामभावः -रघु० ७।३, अर्थेन्द्रियक्षोभमयुग्मनेत्रः पुनर्वशित्वाद्बलवद्विगृह्य -कु० ३।६९, (ख) उकसाहट, चिढ़ -प्रायः स्वमहिमानं क्षोभात्प्रतिपद्यते जन्तुः ऋ० ६।३१

क्षोभणम् [क्षुभ्+णिच्+ल्युट्] क्षुब्ध करना, व्याकुल करना -णः कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

क्षोमः,-मम् [क्षु+मन्] घर की छत पर बना कमरा, चौबारा।

क्षौणिः,-णी (स्त्री०) दे० क्षोणि। सम० प्राचीरः समुद्र, भुज् (पु०) राजा, -भृत् (पुं०) पहाड़।

क्षौद्रः [क्षुद्+अण्] चम्पक वृक्ष, -द्रम् 1. हलकापन 2. कमीनापन, ओछापन 3. शहद -साक्षाद्विषवृक्षैरिव -रघु० ४।६३ 4. जल 5. धूलकण। सम०-जम् मोम।

क्षौद्रेयम् [क्षौद्र+ढक्] मोम।

क्षौमः,-मम् [क्षु+मन्+अण्] 1. रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा-क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम् —श० ४।५—क्षौमान्तरितमेखले (अङ्गे) रघु० १०।८ 2. चौबारा 3. मकान का पिछला भाग,- मम् 1. अस्तर 2. अलसी,—मी सन।

क्षौरम् [क्षुर+अण्] हजामत।

क्षौरिकः [क्षौर+ठन्] नाई।

क्ष्णु (अदा० पर०—स्नौति, स्नुत) पैना करना, तेज करना। सम्-,(आ०) तेज करना (आलं० भी) भट्टि० ८।४०।

क्ष्मा [क्षम+अङ् उपधालोपः] 1. पृथ्वी, (पुत्र) क्ष्मां लक्ष्मयित्वा क्षमयोपपन्नम्—रघु० १८।९, किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मा न क्षिपत्येष यत् मुद्रा० २।१८ 2. (गणित में) एक की संख्या। सम० -जः मंगलग्रह, —पः,—पतिः,—भुज् (पु०) राजा, -कविक्ष्मापतिः -- गीत० १, देशानामुपरि क्ष्माणाः—पंच० १।१५५, भृत् (पुं०) राजा या पहाड़।

क्ष्माय् (भ्वा० आ० क्ष्मायते, क्ष्मायित) हिलाना, कांपना —चक्ष्मायें च मही—भट्टि० १४।२१, १७।२३।

क्ष्विड् (भ्वा० उभ०- क्ष्वेडति- ते, क्ष्वेडू या क्ष्वेडित) भिनभिनाना, दहाड़ना, चहचहाना, गुर्राना, बुदबुदाना, अस्पष्ट ध्वनि करना--मनु० ४।६४।

क्ष्विद् (भ्वा० आ०) क्ष्वेद (दिवा० पर०—क्ष्वेदति, क्ष्वेदित, क्ष्विण्ण), 1. गीला होना, चिपचिपा होना 2. (वृक्ष का दूध या) रस निकलना, रस छोड़ना, मवाद बहना, पसीजना, प्र—,बुदबुदाना, भिनभिनाना भट्टि० ७।१०३।

क्ष्वेडः [क्ष्विड्+घञ्, अच् वा] 1. शब्द, शोर, कोलाहल 2. विष, जहर-गुणदोषौ बुधो गृह्णात्निर्दुष्येष्वविवेक्षरः, शिरसा श्लाघते पूर्वं परं कण्ठे नियच्छति—सुभा० 3. आर्द्र या तर करना 4. त्याग,—डा 1. शेर की दहाड़ 2. युद्ध के लिए ललकार, रणगुहार 3. बाँस।

क्ष्वेडितम् [क्ष्विड्+क्त] सिंह गर्जना।

क्ष्वेल्ला [क्ष्वेल्+अ+टाप्] खेल, क्रीडा, मजाक।

ख

खः [खन्+ड] सूर्य, -खम् 1. आकाश- खं केशवोऽपरः ज्योतिर्मित्रं प्रचक्षते - मृच्छ० ५। २. बादल-गिरः खे मरुतां चरन्ति कु० २।७४, मेघ० ९ 2. स्वर्ग, 3. ज्ञानेन्द्रिय 4. एक नगर 5. गेंद 6. शून्य 7. एक बिन्दु, अनुस्वार 8. गड्ढा, द्वारक, बिवर, रन्ध्र - मनु० ९।१४३ 9. शरीर के द्वारक (जो गिनती में ९ हैं अर्थात् मुंह, दो कान, दो आँखें, दो नासूनें, गुदा तथा जननेन्द्रिय)-खानि वै स्पर्शदाङ्गि:--मनु० ३।६०, ५३, ४।१४४, याज्ञ० १।२० तु० कु० ३।५० 10. घाव 11. प्रसन्नता, आनन्द 12. अभ्रक 13. कर्म 14. ज्ञान 15. ब्रह्मा। सम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--अङ्गः (खेटः) 1. ग्रह, 2. राहु, आरोही शिरोबिन्दु —आपगा गंगा का विशेषण,—उल्कः 1. धूमकेतु 2. ग्रह, --ज: 1. पक्षी—अधुनीत खगः स नैवेद्यां तनुम्—नैष० २।२, मनु० १२।६३ 2. वायु, हवा —तमांसीव यथा सूर्यो वृक्षानग्निर्घनान्खगः महा० 3. सूर्य 4. ग्रह —उदा० आपोबिल्मे यदि खगाः स किलेन्दुवारः—तारा० 5. टिड्डा, 6. देवता 7. बाण, °अधिपः गरुड का विशेषण °अंतक, वाज, श्येन, °अभिरामः शिव का विशेषण, °आसनः 1. उदयाचल 2. विष्णु का विशेषण, °इन्द्रः, °ईश्वरः °पतिः गरुड के विशेषण, °वती (स्त्री०) पृथ्वी, °स्थानम् 1. वृक्ष की खोडर 2. पक्षी का घोंसला, —गंगा आकाश गंगा,—गतिः (स्त्री०) हवा में उड़ान, —गमः पक्षी,—(खे) गमनः एक प्रकार का जादूकृत्य, गोलः आकाशमंडल, °विद्या ज्योतिष विद्या, चमसः चांद, —चरः (खेचर भी) °1. पक्षी 2. बादल 3. सूर्य 4. हवा 5. राक्षस (—री अर्थात् खेचरी) 1. उड़ने वाली अप्सरा 2. दुर्गा की उपाधि, जलम् आकाशीय जल ओस, वर्षा, कोहरा आदि, ज्योतिस् (पुं०) जुगनू, तमासः 1. बादल 2. धुआं, द्योतः 1. जुगनू खद्योतालो विलसिनिभां विद्युदुन्मेषदृष्टिम् मेघ० ८१ 2. सूर्य,—द्योतनः सूर्य, धूमः अग्निशिखा, धूम्रवर्ण खद्यान्—अष्टो० ३।५, परागः अंधकार, पुष्पम् आकाश का फूल, असम्भवता को प्रकट करने की अलंकारिक अभिव्यक्ति इस प्रकार की है असत्पुरुषाभिधानमिव खपुष्पम्, धनुर्भृतः, एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः—सुभा०, भम् ग्रः, भ्रांतिः श्वेत,—मणि आकाश की मणि सूर्य, मौक्तिकम् बिजलुआ, धकावट, मूर्ति शिव का विशेषण, यात्रि (त्रयी०) वर्षा ऋतु की भ्रांस आदि

बाल: बर्फ, पाला, शय (खेशय भी) (वि०) आकाश में विश्राम करने वाला या रहने वाला, शरीरम् आकाशीय शरीर, —श्वासः हवा, वायु, समुत्थ, —संभव (वि०) आकाश में उत्पन्न सिद्धः चांद, स्तनौ पृथ्वी, स्फटिकम् सूर्यकान्त या चन्द्रकान्त मणि—हर (वि०) जिस (राशि) का क्षेत्र शून्य हो।

खचखट (वि०) [खच् अटन्] कठोर, ठोस, ट: खड़िया।

खजूरः [ख+कु+खच्, मुम्] अलक, बालों की लट।

खच् (भ्वा० —क्या० पर० —खचति-खचयति, खचित) 1. आगे आना, प्रकट होना 2. पुनर्जन्म होना 3. संयिद करना, (चुरा० उभ० खचयति, खचित) अकड़ना, बांधना, जड़ना,—उद्—, मिलाना, गड़मड़ करना, जड़ना —रघु० ८।५३, १३।५८, मुद्रा० ३।१८।

खचित (वि०) [खच्+क्त] 1. जकड़ा हुआ, गूंथा हुआ, भरा हुआ, अन्तर्मिश्रित, संकुलनीहारखचितं दिङ्मण्डलम्—शा० ७।११ 2. निश्चित, सम्मिश्रित 3. जड़ा हुआ, जटित, भरा हुआ (समासान्त) °मणि, °रत्न।

खज् [भ्वा० पर० खजति, खजित] मथन करना, हिलाना, आंदोलित करना।

खजः,-जकः [खज्—अच्, कन् च] मथानी, रई का डंडा।

खजपम् [खज्+क्यप्] घी।

खजाकः [खज्+आक] पक्षी।

खजाजिका [खद्—अ+टाप्—खजा, अज्+घञ्, खजाये अजां यस्या ब० स०, खजाज+ङीष्] कन्+टाप्, हलका: बड़ेछी वगैरह।

खंज् (भ्वा० पर०— खञ्जति) लँगड़ाना, ठहर-ठहर कर चलना खञ्जन्ति पथिकाः पिपासुः—नै० ११।१०३।

खंज (वि०) [खञ्ज्+अच्] लँगड़ा, विकलांग, पशु —पादेन खञ्जः सिद्धा०, मनु० ८।२४२, भर्तृ० १।६४। सम०—खेटः, खेलः खंजनपक्षी।

खञ्जनः [खञ्ज्+ल्युट्] खंजन पक्षी स्फुटकमलोदर खेलिनखञ्जनयुगमिव शरदि तदाननम्—गीत० ११, नेत्रे खञ्जनगञ्जने—सा० द०, एकी हि खञ्जनवरो लक्षिनी-दलस्थः—शृंगार० ४७, सम् लगातार घर जाने वाला, यम० —दलम् मन्याशियों का गुप्त मैथुन।

खञ्जना, खञ्जनिका [खञ्जन+टाप्, खञ्जन+ठक्+टाप्] खंजन पक्षियों की जाति।

खञ्जरीटः, -टकः, खञ्जलेखः [खञ्ज+ऋ+ईटन्, कन् च, खञ्ज लिख्+घञ्] खंजन पक्षी भामि० २।७८, चौर० ८, मनु० ५।१४, याज्ञ० १।१७४ अमर० ७०।

खटः [खट्+अच्] 1. कफ 2. अन्धा कुआं 3. कलहाड़ी 4. हल 5. घास सम० कहाहकः पीड़ापन, —खादकः 1. गीदड़ 2. कौवा 3. जानवर 4. चीते का वर्णन।

खटक [खट्+युच्] 1. सगाई-विवाह तय करने का व्यवसाय करने वाला—तु० घटक. 2. अंगूठा हाथ।

खटकामुखम् बाण चलाते समय हाथ की विशेष अवस्थिति।

खटिका [खट्+अच्+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] 1. खड़िया 2. दांत का बाहरी क्लिवर।

खट (ड) विकटः—पार्श्वद्वारं, खिड़की।

खटिनी, खटी [खट्+इनि+ङीष्, खट्+अक्+ङीष्] खड़िया।

खट्टन (वि०) [खट्ट+ल्युट्] छिनना, —नः छिनता आदमी।

खट्टा [खट्—अच्+टाप्] 1. खाट 2. एक प्रकार का घास।

खट्टिः (पुं०, स्त्री०) [खट्ट+इन्] अर्थी।

खट्टिकः [खट्ट+अन्+कन्] 1. कसाई 2. शिकारी, बहेलिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खट्टेरक (वि०) [खट्ट+एरक] ठिगना।

खट्वा [खट् + क्वन्+टाप्] 1. खाट, सोफा, खटोला 2 झूला, पालना। सम०—अंग खाटा या लकड़ी जिसके सिरे पर खोपड़ी जड़ी हो (यह शिव जी का हथियार समझा जाता है तथा कापालिक और योगी इसे धारण करते हैं) भा० ५।४, २३ 2. दिलीप, वर, °भृत् (पु०) शिव की उपाधियों, आरूढ़ (पु०) शिव का विशेषण, आप्लुत आरूढ (वि०) 1. नीच, दुष्ट 2. पाखण्डी, बदमाश 3. मूर्ख, बेवकूफ।

खट्वाका, खट्विका [खट्वा+कन्, टप्, ह्रस्वम् वा] खटोला, छोटी खाट।

खड दे० खड़।

खडः [खड्+अच्] तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना।

खडिका खडी [खड्+अच्+ङीप्, कन्, ह्रस्व, खच्+ङीष्] खाँसी।

खड्ग: [खड्+गन्] 1. तलवार—न हि सुप्तो विजानाति कर्मकारं स्वकारणम् उद्भूतं खड्ग परामृश्य यथेष्ट 2. गैंडे के सींग 3. गैंडा—मनु० ३।२७२, मनु० ५।१८, ड्रम् लोहा। सम० आघातः तलवार का घाव अंधारः म्यान, कोश, आमिषम् भैंस का मांस, आढ्य गैंडा, कोशः म्यान, —धर षड्गधारी योद्धा,—धेनु, धेनुका 1. छोटी तलवार 2. गैंडे की मादा, पत्रम् तलवार की धार, पाणि (वि०) हाथ में तलवार लिये हुए, पात्रम् भैंस के सींगों का बना पात्र, पिधानम् पिधानकम् म्यान, पुत्रिका चाकू, छोटी तलवार, प्रहार तलवार का आघात, फलम् तलवार का फलक (मूठ को छोड़ कर शेष तलवार)।

खड्गवत् (वि०) [खड्ग+मतुप्] तलवार से सुसज्जित।

खड्गिक [खड्ग+ठन्] 1. खड्गधारी योद्धा 2. कसाई।

खड्गिन् (वि०) (स्त्री० नी) [खड्ग+इनि] तलवार से सुसज्जित (पु०) गैंडा।

खड्गीकम् [खड्ग+ईक वा०] दरांती।

खण्ड् तुदा० पर० खण्डयति, खण्डित) 1. तोड़ना, काटना टुकड़े २ करना, कुचलना भट्टि० १५।५४ 2. पूरी तरह हराना, नष्ट करना, मिटाना रजनीचरनाथेन खण्डिते निशि रघु० ३।१११ 3. निराश करना भग्नाश करना, (प्रणय में) हताश करना स्त्रीभिः कृत न खण्डित भर्तृ मनः पंच० १।१४६ 4. विघ्न डालना 5. धोखा देना।

खण्ड: इम् [चण्ड्+घञ्] 1. दरार, खाई, विच्छेद, कटाव, अभ्यिभग 2. टुकड़ा, भाग, खंड, अंश दिवः कान्तिमत्खण्डमेकं मेघ० ३० काष्ठ, मासं आदि 3. ग्रंथ का अनुभाग, अध्याय 4. समुच्चय, संघात, समूह—तत्खण्डदत्त का० २३,—डः 1. चीनी, खाँड 2. रत्न का एक दोष, —डम् 1. एक प्रकार का नमक 2. एक प्रकार का ईख, गन्ना। सम०—अभ्रम् 1. बिखरे हुए बादल 2. कामकेलि में दाँतों का चिह्न,—आलिः (स्त्री०) 1. तेल की एक नाप 2. सरोवर या झील 3. वह स्त्री जिसका पति व्यभिचारी हो, —कथा छोटी कहानी, —काव्यम् मेघदूत जैसा छोटा काव्य—परिभाषा:—खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च - सा० द० ५६८, —ज एक प्रकार की खाँड, —धारा कैंची,—परशुः शिव का विशेषण- महेश्वर्यं लीलाजनितजगत्खण्डपरशोः—गंगा० १, येनानेत जगत्सु खण्डपरशुर्देवो हरः स्याद्यते—महावी० २।३३ 2. जमदग्नि का पुत्र, परशुराम का विशेषण,— पर्शुः 1. शिव 2. परशुराम 3. राहु 4. टूटे दांत वाला हाथी, पाल, हलवाई, प्रलयः विश्व का आंशिक प्रलय जिसमें स्वर्ग से नीचे के सब लोकों का नाश हो जाता है, मण्डलम् वृत्त का अंश, मोदकः खांड के लड्डू, —लवणम् एक प्रकार का नमक, —विकारः चीनी, शर्करा मिसरी, शीला असती, व्यभिचारिणी स्त्री।

खण्डकः,—कम् [खण्ड+कन्] टुकड़ा, भाग, अंश,—कः 1. चीनी, खांड 2. जिसके नाखून न हों।

खण्डन (वि०) [खण्ड्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, काटने वाला, टुकड़े २ करने वाला 2. नष्ट करने वाला, मारने वाला रमणरसखण्डनं मम शिरसि मण्डनम् गीत० १०, भवदञ्जरखण्डनम्—१२, गम् 1. तोड़ना काटना 2. काट लेना, अलि पहुँचाना, चोट पहुँचाना अधरोष्ठखण्डनम्- पंच० १, घटय भजबन्धनं जनय रदखण्डनं गीत० १०, चौर० १२ 3. हलाल करना, (प्रणय में) निराश करना 4. विघ्न डालना रक्षखण्डनवर्जितम्—रघु० ९।३६ 5. ठगना, धोखा देना 6. (तर्क का) निराकरण करना—मे० ६।१३० 7. विद्रोह, विरोध 8. बर्खास्तगी।

खण्डलः, लम् [खण्ड्+लच् नि०] टुकड़ा।

खण्डशः (अव्य०) [खण्ड+शस्] 1. अंशों में, टुकड़ों में, कु काट कर टुकड़े २ करना 2. थोड़ा २ करके, टुकड़े २ कर के।

खण्डित (भू० क० कृ०) [खण्ड्+क्त] 1. काटा हुआ, तोड़ कर टुकड़े २ किया हुआ 2. नष्ट किया हुआ, खंडित किया हुआ 3. (तर्क का) निराकरण किया हुआ 4. विद्रोह किया हुआ 5. निराश किया हुआ, धोखा दिया हुआ, परित्यक्त - खण्डितयुवतिविलापम्- - गीत० ८, ता वह स्त्री जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति अविश्वास का अपराधी रहा हो, और इसलिए उसकी पत्नी उससे रूठ हो, संस्कृत साहित्य में वर्णित १० प्रकार की नायिकाओं में से एक—रघु० ५।६७, मेघ० ३९, परिभाषा इस प्रकार की है:—पार्श्वमेति प्रियो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्या अन्यसंभोगचिह्नितः, सा खण्डितेति कथिता धीरैरीर्ष्याकषायिता—सा० द० ११४। सम० -विग्रह (वि०) अंगहीन, विकलांग,- वृत्त (वि०) आचारहीन, दुश्चरित्र।

खण्डिनी (खण्ड्+इनि+ङीप्) पृथ्वी।

खण्डिका: (ब० व०) खील, लाजा, तला हुआ या भुना हुआ अनाज।

खदिर: [खद्+किरच्] 1. खैर का पेड़,—याज्ञ० १।३०२ 2. इन्द्र का विशेषण 3. चाँद।

खन् (भ्वा० उभ०—खनति-ते, खात, कर्म० खन्यते-खायते) खोदना, खनना, खोखला करना—खनत्याखिलं सिंहः—पंच० ३।१७, मनु० २।२१८ भट्टि० १।१७, अभि—, खोदना, उद्—, खुदाई करना, जड़ निकालना उन्मूलन करना, उखाड़ना (आलं० भी)—वज्रानुत्खाय तरसा—रघु० ४।३६, ३३, १४।७३, मेघ० ५२, भट्टि० १२।५, १५।५५, मा० ९।३४, नि—, १. खनना, खोदना 2. दफनाना, गाड़ना—ऊनद्विवर्षं निखनेत्—याज्ञ० ३।१, वसुधायां निचखनतुः—रघु० १२।३०, भट्टि० ४।३, १६।२२ 3. (स्तंभ के रूप में) उठाना—निचखान जयस्तम्भान्—रघु० ४।३६ 4. जमाना, स्थिर करना, घुसेड़ना—निचखान शरं भुजे—रघु० ३।५५, १२।९०, भट्टि० ३।८, हि० ४।७२, परि—, (खाई आदि) खोदना।

खनक: [खन्+ण्वुल्] 1. खनिक 2. सेंध लगाने वाला 3. चूहा 4. कौन।

खननम् [खन्+ल्युट्] 1. खोदना, खोखला करना, पोला करना 2. गाड़ना।

खनि:,—नी (स्त्री०) [खन्+इ, स्त्रियां ङीप्] 1. खान—रघु० १७।६६, १८।२२, मुद्रा० ७।३१ 2. गुफा।

खनित्रम् [खन्+इत्र] कुदाल, खुर्पा, गैंती।

खनुर: [सं पिपर्ति उच्चतया—ख+पृ+क] सुपारी का पेड़।

खर (वि०) [खं मूलबिलमतिशयेन अस्ति अस्य-ख+र अथवा खमिन्द्रियं राति—ख+रा+क] (विप०—मृदु०, श्लक्ष्ण, द्रव) 1. कठोर, खुरदरा, ठोस 2. अमृदु, तेज, सख्त—रघु० ८।९, स्मरः खरः खलः कान्तः—काव्या० १।५९ 3. तीखा, चरपरा 4. घना, सघन 5. पीड़ाकर, हानिकर, कर्कश 6. तेज धार वाला—देहि खरनखशरघातम्—गीत० 7. गरम—खराधुनादि 8. क्रूर, निष्ठुर,—र: 1. गधा—मनु० २।२०१, ४।११५, १२०, ८।३७०, याज्ञ० २।१६० 2. खच्चर 3. बगला 4. कौवा 5. एक राक्षस का नाम जो रावण का सौतेला भाई था और जो राम के द्वारा मारा गया था—रघु० १२।४२। सम०—अंशु:, —कर:,—रश्मि: सूर्य,—कुटी 1. गधों का अस्तबल 2. नाई की दुकान,- कोण:,- क्षार: चकोर, तीतर, —कोलक: ज्येष्ठ मास,—गृहम्,—गेहम् गधों का अस्तबल,- घस्-घस (वि०) नुकीली नाक वाली, —वज्रम् कमल,—वर्धनि (पु०) खरहरा राम का विशेषण,—नाद: गधे का रेंकना,—नल: कमल,—पात्रम् लोहे का बर्तन,- पाक: लकड़ी का बर्तन, प्रिय: कबूतर,- यानम् गधों से खींची जाने वाली गाड़ी, —शब्द: 1. गधे का रेंकना 2. समुद्री बाज, —शाला गधों का अस्तबल,—स्वरा जंगली चमेली।

खरिका [खर+कन्+टाप्, इत्वम्] पिसी हुई कस्तूरी।

खरिन्धम,—ध (वि०) [खरी+धमा (धमादेशः) पसें धें +क्विप्, मुम्] गधी का दूध पीने वाला।

खरी [खर+ङीष्] गधी। सम०—अजिन: शिव का विशेषण,—दुध: गधा।

खल (वि०) [खन्+कु, रक्वाल्लोपादेशः] 1. श्वेत 2. मूर्ख, मूढ 3. क्रूर 4. निषिद्ध वस्तुओं का इच्छुक,—ल: 1. घोड़ा 2. दाँत 3. धमड 4. कामदेव 5. शिव,—ला (स्त्री०) लड़की जो अपना पति स्वयं चुने।

खल् (भ्वा० पर०—खलति, खलित) 1. पीड़ा देना, बेचैन करना 2. कड़कड़ शब्द करना।

खलनम् [खल्=ल्युट्] खरोचना।

खलिका [खल्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. उपदंश रोग 2. गंजक।

खली (स्त्री०) [खल्+उन्] 1. खरोंच 2. खजूर का वृक्ष 3. चबूतरे का पेड़।

खलूरम् [खल्+ऊरच्] चाँदी।

खलू: (स्त्री०) [खल्+ऊ] खाज, खुजली।

खर्जूर: [खर्ज्+ऊर] 1. खजूर का पेड़ 2. बिच्छू,—रम् चाँदी 2. हरताल,-री खजूर का पेड़- रघु० ४।५७।

खर्पर: [कर्पर पृषो० कस्य खः] 1. चोर 2. बदमाश, ठग 3. भिखारी का कटोरा 4. खोपड़ी 5. मिट्टी का फूटा हुआ बर्तन ठीकरा 6. छाता।

खर्परिका, खर्परी [खर्पर+अच्+ङीष्, +कन्+टाप्, ह्रस्व, खर्पर+ङीष्] एक प्रकार का सुर्मा।

खर्व् (दे) (भ्वा० पर०—खर्वति) 1. जाना, फिरना, चलना 2. चमड़ करना।

खर्व—(र्व) (वि०) [खर्व् (र्व)+अच्] 1. विकलांग, अपाहज, अपूर्ण (अंगहीन) 2. ठिगना, ओछा, कद में छोटा, र्व:,—र्वम् दस अरब की संख्या। सम० -शाल (वि०) ठिगना, ओछा, छोटा।

खर्वट:,—टम् [खर्व्+अटन्] 1. नगर जिसमें पेंठ भरती हो, मंडी 2. पहाड़ की तराई का गाँव।

खल् (भ्वा० पर०—खलति, खलित) 1. चलना-फिरना, हिलना-डुलना 2. एकत्र करना, संग्रह करना।

खल:—लम् [खल्+अच्] 1. खलिहान—मनु० ११।१७, ११४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याज्ञ० २।२८२ 2. पृथ्वी, भूमि 3. स्थान, जगह 4. धूल का ढेर 5. तलछट, गाद, तेल आदि के नीचे जमा हुआ मैल, --ल: दुष्ट या शरारती आदमी—सर्प: क्रूर: खल: क्रूर: सर्पात् क्रूरतर: खल:, मन्त्रौषधिवश: सर्प:, खल: केन निवार्यते- चाण० २६, विषधरतोऽप्यतिविषम: खल इति न मया वदन्ति विद्वांस:, वदथ नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुन: पिशुन: वासव० **खलीकृ** 1. कुचलना 2 घायल करना या क्षति पहुँचाना 3. दुर्व्यवहार करना, घृणा करना—परोक्षे खलीकृतोऽयं धूतकार:—मृच्छ०२] सम० - **उक्ति**. (स्त्री०) दुर्वचन दुर्भाषण,—**धान्यम्** खलिहान,—**पू**: (पुं० स्त्री०) झाड़ देने वाला, साफ करने वाला,- **भूति**: पारा,—**संसर्ग**: दुष्टों की संगति ।

खलक: [ख+ला+क+क+कन्] घड़ा ।

खलति (वि०) [स्खलन्तिकेशा अस्मात् –स्खल्+अतच्] जिo साधु:] गंजे सिर वाला, गंजा- -युवखलति: ।

खलतिक: [खलति+कै--क] पहाड़ ।

खलि,—ली (स्त्री०) [खल्+इन्] तेल की तलछट, खली स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति तिलखलीमिन्द्यनैश्चन्दनार्द्रै: भर्तृ० २।१००।

खलि (लि) न:, नम् [खे अश्वमुखल्लिट् लोनम्: -पृषो० वा ह्रस्व:] लगाम का दहाना, लगाम की रास ।

खलिनी [खल्+इनि+ङीप्] खलिहानों का समूह ।

खलीकार:, -**कृति**: (स्त्री०) [खल+च्वि+कृ+घञ्, क्तिन् वा] 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. दुर्व्यवहार: शा० १।२५ 3. अनिष्ट, उत्पात ।

खलु (अव्य०) [खल्+उन् वा०] यह अव्यय निम्नांकित अर्थों को प्रकट करता है :-1. निस्सन्देह, निश्चय ही, अवश्य, सचमुच -मागें पदानि खलु ते विषमीभवन्ति - श० ४।१४, अनुशेकः खलु विक्रमोऽलंकार:--विक्रम० ४, न खलूर्वानिजित्य रघु कृती भवान् रघु० ३।५१ 2. अनुरोध, अनुनय-विनय प्रार्थना- न खलु न खलु बाण: सन्निपात्योऽयमस्मिन् -श० १।१०, न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत्- नाग० ३ 3. पूछताछ –न खलु तामभिकुद्धो गुरु: विक्रम० ३, (=किमभिकुद्धो गुरु:) न खलु विदितास्ते तव निवसन्तदराणवयहतकेन—मुद्रा० २, न खलूच्यतां पितरिदं गमित: सोऽपि सुहृद्गतां गतिम्- कु० ४।२४ 4. प्रतिषेध (क्रियात्मक संज्ञाओं के साथ) - निर्व्याहितिर्थं लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम् - शि० २।७० 5. तर्क न विदोर्ये कठिना खलु स्त्रिय:—कु० ४।५, (मण० कार इस विषाद के निदर्शन के रूप में उद्धृत करता है)- विधिना जन एष वञ्चितस्तदधीनं खलु देहिनां सुखम् - ४।१० 6. कभी कभी 'खलु' धूरक की भांति भर्ती कर दिया जाता है 7. कभी कभी वाक्यालंकार की तरह प्रयुक्त होता है ।

खलुच् (पुं०) [खम् इन्द्रियं लुञ्चति हन्ति इति–ख+लुञ्च्+विच्] अन्धकार ।

खलूरिका परेड का मैदान जहाँ सैनिक लोग कवायद करें ।

खल्या [खल+यत्--टाप्] खलिहानों का समूह ।

खल्ल: [खल्+इन्, तं लाति--खल्+ला+क] 1. सरल --जिसमें डाल कर औषधियाँ पीसी जायँ, पक्की 2. गड्ढा 3. चमड़ा 4. चातक पक्षी 5. मशक ।

खल्लिका [खल्ल+कन्+टाप्, इत्वम्] कड़ाई ।

खल्लि (ल्ली) ट (वि०) [खल्ल+इन्+टल्+ड, खल्लि+ङीष्+टल्+ट] गंजे सिर वाला ।

खल्वाट (वि०) [खल+वाट उप० स०] गंजा, गंजे सिर वाला खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणै: सन्तापितो मस्तके—भर्तृ० २।९०, विक्रमांक० १८।९९ ।

खश: (ब० व०) भारत के उत्तर में स्थित एक पहाड़ी प्रदेश तथा उसके अधिवासी मनु० १०।४४ ।

खशर: (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम ।

खस्य: [खन्+य निo नस्य ष:] 1. क्रोध 2. हिंसा, निष्ठुरता ।

खस: [खानि इन्द्रियाणि स्यति निश्चलीकरोति—ख+सो+क] 1. खाज, खुजली 2. एक देश का नाम दे० खश ।

खसूचि: (पुं०, स्त्री०) [ख+सूच्+इ] 1. अपमानसूचक अभिव्यक्ति (समास के अन्त में)—वैयाकरण खसूचि: --जो व्याकरण अच्छी तरह न जानता हो या भूल करता हो ।

खस्तस: [खस प्रकारे द्वित्वम्, पृषो० अकारलोप:] पोस्त । सम० - **रस**: अफीम ।

खाजिक: [खाज+ठन्] तला हुआ या भुना हुआ अनाज ।

खाट (ट्) (अव्य०) गला साफ करते समय होने वाली ध्वनि, **खाट्कृ** खखारना ।

खाट:, -टा,—**टिका**,- **टी** (स्त्री०) [ख+अट्+घञ्, स्त्रियां टाप्—खाट+कन्+टाप्, इत्वम्, खाट+ङीष्] अर्थी, टिकटी जिस पर मुर्दे को रख कर चिता तक ले जाते हैं ।

खाण्डव [खण्ड्+अण्+वा+क] खांड, मिश्री,—**वम्** कुरुक्षेत्र प्रदेश में विद्यमान इन्द्र का प्रिय वन जिसे अर्जुन और कृष्ण की सहायता से अग्नि ने जला दिया था । सम०—**प्रस्थ**: एक नगर का नाम ।

खाण्डविक:, **खाण्डिक**: [खाण्डव+ठन्, खण्ड+ठन्] हलवाई ।

खात (वि०) [खन्+क्त] 1. खुदा हुआ, खोखला किया हुआ 2. फाड़ा हुआ, चीरा हुआ,—**तम्** 1. खुदाई 2. सूराख 3. खाई, परिखा 4. आयताकार तालाब । सम० - **भू**: (स्त्री०) खाई, परिखा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खातकः [खात+कन्] 1. खोदने वाला 2. कर्जदार,—कम् | खाई, परिखा।

खाता [खात+टाप्] बनाया हुआ तालाब।

खातिः (स्त्री०) [खन्+क्तिन्] खुदाई, खोखला करना।

खात्रम् [खन्+ष्ट्रन्, कित्] 1. कुदाली 2. आयताकार तालाब 3. घाया 4. वन, जंगल 5. विस्मयोत्पादक भय।

खाद् (भ्वा० पर० खादति, खादित) खाना निगल लेना, खिलाना, शिकार करना, काट लेना—प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसम्—हि० १।८१, खादन्मांसं न दुष्यति—मनु० ५।३२, ५३, भट्टि० ६।६, १५७८, १४।८७, १०१, १५।३५।

खादक (वि०) (स्त्री० —दिका) [खाद+ण्वुल्] खाने वाला उपभोग करने वाला, कः कर्जदार।

खादनः [खाद्+ल्युट्] दाँत,—नम् 1. खाना, चबाना 2. भोजन।

खादिर (वि०) (स्त्री०—री) [खादिर+अञ्] खैर वृक्ष का, या खैर वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ—खादिरं यूपं कुर्वीत—मनु० २।४५।

खादुक (वि०) (स्त्री०—की) [खाद्+उन्+कन्] उत्पाती, हानिकर द्वेषपूर्ण।

खाद्यम् [खाद्+ण्यत्] भोजन, भोज्य पदार्थ।

खानम् [खन्+ल्युट्] 1. खुदाई 2. क्षति। सम०—उदकः नारियल का पेड़।

खानक (वि०) (स्त्री०—निका) [खन्+ण्वुल्] खोदने वाला, खनिक।

खानिः (स्त्री०) [खनिरेव पृषो० बुद्धिः] खान।

खानिकः—कम् [खान+ठञ्] दीवार में किया हुआ छेद, दरार, तरेड़।

खनिलः [खान+इलच् बा०] घर में सेंध लगाने वाला।

खारः,—रिः, (स्त्री०—री) [खम् आकाशम् आधिक्येन वहन्त्यस्मिन्—ख+वह+अण्, ख+आ+रा+क+ङीप् वा ह्रस्वः] १६ द्रोण के बराबर अनाज का माप।

खारिपच (वि०) [खारिम्+पच्—खश्] एक खारी-भर अनाज पकाने वाला।

खार्वा (स्त्री०) त्रेतायुग, दूसरा युग।

खिद्यरः (स्त्री०—री) [खिद् इति शब्दं किरति—खिद्+क+क+क पृषो०] 1. लोमड़ी 2. खाट या चारपाई का पाया।

खिद् I (भ्वा०, तुदा० पर०—खिद्यति, खिन्न) प्रहार करना, खींचना, कष्ट देना II (दिवा० रुधा०, आ०—खिद्यते, खिन्ते, खिन्न) 1. पीड़ित होना, कष्ट सहना, कष्टग्रस्त होना, क्लान्त होना, थकान अनुभव करना, अवसाद या श्रान्ति अनुभव करना—श० ५।७, किं नाम मयि खिद्यते गुरुः—वेणी० १, स पुरुषो यः खिद्यते नेन्द्रियैः—हि० २।१४१, पराभूत—शा० ३।७, भट्टि० १४।१०८, १७।१० 2. डरना, भय्त करना, (प्रेर०)। परि—पीड़ित होना, कष्ट सहना, दुःखी या क्लान्त होना।

खिदिरः [खिद्+किरच्] 1. संन्यासी, 2. दरिद्र 3. चन्द्रमा।

खिन्न (भू० क० कृ०) [खिद्+क्त] 1. अवसाद प्राप्त, कष्ट ग्रस्त, उदास, दुःखी, पीड़ित—गुरु खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषे—वेणी० १।११, अनङ्गबाण-व्रणखिन्नमानसः—शृंग० ३ 2. क्लान्त, थका हुआ, श्रान्त- खिन्नः खिन्नेषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र—मेघ० १३, ३८, नयोपचारोज्झलिखिन्नहस्तया—रघु० ३।११, चौर० ३।२०, शि० ९।११।

खिलः,—लम् [खिल्—क] 1. ऊसर भूमि या परती जमीन का टुकड़ा, मरुभूमि, वृक्षहीन भूमि 2. अतिरिक्त सूक्त जो किसी मूलसंग्रह में जोड़ा गया हो—मनु० ३।२३२ 3. सम्पूरक 4. संग्रहग्रंथ या संकलित ग्रंथ 5. लोखलापन, शून्यता ('खिल' का प्रयोग भू या कृ के साथ भी होता है खिलीभू अगम्य होना, खेद होना, अनभ्यस्त रहना—खिलीभूते विमानाना तदापासभयात्पथि—कु० २।४५, खिलीकृ (क) रोकना, बाधा डालना, अगम्य बनाना, रोकना—रघु० ११।२४, ८७ (ख) परती छोड़ना, उजाड़ना, पूर्णतः नष्ट कर देना—विषक्षमखि-लीकृत्य प्रतिष्ठा त्वद्भुजेऽभूः—शि० २।३४।

खुङ्गाहः [खुम् इत्यव्यक्तशब्दं कृत्वा गाहते—खुम्+गाह+अच्] काला टट्टू या घोड़ा।

खुरः [खुर्+क] 1. सुम 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3. उस्तरा 4. खाट का पाया। सम०—आघातः,—क्षेपः लात मारना,—नस्,—नस (वि०) चिपटी नाक वाला,—पदवी घोड़े के पदचिह्न,—प्रः अर्धचन्द्राकार नोक का बाण—दे० क्षुरप्र।

खुरली [खुरैः सह लाति पीतः पृषोदरा० वत्व—खुर+ला+क+ङीष्] (शस्त्र तथा धनुष आदि का) सैनिक अभ्यास—अस्त्रप्रयोगखुरलीकलहे गणनाम्—मुद्रा० २।३४, दूरोत्पतनखुरलीकेलिजनितान्—५।५।

खुरालकः [खुर इव अलति पर्याप्नोति—खुर+अल्+ण्वुल्] लोहे का बाण।

खुरालिकः [खुराणाम् आलिभिः कायति प्रकाशते खुरालि+कै—क] 1 उस्तरा रखने का घर 2. लोहे का तीर 3. तकिया।

खुल्ल (वि०) [=क्षुल्ल, पृषो०] छोटा, ओछा, अधम, नीच—दे० क्षुद्र। सम०—तातः चाचा।

खेचर दे० 'खचर'।

खेटः [खे अटति अट्+अच्, खिच्+अच् वा] 1. गाँव, छोटा नगर, पुरवा 2. कफ 3. बलराम की गदा 4. घोड़ा (वि० समासान्त 'खेट' रादीपता तथा ह्रास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को प्रकट करना है जो 'अभागा' या 'कंवरूल' आदि शब्दों ने पुकारा जा सकता है, नगरखेटम् (अभागा नगर) 'खेट' के लिए देखें ख के नीचे।

खेटिवातः, लः [खिट्+इन्+खेटि, खेटिः तालोऽन्त्य, तालोऽन्त्य वा] वैतालिक, स्तुतिपाठक जो गृहस्वामी को गा बजा कर जगाता है।

खेटिन् (पुं०) [खिट्+णिनि] दुराचारी, दुश्चरित्र।

खेद [खिद्+घञ्] 1. अवसाद, आलस्य, उदासी 2. थकान, श्रान्ति-अलसत्वं श्रमखेदक्लमाः समाः -उत्तर० १।२४, अध्वखेदं नयेथाः मेघ० ३२, रघु० १८।५५ 3. पीड़ा, यन्त्रणा अमर० 4. दुःख, शोक -गुरु, खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु -वेणी० ६।१३, अमर० १३।

खेदम् [खिद्-घञ्, इकारादेशः] खारी, पल्ली, द्र० खल।

खेद् (म्वा० पर० सेटि, खेदित) 1. हिलाना, धक्का-धक्का आदि जाना 2. काटना 3. खेदना।

खेल (वि०) [खेल्+अच्] खिलाड़ी, रमैया, क्रीडाशूरं रघु० ४।२२, विक्रम० ४।१३, ६३।

खेलनम् [खेल्+ल्युट्] 1 क्रिड़ा, 2. खेल, मनोरञ्जन 3. लीला।

खेला [खेल+अ+टाप्] क्रीड़ा, खेल।

खेलि (स्त्री०) [खे आकाशे अश्नुते पर्यटतीति नै+क+इलच्] 1. कौआ, रंगेक 2. तीर।

खोटि (स्त्री०) [खोड्+उन्] चालाकी की चतुराई।

खोड (वि०) [खोड+अच्] विकलांग, लंगड़ा, पंगे।

खोर (वि०) [खोर्+(द्)+अच्] पंगु, लंगड़ा।

खोलिक [खोल+ठक्] 1. पुरवा 2. आंवी 3. सुगारी का छिलका वै. डेवी।

खोलि [खोल्+इन्] [नाम०] रस।

ख्या (अद० पर० (आर्षप्रयोग में आ० भी) ख्यौ, ख्याय) बताना, घोषणा करना, समाचार देना (सम्प्र० के साथ) कर्म० ख्यापने 1. कहलाना -मनु० ६।२७ 2. प्रसिद्ध या परिचित होना, -प्रेर० ख्यापयति ते 1. ज्ञात कराना, प्रकथन करना मनु० ७।२०१ 2. कहना, घोषणा करना, वर्णन करना -भर्तृ० २।५९, मनु० ११।९९ 3. स्तुति करना, प्रत्याख्यान करना, प्रशंसा करना। अभि-, (कर्म०) ज्ञात होना, प्रेर० घोषणा करना, प्रकथन करना, आ- 1. कहना, घोषणा करना, समाचार देना (प्रायः संप्र० के साथ),—ते रामाय वर्धापयन्ति वध्यविबुधद्विषः -रघु० १५।५, ४१, ७१, ९३; १२।४२, ९१; भग० ११।३१, १८।६३,(कभी कभी संप्र० के साथ-आख्याहि मे यिषयदर्शनम्य) पंच० ४।१५ 2. घोषणा करना, व्यक्त करना 3. पुकारना, नाम लेना— रघु० १०।५१, मनु० ४।६ परि-, सुपरिचित, होना, परिख्यम्—,गिनती करना, प्र- सुपरिचित होना, प्रख्या-, 1. मुकर जाना 2. इंकार करना, मना करना, अस्वीकार करना 3. मना करना, प्रतिषेध करना 4. वर्जित करना 5. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना- मालवि० ३।५, वि सुपरिचित या प्रसिद्ध होना, ख्या-. 1. कहना, समाचार देना, घोषणा करना भट्टि० १४।११३ 2. व्याख्या करना, वर्णन करना- रावणस्यापि ते जन्म व्याख्यास्यामि महा० 3. नाम लेना, पुकारना—विद्वद्भूदेवीणावाणी व्याख्याता सा विद्युन्माला श्रुत० १५, सम्-, गिनना, गणना करना, हिसाब लगाना, जोड़ना तावन्त्येव च तत्कालि लाक्षण्यैः संख्यायन्ते- शारी०।

ख्यात (भू० क० कृ०) [ख्या+क्त] 1. ज्ञात रघु० १।१६ 2. नाम लिया गया, पुकारा गया 3. कहा गया 4. विश्रुत, प्रसिद्ध, बदनाम। सम०—गृहंण (वि०) कुलीन, दूरस्थ, बदनाम।

ख्याति [ख्या+क्तिन्] विश्रुति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा - मनु० १२।३६, पंच० १।७१ 2. नाम, शीर्षक, अभिज्ञान 3. वर्णन 4. प्रशंसा 5. (दर्शन० में) ज्ञान, उपयुक्त पद द्वारा वस्तुओं का विवेचन करने की शक्ति -वि० ४।५५।

ख्यापनम् [ख्या+णिच्+ल्युट्] 1. घोषणा करना, (रहस्य का) उद्घाटन करना 2 अपराध स्वीकार करना, मान लेना, सार्वजनिक घोषणा करना—मनु० ११।२२७ 3. विख्यात करना, प्रसिद्ध करना।

ग

ग (वि०) [गै+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) जो जाता है, जाने वाला, गतिशील होने वाला, ठहरने वाला, रहने वाला, मैथुन करने वाला, गः 1. गन्धर्व 2. गणेश का विशेषण 3. दीर्घ मात्रा (गुरु' शब्द का संक्षिप्त रूप, छन्दः शास्त्र में),—गम् गायन।

गगनम् -गम् [गच्छत्यस्मिन्—गम्+ल्युट्, ग आदेशः] (कुछ लोग 'गगण' को अशुद्ध समझते हैं जैसा कि एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेखक का कथन है –फालुने गगने फेने धन्वमिच्छन्ति बर्बरा') 1. आकाश, अन्तरिक्ष—अदोबद्धेन गगन-स्पृशा रघु. स्वरेण--रघु० ३।४३, गगनमिव नष्टतारम् —पंच० ५।६, सौम्यं चन्द्रः पतति गगणात्- श० ४, अने० पा०, शि० ९।२७ 2. (गण० में) शून्य 3. स्वर्ग । सम०—अग्रम् उच्चतम आकाश,—अङ्गना स्वर्गीय परी, अप्सरा,—अध्वगः 1. सूर्य 2. ग्रह 3. स्वर्गीय प्राणी,—अम्बु (नपुं०) वर्षा का पानी,—उल्मुकः मंगलग्रह,—कुसुमम्,—पुष्पम् आकाश का फूल अर्थात् अवास्तविक वस्तु, असंभावना, दे० 'खपुष्प', -गतिः 1. देवता 2. स्वर्गीय प्राणी— मेघ० ४६ 3. ग्रह,— चर ('गगनेचर' भी) (वि०) आकाश में घूमने वाला (रः) 1. पक्षी 2. ग्रह 3. स्वर्गीय आत्मा,—ध्वजः 1. सूर्य 2. बादल,- सद् (वि०) अन्तरिक्ष में रहने वाला (पुं०) स्वर्गीय जीव- शि० ४।५३,—सिन्धु (स्त्री०) गंगा की उपाधि, -स्पर्श,—स्थित (वि०) आकाश में विद्यमान,—स्पर्शनः 1. वायु, हवा 2. आठ महतों में से एक ।

गङ्गा [गम्+गन्+टाप्] 1. गंगा नदी, भारत की पवित्रतम नदी, -अघोऽघो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा —भर्तृ० ३।१०, रघु० २।२६, १३।५७, (इसका उल्लेख ऋग्वेद० १०।७५।५ में दूसरी नदियों के साथ २ मिलता है) (इसके अतिरिक्त और दूसरी नदियों के लिए भी जो भारत में पावन समझी जाती हैं, यह शब्द कभी २ प्रयुक्त किया जाता है) 2. गंगा देवी के रूप में मूर्त गंगा (हिमवान् पर्वत की ज्येष्ठ पुत्री गंगा है, कहते हैं ब्रह्मा के किसी शाप के कारण गंगा को इस धरती पर आना पड़ा जहाँ वह शंतनु राजा की पत्नी बनी; गंगा के आठ पुत्र हुए, जिनमें भीष्म सब से छोटा था, भीष्म अपने आजीवन ब्रह्मचर्य तथा शौर्य के कारण विख्यात हो गया था। दूसरे मतानुसार वह भगीरथ की आराधना पर इस पृथ्वी पर आई, दे० 'भगीरथ' और 'जह्नु' और तु० भर्तृ० ३।१०) सम० —अम्बु,—अम्भस् (नपुं०) 1. गंगाजल 2. वर्षा का विशुद्ध जल (जैसा कि आश्विन मास में बरसता है),—अवतारः 1. गंगा का इस पृथ्वी पर पदार्पण–भगीरथ इव दृष्टगङ्गावतारः–का० ३२, (यहाँ इस शब्द का अर्थ —स्नान के लिए गंगा में उतरना भी है) 2. पुण्य स्थान का नाम,- -उद्भवः गंगा का उद्गम स्थान, —क्षेत्रम् गंगा तथा उसके दोनों किनारों का दो २ कोस तक का प्रदेश,—चिल्ली एक जलपक्षी,—जः 1. भीष्म 2. कार्तिकेय,–ज्ञः भीष्म का विशेषण,–द्वारम् समतल भूमि का वह स्थान जहाँ गंगा प्रविष्ट होती है ('हरिद्वार' भी उसी स्थान को कहते हैं), -धरः 1. शिव का विशेषण 2. समुद्र, °पुरम् एक नगर का नाम,—पुत्रः 1. भीष्म 2. कार्तिकेय 3. एक संकर जाति जिसका व्यवसाय मुर्दे ढोना है 4. गंगा के घाट पर बैठने वाला पंडा जो तीर्थयात्रियों का पथप्रदर्शन करता है,-- भूः (पुं०) 1. शिव 2. समुद्र,—मध्यम् गंगा का तल भाग, - यात्रा 1. गंगा नदी पर जाना 2. रोगी को गंगातट पर इसलिए ले जाना कि वहीं उसकी मृत्यु हो,- सागरः वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है,- सुतः 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,—ह्रदः एक तीर्थ स्थान का नाम ।

गङ्गाका, गङ्गेका, गङ्गिका [गङ्गा+कन्+टाप्, ह्रस्वो वा, पक्षे इत्वम् अपि] गंगा ।

गङ्गोल: एक रत्न जिसे गोमेद भी कहते हैं ।

गच्छः [गम्+क] 1. वृक्ष 2. (गण० में) प्रक्रम का समय (अर्थात् राशियों की संख्या) ।

गज (भ्वा० पर० गजति गर्जित) 1. चिंघाड़ना, दहाड़ना - जगर्ज्जुर्गजाः–भट्टि० १४।५ 2. मदिरा पीकर मस्त होना, व्याकुल होना, मदोन्मत्त होना ।

गजः [गज्+अच्] 1. हाथी—कचाचितौ दिग्वगिवागजौ गजौ— कि० १।३६ 2. आठ की संख्या 3. लम्बाई की माप, गज (परिभाषा-साधारणगृहस्य त्रिहस्तोन्मुलकाः गजाः) 4. एक राक्षस जिसे शिव ने मारा था। सम० —अशनी (पुं०) 1. सर्वश्रेष्ठ हाथी 2. इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,—अधिपतिः हाथियों का स्वामी, उत्तम हाथी, अध्यक्षः हाथियों का अधीक्षक, अपसदः दुष्ट या बदमाश हाथी, सामान्य या नीच नसल का हाथी ,अशनः अश्वत्थ वृक्ष (नम्) कमल की जड़, -अरिः 1. सिंह 2. शिव जिसने गज नामक राक्षस को मारा था, आजीवः हाथियों से जो अपनी जीविकोपार्जन करता है, महावत, आनन:, —आस्यः गणेश का विशेषण, आयुर्वेदः हाथियों की चिकित्सा का विज्ञान,— आरोहः महावत, आह्वम् —आह्वयम् हस्तिनापुर, इन्द्रः 1. उत्तम हाथी, गजराज किं रुष्टामि गजेन्द्रमन्दगमने श्रृंङ्गार० ७ 2. इन्द्र का हाथी ऐरावत, °कर्णः शिव का विशेषण, —कन्दः खाने के योग्य एक बड़ी जड़, -कर्णिन् (पुं०) गरुड़, -गतिः (स्त्री०) 1. हाथी जैसी मंद चाल, हाथी की सी चाल वाली स्त्री, गामिनी हाथी की सी मन्द तथा गौरवभरी चालवाली स्त्री, -दन्तः —दन्तम् (वि०) हाथी जैसा ऊँचा, --दन्तः 1. हाथी का दांत 2. गणेश का विशेषण 3. हाथीदांत 4. खूंटी या ब्रैकेट जो दीवार में लगा हो, °मयः (वि०) हाथी-दांत से बना हुआ, - दानम् 1. हाथी के गण्डस्थल से बहने वाला मद 2. हाथी का दान,- नासः हाथी का गण्डस्थल,- पतिः 1. हाथियों का स्वामी 2. विशालकाय हाथी—शि० ६।५५ 3. सर्वश्रेष्ठ हाथी,-पुङ्गवः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक विशालकाय श्रेष्ठ हाथी—गजपुङ्गवस्तु, धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते—भर्तृ० २।३१,—**पुरम्** हस्तिनापुर, **बन्धनी,—बन्धिनी,** हाथियों का अस्तबल, —**भक्षकः** अश्वत्थ वृक्ष,— **भाण्डनम्** हाथी को सजाने का आभूषण, विशेषकर हाथी के मस्तक की रंगीन रेखाएँ, **मण्डलिका,—माण्डली** हाथियों की मंडली, —**माचलः** सिंह, —**मुक्ता,— मौक्तिकम्** मोती जो हाथी के मस्तक से निकला हुआ माना जाता है, **मुखः,— -वक्त्रः,—वदनः** गणेश का विशेषण, **-मोटनः** सिंह,—**-यूथम्** हाथियों का झुंड - रघु० ९। ७१, **योधिन्** (वि०) हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाला, **राजः** उत्तम या श्रेष्ठ हाथी,—**व्रजः** हाथियों का दल,—**शिक्षा** हस्तिविज्ञान, **साह्वयम्** हस्तिनापुर, **स्नानम्** (ना०) हाथी का स्नान करना, (आल०) हाथी के स्नान के समान और निष्फल प्रयत्न (हाथी स्नान करके अपने ऊपर धूल डाल लेता है) तु० —अवलेपेन्द्रियज्ञानां हस्तिस्नानमिदं क्रिया- हि० १।१८।

गजता [गज+तल्] हाथियों का समूह।

गजवत् (वि०) [गज+मतुप्] हाथियों को रखने वाला रघु० ६।९।

गज्ज् (भ्वा० पर० **गज्जति**) विशेष ढंग से ध्वनि करना, शब्द करना।

गज्ज [गज्+घञ्] 1. खान 2. खनाना 3. गोशाला 4. मंडी, अनाज की मण्डी 5. अनादर, तिरस्कार,—**-ज्जा** 1. झोंपड़ी, पर्णशाला 2. मधुशाला 3. मदिरापात्र।

गज्जन (वि०) [गज्ज्+ल्युट्] क्षुद्र समझना, लज्जित करना आग बढ़ जाना, सर्वश्रेष्ठ होना- **स्थलकमल-गञ्जनं मम हृदयरञ्जनं** (चरणद्वयम्) गीत० १०, **अलिकुलगञ्जनमञ्जनकम्** १२—नेत्रं खञ्जनगञ्जनं सा० द० 2. पराजित करना, जीतना—**कालिय-विषधरगञ्जन**—गीत० १।

गञ्जिका [गञ्जा+कन्+टाप्, इत्वम्] मधुशाला, मदिरालय।

गड् (स्वा० पर० गडति, गडित) 1. सींचना, निकालना 2. (तरल पदार्थ की भाँति) बहना।

गडः [गड्+अच्] 1. पर्दा 2. बाड़ 3. खाई, परिखा 4 सकावट 5. एक प्रकार की सुनहरी मछली। सम० **उत्थम्, -देशजम्,—लवणम्** पहाड़ी नमक, विशेषतः वह जो गंड प्रदेश में पाया जाता है।

गडयन्तृः, गडयित्नुः [गड् णिच्—तृच्, इत्नुच् वा] बादल।

गडिः [गड्+इन्] 1. दरार 2. सट्टा बैल - गुणानामेव दौरात्म्याद्वारि षयों नियुज्यते, असंव्यातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गडिः- काव्य० १०।

गडु (वि०) [गड्+उन्] बेडौल, कुबड़ा,—**डुः** 1. पीठ पर कूबड़ 2. मेंढा 3. जलपात्र 4. **कंचुआ** 5. गलगण्ड निरर्थक वस्तु. दे० अन्तर्गडु।

गडुकः [गडु+कै+क] 1. जलपात्र 2. अँगूठी।

गडुल,—ल (वि०) [गडु+ल बा० र] कुबड़ा, बेडौल, मुड़ा हुआ।

गडेरः [गड्+एरक्] बादल।

गडोलः [गड्+ओलच्] 1. मुट्ठभर 2. कच्ची खांड।

गडुरः, -लः [गड्+डर, डल वा] भेड़।

गडुरिका [गडुरं मेषमनुधावति+ठन्] 1. भेड़ों की पंक्ति 2. अविच्छिन्न पंक्ति, नदी, धारा, **प्रवाहः भेड़िया धसान** इसका तात्पर्य है. भेड़ों के रेवड़ की भाँति अंधानुसरण करना - तु० इति गडुरिकाधावाहेर्षायां भेदः -काव्य० ८।

गडुकः [गडुक पृषो०] सोने का बर्तन।

गण् (चुरा० उभ० गणयति-ते, गणित) 1. गिनना, गिनती करना, गणना करना- **लोलाक्मलपत्राणि गणयसीव पार्वती**—कु० ६।८४, **नाक्षरं गणय गच्छसि यावदन्तम्**—ह० ६।११ 2. हिसाब लगाना, संगणना या संख्या करना 3. जोड़ना, संपूर्ण जोड़ लगाना 4. अन्दाज लगाना, मूल्य निर्धारण करना (करण० के साथ)—न तं तृणेनापि गणयामि 5. श्रेणी में रखना, कोटि में गिनना- **अगण्यतामरेषु**— दश० १५४ 6. हिसाब में लगाना, विचारना—**वाणी काण-भुजीमजीगणत्-माल्ति०** 7. ध्यान देना, विचार करना, सोचना—त्वया विना सुखमेतावदजस्य गण्यताम्-रघु० ८।६९, ५। २०, ११।७५, **जातस्तु गण्यते सोऽत्र यः स्फुरन्वन्धाधिकम्-पंच०** १।२७, **किंसलयतल्पं गणयति विहितहुताशविकल्पम्**-गीत० ४ 8. लगाना, आरोपण करना, मत्थे मढ़ना (अधि० के साथ) **जड्य ह्रीमति गण्यते** भर्तृ० २।५४ 9. ध्यान देना, खयाल करना, मन लगाना- **प्रणयमगणयित्वा अन्यमापद्गतस्य विक्रम० ४।१३** 10. (निषेधात्मक अव्यय के साथ) उपेक्षा करना, ध्यान न देना **न महान्तमपि क्लेशमजीगणत्**- का० ६४, **मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्** भर्तृ० २।८१, ९, शा० १।१०, भट्टि० २।५३, १५।५४, हि० २।१४२, **अधि—**, 1. प्रशंसा करना 2. गणना करना, गिनना, **अव—**, अवहेलना करना, **परि—**, 1. गणना करना, गिनना 2. विचार करना, ध्यान देना, सोचना - **अपरिगणयन्** मेघ० ५, **प्र-** , हिसाब लगाना, **वि—**, 1. गणना करना, याज्ञ० ३।१०४ 2. खयाल करना, विचार करना- मेघ० १०९, रघु० १।८७ 3. अवहेलना करना ध्यान न देना 4. विचार विमर्श करना, चिंतन करना -पंच० ३।४३।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गण: [गण्+अच्] 1. रेवड़, झुंड, समूह, दल, संघट —गुणिगणगणनारम्भे, भगण:—आदि 2. माला, श्रेणी 3. अनुयायी या अनुचर वर्ग 4. विशेषत: अर्धदेवों का गण जो शिव के सेवक माने जाते हैं और गणेश के अधीक्षण में रहते हैं. इस गण का कोई अर्धदेव—गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनाम् आदि गणानमेकप्रसवावलंबा:- कु० १।५५, ७।४०, ७१, मेघ० ३३, ५५, वि० ५।१३ 5. समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बना मनुष्यों का समाज या सभा 6. सम्प्रदाय (दर्शन या धर्म में) 7. २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पदाति सैनिकों की छोटी टोली ('अक्षौहिणी' का उपप्रभाग) 8. (गण०) अङ्क 9. पाद, चरण (छन्द: शास्त्र में) 10. (व्या० में) धातुओं या शब्दों का समूह जो एक ही नियम के अधीन हो तथा उस श्रेणी के पहले शब्द पर जिसका नाम रक्खा गया हो उदा० स्वादिगण अर्थात् 'भू' से आरम्भ होने वाली धातुओं की श्रेणी 11. गणेश का विशेषण । समo —अग्रणी (पु०) गणेश,- -अचल. कैलास पहाड़ जिस पर शिव के गण रहते हैं,—अधिप:—अधिपति: 1. शिव—शि० ९।२७ 2. गणेश 3. सैन्य दल का मुखिया सेनापति, शिकारों के समूह का मुखिया, गुरु; गलुओं या जानवरों की टोली का मुखिया, यूथपति,- अन्नम् सहभोजशाला, भोज्यपदार्थ जो बहुत से समान व्यक्तियों के लिए बनाया जाय—मनु० ४।२०९, २१९, -अभ्यन्तर (वि०) दल या टोली का एक व्यक्ति (र:) किसी धार्मिक संस्था का सदस्य या नेता—मनु० ३।१५४,—ईश: शिव का पुत्र गणपति (दे० नी० गणपति), -जननी: पार्वती का विशेषण, -भूषणम् सिन्दूर, —ईशान:, ईश्वर. 1. गणेश का विशेषण 2. शिव का विशेषण, - -उत्साह: मेंढा, -कार: 1 वर्गीकरण करने वाला 2. भीमसेन का विशेषण,—कृत्यम् (अव्य०) सब कालों में, कई बार,—पति: एक विशेष ऊँची संख्या, -चक्रम् गणीगण का सहभोज, ज्योत्सार,- छन्दस् (नपुं०) पादों द्वारा मापा गया तथा विनियमित छन्द. —तिथ (वि०) दल या टोली बनाने वाला, -दीक्षा 1. बहुतों की एक साथ दीक्षा, सामूहिक दीक्षा 2. बहुत से व्यक्तियों का एक साथ दीक्षा-संस्कार, —देवता: (ब० व०) उन देवताओं का समूह जो प्राय: टोली या श्रेणियों में प्रकट होते हैं -अमर० परिभाषा देता है—आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिला:, महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवता: । —द्रव्यम् सार्वजनिक संपत्ति, पंचायती माल,—धर: 1. किसी वर्ग या समूह का मुखिया 2. विद्यालय का अध्यापक, -नाथ, —नायक: 1. शिव की उपाधि 2. गणेश का विशेषण, —नायिका दुर्गा की उपाधि,—प:,—पति: 1. शिव 2. गणेश (गणेश, शिव और पार्वती का पुत्र है, एक आख्यायिका के अनुसार वह केवल पार्वती का ही पुत्र है क्योंकि उसका जन्म पार्वती के शरीर के मैल से हुआ। यह बुद्धिमत्ता का देवता और बाधाओं को हटाने वाला है, और इसीलिए प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने पर उसकी पूजा होती है तथा आवाहन किया जाता है उसका चित्रण प्राय: बैठी हुई अवस्था में किया जाता है, उसकी तोंद निकली हुई है, चार हाथ है, चूहे पर सवार है तथा सिर हाथी का है, इसके सिर में दांत केवल एक है, दूसरा टूटा- शिव जी के अन्तःपुर में प्रविष्ट होते हुए पञ्चास्त्र को रोकने के लिए युद्ध करते समय टूट गया (इसी लिए गणेश को एकदन्त या एकदन्त भी कहते हैं; उसका हाथी का सिर है'- इस बात पर प्रकाश डालने वाली अनेक कहानियां है। कहते हैं कि गणेश ने आशु से सुनकर महाभारत लिखा, व्यास ने ब्रह्मा से लिखिकार के रूप में गणेश को सेवाएं प्राप्त कर ली थी)-पर्वत दे० गणाचल,—पीठकम् छोटी, वक्षस्थल,- पुंगव: किसी वर्ग या जाति का मुखिया (ब० व०), -पूर्व: किसी जाति या वर्ग का नेता, भर्तृ (पु०) 1. शिव का विशेषण गणभर्तृरक्षा: कि० ५।४० 2. गणेश का विशेषण 3. किसी वर्ग का नेता, भोजनम् सहभोज, मिलकर भोजन करना, यज्ञ: सामूहिक संस्कार, -राज्यम् दक्षिण का एक साम्राज्य, रात्रम् रातों का समूह, वृक्षम् दे० गणद्रुमम्, हास:, हासक: सुगन्ध द्रव्य की एक जाति।

गणक (वि०) (स्त्री०- णिका) [गण् ण्वुल्] बहुत धन देकर खरीदा हुआ, -क: 1. अङ्कगणित का ज्ञाता 2. ज्योतिषी- रे पापे पुष्पधर क्षणभव निष्ठ कैर्गणकैरसि किं गणकशास्त्रविशारदोऽसि, केनौषधेन मम पश्यसि भर्तृरक्षां किं वागमिष्यति पतिः सचिवप्रधानौ — शुभा०, -की ज्योतिषी की पत्नी।

गणनम् [गण्+णिच्+ल्युट्] 1. गिनना, हिसाब लगाना 2. जोड़ना, गणना करना 3. विचार करना, खयाल करना, ध्यान रखना 4. विश्वास करना, चिन्तन करना।

गणना [गण्+णिच्+युच्] हिसाब लगाना, विचार करना खयाल करना, गिनती करना का वा गणना संकलनेषु अपगतचेतनान्यधि संघट्टशिलामुखं (मदन) का० १५७, (हमें क्या आवश्यकता है: ...तु० कथा) मेघ० १०, ८७, रघु० ११।९४, शि० १६।९९, अमरु ९४। सम०- -कृत् (स्त्री०)- -गणपति,—पति: अङ्कगणित को जानने वाला,—महामात्र: वित्तमंत्री।

गणशस् (अव्य०) [गण+शस्] दलों में, खेपों में, श्रेणी के क्रम से।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गणिः (स्त्री०) [गण्+इन्] गिनना।

गणिका [गण+ठक्, इ+टाप्] 1. रण्डी, वेश्या—सुगात्रा-रक्ता गणिका च गम्य वसन्तसेनेव वसन्तसेना —मृच्छ० १।६, गणिका नाम पादुकान्तरप्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुनर्निराकियते —मृच्छ० ५, निरवकाशय-द्विमिषेवोत्तुङ्ग क्रियादलयादपदर्शिगणिका शि० ९।१० 2. हथिनी 3. एक प्रकार का फूल।

गणित (वि०) [गण् +क्त] 1. गिना हुआ, संख्यात, हिसाब लगाया हुआ 2. खयाल किया हुआ, देखभाल किया हुआ-दे० गण्:-तम् 1. गिनना, हिसाब लगाना 2. गणना विज्ञान, गणित (इसमें अंकगणित [पाटीगणित या व्यक्तगणित] बीजगणित और रेखागणित भूमि-मिति है)—गणितमथ कन्दुः पीडिकी हस्तिशिक्षां ज्ञानवा मृच्छ० १।८ 3. श्रेणी का जोड़, जोड़।

गणितिन् (पु०) [गणित+इनि] 1. जिसने हिसाब लगाया है 2. गणितज्ञ।

गणिन (वि०) (स्त्री० नी) [गण+इनि] (किन्हीं वस्तुओं की) टोली या खेप को रखने वाला, **यूथगणिन्**, कुत्तों के झुंड को रखने वाला, रघु० ९।५२, (पु०) अध्यापक (शिष्यों की श्रेणी को रखने वाला)।

गणेय (वि०) [गण्+एय] गिनती किये जाने के योग्य, जो गिना जा सके।

गणेर [गण्+एरक] कर्णिकार वृक्ष (स्त्री०) 1. रंडी 2. हथिनी।

गणेरुका [गणेर+कै+क] 1. कुटनी, दूती 2. गेरिका।

गण्ड: [गण्+अच्] 1. गाल, कनपटी सहित मुख का समस्त पार्श्व—गण्डाभोगे गुलकपटलं—मा० २।५, उदीय-मादाहणगण्डलेखम्—कु० ७।८२, मेघ० २६, १२, अमरु ८१, ऋतु० ४।६, ६।१०, रघु० ६।१७, शि० १२।५८ 2. हाथी की कनपटी—गा० १।१ 3. गूलर-बुला 4. फोड़ा, रसौली, सूजन, फुंसी—अयमपरो गण्ड-स्योपरि विस्फोटः—मुद्रा० ५, तदा गण्डरोपरि पिटिका संवृत्ता श० २ 5. गंडमाला या गर्दन के अन्य फोड़ा फुंसी 6. जोड़, गांठ 7. चिह्न, धब्बा 8. गेंडा 9. मुखा-भाग 10. नायक, गेंडुआ 11. घोड़े के साज का एक भाग, आभूषण के रूप में घोड़े के जीन पर लगा हुआ बटन। सम०—**अङ्क:** गेंडा, **उपधानम्** तकिया —मृदुगण्डोपधानानि शयनानि सुखानि च —मनु०, **-कुसुम** हाथी की कनपटी से झरने वाला मद, **-कूप:** पहाड़ की चोटी पर बना कुआं, **ग्राम:** बड़ा गांव, **देश:** प्रदेश: गाल, **-फलकम्** गोटा गाल धूसरपाण्ड-गण्डफलकविचर्चिकाङ्कितास्यकमलैः प्रमदाः शि० ९।४७, **-भित्ति:** (स्त्री०) 1. हाथी के गण्डस्थल का छिद्र जिससे मद झरता है 2. भित्ति की भांति गाल' अर्थात् चौड़े, श्रेष्ठ और प्रशस्त गाल—निर्धौतदानाम्बुगण्डभित्तिभिः (गजः) रघु० ५।४३, (यहाँ मल्लि-नाथ कहता है -प्रशस्तौ गंडौ गंडभित्तौ) १२।१०२, **-माल:**—**-माला** कंठमाला रोग (जिसमें गर्दन की गिल्टियों में सूजन हो जाती है), **-मूर्ख** (वि०) अत्यन्त मूर्ख, बिल्कुल मूढ़, **-शिला** बड़ी चट्टान, —शैल: 1. भूचाल या आंधी से नीचे गिराई गई विशाल चट्टान—कि० ७।२७ 2. पर्वतक, **-साह्वय** नदी का नाम, (इसे 'गंडकी' भी कहते हैं), **-स्थलम्**, **-स्थली** 1. गाल—मण्डस्थलेषु मदवारिषु पंच० २।१२३, शृङ्गार० ७, गण्डस्थलीः प्रोषितपत्रलेखाः —रघु० ६।७२ अमरु ७७ 2. हाथी की कनपटियां।

गण्डक: [गण्ड+कन्] 1. गेंडा 2. रुकावट, बाधा 3. जोड़, गांठ 4. चिह्न, धब्बा 5. फोड़ा, रसौली, फुंसी 6. वियोजन, वियोग 7. चार कौड़ी के मूल्य का सिक्का। सम० **वती** दे० गंडकी।

गण्डका [गंडक+टाप्] लौंदा, पिण्ड या डली।

गण्डकी [गण्डक+ङीप्] 1. एक नदी का नाम जो गंगा में मिल जाती है 2. मादा गेंडा। सम०—**पुत्र:**, —**शिला** शालिग्राम (पत्थर का)।

गण्डलिन् (पु०) [गण्डल+इनि] शिव।

गण्डिः [गण्ड+इनि] वृक्ष का तना, जड़ से लेकर उस स्थान तक जहाँ से शाखाएँ आरम्भ होती हैं।

गण्डिका [गण्डक+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का कंकड़ 2. एक प्रकार का पेय।

गण्डीरः [गण्ड+ईरन्] नायक, शूरवीर।

गण्डू: (पु०, स्त्री०) [गण्ड+ऊङ्] 1. तकिया 2. जोड़, गांठ।

गण्डूष: (स्त्री०) 1. जोड़, गांठ 2. हरड़ी 3. तकिया 4. तेल। सम०—**पद:** एक प्रकार का कीड़ा, केंचुआ, **°भवम्** मीसा,—**पदी** छोटा केंचुआ।

गण्डूष:—**षा** [गण्ड+ऊषन्] (पानी का) मुहभर, मुट्ठी भर गजाग्र गण्डूषजलं करेणुः (ददौ)—कु० ३।२७, उत्तर० ३।१६, मा० ९।३४, **गण्डूषजलमात्रेण** शफरी-फरफरायते—उद्भट 2. हाथी के सूंड की नोक।

गण्डोल: [गंड्+ओलच्] 1. कच्ची खांड़ 2. मेंढक।

गत (भू० क० कृ) [गम्+क्त] 1. गया हुआ, अतीत, बीता के लिए गया हुआ—मुद्रा० १।२५ 2. गुजरा हुआ, बीता हुआ, पिछला—गतायां रात्रौ 3. मृत, मुर्दा, विनष्ट—कु० ४।३० 4. गया हुआ, पहुँचा हुआ, पहुँचने वाला 5. अन्तर्गत, अन्तःस्थित, बैठा हुआ विश्वास करता हुआ, सम्मिलित [बहुधा समासों में—प्रासाद-प्रान्तगत:—पंच० १, बैठा हुआ; सदोगतः—रघु० ३।९६, सभा में बैठा हुआ; इसी प्रकार **आह्व°**, **सर्व-गत:** सर्वत्र विद्यमान 6. फंसा हुआ, घटाया गया आपद्गत 7. संकेत करते हुए, संबंध रखते हुए, के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषय में, की बाबत, विषयक, संबद्ध (बहुधा समास में)—राजा शकुन्तलागतमेव चिन्तयति—श० ५, भर्तृगतया चिन्तया—श० ४, वयमपि भवत्यो सखीगतं किमपि पृच्छामः—श० १, इसी प्रकार 'पुत्रगतः स्नेहः' आदि,—तम् । गति, जाना- गतमुपरि घनानां वारिगर्भोदराणाम्—श० ७।७, शि० १।२ 2. चाल, चलने की रीति—कु० १।३४, विक्रम० ४।१६ 3. घटना 4. यदि समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त हो तो इसका 'मुक्त' 'विरहित' 'वंचित' और 'बिना' शब्दों में अनुवाद करते हैं। सम०- अक्ष (वि०) दृष्टिहीन, अन्धा, -अध्वन् (वि०) 1. जिसने अपनी यात्रा समाप्त कर ली है 2. अभिज्ञ, परिचित, (स्त्री०) चतुरंडी से युक्त अमावस्या,—अनुगतम् पूर्वोदाहरण या प्रथा का अनुयायी होना,—अनुगतिक (वि०) दूसरों की नकल करने वाला, अन्धानुयायी —गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः—पंच० १।३४२, लोग भेड़ा चाल चलने वाले या केवल अंधानुकरण करने वाले होते हैं मुद्रा० ६।५, —अन्त (वि०) जिसका अन्त समय आ गया है,— अर्थ (वि०) 1. निर्धन 2. अर्थ हीन (क्योंकि अर्थ का विधान पहले हो किया जा चुका है),—असु,-जीवित, -प्राण (वि०) समाप्त, मृत—भग० २।११, -आगतम् 1. जाना आना, बार २ मिलना- भर्तृ० ३।७, भग० ९।२१, मुद्रा० ४।१ 2. (ज्योतिष में) तारों का अनियमित मार्ग, आधि (वि०) चिन्ताओं से मुक्त, प्रसन्न, आयुस् (वि०) जीर्ण, निर्बल, अतिवृद्ध, —आर्तवा जो ऋतुमती होने की आयु को पार कर चुकी हो, बुढ़िया,—उत्साह वि० उत्साहहीन, उदास, -ओजस् (वि०) शक्ति या सामर्थ्य से विरहित, -कल्मष (वि०) पाप या जुर्म से मुक्त, पवित्रीकृत, -क्लम (वि०) पुनः तरोताजा,-चेतस् (वि०) बेहोश, मूर्छित, चेतनाहीन, -दिनम् (अव्य०) बीता हुआ कल,—प्रत्यागत (वि०) जाकर वापिस आया हुआ मनु० ७।१४६, -प्रभ (वि०) दीप्तिरहित, धुंधला, मलिन, भद्दम या म्लान,—प्राण (वि०) जीवरहित, मृत, -प्राय (वि०) लगभग गया हुआ, तकरीबन बीता हुआ—गतप्राया रजनी, भर्तृका 1. विधवा स्त्री 2. (विरल प्रयोग) वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो (=प्रोषितभर्तृका),- लक्ष्मीक (वि०) 1. कान्ति हीन, दीप्ति से रहित, म्लान 2. धन से वञ्चित निर्धनीकृत, घाटे की अवस्था से पीड़ित,- वयस्क (वि०) बहुत आयु का, वृद्ध, बूढ़ा, -वर्ष, -वर्षम् बीता हुआ वर्ष, -वीर(वि०) मेल मिलाप से रहने वाला, पुनर्मिलित, -व्यथ (वि०) पीड़ा से मुक्त, -शोभ (वि०) जिसका बचपन बीत गया है,—सत्त्व (वि०) 1. मृत, ध्वस्त, जीवनरहित 2. ओछा, -सत्तक: हाथी जिसका मद न झरता हो,-स्पृह (वि०) सांसारिक विषयवासनाओं से उदासीन।

गतिः (स्त्री०) [गम् + क्तिन्] 1. गति, गमन, जाना, चाल गतिर्विलसिता पंच० ४।७८, अभिन्नगतयः श० १।१४, (न) भिदन्ति मन्दा गतिमश्वमुख्यः कु० १।११, उनकी धीमी चाल को मंद सुधारी, इसी प्रकार – गगनगतिः पंच० १, लघुगतिः मेघ० १६, १०, ४६, उत्तर० ६।२३ 2. पहुंच, प्रवेश—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः रघु० १।४ 3. कार्यक्षेत्र, गुंजायश—अन्यगतिः कु० ३।१९, मनोरथानामगतिर्न विद्यते—कु० ५।६४, नास्त्यनर्थनिमंत्रणोपाध्यायानाम् विक्रम० २ 4. मोड़, चर्या देवगतिर्हि चित्रा 5. जाना, पहुँचना, प्राप्त करना - वैकुण्ठीया गतिः पंच० १, स्वर्ग प्राप्ति 6 भाग्य, फल- अर्तृगतिसंलक्ष्या दश० १०३ 7. अवस्था, दशा दानौ भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य—भर्तृ० ५।४३, पंच० १।१०६ 8. प्रस्थापना, संस्थान, स्थिति, अवस्थिति —पराधीनेः पितुः - रघु० ८।७७ कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्त्रीमतस्विनां भर्तृ० २।२०४ पंच० १।४१, ४२० 9. साधन, तरकीब, प्रणाली, दूसरा उपाय अनुपेक्षणे द्वयी गतिः मुद्रा० ३, का गति, क्या हो सकता है ? कुछ नहीं हो सकता (प्रायः नाटकों में प्रयुक्त होता है) पंच० १।३१९, अन्या गतिर्नास्ति -का० १५८ 10. आश्रय, शरणस्थल, शरण- शरणागार, अवलंब विद्यमाना गतिर्येषाम् पंच० १।३२०, ३२२, आयतः सलिले पृथ्वी व. स. में श्रीरिगतिः सिद्धा० 11. क्षेत्र, उद्गम, प्राप्तिस्थान भग० २।४३, मनु० १।१० 12. मार्ग, पथ 13. प्रगति, प्रसार (जगत्) 14. घटना, फल, परिणाम 15. कर्मकारक, भाग्य, किस्मत 16. लक्षण पद 17. ग्रह की अपनी ही कक्षा में दैनिक गति 18. गिनने वाला खाना, सारणी 19 ज्ञान, बुद्धिमत्ता 20. पुनर्जन्म, आवागमन मनु० ६।७२ 21. जीवन की अवस्थाएँ (शैशव, यौवन, वार्धक्य आदि) 22. (व्या० में) उपसर्ग तथा क्रियादिशेषोपपादक अव्यय (अलं, तिरस् आदि) जैसे कि वह किसी क्रिया या कृदन्तक से पूर्व लगाये जाय। सम० —अनुसार दूसरे के मार्ग का अनुगमन करने वाला, भङ्ग: ठहरना, -हीन (वि०) अशरण, निस्सहाय, परित्यक्त।

गत्वर (वि०) (स्त्री० री) [गम्—क्वरप्, अनुनासिक लोपः, तुक्] 1. सचिंचाल, चर, गमन 2. अस्थायी, विनश्वर गत्वरैरसुभिः- किं० २।१२, गत्वरीं धीवनश्रियः—११।१२।

गद् (भ्वा० पर० गदति, गदित) 1. स्पष्ट कहना, कथन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, बोलना, वर्णन करना--उगादाद्ये गदाग्रजम् --शि० २।६९, बहु जगाद पुरस्तात्तस्य मता किलाहम् --११।३९, शुद्धान्तरक्ष्या जगदे कुमारी--रघु० ६।४५ 2. गणना करना, गि--, घोषणा करना, बोलना, कहना --रघु० २।३३ ।

गदः [गद्+अच्] 1. बोलना, भाषण 2. वाक्य 3. रोग, बीमारी --असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा --शि० २।८४, जनपदे न गदः पदमादधौ--रघु० ९।४, १७।८१ 4. गर्जन, गड़गड़ाहट, वम् एक प्रकार का विष । सम०--अश्वौ (द्वि० व०) दो अश्विनी कुमार, देवताओं के वैद्य, अग्रणीः सब रोगों का राजा अर्थात् तपेदिक,--अम्बरः बादल, अरातिः औषधि, दवा ।

गदयित्नु (वि०) [गद्+णिच्+इत्नुच्] 1. मुखर, वाचाल, बातूनी 2. कामुक, विषयी,--स्नुः कामदेव ।

गदा [गद्+अच्+टाप्] 1. क्रीड़ायष्टि या गदा, मुद्गर --संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू --वेणी० १।१५ । सम०- अग्रजः कृष्ण --शि० २।८४, अग्रपाणि(वि०) दाहिने हाथ में गदा लिए हुए,--धरः विष्णु की उपाधि, --भृत् (वि०) गदाधारी, गदा से युद्ध करने वाला (पुं०) विष्णु की उपाधि,-- युद्धम् गदा से लड़ा जाने वाला युद्ध, हस्त (वि०) गदा से सुसज्जित ।

गदिन् (वि०) (स्त्री० नी) [गदा+इनि] 1. गदाधारी--भग० ११।१७ 2. रोगग्रस्त, रुग्ण (पुं०) विष्णु की उपाधि ।

गदगद (वि०) [गद् इत्यव्यक्तं वदति--गद्+गद्+अच्] हकलाने वाला, हकला कर बोलने वाला--तत्रैव रोदिषि गद्गदेन वचसा-- अमरु ५३, गद्गदगलस्खद्भ्यष्टयद्विलीनाक्षर का देहीति वदेत् भर्तृ० ३।८, सानन्दं-गद्गदपदं हरिरित्यवाच--गीत० १०,--दम् (अव्य०) अटक-अटक कर बोलने या हकलाने का स्वर--विललाप स बाष्पगद्गदम् रघु० ८।४३, दः,--दम् हकलान, अस्पष्ट या उलट-पुलट भाषण । सम० --ध्वनिः हर्ष या शोक गूंजक मन्द अस्पष्ट ध्वनि --वाच् (स्त्री०) सुबकी आदि से अन्तर्हित, अस्पष्ट या उलट-पुलट वाणी,--स्वर (वि०) हकलाने वाले स्वर से उच्चारण करने वाला (रः) 1. अस्पष्ट तथा हकलाने का उच्चारण 2. भर्त्सना ।

गद्य (सं० कृ०) [गद्+यत्] बोले जाने या उच्चारण किए जाने के योग्य--गद्यमेतत्स्वयं मम--भट्टि० ६।४७, --वम् नसर, गद्य रचना, छन्दविरहितरचना, तीन प्रकार (गद्य, पद्य, चम्पू) की रचनाओं में से एक --दे० काव्या० १।११ ।

गद्याण (न,--ल) रू: ४१ घुंघचियों के समान भार, ४१ रत्तियों का वजन ।

गन्तृ (वि०) (स्त्री०--त्री) [गम्+तृच्] 1. जो जाता है, घूमता है 2. किसी स्त्री से मैथुन करने वाला ।

गन्त्री [गम्+ष्ट्रन्+ङीप्] बैलगाड़ी । सम०--रथः बैलगाड़ी ।

गन्ध (चुरा० आ०-गन्धयते) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2 पूछना, मांगना 3. चलना-फिरना, जाना ।

गन्धः [गन्ध्+अच्] 1. बू, वास्य--गन्धमाघ्राय चोर्व्याः --मेघ० २१, अपघ्नन्तो दुरितं हृष्यगन्धैः--शि० ४।७, रघु० १२।२७, (ब० स० के उत्तरपद के रूप में प्रयुक्त होने पर यह शब्द बदलकर 'गन्धि' हो जाता है यदि इससे पूर्व उद्, पूति, सु या सुरभि में से कुछ जोड़ दिया गया है, या समास तुलनार्थक है अथवा 'गन्ध' का अर्थ 'जरा सा', 'थोड़ा सा' है--उद्गन्धि भोजनम्--सुगन्धि, सुरभिगन्धि, कमलगन्धि मुखम् 2. वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित २४ गुणों में से एक गुण, वह गुण पृथ्वी का गुणात्मक लक्षण है, पृथ्वी को 'गन्धवती' कहा गया है --तर्क० सं० 3. वस्तु की केवल गन्धमात्र, जरा सा, बहुत ही थोड़े परिणाम में घृतगन्धि भोजनम्--सिद्धा० 4. सुगन्ध, कोई सुगन्धित सामग्री--एषा मया सेविता गन्धयुक्तिः मृच्छ० ८, याज्ञ० १।२३१ 5. गन्धक 6 पिसा हुआ चन्दन चूरा 7. संयोग, सम्बन्ध, पड़ोस 8. घमण्ड, अहङ्कार जैसा कि 'आत्मगन्ध' में,--धम् 1. गन्ध, बू 2. काली अगरलकड़ी । सम०--अधिकम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,--अपकर्षणम् गन्ध दूर करना, --अम्लः (नपुं०) गुलाबित जल,--अम्ला जंगली नीबू का वृक्ष, --अशनः (पुं०) गन्धक,--अष्टकम् आठ सुगन्ध द्रव्यों का मिश्रण जो देवताओं पर चढ़ाया जाय, देवताओं की प्रकृति के अनुसार यह भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, --आलुः छछून्दर, आजीवः सुगन्धों का विक्रेता, --आढ्य (वि०) गन्धसमृद्ध, बहुत सुगन्धित--स्रजश्चोत्तमगन्धाढ्याः--महा०, (द्रुमः) तारपीन का पेड़ (द्रुम) चन्दन की लकड़ी--इन्द्रियम् नाक, घ्राणेन्द्रिय, --इभः,--गजः, --द्विपः, --हस्तिन् (पुं०) सुवास--हाथी' सर्वोत्तम हाथी--गन्धयति गजानन्यान्गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्--विक्रम० ५।१८, रघु० ६।७, १७।७०, कि० १७।१७,--उत्तमा मदिरा, शराब, --उत्तम् सुगन्धित जल,--उपजीविन् (पुं०) गन्धद्रव्यों से आजीविका कमाने वाला, गन्धी,--ओतुः (गन्धोतुः या गन्धोतुः गन्धविलाव,--कारिका 1. सुगन्ध द्रव्य बनाने वाली मेथिका, शिल्पकार स्त्री जो दूसरे के घर उसके नियन्त्रण में रहती है,--कालिका--काली (स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती,--काष्ठम् अगर की लकड़ी --कुटी एक प्रकार का गन्धद्रव्य, केलिका, --चेलिका कस्तूरी,--गुण (वि०) गंधगुण वाला, गंधयुक्त,--घ्राणम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गंध का सूंघना, -जलम् सुवासित, सुगंधित जल,—ज्ञा नासिका, -तूर्यम् बिगुल तथा दुंदुभि आदि रणवाद्य, -तैलम् खुरासानी तेल, सुगन्धित द्रव्यों से तैयार किया गया तेल, -दारु (नपुं०) अगर की लकड़ी, -द्रव्यम् सुगंधित द्रव्य,- धूलिः (स्त्री०) कस्तूरी, -नकुलः छछून्दर,—नालिका, -नाली नासिका, -निलयः एक प्रकार की चमेली,—पः एक पितृवर्ग, -पलाशिका हल्दी, -पलाशी आमा हल्दी की जाति, पाषाणः गन्धक, -पिशाचिका धूने का धुआं, (अपनी गंध से पिशाचों को आकृष्ट करने के कारण तथा कालेरंग का होने के कारण सम्भवतः इसका यह नाम पड़ा है), पुष्पः 1. प्रेत का पौधा 2. केवड़े का पौधा, (पुष्पम्) खुशबूदार फूल पुष्पा नील का पौधा, पूतना भूतनी, प्रेतनी, -फली 1. प्रियंगुलता 2. चम्पककली, बधूः आम का वृक्ष, भात् (स्त्री०) पृथ्वी, भादनः 1. भौंरा 2 गन्धक (न, नम्) मेरु पहाड़ के पूर्व में स्थित एक पहाड़ जिसमें चंदन के अनेक जंगल हैं, -मादनी मदिरा, गन्धर्व,-मादिनी आखु, मार्जारिः गन्धबिलाव, -मुखा, मूषिका, मूली (स्त्री०) छछून्दर, मृगः 1. गन्धबिलाव 2. कस्तूरीमृग,-मेथनः साँड, मोदनः गन्धक, मोहिनी चमेली की कली,-युक्तिः (स्त्री०) सुगन्धद्रव्यों के तैयार करने की कला,—राजः एक प्रकार की चमेली (जम्) 1. एक प्रकार का गंधद्रव्य 2. चंदन की लकड़ी, - लता प्रियंगुलता, लोलुपा मधु मक्खी, वहः वायु—न्द्रियन्द्रिय गन्धवहः प्रयासि—रा० ५।४, दिग्वधूनां गन्धवहं मुखेन कु० ३।३५,—वहा नासिका, —वाहकः 1 वायु 2. कस्तूरीमृग, वाही नासिका, विद्वलः गेहूँ, - वृक्षः साल का पेड़, व्याकुलम् ककोल का पेड़,—शुण्डिनी ३।३८, शंखरः कस्तूरी, -सारः चन्दन, सोमम् कपूर कुमुदिनी, - हारिका गंधकारिका, स्वाभिनी के पीछे-पीछे सुगंध लेकर चलने वाली सेविका।

गन्धकः [गन्ध + कन्] गंधक।

गन्धनम् [गन्ध्—ल्युट्] 1. आच्छादन, अंधेरा करना 2 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 3. प्रकाशन 4. सूचना, सगुनचन, संकेत।

गन्धवती [गंध + मतुप् + ङीप, मस्य वत्वम्] 1. पृथ्वी, 2. शराब 3. व्यास की माता सत्यवती 4. चमेली का एक भेद।

गन्धर्वः [गन्ध + अर्व् + अच्] स्वर्गीय गायक, अर्ध देवों का वर्ग जो देवताओं के गवैये तथा संगीतज्ञ माने जाते हैं, कहते हैं कि वह कन्याओं के स्वर को मधुर बना देते हैं -सौम्य शौच दयायाश्च गंधर्वस्य सुधा गिरम् भाग० १।७१ 2. गवैया 3. घोड़ा 4. कस्तूरीमृग 5 मृत्यु के बाद तथा पुनर्जन्म से पूर्व की आत्मा 6. कोयल। सम०- नगरम्, पुरम् गंधर्वों का नगर, आकाश में एक काल्पनिक नगर, गंधर्वनगरी आदि किसी नैसर्गिक घटना का परिणाम,

राजः विश्वस्थ, गंधर्वों का स्वामी, विद्या संगीत कला, विवाहः मनु० ३।३० में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से एक, इस प्रकार का विवाह वधक और वधुओं की पारस्परिक रुचि और पूर्वप्रेम का परिणाम है, इसमें न किसी प्रकार की रीतिरस्म की आवश्यकता है और न किसी सगे संबंधियों की अनुमति की, कालिदास के कथनानुसार यह है--कथमन्धकन्यकेति स्नेहप्रवणः प० ४।१६, वेदः चार उपवेदों में से एक, जिसमें संगीत कला का विवेचन है,—हस्तः हस्तकः हाथ का पौधा।

गन्धारः (ब० व०) | गंध + कृ + अण | एक देश और उसके शासकों का नाम।

गन्धाली (स्त्री०) 1. भिड़ 2. मत्त मुगा। सम० गर्भः छोटा इलायची।

गन्धालु (वि०) [गन्ध + आलुच्] सुगंधित, सुगंधयुक्त, सुगंधपूर्ण।

गन्धिक (वि०) [गन्ध + ठन्] (किसी समास के अन्त में प्रयोग) 1. संबंधित, जैसा कि 'पुरन्ध्यधिपः' में 2. लेप साथ रखने वाला—अनुपधिकं (संज्ञापद का आदेश), कः 1. सुगंधों का विक्रेता 2. गंधक।

गन्धिस् (पु०, स्त्री०) [गन्धते हिंसायां गन्ध् + इसि] विष्णु का विशेषण, अस् विशेषण [प्रकाश की किरण, सूर्यकिरण या चन्द्रकिरण, स्तिः(पु०) सूर्य (स्त्री०) अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण। सम० करः शशिः, हस्तः सूर्य।

गन्धस्तिमत् (पु०) [गन्धस्ति+मतुप्] सूर्य, धनञ्जयायेन गन्धस्तिमतीमेव रघु० ३।३७, (नपुं०) पाताल के सात प्रभागों में से एक।

गभीर (वि०) [गच्छति अलमत्र; गम् + ईरन्, नि० भुगागमः] [गम्भीर] 1. गहरा (जलाशय इसे गंभीरमधः पुष्पं मधिरमिवाम्भः—उत्तर० ३।३०, आभि० २।२०८) 2. गहरी आवाज वाला (हंस की भांति) 3. घना गहरा हुआ, (जंगल की भांति) घोर 4. अगाध, अथाह 5. संगीत, सुरीला, गहन-पूर्ण, सुन्दर 6. गूढ़, रहस्यपूर्ण 7. गहन, दुर्बोध, दुर्गम्य। सम० आत्मन् परमात्मा, वेद्य (वि०) अत्यन्त मेधावी या अन्तः प्रवेशी।

गभीरिका [गभीर + कन् + टाप्, इत्वम्] गहरी आवाज वाला बड़ा ढोल।

गभोलिका [?] छोटा सांवलूम लड़िया।

गम् [भ्वा० पर० - गच्छति, गत—प्रेर० गमयति, सन्नन्त —जिगमिषति, जिगमयिषते - आ०] जाना, चलना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिरना - गच्छतु आर्या पुरंदरोद्यानम् -विक्रम० ५, -गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः -श० १।३४, यथायथा गच्छसे अब आप कहाँ जा रहे हैं ? 2. दौड़ना, चलना, दूर जाना, खाना होना, प्रस्थान करना--ऊर्ध्वाभ्यां ज्योतिरंकं जगाम -श० ५।३० 3. जाना, पहुँचना, सहारा लेना, आ जाना, समीप आना यदप्यस्योपि गच्छसे पंच० १।७, एवं गच्छति कर्तरि मनु० ८।१९, पाप पापी पर मंडराता है ४।१२, इसी प्रकार वर्षा मूर्च्छा गम्

आदि 4. गुजरना, बीतना, (समय का) व्यतीत होना काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् - हि० १।१, गच्छता कालेन अनन्तर 5. अवस्था या दशा को प्राप्त होना, होना. अनुभव करना, भुगतना, भोगना (प्रायः वाक्य और क्त्वान्त संज्ञाओं के साथ अथवा कर्म० की संज्ञा के साथ जुड़ना है)

गमिष्याम्युपहास्यतां - रघु० १।३, पदवीदुभास्थां सुकुमारीं जगाम -कु० १।२६, उमा नाम्नावली हुई, इसी प्रकार तृप्तिं गच्छति-तृप्त हो जाता है, विदारं गत - उदास हो गया, क्रोधं न गच्छति - क्रुद्ध नहीं होता है, आतुरं गतः -व्याधि से मुक्त हो गया 6. सहवास करना, मैथुन करना--गुरोः सुता ..... यो गच्छति पुमान्-पंच० २।१०७, याज्ञ० १।८०, शैर०-1. भिज्ञाना, पहुँचाना, (दशा को) प्राप्त होना 2. उपयोग करना, (समय को भाँति) बिताना 3. स्पष्ट करना, व्याख्या करना, विवरण देना 4. अर्थ ग्रहणात्मा, संकेत करना, विचार व्यक्त करना--द्वौ नञौ प्रकृतार्थं गमयतः- 'दो नकार एक सकारात्मक अर्थ को प्रकट करते हैं' अति--, दूर जाना, बीत जाना, अधि--, 1. अभिग्रहण करना, अवाप्त करना, ले लेना अधिगच्छति महिमान चन्द्रोपि निशापरिगृहीतः-- मालवि० १।१३, स्वतन्त्रार्थमधिगच्छति मनु० २।२१८, ७।३३ भग० २।६४, रघु० २।६६, ५।३४ 2. निष्पन्न करना, सुरक्षित करना, पूरा करना - अर्थं सप्रतिघंघगन्तु प्रभुरित्मन्तु महाधनेव -मालवि० १।९ 3. समीप जाना, की ओर जाना, पहुँचना, पैठ रखना गुणालयोऽयमन्त्री नृपतिर्नाधिगम्यते- पंच० १।३८४ 4. जानना, सीखना, अध्ययन करना, समझना,- वेदमधिगच्छेत् शिष्यान् उत्तर० ३।२, कि० ७।४१, याज्ञ० ३।३९, याज्ञ० १।९९ 5 विवाह करना, (पति के रूप में) ग्रहण करना—मनु० ९।९२; अध्वा --, प्राप्त करना, होना, घटित होना; अनु , 1. मिलना-जुलना, पीछे चलना, साथ चलना--औरकान्तान् स्त्रियां जनोऽनुगच्छति -श० ४, मानं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्वेनेन्दियार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्—रघु० १४।८६। कि० ५।४२, मनु० १२।६५; पूर्व० ६।३५ 2. संकल्प करना, समझना होना, उत्तर देना- अस्फालिता यन्मधुकारकाणां संवर्जयीव रुतमन्वगच्छत् रघु० १६।१३, कि० ४।३६, अन्तर्-, बीच में जाना, सम्मिलित होना, अन्तर्हित होना, दे० अन्तर्गत, अप , 1. दूर चले जाना; जुरा हो जाना, (समय आदि की भाँति) बीत जाना—पंच० ३।८ 2. ओझल होना, अन्तर्धान होना, से चले जाना; अभि --, निकट जाना, समीप होना, दर्शन करना—एनमभिजगमुर्गोपाः - रघु० १५।९०, कि० १०।२१,

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः मनु० १।१ 2. भिड़ना, (अकस्मात् या संयोग से) घटित होना 3. सहवास करना, मैथुन करना याज्ञ० २।२०५, अभ्या , 1. समीप आना, पहुँचना, निकट आना--सर्वाभ्यावर्ती मुरु- हि० २।१०८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, अभ्युद् , 1 उठना, ऊपर जाना 2. की ओर जाना, मिलने के लिए आगे बढ़ना, अभ्युप , सहमत होना, स्वीकार करना, जिम्मेवारी लेना, मानना, मंजूर करना, अपनाना, अव , 1. आना, पहुँचना, निकट आना--सर्वाभ्यावर्ती मुरु- हि० २।१०८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, अभ्युद् , 1 उठना, ऊपर जाना 2. की ओर जाना, मिलने के लिए आगे बढ़ना, अभ्युप , सहमत होना, स्वीकार करना, जिम्मेवारी लेना, मानना, मंजूर करना, अपनाना, अव , 1. आना, पहुँचना, विचारना, समझना, विश्वास करना परस्त्रावमन्यते एव --श० १, कर्म शान्तमिन्द्रियधिप्रीति श्रान्त इत्यवगच्छति मूर्खः--मृच्छ० १, भग० १०।४१, रघु० ८।८८, भट्टि० ५।८१ 2. विचार करना, मानना, समझना (प्रेर०) बहन करना, प्रकट करना, संकेत करना, जाहिर करना, कहना भट्टि० १०।६२ आ , 1. आना, पहुँचना 2. आ जाना, प्राप्त करना, (विशेष दशा को) पहुँच जाना (प्रेर०) 1. ले जाना, लाना, बहन करना अगमितापि विदूरम् गीत० १२ 2. सोचना, अध्ययन करना-- रघु० १०।७१, 3. प्रतीक्षा करना (आ०), उद् , उठना, ऊपर जाना--असह्यवातोद्गतरेणुमण्डला

कनु० १।१० अने० पा० 2. अंकुर फूटना, दिखाई देना विक्रम० ४।२३ 3. उदय होना, निकलना, पैदा होना, जन्म लेना इक्ष्वाकुतातः पौरवेयमुपस्थेयः शुश्रुवुः कथाः रघु० ७।१६, अमर० ९१ 4. प्रसिद्ध या विख्यात होना - रघु० १८।२०, उप- , 1. जाना, निकट जाना, प्राप्त करना, पहुँचना—रघु० ६।८९ 2. पैठना, अन्दर घुसना हि० ९।३९ 3. अनुभव करना, भुगतना —तपो घोरमुपासनम्- रामा० 4. अवस्था को प्राप्त होना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना -प्रतिकलतामुपगते हि विधौ--हि० ९।६, तामप्रार्थां-लत्वमिवोपगम्यमुं- कु० १।८ 5. मार्ग लेना, स्वीकृति देना, सहमत होना 6. संभोग के लिए स्त्री के निकट जाना सुप्तां भर्ता प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति—मनु० ३।३४, ४।८०. उपा , 1. आ जाना, पहुँचना (स्थान पर या व्यक्ति के पास) 2 पहुँच जाना, अवस्था को चले जाना, प्राप्त करना--तृप्तिमुपागतः, पञ्चत्वमुपागतः आदि के लिए देखो मरण करना--याज्ञ० ३।१४६, नि-, 1. पहुँच

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, हासिल करना —यत्र दुःखान्तं च निगच्छन्ति- भग० १८।३६, ९।३१ 2. ज्ञान प्राप्त करना, सीखना, **निस् [निर्]**—, 1. बाहर जाना, जुदा होना—प्रकाशं निर्गतः—श० ४, हृतबहुपरिच्छेदादाशु निर्गत्य कक्षात्—कथु० १।२७, मनु० ९।८३, श० ६।३, अमरु ६१ 2. हटाना, जैसा कि— 'निर्गत-विशङ्कः' में 3. (किसी रोग से चिकित्सा द्वारा) मुक्त होना **परा**—, 1. वापिस आना, तदयं परागत एवार्हम् —उत्तर० ५ 2. घेरना, लपेटना, व्याप्त करना—स्फुट-परागपरागतपङ्कजम्—शि० ६।२, **परि**—, 1. जाना, चक्कर लगाना,—तं हयं तत्र परिणम्य रामा०, गथा हि मेरुः सूर्यस्य नित्यशः परिगम्यते—महा० 2. घेरना, शि० ९।२६, भट्टि० १०।१, सेनापरिगत—आदि 3. सर्वत्र फैलना, सब दिशाओं में व्याप्त होना 4. प्राप्त करना · वृषलताम्—आदि 5. जानना, समझना, सीखना रघु० ७।७१ 6. मरना, (इस संसार से) चले जाना —जय मेरुयो जातात्त्विरपरिगता एव खलु ते—भर्तृ० ३।३८ 7. प्रभावित करना, ग्रस्त करना, जैसा कि —क्षुधया परिगतः—में, **पर्या**—, 1. निकट जाना, की ओर जाना 2. पूरा करना, समाप्त करना 3. जीतना, **अभिभू करना, प्रति**—, 1 वापिस जाना 2. बढ़ना, की ओर जाना **प्रत्या**—, वापिस आना, लौट आना **प्रत्युद्**—, (सत्कार करने के लिए) आगे जाना, बढ़ना या मिलना · प्रत्युज्जयामातिथिमतिथेयः · · रघु० ५।२, प्रत्युदगच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रियः —गीत० ११, भामि० ३।३, **वि**, (समय आदि का) 1. बीत जाना,—सन्ध्ययापि सपदि व्यगमि—शि० ९।१७ 2. ओझल होना, अन्तर्धान होना· सलज्जाया लज्जापि व्यपगमादिव दूरं मृगदृशः—गीत० ११, भग० ११।१, मनु० ३।२, ५९, (प्रेर०) व्यतीत करना, बिताना —विगमयत्यनिद्र एव क्षणाः —श० ६।५, **विनिस्**—, 1. बाहर जाना 2. अन्तर्धान होना, ओझल होना **विप्र** अलग होना **सम्**—, (आ० में प्रयुक्त) 1. मिल जाना, इकट्ठे चलना, मिलना, मुकाबला करना · · अक्षपूर्वं समगामि—दश०, एते भगवत्यो कलिन्दकन्यागन्दाकिन्यो संगच्छेते—अनर्घ० ७ 2. सहवास करना, संभोग करना · भार्यां च परमसंगा—पञ्च० १।२०८, मनु० ८।३७८, (प्रेर०) इकट्ठा करना, मिलाना या एकत्र करना —रघु० ७।१७, **समधि**—, 1. निकट पहुंचना 2. अध्ययन करना 3. प्राप्त करना, अभिग्रहण करना यत्ने समधिगच्छन्ति यस्यैते तस्य तद्धनम्—मनु० ८।१६, **समव** —, पूरी तरह से जान लेना, **समुपा**—, 1. पास पहुँचना 2. आ पड़ना ।

गम (वि०) [गम्+अप्] (समास के अन्त में) जाने वाला, हिलने-जुलने वाला, पास जाने वाला, पहुँचाने वाला, प्राप्त करने वाला, हासिल करने वाला आदि खगम, तुरगम, हृदयंगम आदि, **मः** 1. जाना, हिलना-जुलना 2. प्रयाण करना अध्वन्यं काहगमः 3. आक्रमणकारी का कूच करना 4. सड़क 5. अविचारिता, विचारशून्यता 6. ऊपरीतल, अटकलपच्चू निरीक्षण 7. स्त्री-संभोग, सहवास गुर्वङ्गनागमः मनु० ११।५५, याज्ञ० २।२९३ 8. पासे आदि का खेल। सम० **आगमः** आना-जाना ।

गमक (वि०) (स्त्री० **मिका**) [गम्+ण्वुल्] 1. संकेतक, सुझाव देने वाला, प्रणाम, अनुक्रमणी—तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः · भा० १।७ 2. विश्वासोत्पादक ।

गमनम् [गम्+ल्युट्] 1. जाना, गति, चाल श्रोणी-भारादलसगमना मेघ० ८२, इसी प्रकार —गजेन्द्र-गमने —शृंगार० ७ 2. जाना, गति (वैशेषिक इसे पाँच कर्मों में से एक कर्म समझते हैं) 3. निकट पहुँचना, पहुँचना 4. अभियान 5. अनुभव करना, सूंघना 6. प्राप्त करना, पहुँचना 7. सहवास ।

गमिन् (वि०) [गम्+इनि] जाने के विचार वाला —जैसा कि 'प्रातर्गमी' (पुं०) यात्री ।

गमनीय, गम्य (सं० कृ०) [गम्+अनीयर्, यत् वा] 1. सुगम, उपलभ्य विकारस्य गमनोपागमि संवृत्ता· · श० १ 2. सुबोध, आसानी से समझ में आने योग्य 3. अभिप्रेत, निहित, अर्थयुक्त 4. उपयुक्त, वाछित, योग्य—याज्ञ० १।९४ 5. सहवास के योग्य, दुर्जन-गम्या नार्यः—पञ्च० १।२७८, अभिकामां स्त्रियं यत्त्व गम्यां रहसि याचितः, नोपैति महा० 6. (औषधि आदि से) उपचार योग्य—न सम्यो मन्त्राणाम् भर्तृ० १।८९ ।

गम्भारिका, गम्भारी [गम्+भिन् · गम्, तं गमं · बिभर्त्ति बिभर्ति · गम्+भृ+ण्वुल्] टाप्, इत्वम्, गम् · भृ +अण् ङीप्] एक वृक्ष का नाम ।

गम्भीर (वि०) [· · गभीर] रघु० १।३६, मेघ० ६४, ६६,—रः 1. कमल 2. जंजीर, नींव । सम० **वेदिन्** (वि०) (हाथी की भाँति) बुद्धिमान्, अद्वितीय ।

गम्भीरा, गम्भीरिका [गम्भीर+टाप्, गम्भीर+ठन्+टाप्, इत्वम्] एक नदी का नाम· गम्भीरायाः पयसि · · मेघ० ४७ ।

गय: 1. गया प्रदेश तथा उसके आस पास रहने वाले लोग 2. एक राक्षस का नाम,—**या** बिहार में एक नगर जो एक तीर्थ स्थान है ।

गर (वि०) (स्त्री० **री**) [गीर्यते गृ+अच्] निगलने वाला,—**रः** 1. पेय, शराबन 2. चौथाई, सेर 3. निगलना (गरं का भी यही अर्थ है, दे० **गरम्**) 1. जहर 2. विषनाशक ओषधि, **रम्** छिड़कना, दर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना । सम० —**अधिका** 1. लाक्षा नामक क्रीड़ा 2. इस कीड़े से प्राप्त लाल रंग,—**स्त्री** एक प्रकार की मछली,—**द** (वि०) विष देने वाला, जहर देने वाला (—**दम्**) विष,—**व्रतः** मोर ।

गरणम् [गृ+ल्युट्] 1. निगलने की क्रिया 2. छिड़कना 3. विष ।

गरभः [गृ—अभच्] भ्रूण, गर्भरथ बच्चा, दे० गर्भ ।

गरलः, लम् | सिरति जीवनम् गृ+अलच् तारा०] विष, जहर, कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः —गीत० ३, गरलमिव कलयति मलयसमीरम् ४, स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनम्—१० 2. साँप का विष, **सम्** धाम का गड्ढा । सम०—**अरिः** पन्ना, मरकतमणि ।

गरित (वि०) [गर+इतच्] विषयुक्त, जिसे जहर दिया गया हो ।

गरिमन् (पुं०) [गुरु+इमनिच्, गरादेशः] 1. बोझ, भारीपन,—शि० ९।४९ 2. महत्त्व, बड़प्पन, महिमा पंच० १।३० 3. उत्तमता, श्रेष्ठता 4. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसके द्वारा अपने आपको इच्छानुसार भारी या हल्का कर सकना है—दे० सिद्धि ।

गरिष्ठ (वि०) [गुरु—इष्ठन् गरादेशः] 1. सबसे भारी 2. अत्यन्त महत्त्वपूर्ण (गुरु शब्द की उत्तमावस्था)

गरीयस् (वि०) [गुरु+ईयसुन्, गरादेश.] अधिक भारी, अपेक्षाकृत बजनदार, अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण (गुरु की मध्यमावस्था)—मतिरेव बलाद्गरीयसी—हि० २।८६, वह्नय्य तस्यां भार्यां प्राणेभ्योऽपि गरीयसीं—हि० १। ११२, शि० २।२४, ३७ ।

गरुडः [गरुद्भ्यां डयते—डी+ड पृषो० तल्लोपः गृ+उडच्] 1. पक्षियों का राजा (यह 'विनता' नाम की पत्नी से उत्पन्न कश्यप का पुत्र है, यह पक्षियों का राजा, साँपों का वैनायिक शत्रु और अरुण का बड़ा भाई है; एक बार इसकी माता और उसकी सौत कद्रु में 'उच्चैःश्रवा' के रंग के विषय में झगड़ा हुआ, विनता हार गई और शर्त के अनुसार उसे कद्रु की दासी बनना पड़ा । गरुड़, माता की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र के पास गया, वहाँ से साँपों के लिए अमृत का घड़ा लाने में गरुड़ को उसके साथ जूझना पड़ा, अन्त में वह अमृत प्राप्त करने में सफल हुआ, फलतः विनता को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई । परन्तु इन्द्र अमृत का घड़ा साँपों के पास से ले गया । गरुड़ को विष्णु की सवारी चित्रित किया गया है । इसका चेहरा श्वेत, नाक तोते जैसी पर लाल और शरीर सुनहरी है) 2. गरुड़ की शक्ल का बना भवन 3. विशेष सैनिक व्यूह रचना । सम० —**अग्रजः** सूर्य के सारथि अरुण का विशेषण,—**अङ्कः** विष्णु का विशेषण,—**अङ्कितम्—अङ्कम्** (पुं०) —**उत्तीर्णम्** पक्षी,—**ध्वजः** विष्णु की उपाधि,—**व्यूहः** एक प्रकार की विशेष सैनिक व्यवस्था दे० (3.) ऊपर ।

गरुत् (पुं०) [गृ (गृ)+उति] 1. पक्षी के पर, बाजू 2. खाना, निगलना । सम०—**योधिन्** (पुं०) बटेर ।

गरुत्मत् (वि०) [गरुत्+मतुप्] पक्षी—**गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः**—रघु० ३।५७, (पुं०) 1. गरुड़ 2. पक्षी ।

गरुलः [=गरुडः, इत्य लः] गरुड़, पक्षियों का राजा ।

गर्गः [गृ+ग] 1. एक प्राचीन ऋषि, ब्रह्मा का एक पुत्र 2. साँड़ 3. केचुवा (ब० व०) गर्ग की संतान । सम० —**स्रोतः** (नपुं०) एक तीर्थ ।

गर्गरः [गर्ग इति शब्दं राति—गर्ग+रा+क] 1. भँवर, जलावर्त 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 3. एक प्रकार की मछली 4. मथानी, दही बिलोने का मटका,—**री** मथानी, पानी की गागर ।

गर्गाटः [गर्ग इति शब्देन अटति—गर्ग+अट्+अच्] एक प्रकार की मछली ।

गर्ज् [रुदा० पर० चुरा० उभ०—गर्जति, गर्जयति-ते, गर्जित] 1. दहाड़ना, गुर्राना—गर्जन् हरिः साम्प्रसि लीलकुञ्जे- भट्टि० २।९, १५।२१, रणे न गर्जन्ति वृथा हि शूराः—रामा०, रुष्टो गर्जति वातिदर्पितबली दुर्योधनो वा शिखी मृच्छ० ५।६ 2. एक गहरी और गड़गड़ाती हुई गर्जना करना—यदि गर्जति वारिधरो गर्जतु तत्राम निष्फुराः पुरुषाः—मृच्छ० ५।३२, (और इस अंक के दूसरे कई श्लोकों में) **गर्जति** शरदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः · उद्भट, **अनु—**, बदले में गड़गड़ाना, गूंजना—कु० ६।४०, **प्रति—**, 1. चिंघाड़ना, दहाड़ना (आलं०) 2. मुकाबला करना विरोध करना—अयोहृदयः प्रतिगर्जतां—रघु० ९।९ ।

गर्जः [गर्ज+घञ्] 1. हाथियों की चिंघाड़ 2. बादलों की गरज या गड़गड़ाहट ।

गर्जनम् [गर्ज्—ल्युट्] 1. दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, गड़गड़ाना 2. (अतः) आवाज, कोलाहल 3. आवेश, क्रोध 4. संग्राम, युद्ध 5. झिड़की ।

गर्जा, गर्जिः [गर्ज—टाप्, गर्ज्+इन] बादलों की गड़गड़ाहट, गरज ।

गर्जित (वि०) [गर्ज्+क्त] गर्जा हुआ, चिंघाड़ा हुआ, —**तम्** बादलों की गरज, या गड़गड़ाहट,—**ताः** चिंघाड़ता हुआ, जिसके मस्तक से मद झरता है ।

गर्तः, —र्तम् [गृ+क्त्] कोटर, छिद्र, गुफा—**ससत्त्वेषु गर्तेषु**—मनु० ४।४७, २०३, (इस अर्थ में 'गर्ता' भी), —**र्तः** 1. कटिप्रदेश 2. एक प्रकार का रोग 3. एक देश का नाम, त्रिगर्त का एक भाग । सम०—**आशयः** चूहे की भाँति बिल में रहने वाला जानवर ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गर्तिका [गर्तः अस्त्यस्याः—गर्त+ठन्,] जुलाहे का करघा, खड्डी, (क्योंकि जुलाहा अपनी खड्डी पर बैठते समय पैर भूमि के नीचे गड्ढे में रखता है)।

गर्द् (स्वा० पर०, चुरा० उभ०—गर्दति, गर्दयति,—ते) शब्द करना, दहाड़ना।

गर्दभः (स्त्री०—भी) [गर्द्+अभच्] 1. गधा—न गर्दभो वाजिघुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, प्राप्ते तु षोडशे वर्षे गर्दभी ह्यप्सरायते। सुभा०, गधे की तीन दशाएँ विशेषताएँ हैं:—अविश्रान्त बहेद्भारं शीतोष्णं च न विन्दति, संसंतोषस्तथा मित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात्—चाण० ७० 2. गधा, बु,—भम् सफेद कुमुदिनी। सम०—अण्डः,—इकः 1. एक वृक्षविशेष 2. वृक्ष, —आह्वयम् सफेद कमल,—गदः चर्मरोगविशेष।

गर्धः [गृध्+घञ्, अच् वा] 1. इच्छा, उत्कंठा 2. लालच।

गर्धन, गर्धित (वि०) [गृध्+ल्युट्, क्त वा] लोभी, लालची।

गर्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गर्ध+इनि] 1. इच्छुक, लालची, लोभी—नवाऽऽमिषगर्धिनः—मनु० ४।२८ 2. उत्सुकतापूर्वक किसी कार्य का पीछा करने वाली।

गर्भः [गृ+भन्] 1. गर्भाशय, पेट —गर्भेषु वसतिः पंच० १, पुनर्गर्भे च संभवम्—मनु० ६।६३ 2. भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, गर्भाधान —नरपतिकुलभूत्य गर्भमाधत्त राज्ञी—रघु० २।७५, गर्भोऽभवद्वाजपत्न्याः—कु० १।१९ 3. गर्भधान कलि-गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मण-स्योपनयनम्—मनु० २।३६ 4. (गर्भस्थ) बच्चा श० ६ 5. बच्चा, अण्डशावक 6. किसी वस्तु का अभ्यन्तर, मध्य या भीतरी भाग (इस अर्थ में समस्त पद)—हिम-गर्भमयूखैः—शृं० ३।३, अग्निगर्भां शमीमिव - ४।१, रघु० ३।९, ५।१७, ९।५५, शि० १।६२, मा० ३।१२, मुद्रा० १।१२ 7. आकाश-प्रभृति अर्थात् सूर्य किरणों द्वारा आठ मासतक शोषित और आकाश में संचित वाष्परशि जो बरसात में फिर इस धरती पर बरसती है, तु० मनु० ९।३०५ 8. भीतरी कमरा, प्रसूतिकागृह, जच्चा खाना 9. अभ्यन्तरोण प्रकोष्ठ 10 छिद्र 11 अग्नि 12. आहार 13. कटहल का कटीला छिलका 14. नदी का पाट, विशेषतः भादपद चतुर्दशी को गंगा का जल कि वर्षाऋतु अपने यौवन पर होती है तथा दरिया उमड़ कर चलते हैं। सम०—अङ्कः (गर्भेऽङ्कः भी) अंक के बीच में विष्कंभक जैसा कि उत्तर रामचरित के सातवें अंक में कुश और लव के जन्म का दृश्य, या बालरामायण में सीतास्वयंवर, सा० द० परिभाषा देता है—अङ्कोदरप्रविष्टो यो मुख्यङ्कारामूला-दिमान् अङ्कोऽपरः स गर्भाङ्कः सबीजः फलदानपि। २७९,—अवक्रान्तिः (स्त्री०) आत्मा का गर्भ में प्रविष्ट होना,—आगारम् 1. बच्चेदानी 2. भीतरी कमरा, निजी कमरा, अन्तःपुर 3. प्रसूतिकागृह 4. मन्दिर का पूजाकक्ष, जहाँ देवता की मूर्ति स्थापित रहती है, —आधानम् 1. गर्भ रहना, गर्भधारण गर्भाधानलक्षण-परिचयान्नूनमयोद्वहमालाः (बलाकाः)—मेघ० १ 2. एक संस्कार, ऋतुस्नान के पश्चात् एक शुद्धि संस्कार (यह संस्कार ही धार्मिक पक्ष में विवाह की पूर्णता को बोध ठहराता है) याज्ञ० १।११, —आशयः योनि, बच्चेदानी, आस्रावः गर्भ का कच्चा गिरना, गर्भपात, —ईश्वरः जन्म से ही धनी, जन्मजात धनी, पैदाइशी राजा या रईस, —उत्पत्तिः भ्रूण की रचना,—उपघातः कच्चे गर्भ का गिर जाना, उपघातिनी वह गाय या स्त्री जिसे बिना ऋतु के गर्भ का स्राव हो जाय,—कर (वि०) गर्भ धारण करने वाला, कालः ऋतु काल, गर्भधारण का समय, कोशः,—थः गर्भाशय, बच्चेदानी, क्लेशः गर्भधारण करने का कष्ट, प्रसव की पीड़ा, —क्षयः गर्भ की कच्ची अवस्था में गिर जाना,—गृहम्, —भवनम्, वेश्मन् (नपुं०) 1. घर के भीतर का कमरा, घर का मध्यभाग 2. प्रसूतिकागृह 3. मन्दिर का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित हो —निर्मेयं गर्भभवनात्—मा० १, ग्रहणम् गर्भधारण, गर्भ होना, घातिन् (वि०) गर्भपात कराने वाला, चलनम्, गर्भस्पन्दन, गर्भाशय में बच्चे का हिलना-डोलना,—च्युतिः (स्त्री०) 1. जन्म, प्रसूति 2. गर्भस्राव, दासः, सी जन्म से ही गुलाम (तिरस्कार सूचक शब्द), द्रुह् (वि०) (कर्तृ० ए० व० ध्रुक्) गर्भपात करने वाला, धरा गर्भवती,— धारणम्, धारणा गर्भ-स्थिति, गर्भ में सन्तान को रखना, ध्वंसः गर्भपात, पाकिन् (पुं०) साठ दिन में पकने वाला धान, साठी चावल, —पातः चौथे महीने के बाद गर्भ का गिर जाना, पोषणम्, भर्मन् (नपुं०) गर्भस्थ बालक का पालन-पोषण—अवृष्टिते भिषग्भिरालोक्यैरुप गर्भमर्पणि रघु० ३।६२ मण्डपः शयनागार, प्रसूतिकागृह, —मासः वह महीना जिस में गर्भ रहे,—मोचनम् प्रसव, बच्चे का जन्म, योषा गर्भवती स्त्री (आल०) बही हुई गंगा जब कि उसका पानी किनारों से बाहर बहता हो, —रक्षणम् गर्भस्थ बालक की रक्षा करना,—रूपः, —रूपकः बच्चा, शिशु, तरुण, लक्षणम् गर्भ हो जाने का चिह्न —लम्भनम् गर्भ की रक्षा और उसके विकास के लिए किया जाने वाला एक संस्कार, वसतिः (स्त्री०)—वासः 1. गर्भाशय—मनु० १२।७८ 2. गर्भाशय में रहना,—विच्युतिः (स्त्री०) गर्भाधान के आरम्भ ही में गर्भस्राव हो जाना,—वेदना प्रसवपीड़ा, —व्याकरणम् गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि,—शङ्कः एक प्रकार का औजार जिससे मरे हुए बच्चे को पेट से निकाला जाता है,—शय्या गर्भाशय,—संभवः—संभूतिः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(स्त्री०) गर्भवती होना,—स्थ (वि०) 1. गर्भाशय में विद्यमान 2. अभ्यन्तर, आन्तरिक, ०स्रावः गर्भ गिर जाना, गर्भ का कच्ची अवस्था में बह जाना—दरं गर्भस्रावः—पंच० १, याज्ञ० ३।२० मनु० ५।६६।

गर्भकः [गर्भ+कन्] बालों के बीच धारण की हुई पुष्पमाला,—कम् दो रातों और उनके बीच के दिन का समय।

गर्भगतः [गर्भस्थ अण्ड इव ष० त०] नाभि का बढ़ जाना।

गर्भवती [गर्भ+मतुप्—ङीप्, वत्वम्] गर्भिणी स्त्री।

गर्भिणी [गर्भ+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री (चाहे मनुष्य की हो या पशु की)—गोगर्भिणीप्रियतमोदपमालभारि-सेव्योपकण्ठविपिनान्यवलयो भवन्ति—मा० ९।२, याज्ञ० १।१०५, मनु० ३।११४। सम० अवेक्षणम् दाईपना, गर्भवती स्त्री और नवजात बच्चे की सेवा और परिचर्या,—दोहदम् गर्भवती स्त्री की प्रबल इच्छाएँ या रुचि, —व्याकरणम्,—व्याकृतिः (स्त्री०) (आयुर्वेद शास्त्र का एक विशेष अङ्ग) गर्भ के विकास का विज्ञान।

गर्भित (वि०) [गर्भ+इतच्] गर्भयुक्त, भरा हुआ।

गर्भितुष्ट (वि०) [अलुक् स० त०] 1. बालक की भाँति गर्भ में ही संतुष्ट 2. आहार और सन्तान के विषय में संतुष्ट 3 आलसी।

गर्भुत् (स्त्री०) [गृ—उति, भुट्] 1. एक प्रकार का घास 2. एक प्रकार का तरकुल 3. सोना।

गर्व (स्वा० पर०—गर्वति, गर्वित) घमंडी या अहंकारी होना, (केवल भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त, जो कि विशेषण ही समझा जाता है और गर्व से बना है) कोऽर्थान्प्राप्य न गर्वितः ०पंच० १।१४६।

गर्वः [गर्व+घञ्] 1. घमंड, अहंकार या कुरु यत्नजन-यौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम् ०मोह० ४, मुधे-वानीं यौवनगर्वं वहसि—मालवि० ४ 2. अलं० शास्त्र में ३३ व्यभिचारिभावों में से एक—रूपधनविद्यादि-प्रयुक्तात्मोत्कर्षज्ञानात्तीवपरावहेलनं गर्वः—रस०, या सा० द० के अनुसार—गर्वो मदः प्रभावश्रीविद्याश्रुकुलादिजः, अवज्ञासंविलासाङ्गदर्शनाविनयादिकृत्।

गर्वाटः [गर्व+अट्+अच्] चौकीदार, द्वारपाल।

गर्ह् [स्वा०, चुरा० आ० (कभी कभी पर० भी)—गर्हते, गर्हयते, गर्हित 1. कलंक लगाना, निन्दा करना, झिड़की देना ०विषमां हि दशां प्राप्य दैवं गर्हयते नरः हि० ४।३, मनु० ४।१९९ 2. दोषी ठहराना, आरोप लगाना 3. खेद प्रकट करना, वि—, कलंकित करना निन्दा करना, झिड़की देना—तं विगर्हन्ति साधवः—मनु० ९।६८, ३।४६, ११।५२।

गर्हणम्, —णा [गर्ह+ल्युट्, गर्ह+युच्+टाप्] निन्दा, कलंक, झिड़की, दुर्वचन।

गर्हा [गर्ह+अ+टाप्] दुर्वचन, निन्दा।

गर्ह्य (वि०) [गर्ह+ण्यत्] निन्दनीय, निन्दा के योग्य, कलंक दिये जाने के योग्य—गर्ह्यं कुर्याद्भृशं कुले—मनु० ५।१४९। सम०—वादिन् (वि०) अपशब्द कहने वाला, दुर्वचन बोलने वाला।

गल् (स्वा० पर०—गलति, गलित) 1. टपकाना, चुआना, पसीजना,—चूता—जलमिव गलत्युपदिष्टम् ०का० १०३, अल्हकपोलमूलगलितैः (अम्बुभिः)—अमरु० २६।९१, भामि० २।२१, रघु० १९।२२ 2. टपकना, या गिरना —थरदमच्छगलद्गलनोपमा० शि० ६।४२, ९।७५, प्रतोदा जगलुः— भट्टि० १४।९९, १७।८७, गलद्धमिल्ल ०गीत० २, रघु० ७।१०, मेघ० ४० 3. ओझल होना, अन्तर्धान होना, गुजर जाना, हट जाना शैशवेन सह गलति गुरुजनस्नेहः ०का० २८९, विद्या प्रमादस्खलितामिव चिन्तयामि—चौर०, भर्तृ० २।४४, भट्टि० ५।४३, रघु० ३।७० 4. खाना, निगलना (गृ से संबद्ध) प्रेर० या चुरा० उभ० (भू० क० कृ० —गलित)—1. उड़ेलना 2. निचारना, निचोड़ना 3. बहना (आ०), निस्—, टपकना, रिसना, चूना—रघु० ५।१७, पर्या—, टपकाना, भट्टि० २।४, वि—, 1. टपकाना ०जिक्रम० ४।१० 2. टपकना, चूना 3. ओझल होना, अन्तर्धान होना।

गलः [गल्—अच्] 1. कंठ, गर्दन ०न गरलं गले कस्तूरीयं—तु० अज्ञागलस्तनः ०भर्तृ० १।६४, अमरु ८८ 2. साल वृक्ष की लाख 3. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र। सम० अङ्कुरः गले का एक विशेष रोग (सूजन), ०उज्जूषः घोड़े की गर्दन के बाल, अयाल,—ओघः गले की रसौली,—कम्बलः गाय बैल की गर्दन का नीचे लटकने वाला चमड़ा, झालर,—गण्डः गंडमाला, गले का एक रोग जिसमें गांठ सी निकल आती है,—ग्रहः, ०ग्रहणम् 1. गला पकड़ना, गला घोटना, श्वासावरोध करना 2. एक प्रकार का रोग 3. मास में कृष्णपक्ष के कुछ दिन अर्थात् चौथ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी और तीन इससे आगे के,—चर्मन् (नपुं०) अन्नानाली, गला,—द्वारम् मुँह,—मेखला हार,—वार्त (वि०) 1. गले की क्रिया में निपुण, खूब खाने और हजम करने वाला, तन्दुरस्त, रक्तश्च-दृश्यन्ते चैव तीर्घेषु गलवार्तास्तथैवान्नैः—पंच० ३, अने० पा० 2. पिछलग्गू, चाटुकार, व्रतः भोर, ०शुण्डिका उपजिह्वा, शुण्डी गर्दन की ग्रन्थियों की सूजन, ०स्तनी (गले-स्तनी भी) बकरी,—हस्तः 1. गले से पकड़ना, गला घोटना, अर्धचन्द्र या गरदनिया 2. अर्धचन्द्राकार बाण, तु० अर्धचन्द्र, ०हस्तित (वि०) गले से पकड़ा हुआ, गर्दनिया देकर निकाला हुआ, गला घोटा हुआ।

गलकः [गल्+बुन्] 1. कण्ठ, गर्दन 2. एक प्रकार की मछली।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गलगम् [गल्+ल्युट्] 1. रिसना, चूना, टपकना 2. चूना, पिघल जाना।

गलगलिका, गलगली [गल्—शतृ+ङीष्, नुम्,+कन्+टाप् इत्वम्,—गल्+शतृ+ङीष्, नुम्] 1. छोटा घड़ा 2. छोटा घड़ा जिसकी पेंदी में छेद करके देव मूर्ति पर टांग देते हैं, जिससे कि उस छेद से बराबर जल टपकता रहता है।

गलिः [गल्+इन वा] हृष्ट पुष्ट परन्तु मट्ठा बैल। दे० गडि।

गलित [भू० क० कृ०) [गल्+क्त] 1. टपका हुआ, नीचे गिरा हुआ 2. पिघला हुआ 3. रिसा हुआ, बहता हुआ 4. नष्ट, ओझल, वञ्चित 5. बंधन-रहित, ढीला 6. खाली हुआ, चू चू कर जो खाली हो गया हो 7. छाना हुआ 8. क्षीण, निर्बल किया हुआ। सम०—कुष्ठम् बढ़ा हुआ या असाध्य कोढ़ जब कि हाथ पैर की अंगुलियां भी गल कर गिर जाती हैं,—दन्त (वि०) दन्तहीन,—नयन जिसकी आंखों में देखने की शक्ति न रहे, अंधा।

गलितकः [गलित इव कायति—कै+क] एक प्रकार का नृत्य।

गलेगण्डः [गलकः स० त०] एक पक्षी जिसके गले से मांस की थैली सी लटकती रहती है।

गल्भ् (स्वा० आ०—गल्भते, गल्भित) साहसी या विश्वस्त होना, ध्र—, साहसी या आत्म विश्वासी होना—या कर्मधन सम्बोधनेन प्राणभिप्रियतमं प्रजगल्भे— शि० १०।१८, न लौक्तिकच्छिद्रकरी शलाका प्रगल्भते कर्मणि टङ्किकायाः—विक्रमांक १।१६, टांकी का काम करने में सक्षम या साहसी नहीं हो सकता।

गल्भ (वि०) [गल्भ्+अच्] साहसी आत्मविश्वासी, जीवट का।

गल्या [गलानां कण्ठानां समूहः—गल्+यत्+टाप्] कण्ठों का समूह।

गल्लः [गल्+ल] गाल, विशेषकर मुख के दोनों किनारों का पार्श्ववर्ती गाल (अलं० शास्त्री इस शब्द को 'ग्राम्य' अर्थात् गंवारू मानते हैं—तु०, काव्य० ७ में दिए गए उदाहरण का—ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भल्लं जल्पति मानुषः, परन्तु तु० भवभूति के प्रयोग की —पातालप्रतिमल्लगल्लविवरप्रक्षिप्तसप्तार्णवम्—मा० ५।२२। सम०—खातूरी गाल के नीचे रखा जाने वाला छोटा गोल तकिया।

गल्लकः [गल्+विच्,=गल्ल, तं लाति ला+क, ततः स्वार्थे कन्] 1. शराब का गिलास 2. पुखराज, नीलमणि, दे० नी० 'गल्वर्क'।

गल्लकी मदिरा पीने का प्याला।

गल्लर्कः [गल्लमणिभेदः तस्य अर्कः दीप्तिरिव—ब० स०] 1. स्फटिक 2. वैदूर्यमणि 3. कटोरा, शराब पीने का गिलास।

गल्ल् (भ्वा०—आ०—गल्लते, गल्लित) कलंक लगाना, निन्दा करना।

गव [कुछ समासों, विशेष कर स्वरों से आरंभ होने वाले शब्दों के आरम्भ में 'गो' शब्द का स्थानापन्न पर्याय] सम०—अक्षः रोशनदान, झरोखा—विलोलनेत्रभ्रमरैर्गवाक्षाः सहस्रपत्राभरणा बभूवुः—रघु० ७।११, कुवलयितगवाक्षो लोचनैरङ्गनानां—७।९३, कु० ७।५८, मेघ० ९८, °जालम् —जाली, झिलमिली, —अञ्चित (वि०) खिड़कियों वाला, —अग्रम् गौओं का झुंड (गोऽग्रम्, गोअग्रम् या गवाग्रम् लिखा जाता है), —अजनम् चरागाह, गोचरभूमि,—अजनी 1. चरागाह 2. खोर, नांद जिसमें पशुओं के खाने के लिए घास रक्खा जाता है,—अजिका लाख,—अह्नं (वि०) गाय के मूल्य का,—अधिकम् गाय और भेड़,—अश्नः 1. मोची 2. जाति से बहिष्कृत,—अश्वम् बैल और घोड़े, —आहृति (वि०) गाय की शक्ल वाला,—आह्निकम् प्रतिदिन गाय को चारा देने की नाप,— इन्द्रः 1. गौओं का स्वामी 2. बढ़िया बैल,— ईशः,—ईश्वरः गौओं का स्वामी,—उद्धः सर्वोत्तम गाय या बैल।

गवयः [गो+अय्+अच्] बैल की जाति—गोसदृशो गवयः—तर्क०—दृष्टः कथंचिद्गवयविविक्तैः—कु० १।५६, ऋतु० १।२३।

गवालूकः [गवय शब्दाय अलति—गव+अल्+ऊकञ्] =गवय।

गविनी [गो+इनि+ङीप्] गौओं का झुंड या लहंडा।

गवेडुः,—धुः,—धुका [?] पशुओं को खिलाने का चारा, घास।

गवेडुकम् गेरू।

गवेष् (स्वा० आ०—चुरा० पर०—गवेषते, गवेषयति, गवेषित) 1. ढूंढना, खोजना, तलाश करना, पूछ ताछ करना—तस्मादेष मतः प्राप्तस्तमेवान्यो गवेष्यताम् —कथा० ५५, १७६ 2. प्रयत्न करना, उत्कट इच्छा करना, प्रबल उद्योग करना- गवेषयाणं महिषीकुलं जलम्—ऋतु० १।२१।

गवेष (वि०) [गवेष्+अच्] खोजने वाला,—षः खोज, पूछताछ।

गवेषणम्,—ना [गवेष्+ल्युट्, युच्+टाप् वा] किसी वस्तु की खोज, या तलाश।

गवेषित (वि०) [गवेष्+क्त] खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ।

गव्य (वि०) [गो+यत्] 1. गौ आदि पशुओं से युक्त 2. गौओं से प्राप्त दूध, दही आदि 3. पशुओं के लिए उपयुक्त,—व्यम् 1. गौओं की हेड़, मवेशी 2. गोचर-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूमि 3. गाय का दूध 4. धनुष की डोरी 5. रंगीन बनाने की सामग्री, पीला रंग,—ब्या 1. गौओं की हेड़ 2. दो कोस के बराबर दूरी 3. धनुष की डोरी 4. रंग देने की सामग्री, पीला रंग।

गव्यूतम्,—तिः (स्त्री०) [गो: यूतिः पृषो०] 1. एक कोस या दो मील की दूरी की माप 2. दो कोस के बराबर दूरी का माप।

गह्, (चुरा० उभ०—गहयति—ते) 1. (जंगल की भांति) सघन या सांद्र होना 2. गहराई तक पहुँचना।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1. गहरा, सघन, सांद्र 2. अभेद्य, अप्रवेश्य, अलंघ्य, दुर्गम 3. दुर्बोध, अभ्यास्क्येय, रहस्यपूर्ण—सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः—पंच० १।२८५, मर्तृ० २।५८, गहना कर्मणो गतिः—भग० ४।१७, शा० १।८ 4. कठोर, कठिन पीड़ाकर, कष्टकर—गहनः संसारः—शा० ३।१५ 5. गहरा किया हुआ, तीव्र किया हुआ—मा० १।३०, —नम् 1. गह्वर, गहराई 2. जंगल, झाड़ी या मुरमुट, घोर या अप्रवेश्य जंगल—यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम्—गीत० ७, भामि० १।२५ 3. छिपने का स्थान 4. गुफा 5. पीड़ा, दुःख।

गह्वर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [गह्+वरच्] गहरा, दुस्तर,—रम् 1. रसातल, अथाह खाई 2. झाड़ी या मुरमुट, जंगल 3. गुफा, कन्दरा गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश—रघु० २।२६, ४६, ऋतु० १।२१ 4. दुर्गम स्थान 5. छिपने की जगह 6. पहेली 7. पाखंड 8. रोना, चिल्लाना,—रः लतामण्डप, निकुंज,—री 1. गुफा, कन्दरा, खोह।

गा [गै+डा] गाना, श्लोक।

गाङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [गङ्गा+अण्] गंगा में या गंगा पर होने वाला 2. गंगा से प्राप्त या गंगा से आया हुआ—गाङ्गमम्बु सितमम्बु यामुनं कज्जलाभमुभयत्र मज्जतः—काव्य० १०, कु० ५।३७,—गः 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय की उपाधि,—गम् 1. विशेष प्रकार का वर्षा का जल (जो स्वर्गीय गंगा से आने वाला माना जाता है) 2. सोना।

गाङ्गेटः,—टेयः [गाङ्ग+अट्—अच्, तक० परस्प, पृषो०] झींगा मछली, या जलबर्बिचक।

गाङ्गेयः [गङ्गा+फिञ्] भीष्म या कार्तिकेय का नाम।

गाङ्गेय (वि०) (स्त्री०—यी) [गङ्गा+ढक्] गंगा पर या गंगा में होने वाला,—यः भीष्म या कार्तिकेय का नाम,—यम् सोना।

गाजरम् [गाजं मदं राति, गाज+रा+क] गाजर।

गाण्डिक्यः— बत्तख।

गाढ (भू० क० कृ०) [गाह्+क्त] 1. डूबकी लगाया हुआ, गोता लगाया हुआ, स्नान किया हुआ, गहरा घुसा हुआ 2. बार २ डुबकी लगाया हुआ, आश्रित, संघन या घना बना हुआ—तपस्विगाढां तमसां प्राप नदीं तुरंगमेण—रघु० ९।७२ 3. अत्यंत दबाया हुआ, कस कर खींचा हुआ, पक्का, मुंदा हुआ, कसा हुआ —गाढाङ्गदैर्बाहुभिः—रघु० १६।६०,—गाढालिङ्गन —अमरु ३६, घुट कर छाती से लगाना—चौर० ६ 4. सघन, सांद्र 5. गहरा, दुस्तर 6. बलवान्, प्रचण्ड, अत्यधिक, तीव्र—गाढोत्कण्ठाललितललुलितैरङ्गकैस्ताम्यतीति—मा० १।१५, मेघ० ८३, प्राप्तगाढप्रकम्पाम् —शृंगार० १२, अमरु ७२, गाढतप्तेन तप्तम्—मेघ० १०२,—ढम् (अव्य०) ध्यानपूर्वक, जोर से, अत्यधिकता के साथ, भरपूर, प्रचण्डता से, बलपूर्वक। सम०—मुष्टि (वि०) बन्द मुट्ठी वाला, लोलुप, कंजूस, (ष्टिः) तलवार।

गाणपत (वि०) (स्त्री०—ती) [गणपति+अण्] 1. किसी दल के नेता से संबंध रखने वाला 2. गणेश से संबंध रखने वाला।

गाणपत्यः [गणपति+यक्] गणेश की पूजा करने वाला, —त्यम् 1. गणेश की पूजा 2. किसी दल का नेतृत्व, चौधरात, नेतृत्व।

गाणितिक्यम् [गणितकानां समूहः—यञ्] रंडियों का समूह।

गाणेशः [गणेश+अण्] गणेश की पूजा करने वाला।

गाण्डिव (डी) वः,—वम् [गाण्डिरस्यस्य संज्ञायां—व पूर्वपददीर्घो विकल्पेन] अर्जुन का बाण (यह बाण सोम ने वरुण को दिया, वरुण ने अग्नि को और अग्नि ने अर्जुन को, जबकि खांडव वन को जलाने में उसने अग्नि की सहायता की) गाण्डिवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।२९ 2. धनुष। सम०—धन्वन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण—मेघ० ४८।

गाण्डीविन् (पुं०) [गाण्डीव+इनि] अर्जुन का विशेषण, तृतीय पांडव राजकुमार—वेणी० ४।

गातानातिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतागत+ठक्] जाने आने के कारण उत्पन्न।

गातानुगतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतानुगत+ठक्] अंधानुकरण से अथवा पुरानी लकीर का फकीर बनने से उत्पन्न।

गातुः [गै+तुन्] 1. गीत 2. गाने वाला 3. गंधर्व 4. कोयल 5. भौंरा।

गात्र (पुं०) (स्त्री०—त्री) 1. गवैया 2. गंधर्व।

गात्रम् [गै+त्रन्, गातुरिदं वा, अण्] 1. शरीर,—अपचितमपि गात्रं व्यायत्स्वादलक्ष्यं—श० २।४, तपति तनुगात्रि मदनः—३।७ 2. शरीर का अंग या अवयव—गुरुपरितापानि न ते गात्राण्युपचारमर्हन्ति श० ३।१८, मनु० ३।२०९, ५।१०९ 3. हाथी के अगले पैर का ऊपरी भाग। सम०—अनुलेपनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्वर्तन,—आवरणम् ढाल,—उत्सादनम् सुगंधित पदार्थों से शरीर को साफ करना,—कर्षण (वि०) शरीर को कृश या दुर्बल बनाने वाला—मार्जनी तौलिया,—यष्टिः दुबला पतला शरीर--रघु० ६।८१,—रुहम् रोंगटे, बाल,—त्वक् दुबला-पतला और सुकुमार शरीर, इकहरा बदन,—संकोचिन् (पुं०) आऊ चूहा, साही (उछलते या छलांग लगाते समय यह अपने शरीर को सिकोड़ लेता है—इसीलिए यह नाम पड़ा),—संप्लवः छोटा पक्षी, गोताखोर।

गात्यः [गै+क्त] गीत, भजन।

गात्रकः,-त्रिकः [गै+ण्वुल्, गात्र+ठन्] 1. संगीतवेत्ता, गवैया 2. पुराणों अथवा धार्मिक काव्यों का लय के साथ गायन करने वाला।

गाथा [गाथ+टाप्] 1. छन्द 2. धार्मिक श्लोक या छन्द जो वेदों से संबंध न रखता हो 3. श्लोक, गीत 4. एक प्राकृत बोली। सम०--कारः प्राकृत काव्यकार।

गाथिकः [गाथा+कन्+टाप्, इत्वम्] गीत, श्लोक --याज्ञ० १।४५।

गाध् (स्वा० आ०—गाधते, गाधित) 1. खड़ा होना, ठहरना, रहना 2. कूद करना, गोता लगाना, डुबकी लगाना—गाधितासे नभो भूयः भट्टि० २२।२, ८।१ 3. खोजना, तलाश करना, पूछ-ताछ करना 4. संकलित करना, गूथना या धागे में पिरोना।

गाध (वि०) [गाध्+घञ्] तरणीय, जो बहुत ठहरा न हो, उथला—संरितः कुर्वती गाधाः पथश्चाडयानकर्दमान्—रघु० ४।२४, तु० अगाध,--धम् 1. उथली या छिछली जगह, घाट 2. स्थान, जगह 3. लालसा, अतितृष्णा 4. पेंदी।

गाधिः,-गाधिन् (पुं०) [गाध्+इन्, गाध+इनि] विश्वामित्र के पिता का नाम (वह इन्द्र का अवतार तथा राजा कौशाम्ब के पुत्र के रूप में उत्पन्न माना जाता है)। —जः,-नन्दनः-सुतः विश्वामित्र का विशेषण, --नगरम्-पुरम् कान्यकुब्ज (वर्तमान कन्नौज) का विशेषण।

गाधेयः [गाधि+ढक्] विश्वामित्र की उपाधि।

गानम् [गै+ल्युट्] गाना, भजन, गीत।

गान्त्री [गन्त्री+अण्+ङीप्] बैलगाड़ी।

गान्दिनी [गो+दा+णिनि, पृषो०] 1. गंगा का विशेषण 2. काशी की एक राजकुमारी, स्वफल्क की पत्नी तथा अक्रूर की माता। सम०--सुतः 1. भीष्म 2. कार्तिकेय तथा 3. अक्रूर का विशेषण।

गान्धर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [गन्धर्वस्येदम् - अण्] गंधर्वों से संबंध रखनेवाला,—र्वः 1. गायक, दिव्य गवैया 2. आठ प्रकार के विवाहों में से एक—गान्धर्वः समयान्मिथः—याज्ञ० १।६६१, (व्याख्या के लिए दे० 'गंधर्वविवाह') 3. सामवेद का उपवेद जो संगीत से संबंध रखता है 4. घोड़ा,—र्वम् गंधर्वों की कला अर्थात् गाना-बजाना,—कर्णि बेला चाहदत्तस्य गान्धर्वं श्रोतु मतस्य—शिशु० ३। सम०—चित्त (वि०) जिसके मन पर गंधर्व ने अधिकार कर लिया है,—शाला संगीतभवन, गायनालय।

गान्धर्व (वि) कः [गांधर्व+कन्, गन्धर्व+ठक्] गवैया।

गान्धारः [गन्ध+अण्=गान्ध+ऋ+अण्] भारतीय सरगम के सात प्रधान स्वरों में तीसरा (संगीत के संकेतों में बहुधा 'ग' से प्रकट किया जाता है) 2. सिंदूर 3. भारत और पर्शिया के बीच का देश, वर्तमान कंधार 4. उस देश का नागरिक या शासक।

गान्धारिः [गान्ध+ऋ+इन्] शकुनि का विशेषण, दुर्योधन का मामा।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यम्-इञ्] गांधार के राजा सुबल की पुत्री तथा धृतराष्ट्र की पत्नी (गांधारी के १०० पुत्र—एक दुर्योधन तथा ९९ उसके भाई—हुए। उसके पति धृतराष्ट्र अंधे थे इसलिए वह सदैव अपनी आँखों पर पट्टी बांधे रखती थी (संभवतः अपने आप को अपने पति की स्थिति में लाने के लिए), जब कौरव सबके सब मर गये तो गांधारी और धृतराष्ट्र अपने भतीजे युधिष्ठिर के साथ रहे)।

गान्धारेयः [गान्धार्या अपत्यम्-ढक्] दुर्योधन का विशेषण।

गान्धिकः [गन्ध+ठक्] 1. सुगंधित द्रव्यों (इतर तेल फुलेल आदि) का विक्रेता, गंधी 2. लिपिकार, करणिक, —कम् सुगंधित द्रव्य (इतर तेल फुलेल आदि) —पण्यानां गान्धिकं पण्यं किमन्यैः काञ्चनादिकैः--पंच० १।१३।

गामिन् (वि०) [गम्+णिनि] (केवल समास के अंत में प्रयुक्त) 1. जाने वाला, घूमने वाला, सैर करने वाला —वैदिशगामी--मालवि० ५, मृगेन्द्रगामी—रघु० २।३०, शेर की चाल चलने वाला—कुञ्जर° —पंच० २।५, अलस° अभि० ५१ 2. सवारी करने वाला —द्विरद°—रघु० ४।४ 3. जाने वाला, पहुँचनेवाला, लागू करने वाला, संबंध रखने वाला—ननु सरूपगामी दोषः—शं० ४, द्वितीयगामी न हि शब्द एव नः —रघु० ३।४९ 4. नेतृत्व करने वाला, पहुँचने वाला, पटने वाला—चित्रकूटगामी मार्गः, कर्तृगामि क्रियाफलम् 5. संयुक्त—सदृशप्रतिगामिनी--मालवि० ५ 6. देनेवाला, सौंपने वाला—शं० ६, याज्ञ० २।१४५।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1. गहराई, थाह (जल या ध्वनि आदि की) 2. गहराई, अगाधता (अर्थ या चरित्र आदि की)--समुद्र इव गाम्भीर्ये--रामा०, शि० १।५५, रघु० ३।३२।

गायः [गै+घञ्] गाना, भजन, गीत—याज्ञ० ३।११२।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गायकः [गै+ण्वुल्] गर्दभ, संगीतवेत्ता – न नटा न विटा न गायकाः—भर्तृ० ३।२७।

गायत्र :-त्रम् [गायत्री+अण्] गीत, सूक्त।

गायत्री [गायन्तं त्रायते-गायत्र+ङी+क+ङीप्] 1. २४ मात्राओं का एक वैदिक छंद—गायत्री छन्दसामहम्—भग० १०।३५ 2. संध्या (प्रातः और सायम्) के समय प्रत्येक ब्राह्मण के द्वारा बोला जाने वाला गुरु-मंत्र; इसके जप से बहुत से पापों का प्रायश्चित होता है, वह मंत्र यह है:—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्—ऋक्० ३।६२।१०, ---त्रम् गायत्री छंद में रचित तथा सस्वर उच्चरित सूक्त।

गायत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [गायत्र+इनि] वेद सूक्तों का गायक, विशेष कर सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाला।

गायन (स्त्री०—नी) [गै+ल्युट्] गर्दभा—तथैव तत्पौरुष-गायनीकृताः – नैष० १।१०३, भर्तृ० ३।२७, अने० पा०, —नम् 1. गाना, गीत 2. गायन विद्या से अपनी आजीविका चलाने वाला।

गारुड (वि०) (स्त्री०—डी) [गरुडस्येदम् · अण्] 1. गरुड की शक्ति का बना हुआ 2. गरुड से प्राप्त या गरुड से संबंध रखने वाला,—डः,-डम् 1. पन्ना – रघु० १३। ५३ 2. साँपों के विष को उतारने का मंत्र—संगृहीत-गारुडेन · का० ५१ 3. गरुड द्वारा अधिष्ठित अस्त्र 4. सोना।

गारुडिकः [गारुड+ठक्] जादू मंत्र करने वाला, ऐन्द्रजालिक, जहरमोरा या विषनाशक ओषधियों का विक्रेता।

गारुत्मत (वि०) (स्त्री०—ती) [गरुत्मान् अस्यास्य-अण्] 1. गरुड की आकृति का बना हुआ 2. (अस्त्र की भांति)—गरुडाधिष्ठित- रघु० १६।७७,—तम् पन्ना।

गार्दभ (वि०) (स्त्री०—भी) [गर्दभस्येदम् अण्] गधे से प्राप्त या गधे से संबद्ध. गर्दभसंबंधी।

गार्ध्यम् [गृद्ध+ष्यञ्] लालच, —त्रि० ३।७३।

गार्ध्र (वि०) (स्त्री०—ध्री) [गृध्रस्यास्यम्—अण्] गिद्ध से उत्पन्न,—ध्रः 1. लालच (प्रायः 'गार्ध्य' का अर्थ) 2. बाण। सम०—पक्षः,—वाजस् (पुं०) गिद्ध के परों से युक्त बाण।

गार्भ (वि०) (स्त्री०—र्भी) **गार्भिक** (स्त्री०—की) (वि०) [गर्भे साधु—अण् ठक् वा] 1. गर्भाशयसंबंधी, भ्रूणविषयक 2. गर्भास्थासंबंधी · मनु० २।२७।

गार्भिणम्—ण्यम् [गर्भिणीनां समूहः भिक्षा० अण्] गर्भवती स्त्रियों का समूह।

गार्हपतम् [गृहपतेरिदम्—अण्] गृहपति का पद व प्रतिष्ठा।

गार्हपत्यः [गृहपतिना नित्यं संयुक्तः, संज्ञायां ष्यञ्] 1. गृहपति के द्वारा स्थायी रूप से रक्खी जाने वाली तीन यज्ञाग्नियों में से एक, यह अग्नि पिता से प्राप्त की जाती है तथा सन्तान को सौंप दी जाती है, इसी से यज्ञ में अन्त्याधान किया जाता है, तु० मनु० २।२३१ 2. वह स्थान जहाँ यह अग्नि रक्खी जाती है,—त्यम् एक परिवार का प्रशासन, गृहपति का पद और प्रतिष्ठा।

गार्हमेध (वि०) (स्त्री०—धी) [गृहमेधस्येदम्—अण्] गृहपति के लिए योग्य या समुचित,—धः पाँच यज्ञ जिनका अनुष्ठान गृहपति को नित्य करना होता है।

गार्हस्थ्यम् [गृहस्थ+ष्यञ्] 1. गृहस्थ पुरुष के जीवन की अवस्था या क्रम, घरेलू काम काज, गृहस्थी 2. गृहपति के द्वारा नित्य अनुष्ठेय पंचयज्ञ।

गालनम् [गल्+णिच्+ल्युट्] 1. (तरल पदार्थ का) छन कर रिसना 2. प्रचंड ताप से गल जाना, गलना, पिघलना।

गालवः [गल+घञ्, तं वाति--वा+क] 1. लोध वृक्ष 2. एक प्रकार का आबनूस 3. एक ऋषि, विश्वामित्र का शिष्य (हरिवंश पुराण में उसे विश्वामित्र का पुत्र बतलाया गया है)।

गालिः [गल+इन्] अपशब्द, दुर्वचन, गाली---ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तो वयमपि तदभावाद्गालिदानेऽप्यसमर्थाः ---भर्तृ० ३।१३३।

गालित (वि०) [गल्+णिच+क्त] 1. छाना हुआ 2. (अर्क की भांति) खींचा हुआ 3. पिघलाया हुआ, ताप से लगाया हुआ।

गालोड्यम् [गलोड्य+अण्] कमल का बीज।

गावल्गणिः [गवल्गण+इञ्] संजय का विशेषण, गवल्गण का पुत्र।

गाह् (भ्वा० आ०—गाहते, गाढ या गाहित) डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना, (पानी जैसे पदार्थ में) डुबोना—गाहन्तां महिषा निधानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्- श० २।६, गाहितासेऽथ पुण्यस्य गङ्गामूर्तिमिव द्रुताम्—भट्टि० २२।११, १४।६७ (आर्क० भी); मनस्तु मे संशयमेव गाहते —कु० ५।४६, संशयों में डूबा हुआ या संशयालु 2. गहराई में घुसना, बैठना, घूमना-फिरना—कदाचित्कानने जगाहे—का० ५८, ऊर्ध्वं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे तस्मिन्वने गोप्तरि गाहमाने · रघु० २।१४, मेघ० ४८, हि० १।१७१, कि० १३।२४ 3. आलोडित करना, क्षुब्ध करना, हिचकोले देना, बिलोना 4. लीन होना (अधि० के साथ) 5. अपने आपको छिपाना 6. नष्ट करना,—अव —, ('अ' को प्रायः लुप्त करके) 1. डुबकी लगाना, स्नान करना, गोता लगाना—तमोघहन्त्री तमसां वगाह्य—रघु० १४।७६, स्वप्नेऽवगाहेत्प्रयतं जलम्—याज्ञ० १।२७२ 2. घुसना, पैठना, पूरी तरह व्याप्त होना—पूर्वापरौ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तोयनिधौ वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदंडः -कु० १।१, ७।४०, उप—, घुसना, प्रविष्ट होना, घि -, 1. गोता लगाना, डुबकी लगाना, स्नान करना -, (दीपिकाः) स व्यगाहत विगाढमन्मथः -रघु० १९।९ 2. प्रविष्ट होना, पैठना, व्याप्त होना (आलं० भी) —विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः -कि० २।३, रघु० १३।१ 3 आन्दोलित करना, विक्षुब्ध करना—विगाह्यमानां सरयूं च नौभिः—रघु० १४।३०, सम्—, घुसना, अन्दर जाना, पैठना—समगाहिष्ट वाम्बरम्—भट्टि० १५।९९ ।

गाहः [गाह्+घञ्] 1. डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना 2. गहराई, आभ्यन्तर प्रदेश ।

गाहनम् [गाह्+ल्युट्] डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना—आदि ।

गाहित (वि०) [गाह्+क्त] 1. स्नान किया हुआ, गोता लगाया 2. पैदा हुआ, घुसा हुआ -दे० गाह् ।

गिन्दुकः [=गेन्दुकः पृषो०] 1. गेंद 2. एक वृक्ष का नाम दे 'गेंदुक' ।

गिर् (स्त्री०) [गृ+क्विप्] (कर्तृ०, ए० व०—गीः, करण० द्वि० व०—गीर्भ्याम् आदि) 1. भाषण, शब्द, भाषा—वचस्यसंयते तस्मिन् ससर्ज गिरमात्मभूः-कु० २।५३, भवतीनां सूनृतार्थैव गिरा कृतमार्तिध्यम्—श० १, प्रवृत्तिसारा: खलु वादृशां गिरः -कि० १।२५, शि० २।१५ याज्ञ० १।७१ 2. सरस्वती का आवाहन, स्तुति, गीत 3. विद्या और वाणी की देवी सरस्वती । सम० -देवी (गीर्देवी) वाणी की देवी सरस्वती, —पतिः (गीः पतिः, गीष्पतिः, गीपतिः) 1. देवताओं के गुरु बृहस्पति 2. विद्वान् पुरुष, -रथः (गीरथः) बृहस्पति, -वा (वा) पः (गीर्वाणः) देव, देवता—परिमलो गीर्वाणचेतोहरः-भामि० १।६३, ८४ ।

गिरा [गिर्+क्विप्+टाप्] वाणी, बोलना, भाषा, आवाज ।

गिरि (वि०) [गृ+इ किच्च] श्रद्धेय, आदरणीय, पूजनीय, -रिः 1. पहाड़, पर्वत, उत्थापन -एष्याश्चः खनने मूढ गिरयो न पतन्ति किम् -भूंगार० ९, ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः—श० ६ 2. विशाल चट्टान 3. आँख का रोग 4. संन्यासियों की सम्मानसूचक उपाधि -उदा० आनन्दगिरि 5. (गणि० में) आठ की संख्या 6. गेंद (जिससे बच्चे खेलते हैं), —रिः (स्त्री०) 1. निगलना 2. चूहा, मूसा (इस अर्थ में 'गिरी' भी लिखा जाता है) । सम०—इन्द्रः 1. ऊँचा पहाड़ 2. शिव का विशेषण 3. हिमालय पहाड़, -ईशः 1. हिमालय पर्वत का विशेषण 2. शिव का विशेषण—सुतां गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्—कु० ५।२, —कन्दरः पहाड़ी कंदरा,—कन्दकः इन्द्र का वज्र,—कदम्बः,—बकः, कदंब वृक्ष की जाति—कन्दरः गुफा कन्दरा,- कणिका पृथ्वी, -काणः एक आँख से अन्धा या एक आँख वाला व्यक्ति,—काननम् पहाड़ी निकुंज, कूटम् पहाड़ की चोटी, गंगा एक नदी का नाम, - गुडः गेंद, -गुहा पहाड़ की गुफा, -चरः (वि०) पहाड़ पर घूमने वाला गिरिचर इव नागः प्राणसार बिभर्ति -श० ३।४ (-रः) चोर,—ज (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न (जम्) 1. अवरक 2. गेरू 3. गुग्गुल 4. शिलाजीत 5. लोहा (—जा) 1. (हिमालय की पुत्री) पार्वती 2. पहाड़ी केला 3. मल्लिका लता 4. गंगा का विशेषण, —तनयः,—नन्दनः —सुतः 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. गणेश का विशेषण, °पतिः शिव का विशेषण, °मल्लम् अबरक, -मालम् पर्वतमाला, —म्बरः इन्द्र का वज्र,—दुर्गम् पहाड़ी किला, पहाड़ पर विद्यमान दुर्ग—नृदुर्ग गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरम्—मनु० ७।७०, ७१,—द्वारम् पहाड़ी मार्ग, -धातुः गेरू—ध्वजम् इन्द्र का वज्र,—नगरम् दक्षिणापथ में विद्यमान एक जिला,—नदी (नदी) पहाड़ी नदी, छोटा चरमा या नदी,—पद्म (नद्म) (वि०) पहाड़ों से घिरा हुआ,—नन्दिनी 1. पार्वती 2. गंगानदी 3. दरिया (पहाड़ से निकलकर बहने वाला)—कलिन्दगिरिनन्दिनीतटसुरद्रुमालम्बिनी-भामि० ४।३, —नितम्बः (नितम्बः) पहाड़ का ढलान,—पीलुः एक फलदार वृक्ष, फालसा, पुष्पकम् शिलाजीत, —पृष्ठः पहाड़ की चोटी,- प्रपातः पहाड़ का ढलान, -प्रस्थः पहाड़ की समतल भूमि,—प्रिया नदी, गाय, —भिद् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—भू (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न (भूः स्त्री) 1. गंगा का विशेषण 2. पार्वती का विशेषण,—मल्लिका कुटज वृक्ष, -मानः हाथी, एक विशालकाय हाथी, -मृद्, मृद्भवम् गेरू राज (पुं०) 1. ऊँचा पहाड़ 2. हिमालय का विशेषण, राजः हिमालय पहाड़,—व्रजम् मगध में विद्यमान (राजगृह) एक नगर का नाम,—शालः एक प्रकार का पक्षी,—शृङ्गः गणेश का विशेषण,—(गम्) पहाड़ की चोटी, सुत (सुत) (पुं०) शिव का विशेषण,—सानु (नपुं०) पठार, अधित्यका,—सारः 1. लोहा 2. टीन 3. मलय पहाड़ का विशेषण सुतः मैनाक पहाड़,—सुता पार्वती का विशेषण—स्रवा पहाड़ी नदी ।

गिरिकः, गिरियकः, गिरियाकः [गिरि+कै+क, गिरि+या+क+कन्, गिरि+या+विक्च+कन्] गेंद ।

गिरिका [गिरि+कन्+टाप्] छोटा चूहा ।

गिरिशः [गिरौ कैलासपर्वते शेते - गिरि+शी+ड वा] शिव का विशेषण - श्रुत्वाहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात् —रघु० २।४१, गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी —कु० १।६०, ३७ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिल् (तुदा० पर—गिलति, गिलित) निगलना (वस्तुतः यह कोई स्वतंत्र धातु नहीं, बल्कि 'गृ' से सम्बद्ध है)।

गिल (वि०) [गिल्+क] जो निगलता है, उदरस्थ कर लेता है—उदा० तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः—दे० तिमिङ्गिल, —**लः** नीम का वृक्ष। सम०—**ग्राहः** मगरमच्छ, घड़ियाल।

गिलनम्, गिलिः (स्त्री०) [गिल्+ल्युट्, गिल+इन्] निगलना, खा लेना।

गिलायुः गले के भीतर एक कड़ी गाँठ या रसौली।

गिलित (रि) त (वि०) [गिल्+क्त] खाया हुआ, निगला हुआ।

गि (गे) ल्युः [गै+इल्युच् आदेर्गुणः] 1. गर्वोक्ति 2. विशेषकर वह ब्राह्मण जो सामवेद के मन्त्रों का गायन करने में चतुर हो, सामगायक।

गीत (भू० क० कृ०) [गै+क्त] 1. गाया हुआ, अलापा हुआ (शा०)—आर्य साधु गीतम्—श० १, चारणद्वन्द्व-गीतः शब्दः—श० २।१४ 2. घोषणा किया हुआ, बतलाया हुआ, कहा हुआ—गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा—मा० २, ('गै' के नीचे भी दे०),—**तम्** गाना, भजन, —तस्मिन् गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५. गीतमुत्सादकारि मृगाणाम् - का० ३२। सम०—**अयनम्** गाने का साधन या उपकरण अर्थात् वीणा बंसरी आदि,—**कर्म**: गीत का गानकर्म,—**ज्ञ** (वि०) गानकला में प्रवीण,—**प्रिय** (वि०) गाने बजाने का शौकीन (यः) शिव का विशेषण,—**मोदिन्** (पुं०) किन्नर,—**शास्त्रम्** संगीत विद्या।

गीतकम् [गीत+कन्] स्त्रीत, भजन।

गीता [गै—क्त—टाप्] (बहुधा गुरु-शिष्य संवाद के रूप में) संस्कृत पद्य में लिखे गये कुछ धार्मिकग्रंथ जो विशेष रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं—उदा० शिवगीता, रामगीता, भगवद्-गीता आदि, परन्तु यह नाम केवल अन्तिम ग्रन्थ (भगवद्-गीता) तक ही सीमित प्रतीत होता है गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः, या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता श्रीधर स्वामी द्वारा उद्धृत।

गीतिः (स्त्री०) [गै—क्तिन्] 1. गीत, गाना—अहो राग-परिवाहिणी गीतिः श० ५, श्रुताप्सरोगीतिरपि क्षणेऽस्मिन् हरः प्रसंख्यानपरो बभूव—कु० ३।४० 2. एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १।

गीतिका [गीति+कन्—टाप्] 1. छोटा गीत 2. गाना।

गीतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गीत+इनि] जो गाकर सस्वर पाठ करता है—गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः—शिक्षा ३१।

गीर्ण (भि०) [गृ+क्त] 1. निगला हुआ, खाया हुआ 2. वर्णित किया गया, स्तुति किया गया (दे० गृ)।

गीर्णिः (स्त्री०) [गृ+क्तिन्] 1. प्रशंसा 2. यश 3. खा लेना, निगल जाना।

गु (तुदा० पर० —गुवति, गूत) विष्ठा उत्सर्ग करना, मलोत्सर्ग करना, पखाना करना।

गुग्गुलः,—लुः [गुज्+क्विप्=गुक् रोगः ततो गुडति रक्षति—गुक्—गुड्+क (कु) डस्य लकारः] एक प्रकार का सुगंधित गोंद, राल, गुग्गल।

गुच्छः [गु+क्विप्=गुत् तं स्यति—गुत्+छो+क] 1. बंडल, गुच्छा 2. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, (वृक्षों का) झुंड—अङ्गणेनिक्षिपेदञ्जनं श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छावलिम्—गीत० ११, मनु० ९।४८ शि० ६।५० 3. मयूरपंख 4. मोतियों का हार 5. बत्तीस लड़ियों का युक्ता हार (कुछ के मतानुसार ७० लड़ियों) सम०—**अर्धः** चौबीस लड़ियों का मोतियों का हार (र्धः, र्धम्) आधा गुच्छा,—**कपिलः** एक प्रकार का अनाज,—**पत्रः** ताड़ का पेड़,—**फलः** 1. अंगूर की बेल 2. केले का वृक्ष।

गुच्छकः [गुच्छ+कन्] दे० 'गुच्छ'।

गुज् (भ्वा० पर०—गोजति, बहुधा भ्वा० पर० गुञ्ज् —गुञ्जति, गुञ्जित या गुजित) गु गु शब्द करना, गुंजार करना, गूँजना, भनभनाना,—न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलम्—भट्टि० २।१९, ६।१४३, १४।२, उत्तर० २।२९—अयि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्ज गुञ्जन्तु भृङ्गाः—भामि० १।५।

गुञ्जः [गुज्+क] 1. भिनभिनाना, गूँजना 2. कुसुमास्तवक, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता—तु० गुच्छ। सम०—**कृत्** भौंरा।

गुञ्जनम् गुञ्ज् [ल्युट्] मन्द-मन्द शब्द करना, भिन-भिनाना, गुंजना।

गुञ्जा [गुञ्ज्+अच्—टाप्] गुंजा नाम की एक छोटी झाड़ी जिसके लाल बेर जैसे फल लगते हैं, घुंघची—अन्तर्विष-मया होना बहिश्चैव मनोरमाः, गुञ्जाफलसमाकारा योषितः केन निर्मिताः—पंच० १।१६९, कि जातु गुञ्जा-फलभूषणानां सुवर्णकारेण समेचरागाम्—विक्रमांक० १।२५ 2. इस झाड़ी का फल, गुंजा जो १$\frac{1}{6}$ ग्रेन के बराबर वजन का होता है, या कृत्रिम रूप से जिसका तोल २$\frac{1}{6}$ ग्रेन की भाप का समझा जाता है 3. गुंजार मंद-मंद गूंजन का शब्द 4. ढाढ़ा, ताशा,—भट्टि० १४।२ 5. मधुशाला 6. चिंतन, मनन।

गुञ्जिका [गुञ्जा—कन्+टाप्, ह्रस्वम्] घुंघची।

गुञ्जितम् [गुञ्ज्—क्त] भनभनाना, गुनगुनाना— स्वच्छन्दं दलदरविन्दं ते मरन्दं विदन्तो विदधतु गुञ्जित मिलिन्दाः —भामि० १।१५, न गुञ्जितं तत्र जहार यन्मनः —भट्टि० २।१९।

गुटिका [गुट्+टिक्—गुटि+कन्+टाप्] 1. गोली 2. गोल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कंकड़, कोई छोटा गोला या पिंड—लोष्टगुटिका: क्षिपति—मृच्छ० ५ 3. रेशम के कीड़े का कोया 4. मोती—निर्यति हारगुटिकानिशाद हिमाम्भ: —रघु० ५।७०। सम०—अञ्जनम् एक प्रकार का सुर्मा।

गुटी [गुटि+ङीष्] दे० 'गुटिका'।

गुड: [गुड्+क] 1. शीरा, राब, ईख के रस से तैयार किया हुआ गुड़—गुडधाना:—सिद्धा०, गुडौदन:—यात्रा० १।३०३, गुडद्वितीयां हरीतकीं भक्षयेत्—सुश्रु० 2. भेली, पिण्ड 3. खेलने की गेंद 4. मुट्ठभर, ग्रास 5. हाथी का जिरहबख्तर, कवच। सम०—उदकम् गुड का शरबत, —उडुम्बा शक्कर,—ओदनम् गुड डाल कर उबाले हुए मीठे चावल,—तृणम्, —दाव:,—ए (नपुं०) गन्ना ईख,—धेनु: (स्त्री०) दूध देने वाली गाय, जो प्रतीक रूप से गुड की बना कर ब्राह्मणों को उपहार में दी जाय,—पिष्टम् गुड के लड्डू,—फल: पीलू का पेड़,—शर्करा खांड,—सूक्तम् —गुड़-द्राक्षणी कलश,—हरीतकी गुड में रक्खी हुई हरें, मुरब्बे की हरें।

गुडक: [गुड+कन्] 1. पिण्ड, भेली 2. ग्रास 3. गुड से तैयार की हुई औषधि।

गुडलम् [गुड+ला+क] गुड से तैयार की हुई शराब।

गुडा [गुड+टाप्] 1. कपास का पौधा 2. बटी, गोली।

गुडाका [गुडयति संकोचयति देहेन्द्रियादीनि इति गुड: तथाकति प्रकाशयति गुड+आ+कै+क+टाप्] 1. तन्द्रा 2. निद्रा। सम०—ईश:, —ईश: 1. अर्जुन का विशेषण, —मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमर्हसि—भग० ११।७, (गीता में और कई स्थानों पर) 2. शिव का विशेषण।

गुडगुडायनम् [गुडगुड इत्येवमयनं यस्य -ब० स०] खांसी आदि के कारण कण्ठ से गुड़गुड़ की आवाज निकलना।

गुडेर: [गुड्+एरक्] 1. पिण्ड, भेली 2. कौर, टुकड़ा।

गुण् [चुरा० उभ०—गुणयति-ते, गुणित] 1. गुणा करना 2. उपदेश देना 3. निमन्त्रित करना।

गुण: [गुण्+अच्] 1. धर्म, स्वभाव (बुरा या अच्छा) दुर्गुण, सुगुण 2. (क) अच्छी विशेषता, विशिष्टता उत्कर्ष, श्रेष्ठता - कृतमे ते गुणा:—या० १, रघु० १।९, २२, साधुत्वे तस्य को गुण:—पंच० ४।१०८, (ख) गौरव 3. उपयोग, लाभ, भलाई (करण० के साथ) मुद्रा० १।१५ 4. प्रभाव, परिणाम, फल, शुभ परिणाम 5. धागा, डोरी, रस्सी, डोर - मेखलागुणै: —कु०४।८, ५।१०, यत: परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९ (यहां 'गुण' का अर्थ विशिष्टता भी है) 6. धनुष की डोरी—गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता -कु० ४।१५, २९, कनकपिनद्धतडिद्गुणसंयुतम् -रघु० ९।५४ 7. वाद्ययंत्र के तार शि० ४।५७ 8. स्नायु 9. सूबी, विशेषण, धर्म- मनु० ९।२२ 10. विशेषता, सब पदार्थों का धर्म या लक्षण, वैशेषिक के सात पदार्थों में से एक (गुणों की संख्या २४ है) 11. प्रकृति का अवयव या उपादान, समस्त रचित वस्तुओं से संबद्ध तीन गुणों में से कोई एक (यह हैं—सत्त्व, रजस् और तमस्) —गुणत्रयविभागाय—कु० २।४, भग० १४।५, रघु० ३।२७ 12. बत्ती, सूत का धागा 13. इन्द्रियजन्य विषय (यह पांच हैं: रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द) 14. आवृत्ति, गुणा (संख्याओं के बाद समास के अन्त में लगकर प्राय: 'तह' या 'गुणा या बार' को प्रकट करता है)—आहारो द्विगुण: स्त्रीणां बुद्धिस्तासां चतुर्गुणा, षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुण: स्मृत:—चाण० ७८, इसी प्रकार त्रिगुण,—शतगुणी भवति —सौगुना हो जाता है 15. गौण तत्त्व, आश्रित अंश (विप० मुख्य) 16. आधिक्य, बहुतायत, बहुलता 17. विशेषण, वाक्य में अन्याश्रित शब्द 18. इ, उ, ऋ तथा ऌ के स्थान में ए, ओ, अर् और अल्, अथवा अ, ए, ओ, अर् और अल् स्वर का आदेश 19. (अलं० शा० में) रस का अन्तर्निहितगुण, मम्मट के अनुसार—ये रसस्याङ्गिनो धर्मा: शौर्यादय इवात्मन:, उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणा:—काव्य० ८, (अलं० शा० के प्रणेता वामन, पंडित जगन्नाथ, दण्डी तथा अन्य विद्वान् गुणों को शब्द और अर्थ दोनों का धर्म समझते हैं तथा प्रत्येक के दस दस प्रकार बतलाते हैं। परन्तु मम्मट केवल तीन गुण मानता है और दूसरों के विचारों की समालोचना करने के पश्चात् कहता है:—माधुर्योज: प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश —काव्य० ८) 20. (व्या० और मी० में) शब्द समूह का अर्थ, धर्म या गुण माना जाता है, उदा० वैयाकरण शब्दार्थ के चार प्रकार मानते हैं:—जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य, इन अर्थों को समझाने के लिए क्रमश: प्रत्येक का गौ:, शुक्ल:, चल: और दित्थ: - उदाहरण देते हैं 21. (राजनीतिशास्त्र में) कार्य करने का समुचित प्रकार, सही रीति (विदेशराजनीति विषयक छ: रीतियां राजाओं के द्वारा व्यवहार्य बतलाई गई हैं—1. संधि, शान्ति, सुलह 2. विग्रह, युद्ध 3. यान, चढ़ाई करना 4. स्थान या आसन अर्थात् पड़ाव 5. संश्रय अर्थात् शरणस्थल ढूंढना 6. द्वैध या द्वैधीभाव संधिनां विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रय: अमर०, दे० याज्ञ० १।३४६ मनु० ७।१६०, शि० २।२६, रघु० ८।२१ 22. तीन गुणों से व्युत्पन्न तीन की संख्या 23. (ज्या० में) सम्पर्क जीवा 24. ज्ञानेन्द्रिय 25. निचले दर्जे का विशिष्ट भोजन—मनु० ३।२२४, २३३ 26. रस्सीदार 27. भीम का विशेषण 28. परित्याग, उत्सर्ग। सम० —अतीत (वि०) सब प्रकार के गुणों से मुक्त, गुणों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से परे,--**अभिष्ठानकम्** वक्षस्थल का वह प्रदेश जहाँ पेटी बाँधी जाती है, -**अनुरागः** दूसरों के सद्गुणों की सराहना करना—कि० १।१९,—**अनुरोधः** अच्छे गुणों की अनुरूपता या उपयुक्तता,—**अन्वित** (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, श्रेष्ठ, मूल्यवान, अच्छा, सर्वोत्तम,- **अपवादः** गुणों का तिरस्कार, गुणों का अपकर्षण, गुण-निन्दा,—**आकरः** गुणों की खान सर्वगुणसम्पन्न,- **आढ्य** (वि०) गुणों से समृद्ध, --**आत्मन्** (वि०) गुणी—**आधारः** गुणों का पात्र, सद्गुणी, गुणवान्, व्यक्ति,- **आश्रय** (वि०) गुणी श्रेष्ठ,—**उत्कर्षः** गुण को श्रेष्ठता, उत्तम गुणों का स्वामित्व,—**उत्कीर्तनम्** गुणों का कीर्तन, स्तुति, प्रशस्ति,—**उत्कृष्ट** (वि०) गुणों में श्रेष्ठ,—**कर्मन्** (नपुं०) 1. अनावश्यक या गौण कार्य 2. (व्या० में) गौण या कार्य का व्यवधानसहित (अर्थात् अप्रत्यक्ष) कर्म, उदा०—नेताऽश्वस्य क्षुध्न क्षुध्नस्य वा, में क्षुध्न गुणकर्म है,- **कार** (वि०) अच्छे गुणों का उत्पादक, लाभदायक, हितकर (रः) 1. वह रसोइया जो अतिरिक्त विशिष्ट भोजन तैयार करता है 2. भीम का विशेषण,—**गानम्** गुणों का गान करना, स्तुति, प्रशंसा, —**ग्रहण** (वि०) 1. अच्छे गुणों का इच्छुक 2. अच्छे गुणों वाला,--**ग्राही** (वि०) गुणों की सराहना करने वाला, गुणों से सलग्न, गुणों का प्रशंसक ननु वक्तृ-विशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः—कि० २।५, **ग्रहीतृ,—ग्राहक,—ग्राहिन्** (वि०) दूसरों के) गुणों का प्रशंसक—रत्न० १।९, भामि० १।९,—**ग्रामः** गुणों का समूह—गुरुतरगुणग्रामाभोगस्फुटोज्ज्वलचन्द्रिका —भर्तृ० ३।१।६, गणयति गुणग्रामम्— गीत० २, भामि० १।१०३,—**ज्ञ** (वि०) गुणों की सराहना जानने वाला, प्रशंसक,—भगवति कमलालये भूशमगुणज्ञासि —मुद्रा० २, गुणागुणज्ञेषु गुणा भवन्ति—हि० प्र० ४७,—**त्रयम्,**—**त्रितयम्** प्रकृति के तीन घटक धर्म अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमस्,— **धर्मः** कुछ गुणों पर आश्रित्व करने में आनुषंगिक गुण या धर्म, - **निधिः** गुणों का भण्डार, —**प्रकर्षः** गुणों की श्रेष्ठता, बड़ा गुण, -—**लक्षणम्** आलंकारिक गुण का सांकेतिक चिह्न,— **लय-लिका,** - **लयनी** तंबू,—**लक्षनम्,—वाचकः** विशेषण, गुण बतलाने वाला शब्द, संज्ञा शब्द जो विशेषण की भाँति प्रयुक्त हो जैसे 'श्वेतोऽश्वः' में 'श्वेत' शब्द,—**विवेचना** दूसरों के गुणों की सराहना करने में विवेकबुद्धि, —**वृक्षः,**— **वृक्षकः** एक मस्तूल या स्तंभ जिससे नौका या जहाज बाँधा जाय, - **वृत्तिः** गौण या अप्रधान संबंध (विप० मुख्यवृत्ति),—**वैशेष्यम्** गुण की प्रमुखता, —**शब्दः** विशेषण, - **संख्यानम्** तीन अनिवार्य गुणों की संगणना, सांख्यदर्शन (योगदर्शन सहित), **संगः** 1. गुणों का साहचर्य 2. सांसारिक विषयवासनाओं में आसक्ति,—**संपद्** (स्त्री०) गुणों की श्रेष्ठता या समृद्धि, बड़ा गुण, पूर्णता,—**सागरः** 1. गुणों का समुद्र, एक बहुत गुणी पुरुष 2. ब्रह्मा का विशेषण ।

गुणकः [गुण्+ण्वुल्] 1. हिसाब करने वाला, या हिसाब लगाने वाला 2. (गणित में) वह अंक जिससे गुणा किया जाय ।

गुणनम् [गुण्+ल्युट्] 1. गुणा करना 2. संगणना 3. गुणों का वर्णन करना, गुणों को बतलाना या गिनना—इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके—गीत० ७, - **नी** पुस्तकों की परीक्षा करना, अध्ययन करना, विभिन्न पाठों के मूल्य को निर्धारण करने के लिए पाण्डुलिपियों का मिलान करना ।

गुणनिका [गुण्+युच्+कन्, इत्वम्] 1. अध्ययन, बार-बार पढ़ना, आवृत्ति— विशेषविदुषः शास्त्रं यत्नबोदयाद्गृह्यते परः, हेतुः परिचयस्यैर्ये वक्तुर्गुणनिकैव सा—शि० २।३५, (आश्रेडितम्-- मल्लि०) 2. नाच, नाचने का व्यवसाय या नृत्यकला 3. नाटक की प्रस्तावना 4. माला, हार—हरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका, —आन० ३ 5. शून्य, अंकगणित में विशेष चिह्न जो शून्यता को प्रकट करता है ।

गुणनीय (वि०) [गुण्+अनीयर्] 1. वह राशि जिसे गुणा किया जाय 2. जिसको गिना जाय 3. जिसे उपदेश दिया जाय, यः अध्ययन, अभ्यास ।

गुणवत् (वि०) [गुण्+मतुप्] गुणों से युक्त, गुणी, श्रेष्ठ ।

गुणिका [गुण्+इन्+कन्+टाप्] रस्सी, गिल्टी, सूजन ।

गुणित (भू० क० कृ०) [गुण्+क्त] 1. गुणा किया हुआ 2. एक स्थान पर ढेर लगाया हुआ, संगृहीत 3. गिना हुआ ।

गुणिन् (वि०) [गुण+इनि] 1. गुणों से युक्त, गुणवाला, गुणी—गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः—मनु० ८।७३, याज्ञ० २।७८ 2. भला, शुभ—गुणिन्यहनि—दश० ६१ 3. किसी के गुणों से परिचित 4. गुणों को धारण करने वाला (कर्म) 5. (अप्रधान) अंशों वाला, मूल्य (विप० गुण) —गुणगुणिनोरेव संबन्धः ।

गुणीभूत (वि०) [अगुणी गुणीभूतः—गुण+च्वि+भू +क्त] 1. मूल महत्त्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित 2. गौण या अप्रधान बनाया हुआ 3. विशेषणों से आदेष्टित । सम०—**व्यङ्ग्यम्** (अलं० शा० में) काव्य के तीन भेदों में से दूसरा—मध्यम—जिसमें अभिधेय अर्थ की अपेक्षा व्यंजना द्वारा अभिव्यक्त अर्थ अधिक आकर्षक नहीं होता है, सा० द० परिभाषा देता है:—अपरं तु गुणीभूतव्यङ्ग्यं वाच्यादनुत्तमे व्यङ्ग्ये, २६५, काव्य का यह भेद इसके आगे आठ भागों में विभक्त किया गया है—दे० सा० द० २६६, काव्य० ५ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुण्ठ् (चुरा० उभ०–गुण्ठयति-ते, गुण्ठित) 1. परिवृत करना, घेरना, लपेटना, परिवेष्टित करना 2. छिपाना, ढक लेना, अव–, ढकना, परदा डालना, छिपाना, अवगुण्ठित करना।

गुण्ठनम् [गुण्ठ्+ल्युट्] 1. छिपाना, ढकना, गोपन 2. मलना –यथा भस्मगुण्ठनम्।

गुण्ठित (वि०) [गुण्ठ्+क्त] 1. घिरा हुआ, ढका हुआ 2. चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ, चूरा किया हुआ।

गुण्ड् (चुरा० उभ०–गुण्डयति, गुण्डित) 1. ढकना, छिपना पीसना, चूरा करना।

गुण्डकः [गुण्ड्+अच्+कन्] 1. धूल, चूर्ण 2. तेल का बर्तन 3. मन्द मधुर स्वर।

गुण्डिकः [गुण्ड+ठन्] आटा, भोजन, चूर्ण।

गुण्डित (वि०) [गुण्ड्+क्त] 1. चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ 2. धूल से ढका हुआ।

गुण्य (वि०) [गुण्+यत्] 1. गुणों से युक्त 2. गिने जाने के योग्य 3. वर्णन किये जाने के योग्य, प्रशस्य 4. गुणा करने के योग्य, वह राशि जिसे गुणा किया जाय।

गुत्सः=गुच्छः।

गुत्सकः [गुध+स+कन्] 1. गट्ठर, गुच्छ 2. गुलदस्ता 3. बंडर 4. पुस्तक का अनुभाग या अध्याय।

गुद् (भ्वा० आ०–गोदते, गुदित) क्रीड़ा करना, खेलना।

गुदम् [गुद्+क] गुदा–याज्ञ० ९३।९, मनु० ५।१३६, ८।२८२। सम०–अङ्कुरः बवासीर,–आवर्तः कोष्ठ बद्धता,–उद्भूतः बवासीर,–ओष्ठः गुदा का मुख, –कीलः,–कीलकः बवासीर,–ग्रहः कब्ज, मलावरोध –दाहः गुदा की सूजन, (मलद्वार का पक जाना), –भ्रंशः कांच निकलना,–वर्त्मन् (नपु०) गुदा, मलद्वार,–स्तब्धः कब्ज।

गुध् i (दिवा० पर०–गुध्यति, गुधित) लपेटना, ढकना, आवेष्टित करना, ढांपना, ii (क्या० पर०–गुध्नाति) कुढ होना; iii (भ्वा० आ०–गोधते) क्रीड़ा करना, खेलना।

गुन्द्रल: [गुन् इति शब्देन दल्यतेऽसौ–गुन्+दल्+णिच् +अच् एक छोटे आयताकार ढोल का शब्द।

गुन्द्रा (द्रा) ला: [पुं०] चातक पक्षी।

गुप् i (भ्वा० पर०–गोपायति, गोपायित या गुप्त) 1. रक्षा करना, बचाना, आत्मरक्षा करना, रखवाली करना–गोपायन्ति कुलस्त्रिय्य आत्मानम्–महा०, जुगोपात्मानमत्रस्तः–रघु० १।२१, जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्–२।३ भट्टि० १७।८० 2. छिपाना, ढकना –किं वक्षश्चरणपतितिभ्यतिकरव्याजेन गोपायते–अमरु २२, दे 'गुप्त'। ii (भ्वा० आ०–जुगुप्सते–गुप् का सन्नन्त रूप) 1. तुच्छ समझना, कतराना, घिन करना, अरुचि करना, निन्दा करना (अप० के साथ, कभी कभी कर्म० के साथ भी) पापाज्जुगुप्सेः–सिद्धा०, किं त्वं मामजुगुप्सिष्ठाः–भट्टि० १५।१९, याज्ञ० ३।२९६ 2. छिपाना, ढकना (इस अर्थ में–गोपते) iii (दिवा० पर०–गुप्यति) घबराना, विह्वल हो जाना, iv (चुरा० उभ०–गोपायति-ते) 1. चमकना 2. डोलना 3. छिपना (कविरहस्य से उद्धृत निम्नांकित श्लोक धातु के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है–गोपायति क्षितिमिमां चतुरब्धिसीमां, पापाज्जुगुप्सत उदारमतिः सदैव, वित्तं न गोपयति यस्तु वणीयकेभ्यो धीरो न गुप्यति महत्स्वपि कार्यजातेषु।

गुपिलः [गुप्+इलच्] 1. राजा 2. रक्षक।

गुप्त (भू० क० कृ०) [गुप्+क्त] 1. प्ररक्षित, संधृत, रक्षित–रघु० १०।६० 2. छिपाया हुआ, ढका हुआ, रहस्यमय –मनु० २।१६०, ७।७६ ८।३७४ 3. अदृश्य, आंख से ओझल 4. संयुक्त,–प्तः वैश्यों के नाम के साथ जुड़ने वाली वर्ण सूचक उपाधि–चन्द्रगुप्तः, समुद्रगुप्तः आदि (ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रायः 'देव' या 'शर्मन्' क्षत्रियों के नामों के साथ 'वर्मन्' या 'त्रात', वैश्यों के नामों के साथ 'गुप्त', 'भूति' अथवा 'दत्त' और शूद्रों के नामों के साथ 'दास' जोड़ा जाता है–तु०, शर्मा देवश्च विप्रस्य, वर्मा त्राता च भूभुजः, भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत्), –प्तम् (अव्य०) गुप्त रूप से, निजी तौर पर, अपने ढंग पर –प्ता काव्यग्रंथों में वर्णित मुख्य स्त्रीपात्रों में से एक, परकीया नायिका, मुरति छिपाने वाली नायिका–वृन्दसुरतगोपना वत्सिप्यमाणसुरतगोपना और वर्तमानसुरतगोपना दे० रसमं०–२४। सम०–कथा गुप्त या गोपनीय समाचार, रहस्य,–गतिः गुप्तचर, जासूस, –चर जासूस, छिप कर घूमने वाला (रः) 1. बलराम का विशेषण 2. गुप्तचर, जासूस,–दानम् छिपा कर दिया जाने वाला दान, गुप्त उपहार, वेशः बदला हुआ भेस।

गुप्तकः [गुप्त+कन्] संधारक, रक्षक।

गुप्तिः (स्त्री०) [गुप्+क्तिन्] 1. संधारण, प्ररक्षा, –सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थम्–मनु० १।८७, ९४, ९९, याज्ञ० १।१९८ 2. छिपाना, लुकाना 3. ढकना, म्यान में रखना–असिर्यथासु कोषगुप्तिः–का० ११ 4. बिल, कन्दरा, कुण्ड, भूमिगृह 5. भूमि में बिल खोदना 6. प्ररक्षा का उपाय, दुर्ग, कारागार 7. कारागार, जेल सप्तभिः इद गुप्तिस्फोटमर्कः करोमि –शि० ११।६० 8. नाव का निचला तल 9. रोक, थाम।

गुफ्, गुम्फ् (तुदा० पर०– गुफति, गुम्फति, गुफित) गूंथना, गुफन करना, बांधना, लपेटना–भट्टि० ७।१०५ 2. (आलं०) लिखना, रचना करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गु (गुं) क्षिप्त (भू० क० कृ०) [गु (गुर्) फ्+क्त] इकट्ठा गूँथा हुआ, बाँधा हुआ, बुना हुआ।

गुम्फः [गुम्फ्+घञ्] 1. बाँधना, गूँथना, गुम्फो वाणीनाम्--बालरा० १।१ 2. एक स्थान पर रखना, रचना, करना, क्रम पूर्वक रखना 3. कंकण 4. पल-मुच्छ, मूँछ।

गुम्फना [गुम्फ् + युच् + टाप्] 1. एक जगह गूथना, नत्थी करना 2. क्रम पूर्वक रखना, रचना करना 3. सुसा-मंजस्य (शब्द और अर्थ का), अच्छी रचना—वाक्य शब्दार्थयोः सम्यग्रचना गुम्फना मता।

गुर् (तुदा० आ०--गुरते, गूर्त, गूर्ण) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, ii (दिवा० आ० भू० क० कृ० गूर्ण) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना, क्षति पहुँचाना 2. जाना।

गुरुत्व [गुर्+क्युट्] प्रयत्न, धैर्य।

गुरु (वि० - रु, र्वी) [गृ+कु, उत्वम्] (म० अ० गरीयस्, उ० अ० गरिष्ठ) 1. भारी, बोझल (विप० लघु०) (आलं० से भी)—उन्नं घूजंगतो गुर्वी सचिवेषु विचिक्षिपे--रघु० १।३४, ३।३५, १२।१०२, ऋतु० १।७ 2. प्रशस्त, बड़ा, लम्बा, विस्तृत 3. लंबा (काल मात्रा या लंबाई में) आरम्भगुर्वी - भर्तृ० २।६०, गुरुषु दिवसेष्वेव गच्छत्सु-मेघ० ८३ 4. महत्त्व-पूर्ण, आवश्यक, बड़ा—विभवगुरुभिः कृत्यैः--श० ४।१८, स्वार्थात्सतां गुरुतरा प्रणयक्रियैव विक्रम० ४।१५ 5. दुःसह्य, असह्य —कान्ताविरहगुरुणा शापेन-मेघ० १ 6. बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड, तीव्र --गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि--रघु० ३।१७, गुर्वपि विरहदुःखम् —श० ४।१५, भग० ६।२२ 7. श्रद्धेय, आदरणीय 8. भारी, दुष्पाच्य 9. अभीष्ट, प्रिय 10. अहंकारी, घमंडी, दर्पोक्ति 11. (छन्दःशास्त्र में) दीर्घमात्रा, (या तो स्वयं दीर्घ, अथवा संयुक्त व्यंजन से पूर्व होने के कारण दीर्घ) उदा० 'इंड' में ई, तथा 'तस्कर' में त, (यह छंद में प्रायः 'ग' लिखा जाता है मात्रौ गौ चेच्छा-लिनी वेदलौकैः --आदि),—इः पिता—न केवलं तद्गु-रुरेकपार्थिवः क्षितावभूदेकगुणधुरोऽपि सः--रघु० ३।३१, ४८, ४।१, ८।२९ 2. कोई भी श्रद्धेय या आदरणीय पुरुष, वृद्ध पुरुष या संबंधी, बुजुर्ग (ब० व०) शुश्रू-रस्व गुरून्—श० ४।१४, भग० २।५, भामि० २।७, १८, १९, ४९, आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया--रघु० १४।४६ 3. अध्यापक, शिक्षक--गुरुशिष्यौ 4. विशेष-तया धार्मिकगुरु, आध्यात्मिक गुरु - तौ गुरुर्गुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिननन्दतुः --रघु० १।५७, (पारिभाषिक रूप से गुरु वह है जो गायत्री मंत्र का उपदेश करे और शिष्य को वेदाध्यापन करे--स गुरुर्यः क्रियाः कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति—याज्ञ० १।३४) 5. स्वामी, प्रधान, अधीक्षक, शासक —वर्णाश्रियाणां गुरवे स वर्णी —रघु० ५।१९, वर्ण और आश्रमों का प्रधान -गुरु-र्नृणां गुरवे निवेद्य--२।६८ 6. बृहस्पति, देवगुरु -गुरुं नेत्रसहस्रेण चोदयामास वासवः—कु० २।२९ 7. बृहस्पति नक्षत्र—गुरुकाव्यानुगां विभ्रच्चान्द्रीमभि-लभः श्रियम्— शि० २।२ 8. नये सिद्धान्त का व्याख्याता 9. पुष्य नक्षत्र 10. कौरव और पांडवों के गुरु 11. मीमांसकों के एक संप्रदाय का नेता प्रभाकर (उसके नाम पर 'प्राभाकर' या 'प्रभाकरीय' कहलाता है)। अर्थ. शिष्य को शिक्षा देने के उपलक्ष्य में गुरुदक्षिणा- -पूर्वमाहृतुमर्हं यतिष्ये रघु० ५।७, - उत्तम (वि०) अत्यंत सम्माननीय (- मः) पर-मात्मा, - कार पूजा, उपासना, कर्म उपदेश, पर-म्पराप्राप्त शिक्षा,--जनः श्रद्धेय पुरुष, वृद्धसंबंधी बुजुर्ग - - नापेक्षितो गुरुजनः का० १५८, भामि० २।७, - तल्पः 1. अध्यापक की शय्या (भार्या) 2. अध्या-पक की शय्या का उल्लंघन अर्थात् गुरुपत्नी के साथ अनुचित संबंध, तल्पग, तल्पिन् गुरु-पत्नी के अनु-चित संबंध रखने वाला (हिन्दूधर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा व्यक्ति महापातकियों में गिना जाता है - अति-पातकी, त्रै०, मनु० ११।१०३) 2. जो अपनी सौतेली माता के साथ व्यभिचार करता है, - दक्षिणा आध्या-त्मिक गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा रघु० ५।१, -दैवत पुष्य नक्षत्र, -पाक (वि०) पचने में कठिन, -भक्ति 1. पुष्यनक्षत्र 2. धनुष, - मर्दलः एक प्रकार की ढोलक या मृदंग, -रत्नम् पुखराज, लाघवम् सापेक्षिक महत्त्व या मूल्य, -वर्तिन्, वासिन् (पुं०) गुरु के घर रह कर पढ़ने वाला ब्रह्मचारी,—वासरः बृहस्पति वार, - वृत्तिः (स्त्री०) ब्रह्मचारी का अपने गुरु के प्रति आचरण।

गुरुक (वि०) (स्त्री० - की) [गुरु + कन्] 1. जरा भारी 2. (छन्द० में) दीर्घ।

गु (गू) जर [गुरु+जृ+णिच्+अण्-पृषो०] 1. गुजरात का प्रदेश या जिला--तेषां मार्गे पश्चिमेवंशजातं गूर्जराणां यः सेतापं शिथिलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य - विक्रमांक० १८।९७।

गुर्विणी, गुर्वी [गुरु+इनि+ङीप्, गुरु+ङीष्] गर्भवती स्त्री—उदा० गुर्विणीं नानुगच्छन्ति न स्पृशन्ति रज-स्वलाम्।

गुलः [=गुड, इत्यय लः] गुड़ तु० गुड।

गुलुञ्छः, —गुलुञ्छकः [=गुञ्छ पृषो० गुद् + विच्, इत्यय लः, गुल्+उञ्छ्+अण्] गुच्छ, झुंड दे० गुच्छ।

गुल्फः [गल्+फक् अकारस्य उकारः] टखना —आगुल्फ-कीर्णपिण्डमार्गपुष्पं कु० ७।५५, गुल्फावलंबिना —का० १०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुल्म:,-ल्मम् [गुड्+मक्, डस्य लः · तारा०] 1. वृक्षों का झुंड, झुरमुट, वन, झाड़ी—मनु० १।४८, ७।१९२, १२।५८, याज्ञ० २।२२९ 2. सिपाहियों का दल, सैन्य-दल जिसमें ४५ पदाति, २७ अश्वारोही, ९ रथारोही और ९ गजारोही होते हैं 3. दुर्ग 4. तिल्ली 5. तिल्ली का बढ़ जाना 6. गाँव की पुलिस चौकी 7. घाट।

गुल्मिन् (वि०) (स्त्री० नी) [गुल्म+इनि] झुरमुट या झाड़वृन्द में उगनेवाला, बढ़ी हुई तिल्ली वाला, तिल्ली के रोग से ग्रस्त।

गुल्मी [गुल्म+अच्+ङीष्] तंबू।

गु (गू) वाक: [गु+आक] सुपारी का पेड़।

गुह् [स्वा० उभ०··गूहति-ते] ढकना, छिपाना, परदा डालना, गुप्त रखना ··गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटी-करोति—भर्तृ० २।७२, गूहेत्कूर्मः इवाङ्गानि··मनु० ७।१०५, रघु० १४।४९, भट्टि० १६।४९, उप ~, आलिंगन करना, तरङ्गहस्तैरुपगूहतीव—रघु० १३।६३, १८।४७, भट्टि० १४।५२, शि० ९।३८, नि ~, छिपाना, गुप्त रखना।

गुह [गुह्+क] 1. कार्तिकेय का विशेषण··गुह इवाप्रति-हतशक्तिः—का० ८, कु० ५।१४ 2. घोड़ा 3. निषाद या चांडाल का नाम जो शृंगवेर का राजा तथा भगवान् राम का मित्र था।

गुहा [गुह+टाप्] 1. गुफा, कंदरा, छिपने का स्थान, —गुहानिबद्धप्रतिशब्ददोषम् —रघु० २।२८, ५।१, धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्—महा० 2. छिपाना, ढकना 3. गड्ढा, बिल 4. हृदय। सम० आहित (वि०) हृदय में रक्खा हुआ, ईश्वर ब्रह्मा, ··मुख (वि०) गुफा जैसे मुँह का, चौड़े मुँह का खुले मुँह का,—शय: 1. चूहा 2. शेर 3. परमात्मा।

गुहिनम् [गुह्+इनन्] वन, जंगल।

गुहेर: [गुह्+एरक] 1. अभिभावक, प्ररक्षक 2. लुहार।

गुह्य [स० कृ०] [गुह्+क्यप्] 1. छिपाने के योग्य, गोपनीय, गुप्त रखने के योग्य, निजी—गुह्य च गूहति ··—भर्तृ० २।७२ 2. गुप्त, एकान्तवासी, निरक्त (सेवावृत्ति) 3. रहस्यपूर्ण ··भग० १८।६३, ह्य. 1. पाखंड 2. कछुवा,—ह्यम् 1. भेद, रहस्य ··मौनं चैवास्मि गुह्यानाम् ··भग० १०।३८, ९।२, मनु० १२।११७ 2. गुप्त इन्द्रिय, पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय। सम०···गुरु: शिव का विशेषण, ··दीपक: जुगनू,—निध्यङ्ग: भूत,—भाषितम् 1. गुप्तवार्ता 2. भेद, रहस्य की बात, ··मथ: कार्तिकेय का विशेषण।

गुह्यक: [गुह्य+गोपनीयं कं सुखं येषाम् ··ब० स०] यक्ष जैसी एक अर्धदेवों की श्रेणी जो कुबेर के सेवक तथा उसके कोष के संरक्षक हैं—गुह्यकस्तं ययाचे··मेघ० ५, मनु० १२।४७।

गू: (स्त्री०) [गम्+कू टिलोप:] 1. कूड़ा करकट 2. मल, विष्ठा।

गूढ (भू० क० कृ०) [गूह्+क्त] 1. छिपा हुआ, गुप्त, गुप्त रक्खा हुआ 2. ढका हुआ। सम०···अङ्ग: कछुवा, —अहिंस: साँप—आत्मन् (समास होकर गूढोत्मन्) बनता है, सिद्धा० ने इस प्रकार समाधान किया है—भवेद् वर्णागमाद् हंसः सिंहो वर्णविपर्ययात्, गूढोत्मा वर्ण-विकृतेर्वर्णलोपात्पृषोदरः), परमात्मा,—उत्पन्न: क: हिन्दूधर्म शास्त्रों में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, यह उस स्त्री का गुप्त पुत्र है जिसका पति परदेश गया हुआ है, तथा वास्तविक पिता अज्ञात है···गूढे प्रच्छन्न उत्पन्नो गूढजस्तु सुत: स्मृत:··याज्ञ० २।१२९, १७०,—नीड: खजनपक्षी, -पथ: 1. गुप्तमार्ग 2 एक-डंडी 3. मन, बुद्धि, पाद्,—पाद: साँप,—पुरुष: जासूस, गुप्तचर, भेदिया, पुष्पक: बकुलवृक्ष, ··मार्ग: भूगर्भ मार्ग,··मैथुन: कौवा,—वर्चस् (पु०) मेंढक, ··साक्षिन् (पु०) गुप्त गवाह, ऐसा साक्षी जिसने प्रतिवादी की बातों को चुपचाप सुना हो।

गूथ:,-थम् [गू+थक्] मल, विष्ठा।

गून (वि०) [गू··क्त] उत्सृष्ट मल।

गूरणम् · देο 'धूरण'।

गूर्णा ? मोर के पंख में बनी हुई आँख की आकृति।

गू (स्वा० पर०··गरति) छिड़कना, तर करना गीला करना।

गूर्ज्, गृर्ज् [स्वा० पर० गर्जति, गृर्ज्जति] शब्द करना, दहाड़ना, गुर्राना आदि।

गूर्ज्जन: [गूर्ज्ज्+ल्युट्] 1. गाजर 2. शलजम 3. गांजा (गांजे की पत्तियों को चबाना जिससे कि मादकता पैदा हो),···नम् विषैले तीर से मारे हुए पशु का मांस।

गूर्द्दि (ही) व. [?] गीदड़ों की एक जाति।

गृध् (दिवा० पर०··गृध्यति, गृद्ध) ललचाना, इच्छा करना, लोभवश प्रयत्नशील होना, लालायित होना, अभिलाषी होना।

गृधु (वि०) [गृध्+कु] कामातुर, लम्पट,—धु: कामदेव।

गृध्नु (वि०) [गृध्+क्नु] 1. लोभी, लालची—अगृध्नुरादत्ते सोऽर्थम् ··रघु० १।२१ 2. उत्सुक, इच्छुक।

गृध्यम्,-ध्या [गृध्+क्यप्] इच्छा, लोभ।

गृध्र (वि०) [गृध्+रक] 1. लोभी लालची ··ध्र:,—ध्रम् गिद्ध,—मार्जारस्य हि दोषेण हतो गृध्रो जरद्गवः हि० १।५९, रघु० १२।५०, ५९। सम०—कूट: राजगृह के निकट विद्यमान एक पहाड़, पति:,—राज: गिद्धों का राजा, जटायु—अस्थ्यवासीन्महति शिखरे गृध्रराजस्य वासः—उत्तर० २।२५,—वाज,—वाजित (वि०) गिद्ध के परों से युक्त (बाण आदि)।

गृष्टि: (स्त्री०) [गृह्णाति सकृत् गर्भम् ··ग्रह्+क्तिच्]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृधो० तारा०] 1. एक बार ब्याई हुई गौ, पहलौठी गाय (सकृत्प्रसूता गौः)-अपोनप्तारोद्वहन्प्रयत्नादगृष्टिः --रघु० २।१८, स्त्री तादृस्संस्कृतं पठन्ती दत्तनवनस्या इव गृष्टिः, सूयमानब्दं करोति - मृच्छ० ३. 2. (दूसरे पशुओं के नामों के साथ जुड़कर) किसी भी पशु का (मादा, बच्चा, **वासितागृष्टिः** : हथिनी का(मादा) बच्चा।

गृहम् [ग्रह्+क] 1 घर, निवास, आवास भवन- न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते-पंच० ४।८१, पश्य वेतस मूलेण सुगृही निर्गृहीकृता०- पंच० १।३९० 2 पत्नी (उपर्युक्त उद्धरण कई बार निदर्शन के रूप में प्रयुक्त होता है) 3. गृहस्थ-जीवन 4. मेषादि राशि 5. नाम या अभिधान,- **हः** (पुं०, ब० व०) 1. घर निवास - इमे नो गृहाः -मुद्रा० १, स्फटिकोपलविग्रहा गृहाः, शशभृद्धिरनिरङ्कुभिलय नै० २।७६, तत्रागार कनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् मेघ० ७५ 2. पत्नी 3. घर के निवासी, कुटुंब। सम०-**अक्षः** झरोखा, झीखा, शीशे या आयताकार खिड़की, --**अधिपः**—ईशः, —**ईश्वरः** 1. गृहस्थ 2. किसी राशि का स्वामी, - **अयनिकः** गृहस्थ,—**अर्थः** घरेलू मामला, घरेलू बातें ---गृहार्थोऽग्निपरिचिक्रियाः -मनु० ३।६७, **अञ्जनम्** एक प्रकार की कांजी,—**अवगृहणी** देहली,-- **अश्मन्** (पुं०) सिल, (एक आयताकार पत्थर जिस पर मसाले पीसे जाते हैं), **आरामः** गृहवाटिका, - **आश्रमः** गृहस्थों का आश्रम, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की द्वितीय अवस्था -दे० आश्रम, **उत्पातः** कोई घरेलू बाधा,— **उपकरणम्** घरेलू बरतन, गृहस्थ के उपयोग की सामग्री,- **कक्षपुटः**—गृहाङ्गणम् दे०, **कपोतः**,-**तकः** पालतू कबूतर,— **करणम्** 1. घरेलू मामला 2. घर की इमारत- **कर्मन्** (न०) गृहस्थ के लिए विहित कर्म, **दासः** चाकर, घरेलू नौकर शम्भुस्वयंभुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सतनं गृहकर्मदासाः-भर्तृ० १।१, - **कलहः** घरेलू झगड़ा भाई भाई की लड़ाई,—**कारकः** घर बनाने वाला, राज, याज्ञ० ३।१४६,—**कुक्कुटः** पालतू मुर्गा,- **कार्यम्** घर का कामकाज मनु० ५।१५०, - **चुल्ली** साथ लगे हुए दो कमरों का घर जिनमें से एक का मुख पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर हो,---**छिद्रम्** 1. घर की गुप्त बातें या कमजोरियाँ 2. कौटुम्बिक अनबन, --**ज**,—**जातः** घर में ही पैदा हुआ नौकर,— **जालिका** धोखा, कपटवेष, -**ज्ञानिन्** ('गृहेज्ञानिन्' भी) 'घर में ही तीसमारखां', अनुभवशून्य, जड, मूर्ख, -**तटी** घर के सामने बना चबूतरा,--**दासः** घरेलू सेवक, --**देवता** घर की अधिष्ठात्री देवता, (व० व०) कुल देवताओं का समूह,—**देहली** घरकी दहलीज-यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनाम् - मृच्छ० १।९, **धर्मः** हवा,- **नाशनः** जंगली कबूतर,—**नीडः** चिड़िया, गौरैया,—**पतिः** 1. गृहस्थ, ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् विवाहित जीवन बिताने वाला घर का मालिक 2. यज्ञमान 3. गृहस्थ के उपयुक्त कर्म अर्थात् आतिथ्य आदि,- **पालः** 1. घर का संरक्षक 2. घर का कुत्ता, --**पीतकः** घर की जमीन, वह भूभाग जिस पर घर की इमारत बनी हुई है और जो घर को घेरती है, - **प्रवेशः** नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना,- **बलिः** पालतू नेवला,—**बलिः** वैश्वदेव यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, अवशिष्ट अन्न सब जीवजन्तुओं को वितरण करना, मनु० ३।२६५, **°भुज्** (पुं०) 1. कौवा 2. चिड़िया - नीहारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः -मेघ०२३, **°देवता** घर का देवता जिसे आहुति दी जाती है, - **भङ्गः** 1. घर से निर्वासित व्यक्ति, प्रवासी 2. घर का नाश करना 3. घर में सेंध लगाना 4. असफलता किसी दुकान या घर की बर्बादी या नाश,—**भूमिः** (स्त्री०) वास्तु स्थान, वह जमीन जिस पर कोई मकान बना हो,-- **भेदिन्** (वि०) 1. घर के कामों में ताक झांक करने वाला 2. घर में कलह कराने वाला, **मणिः** दीपक,-- **मार्जिका** चमगीदड़, **मृगः** कुत्ता,--**मेधः** 1. गृहस्थ 2. पंचयज्ञ,—**मेधिन्** (पुं०) गृहस्थ-गृहैरिमेधिन्तै संगच्छस्ले-मल्लि०) प्रजायें गृहमेधिनाम्-रघु० १।७, दे० 'गृहपति', - **यन्त्रम्** उत्सव आदि के अवसर पर झंडा फहराने का डंडा या कोई और उपकरण-गृहयन्त्रपताकाश्रीरपौरान्तरनिर्मिता-कु० ६।२१, **वाटिका** वाटी घर से मिली हुई बगीची, --**वित्तं** घर का स्वामी,-- **शुकः** पालतू तोता, आमोद के लिए पाला हुआ तोता अमर० १३, **संवेशकः** व्यावसायिक भवननिर्माता, स्थपति, **स्थः** गृही, दूसरे आश्रम में प्रवेश करके रहने वाला सकटा ह्यहिंसा-ल्लोनां प्रत्यवायैर्गृहेसना - उत्तर० १।९, दे० 'गृहपति' और मनु० ३।३८, ६।९०, **°आश्रमः** गृहस्थ का जीवन दे० गृहाश्रम, **°धर्मः** गृहस्थ के कर्तव्य।

गृहयाय्यः [गृह+णिच्+आय्य] 1. गृहस्थ, घरबार वाला (तारा० के अनुसार 'शब्दकल्पद्रुम' में दिया गया 'गृहयाय्य' रूप शुद्ध नहीं है)।

गृहयालुः (वि०) [गृह्+णिच्+आलु] पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला।

गृहिणी [गृह्+इनि+ङीप्] गृहस्वामिनी, पत्नी, गृहपत्नी, (घर का कार्यभार संभालने वाली स्त्री)—न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते, गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते- पंच० ४।८१। सम०—**पदम्** गृहस्वामिनी का पद या प्रतिष्ठा—यांस्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः- श० ४।१७, स्थिता गृहिणीपदे १८।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृहिन् (वि०) [गृह+इनि] घर का स्वामी, गृहस्थ, घरबारी -पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः --श० ४।५, उत्तर० २।२२, मा० २।२४ ।

गृहीत (भू० क० कृ०) [ग्रह्+क्त] 1. लिया हुआ, पकड़ा हुआ -केशेषु गृहीतः 2. स्वीकृत 3. प्राप्त, अवाप्त 4. परिहित, पहना हुआ 5. लुटा हुआ 6. अधिगत; ज्ञात -दे० 'ग्रह्' । सम० **गर्भा** गर्भवती स्त्री, —**विद्** (वि०) 1. भागा हुआ, भगोड़ा, तिरस्करिणी हुआ 2 तिरोभूत, लापता ।

गृहीतिन् (वि०) (स्त्री० नी) [गृहीत+इनि] जिसने कोई बात समझ ली है (अधि० के साथ) -गृहीतो षट्स्वङ्गेषु दश० १२० ।

गृह्य (वि०) [ग्रह्+क्यप्] 1. आकृष्ट या प्रसन्न होने के योग्य जैसा कि 'गुणगृह्यः' 2. घरेलू, 3. जो अपना स्वामी न हो, परतन्त्र 4. पालतू, घर में सधाया हुआ 5. बाहर स्थित -ग्राममुह्या सेना (गाँव के बाहर स्थित सेना),—**ह्यः** 1. घर में रहने वाला 2. पालतू जानवर, **ह्यम्** गुदा । सम०--**अग्निः** अग्निहोत्र की आग जिसको स्थापित रखना प्रत्येक ब्राह्मण का विहित कर्म है ।

गृह्या [गृह्य+टाप्] नगर के निकट बसा हुआ गाँव ।

गृ i (क्रया० पर० गृणाति, गृर्ण) 1. शब्द करना, पुकारना, आवाहन करना 2. घोषणा करना, बोलना, उच्चारण करना, प्रकथन करना —रघु० १०।१३ 3. बयान करना, प्रचारित करना 4. प्रशंसा करना, स्तुति करना -कैश्चिद्गीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति भग० ११।२१, भट्टि० ८।७७, अनु०--प्रोत्साहित करना, भट्टि० ८।७७, ii (तुदा० पर० -गिरति या गिलति) 1. निगलना, हड़प करना, खा जाना 2 निकालना, उडेलना, थूक देना, मुंह से फेंकना, **अव** ,(आ०) खाना, निगलना —तथावदगिरमणेश्च विशाखर्क्षसोमितम्— भट्टि० ८।३०, **उद्** —1. फेंकना, थूक देना, वमन करना —उद्गिरन्तो यद् गरलं फणिनः पुरुषासि परिमलोद्गारैः -भामि० १।११, शि० १४।१ 2. उत्सर्जन करना, निकाल बाहर करना, उगल देना --कु० १।३३, रघु० १४।५३ वेणी० ५।१४, पंच० ५।६७, **नि**—,निगलना, खा जाना -भामि० १।३८. **सम्** 1. निगलना 2. प्रतिज्ञा करना, व्रत करना, (आ०). **समुद्** —, 1. बाहर फेंक देना, निकाल देना 2. जोर से चिल्लाना, iii (चुरा० आ० -गारयते) 1. बतलाना, वर्णन करना 2. अध्यापन करना ।

गेंडु (डु) क: [गच्छतीति गः इन्दुरिव, गेंदु+कन्, गेंडुक पृषो०] खेलने के लिए गेंद, (गेंडुक' भी) ।

गेय (वि०) [गै+यत्] 1. गायक, गाने वाला —गेयो मागधवरुः सान्त्वम्—पा० ३।४।६८, सिद्धा० 2. गाये जाने के योग्य, **यम्** 1. गीत, गायन गाने की कला —गेये केन विनीतो वाम्— रघु० १५।६९, मेघ० ८६, अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्येव विचित्रता शि० २।७२ ।

गेष् (स्वा० आ० गेषते, गेष्ण) ढूंढना, खोजना, तलाश करना—नृ० 'गवेष' ।

गेहम् [गो गणेशो गवर्वो वा ईहः ईप्सितो यत्र तारा०] घर, आवास सा नारी विधवा जाता गेहे रोदिति तत्पतिः - (सुभा०, वि० इस शब्द का अधि० का रूप अलङ्कृ त० स० बनाने के लिए कई शब्दों के साथ प्रयोग होता है, उदा० **गेहेशूरिन्** (वि०) 'घर पर तीसमारखां' अर्थात् कायर, भीरु, **गेहेबाहिन्** (वि०) 'घर पर ही तेज' अर्थात् कायर, **गेहेनदिन्** (वि०) 'घर पर ही ललकारने वाला' अर्थात् कायर' घरे का मुर्गा या डरपोक', **गेहेश्मेहिन्** (वि०) 'घर में ही मूतने वाला' अर्थात् अलसी, **गेहेश्वाः** डींग मारनेवाला, आत्मश्लाघी, शेखीखोर, **गेहेशूरः** 'अपने मोहल्ले में कुत्ता भी शेर होता है' चहारदीवारी के सूरमा, कालीन के शेर, डींग मारनेवाला कायर ।

गेहिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [गेह+इनि]=**गृहिन्** ।

गेहिनी [गेहिन्+ङीप्] पत्नी, घर की स्वामिनी —धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी —सा० ६।९, भर्तृहरिरिवाः प्रिय इति सदृशे चेतसा कातरेण —मेघ० ७७ ।

गै (भ्वा० पर० गायति, गीत) 1. गाना, गीत गाना —अहो साधु रचितेदं गीतम्--मृच्छ० १, रोमसमयमधिकृत्य गीयन्ताम् शा० १, मनु० ४।६४, ९।४२ 2. गाने के स्वर में बोलना या पाठ करना 3. वर्णन करना, घोषणा करना, कहना -(छन्दोमयी भाषा में) गीतरचयामर्थोक्तिरसा --मा० २ 4. गाने के स्वर में वर्णन करना, बयान करना या प्रख्यात करना -चारण-इङ्गीतः शा० २।१४, प्रभवस्तस्य गीयते—कु० २।५, अनु—, गाने में अनुकरण करना अनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम् --गीत० १, कि० ३।६०, **अव**—, निन्दा करना, कलंकित करना, **उद्** -, ऊँचे स्वर में गाना, उच्च स्वर में गायन उद्गास्यतामिच्छति किन्नराणाम् -कु० १।८, गेयमुद्गातुकामा --मेघ० ८६, उद्गीयमान वनदेवताभिः--रघु० २।१२, **उप** —, गाना, निकट गाना प्रिये प्रवृत्तिर्यदियं गीयमानमवैहि उन्मत्तभिदमध्वगम् -उद्भट, कि० १८।४७, **परि**—, गाना, बयान करना, वर्णन करना, **वि** -, 1. वदनाम करना, झिड़कना, कलंकित करना विगीयसे मत्पथदेहदाहिना -नै० १।७९ 2. विषम स्वर (बेमेल स्वर) में गाना ।

गैर (वि०) (स्त्री०-री) [गिरि+अण्] पहाड़ से आया हुआ, पहाड़ी, पहाड़ पर उत्पन्न ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गैरिक (वि०) (स्त्री०—की) [गिरि+ठक्] पहाड़ पर उत्पन्न,—कः-कम् गेरु,- कम् सोना ।

गैरेयम् [गिरि+ढक्] शिलाजीत ।

गो (पुं०, स्त्री०) कर्तृ० गौः [गच्छत्यनेन, गम् करणे डो तारा०] 1. मवेशी, गाय (ब० व०) 2. गौ से उपलब्ध वस्तु—दूध, मांस चमड़ा आदि 3. तारे 4. आकाश 5. इन्द्र का वज्र 6. प्रकाश की किरण 7. हीरा 8. स्वर्ग 9. बाण, (स्त्री०) 1. गाय जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम् रघु० २।३, क्षीरिण्यः सन्तु गावः—मृच्छ० १०।६० 2. पृथ्वी दुदोह गां स यज्ञाय रघु० १।२६, गामानसारां रघुरण्यकेश्च ५।२६, ११।३६, भग० १५।१३, मेघ० २० 3. वाणी, शब्द—रघोरुदारामपि गां निशम्य—रघु० ५।१२, २।५९, कि० ४।२० 4. वाणी की देवता—सरस्वती 5. माला 6. दिशा 7. जल (ब० व०) 8. आँख (पुं०) 1. साँड, बैल —असज्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गवि:—काव्य० १०, मनु० ४।७२, तु० जरद्गव 2. शरीर के बाल, रोंगटे 3. इन्द्रिय 4. वृषराशि 5. सूर्य 6. (गणित में) नौ की संख्या 7. चन्द्रमा 8. घोड़ा । सम०—कण्टकः, -कम् बैलों द्वारा खूंदा हुआ फलत. जाने के अयोग्य स्थान या सड़क 2. गाय के खुर 3. गाय के खुर की नोक, -कर्णः 1. गाय का कान 2. खच्चर 3. सांप 4. बालिश्त (अंगूठे के सिरे से कनिष्ठा की अंगुली तक की दूरी) 5. दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान का नाम, शिव का निवासस्थान श्रितगोकर्णनिकेतशीश्वरम्—रघु० ८।३३ 6. एक प्रकार का बाण, -किराटा,-किरीटिका मैना पक्षी, -किलः -कोलः 1. हल 2. मूसल,-कुलम् 1. गौओं का लश्कर—वृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादु-दूधन्य गोवर्धनम्—गीत० ४, गोकुलस्य तृषार्तस्य—महा० 2. गोशाला 3. 'गोकुल' एक गांव (जहाँ कृष्ण का पालन पोषण हुआ), -कूलिक (वि०) 1. दलदल में फंसी गाय का उद्धार करने में सहायता न देने वाला 2. भेंगा, वक्रदृष्टि, -कृतम् गाय का गोबर, क्षीरम् गाय का दूध, -खा नाखून, -गृष्टिः सकृत्प्रसूता गाय, एहलौठी, -गोयुगम् बैलों की जोड़ी,—गोठम् गौशाला, पशुशाला, -ग्रन्थिः 1. कंठे, सूखा गोबर 2. गौशाला, --ग्रहः पशुओं को पकड़ना,—ग्रासः प्रायश्चित्त के रूप में गाय को घास का कौर देना या भोजन का वह भाग जो गाय को देने के लिए अलग कर दिया जाय, -घृतम् 1. बारिश का पानी 2. गाय का घी,— चन्दनम् एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,—चर (वि०) 1. चारागाह 2. बार-बार जाने वाला, आश्रय लेने वाला, बार-बार मंडराने वाला—पितृवनगोचरः कु० ५।७७ 3. क्षेत्र, शक्ति या पराग के अन्तर्गत—अवाङ्मनसगोचरम् —रघु० १०।१५, इसी प्रकार बुद्धि°, दृष्टि°, श्रवण° आदि 4. पृथ्वी पर घूमने वाला (रः) 1. पशुओं का क्षेत्र, चरागाह उपारतः पश्चिमरात्रिगोचरात्—कि० ४।१० 2. मंडल, विभाग, प्रांत, क्षेत्र 3. इन्द्रियों का परास, इन्द्रियों का विषय—श्रवणगोचरे तिष्ठ (जहाँ तक कानों से सुना जा सके—वहीं ठहरो) नयन गोचर या दिखाई देना 4. क्षेत्र, परास, पहुँच—हर्तुर्याति न गोचरम्—भर्तृ० २।१६ 5. (आलं०) पकड़, दबाव, शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण—कः कालस्य न गोचरान्तरगतः—पंच० १।१४६, अपि नाम मनागवेतीर्णोऽसि रतिरमणबाणगोचरम्—मा० १ 6. क्षितिज,—चर्मन् (नपुं०) 1. गोचर्म 2. विशेष माप (सतह नापने का) --वशिष्ठ के अनुसार परिभाषा—दशहस्तैन वंशेन दशदंशान् समंततः, पंच चाभ्यधिकान् दद्यादेतद्गोचर्म चोच्यते ।, °असनः शिव का विशेषण, -चारकः ग्वाला, चरवाहा,—जरः बूढ़ा बैल या साँड, —जलम् गोमूत्र, —जागरिकम् मांगलिकता, आनन्द,—तल्लजः श्रेष्ठ बैल या साँड, —तीर्थम् गौशाला,—त्रम् 1. गौशाला 2. पशुशाला 3. परिवार, वंश, कुल परम्परा—गोत्रेण माठरोऽस्मि —सिद्धा०, इसी प्रकार कौशिकगोत्राः, वसिष्ठगोत्राः --आदि—मनु० ३।१०९, ९।१४१ 4. नाम, अभिधान--जगाद गोत्रस्खलिते च का न तस्य --नै० १।३०, देखो °स्खलित नी०, मद्गोत्राङ्कविरचितपदं गेयमुद्गातुकामा—मेघ० ८६ 5. समुच्चय 6. वृद्धि 7. वन 8. क्षेत्र 9. सड़क 10. संपत्ति, दौलत 11. छतरी, छाता 12. भविष्य का ज्ञान 13. जाति, श्रेणी, वर्ग, (—त्रः) पहाड़, °कीला पृथ्वी, °ज (वि) समान कुल में उत्पन्न, एक ही जाति का, संबंधी --याज्ञ० २।१३५, °पटः वंश विवरण, वंशशालिका, वंशवृक्ष, वंशावली, °भिद् (पुं) इन्द्र का विशेषण—हृदि क्षतो गोत्रभिदश्मवर्षणः--रघु० ३।५३, ६।७३, कु० २।५२, °स्खलनम् °स्खलितम् नाम लेकर पुकारना, गलत नाम से पुकारना-- स्मरसि स्मर मेखलागुणैस्त्वं गोत्रस्खलितेषु बन्धनम्—कु० ४।८, (—त्रा) 1. गौओं का समूह 2. पृथ्वी,—तालम् हरताल, —दा गोदावरी नामक नदी,—दानम् 1. बाल काटने की दक्षिणा तथास्य गोदानविधेरनन्तरम्— रघु० ३।३३ 2. केशान्त संस्कार (दे० मल्लि० की व्याख्या) कृतगोदानमंगलाः—उत्तर० १ (राधा० में भिन्न प्रकार की व्याख्या है), -दारणम् 1. हल 2. फावड़ा, खुर्पा, -दावरी दक्षिण देश की एक नदी का नाम,—दुह् (पुं)—दुहः ग्वाला,—दोहः 1. गौ का दूध निकालना 2. गाय का दूध 3. गौओं को दोहने का समय, -दोहनम् 1. गौओं को दोहने का समय 2. गौओं को दोहना,—दोही वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाय,—द्वयः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोमूत्र,—**मत्रम्** गौओं का समूह, मवेशी,—**भरः** पहाड़ —**भूमः**, **भूः** 1. गेहूँ 2. संतरा,—**धूलिः** पृथ्वी की धूल, संध्या का समय (संध्या समय ही गौएँ जंगलों से घर लौटती हैं, उनके चलने से धूल के बादल एकत्र हो जाते हैं, इसी लिए इस काल का नाम 'गोधूलि' पड़ा),—**धेनुः** दूध देने वाली गाय जिसके नीचे बछड़ा हो,—**प्रः** पहाड़,—**नन्दी** मादा सारस (पक्षी),— **नन्दः** 1. सारस पक्षी 2. एक देश का नाम,—**नर्दीयः** महाभाष्य के कर्ता पतंजलि मुनि,—**नसः**,—**नासः** 1. एक प्रकार का सांप 2. एक प्रकार का रत्न,—**नाथः** 1. साँड़ 2. भूमिधर 3. ग्वाला 4. गौओं का स्वामी, —**नाथः** ग्वाला, **निष्यन्दः** गोमूत्र,—**पः** ग्वाला (एक वर्णसंकर जाति)—**गोपवेशस्य** विष्णोः—मेघ० १५ 2. गौशाला का प्रधान 3. गाँव का अधीक्षक 4. राजा 5. प्ररक्षक, अभिभावक, (**पी**) 1. ग्वाले की पत्नी —**गोपीपीनपयोधरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली**—गीत० ५, °**अध्यक्षः**, °**ईशः** ग्वालों का मुखिया, कृष्ण का विशेषण, °**इलः** सुपारी का पेड़ °**वधूः** (स्त्री०) ग्वाले की पत्नी °**वधूटी** गोपी, ग्वाले की तरुण पत्नी—**गोपवधूटीदुकूलचौरायं**—भाषा० १,—**पतिः** 1. गौओं का स्वामी 2. साँड़ 3. नेता, मुखिया 4. सूर्य 5. इन्द्र 6. कृष्ण का नाम 7. शिव का नाग 8. बकरा का नाम 9. राजा,—**पशुः** यज्ञीय गाय,—**पालसी** छप्पर को संभालने के लिए उसके नीचे लगी टेढ़ी बल्ली, बलभी, —**पालः** 1. ग्वाला 2. राजा 3. कृष्ण का विशेषण °**शाली** गोशाला, गोघर,—**पालकः** 1. ग्वाला 2. शिव का विशेषण,—**पालिका**,—**पाली** ग्वाले की पत्नी. गोपी, **पीतः** खंजन पक्षी का एक प्रकार,— **पुच्छम्** गाय की पूंछ (छः) 1. एक प्रकार का बन्दर 2. दो, चार या चौंतीस लड़ी का एक हार,—**पुच्छिका** शिव के बैल (नन्दिया) का सिर,—**पुत्रः** जवान बछड़ा, **पुरम्** 1. नगरद्वार 2. मुख्य दरवाजा—कि० ५।५ 3. मन्दिर का सजा हुआ तोरणद्वार,—**पुरीषम्** गाय का गोबर,—**प्रकाण्डम्** बढ़िया गाय का साँड़,— **प्रचारः** गोचरभूमि, पशुओं का चरागाह—राज० २।१६६, —**प्रवेशः** गौओं का जंगल से लौटने का समय, सायंकाल या संध्या समय, **भूत** (पुं०) पहाड़,— **मलिक** (वि०) डांस, कुलाभाली, **-मंडलम्** 1. झुण्ड 2. गौओं का समूह, **-मत्स्य**—दे० गण्डति,— **मतल्लिका** सींधी गाय, श्रेष्ठ गौ,—**मधः** ग्वाला, **मांसम्** गौ का मांस,—**यायुः** 1. एक प्रकार का तेंदुक 2. गीदड़—अनुरकुरुते धनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी—शि० १६।२५ 3. गाय का पित्तदोष 4. एक गन्धर्व का नाम,— **मुखः**,—**मुखम्** एक प्रकार का बाजा या —**मग**० १।१३ (—**खः**) 1. मगरमच्छ, घड़ियाल 2. एक तरह की (चोर के द्वारा लगाई गई) सेंध, — (**खम्**) टेढ़ामेढ़ा बना हुआ मकान, (**खम्**, —**खी**) जपमाला रखने की छाया शंकु के आकार की थैली जिसमें हाथ डाल कर माला के दानों को गिनते रहते हैं, **मूढ** (वि०) बैल की भांति बुद्धू, **-मूत्रम्** गाय का मूत्र,—**मृगः** नीलगाय, गवय, एक प्रकार का बैल,—**मेदः** 'गोमेद' नाम का एक रत्न (यह रत्न हिमालय पहाड़ और सिन्धु नदी से प्राप्य है तथा श्वेत, पीला, लाल और गहरे नीले रंग का होता है), **यानम्** बैलगाड़ी, **रक्षः** 1. ग्वाला 2. गोपाल 3. सन्तरा, **रक्षकः** 1. मुर्गाबी 2. बन्दी 3. नामपुरुष, दिगम्बर साधु, **रसः** 1. गाय का दूध 2. दही 3. छाछ, °**जम्** मटरा—**राजः** बढ़िया साँड़, —**रुतम्** दो कोस के बराबर दूरी का माप,—**रोटिका**,—**रोटी** मैना एक्षी—**रोचना** एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गोमूत्र, गोमांस से मानी जाती है अथवा जो गाय के सिर से उत्पन्न होता है, **लवणम्** नमक की मात्रा जो गाय को दी जाती है—**लांगूलं** (नृ) लः लंगूर, एक तरह का बन्दर—भा० ६।३०,—**लोभी** वेश्या,— **वत्सः** बछड़ा, °**वाहिनी** (पुं०) भेंड़िया, **वर्धनः** मथुरा के निकट वृन्दावन प्रदेश में स्थित एक विख्यात पहाड़, °**धरः**, °**धारिन्** (पुं०) कृष्ण का विशेषण,— **वशा** बांझ गाय,—**वाटम्**,—**वासः** गौओं का बाड़ा,— **विदः** 1. गोपालक, गौशाला का अध्यक्ष 2. कृष्ण 3. बृहस्पति, —**विष्** (स्त्री०), **विष्ठा** गोबर, **विसर्गः** भोर, तड़के (जब गौएँ जंगल में चरने के लिए खोली जाती हैं), **वीर्यम्** दूध का मूल्य, **-वृन्दम्** गौओं का लहंडा, —**वृन्दारक** बढ़िया साँड़ या गाय, —**वृषः** बढ़िया साँड़, °**ध्वजः** शिव का विशेषण,— **व्रजः** 1. गोशाला 2. गौओं का समूह, गोबर भूमि, **शकृत्** (नपुं०) गोबर, **शालम्** (**ला**) गौओं को रखने का स्थान, **-शृङ्गम्** गौओं की तीन जोड़ी, **षः** गौओं का स्थान, गोठ, **संख्यः** ग्वाला,—**सवृक्षः** नीलगाय, गवय की एक जाति, **सर्गः** भोर, तड़के (वह समय जब गौएँ प्रातःकाल चरने के लिए खोल दी जाती हैं), **सूत्रिका** गाय बांधने की रस्सी, **स्तनः** 1. गाय का ऐन, औड़ी 2. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता आदि 3. चार लड़ी की मोतियों की माला, **स्तनी**, **नी** अंगूरों का गुच्छा, **-स्थानम्** गोशाला, **स्वामिन्** (पुं०) गौओं का स्वामी 2. धार्मिक साधु 3. सलाओं के साथ लगाने वाली सम्मानसूचक पदवी (उदा० बोपदेव गोस्वामिन्),—**हत्या** गोवध,—**हनन्** (**हन्तम्**) गोबर, हिंस (वि०) गौओं की रक्षा करने वाला।

गोड्डम्बः [?] तरबूज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोणी [गुण्+घञ्+ङीप्] 1. गूण, बोरा 2. 'द्रोण' के बराबर माप 3. चीथड़े, फटेपुराने कपड़े।

गोण्ड: [गो: अण्ड इव] 1. मासल नाभि 2. निम्न जाति का पुरुष, पहाड़ी, नर्मदा तथा छुणा नदी के मध्यवर्ती विन्ध्य प्रदेश के पूर्वी भाग का निवासी।

गोतम: [गंभि: ध्वस्त तमो यस्य ब० स० पृषो०] अङ्गिरा कुल से सबन्ध रखने वाला एक ऋषि, शतानन्द का पिता तथा अहल्या का पति।

गोतमी [गोतम+ङीप्] गोतम की पत्नी अहल्या। सम० - पुत्र: शतानन्द का विशेषण।

गोधा [गुध्यते, वेष्ट्यते ग्राह्यूरनया- गुध्+घञ्+टाप्] 1. धनुष के चिल्ले की चोट से बचने के लिए बायें हाथ में बाँधी जाने वाली चमड़े की पट्टी 2. पड़ियाल, मगरमच्छ 3. स्वायु, तांत।

गोधि: (पुं०) [गोत्रेत्र धीयतेऽस्मिन् आधारे इन्] 1. मस्तक 2. गंगा में रहने वाला घड़ियाल।

गोधिका [गुध्नाति--गुध्+घञ्+कन्+टाप्] एक प्रकार की छिपकिली, गोह।

गोप: (स्त्री०-पी) [गुप्+अच्, घञ् वा] 1. रक्षक, रक्षा करने वाला--गोप्तिगोप्यो जगद्येशः रघु० ४।२० 2. छिपाना, गुप्त रखना 3. दुर्वचन, गाली 4. हड़बड़ी, लोभ 5. प्रकाश, प्रभा, दीप्ति।

गोपनम् [गुप्+णिच्+ल्युट्] प्रच्छादन, संरक्षण, उद्धार।

गोपायित (वि०) [गुप्+आय्+क्त] प्रच्छादित, बचाया हुआ।

गोप्तृ (स्त्री०--त्री) [गुप्+तृच्] 1. प्रच्छादक, संधारक, अभिभावक--तस्मिन्वनं गोप्तरि साधुगाने--रघु० २।१८, १।९५, मालवि० ५।२० भग० १।११ 2. छिपाने वाला, गुप्त रखने वाला--(पुं०) विष्णु का विशेषण।

गोप्य (वि०) [गो+यत्] गोवर, छप्रम् प्रियम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी खूंभी।

गोभिन् (पुं०) [गो+भिनि] 1. मंत्रियों का स्वामी 2. गौदड़ 3. पूजा करने वाला 4. बृहदेव का मंत्रज्ञ।

गोरणम् [गुर्+ल्युट्] स्फूर्ति, अध्यवसाय, धैर्य।

गोर्दम् [गुर्+दस्, नि०] (घोड़े भी) गल्लिका, स्त्रियाग।

गोल: [गुर्+अच् इत्वम् लः] 1. पिण्ड, गोला० 2. पिण्ड लड्डू, प्रलम्बिका, 3. आकाश मण्डल 4. विश्वास का आश्रय धुव, गु० कुंद 5. एक राशि पर कई ग्रहों का संयोग,--ज्ञा 1. काछ की गेंद (इससे लड़के खेलते हैं) 2. गोल, चमड़े भरने का थैला, मशक 3. लोक संख्या, पैमाइश 4. मर्म, स्याही 5. मक्खी, मधुमक्खी 6. दुष्ट, नीच 7. मांसपिण्ड नदी।

गोलक: [गुर्+ण्वुल्, इत्वम् लः] 1. पिण्ड, भूगोल 2. बच्चों के खेलने के लिए काठ की गेंद 3. पानी का मटका 4. विधवा का जारज पुत्र 5. पाँच या पाँच से अधिक ग्रहों का सम्मिलन 6. गुड़ की पिंडियां 7. खुशबूदार गेंद।

गोल्ह् (भ्वा० आ० --गोल्हते) एकत्र होना, इकट्ठे होना, ढेर लगना।

गोष्ठ:, ष्ठम् [गोष्ठ+अच्] (प्रायः 'गोष्ठम्') 1. व्रज, गोशाला, गो-घर 2. ग्वालों का स्थान, ष्ठः सभा या समाज 'इवः व्रज का कुत्ता जो झुंड के भौंकता है, (आलं०) वह आलसी गुरु जो अपने पड़ोसियों की निंदा करता है, **गोष्ठेपण्डित:** 'व्रज में निपुण' शेखीखोर, मिथ्या डींग हांकने वाला।

गोष्ठि,--ष्ठी (स्त्री०) [गोष्ठ+इन्, गोष्ठ+ङीप्] 1. सभा, सम्मेलन 2. जनसमुदाय, समाज 3. सलाह, बातचीत, प्रवचन--गोष्ठी सत्कविभिः समम् भर्तृ० १।२८ - मा० १०।२५, विशेष सह सर्वदा गोष्ठीमनुभवति पंच० २ 4. समुदाय, जमाव 5. पारिवारिक सबंध, रिश्तेदार, (विशेषतः वह जिससे संबंध बनाये रखने की आवश्यकता है) 6. एक प्रकार का एकांकी नाटक, °पतिः सभा का प्रधान, सभापति।

गोष्पदम् [गो: पदम्, ष० त०--गो+पद्+अच्, नि० सुट् पत्वं च] 1. गाय का पैर 2. घरती पर बना गाय के पैर का चिह्न 3. पैर के चिह्न में समा जाने वाले जल की मात्रा, अर्थात् बहुत ही छोटा गड्ढा 4. गाय के खुर-चिह्न में समाने के योग्य मात्रा 5. वह स्थान जहाँ गौओं का आना-जाना बहुतायत से हो।

गोह्य (वि०) [गुह्+ण्यत्] गोपनीय, छिपाने के योग्य।

गौज्जिक: [गुज्जा+ठक्] सुनार।

गौड: (पुं०) एक देश का नाम स्कंदपुराण इसकी स्थिति इस प्रकार बतलाता है--बङ्गदेश समारभ्य भुवनेशान्तगः शिवे, गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः। 2. ब्राह्मणों का एक भेद, डाः (ब० व०) गौड देश के निवासी,--डी 1. गुड़ से बनाई हुई शराब - गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा--मनु० ११।९५ 2. एक रागिनी 3. (अलं० शा० में) रीति, वृत्ति या काव्य रचना की एक शैली सा० द० कार चार रीतियों का वर्णन करता है, काव्य० में केवल तीन का ही उल्लेख है, यहां 'पाञ्चाली' का ही दूसरा नाम 'गौडी' है आजः प्रकाशकर्त्रस्तैः (वर्णः) तु पञ्चाली (अर्थात् गौडी) काव्य० ७, आजःप्रकाशकर्त्रस्तैर्वर्ण्यन्ते आद्यलक्ष्मणः पुनः, समासबहुला गौडी--सा० द० ६८७।

गौडिक: [गुड+ठक्] ऐश, शराबी।

गौण (वि०) (स्त्री०-णी) [गुण+अण्] 1. मातहत, द्वितीय कोटि का, अनावश्यक 2. (व्या० में) अप्रत्यक्ष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या व्यवधान-सहित (विप० मुख्य या प्रधान)—गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नौह्यादुच्चहाम्—सिद्धा० 3. आलंकारिक, रूपक, अप्रधान अर्थ में प्रयुक्त (शब्द या अर्थ आदि) 4. प्रधान और अप्रधान अर्थ की समानता पर स्थापित जैसा कि 'गौणी लक्षणा' में 5. गुणा की गणना से संबद्ध 6. विशेषण ।

गौण्यम् [गुण+ष्यञ्] मातहती निचली या घटिया अवस्थिति ।

गौतमः [गोतम+अण्] 1. भारद्वाज ऋषि का नाम 2. गोतम का पुत्र, शतानन्द 3. द्रोण का साला, कृपाचार्य 4. बुद्ध 5. न्यायशास्त्र का प्रणेता । सम०—संभवा गोदावरी नदी ।

गौतमी [गौतम+ङीप्] 1. द्रोण की पत्नी, कृपी 2. गोदावरी का विशेषण 3. बुद्ध की शिक्षा 4. गौतम द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र 5. हल्दी 6. गोरोचन ।

गौधूमीनम् [गोधूम+खञ्] गेहूँ का खेत ।

गौनर्दः [गोनर्द+अण्] महाभाष्य के प्रणेता पतञ्जलि मुनि का विशेषण ।

गौपिकः [गोपिका+अण्] गोपी या ग्वाले की स्त्री का पुत्र ।

गौप्तेयः [गुप्ता+ढक्] वैश्य स्त्री का पुत्र ।

गौर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [गु+र, नि०] श्वेत —कैलासगौरं वृषमारुरुक्षोः—रघु० २।३५, द्विरदरदनच्छेदगौरस्य तस्य—मेघ० ५९, ५२, ऋतु० १।६ 2. पीला सा, पीत—रक्त-गौरोचनाक्षेपनिताम्तगौरम् —कु० ७।१७, रघु० ६।६५, गौराङ्गि गर्दं न कदापि कुर्याः—रस० 3. लालरंग का 4. चमकता हुआ, उज्ज्वल 5. विशुद्ध, स्वच्छ, सुन्दर,—रः 1. सफेद रंग 2. पीला रंग 3. लाल रंग 4. सफेद सरसों 5. चन्द्रमा 6. एक प्रकार का भैंसा 7. एक प्रकार का हरिण,—रम् 1. पद्मकेसर 2. जाफरान 3. सोना । सम० -आस्यः एक प्रकार का काला बंदर जिसका मुंह सफेद हो, —सर्षपः सफेद सरसों ।

गौरक्ष्यम् [गोरक्षा+ष्यञ्] ग्वाले का कार्य, गोपालन ।

गौरवम् [गुरु+अण्] 1. बोझ, भार (शा०)—सुरेन्द्रमाश्रित्यगमंगौरवात्—रघु० ३।११ 2. महत्त्व, ऊँचा मूल्य या मूल्यांकन—स्वविक्रमे गौरवमादधानम्—रघु० —१४।१८, १८।३९, कार्यगौरवेण -- मुद्रा० ५, गुणता या महत्त्व 3. सम्मान, आदर, विचार —तथापि यन्मय्यपि ते गुरुर्हियस्तिं गौरवम्—शि० २।७१, प्रयोजनापेक्षितया प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु— कु० ३।१, अमर० १९ 4. सम्मान, मर्यादा, श्रद्धा—कोऽर्थी गतो गौरवम्—पंच० १।१४६, मनु० २।१४५ 5. दुष्करता 6. (छं० में) दीर्घता (जैसे की अक्षर की) 7. (अर्थालिक की) गहराई—मज्जार्यतो गौरवम्—मा० १।७ । सम०—आसनम् सम्मान का पद,—ईरित (वि०) प्रशस्त, यशस्वी, विख्यात ।

गौरवित (वि०) [गौरव+इतच्] अत्यंत सम्मानित, गौरव युक्त ।

गौरिका [गौरी—कन्+टाप्, इत्वम्] कुमारी कन्या, अदिवाहिता लड़की ।

गौरिकः [गौर+इलच्] 1. सफ़ेद सरसों 2. इस्पात या लोहे का चूरा ।

गौरी [गौर ङीष्] 1. पार्वती—जैसा कि 'गौरीनाथ' में 2. आठवर्ष की आयु की कन्या—अष्टवर्षा भवेद्गौरी 3. वह लड़की जो अभी रजस्वला नहीं हुई, कुमारी कन्या 4. गोरे या पीले रंग की स्त्री 5. पृथ्वी 6. हल्दी 7. गोरोचन 8. वरुण की पत्नी 9. मल्लिका लता 10. तुलसी का पौधा 11. मजीठ का पौधा । सम० —कान्तः,—नाथः शिव का विशेषण,—गुरुः हिमालय पहाड़ —गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश—रघु० २।२६, कि० ५।२१, —जः कार्तिकेय (जम्) अभरक,—पट्टः योनिरूपी अर्घा जिसमें शिवलिंग (की मूर्ति) स्थापित किया जाता है, —पुत्रः कार्तिकेय,—ललितम् हरताल,—सुतः 1. कार्तिकेय 2. गणेश 3 ऐसी स्त्री का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में हुआ था ।

गौरुत्तल्पिक [गुरुतल्प+ठक्] गुरुपत्नी से साथ व्यभिचार करने वाला ।

गौलक्षणिकः [गोलक्षण+ठक्] जो गाय के शुभ या अशुभ चिह्नों को पहचानता है ।

गौल्मिकः [गुल्म+ठक्] किसी सेना की टोली का एक सिपाही ।

गौशतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गोशत+ठञ्] सौ गौओं का स्वामी ।

ग्मा [गम्+मा, डित्, डित्त्वात् अमो लोपः] पृथ्वी ।

ग्रथ्, ग्रन्थ् (भ्वा० आ० -ग्रथते, ग्रन्थते) 1. टेढ़ा होना 2. दुष्ट होना 3. झुकना ।

ग्रथनम् [ग्रन्थ्+ल्युट् नलोपः] 1. जमाना, गाढ़ा करना, जाम हो जाना 2. एक जगह नत्थी करना 3. रचना करना, लिखना (इस अर्थ में—ग्रन्थना' शब्द भी है) ।

ग्रन्थः [ग्रन्थ्+घञ्] ढुंड, गुच्छा, लच्छा ।

ग्रथित (भू० क० कृ०) [ग्रन्थ+क्त, नलोपः] 1. एक जगह नत्थी किया हुआ या बांधा हुआ 2. रचित—वर्णः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव—शि० २।७२ 3. क्रमबद्ध, श्रेणीबद्ध 4. गाढ़ा किया हुआ 5. गांठवाला ।

ग्रन्थ् (भ्वा०, कथा० पर०; चुरा० उभ०, म्वा० आ० —ग्रन्थति, ग्रन्थयति; ग्रथयति —ते, ग्रथति, ग्रथते) 1. गूंथना, बांधना, नत्थी करना—भट्टि० ७।१०५ स्रजं ग्रथ्यते 2. क्रम से रखना, श्रेणीबद्ध करना, नियमित सिलसिले में जोड़ना 3. बटना, बटा चढ़ाना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. लिखना, रचना करना--ग्रन्थामि काव्यशिल्पविततार्थरश्मिम्--काव्य० १० 5. बनाना, निर्माण करना, पैदा करना ग्रन्थ--प्राप्तबिन्दुनिकरं पश्चमपङ्क्तयः--का० ६७ भट्टि० १७।६९, उद्--, बांधना, नत्थी करना, मुट्ठा० १।५ अन्तर्जटित करना--लता-प्रतानोद्ग्रथितैः स केसैः--रघु० २।८ 2. खोलना, ढीला करना।

ग्रन्थः [ग्रन्थ्--घञ्] 1. बांधना, गूंथना (आलं० से भी) 2. कृति, प्रबन्ध, रचना, साहित्यिक कृति, पुस्तक - ग्रन्थारम्भे, ग्रन्थकृत्, ग्रन्थसमाप्ति आदि 3. दौलत, सम्पत्ति 4. ३२ मात्राओं का श्लोक, अनुष्टुप् छंद। सम०--कारः,--कृत (पुं०) लेखक, रचयिता- ग्रन्थारंभे समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत्प्रणमति--काव्य० १, --कूटी,--कूटी 1. पुस्तकालय 2. कलामन्दिर, --विस्तरः,--विस्तारः ग्रन्थ का कई भागों में विभाजन, विस्तारमयी शैली, --सन्धिः किसी पुस्तक का अनुभाग या अध्याय (संस्कृत में 'अनुभाग' आदि के पर्याय 'अध्याय' शब्द के अन्तर्गत देखें)।

ग्रन्थनम्--ना [ग्रन्थ्+ल्युट्] दे० 'ग्रथन'।

ग्रन्थिः [ग्रन्थ्-इन्] 1. गांठ, गुच्छा, उभार स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशाविति युवमिनी--भर्तृ० ३।९०, इसी प्रकार 'मेदोग्रन्थिः' 2. रस्सी का बंधन या गांठ, वस्त्र की गांठ --इदमग्रथितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे ग० १।१८, मृच्छ० १।१, मनु० २।४२, भर्तृ० १।५७ 3. रुपया-पैसा रखने के लिए कपड़े के अंचल में गांठ, अंतरीय बटुवा, धन, सम्पत्ति कुसीदाद्दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थि-शमनात्--पंच० १।११ 4. नरकुल की गांठ, गन्ने आदि की पोरों की गांठ या जोड़ 5. शरीर के अवयवों का जोड़ 6. टेढ़ापन, ऐंठना-मरोड़ना, मिथ्यात्व, सचाई में उलट फेर 7. शरीर की वाहिकाओं में सूजन, कठोरता। सम०--छेदकः, --भेदः - मोचकः गिरहकट जेबकतरा अङ्गुलीर्यन्थिभेदका छेदयेत् प्रथमे ग्रहे --मनु० ९।२७७, याज्ञ० २।२७४,--पर्वः, पर्णम् 1. एक सुगन्धियुक्त वृक्ष- विकसाकः १।१७ 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,--बन्धनम् 1. विवाह के अवसर पर दूल्हे और दुलहिन का गठजोड़ा करना 2. बन्धन, -हरः मन्त्री।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि+कै+क] 1. ज्योतिषी, दैवज्ञ 2. राजा विराट के यहां अज्ञातवास के अवसर पर नकुल का नाम।

ग्रन्थित - दे० ग्रथित।

ग्रन्थिन् (पुं०) [ग्रन्थ-इनि] 1. जो बहुत सी पुस्तकें पढ़ता हो, किताबों अजस्रीं ग्रन्थिनः श्रेष्ठाः ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः-मनु० १२।१०३ 2. विद्वान्, पण्डित।

ग्रन्थिल (वि०) [ग्रन्थिरिवेऽस्त्यस्य--लच्] गांठदार, जटिल।

ग्रस् I (भ्वा० आ०--ग्रसते, ग्रस्त) 1. निगलना, भसकना, खा जाना, समाप्त कर देना - स इमां पृथिवीं कृत्स्नां संक्षिप्य ग्रसते पुनः--महा०, भग० ११।३० 2. पकड़ना 3. ग्रहण लगना ह्रावेव ग्रसते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौ भास्वरौ--भर्तृ० २।३४, हिमांशुमाशु ग्रसते तमिस्रा स्फुटं फलम्--शि० २।४९ 4. शब्दों को मिला-जुला कर अस्पष्ट लिखना 5. नष्ट करना, सम्--नष्ट करना भट्टि० १२।४; II (भ्वा० पर०, चु० उभ०--ग्रसति, ग्रासयति--दे) खाना निगलना।

ग्रसनम् [ग्रस्+ल्युट्] 1. निगलना, खा लेना 2. पकड़ना सूर्य या चन्द्रमा का खण्डग्रास।

ग्रस्त (भू० क० कृ०) [ग्रस्+क्त] 1. खाया हुआ, निगला हुआ 2. पकड़ा हुआ पीड़ित, ग्रस्त, अधिकृत,--ग्रह°, विषद्° आदि 3. ग्रहण-ग्रस्त,--स्तम् अर्धोच्चारित शब्द या वाक्य। सम०--अस्तम् ग्रहणग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना,--उदयः ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का उगना।

ग्रह् (क्र्या० उभ० (वेद में 'ग्रभ्')--गृह्णाति, गृहीत; प्रे० ग्राहयति, सन्नन्त--जिघृक्षति) 1. पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, पकड़ लेना, थामना, लपक लेना, कस कर पकड़ना --त्वयेजे मृत्युः पादान् राजा राज्ञी च सार्धवः -ऋ० १।५३-- आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते -मृच्छ० १।५०, तं कण्ठे जग्राह का० ३६३ पाणिं गृहीत्वा, चरणं गृहीत्वा 2. प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, जलपूर्वक असूल करना--प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्--रघु० १।१८, मनु० ७।१२४, ९।१६२ 3. हिरासत में लेना गिरफ्तार करना बन्दी बनाना - बन्दिग्राहं गृहीत्वा- विक्रम० १, यात्मत्र चारान् गृह्णीयात् मनु० ८।३४ 4. गिरफ्तार करना, रोकना, पकड़ना - भग० ६।३५ 5. मोह लेना, आकृष्ट करना महाराजगृहीतहृदयया मया - विक्रम० ४, हृदये गृह्यते नारी मृच्छ० १।५०, माधुर्यगर्भाष्टे हरिणान् गृहीतुम्-रघु० १८।१३ 6. जीत लेना उकसाना, अपनी ओर करने के लिए फुसलाना -लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् चाण० ३३ 7. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, अनुकूल करना -गृहीतुमर्हसीन्द्रियैर्यया मुहुर्महानुभावो हि नितान्तमर्थितः--शि० १।१७, ३३ 8. ग्रस्त करना, पकड़ना, विपदना (भूत प्रेतादिक का) जैसे कि 'पिशाचगृहीत' या 'वेतालगृहीत' में 9. धारण करना, लेना--द्युतिम-गृहीत् गृहणः- शि० १।२२, भट्टि० १९।२९ 10. समझना, जानना, पहचानना, समझना --कि० १०।८ 11 ध्यान देना, विचार करना, विश्वास करना, मान लेना मयाणि मृत्पिण्डबुद्धिना तत्रैव गृहीतम्--श० ६, परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृह्यतां वचः—शा० २।१८ एवं जनो गृह्णाति ---मालवि० १, मुद्रा० ३ 12. (इन्द्रियों द्वारा) संज्ञा लेना, या प्रत्यक्ष करना ज्ञानिनामदभ्र गृह्णन्ती तयोः —रघु० ११।१५ 13. धारणा होना, शस्त्रिष्क से पकड़ना, समझ लेना,---रघु० १८।४६ 14. अनुमान लगाना, अटकल लगाना, अन्दाज करना नेत्रवक्त्र-विकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः—मनु० ८।२६ 15. उच्चारण करना, उल्लेख करना, (नाम आदि का) यदि सामान्यस्य नामापि न गृहीतम् का० ३०५, न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु मनु० ५।१५७ 16. मोल लेना, खरीदना किंवता सूच्येनेत्युत्सृष्टं गृहीतम्---पंच० २, याज्ञ० २।१६९, मनु० ८।२०१ 17. किसी को वंचित करना, छीन लेना, लूट लेना, बलपूर्वक ले लेना, भट्टि० ९।९, १५।६३ 18. पहनना, धारण करना (वस्त्रादिक) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि —भग० २।२२ 19. गर्भ धारण करना 20. (उपवास) रखना 21. ग्रहण लगना 22. उत्तरदायित्व लेना | इस धातु के अर्थ उस संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार से परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे इसे जोड़ा जाय] प्रेर० 1. ग्रहण करवाना, पकड़वाना, स्वीकार करवाना 2 विवाह में उपहार देना 3. सिखाना. परिचित करवाना, अनु---, अनुग्रह करना, आभार मानना, कृपा प्रदर्शित करना---अनुगृहीतोऽहमनया मघवतः संभावनया---शा० ७, अनुगृहीताः स्मः 'अनेक धन्यवाद' 'हम बड़े आभारी हैं', अनुनम् – दिनम् नमस्कार करना, अप---, दूर करना, फाड़ना, अभि --बलपूर्वक पकड़ना, अव---, 1. विरोध करना, मुकाबला करना 2. दण्ड देना 3. हस्तगत करना, पराभूत करना, आ —, आग्रह करना, उद्---, 1. उठाना, ऊपर करना, सीधा खड़ा करना—उद्गृहीतालकान्ताः मेघ० ८, भट्टि० १५।५२ 2. जमा करना, निकालना, उप---, 1. जुटाना 2. पकड़ लेना, अधिकार में ले लेना --शत० ७।१८४ 3. स्वीकार करना, मंजूर करना 4. सहायता करना, अनुग्रह करना, नि —, 1. थाम लेना, जांच-पड़ताल करना 2. दमन करना, रोकना, दबाना, नियंत्रण करना---भग० २।६८ 3. ठहराना, बाधा डालना—निगृहीतो बलाद् द्वारि—महा० 4. दण्ड देना, सजा देना—मनु० ८।३१०, ९।३०८ 5. पकड़ना, लेना, हाथ डालना तमार्यगुह्यं निगृहीतधनुः रघु० २।३३ 6. (आंख आदि) बंद करना, मूंदना—माधुरोऽक्षिणी निगृह्य – मच्छ० २, परि –, 1. कौली भरना, आलिंगन करना 2. घेरना 3. हस्तगत करना, पकड़ना 4. लेना, धारण करना 5. स्वीकार करना 6. सहायता करना, संरक्षण देना, प्र —, 1. लेना, पकड़ना 2. दमन करना, रोकना 3. फैलाना, विस्तार करना, प्रति—, 1. थामना, पकड़ना, सहायता देना वपोधरप्रतिगृहीतमेनम् मालवि० ४, मनु० २।४८ 2. लेना, स्वीकार करना, ग्रहण करना सदाति प्रतिगृह्णाति—पंच० २, अभीप्सा प्रतिगृह्णन्तावन्योन्यमुपदर्शयन्तः—रघु० १।४४, २।२२ 3. उपहार स्वरूप लेना या स्वीकार करना 4. अनुचित व्यवहार करना, विरोध करना, गुंडागर्दी करना, रोकना---प्रतिजग्राह काकुत्स्थस्तस्यैवांजसमाशनः रघु० ४।४०, १२।४७ 5. पाणिग्रहण करना---मनु० ९।७२ 6. आज्ञा मानना, समरूप होना, ध्यान से सुनना 7. आश्रय लेना, अवलंबित होना, वि—, 1. थामना या पकड़ना 2. कलह करना, लड़ना, विवाद करना, विगृह्य चक्रे नमुचिर्दिवं यतो य इत्थमस्तस्य्यमहर्दिवं दिवः - शि० १।५१, भट्टि० ६।८६, १७।२३, सम् –, 1. संग्रह करना, एकत्र करना, संचय करना, जोड़ना संगृह्य धनम्, पाठान् 2. सानुग्रह प्राप्त करना 3. दमन करना, रोकना, (घोड़ों को) लगाम देना 4. (धनुष आदि को) डोरी खोलना; ii (भ्वा० पर०-चुरा० उभ० - ग्रहति, ग्राहयति से) लेना, प्राप्त करना आदि।

ग्रहः ग्रह्+अच्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना, अधिकार जमाना, अभिग्रहण ---हस्थ ग्रहः कथग्रहः - रघु० १९।३१ 2. पकड़, ग्रहण, प्रभाव ---कर्कटग्रहात् पंच० १।२६० 3. लेना, प्राप्त करना, स्वीकार करना, प्राप्ति 4. चुराना, लूटना---अङ्गुलीयविनियोगदर्शनं छेदयेन्नयमयो ग्रहे --मनु० ९।७७ इसी प्रकार 'गोग्रहे' 5. लूट का माल, लूटमार 6. ग्रहण लगना दे० ग्रहण 7. ग्रह (ग्रह गिनती में नौ हैं—सूर्यश्चन्द्रो मंगलश्च बुधश्चापि बृहस्पतिः, शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुरेते ग्रहा नव।) —नक्षत्रतारागणसङ्कुलापि (रात्रिः) रराजु० ६।२२, ३।१३, १२।२८, गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता, शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा---भट्ट० ९।१७ 8. उल्लेख, उच्चारण, दुहराना (नाम आदि का) नामजातियहं स्वेषामभिद्रोहेण कुर्वतः—मनु० ८।२७१, अमर ८३ 9. मगरमच्छ, घड़ियाल 10. पिशाच,शिशु, भूतना 11. अभिव्यक्त राक्षसों का एक विशेष वर्ग जो बच्चों से चिपट कर उन्हें ऐंठन मरोड़ या कुचेष्टाओं से ग्रस्त कर देता है 12. (विचारों व धारणाओं का) ग्रहण, प्रत्यक्षीकरण 13. समझने का अंग या उपकरण 14. वृद्धग्राहिता, धैर्य, अध्यवसाय 15. प्रयोजन, आकलन 16. अनुग्रह, संरक्षण। सम० --अधीन (वि०) ग्रहों के प्रभाव पर निर्भर, --अवरोधः राहु का विशेषण, (नम्) ग्रहों को टक्कर, --अधीशः सूर्य, --आधारः--आधयः ध्रुव नक्षत्र (नक्षत्रों का स्थिर केन्द्र), ---आलयः 1. सिर 2. भूता-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेश, **आलुञ्चनम्** अपने शिकार पर झपटना, और उसे फाड़ डालना इयेनो ग्रहमुल्लुञ्चते—मृच्छ० ३।२० **-ईशः** सूर्य,-**-ग्रस्तोल्लोल** राहु का विशेषण,—**गतिः** ग्रहों की चाल **चित्तकः** ज्योतिषी, **दृष्टा जन्मराशि** की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, वह समय जब कि उनका शुभाशुभ फल होता है, **-देवता** ग्रह विशेष का अधिष्ठातृ देवता,- **नायकः** 1. सूर्य 2. शनि का विशेषण, - **नेमिः** चन्द्रमा,—**पतिः** 1. सूर्य 2. चन्द्रमा, —**पीडनम्—पीडा** 1. ग्रहजनित पीड़ा, बाधा 2. ग्रहण लगना शनिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम् भर्तृ० २।९१, -- **मण्डलम्,** ओ ग्रहों का वृत्त, **युतिः** (स्त्री०) एक ही राशि पर ग्रहों का संयोग, **युद्धम्** ग्रहों का परस्पर विरोध या संघर्ष, **राजः** 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. बृहस्पति,- **लयः** ग्रहों की चाल के अनुसार माना जाने वाला वर्ष, **विद्या** ज्योतिषी, -**शान्तिः** (स्त्री०) वज्र, जप, पूजनादि के द्वारा ग्रहदोष की निवृत्ति का उपाय किया जाना, ग्रहों को प्रसन्न करना, **संगमम्** कई ग्रहों का इकट्ठा हो जाना।

ग्रहणम् [ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना, फंसाना, अभिग्रहण तथा मृगग्रहणेष्वादि—मनु० ५।१३० 2. प्राप्त करना, स्वीकार करना, ले लेना आचारेभ्यो ग्रहणम्—रघु० ७।१७ 3. उल्लेख करना, उच्चारण करना नामग्रहणम् 4. पहनना, धारण करना सोत्तरच्छदमथास्त नेपाव्यग्रहणाय सः—रघु० १७।२१ 5. ग्रहण लगना—याज्ञ० १।२१८ 6. अवबोधन, समझ, ज्ञान न परेषां ग्रहणस्य गोचरम्—नै० ३।९५ 7. अधिगम, अवाप्ति, मन से समझ लेना, पारंगत होना—लिपेर्यथावद्ग्रहणेन वाङ्मयं नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत् रघु० ३।२८ 8. शब्द पकड़ना, प्रतिध्वनि -आदिग्रहणगुरुभिर्जितैर्नंतेयैश्च:—भेघ० ४४ 9. हाथ 10 इन्द्रिय।

ग्रहणिः,-णी (स्त्री०) [ग्रह्+अनि, ग्रहणि+ङीष्] अतिसार, पेचिश।

ग्रहिल (वि०) [ग्रह+इलच्] 1. लेनेवाला, स्वीकार करने वाला 2. न दबने वाला, अटल, कठोर—न निशाखिलयापि वापिका प्रससाद ग्रहिलेव मानिनी—नै० २।७७।

ग्रहीतृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [ग्रह्+तृच्, इटो दीर्घः] 1. प्राप्तकर्ता, जैसा कि 'गुणग्रहीतृ' में 2. ग्रहणकर्त्ता, निरोधक 3. कर्जदार।

ग्रामः [ग्रस्+मन्, आदन्तादेशः] 1. गाँव, पुरवा—पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्नपरीक्षा—मालवि० १, त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्, ग्रामं जनपदस्यार्थे स्वात्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् हि० १।१४९, रघु० १।४४, भेघ० ३० 3. वंश, जाति 3. समुच्चय, संग्रह (किन्हीं वस्तुओं का) - उदा० गुणग्रामः, इन्द्रियग्रामः भग० ८।१९, ९।८ 4. सरगम, (संगीत में) स्वरग्राम या सुरकम। सम० -**अधिकृतः,—अध्यक्षः** -ईशः,—**ईश्वरः** ग्राम का अधीक्षक, मुखिया या प्रधान, -**अन्तः** गाँव की सीमा, गाँव की समीपवर्ती जगह—मनु० ४।११६, ११।७९,—**अन्तरम्** दूसरा गाँव, **अन्तिकम्** गाँव का पड़ोस,—**आचारः** गाँव के रस्मरिवाज,- **आधानम्** शिकार,—**उपाध्यायः** गाँव का पुरोहित,- **कण्टकः** 1. 'गाँव के लिए काँटा' जो गाँव को कष्ट देने वाला हो 2. चुगलखोर, **कुक्कुटः** पालतू मुर्गा, **कुमारः** 1. ग्राम का सुन्दर बालक 2. देहाती लड़का, —**कूटः** 1. गाँव का श्रेष्ठ पुरुष 2. शूद्र,—**गृह्य** (वि०) गाँव के बाहर होने वाला,—**गोहुः** गाँव का स्वामी, **घातः** गाँव को लूटना, --**घोषिन्** (पुं०) इन्द्र का विशेषण, **चर्या** स्त्री० संभो, -**चैत्यः** गाँव का पवित्र 'मूलर' का वृक्ष- **-भेघ०** २३,—**जालम्** गाँवों का समूह, ग्राममंडल, -**जोः** 1. गाँव या जाति का नेता या मुखिया 2. नेता, प्रधान 3. नाई 4. विषयासक्त पुरुष (स्त्री०) 1. वारांगना, वेश्या 2. नील का पौधा, **तक्षः** गाँव का बढ़ई,—**देवता** गाँव का अभिरक्षक देवता, **धर्मः** स्त्री-संभोग, --**ग्रेष्यः** किसी गाँव या जाति का दूत या सेवक,--**-भद्गुरिका** झगड़ा, फसाद, हंगामा, हल्लागुल्ला, **मुख्यः** बाजार, मंडी, --**मृगः** कुत्ता, - **याजकः,—याजिन्** (पुं०) 1. ग्रामपुरोहित, वह पुरोहित जो सभी जातियों के धार्मिक संस्कार कराता है, फलत. पतित ब्राह्मण समझा जाता है 2. पुजारी,—**लुब्धनम्** गाँव को लूटना - **वासः** ('ग्रामे वासः' भी) गाँव में रहना, - **वृद्धः** नपुंसक क्लीव, **-संधः** ग्राम-निगम,—**सिंहः** कुत्ता,—**स्थ** (वि०) 1. गाँव में रहने वाला, ग्रामीण 2. गाँव का सहवासी, एक ही गाँव का रहनेवाला साथी,—**हासकः** पहनोई, जीजा।

ग्रामटिका [?] गाँवड़ी, अभागा गाँव, दरिद्र गाँव—कतिपयग्रामटिकापर्यटनदुर्विदग्ध -प्रब० १।

ग्रामिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [ग्राम+ठक्] 1 देहाती, गंवार 2. अक्खड़,—**कः** गाँव का चौधरी या मुखिया मनु० ७।११६, ११८।

ग्रामीणः [ग्राम+खञ्] 1. ग्रामवासी, गाँव का रहने वाला - ग्रामीणवस्त्वलमलक्षिता जनैश्चिरं वृतीनामुपरि व्यलोकयत्—शि० १२।३७ अमर० ११ 2. कुत्ता 3. कौवा 4. सूअर।

ग्रामेय (वि०) (स्त्री०—यी) [ग्राम+ढक्] गाँव में उत्पन्न, गंवार,—**यी** रंडी, वेश्या।

ग्राह्य (वि०) [ग्राम+यत्] 1. गाँव से संबंध रखने वाला, गाँव में रहने का अभ्यस्त - मनु० ६।३, ७।१२० 2. गाँव में रहने वाला, देहाती, गंवार - अल्पव्ययेन सुन्दरि, ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति—छ० १।३ 3. घरेलू,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पालतू (पशु आदि), 4. आवर्धित (विप० 'वन्य') 5. नीच अशिष्ट (शब्द की तरह) केवल ओछे व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त—चुम्बनं देहि मे भार्ये कामचण्डालदूषणे —रस० या कटिस्ते हरते मनः—सा० द० ५७४, यह ग्राम्य उक्तियों के उदाहरण हैं 6. अभद्र, अश्लील, —ग्यः पालतू सूअर, —ग्यम् 1. गंवारू भाषण 2. देहात में तैयार किया हुआ भोजन 3. मैथुन। सम०—अण्डः गधा,—कर्मन् ग्रामीण का व्यवसाय,—कुङ्कुमम्, कुसुंभ, —धर्मः 1. ग्रामीण का कर्तव्य 2. स्त्रीसंभोग, मैथुन, —पशुः पालतू जानवर,—बुद्धि (वि०) उजड्ड, मजाकिया, अनाड़ी,—वल्लभा वेश्या, रंडी, —सुखम् स्त्रीसंभोग, मैथुन।

ग्रावन् (पुं०) [ग्रस्=डः-नुः, ग्र+आ+धन्+क्विप्] 1. पत्थर, चट्टान —किं हि नामैतदग्रावभिः सज्जन्यलादुनि ग्रावाणः सप्लवन्त इति—महावी० १. अपि ग्रावा रोदिति अपि दलति वज्रस्य हृदयम्—उत्तर० १।२८ शि० ४।२३ 2. पहाड़ 3. बादल।

ग्रासः [ग्रस्+घञ्] 1. कौर, कौर के बराबर कोई वस्तु मनु० ३।१३३, ६।२८, याज्ञ० ३।५५ 2. भोजन, पोषण 3. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहणग्रस्त भाग। सम०—आच्छादनम् -भोजन वस्त्र अर्थात् जीवनार्थ जीवन साधन,—शल्यम् गले में अटकने वाला (मछली का कांटा) आदि कोई पदार्थ।

ग्राह (वि०) (स्त्री०—ही) [ग्रह्+घञ्] पकड़ने वाला, मुट्ठी से जकड़ने वाला, लेने वाला, थामने वाला, प्राप्त करने वाला,—हः 1. पकड़ना, जकड़ना 2. घड़ियाल, मगरमच्छ—रागग्राहवती—भर्तृ० ३।४५ 3. बन्दी 4. स्वीकरण 5. समझना, ज्ञान 6. हठ, दृढ़ाग्रह 7. निर्धारण, दृढ़ निश्चय—भग० १७।१९ 8. रोग।

ग्राहक (वि०) (स्त्री०—हिका) [ग्रह्+ण्वुल्] प्राप्त करने वाला, लेने वाला, —कः 1. बाज, श्येन 2. विक्रिचिकित्सक 3. क्रेता, खरीदार 4. पुलिस अधिकारी।

ग्रीवा [गिरत्यनया—गृ+वनिप्, नि०] गर्दन, गर्दन का पिछला भाग—ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः -श० १।७। सम०—उष्ट्रा घोड़े के गले में लटकता हुआ घंटा।

ग्रीवालिका—दे० ग्रीवा।

ग्रीविन् (पुं०) [ग्रीवा+इनि] ऊंट।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रसते रसान् —ग्रस्+मनिन्] गरम, उष्ण, —ष्मः 1. गर्मी का मौसम, गरम ऋतु (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने)—ग्रीष्मसमयमधिकृत्य रोयतामम् श० १ रघु० १६।५४, भामि० १।३५ 2. गर्मी, उष्णता। सम०—कालीन (वि०) गर्मी के मौसम से संबंध रखने वाला,—उद्भवा, —जा,—भवा नवमल्लिका लता, नेवारी।

ग्रैव (स्त्री०—वी), ग्रैवेय (स्त्री०—यी) (वि०) [ग्रीवा+अण, ढक्] 1. गर्दन पर होने वाला या गर्दनसंबंधी, —वम्, —यम् 1. गले का पट्टा, या हार 2. हाथी की गर्दन में पहनी जाने वाली जंजीर—नालसत् करिणां ग्रैव त्रिपदीछेदिनामपि —रघु० ४।४८, ७५।

ग्रैवेयकम् [ग्रीवा+ढक्] 1. गले का आभूषण—उदा० अस्माकं सखि वाससी न रुचिरे ग्रैवेयकं नोज्ज्वलम्—सा० द० ३ 2. हाथी के गले में पहने जानेवाली जंजीर।

ग्रैष्मक (वि०) (स्त्री०—ष्मिका) [ग्रीष्म+वुञ्] 1. गरमी के मौसम में बोया हुआ 2. गरमी के ऋतु में दिया जाने वाला (ऋण आदि)।

ग्लपनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट्, पुक्, ह्रस्व] 1. मुझाना, सूख जाना 2. थकावट।

ग्लस् (भ्वा० आ० ग्लसते, ग्लस्त) खाना, निगलना।

ग्लह् (भ्वा० उभ०, चुरा० आ०—ग्लहति—ते, ग्लाहयति—ते) 1. जूआ खेलना, जूए में जीतना 2. लेना, प्राप्त करना।

ग्लहः [ग्लह्+अप्] 1. पासे से खेलने वाला 2. दाव, बाजी लगाना, शर्त लगाना 3. पासा 4. जूआ खेलना 5. विजय।

ग्लान (भू० क० कृ०) [ग्लै+क्त] 1. क्लान्त, श्रान्त, थका हुआ, ग्लान, अवसन्न 2. रोगी, बीमार।

ग्लानिः (स्त्री०) [ग्लै+क्ति] 1. अवसाद, क्लान्ति, थकावट -मनश्च ग्लानिमृच्छति—मनु० १।५३, अङ्गग्लानि सुरतजनिता—मेघ० ७०, ३१, शा० ४।४ 2. ह्रास क्षय—आत्मोदयः परग्लानिर्द्वयं नीतिरितीदृशी शि० २।३०, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत —भग० ४।७ 3. दुर्बलता, निर्बलता 4. बीमारी।

ग्लास्नु (वि०) [ग्लै+स्नु] क्लान्त, श्रान्त।

ग्लुच् (भ्वा० पर०—ग्लोचति, ग्लुक्त) 1. जाना, चलना-फिरना 2. चुराना, लूटना 3. छीन लेना, वञ्चित करना—बहूनामल्पवत् प्राणान् अल्पोच्छ्वसने यशः —भट्टि० १५।३०।

ग्लै (भ्वा० पर० —ग्लायति, ग्लात) 1. विरक्ति या अरुचि अनुभव करना, काम करने को जी न करना, (तुमुन्नन्त के साथ) 2. क्लान्त या श्रान्त होना, थका हुआ या अवसन्न अनुभव करना 3. साहस छोड़ना, हतोत्साह होना -उदास होना भट्टि० १२।१७, ६।१२ 4. क्षीण होना, मूर्छित होना—परै ग्लै -ग्लो-पयति 1. सुखा देना, शुष्क कर देना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. थका देना।

ग्लौ (पुं०) [ग्लै+डौ] 1. चन्द्रमा 2. कपूर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घ (वि०) [हन्+टक्, हिलोपः, धत्वं च] (यह केवल समास में उत्तर पद के रूप में प्रयुक्त होता है) प्रहार करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला---जैसा कि पाशिघ और राजघ आदि में,---घः 1. घण्टी 2. खड़खड़ाना, गरगराहट, टिनटिनाना।

घट् i (स्वा० आ० घटते, घटित) व्यस्त होना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, जानबूझ कर किसी काम में लगना (तुमुन्नंत, अधि० या सम्प्र० के साथ)---दधितां जातुमलं घटस्व --भट्टि० १०।४०, अंगदेन समं योद्धुमघटिष्ट १५।१७, १२।२६, १६।२३, २०।२४, २२।३१ 2. होना घटित होना, सम्भव होना---आर्जवस्तपोभिरयवाऽभिमतं घटायैः कृत्यं घटेत सुंदरी यदि तत्कृत स्यात् --मा० १।९, क्या यह सम्भव है, कस्यापरस्योद्भुवः प्रभूनैः वादित्रवृष्टिर्घटते भटस्य नै० २२।२२ 3. आना, पहुँचना। प्रेर०---घटयति 1. एकत्र करना, मिलाना, एक जगह करना---इत्थं नारीर्घटयितुमलं कामिभिः शि० ९।८७, अनेन भैमीं घटयिष्यतस्त्वया---वे० १।४६, कृता सधि भोमो वियटयति यूयं घटयत---वेणी० १।१०, भट्टि० ११।११ 2. निकट लाना या रखना, सम्पर्क में लाना, धारण करना---घटयति धनं कष्टाश्लेषे रसाज्ञ पयोधरौ---रत्न० २।९, घटय जघने कांचीम् --गीत० १२ 3. निष्पन्न करना, प्रकाशित करना, कार्यान्वित करना तदस्यः स्थानमाप्तं घटयति च मौनं च भजते --मा० १।१४, (अभिप्रेतम्) आनीय सृष्टिं घटयति--रत्न० १।६ 4. रूप देना, गढ़ना, आकार देना, निर्माण करना, बनाना---एवमभिधाय वैनतेयम् अघटयत् --पंच २, काव्ये कथं घटितव्यानुप्रासेन चेत: शृंगार० ३, घटय भुजबन्धनम् --गीत० १० 5. प्रणोदित करना, उकसाना स्नेहोद्यो घटयति मां तथापि वक्तुम् भट्टि० १०।७३ 6. मलना, स्पर्श करना, प्र---, 1. व्यस्त होना, काम में लगना भट्टि० २१।१७ 2. आरम्भ करना, शुरू करना---भट्टि० १४।७७ वि--1. वियुक्त होना, अलग होना 2. बिगड़ना, बर्बाद होना, रुक जाना, ठहर जाना, बन्द कर देना --प्रेर० अलग २ करना, तोड़ना, सम् --मिलाना, जो (चुरा० उभ० --घाटयति, चाटित) 1. चोट मारना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. मिलाना, जोड़ना, इकट्ठा --करना, संग्रह करना, उद्---, खोलना, तोड़ कर खोलना काष्टादुद्घाटयति मृच्छ० ३, स्थिरयत्नगद्धारमुद्---घाटयन्तो --भर्तृ० ११६३।

घट: [घट्+अच्] 1. मिट्टी का मटका, घड़ा, मर्दकन, पानी देने का पात्र कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम् भर्तृ० २।४० 2. कुम्भ राशि 3. हाथी का मस्तक 4. कुम्भक प्राणायाम 5. २० द्रोण के बराबर तोल 6. स्तम्भ का एक अंश। सम०---आटोपः रथ या कुर्सी आदि को पूरा ढकने का कपड़ा,---उद्भवः, ---ऊद्भः, ---योनिः--सम्भवः अगस्त्य मुनि के विशेषण ---ऊधस् (स्त्री०) गाय जिसकी औड़ी दूध से भरी हो ---गः कोटिशः स्वर्गयतो घटोत्कचः---रघु० २।४९, ---कर्परः 1. कवि का नाम 2. ठीकरा, बर्तन का टुकड़ा---जीर्णेयं येन कविना घटकर्परः परेण तस्मै वहेय-मुदकं घटकर्परेण --घट० २२,---कारः,---कृत् (पु०) कुम्हार, ---ग्रहः पानी भरने वाला,---दासी, कुटनी तु० कुम्भदासी,---पर्पसलम् पतित व्यक्ति का अन्त्येष्टि संस्कार करना (जो अपने इस जीवन में अपनी जाति में फिर सम्मिलित होना न चाहता हो),---भेदनकम् बर्तन बनाने का एक उपकरण, ---राजः पक्की मिट्टी का जलपात्र, ---स्थापनम् दुर्गा के रूप में जल-कलश की स्थापना।

घटक (वि०) [घट्+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रयास करने वाला प्रयत्नशील---एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये---भर्तृ० २।७४ 2. प्रकाशित करने वाला, निष्पन्न करने वाला 3. सारभूत अंश बनाने वाला, अवयव, उपादान, कः 1. वह वृक्ष जिसके फल दिखाई न देकर फल ही लगे 2. सगाई, विवाह तै कराने वाला, एक अभिकर्ता जो वंशावली मिला कर विवाह-सम्बन्ध तै कराये 3. वंशावली का जानने वाला।

घटनम् - न [घट्+ल्युट्] 1. प्रयास, प्रयत्न 2. होना, घटित होना 3. निष्पन्नता, प्रकाशन, कार्यान्वयन जैसा कि 'अघटितघटना' में 4. मिलाना, एकता, क स्थान पर मिलाना, जोड़---तप्तेन तप्तमयसा घटनाय योग्यम् विक्रम० २।१६, देहद्वयार्धघटनारचितम्---का० २३९ 5. बनाना, रूप देना, आकार देना।

घटा [अट्+अङ्+टाप्] 1. चेष्टा, प्रयत्न, प्रयास 2. संख्या, टोली, जमाव प्रलयघनघटा---का० १११, कौशिक-घटा --उत्तर० २।२९, ५।६, मत्तंगघटा शि० १।६४ 3. सैनिक कार्य के लिए एकत्र हुई हाथियों की टोली 4. सभा।

घटिकः [घट+ठन्] घड़नई के सहारे नदी पार करने वाला, कम् नितम्ब, चूतड़।

घटिका [घटी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. एक छोटा घड़ा, करवा, छोटा मिट्टी का बर्तन तार्यः श्मशानघटिका इव वर्जनीयाः - पंच० १।१९२. एक क्रीडति कूपयन्त्र-घटिकान्यायप्रसक्तो विधिः मृच्छ० १०।५९ 2. २४ मिनट का समय, एक घड़ी 3. एक जल घट जिससे दिन की घड़ियाँ गिनी जाती थीं 4. टखने के ऊपर का तथा पिण्डलों से नीचे का पतला भाग।

घटिन् (पुं०) [घट+इनि] कुंभ राशि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घटिध्मन (वि०) [घटी+ध्मा+ल्युट्] घड़ी बजाने वाला, घटिध्मा (पुं०) घड़ियाल।

घटिध्मायिन् (वि०) [घटी+ध्मा+णिनि] घड़ियाल बजाने वाला, घटिध्मा (पुं०) घड़ियाल।

घटी [घट+ङीष्] 1. छोटा घड़ा 2. २४ मिनट के बराबर समय की नाप 3. छोटा जल-घड़ा जिससे दिन की घड़ियाँ गिनने का कार्य लिया जाय। सम०—कारः कुम्हार,—गृहम्,—शाला (वि०) दे० 'घटशाला', यन्त्रम् 1. पानी ऊपर उठाने वाली रहट की घड़िया, कुएँ पर पड़ा हुआ रस्सी-डोल 2. दिन का समय जानने का एक साधन।

घटोत्कचः [?] हिडिंबा नाम की राक्षसी से उत्पन्न भीम का एक पुत्र (यह बहुत बलवान् पुरुष था, कौरव और पाण्डवों के युद्ध में यह बहुत वीरतापूर्वक पाण्डवों की ओर से लड़ा परन्तु इन्द्र से प्राप्त शक्ति द्वारा कर्ण के हाथों मारा गया—तु० मुद्रा० २।१५)।

घट्ट (म्वा० आ०—घट्टते, घट्टित—बहुधा चुरा० उभ०—घट्टयति—ते, घट्टित) 1. हिलाना, हरकत देना जैसे 'वायुघट्टिता लता' में 2. स्पर्श करना, मलना, हाथों से मलना—विटजनलग्नघट्टितेव वीणा—मृच्छ० १।२४, भट्टि० १४।२ 3. चिकनाना, सहलाना 4. ईर्ष्या-द्वेष की भावना से डोलना 5. बाधा पहुँचाना, अव—, खोलना, परि—, प्रहार करना—त्रि० ९।६४, वि—, 1. हड़ताल कर देना, तितर-बितर करना, बखेरना, उड़ा देना—शि० १।६४, भर्तृ० ३।५४ 2. मलना, घिसना, रगड़ना—कारण्डवानलविघट्टितवीचिमालाः ऋतु० २।८, ४।९, कु० १।९, कि० ८।४५, शि० ८।२४, ११।४१, सम्—1. घर्षपाना 2. इकट्ठा करना, मिलाना 3. एकत्र करना, संचय करना 4. रगड़ना, घिसना, दबाना—रघु० ६।७३।

घट्टः [घट्ट+घञ्] 1. घाट—नदी के तट से पानी तक बनी सीढ़ियाँ 2. हिलना-जुलना, आन्दोलन 3. चुंगी घर। सम०—कुटी चुंगी घर, °प्रवाहन्याय न्याय के नी० दे०,—जीविन् (पुं०) घाट से प्राप्त महसूल से अपना निर्वाह करने वाला 2. वर्णसंकर (वैश्यायां राजकाज्जातः)।

घट्टना [घट्ट+युच्+टाप्] 1. हिलाना, डुलाना, हरकत देना, आन्दोलन करना 2. रगड़ना 3. जीविका वृत्ति, अभ्यास, व्यवसाय, पेशा।

घण्टः [घण्ट+अच्] एक प्रकार का व्यंजन, चटनी।

घण्टा [घण्ट्+अट्—टाप्] 1. घंटी, 2. लोहे का या काँसे का गोल पट्ट जिसे समय की सूचना के लिए मूंगरी से पीट कर बजाते हैं। सम०—आगारम् घण्टा घर, —कलकः, —रवम् घण्टियों से युक्त प्लेट, —ताडः घंटा बजाने वाला, —नादः घण्टे की आवाज, —पथः गाँव की मुख्य सड़क, राजमार्ग, मुख्य मार्ग (दशधनुस्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः कौटि०),—शब्दः 1. काँसा 2. घंटे की आवाज।

घण्टिका [घण्टा+ङीप्+कन्, ह्रस्वः] छोटी घंटियाँ, घुंघरू।

घण्टुः [घण्ट्+उण्] 1. हाथी की छाती पर बंधी एक पट्टी जिसमें घुंघरू लगे होते हैं 2. ताप, प्रकाश।

घनः [घन् इति शब्दं कुर्वन् डायते घन्+ङी+ड] मधुमक्खी।

घन (वि०) [हन् मूर्तौ अप् धनादेशश्च—तारा०] 1. संहत, ठोस, कठोर, ठोस—संजातश्च घनाघनः—मा० ९।३१, नासा घनाश्रिका—याज्ञ० ३।३१, रघु० ११।१८ 2. सघन, घनिष्ठ, घिनका °घनविरलभावः—उत्तर० २।२७, रघु० ८।८१, अमरु ५३ 3. गठा हुआ, पूर्ण, पूर्णविकसित (जैसे कि कुच) घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरधिते गीत० ७, अमरुशतके भवति गुरू हो घनकुचयुग्मे शर्विवदनाऽसौ श्रुत० ८, भर्तृ० १।८, अमरु २८ 4. (शब्द की भाँति) गम्भीर—मा० २।१२ 5. निश्चल, स्थायी 6. अभेद्य 7. बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड 8. पूर्ण 9. शुभ, भाग्यशाली,—नः बादल—घनोदयः प्राक् तडन्तरं पयः शि० ७।३०, घनरुचिरकलापो निःसपत्नोऽस्य जातः-विक्रम० ४।१० 2. लोहे का मुद्गर, गदा 3. शरीर 4. (गणित में) संख्याद्योतक घन (किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से उपलब्ध गुणनफल) 5. विस्तार, प्रसार 6. संग्रह, समुच्चय, परिमाण, राशि, जमाव या समवाय 7. अभ्रक,—नम् 1. ज्ञान, घण्टा, घण्टा 2. लोहा 3. टीन 4. चमड़ी, त्वचा, वल्कल। सम०—अध्वगः, —अन्तः बादलों का लोप, वर्षाऋतु के पश्चात् आने वाली ऋतु, शरद्,—अम्बु (नपुं०) वर्षा, —आकरः वर्षा ऋतु, आगमः बादलों का आगमन, वर्षाऋतु—घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये—ऋतु० २।१, —आश्रयः छुहारे का वृक्ष, आश्रयः पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—उपलः ओले,—ओघः बादलों का एकत्र होना, —कृष्णः ओले,—कालः वर्षाऋतु,—गर्जितम् 1. मेघध्वनि, बादलों की गड़गड़ाहट या गरज, बिजली की कड़क 2. गंभीर और ऊँची दहाड़ या गरज, गोलकः बादी सोने की मिलावट,—जम्बालः गाढ़ी दलदल, तालः एक प्रकार का पक्षी, चातक, सारंग, —तोयः चातक पक्षी,—नादः बूआँ (यह बादलों का मुख्य अवयव समझा जाता है—मेघ० ५),—नीहारः गाढ़ा कोहरा, मथन तुषार,—पदवी 'बादलों का मार्ग' अन्तरिक्ष, आकाश क्रमादिवर्धनपदवीमनेकसंख्यः—कि० ५।३४, —पाषाणः ओला, फलम् (ज्ञा० में) किसी वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथवा ठोसपन, मूलम् (गणित में) घन-राशि का मूल अंक, रसः 1. गाढ़ा रस 2. अर्क गाढ़ा 3. कपूर 4. जल,—वर्गः घन का वर्ग, (गणित में) छठा घात, —वर्त्मन् (नपुं०) आकाश—घनवर्त्म सहस्रधेव कुर्वन् —कि० ५।१७, —वल्लिका,—वल्ली बिजली, —वातः एक प्रकार का कद्दू, कुम्हड़ा,—वाहनः 1. शिव 2. इन्द्र, —श्याम (वि०) 'बादल की भांति काला' गहरा काला, पक्का रंग, (—मः) 1. राम और कृष्ण का विशेषण, —समयः वर्षाऋतु, —सारः 1. कपूर—घनसारलीहारहार— दश० १, (श्वेत पदार्थों में उल्लेख) 2. पारा 3. जल,—स्वनः मेघगर्जन,—हस्तसंख्या (गणित में) खुदाई की विविध आदि नापने की माप (एक हाथ लंबा, एक हाथ मोटा या चौड़ा और एक हाथ ऊँचा इंट)।

घनाघनः [हन्+अच्, ह्रस्वोंधत्वम् दित्वमभ्यासस्य आक् च] 1. इन्द्र 2. जिड़चिड़ा, या मदमस्त हाथी 3. पानी से भरा हुआ या बरसाने वाला बादल।

घरटः [घर सेकम् अट्टति अतिक्रामति —घर+अट्ट् +अण्, शक० पररूपम्] खराद, घराट, चक्की।

घर्घर (वि०) [घर्घ+रा+क] 1. अस्पष्ट, घर्घराहट करने वाला, गरगर शब्द करने वाला—घर्घररवा पारेशमशान सरित्—मा० ५।१९ 2. कलकल ध्वनि करने वाला, (बादलों की भांति) गड़गड़ शब्द करने वाला, —रः 1. अस्पष्ट कलकल ध्वनि, मन्द बड़बड़ या गरगर की ध्वनि 2. कोलाहल, शोर 3. दरवाजा, द्वार 4. हंसी, अट्टहास 5. उल्लू 6. तुराग्नि।

घर्घरा,—री [घर्घर—टाप्, ङीष् वा] 1. घुंघरू जो आभूषण की भांति काम आवें 2. घुंघरुओं की गरगर ध्वनि 3. गंगा 4. एक प्रकार की वीणा।

घर्घरिका [घर्घर+ठन्+टाप्] 1. आभूषण की भांति प्रयुक्त होने वाले घुंघरू 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

घर्घरितम् [घर्घर+इतच्] सूअर के घुरघुराने का शब्द।

घर्मः [घरति अङ्गात्-च+मक् नि० गुणः] 1. ताप, गर्मी —हि० १।२७ 2. गर्मी की ऋतु, निदाघ—निःश्वासहार्यांशुकमाजगाम घर्मः प्रियावेशमिवोपदेष्टुम्· रघु० १६।४३ 3. स्वेद, पसीना—शि० १।५८ 4. कड़ाह, उबालने का पात्र। सम०· अंशुः सूर्य - शा० ५।१४, —अन्तः वर्षाऋतु - अम्भस् (नपुं०) स्वेद, पसीना, शा० १।३०, मा० १।३७, - क्लिन्न घाम, पित्त, घमौरी, (दबे हुए पसीने और गर्मी से शरीर पर पैदा होने वाले छोटे-छोटे दाने),— दीधितिः सूर्य —रघु० ११।६४, द्युतिः -सूर्य—कि० ५।४१,—पयस् (नपुं०) स्वेद, पसीना शि० ९।३५।

घर्षः, घर्षणम् [घृष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. रगड़, घिसर 2. पीसना, चूरा करना।

घस् (भ्वा० अदा०—पर०—घसति, घस्ति, घस्त) खाना, निगलना, (यह अकेली धातु है 'अद्' धातु के कुछ लकारों में ही इसके रूप बनते हैं)।

घस्मर (वि०) [घस्+अमरच्] 1. खाऊ, पेटू—दावानलो घस्मरः—भामि० १।३४ 2. निगल जाने वाला, हड़प करने वाला—इदमुत्तमयूघस्मरो द्यौरिस्मि—वेणी० ५।२६।

घस्र (वि०) [घस्+रक्] पीड़ाकर, क्षतिकर, —स्रः 1. दिन —घस्रो गमिष्यति भविष्यति सुप्रदोषम्—सुभा० 2. सूर्य—महावी० ६।८, —स्रम् केसर, जाफरान।

घाटः, —टा [घट्+अच्, स्त्रियां टाप्] गर्दन का पिछला भाग।

घाण्टिकः [घंटा—ठक्] 1. घंटी बजाने वाला 2. भाट या चारण 3. बतूरे का पौधा।

घातः [हन्+घञ्] 1. प्रहार, आघात, खरौंच, चोट· ज्याघात—दा० ३।१३, नयनशरघात ·गीत० १०. इसी प्रकार पाणिघात, शिरोघात आदि 2. मार डालना, चोट पहुँचाना, संहार करना, वध करना —वियोगी मुग्धाक्ष्याः स खलु रिपुघातावधिरभूत्—उत्तर० ३।४४, पशुघातः—गीत० १, याज्ञ० २।१५९, ३।२५२ 3. बाण 4. गुणनफल। सम०—चन्द्रः अशुभ राशि पर स्थित चन्द्रमा,—तिथिः अशुभ चान्द्र दिन,—नक्षत्रम् अशुभ नक्षत्र,- वारः अशुभ दिन,—स्थानम् बूचड़खाना, वधस्थान।

घातक (वि०) [हन्+ण्वुल्] मारनेवाला, संहार करने वाला, हत्यारा, संहारक, क्रातिल, वध करने वाला।

घातन (वि०) [हन्+णिच्+ल्युट्] हत्यारा, क्रातिल, —नम् 1. प्रहार करना, मार डालना, हत्या करना, वध करना, (यज्ञ में) पशु बलि देना।

घातिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हन्+णिच्+णिनि] 1. प्रहार करने वाला, मारने वाला 2. (पक्षियों को) पकड़ने वाला या मारने वाला 3. विनाशकारी। सम०—पक्षिन्,—विहगः बाज, श्येन।

घातुक (वि०) (स्त्री०—की) [हन्+णिच्+उकञ्] 1 मारने वाला, संहारकारी, अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला 2. क्रूर, दुष्ट, हिंस्र।

घात्य (वि०) [हन्+णिच्+ण्यत्] मारे जाने के योग्य, वह व्यक्ति जिसे मार देना चाहिए।

घारः [घृ+घञ्] छिड़कना, तर करना।

घार्तिकः [घृतेन निर्वृत्तः -ठक्] घी में तले हुए पूड़े (विशेषतः जिनमें छिद्र होते हैं) (इन्हीं को देखकर पंचतंत्र में मूर्ख पंडितों ने कहा था—छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति)।

घासः [घस्+घञ्] 1. आहार 2. चारागाह, चरागाह की घास—घासाभावात् -पंच० ५, घासमुष्टिं परगवे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दद्यात् संवत्सरं तु यः--महा० । सम०—कुम्भम्, —स्थानम् चराग्रह ।

घु (भ्वा० आ० –धवते, घुत) शब्द करना, हल्ला मचाना ।

घुः [घु+क्विप्] कबूतर की गुटर गू ।

घुट् । (तुदा० पर० घुटति, घुटित) 1. फिर प्रहार करना, बदला लेने के लिए प्रहार करना, मुकाबला करना 2. विरोध करना, ii (भ्वा० आ०—घोटते) 1. वापिस आना, लौटना 2. वस्तु विनिमय करना, अदला-बदली करना ।

घुटः, घुटिः,– डी, (स्त्री०) घुटिकः,—का [घुट्+अच्, इन् वा, घुटि+कीष्, कन् स्त्रियां टाप् वा] टखना ।

घुण् । (भ्वा० आ०, तुदा० पर०—घोणते, घुणति, घुणित) लुढ़कना, चक्कर खाना, लड़खड़ाना, अटेरना, ii (भ्वा० आ०) लेना, प्राप्त करना ।

घुणः [घुण+क] लकड़ी में पाया जाने वाला विशेष प्रकार का कीड़ा । सम० अक्षरम्,—लिपिः(स्त्री०) लकड़ी या पुस्तक के पत्रों में कीड़ों के द्वारा बनाई हुई रेखाएँ जो कुछ-कुछ अक्षरों जैसी प्रतीत होती हैं । न्याय दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ।

घुष्टः, घुष्टकः, घुष्टिका [घुष्ट्+क, घुष्ट +कन्, घुष्टक+टाप् हस्वम्] टखना ।

घुसृः [घुस्+ड, नि०] भौंरा ।

घूर् (तुदा० पर०—धूरति, घूरित) 1. शब्द करना, कोलाहल करना, खुरटि भरना, कुकुकारना, (सूअर कुत्ते आदि का) घूरघुराना—कः कः कुत्र न घूर्घुरायिते-घूरीघोरो घूरेच्छूकरः—का० ७ 2. डरावना बनना, भयंकर होना 3. दुःख में चिल्लाना ।

घूरी [घूर्+कि+ङीप्] नाघना, (विशेषकर सूअर की घुघन) घूर्घुरायितघूरीघोरो घूरेच्छूकरः काव्य० ७ ।

घूर्घूरीः [घूर् इत्यव्यक्तं घूरति घूर्+घूर्+क] 1. बोलर, चिल्लड़ (एक प्रकार का कीड़ा) 2. खुरटि भरना, घुरीना, सूअर आदि जानवर के गले से निकलने वाली आवाज़ ।

घूर्घूर [घूर्घूर+अच्+ङीप्] सूअर की आवाज़ ।

घूलघूलारवः ['घुलघुल' इत्यव्यक्तमारौति घुलघुल+आ +रु+अच्] एक प्रकार का कबूतर ।

घृ । (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० –घोरयति, घोषयति –ते, घृषित, घृष्ट, घोषित) 1. शब्द करना, कोलाहल करना 2. ऊँचे स्वर से चिल्लाना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना—स स पापादते तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम् शा० ६।२२, घोषयतु मन्मथनिदेशम्—गीत० १०, इति घोषयतीव दिङ्मुखं करिणांहस्तिपकाहतः ध्वनन् —हि० २।८६, रघु० ९।१०. आ—, उच्च स्वर से रोना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना—भट्टि० ३।२ । उद्—; उच्च स्वर से घोषणा करना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना, ii (भ्वा०—आ०—घुषते) सुन्दर या उज्ज्वल होना ।

घृणृजम् [घृण्+कृणक्, पृषो०] केसर, जाफ़रान—यत्र स्त्रीणां मसृणघृसृणश्लेषणोत्पन्ना कुचश्रीः – विक्रम० १८।३१ ।

घृक्कः [घृ इत्यव्यक्तं कायति— घृ+कै+क] उल्लू । सम० —अरिः कौवा ।

घूर्ण् (भ्वा० आ० – तुदा० पर०—घूर्णते, घूर्णति, घूर्णित) इधर-उधर लुढ़कना, इधर-उधर घूमना, चक्कर काटना, मुड़ना, हिलाना, लिपटना, लड़खड़ाना —दोलिनामतिमर्दन जघर्णविभ्रमातिशयपुष्टि वर्धुषि –शि० १०।३२, भयात्केचिदघूर्णिषुः—भट्टि० १५।३२, ११८, शि० ११।१८ अद्यापि तां सुरतजागर-घूर्णमानां—चौर० ५, प्रेर०—घूर्णति—तें हिलाना, अटेरना या लपेटना –नयनाम्बुरुणानि घूर्णयन्—कु० ४।१२, शि० २।१६, भट्टि० १।८९, (आ, तथा वि उपसर्ग के लग जाने पर भी धातु का वही अर्थ रहता है) ।

घूर्ण (वि०) [घूर्ण+अच्] हिलाने वाला, इधर-उधर चलने-फिरने वाला । सम०—वायुः तवण्डर ।

घूर्णनम्,—ना [घूर्ण+ल्युट्] हिलाना-डुलाना, लपेटना, चक्कर खाना, घूमना, मुड़ना, घूमना –मौलिघूर्णनचलत् —गीत० ९, घूर्णनाम्नापतनभ्रमणादर्शनादिकृत्—सा० द० ।

घृ । (भ्वा० पर० घरति, घृत) छिड़कना ।

।। (चुरा० उभ०—धारयति –ते, धारित) छिड़काव करना, गीला करना, तर करना, अभि—, छिड़कना, आ , छिड़काव करना ।

घृण् (तना० पर०– घृणोति, घृण) चमकना, जलना ।

घृणा [घृ–नक+टाप्] दया, तरस, सुकुमारता—तां विलोक्य वनितावधे घृणां पत्रिणा सह मुमोच राघवः रघु० ११।१७, ९।८१, कि० १५।१३ 2. ऊब, अरुचि, घिन तत्याज तोयं परपुष्टघुष्टे घृणां च वीणास्वनिभे विलेने नै० ३।६०, १।२०, रघु० ११।६५ 3. झिड़की, निन्दा ।

घृणालु (वि०) [घृणा+आलुच्] सकरुण, दयापूर्ण, मृदु-हृदय ।

घृणिः [घृ+नि, नि०] 1. गर्मी, धूप 2. प्रकाश की किरण 3. सूर्य 4. लहर (नपुं०) जल । सम० –निधिः सूर्य ।

घृतम् [घृ+क्त] 1. घी, तपाया हुआ मक्खन –(सर्पिर्विलीनमाज्यं स्यात् घनीभूतं घृतं भवेत्– सा०) 2. मक्खन 3. जल । सम०—अक्षः—अग्निः (पुं०) दहकती हुई आग, –आहुतिः (स्त्री०) घी की आहुति,—आह्वः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरल नामक वृक्षविशेष,—उदः 'घी का समुद्र' सात समुद्रों में से एक, --ओदनः घी से युक्त उबले हुए चावल, कुल्या घी की नदी, दीधितिः अग्नि,—धारा घी की अविच्छिन्न धार, पूरः,—वरः एक प्रकार की मिठाई,—लेखनी घी का चम्मच।

घृताची [घृत+अञ्चु+क्विप्+ङीष्] 1. रात 2. सरस्वती 3. एक अप्सरा (इन्द्र के स्वर्ग की मुख्य अप्सराएँ निम्नांकित हैं-- घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा, सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो दुर्धैः)। सम०- गर्भसंभवा बड़ी इलायची।

घृष् (भ्वा० पर०—घर्षति, घृष्ट) 1. रगड़ना, घिसना अद्यापि तत्कनककुण्डलघृष्टमास्यम् चौर० ११, पंच० १।१४४ 2. कूंची करना, परिष्कृत करना (माजना), चमकाना 3. कुरेदना, पोसना, चूरा करना -दीप्ता तनु मत्स्यराजभवने घृष्टं न किं चन्दनम् पंच० ३।१७५ 4. होड़ करना, प्रतिद्वन्द्वी होना (जैसा कि 'संघृष्' में) उद्---, खुरचना, --चूडामणिभिरुद्घृष्टपादपीठम् महीक्षिताम्--रघु० १७।२८, सम् -प्रतिद्वन्द्विता करना, होड़ाहोड़ी करना, प्रतिस्पर्धा करना---स प्रयोगनिपुणैः प्रयोक्तृभिः संजघर्ष सह मित्रसंनिधौ रघु० १९।३६ 2. रगड़ना, खुरचना।

घृष्टिः [घृष्+क्तिच्] सूअर (स्त्री०) 1. पोसना, चूरा करना, खुरचना 2. होड़ाहोड़ी, प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता।

घोटः, घोटकः [घुट्+अच्, ण्वुल् वा] घोड़ा। सम०—अरिः भैंसा।

घोटी, घोटिका [घोट+ङीष्, घुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] घोड़ी, सामान्य अश्व -आटाकसेऽज्ञ करिघोटि पदाति-जवि वाटिभुवि क्षितिभृजाम्--अस्व० ५।

घोण (न) सः [—णोनसः, पृषो०] एक प्रकार रेंगने वाला जन्तु।

घोणा [घुण्+अच्+टाप्] 1. नाक, घोणोन्नतं मुखम् —मृच्छ० ९।१६ 2. घोड़े की नथुना, (सूअर की) थूथन---धुर्यं रायमाणधोरघोणेन---का० ७८।

घोणिन् (पुं०) [घोणा+इनि] सूअर।

घोण्टा [घुण्+ट+टाप्] उन्नाव का वृक्ष।

घोर (वि०) [घुर्+अच्] 3. भयंकर, डरावना, भीषण, भयानक,—शिवाघोरस्वनां परश्चःशुवंदे विकृतेति ताम्—रघु० १२।३९, तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव --महा०, घोरं लोके वितथमयशः---उत्तर० ७।६, मनु० १।५० १२।५४ 2. हिंस्र, प्रचण्ड,---रः शिव, ---रा रात, ---रम् 1. संत्रास, भीषणता 2. विष।सम०—आकृति, —दर्शन (वि०) देखने में डरावना, भयंकर थिकराल,—घण्टम् कांसा,—रासनः, —रास्यः,—वाशनः, —वाशिन् (पुं०) गीदड़, -ईशः शिव का विशेषण।

घोलः,—लम् [घुर्+घञ्, रस्य लः] मट्ठा, घुला हुआ दही जिसमें पानी न हो (ततु स्नेहमजलं मथितं घोलमुच्यते - सुश्रु०)

घोषः [घुष्+घञ्] 1. कोलाहल, हल्ला, हंगामा—स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्--भग० १।१९, इसी प्रकार रथ°, तुर्य°, शंख° आदि 2. बादलों की गरज स्निग्धगम्भीरघोषम्- मेघ० ६४ 3. घोषणा 4. अफवाह, जनश्रुति 5. ग्वाला हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् रघु० १।४५ 6. झोंपड़ी, ग्वालों की बस्ती—गङ्गायां घोषः---काव्य० २, घोषादनीय — मृच्छ० ७ 7. (व्या० में) घोषध्वंजनों के उच्चारण में प्रयुक्त घोषध्वनि 8 कांसा,—वम् कांसा।

घोषणम्—णा [घुष्+ल्युट्] प्रख्यापन, प्रकथन, उच्चस्वर से बोलना, सार्वजनिक एलान—व्याघातो जयघोषणादिषु बलादस्मद्बलानां कृतः - मुद्रा० ३।२६, रघु० १२।७२।

घोषयित्नुः [घुष्+णिच्+इत्नुच्] 1. ढिंढोरची, भाट, हरकारा 2. ब्राह्मण 3. कोयल।

घ्न (वि०) (स्त्री०- घ्नी) [केवल समास के अन्त में प्रयोज्य] [हन्+क, स्त्रियां ङीप्] वध करने वाला विनाशक, दूर करने वाला, चिकित्सक—ब्राह्मणघ्नः, बालघ्नः, वातघ्नः, पिशाचघ्नः, वञ्चित करने वाला, दूर करने वाला, पृथ्वघ्न, धर्मघ्न आदि।

घ्रा (भ्वा० पर० क्विप्रति, घ्रात --घ्राण) 1. सूंघना, पता लगाना, सूंघ का प्रत्यक्ष ज्ञान करना-- स्पृशन्त्यपि गजो हन्ति जिघ्रन्त्यपि भुजङ्गमः--हि० ३।१४, भामि० १।९९, चुंबन करना प्रेर०—(घ्राणयति) सुंघवाना—भट्टि० १५।१०९, (अव, आ, उप, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर भी इस धातु के अर्थों में विशेष अन्तर नहीं आता--गन्धमाघ्राय योऽर्थान् मेघ० २१, आमोदमुपजिघ्रन्तो - रघु० १।४३, दे० भट्टि० २।१० १४।१२, रघु० ३।३, १३।७०, मनु० ४।२०९ भी)।

घ्राण (भू० क० कृ०) [घ्रा+क्त] सूंघा,—म् सूंघने की क्रिया, -घ्राणेन सूकरो हन्ति मनु० ३।२४१ 2. गंध, बू 3. नाक—बुद्धीन्द्रियाणि चक्षुःश्रोत्रघ्राणरसनत्वगाख्यानि --सां० का० २६, ऋतु० ६।२७, मनु० ५। १३५। सम०-इन्द्रियम् सूंघने की इन्द्रिय, नाक—नासाग्रवीक्षी घ्राणम्—तर्के सं०, —चक्षुस् (वि०) 'जो आँखों का काम नाक से लेता है -अर्थात् अंधा (जो संघ कर अपने मार्ग का ज्ञान प्राप्त करता है),—तर्पण (वि०) नाक को सुहावना, या सुखकर खुशबूदार, सुगन्धयुक्त (—णम्) खुशबू, सुगन्ध।

घ्राणिः (स्त्री०) [घ्रा+क्तिन्] सूंघन की क्रिया -घ्राणिर्घ्रेयमयोः—मनु० ११।६८ 2. नाक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चः [चण् (चि)+ड] 1. चन्द्रमा 2. कछुआ 3. चोर (अव्य०) निम्नांकित अर्थों को बतलाने वाला अव्यय — 1. संयोजन (और, भी, तथा, इसके अतिरिक्त) —शब्द या उक्तियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है; (इस अर्थ में यह उस प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है जिसे मिलाता है या इस प्रकार मिले हुए अन्तिम शब्द या उक्ति के पश्चात् रक्खा जाता है, परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है) · मतो निष्ठाद्यूत्यं भवति च किमप्यालिखति च —मा० १।३१, तौ गुरुर्मुचुलौ च —रघु० १।५७, मनु० १।६४, ३।५. कुलेन कान्त्या वयसा नवेन गुणैश्च तैस्तैर्विनयप्रधानैः—रघु० ६।७९, मनु० १।१०५, ३।११६ 2. वियोजन (परन्तु, तथापि, तो भी)—शास्त्रविदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः —शा० १।१६ 3. निश्चय, निर्धारण (निस्सन्देह, निश्चय ही, ठीक, बिलकुल, सर्वथा) · अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः —गण०, ते तु यावंत एवाजौ तावांश्च वदुशे स तैः · रघु० १२।४५ 4. अर्त (यदि =चेत्) जीवितु चेच्छसे (=इच्छसे चेत्) मूढ हेतु मे गदतः शृणु—महा०, लोभश्चास्ति (अस्ति चेत्) गुणेन किम्—भर्तृ० २।४५, अमे० पा० 5. यह प्रायः पादपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है—भीमः पार्थस्तथैव च —गण० (कोशकार उपर्युक्त अर्थों के साथ 'च' के निम्नांकित अर्थ और बतलाते हैं जो कि संयोजन या समुच्चय के सामान्य अर्थों के अन्तर्गत है:—1. अन्वाचय —अर्थात् मुख्य तथ्य को किसी गौण तथ्य से मिलाना —भो भिक्षामट गां चानय, दे० अन्वाचय 2. समाहार अर्थात् समुच्चयार्थक संबंध · यथा पाणौ च पादौ च पाणिपादम् 3. इतरेतरयोग · अर्थात् पारस्परिक संयोग—यथा प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च प्लक्षन्यग्रोधौ 4. समुच्चय · अर्थात् सब मिलाकर यथा पंचति च पठति च); दो उक्तियों के साथ च की बार२ आवृत्ति होती है 1. 'एक ओर · दूसरी ओर' 'यद्यपि—तथापि' अर्थ · विरोध को प्रकट करने के लिए—न सुलभा सकलेन्दुमुखी च सा किमपि चेदमनङ्ग विचेष्टितम् —विक्रम० २।१, ४।३, रघु० १६।७ या 2. दो बातों का एक साथ होना—या अव्यवहित घटना को प्रकट करने के लिए (ज्यों ही—त्यों ही) · ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः—रघु० १०।६, ३।४०, कु० ३।५८, ६६, श० ६।१७, मा० ९।३६ ।

चंक् (म्वा० उभ०—चकति · ते, चकित) 1. तृप्त होना, सन्तुष्ट होना 2. प्रतिरोध करना, मुकाबला करना ।

चकास् (अदा० पर० (विरलतः—आ०) चकास्ति—ते, चकासित) 1. चमकना, उज्ज्वल होना · गण्डश्चण्डि चकास्ति नीलनलिनश्रीमोचनं लोचनम्—गीत० १०, चकासत चारुचमूरुचर्मधा—शि० १।८, भट्टि० ३।१७ 2. (आलं०) प्रसन्न होना, समृद्ध होना—वितन्वति क्षेमसदेवमातृकादिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते —कि० १।१७, प्रेर० चमकाना, प्रकाशित करना—शि० ३।६, वि० चमकना, उज्ज्वल होना ।

चकित (वि०) [चक्+क्त] डर के कारण) 1. थरथराता हुआ, कांपता हुआ, भय°, साध्वस°—मेघ० २७ 2. डराया हुआ, प्रकम्पित, भौचक्का—व्याधानुसारचकिता हरिणीव यासि—मृच्छ० १।१७ अमरु ४६, मेघ० १३ 3. भयभीत, भीरु, सशंक—चकितविलोकितसकल दिशा०—गीत० २, पौलस्त्यचकितेश्वराः (दिशः) —रघु० १०।७३, तम् (अव्य०) भय से, भौचक्का होकर, संत्रस्त होकर, विस्मय के साथ—चकितमुपैति तथापि पार्श्वमस्य—मालवि० १।११, सभयचकितम् —गीत० ५, शा० ४।४ ।

चकोरः [चक्+ओरन्] पक्षीविशेष, तीतर की जाति का पक्षी (कहते हैं कि चन्द्रमा की किरणें ही इसका आहार है)—ज्योत्स्नापानमदालसेव वपुषा मत्ताश्चकोरांगना: —विद्धशा०, १।११, इतश्चकोराक्षि विलोकयेति —रघु० ६।५९, ७।२५, स्फुरदधरशोभिते तव वदन-चन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम्—गीत० १० ।

चक्रम् [क्रियते अनेन, कृ वर्ण्ये क नि० दित्वम्—तारा०] —गाड़ी का पहिया · चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च हि०१।१७ 2 कुम्हार का चाक 3. एक तीक्ष्ण गोल अस्त्र, चक्र (विष्णु का) 4. तेल पेरने का कोल्हू 5. वृत्त, मण्डल—कलापचक्रेषु निरीक्षितानना · क्रतु० २।१४ 6. दल, समुच्चय, संग्रह· शि० २०।१६ 7. राज्य, एकाधिपत्य 8. प्रांत, जिला, ग्राम-समूह 9. वर्तुलाकार सैनिक व्यूह 10. देह के भीतर के 'षट्चक्र', मूलाधार आदि 11. कालचक्र, वर्ष समूह 12. क्षितिज 13. सेना, समूह 14. ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग 15. भँवर 16. नदी का मोड़, —कः 1. हंस, चकवा 2. समूह, दल, वर्ग । सम०—अङ्गः 1. देवी गदन वाला हंस 2. गाड़ी 3. चकवा, अदः 1. बाजीगर, सपेरा 2. दुष्ट, धूर्त, ठग 3. स्वर्णमुद्रा, दीनार,—आकार, · आकृति (वि०) वर्तुलाकार, गोल,—आयुधः विष्णु का विशेषण, —आवर्तः भँवर वाली या चक्करदार गति, —आह्वः, · आह्वयः चकवा—चक्राह्व ग्रामकुक्कुटम्—मनु० ५।१२,—ईश्वरः 1. 'चक्रस्वामी' विष्णु का नाम 2. जिले का सर्वोच्च अधिकारी, उपजीविन् (पुं०) तेली, —कारकम् 1. नाखून, 2. एक प्रकार का मुगन्ध द्रव्य,—गन्धः गाबदुम तकिया,—गतिः (स्त्री०) चक्रा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार गति, गोलाई में घूमना,—गुच्छः अशोक वृक्ष, —ग्रहणम्, -णी (स्त्री०) दुर्गप्राचीर, परकोटा, खाई,—चर (वि०) वृत्त में घूमने वाला,—चूडामणिः मुकुट में लगी गोलमणि,—जीवकः,—जीविन् (पुं०) कुम्हार,—तीर्थम्—एक पुण्य स्थान का नाम,—दंष्ट्रः सूअर,—धरः 1. विष्णु का विशेषण—चक्रधरप्रभावः —रघु० १६।५५ 2. प्रभु, प्रान्त का राज्य पाल या शासक 3. गाँव का कलाबाज या बाजीगर, धारा पहिए का घेरा—नाभिः पहिए की नाभि—नामन् (पुं०) 1. चकवा 2. लोहे की माक्षिक धातु,—नायकः 1. दल का नेता 2. एक प्रकार का सुगंध-द्रव्य,—नेमिः पहिए की परिधि या घेरा—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण मेघ० १०९,—पाणि विष्णु का विशेषण,—पादः, पादकः 1. गाड़ी 2. हाथी,—पालः 1. राज्यपाल 2. सेना के एक प्रभाग का अधिकारी 3. क्षितिज, —बन्धुः, बान्धवः सूर्य,—बालः क्षः, —वालः—लम्, —डम् 1. वृत्त, मंडल 2. संग्रह, वर्ग, समुच्चय, राशि—कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७४ 3. क्षितिज, (लः) 1. पुराणों में वर्णित एक पर्वत-शृंखला जो भूमंडल को दीवार की भाँति घेरे हुए तथा प्रकाश व अंधकार की सीमा समझी जाती है 2. चकवा, —भृत् (पुं०) 1. चक्रधारी 2. विष्णु का नाम, —भेदिनी रात, भ्रमः,—भ्रमिः (स्त्री०) खराद मान —आरोप्य चक्रभ्रमिमुण्डतेवास्तच्छ्रुवं यत्नोल्लिखितो विभाति रघु० ६।३२,—मध्यलिप्त (पुं०) तेंदू की एक जाति,—मृगः सूअर, यानम् पहिए से चलने वाला वाहन,—रथः सूअर,—वर्तिन् (पुं०) 1 सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, संसार का प्रभु, समुद्र तक फैले राज्य का स्वामी (आसमुद्रक्षितीशः अमर०) पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि श० १।१२, तव तन्वि कुचावेतौ नियतं चक्रवर्तिनौ, आसमुद्रक्षितीशोऽपि भवान् यत्र करप्रदः उद्भटः (अहो 'चक्रवर्तिन्' शब्द में श्लेष है, वहाँ दूसरा अर्थ है 'आकार प्रकार में चक्रवे से मिलता जुलता' 'गोल'),—वाकः (स्त्री० —की) चकवा —दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्—मेघ० ८३,—वातः 1. सीमा, हद 2. बीवंडर 3. कार्य में प्रवृत्त होना, —वातः बवंडर, तूफान-आँधी, —वृद्धिः ब्याज पर ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज—मनु० ८। १५३, १५६,—व्यूहःसैन्यदल की मंडलाकार स्थापना, —संक्रम रोग, (लः) चकवा,—सार्ङ्गधः चकवा,—हस्तः विष्णु का विशेषण।

चक्रल (वि०) [चक्रमिव कामति—कै+क] पहिये के आकार का, मंडलाकार,—कः (तर्क०) मंडल में तर्क करना।

चक्रवत् (वि०) [चक्र+मतुप्; मस्य वः] 1. पहियों वाला 2. मंडलाकार, (पुं०) 1. तेली 2. प्रभु, सम्राट् 3. विष्णु का नाम।

चक्राकी, चक्राकी [ब० स०] हंसिनी।

चक्रिका [चक्र+ठन् टाप्] 1. ढेर, दल 2. दुरभिसंधि 3. घुटना।

चक्रिन् (पुं०) [चक्र+इनि] 1. विष्णु का विशेषण—शि० १३।२२ 2. कुम्हार 3. तेली 4. सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, निरंकुश शासक 5. राज्यपाल 6. गधा 7. चकवा 8. संसूचक, मुखबिर 9. साँप 10 कौवा 11 एक प्रकार का कलाबाज या बाजीगर।

चक्रिय (वि०) [चक्र+घ] गाड़ी में बैठ कर जाने वाला, यात्रा करने वाला।

चक्रीवत् (पुं०) [चक्र+मतुप्, मस्य वः, नि० चक्रस्य चक्रीभावः] गधा—शि० ५।८।

चक्ष् (अदा० आ०—चष्टे) [आर्धधातुक लकारों में अनियमित] 1. देखना, पर्यवेक्षण करना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2. बोलना, कहना, बतलाना (संप्र० के साथ), आ , बोलना, घोषणा करना, वर्णन करना, बयान करना, बतलाना, पढ़ाना, समाचार देना (संप्र० के साथ)—रघु० ५।१९, १२।५५, मनु० ४।५९, ८०, इत्याख्यानविदं आचक्षते मा० २।२, कहना, संबोधित करना भामि० १।६३ 3. नाम लेना, पुकारना, परि , 1. घोषणा करना, वर्णन करना 2. गिनना 3. उल्लेख करना 4. नाम लेना, पुकारना—वेदप्रदानादाचार्यं पितरं परिचक्षते,—मनु० २।१७१, भग० १७।१३, १७, प्र —, 1. कहना, बोलना, नियम बनाना —स्वजनाश्रु किलातिसंततं दहति प्रेतमिति प्रचक्षते—रघु० ८।८६ 2. नाम लेना, पुकारना—योऽप्यात्मनः कारयिता तं श्लोक्य प्रचक्षते—मनु० १२।१२, २।१७, ३।२८, १०।१४, प्रत्या—त्याग देना, छोड़ देना, पीछे हटा देना, व्या— , व्याख्या करना, टीका टिप्पण करना।

चक्षस् (पुं०) [चक्ष्+असि] 1. अध्यापक, धर्म-विज्ञान का शिक्षक, दीक्षागुरु, आध्यात्मिक गुरु 2. बृहस्पति का विशेषण।

चक्षुष्य (वि०) [चक्षुषे हितः स्यात् चक्षुस्+यत्] 1. मनोहर, प्रियदर्शन, सुहावना, सुन्दर 2. आँखों के लिए हितकर, त्वा प्रियदर्शन या सुन्दरी स्त्री।

चक्षुस् (नपुं०) [चक्ष्+उसि] 1. आँख, दृश्यं तमसि न पश्यति दीपेन विना सचक्षुरपि—मालवि० १।९, क्रूरसारे ददच्चक्षुः शा० १।६, तु० घ्राणचक्षुस्, ज्ञानचक्षुस्, नयनचक्षुस्, वाग्चक्षुस् आदि शब्दों को 2. दृष्टि, दर्शन,, नजर, देखने की शक्ति—चक्षुरायुरुवैव प्रहीयते—मनु० ४।४१, ४२। सम०—गोचर (वि०) दृश्य, दृष्टिगोचर, दृष्टि-परास के अन्तर्गत होने वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—दानम् प्राण प्रतिष्ठा के समय मूर्ति को आँखों में रंग भरना,—पथः दृष्टि-पराम, क्षितिज, -मलम् आँखों की कीड़, मल,—रागः (चक्षूरागः) 1. आँखों में लाली 2. 'आँख का प्रेम' आँख लड़ाने से उत्पन्न प्रेम या अनुराग- पुरश्चक्षुरागस्तवदनु मनसोऽन्यपरता—मा० ६।१५, चक्षूरागः कोकिलेषु न परकलत्रेषु - का० ४१ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'आँख लड़ जाना' भी है), —रोगः (चक्षूरोगः) आँख की बीमारी, विषयः 1. दृष्टि-पराम, निगाह, उपस्थिति,दृश्यता—चक्षुर्विषयातिक्रांतेषु कपोतेषु—हि० १, मनु० २।१९८ 2. दृष्टि का विषय, कोई भी दृश्य पदार्थ 3. क्षितिज, - श्रवस् (पुं०) सांप, कि० १६।४२, नै० १।२८।

चक्षुष्मत् (वि०) [चक्षुस्+मतुप्] 1. देखने वाला, आँखों वाला, देखने की शक्ति वाला, तदा चक्षुष्मतीं प्रीतिरासीत्समरसा द्वयोः—रघु० ४।१८ °तां ४।१३, 2. अच्छी दृष्टि रखने वाला।

चक्षुषः - रः [चक्षुष्क+उनक्, उरच् वा] 1. वृक्ष 2. गाड़ी 3. वाहन (नपुं० भी)।

चक्रकर्मन् [कर्म+यङ्+ल्युट्, यङो लुक् तारा०] 1. इधर उधर घूमना, आना-जाना, सैर करना- विधे चक्रकर्मणं रात्रौ—चाण०९७, चक्रे स चक्रनिभचक्रकर्मणलक्षेन —नै० १।१४४, 2. शनैः २ या टेढ़ा-मेढ़ा जाना।

चक्र्य् (भ्वा०पर०चक्रयति, चंक्रित्त) 1. चलायमान करना, लहराना, हिलाना—समरशिरसि चक्रयत्पक्षचूडध्वजानाम् —उत्तर०५।२, मा०५।२३, चक्रच्चक्रयू—नागा०४, चंक्रत्यराग—गीत० १ 2. विकंपित होना विधीदति रोदिति चक्रयति मुञ्चति ताम्यम् गीत० ४।

चक्रः [चक्र्+अच्] 1. डोकरी 2. पाँच अंगुलियों से मापा जाने वाला मापदण्ड, पंचांगुल मान।

चक्रचरिन् (पुं०) [चर्+यङ्, णिनि, यङोलुक्] भौंरा, - करी बरीभरीति वेद दिशं सरीसरीति काम्, स्थिरो चरीकरीति वेत्त चक्रचरीतिचक्रचरी- उद्भट।

चक्रचरीकः [चर्+इकन्, नि० द्वित्वम्] भौंरा,—चुलुकगतिं मदीयां चेतना चक्रचरीकः - रस०, कुन्द लतायाविमुक्तमकरन्द रसाया अपि चक्रचरीकः, प्रणयप्ररूढप्रेमभरभञ्जनकातरभावेशीः विद्धशा० १।४, विक्रमांक० १।२, भामि० १।४८।

चक्रल (वि०) [चंक्र+अलच्, चक्रं गतिं लाति ला+क वा तारा०] 1. चलायमान, हिलता हुआ, कम्पमान, थरथराता हुआ -श्रुत्वैव भीतहरिणीक्षिप्तशुचञ्चलाक्षी —चौर० २३, चक्रचलकुण्डल—गीत० ७, अमरु ७९ 2. (आलं०) चलचित्त, चपल, अस्थिर भोगा मेघविततालमध्यविलसन्तीशक्षिनीचञ्चलाः भर्तृ० ३५४, कि०२।१९, मनश्चक्रचलमस्थिरम्—भग०६।२६,- लः 1. वायु 2. प्रेमी 3. स्वेच्छाचारी, - ला 1. बिजली, 2. धनकी अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी।

चक्रडा [चक्र्+अच्+टाप्] 1. बेत से बनी कोई वस्तु 2. पुआल का बना पुतला, गुड्डा, गुड़िया।

चक्रवु [चंक्र+उन्] 1. प्रसिद्ध, विख्यात, विदित 2. चतुर (जैसे कि अक्षर चक्रवु)३०चुञ्चु, चुः हरिण, - चुः, —चू (स्त्री०) चोंच, चूँच सम० पुटः, दम् पक्षी की ऊपर चोंच—चञ्चूपुट चपलयन्ति चकोरपोताः —रस०, भामि० २।९९, अमोचि चञ्चूपुटमौनमुद्रा विद्यावसा तेन विहस्य भूयः - नै० ३।९९, श्लाघित्व-चञ्चूपुटेन पक्षतौ—२।२, ४, अमरु १२,—प्रहारः चोंच से डूंग मारना,—भृत्, - भृत् (पुं०) पक्षी, - सूचिः बब्या, सौचिक पक्षी।

चंक्रचूर (वि०) [चञ्च्+उरच्] चतुर, विशेषज्ञ।

चट् । (भ्वा० पर० - चटति, चटित) टूटना, गिरना, अलग होना, ।। (चुरा० उभ० चाटयति—ते) 1. मार डालना, क्षति पहुँचाना 2. बाँधना, तोड़ना, उद् —, 1. भयभीत करना, त्रासना, डराना 2. उखेड़ना, हटाना, नाश करना, नै० ३।७ 3. मार डालना, क्षति पहुँचाना।

चटकः [चट् + वबुन्] चिड़िया, गौरैया।

चटका, चटिका, [चटक् + टाप् इदादेशश्च] चिड़िया।

चटुः,—ट (नपुं०) [चट्+कु] कृपा तथा चापलूसी से पूर्ण शब्द, दे० चाटु, टुः पेट।

चटुल (वि०) [चट्+लच्] 1. कम्पमान, थरथराता हुआ, अस्थिर, घुमक्कड़, दोलायमान —आयस्तमेक्षत जनश्चटुलाग्रपादम् - शि० ५।६ त्रासातिमात्रचटुलैः स्मरतः सुनेत्रैः—रघु० ९।५८, चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि मेघ० ४० 2. चंचल, चपल (जैसा कि प्रेम)- किं लब्धं चटुल त्वयेह नवता सौभाग्यभेतां दृशाम् अमरु १४, चटुलप्रेम्णा दयितेन - ७१, 3. बढ़िया, सुन्दर, रुचिकर इति चटुलचाटुपटु चाहमुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम् गीत० १०,- ला बिजली।

चटुलोल, चटूल्लोल (वि०) [कर्म० स०, नि० साधु] 1. कंपनशील 2. प्रिय, सुन्दर 3. मधुरभाषी।

चण (वि०) [चण्+अच्] (समास के अन्त में) विख्यात, प्रसिद्ध, कुशल, कीर्तिकर अक्षरचणः, णः चना।

चणकः [चण्+क्वुन्] नना - उत्पतितोऽपि हि चणकः शक्तः किं भाष्टूकं भञ्जयितुम् - पंच० १।१३२।

चंड (वि०) [चंड्+अच्] 1. (क) हिंस्र, प्रचण्ड, उग्र, आवेशयुक्त, क्रोधी, रुष्ट --अर्थकर्षणोपरागवष्टात् गुरोः कृशानुप्रतिमाद् बिभेषि—रघु० २।४९, मालवि० ३।२०, दे०नी०चण्डी 2. उष्ण, गरम जैसा कि 'चण्डांशु' में 3. सक्रिय, फुर्तीला 4. तीखा, तीक्ष्ण,-डम् 1. उत्साह गर्मी 2. आवेश, क्रोध। सम० अंशुः,--दीधितिः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भानुः सूर्य—ईश्वरः शिव का एकरूप,—मुंडा दुर्गा का ही एक रूप (=चामुंडा),—मृगः जंगली जानवर

विक्रम (वि०) तीक्ष्ण शक्ति का, अपनी शक्ति में भीषण।

चण्डा, -डी (स्त्री०) 1. दुर्गा का विशेषण 2. आवेशयुक्त, या क्रोधी स्त्री—चण्डी चण्डं हन्तुमभ्युद्यता माम्—मालवि० ३।२१, चंण्डी मामवधूय पादपतितं जातानुतापेव सा विक्रम० ४।२८, रघु० १२।५, मेघ० १०५। सम०

-ईश्वरः, -पतिः शिव का विशेषण—पुण्यं यात्रा-स्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३।

चण्डातः [चण्ड+अन्+अण्] सुगंधयुक्त करवीर।

चंण्डातक—कम् [चण्ड+अत्+ण्वुल्] लहंगा, साया।

चण्डाल (वि०) [चण्ड्+आलच्] दुष्कर्मी, क्रूर कर्मी, तु० हिं० चांडाल, ला: 1. अत्यंत नीच और घृणित वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता व ब्राह्मण माता से हुई मानी जाती है 2. इस जाति का पुरुष. जातिबहिष्कृत—चण्डालः किमयं द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६, मनु० ५।१३१, १०।१२, १६, ११।१७५। सम० वल्लकी चंडाल की वीणा, एक सामान्य या देहाती वीणा।

चण्डालिका [चण्डाल+ठन्+टाप्] चण्डाल की वीणा।

चण्डिका [चण्डी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] दुर्गा देवी।

चण्डिमन् (पुं०) [चण्ड+इमनिच्] 1. आवेश, उग्रता, तीक्ष्णता, क्रोध, 2. गर्मी, ताप।

चण्डिलः [चंड+इलच्] नाई।

चतुर (सं० वि०) [चत्+उरच्] (नित्य बहुवचनांत, पुं० चत्वारः, स्त्री० चतस्रः, नपुं० चत्वारि) चार

चत्वारो वयमद्विजाः—वेणी० १।१२, चतस्रोऽवस्था बाल्यं कौमारं यौवनं वार्धक्यं चेति, चत्वारि शृङ्गा त्रयो-ऽस्य पादाः आदि—शैशवं मासान् गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, समास में चतुर् का र् विसर्ग बन जाता है और विसर्ग कई स्थानों पर स् या ष् में परिणत हो जाता है अथवा अपरिवर्तित रहता है। सम० अंशः चतुर्थ भाग, अङ्ग (वि०) चार सदस्यीय, चार एक युक्त, -गम् 1. हाथी, रथ, घोड़े और पदाति इन चार अंगों से सुसज्जित सेना—एकी हि खंजनश्रेरी नलिनीदलस्थो दृष्टः करोति चतुरङ्ग-लीलाविलासम्—शृंगार० ४. चतुरङ्गबली राजा जगतीं वशमानयेत्, अहं पञ्चाङ्गबलवानाकाशं वशमानये - सुभा० 2. एक प्रकार की शतरंज. -अन्त (वि०) चारों ओर सीमाबद्ध भूम्यां विधाय चतुरन्तमेतौ सम्पत्स्यते—रघु० ४।१९, -अन्ता पृथ्वी, अशीत (वि०) चौरासियां, —अशीति (वि० स्त्री०) चौरासी, -अश्र, -अस्र (वि०) (अधि, -त्रि के स्थान पर) 1. चार किनारों वाला, चतुष्कोण—रघु० ६।१० 2. समभित, नियमित या सुन्दर, सुडौल -अभूत तत्क्षणाच्चतुरस्रशोभि वपुः—कु० १।३२, (श्रः,—स्रः) वर्गाकार, -अहम् चार दिन का समय—आनन् ब्रह्मा का विशेषण—इतरता-तापत्रातानि यमेच्छया वितर तानि सहे चतुरानन—उद्भट, -आश्रम ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अव-स्थाएँ, उत्तर (वि०) चार बढ़ा कर,—कर्ण (चतु-ष्कर्ण) (वि०) केवल दो व्यक्तियों द्वारा ही सुना गया, -कोण (चतुष्कोण) (वि०) वर्ग, चार कोनों वाला, (णः) वर्ग, चतुर्भुज, चार पार्श्व वाली आकृति -गति: 1. परमात्मा 2. कछुवा,—गुण (वि०) चार-गुणा, चौहरा, चौलड़ा,—चत्वारिंशत् (चतुश्चत्वा-रिंशत्) (वि०) चवालीस, -रिंश चवालिसवाँ,—शत (चतुर्शत) (वि०) चौरानवेवाँ या चौरानवे जोड़ कर—चतुर्शत शतम्- एक सौ चौरानवे,—दंत: इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,—दश (वि०) चौदहवाँ -दशन् (वि०) चौदह, °रत्नानि (ब० व०) समुद्र मंथन के परिणामस्वरूप समुद्र से प्राप्त १४ रत्न (इनके नाम निम्नांकित श्लोकार्ध में गिनाये गये हैं: लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः, अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यु: सदा मङ्गलम्, °विद्याः (ब० व०) चौदह विद्याएँ (वे यह हैं:—षडंगमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकम्, मीमांसा तर्कमिश्र च एता विद्या-श्चतुर्दश), दशी चांद्रपक्ष का चौदहवाँ दिन,—द्विशन् सामूहिक रूप से चारों दिशाएँ, -दिशम् (अव्य०) चारों दिशाओं में, सब दिशाओं में,- दोल:,—लम् राजकीय पालकी, द्वारम् 1. चारों दिशाओं में चार द्वारों वाला मकान 2. सामूहिक रूप से चारों द्वार, -नवति (वि०-स्त्री०) चौरानवे,- पञ्च (वि०) (चतुः पंच या चतुष्पंच) चार या पांच, पञ्चाशत् (स्त्री०) (चतुःपञ्चाशत्, चतुष्पञ्चाशत्) चउवन, -पथः (चतुः पथः, चतुष्पथः) (थम् भी) वह स्थान जहाँ चार सड़कें मिलें, चौराहा,—मनु० ४।३९, ९।२६४, (थः) ब्राह्मण,- पद (वि०) (चतुष्पदः) 1. चार पैरों वाला 2. चार अंगों वाला (दः) चौपाया (दी) चार चरण का श्लोक पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा - छं० १,—पाठी (चतुष्पाठी) ब्राह्मणों का विद्यालय जिसमें चारों वेदों का पठन-पाठन होता हो। -पाणिः (चतुष्पाणिः) विष्णु का विशेषण, पाद् व (चतुष्पाद्-द) (वि०) 1, चौपाया 2. पांच सदस्यीय या पांच भागों वाला, (पुं०) 1. चौपाया 2. (विधि में) न्यायाग की एक कार्यविधि (अभियोगों की जांच पड़ताल) जिसमें चार प्रकार की प्रक्रियाएँ हों अर्थात् तर्क, पक्षसमर्थन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसूक्ति, निर्णय,—बाहुः विष्णु की उपाधि (हु-नपु०) ; वर्ग,—भद्रम् चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष) की समष्टि,—भागः चौथाभाग चौथाई, भुज् (वि०) 1. चतुष्कोण 2. चार भुजाओं वाला- भग० ११।४६, (पुं०) विष्णु की उपाधि - रघु० १६।२, (नपुं०) वर्ग,—मासम् चातुर्मास्य, चौमासा (आषाढ सुदी एकादशी से कार्तिक सुदी दशमी तक),—मुख (वि०) चार मुँह वाला (खः) ब्रह्मा का विशेषण स्वतः सर्व चतुर्मुखात् रघु० १०।२२, (खम्) 1. चार मुँह-कु० २।१७ 2. चार द्वार वाला मकान, —युगम् चार युगों की समष्टि,—रात्रम् (चतूरात्रम् चार रात्रियों का समूह,—वयस् ब्रह्मा का विशेषण, —वर्गः मानव जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम और मोक्ष) का समूह - रघु० १०।२२,—वर्णः हिन्दुओं की चार श्रेणियों या जातियों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चतुर्वर्णमयो लोकः रघु० १०।२२,—वर्षिका चार वर्ष की आयु की गाय,—विंश (वि०) 1. चौबीस 2. चौबीस जोड़कर जैसे कि चतुर्विंशशतम्- -१२४),—विंशति (वि० या स्त्री०) चौबीस, -विधिक (वि०) २४ से युक्त,—विद्य (वि०) जिसने चारों वेदों का अध्ययन किया है —विध (वि०) चार प्रकार का, चौहरा, वेद (वि०) चारों वेदों से परिचित (दः) परमात्मा, —व्यूहः विष्णु का नाम (हम्) आयुर्वेदविज्ञान —शालम् (चतुः शालम्, चतुश्शालम्, चतुः शाली, चतुश्शाली) चार मकानों का समूह, चारों ओर चार भवनों से घिरा हुआ चतुष्कोण,—षष्टि (वि० या स्त्री०) चौंसठ कला (ब० व०) चौंसठ कलाएं. - -सप्तति (वि० या स्त्री०) चौहत्तर. हायन. ण (वि०) चार वर्ष की आयु का (इस शब्द का स्त्री-लिङ्गरूप आकारान्त है यदि निर्जीव पदार्थों का ही उल्लेख है; और यदि सजीव जन्तुओं से अभिप्राय है तो यह सब ईकारान्त बन जाता है).—होत्रकम् चारों ऋत्विजों (पुरोहितों) का समूह।

चतुर (वि०) [चत् +उरच्] 1. होशियार, कुशल, मेधावी, तीक्ष्णबुद्धि -सर्वात्मना इतिकथाचतुरेव दूती -- मुद्रा० ३।९, अमरु १५।४४, मृगया जहार चतुरेव कामिनी —रघु० ९।६९. १८।१५ 2. फुर्तीला, द्रुतगामी या तेज 3. मनोज्ञ, सुन्दर, प्रिय, रुचिकर न पुनरेति गतं चतुरं वयः- रघु० ९।४७, कु० १।४७, ३।५, ५।४९, रम् 1. होशियारी, मेधाविता 2. हस्तिशाला।

चतुर्थ (वि०) (स्त्री०—र्थी) [चतुर्णां पूरणः डट् थुक् च] चौथा, -र्थम् चौथाई, चौथा भाग। समः —आश्रमः ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चौथी अवस्था संन्यास. भाज् (वि०) अपनी प्रजा से आय का चतुर्थांश ग्रहण करने वाला, राजा, (अर्थ संकट के अवसर पर ही चतुर्थांश लेना विहित है अन्यथा प्रचलित केवल छठा भाग है)।

चतुर्थक (वि०) [चतुर्थ+कन्] चौथा,- कः चौथैया ज्वर (जो हर चार दिन के बाद आता है) चौथिया।

चतुर्थी [चतुर्थ+ङीप्] 1. चान्द्र पक्ष का चौथा दिन 2. (व्या० में) संप्रदान कारक। समः कर्मन् (नपुं०) विवाह के चौथे दिन किया जाने वाला संस्कार।

चतुर्धा -(अव्य०) [चतुर्+धा] चार प्रकार से, चान्वृणा।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयवं चत्वारोऽवयवा अस्य वा कन्] 1. चार से युक्त 2. चार बड़ा कर ढिक त्रिक चतुष्क च पञ्चक च सप्त समम्- मनु०८।१४२(अर्थात् १०२, १०३, १०४, या १०५ यह दो से पाँच प्रतिशत का ब्याज),—कम् 1. चार का समूह 2. चौराहा 3. चौकोर आंगन 4. चार स्तंभों पर अवस्थित भवन, कमरा या मुकुल- कु०५।६९, ७।९,- की 1. एक चौकोर बड़ा तालाब 2. मच्छरदानी, मसहरी।

चतुष्टय (वि०) (स्त्री० यी) [चत्वारोऽवयवा विभागोऽस्य तयप्] चारगुणा, चार से युक्त - गुणात्यय कवेस्तस्य चतुर्मुखसमोदितः, प्रवृत्तिरासीच्छन्दानां चरितार्थो चतुष्टयी। कु० २।३, यम् चार का समूह - एकैकमप्यलंचक्रे किमु यत्र चतुष्टयम्- हि०५०११, कु० ७।६२, सासचतुष्टयस्य भोजनम्-हि० १ 2. वर्ग।

चत्वरम् [चत्+क्वरच्] 1. चौकोर जगह या आंगन 2. चौराहा (जहां कई सड़कें मिलें)- स चत्वरं खेटिकवत्वरे निवसति - मृच्छ० २ 3. यज्ञ के लिए तैयार की गई समतल भूमि।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) [चत्वारो दशतः परिमाणमस्य— ब० स०, नि०] चालीस।

चत्वाल: [चत्+वालच्] 1. यज्ञाग्नि रखने के लिए या आहुति देने के लिए भूमि खोद कर बनाया गया हवनकुंड 2. कुशघास 3. गर्भाशय।

चद् (भ्वा० उभ०— चदति ते) कहना, प्रार्थना करना।

चन्दिरः [चद्-किरच्, नि०] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. हाथी 4. साँप।

चन (अव्य०) नहीं, न केवल, भी नहीं (अकेला कभी प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि सर्वनाम 'किम्' तथा इससे व्युत्पन्न शब्दों (कः, कथम्, क्व, कदा, कुतः आदि) के साथ प्रयुक्त होकर अनिश्चयात्मक अर्थ को व्यक्त करता है - दे० 'किम्' के नी०) [कई विद्वान् 'चन' को पृथक् शब्द न मान कर केवल (च) और (न) का संयोग मानते हैं]।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चस्व (स्वा० पर० —चन्दति, चन्दित) 1. चमकना, प्रसन्न होना, खुश होना।

चन्द: [चन्द्+णिच् ,+अच्] 1. चन्द्रमा, कपूर।

चन्दन:, नम् [चन्द्+णिच्+ल्युट्] चंदन (चंदन का वृक्ष, इसकी लकड़ी या इससे तैयार किया गया कोई विशेष पदार्थ—सुगंध और शीतलता की दृष्टि से श्रेष्ठतम समझा जाता है)। अनलायागुरुचन्दनैर्वसे -रघु० ८।७१ मणिप्रकारः सरसं च चंदनं सुची प्रिये यत्ति जनस्य सेव्यताम् कुमा० १।२, एवं च भाषते लोकः चन्दनं किल शीतलम्, पुत्रगात्रस्य संस्पर्शश्चन्द्रादतिरिच्यते —पंच० ५।२०, बिना मलयजस्पर्शं चंदनं न प्ररोहति —१।४१। सम०—अद्रिः, गिरिः, मलय पर्वत, —उदकम् चन्दन का पानी, —पुष्पम् लौंग, —सारः अत्यंत श्रेष्ठ चंदन की लकड़ी।

चन्दिरः [चन्द्+किरच्] 1. हाथी 2. चन्द्रमा अपि च मानससम्भूतिर्विवस्वान्दिरश्चन्द्रिका -भामि० १।११२, मुकुन्दमुच्चन्दिरे चिरम्रिदं चकोरायताम्—७।१।

चन्द्र [चन्द्+णिच् ,+रक्] 1. चन्द्रमा, यथा प्रह्लादनाच्चन्द्रः -रघु० ४।१२, हतचन्द्रा तमसेव कौमुदी —८।३३, न हि सहस्रतो ज्योत्स्नाः चन्द्रश्चाण्डालयेन्मनः —हि० १।६१, मुख, वदन आदि; पर्यालोचन्द्रेव शरत्प्रियामाम्—कु० ७।२६ (पौराणिककथा के लिए दे० सोम) 2. चन्द्र यह 3. कपूर। विशेषणस्थाधिकचन्द्रभागतविभावनाच्चाल्लक्ष्यताम् पाण्डुताम् —नै० १।५१ 4. मयूर पक्षों में 'आंख' का चिह्न 5. जल 6. सोना [अब 'चन्द्र' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'श्रेष्ठ, प्रमुख, शीर्षस्थ' तथा पुल्लिंग में, "मनुष्यों में चन्द्रमा" अर्थात् एक श्रेष्ठ या महानुभाव व्यक्ति]। इंद्र 1. ईशानचंद्रो 2. सुंदर कामरु (जिस पर केवल इन्द्र ही सो सके)। सम० अंशुः चन्द्रमा की किरण, अर्धः आधा चन्द्रमा, "चूडामणिः, "मौलिः "शेखरः शिव के विशेषण, —आतपः 1. चांदनी 2. चंद्रप्रभा 3. प्रशस्त कक्षा (जिसको केवल छत ही हो), —आत्मजः, औरसः—जः—जातः,—तनयः —नन्दनः,—पुत्रः बुधग्रह,—आनन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला (नः) कार्तिकेय का विशेषण,—आपीडः शिव का विशेषण, —आभासः 'झूठा चंद्रमा' वास्तविक चन्द्रमा से मिलती जुलती आकार में दिखाई देने वाली आकृति,—आह्वयः कपूर, —इष्टा कमल का पौधा, कमलों का समूह, रात को कुमुदिनी का खिलना, —उदयः चन्द्रमा का उगना, —उपलः चन्द्रकान्तमणि—कान्तः चंद्रकांतमणि (चन्द्रमा के प्रभाव से कहते हैं इस मणि से रस झरता है) —उदेति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः—उत्तर० ६।१२, शि० ४।५८, अमर० ५३, मेदि० १।२१, मा० १।२४ (तः, —तम्) रात को खिलने वाला श्वेत कुमुद (तम्) चन्दन की लकड़ी—कला चन्द्रमा की रेखा —राहोश्चन्द्रकलोभिवाननलतासंश्लेष मे—मा० ५।१८,—कान्ता 1. रात 2. चांदनी,—कान्तिः चांदनी (नपुं०) चांदी, —क्षयः चांद्रमास का अंतिम दिन (अमावस्या) या नूतनचन्द्रदिवस जब कि चन्द्रमा दिखाई नहीं देता,—गृहम् कर्कराशि, राशिचक्र में चौथी राशि, गोलः चन्द्रलोक, चन्द्रमंडल,—गोलिका चांदनी, —ग्रहणम् चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना,—चञ्चला छोटी मछली, चूडः -चूडामणिः, मौलिः, शेखरः शिव के विशेषण रहस्यपालक्ष्यत चन्द्रशेखर, -कु० ५।५८, ८६; रघु० ६।३४, द्वारा (पुं, ब० व०) चन्द्रमा की पत्नियां २७ नक्षत्र (पुराणों की दृष्टि से यह दक्ष की पुत्रियां थीं और चन्द्रमा को ब्याही गई थीं), द्युतिः चन्दन की लकड़ी (स्यौ०) चांदनी, —नामन् (पुं०) कपूर, पादः चन्द्रकिरण —मेघ० ७०, मा० ३।१२, —प्रभा चन्द्रमा का प्रकाश, —बाला 1. बड़ी इलायची 2. चांदनी, बिंदुः अनुस्वार (०) का चिह्न —भस्मन् (नपुं०) हरि, —भागा दक्षिणभारत की एक नदी भासः तलवार दे० बद्रहास,—भृतिः(नपुं०) चांदी, मणिः चन्द्रकांत मणि,—रेखा, लेखा चन्द्रमा की कला, रेणुः माहिष्मतीवीर,—लोकः चंद्रसंसार —लोहकम्, लोहम्,—लोहकम् चांदी,—वंशः राजाओं का चन्द्रवंश, भारत के राजवंशों में दूसरी बड़ी पंक्ति, —वदन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला,—व्रतम् एक प्रकार की प्रतिज्ञा या तपस्या —चान्द्रायण,—शाला 1. चौबारा (घर में सबसे ऊपर की मंजिल का कमरा) रघु० १३।४० 2. चांदनी, शालिका चौबारा, शिखा चंद्रकांतमणि भट्टि० ११।१५,—संज्ञः कपूर, —सभवः बुध (वा) छोटी इलायची,—सालोक्यम् चांद में स्वर्ग की प्राप्ति,—हन् (नपुं०) राहु का विशेषण, हासः 1. चमकीली तलवार 2. रावण की तलवार—हे पाणयः किमिति बाल्यध्व चन्द्रहासम् —वेणी० १।५६, ६१ 3. केरल का, एक राजा, सुधार्मिक का पुत्र (यह मूलनक्षत्र में पैदा हुआ था, और इसके बारे पैर में छः अंगुलियां थीं, इसी कारण इसका पिता शत्रुओं द्वारा मारा गया और यह अनाथ और दरिद्र हो गया। बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् उसका राज्य उसे फिर मिल गया। जिस समय अश्वमेध के घोड़े के साथ घूमते हुए कृष्ण और अर्जुन दक्षिण में आये तो इसने उनसे मित्रता कर ली)।

चन्द्रकः [चन्द्र+कन्] 1. चांद 2. मोर के पंखों में आंख का चिह्न 3. नाखून 4. चन्द्रमा के आकार का वृत्त (पानी में तेल की बूंद गिरने से बन जाता है)।

चन्द्रकिन् (पुं०) [चन्द्रक+इनि] मोर,—शि० ३।४९।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्द्रमस् (पुं०) [चन्द्र+मि+असुन्, मादेशः] चाँद,—नक्षत्रताराग्रहसकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२।

चन्द्रिका [चन्द्र+ठन्+टाप्] 1. चाँदनी, ज्योत्स्ना—इतः स्तुतिः का खलु चन्द्रिकाया यदब्धिमप्युत्तरलीकरोति—नै० ३।११६, रघु० १९।३९, कामुकैः कुंभीलकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४ 2. (समास के अन्त में) विशदीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालना। अलंकारचंद्रिका, काव्यचंद्रिका—तु०—कौमुदी 3. जगमगाहट 4. बड़ी इलायची 5. चन्द्रभागा नामक नदी 6. मल्लिका लता। सम०—अम्बुजम् चन्द्रोदय होने पर खिलने वाला कुमुद,—ग्राहः चन्द्रकांतमणि, —पायिन् (पुं०) चकोर पक्षी।

चन्द्रिलः [चन्द्र+इलच्] 1. शिव का विशेषण।

चप् i (भ्वा० पर०—चपति) सांलना देना, ढाढस देना। ii (चुरा० उभ०—चपयति—ते) पीसना, चूरा करना, मांडना।

चपटः=**चपेटः**

चपल (वि०) [चप्+कल, उपधोकारस्याकारः] 1. हिलने-डुलने वाला, कंपमान, थरथराने वाला कुत्रान्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूलाः—श० १।१५, चपलायतांक्षी—चौर० ८ 2. अस्थिर, चंचल, चलचित्त, दोलायमान—शा० २।११, चपलमति आदि 3. भंगुर, अनित्य, क्षणिक—नलिनीदलगतजलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्—मोह० ५ 4. फुर्तीला, चंचल, चुस्त—(गतम्) शैशवाच्चपलमध्यशोभते—का० ११।८ 5. विधारहीन्य, अविवेकी—पुं० चापल,—लः 1. मछली 2. पारा 3. चातक पक्षी 4. क्षय 5. सुगंध द्रव्य।

चपला [चपल+टाप्] 1. बिजली—कुरबकसुमश्री चपलासुषमं रतिपतिमुपकालने—गीत० ७ 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. मदिरा 4. धन की देवी लक्ष्मी 5. जिह्वा। सम०—जवः चंचल तथा अस्थिरमन स्त्री। शि० ९।१६।

चपेटः [चप्+इट्+अच्] 1. थप्पड़ 2. चाटा।

चपेटा, चपेटिका [चपेट्+टाप्, चपेट+कन्+टाप्, इत्वम्] चाँटा—खण्डकोपाध्यायः शिष्याय चपेटिकां ददाति —महा०।

चम् (भ्वा० पर०—चमति, चान्त) 1. पीना, आचमन करना, चढ़ा जाना,—चचाम मधु माध्वीकम्—भट्टि० १४।९४ 2. खाना, आ-, (आ—चामति) 1. आचमन करना, एक सांस में पी जाना, चाटना—नाचेयैः हिममपि वारि वारणेन—कि० ७।३४, भामि० ४।३८, उत्तर० ४।१ 2. चाट लेना, पी जाना, सोख लेना —आचामति स्वेदलवान्मुखे ते—रघु० १३।२०, ९।६८।

चमत्करणम्, चमत्कारः, चमत्कृतिः (स्त्री०) 1. विस्मय, आश्चर्य 2. खेल, तमाशा 3. काव्य सौन्दर्य (जिससे काव्यरस की अनुभूति होती है)—चेतश्चमत्कृतिपदं कवितेव रम्या—भामि० ३।१, तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्—काव्य० १।

चमरः [चम्+अरच्] एक प्रकार का हरिण,—रः,—रम् चौरी (प्रायः चमर मृग की पूंछ से बनी),—री, चमर की मादा—एष्याश्चंयुक्त गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बाल-व्यजनैश्चमर्यः कु० १।१, ४८, शि० ४।६७, मेघ० ५३। सम०—पुच्छम् चमर की पूंछ जो पंखे का काम देती है, (—च्छः) गिलहरी।

चमरिकः [चमर+ठन्] कोविदार वृक्ष, कचनार का पेड़।

चमसः,—सम् [चमत्यस्मिन् चम—असच् तारा०] सोमपान करने का लकड़ी का चमचे के आकार का यज्ञ पात्र, —याज्ञ० १।१८३, (चमसी भी)।

चमूः (स्त्री०) [चम्+ऊ] सेना पर्यायतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् भग० १।३, वासवीना चमूनाम् मेघ० ४३, गजवती जवतीव्रहया चमूः—रघु० ९।१० 2. सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार तथा ३६४५ पदाति हों। सम०—चरः सैनिक, योद्धा,—नाथः, पः,—पतिः सेनापति, कमांडर, सेना नायक—रघु० १३।७४, —हरः शिव की उपाधि।

चमूरुः [चम्+ऊरु, उत्वम्] एक प्रकार का हरिण—चकासतं चारुचमूरुचर्मणा शि० १।८।

चम्प् (चुरा० उभ०—चम्पयति—ते) जाना, चलना-फिरना।

चम्पकः [चम्प्+ण्वुल्] 1. चम्पा नामक पौधा जिसके पीले, सुगंधयुक्त फूल लगते हैं 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, —कम् इस वृक्ष का फूल—अद्यापि तां कनकचम्पक-दामगौरीम्—चौर० १। 1. सम०—माला चम्पाकली, स्त्रियों का एक आभूषण जो गले में पहना जाता है 2. चम्पा के फूलों की माला 3. एक प्रकार का छंद, दे० परिशिष्ट, रम्भा केले की एक जाति।

चम्पकालुः [चम्पकेन पनसावयवविशेषेण श्लति, चम्पक+अल्+उण्] कटहल का पेड़।

चम्पकावती, चंपा, चंपावती [चम्पक+मतुप्+ङीप्, वत्वं दीर्घश्च, चम्प्+अच्+टाप्, चम्पा+मतुप्+ङीप् वत्वं] गंगा के किनारे एक प्राचीन नगर, अंगदेश की राजधानी, वर्तमान भागलपुर।

चम्पालुः=चम्पकालुः।

चम्पूः (स्त्री०) [चम्प्+ऊ] एक प्रकार का काव्य जो गद्य और पद्य दोनों रचनाओं से युक्त होता है तथा जिसमें एक ही विषय की चर्चा होती है—गद्यपद्यमयं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्य्यं चम्पूरित्यभिधीयते --सा० द० ५६९, उदा० भोजचंपू, नलचंपू और भारतचंपू आदि।

चप् (म्वा० आ० --चपते) किसी जगह जाना, हिलना-डुलना।

चयः [चि + अच्] 1. संघात, संग्रह, समुच्चय, ढेर, राशि —चयास्त्रयाणामिव वर्त्मचारिणां पुरा शि० १।३, मृदा चयः - उत्तर० २।९, मिट्टी का ढेर, कचानों चयः -भर्तृ० १।५, घालों का मौंढी (गुच्छा), इसी प्रकार चमरीचयः - शि० ४।६० कुसुमचय सुपारचय आदि 2. किसी भवन की नींव की मिट्टी का टीला 3. किले की खाई की मिट्टी का टीला 4. दुर्गाध्यक्षीर 5. किले का द्वार 6. तिपाई, चौकी 7. भवनों का समूह, विशाल भवन 8. लकड़ियों का चट्टा।

चयनम् [चि --ल्युट्] 1. चुनना, बीनना (फूल आदि का) 2. ढेर लगाना, चट्टा लगाना।

चर् (स्वा० पर० --चरति, चरित) 1. चलना, घूमना, इधर-उधर जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना --नष्टाशङ्का हरिणप्लुताश्च वलन्मन्दं चरन्ति —श० १।१५, (यहाँ 'चर्' का अर्थ 'धीमे चरना' भी है)—इन्द्रियाणां हि चरताम् · भग० २।६७, कायश्चेत्तरुणस्य रामसदृशे मनोरथाः—रघु० १२।५९, मनु० २।२३, ६।६८, ८।३३६, ९।३०६, १०।५५ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना, पर्यवेक्षण करना —चरन्तः किल दुश्चरं तपः रघु० ८।७१, याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३०, 3. करना, व्यवहार करना, आचरण करना (प्रायः अधि' के साथ) —चरन्तीनां च कामतः—मनु० ५।१०९, ९८७, आत्मवत्सर्वभूतेषु यश्चरेत् - महा०, तस्यां स्वं मातृवत् चरेत् —रघु० १।७६, (यहाँ पर धातु 'आचर' भी हो सकती है) 4. घास चरना—शुचिर्हि दूरं चरन् शस्यं—हि० ३।१, 5. खाना, उपभोग करना 6. काम में लगना, व्यस्त होना 7. जीना, जीते रहना, किसी न किसी अवस्था में विद्यमान रहना। प्रेर०--चारयति 1. चलाना, हिलाना-डुलाना 2. भेजना, निर्देश देना, हिलाना 3. दूर करना 4. अनुष्ठान करना, अभ्यास कराना 5. संयोग कराना, -अति 1. अतिक्रमण करना उल्लंघन करना, अवज्ञा करना 2. अत्याचार करना, अनु -, अनुकरण करना, अथवा -नकल करना, पीछे चलना, अप —, 1. अतिक्रमण करना, अत्याचार करना 2. अवज्ञा करना, अभि -, 1. आक्रमण करना, उल्लंघन करना 2. (गति के रूप में) विश्वास जो देना, धोखा देना—मनु० ५।१६२, ९।१०२ 3. जादू करना, मंत्र फूंकना - मन्त्राभिश्चरन्ति याज्ञ० १।२२५, ३।२८९, आ -, 1. कर्म करना, अभ्यास करना, करना, अनुष्ठान करना —नवाविकस्यात्मदिनेष्वनाचरन् - रघु० १।२५, त्वं च तस्योष्टमाचरेः - विक्रम० ५।२०, रघु० १।८९, मनु० ५।१५६, न चाप्याचरितः पूर्वैरयं धर्मः --महा० 2. वर्ताव करना, व्यवहार करना, आचरण करना—पुत्रमित्रावाचरेत् शिष्यम्—सिद्धा०, पुत्र मित्रवदाचरेत् चाण० ११ 3. घूमना, इधर-उधर फिरना 4. आश्रय लेना, अनुसरण करना—रघु० ४।४४, उद्-, 1. ऊपर जाना, उठना, निकलना, आगे बढ़ना -- शि० १७।५२, 2. उठना, प्रकट होना, (शब्द) निकलना --उच्चचार निनदोऽभ्रमि तस्याः - रघु० ९।७३, १५।४६, १६।८७, कीलाहलध्वनिरुदचरत् - का० २७ 3. बोलना, उच्चारण करना --शब्द उच्चरित एव सामगाः —रघु० ११।७३ 4. मलीत्सर्ग करना, पुरीषोत्सर्ग करना—तिरस्कृत्यौचरेत्काष्ठलोष्ठपत्र-तृणादिना -मनु० ४।४२ 5. (आ० में प्रयोग) (क) उत्क्रमण करना, विचलित होना- भट्टि० ८।३१, (ख) उठना, चढ़ना – नै० ५।४८, प्रेर० बुलवाना, उच्चारण करवाना, उप—, 1. सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में प्रस्तुत रहना —गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा मुकेशीं· कु० १।६०, सममुपचरन् भद्रे सुप्रियं चाप्रियं च —मृच्छ० १।३१, रघु० ५।६२, मनु० ३।१९३ 2. (रोगी की) सेवा करना, चिकित्सा करना, परिचर्या करना 3. व्यवहार करना 4. निकट जाना, छल्-, ठगना, धोखा देना, परि, --1. जाना, इधर उधर घूमना 2. सेवा-शुश्रूषा करना, सेवा करना या सेवा में उपस्थित रहना -मनु० २।२४३, भर्तृ० ३।४० 3. देख भाल करना, परिचर्या करना, सेवा करना, प्र, 1. इधर उधर चलना, ऐंठ कर चलना 2. फैलना, प्रचलित होना, वर्तमान होना 3. (प्रथा का) प्रचलन होना 4. कार्य आरंभ करना, मार्ग अपनाना, कार्य करने लगना --मनु० ९।२८४, (प्रेर०) इधर उधर फिराना, वि, -1. इधर उधर घूमना, भ्रमण करना,—रघु० २।८, मेघ० ११५ 2. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 3. कर्म करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, (प्रेर०) 1. सोचना, विचारना, मनन करना 2. चर्चा करना, वादविवाद करना -रघु० १४।४६ 3. हिसाब लगाना, अनुमान लगाना, हिसाब में गिनना, विचार करना—परेषामात्मनश्चैव यो विचार्य बलाबलम्–पंच० ३, सुविचार्य यत्कृतम्---हि० ३।२३, व्यभि, --1. पथ-भ्रष्ट होना, विचलित होना 2. उल्लंघन करना, विश्वास घात करना 3. कपटपूर्ण व्यवहार करना, सम् (आ० जब कि कर्म० के साथ प्रयोग हो) 1. चलना, घूमना, जाना, गुजरना, इधर उधर फिरना --यानैः सञ्चरन्तीत्ये—भट्टि० ८।३२, क्वचित्पथा संचरते सुराणाम्--रघु० १३।१९, नै० ६।५७, संचरणं घनानां कु० १।६ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3. दे देना, हस्तांतरित होना। (प्रेर०) 1. इधर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उधर भेजना, नेतृत्व करना, संचालन करना,—श०५।५ 2. फैलाना, इधर उधर घुमाना 3. पहुँचाना, समाचार देना, दे देना, सौंप देना 4. चरने के लिए मुड़ना।

चर (वि०) (स्त्री०—री) [चर्+अच्] 1. हिलने-डुलने वाला, जाने वाला, चलने वाला (समास के अन्त में) 2. काँपता हुआ, हिलता हुआ 3. जंगम दे० 'चराचर' —मनु० ३।२०१, भग० १३।१५ 4. सजीव —मनु० ५।२९, ७।१५ 5. (प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त) पूर्वकालीन, भूतपूर्व आढ्यचर=जो पहले धनवान् था, इसी प्रकार देवदत्तचर, अध्यापकचर (भूतपूर्व अध्यापक),—र 1. दूत 2. खंजन पक्षी 3. जुआ खेलना 4. कौड़ी 5. मंगलग्रह 6. मंगलवार। सम०—अचर (वि०) जंगम और स्थावर—चराचराणां भूतानां कुक्षिराधारतां गतः—कु० ६।६७, २।५, भग० ११।४३, (रम्) 1. सृष्टि की समस्त रचना, संसार—मनु० १।५७, ६३, २।७५, भग० ११।७, ९।१० 2. आकाश, अन्तरिक्ष,—द्रव्यम् जंगम वस्तु,—मूर्तिः वह मूर्ति जिसका जलूस या सवारी निकाली जाय।

चरकः [चर+कन्] 1. दूत 2. रमता साधु, अवधूत।

चरटः [चर्+अटच्] खंजन पक्षी।

चरणः, —णम् [चर्+ल्युट्] 1. पैर—शिरसि चरणं एव न्यस्यते वारंवारं—वेणी० ३।३८, जात्या कामगवद्योऽसि चरणं स्विदमुद्धृतम्— ३९ 2. सहारा, स्तंभ, थूणी 3. वृक्ष की जड़ 4. श्लोक का एक पंक्ति या पाद 5. चौथाई 6. वेद की शाखा या सम्प्रदाय 7. वंश, —णम् 1. हिलना-डुलना, भ्रमण करना, घूमना 2. अनुष्ठान, अभ्यास—मनु० ६।७५ 3. जीवनचर्या, चालचलन, (नैतिक) व्यवहार 4. निष्पन्नता 5. खाना, उपभोग करना। सम०—अमृतम्,—उदकम् वह पानी जिसमें किसी श्रद्धेय ब्राह्मण या आध्यात्मिक उपदेष्टा के पैर धोये जा चुके हैं, अरविंदम्, कमलम्, —पद्मम् कमल जैसे पैर,—आयुधः मुर्गा,—आस्कन्दनम् पैरों के नीचे रौंदना, कुचलना, पद दलित करना —उदकं (पुं०)—पर्वन् (नपुं०) टखना, न्यासः पग, कदम, —पः वृक्ष, —पतनम् (दूसरे के चरणों में) गिरना, साष्टांग प्रणाम करना। अमरु १७, —पतित (वि०) चरणों में दण्डवत् प्रणाम करना—मेघ० १०५, —शुश्रूषा, सेवा 1. दण्डप्रणाम 2. सेवा, भक्ति।

चरम (वि०) [चर्+अमच्] 1. अन्तिम, अन्त्य, आखरी —चरमा क्रिया 'अन्त्येष्टिक्रिया या अन्त्येष्टि संस्कार' 2. पश्चवर्ती, बाद का—पूर्वं तु चरमं तनोः—अमर० 3. (आयु की दृष्टि से) बूढ़ा 4. बिल्कुल बाहर का 5. पश्चिमी, पच्छमी 6. सबसे नीच, सबसे कम, —मम् (अव्य०) आखिरकार, अन्त में। सम०—अचलः —अद्रिः,—क्ष्माभृत् (पुं०) पश्चिमी पर्वत (सूर्य और चन्द्रमा इसके पीछे ही अस्त हो जाने वाले माने जाते हैं),—अवस्था अन्तिम दशा (बुढ़ापा),—कालः मृत्यु की घड़ी।

चरिः [चर्+इन्] जीव, जन्तु।

चरित (भू० क० कृ०) [चर्+क्त] 1. घूमा हुआ या फिरा हुआ, गया हुआ 2. अनुष्ठित, अभ्यस्त 3. अवाप्त 4. ज्ञात 5. प्रस्तुत,—तम् 1. जाना, हिलना-डुलना, मार्ग, कर्म करना, करना, अभ्यास, व्यवहार, कृत्य, कर्म - उदारचरितानां - हि० १।७०, सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति - १।८१ 3. जीवनी, आत्मजीवनी, साहसकथाएँ, इतिहास, कहानी—उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते—उत्तर० १।२, इसी प्रकार 'दशकुमारचरितम्' आदि। सम०—अर्थ (वि०) 1. जिसने अपना अभीष्ट ध्येय पूरा कर लिया है, सफल रामरावणयोर्युद्धं चरितार्थमिवाभवत् - रघु० १२।८७, १०।३६, २।१७, कि० १३।६२ 2. संतुष्ट, तृप्त 3. कार्यान्वित, संपन्न।

चरित्रम् [चर्+इत्र] 1. व्यवहार, आदत, चालचलन, अभ्यास, कृत्य, कर्म 2. अनुष्ठान, पवित्रकर्म 3. इतिहास, जीवनचरित, आत्मकथा, वृत्तांत, साहसकथा 4. प्रकृति, स्वभाव 5. कर्तव्य, अनुशासित नियमों का पालन —मनु० २।२०, ९।७।

चरिष्णु (वि०) [चर्+इष्णुच्] जंगम, सक्रिय, इधर उधर घूमने वाला।

चरुः [चर्+उन्] उबले चावल, आदि से, देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई आहुति—रघु० १०।५२, ५४, ५६। सम०—स्थाली देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए चावलों को उबालने का बर्तन।

चर्च् I (चुरा० उभ०—चर्चयति-ते, चर्चित) पढ़ना, ध्यान पूर्वक पढ़ना, अनुशीलन करना, अध्ययन करना। II (तुदा० पर०—चर्चति, चर्चित) 1. गाली देना, धिक्कारना, निन्दा करना, बुराभला कहना, चर्चा करना, विचार करना।

चर्चनम् [चर्च्+ल्युट्] 1. अध्ययन, आवृत्ति, बारबर पढ़ना 2. शरीर में उबटन लगाना।

चर्चरिका, चर्चरी [चर्चरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, चर्च्+अरन्+ङीप्] 1. एक प्रकार का गान 2. (संगी० में) तालियाँ बजाना 3. विद्वानों का सस्वर पाठ 4. आमोद प्रमोद, हर्षध्वनि 5. उत्सव 6. खुशामद 7. घुंघराले बाल।

चर्चा, चर्चिका [चर्च्—अङ्+टाप्, चर्चा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. आवृत्ति, स्वर पाठ, अध्ययन, बारबर पढ़ना 2. बहस, पूछ-ताछ, अनुसंधान 3. विचार विमर्श

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. शरीर में उबटन का लेप करना अङ्गचर्चामिवचयम् -कः० १५३, श्रीमद्भगवद्गीतायाम् --गीत० ९ ।

चर्चिचयम् [चर्चिका+गत्] 1. शरीर में लेप (मालिश) करना 2. उबटन ।

चर्चित (भू० क० कृ०) [चर्च+क्त] 1. मालिश किया हुआ, लेप किया हुआ, सुगंधित, सुवासित आदि --चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमालो - गीत० १, ऋतु० २।२१ 2. चर्चा किया गया, विचार किया गया, खोज किया गया ।

चर्पटः [चृप्+अटन्] चपेड़, थप्पड़ तु० 'चपेट' ।

चर्पटी [चर्पट+ङीष्] चपाती, बिस्कुट ।

चर्मटः [चर्+क्विप्, भट्+अच्, ततः कर्म० स०] एक प्रकार की ककड़ी ।

चर्मटी [चर्मट+ङीष्] 1. हर्ष का कोलाहल 2. ककड़ी ।

चर्मन् [चर्मन्+अच्, टिलोपः] ढाल ।

चर्मण्वती [चर्मन्+मतुप्+ङीष्, मस्य वः] गंगा में जाकर मिलने वाली एक नदी, वर्त्तमान चम्बल नदी ।

चर्मन् (नपुं०) [चर्-मनिन्] 1. (शरीर की) त्वचा 2. चमड़ा, खाल --मनु० २।४१, १७४ 3. त्वगिन्द्रिय 4. ढाल --वि० १८।२१ । समः -अम्भस् (नपुं०) लसीका, -अवकर्तनम् चमड़े का काम करना, अवकर्तिन्,-अवकर्तृ (पुं०) मोची, --कारः, -कारिन् (पुं०) मोची, चमड़ा कमाने या रंगने वाला,—कोलः, —कीलम् मस्सा, अर्शमांस,—चित्रकम् सफेद कोढ़, --जम् 1. बाल 2. रुधिर, तरङ्गः झुर्री, दण्डः, —तालिका हण्टर, द्रुमः, द्रुमः भूर्ज नाम का पेड़, —पट्टिका चमड़े का चौरस टुकड़ा जिस पर पासे डाल कर खेला जाय, -पत्री चमगादड़ छोटा परों में पाया जाने वाला चमगादड़,-पादुका चमड़े का जूता,- प्रसेविका मोची की रांपी, --प्रसेवकः, —प्रसेविका धौंकनी, — बन्धः चमड़े का फीता, -मुण्डा दुर्गा का विशेषण, यष्टिः (स्त्री०) हंटर, वसनः 'चर्मावृत' शिव, वाद्यम् ढोल, तबला,— संभवा बड़ी इलायची,—सारः कसिका, स्क्वोदक ।

चर्मनय (वि०) [चर्मन+मयट्] चमड़े का, चमड़े का बना हुआ ।

चर्मकः, चर्मारः [चर्मन्+रा+क, चर्मन्+कृ+अण्] मोची, चमार, चमड़ा रंगने वाला ।

चर्मिल (वि०) [चर्मन्+इलच्] ढाल से सुसज्जित ।

चर्मिन् [वि०] (स्त्री० -णी) [चर्मन्+इनि, टिलोपः] 1. ढाल से सुसज्जित 2. चमड़े का, (पुं०) 1. ढालधारी सैनिक 2. केला 3. भूर्ज वृक्ष ।

चर्या [चर्-यत्+टाप्] 1. इधर-उधर जाना, हिलना-डुलना, इधर-उधर सैर करना 2. मार्ग, चाल (जैसा कि 'राहुचर्या' में) 3. व्यवहार, चालचलन, आचरण-विधि 4. अभ्यास, अनुष्ठान. पालन—मनु० १।१११, व्रतचर्या, तपश्चर्या 5. नव प्रकार के रीति-रिवाज व संस्कारों का नियमित अनुष्ठान 6. खाना 7. प्रथा, रिवाज--मनु० ६।३२ ।

चर्व् (भ्वा० पर० -चुरा० उभ०---चर्वति, चर्वयति—ते, चर्वित) 1. चबाना, कुतरना, खाना, कौंचल करना, काटना—लाङ्गूलं गाढतरं चर्वितुमारब्धवान् - पंच ४, यस्यैतच्च न कुक्कुरैरहरहर्लेढ्यान्तरं चर्व्यते – मृच्छ० २।११ 2. चूस लेना 3. स्वाद लेना, चखना ।

चर्वणम्,—णा [चर्व्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1. चबाना, खाना 2. आचमन करना 3. (आलं०) चखना, स्वाद लेना, आनन्द लेना - प्रमाणं चर्वणेवात्र स्वामिन्नै विदुषां मतम् --सा० द० ५७, (टी० चर्वणा आस्वादनं तच्च स्वादः काव्यार्थसंभेदादभिमानन्दसमुद्भव इत्युक्तप्रकारम्), इसी प्रकार 'निष्पत्त्या चर्वणस्यास्य निष्पत्तिरुपचारतः' ५८ ।

चर्वा [चर्व्+अङ्] तमाचा, थप्पड़ का प्रहार (चर्वन् (पुं०) भी) ।

चर्वित (भू० क० कृ०) [चर्व्+क्त] 1. चबाया गया, काटा हुआ, खाया हुआ 2. चखा गया । समः -चर्वणम् (शा०) चबाये हुए को चबाना, (आलं०) पुनरुक्ति, निरर्थक आवृत्ति, -- चारम् पोकदान ।

चल् (भ्वा० पर०—चलति, (विरल प्रयोग—चलते) चलित) 1. हिलाना, कांपना, बड़बड़ाना, थरथराना, स्पंदित होना, - छिन्नाग्रचेलुः क्षणं भुजाः—भट्टि० १४।४०, सपक्षैरिद्रिचाचालोर्त्—१५।२४, ६।८४ 2. (क) जाना, चलते रहना, सैर करना, स्पंदित होना, हिलना-डुलना (एक स्थान से) - पदात्पदमपि चलितुं न शक्नोति - पंच ४, चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् भाग० ३२, चंचल बाला स्तनभिन्नवल्कला —कु० ५।८४, मृच्छ० १।२६ । (ख) (अपने मार्ग पर) आगे बढ़ना, विदा होना, कूच करना, चल देना —चेलुश्चोत्परिग्रहाः-कु० ६।९३ 3. ग्रस्त होना, सवाध होना, घबड़ाया हुआ या अव्यवस्थितचित्त होना, क्षुब्ध होना, व्याकुल होना मुनेरपि यतस्तस्य दर्शनाच्चलते मनः-पंच० १।४०, लोभेन बुद्धिश्चलति-हि० १।१४० 4. विचलित होना या भटकना (अपा० के साथ) —चलति त्वान्न जिगीषितां हि चेतः-कि० १०।२९, अलग होना, छोड़ देना -मनु० ७।१५, याज्ञ० १।३६०, (प्रेर०) च (चा) लयति, च (चा) लित 1. हिलाना-डुलाना, झुलाना, हरकत देना 2. दूर करना हटाना, निकाल देना 3. दूर ले जाना 4. आनन्द लेना पालना-पोसना (केवल चालयति), उद्--1. चल देना, प्रस्थान करना,--स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयाताम् रघु० २।६, उच्चचाल बलीभत्सखो वह्नी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—११।५१, नगरायोदचलम्—दश० 2. चले जाना, चल देना, (किसी के स्थान को) छोड़ चलना—स्थानादमुच्चलन्प्रभि —श० १।२१, पुणाच्चलितयद्पदम् —रघु० १२।२७, प्र—, 1. हिलाना, जाना, काँपना —भर्तृ० २।४ 2. जाना, सैर करना, चलते जाना, प्रस्थान करना, कूच करना 3. ग्रस्त होना, बाधायुक्त या क्षुब्ध होना 4. भटकना, विचलित होना, वि—, 1. हिलना-डुलना, चलना पतति पत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम्—गीत० ५ 2. जाना, आगे बढ़ना, चल देना 3. क्षुब्ध होना, बाधायुक्त होना, (समुद्र की भाँति) रुखा होना—व्यचलदिदम्भसां पतिः —भट्टि० १५।७० 4. विचलित होना, भटकना —याज्ञ० १।३५८, ii (तुदा० पर०—चलति चलित) खेलना, क्रीडा करना, केलि करना।

चल (वि०) [चल्+अच्] 1. (क) हिलने-जुलने वाला काँपने वाला, डोलने वाला, थरथराने वाला, (आँख आदि को) घुमाने वाला -चलापाङ्गा दृष्टि स्पृशसि —श० १।२४, चलकाकपक्षकैरमात्यपुत्रैः -रघु० ३। २८, लहराने वाले—भर्तृ० १।६, (ख) जंगम (विप० स्थिर)—चञ्चलचले लक्ष्मे—श० २।५ 2. अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, त्रिपिल, डाँवाडोल—दयितास्वन्तवस्थितं नृणां न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने- -कुं० ४।२८, प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु—३।१ 3. अस्थायी, अनित्य, नश्वर—चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं जीवितयौवनं 4. अव्यवस्थित,—ल: 1. कंपकंपी, वेपथु, क्षोभ 2. वायु 3. पारा—ला 1. धन की देवी लक्ष्मी 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य। समः—अति चलायमान (—अतिचल); - चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः —भर्तृ० ३।१२८, लक्ष्मीमिव चलाचलाम् किं० ११।३० (चलाचला - चंचला - मल्लि०) नैष० १।६०, (ख:) कौवा,—आतङ्कः गठिया वाय, वात रोग, —आत्मन् (वि०) चलचित्त, चंचलमना,- इन्द्रिय (वि०) 1. भावुक 2. विषयी,- इषुः वह धनुर्धर जिसका तीर लक्ष्यच्युत हो इधर उधर फिर जाता है, अयोघ्य धनुर्धर,— कर्णः पृथ्वी से ग्रह तक की वास्तविक दूरी,—चञ्चुः चकोर पक्षी,—दलः,—पत्रः अश्वत्थ वृक्ष।

चलन (वि०) [चल्+ल्युट्] गतिशील, थरथराने वाला, कंपमान, डाँवाडोल, —नः 1. पैर 2. हरिण, —नम् 1. काँपना हिलना, डाँवाडोल होना चलनात्मकं कर्म —तर्क सं०, हस्त°, जानु° आदि- तरल दृगञ्चल-चलनमनोहरवदनविनिर्गतरतिगुणम् गीत० ११ 2. घूमना, भ्रमना,—नी 1 सामान्य स्त्रियों के पहनने के लिए लहंगा, पेटीकोट 2. हाथी को बाँधने की रस्सी।

चलनकम् [चलन+कन्] एक छोटा लहँगा या पेटीकोट जिसे नीच जाति की स्त्रियाँ पहनती हैं।

चलिः [चल्+इन्] आवरण, चादर।

चलित (भू० क० कृ०) [चल्+क्त] 1. हिला हुआ, चला हुआ, आन्दोलित, क्षुब्ध 2. गया हुआ, विसर्जित एवमुक्त्वा स चलितः 3. अयाथार्थ 4. ज्ञात, अधिगत (दे० चल्),—तम् 1. हिलाना, स्पंदित करना 2. जाना, चलना 3. एक प्रकार का नृत्य—चलितं नाम नाट्यसन्तरेण भ्रान्तविप० १।

चलुः [चल्—उन्] (पानी का) एक घूंट, चुल्लभर।

चलुकः [चलु+कन्] 1. चुल्लभर (पानी) 2. अंजलिभर या एक घूंट (पानी) नु० 'चुलुक'।

चष् I (भ्वा० उभ० चषति ते) खाना; II (स्वा० पर०—चष्णाति) घाव डालना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना।

चषकः,—कम् [चष्+क्वुन्] सुरापात्र, प्याला, मदिरा पीने का गिलास यत्तैः शिरस्त्रैश्चषकोत्तरैश्च —रघु० ७।४७, मुक्त लालाविलसं पिबति चषकं सासदमिव-शा० १।२९, कि० ९।५६, ५७,—कम् 1. एक प्रकार की मदिरा 2. मद्य, शहद।

चषतिः [चष्+अति] 1. खाना 2. मार डालना 3. ह्रास, निर्बलता, क्षय।

चषालः [चष्—आलच्] 1. यज्ञ के खंभे में लगी लकड़ी की फिरकी 2. छत।

चह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—चहति, चहयति —ते) 1. दुष्ट होना 2. ठगना, धोखा देना 3. अहंकार करना, घमंडी बनाना।

चाकचक्यम् [चक्—अच्, द्वित्वम्, चकचक:—तस्य भावः ष्यञ्] जगमगाना, प्रभा, चमक-दमक।

चाक्र (वि०) (स्त्री०—की) [चक्र+अण्] 1. चक्र से किया जाने वाला (युद्ध) 2. मंडलाकार 3. चक्र या पहिए से संबंध रखने वाला।

चाक्रिक (वि०) (स्त्री० की) [चक्र+ठक्] दे० ऊ० चाक, —कः 1. कुम्हार 2. तेली—याज्ञ० १।१६५, (तैलिक—मिता०, दूसरों के मत में शाकटिक—गाड़ीवान) 3. कोचवान, चालक।

चाक्रिणः [चक्रिन्—अण्] कुम्हार या तेली का पुत्र।

चाक्षुष (वि० स्त्री०—षी) [चक्षुस्+अण्] 1. दृष्टि पर निर्भर, दृष्टि से उत्पन्न, 2. आँख से संबंध रखने वाला, आँख का विषय, दार्शनिक 3. दृश्य, जो दिखाई दे, —षम् दृष्टि पर निर्भर ज्ञान। समः—ज्ञानम् आँखों देखी गवाही, या प्रमाण।

चाङ्गेरी [चि+इङ्गेरच् अङ्गम् यस्या ब० स०] 1. आमलोणिका शाक 2. दांतों की सफ़ेदी या तीक्ष्णता।

चाञ्चल्यम् [चञ्चल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता, द्रुतगति,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झिलोलता, (आंख आदि का) कम्पन, फरकना–भामि० २।६० 2. चंचलता 3. तत्परता ।

चाटः [चट्+अच्] बदमाश, ठग (जो पहले उसमें पूरा विश्वास जमा लेता है जिसे वह ठगना चाहता है) –याज्ञ० १।३३६ –(चाटाः =प्रतारकाः विश्वास्य ये परधनमपहरन्ति–यति०) ।

चाटुः-टु (नपुं०) [चट्+उण्] 1. मधुर तथा प्रिय वचन, मीठी बात, चापलूसी, ठकुरसुहाती (विशेषकर किसी प्रेमी के द्वारा अपनी प्रेमिका के प्रति) –प्रियः प्रियायाः प्रकरोति चाटुम्–ऋतु० ६।१४, विरचितचाटुवचनरचनं चरणरचितप्रणिपातम् –गीत० ११, अमरु ८३, पंच० १, श्लो० ८।१४, चौर० २० (गीतगोविंद के दसवें सर्ग का अधिकांश भाग इसी प्रकार की चाटुकारिता से भरा हुआ है) 2. स्पष्ट भाषण । सम०–उक्तिः (स्त्री०) खुशामद और झूठी प्रशंसा के वचन, –उल्लोल, –कार (वि०) प्रिय तथा मधुर बोलने वाला, चापलूस –शिवावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः –मेघ० ३१, –पटु (वि०) झूठी प्रशंसा करने में कुशल, पूरा चापलूस, –वटुः मसखरा, भांड,–लोल (वि०) सुंदरतापूर्वक हिलने वाला,–शतम् सैकड़ों अनुरोध, बार-बार की जाने वाली खुशामद –पटुचाटुशतैरनुकूलम्–गीत० २, यजपटुचवस्तुं धीरं विलोकयंति चाटुशतैश्च भुञ्जते–भर्तृ० २।३१ ।

चाणक्यः [चणक+यञ्] नागर राजनीति के प्रख्यात प्रणेता विष्णुगुप्त, 'कौटिल्य' भी इन्हीं का नाम है –दे० कौटिल्य ।

चाणरः (पुं०) कंस का सेवक जो प्रसिद्ध मल्लयोद्धा था, जिस समय अक्रूर कृष्ण को मथुरा ले गया तो इस दुर्दांत योद्धा को कृष्ण से लड़ने के लिए भेजा गया । मल्लयुद्ध में कृष्ण ने इसे पछाड़ दिया और पृथ्वी पर रौंद डाला तथा इसके सिर को चूर्ण कर दिया ।

चण्डालः (स्त्री०—ली) [चण्डाल+अण्] पतित, अधम –दे० चंडाल,–चाण्डालः किमयं द्विजातिरथवा–भर्तृ० ३।५६ मनु० ३।२३९, ४।२९, याज्ञ० १।९३ ।

चाण्डालिका=चंडालिका ।

चातकः (स्त्री०—की) [चत्+ण्वुल्] चातक, पपीहा, (कवि समय के अनुसार यह केवल वर्षाऋतु में ही रहता है) –सूक्ष्मा एव पतंन्ति चातकमुखे द्विप्राः पयोबिन्दवः–भर्तृ० २।१२१, दे० २।५१ और रघु० ५।१७ । सम० आनन्दनः 1. वर्षाऋतु 2. बादल ।

चातनम् [चत्+णिच्+ल्युट्] 1. हटाना 2. क्षति पहुँचाना ।

चातुर (वि०) (स्त्री० - री) 1. चार की संख्या से संबद्ध 2. होशियार, योग्य, बुद्धिमान् 3. मधुरभाषी, चापलूस 4. दृष्टिविषयक, प्रत्यक्षज्ञानात्मक- -रम् चार पहियों की गाड़ी, –री कुशलता, दक्षता, योग्यता तद्भूटचातुरीतुरी–नं० १।१२ ।

चातुरम् [चतुरक्ष+अण्] चौपड़ या चार पासों के खेल में चार का दाँव, –क्षः छोटा गोल तकिया ।

चातुर्थिकः [चतुर्थं अर्थमधिकृत्य विहितः–ठक्] (व्या० में) एक ऐसा प्रत्यय जो चार भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द में जोड़ा जाता है ।

चातुराश्रमिक (वि०) (स्त्री०–की), चातुराश्रमिन् (वि०) (स्त्री०–णी) ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार कालों में से किसी एक में रहने वाला । दे० 'आश्रम' ।

चातुराश्रम्य [चतुराश्रम+ष्यञ्] ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार काल । दे० 'आश्रम' ।

चातुरिक, चातुर्थक, चातुर्थिक (वि०) (स्त्री०–की) [चातुर+ठक्, चतुर्थ+अण्, ठक् वा] 1. चौथे या, हर चौथे दिन होने वाला,–कः चौथैया बुखार, जूड़ीताप ।

चातुर्थाह्निक (वि०) (स्त्री०–की) [चतुर्थाह्नि+ठक्] चौथे दिन होने वाला ।

चातुर्दंशम् [चतुर्दश्यां दृश्यते इति] राक्षस-सिद्धा० ।

चातुर्दशिकः [चतुर्दशी+ठक्] जो चांद्रपक्ष की चतुर्दशी के दिन भी पढ़ता है (यह 'अनध्याय' का दिन है) ।

चातुर्मासिक (वि०) (स्त्री० –सिका) [चतुर्षु मासेषु भवः –अण्, –कन्, चतुर्मास+ठक्+टाप्, ह्रस्वश्च] जो चातुर्मास्य यज्ञ का अनुष्ठान करता है ।

चातुर्मास्यम् [चतुर्मास+ष्यञ्] हर चार महीने के पश्चात् अनुष्ठेय यज्ञ अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरंभ में ।

चातुर्यम् [चतुर+ष्यञ्] 1. कुशलता, होशियारी, दक्षता, बुद्धिमत्ता 2. लावण्य, रमणीयता, सौन्दर्य– भ्रूचातुर्यम्—भर्तृ० १।३ ।

चातुर्वर्ण्यम् [चतुर्वर्ण+ष्यञ्] 1. हिन्दुजाति के मूल चार वर्णों की समष्टि–एवं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः—मनु० १०।६३, ऋक् ६।१३ 2. इन चार वर्णों का धर्म या कर्तव्य ।

चातुर्विध्यम् [चतुर्विध+ष्यञ्] चार प्रकार (सम्बन्धिक रूप में), चार प्रकार का प्रभाग ।

चात्वालः [चत्+वालच्=चत्वाल+अण्] 1. भूमि में खोद कर बनाया हुआ हवनकुण्ड 2. कुशा, दर्भ ।

चान्दनिक (वि०) (स्त्री०—की) [चन्दन+ठक्] 1. चन्दन से बनाया हुआ, या उत्पन्न 2. चन्दनरस से सुगन्धित ।

चान्द्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [चन्द्र+अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चन्द्रसंबंधी गुरुकाव्यानुगा विभ्रच्चान्द्रीमभिनभः श्रियम्–शि० २।२, –द्रः 1. चांद्रमास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. शुक्लपक्ष 3. चन्द्रकांतमणि;—द्रम् 1. चांद्रायण नामक व्रत 2. ताजा अदरक 3. मृगशिरस् नक्षत्र,—द्वौ चांदनी। सम०—भागा चन्द्रभागा नाम नदी,—मासः चन्द्रमा की तिथियों के अनुसार गिना जाने वाला महीना,—व्रतिकः चांद्रायण व्रत रखने वाला।

चन्द्रकम् [चान्द्र+कै+क] खूला अदरक, सोंठ।

चान्द्रमस (वि०) (स्त्री० सी) [चन्द्रमस्+अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चांद-संबंधी—लब्धोदयः चन्द्रमसीव लेखा—कु० १।२५, चन्द्रं गता पद्मगुणान् भुङ्क्ते पद्मा-श्रिता चन्द्रमसीमभिख्याम्—१।४३, रघु० २।३९, भग० ८।२५,—स्म् मृगशिरा नक्षत्रपुंज।

चन्द्रमसायनः,—निः [चन्द्रमसोऽपत्यम्+फिञ्] बुधग्रह।

चान्द्रायणम् [चन्द्रस्यायनमिवायनमत्र, पूर्वपदात् संज्ञायां गरदं, संज्ञायां दीर्घः, स्वार्थे अण् वा—तारा०] एक धार्मिक व्रत या प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या जो चन्द्रमा की वृद्धि व क्षय से विनियमित है। इस व्रत में दैनिक आहार (जो १५ ग्रास या कौर का होता है) पूर्णिमा से प्रतिदिन एक२ ग्रास घटता रहता है यहां तक कि अमावस्या के दिन नितांत निराहार व्रत रक्खा जाता है, उसके पश्चात् फिर शुक्लपक्ष में एक कौर से आरंभ करके पूर्णिमा तक बढ़ाकर फिर १५ ग्रास तक लाया जाता है) तु० याज्ञ० ३।३२४, मनु० ११।२१७।

चान्द्रायणिक (वि०) (स्त्री०—की) [चान्द्रायण+ठक्] चान्द्रायण व्रत का पालन करने वाला।

चापम् (चप+अण्) 1. धनुष,—तते चापद्वितीये वहति रणधुरां कार्मुकस्यावकाशः—वेणी० ३।५, इसी प्रकार 'चापपाणिः' 2. हाथ में धनुष लिये हुए 3. इन्द्र धनुष 4. (ज्यामिति) वृत्त की तोरणाकार रेखा 5. धनु-राशि।

चापलम्,—ल्यम् [चपल+अण्, ष्यञ् वा] 1. द्रुतगति, स्फूर्ति 2. चचलता, अस्थिरता, संक्रमणशीलता—कि० २।४१ 3. विचारशून्य या आवेशपूर्ण आचरण, उतावलापन, उद्दण्ड कृत्य—धिक् चापलम् उत्तर ४, तदृशुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः—रघु० १।९, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया—का० १०१ 4. (घोड़े आदि का) अविश्रांत-पुनः पुनः वृत्तिनिरुद्धि-चापलम्—रघु० ३।४२।

चामरः,—रम् [चमर्याः विकारः तत्पुच्छनिर्मितत्वात् चमरी+अण्] (कभी२ —रा,—री) चौरी, चंवर या चमरी की पूंछ, (यह मोरछल या पंखे की भांति प्रयुक्त की जाती है, और एक राजकीय चिह्न समझा जाता है लंबी२ यह केशपुच्छ की भांति घोड़े के सिर पर फहराया जाता है)—स्थास्नुस्ते निचुलकुसुमैः मञ्जरीचामरालि—विक्र० ४।४, अदेवमासंत वयस्थ भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, कु० ७।४२, शि० २।२९, मेघ० ६५, चित्रन्यस्तमिवाचलं हयशिरस्यामावच्चामरम्—विक्रम० १।४, शा० १।८। सम०—ग्राहः,—ग्राहिन् (पुं०) चंवर डुलाने वाला, चंवर बरदार,—ग्राहिणी चंवर डुलाने वाली स्त्री की सेविका—पृष्ठे लोलवलयरणितं चामरग्राहिणीनां भर्तुः—३।६१, —पुच्छः, —पुच्छकः 1. सुपारी का पेड़ 2. केतकी का पौधा 3. आम का वृक्ष।

चामरिन् (पुं०) [चामर+इनि] घोड़ा।

चामीकरम् [चमीकर+अण्] 1. सोना—स्तम्भाश्चामीकरापूर्णाः—विक्रम० १।१४, रघु० ७।५, शि० ४।२४, कु० ७।२४ 2. धतूरे का पौधा। सम०—प्रख्य (वि०) सोने की तरह का।

चामुण्डा [चम्+ला+क, पृषो० साधु] दुर्गा का रौद्ररूप —मा० ५।२५।

चाम्पिला [चम्प्+अङ्+टाप्=चम्पा+अण्+इलच्] चंपा नाम की नदी (संभवतः वर्तमान 'चंबल' नदी)।

चाम्पेयः [चम्पा+ढक्] 1. चम्पक वृक्ष 2. नागकेसर का पेड़, —यम् 1. तन्तु, विशेषकर कमल फूल का 2. सोना 3. धतूरे का पौधा (अन्तिम दो अर्थों में पुं० भी)।

चाय् (स्वा० उभ० चायति ते) 1. निरीक्षण करना, अच्छा बुरा पहचानना, देख लेना—शि० १२।५१ 2. पूजा करना।

चारः [चर्—घञ्] 1. जाना, घूमना, चाल, भ्रमण मण्डलचारशोभाः—विक्रम० ५।२, क्रीडाशैले यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी—मेघ० ६०, पैदल चलना 2. गति, मार्ग, प्रगति मंगलचार, शनिचार आदि 3. भेदिया, चर, गुप्तचर, दूत—मनु० ७।१८४, ९।२६१, दे० चारचक्षुस् नी० 4. अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 5. बेड़ी 6. बंधन, बेड़ी,—रम् कुशिन विष। सम०—अन्तरितः भेदिया,—ईक्षणः—चक्षुस् (पुं०) गुप्तचरों को आंख के स्थान में प्रयुक्त करने वाला राजा (या राजनीतिज्ञ) जो गुप्तचर या भेदिया रखता है और उन्हीं के माध्यम से देखता है, चार-चक्षुर्महीपतिः—मनु० ९।२५६, तु० कामन्दकः राजा पश्यति सन्धिने, वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः, चारैः पश्यन्ति राजानः सर्वत्रैवामितैर्जनाः। रामा० भी—धर्ममार्ग-ध्वनि दूरस्थाः सर्वानर्थप्रदर्शिणः, चारेण तस्माद्दृश्यन्ते राजानश्चारचक्षुषः। **चणः,—चञ्च** (वि०) ललित चाल वाला, मनोहर। **पथः** चौराहा। **भटः** वीर योद्धा। **वायुः** ग्रीष्मकालीन मृदु मन्द पवन, वसन्त ऋतु।

चारकः [चर्+णिच्+ण्वुल्] 1. भेदिया 2. ग्वाला 3. नेता चालक 4. साधी 5. अश्वारोही, सवार 6. कारागार —निगडितचरणाः चारकेरिरेऽध्वा—दश० ३२।

चारणः [चर्+णिच्+ल्युट्] 1. भ्रमणशील, तीर्थयात्री

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. घूमने-फिरने वाला नट या गर्वया. नर्तक. भांड, भाट—मनु० १२।१४ 3. स्वकीय गर्वया, गंधर्व— श० २।१४ 4. वेद या अन्य धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करने वाला 5. भेदिया।

चारिका [चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी।

चारितार्थ्यम् [चरितार्थ+ष्यञ्] उद्देश्यसिद्धि, सफलता।

चारित्रम्, अम् [चरित्र+अण्, ष्यञ् वा] 1. शील, व्यवहार, काम करने की रीति 2. नेकनामी, सच्चरित्रता, ख्याति, सचाई, ईमानदारी, अच्छा चालचलन —अनृतं नाभिधास्यामि चरित्रभंशकारणम्—मृच्छ० ३।२५, २६, चारित्र्यविहीन—आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति —१।४३ 3. सतीत्व, (स्त्रियों का) सदाचरण 4. स्वभाव, तबीयत 5. विशिष्ट आचार या अभ्यास 6. कुलक्रमागत आचार। सम०—**कवच** (वि०) सतीत्व रूपी कवच में सुरक्षित।

चारु (वि०) (स्त्री० रु,—र्वी) [चरति त्रिषे—चर्+उण्] 1. रुचिकर, मनोज्ञ, प्रिय, प्रतिष्ठित, अभीष्ट (संप्र० या अधि० के साथ)—वक्तुमारब्धं चारु 2. सुन्दर, रमणीय, सुन्दर, कान्त, मनोहर—प्रिये चारुशीले मुञ्च मयि मानमनिदानम् - गीत० १०, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, चकमत्तं जारचमूरुचर्मणा —शि० १।८, ४।४९,— रः बृहस्पति का विशेषण,—रु (नपुं०) केसर, जाफरान। सम० **अङ्गी** सुन्दर अंगों वाली स्त्री० **घोष** (वि०) सुन्दर नाक वाला पुरुष, **दर्शन** (वि०) प्रियदर्शन, लावण्यमय, - धारा शची. इन्द्र की पत्नी, **नेत्र, लोचन** (वि०) सुन्दर आंखों वाला, (त्रः; नः) हरिण,—**फला,** अंगूरों की बेल, अंगूर. **लोचना** सुन्दर आंखों वाली,- -**वक्त्र** (वि०) सुन्दर मुख वाला,- **वधना** स्त्री, -**ता** एक मात्रिक छन्द का रचना करने वाली स्त्री.—**शिला** 1. जवाहर, रत्न 2. पत्थर की सुन्दर शिला,—**शील** (वि०) कान्त-स्वभाव या चरित्र, **हासिन्** (वि०) मधुर मुस्कान वाला।

चारुचिक्यम् [चारुचिका+ष्यञ्] 1. शरीर को सुगंधित करना, चन्दन आदि लगाना 2. उबटन।

चार्म (वि०) (स्त्री० -र्मी) [चर्मन्+अण्, टित्वात्] 1. चमड़े का बना हुआ 2. (गाड़ी आदि) चमड़े से ढका हुआ 3. ढाल धारी, ढाल से युक्त।

चार्मंग (वि०) (स्त्री० -गी) [चर्मन्+अण्, स्त्रियां ङीष् च] चमड़े या खाल से ढका हुआ, -गम् खालों या ढालों का ढेर।

चार्मिक (वि०) (स्त्री० -की) [चर्मन्+ठक्] चमड़े का बना हुआ —मनु० ८।२८१।

चार्मिगम् [चर्मिन्+अण्] ढालधारी मनुष्यों का समूह।

चार्वाकः [चारु: लोकसमतो वाको वाक्यं यस्य—ब० स०] कुतर्की दार्शनिक जो बृहस्पति का शिष्य बताया जाता है और जिसने भौतिकवाद एवं नास्तिकता के स्थूल रूप का प्रवर्तन किया (चार्वाकमत के सिद्धांतों के सारांश के लिए दे० सर्व० १) 2. महाभारत में वर्णित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पांडवों का शत्रु था [जब युधिष्ठिर अपनी विजयपताका के साथ हस्तिनापुर में प्रविष्ट हुआ तो उस राक्षस ने एक ब्राह्मण रूप धारण कर लिया तथा उसने युधिष्ठिर, एवं एकत्रित ब्राह्मणों को बुरा-भला कहा। परन्तु शीघ्र ही उसका पता लग गया, और क्रोध में भर कर असली ब्राह्मणों ने उसका वहीं काम तमाम कर दिया। उस राक्षस ने महाभारत युद्ध की समाप्ति पर भी युधिष्ठिर को यह कहकर ठगने का प्रयत्न किया था कि भीम को तो दुर्योधन ने मार डाला—दे० वेणी० ६]।

चार्वी [चारु+ङीप्] 1. सुन्दर स्त्री 2. चांदनी 3. बुद्धि, प्रज्ञा 4. प्रभा, कान्ति, दीप्ति 5. कुबेर की पत्नी।

चाल: [चल्+णि] 1. घर का छप्पर या छत, 2. नीलकंठ पक्षी 3. झिलाना-डुलाना, चलाना-फिराना 4. जंगम होना।

चालकः [चल्+ण्वुल्] दुर्दान्त हाथी।

चालनम् [चल्+णिच्+ल्युट्] 1. चलाना-फिराना, हिलाना डुलाना, (पंखे की भांति) हिलाना 2. छनवाना, छनना, छलनी, -नी छलनी, झरना।

चाषः सः [चर्+णिच्+अच्, पृषो० सत्वम्] नीलकंठ पक्षी - मा० ६।५ याज्ञ० १।१७५।

चि (स्वा० उभ० —िनोति, —िनुते, चित; प्रेर०—चाययति, चापयति; चययति, चपयति भी, सन्नन्त—चिचीषति, चिकीषति) 1. चुनना, बीनना, इकट्ठा करना (द्विकर्मक धातु होने के कारण दो कर्मों के साथ अन्वय परन्तु लौकिकसाहित्य में इसका प्रयोग विरल) —वृक्षं पुष्पाणि चिन्वती 2. ढेर लगाना, ढाल लगा देना, अंबार लगा देना—पर्वतानिव ते भूमावचैषुर्वानरोत्तमाः -भट्टि० १५।७९ 3. जड़ना, खचित करना, मढ़ना, भरना -दे० चित—कर्म० वा०, फल उत्पन्न होना, उगना, बढ़ना, फलना-फूलना, समृद्ध होना —सिध्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा -पंच० १।२२, फल लगता है;—चीयते वालिशस्यापि सन्धेत्रपतिता-कृषिः मुद्रा० १।३, राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १० 2. शरीर में घटना, क्षीण होना, आ—, 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2. भरना, ढकना, मढ़ना—भट्टि० १७।६९, १४।४६, ४७, उद्—, एकत्र करना, बीनना—भट्टि० ३।३७, उप—, जोड़ना, बढ़ाना—उपचिन्वन्प्रभां तन्वीं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्याह परमेश्वरः—कु० ६।२५ (कर्मवा०) उगना, बढ़ना- अधोऽधः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते —हि० २।२ भट्टि० ६।३३ शि० ४।१०, नि—, ठकना भरना, फैलाना, बिखेरना (मुख्यतः क्तांत प्रयोग) -निचितं खमुपेत्य नीरदैः—घट० १, शकुन्तलीडनिचित द्विरेफजटाभरुलम्—श० ७।११, भट्टि० १०।४२, निस् —, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना परि—, 1. अभ्यास करना 2. प्राप्त करना, लेना (कर्मवा०) बढ़ना—रघु० ३।२४ प्र—, 1. इकट्ठा करना, चुनना 2. जोड़ना 3. बढ़ाना, विकसित करना —प्राचीयमानावयवा रराज सा- रघु० ३।७, वि- , 1. एकत्र करना, चुनना 2. खोजना, ढूँढना - चिति-श्चैव समत्तात् श्मशानवाटः -मा० ५, वितिस्- , निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना-वेनि-श्चेतु शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा उत्तर० १।३५, सम्—, 1. एकत्र करना, संग्रह करना, संचय करना—रक्षायोगादपमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति- श० २।१४, रघु० १९।२, मनु० ६।१५ 2. क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना, ठीक से रखना भट्टि० ३।३५, समुद्—, संग्रह करना, जोड़ना।

चिकित्सकः [कित्+सन्+ण्वुल्] वैद्य, हकीम, डाक्टर —उचितवेलातिक्रमे चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—माल-वि० २, मनु० १।८७, याज्ञ० १।१६२।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ+टाप्] औषध सेवन करना, औषधोपचार, इलाज करना, स्वस्थ करना।

चिकिल: [चि+इलच्, कुक्] कीचड़, महापंक, कर्दम, दलदल।

चिकीर्षा [कृ+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] (कोई काम) करने की इच्छा, कामना, अभिलाषा, इच्छा।

चिकीर्षित (वि०) [कृ+सन्+क्त, द्वित्वम्] अभिलषित, इच्छित, साभिप्राय, -तम् अभिकल्प, आशय, अभिप्राय।

चिकीर्षु (वि०) [कृ+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] कुछ करने की इच्छा वाला, इच्छुक,— भग० १।२३, ३।२५।

चिकुर (वि०) [चि हलन्यक्क्ष शब्दं करोति- चि+कुर् +क] 1. हिलने-डुलने वाला, कम्पमान, चंचल, अस्थिर 2. अविचारपूर्ण, आवेशयुक्त -रः 1. सिर के बाल – मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानदे-----कुंकुमपानि —गीत० १२, इसी प्रकार-घनचरुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने - ७ 2. पहाड़ 3. रेंगने वाला, साँप समo—उच्चयः,—कलापः,- निकरः, —पक्षः, -पाशः,—भारः—हस्तः बालों का गुच्छा या ढेर-यस्योरश्चोरुचिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूर: —प्रस० १।२२।

चिकुरः [चिकुर नि० दीर्घः] बाल।

चिक्कः [चिक् इति अव्यक्तं शब्देन कायति शब्दायते - चिक् -कै—क] छछूंदर।

चिक्कण (वि०) (स्त्री० णा,—णी) [चिक्क्, क्विप् चिक् त कणति कण शब्दे-अच् तारा०] 1. चिकना, चमकदार 2. फिसलनी 3. स्निग्ध 4. मधुर, सुरीला—लघु परिश्रायतामेनां भवान् या करयापि तपस्विन इंगुदीतैलचिक्कणशीर्षस्य हस्ते पतिष्यति —श० २,- णः सुपारी का पेड़,—णम् चिक्कणवृक्ष का फल, सुपारी।

चिक्कणा,—णी 1. सुपारी का पेड़ 2. सुपारी।

चिक्कसः [चिक्क्+असच्] जौ का आटा।

चिक्का=चिक्कणा।

चिक्किरः [चिक्क्+इरच्, ह्रस्वः] चूहा, मूसा।

चिक्लिदम् [क्लिद्+मह्+अच्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] तरी, तरबट, ताजगी।

चिच्चिडः [?] एक प्रकार का कद्दू।

चिञ्चिल्लः [पुं० ब० व०] एक देश तथा उसके निवासी।

चिञ्चा [चिम्+चि+ड+टाप्] 1. इमली का पेड़, या उसका फल 2. घुंघची का पौधा।

चित् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०- चेतति, चेटयति- ते) भेजना, बाहर भेजना (जैसे कि किसी सेवक को भेजा जाता है)।

चित् (भ्वा० पर०, चुरा० आ० चेतति, चेतयते, चेतित) 1. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, देखना, नजर डालना, दृष्टिगोचर करना-नेपूनचेत्रश्यस्तम्—भट्टि० १७।१६, चिचेत रामस्तरुकुञ्जम्— १४।६२ १५।३८, २।२९ 2. जानना, समझना, चौकस होना, सतर्क होना परै-रध्याहृताणमानं न चेतयते—दश० १५८ चैतन्य प्राप्त करना 4. प्रकट होना, चमकना।

चित् (स्त्री०) [चित्+क्विप्] 1. विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान 2. प्रज्ञा, बुद्धि, समझ— भर्तृ० २।१, ३।१ 3. हृदय, मन 4. आत्मा, जीव, जीवन में भलीभता-सिद्धांत 5. ब्रह्म। समo—आत्मन् (पुं०) 1. चितनसिद्धांत या धारित 2. केवल प्रज्ञा, परमात्मा,- आत्मकम् चैतन्य, -आभासः जीव (जो सांसारिक वासनाओं में लिप्त है),—उल्लासः जीवों के हृदय का हर्ष, घनः परमात्मा या ब्रह्म, -प्रवृत्तिः (स्त्री०) विचारविमर्श, चिंतन, शक्तिः (स्त्री०) मानसिक शक्ति, बौद्धिक वाग्मिता,- स्वरूपम् परमात्मा, (अव्य०) 1. 'किम्' और 'किम्' से व्युत्पन्न अन्य शब्दों के साथ जुड़नेवाला अव्यय (जैसे कि कदू, कथम्, क्व, कदा, कुत्र, कुल आदि) जिसमे कि अर्थों में अनिश्चयात्मकता आती है- यथा कुत्रचित् -कहीं, केचित्=कोई 2. 'चित्' ध्वनि।

चित (भू० क० कृ०) [चि+क्त] 1. संग्रह किया हुआ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देर लगाया हुआ, अंबार लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2. जमा किया हुआ, संचित 3. प्राप्त, गृहीत 4. ढका हुआ—कृमिकुलचितम्—भर्तृ० २।११ 5. जमाया हुआ, जड़ा हुआ,—तम् भवन ।

चिता [चित+टाप्] मुर्दे को जलाने के लिए चुनकर रक्खी हुई लकड़ियों का ढेर, चितिका—कुरु सम्प्रति तावदाशु मे प्रणिपाताञ्जलिर्याचितश्चितानाम् कु० ४।३५, चितामध्यगम् —कु० ५।६२ । सम० **अग्निः** शव को जलाने वाली आग, **चुड्कम्** चिता ।

चितिः (स्त्री०) [चि+क्तिन्] 1. संग्रह करना, इकट्ठा करना 2. ढेर, समुच्चय, पुंज 3. अम्बार, ढाल, चट्टा 4. चिता 5. चौकोर आयताकार स्थान 6. समझ ।

चितिका [चिता+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. ढाल, चट्टा 2. चिता 3. करधनी ।

चित्त (वि०) [चित्+क्त] 1. देखा हुआ, प्रत्यक्षज्ञात 2. सोचा हुआ, विचारविमर्श किया हुआ, मनन किया हुआ 3. संकल्प किया हुआ 4. अभिप्रेत, अभिलषित, इच्छित,—त्तम् 1. देखना, ध्यान देना 2. विचार, चिन्तन, अवधान, इच्छा, अभिप्राय, उद्देश्य मच्चित्तं. सततं भव—भग० १८।५७, अनेकचित्तविभ्रान्त १६।१६ 3. मन —यदासौ दुर्वारः प्रसरति मदश्चित्तकरिणः —शा० १।२२, इसी प्रकार 'चलचित्त' आदि समस्त शब्द 4. हृदय (बुद्धि का स्थान माना जाता है) 5. तर्क, बुद्धि, तर्कनाशक्ति । सम०—**अनुवर्तिन्** (वि०) मन के अनुकूल कार्य करने वाला, अनुरंजनकारी,—**अपहारक,—अपहारिन्** (वि०) मनोहर, आकर्षक, मोहक,—**आभोगः** भावनाओं के प्रति मन की आसक्ति, किसी एक वस्तु में अत्यन्त अनुराग, **आसक्तः** आसक्ति अनुराग, **उद्रेकः** घमंड, गर्व, —**ऐक्यम्** सहमति, मतैक्य,—**उन्नतिः,—समुन्नतिः** (स्त्री०) 1. महानुभावता 2. घमंड, दर्प, **चारिन्** (वि०) दूसरे की इच्छा के अनुसार काम करने वाला, —**जः** जन्मन् (पु०), —**भूः—योनिः** 1. प्रेम, आवेश 2. प्रेम का देवता काम देव चित्तयोनिरभवत्पुनर्न यः रघु० १९। ४६, सोऽयं प्रसिद्धविभवः खलु चित्तजन्मा —मा० १।२०, —**ज्ञ** (वि०) दूसरे के मन की बात जानने वाला,—**नाशः वेहोशी,—निर्वृतिः** (स्त्री०) संतोष, प्रसन्नता, प्रशम (वि०) स्वस्थ, शान्त, (—**मः**) मन की शान्ति, **प्रसन्नता** हर्ष, खुशी,—**भेदः** 1. विचारभेद 2. असंगति, अस्थिरता, —**मोहः** मनोमुग्धता, —**विक्षेपः** मन का उचाटपन —**विप्लवः—विभ्रमः** चित्तभ्रंश, बुद्धिभ्रंश, उन्मत्तता पागलपन,—**विश्लेषः** मैत्री-भंग,—**वृत्तिः** (स्त्री०) 1 मन की अवस्था या स्वभाव, रुचि, भावना —एवमात्मामिप्रायसंभावितेष्टजनचित्तवृत्तिः प्रार्थयिता विडम्बयते—श० २ 2. आन्तरिक अभिप्राय, संवेग 3. (योग में) मन की आन्तरिक क्रिया, मानसिक दृष्टि—योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः —योग०—**वेदना** कष्ट, चिन्ता —**वैकल्यम्** मन की व्यग्रता, परेशानी—**हारिन्** (वि०) मनोहर, आकर्षक रुचिकर ।

चित्तवत् (वि०) [चित्त+मतुप्, मस्य वः] 1. तर्कसंगत, तर्कयुक्त 2. सकरुण, सदय ।

चित्यम् [चि+क्यप्] शव-दाह करने का स्थान, त्या 1. चिता 2. काष्ठचयन, (वेदी का) निर्माण ।

चित्र (वि०) [चि+अत्र, चि+ष्ट्रन् वा] 1. उज्ज्वल, स्पष्ट 2. चितकबरा, धब्बेदार, शबलीकृत 3. दिलचस्प, रुचिकर मा० १।४ 4. विविध, विभिन्न प्रकार का, भाति २ का —पंच० १।१२६, मनु० ९।२४८, याज्ञ० १।८८ 5. आश्चर्यजनक, अद्भुत, अजीब,—त्रः 1. रंग-बिरंगा वर्ण रंग 2. अशोक वृक्ष,—त्रम् 1. तसवीर, चित्रकारी, आलेखन—चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा —श० २।९, पुनर्यथा चित्रीकृता कांता— श० ६।२०, १३,२१ आदि 2. चमकीला आभूषण 3. असाधारण छवि, आश्चर्य 4. सांप्रदायिक तिलक 5. आकाश, गगन 6. धब्बा 7. सफेद कीड़ा, फुलझरी 8. (सा० शा० में) काव्य के तीन भेदों में अन्तिम काव्यभेद (यह 'शब्दचित्र' और 'अर्थवाच्यचित्र' दो प्रकार का है, काव्यसौन्दर्य मुख्यरूप से अलंकारों के प्रयोग पर निर्भर करता है, जो शब्दों की ध्वनि और अर्थ पर आश्रित है, मम्मट परिभाषा देता है शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्- काव्य० १) 'शब्दचित्र' का उदाहरण रसगंगाधर से उद्धृत किया जाता है—मित्राविधूनयनायाम्रयोसाध्वसायाम्बवे, गोत्रारिगोत्रजित्राय गोत्राय ते नमो नमः ।—**त्रम्** (अव्य०) अहा ! कैसा विस्मय है ! क्या अद्भुत बात है —चित्रं बधिरो नाम व्याकरणमध्येष्यते - सिद्धा० । सम०—**अंगी,—नेत्रा,** —**लोचना** एक पक्षिविशेष, मैना,—**अङ्ग** (वि०) धारीदार, चितीदार, शरीरधारी (गण्) सिंदूर,—**अम्लम्** रसदार मसालों से प्रसाधित चावल याज्ञ० १।२०४, —**अपूपः** एक प्रकार का पूड़ा,—**अर्पित** (वि०) तस्वीर में उतारा हुआ, चित्रित, —**आरम्भः** (वि०) चित्रित रघु० २।३१, कु० ३।४२ **आकृतिः** (स्त्री०) चित्रित प्रतिकृति, आलेखचित्र,—**आयसम्** इत्यात —**आरम्भः** चित्रित दृश्य, चित्र की रूपरेखा - विक्रम० १।४,—**उक्तिः** (स्त्री०) 1. रुचिकर या दार्शनिक युक्ति से पूर्ण प्रवचन - जगन्ति ते पञ्चमनादमित्रचित्रोक्तिसद्भविभूषणेषु - विक्रम० १।१० 2. आकाशवाणी 3. अद्भुतकहानी, - **ओघनः** हल्दी से रंगा पीला भात - **कण्ठः** कबूतर,—**कथालापः** रोचक तथा मनोरंजक कहानियाँ सुनाना,—**कम्बलः** 1. छींट की बनी हाथी की झूल 2. रंग बिरंगा कालीन, - **करः** 1. चित्रकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. नाटक का पात्र या अभिनेता,—**कर्मन्** (नपुं०) 1. असाधारण कार्य 2. विभूषित करना, सजाना 3. तस्वीर 4. जादू, (पुं०) 1. आश्चर्यजनक करतब करने वाला जादूगर 2. चित्रकार, **विद्** (पुं०) 1. चित्रकार 2. जादूगर, **-कार** साधारण शब्द 2. चीता, **- कारः** 1. चित्रकारी करने वाला 2. एक वर्णसंकर जाति (स्थपतेरपि वार्द्धिक्यां चित्रकारो व्यजायत—पराशर०), **---कूटः** एक पहाड़ का नाम, इलाहाबाद के निकट एक जिले का नाम रघु० १२।१५, १३।४७ उत्तर० १, **- कृत्** (पुं०) चित्रकार, **क्रिया** चित्रकारी, **--गत** (वि०) चित्रित किया हुआ, **गन्धर्व** हरताल, **--गुप्तः** यमराज के कार्यालय में मनुष्यों के गुण तथा अवगुणों को लिखने वाला - मृच्छ० १।२०, **- गृहम्** चित्रित घर, **--जल्पः** अटकलपच्चू और असंबद्ध बात, विभिन्न विषयों पर बातचीत, **-दन्तः** भूजे बूल, **दण्डकः** कपास का पौधा, **- न्यस्त** (वि०) चित्रित, तस्वीर में उतारा हुआ कु० ५।४८, **पक्षः** चकोर, **- पट्टः** तौलिया, **--पटः**, **--टः** 1. आलेख, तस्वीर 2. रंगीन या चारखानेदार कपड़ा, **--पद** (वि०) 1. भिन्न २ भागों में विभक्त 2. ललित पदावली से युक्त, **- पादा** मैना, सारिका, **—पिच्छकः** मोर, **-पंखः** एक प्रकार का घास, **- पृष्ठः** चिड़िया, **फलकम्** चित्र-पट्ट, चित्र रखने का तख्ता, **--बर्हः** मोर, **-भानुः** 1. आग 2. सूर्य (चित्रभानुविभातीति दिने रवौ स्त्रियां बह्वी—काव्य० २, अंजन विधि का निदर्शन दिया गया है) 3. भैरव 4. मदार का पौधा, **--मण्डलः** एक प्रकार का साँप, **--मृगः** चितौड़ार हरिण, **मेखलः** मोर, **योधिन्** (पुं०) अर्जुन का विशेषण, **- रथः** 1. सूर्य 2. गंधर्वों के एक राजा का नाम, मुनि नामक पत्नी से कश्यप के १६ पुत्र हुए चित्ररथ उनमें से एक है अज मनेरा-नयश्चित्ररथेनाङ्गीनां पञ्चत्वशानां भ्रातृणामधिको गुणैः। षोडशत्विग्रथो नाम सप्तदश्यः—रघु० ५।३६, **विक्रम०** १,—**लेख** (वि०) सुन्दर लिखावट वाला, अत्यन्त मंडलाकार-रश्मिवत् कलम्बवो रविरिचिलेखे चुवी-- गीत० १०, (ला) योगतारा की पूर्वी, उषा की एक सहेली (जब उषा ने अपना स्वप्न अपनी सहेली विलेखा को सुनाया, तो उसने यह सुझाव दिया कि इस चित्र को आस-पास के लोगों में घुमाया जाय, इस प्रकार जब उषा ने अनिरुद्ध को देखने लिया तो चित्रलेखा ने अपने जादू के द्वारा अनिरुद्ध को उषा के महल में बुलवा दिया), - **लेखकः** चित्रकार -**लेखनिका** चित्रकार की तूलिका, कूची, - **विद्या** (वि०) 1. रंगरेज़ी, चित्रकर्म 2. बेलबूटेदार, --**विद्या** चित्रकला-भाला चित्रकार का कार्यालय,—**शिखण्डिन्** (पुं०) सात ऋषियों (मरीचि, अंगिरस्, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, और वसिष्ठ) का विशेषण, जैः बृहस्पति का विशेषण —**संध्य** (वि०) चित्रित,—**हस्त** युद्ध के अवसर पर हाथी की विशेष अवस्थिति।

चित्रकः [चित्र + कन्] 1. चित्रकार 2. सामान्य शेर 3. छोटा शिकारी चीता 4. एक वृक्ष का नाम,—**कम्** मस्तक पर साम्प्रदायिक तिलक।

चित्रल (वि०) [चित्र + कल] चितकबरा, चित्तीदार, - **लः** रंगबिरंगा रंग।

चित्रा [चित्र + अच् + टाप्] चांद मास की चौदहवां नक्षत्र, हिरातिमुक्तयोर्योगे त्रिवाचंद्रमसोरिव—रघु० १।४६। सम० **अटवीः**, **ईशः** चांद।

चित्रिकः [चैत्र + क पृषो० साधु०] चैत्र का महीना।

चित्रिणी [चित्र—इनि, चित्र अस्त्यर्थे इनि वा] भांति २ के बूटियों और शोभाओं से युक्त स्त्री, रतिशास्त्र में वर्णित चार प्रकार (पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी या करिणी) की स्त्रियों में एक। रतिमंजरी में पंचत्रिणी की परिभाषा इस प्रकार दी गई है: भवति रतिनिज्ञा नातिखर्वा न दीर्घा त्रिलकुसुमसुगन्धा निर्व्रणोल्लाघी—घन कठिन-कुचाढ्या सुंदरी बहुरतिज्ञा, सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रकर्मा ॥ ८॥

चित्रित (वि०) [चित्र + क्त] 1. रंगबिरंगा, चित्तीदार 2. चित्रकारी से युक्त।

चित्रिन् (वि०) [स्त्री०—णी] [चित्र+इनि] 1. आश्चर्यकारी 2 रंगबिरंगा।

चित्रीयते (ना० धा० पर० आ०) 1. आश्चर्य पैदा करना, आश्चर्यजनक होना—एवमुत्तरोत्तरभावश्चित्रीयते जगल्लोकः महावी० ५, भट्टि० १७।६४, १८।२३ 2. आश्चर्य करना।

चित्त (चुरा० उभ०—चित्तयति-ते, चित्तित) 1. सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना—नच्छुत्वा पित्तप्रकोपनिमित्तयामास—पंच० 1. चिन्तय तावत्केनायमुपदेशेन पुत्रश्चित्रश्चरन्दर्शनीयः—मा० 2. सोचना, विचार करना, मन में लाना तस्मादेतत् (क्रियां) न चिन्तयेत् - हि० १, तस्माद्धर्मं सदा राजा मतसाक्षि न चिन्तयेत् मनु० ८।२८१, ८।५८, पंच० १।१३५, चौर० १ 3. ख्याल करना, देखभाल करना, ईक्षारेख रखना ---रघु० १।६४ 4 प्रत्याभिस्मरण करना, याद करना, 5. गणना करना, उपाय करना, खोज करना, सोच कर उपाय निकालना कोऽयमुपायश्चिन्त्यताम् हि० १ 6. कल्पना करना, सम्भावना करना 7. सोचना, विधिपूर्वक बताना 8. चर्चा करना, निरूपण करना, प्रतिपादन करना, अनु- बार बार चिन्तन करना, पिछली याद करना, मन में तौलना - शं० ३।१, भग० ८।८, **परि** - 1. सोचना, विचारना, कूतना स्वेमव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तावत्परिचिन्नय स्वयं कदाचिदेते यदि योगमहेतः –कुव० ५।६७, भग० १०।१७ 2. चिन्तक करना, ध्यान करना, ध्यान में लाना 3. दर्शकोष निकालना, मालूम करना, वि , 1. सोचना, विचारना 2. विशेष करना, आकलन करना, ध्यानमग्न होना –य० ४।१ 3. विचारकोटि में रखना, ध्यान रखना, खयाल करना –अस्माभिस्तु चिन्त्यं स्वयमत्र कुलैवं कुल चालनतः –श० ४।१६ 4. इरादा करना, स्थिर करना, निश्चय करना—5. उपाय ढूंढना, साधन करना, योग निकालना, सम् –, 1. सोचना, विचारना, विषयों करना, चिन्तनस्थ होना आश्व० २।३५,९, चौर० ३९ 2. (गन में) बोलना, निर्देशतः बताना।

चिन्तनम्,—ना [चिन्त्–ल्युट्] 1. सोचना, विचारना, चिन्तनरत होना–मनसानिन्दितं चिन्तनम् मनु० १२।५ 2. आदर चिन्ता

चिन्ता [चिन्त्–णिच्+अङ् टाप्] 1. चिन्तन, विचार 2 दुःखद या आकुल विचार, परवाह, फिक्र —चिन्ताज्वर दर्शनम्- श० ४।९, इसी प्रकार चिन्ता-चिन्ता० १० 3. विचारविमर्श, विचारणा 4. (अल० शा० में) चिन्ता—३३ संचारी भावों में से एक —ध्यात चिन्ता हितानाप्तेः शून्यता श्वासमलकृत् –सा० द० २७१ । समः आकुल (वि०) चिन्ता-मग्न, व्याकुल आतुर,—कर्षित (भू०) चिन्ता करना —पर (वि०) चिन्तनशील, चिन्तातुर, मणिः कालनिक रत्न—(यह जिसके पास होता है, कहते हैं, उसकी सब कामनाएँ पूर्ण कर देता है) दार्शनिकों को मणि-- कामधुग्धेन विधीतो इल चिन्तामणिर्मया —श० १।१९, तदेकलुब्धे हृदि मेऽस्ति लब्धं चिन्ता न चिन्तामणिमण्डनस्य –वै० ३।८१, १।१४५,—वेश्मन्, (नपुं०) परिषद् भवन, मंत्रणागृह।

चिन्तिडी [—तिन्तिडी, पृषो० तस्य चत्वम्] इमली का पेड़।

चिन्तित (वि०) [चिन्त्–क्त] 1. सोचा हुआ, विमृष्ट 2. उपेक्षित, विचार किया हुआ।

चिन्तितिः (स्त्री०) **चिन्तिता** [चिन्त्–क्तिन्, ष टा] सोच, विमर्श, विचार।

चिन्त्य (सं० कृ०) [चिन्त्–यत्] 1. सोचने-विचारने के योग्य 2. जोड़ने के योग्य, मालूम किये जाने या उपाय ढूँढ लिये जाने के योग्य 3. विचारणीय, संदिग्ध, पृष्टव्य यच्च क्वचिदहष्टश्रुतार्थकारणे उहा-हनम् (यः कौमारहरः ...) तदचिन्त्यम् –सा० द० १।

चिन्मय (वि०) [चित्–मयट्] विशुद्ध बौद्धिक, में पूर्ण, आत्मिक (जैसे कि परमात्मा), यम् 1. विशुद्ध ज्ञान-मय 2. परमात्मा।

चिपट (वि०) [नि नता नासिका विद्यतेऽस्य नि –टच्, चि आदेशः] चपटी नाक वाला, –टः चिड़िया, चपटा किया हुआ चावल या अनाज, चोले।

चिपिटः [नि–पिट–घञ् चि आदेशः] देo चिपट। समः —नीव (वि०) छोटी दर्पन वाला, नास, नासिक (वि०) चपटी नाक वाला।

चिपिटकः, चिपुटः [चिपिट–कन्, –लिपिट पृषो० साधुः] चिउड़ा, चोर।

चिबु (दि०) कम्बे [चिब् (वि) + डु] –कन्, पृषो० ह्रस्वः] ठोड़ी, चिबुक सुदृश, सृजामि चाबल् भामि० २।३४ गाज० ३।९८।

चिभिः [चि–भिक् वा०] तोता।

चिर (वि०) [चि+रक्] दीर्घ, दीर्घकाल तक रहने वाला, दीर्घकाल से चला आया, पुराना चिरस्थिरः, चिरकाल, चिरसिद्धम्—आदि, रम् दीर्घकाल (विशे० 'चिर' शब्द का अधीन कारकों में एक वचन क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त होता है और निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 'दीर्घकाल' 'दीर्घकाल तक' 'दीर्घकाल के पश्चात्' 'दीर्घकाल से' 'आखिर कार' 'अन्त में' आदि –नं चिरं पर्वते वसेत् मनु० ४।६०, तावत् प्रतीक्षा चिरयत्यसौ मुनम् रघु० ३।३५, ६२, अमरु ७१, किंचिच्चिरेणावयुवः प्रतिपत्ति दास्यति शा० ६, रघु० १।३४, प्रीतोस्मि ते सौम्य चिरस्य जीव –रघु० १४।५९, कु० ५।४७, अमरु ३, विरात्सुत-स्पर्शसजनां स्मरी १५० ३।२६, ११।६३, १२।३७, विक्रम वाचं न चिरं प्रजापतिः शा० ५।१५, चिरं कुर्यात् अन०। समः—आयुस् (वि०) दीर्घ आयु वाला (पुं०) देवता, आदीक्षः विलम्बित धैरा, लाके-पन्थी, –उदय (वि०) दीर्घ काल तक रहने वाला, कार, कारिन्, कारित् क्रिप् (वि०) मन्थर, विलम्बी, ढीला, दीर्घसूत्री, कालः दीर्घकाल,–कालिक, –कालीन (वि०) दीर्घकाल से चला आता हुआ, पुराना, दीर्घकाल से चालू (रंग के विषय में) लोगों या दीर्घकालानुबन्धी, –जात (वि०) बहुत समय पहले उत्पन्न, पुराना, जीवित् (वि०) दीर्घजीवी (पुं०) उन सात चिरजीवियों का विशेषण जो 'अमर' समझे जाते हैं (अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः, कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः)–पाकिन् (वि०) देर से पकने वाला, पुत्रा एकल पुत्रा,–मित्रम् पुराना मित्र, मेहिन् (पुं०) गदा, –रात्रम् बहुत रातें, दीर्घ-काल, उषित (वि०) जो दीर्घकाल तक रह चुका हो, विप्रोषित (वि०) दीर्घकाल से निर्वासित, प्रवासी, —सुता,– सूतिका वह गाय जो कई बछड़े दे चुकी हो सेवकः पुराना नौकर, –स्थ, स्थायिन्, स्थित (वि०) टिकाऊ, देर तक रहने वाला, चालू रहने वाला, पक्केदार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिरकारिन् (वि०) [चिरम्+कृ+णिनि] देर लगाने वाला, विलम्ब करने वाला, ढील करने वाला।

चिरकालम् (अव्य०) [चिरः कालः यत्र] बहुत समय तक, लम्बे समय तक।

चिरकालीन (वि०) [चिरकाल+खञ्] पुराना, प्राचीन।

चिरजीविन् (वि०) [चिरम्+जीव्+णिनि] दीर्घजीवी, लम्बी आयु वाला, अमर।

चिरञ्जीव (वि०) [चिरम्+जीव्+अच्] दीर्घायु या लम्बी उम्र वाला, —वः काम का विशेषण।

चिरण्टी, चिरिण्टी [चिरे अतति पितृगृहात् भर्तृगेहम् अट्+अच्, पृषो० तारा०] 1. विवाहित या अविवाहित लड़की जो सयानी होने पर भी अपने पिता के घर ही रहे 2. तरुणी, जवान स्त्री।

चिरन्न (वि०) (स्त्री० - न्नी) [चिरे भवः चिर+ल] चिरकालीन, पुराना, प्राचीन।

चिरन्तन (वि०) (स्त्री० - नी) [चिरंम्+ट्यु, तुट्, च] चिरागत, पुराना, प्राचीन,—स्वहस्तदत्तं मुनिमासनं मुनिश्चिरन्तनस्तावदभिन्यदीविशत् -शि० १।१५, चिरन्तनः सुहृद्—आदि।

चिरायति (ना० धा० पर० (चिरायते भी)) विलम्ब करना, ढील देना—कथं चिरयति पाञ्चाली—वेणी० १, किं चिरायितं भवता, संकेतकेषु चिरयति प्रवरो विनोदः मृच्छ० ३।३।

चिरि: [चिरोति मनुष्यवद् वाधयति -चि+रिक्] लोंगर।

चिरु [चि+रुक्] कन्धे का जोड़।

चिरुंटी [चिर+भट्+अच्+ङीष्, पृषो०] एक प्रकार की ककड़ी।

चिल (तुदा० पर०—चिलति) कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना।

चिलमी (मि) लिका [चिल्+मी (मि)+ल्+ण्वुल्+टाप्, ह्रस्व] 1. एक प्रकार का हार 2. जुगनू 3. बिजली।

चिल्ल (स्वा० पर०—चिल्लति, चिल्लित) 1. ढीला होना, शिथिल होना पिलपिला होना 2. आराम से काम करना, क्रीड़ासक्त होना।

चिल्ल:, ल्ला [चिल्ल्+अच्, स्त्रियां टाप्] चील। सम०—आम: गठकतरा, जेबकतरा।

चिल्लिका, चिल्ली [चिल्ल+इन्+कन्+टाप्, चिल्लि+ङीष्] झींगुर—तु० झिल्लिका।

चिवि: [चीव्+इन् पृषो०] ठोढी।

चिह्न [चिह्न्+अच्] 1. निशान, धब्बा, छाप, प्रतीक, कुलचिह्न, बिल्ला, लक्षण -ग्रामेषु यश्चिह्नेषु रघु० १।४४, ३।५५, सन्निपातस्य चिह्नानि—पंच० १।१७७ 2. संकेत, इंगित -प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि रघु० २।२२, -प्रहर्षचिह्नः २।६८ 3. राशिचिह्न 4. लक्ष्य दिशा। सम० कारिन् (वि) 1. चिह्न लगाने वाला, दाग लगाने वाला 2. प्रहार करने वाला, घायल करने वाला, हत्या करने वाला 3. डरावना, विकराल।

चिह्नित (भू०) [चिह्न्+क्त] 1. निशान लगा हुआ, संकेतित, मुद्राकित, किसी पद का बिल्ला लगाये हुए—याज्ञ० २।८६, १।३१८, दिवा चरेयुः कार्यार्थं चिह्नितां राजशासनैः—मनु० १०।५५, २।१७० 2. दागी 3. ज्ञात, अभिहित।

चीत्कार: [चीत्+कृ+घञ्] अनुकरणमूलक शब्द, कुछ जानवरों की क्रन्दन विशेषकर गधे की रेंक या हाथी की चिंघाड़,—स विवेदेति चीत्कारादर्दभस्तादितो यथा —हि० २।३१, वैनाकक्यश्चिरं वो वदनविधुतयः पान्तु चीत्कारवत्यः मा० १।१।

चीन: [चि+नक्, दीर्घः] 1. एक देश का नाम, वर्तमान चीनदेश 2. हरिण का एक प्रकार 3. एक प्रकार का कण्डू ना: (पु० ब० व०) चीन देश के निवासी या शासक,—नम् 1. अंडा 2. आंखों के किनारों पर बांधने के लिए पट्टी 3. सीसा। सम०—अंशुकम्,—वासस् (नपुं०) चीन का कपड़ा, रेशम, रेशमी कपड़ा —चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य—श० १।३४, कु० ७।३, अमरु ७५, कर्पूरः एक प्रकार का कपूर, जम हस्पात, पिष्टम् 1. सिन्दूर 2. सीसा, वङ्गम् सीसा।

चीनाक: [चीन+अक्+अण्] एक प्रकार का कपूर।

चीरम् [चि+रन् दीर्घश्च] 1. चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा, धज्जी, मनु० ६।६ 2. वल्कल 3. वस्त्र या पोशाक 4. चार लड़ियों का मोतियों का हार 5. चौड़ी धारी, रेखा, लकीर 6. रेखाएँ बनाकर लिखना 7. सीसा। सम० परिग्रह,—वासस् (वि०) 1. वल्कलधारी कु० ६।९२, मनु० ११।१०१ 2. चिथड़े या फटे पुराने कपड़े पहने हुए।

चीरि: (स्त्री०) [चि+रि, दीर्घश्च] 1. आँखों को ढकने का पर्दा 2. झींगुर 3. नीचे पहनने वाले कपड़े की झालर या गोट।

चीरि(रे)का [चीरि+कै+क+टाप्] =चीरिका पृषो० साधुः] झींगुर।

चीर्ण (वि) [चर्+क्त, पृषो० अत इत्वम्] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, पालित 2. अर्धांत, दोहराया हुआ 3. विदीर्ण किया हुआ, विभाजित, 4. सम० - पर्ण: खजूर का पेड़।

चीलिका [ची+ला+क+टाप् इत्वम्] झिंगुर।

चीव (भ्वा० उभ०—चीवति-ते) 1. पहनना, ओढ़ना 2. लेना ग्रहण करना 3. पकड़ना।

चीवरम् [चि+वरच् नि० दीर्घः, चीव्+अरच् वा] 1. पोशाक, फटा-पुराना, चिथड़ा प्रेतचीवरवासा स्वतोऽयं रघु० ११।१६ 2. भिक्षुक का परिधान, विशेषकर बौद्ध भिक्षु के वस्त्र, चीवराणि परिग्रहे—सिद्धा०, चीरचीवरपरिच्छदां मा० १, प्रक्षालितं मेतन्मया चीवरमेतत्—मृच्छ० ८।

चीवरिन् (पुं०) [चीवर+इनि] 1. बौद्ध या जैन भिक्षुक 2. भिक्षुक।

चुक्कार: [चुक्क्+अच्—चुक्क+आ+रा+क] सिंह की गर्जन या दहाड़।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चुक्र [चक्+रक्, अत उत्वं च] 1. एक प्रकार की अम्लवेत या अम्ललोणिका 2. खटास, —क्रम् खटास, अम्लता। सम० फलम् इमली का फल, —वास्तुकम् खटमिट्ठा चोका, अम्लशोणिका।

चुक्रा [चुक्र+टाप्] इमली का पेड़।

चुक्रिमन् (पुं०) [चुक्र+इमनिच्] खटास, खट्टापन।

चुक्रुक:, —कम्, चुक्रुकम् [चुच् इति अव्यक्तशब्दं कायति —क+क, पृषो० दीर्घः] चूची का बिटकना या घुंडी।

चुञ्चु (वि०) [कुछ समासों के अन्त में प्रयुक्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध, विभुत, कुशल अक्षर°, चार° आदि।

चुण्टा, टा [चुट् (ड्)+अच्+टाप्] छोटा कुआँ या जलाशय।

चुत् [भ्वा० पर० —चोतति] चूना, टपकना, दे० च्युत्।

चुतः [चुत्+क] गुदा।

चुद् [चुरा० उभ० —चोदयति ते, चोदित] 1. भेजना, निर्देश देना, आगे फेंकना, प्रेरित करना, हाँकना, धकेलना—चोदयाश्चान्· शं० १ 2. प्रणोदित करना स्फूर्ति देना, ठेलना, सजीव बनाना, उकसाना—रघु० ४।२४, मार्गप्रदर्शन करना, फुसलाना—रघु० १०।६७ 3. शीघ्रता करना, त्वरित करना 4. प्रश्न करना, पूछना 5 सादर निवेदन करना 6. प्रस्तुत करना, तर्क या आक्षेप के रूप में सामने लाना, परि— 1. धकेलना, निर्देश देना, भेजना 2. उकसाना, प्रोत्साहित करना, प्र—, 1. ठेलना, प्रणोदित करना, स्फूर्ति देना उकसाना—चापलाय प्रचोदितः—रघु० १।९. 2. हाँकना, हाँकना, स्फूर्ति देना, धकेलना 3. निर्देश देना सम्—, 1. निर्देश देना, उकसाना, ठेलना 2. फेंकना, आगे बढ़ाना।

चुन्दी (चुन्द्+अच् नि० ङीप्) दूती, कुटनी।

चुप् [भ्वा० पर० —चोपति] शनैः शनैः चलना, दबे पाँव चलना, चुपचाप खिसकना।

चुबुकः [—चिबुक, पृषो०] ठोढी।

चुम्ब् [भ्वा०—चुरा० उभ० चुम्बति—ते, चुम्बयति—ते, चुम्बित] 1. चूमना, चुंबन करना, (आलं० से भी) चित्रयति चुम्बति जलधरकल्पं हरिरयमगत इति तिमिरमनल्पम्—गीत० ६, प्रियामुखं किंपुरुषश्चचुम्बे—कु० ३।३८ अमरु १६, हि० ४।३३२ 2. सुकुमारता पूर्वक स्पर्श करना, छूते हुए चलना—उत्तर० ४।१५, परि —, चूमना—ऋतु० ६।१७, अमरु ७७।

चुम्बः, —बा [चुम्ब्+अच्, घञ्, वा, स्त्रियां टाप्] चुंबन, चूमना।

चुम्बकः [चुम्ब्+ण्वुल्] 1. चूमने वाला 2. कामी, कामासक्त, कामुक 3 बदमाश, ठग 4. जिसने चूम लिया, जिसने अनेक विषयों को छू लिया, पल्लवग्राही विद्वान् 5. चुंबक पत्थर (चकमक)।

चुम्बनम् [चुम्ब्+ल्युट्] चूमना, चुंबन—चुम्बनं देहि मे भार्ये कामिनीजीवितप्रदे—रस०।

चुर् (चुरा० उभ०—चोरयति—ते, चोरित) 1. लूटना, चुराना—मनु० ८।३३३ विक्रम० ३।१७ 2. (आलं०) वहन करना, रखना, अधिकार में करना, लेना, धारण करना—अवचुरच्चन्द्रमसोऽभिरामताम् - शि० १।१६।

चुरा [चुर्+अ+टाप्] चोरी।

चुरिः—री (स्त्री०) [चुर्+कि, चुरि+ङीष्] छोटा कुआँ।

चुलकः [चुल्+उकञ्] 1. गहरा कौंचड़ 2. एक घूँट या हथेली भर पानी, चुल्लू,—ममौ स मद्दं चुलके समुद्रः —नै० ८।४५, ज्ञात्वा विधातुश्चलुकात् प्रसूतिम्—विक्रमाङ्क० १।३७ 3. छोटा बर्तन।

चुलुकिन् (पुं०) [चुलुक+इनि] सूँस, उलूपी।

चुलुम्प् [भ्वा० पर०—चुलुम्पयति] 1. झूलना, डोलना, इधर उधर हिलना दोलायमान होना, उद्—1. झोंटे लेना 2. आन्दोलित होना—अम्बोवेर्नालिकेलीरसमिव चुलुकैरुच्चलुलुम्पत्यपो वै—महावी० ५।८।

चुलुम्पः [चुलुम्प्+घञ्] बच्चों को लाड प्यार करना।

चुलुम्पा [चुलुम्प्+टाप्] बकरी।

चुल्ल [भ्वा० पर०—चुल्लति] खेलना, क्रीडा करना, प्रेमात्मार में प्रीतिसूचक संकेत करना।

चुल्लिः [चुल्ल्+इन्] चूल्हा।

चुल्ली [चुल्लि+ङीष्] 1. चूल्हा 2. चिता।

चूचुक्रम्, चूचुक्रम् [चूच्+उकञ्, चकारस्य चकारः, पृषो०] चूची का बिटकना या घुण्डी—शि० ७।१९।

चूडकः [चूडा+कन्, ह्रस्वः] कुआँ।

चूडा [चूल्+अङ्, ह्रस्वः, दीर्घः नि०] 1. बालों की चोटी चुटिया (मुण्डन संस्कार के अवसर पर रक्खी हुई शिखा) रघु० १८।५१ 2. मुण्डन संस्कार 3. मुर्गे की या मोर की कलगी 4. ताज, मुकुट, उष्णीष 5. सिर 6. शिखर, चोटी 7. चौबारा, अटारी 8. कुआँ 9. (कलाई में पहना जाने वाला) आभूषण। सम० —करणम्, —कर्मन् (नपुं०) मुण्डन संस्कार—मनु० २।३५, —पाशः बालों का गुच्छा, केश समूह—चूडापाशे नवकुरवकम्—मेघ० ६५—मणिः,—रत्नम् 1. सिर पर धारण किया जाने वाला आभूषण, चूडामणि, शीर्षफूल (आलं० से भी) 2. बढ़िया श्रेष्ठ (प्रायः समास के अन्त में)।

चूडार,—ल (वि०) [चूडा+अर्च्+अण्, चूडा+लच्] 1. सिर पर चुटिया रखने वाला, शिखाधृक्त 2. कलगीदार।

चूतः [चूष्+क्त पृषो०] 2. आम का पेड़, —ईषद्धरजः कणाधिकपिशा चूते नवा मञ्जरी—विक्रम० २।७, चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः—कु० ३।३२ 2. कामदेव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के पाँच बाणों में से एक, दे० पंचबाण,—सम् गुदा, मलद्वार।

चूर्ण (चुरा० उभ०—चूर्णयति—ते, चूर्णित) चूरा करना, कुचलना, पीस देना 2. चकनाचूर करना, कुचल देना, —सम्, —रण्ड देना, कुचल देना —संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरु- वेणी० १।१५।

चूर्ण,—र्णम् [चूर्ण+अच्] 1. चूरा 2. आटा 3. धूल 4. सुगन्धित चूरा, पिसा हुआ चन्दन, कपूर आदि —भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः—मेघ० ६८ पं: 1. खड़िया 2. चूना। सम०—कारः चूना फूंकने वाला,—कुन्तलः घुंघर, घुंघराले बाल, अलकं-समं केर-लकान्तानां चूर्णकुन्तलबल्लिभिः—विक्रमाङ्क० ४।२, —जन्मन् कपूर, बजरी,—पारदः शिंगरफ, सिन्दूर, —योगः गन्ध द्रव्यों का चूर्ण।

चूर्णकः [चूर्ण+कन्] भून कर पीसा हुआ अनाज, सत्तू —कम् 1. सुगन्धित चूरा 2. गद्य रचना की एक शैली जो कर्णकटु शब्दों से रहित तथा अल्प समास वाली हो—अकठोराक्षरं स्वल्पसमासं चूर्णकं विदुः—छं० ६।

चूर्णनम् [चूर्ण+ल्युट्] कुचलना, पीसना।

चूर्णिः,—र्णी (स्त्री०) [चूर्ण+इन्, चूर्णि+ङीष्] 1. पीसा हुआ, चूरा 2. सौ कौड़ियों का समूह।

चूर्णिका [चूर्ण+टन्—टाप्] 1. भुना हुआ और पिसा हुआ अनाज, सत्तू 2. सरल गद्यरचना की एक शैली।

चूर्णित (वि०) [चूर्ण+क्त] 1. पीसा हुआ, चूरा किया हुआ 2. कुचला हुआ, रगड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ, टुकड़े २ किया हुआ—कु० ५।२४।

चूलः [चूल+क पृषो० दीर्घः] बाल, केश,—ला 1. ऊपर का कक्ष 2. शिखर 3. धूमकेतु की शिखा।

चूलिका [चूल+ण्वुल् पृषो० दीर्घः] 1. मुर्गे की कलगी 2. हाथी की कनपटी 3. (नाटकों में) नेपथ्य में पात्रों द्वारा किसी घटना का संकेत—अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका—सा० द० ३१०, उदा० महावीर-चरित के चौथे अंक के आरंभ में।

चूष् (स्वा० पर०—चूषति, चूषित) पीना, चूसना, चूस लेना।

चूषा [चूष्+क+टाप्] 1. (हाथी का) चमड़े का तंग 2. चूसना 3. भेखला।

चूष्यम् [चूष्+ण्यत्] चूसे जाने वाले भोज्य पदार्थ।

चृत् 1 (तुदा० पर०—चृतति) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. बांधना, एक जगह जोड़ना, II (स्वा० पर०, चुरा० उभ०—चर्तति, चर्तयति—ते) जलाना, प्रज्व-लित करना।

चेकितानः [कित्+यङ्+शानच्, यङो लुक्, षत्वाभावश्चित्वम्] 1. शिव का विशेषण 2. यदुवंशीराजा जो पांडवों की ओर से महाभारत के युद्ध में लड़ा।

चेटः,—कः [चिट्+अच्, वा टस्य डः] 1. नौकर 2. विट, उपपति।

चेटि (डी) **का, चेटिः** (टी) **(डो)**—[चिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वं, पक्षे ङीष्वम्, ङीप्, ङस्कम् वा] सेविका, दासी।

चेतन (वि०) (स्त्रि०—नी) [चित्+ल्युट्] 1. सजीव, जीवित, जीवधारी, सचेत, संवेदनशील—चेतनावेतनेषु —मेघ० ५, सजीव और निर्जीव 2. दृश्यमान,—नः 1. सचेत प्राणी, मनुष्य 2. आत्मा, मन 3. परमात्मा, —ना 1. ज्ञान, संज्ञा, प्रतिबोध चुलुकयति मदीया चेतनां चञ्चरीकः—रस०, रघु० १२।१४, चेतनां प्रति-पद्यते—संज्ञा फिर प्राप्त कर लेता है 2. समझ, प्रज्ञा —परिचयमाद्यामिनीयामात्प्रसादमिव चेतना —रघु० १७।१ 3. जीवन, प्राण, सजीवता—भग० १३।६ 4. बुद्धिमत्ता, विचारविमर्श।

चेतस् (नपुं०) [चित्+असुन्] 1. चेतना, ज्ञान 2. चिंतन-शील आत्मा, तर्कना शक्ति 3. मन, हृदय, आत्मा —चेतः प्रसादयति - भर्तृ० २।२१, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः—श० १।३४। सम०—ज-न्मन्,—भवः,—भूः (पुं०) 1. प्रेम, आवेश 2. कामदेव, —विकारः मन की विकृति, संवेग, क्षोभ।

चेतोमत् (वि०) [चेतस्+मतुप्] जिन्दा, जीवित।

चेद् (अव्य०) यदि, बशर्ते कि, यद्यपि (वाक्य के आरंभ में कभी भी प्रयोग नहीं होता) अपि रोषमुरीकरोषि मोचेत्किमपि त्वां प्रतिवारिधे वदामः—भामि० १।४४, —कु० ४।९, इतिचेद् - न, 'यदि ऐसा कहा गया ·····' (हम उत्तर देते हैं) तो ऐसा नहीं (विवादास्पद विषयों में बहुधा प्रयोग होता है) - सन्निधानमात्रेण राजप्रभृतीनां दृष्टं कर्तृत्वमिति चेन्न - शाव०, अथ चेद्-परन्तु यदि।

चेदिः (पुं० व० व०) एक देश का नाम तदीयशिताश्चेदीनां सर्वोत्तमबभस्तं भा शि० २।९५, ६३। सम०—पतिः,—भूभृत् (पुं०), राज् (पुं०)—राजः शिशु-पाल, दमघोष का पुत्र, चेदिदेश का राजा—शि० २।९६, दे० 'शिशुपाल'।

चेय (वि०) [चि+यत्] 1. ढेर लगाने के योग्य 2. एकत्र करने योग्य, संग्रह किये जाने के योग्य।

चेल् (भ्वा० पर० · चेलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. हिलना, क्षुब्ध होना, कांपना।

चेलम् [चिल्+घञ्] 1. वस्त्र, पोशाक—हसुम्भारुणं चारु चेलं वसाना—जग० 2. (समास के अन्त में) बुरा, दुष्ट, कमीना—भार्याचेलम्—बुरी पत्नी। सम० प्रक्षालकः धोबी।

चेलिका [चेल+कन्+टाप्, इत्वम्] चोली, अंगिया।

चेष्ट् (भ्वा० आ० चेष्टते, चेष्टित) 1. हिलना-जुलना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिलना-डुलना, सक्रिय होना, जीवन के चिह्न दिखलाना यदा स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत्--मनु० १।५२ 2. प्रयत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, संघर्ष करना 3. अनुष्ठान करना, (कुछ कार्य) करना 4. व्यवहार करना—वि--, 1. हिलना-डुलना, चलना-फिरना, गतिशील होना, इधर-उधर फिरना 2. कार्य करना, व्यवहार करना ।

चेष्टकः [चेष्ट्+ण्वुल्] संभोग का आसन विशेष, रतिबंध ।

चेष्टनम् [चेष्ट्+ल्युट्] 1. गति 2. प्रयत्न, प्रयास ।

चेष्टा [चेष्ट्+अङ्+टाप्] 1. चाल, गति--किमस्माकं स्वामिचेष्टानिरूपणेन · हि० ३ 2. संकेत, कर्म--चेष्टया भाषणं च नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः--मनु० ८।२६ 3. प्रयत्न, प्रयास 4. व्यवहार । सम०--नाशः सृष्टि का नाश, प्रलय,--निरूपणम् किसी व्यक्ति की गतिविधि पर आँख रखना ।

चेष्टित (भू० क० कृ०) [चेष्ट्+क्त] हिला, चला, हिला-डुला, --तम् 1. चाल, अंगभंगिमा, कर्म 2. क्रिया, कर्म, व्यवहार--कपोलपाटलादेशि बभूव रजनीचेष्टितम् --रघु० ४।६८, तत्तत्कोशस्य चेष्टितम्--मनु० २।४, काम करना ।

चैतन्यम् [चेतन+ष्यञ्] 1. जीव, जीवन, प्रज्ञा, प्राण, संवेदन 2. (वेदान्त द० में) परमात्मा जो सभी प्रकार की संवेदनाओं का स्रोत और सब प्राणियों का मूल-तत्त्व समझा जाता है ।

चैत्तिक (वि०) [चित्त+ठक्] मानसिक, बौद्धिक ।

चैत्य¹,—त्यम् [चित्य+अण्] 1. सीमा चिह्न बनानेवाला पत्थरों का ढेर 2. स्मारक, समाधि-प्रस्तर 3. यज्ञ मण्डप 4. धार्मिक पूजा का स्थान, वेदी, वह स्थान जहाँ देवमूर्ति प्रस्थापित रहती है 5. देवालय 6. बौद्ध और जैन मन्दिर 7. गूलर का वृक्ष, या सड़क के किनारे उगने वाला गूलर का पेड़--मेघ० २३ (रथ्या-वृक्ष - मल्लि०)। सम०--तरुः,--द्रुमः,--वृक्षः किसी पवित्र स्थान पर उगा हुआ उदुम्बर अर्थात् गूलर का पेड़, - पालः देवालय का संरक्षक, --मुख्यः साधु-संन्यासी का जलपात्र या कमण्डलु ।

चैत्र: [चित्रा+अण्] एक चान्द्र मास का नाम जिसमें कि चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र पुंज में स्थित रहता है, (यह महीना मार्च और अप्रैल के अंग्रेजी महीनों में आता है) 2. बौद्ध भिक्षु, --अम् मन्दिर, मृतक की समाधि । सम०--आश्विनः (स्त्री०) चैत्र की पूर्णिमा, --बन्धुः कामदेव का विशेषण ।

चैत्ररथम्,—थ्यम् [चित्ररथ+अण्, ष्यञ् वा] कुबेर के उद्यान का नाम--एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्य-रम्यानपरो विदर्भान्--रघु० ५।६०,५०।

चैत्रिः, चैत्रिकः, चैत्रिन् (पुं०) [चैत्री विद्यतेऽस्मिन्—चैत्री +इञ्, चित्रा+ठक्, इनि वा] चैत्रमास, चैत का महीना ।

चैत्री [चित्रा+अण्+ङीप्] चैत्र मास की पूर्णिमा ।

चैद्यः [चेदि+ष्यञ्] शिशुपाल,—अभिचैद्यं प्रतिष्ठासुः शि० २।१ ।

चैलम् [चेल+अण्] कपड़े का टुकड़ा, वस्त्र । सम० --धावः धोबी ।

चोक्ष (वि०) [चक्ष्+घञ्, पृषो० साधुः] 1. पवित्र, स्वच्छ 2. ईमानदार 3. होशियार, दक्ष, कुशल 4. सुथरा, रुचिकर, प्रसन्नता देने वाला ।

चोचम् [कोचति आवृणोति—कुच्+अच् पृषो०] 1. वल्कल, छाल 2. चमड़ा, खाल 3. नारियल ।

चोटी--[चुट्+अण्+ङीप्] छोटा लहंगा, साया पेटी-कोट ।

चोडः [चोडति संवृणोति शरीरम्—चुड्+अच्+ङीप्] चोली अंगिया ।

चोदना [चुद्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. भेजना, निर्देश देना, फेंकना 2. स्फूर्ति देना, आगे हांकना 3. प्रोत्सा-हन देना, उकसाना, उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना प्रदान करना 4. उपदेश, पुनीत आदेश, वेदविहित विधि । सम०--पुत्रः खेलने के लिए गेंद ।

चोदित (भू० क० कृ०) [चुद्+णिच्+क्त] 1. भेजा, निर्दिष्ट 2. स्फूर्ति दिया गया, हांका गया 3. उकसाया गया, प्रोत्साहित किया गया, उत्तेजित किया गया 4. तर्क के रूप में सामने प्रस्तुत किया गया ।

चोद्यम् [चुद्+ण्यत्] 1. आक्षेप करना, प्रश्न पूछना 2. आक्षेप 3. आश्चर्य ।

चो(चौ)रः [चुर्+णिच्+अच्, चुरा+ण] चोर, लुटेरा --सकलं चौरं गतं त्वया गृहीतम् · विक्रम० ४।१६, इन्दीवरदलप्रभाचोरं चक्षुः--भर्तृ० ३।६७ ।

चौ(चौ)रिका [चोर+ठन्+टाप्] चोरी, लूट ।

चोरित (वि०) [चुर्+णिच्+क्त] चुराया गया, लूटा गया ।

चौरितकम् [चोरित+कन्] 1. चोरी, चौर्य, स्तेय 2. चुराई हुई वस्तु ।

चोलः (पुं०, ब० व०) [चुल्+घञ्] दक्षिण भारत में एक देश का नाम, वर्तमान तंजौर, --लः,--ली, अंगिया चोली ।

चोलकः [चोल+कै+क] 1. वस्त्रत्राण 2. खाल या वल्कल 3. चोली ।

चोलकिन् (पुं०) [चोलक+इनि] 1. वस्त्रत्राण से सुस-ज्जित सैनिक 2. संतरे का पेड़ 3. कलाई ।

चोल(ली)द्रुमः [चोलस्य अ (उ) द्रुक इव, ष० त०, शक० पर०] साफा, पगड़ी, किरीट, मुकुट ।

चोषः [चुष्+घञ्] 1. चूसना, (आयु० में) सूजन ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोभयत्=प्रेरणा।

छोर(क) (वि०) (स्त्री०—री (ली)) [छुरा+अण् —डलयोरेभेदः] 1. शिक्षायुक्त, कलगीदार 2. मुण्डन संस्कार से सम्बन्धी—डम्,—कम् मुण्डन संस्कार।

छौर्यम् [चोर+ष्यञ्] 1. चोरी, लूट 2. रहस्य, छिपाव आदि०—एतत् छिपे छिपे स्त्री संभोग,—वृत्तिः (स्त्री०) लूटने की आदत।

च्यवनम् [च्यु+ल्युट्] 1. चलना-फिरना, गति 2. वञ्चित होना, हानि, वञ्चना 3. मरना, नष्ट होना 4. बहना टपकना।

च्यु [भ्वा० आ०—च्यवते, च्युत] 1. गिरना, नीचे गिर पड़ना, फिसलना, डूबना (आलं० भी)—श० २।८ 2. बाहर निकलना, बहना, बूंद २ करके टपकना, बार निकालना—स्वतश्चयुतं दन्तिभिवाङ्कुरम्बुदः—रघु० ३।५८, भट्टि० ९।७४ 3. विचलित होना, भटकना, अलग हो जाना, (कर्तव्य आदि) छोड़ देना (अपा० के साथ), अस्माद्वर्णाश्रम च्यवेत्—मनु० ७।९८, १२। ७१,७२ 4. खो देना, वञ्चित होना—अन्योऽप्यस्मात्सत्त्वा च्युतिः—भट्टि० ३।२०, ७।९२ 5. अदृश्य होना, ओझल होना, नष्ट होना, गायब होना—रघु०८।६५, मनु० १२।९६ 6. घटना, कम होना; परि—, 1. चलें जाना, उड़ जाना, बच जाना 2. प्रगमन करना 3. भटकना, अलग हो जाना, छोड़ देना 4. खोना, वञ्चित होना 5. गिर पड़ना, नीचे गिरना, प्र,—अलग हो जाना, नीचे गिर पड़ना आदि (लगभग वह सब अर्थ जो परि पूर्वक 'च्यु' के होते हैं)।

च्युत् (भ्वा० पर०—च्योतति 1. बूंद २ गिर कर बहना, रिसना, चूना, झरना—इदं शोणितमभ्यक्तं संप्रहारेऽच्युत्ततयोः—भट्टि० ६।२८ 2. गिरपड़ना, नीचे गिरना, फिसलना—इदं कवचमच्योतीत्—भट्टि० ६।२९ 3. गिराना, बहाना।

च्युत (भू० कृ० कृ०) [च्यु+क्त, च्युत्+क वा] 1. नीचे गिरा हुआ खिसका हुआ, गिरा हुआ 2. दूर किया गया, बाहर निकाला गया 3. विचलित, भूला हुआ 4. खोया गया। सम०—अधिकार (वि०) पदच्युत किया गया,—आत्मन् (वि०) दूषित आत्मा वाला, दुष्टात्मा—कु० ५।८१।

च्युतिः (स्त्री०) [च्यु+क्तिन्] 1. अधः पतन, अवपतन 2. विचलन 3. बूंद २ गिरना, रिसना 4. खोना, वञ्चित होना—धैर्यच्युतिं कुर्याम्—३।१० 5. अदृश्य होना, नष्ट होना 6. वांछित्तद, 7. सुदा।

च्युतः [=च्युतः पृषो० उकारस्य दीर्घः] आम का वृक्ष।

छ

छ [छो+ड, क वा], अंश, खंड।

छगः (स्त्री०—गी) [छ गच्छति—छ+गम्+ड] बकरा।

छगलः (स्त्री० ली) [छो+कल, गुक्, ह्रस्वः] बकरा, अज—नीला कपड़ा।

छगलकः [छगल+कन्] बकरा।

छटा [छो+अटन्+टाप्] 1. ढेर, पुंज, राशि, संघात —सटाच्छटा भिन्नघनेन—शि० १।४७ 2. प्रकाश किरण-समूह, कान्ति, दीप्ति, प्रकाश—शि० ८।३८ 3. अविच्छिन्न रेखा, लकीर—छातेरताम्बूच्छटा—काव्य०। सम०—आभा बिजली,—फलः सुपारी का वृक्ष।

छत्रः [छादयति अनेन इति—छद्+णिच्+अन्, ह्रस्वः] कुकुरमुत्ता, खुंभी,—त्रम् छाता, छतरी—अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६ मनु० ७।९६। सम०—धरः,—धारः छत्र पकड़ कर चलने वाला,—धारणम् 1. छाता लेकर चलना, या छाता रखना—मनु० २।१७८ 2. राजकीय अधिकार के रूप में छत्र धारण करना,—पतिः 1. राजा जिसके ऊपर राज्य की मर्यादा के चिह्नस्वरूप छत्र किया जाय, प्रभुसत्ताप्राप्त सम्राट् 2. जंबुद्वीप के प्राचीन राजा का नाम,—भङ्गः 1. राजकीय छत्र का विनाश, राज्य का नाश, राजगद्दी से उतारा जाना, सिंहासनच्युति 2. पराश्रयता 3. रजामन्दी 4. परित्यक्त अवस्था, वैधव्य।

छत्रकः [छत्र+कै+क] शिव की पूजा के लिए मन्दिर, —कम् कुकुरमुत्ता, खुम्भी।

छत्रा, छत्राकः [छद्+ष्ट्रन्+टाप्, छत्रा+कन्] कुकुरमुत्ता, खुम्भी—मनु० ५।१९—याज्ञ० १।१७६।

छत्रिकः [छत्र+ठन्] छाता लेकर चलने वाला।

छत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [छत्र+इनि] छाता रखने वाला या लेकर चलने वाला—०(पुं०) नाई।

छदिः [छद्+क्विरच्] 1. घर 2. कुञ्ज, पर्णशाला।

छद् (भ्वा०—चुरा० उभ०—छदति—ते, छादयति-ते, छन्न,-छादित) 1. ढकना, ऊपर से ढाँप देना, पर्दा करना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—हैमैरछन्ना—मेघ० ७६, चक्षुः खेदात्सलिलगुरुभिः पक्ष्मभिश्छादयन्तीम्—मेघ० ९०; छन्नोपान्तः कानवाग्रैः—१८ 2. (चादर की भाँति) बिछाना, ढांपना 3. छिपाना, ढक लेना, ग्रहण लगना (आलं०), गुप्त रखना—ज्ञानपूर्वं कृतं कर्म छादयन्ते हासाश्चयः —महा०, छन्नं दोषमुदाहरन्ती—मृच्छ० ९।४,—अव, छिपाना, ढकना, ढांपना, आ—, 1. ढांपना—नाच्छादयति कौपीनम्—पंच० ३।९७ 2. छिपाना, ढकना—आनोराच्छादयत्प्रभाम्—महा० 3. वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना—मनु० ३।२७, वस्त्र-माच्छादयति, उद्—उघाड़ना, कपड़े उतारना, उप—, 1. आच्छादित करना 2. छिपाना, ढकना, परि— 1. ढांपना, पहनना—दर्भैस्तं परिच्छाद्य—पंच० २, द्वीपिचर्मपरिच्छन्नः (गर्दभः) हि० ३।९ 2. छिपाना, ढांपना, प्र—, 1. ढांपना, लपेटना, पर्दा डालना, अव-गुंठित करना—(वनं) प्राच्छादयदमेयात्मा नीहारेणेव चन्द्रमाः—महा० 2. छिपाना, ढकना, भेस बदलना—प्रच्छादय स्वान् गुणान्—भर्तृ० २।७७ प्रदानं प्रच्छन्नम् २।६४, मनु० ४।१९८, १०।४०, चौर० ४ 3. कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना 4. रुकावट डालना, रोडा अटकाना, प्रति—, 1. छिपाना, ढकना 2. ढांपना, लपेटना सम्—, 1. छिपाना 2. अवगुंठित करना, लपेटना।

छदः, छदनम् [छद्+अच्, ल्युट् वा] 1. आवरण, चादर, अल्पच्छद, उत्तरच्छद आदि 2. स्कन्ध, पक्ष—छदहेम कवन्निवालसत्—नै० २।६९ 3. पत्र, पर्ण 4. म्यान, खोल, गिलाफ, पेटी, बक्स।

छदिः (स्त्री०) छर्दिस् (नपुं०) [छद्+कि, इस् वा] 1. गाड़ी की छत 2. घर की छत या छप्पर।

छद्मन् (नपुं०) [छद्+मनिन्] 1. धोखा देने वाले वस्त्र, कपटवेश 2. दलील, बहाना, व्याज—ब्रह्मविद्या सामर्थ्य-सारः—महावी० २।२५, पलितच्छद्मना जरा—रघु० १२।२, शि० २।२१ 3. जालसाजी, बेईमानी, चालाकी —छद्मना परिदधामि मृत्यवे—उत्तर० १।४५, मनु० ४।१९९, ९।७२। सम०—तापसः बना हुआ तपस्वी, पालडी, —वेषः (अव्य०) अज्ञात रूप से, भेस बदल कर,—वेशिन् (पुं०) खिलाड़ी, ठग, भेस बदले हुए।

छद्मिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [छद्मन्+इनि] 1. जाल-साज, धोखेबाज 2. भेस बदलते हुए (समास के अन्त में) उदा०—ब्राह्मण छद्मिन्=ब्राह्मण का रूप धारण किये हुए।

छन्द् (चुरा० उभ०—छन्दयति ते, छन्दित) 1. प्रसन्न करना, तुष्ट करना 2. फुसलाना, बहकाना 3. ढांपना 4. प्रसन्न होना, उप—1. चापलूसी करना, फुसलाना, आमन्त्रित करना—स्वयोपछन्दित उदकेन—श० ५, पानी पीने के लिए फुसलाया गया 2. प्रार्थना करना, निवेदन करना 3. अनुनय करना 4. कुछ देना।

छन्दः [छन्द्+घञ्] 1. कामना, इच्छा, कल्पना, चाह, अभिलाषा,—विज्ञायतां देवि यस्ते छन्द इति—विक्रम० ३, जैसा आप चाहें 2. स्वतन्त्र इच्छा, अपनी मौज, मन की मौज, कामचार, स्वतन्त्र या इच्छानुकूल आचरण—वध्ये काले स्वयमपि दिवसस्यात्मनश्छन्दवर्ती —विक्रम० २।१, गीत० १, याज्ञ० २।१९५, स्वच्छन्दम् अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार, निरपेक्ष रूप से 3. (अतः) वश्यता, नियन्त्रण 4. मतलब, इरादा आशय 5. जहर।

छन्दस् (नपुं०) [छन्द्+असुन्] 1. कामना, चाह, कल्पना, इच्छा, मरजी—(गृह्णीयात्) मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन या यातय्येन पण्डितम्—चाण० ३१ 2. स्वतन्त्र इच्छा, स्वेच्छाचरण 3. मतलब, इरादा 4. बालसाजी, चालाकी, धोखा 5. वेद, वैदिक सूक्तों का पावन पाठ —स च कुलपतिराज्ञयछन्दसां यः प्रयोक्ता—उत्तर० ३।४८, बहुलं छन्दसि—पाणिनि के द्वारा बहुधा प्रयुक्त, प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११, याज्ञ० १।१४३, मनु० ४।९५ 6. वृत्त, छन्द—ऋक् छन्दसां आशास्ते—श० ४, गायत्री छन्दसामहम्—भग० १०।३५, १३।१४ 7. छन्दों का ज्ञान, छन्दः शास्त्र (छः वेदाङ्गों में से छन्दः शास्त्र भी एक वेदाङ्ग माना जाता है—अन्य वेदाङ्ग हैं:—शिक्षा, व्याकरण, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष)। सम०—कृतम् वेद का पद्यात्मक भाग या कोई दूसरी पावन रचना—यथोदितेन विधिना नित्यं छन्दस्कृतं पठेत् —मनु० ४।१००,—गः (छन्दोगः) 1. श्लोकों का सस्वर पाठ करने वाला 2. सामगायक या सामगान का विद्यार्थी—मनु० ३।१४५, (छन्दोगः साममेदाभ्यायी) —भट्टः छन्दः शास्त्र के नियमों का उल्लंघन,—विचितिः (स्त्री०) 'छन्दः परीक्षा' छन्दः शास्त्र का एक ग्रन्थ —कभी कभी इसे पिङ्गलरचित माना जाता है—छन्दो-विचित्या सकलस्तत्प्रपञ्चो निदर्शितः—काव्या० १।१२।

छन्न (वि०) [छद्+क्त] 1. ढका हुआ 2. छिपा हुआ, गुप्त, रहस्य आदि, दे० 'छद्'।

छन्नमतिः [छन्न+अण्डन्] अनाथ, मातृपितृहीन, जिसका कोई सम्बन्धी न हो।

छर्द् (चुरा० उभ०—छर्दयति, छर्दित) वमन करना, कै करना।

छर्दः, छर्दनं छर्दिः (स्त्री०), छर्दिका छर्दिस् (स्त्री०) [छर्द्+घञ्, ल्युट्, इन्, छर्दि+कन्+टाप्, छर्द्+ इति वा] वमन, कै करना, अस्वस्थता।

छलः,—लम् [छल्+अच्] 1. जालसाजी, चालाकी, धोखा, दगाबाजी—विषहे शठपलायनच्छलानि—रघु० १९।३१, छलमत्र न गृह्यते—मृच्छ० ९।१८, याज्ञ० १।६१,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनु० ८।४९, १८७, अमर १६, शि० १३।११ 2. बदमाशी, धूर्तता 3. दलील, बहाना, व्याज, बाह्यरूप, (इस अर्थ में बहुधा 'उपेक्षा' बतलाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है), परिच्छावलयच्छलेन या न परेषां ब्रह्महत्यां गोचरा-—नै० २।९५, प्रत्यर्प्य पूजामुपदाच्छलेन—रघु० ७।३०, ५।४, १६।२८, भट्टि० १।१, अमर १५, मा० ९।१ 4. हरावा 5. दुष्टता 6. हेत्वाभास 7. योजना, उपाय, तरकीब।

छलयति, —ते [छल+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] धोखा देना, ठगना, बुद्धि में दूसरे को पराजित करना।

छलयति (ना० धा० पर०) अपनी चतुराई से बुद्धि में दूसरे को पराजित करना, धोखा देना, ठगना—बलि छलयते गीत० १, शैवालोल्लाछल्लयन्ति मीनान् —रघु० १६। ६१, भग० १०।३६, अमर ४१।

छलिकम् [छल+ठन्] एक प्रकार का नाटक या नृत्य —छलिकं दुष्प्रयोज्यमुदाहरन्ति—मालवि० २।

छलिन् (पुं०) [छल+इनि] ठग, उचक्का, शठ।

छल्लिः,—ल्ली (स्त्री) [छद्+क्विप्, ता लाति —ला+क गौरा० ङीष्] 1. वल्कल, छाल 2. फैलने वाली लता 3. सन्तान, प्रजा, सन्तति, औलाद।

छविः (स्त्री०) [छादयति असार् छिनत्ति तमो वा—छो+वि किच्च वा ङीप्] 1. आभा, चेहरे की सुर्खी, चेहरे का रंगरूप—हिमकरोदयपाण्डुमुखच्छविः—रघु० ९।३८, छविः पाण्डुरा—श० ३।१०, मेघ० ३३ 2. सामान्य रंगरूप 3. सौन्दर्य, आभा, कान्ति—छविकरं मुखचूर्ण-मुषाश्रियः—रघु० ९।४५ 4. प्रकाश, दीप्ति 5. त्वचा, खाल।

छाग (वि०) (स्त्री० —गी) [छो+गन्] बकरे या बकरी से सम्बन्ध रखने वाला—यात्रा० १।२५८,—गः (स्त्री० गी) 1. बकरा बकरी, ब्राह्मणच्छागतो यथा (वंचितः) —हि० ४।५३, मनु० ३।२६९ 2. मेष राशि, —गम् बकरी का दूध। सम०—भोजन (पुं०) भेड़िया,—मुखः कार्तिकेय का विशेषण, —रथः,—वाहनः आग की देवता अग्नि की उपाधि।

छागलः [छागस्य+अण्] सूखे कण्डों की आग।

छागल (वि०) (स्त्री० —ली) [छगल+अण्] बकरी से प्राप्त होने वाला या उससे सम्बद्ध,—लः बकरा।

छात (वि०) [छो+क्त] 1. काटा गया, विभक्त 2. निर्बल दुबलापतला, कृश।

छात्रः [छत्रं गुरोर्वैगुण्यावरणं शीलमस्य -सिद्धा० छत्र+ण] विद्यार्थी, शिष्य,—त्रम् एक प्रकार का मधु। सम०—गण्डः काव्य का अत्यधनस्क विद्यार्थी जिसे श्लोकों का केवल आरम्भिक पद याद हो, —दर्शनम् एक दिन रक्खे हुए दूध से निकाला हुआ मक्खन,—व्यंसकः मन्दबुद्धि या धूर्त विद्यार्थी।

छादम् [छद्+णिच्+घञ्] छप्पर, छत।

छादनम् [छद्+णिच्+ल्युट्] 1. आवरण, पर्दा (आलं० भी) विनिर्मित छादनमन्तरायाः—भर्तृ० २।७ 2. छिपाना 3. पत्र 4. परिधान।

छादित (वि०) दे० छन्न।

छाद्मिकः [छद्मन्+ठक्] धूर्त, कपटी—मनु० ४।१९५।

छान्दस (वि०) (स्त्री०—सी) [छन्दस्+अण्] 1. वैदिक, वेदों के लिए विशेष शब्द जैसा कि "छान्दसः प्रयोगः" 2. वेदाध्यायी, वेदज्ञ 3. पद्यमय, छन्दोबद्ध,—सः वेदज्ञाता ब्राह्मण।

छाया [छो+य+टाप्] 1. छाँह, छाँव (तत्० समास के अन्त में 'छाया' हो जाता है जब कि छाँह की सघनता का बोध अपेक्षित हो—उदा० इक्षुच्छायानिषादिन्यः—रघु० ४।२०, इसी प्रकार ७।४, ५०, मुद्रा० ४।२१,) छायामयः सानुगतां निधेय्य—कु० १।५, ६।४६, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्—श० ५।७, रघु० १।७५, २।६, ३।७०, मेघ० ६७ 2. प्रतिबिम्बित मूर्ति, अक्स—छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा —श० ७।३२ 3. समरूपता, समानता 4. असत्य कल्पना, दृष्टिभ्रम 5. रंगों का समाश्रिण 6. दीप्ति, प्रकाश—छायामण्डललक्ष्येण —रघु० ४।५, रत्नच्छायाव्यतिकरः—मेघ० १५।३६ 7. रंग—मा०६।५ 8. चेहरे की रंगत, स्वाभाविक रंगरूप, —केवलं लावण्यमयी छाया त्वां न मज्जति—श० ३, मेघैरन्तरिताः प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी—सा० द० 9. सौन्दर्य—श्यामच्छायं भवनम्—मेघ० ८०।१०४ 10. रेखा 11. पंक्ति, रेखा 12. अन्धकार 13. निश्चय 14. दुर्गा 15. सूर्य की पत्नी (यह सूर्य की पत्नी संज्ञा की प्रकृति—या छाया ही थी, फलतः जिस समय संज्ञा अपने पति को बिना बताये अपने पिता के घर चलीगई तो छाया से सूर्य के तीन सन्तान हुईं – दो पुत्र—सावर्णि और शनि, एक कन्या -तपती)। सम० - अङ्कः चन्द्रमा,—करः छाता लेकर चलने वाला,—ग्रहः शीशा, दर्पण,—तनयः,—सूतः सूर्यपुत्र शनि,—तरुः वह वृक्ष जिसकी छाया घनी हो, छायादार पेड़—मेघ० १—द्वितीय (वि०) वह जिसका साथ एक मात्र छाया हो, अकेला,—पथः पर्यायवरण —रघु० १३।२,—भूत (पुं०) चन्द्रमा, - मानः चन्द्रमा, —मम् छाया का मापना,—यित्रम् छतरी, - यृगधरः चन्द्रमा, —यन्त्रम् छाया द्वारा काल का ज्ञान कराने वाला यन्त्र, धूपघड़ी।

छायामय [वि०] [छाया+मयट्] प्रतिबिम्बित, छायादार।

छिः: (स्त्री) [छो+कि वा०] गाली, अपशब्द।

छिक्का [छिक्+कै+क टाप्] छींकना, छींक।

छित (वि०) दे० 'छात'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छित्तिः (स्त्री०) [छिद्+क्तिन्] काटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

छित्वर (वि०) (स्त्री०-री) [छिद्+क्वरप् पृषो० दस्य तः] 1. काटना, काट देना, चीरना, कटाई करना, फाड़ना, छेदना, टुकड़े २ करना, विदीर्ण करना, खण्ड-खण्ड करना, विभक्त करना ...नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि-भग० २।२३, रघु० १२।८०, मनु० ४।६१, ७० याज्ञ० २।३०२ 2. बाधा डालना, विघ्न डालना 3. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, शान्त करना, मारना—तृष्णां छिन्धि—भर्तृ० २।७७, एतन्मे संशयं छिन्धि मतिर्मे संभ्रमप्राप्तिः—महा०, राघवो रथमप्राप्तां तामाशां च सुरद्विषाम्, अर्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीमृगम्-रघु० १२।९६, कु० ७।१६, अव,—काट डालना, टुकड़े २ कर देना, अलग २ करना, विभक्त करना 2. भेद बताना, विवेचन करना 3. सुधारना, परिभाषा देना, सीमित करना (इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग न्याय में बहुमत से होता है), दे० अवच्छिन्न आ,—1. काट डालना, फाड़ना, टुकड़े २ करना 2. छीनना, खसोटना, ले लेना कु० २।४६, मा० ५।२८ 3. काट डालना, अलग कर देना—मनु० ४।२१९ 4. हटाना, खींचकर दूर करना 5. खींचना, खींचकर दूर करना, उद्धृत करना, निकालना 6. अवहेलना करना, ध्यान न देना, उद्—,1. काट डालना, नष्ट करना, उन्मूलन करना, उखाड़ देना -नोच्छिद्यादात्मनो मूलं परेषां ज्ञानितत्परः—महा०, किं वा रिपूस्तव गुरुः स्वयमुच्छिनत्ति—रघु० ५।७१, २।२३, पंच० १।४७ 2. हस्तक्षेप करना, विघ्न डालना, रोकना—अर्धेन तु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधसः, उच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः ग्रीष्मे कुसुमिता यथा—पंच० २।८४, मनु० ३।१०१ परि- 1. फाड़ना, काट डालना, टुकड़े-टुकड़े करना 2. घायल करना, अंग-भंग करना 3. अलग करना, विभक्त करना, जुदा करना—शतेन परिच्छिद्य—सिद्धा० 4. सही-सही निश्चित करना, सीमा बनाना, परिभाषा करना, निश्चय करना, भेद बताना, विवेचन करना, —मध्यस्था भगवती नो गुणदोषतः परिच्छेत्तुमर्हति —मालवि० १, (न)यशः परिच्छेत्तुमियत्तयालम्-रघु० ६।७७, १७।५९, कु० २।५८ प्र—, 1. काट डालना, टुकड़े २ करना 2. ले जाना, वापिस लेना वि—, 1. काट डालना, तोड़ना, फोड़ना, विभक्त करना—यदर्थं विच्छिद्यं भवति कृतसन्धानमिव तत्—श० १।९, रघु० १६।२०, भर्तृ० १।९६ 2. बाधा डालना, तोड़ देना, समाप्त करना, खतम करना, नष्ट करना, (कुल का दीपक) बुझा देना-विच्छिद्यमानेऽपि कुले परस्य-भट्टि० ३।५२, अमरु ७४, सम्,—1. काटना, काट डालना, विभक्त करना 2. दूर करना, साफ कर देना, निवारण करना, हटाना (संदेह आदि)।

छिद् (वि०) [छिद्+क्विप्] (समास के अन्त में) काटने वाला, विभक्त करने वाला, नष्ट करने वाला, हटाने वाला, खण्ड-खण्ड करने वाला—श्रमच्छिदाश्रमपाद-पानाम्-रघु० ५।६ पङ्कच्छिदः फलस्य—मालवि० २।८।

छिदकम् [छिद्+क्वुन्] 1 इन्द्र का वज्र, 2. हीरा।

छिदा [छिद्+अङ्+टाप्] काटना, विभाजन।

छिदिः (स्त्री०) [छिद्+इन्] 1. कुल्हाड़ा 2. इन्द्र का वज्र।

छिदिरः [छिद्+किरच्] 1. कुल्हाड़ा 2. शब्द 3. अग्नि 4. रस्सा, डोरी।

छिदुर (वि०) [छिद्+कुरच्] 1. काटने वाला, विभक्त करने वाला 2. आसानी से टूटने वाला 3. टूटा हुआ, अव्यवस्थित, अस्तव्यस्त—संलक्ष्यते न च्छिदुरोऽपि हारः—रघु० १६।६२ 4. शत्रु 5. धूर्त, बदमाश, शठ।

छिद्र (वि०) [छिद्+रक्, छिद्+अच् वा] छिदा हुआ, छिद्रों से युक्त,—द्रम् 1. छिद्र, दरार, फाँट, कटाव, रन्ध्र, गर्त, विवर, दरज—नवच्छिद्राणि तान्येव प्राण-स्थायतनानि तु—याज्ञ० ३।९९, मनु० ८।२३९ अयं पटश्छिद्रवान्तरलक्षकृतः—मृच्छ० २।९, इसी प्रकार काष्ठ° धूमि० 2. दोष, त्रुटि, दूषण—यें हि सप्तमाज्यानि पर-च्छिद्राणि पश्यसि, आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यसि—महा० 3. भेद या क्षीण अंश, दुर्बल पक्ष, दोष, न्यूनता—नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु, गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः-मनु० ७।१०५, १०२, छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्कः—हि० १।८१ (यहाँ 'छिद्र' का अर्थ 'सूराख' भी है), पञ्च० ३।३९ सम०—अन्वेषिन्,—अन्वेषणशील,—अनुसन्धानिन्,—अन्वेषिन् (वि०) 1. दोष या त्रुटियाँ ढूंढने वाला 2. दूसरों की दूषित बातों को खोजने वाला, दूसरों में दोष निकालने वाला, छिद्रान्वेषी—सर्पाणां दुर्जनानां च परच्छिद्रानुजीविनां—पञ्च० १,—अन्वेषः बेत, नरकुल, सरकण्डा, आत्मन् (वि०) जो अपनी त्रुटियाँ दूसरों पर प्रकट कर देता है, कर्ण (वि०) जिसने कान बिंधवा लिये हैं, दर्शन (वि०) 1. दोषों का प्रदर्शन करने वाला 2. दोषदर्शी।

छिद्रित (वि०) [छिद्र+इतच्] 1. छिद्रों से युक्त 2. बिंधा हुआ, छिदा हुआ।

छिन्न (भू० क० कृ०) [छिद्+क्त] 1. कटा हुआ, विभक्त किया हुआ, विदीर्ण, कटा हुआ, खण्डित, फाड़ा हुआ, टूटा हुआ 2. नष्ट हुआ, दूर किया हुआ—दे० छिद्र, —आ वाराङ्गना, वेश्या। सम०—केश (वि०) जिसके बाल काट लिये गये हैं, जिसका क्षौर या मुण्डन हो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चुका है,—चुन्नः खण्डित चूल,—छेद (वि०) जिसका सन्देह मिट गया है,—नासिक (वि०) जिसकी नाक कट गई है,—भिन्न (वि०) जो पूरी तरह काट दिया गया है, जिसका अंग भंग हो गया है, क्षतविक्षत, काटा हुआ,—मस्त,—मस्तक (वि०) कटे हुए सिर वाला, —मूल (वि०) जिसे जड़ से काट दिया गया है—रघु० ७।४३,—श्वासः एक प्रकार का दमा,—संशय (वि०) जिसके सन्देह दूर हो गये हैं, सन्देहमुक्त, पुष्ट।

छुछुन्दरः (स्त्री०—री) [छुछुम् इत्यव्यक्तशब्दो दीर्यते निर्गच्छति अस्मात् छुछुम्+दृ+अप्] छछूंदर नाम का जन्तु, गन्धाखु—याज्ञ० ३।२१३, मनु० १२।६५।

छुप् (तुदा० पर०—छुपति) स्पर्श करना, छूना।

छुपः [छुप्+क] 1. स्पर्श 2. झाड़ी, झंखाड़ 3. संघर्ष, युद्ध।

छुर् I (म्वा० पर०—छोरति, छुरित) 1. काटना, विभक्त करना 2. उत्कीर्ण करना, II (तुदा० पर०—छुरति, छुरित) 1. ढांपना, सानना, लीपना, जड़ना, पोतना, अवगुंठित करना 2. मिलाना,—वि—सानना, लीपना, ढकना, पोतना—मनःशिलाविच्छुरिता निषेदुः कु० १।५५, चौर० ११, विक्रम० ४।४५।

छुरचम् [छुर्+ल्युट्] सानना, लीपना—ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला रात्रिकापालिकीयम्—काव्य० १०।

छुरा [छुर्+क+टाप्] चना।

छुरिका [छुर्+क्वुन्+टाप्, इत्वम्] चाकू, छूरी।

छुरित (भू० क० कृ०) [छुर्+क्त] 1. खचित, जडित 2. ऊपर फैलाया हुआ, पोता हुआ, आच्छादित किया हुआ—अनेकधातुच्छुरितामराशैः—शि० ३।४, ७, इन्दुकिरणच्छुरितमुखीम्—काव्य० १० 3. समामिश्रित, अन्तर्मिश्रित—परस्परेण छुरितामलच्छवी—शि० १।२२।

छुरी, छुरिका, छूरी [छुर्+ङीप्, छुरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, छुरी पृषो० दीर्घः] चाकू, छूरी।

छुर्द् I (म्वा० पर०, चुरा० उभ०—छर्दति, छर्दयति ते) उलटना II (रुधा० उभ० छृणत्ति, छृन्त) 1. खेलना 2. चमकना 3. दमन करना।

छेक (वि०) [छो+ईकन् बा० तारा०] 1. पालतू, घरेलू (जैसे कि हिंस्रजन्तु) 2. नागरिक, शहरी 3. बुद्धिमान्, नागर। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास के पाँच भेदों में से एक, 'एक बार वर्णावृत्ति' जो कि व्यंजन समूहों में अनेक प्रकार से तथा एक ही बार घटने वाली समानता है—उदा०—आदाय बकुलगन्धनन्दीकुर्वन्पदे पदे भ्रमरान्, अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः—सा० द० ६३४,—अपह्नुतिः (स्त्री०) अपह्नुति अलंकार का एक भेद चन्द्रालोक सोदाहरण निरूपण करता है—छेकापह्नुतिरन्यस्य शङ्कातस्तस्य निह्नवे, प्रजल्पन्नपदे लग्नः कान्तः किं न हि नूपुरः—५।२७,—उक्तिः (स्त्री०) वक्रोक्ति, व्यंग्यात्मक वक्रोक्ति, द्वयर्थक मुहाविरा।

छेदः [छिद्+घञ्] 1. काटना, गिराना, तोड़ डालना, खण्ड-खण्ड करना—अभिज्ञानशकुन्तलानां किमन्ते नन्दनद्रुमाः—कु० २।४१, छेदो दंशस्य दाहो वा—मालवि० ४।४, रघु० १४।१, मनु० ८।२७०, ३७०, याज्ञ० २।२२३ २४० 2. निराकरण करना, हटाना, छिन्न-भिन्न करना, साफ करना, जैसा कि 'संशयच्छेद' में 3. नाश, बाधा—निद्राच्छेदाभिलाषा—मुद्रा० ३।२१ 4. विराम, अवसान, समाप्ति, लोप होना जैसा कि 'धर्मच्छेद' में 5. टुकड़ा, खण्ड, कटौती, खण्ड, अनुभाग —बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः—मेघ० ११, ५९, अभिनवकरिदन्तच्छेदपाण्डुः कपोलः—भा० १।२२, कु० १।४ शा० ३।७, रघु० १२।१००, 6. (गणित में) भाजक, हर (भिन्नराशि का)।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] 1. काटना, फाड़ना, काट डालना, टुकड़े २ करना, खण्ड-खण्ड विभक्त करना—मनु० ८।२८०, २९२, ३२२ 2. अनुभाग, अंश, टुकड़ा, भाग 3. नाश, हटाना।

छेदिः [छिद्+इन्] बढ़ई।

छेदयङ्ग [छम्+अण्डन्, एत्वम्] मातृपितृहीन, अनाथ।

छेलकः [छो+डेलक] बकरा।

छेदिकः [छेद+ठक्] बेत।

छो (दिवा० पर०—छ्यति, छात या छित—प्रेर० छापयति) काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना, कटाई करना, लवनी करना,—भट्टि० १४।१०१, १५।४०।

छोटिका [छुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] चुटकी।

छोरणम् [छुर्+ल्युट्] त्याग करना, छोड़ देना।

ज

ज (वि०) [जि-जन्-जु+ड] (समास के अन्त में) से या में उत्पन्न, पैदा हुआ, वशज, अवतीर्ण, उद्भूत, आदि—अग्निजेन्द्रज, कुलज, जलज, क्षत्रियज, अण्डज, उद्भिज्ज आदि,—जः 1. पिता 2. उत्पत्ति, जन्म 3. विष 4. भूतना, प्रेत या पिशाच 5. विजेता 6. कान्ति, प्रभा 7. विष्णु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जक्षुटः (पुं०) 1. मलय पर्वत 2. कुला।

जक्ष् (अदा० पर०—जक्षिति, जक्षित या जक्ष्ध) खाना, खा लेना, नष्ट करना, उपभोग करना—भट्टि० ४।३९, १३।२८, १५।४६, १८।१९।

जक्षणम्, जक्षिः [जक्ष्+ल्युट्, इन् वा] खाना, उपभोग करना।

जगत् (वि०) (स्त्री०—ती) [गम्+क्विप् नि० द्वित्वं तुगागमः] हिलने-डुलने वाला, जङ्गम—सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च-ऋक्० १।११५। १, इदं विश्वं जगत्सर्वं-मजगच्चापि यद्भुवेत्—महा०, (पुं०), वायु, हवा (नपुं०) संसार—जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ—रघु० १।१। सम०—अम्बा, —अम्बिका दुर्गा,—आत्मन् (पुं०) परमात्मा,—आधिकः शिव का विशेषण,—आधारः 1. समय 2. वायु, हवा,—आयुस्, —आयुस् (पुं०) हवा,—ईशः,—पतिः विश्व का स्वामी, परमदेव,—उद्धारः संसार की मुक्ति,—कर्तृ,—धातृ (पुं०) सृष्टि का बनाने वाला,—चक्षुस् (पुं०) सूर्य,—नाथः विश्व का स्वामी,—निवासः 1. परमात्मा 2. विष्णु का विशेषण—जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि—शि० १।१ 3. सांसारिक अस्तित्व,—प्राणः,—बन्धुः हवा,—योनिः 1. परम-पुरुष 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव की उपाधि 4. ब्रह्मा का विशेषण (निः—स्त्री०) पृथ्वी,—वह्नि पृथ्वी,—साक्षिन् (पुं०) 1. परमात्मा 2. सूर्य।

जगती [गम्+अति नि० साधुः] पृथ्वी, (समीहते) नयेन-जेतु जगतीं सुयोधनः—कि० १।७, समतोल्य भाति जगती जगतीं—५।२० 2. लोग, मनुष्य 3. गाय 4. छन्दो भेद (दे० परिशिष्ट)। सम०—अधीश्वरः, ईश्वरः राजा—नै० २।१, —रुह् (पुं०) वृक्ष।

जगनुः (नुः) =1. अग्नि 2. क्रीड़ा 3. जन्तु।

जागरः [जागर्ति युद्धेऽनेन—जागृ+अच् पृषो० तारा०] कवच।

जगल (वि०) [जन्+डः—जः जातः सन् गलति गल्+अच्] बदमाश, चालाक, धूर्त,—लम् 1. गौंदर 2. कवच 3. एक प्रकार की मदिरा (पुं०) (अन्तिम दो अर्थों में भी)।

जग्ध (वि०) [अद्+क्त जग्धादेशः] खाया हुआ।

जग्धिः (स्त्री०) [अद्+क्तिन् जग्धादेशः] 1. खाना 2. भोजन।

जग्मिः [गम्+कि, द्वित्वम्] हवा।

जघनम् [हन्+अच्, द्वित्वम्] 1. पुट्ठा, कूल्हा, चूतड़,—घटय जघने काञ्चीमञ्च स्रजा कबरीभरम्—गीत० १२ 2. स्त्रियों का पेडू 3. सेना का पिछला भाग, सेना का सुरक्षित भाग। सम०—कूपकी (द्वि० व०) किसी सुन्दरी के कूल्हे के ऊपर के गड्ढे,—चपला व्यभि-चारिणी स्त्री, कामुका—गत्वापुविदेशगमने परमसुखं जघनचपलायाः—पञ्च० १।१७३।

जघन्य (वि०) [जघने भवः यत्] 1. सबसे पिछला, अन्तिम—भग० १४।१८ मनु० ८।२७० 2. सबसे बुरा अत्यन्त दुष्ट, कमीना, अधम, निंद्य 3. नीच कुल में उत्पन्न,—न्यः शूद्र। सम०—जः 1. छोटा भाई 2. शूद्र।

जघ्निः [हन्+कित्, द्वित्वम्] (आक्रमणकारी) शस्त्र, हथियार।

जघ्नु (दि०) [हन्+कु, द्वित्वम्] प्रहार करने वाला, वध करने वाला।

जङ्गम (वि०) [गम्+यङ्+अच्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] हिलने-डुलने वाला, जीवित, चर—चितान्निरिव जङ्गमः—रघु० १५।१६, शोकाग्निरिव जङ्गमः—महादे० ५।२०, मनु० १।४९.—मम् चर या हिलने-डुलने वाला पदार्थ—रघु० २।४४। सम०—इतर (वि०) अचर, स्थावर,—कुटी छाता, छतरी।

जङ्गलम् [गल्+यङ्+अच् पृषो०] 1. मरुस्थल, सुनसान जगह, ऊसर भूमि 2. झुरमुट, वन 3. एकान्त निर्जन स्थान।

जङ्गालः [=जङ्गल, पृषो० साधुः] मेंड़, बाँध, सीमा चिह्न।

जङ्गुलम् [गम्+यङ्+डुल, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] विष, जहर।

जङ्घा [जङ्घन्यते कुटिलं गच्छति—हन्+यङ्+अच्, यङो लुक् पृषो०] जांघ, टखने से लेकर घुटने तक का भाग, पिण्डली। सम०—आरः,—कारिकः धावक, हरकारा, दूत, सन्देशहर,—त्राणम् टांगों के लिए कवच।

जङ्घाल (वि०) [जङ्घा+लच्] (शीघ्रधावक, प्रजवी, —लः 1. हरकारा 2. हरिण, बारहसिंघा।

जङ्घिल (वि०) [जङ्घा+इलच्] प्रधावक, प्रजवी, फुर्तीला।

जज्, जञ्ज् (भ्वा० पर०—जजति, जञ्जति) लड़ना, युद्ध करना।

जट् (भ्वा० पर०—जटति) जुड़ जाना, (बालों का) उलझ खाकर जटाजूट होना।

जटा [जट्+अच्+टाप्] 1. बटे हुए बाल, आपस में बल खाकर चिपके हुए बाल - असंव्यधि शकुन्तलोड-निचितं त्रिभज्जटामण्डलम्—श० ७।११, जटाश्च बिभृयास्त्रियम्—मनु० ६।६, मा० १।२ 2. तन्तुमय जड़ 3. सामान्य जड़ 4. शाखा 5. शतावरी का पौधा। सम०—चीर,—टङ्कः,—टीरः,—धरः शिव के विशेषण, —मूटः 1. जटाओं के रूप में बटे हुए बालों का समूह 2. शिव की जटाएँ - जटाजूटग्रन्थौ वदसि विनिबद्धा पुरभिदा—गंगा० १४,—ज्वालः दीप, लैंप,—धर (वि०) जटाधारी।

जटायुः [जटं संहतमायुः यस्य ब० स०] श्येनी और अरुण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का पुत्र, अर्ध दिव्य पक्षी [यह दशरथ का घनिष्ठ मित्र था, जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था तो जटायु ने सीता का रुदन और करुण-क्रन्दन सुना, फलतः वह भेड़ेड़क हो रावण से भिड़ गया, घमासान युद्ध हुआ, परन्तु वह सीता को रावण के पञ्जे से न छुड़ा सका और स्वयं घायल हो प्राणान्तक पीड़ा से तड़पता रहा। अन्त में सीता की खोज करते हुए राम उसके पास से निकले तो उस दयालु जटायु ने राम को यह बतला कर कि सीता को रावण उठा कर ले गया है, अन्तिम श्वास लिया। राम और लक्ष्मण ने उसका विधिपूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार किया]।

जटाल (वि०) [जटा+लच्] 1. जटाजूटधारी 2. (चिपके हुए बालों की भांति) एक स्थान पर इकट्ठे किये हुए —भामि० १।३६,—लः गूलर का पेड़।

जटिः (ठी) (स्त्री०) [जट्+इन्, जटि+ङीष्] 1. गूलर का पेड़ 2. उलझ पुलझ कर चिपके हुए 3. संघात, समुच्चय।

जटिल (वि०) (स्त्री०—ला) [जटा+इनि] जटाधारी, (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. प्लक्ष का वृक्ष, पाकड़ का पेड़।

जटिल (वि०) [जटा—इलच्] 1. (संन्यासियों की भांति) जटाधारी,—विवेक कश्चिज्जटिलस्तपोधनम्—कु० ५।३०, (यहाँ 'जटिल' शब्द 'मज्ञा' भी है और इसका अर्थ है 'संन्यासी') 2. देवोद्यत, अध्यवस्थित, अन्तर्भिश्रित, गड़बड़ किया हुआ—विज्ञानन्तोऽप्येते वयमिह विषज्जालजटिलान्, न मुञ्चामः कामानहह गहनो मोहमहिमा—भर्तृ० ३।२१ 3. सघन, अभेद्य,—लः 1. सिंह 2. बकरा।

जठर (वि०)[जायते जन्तुर्गर्भो यस्मिन् जन्+अरन् तान्त देशः—तारा०] कठोर, सख्त, दृढ़,—रः,—रम्—1. पेट, उदर—जठर को न बिभर्ति केवलम्—पंच० १।२२ 2. गर्भाशय 3. किसी वस्तु का भीतरी भाग। सम०—अग्निः पेट में स्थित अग्नि जो आहार को पचाने का काम करती है, आमाशय की गिल्टियों से निकलने वाला रस, —आमयः जलोदर रोग,—ज्वाला, —व्यथा उदर-ज्वाला, भूख का कष्ट, शूल —यंत्रणा, —यातना गर्भवास का कष्ट।

जड (वि०) [जलति वनीभवति जल्+अच्, लस्य डः] 1. शीतल, जमा हुआ या ठंडा, शीत या ठिठुरा देने वाला 2. मन्द, लूला-लंगड़ा, मतिहीन, जड़ीकृत —चिन्ताजड़ दर्शनम्—श० ४।५, परामृशन् हर्षजडेन पाणिना—रघु० ३।६८, २।४२ 3. निश्चेतन, चेतनारहित, विवेकशून्य, मन्दबुद्धि—जडानन्धान् पंङ्गून् ···त्रातुम्—गंगा० १५, इसी प्रकार जड़धी, जड़मति —पाञ्च० २।२५, मनु० २।११० 4. मन्दीकृत, उदासीन या चेतनाशून्य किया हुआ, गुणविवेचनशून्य आरसिक —वेदाभ्यासजडः कथं नु विषयव्यावृत्तकौतूहलः —विक्रम० १।९ 5. हड़बड़ा देने वाला, जड़ बना देने वाला, संज्ञाशून्य करने वाला 6. गूंगा 7. वेद (दायभाग) पढ़ने के अयोग्य,—डम् 1. पानी 2. सीसा। सम० क्रिय (वि०) मन्थर, दीर्घसूत्री।

जडता,-त्वम् [जड+तल्—टाप्, जड+त्व वा] 1. मन्दता, कार्य में अरुचि, आलस्य 2. अज्ञान, बुद्धूपन 3. (अल० शा० में) ३३ संचारी भावों में एक—मन्दता, सा० द० १७५।

जडिमन् (पुं०) [जड+इमनिच्] 1. ठण्डक 2. जड़ता 3. मन्दता, उदासीनता 4. मूर्छा, संज्ञाहीनता।

जतु (नपुं०) [जायते वृक्षादिभ्यः जन्+उ त आदेशः] लाख। सम०—अश्मकम् शिलाजीत, -पुत्रकः शतरंज का मोहरा, -रसः लाख, महावर।

जतुकम् [जतु+कन्] लाख, महावर।

जतुका [जतुक+टाप्] 1. लाख 2. चमगादड़।

जतुको, जतूका [जतुक+ङीष्, जतुका नि० दीर्घः] चमगादड़।

जत्रु (नपुं०) [जन्+रु तोऽन्तादेशः] गलवास्थि, हंसुली।

जन् (दिवा० आ०—जायते, जात—क० वा० जन्यते या जायते) पैदा होना, उत्पन्न होना (अपा० के साथ), अजनि ते दे पुत्रः—ऐत०, मनु० १।९, २।३९, ४१, प्राणाद्वायुरजायत—ऋग्० १०।९०।१२, मनु० १०।८, ३।७६, १।७५ 2. उठना, फूटना (पौधे की भांति) उगना 3. होना, बन जाना, आ पड़ना, घटित होना, घटना—अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा —हि० १।६, रक्तनेत्रोऽजनि क्षणात्—भट्टि० ६।३२, याज्ञ० ३।२२६, मनु० १।९९, प्रेर० जनयति जन्म देना, पैदा करना, उत्पन्न करना—अनु—1. बाद में पैदा होना—पुत्रिकायां कुलाया तु यदि पुत्रोऽनुजायते—मनु० ९।१३४ 2. समरूप पैदा होना—असौ कुमारस्तमजोऽनुजातः—रघु० ६।७८ (तस्माज्जातः—मल्लि०), अभि—, 1. पैदा होना, उत्पन्न होना, उदय होना, फूटना—कामात्क्रोधोऽभिजायते भग० २।६२० हि० १।२०५ 2. होना, घटित होना 3. परिणत होना 4. उच्चकुल में जन्म होना 5. उत्पन्न होना —भग० १६।३, उप—, 1. पैदा होना, उत्पन्न होना, निकलना, उगना—ऊष्मणश्चोपजायते -मनु० १।४५, सङ्गस्तेषूपजायते—भग० २।६२, १४।११ 2. फिर जन्म लेना, याज्ञ० ३।२५६, भग० १४।२, 3. होना, घटित होना। प्र—, वि—, सम्—, 1. उगना, निकलना, फूटना 2. पैदा होना, उत्पन्न होना।

जनः [जन्+अच्] 1. जीवजन्तु, जीवित प्राणी, मनुष्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. व्यक्ति, पुरुष (चाहे मनुष्य हो या स्त्री)—क्व वयं क्व परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितो जनः श० २।१८, ततस्य किमपि ब्रूमः यो हि यस्य प्रियो जनः —उत्तर० २।१९, इसी प्रकार 'सखीजन,' सहेली, 'दासजनः' सेवक, 'अबलाजन,' आदि (इस अर्थ में 'जनः' या 'अर्जनः' का प्रयोग बहुधा वक्ता के द्वारा स्त्री या पुरुष दोनों के लिए एकवचन या बहुवचन में किया जाता है और उत्तम पुरुष भी प्रथम पुरुष के रूप में प्रयुक्त होता है) —अयं जनः पृष्टुमनास्तपोधने —कु० ५।४० (मनुष्य); भगवन्परवानयं जनः प्रतिकूलाचरितं क्षमस्व मे—रघु० ८।८१ (स्त्री), पश्यानुकूलं शोरातुरं जनमिमं त्रातापि तो रक्षसि—नागा० १।१ (स्त्री, ब० व०) 2. सामूहिक रूप में मनुष्य, लोग, संसार (ए० व० या ब० व० में)—एवं जनो गृह्णाति —मालवि० १, सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते—श० ५।१७ 3. वंश, राष्ट्र, कबीला 4. 'यह' लोक से परे का संसार, देवत्व को प्राप्त मनुष्यों का स्वर्ग। सम०—अतिग (वि०) असाधारण, असामान्य, अतिमानव,—अधिपः,—अधिनाथः राजा, —अन्तः 1. वह स्थान जहाँ मनुष्य नहीं रहते, वह स्थान जो बसा हुआ नहीं है 2. प्रदेश 3. यम का विशेषण,—अन्तिकम् गुप्त संवाद, कान में कहना या एक ओर होकर कहना (अव्य०) एक ओर को (नाटकों में)—सा० द० रंगमंच के निर्देश को परिभाषा इस प्रकार बतलाता है :—विप्रकाशकरेणान्यानपवार्यातरास्थाम्, अन्योन्यामंत्रणं यत् स्याज्जनान्तिकं तज्जनान्तिकम्, ४२५,—अर्दनः विष्णु या कृष्ण का विशेषण,—आकीर्ण (वि०) लोगों से ठसाठस भरा हुआ, जनसंकुल,— आचारः लोकाचार, लोकरीति,—आश्रमः धर्मशाला, सराय, पथिकाश्रम, —आश्रयः मण्डप, शरणस्थान,—इन्द्रः,—ईशः,—ईश्वरः राजा,—इष्ट (वि०) लोकप्रिय (ष्टः) एक प्रकार की चमेली,—उद्गारणम् यश, कीर्ति,—ओघः जनसंमर्द, भीड़, जमघट,—कारिन् (पुं०) अलङ्कार, —चक्षुस् (नपुं०) 'लोकलोचनं' सूर्य,—त्रा छाता, छतरी,—त्रेशः राजा,—पदः 1. जनसमुदाय, वंश, राष्ट्र · याज्ञ० १।३६० 2. राजधानी, साम्राज्य, बसा हुआ देश —जनपदे न गदः पदमादधौ· -रघु० ९।४, दाक्षिणात्ये जनपदे—पंच० १, मेघ० ४८ 3. देश (विप० पुर, नगर)—जनपदवधूलोचनैः पीयमानः—मेघ० १६ 4. जनसाधारण, प्रजा (विप० प्रभु) 5. मनुष्यजाति, —पदिन् (पुं०) किसी जनसमुदाय या देश का राजा, —प्रवादः 1. अफ़वाह, किंवदन्ती, जनश्रुति 2. लोकापवाद, बदनामी,—प्रिय (वि०) 1. लोक हितेच्छु 2. सर्वप्रिय,—मर्यादा सर्वसम्मत प्रथा,—रञ्जनम् लोगों को सुख देना, लोकप्रियता का प्रसाद प्राप्त करना, —ल्लः 1. किंवदन्ती 2. बदनामी, लोकापवाद,—लोकः ऊपर के सात लोकों में से पाँचवाँ, महर्लोक के ऊपर स्थित लोक,—वादः (जनेवादः भी) 1. समाचार, जनश्रुति 2. लोकापवाद,—व्यवहार लोकप्रिय चलन, —श्रुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध,—श्रुतिः (स्त्री०) किंवदन्ती, जनरव, - संबाध वि० घना बसा हुआ, —स्थानम् दण्डक वन के एक भाग का नाम—रघु० १२।४२, १३।२२, उत्तर० १।२८, २।१७।

जनक (वि०) (स्त्री०—निका) [जन्+णिच्+ण्वुल्] जन्म देने वाला, पैदा करने वाला, कारण बनने वाला या उत्पन्न करने वाला; क्लेशजनक, दुःखजनक आदि, —कः 1. पिता, जन्म देने वाला 2. विदेह या मिथिला के प्रसिद्ध राजा, सीता का धर्मपिता। वह अपने प्रभूत ज्ञान, अच्छे कार्य और पवित्रता के कारण प्रसिद्ध था। राम के द्वारा सीता का परित्याग किये जाने पर उन्होंने वैराग्य ले लिया, सुख और दुःख के प्रति उदासीन हो गये और अपना सारा दार्शनिक चर्चा में बिताया। याज्ञवल्क्य मुनि जनक के पुरोहित और परामर्श दाता थे। सम०—आत्मजा, - तनया, -- नन्दिनी,—सुता जनक की पुत्री सीता के विशेषण।

जनङ्गमः [जनेभ्यो गच्छति बहिः, जन+गम्+खच्, मुमागमः] चाण्डाल।

जनता [जनानां समूहः तल्] 1. जन्म 2. लोगों का समूह, मनुष्य जाति, समुदाय—पश्यति स्म जनता दिनात्यये पार्वणी शशि दिवाकरादिव रघु० ११।८२, १५।६७, शि० २।१४।

जनन (वि०) [जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला आदि,—नम् 1. जन्म, पैदा होना,— यावज्जननम् तावन्मरणम् - मोह० १३ 2. पैदा करना, उत्पादन करना, सृजन करना—क्षीभाजननात्—कु० १।४२ 3. साक्षात्कार, प्रत्यक्षीकरण, उदय 4. जीवन, अस्तित्व—यदेव पूर्वं जनने शरीरं सा दक्षरोषात्सुदती ससर्ज—कु० १।५३, शि० ५।२, गोत्र, कुल, वंशपरंपरा।

जननिः (स्त्री०) [जन्+अनि] 1. माता 2. जन्म।

जननी [जन्+णिच्+अनि+ङीप्] 1. माता 2. दया, दयालुता करुणा 3. चमगादड़ 4. लाख।

जनमेजयः [जनान् एजयति इति जन्+एज्+णिच्+खश्, मुमागमः] हस्तिनापुर का एक प्रसिद्ध राजा, परीक्षित का पुत्र और अर्जुन का पोता (जनमेजय का पिता साँप के काटे जाने से मरा, इसलिए जनमेजय ने उस क्षति का प्रतिशोध करने के लिए संसार से सर्पजाति का समूल विनाश करने के लिए दृढ़ संकल्प किया। तदनुसार एक सर्पयज्ञ का आरंभ किया गया जिसमें तक्षक को छोड़ कर और सब सर्प जला दिये गये।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आस्तिक ऋषि के बीच में पड़ने से तक्षक के प्राण बचे। और सर्पयज्ञ बन्द कर दिया गया। इस यज्ञ के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई, राजा ने भी ब्रह्महत्या के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उस कथा को ध्यानपूर्वक सुना)।

जनयितृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [जन्+णिच्+तृच्] पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता—(पुं०) पिता।

जनयित्री [जनयितृ+ङीप्] माता।

जनस् (नपुं०) [जन्+णिच्+असुन्] दे० जन ३।

जनिः, जनिका, जनी (स्त्री०) [जन्+इन्, जनि+कन्+टाप्, जनि+ङीष्] 1. जन्म, सृजन, उत्पादन 2. स्त्री 3. माता 4. पत्नी 5. स्नुषा, पुत्रवधू।

जनित (वि०) [जन्+णिच्+क्त] 1. जिसे जन्म दिया गया है 2. पैदा किया हुआ, सृजन किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ।

जनितृ (पुं०) [जन्+णिच्+तृच्] पिता।

जनित्री [जनितृ+ङीप्] माता।

जनु (नृ) (स्त्री०) [जन्+उ, जनु+ऊङ्] जन्म, उत्पत्ति।

जनुस् (नपुं०) [जन्+उसि] 1. जन्म—धिग्वारिधीनां जनुः—भामि० १।१६ 2. सृष्टि, उत्पादन 3. जीवन, अस्तित्व—जनुः सर्वंसह्यं जयति ललितोत्तंभ भवतः—भामि० २।५५। सम०—जन्मान्ध=जन्म से अन्धा, जन्मान्ध।

जन्तुः [जन्+तुन्] 1. जानवर, जीवित प्राणी, मनुष्य —शा० ५।२, मनु० ३।७१ 2. आत्मा, व्यक्ति 3. निम्न जाति का जानवर। सम०—कम्बु: 1. घोंघे की सीपी 2. घोंघा,—फल: गूलर का वृक्ष।

जन्तुका [जन्तु+कै+क+टाप्] लाख।

जन्तुमती [जन्तु+मत्+ङीप्] पृथ्वी।

जन्मन् [जन्+मनिन्] 1. जन्म—तां जन्मने शैलवधूं प्रपेदे—कु० १।२१ 2. मूल, उद्गम, उत्पत्ति, सृष्टि —आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः—हि० प्र० ४४, कु० ५।६० (समास के अन्त में) से उत्पन्न या उदय—सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा दवाग्निः—मेघ० ५३ 3. जीवन, अस्तित्व—पूर्वेष्वपि हि जन्मसु मनु० ९।१००, ५।३८, भग० ४।५ 4. जन्म-स्थान 5. उत्पत्ति। सम०—अक्षिप: 1. शिव का विशेषण 2. (ज्योतिष में) जन्म लग्न का स्वामी,—अन्तरम् दूसरा जन्म,—अन्तरीय (वि०) दूसरे जन्म से सम्बद्ध या किसी दूसरे जन्म में किया हुआ,—अन्ध (वि०) जन्म से ही अन्धा,—अष्टमी भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण का जन्म दिन,—कील: विष्णु का विशेषण, —कुण्डली जन्म-पत्रिका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय की ग्रहों की स्थिति दर्शायी गई हो, —कृत् (पुं०) पिता,—क्षेत्रम् जन्म स्थान,—तिथि: (पुं०, स्त्री०)—दिनम्,—दिवसः जन्मदिन,—दः (वि०) पिता,—नक्षत्रम्,—भम् जन्म के समय का नक्षत्र, —नामन् (नपुं०) जन्म से बारहवें दिन रक्खा गया नाम,—पत्रम्,—पत्रिका वह पत्र या पत्रिका जिसमें जन्म लेने वाले बालक के जन्म काल के नक्षत्र या ग्रह आदि बतलाये गये हों,—प्रतिष्ठा 1. जन्म स्थान 2. माता-शा० ६,—भाज् (पुं०) जानवर, जीवित प्राणी —मोदन्तां जन्मभाजः सततं—मृच्छ० १०।६०, —भाषा मातृभाषा—यत्र स्त्रीणामपि किमपरं जन्म-भाषानदेव प्रत्यावासं विलसति वचः संस्कृतं प्राकृतं च—विक्रम० १८।६,—भूमिः (स्त्री०) जन्म स्थान, स्वदेश,—योगः जन्मपत्र,—रोगिन् (वि०) जन्म का रोगी, जिसे जन्मसे ही रोग लगा हो,—लग्नम् वह लग्न जो जन्म के समय हो,—वर्त्मन् (नपुं०) योनि,—ओघ्नम् जन्म से प्राप्त कर्तव्यों का परिपालन,—साफल्यम् जीवन के उद्देश्यों की सिद्धि,—स्थानम् 1. जन्मभूमि, स्वदेश, वह घर जहाँ जन्म लिया है 2. गर्भाशय।

जन्मिन् (पुं०) [जन्मन्+इनि] जानवर, जीवधारी प्राणी।

जन्य (वि०) [जन्+ण्यत्, जन्+णिच्+यत् वा] 1. जन्म लेने वाला, पैदा होने वाला 2. जात, उत्पन्न, 3. (समास के अन्त में) से उत्पन्न, जनित 4. किसी वंश या कुल से संबद्ध 5. गंवारू, सामान्य 6. राष्ट्रीय,—न्यः 1. पिता 2. भित्र, दूल्हे का सम्बन्धी या सेवक 3. साधारण जन 4. जनश्रुति, किंवदन्ती,—न्यम् 1. जन्म, उत्पत्ति, सृष्टि 2. जात, सृष्ट, उत्पादित वस्तु, (विप० जनक)—जन्यानां जनकः कालः—भाषा० ४५; जनकस्य स्वभावो हि जन्ये तिष्ठति निश्चितम्—शब्द०, 3. शरीर 4. जन्म के समय होने वाला अपशकुन 5. बाजार, मण्डी, मेला 6. संग्राम, युद्ध—तत्र जन्यं रघोर्घोरं पार्वतीयैरगंस्त भूत्—रघु० ४।७७ 7. निन्दा, अपशब्द,—न्या 1. माता की सहेली 2. वधू का सम्बन्धी वधू की सेविका—याहीति जन्यावदरकुमारी—रघु० ६।३० 3. सुख, आनन्द 4. स्नेह।

जन्युः [जन्+युच् वा० न अनादेशः] 1. जन्म 2. जानवर जीवधारी, प्राणी 3. आग 4. सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

जप् (भ्वा० पर०—जपति, जपित या जप्त) 1. मन्द स्वर में उच्चारण करना, मन ही मन में बार २ कहना, गुन-गुनाना—जपन्नपि तदैवालापमन्त्रावलिम्—गीत० ५, हरिरिति हरिरिति जपति सकामम्—४, नै० ११।२६ 2. मन्त्रों का गुनगुनाना, मन ही मन प्रार्थना करना —मनु० ११।१९४, २५१, २५९, उप०—, कान में कहना कानाफूसी करके अपने अनुकूल कर लेना, विद्रोह के लिए भड़काना या उकसाना—उपजप्यानुपजपेत्—मनु० ७।१९७।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जपः [जप्+अच्] 1. मन ही मन प्रार्थना करना, धीमे स्वर से किसी मन्त्र को बार २ दुहराना 2. वेदपाठ करना, देवताओं के नाम बार २ दुहराना—मनु० ३।७४, याज्ञ० १।२२ 3. मन्द स्वर से उच्चरित प्रार्थना। सम०—परायणः (वि०) प्रार्थना मन्त्रों को धीमे स्वर में उच्चारण करने में व्यस्त,—माला जप करने की माला।

जप्यः,—प्यम् [जप्+यत्] 1. मन्द स्वर से या मन ही मन में बोली जाने वाली प्रार्थना 2. अपने योग्य प्रार्थना 3. जपी हुई प्रार्थना।

जभ्, जम्भ् i (भ्वा० पर०—जभति, जम्भति) संभोग करना, तु० यभ् ii (भ्वा० आ०—जभते, जंभते) जम्हाई लेना, उबासी लेना।

जभ् (भ्वा० पर० जभति) खाना।

जमदग्निः (पुं०) भृगुवंश में उत्पन्न एक ब्राह्मण, परशुराम का पिता, (जमदग्नि, सत्यवती और ऋचीक का पुत्र था, वह बड़ा ही पुण्यात्मा ऋषि था, कहते हैं कि उसने वेदों का पूर्ण स्वाध्याय किया था, उसकी पत्नी रेणुका थी जिससे पाँच पुत्र हुए। एक दिन रेणुका स्नान करने के लिए नदी पर गई तो वहाँ उसने किसी गंधर्व-दम्पती (कुछ के मतानुसार वह चित्ररथ और उसकी पत्नी थे) को जल में क्रीडा करते देखा। उस मनोहर दृश्य को देखकर उसके मन में ईर्ष्या जागी और वह उन दूषित विचारों से कलुषित हो गई, नदी में स्नान करने पर भी वह पवित्र न हो सकी जब वह वापिस घर आई तो क्रोध के अवतार जमदग्नि ने उसे सतीत्व की कान्ति से हीन देखकर बड़ा धमकाया और अपने पुत्रों को उसका सिर काट देने की आज्ञा दी। परन्तु पहले चारों पुत्रों ने ऐसा क्रूर दुष्कृत्य करने में आनाकानी की। परशुराम उनका सबसे छोटा पुत्र था। उसने तुरंत पिता की आज्ञा का पालन किया फलतः एक कुल्हाड़े से अपनी माता का सिर काट डाला। इससे जमदग्नि का क्रोध शांत हो गया और उसने परशुराम से वरदान मांगने के लिए कहा। दयालु परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की जो तुरंत ही स्वीकार की गई)।

जमनम् जेमनम्।

जम्पती (पुं० द्वि० व०) [जाया च पतिश्च] पति और पत्नी—नु० दम्पती और जायापती।

जम्बालः [जम्भ्+घञ्, नि० भस्य बः=जम्ब+आ+ला+क] 1. गारा कीचड़ 2. काई, सेवार 3. केवड़े का पौधा।

जम्बालिनी [जम्बाल—इनि+ङीप्] एक नदी।

जम्बीरः [जम्भ्+ईरन्, ब आदेशः] चकोतरे का (नींबू की जाति का) पेड़,—रम् चकोतरा।

जम्बु, बू (स्त्री०) [जम्+कु पृषो० बुकागमः, जम्बू+ऊङ्] जामुन का पेड़, जामुन (समा०—खण्डः,—द्वीपः मेरु पहाड़ के चारों ओर फैले हुए सात द्वीपों में से एक।

जम्बु (बू) कः (स्त्री०—की) [जम्बु (बू)+कै+क] 1. गीदड़ 2. नीच मनुष्य।

जम्बूलः [जम्ब् (बूं) तन्नाम फलं लाति ला+क] एक प्रकार का वृक्ष, केनड़ा,—लम् दूल्हे के मित्रों एवं दुल्हन की सखियों द्वारा किया गया परिहास या परिहासात्मक अभिनन्दन।

जम्भः [जम्भ्+घञ्] 1. जबाड़ा (प्रायः ब० व०) 2. दांत 3. खाना 4. कुतर-कुतर कर टुकड़े करना 5. खण्ड, अंश 6. तरकस 7. ठोढी 8. जम्हाई, उबासी 9. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था 10. चकोतरे का पेड़। सम०—अरातिः,—द्विष्, भेदिन्—रिपुः इन्द्र का विशेषण,—अरिः 1. आग 2. इन्द्र का वज्र 3. इन्द्र।

जम्भका, जम्भा, जम्भिका [जम्भ+कन्+टाप्, जम्भ्+णिच्+अ+टाप्, जम्भा+कन्+टाप्, इत्वम्] जमुहाई, उबासी।

जम्भ (भी) रः [जम्भं भक्षणहर्षिं राति ददाति-जम्भ+रा+क, जम्भ्+ईरन्] नींबू या चकोतरे का पेड़।

जयः [जि+अच्] 1. जीत, विजयोत्सव, विजय, सफलता, जीतना (युद्ध में खेल में या मुकदमे में) 2. संयम दमन, जीतना—जैसा कि 'इन्द्रियजय' में 3. सूर्य का नाम 4. इन्द्र का पुत्र जयन्त 5. पाण्डव राजकुमार युधिष्ठिर 6. विष्णु का सेवक 7. अर्जुन का विशेषण, —या 1. दुर्गा 2. दुर्गा का सेवक 3. एक प्रकार का झण्डा। सम०—आवह (वि०) विजय दिलाने वाला, —उद्भव (वि०) विजयोल्लास मनाने वाला,—कोलाहलः 1. जयघोष 2. पासों से खेलना,—घोषः—घोषणम्, —णा विजय का ढिंढोरा,—तन्त्रा जीत का डंका, एक प्रकार का ढोल जिसे विजय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है,—पत्रम् विजय का अभिलेख,—पालः 1. राजा 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, —पुष्पकः एक प्रकार का पासा,—मङ्गलः 1. राजकीय हाथी 2. ज्वरनाशक उपचार,—वाहिनी सेना (इन्द्राणी) का विशेषण,—शब्दः 1. जयध्वनि 2. चारणों द्वारा उच्चरित जयजयकार,—स्तम्भः विजय मनाने के लिए बनाया गया स्तम्भ, विजयसूचक स्तम्भ—निचखान जयस्तम्भान् गजाश्वोत्तोऽन्तरेणु सः—रघु० ४।३६, ६९,

जयद्रथः [जयत् रथो यस्य -ब० स०] सिन्धु प्रदेश का राजा, दुर्योधन का बहनोई, (क्योंकि धृतराष्ट्र की पुत्री दुश्शला जयद्रथ को ब्याही थी) [एक बार जयद्रथ शिकार के लिए गया—वहाँ जङ्गल में उसे द्रौपदी दिखाई दी। उसने द्रौपदी से अपने लिए और अपने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तापियों के लिए भोजन माँगा। अपनी जादू की थाली से द्रौपदी ने उनको यथोचित मात्रा में प्रातराश परोस दिया। उसके इस कार्य से तथा उसके सौन्दर्य से वह इतना अधिक मुग्ध हुआ कि उसने द्रौपदी को अपने साथ भाग चलने के लिए कहा। उसने क्रोध के साथ उसकी बात को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह उसे बलपूर्वक उठा कर ले जाने में सफल हो गया --क्योंकि द्रौपदी के पति उस समय बाहर शिकार के लिए गये हुए थे। जब वह वापस आये तो उन्होंने उस अपहर्ता का पीछा किया, उसे पकड़ कर द्रौपदी को मुक्त कराया--तथा बहुत तिरस्कृत हो जाने पर उसे भी छोड़ दिया। उसने अभिमन्यु की मारने के उपाय ढूंढने में बड़ा भाग लिया। अन्त में वह अर्जुन के द्वारा महाभारत की लड़ाई में मारा गया]।

जयनम् [जि+ल्युट्] 1. जीतना, दमन करना 2. हाथी और घोड़ों आदि का कवच। सम०—युज् (वि०) 1. जीनपोश से सुसज्जित 2. विजयी।

जयन्त: [जि+अच्, अन्तादेश:] 1. इन्द्र के पुत्र का नाम, --पौलोमीसमभर्तारं जयन्तेन पुरन्दर:—विक्रम० ५।१४, ज० ७।२, रघु० ३।२३ ६।८ 2. शिव का नाम 3. चन्द्रमा, - न्ती 1. झण्डा या पताका 2. इन्द्र की पुत्री 3. दुर्गा। सम०—पत्रम् (विधि में) न्यायाधीश द्वारा दी गई लिखित व्यवस्था (दोनों दलों में से किसी एक के पक्ष में) 2. अश्वमेध यज्ञ के लिए छोड़े हुए घोड़े के मस्तक पर लगा नामपट्ट।

जयिन् (वि०) [जेतुं शीलमस्य—जि+इनि] 1. विजेता, पराजेता--विरूपाक्षस्य जयिनीस्ता: स्तुवे वाग्मिलोचना: —विद्धशा० 2. सफल (मुकदमा) जीतने वाला —यात्ञ० २।७९ 3. मनोहर, आकर्षक हृदय का दमन करने वाला—जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादय: —मा० १।३६, (पुं०) विजेता, जयशील—गोरस्या-नेवमाक्रमन्तस्तांस्तान्जनपदाञ्जयी - रघु० ४।३४।

जय्य (वि०) [जि+यत्] जीतने के योग्य, प्रहार्य, जो जीता जा सके (विप० जेय)।

जरठ (वि०) [जृ+अठच्] 1. कठोर, ठोस 2. पुराना, अधिक आयु का --अयमति जरठा: प्रकामपूर्वा: परिणत-दिवसैरिवाभिभाति - शि० ४।२९ (यहाँ 'जरठ' का अर्थ 'कठोर' भी है) 3. क्षीण, जीर्ण, निर्बल 4. पूर्णविकसित, पक्का, परिपक्व जरठकमल —शि० ११।१६ 5. कठोर हृदय, क्रूर, ठ: पाण्डु, पाँचों पाण्डवों के पिता।

जरण (वि०) [जृ+ल्युट्] बूढ़ा, क्षीण, निर्बल।

जरत् (वि०) [जृ+शतृ] 1. बूढ़ा अधिक आयु का 2. निर्बल जीर्ण। सम०—काक: एक ऋषि जिसने वासुकि सर्प की बहन से विवाह किया था [एक दिन वह अपना सिर अपनी पत्नी की गोद में रखे सो रहे थे, सूर्य डूबने को था। पत्नी ने यह देख कर कि सध्याकालीन प्रार्थना का समय बीता जा रहा है, आहिस्ता से जगा दिया। परन्तु नींद में बाधा पहुँचने के कारण जरत्कारु को क्रोध आ गया और वह अपनी पत्नी को छोड़ कर सदा के लिए वहाँ से चल दिया। जाते समय वह अपनी पत्नी को बता गया कि तुम गर्भवती हो और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हें सम्भालने वाला होगा --साथ ही साथ वह सर्प वंश के क्षय को बचावेगा। यह पुत्र ही 'आस्तीक' था],—गव: बूढ़ा बैल—दारिद्र्यस्य परा मूर्ति र्यन्मानद्यविशाल्लता, जरद्गवधन: शर्वस्तथापि परमेश्वर: - पंच० २।१५९।

जरती [जृ+शतृ+ङीप्] एक बूढ़ी नारी।

जरत्: [जृ+अत्च्, अन्तादेश:] 1. बूढ़ा आदमी 2. भैंसा।

जरा [जृ+अङ्+टाप्] ('जरा' शब्द के स्थान पर कर्म० द्वि० व० के आगे अजादि विभक्ति परे होने पर विकल्प से 'जरस्' आदेश हो जाता है) 1. बुढ़ापा—कैकेयी-मक्लेशवाह पलितच्छद्मना जरा —रघु० १२।२, तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरया (जरसा) विना--१।२३ 2. क्षीणता, निर्बलता, बुढ़ापे के कारण दुर्बलता 3. पाचनशक्ति 4. एक राक्षसी का नाम—दे० 'जरासंध' नी०। सम०—अवस्था क्षीणता,—जीर्ण (वि) वयोवृद्ध, निर्बलीकृत, दुर्बल--भर्तृ० ३।१७,--सन्ध: एक प्रसिद्ध राजा और योद्धा, बृहद्रथ का पुत्र (एक पौराणिक कथा के अनुसार यह अलग-अलग दो टुकड़ों के रूप में पैदा हुआ, 'जरा' नामक राक्षसी ने इन दोनों टुकड़ों को जोड़ दिया—इसीलिए यह 'जरासन्ध' के नाम से प्रख्यात हुआ। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यह मगध और चेदि देश का राजा बना। जब इसने सुना कि कृष्ण ने मेरे जामाता कंस को मार डाला तो इसने बड़ी भारी सेना लेकर १८ बार मथुरा को घेरा -परन्तु हर बार मुँहकी खानी पड़ी। जब युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया तो अर्जुन, कृष्ण और भीम ब्राह्मण का रूप धारण करके केवल अपने शत्रु को मार कर बन्दी राजाओं को कैद से छुड़ाने के लिए जरासन्ध को राजधानी में गये परन्तु जरासन्ध ने बन्दी राजाओं को छोड़ने से इंकार किया, तब भीम ने उसे द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध बाहर निकल कर आया —दोनों में घोर युद्ध हुआ—पर अन्त में जरासन्ध भीम के हाथों मारा गया]।

जरायणि: [जराया अपत्यम्—फिञ्] जरासन्ध का नाम।

जरायु [जरां गतं—इ+ञुण्] 1. सांप की केंचुली 2. भ्रूण की ऊपरी झिल्ली 3. योनि, गर्भाशय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम०—ज (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न, पिण्डज—मनु० १।४३, कु० ३।४२ पर मल्लि०।

जरित (वि०) [जरा+इतच्] 1. बूढ़ा, वयोवृद्ध 2 क्षीण, निर्बल।

जरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [जरा+इनि] बूढ़ा, वयोवृद्ध।

जरुथम् [जृ+ऊथन्] मांस।

जर्जर (वि०) [जर्ज+अर] 1. बूढ़ा, निर्बल, क्षीण 2. जीर्ण, फटा पुराना, टूटा-फूटा, तोड़कर टुकड़े २ किया हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ, छोटे २ टुकड़ों में विभक्त —जराजर्जरितविषाणकोटयो मृगाः कां० २१, गात्रं जराजर्जरितं विहाय—महावी० ७।१८, विसर्पन् धारा-भिर्लुठति धरणीं जर्जरकणः—उत्तर० १।२९, भि० ४।२३ 3. घायल, क्षतविक्षत 4 झीझरा, खोखला (जैसे कि टूटे घड़े की आवाज)।—रम् दन्द का खण्डा।

जर्जरित (वि०) [जर्जर+णिच्+क्त] 1. बूढ़ा, क्षीण, निर्बल 2. घिसा-पिसा, झीरे-झीर, फटा-पुराना, चिथड़े चिथड़े हुआ 3. पूरी तरह पराभूत, अयोग्य समर-शरजर्जरितापि सा प्रमाते—गीत० ८।

जर्जरीक (वि०) [जर्जर+ईक नि० साधु:] 1. बूढ़ा, क्षीण 2. जीर्ण-शीर्ण, छेदों से भरा हुआ, सछिद्र।

जर्तृ [जृ+तृच्, र आदेशः] 1, योनि, 2. हाथी।

जल (वि०) [जल्+अच्] स्फूर्तिहीन, ठण्डा, शीतल, जड़।

जलम् पानी—शतस्य कूपोऽयमिति बुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति पञ्च० १।३२२ 2. एक सुगन्धित औषधि का पौधा, खस 3. शीतलता 4. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। सम० अञ्चलम् 1. झरना 2. निर्झर 3. कार्ड,—अञ्जलिः 1. चुल्लू भर पानी 2. मृतक के पितरों को जल तर्पण —कुरुत्रमालाद्य कुतो जलाञ्जलिः—चाण० ९५, मानस्यानि जलाञ्जलिः सरभसं लोके न दत्तो मया अमरु ९७ (यहाँ जला-ञ्जलि का अर्थ है—छोड़ देना, त्यागना),—अटनः सारस,—अटनी जोक, —अण्डकः घड़ियाल, मगरमच्छ, अत्ययः शरद्, पतझड़,—अधिपतिः—तम् वरुण का विशेषण, (तम्) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पुञ्ज,—अधिप वरुण का विशेषण, —अधिष्ठानं कूआँ,—अर्कः जल में पड़ने वाला सूर्य का प्रतिबिम्ब,—अर्जवः 1. वर्षा ऋतु 2. मीठे पानी का समुद्र,—अर्णव (वि०) प्यासा,—अवतारः नदी के किनारे नाव पर उतरने का घाट, -अल्लीला बड़ा चौकोर तालाब,—अलुकः जोक, - आकरः झरना, फौवारा, कूआँ, -आकर्षकः,—काङ्क्षः,—काङ्क्षिन् (पुं०) हाथी,—आखुः ऊदबिलाव, —आत्मिका जोक, —आधारः तालाब, झील या सरोवर, जलाशय,—आयुका जोक,—आई (वि०) गीला (ईम्) गीले कपड़े (ईः) पानी से तर पट्ठा,—आलीका जोक,—आवर्तः भँवर, जल-गुल्म,—आशयः 1. तालाब, सरोवर, जलाशय 2.मछली 3. समुद्र,—आश्रयः 1. तालाब, जलाशय,- आह्लम् कमल,—इन्द्रः 1. वरुण का विशेषण 2. समुद्र, -इन्धनः वाडवाग्नि,—इभः जलहस्ती, ईशः,—ईश्वरः 1. वरुण का विशेषण 2. समुद्र, उच्छ्वासः नाली, परीवाह 2. छलक कर बहना,—उदरम् जलोदर नाम का रोग जिसमें पेट की त्वचा के नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है,- उद्भव (वि०) जलचर, —उरगः,—ओकस् (पुं०)—ओकसः जोक,- कण्टकः मगरमच्छ,—कपिः सूंस,— कपोतः जलकबूतर,—करङ्कः 1. एक खाल 2. नारियल 3. बादल 4. तरङ्ग, कमल,— कल्कः कीचड़, काकः जलकौआ, कान्तः हवा,—कान्तारः वरुण का विशेषण,—किराटः मगरमच्छ, घड़ियाल,- कुक्कुटः जलमुर्ग, मुर्गाबी,—कुन्तलः,—कोशः काई, सेवारज,—कृपी 1. झरना, कूआं 2. तालाब, 3. भँवर,—कर्मः सूंस, —केलिः (पुं०)—क्रीडा (स्त्री०) जल में विहार करना, एक दूसरे पर पानी उछालना, क्रिया मृतकों का पितरों को जल-तर्पण देना,—गुल्मः 1. कछुवा 2. चौकोर तालाब 3. भँवर,—चर (वि०) (अलेचर' भी) जल में रहने वाले जीव-जन्तु °आजीवः °जीवः मछवा, चारित्र 1. जलजन्तु 2. मछली, ज (वि० जल में उत्पन्न या पैदा, (जः) 1. जलजन्तु 2. मछली 3. काई 4. चन्द्रमा (ज:, -जम्) 1. सीप 2. शङ्ख -अधरोष्ठे निवेश्य दध्मौ जलजं कुमारः—वेणी० ७।६३, ११।६०, (जम्) कमल, °आजीवः मछवा, °आसनः ब्रह्मा का विशेषण - वाचस्पतिरयंभेदं प्राज्जलिर्जल-जासनम्—कु० २।३०,—जन्तुः 1. मछली 2. कोई जल का जन्तु,—जन्तुका जोक,जन्मन् कमल, जिह्वः मगर-मच्छ —जीविन् (पुं०) मछवाहा।—तरङ्ग 1. लहर 2. एक वाद्य विशेष - जिसमें जल से भरा हुआ कटोरा (छड़ों के आघात से) मन्द स्वर पैदा करता है। —ताडनम् (घा०) पानी पीटना (आलं०) व्यर्थ काम, -त्रा छाना,—त्रासः जलातङ्क रोग, पागल कुत्ते के काटने से हड़कायापन,—द्रः 1. बादल- आयन्ते विरलालोके जलदा इव सज्जनाः—पञ्च० १।२९ 2. कपूर, °आसनः साल का वृक्ष, °आसमः वर्षाऋतु, °कालः वर्षाऋतु, °क्षयः शरद्, पतझड़, -दर्दुरः एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, - देवता जलदेवी, जलपरी, -द्रोणी डोलची, —धरः 1. बादल 2. समुद्र, धारा पानी की धार, —धिः 1. समुद्र 2. दसवीं 3. चार की संख्या, °गा नदी, °जः चाँद, °जा लक्ष्मी, धन की देवी °दिशना पृथ्वी,—नकुलः ऊदबिलाव, नरः जलपुरुष (इसके शरीर का निचला आधा भाग मछली के आकार का होता है),—निधिः 1. समुद्र 2. चार की संख्या,—निर्गमः 1. नाली, पानी का निकास 2. जलप्रपात, झरने के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पानी का नदी में गिरना, --नीडिः काई, सेवार,—पटलम् बादल,--पतिः 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण, --पथः जलयात्रा—रघु० १७।८१, -पारावतः जलकपोत,--पित्तम् आग,- पुष्पम् पानी में होने वाला फूल, कमल आदि,--पूरः 1. जल की बाढ़ 2. पानी की नदी, --पृष्ठजा काई, सेवार,—प्रदानम् मृतक पितरों को जल तर्पण,—प्रलयः जल के द्वारा विनाश, --प्रान्तः नदी का किनारा,--प्रायम् जलबहुलप्रदेश· -जलप्रायमनूप स्यात् -अमर०,--प्रियः 1. चातक पक्षी 2. मछली, —प्लवः ऊदबिलाव,—प्लावनम् जलप्रलय, बाढ़,—बधुः मछली,—बालकः,--बालकः विंध्य पहाड़ · बालिका बिजली,--बिडालः ऊदबिलाव,--बिम्बः, -बिम्बम् बुलबुला,--बिल्वः 1. एक (जोकोर) तालाब, सरोवर 2. कछुवा 3. केंकड़ी,—भू (वि०) जल में उत्पन्न,--भूः (पुं०) 1. बादल 2. पानी जमा करके रखने का स्थान 3. एक प्रकार का कपूर,—मक्षिका पानी में रहने वाला एक कीड़ा,—मण्डूकम्—एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, जल दर्दुर,—मार्गः नाली, जलप्रणाली, --मुच् (पुं०) बादल—मेघ० ६९ 2. एक प्रकार का कपूर, —मूतिः शिव का विशेषण,- -मृत्तिका ओला,—यन्त्रम् 1. पानी निकालने का यन्त्र —रहट 2. फव्वारा °गृहम्, °निकेतनम्, °मन्दिरम् जल के मध्य बना भवन (ग्रीष्म भवन) या मकान जिसके आस पास फुहारे हों—क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम्--ऋतु० १।२,—यात्रा जल मार्ग से नाव आदि के द्वारा यात्रा, --यानम् पानी की सवारी--जहाज,--रक्षकुः जलकुक्कुट,--रण्डः,--रण्डकः 1. भंवर 2. पानी की बूंद, बुंदावांदी, जलकण 3. साँप, ---रसः समुद्री या सांभर नमक, --राशिः समुद्र,--रुहः,--रुहम् कमल, --रूपः मगरमच्छ,—लता लहर, झाल · वायसः कौड़िल्ला पक्षी,—वासः जल में बसना, —वाहः बादल, -वाहनी पानी की मोरी,--विषवत् शारदीय विषुवत् (२२ या २३ सितम्बर) · -वृश्चिकः झींगा मछली,—व्यालः पनियल साँप, --शयः,—शयनः, ---शायिन् (पुं०) विष्णु का विशेषण,--शूकम् काई, सेवार, --शूकरः मगरमच्छ,—शीर्षः सोखा, अनावृष्टि --सर्पिणी जोंक,—सूचिः (स्त्री०) 1. गंगाई साँप 2. एक प्रकार की मछली 3. कौवा 4. जोंक,--स्थानम्, —स्थायः तालाब, सरोवर, जलाशय,--हम् छोटा जलमन्दिर (ग्रीष्म भवन) जो पानी के मध्य बना हो या जिसमें फौव्वारे लगे हों। --हस्तिन् (पुं०) जलहाथी,—हारिणी नाली, --हासः 1. झाग 2. समुद्रफेन (मसीलीपी नामक जलचर का भीतरी कवच)।

जलङ्गमः [जल + गम् + खच्, मुमागमः] चाण्डाल।

जलधरः [जलेन धरयति परिणमति—जल + धर् + ल्युट्] 1. बादल 2. एक प्रकार का कपूर।

जलाका, जलालूका, जलिका, जलूका, जलूका [जले आकायति प्रकाशते—जल + आ + कै + क + टाप्, जले अलति गच्छति-जल + अल् + उक + टाप्, जल + ऊन् टाप्, जलम् ओको यस्य पृषो०] जोंक।

जलेजम्, जलेजातम् [जले + जन् + ड, क्त वा सप्तम्या अलुक्] कमल।

जलेशयः [जले + शी + अच्, सप्तम्या अलुक्] 1. मछली 2. विष्णु का नाम।

जल्प् (स्वा० पर० जल्पति, जल्पित) बोलना, बातें करना, संलाप करना—अविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण—उत्तर० १।२१, एकेन जल्पन्नल्पाक्षरम् —पंच० १।११६, भट्टि० १।८२ 2. गुनगुनाना, अस्पष्ट उच्चारण करना 3. प्रलाप करना, किंचे-किंच करना, बालकलरव करना, कलकलध्वनि करना, अभि —, बोलना, बातें करना, प्र—, 1. बोलना, कहना, बातें करना—कु० १।४५, 2. पुकारना—सम्—, बोलना, संलाप करना।

जल्पः [जल्प् + घञ्] 1. वक्तृता, भाषण 2. प्रवचन, बातचीत 3. बालकलरव, प्रलाप, गप-शप 4. वादविवाद, वाग्युद्ध।

जल्प (पा) क (वि०) (स्त्री—ल्पिका) [जल्प् + ण्वुल्, पाकन् वा,] बातूनी, गप्पी।

जव (वि०) [जु + अप्] फुर्तीला, चुस्त,—वः (क) वेग, फुर्ती, तेजी, द्रुतता—जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् —भर्तृ० ३।१२१, श० १।८, (ख) त्वरा, क्षिप्रता —अवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः—शि० १।१२ 2. वेग। सम०—अधिकः वेगवान् घोड़ा, द्रुतगामी घोड़ा,—अनिलः तेज हवा, आंधी।

जवन (वि०) (स्त्री०—नी) [जु + ल्युट्] तेज, फुर्तीला, वेगवान् रघु० ९।५९,—नः द्रुतगामी घोड़ा, तेज घोड़ा, —नम् बाल, इलायची, वेग।

जवनिका, जवनी [जूयते आच्छाद्यते अनया—जु + ल्युट् + ङीप्—जवनी + कन् + टाप्, ह्रस्वः = जवनिका] 1. कनात 2. चिक, पर्दा · नरः संसारान्ते विशति यमधानीजवनिकाम्—भर्तृ० ३।११२।

जवसः [जु + असच्] पशुओं के चरने योग्य घास।

जवा [जव + टाप्] अड़हुल, जपा।

जस् [स्वा० उभ० — जस्यति) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मारना।

जस् [दिवा० पर०—जस्यति) स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, ii (भ्वा० चुरा० पर०— जसति, जासयति) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना 2. अवज्ञा करना, अपमान करना, उद्—, मारना—निर्जीवलोज्जासयितुं जगद्दुहाम् --शि० १।३७, भट्टि० ८। १२०।

जहकः [हा + कन्, तित्वम्] 1. संभव 2. डालक 3. साँप की केंचुली।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जहत् (वि०) (स्त्री० —ती) [हा—शतृ] छोड़ने वाला, त्यागने वाला। सम० —लक्षणा, —स्वार्था लक्षणा का एक प्रकार (इसे 'लक्षणलक्षणा' भी कहते हैं) जिसमें शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ देता है परन्तु एक ऐसे अर्थ में प्रयुक्त होता है, जो किसी न किसी प्रकार उस मुख्यार्थ से सम्बद्ध है, उदा० 'गंगायां घोषः' (गंगा में घर) में 'गंगा' शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ कर 'गंगातट' को प्रकट करता है—तु० 'अजहल्स्वार्था' की भी।

जहानकः [हा+आनच्+कन्] महाप्रलय।

जहुः [हा—उ, द्वित्वम्] पशु का बच्चा।

जह्नुः [हा—नु, द्वित्वमाकारलोपश्च] सुहोत्र का पुत्र, एक प्राचीन राजा जिसने गंगा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। (जब गंगानदी भगीरथ की तपस्या के द्वारा स्वर्ग से इस धरा पर लाई गई तो मैदान में आकर उसने राजा जह्नु की यज्ञभूमि को पानी में डुबो दिया। जह्नु ने क्रुद्ध हो कर गंगा को पी डाला। देवता, ऋषि और विशेष कर भगीरथ ने उनके क्रोध को शान्त किया। जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा को अपने कानों के द्वारा बाहर निकालने की स्वीकृति दी इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री समझी गई और उसे जाह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुतनया, जह्नुनन्दिनी या जह्नुसुता आदि नामों से पुकारा गया—तु० रघु० ६।८५, ८।९५)।

जागरः [जागृ+घञ्] सुप्त। जागरण, जागना, जागते रहना। रात्रिजागरखेदो दिवाशयः रघु० ९।३४ 2. जाग्रत अवस्था की मनः सृष्टि 3 कवच, जिरहबख्तर।

जागरणम् [जागृ+ल्युट्] 1. जागना, प्रबुद्ध रहना 2. खबरदारी, सतर्कता।

जागरा [जागृ+अ+टाप्] दे० जागरण।

जागरित (वि०) [जागृ+क्त] जागा हुआ,—तम् जागना।

जागरित् (वि) (स्त्री० —त्री) जागरूक (वि०) [जागृ+तृच्, इडभाव च, जागृ+ऊक्] 1. जागरणशील, जागता हुआ, निद्राशून्य—स्वप्नो जागरूकस्य यायाद्यं वेद कस्तव—रघु० १०।३४ 2. खबरदार, सतर्क —वर्णाश्रमपरिक्षणजागरूकः—रघु० १४।१५, शि० २०। ३६।

जागर्तिः, जागर्या, जागर्यिका [जागृ+क्तिन्, जागृ+ण+यक्+टाप्, गुण, जागृ—शृ, रिङादेशः] जागरण, जागते रहना।

जागुडम् [जगुड+अण्] केसर, जाफ़रान।

जागृ (अदा० पर०—जागर्ति, जागरित) जागते रहना, खबरदार या सावधान रहना (आलं० भी)—सीदमसंजेतागार यथाकालं स्वपन्नपि—रघु० १७।५१, गुरौ षाड्गुण्यचिन्तायामार्य चार्य च जाग्रति—मुद्रा० ७।१३, रात को बैठ रहना—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी—भग० २।६९ 2. निद्रा से जगाया जाना, जागते रहना, आगे का देखना, दूरदर्शी होना।

जाघनी [जघन+अण्+ङीप्] 1. पुंछ 2. जंघा।

जाङ्गल [जङ्गल+अण्] 1. देहाती, विचित्रपम 2. जङ्गली 3. बर्बर, असभ्य 4. बंजर, ऊसर —लः चकोर, तीतर, —लम् 1. मांस 2. हरिण का मांस।

जाङ्गुलम् [जङ्गुल+अण्] जहर, विष।

जाङ्गुलिः, जाङ्गुलिकः [जङ्गुल+इञ्, ठक् वा] साँप के काटे का चिकित्सक, विषवैद्य।

जाङ्घिकः [जङ्घा+ठक्] 1. हरकारा, दूत 2. ऊँट।

जाजिन् (पु०) [जज्+णिनि] योद्धा, लड़ने वाला—जजौ-जोजाजिजज्जाजो—शि० १९।३।

जाठर (वि०) (स्त्री० री) [जठर+अण्] पेट से संबंध रखने वाला या पेट में होने वाला, उदरवर्ती, औदर, —रः पाचनशक्ति, जाठर रस।

जाड्यम् [जड+ष्यञ्] 1. ठंडक, शीतलता 2. अनासक्ति, आलस्य, निष्क्रियता 3. बुद्धि की मन्दता, बेवकूफी, जडता—तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य—भर्तृ० २।१५, जाड्यं धियो हरति—२।२३, जाड्यं ह्रीमति गण्यते—५।४ 4. जिह्वा की नीरसता।

जात (भू० क० कृ०) [जन्+क्त] 1. अस्तित्व में लाया गया, जन्म दिया गया, पैदा किया गया 2. उगा हुआ, निकला हुआ 3. उद्भूत, उत्पन्न 4. अनुभूत, ग्रस्त (प्रायः समास में) दे० 'जन्', तः पुत्र, बेटा (नाटकों में प्रायः 'स्नेह या प्रेम द्योतक' के अर्थ में प्रयुक्त —अयि जात कथयितव्यं कथय उत्तर० ४, 'प्यारे बच्चे' 'मेरे लाल, दुलारे')।—तम् 1. जन्तु, जीवधारी, प्राणी 2. उत्पादन, उद्गम 3. भेद, प्रकार, श्रेणी, जाति 4. श्रेणी बनाने वाली वस्तुओं का समूह—निःशेषविश्राणितकोशजातम्—रघु० ५।१, संपत्ति का समूह अर्थात् हर प्रकार की सम्पत्ति, इसी प्रकार कर्मजातम् (सद कर्मों का समूह)—सुख° वह सब कुछ जो 'सुख' में सम्मिलित है 5. बालक, बच्चा। सम० अपत्या मातृ,—अमर्ष (वि०) नाराज, क्रुद्ध, —अश्रु (वि०) आँसू बहाने वाला,—इष्टिः (स्त्री०) जातकर्मसंस्कार,—उक्षः थोड़ी आयु का बैल,—कर्मन् बच्चे के जन्मते ही अनुष्ठेय संस्कार रघु० ३।१८। कलाप (वि०) (मोर की भाँति) पूँछ वाला,—काम (वि०) आसक्त,—पक्ष (वि०) जिसके डैने या पंख निकल आये हों, अजातपक्ष, अनुद्गतपक्ष,—प्राय (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्धन युक्त, बेड़ी पड़ा हुआ, · प्रत्यय (वि०) जिसके मन में विश्वास उत्पन्न हो गया हो, · · मन्मथ (वि०) प्रेम में आसक्त,—मात्र (वि०) तुरंत का उत्पन्न, सद्योजात,—रूप (वि०) सुन्दर, उज्ज्वल, (पम्) सोना — अध्याकरसमूलघ्ना मणिजातिरसंस्कृता, जातरूपेण कल्याणि न हि संयोगमर्हति -मालवि० ५।१८, मै० १।१२९,—वेदः (पुं०) अग्नि का विशेषण—कु० २।४९, शि० २।५१, रघु० १२।१०४, १५।७२ ।

जातक (वि०) [जात+कन्] जन्मा हुआ, उत्पन्न, · कः 1. नवजात शिशु 2. भिक्षु,—र्मन् 1. जातकर्म संस्कार 2. जन्म विषयक फलित ज्योतिष की गणना 3. एक जैसी वस्तुओं का संग्रह ।

जाति: (स्त्री०) [जन्+क्तिन्] 1. जन्म, उत्पत्ति -मनु० २।१४८ 2. जन्म के अनुसार अस्तित्व का रूप 3. गोत्र, परिवार, वंश 4. जाति, कबीला या वर्ग (जनसमुदाय) —अरे मूढ जात्या चेऽब्रह्मीऽहम्, एषा सा जातिः परित्यक्ता—श्वेणी० ३, (हिन्दुओं की प्राथमिक जातियाँ केवल चार · ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—हैं) 5. श्रेणी, वर्ग, प्रकार, नस्ल—पशुजातिः, पुष्पजाति आदि 6. किसी एक वर्ग के विशेष गुण जो उसे और दूसरे वर्गों से पृथक् करें, किसी एक नस्ल के लक्षण जो मूल तत्त्वों को बतलाएँ जैसे कि गाय और घोड़ों का 'गोत्व' 'अश्वत्व'—दे० गुण क्रिया और द्रव्य—शि० २।४५, तु० काव्य २ 7. अंगोटी 8. जायफल 9. चमेली का फूल या पौधा—पुष्पाणां प्रकरः स्त्रियेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः—अमरु १०, (इन दो अर्थों में 'जाती' ऐसा भी लिखा जाता है) 10. (न्या० में) व्यर्थ उत्तर 11. (संगीत में) भारतीय स्वरग्राम के सात स्वर 12. छन्दों की एक श्रेणी - दे० परिशिष्ट । समः—अन्ध (वि०) जन्मान्ध —मूर्ख० १९०,—कोशः, पः पम्, जायफल, —कोशी,—थी जावित्री,—धर्मः 1. किसी जाति के कर्तव्य, आचार 2. किसी जाति की सामान्य सम्पत्ति, —ध्वंसः जाति या उसके विशेषाधिकारों की हानि, —पत्री जावित्री, जायफल का ऊपरी छिलका,—ब्राह्मणः केवल जन्म से ब्राह्मण, गुण कर्म, तप और स्वाध्याय से हीन, अज्ञानी ब्राह्मण (तपः श्रुतं च योनिश्च त्रयं ब्राह्मण्यकारणम्, तपःश्रुताभ्यां यो हीनो जातिब्राह्मण एव सः—सन्दर्भचिन्तामणि, —भ्रंशः जातिच्युति —मनु० ९।६७,—भ्रष्ट (वि०) जातिच्युत, जाति-बहिष्कृत,—मात्रम् 1. केवल जन्म' केवल जन्म के कारण जीवन में प्राप्त पद 2. केवल जाति (तत्सम्बन्धी कर्तव्यों के पालन का अभाव)—मनु० ८।२०, १२।११४, लक्षणम् जातिसूचक भेद, जाति-सूचक विशेषताएँ,—वाचक (वि०) नस्ल को बतलाने वाला (शब्द)—गौरङ्गः पुरुषो हस्ती,—वैरम् जातिगत द्वेष, स्वाभाविक शत्रुता,—वैरिन् (पुं०) स्वाभाविक शत्रु,—शब्दः नस्ल या जाति बतलाने वाला नाम, जातिबोधक शब्द, जातिवाचक संज्ञा · गौः, अश्वः, पुरुषः, हस्ती आदि,—संकरः दो जातियों का मिश्रण, दोगलापन,—सम्पन्न (वि०) अच्छे घराने का, कुलीन, —सारम् जायफल, स्मर (वि०) जिसे अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त याद हो - जातिस्मरो मुनिरस्मि जात्या का० ३५५, · स्वभावः जातियत स्वभाव या लक्षण, हीन (वि०) नीच जाति का, जाति-बहिष्कृत ।

जातिमत् (वि०) [जाति+मतुप्] उत्तम कुल में उत्पन्न, ऊँचे घराने में जन्मा ।

जातु (अव्य०) [जन् + कतुन् पृषो० साधुः] निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला अव्यय - 1. कभी, सर्वथा, किसी समय, संभवतः—किं तेन जातु जातेन मातुर्यौवनहारिणा पंच० १।२९ न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति - मनु० २।९४, कु० ५।५५ 2 कदाचित्, कभी -रघु० १९।७ 3 एकबार, एक समय, किसी, दिन 4. विधिलिङ् में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ हो जाता है "अनुमति न देना, सहन न कर सकना"—जातु तव भवान्वत्सलं राजा उग्रेत्यवकल्प्यामि (न मर्षयामि) सिद्धा० 5. लट् लकार में प्रयुक्त होकर यह 'निन्दा (गर्हा)' प्रकट करता है · जातु तव भवान् वत्सलं याजयति तदेव ।

जातुधानः [जातु गर्हितं धानं सन्निधानं यस्य ब० स०] राक्षस, पिशाच ।

जातुष (वि०) (स्त्री०—षी) [जतु + अण्, पुक्] 1. लाख से बना हुआ, या लाख से ढका हुआ 2. चिपचिपा, चिपकने वाला ।

जात्य (वि०) [जाति+यत्] 1. एक ही परिवार का, सम्बन्धी 2. उत्तम, उत्तमकुलीन,उच्च, सत्कुलोद्भव, — जात्यस्तेनाभिजातेन शूरः शौर्यवता कुलः - रघु० १७।४ 3. मनोहर, सुन्दर, सुखद ।

जानकी [जनक+अण्+ङीष्] जनक की पुत्री सीता, राम की भार्या ।

जानपदः [जनपद+अण्] 1. देहाती, गंवार, ग्रामीण, किसान (विप० पौर) 2. देश 3. विषय. ·दा सर्वप्रिय उक्ति ।

जानि (ब्रह्मबोहि समास में 'जाया शब्द' के स्थान में आदेश)

जानु (नपुं०) [जन्+उण्] घुटना— जानुन्यामवनिं गत्वा, पृथ्वीपर घुटनों के बल चल कर या घुटने टेक कर । सम०—दघ्न (वि०) घुटनों तक ऊँचा, घुटनों तक गहरा,—फलकम्,—मण्डलम् घुटने की पाली, —सन्धिः घुटने का जोड़ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आपः [जप्+घञ्] 1. प्रार्थना जपना, कान में कहना, गुनगुनाना 2. जप की हुई प्रार्थना या मन्त्र ।

आवालः [अवाल + अण्] रेवड़, बकरों का समूह ।

आमदग्न्यः [जमदग्नि+यञ्] परशुराम, जमदग्नि का पुत्र ।

आया [जन्+अण् वा० स्त्रीत्वम्] 1. पुत्री 2. सुता, पुत्रवधू ।

जामातृ (पुं०) [जायां माति मिनोति स्मिते वा नि०] 1. दामाद—जामातृशतेन यद्य निरुद्धाः उत्तर० १।९१, जामाता दशमो ग्रहः सुभा० 2. स्वामी, मालिक 3. सूरजमुखी फूल ।

जामिः (स्त्री०) [जन्+इन् नि० वृद्धिः] 1. बहन, पुत्री 3. **पुत्रवधू** 4. **नजदीकी संबंधिनी** (सन्निहित-सपिंड स्त्री—कुलजम्) मनु० ३।५७, ५८ 5. गुणवती सती साध्वी स्त्री ।

जामित्रम् [न जायामित्रम्] जन्मकुंडली में लग्न से सातवां घर, तिथौ च जामित्रगुणान्वितायाम्—कु० ७।१, (जामित्रं लग्नात्सप्तमं स्थानम्—मल्लि०) वि०—कुछ लोग इस शब्द को 'जाया' से व्युत्पन्न मानते हैं क्योंकि फलित ज्योतिष में 'जामित्र' का चिह्न पत्नी के भावी सौभाग्य का सूचक । जायामित्रम्] है परन्तु इस शब्द का स्पष्ट सम्बन्ध शीक शब्द (Diametron) से है ।

जामेयः [जाम्या भगिन्या अपत्यम् ढक्] भानजा, बहन का पुत्र ।

जाम्बवम् [जम्बवा फलम् अण् तस्य वा० न लुप्-तारा०] 1. सोना 2. जम्बुवृक्ष का फल, जामन ।

जाम्बवत् (पुं०) [जाम्ब+मतुप्] रीछों का राजा जिसने लंका पर आक्रमण के समय राम की सहायता की । यह अपनी चिकित्सासंबन्धी कुशलता के लिए भी प्रसिद्ध था (यह जांबवान् संभवतः कृष्ण के समय तक जीवित रहा, क्योंकि उस समय स्यमन्तक मणि के लिए कृष्ण और जांबवान् में युद्ध हुआ । इस स्यमन्तक मणि को जांबवान् ने सत्राजित् के भाई प्रसेन से प्राप्त किया था । युद्ध में कृष्ण ने जांबवान् को पछाड़ दिया । पराजित होकर जांबवान् ने स्यमन्तक मणि के साथ अपनी पुत्री जांबवती को भी कृष्ण के अर्पण कर दिया)

जाम्बीरम् (**लम्**) [जंबीर+अण्, पक्षे रलयोरभेदः] जकोतरा ।

जाम्बूनदम् [जम्बूनद+अण्] 1. सोना—रघु० १८।४४ 2. एक सोने का आभूषण—कृतश्चरणे जाम्बूनदैः—शि० ४।६६ 3. धतूरे का पौधा ।

जाया [जन्+यक्+टाप्, आत्व] पत्नी, (शब्द की व्युत्पत्ति मनु० ९।८ के अनुसार—पतिर्भार्यां संप्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते, जायायास्त्वद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः—दे० रघु० २।१ पर मल्लि०) बहुव्रीहि के उत्तर पद में 'जाया' का बदलकर 'जानि' हो जाता है यथा 'सीताजानिः' सीता जिसकी पत्नी है, इसी प्रकार युवजानिः, वामाघंजानिः । सम०—**अनुजीविन्** (पुं०) **आजीवः** 1 अभिनेता, नट 2. वेश्या का पति 3. मोहताज, दरिद्र, **-पती** (द्वि० व०) पति और पत्नी (इसके दूसरे रूप हैं -दंपती, जंपती)

जायिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जि+णिनि] जीतने वाला, दमन करने वाला (पुं०) (संगीत में) ध्रुपद जाति की एक ताल ।

जायुः [जि+उण्] 1. औषधि 2. वैद्य ।

जारः [जीर्यति अनेन स्त्रियाः सतीत्वम् जृ+घञ् जरयतीति जारः निरु०] उपपति, प्रेमी, आशिक—रथकारः स्वकां भार्यां सजारां शिरसाबहत्—पंच० ४।५४ । सम०—**जः, जन्मन्, जातः** दोगला, हरामी,—**भरा** व्यभिचारिणी स्त्री ।

जारिणी [जार+इनि—ङीप्] व्यभिचारिणी स्त्री ।

जालम् [जल+ण] 1. फंदा, पाश 2. जाला, मकड़ी का जाला 3. कवच, तार की जालियों का बना शिरस्त्राण 4. अक्षिकारंध्र, गवाक्ष, झिलमिली, खिड़की -आलात्रप्रेषितदृष्टिरन्या—रघु० ७।९, धूपैर्जालविनिःसृतैर्वलयितः संदिग्धसारावताः विक्रम० ३।२, कु० ७।६० 5. संग्रह, समूह, राशि, ढेर चिंतासन्ततिजन्तुजालनिबिडस्यतेव मा० ५।१०, कु० ७।८९, शि० ४।४६, अमरु ५८ 6. जादू 7. भ्रम, धोखा 8. अनखिला फूल । सम० **-अक्षः** झरोखा, खिड़की, —**कर्मन्** (नपुं०) मछली पकड़ने का धंधा, मछली पकड़ना,—**कारकः** 1 जाल निर्माता 2. मकड़ी,—**गोजिका** एक प्रकार की मंगोनी, **-पाद —पादः** कलहंस,—**प्रायः** कवच, जिरहबख्तर ।

जालकम् [जालमिव कायति—कै+क] 1. फन्दा 2. समुच्चय, संग्रह—बद्धं कर्णशिरीषरोधि वदने घर्माम्भसां जालकम्—श० १।३०, रघु० ९।६८. 3. गवाक्ष, खिड़की 4. कली, अनखिला फूल -अभिनवजालकैर्मालतीनाम् —मेघ० ९८, हलो प्रकार—यूथिकाजालकानि —२६ 5. (बालों में पहना जाने वाला) एक प्रकार का आभूषण तिलकजालकजालकमौक्तिकैः—रघु० ९।४४ (आभरणविशेषः) 6. घोंसला 7. भ्रम, धोखा । सम० **मालिन्** (वि०) अवगुण्ठित ।

जालकिन् (पुं०) [जालक+इनि] बादल ।

जालकिनी [जालकिन्+ङीप्] भेड़ ।

जालिकः [जाल+ठन्] 1. मछवाहा 2. बहेलिया, चिड़ीमार 3. मकड़ी 4. प्रान्त का राज्यपाल या मुख्य-शासक 5. बदमाश, ठग,—**का** 1. जाली 2. जञ्जीरों का बना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कमठ 3. मकड़ी 4. जोंक 5. विधवा 6. लोहा 7. घूघट, मुख पर डालने का ऊनी कपड़ा।

जालिनी [जाल+इनि+ङीप्] चित्रों से सुशोभित कमरा।

जाल्म (वि०) (स्त्री०—ल्मी) [जल्+णिक डा० म] 1. क्रूर, निष्ठुर, कठोर 2. उतावला, अविवेकी,—ल्मः (स्त्री—ल्मी) 1. बदमाश, शठ, लुच्चा, पाजी, कुकर्मी —अपि जाग्रते कतमेन दिग्भावेन गतः स जाल्म इति—विक्रम० १ 2. निर्धन आदमी, नीच, अधम।

जाल्मक (वि०) (स्त्री०—ल्मिका) [जाल्म+कन्] घृणित, नीच, कमीना, तिरस्करणीय।

जावयस् [जवन+क्यङ्] 1. लाल, तेजी 2. शीघ्रता, त्वरा।

जाह्नव [जह्नु+अण्+ङीप्] गङ्गा नदी का विशेषण।

जि (स्वा० पर० (परा और वि पूर्व आने पर—आ०) जयति, जित) 1. जीतना, हराना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलदपटलानि—पञ्च० १।३३०, भट्टि० १५।७६, १६।२ 2. मात कर देना, आगे बढ़ जाना—गर्जितानन्तरा वृष्टिं सौदामन्येव जिगाय सा—कु० २।५३, रघु० ३।३४ घट० २२, शि० १।१९ 3. जीतना (दिग्विजय करना या जूए में जीतना), दिग्विजय करके हस्तगत करना —प्रागजीयत धृणा ततो मही—रघु० ११।९५, (यहाँ 'जि' का अर्थ विजय प्राप्त करना भी है)—मनु० ७।९६ 4. दमन करना, दबाना, नियन्त्रण रखना (कामावेग आदि पर) विजय प्राप्त करना 5. विजयी होना, प्रभुत्व या सर्वोत्तम बनना (प्रायः नान्दी श्लोकों या अभिवादन आदि में प्रयुक्त)—जयतु जयतु महाराजः (नाटकों में), स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः—मा० ५।१, जितमुदुपतिना नमः सुरेभ्यः—रत्न० १।४, भर्तृ० २।२ गीत० ११।, प्रेर० जापयति. जितबाना, विजय दिलाना, सम्पन्न—जिगीषति जीतने की, हस्तगत करने की, आगे बढ़ जाने की, रीस करने की, होड़ लगाने की इच्छा करना; अधि—,जीतना, हराना, पछाड़ना—भर्तृ० १९।२, निस्—1. जीतना, हराना —रघु० ३।५१, भट्टि० २।५२, ७।९४ याज्ञ० ३।२९२ 2. जीत लेना, दिग्विजय द्वारा हस्तगत करना—मनु० ८।१५४, परा—(आ०) 1. हराना, जीतना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—यं पराजयसे मूढ—याज्ञ० २।७५, भट्टि०८।९ 2. खोना, वञ्चित होना 3. जीत लिया जाना या वशीभूत किया जाना, (कुछ) असह्य लगना—अध्ययनात्पराजयते—सिद्धा०, अध्ययन करना कठिन या असह्य लगता है—भट्टि० ८।७१, वि—(आ०) 1. जीतना 2. हराना, वशीभूत करना, दमन करना —व्यजेष्ट षड्वर्गम्—भट्टि० १।२, प्रायस्त्वत्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुण्यायुधः—गीत० १०, भट्टि० २।३९ १५।३९ 3. मात कर देना, आगे बढ़ जाना चक्षुर्मे चक्रमम्भूज विजयते—विद्धशा० १।३३ 4. जीत लेना, दिग्विजय करके हस्तगत करना—भुजार्जितविमान-रघु० १२।१०४, १।९९, शा० २।१३ 5. विजयी होना, श्रेष्ठ या सर्वोत्तम होना—विजयेतां देवः—श० ५,

जिः [जि+डि] पिशाच।

जिगत्नु [गम् +त्नु, सन्वद्भावश्च] प्राण, जीवन।

जिगीषा [जि+सन्+अ+टाप्] 1. जीतने की, दमन करने की, या वशीभूत करने की इच्छा -यान संस्मार कौबेरं वैवस्वतजिगीषया—रघु० १५।४५ 2. स्पर्धा प्रतिद्वंद्विता 3. प्रमुखता 4 चेष्टा, व्यवसाय, जीवनचर्या।

जिगीषु (वि०) [जि+सन्+उ] जीतने का इच्छुक।

जिघत्सा [अद्+सन्+अ, घसादेशः 1. खाने की इच्छा, बुभुक्षा 2 हमला और मारना 3. प्रबल उद्योग करना।

जिघत्सु (वि०) [अद्+सन्+उ घसादेशः [बुभुक्षु, भूखा।

जिघांसा [हन्+सन्+अ+टाप्] मार डालने की इच्छा —रघु० १५।१९।

जिघांसु [हन्+सन्+उ] मार डालने का इच्छुक, घातक, —सुः शत्रु, बैरी।

जिघृक्षा [ग्रह्+सन्+अ+टाप्] ग्रहण करने की या लेने की इच्छा।

जिष्ण (दि०) [ज्ञा+ष्ण जिज्ञादेशः] 1. सूंघने वाला 2. अटकलबाज, अनुमान लगाने वाला, निरीक्षण करने वाला— सदा० मनोजिष्णः सफलोजनः —सा० द०।

जिज्ञासा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा, कुतूहल, कौतुक या जानेच्छा।

जिज्ञासु (दि०) [ज्ञा+सन्+उ] 1. जानने का इच्छुक, जानेच्छु, प्रश्नशील —भग० ६।४४ 2. मुमुक्षु।

जित (दि०) [जि+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जीतने वाला, परास्त करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला—तारकजित, कंसजित्, सहस्रजित् आदि।

जित [भू० क० कृ०] [जि+क्त] जीता हुआ, अभिभूत, दमन किया हुआ, (शत्रु या आवेग आदि) संयत, 2. हस्तगत, हासिल, (दिग्विजय द्वारा) प्राप्त 3. मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4. वशीभूत, दासीकृत या प्रभावित—कामजित श्रीजित आदि। सम—अक्षर (वि०) झटपट या तुरन्त पढ़ने वाला,—अमित्र (वि०) जिसने अपने शत्रुओं को जीत लिया है, जेता विजयी,—अरि (वि०) जिसने अपने शत्रुओं पर विजय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राप्त कर ली है (विः) बुद्ध का विशेषण,—आत्मन् (वि०) जितेन्द्रिय, आवेशशून्य,—आहव (वि०) विजयी,—इन्द्रिय (वि०) जिसने अपनी वासना पर विजय प्राप्त कर ली है या जिसने अपनी ज्ञानेन्द्रियों—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द—को वश में कर लिया है—श्रुत्वा स्पृष्ट्वाऽथ दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः, न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः—मनु० २।९८, —काशिन् (वि०) विजयी दिखाई देने वाला, विजय का अहंकार करने वाला, अपनी विजय की शान दिखाने वाला—चाणक्योऽपि जितकाशितया—मुद्रा० २, जितकाशी राजसेवकः—तर्हि —कोप,—क्रोध (वि०) स्थिरता, शान्तचित्तता, अनुत्तेजनीयता,—तेमिः पीपल के वृक्ष की लाठी,—श्रमः —परिश्रम करने का अभ्यस्त, कठोर,—स्वर्गः जिसने स्वर्ग प्राप्त कर लिया है।

जितिः (स्त्री०) [जि+क्तिन्] विजय, दिग्विजय।

जितुमः, जित्नुमः [जित्+तमर, जित्नु+जितुम पृषो० साधुः] मिथुन राशि, राशिचक्र में तीसरी राशि (ज्योतिष शब्द)।

जित्वर (वि०) (स्त्री०—री) [जि+क्वरप्] विजयी, जीतने वाला, विजेता—शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्—भर्तृ० १।१६, कदलीकृतभूपाली भ्रातृभिर्जित्वरैर्दिशाम्—शि० २।९।

जिन (वि०) [जि+नक्] 1. विजयी, विजेता 2. अतिबुद्ध, —नः 1. किसी वर्ग का प्रमुख, बौद्ध या जैनसाधु, जैनी अर्हत या तीर्थंकर 3. विष्णु का विशेषण। सम०—इन्द्रः—ईश्वरः 1. प्रमुख बौद्ध सन्त 2. जैन तीर्थंकर, —सद्मन् (नपु०) जैनमन्दिर या विहार।

जिनाजिवः [=जीवज्जीव, पृषो० साधुः] चकोर पक्षी।

जिष्णु (वि०) [जि+क्नुस्नु] 1. विजयी, विजेता,—रघु० ४।८५, १०।१८ 2. विजय लाभ करने वाला, लाभ उठाने वाला 3. (समास के अन्त में) जीतने वाला, आगे बढ़ जाने वाला - अलिनीजिष्णुः कचानां चयः -भर्तृ० १।६, शि० १३।२१, —ष्णुः 1. सूर्य 2. इन्द्र 3. विष्णु 4. अर्जुन।

जिह्म (वि०) [जिहानि गरुत्मार्गे, हृ+मन् सन्वत् आलोपश्च] 1. वलवां, कुटिल, तिरछा 2. टेढ़ा, बांका, वक्रदृष्टि - ऋतु० १।१२ 3. धूमावदार, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा 4. नैतिकता की दृष्टि से कुटिल, धोखेबाज, बेईमान, दुष्ट, अनीतिपूर्ण· धृतहेतिरप्यधृतजिह्मगतिः —कि० ६।२४ सुहृदयमीहितमजिह्मधियाम्- शि० ९।९२ 5 धूमला, मिश्रवर्ण, फीका विधिसमर्थनियोगाहीक्षिनहारजिह्मम्-कि० १।४६ 6. मन्थर, आलसी —ह्मम्-बेईमानी, झूठा व्यवहार। सम०—अक्ष (वि०) भैंगा, ऐंचाताना,—गः सांप,—गति (वि०) टेढ़ामेढ़ा चलने वाला, तिर्यग्गति से चलने वाला ऋतु० १।१३,—मेहनः मेंढक,—शीर्षिन् (वि०) अधर्मी धोखेबाज,—शल्यः खैर का वृक्ष।

जिह्मः [ह्वे+ड द्वित्वादि] जीभ।

जिह्मक (वि०) [जिह्म+ला+क] जिभला, चटोरा।

जिह्वा [लिहन्ति अनया—लिह्+वन् नि०] 1. जीभ 2. आग की जीभ अर्थात् लौ। सम०—आस्वादः चाटना, लपलपाना,—उल्लेखनी,—उल्लेखनिका, —निर्लेखनम् जीभ खुरचने वाला,- पः 1. कुत्ता 2. बिल्ली 3. व्याघ्र 4. चीता 5. रीछ,—मूलम् जिह्वा की जड़,—मूलीय (वि०) क् और ख् से पूर्व विसर्ग की ध्वनि, तथा कण्ठ्य व्यञ्जनों की ध्वनि का द्योतक शब्द (व्या० में),—रदः पक्षी,—लिह् (पुं०) कुत्ता, —लौल्यम् लालच,—शल्यः खैर का पेड़।

जीन (वि०) [ज्या+क्त] बूढ़ा, वयोवृद्ध, क्षीण,—नः चमड़े की थैला—जीनकार्मुकबस्तावीन् पृथगदाद्विशुद्धये —मनु० ११।१३९।

जीमूतः [जयति नभः, जीयते अनिलेन जीवनस्योदकस्य मूतं बन्धो यत्र, जीवनं जलं मूतं बद्धमत्र अनेन, जीवन मुञ्चतीति वा पृषो० तारा०] 1. बादल—जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिं—मेघ० ४ 2. इन्द्र का विशेषण। सम०—कूटः एक पहाड़,—वाहनः 1. इन्द्र 2. नागानन्द नाटक में नायक, विद्याधरों का राजा (कथा सरित्सागर में भी उल्लेख [जीमूतवाहन, जीमूतकेतु का पुत्र था, अपनी दानशीलता तथा परार्थवृत्ति के कारण प्रख्यात था। जब उसके बन्धुबान्धवों ने ही उसके पिता की राजधानी पर आक्रमण किया तो उसने अपने पिता जी को कहा कि इस राज्य को अपने आक्रमणकारी बन्धुबान्धवों के लिए छोड़ दो तथा स्वयं मलयपर्वत पर रह कर अपना पवित्र जीवन बितावो। एक दिन कहा जाता है कि जीमूतवाहन ने उस साँप का स्थान ग्रहण किया जो कि अपने समझौते के अनुसार गरुड़ को उसके दैनिक भोजन के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। अन्त में अपने उदार तथा हृदयस्पर्शी व्यवहार के द्वारा जीमूत वाहन ने गरुड़ को इस बात के लिए अभिप्रेरित किया कि वह साँपों को खाने की आदत छोड़ दे। नाटक में इस कहानी को बड़े ही कारुण्यपूर्ण ढंग से कहा गया है],—वाहिन् (पुं०) धूआं।

जीरः [ज्या+रक, सम्प्रसारण दीर्घश्च] 1. तलवार 2. जीरा।

जीरकः, जीरणः [जीर+कन्, पृषो० कस्य णः] जीरा।

जीर्ण (वि०) [जृ+क्त] 1. पुराना, प्राचीन 2. घिसा-पिसा, शीर्ण, बरबाद, ध्वस्त, फटा-पुराना (वस्त्रादिक) —वासांसि जीर्णानि यथा विहाय—भग० २।२२,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. पचा हुआ,—सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः—हि० १।२२,—र्णः 1. बूढ़ा आदमी 2. वृक्ष, -र्णम् 1. गुग्गुल 2. बुढ़ापा, क्षीणता। सम०—उद्धारः पुराने को नया बनाना, मरम्मत, विशेषकर किसी मन्दिर इत्यादि संस्था या धार्मिक, स्थान की,—उद्यानम् उजड़ा हुआ तथा उपेक्षित बाग़, -ज्वरः पुराना बुखार, अधिक दिनों से रहने वाला मन्द ज्वर,—पर्णः कदम्ब वृक्ष,—वाटिका उजड़ी हुई बगीची, -वल्कम् वैकान्तमणि।

जीर्णक: (वि०) [जीर्ण+कन्] करीब-करीब सूखा या मुरझाया हुआ।

जीर्णि: (स्त्री०) [जृ+क्तिन्] 1. बुढ़ापा, क्षीणता, कृशता, दुर्बलता 2. पाचन-शक्ति।

जीव् (भ्वा० पर०—जीवति, जीवित) 1. जीना, जीवित रहना —यस्मिञ्जीवन्ति जीवति बहवः सोऽत्र जीवति-पंच० ११२३, या जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति -शि० २।४५, मनु० २।२३५ 2. पुनर्जीवित करना, जीवित होना 3. (किसी वृत्ति के सहारे) रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना (करण० के साथ)—सत्यानृतं तु वाणिज्यं तेन चैवापि जीव्यते—मनु० ४।६, विषयेण च जीवन्तः ३।१५२, १६२, ११।२६, कभी कभी सजातीय कर्म के साथ इसी अर्थ में प्रयुक्त—अजिह्मामशठां शुद्धां जीवेद् ब्राह्मणजीविकाम्—मनु० ४।११ 4. (आलं०) आश्रित रहना, जीवित रहने के लिए किसी पर निर्भर करना (अधि० के साथ)—चौराः प्रमत्ते जीवन्ति व्याधितेषु चिकित्सकाः, प्रमदाः कामयानेषु यजमानेषु याचकाः, राजा विवदमानेषु नित्यं मूर्खेषु पण्डिताः महा०, प्रेर०—1. फिर जान डालना, 2. पालन पोषण करना, (भोजन द्वारा) पालना, शिक्षित करना, सिखाना पढ़ाना, अति—, 1. जीवित रह जाना 2. जीवन प्रणाली में दूसरों से आगे बढ़ जाना (अधिक ज्ञान से रहना)—अत्यजीवदमरालकेश्वरो—रघु० १९।१५, अनु - 1. लटकना, सहारे निर्भर रहना, जीवित रहना, सेवा करना,—स तु तस्याः पाणिग्राहकमनुजीविष्यति—दश० १२२ 2. बिना ईर्ष्या-के देखना यों तां श्रियमसूयामः पुरा दृष्ट्वा युधिष्ठिरे, अद्य तामनुजीवामः महा० 3. किसी के लिए जीवित रहना 4. जीवनचर्या में दूसरों के पीछे चलना —रघु० १९।१५, अनु० प० (अन्यजीवत् या अन्यजीवत्) 5. जीवित रहना, बचा रहना, उद्,—पुनर्जीवित करना, फिर जीवित होना—उदजीवत् सुमित्राभूः —भट्टि० १७।९५, उप - , 1. किसी आधार पर जीवित रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना—का वृत्तिमुपजीवेयुः, संवाहकवृत्तिमुपजीवामि—मृच्छ० २, शेषास्तमुपजीवेयुर्यदैष पितरं तथा—मनु० ९।१०५, याज्ञ० २।३०१ 2. सेवा करना, आश्रित रहना—शि० ९।३२।

जीव (वि०) [जीव्+क] जीवित, विद्यमान,—क: 1. जीवन का सिद्धांत, श्वास, प्राण, आत्मा -गतजीव, जीवत्याग, जीवाशा आदि 2. वैयक्तिक या व्यक्तिगत रूप से मानव शरीर में रहने वाला आत्मा जो कि इस शरीर को जीवन, गति तथा संवेदना देता है ('जीवात्मन्' कहलाता है, विप० परमात्मन् शब्द ६) याज्ञ० ३।१३१, मनु० १२।२२, २३ 3. जीवन, अस्तित्व 4. जानकर, जीवधारी प्राणी 5. आजीविका, व्यवसाय 6. कर्ण का नाम, 7. एक मरुत् का नाम 8. 'पुष्य' नक्षत्रपुंज। सम०—अन्तकः 1. चिड़ीमार, बहेलिया 2. कातिल, हत्यारा,—आदानम् (पु०) मानव शरीर में रहने वाला आत्मा (विप० परमात्मन्)—आदानम् स्वस्थ संघर निकालना, (आयु० में) रुधिर निकलना, —आधानम् जीवन का प्ररक्षण- आधारः हृदय—इंधनम् दहकती हुई लकड़ी, जलता हुआ काठ,—उत्सर्गः प्राणोत्सर्ग करना, ऐच्छिक मृत्यु, आत्महत्या,—ऊर्णा जीवित पशु की ऊन—ग्रहम्, -ग्राहिन् आत्मा का वासगृह, शरीर,—ग्राहः जीवित पकड़ा हुआ कैदी,—जीवः (जीवञ्जीवः भी) चकोर पक्षी,—द्र. 1. बंश 2. शत्रु, —दशा नश्वर अस्तित्व,—धनम् जीवित दौलत' जीवधारी प्राणियों के रूप में संपत्ति, पशुधन,— धात्री पृथ्वी, —पतिः (स्त्री०)—पत्नी वह स्त्री जिसका पति जीवित है,—पुत्रा,—वत्सा वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित है,—मातृका सात माताएं या देवियां जो प्राणियों का पालन पोषण करने वाली मानी जाती हैं (कुमारी धन दानन्दा विमला मंगला बला पद्मा चेति च विख्याताः सप्तैता जीवमातृकाः)—रक्तम् स्त्री का रज, आर्तव, —लोकः जीवधारी प्राणियों का संसार, मर्त्यलोक, प्राणिजगत्,-व्यत्ययः प्राणान्तलोकः सचतो जीवलोकः- मा० ९।३७, जीवलोकतिलकः प्रलीयते- २१, इसी प्रकार- स्वप्नेंद्रजालसदृशः खलु जीवलोकः - शा० २।२, भग० ११।७ उत्तर० ४।१७, 2. जीवधारी प्राणी, मनुष्य—दिक्ष इवाभयमास्तपाल्यये जीवलोकस्य-शि० ३।१२, आलोकमर्कादिव जीवलोकः - रघु० ५।५५, —वृत्तिः (स्त्री०) पशुपालन, गायभैंस आदि पालन का रोजगार,—शेष (वि०) जिसकी केवल जान बची हो, जो सब कुछ छोड़ कर केवल जान लेकर भाग आया हो,—संक्रमणम् जीव का एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में जाना,—साधनम् धान्य, अनाज,—साफल्यम् जीवनधारण करने के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति, -सूः जीवधारी प्राणियों की माता, वह स्त्री जिसके बच्चे जीवित हों,—स्थानम् 1. जोड़, अस्थिसंधि 2. मर्म, हृदय।

जीवक: [जीव्+णिच्+ण्वुल्] 1. जीवधारी प्राणी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. सेवक 3. बौद्धभिक्षु, भिक्षा के सहारे ही जीवित रहने वाला भिखारी 4. मूदखोर 5. सपेरा 6. वृक्ष ।

जीवत् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [जीव्+शतृ] जीवित, सजीव । सम०—**पतिका** वह स्त्री जिसके बच्चे जिन्दा हों,—**पतिः** (स्त्री०)—**पत्नी** (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित है,—**मुक्त** (वि०) **जीवन्मुक्त**, जिसने परमात्मा के सत्यज्ञान से पवित्र होकर भावी जीवन से मुक्ति पा ली है, सांसारिक बंधनों से मुक्त, —**मृतिः** (स्त्री०) इसी जीवन में परममोक्ष की प्राप्ति,—**मृत** (वि०) जीता हुआ ही मृतक, जो जीता हुआ ही मुर्दे के समान बेकार है, (पागल आदमी या भ्रष्टचरित्र व्यक्ति) ।

जीवथः [जीव्+अथ] 1. जीवन, अस्तित्व 2. कस्तूरा 3. मोर 4. बादल ।

जीवन (वि०) (स्त्री०—नी) [जीव्+ल्युट्] जीवनप्रद, जीवनदाता, प्राणप्रद,—नः 1. जीविताधारी 2. वायु 3. पुत्र,—नम् जिन्दा रहना, अस्तित्व (आलं०) स्वमस्ति मम भूयणं त्वममि मम जीवनम् गीत० १० 2. जीवन का सिद्धांत, संजीवनीशक्ति—भग० ७।९ 3. जल बीजानां प्रभव नमोऽस्तु जीवनाय—कि० १८।३९, या जीवनं-जीवनं हन्ति प्राणान् हन्ति **समीरणः**—उद्भट 4. आजीविका, वृत्ति, अस्तित्व के साधन (आलं० से भी) मनु० ११।७६, हि० ३।३३ 5. पिछले दिन के रक्खे दूध से बनाया गया मक्खन 6. मज्जा । सम० **अन्तः** मृत्यु,—**आधातम्** विष,—**आवासः** 1. जल में रहना, वरुण का विशेषण, जल की अधिष्ठात्री देवता 2. शरीर, —**उपायः** आजीविका,—**औषधम्** 1. अमृत 2. संजीवनी औषध ।

जीवनकम् [जीवन+कन्] अन्नाहार, भोजन ।

जीवनीयम् [जीव्+अनीयर्] 1. जल, 2. ताजा दूध ।

जीवत्तः [जीव्+झच्] 1. जीवन, अस्तित्व 2. दवाई, औषधि ।

जीवन्तिकः [=जीवान्तकः, पृषो०] बहेलिया, चिड़ीमार ।

जीवा [जीव्+अच्+टाप्] 1. जल 2. पृथ्वी 3. धनुष की डोरी—**पहुर्जीवः** पार्थवैधिरयति—महावी० ६।३० 4. चाप के दो सिरों को मिलाने वाली रेखा 5. जीवन के साधन 6. धातु से बने आभूषणों की अंकुर 7. एक पौधा, वच ।

जीवातु (पुं०, नपुं०) [जीवत्यनेन—जीव्+आतु] 1. भोजन, आहार 2. ग्राम, अस्तित्व 3. पुनर्जीवन, फिर जीवित करना—रे हन्त दक्षिण मृतस्य शिशोर्द्विजस्य जीवातवे विसृज गूढमणी कृपाणम्—उत्तर० २।१०, पुनर्जीवन दाता औषधि ।

जीविका [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] जीने का साधन, रोजगार ।

जीवित (वि०) [जीव्+क्त] 1. जीता हुआ, विद्यमान, सजीव—रघु० १२।७५ 2. पुनः जीवनप्राप्त 3. जीवन युक्त, अनुप्राणित 4. (काल) जिसमें रहा जा चुका है,—**तम्** 1. जीवन, अस्तित्व—त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम् – उत्तर० ३।२६, कन्ये कुलजीवितम् कु० ६।६२, मेघ० ८३, नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्—मनु० ६।४५, ७।१११ 2. जीवन की अवधि 3. आजीविका 4. जीवधारी प्राणी । सम०—**अन्तकः** शिव का विशेषण,—**आशा** जीने की उम्मीद, जीवन से प्रेम,—**ईशः** 1 प्रेमी, पति 2 यम का विशेषण—**जीवितेशवसतिं जगाम सा**—रघु० ११।२० (यहाँ द्वान्द्व प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3. सूर्य 4 चन्द्रमा, —**कालः** जीवन की अवधि,—**क्षा** धर्मनी,—**व्ययः** प्राणों का त्याग,—**संशयः** जीवन की जोखिम, प्राणसंकट, जीवन को खतरा—स आतुरो जीवितसंशये वर्तते —वह बुरी तरह से रुग्ण है, उसके प्राण संकट में हैं—भामि० २।२० ।

जीविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जीव+इनि] (सामान्यतः समास के अन्त में) 1. जिन्दा, सजीव, विद्यमान—रघु० १।६३ 2. किसी के सहारे जिन्दा रहने वाला—शस्त्र जीविन्, आयुधजीविन् – (पुं०) जीवधारी प्राणी ।

जीव्या [जीव्+यत्+टाप्] आजीविका के साधन ।

जुगुप्सनम्, जुगुप्सा [गुप्+सन्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. निन्दा, झिड़की 2. नापसन्दगी, अरुचि, घृणा, बीभत्सता 3. (अलं० शा०) बीभत्स रस का स्थायीभाव परिभाषा इस प्रकार है :—**दोषैरुग्रादिभिर्हृद् जुगुप्सा विषयोद्भवा**—सा० द० २०७ ।

जुष् । (तुदा० आ०—**जुषते, जुष्ट**) 1. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना 2. अनुकूल होना, मङ्गलप्रद होना 3. पसन्द करना, अत्यन्त चाहना, प्रसन्नता या खुशी मनाना, सुखोपभोग करना—सस्वं जुषाणस्य भवाय देहिनाम् —भाग० 4. भक्त होना, अनुरक्त होना, अभ्यास करना, भुगतना, भोगना—**पौलस्त्योऽजुषत शुचं विपक्षबन्धुः**—भट्टि० १७।११२ 5. प्रायः जाना, दर्शन करना, बसना—**जुषन्ते पर्वतश्रेष्ठमृषयः पर्वसन्धिषु** महा० 6. प्रविष्ट होना, बिठाना, आश्रय लेना—**रथं च जुजुषे शुभम्**—भट्टि० १४।९५ 7. चुनना ।

ii (भ्वा० पर० —**चुरा०** उभ०—**जोषति, जोषयति** —**ते**) 1. तर्क करना, चिन्तन करना 2. जाँचपड़ताल करना, परीक्षा करना 3. चोट पहुँचाना 4. संतुष्ट होना ।

जुष् (वि०) [जुष्+क्विप्] (समास के अन्त में) पसन्द करने वाला, उपभोग करने वाला, आनन्द लेने वाला —**भर्तृ०** ३।१०३ 2. दर्शन करने वाला, निकट जाने वाला, पहुँचने वाला, लेने वाला, धारण करने वाला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आश्रय लेने वाला आदि –परलोकजुषाम् –रघु० ८। ८५, रजोजुषे जन्मनि –का० १।

जुष्ट (भू० क० कृ०) [जुष् + क्त] 1. प्रसन्न, संतुष्ट 2. अभ्यस्त, आश्रित, देखा हुआ, भुगता हुआ;—भग० २।२ 3. सज्जित, सम्पन्न, युक्त।

जुहू: (स्त्री०) [हु + क्विप् नि० हित्वं दीर्घश्च धारा०] अग्नि में घी की आहुति देने के लिए काठ का बना अर्धचन्द्राकार चम्मच, स्रुवा।

जुहोतिः [जु + क्तिन्] 'जुहोति' क्रिया से सम्पन्न होने वाले यज्ञानुष्ठानों का पारिभाषिक नाम, इससे भिन्न अनुष्ठानों के लिए दूसरा नाम 'यजति' है—श्रुतयो वैदिक्यो जुहोतियजतिक्रियाः—मनु० २।८४ (दे० मेधातिथि तथा दूसरे भाष्यकार, सर्वज्ञ नारायण –जुहोति यज्ञानुष्ठानों को 'उपविद्ध होम' तथा यजति यज्ञानुष्ठानों को 'तिष्ठद्धोम' का नाम देते हैं—दे० आश्वलायन —१।२।५ भी)।

जूः (स्त्री०) [जू + क्विप्] 1. चाल 2. पर्यावरण 3. राक्षसी 4. सरस्वती का विशेषण।

जूक: [शोक शब्द] बुला राशि।

जूटः [जुट् + अच् नि० ऊठभ्] बिपटे हुए तथा मोंढो बनाये हुए केशों का समूह—भूतेशस्य भुजङ्गवल्लि-वलयलक्षितजूटा जटाः—मा० १।२।

जूटकम् [जूट + कन्] बट कर मोंढी बनाय हुए बाल, जटा।

जूतिः स्त्री० [जू + क्तिन्] चाल, वेग।

जूर् (दिवा० आ०—जूर्यते, जूर्ण) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मारना 2. क्रुद्ध होना (संप्र० के साथ) भर्त्रे नखस्पर्शं चिरं जूर्ये –भट्टि० ११।८ 3. पुराना होना।

जूर्तिः (स्त्री०) [ज्वर् + क्तिन्, ऊठ्] बुखार, जड़ी।

जृ (स्वा० पर० जरति) 1. नष्ट बनाना, नीचा दिखाना 2. आगे बढ़ जाना।

जृभ, जृम्भ् (स्वा० आ० –जृभते, जृम्भते, जृम्भित, जृब्ध) 1. उबासी लेना, जमुहाई लेना—मनु० ४।४३ 2. खोलना, विस्तार करना, खिलना (फूल आदि का) – परयुवतिमुखाभं पङ्कजं जृम्भतेऽद्य—ऋतु० ३।२२ 3. बढ़ाना, फैलाना, सर्वत्र प्रसार करना जृंभना जृम्भनमप्रविहतप्रसरं कोचज्योतिः – वेणी० १, तृष्णे जृम्भसि (पर० अनियमित)—भर्तृ० ३।५ भोगः कोऽपि स एक एव परमो नित्योदितो जृम्भते– ३।८० 4. प्रकट होना, उदय होना, अपनी शान दिखाना, दर्शनीय होना व्यक्त हीनः –संकल्पयोनेरधिमानभूतमाज्ञाभाव्यं मधुर्जजृम्भे—कु० ३।२४ 5. आराम में होना 6. (धनुष की भाँति) पीछे मुड़ना, पल्टा खाना प्रेर० जमुहाई दिलाना, प्रसार करवाना, उद् –, प्रकट होना, उदय होना, फूटना –नै० २।१०५, वि –, जमुहाई लेना, उबासी लेना, मुंह खोलना–व्यजृम्भिषत चापरे—भट्टि० १५।१०८ विजृम्भितमिवन्तरिक्षेण –मृच्छ० ५ 2 खुलना, खिलना (फूल आदि का) 3. सर्वत्र फैल जाना, व्याप्त करना, भर देना – मयूखश्चा भगलतूर्यनि स्वनाः –न केवलं सप्तनि मार्गदीपितैः पथि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि—रघु० ३।१९, १२।७२, रजोन्धकारस्य विजृम्भितस्य ७।४२ 4. उदय होना प्रकट होना, समव् –, प्रयत्न करना, हाथपांव मारना, कोशिश करना—व्याल बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते —भर्तृ० २।६।

जृम्भः—भम्, जृम्भणम्, जम्भा, जृम्भिका [जृम्भ् + घञ्, ल्युट् वा, जृम्भ् + अ + टाप्, जृम्भा + कन्, इत्वम्] 1. जमुहाई लेना, उबासी लेना 2. खुलना खिलना, विस्तृत होना –कलिकाश्रयो जृम्भा प्रसवेति— का० २५७, जृम्भारम्भप्रविततदलोत्पन्नजालप्रविष्टैः—वेणी० २।७, मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी —भर्तृ० १।२५ 3. अंगड़ाई लेना—(अंगानि) मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि –ऋतु० ६।१०।

जॄ (स्वा० दिवा० क्या० पर० जुरा० उभ० जरति, जीर्यति, जृणाति, जारयति—ते, जीर्ण जारित) 1. बूढ़ा होना, जर्जर होना, सूखना, मुरझाना—जीर्यन्ते जीर्यतः केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः, जीर्यन्त्यश्वाश्चीरो तृणकं रुक्षमाददते—पंच० ५।८३, भट्टि० ९।४१ 2. नष्ट होना, खो-पी जाना (आलं०) अजरोदिव च प्रजा बल शोका-तथाऽजरत् भट्टि० ६।३० जेरुराधा दशाश्चास्य —१४।११२ 3. घुल जाना, पच जाना जीर्णमन्न प्रशंसीयात्—चाण० ७९ उदरे चाजरन्त्यर्थे –भट्टि० १५।५०।

जेतृ (पुं०) [जि + तृच्] 1. जीतने वाला, विजेता 2. विष्णु का विशेषण।

जेमनम् [जिम् + ल्युट्] 1. खाना 2. भोजन।

जैत्र (वि०) (स्त्री०) [जेतृ + अण्, स्त्रियां ङीप् च] 1. जिसको, सफल, विजय प्राप्त कराने वाला उदग्रिह मदनस्य जैत्रमस्त्र त्रिफलगुणायि भविष्यतीति—मा० २।५ धनुर्जैत्रं रघुर्दधौ—रघु० ४।६६, १६।७२ 2. बढ़िया, त्रः 1. विजयी, विजेता 2. पारा, –त्रम् 1. विजय, जीत 2. वशीकरण।

जैनः [जिन + अण्] जैन सिद्धान्तों का अनुयायी, जैन मत को मानने वाला।

जैमिनिः (पुं०) प्रख्यात ऋषि और दार्शनिक जिन्होंने दर्शन संप्रदाय में 'पूर्वमीमांसा' का प्रणयन किया मीमांसा-कृतपुण्यमथ सहसा हृत्वी मुनि जैमिनिम्—पंच० २।१३।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैवातृक [वि०] (स्त्री०—की) [जीव्+णिच्+आतृ-कन्] 1. दीर्घजीवी, जिसके लिए दीर्घायु की इच्छा की जाय—जैवातृक ननु शूयते पतिरस्याः—दश० २, दुबला-पतला, कृशकाय, —कः 1. चन्द्रमा—राजानं जनयाम्बभूव सहसा जैवातृक त्वां तु यः—भामि० २।७८ 2. कपूर 3. पुत्र 4. दवाई, औषधि 5. किसान।

जैवेयः जीवस्य गुरोः अपत्यम् जीव+ढक्] बृहस्पति के पुत्र कच की उपाधि।

जैह्म्यम् [जिह्म+ष्यञ्] टेढ़ापन, धोखा, झूठा व्यवहार।

जोङ्गटः [जुङ्गति अरोचकत्वं परित्यजति अनेन—जुङ्ग+अटन् नि० गुणः] गर्भवती स्त्री की प्रबल इच्छा, दोहद।

जोटिङ्गः [जुट्+इन्, जोटि+गम्+ड, रिक्तत्वात् मुम्] शिव की उपाधि।

जोषः [जुष्+घञ्] 1. सन्तोष, सुखोपभोग, प्रसन्नता, आनन्द 2. चुप्पी, —क्षम् (अव्य०) 1. इच्छानुसार, आराम से 2. चुपचाप —क्रियते जोषमास्यते—शि० ५, मालवि० २।१७।

जोषा, जोषित (स्त्री०) [जुष्यते उपभुज्यते—जुष्+घञ्, टाप्, जुष्+इति] स्त्री, नारी—तु० योषा, योषित्।

जोषिका [जुष्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. नई कलियों का समूह 2. स्त्री, नारी।

ज्ञ [वि०] [ज्ञा+क] (समास के अन्त में) 1. जानने वाला, परिचित कारीज, विशित्तज्ञ, शास्त्रज्ञ, सर्वज्ञ 2. बुद्धिमान्—जैसा कि 'जंमन्य' में (अपने आपको बुद्धिमान् समझता हुआ), —ज्ञः 1. बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष 2. चैतन्य विशिष्ट आत्मा 3. बुध नक्षत्र 4. मगेल नक्षत्र 5. ब्रह्मा का विशेषण।

ज्ञप्त, ज्ञप्त [वि०] [ज्ञा+णिच्+क्त] जताया गया, समुपदिष्ट, स्पष्ट किया गया, सिखाया गया।

ज्ञप्तिः (स्त्री०) [ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1. समझ, 2. बुद्धि 3. घोषणा।

ज्ञा (क्र्या० उभ० जानाति, जानीते, ज्ञात) 1. जानना (सब अर्थों में) सीखना, परिचित होना —मां ज्ञासी-स्वं भुवौ रामो वदनार्थीनु स रक्षताम्—भट्टि० १५।९, 2. जानना, जानकार होना, परिचित या विज्ञ होना जानेऽहमेतो वीर्यम्—श० ३।१, जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्—कि० २।११०, १२३, ७।१४८ 3. मालूम करना, निश्चय करना, खोज करना—जानती ज: कः कार्यार्थीति—मृच्छ० ९ 4. समझना, जानना, अवबोध करना, महसूस करना, अनुभव करना —जैसा कि दुःखज्ञ, गुरुज्ञ आदि में 5. परीक्षण करना, जांच करना, वास्तविक चरित्र जानना —आत्मनं मित्रं जानीयात्—हि० १।७२, चाण० २१ 6. पहचानना, न त्वं दृष्ट्वा न पुत्रकलां जारस्त्रं कामचारिणं —मेघ० ६३ 7. लिहाज करना, खयाल करना, मान करना —जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः—मेघ० ६ 8. काम करना, व्यस्त करना (सप्त० के साथ) संपियो जानीते—सिद्धा०—बहु घी से अपने आपको यज्ञ में व्यस्त करता है (संपियः-संपियः)—प्रेर०—(ज्ञापयति, ज्ञपयति) 1. घोषणा करना, सूचित करना, जतलाना, ज्ञात करना, अधिसूचित करना 2. निवेदन करना, कहना (आ०) सन्नन्त—जिज्ञापयते, जानने की इच्छा करना, खोजना, निश्चय करना—रघु० २।२६, भट्टि० ८।३३, ४।९१, अनु—, अनुमति देना, इजाजत देना, स्वीकृति देना, 'हाँ' करना सहमत होना, स्वीकार कर लेना—अनुजानीहि मां गमनाय—उत्तर० ३ 2. सगाई करना, विवाह में वचनबद्ध होना, वचन देना (विवाह में)—मां जातमात्रां धनमित्रनाम्नेऽन्वजानाद्भार्यां मे पिता—दश० ५० 3. क्षमा करना, माफ करना 4. प्रार्थना करना 5. अपनाना अप—, छिपाना, गुप्त रखना, इनकार करना, मुकरना (आ०) शतमपजानीते—सिद्धा०, आत्मानमपजानानः यशसामाजेरवद्दिनम्—भट्टि० ८।२६, अभि० 1. पहचानना —नाभ्यजानान्नलं नृपम्—महा० 2. जानना, समझना, परिचित होना, जानकार होना—भग० ४।१४, ७।१३, १८, ५५ 3. ध्यान रखना, खयाल रखना, मानना 4. मान लेना, स्वीकार कर लेना, अव—, दुःख समझना, घृणा करना, तिरस्कार करना, अपेक्षा करना —अवजानासि मां मस्मात्—रघु० १।१७, भट्टि० ३।८, भग० ९।११, आ—, जानना, समझना, खोजना, निश्चय करना (प्रेर०) आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना 2. विदाई दिलाना 3. विसर्जित करना, जाने के लिए छुट्टी देना, परि—, जानकार होना, जानना, परिचित होना—वृषभोऽयमिति परिजाय—पंच० १, मनु० ८।१२६ 2. खोजना, निश्चय करना—सम्यक् परिजाय—पंच० १ 3. पहिचानना—नपस्विभिः कैश्चित् परिज्ञातोऽस्मि—श० २, प्रति—, प्रतिजानीते 1. प्रतिज्ञा करना—हरचापारोपणेन कन्यादानं प्रतिजानीते—प्रस० ४, भट्टि० ८।२६, ६४, मनु० ९।९९ 2. पुष्ट करना, 3. बतलाना, अभिपुष्टि करना, दावा करना, वि—, 1. जानना, जानकार होना भर्तुः ३।२।१ 2. सीखना, समझना, जान लेना 3. निश्चय करना मालूम करना 4. लिहाज करना, मान लेना, खयाल करना (प्रेर०) 1. निवेदन करना, प्रार्थना करना (विप० —आज्ञापयति)—आर्यपुत्र अस्ति मे विज्ञाप्यम्—(रामः) ननु आज्ञापय—उत्तर० १, रघु० ५।२० 2. समाचार देना, सूचना देना 3. कहना, बतलाना, सम्—(आ०) जानना, समझना, जानकार होना 2. पहचानना 3. मेलजोल से रहना, परस्पर सहमत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होना (कर्म० या करण० के साथ)--पित्रा पितरं वा संजानीते—सिद्धा० 4. रखवाली करना, खबरदार रहना-- भट्टि० ८।२७ 5. राजी होना, सहमत होना 6. (पर०) याद करना, सोचना—मातुः मातरं वा संजानासि --सिद्धा० (प्रेर०) सूचना देना।

ज्ञात (वि०) [ज्ञा+क्त] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सीखा हुआ, समझाधारित— दे० 'ज्ञा' ऊपर। **सम०—सिद्धान्तः** पूर्णरूप से शास्त्रों में निष्णात।

ज्ञातिः [ज्ञा+क्तिन्] 1. पैतृक संबंध, पिता, भाई आदि, एक ही गोत्र के व्यक्ति (समष्टि रूप से) 2. बन्धु, बांधव 3. पिता। **सम०—भावः** संबंध, रिश्तेदारी, —**भेदः** संबंधियों में फूट, -**विद्** (वि०) जो निकटस्थ व्यक्तियों से संबंध जोड़ता है।

ज्ञातेयम् [ज्ञाति+ढक्] संबंध, रिश्तेदारी।

ज्ञातृ (पुं०) [ज्ञा+तृच्] 1. बुद्धिमान् पुरुष 2. परिचित व्यक्ति 3. जानकार, प्रतिभू।

ज्ञानम् [ज्ञा+ल्युट्] 1. जानना, समझना, परिचित होना, प्रवीणता - सांख्यस्य योगस्य च ज्ञानम्-- भा० १।७ 2. विद्या, शिक्षण-बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति—मनु० ५।१०९, जाने मौनं क्षमा सत्त्वं—रघु० १।२२ 3. चेतना, संज्ञान, जानकारी--ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि --मनु० ८।२८८, जाने अजाने, जानबूझकर, अनजाने में 4. परम ज्ञान, विशेषकर उस धर्म और दर्शन की ऊँची सचाइयों पर मनन से उत्पन्न ज्ञान जो मनुष्य को अपनी प्रकृति या वास्तविकता को जानना, तथा आत्मसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलन की बात सिखलाता है (विप० कर्म) तु० ज्ञानयोग और कर्मयोग भग० ३।३ 5. बुद्धि ज्ञान और प्रज्ञा की इन्द्रिय। **सम०--अनुत्पादः** अज्ञान, मूर्खता,—**आत्मन्** (वि०) **सर्वविद्, बुद्धिमान्,--इन्द्रियम्** प्रत्यक्षीकरण को इन्द्रिय (यह पाँच है—त्वचा, रसना, चक्षु, कर्ण, और घ्राण, 'बुद्धीन्द्रिय' शब्द को देखो 'इन्द्रिय' के नीचे),—**काण्डम्** वेद का आंतरिक या रहस्यवाद विषयक भाग जिसमें वास्तविक आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान का उल्लेख है, इसके विपरीत संस्कारों का ज्ञान (कर्मकांड) भी वेद में निहित है,--**कृत** (वि०) जानबूझ कर या इरादतन किया हुआ,—**गम्य** (वि०) समझ के द्वारा जानने योग्य,--**चक्षुस्** (नपुं०) बुद्धि की आँख, मन की आँख, बौद्धिक स्वप्न (विप० चर्म चक्षुस्)—**सर्व तु समवेक्ष्यैदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा**- मनु० २।८, ४।२४, (पुं०) बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष,- **तत्त्वम्** वास्तविक ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, -**तपस्** (नपुं०) सत्यज्ञान की प्राप्ति रूप तपस्या, -**दः** गुरु, **दा** सरस्वती का विशेषण, —**दुर्बल** (वि०) जिसमें ज्ञान की कमी है,- **निश्चयः** निश्चिति, निश्चयीकरण,- **निष्ठ** (वि०) सच्चे आत्मज्ञान को प्राप्त करने पर तुला हुआ,---**यज्ञः** आत्मज्ञानी, दार्शनिक—**योगः** सच्चा आत्मज्ञान प्राप्त करने या परमात्मानुभूति प्राप्त करने का मुख्यसाधन, --**चिन्तन, विचारणा,—शास्त्रम्** भविष्य कथन का शास्त्र,— **साधनम्** 1. सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त करने का साधन 2. प्रत्यक्ष ज्ञान की इन्द्रिय।

ज्ञानतः (अव्य०) [ज्ञान+तसिल्] ज्ञान पूर्वक, जानबूझकर, इरादतन।

ज्ञानमय (वि०) [ज्ञान+मयट्] 1. ज्ञानयुक्त, चिन्मय —इतरो दहते स्वकर्मणा बद्धते ज्ञानमयेन वह्निना --रघु० ८।२० 2. ज्ञान से भरा हुआ,---**यः** 1. परमात्मा 2. शिव की उपाधि।

ज्ञानिन् (वि०) (स्त्री०---नी) [ज्ञान+इनि] 1. प्रतिभाशाली, बुद्धिमान् (पुं०) 1. ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 2. ऋषि, आत्मज्ञानी।

ज्ञापक (वि०) [ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] जतलाने वाला, सिखाने वाला, सूचना देने वाला, संकेतक, **कः** 1. अध्यापक 2. समादेशक, स्वामी, **कम्** (दर्शन० में) सार्थक उक्ति, व्यंजनात्मक नियम, (यहां उन शब्दों से अभिप्राय है जो अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा भी नियमों के संबंध में कुछ अधिक व्यक्त करते हैं)।

ज्ञापनम् [ज्ञा+णिच्+ल्युट्] जतलाना, सूचना देना, सिखलाना, घोषणा करना, संकेत देना।

ज्ञापित (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] जतलाया गया, सूचित किया गया, घोषित किया गया, प्रकाशित।

जीप्सा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा।

ज्या [ज्या+अङ्+टाप्] 1. धनुष की डोरी- विश्रामं लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः—श० २।६, रघु० ३।५१, ११।१५, १२।१०४ 2. चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा 3. पृथ्वी 4. माता।

ज्यानिः (स्त्री०) [ज्या+नि] 1. बुढ़ापा, क्षय 2. छोड़ना, त्यागना 3. दरिया, नदी।

ज्यायस् (स्त्री०—सी) [अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः वृद्धो वा +ईयसुन्, ज्यादेशः] 1. आयु में बड़ा, अधिकतर वयस्क--प्रसवक्रमेण स किल ज्यायान् उत्तरः ६ 2. दो में बढ़िया श्रेष्ठतर, योग्यतर--मनु० ४।८, ३।१३७, भग० ३।१, ८ 3. महत्तर, बृहत्तर 4. (विधि में) जो अवयस्क न हो अर्थात् वयस्क या अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी।

ज्येष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वृद्धः प्रशस्यो वा +इष्ठन्, ज्यादेशः] 1. आयु में सब से बड़ा, जेठा 2. श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम 3. प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतम,- **ष्ठः** 1. बड़ा भाई, रघु० १२।१९, ३५ 2. चान्द्रमास (ज्येष्ठ का महीना),---**ष्ठा** 1. सबसे बड़ी बहन 2. १८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाँ नक्षत्र पुंज (तीन तारों वाला) 3. बिचली अंगुली 4. छोटी छिपकली 5. गंगा नदी का विशेषण। सम०—अंशः 1. सबसे बड़े भाई का भाग 2. सबसे बड़े भाई का पैतृक सम्पत्ति में वह भाग जो सबसे बड़ा होने के कारण उसे मिले 3. सर्वोत्तमभाग,—अम्बु (नपुं०) 1. अनाज का धोवन 2. मांड (चावलों का),—आश्रमः 1. ब्राह्मण अथवा गृहस्थ के धार्मिक जीवन में उच्चतम या सर्वोत्तम आश्रम 2. गृहस्थ,—तातः पिता का बड़ा भाई, ताऊ, —वर्णः सर्वोच्च जाति, ब्राह्मण जाति, —वृत्तिः बड़ों का कर्तव्य,—श्वश्रूः (स्त्री०) बड़ी साली।

ज्यैष्ठः [ज्येष्ठा+अण्] वह चान्द्रमास जिसमें पूर्ण चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्रपुंज में स्थित होता है, जेठ का महीना (मई-जून),—ष्ठी 1. ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा 2. छिपकली।

ज्यो (स्वा० आ०—ज्यवते) 1. परामर्श देना, नसीहत देना 2. (व्रत आदि) धार्मिक कर्तव्य का पालन करना।

ज्योतिर्मय (वि०) [ज्योतिस्+मयट्] तारों से युक्त, ज्योति से भरा हुआ, द्युतिमय—रघु० १५।५९, कु० ६।३।

ज्यौतिष (वि०) (स्त्री०—षी) [ज्योतिस्+अच्] 1. गणित या फलित ज्योतिष,—षः 1. गणक, दैवज्ञ 2. छः वेदाङ्गों में से एक (गणित ज्योतिष पर एक ग्रन्थ)। सम०—विद्या गणित अथवा फलित ज्योतिर्विज्ञान।

ज्योतिषी, ज्योतिष्कः ज्योतिस्+कीप्, ज्योतिः ध्वं कायति —कै+क] ग्रह, तारा नक्षत्र।

ज्योतिष्मत् (वि०) [ज्योतिस्+मतुप्] 1. आलोकमय, तेजस्वी देदीप्यमान, ज्योतिर्मय—नक्षत्रतारायहसकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२ 2. स्वर्गीय —(पुं०) सूर्य,—ती 1. रात्रि (तारों से प्रकाशमान) 2. (दर्शन में) मन की सात्त्विक अवस्था अर्थात् शान्त अवस्था।

ज्योतिस् (नपुं०) [द्योतते द्युत्यते वा—द्युत्+इसुन् दस्य जादेशः] प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति—ज्योतिरेक जगाम—शि० ५।३०, रघु० २।७५, मेघ० ५ 2. ब्रह्म-ज्योति, वह ज्योति जो ब्रह्म का रूप है—भग० ५।२४, १३।१७ 3. बिजली 4. स्वर्गीय पिण्ड, ज्योति (ग्रह, नक्षत्र आदि)—ज्योतिर्भिरुद्भिरिव त्रियामा—कु० ७।२१, भग० १०।२१, हि० १।२१ 5. देखने की शक्ति 6. आकाशीय संसार—(पुं०) 1. सूर्य 2. अग्नि। सम०—इङ्गः,—इङ्गणः जुगनू, —कणः अग्नि की चिनगारी,—गणः समष्टिरूप से खगोलीय पिण्ड,—चक्रम् राशिचक्र, —ज्ञः गणक, दैवज्ञ, —मण्डलम् तारकीय मण्डल,—रथः (ज्योतीरथः) ध्रुव तारा, विद् (पुं०) गणक या दैवज्ञ,—विद्या,—शास्त्रम् (ज्योतिषशास्त्रम्) गणितज्योतिष या नक्षत्रविद्या, फलितज्योतिष।

ज्योत्स्ना [ज्योतिरस्ति अस्याम्—ज्योतिस्+न, उपधालोपः] 1. चन्द्रमा का प्रकाश—स्फुरत्स्फारज्योत्स्नाधवलित-तले क्वापि पुलिने—भर्तृ० ३।४२, ज्योत्स्नावलो निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४ 2. प्रकाश। सम०—ईशः चाँद, —प्रियः चकोर पक्षी, —वृक्षः दीवट दीपाधार।

ज्योत्स्नी [ज्योत्स्ना अस्ति अस्य—ज्योत्स्ना+अण्+ङीप्] चाँदनी रात।

ज्योः [ग्रीक शब्द] बृहस्पति नक्षत्र।

ज्यौतिषिकः [ज्योतिष+ठक्] खगोलवेत्ता, गणक, दैवज्ञ या ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नः [ज्योत्स्ना+अण्] शुक्ल पक्ष।

ज्वर् (स्वा० प० ज्वरति, जूर्ण) बुखार या आवेश से गर्म होना, ज्वरग्रस्त होना 2. क्षय होना।

ज्वरः [ज्वर्+घञ्] 1. बुखार, ताप, (आयु० में) बुखार की गर्मी—स्वेदमानज्वर प्राज्ञः कोऽन्यस्ता परिषिञ्चति —शि० २।५४ (आलं० भी) दर्पज्वरः, मदनज्वरः, मदज्वरः आदि 2. आत्मा का बुखार, मानसिक पीड़ा, कष्ट, दुःख, रंज, शोक—अथेतु ते मनसो ज्वरः—रामा०, मनसस्तदुपस्थिते ज्वरे—रघु० ८।८४, भग० ३।३७। सम०—अरिः बुखार का वेग या तेजी,—अङ्कुशः ज्वरप्रशामक, बुखार कम करने वाला,—प्रतीकारः, बुखार का इलाज, ज्वर प्रशामक औषधि।

ज्वरित, ज्वरिन् (वि०) (स्त्री०—तो) [ज्वर+इतच्, इनि वा] ज्वराक्रान्त, ज्वरग्रस्त।

ज्वल् (स्वा० पर०—ज्वलति, ज्वलित) 1. तेजी से जलना, दहकना, दीप्त होना, चमकना,—ज्वलति चलितेन्धनो-ऽग्निः—श० ६।३० कु० ५।३० 2. जल जाना, जल कर भस्म हो जाना, (आग से) कष्टग्रस्त होना —अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ज्वलति न सा मलयज-पवनेन —गीत० ७ 3. उत्सुक होना, —ज्वाल लोक-स्थितये स राजा—भर्तृ० १।४, प्रेर० ज्वलयति—ते, ज्वालयति-ते 1. आग लगाना, आग जलाना 2. देदीप्य-मान करना, रोशनी करना, प्रकाश करना—ककुभां मुखानि सहसोज्ज्वलयन्—शि० ९।४२, त्वदधरद्युचन्द्रन-लम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने गीत० १२, प्र—, तेजी से जलना, जाज्वल्यमान होना—रणाङ्गानि प्रज्वलुः—भट्टि० १४।९८, (प्रेर०)—1. जलाना, आग लगाना 2. चमकाना, रोशनी करना।

ज्वलन (वि०) [ज्वल्+ल्युट्] 1. दहकता हुआ, चमकता हुआ 2. ज्वलनशील, दहनशील,—नः 1. आग—तदनु ज्वलनं मदर्पितं स्वरयेर्दीक्षणवातवीजनैः—कु० ४।३६, ३२, भग० ११।२९ 2. तीन की संख्या,—नम् जलना, दहकना, चमकना। सम० अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्वलित (वि०) [ज्वल्+क्त] 1. दग्ध, जला हुआ, प्रकाशित 2. प्रदीप्त, प्रज्वलित।
ज्वाल: [ज्वल्+घञ्] 1. प्रकाश, दीप्ति 2. मशाल।
ज्वाला [ज्वाल+टाप्] 1. अग्निशिखा, लौ, लपट—रघु० १५।१६ भर्तृ० १।९५। सम०—जिह्व,—ध्वज: आग —मुखी लावा निकलने का स्थान,—वक्त्र: शिव का विशेषण।
ज्वालिन् (पुं०) ज्वल्+णिनि] शिव का विशेषण।

झ

झ: [झट्+ड] 1. समय का बिताना 2. झन झन, खनखन या इसी प्रकार की कोई और ध्वनि 3. संझावात 4. बृहस्पति।
झगझगायित (ना० धा० पर०) चमक उठना, दमकना, जगमगाना, चमचमाना।
झग (गि) ति (अव्य०) [=झटिति] जल्दी से, तुरन्त —साध्यश्वरा झगित्यासीत्पाकुष्टलोचना—महा०।
झङ्कार:, झङ्कृतम् [झमिति अव्यक्तशब्दस्य कार: -कृ+घञ्, कृ+क्त वा] झनझनाहट, भिनभिनाना—(अयं) दिग्नागानातेने मधुपकुलझङ्कारभरितान्—भामि० १।३३, ४।२९, भर्तृ० १।९, अमरु ४८, पंच० ५।५३।
झङ्कारिणी [झङ्कार+इनि+ङीप्] गङ्गा नदी।
झङ्कृति: [झम्+कृ+क्तिन्] खनखनाहट या झनझनाहट, (वीणा के बने आभूषणों की ध्वनि जैसी ध्वनि)।
झञ्झनम् [झञ्झा+ल्युट्] 1. आभूषणों की झनझन या खनखन 2. खड़खड़ाहट या टनटन की ध्वनि।
झञ्झा [झमिति अव्यक्तशब्दं कृत्वा झटिति वेगेन वहति —झम्+झट्+ड+टाप्] 1. हवा के चलने या वर्षा के होने का शब्द 2. हवा और पानी, तूफान, आँधी 3. खनखन की ध्वनि, झनझन। सम०—अनिल:, —मरुत्, —वात: वर्षा के साथ आँधी, तूफान, प्रभंजक, अन्धड़—झञ्झावात: सवृष्टिक:—अमर० हिमभ्यझञ्झावातविलविह्वलस्य (पद्मस्य)—भामि० २।६९, अमरु ४८ मा० १।१७।
झटिति (अव्य०) [झट्+क्विप्, इ+क्तिन्] जल्दी से तुरन्त —मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रंशद्दृशोदृश्यताम् भर्तृ० १।९६, ७०।
झणझणम्, -णा [झण्+घञ्, द्वित्वं, पूर्वपदटिलोप:] झनझनाहट।
झणझणायित (वि०) [झणझण+क्यङ्+क्त] टनटन, झनझन, टनटन करना—उत्तर० ५।५।
झण(ण)त्कार: [झण(ण)त्+कृ+घञ्] झनझन, टनटन, (धातु से बने आभूषण आदि का) झनझनाना, खनखनाना, —झणत्कारकूरक्वणितगुणज्यदृगुधन्वदुर्जय-प्रेमा बाहु:—उत्तर० ५।२६, उद्वेजयति दरिद्र परमुदारगणत्झणत्कार:—उद्भट।
झम्प:, झम्पा [झम्+पत्+ड, स्त्रियां टाप् च] उछल, कूद, छलांग - महावी० ५।६२।
झम्पाक:, झम्पाक:, झम्पिन् (पुं०) [झम्पेन अकर्तृकगच्छति —झंपा+अक्+अण्, झम्प+आ+रा+डु, झम्पा+इनि वा] बन्दर, लङ्गूर।
झर:, झरा, झरी [झृ+अच्, स्त्रियां टाप्, ङीष् च] प्रपातिका, झरना, निर्झर, नदी—प्रत्यग्रधातजझरीनिवृत्तपाद:—महावी० ६।१४, भामि० ४।३७।
झर्झर: [झर्झ्+अरन्] 1. एक प्रकार का ढोल 2. कलियुग 3. बेंत की छड़ी 4. झांझ, मंजीरा,—रा वेश्या बारांगना।
झर्झरिन् (पुं०) [झर्झर+इनि] शिव का विशेषण।
झलझला [झलज्झल इत्यव्यक्त: शब्द: अस्त्यस्य—अच्+टाप्] बूंदों के गिरने का शब्द, झड़ी, हाथी के कान की फड़फड़ाहट।
झला [=झरा पृषो०] 1. लड़की, पुत्री 2. धूप, चिलचिलाती धूप, चमक।
झल्ल: [झर्झ्+क्विप्, तं लाति—ला+क] 1. मल्लयोद्धा 2. एक नीच जाति—मनु० १०।२२, १२।४५,—ली ढोलकी।
झल्लकम्,—की [झल्ल+कन्, स्त्रियां ङीष् च] झांझ, मंजीरा।
झल्लकण्ठ: [ब० स०] कबूतर।
झल्लरी [झर्झ्+अरन्+ङीष् पृषो०] झांझ, मंजीरा।
झल्लिका [झल्ली+कै+क, पृषो०] 1. उबटन आदि के लगाने से शरीर से छूटा हुआ मैल 2. प्रकाश, चमक, दमक।
झष: [झष्+अच्] 1 मछली—झषाणां मकरश्चास्मि —भग० १०।३१, तु० नी० दिये गये 'झषकेतन' आदि शब्दों से 2. बड़ी मछली, मगरमच्छ 3. मीन राशि 4. गर्मी, ताप,—ध्वम् मस्स्यस्थल, नुनसान जङ्गल। सम० —अङ्क:,—केतन:,—केतु:,—ध्वज: कामदेव—स्त्रीमुद्रो झषकेतनस्य—पंच० ४।३४,—अशन: मूंस,—उदरी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।
झाङ्कृतम् [झङ्कृत+अण्] 1. झांझन, पायजेब 2. (जल के गिरने की) आवाज, छपछप का शब्द—स्थाने स्थाने मुखरककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम्—उत्तर० २।१४।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाट: [शट्+घञ्] 1. पर्णशाला, लतामण्डप 2. कान्तार, वृक्षों का झुरमुट।

शिटि-टी (स्त्री०) [शिम्+रट् ;-अच्+ङीष् पृषो०] एक प्रकार की झाड़ी।

शिरिका [शिरि+कै+क+टाप्] झींगुर।

शिल्लि: (स्त्री०) [शिरिति अव्यक्तं शब्दं लिखति —शिर्+लिख्+डि] 1. झींगुर 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

शिल्लिका [शिल्लि+कन्+टाप्] 1. झींगुर 2. धूप का प्रकाश, चमक, दीप्ति।

शिल्ली (स्त्री०) [शिल्लि ङीप्] 1. झींगुर 2. दीमक की बस्ती 3. प्रकाश, चमक। सम०--कण्ठ: पालतू कबूतर।

शीर्षक (स्त्री०) झींगुर।

शुण्ड: [लुण्ड्+अच्, पृषो०] 1. वृक्ष, बिना तने का पेड़ 2. झाड़ी, झाड़-झंखाड़।

शोढ: (पुं०) सुपारी का पेड़।

ट

टङ्क् (चुरा० उभ०-टङ्कयति ते, टङ्कित) 1. बांधना, कसना, जकड़ना 2. ढकना, उढ़--1. छीलना, खुरचना 2. छिद्र करना, सुराख करना।

टङ्क:,—कम् [टङ्क्+घञ्, अच् वा] 1. कुल्हाड़ी, कुठार, टांकी (पत्थर काटने या गढ़ने के छेनी) टङ्कैर्मनः-शिलगुहैव विदार्यमाणा -मृच्छ० १।२०, रघु० १२।८० 2. तलवार 3. स्थान 4. कुल्हाड़ी की धार के आकार की चोटी, पहाड़ी की ढाल या झुकाव -भट्टि० १।८ 5. क्रोध 6. घमंड 7. पैर, का पैर, लात।

टङ्कक: [टङ्क्+कन्] चाँदी का सिक्का। सम०- पति: टकसाल का अध्यक्ष, -शाला टकसाल।

टङ्कण (नम्) [टङ्क्+ल्युट्] सोहागा,—ण: (ना:) 1. घोड़े की एक जाति 2. एक देश विशेष के निवासी। सम०--क्षार: सोहागा।

टङ्कार: [टम्+कृ--अण्] 1. धनुष की डोर खींचने से होने वाली ध्वनि 2. गुर्राना, चिल्लाना, चीत्कार, चीख।

टङ्कारिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [टङ्कार-इनि] टंकार करने वाला, फूत्कार या सीत्कार करने वाला; झंकार करने वाला टङ्कारिणापसनु लङ्काशरक्षतजपङ्कान्-रुषितशरम् अस्व० १।

टङ्किका [टङ्क+कन्-टाप्, इत्वम्] टांकी, कुल्हाड़ी -विक्रमांक० १।१५।

टंग:, -गम् [-टङ्क: पृषो०] कुदाल, खुर्पा, कुल्हाड़ी।

टङ्गण:,—णम् [=टङ्कण पृषो०] सोहागा।

टङ्गा [टङ्ग+टाप्] टांग, लात, पैर।

टङ्करी [टङ्कयति शब्दं रात्रि--रा+क+ङीष्] 1. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 2. परिखा, खंदक।

टाङ्कुर: [टङ्कार+अण्] झंकार, टङ्कार।

टिक् (भ्वा०—आ०—टेकते) जाना, चलना-फिरना।

टिटि(ट्टि)भ: (स्त्री०—भी) [टिटि(ट्टि)इत्यव्यक्तशब्दं भणति--टिटि(ट्टि)+भण्--ड] टिटिहिरी पक्षी, --उल्लिख्य टिट्टिभः पादावास्ते भङ्गभयादिव.—पञ्च० १।३१४, मनु० ५।११, याज्ञ० १।१७२, (टिट्टिभक भी)।

टिप्पणी(नी) [टिप्+क्विप्, टिप्पा एनपते स्तुयते-टिप्+पन्--अच्+ङीष् पृषो० पात्वं वा] भाष्य, टीका। (कभी कभी 'भाष्य' पर लिखी गई 'व्याख्या' के लिए भी -उदा० महाभाष्य पर कैयट की व्याख्या या टीका या कैयट के भाष्य पर नागोजी भट्ट की टीका या भाष्य)।

टीक् (भ्वा० आ० टीकते) चलना-फिरना, जाना, सहारा, देना—कदमर्याः कृतमालमृदुगतदल कोपष्टिकण्ठीकांते मा० ९।७,--आ—, जाना, चलना-फिरना, इधर-उधर घूमना -आटीकमेऽङ्ग करिणोटीपदातिजुषि वाटीभुवि क्षितिभृजम् अस्व० ५।

टीका [टीकयते गम्यते, ग्रन्थार्थोऽनया—टीक्+क+टाप्] व्याख्या, भाष्य—काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीका तथाप्येष तथैव दुर्गमः।

दुष्टङ्क (वि०) [दुष्टु इति अव्यक्तशब्दं कायति—टुदु+कै+क] 1. छोटा, बौड़ा 2. दुष्ट, क्रूर, नृशंस 3. कठोर।

ठ

ठ: (पुं०) (धातु के बने बर्तन के सीढ़ियों में से गिरते हुए ध्वनि जैसी) अनुकरणात्मक ध्वनि—रामाभिषेके मदविह्वलायाः कक्षाच्च्युतो हेमघटस्तरुण्याः, सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं ठठं ठठं ठठठः ठठठः--सुभा०।

ठक्कुर: (पुं०) 1. मूर्ति, देवमूर्ति 2. पूज्य व्यक्ति के नाम के साथ लगने वाली सम्मानसूचक उपाधि—उदा० गोविन्द ठक्कुर (काव्य प्रदीप के रचयिता)।

ठाक्किनी (स्त्री०) तगड़ी, करधनी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डमः [ड+मा+क] एक घृणित और मिश्रित जाति, डोम।

डमर: [मृ+अच्—मरम्, डेन त्रासेन मरं पलायनम्, त० त०] 1. झगड़ा, फसाद, दंगा 2. भावभंगिमा और ललकारों से शत्रु को भयभीत करना,—रम् डर के कारण भाग जाना, भगदड़।

डमरुः [डमित्यव्यक्तशब्दम् रुणद्धि—डम्+रु+कु] एक प्रकार का बाजा, डुगडुगी (इस वाद्ययन्त्र को प्रायः कापालिक साधु बजाया करते हैं) कभी कभी नपुं० भी माना जाता है]।

डम्ब् (चुरा० उभ० डम्बयति—ते) 1. फेंकना, भेजना 2. आदेश देना 3. देखना, कि—, अनुकरण करना, नकल करना, तुलना करना। —(डं) ऋतुर्नाडम्बयामास न पुनः प्राप तच्छ्रियम् —रघु० ४।१७। अपु:प्रकर्षेण विडम्बितेश्वरः—३।१२, १३।२९, १६।११, कि० ५।४६ १२।३८, शि० ११।६, १२।५ 2. हँसी उड़ाना, अवहास करना, खिल्ली उड़ाना—सम्मोहयन्ति, मदयन्ति, विडम्बयन्ति निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति—भर्तृ० १।२२, यथा न विद्वज्जनैः —का० १०९ 3. ठगना, धोखा देना—एवमहमभिप्रायसम्भाविते?जनचित्तवृत्तिः प्रार्थिता विडम्ब्यते—श० २ 4. कष्ट देना, पीड़ा देना।

डम्बर (वि०) [डम्ब्+अरच्] प्रसिद्ध, विख्यात,—रः 1. समवाय, संग्रह, ढेर—मा० १।१६ 2. दिखावा, टिमटाम 3. सादृश्य, समानता, आभास 4. घमण्ड, अहंकार।

डम्भ् (चुरा० उभ० डम्भयति—ते) इकट्ठा करना।

डयनम् [डी+ल्युट्] 1. उड़ान 2. डोली, पालकी।

डवित्थः (पुं०) कौंच का बारहसिंहा।

डाकिनी [डाय भयदानाम अकनि डजनि ङ+अक्+इनि+ङीप्] पिशाचिनी, भूतनी।

डाङ्कृतिः (स्त्री०) [डाम्—कृ+क्तिन्] घण्टी के बजने की ध्वनि, डिङ्ग-डाङ्ग आदि।

डामर (वि०) [डमर+अण्] 1. डरावना, भयावह, भयानक -पर्यान्तं मयि रणमोडामरस्तवं संधत्ते गगनतलप्रयायवेगः मा० ५।३ 2. दंगा करने वाला, हुड़दङ्गी 3. सुरत शकल में मिलता-जुलता, अनुरूप (अर्थात्, मनोहर, सुन्दर)—रतिमण्डिते ललिते कुसुमानि शिखण्डकडामरे (चिकुरे)—गीत० १२,—रः 1. होहल्ला, हंगामा, दंगा, फसाद 2. उत्सव के अवसर पर चहलपहल, लड़ाई झगड़े के अवसर पर खलबली, हलचल।

डालिमः [=दाडिमः, पृषो०] अनार।

डाहलः (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासीः कीर्तिः समाडिंल्यति डाहलार्वीम् विद्धशाल० १।१०३।

डिङ्गरः (पुं०) 1. सेवक 2. लड़ाका, ठग, धूर्त 3. पतित या नीच आदमी।

डिण्डिमः [डिंडीति शब्दं माति—डिण्डि+मा+क] एक प्रकार का छोटा ढोल (आल० भी) इति घोषयतीव डिण्डिमः—हि० २।८६ मुखरयत्स्व यशो नवडिण्डिमम् —नै० ४।५३, अमरु २८, चण्डि रणिरसनारवडिण्डिममभिसर सरसमलज्ज— गीत० ११, आर्यबालचरित-प्रस्तावनाडिण्डिमः— महावी० १।५४।

डिण्डी (डि) रः [डिण्ड्+र पक्षे दीर्घः] 1. मछलीक्षेपी का भीतरी कवच; जो समुद्रफेन की भाँति काम में लाया जाता है 2. आम—उद्दण्डतांतन डिण्डीरे पिण्डपङ्क्तिरिदृश्यत विक्रमांक ४।९४, २।४।

डिमः [डिम्+क] दस प्रकार के नाटकों में से एक—मायेन्द्रजालसंग्रामक्रोधाद्भ्रान्तिविप्लवैः, उपरागश्च भूयिष्ठो डिमः ख्यातेऽतिवृत्तके सा० द० ५।५।

डिम्बः [डिंब्+घञ्] 1. दंगा, फसाद 2. कोलाहल, भय के कारण चीत्कार 3. छोटा बच्चा या छोटा जानवर 4. अंडा 5. गोला, गेंद, पिण्ड। सम—आहवः, —युद्धम् मामूली लड़ाई, (बिना शस्त्र प्रयोग के) झड़प, खटपट, मुठभेड़, झूठमूठ की लड़ाई मनु० ५।९५।

डिम्बिका [डिम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. कामुकी स्त्री, 2. बुलबुला।

डिम्भः [डिम्भ्+अच्] 1. छोटा बच्चा 2. कोई छोटा जानवर जैसे शेर का बच्चा; —जृम्भस्व रे डिम्भ दन्तास्ते गणयिष्यामि श० ७ 3. मूर्ख, बुद्धू।

डिम्भकः (स्त्री०—भिका) [डिम्भ्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्व च] 1. एक छोटा बच्चा 2. जानवर का छोटा बच्चा।

डी (क्या० दिवा० आ०- ड्यते, डीयते, डीन) 1. उड़ना, हवा में से गुजरना 2. जाना, उड़—, हवा में उड़ना, ऊपर उड़ना -सर्वतोदृष्टडीयतामृ— हि० १ (हंसैः) उदडीयत वैकुतालकरग्रहजादरयं विकस्वरस्वरैः—नै० २।५, प्र—, ऊपर उड़ना हंसैः प्रडीनैरिव—मृच्छ० ५।५, प्रोपृ—, ऊपर उड़ जाना प्रोड्डीयेव बलाकया सरसमं सोत्कण्ठमालिङ्गितः—२३।

डीन (भू० क० कृ०) [डी+क्त] उड़ा हुआ, —नम् पक्षी की उड़ान, पक्षियों की उड़ान १०१ प्रकार की बताई गई है, किसी भी विशेष उड़ान को प्रकट करने के लिए 'डीन' से पूर्व उपयुक्त उपसर्ग लगा दिया जाता है —उदा० अवडीनम्, उड्डीनम्, घडीनम्, अभिडीनम्, विडीनम्, परिडीनम्, प्रतिडीनम् आदि।

डुण्डुभः [डुण्ड्+भा—क] साँपों का एक प्रकार जिनमें जहर नहीं होता (निर्विषाः डुण्डुभाः स्मृताः)।

डुलिः (स्त्री०) [—डुलि पृषो०] एक छोटी कछुवी।

डोमः (पुं०) अत्यन्त नीच जाति का पुरुष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढ

ढक्का | ढक् इति शब्देन कायति --ढक् |-कै+क+टाप् | बड़ा ढोल --न ते दुदुक्रुकेन न सीणि ढक्कया न मर्दले मणि न नेऽणि ढक्कया -नै० १५।१७।

ढाभरा (स्त्री०) हबशी।

ढालम् [ढाल+अण्] म्यान।

ढालिन् (पुं०) [ढाल | इनि] ढालधारी योद्धा।

ढुण्ढिः [ढुण्ढ्--इन्] गणेश का विशेषण।

ढौलः (पुं०) बड़ा ढोल, मृदङ्ग, ढपली।

ढौक् (स्वा० आ० ढौकते, ढौकित) जाना, पहुँचाना --यान्तं वने रविचरौ ढुढौके—भट्टि० २।२३, १४।७१, १५।७९—प्रेर० ढौकयति—दे० 1. निकट लाना, पहुँचाना तन्मान्सं चैव गोमायोस्तैः क्षणाद्राशु ढौकितम् महा०, भट्टि० १७।१०३ 2. उपस्थित करना, प्रस्तुत करना।

ढौकनम् [ढौक्+ल्युट्] 1. भेंट 2. उपहार, रिश्वत।

ण

[संस्कृत में 'ण' से आरम्भ होने वाला कोई शब्द नहीं, 'न' से आरम्भ होने वाले बहुत से धातु हैं वस्तुतः वे सब 'अ' से आरम्भ होते हैं, धातुकोश में उन्हें 'ण' से केवल इसलिए आरम्भ किया गया है जिससे कि यह प्रकट हो जाय कि यहाँ 'न' प्र, परि तथा अन्तर् आदि उपसर्ग पूर्व होने पर 'ण' में परिवर्तित हो जाय]।

त

तकिल (वि०) [तक्+इलच्] जालसाज, चालाक, धूर्त।

तक्र [तर्क्+रक्] छाछ, मट्ठा। सम०—अट: रई का डंडा,—सारम् ताजा मक्खन।

तक्ष् (भ्वा० स्वा० पर० तक्षति, तक्ष्णोति, तष्ट) चीरना, काटना, छीलना, छेनी से काटना, टुकड़े-टुकड़े करना, खण्डशः करना आत्मानं तक्षति शोधं वनं परशुना यथा—महा०, निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः --अमर० 2. गढ़ना, बनाना, निर्माण करना (लकड़ी में से) 3. बसौला, रचना करना 4. घायल करना, चोट पहुँचाना 5. आविष्कार करना, मन में बनाना,—निस्, --टुकड़े-टुकड़े करना, सम्,--छीलना, छेनी से काटना, चीरना 2. घायल करना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना –निस्तिक्ष्णाभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यामन्योन्यं संततक्षतुः--महा०, वराह० ४२।२९।

तक्षकः [तक्ष्+ण्वुल्] 1. बढ़ई, लकड़ी का काम करने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का धंधा करने के कारण) 2. सूत्रधार 3. देवताओं का वास्तुकार, विश्वकर्मा 4. पाताल के मुख्य नागों अर्थात् सर्पों में से एक, कश्यप और कद्रू का पुत्र (आस्तीक ऋषि के बीच में पड़ने से जनमेजय के सर्पयज्ञ में जलजाने से बचा हुआ, इसी सर्पयज्ञ में अनेक सर्प जल कर भस्म हो गये थे)

तक्षणम् [तक्ष्+ल्युट्] छीलना, काटना दारवाणां च तक्षणम्--मनु० ५।११५, याज्ञ० १।१८५।

तक्षन् (पुं०) [तक्ष्+कनिन्] 1. बढ़ई, लकड़ी काटने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का काम करने के कारण) अनक्षा तक्षा—काव्य०, जो जाति से तक्षा नहीं है, वह तक्षा कहलाता है जब कि वह तक्षा की भाँति तक्षा के काम को करने लगता है, बढ़ई --शि० १२।२५ 2. देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा।

तगरः [तस्य कोडस्य गरः, ष० त०] एक प्रकार का पौधा।

तङ्क् (भ्वा० पर०--तङ्कति, तङ्कित) 1. सहन करना, बर्दाश्त करना 2. हँसना 3. कष्टग्रस्त रहना।

तङ्कः [तङ्क्+घञ् अच् वा] 1. कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जीवन 2. किसी प्रिय वस्तु के वियोग से उत्पन्न शोक 3. भय, डर 4. संगतराश की छेनी।

तङ्कनम् [तङ्क्--ल्युट्] कष्टमय जीवन, आपदग्रस्त जिंदगी।

तञ्ज् (भ्वा० पर०--तञ्जति, तञ्जित) 1. जाना, चलना-फिरना 2. हिलाना-जुलाना, कष्ट देना 3. लड़खड़ाना।

तञ्च् [स्वा० पर०--तनक्ति, तञ्चित-क्रीडने, सिकुड़ना --तनक्ति स्रोम विस्तृतम् भट्टि० ६।३८।

तटः [तट्+अच्] 1. ढाला, उतार, कगार 2. आकाश या क्षितिज,—टः,--टा,—टी,-टम् 1. किनारा, कूल,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उतार, ढाल -शीलं शैलतटात्पातु -भर्तृ० २।३९, प्रोत्सर्पिन्नितान्ततटी ३।४५, सिन्धोस्तटादोघ इव प्रवृद्धः कु० ३।६, उच्चारणात्पक्षिमृगाश्रतटीस्तम् शि० ४।१८ 2. शरीर के अवयव (जिनमें स्वभावतः कुछ ढाल है) --पद्मपर्यवरुतटीपरिरम्भलग्न -गीत० १, यो लुप्तं सखि चन्दनं स्तनतटे—शृंगार० ७, इसी प्रकार जघनतट, कटितट, श्रोणीतट, कुचतट, कण्ठतट, ललाटतट आदि,—टम् क्रिया । सम०--आघातः सींगों की टक्कर से मिट्टी उखाड़ना, तट या ढलान पर सिर से टक्कर मारना --अभ्यक्तिं तटाघातं निर्जितैरुहता गजाः--कु० २।५०,--स्थ (वि०) (शा०) किनारे पर विद्यमान, कूलस्थित 2. (आल०) अलग खड़ा हुआ, अलग-अलग, उदासीन, परोक्ष, निरिक्ष्य --तटस्थः स्वानर्थान् घटयति मौनं च भजते —मा० १।१४, तटस्थं नैराश्यात् उत्तर० ३।१३, मया तटस्थस्वमुपदर्शितोसि नै० ३।५५, (यहाँ 'तटस्थ' का अर्थ 'कृतघ्नचित्त' भी है)।

तटाकः, —कम् [तट्+आकन्] तालाब (जो कमल तथा अन्य जलीय पौधों के लिए पर्याप्त गहरा हो) दे० 'तड़ाग'।

तटिनी [तटमस्यस्याः इनि ङीप्] नदी—कदा वाराणस्यामम-रतटिनीरोधसि वसन्—भर्तृ० ३।१२३, भाभि० १।२३।

तड् (चुरा० उभ० -ताडयति—ते, ताडित) 1. पीटना, मारना, टक्कराना गोहन्तां गोहनां महिषाः पिपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम् --अ० २।५, (नौः) ताडिता मारुतेर्यथा --रामा०, रघु० ३।६१, कु० ५।२४, भर्तृ० १। ५० 2. पीटना, मारना, दण्डस्वरूप पीटना, आघात पहुँचाना --लालयेत्पञ्चवर्षाणि -दशवर्षाणि ताडयेत् --चाण० ११।१२, न ताडयेन्नृणोनापि --मनु० ४। १६९, पादेन यस्ताडयते --अमरु ५२ 3. प्रहार करना, (ढोल आदि का) पीटना ताडयमानासु भेरीषु --महा०, अताडयन् मृदङ्गांश्च --भट्टि० १७।७ वेणो० १।२२ 4. बजाना, (वीणा के तारों का) आहनन करना --श्रोतुवितन्त्रीरिव ताड्यमाना--कु० १।४५ 5. चमकना 6. बोलना।

तडागः दे० तड़ाग।

तडागः [तड्+आग] तालाब, गहरा जोहड़, जलाशय —स्फुटकमलोदरखेलत्खञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् --गीत० ११, मनु० ४।२०३, याज्ञ० २।२३७।

तडाघातः दे० 'तटाघात' (उच्चैः करिकराक्षेपं तडाघातं विदुर्बुधाः शब्द)।

तडित् (स्त्री०) [ताड्यति अभ्रम् - तड्+इति] बिजली, घनं घनान्ते तडितां गुणैरिव—शि० १।७, मेघ० ७६, रघु० ६।६५। सम०--गर्भः बादल,--लता बिजली की कौंध जिसमें लहरें हों, रेखा बिजली की रेखा।

तडित्वत् (वि०) [तडित्+मतुप्, वत्वम्] बिजली वाला —अवरोहति शैलाग्रं तडित्वानिव तोयदः विक्रम० १।१४, कि० ५।४, (पुं०) बादल शि० १।२२।

तडिन्मय (वि०) [तडित् मयट्] बिजली से युक्त—कु० ५।२५।

तण्ड् (स्वा० आ० -तण्डते, तण्डित) प्रहार करना।

तण्डकः [तण्ड्+ण्वुल्] खञ्जन पक्षी।

तण्डुलः [तण्ड्+उलच्] कूटने, छड़ने और फिर छिड़ने के पश्चात् प्राप्त अन्न (विशेषतः चावल) | शब्द. धान्य. तण्डुल और अन्न यह चार प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं --शस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तं गतपुष्पं यवादिकम्, विस्तुषः प्रोक्तः स्विन्नश्चन्द्रमुदाहृतम्।

तत (भू० क० कृ०) [तन्+क्त] फैलाया हुआ, विस्तारित घेरा हुआ--(दे० तन्)—न तपो तमोभिरिभगम्य वर्तते शि० ९।२३, ६।५०, कि० ५।११,—तम् तारों वाला बाजा।

ततः (तत:) [अव्य० - तद्+तसिल्] 1. (उस स्थान या वस्तु से, --न च निम्नादिव हृदयं निवर्तते मे ततो हृदयम् श० ३।१, मा० २।१०, मनु० ६।७, १२।८५ 2. वहाँ, उधर 3. तब, तो, उसके बाद ततः कतिपयदिवसापगमे का० ११०, अमरु ६६, कि० १।२७, मनु० २।९३, ७।५९ 4. इसलिए, फलतः, इसी कारण 5. तब, उस अवस्था में, तो ('यदि' का सह सम्बन्धी) यदि गृहीतमिदं ततः किम् --का० १२०, अभोक्ष्यमत्रं यदि मन्यसे प्रभो ततः समग्रेऽह्नि --रघु० ३।६५ 6. उससे परे उससे आगे, और आगे, इसके अतिरिक्त ततः परतो निर्मनुष्यमरण्यम् का० १०१ 7. उससे, उसकी अपेक्षा, उसके अतिरिक्त—यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः—भग० ६।२२, ७। २६ 8. कई बार 'ततः' शब्द के सम्प्र० के रूप की भाँति प्रयुक्त होता है--यथा तस्मात्, तस्याः, ततोऽन्य त्रापि दृश्यते सिद्धा०। यतः ततः (क) जहाँ-वहाँ —यतः कृष्णस्ततः सर्वं यतः कृष्णस्ततो जयः, —महा०, मनु० ७।१८८ (ख) क्योंकि -इसलिए यतो यतः --ततस्ततः जहाँ कहीं-वहाँ यतो यतः षट्चरणोऽभि-वर्तते ततस्ततः प्रेरितदीर्घलोचना—शृं० १।२३, ततः किम् तो फिर क्या, इससे क्या लाभ, क्या काम-प्राप्ताः श्रियः सकलकामदुघास्ततः किम्—भर्तृ० ३।७३, ७४, शा० ४।२, ततस्ततः (क) यहाँ-वहाँ, इधर-उधर—ततो दिव्यानि माल्यानि प्रादुरासन्ततस्ततः—महा० (ख) 'फिर क्या' 'इसके आगे' 'अच्छा तो फिर' (नाटकों में प्रयुक्त) ततः प्रभृति तब से लेकर ('यतः प्रभृति' का सह सम्बन्धी) —तृष्णा ततः प्रभृति मे विगुणत्वमेति —अमरु ६८, मनु० ९।९८।

ततस्त्य (वि०) [ततस+त्यप्] वहाँ से आने वाला, वहाँ से चलने वाला—कि० १।२७।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तति (सर्व० वि०) (नित्य बहुवचनांत, कर्तृ० कर्म० तति) [तत्+क्तिच्] इतने अधिक, उदा०—तति पुरुषाः सन्ति आदि,—**तिः** (स्त्री० ०तन्+क्तिन्] 1. श्रेणी, पंक्ति, रेखा—विस्तर्यं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले शं० २।५, बलाहकततीः शि० ४।५४, १।५ 2. गण, दल, समूह 3. यज्ञकृत्य ।

तत्त्वम् [तत्+क्विप्, तुक्, पृषो० तत्+त्व] (कभी कभी 'तत्वम्' भी लिखा जाता है) 1. वास्तविक स्थिति या दशा 2. तथ्य,—यं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती ०शं० १।२४ 3. यथार्थ या मूल प्रकृति ०संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्—भग० १८।१, ३।२८, मनु० १।३, ३।९६, ५।४२ 4. मानव आत्मा की वास्तविक प्रकृति या विश्वव्यापी परमात्मा के समतुल्य विराट् सृष्टि या भौतिक संसार 5. प्रथम या यथार्थ सिद्धांत 6. मूलतत्त्व या प्रकृति 7. मन 8. सूर्य 9. वाद्य का भेद विशेष, विलंबित 10. एक प्रकार का नृत्य । **सम०—अभियोगः** असन्दिग्ध दोषारोप या घोषणा, —**अर्थः** सचाई, वास्तविकता, यथार्थता, वास्तविक प्रकृति, —**ज्ञ**, —**विद्** (वि०) दार्शनिक, ब्रह्मज्ञान का वेत्ता, —**न्यासः** विष्णु की तन्त्रोक्त पूजा में लिहित एक अंगन्यास (इसमें शरीर के विभिन्न अंगों पर गुह्य अक्षर या अन्य चिन्ह बनाने के साथ कुछ प्रार्थनाएँ बोली जाती है)

तत्त्वतः (अव्य०) [तत्त्व+तस्] वस्तुतः, सचमुच, ठीक ठीक ०तत्त्वत एनामुपलप्स्ये—शं० १, मनु० ७।१० ।

तत्र (अव्य०) [तत्+त्रल्] 1. उस स्थान पर, वहाँ, सामने, उस ओर 2. उस अवसर पर, उन परिस्थितियों में, तब, उस अवस्था में 3. उसके लिए, इसमें निरीतयः यन्मदीयाः प्रजास्तत्र हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्- रघु० १।६३ 4. प्रायः 'तद्' के अर्थ० के रूप के अर्थ में प्रयुक्त—मनु० २।११२, ३।६०, ४।१८६, याज्ञ० १।२६३, **तत्रापि** 'तब भी' 'तो भी' (यद्यपि का सह संबंधी) **तत्र तत्र** 'बहुत से स्थानों पर या विभिन्न विषयों में' 'यहाँ-वहाँ' 'प्रत्येक स्थान पर' ०अध्यक्षान्विधिनान्वयंत्र तत्र विपश्चितः ०मनु० ७।८१ । **सम०—भवत्** (वि०) (स्त्री०—ती) श्रीमान्, महोदय, श्रद्धेय, आदरणीय, महानुभाव, (सम्मानपूर्ण उपाधि जो नाटकों में उन व्यक्तियों को दी जाती हैं जो वक्ता के समीप उपस्थित न हों)—पूज्ये तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि; आदिष्टोऽस्मि तत्रभवता काश्यपेन शं० ४, **तत्रभवान्** काश्यपः शं० १, आदि,—**स्थ** (वि०) उस स्थान पर खड़ा हुआ या वर्तमान, उस स्थान से संबद्ध ।

तत्रत्य (वि०) [तत्र+त्यप्] वहाँ उत्पन्न या जन्मा हुआ, उस स्थान से संबद्ध ।

तथा (अव्य०) [तद् प्रकारे थाल् विभक्तित्वात्] 1. वैसे, इस प्रकार, उस रीति से ०तथा मां वल्लभिवा—श० ५, सूतस्तथा करोति—विक्रम० १ 2. और भी, इस प्रकार भी, भी—अनागत विधाता च प्रत्युत्पन्नमतिः स्तथा० पंच० १।३३५, रघु० ३।२१ 3. सच, ठीक इसी प्रकार, सचमुच वैसा हो—यदात्थ राजन्यकुमार ततथा० रघु० ३।४८, मनु० १।४२ 4. (अनुरोध के रूप में) ऐसा निश्चित जैसा कि ('यथा' को पहले रख कर) दे० यथा ('यथा' के सहसंबंधी के रूप में 'तथा' के कुछ अर्थों के लिए 'यथा' के नी० दे०) **तथापि** (प्रायः 'यद्यपि' का सहसंबंधी) 'तो भी' 'तब भी' 'फिर भी' 'तिस पर भी' —प्रथितं दुष्कुलस्यापि चरितं तथापीदं न लक्षये श० ५, वरं महत्याऽपि पिपासयाऽपि तथापि नाऽन्यस्य करोत्युपासनाम्—चात० २।६, वपुः प्रकर्षादिजयद्गुरुं रघुस्तथापि नीचैर्विनयादृश्यत—रघु० ३।३४, ६२, **तथेति** 'सहमति', 'प्रतिज्ञा' को प्रकट करता है,—तथेति शेषामिव भर्तुराज्ञामादाय मूर्ध्ना मदनः प्रतस्थे—कु० ३।२२, रघु० ११।९२, ३।६७, **तथेति** निष्क्रान्तः (नाटकों में) **तथैव** 'उसी प्रकार' 'ठीक उसी भाँति' **तथैव च** 'उसी ढंग से' **तथाच** 'और इसी प्रकार', 'इसी ढंग से', 'इसी प्रकार कहा गया है कि' **तथाहि** 'इसी लिए' 'उदाहरणार्थ', इसी कारण (यह कहा गया है कि) —तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना, तथाहि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणाः रघु० १।२५, श० १।२१ । **सम०—कृत** (वि०) इस प्रकार किया गया, —**गत** (वि०) 1. ऐसी स्थिति या दशा में होने वाला—तथागतायां परिहास-पूर्वम् रघु० ६।८२ 2. इस गुण का, (तः) 1. बुद्ध —काले मिते वाक्यमुदीरकेऽस्मिन् तथागतस्यैव जनः सुचेताः ०शि० २०।८१ 2. जिन, —**गुण** (वि०) 1. ऐसे गुणों से युक्त या संपन्न 2. ऐसी अवस्था को प्राप्त, ऐसी अवस्था में—तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयाम्—वेणी० १।११, —**राजः** बुद्ध का विशेषण, —**रूप**, —**रूपिन्** (वि०) इस आकार प्रकार का, इस प्रकार दिखाई देने वाला, —**विध** (वि०) इस प्रकार का, ऐसे गुणों का, इस स्वभाव का—तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः—कु० ५।८२, रघु० ३।४,—**विधम्** (अव्य०) 1. इस प्रकार, इस रीति से 2. इसी भाँति, समान रूप से ।

तथात्वम् [तथा+त्व] 1. ऐसी अवस्था, ऐसा होना 2. वस्तु स्थिति या मूल बात, सचाई ।

तथ्य (वि०) [तथा+यत्] यथार्थ, वास्तविक, असली —प्रियमपि तथ्यमाह प्रियंवदा—श० १,—**थ्यम्** सचाई, वास्तविकता, सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन ०कु० ३।६३, मनु० ८।२७४ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तद् (सर्व० वि०) [कर्तृ० ए० व०—सः (पुं०), सा (स्त्री०), तत् (नपुं०)] 1. वह, अविद्यमान वस्तु का उल्लेख (तदिति परोक्षे विजानीयात्) 2. वह (प्रायः 'यद्' का सहसम्बन्धी)—यस्य बुद्धिर्बलं तस्य - पंच० १ 3. वह अर्थात् प्रख्यात- -सा रम्या नगरी महान्स नृपतिः सामन्तचक्रं च तत्— भर्तृ० ३।३७, कु० ५।७१ 4. वह (किसी देखे हुए या अनुभूतार्थ का उल्लेख) उत्कम्पनी भयपरिस्खलितांशुकान्ता ते लोचने प्रतिदिशं विधुरे क्षिपन्ती—काव्य० ७, भामि० २।५ 5. वही, समरूप, वह, बिल्कुल वही, (प्रायः 'एव' के साथ) —शतानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव नाम— भर्तृ० २।४०; **कभी कभी 'तद्' के रूप उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के साथ** प्रयुक्त होते हैं, साथ ही बल देने के लिए निर्देशक तथा सम्बन्धबोधक सर्वनामों के साथ भी (इसका अनुवाद प्रायः 'इसलिए' 'तो' करते हैं)—खेहमिज्याविधिद्वात्मा—रघु० १।६८, (मैं वही व्यक्ति, अतः मैं, मैं अमुक व्यक्ति), स त्वं निरत्रपः विहाय लज्जाम् २।४०, 'अतः तुम्हें वापिस आ जाना चाहिए'; **जब 'तद्' की आवृत्ति की जाय तो इसका अर्थ होता है "कई" "भिन्न २"—तैस्तैस्तैस्थानैर्यु - का० ३६९, भग० ७।२०, मा० १।३६, --तेन—तद् का करण० रूप, क्रिया विशेषण केवल के साथ 'इसलिए' 'इस कारण' 'इसे विषय में' 'इसी कारण' अर्थों को प्रकट करता है, तेन हि यदि ऐसा है तो फिर (अव्य०) 1. वहाँ, उधर 2. तब, उस अवस्था में, उस समय 3. इसी कारण, इसीलिए, फलस्वरूप—तदेहि विमर्दक्षमां भूमिमवतारय:—उत्तर० ५, मेघ० ७।११०, रघु० ३।४६ 4. तब ('यदि' का सहसम्बन्धी) तथापि --यदि महत्कुतूहलं तत्कथयामि -- का० १३६, भग० १।४५। सम०—अनन्तरम् (अव्य०) उसके पश्चात् तुरन्त, तो फिर, --अनु (अव्य०) उसके पश्चात्, बाद में --सन्देशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम्-- मेघ० १३, रघु० १६।७, मा० २।२६,--अन्त (वि०) उसी में नष्ट होने वाला, इस प्रकार समाप्त होने वाला—अर्थ,—अर्थीय (वि०) 1. उसके निमित्त अभिप्रेत 2. उस अर्थ से युक्त, अर्ह (वि०) उस योग्यता से युक्त,—अवधि (अव्य०) 1. वहाँ तक, उस समय तक, तब तक तदवधि कुशली पुराणशास्त्रस्मृति शतचारुविचारजो विवेकः--भामि० २।१४ 2. उस समय से लेकर, तब से --इक्ष्वाकूणां दीर्घसंतदवधि मुखे पाण्डिमा--भामि० २।६९,—एकचित्त (वि०) उस पर ही मन को स्थिर करने वाला,- कालः विद्यमान क्षण, वर्तमान समय, श्री (वि०) सभाहित, प्रत्युत्पन्नमति, —कालम् (अव्य०) अविलम्ब, तुरन्त, क्षणः 1. इस क्षण, फिलहाल 2. विद्यमान या वर्तमान समय रघु० १।५१,- क्षणम्,- क्षणात् (अव्य०) तुरन्त, प्रत्यक्षतः, फौरन—रघु० ३।१४, वि० ९।५, याज्ञ० २।१४, अमरु ८३,--क्रिया (वि०) बिना मजदूरी के काम करने वाला, गत (वि०) उस ओर गया हुआ या निर्देशित, तुला हुआ, उसका भक्त, तत्सम्बन्धी, -गुणः एक अलंकार(अल०) स्वमुत्कृष्यं गुणं वीक्षादन्यदुत्कर्षवल-गुणस्य यत्, वस्तु तद्गुणतामेति भव्यते स तु तद्गुणः -- काव्य० १०, दे० चन्द्रा० ५।१४१,—ज्ञ (वि०) व्यवधानशून्य, तात्कालिक, ज्ञः जानने वाला, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान्, दार्शनिक,-- तृतीय (वि०) उसी कार्य को तीसरी बार करने वाला,—धन (वि०) कंजूस, दरिद्र,--पर (वि०) 1. उसका अनुसरण करने वाला, पश्चवर्ती, घटिया 2. उसी की सर्वाधिक पदार्थ मानने वाला, बिल्कुल तुला हुआ, नितान्त संलग्न, उसुकतापूर्वक लगा (प्रायः समास में प्रयोग) -सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत् रघु० २।५, १।६६, मेघ० १०, याज्ञ० १।८३, मनु० ३।२६२. **परायण** (वि०) पूर्णतः संलग्न या आसक्त,--पुरुषः 1. मूल पुरुष, परमात्मा 2. एक समास का नाम जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है, या जिसका उत्तरपद पूर्वपद द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया जाता है, शब्द की मूल भावना जो स्थिर रहती है - यथा, तत्पुरुष, तत्पुरुष कर्मधारय मेनाहं स्थां बहुर्द्वाहिः--उद्भट,—पूर्व (वि०) पहली बार घटने वाला, या होने वाला, --अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया -कु० ५।१०, ७।२०, रघु० ३।४३, १४।३८ 2. पूर्व का, पहला, प्रथम (वि०) पहली बार ही उस कार्य को करने वाला, -- ज्ञः एक प्रकार का वाद, भावः उसके अनुरूप. --मात्रम् 1. केवल वह, सिर्फ मामूली, अत्यन्त तुच्छ मात्रा युक्त 2. (दर्शन०) सूक्ष्म तथा मूलतत्त्व (उदा० शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध),—वाचक (वि०) उसी को संकेतित या प्रकट करने वाला,—विद् (वि०) 1. उसको जानने वाला 2. सचाई को जानने वाला, --विध (वि०) उस प्रकार का, रघु० २।२२, कु० ५।७३, मनु० २।११२,-- हित (वि०) उसके लिए अच्छा, (-तः) एक प्रत्यय जो प्रातिपदिक शब्दों के आगे व्युत्पन्न शब्द बनाने के लिए लगाया जाता है।

तदा (अव्य०) [तस्मिन् काले तद्+दा] 1. तब, उस समय 2. फिर, उस मामले में ('यदा' का सहसंबंधी) भग० २।५२, ५३, मेघ० १।५२, ५४-५६, **यदा यदा --तदा तदा** 'जब कभी' **तदा प्रभृति** तब से, उस समय से लेकर कु० १।५३। सम० -मुख (वि०) आरम्भ, उपक्रांत या शुरू किया हुआ. (खम्) आरम्भ।

तदात्वम् [तदा + त्व] मौजूदा समय, वर्तमान काल।

तदानीम् (अव्य०) [तद्—दानीम्] तब, उस समय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदानीन्तन (वि०) [तदानीम् + ट्यण्, तुट्] उस समय से संबंध रखने वाला, उस समय का समकालीन, एषोऽस्मि कार्यवशादायोध्यिकस्तदानीन्तनश्च संवृत्तः—उत्तर० १ ।

तदीय (वि०) [तद् + छ] उससे संबंध रखने वाला, उसका, उसकी, उनके, उनको—रघु० १।८१, २।२८, ३।८, २५ ।

तद्वत् (वि०) [तद् + मतुप्] उससे युक्त, उसको रखने वाला, जैसा कि 'तद्वान्पोदः' में—काव्य० २, (अर्थ०) 1. उसके समान, उस रीति से 2. समान रूप से, समान रीति से, इसलिए साथ ही ।

तन् i (तना० उभ०—तनोति, तनुते, तत—क० वा० - तन्यते, तायते, सन्नन्त-तितंसति, तितांसति, तितनिषति) 1. फैलाना, विस्तार करना, लंबा करना, तानना —बाह्वोः सकरयंसरुतयोः —अमर० 2. फैलाना, बिछाना, पसारना - भट्टि० २।३०, १०।३२, १५।९१ 3. ढकना, भरना—स तमीं तमोभिरभिगम्य ततान —शि० ९।२३, कि० ५।११ 4. उत्पन्न करना, पैदा करना, रूप देना, देना, भेंट देना, प्रदान करना, व्यधि विमुत्रे मयि सर्पदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् —गीत० ४, पितुर्वृद्धे तेन ततान सोऽभिषेकः रघु० ३।२५, ७।७, यो दुर्जने वसतिं तनुते मनीषां —भामि० १।९५, १० 5. अनुष्ठान करना, पूरा करना, संपन्न करना —(यज्ञादिक)- इति क्षितीशो नवतिं नवाधिकां महाक्रतूना महतीयशाःसतः समाप्तवृद्धिदधाम्युपः क्षये ततान सोपान परंपरामिव —रघु० ३।६९, मनु० ४।२०५ 6. रचना, करना, (ग्रन्थादिक) लिखना, यथा—नाम्नां माला तनोम्यहं, वा—तनुते टीकाम् 7. फैलाना, झुकाना (धनुष आदि का) 8. कातना, बुनना 9. प्रचार करना, प्रचारित होना 10. चालू रहना, टिका रहना। सम० अव ,1. ढकना, फैलाना 2. उतरना आ—, बिस्तर करना, बिछाना, ढकना, ऊपर फैलाना—कि० १६।१५ 2. फैलाना, पसारना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, बनाना - कि० ६।१८ 4. (धनुष या धनुष की डोरी) तानना —मौर्वी धनुषि चातता रघु० १।१९, ११।४५, उद्—, फैलाना प्र -, 1. फैलाना, पसारना स्थानात्स्वं विभर्त्येषामि कवयो दिक्षु प्रतन्यन्ति नः— भर्तृ० ३।२४ 2. ढकना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना दिखावा करना, प्रदर्शन करना, प्रस्तुत करना तदूरीकृत कृतिभिर्वाचस्पत्य प्रतायते—शि० २।३० 5. अनुष्ठान करना (यज्ञादिक का), वि—, 1. फैलाना, बिछाना —स्फुरितवितनजिह्वः—भट्टि० ९।१२ 2. ढकना, भरना प्रस्वेदबिन्दुवितत वदनं प्रियायाः चौर० ९, यो वितत्य स्थितः खम्—भाग० ५।८ 3. रूप देना, बनाना श्रेणीबन्धाद्वितन्वद्भिरुत्तम्भां तोरणस्रजम्—रघु० १।४१ 4. (धनुष का) तानना -धनुर्वितत्य किरतोः शरान् —उत्तर० ६।१, भट्टि० २।४७ 5. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, देना, प्रदान करना 6. (ग्रंथ का) रचना या लिखना—विराटपर्वप्रश्नोत्तौ भावदीपो वितन्यते 7. करना, अनुष्ठान करना (यज्ञादिक या किसी संस्कार का) कु० २।४६ 8. दिखावा करना, प्रस्तुत करना, सम् -, चालू करना, जि (श्वा० पर० चुरा० उभ० -तनति, तानयति से) 1. भरोसा करना, विश्वास करना, विश्वास रखना 2. सहायता करना, हाथ बँटाना, मदद करना 3. पीड़ित करना, रोगग्रस्त करना 4. हानिशून्य होना ।

तनयः [तनोति निस्तारयति कुलम् - तन् + कयन्] 1. पुत्र 2. सन्तान- लड़का या पुत्री, सिरि°, कलिंग° आदि ।

तनिमन् (पुं०) [तनु + इमनिच्] पतलापन, सुकुमारता, सूक्ष्मता ।

तनु (वि०) (स्त्री० नू, न्वी) [तन् + उ] 1 पतला, दुबला, कृश 2. सुकुमार, नाजुक, मृदु (अङ्गादिक, सौन्दर्य के चिह्नस्वरूप—रघु० ६।३२, शु० तन्वङ्गी 3 बढ़िया, कोमल (वस्त्रादिक) ऋतु० १।७ 4. छोटा, थोड़ा, नन्हा, कम, कुछ, सीमित—तनुवाग्विभवोऽपि सन् रघु० १।९, ३।२, तनुत्वायो बहुग्रहः—हि० २।९१, थोड़ा देने वाला 5. तुच्छ, महत्त्वहीन, छोटा —अमर० २७ 6. (नदी की भांति) उथला हुआ, (स्त्री०) 1. शरीर, व्यक्ति 2. (बाहरी) रूप, प्रकटीकरण - प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः शा० १।१, मालवि० ११।१, मेघ० १९ 3. प्रकृति, किसी वस्तु का रूप और चरित्र 4. खाल । सम० अङ्ग (वि०) सुकुमार अङ्ग वाला, कोमलांगी (—गी) कोमलाङ्गिनी स्त्री,—कूप: रोमकूप,—छद: कवच, रघु० ९।५६, १२।८६,—ज: पुत्र,—जा पुत्री,—त्यज (वि०) 1. अपने जीवन को जोखिम में डालने वाला 2. अपने व्यक्तित्व को छोड़ने वाला, मरने वाला, —त्याग (वि०) थोड़ा क्या रुपये वाला, बचा देने वाला, दरिद्र, - त्रम्, - त्राणम् कवच, —भव: पुत्र (वा) पुत्री —मत्स्या—नाक भूत् (पुं०) शरीरधारी जीव, जीवधारी जन्तु, विशेष कर मनुष्य—कल्प स्थितं तनुभृतां तनुभिस्तनः किय —भर्तृ० ३।७३,—मध्य (वि०) पतली कमर, कमर वाला,—रस: पसीना,—रुह्,—रुहम् शरीर का बाल,—वारम् कवच,—वण: फुन्सी,—सञ्चारिणी छोटी स्त्री, या दस वर्ष का लड़का,—सर: पसीना,—हृद: गुदा, मलद्वार ।

तनुज (वि०) [तन्-उलच्] फैलाया हुआ, विस्तारित ।

तनुत्र (नपुं०) [तन्+उत्रि] शरीर ।

तनू (स्त्री०) [तन्+ऊ] शरीर । सम०—उद्भवः,—जः पुत्र, उद्भवा—जा पुत्री,—त्यक् घी, त्यात् (पुं०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाग—तनूनपाद्भुमवितानमाधिजैः—शि० १।६२, अथः- हुतस्यापि तनूनपातो नाधः शिखा याति कदाचिदेव —हि० २।६७,—सहम् 1. शर पर उगे हुए बाल (पुं० भी) 2. पक्षी के पंख, बाल (हः) पुत्र।

तन्तिः (स्त्री०) [तन्+क्तिच्] 1. रस्सी, डोर, सूत्र 2. पंक्ति, श्रेणी। सम०—पालः 1. गोरक्षक 2. किराए के घर रहते समय का सहदेव का नाम।

तन्तुः [तन्+तुन्] 1. धागा, रस्सी, तार, डोर, सूत्र—चिन्ता सन्ततितन्तु—मा० ५।१०, मेघ० ७० 2. मकड़ी का जाला—रघु० १६।२० 3. रेशा—बिसतन्तुगुणस्य कारितम्—कु० ४।२९ 4. सन्तान, बच्चा, सन्तति 5. मगरमच्छ 6. परमात्मा। सम०—काष्ठम् जुलाहों का एक औजार जिससे ताना साफ़ किया जाता है —कीटः रेशम का कीड़ा,—नागः बड़ा मगरमच्छ, —निर्यासः ताड़ का वृक्ष,—नाभः मकड़ी,—भः 1. सरसों 2. बबूला,—वायम् ऐसा बाजा जिसमें तार कसे हुए हों,—वानम् बुनना,—वापः 1. जुलाहा 2. करघा 3. बुनाई,—विग्रहा केले का वृक्ष,—शाला जुलाहे का कारखाना,—सन्तत (वि०) बुना हुआ, सिला हुआ, —सारः सुपारी का पेड़।

तन्तुकः [तन्तु+कन्] सरसों के दाने।

तन्तुनाभः,—भः [तन्+तुनन्, पक्षे नि० णत्वम्] घड़ियाल।

तन्तुरम्,—रम् [तन्तु+र, छत्व वा] मृणाल, कमल की नाल।

तन्त्र् (चुरा० उभ० —तन्त्रयति—ते, तन्त्रित) 1. हकूमत करना, नियन्त्रण रखना, प्रशासन करना—प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा—शं० ५।५ 2. (आ०) पालन-पोषण करना, निर्वाह करना।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1. करघा 2. धागा 3. ताना 4. वंशज 5. अविच्छिन्न वंश परम्परा 6. कर्मकाण्ड पद्धति, रूप-रेखा, संस्कार—कर्मणां युगपद्भावस्तन्त्रम्—कात्या० 7. मुख्य विषय 8. मुख्य सिद्धान्त, नियम, वाद, शास्त्र —जितमनसिजतन्त्रविचारम्—गीत० २ 9. पराधीनता, पराश्रयता—जैसा कि 'स्वतन्त्र' 'परतन्त्र'; दैवतन्त्र दुःखम्—पञ्च० ५ 10. दैवज्ञानिक कृति 11. अध्याय, अनुभाग (किसी ग्रन्थादिक के)—तन्त्रैः पञ्चभिरेतच्च-कार शास्त्रम्—पंच० १ 12. तन्त्र-संहिता (जिसमें देवताओं की पूजा के लिए अथवा अतिमानव शक्ति प्राप्त करने के लिए जादू-टोना या मन्त्रतन्त्र का वर्णन है) 13. एक से अधिक कार्यों का कारण 14. जादू-टोना 15. मुख्योपचार, गण्डा, ताबीज 16. दवाई, औषधि 17. कसम, शपथ 18. देशभूषा, 19. कार्य करने की सही रीति 20. राजकीय परिजन, अनुचर-वर्ग, भृत्यवर्ग 21. राज्य, देश, प्रभुता 22. सरकार, हकूमत, प्रशासन—लोकतन्त्राधिकारः—शं० ५ 23. सेना 24. ढेर, जमाव 25. घर 26. सजावट 27. दौलत 28. प्रसन्नता। सम०—काष्ठम्=तन्तुकाष्ठ—वापः, —वापम् 1. बुनाई 2. करघा,—वापः 1. मकड़ी 2. जुलाहा।

तन्त्रकः [तन्त्र+कन्] नई वेशभूषा (कोरा कपड़ा)।

तन्त्रणम् [तन्त्र्+ल्युट्] शान्ति बनाये रखना, अनुशासन, व्यवस्था, प्रशासन रखना।

तन्त्रि,—त्री (स्त्री०) [तन्त्र्+इ, तन्त्रि+ङीप्] 1. डोरी, रस्सी—मनु० ४।३८ 2. धनुष की डोरी 3. वीणा का तार—तन्त्रीभाद्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचित् मेघ० ८६ 4. स्नायु तांत 5. पूँछ।

तन्द्रा [तन्द्र्+घञ्+टाप्] 1. आलस्य, थकावट, थकान, क्लान्ति 2. ऊंघ, शैथिल्य तन्द्रालस्यविवर्जनम्—याज्ञ० ३।१५८, महावी० ७।४२, हि० १।३४।

तन्द्रालु (वि०) [तन्द्रा+आलुच्] 1. थका हुआ, परि-श्रांत 2. निद्रालु, आलसी।

तन्द्रिः,—द्री (स्त्री०) [तन्द्र्+किन्, तन्द्रि+ङीप्] निद्रा-लुता, ऊंघ।

तन्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [तत्+मयट्] 1. उसका बना हुआ 2. तल्लीन—मा० १।४१, श० ६।२१ 3. तद्रूप, तदेकरूप।

तन्वी [तन्+ङीष्] सुकुमार या कोमलांगी स्त्री—दयम-धिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० १।२०, तव तन्वि कुचौ वेत्ति नियतं चक्रवर्तिनौ उद्भट।

तप् (म्वा० पर० (आ० विरल) तपति, तप्त) (अक० प्रयोग) (क) चमकना, (आग या सूर्य की भांति) प्रज्वलित होना—तमस्तपति घर्मांशौ कर्थमाभिर्विधिष्यति —श० ५।१४, रघु० ५।१३, उत्तर० ६।१४, भग० ९।१९ (ख) गर्म होना, उष्ण होना, गर्मी फैलना (ग) पीड़ा सहन करना तपति न सा किसलयशय-नेन—गीत० ७ (घ) शरीर को कृश करना, तपस्या करना—अगणिततनूतपं तप्त्वा तपांसि भगीरथः —उत्तर० १।२३ 2. (सक० प्रयोग) (क) गर्म करना, उष्ण करना, तपाना—भट्टि० ९।२ भग० ११।१९ (ख) जलाना, दग्ध करना, जला कर समाप्त कर देना —तपति तनुगात्रि मदनस्त्वामनिशं मां पुनर्दहत्येव—श० ३।१७, अङ्गैरनङ्गतप्तैः—३।७, (ग) चोट पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना, खराब करना—यास्यन्तुस्तप्स्यति मां समस्तं—भट्टि० १।२३, मनु० ७।६ (घ) पीड़ा देना, दुःख देना—कर्मवा०—तप्यते, (कुछ लोग इसे दिवा० की धातु मानते हैं) 1. गर्म किया जाना, पीड़ा सहन करना 2. घोर तपस्या करना, (प्रायः 'तपस्' के साथ)—प्रेर०—तापयति—ते, तापित, 1. गर्म करना, तपाना; गगनं तापितपायिताखिलक्षमा—शि० २०।७५, न हि तापयितुं शक्यं सागरांभस्तृणोल्कया-हि० १।८६,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. यंत्रणा देना, पीडित करना, सताना -भृशं तापितः कन्दर्पेण -गीत० ११, भट्टि० ८।१३, अनु, - 1. पश्चात्ताप करना, अफसोस करना, खिन्न होना 2. पछताना **तप्**, ---1. तापना, गर्म करना, झुलसाना, (सोना आदि) पिघलाना (जिस समय अक० के रूप में 'चमकना' अर्थ प्रकट करने के लिए यह धातु प्रयुक्त की जाती है, या जब इसका कर्म स्वयं शरीर का ही कोई अंग होता है, तो उस समय 'आत्मनेपद' में प्रयुक्त होती है) —उत्तप्यति सुवर्णं सुवर्णकारः—महा०, परन्तु उत्तप्यमान आतपः—भट्टि० ८।१, शि० २०।४०, उत्तप्तेपाणी -महा० 2. खा पी जाना, यन्त्रणा देना, पीडित करना, तपाना—शि० ९।६७, **उप**—,1. गर्म करना, तपाना 2. पीडित करना, दुःख देना—शि० ९।६५, **निस्**,—1. गर्म करना 2. पवित्र करना 3. परिष्कार करना, **परि**—,1. गर्म करना, जलाना, नष्ट करना 2. प्रज्वलित करना, आग लगाना **पश्चात्**, -पछताना, खेद प्रकट करना, **वि**—,1. चमकना ('उद्दीपक' की भांति आत्म०)—रविर्वितपतेऽत्यर्थं—भर्तृ० ८।१४ 2. तपाना, गर्म करना, **सम्**—,1. गर्म करना, तपाना —सन्तप्तश्चामीकर-—भट्टि० ३।३, सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते—भर्तृ० २।६७ 2. दुःखी होना, पीड़ा सहन करना, खिन्न होना—संतप्तानां त्वमसि शरणम्—मेघ० ७, 'दुःखियों का'—दिवापि मयि निष्क्रान्ते संतप्ते गुरु मन्यु—महा०, भर्तृ० २।८७ 3. पछताना।

तप (वि०) [तप्+अच्] 1. जलाने वाला, तपाने वाला तपा कर समाप्त करने वाला 2. पीड़ाकर, कष्टकर, दुःखद -पः 1. गर्मी, आग, आँच 2 सूर्य 3. ग्रीष्म ऋतु - शि० १।६६ 4. तपस्या, धार्मिक कड़ी साधना। सम०—अत्ययः, -अन्तः ग्रीष्म ऋतु का अन्त और वर्षा ऋतु का आरम्भ—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि मुज्यते नदी—कु० ४।४४, ५।२३।

तप्ती [तप्+क्त+ङीप्] ताप्ती नदी।

तपनः [तप्+ल्युट्] 1. सूर्य -प्रतापात्तपनो यथा—रघु० ४।१२, ललाटन्तप्तस्तपति तपनः—उत्तर० ६, मा० १ 2. ग्रीष्मऋतु 3. सूर्यकान्तमणि 4. एक नरक का नाम 5. शिव का विशेषण 6. मदार का पौधा। सम०—आत्मजः, -तनयः यम, कर्ण और सुग्रीव का विशेषण,—आत्मजा, -तनया, यमुना और गोदावरी का विशेषण,—इष्टम् तांबा, **उपलः**—मणिः सूर्यकान्त मणि, —छदः सूर्यमुखी फूल।

तपनी [तपन+ङीप्] गोदावरी नदी या ताप्ती नदी।

तपनीयम् [तप्+अनीयर्] सोना, विशेषतः वह जो आग में तपाया जा चुका है—तपनीयशोकः—मालवि० ३, तपनीयोपानद्युगलभार्यः प्रसादीकरोतु—महावी० ४, असंस्पृशन्ती तपनीयपीठम्—रघु० १८।४१।

तपस् (नपुं०) [तप्+असुन्] 1. ताप, गर्मी, आग 2. पीडा कष्ट 3. तपश्चर्या, धार्मिक, कड़ी साधना, आत्मनियन्त्रण -तपः किलेदं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४ 4. आत्मदमन, और आत्मोत्सर्ग के अभ्यास से सम्बद्ध ध्यान 5. नैतिक गुण, खूबी 6. किसी विशेष वर्ण का विशेष कर्तव्यपालन 7. सात लोकों में से एक लोक अर्थात् 'जन-लोक' के ऊपर का लोक (-पुं०) माघ का महीना—तपसि मन्दयभास्तिरभीषुमान्—शि० ६।६३, (पुं०, नपुं०) 1. शिशिर ऋतु 2. हेमन्त 3. ग्रीष्म ऋतु। सम०—अनुभावः धार्मिक तपश्चर्या का प्रभाव, —अवटः ब्रह्मावर्तं देश, —क्लेशः धार्मिक कड़ी साधना का कष्ट,—चरणम्,—चर्या कठोर साधना,—तनुः इन्द्र का विशेषण,—धनः 'साधना का धनी' तपस्वी, भक्त—रम्यास्तपोधनानां क्रियाः—श० १।१३, शमप्रधानेषु तपोधनेषु—२।६, ४।१, शि० १।२३, रघु० १४।१९ मनु० ११।२४२,—निधिः धर्मप्राण व्यक्ति, संन्यासी—रघु० १।५६,—प्रभावः,—बलम् कड़ी साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति, तप द्वारा प्राप्त सामर्थ्य या अभीष्टता, —राशिः संन्यासी,—लोकः जनलोक के ऊपर का लोक,—वनम् तपोभूमि, पवित्र वन जहाँ संन्यासी कठोर साधना में लिप्त हों—कृतं त्वयोपवनं तपोवनमिति प्रेक्षे—श० १, रघु० १।९०, २।१८, ३।८, —वृद्ध (वि०) जो बहुत तप कर चुका हो,—विधिः भक्ति को श्रेष्ठता, धर्म सम्बन्धी अत्यन्त कठोर साधनाः,—स्थली 1. धार्मिक कठोर साधना की भूमि 2. बनारस।

तपसः [तप्+असच्] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. पक्षी।

तपस्यः [तपस्+यत्] 1. फाल्गुन का महीना 2. अर्जुन का विशेषण,—स्या धार्मिक कड़ी साधना, तपश्चरण।

तपस्यति (ना० धा० पर०) तपस्या करना—सुरासुरगुरुः सोऽत्र सपत्नीकस्तपस्यति—स० ७।९, १२, रघु० १३।४१, १५।४९, भट्टि० १८।२१।

तपस्विन् (वि०) [तपस्+विनि] 1. तपस्वी, भक्तिनिष्ठ 2. गरीब, दयनीय, असहाय, दीन—सा तपस्विनी निर्वृता भवतु—श० ४, मा० ३, नै० १।१३५, (पुं०) संन्यासी—तपस्विसामान्यमवेक्षणीया—रघु० १४।६७। सम०—पत्रम् सूर्यमुखी फूल।

तप्त (भू० क० कृ०) [तप्+क्त] 1. गर्म किया हुआ, जला हुआ 2. रक्ततप्त, गरम 3. पिघला हुआ, गला हुआ 4. दुःखी, पीड़ित, कष्टग्रस्त 5. (तप का) किया गया अनुष्ठान। सम०—काञ्चनम् आग में तपाया हुआ सोना,—कृच्छ्रम् एक प्रकार की कठोरसाधना, —रूप्यकम् साफ़ की हुई चाँदी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तम् (दिवा० पर०—ताम्यति, तान्त) 1. दम घुटना, रुद्ध-श्वास होना 2. परिश्रान्त होना, थक जाना - ललित-श्रिरोघपुण्यहूनतैरपि ताम्यति यत्—मा० ५।३१ 3. (मन या शरीर से) दुःखी होना, बेचैन या पीड़ित होना, पीड़ा देना, बर्बाद करना—प्रविशति मुहुः कुञ्ज गुञ्जन्मधुव्रतबृंद ताम्यति—गीत० ५, गाढोत्कण्ठा ललित-ललितैरङ्गैस्ताम्यतीति--मा० १।१५, ९।३३, अमर ७, उद्—, उतावला होना—हृदय किमेवमुत्ताम्यसि श० १।

तमस् [तम्+घ] 1. अन्धकार 2. पैर की ठोकर,—मः 1. राहु का विशेषण 2. तमाल वृक्ष ।

तमस् (नपुं०) [तम्+असुन्] अन्धकार—किं वाऽभविष्य-दकणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्—श० ७।४, विक्रम० १।७, मेघ० ३७ 2. नरक का अन्धकार—मनु० ४।२४२ 3. मानसिक अन्धेरा, भ्रम, भ्रांति—मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः—श० ६।६ 4. (सां० द० में) अन्धकार या अज्ञान, प्रकृति के संघटक ३ गुणों में से एक (दूसरे दो हैं—सत्व, रजस्)--कु० ६।६१, मनु० १२।२४ 5. रंज, शोक 6. पाप (पुं० नपुं०) राहु का विशेषण । सम०—अपह (वि०) अज्ञान या अन्धकार को दूर करने वाला, ज्ञान देने वाला, प्रकाशित करने वाला—कि० ५।२२, (हः) 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. आग, —काण्डः, —ण्डम् घोर अन्धकार —गुणः वेο 'तमस्' ऊपर (४),—घ्नः 1 सूर्य 2. चाँद 3. आग 4. विष्णु 5. शिव 6. ज्ञान 7. बुद्धदेव —ज्योतिस् (पुं०) जुगनू,—तति: व्यापक अन्धकार, —नुद् (पुं०) 1. उज्ज्वल शरीर 2. सूर्य 3. चाँद 4. आग 5. लैम्प, प्रकाश,- नुदः 1. सूर्य 2. चन्द्रमा —भिद्,—भिच्: जुगनू,—विकारः रोग, बीमारी —हन्, —हर (वि०) अन्धकार को दूर करने वाला (पुं०) 1. सूर्य 2. चन्द्रमा ।

तमसः [तम्+असच्] 1. अंधकार 2. कूआँ ।

तमस्विनी, तमा [तमस्+विनि+ङीप्, तम+टाप्] रात ।

तमालः [तम्+कालन्] 1. एक वृक्ष का नाम (इसकी छाल काली होती है) —तरुणतमालनीलबहलोल्लसदम्बुधराः—मा० ९।१९, रघु० १३।१५, ४९, गीत० ११ 2. मस्तक पर चन्दन का सांप्रदायिक तिलक (चिह्न) 3. तलवार, खड्ग । सम० पत्रम् 1. मस्तक पर सांप्रदायिक चिह्न 2. तमाल का पत्ता ।

तमिः, —श्री (स्त्री०) [तम्+इन्, तमि+ङीप्] 1. रात —विशेषकर, काली अंधियारी रात —स तमीं तमोभिरभिगम्य तताम्—शि० ९।२३ 2. मूर्छा, बेहोशी 3. हल्दी ।

तमिस्र (वि०) [तमिस्रा+अच्] काला,—स्रम् 1. अंधकार,—एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रम्- गीत० ११, करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम्—२, कि० ५।२ 2. मानसिक अंधकार (अज्ञान) भ्रम 3. क्रोध, कोप । सम०—पक्षः कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का) रघु० ६।३४ ।

तमिस्रा [तमिस्र+टाप्] 1. (अंधियारी) रात- सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा—रघु० ५।१३, शि० ६।४३ 2. व्यापक अंधकार ।

तमोघ्नः [तमस्-घ्नट्] राहु ।

तम्बा, तम्बिका [तम्बति गच्छति -तम्ब्+अच्+टाप्, तम्ब्+ण्वुल्+टाप्, ह्रस्वम्] गाय, गौ ।

तय् (स्वा० आ०—तयते) 1. जाना, हिलना-डुलना—अध्युवास रथं तेयैः पुरात्—भट्टि० १४।७५, १०८ 2. रखवाली करना, रक्षा करना ।

तरः [तृ+अप्] 1. पार जाना, पार करना, मार्ग—भट्टि० ७।५५ 2. भाड़ा—दीर्घाध्वनि यथादेशं यथाकालं तरो भवेत्- मनु० ८।४०६ 3. सड़क 4. घाटवाली नाव । सम०—पण्यम् नाव का भाड़ा, - स्थानम् घाट, वह स्थान जहाँ नाव आकर ठहरती है ।

तरक्षः, तरक्षु: [तरं बलं मार्गं वा क्षिणोति—तर+क्षि+कु, पक्षे पृषो० उलोपः] बिज्जू, लकड़बग्घा ।

तरङ्गः [तृ+अङ्गच्] 1. लहर - उत्तर० ३।४७, भर्तृ० ११८१, रघु० १३।६३, श० ३।७ 2. किसी ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग (जैसे कथासरित्सागर का) 3. कूद, छलांग, सरपट चौकड़ी, (घोड़े आदि की) छलांग लगाने की क्रिया 4. कपड़ा, वस्त्र ।

तरङ्गिणी [तरङ्ग+इनि+ङीप्] नदी ।

तरङ्गित (वि०) [तरङ्ग+इतच्] 1. लहराता हुआ, लहरों के साथ उछलने वाला 2. छलकता हुआ 3. थरथराता हुआ,—तम् कंपायमान—अपाङ्गतरङ्गितानि बाष्पाः—गीत० ३ ।

तरणः [तृ+ल्युट्] 1. नाव, बेड़ा 2. स्वर्ग, - णम् 1. पार करना 2. जीतना, पराजित करना 3. चप्पू, डांड ।

तरणिः [तृ+अनि] 1. सूर्य 2. प्रकाश-किरण, - णिः, - णी (स्त्री०) बेड़ा, घड़नई, नाव । सम०—रत्नम् लाल ।

तरण्डः, —डम् [तृ+अण्डच्] 1. सामान्य नाव 2. घड़नई (जो उलटे हुए कद्दू या घड़ों को बांसों से बांध कर बनाई जाती है) 3. चप्पू या डांड । सम०- पाद: एक प्रकार की नाव ।

तरण्डी, तरट्, तरन्ती (स्त्री०) [तरण्ड+ङीष्, तृ+अटि, तरन्त+ङीष्] नाव, बेड़ा, घड़नई ।

तरन्तः [तृ+झच्] 1. समुद्र 2. प्रचंड बौछार 3. मेंढक 4. राक्षस ।

तरल (वि०) [तृ+अलच्] 1. कंपमान, लहराता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ—तारापतिस्तरलविद्यु-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दियाधवृन्दम् --रघु० १३।७६ घन इव तरलबलाके --गीत० ५, शि० १०।४०, घ० १।२६ 2. चंचल, अस्थिर, चपल- कैरावितारस्तरलाः स्वयं मत्सरिणः परे --शि० २।११४, अमर २७ 3. शानदार, चमकदार, चटकीला 4. द्वयर्थक 5. कामुक, स्वेच्छाचारी, --लः 1. हार की मध्यवर्ती मणि--मुक्तामयोऽप्यतरलमध्यः--वासव० ३५, तारास्तारास्तरलगुटिकान् (मल्लिनाथ के मतानुसार गृह मेंबदुत का प्रक्षपक है) 2. हार 3. समतल सतह 4. तली, गहराई 5. हीरा 6. लोहा, --ला गाय ।

तरलयति (ना० धा० पर०) कंपन उत्पन्न करना, लहराना, इधर-उधर हिलना-जुलना-- अमर ८७ ।

तरलायते (ना० धा० आ०) कांपना, हिलना, इधर-उधर चलना-फिरना ।

तरलायितः [तरल+क्यच्+क्त] बड़ी लहर, कल्लोल ।

तरलित (वि०) [तरल+इतच्] हिलता हुआ, थरथराता हुआ, आंदोलित होता हुआ --तुङ्गतरङ्ग --गीत० ११, °हारा ७ ।

तरवारिः [तर सगागत विक्षेपवत्त्वं वारयति --तर+वृ+णिच्+इन्] तलवार ।

तरस् [तृ+असुन्] 1. चाल, वेग 2. वीर्य, शक्ति, ऊर्जा- कैलासगनाथं तरसा जिगीषुः--रघु०५।२८, ११७७, शि० ९।७२ 3. तट, पार करने का स्थान 4. घड़नई, बेड़ा ।

तरसम् [तृ+असच्] आमिष, मांस ।

तरसानः [तृ+आनच्, सुट्] नाव ।

तरस्विन् (वि०) (स्त्री०--नी) 1. तेज, फुर्तीला 2. मजबूत, शक्तिशाली, साहसी, ताकतवर --रघु० ९।२३, ११।८९, १६।७७, (पुं०) हलकारा, आशुगामी दूत 2. शूरवीर 3. हवा, वायु 4. गरुड का विशेषण ।

तराधुः, तरासुः तराय तरणाय अन्वरिय, तराय अलति प्राप्नोति तर+अल्+उण्] एक बड़ी चपटी तली की नाव ।

तरिः, री (स्त्री०) [तरति अनया+तृ+इ, तरि+ङीष्] 1. नाव जीर्णा तरिः सरिदतीवयभीरुनीरा उद्भूट, शि० ३।७६ 2. कपड़े रखने का सन्दूक 3. कपड़े का छोर या मगजी (किनारा) 1. सम०--रवः चप्पू, डांड ।

तरिकः, तरिकिन् (पुं०) [तर+ठन्, तरिक+इनि] मल्लाह ।

तरिका, तरिणी, तरित्रम्, तरित्री, [तरिक+टाप्, तर+इनि+ङीष्, तृ+क्विप् तरित्र+ङीष्] नाव । दिनी ।

तरीषः [तृ+ईषन्] 1 बेड़ा, नाव 2. गरुड 3. लक्षम व्यक्ति 4. स्वर्ग 5. कार्य, धन्धा, व्यवसाय, पेशा ।

तरुः [तृ+उन्] वृक्ष—नवतरुरोहणशिथिलस्तरिव सुकरः समुद्धर्तुम् --मालवि० १।८ । सम०--खण्डः,—डम्, --पण्डः,--डम् वृक्षों का झुण्ड या समूह,—जीवनम् वृक्ष की जड़,— तलम् वृक्ष के तने के पास का स्थान, वृक्ष की जड़,— नखः कोटा,— मृगः बन्दर,—राजः 1. कली या फूल 2. कोमल अंकुर अंखुवा,—राजः ताल का पेड़,— रुहा पेड़ पर ही उत्पन्न होने वाला पौधा, --बिल्वासिनी नव मल्लिका लता,—शायिन् (पुं०) पक्षी ।

तरुण (वि०) [तृ+उनन्] 1. चढ़ती जवानी वाला, जवान पुरुष युवक 2. (क) बच्चा, नवजात, सुकुमार, कोमल --भर्तृ० ३।४९ (ख) नवोदित, (सूर्य की भांति) जो आकाश में ऊँचा न हो, कु० ३।५४ 3. नूतन, ताजा --तरुणं दधि--चाण० ६४, तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि, अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति । छं० १ 4. चिन्दाद्धिल, विशद,--णः युवा पुरुष, जवान--पञ्च० १।११, भामि० २।६२,—णी युवती या जवान स्त्री--वृद्धस्य तरुणी विषम् --चाण० ९८ । सम०--ज्वरः एक सप्ताह रहने वाला बुखार,—दधि (नपुं०) पाँच दिन का जमाया हुआ दूध,—पीतिका मैनसिल ।

तरुश (वि०) [तरु+श] वृक्षों से भरा हुआ ।

तर्क (चुरा० उभ० तर्कयति—ते, तर्कित) 1. कल्पना करना, अटकल करना, शंका करना, विश्वास करना, अन्दाज लगाना, अनुमान करना --एवं तावत्कृतमां तर्कयसि --श० ६, मेघ० ९६ 2. तर्क करना, विचारना, विमर्श करना 3. खयाल करना, मान लेना (द्विकर्मक) 4. सोचना, इरादा करना, अभिप्राय रखना, विचार में रहना --(धातु) त्वं वेदच्छस्फटिकविशदं तर्कयेस्तिर्यगम्भः--मेघ० ५३ 5. निश्चय करना, 6. चमकना 7. बोलना, प्र--,1. तर्क करना, विचार-विमर्श करना 2. सोचना, विश्वास करना, खयाल करना,कल्पना करना--भट्टि० २।९, वि०—,1. अटकल करना, अन्दाज करना 2. सोचना, कल्पना, विश्वास करना 3. विचार विमर्श करना, तर्क करना ।

तर्कः [तर्क+अच्] 1. कल्पना, अन्दाज, अटकल--प्रसस्तो तर्कः, विक्रम० २ 2. तर्कना, अटकलबाजी, चर्चा, दुरूह तर्कना---कुतः पुनरस्मिन्प्रबन्धारिते आगमार्थे तर्कनिमित्तस्याक्षेपस्यावकाशः, इदानीं तर्कनिमित्त आक्षेपः परिह्रियते--शारीर, तर्कोऽप्रतिष्ठः स्मृतयो विभिन्नाः --महा०, मनु० १२।१०६ 3. सन्देह 4. न्याय, तर्कशास्त्र --तर्ककाव्य मयूखर्षि धर्षितपरास्तर्कय यस्योक्तयः--नै० २२।१५५, तर्कशास्त्रम्, तर्क दीपिका 5. (न्याय० में) उपहासास्पद होना, वह परिणाम जो पूर्व कथित तथ्यों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(पक्ष) के विपरीत हो 6. कामना, इच्छा 7. कारण, प्रयोजन । सम०— विद्या न्यायशास्त्र ।

तर्कः [तर्क्+घञ्] 1. वादी, पूछताछ करने वाला, प्रार्थी 2. तर्कशास्त्री ।

तर्कुः [पुं० स्त्री०] [कृत्+उ नि०] तकवा, लोहे की तकली जिस पर सूत लिपटता जाता है —तर्कुः कर्तनसाधनम् । सम०—पिण्डः —पीठीः चौंचली (तकुवे के किनारे पर लिपटा हुआ सूत का गोला ।

तर्कुः [=तरलुः पृषो०] लकड़बग्घा, रिज्ज्ज् ।

तर्क्यः [तृक्+ण्यत्] यवक्षार, जवाखार; शोरा ।

तर्ज् [भ्वा० पर०, चुरा० आ० प्रायः पर० भी]—तर्जति, तर्जयति—ते, तर्जित] 1. धमकाना, घुड़कना, डराना —सखीमङ्गुल्या तर्जयति —श० १, अहितानलिनोद्भूतैस्तर्जयन्निव केतुभिः—रघु० ४।२८, ११।७८, १२।४१, भट्टि० १४।८० 2. झिड़कना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना—भट्टि० ६।३, ८।१०१, १७।१०३ 3. खिल्ली उड़ाना, अपहास करना ।

तर्जनम्,—ना [तर्ज्+ल्युट्] 1. धमकाना, डराना 2. निन्दा करना —रघु० १९।१७, कु० ६।४५ ।

तर्जनी [तर्जन+ङीप्] अंगूठे के पास वाली अंगुली ।

तर्णः, तर्णकः [तृण्+अच्, तर्ण+कन्] बछड़ा—शि० १२।४१ ।

तर्णिः [तृ+नि] 1. बेड़ा 2. सूर्य ।

तर्द् [भ्वा० पर० तर्दति] 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. मार डालना, काट डालना—भट्टि० १४।१०८, 'तृद्' भी दे० ।

तर्पणम् [तृप्+ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, तृप्त करना 2. तृप्ति प्रसन्नता 3. (प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले) पाँच यज्ञों में से एक, पितृयज्ञ (विगत पूर्वजों के पितरों के निमित्त जल-तर्पण) 4. समिधा, (यज्ञीय अग्नि के लिए इंधन) । सम०—इच्छुः भौंरा का विशेषण ।

तर्षनं (नपुं०) [तृ+मनिन्] यज्ञीय स्तंभ का शिखर ।

तर्षः [तृष्+घञ्] 1. प्यास 2. कामना, इच्छा 3. समुद्र 4. नाव 5. सूर्य ।

तर्षणम् [तृष+ल्युट्] प्यास, पिपासा ।

तर्षित, तर्षुल (वि०) [तर्ष+इतच्, तृष्+उलच्] 1. प्यासा 2. अभिलाषी, इच्छुक ।

तर्हि (अव्य०) [तद्+हिल्] 1. उस समय, तब 2. उस विषय में, यदा—तर्हि 'जब—तब' यदि—तर्हि 'अगर—तो' कथं—तर्हि 'तो फिर किस प्रकार' ।

तलः,—लम् [तल्—अच्] 1. सतह—भुवस्तलमिव व्योम कुर्वन् व्योमेव भूतलम्—रघु० ४।२९. (कभी कभी अर्थों में बहुत परिवर्तन न कर, समास के अन्त में प्रयोग) —महीतलम् भूमि की सतह अर्थात् पृथ्वी —शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशाः—शं० ७।३२, नभस्तलम् 2. हाथ की हथेली—रघु० ६।१८ 3. पैर का तला 4. बाहु 5. पृष्ठ 6. नौचपन, पद का घटिबाधन 7. निम्न भाग, नीचे का भाग, आधार, पैर, पेंदी—रेवारोधसि बेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते —काव्य० १ 8. (अतः) वृक्ष या किसी दूसरी वस्तु की नीचे की भूमि, किसी भी वस्तु से प्राप्त शरण —फणी मयूरस्य तले निषीदति—ऋतु० १।१३ 9. छिद्र, गढ़ा,—सः 1. तलवार की मूठ 2. तालवृक्ष,—लम् 1. तालाब 2. जङ्गल, वन 3. कारण, मूल, प्रयोजन 4. बायीं बाहु पर पहना जाने वाला चमड़े का फीता (इसी अर्थ में 'तला' भी) । सम०—अङ्गुलिः (स्त्री०) पैर की उंगली,—अतलम् सात अधोलोकों में चौथा, —ईक्षणः सूअर,—उदा नदी,—घातः पृष्ठ,—तालः एक प्रकार का वाद्ययन्त्र,—त्रम्,—त्राणम्,—वाणत्रम् धनुर्धर का चमड़े का दस्ताना,—प्रहारः पृष्ठ,—सारकम् अधोवस्त्र, तङ्ग ।

तलकम् [तल+कन्] बड़ा तालाब ।

तलतः (अव्य०) [तल+तसिल्] पेंदी से ।

तलाची [तल्+अच्+विच्+ङीप्] चटाई ।

तलिका [तल्+ठन्] तंग, अधोबन्धन ।

तलितम् [तल्+क्त] तला हुआ मांस ।

तल्पिन (वि०) [तल्+इनन्] 1. पतला, दुबला, कृश 2. योग्य कम 3. स्पष्ट, स्वच्छ 4. निम्न भाग में या निचली जगह पर स्थित 5. पृथक्—न्म् बिस्तरा, गद्दीदार लम्बी चौकी ।

तल्पिमम् [तल्+इमनिच्] 1. फर्श लगी हुई भूमि, खड़ंजा 2. बिस्तरा, खटिया, सोफ़ा 3. चंदोवा 4. बड़ी तलवार या चाकू ।

तल्लुः [तल्+उनन्] हवा ।

तल्लम् [तल्+कन्] जङ्गल ।

तल्पः,—ल्पम् [तल्+पक्] 1. गद्देदार लम्बी चौकी, बिस्तरा, सोफ़ा सपदि विगलितनिदस्तल्पमुज्झांचकार —रघु० ५।७५, 'बिस्तरा छोड़ा' उठा 2. (आलं०) पत्नी (जैसा कि 'गृहतल्पगः' में) 3. गाड़ी में बैठने का स्थान 4. ऊपर की मञ्जिल, बुर्ज, कंगूरा, अटारी ।

तल्पकः [तल्प+कन्] (नौकर आदि) जिसका कार्य बिस्तरे बिछाने या तैयार करने का है ।

तल्लजः [तल्—लज्+अच्] 1. श्रेष्ठता, सर्वोत्तमता, प्रसन्नता 2. (समास के अन्त में) श्रेष्ठ (इस अर्थ में यह शब्द सदैव पुं० होता है । समास के पूर्व पद का चाहे कोई लिंग हो),—गोतल्लजः श्रेष्ठ गाय, इसी प्रकार 'कुमारी तल्लजः' श्रेष्ठ कन्या ।

तल्लिका [तल्लिमन् लीयते तल्+ली+ड+कन्, इत्वम्] ताली, कुंजी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तल्ली [तल् लसति -तल्+लस्+ड—ङीष्] तरुणी, जवान स्त्री।

तष्ट (वि०) [तक्ष्+क्त] 1. चीरा हुआ, काटा हुआ, तराशा हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ 2. गढ़ा हुआ, दे० 'तक्ष्'।

तष्ट (पुं०) [तक्ष्+तृच्] 1. बढ़ई 2. विश्वकर्मा।

तस्करः [तद्+कृ+अच्, सुट्, दलोपः] 1. चोर, लुटेरा —मा सञ्चर मनःपान्थ तत्रास्ते स्मरतस्करः—भर्तृ० १।८६, मनु० ४।१३५, ८।६७ 2. (समास के अन्त में), जघन्य, घृणित,—री कामुक स्त्री।

तस्थु (वि०) [स्था+कु, द्वित्वम्] स्थावर, अचर, स्थिर।

तार्क्ष्यः, तार्क्षणः [तर्क्ष+ण्य, तर्क्ष+अण्] बढ़ई का पुत्र।

तार्च्छीलिकः [तच्छील+ठक्] विशेष प्रवृत्ति, आदत या रुचि को प्रकट करने वाला प्रत्यय।

ताडङ्कः [ताड्यते, पृषो०दस्य टः, ताट् अङ्कः ब० स०] कान का आभूषण, बड़ी बाली।

तातस्थ्यम् [तटस्थ+ष्यञ्] 1. सामीप्य 2. उदासीनता, अनवधानता, पक्षपातशून्यता—दे० 'तटस्थ'।

ताडः [तड्+घञ्] 1. प्रहार, ठोकर, धूंसा या थप्पड़ 2. कीलालूह 3. पूला, गट्ठर 4. पहाड़।

ताडका [तड्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] एक राक्षसी, सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी और मारीच की माता [अगस्त्य की समाधि भंग करने के कारण वह राक्षसी बना दी गई। जब उसने विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डाला तो राम के द्वारा वह मारी गई। राम पहले तो स्त्री के लिए धनुष तानने के विरुद्ध थे, परन्तु ऋषि ने उनकी शंकाओं को दूर किया था] दे० रघु० ११।१४-२०।

ताडकेयः [ताडका+ढक्] ताडका के पुत्र मारीच राक्षस का विशेषण।

ताडङ्कः, ताडपत्रम् [तालम् अङ्कयते लक्ष्यते-अङ्क+घञ् लस्य डत्वम्, शक० परस्परम्—तालस्य पत्त्रमिव —ष० त० लस्य डः] दे० 'ताटङ्क'।

ताडनम् [तड्—णिच्+ल्युट्] मारना-पीटना, हण्टर लगाना, बेंत लगाना,—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः - चाण० १२, अवतंसोत्पलताडनानि वा - कु० ४।८, शृङ्गार० ९,—नी हण्टर।

ताडिः,—डी (स्त्री०) [तड्+णिच्+इन्, ताडि+ङीष्] 1. एक प्रकार का ताड, 2. एक प्रकार का आभूषण।

ताडयमान [वि०] [तड्+णिच्+शानच्] पीटा जाता हुआ, प्रहार किया जाता हुआ,—नः (ढोल आदि) वाद्ययन्त्र (जो किसी यष्टिका से बजाया जाय)।

ताण्डवः, वम् [तण्ड्+अण्] 1. नाच, नृत्य -मदताण्डवोत्सवान्ते—उत्तर० २।१८ 2. विशेष कर शिव का उन्माद-नृत्य या प्रचण्ड नाच—प्रत्यक्षाननन्दि वस्तावदवं देवि भूयादभीष्टर्थं च हृष्टर्थं च नः—मा० ५।१३, १।१ 3. नृत्यकला 4. एक प्रकार का घास। सम०—प्रियः शिव जी।

तानः [तनोति विस्तारयति गोत्रादिकम्- तन्+क्त, दीर्घः] 1. पिता,—मृष्यन्तु लवस्य बालिशतां तातपादाः—उत्तर० ६, हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य चिरेण—रघु० ९।७५ 2. स्नेह दया या प्रेम को प्रकट करने वाला शब्द (प्रायः अपने से आयु में छोटों के प्रति, विद्यार्थियों के प्रति या बच्चों के प्रति प्रयुक्त),—तात चन्द्रापीड—का०, रक्षसा भक्षितस्तात तव तातो वनान्तरे—महा० 3. सम्मान द्योतक शब्द (जो अपने से बड़े और श्रद्धेय व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है)—हेपितः हि बहवो नरेश्वरास्तेन तात धनुषा धनुर्भृतः—रघु० ११।४० तस्मान्मुच्ये यथा तात संविधातुं तथार्हसि—१।७२। सम०—गुः (वि०) पिता के अनुकूल,—(गुः) तरुः।

तातनः [तात+नूत्+ड] खंजन पक्षी।

तापनः [ताप+ल्यु+क पृषो० पस्य तः] 1. एक रोग 2. लोहे का डण्डा, या सलाख 3. पकाना, परिपक्व करना 4. गर्मी।

तातिः [ताय्+क्तिच्] सन्तान,—तिः (स्त्री०) सातत्य, उत्तराधिकार—जैसा कि 'अरिष्टतातति या शिवतातति' में।

तात्कालिक (वि०) (स्त्री०—की) [तत्काल+ठञ्] 1. उसी समय में होने वाला 2. अव्यवहित।

तात्पर्यम् [तत्पर+ष्यञ्] 1. आशय, अर्थ, अभिप्राय —अनेन तात्पर्यम्—आदि 2. प्रस्तुत योजना का आशय—काव्य० २ 3. उद्देश्य, अभिप्रेत पदार्थ, किसी पदार्थ का उल्लेख प्रयोजन इरादा (अधि० के साथ) —इह यथार्थकथने तात्पर्यम्—पा० २।३।४३, भाष्य 4. वक्ता का आशय (वाक्य में विशेष शब्दों के प्रयोगार्थ)—वक्तुरिच्छा तु तात्पर्यं परिकीर्तितम्— भाषा० ८४, तात्पर्यानुपपत्तिः—८२।

तात्त्विक (वि०) [तत्त्व+ठक्] यथार्थ, वास्तविक, परमावश्यक—किं चासीदमृतस्य भेदविगमः सांचिरिम्मिते तात्त्विकः—भामि० २।८१, तात्त्विकः संबंधः- आदि।

तादात्म्यम् [तदात्मन्+ष्यञ्] प्रकृति की अभिन्नता, समरूपता, एकता—नयनयोरतादात्म्यमभीरुहाम्— भामि० २।८१, भगवत्यात्मनस्तादात्म्यम्- आदि।

तादृश (वि०) (स्त्री०—शी) तादृश, तादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) वैसा, उस जैसा, उसकी भांति- तादृगुणा - मनु० ९।२२, ३२, अमरु० ४६, यादृशस्तादृशः —कोई, जो कोई, सामान्य मनुष्य—उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने पंच० १।३९७।

तानः [तन्+घञ्] 1. धागा, रेशा 2. (संगीत० में)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलम्बित स्वर प्रधान ठेक यथा तानें बिना राग: --भामि० १।११९, **तानप्रदायिन्वमित्रोपगतुं** - कु० १।८, **नम्** 1. विस्तार, प्रसार 2. ज्ञानेन्द्रियों का विषय ।

तानवम् [तनु+अण्] पतलापन, छोटापन हास्यप्रभा तानवमासस्वाद --विक्रमांक० १।१०६ ।

तानूरः [तन्+ऊरण्] भँवर, जलावर्त ।

तान्त (वि०) [तम् : क्त] 1. थका हुआ, निढाल, क्लान्त 2. परेशान, कष्टग्रस्त 3. म्लान, मुर्झाया हुआ दे० 'तम्' ।

तान्तवम् [तन्तु+अण्] 1. कातना, बुनना 2. जाला 3. बुना हुआ कपड़ा ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री० -की) [तन्त्र+ठक्] किसी शास्त्र या सिद्धान्त में सुशिक्षित 2. तन्त्रों से सम्बद्ध 3. तन्त्रों से प्राप्त शिक्षा,- कः तन्त्र सिद्धान्तों का अनुयायी ।

तापः [तप्+घञ्] 1. गर्मी, चमक-दमक--अर्कस्यैवोत्तापः —श० ४।१०, मा० २।१३, मनु० १२।७९, कु० ७। ८४ 2. सताना, पीड़ित करना, कष्ट, सन्ताप, वेदना --इत्तस्तापसानि तथेच्छया वितरितानि सहे चतुरानन उद्भट, समस्ताप. कामं पतसिजनिदाघप्रसरयोः श० ३।८, भर्तृ० १।१९ 3. खेद, दुःख । सम० —**त्रयम्** तीन प्रकार के संताप जो प्रत्येक को इस संसार में सहन करने पड़ते हैं—अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक,—**हर** (वि०) शीतलता देने वाला, गर्मी दूर करने वाला ।

तापनः [तप्+णिच्+ल्युट्] 1. सूर्य 2. ग्रीष्म ऋतु 3. सूर्यकान्तमणि, कामदेव के बाणों में से एक,- नम् 1. जलाना 2. कष्ट देना 3. ठोकना-पीटना ।

तापस (वि०) (स्त्री० सी) 1. तपस्वी से सम्बद्ध, कड़ी साधना से सम्बन्ध रखने वाला 2. भक्त, सः (स्त्री० सी) वानप्रस्थ, भक्त, संन्यासी । सम० — **इष्टा** अंगूर, —**तरुः, द्रुमः** हिंगोट का वृक्ष, इंगुदी ।

तापस्यम् [तापस+ष्यञ्] तपस्या ।

तापिच्छः [तापिं छादयति तापिन्+छद्+ड पृषो०] तमाल का वृक्ष या फूल (नपुं०) प्रफुल्लतापिच्छनिभैरभीयुभिः शि० १।२२, व्योमन्स्तापिच्छगुच्छावलिभिरिव तमोवल्लरीभिन्नियते मा० ५।६, (इसी अर्थ में 'तापिंज' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

तापी [तप्+णिच्+अच्+ङीप्] 1. ताप्ती नदी जो सूरत के निकट समुद्र में गिर जाती है 2. यमुना नदी ।

तामः [तम्+घञ्] 1. भय का विषय 2. दोष, कमी, 3. चिन्ता, दुःख 4. इच्छा ।

तामरम् [तामः-ए+क] 1. पानी 2. घी ।

तामरसम् [तामरे जले सस्ति- सप्-ड] 1. लाल कमल -पंच० १।९४, रघु० ६।३७, ९।१२, ३७, अमरु ७०,८८ 2. सोना, तांबा, **सी** कमलों वाला सरोवर ।

तामस (वि०) (स्त्री०- सी) [तमोऽस्यस्य अण्] 1. काला, अन्धकारयुक्त, अन्धकार सम्बन्धी, अन्धेरा 2. प्रकृति के तीन गुणों में से एक) भग० ७।१२, १७।२, मालवि० १।१, मनु० १२।३३-४ 3. अज्ञानी 4. दुर्व्यसनी,--सः 1. दुष्ट, दाहक, दुर्जन 2. साँप 3. उल्लू, **सम्** अन्धेरा, --सी 1. रात, काली रात 2. नींद 3. दुर्गा का विशेषण ।

तामसिक (वि०) (स्त्री० -की) [तमस्+ठञ्] 1. काला, अन्धकारयुक्त 2. तम से सम्बन्ध रखने वाला, तम से उत्पन्न या तमोमय ।

तामिस्रः [तमिस्रा+अण्] नरक का एक प्रभाग ।

ताम्बूलम् [तम्+ऊलच्, बुक्, दीर्घः] 1. सुपारी 2. पान (जिसमें कत्था चूना लगाकर सुपारी के साथ लोग भोजन के पश्चात् चबाते हैं) ताम्बूलभृतमल्लीर्य भल्लं जल्पति मानुषः- काव्य० ७, रागो न स्खलितस्तवाधरपुटे ताम्बूलसंवर्धितः—भूगार० ७ । सम० - **करङ्कः,— पेटिका** पानदान, --**दः- ,धरः** काहक: पान-दान लेकर अमीरों के पीछे चलने वाला नौकर, **वल्ली** पान की बेल रघु० ६।६४ ।

ताम्बूलिकः [ताम्बूल+ठन्] तमोली, पान बेचने वाला ।

ताम्बूली [ताम्बू+ङीष्] पान की बेल-- ताम्बूलीनां दलैस्तव रचिता पानभूमयः रघु० ४।४२ ।

ताम्र (वि०) [तम्-रक्, दीर्घः] तांबे के रङ्ग का, लाल -उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च,--**म्रम्** तांबा, । सम० **अक्षः** 1. कौवा 2. कोयल,-- **अक्षः काया,**- **अश्मन्** (पुं०) पद्मरागमणि,-- **उपजीविन्** (पुं०) कसेरा, तांबे की चीज़ बनाकर जीवन-निर्वाह करने वाला, **ओष्ठः** (ताम्रोष्ठ या ताम्रोष्ठी) लाल होठ कु० १।४४, **कारः** कसेरा, तांबे का कार्य करने वाला,—**कृमिः** इन्द्रवधूटी, एक प्रकार का लाल कीड़ा,-- **चूडः** मुर्गा, **जपुजम** पीतल,—**दुः** लाल चन्दन की लकड़ी, **पट्टः,—पत्रम्** ताम्रपट्टिका जिस पर प्राचीन भूदान के दाता तथा ग्रहीता के नाम खुदे रहते थे —याज्ञ० १।३१९,—**पर्णी** मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम, (कहते हैं कि यह नदी मोतियों के कारण प्रसिद्ध है), रघु० ४।५१, - **पल्लवः** अशोकवृक्ष, --**लिप्तः** एक देश का नाम (प्रायः--ब० व०) इस देश की प्रजा या शासक, **वृक्षः** चन्दन के वृक्षों का एक भेद ।

ताम्रिक (वि०) (स्त्री० - की) [ताम्र+ठक्] तांबे का बना हुआ ताम्रमय, **कः** कसेरा, तांबे का कार्य करने वाला ।

ताय् (भ्वा० आ० तायते, तायितम्) 1. किसी समान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेखा में प्रसृति करना, फैलाना, विस्तार करना 2. रक्षा करना, संरक्षण में रखना,—वि फैलाना, रचना करना —भट्टि० १६।१०५।

तार (वि०) [तृ+णिच्+अच्] 1. (स्वरादिक) ऊँचा 2. (शब्दादिक) उत्तान, कर्कश —मा० ५।२० 3. चमकीला, उज्ज्वल, स्पष्ट —हारस्तारांस्तरलगुटिकान् (मल्लि० इसको मेघदूत का प्रक्षेपक मानते हैं), उरसि निहितस्तारो हारः —अमरु २८ 4 अच्छा, श्रेष्ठ, सुरस, —रः 1. नदी का किनारा 2. मोती की चमक 3, सुन्दर और बड़ा मोती—हारममलतरतारमुरसिदधत्—गीत० ११ 4. उच्चस्वर,—रः—रम् 1. तारा या ग्रह 2. कपूर,—रम् 1. चांदी 2. आंख की पुतली (पुं० भी माना जाता है) । सम०—अश्मः कपूर, —अरिः लौहभस्म, —पतनम् तार का गिराना या उल्कापतन, —पुष्पः कुन्द या चमेली की बेल,—वायुः सायं सायं करती हुई या सनसनाती हुई हवा, —शुद्धिकरम्—सीसा, —स्वर (वि०) ऊँचे स्वर का या उत्ताल ध्वनि का, —हारः 1. सुन्दर मोतियों की माला 2. एक चमकीला हार ।

तारक (वि०) (स्त्री० -रिका) [तृ+णिच्+ण्वुल्] 1. आगे ले जाने वाला 2. रक्षा करने वाला, बचाकर रखने वाला, बचाने वाला,—कः 1. चालक, खिवैया, कर्णधार 2. छुड़ाने वाला, बचाने वाला 3. एक राक्षस जिसे कार्तिकेय ने मार गिराया था (यह वज्राङ्ग और वरांगी का पुत्र था, पारियात्र पहाड़ पर तपस्या करके इसने ब्रह्मादेव को प्रसन्न किया और वरदान मांगा कि मुझे संसार में, ७ दिन के बच्चे को छोड़ कर, और कोई न मार सके। इस वरदान की बदौलत वह देवताओं को सताने लगा। दुःखी होकर देवता ब्रह्मा के पास गये और इस राक्षस को मारने के लिए उनको सहायता मांगी (दे० कु० २) ब्रह्मा ने उन देवताओं को उत्तर दिया कि केवल शिव का पुत्र ही उन्हें परास्त कर सकता है, उसके पश्चात् कार्तिकेय का जन्म हुआ, और उसने अपने जन्म से सातवें दिन उस राक्षस का काम तमाम कर दिया)।—कः, —कम् घड़ियाल, बेड़ा, —कम् 1. आंख की पुतली 2. आंख । सम०—अरिः -जित् (पुं०) कार्तिकेय का विशेषण ।

तारका [तारक+टाप्] 1. तारा 2. उल्का, धूमकेतु 3. आंख की पुतली संज्ञे दृशमुदयतारकाम् -रघु० ११। ६९, कौर० ५, भर्तृ० १।११ ।

तारकिणी [तारक+इनि+ङीप्] तारों भरी रात, वह रात जिसमें तारे खिले हुए हों ।

तारकित (वि०) [तारक+इतच्] तारों वाला, सितारों भरा, ताराजटित ।

तारणः [तृ+णिच्+ल्युट्] नाव, खड़ियाई, —णम् 1. पार उतारना 2. बचाना, छुड़ाना, मुक्त करना ।

तारणि,—णी (स्त्री०) [तृ+णिच्+अनि, तारणि+ङीष्] घड़ियाल, बेड़ा ।

तारतम्यम् [तरतम+ष्यञ्] 1. कमीकत, अनुपात, सापेक्ष महत्त्व, तुलनात्मक मूल्य 2. अन्तर, भेद —निर्घृणं निबनमेतच्चोद्वंयोस्तारतम्यविधिमुक्तचेतसां, बोधनाय विधिना विनिर्मितो रेफ एव जयदेवजन्तिका—उद्भट ।

तारलः [तरल+अण्] कामुक, लम्पट, विषयी ।

तारा [तार+टाप्] 1. तारा या ग्रह—हंसश्रेणीषु तारासु —रघु० ४।१९, भर्तृ० १।१५ 2. स्थिर तारा—रघु० ६।२२ 3. आंख की पुतली, आंख का ढेला—कान्तामन्तः प्रमोदादभिसरति मदभ्रान्तताराङ्कोरः—मा० २।३०, स्मितमयस्मेरतारैः—१।२८, कु० ३।४७ 4. मोती 5. (क) वानरराज वाली की पत्नी, अंगद की माता, इसने अपने पति को राम और सुग्रीव के साथ युद्ध न करने के लिए बहुत समझाया। राम द्वारा वाली के मारे जाने पर इसने सुग्रीव से विवाह कर लिया (ख) देवगुरु बृहस्पति की पत्नी, एक बार चन्द्रमा इसको उठा कर ले गया और याचना करने पर भी वापिस नहीं किया। घोर युद्ध हुआ, अन्त में ब्रह्मा ने सोम को इस बात के लिए विवश कर दिया कि तारा बृहस्पति को वापिस दे दी जाय। तारा से बुध नामक एक पुत्र का जन्म हुआ। यह बुध ही चन्द्रवंशी राजाओं का पूर्वज कहलाया (ग) राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी तथा रोहितास्व की माता —इसीको तारामती भी कहते हैं)। सम०—अधिपः,—आधीशः, —पतिः चांद—रघु० १३।७६, कु० ७।४८, भर्तृ० १।७१, —पथः पर्यावरण, वातावरण,—प्रमाणम्—नक्षत्रमान नक्षत्रकाल,—भूषा रात,—मण्डलम् 1. तारालोक, राशिचक्र 2. आंख की पुतली,—मृगः मृगशिरा नाम का नक्षत्र ।

तारिकम् [तार+ठन्] किराया, भाड़ा ।

तारुण्यम् [तरुण+ष्यञ्] 1. युवावस्था, जवानी 2. ताजगी (आलं०) ।

तारेयः [तारा+ढक्] 1. बुधग्रह 2. बालि के पुत्र अंगद का विशेषण ।

तार्किकः [तर्क+ठक्] 1. नैयायिक, तार्किक 2. दार्शनिक ।

तार्क्ष्यः [तृक्ष+अण्, ऋ+तार्क्ष+ष्यञ्] 1. गरुड़ का विशेषण —त्रस्तेन तार्क्ष्यात् किल कालियेन रघु० ६।४९ 2. गरुड़ का बड़ा भाई अरुण 3. गाड़ी 4. घोड़ा 5. सांप 6. पक्षी। सम० ध्वजः विष्णु का विशेषण, -नायकः गरुड़ का विशेषण ।

तार्तीय (वि०) [तृतीय+अण्] तीसरा ।

तार्तीयीक (वि०) [तृतीय+ठक्] 1. तीसरा—तार्तीयी-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलया मितोऽप्रमगधत्तस्य प्रवन्धे - नै० ३।१३६, तार्तीयीकं पुरारेस्तदवतु मदनप्लोषणं लोचनं वः—मा० १, अने० पा० ।

ताल: [तल+अण्] 1. ताड का वृक्ष—भर्तृ० २।९०, रघु० १५।२३ 2. ताड का बना हुआ झण्डा 3. तालियाँ बजाना 4. फटफटाना 5. हाथों के कानों का फड़फड़ाना 6. (संगी० में) टेक देना, नियत मात्राओं पर ताली बजाना—करकिसलतालैर्मृंगयाः नर्त्यमानम्—उत्तर० ३।१९, मेघ० ७९ 7. काँसे का बना एक वाद्ययन्त्र—रघु० ९।७१ 8. हथेली 9. ताला, कुण्डी 10. तलवार की मूठ,—लम् 1. ताड वृक्ष का फल 2. हरताल। सम०—अङ्कः 1. बलराम 2. ताड का पत्ता जो लिखने के काम आता है 3. पुस्तक 4. आरा,—अचरः नाचने वाला, नट,—केतुः भीष्म का विशेषण,—कीरकम्, —गर्भः ताड का निःस्रवण,—ध्वजः—भृत् (पुं०) बलराम का विशेषण,—पत्रम् 1. ताड का पत्ता जिस पर लिखा जाता है 2. कान का आभूषण विशेष, बद्ध—, शुद्ध (वि०) तालों के द्वारा मापा गया, लयात्मक, संगीत में मात्राकाल से विनियमित,—मर्दलः एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, झाँझ करताल,—यन्त्रम् जर्राह का एक उपकरण,—रेचनकः नर्तक, अभिनेता,—लक्षणः बलराम का विशेषण,—वनम् वृक्षों का समूह,—वृन्तम् पंखा—शं० ३।२१, कुछ २।३५ ।

तालकम् [ताल+कन्] 1. हरताल 2. कुण्डी, चटखनी। सम०—आभ (वि०) हरा, (—भः) हरा रंग ।

तालङ्कः [=ताडंकः] कान का आभूषण विशेष ।

तालव्य (वि०) [तालु+यत्] तालु से सम्बन्ध रखनेवाला, तालु स्थानीय । सम०—वर्णः तालु स्थानीय अक्षर, अर्थात् इ, ई, च् छ् ज् झ् ञ् और य् तथा श्, स्वरः तालु स्थानीय स्वर—अर्थात् इ ई ।

तालिकः [तल+ठक्] 1. खुली हथेली 2. ताली बजाना —यथैवेन न हस्तेन तालिका संप्रयुज्यते—पंच० २।१२८, उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीभिरेषः —नै० ३।७ ।

तालितम् [तल्+णिच्+क्त, इत्व+ल्लत्वम्] 1. रंगदार कपड़ा 2. रस्सी, डोरी ।

तालो [तल्+णिच्+अच्+ङीष्] 1. पहाड़ी ताड का पेड़, ताड का वृक्ष 2. ताड़ी 3. सुगंध युक्त मिट्टी 4. एक प्रकार की कुंजी । सम०—वनम् ताड के वृक्षों का समूह—रघु० ४।३४, ६।५७ ।

तालु (नपुं०) [तरत्यनेन वर्णान्—तॄ+उण्, रस्य लः] ऊपर के दांतों और कौवे के बीच का गड्ढा, तथा महत्या परिमुक्तालवः—ऋतु० १।११ । सम० —जिह्वः मगरमच्छ,—स्थान (वि०) तालु स्थानीय —(नम्) तालु ।

तालुरः [तल्+णिच्+ऊर] जलावर्त, भंवर ।

तालूयकम् [तल्+णिच्+ऊयक] तालु ।

तावक (वि०) (स्त्री०—की) तावकीन (वि०) [युष्मद्+अण्, तवक आदेशः—तवक+खञ्] तेरा, तेरी —तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः—कु० ५।४, कि० ३।१२, भामि० १।३६, ९६ ।

तावत् (वि०) ('यावत्' का सह संबंधी) [तत्+डावतु] 1. इतना, उतना, इतने—ते तु यावन्त एवाजौ तावांश्च ददृशे सः तैः—रघु० १२।४५, हि० ४।७२, कु० २।३३ 2. इतना विशाल, इतना बड़ा, इतना विस्तृत—यावती संभवेद् वृत्तिस्तावतीं दातुमर्हसि—मनु० ८।१५५, ९।२४९, भग० २।४६ 3. उतना समस्त, सारा, यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्—गण०, (अव्य०) 1. पहले (बिना और कुछ काम किये)—आर्ये इतस्तावदगम्यताम् —श० १, आह्लादयत्स्व तावच्चन्द्रकरश्चन्द्रकान्तमिव —विक्रम० ५।११, मेघ० १३ 2. किसी की ओर से, इसी बीच में—सखे स्थिरप्रतिबन्धो भव, अहं तावत् स्वामिनश्चित्तवृत्तिमनुवर्तिष्ये—श० २, रघु० ७।३२ 3. अभी—गच्छ तावत् 4. निस्सन्देह (किसी उक्ति पर बल देने के लिए)—त्वमेव तावत्प्रथमो राजर्षीणाम्—मुद्रा० १, सुम स्वयम्,—स्वमेव तावत्परिचिन्तय स्वयम्—कु० ५।६७ 5. सचमुच, वस्तुतः (स्वीकृतिसूचक)—दुःखस्यावदुपस्थितः—हि० १ 6. के विषय में, के संबंध में—विग्रहस्तावदुपस्थितः—हि० ३, एवं कृते तव तावत्क्लेशं विना प्राणयात्रा भविष्यति—पंच० १ 7. पूर्णरूप से—तावत्प्रकीर्णाभिनवोपचारम्—रघु० ७।४, (तावत्प्रकीर्ण= साकल्येन प्रसारित—मल्लि० 8. आश्चर्य (ओह! कितना आश्चर्य है।) ('यावत्' के महसंबंधी के रूप में 'तावत्' के अर्थ देखो।—'यावत्' के नीचे) सम०—कृत्वः (अव्य०) इतनी बार, मात्रम् केवल इतना,—वर्ष (वि०) इतने वर्ष पुराना ।

तावतिक (वि०) **तावत्क** (वि०) [तावत्+क, इट्] इतने से मोल लिया हुआ, इतने मूल्य का, इतनी कीमत का।

तावुरिः [पुं० ओक शब्द] वृष राशि ।

तिक्त (वि०) [तिज्+क्त] 1. कड़वा, तीखा (छः रसों में से एक) मेघ० २० 2. सुगंधित—मेघ० ३३,—क्तः 1. कड़वा स्वाद, (कटु के नीचे दे०) 2. कुटज वृक्ष 3. तीखापन 4. सुगंध। सम०—गन्धा सरसों,—धातुः पित्त,—फलः,—मरिचः कनक का पौधा,—सारः खैर का वृक्ष ।

तिग्म (वि०) [तिज्+मक् जस्य गः] 1. पैना, नुकीला (शस्त्रों की भांति) 2. प्रचंड 3. गरम, दाहक 4. तीखा, चरपरा 5. उत्तेजक, जोशीला,—ग्मम् 1. गर्मी 2. तीखापन। सम०—अंशुः 1. सूर्य तिग्मांशुस्तस्यतः—गीत० ५ 2. आग 3. शिव,—करः,—दीधितिः,—रश्मिः सूर्य ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिज् । (भ्वा० आ० (तिज् का नितांत—इच्छार्थक) तितिक्षते, तितिक्षित) 1. सहन करना, सहन करना, साथ निर्वाह करना, साहस के साथ भुगतना —तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्···मालवि० ११७, तांतितिक्षस्व भारत—भग० २।१४, महावी० २।१२, कि० १३।६८, मनु० ६।४७, ११ (चुरा० उभ० या प्रेर०—तेजयति -ते, तेजित) 1. पैना करना, पनाना—कुसुमचापमतेजयदंशुभिः रघु० ९।३९ 2. उकसाना, उत्तेजित करना, भड़काना।

तितउः [तन्+डउ, द्वित्वम्, इत्वम्] चलनी (तपुं०) छाना।

तितिक्षा [तिज्+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] सहनशक्ति, सहिष्णुता, त्याग, क्षमा।

तितिक्षु (वि०) [तिज्+सन्+उ, द्वित्वम्] सहिष्णु, सहन करने वाला, सहनशील।

तितिभः [तितीतिशब्देन भणति तिति+भण्+ड] 1. जुगनू 2. एक प्रकार का कीड़ा, इन्द्रवधूटी, वीरबहोटी।

तितिरः, तित्तिरः [तिति इति शब्दं राति ददाति रा+क] चकोर, तीतर।

तित्तिरिः [तितीति शब्दं रौति -रु वा० डि तारा०] 1. तीतर 2. एक ऋषि जो कृष्णयजुर्वेद का प्रथम अध्यापक था।

तिथः [तिज्+थक्, जलौपः] 1. अग्नि 2. प्रेम 3. समय 4. वर्षा ऋतु या शरद।

तिथिः (पुं० या स्त्री०) [अत्+इथिन्, पृषो० वा ङीप्] 1. चान्द्र दिवस,—तिथिरेव तावत्र शुध्यति मुद्रा० ५, कु० ६।९३, ७।१ 2. १५ की संख्या। सम०—अधः 1. अमावस्या 2. वह तिथि जो आरम्भ होकर सूर्योदय से पूर्व ही या दो सूर्योदयों के बीच में ही समाप्त हो जाती है,—पत्री पञ्चाङ्ग,—प्रणीः चाँद.—वृद्धिः वह दिन जिसमें तिथि दो सूर्योदयों के अन्दर पूरी होती है।

तिनिशः (पुं०) एक वृक्ष विशेष —दात्यूहस्तिनिशस्य कोटरगति स्कन्धे निलीय स्थितम् मा० १।७।

तिन्तिडः, -डी, तिन्तिडिका, तिन्तिडिकः [=तिन्तिडी पृषो०, तिन्तिडी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, तिन्+ईकन् नि०] इमली का वृक्ष।

तिन्दुः, तिन्दुकः-कम्बुकः [तिन्+कुन्नि०, तिन्दु+कन्, पक्षे कस्य लः] तेन्दू का पेड़।

तिम् (भ्वा० पर०—तेमति, तिमित) आर्द्र करना, गीला करना, तर करना।

तिमिः [तिम्+इन्] 1 समुद्र 2. एक बड़ी विशालकाय मछली, झींग मछली—रघु० १३।१०। सम०—कोषः समुद्र,—ध्वजः एक राक्षस जिसे इन्द्र ने दशरथ की सहायता से मारा था (इसी युद्ध में कैकेयी ने मूर्छित दशरथ के प्राणों की रक्षा की, और उनसे दो वर प्राप्त किये; इन्हीं वरों से कैकेयी ने बाद में राम को १४ वर्ष का वनवास दिलाया।

तिमिङ्गिलः [तिमिं—गिल्+खश्, मुम्] एक प्रकार की मछली जो 'तिमि' मछली को निगल जाती है—भामि० १।५५, [2]अज्ञनः, [3]गिलः एक ऐसी बड़ी मछली जो तिमिङ्गिल को भी निगल जाती है—तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः।

तिमित (वि०) [तिम्+क्त] 1. मतिहीन, स्थित, निश्चल 2. आर्द्र, गीला, तर।

तिमिर (वि०) [तिम्+किरच्] अन्धकारमय, विभ्रान्ती दृशौ त्रि तिमिरे पथि गीत० ५, दधुस्तिमिरा दिशः —महा०,—रः—रम् अन्धकार —वर्तते तिमिरमपाकरोति चन्द्रः—शा० ६।१९, कु० ४।११, शि० ४।५७ 2. अन्धापन 3. जंग, मुर्चा। सम०—अरिः, —नुद् (पुं०)—रिपुः सूर्य।

तिरश्ची [तिर्यक् जातिः स्त्रियां ङीप्] जानवर, पशु या पक्षी (स्त्री०)।

तिरश्चीन (वि०) [तिर्यक्+खञ्] 1. टेढ़ा, पार्श्ववर्त्य, तिरछा—गतं तिरश्चीनमनुरूसारथेः···शि० १।२, ···यथा तिरश्चीनमलातशल्यम्—उत्तर० ३।३५ 2. अनियमित।

तिरस् (अव्य०) [तरति दृष्टिपथं—त+असुन्] आँखों से, ओझल से, तिरछेपन से; —स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति —अमर० 2. के बिना, के अतिरिक्त 3. चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से, बिना दिखाई दिये (श्रेष्ठ साहित्य में 'तिरस्' शब्द का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं मिलता—यह मुख्यतः प्रयुक्त होता है (क) 'कृ' के साथ—ढकना, छुपा करना, आगे बढ़ जाना—(रघु० ३।८,१६।२०, मनु० ४।४९, अमर० ८१, भट्टि० ९।६२, हि० ३।८) (ख) 'धा' के साथ—ढकना, छिपाना, अभिभूत करना, अन्तर्धान होना (रघु० १०।४८, ११।९१) और (ग) 'भू' के साथ—अन्तर्धान होना (रघु० १६।२०, भट्टि० ६।७१, १४।४४)। सम०—करिणी-कारिणी 1. परदा, घूंघट—तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति—कु० १।१४, मालवि० २।१ 2. कनात, कपड़े का पर्दा,—कारः —क्रिया 1. छिपाना, अन्तर्धान करना, घृणा,—कृत (वि०) 1. जिसकी अवहेलना की गई हो, अपमानित, निरादृत 2. गर्हित 3. गुप्त, ढका हुआ,···धानम् 1. अन्तर्धान होना, दूर हटाना—अथ खलु तिरोधानमधियाम्—गङ्गा० १८ 2. आच्छादन, अवगुण्ठन, ध्यान,—भावः ओझल होना,—हित (वि०) 1. ओझल हुआ, अंतर्हित 2. ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त।

तिरयति (ना० धा० पर०) 1. छिपाना, गुप्त रखना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. बाधा डालना, रोकना, रुकावट डालना, दृष्टि से ओझल करना –तिरयति करणानां प्राहुर्व्यवसायमीहः –मा० १।४० वारम्वारं तिरयति दृशोरुद्गमं बाष्पपूरः –३५ 3. जीतना ।

तिर्यक् (अव्य०) [तिरस् +अञ्च्+क्विप्, तिरसः तिरि आदेशः, अञ्चेर्लोपः] 1. टेढ़ा, आड़ा, अनुप्रस्थ, तिरछा 2. मुड़ा हुआ, वक्र –(पुं० नपुं०) जानवर (जो मनुष्य की भांति सीधा न चल कर, टेढ़ा चलता है) निम्न जाति का या बुद्धिहीन जानवर वन्धाय दिव्येन तिरश्चि कांश्चित् गाधादिरासादितकौपपोतः रघात् –मै० ३।२०, कु० १।४८ । समः–अन्तरम् आन्तरिक भाषा हुआ सम्बन्धों स्थान, चौड़ाई, अयनम् सूर्य द्वारा वार्षिक परिक्रमण.–ईक्ष (वि०) तिरछा देखने वाला, –जातिः (स्त्री०) पशु-पक्षी की जाति (विप० मनुष्य जाति), –प्रचारः गम् चौड़ाई,—प्रेक्षणम् तिरछी आँख करके देखना, –योनिः (स्त्री०) पशु-पक्षी की सृष्टि का वर्ग –तिर्यग्योनौ च जायते–मनु० ४।२००,–स्रोतस् (पुं०) जानवरों की दुनिया, पशु सृष्टि ।

तिल: [तिल्+क] 1. तिल का पौधा—नाभास्थेलि तिलप्रसूनपदवीम् गीत० १० 2. तिल के पौधे का बीज –नाकस्माच्छाण्डिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्, लुचितानितरैर्यत्न कार्यमत्र भविष्यति । पञ्च० २।५५, 3. मस्सा, धब्बा 4. छोटा कण, इतना बड़ा जितना कि तिल –। सम०–अम्बु,—उदकम् तिल और जल (दोनों को मिला कर मृतकों का तर्पण किया जाता है) श० ३, मनु० ३।२२३,—उत्तमा एक अप्सरा का नाम, ओदनः,–नम् तिल और दूध मिश्रित भात, –कल्कः तिल को पीस कर बनाई गई पीठी, जिन तिलों की खली, –कालकः मस्सा, तिल के बराबर शरीर पर होने वाला काला दाग—किट्टम्, –खलिः (स्त्री०) –खलो,–चूर्णम् तेल के निकालने के पश्चात् बची हुई तिलों की खल—तण्डुलकम् आलिङ्गन (जिस प्रकार तिल चावल मिलते हैं, इसी प्रकार आलिङ्गन में दो शरीर मिलते हैं), तैलम् तिलों का तेल, –पर्णः तारपीन,(–र्णम्) चन्दन की लकड़ी,– पर्णी 1. चन्दन का पेड़ 2. घृत देना 3. तारपीन,–रस. तिलों का तेल, स्नेहः तिलों का तेल,–होम. वह होम जिसमें तिलों की आहुति दी जाय ।

तिलक: [तिल+कन्] 1. सुन्दर फूलों का एक वृक्ष; –आक्रान्ता तिलकत्रियापि तिलकैर्लीनद्विरेफाञ्जनैः –मालवि० ३।५, न खलु गोमवति स्म वनस्थली न तिलकस्तिलकः प्रमदामिव रघु० ९।४१ 2. शरीर पर पड़ी चिती या खाल पर हुआ कोई नैसर्गिक चिह्न, –कः,–कम् 1. चन्दन की लकड़ी या उबटन आदि से किया गया चिह्न –मुखे मधुश्रीस्तिलकं प्रकाश्य– कु० ३।३० कस्तूरिकातिलकमालि विधाय सायं भामि० २।४, ११२१ 2. किसी वस्तु का अलङ्कार ('पुंस्य' 'प्रमुख' 'श्रेष्ठ' अर्थ में समास के अन्त में प्रयुक्त), का एक प्रकार का हार,—कम् 1. मुखाशय 2. फेफड़े 3. एक प्रकार का नमक । सम० आश्रयः मस्तक ।

तिलन्तुदः [तिल–नुद+खश्, मुम्] तेली ।

तिलशः (अव्य०) [तिल–शस्] तिल तिल करके, कण कण करके, अत्यन्त अल्प परिमाण में ।

तिलिस्सः (पुं०) एक बड़ा साँप ।

तिल्वः [तिल्+वन्] लोध का पेड़ ।

तिल्वकः (अव्य०) [तिल्वेष्वो गावो वस्मिन् काले, निपात्+सप्त नि०] गौओं के दोहने का समय (अर्थात् सायंकाल का समय डेढ़ घण्टा बीतने पर)—अभिष्टवन् जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४।१५, (तिल्वकः रात्रेः प्रथमनाडिका) ।

तिष्यः [तिष्+क्यप् नि०] 1. २७ नक्षत्रों में आठवां नक्षत्र, इसे 'पुष्य' भी कहते हैं 2. पौष मास (चन्द्र), –ष्यम् कलियुग ।

तीक् (भ्वा० आ० तीक्ते) जाना, हिलना-डुलना, तु० 'टीक्' ।

तीक्ष्ण (वि०) [तिज्+क्त्न, दीर्घः] 1. पैना (सभी अर्थों में), तीखा, शि० २।१०९, 2. गरम, उष्ण (किरणों की भांति) ऋतु० १।१८ 3. उत्तेजक, जोशीला 4. कठोर, प्रबल, मजबूत (उपाय आदि), 5. रूखा, चिड़चिड़ा 6. कठोर, बदु, कड़ा, सख्त, मनु० ७।१४० 7. अनिष्टकर, अहितकर, अशुभ 8. उत्सुक 9. बुद्धिमान, चतुर 10. उत्साही, उत्कट, ऊर्जस्वी 11. भक्षक, आत्मत्यागं करने वाला,– क्ष्णः 1. नवाचार 2. लम्बी मिर्च 3. काली मिर्च 4. काली सरसों या राई, – क्ष्णम् 1. लोहा 2. इस्पात 3. गर्मी, तीव्रातप 4. युद्ध, लड़ाई 5. विष 6. मृत्यु 7. शस्त्र 8. सम्बद्धी नमक 9. शिप्रता । सम० अंशुः 1. सूर्य 2. आग, आयसम् इस्पात, – उपायः प्रबल साधन, गहरा तरकीब,–कन्दः प्याज, कर्मन् (वि०) उद्यमी, उत्साही ऊर्जस्वी, दंष्ट्रः व्याघ्र,—धारः तलवार,– पुष्पम् लौंग,–मुख्या 1. लौंग का पौधा 2. केंवाँच का पौधा,—बुद्धि (वि०) तीव्रबुद्धि, तेज, चतुर, धार. कुशाग्रबुद्धि, – रश्मिः सूर्य, रसः 1. जवाखार 2. जहर का पानी, जहर शस्त्रप्रयुक्तानां तीक्ष्णरसदोषाणाम् मुद्रा० १।२,– लोहम् इस्पात, – शुकः जौ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीम् (दिवा० पर० तोम्यति) गीला होना, तर होना।

तीरम् [तीर्+अच्] 1. तट, किनारा —नदीतीर, सागर-तीर आदि 2. उतार, कगर, कोर या धार, -रः 1. एक प्रकार का बाज 2 सीसा 3. दीन।

तीरित (वि०) [तीर्+क्त] सुलझाया हुआ, समझिज, साक्ष्य के अनुसार निर्णीत,—तम् किसी बात का सोच विचार।

तीर्ण (वि०) [तॄ+क्त] 1 पार किया हुआ, पार पहुँचा हुआ 2. फैलाया हुआ, प्रसारित 3 पीछे छोड़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ।

तीर्थम् [तॄ+थक्] 1. मार्ग, सड़क, रास्ता, घाट 2. नदी में उतरने का स्थान, घाट (नदी के किनारे बनी हुई सीढ़ियाँ) विशेषतः विभिन्न तथा कृततीर्थः पयसा-विवाहयत्- कि० २।३, (यहाँ 'तीर्थ' का अर्थ 'उपचार, या साधन' भी है) तीर्थं सर्वविद्यावतारणाम्—का० ८८ 3. जलस्थान 4. पवित्रस्थान तीर्थयात्रा का उपयुक्त स्थान, मन्दिर आदि जो किसी पुण्यकार्य के लिए अर्पित कर दिया गया हो (विशेष कर वह जो किसी पावनतटों के किनारे स्थित हो) यूयं मनो यत्रास्ति तीर्थेन किम्- भट्टि० १५५ रघु० १।८५ 5. मार्ग, माध्यम, साधन - उदयेन तीर्थेन घटेत—आदि -मा० १ 6. उपचार, तरकीब 7. पृष्ठात्मा, योगदर्शित, श्रद्धा का पात्र, उपयुक्त आधार —अव पुनस्तादृशस्य तीर्थस्य साधोः समवः उत्तर० १, मनु० ३।१०३ 8. धर्मोपदेष्टा, अध्यापक —मया तीर्थादेशेनाधर्विद्या शिक्षिता - मालवि० १ 9. स्रोत, मूल 10. यज्ञ 11. मन्त्री 12. उपदेश, शिक्षा 13. उपयुक्त स्थान या क्षण 14. उपयुक्त या यथापूर्व रीति 15. हाथ के कुछ भाग जो देवताओं और पितरों के लिए पवित्र होते हैं 16. जैनशास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त वाईा 17 स्त्रियों-चित लज्जा 18. स्त्रीरज 19. ब्राह्मण 20. अग्नि,—पं. सम्मान सूचक प्रत्यय जो गुरुओं और संन्यासियों के नामों के साथ जोड़ा जाय —उदा० आनन्दतीर्थ आदि। सम० —**उदकम्** पवित्र जल - नीर्थोदकं च ब्रह्मिश्च नान्यत्- शुद्धिमर्हति - उत्तर० १।१३, —**कर** 1. जैन अर्हत्, धर्मशास्त्रोपदेष्टा, जैन सन्त (इस अर्थ में 'तीर्थंकर' भी) 2. संन्यासी 3. अभिनव दार्शनिक सिद्धान्त या धर्मशास्त्र का प्रवर्तक 4. विष्णु, -काक, -ध्वांक्ष, -वायस तीर्थ का कौवा अर्थात् लोलुप तीर्थयात्रीजीवी भूत (वि०) पावन, पवित्र, यात्रा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ जाना, पावनस्थानों की यात्रा, -राजः प्रयाग, इलाहाबाद, **राजिः** जी (स्त्री०) बनारस का विशेषण, -**श्राद्ध** सिर के बाल,—**विधिः** (और आदि) संस्कार जो किसी तीर्थ स्थान पर किये जायें, **सेविन्** (वि०) तीर्थ में वास करने वाला (पुं०) सारस।

तीर्थिकः [तीर्थ+ठक्] तीर्थ यात्री, वह संन्यासी ब्राह्मण जो तीर्थों के दर्शनार्थ निकला हो, पण्डा।

तीवर [तिव्+वरच्] 1. समुद्र 2. शिकारी 3. राजपूतों की किसी क्षत्रिय (वर्णसंकर) के सयोग से उत्पन्न वर्ण-संकर सन्तान।

तीव्र (वि०) [तीव+रक्] 1. कठोर, गहन, पैना, तेज, प्रचण्ड, कड़वा, तीखा, उग्र—विलङ्घिताधोरणतीव्रतेजसः रघु० ५।४८, तीव्रो वा प्रचण्ड प्रहरः - उत्तर० ३। १५ 2. गरम, उष्ण 3. चमकीला 4. आवेगक 5. अनैतिक, असौम्य 6. भयानक डरावना,—**क्षम्** 1. गरमी, तीव्रातपत्र 2. किनारा 3. लोहा, इस्पात 4. क्रोध, रोष, —**क्षम्** (अव्य०) प्रचण्ड रूप से, तेजी से, अत्यन्त। सम० —**आनन्दः** शिव का विशेषण, **-गति** (वि०) शीघ्रगामी, फुर्तीला **-रोचस्** 1. साहसपूर्ण तीव्र 2. शर-वीरता,—**वेग** (वि०) 1 दृढ़-अविचलयुक्त, दृढ़निश्चयी 2. अत्युग्र, अत्यन्त तेज।

तु (अव्य०) [तुद्+डु] (वाक्य के आरम्भ में नितान्त प्रयोगाभाव, प्रायः प्रथम शब्द के पश्चात् प्रयोग) 1. विरोध सूचक अव्यय अर्थ —'परन्तु' इसके विप-रीत 'दूसरी ओर' 'तो भी'—स सर्वेषां सुखावामलं ययौ, एकं तु सुनसूदर्शनमुच्चं न लेभे - का० ५९, विरोधे तु पितुरसौ समारोपनसनवस्थितमेव — शं० ५, (इस अर्थ में 'तु' बहुधा 'कि' और 'पर' के साथ जोड़ दिया जाता है और 'किन्तु' तथा 'परन्तु' तु के विकल्पित वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं) 2. और अब, तो, और एकान्त तु प्रतिहारी सानुप्रसुत्यान्नवीत् —का० ८, राजा तु तस्यायां श्रुत्वाऽब्रवीत् - १२ 3. के सम्बन्ध में, के विषय में, को बावत —प्रकर्षता बाह्यानाहुरिह पाकः, चन्द्रोदयादि प्रति तु केनापि विव-क्षितम् - मुद्रा० १ 4. कभी कभी इससे 'भेद' या 'श्रेष्ठ गुण' का पता लगाता है—मृत्पं यथा मृष्टतरं तु दुग्धम् - गण० 5. कभी कभी यह 'बलात्मक' अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः, गण० 6. कभी कभी केवल यह पद पूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है निरर्थकं तुदीत्येवादि पूरणैकप्रयोजनम् —चन्द्रा० २।६।

तुक्खार, तुखार, तुषार (पुं०) विन्ध्याचल पर रहने वाली एक जाति के लोग —तु० विक्रमांक० १८।९३।

तुङ्ग (वि०) [तुङ्ग्+घञ्, कुत्वम्] 1. ऊँचा, उन्नत, लम्बा, उत्तुंग, प्रमुख—जलनिधिमिव विपमण्डलदर्शनतर-लिततुङ्गतरङ्गम् गीत० ११, तुङ्गं नगोत्तंगमिवाधिरोह् — रघु० ६।३ ४।७०, शि० २।४८, मेघ० १२।६४ 2. दीर्घ 3. गुम्बजदार 4. मुख्य, प्रधान 5. उच्च, ओजोला,—ङः 1. ऊँचाई, उन्नतता 2. पहाड़ 3. चोटी, शिखर 4. वृक्षयह 5. पैंडा 6. नारियल का पेड़।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—बीजः पारा,—भद्रः दुर्दान्त हाथी, मदमत्त हाथी, —भद्रा एक नदी जो कृष्णा नदी में गिरती है,—शैलः एक नदी का नाम,—शैखरः पहाड़ ।

तुङ्गी [तुङ्ग + ङीष्] 1. रात 2. हल्दी । सम०— ईशः 1. चन्द्रमा 2. सूर्य 3. शिव की उपाधि 4. कृष्ण की एक उपाधि,—पतिः चन्द्रमा ।

तुच्छ (वि०) [तुद्+छिवप्=तुद्+छो+क] 1. खाली, शून्य, असार, मन्द 2. अल्प, क्षुद्र, नगण्य 3. परित्यक्त, सम्परित्यक्त 4. नीच, कमीना, नगण्य, तिरस्करणीय, निकम्मा 5. गरीब, दीन दुःखी,—च्छम् तुष, भूसी । सम०—द्रुः एरण्ड का वृक्ष,—धान्यः, -धान्यकः भूसी, बूर ।

तुञ्जः [तुञ्ज्+अच्] इन्द्र का वज्र ।

तुदमः [तुद्+उम] मूसा, चूहा ।

तुद् (तुदा० पर०—तुण्डति) 1. टेढ़ा करना, मोड़ना, झुकाना 2. चालबाजी करना, ठगना, धोखा देना ।

तुण्डम् [तुण्ड+अच्] 1. मुँह, चेहरा, चोंच (सूअर की) -- घूर्णनतुण्डैरताम्रकुटिलैः (शूकाः)—काव्या० २।९ 2. हाथी की सूंड 3. उपकरण की नोक ।

तुण्डिः [तुण्ड्+इन्] 1. चेहरा, मुँह 2. चोंच,—डिः (स्त्री०) नाभि, गूण्डी ।

तुण्डिन् (पुं०) [तुण्ड+इनि] शिव के बैल का नाम ।

तुण्डिभ (वि०) [तुण्ड्+भ] दे० 'तुन्दिभ' ।

तुण्डिल (वि०) [तुण्ड् + भ सिध्मा० लच्] 1. बातूनी, वाचाल 2. उभरी हुई नाभि वाला 3. गप्पी तु० 'तुन्दिल' ।

तुत्थः [तुद्+थक्] 1. आम 2. पत्थर, त्थम् एक प्रकार का नीला या श्वेत तूतिया जो सुर्मे की भांति आँख में डाला जाय,—त्था 1 छोटी इलायची 2. नील का पौधा । सम०—अञ्जनम् तूतिया या कासीस,जो आँखों में दवा की भांति लगाया जाय ।

तुद् (तुदा० पर०—तुदति, तुन्न) 1. प्रहार करना, घायल करना, आघात करना—तुतोद गदया वारिम्—भट्टि० १४।८१, १५।३७, शि० २०।७७ 2. चुभोना, अंकुश चुभोना 3. खरोंचना, चोट पहुँचाना 4. पीड़ा देना, तंग करना, सताना, कष्ट देना—सुतीक्ष्णधारासपतनोग्रसायकैस्तुदन्ति केतः प्रसभं प्रवासिनाम्—ऋतु० २।४, ६।२८, आ—, प्रहार करना, ताड़ना देना, मनु० ४। ६८, प्र—, मारना, चोट पहुँचाना, घायल करना (प्रेर०) प्रेरित करना, आगे ढकेलना (आलं०), जोर डालना, बार २ आग्रह करना (किसी काम को करने के लिए)—प्रायेण गृहमिति प्रतोद्यमाना न चलति भाग्यकृतां दशामवैद्यः - मृच्छ० १।५६ ।

तुन्दम् [तुन्द्+दन् पृषो०] पेट, तोंद । सम०—कूपिका, —कूपी नाभि का गर्त, परिमार्जः,—परिमृज्—भृज (वि०) सुस्त, आलसी ।

तुन्दवत् (वि०) [तुन्द+मतुप्, मस्य वत्वम्] तोंदवाला मोटा ।

तुन्दिक, तुन्दिल, तुन्दिभ, तुम्बिल (वि०) [तुन्द+ठन्, तुन्द+इलच्] 1. मोटे पेट वाला 2. जिसकी तोंद बढ़ गई है 3. भरा हुआ, लदा हुआ —मकरन्दतुन्दिलानामरविन्दानामयं महामान्यः—भामि० १।६ ।

तुन्न (वि०) [तुद्+क्त] 1. प्रहृत, चोट किया हुआ, घायल 2. सताया हुआ । सम०—वायः दर्जी ।

तुभ् (दिवा०, क्रया० पर०- तुभ्यति, तुभ्नाति) चोट मारना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना—भट्टि० १७। ७९, ९० ।

तुमुल (वि०) [तुभ्+उलच्] 1. जहाँ पर शोरगुल मच रहा हो, कोलाहलमय भग० १।१३, १९ 2. भीषण, क्रोधी —रघु० ३।५७ 3. उत्तेजित 4. उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, व्याकुल, अव्यवस्थित—रघु० ५।४९, (पु० नपुं०) 1. होहल्ला, हंगामा 2. अव्यवस्थित द्वन्द्व युद्ध, रण-संकुल ।

तुम्बः [तुम्ब्+अच्] एक प्रकार की लौकी ।

तुम्बरः [तुम्ब+रा+क] एक गंधर्व का नाम, दे० तुम्बरु —रम् एक प्रकार का वाद्य यंत्र तान पूरा ।

तुम्बा [तुम्ब+टाप्] 1. एक प्रकार की लम्बी लौकी दुधार गाय ।

तुम्बि, बी (स्त्री०) [तुम्ब्+इन्, तुम्बि+ङीष्] एक प्रकार की लौकी कड़वी तुम्बी,—न हि तुम्बीफलविकलो वीणादण्डः प्रयाति महिमानम्—भामि० १।८० ।

तुम्बु (बु) रुः [तुम्ब् +उरु] एक गंधर्व का नाम ।

तुरङ्गः [तुरेण वेगेन गच्छति—तुर+गम्+ड] 1. घोड़ा —तुरगखुरहतस्थिता हि रेणुः—शि० १।२१, रघु० १।४२, ३।५१ 2. मन, विचार,—गी घोड़ी । सम०—आरोहः घुड़सवार,—उपचारकः साईस,—प्रियः, —प्रम् जौ,—ब्रह्मचर्यम् बलात्-कृत या अनिवार्य ब्रह्मचर्य, स्त्रीसंग के अभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य-जीवन बिताना ।

तुरगिन् (पुं) [तुरग+इनि] घुड़सावार ।

तुरङ्गः [तुर+गम्+खच् मुम् वा ह्रस्वश्च] घोड़ा—भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव —शि० ५।५, रघु० ३।३८, १३।३, —गम् मन, विचार, —गी घोड़ी । सम०—अरिः भैंसा, —द्विषिणी भैंस,—प्रियः, यम् जौ, मेधः अश्वमेध यज्ञ—रघु० १३।६१,—यायिन्,—सादिन् (पुं०) वन्याः,—वदनः किन्नर,—शालम्, स्थानम् अस्तबल, अश्वशाला,—स्कन्धः घोड़ों का दल ।

तुरङ्गमः [तुर+गम्+खच्, मुम्] घोड़ा, रघु० ३।६३, ९।७२ ।

तुरायणम् [तुर+फक्] 1. अनासक्ति 2. एक प्रकार का यज्ञ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुराषाह (पुं०) [तुर + सह + णिच् + क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तुराषाट्-ड्) इन्द्र, कु० २।१, रघु० १५।४०।

तुरी [तुर्+ङीष्] 1. एक रेतीदार उपकरण जिससे लुहार वाने के दांतों को साफ़ करके अलग अलग करते हैं 2. नली, लुहार की नाल -तन्तुवायतुरीतुरी —नै० १।१२ 3. चित्रकार की कूची।

तुरीय (वि०) [चतुर्+छ, आद्यलोपः] चौथा, —यम् चौथाई, चौथा भाग, चौथा (वेदा० द० में) 2. आत्मा की चतुर्थ अवस्था जिसमें वह ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के साथ तदाकार हो जाती है। सम०—वर्णः चौथे वर्ण का मनुष्य, शूद्र।

तुरुष्काः [ब० व०] तुर्क लोग।

तुर्य (वि०) [चतुर्+यत्, आद्यलोपः] चौथा, नै० ४।१२३, —र्यम् 1. एक चौथाई, चौथा भाग 2. (वेदा० द० में) आत्मा की चौथी अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्म के साथ तदाकार हो जाती है।

तुल् [भ्वा० पर०, चुरा० उभ० - तोलति, तोलयति ते, (तुलयति-ते भी जिसे कुछ लोग 'तुला' की नामधातु मानते हैं) 1. तोलना, मापना 2. मन में तोलना, विचार करना, सोचना 3. उठाना, ऊपर करना —कलासे तुलिते—महावी० ५।३७, पौलस्त्यतुलितस्तेरादधान इव ह्रियम्—रघु० ४।८०, १२।८९, शि० १५।३० 4. सम्भालना, पकड़ना सहारा देना—पृथिवीतले तुलितभुजद्वयेसे—शि० १५।३०, ६१ 5. तुलना करना, उपमा देना (करण० के साथ)—मुखं इलेष्मागारं तदपि च शशाङ्केन तुलितम् - भर्तृ० ३।२०, शि० ८।१२ 6. तुल्य होना, समकक्ष होना (कर्म० के साथ) प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः - मेघ० ६४ 7. हल्का करना, गर्हण. करना, तिरस्कार करना अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वाम्—मेघ० २०, (यहां 'तु' का अर्थ है 'सम्भालना या बहा ले जाना') शि० १५।३० 8. सन्देह करना, अविश्वास पूर्वक परीक्षण करना—कः श्रद्धास्थिति भूतार्थ सर्वो मां तुलयिष्यति—मृच्छ० ३।२०, ५।४३ (यहां कुछ संस्करणों में 'तुलविष्यति' भी पाठ है) 9. जांच करना, परीक्षण करना, दुर्दशा करना हा अवस्थे ! तुलयसि—मृच्छ० १. (तुलयसि)।—उद्,—सम्भालना, सहारा देना, थामे रहना।

तुलनम् [तुल्+ल्युट्] 1. तोलना 2. उठाना 3. तुलना करना उपमा देना आदि,—ना 1. तुलना 2. तोलना 3. उठाना उद्वहन 4. निर्धारण करना, आंकना, प्रावकलन करना 5. परीक्षा करना।

तुलसी [तुलां सादृश्यं स्यति नाशयति—तुला+सो+क+ङीष्] एक पवित्र पौधा जिसको हिन्दू विशेषकर विष्णु के उपासक पूजा करते हैं। सम०—पत्रम् (शा०) तुलसी का पत्ता, (आलं०) बहुत तुच्छ उपहार,—विवाहः कार्तिक शुक्ला द्वादशी को, बालकृष्ण की प्रतिमा के साथ तुलसी का विवाह।

तुला [तोल्यतेऽनया—तुल्+अङ्+टाप्] तराजू, तराजू की डंडी।

तुलया धृ 1. तराजू में रखना, तोलना 2. माप तोल 3. तोलना 4. मिलाना—भूलना, समानता, समकक्षता, समता (संज्ञा०, करण० या समास में प्रयोग)- किं धूर्जटेरिव तुलामुपयाति सद्मयेः—वेणी० ३।८, तुलां यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।५४, रघु० ८।१५, सद्यः परस्पर-तुलामधिरोहतां द्वे - रघु० ५।६८, १९।८, ५० 5. तुला राशि, सातवीं राशि—जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलदपटलानि —एच० १।३३० 6. घर की छत पर लगा ढालू शहतीर 7. सोना चांदी तोलने का १०० पल बट्टा। सम०—कूटः कम तोलना,—कोटिः,—टी तूपुर (पैरों में पहनने का स्त्रियों का आभूषण) -लीला चलत्स्त्रीचरणारुणोत्पलस्खलत्तुलाकोटिनिनादकोमलः—शि० १२।४४,—कोशः—षः तोल द्वारा कठिन परीक्षा, —दानम् शरीर के बराबर तोल कर सोने या चांदी का किसी ब्राह्मण के लिए दान,—धटः तराजू का पलड़ा, —धरः १. व्यापारी, व्यवसायी. सौदागर 2. राशिचक्र में तुलाराशि, —धारः व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर,—परीक्षा तुला द्वारा तोलने की कठिन परीक्षा, —पुरुषः सोना, जवाहरात तथा अन्य मूल्यवान् वस्तुएँ जो एक मनुष्य के भार के बराबर हों (तथा दान में किसी ब्राह्मण के लिए दी जायँ) तु० तुलादान,—प्रग्रहः, - ग्राहः तराजू की डंडी या डोरी,—मानम्,—यष्टिः तराजू की डंडी,—रोजम् घुंघची, गुंजा,—सूत्रम् तराजू की डोरी।

तुलित (भू० क० कृ०) [तुल+क्त] 1. तोला हुआ, प्रतितुलित 2. तुलना किया हुआ, उपमित, बराबर किया हुआ —भर्तृ० ३।३६, दे० 'तुल्'।

तुल्य (त्रि०) [तुलया संमितं यत्] 1. समान प्रकार या श्रेणी का, संतुलित, समान, सदृश, अनुरूप (संब० या करण० के साथ अथवा समास में) मनु० ४।८६, याज्ञ० २।७७, रघु० २।३५, १२।८०, १८।३८ 2. योग्य 3. समरूप, वही 4. समदर्शी। सम०—दर्शन समदर्शी, सबको समदृष्टि से देखने वाला,—पानम् मिलकर मद्यपान करना, सहपान,—योगिता (अलं० शा० में) एक अलंकार, एक ही विशेषण रखने वाले कई पदार्थों का एकत्र संयोग, पदार्थ चाहे प्रसंगानुकूल हो अथवा असंबद्ध- नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता —काव्य० १०, तु० चन्द्रा० ५।४१,—रूप (वि०) अनुरूप, समरूप, समान, सदृश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुवर (वि०) [तु+क्वरच्] 1. कषाय, कसैला 2. बिना दाढ़ी का (तूवर भी)।

तुष् (दिवा० पर०—तुष्यति, तुष्ट), प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, परितृप्त होना, खुश होना (प्रायः करण० के साथ)—रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवाः—भर्तृ० २।८० मनु० ३।२०७, भग० २।५५, भट्टि० २।१३, १५।८, रघु० ३।६२, प्रेर०—तोषयति ते, प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, सन्तुष्ट करना, परि—, परितृप्त होना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या—भर्तृ० ३।५०, अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या - २।२, सम् - प्रसन्न होना, परितृप्त होना सन्तुष्ट होना—सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च मनु० ३।६०, भर्तृ० ३।५, भग० ३।१७।

तुषः [तुष्+क] अनाज की भूसी, अज्ञानतायें तत्सर्वं (अध्ययनम्) तुषाणां कण्डनं यथा—मनु० ४।७८। सम० - अग्निः—अनलः अनाज की भूसी या बुर की आग,—अम्बु (नपुं०),—उदकम् चावल या जौ की कांजी,—ग्रहः, - सारः आग।

तुषार (वि०) [तुष+आरक्] ठण्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (पाले के कारण शीतल), ओस से युक्त - शि० ९।७, वर्षा हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगंधः स्वदते तुषारा - नै० ३।९३, रः 1. कोहरा, पाला 2. बर्फ, हिम—कु० १।६, ऋतु० ४।१ 3. ओस—रघु० १४।८४ पा० ५।१९ 4. धुन्द, झीणवर्षा, फुहार, ठण्डे पानी की बौछार,—पक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम् - रघु० २।१३, ९।६८ 5. एक प्रकार का कपूर। सम०—अद्रिः, —गिरिः, —पर्वतः हिमालय पहाड़—तुषाराद्रेवतः—मेघ० १०७, - कणः ओस के कण, हिमकण, कुहरा पाला,—कालः सरदी का मौसम,—किरणः, रश्मिः चन्द्रमा,—अमर ४९, शि० ९।२७,—गौर (वि०) 1. हिम की भांति श्वेत 2. हिम के कारण श्वेत,—रः कपूर।

तुषिताः (ब० व०) [तुष्+कितच्] उपदेवताओं का समूह जो गिनती में १२ या ३६ कहे जाते हैं।

तुष्ट (भू० क० कृ०) [तुष्+क्त] 1. प्रसन्न, तुष्ट, खुश, परितृप्त, परितुष्ट 2. जो कुछ अपने पास है उसी से सन्तुष्ट, तथा अन्य के प्रति उदासीन।

तुष्टिः (स्त्री०) [तुष्+कितन्] 1. सन्तोष, परितृप्ति, प्रसन्नता, परितोष 2. (सां० द० में) मौन स्वीकृति, प्राप्त वस्तु से अधिक की लालसा न होना।

तुष्टुः [तुष्+तुक्] कर्णभूषण कानों में पहनने की मणि

तुस=तुष।

तुहिन (वि०) [तुह्+इनन्, ह्रस्वश्च] ठण्डा, शीतल, —नम् 1. हिम, बर्फ 2. ओस, कुहरा - तुषारग्रलनैस्तुहिनैः पतद्भिः - ऋतु० ४।७, ३।१५ 3. चाँदनी 4. कपूर। सम०—अंशुः,—करः,—किरणः,—द्युतिः, —रश्मिः 1. चन्द्रमा,=शि० ९।३० 2 कपूर, अचलः —अद्रिः,—शैलः हिमालय पहाड़,—रघु० ८।५४,—कणः ओस की बूंद - अमर ५४,—शर्करा बर्फ़।

तृ I (चुरा० उभ०—तृणयति—ते) सिकोड़ना, II (चुरा० आ० - तृणयते) भरना, भर देना।

तृणः [तृण्+घञ्] तरकस—मिलिलशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे गीत० १, रघु० ७।५७। सम० - धारः धनुर्धर।

तृणी, तृणीर [तृण+ङीष्, तृण्+ईरन्] तरकस रघु० ९।५६।

तुवरः [तु+क्विप् तु+व पृषो०] 1. बिना दाढ़ी का मनुष्य 2. बिना सींग का बैल 3. कषाय, कसैला 4. हिजड़ा।

तृ (दिवा० आ०—तूर्यते, तूर्ण) 1. जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2. चोट पहुँचाना, मारना।

तूरम् [तूर्+घञ्] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

तूर्ण (वि०) [त्वर्+क्त, ऊठ्, तस्य नत्वम्] फुर्तीला, तेज, शीघ्रकारी 2. द्रुतगामी, बेड़ा,—र्णः फुर्ती, शीघ्रता, —र्णम् (अव्य०) फुर्ती से, जल्दी से—चूर्णभानीयतां तूर्णं पूर्णचन्द्रनिभाननं—सुभाष०।

तूर्यः,—र्यम् [तूर्यते ताड्यते तूर्+यत्] एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, तुरही—मनु० ७।२२५, कु० ७।१०। सम० - ओघः उपकरणों का समूह।

तूलः,—लम् [तूल्+क] रूई,—लम् 1. पर्यावरण, आकाश, वायु 2. घास का गुच्छा 3. सहतूत का पेड़,—ला 1. कपास का पेड़ 2. लैम्प की बत्ती,—ली 1. रूई 2. दीवे की बत्ती 3. जुलाहे का ब्रश या कूची 4. चित्रकार की कूची या तूलिका 5. नील का पौधा। सम०—कार्मुकम् —मयूल धनुकी, अर्थात् रूई पीनने की धनुही,—पिचुः रूई,—शर्करा बिनौला रूई के पौधे का बीज।

तूलकम् [तूल+कन्] रूई।

तूलिः (स्त्री०) [तूल्+इन्] चितेरे की कूची।

तूलिका [तूलि+कन्+टाप्] चित्रकार की कूची, लेखनी, —उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रम्—कु० १।३१ 2. रूई की बत्ती (दीपक के लिए अथवा उबटन आदि लगाने के लिए) 3. रूई भरा गद्दा 4. वर्मा, छेद करने की सलाख।

तूष्णीक (वि०) [तूष्णीम्+क, मलोपः] चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी।

तूष्णीम् (अव्य०) [तूष्+नीम् बा०] नीरवता में चुपचाप, चुपके से, बिना बोले या बिना किसी शोरगुल के—किमर्थं तूष्णींमास्ते—विक्रम० २, न यौत्स्न्य इति गोविन्द मुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह - भग० २।९। सम०—भावः नीरवता, निस्तब्धता,—शीलः खामोश, स्वल्पभाषी या मौनी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तूलम् [तूल्+तन्, दीर्घः] 1. जटा 2. धूल 3. पाप 4. कण, सूक्ष्म ज़र्रा।

तूह् (तुदा० पर० --तूहति) मारना, चोट पहुँचाना—दे० तूह्।

तृणम् [तृह्+क्त, हलोपश्च] 1. घास --कि जीर्णं तृणमशितं मानमहतामग्रेसरः केसरी भर्तृ० २।२९ 2. घास की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3. तिनकों की बनी कोई चीज़ (जैसे बैठने की चटाई), तुच्छता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त--तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि--भर्तृ० २।१७, दे० 'तृणीकृ' भी। सम०-- अग्निः 1. भूसे या तिनकों की आग -मनु० ३।१६८ 2. जल्दी बुझ जाने वाली आग, अञ्जनः गिरगिट,-- अटवी ऐसा जङ्गल जिसमें घास की बहुतायत हो,—आवृतः हवा का बवण्डर, भभूला, आस्यम् (नपु०), कुटकुसम्, - गौरम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, -इन्द्रः ताड का वृक्ष, -उल्का तिनकों की मशाल, फूंस की आग की लौ,-ओकस् (नपु०) फूंस की झोपड़ी, काण्डः,-- दम् घास का ढेर, - कुटी कुटीरकम् घास फूंस की कुटिया —केतुः ताड का वृक्ष, - गोधा एक प्रकार की गिरगिट, गोह, ग्राहिन् (पुं०) नीलम, नीलकान्त मणि, - जरः गोमेद, एक प्रकार का रत्न,— जलायुका, - जलूका तिलली का लार्वा, - द्रुमः 1. ताड का वृक्ष, खजूर 2. नारियल का पेड़ 3. सुपारी का पेड़ 4. केतकी का पौधा 5. छुहारे का वृक्ष, धान्यम् जङ्गली अनाज जो बिना बोये उगे,—ध्वजः 1. ताड का वृक्ष 2. बांस, - पीडम् दस्त-ब-दस्त लड़ाई, पूली चटाई, सरकण्डों का बना मूढ़ा—प्राय (वि०) तिनके के मूल्य का, निकम्मा, नगण्य,-- बिन्दुः एक ऋषि का नाम—रघु० ८।७९,—मणिः एक प्रकार का रत्न (अम्बर, राल), --मत्कुणः जमानत या जामिन प्रतिभू (सम्भवतः 'ऋणमत्कुण' का अशुद्ध पाठ), राजः 1. नारियल का पेड़ 2. बांस 3. ईख, गन्ना 4. ताड़ का पेड़ -- वृक्षः 1. ताड का पेड़, खजूर का वृक्ष 2. छुहारे का वृक्ष 3. नारियल का पेड़ 4. सुपारी का पेड़, - शीतलम् एक प्रकार का सुगन्धित घास,—सारा केले का पेड़, -सिंहः कुल्हाड़ा, -हर्म्यः घास फूंस का बना घर।

तृण्या [तृण्+य+टाप्] घास का ढेर।

तृतीय (वि०) [त्रि+तीय, संप्र०] तीसरा,-- यम् तीसरा भाग। सम०—प्रकृतिः (पुं०, स्त्री०) होजड़ा।

तृतीयक (वि०) [तृतीय+कन्] प्रति तीसरे दिन होने वाला, (बुखार) तैया।

तृतीया [तृतीय+टाप्] 1. चांद पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2. (व्या० में) करण कारक या उसके विभक्ति-चिह्न। सम०— हृत (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता गया,—तत्पुरुषः करणकारक का समास,—प्रकृतिः (पुं० स्त्री०) हीजड़ा।

तृतीयिन् (वि०) [तृतीय+इनि] तीसरे अंश का अधिकारी (दाय का)।

तृद् (भ्वा० पर०, रुधा० उभ० तर्दति, तृणत्ति, तृन्ते, तृण्ण) 1. फाड़ना, खण्डशः करना, चीरना 2. मार डालना, नष्ट करना, संहार करना--भट्टि० ६।३८, १४।३३, १०८, १५।३६, ४४ 3. मुक्त करना 4. अवज्ञा करना।

तृप् I (दिवा०, स्वा०, तुदा० पर० तृप्यति, तृप्नोति, तृपति, तृप्त) 1. संतुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना --अद्य तर्पयन्ति मांसादाः--भट्टि० १६।२९, प्राशीन्न चातृपत् क्रूरः--१५।२९, (प्रायः करण० के साथ, परन्तु कभी-कभी संबं० या अधि० के साथ भी) —को न तृप्यति वित्तेन --हि० २।१७४, तृप्तस्तत्पितृभिर्तेन--भर्तृ० २।३४, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः, नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचनाः--पंच० १।१३७, तस्मिन्हि तत्पुरेवासस्तर्ते यज्ञे--महा० 2. प्रसन्न करना, परितुष्ट करना,—प्रेर० परितृप्त करना, प्रसन्न करना —इच्छा० तितृप्सति, तितर्पिषति, ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ०--तर्पति, तर्पयति—ते) 1. जलाना, प्रज्वलित करना 2. (आ०) सन्तुष्ट होना।

तृप्त (वि०) [तृप्+क्त] संतृप्त, संतुष्ट, परितुष्ट।

तृप्तिः (स्त्री०) [तृप्+क्तिन्] संतोष, परितोष, रघु० २।३९. ७३, ३।३ मनु० ३।२७१, भग० १०।१८ 2. अतितृप्ति, क्र० 3. प्रसन्नता, परितुष्टि।

तृष् (दिवा० पर० तृष्यति, तृषित) 1. प्यासा होना,--भट्टि० ७।१०६, १४।३०, १५।५९ 2. कामना करना, लालायित होना, उत्सुक या उत्कंठित होना।

तृष् (स्त्री०) [तृष्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तृट्-ड्) 1. प्यास—तृषा शुष्यत्यास्य पिबति सलिलं स्वादु सुरभि--भर्तृ० ३।९२, ऋतु० १।११ 2. लालसा, उत्सुकता।

तृषा—दे० तृष्।

तृषार्त (वि०) प्यास से आकुल, प्यासा,-- ह्म् पानी।

तृषित (भू० क० कृ०) [तृष्+क्त] 1. प्यासा—घटः ९, ऋतु० १।१८ 2. लालची, प्यासा, लाभ का इच्छुक।

तृष्णज् (वि०) [तृष्+नजिङ्] लोभी, लालची, प्यासा।

तृष्णा [तृष्+न+टाप् किच्च] 1. प्यास (शा० और आलं०)--तृष्णा छिनत्त्यात्मनः हि० १।१७१, ऋतु० १।१५ 2. इच्छा, लालसा, लालच, लोभ, लिप्सा —तृष्णां छिन्धि भर्तृ० २।७७, ३।५, रघु० ८।२। सम०—क्षयः इच्छा का नाश, मन की शान्ति, संतोष।

तृष्णालु (वि०) [तृष्णा+आलु] बहुत प्यासा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुह् (दिवा० पर०, चुरा० उभ०—तुण्डेढि, तर्हुयति—ते, तुढ, इच्छा० तितुत्सति, तितुर्हियति) क्षति पहुँचाना, आघात पहुँचाना, मार डालना, प्रहार करना—तृ तुण्डेह्मीति लोकोऽयं वित्ते मां निष्प्राणकम्—भट्टि० ६।३९ (तानि) तुण्डेदु रामः सह लक्ष्मणेन १।१९ ।

तॄ (भ्वा० पर०—तरति, तीर्ण) 1. पार पहुँच जाना, पार करना—केनोडुपेन परलोककर्दमं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३, स तीर्त्वा कपिषाम् —रघु० ४।३८,मनु० ४।७७ 2. पार पहुँचाना, (मार्ग) तय करना, कु० ७।४८ मेघ० १८ 3. बहना, तैरना—शिला तरिष्यत्युदके न पर्णम्—भट्टि० १२।७७ 4. पूर्ण करना, जीत लेना, पार करना, विजयी हो जाना घोरा—हि तरन्त्यापदम्···का० १७५, कृच्छ्रम् महतीर्णः—रघु० १४।६, भग० १८।५८, मनु० ११।३४ 5. किनारे तक जाना, पारंगत होना – रघु० ३।३० 6. पूरा करना, सम्पन्न करना (प्रतिज्ञा का) पालन करना—दैवात्तीर्णप्रतिज्ञः—मुद्रा० ४।१२ 7. बचाया जाना, बच निकलना,—गावो वर्षभयात्तीर्णा वयं तीर्णा महाभयात्—हरि०, कर्मवा०—तीर्यते, पार किया जाना, (प्रेर० तारयति—ते 1. ले जाना, आगे बढ़ाना 2. पहुँचाना 3. बचाना, उद्धार करना, मुक्त करना; इच्छा०—तितीर्षति, तितरिषति, तितरीर्षति) पार करने की इच्छा करना—दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्गवतीभुगजङ्गम् —काव्य० १०, अति—1. पार पहुँचना, जीत लेना, विजयी होना—भग० १३।२५, हि० ४, अव—1. उतरना, अवतरित होना —रघावततार च—रघु० १।५४, १३।६८, मेघ० ५० 2. बहना, में गिरना—सागरं वर्जयित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति—श० ३ 3. प्रविष्ट होना, घुसना, आना —मालवि० १।२२, शि० ९।३२ 4. पूर्ण करना, दमन करना, पार करना 5. (किसी देवता का) मनुष्य के रूप में इस धरती पर अवतार लेना—तु० अवतार, प्रेर०—लाना, जाकर लाना, लगाना—रघु० १।३४, उद्— 1. (पानी में से) बाहर निकलना, (जहाज से) उतरना, निकलना—रघु० २।१७, शि० ८।६३ 2. पार जाना, पार पहुँचना उदतारिपुरम्भोधिम्—भट्टि० १५।३३, १०, रघु० १२।७१, १६।३३, मेघ० ४७ 3. दमन करना, जीतना, पार करना—व्यसनमहार्णवादुत्तीर्णम्—मृच्छ० १०।४९ इसी प्रकार—रोगोत्तीर्णं, निस्—, 1. पार पहुँचना ···मर्तुं ३।४ 2. पूरा करना, सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 3. पार करना, पूरा करना, जीतना—रघु० ३।७ 4. पूरा करना, अन्त तक जाना – रघु० १४।२१, परि—पार पहुँचना, प्रेर० ठगना, धोखा देना—मां तथा प्रतार्य—ह० ५, किंवेवं कविभिः प्रतारितमना-स्तत्स्वं विज्ञानन्नपि—भर्तृ० १।७८, वि—1. पार जाना, पार करना, परे जाना—रघु० ६।७७ 2. देना, स्वीकृत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, अर्पित करना, कृपा करना, अनुग्रह करना···भगवान्मारीचस्ते दर्शने वितरति ·श० ७, वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे—उत्तर० २।४, निवासहेतोरुत्सर्गं वितरेः —रघु० १४।८१, मा० १।३ 3. पैदा करना, उत्पादन करना—ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति हंसश्रेणी— कि० ५।३१, गीत० १ 4. ले जाना, क्षति— ,पार करना, पूरा करना, जीत लेना, सम्···,1. पार करना 2. तैरना, बहना 3. पूरा करना, जीत लेना, अन्त तक जाना ।

तेजनम् [तिज्+ल्युट्] 1. बाण 2. पैना करना, तेज करना 3. जलाना 4. प्रदीप्त करना 5. चमकाना 6. सरकंडा, नरकुल 7. बाण की नोक, शस्त्र की धार ।

तेजनः [तिज्+णिच्+कलच्] एक प्रकार का तीतर ।

तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1 तेज़ी 2. (चाकू की) पैनी धार 3. अग्नि शिखा की चोटी, आग की लपट की नोक 4. गर्मी, चमक, दीप्ति 5. प्रभा, प्रकाश, ज्योति, कांति—रघु० ४।१, भग० ७।९, १०।३० 6. गर्मी या प्रकाश, सृष्टि के पाँच मूलतत्त्वों में से एक—अग्नि (अन्य चार ये हैं पृथिवी, अप्, वायु और आकाश) 7. शरीर की कांति, सौंदर्य—रघु० ३।१५ 8. तेजस्विता—य० २।१४, उत्तर० ६।१४ 9. ताकत, शक्ति, सामर्थ्य, साहस, बल, शौर्य, तेज़···तेजस्तेजसि शाम्यतु—उत्तर० ५ 10. तेजस्वी —तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते—रघु० ११।१ 11. आत्मबल, ओज या ऊर्जा 12. चरित्रबल, ओजस्विता 13. तेजोयुक्त कान्ति, महिमा, प्रतिष्ठा, प्रभुता, गौरव तेजोविशेषानुमितां (राजलक्ष्मीं) दधानः—रघु० २।७ 14. वीर्य, शोध, शुक्र - स्पादक्षणीय यदि मे न तेजः—रघु० १४।६५, रघु० २।७५, दुरन्तस्तेजोहितं तेजो दधानां भूतये भुवः —श० ४।१ 15. वस्तु की मूल-प्रकृति 16. अर्क, सत 17. आत्मिकशक्ति, नैतिक शक्ति, जादू की शक्ति 18. आग 19. मज्जा 20. पित्त 21. घोड़े का वेग 22. ताज़ा मक्खन 23. सोना । बहु०—कर (वि०) 1. कान्तिवर्धक 2. वीर्यवर्धक, शक्तिप्रद—भङ्गः 1. अपमान, प्रतिष्ठा का नाश 2. अवसाद, हतोत्साहता,—मण्डलम् प्रकाश का परिवेश,—मूर्तिः सूर्य,—रूपः परमात्मा ब्रह्म ।

तेजस्वत्, तेजोवत् (व०) [तेजस्+मतुप्, मस्य वः] 1. उज्ज्वल, चमकीला, शानदार 2. तेज़, तीखा 3. वीर, शौर्यशाली 4. ऊर्जस्वी ।

तेजस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [तेजस्+विनि] 1. चमकदार, उज्ज्वल 2. शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न, बलवान्—कि० १६।१६ 3. गौरवशाली, महानुभाव 4. प्रसिद्ध, विख्यात 5. प्रचंड 6. अभिमानी 7. विधिसम्मत ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेजित (वि०) [तिज्+णिच्+क्त] 1. पनाया हुआ, तेज किया हुआ 2. उत्तेजित, उद्दीप्त, प्रणोदित।

तेजोमय (वि०) [तेजस्+मयट्] 1. यशस्वी 2. उज्ज्वल, चमकदार प्रकाशमान—भग० ११।४७।

तेमः [तिम्+घञ्] गीला या तर होना, आर्द्रता।

तेमनम् [तिम्+ल्युट्] 1. गीला करना, तर करना 2. आर्द्रता 3. चटनी, मिर्च मसाला (जो भोजन को रुचिकर बनाये)।

तेवनम् [तिव्+ल्युट्] 1. खेल, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद 2. विहारभूमि, क्रीडास्थल।

तैजस (वि०) (स्त्री०—सी) [तेजस्+अण्] 1. उज्ज्वल, शानदार, प्रकाशमान 2. प्रकाशयुक्त—तैजसस्य घृतस्य प्रवृत्तये—रघु० ११।४३ 3. बातूनिय 4. जौंशाला 5. ओजस्वी, ऊर्जस्वी 6. शक्तिशाली, प्रबल,—सम् घी। सम०—आवर्तनी कुठाली।

तैतिक्ष (व्या०) (स्त्री०—क्षी) [तितिक्षा+ण] सहनशील, सहिष्णु।

तैतिरः [तैत्तिर पृषो०] तीतर।

तैत्तिलः (पुं०) 1. गैंडा 2. देवता।

तैत्तिरः [तित्तिर+अण्] 1. तीतर 2. गैंडा, रम् तीतरों का समूह।

तैत्तिरीय (पु० ब० व०) [तैत्तिरिणा प्रोक्तम् अधीयते—तित्तिरि+छ] यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अनुयायी, —यः यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद)।

तैमिरः [तिमिर+अण्] आँखों का एक रोग—धुंधलापन।

तैर्थिक (वि०) [तीर्थ+ठञ्] पवित्र, पावन,—कः 1. एक संन्यासी 2. किसी नवीन धार्मिक या दार्शनिक सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला,—कम् पवित्र जल (जैसा कि किसी पुण्यतीर्थ से लाया हुआ हो)।

तैलम् [तिलस्य तत्सदृशस्य वा विकारः अण्] 1. तेल—लक्षेत तैलकासु तैलमपि यत्नतः पीडयेत् भर्तृ० २।५, याज्ञ० १।२८३, रघु० ८।३८ 2. घूप 3. सम०—अष्टी शिरे, वर्रया,—अभ्यङ्गः शरीर में तेल की मालिश करना—कल्कजः खली, —पणिका, —पर्णी 1. चन्दन 2. धूप 3. तारपीन, —पिञ्जः सफेद तिल, —पिपीलिका छोटी लाल रंग की चिऊँटी, फलः हिंगोट का वृक्ष,—भाविनी चमेली, माली दीवे की बत्ती, यन्त्रम् तेली का कोल्हू,—स्फटिकः एक प्रकार की मणि।

तैलङ्गः एक देश का नाम, वर्तमान कर्नाटक प्रदेश,—गाः (ब० व०) इस देश के लोग।

तैलिकः, तैलिन् (पुं०) [तैल+ठन्, तैल+इनि] तेली, तेल पेरने वाला।

तैलिनी [तैलिन्—ङीप्] दीवे की बत्ती।

तैलीनम् [तिलानां भवनं क्षेत्रम्—खञ्] तिलों का खेत।

तैषः [तिष्येण नक्षत्रेण युक्तः पौर्णमासी तिष्य+अण्+ङीप्=तैषी, सा अस्ति अस्मिन् मासे—तैषी+लच्] पौष का महीना।

तोकम् [तु+क] सन्तान, बच्चा।

तोककः [तोक+कन्] चातक पक्षी।

तोडनम् [तुड्+ल्युट्] 1. टुकड़े २ करना, खण्डशः करना 2. फाड़ना 3. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

तोत्त्रम् [तुद्+ष्ट्रन्] पशुओं को या हाथी को हाँकने का अंकुश।

तोदः [तुद्+घञ्] पीडा, वेदना, संताप।

तोदनम् [तुद्+ल्युट्] 1. पीडा, वेदना 2. अंकुश 3. चेहरा, मुँह।

तोमरः, रम् [तुम्पति हिनस्ति—तुम्प्+अरच्, नि०] 1. लोहे का डण्डा 2. भाला, नेजा। सम०—धरः अग्निदेव।

तोयम् [तु+बिच्, तवे पूर्वं याति—या+क नि० साधुः] पानी—शा० ७।१२। सम०—अधिवासिनी पाटला वृक्ष,—आधारः, आशयः सरोवर, कूआँ, जलाशय तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः—श० १।१४,—आलयः समुद्र, सागर,—ईशः वरुण का विशेषण (—शम्) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रपुञ्ज,—उत्सर्गः अलोन्मोचन वर्षा—मेघ० ३७, —कर्मन् (नपुं०) 1. अङ्गमार्जन 2. दिवंगत पितरों को जलतर्पण, —कृच्छ्रः, —कृच्छ्रम्, एक प्रकार की तपश्चर्या जिसमें कुछ निश्चित समय तक जल पीकर ही रहना पड़ता है,—क्रीडा जलविहार —गोचर० ३३,—गर्भः नारियल, —चरः एक जलजन्तु, —छिद्रः,—भः ओला, —दः बादल—रघु० ६।६५, विक्रम० १।१४, °अत्ययः शरद् ऋतु, —धरः बादल —धिः, —निधिः समुद्र,—नीवी पृथ्वी,—प्रसादनम् कतकफल, निर्मली,—मलम् समुद्रफेन,—मुच् (पुं०) बादल,—यन्त्रम् 1. जल-घड़ी 2. फौवारा,—राज्—राशिः समुद्र,—वेला जल का किनारा, समुद्रतट, —व्यतिकरः (नदियों का) संगम—रघु० ८।९५, —शुक्तिका सीपी, —सर्पिका,—सूचकः मेंढक।

तोरणः-णम् [तुर्+युच् आधारे ल्युट् वा तारा०] 1. महराबदार बनाया हुआ द्वार, सिंह द्वार 2. बहिर्द्वार, प्रवेशद्वार—गणोन्नूपाणामथ तोरणाद् बहिः—शि० १२।१, दूरात्सलक्ष्यं सुरपतिधनुस्तोरणेन—मेघ० ७५ 3. अस्थायी रूप से बनाया हुआ शोभाद्वार—कु० ७।३, रघु० १।४१, ७।४, ११।५ 4. स्नानागार के निकट का बबूतरा, णम् गदंन, कण्ठ।

तोलः [तुल्+घञ्] 1. तोल या भार जो तराजू में तोल लिया गया हो 2. सोने चाँदी का एक तोला या १२ माशे का भार।

तोषः [तुष्+घञ्] सन्तोष, परितोष, प्रसन्नता, खुशी।

तोषणम् [तुष+ल्युट्] 1. सन्तोष, परितोष 2. सन्तोषप्रद परितृप्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तोयलम् [तोय+लू+ड] मूसल, मोटा।

तौलिकः (ग्रीक शब्द) तुला राशि।

तौलिकः (पुं०) वह सीपी जिसमें से मोती निकलती है, —क्रम् मोती।

तौर्यम् [तूर्य+अण्] तुरही का शब्द। सम०—त्रिकम् तूर्य, गान और वाद्य को समेकता, तेहरी स्वरसंगति —तौर्यत्रिक वृथाट्या च कामजो दशको गणः—मनु० ७।४७, उद्धर० ४।

तौलम् [तुला+अण्] तराजू।

तौलिकः, - तौलिकिकः [तुलि+ठक्, तुलिका+ठक्] चित्रकार।

त्यक्त (भू० कृ० कृ०) [त्यज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त,उन्मुक्त 2. उत्सृष्ट, जिसने आत्मसमर्पण कर दिया है 3. कतराया हुआ, टाला हुआ--देह त्यज्। सम०—अग्निः वह ब्राह्मण जिसने अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है,—जीवित,—प्राण (वि०) प्राण देने के लिए तैयार, कोई भी जोखिम उठाने को तैयार—मदर्थे त्यक्तजीविताः—भग० १।९,—लज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म।

त्यज् (भ्वा० पर० त्यजति, त्यक्त) 1. छोड़ना (सब अर्थों में) त्यागना, उत्सर्ग करना, चले जाना—वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९, मनु० ६।७७, ९।१७७, सं० ५।२६ 2. जाने देना, बरखास्त करना, सेवामुक्त करना,—भट्टि० ६।१२२ 3. छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना, आत्मसमर्पण करना—भर्तृ० ३।१६, मनु० २।९५, ६।३३, भग० ६।२४, १६।२१ 4. कतराना, टालना 5. छुटकारा पाना, मुक्त करना—भग० १।३ 6. अवहेलना करना, उपेक्षा करना - त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च—भग० १।३३ 7. उद्धृत करना 8. वितरण करना, प्रदान कर देना, कृतं (संध्यं) आरब्धुजे त्यजेत् --याज्ञ० ३।४७, मनु० ६।१५, प्रेर०—छुड़वाना, इच्छा०—तित्यक्षति छोड़ने की इच्छा करना, परि—1. छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्याग करना 2. पद त्याग करना, छोड़ देना, रद्द कर देना, तिलाञ्जलि देना---प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति —मुद्रा० २।१७ 3. उद्धृत करना---तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम्, लभ्--1. त्यागना, जायाश्चदोषामुत सन्त्यजामि - रघु० १४।३४ 2. टालना, कतराना —भर्तृ० १।८१ 3. छोड़ देना, तिलांजलि देना--- मनु० ४।१८१ 4. उद्धृत करना—उदा०—संत्यज्य चिक्रमादित्यं धैर्यमन्यच्च दुर्लभम्—राजत० ३।३४३।

त्यागः [त्यज्+घञ्] 1. छोड़ना, परित्याग, छोड़ देना, छोड़ कर चले जाना, वियोग —न माता न पिता न स्त्री न पुत्रस्त्यागमर्हति—मनु० ८।३१९, ९।७८ 2. छोड़ देना, पदत्याग कर देना, तिलांजलि देना —मनु० १।११२, भग० १२।४१ 3. उपहार, दान, धर्मार्थ दान,-- करे श्लाघ्यस्त्यागः—भर्तृ० २।६५, हि० १।१५४, त्यागाय सम्भृतार्थानाम्—रघु० १।१७ 4. मुक्तहस्तता, उदारता--रघु० १।२२ 5. स्राव, मलोत्सर्ग। सम०—धन,—शील (वि०) मुक्त हस्त, उदार, दानशील।

त्यागिन् (वि०) [त्यज्+घिनुण्] 1. छोड़ने वाला, परित्याग करने वाला, छोड़ देने वाला 2. प्रदाता, दाता 3. शौर्यशाली, शूरवीर 4. वह जो धार्मिक अनुष्ठानों के फलस्वरूप किसी पारितोषिक या पुरस्कार की अपेक्षा नहीं करता है—यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते—भग० १७।११।

त्रप (भ्वा० आ०—त्रपते, त्रपित) शर्माना, लजाना, झंझट में फँस जाना—अपत्ले तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ गङ्गा० २८, अप—, मुड़ना, शर्म के कारण कार्यनिवृत्त होना--तस्मादवलेरपत्रपे--भट्टि० १४।८४, येनापत्रपते साधुरसाधुस्तेन तुष्यति—महा०।

त्रपा [त्रप्+अङ्+टाप्] 1. शर्म, लाज--मन्दत्रपाभर --गीत० १२ 2. हया, शर्म (अच्छे और बुरे अर्थ में) 3. कामुक या व्यभिचारिणी स्त्री 4. प्रसिद्धि, ख्याति। सम०—निरस्त,-हीन (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म,—रक्षा वेश्या।

त्रपिष्ठ (वि०) [अयम् एषाम् अतिशयेन तृप्रः--तृप्र+इष्ठन्, तृप्रशब्दस्य त्रपादेशः] अत्यन्त सन्तुष्ट।

त्रपीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [तृप्र+ईयसुन्, तृप्र शब्दस्य त्रपादेशः] अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट।

त्रपु (नपुं०) [अत्ति दृष्ट्वा त्रपते जलते इव --क्रप्+उन् तारा०] टीन, रांगा—यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते—पंच० १।७५।

त्रपुलम्,-- बस्, त्रपुस (नपुं०),--सम् [त्रप्+उल, त्रप्+उष, त्रप+उस्, त्रप्+उस] टीन, रांगा।

त्रप्स्यम् (नपुं०) मट्ठा, घोला हुआ दही।

त्रय (वि०) (स्त्री०—यी) [त्रि+अयच्] तेहरा, तिगुना, तीन भागों में विभक्त, तीन प्रकार का-- त्रयी वै विद्या ऋचो यजूंषि सामानि—शत०, मनु० १।२३,—यम् तिगड्डा, तीन का समूह— अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, लोकत्रयम्—भग० ११।२०, ४३, मनु० २।७६।

त्रयस् ('त्रिशब्द' पुं०, कर्तृ० ब० व०, समास में प्रयोग, अथवा संख्यावाचक शब्दों के साथ) तीन। सम०—चत्वारिंश (वि०) तेंतालीसवाँ,—चत्वारिंशत् (वि० या स्त्री०) तेंतालीस, - त्रिंश (वि०) तेंतीसवाँ—त्रिंशत् (वि० या स्त्री०) तेंतीस, --दश (वि०) 1. तेरहवाँ 2. तेरह जोड़ कर—'त्रयोदशं शतम्' एक सौ तेरह, —दशन् (वि०, ब० व०) तेरह,—दशन (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेरहवीं,—**दशी** चान्द्र पक्ष की तेरहवीं तिथि,—**तमः** (स्त्री०) तिरानवे,—**पञ्चाशत्** (स्त्री०) तरेपन,—**विंश** (वि०) 1. तेइसवाँ 2. तेईस से युक्त,—**विंशतिः** (स्त्री०) तेईस, - **वर्षिः** (स्त्री०) तरेसठ,—**सप्ततिः** (स्त्री०) तिहत्तर ।

त्रयी [त्रय+ङीप्] 1. तीनों वेदों की समष्टि (ऋग्यजुः-सामानि)-त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः—का० १, तौ त्रयीवर्जमितरा विद्याः परिपाठ्यौ—उत्तर० २, मनु० ४।१२५ 2. तिगुना, त्रिक, त्रिसमूह - व्यक्षोत्तिष्ट सभावेद्यामसौ नरशिखित्रयी—शि० २।३ 3. गृहिणी या विवाहित नारी जिसका पति तथा बालबच्चे जीवित हों 4. बुद्धि, समझ । **समः**—**तनुः** 1. सूर्य का विशेषण, इसी प्रकार 'त्रयीमयः' 2. विष्णु का एक विशेषण,—**धर्मः** तीनों वेदों में वर्णित धर्म—भग० ९। २१,—**मुखः** ब्राह्मण ।

त्रस् i (भ्वा०, दिवा० पर०—त्रसति, त्रस्यति, त्रस्त) 1. घबराना, काँपना, हिलना, भय के कारण विचलित होना 2. डरना, भयभीत होना, डर जाना (अपा० के साथ, कभी-कभी सम्प्र० या करण० के साथ)—त्रसदवनात् वस्यति का० २५५, कपेरत्रासिपूनदात्—भट्टि० ९।११, ५।७५, १४।४८, १५।५८, शि० ८। २४, कि० ८।७, प्रेर०—डराना, भयभीत करना,—वि—, भयभीत या त्रस्त होना—वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः—भर्तृ० १।९, **सम्**—डरना, भयभीत होना, त्रस्त होना—भट्टि० १४।३९ ।

ii (चुरा० उभ०—त्रासयति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. थामना 3. लेना, पकड़ना 4. विरोध करना, रोकना ।

त्रस (वि०) [त्रस्+क] चर, जंगम,—**सः** हृदय,—**सम्** 1. वन जंगल 2. जानवर । **समः**—**रेणुः** अणु, धूल का कण या अणु जो सूर्यकिरण में हिलता हुआ दिखाई देता है—तु० जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः, प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते—मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६१ ।

त्रसरः [त्रस्+अरन् बा०] डरकी (जुलाहों का एक उपकरण जिसमें धागों की नली रख कर बुनते हैं) ।

त्रसुर, त्रस्नु (वि०) [त्रस्+उरच्, त्रस्+क्नु] भीरु, काँपने वाला, डरपोक—अत्रस्नुभिर्युक्तधुरं तुरङ्गैः—रघु० १४।४७, सीतां सौमित्रिणा त्यक्तां सम्प्रीक्षी त्रस्नुमेकिकाम्—भट्टि० ६।७ ।

त्रस्त (भू० क० कृ०) [त्रस्+क्त] 1. भयभीत, डरा हुआ, आतंकित—त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टिः—मा० ४।८ 2. डरपोक, भीरु 3. फुर्तीला, चंचल ।

त्राण (भू० क० कृ०) [त्रै+क्त तस्य नादयम्] रक्षा किया गया, अभिरक्षित, प्ररक्षित, बचाया गया,—**णम्** 1. रक्षा प्रतिरक्षा, प्ररक्षा—आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १।११ रघु० १५।३ 2. शरण, सहारा, आश्रय—भट्टि० ३।७० ।

त्रात (भू० क० कृ०) [त्रै+क्त] 1. प्ररक्षित, बचाया गया, रक्षा किया गया ।

त्रायुष (वि०) (स्त्री०—षी) [त्रयुष+अण्] रीछ का बना हुआ ।

त्रास (वि०) [त्रस्+घञ्] 1. चर, चलनशील 2. डराने वाला,—**सः** डर, भय, आतंक—अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः—रत्ना० २।३, रघु० २।३८, ९।५८ 2. चौकन्ना करने वाला, भयभीत करने वाला 3. मथिनत दोष ।

त्रासक (वि०) [त्रस्+णिच्+ण्वुल्] खौफ़नाक, डरावना, भयङ्कर,—**कम्** डराने की क्रिया, डराना ।

त्रासित (वि०) [त्रस्+णिच्+क्त] डराया हुआ, आतंकित भयभीत ।

त्रि (छं० वि०—केवल ब० व०, कर्तृ० पुं० **त्रयः**, स्त्री० **तिस्रः**, नपुं० **त्रीणि**) तीन—त एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः—मनु० २।२६९, प्रियतमाभिरसौ तिसृभिर्बभौ—रघु० ९।१८, त्रीणि वर्षाण्युडीक्षेत कुमार्यृतुमती सती—मनु० ९।९० । **समः - अंशः** 1. तिहाई भाग 2. तीसरा अंश,—**अक्षः**—**अक्षकः** शिव का एक विशेषण,—**अक्षरः** 1. ईश्वर द्योतक अक्षर 'ओम्' जो तीन अक्षरों से मिल कर बना है—दे० 'अ' में 2. जोड़ी मिलाने वाला, षटक (यह शब्द तीन वर्णों से मिल कर बना है),—**अङ्गुलम्**,—**अङ्गुलकम्** 1. वह तीन रस्सियाँ जिनके सहारे बहँगी के दोनों पलड़े दोनों किनारों पर लटकते रहते हैं 2. एक प्रकार का अंजन, सुर्मा, —**अञ्जनम्**—**लिङ्** तीन अंजलि (मिला कर),—**अधिष्ठानः** आत्मा,—**अध्वगा**,—**भागगा**,—**पथगा** गंगा नदी (तीनों लोकों में बहने वाली) के विशेषण, —**अम्बकः** ('त्रियम्बक' भी, यद्यपि लौकिक साहित्य में प्रयोग विरल है) तीन आंखों वाला, शिव, त्रियम्बकं संयमिनं ददर्श—कु० ३।४४, जडीकृतस्त्र्यम्बकवीक्षणेन—रघु० २।४२, ३।४९, **°सखः** कुबेर का विशेषण, —**अम्बका** पार्वती का विशेषण,—**अब्द** (वि०) तीन वर्ष पुराना (—**ब्दम्**) तीन वर्ष,—**अर्शस** (वि०) तिरासिवाँ,—**अशीतिः** (स्त्री०) तिरासी,—**अष्टन्** (वि०) चौबीस,—**अश्र**—**अस्र** त्रिकोण, त्रिभुजाकार (—**स्रम्**) तिकोन, त्रिभुज,—**अहः** तीन दिन का काल, —**अहिक** (वि०) 1. तीन दिन में उत्पादित या अनुष्ठित 2. हर तीसरे दिन घटने वाला—(प्रथा बुखार) तैया,—**ऋचम्** ('तृचम्' भी) तीन ऋचाओं की समष्टि—मनु० ८।१०६,—**ककुद्** (पुं०) 1. त्रिकूट पहाड़ 2. विष्णु या कृष्ण,—**कर्मन्** (नपुं०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्तव्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थात् यज्ञ करना, वेद का अध्ययन करना, तथा दान देना (-पुं०) जो इन तीन कर्मों को सम्पन्न करने में व्यस्त हो, ब्राह्मण, --काय: बुद्ध का नाम,--कालम् तीन काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्यत् या तीन समय - प्रात:, मैध्याह्न तथा सायम् 2. क्रिया के तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) ज्ञ, °दशिन (वि०) सर्वज्ञ,--कूट: सीलोन का एक पहाड़ जिस पर रावण की राजधानी लंका स्थित थी--शि० २।५, --कूर्चकम् तीन फलों का चाकू,—कोण (वि०) त्रिभुजाकार, त्रिकोण बनाने वाला (—ण:) 1. तीन कोन वाली आकृति 2. योनि,—खट्वम्, -खट्वी तीन खाटों का समूह, - गण: सांसारिक जीवन के तीन पदार्थों की समष्टि अर्थात् धर्म, अर्थ और काम,—न बाधतेऽस्य त्रिगण: परस्परम् किं० १।११, दे० नी० 'त्रिवर्ग',--गत (वि०) 1. तिगुना 2. तीन दिन में सम्पन्न,—गर्ता: (ब० व०) 1. भारत के उत्तरपश्चिम में एक देश, इसका नाम 'जलंधर' भी है 2. इस देश के निवासी या शासक,—गा कामासक्त स्त्री, स्वैरिणी, - गुण (वि०) 1. तीन डोरों से युक्त तगड़ी —इताय मौंजी त्रिगुणां बभार यां —कु० ५।१० 2. तीन बार आवृत्ति किया हुआ, त्रिविध, तेहरा, तिगुना ---सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि)—रघु० २।२५ 3. सत्त्व, रजस् तथा तमस् नाम के तीन गुणों से युक्त, (—णम्) (सा० द० में) प्रधान (गा) (वेदा० द०० में) 1. माया 2. दुर्गा का विशेषण ---चक्षुस् (पुं०) शिव का एक विशेषण,—छत्र (वि०) (ब० व०) तीन या चार गत्रा जवात् त्रिचतुरराणि पदानि सीता · बालरा० ६।३४, - चत्वारिंश (वि०) तेतालीसवाँ, - चत्वारिंशत् (स्त्री०) तेतालीस, --जगत् (नपुं०) - जगती तीन लोक 1. स्वर्गलोक, अन्तरिक्षलोक तथा भूलोक या (२) स्वर्गलोक, भूलोक, पाताललोक,- -जट: शिव का एक विशेषण, —जटा एक राक्षसी, जिसको रावण ने अशोकवाटिका में सीता की देखरेख के लिए नियत किया था, जब सीता वहाँ बन्दी के रूप में रक्खी गई। उस समय त्रिजटा ने स्वयं सीता के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, तथा अपनी दूसरी सहचरियों को भी प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही करें, - जीवा,—ज्या तीन सिल्लों की ज्या, या ९० कोटि, अर्धज्यास,— णता, यनुष, --याव, - यदन् (वि० ब० व०)३×९, नौ का तिगुना अर्थात् सत्ताईस, लक्षम्,---तक्षी तीन बढ़इयों का समूह,—दण्डम् 1. (संसार से विरक्त) सन्यासी के तीन डंडों को बांधकर एक किया हुआ 2. तिगुना संयम --अर्थात् मन, वाणी और कर्म का, (ड:) एक धर्मनिष्ठ सन्यासी की अवस्था— दण्डिन् (पुं०) धर्मनिष्ठ साधु या संन्यासी जिसने सांसारिक विषय वासनाओं का त्याग कर दिया है, और जो अपने दहिने हाथ में तीन-दंड (एक जगह मिला कर बंधे हुए) रखता है 2 जिसने अपने मन, वाणी और शरीर को वश में कर लिया है—तु० वाग्दण्डोऽथ मनोदण्ड: काय-दण्डस्तथैव च,यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते— मनु० १२।१०,—दशा: (ब० व०) 1. तीस 2. तेंतीस देवता, (--श:) देवता, अमर—कु० ३।१, °अंकुश: °आयुधम् इन्द्र का वज्र --रघु० ९।५४, °अधिप:, °ईश्वर: °पति: इन्द्र के विशेषण, °अध्यक्ष: विष्णु का एक विशेषण, °अरि: राक्षस, °आचार्य: बृहस्पति का विशेषण, °आलय:, °आवास: 1. स्वर्ग 2. मेरु पर्वत, °आहार: देवताओं का भोजन, °गुरु: बृहस्पति का विशेषण, °गोप: एक प्रकार का कीड़ा, वीरबहूटी (इन्द्रगोप)-- श्रद्धे त्रिदशगोपमात्रके दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि --रघु० ११।४२, °मंजरी तुलसी का पौधा, °वधू, °वनिता अप्सरा या स्वर्ग की देवी · कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथि: स्या: --मेघ० ५८, दर्शनम् आकाश, दिनम् तीन दिनों की समष्टि, - दिवम् 1. स्वर्ग, त्रिमार्गेयेव विदिवस्य मार्ग: – कु० १।२८, श० ७।३ 2. आकाश, पर्यायरूप 3. प्रसन्नता, °अधीश: °ईश: 1. इन्द्र का विशेषण 2. देवता, °उद्भवा गंगा, °ओकस् (पुं०) देवता · दृश (पुं०) शिव का एक विशेषण- दोषम् शरीर में होने वाले तीनों दोष अर्थात् वात, पित्त और कफ,— धारा गंगा, - नयनः (नयनः)- नेत्र: लोचनः शिव के विशेषण रघु० ३।६६, कु० ३।९६, ५।७२, --नवत (वि०) तिरानवेवाँ, नवति: (स्त्री०) तिरानवे, पञ्च (वि०) तीन-गुना पाँच अर्थात् पन्द्रह, पञ्चाश (वि०) तरेपनवाँ, --पञ्चाशत् (स्त्री०) तरेपन, - पट: काच, - पताक: 1. हाथ जिसकी तीन अंगुलियाँ फैली हुई हों 2. त्रिपुंड तिलक लगा हुआ मस्तक,—पत्रकम् ढाक,—पथम् तिराहा, अर्थात् भूलोक, अन्तरिक्ष तथा भूलोक, या आकाश, भूलोक तथा पाताल 2. वह स्थान जहां तीन सड़कें मिलती हों, °गा गंगा का विशेषण—धृतसत्पथ-स्त्रिपथगमभित्र स तमारुरोह पुरुहूतसूत:—कि० ६।१, अमरु ९९, पदम्, पदिका तीन पैर वाला, - पदी 1. हाथी का तंग · नासत्करिणां यूथैं त्रिपदीच्छेदिना-मपि-- रघु० ४।८८ 2. गायत्री छन्द 3. तिपाई 4. गोचापदी नाम की पौधा, - पर्ण: झंक का पेड़ --पाद (वि०) 1. तीन पैरों वाला 2. तीन खण्डों से युक्त, तीन चौथाई,—रघु० १५।९६ 3. त्रिनाम (पुं०) वामनावतार भगवान् विष्णु का विशेषण,—पुट (वि०) त्रिभुजाकार (ट:) 1. त्रिण 2. हथेली 3. एक हाथ परिमाण 4. तट या किनारा,—पुटक: त्रिकोण, त्रिभुज,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--पुटा दुर्गा का विशेषण, --पुञ्जम्, --पुञ्जकम् चन्दन, राल या गोबर से बनाई हुई तीन रेखाएँ, पुरे 1. तीन नगरों का समूह 2. द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक में मय राक्षस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लोहे के ३ नगर (देवताओं की प्रार्थना पर यह तीनों नगर--उनमें रहने वाले राक्षसों समेत शिव जी द्वारा जला दिये गये)--कु० ७।४८, अमर २, मेघ० ५६ भर्तृ० २।१२३, (रः) इन नगरों का अधिपति राक्षस °अन्तकः °अरिः, °घ्नः, °दहनः °द्विष्, (पुं०) °हरः शिव के विशेषण --भर्तृ० २।१२३, रघु० १७।९४, °दाहः तीन नगरों का जलाया जाना--कि० ५।१४, (-रौ) जबलपुर के निकट एक नगर जो पहले चेदिदेश के राजाओं की राजधानी था 2. एक देश का नाम,--पौरुष (वि०) तीन पीढ़ियों से सम्बन्ध रखने वाला, या तीन पीढ़ियों तक जलने वाला,--प्रसूतः वह हाथी जिससे मद का स्राव हो रहा हो,--फला तीन फलों (हरड़, बहेड़ा और आँवला) का संघात, --वलिः,--वली, --वल्लिः,--वली स्त्री की नाभि के ऊपर पड़ने वाले तीन बल (जो सौन्दर्य का चिह्न समझे जाते हैं) --त्रामोदरोपरिलसत्त्रिवलीलतानाम्--भर्तृ० १।९३, ८२, तु० कु० १।३१, --भवम् स्त्रीसहवास, मैथुन, स्त्रीसम्भोग,--भुजम् त्रिकोण,--भुवनम् तीन लोक --पुण्या या वाल्त्रिभुवनपुरोवर्त्ति चण्डीश्वरस्य--मेघ० ३३, भर्तृ० १।९९,--भूमः तिमंजिला महल,--मार्गा गंगा --कु० १।२८,--मुकुटः त्रिकूट पहाड़,--मुखः बुद्ध का एक विशेषण, --मूर्तिः हिन्दुओं के त्रिदेव --ब्रह्मा, विष्णु और महेश का संयुक्त रूप --कु० २।४,--यष्टिः तीन लड़ों का हार,--यामा रात्रि (तीन पहर वाली आरम्भ और अन्त का आधा आधा पहर इसके पृथक् हैं)--संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा विभावा --मेघ० १०८, कु० ७।२१, २६, रघु० ९।७०, विक्रम० ३।२२,--योनिः तीन कारणों (क्रोध, लोभ, और मोह) से होने वाला अभियोग,--रात्रम् तीन रातों (तथा दिनों) का समय,--रेखः शंख, --लिंग (वि०) तीनों लिंगों में प्रयुक्त अर्थात् त्रिलिंग, (गः) एक देश जिसे तैलंग कहते हैं, (गी) तीनों लिंगों की समष्टि,--लोकम् तीनों संसार, °ईशः सूर्य °नाथः तीनों लोकों का स्वामी, इन्द्र का विशेषण रघु० ३।४५ 2. शिव का विशेषण --कु० ५।७७ (--की) तीनों लोकों की समष्टि, त्रिलव --सत्यामेव त्रिलोकी सरिति हरशिरश्चुम्बिनी त्रिस्रोटायाम्--भर्तृ० ३।९५, शा० ४।२२, --वर्गः 1. सांसारिक जीवन के तीन पदार्थ --अर्थात् धर्म, अर्थ और काम --कु० ५।३८ 2. तीन स्थितियां हानि, स्थिरता और वृद्धि --क्षय स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्--अमर०,--वर्णकम् पहले तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) का समाहार,--वारम् (अव्य०) तीन बार, तीन मर्तबा,--विक्रमः वामनावतार विष्णु,--विधः तीनों वेदों में व्युत्पन्न ब्राह्मण --विध (वि०) तीन प्रकार का, तेहरा, --विष्टपम्, --पिष्टपम् इन्द्रलोक, स्वर्ग,--त्रिविष्टपस्थेव पतिं जयन्तः--रघु० ६।७८, °स्थ (पुं०) देवता--स्रोतस्, --गी (स्त्री) प्रयाग के निकट त्रिवेणी संगम जहाँ गंगा यमुना और सरस्वती मिलती है,--स्रैव्यः तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण,--त्रिशङ्कुः अयोध्या का विख्यात सूर्य वंशी राजा, हरिश्चन्द्र का पिता (त्रिशंकु बुद्धिमान् धर्मात्मा और न्याय-परायण राजा था, परन्तु उसमें यह एक बड़ा दोष था कि वह अपने व्यक्तित्व को बहुत प्रेम करता था। उसने इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा से यज्ञ करना चाहा, फलतः उसने अपने कुलगुरु वशिष्ठ से यज्ञ कराने की प्रार्थना की, परन्तु जब उन्होंने इस प्रार्थना को स्वीकार न किया तो उसने उनके १०० पुत्रों से प्रार्थना की, परन्तु उन्होंने भी इसके प्रस्ताव को बेहूदा बता कर ठुकरा दिया। त्रिशंकु ने उन सबको कायर और नपुंसक कहा, और इसके बदले उन्होंने उसे 'चाण्डाल बनने' का शाप दे दिया। जब त्रिशंकु की ऐसी दुर्दशा हुई तो विश्वामित्र ने जिसका परिवार एक दुर्भिक्ष के समय त्रिशंकु का आभारग्रस्त हो गया था---उसका यज्ञ सम्पन्न कराना स्वीकार कर लिया। उसने यज्ञ में देवताओं का आवाहन किया --जब देवता यज्ञ में न आये तो विश्वामित्र ने क्रुद्ध हो अपनी शक्ति से त्रिशंकु को इसी शरीर से ऊपर स्वर्ग में भेजा। त्रिशंकु ऊपर ही ऊपर उड़ता चला गया और आकाशमण्डल से जा टकराया। वहाँ इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने उसे सिर के बल धकेल दिया। तो भी तेजस्वी विश्वामित्र ने नीचे आते हुए त्रिशंकु को बीच ही में 'त्रिशंकु वहीं ठहरो' कह कर रोक दिया। फलतः भाग्यहीन राजा सिर के बल वहीं दक्षिणगोलार्ध में नक्षत्रपुंज के रूप में लटक गया। इसीलिए यह लोकोक्ति ("त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ' श० २ प्रसिद्ध हो गई) 2. चातक पक्षी 3. झिल्ली 4. टिड्डा 5. जुगनू, °जः हरिश्चन्द्र का विशेषण, °याजिन् (पुं०) विश्वामित्र का विशेषण, --शत (वि०) तीन सौ (तम्) 1. एक सौ तीन 2. तीन सौ, --शिखम् 1. त्रिशूल 2. त्रिशाख किरीट या मुकुट,--शिरस् (पुं०) एक राक्षस जिसको राम ने मारा था,--शूलम् त्रिशूल, °अंकः °धारिन् (पुं०) शिव का विशेषण,--शृङ्गिन् (पुं०) शिव का विशेषण, --शृङ्गः त्रिकूट नाम का पहाड़, --षष्टिः (स्त्री०) तरेसठ,--सन्ध्यम्, सन्ध्यी दिन के तीन काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायम्,--सन्ध्यम् (अव्य०) तीनों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संध्याओं के समय,—**सप्तत** वि०] तिहत्तरवाँ,—**सप्ततिः** तिहत्तर,—**सप्तन्-सप्त** (वि० व० व०) तीन बार सात अर्थात् २१—**साम्पस्** तीनों (गुणों) का साम्य,—**स्थली** तीन पवित्र स्थान—अर्थात् काशी, प्रयाग और गया, —**स्रोतस्** (स्त्री०) गंगा का विशेषण—त्रिस्रोतस्ं वहति यो गगनप्रतिष्ठाम्—स० ७।६, रघु० १०।६३, कु० ७।१६ —**सौत्य,—हृद्य** (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता हुआ,—**हायन** (वि०) तीन वर्ष का।

त्रिंश (वि०) (स्त्री०-शी) [त्रिशत्+डट्] 1. तीसवाँ 2. तीस से जुड़ा हुआ, उदा० त्रिंशं शतं-'एक सौ तीस' 3. तीस से युक्त।

त्रिंशक (वि०) [त्रिंश+कन्] 1. तीस से युक्त 2. तीस के मूल्य का या तीस में खरीदा हुआ।

त्रिंशत् (स्त्री०) [त्रयोदशतः परिमाणमस्य नि०] तीस, —**पत्रम्** सूर्योदय के साथ खिलने वाला कमल।

त्रिंशत्कम् [त्रिंशत्+कन्] तीस की समष्टि, तीस का समाहार।

त्रिक (वि०) [त्रयाणां संघः—कन्] 1. तिगुना, तेहरा 2. तिगड्डा बनाने वाला 3 तीन प्रतिशत,—**कम्** 1. तिगड्डा 2. तिराहा 3. रीढ़ की हड्डी का निचला भाग, कूल्हे के पास का भाग—त्रिके स्थूलता—पंच० १।१९०, कश्चिद्विवृत्तत्रिकभिन्नहारः रघु० ६।१६ 4. कन्धे की हड्डियों के बीच का भाग 5. तीन मसाले—(त्रिफला, त्रिकटु, त्रिमद),—**का** रस्सी के आने जाने के लिए कुएं पर लगाई हुई लकड़ी की गिर्री।

त्रितय (वि०) (स्त्री०-यी) [त्रयोऽवयवा अस्य—त्रि+तयप्] तीन भागों वाला, तिगुना, तीन तह का,—**यम्** तिगड्डा, तीन का समूह—श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्—श० ७।२९, रघु० ८।७८, याज्ञ० ३।२६६।

त्रिधा (अव्य०) [त्रि+धाच्] तीन प्रकार से या तीन भागों में, कु० ७।४४, भग० १८।१९।

त्रिस् (अव्य०) [त्रि+सुच्] तीसरी बार, तीन बार।

त्रुट् (दिवा० तुदा० पर० त्रुटयति, त्रुटति, त्रुटित) फाड़ना, तोड़ना, टुकड़े २ करना, तड़कना, फिसल जाना (आलंभी०)—गद्गदगलत्प्रत्युप्तद्विलीनाक्षरम्—भर्तृ० ३।८, १।९६, अयं ते वाग्पीघस्त्रुटित इव सुकतामणिसरः—उत्तर० १।२९।

त्रुटिः,—टी (स्त्री०) [त्रुट्+इन् कित्, त्रुटि+ङीष्] 1. काटना, तोड़ना, फाड़ना 2. छोटा हिस्सा, अणु 3. समय का अत्यन्त सूक्ष्म अन्तर, १/४ क्षण या $\frac{1}{2}$ लव 4. सन्देह, अनिश्चितता 5. हानि, नाश 6. छोटी इलायची (पीपा)।

त्रेता [त्रीन् भदान् एति प्राप्नोति—पृषो० साधुः] 1. तिकड़ी त्रिक 2. तीन यज्ञाग्नियों का समाहार- मनु० २।२३१, रघु० १३।३७ 3. पासे को विशेष ढंग से फेंकना, तीन का दाँव फेंकना—श्वेताहतसर्वस्वः- मृच्छ० २।८ 4. हिन्दुओं के चार युगों में दूसरा—दे० 'युग'।

त्रेधा (अव्य०) [त्रि+एधाच्] तिगुनेपन से, तीन प्रकार से, तीन भागों में—तदेकं सत्त्रेधाख्यायते शत०, (नमः) तुभ्यं चेधा स्थितात्मने—रघु० १०।१६।

त्रै (भ्वा० आ० त्रायते, त्रात या त्राण) रक्षा करना, प्ररक्षित रखना, बचाना, प्रतिरक्षा करना (प्रायः अपा० के साथ) क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः—रघु० २।५३, भग० २।४०, मनु० ९। १३८, भट्टि० ५।५४, १५।१२०, परि—, बचाना, परित्रायस्व परित्रायस्व (नाटकों में)।

त्रैकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिकाल+ठञ्] तीन कालों से (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) सम्बद्ध।

त्रैकाल्यम् [त्रिकाल+ष्यञ्] तीन काल अर्थात्—भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्।

त्रैगुणिक (वि०) [त्रिगुण+ठक्] तिगुना, तेहरा।

त्रैगुण्यम् [त्रिगुण+ष्यञ्] 1. तिगुनापन, तीन धागों या गुणों का एकत्र होने का भाव 2. तीन गुणों का समाहार 3. तीन गुणों (सत्त्व, रजस्, तमस्) की समष्टि —त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते—मालवि० १।४।

त्रैपुरः [त्रिपुर+अण्] 1. त्रिपुर नाम का देश 2. उस देश का निवासी या शासक।

त्रैमातुरः [त्रिमातृ+अण्, उत्वम्] लक्ष्मण का विशेषण।

त्रैमासिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिमास+ठञ्] 1. तीन मास पुराना 2. तीन महीने तक ठहरने वाला, या हर तीन महीने में आने वाला 3. तिमाही।

त्रैराशिकम् [त्रिराशि+ठञ्] (गणित) तीन ज्ञात राशियों के द्वारा चौथी अज्ञात राशि निकालने की रीति।

त्रैलोक्यम् [त्रिलोकी+ष्यञ्] तीन लोकों का समाहार —रघु० १०।५३।

त्रैवर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिवर्ण+ठञ्] पहले तीन वर्णों से संबंध रखने वाला।

त्रैविक्रम (वि०) [त्रिविक्रम+अण्] त्रिविक्रम या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला।—रघु० ७।३५।

त्रैविद्यम् [त्रिविद्या+अण्] 1. तीनों वेद 2. तीनों वेदों का अध्ययन 3. तीन शास्त्र—**द्यः** तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण—भग० ९।२०।

त्रैविष्टपः, त्रैविष्टपेयः [त्रिविष्टप+अञ्, ढक् वा] देवता।

त्रैशङ्कवः [त्रिशङ्कु+अण्] त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चन्द्र का विशेषण।

त्रोटकम् [त्रुट्+णिच्+ण्वुल्] नाटक का एक भेद—सन्धाष्टनवपञ्चाङ्कं दिव्यमानुषसंश्रयम्, त्रोटकं नाम तत्प्राहुः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्येक सविदूपकम्—सा० द० ५४०, उदा० कालिदास का विक्रमोर्वशी ।

त्रोटिः (स्त्री०) [त्रुट्+इ] चोंच, चंचु । सम० —हस्तः पक्षी ।

त्रोत्रम् [त्रै+उत्र] पशुओं को हांकने की छड़ी ।

त्वक्ष् (स्वा० पर० त्वक्षति, त्वष्ट) कतरना, बकलल उतारना, छोलना ।

त्वङ्कारः [त्वम्+कृ+अण्] निरादर सूचक 'तू' शब्द से संबोधन करना ।

त्वङ्ग् (स्वा० पर० त्वङ्गति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. कूदना, सरपट दौड़ना 3. कांपना ।

त्वच् (स्त्री०) [त्वच्+क्विप्] 1. खाल (मनुष्य, सांप आदि की) 2. (गौ, हरिण आदि का) चमड़ा —रघु० ३।३१ 3. खाल, वल्कल —कु० १।७, रघु० २।३७, १७।१२ 4. ढकना, आवरण 5. स्पर्शज्ञान । सम०—अङ्कुरः रोमांच होना,—इन्द्रियम् स्पर्शेन्द्रिय,—कण्डूरः फोड़ा, —गन्धः सन्तरा,—छेदः चमड़ी में घाव, खरोंच, रगड़, —जम् 1. रुधिर 2. बाल (शरीर पर के), —तरङ्गकः झुर्री,—त्रम् कवच, त्वक्त्रं चाचकचे वरम्—भट्टि० १४।९४,—दोषः चर्मरोग, कोढ़,—पारुष्यम् चमड़ी का रूखापन,—पुष्पः रोमांच,—सारः (त्वचि सारः) बांस, त्वक्सारस्त्वग्घरिपूरणलक्षणगीतिः—शि० ४।६१,—सुगंध संतरा ।

त्वचा [त्वच्+टाप्] दे० त्वच् ।

त्वदीय (वि०) [युष्मद्+छ, त्वत् आदेशः] तेरा, तुम्हारा —रघु० ३।५० ।

त्वद् [युष्मदः त्वद् आदेशः समासे] (मध्यम पुरुष का रूप जो कि बहुधा समास में प्रथम पद के रूप में पाया जाता है —उदा० त्वदधीन, त्वत्सादृश्यम् —आदि ।

त्वद्विध (वि०) [तव इव विधा प्रकारो यस्य] तेरी तरह, तुम्हारी भांति ।

त्वर् (स्वा० आ० त्वरते, त्वरित) शीघ्रता करना, जल्दी करना, वेग से चलना, फुर्ती से कार्य करना—भवान्युद्वहदर्थं त्वरताम् —मालवि० २, नानुनेतुमबलाः स तत्वरे —रघु० १९।३८,—प्रेर० त्वरयति—जल्दी कराना, शीघ्रता कराना, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना ।

त्वरा, त्वरिः (स्त्री०) [त्वर्+अङ् । टाप्, त्वर्+इन्] शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग—औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना क्रियाम्—रत्ना० १।२ ।

त्वरित (वि०) [त्वर्+क्त] शीघ्रगामी, फुर्तीला, वेगवान्, —तम् शीघ्रता करना, जल्दी करना (अव्य०) जल्दी से, तेजी से, वेग से, शीघ्रता से ।

त्वष्टृ (पुं०) [त्वक्ष्+तृच्] 1. बढ़ई, निर्माता, कारीगर 2. देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा [पौराणिक कथा के अनुसार त्वष्टृ अग्निदेवता माना जाता है, उसके त्रिशिरा नाम का पुत्र तथा संज्ञा नाम की पुत्री थी । संज्ञा का विवाह सूर्य के साथ हो गया—परन्तु संज्ञा अपने पति के दारुण तेज को सहन न कर सकी, फलतः त्वष्टा ने सूर्य को खराद पर रख कर उसके प्रभा-मंडल को सावधानी से काट-छांट कर परिष्कृत कर दिया (तु० रघु० ६।३२—आरोप्य चक्रभ्रममुच्चतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति—उस बची हुई कतरन से विष्णु का चक्र तथा शिव जी का त्रिशूल एवं देवताओं के अन्य शस्त्र बनाये गये) ।

त्वादृश्, त्वादृश (स्त्री० शी) [त्वमिव दृश्यते—युष्मद्+दृश्+क्विन्, कञ् वा, स्त्रियां ङीप्] तुझ सरीखा, तेरी तरह का—मेघ० ६९ ।

त्विष् (स्वा० उभ० त्वेषति—ते) चमकना, जगमगाना, दमकना, दहकना ।

त्विष् (स्त्री०) [त्विष्+क्विप्] 1. प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, चमक-दमक चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा—शि० १।३, ९।१३, रघु० ४।७५ रत्ना० १।१८ 2. सौन्दर्य 3. अधिकार, भार 4. अभिलाष, इच्छा 5. प्रथा, प्रचलन 6. हिंसा 7. वक्तृता । सम०—ईशः (त्विषां पतिः) सूर्य ।

त्विषिः [त्विष्+इन्] प्रकाश की किरण ।

त्सरुः [त्सर्+उ] 1. रेंगने वाला जानवर 2. तलवार या किसी अन्य हथियार की मूठ —सुप्रग्रहविमलकलधौतत्सरुण्या खड्गेन —वेणी० ३, त्सरुप्रदेशादपवर्जिताङ्गः —कि० १७।५८, रघु० १८।४८ ।

थ

थः [थुड्+ड] पहाड़,—थम् 1. रक्षा, परित्राण 2. त्रास, भय 3. मांगलिकता ।

थुड् (तुदा० पर०—थुडति) 1. ढकना, पर्दा डालना 2. छिपाना गुप्त रखना ।

थुडनम् [थुड्+ल्युट्] ढकना, लपेटना ।

थुत्कारः [थुत्+कृ+अण्] 'थुत्' ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है ।

थुर्व् (स्वा० पर० थूर्वति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना ।

थूत्कारः, थूत्कृतम् [थूत्+कृ+अण्, क्त वा] 'थूत्' की ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है ।

थैथै (अव्य०) किसी संगीत-वाद्य-यंत्र की अनुकरणात्मक ध्वनि ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द

द (वि०) [दे--दो या दा+क] (प्रायः समासान्त प्रयोग) देने वाला, स्वीकार करने वाला, उत्पादन करने वाला, पैदा करने वाला, काट कर फेंकने वाला, नष्ट करने वाला, दूर करने वाला। यथा घनद, अन्नद, गरद, तोयद, अमलद आदि,--दः 1. उपहार, दान 2. पहाड़, --दम् पत्नी,--दा 1. गर्मी 2. पश्चात्ताप।

दंश् (म्वा० पर० दशति, दष्ट- इच्छा० दिदक्षति) काटना, डंक मारना--संदष्ट० १५।४, १६।१९, मृणालिका अदशत् का० ३२, या लिया, कुतर लिया, उप , चटनी, अचार आदि खाना मूलकेनोपदष्टम् भुञ्जते--सिद्धा०, सम् --,1. काटना, डंक मारना संदष्टाधरपल्लवा अमरु ३२ 2. चिपटना, संलग्न रहना, या चिपके रहना उरसा संदष्टसर्पत्वचा--द० ७।११, ३।१८, संदष्टवस्त्रेष्ववलानितम्बेषु रघु० १६।६५, ४८।

दंशः [दंश्+घञ्] 1. काटना, डंक मारना मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदन्तदंशम् गीत० १० 2. साँप का डंक 3. काटना, काटा हुआ स्थान छेदो दंशस्य दोहो वा मालवि० ४।४ 4. काटना, फाड़ना 5. डांस, एक प्रकार की बड़ी मक्खी रघु० २।५, मनु० १।४०, याज्ञ० ३।२१५ 6. त्रुटि, दोष, कमी (मणि आदि की) 7. दाँत 8. तीक्ष्णदन्त 9. कवच 10. जोड़, अंग। सम० ---भीरुः भैंसा।

दंशकः [दंश्+ण्वुल्] 1. कुत्ता 2. बड़ी मक्खी 3. मक्खी।

दंशनम् [दंश्+ल्युट्] 1. काटने या डंक मारने की क्रिया --इदा० दष्टाश्च दंशनैः कान्तं दासीकुर्वन्ति योषितः --सा० द० 2. कवच, जिरहबख्तर धि० १७।२१।

दंशित (वि०) [दंश+क्त] 1. काटा हुआ 2. घृतकवच, कवच से सुसज्जित।

दंशिन् (पुं०) [दंश्+णिनि] दे० 'दंशक'।

दंशी [दंश+ङीष्] छोटा डांस या वनमाखी।

दंष्ट्रा [दंश्+ष्ट्रन्+टाप्] बड़ा दांत, हाथी का दाँत, विशेषतः बड़ा, प्रलम्ब मणिमुद्भेदगैरिकरक्तदंष्ट्राङ्कुरात् --भर्तृ० २।४, रघु० २।४६, इष्टाभरं मृगाणामधिपलयं इव व्यक्तमानावलेपा, नाज्ञाभङ्गं सहन्ते मुवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः-- मुद्रा० ३।२२। सम० - अस्त्रः,-- आयुधः जंगली सूअर, कराल (वि०) भयंकर दाँतों वाला, --विषः एक प्रकार का साँप।

दंष्ट्राल (वि०) [दंष्ट्रा+ल] बड़े बड़े दाँतों वाला।

दंष्ट्रिन् (पुं०) [दंष्ट्रा+इनि] 1. जंगली सूअर 2. साँप 3. लकड़बग्घा।

दक्ष (वि०) [दक्ष्+अच्] योग्य, सक्षम, विशेषज्ञ, चतुर, कुशल,--राटधे च दक्षा वयम् रत्ना० १।६, मेरी स्थिते दयिते दृष्टिदक्षे - कु० १।२, रघु० १२।११ 2. उचित उपयुक्त 3. तैयार, खबरदार, सावधान, उद्यत याज्ञ० १।७६ 4. खरा ईमानदार,-क्षः 1. विख्यात प्रजापति का नाम [दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के उन दस पुत्रों में से एक था जो उसके दाहिने अँगूठे से पैदा हुआ था। मानव समाज के पितृपरक कुलों का वह प्रधान था, कहते हैं उसके बहुत सी कन्याएं थीं, जिनमें से २७ तो नक्षत्रों के रूप में चन्द्रमा की पत्नी थीं और १३ कश्यप की पत्नियाँ थीं। एक बार दक्ष ने एक महायज्ञ का आयोजन किया, परन्तु उसमें उसने न अपनी पुत्री सती को आमन्त्रण दिया और न अपने जामाता शिव को बुलाया। फिर भी सती यज्ञ में गई, परन्तु वहाँ अपमानित होने के कारण वह जलती आग में कूद कर भस्म हो गई। जब शिव ने यह सुना तो वह बड़े उत्तेजित होकर उसके यज्ञ में गये, और यज्ञ का पूर्णतः विनाश कर दिया। कहते हैं, कि फिर भी शिव ने दक्ष (जिसने मृग का रूप धारण कर लिया था) का पीछा किया और उसका सिर काट डाला। बाद में शिव ने उसे पुनः जिला दिया। तब से लेकर दक्ष देवताओं को प्रभुता स्वीकार करने लगा। दूसरे मतानुसार जब शिव बहुत उत्तेजित हुए तो उन्होंने अपनी जटा में से एक बाल तोड़ा और बलपूर्वक उसे जमीन पर पटक दिया, वहाँ से तुरन्त एक राक्षस निकला और शिव के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। उसे दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके यज्ञ को नष्ट करने को कहा गया--तब वह बलवान् राक्षस कुछ गणों को (उपदेवों को) साथ लेकर यज्ञ में गया और वहाँ उपस्थित देवों तथा पुरोहितों का काम तमाम कर दिया। एक और मतानुसार दक्ष का सिर स्वयं शिव ने काटा था] 2. मृगों 3. आग 4. शिव का बैल 5. बहुत सी प्रेमिकाओं में आसक्त प्रेमी 6. शिव का विशेषण 7. मानसिक शक्ति, योग्यता, धारिता। सम० --अध्वरध्वंसकः --क्रतुर्ध्वंसिन् (पुं०) शिव के विशेषण,--कन्या, जा,--तनया 1. दुर्गा का विशेषण 2. अश्विनी आदि नक्षत्र,--सूतः देवता।

दक्षाय्यः [दक्ष+आयच्] 1. सिद्ध 2. गरुड़ का विशेषण।

दक्षिण (वि०) [दक्ष+इनन्] 1. योग्य, कुशल, निपुण, सक्षम, चतुर 2. दायाँ, दाहिना (विप० वाम) 3. दक्षिण पार्श्व में स्थित 4. दक्षिण, दक्षिणी जैसा कि दक्षिणवायु, दक्षिणदिक् में 5. दक्षिण में स्थित 6. निष्कपट, खरा, ईमानदार, निष्पक्ष 7. सुहावना सुखकर, रुचिकर 8. शिष्ट, नागर 9. आज्ञानुवर्ती, वशवर्ती 10. पराश्रित,- क्षः 1. दायाँ हाथ या बाजू 2. शिष्ट व्यक्ति, एसा प्रेमी (नायक) जिसका मन अन्य नायिका द्वारा हर लिया गया है परन्तु फिर भी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह केवल एक ही प्रेयसी में अनुरक्त है 3. शिव या विष्णु का विशेषण। सम० अग्नि: दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि, इसको 'अन्वाहार्यपचन' भी कहते हैं, अग्र (वि०) दक्षिण की ओर संकेत करता हुआ, -अचल: दक्षिणी पहाड़ अर्थात् मलयपर्वत,—अभिमुख (वि०) दक्षिण की ओर मुँह किये हुए, दक्षिणोन्मुख, -अयनम् भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर सूर्य की प्रगति, वह आधावर्ष जब कि सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है, शरद् की दक्षिणी अयन सीमा,—अर्ध: 1. दायाँ हाथ 2. दाहिना या दक्षिणी पार्श्व,—आचार (वि०) 1. ईमानदार, आचरणशील 2. पावन अनुष्ठान के अनुसार शक्ति का उपासक, आज्ञा दक्षिण दिशा, °पति: यम का विशेषण, -इतर (वि०) 1. बायाँ (हाथ या पैर) कु० ४।१९ 2. उत्तरी (-रा) उत्तर दिशा, -उत्तर (वि०) दक्षिण उत्तर की ओर मुड़ा हुआ, °वृत्तम् मध्याह्न रेखा,-दशात् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम की ओर,- पश्चिम (वि०) दक्षिण पश्चिमी, (-मा) दक्षिण पश्चिम दिशा,—पूर्व, —प्राच् (वि०) दक्षिण पूर्वी,—पूर्वा, -प्राची दक्षिण पूर्व दिशा, —समुद्र: दक्षिणी सागर, -स्थ: सारथि।

दक्षिणत: (अव्य०) [दक्षिण+तसिल] 1. दाईं ओर से या दक्षिण दिशा से 2. दाईं ओर की 3. दक्षिण दिशा की ओर (सम्बं० के साथ)।

दक्षिणा (अव्य०) [दक्षिण+आच्] 1. दाईं ओर, दक्षिण की ओर 2. दक्षिण दिशा में (अधि० के साथ) [दक्षिण +टाप्]—णा 1. (यज्ञादिक धार्मिक कृत्यों की पूर्णाहुति पर) ब्राह्मणों को उपहार 2. दक्षिणा (जो प्रजापति की पुत्री तथा मूर्तरूप यज्ञ की पत्नी समझी जाती है—पत्नी सुदक्षिणेत्यसमीदध्वरस्यैव दक्षिणा—रघु० १। ३१ 3. भेंट, उपहार, दान, शुल्क, पारिश्रमिक प्राणदक्षिणा, गुरुदक्षिणा आदि 4. अच्छी दुधार गाय, बहु प्रसवी गाय 5. दक्षिण दिशा 6 दक्षिण देश अर्थात् दक्षिणापथ।त. सम० --अर्ह (वि०) उपहार प्राप्त करने के योग्य या अधिकारी,—आवर्त (वि०) 1. दाईं ओर मुड़ा हुआ 2. दक्षिण की ओर मुड़ा हुआ,—काल: दक्षिणा प्राप्त करने का समय,--पथ: भारत का दक्षिणी प्रदेश -अस्ति दक्षिणापथे विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम्--मा० १,—प्रवण (वि०) दक्षिणोन्मुख।

दक्षिणाहि (अव्य०) [दक्षिण+आहि] 1. दूर दाईं ओर 2. दूर दक्षिण में, के दक्षिण की ओर (अधि० के साथ) दक्षिणाहि ग्रामात्---सिद्ध०।

दक्षिणीय, दक्षिण्य (वि०) [दक्षिणामर्हति--दक्षिणा---छ, यत् वा] यज्ञीय उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण।

दक्षिणेन (अव्य०) [दक्षिण+एनप्] को दाईं ओर (कर्म० या सम्बं० के साथ)—दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते--श० १, दक्षिणेन ग्रामस्य।

दग्ध (भू० क० कृ०) [दह्+क्त] 1. जला हुआ, आग में भस्म हुआ 2. (आल०) शोकसंतप्त, सताया हुआ, दुखी 3. दुर्भिक्षग्रस्त 4. अशुभ 5. शुष्क, नीरस, स्वादहीन 6. दुर्वृत्त, अभिशप्त, दुष्ट ('दुर्वचन' सूचक शब्द, समास का प्रथम पद) नाचापि मे दग्धदेह: पतति —उत्तर० ४, अस्य दग्धोदरस्यार्थे कः कुर्यात्पातकं महत्—हि० १।६८, इसी प्रकार 'दग्धजठरस्यार्थे' मृच्छ० ३।८।

दग्धिका [दग्ध+कन्+टाप्, इत्वम्] भुनी हुई चावल।

दघ्न (वि०) (स्त्री० घ्नी) ऊँचाई, गहराई या पहुँच की भावना को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय—उरुदघ्नेन पयसोत्तीर्य—का० ३१०, कीलालब्धात्रिकरणुरुकदघ्नपङ्क: (मार्ग:)—मा० ३।१७, ५।१४, याज्ञ० २।१०८।

दण्ड् (चुरा० उभ० दण्डयति--ते, दण्डित) सजा देना, जुर्माना करना, मरम्मत करना, (१६ द्विकर्मक धातुओं में से एक धातु)—तान् सहस्रं च दण्डयेत् मनु० ९।२३४, ८।१२३, याज्ञ० २।२६१, स्त्रियस्ये दण्डयतो दण्डधान्---रघु० १।२५।

दण्ड् [दण्ड्+अच्] 1. यष्टिका, डंडा, छड़ी, गदा, मुद्गर, सोटा--पतत्तु शिरस्यकाण्डे यमदण्ड इवैष भुज: - मा० ५।३१, काष्ठदण्ड: 2. राजचिह्न, राजसत्ता का प्रतीकरूप दण्ड आलदण्ड--श० ५।८ 3. उपनयन संस्कार के समय द्विज को दिया गया डण्डा--तु० मनु० २।४५-४७ 4. संन्यासी का डण्डा 5. हाथी की सूंड 6. (कमल आदि का) डंठल या वृन्त (छतरी आदि की) मूठ—ब्रह्मण्टच्छत्रदण्ड:- दश०१ (आरंभिक श्लोक); राज्यं स्वहस्तधृतदंडमिवातपत्रम्-- श० ५।६, कु० ७।८९, इसी प्रकार 'कमल दंड, आदि 7. पतवार, डांड 8. रई का डंडा 9. जुर्माना---मनु० ८।३४१, ९।२२९, याज्ञ० २।२३७ 10. ताडन, शारीरिक दण्ड, सामान्य दण्ड --यथापराधदण्डानाम्—रघु० १।६, एवं राजापध्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा---मुद्रा० १, दण्डं दण्डयेषु पातयेत्---मनु० ८।१२६, कृतदण्ड: स्वयं राजा लेभे शूद्र: सतां गतिम्—रघु० १५।५३ 11. कैद 12. आक्रमण, हमला, हिंसा, दण्ड—वर्णित चार उपायों में से अन्तिम —दे० 'उपाय' मनु० ७।१०९, शि० २।५४ 13. सेना—तस्य दण्डवतो दण्ड: स्वदेहान्न व्यक्षिप्यत—रघु० १७।६२, मनु० ७।६५, ९।२९४, कि० २।१२ 14. सैन्यव्यवस्था का एक रूप, व्यूह 15. वशीकरण, नियंत्रण, प्रतिबन्ध—वाग्दण्डोऽथ मनोदण्ड: कायदण्डस्तथैव च, यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उच्यते—मनु० १२।१० 16. चार हाथ के परिमाण का नाप 17. लिंग 18. घमंड 19 शरीर 20. यम का विशेषण 21. विष्णु का नाम 22. शिव का नाम 23. सूर्य का सेवक 24. घोड़ा (अन्तिम पाँच अर्थों में 'दण्डिन्' है)। सम०—अजिनम् 1. (भक्ति के बाह्य-सूचक) दण्ड और मृगछाला 2. (आलं०) पाखण्ड, छल, —अधिपः मुख्य दण्डाधिकरण, —अनीकम् सेना की एक टुकड़ी,—तव हुतवतो दण्डानीकैरिवंभुंते. धियम् —मालवि० ५।२, —अपूपन्यायः 'न्याय' के अन्तर्गत दे०,—अर्ह (वि०) दण्ड दिये जाने के योग्य, दण्ड का भागी, —अलसिका हैजा, —आज्ञा दण्डित करने के लिए न्यायाधीश का वाक्य, —आहतम् मट्ठा, छाछ, —कर्मन् (नपुं०) दण्ड देना, ताड़ना करना, काकः पहाड़ी कौवा, काष्ठ लकड़ी का डण्डा या सोटा, —ग्रहणम् संन्यासी का दण्ड ग्रहण करना, तीर्थयात्री का डण्डा लेना, साधु हो जाना, छदनम् बरसात रखने का कमरा, डक्का एक प्रकार का ढोल, दासः ऋण-परिशोध न करने के कारण बना हुआ सेवक, देव-कुलम् न्यायालय, धर,—धार (वि०) 1. डण्डा रखने वाला, दण्डधारी 2. दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला—उत्तर० २।१०, (रः) 1. राजा श्रमनुद मनुदण्डधरानन्वयम् —रघु० ९।३ 2. यम 3. न्यायाधीश, संवौच दण्डाधिकरण,—नायकः 1. न्यायाधीश, पुलिस का मुख्य अधिकारी, दण्डाधिकरण 2. सेना का मुखिया, सेनापति, नीतिः (स्त्री०) 1. न्याय प्रशासन, न्याय-करण 2. नागरिक तथा सैनिक प्रशासन, पद्धतिः राज्यशास्त्रमिदंविधि, राज्यतंत्र —रघु० १८।४६, नेतृ (पुं०) राजा,—पः राजा - पाणिः यम का विशेषण,—पातः 1. डण्डे का गिरना 2. दण्ड देना, पातनम् दण्ड देना, ताड़ना करना —पारुष्यम् 1. संग्रहार, प्रघात 2. कठोर तथा दारुण दण्ड देना—पालः,—पालकः 1. मुख्य दण्डाधिकरण 2. द्वारपाल, ड्योढ़ीवान, पोषः मुठदार चलनी, —प्रणामः 1. शरीर को बिना झुकाये नमस्कार करना (डण्डे की भाँति सीधे खड़े रह कर) 2. भूमि पर लेट कर प्रणाम करना,—बालधिः हाथी,—भङ्गः डण्डाओं पर अमल न करना, —भृत् (पुं०) 1. कुम्हार 2. यम का विशेषण, —मान (न) वः 1. दण्डधारी 2. दण्डधारी संन्यासी, मार्गः राजमार्ग, मुख्यमार्ग,—यात्रा 1. बरात का जलूस 2. युद्ध के लिए कूच, दिग्विजय के लिए प्रस्थान,—वासः 1. यम का विशेषण 2. अगस्त्य मुनि की उपाधि 3. दिन, वादिन्,—वासिन् द्वारपाल सन्तरी, पहरेदार, - वाहिन् (पुं०) पुलिस अधिकारी, —विधिः 1. दण्ड देने का नियम 2. दण्डविधान, —विष्कम्भः मवानी की रस्सी बांधने का खंभा,—व्यूहः एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सैनिक पास २ कतारों में खड़े किये जाते हैं,—शास्त्रम् दण्ड निर्णय का शास्त्र, दण्डविधान, हस्तः 1. द्वारपाल, पहरेदार, संतरी 2. यम का विशेषण।

दण्डकः [दण्ड+कन्] 1. छड़ी, डण्डा आदि 2. पङ्क्ति, कतार 3. एक छंद—दे० परिशिष्ट, कः—का, —कम् दक्षिण में एक विख्यात प्रदेश जो नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित है (यह एक बड़ा प्रदेश है, कहते हैं राम के समय यहाँ जङ्गल था) प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेष्वपि—रघु० १४।२५, किं नाम दण्डकेषम् उत्तर० २, क्वायोध्यायाः पुनरुपगमो दण्डकायां वने वः—उत्तर० २।१२-१५।

दण्डनम् [दण्ड+ल्युट्] दण्ड देना, ताड़ना करना, जुर्माना करना।

दण्डाघ्निः (अव्य०) [दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम् इच्, द्वित्वं, पूर्वपदीर्घः] लाठियों की लड़ाई, वह मारपीट जिसमें दोनों ओर से लाठी चलती हों, डण्डों की मोटों की लड़ाई।

दण्डारः [दण्ड+ऋ+अण्] 1. गाड़ी 2. कुम्हार का चाक 3. बेड़ा, नाद 4. मदमस्त हाथी।

दण्डिकः [दण्ड+ठन्] दण्डधारी, छड़ीदरदार।

दण्डिका [दण्डिक+टाप्] 1. लकड़ी 2. पङ्क्ति, कतार, श्रेणी 3. मोतियों की लड़ी, हार 4. रस्सी।

दण्डिन् (पुं०) [दण्ड+इनि] 1. चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, संन्यासी 2. द्वारपाल, ड्योढ़ीवान 3. डाँड चलाने वाला 4. जैन संन्यासी 5. यम का विशेषण 6. राजा 7. दशकुमार चरित और काव्यादर्श का रचयिता, दण्डी कवि—जाते जगति वाल्मीके कविरित्य-भिधाऽभवत्, कवौ इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि—उद्भट।

दत् (पुं०) [सर्वनाम स्थान को छोड़ कर सर्वत्र 'दन्त' के स्थान में 'दत्' आदेश विकल्प से] दांत। सम० —छदः (दन्तच्छदः) होठ, ओष्ठ।

दत्त (भू० क० कृ०) [दा+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हुआ 2. सौंपा हुआ, वितरित, समर्पित 3. रक्खा हुआ, फैलाया हुआ—दे० 'दा', —स्तः 1. हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ('दत्तिम' भी कहते हैं)—माता पिता वा दद्यातां यमाभ्यां पुत्रमापदि, सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्तिमः सुतः 1. मनु० ९।१६८ 2. वैश्यों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि तु० 'गुप्त' के अन्तर्गत उद्धरण से 3. अत्रि और अनसूया का पुत्र—दे० 'दत्तात्रेय' नौ०, —स्नम् उपहार, दान। सम०—अनपकर्मन्—अप्रदानिकम् दी हुई वस्तु को न देना, या दान की हुई वस्तु को वापिस लेना, हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १८ स्वाधि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारों में से एक,—अवधान (वि०) सावधान,—आत्रेयः एक ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र, जो ब्रह्मा विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है,—आदर (वि०) 1. आदर प्रदर्शित करने वाला, सम्मानपूर्ण 2. सम्मान प्राप्त,—शुल्का दुलहिन जिसको दहेज दिया गया है 1,—हस्त (वि०) जिसने दूसरे की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, हाथ का सहारा पाये हुए – शम्भुना दत्तहस्ता—मेघ० ६०, शम्भु की भुजा पर टेक लगाये हुए—स कामरूपेश्वरदत्तहस्तः—रघु० ७।१७, (आलं०) साहाय्यवान्, समर्थित, साहाय्यित, सहायता-प्राप्त - देवैनेत्रं दत्तहस्तावलम्बे —रत्ना० १।८, वाल्या खेदं कृशाङ्ग्याः मुचिरमवयवैर्दत्तहस्ता करोति वेणी० २।२१।

दत्तकः [दत्त | कन्] गोद लिया हुआ पुत्र —याज्ञ० २। १३०, दे० 'दत्त' ऊपर।

दद् (स्वा० आ० ददते) देना, प्रदान करना।

दद (वि०) [दा०+श] देने वाला, प्रदान करने वाला।

दद्दनम् [दद्+ल्युट्] उपहार, दान।

दध् (भ्वा० आ० दधते) 1. पकड़ना 2. धारण करना, पास रखना 3. उपहार देना।

दधि (नपुं०) [दध्+इन्] 1. जमा हुआ दूध, दही,—क्षीर दधिभावेन परिणमते—शारी० दध्योदनः आदि 2. तारपीन 3. वस्त्र। सम०—अभ्रम्,—अोदनम् दही मिला हुआ भात,—उत्तरम्,—उत्तरकम्, —गम् – दही की मलाई, तोड़,—उदः,—उदकः जमे हुए दूध का सागर, —कूर्चिका जमे हुए और उबले हुए दूध का मिश्रण, --चारः रई,—जम् ताजा मक्खन,—फलः कैथ,—मण्डः, -- वारि (नपुं०) दही का तोड़,--मन्थनम् दही का मथना,—शोणः बन्दर,—सक्तु (पुं० ब० व०) दही मिला हुआ सत्तू,—सारः,-- स्नेहः ताजा मक्खन,—स्वेदः अमरिड़का दही।

दधित्थः [दधि+स्था+क पृषो०] कैथ, कपित्थ।

दधीचः (पुं०) एक विख्यात ऋषि, जिसने अपने शरीर की हड्डियाँ देवताओं को दे दी थीं और स्वयं मरने के लिए उद्यत हो गया था। इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी ने एक वज्र बनाया और इन्द्र ने इसी वज्र के द्वारा वृत्र तथा अन्यान्य राक्षसों को परास्त किया। सम०—अस्थि (नपुं०) 1. इन्द्र का वज्र 2. हीरा।

दनुः (स्त्री०) दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही गई थी। यही दानवों की माता थी। सम०—ज,—पुत्रः, —संभवः,—सूनुः, एक राक्षस, °अरिः,—°जित् (पुं०) देवता।

दन्तः [दम्+तन्] 1. दांत, हाथी का दांत, विषदंत (साँप या अन्य विषैले जन्तुओं का), -- वदसि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम् —गीत० १०, सर्पदंत, वराह० आदि 2. हाथी का दांत, गजदंत °पांचालिका--मा० १०।५ 3. बाण की नोंक 4. पर्वत की चोटी 5. लताकुंज, पर्णशाला। सम० —अग्रम् दांत की नोंक,—अन्तरं दांतों के बीच का स्थान, —उद्भेदः दांतों का निकलना,—उत्खनिका—खनित्र (पुं०) जो अपने दांतों को उखल की भांति प्रयुक्त करते हैं, (खाने वाले धान्य को अपने दांतों के बीच में रखकर पीसने वाले), एक प्रकार के साधु संन्यासी, तु० मनु० ६।१७, --कर्षणः नींबू का वृक्ष,—कारः हाथीदांत का काम करने वाला कलाकार, काष्ठम् दतौन--कूरः लड़ाई, घाट्टिन्(वि०) दांतों को क्षति पहुँचाने वाला, दाँतों को खराब करने वाला,—घर्षः दाँतों का किचकिचाना, दांत पीसना, चालः दाँतों का हीलाचन, – छदः होंठ, वारंवारमुदारशोक्तकृतो दन्तच्छदान् पीडयन् भर्तृ० १।४३, ऋतु० ४।१२,-- जात(वि०) (वह बच्चा) जिसके दाँत निकल आये हों, दाँत निकलने का समय, जाहम् दाँत की जड़, --धावनम् 1. दाँतों को धोना, साफ करना 2. दतौन (—नः) खैर का वृक्ष, मौलसिरी का पेड़, पत्रम् एक प्रकार का कर्णाभूषण--रघु० ६।१७, कु० ७।२३, (प्रायः कादम्बरी में प्रयुक्त), पत्रकम् 1. कान का आभूषण 2. कुंद फूल, —पंक्तिका 1. कान का आभूषण - शि० १।६० 2. कुन्द, —पवनम् 1. दतौन 2. दाँतों का धोना साफ करना, —पातः दाँतों का गिरना, —पाली 1. दाँत की नोंक 2. समूहा, -पुष्पम् 1. कुन्द फूल 2. कतक फल, निर्मली,—प्रक्षालनम् दाँतों का धोना,—भागः हाथी के सिर का अगला भाग (जहाँ दांत बाहर निकले होते हैं),—मलम् दाँतों का मैल,—मांसं,—मूलम् बल्कम् मसूड़ा, -मूलीया (ब० व०) दन्त्य वर्ण अर्थात् ऌ त् थ् द् ध् न् ल् और स्,—रोगः दाँत की पीड़ा, —वस्त्रम्—वासः(नपुं०) होंठ - तुलां यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।३४, वि० १०।८६, – बीजः, —बीजः,—बीजकः,— बीजकः अनार का पेड़,—वीणा 1. एक प्रकार का बाजा, सारंगी 2. दाँत कटकटाना —दन्तवीणां वादयन्- -पंच० १, -- भेदः आघातादि के द्वारा दाँतों का टूटना,—व्यसनम् दाँत का टूटना —शठ (वि०) खट्टा, चरपरा (—ठः) नींबू का पेड़, —शर्करा दाँतों के ऊपर मैल की पपड़ी, शाणः दाँतों पर लगाने का दन्तमंजन, दन्तशोधन मिस्सी,—शूल,—लम् दाँत की पीड़ा,—शोधनिः (स्त्री०) दाँत कुरेदनी, —शोफः मसूड़ों की सूजन, —संघर्षः दाँतों का रगड़ना, —हर्षः दाँतों में (ठंडा पानी) लगना, —हर्षकः नींबू का पेड़।

दन्तकः [दन्त+कन्] 1. चोटी, शिखर 2. खूँटी, पलहण्डी।

दन्तावलि (अव्य०) [दन्तैश्च दन्तैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समासान्तः ९च्, पूर्वपददीर्घः] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को दाँतों से काटा जाय।

दन्तावलः, **वलिन्** (पुं०) [अतिशायितौ दन्तौ यस्य दन्त +वलच्, दीर्घः, दन्त+इनि] हाथी, -भामि० १।६०, तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः -हि० १।३५, रघु० १।७१, कु० १६।२।

दन्तुर (वि०) [दन्त+उरच्] बड़े २ या आगे निकले हुए दाँतों वाला- शूकरे निहते चैव दन्तुरो जायते नरः तारा०, शि० ६।५४ 2. दाँतेदार, दन्तुरित, दरारदार, ददानेदार, उन्नतावनत, विषम (आलं०) अखर्वगर्वस्मितदन्तुरेण- -विक्रमांक० १।५० 3. ऊबिल 4. उठना (बालों का) खड़ा होना। सम०-द्रुमः नीबू का पेड़।

दन्तुरित (वि०) [दन्तुर+इतच्] बड़े या आगे निकले हुए दाँतों वाला 2. दाँतेदार, उन्नतावनत, खड़े रोंगटों वाला- -केतकिदन्तुरिताफे -गीत० १, पुलकभर° ११, का० २८६।

दन्त्य (वि०) [दन्त+यत्] दाँतों से सम्बद्ध, -त्यः (अर्थात् वर्णः) दन्तस्थानीय वर्ण, दे० 'दन्तमूलीय' ऊपर।

दन्दशः (पुं०) दाँत।

दन्दशूक (वि०) [दंश+यङ+ऊक] 1. काटने वाला, विषैला 2. उत्पाती,- कः 1. साँप, सर्प 2. रेंगने वाला जन्तु 3. राक्षस- इषुमति रघुसिंहे दन्दशूकाज्जिघांसौ -भट्टि० १।२६।

दभ्, दम्भ् 1 (स्वा० पर० दभति, दम्नोति दब्ध -इच्छा० धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. धोखा देना, ठगना 3. जाना, ii (चुरा० उभ० दम्भयति- ते) ठेलना, उकसाना, ढकेलना।

दभ्र (वि०) [दम्भ्+रक] थोड़ा, स्वल्प,- अदभ्रदर्भमिधिक्षय्य स स्थलीम् किं० १।२८, दे० अदभ्र,—भ्रः समुद्र, —भ्रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा, किसी अंश तक।

दम् (दिवा० पर० -दाम्यति, दमित, दान्त प्रेर० दमयति) 1. पाला जाना 2. शान्त होना —मनु० ४।३५, ६।८, ७।१४१ 3. पालना, वश में करना, जोतना, रोकना —यमो दाम्यति राक्षसान्- -भट्टि० १८।२०, दमित्वा-पारिप्लवात्मानम्-९।४२, १९, १५।३७ 4. शान्त करना।

दमः [दम्+घञ्] 1. पालना, दमन करना (वश में करना) 2. आत्मनियन्त्रण, अपनी उग्र भावनाओं को वश में करना, आत्मसंयम- -भग० १०।४,—(निग्रहो बाह्यवृत्तीनां दम इत्यभिधीयते) 3. बुराई की ओर से मन को हटाना, बुरी वृत्तियों का दमन करना (कुत्सितात्कर्मणो विप्र यच्च चित्तनिवारणं, स कीर्तितो दमः) 4. मन की दृढ़ता 5. दण्ड, जुर्माना- मनु० ९।२८४, २९०, याज्ञ० २।४ 6. दलदल, कीचड़।

दमकः, -षुः [दम्+अवच्, अयुच् वा] 1. अपनी उग्र वृत्तियों को रोकना, या वश में करना आत्मनियन्त्रण 2. दण्ड।

दमन (वि०) (स्त्री०—नी) [दम्+ल्युट्] 1. पालने वाला, दबाने वाला, वश में करने वाला, जोतने वाला हराने वाला—जामदग्न्यस्य दमने नैव निर्वक्तुमर्हसि—उत्तर० ५।३२, भर्तृ० ३।८९ इसी प्रकार 'सर्वदमन' 'अरिदमन' 2. शान्त, निरोधक,- नम् 1. पालना, वश में करना, दबाना, नियन्त्रित करना 2. दण्ड देना, ताड़ना करना—दुर्दान्तानां दमनविधयः क्षत्रियेष्वायतन्ते —महावी० ३।३४ 3. आत्मसंयम।

दमयन्ती [दमयति नाशयति अमङ्गलादिकम्—दम्+णिच् +शतृ+ङीप्] विदर्भ के राजा भीम की पुत्री (इसका नाम 'दमयन्ती' इस लिए पड़ा था- कि इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से सभी सुन्दर महिलाओं का दर्प चूर चूर कर दिया था -नै० २।१८ भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम्, उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधा दधौ। एक स्वर्णहंस ने पहले दमयन्ती के सामने नल के गुण और सौन्दर्य की प्रशंसा की फिर उसी के द्वारा दमयन्ती ने अपने प्रेम का समाचार उसको भिजवाया। उसके पश्चात् स्वयम्वर में दमयन्ती ने नल को उन बहुत से प्रतियोगियों में से, जिनमें कि इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण यह चारों देव भी स्वयं उपस्थित थे, पति के रूप में चुन लिया और फिर दोनों प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्यजीवन बिताने लगे। परन्तु उनका यह सुखमय जीवन अधिक देर तक नहीं रहना था। नल के सौभाग्य से ईर्ष्या करने वाला कलि, नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया और उसने नल को अपने भाई पुष्कर के साथ जूआ खेलने के लिए उकसाया। खेल की धुन में हो मूढ़ राजा ने अपना सर्वकुछ दाँव पर लगा दिया और स्वयं तथा पत्नी को छोड़ सब कुछ हार गया। फलतः नल और दमयन्ती को केवल एक वस्त्र पहने राजधानी से निकाल दिया गया। दमयन्ती को बहुत से कष्ट उठाने पड़े। परन्तु उसकी पति-भक्ति में कोई अन्तर न आया। एक दिन जब दमयन्ती पड़ी सो रही थी, हताश होकर नल उसे छोड़ कर चल दिया। तब दमयन्ती को विवश होकर अपने पिता के घर जाना पड़ा। कुछ समय के पश्चात् वह फिर अपने पति से मिली और फिर शेष जीवन उन्होंने निर्बाधसुख में बिताया -दे० 'नल' और 'ऋतुपर्ण')।

दमयितृ (वि०) [दम्+णिच्+तृच्] 1. पालने वाला, दमन करने वाला 2. दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला 3. विष्णु का विशेषण।

दमित (वि०) [दम्+क्त] 1. पाला हुआ, शान्त, शान्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया हुआ 2. विजित, दमन किया हुआ, वशीभूत, पराजित ।

दम्पती (म्) नस् (पुं०) [दम् + उनस्, पक्षे दीर्घः] जाया ।

दम्पती [जाया च पतिश्च द्व० स० जायादेशः दमादेशः द्विवचन] पति और पत्नी, रघु० १।३५, २।७०, मनु० ३।११६ ।

दम्भः [दम्भ् + घञ्] [1. धोखा, जालसाजी, दांवपेच 2. धार्मिक, पाखण्ड—भग० १६।४ 3. अहङ्कार, घमण्ड, आत्मश्लाघा 4. पाप, दुष्टता 5. इन्द्र का वज्र ।

दम्भनम् [दम्भ् + ल्युट्] ठगना, धोखा देना, छल ।

दम्भिन् (पुं०) [दम्भ् + णिनि] पाखण्डी, पूर्त - याज्ञ० १।१३०, भग० १३।७ ।

दम्भोलिः [दम्भ् + अगुर्—दम्भ्स्, तस्मिन् प्रेरणे अलति पर्याप्नोति - अल् + इन्] इन्द्रका वज्र ।

दम्य (वि०) [दम् + यत्] 1. पालने के योग्य, सधाये जाने के लायक 2. दण्ड दिये जाने योग्य, —म्यः 1. नया बछड़ा (जिसे प्रशिक्षण तथा अनुभव की अपेक्षा है) —नार्हति तातः पुङ्गवधास्तित्या धुरि दम्यं नियोजयितुम् विक्रम० ५, गुर्वी धुरं यो भुवनस्य पित्रा धुर्येण दम्यः सदृशं बिभर्ति रघु० ६।७८, मुद्रा० ३।३ 2. वह बछड़ा जिसे अभी संयोजा नहीं है ।

दय् (भ्वा० आ०—दयते,दयित) दया आना, करुणा का भाव होना, तरस खाना, सहानुभूति प्रदर्शित करना (सर्व० के साथ)—रामस्य दयमानोऽसावध्येति तत्-लक्षणः -भट्टि० ८।११९, तेषां इयसे न कस्माद् —१।३३, १५।६३ 2. प्यार करना, अच्छा लगना, रुचिकर होना—दधमानाः प्रमदाः—शि० १।३, भट्टि० १०।९ 3. रक्षा करना—नगजा न गजा दयिता दयिताः—भट्टि० १०।९ 4. जाना, हिलना-डुलना 5. स्वीकार करना, देना, वितरण करना, नियत करना 6. चोट पहुँचाना ।

दया [दय् + अङ्—टाप्] तरस, सुकुमारता, करुणा, अनुकम्पा, सहानुभूति—निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दया कुर्वति साधवः —हि० १।६०, रघु० २।११, इसी प्रकार 'भूतदया' । सम०—क्षुद्र,क्षुद्रः बुद्ध के विशेषण, —वीरः (अलं० शा०) वीररसपूर्ण करुणा की भावना, करुणा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला वीररस—उदा० जीमूतवाहन (नागानन्द में) गरुड से कहता है—शिरामुखं स्यन्दत एव रक्तमद्यापि देहे मम मांसमस्ति, तृप्तिं न यास्यामि तवापि तावत् किं भक्षणात्त्वं विरतो गरुत्मन्, नु० 'दयावीर' के अन्तर्गत रस० में ।

दयालु (वि०) [दय् + आलुच्] कृपालु, सुकुमार, सदय, करुणापूर्ण—यशःशरीरे भव मे दयालुः—रघु० २।५७, ३।५२ ।

दयित (भू० क० कृ०) [दय् + क्त] प्रिय, चाहा हुआ, इष्ट - भट्टि० १०।२, —तः पति, प्रेमी, प्रिय व्यक्ति - विक्रम० ३।५, भामि० २।१८२, —ता पत्नी, प्रेयसी —दयितजीवितालम्बनार्थी—मेघ० ४, रघु० २।३, भामि० २।१८२, कि० ६।३३, **दयिताजितः** जोरू का गुलाम, पत्नीभक्त पति ।

दर (वि०) [दृ + अप्] फाड़ने वाला, चीरने वाला (प्रायः समासान्त में),—रः, —रम् 1. गुफा, कन्दरा, छिद्र 2. शत्रु, —रः 1. भय, त्रास, डर,—सा दरं पूतना निर्ये हीयमाना रसादरम्—शि० १९।२३, न जातु ह्रादेन न विद्विषादरः कि० १।३३,—रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा (समास में)—दरमीलयन्ती निरीक्षिते —भामि० २।१८२, ७, दरविगलितमल्लीवल्लिचञ्च-त्पराग—आदि० गीत० १, इसी प्रकार— दरदलित -विकसित-उत्तर० ४, मा० ३ । सम०—तिमिरम् भय का अन्धकार, हृतिं दरतिमिरमतिघोरम्—गीत० १० ।

दरणम् [दृ + ल्युट्] तोड़ना, टुकड़े २ करना ।

दरणिः (पुं० स्त्री०) दरणी [दृ + अनि, दरणि + ङीष्] 1. भंवर 2. धारा 3. हिलोर ।

दरद् (पुं० ब० व०) [दर + दे + क] कश्मीर की सीमा को छूता हुआ एक देश,—दः भय, त्रास,—दम् सिंगरफ ।

दरिः री (स्त्री०) [दृ + इन्, दरि + ङीष्] गुफा, कन्दरा, घाटी, दरीगृहं कुरु १।१०, एक भार्या सुन्दरी वा दरी वा भर्तुः ३।१२० ।

दरिद्रा (अदा० पर०—दरिद्राति, दरिद्रितः—प्रेर० दरिद्रयति, इच्छा० दिदरिद्रासति, दिदरिद्रियति) 1. निर्धन होना, गरीब होना,—अर्थाऽत्र पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते, उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति—हि० २।२, भट्टि० १८।३१ 2. कष्टग्रस्त होना,—मुक्तं भवैव किं वक्तुं दरिद्राति यया हरेः—भट्टि० ५।८६ 3. ढुलका पतला होना,—दरिद्रति विपद्दुमे कुसुम-कान्तिसम्भारकाः—विक्रमांक० ११।७४ ।

दरिद्र (वि०) [दरिद्रा + क] निर्धन, गरीब, अभावग्रस्त, दुर्दशाग्रस्त - य तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला, मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः—भर्तृ० २।५०, —ता गरीबी—शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिञ्श्रियः प्रायो दरिद्रता—मृच्छ० ३।२४ ।

दरीदरः [दरो भयं तज्जनकमुदरं यस्य] 1. जुआरी 2. जूए पर लगा दाँव,—रम् 1. जूआ खेलना 2. पाँसा, अक्ष, दे० 'दुरोदर' ।

दर्दरः [दृ + यद् + अच्] 1. पहाड़ 2. कुछ टूटा हुआ मर्तबान ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दर्दरीकः [दृ+यङ्+ईकन्] 1. मेढक 2. बादल 3. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, -कम् एक वाद्ययन्त्र।

दर्दुरः [दृ+यङ्+उरच्] 1. मेढक—पङ्कुक्लिन्नमुवाः पिबन्ति सलिलं धारागृहात्याः दर्दुराः—मृच्छ० ५।१४ 2. बादल 3. बन्सरी जैसा एक वाद्ययन्त्र 4. पहाड़ 5. दक्षिण में स्थित एक पहाड़ का नाम ('मलय' सम्मिलित)—स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१।

दर्दुरः (दुः) (स्त्री०) [दरिद्रा+उ नि० साधु:] दाद, एक प्रकार का चर्मरोग।

दर्पः [दृप्+घञ्, अच् वा] 1. घमण्ड, अहङ्कार, धृष्टता, अभिमान—मनु० ८।२१३, भग० १६।४' 2. उतावलापन 3. गर्व, दम्भ 4. रोष, विक्षोभ 5. गर्मी 6. कस्तूरी। सम०—आक्षात (वि०) अभिमान से फूला हुआ, —छिद्,-हर (वि०) घमण्ड तोड़ने वाला, नीचा दिखाने वाला।

दर्पकः [दृप्+णिच्+ण्वुल्] प्रभ के देवता, कामदेव।

दर्पणः [दृप्+णिच्+ल्युट्] मुँह देखने का शीशा, आइना —लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति—छं० १०९, कु० ७।२६, रघु० १०।१०, १६।३७,—गम् 1. आँख 2. जलना, प्रज्वलित करना।

दर्पित, दर्पिन (वि०) (स्त्री०—ती) [दृप्+क्त, दृप्+णिनि] घमण्डी, अहंकारी, अभिमानी।

दर्भः [दृ+भ] एक प्रकार का पवित्र (कुशा) घास जो यज्ञानुष्ठानों के अवसर पर प्रयुक्त किया जाता है —शा० १।७, रघु० १९।२१, मनु० २।४३, ३।२०८, ४।३६। सम०—अङ्कुर कुश घास का नुकीला पत्ता —शा० २।१२,—अनूप: दर्भ घास से परिपूर्ण दलदली भूमि,—आस्तरः मूंज घास।

दर्भटम् [दृभ्+अटन्] निजी कमरा, आराम करने का एकान्त कमरा।

दर्वः [दृ+वन्] 1. एक उत्पातकारी अनिष्टकर जन्तु 2. राक्षस, पिशाच 3. चमचा।

दर्वटः [दर्व+अट्+अच् शक० पररूपम्] 1. गांव का पहरेदार, पुलिस अधिकारी 2. द्वारपाल।

दर्वीकरः [दृ+ईकन्, नि० साधुः] 1. इन्द्र का विशेषण 2. एक प्रकार का वाद्य यन्त्र 3. हवा, वायु।

दर्विका [दर्वि+कन्+टाप्] कड़छी, चमचा।

दर्वी (वि०) (स्त्री०) [दृ+विन्, वा ङीप्] 1. कड़छी, चम्मच 2. साँप का फैलाया हुआ फण—शि० २०।४२। सम०—करः साँप, सर्प।

दर्शः [दृश्+घञ्] 1. दृष्टि, दृश्य, दर्शन (प्रायः समास में) दुर्दर्शः, प्रियदर्शः 2. अमावस्या 3. पाक्षिक यज्ञ, अमावस्या के दिन होने वाला यज्ञीय कृत्य। सम०—पः देवता,—यामिनी अमावस्या की रात्रि,—विषद् (पुं०) चाँद।

दर्शक (वि०) [दृश्+ण्वुल्] 1. देखने वाला, अनुष्ठान करने वाला 2. दिखलाने वाला, बतलाने वाला कु० ६।५२, कः 1. प्रदर्शन करने वाला 2. द्वारपाल, पहरेदार 3. कुशल व्यक्ति, किसी कला में प्रवीण व्यक्ति।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निरीक्षण करना रघु० ३।४, 2. जानना, समझना, प्रत्यक्ष जानना, परिदर्शन करना—रघु० ८।७२ 3. दृष्टि, दर्शन —चिन्ताजडं दर्शनम्—श० ४।५ 4. आँख 5. निरीक्षण, परीक्षा 6. दिखलाना, प्रदर्शन करना, प्रदर्शनी 7. दिखलाई देना 8. भेंट करना, दर्शन करना, दर्शन —देवदर्शनम् 9. (अतः) किसी के सम्मुख जाना, श्रोता—मारीचस्ते दर्शनं वितरति श० ७—राजदर्शनं मे कार्य—आदि 10. रंग, पहलू, दृष्टि, दर्शन—भग० ११।१०, रघु० ३।५७ 11. दर्शन देना (न्यायालय में) उपस्थित होना—मनु० ८।५८, १६०, 12. स्वप्न, ख्वाब 13. विवेक, समझ, बुद्धि 14. निर्णय, अवबोध 15. धार्मिक ज्ञान 16. शास्त्र में व्याख्यात कोई विषय या सिद्धान्त 17. दर्शनशास्त्र—जैसा कि 'सर्वदर्शनसंग्रह' में 18. दर्पण 19. गुण, व्यवहार की खूबी 20. यज्ञ। सम० ईप्सु (वि०) दर्शन करने का अभिलाषी,—पथ दृष्टि या दर्शन का परास, क्षितिज,—पात्रम् उपस्थित होने के लिए जमानत या ज़ामिन।

दर्शनीय (वि०) [दृश्+अनीयर्] 1. देखने के योग्य, निरीक्षण के योग्य, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करने के योग्य 2. देखने के लिये उचित, सुहावना, मनोहर, सुन्दर 3. न्यायालय में उपस्थित होने के योग्य।

दर्शयितृ (पुं०) [दृश्+णिच्+तृच्] 1. दौवारिक, प्रदेशक, द्वारपाल 2. मार्ग प्रदर्शक।

दर्शित (वि०) [दृश्+णिच्+क्त] 1. दिखाया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत, प्रदर्शित की गई 2. देखा गया, समझ लिया गया 3. व्याख्यात, सिद्ध 4. प्रतीयमान।

दल् (स्वा० पर०—दलति, दलित) 1. फट पड़ना, टुकड़े२ होना, फट जाना, तरेड़ आजाना—दलति हृदयं गाढोद्वेगं द्विधा न तु भिद्यते—उत्तर० ३।३१, अपि श्रावा रोदिति अपि दलति वज्रस्य हृदयम्—१।२८, मा० ९।१२, २०, दलति न सा हृदि विरहभरेण गीत० ७, अमरु ३८ 2. प्रसार करना, विकसित होना, (पुष्प की भांति) खिलना—दलन्नवनीलोत्पल—उत्तर० १, स्वच्छन्दं दलदरविन्दे ते मरन्दं विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः—भामि० ११५, शि० ६।२३, कि० १०।३९,—प्रेर० द (दा) लयति 1. फोड़ना, फाड़ना 2. काटना, बाँटना, टुकड़े २ करना,—उद्,—(प्रेर०) फाड़ डालना, (वि) 1. तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना, तरेड़ आ जाना—स्वदिपुमिर्ध्वदलिध्यदसावपि दै० ४।८८ 2. खोदना।

दलः,—लम् [दल्+अच्] 1. टुकड़ा, अंश, भाग, खण्ड

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--शि० ४।४४ 2. उपाधि 3. दो आधों में से एक जैसे दाल, आधा भाग 4. स्थान, कोण 5. छोटा अंकुर या कोंपल, फूल की पंखड़ी, पत्ता --रघु० ४।४२, शि० ३।२१, २२ 6. शस्त्र का फलक 7. पुंज, राशि, ढेर 8. मेषा की टुकड़ी, सैनिकों की टोली। सम०--आढक: 1. खाग 2. मसीकोषी मत्स्य का भीतरी कवच 3. खाई, परिखा 4. बवंडर, आंधी 5. गेरु, कोष: कुन्दलता, --निर्मोक: भोजपत्र का वृक्ष, --पुष्पा केवड़े का पौधा, --सूचि: --ची (स्त्री०) कांटा, --स्नसा पत्ते का रेशा या नस।

दलनम् [दल्+ल्युट्] फट पड़ना, तोड़ना, काटना, बांटना, कुचलना, पीसना, टुकड़े २ करना --मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूरा: -भर्तृ० १।५९।

दलनी (स्त्री०) दलि: (पुं०) [दलन+ङीप्, दल्+इन्] मिट्टी का ढेला, मिट्टी का लौंदा।

दलप: [दल्+कपन्] 1. शस्त्र 2. सोना 3. शास्त्र।

दलश: (अव्य०) [दल्+शस्] टुकड़े-टुकड़े करके, खण्ड खण्ड करके।

दलित (भू० क० कृ०) [दल्+क्त] 1. टूटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े २ हुआ 2. खुला हुआ, फैलाया हुआ।

दल्भ: [दल्+भ] 1. पहिया 2. जालसाजी, बेईमानी 3. पाप।

दव: [दु+अच्] 1. वन, जंगल 2. जंगल की आग, दावाग्नि -वितर वारिद वारि दवातुरे सुभा० 3. आग, गर्मी 4. बुखार, पीड़ा। सम०--अग्नि:,--दहन: जंगल की आग, दावाग्नि -यस्य न सन्धिर्न विग्रह: दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सन्धिर्न विग्रह: दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य—काव्य० ९, भामि० १।३६, मेघ० ५३, शशाम वृष्टयापि विना दवाग्नि: -रघु० २।१४।

दवथु: [दु+अथुच्] 1. आग, गर्मी 2. पीड़ा, चिन्ता, दुःख 3. आंख की सूजन।

दविष्ठ (वि०) [दूर+इष्ठन्, दवादेश:] 1. अत्यंत दूर का, के, को।

दवीयस् (वि०) [दूर+ईयसुन्, दवादेश:] 1. अपेक्षाकृत दूर का 2. कहीं परे, कहीं दूर,--विद्यावतां सकलमेव गिरां दवीय: --भामि० १।६९।

दशक (वि०) [दशन्+कन्] दस से युक्त, दशगुना, --कांजी दशकी गणः - मनु० ७।४७,--कम् दश का समाहार।

दशत् दशति: (स्त्री०) [दशन्+अति] दस का समाहार, दशक।

दशन् [सं० वि० ब० व०] [दंश्--कनिन्] दस, --स भूमि दिग्वलो वृत्वाऽज्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्--ऋग्० १०।९०, १। सम०--अङ्गुल (वि०) दस अङ्गुल लम्बा,--अर्ध (वि०) पांच (धं:) वृद्ध का विशेषण,--अवतारा: (पुं०, ब० व०) विष्णु के दस अवतार, दे० 'अवतार' के अन्तर्गत,--अस्र: चन्द्रमा,--आनन:,--आस्य: रावण के विशेषण--रघु० १०।७५,--आस्य: रुद्र का विशेषण,--ईश: दस गांवों का अधीक्षक, एकादशिक (वि०) जो दस रुपये देकर ग्यारह लेता है, अर्थात् जो १० प्रतिशत पर उधार देता है, कण्ठ:,--कन्धर: रावण के विशेषण --सप्ततलैकवीरस्थ दशकण्ठकुलद्विप: --उत्तर० ४।२७, °अरि:, °जित् (पुं०) °रिपु: राम के विशेषण --रघु० ८।२९,--गुण (वि०) दस गुना, दस गुणा बड़ा,--ग्रामिन् (पुं०)--प: दस ग्रामों का अधीक्षक, --शीर्ष:=दशकण्ठ:,--पारमिताध्वर: 'दस सिद्धियों का स्वामी' बुद्ध का विशेषण,--पुर: एक प्राचीन नगर का नाम, राजा रन्तिदेव की राजधानी --मेघ० ४७,--बल:,--भूमिग: बुद्ध के विशेषण,--मालिका (ब० व०) 1. एक देश का नाम 2. इस देश के निवासी या शासक, --मास्य (वि०) 1. दस महीने का 2. गर्भ में दस मास (जन्म से पूर्व का बच्चा), --मुख: रावण का विशेषण, °रिपु: राम का विशेषण --रघु० १४।८७,--रथ: अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा, अज का पुत्र, राम और उनके तीन भाइयों का पिता, (दशरथ के तीन पत्नियां थीं, कौशल्या, सुमित्रा, और कैकेयी, परन्तु कई वर्षों तक उनके कोई सन्तान न हुई। वशिष्ठ ने दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिए कहा, ऋष्यशृङ्ग की सहायता से वह यज्ञ संपन्न हुआ। इस यज्ञ के पूरा होने पर कौशल्या से राम का, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का तथा कैकेयी से भरत का जन्म हुआ। दशरथ को अपने सभी पुत्र बड़े प्यारे थे परन्तु राम तो उनका 'प्राण' था। इसके पश्चात् जब कैकेयी ने मन्थरा के द्वारा उकसाये जाने पर अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वर मांगे तो दशरथ ने उसके गर्हित प्रस्तावों से उसका मन हटाने के लिए कैकेयी को धमकाया, जब वह न मानी तो खुशामद, अनुनय विनय के द्वारा उसे समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु कैकेयी बराबर निर्दय बनी रही। फलतः बेचारे राजा को अपने पुत्र राम को निर्वासित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। और उसके पश्चात् उन्होंने इसी दुःख में अपने प्राण त्याग दिये),--रथिमशत: सूर्य रघु० ८।२९,--रात्रम् दस रातों (बीच के दिनों समेत) का समय (त्र:) दस दिन तक चलने वाला एक विशेष यज्ञ,--रूपभृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण,--वक्त्र:,--वदन: दे० 'दशमुख',--वाजिन् (पुं०) चन्द्रमा,--वार्षिक (वि०) हर दश वर्ष के पश्चात् होने वाला या दश वर्ष तक टिकने वाला।

दशधा (वि०) दस प्रकार का,--शतम् 1. एक हजार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. एक सौ दस, °रश्मिः सूर्य,—शती एक हजार,—साहस्रम् दस हजार,—हरा 1. गङ्गा का विशेषण 2. गङ्गा के सम्मान के उपलक्ष्य में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को मनाया जाने वाला पर्व 3. दुर्गा के सम्मान में आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला पर्व (विजया दशमी)।

दशतय (वि०) (स्त्री०-यी) [दशन्+तयम्] दस भागों से युक्त, दस गुना।

दशधा (अव्य०) [दशन्+धा] 1. दस प्रकार से 2. दस भागों में।

दशन:,—नम् [दंश्+ल्युट् नि० नलोप.] 1. दांत, गुहूर्मुहुर्दशनविखण्डितोष्ठ्या- शि० १७।२, शिखरिदशना —मेघ० ९०, मृग० १०।२७ 2. काटना, -नः पहाड़ की चोटी,—नम् कवच। सम०—अंशु दांतों की चमक —कु० ६।२५, - अङ्कः दांत से काटने का चिह्न काटना,—उच्छिष्टः 1. होठ 2. चुम्बन 3. आह,—छदः, —वासस् (नपुं०) 1. होठ 2. चुम्बन, - पदम् बुड़का भरना, दांत का चिह्न- दशनपदं भवद्धरगतं मम जनयति चेतसि खेदम्—गीत० ८,- बीजः अनार का पेड़।

दशम (वि०) (स्त्री०-मी) [दशन्+डट्—मट्] दसवां।

दशाब्दिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [दशमी+इनि] बहुत पुराना।

दशमी (स्त्री०) 1. चान्द्र मास के पक्ष का दसवां दिन 2. मानव जीवन की दसवीं दशाब्दी 3. शताब्दी के अन्तिम दस वर्ष। सम०—स्थ, (दशमीं गत) (वि०) ९० वर्ष से अधिक आयु।

दष्ट (वि०) [दंश+क्त] काटा गया, डङ्क मारा गया आदि।

दशा [दंश्+अङ् नि० टाप्] वस्त्र के छोर पर रहने वाले धागे, कपड़े पर लगी गोट, झालर, मगजी, -रक्तांशुकं पवनलोलदशं वहन्ती—मृच्छ० १।२०, छिन्ना इवाम्बरपटस्य दशाः पतन्ति—५।४ 2. दीये की बत्ती —भर्तृ० ३।१२९, कु० ४।३० 3. आयु, या जीवन की अवस्था—दे० नी० 'दशांत' 4. जीवन को एक अवस्था या काल—जैसा कि बाल्य, यौवन आदि—रघु० ५।४० 5. काल 6. स्थिति, अवस्था, परिस्थिति—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, विषमा हि दशां प्राप्य दैवं गर्हयते नरः—हि० ४।३ 7. मन की स्थिति या अवस्था 8. कर्मों का फल —भाग्य 9. ग्रहों की स्थिति (जन्म के समय) 10. मन. समझ। सम०—अन्तः 1. बत्ती का छोर 2. जीवन का अन्त—निर्विष्टविषयस्नेहः स दशान्तमुपेयिवान्—रघु० १२।१ (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है), —दीपः दीप, दीपक,—कर्षः 1. वस्त्र का किनारा 2. दीप, दीपक,—पाकः—विपाकः 1. भाग्य की परिपक्वावस्था—भाग्य के अनुसार फल प्राप्ति 2. जीवन की परिवर्तित दशा।

दशार्णाः (ब० व०) [दश० ऋणानि दुर्गभूम्यां वा यत्र ब० स०] 1. एक देश का नाम- सायस्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः—मेघ० २३ 2. इस देश के निवासी।

दशिन् (वि०) (स्त्री० नी) [दशन्+इनि] दश रखने वाला—(पुं०) दश ग्रामों का अधीक्षक।

दशेर (वि०) [दंश्+एरक्] काटनेवाला, उपद्रवी, अनिष्ट कर, पीडाकर २: शरारती या विषैला जंतु।

दशे (से) रुकः [दशेर+कन्] ऊँट का बच्चा।

दस्यु [दस्+युच्] 1. दुष्कर्मियों या राक्षसों का समूह, जो कि देवताओं के विद्रोही तथा मानव जाति के शत्रु थे और इन्द्र के द्वारा मारे गये (इस अर्थ में प्रायः वैदिक) 2 जातिबहिष्कृत, अपने कर्तव्यकर्मों से च्युत हो जाने के कारण जाति से बहिष्कृत —तु० मनु० ५।१३१, १०।४५ 3. चोर, लुटेरा, उचक्का -पापीकृतो दस्युरिवासि येन -श० ५।२०, रघु० ९।५३, मनु० ७।१४३ 4. दुष्ट, उत्पातशील मा० ५।२८ 5. आततायी, उद्धत, अत्याचारी।

दस्र (वि०) [दस्यन्ति पांसून् दस् + रक्] बर्बर, भीषण, विनाशकारी, स्रौ (पुं० द्वि० व०) दोनों अश्विनीकुमार, देवों के वैद्य,—स्रः 1. गधा 2. अश्विनी नक्षत्र। सम०-सूः (स्त्री०) सूर्य की पत्नी और अश्विनीकुमारों की माता संज्ञा।

दह् (भ्वा० पर० दहति, दग्ध—इच्छा० दिधक्षति) जलाना, झुलसाना (आत्म० मे भी)—दग्धुं विश्वं दहनकिरणैर्नोदिता द्वादशार्काः --वेणी० ३।६, ५।२०, सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुखकमलमधुपानम् - गीत० १०, श० ३।१७ 2. उड़ा देना, पूर्ण रूप से नष्ट कर देना 3. पीडा देना, सताना, कष्ट देना, दुःखी करना -हृत्यमारमहृतमप्रतिहतं चापल दहति श० ५, तत्सविषमिव शल्यं दहति माम् ६।८, एतत्तु मां दहति यद्गृहमस्मदीयं क्षीणार्थमित्यतिघृणः परिवर्जयन्ति —मृच्छ० १।१२, रघु० ८।८६ 4. (आयु० मे) गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना, निसु,— 1. जलाना, जलाकर समाप्त कर देना 2. सताना, दुःख देना, पीडित करना, परि ,जलाना, झुलसाना -दिशि दिशि परिदग्धा भूमयः पावकेन—कृतु० १।२४ भग० १।३०, प्र - 1. जलाना 2. पूरी तरह से जला देना 3. पीडा देना, सताना 4. कष्ट देना, चिढ़ाना, सम्—,जलाना—अभिजनः संदह्यतां वह्निना—भर्तृ० २।३९।

दहन (वि०) (स्त्री०-नी) [दह्+ल्युट्] 1. जलाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आग में जलाकर समाप्त कर देना -भर्तृ० १।७१ 2. विनाशकारी, क्षतिकर, - नः 1. आग 2. कबूतर 3. 'तीन' की संख्या 4. बुरा आदमी 5. 'भल्लातक' का पौधा, --नम् 1. जलाना, आग में जलाकर समाप्त कर देना (आत्मे से भी)---रघु० ८।२० 2. गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना। सम०---अरातिः पानी,--उपलः सूर्यकांतमणि,--उल्का, जलती हुई लकड़ी, --केतनः धूआँ, प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा, सारथिः हवा।

दहर (वि०) | दह् +अर] 1. रंचमात्र, सूक्ष्म, बारीक, लघु 2. छोटा, -रः 1. बच्चा, शिशु 2. जानवर का बच्चा 3. छोटा भाई 4. हृदयरन्ध्र, हृदय 5. चूहा, चूसा।

दह् [दह् +रक] 1. आग 2. दावाग्नि, जंगल की आग।

दा I (भ्वा० पर०---यच्छति, दत्त) देना, स्वीकार करना, प्रति---, विनिमय करना-तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् ---सिद्धा०, ii (अदा० पर० दाति) काटना,---दात्रिं दात्रिणं भूरि दर्तिं दात्रिमथिनाम् कवि०, iii (जुहो० उभ० -ददाति, दत्ते, दत्त-परन्तु 'आ' पूर्व होने पर 'आत्त', उप पूर्व होने पर उपात्त, नि पूर्व होने पर निदत्त या नीत तथा प्र पूर्व होने पर प्रदत्त या प्रत्त) 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, प्रसून करना, सौंपना, समर्पित करना, भेंट देना (प्रायः कर्म० के साथ वस्तु के पक्ष में, व्यक्ति के पक्ष में संप्र०, कभी सर्व० अथवा अधि० भी) अयकाशं किलोदन्वान् राधायाभ्यर्थितो ददौ---रघु० ४।५८, सेवनघटैः वान्त्वापदेभ्यः पयो दातुमिव एवाभिवर्तते ---शृं० १, मनु० ३।३१, ९।२७१, कथमस्य स्वनं दास्ये -हरि० 2. (ऋण, जुर्माना आदि) देना 3. सौंपना, दे देना 4. छोड़ाना, वापिस करना 5. छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना,--प्राणान् दा प्राण दे देना, इसी प्रकार आत्मानं दा प्राण त्याग देना 6. रखना रख देना, लगाना, अमाना-कर्णे करं ददाति --आदि 7. विवाह में देना --वस्त्रैः दत्त्वा पिता वेतनम् --मनु० ५।१५१, याज्ञ० २।१६६, ३।२४ 8. अनुमति देना, अनुज्ञा देना (प्रायः तुमुनन्त के साथ)---वाष्पस्तु न ददत्यस्य दृष्टुं चित्रगतामपि शृं० २।२१, (इस धातु के अर्थ उस संज्ञा के अनुसार जिससे जोड़ी जाय नाना प्रकार से अदलबदले किये जा सकते हैं या फैलाये जा सकते हैं, उदा०, अग्नि (पावक) दा आग लगाना, अर्गलं दा कुंडी लगाना, चटखनी लगाना, अवकाशं दा स्थान देना, जगह देना दे० 'अवकाश', आज्ञां (निदेशं) दा आज्ञा देना, आदेश देना, आतपे दा धूप में रहना, आत्मानं खेदाय दा, अपने आपको कष्ट में फंसाना, आशिषं दा आशीर्वाद देना, कर्णं दा कान देना, ध्यान से सुनना, चक्षुः (दृष्टिं) दा नजर डालना, देखना, तालं दा तालियाँ बजाना, दर्शनं दा अपने आपको दिखलाना, दूसरों की बात सुनना, निगडं दा हथकड़ी डालना, भूखला में बाँधना, प्रतिवचः (वचनं) या --प्रश्नस्यान्तरे दा उत्तर देना, मनो दा किसी बात में मन लगाना, मार्गं दा रास्ता देना, जाने की अनुमति देना, रास्ते से अलग हो जाना, वरं दा वर देना, वर्मं दा भाथण देना, वृत्तिं दा घेरना, बाड़ लगाना, शब्दं दा शोर मचाना, शापं दा शाप देना, शोकं दा, रंज पैदा करना, श्राद्धं दा श्राद्ध का अनुष्ठान करना, संकेतं दा नियुक्ति करना, संग्रामं दा लड़ना, आदि। प्रेर०---दापयति---ते दिलवाना, स्वीकार करवाना आदि---इच्छा० दित्सति---ते, देने की इच्छा करना, आ---(आ०) लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, सहारा देना - व्यवहारासनमादत्ते युवा---रघु० ८।१८, १०।४०, ३।४६, प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निरादत्ते --३।४१, १।४५ 2. शब्दोच्चारण करना---कि० १।३, शि० २।१३ 3. पकड़ना, थामना---कु० ७।९४ 4. उगाहना वसूल करना (कर आदि)---अगृह्यनुरादत्ते सोऽर्थान् --रघु० १।२१, मनु० ८।३४१ 5. ले जाना, लेना, वहन करना---तीर्थमादाय गच्छेत्---मेघ० २०, ४६, कुशानादाय --शृं० ३ 6. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना --प्राणेन रूपमादत्स्व रसानादत्स्व चक्षुषा आदि---महा० 7. बन्दी बनाना, क़ैद करना---उप+(आ) 1. ग्रहण करना, स्वीकार करना 2. अवाप्त करना, प्राप्त करना---उपानत्किञ्चि। गुरुदक्षिणार्थी--रघु० ५।१, भूर्या पितामहोपाना---याज्ञ० २।१२१ 3. लेना, धारण करना, के जाना 4. अनुभव करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 5. पकड़ना, आक्रमण करना, परि---, सौंपना, समर्पण करना, दे देना---छात्राय परिददाति मूर्खाय --उत्तर० ११४५, मनु० ९।३२७, प्र---, स्वीकार करना, देना, प्रस्तुत करना स्वं प्रायहं प्रादिशि नामरायः कि नाम तस्मै मनसा नरायः---नै० ६।९५, मनु० ३।९९, १०८, २७३, याज्ञ० २।९० 2. शिक्षा देना, सिखाना, भर्तृ० १।१५, प्रति ,अदलाबदली करना, विनिमय करना 2. लौटाना, वापिस देना---और० ५३ 3. बदला देना, क्षतिपूर्ति करना, वि---, (पर० आ०) खोलना, तोड़ कर खोलना न व्यादद्यादाननमप्रमृत्युः---कि० १६।१६, नदी कूलं व्यादद्याति; या --व्यादत्ते पिपीलिका: पतङ्गस्य मृत्यम्---महा०, संप्र--- 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना,---तं तेऽहं संप्रदास्यामि 2. परम्परा से प्राप्त होना---दे० संप्रदाय 3. दानपत्र लिखना, उत्तराधिकार में सौंपना।

दाक्षायणी [दक्ष+इञ्+ङीप्] 1. २७ नक्षत्रों में (जो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कि पुराणानुसार दक्ष की पुत्रियाँ मानी जाती हैं) से कोई सा एक नक्ष 2. दिति, कश्यप की पत्नी, देवताओं की माता 3. पार्वती 4. रेवती नक्षत्र 5. कद्रु, या विनता 6. दन्ती का पौधा। सम०—पतिः 1. शिव का एक विशेषण 2. चन्द्रमा,—पुत्रः देवता।

दाक्षाय्यः [दक्ष्+अय+अण्] गिद्ध।

दाक्षिण (वि०) (स्त्री०—णी) [दक्षिणा+अण्] 1. यज्ञीय दक्षिणा से सम्बद्ध अथवा उपहार से सम्बद्ध 2. दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखने वाला,—णम् यज्ञीय दक्षिणाओं का समूह या संचय।

दाक्षिणात्य (वि०) [दक्षिणा+त्यक्] दक्षिण से सम्बन्ध रखने वाला या दक्षिण में रहने वाला, दक्षिणी—अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम्—पंच० १,—त्यः 1. दक्षिण देश का निवासी, —आरब्धसूराः खलु दाक्षिणात्याः 2. नारियल।

दाक्षिणिक (वि०) (स्त्री०—की) [दक्षि+ठक्] यज्ञीय दक्षिणा सम्बन्धी।

दाक्षिण्यम् [दक्षिण+ष्यञ्] 1. (क) नम्रता, शिष्टता, सुजनता—तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा—रघु० १।३१ (ख) कृपालुता—विक्रम० १।२, भर्तृ० २।२३ मा० १।८ 2. किसी प्रेमी का (अपनी प्रेमिका के प्रति) बनावटी तथा अतिशालीन शिष्टाचार—श० ६।५ 3. दक्षिण से आने की या सम्बन्ध रखने की स्थिति—स्नेहदाक्षिण्ययोर्योगात् कामीव प्रतिभाति मे —विक्रम० २।४, (यहाँ इस शब्द के दोनों ही अर्थ हैं —प्रथम तथा द्वितीय) 4. तालमेल, सामंजस्य, सहमति 5. नैपुण्य, चतुराई।

दाक्षी [दक्ष+इञ्+ङीप्] 1. दक्ष की पुत्री 2. पाणिनि की माता। सम०—पुत्रः पाणिनि।

दाक्षेयः [दाक्षी+ढक्] पाणिनि का मातृपक्षीय नाम।

दाक्ष्यम् [दक्ष+ष्यञ्] 1. चतुराई, कुशलता, उपयुक्तता, दक्षता, योग्यता—भग० १८।४३ 2. सचाई, अखण्डता, ईमानदारी।

दाघः [दह्+घञ्, कुत्वम्] जलाना, जलन।

दाडकः [दल्+णिच्+ण्वुल्, लस्य डः] दाँत, हाथी का दाँत।

दाडि (लि) मः,—मा [दल्+घञ्+इषच्, डलयोरभेदः] अनार का पेड़—पाकारुणस्फुटदाडिमकान्ति वक्त्रम् —मा० ९।३१, अमर० १३ 2. छोटी इलायची,—मम् अनार का फल। सम०—प्रियः,—भक्षणः तोता।

दाडिमः [दा+डिमच् दा०] अनार का पेड़।

दाढा [दा+क्विप्=दा+ढौक्+ड+टाप्] 1. बड़ा दाँत, दाढ़ 2. समुच्चय 3. कामना, इच्छा।

दाढिका [दाढ+कन्+टाप्, इत्वम्] दाढ़ी, —मनु० ८।२८३, (कुल्लू० श्मश्रु)।

दाण्डाजिनिक (वि०) (स्त्री०—की) [दण्डाजिन+ठक्] (धर्म भक्ति के बाह्य चिह्न) डण्डा और मृगछाला लिए हुए,—कः ठग, पाखण्डी, धूर्त।

दाण्डिकः [दण्ड+ठक्] ताड़ना देने वाला, दण्ड देने वाला।

दात (वि०) [दा+क्त] 1. बाँटा हुआ, काटा हुआ 2. घोया हुआ, पवित्रीकृत 3. काटी हुई (फसल)।

दातिः (स्त्री०) [दा+क्तिन्] 1. देना 2. काटना, नष्ट करना 3. वितरण।

दातृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [दा+तृच्] 1. देने वाला' स्वीकार करने वाला, 2. उदार (पुं०—ता) 1. दाता —कु० ६।१ 2. दानी —भामि० १।६६ 3. महाजन, उधार देने वाला 4. अध्यापक।

दात्यूहः [दाति+ऊह्+अण्] जलकुक्कुट—दात्यूहैस्तिनिशस्य कोटरवति स्कन्धे निलीय स्थितम्—मा० ९।७ 2. चातक पक्षी 3. बादल 4. जल-कौवा 'दात्यौह' भी लिखा जाता है)।

दात्रम् [दा+ष्ट्रन्] काटने का एक उपकरण, एक प्रकार की दांती या चाकू।

दात्रः [दद्+घञ्] उपहार, दान। सम० —दः दानी।

दान् (स्वा० उभ०—दानति—ते) काटना, बाँटना इच्छा० दीदांसति—ते, सीधा करना (यहाँ सम्भव केवल रूप की दृष्टि से है अर्थ की दृष्टि से नहीं)।

दानम् [दा+ल्युट्] 1. देना, स्वीकार करना, अध्यापन 2. सौंपना, समर्पण करना 3. उपहार, दान, पुरस्कार —मनु० २।१५८, भग० १७।२०, याज्ञ० ३।२७४ 4. उदारता, धर्मार्थ, धर्मार्थ पुरस्कार, दानशीलता —रघु० १।६९, भर्तृ० ९।४३ 5. मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस, मद,—सदानतोयेन विषाणि नागः—शि० ४।६३, कि० ५।९, विक्रम० ४।२५, पंच० २।७५, (यहाँ शब्द का चतुर्थ अर्थ भी घटता है) रघु० २।७, ४।४५, ५।४३ 6. रिश्वत, घूस, अपने शत्रु के ऊपर विजय प्राप्त करने के चार उपायों में से एक, दे० 'उपाय' 7. काटना, बाँटना 8. पवित्रीकरण, स्वच्छ करना 9. रक्षा 10. आसन, भङ्गस्थिति। सम०—कुल्या हाथी की पुटपुड़ी से बहने वाले मद जल का प्रवाह, —धर्मः दान देने का धर्म, दानरूपी धर्म,—पतिः 1. अत्यन्त उदार पुरुष 2. अक्रूर, कृष्ण का एक मित्र, —पत्रम् दान-लेख,—पात्रम् दान लेने के योग्य व्यक्ति, ब्राह्मण,—प्रतिग्राह्यम् ऋण परिशोध करने की उमानत,—भिन्न (वि०) रिश्वत देकर फोड़ा हुआ,—वीरः 1. बहुत दानी व्यक्ति 2. दान शीलता के फलस्वरूप वीररस, वीरतापूर्ण दान शीलता का रस, उदा० परशुराम जिसने सात द्वीपों वाली इस पृथ्वी को दान कर दिया—नु० रस० में दो गई ('दानवीर' के अन्तर्गत) उक्ति—किमदिमधिकं मे यद् द्विजायार्ययित्रे कवचम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रमणीयं कुण्डलं चार्पयामि, अकरुणमवकृत्य द्राक्कृपाणेन तियंद् बहलरुधिरधारं मौलिमावेदयामि, —शील, शर, —शौण्ड (वि०) अत्यन्त उदार या दानशील।

दानकर्म [दान—कर्मन्] तुच्छ दान।

दानवः [दनोः अपत्यम्—दनु+अण्] राक्षस, पिशाच त्रिदिवमुद्धतदानवकण्टकम्—शि० ७।३ । सम०—अरिः 1 देवता 2. विष्णु का विशेषण, —गुरुः शुक्र का विशेषण।

दानवेयः [दनु+ऊङ्+ढक्]=दानवः।

दान्त (भू० क० कृ०) [दम्+क्त] 1. पालतू, वश में किया हुआ, दमन किया हुआ, नियन्त्रित, लगाम द्वारा रोका हुआ, दे० दम 2. पालतू, मृदु 3. त्यक्त 4. उदार, —तः 1. पालतू बैल 2. दांतों का दमन का वृक्ष।

दान्तिः (स्त्री०) [दम्+क्तिन्] आत्म संयम, वश में करना, आत्मनियन्त्रण।

दान्तिक (वि०) [दन्त+ठञ्] हाथी दांत का बना हुआ।

दापित (वि०) [दा+णिच्+क्त] 1. दिलाया गया 2. जो देने के लिए बाध्य किया गया हो, जिस पर अर्थ दण्ड लगाया गया हो 3. जिसका निर्णय किया गया हो 4. अभिनयित, पढ़ाया हुआ।

दामन् (नपुं०) [दो+मनिन्] 1. डोरी, धागा, फीता, रस्सी, 2. फूलों का गजरा, हार—आर्द्रे बद्धा विरहदिवसे या शिखा दाम हित्वा—मेघ० ९२, कनकचम्पकदामगौरीं—चौर० १, शि० ४।५० 2. लकीर, धारी (जैसे बिजली की) —विद्युद्दाम्ना हेमरुचीव दिग्व्यम्—मालवि० ३।२०, मेघ० २७ 4. बड़ी पट्टी। सम०—अञ्जलम्, —अञ्जनम् घोड़े की पिछाड़ी बांधने की रस्सी शि० ५।६१,—उदरः कृष्ण का विशेषण।

दामनी [दामन्+अण्+ङीप्] वह रस्सी जिसके सहारे पशुओं के पैर बांध दिये जाते हैं।

दामिनी [दामन्+इनि+ङीप्] बिजली।

दाम्पत्यम् [दम्पती+यक्] विवाह, स्त्री पुरुष का पति-पत्नी सम्बन्ध।

दाम्भिक (वि०) (स्त्री०—की) [दम्भ+ठक्] 1. धोखेबाज, पाखण्डी 2. घमण्डी, अभिमानी 3. आडम्बर प्रिय, ढोंगी।

दायः [दा+घञ्] 1. उपहार, पुरस्कार, दान, रहसि रमते प्रीत्या दायं ददात्यनुवर्तते—मा० ३।२, प्रीतिदायः मा० ४, मालवि० ८।१९९ 2. वैवाहिक उपहार (जो वर या वधू को दिया जाय 3. भाग, अंश, उत्तराधिकार, पैतृक संपत्ति,—अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात् —मनु० ९।२१७, ७७, २०२, १६४ 4. भाग, हिस्सा 5. सौंपना, समर्पण करना 6. बांटना, वितरण करना 7. हानि, विनाश 8. दैवदुर्विपाक 9. स्थान, जगह। सम०—अपवर्तनम् उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति को छल करना मनु० ९।७९,—अर्ह (वि०) पैतृकसम्पत्ति को पाने का दावेदार—आदः 1. जो पैतृक सम्पत्ति के एक भाग का अधिकारी हो, उत्तराधिकारी —पुमान् दायादोऽदायादा स्त्री—निरु०, याज्ञ० २।११८, मनु० ८।१६० 2. पुत्र 3. बन्धु, बान्धव, निकट या दूर का सम्बन्धी 4. दावेदार या दावेदार होने का बहाना करने वाला—गवां गोषु वा दायादः—सिद्धा०—आवा, —आदी 1. उत्तराधिकारिणी 2. पुत्री,—आद्यम् 1. उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति 2. उत्तराधिकारी बनने की स्थिति,—कालः पैतृक सम्पत्ति को बांटने का समय,—बन्धुः 1. पैतृक सम्पत्ति का भागीदार 2. भाई, —भागः उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति की बांट (सम्पत्ति का विभाजन)।

दायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [दा+ण्वुल्, युक्] देने वाला, स्वीकार करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्तर°, पिण्ड° आदि।

दारः [दृ+घञ्] 1. दरार, रिक्ति, फटन, छिद्र 2. जुता हुआ खेत,—राः (ब० व०) पत्नी,—एते वयमनी दाराः कन्येयं कुलजीवितम्—कु० ६।६३, दशरथदारानधिष्ठाय वशिष्ठः प्राप्तः—उत्तर० ४, पंच० १।१००, मनु० १।११२, २।२१७, ३० ४।१६, ५।२९। सम०—अधीन (वि०) भार्या पर आश्रित,—उपसंग्रहः, —ग्रहः, —परिग्रहः, —ग्रहणम् विवाह,—वे दारपरिग्रहे —उत्तर० १।१९,—कर्मन् (नपुं०)—क्रिया विवाह —रघु० ५।४०।

दारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [दृ+णिच्+ण्वुल्] तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े २ करने वाला—दारिका हृदयदारिका पितुः—कः 1. लड़का, पुत्र 2. बच्चा, शिशु 3. जानवर का बच्चा 4. गर्भ।

दारणम् [दृ+णिच्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, फाड़ना, चीरना, खोलना, दो कर देना।

दारदः [दरद्+अण्] 1. पारा 2. समुद्र,—दम्,—दम् सिन्दूर।

दारिका [दारक+टाप्, इत्वम्] 1. पुत्री 2. वेश्या।

दारित (वि०) [दृ+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, खण्ड २ किया हुआ, चीरा हुआ।

दारिद्र्यम् [दरिद्र+ष्यञ्] गरीबी, निर्धनता—दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी —सुभा०।

दारी [दृ+णिच्+इन्+ङीष्] 1. दरार 2. एक प्रकार का रोग।

दारु (वि०) [दीर्यते दृ+उण्] फाड़ने वाला, चीरने वाला, —रुः 1. उदार या दानशील व्यक्ति 2. कलाकार,—रु (नपुं०) (पुं० भी) 1. लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, शहतीर 2. गुटका 3. उत्तोलन दण्ड 4. चटखनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

5. देवदारु वृक्ष 6. कच्चा लोहा 7. पीतल। सम०—अण्डः मोर, -आघाटः खुदाई, -गर्भा काठ की पुतली, -जः एक प्रकार का ढोल, -पात्रम् कठरा, काठ का बर्तन, -पुत्रिका, -पुत्री लकड़ी की गुड़िया, --मुद्गपाल्लया,-मुद्गाद्धा छिपकिली,—यन्त्रम् 1. कठपुतली 2. लकड़ी का यन्त्र, —योषः लकड़ी की गुड़िया, सारः चन्दन, —हस्तकः लकड़ी का चमचा।

दारुकः [दारु-+कन्] 1. देवदार का पेड़ 2. कृष्ण के सारथि का नाम—उत्कल्वरं दारुकं इत्युवाच–शि० ४।१८,—का 1. कठपुतली 2. लकड़ी की मूर्ति।

दारुण (वि०) [दृ+णिच् +उनन्] 1. कड़ा, सख्त—उत्तर० ३।३४ 2. कठोर, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर,—मय्येव विस्मरणदारुणाचिलत्वतौ -श० ५।२३, पशुमारण-कर्मदारुणः ६।१, मनु० ८।२७० 3. भीषण, भयानक, भयंकर --श० ६।२९ 4. घोर, प्रचण्ड, उग्र, तीव्र, अत्यन्त पीड़ाकर (शोक, पीड़ा आदि),--हृदयकुसुम-शोषी दारुणो दीर्घशोकः–उत्तर० ५ 5. बहुत तेज, कर्कश (शब्द आदि) 6. नृशंस, रोमाञ्चकारी, -णः भयानक रस,—णम् उग्रता, निर्दयता, बीभत्सता आदि।

दाढ्यम् [दृढ+ष्यञ्] 1. कड़ापन, सख्ती, दृढ़ता 2. पुष्टि, समर्थन।

दार्वीरः,-रम् [दर्वी+रा+क] 1. दक्षिणावर्ती (दाईं ओर खुलने वाला) शंख 2. जल।

दार्भ (वि०) (स्त्री०–र्भी) [दर्भ+अण्] कुश घास का बना हुआ–दार्भं मूञ्चत्यजगलं बीतनिद्रो मयूरः–श० ४, (अंक० पा०)।

दार्व (वि०) (स्त्री०–र्वी) [दारु+अण्] काठ का बना हुआ।

दार्वेटम् [पक्षिणम् शब्द - दारु+अट्+क] मन्त्रणागृह, न्यायालय।

दार्शनिकः [दर्शन+ठक्] दर्शन शास्त्रों से परिचित।

दार्षद (वि०) (स्त्री०–दी) [दृषद्+अण्] 1. पत्थर का बना हुआ, खनिज 2. सिल पर पिसा हुआ (मसाला आदि)।

दार्ष्टान्त (वि०) (स्त्री०–न्ती) [दृष्टान्त–अण्] दृष्टान्त देकर समझाया गया या व्याख्या किया गया, सजिव वर्णन का विषय अर्थात् उपमेय- स्वाभाव्य दार्ष्टान्ति-कत्वेन विवक्षितं –शंकर।

दालिम: [दलयति असुरान् दल्+णिच्+मि] इन्द्र।

दाशः [दुनाति दु+ण] धीवर। सम०–आनन्दः,-अनलः -दहनः, जङ्गल की आग, दावाग्नि -आनन्दमृग-दावाग्नि: शीलशालिमदद्विप: ज्ञानदीपमहावायुरयं खल-समागमः---भामि० १।१९०, ३४।

दाशः [दशति हिनस्ति मत्स्यान्—दंश्+ट, तस्य आत्वम्] मछुवा, मनु० ८।४०८, ४०९, १०।३४। सम०–ग्रामः मछुवों का गाँव, –नन्दिनी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।

दाशरथः,–दाशरथिः [दशरथ+अण्, इञ् वा]–दशरथ का पुत्र, --रघु० १०।४४ 2. राम और उसके तीनों भाई, विशेषकर राम--रघु० १२।४५।

दाशार्हाः [ब० व०] [दशार्ह+अण्] दशार्ह के वंशज, यादव--शि० २।६४।

दाशेरः [दाशी+ढक्] 1. मछुवे का बेटा 2. मछुवा 3. ऊँट।

दाशेरकः [दाशेर+कन्] मालव देश,--काः (ब० व०) मालव देश के निवासी या शासक, दे० 'दाशेर' भी।

दासः [दास्+अच्] 1. गुलाम, सेवक--गृहकर्मदासाः –भर्तृ० १।१, गृह० कर्म०, आदि 2. मछुवा 3. शूद्र, चौथे वर्ण का पुरुष, तु० 'पुत्र'। सम०–अनुदासः --गुलाम का सेवक (अत्यंत विनम्र सेवक) (कभी कभी वक्ता के द्वारा यह शब्द 'विनम्रता' का सूचक समझा जाता है),–वतः सेवक या गुलाम–कमपराधलवं मयि पश्यसि रत्यजसि मानिनि दासजनं वतः –विक्रम० ४।२९ (भीड़भाड़ या सामान्य जनसमूह के लिए 'दास्यकुलम्' समस्तशब्द प्रयुक्त किया जाता है)

दासी [दास+ङीष्] 1. सेविका, नौकरानी 2. मछुवे की पत्नी 3. शूद्र की पत्नी 4. वेश्या। सम०—पुत्रः, —सुतः सेविका या गुलाम स्त्री का पुत्र,—सभम् दासियों का समूह, (जिस समय 'सभं' ए० व० 'दास्याः' शब्द समास में प्रयुक्त होता है तो उसका शाब्दिक अर्थ नष्ट हो जाता है, उदा० दास्याः पुत्रः,—सुतः छिनाल का बेटा, (हरामी का बच्चा—एक प्रकार का अपशब्द) -दास्याः पुत्रैः शकुनिलुब्धकैः—श० २; परन्तु 'दास्याः सदृशी' सेविका के समान।

दासेरः,—रकः [दासी+ढक्, दासेर+कन्] 1. दासी या सेविका का पुत्र 2. शूद्र 3. मछुवा 4. ऊँट—शि० १२।३२, ५।६६, (इस अर्थ में 'दासेय' शब्द भी है)।

दास्यम् [दास+ष्यञ्] दासता, गुलामी, सेवा, अधीनता -पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम् - श० ५।२७, मनु० ८।४१०।

दाहः [दह्+घञ्] 1. जलन, दावाग्नि, --दाहप्रतिविधि कुलवधूमर्यति –रघु० ११।४२, लेशो दशास्य दाहो वा --मालवि० ४।४, कि० ५।१२ 2. (आकाश की भाँति) दहकती हुई लाली 3. जलन की उत्तेजना 4. ताप, संताप। सम० - अगुरु (नपुं०) काष्ठम् एक प्रकार का सुगन्ध, अगर, -आत्मक (वि०) जल उठने वाला,—ज्वरः जलन वाला बुखार,--सरः, सरस् (नपुं०), -स्थलम् मुर्दा के जलाने का स्थान, श्मशानभूमि,--हर (वि०) गर्मी को दूर हटाने वाला (—रम्) उशीर पौधा, खस।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाहक (वि०) (स्त्री०—हिका) [दह्+ण्वुल्] 1. जलाने वाला, सुलगाने वाला 2. आग लगाने वाला, दहनशील 3. दागने वाला, कः आग ।

दाहनम् [दह्—ल्युट्] 1. जलाना, भस्म करना 2. दागना ।

दाह्यम् [दह्+ण्यत्] 1. जलाने के योग्य 2. जल उठने के योग्य ।

दिक्क [दिक्+कै+क] बीस वर्ष का जवान हाथी, करभ ।

दिग्ध (वि०) [दिह्+क्त] 1. सना हुआ, लिपा हुआ, पोता हुआ—हस्तावलम्बिदिग्धौ—मनु० ३।१३२, रघु० १६।१५, दिग्धोऽमृतेन च विषेण च पक्ष्मलाक्ष्या गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्षः—मा० १।२९ 2. मिट्टी में सना हुआ, कलुषित 3. विषाक्त कु० ४।२५, °यः 1. तेल, मल्लम 2. चिकना पदार्थ, उबटन आदि 3. आग 4. जहर में बुझा तीर 5. कहानी (वास्तविक हो या काल्पनिक)

दिग्धि, दिग्धिकः [—दिग्धि+हिडिर पृषो० साधुः] एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।

दित (वि०) [दो+क्त, इत्वम्] कटा हुआ, चीरा हुआ, फटा हुआ, विभक्त ।

दितिः (स्त्री०) [दो+क्तिन्] 1. काटना, टुकड़े २ करना, विभक्त करना 2. उदारता 3. दक्ष की एक कन्या, कश्यप की पत्नी, राक्षसों और दैत्यों की माता । सम० °जः,—°तनयः पिशाच, राक्षस ।

दित्यः [दिति+यत्] राक्षस ।

दित्सा [दातुमिच्छा—दा+सन्—अ+टाप्] देने की इच्छा °भामि० १।१२५ ।

दिदृक्षा [द्रष्टुमिच्छा—दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा °एकस्यासौंदर्यदिदृक्षयेव कु० १।४९ ।

दिधिषुः [दिधं धैर्यं स्यति—सो+कु+दिधिषुमाद्यन. इच्छति—दिधिषू+क्यच्+क्विप्] पुनर्विवाहिता स्त्री का दूसरा पति (स्त्री०), अक्षतयोनि विधवा जिसका दूसरा विवाह हुआ हो ।

दिधि (धी) धूः (स्त्री०) [दिधि+सो—धू पृषो० साधुः] 1. दूसरी बार ब्याही हुई स्त्री 2. अविवाहित बड़ी बहन जिसकी छोटी बहन का विवाह हो गया हो—ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा, सा चाग्रे दिधिषूर्ज्येया पूर्वा च दिधिषूः स्मृता । सम० पतिः वह पुरुष जिसने अपने भाई की विधवा से मैथुन किया हो (केवल वासना की तृप्ति के लिए न कि पवित्र कर्तव्य की दृष्टि से) —भ्रातुर्मृतस्य भार्यायां योऽनुरज्येत कामतः, धर्मेणापि नियुक्तायां स ज्ञेयो दिधिषूपतिः— मनु० ३।१७३ ।

दिधीर्षा [धा+सन्+अ+टाप्] जीवित रखने की इच्छा, सहारा देने की इच्छा—दिक्कुञ्जराः कुरुत तत् त्रितय दिधीर्षा—बालरा० १।४८ ।

दिनम् [द्यति तमः, दो (दी)+नक्, ह्रस्वः] 1. दिन (विप० रात्रि)—दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव हुताशनः— रघु० ४।१, यामिनयन्ति दिनानि च सुदृज्जनवशीकृते मनसि—काव्य० १०, दिनान्ते निहायस गन्तुम्—२।१५ 2. दिन (रात्रि समेत, २४ घण्टे का समय) —दिने दिने सा परिवर्धमाना—कु० १।२५, सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु० २।२५ । सम०—°अन्धकारः—अन्धकार, °अत्ययः—अन्तः, °अवसानम् सायंकाल, सूर्यास्त का समय रघु० २।१५, ४५, —°अधीशः—सूर्यः —°अर्धः मध्याह्न, दोपहर, °आगमः, °आदिः, °आरम्भः, प्रभात, प्रातःकाल, °ईशः, °ईश्वरः—सूर्य —°आत्ययः 1. शनि का विशेषण 2. कर्ण का विशेषण 3. सुग्रीव का विशेषण, °करः—कर्तृ, °कृत् (पुं०) सूरज—तृत्यो-त्सोमस्तद दिनकृतश्चाधिकारो मतो नः—विक्रम० २।१, दिनकरकुलचन्द्र चन्द्रकेतो— उत्तर० ६।८, रघु० ९।२३, °केसरः, —°क्षः अंधेरा, —°क्षयः सायंकाल, °चर्या दैनिक व्यस्तता, प्रतिदिन का कार्यकलाप, —°ज्योतिस् (नपुं०) धूपः, —°द्युतिः चकवाक पक्षी, पः, —°पतिः, °बन्धुः, —°मणिः, —°मयूखः, —°रत्नम् सूर्य, —°मुखम् प्रातःकाल—रघु० ९।२५, °मूर्धन् (पुं०) प्राची दिशा का पर्वत (उदयाचल) जिसके पीछे से सूर्य उदित होता हुआ माना जाता है,—°यौवनम् मध्याह्न, दोपहर (दिन की जवानी) ।

दिनिका [दिन+ठन्+टाप्] दिन की मजदूरी ।

दिरिफकः (पुं०) खेलने की गेंद ।

दिलीपः (पुं०) एक सूर्यवंशी राजा, अंशुमान् का पुत्र, भगीरथ का पिता (परन्तु कालिदास के अनुसार रघु का पिता), [कालिदास ने दिलीप को एक आदर्श राजा बताया है, उसकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा था, जो सब प्रकार से अपने पति के अनुरूप थी । उनके कोई सन्तान न थी । फलतः वे अपने कुलगुरु वसिष्ठ के पास गये, गुरु ने उनको नंदिनी नाम की कामधेनु की सेवा करने के लिए कहा उन्होंने २१ दिन तक गाय की सेवा की और २२वें दिन गौ ने उनपर कृपा की । फलतः उनके यहाँ एक यशस्वी बालक का जन्म हुआ जिसने बड़े होकर समस्त विश्व पर विजय प्राप्त की और फिर वही रघुवंश का प्रवर्तक बना] ।

दिव् । (दिवा० पर०—दीव्यति, द्यूत या द्यूत—इच्छा० दुद्यूषति, दिदिविषति) 1. चमकना, उज्ज्वल होना 2. फेंकना, (अस्त्र की भाँति) क्षपण करना—भट्टि० १३।८७, ५।८१ 3. जूआ खेलना, पासे से खेलना ('पासे' में कर्म० या करण०)—अक्षैरक्षाभवा दीव्यति सिद्धा० वेणी० १।१२ 4. खेलना, क्रीड़ा करना 5. हँसी दिल्लगी करना, चुटकियों में उड़ा देना, खेल करना, मजाक करना। (कर्म० के साथ) 6. दाँव पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रखना, शर्त लगाना 7. बेचना, व्यापार करना (सम्बन्ध० के साथ)—अदेवोद्देवधुभोगानाम्—भट्टि० ८।१२२, (उपसर्ग पूर्व होने पर कर्म० या सम्बन्ध० के साथ,—शतं शतस्य वा परिदीव्यति—सिद्धा०) 8. उड़ाना, अपव्यय करना 9. प्रशंसा करना 10. प्रसन्न होना, हर्ष मनाना 11. पागल होना, पीकर मस्त होना 12. नींद आना 13. कामना करना, ii (श्वा० पर०, चुरा० उभ० देवति, देवयति-ते) विलाप कराना, पीड़ा दिलाना, प्रकुपित कराना, सताना, iii (चुरा० आ०—देवयते) पीड़ा सहन करना, विलाप करना, आर्तनाद करना, परि,—विलाप करना, क्रन्दन करना, पीड़ा सहन करना। भट्टि० ४।३४।

दिव् (स्त्री०) [दीव्यन्त्यत्र दिव्+घा आधारे डि वि—तारा०] (कर्तृ० ए० व० द्यौः) 1. स्वर्ग, रघु० ३।४, १२, मेघ० ३० 2. आकाश 3. दिन 4. प्रकाश, उजाला—विशे० वह समस्त शब्द जिनका पूर्वपद दिव् हैं, अधिकांश अनियमित हैं- उदा० **दिवस्पतिः** इन्द्र का विशेषण,—**अनतिक्रमणीया दिवस्पतेराज्ञा**—शा० ६, **—दिवस्पृथिव्यौ** स्वर्ग और पृथिवी,—**दिविजः,—दिविष्ठः,—दिविस्थ,—दिविसद(ष)द्** (पुं०) **दिवौकस्** (पु०) **दिवौकस्,—सः** स्वर्ग का रहने वाला, देवता—शा० ७, रघु० ३।१९, ४७, दिविषद्वन्दैः—गीत० ७।

दिवम् (नपुं०) [दिव्+क] 1. स्वर्ग 2. आकाश 3. दिन 4. वन, जङ्गल, अरण्य।

दिवसः,—सम् [दीव्यतेऽत्र दिव्+असच् किच्च] दिन—दिवस इवाभ्यस्यमस्तपात्यये जीवलोकस्य—शा० ३।१२। सम०—**ईश्वरः, —करः** सूर्य, ऋतु० ३।२२,—**भुक्तम्** प्रातःकाल, प्रभात,—**विगमः** सायंकाल, सूर्यास्त—मेघ० ९९।

दिवा (अव्य०) [दिव्+का] दिन में, दिन के समय, **दिवाभू**—दिन निकलना। सम०—**अटनः** कौवा,—**अन्धः** उल्लू, **अन्धकौ,—अन्धिका** छछून्दर,— **करः** 1. सूर्य कु० १।१२, ४।४८ 2. कौवा 3. सूरजमुखी फूल, —**कीर्तिः** 1. चाण्डाल, नीच जाति का पुरुष 2. नाई 3. उल्लू,—**निशम्** (अव्य०) दिन रात, **प्रदीपः** दिन का दीपक या लैम्प, अप्रसिद्ध पुरुष,—**भीतः,— भीतिः** 1. उल्लू—दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्—कु० १।१२ 2. चोर, सेंध लगानेवाला, **—मध्यम्** मध्याह्न, **—रात्रम्** (अव्य०) दिनरात,—**वसुः** सूर्य,—**शय** (वि०) दिन में सोने वाला—रघु० १९।३४, **स्वप्नः,—स्वापः** दिन के समय सोना।

दिवातन (वि०) (स्त्री०—नी) [दिवाभवः-ट्यु, तुट् च] दिन का या दिन से सम्बन्ध रखने वाला—कु० ४।४६, भट्टि० ५।६५।

दिविः [दिव्+इन्] चाष पक्षी, नीलकण्ठ ('दिवं' भी)।

दिव्य (दि०) [दिव्+यत्] 1. दैवी, स्वर्गीय, आकाशीय 2. अतिप्राकृतिक, अलौकिक—परदोषसृणादिव्यचक्षुषः—शि० १६।२९, भग० ११।८ 3. उज्ज्वल, शानदार 4. मनोहर, सुन्दर,—**व्यः** 1. अलौकिक या स्वर्गीय प्राणी—दिव्यानामपि कृतविस्मयां पुरस्तात्—शि० ८।६४ 2. जौ 3. यम का विशेषण 4. दार्शनिक,—**व्यम्** 1. दैवी प्रकृति, दिव्यता 2. आकाश 3. दैवी परीक्षा (यह दस प्रकार की गिनाई गई है), तु० याज्ञ० २।९५, ९५ 4. शपथ, सत्योक्ति 5. लौंग 6. एक प्रकार का चन्दन। सम०—**अक्षुः** सूर्य,—**अङ्गना—नारी, —स्त्री** स्वर्गीय अप्सरा, दिव्य कन्या, अप्सरा,—**अदिव्य** (वि०) कुछ लौकिक तथा कुछ अलौकिक (जैसा कि अर्जुन),— **उदकम्** वर्षा का जल,—**कारिन्** (वि०) 1. शपथ उठाने वाला 2. अग्नि परीक्षा देने वाला, **गायनः** गन्धर्व,—**चक्षुस्** (वि०) 1. अलौकिक दृष्टि रखने वाला, दिव्य आँखों से युक्त - रघु० ३।४५ 2. अन्धा (पुं०) बन्दर (नपुं०) ऋषीय आँख, अलौकिक दृष्टि, मानव आँखों द्वारा अदृष्ट पदार्थों को देखने की शक्ति, **ज्ञानम्** अलौकिक जानकारी,—**वृक्षः** (पु०) ज्योतिषी, **प्रश्नः** दिव्यलोकान्तर्गत तत्त्वों की पूछताछ, भावी घटना क्रम की पूछ ताछ, शकुन विचार, **—मानुषः** उपदेवता,—**रत्नम्** काल्पनिक रत्न जो स्वामी की सब इच्छाओं को पूरा करने वाला कहा जाता है, दार्शनिकों की मणि—तु० चिन्तामणि,—**रथः** स्वर्गीय रथ जो आकाश में चलता है,—**रसः** पारा, - **वस्त्र** (वि०) दिव्य वस्त्रों को धारण करने वाला (स्त्रः) 1. धूप 2. सूरजमुखी का फूल, **सरित्** (स्त्री०) आकाशगङ्गा,— **सारः** साल का वृक्ष।

दिश् (तुदा० उभ०—दिशति-ते, दिष्ट; प्रेर० देशयति—ते, इच्छा० दिदिक्षति—ते) 1. संकेत करना, दिखलाना, प्रदर्शन करना, (साक्षी के रूप में) प्रस्तुत करना —साक्षिणः सन्ति मेत्युक्त्या दिशेत्युक्तो दिशेत्र यः —मनु० ८।५३, ५३ 2. अभिन्यस्त करना; नियत करना-- इष्टां गतिं तस्य सुरा दिशन्ति—महा० 3. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, अर्पण करना, सौंपना -- वाणमत्र भजते निजं दिशन्—कि० १३।६८, रघु० ५।३०, ११।२, १६।७२ 4. (कर के रूप में) देना 5. स्वीकृति देना —रघु० ११।४९ 6. निदेश देना, आदेश देना, हुक्म देना 7. अनुज्ञा देना, इजाजत देना —स्मर्तुं दिशन्ति न दिवः सुरसुन्दरीभ्यः—कि०-५।२८, **अति—,** 1 अभिन्यस्त करना, सौंपना 2. प्रयोग का विस्तार करना, सादृश्य के आधार पर घटाना—इति ये प्रत्यया उक्तास्तेऽतिदिश्यन्ते—सिद्धा०, या प्रधानमल्लनिबर्हणप्रायेनातिदिशति—शारी०, **अप—,** 1. संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना 2. प्रकथन करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्तुत करना, कहना, घोषणा करना, बतलाना, चेतावनी देना --मनु० ८।५४ 3. ढोंग रचना, बहाना करना --मित्रकृत्यमपदिश्य --रघु० १९।३१, ३२, ५४, शिरः शूलस्पर्शनमपदिशन्--दश० ५०, शिरदर्द के बहाने को युक्ति देते हुए 4. उल्लेख करना, निर्देश करना—रहसि भर्त्रा मद्गोत्रापदिष्टा—दश० १०२, आ-, 1. करना, दिखलाना 2. आदेश देना, आज्ञा देना, निर्देश देना—पुनरप्यादिश तावदुचितः --कु० ४।१६, आदिक्षदस्यामियमं वनाय --भट्टि० ३।९, ७।२८, रघु० १।५४, २।६५, मनु० ११।१९३ 3. उद्दिष्ट करना, अलग करना, अधिन्यस्त करना --भट्टि० ३।३ 4. अध्यापन करना, उपदेश देना, शिक्षा देना, अङ्कित करना, निश्चित करना --रघु० १२।६८ 5. विशिष्ट करना, 6. आगे होने वाली बात बताना, उद्-, 1. संकेत करना ज्ञापन करना, द्योतित करना, उल्लेख करना—प्रथमोद्दिष्टमासनम्--कु० ६।३५, यथोद्दिष्टव्यापारा--श० ३, अनेऽमूक उद्दिष्टः षष्ठे --मेदि० 2. उल्लेख करना, निर्देश करना, संकेत करना —स्मरमुद्दिश्य -कु० ४।३८ 3. अभिप्राय रखना, उद्देश्य रखना, निर्देश करना, अधिन्यस्त करना, अर्पित करना-फलमुद्दिश्य--भग० १७।२१, उद्दिष्टामुपनिहितां भजस्व पूजाम्--मा० ५।२५, वध्यशिलामुद्दिश्य प्रस्थितः --पंच० १ 4. सिखाना, उपदेश देना --सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधारावतमिदम्--भर्तृ० २।२८, उप—, 1. अध्यापन करना, उपदेश देना, सिखाना --सुलभमुपदिश्यते परस्य—का० १५६, मालवि० १।५, रघु० १६।४३, भग० ४।३४ 2. संकेत करना, इशारा करना, उल्लेख करना—गुणशयामुपदिश्य--रघु० ८।७३ 3. कथन करना, बतलाना, घोषणा करना—किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्--मुच्छ० ९।७ 4. निर्दिष्ट करना, अङ्कित करना, स्वीकृति देना, निश्चित करना--न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिदुच्चार्यते--मनु० ५।१६२, २।१९० 5. नाम लेना, पुकारना, निस्-, 1. संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना एकंक निर्दिशन्--श० ७, अङ्गुल्या निर्दिशति--आदि 2. अधिन्यस्त कर देना, दे देना -निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य --रघु० १।९५ 3. सुझाना, निर्देश करना, संकेत करना 4. भविष्यवाणी करना 5. उपदेश देना 6. बतलाना, समाचार देना, प्र-, 1. संकेत करना, इशारा करना, दिखाना, निर्देश करना—तस्याधिकारपुरुषैः प्रजानां प्रविष्टिम् -रघु० ५।६३, २।३९ 2. बतलाना, कथन करना—भग० ८।२८, भट्टि० ४।५ 3. देना, स्वीकार करना, उपहार देना, प्रदान करना—विद्वद्भ्यो पथि मुनिव्रदिष्टयोः--रघु० ११।९, ७।३५, निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः —मेघ० ११४, मनु० ८।२६५, प्रत्या-, (क) अस्वीकार करना, दूर फेंकना, कतराना—प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधिः—श० ६।५, (ख) पीछे ढकेलना,—रघु० ६।२५ 2. पछाड़ देना; प्रत्याख्यान करना (व्यक्ति का)—कामं प्रत्यादिष्टां स्मरामि न परिग्रहं मुनेस्तन्नयाम् --श० ५।३१ 3. दुखड़ा बनाना, निस्सेज करना, परास्त करना, पृष्ठभूमि में फेंक देना--रघु० १।६१, १०।६८ 4. विपरीत आज्ञा देना, वापिस बुलाना, व्याप-, 1. नाम लेना, पुकारना,—व्यपदिश्यते जगति विक्रमोऽयम्--शि० १५।२८ 2. मिथ्या नाम लेना, मिथ्या पुकारना—मित्रं च मां व्यपदिशस्यपरं च यासि —भर्तृ० ४।९ 3. बोलना, गर्व से कहना —जन्मेन्दोर्विमले कुले व्यपदिशसि—वेणी० ६।७ 4. बहाना करना, ढोंग रचना—महावी० २।११, सम्-, 1. देना, स्वीकृति देना, अधिन्यस्त करना, सौंपना—भट्टि० ६।१४१, याज्ञ० २।३२२ 2. आज्ञा देना, निर्देश देना, शिक्षा देना, उपदेश देना, सन्देश भेजना—किन्तु खलु दुष्यन्तस्य युक्तरूपमस्माभिः सन्देष्टव्यम्--श० ४, शि० ९।५६, ६१ 3. सन्देश के रूप में भेजना, सन्देश सौंपना--अथ विश्वात्मने गौरी सन्दिदेश मिथः सखीम्--कु० ६।१ ।

दिश् (स्त्री०) [दिशति दर्शयत्यवकाशम् दिश् +विच्] (कर्तृ० ए० व०--दिक्, --ग्) 1. दिशा, दिग्बिन्दु, चार दिशाएँ, परिधि का बिन्दु, आकाश का चौथाई - दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः--रघु० ३।१४, दिशि दिशि किरति सजलकणजालम्--गीत० ४ 2. (क) वस्तु का केवल निर्देश, इंगित, (सामान्य रूप रेखा का) संकेत, इतिदिक् (भाष्यकारों द्वारा बहुल प्रयोग, (ख) (अतः) रीति, रूप, प्रणाली —मुनेः पाठोक्तदिशा —सा० द०, दिगियं सूत्रकृता प्रदर्शिता, दासोऽहमेव नृपसभे रक्षःसमभिमा दिशः--अमर० 3. प्रदेश, अन्तराल, स्थान 4. विदेश या दूरस्थ प्रदेश 5. दृष्टिकोण, विषय को सोचने की रीति 6. उपदेश, आदेश 7. 'दस' की संख्या 8. पक्ष, दल 9. काटने का चिह्न (विशे० समास में स्वरादि, सघोष तथा ऊष्म व्यंजनादि शब्दों से पूर्व 'दिग्' तथा अघोष व्यंजनादि शब्दों से पूर्व 'दिक्' हो जाता है उदा० दिगम्बर, दिग्गज, दिक्पथ, दिक्करिन् आदि) । समः -अन्तः दिशाओं का किनारा या क्षितिज, दूर का अंतर, दूरस्थ स्थान —भामि० १।२, रघु० ३।४, ५।६७, १६।८७ नानादिगन्तागता राजानः आदि,—अन्तरम् 1. दूसरी दिशा 2. मध्यवर्ती स्थान, अन्तरिक्ष, अन्तराल 3. दूरवर्ती दिशा, अन्य प्रदेश, विदेश, --अम्बर (वि०) दिशाएँ ही जिसका वस्त्र हों, बिल्कुल नग्न, विवस्त्र—दिगम्बरत्वेन निवेदितं वसु --कु० ५।७२, (—रः) 1. नग्न भिक्षु (जैन या बौद्ध संप्रदाय का) 2. साधु, संन्यासी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. शिव का विशेषण 4. अंधेरा, —ईशः,—ईश्वरः दिशा का अधिष्ठात्री देवता - कु० ५।५३, दे० 'अष्टदिक्पाल,—करः 1. युवा, जवान आदमी 2. शिव का विशेषण, - कारिका—करी, जवान लड़की या स्त्री, —करिन्,—गजः,—दन्तिन्—दारणः (पुं०) वह हाथी जो पृथ्वी को संभालने के लिए किसी दिशा में स्थित कहा जाता है (यह आठों दिशाओं में स्थित होने के कारण अष्ट दिग्गज कहलाते हैं)—दिदन्तियोगः ककुभचक्रवर्ति-विक्रम० ७।१,—ग्रहणम् पृथ्वी की दिशाओं का अवलोकन, - चक्रम् 1. क्षितिज 2. समस्त विश्व, — जयः,—विजयः दिग्विजय, सब दिशाओं में भिन्न २ देशों को जीतना, विश्व का विजय करना स दिग्विजयमनोज्ञवीरः स्मर इवाकरोत्—विक्रमांक० ४।१, —दर्शनम् केवल दिशाएँ दिखाना, केवल सामान्य रूप, रेखा की ओर संकेत करना,—नागः 1. पृथ्वी की दिशा का हाथी, दे० दिग्गज 2. कालिदास का समसामयिक एक कवि (यह वास्तव मेघ० १४ में मल्लि० की व्याख्या पर जो बड़ी सदिग्ध है, आधारित है), मण्डलम् =दिक्चक्रम्, मात्रम् केवल दिशा या संकेत,—मुखम् आकाश की कोई सी दिशा या भाग हरति मे हरिवाहनदिङ्मुखम्—विक्रम० ३।९, अमरु ५,—मोहः मार्ग या दिशा भूल जाना, - वस्त्र (वि०) बिल्कुल नंगा, विवस्त्र, (स्त्रः) 1. दिगम्बर संप्रदाय का जैन या बौद्ध भिक्षु 2. शिव का विशेषण,—विभाविल (वि०) विश्रुत, विख्यात या सब दिशाओं में प्रसिद्ध।

दिशा [दिश्+अङ्+टाप्] पृथ्वी का चौथाई, ओर, तरफ, प्रदेश। समः—गजः,—पालः, दे० दिग्गज, दिक्पाल।

दिश्य (वि०) [दिशि भवः—दिश्+यत्] पृथ्वी की किसी दिशा से सम्बन्ध रखने वाला, या किसी दिशा में स्थित।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1. दिखलाया हुआ, संकेतित, निर्देश किया हुआ, इशारे से बताया हुआ 2. वर्णित, उल्लिखित 3. स्थिर, निश्चित 4. निर्देशित, आदेश दिया हुआ,—ष्टम् 1. अभिप्राय, नियतीकरण 2. भाग्य, नियति, सौभाग्य या दुर्भाग्य - भो दिष्टम्—श० २ 3. आदेश, निर्देश 4. उद्देश्य, ध्येय। समः - अन्तः नियत किये हुए समय की समाप्ति, मृत्यु - दिष्टान्तमाप्स्यति भवानपि पुत्रकाम्यात्—रघु० १।७९।

दिष्टिः (स्त्री०) [दिश्+क्तिन्] 1. अधिन्यास, नियतीकरण 2. निर्देश, आज्ञा, शिक्षा, नियम, उपदेश 3. भाग्य, किस्मत, नियति 4. अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, शुभ कार्य (जैसा कि पुत्रजन्म)—दिष्टिवृद्धिभिव शुभाय —का० ५५, दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमो महानभूत्—का० ७३।

दिष्ट्या (अव्य०) [दिष्टि का करण० ए० व०] भाग्य से, सौभाग्य से, ईश्वर का धन्यवाद, मैं कितना प्रसन्न हूँ, कितना सौभाग्यशाली, शाबाश (हर्ष या बधाई का उद्गार)—दिष्ट्या प्रतिहत दूर्जातम्—मा० ४, दिष्ट्या सीम्य महाग्राहुरज्जनानन्दवर्धनः—उत्तर० १।३७, वेणी० २।१२, दिष्ट्या वृद्ध बधाई देना, - दिष्ट्या धर्मपत्नी समागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मन्तमर्हसे—श० ७।

दिह् (अदा० उभ० - देग्धि, दिग्धे, दिग्ध—इच्छा० दिधिक्षति) 1. लीपना, सानना, पोतना, बिछाना —भट्टि० ३।२१, ७।५४ 2. मैला करना, भ्रष्ट करना, अपवित्र करना—रघु० १६।१५, सम्—, 1. सन्देह करना, अनिश्चित रहना यात्र० २।१६, संदिग्धो विजयो युधि—पंच० ३।१२ 2. भूल करना, हतबुद्धि होना (कर्मवा०)—पान्तु त्वामकठोरकेतकशिखासंदिग्धमुग्धेन्दवः (जटाः)—मा० १।२, या—चूर्णजालविनिःसृतैर्वलभयं संदिग्धपारावतान्—विक्रम० ३।२, कु० ६।४० 3. आक्षेप आरम्भ करना।

दी (दिवा० आ० दीयते, दीन) नष्ट होना, मरना।

दीक्ष् (स्वा० आ० दीक्षते, दीक्षित) 1. किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए अपने आपको तैयार करना, दे० नी० 'दीक्षित' 2. अपने आपको समर्पित करना 3. शिष्य बनाना 4. उपनयन संस्कार करना 5. यज्ञ करना 6. आरम्भ करना।

दीक्षकः [दीक्ष्+ण्वुल्] आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक।

दीक्षणम् [दीक्ष्+ल्युट्] दीक्षा देना, धर्मार्पण।

दीक्षा [दीक्ष्+अ+टाप्] 1. किसी धर्म-संस्कार के लिए समर्पण, पवित्रीकरण—रघु० ३।४४, ६५ 2. यज्ञ से पूर्व किया जाने वाला प्रारम्भिक संस्कार 3. धर्मसंस्कार —विवाह दीक्षा -रघु० ३।३३, कु० ७।१, ८।२४ 4. यज्ञोपवीत संस्कार करना, किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपको समर्पण करना। समः - अन्तः पूर्वकृत यज्ञादि कर्म की त्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाने वाला पूरक-यज्ञ।

दीक्षित (भू० क० कृ०) [दीक्ष्+क्त] संस्कारित, (किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए) दीक्षा-प्राप्त एते विवाहदीक्षिता खलु पौरवाः—श० २।१६, रघु० ८।७५, ११।२४, वेणी० १२।५ 2. यज्ञ के लिए तैयार 3. व्रत लेकर (किसी पुण्य कार्य के लिए) तैयार—रघु० ११।६७ 4. अभिषिक्त -रघु० ४।५, —तः 1. दीक्षा-कार्य में व्यस्त पुरोहित 2. शिष्य 3. वह पुरुष जिसने या जिसके पूर्व-पुरुषों ने ज्योतिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञों का अनुष्ठान किया हो।

दीदिविः [दिव्—क्विन्, द्वित्वं, दीर्घश्च] 1. उबले हुए चावल 2. स्वर्ग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीधितिः (स्त्री०) [दीधी+क्तिन्, इट्, ईकारलोपश्च] 1. प्रकाश की किरण रघु० २।२२, १७।४८, नै० २।६९ 2. आभा, उजाला 3. शारीरिक कान्ति, स्फूर्ति -भर्तृ० २।२९।

दीधितिमत् (वि०) [दीधिति+मतुप्] उज्ज्वल (पुं०) सूर्य --कु० २।२, ७।७०।

दीधी (अदा० आ० दीधीते) 1. चमकना 2. दिखाई देना, प्रतीत होना।

दीन (वि०) [दी+क्त, तस्य नः] 1. गरीब, दरिद्र 2. दुःखी नष्ट-भ्रष्ट, कष्टग्रस्त, दयनीय, अभागा 3. खिन्न, उदास, विषण्ण, शोकग्रस्त —सा विरहे तव दीना —गीत० ४ 4. भीरु, डरा हुआ 5. क्षुद्र, शोचनीय -भर्तृ० २।५१, -नः गरीब आदमी, दुःखी या विपद्ग्रस्त --दीनानां कल्पवृक्षः --मृच्छ० १।४८, विनानि दीनोद्धरणोचितस्य--रघु० २।२५। सम०—**दयालु**, **-वत्सल** (वि०) दीन-दुखियों के प्रति कृपालु -**बन्धुः** दीन-दुखियों का मित्र।

दीनारः [दी+आरक्, नुट्] 1. एक सोने का विशेष सिक्का, -जितश्चासौ मया गोदानसहस्राणि दीनाराणाम्—दश० 2. सिक्का 3. सोने का आभूषण।

दीप् (दिवा० आ० दीप्यते, दीप्त -वारम्० -देदीप्यते) 1. चमकना, जगमगाना (आलं० भी)—सर्वैरङ्गैः समर्पयन्स्वमिव नृपगुणैर्दीप्यते मत्तसप्तिः --मालवि० २।१३, तरुणीस्तन इव दीप्यते मणिहारावलि रमणीयकम् -नै० २।४४, भट्टि० २।२, रघु० १४।६४, हि० प्र० ४६ 2. जलना, प्रकाशित होना -प्रथा प्रथा वेश्म चलाः दीप्यते -का० १०५ 3. दहकना, प्रज्वलित होना, बढ़ना --(आलं० भी) रघु० ५।४७, भट्टि० १४।८८, शि० २०।७१ 4. क्रोध से आगबबूला होना -किं० ३।५५ 5. प्रख्यात होना -प्रेर० दीपयति--ते, आग सुलगाना प्रज्वलित करना, रोशनी करना, प्रकाश करना, वृन्दावनान्तरमदीपयदंशुजालैः (इन्दुः)—गीत० ७. उद्--, प्रेर० 1. आग सुलगाना, 2. उद्बोधित करना, उत्तेजित करना, उद्दीपित करना, प्र--, सम्--, चमकना, जगमगाना।

दीपः [दीप्+घिञ्+अच्], लैंप, दीवा, प्रकाश --तृप्तादीपो घनस्नेहं प्रजाभ्यः संहरन्निव, अन्तरर्थगुणैः शुभ्रैर्लक्ष्यते नैव केनचित्—रघु० १।२२१, न हि दीपो परस्परस्यौपकुरुतः - शारी०, इसी प्रकार 'ज्ञानदीप' । सम० --**अन्विता** 1. अमावस्या 2. -दीपावली, --**आरात्रिकम्** दीप थाल में रख कर देवमूर्ति की आरती उतारना, ---**आलिः**, **—ली**, **—आवली**—**उत्सवः** 1. दीपपंक्ति, रात के समय रोशनी करना 2. विशेषकर से दिवाली का उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या में मनाया जाता है, —**कलिका** दीपक की लौ, —**किट्टम्** दीपक का फूल, दीये का गुल—**कूपी**,—**खरी** दीवे की बत्ती—**ध्वजः** काजल, -**पादपः**, —**वृक्षः** दीपाधार, दीवट,—**पुष्पः** चम्पा का वृक्ष —**भाजनम्** दीपक, रघु० १९।५१, — **माला** प्रकाश करना, रोशनी करना,—**शत्रुः** पतंग, —**शिखा** दीपक की लौ, --**पृङ्खला** दीवों की पंक्ति, रोशनी।

दीपक (वि०) (स्त्री०-**पिका**) [दीप्+णिच्+ण्वुल्] 1. आग सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला 2. रोशनी करने वाला, उज्ज्वल बनाने वाला 3. सचित्र बनाने वाला, सुन्दर बनाने वाला, विख्यात करने वाला 4. उत्तेजक, प्रखर करने वाला शि० २।५५ 5. पौष्टिक, पाचन शक्ति को उद्दीप्त करने वाला, पाचनशील,—**कः** 1. प्रदीप—तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मल विवेकदीपकः--भर्तृ० १।५६ 2. बाज 3. कामदेव का विशेषण ('दीप्यक' भी),—**कम्** 1. जाफरान, केसर 2. (अलं० शा०) एक अलंकार जिसमें समान विशेषण रखने वाले दो या दो से अधिक पदार्थ (प्रकृत और अप्रकृत) एक जगह मिला दिये जायँ, या जिसमें कुल विशेषण (प्रकृत और अप्रकृत) एक ही कर्म के विषय बना दिये जायँ, सकृदुक्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनां, सैषा क्रियासु बह्वीषु कारकस्येति दीपकम्; --काव्य० १०, तु० चन्द्रा० --वर्णिते वर्ण्यविषयैर्यत्र धर्मैक्यं दीपकं बुधाः, मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः --५।४५।

दीपन (वि०) [दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. आग सुलगाने वाला, प्रकाश करने वाला 2. पुष्टिकारक, पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला 3. उत्तेजक, उद्दीपक 4. केसर, जाफरान।

दीपिका [दीप्+णिच्--ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. प्रकाश, मशाल रघु० ४।४५, ९।७० 2. (समास के अन्त में) सचित्र वर्णन करने वाला, स्पष्टकर्ता; तर्कदीपिका।

दीपित (वि०) [दीप्+णिच्+क्त] 1. जिसको आग लगा दी गई हो 2. प्रज्वलित 3. रोशनीवाला, प्रकाशमय 4. प्रज्वलित, प्रकाशित।

दीप्त (भू० क० कृ०) [दीप्+क्त] 1. जलाया हुआ, प्रज्वलित, सुलगाया हुआ 2. दहकता हुआ, गरम, प्रकाश उगलने वाला, चकाचौंध करने वाला 3. प्रकाशमय 4. उत्तेजित, उद्दीपित,- प्तः 1. सिंह 2. नौबू का पेड़,- प्तम् सोना। सम० —**अंशुः** सूर्य, -**अक्षः** बिल्ली, ---**अग्नि** (वि०) (आग की भाँति) सुलगाया हुआ (—निः) 1. धधकती हुई आग 2. अगस्त्य का नाम, —**अङ्गः** मोर,—**आत्मन्** (वि०) जोशीले स्वभाव का, --**उपलः** सूर्यकान्तमणि,—**किरणः** सूर्य,--**कीर्तिः** कार्तिकेय का विशेषण,—**जिह्वा** लोमड़ी (आलंकारिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूप से झगड़ालू और दुष्टस्वभाव वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है), --तपस् (वि०) उज्ज्वल धर्म-निष्ठा से युक्त, उत्कट भक्ति वाला, पिङ्गलः सिंह, —रसः कंचुवा,—लोचनः बिल्ली,—लोहम् पीतल, काँसा ।

दीप्तिः (स्त्री०) [दीप्+क्तिन्] 1. उजाला, चमक, प्रभा, आभा 2. सौंदर्य की उज्ज्वलता, अत्यन्त मनोरमता (दीप्ति और कान्ति के अन्तर के लिए दे० कान्ति) 3. लाख 4. पीतल ।

दीप्र (वि०) [दीप्+र] चमकीला, जगमगाता हुआ चमकदार, - प्रः आग ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ्] (म० अ०—द्राघीयस्, उ० अ०—द्राघिष्ठ) 1. (समय और स्थान की दृष्टि से) लम्बा, दूर तक पहुँचने वाला, दीर्घाक्षि शरदिन्दु-कान्तिवदनम्—मालवि० २।३, दीर्घान् कटाक्षान् · मेघ० ३५, दीर्घांपांग आदि 2. लम्बी अवधि का टिकाऊ, उधार देने वाला दीर्घयामा त्रियामा · मेघ० १०८, विक्रम० ३।४, श० ३।१५ 3. (आह की भाँति) गहरा · अमरः ११, दीर्घमुरुणं च निःश्वसन् 4. (स्वर की भाँति) लम्बा, जैसा कि 'काम' में 'आ' 5. उत्तुंग, ऊँचा, उन्नत,—र्घम् (अव्य०) 1. चिर, चिरकाल तक 2. अत्यन्त 3. अधिक, --र्घः 1. ऊँट, 2. दीर्घस्वर । सम०—अध्वगः दूत, हरकारा, अहन् (पुं०) ग्रीष्म,—आकार (वि०) बड़े आकार का, --आयुः · आयुस् (वि०) दीर्घजीवी, लम्बी आयु वाला,—आयुषः 1. भाला 2. कोई लम्बा हथियार 3. सूअर,- आस्यः हाथी,- कण्ठः, कण्ठकः,-कन्धरः सारस,—काय (वि०) (क्रम में) लम्बा,—केशः रीछ, · गतिः, -ग्रीवः,—घाटिकः,--जङ्घः, ऊँट,-- जिह्वः साँप, सर्प,-- तपस् (पुं०) अहल्या के पति गौतम का विशेषण -रघु० ११।३४, --तरुः,--दण्डः,— द्रुः ताड़ वृक्ष,—बुद्धी छछून्दर,-दर्शिन् (वि०) विवेकी, समझ-दार, दूरदर्शी, दूर तक की बात सोचने वाला-- पंच० ३।१६८ 2. मेधावी, बुद्धिमान् (पुं०) 1. रीछ 2. उल्लू, --नाद (वि०) लगातार देर तक शोर मचाने वाला, (—दः) 1. कुत्ता 2. मुर्गा 3. शंख,—निद्रा 1. लम्बी नींद 2. चिरशयन, मृत्यु · रघु० १२।११,-- पत्रः ताड़ का वृक्ष,—पादः बेगुला,—पादपः 1. नारियल का पेड़ 2. सुपाड़ी का पेड़ 3. ताड़ का वृक्ष,— पृष्ठः साँप, —बाला एक प्रकार का हरिण, चमरी, (इसकी पूँछ से चौरी बनती है),—भारतः हाथी,—रतः कुत्ता,--रदः सूअर,---रसनः साँप, --रोमन् (पुं०) भालू,—वपुस्: हाथी,—सत्रय (वि०) लम्बी जंघाओं वाला,—सत्रम् चिरकाल तक चलने वाला सोमयज्ञ (त्रः) सोमयाजी —रघु० १।८०,--सूत्र,—सूत्रिन् (वि०) धनैः २ कार्य करने वाला, मन्थर, प्रत्येक कार्य को देर में करने वाला, टालने वाला, देर लगाने वाला--दीर्घसूत्री विनश्यति—पंच० ४ ।

दीर्घिका [दीर्घ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. एक लम्बा सरोवर, जलाशय—मालवि० २।१३, रघु० १६।१३ 2. कूआँ या बावड़ी ।

दीर्ण (वि०) [दृ+क्त] 1. चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2. डरा हुआ, भयभीत ।

दु (स्वा० पर०—दुनोति, दूत, या दून) 1. जलाना, आग में भस्म करना --भट्टि० १४।८५ 2. सताना, कष्ट देना, दुःख देना उद्भासीनि जलेजादि दुन्वन्त्यदयितं जनम्—भट्टि० ६।७४, ५।९८, १७।९९, (मुख) तद विश्रान्तकथं दुनोति माम्—रघु० ८।५५ 3. पीड़ा देना, शोक पैदा करना—वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकार दुनोति निर्गन्धतया स मे चेतः-- कु० ३।२८ 4. (अक०) कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना --देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि—गीत० ३,—कर्मवा० (या दिवा० आ०) कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना - नायाति सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति कि दूयसे—गीत० ७, कु० ५।१२, ४८, रघु० १।७०, १७।१९ ।

दुःख (वि०) [दुष्टानि खानि यस्मिन्, दुष्टं खनति —खन्+ड, दुःख्+अच् वा तारा०] पीड़ाकर, अरुचिकर, दुःखमय—सिहानां निनदा दुःखाः श्रोतुं दुःखमतो वनम् —रामा० 2. कठिन, बेचैन—खम् 1. खेद, रंज, विषाद, दुःख, पीड़ा, वेदना—सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते—मृच्छ० १।१० गदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्-सवत्तरम्—विक्रम० ३।२१, इसी प्रकार 'दुःखसुख' 'समदुःखसुख' 2. कष्ट, कठिनाई—शृंगार० १२, ('बड़ी कठिनाई से' 'मुश्किल से' 'कष्ट से' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'दुःखेन' तथा 'दुःखेन' शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं—श० ७।१३, भग० १२।५, रघु० १९।४९, हि० १।१५८) । सम० · अतीत (वि०) दुःखों से मुक्त, · अन्तः मोक्ष, --कर (वि०) पीड़ाकर, कष्टदायक, · धामः 'दुःखों का दृश्य' सांसारिक अस्तित्व, संसार,—छिन्न (वि०) 1. सन्तप्त, कठोर 2. पीड़ित, दुःखी, · प्राय, · बहुल (वि०) कष्ट और दुःखों से पूर्ण,—भाज् (वि०) दुःखी, अभिशप्त, --लोकः सांसारिक जीवन, सतत यातना का दृश्य, संसार, —शील (वि०) जो दूसरों की प्रसन्न न कर सके, बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा रघु० ३।६ ।

दुःखित,—दुःखिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दुःख+इतच्, इनि वा] दुःखी, कष्टग्रस्त, पीड़ित 2. बेचारा, विपण्ण, दयनीय ।

दुकूलम् [दु+ऊलच्, कुक्] बुना हुआ रेशम, रेशमीवस्त्र, अत्यन्त महीन वस्त्र—श्यामलमृदुलकलेवरमण्डतमधि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गजगोरदुकूलम्--गीत० ११, कु० ५।६७, ७८, भट्टि० ३।३४, १०।१, रघु० १७।२५।

दुग्ध (वि०) [दुह् + क्त] 1. दुहा हुआ 2. जिसका दूध दुह लिया गया है, चूस लिया गया है या निकाल लिया गया है -दे० 'दुह्'-- **ध्वम्** 1. दूध, 2. पौधों का दूधिया रस । सम०--**अधम्** 'तालीयम्' दूध का फेन, मलाई, **-पाचनम्** वह बर्तन जिसमें दूध डाल कर औटाया जाय,--**पोष्य** (वि०) अपनी माँ के दूध पर रहने वाला बच्चा, दूध पीता (बच्चा) स्तनपायी, **- समुद्रः** दूध का सागर, सात समुद्रों में से एक ।

दुह (वि०) [दुह् + क] (प्रायः समास के अन्त में) 1. दूध देने वाला 2. सींचने वाला, देने वाला, जैसा कि 'कामदुघा' में ।

दुघा [दुघ+टाप्] दूध देने वाली गाय, दुधार गौ ।

दुग्धक (वि०) [दुग्ध्+क] दूध कातिं दुहुभ् + कं+क, पृषो० भलोपः] बेईमान, दुष्ट हृदय वाला, जालसाज ।

दुग्धुभः -दुहुभ ।

दुन्दुभः [दुर् दुष्टो दुन्भः-- पृषो० रलोपः] हरा प्याज ।

दुन्दुभः (पुं०) [दुन्द इत्यव्यक्तं शब्दमाष्टे--दुन्द् + भन् + ड] एक प्रकार का ढोल, दे० दुन्दुभि ।

दुन्दुः (पुं०) 1. एक प्रकार का ढोल 2. कृष्ण के पिता वसुदेव का नाम ।

दुन्दुभः [दुन्दु--भण् + ड] 1. एक प्रकार का बड़ा ढोल, तासा 2. एक प्रकार का पनियल साँप ।

दुन्दुभिः (पुं०, स्त्री०) [दुन्दु इत्यव्यक्तशब्देन भाति - भा + कि] एक प्रकार का बड़ा ढोल, नगाड़ा--विजय-दुन्दुभिना स्वयशोभः --रघु० ९।११, (पुं०) 1. विष्णु की उपाधि 2. कृष्ण के विशेषण 3. एक प्रकार का विष 4. एक राक्षस जिसे वालि ने मारा था, (जब सुग्रीव ने इस राक्षस का अस्थिपंजर भगवान् राम को यह बतलाने के लिए कि वालि कितना बलवान् था, दिखलाया तो राम ने इसे मामूली सी ठोकर मारी और वह अस्थिपंजर मीलों दूर जाकर पड़ा) ।

दुर (अव्य०) [दु+रक्] ('दुस्' के स्थान में प्रयुक्त किया जाने वाला उपसर्ग जो 'बुराई' 'कठिनाई' का अर्थ प्रकट करने के लिए स्वरादि तथा घोषवर्णादि से आरम्भ होने वाले शब्दों से पूर्व लगाया जाता है, दुस् पूर्वक समासों के लिए दे० 'दुस्') । सम० **-अक्ष** (वि०) 1. दुर्बल आँख वाला 2. खोटी दृष्टि वाला **(-क्षः)** कपट का पासा, **- अतिक्रम** (वि०) 1. दुर्जय, दुस्तर, अजेय--स्वजातिदुरतिक्रमा-पंच० १ 2. दुर्लंघ्य 3. अनिवार्य, **- अत्यय** (वि०) 1. जो कठिनाई से जीता जा सके,---रघु० ११।८८ 2. दुर्लभ, अगाध **- अदृष्टम्** दुर्भाग्य, विपत्ति--**अधिग,-अधिगम** (वि०) 1. दुष्प्राप्य, जिसे प्राप्त करना कठिन हो, पंच० १।३३० 2. दुस्तर 3. दुर्जेय, जिसे अध्ययन करना बहुत कठिन हो—कि० ५।१८,—**अधिष्ठित** (वि०) बुरी तरह से संपन्न, प्रबद्ध या क्रियान्वित किया गया —**अध्वय** (वि०) 1. दुर्लभ 2. दुर्गम, **- अध्यवसायः**, मूर्खतापूर्ण व्यवसाय,—**अध्वः कुमार्ग**,--**अन्त** (वि०) 1. जिसके किनारे पर पहुँचना कठिन हो, अनन्त, अन्तहीन--मकर्षणाय सूक्ष्माय दुरन्तायाप्तकाय च--भाग० 2. परिणाम में दुःखदायी, विषण्ण-अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता कि० १।२३, नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते (वसन्ते)—गीत० १,—**अन्वय** (वि०) 1. दुर्गम 2. जिसका पालन करना, या अनुसरण करना कठिन हो 3. दुष्प्राप्य, दुर्बोध (यः) अशुद्ध निष्कर्ष, दिये हुए तथ्यों का गलत अनुमान, **अभिमानिन्** (वि०) मिथ्या अहंकार करने वाला, झूठा घमंडी,-- **अवगम** (वि०) दुर्बोध,--**अवग्रह** (वि०) जिसे रोकना या काबू में रखना कठिन हो, जिसका नियंत्रण कष्ट-साध्य हो,-- **अवस्थ** (वि०) दुर्दशाग्रस्त, बुरी दशा में पड़ा हुआ,--**अवस्था** दुर्दशा, दयनीय स्थिति, **आकृति** (वि०) कुरूप, बदसूरत,-- **आक्रम** (वि०) 1. अजेय, जो जीता न जा सके 2. दुर्गम, —**आक्रमणम्** 1. अनुचित हमला 2. कठिन पहुँच, **- आग्रहः** अनुपयुक्त या अनुचित अधिग्रहण, **-आग्रहः** मूर्खतापूर्ण हठ, जिद, अनुचित आग्रह, --**आचर** (वि०) कष्टसाध्य,— **आचार** (वि०) 1. बुरे चाल-चलन का, कदाचारी 2. कुत्सित आचरण वाला, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र --भगः ९।३०,(रः) दुर्वृत्त आचरण, कदाचार, दुश्चरित्रता,—**आत्मन्** (पुं०) दुर्जन, लुच्चा, लफंगा,—**आधर्ष** (वि०) 1. जिस पर आक्रमण करना कठिन है 2. जिसको लेशमात्र भी पराभव न हो सके 3. उद्धत, —**आनम** (वि०) जिसे झुकाना बहुत कठिन हो, रघु० ११।३८, **- आप** (वि०) दुर्लभ श्रिया दुरापः कथमीप्सितो मयेति --श० ३।१४, रघु० १।७२ ६।६२, -- **आराध्य** (वि०) जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो, जिसको जीत लेना कष्टसाध्य हो,--**आरोह** (वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो, (- हः) 1. नारियल का पेड़ 2. ताड़ का पेड़ 3. छुहारे का पेड़ - **आलापः** 1. दुर्वचन, गाली 2. बुरी बातचीत, अपशब्दयुक्त भाषा **-आलोक** (वि०) 1. जो कठिनाई से देखा जा सके 2. जिसकी ओर देखने में आँखें झँप जायँ, चकाचौंध करने वाला प्रकाश--दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत् --काव्य० १०, (- कः) चकाचौंध पैदा करने वाली चमक, **- आवार** (वि०) 1. जिसे ढकना कठिन हो 2. जिसे रोकना, बन्द करना, या ठहराना कठिन हो, **- आशय** (वि०) दुर्भनस्क, कुत्सित विचारों वाला व्यक्ति, जिसकी नीयत खराब हो, नीच हृदय का,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--आज्ञा 1. बुरी इच्छा 2. ऐसी आशा करना जो पूरी न हो सके,- आसद (वि०) 1. जिसके पास पहुँचना कठिन हो, दुर्गम, दुर्जेय, दुर्जय रघु० ३।६६, ८।४, महावी० २।५, ४।१५ 2. दुर्लभ, दुष्प्राप्य 3. अहितैषी, अनुपम, इत (वि०) 1. कठिन 2. पापी (तम्) 1. कुमार्ग, बुराई, पाप-दरिद्राणां दैन्यं दुखितमथ दुर्वी-समहृदां दुर्तं दूरीकुर्वन्-संगी० २, रघु० ८।२, अमरु २, महावी० ३।४३ 2. कठिनाई, भय 3. संकट, - दुष्टम् दुर्वचन, गाली 2. दूसरे व्यक्ति की क्षति पहुँचाने के लिए किया जाने वाला जादूटोना या यजानुष्ठान,-ईशः बुरा स्वामी, किंप्रभु,-ईक्षणा,--एषणा अभिशाप, दुर्वचन,--उक्तम्, - उक्तिः दुर्वचन, झिड़की, गाली, बुरा-भला कहना, उत्तर (वि०) जिसका उत्तर न दिया जा सके, - उदाहर (वि०) जिसका उच्चारण किया जाना कठिन हो- अनुच्छिलार्थसम्बन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः--शि० २।७३, --उद्वह (वि०) बोझिल, असह्य, --ऊह (वि०) बहुत माथा पच्ची करने पर भी जल्द समझ में न आने वाला, कठिन, ग (वि०) 1. जहाँ पहुँचना कठिन हो, अगम्य, दुर्गम 2. अप्राप्य 3. दुर्बोध (--गः, गम्) कठिन या तंग रास्ता, (जंगल में, नदी या पहाड़ों में से) सकीर्ण घाटी, भींड़ा दर्रा 2. गढ़, किला, कोट 3. ऊबड़-खाबड़ जमीन 4. कठिनाई, विपत्ति, संकट, दुःख, भय--निस्तारयति दुर्गच्च --मनु० ३।९८, ११।१४३, भग० १८।५८, °अध्यक्षः, °पतिः, °पालः किले का सभादेष्टा या प्रशासक, °कर्मन् (नपुं०) किलाबन्दी, °मार्गः घाटी का मार्ग, गहरी घाटी °लंघनम् कठिनाइयों को पार करना (- नः) ऊँट, °संचरः 1. (घाटी के ऊपर से, पुल पर से, या किले का) कठिन मार्ग, --गा शिव की पत्नी पार्वती की उपाधि,--गत (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, दुर्दशाग्रस्त --भट्टि० १८।१० 2. दरिद्र, गरीब 3. दुःखी, कष्ट-ग्रस्त,--गतिः (स्त्री०) 1. दुर्भाग्य, गरीबी, कमी, कष्ट, दरिद्रता--भग० ६।४० 2. कठिन स्थिति या मार्ग 3. नरक, - गन्ध (वि०) बुरी गन्ध वाला (--धः) 1. बुरी गन्ध, सड़ाद 2. दुर्गंधयुक्त पदार्थ 3. प्याज 4. आम का वृक्ष, --गन्धि, - गन्धिन् (वि०) जिसमें से बुरी गन्ध आवे - गम (वि०) 1. जिसमें से जाया न जा सके, जहाँ पहुँचना कठिन हो, अप्रवेश्य --कामि-नीकायकांतारे कुचपर्वतदुर्गमे--भर्तृ० १।८६, शि० १२।४९ 2. अप्राप्य, दुष्प्राप्य 3. दुर्बोध,--गाह्य,-- गाध, —गाह्य जिसका अवगाहन करना या अनुसंधान करना कठिन हो, अनवगाह्य, - ग्रह (वि०) 1. कष्टसाध्य 2. जिसको जीतना या वश में करना कठिन हो--रघु० १७।५२ 3. दुर्बोध (- हः) मरोड़, ऐंठ - घट (वि०) 1. कठिन 2. असम्भव,—जीव: 1. कर्कश-ध्वनि 2. रीछ, - जन (वि०) 1. दुष्ट, बुरा, खल 2. दरदनाम, द्वेषपूर्ण उपदेशी, (- नः) बुरा या दुष्ट आदमी, ईर्ष्या रखने वाला या उपदेश करने वाला व्यक्ति, दुर्वृत्त दुर्जनः प्रियवादी च नैवविश्वास-कारणम्--चाण० २४, २५, साम्येप्यत्यधिकारणे नोष-कारेण दुर्जनः,- कु० २।४०, - जय (वि०) अजेय, जिसको जीता न जा सके, - जर (वि०) 1. चिरस्थायी 2. (भोजनादि) जो कठिनाई से पचे, अपचनशील 3. जिसका उपभोग करना कठिन हो, - जात (वि०) 1. दुःखी, अभागा 2. बुरे स्वभाव का बुरा, दुष्ट 3. मिथ्या, अवास्तविक, (तम्) दुर्भाग्य, संकट, कठिनाई, रघु० १३।७२,—जातिः (वि०) 1. बुरे स्वभाव का, दुर्जन, दुष्ट अमरु ९९ 2. जाति से बहिष्कृत (स्त्री०-तिः) 1. दुर्भाग्य, दुर्दशा,--ज्ञान, --ज्ञेय (वि०) जो कठिनाई से जाना जा सके, दुर्बोध, - ज्ञयः,- नयः 1. दुराचरण 2. अनौचित्य 3. अन्याय —नामन्,- नामन् (वि०) बदनाम,- दम, —दमन, —दम्य (वि०) जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो, जो सीधा न किया जा सके, प्रबल,--दर्श (वि०) 1. जो कठिनाई से दिखाई दे 2. चकाचौंध करने वाला—भग० ११।५२,--दान्त (वि०) 1. जिसको वश में करना कठिन हो, जो पालतू न हो सके, जो सीधा न किया जा सके शि० १२।२२ 2. उच्छृंखल, घमण्डी,--धृष्ट, दुर्दान्तानां दमनविधयः क्षत्रियेष्वाश्रयंते --महावी० ३।२४, (--ष्टः) 1. बछड़ा 2. झगड़ा, कलह,—दिनम् 1. बुरा दिन 2. मेघाच्छन्न दिन, आँधी, तूफान का मौसम, वृष्टिकाल, उन्मत्तयत्कालदुर्दिनम् - मच्छ० ५--कु० ६।४३, महावी० ४।५७ 3. बोलचाल --रघु० ४।४१, ८२, ५।४७, उत्तर० ५।५ 4. घोर अन्धकार, - दृष्ट (वि०) जिस पर गलत तरीके से विचार किया गया हो, जिसका फ़ैसला ठीक न हुआ हो,— दैवम् बुरी किस्मत, दुर्भाग्य,—द्यूतम् बेईमानी का खेल, द्रुमः प्याज, - धर (वि०) 1. जिसका सुकाबला न किया जा सके, जो रोका न जा सके 2. दुस्सह, —दुर्धरेण मदनेन सासहे - भट्ट० ११, मनु० ७।२८, (-रः) पारा--धर्ष (वि०) 1. अनुल्लङ्घनीय, अनतिक्रम्य 2. अगम्य-हि० प्र० ५ 3. भयंकर, डरावना 4. उद्धत, - धी (वि०) मूर्ख बेवकूफ़, - नामन्: वरा-सीर,—निग्रह (वि०) जिसको दबाया न जा सके, जिस पर शासन न किया जा सके, जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, उच्छृंखल - मनो दुर्निग्रहं चलम् —भग० ६।३५,—निमित्त (वि०) असावधानी से जमीन पर रक्खा हुआ—पदे दुर्निमिते स्खलन्ती—रघु० ७।१०,--निमित्तम् 1. अपशकुन,-- रघु० १४।५० 2. बुरा बहाना,—निवार,—निवार्य (वि०) जिसको

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हटाना या दूर करना कठिन हो, जिसका मुकाबला करना कठिन हो, अजेय,—नीतम् कदाचरण, दुर्नीति, दुर्व्यवहार,—नीतिः (स्त्री०) बुरा प्रशासन—भामि० ४।३६,—बल (वि०) 1. कमजोर, बलहीन 2. क्षीणकाय, शक्तिहीन—उत्तर० १।२४ 3. स्वल्प, थोड़ा, कम—रघु० ५।१२,—बाल (वि०) गंजे सिर वाला, —बुद्धि (वि०) 1. बेवकूफ, मूर्ख, बुद्धू 2. कुमार्गी, दुष्ट मन का, दुष्ट—भग० १।२३,—बोध (वि०) जो शीघ्र समझ में न आये, जिसकी तह तक न पहुँचा जाय, दुर्ग्राह्य -निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः सद भूतीनां चरितं खल जन्तवः—कि० १।६,—भग (वि०) भाग्यहीन अभागा,—भगा 1. वह पत्नी जिसे उसका पति न चाहता हो 2. बुरे स्वभाव की स्त्री, कलहप्रिय स्त्री, —भर (वि०) जिसे निभाना कठिन हो, बोझा, भार, —भाग्य (वि०) भाग्यहीन, अभागा (—ग्यम्) बुरी किस्मत,—भक्षम् 1. खाद्य सामग्री की कमी, अभाव, अकाल—यक्ष्म० २।१४७, मनु० ८।२२, हि० १।७३ 2. कमी,—भृत्यः बुरा सेवक,—भ्रातृ (पुं०) बुरा भाई,—मति (वि०) 1. मूर्ख, दुर्बुद्धि, बेवकूफ, अज्ञानी, 2. दुष्ट, खोटे हृदय का—मनु० ११।३०, —मद (वि०) शराबखोर, खूखार या हिंस्र, मदोन्मत्त, दीवाना, —मनस् (वि०) खिन्नमनस्क, हतोत्साह, दुःखी उदास, —मनुष्यः दुर्जन, दुष्ट पुरुष,—मन्त्रः,—मन्त्रितम् बुरी नसीहत, बुरा परामर्श,—मरणम् बुरी मौत, अप्राकृतिक मृत्यु,—मर्मन् (वि०) निर्लज्ज, अशिष्ट, —मल्लिका,—मल्ली एक प्रकार का उपरूपक, सुखान्त प्रहसन—सा० द० ५५३,—मित्रः 1. बुरा दोस्त 2. शत्रु,—मुख (वि०) बुरे चेहरे वाला, विकराल, बदसूरत—भर्तृ० १।९० 2. कटुभाषी, अश्लीलभाषी बदजबान —भर्तृ० २।६९,—मूल्य (वि०) बहुत अधिक मूल्य का महँगा,—मेधस् (वि०) मूर्ख, बेवकूफ, मन्दबुद्धि, बुद्धू (पुं०) मूढमति, मन्दबुद्धि मनुष्य, बुद्धू —यन्मानवीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम्—शि० २।२६,—योध—योधन (वि०) अजेय, जो जीता न जा सके, (—नः) धृतराष्ट्र और गान्धारी का ज्येष्ठ पुत्र (दुर्योधन बचपन से ही अपने चचेरे भाई, पाण्डवों से घृणा करता था, विशेष कर भीम से। इसलिए पाण्डवों का विनाश करने के लिए उसने यथाशक्ति प्रयत्न किये। जब उसके पिता धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाने का प्रस्ताव रक्खा, तो दुर्योधन को अच्छा न लगा, क्योंकि धृतराष्ट्र ही उस समय राजा थे, इसलिए दुर्योधन ने अपने अन्धे पिता को इस बात पर राजी कर लिया कि पाण्डवों का निर्वासन कर दिया जाय। वारणावत उनका भावी निवासस्थल चुना गया—और उनके रहने के लिए एक विशाल महल बनवाने के बहाने दुर्योधन ने लाख, बेजी आदि दहनशील सामग्री से एक भवन इस आशा से बनवाया कि पाण्डव सब उसमें जल कर मर जायंगे। परन्तु पाण्डवों को दुर्योधन की इस चाल का पता लग गया था, अतः वह सुरक्षित उस भवन से निकल भागे। फिर पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहने लगे। यहाँ रहते हुए उन्होंने बड़े ठाट बाट के साथ एक राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। इस घटना ने दुर्योधन की ईर्ष्या और क्रोधाग्नि को और भी अधिक भड़का दिया—क्योंकि दुर्योधन का पाण्डवों को वारणावत में जला कर मारने का षड्यन्त्र पहले ही निष्फल हो चुका था। फलतः दुर्योधन ने अपने पिता की उकसाया कि पांडवों को हस्तिनापुर में आकर जूआ खेलने के लिए निमन्त्रण दिया जाय क्योंकि युधिष्ठिर विशेष रूप से जूए का शौकीन था। इस जूए के खेल में दुर्योधन को अपने मामा शकुनि की सहायता प्राप्त थी। युधिष्ठिर ने जो कुछ भी दाँव पर लगाया- वही हार गया, यहाँ तक कि इस हार से अन्धे होकर उसने अपने आप को, अपने भाइयों को और अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया। और इस प्रकार जूए में सब कुछ हार जाने पर, शर्त के अनुसार युधिष्ठिर को १२ वर्ष का वनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास बिताने के लिए अपनी पत्नी तथा भाइयों सहित जंगल की ओर जाना पड़ा। परन्तु यह दीर्घकाल भी समाप्त हो गया। वनवास से आकर पाण्डव और कौरवों ने 'भारती' नाम के महायुद्ध की तैयारी की। यह युद्ध १८ दिन रहा और सारे कौरव अपने अधिकांश बन्धुबान्धवों सहित इसी युद्ध में मारे गये। युद्ध के अन्तिम दिन भीम का दुर्योधन से द्वन्द्व युद्ध हुआ और भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन की जंघा तोड़ कर उसे मौत के घाट पहुँचाया),— योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न, अधम कुल का, —लक्ष्य (वि०) जो कठिनाई से देखा जा सके, जो दिखाई न दे, — लभ (वि०) 1. जिसका प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य, दुरासाद्य—रघु० १। ६७, १७।७०, कु० ४।४०, ५।४६,६१ 2. जिसका ढूंढना कठिन हो, जिसका मिलना दुष्कर हो, विरल —शुद्धान्तदुर्लभम्—श० १।१६ 3. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, प्रमुख 4. प्रिय, प्यारा 5. मूल्यवान्—ललित (वि०) लाड प्यार से बिगड़ा हुआ, अत्यधिक लाड प्यार में पला हुआ, जिसे प्रसन्न करना कठिन है,—हा मदकूदुर्ललित —वेणी०—४, विक्रम० २।८, मा० ९ 2. (अतः) स्वेच्छाचारी, नटखट, अशिष्ट, उच्छृंखल —स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै—श० ७, (—तम्) स्वेच्छाचारिता, अक्खड़पन,—लेख्यम् जाली दस्तावेज, —चक्ष (वि०) 1. जिसका दर्शन करना कठिन हो,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवर्णनीय 2. वह बात जिसका बतलाना उचित न हो 3. अनुचित बोलने वाला, गाली देने वाला, (—**ता**) गाली, फटकार, दुर्वचन, —**वक्त्र**(नपुं०) गाली, झिड़क, —**वर्ण** (वि०) बुरे रंग का, (—**र्णम्**) चौदी,—**वर्तिः** (स्त्री०) पौड़ाजनक निवासस्थान—रघु० ८।१४,—**वह** (वि०) भारी, जिसे ढोना कठिन हो—उत्तर० २।१०, कु० १।१०,—**वाच्य** (वि०) 1. जिसका कहना या उच्चारण करना कठिन हो 2. कुभाषी, बदजबान 3. कठोर, क्रूर, (**च्यम्**) 1. झिड़की, दुर्वचन 2. बदनामी, **लोकापवाद**, **वादः** अपवाद, अपयश, कुख्याति, —**वार**,—**वारण** (वि०) जिसका मुकाबला न किया जा सके, असह्य —रघु० १।८७, कु०२।२१,—**वासना** 1. ओछी कामना, बुरी इच्छा—भामि० १।८६ 2. कपोलकल्पना, —**वासस्** (वि०) 1. बुरा वस्त्र धारण किये हुए 2. नंगा (पुं०) 3. एक बड़ा क्रोधी ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र इसे प्रसन्न करना अत्यन्त कठिन था, बहुत से स्त्री पुरुषों को उसने अपमान तथा मुसीबतें सहन करने के लिए शाप दिया। जमदग्नि के क्रोध की भांति, इसका क्रोध भी प्रायः एक लोकोक्ति बन गया, —**विगाह** **विगाह्य** (वि०) जिसमें प्रवेश करना कठिन हो, जिसका अवगाहन मुश्किल हो, अगाध, **विचिन्त्य** (वि०) अचिन्तनीय, अतर्क्य,—**विदग्ध** अकुशल, नौसिखुआ, बेवकूफ, मन्दबुद्धि, मूर्ख 2. बिल्कुल अनाड़ी 3. थोड़े से ज्ञान से ही फूला हुआ, गर्वित, झूठा घमण्ड करने वाला—वृथाशस्त्र ग्रहणदुर्विदग्ध—वेणी० ३, ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रंजयति —भर्तृ० २।३,—**विध** (वि०) 1. कमीना, अधम, नीच 2. दुष्ट, दुश्चरित्र 3. गरीब, दरिद्र —विदधाति रविर्गवंदुर्विधं—नै० २।३३ 4. मन्दबुद्धि, मूर्ख, बेवकूफ,—**विनयः** औद्धत्य, उद्दण्डता,—**विनीत** (वि०) 1. (क) बुरी तरह से शिक्षित, अशिष्ट, असभ्य, दुष्ट —शासितरि दुर्विनीतानाम् —शि० १।२५, (ख) अक्खड़, नटखट, उपद्रवी 2. हठीला, दुराग्रही —**विपाकः** 1. दुष्परिणाम, बुरा नतीजा—उत्तर० १।४०, महावी० ६।७ 2. पूर्व जन्म के या इस जन्म के किये हुए कर्मों का बुरा परिणाम,—**विलसितम्** स्वेच्छाचार, अक्खड़पन, नटखटपना,—**वृत्त** (वि०) 1. दुश्चरित्र, दुष्ट, असभ्य 2. बदमाश, (**त्तम्**) दुराचरण, अशिष्ट व्यवहार,—**वृष्टिः** (स्त्री०) थोड़ी बारिश, अनावृष्टि,—**व्यवहारः** गलत निर्णय (विधि में) —**व्रत** (वि०) नियमों का पालन न करने वाला, जो आज्ञाकारी न हो, • **हुतम्** वह यज्ञ जो बुरी रीति से किया गया हो,—**हृद्** (वि०) दुष्ट हृदय का, तुच्छ विचारों वाला, शत्रु (पुं०) वैरी,—**हृदय** (वि०) दुरात्मा, दिल का खोटा, दुष्ट।

दुरोदरः [दुष्टमासमन्तात् उदरं यस्य ब० स०] 1. जूआरी, द्यूतकार 2. पासा, जूआ 3. बाजी, दाँव, —**रम्** जूआ खेलना, पासे से खेलना—दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जयतीं सुयोधनः—कि० १।७, रघु० ९।७।

दुल् (चुरा० उभ०—दोलयति—ते, दोलित) झूलना इधर-उधर हिलना-जुलना, इधर उधर घुमाना, झुलाना —कर्हि चेद्दोलयेदार्द्रा—गीत०, दोलयन् द्राक्षिवाक्षी—भर्तृ० ३।३९ 2. हिलाकर ऊपर को करना, ऊपर फेंकना • दोलयति चूलिं वायुः —शब्द०।

दुलिः (स्त्री०) [दुल्+कि] छोटी कछुवी, या कछुवी।

दुष् (दिवा० पर० दुष्यति, दुष्ट) 1. बुरा या भ्रष्ट हो जाना, दूषित होना, चाटा उठाना 2. मलिन होना, असती होना (स्त्री का), कलंकित होना, अपवित्र होना, बिगड़ना, पंच० १।१६, मनु० ७।२४, ९।३१८, १०। १०२ 3. पाप करना, गलती करना, गलती होना, 4. असती होना, अभक्त या श्रद्धाहीन होना- प्रेर० —दूषयति (परन्तु—दूषयति • दोषयति यदि अर्थ है 'दूषित करना, भ्रष्ट करना) 1. भ्रष्ट करना, बिगाड़ना, नष्ट कराना, क्षतिग्रस्त करना, विकृत करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, कलंकित करना, धिक्कृत करना, अपवित्र करना—(आ० तथा आलं० से)—न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः—मच्छ० १०। २७, पुरा दूषयति स्थलीम्—रघु० १२।३०, ८।६८, १०।४७, १३।८, मनु० ५।१, १०४, ७।१९५, याज्ञ० १।१८२, अमर ७०—न स्वेनं दूषयिष्यामि शस्त्रग्रहमहाव्रतम् महावी० ३।२८,—दूषित नहीं करूँगा, उल्लंघन नहीं करूँगा, तोड़ूंगा नहीं आदि 2. चरित्र भ्रष्ट करना, उत्साह भंग करना 3. उल्लंघन करना, अवज्ञा करना—मनु० ८।३६४, ३९८ 4. निराकरण करना, हटा देना, रद्द कर देना 5. दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना, किसी के विषय में बुरा कहना दोषारोपण करना—दूषितः सर्वलोकेषु निर्याहस्त्वं समिष्यति—रामा०, याज्ञ० १।१६६ 6. मिलावट करना 7. मिथ्या या बनावटी करना 8. निराकरण करना, खण्डन करना, प्र—, 1. भ्रष्ट होना, बिगड़ना, विषाक्त होना—याज्ञ० ३।१९ 2. पाप करना, गलती करना, श्रद्धाहीन या असती (अभक्त) होना—भग० १।४०, मनु० ९।७४,(प्रेर०)1. बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, गड़बड़ करना, धब्बे लगाना 2. दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना **सम्** दूषित या कलंकित होना —(प्रेर०) 1. दूषित करना भ्रष्ट करना, गड़बड़ करना, धब्बे लगाना 2. उल्लंघन करना 3. दोषारोपण करना, निन्दा करना, दोष निकालना।

दुष्ट [भू० क० कृ०] [दुष्+क्त] 1. बिगड़ा हुआ, खराब हुआ, क्षतिग्रस्त, बर्बाद 2. दूषित, धब्बे लगा हुआ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उल्लंघन किया हुआ, कलुषित 3. मलिन, भ्रष्ट 4. पापासक्त, बदमाश—दुष्टवृषः 5. दोषी, अपराधी 6. नीच, अधम 7. दोषयुक्त, सदोष जैसा कि तर्क० में हेतु 8. पीड़ाकर, निकम्मा। समः—आत्मन्, —आशय (वि०) छोटे मन वाला, दुष्ट हृदय वाला, —गजः बदमाश हाथी,—चेतस्, —धी, —बुद्धि (वि०) छोटे मन का, दुर्भावनापूर्ण, दुःशील, —वृषः मजबूत परन्तु अड़ियल बैल, (जो गाड़ी न खींचे) बदमाश बैल।

दुष्टिः (स्त्री०) [दुष्+क्तिन्] भ्रष्टाचार, खोट।

दुष्टु (अव्य०) [दुर्+स्था+कि] 1. खराब, बुरा 2. अनुचित रूप से, अशुद्ध रूप से, गलती से।

दुष्यन्तः (पुं०) चन्द्रवंश में उत्पन्न एक राजा, पुरु की सन्तान, शकुन्तला का पति, भरत का पिता (जंगल में शिकार खेलता हुआ, एक बार दुष्यन्त, हरिण का पीछा करता हुआ कण्व के आश्रम की ओर निकल गया। वहाँ कण्व की गोद ली हुई पुत्री शकुन्तला ने उसका स्वागत-सत्कार किया। शकुन्तला के अलौकिक सौन्दर्य से राजा दुष्यन्त उस पर मोहित हो गया उसने उसको अपनी रानी बनाने के लिए राजी कर लिया और फलतः गान्धर्व विवाह कर लिया। कुछ समय शकुन्तला के साथ बिता कर राजा अपनी राजधानी को लौटा। कुछ महीनों के पश्चात् शकुन्तला ने एक पुत्र को जन्म दिया। कण्व ने यह उचित समझा कि शकुन्तला को उसके पति के घर भेज दिया जाय। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास गई और उसके सामने खड़ी हुई तो दुष्यन्त ने लोकनिन्दा के डर से कहा कि विवाह करने की बात तो दूर रही मैंने तो तुम्हें कभी देखा तक नहीं, परन्तु उसी समय उसे स्वर्गीय वाणी ने बतलाया कि शकुन्तला उसकी वैध पत्नी है। फलतः उसने शकुन्तला को पुत्र समेत स्वीकार कर उसे अपनी पटरानी बनाया। वह राजा रानी बुढ़ापा-दशा तक सुखपूर्वक रहे, और फिर अपने पुत्र भरत को राज्य देकर जंगल की ओर चल दिये। दुष्यन्त और शकुन्तला का उपर्युक्त वर्णन महाभारत में दिया हुआ है, कालिदास द्वारा वर्णित कहानी कई महत्त्वपूर्ण बातों में इससे भिन्न है—दे० 'शकुन्तला')।

दुस् [दुर्+सुक्] 'बुरा, खराब, दुष्ट, घटिया, कठिन या मुश्किल आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व (कभी २ धातुओं के पूर्व भी) लगाया जाने वाला उपसर्ग। (विशः स्वर और व्यंजनों से पूर्व दुस् का स् बदल कर र् हो जाता है, ऊष्म वर्णों के पूर्व विसर्ग, च् और छ् से पूर्व श् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है)। समः—कर (वि०) 1. दुष्ट, बुरी तरह से करने वाला 2. करने में कठिन, कठोर या मुश्किल—वक्तु सुकरं कर्तुं दुष्करम्—करने की अपेक्षा कहना आसान है,—अमर० ४१, मृच्छ० ३।१, मनु० ७।५५, (--रम्) 1. कठिन या पीड़ाकर कार्य, कठिनाई 2. पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—कर्मन् (पुं०) कोई भी बुरा काम, पाप, जुर्म, कालः 1. बुरा समय —मुद्रा० ७।५ 2. प्रलयकाल 3. शिव का विशेषण, —कुलम् बुरा या नीच घराना—(आदतीत) स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि—मनु० २।२३८, कुलीन (वि०) नीच जाति में उत्पन्न,—कृत् (पुं०) दुष्टपुरुष, कृतम्,—कृतिः (स्त्री०) पाप, दुष्कृत्य उभे सुकृतदुष्कृते —भग० २।५०, —कर्म (वि०) कर्महीन, अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित, —चर (वि०) 1. जिसका पूरा करना कठिन हो, मुश्किल —रघु० ८।७९, कु० ७।६५ 2. अगम्य, दुर्गम 3. बुरा करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला, (—रः) 1. रौंछ 2. द्विकांडीय शंख का सीपी, —चारिन् (वि०) कठोर तपस्या करने वाला, —चरित (वि०) दुष्ट, दुराचरण करने वाला, परित्यक्त (तम्) दुराचरण, बुरा चाल-चलन,—चिकित्स्य (वि०) जिसका इलाज करना कठिन हो, असाध्य,—च्यवनः इन्द्र का विशेषण, च्यावः शिव का विशेषण, तर (वि०) (दुष्टर या दुस्तर) 1. जिसका पार करना कठिन हो—रघु० १।२, मनु० ४।२४२, पंच० १।१११ 2. जिसका दमन करना कठिन हो, अपराजेय, अजेय, —तर्कः मिथ्या तर्कना० —पथ (दुष्पथ) (वि०) जिसका हज्म होना कठिन हो, —पतनम् 1. बुरी तरह से गिरना 2. दुर्वचन, अपशब्द,—परिग्रह (वि०) जिसका पकड़ना, ग्रहण करना या लेना कठिन हो, (—हः) बुरी पत्नी,—पूर (वि०) जिसका पूरा करना, या जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो,—प्रकाश (वि०) अप्रसिद्ध, अन्धकारमय, धूमिल, —प्रकृति (वि०) बुरे स्वभाव का, नीच प्रकृति का, प्रजस् (वि०) बुरी सन्तान वाला,—प्रज्ञ (दुष्प्रज्ञ) (वि०) कमजोर मन का, दुर्बुद्धि, —प्रधर्ष,—प्रधृष्य (वि०) जिस पर प्रहार न किया जा सके, दे० 'दुर्धर्ष' —रघु० २।२७, प्रवादः बदनामी, कलंक, अपकीर्ति, —प्रकृतिः (स्त्री०) बुरा समाचार, कुख्याति—रघु० १२।५१,—प्रसह (दुष्प्रसह) (वि०) 1. जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, भयानक 2. असह्य—मालवि० ५।१०,—प्राप,—प्रापण (वि०) अप्राप्य, दुष्प्राप्य —रघु० १।४८, भग० ६।३६,—शकुनम् बुरा सगुन, अपशकुन,—शला धृतराष्ट्र की इकलौती पुत्री जो जयद्रथ को ब्याही गई थी, शासन (वि०) जिसका प्रबन्ध करना या शासन करना कठिन हो, अविनेय, (नः) धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक (यह बहादुर योद्धा था, परन्तु दुष्ट और दुर्दान्त। जब युधिष्ठिर द्रौपदी को दाँव पर लगा कर हार गया तो दुःशासन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसकी चोटी पकड़ कर उसे भरी सभा में खींच लाया, वहाँ उसने उसे विवस्त्र करना चाहा, परन्तु दीन दुःखियों के सहायक श्रीकृष्ण ने उसका चीर बढ़ा कर उसकी लज्जा की रक्षा की। दुःशासन के इस जघन्य कृत्य से भीम इतना उत्तेजित हो गया कि उसने भरी सभा में प्रतिज्ञा की 'कि मैं तब तक सुख की नींद न सोऊँगा जब तक इस दुष्ट दुःशासन का खून न पी लूँ। महाभारत युद्ध के १६ वें दिन भीम का दुःशासन से सामना हुआ। भीम ने एक ही पछाड़ में दुःशासन का काम तमाम कर दिया-और उसका खून पीकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की),—शील (दुश्शील) (वि०) गुण्डा, दुराचारी, बदमाश,—सभ (दुःसभ या दुस्सभ) (वि०) 1. असभ, असमान, असदृश 2. प्रतिकूल, दुर्भाग्यपूर्ण 3. अनिच्छित, अनुचित, बुरा,—सम्भ (अव्य०) बुरी तरह से, दुष्टतापूर्वक,—सत्वम् दुष्ट प्राणी, -सन्धान,—सन्धेय (वि०) जिनका मिलना या जिनमें सुलह कराना कठिन हो,—सह (दुस्सह) (वि०) असह्य, अप्रतिरोध्य, असमर्घनीय,—साक्षिन् (पु०) झूठा गवाह,—साध,—साध्य (वि०) 1. जिसका पूरा होना कठिन हो 2. जिसका इलाज करना कठिन हो 3. जिसपर विजय न प्राप्त की जा सके,—स्थ,—स्थित (वि०) [दुस्थ या दुस्थित' भी लिखा जाता है] 1. दुर्दशाग्रस्त, गरीब, दयनीय 2. पीड़ित, विषण्ण, दुःखी 3. अस्वस्थ, रुग्ण 4. अस्थिर, अशान्त 5. मूर्ख, बुद्धिहीन, अज्ञानी, (अव्य०—स्थम्) बुरी तरह से, अधूरे ढंग से, अपूर्ण रूप से,—स्थितिः (स्त्री०) 1. दुर्दशा, विषण्णता, दयनीयता 2. अस्थिरता, स्पष्टतम (दुस्पृष्टम्) 1. ईषत्स्पर्श या सम्पर्क 2. जिह्वा का ईषत् स्पर्श या प्रयत्न जिससे य्, र्, ल् तथा व् की ध्वनि निकलती है,—स्मर (वि०) जिसका याद रखना कठिन या पीड़ा कर हो—उत्तर० ६।३४,—स्वप्नः बुरा स्वप्न।

दुह (अदा० उभ०—दोग्धि, दुग्धे, दुग्ध) दोहना, निचोड़ना, उद्धृत करना (द्विक० के साथ)—भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्- कु० १।२, यः पयो दोग्धि पाषाणं स राजाद्भुतमाप्नुयात्—भट्टि० ८।८२, पयो घटोष्णीरपि गोदु हन्ति—१२।७३, रघु० ५।३३ 2. किसी वस्तु में से कोई दूसरी चीज निकालना,—(द्विक० के साथ)—प्राणान्दुहन्निवात्मानं शोकं चित्तमवाग्वहत्—भट्टि० ८।९ 3. छान कर निकाल लेना, लाभ उठाना—दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्—रघु० १।२६ 4. (अपेक्षित पदार्थ) प्रदान करना—कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीम्—उत्तर० ५।३१ 5. उपभोग करना—प्रेर० दोहयति—दुहाना, इच्छा०—दुधुक्षति, दुहने की इच्छा करना—राजन्, दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्—भर्तृ० २।५६।

दुहितृ (स्त्री०) [दुह+तृच्] बेटी, पुत्री। सम०—पतिः 'दुहितुः पतिः' भी) जामाता, दामाद।

दू (दिवा० आ० दूयते, दून) 1. कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना, खिन्न होना—न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मह्यमपराध्यति—शि० २।११, कथमथ वंचयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनं—गीत० ८, कष्टग्रस्त, दुःखी—दे० 'दु' (कर्मवा०) 2. पीड़ा देना।

दूतः, दूतकः [दु+क्त, दीर्घश्च, दूत+कन्] सन्देशहर, संदेशवाहक, राजदूत चाण० १०६। सम०—मुख (वि०) राजदूत के द्वारा बात करने वाला।

दूतिका, दूती: [दू+ति+कन्+टाप्, दूति+ङीष्] 1. संदेशवाहिका रहस्य की (गुप्त) बातें जानने वाली 2. प्रेमी और प्रेमिका से बातचीत कराने वाली, कुटनी (विशे० दूती का 'ती' कभी कभी ह्रस्व हो जाता है - दे० रघु० १८।५३, १९।१८, कु० ४।१६, और इसके ऊपर मल्लि०)।

दूत्यम् [दूतस्य भावः दूत (ती)+यत्] 1. किसी दूत का नियुक्त करना 2. दूतालय 3. संदेश।

दून (वि०) [दू+क्त, नत्वम्] पीड़ित, कष्टग्रस्त,—आदि, दे० 'दु' और 'दू' के नीचे।

दूर (वि०) [दुःखेन ईयते - दुर्+इण्+रक, धातोः लोपः] (सं० अ० दवीयस्, उ० अ० दविष्ठ) दूरस्थ, दूरवर्ती, फासले पर, दूरस्थित, विप्रकृष्ट—कि दूरं व्यवसायिनाम् चाण० ७३, न योजनशतं दूरं बाह्यमानस्य तृष्णया—हि० १।१४६, ४९,—रम् दूरी, फासला ('दूर' शब्द के अग्रधान कारक के कुछ रूप निम्नलिखित रूप से क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं-(क) दूरम् 1. फ़ासले पर, विप्रकृष्ट, दूरी पर (अपा० या संब० के साथ)—ग्रामात् वा ग्रामस्य दूरं —सिद्धा० 2. ऊपर ऊँचाई पर 3. नीचे गहराई में 4. अत्यंत, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—नेत्रे दूरमनञ्जने —सा० द० 5. पूर्णरूप से, पूरीतरह से,—निमग्नां दूरमम्भसि—कथा० १०।२९, दूरमुद्धूततापाः—मेघ० ५५, (ख) दूरेण 1. दूर, दूरवर्ती स्थान से, दूर से, —खलः कापट्यदोषेण दूरेणैव विसृज्यते—भामि० १।७८ 2. कहीं अधिक, अत्यधिक ऊँचाई पर—दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय—भग० २।४९, रघु० १०।३० अने० पा० (ग) दूरात् 1. फासले से, दूरी से,—प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्, दूरादागतः—दूर से आया हुआ (यह समस्त पद समझा जाता है)—नदीयमिता.....दूरात्परित्यज्यताम्—भर्तृ० १।८१, रघु० १।६१ 2. सूक्ष्म दृष्टि से 3. सुदूर पूर्व काल से (घ) दूरे, दूर, फ़ासले पर, दूरवर्ती स्थान पर—न मे दूरे किंचिल्लक्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्—श० १।९, भोः श्रेष्ठिन् शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतीकारः—मुद्रा०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१. भर्तृ० ३।८८, **दूरोज्झ**—1. फ़ासले पर हटा देना, हटाना' दूर करना,—आश्रमे दूरीकृतश्रमे—दश० ५, भामि० १।१२२ 2. वंचित करना अलग करना —मृच्छ० ९।४ 3. रोकना, परे करना 4. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ जाना, दूर रखना ·· श० १।१७, इसी प्रकार **दूरीभू**—दूर रहना, परे रहना, अलग रहना, फ़ासले पर रहना—दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमवैकाम् । सम०—**अन्तरित** (वि०) लम्बी दूरी होने से वियुक्त,—**आघात**: दूर से निशाना लगाना —**आप्लाव** (वि०) दूर तक कूदने वाला, लम्बी छलांग लगाने वाला,—**आरूढ** (वि०) 1. ऊँचाई पर चढ़ा हुआ, दूर तक आगे बढ़ा हुआ 2. गहरा, उत्कट —**दूराकृष्ट**: खलु प्रणयोऽसहनः विक्रम०४,—**दूरितेक्षण** (वि०) भेंगी दृष्टि वाला, **गत** (वि०) दूर हटा हुआ, दूरस्थ, दूर गया हुआ, आगे तक बढ़ा हुआ, गहराई तक गया हुआ· दूरगतमन्मथाक्षेपमेयं कालहरणस्य—श० ३,—**ग्रहणम्** दूरस्थित पदार्थों को भी देखने की दिव्य शक्ति,—**दर्शनः** 1. गिद्ध 2. विद्वान् पुरुष, पण्डित, —**दर्शिन्** (वि०) दूर की देखने वाला, अग्रदृष्टि, बुद्धिमान् (—पुं०) 1. गिद्ध 2. विद्वान् पुरुष 3. द्रष्टा, पैग़म्बर ऋषि,—**दृष्टिः** दूर तक देखने की शक्ति 2. बुद्धिमत्ता, अग्रदृष्टि,—**पातः** 1. दूर तक गिरना 2. दूर की उड़ान 3. बहुत ऊंचाई से गिरना, —**पात्र** (वि०) विस्तृत पाट वाला (नद आदि) —**पार** (वि०) 1. बहुत चौड़ा (दरिया) 2. जो कठिनाई से पार किया जा सके, **बन्धु** (वि०) पत्नी तथा अन्य भाई बन्धुओं से निर्वासित· मेघ० ६, —**भाज्** (वि०) दूरवर्ती, फ़ासले पर विद्यमान,—**वर्तिन्** (वि०) दूरी पर विद्यमान, दूर हटाया हुआ, दूरस्थ, फ़ासले पर,—**वस्त्रक** (वि०) नंगा, **विलम्बिन्** (वि०) नीचे दूर तक लटकने वाला,—**वेधिन्** (वि०) दूर से ही बींधने वाला,—**संस्थ** (वि०) दूरी पर विद्यमान फ़ासले पर, दूरवर्ती ··कण्ठावलेपप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे·· मेघ० ३ ।

दूरतः (अव्य०) [दूर+तस्] 1. दूर से, फ़ासले से—तद्राज्यं दूरतस्त्यजेत्·· पंच० ५।६९, बहति च परीतापं दोषं विमुञ्चति दूरतः—गीत० २ 2. दूर, फ़ासले पर —पंच० १।९ ।

दूरेत्य (वि०) [दूरे भवः—दूर+एत्य] दूरी पर मौजूद, दूर से आया हुआ ।

दूर्यम् [दूरे उत्पाद्यम् -दूर्+यत्] विष्ठा, मैला ।

दूर्वा [दुर्व्+अ+टाप्, दीर्घः] भूमि पर फैलने वाली एक घास, दूब (यह घास देव पूजा के लिए पवित्र समझी जाती है) । सम०—**अङ्कुर** दूब के कोमल पत्ते —विक्रम ३।१२ ।

दूलिका, दूली [दूली+कन्+टाप्, ह्रस्वः, दूर+अच्+ङीष्, रस्व लः] नील का पौधा ।

दूष (वि०) [दूष्+णिच्+अच्] (समासान्त में प्रयुक्त) दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला—उदा० 'पंक्तिदूष' ।

दूषक (वि०)(स्त्री०—**विका**) [दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1. भ्रष्टाचार करने वाला, अपवित्र करने वाला, **विषाक्त** करने वाला, दूषित करने वाला, बिगाड़ने वाला 2. उल्लंघन करने वाला, अवज्ञा करने वाला, गुमराह करने वाला 3. अपराध करने वाला, अतिक्रमण करने वाला, अपराधी 4. आकृति बिगाड़ने वाला 5. पापी, दुष्कृत, —**कः** कुपथ पर चलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला, बदनाम या दुष्ट पुरुष ।

दूषणम् [दूष्+ल्युट्] 1. बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, विषाक्त करना, बर्बाद करना, अपवित्र करना आदि 2. उल्लंघन करना, तोड़ना (समझौता आदि) 3. पथभ्रष्ट करना, बलात्कार करना, सतीत्व नष्ट करना 4. गाली देना, निन्दा करना, कलंकित करना—रघु० १२।४६ 5. बदनामी, अप्रतिष्ठा 6. विपरीत आलोचना, आक्षेप 7. निराकरण 8. दोष, अपराध, त्रुटि, पाप, जुर्म —नोलूकोऽप्यबलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् —भर्तृ० २।९३, हा हा धिक् परगुहासदूषणं—उत्तर० १।४०, मनु० २।२१३, हि० १९८, १५५, २।१८०, —**णः** एक राक्षस, रावण की सेना का एक नायक जिसे भगवान् राम ने मार गिराया था । सम०—**अरिः** राम का विशेषण,—**आवह** (वि०) कलंक में किसी को फँसाने वाला ।

दूषिः, षी (स्त्री०) [दूष्+णिच्+इन्, दूषि+ङीष्] ढीठ, आँख का कीचड़ ।

दूषिका [दूषि+कन्+टाप्] 1. लेखनी, चित्रकार की कूंची 2. एक प्रकार का चावल 3. ढीठ, आँखों का कीचड़ ।

दूषित (वि०) [दूष्+णिच्+क्त] 1. भ्रष्ट, दूषित, विकृत 2. चोटिल, क्षतिग्रस्त 3. अपहृत, हतोत्साहित 4. कलंकित, बदनाम 5. मिथ्यादोषारोपित, बदनाम, निन्दित ।

दूष्य (वि०) [दूष्+णिच्+यत्] 1. भ्रष्ट होने के योग्य 2. गर्हणीय, दण्डनीय, दूषनीय —**ष्यम्** 1. मवाद, राद 2. विष 3. कपास 4. पोशाक, वस्त्र 5. तम्बू —शि० १२।६५,—क्या हाथी की चमड़े का तंग ।

दृ (तुदा० आ०—दृियते, दृित,—इच्छा० दिदरिषते) (इसका स्वतन्त्र प्रयोग विरल है—प्रायः आ उपसर्ग लग कर प्रयुक्त होता है) आदर करना, सम्मान करना, पूजा करना, प्रतिष्ठा करना—द्वितीयाद्दियते सदा —हि० प्र० ७, मुद्रा० ७।२, भट्टि० ६।५५ 2. रक्षा करना, यत्न लगाना (प्रायः—यत्न के साथ) 3. अपने आप के अच्छी तरह लगाना, संलग्न करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यान रखना—भूरि श्रुतं शाश्वतमाद्रियस्व—मा० १। ५ 4. इच्छा करना।

दृंह् i (भ्वा० पर०—दृंहति, दृंहित) 1. पुष्ट करना, 2. समर्थन करना।
ii (भ्वा० आ०) 1. दृढ़ होना 2. विकसित होना या बढ़ना।

दृंहित (भू० क० कृ०) [दृंह्+क्त] 1. पुष्ट किया गया, समर्थित, 2. विकसित, वर्धित।

दृक् [दृ+कक्] छिद्र, सूराख।

दृढ (वि०) [दृंह्+क्त] 1. स्थिर, दृढ़, मजबूत, अचल, अथक—भग० १५।३, हि० ३।६५, रघु० १३।७८ 2. ठोस, पिण्डाकार 3. संपुष्ट, स्थापित 4. स्थिर, धैर्यशाली—भग० ७।२८ 5. दृढ़ता पूर्वक बाँधा हुआ, कस कर बन्द किया हुआ 6. सुसंहत 7. कसा हुआ, घनिष्ठ, सघन 8. मजबूत, गहन, बड़ा, अत्यधिक, ताकतवर, कठोर, शक्तिशाली—तस्याः करिष्यामि दृढ़ानुतापम् —कु० ३।८, रघु० ११।४६ 9. कड़ा 10. (धनुष की भांति) झुकाने या तानने में कठिन 11. टिकाऊ 12. विश्वासपात्र 13. निश्चित, अचूक, —दम् 1. लोहा 2. गढ़, किला 3. अधिकता, बहुतायत, ऊँचा दर्जा, —दम् (अव्य०) 1. दृढ़तापूर्वक, कस कर 2. अत्यधिक, अत्यन्त, तेजी से 3. पूरी तरह से। सम० —अङ्ग (वि०) मजबूत अंगों वाला, हृष्टपुष्ट (गम्) हीरा—**इषुधि** (वि०) मजबूत तरकस रखने वाला, —**काण्ड**: —**न्धिः** बाँस, —**ग्राहिन्** (वि०) मजबूती से पकड़ने वाला अर्थात् हाथ धोकर काम के पीछे पड़ने वाला,—**द्वारः** —**द्वार** (वि०) बिल्कुल सुरक्षित दरवाजों वाला,—**धन्वः** बुद्ध का विशेषण, —**धन्वन्**,—**धन्विन्** (पुं०) अच्छा धनुर्धारी,—**निश्चय** (वि०) 1. दृढ़ संकल्प वाला, अडिग, अटल 2. पुष्ट, —**नीरः**,—**फलः** नारियल का पेड़,—**प्रतिज्ञ** (वि०) प्रण का पक्का, बात का धनी, सहमति पर निश्चल, —**प्ररोहः** गूलर का पेड़,—**प्रहारिन्** (वि०) 1. कड़ा प्रहार करने वाला 2. कस कर मारने वाला, अचूक लक्ष्यवेध करने वाला,—**भक्ति** (वि०) निष्ठावान्, श्रद्धालु,—**मति** (वि०) कृतसंकल्प, स्थिरबुद्धि, अडिग, —**मुष्टि** (वि०) बन्दमुट्ठी वाला, कृपण, कंजूस, (ष्टिः) तलवार,—**मूलः** नारियल का पेड़,—**लोमन्** (पुं०) जंगली सूअर, —**वैरिन्** (पुं०) निर्दय शत्रु, निष्करुण दुश्मन, —**व्रत** (वि०) 1. धर्म साधना में अटल 2. अडिग भक्त 3. धैर्यवान्, आग्रही,—**सन्धि** (वि०) 1. कस कर जुड़ा हुआ, सघनता पूर्वक मिला हुआ 2. सघन, संहत 3. सटा हुआ,—**सौहृद** (वि०) अटल मित्रता वाला।

दृतिः (पुं० स्त्री०) [दृ+ति, ह्रस्वः] मशक,—मनु० २। ९९, याज्ञ० ३।२६८ 2. मछली 3. खाल, चमड़ा 4. धौंकनी। सम०—**हरिः** कुत्ता।

दृक्: (स्त्री०) [दृश्+क्विन्] सूर्य, वज्र।

दृन्भः [दृम्भ्+कू नि०] 1. इन्द्र का वज्र 2. सूर्य 3. राजा यम, मृत्यु का देवता, अन्तक।

दृप् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—दर्पति, दर्पयति—ते) प्रकाशित करना, प्रज्वलित करना, सुलगाना।
ii (दिवा० पर०—दृप्यति, दृप्त) 1. घमण्ड करना, अहंकार करना, ढीठ होना,—स किल नाम्ना दृप्यति —उत्तर०, दृप्यद्दानवदूषमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदोम् —गीत० ९ 2. अत्यन्त प्रसन्न होना, 3. असभ्य या दुर्दान्त होना।

दृप्त (वि०) [दृप्+क्त] 1. घमण्डी, अहंकारी 2. मदोन्मत्त असभ्य, पागल।

दृप्र (वि०) [दृप्+रक्] घमण्डी, अहंकारी, बलवान्, शक्तिशाली।

दृश् (भ्वा० पर०—पश्यति, दृष्ट) 1. देखना, नजर डालना अवलोकन करना, समीक्षा करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना—दक्षयसि भ्रातृजायाम् —मेघ० १।१०, १९, रघु० ३।४२ 2. निरीक्षण करना, सम्मान करना, विचार करना—आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः—चाण० ५ 3. दर्शन करना, प्रतीक्षा करना, दर्शनार्थ जाना—प्रत्यूषयौ मुनि दृष्ट्वा ब्रह्माणमिव वासवः —रामा० 4. मन से दृष्टिगोचर करना, सोचना, जानना, समझना—मनु० १।११०, १२।२३ 5. निरीक्षण करना, खोज करना 6. ढूँढना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, निश्चय करना—याज्ञ० १।३२७, २। ३०५ 7. अन्तर्ज्ञान की दिव्य दृष्टि से देखना—ऋषिर्दर्शनात्तस्यात्मान् ददर्श —नि० 8. विवश होकर देखते रहना—कर्मवा० दृश्यते 1. दिखलाई देना, दृष्टिगोचर होना, दर्शनीय होना, प्रकट होना—तत्र तच्चारु वपुर्न दृश्यते—कु० ४।११ ३, रघु० ३।४०, भट्टि० ३।१९, मेघ० ११२ 2. प्रतीत होना, दृश्यमान होना, दिखाई देना, मालूम होना—रघु० ३।३४ 3. मिलना, दिखाई देना, घटित होना (पुस्तक आदि में)—द्वितीयाध्येतितान्येषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते—सिद्धा०—इति प्रयोगो भाष्ये दृश्यते 4. खयाल किया जाना, माना जाना,—सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया— ला० ४।१९, प्रेर०—दर्शयति—ते 1. किसी को (कर्म०, संप्र० या संबं०) कोई चीज (कर्म०) देखने के लिए प्रेरित करना, दिखलाना, संकेत करना—दर्शय तं चौरसिंहम् —पंच० १, दर्शयति भक्तान् हरिम्—सिद्धा० प्रत्यभिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्सुतौ—रघु० १२।६४, १। ४७, १३।२४, मनु० ४।५७ 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना,—भट्टि० १५।१२ 3. दिखलाना, प्रदर्शन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, दर्शनीय बनना--तदेव मे दर्शय देव रूपम् --भग० ११।४५ 4. (न्याय आदि में) प्रस्तुत करना--मनु० ८।१५८ 5. (साक्षी के रूप में) उपस्थित करना--अत्र श्रुति दर्शयति 6. (आ०) अपने आप को दिखलाना, प्रकट होना, अपनी कोई वस्तु दिखलाना भवो भक्तान् दर्शयते --सिद्धा० (अर्थात् स्वयंप्रेम), त्वां गृहीत्वा वनिता कथंमात्मयं ह्रीनिमोलि खलु दर्शयिताहे--वेणी० ५।७१, स सन्ततं दर्शयते गतस्मरः कृतात्मिपत्यामिव साधु बन्धुताम् --किरा० १।१०, इच्छा०--दिदृक्षते -देखने की इच्छा करना, अनु--भावदृश्य के रूप में देखना--प्रेर० 1. दिखलाना, प्रदर्शन करना 2. स्पष्ट करना, व्याख्या करना, आ , प्रेर० दिखलाना, संकेत करना--उत्कलादर्शितपथः कलिंगाभिमुखो ययौ--रघु० ४।३८,उद्--, प्रत्याशा करना, मुँह ताकना, आगे का देखना, मनोगत भाव देखना--उत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम् - रघु० २।६०, उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासोः कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते--मेघ० २५, उप--, देखना, अवलोकन करना--प्रेर० सामने रखना, समाचार देना, परिचित करना- राज्ञः पुरो मामुपदर्श्य - हि० ३, नयविद्धिर्नवे राज्ञि सदमच्छोपदर्शितम्--रघु० ४।१०, नि- , प्रेर० 1. दिखलाना, संकेत करना--रघु० ६।३१ 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना 3. विचार करना, बातचीत करना, चर्चा करना (जैसे पुस्तकादिक में) 4. अध्यापन करना 5. उदाहरण देकर समझाना दे० निदर्शना, प्र--, प्रेर० 1. दिखलाना, संकेत करना खोज लेना, प्रदर्शित करना 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना, सम्- , 1. देखना, अवलोकन करना--भट्टि०१६।९ 2. भलीभाँति देखना, समीक्षा करना--प्रेर० दिखलाना, प्रदर्शित करना, खोज निकालना--आत्मानं भूतवत्संदृश्य - हि० १, भट्टि० ४।३३, मालवि० ४।९ ।

दृश् (वि०) [दृश्--क्विप्] [समासान्त में] 1. देखने वाला, अवीक्षण करने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा करने वाला 2. विवेचन करने वाला, जानने वाला 3. (के समान) दिखलाई देने वाला, प्रतीत होने वाला (स्त्री०) 1. देखना, समीक्षा, दृष्टिगोचर करना, 2. आँख, दृष्टि--संदधे दृक्षमुदग्रतारकाम् रघु० ११।६९ 3. ज्ञान 4. 'दो' की संख्या 5. ग्रहदशा । अग्र० -- अग्रपक्षः सूर्य,- कर्णः साँप,--क्षयः दृष्टि की क्षीणता या हानि, धुंधला दिखाई देना,- गोचरः दृष्टि-परास, --जलम् आँसू,- क्षेपः क्या पराकोटि की दूरी को लम्बरेखा,--पथः दृष्टिपरास,- पातः दृष्टि, झलक, प्रिया सौन्दर्य, प्रभा, - भक्तिः (स्त्री०) प्रेमदृष्टि, अनुरागभरी चितवन,--लम्बनम् ऊर्ध्वाधर दिग्भेद, --विषः साँप,--श्रुतिः सर्प, साँप ।

दृशद् (स्त्री०) [दृषद्, पृषो०] पत्थर, दे० दृषद् ।

दृशा [दृश्+टाप्] आँख । सम०--आकाश्यम्--कमल, --उपमम् श्वेत कमल ।

दृशानः [दृश्+आनच्] 1. आध्यात्मिक गुरु 2. ब्राह्मण 3. लोकपाल, --नस् प्रकाश, उजाला ।

दृशिः, -शी (स्त्री०) [दृश्+इन्, दृशि+ङीष्] 1. आँख 2. शास्त्र ।

दृश्य (सं० कृ०) 1. देखे जाने योग्य, दर्शनीय 2. देखने के 3. सुन्दर, दृष्टिसुखद, प्रिय--रघु० ६।३१, कु० ७।६४, --श्यम् दिखाई देने वाला पदार्थ--मालवि० १।९ ।

दृश्वन् (वि०) [दृश्+क्वनिप्] (समासान्त में) 1. देखने वाला, दृष्टिगोचर करने वाला 2. (आलं०) परिचित, जानकार जैसा कि 'श्रुतिपारदृश्वा--रघु० ५।२४ तथा विज्ञानां पारदृश्वनः--१।२३ में ।

दृषद् (स्त्री०) [दृ+अदि, षुक्, ह्रस्वश्च] 1. चट्टान, बड़ा पत्थर--मेघ० ५५, रघु० ४।७४, भर्तृ० १।३८ 2. चक्की का पत्थर, शिला (जिस पर मसाला आदि पीसा जाय) ।--उपलः मसाला आदि पीसने के लिए सिल--(दृषदिमायकः चक्कियों से लिया जाने वाला कर) ।

दृषद्वत् (वि०) [दृषद्+वत्] पथरीला, चट्टान से बना हुआ,--ती एक नदी का नाम जो आर्यावर्त की पूर्वी सीमा बनाती है तथा सरस्वती नदी में मिलती है । तु० मनु० २।१७ ।

दृष्ट [भू० कृ० कृ०] [दृश्+क्त] 1. देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ, दृष्टिगोचर किया हुआ, पर्यवेक्षित निहारा हुआ 2. दर्शनीय, पर्यवेक्षणीय 3. माना गया, खयाल किया गया 4. घटित होने वाला, मिला हुआ 5. प्रकट होने वाला व्यक्त 6. जाना हुआ, मालूम किया हुआ 7. निर्धारित, निर्णीत, निश्चित 8. बेधा 9. नियत किया गया--दे० दृश्,--दृष्टम् डाकुओं से डर । सम०--अन्तः,--तन्त्र 1. उदाहरण, निदर्शन, दृष्टांत-कथा--पूर्णश्चन्द्रोदयाकांक्षी दृष्टान्तोऽत्र महार्णवः --शि० २।३३ 2. (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें कोई उक्ति उदाहरण देकर समझाई जाय (उपमा और प्रतिवस्तूपमा से भिन्न--दे० काव्य० १०, और रस० 3. शास्त्र या विज्ञान 4. मृत्यु (तु० दृष्टांत),--अर्थ (वि०) 1. जिसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट तथा व्यक्त हो 2. व्यावहारिक,--कष्ट,--दुःख जिसने मुसीबत झेली हों, कष्ट सहन करने का अभ्यस्त हो गया हो,--कूटम् पहेली, गूढ़ प्रश्न,--दोष (वि०) 1. जिसमें दोष देखा गया हो, जिसे अपराधी समझा गया हो 2. दुर्व्यसनी 3. जिसका भंडाफोड़ हो गया हो, जिसका पता लगा लिया गया हो,--प्रत्यय (वि०) 1. विश्वास रखने वाला 2. विश्वस्त,--रजस् (स्त्री०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह कन्या जो रजस्वला हो गई हो,—व्यतिकर (वि०) 1. जिसने रुष्ट और मुसीबतें झेली हों 2. जो आने वाले अनिष्ट को पहले ही से भांप लेता है।

दृष्टिः (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1. देखना, समीक्षण 2. मन की आंख से देखना 3. जानना, ज्ञान 4. आंख, देखने की शक्ति, नजर—केनेदानीं दृष्टं विलोभयामि —विक्रम० २, चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि—श० १।१४, —दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा —उत्तर० ६।१९, रघु० २।८, श० ४।२, देव दृष्टिप्रसादं कुरु—हि० १ 5. नजर, वितवन 6. विचार, भाव —क्षुद्रदृष्टिरेषा —का० १७३, एतां दृष्टिमवष्टभ्य—भग० १६।९ 7. विचार, आदर 8. बुद्धि, बुद्धिमत्ता, ज्ञान। सम० —कृत,—कृतम् स्थलपद्म, कुमुद,—क्षेपः निगाह डालना, अवलोकन करना,—गुणः तीर का निशाना, चांदमारी, लक्ष्य,—गोचर (वि०) दृष्टि-परास के अन्तर्गत, जो दिखाई दे, दृश्य,—पथः —दृष्टि-पास,—पातः 1. निहारना, निगाह डालना—मार्गं मृगप्रेक्षिणि दृष्टिपातं कुरुष्व —रघु० १३।१८, भर्तृ० १।११, ९४, ३।६६, 2. देखने की क्रिया, आंख का कार्य—रजःकणैर्विततदृष्टिपातः —कु० ३।३१, (मल्लि० 'पात' का अर्थ 'प्रभा' दर्शाते हैं जो हमारी समझ में अनावश्यक है), पूत (वि०) दृष्टिमात्र से पवित्र किया हुआ अर्थात् देख लिया कि किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं है,—दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम् —मनु० ६।४५,—बन्धुः जुगनू,—विक्षेपः कनखियों से देखना, कटाक्ष, तिरछी नजर,—विद्या नेत्र-विज्ञान, —विभ्रमः अनुराग भरी दृष्टि, हाव-भाव से युक्त नजर, -विषः सांप।

दृह्, दृंह् (भ्वा० पर०—दर्हति, दृंहति) 1. स्थिर या दृढ़ होना 2. विकसित होना, बढ़ाना 3. समृद्ध होना; 4. कसना।

दृ (दिवा० क्र्या० पर०—दीर्यति, दृणाति, दीर्णं) 1. फट जाना, टूट जाना, टुकड़े २ होना 2. फाड़ना, चीरना, विभक्त करना, विदीर्ण करना, खण्ड २ करना, टुकड़े २ करना। कर्मवा०—दीर्यते 1. फटना, टूटना, खण्ड २ होना,—कथमेवं प्रलपतां वः सहस्रधा न दीर्णमावयोः जिह्वया—वेणी० ३ 2. अलग करना, प्रेर०—दा —दारयति—ते 1. टुकड़े २ करना, चीर डालना, खोदकर विभक्त करना 2. तितर-बितर करना, बखेरना, वि, टुकड़े २ करना, फाड़ डालना, विभक्त करना, काट कर टुकड़े २ करना—ऐन्द्रिः किल नखैस्तस्या विदधार स्तनौ द्विजः—रघु० १२।२२, न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः—कु० ४।५, रघु० १४।३३ 2. फाड़ना (आल०)—चित्तं विदारयति कस्य न कोविदारः—ऋतु० ३।६, भग० १।१९, (अव, आ तथा प्र आदि उपसर्ग लगने पर धातु का अर्थ नहीं बदलता है)।

दे (भ्वा० आ० दयते, दात—इच्छा० दित्सते) रक्षा करना, पालना, पोसना।

देदीप्यमान (वि०) [दीप्+यङ+शानच्] अत्यंत चमक ने वाला, ज्योतिष्मान्, जगमगाता हुआ।

देय (वि०) [दा+यत्] 1. दिये जाने के लिए, उपहृत किये जाने के लिए—रघु० ३।१६ 2. दिये जाने के योग्य, भेंट के लिए उपयुक्त 3. वस्तु जो वापिस करने के लिए है, विभावितैकदेशेन देये महदभियुज्यते—विक्रमांक० ४।१७, मनु० ८।१३९, १८५।

देव् (भ्वा० आ०—देवते) 1. क्रीडा करना, खेलना, जूआ खेलना 2. विलाप करना 3. चमकना, परि—, विलाप करना, शोक मनाना।

देव (वि०) (स्त्री०—वी) [दिव्+अच्] दिव्य, स्वर्गीय —भग० ९।१९, मनु० १२।११७,—वः 1. देव, देवता —एको देवः केशवो वा शिवो वा—भर्तृ० ३।१२० 2. वर्षा का देवता, इन्द्र का विशेषण—यथा 'द्वादश वर्षाणि देवो न वर्षयं' में 3. दिव्य पुरुष, ब्राह्मण 4. राजा, शासक, जैसाकि 'मनुष्यदेव' में 5. ब्राह्मणों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि—जैसा कि 'गोविन्द देव, पुरुषोत्तमदेव' में 6. (नाटकों में) राजा को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि —ततश्च देव—वेणी० ४, यथाज्ञापयति देवः आदि 7. (समासान्त में) अपने देवता के रूप में—यथा मातृ०, पितृ०। सम०—अंशः भगवान् का अंशावतार —अगारः,—रम् मन्दिर,—अंगना स्वर्गीय देवी, अप्सरा, —अतिदेवः,—अधिदेवः 1. उच्चतम देवता 2. शिव का विशेषण,—अधिपः इन्द्र का विशेषण,—अंधस् (नपुं०) —अन्नम् 1. देवताओं का आहार, दिव्य भोजन, अमृत 2. वह भोजन जो पहले भगवान् की मूर्ति के आगे प्रस्तुत किया गया है—दे० मनु० ५।७ तथा इस पर कुल्लूक० भाष्य,—अभीष्ट (वि०) 1. देवताओं को प्रिय 2. देवता पर चढ़ाया हुआ, (—ष्टा) तांबूली, पान-सुपारी,—अरण्यम् बाग—रघु० १०।८०,—अरिः राक्षस,—अर्चनम्, —ना देवपूजा,—अवसथः मन्दिर, —अश्वः उच्चैःश्रवा का विशेषण, इन्द्र का घोड़ा, —आकीर्णः देवोद्यान, नन्दन वन,—आजीवः,—आजीविन् (पुं०) 1. भगवान् की मूर्ति का सेवक 2. एक नीचकोटि का ब्राह्मण जो मूर्ति की सेवा द्वारा, तथा मूर्ति पर आये हुए चढ़ावे से अपना जीवन-निर्वाह करता है,—आत्मन् (पुं०) गूलर का वृक्ष,—आयतनम् मन्दिर—मनु० ४।४६,—आयुधम् 1. दिव्य हथियार 2. इन्द्रधनुष,—आलयः 1. स्वर्ग 2. मन्दिर,—आवासः 1. स्वर्ग 2. अश्वत्थवृक्ष 3. मन्दिर 4. सुमेरु पहाड़, —आहारः अमृत, पीयूष,—इज्य (वि०) (कर्तृ० ए० व० देवेड्—ड) देवताओं की पूजा करने वाला,—इज्यः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवगुरु बृहस्पति का विशेषण,—**इन्द्रः**,—**ईशः** 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—**उद्यानम्** 1. दिव्य बाग 2. नन्दन वन 3. मन्दिर का निकटवर्ती बाग, —**ऋषिः** (देवर्षिः) 1. सन्त जिसने देवत्व प्राप्त कर लिया है, दिव्य ऋषि, यथा, अत्रि, भगु, पुलस्त्य, अंगिरस आदि—एक दार्शनिक देवर्षी —कु० २।४ (अर्थात् अंगिरस) 2. नारद का विशेषण—भग० १०।१३, २६, —**ओकस्** (नपुं०) सुमेरु पर्वत,—**कन्या** स्वर्गीय देवी, अप्सरा,—**कर्मन्** (नपुं०) **कार्यम्** 1. धार्मिक कृत्य या संस्कार 2. देवों की पूजा,—**काष्ठम्** देवदारु का वृक्ष,—**कुण्डम्** प्राकृतिक झरना, **कुलम्** 1. मन्दिर 2. देवों का समूह, **कुल्या** स्वर्गीय गंगा,—**कुसुमम्** छींग, —**खातम्**, —**खातकम्** 1. पर्वतों में बनी एक प्राकृतिक गुफा 2. एक प्राकृतिक तालाब या जलाशय मनु० ४।२०३ 3. मन्दिर का निकटवर्ती तालाब, **खिलम्** एक गुफा, कन्दरा,—**गणः** देवों की एक श्रेणी,—**गणिका** अप्सरा, —**गजेन्द्रम्** बादल की गड़गड़ाहट,—**गायनः** स्वर्गीय गायक, गन्धर्व,—**गिरिः** एक पहाड़ का नाम—मेघ० ४२,—**गुरुः** 1. (देवों के पिता) कश्यप का विशेषण 2. (देवों के गुरु) बृहस्पति का विशेषण,—**गृही** स्वर्गीय या उसके किनारे पर स्थित स्थान का विशेषण, —**गृहम्** 1. मन्दिर 2. राज-प्रासाद, —**चर्या** देवों की पूजा या सेवा, —**चिकित्सकौ** (द्वि० व०) देवों के वैद्य अश्विनीकुमार, —**छन्दः** १०० लड़ की मोतियों की माला,—**तरुः** 1. मुख्य का वृक्ष 2. स्वर्गीय वृक्षों (मंदार, पारिजात, संतान कल्प और हरिचंदन) में से एक, —**तादः** 1. आग 2. राहु का विशेषण,—**दत्तः** 1. अर्जुन के शंख का नाम —भग० १।१५ 2. कोई व्यक्ति (अनिश्चित रूप से किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त) देवदत्तः पचति, पौत्रो देवदत्तः दिवा न भुंक्ते आदि, —**दारु** (पुं०, नपुं०) देवदारु की जाति का पेड़—कु० १।५८, रघु० २।३६,—**दासः** मन्दिर का सेवक (—**ती**) 1. मन्दिर या देवों की सेविका 2. वेश्या (जिसे मन्दिर में नाचने के लिए लगाया गया हो),—**दीपः** आँख, —**दूतः** दिव्य संदेशवाहक, देवदूत,—**द्रुद्रुभिः** 1. दिग्भ ढोल 2. लाल फूलों वाला तुलसी का पौधा, —**देवः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. शिव—कु० १।५२ 3. विष्णु, —**द्रोणी** देवमूर्ति का जलूस,—**धर्मः** धार्मिक कर्तव्य या पद, —**नदी** 1. गंगा 2. कोई भी पावन नदी —मनु० २।१७, —**नन्दिन्** (पुं०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम, —**नागरी** एक लिपि का नाम जिसमें प्रायः संस्कृत भाषा लिखी जाती है, —**निकायः** देवावास, स्वर्ग, —**निन्दकः** देवताओं की निन्दा करने वाला, नास्तिक, —**निर्मित** (वि०) देवता द्वारा रचित, प्राकृतिक, —**पतिः** इन्द्र का विशेषण, —**पथः** 1. स्वर्गीय मार्ग, आकाश, अन्तरिक्ष 2. छायापथ,—**पशुः** देवता के नाम पर स्वच्छंद छोड़ा हुआ पशु,—**पुर**,—**पुरी** (स्त्री०) अमरावती का विशेषण, इन्द्र की नगरी,—**पुरुषः** बृहस्पति का विशेषण, —**प्रतिकृतिः** (स्त्री०) — **प्रतिमा** देवमूर्ति, देवता की प्रतिमा,—**प्रश्नः** बहादिसंबंधी जिज्ञासा, भविष्य सम्बन्धी प्रश्न, भविष्य की बातें बतलाना, —**प्रियः** देवों को प्रिय, शिव का विशेषण (**देवानांप्रियः**) एक अनियमित समास, इसका अर्थ है 1. बकरा 2. मूढ़, (पशु की भांति जड़—जैसाकि 'तेऽप्यतात्पर्यज्ञा देवानां प्रियाः' काव्य०),—**बलिः** देवताओं को दी जाने वाली आहुति,—**ब्रह्मन्** (पुं०) नारद का विशेषण,—**ब्राह्मणः** 1. वह ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मन्दिर से प्राप्त आय से कर लेता है, 2. आदरणीय ब्राह्मण,—**भवनम्** 1. स्वर्ग 2. मन्दिर 3. गुरुतर का वृक्ष,—**भूमिः** (स्त्री०) स्वर्ग,—**भूतिः** (स्त्री०) गंगा का विशेषण,—**भूयम्** देवत्व, दिव्यप्रकृति,—**भृत्** (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण,—**मणिः** 1. विष्णु की मणि, कौस्तुभ 2. सूर्य,—**मातृक** (वि०) वृष्टि के देवता तथा बादल ही जिसकी प्रतिपालिका माता हो, जिसे केवल वर्षा का जल ही लभ्य हो, जो सिंचाई को छोड़कर केवल वर्षा के जल पर ही निर्भर हो, (वह देश) जो और प्रकार की जलव्यवस्था से वंचित हो—**देशौ नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नाहिपीठितः**, **स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च** यथाक्रमम्—अमर०, तु० **वितन्वति क्षेममदेवमातृकाः** (अर्थात् नदीमातृका:) चिराय यस्मिन् कुरवश्चकासते —कि० ११।७,—**मानकः** विष्णु की मणि जिसे कौस्तुभ कहते हैं,—**मुनिः** दिव्य ऋषि,—**यजनम्** यज्ञभूमि, यज्ञस्थली —देवयजनसंभवे सीते—उत्तर० ४,—**यजिः** (वि०) देवताओं के आहुति देने वाला,—**यज्ञः** वह हवन जिसमें वरिष्ठ देवताओं के निमित्त अग्नि में आहुति दी जाती है, (गृहस्थों के पाँच नैतिक यज्ञों में से एक—मनु० ३।८१, ८५—दे० पंचयज्ञ),—**यात्रा** किसी देवप्रतिमा का जलूस, या सवारी निकालने का उत्सव,—**यानम्**, —**रथः** दिव्यरथ —,—**युगम्** चार युगों में से एक, कृतयुग, सतयुग,—**योनिः** अतिमानव प्राणी, उपदेव 2. दिव्य उत्पत्ति वाला,—**योषा** अप्सरा— **रहस्यम्** दैवी रज या रहस्य—**राजः**,—**राजः** इन्द्र का विशेषण,—**लता** नवमल्लिका लता, नेवारी—**लिङ्गम्** देवता की मूर्ति या प्रतिमा,—**लोकः** स्वर्गलोक, दिव्य-लोक मनु० ४।१८२, —**वज्रम्** आग का विशेषण,—**वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश, —**वर्धकिः**, **शिल्पिन्** (पुं०) विश्वकर्मा, देवताओं का शिल्पी —**वाणी** दिव्य वाणी, आकाशवाणी,—**वाहनः** अग्नि का विशेषण,—**व्रतम्** धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक व्रत (तः) 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,—**शत्रुः** राक्षस,—**शुनी** देवों की कुतिया सरमा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का विशेषण,—**शेषम्** देवनिमित्त किये गये यज्ञ का बचा हुआ अंश,—**श्रुतः** 1. विष्णु का विशेषण 2. नारद का विशेषण 3. पावन शास्त्र 4. देव, —**सभा** 1. देवताओं की सभा, सुधर्मा 2. जूए का घर, —**सभ्यः** 1. जुआरी 2. जूएघरों में प्रायः जाने वाला 3. देवसेवक, —**सायुज्यम्** किसी देवता से मिलकर एक हो जाना, देवसंयोजन, देवत्वप्राप्ति, —**सेना** 1. देवों की सेना 2. स्कन्द की पत्नी,—**स्कन्देन सालंकटिव देवसेनाम्**—रघु० ७।१ (मल्लि०—देवसेना—स्कन्दपत्नी—संभवतः यहाँ देवों की सेना का ही मूर्त रूप में वर्णन है) **पतिः** कार्तिकेय का विशेषण,—**स्वम्** देवों की संपत्ति, (धर्मकार्यों के निमित्त) देवार्पित संपत्ति -यद्धनं यज्ञशीलानां देवस्वंत द्विदुर्बुधाः —मनु० ११।२०, २६, —**हविस्** (नपुं०) बलिपशु ।

देवकी [देवक+ङीष्] देवककी एक पुत्री, वसुदेव की पत्नी, कृष्ण की माता । सम०—**नन्दनः** -पुत्रः—**मातृ**(पुं०) —**सूनुः** श्रीकृष्ण के विशेषण ।

देवटः [दिव्—अटन्] कारीगर, दस्तकार ।

देवता [देव+तल्—टाप्] 1. दिव्य प्रतिष्ठा या शक्ति, देवत्व 2. देव, सुर कु० १।१ 3 देव की प्रतिमा 4. मूर्ति 5. ज्ञान इन्द्रिय । सम० —**अगारः, रम्, -आगारः,—रभ्, गृहम्** मन्दिर,— **अधिपः** इन्द्र का विशेषण,—**अभ्यर्चनम्** देव पूजन,—**आयतनम्,—आलयः, —वेश्मन्** (नपुं०) मन्दिर देवालय, **प्रतिमा** देवमूर्ति प्रतिमा स्नानम् देवमूर्ति का स्नान ।

देवताध्यक्ष (वि०) [देवम् अधिकृत्य पूजयति—देव+अधि+अक्ष+घञ्] देवोपासक ।

देवत् (पुं०) [दिव+अति] पति का छोटा भाई, देवर ।

देवनः [दिव्+ल्युट्] पासा, —**नम्** 1. सौन्दर्य, दीप्ति, कान्ति 2. जूआ खेलना, पासे का खेल 3. खेल, क्रीड़ा, विनोद 4. प्रमोद-स्थल, प्रमोद-वाटिका 5. कैतव 6 स्पर्धा, आगे बढ़ जाने की इच्छा 7. मामला, व्यवसाय 8 प्रसंग, ना जूआ खेलना, पासे का खेल ।

देवयानी (स्त्री०) असुरगुरु शुक्राचार्य की पुत्री [एक बार देवयानी अपने पिता के शिष्य कच पर मोहित हो गई परन्तु कच ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया ! देवयानी ने उसे शाप दे दिया, बदले में कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि वह एक क्षत्रिय की पत्नी बनेगी । दे० 'कच' । एक बार देवयानी ईर्ष्या के राजा वृषपर्वा की पुत्री अपनी सखी शर्मिष्ठा के साथ स्नान करने गई, अपने वस्त्र उतार कर तट पर रख दिया । हवा से उनके वस्त्र बदल गये, जब उन्होंने बदले हुए वस्त्र पहने तो दोनों आपस में झगड़ने लगीं, यहाँ तक कि क्रोध में आकर शर्मिष्ठा ने देवयानी के मुँह पर तमाचा मारा और उसे एक कूएं में फेंक दिया ! सौभाग्य से ययाति ने उसे कूएं से निकाल कर उसके प्राणों की रक्षा की । उसके पश्चात् देवयानी के पिता को स्वीकृति से ययाति का देवयानी के साथ विवाह हो गया, और शर्मिष्ठा को देवयानी के प्रति अपने दुर्व्यवहार के कारण उसकी दासी बनना पड़ा । देवयानी ने ययाति के साथ कई वर्ष सुखपूर्वक बिताये, यदु और तुर्वसु नामक उसके दो पुत्र हुए । उसके पश्चात् ययाति शर्मिष्ठा पर आसक्त हो गया । इस बात से दुःखी होकर देवयानी ने अपने पति को छोड़ दिया तथा अपने पिता के घर चली आई । शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के कहने पर ययाति को बुढ़ापे की अवस्था का शाप दिया । दे० 'ययाति'] ।

देवरः, देवृ (पुं०) [दिव्+अरः, दिव्+ऋ] पति का भाई (चाहे छोटा हो या बड़ा) - मनु० ३।५५, ९।५९, याज्ञ० १।६८ ।

देवलः [दिव+ला+क] देवमूर्ति का सेवक, एक नीच कोटि का ब्राह्मण जिसका अपना निर्वाह देव-प्रतिमा पर प्राप्त चढ़ावे के ऊपर निर्भर है ।

देवलात् (अव्य०) [देव+लाति] देवताओं की प्रकृति के समान, ँभू बदल कर देवत्व बनना ।

दैविक (वि०) (स्त्री० -की), दैविल (वि०) [दिव+ठन्, दिव्+इलच्] 1. दिव्य, देवगुणों से युक्त 2. देव से प्राप्त ।

देवी [दिव्+अच्—ङीप्] 1. देवता, देवी 2. दुर्गा 3. सरस्वती 4. रानी— विशेषतः राज्याभिषिक्त रानी, (अग्रमहिषी—जिसने राज्याभिषेक के अवसर पर पति के साथ सब राज-संस्कारों में पत्नी के नाते भाग लिया हो) - प्रैषभारत सामेषु देवी शब्दलक्षणा सर्वा, स्नानीयसंस्क्रियया पतिरेणं वीपयुज्यते—मालवि० ५।१२, देवीभाव समिता परिग्रहपदं कथं भजेयेषा—काव्य० १० 5. सम्मानसूचक उपाधि जो सर्वश्रेष्ठ महिलाओं के साथ प्रयुक्त होती है ।

देशः [दिश्+अच्] 1. स्थान, जगह—देशः कोनु जलाशयैकशिखिलः—मृच्छ० ३।१२ इसी प्रकार 'स्कन्धदेशे' —श० १।१९, हारदेश, कण्ठदेश आदि 2. प्रदेश, मुल्क, प्रान्त - यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्—हि० १।१७।३ 3. विभाग, भाग, पक्ष, अंश (किसी 'पूर्ण' के) जैसा कि एक देश, एकदेशीय 4. संस्था, अध्यादेश । सम०—**अतिथिः** (पुं०) विदेशी, **अन्तरम्** दूसरा देश, विदेशी भाग मनु० ५।७८, —**अन्तरिन्** (पुं०) विदेशी, —**आचारः, धर्मः** स्थानीय कानून या प्रथा, किसी देश के रीति रिवाज मनु० १।१८८, **कालज्ञ** (वि०) उपयुक्त स्थान और समय को जानने वाला—ज्ञ, **जात** (वि०) 1. स्वदेशीय, स्वदेशोत्पन्न 2. ठीक देश में उत्पन्न 3. असली, खरा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्मलवंशोद्भव;—भाषा किसी देश की बोली,—रूपम् औचित्य, उपयुक्तता—व्यवहारः स्थानीय, प्रचलन, देशविदेश की प्रथा।

देशकः [दिश्—ण्वुल्] 1. शासक, राज्यपाल 2. शिक्षक, गुरु 3. पथ-प्रदर्शक।

देशना [दिश्+णिच्+युच्+टाप्] निर्देशन, अनुदेश।

देशिक (वि०) [दिश+ठन्] स्थानीय, किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, देशी—कः 1. आध्यात्मिक गुरु 2. यात्री 3. पथ-दर्शक 4. स्थानों से परिचित।

देशिनी [दिश्+णिनि+ङीप्] तर्जनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली।

देशी [देश+ङीष्] किसी देशविशेष की बोली, प्राकृत का एक भेद—दे० काव्या० १।३३।

देशीय (वि०) [देश+छ] 1. किसी प्रान्त से सम्बन्ध रखने वाला, प्रान्तीय 2. स्वदेशीय, स्थानीय 3. किसी देश का निवासी (समासान्त में) जैसा कि मगधदेशीय, महेशीय, बंगदेशीय आदि में 4. अदूर, लगभग, सीमान्तवर्ती (शब्दों के अन्त में प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त) —अष्टादशवर्षदेशीयां कन्यां वरयेत्—का० १३१, लगभग १८ वर्ष की लड़की (जिसकी आयुसीमा १८ हो) —रघु० १८।३९, इसी प्रकार 'परदेशीय' आदि।

देश्य (वि०) [दिश्+ष्यञ्] 1. जिसकी ओर संकेत करना हो, या जिसे प्रमाणित करना हो 2. स्थानीय, प्रान्तीय 3. देशी, स्वदेशी 4. असली, खरा, निर्मल वंशोद्भव 5. अदूर, लगभग—दे० ऊपर 'देशीय', —श्यः 1. चश्मदीद गवाह, —अभियोक्ता दिक्षेद्देश्यम्—मनु० ८।५२, ५३, किसी देशविशेष का निवासी, —श्यम् प्रश्नोक्ति, तर्कोक्ति, पूर्वपक्ष।

देहः—हम् [दिह्+घञ्] शरीर—देहं दहन्ति दहना इव गन्धवाहाः—भामि० १।१०४, दे० नी० समस्त शब्द। सम०—अन्तरम् अन्य (दूसरे का) शरीर, प्राप्तिः (स्त्री०) दूसरा जन्म लेना, —आत्मवादः भौतिकता, चार्वाकों के सिद्धान्त,—आवरणम् कवच, पोशाक,—ईश्वरः आत्मा, जीव,—उद्भव, —उद्भूत (वि०) शरीरज, सहज, जन्मजात—कर्तृ (पुं०) 1. सूर्य 2. परमात्मा 3. पिता, कोषः 1. शरीर का आवरण 2. पर, बाल 3. त्वचा, चमड़ा, क्षयः 1. शरीर का ह्रास 2. रोग, बीमारी,—गत (वि०) शरीर में प्राप्त, मूर्त्तरूप,—जः पुत्र,—जा पुत्री,—त्यागः 1. मृत्यु 2. इच्छामृत्यु, शरीर को छोड़ना,—तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वोर्देहत्यागात्—रघु० ८।९५, —दः पारा,—दोषः आँख, धर्मः शरीर के अंगों की क्रिया,—धारकम् हड्डी, —धारणम् जीना, जीवन,—धिः बाजू, कक्ष,—धृक् (पुं०) वायु, हवा,—बद्ध (वि०) मूर्त्त, सशरीर—रघु० ११।३५, —भाज् (पुं०) शरीरधारी, जीवधारी, विश्—पतः मनुष्य,—भुज् (पुं०) 1. जीव, आत्मा 2. सूर्य, भूत् (पुं०) जीवधारी, मनुष्य—भिगिमां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५१, भग० ८।४, १४।१४ 2. शिव का विशेषण 3. जीवन, जीवनशक्ति,—मात्रा 1. मरण, मृत्यु 2. पोषक पदार्थ, आहार,—लक्षणम् मस्सा, त्वचा के ऊपर काला तिल,—वायुः पाँच जीवनवायु में से एक, प्राणवायु,—सारः मज्जा,—स्वभावः शरीर का स्वभाव या गुण।

देहंभर (वि०) [देह+भृ+खच्, मुम्] पेटू, उदरंभरि।

देहवत् [देह+मतुप्] शरीरधारी, (पुं०) 1. मनुष्य 2. जीव।

देहला [देह+ला+क] मदिरा, शराब।

देहलिः, -ली (स्त्री०) [दिह्+ला+कि, देहलि+ङीष्] दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लांघ कर घर में घुसते निकलते हैं,—विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः—मेघ० ८७, मुच्छ० १।९। सम०—दीपः देहलीपर रक्खा हुआ दीपक, °न्यायः, दे० 'न्याय के अन्तर्गत।

देहिन (वि०) (स्त्री० -नी) [देह+इनि] शरीरधारी, शरीरी (पुं०) 1. जीवधारी प्राणी—विशेषतः मनुष्य —त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम्—कु० ४।१०, शि० २।४६ भग० २।१३, १७।२, मनु० १।२० ५।४१ 2. आत्मा, जीव (शरीर में प्रतिष्ठापित)—तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही —भग० २।२२, १३, ५।१४,—नी पृथ्वी।

दे (भ्वा० पर० दायति, दात) 1. पवित्र करना, शुद्ध करना 2. पवित्र होना, 3. रक्षा करना, अव—, 1. धोना करना, उज्ज्वल करना 2. पवित्र करना।

दैतेयः [दिति+ढक्] दिति का पुत्र, राक्षस, दैत्य, । सम०—इज्यः, —गुरुः,—पुरोधस् (पुं०) पूज्यः असुरों के गुरु शुक्राचार्य के विशेषण,—निषूदनः विष्णु का विशेषण, मातृ (स्त्री०) दिति दैत्यों की माता,—सेवजा पुष्करी।

दैत्यः [दिति—ण्य] दे० 'दैतेय'। सम०—अरिः 1. देवता 2. विष्णु का विशेषण,—देवः 1. विष्णु का विशेषण 2. वायु,—पतिः हिरण्यकशिपु का विशेषण।

दैत्या [दैत्य+टाप्] 1. औषधि 2. मदिरा।

दैन (स्त्री० -नी), **दैनंदिन** (स्त्री०—नी), **दैनिक** (स्त्री० -की) (वि०) [दिन+अण्, दिनं दिनं भवः दिनंदिन+अण्, दिन+ठञ्] आह्निक, प्रति दिन का, —मामि० १।१०३।

दैन्यम् न्यम् [दीन+अण्, ष्यञ् वा] 1. शरीरी, दरिद्रावस्था, दयनीय अवस्था, दुर्दशा—दरिद्राणा दैन्यम् —रघु० २, इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्ते बिभर्ति —मेघ० ७४ 2. कष्ट, खेद, विषाद, शोक, उत्साहहीनता 3. दुर्बलता 4. कमीनापन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दैनिकी [दैनिक+ङीप्] प्रतिदिन की मजदूरी, दिनभर की उजरत, ध्याड़ी।

दैर्घ्यम्,—र्घ्यम् [दीर्घ-|-अण्, ष्यञ् वा] लम्बाई, लम्बापन।

दैव (वि०) (स्त्री०—वी) [देव+अण्] देवों से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, स्वर्गीय -संस्कृत नाम दैवी वाग्-व्याख्याता महर्षिभिः—काव्या० १।३३, रघु० १।६० याज्ञ० २।२३५, भग० ४।२५, ९।१३, १६।३, मनु० ३।७५ 2. राजकीय,—वः (अर्थात् विवाहः) आठ प्रकार के विवाहों में से एक, [इसमें कन्या यज्ञ कराने वाले ऋत्विज् को ही दे दी जाती है]—यज्ञस्य ऋत्विजे देवः—याज्ञ० १।५९, (विवाह के आठ प्रकारों के लिए दे० 'उद्वाह' या मनु० ३।२१),—वम् 1. भाग्य, नियति, भवितव्यता, किस्मत—दैवमत्र न सिध्यति —मुद्रा० ३, बिना पुरुषकारेण दैवमत्र न सिध्यति —'भगवान् उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं',—दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्म-शक्त्या—पंच० १।३६१, **दैवात्** 1. संयोग से, भाग्यवश, अकस्मात् 2. देव, देवता 3. धार्मिक संस्कार, देवों को आहुति। सम०—**अत्ययः** दैवी उत्पात, आकस्मिक अनर्थ,—**अधीन,—आयत्त** (वि०) भाग्य पर निर्भर, —**दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्**—वेणी० ३।३३, —**अहोरात्रः** देवताओं का एक दिन अर्थात् मनुष्यों का एक वर्ष,—**उपहत** (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा —मुद्रा० ६।८,—**कर्मन्** (नपु०) देवताओं को आहुति देना,—**कोविद, चिन्तकः,—ज्ञः** ज्योतिषी, भविष्य-वक्ता, याज्ञ० १।३१३, काम० ९।२५,—**गतिः** (स्त्री०) भाग्य का फेर,—मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या—मेघ० ९६,—**तन्त्र** (वि०) भाग्य पर आश्रित,—**दोषः** आँख,—**दुर्विपाकः** भाग्य की निष्ठुरता भाग्य का बुरा फेर या प्रतिकूलता—उत्तर० १।४०, —**दोषः** भाग्य की कठोरता,—**पर** (वि०) 1. भाग्य पर भरोसा करने वाला, भाग्यवादी 2. भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध—**प्रश्नः** भविष्यकथन, ज्योतिष, —**युगम्** देवों का एक युग (१२००० दैववर्षों का एक युग माना जाता है, इस विषय में दे० मनु० १।७१ पर कुल्लू०),—**योगः** संयोग, इत्तिफ़ाक़ भाग्य, मौका —**दैवयोगेन दैवयोगात्** भाग्य से, अकस्मात्,—**लेखकः** भविष्यवक्ता, ज्योतिषी, —**वशः,—शम्** नियति का बल, भाग्य की अधीनता,—**वाणी** 1. आकाशवाणी 2. संस्कृत भाषा—नु० काव्या० १।३३ ऊपर उद्धृत, —**हीन** (वि०) भाग्यहीन, किस्मत का मारा, अभागा।

दैवकः [दैव+कन्] देवता।

दैवत (वि०) (स्त्री०—ती) [देवता+अण्] दिव्य,—तम् देव, देवता, दिव्यता—मूर्द्ध्ना दैवतं विप्रं घृतं मधु चतुष्पदं, प्रदक्षिणानि कुर्वीत—मनु० ४।३९, १।५३, अमर० ३ 2. देवों का समूह, देवताओं का पूरा समूह 3. देवमूर्ति (यह शब्द पुं० भी बतलाया जाता है परन्तु विरल प्रयोग है, मम्मट इस बात को शब्द का 'अप्रयुक्तत्व' दोष बतलाते हैं —दे० 'अप्रयुक्त')।

दैवतस् (अव्य०) [दैव |-तस्] संयोगवश, किस्मत से, भाग्य से।

दैवत्य (वि०) [देवता+ष्यञ्] किसी देवता को सम्बोधित, या अन्य—याज्ञ० १।९९, मनु० २।१८९,४।१२४।

दैवलः—लकः [देव+ला+क, देवल+अण्, दैवल+कन्] प्रेतपूजक, किसी दुष्ट आत्मा (भूत प्रेतादिक) का उपासक।

दैवारिः [देवारीन् असुरान् पाति आश्रयदानेन देवारिः समुद्रः, तत्र भवः -देवारिष अण्] शंख।

दैवासुरम् [देवासुरस्य वैरम्—अण्] देवताओं और राक्षसों के मध्य रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता।

दैविक (वि०) (स्त्री०—की) [देव+ठक्] देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, मनु० १।६५. ८।१०९, —कम् अवश्यम्भावी घटना।

दैविन् (पुं०) [देव—इनि] ज्योतिषी।

दैव्य (वि०) (स्त्री०—व्या,—व्यी) [देव+यञ्] दिव्य, —व्यम् किस्मत, भाग्य 2. दिव्य शक्ति।

दैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [देश+ठञ्] 1. स्थानीय, प्रादेशिक 2. राष्ट्रीय, समस्त देश से सम्बन्ध रखने वाला 3. स्थान सम्बन्धी 4. किसी स्थान से परिचित 5. अध्यापन करने वाला संकेतक, निर्देशक, दिखलाने वाला, कः 1. अध्यापक, गुरु 2. पथ दर्शक।

दैष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [दिष्ट+ठक्] भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध,—कः भाग्यवादी।

दैहिक (वि०) (स्त्री०—की) [देह+ठक्] शारीरिक, देहसम्बन्धी।

दैह्य (वि०) [देहे भवः—ष्यञ्] शारीरिक,—ह्यः आत्मा (शरीरगत)।

दो (दिवा० पर०—द्यति, दित—दातुं, प्रेर० दाययति, इच्छा० दित्सति) 1. काटना, बाटना 2. फसल काटना, अनाज काटना, अव—,काट डालना —यदन्यास्मन्यज्ञे क्षुच्य-वद्यति—शत०।

दोग्ध्र (पुं०) दुह्+तृच् 1. ग्वाल, दूध दोहने वाला, दूधिया मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे—कु० १।२ 2. बन्दीजन 3. चारण या भाट (वह भाड़े का कवि जो पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कविता की रचना करता है) 4. जो स्वार्थवश कोई कार्य करता है (अपने आप को लाभ पहुंचाने के लिए)।

दोग्ध्री [दोग्ध्र+ङीप्] 1. दुधारु गाय 2. दूध पिलाने वाली गाय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोषः [दुह्+घञ्] वछड़ा ।

दोरः [=डोर, नि० ह्रस्य दः] रस्सी, रज्जु ।

दोलः [दुल्+घञ्] 1. झूलना, डोलना, (घड़ी के लंगर की भांति इधर-उधर) हिलना 2. हिंडोला, डोली 3. फाल्गुनपूर्णिमा के दिन होने वाला उत्सव जब कि बालकृष्ण की मूर्तियों को हिंडोले में झुलाया जाता है ।

दोला, दोलिका [दोल+टाप्, दोल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. डोली, पालकी 2. हिंडोला, पालना (आल० भी) - आसीत्स दोलाचलचित्तवृत्तिः रघु० १४।३४, ९।४६, १९।४८, संदेहदोलासारोऽयं काल० २०७, २४६ 3. झूलना, घटबढ़ होना 4. संदेह अनिश्चितता । सम०—**अधिरूढ**,—**आरूढ** (वि०) (ना०) झूले पर सवार (आल०) अनिश्चित, अस्थिर, चंचल—**युद्धम्** सफलता की अनिश्चितता, वह युद्ध जिसमें हार-जीत का कुछ निश्चय न हो ।

दोलायते (ना० धा० आ०) 1. झूलना, इधर-उधर डोलना, इधर-उधर हिलना, घटबढ़ होना, आगे-पीछे होना (आल० भी) 2. चंचल या बेचैन होना ।

दोषः [दूष्+घञ्] (क) त्रुटि, धब्बा, निन्दा, कमी, लांछन, लचर दलील—पश्य तैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् -भर्तृ० २।९३, नाम्ब कुलप्रतिदेशिषं ब्रह्मोहत्यां यः ३, कुलपति इस बात को दोष नहीं मानते —सा धुनक्तदोषा—रघु० १४।९ (ख) भूल (अशुद्धि, गलती 2. जुर्म, पाप, कसूर अपराध —जागामदोषपुरुषं सत्यजामि—रघु० १४।३४, मनु० ८।२४५, याज्ञ० ३।७२ 3. अनिष्टकारी गुण, बुराई, क्षतिकारक प्रकृति या गुण —जैसा कि 'आहार दोष' में 4. हानि, अनिष्ट, भय, क्षति —बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८, को दोष (हममें क्या, हानि है) 5. बुरा फल, अनिष्टकारी फल, बाधक प्रभाव, -तस्किमदमातपदोषः स्यात् —सा० ३, अदात्ता वंशदोषेण कर्मदोषाद् दरिद्रता - चाणा० ४८, मनु० १०।१४ 6. विकृत व्याधि, रोग 7. शरीर के तीनों दोषों का कुपित होना, त्रिदोषकोप 8. (न्या० में) परिभाषा का दोष (अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव) 9. (अलं० में) रचना का एक दोष (पददोष, पदांशदोष, वाक्यदोष, रसदोष, और अर्थदोष जिनका वर्णन काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में किया गया है) 10. बछड़ा 11. तिरस्करण । सम० —**आरोपः** दोष लगाना, इलजाम लगाना, - **एकदृश्** (वि०) दोष ढूंढने वाला, दोषदर्शी छिद्रान्वेषी, **कर**, —**कृत्** (वि०) बुराई करने वाला, अनिष्टकर,—**दुष्ट** (वि०) 1. सिद्धदोष, अपराधी 2. दोषपूर्ण, त्रुटिपूर्ण, - **ग्राहिन्** (वि०) 1. विद्वेषी, दुर्भावनापूर्ण 2. छिद्रान्वेषी,—**ज्ञ** (वि०) दोषों का ज्ञाता (ज्ञः) 1. बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष—रघु० १।९३ 2. वैद्य,—**त्रयम्** शरीर के तीन दोष (अर्थात् वात, पित्त और कफ),- **दृष्टि** (वि०) दोषदर्शी, **प्रसङ्गः** कलंक लगाना, बदनामी, निन्दा, —**भाज्** (वि०) दोषी, अपराधी, सदोष ।

दोषणम् [दुष्+णिच्—ल्युट्] इलजाम लगाना, दोष मढ़ना ।

दोषन् (पुं०, नपुं०) (इस शब्द के सर्वनामस्थान (पहले पांच वचन, में रूप नहीं होते) भुज, बाहु ।

दोषल (वि०) [दोष+लच] दोषी, सदोष, भ्रष्ट ।

दोषस् (स्त्री०) [दुष्+असुन्] रात (नपुं०) अंधेरा ।

दोषा (अव्य०) [दुष्यन्ति अत्रकारणेभ्यः-दुष्+घञ्+टाप्] रात को, -दोषाप्रणि नूनमहिमांशुरुही क्लिष्टेति -शि० ४।४६, ६२, (स्त्री०) 1. भुजा 2. रात्रि का अंधेरा, रात —यमकालदिवस इव क्षपितदोषः का० ३७, (यहां शब्द का अर्थ 'दोष या पाप' भी है) । सम० - **आख्यः**, —**तिलकः** दीपक, लैम्प, **करः** चांद ।

दोषातन (वि०) (स्त्री० नी) [दोषा+टयु तुट्] रात को होने वाला, रात्रि विषयक—रघु० १३।७६ ।

दोषिक (वि०) (स्त्री० की) [दोष+ठन्] दोषी, बुरा, सदोष,—**कः** रात्रिका पहरा ।

दोषिन् (वि०) (स्त्री० णी) [दुष्—णिनि] 1. अपवित्र, दूषित, कलुषित 2. अपराधी, सदोष, मुजरिम, दुष्ट, बुरा ।

दोस् (पुं०, नपुं०) [दंश्यते अनेन दंस् : घञ्सि] (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् इस शब्द को विकल्प से 'दोषन्' आदेश हो जाता है) 1. अंसभुजा, भुजा—**तमुपाददे दुरुदयं दक्षिणं दोर्निशाचरः**—रघु० १५।२३, हेमगात्रगतं दोर्भ्यामिदधाने पयस्यत - १०।५१, कु० ३।७६ 2. धड़ का वह भाग जो बिजवा का निर्माण करता है । सम० - **गु** (वि०) (**दोर्गवु**) टेढ़ी भुजाओं वाला, -- **ग्रह**(**दोर्ग्रह**) (वि०) सबल, शक्तिशाली, (**हः**) भुजा में रहने वाले पीड़ा, - **ज्या** (**दोर्ज्या**) आधार की लंबरेखा, - **दण्डः** (**दोर्दण्डः**) डंडे जैसी भुजा, मजबूत भुजा—महावी० ७।८, भामि० १।१२८, —**मूलम्** (**दोर्मूलम्**) काख, बगल, - **युद्धम्** (**दोर्युद्धम्**) इन्द्रयुद्ध, कुश्ती—महावी० ५।३७, - **शालिन्** (वि०) (**दोःशालिन्**) प्रबल भुजाओं वाला, रणोत्सुक, वीर,—**वेणी०** ३।३२, - **शिखरम्** (**दोः शिखरम्**) कंधा, **सहस्रभृत्** (**दोःसहस्रभृत्**) (पुं०) 1. बाणासुर का विशेषण 2. सहस्रार्जुन का विशेषण,—**स्थः** (**दोस्थः**) 1. सेवक 2. सेवा 3. खिलाड़ी 4. खेल, क्रीडा ।

दोहः [दुह्+घञ्] 1. दोहना—आश्चर्यो नवो दोहोऽयमेषेन सिद्धान्, कु० १।२, रघु० २।२२, १७।१९ 2. दूध 3. दूध की बाल्टी । सम० - **अवनद्धः**,—**जम्** दूध ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोहदः, - दम् | दोहमाकर्षं ददाति -दा + क] गर्भवती स्त्री की प्रबल रुचि - प्रजावती दोहदमिनी ते -रघु० १४।४५, उपैरय का दोहददुःखशीलता यदेव बब्रे तदपश्यदाहृतम्--३।६, ७ 2. गर्भावस्था 3. काली आने के समय पौधों की इच्छा (उदाहरणतः अशोक चाहता है कि तरुणियाँ उसे ठोकर मारें, बकुल चाहता है कि उसके ऊपर मदिरा के कुल्ले किये जायें) --मद्दीरुहा दोहदमेकदाचरेाकाकिन कोरकमुद्गिरन्ति--नै० ३।२१, रघु० ८।६२, मेघ० ७८, दे० प्रियंगु 4. उत्कट अभिलाष-प्रवर्तिनमहासमरदोहदा. नरपतयः --वेणी० ४ 5. सामान्यतः कामना, इच्छा। समः --लक्षणम् 1. भ्रूण, गर्भ (दोहदलक्षण) 2. जीवन की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश।

दोहदवती | दोहद+मतुप्-ङीप्, वत्वम्] गर्भवती स्त्री जिसे किसी वस्तु की इच्छा हो।

दोहन (वि०) [दुह्+ल्युट्] 1. दोहने वाला 2. अभीष्ट पदार्थों को देनेवाला, - नम् 1. दोहना 2. दूध की बाल्टी, नी दूध की बाल्टी।

दोहलः [दोह+ला+क] दे० दोहद, यथा वहसि दोहलम् (अर्थे० पा०) ललितकामिसाधारणम्--मालवि० ३।१६।

दोहली [दोहल -ङीप्] अशोकवृक्ष।

दोह्य (वि०) [दुह्+ण्यत्] दुहने योग्य, दुहे जाने योग्य, - ह्यम् दूध।

दौः शील्यम् [दुःशील+ष्यञ्] बुरा स्वभाव, दुष्टता, दुर्भावना।

दौः साधिकः [दुःसाध+ठक्] 1. द्वारपाल, इंडीहीवान 2. गांव का अधीक्षक।

दौकू (कू) लः [दुकूल+अण्] रेशमी आवरण से ढका हुआ रथ, --लम् बढ़िया रेशमी वस्त्र।

दौत्यम् [दूत+ष्यञ्] संदेश, दूत का कार्य।

दौरात्म्यम् [दुरात्मन्+ष्यञ्] 1. दुष्टता, दुष्ट स्वभाव, दुर्भावना रघु० १५।७२ 2. दुर्जनता गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्याः नियुज्यन्ते --काव्य० १०।

दौर्गत्यम् [दुर्गत+ष्यञ्] 1. गरीबी, कमी, अभाव - पंच० २।९२ 2. दरिद्रता, दुःख।

दौर्गन्ध्यम् [दुर्गन्ध+ष्यञ्] बुरी या अरुचिकर गंध।

दौर्जन्यम् [दुर्जन+ष्यञ्] दुष्टता, दुर्भावना।

दौर्जीवित्यम् [दुर्जीवित+ष्यञ्] कष्टमय जीवन, विपद्ग्रस्त जीवन।

दौर्बल्यम् [दुर्बल+ष्यञ्] नपुंसकता, दुर्बलता, कमजोरी, निर्बलता--मनु० ८।१७१, भग० २।३।

दौर्भागिनेयः [दुर्भग+ढक्, इनङ्] अभागी स्त्री (जिसे उसका पति न चाहे) का पुत्र।

दौर्भाग्यम् [दुर्भग +ष्यञ्, उभयपदवृद्धिः] दुर्भाग्य, बदकिस्मती,--याज्ञ० १।२८३।

दौर्भ्रात्रम् [दुर्भ्रातृ +अण्] भाइयों का आपसी कलह।

दौर्मनस्यम् [दुर्मनस्+ष्यञ्] 1. बुरा स्वभाव, 2. मानसिक पीड़ा, कष्ट, खेद, विषाद 3. निराशा।

दौर्मन्त्र्यम् [दुर्मन्त्र+ष्यञ्] अनिष्टकारी उपदेश, बुरी सलाह--दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति भर्तृ० २।४२।

दौर्वंश्यम् [दुर्वंश+ष्यञ्] दुर्वचन, अपभाषण।

दौर्हृदम्, दौर्हृदकम् [दुर्हृद्+अण्] 1. मन की दुरवस्था, शत्रुता (इस अर्थ में 'दौर्हृद' भी) 2 गर्भावस्था - मुदक्षिणा दौर्हृदलक्षणं दधौ--रघु० ३।१ 3. गर्भवती की प्रबल लालसा 4. इच्छा।

दौर्हृद्यम् [दुर्हृद्+यञ् --अण्] मन की दुरवस्था, शत्रुता।

दौल्मिः [दुल्म--इञ्] इन्द्र का विशेषण।

दौवारिकः (स्त्री० की) [द्वार+ठक्, औ आगम] द्वारपाल, पहरेदार -रघु० ६।५१।

दौश्चर्यम् [दुश्चर+ष्यञ्] 1. दुराचरण, दुष्टता, दुष्कृत्य।

दौष्कुल (वि०) (स्त्री० ली), **दौष्कुलेय** (वि०) (स्त्री० यी)] [दुष्कुल अस्य वः सः, स्वार्थे अण्, दुष्ट कुलम् प्रा० स० -दुष्कुल+ढक्] नीच कुल में उत्पन्न, नीच घराने में उत्पन्न।

दौष्ट्यम् [दुष्ट+ष्या-कु--दुष्ट तस्य भावः अण्] बुराई, दुष्टता।

दौष्यं (ष्य) न्तिः [दुष्य (ष्म) न्त+इञ्] दुष्यंत का पुत्र दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य स० ४।२०।

दौहित्रः [दुहितृ+अञ्] दोहता, पुत्री का पुत्र--मनु० ३।१४८ ५।१३१, - त्रम् तिल।

दौहित्रायणः [दौहित्र+फक्] दोहते का पुत्र।

दौहित्री [दौहित्र+ङीप्] दोहती, पुत्री की पुत्री।

दौहृदिनी [दौहृद+इनि--ङीप्] गर्भवती स्त्री।

द्यु (अदा० पर०--द्योति) अक्षर होना, मुकाबला करना हमला करना, आक्रमण करना भट्टि० ६।११८, १४।१०४।

द्यु (नपुं०) [दिव्+उन्, कित्] 1. दिन 2. आकाश 3. उजाला 4. स्वर्ग (--पुं०) आग (पद अर्थात् व्यंजनादि विभक्तियों के आने पर 'दिव्' (स्त्री०) के स्थान में 'द्यु' आदेश होता है, या समासों में द्यु का प्रयोग होता है)। समः- गः पक्षी, --चरः 1. ग्रह, 2. पक्षी, - जयः स्वर्ग प्राप्त करना, --धुनिः (स्त्री०), --नदी स्वर्गगा, --निवासः देवता, सुरशोकापनिनीषया द्युनिवासभुवम्--भट्टि० २।२१, --पतिः 1. सूर्य 2. इन्द्र का विशेषण, --मणिः सूर्य, - लोकः स्वर्ग, --वधू, - सद् (पुं०) 1. सुर, देवता, --सिंधु १।४३ 2. ग्रह, --सरित् (स्त्री०) गंगा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्यूकः [द्यु+कन्] उल्लू। **-मम०** -अरिः कौआ।

द्युत् (भ्वा० आ० द्योतते, द्योतित या द्योतित—इच्छा० दिद्योतिषते, दिद्योतिषते) चमकना, उजला होना, जगमगाना—द्युतेन के यथा रविः—भट्टि० १४।१०४, ६।२६, ७।१०७, ८।८९, प्रेर० द्योतयति I प्रकाशित करना, देदीप्यमान करना—भट्टि० ८।४६ कु० ६।४ 2. स्पष्ट करना, व्याख्या करना, समझाना 3. अभिव्यक्त करना, अर्थ प्रकट करना **अभि** -, प्रेर० प्रकाश करना, चमकना, उज्ज्वल करना **उद्**—, प्रकाश करना, दीपक जलाना, सजाना, सुशोभित करना—रघु० १०। ८०. **वि** -, चमकना, उज्ज्वल होना—व्यद्योतिष्ट सभावेद्यामसौ नरशिखिशिखी—शि० २।३, १।२०।

द्युतिः (स्त्री०) [द्युत्+इन्] 1. दीप्ति, उजाला, कान्ति, सौन्दर्य—कान्तः कोऽपि संसर्गाद्याति मारकतीं द्युतिम्—शि० ५ ४१, मा० २।१०, रघु० ३।६४ 2. प्रकाश, प्रकाश की किरण—भर्तृ० १।६१ 3. महिमा, गौरव मनु० १।८७।

द्युतित (वि०) [द्युत्—क्त] प्रकाशित, चमकदार, उजाला।

द्युम्नम् [द्यु+म्नक्] 1. आभा, यश, कान्ति 2. बल, सामर्थ्य, शक्ति 3. वैभव, सम्पत्ति 4. प्रोत्साहन।

द्युमत् (पुं०) [द्यु+मतुप्] सूर्य।

द्यूतः—तम् [दिव्+क्त, ऊठ्] 1. खेलना, जूआ खेलना, पासे से खेलना—द्यूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम्—मृच्छ० २, द्यूतं लब्धं त्वयैवेदं द्यूतेनैव हृतं मम। द्यूतेनैव हृता भूमिर्द्यूतेनैव हृतं धनम्। अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते—मनु० ९। २२३ 2. जीता हुआ पुरस्कार। समः—**अधिकारिन्** (पुं०) द्यूतगृह का स्वामी, जूआ खिलाने वाला, **-करः** कृत् जूआ खेलने वाला, जुआरी—अयं द्यूतकरः शर्विलेन खलीकियते मृच्छ० २,—**कारः,—कारकः** 1. जूआघर का रखने वाला 2. जुआरी,—**क्रीडा** पासों से खेलना, जूआ खेलना,—**पूर्णिमा, पौर्णिमा** आश्विन मास की पूर्णिमा, (इस समय जन साधारण लक्ष्मी देवी के सम्मान में खेलों का उत्सव मनाते हैं),—**बीजम्** कौड़ी (खेलने के काम आने वाली), **-वृत्तिः** 1. पेशेवर जुआरी 2. जूआघर का रखवाला,—**सभा,—समाजः** 1. जूआखाना 2. जूआरियों का समूह।

द्यं (भ्वा० पर० द्यायति) 1 घृणा करना, तिरस्कार युक्त व्यवहार करना 2. विरूप करना।

द्यो (स्त्री०) [द्यु+क्विप्] ए० व० द्यौ] [द्युत्+डो] स्वर्ग, वैकुण्ठ, आकाश—द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च पंच० १।१८८, मा० २।१४, (द्वन्द्व समास में 'द्यो' को बदल कर 'द्यावा' हो जाता है—उदा० द्यावापृथिव्यौ, द्यावाभूमी (द्युलोक और भूलोक)। समः—**भूमिः** पत्नी, **सद्** (द्यौषद्) देवता।

द्योतः [द्युत्+घञ्] 1. प्रकाश, ज्योति, उजाला जैसा कि 'चन्द्रोद्योत' में 2. धूप 3. गर्मी।

द्योतक (वि०) [द्युत्+ण्वुल्] 1. चमकने वाला 2. प्रकाशमान 3. व्याख्या करने वाला, व्यक्त करने वाला, बतलाने वाला।

द्योतिस् (नपुं०) [द्युत्+इसुन्] 1 प्रकाश, उजाला, चमक 2. तारा। समः—**इङ्गणः** (ज्योतिरिङ्गणः) जुगनू।

द्रङ्क्षणम् [द्रांक्षति अनेन—द्रांक्ष्+ल्युट्] एक पुराना हलका भार का माप या बट्टा, एक तोला।

द्रढयति (ना० धा० पर०) 1. दृढ़ करना, जकड़ना, कसना (धा०) यथा जटाजूट ग्रन्थि द्रढयति 2. समर्थन करना, पुष्ट करना, अनुमोदन करना—निवेश. शैलानां अदिदर्शयिषुर्वृद्धिं द्रढयति—उत्तर० २।५७, विधुद्वेष्टस्फेटन्यधि तु मम भक्तिं द्रढयति ४।११।

द्रढिमन् (पुं०) [द्रढ्+इमनिच्] 1. कसाव, दृढ़ता, बन्धन दायेव द्रढिमरमणीयं परिकरम् गंगा० ४७ 2. पुष्टि, समर्थन उक्तस्यार्थस्य द्रढिम्ने—शंकर 3. प्रबन्धन, पुष्टीकरण 4. गुरुता।

द्रप्सम् [द्रप्स्यम्] [द्रप्सति अनेन द्रप्स्+घञ्, ए आदेश] जमे हुए दूध का छोप, पतला दही।

द्रम् (भ्वा० पर० द्रमति) इधर-उधर जाना, दौड़ना, इधर उधर भागना—भट्टि० १४।७०।

द्रम्मम् [ग्रीक शब्द से व्युत्पन्न] 'द्रम्म' नाम एक प्रकार का सिक्का।

द्रव (वि०) [द्रु+अप्] 1. (घोड़े की भांति) दौड़ने वाला 2. चूने वाला, रिसने वाला, गीला, टपकने वाला—आक्षिप्य काचिद् द्रवरागमेव (पादम्)—रघु० ७।७ 3. बहने वाला, पनीला 4. तरल (विप० कठिन)—कु० २।११ 5. पिघला हुआ, तरल बनाया हुआ, **-वः** 1. जाना, इधर-उधर घूमना, गमन 2. गिरना, टपकना, रिसना, निःस्रवण 3. भगदड़, प्रत्यावर्तन 4. खेल, विनोद, क्रीडा 5. तरलता, द्रवीकरण 6. तरल पदार्थ, प्रवाही 7. रस, सत 8. काढ़ा 9. चाल, वेग (**द्रवीकृ**—पिघलाना, तरल करना, **द्रवीभू**—पिघलना, पसीजना जैसे दया से—द्रवीभवति मे मनः, महावी० ७।२४, द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव—उत्तर० ३।१३, द्रवीभूतं मन्ये पतति जलरूपेण गगनम्—मृच्छ० ५।२५.)। समः—**आधारः** 1. छोटा बर्तन या पात्र 2. चुल्लू, **-जः** राल, **द्रव्यम्** तरल पदार्थ,—**रसा** 1. लाख 2. शोंद।

द्रवन्ती [द्रु+शतृ+ङीप्] नदी, दरिया।

द्रविडः (पुं०) 1. दक्षिण के घाट पर स्थित एक देश—अस्ति द्रविडेषु काञ्ची नाम नगरी—दश० १३० 2. उस देश का निवासी—जगद्द्रविडधामिकस्येव लुप्तः निसृष्टेः का० २२९ 3. एक नीच जाति—तु० मनु० १०।२२।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रविणम् [दु+इनन्] 1. दौलतमन्दी, धन, संपत्ति, द्रव्य —जैगी० ३।२०, भामि० ४।२९ 2. सोना - रघु० ४।७० 3. सामर्थ्य, शक्ति 4. वीरता, विक्रम 5. वात, सामग्री सामान। सम०—**अधिपतिः, ईश्वरः** कुबेर का विशेषण।

द्रव्यम् [द्रु+गत्] 1. वस्तु, सामग्री, पदार्थ, सामान 2. अवयव, उपादान 3. सामग्री 4. उपयुक्त पात्र (शिक्षादि ग्रहण करने के लिए) मुद्रा० ७।१४, दे० 'अद्रव्य' भी 5. मूल तत्त्व, गुणों का आधार, वैशेषिकों के सात प्रवर्गों में से एक (द्रव्य नौ हैं पृथिव्यप्तेजोवायवाकाशकालदिगात्ममनांसि) 6. स्थायीकृत कोई पदार्थ, दौलत, सामग्री, संपत्ति, धन —तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जनः— उत्तर० २।१९ 7. औषधि, दवाई 8. लज्जा, शालीनता 9. कांसा 10. मदिरा 11. सर्त, दाँव। सम०—**अर्जनम्, —वृद्धिः, —सिद्धिः** (स्त्री०) धन की अवाप्ति,—**ओघः** सम्पन्नता, धन की बहुतायत,—**परिग्रहः** संपत्ति या धन का संचय, **प्रकृतिः** (स्त्री०) माया का स्वभाव,—**संस्कारः** यज्ञ के पदार्थों का शुद्धीकरण, —**वाचकम्** संज्ञा, सत्तासूचक।

द्रव्यवत् (वि०) [द्रव्य+मतुप्] 1. धनी दौलतमंद 2. सामग्री में अन्तर्निहित।

द्रष्टव्य (सं० कृ०, वि०) 1. देखे जाने के योग्य, जो दिखलाई दे सके 2. प्रत्यक्षज्ञानयोग्य 3. देखने, अनुसंधान करने या परीक्षा करने के योग्य 4. प्रिय, दर्शनीय, सुन्दर त्वया द्रष्टव्यानां परं दृष्टम् मा० २, भर्तृ० १।८।

द्रष्टृ (पुं०) [दृश्+तृच्] 1. दर्शक, मानसिक रूप से देखने वाला, जैसाकि 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः' में 2. न्यायाधीश।

द्रहः [—ह्रद पृषो० साधु:] गहरी झील।

द्रा (अदा० दिवा० —द्राति, द्रायति) 1. सोना 2. दौड़ना, शीघ्रता करना 3. उड़ना, भाग जाना, नि —नींद जाना, सोना, सो जाना —अयावलंब्य श्रमसेकपद्धिका तदा निदाघातपखिन्नया लता: —नै० १।२१, नायं ते समयो रहःप्रमथना निद्राति नाथः —भर्तृ० ३।९७, भामि० १।४१, भट्टि० १०।७४, **आ०** ४।१९, **वि०**—उड़ान भरना, भाग जाना, उड़ना।

द्राक् (अव्य०) [द्रा+कु] जल्दी से, तुरन्त, उसी समय तत्काल। सम०—**भूतकम्** कुएँ से अभी २ निकाला हुआ जल।

द्राक्षा [द्राक्ष्+टाप्, नि० नलोपः] अंगूर, दाख (अंगूर की बेल या फल) डाले द्रक्षन्ति के स्वाम् गीत० १२, रघु० ४।६५, भामि० १।१४, ४।३९। सम०—**रसः** अंगूर का रस, मदिरा।

द्राघयति (ना० धा० पर०) 1. लम्बा करना, फैलाना, विस्तार करना 2. बढ़ाना, गाढ़ा करना —द्राघयति हि मे जोषं स्मर्यमाणा गुणास्तव —भट्टि० १४।३३ 3. ठहरना, देर करना।

द्राघिमन् (पुं०) [दीर्घ+इमनिच्, द्राघ् आदेशः] 1. लम्बाई 2. अक्षांश रेखा का दर्जा।

द्राघिष्ठ (वि०) [अतिशयेन दीर्घः दीर्घ+इष्ठन्, द्राघ् आदेशः] 1. सबसे अधिक लम्बा 2. अत्यन्त लम्बा, (दीर्घ की उ० अ०)।

द्राघीयस् (वि०) (स्त्री० —सी) [दीर्घ+ईयसुन्, द्राघ् आदेशः] अपेक्षाकृत लम्बा, बहुत लम्बा ('दीर्घ' का म० अ०)।

द्राण (वि०) [द्रा+क्त, नत्वं, णत्वम्] 1. उड़ा हुआ, भागा हुआ, 2. सोता हुआ, निद्रालु,—**णम्** 1. दौड़ जाना, भगदड़, प्रत्यावर्तन 2. निद्रा।

द्राप्सः [द्रा+सिप्+अच्, पुक्] 1. कीचड़, दलदल 2. रक्त, आकाश 3. सूर्य, जल 4. शिव का विशेषण, छोटा शंख।

द्रामिलः [द्रमिल+अण्] चाणक्य।

द्रावः [द्रु+घञ्] 1. भगदड़, प्रत्यावर्तन 2. चाल, 3. दौड़ना, बहाव 4. गर्मी 5. पतलीकरण, पिघलना।

द्रावकः [द्रु+णिच्+ण्वुल्] 1. पिघलाने वाला पदार्थ 2. अग्निकान्त मणि सूर्यकान्त मणि 3. चन्द्रकान्त मणि 4. चोर 5. बुद्धिमान् पुरुष, परिहास चतुर, ठिठोलिया, विदूषक 6. लोफर, अपेशिचारों,—**कम्** सीसा।

द्रावणम् [द्रु+णिच्+ल्युट्] 1. भाग जाना 2. पिघलना, गलना 3. अर्क निकालना 4. रोटा।

द्राविडः [द्रविड+अण्] 1. द्रविड देश निवासी, द्रविड का 2. पाँच द्राविड (द्राविड, कर्णाट, गुर्जर, महाराष्ट्र, और तैलंग) ब्राह्मणों में एक **डाः** (ब० व०) द्रविड देश तथा उसके निवासी,—**डी** इलायची।

द्राविडकः [द्राविड+कन्] आमाहल्दी, —**कम्** काला नमक।

द्रु I (भ्वा० पर० द्रवति, द्रुत, इच्छा० दुद्रूषति) 1 दौड़ना, बहना, भाग जाना, पलायन करना (प्रायः कर्तृ० के साथ) नक्षत्रा तरीनां बहुवोऽप्युदेषाः सदृङ्मेवाभिमुखं द्रवन्ति —भाग० ११।२८, रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति ३६, दूरे द्रवा कौरवाः —महा० 2. धारा बहाना, द्रवित करना, पसीजना, पिघलना, रिसना (आलं० भी) - द्रवति व हिमरश्मावुदगते चन्द्रकान्तः - मा० १।२८, द्रवति हृदयमेतत् —वेणी० ५।२१, शि० १।९, भट्टि० २।१२ 4. जाना, हिलना डुलना। **परे०** द्रावयति —ते 1. भगा देना, उलटे पाँव भगा देना 2. पिघलना, गलना,—अन्त —,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

1. पीछे भागना, अनुसरण करना, साथ जाना--रघु० ३।३८, १२।६७, १६।४५, शि० १।५२ 2. सीखा करना, पैरवी करना, **अभि** , 1. हमला करना, धावा बोलना, (शत्रु के सामने) जाना--गजा इवान्योन्यमभिद्रवन्तः मुच्छ० ५।२१ 2. आ पड़ना 3. ऊपर से चले जाना, **उप** , 1. हमला करना, आक्रमण करना स्फु० १।१७ 2. की ओर भागना, **प्र** , भाग जाना, प्रत्यावर्तन, दौड़ जाना (कर्म० या अव्य० के साथ)--रथात्प्रद्रवन्ति कलानि वेणी० ४, भट्टि० १५।७९, **प्रति** , भागना, उड़ना, चले जाना--भट्टि० ६।१७, **वि** —, भागना, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, फेरू --भगा देना, विदका देना, तितर बितर कर देना - भट्टि० १५।२ मा० ३।

ii (स्वा० पर० द्रवति) 1. क्षति पहुँचाना, अनिष्ट करना- त द्रवाविद्रिया कपिः भट्टि० १४।८१, ८५ 2. जाना 3. पछाड़ना।

द्रु (पुं० नपुं०) - द्रु+डु] 1. लकड़ी 2. लकड़ी का बना उपकरण (पुं०) 1. वृक्ष मनु० ७।१३१ 2. शाखा। समः -किलिम देवदारु वृक्ष,-- घणः 1. मोगरी, गदा या धारी 2 बढ़ई की हथौड़ी जैसा लोहे का आकरण 2. कुठार, कुल्हाड़ी 4. ब्रह्मा का विशेषण, स्त्री कुल्हाड़ी, **नखः** काँटा, **नस** (नस) (वि०) बड़ी नाक वाला, -- न(ण)हः स्थान, **सल्लकः** एक वृक्ष विशाल।

द्रुणः [द्रु् +क] 1. बिच्छू 2. मधुमक्खी 3. बदमाश **णम्** 1. धनुष 2. तलवार। समः हः असिकोष, म्यान।

द्रुणा] द्रुण --टाप्] धनुष की डोरी।

द्रुणिः, --णी (स्त्री०) [द्रु्+इन्, द्रुणि+ङीष्] 1. एक छोटा कछुवा या कछुवी 2. डोल 3. काननखजूरा

द्रुत (भू० क० कृ०) [द्रु+क्त] 1. आशुगामी, फुर्तीला, दुरगामी 2. धावा हुआ, भागा हुआ, पलायित 3. पिघला हुआ, तरल, घुला हुआ। दे० द्रु, -तः 1. बिच्छू 2 बुध 3. बिल्ली, **तम्** (अव्य०) जल्दी से, फुर्ती से, वेग से, शीघ्रता। समः --पद (वि०) अनुगामी, **विलम्बितम्** एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट।

द्रुतिः (स्त्री०) [द्रु--क्तिन्] 1. पिघलना, घुलना, 2. चले जाना, भाग जाना।

द्रुपदः (पुं०) पांचाल देश के एक राजा का नाम (द्रुपद के पिता का नाम पृषत था, द्रुपद और द्रोण दोनों ने द्रोण के पिता भरद्वाज से धनुर्विद्या सीखी। जब द्रुपद को राजगद्दी मिल गई तो एक बार आर्थिक कठिनाइयों में ग्रस्त होने के कारण द्रोण अपनी छात्रावस्था की मित्रता के आधार पर द्रुपद के पास गया, परन्तु उसने घमंड के कारण द्रोण का अपमान किया। इस कारण द्रोण ने उसे अपने शिष्यों (पाण्डव) द्वारा पकड़वा कर बन्दी बनाया--फिर उसका आधा राज्य उसे वापस कर दिया। परन्तु यह हार द्रुपद के मन में सदैव करकती रही, और एक ऐसा पुत्र पाने की इच्छा से जो उस हार का बदला ले सके, उसने एक यज्ञ किया। उस यज्ञाग्नि से धृष्टद्युम्न नामक पुत्र तथा द्रौपदी नाम की पुत्री ने जन्म लिया। बाद में इसी पुत्र ने धोखे से द्रोण का सिर काट लिया, दे० 'द्रोण' भी)।

द्रुमः [द्रु+मक्] 1. वृक्ष,--गत द्रुमा अपि मृगा अपि वन्धवो मे - उत्तर० ३।८ 2. पारिजात वृक्ष। समः--अरिः हाथी,-- आलयः लाख, गोंद, - आश्रयः छिपकली, **ईश्वरः** 1. ताड़ का वृक्ष 2. चन्द्रमा 3. पारिजात वृक्ष, --उत्पलः काँचकार वृक्ष, -- नखः,--मरः काँटा,--व्याधिः लाख, गोंद, --श्रेष्ठः ताड़ का वृक्ष,--षण्डम् वृक्षोद्यान, पेड़ों का समूह।

द्रुमिणी [द्रुम+इनि+ङीष्] वृक्षों का समूह।

द्रुवयः [द्रु—वय] साप, सांप।

द्रुह् (दिवा० पर० द्रुह्यति, द्रुग्ध) 1. ईर्ष्या द्वेष करना, क्षति या द्वेष पहुँचाने की चेष्टा करना, द्वेषपूर्वक बदला लेने की इच्छा से षड्यन्त्र रचना (सम्प्र०) - मामेवैते मां द्रुह्यन्ति मत्प्रसूतेव सापत्न्येष्वात्मिश्च तवालिवर्गः नै० ३।७, भट्टि० ४।३९, **अभि** —, क्षति पहुँचाना, हमला करने का प्रयत्न करना:, षड्यन्त्र रचना (कर्म० के साथ)--मच्छरीरमभिद्रोग्धुं यतते--मुद्रा० १।

द्रुह् (वि०) [द्रुह्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयोग) (कर्तृ० ए० व० ध्रुक् स्, ध्रुट्,--ड्) क्षति पहुँचाने वाला, चोट पहुँचाने वाला, षड्यन्त्र कारी, शत्रुवत् व्यवहार करने वाला--शि० २।३५, मनु० ४।९०, (स्त्री०) --क्षति, हानि।

द्रुहः [द्रुह्+क] 1. पुल 2. सरोवर, झील।

द्रुहणः, द्रुहिणः [द्रु संसारगति हन्ति—द्रु+हन्+अच्, द्रुह्यति दुष्टेभ्यः, द्रुह्+इनन् शाश्वम्] ब्रह्मा या शिव का नाम।

द्रूः [द्रु+क्विप्, दीर्घः] सोना।

द्रूणः [—द्रुण+क, पृषो० साधुः] हथौड़ा, लोहे का हथौड़ा, दे० 'द्रुघण'।

द्रोणः [—द्रुण+अच्, या द्रु+क] 1. चार सौ बांस लम्बी झील, या सरोवर 2. बादल (विशेष प्रकार का बादल) जल से भरा बादल (जिससे वर्षा इस प्रकार निकले जैसे डोल में से पानी) कोऽयमेवविधे काले कालपाशायिते यधि, अनावृष्टिहते शस्ये द्रोणमेव ह्यवोदितः,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूच्छ० १०।२६ 3. पहाड़ी कौवा, मुरदारखोर कौवा 4. बिच्छू० 5. वृक्ष 6. सफेद फूलों वाला वृक्ष 7. कौरव पाण्डवों का गुरु (द्रोण भरद्वाज ऋषि का पुत्र था, इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि घृताची नामक अप्सरा को देखते ही जब उनका वीर्यपात हुआ तो उन्होंने उसको एक द्रोण में सुरक्षित रक्खा। जन्म से ब्राह्मण होने पर भी द्रोण ने परशुराम से शस्त्रास्त्र विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। बाद में धनुर्विद्या और शस्त्र चालन द्रोण ने कौरव पाण्डवों को सिखलाया। जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा, और जब भीष्म घायल होकर 'शरशय्या पर' लेट गये तो कौरवसेना को बागडोर द्रोण ने संभाली तथा चार दिन तक युद्ध करके पाण्डव पक्ष के हजारों योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। युद्ध के पन्द्रहवें दिन रात को भी संग्राम होता रहा और फिर सोलहवें दिन प्रातःकाल कृष्ण के सुझाव पर भीम ने द्रोण को सुना कर कहा कि अश्वत्थामा मारा गया (तथ्य यह था कि अश्वत्थामा नाम का हाथी युद्ध में काम आया था) इस पर विश्वास न कर इस तथ्य की यथार्थता जानने के लिए उसने सत्यवादी युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर ने भी, कृष्ण के परामर्शानुसार, बात को छलपूर्वक टाल दिया। उन्होंने 'अश्वत्थामा' शब्द को ऊँचे स्वर से उच्चारण किया तथा 'गज' शब्द को धीमे स्वर से—दे० वेणी० ३।९, अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु का समाचार सच समझ कर अत्यन्त शोकग्रस्त हो बूढ़ा पिता मूर्च्छित हो गया। उसी समय धृष्टद्युम्न ने (जिसने द्रोण को मारने की प्रतिज्ञा की थी) उस अवसर से लाभ उठाकर द्रोण का सिर काट डाला। —णः,—णम् एक विशेष तोल का बट्टा, या तो एक आढक या चार आढक, अथवा खारी का १/१६ भाग, या ३२ अथवा ६४ सेर,—णम् 1. काष्ठ पात्र, प्याला, कठौता 2. लकड़ी की कूण्ड या खोर। सम०—आचार्यः दे० ऊ० द्रोण,—काकः पहाड़ी कौवा,—क्षीरा,—द्या,—द्युग्धा, दुग्धा एक द्रोण दूध देने वाली गाय,—मुखम् ४०० गाँव की राजधानी, मुख्य नगर।

द्रोणिः,—णी (स्त्री०) [द्रु+नि, द्रोणि+ङीप्] 1. लकड़ी का बना एक अण्डाकार पात्र जिसमें पानी रक्खा है, अथवा पानी जिससे बाहर निकालते हैं, डोल, चिलमची कुप्पी 2. जलाधार 3. काठ की खोर 4. दो शूर्प या १२६ सेर के बराबर धारिता की माप 5. दो पहाड़ों के बीच की घाटी द, वह—द्रोणीशैलकान्तारप्रदेशमधिति-ष्ठतो माधवस्यान्तिके प्रयामि—मा० ९, हिमवद् द्रोणी। सम०—द्रुमः केतक का पौधा।

द्रोहः [द्रुह्+घञ्] 1. किसी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना, आघात या आक्रमण करने की चेष्टा, क्षति, उपद्रव, ईर्ष्या—अद्रोहायैव कृत्वा—पंच० २।३५, भग० १।३७, मनु० २।१६१ ७।४८, ९।१७ 2. धोखा, विश्वासघात 3. अन्याय, दोष 4. विद्रोह। सम०—अटः 1. पाखंडी, धूर्त, छद्मवेषी 2. शिकारी 3. झूठा मनुष्य,—चित्तम् ईर्ष्यायुक्त विचार, अपकार चिन्ता, हानि पहुँचाने का इरादा—बुद्धि (वि०) उपद्रव करने पर उतारू या दूषित व्यवहार पर तुला हुआ (स्त्री० द्रिः) दुष्ट प्रयोजन, दुराशय।

द्रौणायनः,—निः,—द्रौणिः [द्रोण+फक्, फिञ् या, द्रोण +इञ्] अश्वत्थामा का विशेषण—यदाभेम कृतं तदेव कुरुते द्रौणायनिः क्रोधनः—वेणी० ३।२१।

द्रौपदी [द्रुपद+अण्+ङीप्] पांचालराज द्रुपद की पुत्री का नाम (स्वयम्बर में अर्जुन ने इसे प्राप्त किया। जब उन्होंने घर आकर अपनी माता कुन्ती को कहा कि आज हमने बड़ी अच्छी वस्तु प्राप्त की है। तब माता ने कहा कि सब आपस में बांट लो। क्योंकि कुन्ती के मुख से निकली बात कभी झूठी नहीं हो सकती अतः वह पाँचों भाइयों की पत्नी बनी। जब युधिष्ठिर जूए में अपने राज्य को हार गया, द्रौपदी को हार गया, यहाँ तक कि अपने आप को भी हार गया तो दुःशासन ने और दुर्योधन की पत्नी ने उसका बड़ा अपमान किया। परन्तु इस प्रकार के अपमान को द्रौपदी ने असाधारण सहिष्णुता के साथ सहन किया। और जब कभी, कई अवसरों पर उसको तथा उसके पतियों की परीक्षा ली गई तो उसने उनके मान की रक्षा की (जैसे कि उस समय जब दुर्वासा ऋषि ने अपने साठ हजार शिष्यों के लिए रात को भोजन माँगा)। अन्त में एक दिन उसकी सहिष्णुता समाप्त हो गई और उसने अपने पतियों की कड़े ताने के साथ उसी लहजे में कहा जिसमें कि वह अपने शत्रुओं से प्राप्त क्षति और अपमान का कड़वा घूंट पी रहे थे—दे० किरा० १।२९-४६, —इसी के फलस्वरूप पाण्डवों ने युद्ध करने का दृढ़ संकल्प किया। यह उन पांच सती स्त्रियों में से है जो प्रातः स्मरणीय समझी जाती हैं दे० अहल्या)।

द्रौपदेयः [द्रौपदी+ढक्] द्रौपदी का पुत्र—भग० १।६।१८।

द्वन्द्वः [द्वौ वा महाभिव्यक्तौ—द्वि शब्दस्य द्वित्वम्, पूर्वपदस्य अभावः, उत्तरपदस्य नपुंसकत्वम्, नि०] घड़ियाल जिस पर प्रहार करके घंटों को सूचना दी जाती है, —न्द्वम् 1. जोड़ा, जन्तु युगल, (मनुष्ययुगल भी) 2. स्त्री-पुरुष, नर-मादा—इन्द्वानि भाव क्रियया विवव्रुः—कु० ३।३५, मेघ० ४६, न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत्—कु० ७।६६, रघु० १।४०, अ० २।१४, ७।२७ 3. दो वस्तुओं का जोड़ा, दो विरोधी अवस्थाओं या गुणों का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोड़ा, (जैसे कि सुख-दुःख, शीत और उष्ण)---इन्द्वैर-योजयन्वैधाः सुखदुःखादिभिः प्रजाः---मनु० १।२६, ६।८१, सर्वत्रनिर्वृतिकरे निवसन्नपैति न द्वन्द्वदुःखमिह किंचिदकिंचनेऽपि --शि० ४।६४ 4. झगड़ा, लड़ाई, कलह, टण्टा, युद्ध 5. कुश्ती 6. संदेह, अनिश्चिति 7. किला, गढ़ 8. रहस्य,- द्वः (व्या० में) समास के चार मुख्य भेदों में से एक जिसमें दो या दो से अधिक शब्द एक साथ जोड़ दिये जाते हैं, जो कि असमस्त होने की अवस्था में एक ही विभक्ति के रूप 'और' (समुच्चय बोधक अव्यय) अव्यय से जोड़े जाते -चार्थे द्वन्द्वम्---पा० २।२।२९, द्वन्द्वः सामासिकस्य च भग० १०।३३। सम० चर, चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में रहने वाले - (पुं०) चकवा---दयिता द्वन्द्वचरं पतत्रिणम् रघु० ८।५५, १६।६३,- भावः वैपरीत्य, अनबन, -भिन्नम् स्त्री और पुरुष (नर या मादा) का वियोग, भूत (वि०) 1. एक जोड़ा बनाते हुए 2. संदिग्ध, अनिश्चित,- युद्धम् मल्लयुद्ध, अकेली (दो) की लड़ाई।

द्वन्द्वशः (अव्य०) [द्वन्द्व+शस्] दो दो करके जोड़े में।

द्वय (वि०) (स्त्री० -यी) [द्वि+अयट्] दोहरा, दुगुना, दो प्रकार का, दो तरह का—अनुपक्षणं द्वयी गतिः मुद्रा० ३, भर्तृ० २।१०४, अते० पा०, कभी कभी ब० व० में भी प्रयुक्त, दे० शि० ३।५७,—यम् 1. जोड़ी, युगल, युग्म (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) —द्वितयेन द्वयमेव संगतम्---रघु० ८।६, १।१९, ३।८, ४।४ 2. दो प्रकार की प्रकृति, द्वैधता 3. मिथ्यात्व,—यी जोड़ी, युगल। सम०—अतिग (वि०) जिसका मन रजस् और तमस् इन दो गुणों के प्रभाव से मुक्त हो गया है, सन्त, महात्मा, —आत्मक द्वैधप्रकृति से युक्त, —वादिन्, द्विजिह्व, कपटी।

द्वयस (वि०) (स्त्री० सी) 'जहाँ तक हो सके' 'इतना ऊँचा जितना कि' 'इतना गहरा जितना कि' 'पहुँचने वाला' अर्थ को बतलाने वाला प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के साथ लगा---गुल्फद्वयसे मदपर्यासि---का० ११४, नारीनितम्बद्वयसं बभूव (अभ.) रघु० १६।४६, शि० ६।५५।

द्वयर:, -रम् [द्वाभ्यां सत्यत्रेतायुगाभ्यां परः पूर्वो०---तारा०] 1. विश्व का तृतीय युग —मनु० ९।३०१ 2. पासे का वह पार्श्व जिस पर 'दो' की संख्या अंकित है 3. संदेह, अशोधन, अनिश्चितता।

द्वयामुष्यायण (वि०) [अदस्+फक्=आमुष्यायण: ष० त०] दे० 'द्व्यामुष्यायण'।

द्वार् (स्त्री०) [द्वृ+णिच्+विच्] 1. दरवाजा, फाटक —याज्ञ० ३।१२, मनु० ३।३८ 2. उपाय, तरकीब, द्वारा 'के उपाय से' की मार्फत। सम० -स्थ,-स्थित: (द्वारस्थ:, द्वारस्थ:, द्वारस्थित:, द्वारस्थित:) द्वारपाल, डयोढ़ीवान्।

द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1. दरवाजा, तोरण, प्रवेशद्वार, फाटक 2. मार्ग, प्रवेश, घुसना, मुँह,—अथवा कुल-वाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्—रघु० १।४, ११।१८ 3. शरीर के द्वार या छिद्र (ये गिनती में नौ हैं दे० खम्) कु० ३।५०, भग० ८।१२, मनु० ६।४८ 4. मार्ग, माध्यम, साधन या उपाय द्वारेण 'में से' 'के साधन से'। सम०—अधिप: डयोढ़ीवान्, द्वारपाल,—कपाट:, —टम् दरवाजे का पल्ला या दिला, —गोप:—नायक:, -प:,—पाल:, पालक:, द्वारपाल, डयोढ़ीवान्, पहरेदार,—दारु: लाग्वदार की लकड़ी, -पट्ट: 1. दरवाजे का दिला 2. दरवाज का पर्दा, —पिंडी दरवाजे की देहली, पिधानः दरवाजे की कुंडी —बलिभुज् (पुं०) 1. कौवा 2. चिड़िया,- बाहु: दर-वाजे की बाज़, द्वार का पाखा, -यन्त्रम् ताल, कुंडी स्थ: द्वारपाल।

द्वार (रि) का [द्वार :-कै+क] गुजरात के पश्चिमी किनारे पर स्थित कृष्ण की राजधानी ('द्वारका' के के वर्णन के लिए दे० शि० ३।३३-६०)। सम०—ईश: कृष्ण का विशेषण।

द्वारवती, द्वारावती = द्वारका।

द्वारिक: द्वारिन् (पुं०) डयोढ़ीवान्, द्वारपाल।

द्वि (संख्या० वि०) (कर्तृ० द्वौ, द्वे० - पुं० द्वौ, स्त्री०, नपुं० द्वे) दो, दोनों—सद्यः परस्परतुलामधिरोहतां द्वे—रघु० ५।६८, (विशेष दशन् विंशति और त्रिंशत् से पूर्व द्वि को 'द्वा' हो जाता है, चत्वारिंशत्, पञ्चा-शत्, षष्टि, सप्तति और नवति से पूर्व द्वि को द्वा होता है परन्तु विकल्प से, और अशीति से द्वि में कोई परिवर्तन नहीं होता)। सम०—अक्ष (वि०) दो आँखों वाला, —अक्षर (वि०) द्व्यक्षरी, दो अक्षरों से संबद्ध, --अङ्गुल (वि०) दो अंगुल लम्बा, (-लम्) दो अंगुल की लम्बाई, अणुकम् दो अणुओं का संघात, --अर्थ (वि०) 1. दो अर्थ रखने वाला 2. संदिग्ध, अस्पष्ट या द्व्यर्थक 3. दो बातों का ध्यान रखने वाला, —अशीत (वि०) बयासीवाँ, —अशीतिः (स्त्री०) बयासी, -अष्टम् तांबा, -अहः दो दिन का समय,—आत्मक (वि०) 1. दो प्रकार के स्वभाव वाला 2. दो होने वाला, - आमुष्यायणः दो पिताओं का पुत्र, गोद लिया हुआ बेटा, जो अपने मूल पिता की सम्पत्ति का भी साथ ही साथ उत्तरा-धिकारी हो। --ऋचम् (द्वयृचम्, द्वयृचम्) ऋचाओं का संग्रह, -क:, —ककार: 1. कौवा (क्योंकि 'काक' शब्द में दो 'क' होते हैं) 2. चकोर (क्योंकि कोक शब्द में भी दो 'क' हैं), —ककुद् (पुं०) ऊँट,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—गु (वि०) दो गौओं से विनिमय किया हुआ, (गुः) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक होता है—द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहम्—उद्भट, —गुण (वि०) दुगुना, दोहरा, (द्विगुणोकृ—दो बार हल चलाना, दुगुना करना, बढ़ाना), —गुणित (वि०) 1. दुगुना किया हुआ, —कि० ५।४६ 2. दो तह किया हुआ 3. लपेटा हुआ 4. दुगुना बढ़ाया हुआ, —चरण (वि०) दो डाँगों वाला, दो पैरों वाला —द्विचरणपक्षाना क्षितिभुजाम्—शा० ४।१५, —चत्वारिंश (वि०) [द्वि-चत्वारिंशद्वाः] बयालीसवां —त्वारिंशत् (स्त्री०) (द्वि-द्वाचत्वारिंशत्) बयालीस, —ज (वि०) दुबारा जन्मा, 1. हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) कोई एक, दे याज्ञ० १।३२ 2. ब्राह्मण (जिसपर पवित्रीकारक कृत्य या संस्कारों का अनुष्ठान किया जा चुका है)—जन्मना जायते शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते 3. अंडज जंतु जैसे कि पक्षी, साँप, मछली आदि—स तमानदमविदत् द्विजः—ऋ० २।१, ग्रं० ५।२१, रघु० १२।२२, मुद्रा० १।११, मनु० २।१७ 4. दाँत कीर्ण द्विजानां गणैः—भर्तृ० १।१३ (यहाँ 'द्विज' शब्द का अर्थ ब्राह्मण भी है) °अग्रयः ब्राह्मण, °अयनं यज्ञोपवीत जिसे हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं, °आलयः द्विज का घर °इन्द्रः, °ईशः 1. चन्द्रमा शि० १२।३ 2. गरुड का विशेषण 3. कपूर, °दासः शूद्र, °पतिः, °राजः 1. चन्द्रमा का विशेषण—रघु० ५।२३ 2. गरुड, 3. कपूर, °प्रिया 1. आलबाल, थांवला 2. चुपचप्पा (जहाँ पशु पक्षी पानी पीयें, °बन्धुः, °ब्रुवः 1. जो ब्राह्मण बनने का बहाना करता है 2. जो जन्म से ब्राह्मण हो, कर्म से न हो. तु० ब्रह्मबन्धु, °लिङ्गिन् (पुं०) 1. क्षत्रिय 2. झूठा ब्राह्मण, ब्राह्मण वेशधारी, °वाहनः विष्णु की उपाधि (गरुडारोही), °सेवक शूद्र, —जन्मन्, —जातिः (पुं०) 1. हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनु० २।२४ 2. ब्राह्मण—कि० १।३९, कु० ५।४० 3. पक्षी पंछी 4. दाँत, —जातीय (वि०) हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का, —जिह्वः 1. साँप—शि० १।६३, रघु० ११।६४, १४।४१, भामि० १।२० 2. संसूचक, मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर 3. कपटी पुरुष,—त्र (वि०) (ब० व०) दो तीन—रघु० ५।२५, भर्तृ० २।१२१, —त्रिंश (द्वात्रिंश) 1. बत्तीसवाँ 2. बत्तीस से युक्त, —त्रिंशत् (द्वात्रिंशत्) बत्तीस, °लक्षण ३२ शुभलक्षणों से युक्त, —दन्ति (अव्य०) । डंडे से डंडा,—दत् (वि०) दो दाँत रखने वाला, —दश (वि०) (ब० व०) बीस, —दश (वि०) (द्वादश) 1. बीसवाँ, मनु० २।३६ 2. बारह से युक्त, —दशन् (द्वादशन्) (वि०, ब० व०) बारह, °अक्षः 1. बृहस्पति ग्रह तथा 2. देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण, °अक्षरः °लोचनः कार्तिकेय का विशेषण, °अंगुलः १२ अंगुल का माप, °अह 1. बारह दिन का समय—मनु० ५।८३, ११।६८ 2. १२ दिन तक चलने वाला या १२ दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ, °आत्मन् (पुं०) सूर्य, °आदित्याः (ब० व०) बारह सूर्य दे० आदित्य, °आयुस् (पुं०) कुत्ता, °सहस्र (वि०) १२००० से युक्त, · दशी (द्वादशी) ज्योत्स्नी मास के पक्ष की १२वीं तिथि, · देवतम् विशाखानाम नक्षत्र, —देहः गणेश का विशेषण, °भानुः गणेश का विशेषण, —नरकः वह मनुष्य जिसकी सुन्नत हो चुकी हो,—नवत (द्वि-द्वानवतः) बानवेवाँ, नवतिः (द्वि-द्वानवतिः) बानवे, —पः हाथी, °आस्यः गणेश का विशेषण, · पक्षः 1. पक्षी 2. महीना,—पञ्चाश (द्वि-द्वापञ्चाश) (वि०) बावनवाँ, —पञ्चाशत् (द्वि-द्वापञ्चाशत्) (स्त्री०) बावन, —पथम् दो मार्ग, —पदः, दुपाया, मनुष्य, पदिका, · पदी 1. दुपाया मनुष्य 2. पक्षी, देवता, —पाठः, · पाद्यम् दुहरा जुमला, · पाणिन् (पुं०) हाथी, °बिंदुः विसर्ग (:), —भुजः कौंच, —भूम (वि०) (महल की भांति) दो मंजिला, · भातृ, —मातृजः 1. गणेश तथा 2. जरासंध का विशेषण, —मात्र: दीर्घ स्वर (दो मात्राओं वाला), —मार्गी पगडंडी, —मुखः जोंक, —रः 1. भौंरा—तु० द्विरेफ 2. बर्बर, · रदः हाथी—रघु० ४।४, मेघ० ५९, °अन्तकः, °अरातिः, °अशनः सिंह, · रसनः साँप, —रात्रम् दो रातें, · रूप (वि०) 1. दो रूपों का, 2. दो रंग का, द्विदलीय, · रेतस् (पुं०) खच्चर, —रेफः भौंरा ('भ्रमर' इसमें दो 'र' हैं) कु० १।२७, ३।२७, ३६, —वचनम् (व्या० में) द्विवचन, —वज्रकः १६ कोणों का खोखला या पार्श्वों का घर, —वाहिका बहंगी, —विध (द्वैविध) (वि०) बारहवाँ, —विंशतिः (द्वाविंशतिः) (स्त्री०) बाईस, —विध (वि०) दो प्रकार का, दो तरह का, मनु० ७।१६२, —वेदारा खड़खड़ा, खच्चरों से खींची जाने वाली हल्की गाड़ी, —शतम् 1. दो सौ 2. एक सौ दो, —शफ्य (वि०) दो सौ में खरीदा हुआ या दो सौ के मूल्य का, —शफ (वि०) दो फटे खुर वाला (फः) कोई भी फटे दो खुर वाला जानवर, —शीर्षः अग्नि का विशेषण, —षष्ठ (वि०) (ब० व०) दो बार छः, बारह, — षष्ट (द्विषष्ट, द्वाषष्ट) बासठवाँ, षष्टिः (स्त्री०) (द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः) बासठ, —सप्तत (द्वि-द्वासप्तत) (वि०) बहत्तरवाँ,—सप्ततिः (स्त्री०) (द्वि+द्वासप्ततिः) बहत्तर, —सप्ताहः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्ष, पखवाड़ा, —सहस्र, साहस्र (वि०) २००० से युक्त (—ब्दम्) दो हजार, —सौत्य, —हृद्य (वि०) दोनों ओर से हल चला हुआ अर्थात् पहले लम्बाई की ओर से और फिर चौड़ाई की ओर से, —सुवर्ण (वि०) दो सोने की मोहरों से खरीदा हुआ या दो स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य का, —हन् (पुं०) हाथी, —हायन् , —र्षक (वि०) दो वर्ष की आयु का, —लिंग (वि०) नपुंसक लिंग, —हृदया गर्भवती स्त्री —होतृ (पुं०) अग्नि का विशेषण।

द्विक (वि०) [द्वाभ्यां कायति —द्वि+कै+क] 1. दोहरा, जोड़ी बनाने वाला, दो से युक्त 2. दूसरा 3. दोआबा होने वाला 4. दो अधिक बड़ा हुआ, दो प्रतिशत —द्विकं शतं वृद्धिः—मनु० ८।१४१-२।

द्वितय (वि०) (स्त्री० यी) [द्वौ अवयवौ यस्य—द्वि+तयप्] दो से युक्त, दो में विभक्त, दुगुना, दोहरा (कई बार ब० व० में प्रयुक्त) दुर्मनायमानो विमन्तरं यदि वामी द्वितयेऽपि ते चलाः—रघु० ८।९०, —यम् जोड़ी, युगल —रघु० ८।६,

द्वितीय (वि०) [द्वयोः पूरणम् द्वि+तीय] दूसरा त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम् · उत्तर० ३।२६, मेघ० ८३, रघु० ३।४९, यः 1. परिवार में दूसरा, पुत्र 2. साथी, साझीदार, मित्र, (प्रायः समास के अन्त में) प्रयत्नपरिग्रहद्वितीयः—रघु० ११९५, इसी प्रकार छायां, दुःखं, —या चान्द्रमास के पक्ष की दौयज, पत्नी, साथी, साझीदार। सम०—आश्रमः ब्राह्मण या गृहस्थ के जीवन की दूसरी अवस्था अर्थात् गार्हस्थ्य।

द्वितीयक (वि०) [द्वितीय+कन्] दूसरा।

द्वितीयावृत्त (वि०) [द्वितीय+आवृत्+क्त+टच्] (जैसे आदि) जिसमें दो बार हल चलाया जा चुका हो।

द्वितीयिन् (वि०) (स्त्री० नी) [द्वितीय+इनि] दूसरे स्थान पर अधिकार किये हुए।

द्विध (वि०) [द्विधा+क] दो भागों में विभक्त, दो टुकड़ों में कटा हुआ।

द्विधा (अव्य०) [द्वि+धाच्] 1. दो भागों में—द्विधाभिन्ना शिखण्डिभिः—रघु० १।३९, मनु० १।१२,३२, द्विधैव हृदयं तस्य दुःखितस्याभवन्नदा—महा० 2. दो प्रकार से। सम०—करणम् दो भागों में विभाजन, टुकड़े-टुकड़े करना, —गतिः 1. उभयचर जन्तु, जल-स्थल-चर 2. केंकड़ा 3. मगरमच्छ।

द्विशस् (अव्य०) [द्वि+शस्] दो दो करके, दो के हिसाब से, जोड़े में।

द्विष् (अदा० उभ०—द्वेष्टि, द्विष्टे, द्विष्ट) घृणा करना, पसंद न करना, विरोधी होना—न द्वेष्टि यज्जनमत-स्तन्ममजातशत्रुः—वेणी० ३।१५, भग० २।५७, १८।१०, भट्टि० १७।६१, १८।९, रूपं द्वेष्टि—शं० ६।५, (प्र, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई परिवर्तन नहीं होता)।

द्विष् (वि०) [द्विष्+क्विप्] विरोधी, घृणा करने वाला, शत्रुवत्—(पुं०) शत्रु,—रन्ध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषामामिषतां ययौ—रघु० १२।११, ३।४५, पंच० १।७०।

द्विष [द्विष्+क] शत्रु (द्विषन्तप) वि० शत्रु को संतप्त करने वाला, परिशोष लेने वाला)।

द्विषत् (पुं०) [द्विष्+शतृ] शत्रु (कर्म० या संब० के साथ) · ततः परं दुष्प्रसहं द्विषद्भिः—रघु० ६।३१, शि० २।१, भट्टि० ५।९७।

द्विष्ट (वि०) [द्विष्+क्त] 1. विरोधी 2. घृणित, अप्रिय,—ष्टम् ताँबा।

द्विस् (अव्य०) [द्वि+सुच्] दो बार—द्विरित्थं प्रतिशब्देन व्याजहार हिमालयः—कु० ६।९४, मनु० २।६०। सम०—आगमनम् (द्विरागमनम्) गौना, मुकलावा, दुल्हन का अपने पति के घर दूसरी बार आना, —आपः (द्विराप) हाथी, —उक्त (द्विरुक्त) (वि०) 1. आवृत्ति, पुनरुक्ति 2. अतिरेक, अनुपयोग,—ऊढा (द्विरूढा) पुनर्विवाहिता स्त्री, —आवः,—वचनम् द्विरावृत्ति।

द्वीपः,—पम् [द्विर्गता द्वयोर्दिशोर्वा गता आपो यत्र द्वि+अप्, अप ईप्] 1. टापू 2. शरणस्थान, आश्रयगृह उत्पादन स्थान 3. भूलोक का एक भाग (भिन्न २ मतानुसार इन भागों की संख्या भी भिन्न २ है, चार, सात, नौ या तेरह, कमल की पंखड़ियों की भाँति सब के सब मेरु के चारों ओर स्थित हैं, इनमें से प्रत्येक को समुद्र एक दूसरे से वियुक्त करता है। नै० १।९ में अठारह द्वीपों का वर्णन है, परन्तु सात को संख्या सामान्य प्रतीत होती है—तु० रघु० १।६५, और श० ७।३३, केन्द्रीय भाग जम्बूद्वीप का है जिसमें भारतवर्ष विद्यमान है)। सम०—कर्पूरः चीन से प्राप्त कपूर।

द्वीपवत् (वि०) [द्वीप+मतुप्] टापुओं से भरा हुआ, —(पुं०) समुद्र,—ती पृथ्वी।

द्वीपिन् (पुं०) [द्वीप+इनि] 1. शेर—चर्मणि द्वीपिनं हन्ति सिद्धा० 2. चीता, व्याघ्र। सम०—नखः,—खम् 1. शेर की पूँछ 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

द्वेषा (अव्य०) [द्वि+धा] दो भागों में, दो तरह से, दो बार।

द्वेष [द्विष्+घञ्] 1. घृणा, अरुचि, वीभत्सा, अनिच्छा, जुगुप्सा—भग० ५।१८, भग० ३।३४, ७।२७, इसी प्रकार अक्षद्वेषः, भवद्वेषः 2. शत्रुता, विरोध, ईर्ष्या —मनु० ८।२२५।

द्वेषण (वि०) [द्विष्+ल्युट्] घृणा करने वाला, नापसन्द

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करने वाला,—नः शत्रु,—नम् घृणा, जुगुप्सा, शत्रुता, अरुचि।

द्वेषिन्, द्वेष्टृ (वि) [द्वेष+इनि, द्विष्+तृच्] घृणा करने वाला, (पुं०) शत्रु।

द्वेष्य (सं० कृ०) [द्विष्+ण्यत्] 1. घृणा के योग्य, 2. घिनौना, घृणित, अरुचिकर —रघु० १।२८,—ष्यः शत्रु भग० ६।९, ९।२९, मनु० ९।३०७।

द्वैगुणिक [द्विगुण+ठक्] सूदखोर जो शत-प्रतिशत ब्याज लेता है।

द्वैगुण्यम् [द्विगुण+ष्यञ्] 1. दुगुनी राशि मूल्य या माप 2. द्वित्व, द्वैतावस्था 3. तीन गुणों (अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमस्) में से दो पर अधिकार रखना।

द्वैतम् [द्विधा इतम् द्वितम्, तस्य भावः स्वार्थे अण्] 1. द्वित्व 2. द्वैतवाद (दर्श०) दो विशद नियमों का प्रकथन, जैसे कि जीव और प्रकृति, ब्रह्म और विश्व, आत्मा और परमात्मा एक दूसरे से भिन्न हैं--तु० 'अद्वैत'--किं शास्त्र अद्वयेन यस्य गलति द्वैतान्धकारोत्करः- भामि० १।८६ 3. एक जंगल का नाम। सम०—वनम् एक जंगल का नाम—किं० १।१, —वादिन् (पुं०) वह दार्शनिक जो द्वैतसिद्धान्त को मानता है।

द्वैतिन् (पुं०) [द्वैत+इनि] द्वैतवादी दार्शनिक।

द्वैतीयीक (वि०) (स्त्री०-की) [द्वितीय+ईकक्] दूसरा : द्वैतीयीकतया मितोऽयमगमत्तस्य प्रबन्धे महाकाव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वलः—नै० २।११०, तु० तार्तीयीक।

द्वैध (वि०) (स्त्री० -धी) [द्वि+धमञ्] दोहरा, दुगुना (**द्वैधीभू**--दो भागों में विभक्त होना, खण्ड २ होना, द्विविधा में पड़ना, मन में अनिश्चित होना), --धम् 1. द्वैतावस्था, दोहरी प्रकृति या अवस्था 2. दो भागों में वियुक्ति 3. दुगुने साधन, गौण आरक्षण 4. विविधता, भिन्नता, संघर्ष, विवाद, विभेद --श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्यात् तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ--मनु० २।१४, ९।३२, याज्ञ० २।७८ 5. संदेह, अनिश्चितता --भग० ५।२५, वेणी० ६।४४ 6. दो प्रकार का व्यवहार, दुरंगीनीति, विदेशनीति के छः प्रकारों में से एक, दे० नी० द्वैधीभाव और गुण।

द्वैधीभावः [द्वैध+च्वि+भू+घञ्] 1. द्वैतता, दो प्रकार की अवस्था या प्रकृति 2. दो खण्ड, विभिन्नता, द्विधाभाव 3. संदेह, अनिश्चितता, डांवाडोल होना निलम्बन,—धृतद्वैधीभावकातरं मे मनः--शं० १ 4. दुविधा 5. विदेश नीति के छः गुणों में से एक (कुछ के मतानुसार इसका अर्थ है--दो तरह का व्यवहार, दुरंगापन, जाहिर से शत्रु के साथ मित्र जैसे संबंध रखना-- बलिनोद्विषतोमंध्ये वाचात्मानं समर्पयन्, द्वैधीभावेन तिष्टेत्तु काकाक्षिवदलक्षितः; दूसरों के मतानुसार शत्रु की सेना में फूट डालना और अपने से बलवान् शत्रु का छोटी२ टुकड़ियों में मुकाबला करना तथा आक्रमण द्वारा उसे दुःखी करना—द्वैधीभावः स्वबलस्य द्विधा करणम्—याज्ञ० १।३४७ पर मिता०, तु० मनु० ७।१७३, व १६० से।

द्वैध्यम् [द्विधा+ष्यञ्] 1. दुरंगी चाल 2. विविधता, विभिन्नता।

द्वैप (वि०) (स्त्री०-पी) [द्वीप+अण्] 1. टापू से संबंध या टापू पर रहने वाला 2. शेर से संबंध रखने वाला, शेर की खाल का बना हुआ या व्याघ्र की खाल से ढका हुआ,--पः शेर की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

द्वैपक्षम् [द्विपक्ष+अण्] दो दल, दो टोलियाँ।

द्वैपायनः [द्वीपायन+अण्] टापू में उत्पन्न, वेदव्यास।

द्वैप्य (वि०) (स्त्री०—प्या,—प्यी) [द्वीप+यञ्] टापू निवासी या टापू से संबन्ध—शि० ३।७६।

द्वैमातुर (वि०) [द्विमातृ+अण्] दो माताओं वाला, अर्थात् जन्मदात्री माता तथा सौतेली माता,—रः 1. गणेश का नाम 2. जरासंध का नाम—हते हिडिंबरिपुणा राज्ञि द्वैमातुरे युधि- शि० २।६०।

द्वैमातृक (वि०) (स्त्री०—की) [द्विमातृक+अण्] (वह देश) जहाँ वर्षा तथा नदी दोनों का जल खेती के काम आता हो (तु० 'देवमातृक')।

द्वैरथम् [द्विरथ+अण्] 1. दो रथारोहियों का एकाकी युद्ध 2. एकल युद्ध,—थः शत्रु।

द्वैराज्यम् [द्विराज्य+ष्यञ्] दो राजाओं में बँटा हुआ उपनिवेश।

द्वैवार्षिक (वि०) [द्विवर्ष+ठक्] प्रति दूसरे वर्ष होने वाला।

द्वैविध्यम् [द्विविध+ष्यञ्] 1. द्वैतता, दुरंगी प्रकृति, 2. विभिन्नता, विविधता, भिन्नता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध (वि०) [धा+ड] (समास के अन्त में), रखने वाला, संभालने वाला,—**धः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. कुबेर 3. भलाई, नेकी, आचार, गुण,—**भम्** धन दौलत, संपत्ति।

धनु कोषोद्गार—उत्तर० ४।२४।

धक्क् (चुरा० उभ०—धक्कयति—ते) ध्वस्त करना, नष्ट करना।

धटः [धट्+अच्, धक० परस्मै०] 1. तराजू, तराजू के पलड़े 2. तराजू द्वारा कठोर परीक्षा 3. तुला राशि।

धटकः [धट+कै+क] ४२ गुंजा या रत्तियों के समान एक प्रकार का तोल विशेष।

धटिका, धटी [धटी+कन्+टाप्, ह्रस्वः; धन्+अच्+ङीष्, नि० नस्य टः] 1. पुराना कपड़ा या चिथड़ा 2. लंगोटी

धटिन् (पुं०) [धट+इनि] 1. शिव का विशेषण 2. तुला राशि,—**नी**=धटी।

धण् (स्वा० पर०—धणति) शब्द करना।

धतूरः, धतूरकः,—का [धयति धातूत् धे+उरच् पृषो०, धतूर+कन्, स्त्रियां टाप् च] धतूरे का पौधा।

धन् (स्वा० पर०—धनति) शब्द करना।

धनम् [धन्+अच्] 1. संपत्ति, दौलत, धन, निधि, रुपया (सोना, आदि चल संपत्ति)—धने तावदसुलभम्—हि० १, (आल० भी) जैसा कि तथोधन, विद्याधन आदि में 2. (क) मूल्यवान् संपत्ति, कोई प्रियतम या स्निग्धतम पदार्थ, प्रियतम निधि—कष्टं जनः कुलधनैरनुरञ्जनीयः—उत्तर० १।१४, गुरोरपीदं धनमाहितास्मैः—रघु० २।४४, मानधनम्, अभिमान० आदि (ख) मूल्यवान् वस्तु मनु० ८।२०१, २०२ 3. पूंजी (विप० वृद्धि या ब्याज) 4. लूट का माल अपहृत वस्तु, ऊपरी आय 5. मल्लयुद्ध में विजेता को प्राप्त होने वाला पुरस्कार, खेल में जीता हुआ पारितोषिक 6. पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता 7. धनिष्ठा नक्षत्र 8. फालतू अवशिष्ट 9. (गणि० में) जोड़ की राशि (विप० ऋण)। सम०—**अधिकारः** संपत्ति में अधिकार, उत्तराधिकार में संपत्ति पाने का हक़, **अधिकारिन्**, —**अधिकृत**: 1. कोषाध्यक्ष 2. उत्तराधिकारी—**अधिगोप्तृ**,—**अधिपः**—**अधिपतिः**, **अध्यक्षः** 1. कुबेर का विशेषण—कि० ५।१६ 2. कोषाध्यक्ष, —**अपहारः** 1. अर्थदंड 2. लूट खसोट का माल,—**अर्चित** (वि०) धन के उपहारों से सम्मानित, मूल्यवान् उपहारों से संतुष्ट किया गया,—**मानधना धनार्चिताः** कि० १।१९ 2. मालदार, धनाढ्य,—**अर्थिन्** (वि०) धनेच्छुक, लालची, कंजूस, —**आढ्य** (वि०) मालदार, धनी, दौलत मंद,—**आधारः** खजाना,—**ईशः, ईश्वरः** 1. कोषाध्यक्ष 2. कुबेर का विशेषण,—**उष्मन्** (पुं०) धन की गर्मी—तु० अर्थोष्मन्,—**एषिन्** (पुं०) साहूकार जो अपना रुपया मांगे,—**केलिः** कुबेर का विशेषण, —**क्षयः** धन की हानि, **धनक्षये वर्धते जाठरग्निः**—पंच० २।१७८,—**गर्व,—गर्वित** (वि०) रुपये का घमंडी, —**गतम्**—सब प्रकार की मूल्यवान् संपत्ति, समस्त द्रव्य,—**दः** 1. उदार या दानशील व्यक्ति 2. कुबेर का विशेषण—रघु० ९।२५, १७।८० 3. अग्नि का नाम, °**अनुजः** रावण का विशेषण—रघु० १२।५२, ८८,—**दंडः** अर्थदंड, जुर्माना,—**दायिन्** (पुं०) आग,—**पतिः** कुबेर का विशेषण—तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्—मेघ० ७५,७,—**पालः** 1. कोषाध्यक्ष 2. कुबेर का विशेषण,—**पिशाचिका, पिशाची** धन का राक्षस, धन की तृष्णा, लालच, लोलुपता,—**प्रयोगः** सूद खोरी,—**प्रद** (वि०) धन का घमंडी,—**मूलम्** मूलधन, पूंजी,—**लोभः** तृष्णा, लिप्सा, —**व्ययः** 1. खर्च 2. अपव्यय,—**स्थानम्** खजाना, **हरः** 1. उत्तराधिकारी 2. चोर 3. एक प्रकार का सुगंधद्रव्य।

धनकः, धनाशा [धनस्य कामः—धन+कन्] तृष्णा, लालच, लालसा।

धनञ्जयः [धन+जि+खच्, मुम्] 1. अर्जुन का नाम (नाम की व्युत्पत्ति—सर्वाञ्जनपदान् जित्वा विशमाहाय केवलम्, मध्ये धनस्य तिष्ठामि तेनाहुर्मां धनञ्जयम्—महा० 2. अग्नि का विशेषण।

धनवत् (वि०) [धन+मतुप्] धनी, दौलतमंद।

धनिकः [धनमादेयत्वेनास्ति अस्य—ठन्] 1. धनवान् या दौलतमंद पुरुष 2. महाजन, साहूकार—दापयेद्धनिकस्यार्थम्—मनु० ८।५१, याज्ञ० २।५५, 3. पति 4. ईमानदार व्यापारी 5 'प्रियंगु' वृक्ष।

धनिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन+इनि] धनी, मालदार, दौलतमंद (पुं०) 1 दौलतमंद 2. साहूकार—याज्ञ० २।१८,४१, मनु० ८।६१।

धनिष्ठ (वि०) [धन—इष्ठन्, धनिन् की उ० अ०] अत्यंत धनी, —ष्ठा तेइसवां नक्षत्र, (इसमें चार नक्षत्रों का पुंज है)।

धनी धनीका [धनमस्ति अस्याः—धन्+अच्+ङीष्] तरुणी, जवान स्त्री।

धनु [धन् उ] धनुष. (संभवतः 'धनुष्' का ही रूप)

धनुस् (वि०) [धन्+उसि] 1. धनुष से सुसज्जित (तपुं०)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनुष,—धन्वयमोघं समत्तन्न बाणम् - कु० ३।६६, इसी प्रकार इन्द्रधनुः आदि (बहुव्रीहि समास के अन्त में 'धनुस्' के स्थान में 'धन्वन्' आदेश हो जाता है - रघु० २।८) 2. चार हाथ के बराबर लंबाई की माप - याज्ञ० १।१६३, मनु० ८।२३७ 3. वृत्त की चाप 4. धन राशि 5. मरुस्थल तु० धन्वन्। सम०- कर (वि०—धनुष्कर) धनुष से सुसज्जित (रः) धनुष बनाने वाला,—काण्डम् (धनु, कांडम्) धनुष और बाण - खण्डम् (धनुः खंडम्) धनुष का भाग-मेघ० १५, —गुणः (धनुर्गुणः) धनुष की डोरी,—ग्रहः (धनुर्ग्रहः) धनुर्धारी,—ज्या (धनुर्ज्या) धनुष की डोरी —अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम्—श० २।४,—द्रुमः (धनुर्द्रुमः) बांस —धरः,—भृत् (पुं०) (धनुर्धरः आदि) धनुर्धारी—रघु० २।११,२९, ३।३१,३८,३९, ९।११,१२।१५७,१६।७७,—पाणि (वि०) (धनुष्पाणि) धनुष से सुसज्जित, हाथ में धनुष लिये हुए,—मार्गः (धनुर्मार्गः) धनुष की भांति टेढ़ी रेखा, वक्र,—विद्या (धनुर्विद्या) धनुर्विज्ञान,—वृक्षः, (धनुर्वृक्षः) 1. बांस, 2. अश्वत्थ का वृक्ष,—वेदः (धनुर्वेदः) चार उपवेदों में से एक - धनुर्वेद, धनुर्विज्ञान।

धनू (स्त्री०) [धन्+ऊ] धनुष, कमान।

धन्य (वि०) [धन्+यत्] 1. धन प्रदान करने वाला, —मनु० ३।१०९,४।१२ 2. दौलतमंद, धनी, मालदार 3. सौभाग्यशाली, भाग्यवान् महाभाग, ऐश्वर्यशाली—धन्यं जीवनमस्य मानसरसः—मालवि० १।१६. धन्या केयं स्थिता ते शिरसि—मुद्रा० १।१ 4. श्रेष्ठ, उत्तम, गुणवान्,—न्यः भाग्यवान् या सौभाग्यशाली, किस्मत वाला व्यक्ति—पत्यावस्तद्वरजसा मलिनीभवति—श० ७।१७, भर्तृ० १।४१, धन्याः कोऽपि न विक्रियां कलयते प्राप्ते नवे यौवने—१।७२ 2. काफिर, नास्तिक 3 जादू,—न्या 1. धात्री 2. धनिया,—न्यम् दौलत, कोष। सम०—वादः 1. साधुवाद देने के लिए बोला जाने वाला शब्द, साधुवाद 2. प्रशंसा, स्तुति, वाहवाह।

धन्यमन्य (वि०) [धन्य+मन्+क्यच्, मुम्] अपने आपको भाग्यशाली मानने वाला।

धन्याकम् [धन्य+आकन्, नि०] 1. धनिये का पौधा 2 धनिया।

धन्वम् [धन्+वन्] वनप (श्रेण गाहिल्य में विरल प्रयोग)। सम०—धिः धनुष रखने की पेटी।

धन्वन् (पुं०, नपुं०) [धन्+कनिन्] 1. सूखी जमीन, मरुभूमि, रेत की भूमि -एवं धन्वनि वप्तरस्य सकले संहारहेतावपि—भामि० १।३१,2 समुद्रतट, कड़ी भूमि। सम० दुर्गम् गढ़ (जो चारों ओर फैली मरुभूमि के कारण अगम्य हो)- मनु० ७।७०।

धन्वन्तरम् (नपुं०) चार हाथ के बराबर दूरी की माप, तु० 'दंड'।

धन्वन्तरि [धनुः चिकित्साशास्त्रं तस्यान्तमृच्छति-धनु+अन्त—ऋ+इ] देवताओं के वैद्य का नाम, (कहते हैं कि धन्वंतरि, समुद्रमंथन के फलस्वरूप, अमृत हाथ में लिए हुए समुद्र से निकले थे तु० चतुर्दशरत्न।

धन्विन् (वि०) (स्त्री० नी) [अस्त्र वापोऽस्यास्त्र इति] धनुष से सुसज्जित, (पुं०) 1. धनुर्धारी के मम धन्विनोऽन्ये—कु० ३।१०, उत्तरो स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २।४ 2. अर्जुन 3. शिव और 4. विष्णु का विशेषण 5. धनु राशि।

धन्विन् [धन्व्+इनन्] सूअर।

धम (वि०) (स्त्री० - मा, - मी) [धम्+अच्] (प्रायः समास के अन्त में) 1. धौंकने वाला अग्निदग्धम्, नाडिधम 2. पिघलाने वाला, गलाने वाला,- मः 1. चन्द्रमा 2. कृष्ण की उपाधि 3. मृत्यु के देवता यम, और 4. ब्रह्मा का विशेषण।

धमकः [धम्+ण्वुल्] लुहार।

धमधमा (स्त्री०) अनुकरणमूलक शब्द जो धौंकनी या बिगुल की ध्वनि को व्यक्त करता है।

धमन (वि०) [धम्+ल्युट्] 1. धौंकने वाला 2. क्रूर, —नः एक प्रकार का नरकुल।

धमनिः, -नी [धम्+अनि, धमनि—ङीष्] 1. नरकुल, नै 2. शरीर की नाड़ी, शिरा 3. गला, गर्दन।

धमिः [धम्+इ] फूंक मारना।

धम्मल्लः, धम्मिल्लः, धम्मील्लः [धम्+विच्, मिल् क्, पृ०] स्त्री के सिर का सौंदिदार अलंकृत जूड़ा जिसमें मोती और फूल लगे हों आकुलाकुलमुद्धम्मिल्लं गीतं उरसि विलीयमानां सस्तधर्मिल्लकानाम् (वधूनाम्) भर्तृ० २।४९, शृंगार० १।

धय (वि०) [धे+अ] (प्रायः समास के अन्त में) पीने वाला चूसने वाला जैसा कि 'स्तनंधय' में।

धर (वि०) (स्त्री०—रा, - री) [धृ+अच्] (प्रायः समास के अन्त में) पकड़ने वाला, ले जाने वाला, समालने वाला, पहनने वाला, रखने वाला, कब्जे में करने वाला, संपन्न, प्रस्तुत करने वाला, निरीक्षण करने वाला जैसा कि अक्षधर, अंशुधर, नगाधर, गंगाधर, महीधर, अम्बुधर, विश्वंभरधर आदि, रः 1. पहाड़ - उत्कन्धरं दर्दुरमेदुरं गिरिम्- रघुधर दारुक इत्यवादत - शि० ४।१८ 2. खड़ी का ढेर 3. ओला, हिमोपल 4 कल्पान्तकाल पर्यंत रहने वाला संसार भगवान् विष्णु 5. एक वसु का नाम।

धरण (वि०) (स्त्री० णी) [धृ+ल्युट्] धारण करने वाला, आधार देने वाला आदि, णः 1. शेषनाग (जो पृथ्वी का काम दे रहा है), पर्वतपार्श्व

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. संसार 3. सूर्य 4. स्त्री की छाती 5. चावल, अनाज हिमालय (पहाड़ों का राजा), -पत्नी 1. सहायक देना, निर्वाह करना, संभालना -सारवत्तिनी धरणक्षमं च--कु० १।१७, धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे -गीत० १ 2. कब्जे में करना, लाना, उपलब्ध करना 3. थूनी, टेक, सहारा 4. भुरक्षा 5. दस पल के वजन का बट्टा।

धरणिः, -णी (स्त्री) [धृ + अनि, धरणि + ङीष्] पृथ्वी—लुठति धरणिशयने वह विलपति तव नाम --गीत० ५ 2. भूमि, मिट्टी 3. छत का शहतीर 4. नाड़ी, शिरा। सम०—**ईश्वरः** 1. राजा 2. विष्णु का या 3. जिन का विशेषण,—**कीलकः** पहाड़,—**जः, पुत्रः**—**सुतः** 1. मंगल के विशेषण 2. नरक राक्षस के विशेषण,—**जा, पुत्री**—सुता जनक की पुत्री सीता (पृथ्वी से उत्पन्न होने के कारण) का विशेषण -धरः 1. शेष या 2. विष्णु का विशेषण 3. पहाड़ 4. कछुवा 5. राजा 6. हाथी (स्त्री. कहते हैं कि पृथ्वी को संभाले हुए हैं), -धृत् (पुं०) 1. पहाड़ 2. विष्णु या 3. शेष का विशेषण।

धरा [धृ--अच्+टाप्] 1. पृथ्वी धरा धारणगौर्नमे-जिनवरारैरिभवत इव --वृच्छ० ५।२२ 2. स्थिर 3. मूल 4. गर्भाशय का योनि। सम०—**-अधिपः** राजा, **अमरः,—देवः सुरः** ब्राह्मण, **-आत्मजः, पुत्रः सुनुः** 1. मंगल ग्रह के विशेषण 2. नरक राक्षस के विशेषण, **आत्मजा** सीता का विशेषण, **-उद्धारः** पृथ्वी का छुटकारा, **-धरः** 1. पहाड़ 2. विष्णु या कृष्ण का विशेषण 3. शेष का विशेषण, **पतिः** 1. राजा 2. विष्णु का विशेषण,—**भुज्** (पुं०) राजा, —**भृत्** (पुं०) पहाड़।

धरित्री [धृ + इत्र + ङीष्] 1. पृथ्वी, श० २।१४, रघु० १४।५४ कु० ११२, १७ 2. भूमि, मिट्टी।

धरिष्णु (पुं०) [धृ--इष्णुच्] पहाड़, पहाड़ के पत्थर।

धर्तृः [धृ-तृच्] धारण करने वाला, पालन करने वाला, पोषक, सहारा देने वाला, पति, स्वामी, राजा, शासक, पहाड़ -धर्तुः पृथोः साधुः [धर्तृ + ङस्] धर्तृ का पोता।

धर्तव्य [धृ + तव्य] 1. धारण करने के योग्य 2. थूनी, टेक 3. शक्ति, 4. सद्गुण, सदाचार, नैतिक गुण।

धर्मः [धियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा धृ + मन्] 1. कर्तव्य, उचित, सम्पदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन 2. कानून, प्रचलन, रूढ़ता, प्रथा, व्यवहार, अनुविधि 3. धार्मिक या नैतिक गुण, भलाई, नेकी, अच्छे काम (जीवन के चार उद्देश्यों में से एक) रघु० २।६८, ऐसे त्रिवर्ग भी, इन्हें एवं पुरुषार्थों के साथ मिलाकर कहा जाता है, -हि० १।२५ भी, कहिए नास्ति सिंहस्य आक्रमणे क्रमः पक्षिणोऽपि धर्मं एव श० ५।४, मनु० ११।१४ 5. अधिकार, न्याय, औचित्य या न्यायसाम्य, निष्पक्षता, 6. पवित्रता, औचित्य, शालीनता 7. नैतिकता, नीतिशास्त्र, 8. प्रकृति, स्वभाव, चरित्र—मा० १।६, प्राणिं जीवं 9. मूल गुण, विशेषता, लाक्षणिक गुण (विशिष्ट) विशेषता -वदन्ति वर्ण्यवर्णानां वर्मैक्यं दीपकं बुधाः -चन्द्रा० ५।४५ 10. रीति, समरूपता समानता 11. यज्ञ 12. सत्यता, भद्रपुरुषों की संगति 13. भक्ति, धार्मिक भावुकता 14. रीति प्रणाली 15. उपनिषद् 16. ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर 17. मृत्यु का देवता यम। सम०—**अङ्गः, —गा** सारस,—**अधर्मौ** (पुं० द्वि० व०) सत्य और असत्य, कर्तव्य और अकर्तव्य, **-विद्** (पुं०) मीमांसक जो कर्म के सही या गलत मार्ग को जानता है, **-अधिकरणम्** 1. विधि का प्रशासन 2. न्यायालय, **—अधिकरणिन्** (पुं०) न्यायाधीश, दण्डनायक, **-अधिकारः** 1. धार्मिक कृत्यों का अधीक्षण--श० १ 2. न्याय-प्रशासन 3. न्यायाधीश का पद, **-अधिष्ठानम्** न्यायालय, **—अध्यक्षः** 1. न्यायाधीश 2. विष्णु का विशेषण, **—अनुष्ठानम्** धर्म के अनुसार आचरण, अच्छा आचरण, नैतिक चालचलन, **-अपेत** (वि०) जो धर्म विरुद्ध हो, दुराचारी, अनीतिकर, [अधार्मिक (तम्) दुर्व्यसन, अनैतिकता, अन्याय, **-अरण्यम्** तपोवन, वन जिसमें संन्यासी रहते हों -धर्मारण्यं प्रविशति यज्ञः--श० १।३३, **—अलीक** (वि०) झूठे चरित्र वाला **-आगमः** धर्मशास्त्र, विधि-ग्रन्थ, **-आचार्यः** 1 धर्मशिक्षक 2. धर्मशास्त्र या कानून का अध्यापक, **-आत्मज** युधिष्ठिर का विशेषण, **आत्मन्** (वि०) न्यायशील, भला, पुण्यात्मा, सद्गुणी, **आसनम्** न्याय का सिंहासन, न्याय की गद्दी, न्यायाधिकरण -न संभाषितमप्य धर्मासनमध्यासितुम् श० ६, धर्मासनाद्विगति वासगृहं नरेन्द्रः उत्तर० १।७, **-इन्द्रः** युधिष्ठिर का विशेषण, **ईशः** यम का विशेषण

उत्तर (वि०) अतिधार्मिक, जो न्याय धर्म का प्रयत्न पक्षपाती हो, निष्पक्ष और न्यायपरायण—धर्मोत्तरैः सत्यसमाश्रयैश्च रघु० १३।७, **-उपदेशः** 1. धर्म या कर्तव्य की शिक्षा, धार्मिक या नैतिक शिक्षण 2. धर्मशास्त्र, **कार्यम्, क्रिया,** कर्तव्य कर्म, नीति का आचरण, धर्मपालन, धार्मिक कृत्य या उपहार 2. सदाचरण, **-कथारिद्रः** कलियुग, **-कार्य** युद्ध का विशेषण, **कोलः** अनुदान, राजकीय लेख या शासन, **-केतुः** बुद्ध का विशेषण, **-कोशः** धर्मसंहिता, धर्मशास्त्र—धर्मशास्त्र मतल्ये —मनु० २।६, **-क्षेत्रम्** 1. शान्तकर्म (धर्म की भूमि) 2 दिल्ली के निकट का मैदान, कुरुक्षेत्र (यहां ही कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था) धर्मक्षेत्रे कुरु-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षेत्रे समवेता युयुत्सवः—भग० १।१, —घटः वैशाख के महीने में ब्राह्मण को प्रतिदिन दिये जाने वाले सुगन्धित जल का घड़ा, —चक्रभृत् (पुं०) बौद्ध या जैन, —चरणम्, —चर्या कानून का पालन, धार्मिक कर्तव्यों का सम्पादन—कु० ७।८३, —चारिन् (वि०) सद्व्यवहार करने वाला, कानून का पालन करने वाला, सद्गुणी, नेक—रघु० ३।४५, (पुं०) संन्यासी —चारिणी 1. पत्नी 2. पतिव्रता सती साध्वी पत्नी, —चिंतनम्, —चिंता भलाई या सद्गुणों का अध्ययन, नैतिक कर्तव्यों का विचार, नीति-विमर्श, —ज: 1. धर्म से उत्पन्न, वैध, पुत्र, असली बेटा—तु० मनु० ९।१०७ 2. युधिष्ठिर का नाम, —जन्मन् (पुं०) युधिष्ठिर का नाम, —जिज्ञासा धर्म सम्बन्धी पूछताछ, सदाचरण विषयक पृच्छा—अथातोधर्मजिज्ञासा —जैव,—जीवन (वि०) जो अपने वर्ण के नियमानुसार निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करता है, (नः) वह ब्राह्मण जो दूसरों के धर्मानुष्ठान में साहाय्य प्रदान कर अपनी जीविका चलाता है, —ज्ञ (वि०) सही बात को जानने वाला, नागरिक तथा धार्मिक कानूनों का जानकार—मनु० ७।१४१, ८।१७९, १०।१२७ 2. न्यायशील, नेक, पुण्यात्मा, —त्यागः अपने धर्म का त्याग करने वाला, धर्मच्युत,—दारः (पुं०, ब० व०) वैध पत्नी—स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम्—मा० ६।१८, —द्रोहिन् (पुं०) राक्षस, —धातुः बुद्ध का विशेषण, —ध्वजः, ध्वजिन् (पुं०) धर्म के नाम पर पाखंड रचने वाला, छद्मवेशी, नन्दनः युधिष्ठिर का विशेषण—नाथः कानूनी अभिभावक, वैध स्वामी,—नाभः विष्णु का विशेषण, —निवेशः धार्मिक भक्ति, —निष्पत्तिः (स्त्री०) कर्तव्य का पालन, नीति-पालन, धार्मिक अनुष्ठान,—पत्नी वैधपत्नी, धर्मपत्नी—रघु० २।२,२०,७२,८।३, याज्ञ० २।१२८, —पथः भलाई का मार्ग, चाल चलन का सन्मार्ग, —पर (वि०) धर्मपरायण, पुण्यात्मा, नेक, भला, —पाठकः नागरिक या धार्मिक कानूनों का अध्यापक, —पालः कानून का रक्षक (आल० से इसे 'दंड' कहते हैं), दण्ड, सजा, तलवार,—पीडा कानून का उल्लंघन करना, कानून के प्रति अपराध, पुत्रः 1. धर्मसम्मत पुत्र, (जो कर्तव्य ज्ञान की दृष्टि से उत्पन्न किया या माना गया हो केवल कामवासना का परिणाम न हो) 2. युधिष्ठिर का विशेषण, —प्रवक्तृ (पुं०) 1. धर्म का व्याख्याता, कानूनी सलाहकार, 2. धार्मिक शिक्षक, धर्म-प्रचारक, —प्रवचनम् 1. कर्तव्य-विज्ञान—उत्तर० ५।२३ 2. धर्म की व्याख्या करना, (नः) बुद्ध का विशेषण, —बाहु (बाहु) णिजिकः 1. जो अपने सद्गुणों से व्यापारी की भांति लाभ उठाने का प्रयत्न करता है 2. लाभदायक व्यवसाय को करने वाले व्यापारी की भांति जो पुरस्कार पाने की इच्छा से धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करता है,—भगिनी 1. वैधभगिनी 2. धर्मगुरु की पुत्री 3. वर्तमान, अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए जिसको बहन मान लिया जाता है, —भागिनी साध्वी पत्नी, —भाणकः व्याख्यानदाता जो महाभारत तथा भागवत आदि ग्रन्थों को व्याख्या सार्वजनिक रूप से अपने श्रोताओं के सामने रखता है,—भ्रातृ (पुं०) 1. धर्म-शिक्षा का सहपाठी, धर्म का भाई 2. वह व्यक्ति जिसको अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए, भाई मान लिया जाता है, —महामात्रः धर्ममंत्री, धार्मिक मामलों का मंत्री, —मूलम् नागरिक या धार्मिक कानूनों की नींव, वेद, —युगम् सत्ययुग, कृतयुग, —यूपः विष्णु का विशेषण, —रति (वि०) भलाई और न्याय में प्रसन्नता प्राप्त करने वाला, नेक, पुण्यात्मा, न्याय-शील—रघु० १।२३, —राज् (पुं०) धर्म का विशेषण, —राजः 1. यम 2. जिन 3. युधिष्ठिर, और 4. राजा का विशेषण, रोधिन् (वि०) 1. कानून के विरुद्ध, अवैध, अन्यायपूर्ण 2. अनैतिक, लक्षणम् 1. धर्म का मूल चिह्न 2. वेद, (ना) मीमांसा दर्शन, —लोपः 1. धर्माभाव, अनैतिकता, कर्तव्य का उल्लंघन—रघु० १।७६, —वत्सल (वि०) कर्तव्यशील, धर्मात्मा, —वर्तिन् (वि०) न्याय परायण, नेक, —वासरः पूर्णिमा का दिन, —वाहनः 1. शिव का विशेषण 2. भैंसा (यम की सवारी), —विद् (वि०) (नागरिक तथा धर्म विषयक) कर्तव्य का ज्ञाता, —विधिः वैध उपदेश, या आदेश, —विप्लवः कर्तव्य का उल्लंघन, अनैतिकता, —वीरः (अलं० शा० में) भलाई या पवित्रता के कारण उत्पन्न वीर रस, शौर्यसहित पवित्रता का रस, रस० में निम्नांकित उदाहरण दिया गया है :—सपदि विलयमेतु राज-लक्ष्मीस्तरलतरा पतन्त्वमंदा कृपाणधाराः, अपहरतु तरां शिरः कृतान्तो मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात् । —वृद्ध (वि०) सद्गुण व पवित्रता की दृष्टि से आगे बढ़ा हुआ (वृद्धा)—कु० ५।१६, —वैतंसिकः वह जो अपने आपको उदार प्रकट करने की आशा में, अवैधरूप से कमाये हुए धन को दान कर देता है, —शाला 1. न्यायालय, न्यायाधिकरण 2. वर्गाधिसंस्था, शासनम्, —शास्त्रम् धर्मसंहिता न्यायशास्त्र हि० १।१७, याज्ञ० १।५, —शील (वि०) न्यायशील, पुण्यात्मा, सदाचारी या सद्गुणी, —संहिता धर्मशास्त्र (विशेष रूप से मनु, याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों द्वारा प्रणीत स्मृतियाँ), —सङ्गः 1. सद्गुण या धर्म से अनुराग या आसक्ति 2. पाखंड, —सभा न्यायालय,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—सहायः धार्मिक कर्तव्यों के पालन करने में सहायक, साथी या साझीदार ।

धर्मतः (अव्य०) [धर्म-तसिल्] 1. धर्म के अनुसार, नियमानुकूल, सही तरीके से, धर्म पूर्वक, न्याय के अनुरूप 2. भलाई से, नेकी के साथ 3. भलाई या नेकी के उद्देश्य से ।

धर्मयु (वि०) [धर्म + यु] 1. सद्गुणभूषण, न्यायशील, पुण्यात्मा, नेक ।

धर्मिन् (वि०) [धर्म+इनि] 1. सद्गुणों से युक्त, न्यायशील, पुण्यात्मा 2. अपने कर्तव्य को जानने वाला 3. कानून का पालन करने वाला 4. (समास के अंत में) किसी वस्तु के गुणों से युक्त, प्रकृति का, विशिष्ट गुणों से युक्त,—वदसुताः द्विजधर्मिणः - मनु० १०। १४, कल्पवृक्षफलधर्मि काङ्क्षितम्-रघु० ११।५०, (पुं०) विष्णु का विशेषण ।

धर्मोपुत्रः (पुं०) अभिनेता, नाटक का पात्र, खिलाड़ी ।

धर्म्य (वि०) [धर्म+यत्] 1. धर्मसम्मत, कर्तव्यसंगत कानूनी रूप से सही, वैध -मनु० ३।२२, २५, २६ 2. धर्मयुक्त (कार्य)-कु० ६।१३ 3. न्यायोचित, भला, उपयुक्त धर्म्याद्धि शुद्धाच्छूयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते —भग० २।३१, १।२, याज्ञ० ३।४४ 4. वैध, यथा-रीति 5. विशेष गुणों से युक्त —यथा 'तद्धर्म्यम्' ।

धर्षः [धृष्+घञ्] 1. धृष्टता, अविनय अहंकार, ढिठाई 2. घमंड, अभिमान 3. अधीरता 4. संयम 5. बलात्कार, (स्त्री का) सतीत्व हरण 6. क्षति, बुराई, अवज्ञा 7. हीजड़ा । समः -कारिणी बलात्कार द्वारा जिसका सतीत्वहरण हो चुका हो ।

धर्षकः (वि०) [धृष्+ण्वुल्] 1. हमला करने वाला, आक्रमणकारी, प्रहार करने वाला 2. बलात्कार करने वाला, सतीत्वहरण करने वाला 3. अधीर,—कः 1. सतीत्वहर्ता, व्यभिचारी, बलात्कारी 2. अभिनेता, नटक ।

धर्षणम्,-णा [धृष्+ल्युट्] 1. धृष्टता, अविनय 2. अवज्ञा, मानहानि 3. आक्रमण, अत्याचार, सतीत्वहरण, बलात्कार नारी 4. स्त्रीसंभोग 5. तिरस्कार, निरादर 6. दुर्वचन ।

धर्षणिः,-णी [धृष्+अनि, धर्षणि+ङीष्] असती, स्वैरिणी, कुलटा स्त्री ।

धर्षित (वि०) [धृष्+क्त] 1. जिसका चरित्र भ्रष्ट किया गया है, अत्याचार पीड़ित, जिसके साथ बलात्कार हो चुका है 2. विजित, पराभूत, परास्त -नै० २२।१५५ 3. जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, जिसे गाली दी गई है, तिरस्कृत,-तम् 1. औद्धत्य, घमंड 2. सहवास, मैथुन,-ता कुलटा, असती स्त्री ।

धर्षिन् (वि०) [धृष्+णिनि] 1. घमंडी, उद्धत, उद्दंड 2. आक्रमण करने वाला, सतीत्वहरण करने वाला, बलात्कार करने वाला 3. तिरस्कार करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला 4. धर्षक, ढिलेर 5. स्त्री सहवास करने वाला,- णी कुलटा, या असती नारी ।

धवः [धु+अप्] 1. हिल-जुल, कम्पन 2. मनुष्य 3. पति-यथा 'विधवा' में 4. मालिक, स्वामी 5. बदमाश, ठग 6. एक प्रकार का वृक्ष 'धौ' ।

धवलः [धव् कम्प् लाति—ला+क तारा०] 1. श्वेत, —धवलातपत्रम् धवलं गृहम् 2. सुन्दर 3. स्वच्छ, विशुद्ध,- लः 1. श्वेत रंग 2. अल्पवयस्क बैल 3. चीनी कपूर 4. 'धव' नाम का वृक्ष,- लम् सफ़ेद कागज़ —ला सफ़ेद गाय, बौली गाय । सम०—उत्पलम् श्वेत कुमुद (चन्द्रोदय होने पर इस का खिलना प्रसिद्ध है)—गिरिः हिमालय पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी, —गृहम् धूने से पुता घर, महल,—पक्षः 1. हंस 2. चान्द्रमास का शुक्लपक्ष, मृत्तिका चाक-मिट्टी ।

धवलित (वि०) [धवल+इतच्] सफ़ेद किया हुआ, श्वेत बना हुआ ।

धवलिमन् (नपुं०) [धवल+इमनिच्] 1. सफ़ेदी, सफ़ेद रंग 2. पांडुता पीलापन — इय धूतिर्नाङ्के प्रियविरह-जन्मा धवलिमा सुधा० ।

धविलम् [धू+इत्र] मृगचर्म से बना पंखा ।

धा (जुहो० उभ० दधाति, धत्ते, हित, कर्मवा० धीयते, प्रेर० वापयति-ते, इच्छा० दित्सति—ते) 1. रखना, धरना, जड़ना, लिटा देना, भर्ती करना, तह जमाना

विज्ञातदोषेषु दधाति दण्डम्- महा०, निःशंकं धीयते (अने० पा० 'दीयते' के स्थान पर) लोकैः पदयं भस्मन्यधे पदम्— हि० २।१७३ 2. जमाना, (मन और विचारों को) लगाना, (सम्प्र० या अधि० के साथ) - धत्ते चक्षुर्मुकुलिनि रणत्कोकिले बालचूते—मा० ३।१२, दधुः कुमारानुगमे मनांसि-- भट्टि० ३।११, २।७: मनु० १२।२२ 3. प्रदान करना, अनुदान देना, देना, अर्पित करना, उपहार देना, (संप्र० संब० या अधि० के साथ) धुर्यां लक्ष्मीमथ मयि भृशं धेहि देव प्रसीद मा० १।३, यस्य सोऽदधात्सर्गे तस्य स्वयमादिराट्— मनु० १।२९ 4. पकड़ना, रखना—तानपि दधासि मातः—मालवि० १।६८, श० ४।१ 5. पकड़ना, हस्तगत करना -भट्टि० १।२६, ४।२६, कि० १३।५४ 6. पहनना, धारण करना, बहन करना गुरूणि वासांसि विहाय तूर्णं तनूनि धत्ते जनः कामपदालसाङ्गः ऋतु० ६।१३, १६, धत्ते भरं कुसुमपत्र फलोल्वलीनाम्— भामि० १।९४, दधतो मङ्गलक्षौमे— रघु० १३।८, ९।४०, भट्टि० १८।५४ 7. धारण करना, लेना, रखना, दिखलाना, प्रदर्शन करना, कब्जे में करना (प्रायः आ०)— काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम् - हि० प्र० ४१, शिरसि मसीपटलं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दधाति दीपः—भामि० १।७४, रघु० २।७, अमरु २३।६७, मेघ० ३६, भर्तृ० ३।४६, रघु० ३।१, भट्टि० २।१,४।१६—१८, शि० ९।३.१०।८६, कि० ५।५ 8. संभालना, निबाहना, थामे रखना,—गामधास्यत्कर्षं नागो मृणालमदुभिः फणैः— कु० ६।६८ 9. सहारा देना, स्थापित रखना - संपद्दिनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयं -रघु० १।२६ 10. पैदा करना, रचना करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना, बनाना—मुखा कुड्मलितानने दधती वायु स्थिता तस्य सा—अमरु ७० 11. सहना, भोगना, ग्रस्त होना—शि० ९।२, ३२,६६ 12. सम्पन्न करना, [दा' की भांति इस धातु के अर्थ भी दूसरे शब्दों के साथ जुड़ने से विविध प्रकार के हो जाते है, उदा० मनः, मतिम्, धियं वा, मन को लगाना, विचारों को लगाना दृढ़ संकल्प करना, पदं वा पग रखना. प्रविष्ट होना, कर्णे करं वा, कान पर हाथ रखना | अतिसम् —ढकना, ओझा देना - भयवत् कुसुमायुधस्य सखा चन्द्रमसा च विश्वसनीयाभ्यामनिसंशीयते कामिजनसार्थः —श० ३, विक्रम० २, अन्तर —, 1. मन में रखना, नानना, ग्रहण रखना—नया विश्वम्भरे देवि मामंतर्कानुमर्हसि —रघु० १५।८१, 2. अपने आपको छिपाना, गुप्त रखना, आंखल होना (संप्र० के साथ) —भट्टि० ५।३२, ८।३१, 3. ढकना, छिपाना, दृष्टि से ओझल करना, लपेटना, ढांकना (आ० भी) नितम्बदेशे कोटि शोल्वृत्तसमाधिभिः—गहा० अनुसम्—, 1. ढूंढना, पूछताछ करना, अन्वेषण करना, जांचपड़ताल करना 2. सचेत होना. अपने आपको ज्ञात करना 3. उल्लेख करना, संकेत करना, लक्ष्य बनाना 4. योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, क्रम में रखना, अपि—(कभी कभी 'अपि' का 'अ' लुप्त हो जाता है) । (क) बन्द करना, मेजना ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमनिद्यानि—गीत० ५, इसी प्रकार—कर्णौ नयने-पिदधानि (व) ढकना, छिपाना, गुप्त रखना, —प्रायो मूर्खः परिभवविधौ नाभिमानं विधत्ते - शृंगार० १७, प्रभावविहिता विक्रम० ४।२, शि० ९।७६, भट्टि० ७।६२ 2. रोकना, बाधा डालना, प्रतिबंध लगाना -भुजद्वयविहितद्वार पातालमविशितिष्ठति- -रघु० १।८० अभि , (क) कहना, बोलना, बताना कु० ३।६३, मनु० १।४३, भट्टि० ७।७८, भग० १८।६८, (ख) 1. संकेत करना, व्यक्त करना, मुख्यतः कहलाना प्रस्तुत करना—साक्षात्संकेतितं यौर्थमभिधत्ते स वाचकः काव्य० 2. तत्पर होना, अभिदधति सत्त्वम् 2. अभियान होना. पुकारना. अभिसम्—, 1. किसी पर फेंकना. निशाना लगाना, (तीर आदि का) लक्ष्य बनाना 2. ध्यान में रखना, (मन में) निशाना बनाना, सोचना—कृष्यद्भूकमभिसंधाय —महावी० ५, अभिसंधाय तु फलम्—भग० १७।१२, २५, विक्रम० ४।२८ 3. धोखा देना, ठगना— जनं विद्वानेकः सकलमभिसंधाय—मा० १।१४ 4. अपने पक्ष में कर लेना, मित्र बना लेना, दूसरों का मित्र बन जाना तात्सवीनभिसंदध्यात् सामादिभिरुपक्रमैः मनु० ७।१५९ (वशीकुर्यात्) 5. प्रतिज्ञा करना, प्रकथन करना 6. जोड़ना, अध्या नीचे रखना, नीचे फेंकना, अव—सावधान होना, ध्यान देना, कान देना इतोऽवधत्तां देवराजः— महावी० ६, आ, (प्रायः 'आ०' में) 1. रखना, धरना, ठहरना—जनपदे न गद पदमादधौ—रघु० ९।४, भग० ५।४० शि० ४।३ 2. प्रयोग करना, जमाना, किसी की ओर संकेत करना प्रतिपत्तसाधीयतां यत्नः—श० १, मध्येव मन आधत्स्व— भग० १२।८, आधीयतां पैर्यमर्यं च धीः —का० ६३, 3. लेना, आधिकार में करना, वहन रखना गर्भमाधत्त राज्ञी- रघु० २।७५, (गर्भ वहन किया) आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीं—कि० ५।३९, (लेती है या धारण करती है) कु० ७।२६, 4. बोझा उठाना, थामना, संहारा देना शेषः संदेवाहितभूमिभारः—श० ५।४ 5. पैदा करना, उत्पादन करना, सर्जन करना, उत्तेजित करना (भय या आश्चर्य) छायाश्चरन्ति बहुधा भयमादधानाः श० २।२७, कि० ४।१२ 6. देना, समर्पित करना रघु० १।८५ 7. नियुक्त करना, स्थिर करना तमेव चाद्याय विवाहसाक्षिये—रघु० ७।२० 8. संस्कृत करना—कु० १।४७ 9. अनुष्ठान करना, (व्रत आदिका) पालन करना, -आविस्, भेद खोलना, प्रकट करना (श्रेष्ठ-साहित्य में बहुत प्रयोग नहीं) उप —, 1. रखना, उठाना, नीचे रखना, अन्दर रखना - अधिजानु बाहुमुपाधाय शि० ९।५४, हृदि चैनामुपधानुमर्हसि —रघु० ८।७७, (हृदयस्थित करने के लिए) उपहितं शिशिरांशुमरीचिभिर्मृदुलतालशोभित किसलके—रघु० ९।३१, कु० १।४४ 2. निकट रखना, (घोड़े आदि को) जोतना, महावी० ४।५६ 3. पैदा करना, निर्माण करना, उत्पादन करना मृच्छ० १।५३ 4. ऊपर डालना, सौंपना, संभालना, देख रेख में करना —तदुपक्षिप्तकुटुम्बः,—रघु० ७।७१, 5. नकिये के स्थान में प्रयुक्त करना—वामभुजमुपधाय- दश० १११ 6. काम में लगाना, अभ्यर्थना करना, प्रदान करना - क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति— रघु० ३।२९ 7. ढकना, छिपाना 8. देना, जनाना, समाचार देना, उपा, — 1. निकट रखना, ऊपर रखना 2. पहनना 3. पैदा करना, सर्जन करना, उत्पादन करना —भर्तृ० ३।८५, तिरस्—. 1. छिपाना, गुप्त रखना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. (आ०) लुप्त होना, ओझल होना—अभिवृष्ट-मरुत्सखं कृष्णमिवंसितारोदधे—रघु० १०।४८, ११।९,१, तिरस् के नी० भी देखिये **निः**, 1. रखना, धरना, जड़ देना—शिरसि निदधानोऽञ्जलिपुटम् भर्तृ० ३।१२१, रघु० ३।५७, ६२, १२।५२ शि० १।१३ 2. भरोसा करना, सौंपना, देख रेख में रखना—निदधे विजयाशंसां चापे सीता च लक्ष्मणे—रघु० १२।४४, १४।३६ 3. देना,समर्पित करना, जमा कर देना—दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव बृताशनः—रघु० ४।१ 4. दबा देना, शान्त करना, रोक देना—सक्तिं निहितं रजः क्षितौ—भट्ट० १ 5. दफन करना, (भूमि के अन्दर) गाड़ देना, छिपाना—मनु० ५।६८, परि—, 1. (वस्त्रादिक) पहनना, धारण करना—वल्कं स मेध्यां परिधाय रौरवीं—रघु० ३।३१ 2. अड़ाना बना लेना, घेरा डाल लेना 3. किसी की ओर संकेत करना, **परि**, सिर पर रखना या धारण करना तुरासाहं पुरोधाय धाम स्वायंभुवं ययुः—कु० २।१, रघु० १२।४३

2. कुलपुरोहित बनाना, **प्रणि**, —रखना, नीचे धरना या लिटा देना, साष्टांग प्रणत होना—प्रणिहितशिरसं दा कान्तमार्द्रापराधम् मालवि० ३।१२, तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम् भग० ११।४४ 2. जड़ना, अन्दर रखना, अन्दर लिटाना, पेटी में बन्द करना—यदि मणिस्त्रपुणि प्रणिधीयते—पंच० १।७५, अनें० पा० 3. प्रयोग करना, स्थिर करना, किसी की ओर संकेत करना—भर्तृ० प्रणिहितेक्षणाम्—रघु० १५।८४, भट्टि० ६।१४२ 4. फैलाना, विस्तार करना—मामाकाम-प्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेषहेतोः मेघ० १०६, नीचीं प्रति प्रणिहितै तु करे प्रियेण सख्यः शपामि यदि किंचिदपि स्मरामि—काव्य० ४ 5. (चर के रूप में) बाहर भेजना, **प्रतिवि** —, 1. प्रतीकार करना, संशोधन करना, मरम्मत करना, बदला लेना, उपाय करना, विरुद्ध पग उठाना—अर्थवादं एवः, दोषं तु मे कंचित्-स्वयं येन स प्रतिविधीयेत—उत्तर० १, क्षिप्रमेव कस्मान्नप्रतिविहितमार्येण मुद्रा० ३ 2. व्यवस्था करना, क्रम से रखना, सजाना 3. प्रेषित करना, भेजना, **प्रवि**—, 1. बाँटना 2. करना, बनाना, **वि** —, 1. करना, बनाना, घटित करना, प्रभावित करना, सम्पन्न करना, अनुष्ठान करना, पैदा करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना यथाक्रमं पुंसवनादिकाः क्रिया धृतेश्च धीरः सदृशोऽभ्यधत्त सः—रघु० ३।१०—तस्मा-देवा विधेयासुः—भट्टि० १९।२, विधेयासुर्देवाः परमरमणीयां परिणतिम्—मा० ६।७, प्रायः शुभं च विदधात्यशुभं च जन्तोः सर्वंक्षमा भगवती भवितव्यतैव १।२३, ये ह्ये कालं विधयः—शा० १।१, पैदा करना, उत्पादन करना, समय का विनियमित करना —वस्य तस्यावली श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् भग० ७।२१, रघु० २।३८, ३।६६, (इस अर्थ 'विधा' के साथ जुड़ने वाले शब्द के अनुसार और भी अधिक अदल-बदल किए जा सकते हैं, नृ० कृ०) 2. निर्धारित करना, विधान बनाना, निर्दिष्ट करना, नियत करना, स्थिर करना, आदेश देना. आज्ञा देना—प्राङ्-नाभिबंधनात्पुंसो जातकर्म विधीयते मनु० २।२९, ३।१९, याज्ञ० १।७२, शूद्रस्य तु सवर्णैव ताम्या भार्या विधीयते ९।१५७, ३।१।८ 3. रूप बनाना, शक्ल देना, सर्जन करना, निर्माण करना—तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९, अङ्गानि चम्पक-दलैः स विधाय नूनं कान्त्या कथं घटितवानुपलेन वेधाः—शृंगार० ३ 4. नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना (मन्त्री आदि को) 5. पहनना, धारण करना पंच० १।२९ 6. स्थिर करना, (मन आदि को) लगाना भग० २।४४, भर्तृ० ३।५४ 7. क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना 8. तैयार करना, तत्पर करना,

व्यव -, 1. बीच में रखना, बीच में डालना, हस्तक्षेप करना प्रेक्ष्य स्थितां सहचरीं व्यवधाय देहम् -रघु० ९।५७ 2. छिपाना, ढकना, पर्दा डालना—व्यपव्यव-हितस्मृतेः—शा० ५, **-धृ** —, भरोसा करना, विश्वास रखना (कर्म० के साथ)—कः श्रद्धास्यति भूतार्थमन्मुच्छ० ३।२४, श्रद्दधे विदुराणीव भावं ते दारुणं-कितम् कृष्णकर्मणि—रघु० ११।४२, **सम्**—, 1. मिलाना, एकत्र लाना, संयुक्त करना, मिला देना, यानि उदकेन संधीयन्ते तानि भक्षणीयानि कुल्लूक० 2. वार्ता करना, मित्रता करना, संधि करना—शत्रुणा न हि संदध्यात्सुश्लिष्टेनापि सन्धिना हि० १।८८, चाण० १९, काम० ९।४१ 3. स्थिर करना, यानि उदकेन संधीयन्ते दृशमुदग्रतारकाम्—रघु० ११।६९

4. (किसी अस्त्र या तीर आदि को) धनुष पर ठीक-ठीक बैठाना, या ठीक से जमाना—धनुर्व्यायोग्य समयत्त बाणम्—कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।९७ 5. उत्पादन करना, पैदा करना पर्याप्तं मयि रमणीयचक्रमस्त्रं संधत्ते गगनतलप्रयाणवेगः मा० ५।३, संधत्ते भृश-मरतिं हि सद्वियोगः—कि० ५।५१ 6. मुकाबला करना, मुकाबले में सामने आना, शतमेकोऽहि संधत्ते प्राकारस्थो धनुर्धरः—पंच० १।२२९ 7. सुधारना, मरम्मत करना, स्वस्थ करना 8 कष्ट देना 9. ग्रहण करना, सहारा देना, थामकर संभालना 10. अनुदान देना, **सांति**—, 1. रखना, एकत्र रखना,—मनु०२।१८६ 2. निकट रखना—शा० ३।१२, 3. स्थिर करना, निर्दिष्ट करना—रघु० १३।१४४ 4. निकट जाना पहुँचना—प्रेर० निकट लाना, एकत्र संग्रह करना, सभा—, 1. एकत्र रखना या धरना, मिलाना, संयुक्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना 2. रखना, धरना, स्थापित करना, लागू करना – पदं मूर्ध्नि समाधत्ते केसरी गजदन्तिनः पंच० १। ३२७ 3. जमाना, अभिषेक करना, राजगद्दी पर बिठाना – रघु० १७।८ 4. समाप्तवस्त होना, (मन को) शान्त करना · मनः समाधाय निवृत्तशोकः – रामा०, न शशाक समाधातुं मनो मदनवेपितम् – भाग० 5. संकेन्द्रित करना, (आँख या मन आदि को) एकाग्र करना, – भग० १२।९, भर्तृ० ३।४८ 6. संतुष्ट करना, (शंका का) समाधान करना, आक्षेप का उत्तर देना · इति समाधत्ते (टीकाओं में) 7. सम्मत करना, सुधारना, ठीक करना, हटा देना – न ते शक्यः समाधातुम् हि० ३।३७, उत्पन्नामापदं वस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्· ४।७ 8. विचार करना भट्टि० १२।६ 9. सौंपना, अर्पण करना, हस्तान्तरित करना 10. पैदा करना, कार्यान्वित करना, सम्पन्न करना (निम्नांकित श्लोक में सौंपना या धरना के प्रयोगों का चित्रण किया गया है अधित कापि मुखे सलिलं सखी व्यधित कापि शरीरजलैः स्तनौ. व्यधित कापि हृदि व्रजनाथिलं व्यधित कापि मुनोः स्तनौ ० ४।११११, इससे भी अच्छा निम्नांकित जगन्नाथ का श्लोक निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुषां प्रमाणं सीधानामलघुपरिणामं त्रिजगतः, समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियां श्रियःसाधानं नः परिहरतु पापं तव वपुः गंगा० १८)।

धाकः [धा–क उणा० नस्य लत्वम्] 1. बैल 2. आधार, आश्रय 3. आहार, भात 4. स्थूणा, खंभा, स्तंभ।

धाटी [धट् घञ्]+ङीष्] धावा, आक्रमण।

धाणकः [धा+आणक] एक सोने का सिक्का (दीनार का अंश)

धातुः [धा+तुन्] संघटक या मूल भाग, अवयव 2. मूल तत्त्व, मुख्य या तत्त्व मूलक भागों –अर्थात् पृथिवी, आपः, तेजस्, वायु और आकाश, 3. रस, मुख्य द्रव्य या रस, शरीर का अनिवार्य उपादान (यह गिनती में सात माने जाते हैं –रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जा-शुक्राणि धातवः · कई बार केश, स्नायु और स्नायु को मिला कर रस मान लिये जाते हैं) 4. शरीर के स्थितिविधायक तत्त्व (अर्थात् वात, पित्त, कफ – त्रिदोष) 5. खनिज पदार्थ, धातु, बच्चों धातु –व्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र, –कु० १।७, त्वामालिख्य प्रणयकुपिता धातुरागैः शिलायाम् मेघ० १०५, रघु० ४।७१, कु० ६।५१ 6. क्रिया का मूल, भूवादयो धातवः पा० १।३।१, पदात्पदव्यवनार्थस्य धातोरधिरिदाभवत् –रघु० १५।९ 7. आत्मा. 8. परमात्मा 9. ज्ञानेन्द्रिय 10 पाँच महाभूतों का गुण – अर्थात् रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द 11. हड्डी। सम० **उपलः** खड़िया, चाक्, **काशीशम्–कासीसम्–कसीस, कुशलः**–(वि०) धातु के कार्यों में दक्ष–**क्रिया** धातुकार्मिकी, धातुकर्म, खनिकी, धातुविज्ञान,–**क्षयः** शरीर के तत्त्वों का नाश, क्षयरोग, **जम्** शिलाजीत, **तैलजं तैलम्**–**द्रावकः** सुहागा,–**पः** खारा, पौष्टिक रस, शरीर के सात मूल उपादानों में मुख्य उपादान –**पाठः** पाणिनि की व्याकरण पद्धति के अनुसार बनी धातुओं की सूची (पाणिनि के सूत्रों के परिशिष्ट के रूप में धातु पाठ, पाणिनि निर्मित एक आवश्यक सूची है),– **भूत** (पुं०) पहाड़,– **मलम्** 1. शरीरस्थ धातुओं के मल के अपवित्र रूपांतर 2. सीसा,–**माक्षिकम्** 1. एक उपधातु सोनामक्खी 2. खनिज पदार्थ, **मारिन्** (पुं०) गंधक,– **राजकः** लोहं,–**वल्लभम्** सुहागा,–**वादः** खनिज विज्ञान, धातुविज्ञान,–**वादिन्** (पुं०) खनिज विज्ञाता–**वैरिन्** (पुं०) गंधक,–**शेखरम्** कांसीस, गंधक का तेजाब,– **शोधनम्**, **संभवम्** सीसा, – **साम्यम्** अच्छा स्वास्थ्य (त्रिदोष-समता)।

धातुमत् (वि०) [धातु+मतुप्] धातुओं से भरा हुआ, धातु संपन्न। सम०—**ता** धातुओं का बाहुल्य,– कु० १।४।

धातृ (पुं०) [धा+तृच्] 1. निर्माता, रचयिता, उत्पादक, प्रणेता 2. धारण करने वाला, संधारक, गहारा देने वाला 3. सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का विशेषण – मत्सः दुर्जनचित्तवृत्तिहरणो धातापि भगवान्नमः–हि० २।१६५, रघु० १३।६, शि० १।१३, कु० ७।४४ कि० १२।३३ 4. विष्णु का विशेषण 5. आत्मा 6. ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि होने के कारण सप्तर्षियों के नाम, तु० कु० ६।९ 7. विवाहित स्त्री का प्रेमी व्यभिचारी।

धात्रम् [धा+ट्रन्] बर्तन, पात्र।

धात्री [धात्र+ङीष्] 1. दाई, धाय, उपमाता 2. उचाच धाय्या प्रथमोदितं वचः· रघु० ३।२५ कु० ७।२५ 3. माता–वाजः ३।८२, ३. पृथ्वी 4. आँवले का वृक्ष। सम०—**पुत्रः** धाय का पुत्र, धर्म भाई 2. अभिनेता, –**फलम्** आँवला।

धात्रेयिका, धात्रेयी [धात्रेयी+कन्] छोटी, हल्की, धात्री इव–ङीष्] धात्रीपुत्री–धात्रेयिकायाश्चतुरं वचश्च · भा० १।३२, कथितमेव नो मालतीधात्रेय्या लवङ्गिकया–मा०१ 2. धाय, दूध पिलाने वाली धाय।

धानम्,—**नी** [धा+ल्युट्, धान+ङीष्] आधार, पात्र, गद्दी, स्थान, जैसा कि मसीधानी, राजधानी, शमधानी।

धानाः (स्त्री० ब० व०) [धान+टाप्] भुने हुए जौ या चावल, खील 2. मंजु 3. अनाज, अन्न 4. कली, अंकुर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धानुदण्डिकः, धानुष्कः [धनुर्दण्ड+ठक्, धनुष्+ठक्+क] तीरंदाज, (धनुष के द्वारा अपनी जीविका कमाने) वाला धनुर्धर -निमित्तादाराद्धेर्धानुष्कस्यैव वलिंलप्—शि० २।२७।

धानुष्यः [धनुष्+ष्यञ्] बाँस।

धार्या (स्त्री०) इलायची।

धान्यम् [धान+यत्] 1. अनाज, अन्न, चावल 2. धनिया (खरा और धान्य, तथा तंडुल और अन्न की भिन्नता के लिए दे० तण्डुल) । सम० -अम्लम् मांड से तैयार की हुई कांजी, **अर्घः** चावल या अनाज के रूप में धन, **अस्थि** (नपुं०) तूस या भूसी, **कूर** या खीचड़ा,—**उत्तमः** बढ़िया अन्न अर्थात् चावल,—**कल्कम्** 1. छिलका (अन्न का), धान्यत्वचा 2. भूसी, खोकर, पुआल,—**कोष्ठः,—कोष्ठकम्** अनाज की खत्ती,—**क्षेत्रम्** अनाज का खेत,—**क्षमः** चोला, छिलका,—**त्वच्** (स्त्री०) अनाज का छिलका, **मायः** अनाज का व्यापारी,—**राजः** जौ,—**वर्धनम्** ब्याज के लिए अनाज उधार देना, अनाज की सूदखोरी,—**बीजम्** (**बीजम्**) धनिया,—**वीरः** उड़द (माष) की दाल, **शोधकम्** अनाज की बाल,—**शूकम्** अनाज का सिट्टा, दूंड,—**सारः** कूट पीट कर निकाला हुआ अन्न।

धान्या, धान्याकम् [धान्य+टाप्, स्वार्थे कन् च] धनिया।

धान्वन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन्वन्+अण्] मरुभूमि का, मरुस्थल में विद्यमान।

धामकः [=धानक पृषो०] एक माशे की तोल।

धामन् (नपुं०) [धा+मनिन्] 1. आवास -स्थान, गृह, निवासस्थान, घर—तुरासाह्न पुरोधाय धाम स्वायंभुव यथुः कु० २।१. पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डेश्वरस्य—मेघ० ३३, भग० ८।२१, भर्तृ० १।३३ 2. जगह, स्थान, आश्रय—श्रियोधाम 3. घर के निवासी, परिवार के सदस्य 4. प्रकाश किरण, सहस्रधामन् मुटा० ३।१७, हिमधामन् शि० ९।५३ 5. प्रकाश, कान्ति, दीप्ति—मुद्रा० ३।१७, कि० २।२०, ५४, ५९, १०।६, अमरु ८६, रघु० ६।६, १८। २२, 6. राजयोग्य कांति, यश, प्रतिष्ठा—रघु० ११। ८५ 7. शक्ति, सामर्थ्य, प्रताप—कि० २।४७ 9. जन्म 9. शरीर 10. टोली, दल 11. अवस्था, दशा। सम०—**ईशिन्,** —**निधिः** सूर्य।

धामनिका, धामनी [धामनी+कन्+टाप् ह्रस्वः, धमनी+अण्+ङीप्] दे० धमनी।

धार (वि०) [धृ+णिच्+अच्] 1. संभालने वाला, थामने वाला, सहारा देने वाला, 2 नदी की भांति प्रवाहित होने वाला, टपकने वाला, चाटने वाला, -रः 1. विष्णु का विशेषण 2. वर्षा का आकस्मिक तथा तीक्ष्ण बौछार, तेजी से उड़ा ले जाने वाली झड़ी 3. हिम, ओला 4. गहरी जगह 5. कूप 6. हद, सीमा।

धारकः [धृ+ण्वुल्] 1. किसी प्रकार का बर्तन (बक्स ट्रंक आदि), जलपात्र 2. कर्जदार।

धारण (वि०) (स्त्री० ई) [धृ+णिच्+ल्युट्] संभालने वाला, थामने वाला, ले जाने वाला, संधारण करने वाला, निबाहने वाला, रक्षा करने वाला, रखने वाला, धारण करने वाला, -णम् 1. संभालने, थामने, सहारा देने, संधारण करने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2. रूप में करना, संपत्ति 3. पालन करना, दृढ़ता पूर्वक पकड़ना, 4. याद रखना—ग्रहणधारण पटुबालकः 5. (किसी का) कर्जदार होना,—**णी** 1. पंक्ति या रेखा 2. शिरा, तलवार वाहिका।

धारणकः [धारण+कन्] कर्जदार।

धारणा [धारय+टाप्] 1. संभालने, थामने, सहारा देने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2. मन में धारण करने की शक्ति, अच्छी धारणात्मकस्मरण शक्ति —धीर्धारणावती मेधा -अमर 3. स्मरण शक्ति 4. मन को शांत रखना, ध्यान को थामे रखना, मन की दृढ़ आत्मसंयता परिचेतुमुपांशु धारणा—रघु० ८।१८, मनु० ६।७२, याज्ञ० ३।२०१, (धारणेत्युच्यते चेयं धार्यते यन्मनस्तया) 5. धैर्य, दृढ़ता, स्थिरता 6. निश्चित विधि या नियम, निश्चित नियम, उपसंहार, इति धर्मस्य धारणा—रघु० ८।१८४, ४।३८, ९।१२४ 7. समझ, बुद्धि 8 न्यायपटुता, औचित्य, शालीनता 9. आस्था, विश्वास। सम० -योगः गहरी भक्ति, मनोयोग,—**शक्तिः** (स्त्री०) धारणात्मक स्मरण शक्ति।

धारयित्नु [धृ+णिच्+क्त्नु+ङीप्] पृथ्वी।

धारा [धार+टाप्] 1. पानी की सरिता या धार, गिरते हुए जल की रेखा, सरिता, धार—भर्तृ० २।९३, मेघ० ५५, रघु० १६।६६, आबद्धधारमभ्रु प्रावर्तत —दश० ७४ 2. बौछार, वर्षा की तेज घड़ी 3. अनवरत रेखा—भामि० २।२० 4. घड़े का छिद्र 5. घोड़े का कदम -धाराः प्रक्षाधयितुमव्यक्तिकीर्णरूपाः शि० ५।६० 6. हाशिया, किनारा, किसी वस्तु की किनारी या सीमा—भ्रुव स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—श० १।९८ 7. तलवार, कुल्हाड़ा या किसी काटने वाले उपकरण का तेज किनारा या धार -राजितः परशुधारया सम—रघु० ११।७८, ६।४२, १०।८६, ४१, भर्तृ० २।२८ 8. किसी पहाड़ या चट्टान का किनारा 9. पहिया या पहिये का परिधाह या परिधि रघु० १३।१५ 10 उद्यान की दीवार, बाड़, झाड़बंदी 11. सेना की अग्रिम पंक्ति 12. उच्चतम बिन्दु, सर्वोपरिता 13. समुच्चय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

14. घर, 15. रात 16. हल्दी 17. समानता, 18 कान का अग्रभाग। सम०-अग्रम् बाण का चौड़ा फलका,-अर्बुदः 1. वर्षा की बूंद 2. ओला 3. (शत्रु का मुकाबला करने के लिए) सेना के आगे २ बढ़ने जाना, अंगः तलवार,-अद्रः 1. चातक पक्षी 2. घोड़ा 3. बादल 4. मदमाता हाथी, अधिरूढ़ (वि०) उच्चतम स्तर तक उठाया हुआ अवनिः (स्त्री०) हवा, अम्बु (नपुं०) अम्बु प्रवाह आदि १० आसारः भारी वर्षा, मुसलाधार वर्षा धारासारैर्मही वृष्टिर्दभूव हि० ३, विक्रम० ४।१, -उक्ष (वि०) (गौ के स्तन से निकला हुआ) गरम (दूध), गृहम् स्नानागार, जिसमें फौवारे से सुसज्जित स्नानागार हो—रघु० १६।४९, रत्न० १।१३, धरः 1. बादल 2. तलवार, -निपातः, -पातः 1. वारिश का होना, बौछार का इतना गिरना मेघ० ४८ 2. जल की धारा सरिता, यन्त्रम् फौवारा, झरना (पानी का) अमरु ५१, रत्न० १।१२,—वर्ष,-पंम्-संपातः लगातार घोर मुसलाधार वृष्टि -रघु० ४।८२,-वाहिन् (वि०) अनवरत, लगातार -उत्तर० ४।२, विषः देखो तलवार।

धारिणी [धृ णिनि+ङीप्] पृथ्वी।

धारिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [धृ+णिनि] 1. ले जाने वाला, वहन करने वाला, सिंहासन वाला, सुरक्षित रखने वाला, रखने वाला, संभालने वाला, गहारा देने वाला गाडाभोरहधारि -गीत० १२, कर आदि 2. स्मृति में रखने वाला, धारणात्मक स्मरण शक्ति रखने वाला, अन्येभ्यो ग्रन्थितः श्रेष्ठः, ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः मनु० १२।१०३।

धार्तराष्ट्रः [धृतराष्ट्र+अण्] 1. धृतराष्ट्र का पुत्र 2. एक प्रकार का हंस जिसके पैर और चोंच काली होती हैं -निपतन्ति यातं राष्ट्रा. कालवदान्मेत्रिणोधार्त्त०-वेणी० १।६, (यहां शब्द उपर्युक्त दोनों अर्थों में प्रयुक्त है)।

धार्मिक (वि०) (स्त्री०-की) [धर्म ठक्] 1. नेक, पुण्यात्मा, न्यायशील, सद्गुणसम्पन्न 2. सत्यनिष्ठ, न्याय्य, न्यायोचित 3. धर्म से युक्त।

धार्मिणम् [धर्मिन्+अण्] सद्गृहस्थियों का समाज।

धार्ष्ट्यम् [धृष्ट+ष्यञ्] अहंकार, अविनय, औद्धत्य, ढिठाई, अक्खड़पन।

धाव् (स्वा०पर०-धावति, धावित) 1. दौड़ना, आगे बढ़ना अद्यापि धावति मनः-चौर० ३६, धावन्तमी मृगजलाक्षमवेव रथ्याः—शा० १।८, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसत्तु चेतः १।३४, 2. किसी की ओर दौड़ना, किसी के मुकाबले में आगे बढ़ना, आक्रमण करना, मुकाबला करना - भट्टि० १६।६७ 3. बहना, नदी की भांति प्रवाहित होना धावत्य-भिति तैलवत्-मुद्रा० 4. दौड़ना, उड़ जाना। [स्वा० उभ०-धावति-ते, धौत, धावित] 1. धोना, साफ करना, मांजना, निर्मल करना, रगड़ना-धवाब्धि-स्खलदम्बुभिः नृपतेरस्य विभीषणा, विदधत्कार धौतास्त्र: स रिपुं ते ननदं च भट्टि० १४।५० मनः ६।२५, शि० १७।८ 2. उज्ज्वल करना, चमकाना 3. किसी लक्षित से टकराना (आ०) निस्, धो डालना-निर्धौतं मति हरिश्चन्द्रेन जलौघैः-शि० ३।५१, निधौत-दोषान् मलयवंशिभिः रघु० ५।४३, ७२।

धावकः [धाव्+ण्वुल्] 1. धोबी, 2. एक कवि (कहा जाता है कि इसने श्रीहर्ष राजा के लिए रत्नावली का लेखन की थी-श्रीहर्षादिधावकादीनामिव यशः-काव्य० १, अने० पा० प्रतिष्ठायशसां धावकमयूरभट्ट-कविपुत्रादीनां प्रबन्धानामिवान्य मालवि० १, अने० पा०।

धावनम् [धाव्+ल्युट्] 1. दौड़ना, सरपट भागना 2. बहना, 3. आक्रमण करना 4. मांजना, पवित्र करना, रगड़ना, हटा देना 5. किसी चीज से रगड़ना।

धावल्यम् [धवल+ष्यञ्] 1. सफेदी 2. पाण्डुता।

धिः (तुदा० पर० - धिनोति) संभालना, रखना, अधिकार में करना, सम्-, गुलाम करना तु० संधा० में (या धिन्व् स्वा० पर० धिनोति) प्रसन्न करना, खुश करना, संतुष्ट करना पश्यन्ती चारुरूप तदपि विलुलितलज्जयेव धिनोति गीत० १२, धिनोति नाम्नाऽजलजेव पूजा त्वयाऽन्वहं तन्वि विनम्रमाना-नै० ८।९७, उत्तर० ५।२७, कि० ११।२२।

धिः (समास के अन्त में प्रयुक्त) आधार, भंडार, आशय आदि उदधिः, इषुधिः, वारिधिः, जलधिः आदि।

धिक् (अव्य) [धा+किक्] निंदा, घृणा, धिक्कार की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय (धिक्कार, फटे मुंह शर्म, दुःख, तरस -कर्म० साथ) धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां-च, भर्तृ० २।२, शिरीषमा देहभृतामसारता-रघु० ८।५० धिक्त्वान् धिक्त्वन् धिगेतान् कथयति सततं कीर्तनत्रयी मुदङ्कः, धिक् सानुजं कुरुपतिं धिगजानं-वेणी० ३।११, कर्मी-स्त्री कर्तृ० सर्वो० और सर्व० के साथ धिगर्था, कष्टसंश्रया: पञ्च १, धिक्-मूर्ख, धिगस्तु हृदयस्यास्य (धिक्कृ तिरस्कार करना) अवज्ञा करना, रद्द करना, बुरा भला कहना। सम० -कारः-क्रिया झिड़कना, फटकारना, तिरस्कार करना, अवज्ञा करना,-वज्रः डांटफटकार बताना, निंदा-मनु० ८।१२९,-पारुष्यम् अपशब्द, डांट फटकार, भर्त्सना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धिप्सु (वि०) [दम्भ्+सन्+उ] धोखा देने का इच्छुक, धोखा देने वाला---भट्टि० ९।३३ ।

धिष्ण्य दे० धि० ।।

धिषणः [धृष् + क्यु, धिष् आदेशः] देवों के गुरु बृहस्पति का नाम,---णम् निवासस्थान, आवास, घर, -णा 1. भाषण, 2 स्तुति, सूक्त 3. बुद्धि, समझ महावी० ६।७ 4. पृथ्वी 5. प्याला, कटोरा ।

धिष्ण्यः [धृष्+ण्य निo ऋकारस्य इकारः] 1. यज्ञाग्नि के लिए स्थान, चबूतरा०, अर्थात् वेदि परितः कृतशिरण्या---शi० ४।७ 2. असुरों के गुरु शुक्राचार्य का नाम 3. यक्ष ग्रह 4. शक्ति, सामर्थ्य,---ष्ण्यम् 1. आसन, आधान, स्थान, ग्रह, घर 2 भौमान्येव धिष्ण्यानि हिंसा ज्योतिर्मयानपि- रघु० १५।३९, 2 केतु, उल्का 3. अग्नि 4. राजा, नक्षत्र ।

धी: (स्त्री०) [धृष् ! क्विप्, संप्रसारण] 1. (क) बुद्धि, समझ धियः समग्रैः स गुणैरुदारधीः---रघु० २।३० —कु० कुधी, सुधी आदि (ख) मन, दुष्टधी दुष्ट बुद्धि वाला---भग० २।५८, रघु० ३।३० 2. विचार कल्पना, उत्प्रेक्षा, प्रत्यय ---न धिया पथि वर्तसे---कु० ६।२२ 3. विचार, आशय, प्रयोजन, नैसर्गिक प्रवृत्ति, कि० १।२७ 4. भक्ति, प्रार्थना 5. यज्ञ । समo ---इन्द्रियम् प्रत्यक्षज्ञान का अंग (बाह्येन्द्रिय), मनः कर्णत्वचं नेत्र रसना च त्वचा सह. नासिका चेति पञ्चैतानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते, **गुणः** (ब० व०) बौद्धिक गुण, (श्रुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा, ऊहापोहोऽर्थविज्ञान तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः---कामन्दक), -पतिः (धियां पतिः) देवों के गुरु बृहस्पति —मन्त्रिन् (पुं०),— **सचिवः** 1. सलाहकार मंत्री (विo) कर्मसचिव---कार्यान्वयीमयी) 2. बुद्धिमान् और दूरदर्शी सलाहकार,---**शक्तिः** (स्त्री०) बौद्धिक शक्ति,—**सखः** सलाहकार, परामर्शदाता, मन्त्री ।

धीत (वि०) [धे -क्त] 1. चूसा गया, पीया गया, दे० धे ।

धीतिः (स्त्री०) [धी-क्तिन्] 1. पीना, चूसना, 2. प्याला ।

धीमत् (वि०) [धी-मतुप्] बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, विद्वान् (पुं०) बृहस्पति का विशेषण ।

धीर (वि०) [धी---रा+क] 1. बहादुर, उद्धत साहसी -धीरोद्धता गतिः---उत्तर० ६।१९ 2. स्थिर, सुदृढ़, अटल, टिकाऊ, चलाऊ, स्थायी —रघु० २।६ 3. दृढ़मनस्क, धैर्यवान्, स्वस्थचित्त, अडिग, दृढ़ निश्चय वाला, धीरा स्वरूपाद्यदः---का० १७५, विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः---कु० १।५२ 4. स्वस्थचित्त, शान्त, सावधान 5. सौम्य, स्थिरबुद्धि, प्रशान्त, गम्भीर रघु० १८।४ 6. मजबूत, बलवान 7. बुद्धिमान्, दूरदर्शी, प्रतिभाशाली, सम्भदार, विद्वान् चतुर---धृतेरेव धीरः सदृशीर्व्यधत्त सः रघु० ३।१०, ५।३८, १६।७४, उत्तर० ५।३१ 8. गहरा, गंभीर, ऊंचा स्वर, खोखलारहर स्वरेण धीरेण निदर्शयन्निव---रघु० २।४३, ५२, उत्तर० ६।१७ 9. आचरणशील, आचारवान् 10. (वायु आदि) मन्द, मृदु, सुहावना, सुखकर---धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली---गीत० ५ 11. सुस्त, आलसी 12 साहसी 13 हेकड़,---**रः** 1. समुद्र 2. राजा बलि का विशेषण, ---**रम्** केसर, जाफरान, ---**रम्** (अव्य०) साहसपूर्वक, दृढ़ता के साथ, अडिग होकर धीरज के साथ भर्तृ० २।३१, अमरु ११। समo---**उदात्तः** अच्छे विचारों का शूरवीर व्यक्ति (काव्य नाटक में) नायक, -अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः, स्थेयान्विमूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रतः कथितः---सा० द० ६६,---**उद्धतः** शूरवीर परन्तु अभिमानी (काव्य-नाटक में) नायक---मायावान् प्रचण्डश्चपलोऽहंकारदर्पसूयिष्ठः, आत्मश्लाघानिरतो धीरैर्धीरोद्धतः कथितः ---सा० द० ६७, -**चेतस्** (वि०) दृढ़, अडिग, दृढ़ मन वाला, साहसी, -**प्रशान्तः** (काव्य नाटक में) नायक जो शूरवीर और शान्त व्यक्ति हो---**सामान्यगुणैर्युक्तः** द्विजातिको धीरप्रशान्तः स्यात् -सा० द० ६९, **ललितः** (काव्य नाटक में) नायक जो दृढ़ और शूरवीर होने के साथ-साथ क्रीडाप्रिय और असावधान हो---निश्चिन्तो मृदुनिःसारः कलापरो धीरललितः स्यात् सा० द० ६८, **स्कन्धः** भैंसा ।

धीरता [धीर+तल्+टाप्] । धैर्य, साहस, मनोबल ---विपत्तौ च महतीनामेतदेव धीरतामनुगच्छति---हि० ३।४४ 2. ईर्ष्या का दमन 3. गंभीरता, शान्तचित्तता ---प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि---मेघ० १४४, (दूसरे अर्थों के लिए दे० 'धैर्य') ।

धीरा [धीर+टाप्] काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई भी, उसकी उपस्थिति में अपनी बाह्य भावमुद्रा से अपना रोष प्रकट नहीं होने देती---रसमंजरी की उक्तिः व्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका धीरा दे० सा० द० १०२---५, भो । समo ---**अधीरा** काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई अपने रोष को अभिव्यक्त भी कर देती है, और अपनी ईर्ष्या को छिपा भी लेती है---व्यङ्ग्यान्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका धीरा-धीरा---रसमंजरी ।

धीलटिः,---टी (स्त्री०) [धी-लट्-इन्, धीलटि+ङीष्] पुत्री, बेटी ।

धीवरः [दधाति मत्स्यान् - धा+क्वरच्] मछुवा---मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनां, लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति--- भर्तृ० २।६१,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१।८५,—**रम्** लोहा,—**री** 1. मछुवे की स्त्री 2. मछलियाँ रखने की टोकरी।

धु (स्वा० उभ०—धुनोति, धुनुते, धुत) दे० 'धू'।

धुक्ष् (भ्वा० आ० धुक्षते, धुक्षित) 1. सुलगाना 2. जीना 3. कष्ट भोगना—प्रेर० धुक्षयति—सुलगाना, प्रज्वलित करना, **सम्**—सुलगाना, उत्तेजित होना (आलं० भी) संदुधुक्षे तयोः कोपः—भट्टि० १४।१०९, प्रेर० सुलगाना, प्रज्वलित करना, उत्तेजित करना—निर्वाणभूयिष्ठमिवास्य वीर्यं संधुक्षकत्वीव वपुर्गुणेन—कु० ३।५२।

धुत (वि०) [धु+क्त] 1. हिला हुआ,—रघु० ११।१६ 2. छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

धुनिः—नी (स्त्री०) [धु+नि, धुनि+ङीप्] नदी, दरिया—पुराणां संहर्तुः सुरधुनि कपर्दोऽधिरुरुहे—गंगा० २२। **सम०—नाथः** समुद्र।

धुर् [धुर्व्+क्विप्] (केवल० ए० व०—धूः) 1. (शा०) जूआ, न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, अत्रस्तुभिर्यंस्तधुरं तुरङ्गैः—रघु० १४।४७, 2. जुए का वह भाग जो कंधों पर रक्खा रहता है, 3. पहिए की नाभि को धुरी के साथ स्थिर करने के लिए धुरी के दोनों किनारों पर लगी कील 4. गाड़ी का बम 5. बोझा, भार (आलं० भी) उत्तरदायित्व, कर्तव्य, कार्य—तेन धूर्यमतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे—रघु० १।३४, २।७४, ३।३५, ६६, कु० ६।३० आत्मैरत्यन्तवाप्तैरुपफलैः कार्यधुर्यैरुपेक्षिता—भट्टि० ६।५, ४।६, कि० ३।५०, १४।६ 6. प्रमुखतम या उच्चतम स्थान, हरावल, अग्रभाग, शिखर, सिर आगामुलानां धुरि कीर्तनीया—रघु० २।२, धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानाम्, १४।७४, अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः गिरेः धुरि पुत्रिणाम्—१।९१, धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—शालवि० १।१६, ५।१६, (**धुरि कृ** सिरे पर रखना या आगे रखना—स० ७।४) । **सम०—गत** (**धूर्गत**) (वि०) 1. रथ के बम पर खड़ा हुआ 2. सिर पर खड़ा हुआ मुख्य, प्रधान, प्रमुख, **-ग्रहिः** शिव का विशेषण, **-धर** (**धूर्धर, धुरंधर** भी) (वि०) 1. जूआ सँभालने वाला 2. जोते जाने के योग्य 3. अच्छे गुणों से युक्त या महत्त्वपूर्ण कर्तव्यों से लदा हुआ 4. मुख्य, प्रधान, अग्रगण्य प्रमुख,—कुलधुरंधरो भव—विक्रम० ५, (**रः**) 1. बोझा ढोने वाला जानवर 2. जिसके ऊपर किसी कार्य का भार हो 3. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, **-वह** (**धूर्वह**) (वि०) भार वहन करने वाला 2. काम का प्रबंधक, (**हः**) बोझा ढोने वाला पशु, इसी प्रकार 'धूर्वाह'।

धुरा (स्त्री०) बोझा, भार—रणधुरा वेणी० ३।५।

धुरीण, धुरीय (वि०) [धुरं वहति, अर्हति वा, धुर्+ख, छ वा] 1. बोझा ढोने या सँभालने के योग्य 2. जोते जाने के योग्य 3. महत्त्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त (णः, —यः) 1. बोझा ढोने वाला पशु 2. आवश्यक कार्यों में नियुक्त 3. मुख्य, प्रधान, अग्रणी।

धुर्य (वि०) [धुर्+यत्] 1. बोझा सँभालने के योग्य 2. महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे जाने के योग्य 3. जोते पर स्थित, मुख्य, प्रमुख, —र्यः 1. बोझा ढोने का पशु 2. घोड़ा या बैल जो गाड़ी में जुता हुआ हो नाविनीतैरयं धुर्यैः मनु० ४।९७, अनेर धियते विश्वं धुर्यैरनिमिषाच्यवि—कु० ६।७९, धुर्येण विश्रामयेति—रघु० १।५४, ६।७८, १७।१२, 3. (ढोने वाले के) भार को सँभालने वाला रघु० ५।६६, 4. मुख्य अग्रणी, प्रधान—न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय—रघु० ७।७१ 5. मंत्री, महत्त्वपूर्ण कार्यों पर नियुक्त व्यक्ति।

धुस्तु (स्त्री०) रः [धु+उर, स्तुट्] धतूरे का पौधा।

धू (तुदा० पर०, स्वा०, भ्वा०, क्रया०, चुरा०—उभ० धुवति, धवति—ते; धुनोति, धुनुते; धुनाति, धुनीते धूतयति—ते) 1. हिलाना, क्षुब्ध करना, कंपाना—धून्वन्ति पक्षपवनैर्न सभां वलक्षाः—शृङ्ग० ३।१२, धुन्वन् कल्पद्रुमकिसलयान्—मेघ० ६६, कु० ७।४९, रघु० ४।६७, भट्टि० ५।१०१, १।७, १०।२२ 2. उड़ा देना, हटाना, फेंक देना—सजसमी शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिमङ्कुरा—शि० ७।२४ 3. फूंक मार कर उड़ा देना, नष्ट करना 4. सुलगाना, उत्तेजित करना (आगे को) पंखा करना वायुना वृषभानां हि वनं दहति पावकः—महा०, पवनधूतः अग्निः—शकु० १।२६ 5. अशिष्ट व्यवहार करना, छेड़ पहुँचाना, क्षति पहुँचाना—मा नघावोररि रुणः—भट्टि० २।५०, १।१६१ 6. अपने ऊपर से उतार फेंकना, अपने आपको मुक्त करना—(सेवकाः) आरोहन्ति शनैः पदाद्धुन्वन्तमपि पार्थिवम्—पञ्च० १।३६, (कवि स्वस्य के निम्नलिखित श्लोक में इस धातु के विभिन्न गणों के रूप में दिए गये हैं—धुनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं चलं धुनाति धवतिं स्फुटतातिमुक्तम्। वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्कानने धवति चन्दनमारौद्धत्र)। **अव**—हिलाना, इधर-उधर करना, कम्पाना, लहराना, —रेणुः पतत्रावधूतः—रघु० ७।४३, डोलायवनेश्चामरैः—मेघ० ३५, कि० ६।३, शि० १३।३६ 2. उतार फेंकना, हटाना, पराभूत करना, राजसत्त्वमवधूय मातृकम्—रघु० ११।९०, सुखधूरवहतामवाप्य शरैः ९।१९, ३।६१, कि० १।४२ 3. अवहेलना करना, अस्वीकृति करना, उपेक्षा करना, विरस्कार-युक्त व्यवहार करना चण्डी मामवधूय पादपतितं —विक्रम० ४।३८, पादानतः कोपनयाऽवधूतः—कु०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३।८, विक्रम० ३।५, उद्--हिला डालना, उठाना, ऊपर को उछालना, लहराना—कैर्नोद्धूनानि वामराणि का० ११७, रघु० १।८५, ९।५०, उद्धुनीयात मत्केतून् भट्टि० १९।८, कि० ५।३९, भास्वद्भरो-द्धूतरजोधूलिरजः घन० 2. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, नष्ट करना (आलं० भी) उद्धूतपापाः--मेघ० ५५, शि० १८।८ 3. बाधा पहुँचाना, उत्तेजित करना, भड़काना, निस् - , 1. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, निकाल देना, नष्ट करना—निर्धूतोऽयं श्रमश्रोणिभा--गीत० १२, ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः-- भग० ५।१७, रघु० १२।५७ 2. उपेक्षा करना, तिरस्कार-युक्त व्यवहार करना, अवज्ञा करना 3. त्याग देना, छोड़ देना, फेंक देना, वि - , 1. हिलाना, इधर-उधर करना, कंपाना, मृदुपवनविधूतान्- ऋतु० ६।२९, ३।१० दीर्घा वेणीर्विधुन्वाना- महा० 2. उतार देना, नष्ट करना, निकाल देना, दूर भगा देना कर्णविधि-धितु द्युमिम्--भट्टि० २।२८, रघु० ९।७२, अन० पा० उपेक्षा करना, घृणा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना रघु० ११।४० 4. छोड़ना, छोड़ देना, त्याग देना नै० १।३५ ।

धूः (स्त्री०) [धू+क्विप्] हिलना, काँपना, अस्थ होना ।

धूत (भू० क० कृ०) [धू+क्त] 1. हिला हुआ 2. उतार फेंका हुआ, हटाया हुआ 3. भड़काया हुआ 4. परित्यक्त, उजड़ा हुआ 5. फटकारा हुआ 6. परीक्षित 7. अवज्ञात, तिरस्कारपूर्वक व्यवहार किया गया 8. अनुमानित । सम०—कल्मष, पाप (वि०) जिसने अपने पाप उतार फेंके हैं, पापमुक्त ।

धूतिः (स्त्री०) [धू+क्तिन्] 1. हिलाना, इधर उधर करना 2. भड़काना ।

धून (भू० क० कृ०) [धू+क्त, तस्य नः] हिला हुआ, अस्थ ।

धूनिः (स्त्री०) हिलाना, अस्थ करना ।

धूप् १ (स्वा० पर० धूपायति, धूपायित) गरम करना, गरम होना, १० (चुरा० उभ० धूपयति-ते) 1. धूनी देना, सुवासित करना, धुपाना, सुगंधित करना 2. चमकना 3. बोलना ।

धूपः [धूप्+अच्] 1. धूप, लोबान, गन्धद्रव्य, कोई सुगंधित पदार्थ 2. (सोंद बिरोजा आदि सुगंधित पदार्थों से उठने वाली वाष्प, सुगंधित वाष्प या धुआँ - यूपोत्पन्नो व्याजितमार्दभावम्--कु० ७।१४, मेघ० ३३, विक्रम० ३।२, रघु० १६।५० 3. सुगंधित चूर्ण । सम०—आधार (पुं०) एक प्रकार की गुग्गुल जो धुपाने के काम आती है,--अङ्गः 1. तारपीन 2. गन्धक वृक्ष,—अर्हम् गुग्गुल,--पात्रम् धूपदान अमर-दान, धूप जलाने का पात्र,—वासः गंधद्रव्य के धुएँ से वासना, धुपाना,--द्रुमः एक पेड़ जिससे गुग्गुल निकलता है, सरल वृक्ष ।

धूमः [धू+मक्] 1. धुआँ, वाष्प धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः--मेघ० ५ 2. वृथ, कोहरा 3. उल्का, केतु 4. बादल 5. (नस्य, छींक लाने वाला) धुआँ 6. डकार, उद्गार । सम०—आभ (वि०) धुएँ जैसा प्रतीत होने वाला, धूमैले रंगका, - आवलिः धुएँ का बादल या धूममाला,--उत्थम् नौसादर, --उद्गारः 1. धुआँ या वाष्प उठना,---उर्णा यम की पत्नी का नाम, °पतिः यम का विशेषण, - केतनः, - केतुः 1. आग,—कोपस्तं नंदकुलकानने धूमकेतोः -- मुद्रा० १।१०, रघु० ११।८१ 2. उल्का, पुच्छल तारा, गिरता हुआ तारा—धूमकेतुमिव किमपि करालम् -गीत० १, धूमकेतुरिवोत्थितः-- कु० २।३२ 3. केतु,- जः बादल, -ध्वजः अग्नि,- पानम् धुआँ या वाष्प पीना,—महिषी कोहरा, धुंध, योनिः बादल तृ० मेघ० ५ ।

धूमल (वि०) [धूम+ला+क] धूमैला, भूरा-लाल, मटमैला ।

धूमायति-ते (ना० धा० पर०) धुएँ से भर देना, वाष्प से ढक देना, अँधेरा करना धूमायिता दश दिशो दधिरेनारन्ध्रिदा —भामि० १।१०४, मृच्छ० ५।५७ ।

धूमिका [धूम+ठन्+टा] वाष्प, कोहरा, धुंध ।

धूमित (वि०) [धूम+इतच्] धुएँ से ढका हुआ, अंधकार-युक्त--कु० ४।३० ।

धूम्या [धूम+यत्+टाप्] धुएँ का बादल, प्रगाढ धुआँ ।

धूम्र (वि०) [धूम+रा+क] 1. धूमैला, धुएँ वाला, भूरा अर्त० ३।५५, रघु० १५।१६ 2. गहरा लाल 3. काला, अंधकारावृत 4. मटमैला, - स्रः 1. काले और लाल रंग का मिश्रण 2. लोबान, --अम् पाप, दुर्व्यसन, दुष्टता । सम० अटः एक प्रकार की शिकारी चिड़ियां,—दृश् (वि०) मटमैले रंग का, —लोचनः कबूतर, लोहित (वि०) गहरा लाल, गाढ़ा मटमैला, (तः) शिव का विशेषण,—शूकः ऊँट ।

धूम्रकः [धूम्र+कै+क] ऊँट ।

धूर्त (वि०) [धूर्व (धूर्) + क्त] 1. चालाक, शठ, बदमाश, मक्कार, जालसाज, 2. उपद्रवी, क्षति पहुँचाने वाला, —र्तः 1. ठग, बदमाश, उचक्का, 2. जुआरी 3. प्रेमी, रसिया, विनोदप्रिय धूर्त—तत्ते धूर्त हृदि विधिता विभ्रतमा काचिन्मभेश्वरा—पंच० ४।६, धूर्तोऽपरो चुबति --अमरु १६, इसी प्रकार--धूर्तानामभिसारसत्वर-हृदयम्--शांत० ११ 4. धतूरा । सम०- कृत् (वि०) मक्कार, बेईमान, (पुं०) धतूरे का पौधा,— जनुः मनुष्य,--रजना धूर्त विद्या, बदमाशी ।

धूर्तकः [धूर्त+कन्] 1. गीदड़ 2. बदमाश ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धूर्वी [धुर+अङ्+ङिवद्, अङ् इयस्य वी आदेशः] गाड़ी का जुआ, या अगला भाग !

धूलकम् [धू+लक+बा०] विष, जहर !

धूलिः,–ली (पुं०, स्त्री०) [धू+लि बा०, धूलि+ङीष्] 1. धूल, अनीरावपङ्कतां धूलिभूदकं नावतिष्ठते–शि० २।३४ 2. चूर्ण । सम०– कुट्टिमम्,–केदारः 1. टीला, प्राचीर 2. जोता हुआ खेत, ध्वजः वायु, –पटलः धूल का ढेर,–पुष्पिका,–पुष्पी केतकी का पौधा !

धूलिका [धूलि+कन्+टाप्] कोहरा, धुंध !

धूसर (वि०) [धू+सर, किच्च न षत्वम्] धूल के रंग का, भूरा सा, धूमिला–सफेद रंग का, मटमैला–शशी दिवसधूसरः– भर्तृ० २।५६, कु० ४।४, ४६, रघु० ५।४२, १६।१७, शि० १७।४१, –रः 1. भूरारंग 2. गधा 3. ऊँट 4. कबूतर 5. तेली !

धृ I. (तुदा० आ०–कहीं कहीं मतान्तर धृ का कर्मवा० रूप धियते, धृत) 1. होना, विद्यमान होना, रहना रहते रहना, जीवित रहना–आर्यपुत्र धियै एषा धिये – उत्तर० ३, धियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुतः सुखम्–शि० २।३५, १५।८९ 2. स्थापित या सुरक्षित रहना, रहना, चलते रहना– सुरतश्रमसंभृतो मुखे धियते स्वेदलवोदगमोऽपि–रघु० ८।५१, कु० ४।१८ 3. संकल्प करना, II. (स्वा० चुरा० उभ० धरति-ते, धारयति-ते, धृत, धारित) 1. थामना, संभालना, ले जाना– भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्–भर्तृ० २।४, वैणवीं धारयेद्यष्टिम् सोदकं च कमण्डलुम्– मनु० ४।३६, भट्टि० १७।५४, विक्रम० ४।३६ 2. थामना, संभालना, स्थापित रखना, सहारा देना, जीवित रखना धृतमंदर– गीत० १, यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् मनु० ९।३११, पंच० १।११६, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः– मेघ० ११३, चिरमात्मना धृतम् – रघु० ३।३५ 3. अपने अधिकार में थामे रखना, अधिकार में करना, पास रखना, रखना–या संस्कृता धार्यते–भर्तृ० २।१९ 4 धारण करना, (रूप, छद्मवेश), लेना–केशव धृतशूकररूप–गीत० १, धारयति कोकनदरूपम्–१०, 5. पहनना, धारण करना, (वस्त्रालंकारादिक) उपयोग में लाना, श्रितकमलाकुचमण्डल धृत कुण्डल ए–गीत० १ 6. रोकना, दमन करना, नियन्त्रण करना, ठहराना, स्थगित करना 7. अभाना, संकेत करना (संप्र० या अधि० के साथ)–ब्राह्मण्ये धृतमानसः, मनो दधे राजसूयाय आदि 8. मुगतना, भोगना 9. किसी व्यक्ति के लिए कोई वस्तु निर्धारित करना, नियत करना, निर्दिष्ट करना 10. किसी का ऋणी होना (संप्र०, संब० विरल०),–वृक्षसेचने द्वे धारयति मे, श० १, तस्मै तस्य वा धनं धारयति आदि 11. थामना, रखना 12. पालन करना, अभ्यास करना 13. हवाला देना, उद्धृत करना (इस धातु के अर्थ उन संज्ञा शब्दों के अनुसार, जिनसे यह जुड़े, विविध प्रकार के हो जाते हैं–उदा० मनसा धृ मन में धारण करना, याद रखना, शिरसा धृ, मूर्ध्नि धृ सिर पर रखना, अत्यंत आदर करना, अंतरे धृ धरोहर रखना, जमानत के रूप में जमा करना, समये धृ सहमत करना, दण्डं धृ दण्ड देना, सजा देना, बल का उपयोग करना, जीवितं, प्राणान् शरीरं, गात्रं देहम् धृ जीवित रहना, आत्मा को स्थापित रखना, प्राणों को सुरक्षित रखना, व्रतं धृ व्रत का पालन करना, तुलया धृ तराजू में रखना, तोलना, मनः, मतिम्, चित्तम्, बुद्धिम् धृ किसी वस्तु में मन लगाना, मन जमाना, सोचना, दृढ़ संकल्प करना गर्भं धृ, गर्भवती होना, धारणां धृ (एकाग्रता संयम का) पालन करना, 1. अव,–1. स्थिर करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, शि० १।३ 2. जानना, निश्चय करना, समझना, सही सही जानना, न विश्वमूर्तेरवधार्यते वपुः–कु० ५।७८, रघु० १३।५, उद्,—1. ऊपर उठाना, उन्नत करना 2. बचाना, परित्राण करना 3. बाहर निकालना, उद्धृत करना 4. उन्मूलन करना, उखाड़ना, (उद् पूर्वक धृ के वही हैं रूप जो उद् पूर्वक हृ के हैं) निस्–, निर्धारण करना, निश्चय करना, नियत करना, —निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्ता खलु वाचिकम्–शि० २।७०, ९।२०, वि –,1. धर पकड़ना, पकड़ लेना, ग्रहण करना, धारण कर लेना अशुक पल्लवेन विधृतः, अमरु ७९. ५५ 2. पहनना, धारण करना, उपयोग में लाना–रघु० १२।४० 3. स्थापित रखना, वहन करना, सहारा देना, थामलेना, पंच० १।८२, भर्तृ० ३।२३ 4. टकटकी लगाना, निर्देश देना, सम्–, 1. थामना, संभालना, ले जाना 2. थाम लेना, सहारा देना–अरैः संधार्यते नाभिः–पंच० १।८१ 3. दबाना, नियंत्रण में रखना, रोकना 4. मन में रखना, याद रखना, समुद्–,1. जड़ से उखाड़ लेना, उन्मूलन करना दे० उद् पूर्वक हृ 2. बचाना, परित्राण करना, संप्र,– 1. जानना, निर्धारण करना, निश्चय करना शि० १।६० 2. विचार विमर्श करना, चिन्तन करना, सोचना, विचार करना–मनु० १०।७३, एवं संप्रधार्य पंच० १ ।

धृत (भू० क० कृ०) [धृ+क्त] 1. थामा गया, ले जाया गया, वहन किया गया, सहारा दिया गया 2. अधिकृत किया गया 3. रक्षा गया, संधारित, धारण किया गया 4. पकड़ा गया, आत्मसात् किया गया,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संभाला गया, पहना गया, उपयोग में लाया गया 6. रख दिया गया, जमा किया गया 7. अभ्यास किया गया, पालन किया गया 8. तोला गया 9. (कतृवा०) धारण किया हुआ, संभाला हुआ 10. तुला हुआ दे० ऊपर 'धृ'। सम०—आत्मन् (वि०) पक्के मन वाला, स्थिर, शान्त,स्वस्थचित्त—दंड (वि०) 1. दण्ड देने वाला 2. वह जिसको दण्ड दिया जाता है—पट (वि०) कपड़े से ढका हुआ—राजन् (वि०) (देश आदि) अच्छे राजा द्वारा शासित,—राष्ट्रः विचित्र वीर्य की विधवा पत्नी से उत्पन्न व्यास का ज्येष्ठपुत्र (ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण धृतराष्ट्र राज्य का अधिकारी था, परन्तु जन्मांध होने के कारण उसने प्रभुसत्ता पांडु को सौंप दी। जिस समय पाण्डु वानप्रस्थ लेकर जंगल की ओर गया, तो राज्य की बागडोर फिर धृतराष्ट्र ने स्वयं संभाल ली, और अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को युवराज बनाया। जब युद्ध में भीम ने दुर्योधन का काम तमाम कर दिया तो धृतराष्ट्र को बदला लेने की इच्छा हुई, फलतः उसने युधिष्ठिर और भीम को आलिंगन करना चाहा। श्रीकृष्ण उसकी इस बात को तुरन्त ताड़ गये, उन्हें विश्वास हो गया कि धृतराष्ट्र ने भीम को अपना शिकार समझ लिया है। इस लिए श्रीकृष्ण ने लोहे की एक भीम की मूर्ति बनवाई। जिस समय धृतराष्ट्र भीम का आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ा तो श्रीकृष्ण ने भीम की लौहमूर्ति आगे करवा दी जिसको कि बदला लेने के प्रबल इच्छुक धृतराष्ट्र ने इस प्रकार इतना बल लगा कर दबाया कि वह लोह मूर्ति टुकड़े २ हो गई। इस प्रकार असफल प्रयत्न हो धृतराष्ट्र अपनी पत्नी गांधारी समेत हिमालय पर्वत की ओर चला गया जहां कुछ वर्षों के पश्चात् वह स्वर्ग सिधार गया), ...वर्मन् (वि०) कवच पहने हुए, कवचित।

धृतिः (स्त्री०) [धृ+क्तिन्] 1. लेना, पकड़ना, हस्तगत करना 2. रखना, अधिकृत करना 3. स्थापित रखना, सहारा देना 4. दृढ़ता, स्थिरता, स्थैर्य 5. धैर्य, स्फूर्ति, दृढ़संकल्प, साहस, आत्म-संयम—भज धृतिं स्वज मोहनिशेतुकाम्। शि० ४।१०४, कि० ६।११, रघु० ८।६६ 6. सन्तोष, तृप्ति, सुख, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष धृतेश्च धीरः मदशोत्थवंशतां स.—रघु० ३।१०, १६। ८२, चक्षुर्वैनानि न धृतिम् विक्रम० २।८, शि० ७।१० १४ 7. साहित्यशास्त्र में वर्णित ३३ व्यभिचारीभावों में 'सन्तोष' की गिनती की गई है—ज्ञानाभीष्टादर्थलाभेऽपि संपूर्णस्पृहतामतिः, सोल्लिखत्वचनोल्लासा सहासा प्रतिभादिकृत् सा० द० १९८, १६८ 8. यज्ञ।

धृतिमत् (वि०) [धृति+मतुप्] 1. पक्का, स्थिर, दृढ़, अडिग 2. संतुष्ट, प्रसन्न, प्रहृष्ट, तृप्त—रघु० १३।७७।

धृष्टद्युम्न (पु०) [धृ+क्त+द्युम्न] 1. विष्णु का विशेषण, 2. ब्रह्मा की उपाधि 3. सद्गुण, नैतिकता 4. आकाश 5. समुद्र 6. चतुर व्यक्ति।

धृष् 1. (भ्वा० पर० धर्षति, धर्षित) 1. एकत्र होना, संहत होना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० धर्षति, धर्षयति-ते)। नाराज करना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 2. अपमानित करना, मर्यादा से हीन व्यवहार करना 3. डांटा बोलना, जीतना, पराभूत करना, विजय प्राप्त करना, नष्ट करना 4. आक्रमण करने का साहस करना, ललकारना, चुनौती देना 5. (किसी स्त्री के साथ) बलात्कार करना, सतीत्व हरण करना, iii (स्वा० पर० धृष्णोति, धृष्ट) 1. दिलेर या साहसी होना 2. विश्वस्त होना 3. घमंडी होना, उद्धत होना, 4. ढीठ होना, उतावला होना 5. साहस करना, निडर होना (तुमुअंत के साथ) 6. ललकारना, चुनौती देना—भट्टि० १४।१०२ 7. (चुरा० आ०—धर्षयते) हमला करना, आक्रमण करना, बलात्कार करना।

धृष्ट (वि०) [धृष्+क्त] 1. दिलेर, साहसी, विश्वस्त, 2. ढीठ, अक्खड़, निर्लज्ज, उच्छृंखल, अविनीत —धृष्टः पार्श्वे वसति- हि० २।२६ 3. प्रगल्भ, दुःसाहसी 4. दुश्चरित्र, लुच्चा,—ष्टः विश्वासघातक पति या प्रेमी—कृतागा अपि निःशङ्कैस्तज्जितोऽपि न लज्जितः, दृष्टदोषोऽपि मिथ्यावाक् कथितो धृष्टनायकः। सा० द० ७२। सम०—द्युम्नः द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई (धृष्टद्युम्न और उसका पिता द्रुपद दोनों महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़े। धृष्टद्युम्न ने कई दिन तक पांडवों की सेना के मुख्य सेनापतित्व का पद संभाला। जब द्रोण ने घोर संघर्ष के पश्चात् द्रुपद को मार डाला, तो धृष्टद्युम्न ने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने पिता की मृत्यु का बदला लूंगा। आखिर युद्ध के सोलहवें दिन प्रातः काल धृष्टद्युम्न को अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का अवसर मिला जब कि उसने अन्यायपूर्वक द्रोण का सिर काट डाला, दे० द्रोण। उसके पश्चात् एक दिन वह पाण्डवशिविर में सो रहा था कि अचानक अश्वत्थामा ने आ दबाया और मौत के घाट उतार दिया गया)।

धृष्णज (वि०) [धृष्+नञिङ] 1. साहसी, विश्वस्त 2. ढीठ, निर्लज्ज।

धृष्णिः [धृष्+नि] प्रकाश की किरण।

धृष्णु (वि०) [धृष्+क्नु] 1. दिलेर, विश्वस्त, साहसी, बहादुर, बलशाली (अच्छे अर्थ में) 2. निर्लज्ज, ढीठ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धे (भ्वा० पर० धयति, धौत—प्रेर० धापयति, इच्छा० धित्सति) 1. चूसना. पीना, घूंट भरना, निगल जाना (आल० भी) अभ्यङ्गसानवासाच्च रविरं वनवासिनाम् भट्टि० १५।२९, ६।१८, मनु० ४।५९, याज्ञ० १।१६० 2. चूमना—अन्यो वक्त्रधानम्—गीत० १२ 3. घूस लेना, खींच लेना, ले लेना।

धेनः [धे+नन्] 1. समुद्र 2. नद,

धेनुः (स्त्री०) [धयति सुतान्, धीयते वत्सैर्वा—धे+नु इच्च तारा०] गाय, दुधार गाय -धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः—उत्तर० ५।३१ 2. किसी जाति की स्त्री (इस अर्थ में किसी भी पुरुषवाचक नाम के आगे लग कर उसे स्त्रीवाचक शब्द बना देता है यथा खड्गधेनुः, वडवधेनुः आदि 3. पृथ्वी (कई बार समास के अन्त में लग कर इससे अल्पार्थवाची शब्द बनता है, जैसे असिधेनुः, खड्गधेनुः)।

धेनुक [धेनु+कन्] एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार गिराया था। सम०—सूदनः बलराम का विशेषण।

धेनुका [धेनुक+टाप्] 1. हथिनी 2. दूध देने वाली गाय।

धेनुष्या [धेनु+यत्, मुक्] वह गाय जिसका दूध बंधक रूप में सुरक्षित हो।

धेनुष्कम् [धेनु+ठक्] 1. गोओं का समूह 2. रतिबंध।

धैर्यम् [धीर+ष्यञ्] दृढ़ता, टिकाऊपन, सामर्थ्य, ठोसपन, स्थिरता, स्थायिता, धीरज, साहस धैर्यमवष्टभ्य —पंच० १, विपदि धैर्यम्—भर्तृ० २।६३, इसी प्रकार 'धैर्यच्युति' शि० २।५९ 2. शान्ति, स्वस्थता 3. गुरुत्वाकर्षण शक्ति, सहिष्णुता 4. अनम्यता 5. हिम्मत, दिलेरी मेघ० ४०।

धैवतः [धीमत्+अण् पृषो० मस्य वत्वम्] भारतीय संगीत स्वरग्राम के सात स्वरों में छठा स्वर।

धैषत्यम् [धीवत्+ष्यञ्] चतुराई।

धोः = दुह्।

धोर् (भ्वा० पर० धोरति) 1. जल्दी जाना, अच्छे कदम रखना, दौड़ना, दुल्की चलना 2. कुशल होना।

धोरणम् [धोर्+ल्युट्] 1. (घोड़ा, हाथी आदि) वाहन, सवारी 2. जल्दी जाना 3. घोड़े की दुल्की चाल।

धोरणिः,-णी (स्त्री०) [धोर्+अनि, धोरणि+ङीप्] 1, अनवच्छिन्न श्रेणी या नैरन्तर्य यैर्माकन्दैर्ननं मनोज्ञपवने सद्यः स्खलत्स्वादुरीषारावोरणिधौतधार्मानि धराधीश्वरमालम्ब्यते, तेषां नित्यविनोदिनां सुकृतिनां माध्वीकपानां पुनः कालः किं न करोति केलकि यत्तस्त्वं चापि केलिस्थली—उद्भट, परम्परा।

धोरितम् [धोर्+क्त] 1. क्षति पहुंचाना, चोट पहुंचाना, प्रहार करना, 2. गमन, गति 3. घोड़े की दुल्की चाल।

धौत (भू० क० कृ०) [धाव्+क्त] 1. धोया हुआ, बहाया गया, साफ किया गया, पवित्र किया गया, प्रक्षालन किया गया—कुल्याम्भोभिः पवनचलितैः शाखिनो धौतमूलाः—श० १।१५, शिक्षा० ५८, कु० १।६,६।५७, रघु० १६।४९,१९।२० 2. चमकाया हुआ, उजला किया हुआ 3. उज्ज्वल, सफ़ेद, चमकदार, जमकीला, चमचमाता हुआ,—हरशिरश्चन्द्रिका-धौतहर्म्या—मेघ० ७।४४, विकसदृन्ताशुधौताधरम्—गीत० १२, सम् चादी, सभ० कटः मोटे कपड़े का थैला, कौषेयम्,—कौषेयम् धुली हुई रेशम, —क्षितम् स्फटिक।

धौमः [धूम+अण्] 1. धूमपान 2. (विशेष रूप से तैयार किया गया) मकान बनाने के लिए स्थान।

धौरितकम् [धौरित+अण्+कन्] घोड़े की दुल्की चाल।

धौरेय (वि०) (स्त्री०—यी) [धुरं वहति ढक्] बोझा ले जाने के योग्य,—यः 1. बोझा ढोने का पशु 2. घोड़ा।

धौर्तकम्, धौर्तिकम्, धौर्त्यम् [धूर्तस्य भावः कर्म वा धूर्त+वुञ्, ठक्, ष्यञ् वा] जालसाजी, बेईमानी, बेदमाशी।

ध्मा (भ्वा० पर० ध्मायति, ध्मात, प्रेर० ध्मापयति) 1. फूंक मारना, श्वास बाहर निकालना, निःश्वसन 2. (हवा के उपकरण की भांति) धौंकना, फूंक मार कर बजाना—शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् भग० १।१२,१८, रघु० ७।५२, भट्टि० ३।३४,१७।७ 3. आग को फूंकना, फूंक मारकर आग को उद्दीप्त करना, चिंगारियां उठाना को धमेच्छंखेन च पावकम् महा० 4. फूंक द्वारा निर्माण करना 5. फेंकना, फूंक से उड़ाना, फेंक देना, आ—, 1. हवा भरना, फुलाना 2. फूंक मारना या हवा से भरना, (शंख आदि को), उप—, फूंक मारकर तेज करना, पंखा करना - नाग्नि मुखेनोपधमेत्- मनु० ४।५३ निस् -, फूंक मारकर बाहर निकालना, प्र—, (शंख आदि) बजाना शङ्खौ प्रदध्मतुः -भग० १।१४, वि -, बखेरना तितर बितर करना, नष्ट करना।

ध्माकारः [ध्मा+कृ+अण्] लुहार, लोहकार।

ध्मांक्षः अने० पा० = ध्वांक्षः।

ध्मात (भू० क० कृ०) [ध्मा+क्त] 1. (वायुवाद्ययंत्र की भांति) बजाया हुआ, पंखा किया हुआ, भड़काया हुआ 2. हवा भरा हुआ, फूला हुआ, फुलाया हुआ।

ध्यात (वि०) [ध्यै+क्त] सोचा हुआ, विचार किया हुआ, दे० 'ध्यै'।

ध्यानम् [ध्यै+ल्युट्] 1. मनन, विमर्श, विचार, चिन्तन ज्ञानाद् ध्यानं विशिष्यते—भग० १२।१२, मनु० १।१२, ६।७२ 2. विशेष रूप से सूक्ष्मचिंतन, धार्मिक मनन—तदेव ध्यानादवगतोऽस्मि—श० ७, रघु० १।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७३ 3. दिव्य अन्तर्ज्ञान या अन्तर्विवेक 4. किसी देवता की व्यक्तिगत उपाधियों का मानसिक चिन्तन—इति ध्यानम् । सम०—गम्य (वि०) केवल मनन द्वारा प्राप्त, -तत्पर,—निष्ठ पर (वि०) विचारों में खोया हुआ, मनन में लीन, चिन्तनशील,—स्थ (वि०) मनन में लीन, विचारों में खोया हुआ ।

ध्यानिक (वि०) [ध्यान + ठक्] सूक्ष्म मनन और पवित्र चिन्तन के द्वारा अनुसंहित या प्राप्त ।

ध्याम (वि०) [धै+मक्] अस्वच्छ, मैला, काला, मलिन --भट्टि० ८।७१, **मम्** एक प्रकार का घास ।

ध्यामन् (पुं०) [धै+मनिन्] माप, प्रकाश (नपुं०) मनन ('ध्यामन्' कर्म शुद्ध) ।

ध्यै (भ्वा० पर० ध्यायति, ध्यात, इच्छा० दिध्यासति, कर्मवा० ध्यायते) सोचना, मनन करना, विचार करना, चिंतन करना, विचार विमर्श करना, कल्पना करना, याद करना-- ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते भग० २।६३, न ध्यातं पदमीश्वरस्य ---भर्तृ० ३।११, पितृन् ध्यायन् - मनु० ३।२२४, ध्यायन्ति त्वार्य धिया - पंच० १।१३६, मेघ० ३, मनु० ५।४७, ९।२१, अनु , 1. सोचना, ध्यान लगाना 2. याद करना 3. मंगलकामना करना, आशीर्वाद देना, अनुग्रह करना, रघु० १४।६०,१७।३६. अप --, बुरा सोचना, मन से शाप देना. अभि , 1. कामना करना, इच्छा करना, लालच करना--याज्ञ० ३।१३४ 2. सोचना अव--, अवहेलना करना, नि - सोचना, मनन करना, वि , 1. सोचना, मनन करना, याद करना---भट्टि० १४।६५ 2. गहन मनन करना, टकटकी लगाकर देखना--अंगुलीयकं निध्यायन्ती - मालवि० १, शि० ८।६९,१२।४, कि० १०।४६ ।

ध्राडिः [ध्राड्—इन्] फूल चुनना ।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] (क) स्थिर, दृढ़, अचल, स्थावर, स्थायी, अटल, अपरिवर्तनीय—इति ध्रुवेच्छा-मनुशासनी सुताम्- कु० ५।५, (ख) शाश्वत, सदैव रहने वाला, नित्य -- ध्रुवेण भर्त्रा—कु० ७।८५, मनु० ७।२०८ 2. स्थिर (ज्योतिष में) 3. निश्चित, अचूक, अनिवार्य—आतस्थ हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च -भग० २।२७ यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते—चाण० ६३ 4. मेधावी, धारणशील—जैसा कि 'ध्रुवा स्मृति' में 5. मजबूत, स्थिर, (दिन की भांति) निश्चित, **वः** 1. ध्रुव तारा, रघु० १७।२५, १८।३४, कु० ७।८५ 2. किसी बड़े वृत्त के दोनों सिरे 3 नक्षत्र राशिचक्र के आरंभ से ग्रह की दूरी, ध्रुवीय देशांतर रेखा 4. वटवृक्ष 5. स्थाणु, खूंटा 6. (कटे हुए वृक्ष का) तना 7. गीत का आरंभिक पाद, टेक (समवेत गान की भांति दोहराया गया टेक० गीत०) 8. समय, काल, युग 9. ब्रह्मा का विशेषण, 10. विष्णु और 11. शिव की उपाधि 12. उत्तानपाद के पुत्र और मनु के पौत्र का नाम [ध्रुव उत्तर दिशा में स्थित एक तारा है, परन्तु पुराणों में उत्तानपाद के पुत्र के रूप में इसका वर्णन उपलब्ध है। सामान्य मर्त्य का ध्रुव तारे के उच्च पद को प्राप्त करने का वर्णन इस प्रकार है—उत्तानपाद के सुरुचि और सुनीति नाम की दो पत्नियां थीं, सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था, तथा ध्रुव का जन्म सुनीति से हुआ था। एक दिन ध्रुव ने अपने बड़े भाई उत्तम की भांति पिता की गोद में बैठना चाहा, परन्तु उसे राजा और सुरुचि दोनों ने अपने पिता के घर को छोड़ कर जंगल की राह ली। यद्यपि वह अभी बच्चा ही था, तो भी उसने घोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप विष्णु ने उसको ध्रुव तारे का पद प्रदान किया)---**व्यम्** 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. स्वर्ग,—**वा** 1. (लकड़ी का बना) यज्ञ का श्रुवा 2. साध्वी स्त्री, ---**वम्** (अव्य०) अवश्य, निश्चित रूप से, अकीलन —रघु० ८।४९, श० १।१८ । सम०—**अक्षरः** विष्णु की उपाधि,—**आवर्तः** सिर पर रखने मुकुट का वह स्थान जहां से बाल चमकते हैं,—**तारकम्**,—**तारा** ध्रुव तारा ।

ध्रुवकः [ध्रुव+कन्] 1. गीत का आरम्भिक पद (जो समवेत गान की भांति दोहराया जाय, टेक 2. तना, भूत 3. स्थूणा ।

ध्रौव्यम् [ध्रुव+ष्यञ्] 1. स्थिरता, दृढ़ता, स्थावरता 2. अनधि 3. निश्चय ।

ध्वंस् (भ्वा० आ० ध्वंसते, ध्वस्त) 1. नीचे गिरना, गिर कर टुकड़े २ होना, चूर २ हो जाना—भट्टि० १५। ९३, १४।५५ 2. गिरना, डूबना, ह्रासोन्मुख होना --मा० १।४४ 3. नष्ट होना, बर्बाद होना 4. ग्रस्त होना —मुद्रा० ३।८, प्रेर०—नष्ट करना, अ---, नष्ट होना, मिट जाना, वि-. 1. गिरकर टुकड़े २ होना 2. तितर-बितर हो जाना, बिखर जाना 3. नष्ट होना, मिट जाना बर्बाद होना ।

ध्वंसः, ध्वंसनम् [ध्वंस्+घञ्, ल्युट् वा] 1. नीचे गिर जाना, डूबना, गिर कर टुकड़े २ हो जाना 2. हानि, नाश, बर्बादी,—सी सूर्य की किरण में धूलिकण ।

ध्वंसिः [ध्वंस् + इन्] मुहूर्त का ज्ञाता ।

ध्वजः [ध्वज् + अच्] 1. ध्वज, झण्डा, पताका, वैजयन्ती, रघु० ७।४०, १७।३२, पंच० १।२६ 2. पूज्य या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमुख व्यक्ति, झंडा या भूषण (समास के अन्त में) जैसा कि 'कुलध्वज:' (कुल का भूषण या पूज्य व्यक्ति) में 3. वह बांस जिसमें झण्डा लहराता है, 4. चिह्न, निशान, लक्षण, प्रतीक—वृषभ,° मकर° आदि 5. देवता की उपाधि 6. पथिकाश्रम का चिह्न 7. व्यवसाय का चिह्न—व्यवसाय लक्षण 8. जननेन्द्रिय (किसी जानवर की, चाहे नर हो या मादा) 9. कलाल 10. किसी वस्तु से पूर्व की ओर स्थित घर 11. घमंड 12. पाखंड, (**ध्वजोह** झंडा लहराना, बालं० बहाने के रूप में प्रयुक्त करना) । सम० —**अंशुकम्**—**पटः**,—**पटम्** झंडा—रघु० १२।८५, —**आहृत** (वि०) युद्धभूमि में पकड़े हुए,—**गृहम्** वह कमरा जहां झंडे रखे जाते हैं,—**द्रुमः** ताड़ का वृक्ष, —**प्रहरणः** वायु, हवा,—**यन्त्रम्** झंडा खड़ा करने की कूटयुक्ति,—**यष्टिः** (स्त्री०) झंडे का डंडा या बांस मनु० ९।२८५ ।

ध्वजवत् (वि०) [ध्वज+मतुप्+मस्य वः] 1. झंडों से सजा हुआ 2 चिह्न से युक्त 3. अपराधों के लक्षण से युक्त, दागी, (पुं०) 1. झंडा-वाहक 2. मद्य विक्रेता, कलाल ।

ध्वजिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [ध्वज+इनि] 1. झण्डा-बरदार, झण्डा ले जाने वाला 2. चिह्नधारी 3. सुरा-पात्र के चिह्न वाला—मनु० ११।९३, (पुं०) 1. पताका वाहक 2. कलाल, मद्य विक्रेता—याज्ञ० १।१४१ 3. गाड़ी, शकट, रथ 4. पहाड़ 5. सौंप 6. मोर 7. घोड़ा 8. ब्राह्मण,—**नी** सेना—रघु० ७।४०, शि० १२।६९, कि० १३।९ ।

ध्वजीकरणम् [ध्वज+च्वि+कृ+ल्युट्] 1. झंडोत्तोलन, झंडे को फहराना 2. दावा स्थापित करना, किसी बात को हेतु बनाने वाला ।

ध्वन् (भ्वा० पर० ध्वनति, ध्वनित) शब्द करना, ध्वनि पैदा करना, गुनगुनाना, भिनभिनाना, गूंजना, प्रति-ध्वनि करना, गरजना, बड़ाड़ना—विभिद्यमाना इव दध्वनुर्दिशः—कि० १४।४६, अयं धीरं धीरं ध्वनति नवनीलो जलधरः भामि० १।६०, क्वचिद्ध्वान मेघ-वत्—भट्टि० ९।५, १४।३, ध्वनति मधुपसमूहे श्रवण-मधिदधाति—गीत० ५, प्रेर०—ध्वनयति, शब्द करवाना, (घंटी की भांति) बजवाना, परन्तु 'ध्वानयति' अस्पष्ट उच्चारण करवाना ।

ध्वनः [ध्वन्+अप्] 1. शब्द, स्वर 2. भिनभिनाना, गुनगुनाना ।

ध्वननम् [ध्वन्+ल्युट्] 1. ध्वनि निकालना 2. संकेत करना, सुझाव देना, या (अर्थ) बताना 3. (सा० शा० में) व्यंजना शक्ति, शब्द या वाक्य की वह शक्ति जिसके कारण वह मुख्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ को प्रकट करे, सुझाव-शक्ति—तु० 'अंजन' भी ।

ध्वनिः [ध्वन्+इ] 1. शब्द, प्रतिध्वनि, कोलाहल या शोर—मृदङ्गधीर ध्वनिमन्वगच्छत्—रघु० १६।१३, २।७२, उत्तर० ६।१७ 2. लय, तान, स्वर शि० ६।४८ 3. वाद्ययंत्र की ध्वनि—रघु० ९।७१ 4. बादल गरज या गड़गड़ाहट 5. केवल रिक्तध्वनि 6. शब्द 7. (सा० शा० में) काव्य के तीन मुख्य भेदों में से सर्वोत्तम काव्य जिसमें कि शब्द का ध्वन्यर्थ, अभिहित अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारक हो, या जहां मुख्यार्थ, ध्वन्यर्थ के अधीन हो इदमुत्तममतिशायिनि व्यंग्ये वाच्यादध्वनिर्बुधैः कथितः-काव्य० १, (रस-गंगाधर में ध्वनि के पाँच भेद बताये गये है, दे० 'ध्वनि' के नीचे) । सम० —**ग्रहः** 1. कान 2. श्रवण, या श्रुति 3. श्रवणेन्द्रिय, —**ताला** 1. शब्द 2. बादल की गरज या गड़गड़ाहट—कि० ५।१२ ।

ध्वस्तिः (स्त्री०) [ध्वंस्+क्तिन्] नाश, बर्बादी ।

ध्वांक्षः [ध्वंक्ष्+अच्] 1. कौआ—(कभी-कभी 'तिरस्कार' प्रकट करने के लिए समास के अन्त में प्रयुक्त किया जाता है उदा० दीर्घध्वांक्षः) 2. भिक्षुक 3. ढीठ व्यक्ति 4. मूर्खों, गंवार । सम० —**अरातिः** उल्लू, —**पुष्टः** कोयल ।

ध्वानः [ध्वन्+घञ्] 1. शब्द 2. गुनगुनाना, भिन-भिनाना, बड़बड़ाना ।

ध्वान्तम् [ध्वन्+क्त] अंधकार—ध्वान्तं नीलनिचोलचारु सुदृशां प्रेङ्खन्मालिङ्गति—गीत० ११, सं० १९,४२, शि० ४।६२; सम०—**उन्मेषः**, —**विलः** जुगनू, —**शात्रवः** 1. सूर्य 2. चांद 3. आग 4. श्वेतवर्ण ।

ध्वृ (भ्वा० पर०—ध्वरति) 1. झुकाना 2 हत्या करना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न

न (वि०) [नद् (नद्य)+ड] 1. पवला, फाल्गु 2. खाली, रिक्त 3. बहो, समरूप 4. अभिभवत्,—**नः** 1. मोती, 2. गणेश का नाम, 3. दौलत, सम्पन्नता 4. मंडल, 5. पुंज—(अव्य०) (क) निषेधात्मक अव्यय, 'नहीं' 'न तो' 'न' का समानार्थक, लोट् लकार में प्रतिषेधात्मक न होकर, आज्ञा, प्रार्थना या कामना के लिए प्रयुक्त, (ख) विधिलिङ् की क्रिया के साथ प्रयुक्त किये जाने पर कई बार इसका अर्थ होता है —'ऐसा न हो कि' इस डर से कि कहीं ऐसा न हो' —क्षतिर्वायते शस्त्र नर्तशब्दो भवेदिति—रामा० (ग) तर्कपूर्ण लेखों में 'न' शब्द 'इतिचेत्' के पश्चात् रक्खा जाता है और इसका अर्थ होता है 'ऐसा नहीं' (घ) अब भिन्न-भिन्न वाक्यों में या एक ही वाक्य के क्रमबद्ध वाक्यखण्डों में निषेधक की पुनरावृत्ति करनी होती है तो केवल 'न' की आवृत्ति की जा सकती है, अथवा उत, च, अपि, चापि और वा आदि अव्ययों के साथ 'न' को रक्खा जा सकता है —नाधीयीतादत्त-माल्यो न वृक्षं न च हस्तिनम्, न यानं न खरं नोष्ट्रं नैरिणस्थो न यानगः। मनु० ४।१२०, प्रदिशन्त न यं कश्चिन्नादत्ते कस्यचित्न। महा०, मनु० २।१९५-३८, १. ४।१५, श० ६।१७, कई बार 'न' द्वितीय तथा अन्य वाक्यखंडों में न रक्खा जाकर केवल च, वा, इत्यादि से व्याख्यायित करना है संपदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो रणे च धीरत्वम् हि० १।२३, (ङ) किसी उक्ति पर बल देने के लिए बहुधा 'न' को एक और 'न' के साथ अथवा किसी अन्य निषेधात्मक शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है —प्रत्युवाच न तत्रिर्यं तस्यास्तस्यां न वेधि पुरुषं पुराणम्—रघु० ११।८५, न च न परिचिह्नानि न नाट्यमात्रः—मालवि० १।११, न पुनरलंकरिष्यं न पुष्यति—श० १, नादंडयो नाम राजोऽस्ति—मनु० ८।३३५, मेघ० ६३, १०६, नासी, न कार्य्यो न च वेद सत्यम् इष्टं न सा—रघु० ६।७०, शि० १।५५, विक्रम० २।१०, (च) कुछ शब्दों में नञ् तत्पुरुष के आरम्भ में 'न' को ऐसा का ऐसा ही रख लिया जाता है यथा न ज, नञ्सम, नकुल, आदि पा० ६।३।७५, (छ) 'न' को बहुधा दूसरे अक्षरों के साथ भी जोड़ दिया जाता है —नेत्र, नेता, नैव, ननु, नवेद्, नवल आदि। **नः** अस्त्यौ (पुं० द्वि० व०) अश्विनौ कुमार, देवों के वैद्ययुगल, **एक** (वि०) 'एक नहीं' अर्थात् एक से विशेष, कुछ, कई, **°आत्मन्** (वि०) विविध योनि का विभिन्न प्रकृति का, **°चर** (वि०) न रहने वाला यत्रतत्रारी, संघात्रवासी, समाज में रहने वाला, सामाजिक **°भेद, °रूप** (वि०) विविध प्रकार का, नाना प्रकार के रूपों का **°शस्** (अव्य०) बार २, बहुधा,—**किंधन** (वि०) अत्यंत गरीब, भिखारी के समान।

नकुटम् [कुट्+क, न शब्देन समासः] नाक, नासिका।

नकुलः [नास्ति कुलं यस्य, नञो न लोपः प्रकृतिभावात्] नेवला, लाठी नकुल—यदयं नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुनः पिशुनः—वास० 2. चौथा पाण्डव राजकुमार —अहं सस्य अतिशयितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शने-नोत्सुका आता—वेणी० २, (यहाँ नकुल का प्रथम अर्थ है, परन्तु दुर्योधन ने दूसरा अर्थ ग्रहण किया)।

नक्तम् [नञ्+क्त] 1. रात 2. केवल रात्रि के समय खाना, एक प्रकार का धार्मिक व्रत या तपश्चर्या। **समः** —अन्ध (वि०) रात्र्यंध, जिसे रात में दिखाई नहीं देता,—**चर्या** रात को घूमना,—**चारिन्** (पुं०) 1. उल्लू 2. बिलाव 3. चोर 4. राक्षस, पिशाच, भूत प्रेत,—**भोजनम्** रात का भोजन, व्याल,—**माल:** एक वृक्ष का नाम—रघु० ५।४२,—**मुखा** संध्या, सायंकाल,—**व्रतम्** 1. दिन भर व्रत रखना तथा रात को भोजन करना 2. कोई भी साधना या धार्मिक व्रत जो रात में किया जाय।

नक्तम् (अव्य०) रात के समय, रात को —गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तम्—मेघ० ३७, मनु० ६।१९। **समः** —**चरः** रात को घूमने वाला प्राणी 2. चोर, —**चारिन्** (पुं०)=नक्तंचारिन्,—**दिनम्** रात दिन,—**दिनम्—दिवम्** (अव्य०) रात और दिन।

नक्तकः [नक्त+कै+क] गंदा, मैला फटा पुराना कपड़ा

नक्तः [न क्रामतीति न+क्रम्+क्त, नञो न लोपः] घड़ियाल, मगरमच्छ, **नक्रः** स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति -पंच० ३।४६ रघु० ७।३०, १६।५५, **°क्रम्** 1. दरवाजे की चौखट की ऊपर की लकड़ी 2. नाक, **°क्षा** 1. नाक, 2. मोतियों या भिर्रों का छल्ला।

नक्षत्रम् [नक्ष्+अत्र] 1. तारा 2. तारक पुंज, चन्द्रपथ में तारासमूह, नक्षत्र—नक्षत्रतारागृहसंकुलापि -रघु० ६।२२। **समः** —**ईशः,—ईश्वरः,—नाथः, पः, —पतिः**—**राजः** चन्द्रमा,—रघु० ६।६६, **चक्रम्** 1. स्थिर तारा-मंडल 2. नक्षत्रों का समूह,—**दर्शः** ज्योतिर्विद्, ज्योतिषी,—**नेमिः** 1. चन्द्रमा 2. ध्रुवतारा 3. विष्णु की उपाधि (**निः**—**स्त्री०**) अन्तिम नक्षत्र, खेती, **पथः** आकाश जिसमें तारे खिले हों, **°पाठकः** ज्योतिषी, **माला** 1. तारापुंज 2. २७ मोतियों की माला 3. चन्द्रपथ में तारामंडल 4. हाथियों के कण्ठ का आभूषण—अनङ्गवारण शिरोनक्षत्रमालायमानेन मेखलाकाण्डा का० ११,—**यो:** चन्द्रमा का नक्षत्रों से मिलन,—**वर्त्मन्** (पुं०) आकाश,—**विद्या** गणित,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्योतिष--वृष्टिः (स्त्री०) टूटने वाले तारे,--सूचकः अयोग्य ज्योतिषी--तिथ्युत्पत्तिं न जानन्ति यहाणां नैव सामनम्, परकार्येषु वर्तते ते वै नक्षत्रसूचकाः। या--अविदितैव यः शास्त्र देवज्ञत्वं प्रपद्यते, स पक्ति-दूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः, बराह० २।१७, १८।

नक्षत्रिन् (पुं०) [नक्षत्र+इनि] 1. चन्द्रमा 2. विष्णु का विशेषण।

नखः, नखम् [नह्+क्स, हकारस्यलोपः] हाथ या पैर की अंगुली का नाखून, पंजा, नखर **नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन्नृपतिः**—भामि० १।२, ३१, १२। १२ 2. बीस की संख्या,—**क्षः** भग, अंश। **सम०**--**अङ्कः** खरोंच, नखचिह्न—भामि० २।३२, **आघातः खरोंच**, नख द्वारा किया गया घाव--मा० ५।२३, —**आयुधः** 1. व्याघ्र 2. सिंह 3. मुर्गा, **आशिन्** (पुं०) उल्लू,—**कुट्टः** नाई,--**आहम्** नाखून की जड़ --**दारणः** दात्र, वयन (भम्) नहरनी, नाखून काटने की कैंची --**निकृन्तनम्**,--**रजनी** नाखून काटने की कैंची, नहरनी, **पदम्**,—**व्रणः** नखचिह्न, खरोंच, नखपदमुखान् प्राप्य वर्षाबिन्दून्—मेघ० ३५, **मुद्रः** घनुष —**लेखा** 1. नखचिह्न 2. नाखून रंगना, **विकिरः** (अपने पंजों से फाड़ने वाला) शिकारी पक्षी, **शङ्कुः** छोटा शंख।

नखप्रच (वि०) [नख+पच्--क्विप्, मुम्] नाखून खुलवाने वाला, शि० १।८५।

नखर:,--**रम्** [नख+र-अ-क] अंगुली का नाखून, पंजा, नख। **सम०** **आयुधः** 1. व्याघ्र 2. सिंह 3. मुर्गा **आहुः** कर्कोर।

नखायुधि (अव्य०) [नखैश्च नखैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम् द० स०] परस्पर नखाघात द्वारा होने वाला युद्ध, नाखूनों की लड़ाई।

नाखिन् (वि०) [नख+इनि] 1. बड़े 2. नाखूनों वाला, तेज पंजों वाला 2 नखीला, काटेदार (पुं०) व्याघ्र या शेर जैसा नखधारी जन्तु।

नगः [न गच्छति--न+गम्+ड] 1. पहाड़--कु० १। १७, उद्भ० वि० ६।७९ 2. वृक्ष 3. पौधा 4. सूर्य 5. साँप 6. सात की संख्या। **सम०** **अदनः** बंदर **अधिपः,—अधिराजः**--**इन्द्रः** 1. (पहाड़ों का स्वामी) हिमालय पर्वत 2. सुमेरु पर्वत,—**अरिः** इन्द्र का विशेषण,—**उच्छ्राय** पहाड़ की ऊँचाई, **ओकस्** (पुं०) 1. पक्षी 2. कौवा 3. सिंह 4. प्रलय काल का काल्पनिक पक्षी,—**ज** (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, पहाड़ी --**भिद्** १०।१, (ज.) हाथी, **जा**--**नन्दिनी** पार्वती का विशेषण,—**पतिः** 1. हिमालय पहाड़ 2. (कल्पनिक) का स्वामी) चन्द्रमा,--**भिद्** (पुं०) 1. कुल्हाड़ा 2. इन्द्र का विशेषण,--**मूर्धन्** (पुं०) पहाड़ की चोटी --**रन्ध्रकरः** कार्तिकेय का विशेषण--रघु० ९।२।

नगरम् [नग इव प्रासादादि युक्तत्वात् बा० र] कस्बा, शहर (विप० ग्राम)--नगरगमनाय मतिं न करोति--घट० २। **सम०**--**अधिकृतः, अधिपः**, अध्यक्षः नगर का मुख्य दण्डनायक, मुख्य आरक्षाधिकारी 2. नगर पाल, नगर का अधीक्षक,--**उपान्तः** उपनगर नगर के आसपास की आबादी,—**ओकस्** (पुं०) नागरिक, --**काकः** 'ग्रहरक्षा' कौवा एक तिरस्कारयुक्त उक्ति --**घातः** हाथी, **जनः** 1. नगर के लोग, नागर 2. नागरिक, --**प्रदक्षिण** जलूस में मूर्ति को नगर के चारों ओर घुमाना,—**प्रान्तः** उपनगर,—**मार्गः** प्रधान सड़क, राजपथ,--**रक्षा** नगर का अधीक्षण या शासन, **स्थ** नगरवासी, नागरिक।

नगरी [नगर+ङीप्] नगर, । **सम०**--**काकः** सारस, —**बकः** कौवा।

नग्न (वि०) [नञ्+ग्ना+क्त, तस्य नः] नंगा, विवस्त्र, वस्त्रहीन --न नग्नः स्नानमाचरेत् मनु० ४।४५, नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति--चाण० ११० 2. बिना जोता हुआ, बिना बसा, सुनसान **रः** 1. नंगा भिक्षु 2. क्षपणक 3 पाशुपत 4. शैवों के साथ रहने वाला भाट, घूमता हुआ भाट--**ग्ना** 1. तपोनिर्लज्जा, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2. रजोधर्म होने से पूर्व की अवस्था की लड़की।

नग्नकरणम् [नग्न+कृ+ल्युट्, मुम्] नंगा करना।

नग्नं भविष्णु,—भावुक [वि०] [नग्न+भू+ष्णुच्, उकञ्] नंगा होने वाला।

नघः [न नहि गच्छति न+गम्+ड] हिमो, ओस।

नचिकेतस् (पुं०) अग्नि का विशेषण।

नचिर (वि०) [न चिरम्, न शब्देन लक्षणया] दे० अचिर, मनु० ५।६, १२।७।

नञ् (अव्य०) निषेधात्मक अव्यय 'न' के लिए व्याकरणिक शब्द।

नट । (स्था० पर० नटति 'चोट पहुंचाने' के अर्थ में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'ध' के पश्चात् 'न' को 'ण' हो जाता है) 1. नाचना, यदि मनसा नटेयम् गीत० ४ 2. अभिनय करना 3. (धोखे से डालकर) क्षति पहुँचाना, प्रेर०—नाटयति-ते 1. अभिनय करना, हाव भाव व्यक्त करना, (नाटकों में) नाटक के रूप में वर्णन करना, शरत्समये नाटयति--भा० १ 2. अनुकरण करना, नकल करना।—स्फटिकदर्पणमुन्नतिटयत्यिव शैलः--अधिगतधवलिम्नः शूलपाणेरभिख्याम् शा० ४।६५, (विशे० 'नचाना' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'नट्' धातु का 'नटयति' रूप बनता है--भट्टि० ३।१२६), ii (चुरा० उभ० नाटयति-ते 1. गिर पडना, गिरना 2. चमकना 3. क्षति पहुँचाना।

नटः [नट्+अच्] 1. नाचने वाला--न नटा न विटा न गायकाः --भर्तृ० ३।२७ 2. अभिनेता--कुर्वन्नेष प्रहसनस्य नटः क्रीडोऽसि--भर्तृ० ३।१२६, ११२, 3. पतित क्षत्रिय का पुत्र 4. अर्जुन वृक्ष 5. एक प्रकार का नर कुल। सम०--**अंतिका** लज्जा, ह्री, **ईश्वरः** शिव का विशेषण--**चर्या** नाटक के पात्र का अभिनय, --**भूषणः**--**मंडनम्** हरताल--**रंगः** नाटक रंगमंच, --**वरः** प्रधान नट, सूत्रधार--**संज्ञकम्** हरताल (क०) अभिनेता, नट।

नटनम् [नट्+ल्युट्] 1. नाचना, नाच 2. अभिनय करना, हावभाव प्रकट करना, नाटकीय चित्रण।

नटी [नट्+ङीष्] 1. अभिनेत्री 2. मुख्य नटी (सूत्रधार की पत्नी) 3. वेश्या, रंडी। सम०--**सुतः** नटी का पुत्र।

नटया [नट्+ण+टाप्] अभिनेताओं की मंडली।

नड:—**डम्** [नड्+अच्, लस्य डत्वम्] नरकुल का एक भेद। सम०--**अगारम्, आगारम्** नरकुलों का बना झोंपड़ा--**प्राय** (वि०) जहाँ नरकुल बहुत होते हों **वनम्** नरकुलों का जंगल **संहतिः** (स्त्री०) नरकुलों का संग्रह।

नडज (वि०) (स्त्री०-जी) [नड+श] सरकंडों से ढका हुआ।

नडिनी [नड+इनि+ङीप्] 1 सरकंडों का ढेर 1. सरकंडों का बना हुआ मुड़ा या शय्या, वह नदी जहाँ सरकंडों के पौधे बहुतायत से हों।

नडिल, (वि०), नड्वत (वि०) (स्त्री०-ती) [नड+इलच्, ड्वतुप् वा] सरकंडे जहाँ पर बहुतायत से हों, या जो सरकंडों से ढका हुआ हो, सरकंडों से पूर्ण स्थान।

नड्वा [नड्+य+टाप्] सरकंडों का ढेर।

नड्वल (वि०) [नड्+ड्वलच्] सरकंडों से व्याप्त--**लम्** सरकंडों का ढेर या शय्या, यो नड्वलानीव गजः परेयां बलान्यमृद्नात्ललिताभवक्त्राः--रघु० १८।५।

नत (भू०क०कृ०) [नम्+क्त] झुका हुआ, प्रणत, झुकने वाला, रुझान वाला 2. डूबा हुआ, अवसन्न 3. कुटिल, टेढ़ा--**तम्** दाम्पोत्तर रेखा (मध्य दिन रेखा) से किसी ग्रह की दूरी। सम०--**अंगः** शिरोबिंदु की दूरी **अंग** (वि०) 1. झुके हुए शरीर वाला 2. झुकने वाला 3. प्रणत (गौ) 1. झुके हुए अंगों वाली स्त्री 2. स्त्री--**नासिक** (वि०) चपटी नाक वाला,—भ्रूः टेढ़ी भौंहों वाली स्त्री।

नतिः (स्त्री०) [नम्+क्तिन्] 1. झुकाव, झुकना, प्रणमन 2. वक्रता, कुटिलता 3. अभिवादन करने के लिए शरीर का झुकाना, प्रणति, शालीनता 4. (ज्यो० में) भोगांश में स्थानभ्रंश।

नद् (स्वा० पर० नदति, ननदिन) 1. शब्द करना, कलकल ध्वनि करना, (बादल की भांति) गरजना--वाम्शचायं नदति मधुरं चातकस्ते सगंधः --मेघ० ९, नदत्यकाण्डगंगायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे- रघु० १७८, शि० ५।६१, भट्टि० २।४ 2. बोलना, चिल्लाना, पुकारना, दहाड़ना (प्रायः शब्द, स्वन नाद कर्म के साथ) ननाद बलवन्नादं, शब्दं घोरतरं नदन्ति--महा० 3. यशस्वी होना--भट्ट० नादयति-ते 1. कोलाहल से भर देना, कोलाहलमय करना 2. शब्द करवाना, उच्--दहाड़ना, ज़ोर से पुकारना, (बैल की भांति) रंभाना, कु० १।५९, नि-, शब्द करना, चिल्लाना--रघु० ५।७५, मालवि० ५।१०, भट्टि० ६।११७, प्र (प्रणदति) ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना--कक्षादाः प्राणदन् घोराः महा० शिवाः प्रणदंति आदि प्रति--, गूंजना, प्रतिध्वनि करना, प्रेर०--कोलाहल से भरना, गुंजायमान करना शा० २।२६, ऋतु० ३।१४, वि--, ध्वनि करना, गूंजना--भग० १।१९, प्रेर०- क्रंदन करवाना या गीत गवाना--अवुर्दैः शिक्षितगणो विनाद्यते—घट० १०।

नदः [नद्+अच्] 1. दरिया, बड़ी नदी (जैसी कि सिंधु) शि० ६९, (यहाँ सल्लिः की टिप्पण--प्राक्लक्षणेसो नदः प्रत्यक्लक्षणेसौ नदा नर्मदां विनेत्याहुः) 2. नदी, प्रवहणी, नाला—कि० ५।२७ 3. समुद्र। सम०--**राजः** समुद्र।

नदयः [नद्+अयच्] 1. शोर, दहाड़ 2. बैल की दहाड़।

नदी [नद+ङीप्] दरिया, प्रवहणी, सरिता—रविक्षीणजला तपात्यये पुनरोघेन हि पूर्यते नदी--कु० ४।४४। सम०--**ईन-ईशः**, **कान्तः** समुद्र,--**कुलप्रियः** एक प्रकार का नरकुल **ज** (वि०) जलोत्पन्न (ज:) भीष्म का विशेषण (**जम्**) कमल—**तरत्थानम्** उतरने का स्थान, घाट **दोहः** भाड़ा, उतराई, किराया, --**धरः** शिव का विशेषण, **पतिः** 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण, **पूरः** उमड़ा हुआ दरिया,--**भवम्**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नदीलक्षण, —मातृक (वि०) (देश आदि) जहां नदी के पानी से सिंचाई होती हो, सिंचित, नदी या नहर द्वारा सिंचाई पर जो निर्भर करता हो, नै० ३।२८, तु० देवमातृक,—रयः नदी की धार,—वंकः नदी का मोड़,—स्नः (वि०) (स्नातृ) 1. नदी में स्नान करने वाला 2. नदियों के भयानक स्थानों, उनकी गहराइयों और प्रवाहों को जानने वाला—ततः समाज्ञापयदाशु सर्वानानायिनस्तद्विधे नदीष्णान् रघु० १६।७५, अतः 3. अनुभवी, चतुर,—सर्जः अर्जुन वृक्ष ।

नद्ध (भू० क० कृ०) [नह्+क्त] 1. बंधा हुआ, बाँधा हुआ, जकड़ा हुआ, चारों ओर से बद्ध, धारण किया हुआ 2. ढका हुआ, जड़ा हुआ, अन्तर्ग्रथित 3. संयुक्त, संयोजित देo 'नह्',—द्धम् गांठ, बंधन, बंध, गिरह ।

नद्धभ्री [नह्+क्त+ङीप्] चमड़े का फीता ।

ननंदृ, ननांदृ (स्त्री०) [ननन्दति सेवयापि न तुष्यति न+नन्द्+ऋन्] पति की बहन, ननान्दुः पत्न्या च देश्याः संदिष्टमृष्यशृंगेण—उत्तर० १ । सम० **ननांदृपतिः** (ननान्दुःपतिः) ननदोई, पति की बहन का पति ।

ननु (अव्य०) (मूल रूप से न और नु का संयुक्त रूप, जिसे आज कल एकत्र शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है) यह अव्यय निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है —1. पूछताछ, प्रश्न, ननु समाप्तकृत्यो गौतमः—मालवि० ४ 2. निश्चय ही, अवश्य, निस्संदेह, क्या यह असन्दिग्ध नहीं (प्रश्न सूचक बल के साथ) यदाऽसेवादिनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १ 3. निस्सन्देह, बेशक, अवश्य—उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वंगेषु—रघु० १।६०, त्रिलोकनाथेन सदा सलक्ष्मिकस्त्वया विभव्या ननु विश्वचक्षुषा—३।५५ 4. संबोधन सूचक अव्यय (आ 'अहो') ननु मानव—दश०, ननु भूताः पठितमेव युष्माभिस्तत्काण्डे —उत्तर० ४ 5. 'कृपा करके' 'अनुग्रह करके' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रतिषेधात्मक कथन के रूप में प्रयुक्त होता है —ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम्—कु० ४।३२ 6. कभी-कभी संशोधनशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु एते परिक्रम्य भण मृच्छ० ५, ननु भवानेवमेव वर्तते —श० २, ननु विचिन्त्यतां भवान् —विक्रम० २ 7. तर्कानुबद्ध चर्चा के समय आक्षेप करने या विरोधी प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है (इसके पश्चात् प्रायः 'उच्यते' आता है) नन्वेवमप्यविद्यादिशरीरादिसंघातस्य अचेतनत्वात् व गोत्रादीनां कार्यावगतिः उच्यते —शारी० ।

नन्द् (भ्वा० पर० नन्दति, नंदित) प्रसन्न होना, हर्षित होना, खुश होना सन्तुष्ट होना, (किसी बात पर) हर्ष प्रकट करना—नेदनुस्तत्प्रदानेन तावत्सनौ—रघु० २।२३, ११, २।२२, ४।३, भट्टि० १५।२८, प्रेरo —नन्दयति—ते—प्रसन्न करना, खुश करना, हर्षित करना, आनन्दित करना—अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुदती मे दृष्टिं न नन्दयति सम्भरणोयशोभा । श० ४।२, भट्टि० २।१६, रघु० १।५२ अभि—1. हर्ष प्रकट करना, प्रसन्न होना, संतुष्ट होना—आत्मविद्वत्तामभिनंदति—का० १०८, नाभिनंदति न द्वेष्टि भग० २।५७ 2. बधाई देना, जय जयकार करना, स्वागत करना, नमस्कार करना—तापसीभिरभिनंद्यमानास्तिष्ठति —श० ४, तमभ्यनंदत्प्रथमं प्रजापतिः रघु० ३।६८, २।७४, ७।६९, ११।३०, १६।६४ 3. प्रशंसा करना, तारीफ करना, श्लाघा करना, अच्छा समझना—नाम यस्याभिनंदति द्विषोऽपि स पुमान् —किरा० ११।७३, श० ३।२४, रघु० १२।३५, न ते दक्षोऽभिनंदामि—श० २ 4. कामना करना, चाहना, पसन्द करना, अपेक्षा करना (प्रायः 'न' के साथ) नाभिनंदेत मरणं नाभिनंदेत जीवितम् —मनु० ६।४५, हि० ४।४, आ—,प्रसन्न होना, खुश होना—आनंदितास्त्वया दृष्ट्वा भट्टि० २२।१४, प्रेरo— प्रसन्न करना, खुश करना—उत्तर० ३।१४, याज्ञ० १।३५६, प्रति —, 1. आशीर्वाद देना—रघु० १।५७, मनु० ७।१४६, कु० ७।८७ 2. स्वागत करना, बधाई देना, जयजयकार करना, हर्ष पूर्वक सत्कार करना प्रतिनंद्य स तां पूजाम्—महा०, मनु० २।५४ ।

नन्दः [नन्द्+अच्] 1. आनन्द, सुख, हर्ष 2. (११ इंच लम्बी) एक प्रकार की बांसुरी 3. मेंढक 4. विष्णु 5. एक राजा का नाम जो यशोदा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसको देख रेख में कृष्ण को रक्खा गया था जब कि कंस उसे मारना चाहता था) 6. नंद वंश का प्रतिष्ठाता (यह वही नंदवंश था जिसके नौ भाई पाटलिपुत्र में राज्य करते थे तथा जिन्हें चन्द्रगुप्त के मंत्री चाणक्य की नीति के द्वारा यमलोक भेज दिया गया था) नमुत्खाता नदा नव हृदयरोगा इव भुवः —मुद्रा० १।२३, अनूहीते राक्षसे किमुचलति नन्दकुलोत्पन्ने मुद्रा० १।३, २७ २८ । सम०—**आत्मजः**, —**नंदनः** कृष्ण का विशेषण—पालः कृष्ण का विशेषण ।

नन्दक (वि०) [नन्द्+णिच्+ण्वुल्] 1. हर्षित करने वाला, आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला 2. खुश होने वाला, हर्ष मनाने वाला 3. परिवार को प्रसन्न करने वाला—कः 1. मेंढक 2. कृष्ण की तलवार 3. तलवार 4. आनन्द ।

नन्दकिन् (पुं०) [नन्दक—इनि] विष्णु का विशेषण ।

नन्दथुः [नन्द्+अथुच्] आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

नन्दन (वि०) [नन्द्—णिच्+ल्युट्] 1. खुश करने वाला, सुहावना, प्रसन्न करने वाला—नः 1. पुत्र —याज्ञ० १।२७४, रघु० ३।४१ 2. मेंढक 3. विष्णु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का विशेषण 4. शिव—नम इन्द्र का उद्यान, आनन्द-धाम—अभिज्ञाऽछेद्यपात्राणां क्रियते नन्दनद्रुमाः कु० २।४१, रघु० ८।२५ 2. हर्ष मनाने वाला, प्रसन्न होने वाला, 3. हर्ष, सम०—काष्ठ पीले चन्दन की लकड़ी, हरिचंदन।

नंदयत्—नंदयन्त्—[नंद् + अन्, अन्त आदेशः, नन्द् + णिच् —अत् (अन्त)] पुत्र, बेटा।

नन्दा [नन्द् + टाप्] 1. खुशी, हर्ष, आनन्द 2. सम्पन्नता, धनाढ्यता, समृद्धि 3. छोटा मिट्टी का जल-पात्र 4. नवमी, पक्ष की बहुत ही प्रसिद्धा, पहली और एकादशी, चांद्रमास की तीन तिथियां, (यह शुभ तिथियां समझी जाती हैं)।

नन्दिः (पुं० स्त्री०) [नन्द—इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी—कौशल्यानन्दिवर्धनः **निः** (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. शिव 3. शिव का अनुचर 4. जूआ खेलना, क्रीड़ा (इस अर्थ में नपुं० भी)। सम०—**ईशः, ईश्वरः** 1. शिव का विशेषण 2. शिव का प्रधान अनुचर **ग्रामः** वह गांव जहां राम के वनवासकाल में भरत रहा—रघु० १२।१८,—**घोषः** अर्जुन का रथ **वर्धनः** 1. शिव का विशेषण 2. मित्र 3. चांद पक्ष का अन्त अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा।

नन्दिकः [नन्दि + कन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. छोटा जल-पात्र 3. शिव का अनुचर। सम०—**ईशः, ईश्वरः** 1. शिव का एक मुख्य अनुचर 2. शिव।

नन्दिन् (वि०) [नन्द् + णिनि, नन्द् + णिच् + णिनि वा] 1. आनन्दित, हृष्ट, प्रसन्न, खुश 2. आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला—(पुं०) 1. पुत्र, 2. नाटक में नान्दीपाठ या आशीर्वचन कहने वाला व्यक्ति 3. शिव का मुख्य अनुचर, द्वारपाल, या वह बैल जिस पर शिव सवारी करता है अतागृह्णाद्रथवतीरथ नंदी कु० २।४३, मा० १।१, नैं० 1. पुत्री उत्तर० १।९ 2. नन्दन, पति की बहन 3. कामधेनु (जो सब इच्छाओं को पूरा करती है तथा जिस का स्वामी कुलगुरु वसिष्ठ हैं। अग्निहा नन्दिनो नाम धेनुरुद्वपते वनात् रघु० १।८२, २।६९, 4. गंगा का विशेषण 5. पवित्र काली तुलसी।

नप्तृ (पुं०) [पाती इति √पा—तृच्, तती नञ्या समासे प्रकृतिभावः] (प्रायः वेद में प्रयुक्त) पोता, यथा तनूनपात्।

नपुंस् (पुं०) नपुंस: [नञ्या समासे प्रकृतिभावः] जो पुरुष न हो, हिजड़ा।

नपुंसकः,—कम् [न पुमान् न स्त्री, नि० स्त्रीपुंसयोः पुंसक आदेशः] 1. उभयलिंगी (न स्त्री न पुरुष) 2. नामर्द, हिजड़ा 3. भीरु, डरपोक,—**कम्** 1. नपुंसक लिंग का शब्द 2. नपुंसक लिंग।

नप्तृ (पुं०) [न पतन्ति पितरो येन—न + पत् + तृच् नि०] पोता, नाती, (लड़के का पुत्र या लड़की का पुत्र)।

नभः [नभ् + अच्] श्रावण मास,—**भम्** आकाश, अन्तरिक्ष।

नभस् (नपुं०) [नह्यते मेघैः सह—नह् + असुन्, भश्चासादेशः] 1. आकाश, अन्तरिक्ष—रघु० ५।२९, भग० १।१९, ऋतु० १।११ 2. बादल 3. कोहरा, वाष्प 4. पानी 5. जीवन की अवधि, आयु (पुं०) 1. वर्षा ऋतु 2. नासिका, घ्राण 3. (जुलाई—अगस्त के अनुरूप, इस अर्थ में नपुं० भी) श्रावण मास, प्रत्यासन्ने नभसि दयितायोत्तिलत्वनाथी—मेघ० ४, रघु० १२।२९, १७।६१, १८।५ 4. पीकदान। सम०—**अंबुपः** चातक पक्षी,—**कांतिः** (पुं०) सिंह,—**गजः** बादल,—**चक्षुस्** (पुं०) सूर्य, **तमसः** 1. चन्द्रमा 2. जादू—**चर** (वि०) गगन विहारी—कु० ५।२३, (—रः) 1. देवता, उपदेवता रघु० १८।६ 2. पक्षी—**तुहः** बादल, दृष्टि (वि०) 1. अंधा 2. आकाश की ओर देखने वाला,—**द्वीपः,—भूमः** बादल,—**नदी** आकाश गंगा—**प्राणः** हवा,—**मणिः** सूर्य,—**मंडलम्** आसमान, अन्तरिक्ष, मेघ नभोमंडलमावृणोशिः—सा० द० १०, **द्वीपः** चन्द्रमा,—**रजस्** (पुं०) अंधकार,—**रेणुः** (स्त्री०) कोहरा, धूंध, —**लयः** धूआं,—**लिह्** (वि०) आकाश को चाटने वाला, उन्नत, बहुत ऊंचा तुं० अभ्रंलिह,—**सद्** (पुं०) देवता—शि० १।११, **सरित्** (स्त्री०) 1 छायापथ 2. आकाशगंगा—**स्थली** आकाश,—**स्पृश्** (वि०) गगनचुंबी, उन्नत।

नभसः [नभ् + असच्] 1. आकाश 2. वर्षा ऋतु 3. समुद्र।

नभसंगयः [नभस + गम् + खच् + मुम्] पक्षी।

नभस्यः [नभस् + यत्] (अयस्य—सिलबर के अनुरूप) भाद्रपद का महीना—रघु० ९।५४, १२।२९, १७।४६।

नभस्वत् (वि०) [नभस् + मतुप्, मस्य वः] वाष्पयुक्त, धुंधवाला, मेघाच्छन्न,—(पुं०) हवा, वायु नै० १।९३, रघु० ४।८, १०।७३, शि० १।१०।

नभाकः [नभ् + आक] 1. अंधकार 2. राहु का विशेषण

नभ्राज् (पुं०) [भ्राज् + क्विप्, नञ्या समासे प्रकृतिभावः] काला बादल, काली घटा।

नम् (भ्वा० पर०—कभी कभी आ०—नमति—ते, नत, प्रेर० नमयति—ते, परन्तु उपसर्ग पूर्व होने पर केवल 'नमयति', इच्छा० निनंसति) 1. झुकना, नमस्कार करना, अभिवादन करना (सम्मान सूचक लक्षण) (कर्म० या संप्र० के साथ) इयं नमति व: सर्वान् त्रिलोचनवधूरिति—कु० ६।८९, मेघ० ११।१७,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भट्टि० १।५१, १०।३१, १२।३६, शि० ४।५७, अधीन होना, पराभव स्वीकार करना, झुक जाना --अवनतः सन्धिप्रान् नमेत्--काम० ८।५५ 3. झुकना, दबाना, नीचा होना--अनमीद्भूभरेणाद्य --भट्टि० १५।२५ नैषः सर्वविद्या --का० ५५, उत्तानयति नमति वर्षति ... मेघः--मृच्छ० ५।२६ 4. ढकना, झुकते होना 5 झुका हुआ होना, वक्र होना 6. स्वीकार निकालना। **अभ्युद्** --, उठाना, ऊपर होना | **अव** --, 1. झुकना, नम्र होना, नीचे को ढलना --शि० ९।७४ 2. झुकाना, लटकाना --स्त्रीत्वादातु जघनावरोः--मेघ० ४५, **उद्** --, 1. (क) उदय होना, प्रकट होना, उठना --उन्नमयोन्नतयं लोकंते रश्मिजाला मनोरथाः --पंच० ३।१२, (ख) 1. लटकना, झुकना होना --उन्नमदरुकालबुडिनम् --मृच्छ० ५ 2. उदय होना, चढ़ना, ऊपर उठना (अलं० भी) उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघः. मृच्छ० ५।२६, **उन्नमयोन्नमयोः** --भट्टि० ३।३९, ३।४८, शि० ९।७१, 3. उठाना, ऊंचाई करना--कि० १६।३५, प्रेर० ऊपर उठाना, सीधा खड़ा करना--**उप** --, आना आ जाना, पहुंचना 2. होना, भाग्य में होना, घटित होना, सामने आना (संप्र० के साथ या अकेला) कस्यान्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा--मेघ० १०९, मत्सभोगः कतमुपनयेत् व्यत्यजीजीपि--मेघ० ९१, यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तदमवत्तरम् --विक्रम० २।२१, भर्तृ० २।१२१, मेघ० १०, रघु० १०।३१, 3. उपस्थित करना, देना, प्रस्तुत करना --फलीकोपनतं जलाजलिम्--रघु० ८।६८, **परि** --, 1. नीचे को झुकना, झुकना (जैसे कि कोई हाथी अपने दांतों से प्रहार करने के लिए) वराहोद्धारणायाभ्यपरिणतमवनीमार्यवर्त्मेव दन्तैः--मेघ० २, दिक्के नागा: परिणतोरुः रव गुरु --शि० १८।२७ 2 झुकना, नमस्कार करना, झुकाव होना --व्यज्जापरिणतैः (वदनकमलैः) भट्टि० ३।८, 3. परिवर्तित होना, रूपान्तरित होना, रूप धारण करना (करण० के साथ) लतामावेन परिणतमस्था रूपम् --विक्रम० ४।२८, क्षीर जलं वा स्वगुणेन दर्शयिहिमाभावेन परिणमते --शारी०, मेघ० ४५, 4. विकसित या परिपक्व होना, पकना, परिणतपलाश्च दाणीम् उत्तर० ३।२०, मेघ० १८, कि० ५।३७, मालवि० ३।८, ऋतु० १।२३ 5 (आयु से) बढ़ना, बड़ा होना, बूढ़ा होना, क्षीण होना, परिणत शरच्चन्द्रिकासु क्षपासु मेघ० ११०, इसी प्रकार 'जरापरिणत' आदि 6. ढकना, (नूपुर आदि का) पश्चिम में खिसना अनेन राजपथेन परिणतो दिवसः--का० ४७ 7. पक्व जाना, ग्रस्त **परिणमेच्च** यत् --महा०, **प्र** (प्रणति) नमस्कार करना, अभिवादन करना, विनम्र प्रणति करना (कर्म० या संप्र० के साथ) न प्रणमति देवताभ्यः का० १०८, तौ प्रणतानां --का० २१९, भग० ११।४४, रघु० ३।२१, (**साष्टांगं प्रणम्** आठ अंगों से झुक कर प्रणाम करना --देव 'साष्टांग', **दण्डवत् प्रणम्** डंडे की भांति पूर्ण रूप से भूमि पर लेट कर नमस्कार करना, सब अंगों से भूमि को स्पर्श करते हुए नु० दंडप्रणाम). **वि** --, 1. अपने आपको झुकाना, नम्र करना, विनीत होना, विनति चास्य तरस प्रयोः कि० ३।३४, भर्तृ० १।६७, भट्टि० ७।५२, देव 'विनत' **विपरि** 1. मरुलना 2. बदल कर खराब होना **सम्** 1. झुकना नीचे को होना, झुकाव होना --संनतांगी कु० १।३४, भट्टि० ३।३१, पर्वसु संनतां विक्रम० ४।२६ 2. नम्र होना, विनीत होना संनमद्वाक्षरीकाम् रघु० १८।३४।

नमत (वि०) [नम्+अतच्] झुका हुआ, विनीत, कुटिल, वक्र -तः 1. अभिनेता 2. धूआं 3. स्वामी, प्रभु 4. बादल।

नमनम् [नम्-ल्युट्] 1 विनीत होना, झुकना, नम्र होना 2. दबना 3. विनति, नमस्कार. अभिवादन।

नमस् (अव्य०) [नम्+असुन्] प्रणति, अभिवादन, प्रणाम, पूजा (यह शब्द स्वयं सर्वदा सप्र० के साथ प्रयुक्त होता है, नमसे वदनानुरूपतायै नमसेऽस्तु भामि० ११४४, नमस्तिमयेय तुभ्यम् कु० २।६, परन्तु कु० के योग में कर्म० के साथ मूर्तिवत् नमस्कुरुष सिद्धा०, परन्तु कर्मी-कर्मी स० के साथ भी --नमस्कुर्मो तृणिहाय --सिद्धा०, यह शब्द सदा शब्द का अर्थ रखता परन्तु समझा जाता है अव्य०)। **समः** --कारः, --कृतिः (स्त्री०) --करणम् प्रणति, सादर प्रणाम, सादर अभिवादन ('नमः' शब्द के उच्चारण के साथ), **कृत** (वि०) 1. जिसे प्रणति दी गई है, जिसको प्रणाम किया गया है 2 सम्मानित, अर्चित, पूजित, --गुरुः आध्यात्मिक गुरु, --**वाक्यम्** (अव्य०) 'नमस्' शब्द का उच्चारण करना, अर्थात् विनम्र अभिवादन करना इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे --उत्तर० १।६।

नमस्य (वि०) [नमस्-अस्च्] अत्यन्त, मानसङ्ग व्यवस्थित। **नमस्ति**, नमस्यित (वि०) [नमस्-क्यच्, नमस्य--क्त, विकल्पेन यलोपः] जिसे नमस्कार किया गया हो, सम्मानित, जिसे प्रणाम किया गया है।

नमस्यति (ना० धा० पर०) नमस्कार करना, अभिवादन करना, पूजा करना भर्तृ० ३।९४।

नमस्य (वि०) [नमस्+यत्] 1 अभिवादन प्राप्त करने का अधिकारी, सम्मानित, आदरणीय, वन्दनीय 2. आदरयुक्त, विनीत,--**या** पूजा, अर्चना, श्रद्धा, भक्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नमुचिः [न मुञ्चति-मुच्+इन्] 1. एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मार डाला था। बलपूर्वक नमुचेरन्ये शिरः-रघु० ९।७२, (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की तो नमुचि नामक एक असुर ने इन्द्र का डटकर मुकाबला किया और अन्त में इन्द्र को कायरों बना लिया। उस दैत्य ने इन्द्र से कहा कि यदि तुम वह प्रतिज्ञा करो कि न मैं तुम्हें दिन में मारूंगा न रात को, न गीली में न सूखे में तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा। इन्द्र ने प्रतिज्ञा की और फलतः उसे छोड़ दिया गया। फिर इन्द्र ने संध्या समय फेनों के द्वारा (जो न गीले थे न सूखे) नमुचि का सिर काट डाला। दूसरे एक कथन के अनुसार नमुचि इन्द्र का मित्र था उसने एक बार इन्द्र की शक्ति को पी लिया और उसे निर्बल एवं अशक्त बना दिया, फिर अश्विनीकुमारों (सरस्वती ने भी) ने इन्द्र को वज्र दिया जिससे उसने नमुचि का सिर काट डाला) 2 कामदेव।

नमेरुः [नम्+एरु] एक वृक्ष का नाम, कदंब का सुगन्धित गोंद नमेरुसरसस्यन्दसान्द्रा-कु० १।५५, ३।४३, रघु० ४।७८।

नम्र (वि०) [नम्+र] 1. विनीत, प्रणतिशील, झुका हुआ, विनत, नीचे लटकने वाला अर्थात् नम्रास्तत्रैव फलागमैः-शि० ५।१२, श्लोकस्त्रस्ता स्वतन्त्रयां—मेघ० ८०, पंच० १।१०६, रत्न० १।१२ 2. प्रणतिशील, सादर अभिवादनशील, अभ्युत्थानं नम्रा प्रणियत क्रियाः रघु० ३।२५, इत्युच्चैर्नाभिरूपा स्म नम्रा-कु० ७।२८ 3. सुशील, विनयी, विनयशील, श्रद्धालु -मेघ० ५५ 4 कुटिल, वक्र 5. पूजा करने वाला 6. मंद, ढीलापन।

नय् (स्वा० आ०—नयते) 1. जाना 2. रक्षा करना।

नयः [नी+अच्] 1. निर्देशन, मार्गदर्शन, प्रबन्धन 2. व्यवहार, निष्पादनी, आचरण, शिष्टचर्या-जैसा कि दुर्नय में 3. बुद्धिमत्ता, अभ्युदृष्टि 4. नीति, शासन विषयक बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता, नागरिक प्रशासन राज्य की नीति नयप्रचारं व्यवहारं दृष्टव्यम् मृच्छ० १।७, नयपूर्णादिशामिव भूपतेः सदुपस्कार फला श्रियसंचितः-रघु० ९।२७ 5. नैतिकता, न्याय, न्यायपरता, न्यायता चलति नयान्न जिगीषतां हि गोत्र-किं० १०।२९, २।३, ६।३८, १६।४२ 6. रूप-रेखा, ढांचा, योजना—मुद्रा० ६।११,७।९ 7. सिद्धांत वाक्य, नियम 8. कर्म, प्रणाली, रीति 9. पद्धति, वाद, मतांति 10. दार्शनिक पद्धति जैसे कि नये भाग०, १०५। मध०—कोविद् २ (वि०) नीति कुशल, दूरदर्शी चक्षुस् (वि०) न्यायसंगत अपदृष्टि रखने वाला, बुद्धिमान्, दूरदर्शी - रघु० १।५५ -नेतृ (पुं०) राज नीतिशास्त्र पारंगत -विद् (पुं०) **विशारदः** राजनयिक, राजनीतिज्ञ -शास्त्रम् 1. राजनीतिशास्त्र, 2. राजनीति का या राजनीतिक अध्ययन का कोई ग्रन्थ 3. नीतिशास्त्र **शालिन्** (वि०) न्यायपूर्ण, न्यायपरायण किं० ५।२४।

नयनम् [नी+ल्युट्] 1. मार्ग दर्शन, निर्देशन, संचालन, प्रबन्धन 2. ले जाना, निकट लाना, खींचना 3. हुकूमत करना, शासन करना 4. प्रापण 5. लोचन। समः - **अभिराम** (वि०) आंखों को प्रसन्न करने वाला, दिखाने योग्य (-मः) चांद, -**उत्सव** 1. दीपक, लैंप 2. आंख को प्रसन्नता 3. कोई प्रिय वस्तु उपांतः आंख का कोना -कु० ७।९३, -**गोचर** (वि०) दृश्यमान, दृष्टि-परास के अन्तर्गत,-छद्म पलकः,—पथः दृष्टि-परास,—पुटम् अक्षिगोलक,—**विषय**: 1. कोई दृश्यमान पदार्थ 2. दृष्टिपरास, -**सलिलम्** अश्रु शि० ३५।

नरः [नृ+अच्] 1. मनुष्य, पुमान् पुरुष संयोजयति विद्वेषं वीतरागादिषु नरं हितम् पंच० १, मनु० ९।९३, २।२१३ 2. मानवजाति 3. मोहन 4. पुरुषों की कौम, मनु० 5. पतिप्राणा, नियमपुरुष 6. दोनों हाथों को दोनों ओर फैलाकर, हाथ के एक सिरे से दूसरे हाथ के सिरे तक की लम्बाई 7. एक संकीर्ण ऋषि का नाम 8. अर्जुन का नाम देo तथा नारायणः। मध०—**अधिप**, — **अधिपति**, — **ईश**, — **ईश्वरः** देवः, पतिः पालः राजा, भग० १०।२७, मनु० ७।१३, रघु० २।५५, ३।४२, ७।६९, मेघ० ३७, पाल० १।३१०, **अंतक**: यमः, —**अयन**: विष्णु का विशेषण, - अरिः, -आगारः, -इन्द्रः 1. राजा, - रघु० २।१८, ३।३३, ६।८७, मनु० १।२५३ 2. शैव, त्रिपुनाशक ओषधियों का सिद्धांत, शिवालय नर-कंकिलालरेंद्रभिक्षाटनी या निर्देशे भग० ५१, **सुलिप्तहा नरेन्द्रेण** फणीन्द्रा इव भावयः—शि० २।८८, (यहां शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है), -**उत्तमः** विष्णु का विशेषण, **ऋषभ** मनुष्यों में श्रेष्ठ राज-कुमार, राजा,—**कपाल** मनुष्य की खोपड़ी, -**कीलकः** आध्यात्मिक गुरु की सेवा करने वाला, -**केशरिन्** (पुं०) विष्णु का चौथा अवतार, नृ- नरसिंह को देo, - **द्विष्** (पुं०) राक्षस, पिशाच—भट्टि० १५।९४, —**नारायणः** कृष्ण का नाम, (द्वि० व०—**नौ**) बलराम और कृष्ण दोनों एक ही साथ जाने जाते थे, परन्तु पुराणों और महाकाव्यों में दो स्वतंत्र साथी जाने जाते हैं — नर को अर्जुन का सखरूप तथा कृष्ण को नारायण का रूप (कुछ स्थानों पर इन्हें 'देवी' 'पुराणों' 'ऋषी' या 'ऋषिसत्तमौ' कहते हैं, कहा जाता है कि यह दोनों हिमालय पर्वत कंडों साधना और तपस्या किया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करते थे, इनकी इस तपस्या से इन्द्र भयभीत हुआ, फलतः उसने इनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए कई देव कन्याओं को भेजा। परन्तु नारायण ने अपनी जंघा पर रखे एक फूल से सौन्दर्य में इनसे बढ़ चढ़कर 'उर्वशी' नाम की एक अप्सरा की उत्पत्ति करके इन स्वर्गदेवियों को लज्जित कर दिया, तु० स्थाने खलु नारायणमपि विलोभयेत्स्तत्पुंभवाभिमानी दृष्ट्वा प्रीतिनाः सर्वा अप्सरस इति -विक्रम० १), --पशुः पशु जैसा मनुष्य, मानव रूप में पशु --पंगवः मनुष्यों में श्रेष्ठ, उत्तमपुरुष, -मालिका, -मालिनी, -मालिनी मनुष्य जैसी स्त्री जिसके दाढ़ी हो, मर्दानी औरत, -मेधः नरयज्ञ,--यंत्रम् घुपखड़ी, -यानम् रथः --वाहनम् मनुष्य द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी —लोकः 1 मनुष्यों का संसार, पृथ्वी, पार्थिव संसार 2. मानवता, --वाहनः कुबेर का विशेषण --रघु० २।११, --वीरः पराक्रमी मनुष्य शूरवीर,--व्याघ्रः --शार्दूलः प्रमुख पुरुष, --शृंगम् 'मनुष्य का सींग, असम्भावना; भेड़ के मेंढ़, बकरे के धड़ और सांप की पूंछ वाला दरफा अर्थात् बन्ध्यापुत्र, सत्ताहीनता, -संघः मानव-समाज, --सिंहः, --हरिः 'नरसिंह' विष्णु का चौथा अवतार, तु० तवकरकमलवरे नखमद्भुतशृंगं दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम्, केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे —गीत० १,--स्कंधः मनुष्यों की टोली।

नरकः---कम् [नृणाति क्लेशं प्रापयति—नृ+चुन्] नीचलोक, एक प्रदेश, (स्वर्ग के राज्य के अनुरूप संसार, नरक निम्नलिखित २१ माने जाते हैं जहाँ पापियों को विविध प्रकार की यातनायें दी जाती हैं), --क एक राक्षस का नाम, प्राग्ज्योतिष का राजा (एक वृत्त के अनुसार नरक एक बार अदिति के कर्णाभूषण उठाकर भाग गया, सब देवताओं की प्रार्थना सुनकर कृष्ण ने उसको एक ही पछाड़ में मार गिराया और वह यातना दूर प्राप्त किया। एक दूसरे वृत्त के अनुसार नरक ने हाथी का रूप धारण किया और वह विश्वकर्मा की पुत्री को उठा कर ले गया तथा उसके साथ बलात्कार किया। उसने गन्धर्वों, देवों, और मनुष्यों की लड़कियों तथा अप्सराओं को उठाया और इस प्रकार सोलह हजार से अधिक युवतियों को अपने अन्तःपुर में रखा। कृष्ण ने जब नरक को मार दिया तो वह सब युवतियाँ कृष्ण के अन्तःपुर में हमेशा-हमेशा के लिए रख दी गई। यह राक्षस भूमि से उत्पन्न होने के कारण भौम कहलाता है) । सम०---अंतकः, ---अरिः, —जित् (पुं०) कृष्ण के विशेषण, -आगमः 1. मृत्यु के पश्चात् आत्मा 2. भूत, प्रेत --कुंडम् मृतक का गड्ढा जहाँ दुष्टों को नाना प्रकार की यातनायें दी जाती हैं इस प्रकार के ८६ स्थान गिनाये गये हैं), —स्था वैतरणी नदी।

नरंगमः, नरांगः [नृ+अंगच्, नर+अंस्+अण्] पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग।

नरंगिः [नरान् चेष्टयतेऽस्मिन् नर+धा+कि, पृषो० मुम्] सांसारिक जीवन या अस्तित्व।

नरी [नर+ङीप्] नारी, स्त्री —भाग० ३।१६।

नरकुडकम् [नरस्य कुडकमिव, पृषो०] नाक, नासिका।

नर्तः [नृत्+अच्] नाचना, नाच।

नर्तकः [नृत्+ण्वुल्] 1. नाचने वाला, नृत्यशिक्षक 2. अभिनेता, भट, मूकनाटक का पात्र 3. भाट, चारण 4. हाथी 5. राजा 6. मोर,---की 1. नाचने वाली स्त्री, नटी, अभिनेत्री रंगस्थ दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी सर्व नृपात् - मा० का० ५९, कि० १०।४१, रघु० १९।१४, १९ 2. हथिनी 3. मोरनी।

नर्तनः [नृत्+ल्युट्] नाचने वाली, -नम् हावभाव प्रदर्शित करना, नाचना, नाच। सम०---गृहम्, —शाला नाचघर,—प्रियः शिव का विशेषण।

नर्तित (वि०) [नृत्+णिच्+क्त] नाचा हुआ, नचाया हुआ।

नर्द् (स्वा० पर० --नर्दति, नर्दित) गरजना, दहाड़ना, शब्द करना - अनर्दिषुः कपिवृषभाः -भट्टि० १५।३५, १४।४०, १५।२८, १७।४० 2. जाना, गतिशील होना।

नर्द (वि०) [नर्द्+अच्] गरज, दहाड़।

नर्दनम् [नर्द्+ल्युट्] 1 गरजना, दहाड़ना 2 प्रसन्नता का प्रकाश करना, ऊँचे स्वर में कीर्तिगान करना।

नर्दिः [नर्द्+क्त] एक प्रकार का गाना, पाने का हाथ नर्दिरर्थिनां दानशौण्डतां विदधाति सर्वदा - मृच्छ० २।८, --तप् श्वाजी, दहाड़, गरज।

नर्मन् [नर्म्+अटन्, पृषो०] 1. कोहनी, बाँह का टूकड़ा 2. सूर्य।

नर्मठः [नर्म्+अठच्] 1. भांड 2. लम्पट, दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी 3. क्रीडा, मनोरंजन, विनोद में मेंढ़ा, संभोग 5. छोड़ो 6. चूतड़।

नर्मन् (नपुं०) [नृ+मनिन्] 1. क्रीडा, विनोद, विलास आमोद, प्रमोद, क्रीडाकौतुक, केलिविहार -क्रीडनकैर्बाले परिकल्पितैः नर्मजनकमसकं मुग्धे —गीत० १२ (कौतुकजनकः) ; रघु० १६।२८ 2. परिहास, हँसी दिल्लगी, छेड़ छाड़, रतिक्रीडा विद्ध --नर्मगर्भाभि. कथाभिः का० ७७, परिहासपूर्ण, सरस। सम०---कीलः पति, --गर्भ (वि०) रमिक, ठिठोलिया, विनोदी (भः) सुखदायी -द (वि०) आह्लादकारी, आनन्ददायक (-दः) विदूषक (नर्मसचिव), दा निकल-पर्वत से निकलने वाली एक नदी जो खंभात की खाड़ी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में जाकर गिरती है; -द्युति (वि०) हर्षोत्फुल्ल, हंसमुख, प्रसन्नवदन (स्त्री० -तिः) परिहास का मजा लेना—सचिवः,—सुहृद् (पुं०) विदूषक, राजा या किसी रईस का मनोविनोद करने वाला साथी, इदं खेदैर्यथा बहुत मनुतेनेमंसचिवं सुधाशालाभिर्न भवतु मा० २।७, तो पाचले नरपतेर्नर्मसुहृन्नन्दनो नृपमूलेन १।११, शि० १।५९।

नर्मशः [नर्मन्+श—टाप्] 1. घाटी, कंदरा 2. घोंघनी 3. बूढ़ी स्त्री जिसे अब रजोधर्म न होता हो 4. मरुआ नाम का पौधा।

नलः [नल्+अच्] 1 एक प्रकार का नरकुल 2. निषधदेश का एक विख्यात राजा, 'पैदय चरित' काव्य का नायक। [नल अयोध्या के उदार और सहृदय संपन्न राजा थे। देवताओं का विरोध सहकर भी दमयंती इसे अपना पति चुना था, फिर वे कुछ वर्षों तक सानन्द रहते रहे 1. परन्तु दमयंती को प्राप्त करने में निराश होकर कलि ने नल पर जुल्म ढाये, वह नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया) इस प्रकार कलिग्रस्त हो नल ने अपने भाई पुष्कर के साथ जुआ खेला, उसमें सब कुछ हार जाने पर उसे सपत्नीक राजधानी से निर्वासित कर दिया गया। एक दिन जब कि वह जंगल में सारा २ थिर रहा था, हताश होकर अपनी स्त्री को अर्धनग्नावस्था में छोड़ कर चल दिया। उसके पश्चात् कर्कोटक साप के काटने से उसका शरीर विकृत हो गया। इस प्रकार विकृत शरीर हो वह अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहां गया और वहां वह बाहुक नाम से नौकर हो गया और उनके घोड़ों के साहस का काम करने लगा। उसके पश्चात् राजा ऋतुपर्ण की सहायता से उसने अपनी पत्नी दमयंती को फिर से प्राप्त किया और वे आनन्द पूर्वक रहने लगे -दे० 'ऋतुपर्ण' और 'दमयंती') 3. एक प्रसिद्ध वानर जो विश्वकर्मा का पुत्र था तथा जिसने नलसेतु नामक एक पत्थरों का पुल बनाया, जिसके ऊपर से होकर राम ने अपने सैन्यदल समेत लंका में प्रवेश किया, -वम् कमल। समः -कीलः घुटना—कूबः (ब) रः कुबेर के एक पुत्र का नाम—वम् एक सुगन्धित जड़, खस, उशीर—कि० १२।५०, नै० ४।११६,—पट्टिका नरकुलों की बनी हुई एक प्रकार की चटाई, मीनः जल बृदिचक, झींगा मछली।

नलकम् [नल—कै+क] 1. शरीर की कोई भी लंबी हड्डी—महावी० १।३५ 2. कुहनी की हड्डी।

नलकिनी [नलक+इनि+ङीप्] 1. घुटने को कपाली 2. टांग।

नलिनः [नल्+इनच्] सारस—नम् 1. कमल, कुमुद 2. जल 3. नील का पौधा, नलिनेशयः विष्णु का विशेषण।

नलिनी [नल+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा न पर्वतायें नलिनीं प्रहोहितं मुञ्च० ४।१७, नलिनीदलगतजलमतितरलम्—मोह० ५, कु० ४।६ 2. कमलों का समूह 3. कमलों से भरा हुआ सरोवर। समः—खंडम्, -षंडम् कमलपुंज,—लहः ब्रह्मा का विशेषण, (हम्) कमलकेंडी, कमल का रेशा।

नल्वः [नल्+व] दूरी मापने का नाप जो ४०० हाथ लम्बा हो।

नव (वि०) [नु+अप्] 1. नया, ताजा, थोड़ी आयु का, नवीन -चिलयोनिरिव भवत्पुनर्नवः-रघु० १९।४६, वलेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते—कु० ५।८६, पत्तर० १।१९ रघु० १।८३, २।४७, ३।५०, ११, शि० १।४, ३।३१, कि० १।४३ 2. आधुनिक, -वः कौवा--वम् (अव्य०) आजकल में, हाल में, अभी अभी, बहुत दिन हुए। 1. समः -अन्नम् नये चावल या नया अनाज, —अंशु (नपुं०) ताजा पानी, -अहः पक्ष का पहला दिन इतर (वि०) पुराना—रघु० ७।२२,-उद्धतम् ताजा मक्खन, -उढा,—पाणिग्रहणा, अभी की विवाहित स्त्री, दुलहिन—दि० १।२१०, भर्तृ० १।४, रघु० ८।७, कारिका,—कालिका,—फलिका 1. नवविवाहित स्त्री 2. तुतन दर्जस्वला स्त्री, -छात्रः नया विद्यार्थी, नौसिखिया, नवशिष्य—नी (स्त्री०) -नीतम् ताजा मक्खन —अहो नवनीतकल्पहृदय आर्य पुत्रः मालवि० ३,—नीतकम् 1. परिष्कृत मक्खन 2. ताजा मक्खन, -पाठकः नया अध्यापक,—मल्लिका --मालिका चमेली का एक भेद,—यज्ञः नये अन्न या नये फलों से आहुति देना, -यौवनम् नई जवानी, यौवन का नया विकास,—रजस् (स्त्री०) लड़की जिसे हाल ही में रजोदर्शन हुआ हो,—वधूः,—वरिका नवविवाहिता लड़की,—वस्त्रभृत् एक प्रकार का चन्दन,—वस्त्रम् नया कपड़ा,—शशिभृत् (पुं०) शिव का विशेषण—सेव० ४३,—सूतिः (स्त्री०),—सूतिका 1. नई सूई हुई या दुधार गाय 2. जच्चा स्त्री।

नवकम् [नवन्—कन् नलोपः] नौ वस्तुओं का समूह, नौ का गुच्छा।

नवत (वि०) (स्त्री—ती) [नवति+डट्] नब्बेवां—तः 1. छींट की बनी हाथी की झूल 2. ऊनी कपड़ा, कंबल 3. चादर, आवरण।

नवतिः (स्त्रि०) [नि०] 1. नब्बे नवनवतिशताद्रव्यकोटीश्वरास्ते -मुद्रा० ३।२३, रघु० ३।६९।

नवतिका [नवति+कन्+टाप्] 1. नब्बे 2. चित्रकार की कूची (कहा जाता है कि इस कूची में नब्बे बाल होते हैं)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवन् (सं० वि०) [नु+कनिन् ङा० गुण.] (निरुक्तद्वा०) नौ—नवति नवाधिकं रघु० ३।६९, देव० नीचे दिए गये समस्त शब्द (आरंभ में प्रयुक्त होनेपर 'नवन्' के 'न्' का लोप हो जाता है)। समः—अशीतिः (स्त्री०) नवासी.—अक्षिस् (पुं०), दीधितिः मंगल-ग्रह,—कृत्वस् (अव्य०) नौ गुणा,—ग्रहः (पुं०,बव०) नौ ग्रह, देव 'ग्रह' के अन्तर्गत,—चत्वारिंश (वि०) उनचासवाँ,—चत्वारिंशत् (स्त्री०) उनचास.—छिद्रम्, द्वारम् शरीर (नौ दरवाजों वाला, देव 'गृह'),—त्रिंश (वि०) उंतालीसवां,—त्रिंशत् (स्त्री०) उंतालीस—दश (वि०) उन्नीसवाँ,—दशन् (ब०व०) उन्नीस,—नवतिः (स्त्री०) निन्यानवे.—निधिः (पुं०, ब०व०) कुबेर के नौ खजाने—अर्थात् महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छपौ, मुकुंदकुंदनीलश्च खर्वश्च निधि-योनय,—पंचाश (वि०) उनसठवाँ—पंचाशत् (स्त्री०) उनसठ, -रत्नम् 1. नौ अमूल्य रत्न—अर्थात् मुक्ता माणिक्यवैदूर्यगोमेदान् वज्रविद्रुमौ, पद्मरागं मरकतं नीलं चेति यथाक्रमम् 2. राजा विक्रमादित्य के दरबार के नौ कवि, कविरत्नं-धन्वंतरिक्षपणकामर-सिंहशंकु वेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः ख्यातो वराह-मिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य, -रसाः (पुं०, ब०व०) काव्य के नौ रस, देव 'अष्टरस' और 'रस',—रात्रम् 1. नौ दिन का समय 2. आश्विन मास के प्रथम नौ दिन जो दुर्गा पूजा के दिन माने जाते हैं, विंश (वि०) उंतीसवां.—विंशतिः (स्त्री०) उंतीस, विंश (वि०) नौ नरह का, नौ प्रकार का, -शतम् 1. एक सौ नौ 2. नौ सौ, -वृष्टिः (स्त्री०) उनहत्तर,—सप्ततिः उनासी।

नवधा (अव्य०) [नव+धा] नौ प्रकार से, नौगुणा।

नवम (वि०) (स्त्री०—मी) [नवन्+डट्, टकारादेशः] नवां—मी चान्द्रमास के पक्ष का नवां दिन।

नवशः (अव्य०) [नवन्+शस्] नौ नौ करके।

नवीन, नव्य (वि०) [नव+खञ्, यत् वा] 1. नया, ताजा, हाल का 2. आधुनिक।

नश् [दिवा० पर०—नश्यति, नष्ट, प्रेर०—नाशयति —इच्छा० निनंक्षति, निनशिषति] 1. खोया जाना, अन्तर्धान होना, लुप्त होना, अदृश्य होना —ध्रुवाणि तस्य नश्यंति—हि० १, तथा सीमा न नश्यति —मनु० ८।२४७, याज्ञ० २।५८, —क्षणनष्टदृष्टिमिमम् मृच्छ १।५४ 2. नष्ट होना, ध्वस्त होना, मरना, बर्बाद होना जीवनाश नशाश च—भट्टि० १४।३१, मनु० ८।१६, ७।४०, सुद्रा० ७।८ 3. भाग जाना, उड़ जाना, बच निकलना नश्यति कृतानि वदनं मयीदृशः —भट्टि० १७।१२, नंसुदिवाद्य नियानवंगः—१४।११२, रत्न० २।३ 4. भ्रष्टाचारी होना, अपकर्ष होना —प्रेर०

1. अन्तर्धान करना 2 नष्ट करना, हटा देना, मिटा देना, भगा देना, उड़ा देना, भ्र—, (प्रणश्यति) वि—, ध्वस्त होना, मरना—भट्टि० ३।१४, भग० ८।२०।

नश् (स्त्री०) नशः, नशनम् [नश्+क्विप्, क, ल्युट् वा] नाश, ध्वंस हानि, अन्तर्धान।

नश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [नश्+क्वरप्] 1. नष्ट होने वाला, क्षणस्थायी, क्षणभंगुर, अनित्य, अस्थायी —निखिल जगदेव नश्वरम्—रस० 2. विनाशकारी, उपद्रवकारी।

नष्ट (भू० क० कृ०) [नश्+क्त] 1. खोया हुआ, अन्तर्हित, लुप्त, अदृश्य 2. मृत, ध्वस्त, उच्छिन्न 3. भ्रष्ट, क्षीण 4. भागा हुआ 5 वंचित, मुक्त (समास में)। समः—अग्नि (वि०) विधिवत्योक्त (जिसका वेद नष्ट हो गया हो),—आतंकम् (अव्य०) निश्चिन्तता के साथ निर्भय होकर.—नष्टातंक हरिणशिशवो मंद-मंद चरन्ति—रघु० १।१३, अने० पर०,—आत्मन् (वि०) ज्ञान से वंचित, बेहोश, आप्तिसूत्रम् लूट का माल, लूट-खसोट,—आशंक (वि०) निडर, सुर-क्षित, भयरहित,—इंदुकला पूर्णिमा का दिन,—इन्द्रिय (वि०) इन्द्रियरहित, चेतन,—चेष्ट,—संज्ञ (वि०) जिसकी चेतना जाती रही है, अचेतन, बेहोश, मूर्छित, चेष्टता विश्वविनाश।

नस् (स्त्री०) [नस्+विवप्] (दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् 'नासिका' के स्थान में होने वाला आदेश) नाक, नासिका। समः—क्षुद् (वि०) छोटी नाक वाला।

नस्तस् (अव्य०) [नस्+तसिल्] नाक से—याज्ञ० ३।१२७।

नसा [नस्+टाप्] नाक, नासिका।

नस्तः [नस्+क्त] नाक, —स्तम् नस्य, सूँघनी स्ता नाक के नथुने में दिया गया छिद्र। समः—कर्तः नकेल डाल कर चलाया गया बैल।

नस्तित (वि०) [नस्त+इतच्] नाथा हुआ (नाक में रस्सी डालकर)।

नस्य (वि०) [नासिक+यत् नसादेशः] अनुनासिक, —स्यम् 1. नाक का बाल 2. सूंघनी,—स्या 1. नाक 2. पशु के नाक में से निकली हुई रस्सी, नकेल —भि० १२।१०।

नह् [दिवा० उभ०—नह्यति—ते, नद्ध, इच्छा० निनत्सति —ते] बांधना, बंधनयुक्त करना, ऊपर से चारों ओर से या एक जगह बांधना, कसकर कराना—शैल्य-नद्धानि निखातानि—कु० १।५६, रघु० ४।५७, १६।४१ 2. पहनना, वस्त्र धारण करना, सुसज्जित करना (आ०), प्रेर०—पहनना, अप—खोलना अपि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--(कभी-कभी बदलकर केवल 'पि' रह जाता है) 1. बांधना, कमर कसना, बंधन में डालना -अतिगिनद्धेन बलवलेन—ला० १. मंदारमाला हरिणा पिनद्धा--शि० ७।२ 2. पहनना, कपड़े धारण करना--भट्टि० ३।४७ 3. ढकना, (लिफाफे में) बंद करना--शि० १।१९, उद् बांधना, जकड़ना, गूंथना—रघु० १७।२०, १८।५०, परि—घेरना, अन्तर्वेष्टित करना, परिवृत करना -सज्जगति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः मा० ५।१, रघु० ६।६४, मालवि० ५।१०, ऋतु० ६।२५, सम्—1. कसना, बांधना, जकड़ना 2. वस्त्र पहनना, धारण करना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना, सवारना, शिरोवेश पहनना—संनद्धसैन्यैः सैन्यम्—भट्टि० १५।१११--२, १४।७, १७।४ 4. (किसी कार्य के लिए) अपने आपको तैयार करना, (आ० इस अर्थ में) युद्धाय संन्नह्यते -महा०, छेतुं वज्रमणीव्र शिरीषकुसुमप्रान्तेन संनह्यते भर्तृ० २।६, दे० 'संनद्ध' भी।

नहि (अव्य०) निश्चय ही नहीं, निश्चित रूप से नहीं, किसी भी अवस्था में नहीं, बिल्कुल नहीं--आशंसा न हि नः प्रेते जीवेम दशमूर्तयः भट्टि० १९।५।

नहुषः [नह्+उषच्] एक चन्द्रवंशी राजा, ययाति का पिता, पुरुरवा का पोता और आयुस का पुत्र, यह बहुत बुद्धिमान्, और बलवान राजा था। जब इन्द्र ने वृत्र को मार दिया, और उस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करने के लिए वह एक सरोवर में जा छिपा, तो उस समय नहुष राजा को इन्द्र के आसन पर बिठाया गया। वहाँ रहते हुए नहुष इंद्राणी के प्रेम को जीतने के विचार से सप्तर्षियों को पालकी में जोत कर उसके भवन की ओर चला। मार्ग में उसने सर्पाधियों को 'सर्प' 'सर्प' (तेज चलो, तेज चलो) कह कर फुर्ती से चलने के लिए कहा। उस समय अगस्त्य मुनि ने नहुष को साँप बन जाने का शाप दिया। वह आकाश से इस पृथ्वी पर गिरा और तब तक इसी दुरवस्था में पड़ा रहा जब तक कि युधिष्ठिर ने आकर उद्धार न किया हो)।

ना [नह्+डा] नहीं, न (=न)।

नाकः [न कम् अकम् दुःखम्, तत् नास्ति अत्र इति नि० प्रकृतिभावः] 1. स्वर्ग -आनाकरथवर्त्मनाम्- रघु० १।५, १५।९६ 2. आकाश मंडल, ऊर्ध्वतर गगन, अन्तरिक्ष। सम०-चरः 1. देव 2. उपदेव -नाथः, —नायकः इन्द्र का विशेषण, -वनिता अप्सरा—सद् (पुं०) देव, -भट्टि० १।४।

नाकिन् (पुं०) [नाक+इनि] देवता, सुर—शि० १।४५।

नाकुः [नम्+उ नाक् आदेशः] 1. बल्मीक 2. पहाड़।

नाक्षत्र (वि०) (स्त्री०-त्री) [नक्षत्र+अण्] तारा-सम्बन्धी, नक्षत्रविषयक,—ब्दम् २७ नक्षत्रों में से चन्द्रमा की गति के आधार पर गिना गया महीना, ६० घड़ी वाले तीस दिनों का एक मास--नाडीपट्या तु नाक्षत्र-महोरात्रं प्रकीर्तितम्—सूर्य०।

नाक्षत्रिकः [नक्षत्र+ठञ्] २७ दिनों का महीना (जिसमें प्रत्येक दिन--चन्द्रमा की नक्षत्रान्तर्गति पर आधारित है)।

नागः [नाग+अण्] 1. साँप, विशेष कर काला साँप 2. एक काल्पनिक नागदैत्य जिसका मुख मनुष्य जैसा और पूंछ साँप जैसी होती है तथा जो पाताल में रहता है—भग० १०।२९, रघु० १५।८३ 3. हाथी--मेघ० ११, ३६, शि० ४।६३ विक्रम० ४।२५ 4. नगर-मच्छ 5. क्रूर, अत्याचारी व्यक्ति 6. (समास के अन्त में), गण्यमान्य और पूज्य व्यक्ति--उदा० पुरुषनाग 7. बादल 8. खूंटी (दीवार में गड़ी हुई) 9. नागकेसर, नागरमोथा 10. शरीरस्थ पाँच प्राणों में वह वायु जो डकार के द्वारा बाहर निकलती है 11. सात की संख्या -गम् 1. रांग 2. सीसा। सम०-अंगना 1. हथिनी 2. हाथी की सूंड, -अंजना हथिनी, —अधिपः शेष का विशेषण, अंतकः, —अरातिः, —अरिः 1. गरुड़ का विशेषण 2. मोर 3. सिंह, -अशनः 1. मोर —पंच० १।१५९ 2. गरुड़ का विशेषण, -आननः गणेश का विशेषण, -आह्वः हस्तिनापुर, इन्द्रः 1. भव्य या श्रेष्ठ हाथी—कु० १।३६ 2. इन्द्र का हाथी ऐरावत 3. शेष का विशेषण, -ईशः 1. शेष की उपाधि 2. परिभाषेन्दुशेखर तथा कई अन्य पुस्तकों का प्रणेता 3 पतंजलि, -उदरम् 1. लोहे का तवा (जो सैनिक छातों के बांधते हैं), वक्षस्त्राण 2. गर्भावस्था का एक रोग विशेष, गर्भोद्वहभेद, -केसरः सुगंधित फूलों का एक वृक्ष, —गर्भम् सिन्दूर, -चूडः शिव की उपाधि,—जम् 1. सिंदूर 2. रांग, —जिह्विका मैनसिल, —जीवनम् रांगा -दंतः,- दंतकः 1. हाथी दांत 2. दीवार में लगी खूंटी या दीवारगीरी, -दंती 1. एक प्रकार का सुरजमुखी फूल 2. वेश्या, —नक्षत्रम्,-नाथ-कम् आश्लेषा नक्षत्र, (-कः) सांपों का स्वामी, -नासा हाथी की सूंड, -निर्यूहः दीवार में लगी खूंटी या दीवारगीरी, -पंचमी श्रावणशुक्ला पंचमी को मनाया जाने वाला उत्सव, पदः एक प्रकार का रतिबंध, -पाशः 1. युद्ध में शत्रुओं को फंसाने के लिए प्रयुक्त एक प्रकार का जादू का जाल 2. वरुण का शस्त्र या जाल, —पुष्पः 1. चम्पक का पौधा 2. पुन्नाग वृक्ष, —बंधकः हाथी पकड़ने वाला, बंधुः गूलर का पेड़, पीपल का पेड़, —बलः भीम की उपाधि—भूषणः शिव की उपाधि —मंडलिकः 1. सपेरा 2. साँप पकड़ने वाला, —मल्लः ऐरावत का विशेषण, —यष्टिः (स्त्री०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—पष्टिका 1. नये खुदे तालाब में पानी की गहराई नापने के लिए अंकांकित बांस विशेष 2. धरती में छेद करने का वर्मा,—रक्तम्, रेणुः सिंदूर,—रंगः संतरा —राजः शेष की उपाधि,—लता,—वल्लरी,—वल्ली नागकेसर, पान की बेल,—लोकः सांपों की दुनिया, सांपों का कुल, भूलोक के नीचे अवस्थित पाताल लोक, —वारिकः 1. राजकीय हाथी 2. महावत 3. मोर 4. गरुड की उपाधि 5. हाथियों का यूथपति 6. किसी समाज का प्रधान व्यक्ति,—संभवम्, —संभूतम् सिंदूर ,—साह्वयम् हस्तिनापुर ।

नागर (वि०) (स्त्री०—री) [नगर+अण्] 1. नगर में उत्पन्न, नगर में पला 2. नगर से संबंध रखने वाला, नगरीय 3. नगर में बोला जाने वाला 4. नम्र, शिष्ट 5. चतुर, चालाक 6. बुरा, दुष्ट, दुर्व्यसनी (जिसने नगर की बुराइयां ग्रहण करली हैं),—रः 1. नागरिक —भेद० २५, शा० ४।१९ 2. देवर, पति का भाई 3. व्यापारिन 4. नारंगी 5. थकावट, कठिनाई, श्रम 6. मुकरना, जानकारी का खण्डन,—री 1. लिपि, वर्णमाला जिसमें प्रायः संस्कृत लिखी जाती है—तु० देवनागरी 2. चालाक और बुद्धिमती स्त्री—हन्ता-भीरोः स्मरन्तु सकथं संवृतो नागरीभिः उ० द्रु० १६ 3. स्नुही नाम का पौधा ।

नागरक, नागरिक (वि०) नगरेभवः वुञ्, नगर-+ठक्] 1. नगर में पला नगर में उत्पन्न 2. नम्र, शिष्ट, शालीन—नागरिकवृत्त्या संज्ञापार्थनाम्—शा० ५ 3. चतुर, बुद्धिमान्, चालाक,—कः 1. नागरिक 2. नम्र या शिष्ट व्यक्ति, बांका बहादुर, वह प्रेमी जो अपनी पहली प्रेमिका को अतिशय प्रेम प्रदर्शित करता है, परन्तु किसी अन्य से अपनी प्रेमपूर्ण प्रार्थना करता है 3. जो नगर के दुर्व्यसनों में फंस गया है 4. चोर 5. कलाकार 6. पुलिस का मुख्य अधिकारी—विक्रम० ५, शा० ६ ।

नागरीदृशः, नागरी [नागरी+इट्+क, नाग इव व्यटेति नाग+वि+इट्+क] 1. लम्पट, दुश्चरित्र 2. जार 3. संडक भिड़ाने वाला ।

नागवल्लः [नाग+व+क] संतरा, नारंगी ।

नागर्यम् [नागर+ष्यञ्] बुद्धिमत्ता, चतुराई ।

नाचिकेतः [नाचिकेता+अण्] अग्नि ।

नाटः [नट्+घञ्] 1. नाचना, अभिनय करना 2. कर्णाटक प्रदेश ।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1. स्वांग, रूपक 2. रूपक के दस मुख्य भेदों में से पहला, परिभाषा आदि के लिए दे० सा० द० २७७,—कः अभिनेता, नाचने वाला ।

नाटकीय (वि०) [नाटक+छ] नाटकसंबंधी, नाटक-विषयक—पूर्वरंगः प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः —वि० २।८ ।

नाटारः [नटस्य अपत्यम् आरक] अभिनेत्री का पुत्र ।

नाटिका [नाट+कन्+टाप्, इत्वम्] एक छोटा या लघु प्रहसन, एक रूपक, उदा० रत्नावली, प्रियदर्शिका, या विद्धशालभंजिका; सा० द० परिभाषित करता है —नाटिका कल्पवृत्ता स्यात् स्त्रीप्राया चतुरङ्किका, प्रख्यातो धीरललितस्तत्र स्याश्चायको नृपः; स्यादन्तः पुरसंबंधा संगीतव्यापृताथवा; कन्यानृपाया कन्याऽत्र नायिका नृपवंशजा; संप्रवर्तेत नेतार्ऽस्यां देव्यास्त्रासेन शाङ्किता:, देवी पुनर्भवेज्ज्येष्ठा प्रगल्भा नृपवंशजा; पदे पदे मानवती तद्वशः संगमो द्वयोः, वृत्तिः स्यात्कौशिकी स्वल्पविमर्शाः संधयः पुनः ५३९ ।

नाटितकम् [नट्+णिच्+क्त+कन्] अनुकृति, किसी की चेष्टादि का अनुकरण, संकेत, हावभाव प्रदर्शन — भीतिनाटितकेन—शा० ५ ।

नाटेयः,-रः [नटी+ढक्, ढुक् वा] किसी अभिनेत्री या नर्तकी का पुत्र ।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1. नाचना 2. अनुकरणात्मक चित्रण, स्वांग, हावभाव प्रदर्शन, अभिनय करना—नाट्ये च दक्षा यथम्—रत्न० १।६, नृत्त नाट्ये मत्तिं च चिर मोर्वशीगर्वशोला—विक्रमांक० १८।२९ 3. नृत्यकला, अभिनय कला, नाट्यकला नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् - मालवि० १।४,—टयः अभिनेता । समः—आचार्यः नृत्यकला का गुरु,—उक्तिः (स्त्री०) नाटकीय वाक्यविन्यास, —धर्मिका, धर्मी अभिनयसंबंधी नियमावली—प्रियः शिव की उपाधि,—शाला 1. नाचघर 2. नाटक खेलने का घर या स्थान,—शास्त्रम् 1. नाट्य विज्ञान नृत्य, गीत तथा अभिनय संबंधी विद्या 2. नाट्यशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ ।

नाडिः-डी (स्त्री०) [नड+णिच्+इन्, नाडि+ङीष्] 1. किसी पौधे का पोला डंठल 2. कमल की खोखली डंडी 3. (धमनी या शिरा की भांति) नलियों के आकार का शरीर का अंग- पडधिकदशनाडीत्रिकम व्यवस्थितात्मा—मा० ५।१,२ 4. बांसुरी, मुरली 5. नासूर वाला घाव, नासूर, नाडीव्रण 6. हाथ या पैर की नब्ज 7. चौबीस मिनट के समय के बराबर भाप, घड़ी 8. आधे मुहूर्त का कालमान 9. ऐन्द्रजालिक जाल । समः—चरणः एक पक्षी, -चीरम् एक छोटा नरकुल,—तंत्रः कौवा,—परीक्षा नब्ज देखना,—मंडलम् आकाशीय विद्युत् रेखा,—यन्त्रम् नली के आकार का एक उपकरण,—व्रणः नासूर, पूयव्रण, रिसने वाला फोड़ा ।

नाडिका [नाडि+कन्+टाप्] 1. नली के आकार का अंग 2. २४ मिनट का समय, घड़ी—नाडिका विच्छेद पदहः—मा० ७, का० १३,७० ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाडि (स्त्री) धम (वि०) [नाडीं धमति--नाडी+ध्मा+क्विप्, धमादेशः, ह्रस्वः, मुम् च, पक्षे ह्रस्वाभावः] (भय आदि) नलिकाकार अंगों की गति देने वाला, नाडिध्मेन स्वासेन--का० ३५३,—सः सुनार।

नाणकम् [न आणकम्, इति] मिक्का, मोहर लगी हुई कोई वस्तु, लघा नाणकमोचिका मकरिका--मृच्छ० १।२३, याज्ञ० २।२४०।

नातिचर (वि०) [न अतिचरः] जो बहुत लंबी अवधि का न हो, जो दीर्घकालीन न हो।

नातिदूर (वि०) [न अतिदूरः] जो बहुत दूर न हो, अधिक दूरी पर न स्थित हो।

नातिवादः [न अतिवादः] दुर्वचन तथा अपशब्दों का परिहार करना।

नाथ् (स्वा० पर० नाथति--कभी-कभी आ० भी) 1. निवेदन करना, प्रार्थना करना, किसी बात की याचना करना (संप्र० अथवा द्विकर्म० के साथ), मोक्षाय नाथते मुनिः--बेंक०, नाथसे किमु पतिं न भूभृतः--किं० १३।५९, सनुद्धमिदानि तेमिष्टदेवं नाथितं के नाम न लोकनाथम्--नै० ३।२५ 2. शक्ति रखना, स्वामी होना, छा जाना 3. तंग करना, कष्ट देना 4. आशीर्वाद देना, मंगल कामना करना, शुभाशीष देना (केवल इस अर्थ में आ०), नाथितशर्म--महावी० १।११, (मम्मट निम्नांकित पंक्ति में कहलाता है कि यहां 'नाथते' स्थान पर 'नाथति' होना चाहिए, क्योंकि यहां अर्थ केवल 'निवेदन या प्रार्थना करना' है--दोनं स्वामनुनाथते कुचयुगं पत्रावृतं मा कृथाः), सर्पिषो नाथते--सिद्धा०।

नाथः [नाथ्+अच्] 1. प्रभु, स्वामी, रक्षक, नेता 2. पति 3. भारवाही बैल की नाक में डाला हुआ रस्सा। सम०--हरिः पशु।

नाथवत् (वि०) [नाथ+मतुप्, वत्वम्] 1. सनाथ, जिसका कोई स्वामी या रक्षक हो—नाथवंतस्तया लोकास्त्वमनाथा विपर्यये उत्तर० १।४३ 2. पराश्रयी, परापीन।

नादः [नद्+घञ्] 1. ऊँची दहाड़, चिल्लाहट, चीख, गरजना, दहाड़ना--सिंहनादः, घन° आदि 2. ध्वनि—मा० ५।२० 3. (योगशास्त्र में) अनुनासिक ध्वनि जिसे हम चन्द्रबिन्दु (ँ) के द्वारा प्रकट करते हैं।

नादिन् (वि०) [नद्+णिनि] ध्वनि या शब्द करने वाला, अनुनादी अब्दवद्वेदनादी रथः—रघु० ३।५९, १९।५ 2. रंभने वाला, गरजने वाला—खर°, सिंह° आदि।

नादेय (वि०) (स्त्री—यी) [नदी+ढक्] नदी में उत्पन्न, जलीय, समुद्रीय,—यम् लैवणिलवण।

नाना (अव्य०) [न+नाञ्] 1. अनेक स्थानों पर, विभिन्न रीति से, विविध प्रकार से, तरह तरह से 2. स्पष्ट रूप से, अलग, पृथक् रूप से, 3. बिना (कर्म० करण० या अपा० के साथ) नाना नारीं निष्फलां लोक यात्रा—बेंप०, (विश्वं) न नानाऽभूना रामात् वर्षणाघोक्षजो वरः--तदेव 4. (समास के आरंभ में विशेषण के रूप में प्रयोग) विविध प्रकार का, तरह तरह का, नाना प्रकार का, विभिन्न, विविध--नाना फलैः फलति कल्पलतेव भूमिः--भर्तृ० २।४६, भग० १।९, मनु० ९।१४८। सम० अन्यय (वि०) विभिन्न प्रकार का, बहुपक्षी -अर्थ (वि०) 1. विविध उद्देश्य या लक्ष्यों वाला 2. विविध अर्थों वाला, (शब्द के रूप में) अनेकार्थक—कारम् (अव्य०) विविध प्रकार से करके,—रक्त (वि०) विविध रुचि से युक्त—मालवि० १।४,--रूप (वि०) विभिन्न रूपों वाला, विविध प्रकार का, बहुरूपी, नाना प्रकार का,--वर्ण (वि०) भिन्न २ रंगों का, —विध (वि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का, बहुविध,--विधम् (अव्य०) विविध रीति से।

नानांदः [ननांदुः+अण्] ननद का पुत्र।

नांत (वि०) [न० ब०] अन्तरहित, अनन्त।

नांतरीयक (वि०) [न अन्तरा विनाभवः—अन्तरा+छ, +कन्] जो अलग न किया जा सके, अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ।

नांद्यम् [नम्+ण्ड्न्] प्रशंसा, स्तुति।

नांदिकरः, नांदिन् (पुं०) [नान्दी करोति-कृ+ट, ह्रस्वः, नन्द्+णिनि] नांदी पाठ करने वाला, (नाटक के आरंभ में मांगलिक वचन बोलने वाला)।

नांदी [नन्दन्ति देवा अत्र नन्द्+घञ्, पृषो० वृद्धि, ङीप्] 1. हर्ष, संतोष, खुशी 2. समृद्धि 3. नाटकानुष्ठान के आरंभ में देवस्तुति 4. विशेषकर, नाटक के आरंभ में मंगलाचरण के रूप में आशीर्वादात्मक श्लोक या श्लोकों का पाठ, स्वस्त्ययन—आशीर्वचनसंयुक्ता नित्यं यस्मात्प्रयुज्यते, देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नांदीति संज्ञिता या—देवद्विजनृपादीनामाशीर्वचनपूर्विका, नंदंति देवता यस्यां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता। सम०—करः दे० 'नांदिन्'—निनादः हर्षनाद—महावी० २।४,—पदः कुएँ का ढकन—मुख (वि०) (दिवंगत पूर्वज या पितर) जिनके लिए नांदीमुख श्राद्ध किया जाय (—खम्) °श्राद्धम् पितरों की पुण्यस्मृति में किया जाने वाला श्राद्ध, विवाह आदि शुभ उत्सवों से पूर्व की जाने वाली आरंभिक स्तुति (खः) कुएँ का ढकन, —वादिन् (पुं०) 1. नाटक में मंगलाचरण के रूप में नान्दी पाठ करने वाला 2. ढोल बजाने वाला, --श्राद्धम् दे० ऊपर 'नांदीमुखम्'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नापित: [न आप्नोति सरलताम्—न+आप्+तन्, इट्] नाई, हजामत बनाने वाला—पंच० ५।१। सम०—शाला नाई की दुकान, क्षौरगृह, वह स्थान जहाँ हजामत होती हो।

नापित्यम् [नापित+ष्यञ्] नाई का व्यवसाय।

नाभि: (पुं०, स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तादेश:] सूंडी—गणावर्तसनाभिनाभिभि:—दश० २, निम्ननाभि:—मेघ० ८३, रघु० ६।५२, मेघ० २८ 2. नाभि के समान गर्त—(पुं०) 1. पहिए की नाह पंच० १।८१ 2. केन्द्र, किरणबिन्दु, मुख्य बिंदु 3. मुख्य, अग्रणी, प्रधान—कृत्स्यनाभिर्नृपमंडलस्य—रघु० १८।२० 4. निकट की रिश्तेदारी, बिरादरी, (जाति आदि) का समुदाय जैसा कि 'सनाभि' में 5. सर्वोपरि प्रभु—रघु० ९।१६ 6. निकटसंबंधी 7. क्षत्रिय 8. जन्मभूमि,—भि: (स्त्री०) कस्तूरी (अर्थात् मृगनाभि) (विशे० बहु० समास के अन्त में प्रयुक्त 'नाभि' शब्द बदल कर 'नाभ' बन जाता है) जैसा कि 'पद्मनाभ:' में)। सम० आवर्त: नाभि का गर्त, जः ब्रह्मन् (पुं०)—भू: ब्रह्मा के विशेषण,—नाडी,—नालम् 1. नाभिरज्जु, जन्मरज्जु, नाल 2. नाभि का विदारण।

नाभिल (वि०) [नाभिरस्यस्य—लच्] नाभि से संबद्ध, या नाभि से आने वाला।

नाभीलम् [नाभि+ईलच्+ला+क] 1. नाभि का गर्त 2. पीड़ा, 3. विदीर्ण नाभि।

नाभ्य (वि०) [नाभि+यत्] नाभि से संबंध रखने वाला, नाभि से आने वाला, नाभि में रहने वाला, नाल से जुड़ा हुआ,—भ्य: शिव का विशेषण।

नाम (अव्य०) [नम्+णिच्+ड] निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होने वाला अव्यय—1. नामधारी, नामक, नाम से—हिमालयो नाम नगाधिराज: कु० १, तन्वन्दिनीं सुदृत्तां नाम—दश० ७ 2. निस्सन्देह, निश्चय ही, सचमुच, वास्तव में, यथार्थ में, अवश्य, वस्तुत:—मया नाम जितम्—वेणी० २।१७, विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम—श० १, अश्वावाप्तिस्थ मम नाम—विक्रम० ५।१६, जब कि मैं जरा आश्वस्त हुआ 3. संभवत:, कदाचित्—प्राय: 'मा' के साथ—अये पदशब्द इव मा नाम रक्षिण:—मृच्छ० ३, कदाचित् (परन्तु मुझे आशा नहीं) रखवालों का—मा नाम अकार्यं कुर्यात्—मृच्छ० ४ 4. संभावना—तर्हि व नामास्त्रगति:—कु० ३।१९, त्वया नाम मुनि विमान्य:—श० ५।१९, क्या यह संभव है (निदात्मक ढंग से); इसका प्रयोग 'अपि' के साथ बहुधा निम्नांकित अर्थ में होता है—'मेरी इच्छा है' 'क्या ही अच्छा हो' 'क्या यह संभव है कि' आदि, दे० 'अपि' के अन्तर्गत 5. झूठमूठ का कार्य, बहाना (अलीक), कार्तातिको नाम भूत्वा—दश० १३०, इसी प्रकार 'भीतो नामावप्लुत्य' १०४, मानों भयभीत होकर—परिश्रम नाम विनीय च श्रमम्—कु० ५।३२ 6. (लोट् लकार के साथ) मानो कि, यद्यपि, हो सकता है, अच्छा—तद्भवतु नाम शोकादेवाय—का० ३०८ करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्तत:—हि० २।१४, यद्यपि वह स्वयं प्रयत्न कर सकता है, इसी प्रकार—मा० १०।७, श० ५।८ 7. आश्चर्य—अथो नाम पर्वतमारोहति—गण० 8. रोष या निंदा—ममापि नाम दक्षाननस्य पुर: परिभव:—गण०, (यह वाक्य निंदासूचक भी हो सकता है), कि नाम विस्फुरें शस्त्राणि—उत्तर० ४, ममापि नाम तत्त्वैरभिभूयते गुहा:—श० ६; नाम शब्द प्राय: प्रश्न वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न 'कथम्' 'कदा' आदि अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त होकर निम्नलिखित अर्थ प्रकट करता है—'संभवत:' 'निस्सन्देह', 'मैं जानना चाहूँगा'—अपि कथं नामैतत्—उत्तर० ६, को नाम राज्ञां प्रिय:—पंच० १।१४६, को नाम पाकाभिमुखस्य जंतुर्वाणि दैवस्य पिधातुमीष्टे—उत्तर० ७।४।

नामन् (नपुं०) [नायते अभ्यस्यते नम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन वा नम्+मनिन् निo धातुo] 1. नाम, अभिधान, वैयक्तिक नाम (विप० गोत्रम्) कि नु नामैतदस्या:—मुद्रा० १, नाम ग्रह संबोधित करना या नाम लेकर बुलाना, नामग्राहमरोदीत्सा भट्टि० ५।५, नाम कृ या धा, नाम्ना या नामत: कृ नाम रखना, पुकारना, नाम लेकर बुलाना—चकार नाम्ना रघुपुत्रसंभवम् रघु० ३।२१, ५।३६, तौ कुशलवौ चकार किल नामत: १५।२२ चंद्रागेह इति नाम चक्रे—का० ७४, मातर नामत: पृच्छेयम् श० ७ 2. केवल नाम—संत्र्यायसि सहितस्य पयसो नामापि न शायते: भर्तृ० २।६७, 'नाम भी नहीं' अर्थात् 'कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता है' आदि 3. (व्या० में) संज्ञा, नाम (विप० आख्यात) तत्राम येनाभिदधति सत्त्व—या—सत्त्वप्रधानानि नामानि—निरु० 4. शब्द, नाम, सामान्यार्थक शब्द—इति वृक्ष नामानि 5. सामग्री (विप० गुण)। सम० अंक (वि०) नाम से चिह्नित—रघु० १२।१०३, -अनुशासनम्,—अभिधानम् 1 किसी के नाम की घोषणा करना 2. शब्द संग्रह, शब्दकोष,—अराधा: (किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को) नाम लेकर गाली देना, नाम लेकर बुलाना अर्थात् तिरस्कार करना, - आवली किसी देवता की) नाम-सूची, - करणम्, -कर्मन् (नपुं०) 1. नाम रखना, जन्म होने के पश्चात् बालक का नामकरण करना 2. नाम मात्र का अनुबंध,—ग्रह: नामोल्लेख करना, नाम लेकर संबोधित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, नामोच्चारण, नाम याद करना पुण्यानि नामग्रहणान्यपि महान्तुर्गाणाम् ४३, मनु० ८।२७१, रघु० ७।४१,--त्यागः नाम छोड़ना,--स्वनामत्याग करोमि पंच० १, 'मैं अपना नाम छोड़ दूंगा',—धातुः नाम क्रिया, नाम धातु (जैसे पार्थीयते, वृषस्यति आदि), धारक,—धारिन् (वि०) नाम मात्र रखने वाला, नाम मात्र का, नाममात्र—पच० २।८४,-धेयम् नाम, अभिधान,—वनज्योत्स्नेति कृतनामधेया श० १, कि नामधेया सा—मालवि० ४, रघु० १।४५, १०।६७, ११।८, मनु० २।३०,—निर्देशः नाम से संकेत -मात्र (वि०) केवल नामधारी, नाममात्र का, नाम के लिए, पंच० १।७७, २।८६,—माला,—संग्रहः नामों की सूची, (संज्ञाओं की) शब्दावली, --मुद्रा मोहर लगाने की अंगूठी, नामांकित अँगूठी—उभे नाममुद्राक्षराण्यनुबाच्य परस्परमवलोकयतः--श० १,---लिङ्गम् संज्ञाओं का लिंग अनुशासनम् संज्ञा शब्दों के लिंगों की नियमावली,--वर्जित (वि०) 1. नाम रहित 2. मूर्ख, बेवकूफ,—वाचक (वि०) नाम बतलाने वाला (कम्) व्यक्ति वाचक संज्ञा शेष (वि०) जिसका केवल नाम ही बाकी रह गया हो, जिसका नाम ही जीवित हो, स्वर्गीय—उत्तर० २।६।

नामिः [नम् + इञ्] विष्णु की उपाधि।

नामित (वि०) [नम्+णिच्+क्त] झुका हुआ, विनम्र, विनीत।

नाम्य (वि०) [नम्--णिच्—क्त] लचकदार, लचीला, लचकीला।

नायः [नी+घञ्] 1. सेना, मार्ग दर्शक 2. मार्ग दिखलाने वाला, निर्देशक 3. नीति 4. उपाय, तरकीब।

नायकः [नी+ण्वुल्] 1. मार्गदर्शक, अगुवा, संवाहक 2. मुख्य, स्वामी, प्रधान, प्रभु 3. गणमान्य या प्रधान पुरुष, पूज्य व्यक्ति—सेनानायकः आदि 4. सेनानायक, सेनापति 5. (अलं० शा० में) नाटक या काव्य का नायक, (सा० द० के अनुसार नायक चार प्रकार के हैं धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित और धीरप्रशान्त, इन चारों के कुछ अवान्तरभेद होने के कारण नायक के भेद संख्या में ४० होते हैं, सा० द० ६४।३५, रसमंजरी केवल तीन भेदों का (पति, उपपति और वैशिक २५।१० उल्लेख करती है) 6. हार के बीच का मुख्य मणि 7. निदर्शन या मुख्य उदाहरण—दर्पिते स्त्रीषु नायकाः। सम०—अधिपः राजा, प्रभु।

नायिका [नायक+टाप्, इत्वम्] 1. स्त्रीजनों 2. पत्नी 3. किसी कहानी या नाटक की नायिका (सा० द० के अनुसार नायिका के तीन भेद हैं स्वा या स्वीया, अन्या या परकीया तथा साधारण स्त्री अर्थात् वर्गीकरण के लिए दे० सा० द० ९७—११२, और रसमं० ३—९४, तु० 'अन्यस्त्री' भी)

नारः [नर+अण्] जल (स्त्री० भी—तु० मनु० १।१०)—रम् मनुष्यों की भीड़ या सम्मर्द। सम० जीवनम् सोना।

नारक (वि०) (स्त्री० की) [नरक+अण्] नारकीय, नरकसंबंधी, दोजखी,—कः 1. नारकीय प्रदेश, दोजख नरकवासी।

नारकिक, नारकिन्, नारकीय (वि०) [नरक+ठक्, इनि, छ वा] 1. नरक का, दोजखी 2. नरक या दोजख में रहने वाला।

नारंगः [नृ+अंगच्, वृद्धि] 1. संतरे का पेड़ 2. लुब्धा, लम्पट 3. जीवित प्राणी 4. युगल,—गम्,—गकम् 1. संतरे, सद्योमुंडित मत्तदूर्णाचूकप्रस्थिनारंगकम् 2. गाजर।

नारदः [नरस्य धर्मो नारं, तत् ददाति—दा+क] प्रसिद्ध देवर्षि का नाम, दिव्य ऋषि, सन्त महात्मा जिसने देवत्व प्राप्त किया [देवर्षि नारद ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक हैं जो उसकी गोद से उत्पन्न हुए, यह वेदों के संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया गया है जो मनुष्यों को देवों का संदेश देते तथा मनुष्यों का संदेश देवों तक पहुंचाते थे। यह देवता और मनुष्यों में कलह के बीज बोने के कारण 'कलिप्रिय' कहलाते थे, कहा जाता है कि 'वीणा' का आविष्कार इन्होंने ही किया था, यह एक आचारसंहिता के भी प्रणेता हैं जिसका नाम इन्हीं के नाम पर 'नारद-स्मृति' है]।

नारसिंह (वि०) [नरसिंह+अण्] नरसिंह से संबंध रखने वाला, हः विष्णु का विशेषण।

नाराचः [नरान् आचामति-आ+चम्+ड स्वार्थे अण्, नारम् आचामति वा तारा०] 1. लोहे का बाण, तब नाराचदुर्दिने--रघु० ४।४१ 2. बाण—कनकनाराचपरंपराभिरिव—का० ५७ 3. जल हाथी।

नाराचिका, नाराची नाराच+हृस्व+टाप्, नाराच+अच्+ङीष्] सुनार की तराजू, (कसौटी रूपी तराजू)।

नारायणः [नारा अयनं यस्य ब० स०] 1. विष्णु की उपाधि [मनु० १।१० में इसकी व्युत्पत्ति यह दी है आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः, ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः 2. एक प्राचीन ऋषि का नाम जो 'नर' के साथी थे तथा जिन्होंने अपनी जंघा से उर्वशी को पैदा किया--तु० उरुद्भवा नरनारायणस्य मुनेः सुरस्त्री विक्रम० १।२, दे० 'नर-नारायण' 'नर' के अन्तर्गत -णी 1. धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2. दुर्गा का विशेषण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नारीकेरः, --लः [किल्+घञ्--केलः, नारीः केलः · ष० त०, पर्षा० हुलक०, अथवा नल्--इण् लस्य रः--नारि, केन जलेन इलति--इल्+क कर्म० स०] नारियल--नारिकेलसमाकारा दृश्यते हि सुहृज्जनाः हि० १।९४ (यह शब्द इस प्रकार (नारिकेलि—लो, नारिकेर--ल, नाडि (डी) केर, नालिकेर, नालिकेलि -ली) भी लिखा जाता है।

नारी [नृ—नर वा जाती ङीष् नि०] 1. स्त्री,—अर्थतः पुरुषो नारी या नारी सार्थतः पुमान् मृच्छ० ३।२७ सम० --तरंगकः 1. जार, उपपति 2. लम्पट, **दूषणम्** स्त्री का दुर्व्यसन (वे हैं · पानं दुर्जनसंसर्गः पत्न्या च विरहोऽटनम्, स्वप्नोऽन्यगृहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्--मनु० ९।१३, · **प्रसंगः** कामासक्ति, लम्पटता, --**रत्नम्** स्त्रीरत्न, श्रेष्ठ स्त्री।

नारंगः [नारीणामङ्गमिव शोभनमंगं यस्य] सतरे का पेड़।

नाल (वि०) [नलस्येवम् · अण्] नरकुल का बना हुआ --**लम्** 1. पोला डंठल, विशेष कर कमल की डंडी, विकचकमले स्निग्धवैदूर्यनालं--मेघ० ७६, रघु० ६।१३, कु० ७।८१, (पुं० भी इस अर्थ में) 2. शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 3. हरताल 4. मूठ, दस्ता · लः नहर, नाली।

नालंबी (स्त्री०) शिव की वीणा।

नाला [नल्+ण+टाप्] पोला डंठल, विशेषकर कमल नाल।

नालिः,--ली (स्त्री०) [नल्+णिच्+इन्, नालि-ङीष्] 1. शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 2. पोला डंठल, विशेषकर कमलनाल, 3 २४ घंटे का समय, घड़ी 4. हाथी के कानों को बींधने का उपकरण 5. नहर, नाभी 6. कमलफूल।

नालिक: [नलमेव नालमस्यास्त्य ठन्] भैंसा—**कः** 1. कमल की डंडी 2. नली 3. हाथी का कान बींधने का उपकरण, - **कम्** 1. कमल का फूल 2. एक प्रकार का फूंक से बजने वाला वाद्ययंत्र, बांसुरी।

नालिकेर, नालिकेलि -ली दे० नारिकेर आदि।

नालीकः [नाल्यां कायति--कै+क तारा०] 1. हाथ 2. भाला, नेजा 3. कमल 4. कमल की रेशेदार डंडी 5 कमल के फूलों का रेशेदार डंठल।

नालीकिनी [नालीक+इनि+ङीप्] 1. कमल फूलों का गुच्छा, समूह 2. कमलों का सरोवर।

नाविकः [नावा तरति--ठन्] जहाज का कर्णधार, चालक --अस्थानिरिति ते कृष्ण मन्ये नौर्नाविके स्थिति, नाविकपुरुषे न विश्वासः -महा० 2. पोतवाहक, मल्लाह 3. नौयात्री।

नाविन् (पुं०) [नौ+इनि] केवट, मल्लाह।

नाव्य (वि०) [नावा तार्यं नौ · यत्] 1 जहां किश्ती या जहाज से जाया जा सके, (नदी आदि) जिसमें जहाज चलाया जा सके · नाव्याः सुप्रतरा नद्यः --रघु० ४।३१, नाव्य एष कैवर्तधारिणुर्भुजे.—शि० १४।७६ 2. प्रशंसा के योग्य **व्यम्** नयापन, नूतनता।

नाश [नश्+घञ्] 1. ओझल होना गला नाशं तारा उपकूलमिसावार्विव जले--मृच्छ० ५।२५ 2. भगदौड़, ध्वंस, बर्बादी, हानि—भग० २।४० रघु० ८।८८, १८।६७. इसी प्रकार वित्त° बुद्धि° 3. मृत्यु 4. मुसीबत, संकट 5. परिहार, परित्याग 6. भगदड़, पलायन।

नाशक (वि०) [नश्+णिच्+ण्वुल्] विध्वंसक, नाश करने वाला।

नाशन (वि०) (स्त्री० -नी) [नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, नाश कराने वाला, हटाने वाला (समास में)—**नम्** 1. विध्वंस, बर्बादी 2. दूर हटाना, दूर कर देना, बाहर निकाल देना 4. नष्ट होना, मृत्यु।

नाशिन् (वि०) (स्त्री · नी) [नश्+णिनि] 1. विध्वंसक, नाश करने वाला, हटाने वाला 2. नष्ट करने वाला, नष्ट होने योग्य भग० २।१८ मनु० ८।१८५।

नाशिकः [नष्ट · ठन्] खोई हुई वस्तु का स्वामी।

नासा [नास् · अ+टाप्] 1. नाक · स्फुरदधरतासाप्रहृतया उत्तर० १।२१, भग० ५।२६ 2. हाथी की सूंड 3. दरवाजे की चौखट को ऊपर की लकड़ी। सम० **अग्रम्** नाक का अग्रभाग, मा० २।१, **छिद्रम्**, --रन्ध्रम्, विवरम् नथुना, - **दाघ** (त्रि०) दरवाजे की चौखट को ऊपर वाली लकड़ी, **परिस्रावः** नाक का बहना, सर्दी लगना, - **पुटः**,-**पुटम्** नथुना, - **वंशः** नाक की हड्डी, **स्रावः** सर्दी से नाक का बहना।

नासिक्य (वि०) [नासिका+यत्+स्वार्थ, मुम् ह्रस्वश्च] नाक के द्वारा पीने वाला।

नासिका [नास्+ण्वुल्—टाप्, इत्वम्] नाक, दे० 'नासा'। सम०--**स्रवः** नाक से निकलने वाला श्लेष्मा।

नासिक्य (वि०) [नासिका--ष्यञ्] 1. अनुनासिक 2. नाक में होने वाला, · **क्यः** अनुनासिक ध्वनि,-**क्यम्** नाक।

नासीरम् [नासाय हितं ईर्-+क तारा०] सेना के सामने आगे चलना या लड़ना - रः 1. (सेना का) अग्रभाग —नासीरचरयोर्भटस्त्रो. मालवी० ६, वे० १।९८ 2. सेना की रक्षित के आगे चलने वाला योद्धा।

नास्ति (अव्य०) [न+अस्ति] 'यह नहीं है' अनस्तित्व, जैसा कि 'नास्तिक्योर' में। सम० **वादः** 'सर्वोपरि शासक या परमात्मा का अनस्तित्व' सिद्धान्त, नास्तिकता, अनास्था · बौद्धैर्नैव सदैव नास्तिवादप्रसंगेन —का० ४९।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नास्तिक (वि०) [नास्ति परलोकः अस्माअीश्वरो वा इति मतिरस्य -ठन्] या—क: अनीश्वरवादी, अविश्वासी, जो वेदों की प्रामाणिकता, पुनर्जन्म और परमात्मा या विश्व के विनाश के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है शि० १६।७ मनु० २।११, ३।२२।

नास्तिक्यम् [नास्तिक+ष्यञ्] नास्तिकता, अनास्था, पापाचरण।

नास्तिकः (पुं०) आम का वृक्ष।

नास्यम् [नासा+यत्] नाक की रस्सी, चालू बैल की नकेल।

नाहः [नह्+घञ्] 1. बंधन, निग्रह 2. फंदा, जाल 3. गलावरोध, कोष्ठबद्धता।

नाहुषः, -षि: [नहुषस्यापत्यम्—नहुष+अण्, इञ् वा] ययाति राजा की उपाधि।

नि (अव्य०) [नी+डि] (प्रायः संज्ञा या क्रिया के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है, क्रिया विशेष या संबंधबोधक अव्यय के रूप में विरल प्रयोग), गण० के अनुसार, इस शब्द के निम्नांकित अर्थ हैं 1. निचान, नीचे की ओर गति निपत् निपद् 2. संनूह, या संग्रह, निकर, निकाय 3. तीव्रता—निकाम, निगृहीत 4. दृढ़ता, आदेश, निदेश 5. सान्त्वना, स्थापित्व —निनिदेश 6. कुशलतापूर्ण निपुण 7. नियन्त्रण, निग्रह, निबंध 8. सम्मिलन (में, अन्तर्गत) निर्घातमुदकम् 9. सान्निध्य, सामीप्य —निकट 10. अपमान, बुराई, हानि निकृति, निकार 11. दिखलावा, निदर्शन 12. विश्वास, निर्वृति 13. आश्रय, शरण 14. सन्देह 15. निश्चय 16. घुटौटीकरण 17. (दुर्दिशा के अनुसार) फेंकना, देना आदि।

निःक्षेपः [निर्+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, भेज देना 2. व्यय करना।

निःक्षयणी, निःक्षेणिः (स्त्री०) [निःनिःक्षिप्तं क्षीयते आ क्षीयते अनया निर्+क्षि+ल्युट्+ङीप्, निःक्षिप्ता क्षेणिः सोपानपंक्तिः यस्य ब० स०] सीढ़ी, जीना —रघु० १५।१००।

निःश्वासः, निश्वासः [निर्+श्वस्+घञ्] 1. सांस बाहर निकालना, बहिःश्वसन 2 आह भरना, लम्बा सांस लेना, श्वास लेना।

निःसरणम् [निर्+सृ+ल्युट्] 1. बाहर जाना, बहिर्गमन 2 निकास, द्वार, दरवाजा 3. महाप्रस्थान, मृत्यु 4. उपाय, तरकीब, उपचार 5. मोक्ष।

निःसह (वि०) [निर्+सह् अच्] सहन करने या रोकने के अयोग्य, असह्य 2. निःशक्त, बलहीन, हतोत्साह, श्लथ, थका, अति विरम निःसहांस जाता। मा० २, इसी प्रकार मा० २, ७, उत्तर० ३ 3. असहनीय, जो सहा न जा सके, अनिवार्य।

निःसारणम् [निर्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. निष्कासन, निकाल बाहर करना 2. घर में निकलने का मार्ग, द्वार, दरवाजा।

निःस्रावः [निर्+स्रु+घञ्] क्षेप, वमन, फालू।

निःस्रावः [निर्+स्नु] 1. व्यय, खर्च करना, अपव्यय 2. चावलों का मांड।

निकट (वि०) [नि समीपे कटति नि+कट्+अच्] नजदीकी, समीपस्थ, अदूरस्थ, आसन्न, —टः, —टम् समीप ('नजदीक' 'पास' 'समीप' अर्थों को क्रिया विशेषण के रूप में प्रकट करने के लिए 'निकटे' प्रयुक्त होता है—वहति निकटे कालस्रोतः समस्तभया वहम्—शा० ३।२)

निकरः [नि+कृ+अप्, अच् वा] 1. ढेर, चट्टा 2. झुण्ड, समुच्चय, संग्रह —पात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः गीत० ११, शि० ४।५८, ऋतु० ६।१८ 3. गठरी 4. रस, सार, सत 5. उपयुक्त उपहार, दक्षिण 6. निधि, खजाना।

निकर्तनम् [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना।

निकर्षणम् [नि+कृष्+ल्युट्] विश्राम या विहार के लिए खुला स्थान, नगर में या नगर के निकट खेल का मैदान 2. दालान 3. पड़ोस 4. जमीन का टुकड़ा जो अभी जोता न गया हो।

निकषः [नि+कष्+घ, अच् वा] 1. कसौटी, निकष-प्रस्तर, निकषे हेमरेखेव -रघु० १७।४६, महावी० १।४ 2. (आल०) कसौटी का काम देने वाली कोई वस्तु, परीक्षण—सन्देश दर्पनिकषस्तव चन्द्रकेतुः उत्तर० ५।१०, आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः मृच्छ० १।४८, दश० १, का० ४४ 3. कसौटी पर घसी सोने की रेखा कनकनिकषस्निग्धविद्युल्लेखेव रत्नजटिलहेमाभरणेन —गीत० ७, कनकनिकषस्निग्धा विद्युल्लेखा न समोदयी- विक्रम० ४।१, ५।१९। सम० —उपलः, —पाषाणः (पुं०), —पाषाणः कसौटी निकष-प्रस्तर —तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति गीत० ११, तत्त्वनिकषपाषाणे तु तेषां विपद् हि० १।२१०, २।८०।

निकषा [नि+कष्+अच्+टाप्] 1. रावण आदि राक्षसों की माता, (अव्य०) 2. निकट, अदूर, समीप, पास (कर्म० के साथ) निकषा सौधनिलिम् दश०, विलिख्य लंकां निकषा हनिष्यसि शि० १।६८। सम० —आत्मजः राक्षस।

निकाम (वि०) [नि+कम्+घञ्] 1. पुष्कल, विपुल, बहुल—निकामजलं स्रोतोवहा—श० ६।१६, 2. इच्छुक मनः, मम् कामना, चाह,—मम् (अव्य०) 1. यथेच्छ, इच्छा के अनुसार 2. आत्मसंतोषार्थ, मन-भर कर, खूब निकामं जयितव्यमस्मि नास्मि —श० २, 'मैं रात्रि को भी आराम से नहीं सो पाता' 3. अत्यंत, अत्यधिक—निकामं क्षामांगी—मा० २।३, (इसके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्तिम 'म्' का लोप करके, इसे समास के प्रथमखण्ड के रूप में भी बहुधा प्रयुक्त किया जाता है निकाम-निरंकुशः—गीत० ७, कु० ५।२३, शि० ४।५४।

निकायः [नि+चि+घञ्, कुत्वम्] 1. ढेर, संघटन, श्रेणी, समुच्चय, झुण्ड, समूह, महावी० १।५० 2. सत्संग या विद्वत्सभा, विद्यालय धार्मिक परिषद् 3. घर, आवास, निवास-स्थल-कशीनिकायः आदि 4. शरीर 5. उद्देश्य, नांदमारी, निशाना 6. परमात्मा।

निकाय्यः [नि+चि+ण्यत्, नि०] निवास, आवास, घर—न प्रणाय्यो जनः कञ्चिन्निकाय्यं तेऽधितिष्ठति—भट्टि० ६।६६।

निकारः [नि+कृ+घञ्] 1. अनादर फटकना 2. ऊपर उठाना 3. वध, हत्या 4. अनादर, ताड़ेदारी 5. अवज्ञा, क्षति, अनिष्ट, अपराध; तीणो निकारा-र्णवः—वेणी० ६।४३, ४४।६ 6. गाली, बुरा भला कहना, अवमान 7. दुष्टता, द्वेष 8. विरोध, वचन विरोध।

निकारणम् [नि+कृ+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

निकाशः,—शम् [नि+काश् (श्म्)—घञ्] 1. दर्शन, दृष्टि 2. क्षितिज 3. सामीप्य, पड़ोस 4. समानता, समरूपता (समास के अन्त में) मा० ५।१३।

निकाषः [नि+कष्+घञ्] खुरचना, रगड़ना—कि० ७।६।

निकुंचनः [नि+कुंच+ल्युट् [एक तोल जो १।४ कुडव के बराबर है (आठ तोले के बराबर तोल)।

निकुंजः,—जम् [नि+कुञ्+अच्+ह, पृषो०] लतामण्डप, लतासमूह, कुंज पर्णशाला यमुनानिरुद्धनीपनिकुंजे मंदमाधिनम् गीत० ४।२,११, ऋतु० १।२३।

निकुम्भः [नि+कुम्भ्+अच्] 1. शिव के एक अनुचर का नाम रघु० २।३५ 2. मुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम।

निकुरः (रुं) बम् [नि+कुर्+अम्बच्, उम्बच् वा] झुंड, संग्रह, पुंज, समुच्चय जनानिकुरंबम्—गीत० १९, किरात० आन० २०, चिकुरैः ४३।

निकुलीनिका [नि+कुलीन+कन्+टाप्, इत्वम्] अपने कुल की विशेष कला, खानदानी हुनर, जो जन्म से मनुष्य को उत्तराधिकार में प्राप्त होती है, किसी घराने की परम्परागत विशेष कला या दस्तकारी।

निकृत (भू० क० कृ०) [नि+कृ+क्त] 1. विजित, निरुत्साहित, दीन 2. तिरस्कृत, क्षुब्ध उत्तर० ६।१४ 3. प्रवंचित, धोखा खाया हुआ 4. हटाया हुआ 5. कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त 6. दुष्ट, बेईमान 7. अधम, नीच, कमीना।

निकृतिः (वि०) [नि+कृ+क्तिन् अधम, बेईमान, दुष्ट (स्त्री०—तिः) 1. अधमपना, दुष्टता 2. बेईमानी, जालसाजी, धोखा—अनिकृतिनिपुण ने वेष्टितं मान-शौण्ड वेणी० ५।२१, कि० १।४५ 3. तिरस्कार, अपराध, अपमान—मुद्रा० ४।११ 4. गाली, झिड़की 5. अस्वीकृति, निराकरण 6. गरीबी, दरिद्रता। सम० —ग्रह (वि०) दुष्ट, दुर्मना।

निकृंतन (वि०) नी) [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना, नष्ट करना, विरहिनिकृंतन कृतमुखाकृतिकेतकिदंतुरि-ताशे (वसंते) गीत० ११—नम् काटना, काट डालना, नष्ट करना 2. काटने का उपकरण, एकैन नखकृंतनेन सर्वं कार्ण्यायसं विज्ञातं स्यात्—शारी०।

निकृष्ट (वि०) [नि+कृष्+क्त] 1. नीच, अधम, कमीना 2. जातिबहिष्कृत, घृणित 3. गंवारू, देहाती।

निकेतः [निकेतति निवसति अस्मिन्—नि+कित्+घञ्] घर, आवास, भवन, आलय—श्रितमंकेनिकेतमी-श्वरम्—रघु० ८।३३, १४।५८, भग० १८।१९, कु० ५।२५, मनु० ६।२३, शि० ५।२६।

निकेतनः [नि+कित्+ल्युट्] ग्याड़—नम् भवन, घर, आलय, सिंजानां मंजुमंजीर प्रविवेश निकेतनम्—गीत० ११, मनु० ६।२६,११।१२८, कि० १।१६।

निकोचनम् [नि+कुच्+ल्युट्] सिकुड़न, सिलवट।

निक्वणः, निक्वाणः [नि+क्वण्+अच्, घञ् वा] 1. संगीतस्वर 2. ध्वनि, स्वर।

निक्षा [निक्ष्+अ+टाप्] जूं का अंडा, लीख ('लिक्षा' का अशुद्ध रूप)।

निक्षिप्त [भू० क० कृ०] [नि+क्षिप्+क्त] 1. फेंका हुआ, डाला हुआ, रक्खा हुआ 2. जमा किया हुआ, न्यस्त, धरोहर के रूप में रक्खा हुआ 3. भेजा हुआ, पहुँचाया हुआ 4. अस्वीकृत, परित्यक्त।

निक्षेपः [नि+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, डालना (कर्म० के साथ), अलं मान्यानां शपथनिक्षेपेण—मा० द० २ 2. धरोहर, न्यास, अमानत—पंच० १।१४, मनु० ८।४ 3. किसी के भरोसे पर या क्षतिपूर्ति के निमित्त, बिना सोहर लगाये रक्खी हुई जमा, खुली धरोहर समक्षं तु निक्षेपणं निक्षेपः —याज्ञ० २।६८ पर मिता० 4. भेजना 5. फेंक देना, परित्याग करना 6. मिटाना, मुझाना।

निक्षेपणम् [नि+क्षिप्+ल्युट्] 1. डालना, पैरों के नीचे रखना कु० १।३३ 2. किसी वस्तु को रखने का उपाय।

निखननम् [नि+खन्+ल्युट्] खोदना, गाड़ना जैसा कि स्थण्डिलनिखननन्यायः।

निखर्व (वि०) [निगतः खर्वः प्रा० स०] छिनता, धर्म दस हजार करोड़।

निखात (भू० क० कृ०) [नि+खन्+क्त] 1. खोदा हुआ, खोदकर निकाला हुआ 2. जमाया हुआ, (खूटे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की भांति) खोदकर गाड़ा हुआ, अन्दर गड़ाया हुआ—अस्यं निखातमुदहारयतामुरस्तः रघु० ९।७८ अष्टादशद्वीपनिखातयूपः ६।३८, गाढ निखात इव मे हृदये कटाक्षः—मा० १।२९ 3. गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ।

निखिल (वि०) [निर्वृतं खिलं शेषो यस्मात् ब० स०] संपूर्ण, पूरा, समस्त, सब—प्रत्यक्षं ते निखिलमधिराद् भ्रातः स्वतं मया यत्—मेघ० ९४।

निगड (वि०) [नि+गल्+अच् लस्य डः] बेड़ी से बंधा हुआ, शृंखलित, वृद्धस्य निगडस्य च—मनु० ४।२१०, —डः, —डम् 1. हाथी के पैरों के लिए लोहे की जंजीर, बद्धापराधि परितो निगडान्यलावीत्—शि० ५।४८, भामि० ४।२० 2. हथकड़ी, बेड़ी।

निगडित (वि०) [निगड+इतच्] हथकड़ी से बंधा हुआ, बेड़ी से जकड़ा हुआ, शृंखलित, बांधा हुआ।

निगणः [निर्गरय, पृषो० साधुः] यज्ञाग्नि का धूआं !

निगदः, निगादः नि+गद्+अप्, घञ् वा] 1. सस्वर पाठ, स्तुति पाठ 2. ऊंचे स्वर से बोली गई प्रार्थना 3. भाषण, प्रवचन 4. अर्थ सीखना यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते—निरु० 5. उल्लेख, उल्लेखीकरण इति निगदेनैव व्याख्यातम् !

निगदितम् [नि+गद्+क्त] प्रवचन, भाषण !

निगमः [नि+गम्+घञ्] वेद, वेद का मूल पाठ—साकूतैः सादृवा साहेतैः निगमैः—पा० ६।३।११२, ७।२।६४ वैदिक उद्धरण, वेद का वाक्य तथापि च निगमो भवति (निरुक्त में बहुधा प्रयुक्त) 3. सहायक ग्रंथ, उपवेद, वेद भाष्य, मनु० ४।१९ तथा उसका कुल्लू० भाष्य 4. वेद का विधि वाक्य, ऋषियों के वचन 5. (शब्द का मूल स्रोत) धातु 6. निश्चय, विश्वास 7. तर्क 8. व्यवसाय, व्यापार 9. मंडी, मेला 10. चलते फिरते सौदागरों की मण्डली 11. मार्ग, नगरी का मार्ग 12. नगर।

निगमनम् [नि+गम्+ल्युट्] 1. वेद का उच्चारण, या उद्धृत शब्द 2. (तर्क० में) अनुमान-प्रक्रिया में उपसंहार, (पंचावयवी भारतीय अनुमान-प्रक्रिया में पांचवां अवयव), घटाना।

निगरः, निगारः [नि+गृ+अप्, घञ् वा] निगलना, डकारना।

निगरणम् [नि+गृ+ल्युट्] 1. निगलना, डकारना 2. (आलं०) ग्रहण कर लेना, पूर्ण रूप से लय कर देना—णः 1. गला 2. यज्ञाग्नि का धूआं।

निग (गा) ल [=निगर, निगार, रलयोरभेदः] 1. निगलना, डकारना 2. घोड़े का गला या गर्दन वत् (पुं०) घोड़ा।

निगीर्ण (भू०क०कृ०) [नि+गृ+क्त] 1. निगला हुआ, डकारा हुआ 2. पूर्ण रूप से निगला हुआ, या लय किया हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, अतएव आपूरणीय उपमानेनानंतनिगीर्णस्यौपमेयस्य यदध्यवसानं सैका—काव्य० १०।

निगूढ (वि०) [नि+गुह्+क्त] 1. छिपाया हुआ, गुप्त—शि० १३।४०, 1. रहस्य, निजी—ढम् (अव्य०) चुपचाप, निजी ढंग से।

निगूहनम् [नि+गुह्+ल्युट्] दुराना, छिपाना !

निग्रंथनम् [नि+ग्रंथ्+ल्युट्] वध, हत्या !

निग्रहः [नि+ग्रह्+अप्] 1. रोक रखना, नियंत्रित करना, दमन करना, वश में करना—जैसा कि 'इन्द्रियनिग्रह' में—मनु० ६।९२, याज्ञ० १।२२२ भर्तृ० १।६६, भग० ६।३४ 2. दबाना, रोकना, कुचलना—मनु० ६।७१ 3. दौड़ कर पकड़ लेना, अधिकार में कर लेना, गिरफ्तार करना—त्वन्निग्रहे तु वरणादि न मे प्रवर्तः—मुच्छ० १।२२, शि० २।८८ 4. कैद करना, कारागार में डालना 5. पराजय, पछाड़ देना, परास्त करना 6. हटा देना, नष्ट करना, दूर करना रघु० ९।२५, १५।६, कु० ५।५३ 7. रोगों की रोकथाम, चिकित्सा 8. दण्ड, सजा (विप० अनुग्रह) निग्रहानुग्रहरुग्रहण कर्ता—पंच० १, नियहोऽप्यनयन्नग्रहीकृतः—रघु० ११।९०, ५५, १२।५५, ६३ 9. डांट, फटकार, गाली 10. अरुचि, नापसंदगी, जुगुप्सा 11. (न्या० में) तर्कगत दोष, त्रुटि, अनुमान-प्रक्रिया में भूल (जिसके कारण हेत्वाभासी परास्त हो जाता है) तु० सुद्रा० ५।१० 12. मूठ 13. सीमा, हद।

निग्रहणम् [नि+ग्रह्+ल्युट्] पीछे कर देने वाला, दबाने वाला—णम् 1. दमन करना, दबाना 2. पकड़ना, कैद करना 3. सजा, दण्ड 4. पराजय।

निग्राह्यः [नि+ग्रह्+घञ्] 1. दण्ड 2. कोसना—जैसा कि 'निग्राह्यस्ते गुरुर्यात्' (भगवान्, तुम्हें शापग्रस्त करे) भट्टि० ७।४३ में।

निघ (वि०) [नि+हन्, नि०] जितना चौड़ा उतना ही लम्बा, —घः 1 गैंडा 2. पाप।

निघंटुः [नि+घण्ट्+कु] 1. शब्दावली 2. विशेष रूप से वैदिक शब्दावली जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त में की है।

निघर्षः निघर्षणम् [नि+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना घर्षण करना, घिस० २।५१।

निघसः [नि+अद्+अप्, घसादेशः] 1. खाना, भोजन करना 2. भोजन।

निघातः [नि+हन्+घञ्] 1. अभिघात, प्रहार—रघु० ११।७८ 2. स्वर का दमन करना या अभाव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निघातिः (स्त्री०) [नि+हन्+इञ्, कुत्वम्] लोहे की गदा।

निघृष्टकम् [नि+घृष्+क्त] ध्वनि, शब्द।

निघ्न (वि०) [नि+हन्+क] 1. आश्रित, अनुसेवी, आज्ञाकारी (नौकर की भांति), तथापि निघ्नं नृप तावकीनैः ग्रहं चौद्धतं मे हृदयं गुणौघैः—कि० ३।१३, निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौरुष्यं देवि क्षमस्वेति वभूव नम्रः—रघु० १४।५८ 2. शिष्य, विधेय 3. पराश्रित (अर्थात् विशेष्य के लिंगादि का अनुसरण करने वाला इति विशेष्यनिघ्नवर्गः 4. (संख्या वाचक शब्द के पश्चात्) गुणित।

निचयः [नि+चि+अच्] 1. संग्रह, ढेर, समुच्चय —कि० ४।३७ 2. अव्ययों का संघातजिसने पूर्णता आजाय—जैसा 'शरीरनिचय' में 3. निश्चितता।

निचायः [नि+चि+घञ्] ढेर।

निचिकिः देo मैचिकी।

निचित (भू० क० कृ०)' [नि+चि+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित, फैला हुआ, निचितं खमुपेत्य गौरदैः ··· घट० १ द्वि० १७।१४ 2. भरा हुआ, पूरित 3. उठाया हुआ।

निचुलः [नि+चुल्] क] 1. एक प्रकार का नरकुल 2. एक कवि, कालिदास का मित्र··· स्थानादस्मात् सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुखः खम् मेघ० १४, (यहाँ मल्लि० —निचुलो नाम महाकविः कालिदासस्य सहाध्यायः, परन्तु यह व्याख्या बड़ी संदिग्ध है) 3. ऊपर से शरीर ढकने का कपड़ा, चादर, तु० निचोल।

निचुलकम् [निचुल+कन्] वक्षत्राण, चोली, अंगिया।

निचोलः [नि+चुल्+घञ्] 1. अवगुण्ठन, घूंघट, पर्दा ध्वांत नीलनिचोलचारु गीत० ११, शीलय नीलनिचोलम्—५ 2. बिस्तरे की चादर 3. डोली का आवरण।

निचोलकः [निचोल+कै+क] 1. वनिआन, चोली 2. सिपाही की जाकट जो जरत्राण का काम दे।

निच्छविः [प्रा० ब०] एक प्रदेश जिसे आज कल तिरहुत कहते हैं।

निच्छविः (पुं०) एक व्रात्य जाति, पतित जाति (व्रात्य क्षत्रिय की सन्तान) दे० मनु० १०।२२।

निज् (जुहो० उभ० नेनेक्ति, नेनिक्ते, प्रणेनेक्ति, निक्त) धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना सस्नुः पयः स्फुरनेनिजुरवशाणि ··· शि० ५।२८ 2. अपने आपको धोना, निर्मल करना, स्वच्छ होना (आ०) 3. पोषण करना, अर्च—, प्रज्वालन करना, पानी छिड़कना, निस्—, धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना ···रघु० १७।२२, याज्ञ०, १।१९१, मनु० ५।१२७।

निज (वि०) [नि+जन्+ड] 1. अन्तर्जात, स्वदेशजात, सहज, अन्तर्भव, जन्मजात 2. अपना, स्वकीय, आत्मीय अपने दल का या अपने देश का—निजं वपुः पुनरन्यन्निजां रुचिम्···शि० १७।४, रघु० ३।१५, १८, मनु० २।५० 3. विशिष्ट 4. निरन्तर रहने वाला, चिरस्थायी।

निज् (अदा० आ० निक्ते) धोना, प्र—, धोना प्रक्षिक्ते।

निटलम् ('निटिल' भी लिखा जाता है) [नि+टल्+अच्] मस्तक, निटिलतटचुंबित···दश० ४, १५। सम०—अक्षः शिव का नाम।

निडीनम् [नीचैः डीनं पतनमस्ति] पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना, या झपट्टा मारना, दे० 'डीन'।

नितंबः [निभृतं तस्यते कामुकैः, तम् कांक्षायाम्] 1. चूतड़, (स्त्री का) पिछला उभरा हुआ भाग, श्रोणि प्रदेश, कूल्हा,—यातं यच्च नितंबयोर्गुरुतया मंदं विलासादिव—श० २।१, रघु० ४।५२, ६।१७, मेघ० ४१, भर्तृ० १।५, मालवि० २।७ 2. (पर्वत का) ढलान, पर्वतश्रेणी, पार्श्व या पहलू सनाकवनितं नितंबकरिभिः (गिरम्) कि० ५।२७, सैन्या नितंबाः किमु भूधराणां किं वा स्मरस्मेरविलासिनीनाम् भर्तृ० १।१९, विक्रम० ४।२६, भट्टि० २।८, ७।५८ 3. खड़ी चट्टान 4. नदी का ढलवां किनारा 5. कंधा। सम० बिंबम् गोलाकार कूल्हा, ऋतु० १।४।

नितंबवत् (वि०) [नितंब+मतुप्] सुन्दर कूल्हों वाला ··· ती स्त्री चारु चुचुंब नितंबवती दयितेन गीत० १, विक्रम० ४।२६।

नितंबिन् (वि०) [नितंब+इनि] सुन्दर कूल्हों वाला, सुडौल चूतड़ वाला (बहुधा 'जघन' के लिए प्रयुक्त) तु० मालवि० २।३, कि० ८।१६, रघु० १९।२६, 2. अच्छे पार्श्वागों वाला (पहाड़ आदि)—नी 1. बड़े और सुन्दर कूल्हों वाली स्त्री···कि० ८।३, शि० ७।६८, कु० २।७ 2. स्त्री।

नितराम् (अव्य०) [नि+तरप्+अमु] 1. पूर्णरूप से, सर्वथा, पूरी तरह से··· प्राणांस्त्यजामि कितरां तदवाप्तिहेतोः···चौर० ४१, भर्तृ० १।९६ 2. अत्यंत, अत्यधिक, बहुत ज्यादह···तुर्दांत चेतो नितरां प्रवासिनां · ऋतु० २।४, अमरु १०, शोषितसरसि निदाघे नितरामेवोद्वहतः सिंधुः ···पंच० १।२०४, नितरां नीचोऽस्मीति-भामि० १।९ 3. निरंतर, सदा, लगातार 4. सर्वथा 5. निश्चय ही।

नितलम् [नितरां तलम् अधोभागः यस्मिन्] पाताल के सात प्रभागों में से एक, दे० पाताल।

नितांत (वि०) [नि+तम्+क्त+दीर्घः] असाधारण, अत्यधिक, बहुत अधिक, तीव्र · नितांतकठिनं खलु मम न वेद सा मानसीम्—विक्रम० २।२,— तम् (अव्य०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अत्यंत, अतिशय ।

नित्य (वि०) [नियमेन नियतं वा भवं–नि+त्यप्] 1. निरंतर रहने वाला, चिरस्थायी, लगातार, देर तक टिकने वाला, शाश्वत, निर्बाध—यदि नित्यमनित्येन लभ्येत हि० १।४८. नित्यज्योत्स्ना: प्रतिहततमोवृत्तिरम्या. प्रदोषाः -मेघ० (लल्लि० इसे प्रक्षिप्त मानता है) मनु० २।२०६ 2. अटल, नियमित, निश्चित, अनैच्छिक, नियमित रूप से नियत (विप० काम्य) 3. आवश्यक, अवश्यकरणीय, अपरिहार्य 4. सामान्य, प्रचलित (विप० नैमित्तिक) 5. (समास के अन्त में) निरंतर निवास करने वाला, लगातार किसी काम में लगा हुआ या व्यस्त, जाह्नवीतीर°, अरण्य°, आदान°, ध्यान° आदि,–त्यः समुद्र, -त्यम् (अव्य०) प्रतिदिन, लगातार, सदा, हमेशा, निरन्तर सदैव । सम० अनेकध्यायः–ऐसा अवसर जब वेद पठन-पाठने सर्वथा त्याग दिया जाय, मनु० ४।१०७, -अनित्य (वि०) शाश्वत तथा नश्वर, ऋतु (वि०) ऋतु के आने पर नियमित रूप से होने वाला,–कर्मन् (नपुं०), कृत्यम्, क्रिया प्रतिदिन किया जाने वाला आवश्यक कार्य, लगातार किया जाने वाला कर्तव्य, जैसे कि दैनिक पंचयज्ञ,- गतिः वायु, हवा,—दानम् प्रतिदिन दान देने का कर्म, -नियमः अटल सिद्धान्त,–नैमित्तिकम् किसी निमित्त विशेष से नियमित रूप से होने वाला या किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर किया जाने वाला अनुष्ठान् (उदा० पर्वश्राद्ध), —प्रलयः सुषुप्ति, - मुक्तः परमात्मा, योक्त्री (सदा युवती बनी रहने वाली) द्रौपदी का विशेषण, - शंकित (वि०) सदैव चौकन्ना, सदैव सशंक, - समासः अनिवार्य समास, ऐसा समास जिसके अर्थों को पृथक् २ शब्दों द्वारा अभिव्यक्त न किया जा सके –उदा० जमदग्नि, जयद्रथ आदि, इवेन नित्यसमासः आदि ।

नित्यता, –त्वम् [नित्य+तल्–टाप्,त्व वा] 1. स्थिरता, अनवरतता, नैरन्तर्य, शाश्वतता, निरन्तरता 2. आवश्यकता ।

नित्यदा (अव्य०) [नित्य+दाच्] लगातार, हमेशा, प्रतिदिन, सदैव ।

नित्यशस् (अव्य०) [नित्य+शस्] लगातार, हमेशा, सदैव– भग० ८।१४, मनु० २।९६,४।१५० ।

नित्युः [नितरां वियात् द्राति पलायते–नित्र+द्रा+कु] मनुष्य ।

नित्यदर्शक (वि०) [नि–दृश्+ण्वुल्] 1. देखने वाला 2. अन्दर देखने वाला, प्रत्यक्ष करने वाला 3. संकेत करने वाला, प्रकथन करने वाला, इंगित करने वाला ।

निदर्शनम् [नि+दृश्+ल्युट्] 1. दृश्य, अन्तर्दृष्टि, अन्तरीक्षण, नजर, दर्शनशक्ति 2. इशारा करना, बतलाना 3. प्रमाण, साक्ष्य - बलिना सह योद्धव्यमिति नास्ति निदर्शनम्—पंच०३ ।२३ 4. दृष्टान्त, उदाहरण, मिसाल–मनु प्रभुरेव निदर्शनम्–रघु० २, निदर्शनमसारत्वा लघुबंहुतुणं नरः– शि० २।५०, रघु० ८।४५ 5. अनुमेय 6. चिह्न, शकुन 7. योजना, पद्धति 8. विधि, वेदविहित प्रमाण, निषेध.—ना अलंकार शास्त्र में एक अलंकार– निदर्शना, अभवन्वस्तुसंबंध उपमाप्रतिकल्पकः काव्य० १०, उदा० रघु० १।२ ।

निदाघः [निदहंति दह्यते अत्र नि+दह्–घञ्] 1. ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु, गर्मी का मौसम (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने) निदाघमिहिरज्वालासंतप्तः भा.मि० १।१६, निदाघकालः समुपागतः प्रिये—ऋतु० १।१, पंच० १।१०५, कु० ७।८४ 3. स्वेद, पसीना । सम० –करः सूर्य, -कालः गरमी की ऋतु ।

निदानम् [निश्चयं दीयतेऽनेन नि+दा+ल्युट्] 1. पट्टी, तरमा, रस्सी, डोरी 2. बछड़े को बांधने का रस्सा 3. प्राथमिक कारण, प्रथम या आवश्यक कारण - निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य संततेः—रघु० ३।१, अथवा बलमारभो निदानं क्षयसदः– शि० २।९४ 4. सामान्य कारण—मुज मणि मानमंदिरानम्–गीत० ५ 5. (आयु० में) रोग का कारण जानना, रोग-विज्ञान 6. किसी रोग का निरूपण 7. अन्त, समाप्ति 8. पवित्रता, निर्मलता, शुद्धता ।

निदिग्ध [भू० क० कृ०] [नि–दिह्+क्त] 1. लेप किया हुआ, चुपड़ा हुआ 2. बढ़ाया हुआ, संचित –ग्धा छोटी इलायची ।

निदिध्यासः, निदिध्यासनम् [नि+ध्यै+सन्+घञ्, ल्युट् वा] बारंबार ध्यान में लाना, निरंतर चिन्तन ।

निदेशः [नि+दिश्+घञ्] 1. आज्ञा, हुक्म, हिदायत, अनुदेश—वाक्येनैव स्थापिता स्वे निदेशे—मालवि० ३।१४, स्थितं निदेशे पृथगादि देशं –रघु० १४।१४ 2. भाषण, वर्णन, संभाषण 3. सामीप्य, पड़ोस 4. पात्र, बर्तन ।

निदेशिन् (वि०) [निदेश+इनि] संकेत करने वाला, –नी 1. दिशा, पृथ्वी का एक बिन्दु 2. प्रदेश ।

निद्रा [निन्द्+रक्+टाप्, नलोपः] 1. सुप्तावस्था, नींद —प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः—शा० १।३ 2. शिथिलता 3. खाली मुंडना, कली की अवस्था 1. सम० —भंगः जागरण, नींद टूट जाना, -वृक्षः अंकोल —संजननम् श्लेष्मा, कफात्मक वृत्ति ।

निद्राण (वि०) [नि+द्रा+क्त, तस्य नः, ततो णत्वम्] सोता हुआ, शयान, ।

निद्रालु (वि०) [नि+द्रा+आलुच्] शयान, निद्रित, –लुः विष्णु की उपाधि ।

निद्रित (वि०) [निद्रा+इतच्] सोया हुआ, सुप्त ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निधन (वि०) [निर्गतं धनं यस्मात्—ब० स०] गरीब, दरिद्र —अहो निधनता सर्वविपदामास्पदम् मृच्छ० १।१४, —नः —नम् 1. ध्वंस, सर्वनाश, मरण, हानि —स्वधर्मे निधनं श्रेयः भग० ३।३५, म्लेच्छनिवह निधनं कलयसि करवालम् - गीत० १, कल्पांतेष्वपि न प्रयांति निधनं विद्याख्यमंतर्धनम् भर्तृ० २।१६ 2. उपसंहार, अंत, परिसमाप्ति—नम् परिवार, वंश।

निधानम् [नि—धा+ल्युट्] 1. नीचे रखना, निर्धारित करना, जमा करना 2. संभाल कर रखना, सुरक्षित रखना 3. गोदाम, आधार, आशय—निधानं धर्मणाम् गीता० १८ 4. खजाना— निधानमर्थानां सागरं-वराम् —रघु० ३।९, भग० ९।१८, विशेष लोकरक्ष परं निधानम् 5. कोष, भंडार, संपत्ति, दौलत।

निधि [नि : धा+कि] 1. घर, आधार, आशय -जल°, तोय°, तपोनिधि आदि 2. भंडारगृह, कोषागार 3. खजाना, भंडार, संचय (कुबेर के नौ खजानों के लिए दे० 'नवनिधि') 2. समुद्र 5. विष्णु का विशेषण 6. सद्गुणसंपन्न व्यक्ति। समः -ईशः, -नाथः कुबेर का विशेषण।

निधुवनम् [नितरां धुवनं हस्तपादादि चालनमत्र] 1. क्षोभ, कम्पन 2. संभोग, मैथुन- अनिवर्यमवश्यमपि निधुवन-शीलम् गीत० ३. शि० ११।१८, चौर० ४, ९, ३५ 3. आनन्द, उपभोग, केलि।

निध्यानम् [नि+ध्यै+ल्युट्] दर्शन, अवलोकन, दृष्टि।

निध्वानः [नि+ध्वन्+घञ्] ध्वनि, शब्द।

निनंसु (वि०) [नन्दितुमिच्छुः—नन्द्+सन्+उ] 1. मरने की इच्छा वाला 2. भाग जाने या बच निकलने का इच्छुक- भट्टि० ४।३३।

निन (ना) दः [नि+नद्+अप्, घञ् वा] 1 ध्वनि, शोर-उच्चस्वर निनदाभिमि तस्याः—रघु० ९।७३, ११।१५, ऋतु० १, १५ 2. (मक्खियों का) भिनभिनाना, गुंजन करना।

निनयनम् [नि+नी+ल्युट्] 1. अनुष्ठान 2. किसी कार्य को पूर्ण करना, सम्पन्न करना ३. उडेलना।

निंद् (स्वा० पर० निन्दति, निन्दित, प्रणिन्दति) दोष देना, निंदा करना, छिद्रान्वेषण करना, बुरा भला कहना, डांटना, फटकारना, धिक्कारना—निन्दि रूप हृदयेन पार्वती कु० ५।१, सा निन्दती स्वानि भाग्यानि बाला —श० ५।३०, भग० २।३६, मनु० ३।४२।

निंदक (वि०) [निंद्+ण्वुल्] कलंक लगाने वाला, निंदा करने वाला, गाली देने वाला, बदनाम करने वाला।

निंदनम् [निंद्+ल्युट्, निंद्+अ+टाप् वा] 1. कलंक, दोषारोपण, डांट, फटकार, गाली, बुरा-भला कहना, बदनामी-एषाजन्मुर्मुखे निंदा -काव्य० १०, पर्याः, वेदः 2. ध्वनि, दुष्टता। समः स्तुतिः (स्त्री०) 1. व्याजस्तुति, स्तुति के रूप में निन्दा 2. प्रच्छन्नस्तुति।

निंदित [भू० क० कृ०] [निंद्+क्त] कलंकित, दोषारोपित, गाली दिया हुआ, बदनाम किया हुआ।

निंदुः (स्त्री०) [निन्द्+उ] मरा बच्चा पैदा करने वाली स्त्री, मृतवत्सा।

निंद्य (वि०) [निंद्+ण्यत्] 1. कलंक के योग्य, दोषारोपण के लायक, निंदनीय, गर्हित, जघन्य 2. वर्जित, प्रतिषिद्ध।

निपः —पम् [नियत सिंचति अनेन नि+पा+क] जल का गड्ढा— पः कदंब का पेड़।

निप (पा) ठ. [नि+पठ्+अप्, घञ् वा] पढ़ना, मन्त्र पाठ करना अध्ययन करना।

निपतनम् [नि+पत्+ल्युट्] 1. नीचे गिरना, नीचे उतरना, उतरना 2. नीचे की ओर उड़ना।

निपत्या [निपतंति अस्याम् नि+पत्+क्यप्+टाप्] 1. फिसलन वाली भूमि 2. रणक्षेत्र।

निपाकः [नि+पच्+घञ्] परिपक्व करना, पकाना।

निपातः [नि+पत्+घञ्] 1 नीचे गिरना, नीचे आना, नीचे उतरना — पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिताः -कु० ५।२४, ऋतु० ५।४ 2 आक्रमण करना, टूट पड़ना, झपटना, कूदना रघु० २।६० 3. फेंकना, फेंक कर मारना, हंसना कु० ३।१५ 4. उतार, प्रपात, निशितनिपाताः शराः श० १।१० 5. मरण, मृत्यु—मनु० ६।३१ 6. आकस्मिक घटना 7. अनियमित रूप, अनियमितता, अनियमित या अपवाद मानना, ऐसे निपातात्, निपातोऽयम् आदि 8. अव्यय, वह शब्द जिसके और रूप न बने – पा० १।४।५६।

निपातनम् [नि+पत्+णिच्+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देना, पछाड़ देना, मारना मनु० ११।२०८, 2. परास्त करना, बर्बाद करना, वध करना 3. गर्म स्पर्श करना 4. अनियमित या अपवाद मानना 5. शब्द का अनियमित रूप, अनियमितता, अपवाद।

निपानम् [नि+पा+ल्युट्] 1. पीना 2. जलाशय, जोहड़, पोखर, गाहस्तात् महिषा निपानसलिलं शृंग-मुद्वस्तादितम्—श० २।६, हि० १।१७२, रघु० ९। ५३ 3. चौपच्चा, कूएँ के समीप पानी का हौज जिसमें पशुओं के पीने का पानी भरा हो 4. कूआं 5. दूध की झाड़ी।

निपीडनम् [नि+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, दबाना, भींचना- शि० १।७४, १३।११ 2. चोट पहुंचाना, घायल करना, ना अत्याचार करना, घायल करना, अति पहुंचाना।

निपुण (वि०) [नि+पुण्+क] 1. चतुर, चालाक, बुद्धिमान्, कुशल वैद्यस्य निसर्गनिपुणाः स्त्रियः—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मात्रा० ३ 2. प्रवीण, कुशल, जानकार, परिचित (अधि० या करण० के साथ) वाक्यं निपुणः, वाचा निपुणः 3. अनुभवशील, कृपालु, मिलनसार 4. सूक्ष्म, बारीक, कोमल 5. सम्पूर्ण, पूरा, सही—णम्(अव्य०), **निपुणेन**, 1. कौशल से, चतुराई से 2. पूरी तरह से, पूर्णरूप से, सर्वथा 3. ठीक, साधारणी से, यथार्थतः, सूक्ष्मरूप में—निपुणमभिव्यज्यनुपलब्धवान् दश० ५९, 4. मृदुता के साथ।

निबद्ध (भू० क० कृ०) [नि+बध्+क्त] 1. बांधा हुआ, कसा हुआ, हथकड़ी पहनाया हुआ, रोका हुआ, बंद किया हुआ 2. जुड़ा हुआ, संबद्ध 3. निर्मित 4. चर्चित, जड़ा हुआ 5. गवाह के रूप में बुलाया हुआ।

निबंध: [नि+बंध्+घञ्] 1. बांधना, कसना, जकड़ना 2. आसक्ति संलग्नता भग० १६।१५ 3. रचना करना, लिखना 4. साहित्यिक रचना या कृति,—अन्यथारूपेणमयग्रबंधविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबंधं चक्रे—वास० 5. संग्रह-ग्रन्थ 6. नियंत्रण, अवरोध, बंधन 7. मुक्तावरोध 8. बंध, हथकड़ी 9. संपत्ति का अनुदान, पशु, रुपया आदि सहायता के रूप में देना भूयां पितामहोपात्ता निबंधो द्रव्यमेव वा—याज्ञ० २।१२१, स्थिर संपत्ति 10. बुनियाद, मूल 11. हेतु, कारण।

निबंधनम् [नि—बंध्—ल्युट्] 1. एक जगह जकड़ना, मिलाकर बांधना 2. संरचना करना, निर्माण करना 3. निवेशन करना, रोकना, कैद करना 4. बंध, हथकड़ी 5. गांठ, बंध, सहारा, टेक—आधानिबंधमं जाता जीवलोकस्य—उत्तर० ३, सम्बन्धित मामलोंका मनगढ़ी दलीलें निबंधनम्: मा० ३ 6. पराश्रयता, सापेक्षता—पंच० १।७२, अपरिहार्यता 7. कारण, मूल, हेतु प्रयोजन, आधार, बुनियाद—नाकम्प्रतिष्ठानिबंधनानि देहिना व्यवहारबन्धनानि—मा० ४, आधारित और, प्रत्याशा में; अनिवार्य निष्कारण, आकस्मिक—उत्तर० ५।७ 8. आधार, गद्दी, आधार—मा० २।६ 9. रचना करना, क्रमबद्ध करना—कु० ७।२० 10 साहित्यिक रचना या कृति, पुस्तक 11. (भूमि का) अनुदान, नियोजन या हस्तांतरण-प्रलेख-सनद्ति:, सन्निबंधना भि० २।११२, (यहां 'निबन्धन' का अर्थ 'पुस्तक' भी है) 12 बाणों की तूणी 13. (व्या० में) कारक प्रकरण 14. भाष्य।

निबंधनी [निबंधन—ङीप्] बंध, हथकड़ी, डोरी या रस्सी।

निब्ब (वे) हिंसा (वि०) [नि+ब (व) हिंस्+क्विप्] नष्ट करने वाला, विनाशक, (समास में) शत्रु कि० ३।४३, महावी० ३।८७, णम् वध, संहार, विनाश, हत्या—मै० १।१३१।

निब्बिड (वि०) [नि+बिड्+क] सघन, विनका, दे० 'निबिड'।

निभ (वि०) [न+भा+क] (केवल समास के अन्त में) सदृश, समान, अनुरूप उद्युद्धमुखचन्द्रकान्तिनिभं वहंति मा० १।४० इसी प्रकार 'चन्द्रनिभानना' आदि, भः, भम् 1. दर्शन, प्रकाश, प्रकटीकरण 2. बहाना, छद्मवेश, व्याज 3. चाल, जालसाजी।

निभालनम् [नि+भल+णिच्+ल्युट्] देखना, दृष्टि, प्रत्यक्षीकरण।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1. अत्यन्त भीत 2. गया हुआ, धँसा हुआ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ, बीना किया हुआ 2. भरा हुआ, आपूरित -चित्त वा निभृत:—भाग० 3 छिपाया हुआ, गुप्त, दृष्टि से ओझल, अनीक्षित, अनवलोकित—निभृतो भूत्वा—पंच० १, नक्षसा निभृतेवेदुः रघु० ८।१५, चन्द्रमा के अन्तर्हित होने पर, अंधेरी अर्द्ध चाँद अस्त होने को था शि० ६।३० 4. गुप्त, प्रच्छन्न, शि० १३।४२ 5. (क) चुप शान्त—निभृतद्विरेफं (कानन) कु० ३।४२, ९।२, (ख) स्थिर, नियत, अचल, गतिहीन मा० १।८ 6. मृदु, सौम्य अनिभृता वाचयतः—शि० १३।६९ जो कोमल न हों, प्रचंड, दृढ़ मा० २।१२ 7. विनीत, नम्र अनिभृतकरेषु प्रियेषु—मेघ० ६८, प्रणामनिभृता कुलवधूरियं मुद्रा० १ 8. वृद्ध, अटल 9. एकाकी, अकेला—निभृतनिकुंजगृहं गतया गीत० २ 10. बंद, (दरवाजा) मुद्रा हुआ, तम् (अव्य०) 1. गुप्त रूप से, प्रच्छन्न रूप से, निजी तौर पर, बिना किसी के देखे भा० ३, शि० ३।७४, मनु० ९।२६३ 2. चुपचाप, शान्ति से- कि० १३४।

निमग्न (भू० क० कृ०) [नि—मज्ज्+क्त] 1. डूबा हुआ, डुबोया हुआ, बोरा हुआ, आप्लावित, जलमग्न हुआ (आल० भी) निमग्नस्य पयोराशौ, चिंतानिमग्न आदि 2. नीचे गया हुआ, (सूर्य की भांति) अस्त 3. अभिप्लुत, आच्छादित 4. अवसन्न, अप्रसन्न।

निमज्जयु: [नि+मज्ज्+अयुच्] 1. डुबकी लगाना, गोता लगाना 2. बिस्तरे में डुबना, शयन करना, सो जाना —तस्ये कांतोत्तरः सार्धं मन्येऽहं छिद्र निमज्जयुम् —भट्टि० ५।२०।

निमज्जनम् [नि+मज्ज्+ल्युट्] स्नान करना, डुबकी लगाना, गोता लगाना, डूबना (शा० और आल०) दूरं निमज्जनमपैति सुधायाम् मै० ५।२४, एवं संसार-गहने उन्मज्जननिमज्जने —महा०।

निमन्त्रणम् [नि+मन्त्र+ल्युट्] 1. न्योता 2. आमन्त्रण, बुलावा 3. आह्वान, तलबी।

निमयः [नि+मि+अच्] वस्तु-विनिमय, अदला-बदली।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निमानम् [नि+मा+ल्युट्] 1. माप 2. मूल्य (निमानम् =मूल्यम्—सिद्धा०)।

निमिः (पुं०) 1. आँख का झपकना, निमेष 2. इक्ष्वाकु की एक सन्तान, मिथिला में राज्य करने वाले राजाओं के कुल का पूर्वज।

निमित्तम् [नि+मिद् + क्त] 1. कारण, प्रयोजन, आधार, हेतु—निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः—शा० ७।३० 2. कर्मकारक या कौशलदर्शी कारण (विप० उपादान) 3. प्रतियोगिन कारण, व्याज. निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् भग० ११।३३, निमित्तमात्रेण पांडवक्रोधेन भवितव्यम् वेणी० १ 4 चिह्न, संकेत, निशानी 5. ढूंठ, लक्ष्य, निशाना निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वलितम् शि० २।२७ 6. भविष्यसूचक (शुभाशुभ) शकुन, —निमित्तं सूचयिष्यामि शा० १. निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव भग० १।३०, रघु० १।९६, मृ० ६।५०, याज्ञ० १।२०३, २।१७१, (‘निमित्त’ शब्द समास के अन्त में ‘कारण या उत्पत्ति’ अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है —किंनिमित्तोऽयमातंकः—शा० ३, **निमित्तम्, निमित्तेन, निमित्तात्** के कारण, क्योंकि, इस कारण कि’। सम०—अर्थः (त्रा० में) अकर्मक क्रिया की अवस्था, तुमुन्त प्रयोग,—**आवृत्तिः** (स्त्री०) किसी विशेष कारण पर आश्रय, **कारणम्, हेतुः** कर्मकारक या कौशलदर्शी कारण,—**ज्ञः** (पुं०) कौवा, **धर्मः** 1. प्रायश्चित्त 2. सामयिक संस्कार,—**विद्** (वि०) अच्छे और शकुनों का ज्ञाता —(पुं०) ज्योतिषी।

निमिषः [नि—मिष्+क] 1. आँख झपकना, आँख बन्द करना, पलक झपकाना 2. पलकमात्र समय, पलभर 3. फूलों का बन्द होना 4. आँख की पलक का शब्द होना 5. विष्णु। सम०—**अंतरम्** क्षण भर का अन्तराल।

निमीलनम् [नि+मील्+ल्युट्] 1. पलकें बन्द करना, झपकना, नयननिमीलनविलिन्दा व्यथा ते —गीत० ४, अमरु ३३ 2. मरणमय आँखें मूंदना, मृत्यु 3. (ज्यो० में) पूर्णग्रास।

निमिषा, निमीलिका [नि—मील्+अ+टाप्, निमिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. आँखें बन्द करना 2. आँख झपकाना, पलक मारना, किसी की ओर आँख मिचकाना 3. जालसाजी, बहाना, चालाकी।

निमूलम् (अव्य०) [निष्क्रान्तं मूलम् प्रा० स०] नीचे जड़ तक —निमूलकाषं कषति।

निमेषः [नि+मिष्+घञ्] आँख का झपकना, क्षण, दे० ‘निमिष’ —हरति निमेषात् कालः सर्वम्—मोह० ४, अनिमेषेण चक्षुषा—टकटकी लगाकर, एकटक दृष्टि से —रघु० २।११, ३।४३, ६१। सम०—**कृत** (स्त्री०) बिजली—**दृश्** (पुं०) जुगनू।

निम्न (वि०) [नि+म्ना+क] गहरा (शा० और आलं०) चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः—मेघ० ८२, ऋतु० ५।१२, शि० १०।५७ 2. नीचा, अवलम्ब, —**म्नम्** 1. गहराई, नीची भूमि, निम्न देश (क्रः) पयस्त्रा निम्नाभिमुखं प्रतीयाय—कु० ५।५, न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे मतो हृदयम् श० ३।६, याज्ञ० २।१५१, ऋतु० २।१३ 2. उलान, डाल 3. अधःपात, मूर्च्छा, 4. अवसाद, निचला भाग—जलनिधिरितिदत्त्वाव्यक्त निम्ननाभिः—मा० ४।१०। सम०—**उन्नत** (वि०) ऊंचा नीचा, अवनत उन्नता, ऊर्वङ्गावड, —**गतम्** निम्नस्थान, —**गा** नदी, पहाड़ी नदी —रघु० ८।८।

निम्रः [निम्र अच्] नीम का पेड़, आम्र छिल्ली कुठारेण निम्रं परिचरेन्नृपः, दध्नैनं पयसा सिञ्चेन्नीरास्य मधुरो भवेत्—रामा०।

निम्लोचः [नि—म्लुच् + अच्] सूर्यास्त।

नियत (भू०क०कृ०) [नि—यम् + क्त] 1. दमन किया हुआ, नियंत्रित 2. अभिभूत, नियंत्रण में किया हुआ, स्वस्थ, स्वशासित 3. संयमी, मिताहारी 4. सावधान 5. जमा हुआ, स्थायी, अनवरत, स्थिर 6. अवश्यभावी, निश्चित, अचूक 7. अनिवार्य 8. ध्रुव, निश्चित 9. विचारणीय विषय (प्रसंगानुकूल हो चाहे असंबद्ध) दे० ‘तुल्ययोगिता’, —**तम्** (अव्य०) 1. हमेशा, लगातार 2. निश्चयात्मक रूप से, अवश्य, अनिवार्यतः, निश्चय ही।

नियतिः (स्त्री०) [नि—यम् —क्तिन्] 1. नियंत्रण, प्रतिबन्ध 2. भाग्य प्रारब्ध, भवितव्यता, किस्मत (बुरी हो या अच्छी) नियतिबलात्सु—दश०, नियतेर्नियोयात्—शि० ४।३४, कि० २।१२, ४।२१ 3. धार्मिक कर्तव्य 4. आहम नियंत्रण, आत्म संयम।

नियंतृ (पुं०) [नि+यम्+तृच्] 1. सारथि, चालक शि० १२।२४ 2. राज्यपाल, शासक, स्वामी, वितियंता—रघु० १।१७, १५।५१ 3. दण्ड देने वाला, सजा देने वाला।

नियंत्रणम्, —णा [नि—यंत्र—ल्युट्; स्त्रियां टाप् च] 1. रोक, आरक्षण, प्रतिबंध—अनियंत्रणानुयोगो दोष नरपतिव्रजनः—शि० १ 2. प्रतिबंध लगाना, सीमित करना (किसी विशेष अर्थ में) अनेकार्थस्य शब्दस्यैकार्थनियंत्रणा सा० द० २ 3. निर्देशन, शासन 4. परिभाषा बताना।

नियंत्रित (भू०क०कृ०) [नि—यंत्र+क्त] 1. दमन किया हुआ, रोका हुआ 2. प्रतिबद्ध, सीमित (किसी विशेष अर्थ में, शब्द के रूप में)।

नियमः [नि+यम्+अप] 1. नियंत्रण, रोक 2. संयमना, वशीभूत करना 3. सीमित करना, रोक लगाना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. नियम, निरोध—मनु० ८।१२२ 5. सीमाबंधन, हदबंदी 6 नियम या विधि कानून, प्रचलन—नाय मंडलानो नियमः—शारी० 7. नियमितता रत्न० १।२० 8. निश्चितता, निश्चय 9. संविदा, प्रतिज्ञा, व्रत, वादा 10. आवश्यकता, अनिवार्यता, 11. कोई वैधिक या स्वेच्छा से गृहीत धार्मिक अनुष्ठान (केवल अपवादों पर निर्भर) रघु० ३।९४, (दे० मल्लि०, नि० १३।३३ तथा कि० ५।४२ पर) 12. कोई छोटा अनुष्ठान या छोटा व्रत, विहित कर्तव्य जो सब की भांति अनिवार्य न हो: शौच-नित्या त्वपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहः व्रतमौपोषवासश्च नियमेषु प्रकीर्तितः अमि० 13. तपस्या, भक्ति, कठिन साधना नियम विघ्नकारिणी शा० १, रघु० १५।७४ 14. (सांख्य० में) इस प्रकार का नियम या विधि जिसमें उस बात का विधान किया जाता है, जो, यदि यह विधि न होती तो ऐच्छिक होती—विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति 15. (योग० में) मन का निग्रह, योग में समाधि के आठ मुख्य अंगों में दूसरा 16 (अलं० में) वर्णितसमय, जैसा कि वसन्त ऋतु में कोयल का वर्णन, वर्षा ऋतु में मोरों का वर्णन, **नियमेन** नियम पूर्वक, अनिवार्यतः। °कर्म० नित्य विहित संस्कारों का दृढ़तापूर्वक पालन, °पत्रम् लिखित संविदा पत्र,—**स्थितिः** (स्त्री०) धार्मिक कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन, साधना।

नियमनम् [नि+यम्+ल्युट्] 1. अवरोध करना, शासन में लाना, नियन्त्रण करना, दमन करना—नियमनाद्भयत्राणात्क्षत्रियः परिकीर्तितः—रघु० ९।६ 2. प्रतिबन्ध, सीमा-निर्धारण 3. दीक्षा, 4. विधि, स्थिर नियम।

नियमवती [नियम+मतुप्+ङीप्] स्त्री जिसे धार्मिक कर्तव्यों के विशेष रूप से होना हो।

नियमित (भू०क०कृ०)[नि+यम्+णिच्+क्त] 1. अवरुद्ध, दमन किया नियन्त्रित 2. शासित, निर्देशित 3. विनियमित, विहित, निर्धारित 4. स्थिर, संवेदित प्रतिज्ञात।

नियमः [नि+यम्+घञ्] 1. नियंत्रण 2. धार्मिक व्रत

नियामक (वि०) (स्त्री० °मिका) [नि+यम्+णिच्+ण्वुल्] 1. नियंत्रण करने वाला, अवरुद्ध करने वाला 2. दमन करने वाला, पछाड़ने वाला 3. सीमित करने वाला, प्रतिबंधन लगाने वाला, ध्यानपूर्वक परिभाषा बनाने वाला 4 निर्देश करने वाला, शासन करने वाला, क: 1. स्वामी, शासक 2 सारथि 3. जैन मन्दिर का कर्णधार, विमानचालक।

नियुक्त (भू०क०कृ०) [नि+युज्+क्त] 1. निर्देशित, आज्ञप्त, अनुदिष्ट, आदिष्ट 2. अधिकृत, निर्धारित 3. विवादास्पद विषय को उठाने के लिए अनुज्ञात 4. संलग्न 5. उपबद्ध 6. निर्णीत।

नियुक्तिः (स्त्री०) [नि+युज्+क्तिन्] 1. निर्देशाज्ञा, आदेश, हुक्म 2. नियोगन, आयोग, पद, कार्यभार।

नियुतम् [नि+यु+क्त] 1. दस लाख 2. सौ हजार 3. दस हजार करोड़ या १०० अयुत।

नियुद्धम् [नि+युध्+क्त] पैदल युद्ध करना, घमासान युद्ध, व्यक्तिगत लड़ाई।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1. किसी काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग 2. निर्देशाज्ञा, आदेश, हुक्म, निदेश, आयोग, कार्यभार, निर्धारित कर्तव्य, किसी की देख रेख में आयुक्त कार्य: यः सावज्ञो माधव श्रीनियोगे - मालवि० ५।८, मनोनियोगक्रियया॰तुकं मे—रघु० ५।११ अथवा नियोगः खल्वीदृशो संदेशभाग्यस्य —उत्तर० १, आज्ञापयतु को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति शा० १, त्वमपि स्वनियोगमशून्यं कुरु (अपना काम करो—अपने निर्धारित कार्य में लगो) (नौकरों को दूर हट जाने के लिए कहने की एक शिष्ट रीति जिसका प्रायः नाटकों में अधिक प्रचलन है) 3. किसी के साथ संलग्न करना 4. आवश्यकता, अनिवार्यता तत्सिद्धेवे नियोगेन स किंकल्पराङ्मुखः - रघु० १९।४९ 5. प्रयत्न' चेष्टा 6, निश्चितता, निश्चयन 7. प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निस्सन्तान विधवा को अपने देवर या और किसी निकट संबंधी के द्वारा संतान पैदा कराने की अनुमति है, इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'क्षेत्रज' कहलाता है, तु० मनु० ९।५९—देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियुक्तया, प्रजेप्सिताधिगन्तव्या संतानस्य परिक्षये- दे० ६०, ६५ भी। (व्यास ने इसी रीति से विचित्रवीर्य की विधवाओं से पांडु और धृतराष्ट्र को पैदा किया)।

नियोगिन् (पुं०) [नियोग+इनि] अधिकारी, आश्रित, मंत्री, कार्यनिर्वाहक।

नियोक्तृ: [नि+युज्+तृच्] प्रभु, स्वामी।

नियोजनम् [नि+युज्+ल्युट्] 1. जकड़ना, संलग्न करना 2. आदेश देना, विधान करना 3. उकसाना, प्रेरित करना 4. नियुक्त करना।

नियोज्यः [नि+युज्+यत्] किसी कर्तव्य का कार्यभार संभालने वाला, कार्यनिर्वाहक, अधिकारी, सेवक, नौकर —सिध्यंति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः शा० ७।४।

नियोद्धृ(पुं०) [कि+युध्+तृच्] 1. योद्धा, पहलवान 2. मुर्गा।

निर् (अव्य०) [न्+विसर्ग, इत्वम्] ('से मुक्त' 'बिना' 'से रहित' 'से दूर' 'से बाहर' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए सघोष व्यंजनों और स्वरों से पूर्व 'निस्'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का स्थानापन्न; संज्ञा से पूर्व 'अ' या 'अन्' लगा कर भी इस अर्थ को प्रायः व्यक्त किया जा सकता है, दे० नी० दिए गये समस्त शब्द, दे० 'निस्' और तु० 'अ' से) । सम०—अंश (वि०) 1. पूर्ण, समस्त 2. पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति में भाग लेने का अनधिकारी—अक्ष: (ब्यो० में) भोगांश से मुक्त स्थान—अनि (वि०) जिसने अग्निहोत्र करना त्याग दिया हो—अंकुश (वि०) 'जिस पर किसी प्रकार का दबाव न हो:, कोई रोक-टोक न हो, नियन्त्रण से मुक्त, उद्दंड, स्वतंत्र, स्वेच्छाचारी, उच्छल—निरंकुशं इव द्विपः—भाग०, कामो निकामनिरंकुशः—गीत० ७, निरंकुशाः कवयः सिद्धाः, भर्तृ० ३।१०६, महावी० २।३९, अंग (वि०) 1. अंगहीन 2. साधनहीन, अंजिन (वि०) त्वचारहित, अंजस (वि०) 1. 'बिना आंजक का' 2. निष्कलंक, निर्दोष 3. मिथ्याज्ञ से रहित 4. सीधा-सादा, जिसमें बनावट न हो (न:) शिव का विशेषण (ना) पूर्णिमा, -अतिशय (वि०) जिससे बढ़-चढ़ कर दूसरा न हो, अद्वितीय,--अत्यय (वि०) 1. निर्भय, निरापद, सुरक्षित--रघु० १७।५३ 2. निरपराध, निष्कलंक, निर्दोष, निःस्पृह -कि० १।१२, १३।६१, पूर्णतः सफल,—अध्व (वि०) जो रास्ता भूल गया हो, —अनुकोश (वि०) निर्मम, निर्दय कठोरहृदय, (श:) निर्दयता, निष्ठुरता अमुग (वि०) जिसका कोई अनुयायी न हो,—अनुनासिक (वि०) अनुनासिक से भिन्न, जिसके उच्चारण में नाक का योग न हो, —अनुरोध (वि०) 1. अननुकूल, अमैत्रीपूर्ण 2. निष्करुण, सद्भावशून्य —ता १०—अंतर (वि०) 1. सदा बना रहने वाला, लगातार होने वाला,अव्यवहित, अविच्छिन्न—निरंतराधिपटलैः -भामि० १।१६, निरंतरास्वेतरवातवृष्टिषु—कु० ५।२५ 2. व्यवधानरहित, निरंतराल, सटा हुआ—मुहे निरंतरपयोधरया मर्मच मुख्छ० ५।१५, हृदयं निरंतरबहलकठिनस्तनमंडलावरणमप्यभित्वत्—शि० ९।६६ 3. अखंड, सघन—शि० १६।७६ 4. मोटा, स्थूल 5. विश्वसनीय, (मित्र की भांति) ईमानदार, सच्चा 6. सदा आंखों के सामने रहने वाला 7. अभिन्न, समान, समरूप (अव्य०—रम्) 1. निर्बाध, लगातार, सतत, अनवरत 2. बिना किसी मध्यवर्ती अन्तराल के 3. पक्की तरह से, कसकर, दृढ़तापूर्वक—(परिष्वजस्व) कान्तेरिदं मम निरंतरमंग-मंगैः—वेणी० ३।२७, परिष्वजेते शयने निरंतरम् —ऋतु० २।११ 4. तुरन्त, °अभ्यास: अनवरत अध्ययन, सपरिश्रम अभ्यास,—अन्तराल (वि०) जिसके बीच में स्थान न हो, सटा हुआ 2. तंग, सीढ़ा, —अन्वय (वि०) 1. निस्सन्तान, संतानरहित 2. असंबद्ध, संबंधरहित (वाक्य में शब्द की भांति) 3. अप्रासंगिक 4. असंगत, संगतिरहित, अव्यवस्थित 5. अदृश्य, आंख ओझल—मनु० ८।३३२ 6. बिना नौकर-चाकरों के, अनुचरवर्ग जिसके साथ न हो—दे० 'अन्वय',—अपत्रप (वि०) 1. निर्लज्ज, ढीठ 2. साहसी, —अपराध (वि०) निर्दोष, निरीह, दोषरहित, कलंकरहित (-धः) भोलापन,—अपाय (वि०) 1. दुष्टता से रहित 2. अपरहित, अनश्वर 3. अमाप, अछूत, -अपेक्ष (वि०) 1. जो किसी दूसरे पर निर्भर न हो, स्वतंत्र, किसी और की अपेक्षा न रखने वाला (अधि० के साथ) स्यायनिर्णीतमारब्धाधिरपेक्षमिवागमे— कि० ११।३९ 2. अवहेलना करने वाला ध्यान न देने वाला 3. तृष्णा से मुक्त, निर्मम—हि० १।८३ 4. लापरवाह, असावधान, उदासीन 5. सांसारिक विषयवासनाओं से विरक्त मनु० ६।९१ 6 निःस्पृह, दूसरे से किसी पुरस्कार की इच्छा न रखने वाला —भामि० १।५ 7. निष्प्रयोजन, (क्षा) उदासीनता, अवहेलना,—अभिभव (वि०) जो दोनता या तिरस्कार का पात्र न हो,—अभिमान (वि०) 1. जो अहंमन्यता से मुक्त हो, घमंड या अहंकार रहित 2. स्वाभिमानशून्य,—अभिलाष (वि०) जिसे किसी वस्तु की चाह न हो, उदासीन- स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः शा० ५।५,—अभ्र (वि०) मेघरहित, —अमर्ष (वि०) 1. क्रोधशून्य, धैर्यवान् 2. निरीह, —अम्बु (वि०) 1. जल से परहेज करने वाला 2. निर्जल, जलरहित, अर्गल (वि०) अर्गलारहित, प्रतिबंधरहित, निर्बाध, अनियंत्रित, निषिद्ध, पूर्णतः मुक्त -मालवो० ५, (अव्य०—लम्) मुक्त रूप से, -अर्थ (वि०) 1. निर्धन, गरीब, दरिद्र 2. अर्थहीन, (शब्द या वाक्य) निरर्थक 3. अनर्थक 4. व्यर्थ, बेकार, निष्प्रयोजन—अर्थक (वि०) 1. बेकार व्यर्थ, अलाभकर 2 अर्थहीन, अनर्थक, जिसका कोई तर्क-युक्त अर्थ न हो (-कम्) पूरक निरर्थक तु हीत्यादि पूरणैकप्रयोजनम्—चन्द्रा० २।६,—अवकाश (वि०) 1. मुक्त स्थान से रहित 2. जिसके पास फुर्सत का समय न हो,—अवग्रह (वि०) 1. नियन्त्रण से मुक्त, अनियंत्रित, अनवरुद्ध, नियंत्रणरहित, दुर्निवार 2. मुक्त, स्वतंत्र 3. स्वेच्छाचारी, दुराग्रही,—अवद्य (वि०) निष्कलंक, निर्दोष, अकलंकनीय, जिसमें कोई आपत्ति न हो सके—हृद्यनिरवद्यरूपी भूपो बभूव—दश० १, —अवधि (वि०) जिसका कोई अन्त न हो, असीम —उत्तर० ३।४४,—अवयव (वि०) 1. लंडरहित 2. अविभाज्य 3. अंगरहित,—अवलंब (वि०) 1. असहाय, निराश्रय— श० ६ 2. जो सहारा न दे —अवशेष (वि०) पूर्ण, पूरा, समस्त, अवशेषेण (अव्य०) पूरी तरह से, सर्वथा, पूर्णरूप से, बिल्कुल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--अशन (वि०) भोजन से परहेज करने वाला (नम्) उपवास,—अस्त्र (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निहत्था,-अस्थि (वि०) बिना हड्डी का,--अहंकार, —अहंकृति (वि०) घमंडरहित, अभिमानशून्य, विनीत नम्र,--अहम् (वि०) अहंमन्यता से मुक्त, —आकांक्ष (वि०) 1. जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से मुक्त 2. (वाक्य या शब्द के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो,—आकार (वि०) 1. आकृतिशून्य, आकाररहित, बिना रूप का 2. कुरूप, विरूप 3. छद्मवेषी 4. विनश्वर, कुघोल (रः) 1. परमात्मा, सर्वशक्तिमान् 2. शिव की उपाधि 3. विष्णु का विशेषण,—आकुल (वि०) 1. जो घबराया न हो, अनुद्विग्न, जो हतबुद्धि न हुआ हो 2. स्थिर, शांत 3. स्वच्छ, निर्मल,--आकृति-(वि०) 1. आकाररहित, रूपरहित 2. विरूप (तिः) 1. वह ब्रह्मचारी जिसने विधिपूर्वक वेदाध्ययन न किया हो 2. विशेषकर वह ब्राह्मण जिसने अपने वर्ण के लिए निर्धारित वेदाध्ययन के कर्तव्य को पूरा न किया हो,—आक्रोश (वि०) जिस पर दोषारोपण न किया गया हो, जिसका तिरस्कार न हुआ हो,--आगस् (वि०) निर्दोष, निरीह, निष्पाप रघु० ८।४८,--आचार (वि०) आचारहीन, धर्मभ्रष्ट,- आडंबर वि०) बिना ढोल का, ढोंगरहित, —आतंक (वि०) 1. भय से मुक्त—रघु० १।६३, 2. नीरोग, सुखद, स्वस्थ,--आतप (वि०) जिसमें धूप या गर्मी न हो, छायादार, (पा) रात, - आदर (वि०) अपमानजनक, -आधार (वि०) 1. आधाररहित 2. निराश्रय, आश्रयहीन (आलं० भी) निराधारो हा रोदिमि कथय कंपामहि पुरः--गंगा० ४।३९, —आधि (वि०) निर्भय, चिन्तामुक्त,--आपद् (वि०) आपत्तिरहित, संकटमुक्त, आबाध (वि०) असन्तापित, उत्पीडनरहित, बाधारहित, बाधामुक्त, 2. निर्बाध 3. जो बाधक न हो, जो पीड़ा न पहुंचाता हो 4. (विधि में) (मुकदमा या अभियोग का कारण आदि) मूर्खतापूर्वक प्रबाधी--उदा० यस्मादृग्हृष्यपक्रमणायं स्वगृहे व्यवहरति-मिता०, --आमय (वि०) 1. रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग, भला-चंगा 2. निष्कलंक, विशुद्ध 3. निष्कपट 4. दोषों से मुक्त, निर्दोष 5. भरा हुआ, संपूर्ण 6. अमोघ (यः-यम्) नीरोगता, स्वास्थ्य, कल्याण, मंगल, आनन्द (यः) 1. जंगली बकरी 2 सूअर, --आमिष (वि०) 1. बिना मांस का, मांस न खाने वाला 2. वासनारहित, लालच से मुक्त 3. पारिश्रमिक आदि न पाने वाला,—आय (वि०) जिससे कोई आमदनी या राजस्व प्राप्त न हो, लाभरहित, —आयास (वि०) जिसमें परिश्रम न लगे, सुकर, आसान, -आयुध (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था,—आलंब (वि०) जिसे कोई सहारा न हो, (आलं० भी) महावी० ४।५३ 2. जो दूसरे पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3. जो अपना आश्रय आप ही हो, असहाय, अकेला—निरालंबो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् - जग०,—आलोप (वि०) 1. इधर उधर न देखने वाला 2. दृष्टिहीन 3. प्रकाशरहित, अंधकारयुक्त भा० ५।३०,—आश (वि०) आशाशून्य, निराश. नाउम्मीद---मनो बभूवेदुमती-निराशम्—रघु० ६।२,—आशंक (वि०) निर्भय, -आशिष् (वि०) 1. आशीर्वाद या वरदान से वञ्चित 2. निरिच्छ, इच्छारहित, निराश, उदासीन --जगच्छरण्यस्य निराशिषः सतः—कु० ५।७६, --आश्रय (वि०) 1. आश्रयहीन, जिसे कोई सहारा न हो, आश्रयरहित 2. निर्वहीन, दरिद्र, अकेला, शरणहीन — निराश्रयाधुना वत्सलता,—आस्वाद (वि०) स्वादरहित, फीका, बेमजा,—आहार (वि०) जिसे भोजन न मिले, उपवास करने वाला, भोजन से परहेज करने वाला (—रः) उपवास करना,—इच्छ (वि०) बिना इच्छा के, चाहरहित, उदासीन,—इन्द्रिय (वि०) 1 जिसका कोई अंग नष्ट हो गया हो या काम न दे 2. विकलांग, अपांग 3. दुर्बल, अशक्त, कमजोर 4. ज्ञान के साधन से हीन, जिसकी कोई इन्द्रिय बेकाम हो गई हो—मनु० ९।१८,—इंधन (वि०) इंधनरहित,—ईति ऋतुओं के संकट (अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि) से मुक्त—रघु० १।६३, दे० इति,—ईश्वर (वि०) ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक,—ईषम् हल का फाल,—ईह (वि०) 1. तृष्णा से रहित, उदासीन,--रघु० १०।२१ 2. उद्यमहीन,--उच्छ्वास (वि०) 1. जो श्वास न लेता हो, श्वासरहित (—सः) श्वास-क्रिया का अभाव,—उत्तर (वि०) 1. उत्तर रहित, बिना उत्तर के 2. जो कुछ उत्तर न दे सके, चुप 3. जिससे बड़ा कोई और न हो, उत्सव (वि०) बिना उत्सव का—विरतं गेयमृतुनिलयः -रघु० ८।६६,—उत्साह (वि०) जिसमें उत्साह न हो, उत्साह रहित, स्फूर्ति शून्य (हः) उत्साह का अभाव, आलस्य--उत्सुक (वि०) 1. उदासीन 2. शान्त, चुपचाप, -उदक (वि०) जलरहित, - उद्यम,--उद्योग (वि०) निश्चेष्ट, निकम्मा, आलसी, सुस्त,-उद्वेग (वि०) उत्तेजना रहित, जिसमें घबराहट न हो, गम्भीर, शांत,—उपक्रम (वि०) जिसका आरम्भ न हुआ हो,—उपद्रव (वि०) 1. संकट या कष्ट से मुक्त, जिसमें या जहां कोई भय या उत्पात न हो, भाग्यशाली, सुखद, निर्बाध,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संताप-विपक्षियों के आक्रमण से सुरक्षित 2. राष्ट्रीय दुःखों या अत्याचारों से मुक्त 3. जो किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाये 4. सुरक्षित, शान्तिमय, --**उपधि (वि०)** निकट, ईमानदार --उत्तर० २।२, --**उपपत्ति** (वि०) अनुपयुक्त, **उपपद** (वि०) 1. जिसको कोई उपाधि या पद न हो -भट्टा० ३ 2. गौण शब्द से अम्बद्ध, **उपप्लव** (वि०) बाधा-रहित, जहाँ कोई रुकावट या संकट न हो, जहाँ किसी प्रकार की हानि न हो--निरुपप्लवानि नः समीहितानि शं० ३, **उपम** (वि०) अनुपम, बेजोड़, अतुलनीय, **उपसर्ग** (वि०) जहाँ उत्पात न होते हों, उपद्रव से रहित, **उपाख्य** (वि०) 1. अवास्तविक, मिथ्या, (बध्यात्मपुर की भान्ति) जिसका कोई अस्तित्व न हो 2. अभौतिक 3. सीधा, **उपाय** (वि०) उपायरहित, असहाय,—**उपेक्ष** (वि०) 1. जानबूझ कर या चालाकी से मुक्त 2. जिसकी उपेक्षा न की गई हो,—**उष्मन्** (वि०) तापशून्य, शीतल, **गंध** (वि०) गंधशून्य, गंधरहित, जिसमें गंध न हो, बिना गंध के —निर्गंधा इव किंशुकाः, **गुल्फि** (स्त्री०) सेमर का पेड़, **गर्व (वि०)** अभिमानरहित, **गवाक्ष** (वि०) जहाँ कोई खिड़की न हो,—**गुण** (वि०) 1. (धनुष की भांति) बिना डोरी का 2. सपत्तिशून्य 3. गुण-रहित, बुरा, निकम्मा—निर्गुणः शोभते नैव विपुलाऽम्बरोऽपि नाः --भामि० १।११५ 4. जिसका कोई विशेषण न हो 5. जिसकी कोई उपाधि न हो (**णः**), परमात्मा, —**गृह** (वि०) जिसका कोई घर न हो, घररहित - सुगृही निर्गृही कृता - पंच० १।३९०, —**गौरव** (वि०) 1. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, प्रतिष्ठारहित, —**ग्रंथ** (वि०) 1. बन्धनमुक्त, बाधा-रहित 2. गरीब, संपत्तिरहित, भिखारी 3. अकेला, असहाय (**थः**) 1. जड़, मूर्ख 2. जुआरी 3. सन्त महात्मा जो सब प्रकार की सांसारिक विषय वासनाओं को त्याग कर नग्न होकर विचरता है, और विरक्त संन्यासी की भांति रहता है, - **ग्रंथक** (वि०) 1. निपुण, विशेषज्ञ 2. असहाय, अकेला 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4. निष्फल (**कः**) धार्मिक साधु, क्षपणक 2. दिगंबर साधु 3. जुआरी,—**ग्रंथिकः** नंगा रहने वाला साधु, दिगंबर संप्रदाय का जैन-साधु, क्षपणक, --**घटम्** 1. वह बाजार जहाँ दुकानदारों से किसी प्रकार का कर न लिया जाता हो 2. बड़ा बाजार जहाँ बहुत भीड़ भड़क्का हो, - **घृण** (वि०) 1. क्रूर, निष्ठुर, निर्दय 2. निर्लज्ज, बेहाया,—**जन** (वि०) जहाँ कोई न रहता हो, जो आबाद न हो, जहाँ कोई आता-जाता न हो, एकान्त, सुनसान (**नम्**) मरुभूमि, एकांत सुनसान जगह,—**जर** (वि०) 1. जो कभी बूढ़ा न हो, सदा युवा रहने वाला 2. अनश्वर, जिसकी कभी मृत्यु न हो, (**रः**) देवता, सुर (ऋ० ४० ब० व०--**निर्जराः** - **निर्जरसः**) (**रम्**) अमृत, सुधा, - **जल** (वि०) 1. जलरहित, मरुभूमि, जलशून्य 2. जिसमें पानी न मिला हो (**लः**) ऊसर, बंजर, बीरान उजाड़, - **जिह्व** मेंढक, **जीव** (वि०) 1. प्राणरहित 2. मृतक, ज्वर (वि०) जिसे बुखार न हो, स्वस्थ,—**दंड** क्षुद्र,--**दय** (वि०) 1 निर्दय, क्रूर, निर्मम, बेरहम, करुणारहित 2. उग्र 3. घनिष्ठ दृढ़, मजबूत, अत्यधिक, प्रचुर मम्ने विदेहि मयि निर्दयदंडवत्सम् --गीत० १०, निर्दयरतिश्चालसाः.--रघु० १२।३२, निर्दयालेखनेनोः भेद० १०६, --**दयम्** (अव्य०) 1. निष्ठुरता के साथ, क्रूरतापूर्वक 2. प्रचंडता के साथ, कठोरतापूर्वक रघु० ११।८८, **दश** (वि०) दस से अधिक दिनों का, --**दशन** (वि०) बिना दांतों का, **दुःख (वि०)** 1. पीड़ा से मुक्त, पीडारहित 2. जो पीड़ा न दे, **दोष** (वि०) 1. निरपराध, दोषरहित --न निर्दोषं हि निर्गुणम् 2. अपराधशून्य, निरोह, **द्रव्य** (वि०) संपत्तिरहित, गरीब, **द्रोह** (वि०) जो शत्रु न हो, मित्रवत्, कृपापूर्ण, जो द्वेषपूर्ण न हो,—**द्वन्द्व** (वि०) जो सुख-दुःख के द्वंद्वों से रहित हो, हर्ष और विषाद से परे हो,—निर्द्वंद्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् —भग० १४५ 2. जो औरों पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3. ईर्ष्या द्वेष से मुक्त हो 4. जो दो से परे हो 5. जिसमें मुकाबला न हो, जिसमें किसी प्रकार का झगड़ा न हो 6. जो दो सिद्धांतों को न मानता हो,—**धन** (वि०) संपत्तिहीन, गरीब, दरिद्र-श्रुतिस्मृत्यवबोधेन निर्धनः परिभूयते--चाण० ८२, (**नः**) बूढ़ा बैल,—**धर्म** (वि०) धर्महीन, अधर्मी,—**धूम** (वि०) जहाँ धुआँ न हो--**नर** (वि०) मनुष्यों द्वारा परित्यक्त, उजाड़,—**नाथ** (वि०) जिसका कोई अभिभावक या स्वामी न हो,--**निद्र** (वि०) जिसे नींद न आई हो, जागरूक,—**निमित्त** (वि०) अकारण बिना कारण का,--**निमेष** (वि०) बिना पलक झपकाये टकटकी लगाने वाला,---**बंधु** (वि०) बंधुरहित, मित्रहीन,—**बल** (वि०) शक्तिरहित, कमजोर, बलहीन,---**बाध** (वि०) 1. बाधारहित 2. जहाँ प्रायः आना-जाना न हो, एकांत, निर्जन 3. निरुपद्रव,—**बुद्धि** (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, बेवकूफ,—**बुध,—बुस** (वि०) जिसकी भूसी न निकाली गई हो, जिसमें से बूर निकाल दिया गया है,--**भय** (वि०) 1. निडर, निश्शंक 2. भय से मुक्त, सुरक्षित, निरापद,—**भर** (वि०) अत्यधिक, तीव्र, उग्र, बहुत मजबूत—दर्पाभर निर्भर स्मरज्वर—गीत० १२,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमरु ४२ 2. उत्सुक 3. दृढ़, प्रगाढ़ (आलिंगन आदि)– कुचकुंभनिर्भरपरीरंभामृतं याचन्ति– गीत० ५, परिरब्ध निर्भरम्– गीत० १ 4. गाढ़, गहरा (नींद आदि) 5, (समास के अन्त में) भरा हुआ, आनन्द०, मद० आदि (रम्) अधिकता (अव्य०— रम्) 1. अत्यधिक, अत्यत, बहुत 2. सुख, चैन से–, भाग्य (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यपूर्ण भृति (वि०) बेगार में काम करने वाला,—मक्षिक (वि०) 'मक्खियों से मुक्त' निर्बाध, निर्जन, एकांत (अव्य० —गम्) बिना मक्खियों के अर्थात् एकान्त, निर्जन— कृतं भवतेदानीं निर्मक्षिकम्—श० २।६,– मत्सर (वि०) ईर्ष्यारहित, ईर्ष्या न करने वाला, मत्स्य (वि०) जहाँ मछलियाँ न हों,– मद (वि०) 1. जो नशे में न हो, संजीदा, गंभीर, शान्त 2. अभिमान रहित, विनीत 3. (हाथी की भाँति) मदजल से रहित,– मनुज,—मनुष्य (वि०) मनुष्यों से रहित, गैर-आबाद, मनुष्यों द्वारा परित्यक्त, मन्यु (वि०) बाह्य संसार के सब प्रकार के संबंधों से मुक्त, जिसने सब सांसारिक वंधनों को तिलांजलि दे दी है, संसार विव निर्ममः (तारा) रघु० १२।६०, भग० २।७१, ३।३०, उदासीन (अधि० के साथ) निर्मम निर्ममोऽर्थेषु मधुरां मधुरद्युतिः—रघु० १५।२८, प्राप्तेर्वधूं निर्ममः—महा०,—मर्याद (वि०) 1. सीमा-रहित, अपरिमित 2. औचित्य की सीमा का उल्लंघन करने वाला, अनियंत्रित. उद्दंड, पापमय, अपराधी – मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैरसद्भिरुदाहृतैः–वेणी० ३।२२, – मल (वि०) मैल और गन्दगी से मुक्त 2. स्वच्छ शुद्ध, अकलुष, निष्कलंकित (आलं० भी) धीराग्निमंलतो जनिः भामि० १।६३ 3. निष्पाप, सद्गुणसंपन्न, मनु० ८।३१८ (लम्) 1. कहानी 2. देवता के चढ़ावे का अवशेष, उपलः स्फटिक, मशक (वि०) मच्छरों से मुक्त, –मांस (वि०) मांसरहित –मानुष (वि०) जो बसा हुआ न हो, निर्जन, – मार्ग (वि०) मार्ग रहित, पथशून्य,—मूत्रः 1. सूर्य 2. वेदमाता (दुर्गा) वह बाजार या मण्डी जहाँ कर या चुंगी न लगे, –मूल 1. (वृक्ष आदि) बिना जड़ का 2. निराधार, आधारहीन (वक्तव्य या दोषारोप आदि) 3. उन्मूलित,– मेघ (वि०) निरभ्र, बादलों से रहित, —मेघ (वि०) जिसे समझ न हो, निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, मन्दबुद्धि, – मोह (वि०) माया या छल से मुक्त, यत्न (वि०) निश्चेष्ट, उद्यमहीन · यंत्रण (वि०) 1. जहाँ कोई नियंत्रण न हो, निर्बाध, नियंत्रणरहित, प्रतिबन्धशून्य, 2. उद्दंड, स्वेच्छाचारी, स्वतन्त्र (क्त्र्) प्रतिबन्धशून्यता, स्वतन्त्रता,—यशस्क (वि०) जिसकी कीर्ति न हो, अकीर्तिकर, लज्जा-जनक यूथ (वि०) जो अपने दल से बिछुड़ गया हो, (हाथी की भाँति) यूथभ्रष्ट,—रथ (नीरथ) (वि०) बिना रथ का, फीका, रज, रजस्क (वि०) (नीरज, नीरजस्क) 1. धूल से मुक्त, 2. रागशून्य अन्धकार शून्य, रजस् (वि०) (नीरजस्) दे० 'नीरज' (स्त्री०) रजस्वला न होने वाली स्त्री, तमसा राग या अन्धकार का अभाव, रंध्र (वि०) (नीरंध्र) 1. जिसमें छिद्र न हों, अत्यन्त सटा हुआ, संलग्न, साथ लगा हुआ –उत्तर० २।३ 2. निविड़, सघन 3. मोटा, स्थूल,– रव (वि०) (नीरव) शब्द-रहित, ध्वनिशून्य - रघु० ८।५८,– रस (वि०) (निरस) 1. स्वादरहित, बेमजा, रसहीन 2. (अर्थ०) फीका, काव्य सौन्दर्य से विहीन—नीरसानां पद्यानाम् —सा० द० १ 3. सूखा, रूखा, शुष्क— शृंगार० ९ 4. व्यर्थ, बेकार, निष्फल, अलब्धफलनीरसान् मम विधाय तस्मिन् जने—विक्रम० २।११ 5. अरुचिकर, 6. क्रूर निष्ठुर (स्त्रः) अत्यार,—रसन (वि०) (नीरसन) बिना मेखला या कटिसूत्र के (रसना) – कि० ५।११, – रुज् (वि०) (नीरुक्) कान्तिहीन, म्लान, धूमिल, – रुज्,— रुज (वि०) (नीरुज्, नीरुज) रोग से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी,—नीरुजस्य किमौषधैः–हि० १, —रूप (वि०) (नीरूप) रूपरहित, निराकार—रोग (वि०) (नीरोग) रोग या बीमारी से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी,—लक्षण (वि०) 1. अशुभ चिह्नों से युक्त, अमंगलकारी (मनहूस) सूरतहाबेलेवाला 2. जिसकी प्रसिद्धि न हो 3. अनावश्यक, निरर्थक 4. बेदाग, —लज्ज (वि०) बेशर्म, बेहया, ढीठ,· लिंग (वि०) जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो,—लेप (वि०) 1. जो लिपा हुआ न हो, जिस पर मालिश न की गई हो—मनु० ५।११२ 2. निष्कलंक, निष्पाप, —लोभ (वि) लालच से मुक्त, लाभरहित, —लोमन् (वि०) जिसके बाल न हों, बालों से शून्य,— वंश (वि०) जिसका वंश उच्छिन्न हो गया हो, निःसन्तान,· वन (वि०) 1. वन से बाहर 2. वन से रहित, नंगा, खुला हुआ,— वसु (वि०) धनहीन, गरीब,– वात (वि०) वायु से सुरक्षित या मुक्त, शान्त, चुपचाप,—रघु० १५।६६, (तः) वायु के प्रकोप से मुक्त स्थान,—वानर (वि०) बंदरों से मुक्त, – वायस (वि०) कौओं से सुरक्षित, · विकल्प,–विक-रूपक, (वः) 1. विकल्प से रहित 2. जिसमें दृढ़ संकल्प या निश्चय का अभाव है 3. पारस्परिक संबंध से विहीन 4. प्रतिबन्धयुक्त 5. कर्ता, कर्म या ज्ञाता तथा ज्ञेय के विवेक से रहित एक प्रकार का प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें किसी विषय का केवल इसी रूप में ज्ञान होता है कि यह कुछ है, जिस प्रकार कि समाधि की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवस्था में केवल एक ही अभिन्न तत्त्व (ब्रह्म) पर एकमात्र ध्यान केन्द्रित होता है, और ज्ञाता, ज्ञेय, तथा ज्ञान के विभेद का बोध नहीं रहता यहाँ तक कि आत्मचेतना का भी भास नहीं होता—निर्विकल्पकः ज्ञातृज्ञानादिविकल्पभेदलयापेक्षः, नोचेत् चेतः प्रविश सहसा निर्विकल्पे समाधौ—भर्तृ० ३।६१, वेणी० १।२३, (अव्य०—त्यम्) बिना किसी संकोच या हिचक के, —विकार (वि०) 1. अपरिवर्तित, अपरिवर्त्य, निश्चल 2. विकार रहित—मालवि० ५।१४ 3. उदासीन स्वर्थहीन—ऋतु० २।२८,—विकास (वि०) जो खिला न हो, अविकसित,—विघ्न (वि०) बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप के, जिसमें कोई बाधा न हो, विघ्न-बाधाओं से मुक्त (त्नम्) विघ्नों का अभाव,—विचार (वि०) अविमर्शी, विचार शून्य, अविवेकी—रे रे स्वैरिणि निर्विचारकवितें मास्मत्प्रकाशीभव—चन्द्रा० १ 2, (अव्य—रम्) बिना विचारे, निस्संकोच, विचिकित्स (वि०) सन्देह या शंका से मुक्त,—विचेष्ट (वि०) गतिहीन, संज्ञाहीन,—वितर्क (वि०) जिस पर तर्क या सोच विचार न किया जा सके,—विशोक (वि०) आमोद प्रमोद से रहित, मनोरंजनशून्य—मेघ० ८६,—विन्ध्य विन्ध्य पहाड़ियों में बहने वाली एक नदी—मेघ० २८,—विभ्रम (वि०) विचारशून्य, अविवेकी, सोचविचार न करने वाला,—विवर (वि०) 1. बिना किसी विवर या मुंह के 2. जिसमें कोई छिद्र या अन्तराल न हो, सटा हुआ, शि० २।४५,—विवाद (वि०) 1. विवाद रहित 2. जिसमें कोई झगड़ा न हो, कोई विरोध न हो, विश्वसम्मत,—विवेक (वि०) ना समझ, विवेकशून्य, अबूझदर्शी, मूर्ख,—विशंक (वि०) निडर, निश्शंक, विश्वस्त—मनु० ७।१७६, पंच० १।८५,—विशेष (वि०) कोई अन्तर न मानने वाला, बिना भेद-भाव के, किसी प्रकार का भेदभाव न रखने वाला—निर्विशेषा वयं त्वयि—महा०, निर्विशेषो विशेषः—भर्तृ० ३।५०, 'भेद-भावका अभाव ही अन्तर' 2. जहाँ भिन्नता का अभाव हो, समान, तुल्य (प्रायः समास में) अभिन्न—प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषम्—कु० १।४६, स प्रतिपत्तिर्निर्विशेषप्रतिपत्तिरासीत्—रघु० १४।२२ 3. अभेदकारी, गड्ड-मड्ड (क्रः) अन्तर का अभाव (निर्विशेषम् और निर्विशेषेण शब्द 'बिना किसी भेद-भाव के', 'समान रूप से' 'बिना किसी अन्तर के' अर्थों को प्रकट करने के लिए क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, स्वगृहनिर्विशेषमत्र स्थीयताम्—हि० १, रघु० ५।६),—विशेषण (वि०) बिना किसी विशेषण के,—विष (वि०) (सांप आदि) जिसमें जहर न हो—निर्विषा हृदुभाः स्मृताः—विषय (वि०) 1. अपनी जन्मभूमि या निवास स्थान से निर्वासित किया हुआ—मनो निर्विषयार्थकामया—कु० ५।३८, रघु० ९।२८ 2. जिसे कार्य-क्षेत्र का अभाव हो किंच एवं काव्यं प्रविरलविषयं निर्विषयं वा स्यात्—सा० द० १ 3. (मन की भांति) विषय-वासनाओं में अनासक्त प्राण (वि०) बिना सींगों का—विहार (वि०) जिसके लिए आनन्द का अभाव हो,—वीज (बीज) (वि०) 1. बिना बीज का 2. नपुंसक 3. निष्कारण,—वीर (वि०) वीर विहीन—निर्वीरमुर्वीतलम्—प्रस० ११३१ 2. कायर—वीरा वह स्त्री जिसका पति व पुत्र मर गये हों—वीर्य (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, पुरुषार्थहीन, नपुंसक—निर्वीर्यं गुरुशापप्रभावितवशात् किं मे तदेवायुधम्—वेणी० ३।३४,—वृक्ष (वि०) जहाँ पेड़ न हों,—वृष (वि०) जहाँ अच्छे बैल न हों,—वेग (वि०) निश्चेष्ट, गतिहीन, शान्त, वेगरहित,—वेतन (वि०) अवैतनिक, बिना वेतन का,—वेष्टनम् जुलाहे की नरी, ढरकी, —वैर (वि०) वैरभाव से रहित, स्नेही शान्तिप्रिय (रम्) शत्रुता का अभाव, व्यंजन (वि०) सीधा सादा, खरा 2. बिना मसाले का (अव्य०—ने) सीधा-सादे ढंग से, बेलाग, ईमानदारी से, —व्यथ (वि०) 1. पीड़ा से मुक्त 2. शान्त, स्वस्थ,—व्यपेक्ष (वि०) उदासीन, निरपेक्ष रघु० १३।२५, १४।३९, व्यलीक (वि०) जो किसी प्रकार की चोट न पहुंचाये 2. पीड़ारहित 3. प्रसन्न, मन से कार्य करने वाला 4. निष्कपट, सच्चा, पाखंडहीन,—व्याघ्र (वि०) जहाँ चोरों का उत्पात न हो,—व्याज (वि०) 1. स्पष्ट का, खरा, ईमानदार, सरल 2. पाखंडरहित—भर्तृ० २।८२, (अव्य०—ज्रम्) सरलता से, ईमानदारी से, स्पष्ट रूप से, अमरु ७९,—व्यापार (वि०) जिसे कोई काम न हो, बेकार, रघु० १५।५६, व्रण (वि०) 1. जिसे चोट न लगी हो, व्रणरहित 2. जिसमें दरार न पड़ी हो,—व्रत (वि०) जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा का पालन न करे,—हिंस्र (वि०) जाड़े की समाप्ति, हिमशून्य, —हेति (वि०) निरस्त्र, जिसके पास कोई हथियार न हो,—हेतु (वि०) निष्कारण, बिना किसी तर्क, या कारण के,—ह्रीक (वि०) 1. निर्लज्ज, बेहया, ढीठ 2. साहसी, निर्भीक।

निरत (वि०) [नि+रम्+क्त] 1. किसी कार्य में लगा हुआ या रुचि रखने वाला 2. भक्त अनुरक्त, संलग्न, आसक्त—जनवासनिरतः—का० १५७ 3. प्रसन्न, खुश 4. विश्रान्त, विरत।

निरति: (स्त्री०) [नि+रम्+क्तिन्] दृढ़ आसक्ति, अनुरक्ति, भक्ति।

निरय: [निर्+इ+अच्] नरक—निरयनगरद्वारमुद्घाटयंती—भर्तृ० १।६३, मनु० ६।६१।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निरवहानि (लि) ला [निर्+अव+हन् (ल्)+ष्युल्+टाप्, इत्वम्] बाड़ा, चहारदीवारी।

निरस (वि०) [निर्गतो रसो यस्मात् प्रा० ब०] स्वाद-रहित, फीका, सूखा—सः 1. रस की कमी, फीकापन, स्वादहीनता 2. रसहीनता, सूखापन 3. उत्कण्ठा का अभाव, भावना की कमी।

निरसन (वि०) (स्त्री०—नी०) [निर्+अस्+ल्युट्] निकालने वाला, हटाने वाला, दूर भगाने वाला, —नः० ६।४७ 2. उद्गमन या के करने वाला—**नम्** 1. निकालना, प्रक्षेपण, निष्कासन, हटाना 2. मुकरना, दबन-विरोध, अस्वीकृति, इंकार 3. के करना, थूक देना 4. रोकना, दबाना 5. विनाश, वध, उन्मूलन।

निरस्त (भू० क० कृ०) [निर्+अस्+क्त] 1. दूर डाला हुआ, दूर फेंका हुआ, प्रत्याख्यात, हाका हुआ, निष्कासित, निर्वासित—कौलीनभीतेन गृहान्निरस्ता —रघु० १४।८४ 2. दूर भगाया गया, नष्ट किया गया, अन्हाय तावदरुणेन तमो निरस्तम्—रघु० ५।७१ ३. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4. दूर हटाया गया, दलित, शून्य—निरस्तपादपे देशे एरंडोऽपिद्रुमायते हि० १।६९ 5. (बाण आदि) चलाया हुआ 6. निगकृत 7 उगला हुआ, थूका हुआ 8. शीघ्रता पूर्वक उच्चरित 9. फाड़ा हुआ, विनष्ट 10. दबाया हुआ, रोका हुआ 11. (करार, प्रतिज्ञा आदि) तोड़ा हुआ, —**स्तम्** 1. अस्वीकृति, इंकार 2. छोड़ देना, इतोच्चारण। सम०—भेद (वि०) सब प्रकार के भेद-भाव हटाये हुए, वही, समरूप,—राग (वि०) जिसने समस्त सांसारिक अनुरागों का त्याग कर दिया है।

निराकः [निर्+लक्+घञ्] 1. पकाना 2. स्वेद, पसीना 3. दुष्कर्मों का विस्तार ('विपाक' भी)।

निराकरणम् [निर्+आ+कृ+ल्युट्] 1. प्रत्याख्यान करना, निकाल बाहर करना, रद्द कर देना—निरा करणविक्लवा शा० ६, 2. निर्वासन 3. अवबाधा, विरोध, प्रतिरोध, अस्वीकृति 4. खण्डन, उत्तर 5. तिरस्कार 6. यज्ञ के मुख्य कर्तव्यों की उपेक्षा 7. विस्मृति।

निराकरिष्णु (वि०) [निर्+आ+कृ+इष्णुच्] 1. प्रत्या-ख्यान करने वाला, बाहर निकालने वाला, निकाल बाहर करने वाला—रघु० १४।५७ 2. विघ्न डालने वाला, बाधक 3. ठुकराने वाला, तिरस्कर्ता 4. किसी को किसी वस्तु से वंचित करने की चेष्टा करने वाला।

निराकुल (वि०) [निर्+आ+कुल्+क] 1. भरा हुआ, व्याप्त, ढका हुआ अलिकुलमकुलकुसुममधुनि-राकुलबकुलकलापे गीत० १ 2. दृढ़ी—दे० 'निर्' के अन्तर्गत भी।

निराकृतिः (स्त्री०) निराकिया [निर्+आ+कृ+क्तिन्, निर्+आ+कृ+श+टाप्] 1. प्रत्याख्यान, निष्का-सन, अस्वीकरण 2. इंकार 3. अवबाधा, विघ्न, रुका-वट, हस्तक्षेप विरोध, प्रतिरोध।

निराम (वि०) [निष्कृतः रोगो यस्मात् प्रा० ब०] उत्कण्ठा-रहित, जिसमें जोश न रहे।

निराविष्ट (वि०) [निर्+आ+दिश्+क्त] जो ऋण वापिस कर दिया गया हो।

निरामालुः [मि+रम्+आलुच्] कैथ का वृक्ष।

निरासः [निर्+अस्+घञ्] 1. प्रक्षेपण, निर्वासन, बाहर फेंक देना, हटाना 2. उगलना 3. निराकरण 4. विरोध।

निरिंगिणी,—नी [निः निभृतं अनभिङ्गति प्राप्नोति—निर्+इंग्+इनि+ङीष्] परदा, घूंघट।

निरीक्षणम्, निरीक्षा [निर्+ईक्ष्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. दृष्टि 2. देखना, ध्यान देना, नजर डालना, अवलोकन करना 3. ढूंढना, खोजना 4. विचार, खयाल,—निरीक्षया की बाबत, के विषय 5. आशा, प्रत्याशा 6. ग्रहदशा।

निरीषः, षम् [निर्+ईष्+(पृ)+क] हल का फाल।

निरुक्त (वि०) [निर्+वच्+क्त] 1. अभिहित, उच्चरित, अभिव्यक्त, परिभाषित 2. उच्चस्वर से बोला हुआ, स्पष्ट,—**क्तम्** 1. व्याख्या, निर्वचन, व्युत्पत्ति-सहित व्याख्या 2. छः वेदांगों में एक जिसमें अप्रचलित शब्दों की व्याख्या की गई है, विशेषकर वैदिक शब्दों की—नाम च धातु जमाह निरुक्ते—नि० 3. यास्क द्वारा निघण्टु पर किया गया भाष्य।

निरुक्तिः (स्त्री०) [निर्+वच्+क्तिन्] 1. व्युत्पत्ति, शब्दों की व्युत्पत्तिसहित व्याख्या 2. (अलं० शा० में) एक काव्यालंकार जिसमें शब्द की व्युत्पत्ति की मनमानी व्याख्या की जाय, परिभाषा इस प्रकार है—निरुक्तियोगतो नाम्नामन्यार्थत्वप्रकल्पनम्, ईदृशीयंचरि-तैजनि सत्यं दोषाकरो भवान्—चन्द्रा० ५।१६८, (दोषाकरः=दोषाणामाकरः)।

निरुच्छ्वास (वि०) [निर्+उद्+श्वस्+क्विप्+कन्, ह्रस्वः] 1. अत्यंत आतुर, 2. उत्सुकतारहित, उदासीन।

निरुद्ध (भू० क० कृ०) [नि+रुध्+क्त] 1. अवबाधित, प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, नियन्त्रित, दमन किया गया—उत्तर० १।२७ 2. संसीमित, बंदीकृत। सम०—कंठ (वि०) जिसका सांस रुक गया हो, दम घुट गया हो,— गुदः मलद्वार का अवरोध।

निरूढ (वि०) [नि+रुह्+क्त] परंपरागत, प्रचलित, रूढ़ (शब्द का अर्थ—विप० यौगिक अर्थात् व्युत्प-त्यर्थ) शौनं काचिदथकाङ्क्षित निरूढा सैव सा चलति यत्र हि चित्तम्—नै० ५।५७ 2. अविवाहित,—**ढः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१. अन्तर्निधान, न्यास (जैसा कि "लाल" में 'लालिमा')। सम०—लक्षणा शब्द का वह गौण प्रयोग जो वक्ता के विशेष आशय या विवक्षा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके स्वीकृत या लोकरूढ़ प्रचलन पर आधारित है।

निरूढिः (स्त्री०) [नि+रुह्+क्तिन्] 1. प्रसिद्धि, ख्याति 2. जानकारी, परिचय, प्रवीणता नृपविश्वासु निरूढिमागता--किरा० २।६ 2. संपुष्टि।

निरूपणम्,-पा [नि+रूप्+णिच्+ल्युट्; स्त्रियां टाप् च] 1. रूप, आकृति 2. दृष्टि, दर्शन 3. ढूंढना, खोजना 4. निश्चयन, अन्वेषण, निर्धारण 5. परिभाषा।

निरूपित (भू० क० कृ०) [नि+रूप्+णिच्+क्त] 1. देखा गया, खोजा गया, चिह्नित, अवलोकित 2. नियत, चुना हुआ, निर्वाचित 3. विवेचन किया गया, विचार किया गया 4. निश्चय किया गया, निर्धारित।

निरूहः [नि+रुह्+घञ्] 1. वस्तिकर्म का एक प्रकार 2. तर्क, युक्ति 3. निश्चितता, निश्चय 4. वाक्य जिसमें न्यूनपद न हो, संपूर्ण वाक्य।

निर्ऋतिः [निर्+ऋ+क्तिन्] 1. क्षय, नाश, विघटन 2. संकट, अनिष्ट, विपदा, विपत्ति--सा हि लोकस्य निर्ऋतिः—उत्तर० ५।३० 3. अभिशाप, आक्रोश 4. मृत्यु, मृत्युमान् विनाश, मृत्यु या विनाश की देवी, दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ११।११९।

निरोधः, निरोधनम् [नि+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1. कैद करना, रोधागार में रखना, हवालात में रखना—मनु० ८।२१०,३७५ 2. घेरना, छेक देना अमर० ८७ 3. प्रतिबंध, रोक, दमन, नियंत्रण - योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः—योग०, कु० ३।४८ 4. रुकावट, अवरोध, विरोध 5. चोट पहुँचाना, दण्ड देना, क्षति पहुँचाना 6. क्षय, विनाश 7. अरुचि, नापसंदगी 8. निराशा, भग्नाशा।

निर्गः [निर्+गम्+ड] देश, प्रदेश, स्थान।

निर्गंधनम् [निर्+गंध्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्गमः [निर्+गम्+अप्] 1. बाहर जाना, चले जाना --रघु० ११।३ 2. विदायगी, ओझल होना—रघु० १९।४६ 3. द्वार, मार्ग, निकास --कथमस्यवाप्तनिर्गमः प्रवेशो--का० १५९ 4. निष्क्रमण, बाहर जाने का द्वार।

निर्गमनम् [निर्+गम्+ल्युट्] बाहर निकलना या चले जाना।

निर्गुः [निर्+गुह्+क्त] वृक्ष का कोटर।

निर्ग्रंथनम् [निर्+ग्रन्थ्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्घटः, टम् [निर्+घट्+घञ्] 1. शब्दावली, शब्द संग्रह 2. सूचीपत्र।

निर्घर्षणम् [निर्+घृष्+ल्युट्] रगड़, टक्कर।

निर्घातः [निर्+हन्+घञ्] 1. विनाश 2. बवंडर, हवा का प्रचंड झोंका, आंधी 3. हवा की सनसनाहट, आकाश में हवा के झोंकों के टकराने का शब्द निर्घातैः कुंजलीनाऽऽ जिघांसुरयोनिर्घोषैः क्षोभयामास सिंहान्—रघु० ९।६४, मनु० १।३८, ४।१०५, ७, याज्ञ० १।२४५, (वायना सिंहतो वापूर्गगनाच्च पतत्यधः, प्रचंडश्चोरनिर्घोषो निर्घात इति कथ्यते) 4. भूकंप 5. वज्रपात—अहह दारुणो दैवनिर्घातः—उत्तर० २।

निर्घातनम् [निर्+हन्+णिच्+ल्युट्] बलपूर्वक बाहर निकालना, प्रकाशित करना।

निर्घोषः [निर्+घुष्+घञ्] 1. ध्वनि ऐणी० ४, रघु० १।३६ 2 निनाद, खड़खड़ाहट, टनक ज्यानिर्घोषैः क्षोभयामास सिंहान् रघु० ९।६४, मारुतीनिर्घोषः--उत्तर० ३।

निर्जयः, निर्जितिः (स्त्री०) [निर्+जि+अच्, क्तिन् वा] पूरी विजय, वशीकरण, पराजय करना।

निर्झरः,—रम् [निर्+झृ+अप्] झरना, जल प्रपात, घनघोरवृष्टि, वारिप्रवाह, पहाड़ी झरना शीतो निर्झरवारिसंगमसुभगः--नागा० १, रघु० २।१३, शा० २।१७, २१, ४।६, ५: 1. मूसी अजाना 2. हाथी 3. सूर्य का घोड़ा।

निर्झरिन् (पुं०) निर्झर+इनि] पहाड़।

निर्झरिणी, निर्झरी [निर्झरिन्+ङीप्, निर्झर+ङीष्] नदी, पहाड़ी झरना सखजनसुखसूरिस्रोतसो निर्झरिण्याः उत्तर० २।२०।

निर्णय [निर्+नी+अच्] 1. दूरीकरण, हटाना 2. पूर्ण निश्चय, फैसला, प्रत्यक्षण, निर्धारण निश्चीकरण --संदेहनिर्णयो नास्ति यत्र० १।२७, मनु० ८।३०१, ४०२, ९।२५८, याज्ञ० २।१० हृदयं निर्णयमेव धावति —कि० २।२९ 3. घटना, घटकर, उपसंहार, (तर्क० में) प्रदर्शन 4. विचारविमर्श, गवेषणा, विचारण 5. किसी विचारपति द्वारा किसी विवाद के विषय में स्थिर किया गया मत, व्यवस्था, फैसला—सर्वज्ञस्याप्येकाकिनो निर्णयाभ्युपगमो दोषाय-- मालवि० १। सम०—पादः निर्णय की आज्ञप्ति, फरमान, व्यवस्था (विधि में)।

निर्णायक (वि०) [निर्+नी+णिच्+ण्वुल्] निर्णय देने वाला, अन्तिम फैसला करने वाला।

निर्णायनम [निर्+नी+ल्युट्] 1. निश्चय करना 2. हाथी के कान का आवरण कोष।

निर्णिक्त (भू० क० कृ०) [निर्+निज्+क्त] धोया हुआ, शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ रघु० १७।२२।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्णिक्तिः (स्त्री०) [निर्+निज्+क्तिन्] 1. धुलाई 2. प्रायश्चित्त, परिशोधन महावी० ४।२५ ।

निर्णेकः [निर्+निज्+घञ्] 1. धुलाई, सफाई 2. संक्षालन 3. परिशोधन, प्रायश्चित ।

निर्णेजकः [निर्+निज्+ण्वुल्] धोबी ।

निर्णेजनम् [निर्+निज्+ल्युट्] 1. संक्षालन 3. प्रायश्चित्त, परिशोधन (किसी अपराध के लिए) ।

निर्णोदः [निर्+निद्+घञ्] दूर करना, निर्वासन ।

निर्दय,—इ (वि०) [=निर्दय पृषो० साधु:] 1. निष्करुण, नृशंस, निर्मम 2. दूसरों की त्रुटियों पर हर्ष मनाने वाला 3. ईर्ष्यालु 4. गालीगलौज करने वाला, पिशुन 5. व्यर्थ, अनावश्यक 6. प्रचंड 7. पागल, उन्मत्त ।

निर्दरः,—रि: [निर्+दृ+अप्, इन्+वा] कन्दरा गुफा ।

निर्दलनम् [निर्+दल्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, तोड़ना, नष्ट करना ।

निर्दहनम् [निर्+दह्+ल्यु] जलाना, दग्ध करना ।

निर्दातृ (पु०) [निर्+दा (दो)+तृच्] 1. निराने वाला 2. दाता 3. किसान, खेती काटने वाला ।

निर्दारित (भू० क० कृ०) [निर्+दृ+णिच्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, विदीर्ण 2. खोला हुआ, काट कर खोला हुआ —शि० १८।२८ ।

निर्दिग्ध (भू० क० कृ०) [निर्+दिह्+क्त] 1. लेप किया हुआ, मालिश की हुई 2. सुपोषित, स्थूलकाय, हृष्ट पुष्ट ।

निर्दिष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+दिश्+क्त] 1. इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, संकेतित 2. विशिष्ट, विशिष्टीकृत 3. वर्णित 4. अभिन्यस्त, नियत 5. दृष्टांतपूर्वक कहा हुआ, प्रकथित 6. निश्चय किया हुआ निर्धारित 7 आदिष्ट ।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] 1. इशारा करना, दिखलाना, संकेत करना 2. आदेश, हुक्म, निदेश रघु० १२।१७ 3. उपदेश, अनुदेश 4. बतलाना, कहना, घोषणा करना 5. विशेषता करना, विशिष्टीकरण, विशिष्टता, विशिष्टोल्लेख— अयुक्तार्थं निर्देशः—महा०, भग० १७।३३ 6. निश्चय 7 पड़ोस, सामीप्य ।

निर्धारः, निर्धारणम् [निर्+धृ—णिच्+घञ् ल्युट् वा] 1. बहुतों में से एक को विशिष्ट करना, या पृथक् करना—यत्तदश्च निर्धारणम्—पा० २।३।४१, विक्रम० ३।९२ 2. निश्चय करना, फैसला करना, निर्णय करना 3 विशिष्टता, निश्चय ।

निर्धारित (भू० क० कृ०) [निर्+धृ+णिच्+क्त] निर्णीत किया गया, निश्चय किया गया, स्थिर किया गया, निश्चित किया गया, दे० 'निस्' पूर्वक धृ ।

निर्धूत (भू० क० कृ०) [निर्+धू+क्त] 1. हिलाया गया, हटाया गया रघु० १२।५७ 2. परित्यक्त, अस्वीकृत 3. वंचित, रहित 4. टाला गया 5. निराकृत 6. नष्ट किया गया, (दे० 'निस्' पूर्वक 'धू') ।

निर्धौत (भू० क० कृ०) [निर्+धाव्+क्त] 1. धो दिया गया, रघु० ५।४३ 2. चमकाया गया, उज्ज्वल ।

निर्बंधः [निर्+बंध्+घञ्] 1. आग्रह, हठ, जिद, दुराग्रह निबंधसंज्ञालक्ष्या (गुरुणा)—रघु० ५।२१, कु० ५।६६ 2. वृद्धाग्रह, भारी मांग, अत्यावश्यकता [निर्बंधपृष्ट: स जगाद—रघु० १४।३२, अत्र एव खलु निबंधः—श० ३ 3. ठिठाई 4. दोषारोपण 5. कलह, झगड़ा ।

निर्बर्हण—दे० निबर्हण ।

निर्भट (वि०) [निर्+भट्+अच्] कठोर, दृढ़ ।

निर्भर्त्सनम्,—ना [निर् +भर्त्स्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. धमकी, घुड़की,—शि० ६।६२ 2. गाली, झिड़की, बुरा-भला कहना, दोषारोपण 3. दुर्भावना 4. लाल रंग, लाल ।

निर्भेदः [निर्+भिद्+घञ्] 1. फट जाना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना 2. फटन, दरार 3. स्पष्ट उल्लेख या घोषणा—मालवि० ४ 4. नदी का तल 5. किसी बात का निर्णय ।

निर्मथः, निर्मंथन, निर्मथ्य, निर्मंथन [निर्+मंथ्+घञ्, ल्युट् वा, निर्+मंथ्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना, मथना, हिलाना 2. दो अरणियों (लकड़ी के टुकड़ों) को आग पैदा करने के लिए आपस में रगड़ना, अरणि ।

निर्मथ्य (वि०) [निर्+मंथ्+ण्यत्] 1. हिलाये जाने या मथे जाने के योग्य 2. (आग की भांति) रगड़ से पैदा करने के योग्य—थ्यम् अरणि (वह लकड़ी जिसे रगड़ कर आग पैदा की जाती है) ।

निर्माणम् [निर्+मा+ल्युट्] 1. मापना, नाप—यत्तच्चाध्वकालनिर्माणम्—पा० २।३।२८ भाष्य 2. माप, फैलाव, विस्तार अयमप्राप्तनिर्माणः (बालः)—रामा० 'पूर्ण विकास को अभी प्राप्त नहीं हुआ' 3. उत्पादन, रचना, निर्मिति, ईदृशो निर्माणभागः परिणतः—उत्तर० ४ 4. सृष्टि, रचित वस्तु रूप निर्माणमेवहि तदादरलालनीयम्—मा० ९।४९ 5. रूप, बनावट, आकृति —शरीरनिर्माणशिल्पिनः नवरूपानुभावः—महावी० १ 6. रचना, कृति) भवन—णा उपयुक्तता, औचित्य, सुरीति ।

निर्मलिम्नम् [निर् +मल् +क्यन्] 1. शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलंकता 2. किसी देवता के चढ़ाये का अवशेष, फूल आदि—निर्मलियंजिलतपुण्डाक्षनिकरे का पट्टपदाना रीतिः—शृंगार० १० 3. देवता पर समर्पित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करने के पश्चात् मुर्झाये हुए फूल—निर्माल्यैरथ ननूतेऽन्धीरिवानाम्—शि० ८।६० 4. अवशेष ।

निर्मितिः (स्त्री०) [निर्+मा+क्तिन्] उत्पादन, सृजन, निर्माण, कलात्मक वस्तु की रचना—नवरसरुचिरां निर्मितिमाददती भारती कवेर्जयति ।

निर्मुक्त (भू० क० कृ०) [निर्+मुच्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ, स्वतंत्र किया हुआ—रघु० १।४६ 2. सांसारिक वस्तु की रचना—नवरसरुचिरां निर्मितिमाददती भारती कवेर्जयति । 3. वियुक्त, अलग किया हुआ,—क्तः साँप जिसने हाल ही में अपनी केंचुली छोड़ी हो ।

निर्मूलनम् [निर्+मूल्+णिच्+ल्युट्] उच्छेदन, जड़ से उखाड़ फेंकना, उन्मूलन (आल० भी) कर्मनिर्मूलनश्रमः—भर्तृ० ३।७३ ।

निर्मृष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+मृज्+क्त] पोंछा गया, धोया गया, रगड़ा गया—निर्मृष्टरागोऽधरः—सा० द० १ ।

निर्मोकः [निर्+मुच्+घञ्] 1. मुक्त करना, स्वतंत्र करना 2. खाल, चमड़ी, विशेष रूप से केंचुली—रघु० १६।१७, शि० २०।४७ 3. कवच, जिरहबख्त 4. आकाश, अन्तरिक्ष ।

निर्मोक्षः [निर्+मोक्ष्+घञ्] मुक्ति, छुटकारा—रघु० १०।२ ।

निर्मोचनम् [निर्+मुच्+ल्युट्] मुक्ति, छुटकारा ।

निर्यागम् [निर्+या+ल्युट्] 1. निष्क्रमण, बाहर जाना, प्रस्थान करना, विदायगी 2. अन्तर्धान, ओझल 3. मरण, मृत्यु 4. चिन्तन मुक्ति, परमानंद 5. हाथी की आँख का बाहरी किनारा आरणं निर्याणभागेऽभिघ्नन्—दश० १७, निर्याणनिर्भेदसृजं चलितं निषादी—शि० ५।४१ 6. पशुओं के पैर बाँधने की रस्सी, पैंकड़ा—निर्याणहस्तस्य पुरो दुधुक्षतः—शि० १२।४१ ।

निर्यातनम् [निर्+यत्+णिच्+ल्युट्] 1. वापिस करना, लौटाना, अर्पण करना, (धरोहर) प्रत्यर्पण करना 2. ऋणपरिशोध 3. उपहार, दान 4. प्रतिहिंसा, बदला (जैसा कि 'वैर निर्यातन') 5. वध, हत्या ।

निर्यातिः (स्त्री०) [निर्+या+क्तिन्] 1. निकलना, प्रस्थान 2. इस जीवन से विदा लेना, मरण, मृत्यु ।

निर्यामिः [निर्+यम्+णिच्+घञ्] मल्लाह, कर्णधार या चालक, नाविक, नाद जैसे वाला ।

निर्यासः, सम् [निर्+यस्+घञ्] वृक्षों या पौधों का निःश्रवण, गोंद, रस, राल—शालनिर्यासगन्धिभिः—रघु० १।३८, मनु० ५।६ 2. अर्क, सार, काढ़ा 3. कोई गाढ़ा तरल पदार्थ ।

निर्यूहः [निर्+यूह्+क] पृथो० साधुः] 1. कंगूरा, मीनार, बुर्ज या कलश (जो स्तम्भ या दरवाजों पर बनाया जाता है) वितर्दिनिर्यूहविटंकनीडः—शि० ३।५५, (यहाँ मल्लिनाथ इसका अर्थ लिखते हैं—"मत्तवारणाख्यः उपाश्रयः" और 'वैजयन्ती' का उद्धरण देते हैं, संभवतः इसका नाम इसके हाथी के रूप की समानता के कारण पड़ा है) चारद्वारतोरणनिर्यूहा—रामा० 2. शिरोभूषण, चूड़ामणि, मुकुट 3. दीवार में लगी खूंटी 4. दरवाजा, फाटक 5. सत्व, काढ़ा ।

निर्लुञ्चनम् [निर्+लुञ्च्+ल्युट्] उखाड़ना, फाड़ना, छीलना ।

निर्लुण्ठनम् [निर्+लुण्ठ्+ल्युट्] 1. लूटना, लूटखसोट 2. फाड़ डालना ।

निर्लेखनम् [निर्+लिख्+ल्युट्] 1. खुरचना, खरोंचना, नोचना 2. खुरचनी, रांपी ।

निर्व्वयनी [निर्+ली+ल्युट्, पृषो० साधुः] साँप की केंचुली ।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] 1. उक्ति, उच्चारण 2. लोकप्रसिद्ध उक्ति, लोकोक्ति 3. व्युत्पत्तिसहित, व्युत्पत्ति 4. शब्दावली, शब्दसूची ।

निर्वपणम् [निर्+वप्+ल्युट्] 1. उडेल देना, भेंट करना 2. विशेष रूप से पितरों को पिंडदान, तर्पण—मनु० ३।२४८, २६० 3. उपहार प्रदान करना 4. पुरस्कार, दान ।

निर्वर्णनम् [निर्+वर्ण्+ल्युट्] 1. नजर डालना, देखना दृष्टि 2 चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक अवलोकन करना ।

निर्वर्तकः (वि०) (स्त्री०—टिका) [निर्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] पूरा करने वाला, निष्पन्न करने वाला, समाप्त करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, सम्पन्न करने वाला ।

निर्वर्तनम् [निर्+वृत्+णिच्+ल्युट्] निष्पत्ति, पूर्ति, कार्यान्वित ।

निर्वहणम् [निर्+वह्+ल्युट्] 1. अन्त, पूर्ति—शि० १४।६३ 2. निर्वाह करना, अन्त तक निबाहना, जीवित रखना—मानस्य निर्वहणम्—अमरु 3. ध्वंस, सर्वनाश ।. (नाटकों में) उपकांति, वह अन्तिम अवस्था जब कि महान् परिवर्तन का अन्तिम क्षण हो, नाटक या उपन्यास आदि का उपसंहार—तत्रैव निमित्तं कुरु—विकृतनाटकस्येव अस्यमुखेऽप्यनिर्वहणे—मुद्रा० ६ ।

निर्वाण (भू० क० कृ०) [निर्+वा+क्त] 1. फूंक मार कर बुझाया हुआ, (आग या दीपक की भाँति) बुझाया—मया—निर्वाणदैन्यदलनः प्रशमप्रदोषाम्—वेणी० १।७, कु० २।२३ 2 खोया हुआ, लुप्त 3. मृत, मरा हुआ 4. जीवन से मुक्त 5. (सूर्य की भाँति) अस्त 6. शान्त, चुपचाप, 7. पूरा हुआ, पक्व 1. बुझाना—१।१३१, अनेनिर्वाणमाप्नोति विना-ग्निरिवानलः—महा० 2. दृष्टि से ओझल होना, लोप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होना 3. विघटन, मृत्यु 4. माया या प्रकृति से मुक्ति पाकर परमात्मा से मिलन, शाश्वत आनन्द—निर्वाणमपि मन्येऽहमन्तराय जयश्रियः-कि० ११।६९, रघु० १२।१ 5. (बौद्ध-विषयक) सांसारिक जीवन से व्यक्ति का पूर्ण निर्वाण, बौद्धों की मोक्षप्राप्ति 6. पूर्ण और शाश्वत शान्ति, सदा के लिए विश्राम—कि० १८।३९ 7. पूर्ण संतोष या आनन्द, ब्रह्मानन्द, परमानन्द—अयं लब्ध्वा नेत्रनिर्वाणम् --श० ३, मालवि० ३।१, शि० ४।२३, विक्रम० ३।२१ 8. विश्राम, विराम 9. शून्यता 10. सम्मिलन, साहचर्य, संगम 11. हस्तिस्नान—दे० 'अनिर्वाण' रघु० १०।१ में 12. विज्ञान में शिक्षण। सम०—भूयिष्ठ (वि०) प्रायः आंखों से ओझल या लुप्त —निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं संधुक्षयतीव वपुर्गुणेन —कु० ३।५२,—मस्तक: मुक्ति, मोक्ष।

निर्वाहः [निर्—वह्+घञ्] 1. दोष रोपण, दुर्वचन 2. बदनामी, लोकापवाद, परिवाद—रघु० १४।३४ 3. शास्त्रार्थ का निर्णय 4. वाद का अभाव।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] दे० 'निर्वपणम्'।

निर्वापणम् [निर्+वप्+णिच्+ल्युट्] 1. चढ़ावा, आहुति, पिंडदान या श्राद्ध 2. भेंट, दान 3. बुझाना, गुल करना 4. उड़ेलना, बखेरना, (बीज का) बोना 5. पुरस्करण, प्रदान 6. निराकरण, उपशमन, शान्ति —कर्तव्यानि दुःखितदुःखनिर्वापणानि—उत्तर० ३ 7. विनाश 8. वध, हत्या 9. ठण्डा करना, विश्रांति करना—शरीरनिर्वापणाय —श० ३ 10. प्रशीतल और ठंडा उपचार।

निर्वासः, निर्वासनम् [निर्+वस्+घञ्, निर्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. निकालना, निर्वासन करना, देशनिकाला देना 2. वध, हत्या।

निर्वाहः [निर्+वह्+घञ्] 1. निबाहना, निष्पन्न करना, संपन्न करना 2. सम्पूर्ति, अन्त 3. अन्तक निबाहना, सहारा देना, दृढ़तापूर्वक डटे रहना, धैर्य—निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८ 4. जीवित रहना 5. पर्याप्ति, यथेष्ट व्यवस्था, अक्षयता 6. वर्णन करना, बयान करना।

निर्वाहणम् [निर्+वह्+णिच्+ल्युट्] दे० 'निर्वहण'।

निर्विण्ण (भू० क० कृ०) [निर्+विद्+क्त] 1. निर्वेदयुक्त, खिन्न, मुच्छ० १।१४ 2. भय या शोक से अभिभूत 3. शोक से कृश 4. दुःखित, पतित 5. किसी वस्तु से घृणा—मत्स्याशनस्य निर्विण्णः—पंच० १ 6. क्षीण, मुरझाया हुआ 7. विनम्र, विनीत।

निर्विष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+विश्+क्त] 1. उपभुक्त, अवाप्त, अनुभूत 2. पूर्णतः उपभुक्त—रघु० १२।१, 3. पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त—निर्विष्टं वैश्यशूद्रयोः—गौ० 4. विवाहित 5. व्यस्त।

निर्वृत (भू० क० कृ०) [निर्+वृ+क्त] 1. संतृप्त, संतुष्ट, प्रसन्न, निवृत्त स्वः—शि० २।४ 2. निश्चित, वेफ़िक्र, आराम में 3. विश्रान्त, समाप्त।

निर्वृतिः (स्त्री०) [निर्+वृ+क्तिन्] 1. संतृप्ति, प्रसन्नता, सुख, आनन्द, वजति निर्वृतिमेकपदे मनः—विक्रम० २।९, रघु० ९।३८, १२।६५, शि० ७।१९ शि० ४।६४, १०।२८, कि० ३।८ 2. शान्ति, विश्राम, विश्रान्ति 3. मुक्ति, निर्वाण—द्वारं निर्वृतिसदनो विजयते कृष्णेतिवर्णद्वयम्—भामि० ४।१४ 4. संपूर्ति, निष्पत्ति 5. स्वतंत्रता 6. अन्तर्धान होना, मृत्यु, विनाश।

निर्वृत्त (भू० क० कृ०) [निर्+वृत्+क्त] निष्पन्न, अवाप्त, सम्पन्न।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) [निर्+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पन्नता—मनु० १२।१।

निर्वेदः [निर्+विद्+घञ्] 1. घृणा, जुगुप्सा 2. अतितृप्ति, छक जाना 3. विषाद, निराश, अवसाद—परिभवानिर्वेदमापद्यते—मृच्छ० १।१४ 4. दीनता 5. शोक 6. विरक्ति—भग० २।५२, (एक प्रकार की भावना जिससे शान्तरस का उदय होता है—काव्य०—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः 7. स्वाभिमान, दीनता (तैंतीस संचारिभावों में से एक), तु० रस० में दी गई परिभाषा से, निम्नांकित दृष्टांत दिया गया है -यदि लक्ष्मण सा मृगेक्षणा न मदीक्षासरणिं समेष्यति, अमुना धनुषा जनौघवित्तेन में जगतां वा विफलेन किं फलम्।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1. लाभ, प्राप्ति 2. मजदूरी, भाड़ा, नौकरी 3. भोजन, उपभोग, वेतन 4. भुगतान की अदायगी 5. प्रायश्चित्त, परिशोधन 6. विवाह 7. मूर्छित होना, बेहोश होना 8. छिद्र, रंध्र।

निर्व्यूढ (भू० क० कृ०) [निर्+वि+वह्+क्त] 1. पूरा किया गया, समाप्त किया गया 2. उद्गतया उद्दित, वर्धित, विकसित-मुद्रसेनिर्व्यूढविस्मय—मा० ७, निर्व्यूढसौहृदभरेति—६।१७, (उपचित-जगद्वर) 3. प्रतिसमर्थित, पूर्णतः प्रदर्शित, सत्यप्रमाणित, श्रद्धापूर्वक या अन्त तक पालन किया गया-हा तात जटायो निर्व्यूढस्तेऽपत्यस्नेहः—उत्तर० 3. निर्व्यूढः संभावनाभारः बुद्धरक्षितया —मा० ८, निर्व्यूढं तातस्य कापालिकव्रतम्—मा० ४।९, १०, महावी० ७।८ 4. परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

निर्व्यूढिः (स्त्री०) [निर्+वि+वह्+क्तिन्] 1. अन्त, पूर्ति 2. शिखर, उच्चतम बिंदु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्व्यूहः [निर्+वि+वह्+घञ्] दे० 'निर्यूह' 1. कमरा 2. शिरस्त्राण, कलगी 3. दरवाजा, फाटक 4. दीवार में लगी खूंटी या ब्रैकेट 5. काढ़ा।

निर्हरणम् [निर्+हृ+ल्युट्] 1. शव का दाहसंस्कार के लिए ले जाना, शव को चिता पर रखना 2. ले जाना, बाहर निकालना, निकोहना, हटाना 3. जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना।

निर्हारः [निर्+हृ+घञ्] मलोत्सर्ग, मलत्याग।

निर्हारः [निर्+हृ+घञ्] 1. ले जाना, दूर करना, हटाना 2. बाहर खींचना, उखाड़ना 3. जड़ से उखाड़ना, विनाश 4. मृतक शरीर को दाह संस्कार के लिए ले जाना 5. निजी धन संचय, निजी जमा —मनु० ९।१९९ 6. मलत्याग, (वि० आहार)।

निर्हारिन् (वि०) [निर्+हृ+णिनि]। पालन करने वाला 2. व्याप्त, (गंधादिक) विस्तारशील 3. गंधयुक्त।

निर्हृतिः (स्त्री०) [निर्+हृ+क्तिन्] मार्ग से हटाना, दूर करना।

निर्ह्रादः [निर्+ह्लद्+घञ्] ध्वनि,—रघु० १०।१।

निलयः [नि+ली+अच्] 1. छिपने का स्थान, (जानवरों का) भट या मांद, (पक्षियों का) घोंसला—शि० ९।४ 2. आवास, निवास, घर, गृह (प्रायः समास के अन्त में) रहने वाला, वास करने वाला 3. अस्त होना, छिपना- दिनांते निलयाय गंतुम्-रघु० २।१५, (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है)।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] 1. किसी स्थान पर बसना, उतरना 2. धारणगृह, घर, गृह, आवास।

निलिंपः [नि+लिंप्+घञ्, कर्म०+टाप्, इत्व] गाय।

निलीन (भू० क० कृ०) [नि+ली+क्त] 1. पिघला हुआ या गला हुआ 2. बन्द या लिपटा हुआ, गुप्त 3. अन्तर्ग्रस्त, घिरा हुआ, परिवलयित 4. ध्वस्त, नष्ट 5. परित्यक्त, रूपान्तरित (दे० नि पूर्वक ली)।

निवचने (अव्य०) [प्रा० स०] न बोलना, बोलना बन्द करके, जिह्वा को रोक कर ('कृ' के साथ प्रयुक्त होने पर 'मौनं' के रूप में या उपसर्ग के रूप में अथवा स्वतंत्र शब्द समझा जाता है—उदा० निवचनेकृत्य, निवचने कृत्वा—पा० १।४।७६)।

निवपनम् [नि+वप्+ल्युट्] 1. बिखेरना, उडेलना, नीचे फेंकना 2. बोना 3. पितरों के नाम पर चढ़ावा, मृतपूर्वजों को लक्ष्य करके दी गई आहुति- को नु कुले निवपनानि नियच्छतीति यः ९।२४।

निवरा [नि+वृ+अप्+टाप्] अक्षतयोनि, अविवाहित कन्या।

निवर्तक (वि०) [नि+वृत्+ण्वुल्] 1. वापिस देने वाला, आने वाला या पीछे मुड़ने वाला 2. ठहरने वाला, पकड़ने वाला 3. उन्मूलक, निष्कासित करने वाला, मिटाने वाला 4. वापिस लाने वाला।

निवर्तन (वि०) [नि+वृत्+ल्युट्] 1. लौटाने वाला 2. पीछे मुड़ने वाला, ठहरने वाला—नम् वापिस होना, मुड़ना, या वापिस आना, लौटना—इह हि पतताः नास्त्यालंबो न चापि निवर्तनम्—शा० ३।२ 2. न घटने वाला, बन्द होने वाला 3. रुकने वाला, परहेज करने वाला (अपा० के साथ) 4. काम से हाथ खींचना, निष्क्रियता (विप० प्रवर्तन)—काम० १।२८ 5. वापिस लाना—अमर ८४ 6. पश्चात्ताप करना, सुधार करने की इच्छा 7. बीस बांस लम्बी भूमि।

निवसतिः (स्त्री०) [नि+वस्+अतिच्] घर, आवास, आवासस्थान, वासगृह, निवासस्थान।

निवसथः [नि+वस्+अथच्] गांव, ग्राम।

निवसनम् [नि+वस्+ल्युट्] 1. गृह, आवास, निवासस्थान 2. परिधान, वस्त्र, अन्तर्वस्त्र—शि० १०।६०, रघु० १९।४१।

निवहः—भर्तृ० ३।३७, इसी प्रकार घनैर्दैत्य० कपोत० आदि 2. सात पवनों में से एक पवन का नाम।

निवात (वि०) [निर्गतः वातो यस्मिन् ब० स०] 1. से सुरक्षित, जहाँ वायु न हो, शान्त—रघु० १९।४२ 2. जिसे चोट न लगी हो, क्षति न पहुँची हो, बाधा रहित 3. सुरक्षित, अभय 4. सुसज्जित, दृढ़ कवच धारण किए हुए,—तः 1. धारणगृह, निवासस्थान, आश्रयागार 2 अकाट्य कवच,—तम् 1. वायु से सुरक्षित स्थान—निवातनिष्कंपमिव प्रदीपम्—कु० ३।४८, कि० १४।३७, रघु० १३।५२, ३।१७, भट्ट० ६।१९ 2 वायु का अभाव, शान्त, निस्तब्धता—रघु० १२।३६ 3. निष्कंटक स्थान 4. दृढ़ कवच।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1. बीज, अनाज, बीज के रूप में बोये हुए दाने 2. मृतक पूर्वजों के पितरों को या दूसरे बन्धुओं को भेंट, जलतर्पण (श्राद्ध के अवसर पर) एको निवापसलिलं पितृणीय वृक्तम्—मा० १।४०, निवापदानिभिः—रघु० ८।८६, निवापांजलयः पितृणाम्—५।८, १५।९१, मुद्रा० ४।५ 3. भेंट या उपहार।

निवारः, निवारणम् [नि+वृ+णिच्+अच्, ल्युट् वा] 1. दूर रखना, रोकना, हटाना—देशनिवारणैरहं —रघु० ७।५ 2. प्रतिषेध, बाधा।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1. रहना, बसना, निवास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना 2. घर, आवास, वासगृह, विश्राम-स्थान – निवासश्चित्तायाः—मृच्छ० १।१५, शि० ४।६३, ५।२१, भग० ९।१८, मृच्छ० ३।२३ 3. रात बिताना 4. पोशाक, वस्त्र ।

निवासनम् [नि+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. निवासस्थान 2. पड़ाव, डेरा 3. समय बिताना ।

निवासिन् (वि०) [नि+वस्+घिनि] 1. निवास करने वाला, रहने वाला 2. पहनने वाला, वस्त्रों से ढका हुआ कु० ७।२६, (पुं०) निवासी, आवासी ।

निविः (विः) ड (वि०) [नि+विद्+क] 1. निरस्त-त्रास, सघन, मोटा हुआ 2. दृढ़, कसा हुआ, पक्का, निविडो पुरिष्टः—रघु० ९।५८, १९।४४ 3. मोटा, अप्रवेश्य, घना, अभेद्य—रघु० ११।१५ 4. स्थूल, मोटा 5 महाकाय, विशाल 6. ठेठी नाक वाला ।

निविशेष (वि०) [निर्गतो विशेषो यस्मात् ब० स०] अभिन्न, समान,—षः अन्तर का अभाव ।

निविष्ट [भू० क० कृ०] [नि+विश्+क्त] 1. स्थित, ऊपर बैठा हुआ 3. पड़ाव डाला हुआ—रघु० १०।६८ 3 स्थिर, तुला हुआ 4. संकेन्द्रित, दमन किया हुआ, नियन्त्रित -कु० ५।३१ 5. दीक्षित 6. व्यवस्थित ।

निवीतम् [नि+व्ये+क्त, सम्प्रसारणम्] 1. यज्ञोपवीत पहनना (माला की भांति गले में धारण करना) निवीतं मनुष्याणां प्राचीनावीतं पितृणामुदीतं देवानाम् —जै० ब्रा० 2 धारण किया हुआ जनेऊ, तः, तम् परदा, अवगुंठन, आवरण' दुपट्टा ।

निवृत [भू० क० कृ०] [नि+वृ+क्त] छिपा हुआ, लपेटा हुआ, तः, तम् अवगुंठन, परदा, आवरण ।

निवृतिः (स्त्री०) [नि+वृ+क्तिन्] आवरण, घेरा ।

निवृत्त (भू० क० कृ०) [नि+वृत्+क्त] 1 लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2. गया हुआ, छिपा हुआ 3. रुका हुआ, ठहरा हुआ, विरत 4. सांसारिक कार्यों से परहेज करने वाला, इस संसार से विरक्त, शान्त 5. असदाचरण के लिए पश्चात्ताप 6. समाप्त पूरा, समस्त, दे० नि पूर्वक वृत्,—तम् लौटना । सम० –आत्मन् (पुं०) 1. ऋषि २. विष्णु की उपाधि,– कारण (वि०) बिना किसी अन्य कारण या प्रयोजन के (—णः) धर्मात्मा मनुष्य, सांसारिक इच्छाओं से अप्रभावित, मांस (वि०) जो मांस खाने से परहेज करता है, निवृत्तमांसस्तु जनकः उत्तर० ४,—राग (वि०) जितेन्द्रिय -वृत्ति (वि०) किसी व्यवसाय से उपरत होनेवाला, - हृदय (वि०) हृदय में पछताने वाला ।

निवृत्तिः (स्त्री०) [नि+वृत्+क्तिन्] 1. लौटना, वापिस आना, लौट आना शि० १४।६४, रघु० ४।८७ 2. अन्तर्धान, विराम, उपरति स्थगन—शान्तिनिवृत्तौ —श० ७, रघु० ८।८२ 3. काम से दूर रहना, निष्क्रियता (विप० प्रवृत्ति) 4. परहेज करना, अरुचि —प्राणायामनिवृत्तिः -भर्तृ० ३।३३ 5. छोड़ना, रुकना 6. वैराग्य, सांसारिक कार्यों से उपराम, शान्ति, संसार से वियुक्ति 7. विश्राम, आराम 8. आनन्द, कैवल्य 9. मुकरना, अस्वीकार करना 10. उन्मूलन, प्रतिरोध ।

निवेदनम् [नि+विद्+ल्युट्] 1. बतलाना, कहना, प्रकथन करना समाचार, उद्घोषणा 2. अर्पण करना, सौंपना 3. समर्पण 4. प्रतिविधान 5. चढ़ावा या आहुति ।

निवेद्यम् [नि+विद्+ण्यत्] किसी देवमूर्ति को भोग लगाना – नु० 'नैवेद्य' ।

निवेशः [नि+विश्+घञ्] 1. प्रवेश, दाखला 2. पड़ाव डालना, ठहरना 3. ठहरने का स्थान, शिविर, खेमा सेनानिवेशं तुमुलं चकार -रघु० ५।४९,७।२, शि० १७।४०, कि० ७।२७ 4. घर, आवास, निवास कि० ४।१९ 5. विस्तार, (छाती की) सुडौलता -कि० ४।८ 6. जमा करना, अर्पण करना 7. विवाह करना, विवाह, जीवन में स्थिर होना 8. छाप, नकल 9. सैन्यव्यवस्था 10 आभूषण, सजावट ।

निवेशनम् [नि+विश्—णिच्+ल्युट्] 1. प्रवेश, दाखला 2 ठहरना, पड़ाव डालना 3. विवाह करना, विवाह 4. लेखबद्ध करना, शिला-लेखन 5. आवास, निवास, घर, आवास-स्थान 6. शिविर 7. कस्बा या नगर 8. सांसला ।

निवेष्टः [नि+वेष्ट+घञ्] आवरण, लिफाफा ।

निवेष्टनम् [नि+वेष्ट+ल्युट्] उकना, लिफाफे में बन्द करना ।

निश (स्त्री०) [यह शब्द, कारक की दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् सारी विभक्तियों में 'निशा' शब्द के स्थान में विकल्प से आदेश हो जाता है, पहले पांच वचनों में इसका कोई रूप नहीं होता] 1. रात 2. हल्दी ।

निशामनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1. देखना, अवलोकन करना 2. दर्शन, दृष्टि 3. सुनना 4. जानकार होना ।

निश (घ्न) रणम् [नि+शृ—(णिच्)+ल्युट्] वध, हत्या ।

निशा [नितरां श्यति तनूकरोति व्याप्तान्—शो+क लाशः] 1. रात—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी—भग० २।६९ 2. हल्दी । सम० अवः, - अवनः 1. उल्लू 2. राक्षस, भूत, पिशाच, - अति-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रमः,—कृत्यः,—अन्तः,—अवसानम्, 1. रात बिताना 2. पौ फटना—**अदः**—निशाद, —**अंध** (वि०) जिसे रतौंधा आता हो, रात का अंधा,—**अधीशः,** —**ईशः,**—**नाथः,** —**पतिः,**—**मणिः,**—**रत्नम्** चन्द्रमा, चाँद **अर्धकालः** रात का पूर्वा भाग,—**आख्या,** —**आह्वा** हल्दी, —**आदिः** सायंकालीन प्रकाश, —**उत्सर्गः** रात्रि का अवसान, पौ फटना —**करः** 1. चाँद—कु० ४।१३ 2. मुर्गा 3. कपूर,—**गृहम्** शयनागार, **चर** (वि०) (स्त्री० री, रो) रात में घूमने फिरने वाला, रात को चुपचाप पीछा करने वाला (रः) 1. राक्षस, पिशाच, भूत, प्रेत रघु० १२।६९ 2. शिव का विशेषण 3. गीदड़, 4. उल्लू 5. साँप 6. चकवाक 7. चोर **पतिः** 1. शिव और 2. रावण का विशेषण (री) 1. रात्री 2. रात को निश्चित किये हुए समय पर अपने प्रेमी से मिलने के लिए जाने वाली स्त्री रामसन्मथसंतापेन तापिता दुःसहेन हृदये निशाचरी- रघु० १२।२० (यहाँ पर यह शब्द 'प्रथम अर्थ' के लिए भी प्रयुक्त है) 3. वेश्या, **चर्मन्** (पुं०) अंधकार, **जलम्** ओस, कोहरा, —**दीपिन्** (पुं०) उल्लू, **निशम्** (अव्य०) पूरी रात, सदैव—**पुरुषम्,** सफेद कमलिनी (रात को खिलने वाली) 2. चाला, ओस,—**मुखम्** रात्रि का आरम्भ, —**मृगः** गीदड़—**वनः** क्षण,—**विहारः** पिशाच, राक्षस —**प्रबन्धतु रामभिशारिकासरो**—भट्टि० २।३६,—**वेदिन्** (पुं०) मुर्गा, —**हासः** श्वेत कमल, कुमुद (रात को खिलने वाला)।

निशात (भू० क० कृ०) [नि+शो+क्त] 1. पहनाया हुआ, शान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ, तेज किया हुआ 2. नवकाया गया, सजाकाया हुआ उज्ज्वल।

निशातनम् [नि+शो+ल्युट्] पहनाना, शान पर चढ़ाकर तेज करना।

निशांत (भू० क० कृ०) [नि+शम्+क्त] शांतियुक्त, शांत, चुपचाप, सहन-शील, **तम्** पर, आवास, निवास —रघु० १६।४०।

निशामः [नि+शम्+घञ्] निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, दर्शन करना।

निशामनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1. दर्शन करना, अवलोकन करना 2. दृष्टि 3. सुनना 4. बार २ निरीक्षण करना 5. छाया, प्रतिबिंब।

निशित (वि०) [नि+शो+क्त] पैना किया हुआ, शान पर तेज किया हुआ—निशितनिपाता शराः—रघु० १। १० 2. उद्दीपित,—**तम्** लोहा।

निशीथः [निर्शरते जना अस्मिन्—निर्शा अवारे वक —तारा०] 1. आधीरात - निशीथदोषाः सहसा हतत्विषः—रघु० ३।२५, मेघ० ८८ 2. सोने का समय, रात - शुचौ निशीथेऽनुभवंति कामिनः—ऋतु० १।३, अमर० ११।

निशीथिनी, निशीथ्या [निशीथ+इनि+ङीप्, निशीथ +यत्+टाप्] रात।

निशुंभः [नि+शुम्+घञ्] 1. वध, हत्या—मा० ५।२२ 2. तोड़ना, (धनुष आदि का) झुकाना - महावी० २।३३ 3. एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मार दिया था। **सम०—क्षपणी,—मर्दनी** दुर्गा का विशेषण।

निशुंभनम् [नि+शुम्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना।

निश्चयः [निस्+चि+अप्] 1. जाँचपड़ताल, खोज, पूछताछ 2. स्थिर मत, दृढ़ विश्वास, पक्का भरोसा 3. निर्धारण, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता—एष मे स्थिरो निश्चयः मुद्रा० १ 4. निश्चिति, स्पष्टता, असंदिग्धता, परिणाम 5. पक्का इरादा, योजना, प्रयोजन, उद्देश्य—कैकेयी क्रूरनिश्चया—रघु० १२।४, कु० ५।५।

निश्चल (वि०) [निस्+चल+अच्] 1. अचर, स्थिर, अटल, अडिग 2. अपरिवर्तनीय, अपरिवर्तनशील—भग० २।५३,—**लः** पृथ्वी। **सम०—अंग** (वि०) दृढ़ शरीरवाला, मजबूत (**गः**) 1. सारस की एक जाति 2. चट्टान, पहाड़।

निश्चायक (वि०) [निस्+चि+ण्वुल्] निश्चायक, निर्णयात्मक, अन्तिम या निश्चयात्मक।

निश्चारकम् [निस्+चर्+ण्वुल्] 1. मलोत्सर्ग करना 2. हवा, वायु 3. हठ, स्वेच्छाचारिता।

निश्चित (भू० क० कृ०) [निस्+चि+क्त] निश्चित किया हुआ, निर्धारित किया हुआ, फैसला किया, तय किया हुआ, समाधान किया हुआ (वेणी० में भी प्रयुक्त) अरावणमरामं वा जगदेतति निश्चितं—रघु० १२।८३, —**तम्** निश्चय, निर्णय, **तम्** (अव्य०) निःसंदेह, निश्चित रूप से अवश्यमेव।

निश्चितिः (स्त्री०) [निस्+चि+क्तिन्] 1. निश्चय करना, निर्णय करना 2. निर्धारण, दृढ़ संकल्प।

निश्रमः [नि+श्रम्+घञ्] किसी कार्य पर किया गया परिश्रम, अध्यवसाय, अनवरत परिश्रम।

निश्रयणी, निश्रेणि, निश्रेणी [नि+श्रि+ल्युट्+ङीप्, नि+श्रि+नि. ङीष् वा] सीढ़ी, जीना, तु० 'निःश्रयणी'।

निश्वासः [नि+श्वस्+घञ्] साँस खींचना, साँस लेना, आह भरना—तु० 'निःश्वास'।

निषंगः [नि+सञ्ज्+घञ्] 1. आसक्ति, संलग्नता 2. सम्मिलन, साहचर्य 3. तरकस—शि० १०।३४, कि० १७।३६, रघु० २।३०, ३।३४।

निषंगथिः [नि+सञ्ज्+थिन्] 1. आलिंगन 2. धनुर्धर 3. सारथि 4. रथ, गाड़ी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निषंगिन् (अव्य०) [निषङ्ग+इनि] 1. आसक्त, संलग्न —त्रि० १२।२६ 2. तरकसधारी—पुं० 1. धानुष्क, धनुर्धर 2. तरकस 3. खड्गधारी।

निषण्ण (भू० क० कृ०) [नि+सद्+क्त] 1. बैठा हुआ, आसीन, विश्रान्त, आश्रित,—रघु० ९।७६, १३।७५ 2. सहारा दिया हुआ 3. गया हुआ 4. खिन्न, कष्टग्रस्त, गतभुख—पुं० 'विषण्ण'।

निषण्णकम् [निषण्ण+कन्] आसन।

निषत्ता [नि+सद्+क्यप्+टाप्] 1. खटोला, पीठा 2. व्यापारी का कार्यालय, दुकान 3. मंडी, हाट —त्रि० १८।१५।

निषद्वरः [नि+सद्+क्वरच्] 1. गारा, दलदल 2. कामदेव,—री रात।

निषधः (द० ह०) [नि+सद्+अच्, पृषो०] नल द्वारा शासित एक देश तथा उसके निवासियों का नाम,—धः 1. निषध देश का शासक 2. पहाड़ का नाम।

निषादः [नि+सद्+घञ्] 1. भारत की एक जंगली आदिम जाति, जैसे शिकारी, मछुवे आदि, पहाड़ी —मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः —रामा० रघु० १४।५२, ७० 2. पतित जाति का मनुष्य, चाण्डाल, एक वर्णसंकर जाति 3. विशेषकर शूद्रा स्त्री से ब्राह्मण का पुत्र—मनु० १०।८ 4. (संगीत में) हिन्दूस्वरसप्तक का पहला (यदि उपयुक्तता के अधिक निकट हो तो—अस्मिन् यः प्रायेण) स्वर—गीतकलादिन्यासमिव निषादानुवृत्तम्—का० २१, (यहां यह प्रथम भी रखती है)।

निषादित [नि+सद्+णिच्+क्त] 1. बैठाया हुआ 2. कष्टग्रस्त, दुखी।

निषादिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [निषाद+इनि] बैठने वाला या लटने वाला, विश्राम करने वाला, आराम करने वाला—रघु० १।५२, ४।२, (पुं०) महावत,—त्रिः ५।४१।

निषिद्ध (वि०) [नि+सिध्+क्त] 1. मना किया हुआ, प्रतिषिद्ध, दूर हटाया हुआ, रोका हुआ—देo नि पूर्वक सिध्।

निषिक्त (भू० क० कृ०) [नि+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. भरा हुआ, टपकाया हुआ, उंडेला हुआ, व्याप्त किया हुआ।

निषिद्धिः [नि+सिध्+क्तिन्] 1. प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना 2. प्रतिरक्षा।

निषूदनम् [नि+सूद्+णिच्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना—नः वधिक जैसा कि 'बलवृत्रनिषूदन' में।

निषेकः [नि+सिच्+घञ्] 1. छिड़कना, तर करना —मुखसलिलनिषेकः—ऋतु० १।२८ 2. बूंद २ टपकना, रिसना, झरना, तैलनिषेकबिन्दुना—रघु० ८।३८, टपकते हुए तेल की एक बूंद 3. स्राव, प्रस्राव 4. वीर्यपात, वीर्यसिंचन, गर्भवती करना, बीज—कु० २।१६, रघु० १४।६० 5. सिंचाई, 6. प्रक्षालन के लिए जल 7. वीर्य की अपवित्रता 8. मैला पानी।

निषेधः [नि : सिध्+घञ्] 1. प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना, रोकना, प्रतिरोध 2. प्रत्याख्यान, मुकरना 3. नकारात्मक अव्यय दो निषेधों प्रकृतार्थं गमयतः 4. प्रतिषेधक नियम (विप० विधि) 5. नियम से व्यतिक्रम करना, अपवाद।

निषेधकः [नि+सेध्+ण्वुल्] 1. अभ्यास करने वाला, अनुगमन करने वाला, भक्त, अनुरक्त 2. बार २ आने वाला, बसने वाला, आश्रयग्रहण करने वाला 3. उपभोग करने वाला।

निषेवणम्, निषेवा [नि+सेव्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. सेवा करना, नौकरी, हाजरी में खड़े रहना 2. पूजा, आराधना 3. अभ्यास, अनुष्ठान 4. आसक्ति, लगाव 5. रहना, बसना उपभोग करना, उपयोग में लाना 6. परिचय, उपयोग।

निष्क (चुरा० आ०—निष्कयते) तोलना, मापना।

निष्कः,—कम् [निष्क्+अच्] 1. स्वर्णमुद्रा (भिन्न-भिन्न मूल्य की, परन्तु सामान्यतया १६ माशे या एक कर्ष के तोल के सोने के बराबर) 2. १०८ से १५० कर्ष के तोल का सोना 3. छाती या कण्ठ में पहनने का स्वर्णाभूषण 4. सोना,—कः चांडाल।

निष्कर्षः [निस्+कृष्+घञ्] 1. बाहर निकालना, निचोड़ना 2. सत्, सारभूत अंश, तत्त्व—इति निष्कर्षः (भाष्यकारैः) द्वारा बहुधा प्रयुक्त)—मनु० ५।१२५, भाष्य० १।८ 3. मापना 4. निश्चय, जाँचपड़ताल।

निष्कर्षणम् [निस्+कृष्+ल्युट्] 1. बाहर निकालना, निचोड़ना, खींचना—रघु० १२।९७, 2. घटाना।

निष्कालनम् [निस्+कल्—णिच्+ल्युट्] (गाय भैंसों को) हांक कर दूर करना 2. वध, हत्या।

निष्कासः (स०) [निस्+कास् (स्)+घञ्] 1. बाहर निकलना, निर्गम, निकास 2. प्रासाद आदि का द्वार-मण्डप 3. प्रभात 4. अन्तर्धान।

निष्कासित (भू० क० कृ०) [निस्+कस्+णिच्+क्त] 1. निर्वासित, बाहर निकाला हुआ, हांक कर बाहर किया हुआ 2. बाहर गया हुआ, बाहर निकाला हुआ, 3. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 4. ठहराया हुआ, सिक्त किया हुआ, 5. खोला हुआ, खिला हुआ, फैलाया हुआ 6. पुरस्कृत कहा हुआ, छिड़का हुआ।

निष्कासिनी [निस्+कस्+णिच्+ङीप्] वह दासी जो अपने स्वामी के नियंत्रण में न हो।

निष्कुटः [निस्+कुट्+क] 1. घर से लगा हुआ प्रमद-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वन, क्रीडोद्यान 2. खेत 3. स्त्रियों का रनवास, राजा का अन्तःपुर 4. दरवाजा 5. वक्ष की कोटर।

निष्कुटि:,-टी (स्त्री०) [निस्+कुट्+इन्, स्त्रियां ङीप्] बड़ी इलायची।

निष्कुषित (भू० क० कृ०) [निस्+कुष्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, बलात् बाहर खींचा हुआ, विदीर्ण--रघु० ७।५० 2. निकाला हुआ, निर्वासित--दे० निस् पूर्वक 'कुष्'।

निष्कुहः [निस्+कुह्+अच्] वृक्ष की कोटर--तु० 'निष्कुट'।

निष्कृत (भू० क० कृ०) [निस्+कृ+क्त] 1. ले जाया गया, हटाया गया 2. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है, दोषमुक्त, क्षमा किया गया,--तम् प्रायश्चित्त या परिशोधन।

निष्कृतिः (स्त्री०) [निस्+कृ+क्तिन्] 1. प्रायश्चित्त, परिशोधन पंच० ३।१५७ 2. निस्तार, प्रतिदान, ऋणशोधन, कर्तव्यसम्पादनेन तस्य निष्कृतिः श्रेयसा कर्तुं वयं शक्तेरपि--मनु० २।२२३, ३।१९, ८।१०५, ९। १९, ११।२७ 3. हटाना 4. आरोग्यलाभ, चिकित्सा, प्रतीकार 5. टालना, बचना 6. अपेक्षा करना 7. बुरा चालचलन, बदमाशी।

निष्कृष्ट (भू० क० कृ०) [निस्+कृष्+क्त] 1. उखाड़ा हुआ, खींच कर बाहर निकाला हुआ, उद्धृत 2. संशोधनादृत्त।

निष्कोषः, निष्कोषणम् [निस्+कुष्+क्त ल्युट् वा] 1. फाड़ना, खींचकर बाहर निकालना, उखाड़ना, उन्मूलन करना 2. भूसी निकालना, छिलका उतारना।

निष्कोषणकम् [निष्कोषण+कन्] दांत खुरचनी पंच० १।७१।

निष्क्रमः [निस्+क्रम्+घञ्] 1. बाहर जाना, निकलना 3. विदा होना, निर्गमन करना 3. एक संस्कार (चौथे मास में शिशु को) पहली बार खुली हवा में निकालना चतुर्थे मासि निष्क्रमः--याज्ञ० १।१२, तु० 'उपनिष्क्रमण' से भी 4. पतित होना, जाति भ्रष्टता, जाति-हीनता 5. दौड़िक शक्ति।

निष्क्रमणम् [निस्+क्रम्+ल्युट्] 1. आगे या बाहर जाना 2. एक संस्कार (इसमें नवजात बालक को चौथे मास में पहली बार खुली हवा में निकाला जाता है) चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्--मनु० २।३४।

निष्क्रमणिका [निष्क्रमण+कन्+टाप् ह्रस्वश्च] दे० निष्क्रम (३)।

निष्क्रयः [निस्+क्री+अच्] निस्तार, छुटकारा, बन्दी का उद्धार-मूल्य--इदौ दत्तं समुद्रेण पीतेनेवाहरन्निष्क्रयम्--रघु० १५।५५, २५५, ५।२२, मुद्रा० ६।२० 2. पुरस्कार 3. भाड़ा, मजदूरी 4. अदायगी, चुकौती --शि० १।५० 5. अदला-बदली, विनिमय।

निष्क्रयणम् [निस्+क्री+ल्युट्] निस्तार, छुटकारा, बन्दी का उद्धार-मूल्य।

निष्क्रयिकः [निस्+क्रय+ठक्] 1. काड़ा 2. रसा, शोरबा।

निष्टप्तम् [निस्+तप्+क्त] जलन।

निष्टानकः [निस्+तानकः] घनध्वनि, कर्णकटु ध्वनि, मरमराहट।

निष्ठ (वि०) [निपरा निष्ठति-नि+स्था+क] (प्रायः समास के अन्त में) 1. अन्दर रहने वाला, स्थित --तस्मिंछे फले 2. निर्भर, आश्रित, संकेत करने वाला या संबंध रखने वाला तमेनिष्ठाः मनु० १२।९५ 3. भक्त, अनुरक्त, अभ्यास करने वाला, इरादा --सत्यनिष्ठ 4. कुशल 5. आस्था रखने वाला धर्म-निष्ठ, -ष्ठा 1. अवस्था, दशा 2. स्थैर्य, दृढ़ता, स्थिरता नभो निष्ठा-शून्यं भ्रमति च किमाश्रान्तिरिति च--मा० १।३१ 3. भक्ति, श्रद्धा, धनिष्ठ अनुराग 4. विश्वास, दृढ़ भक्ति, आस्था-शास्त्रेषु निष्ठा मा० ३।११, भग० ३।३ 5. श्रेष्ठता, कुशलता, पर्याप्तता, पूर्णता 6. उपसंहार, अन्त, अवसान अल्पारब्धेऽर्थेऽनिष्ठा -मा० ४ 7. उत्क्रान्ति या नाटक का अन्त 8. निष्पत्ति, संपूर्ति-मनु० ८।१२७ 9. चरम बिन्दु 10. मृत्यु, विनाश, प्रलय 11. स्थिर या निश्चित ज्ञान, निश्चिति 12. भिक्षा मांगना 13. योगना, कष्ट उठाना, दुःख, चिन्ता 14. (व्या०) क्त, क्तवतु (त और तवत्) के लिए पारिभाषिक शब्द।

निष्ठानम् [नि+स्था+ल्युट्] चटनी, मसाला।

निष्ठा (स्त्री०) अ--यम्, निष्ठे (स्त्री०) बहुत्व निष्ठेतिनिष्ठ [नि+ष्ठिव्+घञ्, दीर्घः, दीर्घाभावे गुणः; ल्युट् वा, दीर्घः पक्षे गुणः] क्त, दीर्घश्च] थूक देना, थूकना --भर्तृ० १।९२।

निष्ठुर (वि०) [नि+स्था+उरच्] 1. कठोर, कर्कश, उजड्ड, रूखा 2. कड़ा, तेज, (हवा के झोंके की भांति) तोक्ष्ण शि० ५।४९ 3. क्रूर, क्रूर, परानाघहृदय (पुरुषों के विषय में) व्यवसायः प्रतिनिधिनिष्ठुरः रघु० ८।९५, ३।६२ 4. पक्का।

निष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [नि+ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] थूका हुआ, थूका हुआ, फेंका हुआ--निष्ठ्यूतपरुषगण्डस्थलमुखो लक्षारस: केनचित्--श० ४।९, रघु० २।७५, शि० ३।१०।

निष्ठ्यूतिः (स्त्री०) [नि+ष्ठिव्+क्तिन्, ऊठ्] थूक, खकार।

निष्ण,निष्णात (वि०) [नि+स्ना+क, क्त च] चतुर, कुशल, विज्ञ, दक्ष, सुपरिचित, विशेषज्ञ निष्णातोऽपि च वेदार्थे साधुत्वं नैति दुर्जनः--भामि० १।८७,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भट्टि० २।२६, शि० ८।६३, मनु० २।६६, ६।३० 2. प्रकाशित, सम्पन्न, निष्पन्न—भा० १०।२४ (निःशंक विहितः—जगदर 3. बढ़िया, पूर्ण।

निष्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] 1. काढ़ा बनाया हुआ, जल में भिगोया हुआ 2. भली प्रकार पकाया हुआ।

निष्पतनम् [निस्+पत्+ल्युट्] 1. झपट कर निकलना, शीघ्रता से बाहर जाना।

निष्पत्तिः [स्त्री०] [निस्+पद्+क्तिन्] 1. जन्म, उत्पादन—शस्त्रनिष्पत्तिः 2. परिपक्वावस्था, परिपाक—कु० २।३७ 3. पूर्णता, समापन 4. संपूर्ति, संपन्नता, समाप्ति।

निष्पन्न (भू० क० कृ०) [निस्+पद्+क्त] 1. जन्मा हुआ, उदित, उद्गत, पैदा हुआ 2. कार्यान्वित हुआ, पूरा हुआ, संपन्न 3. तत्पर।

निष्पर्वणम् [निस्+पू+ल्युट्] फटकना।

निष्पावणम् [निस्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. कार्यान्वयन, निष्पत्ति 2 उपसंहरण 3. उत्पादन, पैदा करना।

निष्पावः [निस्+पू+घञ्] 1. फटकना, अनाज साफ करना 2. छाज से उत्पन्न होने वाली वायु 3. हवा।

निष्पीडित (भू० क० कृ०) [निस्+पीड्+णिच्+क्त] निचोड़ा हुआ, भींचा हुआ, -निष्पीडितेंदुकरकंदलजो नु सेक.—उत्तर० ३।२१।

निष्पेषः, निष्पेषणम् [निस्+पिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. पिसाकर रखड़ना, पीसना, चूर-चूर करना, कुचलना—भुजातरनिष्पेषः—वेणी० ३ 2. खोदना या कूटना, आज्ञान करना, रगड़ देना—रघु० ४।७७, महावी० १।३४, का० ५६।

निष्प्रवाणम्-णि (नपुं०) [निस्+प्र+वे+ल्युट्, ङीप्] नौका प्रवाणी नन्वुवाप अलाका अस्मात् अस्य वा नि० साधु] नया कोरा कपड़ा, °भूमलभ्य-दशः।

निस् (अव्य०) [निस्+क्विप्] 1. उपसर्ग के रूप में यह धातुओं के पूर्व लग कर वियोग (से दूर, के बाहर), निश्चिति, पूर्णता, उपभोग, धारण करना, अतिक्रमण आदि अर्थों को बतलाता है, उदाहरण दे० पीछे 'निर्' के अन्तर्गत 2. संज्ञा शब्दों के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त, होकर बहुत से नाम और विशेषण बनाता है तथा निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) 'से' 'से दूर' जैसा कि निर्वेत, निष्कौशाम्बि या (ख) आंशिक प्रचलित 'नहीं' के बिना' 'से शून्य' (अभावात्मकता पर बल देने वाला), निःशेष—बिना शेष के, निष्फल, निर्जल आदि (विशे० समासों में निस् का स् स्वरों के, अथवा वर्ग के तीसरे, चौथे या पाचवें वर्ण, या य र ल व ह में से कोई वर्ण, परे होने पर, बदल कर र हो जाता है, दे० निर्, ऊष्म वर्णों के परे होने पर विसर्ग, च् छ् से पूर्व श् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है, दे० दुस्)। सम०—कंटक (निष्कंटक) (वि०) 1. बिना कांटों का 2. कांटों से या शत्रुओं से युक्त, भय तथा उत्पातों से मुक्त,—कंद (निष्कंद) (वि०) भक्ष्य मूलों के बिना,—कपट (निष्कपट) (वि०) निश्छल, शुद्ध हृदय,—कंप (निष्कंप) (वि०) गतिहीन, स्थिर, अचर—निष्कंपचामरशिखा—शि० १।८, कु० ३।४८,—करुण (निष्करुण) (वि०) निर्दय, निर्मम, क्रूर,—कल (निष्कल) (वि०) 1. अखंड, अविभक्त, समस्त 2. प्राप्तव्य, क्षीण, न्यून 3. पुंस्त्वहीन, ऊसर 4. विकलांग—(लः) 1. आधार 2. योनि, भग 3. ब्रह्मा (—ला,-ली) एक बूढ़ी स्त्री जिसके बच्चे होने बन्द हो गये हों, या जिसे अब रजोधर्म न होता हो,—कल्मष (निष्कल्मष) (वि०) निर्दोष, कलंक से रहित,—कषाय (निष्कषाय) (वि०) मैल तथा दुर्वासनाओं से मुक्त,—काम (निष्काम) (वि०) 1. कामना या अभिलाषरहित, निरिच्छ, निस्वार्थ, स्वार्थरहित 2. संसार की सब प्रकार की इच्छाओं से मुक्त (अव्य०—मम्) 1. बिना इच्छा के 2. अनिच्छा पूर्वक,—कारण (निष्कारण) (वि०) 1. बिना कारण के, अनावश्यक 2. निस्स्वार्थ, निष्प्रयोजन—निष्कारणो बंधुः 3. निराधार, हेतुरहित (अव्य० णम्) बिना किसी कारण या हेतु के, कारण के अभाव में, अनावश्यक रूप से,—कालः (निष्कालकः) पश्चात्ताप में रत (अपराधी) जिसके बाल, रोएँ सब मूड कर घी लगाया गया हो,—कालिक (निष्कालिक) (वि०) 1. जिसकी जीवनचर्या समाप्त हो गई, जिसके दिन इने गिने हों 2. जिसे कोई जीत न सके, अजेय, -किंचन (निष्किंचन) (वि०) जिसके पास एक पैसा भी न हो, धनहीन, दरिद्र,—कुल (निष्कुल) (वि०) जिसका कोई बन्धुबान्धव न रहा हो, संसार में अकेला रह गया हो (निष्कुलं कृ पूर्ण रूप से संबंध विच्छेद करना, निर्मूल कर देना; निष्कुलाः कृ 1. किसी के परिवार को तहस-नहस कर देना 2. छिलका उतारना, भूसी अलग करना—निष्कुलाकरोति वाडिमम्- सिद्धा०),—कुलीन (निष्कुलीन) (वि०) नीच कुल का,—कूट (निष्कूट) (वि०) छलरहित, ईमानदार, निर्दोष,—कृप (निष्कृप) (वि०) निर्मम, निर्दय, क्रूर,—कैवल्य (निष्कैवल्य) (वि०) 1. केवल, विशुद्ध, निरपेक्ष 2. मांस से वञ्चित, मोलहीन,—कौशांबि (निष्कौशांबि) (वि०) जो कौशांबि से बाहर चला गया है, क्रिय (निष्क्रिय) (वि०) 1. क्रियाहीन 2. जो धार्मिक संस्कारों का अनुष्ठान न करता हो,—क्षत्र (निःक्षत्र),—क्षत्रिय (निःक्षत्रिय) (वि०) सैन्यजाति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से रहित,—**क्षेपः** (निःक्षेपः)=निक्षेप,—**चक्रम** (निश्चक्रम्) (अव्य०) पूर्ण रूप से,—**चक्षुस्** (निश्चक्षुस्) (वि०) अन्धा, बिना आँखों का,—**चत्वारिंश** (निश्चत्वारिंश) (वि०) जिसने चालीस पार किये हों, —**चित** (निश्चिंत) (वि०) 1. चिन्ताओं से मुक्त, असंबद्ध, सुरक्षित 2. विचारहीन, चिन्तन शून्य, —**चेतन** (निश्चेतन) चेतनारहित,—**चेतस्** (नश्चेतस्) (वि०) जो अपने ठीक होश में न हो,—**चेष्ट** (निश्चेष्ट) (वि०) गतिहीन, निश्चल, **चेष्टाकरण** (निश्चेष्टाकरण) (वि०) किसी की गति से वञ्चित करना, गतिहीनता का उत्पादक (कामदेव के एक बाण का विशेषण), —**छदस्** (निश्छदस्) (वि०) जो वेदों का अध्ययन न करता हो,—**छिद्र** (निश्छिद्र) (वि०) 1. जिसमें सूराख न हो 2. निर्दोष 3. निर्बाध, क्षतिरहित,—**तंतु** (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, निस्सन्तान,—**तन्द्र** (वि०) जो आलसी न हो, फुर्तीला, स्वस्थ,—**तमस्क, तिमिर** (वि०) अंधकार मुक्त, प्रकाशमान् 2. पाप और नैतिक मलिनताओं से मुक्त,—**तर्क्य** (वि०) कल्पनातीत, अचिन्तनीय,—**तल** (वि०) 1. गोल, वर्तुलाकार मुक्ताकलापस्थ च निस्तलस्थ —कु० १।४२ 2. हिलने वाला, काँपने वाला, डोलने वाला 3. तलीरहित, —**तुष** (वि०) 1. भूसी से विमुक्त 2. विशुद्ध, स्वच्छ सारलीकृत, **तोरः** गेहूँ, रत्नम् स्फटिक,—**तेजस्** (वि०) निरग्नि, ताप या शक्ति रहित, निःशक्त, पुरुषहीन 2. उत्साहित, मन्द 3. गूढ, —**त्रप** (वि०) ढीठ, निर्लज्ज,—**त्रिंश** (वि०) 1. तीस से अधिक —निस्त्रिंशानि वर्षाणि वैचरन्य पा० ४।४।३२, सिद्धा० 2. निर्मम, निर्दय, क्रूर अमर० ५ (—शः) तलवारधारी भट (पुं०) कृपाणधारी, **त्रैगुण्य** (वि०) तीन गुणों सत्त्व, रजस तथा तमस् से शून्य, —**पंक** (निष्पंक) (वि०) कीचड से मुक्त, स्वच्छ, शुद्ध, —**पताक** (निष्पताक) (वि०) बिना किसी झंडे के, —**पतिसुता** (निष्पतिसुता) वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति, —**पत्र** (निष्पत्र) (वि०) 1. जिसमें कोई पत्ता न हो 2. जिसके पंखे न हों, बिना पंखों का (**निष्पत्रा कृ** बाण से इस प्रकार बींधना जिससे कि पंख विद्ध जन्तु के आर पार निकल जाय, अत्यन्त पीड़ा पहुँचाना (आलं०) **निष्पत्राकरोति मृगं व्याधः**) **सुपंखस्य शरस्य अपरभागे निर्गमनाभिव्यक्तं करोति—सिद्धा०**), एकाङ्ग मृगः शरेणाकृतोऽन्यश्च निष्पत्राकृतोऽपतत्—दश० १६५, इसी प्रकार—**यांतीं गुरुजनैः साकं स्मयमानाननांबुजां। तिर्यग्ग्रीवं यदद्राक्षीत्तन्निष्पत्राकरोऽजगत् भामि० २।१३२,—पद** (निष्पद) (वि०) बिना पैरों का (**इव**) एक गाड़ी जो बिना पैरों या बिना पहियों के चले,—**परिकर** (निष्परिग्रह) (वि०) बिना तैयारी के,—**परिग्रह** (निष्परिग्रह) जिसके पास किसी प्रकार की सम्पत्ति न हो,—**मुद्रा०** 2. (हः) वह संन्यासी जिसने न तो विवाह किया हो, न जिसका कोई आश्रित हो और न जिसके पास कुछ सामान हो, —**परिच्छद** (निष्परिच्छद) (वि०) जिसका कोई अनुचर या पिछलगुआ न हो,—**परीक्ष** (निष्परीक्ष) (वि०) जो यथार्थ या सही सही परख न करे, —**परीहार** (निष्परीहार) (वि०) जो सावधानी न रक्खे,—**पर्यंत** (निष्पर्यंत), **पार** (निष्पार) (वि०) सीमा रहित, असीमित०,—**पाप** (निष्पाप) (वि०) पापरहित, निर्दोष, पवित्र,— पुत्र (निष्पुत्र) (वि०) पुत्र रहित, निस्सन्तान, —**पुरुष** (निष्पुरुष) (वि०) 1. निर्जन, बिना किसी असामी के, उजाड 2. पुंसत्वहीन 3. जो पुंलिंग न हो, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग (षः) 1. होजरा 2. कायर, **पुलाक** (निष्पुलाक) बिना पुआली का, बिना भूसी का, **पौरुष** (निष्पौरुष) (वि०) पौरुषहीन,—**प्रकंप** (निष्प्रकंप) (वि०) स्थिर, अचल, गतिहीन,—**प्रकारक** (निष्प्रकारक) (वि०) जातिभेदरहित, वैशिष्ट्यरहित, पूर्ण —निष्प्रकारक ज्ञानं निर्विकल्पम्—सर्व०,—**प्रकाश** (निष्प्रकाश) (वि०) पारदर्शक, अस्पष्ट, अंधकारमय,—**प्रचार** (निष्प्रचार) (वि०) 1. न हिलने डुलने वाला 2. एक ही स्थान पर स्थिर रहने वाला 2. संकेतित, जमाया हुआ, स्थिर किया हुआ,—**प्रति (ती) कार** (निष्प्रति (ती) कार), **प्रतिक्रिय** (निष्प्रतिक्रिय) (वि०) 1. जिसकी चिकित्सा न हो सके, जिसका कोई प्रतिकार न हो सके —सर्वथा निष्प्रतिकारेयमापदुपस्थिता—का० १५१ 2. निर्बाध, बाधारहित (अव्य०रम्) बिना किसी विघ्न के,—**प्रतिघ** (निष्प्रतिघ) (वि०) विघ्नरहित, निर्बाध, बाधाशून्य—रघु० ८।७१, —**प्रतिद्वन्द्व** (निष्प्रतिद्वन्द्व) (वि०) 1. शत्रुरहित, निर्विरोध 2. बेजोड़, अप्रतिम, अनुपम,—**प्रतिभ** (निष्प्रतिभ) (वि०) 1. कान्तिशून्य 2. प्रज्ञाहीन जो प्रत्युत्पन्नमति न हो, मन्द बुद्धि, जड़ 3. उदासीन, —**प्रतिभाग** (निष्प्रतिभाग) (वि०) कायर, भीरु, —**प्रतीप** (निष्प्रतीप) (वि०) 1. सीधा सामने देखने वाला, पीछे मुड़कर न देखने वाला 2. (दृष्टि) अबाधित,—**प्रत्यूह** (निष्प्रत्यूह) (वि०) निर्विघ्न, अबाध,—**प्रपंच** (निष्प्रपंच) 1. विस्तारहीन 2. छल कपट से रहित, ईमानदार,—**प्रभ** (निष्प्रभ या निष्प्रभ) (वि०) 1. कान्तिविहीत, विवर्ण दिखाई देने वाला—रघु० ११।८१ 2. शक्तिरहित 3. निस्तेज, लुतिहीन, अन्धकारमय,—**प्रमाणक** (निष्प्रमाणक)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(वि०) बिना अधिकार का,—**प्रयोजन** (निष्प्रयोजन) (वि०) 1. निरुद्देश्य, जो किसी प्रयोजन से प्रभावित न हो 2. निष्कारण, निराधार 3. व्यर्थ 4. अनुपयोगी, अनावश्यक (अव्य०—**नम्**) बिना कारण या हेतु के, **बिना किसी मतलब के—मुद्रा०** ३,—**प्राण** (निष्प्राण) (वि०) प्राणहीन, निर्जीव, मृतक,—**फल** (निष्फल) (वि०) 1. जिसका कोई फल न निकले, फलहीन, (आल० भी) अफल—निष्फलारंभयत्ना—मेघ० ५४ 2. अनुपयोगी, बिना लाभ का, निरर्थक—कु० ४।१३ 3. **बांझ**, ऊसर 4. (शब्द) निरर्थक 5. बिना बीज का, निर्वीर्य (—**स्त्री**) स्त्री जिसके सन्तान होना बन्द हो गया हो,—**फेन** (निष्फेन) (वि०) बिना झागों का,—**बाह्य** (निःशब्द) (वि०) जो शब्दों में व्यक्त न किया गया हो, शब्दरहित—ना. शब्द रोदितुमारेभे—का० १४३,—**शलाक** (निःशलाक) (वि०) अकेला, एकांतसेवी, निवृत्त—(**कम्**) निर्जन स्थान, एकान्तस्थान—अरण्ये निःशलाके वा मयूरेदर्शिताश्चित्रः—मनु० ७।१४७, —**शेष** (निःशेष) (वि०) बिना कुछ शेष रहे, पूर्ण, समस्त, पूरा,—नि. शेषविश्राणितकोशजातम् · रघु० ५।१. · **शोध्य** (निःशोध्य) (वि०) शोधा हुआ, स्वच्छ, · **संशय** (निःसंशय) (वि०) 1. असन्दिग्ध, निश्चित 2. सन्देहरहित, आशंकारहित, संदेहशून्य रघु० १५।३९ (अव्य० **यम्**) निस्सन्देह, असन्दिग्ध रूप से, निश्चित रूप से, अवश्य, **संग** (निःसंग) (वि०) 1. अनासक्त, भक्तिरहित, अनपेक्ष, उदासीन · परिनिःसंगस्तव फलस्यागस्य:- कि० १८।२४ 2. सांसारिक आसक्तियों से मुक्त 3. निर्लिप्त, विषयवत, अनुरागशून्य 4. अद्वैत (अव्य०—**नम्**) निस्स्वार्थ भाव से—**संज्ञ** (निःसंज्ञ) (वि०) बेहोश, · **सत्त्व** (निःसत्त्व) (वि०) 1. सत्त्वरहित, दुर्बल, पुरुषत्वहीन 2. नीच, नगण्य, अधम 3. शक्तिहीन, असार 4. जीवित प्राणियों से वंचित (**त्वम्**) 1. शक्ति या ऊर्जा का अभाव 2. सत्ताहीनता 3. नगण्यता, —**संतति** (निस्संतति), **संतान** (निस्सन्तान) (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, सन्ततिरहित,—**संदिग्ध** (निस्संदिग्ध),—**संदेह** (निस्सन्देह) (वि०) दे० निःसंशय, · **सन्धि** (निस्सधि, निःसन्धि) (वि०) जिसमें दिखाई देने वाली कोई गांठ न हो, संहत, सघन, सटा हुआ, —**सपत्न** (निःसपत्न) (वि०) 1. जिसका कोई शत्रु न हो - धनरुचिरकलापो निःसपत्नोऽद्य जातः —विक्रम० ४।१० 2. जिसका कोई और दावेदार न हो, जो सर्वथा एक ही का हो 3. अज्ञातशत्रु, · **समम्** (निस्समम्) (अव्य०) 1. बिना ऋतु के, अनुचित समय पर 2. दुष्टता के साथ, · **संपात** (निःसंपात) (वि०) जहां मार्ग उपलब्ध न हो, जहां मार्ग अवरुद्ध हो (तः) आधीरात का अंधेरा, गुप अंधेरा, घना अंधकार, -**संबाध** (निःसंबाध) (वि०) जो संकीर्ण न हो, प्रशस्त, विस्तृत, —**संसार** (निःसंसार) (वि०) 1. नीरस, सारहीन, बिना गूदे का 2. निकम्मा, असार,- **सीम** (निःसीम),- **सीमन्** (निःसीमन्) (वि०) अपरिमेय, सीमारहित—अहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः—भर्तृ० २।२५, निःसीमशर्मपद्म—३।९७, · **स्नेह** (निःस्नेह) (वि०) जो चिकना न हो, बिना चिकनाई का, शुष्क 2. स्नेहरहित, भावनाशून्य, कृपाहीन, उदासीन 3. जिससे कोई प्यार न करता हो, जिसकी कोई देखभाल न करता हो—पंच० १।८२, · **स्पंद** (निःस्पंद या निस्स्पंद) (वि०) गतिहीन, स्थिर,—रघु० ६।४०, —**स्पृह** (निःस्पृह) (वि०) 1. कामनाशून्य 2. लापरवाह, उदासीन—ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा—कि० २।५, रघु० ८।१० 3. सन्तुष्ट, डाह न करने वाला 4. सांसारिक बन्धनों से मुक्त—**स्व** (निःस्व) (वि०) निर्धन, दरिद्र—निःस्वो वष्टि शतम्—शा० २।६, —**स्वादु** (निःस्वादु) (वि०) स्वादरहित, बिना स्वाद का, बेमजा।

निसंपात दे० निःसंपात।

निसर्गः [नि+सृज्+घञ्] 1. प्रदान करना, अनुदान देना, उपहार देना, पुरस्कार देना - मनु० ८।१४३ 2. अनुज्ञा 3. मलोत्सर्ग, शून्यीकरण, मलत्याग 4. त्याग, तिलांजलि देना 5. सृष्टि - निसर्गदुर्बोधम्—कि० १।६, १८।३१, रघु० ३।३५, कु० ४।१६,- **निसर्गतः**, **निसर्गेण** प्रकृति से, स्वभावतः 7. अदला-बदली, विनिमय। समः **ज**, · **सिद्ध** (वि०) सहज, अन्तर्जात, स्वाभाविक,—**भिन्न** (वि०) स्वभावतः और प्रकार का—निसर्ग भिन्नास्पदमेकसंश्रयम् रघु० ६।२९, —**विनीत** (वि०) 1. स्वभावतः विवेकी 2. स्वभावतः विनम्र।

निसारः [निः+सृ+घञ्] समुच्चय, समूह।

निसूदन (वि०) [नि+सूद्+ल्युट्] मारने वाला, नष्ट करने वाला, —**नम्** वध, हत्या।

निसृष्ट (भू० क० कृ०) [निः+सृज्+क्त] 1. सौंपा गया, दिया गया, अर्पित 2. छोड़ा गया, त्यक्त 3. वियोजित 4. अनुज्ञात, अनुमत 5. केन्द्रवर्ती, मध्यस्थ। समः —**अर्थ** (वि०) जिसे किसी कार्य का प्रबन्ध सौंपा गया हो 2. दूत, अभिकर्ता —दे० मा० द० ८६, ८७, **दूती** वह स्त्री जो नायक और नायिका के प्रेम को जाग कर स्वयं उनको मिलाती है -तत्रियुणं निसृस्यर्थदूतीकलः सूत्रयितव्यः - मा० १ (यहां जगद्धर निसृष्टार्थदूती शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- नायिकाया नायकस्य वा मनोरथं ज्ञात्वा स्वमत्या कार्यं साधयति वा) ।

निस्तरणम् [निस्+तृ+ल्युट्] 1. बाहर जाना, बाहर आना 2. पार करना 3. बचाना, मुक्ति, छुटकारा 4. तरकीब, उपाय, योजना ।

निस्तर्हणम् [निस्+तृह+ल्युट्] वध, हत्या ।

निस्तारः [निस्+तृ+घञ्] 1. पार करना—संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी—भट्टि० १।६९ 2. छुटकारा पाना, छुट्टी, बचाव, उद्धार 3. मोक्ष 4. ऋणापाकरण, चुकौती, अदायगी—वेतनस्य निस्तारः कृतः—हि० ३ 5. उपाय, तरकीब ।

निस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [निस्+तॄ+क्त] 1. उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, बचाया हुआ 2. पार किया हुआ (आलं०) वेणी० ६।३६ ।

निस्तोदः [निस्+तुद्+घञ्] चुभना, डंक मारना ।

निस्पंदः [नि+स्पन्द्+घञ्] कंपकपी, थरथराहट, गति ।

निस्यं (व्यं) क्तः [नि+स्यन्द्+घञ् पक्षे विकल्पेन] 1. आगे, या नीचे की ओर बहना, चूना, टपकना, बूंद २ करके गिरना, झरना, रिसना—वल्कलनिस्रुता निस्यंदरेखांकिताः—श० १।१४ 2. क्षरण, स्राव, रसीला पदार्थ, रस—उत्तर० २।२४, मा० ५।६ 3. प्रवाह, स्रोत, पानी की धार हिमाद्रिनिस्यंद इवाव-तीर्णः रघु० १४।३, ४१, १६।७०, मदनिस्यंदरेखयोः ---१०।५८, मेघ० ४२ ।

निस्यंदिन (वि०) [नि+स्यन्द्+णिनि] टपकने वाला, बहने वाला, रिसने वाला ।

निस्रवः, निस्रावः [नि+स्रु+अप्, घञ् वा] 1. सरिता, धारा 2. चावलों का माड़ ।

निस्वनः, निस्वानः [नि+स्वन्+अप्, घञ् वा] शब्द, आवाज, रघु० ३।१९, ऋतु० १।८, कि० ५।३ ।

निहत (भू० क० कृ०) [निः हन्+क्त] 1. पटखनी दिया हुआ, आघात किया हुआ; वध किया हुआ, मारा हुआ 2. प्रहार किया हुआ, चोट जमाया हुआ 3. अनुरक्त, भक्त ।

निहननम् [नि+हन्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निहवः [नि+ह्वे+अप्] संप्रसारण [आवाहन, बुलावा] ।

निहारः [नि+हृ+घञ्] दे० 'नीहार' ।

निहिंसनम् [नि+हिंस+ल्युट्] वध, हत्या ।

निहित (भू० क० कृ०) [नि+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ, स्थापित, जमा किया हुआ 2. सौंपा हुआ, समर्पित 3. प्रदत्त, प्रयुक्त 4. अन्तर्हित, अंदर रक्खा हुआ 5. कोषबद्ध किया हुआ 6. संभाला हुआ 7. (धूल आदि) पड़ी हुई 8. गंभीर स्वर में उच्चरित ।

निहीन (वि०) [नितरां हीनः प्रा० स०] अधम, नीच, —नः नीच आदमी, अधम कुल में उत्पन्न ।

निह्नवः [नि+हनु+अप्] 1. मुकर जाना, जानकारी का छिपाना—कार्यः स्वमतिनिह्नवः—मा० १।१२, चन्द्रा० ५।२७ 2. गोपनीयता, छिपाव—याज्ञ० २।११ २६७ 3. रहस्य 4. अविश्वास, सन्देह, शंका 5. दुष्टता 6. परिशोधन, प्रायश्चित्त 7. बहाना ।

निह्नुतिः (स्त्री०) [नि+ह्नु+क्तिन्] 1. मुकरना, जानकारी का छिपाव, अमरु ८ 2. पाखंड, संवरण, मनोगुप्ति 3. गोपनीयता, छिपाना, गुप्त रखना ।

नी (स्वा० उभ० नयति-ते, नीत) [द्विकर्मक धातु, उदाहरण नी० देo] 1. ले जाना लेजाना, लाना, पहुँचाना, लेना, संचालन करना--अजां ग्रामं नयति --सिद्धा०. नय मां नवेन वर्त्मति पद्यैर्मुखा धिक्रम० ४।४३ 2. निर्देश करना, निदेश देना, शासन करना —मालवि० १।२ 3. दूर ले जाना, वहन ले जाना---सीता लंकां नीता सुरारिणा—भट्टि० ६।४१, रघु० १२।१०३, मनु० ६।८८ 4. उठा ले जाना - मा० ३। ५ ८. किसी के लिए ले जाना (आ०) 6. व्यय करना, (समय) बिताना—गेहाश्रमदयरन्धे दलदरविन्दे दिनान्य-नाषित—भामि० १।१०, नीत्वा मासान् कतिचिद् --मेघ० २, संविष्टः कुशशयने निशां निनाय-रघु० १।९५ 7. किसी अवस्था तक कृत्य करना—तमीमं तरलतानयरनंगः—का० १४३, नीतस्त्वया पंचताम् रत्न० ३।३, रघु० ८।१२ (इस अर्थ में वह धातु नामों के साथ उसी प्रकार प्रयुक्त होती है जिस प्रकार कृ —उदा० 1. अस्तं नी छिपाना 2. दंडं नी दण्ड देना, सजा देना 3. वशत्वं नी दास बनाना 4. दुःखं नी संकटग्रस्त करना 5. परितोषं नी तृप्त करना, प्रसन्न करना 6. पुनरुक्ततां नी फालतू करना 7. भस्मतां नी 8. भस्मसात् नी जलाकर राख करना 9. वशं नी अधीन करना, जीत लेना 10. विक्लवं नी 11. क्षितिशं नी नष्ट करना 12. शूद्रतां नी शूद्र बनाना 13. साध्यं नी संपन्नहीं मानना 8. निश्चय करना, गवेषणा करना, पूछताछ करना, निर्णय करना, फैसला करना---छलं निरस्य भूतेन व्यवहारान्नयेन्नृपः --याज्ञ० २।१९, एवं शास्त्रेषु भिन्नेषु बहुधा नीयते क्रिया- भट्टा० 9. पता लगाना, लोक के सहारे पीछा करना, खोज निकालना---एतैर्लिंगैर्नयेत् सीमां—मनु० ८।२५२, २५६, यथा नयत्यसूक्पातैर्मृगस्य मृगयुः पदम् —८।४४, याज्ञ० २।१५१ 10. विवाह करना 11. बहिष्कृत करना 12. (आ०) शिक्षा देना, अनुदेश देना---शास्त्रे नयति सिद्धा, प्रेर०—नाययति—तैं, नार्नदर्शन करना, पहुँचवाना (करण० के साथ) तेन मां भरस्तीरमनाययत्---का० ३८, इच्छा० निनीषति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—ले, ले जाने की कामना करना, अनु—मानना, अपने पक्ष का बना लेना, प्रवृत्त करना, फुसलाना, प्रार्थना करना, राजी करना, बहलाना, (क्रोधादिक) शान्त करना, प्रसन्न करना, लुभाना—स चानुनीतः प्रणतेन पश्चात्—रघु० ५।५४, विप्रहाच्च शयने पराङ्मुखीनानुनेतुमबलाः स तत्परे—१९।३८, कि० १३। ६७, भट्टि० ५।४६, ६।१३७ 2. स्नेह करना - भर्तृ० २।७७ 3. साधना, अनुशासन में रखना, अप—, 1. दूर ले जाना, दूर बहा ले जाना, निवृत्त करना—मनु० ३।२४२ 2. (क) हटाना, नष्ट करना, ले जाना - शि० ६।२६. अकूपारनेष्यामि—भट्टि० १६।३०, (ख) लूटना, चुराना, कुमार करना, छीनना, ले लेना—रघु० १३।२४ 2. उद्धृत, निचोड़ करना—शल्य हृदयादपनीतमिव—विक्रम० ५, दूर करना, (वस्त्रादिक) उतारना, खींचकर उतारना—चरणाग्निगडमपनय—मृच्छ० ६, अपनयतु भवत्यां मृगयाविषम्—श० २, रघु० ४।६४, अभि—, 1. निकट लाना, सभालना करना, नेतृत्व करना, ले जाना कि० ८।३२ मुद्रा० १।६,१५ 2. अभिनय करना, नाटकीय रूप से प्रतिनिधान या प्रदर्शन करना, हाव-भाव (बहुधा रंगभूमि के निर्देशों में प्रयुक्त) प्रदर्शित करना—अतिभिनीतेयं—श० ३, कुसुमावचयनमभिनयन्ती सखीर्या—श० ४, मुद्रा० १।२, ३।३१ 3. उद्धृत करना, उठाना, अभिवि ,अवधारण करना, शिक्षा देना, सधाना, आ —, 1. लाना, जाकर लाना—भुवनं मत्यार्थमानीयते—श० ७।८, मनु० ८।२१० 2. प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना आनिनाय भुवः रंपं रघु० १५,२४ 3. किसी अवस्था में पहुंचाना अन्तीयतां सम्प्रतम् रत्न० १।१ 4. निकट ले जाना, पहुंचाना उद्—, 1. आगे बढ़ाना, पालनपोषण करना 2. उठाना, उन्नत करना, सीधा खड़ा करना (आ) ईक्षमुद्यते—सिद्धा० 3. एक ओर ले जाना, एकान्तमुद्दीय—महा० 4. अनुमान लगाना, निश्चय करना, अटकल लगाना, अन्दाज लगाना उत्तर० १।२९, ३।२२, उप -, 1. निकट लाना, जाकर लाना विधिनैवोपनीतस्त्वम्—मृच्छ० ७।६, मनु० ३।२२५, मालवि० २।५, कु० ७।७२ 2. उठाना, उन्नत करना, ले जाना शि० १।७२ 3. प्रस्तुत करना, उपस्थित करना रघु० २।५९, कु० ३।६९ 4. प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना—उपनयन्त्यर्थान्—पंच० २।१८०, उपनयन्नगैरनगोऽसवम्—गीत० १ 5. किसी अवस्था में लाना, अवस्थाविशेष तक पहुंचाना—पुरोपनीतं नृप रामणीयकम्—कि० १।३९ 6. यज्ञोपवीत धारण कराना (आ०) माणवकमुपनयते—सिद्धा०, भट्टि० १।१५, रघु० ३। २९, मनु० २।४९ 7. भाड़े पर रखना, भाड़े के नौकर रखना—कर्मकारानुपनयते—सिद्धा०, उपा , अवस्था विशेष में लाना, धंधाना, नि -, 1. निकट ले जाना, समीप पहुँचाना—याज्ञ० ३।२९५ 2. झुकना, विनत होना, वस्त्र निनीय—3. उड़ेलना 4. घटित करना, निष्पन्न करना, निस् , 1. ले उड़ना, 2. निश्चय करना, तय करना, फैसला करना, संकल्प करना, दृढ़ करना कथमप्युपायमात्मनैव निर्णीय दश०, कि० ११।३९, परि—, 1. (अग्नि की) प्रदक्षिणा करना—तौ दंपती चिः परिणीय वह्निं(पुरोधाः) —कु० ७।८०—अग्निं पर्णयं च यत्—रामा० 2. विवाह करना, ब्याहना—परिणेष्यति पार्वतीं यदा तपसा तत्प्रवणीकृतो हरः—कु० ४।४२ 2. निश्चय करना, खोज करना—मनु० ७।१२२, प्र—, 1. (सेना आदि का) नेतृत्व करना—वानरेन्द्रेण प्रणीतेन (बलेन) रामा० 2. प्रस्तुत करना, देना, उपस्थित करना - अर्घ्यं प्रणीय जनकात्मजा भट्टि० ५।७६ 3. चेताना, (आग) सुलगाना, पंच० ३।१ 4. वेदमंत्रों के पाठ से अभिमंत्रित करना, पूजना, अर्चना करना—त्रिधाप्रणीतो ज्वलनः—हरि० 5. (दण्ड आदि) देना—मनु० ७।२०, ८।२३८ 6. निर्धारित करना, शिक्षा-प्रदान करना, प्रस्थापन करना, प्रतिष्ठापित करना, विहित करना—स एव धर्मो मनुना प्रणीतः—रघु० १४।६७, भवत्प्रणीतयाचारमामनंति हि साधवः—कु० ६।३१ 7. लिखना, रचना करना—प्रणीतः न तु प्रकाशितः—उत्तर० ४, उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते उत्तर० १।३ 8. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान करना, प्रकाशित करना—नैः ११।५,१९, भर्तृ० ३।८२ 9. (अवस्था विशेष तक) पहुँचाना, निम्न अवस्था में ले जाना, प्रति—, वापिस ले जाना, वि—, 1. हटाना, ले जाना, नष्ट करना (आ०, उस स्थान को छोड़कर जहाँ कर्म के स्थान में 'शरीर का कोई भाग' हो) पद्मदृष्टध्वनिभिर्विनीतनिद्राः—रघु० ९।७१, ५।७५, १३।३५,४६, १५।४८, कु० १।९, विनयते स्म तज्जोधा मधुभिर्विजयश्रमम्—रघु० ४।६५,६७ 2. अध्यापन करना, शिक्षण देना, शिक्षा देना, प्रशिक्षित करना—त्रिभिर्यूरेनं गुरवो गुरुप्रियम्—रघु० ३।२९,१५।६२,१८।५१, याज्ञ० १।३११ 3. पालना, वशीभूत करना, प्रशमित करना, नियंत्रित करना—वन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्—रघु० २।८, १४।७५, कि० २।४१ 4. प्रसन्न करना, (क्रोध आदि) शान्त करना (आ०) 5. व्यतीत हो जाना, (समय को) बिताना—कथमति धार्मिकी विनेष्यसि—गीत० ८ 6. पार ले जाना, सम्पन्न करना, पूरा करना 7. व्यय करना, प्रयुक्त करना. उपयोग में (आ०) लाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतं विनयते—सिद्धा० 8. देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, (श्रद्धांजलि) अर्पित करना (आ०), करं विनयते—सिद्धा० 9. नेतृत्व करना, संचालन करना—कु० ७।९, **सम्**—, 1. एकत्र करना 2. हुकूमत करना, प्रशासन करना, पथप्रदर्शन करना 3. वापिस प्राप्त, लौटाना 4. निकट लाना, **समा**—, 1. मिलाना, एकता में आबद्ध करना, एकत्र करना रघु० २।६४, शि० ५।२५ 2. जा कर लाना लाना रघु० १२।७८।

नौ (पुं०) [नी+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) नेता, पथप्रदर्शक, जैसा कि ग्रामणी, सेनानी और अग्रणी में।

नौका (स्त्री०) कुल्या, गूल, खेत को सिंचाई के लिए बनी नहर।

नौकारः दे० 'निकार'।

नौकाश (वि०) [नि+काश्+अच्, दीर्घः] दे० 'निकाश' शि० ५।२५।

नौच (वि०) [निकृष्टतमीं शोभां विनोति-चि+ड, तारा०] 1. नीच, छोटा, स्वल्प, थोड़ा, सौना 2. निम्नस्थित, निकृष्ट भग० ६।११, मनु० २।१९८, याज्ञ० १।१३१ 3. नीची, गहरी (आवाज) 4. नीच, कमीना, अधम, दुष्ट, अत्यंत छोटा—प्रारम्भे मे स्थलु विघ्नभयेन नीचैः—भर्तृ० २।२७, नीचस्य गोवरयते सूक्ष्ममास्यते कैः—५९, भामि० १।४८ 5. निकम्मा, निरर्थक,—**चा** श्रेष्ठगाय। सम०—**गा** तंत्रीं—**भोज्यम्** प्याज, —**योनिन्** (वि०) नीच कुलोत्पन्न, नीच घराने में जन्मा हुआ, इसी प्रकार 'नीचजातिं',—**वज्रः**, —**वल्लम्**, वैकान्तमणि।

नीच (चि) का [नीच+कन्+टाप्, पक्षे इत्वं वा] बढ़िया या श्रेष्ठ गाय, (नीचिकी' भी)।

नीचकिन् (पुं०) [नीचक+इनि] 1. किसी वस्तु का शिखर 2. बैल का सिर 3. अच्छी गाय का स्वामी।

नीचकैः (अव्य०) [नीचैस् इत्यस्य टः प्राग्वत्] (प्रायः विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त) 1. नीचा, नीचे, अधः, के नीचे, तले, नीचे की ओर (विप० ऊपरि)—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९ 2. नीचे झुककर, विनम्र हो कर, विनयपूर्वक—रघु० ५।६२ 3. आहिस्ता २, कोमलता से—नीचैर्वास्यति—मेघ० ४२ 4. मन्द स्वर में—धीमी आवाज से—नीचैः शंस हृदिस्थितो ननु स मे प्राणेश्वरः श्रोष्यति—अमरु ६७, नीचैरनुदात्तः—पा० १।२।३०, 5. छोटा, गुटका, बौना—तथापि नीचैर्विनयादध्यैयत रघु० ३।२४, (पुं०) पहाड़ का नाम—नीचैरास्य गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः—मेघ० २६। सम०—**गतिः** (स्त्री०) शिथिलगति, **मुख** (वि०) नीचे को मुँह किये हुए।

नीडः, —**डम्** [नितरां लीयन्ति खगा अत्र—नि+ल्ड+क, लस्य ड इत्वं तारा०] 1. पक्षी का घोंसला—श० ७।११ 2. बिस्तरा, गद्दा 3. मांद, भट 4. रथ का भीतरी भाग 5. स्थान, आवास, विश्रामस्थल। सम०—**उद्भवः**,—**जः** पक्षी।

नीडकः [नीड+कन्] 1. पक्षी 2. घोंसला।

नीत (भू० क० कृ०) [नी+क्त] 1. ले जाया गया, संचालित, नेतृत्व किया गया 2. लब्ध, प्राप्त 3. निम्न अवस्था को पहुंचाया हुआ 4. व्यतीत, बिताया गया 5. भली भांति व्यवहृत, सही—दे० 'नी',—**तम्** 1. धन 2. धान्य, अनाज।

नीतिः (स्त्री०) [नी+क्तिन्] 1. निर्देशन, निर्दर्शन, प्रबंध 2. आचरण, चालचलन, व्यवहार, कार्यक्रम 3. औचित्य, शालीनता 4. नीतिकौशल, नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता, व्यवहारकुशलता आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः—नै० ५।१०३, रघु० १२।६९, कु० १।२२ 5. योजना, उपाय, कूटयुक्ति—मा० ६।३ 6. राजनय, राजनीति विज्ञान, राजनीतिज्ञता, राजनीतिक बुद्धिमत्ता—आत्मोदयः परलोकनिर्दयं नीतिरतीवर्तां—शि० २।३०, भग० १०।३८ 7. आचारशास्त्र, आचार, नीतिशास्त्र, आचारदर्शन 8. अवाप्ति, अधिग्रहण 9. देना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना 10. संबंध, सहारा। सम०—**कुशल**,—**ज्ञ**,—**निपुण**,—**विद्** (वि०) 1. राजनीतिविशारद, राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ 2. दूरदर्शी, बुद्धिमान्,—**दोषः**—बृहस्पति को गाड़ी, **दोषः** आचार, नीतिविषयक भूल, **बोधम्** सदाचार का ओज, निर्वापणं कृतम् पञ्च० १, —**विषयः** नैतिकता या दूरदर्शी व्यवहार का क्षेत्र,—**व्यतिक्रमः** 1. नीतिशास्त्र या राजनीति-विज्ञान के नियमों का उल्लंघन 2. चालचलन की त्रुटि, नीतिविषयक भूल,—**शास्त्रम्** नीतिशास्त्र या राजनय, नैतिकता।

नीध्रम् (क्त) [नितरां ध्रियते धृ मूलवि० क० दीर्घः —तारा०] 1. छत का किनारा 2. जंगल 3. पहिए की परिधि या घेरा 5. चन्द्रमा 5. रेवती नक्षत्र।

नीपः [नी+प बा० गुणाभावः] 1. पहाड़ की तलहटी 2. कदंब वृक्ष (बरसात में फूल देने वाला) नीपः प्रदीप्यते-मृच्छ० ५।१४, सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् मेघ० ६५, ६ 3. अशोक जाति का वृक्ष 4. राजाओं का एक कुल—रघु० ६।४६,—**पम्** कदंब वृक्ष का फूल—मेघ० २१, रघु० १९।३७।

नीरम् [नी+रक्] 1. पानी—नीरानिमग्नलनी जनिः भामि० १।६३ 2. रस, आसव। सम०—**जम्** 1. कमल 2. मोती, —**दः** बादल—धीरध्वनिभिरलं ते नीरद मे मासिकां गर्भः भामि० १।६१, शि० ४।५२, —**धिः**, **निधिः** समुद्र, —**हृदम्** कमल।

नीराजनम्, —**ना** [निर्+राज्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शस्त्रास्त्रों को चमकाना, एक प्रकार का सैनिक व धार्मिक पर्व जिसको राजा या सेनापति आश्विन मास में संग्राम क्षेत्र में जाने से पूर्व मनाते थे (अर्थात् राजा के पुरोहित, मंत्री, नया सेना के अधिकारी अपने विविध शस्त्रास्त्रों सहित वेद मंत्रों द्वारा) ४।४५, १७।१२, नै० ४।१४४ 2. अर्चना के रूप में देवमूर्ति के सामने प्रज्वलित दीपक घुमाना।

नील (वि०) (स्त्री० -ला (वस्त्रादिक)—ली (जीव जन्तु आदि) | नील् + अच्] 1. नीला, गहरा नीला -- नीलस्निग्धः श्रयति शिखरं वृतनस्त्वयिवाह --उत्तर० १।३३ 2. नील से रंगा हुआ,—लः 1. गहरा नीला या काला रंग 2. नीलमणि 3. गूलर का पेड़, बड़ का पेड़ 4. राम की सेना में एक वानर मुख्य 5. नीलगिरि, पर्वत की एक मुख्य शृंखला,—**लम्** 1 काला नमक 2. नीला धोबा या तूतिया 3. सुरमा 4. दिए। समः -अंगः सारस पक्षी,--**अंजनम्** सुरमा,--**अंजना, -अंजना,—अंजना** बिजली,—**अरुणम्—अंकुशम्, आम्बुजम्नं** (नपुं०), **उत्पलम्** नील कमल, --**अभ्रः** काला बादल,- **अंबर** (वि०) गहरे नीले वस्त्रों से सुसज्जित (रः) 1. राक्षस, पिशाच 2. शनि ग्रह 3. बलराम का विशेषण,- **अश्वः** प्रभातकाल, पौ फटना, **अश्वत्** (पुं०) नीलमणि- **कंठः** 1. मोर, मा० १।३०, मेघ० ७९ 2. शिव का विशेषण 3. एक प्रकार का जलकुक्कुट 4. नीलकंठ पक्षी 5. खंजन पक्षी 6. चिड़िया 7. मधुमक्खी, -**केशी** नील का पौधा,- **गोवः** शिव का विशेषण,--**छदः** 1. छुहारे का पेड़ 2. गरुड़ का विशेषण,- **तरुः** नारियल का वृक्ष, **तालः** तमाल का वृक्ष,—**पंकः,—कम्** अंधेरा, --**पटलम्** 1. काला आवरण, काली तह 2. अंधे आदमी की आंख का जाला- पंच० ५,—**पिच्छः** बाज पक्षी,—**पुष्पिका** 1. नील का पौधा 2. अलसी—**भः** 1. चांद 2. बादल 3. मधुमक्खी,—**मणिरत्नम्** नीलम नीलकान्तमणि—**नेपथ्योचितनीलरत्नम्**—गीत० ५, भामि० २।८२,—**नीलिकः** जूनू,—**मल्लिका** 1. लोहमल्लिक 2. काली मिट्टी,—**राजिः** (स्त्री०) अंधकार की रेखा, घुप अंधेरा, घोर अंधकार--निशालक्ष्मीक्षतनीलराजयः—ऋतु० १।२,—**लोहितः** शिव का विशेषण, श० ७।३७ कु० २।५७।

नीलकम् [नील + कन्] 1. काला नमक 2. नीला इस्पात 3. तूतिया,- **कः** काले रंग का घोड़ा।

नीलं (लो) गु [नि + लङ् + कु, पूर्वदीर्घः] एक प्रकार का कीड़ा।

नीला दे० नीली।

नीलिका [नील० + क + टाप्, इत्वम्] नील का पौधा ('नीलिनी' भी।

नीलिम्न् (पुं०) [नील + इमनिच्] नीलारंग, कालापन, नीलापन।

नीली [नील + अच् + ङीष्] 1. नील का पौधा—तत्र नीलीरस परिपूर्णे महाभांडमासीत् -- पंच० १, एको बहस्तु मीतायां नीलीरसपरोर्यथा—पंच० १।२६० 2. नीलमक्खियों की एक जाति 3. एक प्रकार का रोग। समः --**रागः** (वि०) अनुराग में दृढ़ (गः) 1. नील के रंग की भांति अपरिवर्तनीय स्नेह, दृढ़ानुरक्ति 2. पक्का मित्र,--**संधानम्** नील का खमीर भांडम् नील का वर्तन।

नीवरः [नी + ष्वरक्] 1. व्यवसाय, व्यापार 2. व्यापसाधिक 3. धर्मभिक्षु, सन्यासी 4. कीचड़,—**रम्** जल।

नीवाकः [नि + वच् + घञ्, कुत्व, दीर्घः] 1. कमी के समय अनाज की बड़ी मांग 2. दुर्भिक्ष, अकाल।

नीवारः [नि + वृ + घञ्, दीर्घः] जंगली चावल जो बिना जोते बोये उत्पन्न हों- नीवारः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरुणामधः--ऋ० १।१४, रघु० १।५०,५१,९।

नीविः,—वी (स्त्री०) [निव्यायति निर्वीयते वा नि--अच् | इत्, नीवि + ङीष्] कमर में लपेटी हुई धोती, धोती के दोनों किनारों की गांठ जो सामने पेट पर बांधी जाय, धोती की गांठ, नाड़ा, कमरबन्द-प्रस्थानभिन्ना न ववंशेरोविभ् -रघु० ७।९, नीवीबंधोच्छवसनम् --मा० २।५, कु० १।३८, नीवि प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण - काव्य० ४, मेघ० ६८, शि० १०।६४ 2. पूंजी, मूलधन 3. दाँव, बाजी, शर्त।

नीवृत् (पुं०) [नि + वृ + क्विप्, पूर्वदीर्घः] कोई भी आबाद देश, गाँव, राजधानी।

नीव्र दे० नीवृत्।

नीशारः [नि + शृ + घञ्, पूर्वदीर्घः] 1. गरम कपड़ा, कंबल 2. मसहरी, मच्छदानी 3. कनात।

नीहारः [नि + हृ + घञ्, पूर्वदीर्घः] 1. कुहरा, धुंध— रघु० ७।६०, याज्ञ० १।१५०, मनु० ४।११३ 2. पाला, भारी ओस 3. मलमूत्र त्याग।

नु (अव्य०) [नुद् + डु] प्रश्नवाचकता का द्योतक तथा 'सन्देह' एवं 'अनिश्चयात्मकता' प्रकट करने वाला अव्य०--स्वल्पो नु माया नु मतिभ्रमो नु--प०, अस्तंलंघहुन नु विवस्वानादित्येश जलधिं नु महीनु— कि० १।७, ५।१, ८।५३, १।१५, ५४, १३।४, कु० १।४७, शि० १०।१४, श० २।८ २. 'संभावना' और 'अवश्य' के अर्थों को बतलाने के लिए इसे प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न शब्दों से साथ जोड़ दिया जाता है कि श्वेतेतस्यालिकमन्यदितोऽथवा मा० १।१७, कथं नु गुणवद्विदेय कलत्रम्—दश०, दे० किन्नु भी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नु (अदा० पर० नौति, प्रणौति, नुत—प्र०+ नावयति, इच्छा० नुनूषति)। 1. प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना—सरस्वती तन्मिषुतं नुनाव—कु० ७।९०, भट्टि० १४।११२, दे० नु०।

नुतिः (स्त्री०) [नु+क्तिन्] 1. प्रशंसा, संस्तुति, प्रशस्ति परगुणनुतिभिः (अने० पा०) स्वान् गुणान् ख्यापयताः मर्तृ० २।६९ 2. पूजा, समादर।

नुद् (तुदा० उभय० नुदति—ते, नुत्त या नुन्न, प्रणुदति) 1. धकेलना, धक्का देना, हांकना, ठेलना, प्रोत्साहित करना—मंदं मंदं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम् —मेघ० ९ २. प्रोत्साहित करना, उकसाना, आगे बढ़ाना—शि० ११।२६ ३. हटाना, भगा देना, फेंक देना, मिटाना—अदस्त्वया नुन्नम नुन्नमः तमः —शि० १।२७, केयूरबंधोच्छ्वसितैर्नुनोद—रघु० ६।६८, ८।४०, १६।८५, कि० ३।३३, ५।२८ 4. फेंकना, डालना, भेजना—प्रेर० 1. हटाना, दूर करना 2. प्रोत्साहित करना, उकसाना, ढकेलना, ठेलना, आगे बढ़ाना,—अप्—, भगाना, हटाना—भट्टि० १०।१३, उप्, —धकेलना, आगे चलाना—शि० ४।६१, निस्—1. अस्वीकार करना, इंकार करना—धाता मत्स्यान्यपगे मांसं शाकं चव न निर्णुदेत्—मनु० ४।२५० 2. हटाना, मिटाना, प्र—, मिटाना, दूर करना, हटाना—शि० ९।७१, वि —, 1. आघात करना, बींधना 2. (वीणा आदि) वाद्ययंत्र बजाना—प्रेर० 1. हटाना, दूर करना, मिटाना, फेंक देना—नाथं विनोदय दृष्टिभिः—गीत० १०, शि० ४।६६ 2. आगे बढ़ना, (काल) बिताना 3. मोड़ना, बहलाना, मनोरंजन करना—लतासु दृष्टिं विनोदयामि—श० ६, रघु० १४।७७ 4. दिल बहलाना—रघु० ५।६७, सम्—, 1. एकत्र करना, संग्रह करना 2. प्राप्त करना, मिलना।

नूतन, नूत्य (वि०) [नव+तनप् (त्वा) नू आदेशः,]। 1. नया—नूतनो राजा समाज्ञापयति—उत्तर० १, रघु० ८।१५ 2. ताजा, कच्चा 3. भेंट, उपहार 4. तात्कालिक 5. हाल का, आधुनिक 6. कुतूहल पूर्ण, अजीब।

नूनम् (अव्य०) [नु+ऊन्+अम्] असंदिग्ध रूप से, विषयरत रूप से, निश्चय ही, अवश्य, निस्सन्देह —अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वयि ज्वलत्यौर्व इवाम्बुराशौ शि० ३।३, मेघ० ९।१८ ४६, भर्तृ० १।१०, कु० १।१२, ५।७५, रघु० १।२९, 2. अत्यधिक संभावना के साथ, पूरी संभावना है कि—उत्तर० ४।२३।

नूपुरः—रम् [नू+क्विप्=नु+पुर्+क] पाजेब, पैरों का आभूषण—नहि चूडामणिः पादे नूपुरं मूर्ध्नि धार्यते —हि० २।७१।

नृ (पुं०) [नी+ऋन् डिच्च] (कर्तृ० ए० व०—ना, संबंध०, ब० व०, नृणां या नृणाम्) 1. मनुष्य, एक व्यक्ति—स्त्री हो, चाहे पुरुष, मनु० ३।८१, ४।६१, ७।६१, १०।३३ 2. मनुष्यजाति 3. वातरंग का मोहरा 4. शूरजघडी की कील 5. पुल्लिंग शब्द —संधिर्नाम द्विगहो यानम्—अमर० १. सम०—अस्थि-मालिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रूपालम् मनुष्य की खोपड़ी,—केसरिन् (पुं०) 'नर-शेर,' नृसिंहावतार में विष्णु भगवान्—नु० 'नरसिंह',—जलम् मनुष्य का मूत्र,—देवः एक राजा,—धर्मम् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—पः मनुष्यों का राजा, राजा, प्रभु °अधवरः राजसूय यज्ञ जिसे सम्राट् सम्पन्न करता है और जिसमें सभी पदों का कार्य सहायक राजाओं द्वारा किया जाता है,—°आत्मजः राज-कुमार, युवराज,—°आभी-रम्,—°आलयः राजभोज में होने वाला संगीत, —°आसयः तर्पदिक, क्षप्र,—°आसनम् राजगद्दी, सिंहासन, राज्य की कुर्सी,—°गृहम् राजमहल,—°नीतिः (स्त्री०) राजनय, राजा की नीति, राजनीति —वेश्यागणेव नृपनीतिरनेकरूपा—भर्तृ० २।४७—°प्रियः आम का पेड़, °लक्ष्मन् (नपुं०), —°लिंगम् राजचिह्न राजत्व का लक्षण, राजकीय अधिकार चिह्न, विशेष कर श्वेत छत्र,—°शासनम् राजविज्ञप्ति, °सभम् °सभा राजाओं की सभा,—पतिः,—पालः राजा,—पशुः मनुष्य की शक्ल का जानदार, हिंसक पशु, नृशंस, —मिथुनम् मिथुन राशि,—मेधः नरमेध यज्ञ,—यज्ञः 'मनुष्यों के लिए किया जाने वाला यज्ञ', आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार (दैनिक 'पंच यज्ञों' में से एक यज्ञ—दे० पंचयज्ञ),—लोकः मरण-धर्मा लोगों का संसार, मर्त्यलोक,—वराहः 'सूअर' के अवतार में विष्णु भगवान्,—वाहन कुबेर का विशेषण,—वेष्टनः शिव का नाम,—शृंगम् 'मनुष्य का सींग' अर्थात् असंभावना,—सिंहः 1. 'सिंह जैसा मनुष्य', शेरेनर, प्रमुख मनुष्य, पूज्य व्यक्ति 2. विष्णु भगवान् का चौथा अवतार, 'नृसिंहावतार', तु०नरसिंह 3. एक प्रकार का रतिबन्ध,—सेनम्,—सेना मनुष्यों की फ़ौज,—स्वेदः वैभव-शाली मनुष्य, बड़ा आदमी—रघु० ५।५९।

नृगः (पुं०) वैवस्वत मनु का पुत्र, जो एक ब्राह्मण के शापवश छिपकली बना।

नृत् (दिवा० पर० नृत्यति, प्रणृत्यति, नृत्त) नाचना, इधर उधर हिलना—नृत्यति युवतिजनेन समं सखि—गीत० १, लोलोमौ पर्यसि महोत्पलं ननर्त—शि० ८।२३, भट्टि० २।४३ 2. रंगमंच पर अभिनय करना 3. हाव भाव दिखाना, नाटक करना, प्रेर०—नर्तयति-ते 1. नचवाना—त्वमाशे मोघाशे किमपरमतो नर्तयसि माम्—भर्तृ० ३।९, ताले: शिञ्जावलयसुभगै

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नेत्रिः कांतया मे—मेघ० ७९, उत्तर० ३।१९ 2. हिलजुल पैदा करना,—आ—, (प्रेर०) 1. नाच कराना 2. नचवाना, फुर्ती के साथ हिलाना—मरुद्भिरानर्तितनक्तमाले—रघु० ५।४२, अमरु ३२, ऋतु० ३।१०, उप—, 1. नाचना 2. किसी दूसरे के आगे नाचना—उपानृत्यत देवेशम्, प्र—, नाचना, प्रति—, नाच की नकल करके हंसी उड़ाना।

नृतिः (स्त्री०) [नृत्+इन्] नाचना, नाच।

नृतम्, नृत्यम् [नृत+क्त, ष्यञ् वा] नाचना, अभिनय करना, नाच, मूक अभिनय, हावभाव—नृत्तादस्याः स्थितमतितरां कांतम्—मालवि० २।७, नृत्यं मयूरा विजहुः—रघु० १४।६९, मेघ० ३२,३६, रघु० ३।१९। सम०—प्रियः शिव का विशेषण,—शाला नाचघर, —स्थानम् रंगमञ्च, नाचने का कमरा।

नृपः, नृपतिः, नृपालः [नरान् पाति रक्षति—नृ+पा+क, तृणां पतिः, ष० त०, नृ+पाल्+ड० 'नृ' के नीचे। णिच्+अण्]

नृशंस (वि०) [नृ+शंस्+अण्] दुष्ट, द्वेषपूर्ण, क्रूर, उपद्रवी, कमीना,—मृच्छ० ३।२५, मनु० ३।४१, याज्ञ० १।६४।

नेजकः [निज्+ण्वुल्] धोबी।

नेजनम् [निज्+ल्युट्] धोना, साफ करना, मांजना।

नेतृ (पुं०) [नी+तृच्] 1. जो नेतृत्व या पथप्रदर्शन करे, अगुवा, संचालक, प्रबंधक, (हाथियों तथा और जानवरों का) पथप्रदर्शक,—रघु० ४।७५, १४।२२, १६। २०, मेघ० ६९, नेतादस्य सूक्ष्म लुप्तस्य वा सिद्धाः, मुद्रा० ७।१४ 2. निदेशक, गुरु—भर्तृ० २।८८ 3. मुख्य, स्वामी, प्रधान 4. (दण्ड आदि) देने वाला —मनु० ७।२५ 5. मालिक 6. नाटक का नायक।

नेत्रम् [नयति नीयते वा अनेन—त्री; ष्ट्रन्] 1. नेतृत्व करना, संचालन 2. आंख—प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुंबिनः—कु० ६।८५, २।२९, ३०, ७।१३ 3. रथ के ढंडे की रस्सी 4. बुनी हुई रेशम, महीन रेशमी वस्त्र—नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम्—रघु० ७।३९, (यहाँ कुछ भाष्यकार 'नेत्र' शब्द का सामान्य अर्थ 'आँख' ही मानते हैं) 5. वृक्ष की जड़ 6. बस्ति-क्रिया की नली 7. गाड़ी, वाहन 8. दो की संख्या 9. नेता, अगुआ 10. नक्षत्र पुंज, तारा (इन दो अर्थों में पुंलिंग)। सम०—अंजनम् आँखों के लिए सुरमा-शृंगार० ७, —अंतः आँख का बाहरी किनारा, —अंबु, —अम्भस् (नपुं०) आँसू, —आमयः आंख का रोग, नेत्र-प्रदाह,—उत्सवः सुखद तथा सुन्दर पदार्थ, —उपमम् बादाम,—कनीनिका आँख की पुतली,—कोशः 1. अक्षिगोलक 2. फूल की कली गोचर (वि०) दृष्टि-परास के भीतर, प्रत्यक्षज्ञेय, दृश्य,—छदः पलक, —जम्,—जलम्,—वारि आँसू,—पर्यंतः आंख का बाहरी किनारा,—पिंडः 1. अक्षिगोलक 2. बिल्ली, —बलम् ढीठ, आँख का मेल,—योनिः, 1. इन्द्र का विशेषण (जिसके शरीर पर, गौतम द्वारा दिये गये शाप के फलस्वरूप, स्त्री-योनि से मिलते जुलते हजार चिह्न हों) 2. चन्द्रमा,—रंजनम् अंजन; सुरमा,—रोमन् (नपुं०) आंख की बरौनी,—वस्त्रम् आँख का पर्दा, पलक,—स्तंभः आंखों का पथरा जाना।

नेत्रिकम् [नेत्र+ठन्] 1. नली 2. चम्मच।

नेत्री [नेत्र+ङीप्] 1. नदी 2. धमनी 3. स्त्री मेता 4. लक्ष्मी का विशेषण।

नेदिष्ठ (अव्य० एषाम् अतिशयेन अन्तिकः—+इष्ठन्, अन्तिकस्य नेदादेशः] निकटतम, दूसरा, अत्यंत निकट (अंतिक' की उत्तमावस्था)।

नेदीयस् (वि०) (स्त्री०-सी) [अनयोः अतिशयेन अन्तिकः+ईयसुन् अन्तिकस्य नेदादेशः] निकटतर, अधिक पास (अंतिक की मध्यमावस्था)—नेदीयसी भूत्वा—मा० १, निकट आकर, पहुँचकर।

नेपः [नी+क, गुणः] कुल-पुरोहित।

नेपथ्यम् [नी+विच्, नेः नेता तस्य पथ्यम्] 1. सजावट, आभूषण 2. परिधान, पोशाक, वेशभूषा, वस्त्र—उदार नेपथ्यभृत्—रघु० ६।६, राजेन्द्रनेपथ्यविधानशोभा—१४।९, उज्ज्वलनेपथ्यविरचना—मा० १, कु० ७।७, विक्रम० ५ 3. विशेषकर नाटक के पात्र की वेशभूषा—विरलेनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु—मालवि० १ 4. परिधान कक्ष (जहाँ नाटक के पात्र अपनी वेशभूषा धारण करते हैं, यह सदैव 'परदे के पीछे' होता) रंगमंच पृष्ठ, नेपथ्ये परदे के पीछे। सम०—विधानम् परिधान-कक्ष की व्यवस्था—शक० १।

नेपालः (पुं०) भारत के उत्तर में स्थित एक देश का नाम लाः—(ब० व०) इस देश के निवासी,—लम् तांबा, —ली जंगली छुहारे का वृक्ष या इसका फल। सम०—जः,—जातः मैनसिल।

नेपालिका [नेपाल+ङीष्+कन्—टाप्, ह्रस्वः] मैनसिल।

नेम (वि०) [कर्तृ० ब० व०—नेमे—नेमाः] [नी+मक्] आधा,—मः 1. भाग 2. समय, काल, क्षण 3. हद, सीमा 4. घेरा, बाड़ा 5. दीवार की नींव 6. जाल-साज़ी, धोखा 7. सायंकाल 8. विधु, साईं 9. जड़।

नेमिः,—मी (स्त्री०) [नी+मि, नेमि+ङीष्] 1. परिधि, पहिये का घेरा, उपोद्घातश्चक्रा न रथांगनेमयः—शं० ७।१०, चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, रघु० ११७, ३९ 2. किनारा, घेरा 3. हस्तचर्धरी, गरारी 4. वृत्त, परिधि—उदधिनेमि—रघु० ९।१० 5. भूमि 6. पृथ्वी, मिः तिनिश का वृक्ष।

नेष्टृ (पुं०) [नेष्+तृच्] सोमयाग के प्रधान ऋत्विजों (जिनकी संख्या १६ होती है) में से एक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नेष्टुः [निश् + तुन्] मिट्टी का लौंदा ।

नैः श्रेयस (वि०) (स्त्री०—सी), **नैःश्रेयसिक** (वि०) (स्त्री०—की) [निःश्रेयस + अण्, ठक् वा] मोक्ष या आनन्द की ओर ले जाने वाला ।

नैःस्वम्, नैःस्व्यम् [निःस्व + अण्, ष्यञ् वा] धनहीनता, गरीबी, दरिद्रता ।

नैक (वि०) [न + एक] जो अकेला न हो (प्रायः समास में प्रयुक्त) **°आत्मन्** (पुं०) **°रूपः °भृंगः** परमपुरुष परमात्मा के विशेषण ।

नैकटिक (वि०) (स्त्री०—की) [निकट + ठक्] पार्श्ववर्ती, निकट का, सटा हुआ, —कः सन्यासी या भिक्षु—भट्टि० १४।१२ ।

नैकटयम् [निकट + ष्यञ्] सामीप्य, पड़ोस ।

नैकषेयः [निकषा + ढक्] राक्षस (निकषा की सन्तान) ।

नैकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [निकृत्या परापकारेण जीवति—निकृति + ठक्] 1. बेईमान, झूठा, क्रूर—मनु० ४।१९६ 2. नीच, दुष्ट, दुरात्मा 3. दुःशील, रूखे मिजाज का ।

नैगम (वि०) (स्त्री०—मी) [निगम + अण्] वेद से संबद्ध, वेद में पाया जाने वाला, दे० **°कांडम्,—मः** 1. वेद का व्याख्याता—इति नैगमाः 2. उपनिषद् 3. उपाय, तरकीब 4. विवेकपूर्ण आचरण 5. नागरिक, 6. व्यापारी, सौदागर—धारान्हारोपनयनपरा नैगमाः सानुमतः —विक्रम० ४।४ ।

नैघंटुकम् [निघंटु + ठक्] वैदिक शब्दों का संग्रहग्रंथ (पाँच अध्यायों में) जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त में की है ।

नैचिकम् [नीचा + ठक्] बेल का सिर ।

नैचिकी [निचिः + गौरवर्णशिरोदेशः, ततः स्वार्थे कन्—निचिक + अण् + ङीप्] बढ़िया गाय ।

नैतलम् [नितल + अण्] पाताल, नरक । सम०—**सदन्** (पुं०) यम, —महीधी० ५।१८ ।

नैत्यम् [नित्य + अण्] नित्यता, शाश्वतता ।

नैत्यक (वि०) (स्त्री० की), **नैत्यिक** (वि०) (स्त्री०—की) [नित्य + कन्, नित्य + ठक्] 1. नियमित रूप से घटने वाला, बार २ दोहराया गया 2. नियमित रूप से अनुष्ठेय (विशेष अवसरों पर नहीं) 3. अपरिहार्य, अनवरत, अवश्यकरणीय ।

नैदाघः [निदाघ + अण्] ग्रीष्म ऋतु ।

नैदानः [निदान + अण्] शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र का वेत्ता ।

नैदानिकः [निदान + ठक्] निदानशास्त्र का ज्ञाता, व्याधिकोविद ।

नैदेशिकः [निदेश + ठक्] आदेशों और निदेशों का पालन करने वाला, सेवक ।

नैपातिक (वि०) (स्त्री०—की) [निपात + ठक्] अकस्मात् या दैवयोग से होने वाला उल्लेख ।

नैपुण्यम् [निपुण + अण्, ष्यञ् वा] 1. दक्षता, कौशल, चतुराई, प्रवीणता—नैपुणोन्नेयमस्ति—उत्तर० ६।२६, शि० १६।३० 3. कोई कार्य जिसमें कौशल की आवश्यकता हो, सूक्ष्म बात 4. समग्रता, पूर्णता—मनु० १०।८५ ।

नैभृत्यम् [निभृत + ष्यञ्] 1. लज्जाशीलता, विनम्रता 2. गोपनीयता—नैभृत्यमवलंबितम्—मालवि० ५ ।

नैमन्त्रणकम् [निमंत्रण + अण् + कन्] भोज, दावत ।

नैमयः [निमय + अण्] व्यापारी, सौदागर ।

नैमित्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [निमित्त + ठक्] 1. किसी विशेष कारण के फलस्वरूप उत्पन्न, संबद्ध या निर्भर 2. असाधारण, कभी कभी होने वाला, सांयोगिक, किसी विशेष निमित्त से किया गया (विप०—नित्य), **कः** ज्योतिषी, भविष्यवक्ता, —**कम्** 1. कार्य (विप० —कारण) निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः—श० ७।२० 2. किसी विशेष अवसर पर होने वाला संस्कार, आवर्ती पर्व ।

नैमिष (वि०) (स्त्री०—षी) [निमिष + अण्] निमिषमात्र या क्षणभर रहने वाला, क्षणिक, अस्थायी—**षम्** पवित्र वनस्थली जहाँ कुछ ऋषि मुनि रहते थे जिनको कि सौति ने महाभारत सुनाया था—रघु० १९।७. (नाम करण इस प्रकार हुआ—यत्तत्तु निमिषेणेदं निहतं दानवं बलम्, अरण्येऽस्मिन् ततस्तेन नैमिषारण्यसंज्ञितम्) ।

नैमेयः [नि + मि + यत् + अण्] विनिमय, अदलाबदली ।

नैयग्रोधम् [न्यग्रोध + अण्] बड़ या बरगद का फल, बरगद का पेड़ ।

नैयत्यम् [नियत + ष्यञ्] नियंत्रण, आत्मसंयम ।

नैयमिक (वि०) (स्त्री०—की) [नियम + ठक्] नियम या विधि के अनुरूपी, नियमित.—**कम्** नियमितता ।

नैयायिक [न्याय + ठक्] तार्किक, न्यायदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी ।

नैरंतर्यम् [निरंतर + ष्यञ्] 1. निर्बाधता, निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता 2. सान्निध्य, संसक्ति ।

नैरपेक्ष्यम् [निरपेक्ष + ष्यञ्] अवहेलना, निरपेक्षता, उदासीनता ।

नैरयिकः [निरय + ठक्] नरकवासी, नरक भोगने वाला ।

नैरर्थ्यम् [निरर्थ + ष्यञ्] निरर्थकता, बेहूदगी, बकवास ।

नैराश्यम् [निराश + ष्यञ्] 1. आशा का अभाव, नाउम्मीदी, निराशा —नैरर्थ्यं नैराश्यात्—उत्तर० ३।१३ 2. कामना या प्रत्याशा का अभाव—नैराशाः पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलंबितम्—हि० १, १४४, भामि० ४ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नैरुक्तः [निरुक्त+अण्] जो शब्दों की व्युत्पत्ति जानता है, शब्दव्युत्पत्तिशास्त्रविद् ।

नैरुज्यम् [निरुज+ष्यञ्] स्वास्थ्य, आरोग्य ।

नैर्ऋतः [निर्ऋति+अण्] एक राक्षस—भयमग्रलयोद्वेगाद्धारयन्त्यैर्ऋतोदयैः—रघु० १०।३६, ११।२१, १२। ४३, १४।४, १५।२० ।

नैर्ऋती [नैर्ऋत+ङीप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2. दक्षिण पश्चिमी दिशा ।

नैर्गुण्यम् [निर्गुण+ष्यञ्] गुणों या धर्मों का अभाव, 2. श्रेष्ठता की कमी, अच्छे गुणों का अभाव—नैर्गुण्यमेव साधीयो धिगस्तु गुणगौरवम्—भामि० १।८८ ।

नैर्घृण्यम् [निर्घृण+ष्यञ्] निर्ममता, क्रूरता—वैयग्र्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथा हि दर्शयति—ब्रह्म० २।१।३४ ।

नैर्मल्यम् [निर्मल+ष्यञ्] स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलङ्कता ।

नैर्लज्ज्यम् [निर्लज्ज+ष्यञ्] निर्लज्जता, बेहयाई, ढीठपना ।

नैल्यम् [नील+ष्यञ्] नीलापन, गहरा नीला रंग ।

नैवि (वि) इयम् [नीवि (वि) इ+ष्यञ्] संशक्तता, सटा हुआ होने का भाव, घनापन, सघनता ।

नैवेद्यम् [निवेद+ष्यञ्] किसी देवता या देवमूर्ति को भेंट देने के लिए भोज्य पदार्थ ।

नैश (वि०) (स्त्री०—शी) नैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [निशा+अण्, ठञ् वा] रात से संबंध रखने वाला, रात्रिविषयक, रात को होने वाला—तन्नैशं निमिरमपाकरोति चन्द्रः—शा० ६।२९, नैशस्यापिहृतेभुज इवच्छिन्नमूर्णिपृथ्वी—विक्रम० १।८, कि० ५।२ 2. रात को मनाया जाने वाला ।

नैश्चल्यम् [निश्चल+ष्यञ्] स्थिरता, अचलता, दृढ़ता ।

नैश्चित्यम् [निश्चित+ष्यञ्] 1. निर्धारण, निश्चिति 2. निश्चित समय पर होने वाला संस्कार ।

नैषधः [निषध+अण्] 1. निषध देश का राजा 2. विशेषतः, राजा नल का विशेषण 3. निषध देश का वासी, या जो निषध देश में उत्पन्न हुआ है ।

नैष्कर्म्यम् [निष्कर्मन्+ष्यञ्] 1. अकर्मण्यता, क्रियाहीनता 2. कर्म और उनके फलों से मुक्ति—भग० ३।४, १८।४९ 3. वह मुक्ति जो कर्म न कर केवल भाव, ध्यान आदि से प्राप्त की जाय (विप० कर्म मार्ग द्वारा प्राप्त मुक्ति) ।

नैष्किक (वि०) (स्त्री—की) [निष्क+ठक्] निष्क देकर खोल लिया हुआ, या निष्क से बना हुआ—कः टकसाल का अध्यक्ष ।

नैष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [निष्ठा+ठक्] 1. अन्तिम, आखीर का, उपसंहारक—विन्ध्ये विधिमस्य नैष्ठिकम्—रघु० ८।२५ 2. निर्णीत, निश्चायक, निर्णायक (उत्तर आदि) 3. स्थिर, दृढ़, संलग्न 4. उच्चतम, पूरा 5. पूर्ण रूप से जानकार, या विज्ञ 6. निरन्तर त्यागमय शुद्ध पवित्र जीवन बिताने की प्रतिज्ञा करने वाला,—कः वह शाश्वत छात्र जो आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निर्धारित काल के पश्चात् भी सदैव गुरु की सेवा में रहे, और जिससे आजन्म ब्रह्मचारी तथा जितेन्द्रिय रहने की प्रतिज्ञा कर ली है—कु० ५।६२, तु० याज्ञ० १।४९ ।

नैष्ठुर्यम् [निष्ठुर+ष्यञ्] क्रूरता, कर्कशता, कठोरता ।

नैष्ठ्यम् [निष्ठ+ष्यञ्] स्थायित्व, दृढ़ता ।

नैसर्गिक (वि०) (स्त्री० की) [निसर्ग+ठक्] स्वाभाविक, अन्तर्जात, सहज, अन्तर्हित—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्धिन स्थितिर्न मुसलैरवताडनानि—मा० ९।४९, रघु० ५।३७, ६।४६ ।

नैस्त्रिंशिकः [निस्त्रिंश+ठक्] कृपाणधारी, तलवार रखने वाला ।

नो (अव्य०) [न+उ] नहीं, न, मत (प्रायः 'न' की भाँति प्रयुक्त) भग० १७।२८, पंच० ५।२४, अमरु ५,७,१०,६२ ।

नोचेत् (अव्य०) [नो+चेत्+द्व० स०] अन्यथा, वरना ।

नोदनम् [नुद्+ल्युट्] 1. ठेलना, हाँकना, आगे बढ़ाना 2. हटाना, दूर करना, मिटाना ।

नोधा (अव्य०) [नो+धा] नौ प्रकार, नौ गुना ।

नौः (स्त्री०) [नुद्यते अनया—नुद्+डौ] जहाज, नौका, पोत महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया—शा० ३। १ 2. एक नक्षत्रपुंज का नाम। सम०—आरोहः (नावारोहः) 1. जहाज का यात्री 2. मल्लाह—कर्णधारः, नाविकः, पोतचालकः, —कर्मन् (नपुं०) मल्लाह की वृत्ति—मनु० १०।३४,—चरः,—जीविकः मल्लाह मांझी—रघु० १७।८१,—तार्य (वि०) जिसमें नाव चल सके, जो नाव से पार किया जा सके,—दंडः डांड, चप्पू,—यानम् पोत-कौशल, नौकायन्,—यायिन् (वि०) नाव या जहाज से जाने वाला, नौयात्री—मनु० ८। ४०९,—वाहः कर्णधार, कर्णी, पोतवाहक, केवट,—व्यसनम् पोतभंग, नौका का टूट जाना—नौव्यसने विपन्नः—श० ६, —साधनम् जहाजी बेड़ा, नौसमूह, पोतावली—वंगानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान्—रघु० ४।३६ ।

नौका [नौ+कन्+टाप्] एक छोटी नाव, डिंगी—क्षण मिह सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका —मोह० ६ । सम०—दंडः चप्पू, पतवार ।

नौक् (अव्य०) [नि+अंच्+क्विन्] क्रियाविशेषण, घृणा अपमान एवं दीनता को द्योतन करने के लिए 'कृ' और 'भू' से पूर्व लगने वाला उपसर्ग । सम०—करणम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—कारः 1. दीनता, अवमानना 2. अनादर, घृणा, अपमान—न्यक्कारो हृदि वज्रकील इव मे तीव्रं परिस्पन्दते—महावी० ५।२२, ३।४०, गंगा० ३२,—भावः 1. दीनता, अवमानना 2. घटिया करने वाला, मातहती, अधीनता,—भावित (वि०) 1. दीन, अवः—पतित, अपमानित 2. आगे बढ़ा हुआ, श्रेष्ठता को प्राप्त, अप्रधानीकृत—न्यग्भावितवाच्यध्वन्यध्वंजन क्षमस्य शब्दार्थयुगलस्य—काव्य० १।

न्यक्ष (वि०) [नियते निकृते वा अक्षिणी यस्य—ब० स०, कच् प्रत्ययः] नीच, अधम, दुष्ट, कमीना,—क्षः 1. भैंस 2. परशुराम का विशेषण,—क्षम् सूराख, छिद्र।

न्यग्रोधः [न्यक् रुणद्धि—न्यक्+रुध्+अच्] 1. बरगद का पेड़ 2. पुरुष, लंबाई का एक नाप जिसकी लंबाई उतनी होती है जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से होवे। सम०—परिमंडला श्रेष्ठ स्त्री (श्रेष्ठ स्त्री की परिभाषा यह है—स्तनी सुकठिनौ यस्या नितंबे च विशालता, मध्ये क्षीणा भवेद्यात्रा सा न्यग्रोधपरिमंडला (शब्द०), दूर्वाकांडमिव श्यामा न्यग्रोधपरिमंडला —भट्टि० ४।१८।

न्यंकुः [नि+अञ्च्+कु] एक प्रकार का बारहसिंगा —रघु० १३।१५।

न्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—ञ्ची) [नि+अञ्च्+क्विन्] नीचे की ओर मुड़ा या झुका हुआ, या नीचे की ओर जाता हुआ 2. मुंह के बल लेटा हुआ 3. नीच, घृणा के योग्य, अधम, कमीना, दुष्ट—शि० १५।२१, (यहाँ इसका अर्थ 'निम्न' या 'नीचे की ओर' भी है) 4. मन्थर, आलसी 5. पूर्ण, समस्त।

न्यंचनम् [नि+अञ्च्+ल्युट्] 1. वक्ष 2. छिपने का स्थान 3. कोटर।

न्यंचः [नि+इ+अच्] 1. हानि, नाश 2. बरबादी, क्षय।

न्यसनम् [नि+अस्+ल्युट्] 1. जमा करना, लेटना 2. सौंपना, छोड़ना।

न्यस्त (भू० क० कृ०) [नि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ, लिटाया हुआ, जमा किया हुआ 2. अन्दर रक्खा हुआ, अन्तर्हित, प्रयुक्त—न्यस्ताक्षराः —कु० १।७ 3. वर्णित, चित्रित—चित्रन्यस्त 4. सुपुर्द किया हुआ, सौंपा हुआ, स्थानान्तरित—विक्रम० ५।१७, रत्न० १।१० 5. रहना, टिकना 6. छोड़ा हुआ, एक ओर डाला हुआ, उत्सृष्ट। सम—दंड (वि०) दंड जोड़ने वाला,—देह (वि०) मरा हुआ, मृत,—शस्त्र (वि०) 1. जिसने हथियार डाल दिये हों—आचार्यस्य त्रिभुवनगुरोर्न्यस्तशस्त्रस्य शोकात्—वेणी० ३।१८ 2. निरस्त्र, अरक्षित 3. जो हानि कारक न हो।

न्याक्ष्यम् [नि+अक्+ष्यत्] तले हुए चावल, मुर्मुरे।

न्यक्ष [नि+अद्+ण] खाना, खिलाना।

न्यायः [नियन्ति अनेन—नि+इ+घञ्] 1. प्रणाली, तरीका, रीति, नियम, पद्धति, योजना—अधार्मिकं विभिन्नार्थनिगृहीयान् प्रयत्नतः—मनु० ८।३१० 2. उपयुक्तता, औचित्य, मुरीति—कि० ११।३० 3. कानून, न्याय या इंसाफ, नैतिक विशालता, न्याय्यता, सचाई, ईमानदारी—यांति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यंचोऽपि सहायताम् अमरु० १।४ 4. कानूनी मुकदमा, कानूनी कार्रवाई 5. कानून के अनुसार दण्ड, निर्णय 6. राजनीति, अच्छा शासन 7. समानता, सादृश्य 8. लोकरूढ़ नीतिवाक्य, उपयुक्त दृष्टांत, निदर्शना जैसे कि 'दंडापूप न्याय' 'काकतालीय न्याय' 'घुणाक्षर न्याय' आदि दे० नी० 9. वैदिक स्वर—न्यायैरभिष्टुवीरणम्—कु० २।१२ (मल्लि० 'न्याय' शब्द का अर्थ 'स्वर' करते हैं, परन्तु हमारी सम्मति में यहाँ 'पद्धति' 'रीति' है जो कि तीन 'पद्धतियों' अर्थात् ऋक्, यजुस् और सामन् में प्रकट किया गया है) भर्तृ० ३।५५ 10. (व्या० में) विश्वव्यापी नियम 11. गौतम ऋषि प्रणीत न्यायशास्त्र 12 तर्क शास्त्र, न्यायदर्शन 13. अनुमान की पूरी प्रक्रिया (जिसमें पाँचों अंग अर्थात् प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन सम्मिलित हैं)। सम०—पथः मीमांसा दर्शन,—वर्तिन् (वि०) आचरणशील, न्यायानुसार आचरण करने वाला,—वादिन् (वि०) न्याय और धर्मानुमोदित बात कहनेवाला,—शास्त्रम् तर्क विज्ञान, तर्कशास्त्र, —सारिणी उचित तथा उपयुक्त व्यवहार, —सूत्रम् गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के सूत्र।

विशे० कुछ सिद्धान्त-वाक्य या लोकरूढ़ नीतिवाक्यों को पाठकों के उपयोग के लिए संग्रह करके नीचे अकारादिक्रम से रख दिया गया है।

1. अंधचटकन्यायः [अन्धे के हाथ बटेर लगना] अर्थ में 'घुणाक्षर न्याय' के समान।
2. अंधपरंपरान्यायः [अंधानुकरण—जब लोग बिना विचारे दूसरों का अन्धानुकरण करते हैं और यह नहीं कि इस प्रकार का अनुकरण उन्हें अन्धकार में फँसा देगा]।
3. अरुंधती दर्शनन्यायः [अरुन्धती तारादर्शन का सिद्धांत, ज्ञात से अज्ञात का पता लगाना; शंकराचार्य की निम्नांकित व्याख्या से इसका प्रयोग स्पष्ट हो जायगा —अरुंधतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थां स्थूलां तारामपुरुषां प्रथममरुंधतीति याहयित्वा तां प्रत्याख्याय पश्चादरुंधतीमेव याहयति।
4. अशोकवनिकान्यायः [अशोकवृक्षों के उद्यान का न्याय] रावण ने सीता को अशोकवाटिका में रक्खा था, परन्तु उसने और स्थानों को छोड़ कर इसी वाटिका में क्यों रक्खा, इसका कोई विशेष कारण नहीं बताया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जा सकता। सारांश यह हुआ कि जब मनुष्य के पास किसी कार्य को सम्पन्न करने के अनेक साधन प्राप्त हों, तो यह उसकी अपनी इच्छा है कि वह चाहे किसी साधन को अपना ले। ऐसी अवस्था में किसी भी साधन को अपनाने का कोई विशेष कारण नहीं दिया जा सकता।

5. **अश्मलोष्टन्याय:** [पत्थर और मिट्टी के लोंदे का न्याय] मिट्टी का ढला रूई की अपेक्षा कठोर है परन्तु वही कठोरता मदुता में बदल जाती है जब हम उसकी तुलना पत्थर से करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है जब उसकी तुलना उसकी अपेक्षा निचले दर्जे के व्यक्तियों से की जाती है, परन्तु यदि उसकी अपेक्षा श्रेष्ठतर व्यक्तियों से तुलना की जाय तो वही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नगण्य बन जाता है। 'पाषाणेष्टकन्याय' भी इसी प्रकार प्रयुक्त किया जाता है।

6. **कदंबकोरक (गोलक) न्याय:** [कदंब वृक्ष का कलि का न्याय] कदंब वृक्ष की कलियाँ साथ ही खिल जाती हैं, अतः जहाँ उदय के साथ ही कार्य भी होने लगे, वहाँ इस न्याय का उपयोग करते हैं।

7. **काक तालीय न्याय:** [कौवे और ताड़ के फल का न्याय] एक कौवा एक वृक्ष की शाखा पर जाकर बैठा ही था कि अचानक ऊपर से एक फल गिरा और कौवे के प्राण पखेरू उड़ गये ...अतः जब कभी कोई घटना शुभ हो या अशुभ अप्रत्याशित रूप से अकस्मात् घटती है, तब इसका उपयोग होता है—तु० चन्द्रा०—प्रत्यया मेलनं तत्र लाभो मे यत्त्व सुभ्रुवः, तदेतत्काकतालीयमविचिंतितसंभवम्। कुवलयानन्द में भी—पतत् तालफलं यथा काकेनोपभुक्तमेवं रहोदर्शनेक्षुभितहृदया तन्वी मया भुक्ता। दे० 'काकतालीय' भी।

8. **काकदंतगवेषणन्याय:** [कौवे के दाँत ढूँढना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति व्यर्थ, अलाभकारी या असंभव कार्य करता है।

9. **काकाक्षिगोलन्याय:** [कौवे की आँख गोलक का न्याय] एकदृष्टि, एकाक्ष आदि शब्दों से यह कल्पना की जाती है कि कौवे की आँख तो एक ही होती है, परन्तु वह आवश्यकता के अनुसार उसे एक गोलक से दूसरे गोलक में ले जा सकता है। इसका उपयोग उस समय होता है जब वाक्य में किसी शब्द या पदांश का जो केवल एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, आवश्यकता होने पर दूसरे स्थान पर भी अध्याहार कर लें—अर्थात्=द्वोरोऽस्त्रियामतीरीयः हत्यत्र अस्त्रियामित्यस्य काकाक्षिगोलकन्यायेन अंतरीपशब्देनाप्यन्वयः।

10. **कूपयंत्रघटिका न्याय:** [रहटटिंडर न्याय] इसका उपयोग सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है—जैसे रहट के चलते समय कुछ टिंडर तो पानी से भरे हुए ऊपर को जाते हैं, कुछ खाली हो रहे हैं, और कुछ बिल्कुल खाली होकर नीचे को जा रहे हैं—कांश्चित्पूर्णयति प्रपूरयति वा कांश्चिन्नयत्युन्नति कांश्चित्पातविधौ करोति च पुनः कांश्चिन्नयत्याकुलान्, अन्योन्यप्रतिपक्षसंहतिमिमां लोकस्स्थिति बोधयन्लेष क्रीडति कूपयंत्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः। मृच्छ० १०।५९।

11. **घटकुटीप्रभातन्याय:** [चुंगी घर के निकट पौफटी का न्याय] कहते हैं एक गाड़ीवान चुंगी देना नहीं चाहता था, अतः वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते से रात को ही चल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश रात भर इधर-उधर घूमता रहा, जब पौफटी तो देखता क्या है कि वह ठीक चुंगीघर के पास ही खड़ा है, विवश हो उसे चुंगी देनी पड़ी इसलिए जब कोई किसी कार्य को जानबूझ कर टालना चाहता है, परन्तु में उसी को करने के लिए विवश होना पड़ता है तो उस समय इस न्याय का प्रयोग होता है—दे० शेखर—तदिदं घटकुटीप्रभातन्याय मनुवदति।

12. **घुणाक्षर न्याय:** [लकड़ी में घुणकीटों द्वारा निर्मित अक्षर का न्याय] किसी लकड़ी में घुन लग जाने से अथवा किसी पुस्तक में दीमक लग जाने से कुछ अक्षरों की आकृति से मिलते-जुलते चिह्न अपने आप बन जाते हैं, अतः जब कोई कार्य अनायास व अकस्मात् हो जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

13. **दण्डापूपन्याय:** [डंडे और पूड़े का न्याय] जब डंडा और पूड़ा एक ही स्थान पर रखे गये—और एक व्यक्ति ने कहा कि डंडे को तो चूहे घसीट कर ले गये और खा लिया, तो दूसरा व्यक्ति स्वभावतः यह समझ लेता है कि पूड़ा तो खा ही लिया गया होगा—क्योंकि वह उसके पास ही रक्खा था। इसलिए जब कोई वस्तु दूसरी के साथ विशेष रूप से अत्यंत संबद्ध होती है और एक वस्तु के संबंध में हम कुछ कहते हैं तो वही बात दूसरी के साथ भी अपने आप लागू हो जाती है, तु०—मूषिकेण दंडो भक्षितः इत्यनेन तत्सहचरितमपूपभक्षणमर्थादायात भवतीति नियतसमानन्यायादर्थांतरमापततीत्येष न्यायो दंडापूपिकासा० द० १०।

14. **देहलीदीपन्याय:** [देहली पर स्थापित दीपक का न्याय] जब दीपक को देहली पर रख दिया जाता है तो इसका प्रकाश देहली के दोनों ओर होता है अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब एक ही वस्तु दो स्थानों पर काम आवे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

15. **नृपनापितपुत्रन्यायः** [राजा और नाई के पुत्र का न्याय] कहते हैं कि एक नाई किसी राजा के यहाँ नौकर था, एक बार राजा ने उसे कहा कि मेरे राज्य में जो लड़का सब से सुन्दर हो उसे लाओ। नाई बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक न मिला जैसा राजा चाहता था। अन्त में थककर और निराश होकर वह घर लौट आया— तब उसे अपना काला-कलूटा लड़का ही अत्यंत सुन्दर लगा। वह उसी को लेकर राजा के पास गया पहले तो उस काले कलूटे बालक को देख कर राजा को बड़ा क्रोध आया परन्तु वह विचार कर कि मामक मात्र अपनी वस्तु को ही सर्वोत्तम समझता है, उसे छोड़ दिया तृ० सर्वः कांतमात्मीयं पश्यति—हिन्दी—अपनी छाछ को कौन खट्टा बताता है।

16. **पंकप्रक्षालनन्यायः** [कीचड़ पोकर उतारने का न्याय] कीचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि मनुष्य कीचड़ लगने ही न देवे। इसी प्रकार भयग्रस्त स्थिति में फँस कर उससे निकलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा वह ज्यादह अच्छा है कि उस भयग्रस्त स्थिति में कदम ही न रक्खे—तु०—'प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्'—'सौ दवा से एक परहेज़ अच्छा'।

17. **पिष्टपेषणन्यायः** [पिसे को पीसना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिसे को पीसना फालतू और व्यर्थ कार्य है— तु० कृतस्य करणं वृथा।

18. **बीजांकुरन्यायः** [बीज और अङ्कुर का न्याय] कार्य कारण जहाँ अन्योन्याश्रित होते हैं वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है (बीज से अङ्कुर निकला, और फिर समय पाकर अंकुर से ही बीज की उत्पत्ति हुई) अतः न बीज के बिना अङ्कुर हो सकता है और न अंकुर के बिना बीज।

19. **लोहचुम्बकन्यायः** [लोहे और चुंबक का आकर्षण न्याय] यह प्रकृति सिद्ध बात है कि लोहा चुंबक की ओर आकृष्ट होता है, इसी प्रकार प्राकृतिक घनिष्ट संबंध या निसर्गवृत्ति की बदौलत सभी वस्तुएं एक दूसरे की ओर आकृष्ट होती हैं।

20. **वह्निधूमन्यायः** [धूएँ से अग्नि का अनुमान] धूएँ और अग्नि की अवश्यंभावी सहवर्तिता नैसर्गिक है, अतः (जहाँ धूआँ होगा वहाँ आग अवश्य होगी)। यह न्याय उसी समय प्रयुक्त होता है जहाँ दो पदार्थ कारण-कार्य या दो व्यक्तियों का अनिवार्य संबंध बताया जाय।

21. **वृद्धकुमारीवाक्य (वर) न्यायः** [बूढ़ी कुमारी का वरदान न्याय] इस प्रकार का वरदान मांगना जिसमें वह सभी बातें आ जाय जो एक व्यक्ति चाहता है। महाभाष्य में कथा आती है कि एक बूढ़िया कुमारी की इन्द्र ने कहा कि एक ही वाक्य में जो वरदान चाहो मांगो, तब बूढ़िया बोली— पुत्रा मे बहुसौवर्ण-घृतमोदनं कांचनपात्र्यां भुंजीरन् (अर्थात् मेरे पुत्र सोने की थाली में घी दूध युक्त भात खायें)। इस एक ही वरदान में बूढ़िया ने पति, पुत्र, धन-धान्य, पशु, सोना, चाँदी सब कुछ माँग लिया। अतः जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।

22. **शाखाचंद्रन्यायः** [शाखा पर वर्तमान चन्द्रमा का न्याय] जब किसी को चन्द्रमा का दर्शन कराते हैं तो चन्द्रमा के दूर स्थित होने पर भी हम यही कहते हैं 'देखो सामने वृक्ष की शाखा के ऊपर चाँद दिखाई देता है'। अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई वस्तु चाहे दूर ही हो, निकटवर्ती किसी पदार्थ में संसक्त होती है।

23. **सिंहावलोकनन्यायः** [सिंह का पीछे मुड़ कर देखना] यह उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति आगे चलने के साथ २ अपने पूर्वकृतकार्य पर भी दृष्टि डालता रहता है. जिस प्रकार सिंह शिकार की तलाश में आगे भी बढ़ता जाता है परन्तु साथ ही पीछे मुड़कर भी देखता रहता है।

24. **सूचीकटाहन्यायः** [सूई और कड़ाही का न्याय] यह उस समय प्रयुक्त किया जाता है, जब दो बातें एक कठिन और एक अपेक्षाकृत आसान करने को हों, तो उस समय आसान कार्य को पहले किया जाता है. जैसे कि जब किसी व्यक्ति को सूई और कड़ाही दो वस्तुएँ बनानी हैं तो वह सूई को पहले बनावेगा— क्योंकि कड़ाही की अपेक्षा सूई का बनाना आसान या अल्पश्रमसाध्य है।

25. **स्थूणानिखननन्यायः** [गड़ा खोदकर उसमें थूणी जमाना] जब किसी मनुष्य को कोई थूणी अपने घर में लगानी होती है तो मिट्टी कंकड़ आदि बार बार डाल कर और कूटकर वह उस थूणी को दृढ़ बनाता है. इसी प्रकार वादी भी अपने अभियोग की पुष्टि में नाना प्रकार के तर्क, और दृष्टान्त उपस्थित करके अपनी बात का और भी अधिक समर्थन करता है।

26. **स्वामिभृत्यन्यायः** [स्वामी और सेवक का न्याय] इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब मालिक और नौकर, पोषक और पोष्य के संबन्ध को बतलाना होता है या ऐसे ही किन्हीं दो पदार्थों का संबंध बतलाया जाता है।

न्याय्य (वि०) [न्याय + यत्] 1. ठीक, उचित, सही, न्यायसंगत, उपयुक्त योग्य— न्याय्यात्पथः प्रविचलंति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पदं न धीरः—भर्तृ० २।८३, भग० १८।१५, मनु० २।१५२, ९।२०२, रघु० २।५५, कि० १४।७, कु० ६।८७ 2. सामान्य, प्रचलित ।

न्यासः [नि+अस्+घञ्] 1. रखना, स्थापित करना, आरोपण करना—तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुम्—रघु० २।२, कु० ६।५०, चरणन्यास, अंगन्यास आदि 2. अंकन, कोई भी छाप, चिह्न, मोहर, ठप्पा, अतिशस्त्र-नखपातानाम्—रघु० १२।७३, जहाँ नखचिह्न, अस्त्र-चिह्नों से भी बढ़ गये, दंतन्यासः 3. जमा करना 4. धरोहर, अमानत प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा—शि० ४।२१, रघु० १२।८, याज्ञ० २।६७ 5. सौंपना, अर्पण-बद्ध होना, सिपुर्द करना, हवाले करना 6. चित्रित करना, लिख रखना 7. छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्यागना, तिलांजलि देना—शस्त्रैः, भग० १८।२ 8. सम्भाल रखना, घटाना 9. खोद कर निकालना, (पंजे आदि से) पकड़ना 10. शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में भिन्न भिन्न देवताओं का ध्यान जो सामान्य रूप से मंत्र पाठ के साथ २ तदनुरूप हावभाव सहित सम्पन्न किया जाता है । सम०—अपहारः किसी धरोहर का प्रत्याख्यान करना,—धारिन् (पुं०) धरोहर रखने वाला, रहन रखने वाला ।

न्यासिन् (पुं०) [न्यास+इनि] जिसने अपने समस्त सांसारिक बंधनों को काट डाला है, संन्यासी ।

न्यु (न्यू) ख (वि०) [नि+उङ्+घञ्] 1. मनोहर, सुन्दर, प्रिय 2. उचित, ठीक ।

न्युब्ज (वि०) [नि+उब्ज+अच्] 1. नीचे की ओर झुका हुआ, मा मुड़ा हुआ, मुंह के बल लेटा हुआ —ऊर्ध्वोपित न्युब्जकटाहकल्पं (व्योम्नि)—नै० २२।३२ 2. झुका हुआ, टेढ़ा 3. उन्नतोदर 4. कुबड़ा, —ब्जः बड़ या बरगद का पेड़ । सम०—क्षुद्रः खोटा, अधम सदृश ।

न्यून (वि०) [नि+ऊन्+अच्] 1. कम किया हुआ, घटाया हुआ, छोटा किया हुआ 2. सदोष, घटिया, हीन, अभावग्रस्त, रहित या विहीन—जैसा कि अर्थ-न्यून में 3. कम (विप० अधिक)—याज्ञ० २।११९ 4. सदोष (किसी अंग से) पाद° 5. नीच, दुष्ट, दुर्वृत्त, निंद्य,—नम् (अव्य०) कम, कम मात्रा में । सम०—अंग (वि०) अपांग, विकलांग,—अधिक (वि०) कम या ज्यादह, असमान,—धी निर्बुद्धि, अज्ञानी, मूर्ख ।

न्यूनयति (ना० धा० पर०) घटना, कम करना ।

प

प (वि०) [पा+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) 1. पीने वाला, जैसा कि 'द्विज' 'अनेकप' में 2. चौकसी करने वाला, रक्षा करने वाला, हुकूमत करने वाला जैसा कि 'भूप' और 'क्षितिप' में—पः 1. वायु हवा 2. पत्ता 3. अंडा ।

पक्कणः [पचति श्वादिनिकृष्टमांसमिति पच्+क्विप्+कः+शवरः तस्य कणः कोलाहलशब्दो यत्र] 1. चाण्डाल का घर बर्बर या जंगली आदमी का घर ।

पक्तिः (स्त्री०) [पच्+क्तिन्] 1. पकाना 2. पचना, हाजमा या पाचन शक्ति 3. पक जाना, परिपक्व होना, परिपक्वावस्था का विकास 4. प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा । सम० शूलम् अजीर्ण के कारण पेट में होने वाला दर्द, उदर पीड़ा ।

पक्तृ (वि०) [पच्+तृच्] 1. रसोइया पाचक 2. पकाने वाला 3. उदीपक, पचाने वाला—(पुं०) जठराग्नि ।

पक्त्रम् [पच्+ष्ट्रन्] 1. यज्ञाग्नि को स्थापित रखने वाले गृहस्थ की दशा 2. इस प्रकार स्थापित यज्ञाग्नि ।

पक्तिम् (वि०) [पच्+क्त्रि+मम्] 1. पक्का, पका हुआ 2. परिपक्व, 3. पकाया हुआ ।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1. पकाया हुआ, भूना हुआ, उबाला हुआ—जैसा कि 'पक्वान्न' में 2. पचा हुआ 3. सेका हुआ, गरम किया हुआ, तपाया हुआ (विप० आम) पक्वेष्टकानामाकर्षम्—मृच्छ० ३ 4. परिपक्व, पक्का, पक्वबिम्बाधरोष्ठी—मेघ० ८२ 5. सुविकसित, सुपूरित, परिपक्व जैसा कि 'पक्वकेशों' में 6. अनुभवशील, बुद्धिमान् 7. (फोड़े की) भांति) पका हुआ जिसमें पीप पड़ने वाली हो 8. सफेद (बाल) 9. नष्ट, क्षीयमाण विनाश के अन्त पर, अपनी मृत्यु का स्वागत करने के लिए पक्का । सम०—अतिसारः पुरानी पेचिश,—अन्नम् मसाला आदि डालकर बनाया गया भोजन,—आशयः पेट, उदर,—इष्टका पकी हुई ईंट,—इष्टकाचितम् पक्की ईंटों से निर्मित भवन,—क्षत (वि०) 1. पकाने वाला, 2. परिपक्व होने वाला, —क्षः शराब, मदिरा—वारि (नपुं०) काजी का पानी ।

पक्वकः (पुं०) एक बर्बर जाति का नाम, चाण्डाल ।

पक्ष् (स्वा० पर०, चुरा० उभ, पक्षति, पक्षयति-ते) 1. लेना, ग्रहण करना 2. स्वीकार करना 3. पक्ष लेना, तरफदारी करना ।

पक्षः [पक्ष्+अच्] बाजू, भुजा, अपापि पक्षावपि नोद्धि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

येते —का० ३४७, इसी प्रकार 'उद्भिन्नपक्षः' निकल आये हैं पंख जिसके, पक्षयुक्त, पक्षच्छेदोद्यत शक्रम् —रघु० ४।१०, ३।४० 2. बाण के दोनों ओर लगे पंख 3. किसी मनुष्य या जन्तु का पार्श्व, कंधा—स्तंबेरमा उभयपक्षविनीतनिद्रा.—रघु० ५।७२ 4. किसी भी वस्तु का पार्श्व, बगल 5. सेना का एक कक्ष या पार्श्व 6. किसी वस्तु का अर्धभाग 7. चान्द्र मास का अर्धभाग, पखवारा (१५ दिनों का) (इस प्रकार के दो पक्ष होते हैं—शुक्लपक्ष—जिन दिनों चन्द्रमा निकला रहता है, कृष्ण या तमिस्रपक्ष—अंधियारा पाख) तमिस्रपक्षेऽपि सह प्रियाभिर्यन्नीस्ना यतो निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४, मनु० १।६६, याज्ञ० ३।५०, सीमा वृद्धिं समायाति शुक्लपक्ष इवोडुराट्—पंच० १।१२ 8. दल, गुट, पहलू - प्रमुदितकरपक्षं --रघु० ६।८६, शि० २।११७, भग० १४।२५, रघु० ६।५३,१८ 9. किसी एक दल से संबद्ध, अनुयायी, साझीदार—शत्रुपक्षोऽयवान्—हि० १ 10. श्रेणी, समुदाय, समूह, अनुयायियों की संख्या -अक्षौ, मित्र° 11. किसी तर्क का एक पहलू, विकल्प, दो में से कोई सा एक पक्ष,—पक्षे दूसरा पहलू, इसके विपरीत पूर्व एवाभवत्पक्षस्तस्मिन्नभवदुत्तरः —रघु० ४।१०, १४।३४, तु० पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष 12. एक सामान्य विचार जैसा कि 'पक्षांतरे' में 13. चर्चा का विषय, प्रस्ताव 14. अनुमान-प्रक्रिया का विषय (वह वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति संदिग्ध हो) संदिग्धसाध्यवान् पक्षः —तर्क०, धर्मतः शुद्धिभूतो गृहीतपक्षाः —शि० २०।११ (यहां इसका अर्थ 'पक्षयुक्त' भी है) 15. दो की संख्या की प्रतीकात्मक उक्ति 16. पक्षी 17. अवस्था, वर्ष 18. दरेर 19. शरीर का अंग 20. राजा का हाथी 21. सेना 22. दीवार 23. विरोध 24. प्रतिवचन, उत्तर 25. राशि,समुच्चय (समासमें 'बाल'का अर्थ देने वाले शब्दों के साथ), केशपक्षः, तु० हस्त । सम० —अंतः कोई से भी पक्ष का पन्द्रहवां दिन अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा का दिन -अंतरम् 1. दूसरा पार्श्व 2. किसी तर्क का दूसरा पहलू 3. और विचार या कल्पना,—आघातः 1.शरीर के एक अंग का मारा जाना, अधूलकड़ा आभासः 1. त्रासक तर्क 2. मिथ्या परिवाद या फरियाद, -आहारः पखवारे में केवल एक बार भोजन करना, —ग्रहणम् किसी भी पक्ष का हो जाना,—चरः 1. यूथभ्रष्ट हाथी 2. चन्द्रमा, —छिद् (पुं०) इन्द्र का विशेषण (पहाड़ के पंखों या भुजाओं को काटने वाला), कु० १।२०,—जः चाँद — द्वयम् 1. किसी विवाद के दोनों पहलू 2. दो पखवारे अर्थात् एक मास, -द्वारम् बाहरदरवाजा, निजी द्वार, -धर (वि०) 1. पंखधारी 2. एक का पक्ष लेने वाला, किसी एक की तरफदारी करने वाला (रः) 1. पक्षी 2. चन्द्रमा 3. हिमायती 4. यूथभ्रष्ट हाथी, - नाडी पक्षों का मोटा पर जिसे कलमकी भांति प्रयुक्त करते हैं,—पातः 1. किसी एक की तरफदारी करना 2. (किसी वस्तु के लिए) स्नेह, प्रेम, चाह, रुचि - भवति भव्येषु हि पक्षपातः—कि० ३।१२, वेणी० ३।१०, उत्तर० ५।१७, रिपुपक्षे बद्धपक्षपातः —मुद्रा० १।३ 3. किसी दल विशेष की ओर अनुराग, हिमायत, तरफदारी - पक्षपातमत्र देवी मन्यते —मालवि० १, सत्यं जनो वध्मि न पक्षपातात् --भर्तृ० १।४७ ४. पंखों का गिरना, पक्षमोचन 5. हिमायती - पातिन् (वि०) 1. पक्षपात करने वाला, किसी एक दल का अनुयायी, (किसी एक विशिष्ट बात का) तरफदार --पक्षपातिनो देवा अपि पांडवानाम् वेणी० ३ 2. सहानुभूति करने वाला—वेणी० ३ 3. अनुयायी, हिमायती, मित्र--यः सुरपक्षपाती विक्रम० १, (नै० २।५२ में 'पक्षपातिता' शब्द का अर्थ है 'पंखों की गति' भी), पालिः चोर दरवाजा, --बिलः कंक पक्षी, भागः 1. पार्श्व, बगल 2. विशेषतः हाथी का पार्श्व, -भुक्तिः उतरी दूरी जितनी सूर्य एक पखवारे में तय करता है, -मूलम् पंख की जड़, -वादः 1. एकतरफा बयान 2. एक पक्ष की उक्ति, मताभिव्यक्ति, वाहनः पक्षी, - हतः (वि०) जिसका एक पार्श्व लकवे से बेकाम हो गया हो, -हरः पक्षी, -होम 1. पन्द्रह दिन तक होने वाला यज्ञ 2. पाक्षिक यज्ञ ।

पक्षकः [पक्ष+कन्] 1. चोर दरवाजा 2. पक्ष, पार्श्व 3. साथी, हिमायती (समास के अन्त में प्रयुक्त)।

पक्षता [पक्ष+तल्+टाप्] 1. मित्रता, हिमायत 2. दल- विशेष का अनुगमन 3. किसी एक पक्ष का होना ।

पक्षतिः (स्त्री०) [पक्षस्य मूलम्-पक्ष+ति] 1. पंख की जड़ अस्निग्धवलपुटेन पक्षतौ—नै० २।२, खड्गं छिन्नं जटायुपक्षतिः —उत्तर० ३।४१, शि० ११।२६ 2. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा ।

पक्षालः [पक्ष+आलच्] पंछी ।

पक्षिणी [पक्ष+इनि+ङीप्] 1. मादा पक्षी 2. दो दिनों के बीच की रात (द्वावह्नोर्यत्र रात्रिश्च पक्षिणीयं-भिधीयते) 3. पूर्णिमा ।

पक्षिन् (वि०) (स्त्री -णी) [पक्ष+इनि] 1. पक्षयुक्त 2. बाजूवाला 3. तरफदार, दल विशेष का अनुयायी --(पुं०) 1. पक्षी 2. तीर 3. शिव का विशेषण। सम०-इन्द्रः प्रवरः राज् (पुं०) -राजः, -सिंहः स्वामिन् (पुं०) गरुड का विशेषण, -कीटः छोटी चिड़िया,—शाला 1. घोंसला 2. चिड़ियाघर ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्ष्मन् (नपुं०) [पक्ष् + मनिन्] 1. बरौनी -मलिनमुरुभिः पक्ष्मभिः—मेघ० ५०।४७, रघु० २।१९, ११।२६, 2. फूल की पंखड़ी 3. घास की शिरा, पतला धागा 4. बाल।

पक्ष्मल (वि०) [पक्ष्मन्+लच्] 1. दृढ़, लम्बी और सुन्दर बरौनी वाला—पक्ष्मलाक्ष्या. शि० ३।२५ 2. बालों वाला. लोमश. रोएंदार मृदितपक्ष्मलरत्नकान्तिः —शि० ४।६१।

पक्ष्य (वि०) [पक्ष+यत्] 1. पखवारे में होने वाला, पाक्षिक 2. पक्षधर 3. पक्षपाती, -क्ष्यः हिमालयी, अनुयायी, मित्र, सखा --ननु वक्षिण एव वार्यमेतद्विजयते द्विषतो मदस्य पक्ष्याः विक्रम० १।१६।

पंक,- कम् [पच् विस्तारे कर्मणि करणे वा घञ्, कुत्वम्] गारा, लसदार मिट्टी, दलदल अनोखा पंकतो पुष्पमुदकं मालविकेऽते शि० २।३४, कि० २।६, रघु० १३।६० 2. अतः मोटी राशि, स्थूल ढेर कृष्णागुरुपंक- कु० ३० 3. दलदल, कीचड़, धब्बा 4. पाप। सम० कौरः टिटिहरी, -क्रोडः सूअर,—ग्राहः, मकरमच्छ, पङ्कियाल, -छिद् (पुं०) रीठे का वृक्ष (कतक), जिसके फल से गदले पानी को स्वच्छ किया जाता है) मालविछि २।८, -जम् कमल, -जः, -जन्मन् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, -नाभः विष्णु का विशेषण रघु० १८।२०, -जन्मन् (नपुं०) कमल (पुं०) सारस पक्षी, -मंडूकः द्विकोष शंख, -रुहम् (नपुं०),-रुहम् कमल, -वासः केंकड़ा।

पंकजिनी [पंकज-इनि] 1. कमल का पौधा कि० १०।३३ 2. कमलों का समूह 3. कमलों से भरा हुआ स्थान 4. कुमुद घास।

पंकणः [पृषो० साधु] चांडाल की झोंपड़ी. दे० 'पक्कण'।

पंकारः [पङ्क-अर-अण्] 1. सिवार 2. बांध, मेड़ 3. जौंक, सोंडी, पौड़ियां।

पंकिल (वि०) [पंक+इलच्] गारे से भरा हुआ, गदला, मैला, मलिन शि० १७।८।

पंकेज [पंके जायते -पंके--जन्+ड] कमल।

पंकेरुह (नपुं०), हम् [पंके+रुह्+विवप्, क वा] कमल- हः सारस पक्षी।

पंकेशय (वि०) [पंके-शी—अच्] दलदल में रहने वाला।

पंक्तिः (स्त्री०) [पंच्—क्तिन्] लाइन, कतार, श्रेणी, शिलिला-दृश्येत चारुदर्वीविरलकाकांक्षा-विक्रम० ४।६, पद्म पंक्ति—रघु० २।१९, अलिपंक्ति—कु० ४।१५, रघु० ६।५ 2. समूह, संग्रह, रेवड़, दल 3. (एक ही जाति के) लोगों की लाइन जो खाने पर बैठी हो, एक ही जाति के सहभोजियों का समुदाय तु० पंक्तिपावन 4. जीविका पीढ़ी 5. पृथ्वी 6. यज्ञ, प्रसिद्धि 7. पांच का समूह, पांच की संख्या 8. दस की संख्या जैसा कि 'पंक्तिरथ' और 'पंक्तिग्रीव' में है। सम०—ग्रीवः रावण का विशेषण, -चरः समुद्री उकाब, कुरर पक्षी, -दूषः, -दूषकः, जिसके साथ बैठकर भोजन करने से दूषण लगे, ऐसा समाज की दूषित करने वाला व्यक्ति,— पावनः आदरणीय या सम्मानित व्यक्ति, एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण जो विद्वान् होने के साथ २ अपनी उपस्थिति से भोज को पंक्ति को पवित्र कर देता है, पंक्तिपावनाः पंचाग्नयः—मा० १,—यहां जयद्रथ कहता है—पंक्तिपावनाः पंक्तो भोजनार्हाणांछ्यो पावनाः, अग्निभोजिनः पवित्राद्याः, यद्वा, यज्ञेषु पात्रेषु वस्तु सान्नां यदवाप्ति पात्रतः, अथवाशिरसोऽन्येषां ब्राह्मणः पंक्ति पावनः। यत्—अध्यापनं सर्वेषु वेदेषु सर्वं प्रवचनेषु च. शास्त्रेषते प्रवक्तारं पंक्तयो तावत्पुनाति च। तत्रो हि पावनाभ्यंक्षा उच्यते पंक्तिपावनाः। मनु इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—अपांक्तयोपहताः पंक्तिः पाव्यते वैदिजोत्तमैः, तान्निबोधत कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान् पंक्तिपावनान्। मनु० ३।१८४—दे० ३।१८३, १८६ भी,—रथः दशरथ का नाम- रघु० १०।३४।

पंगु (वि०) (स्त्री०—गु—ङी०) [पञ्च्—कु. सम्प्र पच्चे जस्य गादेशः, तुम्] लंगड़ा, लड़खड़ाता, विकलांग गुः 1. लंगड़ा, आदमी, —मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् 2. मनि का विशेषण। सम० ग्राहः 1. मगरमच्छ 2. दसवीं राशि, मकरराशि।

पंगुल (वि०) [पङ्गु + लच्] लङ्गड़ा, विकलांग।

पच् I (भ्वा० उभ० पचति-ते, पक्व) 1. पकाना, भूनना, भोजन बनाना (यह धातु द्विकर्मक बतलाई जाती है—उदा० तण्डुलानोदनं पचति परन्तु इस प्रकार का प्रयोग लौकिक संस्कृत में बिरल है), यः पचत्यात्मकारणात् मनु० ३।११८, शूले मत्स्यानिवाक्षेषु दुर्बलान् बलवत्तरः—०।२०, भट्ट० १।८५ 2. पकाना, (ईंट आदि) पकाना, दे० पक्व 3. (भोजन आदिक) पचाना—पचामान्नं चतुर्विधम्—भग० १५।१४ 4. पकना, परिपक्व होना 5. पूर्णता को पहुंचाना, (समझ आदि का) विकास करना 6. (धातु आदि का) गलाना 7. (अपने लिए) पकाना (आ०)—कर्मवा०-पच्यते, 1. पकाया जाना 2. पकना होना, परिपक्व या विकसित होना, पकना (आलं०) फल देना, पूर्णता को प्राप्त करना—रघु० ११।५०,—प्रचयति-ते पकवाना, पकवा कराना, विकसित कराना, पूर्णता को पहुंचाना—संवत्सरं शिष्यानि-पकाने की इच्छा करना—परि—, पकना, परिपक्व होना, विकसित होना, वि— 1. परिपक्व होना, विकसित होना पकना, फल देना —रघु० १७।५३ 2. पचाना 3. भलीभांति पकाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ii (स्वा० आ०—पचते) रुष्ट करना, विशद करना।

पचतः [पच्+अत] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. इन्द्र का नाम।

पचनः (वि०) [पच्+ल्युट्] पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना—नः अग्नि—नम् 1. पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना 2. पकाने के उपकरण, बर्तन, इन्धन आदि।

पचपचः [प्रकारे पच द्वित्वम्] शिव जी को उपाधी।

पचा [पच्+अङ्+टाप्] पकाने की क्रिया।

पचिः [पच्+इन्] अग्नि।

पचेलिम (वि०) [पच्+एलिमच्] 1. शीघ्र ही पकने वाला 2. परिपक्व होने के योग्य 3. स्वतः या नैसर्गिक रूप से पकने वाला दर्शे बालूरफलं पचेलिमम्—नै० १।९४,—मः 1. अग्नि 2. सूर्य।

पचेलुकः [पच्+एलुक] रसोइया।

पञ्जटिका (स्त्री०) एक छोटी घंटी।

पंचक (वि०) [पंच+कन्] 1. पाँच से युक्त 2. पाँच से सबद्ध 3. पाँच से निर्मित 4. पांच से खरीदा हुआ 5. पाँच प्रतिशत लेने वाला,—कः,—कम् पाँच वस्तुओं का संग्रह, 'अम्लपंचक'।

पंचत् (स्त्री०) पंच, पंचसमुदाय, पंचायत।

पंचता,—त्वम् [पञ्चन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. पाँचगुना स्थिति 2. पाँच का संग्रह 3. पाँच तत्त्वों की समष्टि —अतः **पंच—तां—त्वं—गम्—या** उन पाँच तत्त्वों में घुलमिल जाना जिनसे शरीर बना है, मरना, नष्ट होना, **पंचतां—त्वं गो** मार डालना, नष्ट करना—**पंचभिर्मिमते देहे पंचत्वं च पुनर्गते, त्वां त्वां योनिमनुप्राप्ते तत्र का परिदेवना**। रत्न० ३।३।

पंचधुः [पञ्चन्+अधुच्] 1. समय 2. कोयल।

पंचधा (अव्य०) [पंचन्+धा] 1. पाँच भागों में 2. पाँच प्रकार से।

पंचन् (सं० वि०) [पंच्+कनिन्] (सर्वैव बहुवचनांत, कर्तृ० कर्म० पंच) पाँच (समास में पूर्वपद होने के स्थिति में पंचन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम० **अंग** पाँचवाँ भाग, पांचवाँ—**अग्निः** 1. पाँच यज्ञाग्नियों का समूह (अर्थात् अन्वाहार्य पचन या दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य) 2. पंचाग्नियों को स्थापित रखने वाला गृहस्थ पंचाग्नयो ह्यनवताः—भा० १, मनु० ३।१८५—**अंग** (वि०) पाँच सदस्यीय, पाँच अंगों वाला, जैसा कि पंचांग: प्रणामः (अर्थात् बाहुभ्या चैव जानुभ्या शिरसा वचसा दृशा), कृतपंचाङ्गविनिर्णयो नयः—किरा० २।१२, (दे० मल्लि० और कादंबरी) (गः) 1. ऊंट 2. एक प्रकार का घोड़ा जिसके शरीर के विभिन्न भागों पर पाँच चिह्न हों (गी) लगाम का दहाना, मुखरी (गम्) 1. पाँच भागों का संग्रह या समष्टि 2. भक्ति के पाँच प्रकार 3. पंचांग, तिथिपत्र, जैत्री—तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च, चतुरंगबलो राजा जगतीं वशमानयेत्, अहं पंचांग बलवानाकाशं वशमानये—सुभा० **गुप्तः** एक प्रकार का समुद्री कछुवा **शुद्धिः** (स्त्री०) तिथि, वार, नक्षत्र, योग, और करण (ज्योतिष्), इन पाँच आवश्यक अंगों की अनुकूल स्थिति,—**अंगुल** (वि०) (स्त्री०—**ला,—ली**) पाँच अंगुल की माप,—**अ** (आ) **जम्** बकरी से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थ, **अप्सरस्** (नपुं०) मंडकर्णी ऋषि द्वारा निर्मित कहा जाने वाला सरोवर—तु० १३।३८,—**अमृतम्** देवपूजा के लिए पाँच मिष्ट पदार्थों का संग्रह (दुग्धं च शर्करा चैव घृतं दधि तथा मधु),—**अक्षिस्** (पुं०) बुधग्रह, —**अवयव** (वि०) पाँच अंगों वाला (जैसे कि अनुमान प्रक्रिया—इसके प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन, यह पाँच अंग है),—**अवस्थः** शव, (क्योंकि यह पाँचों तत्त्वों में घुल मिल जाता है) तु० 'पंचत्व' से,—**अविकम्** भेड़ से प्राप्त पाँच प्रकार के पदार्थ —**अशीतिः** (स्त्री०) पचासी,—**अहः** पाँच दिन का समय,—**आतप** (वि०) पंचाग्नियों (चारों ओर चार अग्नि, तथा ऊपर सूर्य) से तपस्या करने वाला—तु० रघु० १३।४१,—**आनन**:,—**आस्यः**, **मुख—वक्त्रः** 1. शिव का विशेषण 2. सिंह (क्योंकि इस मुख प्रायः खूब खुला होता है, चार पंजे भी मुख जैसा काम करते हैं—पंचम् आननं यस्य) (अत्यधिक विद्वत्ता तथा प्रतिष्ठा को प्रकट के लिए प्रायः विद्वानों के नामों के अन्त में लगाया जाता है—'न्याय', तर्क० आदि—उदा० जगन्नाथ तर्कपंचानन),—**इंद्रियम्** पाँच अंगों की समष्टि (ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेंद्रिय—दे० इन्द्रियम्), **इषुः—बाणः**—**हरः** कामदेव का विशेषण (क्योंकि इसके पाँच बाण हैं—अरविंदमशोकं च चूतं च नवमल्लिका, नीलोत्पलं च पंचैते पंचबाणस्य सायकाः),—**उत्थम्** (पुं०, ब० व०) शरीर में रहने वाली पांच अग्नियां,—**कर्मन्** (नपुं०—आयु० में) पाँच प्रकार की चिकित्साएँ अर्थात् 1. वमन 'उल्टी कराने वाली औषधियाँ देना' 2 रेचन—शौच लाने वाली औषधियों का सेवन 3. नस्य—छींक लाने वाली औषधियाँ—नसवार—देना 4. अनुवासन —तैलयुक्त वस्तिकर्म 5. निरूह—बिना तेल का वस्तिकर्म,—**कृत्यम्** (अव्य०) पाँच बार,—**कोणम्** पांच कोण की आकृति,—**कोल्म्** पाँच मसालों (पीपल, चित्तरामूल, चई, चित्रकमूल और सोंठ) का चूर्ण, —**कोषाः** (पुं०, ब० व०) पाँच प्रकार का परिधान 1. अन्नमय कोष या स्थूल शरीर 2. प्राणमय कोष 3. मनोमय कोष 4. विज्ञानमय कोष (२, ३, व ४ से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिल कर लिंग शरीर बनता है 5. आनन्दमय कोष —अर्थात् मोक्ष] जिसमे आत्मा लिप्त समझा जाता है,—**कोशी** पाँच कोस की दूरी,—**छदम्** [छदयो पाँच खाटों का समूह,—**गव्यम्** पाँच गौवों का समूह, —**गव्यम्** गौ से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थों (अर्थात् दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर—क्षीर दधि तथा चान्य पञ्च गोमयमेव च) का समूह,—**गु** (वि०) पाँच गौओं के बदले खरीदा हुआ,—**गुण** (वि०) पाँच गुणा,—**गुप्तः** 1. कछुवा 2. दर्शनशास्त्र में वर्णित भौतिकवाद की पद्धति, चार्वाकों का सिद्धांत, —**चत्वारिंश** (वि०) पैंतालीसवाँ,—**चत्वारिंशत्** पैंतालीस,—**जनः** 1. मनुष्य, मनुष्य जाति 2. एक राक्षस जिसने शंखशुक्ति का रूप धारण कर लिया था तथा जिसको श्रीकृष्ण ने मार गिराया था 3. आत्मा 4. प्राणियों की पाँच श्रेणियाँ अर्थात् देवता, मनुष्य, गंधर्व, नाग, और पितर 5. हिन्दुओं की चार मुख्य जातियाँ (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा पाँचवें निषाद या अवर्ण्य लोग (इन दो अर्थों में ब० व०) [पूरे विवरण के लिए दे० बृह० १।४।११-१३ पर शांकरभाष्य],—**जनीय** (वि०) पाँचजनों का भक्त (वः) अभिनेता, छद्मरूपिया, विदूषक,—**ज्ञानः** 1. बुद्ध का विशेषण क्योंकि वह पाँच प्रकार के ज्ञान से युक्त है 2. पाशुपत सिद्धांतों से परिचित मनुष्य, —**तयम्**, —**ती पाँच रथकारों का समूह**...**तत्त्वम्** 1. पाँच तत्त्वों की समष्टि अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश 2. (तंत्रों में) तांत्रिकों के पाँच तत्त्व जो पंचमकार —अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन—भी कहलाते हैं,—**तपस्** (पुं०) एक संन्यासी जो ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की प्रखर किरणों के नीचे चारों ओर आग जला कर बैठा हुआ तपस्या करता है—तु०—हविर्भुजामंधवतां चतुर्णी मध्ये ललाटंतपसत्प्रसक्तिः—रघु० १३।४१, कु० ५।२३, मनु० ६।२३, और शि० २।५१ भी,—**तय** (वि०) पाँच गुणा (—यः) पंचायत,—**त्रिंश** (वि०) पैंतीसवाँ,—**त्रिंशत्**,—**त्रिंशतिः** (स्त्री०) पैंतीस,—**दश** (वि०) 1. पन्द्रहवाँ 2. जिसमें पन्द्रह बद्धे हुए हैं —यथा पंचदशंशतम्—एक सौ पन्द्रह—**दशन** (वि०, ब० व० पन्द्रह, —**दः** पन्द्रह दिन की अवधि—**दशिन्** (वि०) पन्द्रह से युक्त या निर्मित,—**दशी** पूर्णिमा, —**दोषम्** शरीर के पाँच लंबे अंग—बाहु नेत्रद्वयं कुक्षिर्द्वेतु नासे तथैव च, स्तनयोस्तरं चैव पंचदीर्घं प्रचक्षते,—**नख** 1. पाँच पंजों से युक्त कोई जानवर —पंच पंचनखा भक्ष्या ये प्रोक्ताः कृतलेद्विजैः—मनु० ५।१३१, मनु० ५।१७, १८, याज्ञ० १।१७७ 2. हाथी 3. कछुवा 4. सिंह या व्याघ्र,—**नदः** पाँच नदियों का देश, वर्तमान पंजाब' (पाँच नदियों के नाम—शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता या क्रमशः सतलुज, व्यास, रावी, चेनाब, और झेलम) (—दाः—ब० व०) इस देश के निवासी— पंजाबी, —**नवतिः** (स्त्री०) निन्नानवें,—**नीराजनम्** देवमूर्ति के सामने पाँच पदार्थों को हिलाना और फिर उसके सामने लंबा लेट जाना (पाँच पदार्थों के नाम - दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान का पत्ता),

पंचाल (वि०) पचपनवाँ, —**पंचाशत्** पंचपन,— **पदी** पाँच कदम पंच० २।११५,—**पात्रम्** 1. पाँच पात्रों का समूह 2. एक श्राद्ध जिसमें पाँच पात्रों में रखकर भेंट दी जाती है,—**प्राणाः** [प्र० ब० व०] पाँच जीवन प्रदवायु — प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान,

प्रासादः विशिष्ट आकार का मन्दिर (जिसमें चार कंगूरे और एक मीनार या शिखर हो),—**बाणः** —**बाणः**,— **शरः** कामदेव के विशेषण दे० 'पंचेषु',

—**भुज** (वि०) पाँच भुजाओं का (जः) पंचभुज या पंचकोना नु० पंचकोण, **भूतम्** पाँच मूलतत्त्व —पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश **मकारम्** वाममार्गी तन्त्राचार के पाँच मूलतत्त्व जिनके नाम का प्रथम अक्षर 'म' है (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) दे० 'पंचतत्त्व' (2), **महापातकम्** पाँच बड़े पाप दे० महापातक, **महायज्ञः** (पुं०, ब० व०) पाँच दैनिक यज्ञ जो एक ब्राह्मण के लिए अनुष्ठेय हैं —दे० महायज्ञ,—**यामः** दिन, **रत्नम्** पाँच रत्नों का संग्रह, (वे कई प्रकार से गिने जाते हैं—(१) नीलकं वज्रकं चैति पद्मरागश्च मौक्तिकम्, प्रवालं चेति विज्ञेयं पंचरत्नं मनीषिभिः, (२) सुवर्ण रजत मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम्, रत्नपंचकमाख्यातम्, (३) कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम्, पंचरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिः,—**रात्रम्** पाँच रात्रियों का समय,—**राशिकम्** (गणि० में) गणित की एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं राशि निकाली जाती है,—**लक्षणम्** एक पुराण (क्यों कि इसमें पाँच महत्त्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है—सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्, दे० 'पुराण' भी, **लवणम्** नमक के पाँच प्रकार—अर्थात् कांचक, सैन्धव, सामुद्र, बिड और सौवर्चल, **वटी** 1. अंजीर की जाति के पाँच वृक्ष—अर्थात् पीपल, बेल, वट, हरड़ और अशोक 2. दण्डकारण्य का एक भाग जहाँ से गोदावरी निकलती है और जहाँ राम ने सीता समेत बहुत दिन बिताये थे, वह स्थान नासिक से दो मील की दूरी पर है —उत्तर० २।२८, रघु० १३।३१,—**वर्षदेशीय** (वि०) लगभग पाँच वर्ष की आयु का,—**वर्षीय** (वि०) पाँच

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्ष का, **-वल्कलम्** पाँच प्रकार के वृक्षों (अर्थात् बड़, गूलर, पीपल, प्लक्ष और बेतस) की छाल,—**विंश** (वि०) पच्चीसवाँ,—**विंशतिः** (स्त्री०) पच्चीस, —**विंशतिका** पच्चीस का संग्रह जैसा कि 'वेतालपंचविंशतिका' में,—**विध** (वि०) पाँच गुणा या पाँच प्रकार का,—**शत** (वि०) 1. जिसका जोड़ पांच सौ हो 2. पाँच सौ (—**तम्**) 1. एक सौ पांच 2. पांच सौ, —**शाखः** 1. हाथ 2. हाथी,—**शिखः** सिंह —**ब** (वि०) (ब० व०) पांच छः, सत्यव्रतेऽपि बृहत्सपित्रभृतयः गर्भाधिताः पञ्चयाः—भर्तृ० २।३४,—**षष्ट** (वि०) पैंसठवां,—**षष्टिः** (स्त्री०) पैंसठ,—**सप्तत** पचहत्तरवां, —**सप्ततिः** (स्त्री०) पचहत्तर,—**सूनाः** (स्त्री०) घर में रहने वाली पांच वस्तुएं जिनके द्वारा छोटे २ जीवों की हिंसा हो जाया करती है—वे ये हैं पंचसूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः कण्डनी चोदकुम्भश्च —मनु० ३।६८ (चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और पानी का घड़ा),—**हायन** (वि०) पांच वर्ष की आयु का।

पंचनी [पंचन्+ङीष्] शतरंज जैसे खेल की कपड़े की बनी हुई बिसात।

पंचम (वि०) (स्त्री० —मी) [पंचन्+मट्] 1. पाँचवाँ 2. पांचवां भाग बनानेवाला 3. दक्ष, चतुर 4. सुन्दर, उज्ज्वल,—**मः** 1. भारतीय स्वरग्राम का पाँचवाँ (बाद के समय में सातवाँ) स्वर, कथित कोकिलरव (कोकिलो रौति पंचमम् नारदः) शरीर के पाँच अंगों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम 'पंचम' है—वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु, विचरन् पंचमस्थानप्राप्त्या पंचम उच्यते 2. संगीत स्वर या राग का नाम —व्यथयति वृथा मौने तस्मिन् प्रपंचय पंचमम्—गीत० १०, इसी प्रकार उदंचित पंचम रागम्—गीत० १, **नम्** 1. पाँचवाँ 2. मैथुन, तान्त्रिकों का पाँचवाँ मकार, —**मी** 1. चान्द्रमास के पक्ष की पांचवीं तिथि 2. (व्या० में) अपादान कारक, द्रौपदी का विशेषण 4. शतरंज की कपड़े की बिसात। सम०—**आस्यः** कोयल।

पंचालः (पुं०, ब० व०) [पंच्—कालन्] एक देश तथा उसके निवासियों का नाम, —**लः** पंचालों का राजा।

पंचालिका [पंचाय प्रपंचाय अलति—अल्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] गुड़िया, पुतली —तु० 'पांचालिका'।

पंचाली [पंचाल+ङीष्] 1. गुड़िया, पुतली 2. एक प्रकार का राग 3. शतरंज आदि खेल की कपड़े की बनी बिसात।

पंचाश (वि०) (स्त्री० शी) [पंचाशत्+डट्] पचासवाँ।

पंचाशत्, पंचाशतिः (स्त्री०) पचास।

पंचाशिका [पंचाश+क+टाप् इत्वम्] पचास श्लोकों का संग्रह—अर्थात् 'चौर पंचाशिका'।

पंजरम् [पंज्+अरन्] पिंजरा, चिड़ियाघर—पंजरशुकः, **भुजपंजरः** —**रः, -रम्** 1. पसलियाँ 2. कंकाल, ठठरी **-रः** 1. शरीर 2. कलियुग। सम०—**आखेटः** मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी, —**शुकः** पिंजरे का तोता, पिंजड़े में बंद तोता; विक्रम० २।२३।

पंजिः, -जी (स्त्री०) [पंज्—इन्, पंजि—ङीष्] 1. रूई का गल्हा जिससे धागा काता जाय, पूनी 2. अभिलेख, पत्रिका, बही पंजिका 3. तिथि-पत्र, जन्त्री, पत्रा या पंचांग। सम०—**-कारः, -कारकः** लेखक, लिपिकार।

पट् I (भ्वा० पर०—पटति) जाना, हिलना-डुलना—प्रेर० या चुरा० उभ०—पाटयति—ते 1. टुकड़े करना, विदीर्ण करना, फाड़ना, फाड़ कर अलग २ करना, फाड़ कर खोलना, विभक्त करना 'कश्चिन्मध्यात्पाटयामास, दंतौ जि० १८।५१, दरश्चर्म पाटयेल्लेखम् —याज्ञ० २।९४ मृच्छ० ९ 2. तोड़ना, तोड़ कर खोलना अन्यासु भित्तिषु मया निशि पातितासु —मृच्छ० ३।१४ 3. खेदना, चूभोना, धंसेदना ध्वंसपाटितस्तेन पाणिना—रघु० ११।३१ 4. दूर करना, हटाना 5. तोड़ डालना **उद्** , 1. फाड़ डालना, निकाल लेना—दंतोत्पाटयेत्प्रसह्यान्—मनु० ४।६९, कीलमुत्पाटयितुमारभे पच० १ 2. जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना—कु० २।४३, रघु० १५।४९ 3. उद्धृत करना **वि**—, 1. फाड़ डालना (केतकदर्ह) विपाटयामास युवा नखाग्रैः—रघु० ६।१७ 2. खींचना, बाहर निकालना, उद्धृत करना।

II (चुरा० उभ०—पटयति—ते) 1. गूंथना, बुनना —कुविंदस्त्वं तावत्पटयसि गणग्रामममितः—काव्य० ७ 2. वस्त्र पहनाना, लपेटना 3. घेरना, घेरा बनाना।

पटः, —टम् [पट् बेष्टने करणे घञर्थे कः] 1. वस्त्र, पहनावा, कपड़ा, चिथड़ा -अयं पटः सूत्रदशिरंतां गतो न्यायं पटच्छिद्रशतैरलंकृतः—मृच्छ० २।९, मेघाः स्रवंति बलदेवपट प्रकाशाः- ५।४५ 2. महीन कपड़ा 3. घूंघट, परदा 4. कपड़े का टुकड़ा जिस पर चित्र बनाये जायें **-टम्** छप्पर, छत। सम०—**-उटजम्** तंबू,—**-कारः** 1. जुलाहा 2. चित्रकार, —**-कुटी** (स्त्री०), —**-मंडपः, -वासः, -वेश्मन्** (नपुं०) तंबू—शि० १२।६३,—**वासः** 1. तंबू 2. पेठोकोट 3. सुगंधित चूर्ण — रत्न० १, —**वासकः** सुगंधित चूर्ण।

पटकः [पट+कै+क] 1. शिविर, पड़ाव 2. रुई का कपड़ा

पटच्चरः [पटत् इति अव्यक्तशब्दं चरति—पटत्+चर+अच्] चोर, तु० पाटच्चर,—**रम्** चिथड़ा, फटे पुराने कपड़े।

पटत्कः [पटत्+कै+क] चोर।

पटपटा (अव्य०) अनुकरण मूलक ध्वनि।

पटलम् [पट्+कलच्] 1. छत, छप्पर—विनमितपटलांत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दृश्यते जीर्णकुड्यम् मुद्रा० ३।१५ 2. ढकना, आवरण, अवगुण्ठन, लेपन—शिरसि मसीपटलं दधाति दीप: भामि० १।७४ 3. आँखों का जाला 4. ढेर, समूहसंघ, राशि, परिमाण रथागपाणे: पटलेन रोचिषाम्—शि० १।२१, जलदपटलानि पंच० १।३६१, क्षौद्रपटलै: रघु० ४।६३, मुक्तापटलम्—१३।१७ तारकपटलम्—गीत० ७ 5. टोकरी 6. अनुचरवर्ग, नौकर चाकर, ल:-ली 1. वृक्ष 2. ठठल, ल:, —लम् पुस्तक का अध्याय । सम०—प्रात: छत का किनारा ।

पटह: [पटेन हन्यते —पट+हन्+ड] 1. धौंसा, नगाड़ा, ढोल, तबला, कुर्वन् संध्याबलिपटहता शूलिन: श्लाघनीयाम् मेघ० ३४, पटुपटहध्वनिभिर्विनोदनिद्रः रघु० ९।७१ 2. आरम्भ, उपक्रम 3. घायल करना, मारना । सम०—घोषक: दिंडोरची (जो ढोल पीटता जाता है और घोषणा करता जाता है) डोंडी पीटने वाला, —भ्रमणम् लोगों को एकत्र करने के लिए ढोल पीटते हुए इधर उधर घूमना ।

पटालुका [पट+आल्+उक+टाप्] जोंक ।

पटि:,-टी (स्त्री०) [पट्+इन्, पटि+ङीप्] 1. रंगशाला का पर्दा 2. कपड़ा 3. मोटा कपड़ा, कैनवस 4. कनात । सम० क्षेप: (रंगशाला) के पर्दे को एक ओर गिराना, यह एक प्रकार का रंगमंच का निर्देशन है जो किसी पात्र के शीघ्रता पूर्वक रंगमंच पर आने को प्रकट करता है, तु० 'अपटी क्षेप' ।

पटिष्ठ (पु०) [पट्+इमनिच्] 1. दक्षता, चतुराई 2. निपुणता 3. तीक्ष्णता 4. नैपुण्य 5. प्रचंडता, तीव्रता आदि ।

पटीर: [पट्+ईरन्] 1. खेलने की गेंद चंदन की लकड़ी 3. कामदेव—रघु० 1. कल्पा 2. चलनी 3. पेट 4. क्षेत्र 5. बादल 6. ऊँचाई । सम०—जन्मन् (पु०) चन्दन का पेड़—वहन्ति विषधरान् पटीरजन्मा—भामि० १।७४ ।

पटु (वि०) (स्त्री० —टु, टी म० अ०—पटीयस्, उ० अ०—पटिष्ठ) [पट्+कित्+उ, पटादेश:] 1. चतुर, कुशल, दक्ष, प्रवीण (प्राय: अधि० के साथ) वाचि पटु: 2. तीक्ष्ण, तीखा, चरपरा 3. प्रखर, काइयाँ 4. प्रचंड, मजबूत, तीव्र, गहन—अयमपि पटुर्धारासारो न बाणपरंपरा—विक्रम० ४।१, उत्तर० ४।३ 5. कर्कश, सुश्राव्य, तेजश्चनियुक्त—किमिदं पटुपटहध्वनिभिश्चो नादीनादः—मुद्रा० ६, पटुपटहध्वनिभिर्विनोदनिद्रः—रघु० ९।७१, ७३ 6. प्रवण, स्वस्थ—शि० १५।४३ 7. कठोर, क्रूर, पाषाणहृदय 8. मक्कार, धूर्त, चालाक, शठ 9. नीरोग, स्वस्थ 10. सक्रिय, व्यस्त 11. वाक्पटु, वाग्मी 12. खिला हुआ, फूलाया हुआ—टु:-टु (नपुं०) कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी—टु (नपुं०) नमक । सम० —कर्ण, —वेशीय (वि०) खासा चतुर, तीक्ष्णबुद्धि ।

पटोल: [पट्+ओलच्] परमल, ककड़ी की जाति का, —लम् एक प्रकार का कपड़ा ।

पटोलक: [पटोल+कै+क] शुक्ति, घोंघा ।

पट्ट:—टम् [पट्+क्त, डत्वाभावः] 1. शिला, तख्ती (लिखने के लिए) पट्टिका—शिलापट्टसधिशयाना—शि० ३, इसी प्रकार भालपट्ट आदि 2. राजकीय अनुदान, राजाज्ञा—याज्ञ० १।३१७ 3. किरीट, मुकुट—रघु० १८।४४ 4. धज्जी—निर्मिकपट्टा: फणिभिर्विमुक्ता: —रघु० १६।१७ 5. रेशम—पट्टोपधानम् का० १७, भर्तृ० ३।७४, इसी प्रकार 'पट्टांशुक' 6. महीन या रंगीन कपड़ा, वस्त्र 7. ओढ़ने का वस्त्र—भट्टि० १०।६० 8. शिरोवेष्टन, पगड़ी, रंगीन रेशमी साफा —रत्न० १।४ 9. सिंहासन 10. कुर्सी, तिपाई 11. ढाल 12. चक्की का पाट 13. चौराहा 14. नगर, कस्बा 15. पट्टी, तनी या बंधनी । सम०—अर्हा पटरानी—उपाध्याय: राजाज्ञा तथा अन्य प्रलेखों या दस्तावेजों के लिखने वाला,—अम् एक प्रकार का कपड़ा—देवी, —महिषी, —राज्ञी पटरानी,—वन्ध्य,—वास्तु (वि०) रेशमी या रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित ।

पट्टनम्,—नी [पट्+तनप्, पट्टन+ङीप्] नगर ।

पट्टिका [पट्टी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. तख्ती, फलक जैसा कि 'क्रीडपट्टिका' में 2. प्रलेख या दस्तावेज 3. धज्जी कपड़े का टुकड़ा—वल्कलैकदेशाद्विपाट्य पट्टिकाम्—का० १४९ 4. रेशमी कपड़े का टुकड़ा 5. बन्धनी या तनी, पट्टी । सम०—वायक: रेशम की बुनावट ।

पट्टि (ट्टी) श्र: (स्त्र:) [पट्ट+इञ् (स्त्र) क्, पक्षे पट्टी+शी (सी)+क] एक तेज धार की बर्छी, क्षणप्राप्तपट्टिश आदि दश० (पट्टिशो लौहदण्डो यस्तीक्ष्णधार: क्षुरोपम:—वैजयंती)

पट्टोलिका [पट्ट+उल्+ण्वुल्+टाप्, ह्रस्वश्च] एक प्रकार का बंध या पट्टा (भूमिकरग्रहणव्यवस्थापक: पत्रभेद: —तारा०) ।

पठ् (स्वा० पर०—पठति, पठित) 1. जोर से पढ़ना या दोहराना, सस्वर पाठ करना, पूर्वाभ्यास करना—य: पठेच्छृणुयादपि 2. पाठ करना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रोक्तं पठन् द्विज:- मनु० १२।१२६, ४।९८३ 3. (देवता का) आवाहन करना 4. हवाला देना, उद्धृत करना, (किसी पुस्तक का) उल्लेख करना—एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं पुराणे यदि पठ्यते—महा० 5. घोषणा करना, अभिव्यक्त करना—भार्या च परमो हार्थ: पुरुषस्येह पठ्यते महा० 6. (अपा० के साथ).....से पढ़ना, प्रेर०—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाठयति-ते 1. जोर से पढ़वाना 2. अध्यापन करना, शिक्षा देना—सन्तत—पिपठिपति—पाठ करने की इच्छा करना,—परि—,उल्लेख करना, घोषणा करना (प्रेर०) शिक्षा देना—तौ सर्वं विद्याः परिपाठितौ—उत्तर० २, सम् , पढ़ना, सोचना—मनु० ४।९८ ।

पठकः [पठ्+ण्वुल्] पढ़ने वाला ।

पठनम् [पठ्+ल्युट्] 1. पढ़ना, पाठ करना 2. उल्लेख करना 3. अध्ययन करना, अनुशीलन करना ।

पठिः [स्त्री०] [पठ्+इन्] पढ़ना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना ।

पण् i (भ्वा० आ०—पणते, पणित) 1. व्यापार करना, लेन-देन करना, खरीदना, मोल लेना मै० २।९९ 2. सौदा करना, वाणिज्य करना 3. शर्त लगाना या दाँव पर लगाना (शर्त की वस्तु में प्रायः सर्व०. परन्तु कभी कर्म० भी)—प्राणान्।सर्वस्वम्—भट्टि० ८।१२१, पणस्व कृष्णां पांचालीम् महा० सं. जोखिम उठाना, ii (भ्वा० आ०, चुरा० उभ०—पणते, पणायति-ते) 1. प्रशंसा करना 2. सम्मान करना, वि—, देखना, अदल बदल करना आभीरदेशे किल चन्द्रकान्तं त्रिभिर्वराटैर्विपणन्ति गोपाः सुभा० ।

पणः [पण्+अप्] 1. पासों से या दाँव लगाकर खेलना 2. जुआ, जो दाँव या शर्त लगा कर खेला जाय याज्ञ० २।१८, दमयंत्या पणः साधुवेत्तव्याम्—महा० 3. दाँव पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त, संविदा, समझौता- संधिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन वेणी० १।१५, ठहराव, सुलह हि० ४।११८, ११२ 5. मजदूरी, भाड़ा 6. पारितोषिक 7. रकम जो या तो शिक्षकों में हो या कौड़ियां में 8 ८० कौड़ी के मूल्य का सिक्का—अशीतिभिर्वराटकैः पण इत्यभिधीयते 8. मूल्य 10. धन दौलत, संपत्ति 11. विक्रयवस्तु 12. व्यापार, लेनदेन 13. दुकान 14. बिक्री, बेचने वाला 15. शराब बेचने वाला 16. मकान । सम० अंगना—स्त्री बेश्या, रंडी,—अंधिः मंडी, मेला या पैंठ,—बंधः 1. संधि या सुलह करना—पणबंधमुखान् गुणानजः बहुपायमुक्त समीक्ष्य तत्फलम्—रघु० ८।२१, १०।८६ 2. संभवतः, ठहराव (यदि भवतानिदं कुपात्तिर्हृदयमहं भवते दास्यामीति समयकरणं पणबंधः—मनोरमा) ।

पणनम् [पण्+ल्युट्] 1 अदल-बदल करना, खरीदना 2. शर्त लगाना 3. बिक्री ।

पणबः [पणं स्तुतिं वाति-पण+आ+क] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—भग० १।१३, शि० १३५ ।

पणाय्या [पण्+आय+अप्+टाप्] 1. लेनदेन, व्यवसाय, व्यापार 2. मंडी 3. वाणिज्य से प्राप्त होने वाला लाभ 4. जूआ खेलना 5. प्रशंसा ।

पणिः (स्त्री०) [पण्+इन्] बाजार (पु०) 1. कंजूस, लोभी 2. अपावन मनुष्य या पापी ।

पणित (भू० क० कृ०) [पण्+क्त] 1. (व्यापार में) किया गया लेने-देन 2 शर्त पर रक्खा हुआ, दे० 'पण' ।

पंड i (भ्वा० आ०—पंडते, पंडित) जाना, हिलना-जुलना; ii (चुरा० उभ०—पंडयति-ते) संग्रह करना, चट्टा लगाना, ढेर लगाना ।

पंडः [पंड्+अच्, ड वा] हिजड़ा, नपुंसक ।

पंडा [पंड्+टाप्] 1. बुद्धिमत्ता, समझ 2. ज्ञान, विज्ञान ।

पंडावत् (पु०) [पंडा+मतुप्] बुद्धिमान्, विद्वान् ।

पंडित (वि०) [पंडा+इतच्] 1. विद्वान्, बुद्धिमान्- स्वस्थे को वा न पंडितः 2. सूक्ष्मबुद्धि, चतुर 3. दक्ष, प्रवीण, कुशल (प्रायः अधि० के साथ या समास में)—ममरालापनिषण्णपंडिताम् कु० ४।१६, इसी प्रकार 'नृत्तपंडित'-४।१८, 'नयपंडित' आदि,—तः 1. शास्त्रज्ञ, विद्वान् 2. गणेश्वर । सम० जातीय (वि०) कुछ चतुर,—मानिन्, मानिन्, पंडितंमन्य (वि०) अपने आप को विद्वान् समझने वाला, समझदार आदमी, अपने आपको शास्त्रज्ञ या पंडित मानने वाला ।

पंडितम्न् (पु०) [पंडित+ इमनिच्] ज्ञान, विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता ।

पण्य (वि०) [पण+यत्] 1 बिकाऊ, विक्रययोग्य 2. लेन-देन के योग्य- ण्यः 1. वर्तन, वस्तु, विक्रेयवस्तु पुराणभाषासे विणिरूपण्या रघु० १६।४१, पण्यानां गणिकः पण्यम्—पंच० १।१३, मनु० ५।१२९ याज्ञ० २।२८५, मालवि० ११९५ 2. दोगिज, व्यवसाय 3 मूल्य-बहुता पुण्य पण्येन क्रीतेयं कामलोलुपा शा० ३।१ । सम०—अंगना, योषित् (स्त्री०), —विलासिनी,—स्त्री (स्त्री०) वेश्या, रंडी एवंस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्येतकः—भर्तृ० ३।९०, मेघ० २५, अजिरम् मंडी, आजीवः व्यापारी, —आजीवकम् मंडी, पेंठ या मेला' पतिः बड़ा व्यापारी—भूमिः (स्त्री०) मालगोदाम, वीथिका, —वीथी,—शाला 1. मंडी, 2 विक्रयणी, दुकान ।

पत् (भ्वा० पर० पतति, पतित) 1. गिरना, गिर पड़ना, नीचे आना, उतरना—अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात विद्याधरहस्तमुक्ता—रघु० २।७०, वृष्टिर्भवने चास्य पेतुषी—१०।७७, (रेणु) पतति परिणतारुण प्रकाशः सलिलसमूह इवाश्मदूषितेषु—शृं० १।३१, मेघ० १०५, भट्टि० ७।९, २१।६ 2. उड़ना, वायु में आना जाना, उड़ान भरना हतुं कलहकारोऽसौ शब्दकारः पपात खम्—भट्टि० ५।१०० दे० नी० 'पतत्' 3. छिपाना, डूबना (क्षितिज के नीचे) सोऽयं चन्द्रः पतति गगनादल्पशेषैर्मयूखैः—शृं० ४, अने० पा०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पतत्पतंगवत्निमज्जनधीनिधिः—शि० १।१२ 4. अपने आप को डालना, नीचे फेंकना—मयि ते पादपतिते किंकरव्यमुपागते· पंच० ४।७, इसी प्रकार 'चरणपतितम्' मेघ० १०५ 5. (नैतिक दृष्टि से) गिरना, जाति से पतित होना, प्रतिष्ठा का नष्ट होना, भ्रष्ट होना परधर्मेण जीवन् हि सद्यः पतति जातितः; मनु० १०।९७; ३।१६, ५।१९, ९।२००; याज्ञ० १।३८ 6. (स्वर्ग से) नीचे आना—पतति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः—भग० १।४१ 7. घटना, आपद्ग्रस्त या संकटापन्न होना—प्रायः कदुकपतितोत्पतत्यार्यः· पतत्यपि— भर्तृ० २।१२३ 8. नरक में जाना, नारकीय यातना सहन करना· मनु० ११।३७, भग० १६।१६ 9. पड़ना, घटित होना, हो जाना, संपन्न होना—लक्ष्मीर्यत्र पतति तत्र विद्यैवाद्या इव व्यापदः—सुभा० 10. निर्दिष्ट होना, उतरना या पड़ना (अधि० के साथ)·—प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जनें पतंति चक्षूंषि न दारुणाः शराः— शृं० ६।२८ 11. भाग्य में होना 12. प्राप्त होना, फैलना— प्रेर०—(पातयति—ते—पतयति विरल प्रयोग) 1. नीचे गिराना, उतारना, डुबोना —निपतंतीं पतिमप्यपातयत्— रघु० ८।३८, ९।६१, ११।३६ 2 गिरते देना, नीचे को फेंकना. गिराना, (वृक्ष आदि का) गिराना 3. बर्बाद करना, परास्त करना 4. (आँसू) गिराना 5 फेंकना, (दृष्टि) डालना, सन्नन्त— पिपतिषति-गिरने की इच्छा करना अव--, 1. उड़ना 2. पीछे दौड़ना, अनुसरण करना, पीछे लगे रहना, पीछा करना ---मुहुरनुपतति स्यंदने दत्तदृष्टिः शृं० १।७, मा० ९।८, शि० ११।४०, अभि -, 1. निकट उड़ना, नजदीक जाना, पास पहुँचना, अधिरोहुमसंतुलिंगि-मनोरथत् शि० ९।१, किं० १५।३६ 2. आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना रघु० ७।३७ 3. उड़ कर पकड़ लेना 4. वापिस आना, लौट पड़ना पीछे हटना, अभ्युद्--, टूट पड़ना, आक्रमण करना, आ , 1. टूट पड़ना, आक्रमण करना, धावा बोलना —रघु० १२।४४, ५।५० 2. उड़ना, मिल पड़ना, झपटना 3. निकट जाना 4. होना, घटित होना, आ पड़ना—कथमिदमापतितम्—उत्तर० २, अहो न खलमनमापतितम्—पंच० २ 5. सूझना, (मन में) आना, टति हृदये नापतितं—का० २८८, उद् , उछलना कूदना मंथूदपतिं परितः पटलैरलीनाम् शि० ५।३७, [प्रायः कर्म० या संप्र० के साथ) उल्लोढ्डमुखः खम्—मेघ० १४, भट्टि० ५।३०, स्वर्गायोत्पतिता भवेत् विक्रम० ४।२, कु० ६।२६ 2. सूझना, विचार में आना रघु० १३।११ 3. (गेंद की भांति) उछल कर आना —भर्तृ० २।८५ 4. उदय होना, जन्म लेना, फूटना, उत्पन्न होना— निष्पेषोत्पतितावनल—रघु० ४।७७, स्खलत्समाहर्तरिवास्य उत्पतुः रामा०, नि--, 1. नीचे गिरना या आना, अवरोहण करना, उतरना, डूबना—निपतंतीं पतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, भट्टि० १५।२७ 2. फेंका जाना, निर्दिष्ट होना रघु० ६।११ 3. (पैरों में) डालना, साष्टांग लेटना· देवास्तदंते हरमूर्ध्वबाहवः किरीटबद्धांजलयो निपेतुः· कु० ७।९२, भर्तृ० २।३१ 4. गिरना, उतरना, मिल जाना— रघु० १०।२६ 5. टूट पड़ना, आक्रमण करना, पिलप हुना— सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु · भर्तृ० २।३८ 6. होना, घटित होना, आ पड़ना, भाग्य में होना सकृदंशो निपतति मनु० ९।४७ 7. रुकावा जाना, स्थान पर अधिकार करना—अभ्यहितं पूर्वं निपतति प्रेर०—1. नीचे गिराना, फेंकना, पटक देना 2. भार डालना, नष्ट करना, बर्बाद करना निस्—निकलना, फूट पड़ना, फल निकलना, निकल पड़ना अरविंदरेणुपत्तर्तकैर्निष्पतद्भिः —शं० ७।७, एषा विदूरीभवतः समुद्गमकानना निष्पततीव भूमिः— रघु० १३।१८, मनु० ८।५५, याज्ञ० २।१६, कु० ३। ७१, मेघ० ६९, परा—, 1. पहुँचना, निकट आना, पास जाना 2. वापिस आना, फिर , इधर उधर उड़ना, चक्कर काटना, छा जाना बिंदूत्क्षेपान् पिपासुः परिपतति शिखी भ्रांतिमद्वारियंत्रम्-मालवि० २।१३, अमरु ४८ 3. झपट्टा मारना, आक्रमण करना, टूट पड़ना (युद्ध में) 3. सब दिशाओं में दौड़ना— (हयाः) परिपेतुर्दिशो दश—महा० 4. चले जाना, गिर पड़ना—शि० ११।४१, प्र—, 1. नीचे आना, नीचे गिरना, उतरना 2. गिरकर अलग या दूर हो जाना 3. उड़ना, इधर उधर झपटना, प्रणि—, प्रणाम करना, अभिवादन करना (कर्म० या संप्र० के साथ) प्रणिपत्य सुरालयश्रमं रघु० १०।१५, वाणीशं वाग्भिरर्थाभिः प्रणिपत्यापतत्स्थिरैः· कु० २।३. प्रोद--ऊपर उड़ना, उड़ान भरना, विति—, उड़ना, गिरना, उतरना ---ऋतु० ४।१८ (प्रर०) गिराना, बर्बाद करना, नष्ट करना--मृच्छ० २।८, सम्--, 1. मिल कर उड़ना, एकत्र होना 2. इधर उधर जाना या घूमना 3. आक्रमण करना, टूट पड़ना, धावा बोलना 4. होना, घटित होना, (प्रेर०)—1. निकट लाना 2. संग्रह करना, एकत्र करना मिलाना,·—रघु० १४।३६, १५।७५ ।

पतः [पत् + अच्] 1. उड़ना, उड़ान 2. जाना, गिरना, उतरना, । रम० गः पक्षी. मनु० ७।२३ ।

पतंगः | पतन् उत्प्लवन् गच्छति—गम् + ड, नि०] 1. पक्षी नृपः पतंगं समधत्त पाणिना नै० १।१२४, भामि० १।१७ 2. सूर्य विकसति हि पतंगस्योदये पुंडरीकम्— उत्तर० ६।१२, मा० १।१२ शि० १।१२, रघु० २।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१५ 3. शलभ, टिड्डी-दल, टिड्डा—पतंगवद्वह्निमुखं विविक्षुः—कु० ३।६४,४।२०, पंच ३।१२६ 4. मधुमक्खी, -गम् 1. पारा 2. एक प्रकार की चंदन की लकड़ी।

पतंगमः [पत्+गम्+खच्, मुम्] 1. पक्षी 2. शलभ।

पतंगिका [पतंग+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटी चिड़िया 2. एक छोटी मधुमक्खी।

पतंगिन् (पुं०) [पतंग+इनि] पक्षी।

पतंचिका [पत् अत्रुं चिक्कयति पीडयति -पृषो०] धनुष की डोरी।

पतंजलिः (पुं०) पाणिनि के सूत्रों पर लिखे गये—महाभाष्य के प्रसिद्ध निर्माता, दार्शनिक, योगदर्शन के प्रवर्तक।

पतत् (वि०) (स्त्री०—ती) [पत्+शतृ] उड़ने वाला, अवरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे आने वाला (पुं०) पक्षी—परमः पुमानिव पतिः पतताम्—कि० ६।१, क्वचित्पक्षा संचरते गुरणानां क्वचिद्विनाना पतला क्वचिच्च—रघु० १३।१९, शि० ९।१५। सम०—ग्रहः 1. प्रारक्षित सेना 2. थूकने का बर्तन, पीकदान—तमेकनाणिकक्रयमयं महोल्लतं पत्तद्ग्रहं ग्राहितवान्लेख सः—नै० १६।२७, -भोदः बाज, श्येन।

पतत्रम् [पत्—करणे अत्रन्] 1. बाजू, डैना 2. पर, पंख 3. सवारी।

पतत्रिः [पत्+अत्रिच्] पक्षी।

पतत्रिन् (पुं०) [पतत्र+इनि] 1. पक्षी,—दर्पिताइन्द्रचरं पतत्रिणं (पुनरेति) रघु० ८।५६,९।२७,११।११, १२।४८, कु० २।४ 2. बाण 3. घोड़ा। सम० - केतनः विष्णु का विशेषण।

पतनम् [पत्—ल्युट्] 1. उड़ने या नीचे आने की क्रिया, उतरना, अवरोहण करना, अपने आपको तीव्रवेग से पटकना 2. (सूर्यादिका) अस्त होना 3. नरक में जाना 4. धर्मभ्रंश 5. मर्यादा या प्रतिष्ठा से गिरना 6. अवपात, ह्रास, नाश, विपत्ति (विप० उदय या उच्छ्राय)—ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रायाः पतनानि च—याज्ञ० १।३०७ 7. मृत्यु 8. नीचे लटकना, (छाती का) ढलकना 9. गर्भस्राव होना।

पतनीय (वि०) [पत्—अनीयर्] गिराने वाला, जातिभ्रष्ट करने वाला—यम् पतित करने वाला पाप या जुर्म—याज्ञ० ३।४०, २१८।

पतमः, पतसः [पत्+अम, असच् वा] 1. चांद 2. पक्षी 3. टिड्डा।

पतयालु (वि०) [पत्+णिच्+आलुच्] पतनोन्मुख, पतनशील।

पताका [पत्यते आयते करश्चिद्धेदोऽत्रा -पत्+आक+टाप्] झण्डा, ध्वज (आलं० से भी) में कामप्रमंजरी कामयते स हरतु सुभगपताकाम् दश० ४७, (सर्वोपरि सौन्दर्य का सौभाग्य का आनंद लेने दो उसे) 2. ध्वजदण्ड 3. संकेत, लक्षण, चिह्न, प्रतीक 4. उपास्थान या नाटकों में आई हुई प्रासंगिक कथा, दे० नी०—पताकास्थानक' 5. मांगलिकता, सौभाग्य। सम०—अंशुकम्—झंडा—स्थानकम् (नाटच० में) प्रासंगिक कथा की सूचना जब कि अप्रत्याशित रूप से, किसी परिस्थितिवश उसी लक्षण वाली कोई दूसरी आकस्मिक अविचारित वस्तु प्रदर्शित की जाती है (यत्रार्थे चिन्तितेऽन्यस्मिंस्तल्लिंगोऽन्यः प्रयुज्यते, आगन्तुकेन भावेन पताकास्थानकं तु तत्, सा० द० २९९ (इसके अन्य प्रकारों की जानकारी के लिए दे० ३०७—३०४ तक)।

पताकिक (वि०) [पताका+ठन्] झंडा उड़ाने वाला, ध्वजदण्डधारी।

पताकिन् (वि०) [पताका+इनि] झंडा ले जाने वाला, पताकाओं से अलंकृत (पुं०) 1. झंडाधारी, झंडाबरदार 2. ध्वजा,—नी सेना (न प्रहेहे) स्थयत्कर्मराजोऽध्यस्य कुन एव पताकिनीम्—रघु० ४।८२, कि० १४।२७।

पतिः [पाति रक्षति—पा+इति] 1. स्वामी, प्रभु जैसा कि 'गृहपति' में 2. मालिक, अधिपति, स्वामी—क्षेत्रपति 3. राज्यपाल, शासक, प्रधानता करने वाला, औषधीपतिः, वनस्पतिः कुलपति आदि 4. भर्ता प्रमदा पतिवत्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि—कु०४।३३। सम—घातिनी, —न्नी वह स्त्री जो अपने पति का वध कर देती है, —देवता,—देवा वह स्त्री जो अपने पति को देवता समझती है, पतिव्रता, सती स्त्री कः पतिदेवतामन्यः परिमार्ष्टुमुत्सहेत—श० ६, तमलभत पतिं पतिदेवता शिवविरोधिमिवाशयमाशया—रघु० ९।१३ पूरि स्थिता त्वं पतिदेवतानाम्—१।७४,—धर्मः अपने पति के प्रति (पत्नी का) कर्तव्य,—प्राणा सती स्त्री—लोकः वह लोक जहां मृत्यु हो जाने के पश्चात् पति पहुंचता है,—व्रता भक्त, श्रद्धालु, निष्ठावती स्त्री; सती स्त्री एवम् पति के प्रति निष्ठा, स्वाभिभक्ति,—सेवा पति के प्रति भक्ति।

पतिंवरा [पति+वृ+खच्, मुम्] अपना वर चुनने के लिए तत्पर स्त्री—रघु० ६।१०, ६७।

पतितः (भू० क० कृ०) [पत्+क्त] 1. गिरा हुआ, अवरूढ, उतरा हुआ 2. नीचे गिरा हुआ 3. (नैतिक दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुश्चरित्र 4. स्वधर्मभ्रष्ट 5. अपसादित, जातिबहिष्कृत 6. युद्ध में हारा हुआ, पराजित, परास्त 7. ग्रस्त, फंसा हुआ जैसा कि 'अवशपतित' में।

पतेरः [पत्+एरक्] 1. पक्षी 2. छिद्र या विवर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्तनम् [पद्यन्ते जना यस्मिन्, पत्+तनन्] कस्बा, नगर (विप० ग्राम)--पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्न परीक्षा-गाल्वि० १।

पत्तिः [पद्+क्तिच्] 1. पैदल, पैदल सैनिक--रघु० ७।३७ 2. पैदल चलने वाला यात्री 3. चोर--(स्त्री०) 1. सेना का छोटे से छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल सैनिक हों 2. जाने वाला, चलने वाला। सम०--कायः पैदल सेना,--गणकः सेना का अधिकारी जिसका काम पैदल सेना की गिनती करना है--संहतिः (स्त्री०) पैदल सिपाहियों की टुकड़ी, पैदल सेना।

पत्तिन् (पुं०) [पद्यन्ते तेलादि, पाद-इनि, पादस्य पदादेशः] पैदल सिपाही।

पत्नी [पति+ङीप्, नुक्] सहधर्मिणी, भार्या। सम०--आटः नगर-गोपुरम्, अलपुर,--सन्नहनम् धर्मपत्नी का कटिबन्ध या करधनी।

पत्रम् [पद्+ष्ट्रन्] 1. (वृक्ष का) पत्ता--पत्रे भरं कुसुमगा लोभात्कोनाम्--भामि० १।९४ 2. फूल की पत्ती, कमल का पत्ता--तोलालपत्रव्यजनैः--श० १।१७ 3. पत्ता जिसके ऊपर लिखा जाय, कागज, लिखा हुआ पत्र--पत्रारूढाः प्रेषिताम्--श० ६, पत्र पर लिखा लेख, चिट्ठी--विक्रम० २।१८ 4. पत्र, दस्तावेज 5. किसी धातु का पत्रा, स्वर्ण-पत्र 6. पक्षी का बाजू, पंख, पर 7. बाण का पंख--रघु० २।३१ 8. सामान्य सवारी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि) दिशः पपात पत्रेण विलोकितेन--रघु० १।१४८ नै० ३।१६ 9. शरीर पर (विशेष कर मुख पर) चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्य का लेप करना रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोः--गीत० १२, रघु० १३।५५ 10. तलवार या चाकू का फल 11. चाकू, छुरी। सम०--अंगम् 1. वृक्ष 2. लाल चंदन--अंगुलिः शरीर (चंदन, लाक्षा आदि) पर अंगुलियों से केसर मिश्रित चंदन से अंग रचना गुर्वंगुलिः पदार्थ से चित्रण करना, --अंजनम् मसी,--आवलिः (स्त्री०) 1. शरीर 2. पत्तों का कतार 3. शरीर पर सजावट की दृष्टि से चंदनादि से रेखाचित्रण करना,--आवली 1. पत्तों की पंक्ति 2. = पत्रावली (3),--आहारः पत्ते खाकर जीवित रहना,--इणम् बुनने वाली रेशम, रेशमी वस्त्र--नानीविवस्त्रिकयेव पत्रीणं वीक्ष्यते--मालवि० ४।१२,--काहला परों के फटफटाहट, पत्तों की खड़खड़ाहट,--गारकः आरा,--नाडिका पत्ते के रेशे,--परशुः छेनी,--पालः लंबी छुरी, बड़ा चाकू (लो) 1. बाण का पंखवाला भाग 2. केंचुआ,--पाल्लवः सड़क का सोने का आभूषण, टीका,--पुटम् पत्तों से बना पात्र, दोना --रघु० २।६५,--भा (वा) ला: चप्पू--भंगः, --भंगिः,--भी (स्त्री०) शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, मेहंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना--कस्तूरीविरचितभंगिनिकरो मण्डस्थले भृंगार० ७ (कादंबरी में बहुलता से प्रयुक्त)--मौक्तिकं तथा पत्ता या कोपल,--रथः पक्षी-व्यर्थीकृतं पत्ररथेन तेन--मै० ३।६, इन्द्रः गरुड़ का नाम, इन्द्रकेतुः विष्णु का नाम रघु० १८।३०,--रे (ले) खा, --वल्लरी,--वल्लिः,--वल्ली (वि०) दे० ऊ० 'पत्र भंग'--रघु० ६।७२, १६।६७, ऋतु० १।३, शि० ८। ५६, ५९--वाज (वि०) (बाण आदि) पक्षों से युक्त, --वाहः 1. पक्षी शि० १८।७३ 2. बाण 3. डाकिया, चिट्ठीरसौ, विशेषकः चित्रकारी की रेखाएँ--दे० 'पत्रभंग'--कु० ३।३३, रघु० ३।५५, १।२९, --वेष्टः एक प्रकार का कानों का आभूषण,--शाकः शाकभाजी जिसमें मुख्यरूप से पत्ते हों,--श्रेष्ठः बेल का पेड़, --सूचिः (स्त्री०) कांटा,--हिमम् जाड़े की ऋतु जब पाला या बर्फ पड़े।

पत्रकर्म [पत्र+कृ+मन्] 1. पत्ता 2. सौन्दर्य बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी।

पत्रणा [पत्र+णिच्+युच्+टाप्] 1. सौन्दर्यवृद्धि के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी 2. बाण में पंख लगाना।

पत्रिका [पत्री+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. लिखने के लिए कागज 2. चिट्ठी, लेख, प्रलेख।

पत्रिन् (वि०) (स्त्री०--णी) [पत्रम् अस्त्यर्थे इनि] 1. पत्तों से युक्त, परों वाला--मयूरैः --रघु० ३।५६ 2. जिसमें पत्ते या पृष्ठ हों (पुं०) 1. बाण--जां विलोक्य वनितावधे धृणां पत्रिणा सह सुमोच राघवः--रघु० ११।२७, ३।५३, ९।६१ 2. पक्षी--रघु० १२।२९ 3. बाज 4. पहाड़ 5. रथ 6. वृक्ष। सम०--वाहः पक्षी।

पत्सलः [पद्+असलच्, ह्रस्व लः] रास्ता, मार्ग।

पथः [पद्+क (घञर्थे)] रास्ता, मार्ग, प्रसार, (समास के अन्त में) किनारा। सम०--कल्पना जादू के खेल, --दर्शकः मार्ग बतलाने वाला।

पथिकः [पथिन्+कन्] 1. यात्री, मुसाफिर, बटोही --पथिकवनिताः मेघ० ८, अमरु ९३ 2. पथप्रदर्शक। सम०--संततिः, संहतिः (स्त्री०,--सार्थः यात्रियों का समूह, काफला।

पथिन (पुं०) [पथ आधारे इनि] (कर्तृ० पंथाः, पंथानौ, पंथानः, कर्म० ष० व० पथः, करण० च० व० पथिभिः आदि, समास के अन्त में यह शब्द बदल कर 'पथ' हो जाता है--तीर्थादानपथः, दृष्टिपथः, नदपथः, सत्पथः, प्रतिपथम् आदि) 1. मार्ग, रास्ता,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पथ श्रेयसामेव पंथाः—भर्तृ० २।२६, **वक्रः पंथाः**—मेघ० २७ 2. धारा, राहगीरी या पर्यटन—जैसा कि 'शिवास्ते सन्तु पंथानः' में (मैं आपकी मुक्त यात्रा की कामना करता हूं, भगवान् आपकी धारा सफल करें) 3. परास, पहुंच जैसा कि कर्णपथ, श्रुति, और दर्शन में 4. कार्यपद्धति, आचरण की रेखा, व्यवहारक्रमः—पथः शुचेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसा-मादत्ते न पङ्क्तिम्—रघु० ३।४६ 5. संप्रदाय, सिद्धांत 6. नरक का प्रकाश। सम०—**देयम्** सार्वजनिक मार्गों पर लगाया गया राजकर,—**द्रुमः** खैर का पेड़, —**प्रश्न** (वि०) मार्गों का जानकार—**वाहकः** (वि०) कूर (कः) 1. शिकारी, चिड़ीमार 2. बोझा ढोने वाला, कुली।

पथिकः [पथ् + इलच्] यात्री, राहगीर, बटोही।

पथ्य (वि०) [पथिन् + यत्] [इनो लोपः] 1. स्वास्थ्य प्रद, स्वास्थ्यवर्धक, कल्याणकारी, उपयोगी (औषधि, आहार, सम्मति आदि) अधिवस्तु तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः—रामा०, याज्ञ० ३।६५, **पथ्यमन्नम्** 2. योग्य उचित, उपयुक्त,—**थ्यम्** 1. स्वास्थ्यवर्धक या पौष्टिक आहार जैसा कि 'पथ्याशी स्वामी वर्तते' में 2. कल्याण, कुशलक्षेम —उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता—शि० २।१०। सम०—**अपथ्यम्** उन पदार्थों का समूह जो किसी रोग में स्वास्थ्यवर्धक या हानिकर समझे जाते हैं।

पद I (फुरा० आ० पदते) जाना, हिलना-जुलना।

II (दिवा० आ० पद्यते, पन्न—प्रेर०—पादयति-ते, इच्छा० पित्सते) 1. जाना, चलना-फिरना 2. पास जाना, पहुंचना (कर्म० के साथ) 3. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना ज्योतिषामायिषाय च प्रभाव चाप्रयतत —महा० 4. पालन करना, अनुसरण करना —स्वधर्मं पद्यमानास्ते—महा० अनु० ८, 1. पीछे चलना, अनुगमन करना, सेवा करना 2. स्नेहशील होना, अनुरक्त होना 3. प्रविष्ट होना, अन्दर जाना 4. अपनाना 5. मालूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना, **अभि.**—पास जाना, नजदीक होना, पहुंचना—राघवा-वरजा तत्र राघवं मदनातुरा, अभिपेदे निदाघार्ता व्यालोलं मजदूर्मम्—रघु० १२।३२, १९।११ 2. संमिलित होना—शि० ३।२५ 4. अवलोकन करना, विचार करना, खोजना, समझना—क्षणयम्य-पद्यत जनैर्न मुग्धा मयन गणाधिपति मूर्तिरिति—शि० ९।२७ 5. सहायता करना, मदद करना, सम्पन्न करना, **आ**—महा० 1. पकड़ना, पराजय करना, आक्रमण करना, दबोच लेना, अधिकार में कर लेना, प्रश्न करना सर्वतश्चाभिसन्पेदा धार्तराष्ट्री महाचमूः, चंद्रवातामि-पन्नानामुदधीनामिव स्वनः—महा०, **दे० अभिपद्**' 6. लेना, धारण करना—मनु० १।३ 7. स्वीकार करना, प्राप्त करना, अभ्युप—. 1. दया करना, सांत्वना देना, आराम पहुंचाना, तर्क खाना, अनुग्रह करना (कष्ट से) मुक्त करना कु० ८।५५, ५।६१ 2. सहायता मांगना, दीनता प्रकट करना 3. सहमत होना, स्वीकृति देना आ—, 1. निकट जाना, की ओर चलना, पहुंचना—भट्टि० १५।८९, 2. प्रविष्ट होना, (किसी स्थान या स्थिति को) चले जाना या प्राप्त करना—निवेदमापद्यते मुच्छ० १।१४, (ऊब जाता हूं) आपेदिरेऽवरणर्थं परितः पतंगाः—भामि० १।१७, इसी प्रकार 'क्षीरे दधिभावमापद्यते—सा० 3. कष्ट फेंकना, दुर्भाग्यग्रस्त होना—अर्थश्चार्थी परित्यज्य य काममनुवर्तते, ध्रुवमाप्नुयात्स वैक्लिव्यं राजा दशरथो यथा रामा० 4. होना, घटित होना—भट्टि० ६।३१, प्रेर०—1. प्रकाशित करना, सामने लाना, कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना—रघु० २।१२ 2. निकालना, जन्म देना, पैदा करना—रुधिरमानसापादयति—का० १०५ 3. घटाना, कष्टग्रस्त करना, ले जाना—रघु० ५।५ 4. बदलना 5. नियमन में लाना, **उद्**—1. जन्म लेना, पैदा होना, उदय होना, उत्पन्न होना, उगना—उत्पत्स्यतेऽस्मिन् मम कोऽपि समानधर्मा—मा० १।६, मनु० १।७७ 2. होना, घटित होना—प्रेर० 1. पैदा करना, सर्जन करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, कार्यान्वित करना, प्रकाशित करना—वक्षोरुहावुदपादयति—पंच० २ 2. सामने लाना, **उप**—1. पहुंचना, निकट जाना, पास जाना, पधारना यमुनातटमुपेदे पंच० १ 2. हासिल होना, प्राप्त होना, किसी में आना—भय० ६।३६, १३।१८ 3. होना, घटित होना, आ पड़ना, पैदा हो जाना—देवि एवमुपपद्यते—मालवि० १, उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वलोकपूर्वा—रा० ५।२६—रघु० १।६० 4. संभव होना, संभाव्य होना—नेत्तरां जगतः कारणमुपपद्यते—शारी० कु० ६।६१, ३।१२ 5. उपयुक्त होना, योग्य होना, पर्याप्त होना, अनुरूप सुनिति—(अधि० के साथ) मां कलैव्य गच्छ कौन्तेय नैतत्त्वय्युपपद्यते—भग० २।३, १८।७ 6. आक्रमण करना, प्रेर० 1. किसी स्थिति में लाना, पहुंचाना, प्राप्त कराना—विश्वासमुपपादयति 2. नेतृत्व करना, ले जाना 3. तैयार होना—रथमुपपादयेति—वेणी० २ 4. किसी को कोई वस्तु प्रदान करना, प्रस्तुत करना, उपहार देना—रघु० १४।८, १५।१८, १६।३२, याज्ञ० १।३१५ 5. प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, उपार्जन करना, कार्यान्वित करना, काम में लाना, अनुष्ठान करना यत्नवत् मासाकि प्रकाशमुपपादयितुम्—रत्न० ६२, देवकार्यमृषीणामुपपादयतः—रघु० ११।९१, १७।५५ 6. न्याय्य ठहराना, तर्क देना, प्रदर्शित करना, प्रमा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पित करना 7. संपन्न करना, युक्त करना. निस्—, 1. निकलना, उगना 2. पैदा होना, प्रकाशित होना, उदय होना, कार्यान्वित होना. -निष्पद्यते न संस्थानि— मनु० ६।२४७, प्रेर० पैदा करना, प्रकाशित करना, जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना एवं नित्यसेकमेव पटं निष्पादयसि--पंच० प्र--, 1. (क) की ओर जाना, पहुँचना, आश्रय लेना, चले जाना, पहुँच जाना तां जन्मने शैलवधूं प्रपेदे—कु० १।२१, (द्वितीय) कौन्तेयः प्रपेदे वरनन्दुशिष्यः-- रघु० ५।१, भट्टि० ४।१. कि० १।९, ११।६, रघु० ८।२१ (ख) आश्रय ग्रहण करना— शरणार्थमस्मां कथं प्रपद्ये त्वयि दोष्यमाने रघु० १४।६४ 2. किसी विशिष्ट अवस्था को जाना, पहुँचना या किसी विशिष्ट दशा में होना— रेणु प्रपेदे परिपक्वभावम् -रघु० १६।३०, मुहूर्तं कर्णोत्पलतां प्रपेदे -कु० ७।८१, इदृशीमवस्थां प्रपद्यान्त-रम्--श० ५, कृत्रिमैरीदृशैः संगमः प्रपेदे—मालवि० ४।३३, अमर २७ 3. प्राप्त करना, लेना, लेना, हस्तगत करना, प्राप्त करना, हासिल करना, सहकार न प्रपेदे मधुना भवत्समं जगति भालि० १।२१, रघु० ५।५१ 4. ग्रहण करना, वर्जित करना,—कि प्रपद्यते वैद्यैः मालवि० १, (वह करने के लिए क्या सुझाव प्रस्तुत करता है), पद्यमो मृषि किं प्रपद्यते - अमरु २० 5. प्रविष्ट करना, अनुमति देना, सहमत होना, स्वीकार करना- याज्ञ० २।४०, 6. निकट खिसकना, आना, (समय आदि का) पहुँचना 7. चले चलना, प्रगति करना 8. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, प्रति— . 1. कदम रखना, जाना, पहुँचना, सहारा लेना (किसी व्यक्ति का) आश्रय लेना -उमामुखं तु प्रतिपद्य लोला द्विरेफमाला प्रीतिम-वाप लक्ष्मीं--कु०१।४३ 2. ग्रहण करना, कदम रखना, लेना, अनुमरण करना, (मार्ग आदि) इतः पत्थान प्रति पद्यस्व--उ० ४. प्रतिपद्यस्व पृथ्वीमर्हसि नृप - कु० ४।१० 3. पधारना, पहुँचना, प्राप्त करना— शि० ६।१६ 4. हासिल करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, भाग लेना, हिस्सा लेना-- स हि तस्य न केवलां श्रियं प्रतिपेदे सकलान् गुणानपि —रघु० ८।५. १३, ४।१, ४४. ११।३४, १२।७, १९।५५, भग० १४।१४, शि० १०।९३ 5. स्वीकार करना, मान लेना, -शि० १५।२२, १६।२४, 6. बसूल करना, फिर प्राप्त करना, पुनः उपलब्ध करना, ग्रहण करना -श० ६।३१, कु० ४।१६, ७।९२ 7. मान लेना, स्वीकार करना—न मामेवं प्रतिपत्तासे मा जेन्मतासि मैथिलि भट्टि० ८।७५, श० ५।२२, प्रमदा: पतिवत्समंगा इति प्रतिपन्न हि विचेतनैरपि—कु० ४।३३ 8. थामना, ग्रहण करना, पकड़ना—सुमत्रप्रतिपन्नरश्मिभिः—रघु० १४।४७ 9. विचार करना, खयाल करना, सोचना, अवलोकन करना— तद्धनुर्ग्रहणमेव राघवः प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम्—रघु० ११।७९ 10. अपने जिम्मे लेना, करने की प्रतिज्ञा करना, हाथ में लेना— निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८, कार्यं त्वया नः प्रतिपन्नकल्पम् - कु० ३।१४, रघु० १०।४० 11. हामी भरना, सहमत होना स्वीकृति देना—तयेति प्रतिपन्नाय रघु० १५।९३ 12. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना, पालन करना --आचारं प्रतिपद्यस्व श्र० ४, किरा० २, "औपचारिक आचार (अभिवादन आदि) का पालन करो", शासनमर्हतां प्रतिपद्यध्वम् मुद्रा० ४।१८, आज्ञा पालन करो 13. व्यवहार करना, बर्ताव करना, किसी का कोई कार्य करना (सह० या अधि के साथ), स कालयवनश्चापि किं कृष्णे प्रत्यपद्यत -हरि०, स भवान् मातृपितृवदस्मासु प्रतिपद्यताम् महा०, कथमहं प्रतिपत्स्ये-श० ५, न युक्तं भवतास्मासु प्रतिपत्तुमसाम्प्रतम् - महा० 14. (उत्तर) देना, (प्रत्युत्तर) देना -कथं प्रतिवचनमपि न प्रपद्यसे—मुद्रा० ६ 15. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, जानकार होना 16. जानना, समझना, परिचित होना, सीखना, मालूम करना 17. घूमना, भ्रमण करना 18. होना, घटित होना, (प्रेर०) —1. देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, समर्पित करना- अर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्-- भर्तृ० २।१८, मनु० ११।४, गुणवते कन्या प्रतिपादनीया—श० ४ 2. सिद्ध करना, प्रमाणित करना, प्रमाण देकर पक्का करना उक्तमेवार्थमुदाहरणेन प्रतिपादयति 3. व्याख्या करना, स्पष्ट करना 4. लाना या वापिस मोड़ना, (किसी स्थान पर) ले जाना 5. खयाल करना, विचार करना 6. उपस्थिति की घोषणा करना. पुनः प्रस्तुत करना 7. उपार्जन करना 8. कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना, वि—, बुरी तरह विफल होना, असफल होना, (व्यवसाय आदि), का विफल होना 2. दुर्भाग्यग्रस्त या दुर्दशाग्रस्त होना —स बंधूर्यो विपन्नानामापदुद्धरणक्षमः--हि० १।३१ 3. विकलांग होना, अशक्त होना 4. मरना, नष्ट होना —नाथवत्स्वयं लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे--उत्तर० १।४४, मृच्छ० १।३८, व्या , 1. (पृथ्वी पर) उतरना, नीचे आना 2. मरना, नष्ट होना—दे० व्यापन्न-(प्रेर०)-मारना, कतल करना,—सम्-- 1. (तैयार माल) बाहर निकालना, सफलता प्राप्त करना, समृद्ध होना, सम्पन्न होना, पूरा होना, — --संपत्स्यते वः कामोऽयं कालः कविवप्रतीक्ष्यताम् —कु० २।५४, रघु० १४।७६, मनु० ३।२५४, ६।६९ 2. पूरा होना, (संख्या आदि) जुड़ कर होना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्याहृताः पच पञ्चदश संपद्यंते 3. वन जाना, होना | संपत्स्यते तमोसि भवतो राजहंसाः सहायाः—मेघ० ११, २३, संपेदे श्रयसल्लिलोद्गमो विभूषाम्—कि० ७।५ 4. उदय होना, जन्म लेना, पैदा होना 5. एक जगह पड़ना, एकत्र होना 6. सुसज्जित होना, संपन्न होना, स्वामी होना—अशोक यदि सख एव कुसुमेन संपत्स्यसे —मालवि० ३।१६, दे० 'संपन्न' 7. (किसी ओर) प्रवृत्त होना, करवाना, पैदा करना (संप्र० के साथ)—साधोः शिक्षा गुणाय संपद्यते नासाधोः —पंच० १, मुद्रा० ३।३२ 8. प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना 9. सलग्न होना, लीन होना (अधि० के साथ) (प्रेर०)—1. करवाना, होना, पैदा करना, सम्पन्न करना, पूरा करना, कार्यान्वित करना—इति रवसुर्भोजकुलप्रदीप संपाद्य पाणिग्रहण स राजा—रघु० ७।२९ 2. उपार्जन करना, प्राप्त करना, सज्जित करना, तैयार करना अधिग्रहण करना, हासिल करना 4. सज्जित करना, संपन्न करना युक्त करना 5. बदलना, रूपान्तरित करना, 6. करार या वादा करना, संप्रति —1. की ओर जाना, पहुँचना 2. विचार करना, खयाल करना कु० ५।३९. **सम** 1. घटित होना, होना घटना होना 2. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

पद् (पुं०) [पद्+विच्] (इस शब्द का पहले पांच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व०, के पश्चात् विकल्प से यह पद के स्थान में आदेश हो जाता है) 1. पैर 2. चरण, चौथाई भाग (किसी कविता या श्लोक का)। सम० —काशिन् (पुं०) पैदल चलने वाला, हृति, ती(स्त्री०) (पद्धतिः, ती) रास्ता, पथ, मार्ग, वत्रिया (आर्क० भी) इस हि रघु सिहासा वीरचारित्रपद्धतिः —उत्तर० ५।२२, रघु० ४।४६, ६।५५, ११।८७, कविप्रथम पद्धतिम्—१५।३३, 'कवियो को दिखाया गया पहला मार्ग' 2. रेखा, पंक्ति, शृंखला 3. उपनाम, वंशनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्तिवाचक सज्ञा शब्दों के समास में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो—उदा० गुप्त, दास, दत्त आदि 4. विवाहादि विधि की सूचिका करने वाली पुस्तक. —**हिमम्** (पद्धिमम्) पैरों का उठाना।

पदम् | पद्+अच्] 1. पैर (इस अर्थ में पुं० भी होता है) **पदेन** पैदल—शिखरिषु पदं न्यस्य—मेघ० १३, अथवं पदमर्पयति हि —रघु० २।७४, 'कुमार्ग पर कदम रक्खा' ३।५०, १२।५२. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते—३।६२, 'गुणों के द्वारा सर्वत्र कदम रक्खा जाता है—अर्थात् गुणों की ही कद्र होती है, जनपदे न गद. पदमादधौ —९।४ 'देश में किसी भी रोग ने कदम नहीं रक्खा' यदवधि न पदं दधाति चित्ते—भामि० २।१४, **पदं कृ** (क) कदम रखना (शा०)—(ख) शांते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्—श० ४।२५, (ख) प्रवृत्त होना, अधिकार करना, कब्जा करना, (आलं०) कृतं वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १२७, कृतं हि मे कुतूहलेन प्रश्नावकाशाहृदि पदम् १३३, इसी प्रकार कु० ५।३१, पच० २४०, कृत्वा पदं नो गले —मुद्रा० ३।२६, 'हमारे विरुद्ध' (शा०—अपना कदम हमारी गर्दन पर रखकर), **मूर्ध्नि पदं कृ** किसी के सिर पर चढ़ना, दीन बनाना—पंच० १।३२७, आकृति विशेषेश्वादरः पदं करोति—मालवि० १, सुन्दर रूप ध्यान आकृष्ट करता है (आदर प्राप्त करता है) —जने सखीपद कारिता —श० ४, (मित्रता या विश्वास का) वर्तावं करायां गया, धर्मेण सर्वं पार्वत्यां प्रति पदं कारिते—कु० ६।१४ 2. कदम, पग, डग तत्त्वी स्थिता कर्णिचिदेव पदानि गत्वा श्र० २।१२, **पदे पदे** हर कदम पर अक्षमाला-मदस्त्रा पदात्पदमपि न गन्तव्यम्—या चलितव्यम् 'एक कदम भी मत चलो' पिनु इदं साधनमुत्पतंती —विक्रम० १।१०, 'विष्णु का त्रिलोका कदम' अर्थात् अन्तरिक्ष (पौराणिक मतानुसार पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल यह तीनों लोक हो वामनावतार (पंचम अवतार) विष्णु के तीन कदम माने जाते है) इसी प्रकार —अथात्मनः शब्दगुणं गुणज्ञः पदं विमानेन विसर्पमाणः —रघु० १३।१ 3. पदचिह्न, पद-छाप, पदांक—पदपंक्तिः —श० ३।८, या पदावलीः —पगडडिया, पदमनुविधेयं च महतां —भर्तृ० २।२८, 'महाजनों के पदचिह्नों पर ही चलना चाहिए' 4. चिह्न, अंक, छाप, निशान —रतिवलयपदांके चापमासज्य कंठे—कु० २।६८, मेघ० ३५, ९६, मालवि० ३ 5. स्थान, अवस्था, स्थिति—अयोध्या पदम् भर्तृ० २।१०. आत्मा परिश्रमस्य पदमुपनीतः—श० १, 'कष्ट की अवस्था तक पहुँचाया' —तदलमथपदं हृदिशोकवने —रघु० ८।२१, 'हृदय में स्थान न पाया' (अर्थात् हृदय पर छाप न छोड़ी), —अपदे कल्किदोषिम—मालवि० १, 'मेरे सन्देह स्थान से बाहर थे' अर्थात् निस्सदेह— कुचकुटद्वयेषु लोभः पदमधत्त —दश० १६२, कु० ६।७२, ३।४, रघु० २।५०, ९।८२, कृतपदं स्तनयुगलम्—उत्तर० ६।३५, 'स्तनयुगल विकासोन्मुख था' 6. मर्यादा, दर्जा, पद, स्थिति या अवस्था—भगवत्या प्राणिकपदमध्यासितव्यम्—मालवि० १, वाल्येवं गृहिणीपदं युवतयः—श० ४।१८, 'पत्नी की प्राप्त करती हैं' सचिवैः, राजं आदि 7. कारण, विषय, अवसर, वस्तु, मामला या बात—व्यवहारपदं हित्वा—याज्ञ० २।५, झगड़े की बात या अवसर, कानूनी दृष्टि से स्वामित्व अधिकार, अदालती कार्रवाई—सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाण-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्तःकरणप्रवृत्तयः—शं० १।२२, वांछितफलप्राप्तेः पदम् रत्न० १।६ 8. आवास, पदार्थ, आशय—पदं दृशः स्याः कथमीदृशम्—शि० १।३७, १।१२, अगरीयान् पदं नृपश्रियः—कि० २।१४, अविवेकः परमापदां पदम्—२।३०, के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारंभयत्नाः—मेघ० ५४, हि० ४।६९ 9. श्लोक का एक चरण, एक लाइन—विरचितपदं (पद्यम्) मेघ० ८६, १३३—मालवि० ५।२, शं० ३।१६ 10. विभक्तिचिह्न से युक्त पूरा शब्द—सुप्तिङन्तं पदम् पा० १।४।१४, वर्णाः पदं प्रयोगार्हास्थितिकार्थबोधकाः —सा० द० ९, रघु० ८।७७ 11. कर्तृ०, ए० व० को छोड़ कर शेष सभी व्यंजनादि विभक्तिचिह्नों का सार्थक नाम 12. वैदिक मन्त्रों को सन्धिविच्छेद करके पृथक् २ रखना, वैदिक मन्त्रों का पद-पाठ निर्धारित करना 13. बहाना—शि० ७।१४ 14. वर्गमूल 15. (वाक्य का) प्रभाग या खंड 16. लम्बाई की माप 17 प्रश्रय, संभरण या परिपोषण 18. शतरंज की बिसात पर घरों वर्गाकार घर,—दः प्रकाश की किरण। सम०—अंकः,—चिह्नम् पदछाप,—अंगुष्ठः पैर का अँगूठा,—अनुगः अनुगामी, सहचर,—अनुशासनम् शब्द विज्ञान, व्याकरण,—अंतः शब्द का अन्त, अन्तरम् दूसरा पग, एक पग का अन्तराल—पदांतरे स्थित्वा—शं० १, अब्जम्—अंभोजम्, अरविंदं,—कमलम्, पंकजम्, पद्मम् चरणकमल, कमल जैसे पग, —अर्थः 1. शब्द का अर्थ 2. वस्तु या पदार्थ 3. दीपक या विंशम (नैयायिक इसके आगे १६ उपर्शार्थक गिनाते हैं) 4. अभिधेय, वह वस्तु जिसका कुछ नाम रक्खा जा सके, प्रवर्ग, वैशे० के अनुसार इन प्रवर्गों या पदार्थों की संख्या सात, सांख्यों के अनुसार २५, (या पतञ्जलि के अनुयायियों के अनुसार २७) और वेदान्तियों के अनुसार केवल दो ही हैं,—आघातः पैर का प्रहार या ठोकर,—आजिः पैदलसिपाही, आवली शब्दों का समूह, शब्दों या पंक्तियों का अविच्छिन्न क्रम (काव्यस्य शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली - काव्या० १।१०, मधुरकोमलकान्तपदावली शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम्—गीत० १, आसनम् पादपीठ, पैर रखने की चौकी, —क्रमः चलना, कदम रखना,—गः पैदल सिपाही,—च्युतः (वि०) पद से हटाया गया, गद्दी से उतारा हुआ —छेदः,—विच्छेदः,—विग्रहः शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का संघटकों में पृथक्करण,—न्यासः 1. कदम रखना, डग भरना, पग रखना 2. पदचिह्न 3. पैरों की एक मुद्रा विशेष 4. गोखरू का पौधा,—पंक्तिः (स्त्री०) 1. पदचिह्नों की कतार—श० ३।९, विक्रम० ४।६ 2. शब्दों का क्रम—कि० १०।३० 3. ईंट, पवित्र इष्टका,—पाठः वैदिक मंत्रों का एक विशेषक्रम जिसमें मंत्र के प्रत्येक शब्द उच्चारणविकारों से निरपेक्ष होकर अपने मूलरूप में ही लिखा जाता है और इसी मूलरूप में उच्चारण किया जाता है (विप० संहितापाठ),—पातः, विक्षेपः कदम, (घोड़े का भी) कदम,—भंजनम् शब्दों का विग्रह, निरुक्ति, —भाजिका एक टीका जिसमें किसी संदर्भ के शब्द, पृथक् २ किये जाते हैं तथा समासों का विग्रह कर दिया जाता है, —माला जादू का गुर,— वृत्तिः (स्त्री०) दो शब्दों के बीच अंतर या विराम।

पदकम् [पद्+कन्] कदम, स्थिति, पदवी —दे० 'पद' —कः कण्ठ का एक आभूषण 2. पद पाठ का ज्ञाता।

पदवि,—**वी** (स्त्री०) [पद्—अवि वा ङीष्] 1. रास्ता, मार्ग, पथ, वर्टिका (आलं०) पवन पदवीं—मेघ० ८, अनुयाहि राघुपदवीम्—भर्तृ० २।७७, 'भले आदमियों के पदचिह्नों पर चलो'—श० ४।१३, रघु० ३।५०, ७।७, ८, ११, १५।९९, भर्तृ० २।४६, वेणी० ६।२७, इसी प्रकार 'यौवनपदवीमारूढः'—पंच० १, 'वयस्कत प्राप्त की' (अर्थात् पूरा मनुष्य बन गया) 2. अवस्था, स्थिति, दर्जा, मर्यादा, पदवी, पद 3. जगह, स्थान।

पदातः, पदातिः [पदेभ्यामतति—अत्+अच्, इन् वा] 1. पैदल सिपाही—रघु० ७।३७ 2. पैदल यात्री, (पैदल चलने वाला) उत्तर० ५।१२।

पदातिन् (वि०) [पदात+इनि] 1. (सेना) जिसमें पैदल सिपाही हों 2. पैदल चलने वाला (पुं०) पैदल सिपाही।

पदिक (वि०) [पादेन चरति- पाद+ठन्, पादस्य पदादेशः] पैदल चलने वाला - (पुं०) पैदल आदमी।

पद्मम् [पद्+मन्] 1. कमल (इस अर्थ में पुं० भी) पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम्—2. कमल जैसा आभूषण, 3. कमल का रूप या आकृति 4. कमल की जड़ 5. हाथी सूंड और चेहरे पर रंगीन निशान 6. कमल के आकार खड़ी की हुई सेना 7. विशेषरूप से बड़ी संख्या, (१०००००००००००००००) 8. सीसा,—द्मः 1. एक प्रकार का मंदिर 2. हाथी 3. साँप की एक जाती 4. राम का विशेषण 5. कुबेर के नौ खजानों में से एक—दे० नवनिधि 6. एक प्रकार का रतिबंध, मैथुन, —द्मा श्री सौभाग्य की देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी (तं) पद्मा पद्मातपत्रेण मेजे साम्राज्यदीक्षितम्—रघु० ५। सम०—अक्ष (वि०) कमल जैसी सुन्दर आँखों वाला (—क्षः) विष्णु या सूर्य का विशेषण, (—क्षम्) कमल गट्टा,—आकरः 1. एक विशाल सरोवर जिसमें कमल खिले हों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. पोखर, पल्वल 3. कमलों का समूह -भर्तृ० २।७३, —आलयः जगत्स्रष्टा ब्रह्मा का विशेषण, (—या) लक्ष्मी का विशेषण,—आसनम् 1. कमल पीठ—कु० ७।८६, 2. एक प्रकार का योगासन—ऊरूमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदं, वामोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम्, (नः) जगत्स्रष्टा ब्रह्माका विशेषण,—आह्लम् लौंग,—उद्भवः ब्रह्मा का विशेषण—करः,—हस्त विष्णु का विशेषण (रा,—स्ता) लक्ष्मी का नाम, —कर्णिका पद्म का बीजकोश,—कलिका कमल का अनखिला फूल, कली, —केशरः—कम् कमलफूल का रेशा—कोशः,—कोषः 1. कमल का संपुट 2. संपुटित कमल के आकार की उँगलियों की एक मुद्रा,—खंडम्,—खण्डम् कमलों का समूह,—गंध,—गंधि (वि०) कमल की गंधवाला या कमल की सी गंधवाला,—गर्भः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. सूर्य का विशेषण, —गुणा—गृहा धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण, —जः,—जातः,—भवः,—भूः—योनिः,—संभवः कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण,—तंतुः कमल का रेशेदार डंठल,—नाभः,—भि विष्णु का विशेषण—नालम् कमल का डंठल,—पाणिः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,—पुष्पः कर्पिकार का पौधा, —बंधुः एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिसमें शब्दों को कमल-फूल के रूप में व्यवस्थित किया हो—दे० काव्य० ९,—बंधुः 1. सूर्य 2. मधुमक्खी,—रागः,—रङ्गम् लाल, माणिक्य, रघु० १३।५३, १७।२३, कु० ३।५३,—रेखा हथेली में (कमल फूल के आकार की) रेखायें जो अत्यन्त धनवान् होने का लक्षण है,—लांछन 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण 3. सूर्य और 4. राजा का विशेषण (ना) 1. धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2. या विद्या की देवी सरस्वती का विशेषण—वासा लक्ष्मी का विशेषण।

पद्मकम् [पद्म—कन्] 1. कमलफूल के आकार की ब्यूह-रचना में स्थित सेना 2. हाथी की सूंड और चेहरे पर रंगीन स्थान 3. बैठने की विशेष मुद्रा।

पद्माकिन् (पुं०) [पद्माक+इनि] 1. हाथी 2. भोजपत्र का वृक्ष।

पद्मावती [पद्म+मतुप्, वत्वम्, ङीषञ्च] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. एक नदी का नाम—मा० ९।१।

पद्मिन् (वि०) [पद्म+इनि] 1. कमल रखने वाला 2. चितकबरा (पुं०) हाथी—नी 1. कमल का पौधा —सुरराज इव विभ्रत् पद्मिनी दलसंनाम्—कु० ३। ७६, रघु० १६।८८, मेघ० ३२, मालवि० २।१३ 2. कमलफूलों का समूह 3. सरोवर या झील जिसमें कमल लगे हुए हों 4. कमल का रेशेदार डंठल 5. हथिनी 6. रतिशास्त्र के लेखकों ने स्त्रियों के चार भेद किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री, इनका लक्षण रतिमंजरी में इस प्रकार दिया है—भवति कमलनेत्रा नासिकाक्षुद्ररंध्रा अविरलकुचयुग्मा चारुकेशी कृशांगी मृदुवचनसुशीला गीतवाद्यानुरक्ता। सकलतनुसुवेशा पद्मिनी पद्मगंधः।

पद्मेशयः [पद्मे शेते—शी+अच्, अलुक् स०] विष्णु का विशेषण।

पद्य (वि०) [पद्+यत्] 1. पद या पंक्तियों वाला 2. चरण या पद को मापने वाला,—द्यम् 1. छंद 2. शब्द का एक भाग,—द्या एकहंडी, पद्य, वटिया, —द्यम् (चार चरणों से युक्त) श्लोक, कविता —मदीयपद्यरत्नानां मंजूषेयं मया कृता—भामि० ४।४५, पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा —छं० २ 2. प्रशंसा, स्तुति।

पद्या [पद्यतेऽस्मिन् पद्+रक्] गर्भ।

पद्यः [पद्+क्यन्] 1. भूलोक, मर्त्य लोक 2. रथ 3. मार्ग।

पन् (स्वा० उभ०—पनायति—ते, पनायित या पनित) प्रशंसा करना, स्तुति करना—तु० 'पण'।

पनसः [पनायन्ते स्तूयन्तेऽनेन देवाः—पन्+असच्] 1. कटहल का वृक्ष 2. कांटा,—सम् कटहल का फल।

पनक (वि०) [पथि जातः—पथिन्+कन्, पन्थादेशः] मार्ग में उत्पन्न।

पन्न (भू० क० कृ०) [पद्+क्त] 1. गिरा हुआ, डूबा हुआ, नीचे गया हुआ, अवतरित 2. डूबा हुआ—दे० पद्। सम०—ग: सांप, सर्प—विफणः पन्नगः फणा कुरुते—श० ६।३० (—गम्) मोती, °अरिः, °अशनः, °आशनः गरुड के विशेषण।

पनिः [पानेलोकम्—पिचिति वा, पा—कि, द्वित्वम्] चन्द्रमा।

पपीः [पा+ई, द्वित्वं किच्च] 1. चन्द्रमा 2. सूर्य।

पपु (वि०) [पा—कु, द्वित्वम्] पालन-पोषण करने वाला, रक्षा करने वाला,—पुः (स्त्री०) धाय माता, प्रतिपालिका।

पपा [पाति रक्षति, महद्भयादीन्—पा० द्वित्वम् मुडागमश्च, नि०] इंद्रकारण्य का एक सरोवर—इदं च पपामिधानं सर—ह्लाद० १, रघु० १३।२०, भट्टि० ३।७३ 2. भारत के दक्षिण में एक नदी का नाम।

पयस् (नपुं०) [पय+असुन्, पा+असुन्, इकारादेशश्च] 1. पानी 2. दूध पयः पान भुजगानां केवलं विषवर्धनम् —हि० ३।४, रघु० २।३९, ६३, १४।७८, (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) 3. वीर्य (इस वर्णों में पूर्व पयस् को इदल कर 'पयो' हो जाता है)। सम०—गलः, —दः 1. ओला 2. टापू,—दनम् ओला,—धयः जलाशय या सरोवर,—मुच् (पुं०) बादल—दः बादल —मेघ० ७, रघु० १४।३७,—मुच् (पुं०) मोर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—परः 1. बादल 2. स्त्री की छाती—पद्मावोधरतटी —मोल० १, शिशुपालवध ४।२४, (यहाँ भाव का अर्थ 'बादल' भी है)—रघु० १४।२२ 3. ऐन अीडी—रघु० २।३ 4. नारियल का पेड़ 5. रीढ़ की हड्डी,—धस् (पुं०) 1. समुद्र 2. तालाब, सरोवर, जलाशय,—धिः,—निधः समुद्र, —धृतु० २।७. नै० ४।९०,—मुच् (पुं०) बादल—रघु० ३।३. ६।५,—वाहः बादल,—रघु० १।३६, ।

पयस्य (वि०) [पयसो विकारः पयसः इदं वा—पयस् +यत्] 1. दूध से युक्त, दूध से बना हुआ 2. पानी से युक्त,—स्यः बिल्ली,—स्या दही ।

पयस्वल (वि०) [पयस् +वलच्] दूध से भरा हुआ, पर्याप्त दूध देने वाला,—लः बकरी ।

पयस्विन् (वि०) [पयस् +विनि] दूधिया, जल से युक्त, —नी 1. दूध देने वाली गाय—रघु० २।२१,५४,६५ 2. नदी 3. बकरी 4. रात ।

पयोधिकम् [पयोधि +कै—क] समुद्रझाग ।

पयोष्णी (स्त्री०) विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी (कुछ विद्वान् इसे वर्तमान 'ताप्ती' मानते हैं, परन्तु 'ताप्ती' को एक सहायक नदी 'पूर्णा' है जिसकी 'पयोष्णी' के साथ अभिन्नता अधिक संभव प्रतीत होती है) ।

पर (वि०) [पृ०—अप्, कर्तरि अच् वा] (जब सापेक्ष स्थिति बतलाई जाती है इस शब्द के रूप विकल्प से कर्तृ० संबो० अपा०, और अधि० में सर्वनाम की भाँति होते हैं) 1. दूसरा, भिन्न, अन्य—देo 'पर' पुं० भी 2. दूरस्थित, हटाया हुआ, दूर का 3. परे, आगे, के दूसरी ओर—म्लेच्छदेशास्ततः परः—मनु० २।२३, ७।१५८ 4. बाद का, पीछे का, आगे का (प्रायः अपा० के साथ) वाल्यात्परामिव दशां मदनो-ध्यवास—रघु० ५।६३, कु० १।३१ 5. उच्चतर, श्रेष्ठ, सिकतास्वादपि परां प्रपेदे परमाणुताम् - रघु० १५।२२. इन्द्रियाणि पराण्याहु रिन्द्रियेभ्यः परं मनः, मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः -भग० २।४३, 6. उच्चतम, महत्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मूल्य, सर्वोत्तम, प्रधान -न स्वयं दृष्टव्यात्मा परं दृष्टम्—श० २, कि० ५।२८ 7. (समास में) आगे का वर्ण या ध्वनि रखने वाला, पीछे का 8. विदेशी, अपरिचित, अज-नबी 9. विरोधी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल 10. अधिक, अतिरिक्त, बचा हुआ जैसा कि परं शतम्—एक सौ से अधिक 11. अन्तिम, आखीर का 12. (समास के अन्त में) किसी वस्तु को उच्चतम पदार्थ समझने वाला, लीन, तुला हुआ, अनन्यासक्त, पूर्णतः समर्पित -परिचर्यापरः-रघु० १।९१, इसी प्रकार 'ब्रह्मपर' शोकपर, दैवपर, चिंतापर आदि—रः 1. दूसरा, व्यक्ति, अपरिचित, विदेशी (इस अर्थ में बहुधा ब० व०) यतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९, शि० २०।७४, दे० 'एक' 'अन्य' भी 2. शत्रु, दुश्मन, रिपु उत्तिष्ठमानस्य परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता -शि० २। १०, पंच० २।१५८, रघु० ३।२१,—रम् उच्चतम स्तर या बिन्दु, चरम बिन्दु 2. परमात्मा 3. मोक्ष विशे० कर्म०, करण०, और अधि० के एक वचन के 'पर' शब्द के रूप क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त किये जाते हैं—अर्थात् (क) परम् 1. परे, अधिक, में से (अपा०), वर्तमानः परम्- रघु० १।१७, 2. के पश्चात् (अपा०) अस्मात् परं—श० ४।१९, ततः परम् 3. उस पर, उसके बाद 4. परंतु, लोभी 5. अन्यथा 6. ऊँची मात्रा में, अधिकता के साथ, अत्यधिक, पूरी तरह से, सर्वथा—परं दुःखितोऽस्मि —आदि 7. अत्यंत (ल) परेण 1. आगे, परे, अपेक्षा-कृत अधिक—किंवा मृत्योः परेण विधास्यति—मा० २।२ 2. इसके पश्चात्—मयि तु कृतनिधाने किं विद-ध्याः परेण —महावी० २।४९ 3. के बाद (अपा० के साथ) स्तम्भ त्यागात्परेण— उत्तर० २।७. (ग) परे 1. बाद में, उसके पश्चात्—अथ ते दशाहात् परे —रघु० ८।७३ 2. भविष्य में। समo—अंगम् शरीर का पिछला,—अंशः शिव का विशेषण,—अश्वः अरब या पंजाब के देशों में पाया जाने वाला घोड़ा, —अधीन (वि०) पराधीन, पराश्रित, परवश, मनु० १०।५४.५६,—अंतः (पुं० ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—अंतकः शिव का विशेषण—अन्न (वि०) दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला (भृत्य) दूसरे का भोजन 'परिपुष्टतः दूसरों के भोजन से पालन-पोषण पाना० ३।२४१ 'भोजिन् (वि०) दूसरों के भोजन पर निर्वाह करने वाला हि० १।१२९,—अपर (वि०) 1. दूर और निकट, दूर और समीप 2. पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती 3. पहले और बाद में, पहले और पीछे 4. ऊंचा और नीचा, सबसे उत्तम और सबसे खराब (-रम्) (नर्क० में) महत्तम और लघुतम संख्याओं के बीच की वस्तु, जाति (जो श्रेणी और व्यक्ति दोनों के मध्य विद्यमान हो), —अमृतम् वृष्टि,—अयण (अयन) (वि०) 1. अनुरक्त, भक्त, संमक्त 2. आश्रित, वशीभूत 3. तुला हुआ, अनन्यभक्त, सर्वथा लीन (समास के अन्त में)—प्रभुर्धनपरावणः—भर्तृ० २।५६, इसी प्रकार—शोकपरं कु० ४।१, अग्निहोत्रं आदि (-णम्) प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या अन्तिम सहारा,—अर्थ (वि०) दूसरा ही उद्देश्य या अर्थ रखने वाला, 2. दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य के लिए किया हुआ (-र्थः) 1. सर्वोच्च हित या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाभ 2. किसी दूसरे का हित (विप० स्वार्थ)—स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रेणी:—सुभा०, रघु० १।२९ 3. मुख्य अर्थ 4. सर्वोच्च उद्देश्य (अर्थात् मैथुन) (**-र्थम्,-र्थे**) (अव्य०) दूसरे के लिए,- **-अर्थम्** 1. दूसरा भाग (विप० पूर्वार्ध) उत्तरार्ध—दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् —भर्तृ० २।६० 2. विशेष रूप से बड़ी संख्या अर्थात् १००,०००,०००,०००,०००,०००, एकवादि परार्धपर्यंता संख्या—तर्क०,—**अर्घ्य** (वि०) दूसरे किनारे पर होने वाला 2. संख्या में अत्यंत दूर का -हेमंतो वसन्तात्परार्ध्यः—शत० 3. अत्यंत श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, परम श्रेष्ठ, अत्यंत मूल्यवान्, सर्वोच्च, परम —रघु० ३।२७, ८।२७, १०।२४, १६।३९ शि० ८।४५ 4. अत्यंत कीमती—शि० ४।११ 5. अत्यंत सुन्दर, प्रियतम, मनोज्ञतम—रघु० ६।४, शि० ३।५८, (**-र्घ्यम्**) 1. अविकलम् 2. अनन्त या असीम संख्या, —**अवर** (वि०) 1. दूर और निकट 2. सवेरा और अबेरी 3. पहले का और बाद का या आगामी 4. उच्चतर और निम्नतर 5. परंपराप्राप्त —मनु० १।१०५ 6. सर्वसम्मिलित,—**अह्नः** दूसरे दिन,—**अह्नः** तीसरा पहर, दिन का उत्तरार्ध भाग, **आचित** (वि०) दूसरे द्वारा पाला-पोसा हुआ (—तः) दास,—**आत्मन्** (पुं०) परमात्मा,—**आयत** (वि०) दूसरे के अधीन, पराश्रित, पराधीन—परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्तु पुरुषः—मुद्रा० ३।४, **आयुस्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, **-आविद्ध**: 1. कुलेर का विशेषण 2. विष्णु की उपाधि.—**आश्रयः**— **आश्रयः** परवलंबन दूसरे की अधीनता,—**आस्कंदिन्** (पुं०) चोर, लुटेरा, —**इतर** (वि०) 1. शत्रुता से भिन्न अर्थात् मैत्री पूर्ण, कृपालु 2. अपना, निजी—कि० १।१४, **ईशः** ब्रह्मा का विशेषण,- **उत्कर्षः** दूसरे की समृद्धि,—**उपकारः** दूसरों की भलाई करना जनहितैषिता, उदारता, धर्मार्थ—परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्, --**उपजापः** शत्रुओं में फूट डालना,—**उपरुद्धः** (वि०) शत्रु के द्वारा घेरा हुआ, -**ऊढा** दूसरे की पत्नी,—**एधित** (वि०) दूसरे द्वारा पालित-पोषित (तः) 1. सेवक 2. कोयल,—**कलत्रम्** दूसरे की पत्नी, **अभिगमनम्** व्यभिचार—हि० १।१३५, -**कार्यम् दूसरे का व्यवसाय** या काम,—**क्षेत्रम्** 1. दूसरे का शरीर 2. दूसरे का क्षेत्र—मनु० ९।४९ 3. दूसरे की पत्नी—मनु० ३। १७५,--**गामिन्** (वि०) 1. दूसरे के साथ रहने वाला 2. दूसरे से संबंध रखने वाला. 3. दूसरे के लिए लाभदायक, -**ग्रंथिः** (अंगुली आदि का) जोड़, गांठ,—**चक्रम्** 1. शत्रु की सेना, 2. शत्रु के द्वारा आक्रमण ६ हथियों में से एक,—**छंदः** दूसरे की इच्छा, —**अनुवर्तनम्** दूसरे की इच्छा का अनुगमन करना, —**छिद्रम्** दूसरे की कमजोरी, दूसरे की त्रुटि **जात** (वि०) 1. दूसरे से उत्पन्न 2. जोंकिका के लिए दूसरे पर आश्रित (तः) सेवक,- **जित** (वि०) दूसरे से जीता हुआ (तः) कोयल, **तंत्र** (वि०) दूसरे पर आश्रित, पराधीन, अनुसेवी,— **दारः** (पुं०, ब० व०) दूसरे की पत्नी,— **दारिन्** (पुं०) व्यभिचारी, परस्त्री-गामी, **दुःखम्** दूसरे का कष्ट या दुःख विरलः परदुःखदुःखितो जनः, सहदर्पि परदुःख शोभते सज्जनगोष्ठिः—विक्रम० ४।१३, - **देशः** विदेश,- **देशिन्** (पुं०) विदेशी, -**द्रोहिन्** --**द्वेषिन्** (वि०) दूसरों से घृणा करने वाला, विरोधी, अशुभचिंतक, --**धनम्** दूसरे की संपत्ति,—**धर्मः** 1. दूसरे का धर्म —स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितः —भग० ३।३५ 2. दूसरे का कर्तव्य या कार्य 3. दूसरी जाति का कर्तव्य— मनु० १०। ९७, **निपातः** समाज में ऊंचे की अनिर्णायक पदावनतिता अर्थात् भूतपूर्व वहां अब है पूर्व भूत: इसी प्रकार राजदेवः आख्यातिः आदि, -**पक्षः** शत्रु का दल या पक्ष, -**पदम्** 1. उच्चतम स्थिति, प्रभुसत्ता 2. मोक्ष,—**पिंडः** दूसरे का भोजन, दूसरों से दिया गया भोजन अद् (वि०) वह जो दूसरों का भोजन करे या जो दूसरे के खर्च पर जीवन निर्वाह करे (पुं०) सेवक, **रत** (वि०) दूसरे के भोजन पर पलने वाला, **पुरुष** 1. दूसरा मनुष्य, अपरिचित 2. परमात्मा, विष्णु 3. दूसरी स्त्री का पति, **पुष्ट** (वि०) दूसरे के द्वारा पाला पोसा हुआ (—ष्टः) कोयल **महोत्सवः** आम का वृक्ष, -**पुष्टा** 1. कोयल 2. वेश्या, रंडी, **पूर्वा** वह स्त्री जिसका दूसरा पति हो, **प्रेष्यः** सेवक, चरेलू नौकर, **ब्रह्मन्** (नपुं०) परमात्मा, भाग: दूसरे का हिस्सा, 2. श्रेष्ठ गुण 3. सौभाग्य, समृद्धि 4. (क) सर्वोत्तमता, श्रेष्ठता, सर्वोपरिता दुरधिरमः परभागो यावत्पुरुषगणं पौरुषं न क्रमम्—पंच० १।३३०, ५।३४, (ख) अधिकता, बाहुल्य, ऊंचाई -स्थलकमल-नंजन मम दूरपरंजनं जनितरतिरंगपराभवम् वेणी० १०, लाभादि लब्धपरभागपरावरोलें रघु० ५।५९, कु० ७।९. कि० ५।३०, ८।४६, शि० ७।३३, ८।५१, १०।८६, **भाषा** विदेशी भाषा,- **भुक्त** (वि०) दूसरे के द्वारा भोगा हुआ, **भृत** (पुं०) कोयल (क्योंकि यह दूसरे का अर्थात् कौवे का पालन-पोषण करता है),—**भृतः** ता कोयल (क्योंकि यह दूसरे के द्वारा अर्थात् कौवे से पाली पोसी जाती है) तु० शि० ५।३२, कु० ६।२. रघु० १।४६ शि० ४।२, -**मृत्युः** कौवा,- **रमण** विवाहित स्त्री, दे० पार-दार- पंच० १।१८०, **लोक** दूसरा (आगामी) दुनिया —कु० ४।१० कु० ४।१० **विधिः** अन्त्येष्टि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्कार, —वश —वश्य (वि०) दूसरे के अधीन, पराश्रित, —वाक्यम् दोष या त्रुटि,—वाणि: 1. न्यायकर्ता 2. वर्ष 3. कार्तिकेय के मोर का नाम,—वाद: 1. अफवाह, जनश्रुति 2. आपत्ति, विवाद —वादिन् (पुं०) झगड़ालू विवादी,—व्रत: धृतराष्ट्र का विशेषण, —स्वत् (अव्य०) परसों (आगामी),—संतत: आत्मा —स्वर्ण (वि०) (व्या० में) अपवर्ती वर्ण का सजातीय,—सेवा दूसरे की सेवा,—स्त्री दूसरे की पत्नी, —स्वम् दूसरे की संपत्ति —रघु० १।२७, मनु० ७।१२३ 'हरणम् दूसरे की संपत्ति हर लेना, हन् (वि०) शत्रुओं का मारने वाला,—हितम् दूसरे का भला।

परकीय (वि०) [परस्य इदम्—पर+छ, कुक्] 1. दूसरे से संबंध रखने वाला—अर्थो हि कन्या परकीय एव —श० ४।२१, मा० ४।२०१,—या दूसरे की पत्नी, जो अपनी न हो, नायिकाओं के तीन मुख्य प्रकारों में से एक—दे० 'अन्यस्त्री' और सा० द० १०८।

परंजः (पुं०) 1. तेल कोल्हू 2. तलवार का फल।

परंजनः, परंजरः [परस्याः पत्न्याः विशेषेण जनः स्वामी नि०, पर+जि+अच्, मुम्] वरुण का विशेषण।

परतः (अव्य०) [पर+तस्] 1. दूसरे से, भामि० १।१२० 2. शत्रु से रघु० ३।६८ 3. आगे, अपेक्षाकृत अधिक, परे, बाद, ऊपर (प्रायः अपा० के साथ) —चूडे परस्तस्य सः—भग० ३।४२ 4. अन्यथा 5. भिन्न प्रकार से।

परत्र (अव्य०) [पर+त्र] 1. दूसरे लोक में, भावी जन्म में—परत्रेह च शर्मणे रघु० १।९१, कु० ४।३७, मनु० ३।२७१, ५।१६६ ८।१२७, उत्तर काल में, आगे या बाद में 3. आने वाले समय में, भविष्य में। समः —भीरुः परलोक के भय से विस्मित हो, धर्मात्मा पुरुष।

परंतप (वि०) [परान् शत्रून् तापयति पर+तप्+णिच्+खच्, हुमुख्] दूसरों को सताने वाला, अपने शत्रुओं का दमन करने वाला भग० ४।२, रघु० १।७७, —पः शूरवीर, विजेता।

परम (वि०) [परं परत्वं मानिकं तारा०] 1. दूरतम, अन्तिम 2. उच्चतम, सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ, महत्तम —प्राप्नोति परमां गतिम् मनु० ४।१४, ७।१, २।१३ 3. मुख्य, प्रधान, प्राथमिक, सर्वोपरि—मनु० ८।३०२, ५।३११ 4. अत्यधिक, अन्तिम 5. वरिष्ठ, पर्याप्त,—मम् सर्वोच्च या उच्चतम मुख्य या प्रमुख भाग (समास के अन्त में), पराकाष्ठा युक्त, पूर्णता, मत्तस्य —कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिता: भग० १६।११, मनु० ६।९६, —मम् (अव्य०) 1. स्वीकृतिवाचक, अंगीकार या सहमति बोधक, अव्यय (अच्छा, बहुत अच्छा, हाँ, ऐसा ही)—ततः परम मित्युक्ता प्रतस्थे मुनिमंडलम्—कु० ६।३५ 2. अत्यधिक, अत्यन्त परमकृद्धः आदि० । सम०—अंगना श्रेष्ठस्त्री—अणु: अत्यणु, अत्यल्पमात्रा का अणु—रघु० १५।२२, परंपरम परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्- भर्तृ० २।७८, पृथ्वी नित्या परमाणूत्करा—तर्क० (परमाणु की परिभाषा—जालांतरगते रश्मौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः, तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स उच्यते।) —अर्थतम् 1. परमात्मा 2. विशुद्ध एकेश्वरवाद, —अक्षम् क्षीर, दूध में पके हुए चावल, —अर्थः 1. सर्वोच्च या नितांत अलौकिक सत्य, वास्तविक आत्मज्ञान, ब्रह्म या परमात्मासंबंधी ज्ञान रघु० ८।२२, महावी० ७।२ 2. सचाई, वास्तविकता, आन्तरिकता —परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः —श० २।१८, (प्रायः समास में प्रयुक्त होकर 'सत्य' 'वास्तविक' अर्थ प्रकट करता है) °भस्याः -रघु० ७।४०, महावी० ४।३० 3. कोई श्रेष्ठ या महत्त्वपूर्ण पदार्थ 4. सर्वोत्तम अर्थ, —अर्थतः (अव्य०) सचमुच, वस्तुतः, यथार्थतः, सत्यतः—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञानारंभः प्रतीकारस्य—श० ४, उवाच चैनं परमार्थतो हरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम्—कु० ५।७५, पंच० १।१२६,—अहः श्रेष्ठ दिन,—आत्मन् (पुं०) सर्वोत्तम आत्मा या ब्रह्म,—आपद (स्त्री०) अत्यंत भारी संकट या दुर्भाग्य, ईशः विष्णु का विशेषण, 2. इन्द्र की उपाधि 3. शिव का विशेषण 4. सर्वशक्तिमान् परमात्मा का विशेषण,—ऋषिः उच्चकोटिका ऋषि, ऐश्वर्यम् सर्वशक्तिमत्ता, सर्वोपरिता,—गतिः (स्त्री०) मोक्ष, निर्वाण,—गत्रः श्रेष्ठजाति का बैल या गाय, —पदम् 1. सर्वोत्तम स्थिति, उच्चतम दर्जा 2. मोक्ष, —पुरुषः, पुमान् परमात्मा, —प्रख्य (वि०) प्रसिद्ध विख्यात,—ब्रह्मन् (नपुं०) परमात्मा,—हंसः उच्चतम कोटि का संन्यासी, वह जिसने भावात्मक समाधि के द्वारा अपनी इन्द्रियों का दमन करके उनको वश में कर लिया है—तु० कुटीचक।

परमेष्ठः [परम+इष्ठन्] ब्रह्मा का विशेषण।

परमेष्ठिन (पुं०) [परमेष्ठ+इनि] 1. ब्रह्मा की 2. शिव की 3. विष्णु की 4. गरुड़ की 5. और अग्नि की उपाधि 6. कोई भी आध्यात्मिक गुरु।

परंपर (वि०) [परंपरयति पृ+अच्, अलुक् स०] 1. एक के बाद दूसरा 2. पूर्वानुपर, उत्तरोत्तर,—रः प्रपौत्र, —रा 1. अविच्छिन्न शृंखला, नियमित सिलसिला, आनुपूर्व, महतीयं खलनयंपरंपरा—का० १०३, कर्णपरंपरया 'एक कान से दूसरे कान में' सुन सुना कर, परंपरया आगम् 'नियमित परम्परा के क्रम से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राप्त होना' 2. (नियमित वस्तुओं की) पंक्ति, कतार, संग्रह समूह—तोयांतर्भास्करालीव रेजे मुनि परंपरा—कु० ६।४९, रघु० ६।५, ३५,४०, १२।५०, 3. प्रणाली, क्रम, सुव्यवस्था 4. वंश, कुटुंब, कुल 5. क्षति, चोट, मार डालना।

परंपराक (वि०) [परंपरा कायेत प्रकाशते—कै+क] यज्ञ में पशु का वध करना।

परंपरीण (वि०) [परंपर+खञ्] उत्तराधिकार में प्राप्त, आनुवंशिक—लक्ष्मीं परंपरीणां स्वयं पुत्रपौत्रीणतां नय—भट्टि० ५।१५ 2. परंपराप्राप्त।

परवत् (वि०) [पर+मतुप् मस्य वः] 1. पराधीन, दूसरे के वश में, आज्ञापालन के लिए तत्पर—सा बाला परवतीति मे विदितम्—श० ३।२, भगवन्परवानयं जनः—रघु० ८।८१, २।२६, (प्रायः करण० या अधि० के साथ) भ्राता यदिदयं परवानसि त्वं - रघु० १४।५५ 2. शक्ति से वंचित, निःशक्त परवानिव शरीरोपतापेन—मा० ३ 3. पूर्णरूप से (दूसरे के) अधीन जो स्वयं अपना स्वामी न हो, विजित, पराभूत—विस्मयेन परवानस्मि—उत्तर० ५, आत्मदेव परवानस्मि —उत्तर० ३, साध्वसेन—मा० ६।

परवत्ता [परवत्+तल्+टाप्] दूसरे की अधीनता, पराधीनता, विक्रम० ५।१७।

परशः [स्पृशति इति पृषो०] पारसमणि जिसके स्पर्श से, कहा जाता है कि लोहा आदि दूसरी धातुएँ सोना बन जाती हैं, संभवतः यह दार्शनिकों का पारस-पत्थर है।

परशुः [परं शृणाति—शॄ+कु डिच्च] कुल्हाड़ा, कुल्हाड़ी, कुठार फरसा—तर्जितः परशुधारया समम्—रघु० ११। ७८ 2. शस्त्र, हथियार 3. वज्र। सम०—धरः 1. परशुराम का विशेषण 2. गणेश की उपाधि 3. कुठारधारी सैनिक,—रामः 'कुठारधारी राम' एक विख्यात ब्राह्मणयोद्धा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छठा अवतार था (इसने अपनी बाल्यावस्था में ही अपने पिता की आज्ञा से जब कि उसके भाइयों में से कोई भी तैयार न हुआ, अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला—दे० जमदग्नि। इसके पश्चात् एक बार राजा कार्तवीर्य, जमदग्नि के आश्रम में आये और उसकी गौ को खोलकर ले गये। परन्तु घर आने पर जिस समय परशुराम को पता लगा तो वह कार्तवीर्य से लड़ा और उसे मृत्युलोक पहुँचा दिया। जब कार्तवीर्य के पुत्रों ने सुना तो वह बड़े क्रुद्ध हुए—फलतः वे आश्रम में आये और जमदग्नि को अकेला पाकर उसे मार डाला। जब परशुराम—जो कि इस घटना के समय आश्रम में नहीं था, वापिस आया, तो अपने पिता के वध का समाचार सुन अत्यंत क्षुब्ध हुआ, उसी समय उसने समस्त क्षत्रिय जाति का उन्मूलन करने की भीषण प्रतिज्ञा की। वह अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने में सफल हुआ, कहते हैं कि उसने इस पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय जाति से मुक्त किया। वह क्षत्रिय जाति का नाशकर्ता बाद में दशरथ के पुत्र राम के द्वारा जब कि वह केवल सोलह ही वर्ष के थे (दे० रघु० ११। ६८,९१) पराजित किया गया। कहते हैं कि कार्तिकेय की शक्ति से ईर्ष्या होने के कारण उसने मौनाक पर्वत को भी एक बार तीरों से बींध दिया—तु० मेघ० ५७; सात चिरंजीवियों में इनकी भी गिनती है, विश्वास किया जाता है कि परशुराम अब भी महेन्द्र-पर्वत पर बैठे तपस्या कर रहे हैं—तु० गीत० १, क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं स्नपयसि पयसि शमित-भवतापम्, केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥

परश्व (रव) धः [पर+श्वि+डः—परुच्च, तंदधाति —धा+क; त्रि० शस्त्र सन्वम्] कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा—धारां शिता शामपरश्वधस्य सभाश्रयन्त्युत्पल-पत्त्रसाराम्—रघु० ६।४२।

परस् (अव्य०) [पर+असि] (श्रेष्ठ संस्कृत में इसका स्वतंत्र प्रयोग विरल है) 1. परे, आगे, और भी 2. इसके दूसरी ओर 3. दूर, दूरी पर 4. अपवाद रूप से। सम०—कृत्य (वि०) अत्यन्त काला,—पुरुषः (वि०) मनुष्य से लंबा या ऊँचा—शत (वि०) सौ से ऊपर—कि० १२।२६, शि० १२।५७,—श्वस् (अव्य) आगामी परसों, सहस्र (वि०) एक हजार से अधिक—परः सहस्रा शारदस्तावतीः तव्वा—उत्तर० १।१५, परः सहस्रैः पितरोऽभिलाषः—महावी० ५।१७।

परस्तात् (अव्य०) [पर+अस्तातिं] 1. परे, के दूसरी ओर, और आगे (संब० के साथ)—आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्—भग० ८।९ 2. इसके पश्चात्, बाद बाद में 3. अपेक्षाकृत ऊँचा।

परस्पर (वि०) [परः परः इति विग्रहे समासबद्धावे पूर्व-पदस्य सुः] आपस में—परस्परां विस्रम्भयन्ति लक्ष्मी-मालोकयाचक्रुरिवादरेण—भट्टि० २।५, (सर्व० वि०) अन्योन्य, एक दूसरा (केवल ए० व०, में प्रयुक्त —प्रायः समास में) परस्परस्योपरि पर्यचीयत —रघु० ३।२४, ७।३५, अविज्ञातपरस्परः अपसर्पः —१७।५१, परस्परारक्षितादृश्यम्—१।४०, ३।२४, विशे० 'एक दूसरे के विरुद्ध' 'आपस में' 'एक दूसरे से' 'एक दूसरे के द्वारा' 'इतरेतर के रूप में' 'आपस में' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए इस शब्द के कर्म० करण० और अपा० के एक वचन के रूप क्रियाविशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं - दे० भय० ३।११, १०।९ रघु० ४।७९, ६।४६, ७।१७, ५१, १२।१४।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परस्मैपदम्, परस्मैभाषा [परस्मै परार्थं पदं भाषा वा] दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य, क्रिया के दो रूपों में से (परस्मै तथा आत्मने) एक जिसमें कि संस्कृत की धातुओं के रूप चलते हैं।

परा (अव्य०) [पृ + अच् + टाप्] 'दूर' 'पीछे' 'उल्टे क्रम से' एक और' की ओर' अर्थों को प्रकट करने के लिए धातु या संज्ञा से पूर्व लगने वाला उपसर्ग। पाणि० के अनुसार 'परा' के अर्थ निम्नलिखित हैं —1. मार डालना, आघात करना आदि (पराहत) 2. जाना (परागत) 3. देखना, सम्मान करना (पराबृष्ट) 4. पराक्रम (पराक्रान्त) 5. की ओर विदेश, (परावृत्त) 6. आधिपत्य (पराजित) 7. पराधीनता (पराधीन) 8. उद्धार, मुक्ति (पराकृत) 9. प्रतीपक्रम पीछे की ओर (पराङ्मुख) 10. एक ओर रख देना, अवहेलना करना।

पराकरणम् [परा + कृ + ल्युट्] एक ओर रख देने की क्रिया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, तिरस्कृत करना।

पराक्रमः [पर० + क्रम् + घञ्] 1. शूरवीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य पराक्रमः परिभवे—शि० २।४८ 2. विरोधी अभियान करना, आक्रमण करना 3. प्रयत्न, कौशिश, उद्योग 4. विष्णु का नाम।

परागः [परा + गम् + घञ्] 1. पुष्परज,—स्फुटपरागरागनिर्भरेऽरुजम्—शि० ६।२, अमरु ५४ 2. धूलि—रघु० ४।३० 3. स्नान के पश्चात् सेवन किया जाने वाला सुगंधित चूर्ण 4 चन्दन 5. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 6. यश, प्रसिद्धि 7. स्वाधीनता।

परांगवः [परागं प्रभुत्वमोरं याति प्राप्नोति—या + क] राजहंस।

परा(रां)च् (वि०) (स्त्री० ची) [परा + अंच् + क्विन्] 1. परे या दूसरी ओर स्थित, ये चामुष्मात्परांचो लोकाः छां० 2. मुँह मोड़ कर (पराङ्मुख) —शि० १८।१८ 3. जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल—दैवे परांचि भामि० १।१०५ या दैवे पराग्यदवसायिनि हुँते जाते—३।१ 4. दुरस्थ 5. बाहरकी ओर निर्देशित। सम०—मुख (वि०) (पराङ्मुखीनां-नुगुल्लाः संतत्वरे—रघु० १९।३८, अमरु ९० मनु० २।१९५, १०।११९ 2. (क) विमुख, उल्टा—भातुर्न केवलं स्वस्याः श्रियोऽपासीत् पराङ्मुख. —रघु० १२।१३, (ख) उदासीन, कतराने वाला, टाल जाने वाला —प्रवृत्तिपराङ्मुखी भावः—विक्रम० ४।२०, शि० ५।२८ 3. प्रतिकूल, अनुकूल—नवरधि न ते दोषोऽस्माकं विधिस्तु पराङ्मुखः—अमरु २७ 4. उपेक्षा करने वाला—मत्येवास्थापराङ्मुखः—रघु० १०।४३।

परांचीन (वि०) [परांच् + ख] विरुद्ध दिशा में मुड़ा हुआ, विमुख 2. पराङ्मुख, अरुचि रखने वाला 3. परवाह न करने वाला, उपेक्षा करने वाला 4. बाद में होने वाला, उत्तरकालभव 5. दूसरी ओर स्थित, परे होने वाला।

पराजयः [परा + जि + अच्] 1. परास्त करना, विजय, जीतना, अधीनीकरण, हार— रघु० ११।१९, मनु० ७।१९९ 2. परास्त होना, सहन करने के योग्य न होना (अपा० के साथ) अध्ययनात्पराजयः 3. हारना, हार, असफलता (मुकदमे आदि में) अन्यथावादिनो (साक्षिणः) यस्य ध्रुवस्तस्य पराजयः— याज्ञ० २।७९ 4. पदच्युति, त्यजन 5. परित्याग।

पराजित (भू० क० कृ०) [परा—जि + क्त] जीता हुआ, वश में किया हुआ, हराया हुआ 2. कानून द्वारा दण्डित, (मुकदमे में) हारा हुआ, पछाड़ा हुआ।

परान (ण) सा [परा + अन् (ण) + अस + टाप्] औषधीय चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज, वैद्य का व्यवसाय।

पराभवः [परा + भू + अप्] 1. (क) हार, असफलता, पराजय—पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्—कि० १।४१ (ख) मानभंग, मानमर्दन, प्रतिष्ठाभंग कुर्वेरस्य मनः शल्यं क्षमतीदं पराभवम् कु० २।२२, तद पद्मफलवर्वेरिपराभवमिदमनु भवतु सुधेशम्—गीत० १२ 2. घृणा, अवहेलना, तिरस्कार 3. विनाश 4. लोप, वियोग (कभी-कभी 'अभाव' भी लिया जाता है)।

पराभूतिः (स्त्री०) [परा + भू + क्तिन्] दे० 'पराभव'।

परामर्शः [परा + मृश् + घञ्] 1. पकड़ लेना, खींचना जैसा कि 'केशपरामर्श' में 2. झुकाना या (धनुष) को तानना 3. हिंसा, आक्रमण, हमला · यात्रासैन्याः परामर्शः महा० 4. बाधा विघ्न तपः परामर्शविबुद्धमन्योः कु० ३।७१ 5. ध्यान करना, प्रत्यास्मरण 6. विचार, विमर्श, चिन्तन 7. निर्णय 8. (तर्क० में) घटाना, निश्चय करना कि अपना पक्ष या विषय सहेतुक है—व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मतावज्ञानं परामर्शः—तर्क० यं · व्याप्तस्य पक्षधर्मस्यवधीः परामर्श उच्यते भाषा० ६९।

परामृष्ट (भू० क० कृ०) [परा + मृश् + क्त] 1. छूआ गया, हाथ लगाया गया, दबोचा गया, पकड़ा गया 2. रूखा व्यवहार किया गया, दुर्व्यवहार किया गया 3. तोला गया, विचार किया गया, कूता गया 4. सहन किया गया 5. संबद्ध 6. (रोग से) ग्रस्त—दे० परा पूर्वक 'मृश्'।

परारि (अव्य०) [पूर्वतरे वत्सरे इत्यर्थे परभावः आदि च संवत्सरे] पूर्वतर वर्ष में, विगतवर्ष में, परिभार साल।

परायण दे० 'पर' (५८+अयन) के नीचे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परावर्तः, परावृत्तिः [परा+वृत्—घञ्, क्तिन् वा] 1. पीछे मुड़ना, वापसी, प्रत्यावर्तन 2. अदल-बदल, विनिमय 3. पुनः प्राप्ति 4. (कानून में) दण्ड या सजा की उलट-पलट ।

पराशरः [पराशृ+अच्] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो व्यास के पिता तथा एक स्मृतिकार थे ।

परासम् [परा+अस्] भाला, बर्छा ।

परासनम् [परा+अस्+ल्युट्] वध, हत्या ।

परासु [वि०] [परागताः असवः यस्य प्रा० ब० स०] निर्जीव, मृतक, प्राक् परासुर्द्विजात्मजः—स्यू० १५१, ५६, ९७८ ।

परास्त (भू० क० कृ०) [परा+अस्+क्त] 1. फेंका हुआ, डाला हुआ 2. निष्कासित, निकाला हुआ 3. अस्वीकृत 4. निराकृत, त्यक्त 5. हताश हुआ ।

पराहत (भू० क० कृ०) [परा+हन्+क्त] 1. पटका हुआ, पछाड़ा हुआ 2. फेंका हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ, तम् प्रहार, आघात ।

परि (अव्य०) [पृ+इन्] (कभी-कभी बढ़ाकर 'परी' भी हो जाता है, जैसे कि 'परीवाद', 'परीहास' या 'परीहास' में) यह उपसर्ग के रूप में धातु या संज्ञाओं से पूर्व जुड़कर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 1. (क) चारों ओर, इधर उधर, इर्दगिर्द (ख) बहुत, अत्यधिक 2. पंचम्यर्थक अव्यय (संबं० बोध०) के रूप में निम्नांकित अर्थ है (क) ओर की दिशा में, की तरफ, के सामने (कर्म० के साथ) पूर्वा परि विद्योतते विद्युत् (ख) कमला, अलग, से करके (कर्म० के साथ) वृत्र पूर्व परि मिषति, वह एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष को लाँघता है' (ग) बिना में, भागे में (कर्म० के साथ) वदन्ति 'मां परि स्यात् 'जो मेरे भाग में बचा हो, लक्ष्मीहेतिपरि—सिद्धा० (घ) से में से (तृ०) सिवाय, (अपा० के साथ) परि विमर्शेभ्यो बुद्धयो हीनाः, पर्यालोचनात् पश्चात्तापाः—भर्तृ० ३।८० (च) बीच होने के बाद (छ) फलस्वरूप 3 क्रिया विशेषण जैसे कि संज्ञा के रूप में संज्ञाओं से पूर्व लग कर, जब कि क्रिया में होना संबंध प्रकट करता है 'बहुत' अति' अत्यधिक' अत्यन्त' आदि अर्थ प्रकट करता है जैसा कि पर्याप्त (आगु ६।८।८।) में इसी प्रकार परिजनुर्दानम्, परिदीर्घतः 4. अवधीभाव समासों से पूर्व परि' का निम्नांकित अर्थ होता है (क) बिना, सिवाय के बाहर, इसको छोड़ कर जैसा कि, तार्किकाणां बुद्धौ देवः—का० १।१।९, पुरा० १।१।७ के अनुसार 'परि' अक्ष, शलाका या संख्या वाचक शब्द के पश्चात् अव्ययीभाव समास के अन्त में प्रयुक्त होता है यदि पाशा उलट जाने के कारण या दुर्भाग्यवश हार का पराजय हो जाय ; द्यूतव्यवहारे पराजये एवायं समासः)—उदा० अक्षपरि, शलाकापरि, एकपरि—तृ० अक्षपरि (ख) इधर उधर, चारों ओर, घिरा हुआ जैसा कि 'पर्यग्नि' में ; ज्वालाओं के बीच में) 5 कर्मधारय समास के रूप में परि' का अर्थ है 'खाली', 'रहित' 'छोड़ा हुआ' जैसा कि 'पर्यधीयन्—परिव्रजोनिष्क्रान्तोनध्यायः में ।

परिकथा [प्रा० स०] आख्यानप्रिय व्यक्ति के इतिवृत्त तथा उसके साहसिक कार्यों को बताने वाली रचना, काल्पनिक कथा ।

परिकंपः [प्रा० ग०] 1. भारी भार 2. प्रबल फेंकनी, या अस्त्रप्रहार महाभा० २।५।३ ।

परिकरः [प्रा० स०] 1. परिजन, अनुचर वर्ग, नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग 2. समवाय, संग्रह, समूह—रघु० ३।२, 3. आरंभ, उपक्रम भट्ट० १।६ 4. परिधि, कटिबंध, परिहस्त—अहिपरिकरभाजः—शि० ४।६५, **परिकर बंध (कृ)** कमर कसना, तैयार होना, किसी कार्य के लिए अपने आपको सन्नद्ध करना—बध्नन्त्वेते परिकर—का० १७०, कृतपरिकरस्तं भवाद्दृश्य वैलोक्यपतिर्न क्षमं परिगंतोभवितुम्—वेणी० २, गंगा० ४६, अमरु० ५२ 5. मंडली 6 (सा० शा० में०) एक अलंकार जिसमें सार्थक विशेषणों का उपयोग होता है—विशेषणैर्यत्साकूतैरिष्टः परिकरस्तु सः काव्य० १०. उदा० सुधांशुकलिनोनेसरसार्थः इत्यनूद्य शिवः—रुय्यक० ५।५६ 7. (नाटक० में नाटक की वस्तु कथा में आने वाली घटनाओं का परोक्षसूचन, 'बीज' का पल्लवन, द० सा० द० ३।४८ 8. निर्णय ।

परिकर्ण (पं०) [प्रा० स०] वह पुरोहित जो बड़े भाई के अविद्यमान रहने पर छोटे भाई का विवाह संस्कार करता है—परिकर्वा चाहरेत्—हारीत, तु० परिवेत्तृ ।

परिकर्मन् [तृ०] [परि+कृ+मनिन्] संस्कार—नपुं० —शरीर की विधिवत् या सुरुचिपूर्ण करना, वैयक्तिक सजावट, अलंकृत करना, प्रसाधन—कृतानाः परिकर्णाम्—शृं० श० ३, घेरों में बटोरकर लाना—कु० ७।९९, 3 सजावट, तैयारी 4. पूजा, अर्चना 5. (संख्या में) गुणा करना, परिवर्तिकरण मंत्र को गुणा करने के संबंध में—शि० ४।५५, (इसके ऊपर देखें श्लोक०) 6. गणित की प्रक्रिया (इसके आठ भेद हैं) ।

परिकर्षः—कर्षणम् [परि+कृष्+घञ्, ल्युट् वा] खींच कर बाहर निकालना, उखाड़ना ।

परिकल्कनम् [परि+कल्क्+णिच्+ल्युट्] धोखा, छल, छद्म-कपट ।

परिकल्पनम्—नं [परि+कृप्+ल्युट्] 1. निर्णय करना, निश्चय करना, फैसला करना, निर्धारण करना 2. उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप देना, क्रम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बद्ध करना—मुद्रा० ३।१५ 3. जुटाना, सम्पन्न करना 4. वितरण करना।

परिकांक्षितः [परि+काङ्क्ष्+क्त] धर्म परायण साधु या संन्यासी, भक्त।

परिकीर्ण (भू० क० कृ०) [परि+कृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, प्रसृत, इधर उधर बखेरा हुआ 2. छिड़का हुआ, भौंड़सिड़केका से वृक्ष, भरा हुआ—शि० १६।१०, रघु० ८।४५।

परिकूटम् [प्रा० स०] अवरोध आड़, नगर के फाटक के सामने की खाई।

परिकोपः [परि+कुप्+घञ्] अगाध क्रोध, भीषणता।

परिक्रमः [परि+क्रम्+घञ्] 1. इधर उधर भ्रमण करना, इतस्ततः घूमना—किं० १०।२ 2. भ्रमण, घूमना, टहलना 3. प्रदक्षिणा करना 4. इच्छानुसार टहलना 5. सिलसिला, क्रम 6. पर्याकमा, उत्तरोत्तर 7. घूमना। समा०—सहः बकरी।

परिक्रयः,-क्रयणम् [परि+क्री+घञ्, ल्युट् वा] 1. मजदूरी, भाड़ा 2. मजदूरी पर काम में लगाना 3. मोल लेना, खरीद डालना 4. विनिमय, अदल-बदल 5. रुपया देकर की गई संधि तु० द्वि० ३।१२२।

परिक्षणा [परि+क्षि+ल्युट्+टाप्] क्रिया प्रा० स०] 1. घर लगाना, चारों ओर खाई खोदना 2. घेरना 3. (नाट्य० में) परिकर (७)।

परिक्लान्त (भू० क० कृ०) [परि+क्लम्+क्त] थका हुआ, परिश्रांत, उकताया हुआ।

परिक्लेदः [परि+क्लिद्+घञ्] गीलापन, नमी, आर्द्रता।

परिक्लेशः [परि+क्लिश्+घञ्] कठिनाई, थकावट, कष्ट।

परिक्षयः [परि+क्षि+अच्] 1. ह्रास, बर्बादी, विनाश, परिसमाप्ति अभिनवरसमणीनां परिक्षयः मुद्र० १, किरात० ४।४६ 2. अन्तर्धान होना, समाप्त होना 3. बर्बादी, नाश, अनफलता शि० १६।५७, मनु० ७।५९।

परिक्षाम [परि+क्षै+क्त, धकारादेशः] कृश, क्षीण, दुर्बल।

परिक्षालनम् [परि+क्षाल्+णिच्+ल्युट्] 1. धोना, मांजना 2. धोने के लिए पानी।

परिक्षिप्त (भू०क०कृ०) [परि+क्षिप्+क्त] 1. नगेरा हुआ, वेष्टित 3. परिवेष्टित, घेरा हुआ वैतालपरिक्षिप्ते मनो मम ३, कु० ६।८८ 4. खाई से घेरा हुआ 5. ऊपर से फैलाया हुआ, ऊपर डाला हुआ 6. क्षीण हुआ, परिष्कृत।

परिक्षीण (भू०क०कृ०) [परि+क्षि+क्त] 1. अन्तर्हित, लुप्त, 2. बर्बाद हुआ, ह्रासित 3. कृश, क्षिप्त हुआ, थका हुआ 4. दरिद्र किया हुआ, सर्वथा बर्बाद किया हुआ- भर्तृ० २।४५ 5. खोया हुआ, नाश किया हुआ 6. कम किया हुआ, घटाया हुआ 7. (कानून में) दिवालिया।

परिक्षीव (वि०) [परि+क्षीव्+क्त, तस्य लोपः] बिल्कुल नशे में चूर।

परिक्षेपः [परि+क्षिप्+घञ्] 1. इधर उधर घूमना, टहलना 2. देखरेख, फैलाना 3. घेरना, परिवेष्टन, चारों ओर बेहना 4. घेरे की सीमा, हद जिससे कोई चीज घेरी जाय रघु० १२।६६।

परिखा [परिवृत्य खन्यते खन्+ड+टाप्] प्रतिकूप, खाई, नगर या किले के चारों ओर बनी नाली या खात—रघु० १।३०, १२।६६।

परिखातम् [परि+खन्+क्त] 1. प्रतिकूप, खाई 2. लीक, लूह 3. चारों ओर से खोदना।

परिखेदः [परितः खेदः प्रा० स०] थकावट, परिश्रान्ति, थकान कु० १।६०, ऋतु० १।२७।

परिख्यातिः (स्त्री०) [परि+ख्या+क्तिन्] यश, प्रसिद्धि।

परिगणनम्,-ना [परि+गण्+ल्युट्] पूर्ण गिनती, सही वर्णन या हिसाब श्रेणीभूतः परिगणनया निर्दिशतो बलाकाः- मेघ० (मल्लि० इसको क्षेपक समझते हैं)।

परिगत (भू०क०कृ०) [परि+गम्+क्त] 1. घेरा हुआ, आवेष्टित, अहाता बनाया हुआ 2. प्रसृत, चारों ओर फैलाया हुआ 3. ज्ञात, समझा हुआ रघु० ७।७१, परिगत परिगणन्य एव भवान् वेणी० ३, महावी० ३।४७ 4. भरा हुआ, ढका हुआ, सम्पन्न (प्रायः समास में) शि० ९।२६ 5. हासिल, प्राप्त भर्तृ० ३।५२ 6. बाद किया हुआ।

परिगलित (भू०क०कृ०) [परि+गल्+क्त] 1. डूबा हुआ 2. उथला हुआ 3. लुप्त 4. पिघला हुआ 5. बहता हुआ।

परिगर्हणम् [परि+गर्ह्+ल्युट्] भारी कलङ्क।

परिगृह्य (भू०क०कृ०) [परि+गृह्+क्त] 1. बिल्कुल शून्य 2. अयोध्य, जो समझने में अत्यन्त कठिन हो।

परिगृहीत (भू०क०कृ०) [परि+ग्रह्+क्त] 1. अपनाया हुआ, पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2. आलिंगन किया हुआ, घेरा हुआ 3. स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ 4. हाथों भरा हुआ, स्वीकृत किया हुआ, माना हुआ 5. संरक्षण दिया हुआ, अनुग्रह किया हुआ 6. अनुसरण किया हुआ, आज्ञा माना हुआ 7. विरोध किया हुआ 8. पूर्वक 'ग्रह्'।

परिगृह्या [परि+ग्रह्+क्यप्+टाप्] विवाहिता स्त्री।

परिग्रहः [परि+ग्रह्+घञ्] 1. पकड़ना, थामना, लेना, ग्रहण करना, आसनरज्जु परिग्रहे रघु० १।४६, शंका परिग्रहः मुद्रा० १, शंका करना 2. घेरना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्द करना, चारों ओर से घेरा डालना, बाड़ बनाना 3. पहनना, (वेषभूषा की भांति) लपेटना—मौलिपरिग्रहः-रघु० १८।३८ 4. धारण करना, लेना—मानपरिग्रहः—अमरु ९२, विवाहलक्ष्मी—उत्तर० ४ 5. प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, अंगीकार करना—भौमो मुनेः स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३।३६, अर्थपरिग्रहार्थे—७०, १२।१६, कु० ६।५६, विद्यापरिग्रहाय—मा० १, इसी प्रकार—आसनपरिग्रहं करोतु देवः—उत्तर० ३, 'आसन-ग्रहण कीजिए महाराजाधिराज' 6. वैभव, संपत्ति, सामान त्यक्तसर्वपरिग्रहः—भग० ४।२१, रघु० १५।५५, विक्रम० ४।२६ 7. आवाह, विवाह—तवे दारपरिग्रहे—उत्तर० १।१९,—मा० ५।२७, श० १।२२ 8 पत्नी, रानी—प्रयतपरिग्रहद्वितीयः—रघु० १।९५, ९२, ९।१४, ११।३३, १६।८, श० ५।२७, ३०, परिग्रहं बहुलेऽपि श० ३।२१ 9. अपने रक्षण में लेना, अनुग्रह करना—उत्तर० ७।११, मालवि० १।१३ 10. अनुचर, अनुसेवी, नौकर-चाकर, परिजन, सेवक समूह 11. गृहस्थ, परिवार, परिवार के सदस्य 12. राजा का अन्तःपुर, रनिवास 13. जड़, मूल 14. सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण 15. क्षय 12. सेना का पिछला भाग 17. विष्णु का नाम 18. संक्षेप, उपसंहार।

परिग्रहीत (पुं०) [परि—ग्रह्+क्त] पति—श० ४।२२।

परिक्लान्त [भू० क० कृ०] [परि+क्लै+क्त] 1. शिथिल, थका हुआ 2. विमुख, पराङ्मुख।

परिघः [परि+हन्+अप्, घादेशः] 1. लोहे की छड़ या लकड़ी का मूसल जो द्वार को बंद रखने के लिए प्रयुक्त की जाय, अर्गला- एकः कृतघ्ना नगरपरिघः प्रांशुबाहुर्भुवनबिदित श० २।१५, रघु० १६।८४, शि० १२, मालवि० ५।२ 2. (अतः) रोक, अवरोध, विघ्न, बाधा—मार्गवस्य सुकृतोऽपि सोऽभवत्स्वर्गमार्गपरिघो दुरत्ययः—रघु० ११।८८ 3. लोहे की स्यामें लगी हुई लाठी, मुद्गर जिसमें लोहे की स्यामें जड़ दी गई हों रघु० १२।७२ 4. लोहे की गदा 5. जलपात्र, घड़ा 6 शीशे की झारी 7. घर 8. मारना, नष्ट करना 9. प्रहार करना—आघात या थप्पड़।

परिघट्टनम् [परि—घट्ट+ल्युट्] घोटना, कड़ेसी चलाना।

परिघातः, घातनम् [परि+हन्+घञ्, ल्युट्वा] 1. मारना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा पाना 2. मुद्गर, मोटे सिरे की छड़ी।

परिघोषः [परि—घुष्+घञ्] 1. कोलाहल 2. अनुचित भाषण 3. गर्जन।

परिचतुर्दशात् (वि०) [प्रा० स०] पूरे चौदह।

परिचयः [परि+चि+अप्] 1. ढेर लगाना, एकत्र करना 2. ज्ञान पहचान, परिचिति, घनिष्ठता, सरकारी संरक्षण—पुरुषपरिचयेन—मृच्छ० १।५६, अतिपरिचयादवज्ञा 'अतिपरिचय से होता है, अरुचि अनादर भाव' परिचय चलदध्वनिपातेन—रघु० ९।४२, सकलकलापरिचयः—का० ७६ 3. जांच, अध्ययन, अभ्यास, मुहुर्मुहु- आवृत्ति, हेतुपरिचयस्यैवं वक्तुर्गुणनिकैव सा - शि० २।७५, ११।५, वर्णपरिचयं करोति —श० ५ 4. ज्ञान- महावीर ५।१० 5. पहचान, —मेघ० ९।

परिचरः [परि+चर्+अच्] 1. सेवक, अनुचर, टहलुआ 2. शरीर रक्षक 3. रक्षक, पहरेदार 4. श्रद्धांजलि, सेवा।

परिचरणः [परि+चर्+ल्युट्] सेवक, टहलुवा, सहायक, —णम् 1. सेवा, टहल 2. इधर उधर जाना।

परिचर्या [परि+चर्+ण्वुल्+टाप्] 1. सेवा, टहल -रघु० १।९१, भग० १८।४४ 2. अर्चना, पूजा —शि० ११।७।

परिचाय्यः [परि—चि—ण्यत्] गड़ाग्नि (कुण्ड में स्थापित)।

परिचारः [परि+चर्+घञ्] 1. सेवा, टहल 2. सेवक 3. टहलने का स्थान।

परिचारकः, परिचारिकः [परि+चर्+ण्वुल्, परिचार —ठन्] सेवक, टहलुवा।

परिचित [भू० क० कृ०] [परि+चि+क्त] 1. ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2. जानकार, घनिष्ठ, जान पहचान का 3. सीखा गया, अभ्यस्त।

परिचितिः (स्त्री०) [परि+चि+क्तिन्] जान पहचान, परिचय, घनिष्ठता।

परिच्छद् (स्त्री०) [परि—छद्+क्विप्] 1. परिजन, अनुचरवर्ग 2. साज-सामान।

परिच्छदः [परि+छद्+णिच्+घञ्] 1. आवरण, चादर, पोशाक 2. वस्त्र, वेशभूषा—शाखावसक्तकमनीय परिच्छदानाम् कि० ७।४० 3. नौकरचाकर, परिजन, टहलुए, आश्रितमंडली- रघु० १।७० 4. साजसामान, (छत्र, चामर आदि) ऊपरी सामान सेना परिच्छदस्तस्य रघु० १।६७ 5. सामान, असबाब, व्यक्तिगत सामान, निजी चीजें व सामान (बर्तनभांडे, तथा अन्य उपकरण आदि) विक्रयो वा भवेद्दाप्यस्तस्यैव परिच्छदः- मनु० ९।२४१, ७।४०, ८।४०५, ९।७८, ११।७६ 6. यात्रा का आवश्यक सामान।

परिच्छदः [परि+छन्द्+क] नौकर-चाकर, परिजन।

परिच्छन्न [भू० क० कृ०] [परि+छद्+क्त] 1. वेष्टित, ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, जिसने वस्त्र पहने हुए हों 2. ऊपर फैलाया हुआ, या बिछाया हुआ 3. घिरा हुआ (परिजनों से) 4. छिपा हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिच्छित्तिः (स्त्री०) [परि + छिद् + क्तिन्] 1. यथार्थ परिभाषा, सीमित करना 2 विभाजन, अलग अलग करना।

परिच्छिन्न (भू० क० कृ०) [परि + छिद् + क्त] 1. काटा हुआ, विभक्त करना, (उचित और अनुचित में) विवेचन 2 यथार्थ परिभाषा, फैसला, यथार्थ निर्धारण, निश्चय करना परिच्छेदव्यक्तिर्भवति न पुरुषधियि विषये—मा० १।३१, परिच्छेदानीत सकलव्यवहाराणाम्-निर्णय १।३०, सब प्रकार की परिभाषा और निर्धारण में श्रेष्ठता होना इत्याकूतपरिच्छेदपरिकरितपरिच्छेदाकुलं मे मनः श० ५।१ 3. विवेक, निर्णय, सूक्ष्मदृष्टि—परिच्छेदो हि पाण्डित्यं यदापन्ना विपनयः, अपरिच्छेदकर्तृणां विपदः स्युः पदे पदे हि० १।१४८, कि पाण्डित्य परिच्छेदः १।४७ 4. सीमा, हद, सीमा स्थिर करना, इदमन्तो—अलमत्र परिच्छेदेन गालवि० २ 5. अनुभाग या पुस्तक का बाट ('अनुभाग' के अन्त नामों के लिए दे० 'अध्याय' के अन्तर्गत)।

परिच्छेद्य (वि०) [परि + छिद् + ण्यत्] 1 यथार्थरूप से परिभाषा के योग्य, परिभाषणीय, मनु० ८।९, रघु० १०।२८ 2 तोलने या अनुमान लगाने के योग्य।

परिजनः [प्रा० स०] 1. सदा साथ रहने वाले नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग, अनुचरवर्ग—परिजनो राजादमभित: स्थित:—गालवि० १ 2 अनुचरी लोग, सेवकसमूह, सेविकाओं का समूह, दासियों—रघु० १२।२३ 3. सेवक, दास।

परिजल्पितम् [परि + जल्प् + क्त] (नौकर या सेवक का) गुप्त संकेत जिससे अपनी कुशलता श्रेष्ठता तथा स्वामी की कृपा एवं प्रशंसा तथा और दूसरे इसी प्रकार के दोष प्रकट हों; उपरुक्तलीलमणि इस प्रकार परिभाषा बताते हैं—प्रभोर्निदेशनाशाद्यैश्चतापल्यादिगूपनात्, स्वविचक्षणतायाश्चाख्यानं स्यात्परिजल्पितम्। (विल्सन के अनुसार अपने प्रिय से उपेक्षित किसी स्त्री के द्वारा प्रयुक्त गुप्त झिड़कियाँ ही 'परिजल्पित' हैं)।

परिज्ञप्तिः [परि + ज्ञप् + क्तिन्] 1. संलाप, संवाद 2. पहचान।

परिज्ञानम् [परि + ज्ञा + ल्युट्] पूरा ज्ञान, पूरी जानकारी।

परिडीनम् [परि + डी + क्त] पक्षियों का गोल बना कर उड़ना या पक्षियों के गोल की उड़ान—दे० डीन।

परिणत (भू० क० कृ०) [परि + नम् + क्त] 1. झुका हुआ, विनत, ढलता हुआ—मेघ० २ 2. (आयु में) वृद्ध, ढलता हुआ—परिणते वयसि—का० ३५,६२, ६३ 3. पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित—शब्दब्रह्मविदः केचे: परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम् उत्तर० ७।२१, मेघ० २३—परिणतमकरंदामिकारते—भामि० १।८, शि० ११।४९ 4. पूर्णरूप से बड़ा हुआ, प्रौढ़, पूर्णविकसित परिणतशरच्चन्द्रकिरणैः—भर्तृ० ३।४९, मेघ० १०० 5. (भोजन आदि) पचा हुआ 6. रूपान्तरित या परिवर्तित (करण० के साथ) विक्रम० ४।२८ 7. समाप्त, पर्यवसित, अवसायी, अनेन समयेन परिणतो दिवसः—का० ४७ 8. (सूर्य आदि) अस्त,—तः अपने दांत से प्रहार करने के लिए झुका हुआ या पार्श्वघात देने वाला हाथी (तिर्यगदंतप्रहारश्च गजः परिणतो मतः—हेला०) शि० २।२९, कि० ६।३।

परिणतिः (स्त्री०) [परि + नम् + क्तिन्] 1. झुकना, ढलना, नत होना 2. पक्कापन, परिपक्वता, विकास—महावी० २।१४ 3. परिवर्तन, रूपान्तरण, कायापलट 4. पूर्णता 5. नतीजा, परिणाम, फल—परिणतिरवधार्या यत्नतः पंडितेन—भर्तृ० २।९४, १।२०,३।१७, महावी० ६।२८ 6. अन्त, उपसंहार समाप्ति, अवसान—परिणतिरमणीयाः प्रीतयस्तत्प्रबद्धिधाना मा० ६।७,१६, शि० १।१।१ 7. जीवन की अन्तिम आकी, बुढ़ापा—मेदाकारा परिणतिरभूत्—विक्रम० ३।१, अंसावस्तः परिणति शिथिलः परिमंदमूर्धनयनो दिवसः—शि० ९।२, (यहाँ प० का अर्थ है 'अन्त या उपसंहार' भी) 8. (भोजन का) पचना।

परिणद्ध (भू० क० कृ०) [परि + नह् + क्त] 1. बँधा हुआ, लिपटा हुआ 2. विस्तृत, विशाल—परिणद्धकंधरः—रघु० ३।३४।

परिणयः-णयनम् [परि + नी + अप्, ल्युट् वा] विवाह—नवपरिणयां वधूः प्रणयने—काव्य० १०।

परिणहनम् [परि-नह्—ल्युट्] कमर कसना, कमर पर कपड़ा लपेटना।

परि (री) णामः [परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण 2. पाचन—अन्नं न मस्यस्य परिणामभीति—सुश्रुत, भुक्तस्य परिणामहेतुरीदृश्यम्—पंच० 3. नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव—अप्रियस्यापि पथ्यस्य परिणामः सुखावहः—हि० २।१३५, मृच्छ० ३।१, परिणामसुखे गरीयसि वचसि औषधे—कि० २।४, भाग० १०।३७, ३८ 3. पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास—उपैतिशस्य परिणामरम्यताम्—शि० ४।२०, फलपरिणामरम्याम्-जनुः—उत्तर० २।२०, मा० ९।२४ 5. अन्त, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, ह्रास—दिवसाः परिणामरमणीयाः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—श० १।३, वयः परिणामपांडुरशिरसं—का० १०, परिभाणमुपैति दिवसः—का० २५४, 'दिन समाप्त होने वाला है' 6. बुढ़ापा—परिणामे हि दिलीप-वंशजाः—रघु० ८।११ 7. (समय का) बीतना 8. (अलं० शा० में) रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं (चन्द्रालोक में दी गई परिभाषा और उदाहरण—परिणामः क्रियार्थश्चेद्विययी विषयान्तरम्ना, प्रसन्नेन दृगञ्जेन वीक्षते मदिरेक्षणा—५।१८, दे० रसगंगाधर में 'परिणाम' के नीचे)। समः —वर्शिन् (वि०) बुद्धिमान्, दूरदर्शी, दृष्टि (वि०) बुद्धिमान् (—ष्टिः—स्त्री०) बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, —पथ्य (वि०) जिसका फल स्वास्थ्यप्रद हो शूलम् पीडायुक्त अजीर्ण या मन्दाग्नि, उदरपीडा, पीड़ा के साथ उदरवायु, वायगोले का दर्द।

परि (री) णाहः [परि+नी+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. शतरंज की गोट का चलाना 2. (शतरंज की) चाल।

परिणायकः [परि+नी+ण्वुल्] 1. नेता 2. पति —शि० ९।७३।

परि (री) णाहः [परि+नह+घञ्, पधे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्ज —स्तनयुगपरिणाहोच्छ्वासिता वल्कलेन—श० १।१९, स्तनपरिणाह विलासवैजयंती मा० ३।१५, विशाल वक्षःस्थल,—ककुदे वृषस्य कृतबाहुमकृश परिणाहं शालिनी कि० १२।२०, मुखछ० ३।९, रत्न० २।१३, महावी० ७।२४ 2. वृत्त की परिधि।

परिणाहवत् (वि०) [परिणाह—मतुप्, मस्य वत्वम्] विशाल, बड़ा, विस्तृत।

परिणाहिन् (वि०) [परिणाह+इनि] विशाल, बड़ा —कु० १।२६।

परिणिसक (वि०) परि+निस्+ण्वुल्] स्वाद चखने वाला, खाने वाला-पलामां परिणिसकः—भट्टि० ९।१०६ 2. चुम्बन।

परिणिष्ठा [परि+निष्ठा प्रा० स०] पूरा कौशल।

परिणीत (भू० क० कृ०) [परि+नी+क्त] विवाहित —ता विवाहित स्त्री।

परिणेतृ (पुं०) [परि+नी+तृच्] पति—श० ५।१७, रघु० १।२५, १४।२६, कु० ७।३१।

परितर्पणम् [परि+तृप्+ल्युट्] तृप्त करना, सन्तुष्ट करना।

परितस् (अव्य०) [परि+तस्] (संज्ञा के साथ प्रायः कर्म० में, कभी-कभी स्वतंत्र रूप से प्रयोग) 1. इर्दगिर्द, सब ओर, घूमा फिराकर, सब दिशाओं में, सर्वत्र, चारों ओर—रक्षाहि वेदि परितो निरास्थत्—भट्टि० १।१२, शि० ५।२६, ९।३६, कि० १।१४, गाहितमखिलं गहनं परितो दृष्टाश्च विटपिनः सर्वे भामि० १।२१, २९ 2. की ओर, की दिशा में आपेदिरेऽभ्यर्षयं परितः पतंगाः भामि० १।१७, रघु० ९।६६।

परितापः [परि+तप्+घञ्] 1. अत्यंत या झुलसा देने वाली गर्मी—(पादपः) शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्—श० ५।७ गुरुपरितापानि गात्राणि —३।१८, ऋतु० १।२२ 2. पीड़ा, वेदना, व्यथा, शोक—प्रसक्ते निर्वृणे हृदयपरितापं वहसि किम् —मालवि० ३।१ 3. विलाप, मातम, शोक—विरहितविविधविलापं सा परितापं चकारोच्चैः—गीत० ७ 4. कामना, भय।

परितुष्ट (भू० क० कृ०) [परि+तुष्+क्त] 1. पूर्ण रूप से संतुष्ट—चमसिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या- भर्तृ० ३।५०, इसी प्रकार—मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः—भर्तृ० ३।५० 2. प्रसन्न, खुश।

परितुष्टिः (स्त्री०) [परि+तुष्+क्तिन्] 1. संतुष्टि, पूर्ण संतोष 2. खुशी, हर्ष।

परितोषः [परि+तुष्+घञ्] 1. संतोष, इच्छा का अभाव (विप० लोभ) सर्व इह परितोषनिबन्धनो विबुधो विशेषः भर्तृ० ३।५० 2. पूर्ण संतोष, तृप्ति—आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् श० १।३ 3. प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, पसन्दगी (अधि० के साथ) कु० ६।५९, रघु० ११।९२, मुद्रा० परितोषः।

परितोषण (वि०) [परि+तुष्+णिच्+ल्युट्] संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला, —णम् संतुष्ट करना।

परित्यक्त (भू० क० कृ०) [परि+त्यज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, उत्सृष्ट, सर्वथा त्यागा हुआ 2. वञ्चित, रहित (करण० के साथ) 3. (तीर आदि) छोड़ा हुआ 4. अभिशप्त।

परित्यागः [परि+त्यज्+घञ्] 1. छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर भाग जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद अपरित्यागमयाचदात्मनः —रघु० १२, कृतसीतापरित्यागः—१५।१ 2. छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, विरक्त होना, गद्दी छोड़ देना, —स्वनाम परित्यजामि करोमि पंच० १, 'मैं अपना नाम छोड़ दूंगा'—मनु० २।२५ 3. अवहेलना, भूल-चूक—मोहात्तस्य (कर्मणः) परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः भग० १८।७ 4. वदान्यता, उदारता 5. हानि, कंगाली।

परित्राणम् [परि+त्रै+ल्युट्] संधारण, संरक्षण, बचाना प्रतिज्ञा, मुक्ति, छुटकारा—परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्—भग० ४।८, रामापरित्राण विहस्तयोधं सेनानिवेशं तुमुलं चकार—रघु० ५।४९।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परित्रासः [परि+त्रस्+घञ्] त्रास, भय, डर ।

परिदंशित (वि०) [परि+दंश्+क्त] कवच से ढका हुआ, आपादमस्तक शस्त्रों से सुसज्जित (पूर्णतया जिरहबख्तर से युक्त) ।

परिदानम् [परि+दा+ल्युट्] 1. विनिमय, अदला-बदली 2. भक्ति 3. धरोहर का वापिस मिलना ।

परिदायिन् (पु०) [परि+दा+णिनि] वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवाहित है—तु० 'परिवेत्तृ' ।

परि (री) दाहः [परि+दह्—घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. जलन 2. व्यथा, पीड़ा, दुःख, शोक ।

परिदेवः [परि+दिव्+घञ्] शोक मनाना, मातम, विलाप ।

परिदेवनम्,—ना, परिदेवितम् [परि+दिव्+ल्युट्, परि+दिव्—क्त] 1. विलाप, विलखना, रोना-धोना—अथ तैः परिदेवितास्फरैः—कु० ४।२५, रघु० १४।८३, भग० २।२८, तत्र का परिदेवना—पाञ्च० ३।९, हि० ४।६१ 2. पश्चात्ताप, खेद ।

परिदेवन (वि०) [परि+दिव्+ल्युट्] शोकसंतप्त, खेदजनक, दुःखी ।

परिदृष्ट (पुं०) [परि+दृश्+तृच्] तमाशबीन, दर्शक ।

परिधर्षणम् [परि+धृष्+ल्युट्] 1. हमला, आक्रमण, बलात्कार 2. अपमान, निरादर, तिरस्कार 3. दुर्व्यवहार, रूखा व्यवहार ।

परि (री) धानम् [परि+धा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना 2. पोशाक, अधोवस्त्र, कपड़े आत्तचित्रपरिधानविभूषाः- कि० ९।१, शि० १।५१, ६१, ४।६१ ।

परिधानीयम् [परि+धा+अनीयर्] अधोवस्त्र, नाभि से नीचे का पहरावा ।

परिधायः [परि+धा+घञ्] 1. नौकर-चाकर, अनुचर टहलुए 2. आधार, आशय 3. नितंब, चूतड़ ।

परिधिः [परि+धा+कि] 1. दीवार, मेंड़, बाड़, घेरा 2. सूर्य या चन्द्रमा का परिवेश परिवेषमुक्त इवांशु-र्दीधितिः रघु० ८।३०, शशिपरिधिरिवोच्चैर्मण्डलस्थेन तेने —नै० २।१०८ 3. प्रकाशमंडल 4. क्षितिज 5. परिधि या वृत्त 6. वृत्त की परिधि 7. पहिये का घेरा 8. ('पलाश' आदि पवित्र वृक्षों) समिधा या लकड़ी जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर रक्खी रहती है सप्तास्यासन् परिधयः त्रिः सप्तः समिधः कृताः—ऋक् १०।९०।१५ । समः **पतिश्वेचरः** शिव का विशेषण —स्थः 1. चौकीदार 2. किसी राजा या सेनापति का सहायक अधिकारी ।

परिधूपित (वि०) [परि+धूप्—क्त] धूप द्वारा सुवासित या सुगंधित किया हुआ ।

परिधूसर (वि०) [परितः सर्वतो भावेन धूसरः—प्रा० स०] बिल्कुल भूरा—वसने परिधूसरे वसाना—शि० ७।२१, २४।८ ११।६० ।

परिधेयम् [परि+धा+यत्] अधोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा ।

परिध्वंसः [परि+ध्वंस्+घञ्] 1. क्षय, विनाश, बरबादी, कष्ट 2. असफलता, विध्वंस, संहार 4. जाति-च्युति ।

परिध्वंसिन् (वि०) [परि+ध्वंस्+णिनि] 1. गिर कर अलग होने वाला 2. बर्बाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला—हि० २।१३४ ।

परिनिर्वाण (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल बुझा हुआ, —णम् (व्यक्ति की) अन्तिम विलुप्ति, परिमृति ।

परिनिर्वृत्तिः (स्त्री०) [परि+निर्+वृत्+क्तिन्] आत्मा की शरीर से पूर्णमुक्ति, पुनर्जन्म से छुटकारा, पूर्ण मोक्ष ।

परिनिष्ठा [प्रा० स०] 1. (किसी वस्तु का) पूरा ज्ञान या परिचय, 2. पूर्ण निष्पत्ति 3. चरम सीमा ।

परिनिष्ठित [भू० क० कृ०] [परि+नि+स्था+क्त] 1. पूर्ण कुशल 2. सुनिश्चित—अपरिनिष्ठितस्योपदेश-स्यान्यार्थं प्रकाशनम्—मालवि० १ ।

परिपक्व (भू० क० कृ०) [परि+पच्+क्त] 1. पूरी तरह पका हुआ, 2. भलीभाँति सेका हुआ, 3. बिल्कुल पक्का, प्रौढ़, सिद्ध, पूर्णता को प्राप्त (आत्म० भी) --प्रफुल्लसीध्राः परिपक्वशालिः—ऋतु० ४।१, इसी प्रकार परिपक्वबुद्धिः 4. सुसंबंधित, समझदार, काइयाँ 5. पूरी तरह पचा हुआ 6. मुर्झाने वाला, मृत्यु के निकट ।

परिपणं (नम्) [परि+पण्+घ प्रा०स०] पूंजी, मूल-धन, बारदाना ।

परिपणनम् [परि+पण्+ल्युट्] वादा करना, प्रतिज्ञा करना ।

परिपणित (भू०क०कृ०) [परि+पण्+क्त] वादा किया हुआ, वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई—शि० ७।९ ।

परिपंथकः परि+पन्थ्+ण्वुल्] शत्रु, विरोधी, दुश्मन ।

परिपंथिन् (वि०) [परि+पन्थ्+णिनि] रास्ता रोकने वाला, रोड़ा अटकाने वाला, विरोध करने वाला, विघ्न डालने वाला (पाणिनि के मतानुसार केवल वेद में मान्य, परन्तु तु० नीचे दिए हुए उद्धरणों से)—अर्थपरिपंथी महानरातिः यूद्वा० ५, नाभविष्यमहं तत्र यदि तत्परिपंथिनी मा० ९।५०, इसी प्रकार भामि० १।६२, भग० ३।३४, मनु० ७।१०८, ११० (पुं०) रिपु, शत्रु, प्रतिद्वन्दी, दुश्मन 2. लुटेरा, चोर डाकू ।

परि (री) पाकः [परि+पच्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीर्घः] 1. पूरी तरह से पकाया जाना या सँवारा जाना 2. पचना, जैसा कि 'अन्नपरिपाक' में 3. पक जाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता शि० ४।४८, कु० ६।१० 4. फल, नतीजा, परिणाम प्रपन्नानां मूर्तः सुकृतपरिपाकोऽनिमतान् महावी० ७।३१, भर्तृ० २।१३२, ३।१३५ 5. चतुराई, दूरदर्शिता, कुशलता।

परिपाटल (वि०) [प्रा०स०] पीला लाल -रघु० १९। १०, शिशु १३।४२।

परिपाटिः,–टी (स्त्री०) [परि भाषेन पाटिः पाटनं गतिः | यस्या –प्रा०ब०स०, परिपाटि+ङीप्] 1. प्रणाली, रीति, प्रक्रम -पाटीर तव पटीयान्कः परिपाटीमिमा-पुरीकर्तुम् -भामि० १।१२, कदवानां वाटी रसिक परिपाटी स्फुटयति –हंस० २४ 2. व्यवस्था, क्रम, उत्तराधिकार।

परिपाठः [प्रा०स०] परिगणना, पूर्ण निर्देशन, पूरा विवरण।

परिपार्श्व (वि०) [अव्या०स०] निकट, पार्श्व में, पास, नजदीक ही।

परिपालनम् [परि+पल्+णिच्+ल्युट्] 1. भली-भांति पालना, रक्षा करना, संधारण करना, संभाले रखना, जीवित रखना –क्लिश्नातिलश्यपरिपालनवृत्तिरेव द्या० ५।६ 2. भरण पोषण, संवर्धन– जातस्य परि-पालनम् – मनु० ९।२७।

परिपिष्टकम् [परि+पिष्+क्त—कन्] तीसा।

परिपीडनम् [परि+पीड्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, भींचना 3. क्षति पहुँचाना, चोट लगाना, नुकसान पहुँचाना।

परिपुटनम् [परि+पुट्+ल्युट्] 1. हटाकर अलग करना 2. बल्कल या छाल उतारना।

परिपूजनम्, परिपूजा [परि–पूज्–ल्युट्, प्रा०स०] सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना।

परिपूत (भू०क०कृ०) [परि+पू–क्त] 1. विशुद्ध किया गया, विशुद्ध- उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनैरवैः उत्तर० १।१३, शि० २।१२६ 2. पूरी तरह कटका हुआ, पिछोड़ा हुआ, भूसी से पृथक् किया हुआ।

परिपूर्णम् [परि–पूर्–क्युट्] 1. भरना शि० ४।६१ 2. पूर्णता को पहुँचाना, पूरा करना।

परिपूर्ण (भू०क०कृ०) [परि–पूर् | क्त] 1. पूर्ण तरह भरा हुआ, इंदुः पूर्ण चाँद, समस्त, सारा, भली भांति भरा हुआ 2. स्वसंकुट, संतुष्ट।

परिपूर्तिः (स्त्री०) [परि+पूर्+क्तिन्] पूर्णता, पर्याप्तता।

परिपृच्छा [परि+प्रच्छ्–अङ्+टाप्] पूछ-ताछ, प्रश्न।

परिपेलव (वि०) [प्रा०स०] अति कोमल, सूक्ष्म, अत्यन्त मृदु।

परिपोटः, पोटकः [परि–पुट्+घञ्, पक्षे पोटः+कन्] (आयु० में) एक प्रकार कर्ण रोग (जिसमें कान की खाल गलने लगती है)।

परिपोषणम् [परि+पुष्–ल्युट्] 1. खिलाना-पिलाना, भरण-पोषण 2. आगे बढ़ाना, उन्नति करना।

परिप्रश्नः [प्रा०स०] पूछताछ, प्रश्नवाचकता, सवाल, कवरकलस्त्री जाति परिप्रश्नेन–पा० २।१।६३, ३।२।१२० तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया– भग० ४।३४।

परिप्राप्तिः (स्त्री०) [प्रा० त०] अधिग्रहण, उपलब्धि।

परिप्रेष्यः [प्रा०स०] सेवक।

परिप्लव (वि०) [परि+प्लु+अच्] 1. बहता हुआ 2. थरथराता हुआ, काँपता हुआ, डोलता हुआ, हिलोरे लेता हुआ, कम्पायमान 3. अस्थिर, चंचल –वि० १।१६८, वः 1. जलप्लावन 2. जल में डुबोना, गीला करना 3. किश्ती, नाव 4. दुर्व्यवहार, अत्याचार।

परिप्लुत (भू०क०कृ०) [परि+प्लु+क्त] 1. बाढ़ग्रस्त, जलप्लावित 2. घबड़ाया हुआ, व्याकुल जैसा कि श्लोक में 3. आवेकुल, विलग्न, सना, –तम् उछल छलांग,—ता प्रगल्भ।

परिप्लुष्ट (भू०क०कृ०) [परि+प्लुष्+क्त] जला हुआ, झुलसा हुआ, भलीभांति जला हुआ।

परिब (ब) हः [परि–बृह् (बृ)+क्विप्] ऊँचा, अनुचर, नौकर-चाकर, इदमृषु वः प्रवृत्तिमाददे नः भवत्या संवर्धयतामृ दशा० १०८ 2. उपकरण, घर के अन्दर का सामान—परिवर्हेषु वैश्यानि रघु० १४।२९, "उपयुक्त सम्मान से सुसज्जित कमरे" 3. राज चिह्न 3. सवारी, धनदौलत।

परिव (व) हणम् [परि+बृह् (ब)+ल्युट्] 1. अनुचर, नौकर-चाकर 2 बनाव-सिंगार, काट-छाँट 3 वृद्धि 4. पूजा।

परिवाधः [प्रा० स०] 1. कष्ट, पीड़ा, सताना 2. थकावट, उग्र व्यथा।

परिषृ (वृ) हणम् [परि+बृंह् (बृ) हृ–ल्युट्] 1. समृद्धि, कल्याण 2. परिशिष्ट, परिपूरक।

परिबृ (बृ) हित (भू० क० कृ०) 1. बढ़ा हुआ, आवर्धित 2. फला-फूला, समृद्ध हुआ 3. से युक्त, संपन्न,—तम् हाथी की चिघाड़।

परिभंगः [प्रा० स०] छिन्न-भिन्न होना, रट कर टुकड़े २ होना।

परिभर्त्सनम् [परि+भर्त्स्–ल्युट्] धमकाना, धमकी।

परि (री) भवः [परि+भू–अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. अपमान क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा हनन, तिरस्कार, निरादर, सामर्थ्यानि परिभवः प्रभवेषु वैफल्यं सुमनस्विता (भूषणम्)–शि० २।४८, रघु० १।८३, ९।७५, ११।२५, गीता० १।४०, ३।२५ 2. हार, पराजय। सम०—आस्पदम्,—पदम् 1. घृणा का पात्र, शि० ३।५१ 2. अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति,—विधिः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिष्ठाभंग- प्रायो मूर्खः परिभवविधौ नाभिमानं तनोति—शृंगार १६ ।

परिभविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि+भू+इनि 1. मानहर, तुच्छ, अनादर या घृणायुक्त व्यवहार करने वाला 2. अपमानग्रस्त, तिरस्कार, पीडित ।

परिभावः [परि+भू+घञ्] दे० 'परिभव' ।

परिभाविन् (वि०) (स्त्री० नी [परि+भू+णिनि] 1. मानमर्दन करने वाला, अनादर या घृणा करने वाला, तिरस्कार-युक्त व्यवहार करने वाला- श० ४ 2. लज्जित करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला 3 तुच्छ समझने वाला, उपेक्षा करने वाला अवज्ञापूर्ण परिभाविनं गदम् रघु० १२।५३, 'अविचारोपचार की उपेक्षा करने वाला' ।

परिभाषण [परि+भाष्+ल्युट्] 1. बातचीत, प्रत्यक्ष, बातचीत करना, गपशप लगाना, गप्पें हांकना 2. निन्दात्मिकोक्ति, धिक्कारना, झिड़की, अपशब्द 3. नियम, विधि ।

परिभाषा [परि+भाष्+अ+टाप्] 1. व्याख्यान, प्रवचन 2. निन्दा, झिड़की, कलङ्क, गाली 3. पारिभाषिक शब्दावली, पारिभाषिक पदावली, (किसी ग्रंथ में प्रयुक्त) तकनीकी शब्दावली—इति परिभाषा प्रकरणं सिद्धा०, इसी गुणवृद्धीत्यादिका परिभाषा मता० 4. (अतः) कोई सामान्य नियम, विधि या परिभाषा जो सर्वत्र घट सके (अनियमनिवारको न्याय विशेषः), परिज्ञः प्रमिताक्षरापि सर्वं विषयं वस्तवस्तो गता प्रतिष्ठाम्, न खलु प्रतिहन्यते कदाचित् परिभाषेव गुरोगिरां यदाज्ञा—शि० १६।८० 5. किसी भी पुस्तक में प्रयुक्त संकेत या संक्षेपकों की सूची 6. (व्या० में) पाणिनि के अन्य सूत्रों में मिला हुआ व्याख्यात्मक सूत्र जो उन सूत्रों के प्रयोग की रीति बतलाता है ।

परिभुक्त (भू० क० कृ०) [परि+भुज्+क्त] 1. खाया हुआ, प्रयोग में लाया हुआ 2. उपभुक्त 3. अधिकृत ।

परिभुग्न (वि०) [परि+भुज्+क्त] बिगत, वक्रीकृत, झुका हुआ ।

परिभूतिः (स्त्री०) [परि+भू+क्तिन्] तिरस्कार, अपमान, अनादर, अवमानना—मुद्रा० ४।११ ।

परिभूयणः [परि+भूय्+ल्युट्] किसी भूमि का समस्त राजस्व छोड़ कर दी गई हो ।

परिभोगः [परि+भुज्+घञ्] 1. उपभोग रघु० ४।८५ 2. विशेष कर मैथुन,—रघु० ११।५२, १९। २१, १८।३० 3. दूसरे के सामान का अवैध प्रयोग ।

परिभ्रंशः [परि+भ्रंशु+घञ्] 1. दब निकलना 2. गिरना ।

परिभ्रमः [परि+भ्रम्+घञ्] 1 घूमना, इधर उधर टहलना 2. घुमा-फिरा कर बात कहना, घाग्जाल, वक्रोक्ति 3. भूल, भ्रम ।

परिभ्रमणम् [परि+भ्रम्+ल्युट्] 1. घूमना, इधर उधर टहलना, पर्यटन 2. चारों ओर घूमना, चक्कर काटना, परिधि ।

परिभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [परि+भ्रंशु+क्त] 1. गिरा हुआ, स्खलित 2. बच कर निकला हुआ 3. फेंका हुआ, अधःपतित 4. वञ्चित, शून्य (अपा० या करण० के साथ) 5. अवहेलना करने वाला ।

परिमंडल (वि०) [प्रा० ब० स०] गोलाकार, गोल, वर्तुलाकार, लम् पिंड, गोलक 2. गेंद 3. वृत्त ।

परिमंथर (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त मंद, शि० ९।७८ ।

परिमंद (वि०) [प्रा० स०] 1. अत्यंत मंद, धुंधला, बिल्कुल फीका परिमंद सूर्यतपनो दिवसः- शि० ९।३ 2. अत्यंत मंद 3. बहुत थका हुआ- शि० ९।३२ 4. बहुत थोड़ा शि० ९।२७ ।

परिमरः [परि+मृ+अप्] विनाश—चिरात् क्षत्रस्यास्तु प्रलय इव घोरः परिमरः—महावी० ३।४१ ।

परिमर्दः, परिमर्दनम् [परि+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. रगड़ना, पीसना 2. कुचलना, पैरों के नीचे रौंदना 3. विनाश 4. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 5. आलिंगन, परिरंभण ।

परिमर्षः [परि+मृष्+घञ्] 1. ईर्ष्या, अरुचि 2. क्रोध ।

परिमलः [परि+मल्+अच्] 1. सुगंध, सुवास, सौरभ, महक—परिमलो गीर्वाणचेलो हरः भामि० १।६३, ६६,७०,७१, मेघ० २५ 2. सुगंधयुक्त पदार्थों का पीसना 3. सुगंधद्रव्य 4. सहवास अथपरिमलजाम-वाप्यलक्ष्मीम् कि० १०।१ 5. विद्वत्सभा 6. कलंक, धब्बा ।

परिमलित (वि०) [परि+मल्+क्त] 1. सुगंधित 2 कलुषित, सौन्दर्य भ्रष्ट ।

परि(री)माणम् [परि+मा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घः] 1. मापना, (शक्ति या ताकत की) माप- सद्यः परानपरिमाण विवेकमूढः- मुद्रा० १।१०, कु० २।८, मनु० ८।१३३ 2. तोल, संख्या, मूल्य—याज्ञ० २।६२, १।३१९ ।

परिमार्गः, परिमार्गणम् [परि+मार्ग्+घञ्, ल्युट् वा] 1. ढूंढना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना, पदचिह्न देखते हुए खोज निकालना 2. स्पर्श, सम्पर्क हि० ७।७५ 3. साफ़ करना, पोंछना ।

परिमार्जनम् [परि+मृज्+णिच्+ल्युट्] 1. मांजना, साफ़ करना, झाड़-पोंछ करना 2. घी और शक्कर से बनी मिठाई ।

परिमित (भू० क० कृ०) [परि+मा+क्त] 1. मापना,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मितव्ययी 2. सीमित 3. मापा हुआ, नपातुला 4. विनियमित, संयमित। समः—आभरण (वि०) थोड़े आभूषण धारण करने वाला, सच्चमरूप से अलंकृत, —आयुस् (वि०) अल्पायु, थोड़ी उम्र जीने वाला,—आहार, —भोजन (वि०) परहेजगार, मिताहारी, कमभोजन करने वाला,—कथ (वि०) थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी, तथे तुले शब्द बोलने वाला —मेघ० ८३।

परिमितिः (स्त्री०) [परि+मा+क्तिन्] 1. माप, परिमाण 2. सीमाबंधन।

परिमिलनम् [परि—मिल्+ल्युट्] 1. स्पर्श, संपर्क, रत्न० २।१२ 2. सम्मिश्रण, मेल।

परिमुखम् (अव्य०) [अव्य० सं०] मुँह के सामने, (किसी के) ठीक सिर्फ, चारों ओर।

परिमुग्ध (वि०) [परि+मुह्+क्त] 1. भोला भाला, प्रिय, सरल, मनोहर 2. आकर्षक परन्तु मूर्ख।

परिमृदित (भू० क० कृ०) [परि+मृद्+क्त] 1. पैरों तले रौंदा हुआ, कुचला हुआ, पददलित, दुर्व्यवहारग्रस्त —परिमृदितमृणालीलोलनमंगम—मा० १।२२, उत्तर० १।२४ 2. आलिंगित, परिरंभण किया हुआ 3. मसला हुआ, पीसा हुआ।

परिमृष्ट (भू० क० कृ०) [परि+मृज्+क्त] 1. धोया हुआ, मांजा हुआ, शुद्ध किया हुआ 2. मसला हुआ, स्पर्श किया हुआ, यत्नपाया हुआ—वेणी० ३ 3. आलिंगन 4. फैला हुआ, व्याप्त, भरा हुआ—कि० ६।२३।

परिमेय (वि०) [परि+मा+यत्] 1. थोड़े, सीमित—परिमेयपुरः—सरौ—रघु० १।३७ 2. जो मापा जा सके, गिना जा सके 3. सान्त, जिसकी सीमा हो, समाप्यिका।

परिमोक्षः [परि+मोक्ष्+घञ्] 1. हटाया, मुक्त करना—प्रायो विषाणपरिमोक्षलघूद्यतायाम् चक्रुश्चिकार नृपतिर्निशितैः क्षुरैश्च—रघु० २।६२, सींगों को हटाना अर्थात् सींग तोड़ डालना 2. मुक्त करना, स्वतंत्र करना, छुटकारा 3. खोली करना, मलत्याग 4. बच निकलना 5. मोक्ष, निर्वाण।

परिमोक्षणम् [परि+मोक्ष्+ल्युट्] 1. मुक्ति, छुटकारा 2. खोल देना।

परिमोषः [परि+मुष्+घञ्] चुराना, लूटना, चोरी।

परिमोषिन् (पुं०) [परि+मुष्+णिनि] चोर, लुटेरा।

परिमोहनम् [प्रा० सं०] 1. बहकाना, प्रलोभन देना, फुसलाना, मंत्रमुग्ध करना 2. कामोद्दीपन करना, प्रेम में अन्धा करना।

परिम्लान (भू० क० कृ०) [परि—म्लै+क्त] 1. मुर्झाया हुआ, मूर्छित, कुम्हलाया हुआ, कु० २।२ 2. श्रान्त, शिथिल 3. क्षीण, निस्तेज, हतप्रभ 4. मलिन, कलंकित।

परिरक्षकः [परि+रक्ष्+ण्वुल्] रक्षा करनेवाला, अभिभावक।

परिरक्षणम्, परिरक्षा [परि+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् च] 1. रक्षा, संधारण, देखभाल करना मनु० ९। ५४, ७१ 2. ध्यान रखना, बनाये रखना, पालनपोषण—न समर्थपरिरक्षणं क्षमं ते कि० १।४५, 3. छुटकारा, बचाव।

परिरथ्या [प्रा० सं०] गली, सड़क।

परि(री)रंभः, परिरंभणम् [परि+रभ्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घः, परि—रभ्+ल्युट्] आलिंगन करना, अंक में भर लेना—प्रेमपरिरंभविधिष्वक्षमत्वम् शि० १।७४, १०।५९, उत्तर० १।२४,२७, कि पुरैव समभ्रमं परिरंभणं न ददासि—गीत० ३।

परिरटित (वि०) [परि—रट्+क्त] चिल्लाने वाला, चीखने वाला, रट लगाने वाला।

परिरब्ध (वि०) [प्रा० सं०] 1. बहुत हल्का (प्रा०), (कपड़ा आदि) 2. बहुत हल्का या अच्छी पकवे वाला क्षीणः क्षीणः परिलपति यदः सोपसां चोपभुज्य —मेघ० १३ 3. बहुत छोटा उत्तर० ४।२१।

परिरब्ध (भू० क० कृ०) [परि+रभ्+क्त] 1. अलंकृत, सजाया, घटाया हुआ 2. नष्ट, लुप्त।

परिलेखः [परि+लिख्+घञ्] 1. खरोंचना, आलेखन, चित्रण, खाका 2. चित्र।

परिलोपः [परि+लुप्+घञ्] 1. क्षति: 2. उपेक्षा, भूलचूक।

परिवत्सरः [प्रा० सं०] वर्ष, एक समूचा वर्ष, वर्ष का आवर्तन देव्या सूनुरहं जगत्परिवृढः परिवत्सरः —उत्तर० ३।३३।

परिवर्जनम् [परि+वृज्+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्यागना, तजना 2. छोड़ देना, तिलांजलि देना 3. वर्ष, वर्ष्या।

परिवर्तः (र्ती) वर्तः [परि—वृत्—घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परिक्रमण, (पद अदि का) घूमना 2. कालचक्र, कालक्रम, कालगति- युगशतपरिवर्तान् —शा० ७।३४ 3. युग का अन्त शि० १७।२० 4. आवृत्ति, पुनरावर्तन 5. परिवर्तन, अदलबदल नदीदर्शा जीवलोकस्य परिवर्तः उत्तर० ३, 'जीवन की परिवर्तित अवस्थाएँ' 'परिस्थितियों में अदल-बदल', इसी प्रकार जीवलोकस्यपरिवर्तमनुधावामि—मा० ७, स्वर परिवर्तः मुच्छ० १।६, प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण 7. वर्ष 8. पुनर्जन्म, आवागमन 9. विनिमय, अदलाबदली—शि० ५।३९, 10. पुनरागमन, वापसी 11. आवास 12. किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद 13. कूर्मावतार, विष्णु का दूसरा अवतार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिवर्तक (वि०) [परि+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. घुमाने वाला, चक्कर देने वाला 2. बदला चुकाने वाला, वापिस करने वाला।

परिवर्तनम् [परि+वृत्+ल्युट्] 1. इधर उधर घुमना, इधर उधर मुड़ना (बिस्तर आदि पर) करवटें बदलना —कु० ५।१२, रघु० ५।१३, शि० ४।४७ 2. इधर उधर मुंह फिराना, चक्कर काटना, चक्कर खाना 3. कौटिल्यवाले, एक का अन्य में बदलना —वेणीसंहार विवाद—पंच० ३ 5. अदल-बदली, विनिमय 6. पलटना, उलटना।

परिवर्तिका [परि+वृत्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] (आयु०) लिंग की अग्रत्वचा का सिकुड़ जाना।

परिवर्तिन् (वि०) [परि+वृत्+णिनि] 1. इधर उधर घूमने वाला, घूमने वाला 2. बदलने वाला, अदला-बदली करने वाला, परिवर्तनशील, नश्वर —रघु० १।२७ 3. बदलने वाला 4. निकट रहने वाला, इधर उधर घूमने वाला 5. प्रत्यावर्ती, पराधीन होने 6. विनिमय शील 7. क्षतिपूर्ति करने वाला, बदला देने वाला।

परिवर्धनम् [परि+वृध्+ल्युट्] 1. बढ़ना, विस्तृत होना 2. संवर्धन, पोषण-पोषण करना 3. बड़ा होना, वृद्धि।

परिवसथः [परिवसन्ति अत्र –परि+वस्+अथ] गांव।

परिवहः [परि–वह्+अ] वायु के सात मार्गों में एक —इस मार्ग, इसी मार्ग से सप्तर्षि घूमते हैं तथा आकाश गंगा बहती है, सप्तर्षिमंडल स्वर्गीय पथ्य. परिवहस्थः वायु के दूसरे मार्गों के लिए दे० 'वात' के नीचे, तु० कालिदास द्वारा दिये गये पथ के वर्णन विस्तोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठा ज्योतींषि वर्तयति यः सकलान्तरात्मा; तस्य द्वितीय हरिविक्रमविश्रमस्य वाग्योगिमं परिवहस्थ वदंति मारुतम्— शा० ७।६।

परि (री) वादः [परि+वद्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] कलंक, निन्दा, बदनामी, गाली अथमेव मयि प्रथम परिवादस्तव— मालवि० १, दश० १।१३३ 2. लोकापवाद, कलंक, दूषण, अपकीर्ति मा भूत्परिवादपावकोल्लेखः—रघु० ५।२४, १४।८६, महावी० ५।२८ 3. दोषी ठहराना, दोषारोपण करना—मृच्छ० ३।३० 4. सारंगी बजाने का उपकरण।

परिवादकः [परि+वद्+णिच्+ण्वुल्] 1. वादी, अभियोक्ता, दोषारोपक 2. सारंगी बजाने वाला।

परिवादिन् (वि०) [परि–वद्+णिनि] खरीखोटी सुनाने वाला, निन्दा करने वाला, गालो देने वाला, बुरा-भला कहने वाला 2. दोषारोपण करने वाला 3. चीखने वाला, चिल्लाने वाला 4. निश्चित, कलंकित—(पुं) दोषारोपण करने वाला, वादी, अभियोक्ता,—नी सात तारों की वीणा, शि० ६।९, रघु० ८।३५।

परि (री) वापः [परि+वप्—घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. मुंडन या हजामत बनाना, मूंडना या बाल काटना 2. बोना 3. जलाशय, पल्वल, पोखर, जोहड़ 4. सामान (घरका) 5. नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग।

परिवापित (वि०) [परि+वप्+णिच्+क्त] मुंडा हुआ जिसके बाल कटे हुए हों या जिसने हजामत करा ली हो।

परि (री) वारः [परिवियते अनेन परि–वृ–घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. नौकर-चाकर, अनुचरवर्ग, टहलुए, अनुयायी (गण) अप्राप्ये कन्या परिहार शौंडि:—रघु० ६।१०, १२।१६, ब्रह्मणपरिहारो राजमार्ग प्रदेशः—मृच्छ० १।५७ 2. वस्त्र, चादर 3. म्यान, कोष।

परिवारणम् [परि+वृ–णिच्+ल्युट्] 1. ढकना, छिपाना 2. नौकर चाकर, अनुचर 3. दूर हटाना।

परिवारित (भू० क०कृ०) [परि+वृ–णिच्–क्त] 1. परिवेष्टित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ 2. व्याप्त, फैलाया हुआ शि० ३।३४ कि० ५।४२, तम् ब्रह्मा का धनुष।

परिवासः [परि+वस्–घञ्] आवास स्थान, ठहरना, टिकना, प्रवास, बसेरा।

परि (री) वाहः [परि+वह्–घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] (तालाब का)।

परिवाहिन् (वि०) [परि–वह्+णिनि] छलकता हुआ, जैसा कि—आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा—शा० ४।

परिविद्धः (द्धः), **परिविद्धः, परिविद्धितः** [परि–विद्+क्त, पक्षे लत्वणत्वयोरभावः, परि+विध्+क्त] अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो दे० मनु० ३।१७१, 'परिवेत्तृ' भी।

परिविद्धः [परि+व्यध्–क्त] कुबेर का विशेषण।

परिविंदकः, परिविवित्सुः (पुं०) [परि+विद्+ण्वुल्, सन् वा] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परिविहारः [परितो विहारः प्रा०स०] इधर उधर सैर करना, घूमना, टहलना।

परिविह्वल (वि०) [प्रा०स०] अत्यन्त व्याकुल, क्षुब्ध या घबड़ाया हुआ।

परिवृढः [परि–वृंह्–क्त] स्वामी, प्रभु, मालिक, प्रधान, मुख्य (विशेषण की भाँति भी प्रयुक्त) कि मुक्तः परिवृढा न त्रिदोहु तत्रतामुपनता विवदते—वेणी० ५।२२, कु० १२।५८, महावी० ६।२५, ३१,४८।

परिवृत (भू०क०कृ०) [परि–वृ+क्त] 1. घिरा हुआ, परिवेष्टित, वेष्टित 2. प्रच्छन्न, गुप्त 3. व्याप्त, फैला हुआ 4. ज्ञात।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिवृत्त (भू०क०कृ०) [परि | वृत्+क्त] 1. घुमा हुआ, मोड़ा हुआ अर्धमुकी चिकम० ११।७ 2. प्रत्यावर्तित पीछे मुड़ा हुआ 3. अदला-बदली किया हुआ, विनिमय किया हुआ 4. समाप्त किया हुआ, अन्त किया हुआ, सम् आलिंगन।

परिवृत्तिः (स्त्री०) [परि+वृत्+क्तिन्] 1. क्रांति शि० १०।९१ 2. वापसी, लौटना 3. विनिमय, अदला-बदली 4. अन्त, समाप्ति 5. घेरा 6. किसी स्थान पर टिकना, बसना 7. (अलं० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी समान, कम या बड़ी वस्तु से विनिमय हो परिवृत्तिर्विनिमयो योऽन्यूनेनासमेन वा—काव्य० १०—उदा०—दत्त्वा कटाक्षमेणाक्षी जयाहि हृदयं मम, सखे तु हृदयं दत्त्वा गृहीतो मदन ज्वरः। सा० द० ७३४ 8. अर्थ को बिना बदले एक शब्द के स्थान में दूसरा शब्द रखना, जैसा कि शब्देपरिवृत्तिमहत्त्वम् काव्य० १० उदा० 'वृषध्वज' में 'ध्वज' के स्थान में लांछन या वाहन लगाया जा सकता है।

परिवृद्धिः (स्त्री०) [प्रा०स०] संवर्धन, बढ़ती, उन्नति।

परिवेत्तृ (पुं०) **परिवेदकः** [प्रा०स०] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो रघु० १२।१६, उपेत्रे अनिविष्टे कनीयान् निर्विशन् परिवेत्ता भवति, परिविन्दो ज्येष्ठः, परिवेदनीया कन्या, परिदाता दाता, परिकर्ता याजकः, सर्वे ते पतिताः—हारीत।

परिवेदनम् [परि+विद्+ल्युट्] 1. बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह 2. विवाह 3. पूरा या सही ज्ञान 4. उपलब्धि, अधिग्रहण 5. अभ्युपगम, स्वीकृति मनु० ११।६० 6. सर्वव्यापित्व, विश्वव्यापी या विश्वसत्ता, मनु 1. समझदारी, बुद्धिमत्ता 2. बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता।

परिवेदनीया, परिवेदिनी [परि+विद्+अनीयर्—टाप् परि—विद्+णिनि—ङीप्] उस छोटे भाई की पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परि (री) वेषः (पुं०) [परि+विष्+(ए)—घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना 2. वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल रघु० ५।७४, ६।१३, शि० ५।१२, १७।९ 3. (विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल लक्ष्मीसमुद्भवे तदनन्तरं रविबिंबशोभिनि परिवेषमंडलः—रघु० १३।५२ 4. वृत्त की परिधि 5. सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब 6. कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है।

परिवेषकः [परि+विष्+ण्वुल्] भोजन परोसने वाला।

परिवेषणम् [परि+विष्+ल्युट्] 1. भोजन परोसना, (सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना, भोजन वितरण करना 2. लपेटना, घेरना 3. सूर्यमंडल, चन्द्रमंडल 4. परिधि।

परिवेष्टनम् [परि+वेष्ट्+ल्युट्] 1. घेरना, लपेटना 2. परिधि 3. ढकना, आवरण।

परिवेष्टृ (पुं०) [परि+वेष्ट्+तृच्] भोजन के समय सेवा करने वाला, भोजन परोसने वाला मनसः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे ऐत०।

परिव्ययः [प्रा० स०] 1. लागत, मूल्य 2. निर्वाहभत्ता।

परिव्याधः [परि+व्यध्+घञ्] ण। अंकुश या नश्तर की एक जाति।

परिव्रज्या [परि+व्रज्+यत्+टाप्] 1. आवारागर्दी करना, इधर उधर घूमते फिरना 2. संन्यासी होना, साधु महात्माओं का जीवन बिताना 3. सांसारिक मोहमाया का त्याग, वैराग्य में अन्तिम, धार्मिक संन्यास।

परिव्राज्, परिव्राजः, जकः [परिव्रज्य संवात् विभक्तेर्लुक् प्रव्रजति परि+व्रज्+क्विप्, षत्व, षकार वा] 1. भ्रमणशील साधु, अनुचर, तपस्वी, संन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो।

परिशाडवल (वि०) (स्त्री० ली) [प्रा० स०] घास के लिए उसी रूप में बना रहने वाला।

परिशिष्ट (वि०) [परि+शिष्+क्त] छोड़ा हुआ, बचा हुआ, शेषम् सम्पूरक, अतिरिक्त जैसा कि मूल परिशिष्ट।

परिशीलनम् [परि+शील्+ल्युट्] 1. रगड़, मलकर (शा०)—ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे गीत० १, इसी प्रकार चन्दनपरिशीलनविलिखित ...११ 2. अभ्यास मलकर, आपसी विचार जोड़, पत्र व्यवहार 3. अध्ययन, (किसी वस्तु में) आसक्ति, स्थिर या निश्चित वृत्ति काव्यादेः सा० द०।

परिशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. पूर्ण शुद्धि, अग्नि उत्तर० ४ 2. दोष-शुद्धि, सिद्धाई।

परिशुष्क (भू० क० कृ०) [परि—शुष्+क्त] 1. पूरी तरह सूखा हुआ, मुरझाया हुआ, लम्बा हुआ, गया महत्या परिशुष्कतालवः ऋतु० १।११ 2. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, (गालों की भांति) चिपका हुआ, —क्रम एक प्रकार का तला हुआ मांस।

परिशून्य (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल खाली, रघु० ८।६६ 2. संवेदना स्वतन्त्र, नितान्त शून्य १९।६।

परिशृत: [परि+शृ—क्त] तीक्ष्ण बनाया।

परि (री) शेषः [परि+शिष्—घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बचा हुआ, बाकी 2. परिशिष्ट 3. समाप्ति, उपसंहार, संपत्ति।

परिशोधः, परिशोधनम् [परि+शुध्+घञ्, ल्युट्] 1. शुद्ध करना, मांजना 2. छुटकारा, भारनिवारण, (ऋण आदि का) भुगतान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिशोषः [परि+शुष्+घञ्] बिल्कुल सूख जाना, पूरी तरह भर जाना।

परिश्रमः [परि+श्रम्+घञ्] 1. थकान, थक कर चूर-चूर होना, कष्ट, पीड़ा, आत्मा परिश्रमस्य पदमालिनि० ४।१, रघु० १।५८, ११।१२ 2. चेष्टा, उद्योग, गहन अध्ययन, लगातार व्यस्त रहना आर्ये कुशलं श्रमस्य मालविकाग्नि० ज्योतिःशास्त्रे—मुद्रा० १।

परिश्रयः [परि+श्रि+अच्] 1. सम्मिलन, संगम 2. आश्रय, आधार।

परिश्रान्तिः (स्त्री०) [परि+श्रम्+क्तिन्] 1. थकान, श्रम, कष्ट, थकना, चूर-चूर होना 2. उद्योग, चेष्टा।

परिश्लेषः [परि+श्लिष्+घञ्] आलिंगन।

परिषद् (स्त्री०) [पारंत: सीदन्ति अस्याम् परि+सद्+क्विप्] 1. सभा, सम्मिलन, मन्त्राणासभा, श्रोतृगण अभिज्ञभूमिष्ठा पारिषदम् शा० १ 2. धर्मसभा, शास्त्रीयसभा।

परिषदः, परिषदकः [परिषद्+अण्, कन्] किसी सभा का सदस्य या मेंबर।

परिषेकः, परिषेचनम् [परि+सिच्+घञ्, ल्युट्] घानी निकालना या उड़ेलना, घीला या तर करना।

परिष्कण्व (ण्वा) (त्रि०) [परि+स्कन्द्+क्त, पत्वं वा] दूसरे से पीछा किया, **ष्णः** पीछेपुत्र, जिसे किसी अपरिचित ने पाला पोसा हो।

परिष्कं (स्कन्द्) द (वि०) [परि+स्कन्द्+घञ्] दूसरे के द्वारा पाला गया, **दः** 1. पीछे चलने वाला 2. भृत्य, सेवक।

परिष्कारः [परि+कृ+घञ्, सुट्, षत्वम्] सजावट, अलंकरण करना।

परिष्कारः [परि+कृ+घञ्, सुट् षत्वम्] 1. सजावट, आभूषण, अलंकरण 2. पाचनक्रिया, खाना पकाना 3. दीक्षा, आरंभिक संस्कारों द्वारा पवित्रीकरण 4. (धन का) सामान (परिष्कार भी इस अर्थ में)।

परिष्कृत (भू० क० कृ०) [परि+कृ+क्त, सुट्, षत्वम्] 1. अलंकृत, सजाया हुआ 2. पकाया गया, प्रतीकिया किया गया 3. आरंभिक संस्कारों द्वारा अभिमन्त्रित (देव परि पूर्वक 'कृ') (परिस्कृत भी इस अर्थ में)।

परिष्क्रिया [परि+कृ+श+टाप्, सुट्] अलंकरण, सजावट, शृंगार।

परिष्टो (स्तो) भः [परि+स्तु+मन्, पत्वं वा] 1. हाथी की रंगीन झूल 2. आच्छादन, आवरण।

परिष्वं (स्वं) गः [परि+स्वंद्+घञ्, पत्वं वा] 1. नोंक-झोंक, अनुनय 2. (फूलों से) केश शृंगार 3. शृंगार, सजावट 4. अंकन, बाहुपाश, धक्कधक्का, स्पर्श 5. खाद्यसामग्री, संवर्धन 6. कुचलना।

परिष्वक्त (भू० क० कृ०) [परि+स्वंज्+क्त] परिरब्ध आलिंगित या आलिंगनबद्ध।

परिष्वङ्गः [परि—स्वज्+घञ्] 1. आलिंगन क्रि० १८।१९, हि० ३।६७ 2. स्पर्श, सम्पर्क, मेल-मिलाप भट्ट० ३।१७।

परिसंवत्सर (वि०) [ऊर्ध्वं संवत्सरात्—अव्य० स०] पूरा एक वर्ष का, **रः** पूरा वर्ष, **परिसंवत्सरात्** पूरे एक वर्ष से ऊपर, —मनु० ३।११९।

परिसंख्या [परि+सम्+ख्या+अङ+टाप्] 1. गिनती, संगणना 2. योगफल, जोड़, पूर्ण संख्या— वित्तस्य विद्यापरिसंख्यया मे रघु० ५।२१ 3. (मीमांसा० में) अपाकरण, विशेष विवरण, स्पष्ट रूप से बताई गई ऐसी सीमा जिससे कि विहित वस्तुओं से भिन्न सभी वस्तुओं का निषेध हो जाय; परिसंख्या-विधि (जो पहली बार विधान किया जाय) तथा नियम (विविध विकल्पों में से किसी विशेष विकल्प का चुनाव) का विपरीतार्थक शब्द; विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति, तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते। उदा० 'पंच पंचनखा भक्ष्याः' मीमांसको द्वारा बहुधा उद्धृत), मनु० ३।४५ पर कुल्लू०—अयं नियमविधिर्न तु परिसंख्या 4. (अलं० में) विशेष उल्लेख या ऐकान्तिक विशेष विवरण, अर्थात् जहाँ जांच करके या बिना किसी पूछताछ के किसी बात की पुष्टि की जाय जिससे कि किसी अन्य वैसे ही वस्तु का अभिहित या अध्याहृत खंडन हो (श्लेष पर आधारित होने की स्थिति में यह अलंकार विशेष प्रभावोत्पादक होता है) यस्मिन्नेव नहीं शासति चित्रकर्मसु वर्णसंकराश्चापेषु गुणच्छेदाः आदि या—पश्य नूपुरेषु मुखरता विवाहेषु करग्रहण तूरगेषु कशाभिघातः का०, अन्य उदाहरणों के लिए देखो—सा० द० ७३५।

परिसंख्यात (भू० क० कृ०) 1. गिना हुआ, हिसाब लगाया हुआ 2. ऐकान्तिकरूप से विशिष्ट या निर्दिष्ट।

परिसंख्यानम् [परि+संख्या+ल्युट्] 1. गिनती, जोड़, पूर्णसंख्या 2. ऐकान्तिक विशेष निर्देश 3. सही अनुमान, ठीक अंदाजा।

परिसंचरः [परि+सम्+चर्+अच्] विश्वप्रलय का समय।

परिसमापन, परिसमाप्तिः (स्त्री०) [परि+सम्+आप्—ल्युट्, क्तिन्] समाप्त करना, पूरा करना।

परिसमूहनम् [परि+सम्+ऊह्+ल्युट्] 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2. (अग्नेः समन्तात् मार्जनम्) यज्ञाग्नि के चारों ओर (विशेष रीति से) जल छिड़कना।

परिसरः [परि+सृ+घ] 1. तट, किनारा, सामीप्य,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आसपास, पड़ोस, पर्यावरण (किसी नदी, पहाड़ या नगर का)—गोदावरीपरिसरस्य गिरिस्तटानि —दशर० ३।८, परिसरविवर्तेषु लीलामुक्ताः किं० ५।३८, 2. स्थिति, स्थान 3. चौड़ाई, अंश 4. मृत्यु 5. नियम, विधि।

परिसरणम् [परि+सृ+ल्युट्] इधर-उधर दौड़ना।

परिसर्पः [परि+सृप्+घञ्] 1. इधर-उधर घूमना, 2. खोज में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना 3. घेरना, मण्डलाकार करना।

परिसर्पणम् [परि+सृप्+ल्युट्] 1. चक्कर, रेंगना 2. इधर-उधर दौड़ना, उड़ना, भागना—पतंगवत् परिसर्पणे च तुल्यः मृच्छ० ३।२१।

परि (री) सर्या, परि (री) सारः [परि+सृ+श+यक्+टाप् घञ् वा पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] इधर उधर घूमना फिरना, प्रदक्षिणा, फेरी।

परिस्तरणम् [परि+स्तृ+ल्युट्] 1. बिछाना, फैलाना, इधर उधर बखेरना 2. आवरण, ढक्कन।

परिस्फुट (वि०) [प्रा० स०] 1. सर्वथा समतल, एकदम स्पष्टगोचर 2. पूर्णविकसित, फूला हुआ, खुला हुआ।

परिस्फुरणम् [परि+स्फुर्+ल्युट्] 1. कंपकंपी, थरथरी 2. कली का खिलना।

परिस्यंदः [परि+स्यन्द्+घञ्] 1. रसना, बूंद २ टपकना, चूना 2. बहाव, धारा 3. अनुचरवर्ग—दे० 'परिष्यंद'।

परिस्रवः [परि+स्रु+अच्] 1. बहना, बहाव 2. नीचे सरकना 3. नदी, निर्झर।

परिस्रावः [परि+स्रु+णिच्+अच्] निकास, निस्राव।

परिस्रुत् (स्त्री०) [परि+स्रु+क्विप्+तुक्] 1. एक प्रकार की नशीली शराब 2. रिसना, टपकना, बहना।

परिस्रुता [परिस्रुत्+टाप्] 1. एक प्रकार की मादक शराब 2. रिसना, टपकना, बहना।

परिहत (वि०) [परि+हन्+क्त] छीला हुआ।

परिहरणम् [परि+हृ+ल्युट्] 1. छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना 2. टालना, कतराना 3. निराकरण करना 4. पकड़ना, ले जाना।

परि (री) हारः [परि+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना, त्याग देना 2. हटाना, दूर करना जैसा कि 'विरोधपरिहार' में 3. निराकरण करना, निवारण करना 5. उल्लेख न करना, भूल, चूक 6. आच्छादन, गुप्त रखना 7. गांव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड—धनः धनं परोक्षारीः ग्रामस्य स्यात्समन्ततः—मनु० ८।२३७ 8. विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, छूटकर से माफी या छुटकारा मनु० ७।२०१ 9. तिरस्कार, अनादर 10. आपत्ति।

परिहाणिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. घटी, कमी, नुकसान 2. मूर्छना, होश होना रघु० १९।५०।

परिहार्य (वि०) [परि+हृ+घञ्] करवाये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य, जिससे बचा जाय, जिसे ले जाया जाय या दूर किया जा सके कंकण।

परि (री) हासः [परि+हस्+घञ्] 1. मखौल, मज़ाक, हँसी, दिल्लगी, स्वगतप्रेक्षणाद्येषु न खलु परिहासस्य विषयः—मा० ३।१८, परिहासपूर्वेषु—मखौल में, हँसी दिल्लगी में रघु० ६।८२—परिहासविजल्पितम् —श० २।१८, मखौल में कहा हुआ—परीहासाश्चिताः सतनमभवन् येन भवत्, वेणी० ३।१४, कु० ७।१५, रघु० १।८, शि० १०।१२ 2. हँसी उड़ाना, उपहास करना। सम० —कथा (स्त्री०) विदूषक, हंसोड़ा, मसखरा व्यक्ति।

परिहृत (भू० क० कृ०) [परि+हृ+क्त] 1. कतराया हुआ टाला हुआ 2. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 3. निराकृत, अपास्त (आरोप या आपत्ति आदि) 4. किया हुआ, पकड़ा हुआ—दे० परिपूर्वक 'हृ'।

परीक्षकः [परि+ईक्ष्+ण्वुल्] परीक्षा लेने वाला, जांच करने वाला, स्पष्ट करने वाला।

परीक्षणम् [परि+ईक्ष्+ल्युट्] जांच पड़ताल करना, परखना, इम्तहान लेना मनु० ९।११७।

परीक्षा [परि+ईक्ष्+अ+टाप्] 1. इम्तहान, जांच, परख—पत्तने विद्यमानेऽपि प्राप्ते रत्नपरीक्षा—मालवि० १, मनु० ९।१९, 2 (विधि में) जांच-पड़ताल के विविध प्रकार।

परीक्षित (पुं०) [परि+ईक्ष्+क्त, तुक्, उपसर्गस्य दीर्घः] अर्जुन का पौत्र, अभिमन्यु का पुत्र, युधिष्ठिर के पश्चात् यही हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठा; सांप द्वारा काटे जाने पर इसकी मृत्यु हुई। कहते हैं, इसी के राज्य से कलियुग का आरंभ हुआ।

परीक्षित (भू० क० कृ०) [परि+ईक्ष्+क्त] परखा किया, जांच पड़ताल की गई—परीक्षितं काव्यमुदर्ण-मेतत्—विक्रम० १।२४।

परीत (भू० क० कृ०) [परि+इ+क्त] 1. घिरा हुआ, पर्यावृत 2. समाप्त हुआ, बीता हुआ 3. विगत, व्यतीत 4. पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भरा हुआ—कोपपरीतमानसम्—हि० ३।२५, मुद्रा० ३।३०।

परीताप, परीपाक, परीवार, परीवाह, परीहास आदि—दे० 'परिताप' आदि।

परीप्सा [परि+आप्+सन्+अ+टाप्] 1. प्राप्त करने की इच्छा 2. जल्दी, शीघ्रता।

परीरम् [पृ+ईरन्] एक फल।

परीरणम् [परि+ईर्+ल्युट्] 1. कलेवा 2. लड़ी 3. पोशाक, वेशभूषा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परीष्टिः (स्त्री०) [परि+इष्+क्तिन्] 1. अनुसंधान, पूछताछ, गवेषणा 2. सेवा, परिचर्या 3. आदर, पूजा, श्रद्धांजलि।

परः [पृ+उ] 1. जोड़, गांठ 2. अवयव, अंग 3. समुद्र 4. स्वर्ग, वैकुण्ठ, 5. पहाड़।

परुत् (अव्य०) [पूर्वस्मिन् वत्सरे-इति पूर्वस्य परभावः उत् च] गत वर्ष, पिछला साल।

परुष्टारः [ब० स०] घोड़ा।

परुष (वि०) [पृ+उषन्] 1. कठोर, रूखा, सख्त, कड़ा (विप० मृदु या श्लक्ष्ण) पक्ष्म चर्म, परुषा माला-आदि 2. (शब्द आदि) कटु, अपमानित, निष्ठुर, निष्करुण, क्रूर, निर्मम, (वाक्) अपमान पर्याक्षर-मीरिता रघु० ९।८, पंच० १।५०, (व्यक्ति भी) गीत० ९, याज्ञ० १।३०९ 3. (शब्द) कर्णकटु, अरु-चिकर—तेन वज्रमरुत्स्वनेन वनुः रघु० ११।६५, भग० 4. रूखा, स्थूल, खुरदरा, (बाल) मैला-कुचैला शुद्धस्नानात्परुषमलकं -मेघ० १९ 5. तीक्ष्ण, प्रचण्ड, मजबूत, उत्सुक, (वायु आदि) वेधक -परुषपवनधू-गोक्षिप्तमंशुकपर्णः —कुमा० १।२२, २।२८ 6. ठोस, गाढ़ा 7. मलिन, मैला, -षम् कठोर या दुर्वचनयुक्त भाषण, अपभाषण। समः—इतर (वि०) जो रूखा न हो, कोमल, मृदु—रघु० ५।६८, —उक्तिः—वचनम् अपभाषित।

परुस् (नपुं०) [पृ+उस्] 1. सन्धि, ग्रन्थि, जोड़, गांठ 2. अवयव, शरीर का अंग।

परेत (भू० क० कृ०) [पर+इ+क्त] दिवंगत, मृतयात्रा, मृत—तः प्रेत, भूत। समः—भर्तृ, राज् (पुं०) मृत्यु का देवता, यमराज त्रि० १।५७, -भूमिः (स्त्री०), —वासः दक्षिणान्त कु० ६।८।

परेद्यवि, परेद्युः (अव्य०) [परस्मिन् अहनि, नि० साधु०] दूसरे दिन, और दिन।

परेष्टुः (स्त्री०), परेष्टुका [पर+इष्+तु, परेष्टु+कन्+टाप्] वह गाय जो कई बार ब्या चुकी हो।

परोक्ष (वि०) [अक्ष्णः परम्—अ० स०] 1. दृष्टिपथ से परे, या बाहर, जो दिखाई न दे, अगोचर 2. अनुपस्थित —क्षाणि नृत्ता भूतानिः परोक्षैः रघु० ७।१३ 3. गुप्त, अज्ञात, अपरिचित परोक्षमन्यो जनः भर्तृ० २।१८, 'काम के प्रभाव से अपरिचित' हि० प्र० १०, -क्षः मरुत्तासी, -क्षम् 1. अनुपस्थिति अगोचरता 2. (व्या० में) भूतकाल (जो वक्ता ने न देखा हो) परोक्ष लिट्—पा० ३।२।११५, 'परोक्ष' के अर्थ०, तथा अव्यि० के प० ब० (अर्थात् परोक्षाम्, परोक्षे) अनुपस्थिति में 'दृष्टि से परे' 'पीठ पीछे' अर्थ का प्रकट करने के लिए क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं (सब० के बिना, या साथ)—परोक्षे श्लोकर्तुं शक्यते न समग्रतः—मालवि० २, परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् चाण० १८, नोदाहरेदस्य नाम परोक्षमपि केवलम् मनु० २।१९६। समः—भोगः स्वामी की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपभोग,—वृत्ति (वि०) आंखों से दूर रहने वाला (त्तिः—स्त्री०) अदृष्ट और अज्ञात जीवन।

परोष्टिः, परोष्णी [पर+उष्+क्तिन्, पक्षे ङीष्] उरणी यस्याः ब० स०] तैलचट्टा (झींगुर के आकार काले रंग का एक कीड़ा)।

पर्जन्यः [पृ+अन्यन्, नि० प्रकारस्य जकारः] 1. बरसने वाला मेघ, गरजने वाला बादल, बादल या मेघ प्रवृद्ध इव पर्जन्यः सारंगैरभिनंदितः -रघु० १७।१५, यतो वर्षति पर्जन्यः—मै० स०, मच्छ० १०।६० 2. अग्नि, अग्नाद्भवति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः भग० ३।१४ 3. वृष्टि का देवता अर्थात् इन्द्र।

पर्ण (चुरा० उभ०—पर्णयति-ते) हराभरा करना—वसंतः पर्णयति चम्पकम्।

पर्णम् [पर्ण+अच्] 1. पंख, बाजू जैसा कि 'सुपर्ण' में 2. बाण का पंख 3. पत्ता 4. पान का पत्ता, -र्णः ढाक का पेड़। समः अशनम् पत्ते खाकर जीना (नः) बादर, -असिः काली तुलसी, आहार (वि०) पत्ते खाकर निर्वाह करने वाला, उटजम् पत्तों की कुटिया, साधुओं की झोंपड़ी, आश्रम, -कारः पत्तावाड़ी, तमोली, पान बेचने वाला, कुटिका, -कुटी पत्तों की बनी कुटिया,—कृच्छ्रः प्रायश्चित्त संबंधी साधना जिसमें प्रायश्चित्तकार को पांच दिन तक पत्ते और कुशाओं का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है, दे० याज्ञ० ३।३१७, इसके ऊपर मिताक्षरा भी,—खंडः फलपत्तों के बिना वृक्ष (-डम्) पत्तों का ढेर,—चीरघटः शिव का विशेषण, चोरकः एक प्रकार का सुगंध द्रव्य,—नरः पत्तों से बनाया गया पुतला जो अप्राप्त शत्रु की जगह रखकर जलाया जाता है,—भेदिनी प्रियंगुलता, —भोजनः बकरी, —मृगः (पुं०) जाड़े की मौसम, शिशिर ऋतु, -मृगः वृक्षों की शाखाओं पर रहने वाला जंगली जानवर, वृक्ष (पुं०) वसंत ऋतु, -लता पान की बेल,—वीटिका पान का बीड़ा,—शय्या पत्तों की सेज, शाला पत्तों की बनी कुटिया, साधुओं का—आश्रमनिर्विष्टा कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य—रघु० १।९५, १२।४०।

पर्णल (वि०) [पर्ण+लच्] पत्तों से भरा हुआ, पत्तों वाला—भट्टि० ६।१४३।

पर्णासिः [पृ+असि, गुक्] 1. पानी के मध्य खड़ा भवन, ग्रीष्म भवन 2. कमल 3. शाक सब्जी 4. सजावट, प्रसाधन, शृंगार।

पर्णिन् (पुं०) [पर्ण+इनि] वृक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर्णिल (वि०) [पर्ण+इलच्] दे० 'पर्णल'।
पर्द् (स्वा० आ०-पर्दते) पाद मारना, अपानवायु छोड़ना।
पर्दः [पर्द+अच्] 1. केश समूह, घना बाल 2. पाद, अपान वायु।
पर्पः [पृ+प] 1. नया उगा घास 2. पंचु-पीलु, पंगुगाड़ी —पैन पीठेन पंगवश्चरति स पर्पः पा० ४।४।१० पर सिद्धा० 3. घर।
पर्परीकः [पृ+ईकन्] 1. सूर्य 2. आग 3. जलाशय, तालाब।
पर्यंक (अव्य०) [परि+अंच्+विच्] चारों ओर, सब दिशाओं में।
पर्यंकः [परिएयतः अङ्कम्-अस्या० स०] 1. खाट, पलंग, सोफा 2. अरुमाली 3. समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अंगस्थिति योगासन 4. वीरासन -- वसिष्ठ द्वारा दी गई परिभाषा—एकं पादमर्धकं स्मिन् विन्यस्योरौ तु संस्थितम्, इतरस्मिंस्तथैवोरु वीरासनमुदाहृतम्। पर्यंकग्रंथिबंध आदि —मृच्छ० १।१। समः—बंधः जांघ के सहारे बैठने की स्थिति जिसे 'पर्यंक' कहते हैं, पर्यंकबंधस्थितिपूर्वकायम् --कु० ३।४५,५९, -भोगिन् (पु०) एक प्रकार का सांप।
पर्यटनम्, पर्यटितम् [परि+अट्+ल्युट्, क्त वा] घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, यात्रा करना।
पर्यनुयोगः [परि--अनु+युज्+घञ्] किसी उक्ति का खंडन करने के उद्देश्य से पूछताछ (दूषणार्थं जिज्ञासा -हला०) एतेनास्यापि पर्यनुयोगस्थानवकाशः--दाय०।
पर्यंत (वि०) [प्रा० स०] से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ —समुद्रपर्यंता पृथिवी--समुद्र को सीमा से आवृद्ध पृथ्वी,--तः 1. आवर्त, परिधि 2. गोट, किनारा, मगजी, चरमसीमा, हद -- उदगपर्यंतचारिणी—श० ४, पर्यन्तबनम्---रघु० १३।३८ ऋतु० ३।३ 3. पार्श्व, कक्ष --रत्न० २।३, रघु० १८।४३ 4. अन्त, उपसंहार, समाप्ति—पंच० १।१२५। समः --देशः भू; --भूमिः मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश,—पर्वतः संलग्न पहाड़।
पर्यंतिका [प्रा० स०] अच्छे गुणों की हानि, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन।
पर्ययः [परि+इ+अच्] क्रान्ति, पतन, निःश्वास-काल-पर्ययात्- -राज० ३।२१७, मनु० १।३०, ११।२७ 2. (समय की) बर्बादी, या खोना 3. परिवर्तन, अदल-बदल 4. उलट-पुलट, अव्यवस्था, अनियमितता 5. शास्त्रीय मर्यादा का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना 6. विरोध।
पर्ययणम् [परि+अय्+ल्युट्] 1. चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा 2. घोड़े की जीन।
पर्यवदात (वि०) [प्रा० स०] पूरी तरह शुद्ध और पवित्र।
पर्यवरोधः [प्रा० स०] बाधा, विघ्न।
पर्यवसानम् [प्रा० स०] 1. अन्त, समाप्ति, उपसंहार 2. निर्धारण, निश्चयन।
पर्यवसित (भू० क० कृ०) [परि+अव+सो+क्त] 1. समाप्त किया गया, अन्त तक किया हुआ, पूरा किया हुआ 2. नष्ट, लुप्त 3. निर्धारित।
पर्यवस्था, पर्यवस्थानम् [परि+अव+स्था+अङ्+टाप्, ल्युट् वा] 1. विरोध, मुकाबला, बाधा 2. वैपरीत्य।
पर्यश्रु (वि०) [प्रा० ब० स०] आंसुओं से भरा हुआ, **अश्रुपरिप्लावित**, आंसू बहाने वाला, अश्रुयुक्त--पर्यश्रुणी मंगलमंगभीरतं लोचने मीलयितुं विषेहे--कि० ३।३६, पर्यश्रुस्त्वजत मूर्धनि चोपजघ्रौ--रघु० १३।७०।
पर्यसनम् [परि+अस्+ल्युट्] 1. फेंकना, इधर उधर डालना 2. भेजना, धकेलना 3. भेज देना, 4. स्थगित करना।
पर्यस्त (भू० क० कृ०) [परि+अस्+क्त] 1. इधर उधर फेंका गया, बखेरा गया, पर्यस्तो भवतेजयस्त्रोपरि शिलीमुखाकारः वेणी० ४, शि० १०।११ 2. घेरा हुआ, मण्डलाकृत 3. उलटाया गया, उथला हुआ 4. पदच्युत, एक ओर रक्खा हुआ 5. प्रहार किया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ, मारा हुआ।
पर्यस्तिः (स्त्री०) पर्यस्तिका [परि+अस्+क्तिन्, पर्यस्ति+कन्+टाप्] वीरासन, पलंग।
पर्याकुल (वि०) [प्रा० स०] 1. मैला, गंदा (पानी आदि) 2. अव्यवस्थित, उद्विग्न, भयभीत—त्र० १ 3. क्रमहीन, अव्यवस्थित, उथल-पुथल—श० १।३० 4. उत्तेजित, क्षुब्ध, घबराया हुआ—पर्याकुलोऽस्मि श० ६, ऋतु० ६।२५ 5. भरा हुआ, पूरा—स्नेह०, क्रोध० आदि।
पर्याणम् [परि+या+ल्युट्, पृषो०] जीन, काठी--वत्त-पर्याणम् - का० १२६, जीन कसा हुआ।
पर्याप्त (भू० क० कृ०) [परि+आप्+क्त] 1. प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध 2. समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ 3. भरा हुआ, पूर्ण, समस्त, सारा, समग्र पर्याप्त चन्द्रेव शरदि श्रियाम् - कु० ७।२६, रघु० ६।४४ 4. योग्य, सक्षम, समर्थ रघु० १०।५५ 5. काफी, यथोचित रघु० १५।१८, १७।१७ मनु० ११।७,—प्तम् (अव्य०) 1. स्वेच्छा-पूर्वक, तत्परता के साथ 2. संतोष, काफी, यथेष्ट रूप से -पर्याप्तमाचामति उत्तर० ४।१, यथेच्छ पी लेता है 3. पूरी तरह से, योग्यतापूर्वक, सक्षमता के साथ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर्याप्तिः (स्त्री०) [परि | आप् + क्तिन्] 1. प्राप्त करना, अधिग्रहण 2. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 3. कार्य, पूर्णता, यथेष्टता 4. तृप्ति, संतोष 5. सामर्थ्य, पहुंच को रोकना 6. उपयुक्तता, सक्षमता ।

पर्यायः [परि-इ + घञ्] 1. चक्कर लगाना, क्रान्ति 2. (गणित की) समाप्ति, व्यतीत होना, बीतना 3. नियमित परिवर्तन, या आवृत्ति 4. बारी, उत्तरादिकार, उचित या निर्धारित क्रम -पर्याय सेवामुत्सृज्य -कु० २।२६, मनु० ४।८७, मुद्रा० ३।२७ 5. प्रणाली, व्यवस्था 6. तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रणाली 7. समानार्थक, पर्यायवाची पर्यायो निश्चलत्वं शरीरिणाम्—पंच० २।९९, पर्यंतरय पर्यायो इमे—आदि 8. सृष्टि, निर्माण, तैयारी. रचना 9. धर्म, गुण 10. (अल० में) एक अलंकार --दे० काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, १०९, सा० द० ७२३ (विशेष **पर्यायेण** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ बताता है 1. बारी बारी से, उत्तरोत्तर, निरन्तर, नियमित क्रम से 2. यथावसर, कभी कभी —पर्यायेण हि दृश्यंते स्वप्नाः काम शुभाशुभा—वेणी० २।१३ । सम० **उक्तम्** एक अलंकार, घुमाफिरा कर कहना, वक्रोक्ति या वाक्पर्यंच से कहने की रीति, जब बात को घुमा फिरा कर या वाग्जाल के साथ कहा जाय उया० दे० चन्द्रा० ५।१६, या सा० द० ७०३. —**च्युत** (वि०) गुप्त रूप से उखाड़ा हुआ, जिसका स्थान छलपूर्वक ले लिया गया है, —**वचनम्** शब्दः समानार्थक, —**शयनम्** बारी २ सोना और जीकसी रखना ।

पर्याली (अव्य०) [परि | आ + अल् + ई] हानि या क्षति को (हिंसन) अभिव्यक्त करने वाला अव्यय जो प्रायः कृ, भू या अस् के पूर्व लगाया जाता है यथा पर्यालीकृत्य—हितोप० ।

पर्यालोचनम्, ना [परि + आ + लोच् + ल्युट्] 1. सावधानता, सतर्कता, विचार, परिपक्व विमर्श 2. जानना, पहचानना ।

पर्यावर्तः, पर्यावर्तनम् [परि + आ + वृत् + घञ्, ल्युट् वा] वापिस आना, प्रत्यागमन ।

पर्याविल (वि०) [प्रा० स०] बड़ा गदला, मैला, मिट्टी में भरा हुआ -रघु० ७।४० ।

पर्यासः [परि-अस्-घञ्] 1. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 2. परिवर्तन, क्रान्ति 3. उलटा क्रम या स्थिति ।

पर्याहारः [परि+आ+हृ-घञ्] 1. बोझा ढोने के लिए कंधों पर रखना गया जुआ 2. ले जाना 3. बोझा, भार 4. भट्टा 5. अनाज का भंडार में रखना ।

पर्युक्षणम् [परि + उक्ष्-ल्युट्] बिना किसी मन्त्रोच्चारण के चारों ओर चुपचाप जल के छींटे देना ।

पर्युत्थानम् [परि+उद्+स्था+ल्युट्] खड़ा होना ।

पर्युत्सुक (वि०) [प्रा० स०] 1. शोक पूर्ण, खेद युक्त, खिन्न, दुःखद स्वम् शोक. रघु० ५।६७ 2. अत्यन्त इच्छुक, आतुर, सौत्सुक, प्रबल इच्छा रखने वाला स्मर पर्युत्सुक एष माधवः- कु० ४।२८, **विक्रम०** २।१६ ।

पर्युदंचनम् [परि + उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1. ऋण, उधार 2. उधार लेना, उठाना, उद्धार करना ।

पर्युदस्त (भू० क० कृ०) [**परि+उद्** + अस्+क्त] 1. बहिष्कृत किया हुआ, निकाला हुआ 2. रोका गया (नियमित) आपत्ति उठाई गई ।

पर्युदासः [परि+उद्-अस्+घञ्] अपवाद, निषेध सूचक नियम या विधि ।

पर्युपस्थानम् [परि+उप-स्था+ल्युट्] सेवा, टहल, उपस्थिति ।

पर्युपासनम् [परि+उप + आस् + ल्युट्] 1. पूजा, सम्मान, सेवा 2. मित्रता, शिष्टता 3 पास पास बैठाना ।

पर्युप्तिः (स्त्री०) [परि-उप्+क्तिन्] बोना, बीजना ।

पर्युषणम् [परि-उष्+ल्युट्] पूजा, अर्चा, सेवा ।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी, जो ताजा न हो तु० 'आर्यपिंड' 2. फीका 3. मूर्ख 4. घमंडी ।

पर्येषणम्, -णा [परि, इष् + ल्युट्] 1. तर्क द्वारा गवेषणा 2. खोज, सामान्य पूछ-ताछ 3. श्रद्धांजलि, पूजा ।

पर्येष्टिः (स्त्री०) [परि-इष्+क्तिन्] खोज, पूछताछ ।

पर्यंकम् [पर्यंक्यते नियन्त्रितं कार्यते - पर्यंक्+क] घुटने का जोड़ ।

पर्वणी [पर्व+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] 1. पूर्णिमा, या शुक्ल-प्रतिपदा 2. उत्सव 3. (आयु० में) आंख की संधि का विशेष रोग ।

पर्वतः [पर्व+अतच्] 1. पहाड़, गिरि - परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यम् भर्तृ० २।७८, न पर्वताये नलिनी प्ररोहति 2. चट्टान 3. कृत्रिम पहाड़ या ढेर 4. 'सात' की संख्या 5. वृक्ष । सम० **-अरिः** इन्द्र का विशेषण, **आत्मजः** मैनाक पर्वत का विशेषण, —**आत्मजा** पार्वती का विशेषण, **आधारा** पृथ्वी, —**आशयः** बादल, **आश्रयः** शरभ नामक काल्पनिक जंतु, - **काकः** पहाड़ी कौवा, **जा** नदी, **पतिः** हिमालय पहाड़ का विशेषण, **मोचारा** हाड़ी केला, —**राज्** (पुं०), —**राजः** 1. विशाल पहाड़, 2. पर्वतों का स्वामी हिमालय, **-स्थ** (वि०) पहाड़ी, **पर्वत** - स्थित ।

पर्वन् (नपुं०) [पृ + वनिप्] 1. गांठ, जोड़ (**बहुधीहि** समास के अन्त में कभी कभी बदल कर 'पर्व' हो जाता है जैसा कि 'कर्कशंगुलिपर्वया- रघु० १२।४१' में 2. अवयव, अंग 3. अंश भाग, खण्ड 4. पुस्तक,

For Private and Personal Use Only

अध्याय (जैसा कि महाभारत में 5. जीने की सीढ़ी –रघु० १६।४६ 6. अवधि, निश्चित समय 7. विपत्कर, चन्द्रमा के चार परिवर्तन अर्थात् दोनों पक्ष की अष्टमी पूर्णिमा तथा अमावस्या 8. चन्द्रमा के परिवर्तन काल के अवसर पर अनुष्ठित यज्ञ 9. पूर्णिमा या अमावस्या,—अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमंडला विभावरी कथय कथं भविष्यति माल०वि० ४।१५, रघु० ७।३३ मनु० ४।१५०, भर्तृ० २।३४ 10. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 11. उत्सव, त्योहार, हर्ष का अवसर 12. सामान्य अवसर। सम०—काल: 1. चन्द्रमा का आवर्तिक परिवर्तन 2. वह काल जब चन्द्रमा पर्वसन्धि में से गुजरता है (मिलते या निकलते समय), -कारिन् (पुं०) वह ब्राह्मण जो अमावस्या आदि के आवर्तिक अनुष्ठान या संस्कारों को अपने लाभ के कारण सामान्य दिनों में करता है, -गामिन् (पुं०) पर्व आदि शास्त्र निर्दिष्ट अवसरों पर भी अपनी पत्नी से मैथुन करने वाला व्यक्ति, -धि: चन्द्रमा, -योनि: बेत, नरकुल, -रन्ध्र (पुं०) अनार का वृक्ष, -संधि: पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के मध्य का समय, अर्थात् पूर्णिमा या अमावस्या की समाप्ति पर प्रतिपदा आरम्भ।

पर्शु: [पर्श् शृणाति – पर्श+कु स च डित् वा स्पृशति वा+शु, -स्पृश्+शु, प आदेश:] 1. कुठार, कुल्हाड़ी – तु० 'परशु' 2. शस्त्र, हथियार। सम०—पाणि: 1. गणेश का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण।

पर्शुका [पर्शु+कन्+टाप्] पसली।

पर्षद्: [–परिषद्+घा+क, पृषो०] दे० 'परिषद्'।

पर्षद् (स्त्री०) [पृष्+अदि] 1. सभा, सम्मिलन, सम्मेलन 2. विशेषकर धर्मसभा–याज्ञ० १।९।

पल: [पल्+अच्] पुआल, भूसी, **लम्** 1. मांस, आमिष 2. कर्ष का तौल 3. तरल पदार्थों का मापने का भार 4. समय मापने का मान। सम०—अशिन् पिशा, —अंग: कच्छुआ, –अद:, –अशन: पिशाच, राक्षस, –आर: रुधिर, –गंड: पलस्सर करने वाला, राज —प्रिय: 1. राक्षस 2. पहाड़ी कौवा,– भा मध्याह्न की त्रिपुरीय छाया – अर्थात् मध्याह्न के समय घटघड़ी के कील की तत्कालीन छाया।

पलंकट (वि०)[पल मांस कटति–पल्+कट्+अच्, मुम्] भीरु, बुजदिल।

पलंकर: [पल मांसं करोति—पलम् +कृ+अच्, द्वितीया या अलुक्] धिन्न।

पलंकष: [पलं कर्षति -पलम् +कष्+अच्, द्वितीयाया अलुक्] 1. राक्षस, पिशाच, दानव, **लम्** 1. मांस 2. कीचड़, दलदल 3. पिसे हुए तिल व चीनी मिलाकर बनाई गई मिठाई, गजक। सम०—उदर: पित्त, —प्रिय: 1. पहाड़ी कौवा 2. राक्षस।

पलद: [पल+दा+क] मछलियां पकड़ने का जाल या टोकरी।

पलांडु (पुं०, नपुं०) [पलस्य मांसस्य अंडमिव पल +अंड्+कु] प्याज –मनु० ५।५, याज्ञ० ११७६।

पलाप: [पलं मांसम् आप्यते अनेनाहरहर्येण अत्र—पल+आप् +घञ्] 1. हाथी की पूंछ्ड़ी 2. पगहा, रस्सी।

पलायनम् [परा+अय्+ल्युट् रस्य ल:] भागना, लौटना उड़ान, बच निकलना भग० १८।४३, रघु० १२।३१

पलायित (भू० क० कृ०) [परा+अय्+क्त] भागा हुआ, लौटा हुआ, दौड़ा हुआ, बच निकला हुआ।

पलाल: लम् [पल+कालच्] पुआल, भूसी मनु० ८।३।

सम० दोहद: आम का वृक्ष।

पलालि: [पल+अल्+इन्] मांस का ढेर।

पलाश: [पल+अश्+अण्] एक वृक्ष, ढाक का पेड़ किंशुकनखपलाशपलाशवनम् पुर: शि० ६।२, शम् 1. इस वृक्ष का फल बालेंदुवक्राभ्यधिकाशमाद्वनु, पलाशान्यतिलोहितानि कु० ३।२९ 2. पत्ता, पंखड़ी -अलक्तपलाशतरणीचरास्तरो:—शि० १।२१, ६।२ 3. हरा रंग।

पलाशिन् (पुं०) [पलाश+इन्] ढाक का पेड़।

पलितंगी [पलित+अच्+ङीष्] 1. बूढ़ी स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों 2. पहली बार ही ब्याई हुई गौ, बालगर्भिणी।

पलिघ: [परि+हन्+अप्, पलादेश:, रस्य ल:] 1. शीशे का बर्तन, घड़ा 2. पलाल, पुआल 3. लोहे की गदा तु० परिघ 4. गोशाला, गोगृह।

पलित (वि०) [पल्+क्त] भूरा, धवल, सफेद बालों वाला, बूढ़ा, बुढ़ापे के लक्षणों से युक्त, सादृश्य में 'पलितधौलिनिस्तटाभे (शिरसि) वेणी० ३।१९, –तम् 1. सफेद बाल या बालों की सफेदी जो बुढ़ापे के कारण हुई हो–कैकेयी-संक्रमवाह पलितच्छद्मना जरा रघु० १०।२. मनु० ६।२ 2. अधिक या अलंकृत वेश।

पलितंकरण (वि०) [आधिक्येन पलित क्रियतेऽनेन पलित +कृ+ल्युट्, मुम्] सफेद करने वाला।

पलितंभविष्णु (वि०) [अतीव पलितो भवति पलित +भू+इष्णुच्, मुम्] सफेद होने वाला।

पलंक: [पलति अकस्मादेव, पलि+अंक्+घञ्, रस्य ल:] पतंग, खटमल– दे० पर्यंक।

पल्ययनम् [परि+अय्+ल्युट्, रस्यल:] 1. जीन, काठी 2. रास, लगाम।

पल्ल: [पल्ल्+अच्] अनाज का बड़ा भंडार, खत्ती।

पल्लव:–वम् [पल्+विच् पल्, ल+अप्—लव, पल्लासौ लवश्च कर्म० स०] 1. अंकुर, कोंपल, टहनी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—करपल्लवः, लतेव संनद्धमनोज्ञपल्लवा—रघु० १।७ 2. कली, मंजरी 3. विस्तार, फलाव, अभिव्यक्ति 4. लालरंग, महावर, अलक्त 5. सामर्थ्य, शक्ति 6. घास की पत्ती 7. कंकण, बाजूबंद 8. प्रेम, केलि 9. वटवल्लरी, वः स्वेच्छाचारी। सम०—अंकुरः, —आधारः शरीर, अस्त्रः कामदेव का विशेषण, —द्रुः अशोक वृक्ष।

पल्लवकः [पल्लव+कै+क] 1. स्वेच्छाचारी 2. लौंडा, गांडू 3. रंडी का प्रेमी 4. अशोक वृक्ष 5. एक प्रकार की मछली 6. अंकुर।

पल्लविकः [पल्लव+ठन्] 1. स्वेच्छाचारी, रसिया 2. लौंडा, बांका, छैला।

पल्लवित (वि०) [पल्लव+इतच्] 1. अंकुरित होने वाला, नई २ कोंपलों से युक्त 2. फैला हुआ, विस्तृत —अत्र पल्लवितेन 'बस रहने दो और अधिक विस्तार' 3. लाल से लाल रंग हुआ —तः लालरंग।

पल्लविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पल्लव+इनि] 1 नई २ कोंपलों से युक्त, नये किसलयों वाला—कु० ३।५४, —(पुं०) वृक्ष।

पल्लि:,—ल्ली (स्त्री०) [पल्ल्+इन्, पल्लि+ङीप्] 1. छोटा गांव, 2. झोंपड़ी 3. घर, पड़ाव 4. एक नगर या कस्बा (नगरों के नामों के अन्त में प्रयुक्त जैसे कि त्रिशिरपल्लि) 5. छिपकली।

पल्लिका [पल्लि+कन्+टाप्] 1. छोटा गांव, पड़ाव 2. छिपकली।

पल्वलम् [पल्—वलच्] छोटा तालाब, छप्पड़, जोहड़, तडाग (अल्प सरः) न पल्वलजलेऽप्युना कथं वर्तताम्—भामि० १।३, रघु० २।१७,३।६। सम०—आवासः कछुवा, पंकः छप्पड़ का गारा, कीचड़।

पवः [पू+अप्] 1. वायु 2. पवित्रीकरण 3. अनाज फटकना—वम् गोबर।

पवनः [पू+ल्युट्] हवा, वायु मरुत् सिषेवे पवनं न दुर्वासास्ते सुधाः, पवनसुतः आदि—नम् 1. पवित्रीकरण 2. फटकना 3. चलनी, झरना 4. पानी 5. कुम्हार का आवा (पुं० भी)—नी झाड़। सम०—अशनः—भुज् (पुं०) सांप,—आत्मजः 1. हनुमान् का विशेषण 2. भीम का विशेषण 3. आग, —आशः सांप, सर्प,—नाशः 1. गरुड़ का विशेषण 2. मोर, —तनयः,—सुतः 1. हनुमान् का 2. भीम का विशेषण, —व्याधिः 1. कृष्ण के सलाहकार और मित्र उद्धव का विशेषण 2. गठिया।

पवमानः [पू+शानच्, मुक्] 1. हवा, वायु- पवमानः पृथिवीरुहाणिव—रघु० ८।९ 2. एक प्रकार की यज्ञाग्नि जिसे गार्हपत्य कहते हैं।

पवाका [पू+आप्, नि० साधुः] बवंडर, आँधी, झंझावात।

पविः [पू+इ] इन्द्र का वज्र।

पवित्र (वि०) [पू+क्त] पवित्र किया हुआ, छाना हुआ सम् कांसी मिर्च।

पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1. पुनीत, पावन, निष्पाप, पवित्रीकृत (व्यक्ति या वस्तुएँ)—यैणि श्राद्धे पवित्राणि रोहित्रः कुतपस्तिलाः —मनु० ३।२३६, पवित्रो नरः, पवित्रं स्थानम् आदि 2. शुद्ध, छना हुआ 3. यज्ञादि के अनुष्ठानों द्वारा पवित्र किया गया 4. पवित्र करना, पाप धोना, —त्रम् 1. छानने या शुद्ध करने का उपकरण, चलनी, झरना 2. कुश की बनी पवित्रियाँ जो यज्ञ में घी को पवित्र करने तथा छींटें देने के काम आती हैं 3. कुशा की बनी अंगूठी जो कई धार्मिक अवसरों पर चौथी अँगुली में पहनी जाती है 4. जनेऊ जो हिन्दुजाति के प्रथम तीन वर्ण पहनते हैं 5. ताँबा 6. वृष्टि 7. जल 8. रंगडना, मांजना 9. अर्घ्य देने का पात्र 10. घी 11. शहद, मधु। सम० आरोपणम्, —आरोहणम् सज्जोपवीत धारण करने का संस्कार, उपनयन संस्कार, -पाणि (वि०) दर्भघास को हाथ से थामने वाला,—धान्यम् जौ।

पवित्रकम् [पवित्र+कै+क] सन या सुतली का बना जाल या रस्सा।

पशव्य (वि०) [पशु+यत्] 1. मवेशियों (गाय भैंसों आदि) के लिए उचित या उपयुक्त याज्ञ० १।३२१ 2. पशुओं से या रेवड़ या लहंडे से संबंध रखने वाला 3. पशुओं का स्वामी 4. पशुधनपूर्ण।

पशुः [सर्वमविशेषेण पश्यति—दृश्+कु, पशादेशः] 1. मवेशी, (एक या समष्टि) मनु० ३२७, ३३१ 2. जानवर 3. बलिपशु जैसे कि बकरा 4. नृशंस, जंगली, तिरस्कार प्रकट करने के लिए नर' वाचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—पुरुषपशोश्चषशोश्च को विशेषः—हि० १, तु० नृपशु, नरपशु 5. एक उपदेवता, शिव का एक अनुचर। सम०—अवदानम् पशुबलि—क्रिया 1. बलिदान की प्रक्रिया 2. स्त्रीप्रसंग,—गायत्री वह मन्त्र जो कि बलिके पशु के कान में बोला जाता है, यह प्रसिद्ध गायत्रीमंत्र हास्यमय अनुकृति है—पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय (विघ्नकर्मणे) धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्,—घातः यज्ञ के लिए पशुओं का वध,—चर्या सहवास, स्त्री प्रसंग, धर्मः 1. पशुओं की प्रकृति या लक्षण 2. पशुओं की चिकित्सा 3. स्वच्छन्द मैथुन—मनु० ९।९६ 4. विधवाविवाह, —नाथः शिव का विशेषण,—पः ग्वाला—पतिः 1. शिव का विशेषण मच० ३६, ५६, कु० ६।९५ 2. ग्वाला, पशुओं का स्वामी 3. 'पाशुपत' नामक दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला दर्शन शास्त्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--दे० सर्व, --पालकः--पालकः ग्वाला, पशुओं का पालन करने वाला,—पालनम्,—रक्षणम् पशुओं की पालना, रखना,--पाशकः एक प्रकार का रतिबन्ध या मैथुन प्रकार,--प्रेरणम् पशुओं को हाँकना, --बारम् (अव्य०) पशुवध की रीति के अनुसार--दृष्टिपशुमारं मारिताः श० ६,--यज्ञः,—याग:,—इज्यम् पशु यज्ञ, --रज्जुः (स्त्री०) पशुओं को सँभालने के लिए रस्सी, --राजः सिंह, केसरी।

पश्चात् (अव्य०) [अपर+अति, पश्चभावः] 1. पीछे से, पिछली ओर से • पश्चाद्बुद्धपुरुषवादायः--श० ६, पश्चादुच्चैर्भवति हरिणः स्वागमायच्छमानः--श० ४, (पालान्तर) 2. पीछे, पीछे की ओर, पीछे की तरफ (विप० पुरः) गच्छन्ति पुरः शरीरं यान्ति पश्चादसंस्तुताः चेतः श० १।३३, ३।७ 3. (समय और स्थान की दृष्टि से) बाद में, तब, इसके बाद, उसके अन्तर

लङ्घ्वा पुरीं चद्धिमतीं च पश्चात्—भट्टि० २।६०, तस्य पश्चात्--उसके बाद--रघु० ४।३०, १२।७, १७।२९, १६।२९, मेघ० ३६, ४४ 4. आखिरकार, अन्त में, अन्तर्गोत्रश्च 5. पश्चिम से 6. पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ। सम०--कृत (वि०) पीछे छोड़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ, पृष्ठभूमि में फेंका हुआ पश्चात्कृताः स्निग्धजनाश्रिधोऽपि • कु० ७।२८, रघु० १७।१८, **तापः** पछतावा, ग्लानि, पछतावा पैदा करना।

पश्चार्धः [अपरश्चासौ अर्धः, कु० स०, अपरस्य पश्चभावः] (शरीर का) पिछला भाग, या पार्श्व पश्चाद्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2. (समय और देश की दृष्टि से) अन्तिम

पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य का० २५, रघु० १९।१, ५६, पश्चिमाद्यामिनीयामात् प्रभादर्शिवचेतना रघु १७।१, स्मरतः पश्चिमाभाजां १७।८, पत पश्चिमयोः पितुः पादयोः--मुद्रा० ७ 3. पश्चिमी, पश्चिमी ढंग का मनु० २।२२, ५।९२ (**पश्चिमेन**) क्रियाविशेषण के रूप में "पश्चिम में" 'बाद में' 'पीछे' अर्थों को प्रकट करने लिए, कर्म० या संबंध के साथ प्रयुक्त, इसी प्रकार पश्चिम में। सम०--अर्धः 1. उत्तरार्ध 2. रात का पिछला पहर 3. रात्रि का पिछला भाग उषाराग. पश्चिमरात्रगोचरातु किं० ४।१०, (पालान्तर)।

पश्चिमा [पश्चिम+टाप्] पश्चिम दिशा। सम० --उत्तरा उत्तर-पश्चिम।

पश्यत् (वि०) (स्त्री०-न्ती) [दृश्--शतृ, पश्यादेशः] देखने वाला, प्रत्यक्ष ज्ञान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिपात करने वाला, निरीक्षण करने वाला आदि।

पश्यतोहरः [पश्यन्तं जनम् अंनादृत्य हरति-हृ+अच्, ष० त० अलुक् समासः] चोर, लुटेरा, डाकू (वह व्यक्ति जो दूसरों की आंखों के सामने हो या स्वामी के देखते रहने पर भी चोरी कर लेता है, जेबी सुनार)।

पश्यंती [दृश्+शतृ, पश्यादेशः, ङीप्] 1. देखती, रखी 2. विशेष--प्रकार की ध्वनि।

पस्त्यम् [अपस्त्यायन्ति निष्ठन्ति अत्र--अप+स्त्यै+क] नि० अंकारलोपः] घर, निवास, आवास पस्त्यं प्रपातुमथ तं प्रभुराप्तपृच्छे कर्तिः १।७४।

पस्पशः (पुं०) पतंजलिप्रणीत महाभाष्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आह्निक शब्दविज्ञेय नो भाति गतनीतिरस्पशा—शि० २।११२, (यहाँ 'अस्पशा' का अर्थ है 'बिना सूत्र नहीं के') 2. प्रस्तावना, उपोद्घात।

पह्लव (ह्लव) वाः, पह्लिकः (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम, संभवतः पर्शिया देशवासी।

पा I (स्वा० पर० पिबति, पातुं, कर्मवा० पीयते) 1. पीना, एक सांस में चढ़ा जाना पिब स्तन्यं पोत --भामि० १।६०, दृशासनस्य रुधिरं न पिबाम्यहं यदि --वेणी० १।१५, रघु० ३।५४, कु० ३।६६, भट्टि० १४।९२, १५।६ 2. चूसना पिबन्तीव पयोधरं च सिंधुः--रघु० १३।९, श० १।२४ 3. चिन्तन करना (आंख और कान से पीना), उत्सव मनाना, ध्यान पूर्वक सुनना-- निदाघतप्तस्तिमितं नलेषु निषादराजस्य कलं पिबन्तः सुस्वनवत् रघु० २।१७ २।१०,७३, ११।३६, १३।३०, मेघ० १६, कु० ७।६४ 5. अवशोषण करना, पी जाना (बाणैः) आयुर्देहाद्गिरः पीतं रुधिरं तु पत्त्रिभिः--रघु० १२।४८, प्रेर०--पाययति ते, 1. पिलाना, पीने के लिए देना, --रघु० १३।९ भट्टि० ८।४१, ६२ 2. सोचना, --इच्छा० पिपासति, पीने की इच्छा करना--हलक्षलं खलु पिपासति फीनुकेन भामि० १।९५ अनु , बाद में पीना, अनुसरण करना--अनुपास्यन्ति वाष्पदूषितं परमौकसन्न जलांजलिम्--रघु० ८।९८, आ--, 1. पीना—रघु० १४। २२ 2. पी जाना, अवशोषण करना, चूस लेना --आपीतसूर्य नयः- मृच्छ० ५।२० उपेति सलिलं ग्रस्तं रसमापीय पार्थिवम्- महा०, 3. (आँख, कान से) पीने का उत्सव मनाना, ता राघवं दृष्टिभिरापिबन्त्य रघु० ७।१२, नि—, 1. पीना, चूसना -अनेन चिपीयतेऽधरः पंच० १।१८९, इंतच्छदं प्रियतमेन निपीतसारम्—मनु० ४।१२ 2. (आँख या कान से) पीना, सौन्दर्यविलोकन करना, परि- आलिंगन करना—उपनिषदः परिपीताः भामि० २।४७, वि (अदा० पर०—पाति, पात) 1. रक्षा करना, देख-भाल करना, चौकसी रखना, बचाना, संधारण करना —(प्रायः अपा० के साथ) पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--रघु० १०।२५, पालयत्वां'''भूतेशस्य भुजंगवल्लि-वलयस्खलनद्ध--जूटाजटाः--मा० १।२, जीवन् पुरः शश्वदुपप्लवेभ्यः प्रजाः प्रजानाथ पितेव पासि रघु० २।४८ 2. हुकूमत करना, शासन करना, पालयति पृथ्वीम्'''भूपाः मुच्छ० १०।६०, प्रेर० पालयति —ते 1. रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, संधारण करना--कर्य दुष्टः स्वयं धर्मे प्रजास्तव पालयिष्यसि -भट्टि० ६।१३२, मनु० ९।१०८ रघु० ९।२ 2. हुकूमत करना, शासन करना--नां पुरी पालयामास रामा० 3 पालन करना, स्थिर रखना, अनुपालन करना, पूरा करना (प्रतिज्ञा, व्रत आदि), पालितसमयस्य रघु० १३।६५ 4. पालन पोषण करना, संवर्धन करना, स्थापित रखना 5. प्रतीक्षा करना -अन्योपविश्य मुहूर्तमार्यः पालयतु कुण्डागमनम् -वेणी० 1. अनु--1. बचाना, संधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना मनु० ८।२७, परि ०, 1. बचाना, संधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना याज्ञ० १।३३८ मनु० ९।२५१ 2. हुकूमत करना, शासन करना, या० १०।२५ 3. पालन-पोषण करना, संवर्धन करना, सहारा देना 4. स्थिर रखना, पालन करना, जमे रहना, धैर्य रखना--अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति - चौर० ५० 5. प्रतीक्षा करना, इंतजार करना अथ मलनवधूरुत्पल्वलीं व्यसनकृशां परिपालयत्रभूव -कु० ४।४६, प्रति --, 1. बचाना, संधारण करना 2. प्रतीक्षा करना, इंतजार करना, 3. अमल करना, आज्ञा मानना ।

पा (वि०) (समास के अन्त में) [पा+क्विप्] 1. पीने वाला, चट्टा जाने वाला जैसा कि सोमपाः, अर्घपाः में 2. बचाने वाला, देखभाल करने वाला, स्थिर रखने वाला - गोपा ।

पांस (श) न (वि०) (स्त्री० ना, -नी) [प्रायः समास के अन्त में] [पंस् (शृ)+घञ्, दीर्घः] कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला, दूषित करने वाला--पौलस्त्यकुलपांसन महीवी० ५ 2. विघातन करने वाला, भ्रष्ट करने वाला 3. दुष्ट, तिरस्करणीय 4. बदनाम, कुख्यात ।

पांस (श) व (वि०) [पांसु (शु)+अण्] धूल से भरा हुआ ।

पांसुः (शुः) [पंस् (शृ)+कु, दीर्घः] 1. धूल, गर्द, चूरा (जौ होकर गिरने वाला) रघु० २।४, ऋतु० १।२३, याज्ञ० १।१५० 2. धूलकण 3. गोंदर, खार 4. एक प्रकार का कपूर । सम० कामीसम् कसीस, कुली प्रशस्त पथ, राजमार्ग, कूलम् 1. धूल का ढेर 2. ऐसा कानूनी दस्तावेज जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम न हो, निरुपदक्षासन, कृत (वि०) धूल से भरा हुआ,—क्षारम्,—जम् एक प्रकार का नमक, जत्वरम् ओला, -नक्षत्रः शिव का विशेषण, चामरः 1. धूल का ढेर 2. तंबू 3. दूम से ढका नरोला 4. प्रशंसा,—जालिकः विष्णु का विशेषण, —पटलम् धूल की परत या तह, -मर्दनः पेड़ की जड़ों के पास चारों ओर से खोद कर पानी सींचने का स्थान, आलवाल, थांवला ।

पांसु (शु) रः [पांसु (शु)+रा+क] 1. ढांस, गोमक्खी 2. विकलांग, लूला जो गाड़ी में बैठकर इधर उधर घूमे ।

पांसु (शु) लः (वि०) [पांसु (शु) + लच्] 1. धूल में भरा हुआ धूलिधूसरित--मा० २।४ 2 अपवित्र, दूषित, कलुषित, कलंकित दारव्यायी भवाम्यहो परस्त्रीस्पर्शपांशुलः श० ५।२८ 3. दूषित करने वाला, कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला

जैसा कि 'कुरुपांसुलः' में,—लः 1 दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी, लम्पट 2. शिव का विशेषण,-ला 1. रजस्वला स्त्री 2. असती या अभिचारिणी स्त्री, अ" सती स्त्री - रघु० २।२ 3. पृथ्वी ।

पाकः [पच्+घञ्] 1. पकाना, प्रसाधन, सेंकना, उबालना 2. (ईंट आदि) आंच लगाना, सेंकना—मनु० ५।१२९, याज्ञ० १।१८७ 3. (भोजन का) पचना 4. पका होना औषधयः फलपाकांताः मनु० १।४६ फलमभिमुखपाक राजजंबूद्रुमस्य—विक्रम० ४।१३, मा० ९।३१ 5. परिपक्वता, पूर्ण विकास थी", मति० 6. सम्पूर्ति, निष्पन्नता, पूरा करना युयोज पाकाभि मुखैर्मनोरथान् विजयना फले--रघु० १७।४० 7. नतीजा परिणाम, फल, परिणति, (आल० भी) आशीर्भिरेधयामासुः पुरः पाकाभिरक्रियाम्--कु० ६।९० पाकाभिमुखस्य दैवस्य-- उत्तर०७।४, १४ कृत कार्यों के फलों का विकास 9. अनाज, अन्न—नीवारपाकादि-रघु० ५।९ (पच्यते इति पाकः धान्यम्) 10. पकने की क्रिया, (फोड़े आदि का) पकना, पीप पड़ना 11. बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद हो जाना 12. गार्हपत्याग्नि 13. उल्लू 14. बच्चा, शिशु 15. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था । सम०—आगारः, रम् आगारः, रम् शाला, स्थानम् रसोई, अतीसारः पुरानी पेचिश, अभिमुख (वि०) 1. पकने के लिए तैयार, विकासोन्मुख 2. कृपापरायण, जम् 1. काला नमक 2. उदरवायु, पात्रम् पकाने का बर्तन, पुटो कुम्हार का आवा, यज्ञः गृह्ययज्ञ, (इसके भेदों के लिए दे० मनु० २।१४३ पर 'हुतभुक्')। शुक्ला सड़िया, शासनः इन्द्र का विशेषण कु० २।६३, शासनिः 1. इन्द्र के पुत्र जयन्त का विशेषण 2. वालि तथा 3. अर्जुन का विशेषण ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाकलः [पाक+ला+क] 1. आग 2. हवा 3. हाथी का ज्वर · तु० कूटपाकल ।

पाकिम (वि०) [पाकेन निर्वृत्तम्—पाक+इमप्] 1. पका हुआ, प्रसाधित 2. (प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ 3. नमक आदि) उबाल कर प्राप्त किया हुआ ।

पाकुः, पाकूकः [पच्+उण्, क आदेशः] रसोइया ।

पाक्य (वि०) [पच्+ण्यत्, क आदेशः] पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लायक, परिपक्व होने के योग्य, —क्यः जवाखार क्षोरा ।

पाक्ष (वि०) (स्त्री०-क्षी) [पक्ष+अण्] 1. (कृष्ण या शुक्ल) पक्ष से संबंध रखने वाला, पाक्षिक 2. किसी दल या पार्टी से संबद्ध ।

पाक्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [पक्ष+ठक्] 1. पक्ष से संबद्ध, अर्धमासिक 2. पक्षों से संबद्ध 3. किसी दल या पार्टी का पक्ष लेने वाला 4. तर्क विषयक 5. ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विशेष रूप से निर्धारित न हो—नियमः पाक्षिके सति,—कः बहेलिया, चिड़ीमार ।

पाक्षंडः [पाखंडीति—पा+क्विप्, पाः खंडयति · पा+खण्ड्+अच्] विधर्मी, नास्तिक - पाक्षंड-चंडालयोः, पाषाणैरभकयोर्मृगीव वृकयोर्भीरुगीता गोचरम् —मा० ५।२४, दुरात्मन् पाखंड चंडाल —मा० ५ ।

पागल (वि०) [पारक्षयम्, तस्मात् गलति विच्युतो भवति—पा+गल्+अच्] विक्षिप्त, जिसका दिमाग खराब हो ।

पांक्तेय, पांक्त्य (वि०) [पंक्ति+ठक्, यत् वा] 1. भोजन पंक्ति में एक साथ बैठने के योग्य 2 साहचर्य के उपयुक्त ।

पाचक (वि०) [पच्+ण्वुल्] 1. पकाना, सेकना 2. पचाने वाला, पौष्टिक —कः 1. रसोइया 2. आग, कम पित्त । सम०—स्त्री महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री ।

पाचन (वि०) (स्त्री०-नी) [पच्+णिच्+ल्युट्] 1. पकाने वाला 2. पचाने वाला, हाजिम, —नः 1. आग 2. खटास, अम्लता, नम् 1. पकाने की क्रिया 2. पकने की क्रिया 3. घुलनशील, भोजन पचाने वाली औषधि 4. घाव भरना 5. तपस्या, प्रायश्चित्त ।

पाचलः [पच्+णिच्+कलन्] 1. रसोइया 2. आग 3. हवा, लम् पकाना, परिपक्व करना ।

पाचा [पच्+णिच्+अङ+टाप्] पकाना ।

पांचकपाल (वि०) (स्त्री०-ली) [पंचकपाल+अण्] पाँच कपालों में भर कर दी गई आहुति से संबंध रखने वाला ।

पांचजन्यः [पंचजन+ष्य] कृष्ण के शंख का नाम—(दधानौ) निश्वासमरुद्भूत पांचजन्यः—शि ३।२१, भग० १।१५। सम०—धरः कृष्ण का विशेषण ।

पांचदश (वि०) (स्त्री०-शी) [पंचदशी+अण्] मास की पन्द्रहवीं तिथि से संबंध रखने वाला ।

पांचदश्यम् [पंचदशन्+ष्यञ्] पन्द्रह का समुच्चय ।

पांचनद (वि०) [पंचनद+अण्] पंचनद या पंजाब में प्रचलित ।

पांचभौतिक (वि०) (स्त्री-की) [पंचभूत+ठक्, द्विदवृद्धि] पाँच तत्त्वों के समूह से बना हुआ, या पाँच तत्त्वों वाला, पाँच भौतिकी सृष्टिः महाभा० ६. याज्ञ० ३।१७५ ।

पांचवर्षिक (वि०) [पंचवर्ष+ठञ्] पाँच वर्ष का ।

पांचशब्दिकम् [पंचशब्द+ठक्] 1. पाँच प्रकार का संगीत 2. गायन तथा उसी वाद्ययंत्र ।

पांचाल (वि०) (स्त्री०-ली) [पंचाल+अण्] पंचाल से संबद्ध या पंचालों के शासक, —लः 1. पंचालों का देश 2. पंचालों का राजकुमार, —लाः (पुं०पं०) पंचाल देश के लोग ।

पांचालिका [पांचाली+कप्+टाप्, ह्रस्वः] गुड़िया, पुतली-स्तन्य त्यागप्रभृति सुमुखी दंत पांचालिकेव क्रीडायोगं तदनु विनयं प्रापिता बंधिता च —मा० १०।५ ।

पांचाली [पांचाल+अण्+ङीष्] 1 पंचाल देश की राजकुमारी या स्त्री 2. पांडवों की पत्नी, द्रौपदी 3. गुड़िया, पुतली 4. (अलं०) रचना की चार शैलियों में से एक सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—वर्णैः शैथैः (अर्थात् माधुर्यव्यंजकैः प्रकाशकाभ्या भिन्नैः) पुनर्द्वयोः, समस्त पंचपादों वधः पांचालिकी मता. ६२८ ।

पाट् (अव्य०) [पट्+णिच्+विट्] एक अव्यय जो बुलाने के लिए—अर्थात् संबोधन के रूप में प्रयुक्त हो जाता है ।

पाटकः [पट्+णिच्+ण्वुल्] 1. विदारक, विभाजक 2. गाँव का एक भाग 3. गाँव का आधा हिस्सा 4. एक प्रकार का संगीत-उपकरण 5. तक, किनारा 6. खाट की चौड़ियाँ 7. बुलवाना या पूजी की हानि 8. बिना या बालिश्तें 9. पासे फेंकना ।

पाटच्चरः [पाटयन् छिन्दन् चरति चर—अच्, षष्ठी०] चोर, लुटेरा, पाड़ लगाने वाला, कुसुमरसपाटच्चरः —शृं० ६, पथिनीपरिमलाभिपाटच्चरैः · भामि० २।७५ ।

पाटनम् [पट्+णिच्+ल्युट्] विदीर्ण करना, तोड़ना, फाड़ना, नष्ट करना ।

पाटल (वि०) [पट्+णिच्+कलन्] पीतरक्त वर्ण, गुलाबी रंग, अपने स्त्री नखपाटलमं कुरबकम्—विक्रम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२।७, पाटलपाणिजां क्रितमुरः—गीत० १२, -लः पीलापन, प्याजी या गुलाबी रंग -कपोलपाटलादेशि बभूव रघुरेष्टितम् रघु० ४।६८ 2. पाटल का फूल पाटल संसर्ग सुरभिवनवाताः—श० १।३, -लम् 1. पाटल वृक्ष का फूल -रघु० १६।५९, १९।४६ 2. एक प्रकार का बादल जो बरसात में तैयार होता है 3. केसर, जाफरान । सम० -उपलः लाल,—द्रुमः पाटल वृक्ष ।

पाटला [पाटल+अच्+टाप्] 1. लाल लोध्र 2. पाटल का वृक्ष तथा उसका फूल 3. दुर्गा का विशेषण ।

पाटलिः (स्त्री०) [पाटल+इन्] पाटल का फूल । सम० -पुत्रः एक प्राचीन नगर, मगध की राजधानी, जो शोण और गंगा के संगम पर स्थित है, जिसे कुछ लोग वर्तमान 'पटना' मानते हैं, इसको 'पुष्पपुर' या 'कुसुमपुर' भी कहते हैं दे० मुद्रा० २।३, ४।१६, रघु० ६।२४ ।

पाटलिकः [पाटलि+कन्] छात्र, विद्यार्थी ।

पाटलिमन् (पुं०) [पाटल+इमनिच्] पीतरक्त वर्ण ।

पाटल्या [पाटल+यत्+टाप्] पाटल के फूलों का गुच्छा ।

पाटवम् [पटु+अण्] 1. तीक्ष्णता, पैनापन 2. चतुराई, कौशल, दक्षता, प्रवीणता —पाटवं वस्तूनांविषु हि० १. कि० ९।५४ 3. ऊर्जा 4. फुर्ती, उतावलापना ।

पाटविकः (वि०) (स्त्री०—की) [पाटव+ठक्] 1. चतुर, तीक्ष्ण, कुशल 2. धूर्त, चालबाज, मक्कार ।

पाटितः (भू० कृ० कृ०) [पट्+णिच्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, तोड़ा हुआ 2. भिन्न, छिन्न-भिन्न रघु० ११।३१ ।

पाटी [पट्—णिच्+इन्—ङीप्] अंकगणित । सम० गणितम् अंकगणित ।

पाटीरः [पटीर+अण्] 1. चन्दन —पाटीरं तव पटीयान् कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम् भामि० १।१२ 2. खेत 3. रोंगा 4. बादल 5. चलनी ।

पाठः [पठ्+घञ्] 1. प्रपठन, सस्वर पाठ, आवृत्ति करना 2. पढ़ना, वाचन, अध्ययन 3. वेदाध्ययन, वेद-पाठ, ब्रह्मयज्ञ, ब्राह्मणों के द्वारा पांच दैनिक यज्ञों में से एक 4. पुस्तक का मूलपाठ, स्वाध्याय, पाठभेद —अत्र गंधवदगंधवादनः इति आसंतुकः पाठः, प्राचीनपा-पाठस्तु सुगंधिगंधवादनः इति वृत्तिकारादयः मल्लि० कु० ६।७ पर । सम० अन्तरम् दूसरा पाठ, पाठभेद, —छेदः विराम, यति,—दोषः दूषित पाठ, पाठ की अशुद्धियां, निह्नवः किसी संदर्भ का पाठ निर्धारित करना, मंजरी, शालिनी मैना, सारिका, डाक्टर विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामंदिर ।

पाठकः [पठ्+णिच्+ण्वुल्] 1. अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु 2. पुराण या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का सार्वजनिक पाठ करने वाला 3. आध्यात्मिक गुरु 4. छात्र, विद्यार्थी, विद्वान् ।

पाठनम् [पठ्+णिच्+ल्युट्] अध्यापन, व्याख्यान देना ।

पाठित (भू० क० कृ०) [पठ्+णिच्+क्त] पढ़ाया हुआ, शिक्षा दिया हुआ ।

पाठिन् (वि०) [पठ्+णिनि, पाठ+इनि वा] 1. जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो 2. जानकार, परिचित ।

पाठीनः [पठ्+ईनण्] 1. पुराना या अन्य धार्मिक ग्रंथों की कथा करने वाला 2. एक प्रकार की मछली —विवृत पाठीन परिहृतं पयः किं० ४।५ ।

पाणः [पण्+घञ्] 1. व्यापार, व्यवसाय 2. व्यापारी 3. खेल 4. खेल पर लगा या गया दांव 5. करार, 6. प्रशंसा 7. हाथ ।

पाणिः [पण्+इण्] हाथ -दानेन पाणिर्न तु कंकणेन (विभाति) —भर्तृ० २।३१, णिः (स्त्री०) मंडी (पाणौ कृ हाथ में थामना, विवाह करना,—पाणीकरणम् विवाह) । सम० गृहीती, हाथ से ग्रहण की गई, ब्याही गई, पत्नी,—ग्रहः,—ग्रहणम् विवाह करना, शादी, रघु० ७।२९, ८।७, कु० ७।४,—ग्रहीतृ (पुं०) —ग्राहः दूल्हा, पति ध्यायन्यपिष्टं यत्किंचित् पाणिग्राह्यस्य चेतसा मनु० ९।२१, बाल्ये पितुर्वशे-तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने —५।१४८,—घः 1. ढोल बजाने वाला 2. कारीगर, शिल्पकार,—घातः हाथ का प्रहार, घूंसा, जः नाखून —तस्याः पाटलपाणि-जालिनमुरः—गीत० १२,—तलम् हथेली,—धर्मः विवाह की विधि,—पीडनम् विवाह,—पाणिपीडनमहं दमयन्त्याः कामयेमहि महीमिहिकाशो—नै० ५।९९ पाणिपीडनविधेरनन्तरम् कु० ८।१, प्रणयिनी पत्नी बंधः हाथों का मिलना' विवाह,—भुज् (पुं०) वट का वृक्ष, गूलर का वृक्ष,—मुक्तम् हाथ के फेंक कर मारा जाने वाला आयुध, अस्त्र, यह (पुं०), रुहः अंगुली का नाखून,—वादः 1. तालियां बजाना 2. ढोल बजाना, सूत्रं रस्सी ।

पाणिनिः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम, यह अन्तःस्फूर्त मुनि समझे जाते हैं, कहते हैं कि व्याकरण का ज्ञान इन्होंने शिव से प्राप्त किया था । 'अष्टा-ध्यायी' नाम का व्याकरण इन्होंने ही रचा ।

पाणिनीय (वि०) [पाणिनि+छ] पाणिनि से संबंध रखने वाला, या उसके द्वारा बनाया गया शि० १९।७५, यः पाणिनि का अनुयायी -अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः, यम् पाणिनि द्वारा प्रणीत व्याकरण ।

पाणिधम—य (वि०) [पाणि+धमा (धे)+खश्, मुम्] हाथ से धौंकने वाला, हाथ से फूंकने वाला, हाथ से पीने वाला ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पांडर (वि०) [पाण्डर+अच्] 1. धवल, पीतधवल, सफ़ेद 2. गेरु 3. चमेली का फूल।

पांडव [पाण्डोः अपत्यम् पाण्डु+अण्] पाण्डु का पुत्र या सन्तान, पांडु के पाँचों पुत्रों में से कोई भी एक युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—हंसाः संपतिपांडवा इन दनादशातवर्षा गना:—मृच्छ० ५।६१ सम०—आभीलः कृष्ण का नाम,—श्रेष्ठः युधिष्ठिर का नाम।

पांडवीय (वि०) [पांडव+छ] पांडवों से संबंध रखने वाला।

पांडवेय=पांडव।

पांडित्यम् [पंडित+ष्यञ्] 1. विद्वत्ता, गहन अधिगम—विद्या तदेव सम्यक् पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः—मा० १।७ 2. चतुराई कुशलता, दक्षता, तीक्ष्णता नस्यानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः भामि० १।२।

पांडु वि०) [पण्ड्+कु, नि० दीर्घः] पीत-धवल, सफ़ेद सा, पीला पीताभधिकलक्ष्यः पांडुच्छायः दृष्टा परिदुर्बलः—उत्तर० ३।२२, **दुः** 1. पीत-धवल, या पीताभ श्वेत रंग 2. पीलिया, यरकान 3. सफ़ेद हाथी 4. पांडवों के पिता का नाम [विचित्रवीर्य की विधवा अंबिका से व्यास के द्वारा पांडु का जन्म हुआ था। पांडु रंग क्यों पैदा होने के कारण उसका नाम पांडु पड़ा, क्योंकि श्वास के साथ सहवास के अवसर पर उसकी माता पांडु रंग की हो गई थी—(यस्मात्पांडुत्वमापन्ना विच्छाये प्रेक्ष्य मामिह, तस्मात्देष गुणस्तै वै पाण्डुरेव भविष्यति—महा०),—किसी शाप के कारण पांडु को स्त्रियों से संतानोत्पत्ति करने से रोक दिया गया था। इसीलिए उसने कुन्ती को दुर्वासाऋषि से प्राप्त मंत्र का उपयोग करके संतान प्राप्त करने की अनुमति दे दी थी, फलतः कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को जन्म दिया, इसी मंत्र के उपयोग से माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया। एक दिन पांडु अपने शाप को भूलकर जिसके कारण वह सावधान था, उसने माद्री का आलिंगन करने का दुस्साहस किया, परन्तु वह उसके भुजपाश में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया]। सम० आमयः पीलिया यरकान, **-कंबलः** 1. सफ़ेद कंबल 2. सफ़ेद कालीन 3. राजकीय हाथी की झूल **-पुत्रः** पांडु का पुत्र, पांडवों में से कोई एक, **मृत्तिका**, सफ़ेद या पीली मिट्टी, **-रागः** सफ़ेदी, पीलापन, **-लेखः** खड़िया से बनाई रूपरेखा, भूमि या किसी फलक पर खड़िया से बनाई गई कोई रूपरेखा —पांडुलेखेन फलके भूमौ वा प्रथमं लिखेत्, स्पष्टार्थकं तु संशोध्य पश्चात्तत्र निवेशयेत् शारदा०, **-लोहिता** हरिद्रा का विशेषण —**सोपाकः** एक वर्ण संकर जाति—चांडालात्पांडुसोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान् —मनु० १०।३७।

पांडुर (वि०) [पाण्डुवर्णोऽस्त्यस्मिन् पांडु+र] सफ़ेद सा, पीत-धवल, पीताभ-श्वेत, पीला—छवि: पांडुरा —रघु० ३।१०, रघु० १४।२६, कु० ३।३३, **रम्** श्वेत कुष्ठ। सम० **इक्षुः** एक प्रकार का ईख, **पौण्ड्रा**।

पांडुरिमन् (पुं०) [पांडुर+इमनिच्] पीलापन, सफ़ेदी या पीला रंग।

पांड्यः (पु०, ब० व०) [पांडु देशः, अभिजनोऽस्य राजा वा—पांडु+ष्यङ] एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम—तस्यामेव रघो. पांड्याः प्रतापं न विषेहिरे—रघु० ४।४०, **-ष्यः** उस देश का राजा रघु० ६।६०।

पात (वि०) [पा+क्त] रक्षित, देखभाल किया गया, संधारित **-तः** [पत्+घञ्] 1. उड़ना, उड़ान 2. उतरना, अवतरण करना, उतार 3. नीचे गिरना, पतन, पराजय (आलं० भी) दृष्ट०, गृह०, **चरणपातः** पैरों में गिरना—रघु० ११।१२, **पातोत्पाती** उदय और अस्त 4. नाश, विघटन, बर्बादी—कु० ३।४४ 5. आघात प्रहार जैसा कि 'वज्रपात' में 6. बहना, छूटना, निकलना—असृक्पातैः मनु० ८।४४ 7. डालना फेंकना, निशाना बनाना—दृष्टिः रघु० १३।१८, 8. आक्रमण, हमला 9. घटना, होना, घटित होना 10. दोष, त्रुटि 11. राहु का विशेषण।

पातकः, कम् [पत्+णिच्+ण्वुल्] पाप, जघं (हिन्दू-धर्मशास्त्र में पांच महापातक गिनाये गये हैं—ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः, महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैस्सह—मनु० ११।५४।

पातञ्जिः [पतञ्जि+इञ्] 1. शनि 2. यम 3. कर्ण और सुग्रीव का विशेषण।

पातंजल (वि०) [स्त्री० -ली] [पतंजलि+अण्] पतंजलि द्वारा रचित, -पातंजले महाभाष्ये कृतभूरि परिश्रमः - परिभाषेन्दुशेखर, **-लम्** पतंजलि द्वारा प्रणीत योगदर्शन, (ऐसा विश्वास किया जाता है कि महाभाष्यकार पतंजलि ही योगदर्शन के प्रणेता थे, परन्तु यह विचार अब ठीक नहीं है)।

पातनम् [पत्+णिच्+ल्युट्] 1. गिराने का कारण बनना, गिराना नीचे लाना या फेंक देना, पछाड़ देना, नीचे पटक देना 2. फेंकना, डालना 3. हीन करना, नीचा दिखाना। (विधि० —उन सभी शब्दों के अनुसार जिनके साथ 'पातन' शब्द प्रयुक्त होता है, 'पातने' के मिलने अर्थ हैं -उदा० दण्ड्य पातनम्—उड़ा गिराना' दण्ड देना, गर्भस्य पातनम्—गर्भ का गिराना, गर्भपात कराना)।

पातालम् [पाताल्यामिन्नवर्षेभ्य पत्+आलच्] 1. पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से अंतिम लोक—नागलोक,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह सात लोक ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल 2. निम्नप्रदेश, या नीचे का लोक—रघु० १५।८४, १।८० 3. गड्ढा, छिद्र 4. बड़वानल। सम० -गंगा नीचे के लोक में बहने वाली गंगा,—ओकस् (पुं०)—निलयः, निवासः वासिन् (पुं०) 1. राक्षस 2. नाग या सर्पदेवता।

पातालिकः [पाताल+ठन्] गंगा में रहने वाला सूंस, शिशुमार।

पातित (भू० क० कृ०) [पत्+णिच्+क्त] 1. डाला गया, फेंका गया नीचे गिराया गया, पटक दिया गया 2. पराजित किया गया, नीचा दिखाया गया 3. नीचा किया गया।

पातित्यम् [पतित+ष्यञ्] पद या जाति का पतन, परच्युति, अधोगति।

पातिन् (वि०) (स्त्री० नी) [पत्+णिनि] 1. जाने वाला, अवतरण करनेवाला, उतरने वाला 2. पतनशील, डूबनेवाला 3. गिरने वाला 4. गिरने वाला, फेंकने वाला 5. उड़ेलने वाला, छोड़ने वाला, निकालने वाला।

पातिली [पाति+खार्थे पतिपृथ्वी लोपश्चेत्र पाति+ली पृषो०]-ङीष्] 1. जाल, फंदा 2. छोटा मिट्टी का बर्तन, हांडी।

पातुक (वि०) (स्त्री० -की) [पत्+उकञ्] 1. पतनशील, 2. गिरने की आदत वाला,—कः पहाड़ का ढलान, चट्टान 2. शिशुमार, सूंस।

पात्रम् [पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा+ष्ट्रन्] 1. पीने का बर्तन, प्याला, गिलास 2. कोई भी बर्तन पात्रे निधायाघ्र्यम् रघु० ५।१२, १२ 3. किसी वस्तु का आधार, प्राप्तकर्ता पंच० २।९७ 4. जलाशय 5. योग्य व्यक्ति, दान पाने के योग्य, दानपात्र —विलम्ब्य पात्रे व्यय —भर्तृ० २।८९, भग० १७।२२, याज्ञ० १।२०१, रघु० ११।८६ 6. अभिनेता, नाटक का पात्र—तत्प्रविशन्ति प्रधानीकृतां पत्रः— शा० १, उत्क्षिप्तो पात्रवर्गः—विक्रम० १, नाटक ना पात्रे 7. राजा का मंत्री 8. नहर या नदी का घाट 9. योग्यता, औचित्य 10. आदेश, हुक्म। सम० -उपकरणम् बर्तनों का प्रकार की सजावट—पालः 1. चपरासी, डांड 2. तराजू की डंडी—संस्कारः 1. बर्तनों को मांज धोकर साफ करना 2. नदी का प्रवाह।

पात्रिक (वि०) (स्त्री०-की) [पात्र+ठन्] 1. किसी बर्तन की नाप, आढक 2. योग्य, यथोचित, समुचित, कम् बर्तन, प्याला, तश्तरी।

पात्रिय, पात्र्य (वि०) [पात्रमर्हति -पात्र+घ, यत् वा] भोजन में भाग लेने के योग्य।

पात्रीयम् [पात्र+छ] शतंजीय पात्र सुरा आदि।

पात्रोरः,-रम् [पात्रैर्याति-पात्री+रा+क] आहुति।

पात्रे बहुलः, पात्रेसमितः [पात्रे भोजनसमये एव बहुलः संगतो दृश्यते तु कार्ये—अलुक् समास] 1. केवल भोजन का साथी, परान्नभोजी 2. धोखेबाज, कपटी, पाखंडी।

पाथः [पीयतेऽदः, पा+थ] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. जल।

पाथस् (नपुं०) [पा+असुन्, थुक् च] 1. जल, गंगा० २६ 2. हवा, वायु 3. आहार। सम० जम् 1. कमल 2. शंख, -दः, धरः बादल, धिः, निधिः, पतिः समुद्र, नैः १३।२०।

पाथेयम् [पथिन्+ढक्,] भोज्य सामग्री जिसे यात्री राह में खाने के लिए साथ ले जाता है, मार्गव्यय जहाज पाथेयमिवेन्द्रसूनुः किं० ३।३७, बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः—मेघ० ११, विक्रम० ४।१५ 2. कन्याराशि।

पाद: [पद्+घञ्] 1. पैर (चाहे मनुष्य का हो या किसी जानवर का) तयोर्जगृहतुः पादान् रघु० १।५७, पादयोर्निपत्य, पादपतितः (समास के अन्त में 'पाद' को बदल कर 'पाद्' हो जाता है, यदि इससे पूर्व 'सु' हो या संख्यावाचक शब्द, उदा० सुपाद्, द्विपाद् त्रिपाद् आदि; जिस समय पूर्वपद तुलना-मान के रूप में प्रयुक्त किया जाय, उस समय भी 'पाद्' हो जाता है यदि पूर्वपद 'हस्ति' से भिन्न हो दे० पा० ५।४।१३८-४०, उदा० व्याघ्रपाद्; अतिशय आदर तथा सम्मान व्यक्त करने के लिए, कर्तृ० का बहुवचनान्त रूप व्यक्तियों की उपाधियों या नामों के साथ जोड़ दिया जाता है मृच्यंतु लवस्य कालिशता तातपादाः—उत्तर० ६, १।२९ देवपादानां तास्माभिः प्रयोजनम् पंच० १, इसी प्रकार- एवमाराध्यपादा आज्ञापयंति प्रबो० १, एवं—कुमारिपादाः आदि 2. प्रकाश की किरण -बालरव्यपि स्पृशः पादाः पतंत्युपरि भूभृताम् पंच० १।३२८, शि० ९।३४, रघु० १६।५३, (यहां शब्द का अर्थ 'पैर' भी है) 3. पैर या पाया (जड़ पदार्थों का, खाट आदि का) 4. वृक्ष की जड़ या पैर जैसा कि 'पादप' में 5. गिरिपाद, तलहटी (पादाः प्रस्थतपर्वताः) मेघ० १९, शृं० ६।१६ 6. चौथाई, चौथाभाग, जैसा कि 'सपादोरुकः' में (सवा रुपया)- मनु० ८।२४१, याज्ञ० २।१७४ 7. श्लोक का एक चरण, पंक्ति 8. किसी पुस्तक के अध्याय का चौथा भाग जैसा कि ब्रह्मसूत्र का या पाणिनि की अष्टाध्यायी का 9. भाग 10. स्तंभ, खंभा। सम०—अग्रम् पैर का आगे का भाग—रत्नम् ११।,—अंकः पदचिह्न,—अंगदम्, -दी पैर का आभूषण, नूपुर, पायल, -अंगुष्ठः पैर का अंगूठा,—अंतः पैरों का अन्तिम भाग, —अंतरम् एक पग के बीच का अन्तराल, एक पग की दूरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अव्य०—रे) 1. एक पद की दूरी के बाद 2. निकट, सटा हुआ, **अम्बु** (नपुं०) छाछ जिसमें एक चौथाई पानी हो,—**अंभस्** (नपुं०) जल जिसमें श्रद्धेय व्यक्तियों के चरण धोये हों,—**अरविंदम्**, **कमलम्**,—**पंकजम्**, —**पद्मम्** कमल जैसा पैर, कमलचरण, —**अलिंदी** किश्ती, नाव,—**अवसेचनम्** 1. चरण धोना 2. पैर धोने के लिए पानी, **अवघातः** ठोकर, **आतत** (वि०) भूखा-प्यासा, पैरों में पड़ा हुआ कु० ३।८,—**आघातः** कुएँ से जल निकालने के लिए पैरों से चलाया जाने वाला यंत्र, रहट, **आसनम्** पैर रखने का पीढ़ा, —**आरुकालनम्** पैरों से रौंदना, कुचलना, रुक २ कर आगे बढ़ने की चेष्टा,—**आहत** (वि०) ठोकर खाया हुआ, ठुकराया हुआ,—**उदकम्**—**जलम्** 1. पैर धोने के लिए पानी 2. वह पानी जिसमें पुण्यात्मा, तथा सम्मानित व्यक्तियों ने पैर धोये हैं और इसीलिए जो पवित्र समझा जाता है,—**उदरः** सांप,—**कटकः**, —**कम्**, **कोलिका** नूपुर, पायल, **क्षेपः** कदम, पग —**ग्रन्थिः** टखना, —**ग्रहणम्** (आदरयुक्त अभिवादन के रूप में) पैर पकड़ना, कु० ७।२७,—**चतुरः**, —**चारकः** 1. मिथ्याभिन्दक 2. बकरा 3. रेवीला तट 4. ओला, —**चारः** पैदल चलना, टहलना - यदि चेद्विचरेत् पादचारेण गौरी—मेघ० ६०, 'यदि गौरी पैदल चले' रघु० ११।१० **चारिन्** (वि०) पैदल चलने वाला, पैदल योद्धा, (पुं०) 1. पैरों वाला 2. पैदल सैनिक,—**जः** शूद्र, **जाहम्** पपोटा, टखने की हड्डी,—**तलम्** पैर का तलवा,—**त्रः**,—**त्रं**, **त्राणम्** जूता, बूट,—**पः** वृक्ष - निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते—हि० १।६१, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्—श० ५।५, **खंडः**,—**खम्** बाल, दुर्बल का हथियार,—**गालिका** नूपुर, पाजेब, **गोः** पैंकड़ा, पशुओं के पैरों को बाँधने की रस्सी (**शी**) 1. हथकड़ी 2. चटाई 3. लता - **ढीढः**,—**ठम्** पैर रखने का पीढ़ा, —रघु० १७।२८, कु० ३।११, **पूरणम्** 1. पंक्ति पूरी करना 2. पादपूरक -तु पादपूरणे भेदे समुच्चयेऽवधारणे विश्व०,— **प्रक्षालनम्** पैर धोना,—**प्रतिष्ठानम्** पैर रखने का पीढ़ा, **प्रहारः** ठोकर, —**बंधनम्** बेड़ी, मुद्रा पदचिह्न,—**मूलम्** 1. पपोटा 2. पैर का तलवा 3. एड़ी 4. पहाड़ की तलहटी 5. किसी से बात करने की विनम्र रीति - देवपादमूलमागतोहम्—का० ८, - **रसः** (नपुं०) पैरों की धूल,—**रक्षुः** (स्त्री०) हाथी के पैर बाँधने की चमड़े की रस्सी, **रथी** जूता, बूट,—**रोहः**, —**रोहिषः** बड़ का पेड़,—**वंदनम्** चरणवंदना, चरणों में प्रणाम,—**विरजस्** (नपुं०) जूता, **वृद्धा** (पुं०) देवता,—**शाखा** पैर की अंगुली,—**शैलः** गिरिपाद, पहाड़ की तलहटी में बिखरा पहाड़ी, - **शोचः** पैर की सूजन, **शौचम्** पैर धोकर साफ करना, पैर धोना,—**सेवनम्**,—**सेवा** 1. पैर छूकर सम्मान प्रदर्शित करना 2. सेवा,— **स्फोटः** 'बवाई फटना' विपादिका, सरदी से पैर फटना, **हत** (वि०) युक्तराधा हुआ।

पादकिकः [पदवी+ठक्] यात्री, पथिक।

पादात (पुं०) [पादेभ्यो भवति-पाद+अत्+विवप्] पैदल सिपाही, प्यादा।

पादातः [पदातीनां समूहः—पदाति+अण्] पैदल-सिपाही - शि० १८।४,— **तम्** पैदल-सेना।

पादातिः, **पादातिकः** [पाद+अत्+इन्, पादेन अवः रक्षणम् पादाक+ठक्] पैदल सिपाही।

पादिक (वि०) (स्त्री०—की) [पाद+ठक्] चतुर्थांश, चौथा भाग - पादिकं शतम्—२५ प्रतिशत।

पादिन् (वि०) [पाद+इनि] 1. सपाद, पैरों वाला 2. श्लोक की भाँति चार चरणों से युक्त 4. चौथे भाग को लेने वाला, या चतुर्थांश का अधिकारी।

पादिनः (पुं०) चौथा भाग, चतुर्थांश।

पादुकः (वि०) (स्त्री० का—की) [पद+उकञ्] पैदल चलने वाला,— **का** खड़ाऊँ, जूता- यज्ञ भरत गृहीत्वा पादुके त्वं मदीये - भट्टि० ३।५६,— रघु० १२।१७। सम०— **कारः** मोची, जूता बनाने वाला।

पादू (स्त्री०) [पद्+ऊङ्, णिच्] जूता,— **कृत्** (पुं०) जूता बनाने वाला।

पाद्य (वि०) [पाद+यत्] पैरों से संबंध रखने वाला, —**द्यम्** पैर धोने के लिए जल—पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

पानम् [पा+ल्युट्] 1. पीना, चढ़ा जाना, (ओष्ठ का) चुम्बन, पयःपानं देहि मुखकमलमधुपानम्— गीत० १० 2. सुरापान करना—मनु० ७।५०, ९।१३, १२। ४५ 3. पान के योग्य, पेय पदार्थ—मनु० ३।२७ 4. पान-पात्र 5. तेज करना, पैनाना 6. बचाना, रक्षा, —**नः** शराब खींचने वाला, कलवार। सम०— **अगारः** —**आगारः**, —**रम्** मदिरालय,— **अत्ययः** अत्यधिक पीना, **गोष्ठिका**,— **गोष्ठी** 1. शराबियों की मंडली 2. शराब की दुकान, मदिरालय,—**प** (वि०) सुरापान करने वाला,—**पात्रम्** **भाजनम्**,— **भाण्डम्** पान-पात्र, प्याला,—**भूः**,—**भूमिः** **भूमी** (स्त्री०) शराब पीने का स्थान रघु० ७।४९, १९।११,—**मण्डलम्** शराबियों की मंडली, **रत** (वि०) सुरापान की लतवाला, —**वणिज्** (पुं०) शराब-विक्रेता,— **विभ्रमः** नशा, —**शौंड** पियक्कड़, अत्यधिक पीने वाला।

पानकम् [पान+कन्] पानीय, पेय, घूंट।

पानिकः [पान+ठक्] शराब-विक्रेता, कलाल।

पानिलम् [पान+इलच्] पान-पात्र, प्याला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पानीयम् [पा ! अनीयर्] 1. जल 2. पेय, चूंट, पानीय-पीने के योग्य शर्बत आदि। सम० **नकुलः** ऊद-बिलाव,—**वणिका** रेत, बालू, —**शाला,—शालिका** प्याऊ, जहां यात्रियों को पानी पिलाया जाय -तु० प्रपा।

पान्थः [पन्थानं नित्यं गच्छति -पथिन्+अण्, भकारादेशः] यात्री, बटोही -रे पान्थ विह्वलमना न मनागपि स्याः भामि० १।३७।

पाप (वि०) [पाति रक्षति आत्मानम् अस्मात् पा+पप्] 1. अनिष्टकर, पापमय, दुष्ट, दुर्वृत्त पाप कर्म च यत् परंरपि कृते तत्सम्बन्धं सम्भाव्यते मृच्छ० १।३६, मनु० ६।९ 2. उपद्रवकारी, विनाशक, अभिशप्त पापेन मृत्युना गृहीतोऽस्मि मालवि० ४ 3. नीच, अधम, पतित मनु० ३।१५२, ४।१७१ 4. अशुभ, प्रहेली, अनिष्ट सूचक (पाप ग्रह आदि)—**पम्** बुराई, बुरी अवस्था, दुर्भाग्य—पापं पापाः कथयथ कर्म कीदृग्गतोः पितुर्मे वेणी० ३।५, शान्तम् पापम् —'पाप से बचाये भगवान्' (प्रायः नाटकों में प्रयुक्त) 2. बुराई, जुर्म, दुर्व्यसन, दोष -अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते -मृच्छ० ९।३७, मनु० ११।२३१, ४।१८१, रघु० १२।९, —**पः** पाजी, पापी, दुष्ट, दुराचारी। सम० -**अधम** (वि०) अत्यंत दुष्ट, अधम, **अपनुत्तिः** (स्त्री०) प्रायश्चित्त, **अहः** दुर्भाग्यपूर्ण दिवस, **-आचार** (वि०) पापमय आचरण वाला, पापपूर्ण जीवन बिताने वाला, दुर्व्यसनी, दुष्ट, —**आत्मन्** दुष्टमना, पापपूर्ण, दुष्ट- (पुं०) पापी, **आशय,—चेतस्** (वि०) दुष्ट इरादे वाला, दुष्ट-हृदय, **कर, -कारिन्,—कृत्** (वि०) पापपूर्ण, पापी, अधम, **—क्षयः** पाप का दूर करना, पाप का नाश, —**ग्रहः** दुष्ट ग्रह, प्रहेली (जैसे मंगल, शनि, राहु या केतु), **-घ्न** (वि०) पाप को दूर करने वाला, प्रायश्चित्त कारी, —**चेतस्** (वि०) 1. पापी, 2. राक्षस, **दृष्टि** (वि०) बुरी निगाह वाला, खोटी आँख वाला, **धी** (वि०) दुष्ट हृदय, दुर्बुद्धि, -नापितः चालाक या दुष्ट नाई, —**नाशन** (वि०) पापनाशक या प्रायश्चित्तकारी, —**पतिः** जार, उपपति, **पुरुषः** दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य, **फल** (वि०) अनिष्टकर, अशुभ, —**बुद्धि** —**भाव** —**मति** (वि०) दुष्टहृदय, दुष्ट, दुश्चरित्र, —**भाज्** (वि०) पापपूर्ण, पापी - कु० ५।८३, —**मुक्त** (वि०) पाप से छूटा हुआ, पवित्र,—**मोचनम्,** **विनाशनम्** पाप का नाश, **योनि** (वि०) नीच जाति में उत्पन्न (स्त्री —निः) नीच कुल में जन्म, **रोगः** 1. कोई बुरा रोग 2. ऑतला, चेचक, —**शील** (वि०) दुष्ट कार्यों में प्रवृत्त होने वाला, दुष्टप्रकृति, दुष्टहृदय, **संकल्प** (वि०) दुष्टहृदय, दुरात्मा (स्वः) दुष्ट विचार।

पापर्द्धिः [पापानामृद्धिर्यत्र—ब० स०] शिकार, आखेट।

पापल (वि०) [पाप+ला+क] पाप कमाने वाला, पाप कर।

पापिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पाप+इनि] पापपूर्ण, दुष्ट, बुरा - (पुं०) पाप करने वाला।

पापिष्ठ (वि०) [अतिशयेन पापी—पाप+इष्ठन्] अत्यंत पापपूर्ण, अधम, दुष्टतम (पाप की अतिशयावस्था)।

पापीयस् (वि०) (स्त्री० सी) [पाप+ईयसुन्, अयमनयो रतिशयेन पापी, तुलना-अवस्था] अपेक्षाकृत पापी, अपेक्षाकृत दुष्ट या अनिष्टकर।

पाप्मन् (पुं०) [पा+मनिन्, पुगागमः] पाप, जुर्म, दुष्टता, अपराध—मया गृहीतनामानः स्मृयन्त इव पाप्मना-उत्तर० १।४८।७।२०, मा० ५।२६, मनु० ६।८५।

पाम्न् (पुं०) [पा+मनिन्] एक प्रकार का चर्मरोग, खुजली। सम०—**घ्नः** गंधक।

पामन (वि०) [पामन्+न, नलोपः] खुजली रोग से ग्रस्त।

पामर (वि०) (स्त्री०— रा,—री) [पामन्+र] 1. खुजली रोग से ग्रस्त, खुजली वाला अनिष्टकर, दुष्ट 3. नीच, गंवार, अधम 4. मूर्ख, जड़ 5. निर्धन, असहाय—उ० ६० ५, **रः** मूढ़, जड़बुद्धि —बलमेति चेत्पामरः -भामि० १।६२ 2. दुष्ट या नीच पुरुष 3. अत्यंत नीच कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति।

पाम्ना [पामन् डीप्निषेधः, नलोपः, दीर्घः] दे० ऊपर 'पामन्'। सम०—**अरिः** गंधक।

पायना [पा—णिच्+युच्+टाप्] 1. पीलाना 2. सींचना, तर करना 3. तेज करना, पैनाना।

पायस (वि०) (स्त्री०—सी) [पयस+अण्] दूध या पानी से बना हुआ **सः, सम** 1. खीर, दूध में उबले हुए चावल मनु० ३।२७१, ५।७, याज्ञ० १।१७३, 2. तारपीन,—**सम्** दूध।

पायिकः (पुं०) पैदल सिपाही।

पायुः [पा+डुण्, युक्] गुदा, मलद्वार —पायूपस्थम् मनु० २।९०, ९१, याज्ञ० ३।९२।

पार्यम् [पा+यत्, नि० पत्वम्, गुणागमः] 1. जल 2. पेय पदार्थ 3. प्रस्थान 4. परिमाण।

पारः-रम् [परं तीरं परमेव अण्, पृ+घञ् वा] 1. या नदी का परला सामने वाला दूसरा किनारा —पारं दुःखोदधेर्गन्तुं तर यावन्त भिषक्—शा० ३।१, विरहजलधेः पारमासादयिष्ये पदा० १३, हि० १। २०४ 2. किसी भी वस्तु का विरोधी पक्ष कु० २।५८ 3. किसी वस्तु का अन्तिम किनारा, अन्तिम सीमा—वेणी० ३।३५ 4. किसी वस्तु का अधिकतम परिमाण, समाप्ति—स पूर्वजन्मांतरदृष्टपारः स्मरन्निव —रघु० १८।५०, (**पारं गम्, इ, या** 1. पार जाना, ऊपर चढ़ना 2. निष्पन्न करना, पूरा करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसा कि 'प्रतिज्ञायाः पारं गतः', पूर्ण रूप से आत्मसात् करना, प्रवीण होना- -सकलशास्त्र पारंगतः,--रः पारा (पार 'दूसरी ओर' 'परे' कई वार समास में प्रयुक्त होता है --उदा० पारेगंगम्, पारेसमुद्रम् - गंगा के पार या समुद्र के पार)। सम०—अपारम् – अवारम् दोनों तट, पास और दूर का (रः) समुद्र, सागर -शोकपारावारमुत्तर्तुमशक्नुवती दश० ४, भामि० ४।११,—अयनम् 1. पार जाना 2. पूरा पढ़ना, अनुशीलन, आद्यापान्त अध्ययन 3. समग्रता, सम्पूर्णता, या किसी वस्तु की समष्टि जैसा कि ब्रह्मपारायण या मंत्रपारायण' में, - अयणी 1. सरस्वती देवी 2. चिन्तन, मनन 3. कृत्य, कर्म 4. प्रकाश, - काम (वि०) दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक, ग (वि०) 1. पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला 2. जो पार पहुंच चुका है, जिसने किसी ग्रंथ का पूरा अध्ययन कर लिया है, पूर्णपरिचित, पूरा ज्ञाता (सह० के साथ, या समास में)—मनु० २।१४८, याज्ञ० १।१११ 3. प्रकाण्ड विद्वान्,- गत, गामिन् (वि०) जो तट के दूसरी ओर पहुंच गया है, -दर्शक (वि०) 1. सामने के तट को दिखलाने वाला 2. जिसके आर पार दिखाई दे, दृश्वन् (वि०) 1. दूरदर्शी, बुद्धिमान्, समझदार 2. जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है, जिसने किसी बात को पूर्ण रूप से जान लिया है—श्रुतिपारदृश्वा रघु० ५।२४।

पारक (वि०) (स्त्री० की) [पृ+ण्वुल्] 1. पार करने की योग्यता रखने वाला 2. आगे ले जाने वाला, बचाने वाला, सौंपने वाला 3. प्रसन्न करने वाला, संतुष्ट करने वाला।

पारक्य (वि०) [परस्मै हितम् -पर+ष्यञ्, कुक्] 1. पराया, दूसरे का 2. दूसरों के लिए उद्दिष्ट 3. विरोधी, शत्रुतापूर्ण, - कर्मन् परलोक साधन, पवित्र आचरण।

पारग्रामिक (वि०) (स्त्री० की) [परग्राम+ठक्] पराया, विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

पारज (पुं०) [पार् + शिच् + अंज] सोना, स्वर्ण।

पारजायिकः [परजायां गच्छति--परजाया +ठक्] व्यभिचारी पुरुष।

पारटोटः, - टः (पुं०) पत्थर, चट्टान।

पारण (वि०) [पृ+ल्युट्] 1. पार ले जाने वाला, उबारने वाला 2. बचाने वाला, उद्धार करने वाला,—णः 1. बादल 2 संतोष, -णम् 1. निष्पन्न करना, पूरा करना 2. पाठ करना, बांचना 3. व्रत (उपवास) के पश्चात् भोजन करना, व्रत खोलना कार्य चतुर्थी पारणम् विद्ध० १, २।३९, ५५, ७०, भोजन करना --कु० ५।२२. (अध्वव्यवहारकर्म--मल्लि०)।

पारतः [पारं तनोति पार +तन्+ड] पारा।

पारतंत्र्यम् [परतंत्र+ष्यञ्] पराधीनता, अधीनता, अनुसेवा।

पारत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [परत्र+ठक्] 1. परलोक संबन्धी 2. भावी जीवन के लिए उपयोगी।

पारत्र्यम् [परत्र + ष्यञ्] भावी जीवन में प्राप्त फल, परलोक फल मनु० २।२३६।

पारद [पारं ददाति पार+दा+क] पारा- सिद्धजनं पारदोऽव रसः भामि० १।८२।

पारदारिकः [परदारा +ठक्] व्यभिचारी, परदारगामी -याज्ञ० २।२९५।

परदार्य्य [परदार + ष्यञ्] व्यभिचार, परदारगमन - मनु० ११।५९, याज्ञ० ३।२३५।

पारदेशिक (वि०) (स्त्री० की) [परदेश+ठक्] विदेशी, बाहर के देश का, कः 1. विदेश का रहने वाला 2. यात्री।

पारदेश्य (वि०) (स्त्री० श्यी) [परदेश + ष्यञ्] 1. विदेश से संबंध रखने वाला, विदेशी, श्यः 1 अन्य देश का रहने वाला 2. यात्री।

पारभृत्य [इसका शुद्ध रूप संभवतः 'प्राभृत' है] उपहार, भेंट।

पारमहंस्यम् [परमहंस + ष्यञ्] सर्वोत्कृष्ट संन्यासवृत्ति, मनन। सम० चरि (अव्य०) इस प्रकार के संन्यासी से संबन्ध रखने वाला।

पारमार्थिक (वि०) (स्त्री०-की) [परमार्थ+ठक्] 1. 'परमार्थ' अर्थात् सर्वोपरि सत्य अथवा अध्यात्म ज्ञान से संबन्ध रखने वाला 2. वास्तविक, अवश्यक, यथार्थ में विद्यमान सत्ता विविधा पारमार्थिकी व्यवहारिकी प्रातीतिकी च प्रपञ्च 3. सच्चा का ध्यान रखने वाला, सत्यप्रेम न लोकः पारमार्थिकः पंच० १।३१२ 3. सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम।

पारमिक (वि०) (स्त्री०-की) [परम+ठक्] सर्वोपरि, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान।

पारमित (वि०) [पारमितः प्राप्तः-अलुक् स०। 1. दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ 2 पार पहुंचा हुआ, आर-पार गया गया हुआ 3. परमोत्कृष्ट।

पारमेष्ठ्यम् [परमेष्ठिन्+ष्यञ्] 1. सर्वोपरिता, उच्चतम पद 2. राजसिंहासन।

पारंपरीण (वि०) (स्त्री-णी) [परंपरा+खञ्] परंपरा प्राप्त, आनुवंशिक, वंशक्रमागत।

पारंपरीय (वि०) [परम्परा+छ] परम्पराप्राप्त, आनुवंशिक।

पारंपर्य्य [परम्परा+ष्यञ्] 1. आनुवंशिक क्रम, अविच्छिन्न क्रम, 2. परम्परा से प्राप्त शिक्षा, परम्परा 3. अन्तर्वर्तिता, मध्यस्थता। सम०—उपदेशः परंपरा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राप्त शिक्षा, परम्परा (इस परम्परा को पौराणिक लोग 'प्रमाण' मानते हैं)।

पारयिष्णु (वि०) [पार्+णिच्+इष्णुच्] 1. सुझानेवाला, तृप्तिकारक 2. किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ।

पारलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [परलोकाय हितम् पर लोक+ठक् द्विपदवृद्धिः] परलोक से संबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी,—धर्म एको मनुष्याणां सहायः पारलौकिके—महा०, ने ५।९२।

पारवतः [—पारयतीति(पार+आ+पत्+अच्)] कबूतर।

पारवश्यम् [परवश+ष्यञ्] परावलंबन, पराश्रयता, अधीनता।

पारशव (वि०) (स्त्री०—वी) [परशु+अण्] 1. लोहे का बना हुआ 2. कुठार से संबंध रखने वाला, —वः 1. लोहा 2. शूद्र स्त्री में उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र ये ब्राह्मणस्तु शूद्रासु कामादुत्पादयेयुस्ते सुतम्, स पारशवसंज्ञस्तान्पारशवः स्मृतः—मनु० ९।१७८ या परे शवात् ब्राह्मणस्यैव पुत्रः शूद्रापुत्रं पारशवं तमाहुः—महा० 3 दीमक, हरामी।

पारश्वधः, पारश्वधिकः [परश्वधः प्रहरणमस्य—अण्, परश्वध+ठक्] फरसा धारण करने वाला, कुठार धारी।

पारस (वि०) (स्त्री०—सी) [पारस्यदेशे भवः अण् बा० डीप्] पारसी फारस देश का रहने वाला।

पारसिकः 1. फारस देश 2. फारस देश का, पारसीक।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा।

पारसीकः [पृषो० साधुः] 1. फारस देश 2. फारस देश का घोड़ा, कः (पुं०, साधुः) फारस देश के रहने वाले—पारसीकास्तती जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना—रघु० ४।६।

पारस्त्रैणेयः [परस्त्री+ढक्, इनङ, उभय पदवृद्धिः] दोगला, हरामी (परस्त्री से उत्पन्न)।

पारहंस्य (वि०) [परहंस+ष्यञ्] उस संन्यासी से संबंध रखने वाला जिसने सब इन्द्रियों का दमन कर लिया है।

पारा [पार—अच्+टाप्] एक नदी का नाम—तदुत्तिष्ठ पारांसिधुसभेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशावः भा० ४।९।१।

पारापतः [पार+आ+पत्+अच्] कबूतर।

पारायणिकः [पारायण+ठक्] 1. व्याख्यानदाता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला 2. शिष्य, विद्यार्थी।

पाराशकः [पार+शक्+उण्] पत्थर, चट्टान।

पाराशतः [—पारयतीति, पृषो० गस्य वः] 1. कबूतर, फाख्ता, पेंडुकी-पाराशतः खरशिलाकणमात्रभोजी कामी भवत्यनुदिनं वद कोऽत्रहेतुः—पंचा० ३।१५८, मेघ० ३८ 2. बन्दर 3. पहाड़। सम०—अंघ्रिः, —पिच्छः एक प्रकार का कबूतर।

पारावारीण (वि०) [पारावार+ख] 1. दोनों छोर तक जाने वाला 2. पूर्ण रूप से जानकार।

पाराशरः, पाराशर्यः [पराशर+अण्, ञ्य वा] पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण।

पाराशरिः [पराशर+इञ्] 1. शुकदेव का विशेषण 2. व्यास का नाम।

पाराशरिन् (पुं०) [पाराशर+इनि] 1. साधु, संन्यासी 2. विशेषकर वह जो व्यास के शारीरक सूत्रों के अध्येता हों।

पारिकांक्षिन् (पुं०) [पारयति संसारात् परि ब्रह्मज्ञानम् तत्काङ्क्षति—पारि—कांक्ष्+णिनि] ध्यानमग्न या चिन्तनशील संत, संन्यासी जो भावात्मक समाधि का भक्त हो।

पारिक्षितः [परिक्षित्—अण्] जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित् का पुत्र।

पारिखेय (वि०) (स्त्री०—यी) [परिखा+ढक्] चारों ओर परिखा या खाई से घिरा हुआ।

पारिजातः, पारिजातकः [पारिजाय अलि इतिकारी समृद्धः यस्माज्जातः—पारिजात+कन्] 1. स्वर्ग के पांच वृक्षों में से एक (कहते हैं कि समुद्र मंथन से 'पारिजात' को उपलब्धि हुई, जिसे इन्द्र ने अपने नन्दन-कानन में लगाया, कृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे अपनी प्रिया सत्यभामा के बाग में लगाया)—कल्पद्रुमाणामिव पारिजातः—रघु० ६।६, १०।११, १७।७, 2. मूंगे का पेड़ 3. सुगन्ध।

पारिणाह्य (वि०) (स्त्री०—ह्यी) [परिणय+ष्यञ्] 1. विवाह से संबन्ध रखने वाला 2. विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ, ह्यम् 1. विवाह के अवसर पर स्त्री को मिली हुई सम्पत्ति—मातुः परिणाह्यं स्त्रियो विभजेरन्—वसिष्ठ 2. विवाह व्यवस्था।

पारित्र्या [परिनय+ष्यञ्] बालों को बांधने के लिए मोतियों की लड़ी।

पारितोषिक (वि०) (स्त्री०—की) [परितोष+ठक्] सुखकर, तृप्तिकर, सान्त्वनाप्रद, —कम् उपहार, पुरस्कार—गृह्यतां पारितोषिकमिदमङ्गुलीयकम्—मृच्छ० ५।

पारिप्लवजिकः [परितः प्लवजा परिप्लवजा+ठक्] झंडा बरदार, झंडा ले चलने वाला।

पारिभद्रः [—परिभद्र+अण्] शिव, केसरी।

पारिपंथिकः [परिपंथ+ठक्] लुटेरा, डाकू।

पारिपाट्यम् [परिपाटी+ष्यञ्] 1. ढंग, प्रणाली, रीति (परिपाटी) 2. नियमितता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारिपार्श्वम् | पारिपार्श्व+अण्] अनुचरवर्ग, सेवक, अनुयायी ।

पारिपार्श्वकः, पारिपार्श्विकः [पारिपार्श्व+कन्, परि-पार्श्व+ठक्] 1. सेवक, टहलुआ 2. नाटक में सूत्र-धार का सहायक, नान्दीपाठ के अवसर एक अन्तर्वादी प्रविश्य पारिपार्श्वकः, तत्किमिति पारिपार्श्विकं नारंभयसि कुशीलवैः सह संगीतम् वेणी० १ ।

पारिपार्श्विका [पारिपार्श्विका+टाप्] दासी, सेविका, निजी नौकरानी ।

पारिप्लव (वि०) [परिप्लव+अण्] 1. इधर उधर घूमने वाला, डांवाडोल, चंचल, अस्थिर, कम्पायमान —नवेद पारिप्लवनेत्रया नृपः रघु० ३।११ 2. तैरना, बहना रघु० १३।३०, १६।६१ 3. क्षुब्ध, उद्विग्न, परेशान, घबराया हुआ—उत्तर० ४।२२,—वः नाव, बम् बेचैनी, विकलता ।

पारिप्लाव्यः [परिप्लव+ष्यञ्] हंस **व्यम्** 1. परेशानी, बेचैनी, क्षोभ 2. कंपकंपी, थरथराहट ।

पारिबर्हः [परिबर्ह+अण्] वैवाहिक उपहार ।

पारिभद्रः [परिभद्र+अण्] 1. मूंगे का वृक्ष 2. देवदारु वृक्ष 3. सरल वृक्ष 4. नीम का पेड़ ।

पारिभाव्यम् [परिभू+ष्यञ्] जमानत, प्रतिभूति, जमानत के रूप में रक्खी गई वस्तु ।

पारिभाषिक (वि०) (स्त्री०-की) [परिभाषा+ठक्] 1. चालू, सामान्य प्रचलित 2. (शब्द आदि) तकनीकी, किसी विशेषार्थ का संकेतक ।

पारिमाण्डल्यम् [परिमण्डल+ष्यञ्, अण्, सूर्य की किरणों में विद्यमान रजकण भाषा० १५ ।

पारिमुखिक (वि०) (स्त्री०-की) [परिमुख+ठक्] मुंह के सामने का, निकटवर्ती, पास का ।

पारिमुख्यम् [परिमुख+ष्यञ्] उपस्थिति, सभा में होना ।

पारिया (या) त्रः (पुं०) सात मुख्य पर्वत शृंखलाओं में से एक रघु० १८।२६, दे० 'कुलाचल' ।

पारिया (या) त्रिकः [पारियात्र+ठक्] 1. पारियात्र पहाड़ का निवासी 2. पारियात्र पहाड़ ।

पारियानिकः [परियान+ठक्] यात्रा पर जाने के लिए गाड़ी ।

पारिरक्षकः [परिरक्षति आत्मानं-परि+रक्ष्+ण्वुल्+अण्] साधु, संन्यासी ।

पारिविन्द्यम्, पारिवेद्यम् [परिविद्+ष्यञ्, परिवेत्तृ+ष्यञ्] अपने भाई के विवाह हो जाने पर भी बड़े भाई का अविवाहित रहना ।

पारिव्राजकम् पारिव्राज्यम् [परिव्राजक+अण्, परिव्राज्+ष्यञ्] साधु संन्यासी का भ्रमणशील जीवन, संन्यास ।

पारिशीलः [परिशील+अण्] रोटी, पूड़ा, मालपुआ (दे० अपूप) ।

पारिशेष्यम् [परिशेष+ष्यञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी ।

पारिषद (वि०) (स्त्री०-दी) [परिषद्+अण्] सभा या परिषद् से सम्बन्ध रखने वाला, —दः 1. सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का सदस्य, परामर्शक 2. राजा का सहचर,—दाः (पुं०, ब० व०) देव का अनुचर-वर्ग ।

पारिषद्यः [परिषद्+ष्यत्] सभा में विद्यमान व्यक्ति, दर्शक ।

पारिहारिकी [परिहर+ठक्+ङीष्] एक प्रकार की बुझौवल, पहेली ।

पारिहार्यः [परि+हृ+ष्यत् अण्] कड़ा, कंगण, —र्यम् लेना, ग्रहण करना ।

पारिहास्यम् [परिहास+ष्यञ्] हंसी-दिल्लगी, ठठोली, हंसी-मजाक ।

पारी [पृ+णिच्] घञ्+ङीष्] 1. हाथी के पैरों को बांधने का रस्सा 2. जल का परिमाण 3. पानपात्र, सुराही, प्याला 4. दूध की बाल्टी शि० १२।४० ।

पारोक्षितः = पारिक्षित ।

पारीय (वि०) [पार+छ] 1. दूसरी पार रहने या जाने वाला 2. (समास के अन्त में) सुविज्ञ, सुपरिचित—त्रिवर्गपारीणमसौ भवत्तमध्वासयत्नासनमस्मिन्द्रः—भट्टि० २।४६ ।

पारीणह्यम् [परिणाह+ष्यञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] घर का सामान, या दर्शन आदि ।

पारीन्द्रः [पारि पशुः तस्येन्द्रः] 1. सिंह, 2. अजगर, बड़ा सांप ।

पारीरुष्यम् [पारुष+ष्यञ्] 1. खुरदरापन, ऊबड़खाबड़पन, कड़ापन 2. कठोरता, क्रूरता, (स्वभाव की) निर्दयता 3. अपभाषण, गाली देना, बुराभला कहना, अश्लील भाषा, अपमान-भग० १६।४, याज्ञ० २।१२,७२ 4. (वाणी में या कर्म में) हिंसा मनु० ८।६,७२, ७।४८,५१, 5 द्वन्द्व का उद्यान 6. अगर, **र्यः** वह-स्पति का विशेषण ।

पारोवर्यम् [परोवर+ष्यञ्] परंपरा ।

पार्घट्टम् [पार्घ घट्टते इति अच्, पृषो० साधुः] फूल, गन्ध ।

पार्जन्य (वि०) [पर्जन्य+अण्] वृष्टि से संबंध रखने वाला ।

पार्ण (वि०) (स्त्री०-र्णी) [पर्ण+अण्] 1. पत्तों से संबंध रखने वाला या पत्तों का बना हुआ 2. पत्तों से उठाया हुआ (जैसे कि कर) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पार्थः [पृथा+अण्] 1. युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का मातृकुलसूचक नाम, परन्तु अर्जुन का विशेषरूप से - भग० १।२५, और दूसरे अनेक स्थल 2. राजा। सम० सारथिः कृष्ण का विशेषण।

पार्थक्यम् [पृथक्+ष्यञ्] पृथक्ता, अलहदगी, अलग २ होने का भाव, अकेलापन, अनेकता।

पार्थवम् [पृथ्-अण्] विशालता, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।

पार्थिव (वि०) (स्त्री०—वी) [पृथिवी + अण्] 1. मिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी संबंधी, भूमिसंबंधी, पृथ्वी से संबंध रखने वाला—यतोरजः पार्थिवमुज्जिहीते—रघु० १३।६४ 2. धरती पर शासन करने वाला 3 राजसी, राजकीय,—वः 1. पृथ्वी पर रहने वाला 2. राजा, प्रभु—रघु० ८।१ 3. मिट्टी का बर्तन। सम० —नन्दनः—सुतः राजकुमार, राजपुत्र,—कन्या—नन्दिनी, —सुता राजा की पुत्री, राजकुमारी।

पार्थिवी [पार्थिव + ङीप्] 1. सीता का विशेषण, धरती की पुत्री - पार्थिवीवृद्धहृद्यद्रुहः—रघु० ११।४५ 2. लक्ष्मी का विशेषण।

पार्पः (पुं०) 1. मुट्ठी भर चावल 2. क्षयरोग, तपेदिक।

पार्पटिक (वि०) (स्त्री०—की) [पर्पट+ठक्] अन्तिम, आखिरी, निर्णायक।

पार्वण (वि०) (स्त्री०—णी) [पर्वन्+अण्] 1. पर्व संबंधी, रघु० ११।८२ 2. वृद्धि की प्राप्त होना, बढ़ना (जैसे कि चन्द्रमा का), णम् पर्व के अवसर पर (अमावस्या के दिन) सभी पितरों के निमित्त आहुति देने का सामान्य संस्कार।

पार्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [पर्वत + अण्] 1. पहाड़ पर होने या रहने वाला 2 पहाड़ पर उगने वाला, पहाड़ से प्राप्त होने वाला 3. पहाड़ी।

पार्वतिकम् [पर्वत + ठञ्] पहाड़ों का समुच्चय, पर्वत-शृंखला।

पार्वती [पार्वत + ङीप्] 1. दुर्गा का नाम, हिमालय की पुत्री के रूप में उत्पन्न (अपने पहले जन्म में वह सती थी—तु० कु० १।२१) तां पार्वतीत्यभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रिया बन्धुजनो जहाव—कु० १।२६ 2. श्यामलिन 3. द्रौपदी का विशेषण 4. पहाड़ी नदी 5. एक प्रकार की सुगन्धयुक्त मिट्टी। सम० नन्दनः 1. कार्तिकेय की उपाधि 2. गणेश का विशेषण।

पार्वतीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पर्वत+छ] पहाड़ में रहने वाला, यः 1. पहाड़ी 2. एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम (ब० व०) तत्र जग्मुर्यं रघोर्वीरं पार्वतीयगणैः सह—रघु० ४।७७।

पार्वतेय (वि०) (स्त्री०—यी) [पार्वती + ढक्] पहाड़ पर उत्पन्न, —यम् अंजन, सुरमा।

पार्ष्णेयः [पर्शु+अण्] कुशल से सुसज्जित योद्धा।

पार्श्वः,—र्श्वम् [पर्शना समूहः] 1. कोख से नीचे का शरीर का भाग, स्थान जहां पसलियां हैं—शयने सन्निषण्णैकपार्श्वाम्—मेघ० ८९ 2. पांसू, कोख, (सजीव और निर्जीव पदार्थों का) पार्श्वभाग पितरं क्वचिदतिमात्रं निजपार्श्वानेव दहतिस्राम्—पंच० १।३२४ 3. आस-पास, र्श्वः जिनका विशेषण, —र्श्वम् 1. पसलियों का समूह 2. जालसाजी से भरी हुई तरकीब, असम्मानजनक उपाय (पार्श्वम् क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है—के निकट' के पास में' की ओर'—श० ७।८, इसी प्रकार **पार्श्वात्** 'की ओर से' 'से दूर' **पार्श्वे** 'निकट' 'नजदीक' 'पास में' न मे दूरे किंचिदक्षणमपि न पार्श्वे रघुजनात् पं० ११९, भर्तृ० २।३७) । सम० —अनुचरः टहलुआ, सेवक -रघु० २।९,—अस्थि (नपुं०) पसली,—आयात (वि०) जो बहुत निकट आ गया है, आसन्न (वि०) पास ही विद्यमान, —उदरशिरः केकड़ा,—गः टहलुआ, सेवक—रघु० ११।४३, गत (वि०) पार्श्ववर्ती, पास ही स्थित, सेवा करने वाला 2. शरणागत, चरः सेवक, टहलुआ —रघु० ९।७२, १८।२१,—द्वः टहलुआ, सेवक,—देशः (शरीर की) कोख, पांसू,—परिवर्तनम् 1. बिस्तर पर करवट बदलना 2. भादपदशुक्ल ११ में होने वाला पर्व (आज के दिन समझा जाता है कि विष्णु करवट बदलते हैं), भागः कोख, पांसू,—वर्तिन् (वि०) 1. पास होने वाला, उपस्थित, सेवा में खड़ा हुआ 2. साथ ही लगा हुआ, —शय (वि०) पास ही सोने वाला, बगल में सोने वाला,—शूलः,—लम् कोख में मीठा दर्द, सूत्रकः एक प्रकार का आभूषण,—स्थ (वि०) पार्श्ववर्ती, नजदीकी, निकटवर्ती, समीपस्थ (स्थः) 1. सहचर 2. सूत्रधार का सहायक—तु० पारिपार्श्वक।

पार्श्वकः (स्त्री०—की) [पार्श्व+कन्] ठग, प्रवंचक, चोर।

पार्श्वतः (अव्य०) [पार्श्व+तस्] निकट, नजदीक, समीप, पास रघु० १९।३१।

पार्श्विक (वि०) (स्त्री०—की) [पार्श्व+ठक्] पांसू से संबंध रखने वाला, कः 1. पक्ष लेने वाला आदमी, साझीदार 2 सारथी, सहचर 3. जादूगर।

पार्श्वतः (वि०) (स्त्री०—ती) [पृषत + अण्] चितकबरे हरिण से संबंध रखने वाला—मनु० ३।२६९, याज्ञ० १।२५७,—तः राजा द्रुपद और उसके पुत्र धृष्टद्युम्न का शिक्षकुलसूचक नाम।

पार्षती [पार्षत + ङीष्] 1. द्रौपदी का विशेषण 2. दुर्गा की उपाधि।

पार्षद् (स्त्री०) [परिषद्, पृषो०] सभा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पार्श्वः [पार्श्वं महति अण्] 1. साथी, सहचर 2. टहलुआ अनुचरवर्ग 3. सभा में उपस्थित, दर्शक, सभासद् ।

पार्श्वकः [पर्षद्+क्य] सभासद्, सदस्य ।

पार्ष्णिः (पुं०, स्त्री०) [पृष्+नि, नि० वृद्धिः] 1. एड़ी —उद्धतयत्नांगुलि पार्ष्णिभागान्—कु० १।११, पार्ष्णि प्रहार—का० ११९ 2. सेना की पिछाड़ी 3. पिछाड़ी, पिछला भाग—शुद्धपार्ष्णिरयान्वितः रघु० ४।२६, 'जिसकी पिछाड़ी शत्रुरहित हो गई है' 4. ठोकर (स्त्री०) 1. व्यभिचारिणी स्त्री 2. कुन्ती का विशेषण । सम०—ग्रहः अनुयायी,—ग्रहणम् शत्रु की पीठ पर आक्रमण करना,—ग्राहः पृष्ठवर्ती शत्रु 2. पृष्ठवर्ती सेना का सेनापति 3. मित्रराजा जो किसी राजा की सहायता करे—मनु० ७।२०७, घातः ठोकर, कि० १७।५०,—त्रम् पृष्ठरक्षक, पीछे रहने वाली सेना की टुकड़ी, प्रारक्षित,—ग्राहः बाह्यवर्ती घोड़ा ।

पालः [पाल्+अच्] 1. प्ररक्षक, अभिभावक, संरक्षक —यथा गोपाल, वृष्णिपाल आदि 2. ग्वाला —विवादः स्वामिपालयोः - मनु० ८।५, २२९, २४० 3. राजा 4. पीकदान । सम०- छत्रः छुकरमुत्ता, साँप की छतरी ।

पालकः [पाल्+ण्वुल्] 1. अभिभावक, प्ररक्षक 2. राज कुमार, राजा, शासक, प्रभु 3. साईस, घोड़े का रख वाला 4. घोड़ा 5. चिचक वृक्ष 6. पालक पिता ।

पालकाप्यः (पुं०) 1. एक ऋषि करेणु का पुत्र, (इन्होंने ही सर्वप्रथम हस्तिविज्ञान की शिक्षा दी) 2. हस्तिविज्ञान ।

पालंकः [पाल्+किप्=पाल्+अंक्+घञ्] 1. पालक का साग 2. बाजपक्षी,—की एक गंधद्रव्य ।

पालंक्यः,—क्या [पालंक+ष्यञ्, स्त्रियां टाप् च] एक सुगंध द्रव्य ।

पालन (वि०) [पाल्+ल्युट्] रक्षा करने वाला, संरक्षण देने वाला, कि० १।९,—नम् 1. प्ररक्षण, संरक्षण, पालना, पोसना, लालन-पालन करना—लेभे° रघु० १९।३, इसी प्रकार प्रजा° क्षिति° आदि 2. बनाये रखना, अनुपालन करना, (व्रत, प्रतिज्ञा, आदि को) पूरा करना 3. ताजी ब्याई हुई गौ का दूध, खीस ।

पालयितृ (पुं०) [पाल्+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, संरक्षक, परवरिश करने वाला—रघु० २।६९।

पालाशः (वि०) (स्त्री०—शी) [पलाश+अण्] 1. ढाक का, ढाक से उत्पन्न 2. ढाक की लकड़ी का बना हुआ, मनु० २।४५ 3. हरा,—शः हरा रंग । सम०—खंडः,—वंगः मगध देश का विशेषण ।

पालिः,—ली (स्त्री०) [पाल्+इन्] कान का सिरा ।

पालिः,—ली [स्त्री०] [पाल्+इन्] 1. कान का सिरा —श्रवणपालिः—गीत० ३ 2. किनारा, गोट, मगजी —मूर्त० ३।५५ 3. तेज सिरा, धार या नोक —भामि० २।३ 4. हद, सीमा 5. श्रेणी, पंक्ति, —बिपुल पुलकपाली - गीत० ६, शि० ३।५१ 6. थब्बा, चिह्न 7. बांध, पुल 8. गोद, अंक 9. आवर्ताकार तालाब 10. अध्ययनकाल में गुरु द्वारा छात्र का भरण-पोषण 11. जू 12 प्रशंसा, स्तुति 13. वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मूंछे हों ।

पालिका [पालि ! कन्+टाप्] 1. कान का सिरा 2. तलवार या किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की तेज धार 3. पनीर या मक्खन आदि काटने की छुरी ।

पालित (भू० क० कृ०) [पाल्+क्त] 1. प्ररक्षित, संरक्षित, आरक्षित 2. पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ ।

पालित्यम् [पलित+ष्यञ्] वृद्धावस्था के कारण बालों की सफेदी, धवलता ।

पाल्वल (वि०) (स्त्री०—ली) [पल्वल+अण्] पोखर में उत्पन्न, तलैया से प्राप्त ।

पावकः [पू+ण्वुल्] 1. आग - पावकस्य महिमा स गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि यः रघु० ११।७५, ३।९, १६।८७ 2. अग्नि देवता 3. बिजली की आग 4. चित्रक वृक्ष 5. तीन की संख्या । सम०—आत्मजः कार्तिकेय का विशेषण 2. गुदर्शन नामक क्रिया ।

पावकिः [पावक+इञ्] कार्तिकेय का विशेषण ।

पावन (वि०) (स्त्री०—नी) [पू+णिच्+ल्युट्] 1 निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, शुद्ध करने वाला, पवित्र बनाने वाला—पादास्तामभितो निषण्णहरिणा गौरीगुरोः पावनाः - श० ६।१७, रघु० १५।१०१ १९।५३, भग० १८।५, मनु० २।२६, याज्ञ० ३।३०७ 2. पवित्र, पुनीत, विशुद्ध, परिष्कृत - कु० ५।१७,—नः 1. आग 2. गंध द्रव्य 3. सिद्ध 4. व्यास कवि,—न० 1. नम् पवित्री करण, विशुद्धीकरण—पदनख-नीरजनितजनपावन —गीत० १ 2 तप 3. जल 4. गोबर 5. संप्रदायसूचक तिलक । सम०—ध्वनिः शंखनाद ।

पावनी [पावन+ङीप्] 1. पवित्र तुलसी 2. यज्ञ 3. गंगा नदी ।

पावमानी [पवमानम् अधिकृत्य प्रवृत्तम्-पवमान+अण् +ङीप्] विशिष्ट वैदिक ऋचाओं का विशेषण ।

पावरः (पुं०) पासे का वह पहलू जिस पर 'दो' की संख्या अंकित हो, पासे को विशेष ढंग से फेंकना,— पावर-पतनाच्च शोचित शरीरः—मृच्छ० २।८ ।

पाशः [पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्] 1. डोरी, शृंखला, बेड़ी फंदा—पादाकृष्टव्रततिजलपासंगसंजात-पाशः - श० १।३२, बाहुपाशेन व्यापादिता - मृच्छ० ९, रघु० ६।८४ 2. जाल, खटकेदार पिंजड़ा, या फंदा 3. बन्धन जो (वरुण के द्वारा) शत्रु की भांति प्रयुक्त होता है—कु० २।२१ 4. पाँसा—रघु०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६।१८ पर मल्लि० 3. किसी बुनी हुई वस्तु की किनारी 6. (समास के अन्त में) 'पाश' का अर्थ होता है -(क) तिरस्कार, अवमान तथा 'छात्रपाश' (निकम्मा विद्यार्थी) में, वैयाकरण० भिषक्पृ आदि (ख) गोदने, सहलाना तथा मैसोल्थमुद्रा में व कर्णाघात: उत्तर० ६।२७, (ग) बहुतायत, ढेर, राशि (केश' अर्थ वाचक शब्द के पश्चात्) केशपाश (देखिए कलाप)। गण० अंत: कपड़े का पृष्ठभाग, -क्रीडा जुआ खेलना, पासे के साथ खेलना, -धर:, -पाणि: वरुण का विशेषण, -बद्ध (वि०) पिंजड़े में फंसा हुआ, जाल में पकड़ा हुआ, फंदे में पड़ा हुआ, -बंधः बंधन, बाल, फांसी की डोरी, -बंधक: बटेरिया, पक्षी पकड़ने वाला, -बंधनम् जाल, -भृत् (पुं०) वरुण का विशेषण रघु० २।९, -रज्जु: (स्त्री०) बड़ी रस्सी, -हस्त: हाथ में जाल पकड़े हुए वरुण का विशेषण।

पाशक: [पाश्+कन्] अक्ष, पासा। सम० पीठम् जूआ खेलने की चौकी।

पाशनम् [पश्+णिच्+ल्युट्] 1. बंधन, फंदा, जाल, गुलेल या चौकिया 2 डोरी, चाबुक या सांटे में लगी चमड़े की डोरी या तस्मा 3. जाल में फंसाना, पिंजरे में बन्द करना।

पाशव (वि०) (स्त्री० वी) [पशु+अण्] जानवरों से प्राप्त, या संबंध रखने वाला, बस्य रेवड़, लहंदा। सम० पालनम् पशुचरण या चरागाह, गोचरभूमि।

पाशित (वि०) [पश्+णिच्+क्त] बद्ध, जाल में फंसा, बेड़ियों से जकड़ा हुआ।

पाशिन् (पुं०) [पाश+इति] 1. वरुण का विशेषण 2. यम का विशेषण 3. हिरणों को पकड़ने वाला, बहेलिया, जाल में फंसाने वाला।

पाशुपत (वि०) (स्त्री० ती) [पशुपति+अण्] 1. पशुपति से प्राप्त, या पशुपति से सम्बद्ध अथवा पशुपति के लिए पावन, त: 1. शिव का अनुयायी और पूजक 2. पशुपति के सिद्धान्तों का पालन करने वाला, तम् पाशुपत सिद्धांत (दे० सर्व०)। सम०-अस्त्रम् पशुपति या शिव द्वारा अधिष्ठित एक अस्त्र का नाम (जिसे अर्जुन ने शिव से प्राप्त किया था)।

पाशुपाल्यम् [पशुपाल+ष्यञ्] पशुओं का पालना, ग्वाले की वृत्ति या धंधा।

पाश्चात्य (वि०) [पश्चात्+ष्यञ्] 1. पिछला 2. पश्चिमी रघु० ४।६२ 3. पश्चवर्ती, बाद का 4. बाद में होने वाला,—त्यम् पिछला भाग।

पाश्या [पाश+ष्य+टाप्] 1. जाल 2. रस्सियों या पीढ़ियों का समूह।

पाषंड: [पा वर्योधर्मः तं षंडयति-पा+षंड+अच्]=पाखंड मनु० ५।९०, ९।२८५।

पाषंडक:, पाषंडिन् (पुं०) [पाषंड+कन्, पा+षंड+णिनि] नास्तिक, धर्मभ्रष्ट, धर्म के नाम पर झूठा आडंबर रचने वाला धूर्त व्यक्ति,—याज्ञ० १।१३०, २।६०।

पाषाण: [पिनष्टि पिष् संचूर्णे ने आनच् पृषो० तारा०] पत्थर, जो बाट का काम देने वाला छोटा पत्थर। सम० दारक:, दारण: टांकी, -संधि: चट्टान के अन्दर गुफा या दरार, -हृदय (वि०) पत्थर की भांति कठोरहृदय, क्रूर, निष्ठुर।

पि (तुदा० पर० पियति) जाना, हिलना-जुलना।

पिक: [अपि कायति शब्दायते—अपि+कै+क, अकारलोप:] कोयल कुसुमसारसनसायनबंदिनि पिकनिकरे भज भावम्-गीत० ११ आ—उन्मीलति कुहू: कुहूरिति कलोलाला: पिकाना गिर: - गीत० १ । सम० आनन्द:,-बांधव: वसन्तऋतु,—बंधु:, --राग:, वल्लभ: आम का पेड़।

पिकक: [पिक इत्यव्यक्तरावेण कायति--पिक+कै+क] 1. २० वर्ष की आयु का हाथी 2. हाथी का बच्चा।

पिंग (वि०) [पिञ्ज् वर्णे अच् कुत्वम्] लालिमा लिये भूरा रंग, खाकी, पीला-लाल रंग,—अन्तर्निविष्टापलपिंगतारम् (विलोचनम्) कु० ७।३३,--ग: 1. खाकी या भूरा रंग 2. भैंसा 3. चूहा,--गा 1. हल्दी 2. केशर 3. एक प्रकार का पीला रोगन 4. चंडिका की उपाधि। सम० अक्ष (वि०) ललाई लिये भूरे रंग की आंखों वाला, लाल आंखों वाला (क्ष) 1. लंगूर 2. शिव का विशेषण,—ईक्षण: शिव की उपाधि, -ईश: अग्नि का विशेषण, कपिश तेल चट्टा, --चक्षुस् (पुं०) केकड़ा, -जट: शिव का विशेषण, -सार: हरताल,--स्फटिक: 'पीला बिल्लौर', गोमेद रत्न।

पिंगल (वि०) [पिञ्ज्+कलच्, पिंगलाति ला+क+क तारा०] ललाई लिये भूरे रंग का, पीताभ, भूरा, खाकी--रघु० १२।७१, मनु० ३।८—ल: 1. खाकी रंग 2. अग्नि 3. बंदर 4. एक प्रकार का नेवला 5. छोटा उल्लू 6. एक प्रकार का सांप 7. सूर्य के एक अनुचर का नाम 8. कुबेर के एक कोष का नाम 9. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम, संस्कृत के छन्द: शास्त्र का प्रणेता, उसकी कृति का नाम—पिंगलच्छंद: शास्त्र है,--छन्दोज्ञाननिधि जघान मकरो वेलातटे पिंगलम्--पंच० २।३३,--लम् 1. पीतल 2. पीले रंग की हरताल,—ला 1. एक प्रकार का उल्लू 2. शीशम का वृक्ष 3. एक प्रकार की धातु 4. शरीर की विशेष वाहिका 4. दक्षिण देश की हथिनी 5. एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गणिका जो अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध है (भागवत में उल्लेख है कि किस प्रकार उस गणिका ने तथा अजामिल ने इस लोक के बंधनों से मुक्ति पाई)। सम०—अक्षः शिव का विशेषण।

पिंगलिका [पिंगल+ठन्+टाप्] 1. एक प्रकार का सारस 2. एक प्रकार का उल्लू।

पिंगाक्षः [पिंग+अक्ष्+अण्] 1. गांव का मुखिया या मालिक 2. एक प्रकार की मछली,—क्षम् प्राकृत स्वर्ण, —हरि नीलम का पौधा।

पिंजरः, —रम्, पिंजिरम्,—रम् [अपि-पञ्ज्+घञ्, अकारलोपः, पृषो०] पेट, उदर।

पिंजरकः [पिंजर+कन्] पेटू, औदरिक।

पिंजिरिका [पिंजिरम्+ठन्+टाप्] पिंडली, टांग की पिंडली।

पिंजिरिल (वि०) [पिंजिर+इलच्] मोटे पेट वाला, स्थूलकाय।

पिंडु: पच्+उ पृषो० तारा०] 1. रूई 2. एक प्रकार का वाट, (दो तोले के बराबर) कर्ष 3. एक प्रकार का कोढ़। सम०—तैलम् रूई, —मंडः,—मंडः नीम का पेड़—शि० ५।६६।

पिंडुलः [पिंडु+ला+क] 1. रूई 2. एक प्रकार का जल-काक या समुद्री कौवा।

पिंडट (वि०) [पिंड्+अटन्] दबाकर चपटा किया हुआ,—टः आंखों की सूजन, नेत्र-प्रदाह,— टम् 1. रांगा, जस्ता 2. सीसा।

पिंडा [पिंड्+अच्+टाप्] १६ मोतियों की एक लड़ जिसका वजन एक धरण (मोतियों की विशेष तोल) हो।

पिंडछम् [पिंड्छ्+अच्] 1. पूंछ का पर (जैसे मोर का) 2. मोर की पूंछ—शि० ४।५० 3. बाण के पंख 4. बालू 5. कलगी, शिखा,—च्छः पूंछ,—च्छा 1. म्यान, गिलाफ, कोष 2. चावल का मांड 3. पंक्ति, श्रेणी 4. ढेर, समुच्चय 5. रेशमीकपास के पौधे का कोष या रस 6. केला 7. कबंध 8. टांग की पिंडली 9. सींप की विषमय लार 10. सुपारी। सम०—बाणः बाज, श्येन।

पिंडछल (वि०) [पिंड्छ्+लच्] 1. चिपचिपा, चिकना, फिसलनवाला, लसलसा तरुणं सर्षपशाकं नवौदनम् पिच्छिलानि च दध्नीति—छन्द० १ 2. पूंछवाला—लः, ला,—लम्, 1. चावलों का मांड, भुक्तमंड 2. चावल की कांजी से युक्त चटनी 3. मलाई समेत दही। सम०—त्वच् (पुं०) संतरे का पेड़ या छिलका।

पिंड् I (अदा० आ०—पिंक्ते) 1. हल्के रंग की, पुट देना, रंगना 2. स्पर्श करना 3. सजाना II (चुरा० उभ०) पिंजयति—ते) 1. देना 2. लेना 3. चमकना 4. शक्तिशाली होना 5. रहना, बसना 6. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना।

पिंजः [पिंज्+घञ्, अच् वा] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. हत्या, वध 4. ढेर,—जम् सामर्थ्य, शक्ति,—जा 1. क्षति, चोट 2. हल्दी 3. कपास।

पिंजटः [पिंज्+अटन्] दीद, आंख की कीच।

पिंजनम् [पिंज्+ल्युट्] धुनकी, रूई धुनने का धनुषाकार उपकरण।

पिंजर (वि०) [पिंज्+अरच्] ललाई लिये पीले रंग का खाकी, सुनहरी रंग का,—शिखा प्रदीप्तस्य मुक्तपिंजरा —मृच्छ० ३।१७, रघु० १८।४०,—रः ललाई लिये पीला या खाकी भूरा रंग 2. पीला रंग—रम् 1. सोना 2. हरताल 3. अस्थिपंजर 4. पिंजड़ा।

पिंजरकम् [पिंजर+कन्] हरताल।

पिंजरित (वि०) [पिंजर+इतच्] पीले रंग का, हल्के भूरे रंग का।

पिंजल (वि०) [पिंज्+कलच्] 1. शोकसंतप्त, भयभीत, व्याकुल, विस्मित 2. (सेना आदि) आलोकित,—लम् 1. हरताल 2. कुश की पत्ती।

पिंजालम् [पिंज्+आलच्] सोना, सुवर्ण।

पिंजिका [पिंज+ण्वुल्—टाप्, इत्वम्] पूनी, रूई का गोल गल्हा जिससे कातने पर सूत निकलता है।

पिंजूषः [पिंज्+ऊषण्] कान का मैल।

पिंजटः [=पिंजट, पृषो०] आंखों की कीच, दीद।

पिंजोलम् [पिंज्+ओल+टाप्] पत्तों की खड़बड़ाहट, पत्तों का खड़-खड़ शब्द करना।

पिटः [पिट्+क] सन्दूक, टोकरी—टम् 1. पर, कुटीर 2. छप्पर, छत।

पिटकः,—कम् [पिट+कन्] 1. सन्दूक, टोकरी 2. थैली 3. फूंसी फफोला, छोटा फोड़ा, गोमूर (इस अर्थ में 'पिटिका' तथा 'पिटिका' भी)—तत: भंडस्यापरि पिटका संवृत्ता शा० ५ 4. इत्र के लड्डे पर एक प्रकार का आभूषण।

पिटकधा [पिटक+ध+टाप्] सन्दूकों का ढेर।

पिटाकः [पिट्+काक वा०] पिटारी, सन्दूक।

पिट्ठकम् [=पिट्ठक, पृषो० कस्य पः] दांतों का जमा हुआ मैल।

पिठरः,—रम् [पिठ्+कन्] बर्तन, तसला, बटलोई ('पिठरी' भी इसी अर्थ में)—पिठर बबन्धतिमात्रं निजपार्श्वानीव दहतिस्मनाम्—पंच० १।३२४, जठर-पिठरो दुष्पूरेयं करोति विडंबनाम्—भर्तृ० ३।११६, —रम् रई का डंडा।

पिठरकः,—कम् [पिठर+कन्] बर्तन, तसला। सम० —कपालः,—लम् ठीकरा, खपड़ी, खप्पर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिडकः,—का [पोड्+ण्वुल्, नि० साधु:] छोटा फोड़ा, फुंसी, फफोला।

पिंड् (ध्वा० आ०, चुरा० उभ०—पिण्डते, पिण्डयति-ते, पिण्डित) 1. इकट्ठा करके पिंडी या गोला बनाना 2. गोंदना, मिलाना 3. ढेर लगाना, इकट्ठा करना।

पिंड (वि०) (स्त्री०—ण्डी) [पिण्ड्+अच्] 1. ठोस, घन 2. भिला हुआ, सघन, सटा हुआ, ढ., **डम्** 1. पिंडी, गोला, गोलक (अर्थ: पिंड:, नेत्र पिंड आदि) 2. लोंदा, ढेला (मिट्टी का) 3. कौर, ग्रास, मुंहभर कवल —रघु० २।५९ 4. श्राद्ध में पितरों को दिया जाने वाला चावलों का पिंड· रघु० ११६६, १।२६, मनु० ३।२१६, ९।१३२, १२६, १४०, याज्ञ० १।१५९ 5. भोजन **सफलीकृतभूर्तपिंडः** मालवि० ५,'नमक-हलाल' 6. जीविका, वृत्ति, निर्वाह 7. दान · **पिंडपातवेला** मा० २ 8. मांस, आमिष 9. गर्भ-धारण की आरंभिक अवस्था का गर्भ 10. शरीर, शारीरिक ढाचा—**एकांतविध्वस्तिषु मद्विधानां पिंडेष्व-नास्था खलु भौतिकेषु**— रघु २।५७ 11. ढेर, संग्रह, **तमुच्चय** 12. टांग की पिंडली—मा० ५।१६ 13. हाथी का कुंभस्थल 14. मकान के आगे का निकाला हुआ छज्जा 15. धूप, या गंध द्रव्य 16. (अंक ग० में) जोड़, कुलयोग 17. (ज्या० में) घनत्व, **—डम्** 1. शक्ति, सामर्थ्य, ताकत 2. लोहा 3. ताज़ा मक्खन 4. सेना (**पिंड कृ** गोले बनाना, निष्पीडित करना, ढेर लगाना, **पिंडीभू** गोले या लोंदे बनाना)। सम०—**अन्वाहार्य** पितरों को पिंड दान के पश्चात् खाने के योग्य मनु० ३।१२३,—**अन्वाहार्यकम्** पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन,—**अश्मन्** आला, —**अयसम्** इस्पात,—**अलक्तकः** महावर, लाल रंग, —**अंशनः**, - **आज्ञः**, - **आशकः**,—**आशिन्** (पुं०) भिक्षुक,—**उदकक्रिया** मृतव्यक्तियों के निमित्त पिण्डदान तथा जलदान, - **श्राद्ध** और तर्पण,—**उद्धरणम्** पिंडदान में भाग लेना,—**गोसः** रसगंध, लोबान की तरह का सुगंधित गोंद, - **तैलम्**, - **तंलकः** गंधद्रव्य विशेष, लोबान,—**द** (वि०) 1. जो भोजन देता है, जीवन निर्वाह के लिए आहार देने वाला - इवा पिंडदस्य कुरते गजपुंगवस्तु धीरं विलोक्यति चाटुशतैश्च भुंक्ते भर्तृ० २।३१ 2. मृत पितरों को पिण्ड देने का अधिकारी याज्ञ० २।१३२ (**दः**) पिंडदान करने वाला निकटतम संबंधी पुरुष 2. स्वामी, अभिरक्षक, —**दानम्** 1. अन्त्येष्टि क्रिया के समय पिंड देना 2. अमावस्या की संध्या के समय पितरों को पिंडदान देना,—**निर्वपणम्** पितरों को पिंडदान देना,—**पातः** भिक्षा देना, मा० १,—**पातिकः** भिक्षा से जीविका चलाने वाला,—**पादः**—**पाद्यः** हाथी,—**पुष्पः** 1. अशोक वृक्ष 2. चीन का गुलाब 3. अनार (**ष्पम्**) 1. अशोक वृक्ष पर फूल आना, मंजरी 2 चीनी गुलाब का फूल 3. कमल फूल,—**भाज्** (वि०) पिंड प्राप्त करने का अधिकारी (पुं० ब० व०) स्वर्गीय मृत पुरुष या पितर—शं० ६।२५,—**भृतिः** (स्त्री०) जीविका, जीवन निर्वाह का साधन, **मूलम्**, - **मूलकम्** गाजर, - **यज्ञः** श्राद्ध करके पितरों को पिंडदान देना—याज्ञ० ३।१६,—**लेपः** पिंड का वह अंश जो हाथ में चिपका रह जाता है (यह अंश प्रपितामह से ठीक पूर्ववर्ती तीन पितरों को दिया जाता है),—**लोपः** (संतान न होने के कारण) पिंडदान का अभाव,—**संबंधः** जीवित तथा मृत व्यक्ति के बीच का संबंध जिससे कि पिंड-दाता की पिंडभोक्ता के प्रति पात्रता का निर्धारण किया जाय।

पिंडकः—**कम्** [पिण्ड+कै+क] 1. लोंदा, गोला, गोलक 2. गूमड़ा या सूजन 3. भोजन का ग्रास 4. टांग की पिंडली 5. गंधद्रव्य, लोबान 6. गोजर—**कः** बैताल, पिशाच।

पिंडनम् [पिंड्+ल्युट्] गोले या पिण्ड बनाना।

पिंडकः [पिंड्+कलच्] 1. पुल, बांध 2. टीला, ऊर्ध्वभूमि या शैलशिला।

पिंडतः [पिंड्+सन्+ड] भिक्षुक, भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला साधु।

पिंडातः [पिंड+अत्+अच्] लोबान, गंधद्रव्य।

पिंडारः [पिंड+ऋ+अण्] 1. साधु, भिक्षुक 2. ग्वाला 3. भैंसों को चराने वाला 4. विकंकत वृक्ष 5. निन्दा की अभिव्यक्ति।

पिंडिः—**डी** (स्त्री०) [पिंड्+इन्, पिंडि+ङीष्] 1. पिंडी, गोला 2. पहिये की नाभि 3. टांग की पिंडली 5. लौकी, घीया 6. घर 7. ताड़ की जाति का वृक्ष। सम०—**पुष्पः** अशोक, वृक्ष,—**लेपः** एक प्रकार का लेप या उबटन,—**शूरः** 'गेहेशूर' पेटू, डींग हांकने वाला, कायर, आत्मश्लाघी, भीरु, मेहरा—तु० गेहेनर्दिन् आदि।

पिंडिका [पिंड्+ण्वुल्, इत्वम्] 1. घूम, गोलाकार सूजन 2. टांग की पिंडली —दे० ऊ० 'पिंडि'।

पिंडित (वि०) [पिंड्+क्त] 1. दबा २ कर बनाया गया गोला या पिण्डा 2. पिंडाकार बनाया हुआ, लोंदे जैसा 3. ढेर किया हुआ, बटोड़ा 4. मिश्रित 5. जोड़ा हुआ, गुणा किया हुआ 6. गिना हुआ, संख्यात।

पिंडिन् [वि०] [पिंड+इनि] 1. पिंड प्राप्त करने वाला (पितर) (पुं०) भिखारी 2. पितरों को पिण्डदान देने वाला।

पिंडिलः [पिण्ड+इलच्] 1. पुल, बांध 2. ज्योतिषी, गणक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिंडीर (वि०) [पिण्ड+ईर्+णिच्] फीका, रसहीन, नीरस, सूखा, --र: 1. अनार का वृक्ष 2. मसीक्षेपी का भीतरी कवच 3. समुद्रफेन --दे० 'डिंडीर'।

पिंडोलिः (स्त्री०) [पिण्ड्+ओलि] खाते समय मुंह से गिरा कण, जूठन, उच्छिष्ट।

पिण्याकः कम् [पिण् | आक, नि० साधु.] 1. खल (तिल या सरसों का) 2. गन्ध द्रव्य, लोबान 3. केसर 4. हींग।

पितामहः (स्त्री०-ही) [पितृ+डामहच्] 1. दादा, बाबा 2. ब्रह्मा का विशेषण।

पितृ (पुं०) [पाति रक्षति--पा+तृच्] पिता,--तेनास लोकः पितृमान् विनेषा—रघु० १४।२३, १।२४, ११।६७,--रौ (द्वि०व०) पिता-माता, माता-पिता--जगतः पितरौ वंदे पार्वतीपरमेश्वरौ--रघु० १।१, याज्ञ० २।११७,—रः (ब०व०) 1. पूर्वपुरुष, पूर्वज, पिता,—शि० ५।२४ 2. पितृकुल के पितर, पितृवर्ग—मनु० २।१५१ 3. पितर—रघु० २।१६, ४।२०, भग० १०।२९, मनु० ३।८१, १९२। समः--अर्जित (वि०) पिता द्वारा कमाई हुई पैतृक (संपत्ति), —कर्मन् (नं०), कार्यम्,--कृत्यम्,—क्रिया मृत पूर्व पुरुषाओं को के निमित्त किया जाने वाला श्राद्धकर्म,—काननम् कब्रिस्तान, - रघु० ११।१६,— कुल्या मलय पर्वत से निकलने वाली नदी,- गणः 1. पूर्वपुरुषाओं के समस्त वर्ग 2. पितर, वंश प्रवर्तक जो प्रजापति के पुत्र थे--दे० मनु० ३-१९४-५,— गृहम् 1. पिता का घर 2. कब्रिस्तान, जहां दफन किये जायें, घातकः, घातिन् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला,- तर्पणम् 1. पितरों को दी जाने वाली आहुति या जलदान 2. (मार्जन के अवसर पर) पितर तथा अन्य दिवंगत पूर्वजों के निमित्त दायें हाथ में जल छोड़ना—मनु० २।१७६ 3. तिल,- तिथिः (स्त्री०) अमावस्या, तीर्थम् गया तीर्थ जहां जाकर पितरों के निमित्त श्राद्ध करना विशेष रूप से फलदायक विहित है 2. अंगूठे और तर्जनी के मध्य का भाग (इसके द्वारा तर्पण आदि करना पवित्र माना जाता है), दानम् पितरों के निमित्त किया जाने वाला दान, दायः पिता से प्राप्त संपत्ति, दिनम् अमावस्या,—देव (वि०) 1. पिता की पूजा करने वाला 2. पितरों की पूजा से संबद्ध (वः) अग्निष्वात्त आदि दिव्य पितर, —दैवत (वि०) पितरों द्वारा अधिष्ठित (तम्) दसवां (मघा) नक्षत्र, द्रव्यम् पिता से प्राप्त संपत्ति, याज्ञ० २।११८.—पक्षः 1. पितृकुल, पैतृक संबंध 2. पितृकुल के संबंधी 3 पितृ पक्ष आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकृत्य करना प्रशस्त माना गया है,—पतिः यम का विशेषण, - पदम् पितरों का लोक, पितृ (पुं०) दादा, बाबा, पितामह, पुत्री (द्वि० व० पितापुत्रौ) पिता और पुत्र, (पितृ-पुत्रः प्रसिद्ध और लोक विश्रुत पिता का पुत्र, पूजनम् पितरों की पूजा, पैतामह (वि०) (स्त्री० ही) पूर्व पुरुषाओं से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक (ब०व०--हाः) पूर्व पुरुष, प्रभुः (स्त्री०) 1. दादा 2. सांध्यकालीन झुटपुटा, प्राप्त (वि०) 1. पिता से प्राप्त 2. पितृकुल क्रमागत से प्राप्त,--बंधुः पितृकुल के नातेदार (नपं०-बंधु) पिता के संबंध से रिश्तेदारी, भक्त (वि०) पिता का कर्तव्य परायण भक्त,—भक्तिः (स्त्री०) पिता के प्रति कर्तव्य, भोजनम् पितरों को दिया गया भोजन,— भ्रातृ (पुं०) पिता का भाई, चाचा या ताऊ, -- मंदिरम् 1.पितृगृह 2. कब्रिस्तान, मेधः पितरों के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ, श्राद्ध, यज्ञः 1. मृत पूर्व पुरुषाओं को प्रतिदिन तर्पण या जलदान, ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पंच यज्ञों में से एक पितृ यज्ञस्तु तर्पणम् मनु० ३।७०, १२५, २८३,—राज् (पुं०), राजः,—राजन् (पुं०) यम का विशेषण - रूपः शिव का विशेषण, लोकः पितरों का लोक वंशः पिता का कुल, वनम् श्मशान, कब्रिस्तान (पितृवनेश्वरः 1. राक्षस, पिशाच, शिव का विशेषण),— वसतिः (स्त्री०), सद्मन् (नपुं०) श्मशान, कब्रिस्तान कु० ५।७७, व्रतः श्राद्ध, पितृकर्म, श्राद्धम् पिता या मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध, स्वसृ (स्त्री०) (पितृष्वसृ) पितृ-स्वसृ-भी) भुआ, फूफी - मनु० २।१३१, ष्यश्रोधः फूफी की सास, -संनिभ (वि०) पितृतुल्य, स्वित्वत् सूः 1. पितामह, दादा, बाबा 2. सांध्यकालीन झुटपुटा-स्थानः,-- स्थानीयः अभिभावक (जो पिता के स्थान में है), हत्या पिता का वध, हन् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला।

पितृक (वि०) [पितृ+कन्] 1. पैतृक, कुलक्रमागत, आनुवंशिक 2. और्ध्वदैहिक।

पितृव्यः [पितृ+व्यत्] 1. पिता का भाई, चाचा 2. कोई भी वयोवृद्ध पुरुष-संबंधी--मनु० २।१३०।

पित्तम् [अपि--दो--त अपेः अकारलोपः] पित्तदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक (शेष दो हैं वात और कफ) पित्त यदि शर्करया साम्यति कोऽपि पटोलेन - पंच० १।३७८। सम० अतीसारः पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग, उपहतः (वि०) पित्त से ग्रस्त पश्यसि निर्निमेषाक्ष शंखमुपि पीतम्--काव्य० १०, कोपः पित्तज्वर,-क्षोभः पित्त-दोष की अधिकता, पित्तप्रकोप, ज्वरः पित्त के प्रकोप से होने वाला ज्वर या बुखार,—प्रकृति (वि०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो, या जो क्रोधी स्वभाव का हो, **प्रकोपः** पित्त का आधिक्य या पित्त का कुपित हो जाना, --**रक्तम्** रक्तपित्त नामक रोग, --**वातुः** पित्त के प्रकोप से पेट में वायु का पैदा होना, अफारा, **विदग्ध** (वि०) पित्त के प्रकोप से आक्रांत, --**शमन, हर** (वि०) पित्त के प्रकोप को शान्त करने वाला।

पिशल (वि०) [पिश् + ला + क] पित्त बहुल, जिसमें पित्त की अधिकता हो, **लम्** 1. पीतल 2. भोजपत्र का वृक्ष विशेष।

पित्र्य (वि०) [पितृ: इदम्—पितृ + यत्, रीढ़ आदेशः] 1. पैतृक, बपौती का, पुश्तैनी 2. (क) मृत पितरों से संबंध रखने वाला -मनु० २।५१, (ख) और्ध्वदैहिक-क्रियासंबंधी, --**म्यः** 1. उपेरुक भाई 2. माघमास, —**म्या** 1. मघा नक्षत्रपुंज 2. पूर्णिमा और अमावस्या का दिन, **म्यम्** 1. मघा नाम का नक्षत्र 2. अंगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का भाग (पितरों के लिए पूज्य)।

पित्सत् (पु०) [पत् + सन्, इस् अभ्यासलोपः, पित्स + शतृ] पक्षी।

पित्सलः [पत्—सल्, इत्] मार्ग, पथ।

पिधानम् [अपि—धा + ल्युट्, अपेः अकारलोपः] 1. ढकना, छिपाना 2. म्यान 3. चादर, चोगा 4. ढक्कन, चोटी।

पिधायक (वि०) [अपि + धा + ण्वुल्, अपेः अकारलोपः] ढकने वाला, छिपाने वाला, प्रच्छन्न रखने वाला।

पिनद्ध [भू० क० कृ०] [अपि + नह् + क्त, अपेः अकारलोपः] 1. जकड़ा हुआ, बंधा हुआ या धारण किया हुआ 2. सुसज्जित 3. छिपाया हुआ, प्रच्छन्न 4. चुभाया हुआ, छिदा हुआ 5. लपेटा हुआ, ढका हुआ, आवेष्टित।

पिनाकः,-कम् [पा रक्षणे आकान् तुट् धातोरात इत्वम्] 1. शिव का धनुष 2. त्रिशूल 3. सामान्य धनुष 4. लाठी या छड़ी 5. धूल की बौछार। सम०—**गोप्तृ, —धृक्,- धृत्,--पाणिः** (पुं०) शिव की उपाधियाँ —कु० ३।१०।

पिनाकिन् (पु०) [पिनाक + इनि] शिव का विशेषण कु० ५।७७, श० १।६।

पिपतिषत् (पुं०) [पत् + सन् + शतृ] पक्षी।

पिपतिषु (वि०) [पत् + सन् + उ] गिरने की इच्छा वाला, पतनशील, —**षुः** पक्षी।

पिपासा [पा + सन् + अ + टाप्] प्यास।

पिपासित, पिपासिन्, पिपासु (वि०) [पा—सन्] क्त, पिपासा—इनि, पा + सन् + उ] प्यासा।

पिपीलः, पिपीलकः [अपि + पील् + अच्, अपेः अकारलोपः, पिपील + ङीष्] चींटा, चींटी।

पिपीलकः [पिपील + कन्] मकोड़ा।

पिपीलिकः [अपि + पील् + इकन्, अपेः अकारलोपः] चींटा, —**कम्** एक प्रकार का सोना (चींटों द्वारा एकत्र किया हुआ माना जाता है)।

पिपीलिका [पिपीलक + टाप्, इत्वम्] चींटी। सम० —**परिसर्पणम्** चींटियों का इधर उधर दौड़ना।

पिप्पलः [पा + अलच्, पृषो०] 1. पीपल का पेड़—श्लोक १।३०२ 2. घुंघची 3. जाकेट या कोट की आस्तीन --**लम्** 1. बरबटा 2. पीपल का बरबटा 3. सम्भोग 4. जल।

पिप्पलिः,—ली (स्त्री०) [पृ + अचलच् + ङीष् पृषो० पक्षे ह्रस्वाभावः] पिपरामूल, पीपल नाम की औषध।

पिप्पिका (स्त्री०) दाँतों पर जमी हुई मैल की पपड़ी।

पिप्लुः [अपि--प्लु + डु अपेः अकारलोपः] निशान, तिल, मस्सा, झिल्ली।

पियालः [पीय् + कालन्, ह्रस्वः] एक वृक्षविशेष (चिरौंजी) --कु० ३।२१, --**लम्** इस वृक्ष (चिरौंजी) का फल।

पिल् (चुरा० उभ०-पेलयति-ते) 1. फेंकना, डालना 2. भेजना, चलाना करना 3. उत्तेजित करना, उकसाना।

पिलुः (पुं०) दे० 'पीलु'।

पिल्ल (वि०) [किल्ल्रे चक्षुषी यस्य, किल्ल्र + अच्, पिल्लादेशः] चौंधियाई आँखों वाला,—**ल्लम्** चौंधियाने वाली आँख।

पिल्लका [पिल्ल + कै + क + टाप्] हथिनी।

पिश् (तुदा० उभ० पिशति-ते) 1. रूप देना, बनाना, निर्माण करना 2. संघटित होना 3. प्रकाश करना, उजाला करना।

पिशंग (वि०) [पिश्—अंगच् किच्च] ललाई लिये भूरे रंग का, लाल सा खाकी रंग का—मध्ये समुद्र कक्षुभः पिशङ्गीः शि० ३।३३, १।६, कि० ४।३६, —**गः** खाकी रंग।

पिशंगकः [पिशंग + कन्] विष्णु अथवा उसके अनुचर का विशेषण।

पिशाचः [पिशितमाचमति—आ + चम्, ड० ड पृषो०] भूत, बैताल, शैतान, प्रेत, दुष्ट प्राणी नरभक्षितः पिशाचोऽपि भोजनेन— विक्रम० २, मनु० १।३७, १२।४४। सम० **-आलयः** वह स्थान जहाँ फास्फोरस के कारण अंधेरे में प्रकाश होता हो,—**भूः** एक प्रकार का वृक्ष (सिहोर),--**भाषा,—संचारः** पिशाच द्वारा आविष्ट होना,-- **भाषा** 'शैतानों की भाषा' पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग नाटकों में मिलता है, संस्कृत का अपभ्रंश,-- **सभम्** 1. शैतानों की सभा 2. भूतों का घर, प्रेतावास।

पिशाचकिन् (पुं०) [पिशाच + इनि, कुक्] धन के स्वामी कुबेर का विशेषण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिशाचिका [पिशाच+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. पिशाचिनी, भूतनी, स्त्री पिशाच 2. (समास के अन्त में) किसी पदार्थ के लिए शैतानी या पैशाचिकी आसक्ति–किमनया आयुधपिशाचिकया -महावी० ३, युद्ध के लिए घोर अनुरक्ति, **पिशाची** भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है,—तस्य खल्वियं यावज्जीवमायुधपिशाची न हृदयादपक्रामति—बालरा० ४ या —कियच्चिरमियमतिनाटयिष्यति भवंतमायुधपिशाची- -अनर्घ० ४।

पिशितम् [पिश्+क्त] मांस - कुत्रापि नापि खलु हा पिशितस्य लेशः--भामि० १।१०५, रघु० ७।५०। सम० - **अशनः,—आशः,—आशिन्,—भुज्** (पुं०) 1. मांसभक्षी, पिशाच, बेताल--(छायाः) संध्यापयोदकपिशाः पिशिताशनानां चरंति—मृ० ३।२७ 2. मनुष्यभक्षी, नरभक्षी।

पिशुन (वि०) [पिश्+उनच्, किच्च | (क) संकेत करने वाला, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला, प्रदर्शन करने वाला, परिचायक--शत्रूणामनिशं विनाशपिशुनः शि० १।७५, तुल्यानुरागपिशुनम् विक्रम० २।१४, रघु० १।५३, अमरु ९७ (ख) स्मरणीय, स्मारक, क्षेत्रं क्षत्रवधानपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः मेघ० ४८ 2. मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर, चुगली खाने वाला —पिशुनजनं खलु विभ्रति क्षितीन्द्राः भामि० १।७४ 3. दुष्ट, क्रूर, प्रद्वेषी 4. अधम, कमीना, तिरस्करणीय 5. मूर्ख, मन्दबुद्धि, नः 1. मिथ्या निन्दा करने वाला, चुगलखोर, ढिंढोरवा, अधम, भेदिया, दोही, कलंकित करने वाला शि० १।१३५, पंच० १।३०४, मनु० ३।१६१ 2. रूई 3. नारद का विशेषण 4. कौवा। सम० **वचनम्,—वाक्यम्** चुगली, गुणनिन्दा, बदनामी।

पिष् (भ्वा० पर०–पिनष्टि, पिष्ट) 1. कूटना, पीसना, दरदरा करना, कुचलना—अयवा भवतः प्रवर्तना न कथं पिष्टमियं पिनष्टि नः नै० २।६१, १३।१९, माघ० १।पिपेष पिपेष -महावी० ६।४५, भट्टि० ६।३७, १२।४८ भामि० १।१२ 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, नष्ट करना, मार डालना (संप्र० के साथ) कमेण पेष्टुं भुवनद्विषामसि -शि० १।४०, उद् ,कुचलना, पीस डालना, **निस्—**,कूटना, चूर्ण करना, कण कण करना, (तं) निष्पिपेस क्षितौ क्षिप्रं पूर्णकुंभमिवांभसि -महा०, शिलानिष्पिष्टमृद्गारः - रघु० १२।७३ 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, खरोंच मारना मट्टि० ६।१२०।

पिष्ट (भू० क० कृ०) [पिष्+क्त] पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, कुचला हुआ -भामि० १।१२,७३ 2. रगड़ा हुआ, मीजा हुआ, (हाथ) मिलाया हुआ,—**ष्टम्** पिसी हुई कोई चीज, पिसा हुआ मसाला 2. आटा, बेसन - पिष्टं पिनष्टि 'पिसे हुए को पीसता है' अर्थात् व्यर्थ काम करता है, या बिना किसी लाभ के दोहराता है 3. सीसा। सम० **उदकम्** आटे में मिला हुआ जल, **पचनम्** आटा भूनने के लिए कड़ाही, पतीली आदि, **पशुः** आटे का बना या ढला हुआ किसी पशु का पुतला **पिण्डः** आटे की बाटी या पेड़ी **पूरः** दे० 'घृतपूर', **पेषः, पेषणम्** पिसे को पीसना, व्यर्थ काम करना, बिना किसी लाभ के दोहराना 'न्यायः' दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, **मेहः** एक प्रकार का मधुमेह, **वर्तिः** एक प्रकार का लड्डू जो घी, दाल या चावल से बनाया जाता है,—**सौरभम्** (पिसा हुआ) चन्दन।

पिष्टकः,- -कम् [पिष्ट+कन्] 1. बाटी जो किसी अनाज के आटे से बनाई गई हो 2. तिकी हुई बाटी, रोटी, पूरी,—**कम्** तिलकुट, तिल के लड्डू।

पिष्टपः,- पम् [विशस्ति अत्र सुकृतिनः--विश्+कप् नि०] विश्व का एक भाग—तु० 'विष्टप'।

पिष्टातः [पिष्ट+अत्+अण्] सुगंधयुक्त या खुशबूदार चूर्ण।

पिष्टिक [पिष्ट+ठन्] चावलों के आटे की बनी टिकिया।

पिस् 1 (भ्वा० पर० पेसति) जाना, चलना ॥ (चुरा० उभ० पेसयति—ते) 1. जाना 2. मजबूत बनना 3. रहना 4. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5. देना या लेना।

पिहित (भू० क० कृ०) [अपि | धा+क्त, अप. आकारलोपः] 1. बन्द, अवरुद्ध, रुका हुआ, जकड़ा हुआ --दे० अपि पूर्वक धा 2. ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त --दे० अपिहित 3. भरा हुआ, ठसा हुआ।

पी (दिवा० आ० पीयते) पीना—तव वदनमवापुर्ये निपीय मृच्छ० १०।१३, वे० १।१।

पीचम् (नपुं०) ठाठी।

पीठम् [पेठन्ति उपविशन्ति अत्र--पि+घञ्, वा० दीर्घः पीयते अत्र पी--कर्तृ] 1. आसन (सिंहासन, चौकी, कुर्सी पलंग आदि) जवैन पीठादुदतिष्ठदच्युतः—शि० १।१२, रघु० ४।८४, ६।१५, 2. ब्रह्मचारी के बैठने के लिए कुशासन 3. देवासन, वेदी 4. पादपीठ, आधार 5. बैठने की विशेष मुद्रा। सम० **-कीलः** विश्वासपात्र पुरुष परोपजीवी, **-गर्भः** मूर्ति के आधार में वह गड्ढा जिसमें वह जमाई जाती है, **नायिका** वह चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-पूजा के अवसर पर दुर्गा मान कर पूजी जाती है,—**भूः** आधार, नींव, भूगृह, तहखाना, **मर्दः** 1. सहचर, परोपजीवी, जो नाटक में बड़े२ कार्यों में नायक की सहायता करता है जैसे कि नायिका की प्राप्ति में, इसी प्रकार 'पीठ-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंदिका' वह स्त्री है जो नायिका के प्रेमी नायक को प्राप्त कराने में उसकी सहायता करती है 2. नृत्य शिक्षक जो वेश्याओं को नृत्यकला की शिक्षा देता है, —सर्ग (वि०) लंगड़ा, विकलांग।

पीठिका [पीठ+ईष्+क+टाप्, ह्रस्वः] 1. आसन (चौकी, तिपाई) 2. पीढ़ा, आधार 3. पुस्तक का अनुभाग या प्रकाश जैसा कि दशकुमार चरित की पूर्व पीठिका और उत्तरपीठिका।

पीड् (कुरा० उभ०—पीडयति-ते, पीडित) पीड़ित करना, सताना, नुकसान पहुँचाना, घायल करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना, छेड़ना, परेशान करना नीलं नलपीडिच्छदैः भट्टि० १५।८२, मनु० ४।६७, २३८, ७।२९ 2. विरोध करना, सामना करना 3. (नदी आदि को) घेरना दबाना, भींचना, निचोड़ना, बटकी काटना कदे पीडयन् मद्यं० ८, लक्षेन सिन्धुमिव नैलयधिं यत्नतः पीडयन् भट्टि० २।५, दशनपीडिताधरा रघु० १९।३५ 5. दबाना, कष्ट करना —मनु० १।५१ 6. अवहेलना करना 7. किसी अशुभ वस्तु से डरना 8. ग्रहण-ग्रस्त होना, अभि, अव, दबाना, निचोड़ना, पीड़ित करना, आ, दबाना, भार से झुका देना पर्याप्तभरणैरापीडितः गीत० १२, उद्, 1. मसलना, घिसना, रगड़ना अन्योन्यपुष्पोद्वर्तनोत्पलाक्ष्याः स्वनदंश पांडु तथा पद्मरेणुः कु० १।४०, शि० ३।६६ 2. पिचकाना, ऊपर को फेंकना, धकेलना, पेलना रघु० ५।४६, १६।६६, उप, 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, दुःखी करना, तंग करना, परेशान करना -स्तनोत्कोटैः परिस्खलद्बाला—कि० ३।५४, शि० १०।४७ 2. अत्याचार करना, बरबाद करना मनु० ८।६७, ७।१९५, नि, 1. तंग करना, पीड़ित करना, परेशान करना, दंड देना, कष्ट देना -मनु० ७।२७ 2. निचोड़ना, दबाना, कस कर पकड़ना, दृढ़ता से लेना, थामना—गुरोः मदारस्य निपीड्य पादौ रघु० २।३५, ५।६५, नि, —, निचोड़ना—दे० निपीडित, परि—, 1. पीड़ा देना, कष्ट देना, परेशान करना 2. दबाना, भींचना इ— अत्यधिक पीड़ित करना, यातना देना, सताना २ दबाना, भींचना, सम्—, भींचना, बटकी काटना कदे जीर्णलतप्रतानवलयैनाल्पर्यसंपीडितः शृं० ७।११, चौ० ३।

पीडकः [पीड्+ण्वुल्] अत्याचारी।

पीडनम् [पीड्+ल्युट्] 1. पीड़ित करना, कष्ट देना, अत्याचार करना, पीड़ा पहुंचाना —मनु० ९।२९९ 2. भींचना, दबाना -दोर्बलिबंध-निबिडोत्तन पीडनानि गीत० १०, दंष्ट्रोत्कीपीडन नखसकारक्तसिक्थाम् वीर० ४८ 3. दबाने का उपकरण 4. लेना, थामना, पकड़ना जैसा कि 'करपीडन' और 'पाणिपीडन' में 5. बर्बाद करना, उजाड़ना 6. अनाज गाहना 7. ग्रहण —जैसा कि 'ग्रहपीडन' में 8. ध्वनि निरोध, स्वरोच्चारण का एक दोष।

पीड़ा [पीड्+अङ्—टाप्] 1. दर्द, कष्ट, भोगना, सताना, परेशानी, वेदना—आश्रमपीडाः रघु० १।३७, बाधा, ७१, मर्दन, दारिद्र्यपीडा आदि 2. क्षति पहुँचाना, हानि पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना भग० १७।१९, मनु० ७।१९९ 3. उजाड़ना, बर्बाद करना 4. उल्लंघन, अतिक्रमण 5. प्रतिबंध 6. दया, करुणा 7. ग्रहण 8. सुमिरनी, शिरोमाल्य 9. सरलवृक्ष : सम० कर (वि०) कष्टकर, पीड़ामय।

पीडित (भू० क० कृ०) [पीड्+क्त] 1. पीड़ा से युक्त, तंग किया हुआ, सताया हुआ, अत्याचारग्रस्त, नीचा गया 2. निचोड़ा हुआ, दबाया हुआ 3. विवाहित, पाणिगृहीत 4. अतिक्रान्त, तोड़ा हुआ 5. उजाड़ा हुआ, बर्बाद किया हुआ 6. ग्रहणग्रस्त 7. बाँधा हुआ, बंधनग्रस्त, **तम्** 1. दर्द करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना 2. मैथुन का विशेष प्रकार, रतिबंध,—**तम्** (अव्य०) मजबूती से, सटा कर, दृढ़ता पूर्वक।

पीत (वि०) [पा+क्त] 1. पीया हुआ, चढ़ाया हुआ 2. परिचालित, सिक्त, भरा हुआ, संतृप्त 3. पीला विद्युत्प्रभारुचित-पीनपटोनरीयः मच्छ० ५।२, तः 1. पीला रंग 2. पुखराज 3. कुसुम्भ,—**तम्** 1. सोना 2. हरताल। सम०—अम्बरः विष्णु का विशेषण,—**अंबरः** विष्णु का विशेषण —इति निगदितः प्रेक्षु पीताम्बरोऽपि नवाकरोत्-गीत० १२ 2. अभिनेता 3. पीले वस्त्र पहने हुए सांख्य संन्यासी, **अरुण** (वि०) पीताभलाल, पीलेपन से युक्त लाल, **अश्मन्** (पु०) पुखराज,—**कदली** केले का एक भेद, सुनहरी केला,—**कंदम्** गाजर,—**काष्ठम्** पीला चंदन, **चंदनम्** 1. एक प्रकार का चंदन 2. केसर 3. हल्दी, **चञ्चुकः** दोयल, तुंडः कारंडव पक्षी,—**दारु** (नपुं०) एक प्रकार का चीड़ का पेड़, या सरल वृक्ष, **दुग्धा** दूधारू गाय, **द्रुः** सरल वृक्ष, **पाद्या** एक प्रकार का पक्षी, मैना, **मणिः** पुखराज, **माक्षिकम्** एक प्रकार का खनिज द्रव्य, सोनामाखी, **-मूलकम्** गाजर, **रक्त** (वि०) पीलेपन से युक्त लाल रंग का, संतरे के रंग का (**क्तम्**) एक प्रकार का पीले रंग का लाल, पुखराज,—**रागः** 1 पीला रंग 2. मोम 3 पयकेसर, —**बालुकः** हल्दी, **वासस्** (पुं०) कृष्ण का विशेषण, —**सारः** 1 पुखराज 2 चन्दन का वृक्ष (**रम्**) पीली चंगु गो लकड़ी, —**सारि** (नपुं०) अंजन, सुर्मा, **स्कंधः** सूअर, —**स्फटिकः** पुखराज, —**हरित** (वि०) पीलापन लिये हुए हरा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीतकम् [पीत+कन्] 1. हरताल 2. पीतल 3. केसर 4. शहद 5. अगर की लकड़ी 6. चंदन की लकड़ी।

पीतनः [पीन करोति इति—पीत+णिच्+ल्युट् वा पीतं नयति इति पीत+नी+ड] गूलर की जाति का वृक्ष —नम् 1. हरताल 2. केसर।

पीतल (वि०) [पीत+ला+क] पीले रंग का,—लः पीला रंग, —लम् पीतल।

पीतिः [पा+क्तिच्] घोड़ा —(स्त्री०) 1. घूंट, पीना 2. मदिरालय 3. हाथी की सूंड।

पीलिका [पीत+ठन्+टाप्, इत्वम्] 1. केसर 2. हल्दी 3. पीली चमेली, या सोनजूही।

पीलुः [पा+क्तुन्] 1. सूर्य 2. अग्नि 3. हाथियों के झुंड का मुख्य हाथी, यूथपति।

पीषः [पा+थक्] 1. सूर्य 2. काल 3. अग्नि 4. पेय 5. जल।

पीषिः [=पीति, पृषो० तस्य षः] घोड़ा।

पीन (वि०) [प्याय+क्त, संप्रसारणे दीर्घः] 1. स्थूल, मांसल, हृष्टपुष्ट 2. भरापूरा, विशाल, मोटा —जैसा कि 'पीनस्तनी' में 3. पूर्ण, गोलमटोल 4. प्रभूत, अधिक। सम० -ऊधस् स्त्री (पीनोध्नी) भरे पूरे ऐन (औड़ी) वाली गाय, वक्षस् (वि०) विशाल-वक्षःस्थल वाला, भरी पूरी छाती वाला।

पीनसः [पीनं स्थूलमपि जनं स्यति नाशयति—पीन+सो+क] 1. नाक पर दुष्प्रभाव डालने वाला जुकाम 2. खांसी, जुकाम।

पीयुः [पा+कुं नि० युक्, ईत्वम्] 1. कौवा 2. सूर्य 3. अग्नि 4. उल्लू 5. काल 6. सोना।

पीयूषः,-षम् [पीय+ऊषन्]। सुधा, अमृत मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः भर्तृ० २।६८, इमां पीयूषलहरीम् गंगा० ५३ 2. दूध 3. ब्याने के बाद पहले सात दिन का गाय का दूध। सम० महस् (पुं०), रुचि: 1 चन्द्रमा 2. कपूर,—वर्षः 1.अमृतवर्षा 2. चन्द्रमा 3. कपूर।

पीलकः [पील्+ण्वुल्] मकोड़ा।

पीलुः [पील्+उ] 1. बाण 2. अणु 3. कीड़ा 4. हाथी 5. ताड़ का तना 6. फूल 7. ताड़ के वृक्षों का समूह 8. 'पीलु' नाम का एक वृक्ष।

पीलूकः [पीलु+कन्] चींटा।

पीव् (स्वा० पर० पीवति) मोटा-ताजा या हृष्ट पुष्ट होना।

पीवन् (वि०) (स्त्री०—पीवरी) [पीव्+क्वनिप्, सम्प्र० दीर्घः] 1. भरा पूरा, स्थूल, मोटा 2. हृष्ट पुष्ट, बलवान् (पुं०) पवन।

पीवर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [पीव्+वरच्, सम्प्र० दीर्घः] 1. स्थूल, विशाल, हृष्टपुष्ट, मांसल, मोटा-ताजा रघु० ३।८, ५।६५ १९।३२ 2. फूला हुआ मोटा, -रः कछुवा, री 1. तरुणी 2 गाय।

पीवा [पीयते-पी+व+टाप्] जल।

पंस् (चुरा० उभ० पंसयति-ते) । कुचलना, पीसना 2. पीड़ा देना, कष्ट देना, दण्ड देना।

पुंस् (पुं०) [पा+डुयसुन्] (कर्तृ०—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः, करण द्वि० व० -पुम्भ्याम्, संबो० ए० व० पुमन्) 1. पुरुष 2. नर पुमि विश्वमिति कुत्र कुमारी नै० ५।११० 2. इंसान, मानव- अस्याधीः स पुमांल्लोके हि० १ 3. मनुष्य, मनुष्य आदि, कौम, राष्ट्र - वधैः पुंसां रघुपतिपदैः मेघ० १२ 4. टहलुआ, सेवक 5. पुल्लिंग शब्द 6. पुल्लिंग पुंभि वा हरिश्चन्दनम् अमर० 7. आत्मा। सम०—अनुज (वि०) (पुंसानुज) [पुंसा अनुजः, समासे तृतीयायाः अलुक्] वह जिसका बड़ा भाई भी हो, अनुजा (पुंसानुजा) लड़का होने के बाद जन्म लेने वाली लड़की अर्थात् बड़े भाई वाली लड़की, अपत्यम् (पुंसपत्यम्) लड़का, अर्थः (प्रमर्थः) 1. पुरुष या मनुष्य का उद्देश्य 2. मानव-जीवन के चार ध्येयों में से कोई सा एक, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष, देव पुरुषार्थ, -आख्या (प्रमाख्या) नर की संज्ञा, आचारः (पुमाचारः) पुरुष का आचार, चालचलन, कटिः (स्त्री०) पुरुष की कमर,-कामा (पुंस्कामा) पति की कामना करने वाली स्त्री, -कोकिलः (पुंस्कोकिलः) नर-कोयल कु० ३।३२,—क्षेत्रः (पुंक्षेत्रः) नर-क्षेत्र,--गवः (पुंगवः) 1. बैल, साढ़ 2. (समास के अन्त में) मुख्य, सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, पुरुष या किसी भी श्रेणी का प्रमुख व्यक्ति—वाल्मीकिर्मुनिपुंगवः -रामा०, इसी प्रकार गजपुंगव, भर्तृ० २।३१, नर पुंगवःआदि, -केतुः शिव का विशेषण - कु० ७।७७, चली (पुंश्चलीयः) स्त्री का बेटा,-चिह्नम् (पुंश्चिह्नम्) शिश्न, पुरुष की जननेन्द्रिय, जन्यन् (पुंजन्यन्) (नपुं) लड़के का पैदा होना, नर-सन्तान का जन्म लेना, योगः वह नक्षत्रपुंज जिसमें कि लड़कों या नर-सन्तान का जन्म होता है, दासः (पुंदासः) पुरुष-दास,- ध्वजः (पुंध्वजः) 1 प्राणिमात्र में किसी भी जाति का नर 2. वृक्ष, -नक्षत्रम् (पुंनक्षत्रम्) नर जाति का नक्षत्र, नामः (पुंनामः) 1. पुराणों में हाथी, पूज्य या आदरणीय पुरुष 2. सफेद हाथी 3. सफेद कमल 4. जायफल 5. नाग केशर, नाम की वृक्ष रघु० ६।५७, नाटः,-डः (पुंनाटः-ड:) इस नाम का वृक्ष, —नामधेयः (पुंनामधेयः) नर, पुरुषवाची, नामन् (पुंनामन्) (वि०) पुंलिंग नामधारी, (नु) पुंनाग नामक वृक्ष, -पुत्रः नर-सन्तान, लड़का, प्रजनम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्गं, -भूमन् (पुंभूमन्) (पु)

For Private and Personal Use Only

वह शब्द जो केवल पुंल्लिग बहुवचनात ही होता है –दारा: पुंभूमि चाक्षता:–अमर०,–योग: (पुंयोग) पुरुष के साथ सहवास या संसर्ग 2. किसी पुरुष या पति का संकेत–पुंयोगे क्षत्रिणी,–रत्नम् (पुरुरत्नम्) श्रेष्ठ राशि: (पुराशि: नर-राशि, –रूपम् (पुरूपम्) नर का रूप, –लिंग (पुंल्लिग) (वि०) पुरुषवाचक (शब्द), पुरुष वाचक (गम्) 1. पुरुष वाचक चिह्न 2 वीर्य, पौरुष 3. पुरुष की जननेन्द्रिय,–वत्स: (पुंवत्स:) बछड़ा, –वृष: (पुंवृष:) छछूंदर,–वेष (पुंवेष) (वि०) पुरुष की वेश भूषा में, मर्दानी पोशाक पहने हुए,–सवन (पुंसवन) (वि०) पुत्रोत्पत्ति करने वाला (नम्) सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है –रघु० ३।१० 2. भ्रूण, गर्भ 3. दूध।

पुंस्त्वम् [पुंस्+त्व] 1. पुरुष का लक्षण, वीर्य, पुरुषत्व, मर्दानगी –वरम् पुंस्त्वे परीक्षितः–याज्ञ० १।५५, 2. शुक्र, वीर्य 3. पुंलिंग।

पुंवत् (अव्य०) [पुंस्+वति] 1. पुरुष की भांति –रघु० ६।२० 2. पुंलिंग में।

पुक्कश (वि०) (स्त्री०–शी), **पुक्कस** (वि०) (स्त्री०–सी) [पुक् कुत्सितं कशति गच्छति–पुक्+कश् (स्)+अच्] अधम, नीच, शः, सः एक पतित वर्णसंकर जाति, शूद्र स्त्री में उत्पन्न निषाद की सन्तान – जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कसः–मनु० १०।१८, –शी, –सी 1 कली नील का पौधा 3. पुक्कस जाति की स्त्री।

पुंख:,–खम् [पुमासं खनति–पुम्+खन्+ड] 1. बाण का पंख वाला भाग–रघु० २।३१, ३।६४, ९।६१ 2. बाज, श्येन।

पुंखित: [वि०] [पुंख+इतच्] पंखों से युक्त (यथा–बाण)।

पुंज:,–जम् [–पुञ्ज, पृषो०] ढेर, संग्रह, समुच्चय।

पुंजल: [पुंज+ला+क] आत्मा।

पुच्छ:,–च्छम् [पुच्छ्+अच्] 1. पूंछ–पश्चात्पुच्छे वहन्ति विपुलं उत्तर० ४।२७ 2. बालों वाली पूंछ 3. मोर की पूंछ 4. पिछला भाग 5. किसी वस्तु का किनारा। समः–अग्रम्, –मूलम् पूंछ का सिरा,–कंटक: विच्छू, जाहम् पूंछ की जड़।

पुच्छटि:,–टी (स्त्री०) [पुच्छ+अट्+इन्, पुच्छटि+ङीप्] अंगुलियां चटकाना।

पुच्छिन् (पुं०) [पुच्छ+इनि] मुर्गा।

पुंज: [पुञ्+जि+क] ढेर, समुच्चय, मात्रा, राशि, संग्रह–क्षीरोदवेलेव सफेनपुंजा–कु० ७।२६, प्रत्युद्गच्छति मूर्छानि स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः–गीत० ११।

पुंजि (स्त्री०) [पिञ्ज्+इन्, पृषो०] ढेर, मात्रा, राशि।

पुंजिक: [पुंजि+कन्] ओला।

पुंजित (वि०) [पुंज+इतच्] 1. ढेरों, संगृहीत, एक जगह लगाया हुआ ढेर 2. मिलाकर भींचा हुआ, दबाया हुआ।

पुट् i (तुदा० पर०–पुटति) 1. आलिंगन करना, लिपटना 2. अन्तर्ग्रंथित करना, बटना, गूंथना ii (चुरा० उभ० पुटयति–ते) 1. मिलना 2. बांधना, जकड़ना 3. पीट-यति–ते (क) पीसना, चूर्ण करना (ख) बोलना (ग) चमकना iii (स्वा० पर० पोटति) 1. पीसना 2. मलना।

पुट:,–टम् [पुट्+क] 1. तह 2. खोखली जगह, बिवर, खोखलापन–निम्नपल्लवपुटो वनानिल:–रघु० ९।६८, ११।२३, १७।१२, मालवि० ३।९, अंजलिपुट, कर्णपुट आदि 3. दोना, पत्तों की तहकरके बनाया गया, पुत्तड़ा–दुरुवा पयः पत्रपुटे मदीयम्–रघु० २।६५, मनु० ६।२८ 4. कोई उथला पात्र 5. फली, छीमी 6. स्थान, ढकना, आच्छादन 7. फलक (पुटी भी इन्हीं अर्थों में) 8. घोड़े का सुम, –ट: रत्नपेटी,–टम् जायफल। समः–उदजम् सफेद छतरी,–उदकः नारियल,–भेद: 1. बर्तन, कलसा, घड़ा 2. तांबे का पात्र,–पाकः औषधियां तैयार करने की विशेष पद्धति, (इसमें औषधियों को पत्तों में लपेट कर ऊपर से मुल्तानी पोत देते हैं और फिर आग में भूना जाता है– अनि-भिन्नो गभीरत्वादंतर्गूढघनव्यथः, पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः–उत्तर० ३।१,–भेद: 1. पुर, नगर 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र, आतोद्य 3. जला-शयं या भवन,–भेदनम् कस्बा या नगर–शि० १२।२६।

पुटकम् [पुट+कन्] 1. तह 2. उथला या कम गहरा प्याला 3. दोना या पुत्तड़ा 4. कमल 5. जायफल।

पुटकिनी [पुटक–इनि+ङीप्] 1. कमल 2. कमल समूह।

पुटिका [पुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] इलायची।

पुटित (वि०) [पुट्+क्त] 1. रगड़ा हुआ, पीसा हुआ 2. सिकुड़ा हुआ 3. टांका लगाया हुआ, सीया हुआ 4. खण्डित।

पुटी [पुट+ङीप्] दे० 'पुट'।

पुड् (तुदा० पर०) 1. छोड़ना, त्याग देना, तिलांजलि दे देना 2. पदच्युत करना 3. निकालना, विदा करना, खोजना।

पुंड् (भ्वा०पर०–पुंडति) पीसना, चूरा करना, चूर्ण बना देना या पीस डालना।

पुंड: [पुण्ड्+घञ्] चिह्न, निशान।

पुंडरीकम् [पुंड्+ईकन् वि०] 1. श्वेतकमल,–उत्तर० ६।२७, मा० ९।७४ 2. सफेद छाता,–क: 1. सफेद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंग 2. दक्षिणपूर्व या आग्नेयी दिशा का अधिष्ठातृ-दिक्पाल रघु० १८।८ 3. व्याघ्र 4. एक प्रकार का साँप 5. एक प्रकार का चावल 6. एक प्रकार का कीड़ा 7. हाथी का बुखार 8. एक प्रकार का आम का वृक्ष 9. घड़ा, जलपात्र 10. आग 11. मस्तक पर सम्प्रदायद्योतक तिलक। सम०—अक्षः विष्णु का विशेषण रघु० १८।८,—उलूकः एक तरह का पक्षी, —मुखी एक तरह की जोंक।

पुंड्रः [पुंड्+रक्] 1. एक प्रकार का गन्ना (लाल रंग का) पौंडा 2. कमल 3. श्वेत कमल 4. (मस्तक पर) सम्प्रदायद्योतक तिलक (चन्दनादिक का) 5. कीड़ा —ड्राः (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम। सम० केलिः हाथी।

पुंड्रकः [पुंड्+कन्] 1. एक प्रकार का ईख (लाल रंग का) पौंडा 2. सम्प्रदाय द्योतक तिलक।

पुण्य (वि०) [पू०+यत्, णुक्, ह्रस्वः] 1. पवित्र, पुनीत, शुचि जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु आश्वमेध मेघ० १, पुण्यं धाम चडीश्वरस्य ३३, रघु० ३।४१, शं० २।१४, मनु० २।६८ 2. अच्छा, भला, शुभी, सच्चा, न्याय 3. शुभ, कल्याणकारी, भाग्यशाली, अनुकूल (दिन आदि) मनु० ३।२०,२६ 4. रुचिकर, सुहावना, प्रिय, सुन्दर 5. प्रकृत्या पुण्यश्लोकी—महावी० १।१६,२४, उत्तर० ४।१९, इसी प्रकार 'पुण्यदर्शन' 6. मधुर, गंधयुक्त (जैसे सुगंध, परिमल) 7 आध्यात्मिक, उत्सव या संस्कार संबंधी, —ण्यम् 1. सद्गुण, धार्मिक या नैतिक गुण अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८३, महती पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया—शा० ३।१, रघु० १।६९, मे० ३।८७ 2. सद्गुणसंपन्न कृत्य, प्रशस्त कार्य 3 पवित्रता, पवित्रीकरण 4. पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुंड, —ण्या पवित्र तुलसी। सम० —अहन् मंगलमय या शुभ दिवस पुण्याहं भवतो ब्रुवन्तु, अस्तु पुण्याहम्—पुण्याहं ब्रूत मंगल सुदिवसं प्रातः प्रयातस्य ते—अमरु ३१, वाचनम् बहुत से धार्मिक संस्कारों के आरंभ में तीन बार उच्चारण करना 'यह शुभदिवस है',—उदयः सौभाग्य का प्रभात,—उद्यान (वि०) सुन्दर उद्यान रखने वाला, कर्तृ (पुं०) स्तुत्य या गुणवान् पुरुष,—कर्मन् (वि०) स्तुत्य कार्यों के करने वाला, खरा, ईमानदार (नपुं०) स्तुत्य कार्य, —कालः शुभ समय,—कीर्ति (वि०) अच्छे नाम वाला, यशस्वी, विख्यात- भट्टि० १।५,—कृत् (वि०) सद्गुणसंपन्न, प्रशंसनीय, स्तुत्य,—कृत्या धर्मकार्य, ऐसा काम जिसके करने से पुण्य हो,—क्षेत्रम् 1. पवित्र-स्थान, तीर्थस्थान 2. पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त, —गंध (वि०) मधुर गंध से युक्त, —गृहम् 1. वह स्थान जहाँ अन्न आदि बाँटा जाय, 2. देवालय, —जनः 1. सद्गुणी 2. राक्षस, पिशाच 3. यक्ष रघु० १३।६०, —ईश्वरः कुबेर का विशेषण— अनुययौ यमपुण्यजनेश्वरौ रघु० ९।६,—जित (वि०) पुण्य-द्वारा प्राप्त किया हुआ, तीर्थम् तीर्थयात्रा का शुभ-स्थान, दर्शन (वि०) सुन्दर (नः) नीलकंठपक्षी (म्) पवित्रस्थान, मन्दिर आदि का दर्शन,—पुरुष धर्मात्मा या पुण्यात्मा, प्रतापः अच्छे गुणों या नैतिक कार्यों का प्रभाव, फलम् सत्कर्मों का पुरस्कार, (लाः) वह उद्यान जहाँ पुण्यरूपी फलों की प्राप्ति होती है, भाज् (वि०) सौभाग्यशाली, धर्मात्मा, अच्छे गुणों वाला पुण्यभाजः खलमीं मुनयः का० ४३,—भूः, भूमिः (स्त्री०) पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त, रात्रः शुभरात्रि, लोकः स्वर्ग, वैकुण्ठ, शकुनम् शुभशकुन (नः) शुभशकुनसूचक पक्षी,—शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सत्कर्मों में रुचि रखने वाला, धर्मपरायण, ईमानदार, श्लोक (वि०) सुविख्यात, जिसका नामोच्चारण ही शुभ समझा जाय, उत्तम यशवाला, पावनचरित्र वाला (कः) (निषध देश के राजा) नल का विशेषण, युधिष्ठिर और जनार्दन का विशेषण— पुण्यश्लोको नलः राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः, पुण्यश्लोका च वैदेही, पुण्यश्लोको जनार्दनः। —(का) सीता और द्रौपदी का विशेषण,—स्थानम् पुण्यभूमि, पवित्रस्थान, तीर्थस्थान।

पुण्यवत् (वि०) [पुण्य+मतुप्, मस्जादेः] 1. सत्कर्म करने वाला, सद्गुणी 2. भाग्यशाली, मंगलमय, अच्छी किस्मत वाला 3. सुखी, भाग्यवान्।

पुत् (नपुं०) [पू+डुति -पवा०] नरक का एक विशेष प्रभाग जहाँ पुत्रहीन व्यक्ति डाले जाते हैं, दे० 'पुत्र' नीचे। सम० —नामन् (वि०) 'पुत' नाम वाला।

पुतलः,-ली [पुत्+घञ्, -पुत्रं त्रायते लाति—पुत-+ला —क, स्त्रियां ङीप्] 1 प्रतिमा, मूर्ति, चुत, पुतली 2. गुड़िया कठपुतली। सम० —दहनम्,—विधिः विदेश में जिसका प्राणांत हुआ हो अथवा अप्राप्य शव के बदले उसका पुतला बना कर जलाना।

पुत्तलकः, पुत्तलिका [पुत्तल+स्वार्थे कन्, पुत्तली+स्वार्थे कन्+टाप्, ह्रस्वः] गुड़िया, मूर्ति आदि।

पुत्तिका [पुत्त+ठन्+टाप्] 1. एक प्रकार की मधुमक्खी, 2. दीमक।

पुत्रः [पुत्, भे+क] बेटा (इस शब्द की व्युत्पत्ति—पुम्नाम्नो नरकात्त्रायते पितरं सुतः, तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा—मनु० ९।१३८. इस लिए इस शब्द का शुद्ध रूप 'पुत्त्र' है) 2. बच्चा, किसी जानवर का बच्चा 3. प्रिय वत्स (छोटे बच्चों को प्यार से संबोधित करने का शब्द) 4. (समास के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु यथा अग्निपुत्र, शिलापुत्र आदि, **जो** (द्वि० व०) पुत्र और पुत्री (**पुत्रीकृ** पुत्र के रूप में गोद लेना रघु० २।३६)। सम० **अन्नाद** 1. जो पुत्र की कमाई पर निर्वाह करता है, या जिसके निर्वाह का व्यवस्था पुत्र द्वारा की जाय 2. एक विशेष प्रकार का मांसु दे० कुट्टीचक, —**अग्नि** (वि०) पुत्र चाहने वाला,—**इष्टिः, इष्टिका** (स्त्री०) पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष, **काम** (वि०)पुत्र की कामना करने वाला, **कार्यम्** पुत्र संबंधी संस्कारादि, **कृतकः** जो पुत्र की भांति मानी गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र—स्वामिकार्यादित्यधिकमौ जहाति सोऽयं न पुत्र कृतकः पदवीं गतस्ते श० ४।१३, - **जात** (वि०) जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो, **दारम्** पुत्र और पत्नी, —**धर्मः** पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य - **पौत्रम्**—आः बेटे और पोते, **पौत्रीण** (वि०) पुत्र से पौत्र का प्राप्त होने वाला, आनुवंशिक भट्टि० ५।१५,—**प्रतिनिधिः** पुत्र के स्थान पर अपनाया हुआ, (उत्त० - **सम** पुत्र), - **लाभः** पुत्र की प्राप्ति, - **वधूः** (स्त्री०) पुत्र की पत्नी, स्नुषा.—**सख** बच्चों से प्रेम करने वाला, बच्चों का प्रेमी, **हीन** (वि०) जिसके पुत्र न हो, निस्संतान।

पुत्रक [पुत्र + कन्] 1. छोटा पुत्र, बालक, बच्चा, लाल, वत्स (बात्सल्य को प्रकट करने वाला शब्द) 2. गुड़िया, कठपुतली कु० १।२९ 3. धूर्त, ठग 4. टिड्डी, टिड्डा 5. धरम का पत्थाना, पतंग, ७ बाल।

पुत्रका, पुत्रिका, पुत्री [पुत्रक + टाप्, पुत्री+कन् + टाप्, ह्रस्व पुत्र + ङीप्] 1. बेटी 2. गुड़िया, पुतली 3 (समास के अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु यथा अग्निपुत्रिका कन्दु पुत्रिका आदि। सम० **पुत्रः,—सुतः** 1. बेटा का बेटा, दौहित्र, नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ पुत्र मनु० ९।१३७ 2. बेटी जो पुत्रवत् मानी जाती है तथा पिता के घर रहती है (पुत्रिकैव पुत्रः अथवा पुत्रिकैव सुत पुत्रिका सूतः गोत्रार्थमस्मिन् एव याज्ञ० २।१२८ पर मिता०) 3. चोर,—**प्रसूः** वह माता जिसके कन्याएँ ही हों, पुत्र न हो,—**भर्तृ** (पुं०) बेटी का पति जामाता, दामाद। **पुत्रिन्** (वि०) (स्त्री० नी) [पुत्र-इनि] बेटे वाला, बेटों वाला -रघु० १।९१, शिशु० २।१२, (पुं०) पुत्र का पिता।

पुत्रिय, पुत्रीय, पुत्र्य (वि०) [पुत्र ष, छ, यत् वा] पुत्रसंबंधी पुत्रविषयक।

पुत्रीया [पुत्र -क्यच्-अ—टाप्] पुत्र प्राप्ति की इच्छा।

पुत्रल (वि०) [पूत् कुत्सिते गलो यस्मात् ब० स०] सुन्दर, प्रिय, मनोहर,— लः परमाणु—पुत्रलाः परमाणवः—श्रीधर 2. शरीर, भूतद्रव्य 3. आत्मा 4. शिव का विशेषण।

पुनर् (अव्य०) [पम्-अर्+उरच्] 1. फिर, एक बार फिर, नये सिरे से न पुनरेवं प्रवर्तितव्यम् श० ६, किमत्र चित्रं यदि पुनर्विधातुः स्फुरत्तनूनां शतधारुरुः कुः ५।८२, इसी प्रकार **पुनर्भू** फिर पत्नी बनना 2. वापिस, विपरीत दिशा में (अधिकतर क्रियाओं के साथ), **पुनर्दा** वापिस देना, लौटाना, **पुनर्या**—इ—यम् आदि वापिस जाना, लौटना आदि 3. इसके विपरीत, इसलिए, परन्तु, तोभी, तथापि इसका होना हुए भी (**विरोध** सूचक बल के साथ)—प्रसादे हव मूर्तस्य स्पर्शः सनेर्हादशीतलः, अलौल्यानन्दयति मां स एव पुनः स्वप्नेऽपि नदिनि उत्तर० ३।१४, मम पुनः सर्वमेव नास्ति—उत्तर० २ **पुनः पुनः** फिर-फिर' बार बार' बहुधा'—पुनः पुनः सूतनिषिद्धचापलं रघु० ३।४२, **कि पुनः** कितना अधिक, कितना कम दे० किम् के नीचे, **पुनरपि** फिर, एक बार और, इसके विपरीत। सम० - **अर्थिता** बार बार की हुई प्रार्थना, **आगत** (वि०) फिर आया हुआ, लौटा हुआ, —**अस्मीमृत्यु** देहस्य पुनरागमनं कुतः—सर्व०, **आधानम्, आधेयम्** अभिमंत्रित अग्नि का पुनः स्थापन, **आवर्तः** 1. बारंबार 2 बार २ जन्म होना, - **आवर्तिन्** (वि०) फिर से संसार में जन्म लेने वाला, **आवृत्** (स्त्री०), **आवृत्तिः** (स्त्री०) 1. दोहराना 2. फिर से संसार में आना, बार बार जन्म लेना याज्ञ० ३।१९४ 3. दोहराना, (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण, **उक्त** (वि०) 1. फिर कहा हुआ, दोहराया गया, दुबारा कहा गया 2. फालतू, अनावश्यक - शशांक वाचा पुनरुक्तयेव रघु० २।३८, शि० ९।९४, (**कम्**) **पुनरुक्तता** 1. दोहराना 3. बाहुल्य, आधिक्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति या पुनरुक्ति उत्तर० ५।१५, भर्तृ० ३।७८, **जन्मन्** (पुं०) द्विजन्मा, ब्राह्मण, **पुनरुक्तवदाभासः** प्रतीयमान पुनरुक्ति, पुनरुक्ति का आभास होना, एक अलंकार -उदा० भूजंगकुंडलीव्यक्तसंधिभूषाभृतो जगत्यपि सदा पायादर्थात्मवैभवः शिवः। सा० द० ६२२, (यहाँ पुनरुक्ति की प्रतीति तुरन्त दूर हो जाती है जब कि सदर्भ का सही अर्थ समझ लिया जाता है, तु० काव्य० १० में 'पुनरुक्तवदाभास' के नीचे),—**उक्तिः** (स्त्री०) 1 दोहराना 2 बाहुल्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति, **उत्थानम्** फिर उठना, पुनर्जीवित करना, **उत्पत्तिः** (स्त्री०) 1. पुनरुत्पादन 2 फिर जन्म होना, देहान्तरागमन,—**उपगमः** वापसी —क्वायोध्यायाः पुनरुपगमो दंडकायां वनेषु उत्तर० २।१३,—**ऊढा** ऊंका दुबारा ब्याही हुई स्त्री,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गमनम् वापसी, फिर जाना,– **जन्मन्** (नपुं०) बार २ जन्म होना, देहान्तरगमन, **जात** (वि०) फिर उत्पन्न हुआ, **नवः, नवः** बार २ उगना, नाखून, **दारक्रिया** पुनर्विवाह करना (पुरुष का), दूसरी पत्नी लाना, **प्रत्युपकारः** किसी के उपकार का बदला चुकाना, **भव** बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन **मार्गणं च क्षपयन्तु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः** श० ७।२५, कु० ३।५ 2 नाखून, **भावः** नया जन्म, पुनर्जन्म, **भूः** 1. विधवा जिसका पुनर्विवाह हो गया हो 2. पुनर्जन्म, यात्रा 1 फिर जाना 2. द्वार २ प्रगति करना (जलूस निकलना), –**वचनम्** फिर कहना, **वसुः** (प्रायः द्वि० व०) 1. सातवां नक्षत्र (दो या तीन तारों का पुंज) या तदधिष्ठातृ देवः **पुनर्वसू** रघु० ११।३६ 2 विष्णु और 3. शिव का विशेषण, **विवाह** फिर विवाह होना, **संस्कारः** (पुनः संस्कारः) किसी संस्कार या शुद्धिकारक कृत्य की पुनरावृत्ति, **संगमः, संधानम्** (पुनः संधानम्) फिर से मिलना,–**संभवः** (पुनः-सम्भव) (संसार में) फिर जन्म लेना, देहान्तरागमन।

पुप्फुलः [–पुप्फुसः, पृषो० सस्य लत्वम्] उदरवायु, अफारा।

पुप्फुसः [पुप्फुस्–अच्] 1. फेफड़ा 2. कमल का बीज कोष।

पुर (स्त्री०) (कर्तृ०, ए० व०–पूः, करण०, द्वि० व० पूर्भ्याम्) [पृ+क्विप्] 1. नगर, शहर जिसके चारों ओर सुदृढ़ दीवार हो, पुरप्रभिव्यक्तमुदग्रसादा रघु० १६।२३ 2. दुर्ग, किला, गढ़ 3. दीवार दुर्गप्राचीर 4 शरीर 5 वृद्धि। समः द्वार (स्त्री०), **द्वारम्** नगर का फाटक।

पुरम् [पृ–क] 1. नगर, शहर (बड़े २ विशाल भवनों से युक्त, चारों ओर परिखा से घिरा हुआ, तथा विस्तार में जो एक कोस से कम न हो)–**पुरे तावत्-मेलास्य तन्तीति रविरातपम्** कु० २।३, रघु० १।५९ 2. किला, दुर्ग, गढ़ 3. घर, निवास, आवास 4. शरीर 5. अन्तःपुर, रनिवास 6. पाटलिपुत्र 7. पुष्पकोस, पत्तों की बनी फूलकटोरी 8. चमड़ा 10 गुग्गुल। समः अद्रः नगरप्राचीर पर बना कंगूरा या मीनार, **–अधिपः, अध्यक्षः** नगरपाल, **–अरातिः, –अरिः, –असुहृद** (पुं०), **–रिपुः** शिव के विशेषण –पुरारातिभान्त्या कुसुमशर किं मां प्रहरसि सुभा०, दे० त्रिपुर, **–उत्सवः** नगर में मनाया जाने वाला उत्सव, **–उद्यानम्** नगरोद्यान, उपवन, **–ओकस्** (पुं०) नगर में रहने वाला, **–कोट्टम्** नगरद्वारक दुर्ग **–ग** (वि०) 1. नगर को जाने वाला 2. अनुकूल, **जित्, द्विष्, –भिद्** (पुं०) शिव के विशेषण, **–ज्योतिस्** (पुं०) 1. अग्नि का विशेषण 2. **अग्निलोक**, **–तटी** छोटी पैंठ, छोटा गांव जहाँ पैंठ लगती हो, **तोरणम्** नगर का बाहरी फाटक, **द्वारम्** नगर का फाटक, **निवेशः** नगर की नींव डालना, **पालः** नगररक्षक, दुर्ग का सेनापति, **मथनः** शिव का विशेषण, **मार्गः** नगर की गली, कु० ४।११, रघु० ११।३, **–रक्षः, रक्षकः, रक्षिन्** (पुं०) कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी, **रोधः** दुर्ग का घेरा, **–वासिन्** (पुं०) नागरिक, नगर का रहने वाला, **–शासनः** 1. विष्णु का विशेषण 2. शिव की उपाधि।

पुरटम् [पुर्+अटन्] सोना, स्वर्ण।

पुरणः [पृ+क्यु, उत्वम्, रपरः] समुद्र, महासागर।

पुरतः (अव्य०) [पुर–तस्] सामने, आगे (विप० पश्चात्), पश्यामि तावित्र इतः पुरस्तान्न पश्चात्–मा० १।४०, की उपस्थिति में **न च पश्यसि तस्य नस्य हुरतो मा ब्रूहि दीनम् वचः** भर्तृ० २।५१ 2. बाद में इयं च तेऽन्या पुरतो विडम्बना कु० ५।७०, अमर ४३।

पुरंदरः [पुरं दारयति–इति पृ+णिच्+खच्, मुम्] 1. इन्द्र–रघु० २।७४ 2. शिव का विशेषण 3. अग्नि की उपाधि 4. चोर, सेंध लगाने वाला,–रा गंगा का विशेषण।

पुरंधिः, स्त्री० (स्त्री०) [पुरं गेहरूपं ब्रह्मणं धारयति धृ+इ+ खच्+ङीप्, पृषो० वा ह्रस्वः तारा०] 1. प्रौढ़ विवाहिता स्त्री, माता का, विवाहिता स्त्री–पुरंध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमार हि भवति उत्तर० ४।१२, मृदा० २। ७, कु० ६।३२, ७।२ 2. वह स्त्री जिसका पति व बच्चे जीवित हों।

पुरला [पुर्+ला+क+टाप्] दुर्गा का विशेषण।

पुरस् (अव्य०) [पूर्व असि, पुर् आदेशः] 1. सामने, आगे, उपस्थिति में, आँखों के सामने (स्वतंत्र रूप से या संबंध के साथ) अभ्यु पुरः पश्यसि देव दारुम्–रघु० २।३६, **तस्य प्रियेत्वा कथमग्रि पुरः**–**वेणी०** ३, कु० ४।३, अमरु ४३, प्रायः कृ, भू या अस् धातुओं के साथ प्रयोग (दे० धातु०) 2. पूर्व में, पूर्व से 3. पूर्व की ओर। समः **–करणम्,**–**कारः** 1. सामने या आगे रखना 2. अधिमान 3. सम्मान वर्तावे, आदर-प्रदर्शन, अनुरोध 4. पूजा 5. सहचारिता, हाजरी देना 6. तैयारी 7. व्यवस्थापन 8. पूर्ण करना 9. आक्रमण करना 10. दोषारोपण करना, **–कृत** (वि०) 1. सामने रक्खा हुआ–रघु० २।८० 2 सम्मानित, आदर से बर्ताव किया गया, पूज्य 3. छोटा गया, माना गया, अनुगमन किया–**पुरस्कृतमध्यमकर्मः**–रघु० ८।९ 4. आराधित, पूजित 5. सेवा में प्रस्तुत, संलग्न, संयुक्त 6. तैयार, तत्पर 7. अभिभावित 8. दोषारोपित, कलंकित 9. पूरा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया हुआ 10. प्रत्याशित,—क्रिया 1. आदर प्रदर्शित करना, सम्मानित बनाना, 2. आरम्भिक या दीक्षासंबंधी कृत्य. -ग, गम (पुरोग, गम) (वि०) 1. मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्रायः संज्ञा के बल सहित स किवदन्ती वदंता पुरोगः रघु० १४।३, ६।५५, कु० ७।४० 2. समास में प्रयुक्त) अभिष्ठित- इन्द्र-पुरोगमा देवाः 'इन्द्र के नेतृत्व में देवता',— गतिः (स्त्री०) 1. पूर्वजीवितता, (तिः) कृत्ता, गंतृ,—गामिन् (वि०) 1. पहले या आगे जाने वाला 2. मुख्य, नेतृत्व करने वाला, नेता (पुं०) कृत्ता, चरणम् 1, आरंभिक या दीक्षा विषयक कृत्य 2. तैयारी, दीक्षा 3. किसी देवता के नाम का जप तथा हवन में आहुति, -छदः पूतृक, जन्मन् (पुरोजन्मन्) (वि०) पहले पैदा हुआ, डाश् (पुं०), डाशः (पुरोडाश्,- डाश) चावलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई वस्तु की आहुति मनु० ७।२१, धस् (पुरोधस्) (पुं०) कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का, धानम् (पुरोधानम्) 1. सामने रखना, पुरोहित द्वारा कराया गया उपचार,—शिखा (पुरोशिखा) (और अब अन्य स्त्रियों की अपेक्षा) मनचलेवाली लपटों, पाक (वि०) पूरा होने के निकट. पूरा होने वाला—कु० ६।२०, प्रहर्तृ (पुं०) पहली पंक्ति में आकर लड़ने वाला सैनिक रघु० १३।७२, — फल (वि०) जिसका फल निकट ही हो, (निकट भविष्य में) फल देने वाला रघु० २।२२,—भाग (पुरोभाग) (वि०) 1. बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी 2. छिद्रान्वेषण करने वाला 3. स्पृहाशील, ईर्ष्यालु प्रायः समासविधा परस्परयत्नः पुरोभागा. मालवि० १।२० (यहाँ 'पुरोभाग' शब्द का अर्थ 'ईर्ष्या' भी है) (गः) 1. आगे का भाग, अगला भाग, गाड़ी 2. बलात् प्रवेश, अनधिकार प्रवेश 3. डाह, स्पर्धा,—भागिन् (वि०) आगे रहने वाला, स्वेच्छाचारी, नटखट—श० ५ 2. बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी विक्रम० ३।३, छिद्रान्वेषी, -भाक्तः, वातः (पुरोमारुतः, - वातः) आगे की हवा, सामने चलने वाली हवा - मालवि० ४।३, रघु० १८।३८, -सर (वि०) अगेसर, (- रः) आगे चलने वाला, अग्रदूत श० ४।२ 2. अनुचर, टहलुआ, सेवक—परिमेय पुरःसरो रघु० १।३७ 3. नेता, जो नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख कु० ६।४९ 4. (समास के अन्त में) अनुचरों सहित, परिचरों सहित, के साथ—मातपुरःसरम्, प्रणामपुरःसरम्, वृकपुरःसराः -आदि —स्थायिन् (वि०) सामने खड़े रहने वाला,—हित (वि०) 1. सामने रक्खा हुआ 2. नियुक्त, दूत, आयुक्त (-तः) 1. कार्यभार सँभालने वाला, अभिकर्ता, दूत 2. कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्मकाण्ड या संस्कारों का संचालन करता है।

पुरस्तात् (अव्य०) [पूर्व+अस्तात्, पुर आदेशः] 1. आगे, सामने (प्रायः संबं० या अपा० के साथ) -रघु० २।४४, कु० ७।३०, मेघ० १५. या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त -अभ्युन्नता पुरस्तात्--श० ३।८ 2. सिर पर, सर्व प्रथम मालवि० १।१ 3. पहले स्थान पर, आरंभ में 4. पहले, पूर्वतः 5. पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ 6. बाद में, आगे, अन्त में।

पुरा (अव्य०) [पुर्-का] 1. पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में पुरा शक्रमुपस्थाय रघु० १।७५, पुरा सरसि मानसे यदय यातं वयः भामि० १।३, मनु० १।११९, ५।३२ 2. पहले अब तक, इस समय तक 3. पहले पहले, सबसे पहले 4. थोड़े समय में, शीघ्र, अविरात् थोड़ी देर में (इस अर्थ में प्रायः वर्तमान काल के साथ, जहाँ कि भविष्यत् काल का अर्थ प्रकट हो) पुरा सप्तदशीं जयंति वसुधामप्रतिरथः--श० ७।३३, पुरा द्रक्ष्यति स्थलीम्--रघु० १२।३०, आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा--मेघ ८५. नैं० १।१८, शि० १५।५६, कि० १०।५०, ११।३६। सम० उपनिष (वि०) जिस पर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले आधिपत्य में था,--कल्प पुराना उपाख्यान, कल्पः 1. पूर्व सृष्टि 2. अतीत की कहानी 3. पहला युग द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैरकरं महत् मनु० २।२२७, कृत (वि०) पहले किया हुआ,--योनि (वि०) प्राचीन मूल (उत्पत्ति),—वस्युः भीष्म का विशेषण, विद् (वि०) अतीत से परिचित, पूर्व काल की घटनाओं का ज्ञाता, पहले जमाने या पूर्व काल की घटित बातों का जानकार, वदन्त्यपरेतिह तं पुराविदः - कु० ५।२८, ६।९, रघु० ११।१०,—वृत्त (वि०) प्राचीन काल में होने वाला या उससे संबद्ध 2. पुराना, प्राचीन कथा पुराना उपाख्यान (—त्तम्) 1. इतिहास 2. पुरानी या काल्पनिक घटना—पुरावृत्तोद्धारैरपि च कथिता कार्य पदवी—मा० २।१३।

पुरा [पुर्+टाप्] 1. गंगा का विशेषण 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य 3. पूर्व दिशा 4. किला।

पुराण (स्त्री०--णा, णी) [पुरा नवम्--निच्] 1. पुराना, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी -- पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्—मालवि० १।२, पुराणपत्रापगमादनंतरम्- रघु० ३।७ 2. वयोवृद्ध, पुरातन—अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः—भग० २।२० 3. क्षीण, घिसाघिसाया,--णम् 1. अतीत घटना, या वृत्तान्त 2. अतीत की कहानी, उपाख्यान, प्राचीन या पौराणिक इतिहास 3. कुछ विख्यात

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं तथा व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाती हैं, वह पुस्तकें ही हिन्दु-पुराण कथा शास्त्र का भंडार हैं, पुराणों में पाँच विषयों का वर्णन है और इसी लिए 'पुराण' को 'पंचलक्षण' भी कहते हैं - सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्। पुराण के अठारह नामों के लिए दे० अष्टादशन् के नीचे, —णः ८० कौड़ियों के बराबर मूल्य का एक सिक्का। समः

अन्तः यम का विशेषण,—**उक्त** (वि०) पुराणों में निर्दिष्ट या विहित, **ज्ञः** 1. ब्राह्मण का विशेषण 2. पुराण पाठक, पुराण की कथा कहने वाला,—**पुरुषः** विष्णु का विशेषण।

पुरातन (वि०) (स्त्री० नी) [पुरा+ट्यु, तुट्] 1. पुराना, प्राचीन, शि० १२।६०, भग० ८।३ 2. वयोवृद्ध, प्राक्कालीन, -रघु० ११।८५, कु० ६।९ 3. घिसाघिसाया, क्षीण, -नः विष्णु का विशेषण।

पुरिः (स्त्री०) [पृ+इ] 1. नगर, शहर 2 नदी।

पुरिशय (वि०) [पुरि | शी +अच्] शरीर में विश्राम करने वाला।

पुरी [पुरि+ङीप्] 1. शहर, नगर अशासैकपुरीमिव—रघु० १।३० 2. मद्य 3. शरीर। समः **मोहः** धतूरे का पौधा।

पुरीतत् (पुं०, नपुं) [पुरी देहं तनोति—तन् - क्विप्] 1. हृदय के पास की एक विशेष अंतड़ी 2. अंतरिंग —(पुरितत् भी, परन्तु यह रूप अशुद्ध प्रतीत होता है)।

पुरीषम् [पृ+ईषन्, किच्च] मल, विष्ठा, गूथ (गोबर), मनु० ३।२५० ५।१२३, ६।७६, ४।५२ 2. कूड़ा-करकट, गंदगी। समः—**उत्सर्गः** मलत्याग, **निग्रहणम्** कोष्ठबद्धता।

पुरीषजः [पुरीष+जन्+ड] मल, विष्ठा,—**त्यम्** मलोत्सर्ग करना, मलत्याग करना।

पुरीषमः [पुरीष निर्मीते पुरीष + मा+क] उड़द, माष।

पुरु (वि०) (स्त्री० रु, वीं) [पृ पालनपोषणयोः —कु] अति, प्रचुर, अधिक, बहुत से (लौकिकसाहित्य में 'पुरु' शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है), **रुः** 1. फूलों का पराग 2. स्वर्ग, देवलोक 3. एक राजकुमार का नाम, चन्द्रवंशी राजाओं में छठा राजा (यह शर्मिष्ठा और ययाति का सब से छोटा पुत्र था। जब ययाति ने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा कि क्या कोई उनमें से ऐसा है जो मेरे बुढ़ापे और दुर्बलता के बदले मुझे अपना यौवन व सौंदर्य दे दे, तो वह केवल पुरु ही था जिसने विनिमय स्वीकार किया, एक हजार वर्ष के पश्चात् ययाति ने पुरु का यौवन और सौंदर्य उसे लौटा दिया तथा उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। कौरव और पांडवों का पूर्व पुरुष पुरु ही था)। समः **जित्** (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. राजा कुलीनोज या उसके भाई का नाम, -**दम्** सोना, स्वर्ण, -**वंशकः** हंस, —**लंपट** (वि०) बहुत विषयी, या कामातुर, **हू** बहुत, बहुत से, -**हूत** (वि०) बहुतों से आवाहन किया गया (तः) इन्द्र का विशेषण रघु० ४।३, १६।५, कु० ३।४५, मनु० ११।२२, "**द्विष्** (पुं०) इन्द्र जित् का विशेषण।

पुरुषः [पुरि देहे शेते -शी+क पृषो० तारा०, पुर्+कुषन्] 1. नर, मनुष्य, मर्द - अर्थतः पुमो नारी या नारी सार्थत पुमान्—मच्छ० ३।२७, मनु० १।३२, ७।१७, १।१२, रघु० २।४१ 2 मनुष्य, मनुष्य जाति 3. किसी पीढ़ी का प्रतिनिधि या संदेश्य 4. अधिकारी, कार्यकर्ता, अभिकर्ता, अनुचर, सेवक 5. मनुष्य की ऊँचाई या माप, दोनों हाथ फैला कर लम्बाई की माप) हो पुरुषौ प्रमाणमस्याः सा हि पुरुषा-पी परिषा—सिद्धा० 6. आत्मा—ज्ञाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च—भग० १५।१६ आदि० 7. परमात्मा, ईश्वर (विश्व की आत्मा) शि० १।३३, रघु० १३।६ 8. पुरुष (ज्या० में) प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष (सिद्धा० में यही क्रम है) 9. आँख की पुतली 10 (सांख्य० में), आत्मा (विप० प्रकृति) सांख्यसप्तत्यासार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, यह निष्क्रिय है, तथा प्रकृति का दर्शक है—कु० २।१२, 'मानव' शब्द की भी, -**यम्** मेरु पर्वत का विशेषण। समः - **अंगम्** पुरुष की ज्ञानेन्द्रिय, लिंग, **अदः** नरभक्षक, मनुष्य का मांस खाने वाला, पिशाच, **अधमः** अत्यंत नीच पुरुष, बहुत ही जघन्य और घृणित व्यक्ति, **अधिकारः** 1 पुरुष का पद या कर्तव्य 2. मनुष्य का मूल्यांकन या प्रतिकलता - कि० ३।५१, - **अन्तरम्** दूसरा मनुष्य, **अर्थः** 1 मानव-जीवन के चार मूल्य पदार्थों (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक 2 मानवप्रयत्न या चेष्टा, पुरुषकार, हि० प्र० २५, **अस्थिमालिन्** (पुं०) शिव का विशेषण, **आद्यः** विष्णु का विशेषण, **आयुधम्, आयुस्** मानव-जीवन की अवधि अकृपणमतिः कामं जीवेज्जनः पुरुषायुषम्—विक्रम ६।४४, पुरुषायुषजीविनो निराशाः निरीहाः रघु० १।६१, **आशिन्** (पुं०) नरभक्षी, राक्षस, पिशाच, **इन्द्रः** राजा, **उत्तमः** 1. श्रेष्ठ पुरुष 2. परमात्मा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण—परमात्मेत्युदाहृतः परमात्मापि चोत्तमः, अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८,—**कारः** 1. मानवप्रयत्न, मनुष्यचेष्टा, मर्दाना काम, मर्दानगी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पराक्रम (विप० दैव) एव पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति हि० प्र० ३२, दैवे पुरुषकारे च कर्मसिद्धि-र्व्यवस्थिता—याज्ञ० १।३४९, नृ० भगवान् उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं पंच० ५।३०, वि० ५।५२ 2 पौरुष, वीर्य।

कुणपः,—पम् मानवशव **केसरिन्** (पुं०) नर-सिंह विष्णु का चौथा अवतार—पुरुषकेसरिणश्च पुरः नखैः—हरि० ७१३, **ज्ञानम्** मानवजाति का ज्ञान **दंश, दंशस** (वि०) मनुष्य को ऊँचाई के बराबर लंबा **द्विष** (पु०) विष्णु का शत्रु, **नामः** 1 नरपति, नेतापति 2 राजा, **पशुः** नरपशु, क्रूर-व्यक्ति पं० नरपशु, पुंगवः, पुंडरीकः श्रेष्ठपुरुष, प्रमुख व्यक्ति, **बहुमानः** मनुष्यजाति की प्रतिष्ठा -भर्तृ० ३।९, **मेधः** नरमेध, पुरुषयज्ञ, **वरः** विष्णु का विशेषण,—**वाहः** 1. गरुड़ का विशेषण 2. कुबेर की उपाधि, **व्याघ्रः, शार्दूलः, सिंहः** 1. मनुष्यों में श्रेष्ठ पुरुष या प्रमुख व्यक्ति 2. शूर-वीर, अग्रदूत आदमी, **समवायः** मनुष्यों का समूह, **सूक्तम्** ऋग्वेद के दसवें मण्डल का ९०वां सूक्त (यह बहुत ही पवित्र माना जाता है)।

पुरुषकः,—रूप [पुरुष+कन्] मनुष्य की भांति दो पैरों पर खड़ा होने वाला, घोड़े का पालतू श्रीवृक्षको पुरुषकाद्यधिनायकाश्च—हि० ५।५६।

पुरुषता,—त्वम् [पुरुष+तल्+टाप्, त्व वा] 1. पुरुषत्व, मर्दानगी, पराक्रम 2. वीर्य।

पुरुषायित (वि०) [पुरुष+क्यङ्+क्त] मनुष्य की भांति आचरण करने वाला,—**तम्** 1. मनुष्य का अभिनय करना, मनुष्यजाति का अभिनय, मैथुन 2. एक प्रकार का स्त्रीमैथुन जिसमें स्त्री पुरुषवत् आचरण करती है—आकूतिमन्तोऽप्य नाप्तैः विलक्षितैः पुरुषा-यित अभिदधाति लोकेन वेदस्यादिभिन्यक्तिमुपनीतम् काव्य १०।

पुरूरवस् (पु०) [पुरु प्रकृष्टं यथास्यात्तथा रौति—पुरु-रु+असि नि० साधु] पुरु और इला का पुत्र, चन्द्र-वंशी राजकुल का प्रवर्तक, (मित्र और वरुण के शाप के कारण उस पृथ्वी पर उतरती हुई उर्वशी को पुरूरवा ने देखा और उस पर आसक्त हो गया। उर्वशी भी इस राजा को देख कर उस के लोकविश्रुत सौन्दर्य तथा सचाई, भक्ति, उदारता आदि गुणों के कारण उस पर मुग्ध हो गई, फलतः उसकी पत्नी बन गई। बहुत दिनों तक वह सुख पूर्वक रहे, एक पुत्र को जन्म देने के पश्चात् उर्वशी फिर स्वर्ग चली गई। राजा ने उसके वियोग के शोक में बड़ा विलाप किया। उर्वशी प्रसन्न हो दोबारा उसके पास आकर फिर रहने लगी और एक पुत्र को जन्म देकर फिर स्वर्ग चली गई। इस प्रकार उर्वशी ने क्रमशः पांच पुत्रों को जन्म दिया। परन्तु पुरूरवा उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाना चाहता था अतः उसने गंधर्वों के निर्देशानुसार यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसके फल-स्वरूप उसका मनोरथ पूरा हुआ। विक्रमोर्वशीय में दी गई कहानी कई अंशों में भिन्न प्रकार से बताई गई है इसी प्रकार ऋग्वेद के आधार पर शतपथ ब्राह्मण में दिया गया वृत्तान्त भी भिन्न प्रकार का है, जहां कि यह बतलाया गया है कि उर्वशी ने दो शर्तों पर पुरूरवा के साथ रहना स्वीकार किया। पहली शर्त यह कि उसके दो मेंढे जिनको वह पुत्रवत् प्यार करती है, उसके पलंग के पास ही बंधेंगे तथा उसमें कभी दूर नहीं ले जाये जायेंगे; और दूसरे यह कि वह उर्वशी को कभी भी नंगा दिखाई न दे। उसके पश्चात् एक बार गंधर्व मेंढों को उठा कर ले गये, अतः उर्वशी भी अन्तर्धान हो गई)।

पुरोदिः [पुरम्+अद्+इन्] 1. नदी का प्रवाह 2. पक्षी का सरसराहट या मर्मरध्वनि, पत्र शब्द।

पुरोऽक्षस, पुरोक्षस् आदि देo 'पुरस्' के अन्तर्गत।

पुर्व् (स्वा० पर०-पूर्वति) 1. भरना 2. वसना, रहना 3. निमंत्रित करना (अन्तिम दो अर्थों में चुरा० पर० मानी जाती है)।

पुल (वि०) [पुल्+क] महान्, विशाल, व्यापक विस्तृत, ला रोमाञ्च होना।

पुलकः [तुल्+कन्] 1. शरीर के बालों का सीधा खड़ा होना, (भय या हर्ष से) शिहरन, रोमांच—चारु चुचुंब नितंबवती दयित पुलकैरनुकूलं—गीत० १, मुगमद तिलक लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे—७, अमरु ५७, ७७ 2. एक प्रकार का पत्थर या रत्न 3. रत्न में दोष 4. एक प्रकार का खनिज पदार्थ 5 अधपका जिससे हाथी पलते हैं 6. हरताल 7. खराब पौधे का छिलका 8. एक प्रकार की सरसों, राई। सम०—अंगः वरुण का जाल, **आलयः** कुबेर का विशेषण, **उद्गमः** शरीर के रोंगटों का खड़ा होना, रोमांच होना।

पुलकित (वि०) [पुलक+इतच्] जिसके रोंगटे खड़े हो गये हैं, रोमांचित, गद्गद, आनन्दित, हर्षोत्फुल्ल।

पुलकिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [पुलक+इनि] रोमांचित, जिसके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये हैं,—पुं० कलम्ब वृक्ष का एक प्रकार।

पुलस्तिः, पुलस्त्यः [पुल्+विच्—पुल्+अस्+क्तिच्, पुल-स्ति—त्यच्] एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का एक मानस पुत्र मनु० १।३५।

पुला [पुल+टाप्] मृदु तालु, गले का कोंआ, तालु जिह्वा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुलाकः,—कम् [पुल्+आक् नि०] 1. थोथा या मुरझाया हुआ अन्न, कदन्न 2. भात का पिंड 3. संक्षेप, संग्रह 4. संक्षिप्तता, संक्षृति 5. चावलों का मांड 6. क्षिप्रता, द्रुतता, त्वरा।

पुलाकिन् (पुं०) [पुलाक+इनि] वृक्ष।

पुलाप्सित्तम् [=पलायित, पृषो०] घोड़े की सरपट चाल।

पुलिनः,—नम् [पुल्+इनन् किच्च] 1. रेतीला किनारा, रेतीला समुद्रतट—रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारि-रधुना—गीत० ७, रघु० १४।५२, कभी-कभी ब० व० में प्रयुक्त—कालिंद्याः पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रासे रसम्—वेणी० १।२ 2. नदी का प्रवाह हट जाने से तट पर बना छोटा टापू, लघुद्वीप 3. नदीतट।

पुलिनवती [पुलिन+मतुप्, वत्वम्, ङीप्] नदी।

पुलिन्दकः [पुल्+किदच्, कन्] 1. (प्रायः ब० व० में) एक असभ्य जाति का नाम 2. इस जाति का एक मनुष्य, बर्बर, अशिष्ट, जंगली, पहाड़ी—रघु० १६।१२,३२।

पुलिरिकः (पुं०) साँप।

पुलोमन् (पुं०) एक राक्षस का नाम, इन्द्र का श्वसुर। सम०—अरिः,—जित्,—भिद्,—द्विष् (पुं०) इन्द्र के विशेषण,—जा,—पुत्री शची, पुलोमा की पुत्री तथा इन्द्र की पत्नी।

पुष् (स्वा०, दिवा० क्रया०—पर०—पोषति, पुष्यति, पुष्णाति), 1. पोषण करना, (छाती से लगाकर) दूध पिलाना, पालना, पोसना, शिक्षित करना—तैनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण—भर्तृ० २।४६, भग० १५।१३, भट्टि० ३।१३, १७।३२ 2. सहारा देना, भरण पोषण करना, परवरिश करना 3. बढ़ने देना, खिलना, विकसित होना, राहुल मिलना—पुपोष लावण्यमयान् विशेषान्—कु० १।२५, रघु० ३।३२, न तिरोधीयते स्थायी तरसौ पुष्यते परम्—सा० द० ३ 4. बढ़ाना वृद्धि करना, आगे बढ़ाना, वर्धन (मूल्यादि)—पंचानामपि भूतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः—रघु० ४।११,१५ 5. प्राप्त करना, अधिकार में करना, रखना उपभोग करना भर्तृ० ३।३४ 6. बतलाना, दिखलाना, धारण करना, प्रदर्शन करना—वपुरभिनवमस्याः पुष्यति स्वां न शोभां—शा० १।१९, कु० ७।८,७८, रघु० ६।५८,१८।३२, न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति-लोके विपरीतमर्थम्—कु० ३।६३, मेघ० ८० 7. बढ़ना, पुष्ट होना, फलना-फूलना, समृद्ध होना 8. प्रशंसा करना, स्तुति करना,—प्रेर० या चुरा० उभ० पोषयति-ते 1. पालन-पोषण करना, परवरिश करना, भरणपोषण करना आदि 2. बढ़ाना, उन्नति करना।

पुष्करम् [पुष्कं पुष्टिं राति—रा+क] 1. नीला कमल 2. हाथी की जिह्वा की नोक—शि० ५।३० 3. ढोल का चमड़ा अर्थात् वह स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है—पुष्करेष्वाहृतेषु—मेघ० ६६, रघु० १७।११ 4. तलवार का फल 5. तलवार का म्यान 6. बाण 7. वायु, आकाश, अन्तरिक्ष 8. पिंजड़ा 9. जल 10. मादकता 11. नृत्यकला 12. युद्ध, संग्राम 13. एकता 14. अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान,—रः 1. सरोवर, तालाब 2. एक प्रकार का ढोल, धौंसा, ताशा 4. सूर्य 5. अनावृष्टि या दुर्भिक्ष पैदा करने वाले बादलों का समूह—मेघ० ६, कु० २।५० 6. शिव का विशेषण,—रम् शिव के मान विशाल प्रभागों में से एक। सम०—अक्षः विष्णु का विशेषण, —आख्यः,—आह्वः सारस—तीर्थः स्नान करने का एक प्रसिद्ध स्थान दे० ऊ० पुष्कर,—पत्रम् कमल का पत्ता, प्रियः सोमः,—बीजम् कमलगट्टा, —व्याघ्रः घड़ियाल,—शिखा कमल की जड़,—स्थपतिः शिव का विशेषण, सृज् (स्त्री०) कमलों की माला।

पुष्करिणी [पुष्करिन्+ङीप्] 1. हथिनी 2. कमलसरोवर 3. सरोवर, जलाशय 4. कमल का पौधा।

पुष्करिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [पुष्कर+इनि] कमलों से भरी स्थली, (पुं०) हाथी।

पुष्कल (वि०) [पुष्+कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लत्वा—नागः] 1. बहुत, काफी, प्रचुर—भक्षितेनापि भवता नाहारो मम पुष्कलः हि० १।८४, मनु० ३।२७७ 2. पूरा, समस्त भग० ११।२१ 3. समृद्ध, उज्ज्वल, शानदार 4. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख 5. निकटवर्ती 6. निर्घोषमय, गूँजने वाला, प्रतिध्वनि करने वाला,—लः 1. एक प्रकार का ढोल 2. मेरु पर्वत का विशेषण,—लम् 1. ६४ मुट्ठियों के बराबर एक विशेष तोल या माप 2 चार ग्राम की भिक्षा।

पुष्कलकः [पुष्कल+कन्] 1. कस्तूरी-मृग 2. सोम्नि पुष्कलको हतः—सिद्धा० 2. कुत्ता, बटखनी, फन्दा।

पुष्ट (भू० क० कृ०) [पुष्+क्त] 1. पाला-पोसा, खिलाया-पिलाया, परवरिश किया गया, शिक्षित किया गया 2. फलता-फूलता हुआ, बढ़ता हुआ, बलवान्, हृष्टपुष्ट 3. तहल किया गया, देखभाल किया हुआ 4. समृद्ध, पूरी तरह सम्पन्न 5. पूर्ण, पूरा 6. पूरीध्वनि वाला, ऊँची आवाज वाला 7. प्रमुख।

पुष्टिः (स्त्री०) [पुष्ट+क्तिन्]। 1. पालन-पोषण करना, पालना परवरिश करना, 2. पालन पोषण, संवर्धन, वृद्धि, प्रगति—यत्पिण्डतामपि गृणां पिष्टोऽपि तनोषि परिमलैः पुष्टिम्—भामि० १।१२ 3. पराक्रम शालिता, स्थूलता—अन्धस्य वृष्टिरिव पुष्टिरिवातुरस्य—मृच्छ० १।४९, 4. धन-दौलत, सम्पत्ति, सुख का साधन,—रघु० १८।१२ 5. समृद्धि, सम्पन्नता 6.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकल्प, पूर्णता। समः -**कर** (वि०) पौष्टिक, पुष्टि कारक, -**कर्मन्** (नपुं) सांसारिक संपत्ति प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान, -**द** (वि०) संवर्धनकारी, समृद्धिकर, **वर्धन** (वि०) कल्याणकारी, समृद्धि कारक (नः) मुर्गा।

पुष्प् (दिवा० पर० पुष्यति) खुलना, चौंकना या फूंकना, विस्तार करना, खिलना **पुष्पत्सुष्करवामितम्य पयसः** उत्तर० ३।१६।

पुष्पम् [पुष्प्+अच्]। फूल, कुसुम 2. रजः स्राव, रजोधर्म यथा 'पुष्पवती' में 3. पुखराज 4. आंखों का रोग विशेष, श्वेतक 5. कुबेर का रथ· दे० 'पुष्पक' 6. शौर्य, (प्रेमकी भाषा में) नम्रता 7. विस्तार होना, खिलना, प्रफुल्ल होना (इस अर्थ में पुं० भी)। समः अंजनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भांति प्रयुक्त होती है, -**अंजलिः** फूलों की अंजलि,—**अभिषेक** —स्नान, —**अंबुजम्** पुष्प रस या मकरन्द, **अवचयः** फूलों का चुनना, फूल एकत्र करना, **अस्त्रः** कामदेव का विशेषण, **आकर** (वि०) फूलों से समृद्ध, मासो नु पुष्पाकरः -विक्रम० १।९, **आगमः** वसन्त ऋतु, **आजीवः** माली, मालाकार, **आपीडः** फूलों का गजरा,—**आयुधः**,—**इषुः** कामदेव, **आसवम्** मधु, **आसारः** फूलों की बौछार मनु० ४३, —**उद्गमः** फूलों का निकलना,—**उद्यानम्** पुष्प वाटिका, **उपजीविन्** (पुं०) माली, बागवान, मालाकार, **कालः** 1. फूलों का समय, बसन्त ऋतु 2. मासिक रजोधर्म का समय, -**कासीसम्** एक प्रकार का कसीस, —**कीटः** भौरा, **केतनः** का मवेव, **केतुः** कामदेव (नपुं) 1. पुष्परस, मकरंद 2. पुष्पोद्यान,—**गृहम्** फूलों का घर, पुष्प संधारक, **घातकः** धौंस, **चयः** 1. फूल चुनना 2. फूलों का संग्रह,—**चापः** कामदेव,—**चामरः** एक प्रकार की बेंत, **जम्** फूलों का रस, **द्रुः** वृक्ष, —**दंतः** 1. शिव के एक गण का नाम 2. महिम्नस्तोत्र के रचयिता का नाम वायव्य कोण में अधिष्ठित दिग्गज,—**दामन्** (नपुं०) फूलमाला, **द्रवः** 1. फूलों का रस मकरंद 2. फूलों का आसव,—**द्रुमः** पुष्पप्रधान वृक्ष,—**धः** व्रात्य ब्राह्मण की सन्तान—तु० मनु० १०।२१,—**धनुस्**,-**धन्वन्** (पुं०) कामदेव—शि० ९।४१, कु० ३।६४,—**धारणः** विष्णु का विशेषण, -**ध्वजः** कामदेव, —**निक्षः** भौरा, —**निर्यासः**, —**निर्यासकः** पुष्परस, मकरंद, फूलों का रस,—**नेत्रम्** फूलनली, · **पत्रिन्** (पुं) कामदेव,—**पवः** योनि —**पुरम्** पाटलिपुत्र—रघु० ६।२४, **प्रचयः**,—**प्रजाघः** फूल तोड़ना, फूल चुनना, —**प्रचायिका** फूलों का चुनना,—**प्रस्तारः** पुष्पशय्या, फूलों का बिछौना,—**बलिः** फूलों की भेंट या चढ़ावा, —**बाणः**,—**बाणः** कामदेव,—**भवः** पुष्परस, मकरंद, -**मंजरिका** नीला कमल,—**माला** फूलमाला, **मासः** 1. चैत्र का महीना 2. वसंत ऋतु, · **रजस्** (नपुं) पराग, —**रथः** हवा खोरी के काम आनेवाला रथ (जो युद्ध के लिए न हो, **रसः** फूलों का रस, मकरंद,—**आह्वयम्** मधु- रागः,—**राजः** पुखराज, **रेणुः** पराग · वायु-विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् कवि०, रघु० १।३८, —**रोचनः** नागकेसर का वृक्ष, **लावः** फूल चुनने वाला, (वी) फूल चुनने वाली, मालिन —**लेखः** २६, —**लिक्षः**, **लिह्** (पुं) भौंरा, —**वंदूकः** रसिया, बांका, छैल-छबीला, **वर्षः**, **वर्षणम्** फूलों की बौछार रघु० १२।१०२,—**वाटिका**,—**वाटी** फुलवाड़ी, —**वृक्षः** पुष्पप्रधान वृक्ष —रघु० १२।१४, · **वेणी** चोटी में लगाया हुआ फूलों का गजरा, फूलों की माला, **शकटी** आकाशवाणी, **शय्या**, फूलों की सेज, फूलों का बिछौना,—**शरः**, · **शरासनः**, · **सायकः** कामदेव,—**समयः** बसन्त, **सारः**, **स्वेदः** फूलों का रस, मकरंद, हंसा रजस्वला स्त्री,—हीन गर्भावती स्त्री, जिसकी बच्चे पैदा करने की आयु बीत चुकी हो।

पुष्परूम् [पुष्प+कन्] 1. फूल 2. पीतल की भस्म 3. लोहे का प्याला 4. कुबेर का रथ (जिसे कुबेर से रावण ने छीन लिया था, तथा जो फिर राम ने ले लिया था)—रघु० १२।४०, १६।४६ 5. कंकण 6. एक प्रकार का पुष्पाभूषण 7. आंखों का एक विशेष रोग।

पुष्पंधयः [पुष्प+धे · खश्, मुम्] भौंरा।

पुष्पलकः [पुष्प+लक् + अच्] स्थाणु, खूंटा, कीली, कील।

पुष्पवत् [वि०] [पुष्प+मतुप्, वत्वम्] 1. प्रफुल्ल, फूलों से युक्त 2. फूलों से जड़ा हुआ (पुं०—द्वि० व०) सूर्य और चन्द्रमा, -**ती** रजस्वला स्त्री —पुष्पवत्यपि पवित्रा - का० २०।

पुष्पा [पुष्प्—अच्—टाप्] चम्पा नाम की नगरी।

पुष्पिका [पुष्प्—ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. दांतों पर जमी हुई मैल 2. शिलाच्छद में जमी मैल 3. अध्याय के अन्तिम शब्द जिनमें वर्णित विषय की सूचना दी जाती है—इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वनपर्वणि ..... अमुकोऽध्यायः।

पुष्पिणी [पुष्पिन्+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

पुष्पित [वि०] [पुष्प् · क्त] 1. फूलों से युक्त, विकसित फूलों से भरा हुआ, खिला हुआ - चिरविरहेण विलोक्य पुष्पिताग्राम् · गीत० ४, यहाँ 'पुष्पिताग्रा' एक छंद का भी नाम है 2. फूलों से अलंकृत, (भाषण) भड़कीला 3. फूलों से लदा हुआ, फूलों से सम्पन्न यथा सुवर्णपुष्पिता पृथ्वी पंच० १।४५ 4. पूर्ण विकसित, पूरी तरह खिला हुआ, · ता रजस्वला स्त्री।

पुष्पिन् [वि०] [पुष्प+इनि] 1. फूल धारण करने वाला, प्रफुल्ल 2. फूलों से भरा हुआ, फूलों से समृद्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्यः | पुष्+क्यप्] 1. कलियुग 2. पौष का महीना 3. आठवाँ नक्षत्र (तीन तारों का पुंज), इसे 'तिष्य' नाम से भी पुकारा जाता है। सम०—रथः—पुष्य रथ।

पुष्यलकः [पुष्य+लक्+अच्] वि० 'पुष्टलक'।

पुस्तम् [पुस्त्+घञ्] 1. पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना 2. मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के खिलौना बनाना 3. मिट्टी, काष्ठ या किसी धातु की बनी कोई वस्तु 4. पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक। सम०—कर्मन् (नपुं०) लीपना-पोतना, चित्रकारी करना।

पुस्तक,-कम्, पुस्ती [पुस्त+कन्, ङीप् वा] पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक।

पू (स्वा० दिवा०,-आ०, क्या० उभ०—पवते, पुनाति, पुनीते पूत, प्रेर०—पावयति—इच्छा० पुपूषति, पिपविषते) 1. पवित्र करना, छानना, शुद्ध करना (शा० और आल०) अवश्यपाव्यं पवसे भट्टि० ६।९४, ३।१८, पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे—श० १, मनु० १।१०५, २।६२, याज्ञ० १।५८, रघु० १।५३ भग० १०।३१ 2. निथारना 3. भूसी साफ करना, फटकना 4. प्रायश्चित्त करना, परिमार्जन करना 5. पहचानना, विवेक करना 6. सोचना, उपाय ढूंढना, आविष्कार करना।

पूगः | पू+गन्, किच्] 1. समुच्चय, ढेर, संग्रह, मात्रा —शि० ९।६४ 2. समाज, निगम, संघ- याज्ञ० २।३०, मनु० ३।१५१ 3. सुपारी, पूगी रघु० ४।४४ ६।६३, १३।१७ 4. प्रकृति, गुण, स्वभाव,—गम् सुपारी। सम० पत्रम् 1. थूहर का वर्तन, पीकदान 2. पान-दान, पीठम्, पीठम् थूकने का बर्तन, —फलम् सुपारी,—वैरम् अनेक लोगों से शत्रुता।

पूज् (चुरा० उभ०-पूजयति-ते, पूजित) 1. आराधना करना, पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, सादर स्वागत करना—पदपूजास्वहमिह पाथ सुरजिजन-पूजित सतम्—शि० १५।१४, मनु० ४।३३१, भट्टि० २।२६, याज्ञ० २।१४ 2. उपहार देना, भेंट चढ़ाना, —मनु० ७।२०३, सम्—1. पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना 2. उपहार देना, (दक्षिणादि से) सम्मानित करना।

पूजक (वि०) (स्त्री०—जिका) [पूज्+ण्वुल्] सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आदर करने वाला आदि।

पूजनम् [पूज्+ल्युट्] पूजना, सम्मान करना, आराधना करना—भग० १७।१४।

पूजा [पूज्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, श्रद्धांजलि—रघु० १।७१। सम०—अर्ह (वि०) श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, श्रद्धास्पद।

पूजित (भू० क० कृ०) [पूज्+क्त] 1. सम्मानित, आदृत 2. आराधित, प्रतिष्ठित 3. स्वीकृत 4. संपन्न 5. अनुशासित, सिफारिश किया हुआ।

पूजिल (वि०) [पूज्—इलच्] श्रद्धेय, आदरणीय, लः देव।

पूज्य (वि०) [पूज्—क्यप्] आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय, श्रद्धेय,—ज्यः 1. देवसुर।

पूण् (चुरा० उभ० पूणयति ते) एक जगह देर लगाना, संचय करना, राशि लगाना।

पूत (अव्य०) फूंक मारने की अनुकृति का सूचक शब्द।

पूत (भू० क० कृ०) [पू+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, धोया हुआ (आल० भी) दृष्टिपूत न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्, सत्यपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत्—मनु० ६।४६ 2. पिछोड़ा हुआ, फटका हुआ 3. प्रायश्चित्त किया हुआ या संस्कृत, आयिकृत 5. सड़ने वाला, गलन-सड़ा, दुर्गंधयुक्त, बदबूदार,—तः 1. शंख 2. गर्भस्थ कुश घास, तम् नवनीत। सम० आत्मन् (वि०) पवित्र मन वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण, ऋतायी ऊन की पत्नी शची, ऋतुः इन्द्र का विशेषण भट्टि० ८।२९, तृणम् सड़ेद कुश घास, द्रुः पलाश वृक्ष, धान्यम् तिल पीए, पाप्मन् निष्पाप, पाप से रहित, फलः कटहल का वृक्ष।

पूतना [पू णिच् + यच् + टाप्] एक राक्षसी जो कृष्ण का जब वह अबोध बालक था, मारने का प्रयत्न करती हुई, स्वयं उसके द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुई 2 राक्षसी मा पूतनेव मामुयम्गया, शिवतातिरेषि सा० ६।४९ । सम० अरिः, सूदनः, हन् (पुं०) कृष्ण के विशेषण।

पूति (वि०) [पूय् क्तिन्] बदबूदार, सड़ा हुआ, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देनेवाला भग० १७।१०, तिः (स्त्री०) 1. पश्चिमीकरण 2. दुर्गंध, सड़ांद 3. बदबू नपुं० 1. गंदा पानी 2. पीप, मवाद। सम० अंडः कस्तूरी मृग, —काष्ठम् देव दार वृक्ष, —काष्ठकः सरल वृक्ष, —गंधः (वि०) बदबूदार, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देने वाला, सड़ा हुआ (न्धः) 1. सड़ांद, दुर्गंध, बदबू 2 गंधक (धम्) 1. जस्ता, रांगा 2. गंधक, गंधि (वि०) बदबूदार, दुर्गंध देनेवाला, -नासिक (वि०) दुर्गंधमय नाक वाला,—वक्त्र (वि०) जिसके मुंह से बदबू आती हो, व्रणम् दूषित फोड़ा (जिसमें से पीप निकले)।

पूतिक (वि०) [पूति+कै+क] सड़ा हुआ, बदबूदार, सड़ांमला, कम् लोह, मल, विष्ठा।

पूतिका [पूतिक+टाप्] एक प्रकार की जड़ी। सम० —मुखः दो कोष वाला शंख।

पून (वि०) [पू + क्त तस्य नः] नष्ट किया गया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूषः [पू+क्विप्, पा+क] पूषा, दे 'अपूप'।

पूपल्ल, लो, पूपालिका, पूपाली, पूपिका [पूप+ला+क+टाप्, ङीप् वा; पूपाव अलति--पूप+अल्+अच्+ङीप्--कन्--टाप्, ह्रस्व:, पूप+अल्+पच्, ङीप् पूप्+छन्+टाप्] एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपूआ।

पूयः-यम् [पूय्+अच्] पीप, फोड़ या घाव से निकलने वाला मवाद, पीप आना, मवाद निकलना- मनु० ३।१८०, ४।२२०, १२।७२। सम०--रक्तः नाक का एक रोग विशेष (इसमें पीप से युक्त रक्त, या मवाद नाक से बहता है) (रक्तम्) 1. कचलोहू, मवाद 2. नथनों से मवाद का बहना।

पूयनम् [पूय् ल्युट्]=दे० 'पूय'।

पूर् । (दिवा० आ-पूर्यते, पूर्ण) 1. भरना, पूर्ण करना 2. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ॥ (चुरा० उभ० पूरयति ते, पूरित---पू० का प्रेर० रूप) 1. भरना की न यति वर्ष लोके मुखे दिवेन पूरित: भर्तृ० २।११८, वि० ५।६४ 2. हवा से भर जाना, (शंख आदि में) फूंक मारना 3. डकना, घेरना भट्टि० ७।३० 4. पूरा करना, सन्तुष्ट करना पूर यतु कुतूहलं वत्स: उत्तर० ४, इसी प्रकार आशा, मनोरथ आदि 5. तीव्र करना, (ध्वनि आदि) सबल करना 6. गुजायमान करना 7. बोझ लादना, समृद्ध करना, आ , 1. भरना, पूर्ण करना, पूरा करना, ऊपर तक भरना (आलं० भी) रघु० १६।३५, भग० ११।३०, भट्टि० ३।११८ 2. हवा से भरना, (शंख आदि) बजाना -कर्मवाच्य में प्रयुक्त 3. अन्तर्गर्भित करना, घिरोना कुमा० ३।१८. परि, भरना, पूरी तरह से भर लेना, प्र , 1. भरना, उभारों से भरना, समृद्ध करना मुच्छ० ९।५९, (यहाँ यह दोनों अर्थ देता है), सम् , पूरा करना, भरना।

पूरः [पूर+क] 1 भरना, पूरा करना 2. संतोष देना, प्रसन्न करना, तृप्त करना 3. उडेलना, पूर्ति करना

अनेकपूरा: गुरुप्रसादाश्च कुं० १।२० के नदी का बहना, समुद्र में पानी का बढ़ना, बाढ़ रघु० ३।१७ 5 बाढ़ या नदी का रूप होना, बाढ़ आना अंजु बाष्पा शोणितं आदि 6. जलप्रपात, सरोवर, तालाब 7. घाव का खाद होना या भरना 8. एक प्रकार की रोटी या पूरी,-रम् एक प्रकार का गंधद्रव्य,--उत्लोडः बाढ़ या जलाधिक्य।

पूरक (वि०) [पूर् ण्वुल्] 1. भरने वाला, पूरा करने वाला 2. संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला, कः 1. सोंठ का पौधा 2. श्वास की समाप्ति पर पिचरों को दिया जाने वाला विशेष 3. (अंकगणित में) गुणक।

पूरण (वि०) (स्त्री० णी) [पूर्+ल्युट्] 1. भरना, पूरा करना 2. क्रम सूचक (अंकों के साथ प्रयुक्त) ---जैसे द्वितीय, तृतीय आदि-- न पूरणी तं समुपैति संख्या---कि० ३।५१ 3. संतुष्ट करने वाला---णः 1. पुल, बांध, सेतु 2. समुद्र, णम् 1. भरना 2. ऊपर तक भरना, पूरा करना-- रघु० ९।७३ 3. फूलना, सूजना 4. पूरा करना, सम्पन्न करना 5. एक प्रकार की पूरी या रोटी 6. मृतक कार्य में प्रयुक्त रोटी 7. वर्षा, बरसना 8. ऐंठन, मरोड़ 9. (गणि० में) गुणा। सम०--प्रत्ययः क्रम सूचक संख्या बनाने वाला प्रत्यय।

पूरिका [पूर+ङीष्+कन्--टाप्, ह्रस्व:] पूरी, कचौरी।

पूरित (भू० क० कृ०) [पूर्+क्त] 1. भरा हुआ, पूरा 2. दिखाया हुआ, आच्छादित 3. गुणा किया हुआ।

पूरुषः [पुर्--कुषन्, नि० दीर्घः]=दे० 'पुरुष'—भामि० १।७५।

पूर्ण (भू० क० कृ०) [पूर्+क्त, नि०] 1. भरा हुआ, आपूरित, पूरा किया हुआ, अश्रु शोक आदि 2. संपूर्ण, अखंड, समग्र, समूचा रघु० ३।३८ 3. पूरा किया हुआ, सम्पन्न 4. समाप्त, पूरा 5. अतीत, बीता हुआ 6. संतुष्ट, तृप्त 7. शोध पूर्ण, गुंजायमान, 8. बलवान्, शक्तिशाली 9. स्वार्थी, स्वलोन। सम० - अंक: पूर्ण संख्या, अभिलाष (वि०) संतुष्ट, तृप्त, आत्मन् 1. ढोल 2. ढोल की आवाज 3. बर्तन 4. चंद्रकिरण 5. दे० पूर्ण पात्र (कभी कभी 'पूर्णालिक' भी पढ़ा जाता है, -इन्दु: पूरा चाँद,—उपमा पूरी या समूची उपमा अर्थात् जिसमें उपमान 'उपमेय' 'साधारणधर्म' और 'उपमाप्रतिपादक शब्द' यह चारों अपेक्षित बातें अभिव्यक्त की गई हों (विप० लुप्तोपमा) उदा० अंभोरुहमिवाताम्रं मुखं करतलं तव--दे० काव्य० १०, 'उपमा' के अन्तर्गत भी, कुंभ (वि०) पूरे कोहान से युक्त, काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं, संतुष्ट, तृप्त, कुंभः 1. पूरा कलश 2. पानी से भरा घड़ा 3. युद्ध करने की विशेष रीति 4. (ढोलाद में) कलश के आकार का गर्त —तदत्र पक्वेष्टके पूर्णकुंभ एव शीर्यते--मृच्छ० ३, --पात्रम् 1. जल से भरी गागर 2. कलशपूर, गागर भर 3. २५६ मुट्ठी भर (अनाज की) तौल 4. (बहुमूल्यालंकार आदि) मूल्यवान् वस्तुओं से भरा हुआ (गंडूल, टोकरी आदि) बर्तन जो वधूवांधवें द्वारा किसी उत्सवादि के अवसर पर उपहार के रूप में बाटा जाय, अतः इसका सामान्य अर्थ है वह उपहार जो किसी सुखद समाचार के लाने वाले व्यक्ति को दिया जाता है कदा मे तनयजन्ममहोत्सवानंदनिर्भरो हरिष्यति पूर्णपात्रं परिजनः--का० ६२, ७०, ७३, १६५, मल्लीजनेनाणह्यिमाणपूर्णपात्राम् २९९,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्काम प्रभवति पूर्णपात्रवृत्त्या स्वीकर्तुं मम हृदयं च जीवितं च मा० ४।१, (पूर्णपात्र की परिभाषा —हर्यादुत्सवकाले यदलंकारांशुकादिकम्, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं स्यात्पूर्णकं च तत्। या—वर्षाभिषेकयदानदादलंकारादिकं पुनः, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत्। हारावली', **पूर्णा** (स्त्री०) ज: नींबू, —सासौ पूर्णिमा, पूर्णो।

पूर्णकः [पूर्ण+कन्] 1. एक प्रकार का वृक्ष 2. रसोइया 3. नीलकंठ।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी [पृ+निङ्=पूर्णि, मा+क+टाप्, पूर्णि+मास+ङीप्] वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है, पूनो—मै० २।७६।

पूर्त (वि०) [पूर्+क्त निं०] 1. पूर्ण, पूरा 2. छिपाया हुआ, ढका हुआ 3. पालन-पोषण किया गया, रक्षा किया गया, तंम् 1. पूर्ति 2. पोषण, पालन 3. पुरस्कार, पात्रता 4. पावन, उदारता का कृत्य—परिभाषा—वापीकूपतडागादिदेवतायतनानि च अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते - मनु० ४।२२६, (विप० इष्ट)

अग्नि द्वारा इसकी परिभाषा - अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पालनम्, आतिथ्यं वैश्वदेवश्च इष्टमित्यभिधीयते) तु० इष्टपूर्त।

पूर्तिः (स्त्री०) [पूर्+क्तिन्] 1. भरना 2. पूरा करना, पूर्णता, सम्पन्नता 3. तृप्ति, संतुष्टि।

पूर्व (वि०) [पूर्व—अच्] (जब काल और दिशा की दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है तो इस शब्द के रूप सर्वनाम की भांति होते हैं, परन्तु यह भी करण० व० व०, तथा अपादान० व अधिकरण० एक, व० में विकल्प से) 1. सामने होने वाला, प्रथम, प्रमुख 2. पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में ग्रामात्पूर्वतः पूर्वः 3. पहले का, से पहला 4. पुराना, प्राचीन —पूर्वसूरिभिः रघु० १।४ 5. पूर्वोक्त, विगत, पिछला, पहला, पूर्ववर्ती (विप० उत्तर), इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त यथा: 'श्रुतपूर्व' 6. उपर्युक्त, पूर्वोक्त 7. (समास के अन्त में) पूर्ववर्ती, से युक्त, अनुसेवित सर्वमाभाषणपूर्वमाहुः - रघु० २।५८, पुष्पः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः श० २।१४, तान् हिंसापूर्वमाहु कु० ७।४७ ५।३१, दण्डपूर्वरथं यमाह्वया दण्डकेऽग्निगुरु विदूर्वया: रघु० ८।२९ इसी प्रकार 'अतिपूर्व' मनु० ११।१४७ 'इदातन' 'ज्ञानपूर्वक' १२।३२,—अबोधपूर्वम् अनजाने श० ५।३, ज: पूर्वज, पूर्व पुरुषा, बाप दादा

पूर्वः किलाय परिचिंतितो नः रघु० १३।३, पयः पूर्वः सनिस्वासैः कवलणमुपभुज्यते १।६७, ५।१४,

र्वम् अगला भाग, **र्वम्** (अव्य०) 1. से पहले (अपा० के साथ) मासात्पूर्वम् 2. विगत काल में, पहले, प्रारंभ में, पूर्वतः, पहले ही तं पूर्वमभिवादयेत् मनु० २।११७, ३।९४, ८।२०५, रघु० १२।३५, **पूर्वेण**- से पूर्व में (संब० या कर्म० के साथ) **अद्य पूर्वम्** 'अब तक' 'इससे पहले' **पूर्वं-ततः**—पश्चात्, ऊपर पहले तब, पहले बाद में, विगत काल में **पूर्वम्**- **अधुना** या- **अद्य** पहले आज। सम०—**अचलः, अद्रिः** उदयाचल (पूर्व दिशा का पहाड़ जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है), —**अंतः** पूर्ववर्ती शब्द की समाप्ति, **अपर** (वि०) 1. पूर्वी और पश्चिमी पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य —कु० १।१ 2. पहला और अन्तिम 3. पहले का और बाद का, पूर्ववर्ती और परवर्ती 4. किसी दूसरे से युक्त, **(र्म्)** 1. जो पहले और बाद में हो 2. संबंध 3. प्रमाण और प्रमेय **-विरोधः** असंगति, असंबद्धता, **-अभिमुख** (वि०) (वि०) पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए, या मुड़े हुए, **-अम्बुधिः** पूर्वी समुद्र, **-अर्जित** (वि०) पूर्वकर्मों द्वारा प्राप्त **(तम्)** पैतृक संपत्ति **धः** - **र्म्** 1. पहला आधा भाग - दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् - भर्तृ० २।६०, समाप्त पूर्वार्धम्- आदि 2. (शरीर का) ऊपर का भाग श० ३, रघु० १६।६, ३. श्लोकार्ध का प्रथम भाग, **-अह्नः** मध्याह्न से पूर्व, दोपहर से पूर्व—मनु० ४।९६, ७।८७ (पूर्वाह्णिक, पूर्वाह्णेतन (वि०) मध्याह्न से पूर्वकाल संबंधी), **-आवेदकः** वादी, मुद्दई, **-आषाढा** बीसवां नक्षत्र, (जो नक्षत्रों का पुंज), **-इतर** (वि०) पश्चिमी, **-उक्त, -उदित** (वि०) पहले कहा हुआ, उपर्युक्त, **-उत्तर** (वि०) उत्तरपूर्वी (द्वि० व० **रे**) पूर्ववर्ती पहले का और बाद का, **-कर्मन्** (नपुं०) 1. पहला काम या कार्य 2. प्रथम कार्य, पहले किया जाने वाला कार्य 3. पूर्व जन्म में किया गया कार्य, **-कल्पः** विगत काल, **-कायः** 2. जानवरों के शरीर का अगला भाग

पञ्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् - श० १।७ 2. मनुष्यों के शरीर का ऊपरी भाग —स्तब्धेन करेणानतपूर्वकायम्- रघु० ५।३६, **-पयकबंधस्थिर** पूर्वकायम् कु० ३।४५, **-कालः** विगत काल, प्राचीन समय, **-कालिक, -कालीन** (वि०) प्राचीन, **-काष्ठा** पूर्व, पूर्व दिशा, **-कृतम्** पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य, **-कोटिः** (स्त्री०) वाक्प्रतियोगिता की आरंभिक उक्ति, विवादविषय, पूर्वपक्ष, **-गंगा** नर्मदा नदी, **-चोदित** (वि०) उपर्युक्त, ऊपर बताया हुआ 2. पहले से कहा हुआ, या पूर्व प्रस्तुत (आक्षेप आदि) **-ज** (वि०) 1. जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जन्मा हुआ 2. प्राचीन, पुराना 3. पूर्वी **(जः)** 1. बड़ा भाई शि० १६।४४, रघु० १५।३६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. बड़ी पत्नी का लड़का 3. पूर्वपुरुष, बापदादा, —जन्मन् (नपुं०) पहला जन्म, (पुं०) बड़ा भाई —रघु० १४।४४, १५।९५,—जा बड़ी बहन, जातिः (स्त्री०) पूर्वजन्म,—ज्ञानम् पूर्वजन्म का ज्ञान, दक्षिण (वि०) दक्षिणपूर्वी (णा) दक्षिण पूर्व दिशा, दिक्पतिः पूर्वदिशा का अधिपति इन्द्र,—दिनम् दिन का पूर्वभाग, दोपहर से पूर्व का समय,—दिश् (स्त्री०) पूर्व दिशा, दिष्टम् भाग्य में लिखा, दैवः 1. प्राचीन देवता 2. राक्षस या असुर 3. प्रजनक, पिता, देशः पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग, निपातः समास में शब्द की अनियमित प्राथमिकता तु० परनिपात, पक्षः 1. अगला हिस्सा या पार्श्व 2. कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का प्रथमपक्ष) 3. विवाद का पूर्वपक्ष, प्रथमदर्शनाधारित तर्क या प्रश्न का दृष्टिकोण 3. किसी तर्क का प्रथम आक्षेप 4. वादी की प्रतिज्ञा 5. अभियोग, नालिश, पदम् किसी समास या वाक्य का प्रथम पद, पर्वतः उदयाचल जिसके पीछे सूर्य का उदय होना माना जाता है पांचालक (वि०) पूर्वी पंचालों से संबंध रखने वाला पाणिनीयाः (पु०, ब० व०) पूर्व देश के रहनेवाले पाणिनि के शिष्य, पितामहः बापदादा, पूर्वज, पुरुषः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. पिता, पितामह या प्रपितामह में से कोई एक 3. पूर्वपुरखा,—पूर्व (वि०) प्रत्येक पूर्ववर्ती -फाल्गुनी ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं °भद्रः बृहस्पति ग्रह का विशेषण, भागः अगला हिस्सा, —भाद्रपदा पच्चीसवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं,—भुक्तिः (स्त्री०) पहले से किया हुआ अधिकार, —भूत (वि०) पूर्ववर्ती, पहले का, - मीमांसा प्रथम मीमांसा, वेद के अंतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृच्छा (विप० उत्तरमीमांसा या वेदान्त -दे० मीमांसा,—रंगः नाटक का उपक्रम या आरंभ, आमुख या प्रस्तावना, —पूर्वरंगं विधायैव सूत्रधारो निवर्तते -सा० द० २८३, पूर्वरंगः प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः शि० २।८ (दे० इस पर मल्लि०), रागः आरंभिक प्रेम, दो व्यक्तियों के मिलन से पूर्व (श्रवण दर्शन आदि के कारण) उनमें उत्पन्न होनेवाला प्रेम, रात्रः 1. रात का पहला भाग, रूपम् 1. होने वाले परिवर्तन का संकेत 2. रोग होने का लक्षण 3. दो सहवर्ती स्वर या व्यंजनों में से पहला जो स्थिर रहे, वयस् (वि०) बच्चा —वयस् (वि०) पहले से विद्यमान, पहले का, पहले होने वाला, वादः वादी द्वारा प्रस्तुत अभियोग, मुद्दई द्वारा की गई नालिश, वादिन् (पुं०) अभियोक्ता या मुद्दई, वृत्तम् 1. पहली घटना,—रघु० ११।१० 2. पहला आचरण, शारद (वि०) शरद् ऋतु के पूर्वार्ध से संबंध रखने वाला, शैलः दे० पूर्वपर्वत,—सन्ध्यम् जाँघ का ऊपरी भाग,—संध्या प्रभातकाल, पौ फटना,—शि० ११।४०,—सर (वि०) अग्रेसर, सागरः पूर्वी समुद्र —रघु० ४।३२, - साहसः पहला या सबसे भारी अपराध, - स्थितिः (स्त्री०) पहली या प्रथम अवस्था।

पूर्वक (वि०) [पूर्व+कन्] (समास के अन्त में) 1. पूर्ववर्ती, अनुसेवित—अनाप्तपत्रपूर्वकमाह—श० ५ 2. पूर्ववर्ती, पिछला, —कः पूर्वज, बापदादा।

पूर्वगामिन् (वि०) [पूर्व+गम्+खच्] पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती।

पूर्वतः (अव्य०) [पूर्व+तस्] 1. पूर्व में, पूर्व की ओर, —रघु० ३।४२ 2. पहले, सामने।

पूर्वत्र (अव्य०) [पूर्व+त्रल्] पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह।

पूर्ववत् (अव्य०) [पूर्व+वति] पहले की भाँति।

पूर्विन् (वि०) (स्त्री०-णी) पूर्वीण (वि०) [पूर्व+इनि, पूर्व+ख] 1. प्राचीन 2. पैतृक।

पूर्वेद्युः (अव्य०) [पूर्वस्मिन् अहनि—पूर्व+एद्युस् नि० साधु] 1. पहले दिन 2. गत दिवस, बीते हुए कल —मनु० ३।१८७ 3. दिन के प्रथम भाग में, पौ फटने पर 4. भोर में, सवेरे।

पूल (स्वा० पर०, चुरा० उभ०—पूलति, पूलयति-ते) ढेर लगाना, संचय करना, एकत्र करना।

पूलः, पूलकः [पूल्+अच्, ञ्वुल् वा] गठरी, पुली।

पूलाकः=पुलाक—दे०।

पूलिका [=पूरिका, रस्य लः] एक प्रकार की रोटी, पूरी।

पूवः, पूवकः [पूव्+क, पूव्+अन्] शहतूत का वृक्ष।

पूषन् (पुं०) (कर्तृ०—पूषा,—षणौ,—षणः) [पूष्+कनिन्] सूर्य,—सदा पातः पूषा गगनपरिमाणं कलयति —भर्तृ० २।११४, इन्धनौघवगण्यग्निस्त्विषा नार्यते पूषणम्—शि० २।३ । सम०—असुहृद् (पुं०) शिव का विशेषण,—आत्मजः 1. बादल 2. इन्द्र का विशेषण, —आशा इन्द्र का नगर (अमरावती)।

पृ I (तुदा० आ०—प्रियते, पूर्त) —अस्त होना, सक्रिय होना (बहुधा 'व्या' उपसर्ग के साथ) —कार्ये व्याप्रियते —दे० व्यापृत —प्रर० (पारयति ते) 1. काम करना, काम पर लगाना, सौंपना, नियत करना (बहुधा अधि० के साथ) व्यापारितः मूलभूतां विधाय सिद्धत्वमंकागतसत्त्ववृत्ति—रघु० २।३८ 2. रखना, जड़ देना, निश्चित करना, निर्देश देना, ढालना—व्यापारयामास करं किरीटे —रघु० ६।१९ उमामुखे ···व्यापारयामास विलोचनानि···कु० ३।६७, व्यापारितं शिरसि शस्त्रमशस्त्रपाणेः—वेणी० ३।१९, रघु० १३।२५।

II (जुहो० पर०—पिपर्ति, पूर्ण) 1. आगे ले जाना 2.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से मुक्त करना, प्रकाशित करना 3. भरना 4. रक्षा करना, जीवित रखना, जीवित रहना 5. उन्नति करना, प्रगति करना।

iii (क्र्या० पर० पृणाति) रक्षा करना।

iv (चुरा० उभ०—पारयति-ते, कभी-कभी 'पार' स्वतंत्र धातु मानी जाती है) 1. पार ले जाना, नाव से पार उतारना 2. किसी वस्तु के दूसरे पार्श्व पर पहुचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (व्रत का) पूरा करना 3. योग्य या समर्थ होना —अधिकं न हि पारयामि वक्तुम् —भाष्टि० २।५९, शि० ४ 4. सौंपना, बचाना, उद्धार करना, निस्तार करना।

v (स्वा० पर०—पृणेति) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, तृप्त करना 2. प्रसन्न होना, खुश होना।

पृक्त (भू० क० कृ०) [पृच्+क्त] 1. मिश्रित, संपृक्त —रघु० २।१२ 2. स्पृष्ट, संपर्क में लाया गया, स्पर्श करने वाला, संयुक्त,—क्तम् संपत्ति, दौलत।

पृक्तिः (स्त्री०) [पृच्+क्तिन्] स्पर्श, संपर्क, संयोग।

पृक्थम् [पृच्+थन्] संपत्ति, धन-दौलत, वैभव।

पृच् I (अदा० आ० पृक्ते, पृक्ण) संपर्क में आना।

II (स्वा० पर० पृणक्ति, पृक्त) संपर्क में लाना, सम्मिलित होना, मिल जाना —एवं वदन् दाशरथिः पृणाभ्यनुज्ञां शश्वत्—भट्टि० ६।३९, 2. मिश्रण करना, मिलाना 3 संपर्क में होना, स्पर्श करना 4. संपृक्त करना, भरना, संपृक्त करना 5. बढ़ाना, वृद्धि करना, सम् मिश्रण करना, घोलना, मिलना, मिलाना-बागर्थाविव संपृक्तौ -रघु० १।१, भट्टि० १७।१०६, दे० संपृक्त III (स्वा० पर०, चुरा० उभ० पर्वति, पर्चयति-ते) 1. स्पर्श करना, संपर्क में आना 2. रोकना, विरोध करना।

पृच्छकः [पृच्छ्+ण्वुल्] पूछताछ करने वाला, गवेषणा करने वाला —पृच्छकेन सदा भाव्यं पुरुषेण विजानता —पंच० १।९३, याज्ञ० २।२६८।

पृच्छनम् [पृच्छ्+ल्युट्] पूछना, पूछ-ताछ करना।

पृच्छा [पृच्छ्+अङ्+टाप्] 1. प्रश्न करना, पूछना, पूछ-ताछ करना 2. भविष्य विषयक पूछ-ताछ।

पृज् (अदा० आ० -पृक्ते) संपर्क में आना, स्पर्श करना।

पृत् (स्त्री०) [पृ+क्विप्, तुक्] सेना —(पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि०, द्वि० व० के पश्चात् 'पृतना' के स्थान में विकल्प से 'पृत्' आदेश हो जाता है)।

पृतना [पृ+तनन्—टाप्] 1. सेना 2. सेना का एक प्रभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं 3. युद्ध, संग्राम, मुठभेड़। समः—साहः इन्द्र का विशेषण।

पृथ् (चुरा० उभ० पर्थयति-ते) 1. विस्तार करना 2. फेंकना, डालना 3. भेजना, निर्देश देना।

पृथक् (अव्य०) [प्रथ्+अज् कित्, संप्रसारण] 1. अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके -संख्यादंडभृतः पृथक् पृथक् भगः १।१८, मनु० ६।२६, ७।५७ 2. भिन्न, अलग, भिन्नतापूर्वक भट्टि० ५।४, १३।४, रचिता पृथगर्थता गिरां किं० २।२७ 3. जुदा, एक ओर, एकाकी—चिकण० ४।२० 4. छोड़ कर, सिवाय, अपवाद के साथ, बिना (कर्म० करण० या अपा० के साथ) पृथग्ग्रामेण, रामात्, रामं वा—सिद्धा०, भट्टि० ९।१०९ (पृथक् कृ—अलग २ करना, बाँटना, जुदा-जुदा करना, विश्लेषण करना)। समः —आत्मता 1. अलग-अलग होना, पृथकता 2. भेद, भिन्नता 3. विवेक, निर्णय, -आत्मन् (वि०) भिन्न, अलग—आत्मिका व्यक्तिगत सत्ता, वैयक्तिकता —करणम्,-क्रिया 1. अलग-अलग करना, भेद करना 2. विश्लेषण करना, -कृत (वि०) भिन्न कुल से संबंध रखने वाला, -क्षेत्र (पु० ब० व०) एक पिता की विभिन्न पत्नियों से सन्तान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पत्नियों से सन्तान, -चर (वि०) एकाकी जाने वाला, अलग जाने वाला,—जनः नीच पुरुष, ज्ञान-रहित, गँवार आदमी, प्राकृत जन, नीच लोग— न पृथग्जनवच्छुचो वशं वशिनामुत्तम संयुगृह्यसे—रघु० ८।९०, किं० १४।२४ 2. मूर्ख, बुद्धू, अज्ञानी—शि० १६।३९ 3. दुष्ट आदमी, पापी,—भावः पृथकता, वैयक्तिकता (इसी प्रकार 'पृथक्त्वम्'),—रूप (वि०) भिन्न-भिन्न रूपों या प्रकारों का, —विध (वि०) भिन्न-भिन्न प्रकार का, नाना प्रकार विविध,—शय्या अलग सोना.—स्थितिः (स्त्री०) अलग सत्ता।

पृथवी [प्रथ्+क्वनिप्, संप्रसारण] दे० पृथिवी।

पृथा (स्त्री०) पाण्डु की दो पत्नियों में से एक, कुन्ती का नाम। समः—जः,-तनयः,-सुतः,-सूनुः पहले तीन पांडवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत -अस्त्रत्यागात् हृत इति पृथासूनुना स्पष्टमुक्तं —वेणी० ३।९, अभिनन्दन्ते पृथासूनुः स्नेहेन परिचम्बरे —किं० ११।८, —पतिः पांडु का विशेषण।

पृथिका [प्रथ्+क+टाप् संप्रसारणम्, इत्वम्] कनखजूरा।

पृथिवी [प्रथ्—क्विन्, संप्रसारणम्] पृथ्वी (कई 'पृथिवी' भी लिखा जाता है)। समः—इन्द्रः,-ईशः,-क्षित् (पु०), पालः,-पालकः,-भुज् (पु०) भुजः,शक्रः, राजा,—तलम् पाताल, पतिः 1. राजा 2. मृत्यु का देवता यम, -मंडलः,-लम् भूमंडल, -यहः वृक्ष-पर्वमानः पृथिवी रुहानिव रघु० ८।९, -लोकः मर्त्यलोक भूलोकः।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथु (वि०) (स्त्री०-थु,-ध्वी) तुल० प्रथीयस्,-उत्त० अ० प्रथिष्ठ) [प्रथ्+कु, सम्प्रसारणम्] 1. चौड़ा, विस्तृत, प्रशस्त, फैलावदार—पृथुनितंब--दे० नीचे, सिंधोः पृथुमपि तनुम्—मेघ० ४६ 2. यथेष्ट, बहुल, पर्याप्त—विक्रम० ४।२५ 3. विस्तीर्ण, बड़ा--दंशः पृथुतरीकृताः—रत्न० २।१५, शि० १२।४८, रघु० ११।२५ 4. विवरणयुक्त, अतिविस्तृत 5. बहुसंख्यक 6. चुस्त, फुर्तीला, चतुर 7. महत्त्वपूर्ण,—थुः 1. अग्नि का नाम 2. एक राजा का नाम (पृथु अंग के पुत्र वेन का बेटा था। यही पहला राजा कहलाता है जिससे कि इस भूमि का नाम पृथ्वी पड़ा। विष्णु पुराण में वर्णन मिलता है कि वेन स्वभाव से दुष्ट था, जब उसने यज्ञ व पूजा का निषेध किया तो पुण्यात्मा ऋषियों ने उसे पीट कर मार डाला, उसके पश्चात् राजा के न होने पर देश में लूट मार होने लगी, अराजकता फैल गई, फलतः मुनियों ने पुत्रोत्पत्ति की इच्छा से मृत राजा की दाईं भुजा को मसला, तब उससे अग्नि के समान तेजस्वी पृथु निकला। उसे तुरन्त राजा घोषित कर दिया गया। उसकी प्रजा दुर्भिक्षग्रस्त थी--अतः उसने राजा से भोज्य फलों को दिलाने की प्रार्थना की जो कि पृथ्वी ने देना बन्द कर दिया था। क्रुद्ध होकर पृथु ने अपना धनुष उठाया और पृथ्वी को अपनी प्रजा के लिए आवश्यक पदार्थ पैदा करने के लिए बाध्य किया। पृथ्वी ने गाय का रूप धारण कर लिया और राजा के आगे-आगे भागने लगी—राजा भी उसका पीछा करता रहा। अन्त में पृथ्वी ने आत्मसमर्पण कर दिया और राजा से अपने प्राण बचाने की प्रार्थना की, साथ ही यह प्रतिज्ञा की कि आवश्यक फल शाकादिक प्रजा को मिल सकेंगे यदि उसे एक बछड़ा दे दिया जाय जिसके द्वारा वह दूध देने के योग्य हो सके। तब पृथु ने स्वायंभुव मनु को बछड़ा बनाया, पृथ्वी को दुहा और दूध अपने हाथों में लिया जहां से सब प्रकार के अन्न, शाकभाजियां और फलफूल प्रजा के पालन-पोषण के लिए उत्पन्न हुए। इसके पश्चात् पृथु के उदाहरण का बाद में नाना प्रकार से अनुकरण किया गया। देव, मनुष्य, ऋषि, पहाड़, नाग और असुर आदि ने अपने में से ही उपयुक्त दोग्धा तथा बछड़े को ढूंढा और इस पृथ्वी का अपनी इच्छानुसार दोहन किया तु० कु० १।२.),—युः (स्त्री०) अफीम। सम०—उदर (वि०) मोटे पेट वाला, हृष्ट-पुष्ट (रः) मेंढा, -जघन,—नितंब (वि०) मोटे और विस्तार युक्त कूल्हों से युक्त-पृथुनितंब नितंबवती तव -विक्रम० ४।२६,—पत्रः,-पत्र लाल लहसुन —प्रथ,-यशस् (वि०) दूर-दूर तक प्रसिद्ध, व्याकृत यशस्वी,—रोमन् (पुं०) मछली, °युग्मः मीन राशि, —श्री (वि०) अत्यन्त समृद्ध,—श्रोणी (वि०) बड़े भारी कूल्हों वाला,—संपद् (वि०) धनवान्, दौलत मंद,—स्कंधः सूअर।

पृथुकः, कम् [पृथु+कै+क] चौले, चिवड़े—कः बच्चा निन्द्यजनन्यः पृथुकान् पथिभ्यः—शि० ३।३१,—का लड़की।

पृथुल (वि०) [प्रथ्+कलच्, ला+क वा] चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत--श्रोणिषु प्रियकरः पृथुलासु स्पर्शमाप सकलेन तलेन -शि० १०।६५।

पृथ्वी [पृथु+ङीष्] 1. पृथिवी, धरा 2. पांच मूल तत्त्वों में से एक, पृथ्वी 3. बड़ी इलायची 4. एक छंद (दे० परिशिष्ट १)। सम०—ईशः,—पतिः, -पालः, -भुज् (पुं०) राजा, प्रभु,—खातम् गुफा,—गर्भः गणेश का विशेषण,—गृहम् गुफा, कृत्रिम खोह,--जः 1. वृक्ष 2. मंगल ग्रह।

पृथ्वीका [पृथ्वी+कन्+टाप्] 1. बड़ी इलायची 2. छोटी इलायची।

पृदाकुः [पृद्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः] 1. विष्णु 2. व्याघ्र 3. सांप, छोटा विषैला साप 4. वृक्ष 5. हाथी 6. चीता।

पृश्नि (श्णि) (स्पृश्+नि निं० पृषो० सलोपः] 1. छोटा, छोटे कद का बौना 2. सुकुमार, दुबला-पतला 3. विविध प्रकार का, चित्तीदार, --श्निः 1. प्रकाश की किरण 2. पृथ्वी 3. तारा समूह से युक्त आकाश 4. कृष्ण की माता देवकी। सम०—गर्भः - धरः, - भूः कृष्ण के विशेषण, -शृंगः 1. कृष्ण का विशेषण 2. गणेश का विशेषण।

पृश्नि (श्णि) का, पृश्नी (श्णी) [पृश्नौ जले कार्यतिशोभते--पृश्नि+कै+क+टाप्, पृश्नि+ङीष्] जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुंभी।

पृषत् (नपुं०) [पृष्+अति] 1. जल या किसी और तरल पदार्थ की बूंद (कुछ लोगों के मतानुसार केवल ब०व० में प्रयुक्त)। सम०- अंशुः, अश्रुः 1. वायु, हवा 2. शिव का विशेषण,—आज्यम् दही में मिला हुआ घी,—पतिः (पृषतां पतिः) वायु--बलः वायु का घोड़ा।

पृषतः [पृष्+अतच्] 1. चित्तीदार हरिण 2. पानी की बूंद--पृषतैरपां शमयतां च रजः—कि० ६।२७, रघु० ३।३, ४।२७, ६।५१ 3. धब्बा, निशान—। सम०—अश्वः हवा, वायु।

पृषत्कः [पृषत्+कन्] बाण—तदुपोढैश्च नभश्चरैः पृषत्कः—कि० १३।२३, शि० २०।१८, --उद्भूट १।१, धनुर्भृतां हस्तवतां पृषत्का - रघु० ७।४५।

पृषंतिः [पृष्+अंतिच्] पानी की बूंद—पः पृषंतिभिः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्पृष्टा वांति वाताः शनैः शनैः—अमरकोश पर भरत ।

पृथभाषा=पृथभासा ।

पृथाकरा [पृथ्+क्विप्, पृथे सेवनाय आकीर्यते—पृथ्+आ+कृ+अप्+टाप्] छोटा पत्थर (जो बाट की भांति प्रयुक्त किया जाय) ।

पृथातक्र | पृथत् | आ+तक् |+अच्] दही और घी का संमिश्रण ।

पृथोदरः [पृथत् उदरं यस्य, पृथो० तलोपः] (यह शब्द पृथत् और उदर से मिल कर बना है, पृथत् के त् का अनियमित कारक के रूप में लोप हो गया । इस प्रकार यह शब्द अनियमित समासों की एक पूरी श्रेणी है—पृथोदरादित्वात् साधुः, दे० 'गण' पा० ४।३।१०९ ।

पृष्ट (भू०क०कृ०) [प्रच्छ्+क्त] 1. पूछा हुआ, पता लगाया हुआ, प्रश्न किया हुआ, सवाल किया हुआ, 2. छिड़का हुआ । सम०—आयनः 1. धान्य विशेष, अनाज 2. हाथी ।

पृष्टिः (स्त्री०) प्रच्छ् |+क्तिन्] पूछ-ताछ, प्रश्न वाचकता ।

पृष्ठम् [पृष् स्पृश् वा धक्, नि० साधुः] 1. पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाड़ी 2. जानवर की पीठ अश्वपृष्ठमारुहः—आदि 3. सतह या ऊपर का पार्श्व रघु० ४।३१,१२।६७, कु० ७।५१, इसी प्रकार अवनिपृष्ठचारिण्यौ उत्तर० ३ 4. (किसी पत्र या दस्तावेज की) पीठ या दूसरी तरफ याज्ञ० २।९३ 5. घर की चपड़ी छत 6. पुस्तक का पृष्ठ । सम० अस्थि (नपुं०) रीढ़ की हड्डी, गोपः, -रक्षः जो किसी लड़ते हुए योद्धा की पीठ की रक्षा करे, -ग्रंथि (वि०) ककुदान्, कूबड़ युक्त, -चक्षुस् (पुं०) केकड़ा, -तल्पनम् हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियां, दृष्टिः 1. केकड़ा 2. रीछ, फलम् किसी आकृति का फाल्तू भाग, -भागः पीठ, मांसम् 1. पीठ का मांस 2. पीठ पर की गूमड़ी °अद °अवन (वि०) चुगलखोर, बदनाम करने वाला, कलंकित करने वाला (°दम्, °दनम्) चुगली, पृष्ठमांसादनं तच्छत् परोक्षे दोषकीर्तनम् · हेमचन्द्र तु० प्राक्शतादयोः पतति खादति पृष्ठमांसम् –हि० १।८१, °यानम् सवारी, -वंशः रीढ़ की हड्डी वास्तु (नपुं०) मकान की ऊपर की मंजिल, वाह, (पुं०), वाह्यः लद्दू बैल, शय (वि०) पीठके बल सोने वाला, °शृंग (जंगली बकरी, °शृंगिन् (पुं०) 1. मेढ़ा 2. भैंसा 3. हिजड़ा 4. भीम का विशेषण ।

पृष्ठकम् | पृष्ठ-|-कन् | पीठ ।

पृष्ठतस् (अव्य०) [पृष्ठ-|-तसिल्] 1. पीछे, पीठ पीछे, पीछे से—गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात् · मनु० ४।१५४, ८।३००, भग० ११।४० 2. पीठ की ओर, पीछे की ओर— गच्छ पृष्ठतः 3. पीठ पर 4. पीठ पीछे चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से (**पृष्ठतः कृ**) 1. पीठ पर रखना, पीछे छोड़ना 2. उपेक्षा करना, तिलांजलि देना, छोड़ देना 3. विरक्त होना, हाथ खींचना, त्याग देना, तिलांजलि देना, **पृष्ठतो गम्**—अनुसरण करना, **पृष्ठतो भू**—1. पीछे खड़े होना 2. उपेक्षित होना ।

पृष्ठ्य (वि०) [पृष्ठ+यत्] पीठ से संबंध रखने वाला, °ष्ठ्यः लट्टू घोड़ा ।

पृष्णिः (स्त्री०) [=पृश्नि पृषो०] एड़ी ।

पॄ (जुहो०, क्रया०—परः० पिपर्ति, पृणाति, पूर्ण—कर्म० पूर्यते, प्रेर० पूरयति—ते, इच्छा० पिपरिषति (रीते), पुपूर्षति) 1. भरना, भर देना, पूरा करना 2. पूरा करना, (आशा आदि) पूरी करना, तृप्त करना 3. हवा भरना, (शंख, बंसरी आदि) बजाना 4. संतुष्ट करना, थकावट दूर करना, प्रसन्न करना—पितृनपारीत्—भट्टि० १।२ 5. पालना, परवरिश करना, पुष्ट करना, पोलनपोषण करना, पालन करना ।

पेचकः [पच्+क्वुन्, इत्वम्] 1. उल्लू 2. हाथी की पूंछ की जड़ 3. गलगंड, शय्या 4. बादल 5. जूं ।

पेचकिन् (पुं०) पेचिलः [पेचक+इनि, पच्+इलच्, इत्वम्] हाथी ।

पेंजूषः (पुं०) कान का मैल, थूथ, दे० पिंजूष ।

पेटः,-टम् [पिट्+अच्] 1. थैला, टोकरी 2. पेटी, संदूक, °टः खुला हाथ जिसकी अंगुलियां फैलाई हुई हों ।

पेटकः,-कम् [पेट+कन्] 1. टोकरी, संदूक, थैला 2. समुच्चय, पठरी ।

पेटाकः [=पेटक, पृषो०] थैला, टोकरी, संदूक ।

पेटिका, पेटी [पिट्+ण्वुल्-|-टाप्, इत्वम्, पेट+ङीप्] छोटा थैला, टोकरी ।

पेडा | =पेट, पृषो०] बड़ा थैला ।

पेय (वि०) [पा+ण्यत्] 1. पीने के योग्य, चढ़ा जाने के लायक 2. स्वादिष्ट, यस् पानीय, मद्य या शर्बत आदि, या भात का मांड, चावलों की लपसी ।

पेयूः (पुं०) 1. समुद्र 2. अग्नि 3. सूर्य ।

पेयूषः,-षम् [पेय+ऊषन्, वा० गुणः] 1. अमृत 2. उस गाय का दूध जिसे ब्याये अभी एक सप्ताह से अधिक नहीं हुआ सप्तरात्रप्रसूतायाः क्षीरं पेयूषमुच्यते—हारावली, मनु० ५।६ 3. ताजा घी ।

पेरा (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र · भट्टि० १७।७ ।

पेल् [भ्वा० पर०, चुरा० उभ० पेलति, पेलयति-ते] 1. जाना, चलना—फिरना 2. हिलना, कांपना ।

पेलम्, पेलकः] पेल्+अन्, पेल+कन्] अण्डकोष ।

पेलव (वि०) [पेल+वा+क] 1. सुकुमार, सुकोमल, मृदु, मुलायम,—धनुः पेलवपुष्पपत्रिणः कु० ४।२९, ५।४,७।६५ 2. दुबला, पतला, क्षीण—श० ३।२२ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पेलिः, पेलिन् (पुं०) [पेल्+इन्, पेल+इनि] घोड़ा।

पेश (प, स) ल (वि०) [पिश् (प्, स्)+अलच्] 1. मृदु, मुलायम, सुकुमार -रघु० १।४०,११।४५, मेघ० ९३ 2. दुबला-पतला, क्षीण (कमर आदि) -रघु० १३।३४ 3. मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त अच्छा -भामि० २।२ 4. विशेषज्ञ, चतुर, कुशल - भर्तृ० २।५६ 5. चालाक, छली।

पेशिः,-शी [पिश्+इन्, पेशि+ङीष्] 1. मांस का पिंड 2. मांस राशि 3. अंडा 4. पुट्ठा -याज्ञ० ३।१०० 5. गर्भाधान के पश्चात् शीघ्र बाद का कच्चा गर्भ-पिण्ड 6. खिलने के लिए तैयार कली 7. इन्द्र का वज्र (पुंल्लिग भी) 8. एक प्रकार का वाद्ययंत्र। सम०—कोशः (शः) पक्षी का अंडा।

पेषः [पिष्+घञ्] पीसना, चूरा करना, कुचलना -शि० ११।४५।

पेषणम् [पिष्+ल्युट्] 1. चूर्ण बनाना, पीसना 2. खलिहान का वह स्थान जहाँ अनाज की बालों पर दायें चलाई जाती हैं 3. सिल और लोढी, पीसने का कोई भी उपकरण।

पेषणिः (स्त्री०) पेषणी, पेषाकः [पिष्+अनि, पेषणि+ङीष्, पिष्+आ—कन्] चक्की, सिल, खरल।

पेस्वर (वि०) [पेस्+वरच्] 1. जाने वाला, घूमने वाला 2. नाशकारी।

पै (स्वा० परo पायति) सूखना, मुरझाना।

पैतिः [पितृ+इञ्] यास्क का पैतृकनाम।

पैजूवः [पिजूष+अण्] कान।

पैठर (वि०) (स्त्री०—री) [पिठर+अण्] किसी पात्र में उबाला हुआ।

पैठीनसिः (पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो एक धर्मशास्त्र का प्रणेता है।

पैडिक्यम्, पैडित्यम् [पिण्ड+ठन्+ष्यञ्, पिण्ड+इन्+ष्यञ्] भिक्षा पर जीवन निर्वाह करना, भिक्षा-वृत्ति।

पैतामह (वि०) (स्त्री०—ही) [पितामह+अण्] 1. दादा या पितामह से संबंध रखने वाला 2. उत्तराधिकार में पितामह से प्राप्त 3. ब्रह्मा से गृहीत, ब्रह्मा से अधिष्ठित, या ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला - रघु० १५।६०,—हाः (बo वo) पूर्वपुरुष, बाप दादा।

पैतामहिक (वि०) (स्त्री०—की) [पितामह+ठक्] पितामह से संबन्ध रखने वाला।

पैतृक (वि०) (स्त्री०—की) [पितृ+ठञ्] 1. पिता से सम्बन्ध रखने वाला 2. पिता से प्राप्त या आगत, पुरखाओं से संबंध, पिता की परंपरा से प्राप्त—रघु० ८।६,१८।४०, मनु० ९।१०४, याज्ञ० २।४७ 3. पितरों के लिए पुनीत,—कम् मृत पुरखाओं या पितरों के सम्मान में अनुष्ठित श्राद्ध।

पैतृमत्यः [पितृमती+ष्यञ] 1. अविवाहिता स्त्री का पुत्र 2. किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र (पितृमतः पुत्रः)।

पैतृष्वस्रेयः, पैतृष्वसेयः [पितृष्वसृ+ढक्, छण् वा] फूफी या बुआ का बेटा।

पैत्त (वि०) (स्त्री०—त्ती), **पैत्तिक** (वि०) (स्त्री०—की) [पित्त+अण्, ठञ् वा] पित्तीय, पित्तसंबंधी।

पैत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [पितृ+अण्] 1. पिता या पुरखाओं से संबन्ध रखने वाला, पैतृक, पुश्तैनी 2. पितरों के लिए पुनीत,—त्रम् तर्जनी और अंगूठे का मध्यवर्ती हाथ का भाग (इस अर्थ में 'पैत्र्यम्' भी)।

पैलव (वि०) (स्त्री०—वी) [पीलु+अण्] पीलु वृक्ष की लकड़ी से बना हुआ—मनु० २।४५।

पैशल्यम् [पेशल+ष्यञ्] मृदुता, सुशीलता, सुकुमारता।

पैशाच (वि०) (स्त्री०—ची), [पिशाच+अण्] राक्षसी, नारकीय, चः हिन्दू-धर्मशास्त्र में अंकित आठ प्रकार के विवाहों में से आठवाँ या निम्नतम श्रेणी का विवाह (इसमें किसी सोई हुई प्रमत्त या पागल कन्या का, उसकी स्वीकृति के बिना उसका कौमारहरण क्रिया जाता है सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः—मनु० ३।३४, याज्ञ० १।६१ 2. एक प्रकार का राक्षस या पिशाच,—चौ किसी धार्मिक संस्कार के अवसर पर तैयार किया गया नैवेद्य 2. रात 3. एक प्रकार की अंडबंड भाषा जो रंगमंच पर पिशाचों द्वारा बोली जाय, प्राकृत भाषा का एक निम्नतम रूप।

पैशाचिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिशाच+ठक्] नारकीय, राक्षसी।

पैशुनम्, न्यम् [पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ्, वा] 1. चुगली, बदनामी, दूसरे की उचर लगाना, कलंक- मनु० ७।४८, ११।५५, भग० १६।२ 2. बदमाशी, ठगी 3. दुष्टता, दुर्भावना।

पैष्ट (वि०) (स्त्री०—ष्टी) [पिष्ट+अण्] आटे का या पीठी का बना हुआ।

पैष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिष्ट+ठञ्] आटे या पीठी का बना हुआ **कम्** 1. कचौड़ियों का ढेर 2. अनाज से खींची हुई मदिरा।

पैष्टी [पैष्ट+ङीष्] अनाज को सड़ाकर उससे तैयार की हुई मदिरा—तु० गौडी।

पोगंड (वि०) [पौः शुद्धो गंड एकदेशो यस्य-बहु०] 1. बच्चा, अवयस्क, अपूर्ण विकसित 2. कम या विकृत अंग वाला 3. विकृत, विरूप, - डः बालक जिसकी आयु ५ से सोलह वर्ष के भीतर की हो, तु० 'अपोगंड'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोटः [पुट+घञ्] घर की नींव । सम०—इलः 1. एक प्रकार का तरकुल 2. कास 3. एक प्रकार की मछली ।

पोटक [पुट्+ण्वुल्] नौकर ।

पोटा [पुट्+अच्+टाप्] 1. मरदानी स्त्री, पुरुषों की भाँति दाढ़ी वाली स्त्री 2. हिजड़ा, उभयलिंगी 3. नौकरानी ।

पोटी [पोट+ङीष्] स्थूलकाय मगरमच्छ ।

पोटुलिका, पोट्टली [पोट्टुली+कन्+टाप्, ह्रस्व, पोट+ली+ङ ङीष्, पृषो०] पोटली, पुलिंदा, गठरी ।

पोतः [पू+तन्] 1. किसी भी जानवर का बच्चा, पशुशावक, बछेड़ा, अंडशावक आदि—पिबत स्तन्यं पोता —भामि० १।६०, मृगपोतः, करिपोतः आदि, **वीरपोतः** नया योद्धा उत्तर० ५।३ 2. दस बरस का हाथी 3. जहाज, बेड़ा, किश्ती पोतेन दुस्तरवारिराशितरणे —हि० २।१६५, मनु० ७।३२ 4. वस्त्र, कपड़ा 5. पौधे का अंकुर 6. घर बनाने की जगह । सम०—**आच्छादनम्** तंबू,—**आधानम्** छोटी-छोटी मछलियों का झुण्ड, —**धारिन्** (पुं०) जहाज का स्वामी, —**भंगः** जहाज का टूट जाना, —**रक्षः** किश्ती या नाव का चप्पू या डांड, —**वणिज्** (पुं०) व्यापारी जो समुद्र से ओ जाकर व्यापार करे, —**वाहः** —खिवैया, नाविक ।

पोतकः [पोत+कन्] 1. पशुशावक 2. छोटा पौधा 3. घर बनाने के निमित्त भूखण्ड ।

पोतासः [पोत+अस्+अच्] एक प्रकार का कपूर ।

पोतृ (पुं०) [पू+तृच्] यज्ञ में कार्य कराने वाले सोलह ऋत्विजों में से एक (ब्रह्मा नामक ऋत्विज का सहायक) ।

पोत्या [पोत+य+टाप्] नौकाओं का बेड़ा ।

पोत्रम् [पू+ष्ट्रन्] 1. सूअर की थूथन 2. नौका, जहाज 3. हल का फलका 4. वृक्ष 5. वस्त्र 6. पोतृ का पद । सम० **आयुधः** सूअर, वराह ।

पोत्रिन् (पुं०) [पोत्र+इनि] सूअर, वराह ।

पोलः [पुल्+घञ्] 1. ढेर 2. राशि, विस्तार ।

पोलिका, पोली [पोली+कन्+टाप्, ह्रस्व, पोल+ङीष्] एक प्रकार की पूरी (मैदे की बनी हुई) ।

पोलिंदः [पोलस्य अलिन्द इव -पृषो०] जहाज का मस्तूल ।

पोषः [पुष्+घञ्] 1. पोषण, संचालन, संधारण 2. पुष्टि, वृद्धि, संवर्धन, प्रगति 3. समृद्धि, प्राचुर्य, बाहुल्य ।

पोषणम् [पुष्+णिच्+ल्युट्] पोसना, (छाती का) दूध पिलाना, पालना, संधारण करना ।

पोषयित्नुः [पुष्+णिच्+इत्नुच्] कोयल ।

पोषित् (वि०) [पुष्+णिच्+तृच्] दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला—(पुं०) परवरिश करने वाला, दूध पिलाने वाला ।

पोषिन्, पोष्ट् (वि०) [पुष्+णिनि, तृच् च] दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला (पुं०) पालक, पोषक, रक्षक ।

पोष्य (वि०) [पुष्+ण्यत्] 1. खिलाये जाने के योग्य, पालन-पोषण किये जाने योग्य, संपालनीय 2. सुपालित, फलता-फूलता, समृद्ध । सम०—**सुतः** गोद लिया हुआ पुत्र, **वर्गः** ऐसे संबंधियों का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने के योग्य हो ।

पौंश्चलीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुंश्चली+छण्] वेश्याओं से संबंध रखने वाला ।

पौंश्चल्यम् [पुंश्चली+ष्यञ्] वेश्यापन, कुलटापन —मनु० ९।१५ ।

पौंसवनम् [पुंसवन+अण्] दे० 'पुंसवन' ।

पौंस्न (वि०) (स्त्री०—स्नी) [पुंस्+स्नञ्] 1. पुरुषोचित—भट्टि० ५।९१ 2. मर्दाना, पौरुषेय, स्नम् मर्दानगी, पौरुष ।

पौंड (वि०) (स्त्री० ड्री) [पौंड्र+अण्] डाकोचित, —**इन्** वचन, बाल्यावस्था (५ से १६ वर्ष तक की आयु) ।

पौंड्रः [पुंड्र+अण्] 1. एक देश का नाम 2. उस देश का राजा, या निवासी 3. एक प्रकार का गन्ना 4. संप्रदायबोधक तिलक 5. भीम के शंख का नाम—**पौंड्रं दध्मौ** महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः—भग० १।१५ ।

पौंड्रकः [पुंड्र+कन्] 1. गन्ने (ईख) का एक भेद 2. (रस पका कर गुड़ बनाने वालों की) वर्णसंकर जाति —तु० मनु० १०।४४ ।

पौंड्रिकः [पुंड्र+ठक्] एक प्रकार का गन्ना (ईख) पौंडा ।

पौंतवम् [=यौतव पृषो०] एक तोल ।

पौंत्रिकम् [पुत्रिका अण्] (पीले रंग का) एक प्रकार का शहद ।

पौत्र (वि०) (स्त्री० त्री) [पुत्रस्यापत्यम् अण्] पुत्र से प्राप्त या संबद्ध,—त्रः पोता, पुत्र का बेटा,—त्री पोती, पुत्र की बेटी ।

पौत्रिकेयः [पुत्रिका+ढक्] लड़की का पुत्र जो अपने नाना का वंश चलाये ।

पौनः पुनिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुनः पुनः+ठञ्, टिलोपः] बार २ दोहराया गया, बार २ होने वाला ।

पौनः पुन्यम् [पुनः पुनः+ष्यञ्] बार बार आवृत्ति, लगातार दोहराया जाना ।

पौनरुक्त्यम्, पौनरुक्तयम् [पुनरुक्त+अण्, ष्यञ् च] -आवृत्ति,—अतिप्रियोऽसीति पौनरुक्त्यम्—का० २।६, रघु० १२।४० 2. आधिक्य, अनावश्यकता, निरर्थकता—अभिव्यक्तायां क्रियायां किं दीपिका-पौनरुक्त्यधेन—विक्रम० २ ।

पौनर्भव (वि०) [पुनर्भू+अञ्] 1. जिसने दूसरे पति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से संबंध रखने वाला 2. दोहरा हुआ, —वः 1. पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र, प्राचीन हिन्दू-धर्मशास्त्र में स्वीकृत बारह पुत्रों में से एक —याज्ञ० २।१३०, मनु० ३।१५५ 2. स्त्री का दूसरा पति मनु० ९।१७६।

पौर (वि०) (स्त्री०—रो) [पुर+अण्] किसी नगर या शहर में संबंध रखने वाला —वः शहरी, नागरिक (विप० जानपद) कु० ६।६१ मेघ० २७, रघु० २।३७,७८, १३।३, १६।९ ; सम० अंगना वीथिका (स्त्री०), स्त्री नगर में रहने वाली स्त्री, जानपद (वि०) शहर या नगर से संबंध रखने वाला (ब. व. वः) नागरिक और ग्रामीण, शहरी और देहाती कथं दुर्जनाः पौर जानपदाः —उत्तर० ६, वृद्धः प्रमुख नागरिक, उपनगरपाल।

पौरकम् [पौर+कै+क] 1. घर के निकट बगीचा 2. नगर के निकट उद्यान।

पौरंदर (वि०) (स्त्री०—री) [पुरंदर+अण्] इन्द्र से प्राप्त, इन्द्र संबंधी, इन्द्र के लिए पुनीत, रम् ज्येष्ठा नक्षत्र।

पौरव (वि०) (स्त्री०—वी) [पुरु+अण्] पुरु के वंश में उत्पन्न, वः पुरु की संतान, पुरुवंशी —गण० ५, 2. भारत के उत्तर में स्थित एक देश तथा उसके नागरिक 3. उस प्रदेश का निवासी या राजा।

पौरवीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पौरव+छ] पौरवों का भक्त।

पौरस्त्य (वि०) [पुरस्+त्यक] 1. पूर्वी—गोरम्भो वा नुखपति मरुत् गानुसंवाहनाभिः मा० ९।२५, पौरस्त्यश्लेषामारुत २।१७, रघु० ४।३४ 2. प्रमुख 2. पहला, प्रथम, पूर्ववर्ती।

पौराण (वि०) (स्त्री०—णी) [पुराण+अण्] 1. भूत काल का, प्राचीन, अतीत काल का 2. प्राक्कालीन 3. पुराणों से संबंध रखने वाला या उनसे प्राप्त।

पौराणिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुराण+ठक्] 1. भूत काल का, प्राचीन 2. पुराणों से संबद्ध या उनसे प्राप्त 3. अतीत काल के उपाख्यानों का ज्ञाता, —कः पुराणों का सुविज्ञ ब्राह्मण, पुराणों का पाठक (जनसाधारण में बैठ कर) 2. पुराणविद्, पौराणिक कथा जानने वाला व्यक्ति।

पौरुष (वि०) (स्त्री—षी) [पुरुष+अण्]। पुरुष संबंधी, मानवी 2. मर्दाना, पुरुषोचित,—षः एक मनुष्य के द्वारा ढोये जाने योग्य बोझा, -षी स्त्री यम् 1. मानवी कृत्य, मनुष्य का काम, चेष्टा, प्रयत्न -धिगस्त्वधा पौरुषम् भर्तृ० २।८८, दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या —पंच० १ 2. शौर्य, विक्रम, वीरता, मर्दानगी, साहस—पौरुषभूषणः—रघु० १५।२८, ८।२८ 3. पुरुषत्व —भग० ७।८ 4. वीर्य, शुक्र 5. पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग 6. मनुष्य की पूरी ऊँचाई, खुली हुई अंगुलियों समेत अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर जितनी ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचे 7. भूगर्दभी।

पौरुषेय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुरुष+ढक्] 1. मनुष्य से प्राप्त, मनुष्य कृत, मनुष्य द्वारा स्थापित या प्रवर्तित तथा अपौरुषेय के विप० 2. पराक्रमी, पुरुषोचित 3. आध्यात्मिक, —यः 1. मनुष्यत्व 2. मनुष्यों की भीड़ 3. रोजनदारी पर काम करने वाला श्रमिक, कुली 4. मानवी काम, मनुष्य का कार्य।

पौरुष्यम् [पुरुष+ष्यञ्] बहादुरी, साहस, शौर्य।

पौरोगवः [पुरोगवे नेत्रे यस्य पुरोगु+अण्] राज भवन का अधीक्षक, विशेषतः राजा की रसोई का।

पौरोभाग्यम् [पुरोभागिन्+ष्यञ्] अन्य लोगों से बढ़िया 1. उत्कृष्टता, श्रेष्ठता —पौरोभाग्यमिवाचरन् रघु० १२।२० 2. दुर्भाग्य, ईर्ष्या, डाह।

पौरोहित्यम् [पुरोहित+ष्यञ्] पुरोहित का पद, पुरोहिताई।

पौर्णमास (वि०) (स्त्री०—सी) [पूर्णमासी+अण्] पूर्णिमा से संबंध रखने वाला,—सः अग्निहोत्रों द्वारा पूर्णिमा के दिन अनुष्ठित संस्कार।

पौर्णमासी, पौर्णमी [पौर्णमास+ङीप्, पूर्ण+मा—क+अण्+ङीप्] पूर्णिमा, पूर्णमासी।

पौर्णमास्यम् [पौर्णमासी+यत्] अव्य० पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ।

पौर्णिमा [पूर्णिमा+अण्+टाप्] पूर्णमासी का दिन।

पौर्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्व+ठक्] पूर्वपद अर्थात् कार्यों से संबंध रखने वाला मनु० ३।१७८, ४।२२७।

पौर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [पूर्व+अण्] 1. भूतकाल संबंधी, 2. पूर्व दिशा से संबंध रखने वाला, पूर्वी।

पौर्वदेह (वि०) **हिक** (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वदेह+ठक्] पूर्वजन्म संबंधी, पहले शरीर में किया हुआ, पूर्वजन्म-कृत —भग० ६।४३, याज्ञ० ३।२४८।

पौर्वपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वपद+ठञ्] समास के प्रथम पद से संबंध रखने वाला।

पौर्वापर्यम् [पूर्वापर+ष्यञ्] 1. पहले का और बाद का संबंध, पूर्ववर्ती और परवर्ती का संबंध 2. उचित क्रम, अनुक्रम, सातत्य।

पौर्वाह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वाह्ण+ठञ्] दोपहर के पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, मध्याह्न पूर्व संबंधी।

पौर्विक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्व+ठञ्] 1. पहला, पूर्वकालीन, पहले का 2. पैतृक 3. पुराना, प्राचीन।

पौलस्त्यः [पुलस्तेरपत्यम्—पुलस्ति+यञ्] रावण का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेषण—पौलस्त्यः कथमन्यदारहरणे दोषं न विज्ञातवान्—पंच० २।४, रघु० ४।८०, १०।५, १२।७२ 2. कुबेर का विशेषण 3. विभीषण का विशेषण 4. चन्द्रमा।

पौलिः (पुं०, स्त्री०) पौली (स्त्री०) [पुल्+इ, ण, पौलेन निवृत्तः—पौल+इञ्, पौलि+ङीप्] एक प्रकार की पूरी।

पौलोमी [पुलोमन्+अण्, अनो लोपः, पौलोम+ङीप्] शची, पुलोमा की पुत्री, इन्द्र की पत्नी—आशीरन्या न ते युक्ता पौलोम्या सदृशी भव—शं० ७।२८। सम०—संभवः जयन्त का विशेषण।

पौषः [पौषी+अण्] एक चंद्रमास का नाम जिसमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है (दिसम्बर-जनवरी में आने वाला मास), °यी पौष मास में आने वाली पूर्णिमा, रघु० १८।३५।

पौष्कर,—रक, (स्त्री०—री,—की) पुष्कर+अण्, पौष्कर+कन्] नील कमल से संबंध रखने वाला।

पौष्करिणी [पुष्कराणां समूहः—पौष्कर+इनि+ङीप्] कमलों से भरा हुआ सरोवर, सरोवर।

पौष्कलः [पुष्कल+अण्] अनाज का एक भेद।

पौष्कल्यम् [पुष्कल+ष्यञ्] 1. परिपक्वता, पूर्ण विकास, पूरी वृद्धि 2. बाहुल्य।

पौष्टिक (वि०) (स्त्री०-की) [पुष्टि+ठञ्] 1. वृद्धि करने वाला, कल्याण कारक 2. पोषण करने वाला, पोषक, पुष्टिकारक, बलवर्धक।

पौष्णम् [पूषादेवता अस्य—पूषन्+अण्, उपधालोपः] रेवती नक्षत्र।

पौष्य (वि०) (स्त्री०-ष्यी) [पुष्प+अण्] फूल संबंधी या फूलों से प्राप्त, पुष्पमय, पुष्पित,—ष्यी 1. पाटलिपुत्र नगर, पटना 2. (फूलों से तैयार की गई एक प्रकार की) शराब।

प्याट् (अव्य०) [प्याय्+डाटि (वा०)] हो, अहो आदि अव्यय जो बुलाने या पुकारने के लिए व्यवहृत होते हैं।

प्याय् (स्वा०आ०—प्यायते, प्यान या पीन) फूलना, मोटा होना, बढ़ना दे० नीचे 'पीं'।

प्यायनम् [प्याय्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

प्यायित (वि०) [प्याय्+क्त] 1. वर्धित, वृद्धि को प्राप्त 2. जो मोटा हो गया हो 3. विश्रान्त, सशक्त किया हुआ।

प्यीं (भ्वा० आ०—प्यायते, पीन) 1. बढ़ना, वृद्धि को प्राप्त होना, मोटा होना—भट्टि० ६।३३ 2. पुष्कल होना, समृद्ध—प्रेर० प्याययति-ते 1. बढ़ाना 2. बड़ा करना, मोटा बनाना सुखी करना—मनु० ९।३१४ 2. तृप्त करना, इच्छानुसार संतुष्ट करना।

प्र (अव्य०) [प्रच्+ड] 1. धातुओं के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका अर्थ है—'आगे' 'आगे का' 'सामने' 'आगे की ओर' 'पहले' 'दूर' यथा प्रगम्, प्रस्था, प्रचुर, प्रथा आदि 2. विशेषणों के पूर्व लग कर इसका अर्थ है—'बहुत' 'बहुत अधिक' 'अत्यंत' आदि—प्रकृष्ट, प्रमत्त आदि, दे० आगे 3. संज्ञाओं (चाहे धातुओं से बने हों) के पूर्व लग कर गण० के अनुसार इसके निम्नांकित अर्थ होते हैं—(क) आरंभ, उपक्रम यथा प्रयाणम्, प्रस्थानम् प्रारूह (स) लम्बाई यथा प्रवालमूधिक (ग) शक्ति यथा प्रभु (घ) तीव्रता, आधिक्य यथा प्रवाद, प्रकर्ष, प्रच्छाय, प्रगुण (ङ) स्रोत या मूल यथा प्रभव, प्रपौत्र (च) पूर्ति, पूर्णता, तृप्ति यथा प्रभुक्तमन्नम् (छ) अभाव, वियोग, अनस्तित्व यथा प्रोषिता, प्रपर्ण वृक्षः (ज) अतिरिक्त यथा प्रज्ञ (झ) श्रेष्ठता यथा प्राचार्यः (ञ) पवित्रता यथा प्रसव्य जलम् (ट) अभिलाषा यथा प्रार्थना (ठ) विराम यथा प्रशम (ड) सम्मान आदर यथा प्राञ्जलिः (जो सादर हाथ जोड़ता है) (ढ) प्रमुखता यथा प्रणस, प्रवाल।

प्रकट (वि०) [प्र+कट्+अच्] 1. स्पष्ट, साफ, जाहिर, प्रतीयमान, प्रत्यक्ष 2. बेपरदा, खुला हुआ 3. दृश्यमान, —टम् (अव्य०) साफ तौर से, प्रत्यक्षतः, सार्वजनिक रूप से, स्पष्ट रूप से [प्रकटो भू व्यक्त करना, खोलना, प्रदर्शन करना, प्रकटो भू व्यक्त होना, जाहिर होना)। सम०—प्रीतिवर्धः शिव का विशेषण।

प्रकटनम् [प्र+कट्+ल्युट्] व्यक्त होने की क्रिया, खोलना, उघाड़ देना।

प्रकटित (भू० क० कृ०) [प्रकट्+क्त] 1. व्यक्त, प्रदर्शित, अनावृत 2. सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित 3. जाहिर।

प्रकंपः [प्र+कम्प्+घञ्] कांपना, हिलना, थरथराना, प्रचंड थरथरी या भूकम्प के धक्के वाला चाहे मनस्तिजवशात् प्राप्तगाढप्रकंपा—सुभा०, सशिरप्रकंपम्—शि० १३।४२।

प्रकम्पन (वि०) [प्र+कम्प्+ल्युट्] हिलाने वाला,—नः 1. हवा, प्रचंड वायु, आंधी का झोंका—प्रकम्पनेनानुचकम्पिरे सुराः—शि० १।६१, १४।४३ 2. नरक का नाम, नम् अत्यधिक या प्रचंड कंपकंपी, जोरदार थरथरी।

प्रकरः [प्र+कृ (कृ)+अप्] ढेर, समुच्चय, मात्रा, संग्रह —मुक्ताफलप्रकरभोजि गुहागृहाणि—शि० ५।१२, बाष्पप्रकर कलुषां दृष्टिम्—शं० ६।८, रघु० ९।५६, कु० ५।६८ 2. गुलदस्ता, पुष्पचय 3. मदद, सहायता, मित्रता 4. रिवाज, प्रचलन 5. आदर 6. संतोषहरण, अपहरण,—रम् अगर की लकड़ी।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] 1. निरूपण करना, व्याख्या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, विचारविमर्श करना 2. विषय, प्रसंग, विभाग, (विवेचन का) विषय -कृतसप्रकरणसाम्रित्य—श० १ 3. अनुभाग, पाठ, परिच्छेद आदि किसी कृति का छोटा प्रभाग 4. मौका, अवसर 5. मामला, बात 6. प्रस्तावना, आमुख 7. नाटक का एक भेद जिसकी कथावस्तु कृत्रिम हो जैसा कि मृच्छकटिक, मालती-माधव, पुष्पभूषित आदि। सा० द० कार द्वारा दी गई परिभाषा -भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कवि-कल्पितम्, शृंगारांगी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्, साधारणस्त्रीकामार्थं परो वीरप्रशंसकः ५११।

प्रकरणिका, प्रकरणी [प्रकरणी+कन्+टाप्, ह्रस्वः; प्रकरण+ङीप्] एक नाटक जो प्रकरण के लक्षणों से हो युक्त हो। सा० द० कार उस परिभाषा इस प्रकार करता है—नाटिकेव प्रकरणिका सार्थवाह- दिनायिका, समानवंशजा नेतुर्भवेद्यत्र च नायिका ५५४।

प्रकरिका [प्रकरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] एक प्रकार का विष्कंभ या उपकथा जो नाटक में आगे वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय।

प्रकरी [प्रकर+ङीप्] एक प्रकार का विष्कंभ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय 2. नटों की पोशाक 3. रंगस्थली 4. चौराहा 5. एक प्रकार का गीत।

प्रकर्षः [प्र+कृष्+घञ्] 1. श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोपरिता —बहुः प्रकर्षाञ्जगदुर्गुरुं रघुः—रघु० ३।३४, वर्ण प्रकर्षे सति कु० ३।२८ 2. तीव्रता, प्रबलता, आधिक्य—प्रकर्षगतेन आंकक्षतानेन—उत्तर० ३ 3. सामर्थ्य, शक्ति 4. निरपेक्षता 5. लम्बाई, विस्तार **प्र कर्षेण प्रकर्षात्** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'अत्यंत' 'अधिकता के साथ' या 'उत्कृष्टता के साथ' अर्थ प्रकट करते हैं)।

प्रकर्षणम् [प्र+कृष्+ल्युट्] 1. खींचने की क्रिया, आकर्षण 2. हल चलाना 3. अवधि, लंबाई, विस्तार 4. श्रेष्ठता, सर्वोपरिता 5. ध्यान हटाना।

प्रकला [प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म अंश।

प्रकल्पना [प्र+कल्प्+णिच्+युच्+टाप्] स्थिर करना, निश्चयन, नियत करना—मनु० ८।२११।

प्रकल्पित (भू० क० कृ०) [प्र+कल्प्+णिच्+क्त] 1. बनाया हुआ, कृत, निर्मित 2. निश्चत किया हुआ, नियत किया हुआ,—ता एक प्रकार की पहेली।

प्रकाण्डः,—ण्डम् [प्रकृष्टः कांडः—प्रा० स०] 1. वृक्ष का तना जड़ से शाखाओं तक—शि० ९।४५ 2. शाखा, किसलय 3. (समास के अंत में) कोई भी श्रेष्ठ या प्रमुख प्रकार का पदार्थ ऊरुप्रकांडद्वितयेन तस्याः—नै० ७।९ 3. क्षत्र प्रकांडः—महावी० ४।३५ ५।४८ 4. भुजा का ऊपरी भाग।

प्रकाण्डकः [प्रकाण्ड+कन्] दे० 'प्रकाण्ड'।

प्रकाण्डरः [प्रकाण्ड+रा+क] वृक्ष, पेड़।

प्रकाम (वि०) [प्रा० स०] 1. शृंगारप्रिय 2. अत्यन्त, अति, मनभर कर, सानन्द -प्रकाम विस्तर -रघु० २।११, प्रकामा लोकनीयताम् कु० २।२४,—मः इच्छा, आनन्द, संतोष -मम् (अव्य०) 1. अत्यधिक, अत्यंत —जातो ममायं विशदः प्रकामम् (अन्तरात्मा), श० ४।२१, रघु० ६।४४, मृच्छ० ५।२५ 2. यथेष्टरूप से, मन भर कर, इच्छानुकूल 3. स्वेच्छापूर्वक, मन से। **समः**—भुज् (वि०) अघा कर खाने वाला, मन भर कर खाने वाला—रघु० १।९६।

प्रकारः [प्र+कृ+घञ्] 1. ढंग, रीति, तरीका, शैली —कः प्रकारः किमेतत् मा० ५।२० 2. किस्म, जिन्स, भेद, जाति (प्रायः समास में प्रयुक्त) **बहुप्रकार** विविध प्रकार का, विप्रकार, नाना° आदि 3. समरूपता 4. विशेषता, विशिष्ट गुण।

प्रकाश (वि०) [प्र+काश्+अच्] 1. चमकीला, चमकने वाला, उज्ज्वल—प्रकाशाश्चाप्रकाशाश्च लोकालोक इवाचलः रघु० १।६८, ५।२ 2. साफ, स्पष्ट, प्रत्यक्ष शि० १२।५६, भग० ७।२५ 3. विशद, प्रांजल कि० १४।४ 4. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, माना हुआ -रघु० ३।४८ 5. खुला, सार्वजनिक 6. वृक्षादि काट कर साफ किया हुआ स्थान, खुली जगह —रघु० ४।३१ 7. खिला हुआ, विस्तारित 8. (समास के अन्त में) (के) समान दिखाई देने वाला, सदृश, मिलता-जुलता, शः 1. दीप्ति, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता 2. (आलं०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, व्याख्या करना (प्रायः गुस्तकों के नामों के अन्त में) काव्य प्रकाश, भाव प्रकाश, तर्क प्रकाश आदि 3. धूप 4. प्रदर्शन, स्पष्टीकरण शि० ९।५ 5. कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्ध यश 6. विस्तार, प्रसार 7. खुली जगह, खुली हुआ प्रकाश निर्गतोऽयं लोकालोकाभि —श० ४ 8. सुनहरी शीशा 9. (पुस्तक का) अध्याय, परिच्छेद या अनुभाग —शम् (अव्य०) 1. खुले रूप से, सार्वजनिक रूप से —प्रतिभूर्द्वीपिनी वस्तु प्रकाशं धनिनो धनम्—याज्ञ० २।५६, मनु० ८।१९३ ९।२२८ 2. ऊँचे स्वर से, प्रकट होकर, (रंगमंच के अनुदेश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त—विप० आत्मगतम्) । **समः**—आत्मक (वि०) चमकीला, उजला, -आत्मन् (वि०) उज्ज्वल, चमकदार (पुं०) शिव का विशेषण 2. सूर्य—इतर (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य,—कथः खुल्लमखुल्ला खरीदना, —नारी वारांगना रंडी, वेश्या—अलं चतुः शाल मिमं प्रवेश्य प्रकाशनारीधृत एष यस्मात्—मृच्छ० ३।७।

प्रकाशक (वि०) (स्त्री०—शिका) [प्र+काश्+णिच्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ष्वुल्] 1. प्रकट करने वाला, खोजने वाला, उघाड़ने वाला, सूचित करने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शित करने वाला 2. अभिव्यक्त करने वाला, संकेत करने वाला 3. व्याख्या करने वाला 4. उजला, चमकीला, उज्ज्वल 5. माना हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात,—कः 1. सूर्य 2. खोजी 3. प्रकाशित करने वाला। सम०—ज्ञातृ (पुं०) मुर्गा।

प्रकाशन (वि०) [प्र+काश्+णिच्+ल्युट्] रोशनी करने वाला, विख्यात करने वाला,—नम् 1. जतलाना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, उघाड़ना 2. प्रदर्शन, स्पष्टीकरण 3. रोशनी करना, चमकाना, उजला करना, —नः विष्णु।

प्रकाशित (भू०क०कृ०) [प्र+काश्+णिच्+क्त] 1. प्रकट किया गया, स्पष्ट किया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत 2. छापा गया (ग्रंथों के लिए प्रयुक्त) उत्तर० ४ 3. रोशन किया गया, चमकाया गया, ज्योतिर्मय किया गया 4. जो दिखलाई दे, दृश्य, स्पष्ट, प्रकट।

प्रकाशिन् (वि०) [प्रकाश+इनि] साफ, उजला, चमकदार आदि।

प्रकिरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] इधर उधर बिखेरना, छितराना।

प्रकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1. इधर उधर बिखरा हुआ, छितराया हुआ, खिंडाया हुआ, तितर बितर किया हुआ (प्रकीर्णः पुष्पेषां हरिचरणयोरंजलिरियम् वेणी० १।१ 2. फैलाया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित 3. लहराया हुआ लहराता हुआ शि० १२।१७ 4. वियर्यस्त, शिथिल, अस्तव्यस्त 5. अव्यवस्थित, असम्बद्ध (बहूनि स्वेच्छया क्रमं प्रकीर्णानभिधीयते शि० २।६३ 6. क्षुब्ध, इतेजित 7. विविध, विभिन्न जैसा कि भट्टिकाव्य का प्रकीर्णकाण्ड,—र्णम् 1. नाना-संग्रह, फुटकर संग्रह 2. फुटकर विषयों के संग्रह का एक अध्याय।

प्रकीर्णक (वि०) [प्रकीर्ण+कन्] इधर उधर बिखरे हुए, छितरे हुए, कः, कम् चवर, मोरछल शि० १२।१७, कः घोड़ा, —कम् 1. नाना संग्रह, फुटकर वस्तुओं का संग्रह 2. विविध विषयों का अध्याय।

प्रकीर्तनम् [प्र+कृत्+ल्युट्] 1. उद्घोषण, घोषणा 2. प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना।

प्रकीर्ति: (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. प्रसिद्धि, प्रशंसा 2. यश, ख्याति 3. घोषणा।

प्रकुंचः [प्र+कुञ्च्+घञ्] घारिता का विशेष माप।

प्रकुपित (भू० क० कृ०) [प्र+कुप्+क्त] 1. अतिक्रुद्ध, कोपाविष्ट, रुष्ट 2. उत्तेजित।

प्रकुलम् [प्र+कुल्+क] सुन्दर शरीर, सुडौल काया।

प्रकूष्मांडी [प्रा० ब०—ङीष्] दुर्गा का विशेषण।

प्रकृत (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2. आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 3. नियुक्त किया हुआ, जिसे कार्य भार सौंपा जा चुका है 4. असली, वास्तविक 5. चर्चा का विषय, विचारणीय विषय, प्रस्तुत विषय (अलंकारग्रंथों में 'उपमेय' के लिए बहुधा प्रयुक्त) संभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् काव्य० १० 6. महत्त्वपूर्ण, मनोरंजक,—तम् मूलविषय, प्रस्तुत विषय, यानु किमनेन प्रकृतमेव अनुसरामः। सम०—अर्थ (वि०) मूल अर्थ को रखने वाला (—र्थः) मूल अर्थ।

प्रकृति: (स्त्री०) [प्र+कृ+क्तिन्] 1. किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, माया, अदृश्यजगत्, स्वाभाविक रूप (विप० विकृति जो या तो परिवर्तन है या कार्य) प्रकृत्या यद्वक्रम्—श० १।९, उष्णत्वमग्न्यातपसंप्रयोगात् शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य- रघु० ५।५४, मरण प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः—रघु० ८।८७, अपेहि रे अत्रभवान् प्रकृतिमापन्नः—श० २, (उन्होंने फिर अपना सामान्य स्वभाव धारण कर लिया है) **प्रकृतिमापद्, प्रकृतिप्रतिपद्, प्रकृतौ स्था** होश में आना, अपना चैतन्य फिर प्राप्त करना 2. नैसर्गिक स्वभाव, मिजाज, स्वभाव, आदत, (मानसिक) रचना, वृत्ति—प्रकृतिकृपण, प्रकृतिसिद्ध—दे० नी० 3. बनावट, रूप, आकृति—महाभूताद्यप्रकृतिः मा० १ 4. वंशानुक्रम, वंशपरंपरा—मृच्छ० ७ 5. मूल, स्रोत, मौलिक या भौतिक कारण, उपादानकारण प्रकृतिश्चोपादानकारणं च ब्रह्माभ्युपगन्तव्यम् शारी० (ब्रह्म० १।४।२३ पर की गई चर्चा का पूरा विवरण देखिये) यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति—श० ३।१ 6. (सांख्य० में) प्रकृति (पुरुष से विभिन्न) —भौतिक सृष्टि का मूलस्रोत जिसमें तीन (सत्त्व, रजस् और तमस्) प्रधाने गुण सन्निविष्ट हैं 7. (व्या० में) मूलधातु या शब्द (प्रातिपदिक) जिसमें लकार और कारकों के प्रत्यय लगाए जाते हैं 8 आदर्श, तमूना, मानक (विशेषतः कर्मकाण्ड की पुस्तकों में 9. स्त्री 10. सृष्टि रचना में परमात्मा की मूर्त इच्छा (इसी को 'माया' या मरीचिका कहते हैं) भग० ९।१० 11. स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय, योनि, लिङ्ग 12. माता, (ब० व०) 1. राजा के मन्त्री, मन्त्रिपरिषद्, मन्त्रालय—रघु० १२।१२, पंच० १।४८, ३०१ 2. (राजा की) प्रजा—प्रवर्तंतां प्रकृतिहिताय पार्थिवः—श० ७।२५, नृपतिः प्रकृतीरवेक्षितुम्—रघु० ८।१८, १० 3. राज्य के संविधायी सात तत्त्व या अंग अर्थात् १. राजा २. मन्त्री ३. मित्रराष्ट्र ४ कोष ५. सेना, ६. प्रदेश ७. गढ़ आदि ८. नगरपालिका या निगम (यह भी कभी-कभी उपर्युक्त सातों के साथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोड़ दिया जाता है) स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्र-दुर्गबलानि च -अमर 4. अनेक प्रभु जो युद्ध के समय विचारणीय होते हैं (पूरे विवरण के लिए दे० मनु० ७।१५५, और १५७ पर कुल्लू०) 5. आठ प्रधान तत्त्व जिनसे सांख्यदार्शनिकों के अनुसार प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है, दे० सां० का० ३ 6. सृष्टि के पांच प्रधान तत्त्व, पंच महाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। सम० ईशः राजा या दण्डाधिकारी, -कृपण (वि०) स्वभाव से सुस्त, या विवेकहीन -मेघ० ५, तरल (वि०) चंचल स्वभाव का, असंगत, बेमेल -अमरु २७, -पुरुषः मन्त्री, (राज्य का) कार्य निर्वाहक -मेघ० ६, -मंडलम् समस्त प्रदेश या राजधानी -रघु० ९।२, लयः प्रकृति में समा जाना, विश्व का विघटन, सिद्ध (वि०) अन्तर्जात, सहज, नैसर्गिक -भर्तृ० २।५२, सुभग (वि०) स्वभाव से प्रिय, रुचिकर, स्थ (वि०) 1. प्राकृतिक अवस्था में होने वाला, स्वाभाविक, असली 2. अंतर्हित, सहज, प्रकृति के अनुरूप रघु० ८।२१ 3. स्वस्थ, तन्दुरुस्त 4. जिसने आरोग्य प्राप्त कर लिया हो 5. स्वस्थ, आत्मलीन 6. विस्मृत, नंगा।

प्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+कृष्+क्त] 1. खींचकर निकाला हुआ 2. सुदीर्घ, लंबा, अतिविस्तृत 3. सर्वोत्तम, पूज्य, श्रेष्ठ प्रमुख, गौरवशाली 4. मुख्य, प्रधान 5. विक्षिप्त, अशांत।

प्रकल्पित (भू० क० कृ०) [प्र+कल्प्+क्त] तैयार किया हुआ, सज्जीकृत, व्यवस्थित।

प्रकोपः [प्र+कुप्+घञ्] संक्षोभ, बवंडर।

प्रकोष्ठः [प्र+कुष्+थन्] 1. कोहनी से नीचे की भुजा, गट्टे से ऊपर का हाथ-वामप्रकोष्ठार्पितहेमवेत्रः—कु० ३।४१, कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः मेघ० २, रघु० ३।५९ शा० ६।६ 2. फाटक के निकट का कमरा मुद्रा० १ 3. घर का आंगन, (चारों ओर मकानों से घिरा हुआ) चौकोर या वर्गाकार आंगन -इमं प्रथमं प्रकोष्ठं प्रविशन्वार्यः—आदि—मृच्छ० ४।

प्रकोष्ठकः [प्रकोष्ठ+कन्] फाटक के पास का कमरा -वस्त्रवितर्प्रक्षिप्तालंकुले तदङ्गद्वारबहिः प्रकोष्ठके—कु० १५।६।

प्रक्षरः [=प्रखर, पृषो०] 1. हाथी या घोड़े की रक्षा के लिए कवच 2. कुता 3. खच्चर।

प्रक्रमः [प्र+क्रम्+घञ्] 1. पग, कदम 2. दूरी मापने का गज, पग का अन्तर (लगभग ३० इंच 3. आरंभ, शुरू 4. प्रगमन, मार्ग -मा० ५।२४ 5. प्रस्तुत बात 6. अवकाश, अवसर 7. नियमितता, क्रम, प्रणाली 8. मात्रा, अनुपात, माप। सम०—भंगः नियमितता और सममिति का अभाव, क्रम का टूट जाना, रचना का एक दोष (काव्य० ७ में वर्णित 'भग्न-प्रक्रमता' यही है, सममिति या समरूपता का अभाव चाहे वह अभिव्यक्ति में हो चाहे रचना में—नाथे निशायां नियतेनियोयादस्तं गते हंत निशापि माता यह अभिव्यक्ति की समरूपता के अभाव का उदाहरण है, यहां 'गता निशाऽपि' ने अभिव्यक्ति की अनियमितता को शान्त कर दिया है, -विश्रब्धं क्रियतां वराहतति भिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले—रचना की अनियमितता का उदाहरण है, यहां कविता की समरूपता को स्थिर रखने के लिए कर्मवाच्य के बजाय कर्तृवाच्य रचना की आवश्यकता है, इसी पंक्ति को बदलकर विश्रब्धं रचयंतु शूकरवरा मुस्ताक्षतिं पल्वले' पढ़ने से दोष का परिहार हो जाता है—अधिक विवरण के लिए दे० काव्य ७ 'भग्न प्रक्रमता' के नीचे।

प्रक्रान्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्रम्+क्त] 1. आरंभ किया गया, शुरू किया गया 2. गत, प्रगत 3. प्रस्तुत, विवादग्रस्त 4. बहादुर।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श+टाप्] 1. रीति, प्रणाली, पद्धति 2. कर्मकांड, संस्कार 3. राजचिह्न को धारण करना 4. उच्च पद, समुन्नति 5. (किसी पुस्तक का) एक अध्याय या अनुभाग—यथा उणादिप्रक्रिया 6. (व्या० में) व्युत्पत्तिजन्य रूपनिर्माण 7. प्राधिकार।

प्रक्रीडः [प्र+क्रीड्+अच्] क्रीडा, मनोरंजन, खेल या आमोद-प्रमोद।

प्रक्लिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+क्लिद्+क्त] 1. तर, नमी वाला, गीला 2. तृप्त 3. दया से पसीजा हुआ।

प्रक्वणः, प्रक्वाणः [प्र+क्वण्+अप्, घञ् च] वीणा की झनकार।

प्रक्षयः [प्र+क्षि+अप्] नाश, बरबादी।

प्रक्षर दे० प्रस्खर।

प्रक्षरणम् [प्र+क्षर्+ल्युट्] मन्द २ स्रवित होना, रिसना।

प्रक्षालनम् [प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1. धोना, धो डालना -रघु० ६।४८ 2. मांजना, साफ करना, स्वच्छ करना 5. धोने के लिए पानी।

प्रक्षालित (भू० क० कृ०) [प्र+क्षल्+णिच्+क्त] 1. धोया गया, मांजा गया 2. स्वच्छ किया गया 3. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है।

प्रक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्षिप्+क्त] 1. फेंका गया, डाला गया, उछाला गया 2. डाला गया -मा० ५।२२ 3. निकला हुआ 4. बीच में डाला गया, नकली या खोटा यथा 'प्रक्षिप्तोऽयं श्लोकः' में।

प्रक्षीण (भू० क० कृ०) [प्र+क्षि+क्त] 1. सूखा या हुआ, दुबला होने वाला 2. नष्ट किया हुआ 3. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है 4. लुप्त, ओझल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रशुष्क (भू० क० कृ०) [प्र+शुष्+क्त] 1. कुचला हुआ 2. आरपार भेदा हुआ 3. उत्तेजित किया हुआ।

प्रक्षेपः [प्र+क्षिप्+घञ्] 1. आगे फेंकना, उभारना फेंकना, डालना 3. बखेरना 4. खोट घसाना, बीच में मिलाना 5. गाड़ी का बक्स 6. किसी व्यापारिक संघ के प्रत्येक सदस्य द्वारा जमा की गई धनराशि।

प्रक्षेपणम् [प्र+क्षिप्+णिच्+ल्युट्] फेंकना, डालना, उछालना।

प्रक्षोभणम् [प्र+क्षुभ्+ल्युट्] उत्तेजना, क्षोभ।

प्रक्ष्वेडनः [प्र+क्ष्विड्+ल्युट्] लोहे का तीर 2. हल्ला-गुल्ला, हड़बड़ी।

प्रक्ष्वेडित (वि०) [प्र+क्ष्विड्+णिच्+क्त] मुखर, चीत्कार से पूर्ण, कोलाहलमय।

प्रखर (वि०) [प्रकृष्ट+खर्-प्रा० स०] 1. अत्यन्त गरम – यथा प्रखरकिरण 2. तेज गंधयुक्त, तीक्ष्ण 3. अत्यंत कठोर, रूखा, – रः दे० 'प्रस्वर'।

प्रख्य (वि०) [प्र+ख्या+क] 1. साफ, प्रत्यक्ष, स्पष्ट 2. (के समान) दिखाई देने वाला, मिलता-जुलता (समास के अन्त में प्रयुक्त) अमृत°, शशांक° आदि।

प्रख्या [प्र+ख्या+अङ+टाप्] 1. प्रत्यक्षज्ञेयता, दृश्यता 2. विश्रुति, यश, प्रसिद्धि—त्यदसत्परमप्रख्यः संप्रत्येव पुरीमिमाम्—रामा० 3. उत्साहना 4. समरूपता, समानता (समास में)—याज्ञ० ३।१०।

प्रख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+ख्या+क्त] 1. मशहूर, प्रसिद्ध, विश्रुत माना हुआ 2. पहले से मोल लिया हुआ, पूर्वक्रयाधिकार केवल पर अभ्यर्थित 3. खुश, प्रसन्न। सम० –वंशक (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला।

प्रख्याति: (स्त्री० [प्र+ख्या+क्तिन्] 1. कीर्ति, विश्रुति, प्रसिद्धि 2. प्रशंसा, स्तुति।

प्रगंडः [प्रकृष्टः गंडो यस्य प्रा० ब०] कोहनी से ऊपर कंधे तक की भुजा।

प्रगंडी [प्रगंड+ङीष्] (नगर का) परकोटा, बाहरी दीवाल।

प्रगत (भू० क० कृ०) [प्र+गम्+क्त] 1. आगे गया हुआ 2. पृथक्, अलग। सम०—जानु,-जानुक (वि०) घुनुष्टरी, घुटने पर मुड़ी हुई टाँगों वाला।

प्रगतिः [प्र+गम्+अप्] प्रेम की आराधना में प्रथम प्रगति, प्रेम की प्रथम अभिव्यक्ति।

प्रगमनम् [प्र+गम्+ल्युट्] 1. आगे बढ़ना, प्रगति 2. प्रेम की आराधना में पहला कदम, दे० ऊ० 'प्रगम'।

प्रगर्जनम् [प्र+गर्ज्+ल्युट्] दहाड़ना, चिंघाड़ना, गरजना।

प्रगल्भ (वि०) [प्र+गल्भ्+अच्] 1. साहसी, भरोसा करने वाला 2. हिम्मती, बहादुर, निःशंक, उत्साही, साहसी,—रघु० २।४१ 3. वाग्मी, वाक्पटु—रघु० ६।२० 4. हाजिर जवाब, मुस्तैद 5. दृढ़ संकल्पी, ऊर्जस्वी 6. (आयु की दृष्टि से) परिपक्व, कु० १।५१ 7. परिपक्व, विकसित, पूरा बढ़ा हुआ, बलवान् प्रगल्भवाक् –कु० ५।३०, (प्रौढवाक्) मा० ९।२९, उत्तर० ६।३५ 8. कुशल का० १२ 9. बेफ़िक्र, उद्धत, घमंडी, उपकारशील 10. निर्लज्ज, ढीठ—रघु० १३।९, 11. गौरवशाली प्रमुख,—ल्भा 1. साहसी स्त्री 2. कर्कशा, झगड़ालू स्त्री 3. उद्धत या प्रौढ़ स्त्री, काव्यनाटक की नायिकों में से एक' (सब प्रकार के लाड़प्यार से चूमा-चाटी में चतुर, ऊँचे दर्जे के व्यवहार से युक्त, शालीनता-सम्पन्न, प्रौढ़ आयु की तथा अपने पति पर शासन करने वाली—सा० द० १०१ तथा तत्संबंधी उदाहरण)।

प्रगाढ (भू० क० कृ०) [प्र+गाह्+क्त] 1. डुबोया हुआ, तर किया हुआ, भिगोया हुआ 2. अति, अत्यधिक, तीव्र 3. दृढ़, मजबूत 4. कठोर, कठिन,–ढम् 1. कंगाली 2. तपस्या, शारीरिक, कष्ट, ढम् (अव्य०) 1. अत्यधिक, अत्यंत 2. दृढ़तापूर्वक।

प्रगातृ (पुं०) [प्र+गै+तृच्] उत्तम गाने वाला।

प्रगुण (वि०) [प्रकर्षेण गुणो यत्र प्रा० ब०] 1. सीधा, ईमानदार, खरा, (आल० शा० से)—वहिः सर्वाकारप्रगुणारमणीयं व्यवहरन्—मा० १।१४ 2. सुदृशासम्पन्न, उत्तम गुणों से युक्त—श्रमजयात्प्रगुणां च करोत्यसौ तनुमतोऽनुमतः सचिवैर्यथा— रघु० ९।४९ 3. (क) योग्य, उपयुक्त, गुणी- मा० ११।६ (ख) प्रवीण- ९।४५ 4. कुशल, चतुर (प्रगुणी कृ 1. सीधा करना, क्रम से रखना, व्यवस्थित करना 2. चिकना करना 3. पालन-पोषण करना, परवरिश करना)।

प्रगुणित (वि०) [प्र+गुण्+क्त] 1. सीधा या समतल किया हुआ 2. चिकना किया हुआ।

प्रगृहीत (भू० क० कृ०) [प्र+ग्रह्+क्त] 1. थामा हुआ, संभाला हुआ 2. प्राप्त, स्वीकृत 3. संधि के नियमों की अधीनता का अभाव, दे० नीचे 'प्रगृह्य'।

प्रगृह्यम् [प्र+ग्रह्+क्यप्] संधि के नियमों से मुक्त स्वर जो स्वतंत्र रूप से बोला या लिखा जाय 'ईदूदेद्-द्विवचनं प्रगृह्यम्' पा० १।१।११।

प्रगे (अव्य०) [प्रकर्षेण गीयतेऽत्र—प्र+गै—के] भोर होते ही, पौ फटते ही इत्थं रथारोहेभनिषादिना प्रगे गणो नृपाणामथ तोरणाद् बहिः—शि० १२।१, सायं स्नायात्प्रगे तथा—मनु० ६।९, ४।६२। सम० –तन (वि०) प्रातः काल अनुष्ठेय कर्म,—निश,—शय (वि०) जो दिन निकल जाने पर भी सोया पड़ा है।

प्रगोपनम् [प्र+गुप्+ल्युट्] रक्षण, संचारण।

प्रग्रथनम् [प्र+ग्रन्थ्+ल्युट्] नत्थी करना, गूंथना, बुनना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रहः [ग्रह्+अप्] 1. फैलाना, थामना 2. पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, हथियार लेना 3. ग्रहण का आरंभ 4. रास, लगाम धृताः ग्रहाः अवतरत्यवरुष्मान् —शि० १, शि० १२।३१ 5. रोक थाम, पाबन्दी 6. बंधन, कैद 7. कैदी, बन्दी 8. पालना, (कुत्ते आदि बांधकर को) संधाना, 9. प्रकाश की किरण 10. तराजू की डोरी 11. संधि के नियमों से मुक्त स्वर, दे० 'प्रगृह्य'।

ग्रहणम् [ग्रह्+ल्युट्] 1. लेना, पकड़ना, धरना 2. ग्रहण का आरम्भ 3. रास, लगाम 4. रोक थाम, पाबन्दी।

ग्राहः [ग्रह्+घञ्] 1. पकड़ना, लेना 2. ले जाना, ढोना 3. तराजू की डोरी 4. रास, लगाम।

ग्रीष्मः,—ष्मम् [प्रकृष्टा ग्रीष्मा यस्य—प्रा० ब०] 1. रंगी हुई वर्जी 2. किसी मकान के चारों ओर लकड़ी की बाड़ 3. तबेला 4. वृक्ष की चोटी।

घटकः [घट्+णिच्+ण्वुल्] नियम, सिद्धान्त, विधि (आदेश)।

घटदा [प्रा० श०] किसी विज्ञान के आरंभिक सिद्धान्त या मूलतत्त्व। सम०—**विद्** (पुं०) ऊपर ऊपर का पाठ करने वाला, पल्लवग्राही।

घ्राणः (नः). **घ्राणम्** (नः) [घ्रा+ल्युट्+अप् पक्षेवृद्धिः, पत्वाभावश्च] 1. भवन के द्वार के सामने बनी ड्योढ़ी, पौली, 2. तांबे का बर्तन 3. लोहे की गदा या घन (लौहदण्ड)।

घ्रसः (वि०) [घ्रा+अद्+शप्, घसादेशः] खाऊ, पेटू —सः 1. राक्षस खाऊपना, पेटूपन।

घ्राताः [घ्रा+हन्+घञ्] 1. हत्या 2. संघर्ष, युद्ध।

घ्रुणः [घृण्+क] अतिथि (पाठान्तर प्राघुण, या प्राघूर्ण)।

घ्रूर्णः [घूर्ण्+अच्] अतिथि—दे० 'प्राघूर्ण'।

घ्रोषः [घ्रुष्+घञ्] 1. शोर, शब्द, कोलाहल 2. हंगामा, होहल्ला।

चक्रम् [गतत्वाच्चक्रम—प्रा० स०] कूच करने वाली सेना, प्रयाणोन्मुख फ़ौज।

चक्षस् (पुं०) [चक्ष्+अस्] 1. बृहस्पति ग्रह 2. बृहस्पति का विशेषण।

चण्ड (वि०) [प्रकर्षेण चण्डः—प्रा० श०] 1. उत्कट, अत्यन्त तीव्र, उग्र 2. मजबूत, शक्तिशाली, भीषण 3. अत्युष्ण, दम घोटने वाली (गर्मी) 4. क्रुद्ध, कोपाविष्ट 5. साहसी, भरोसा करने वाला 6. भयंकर, भयावह 7. असहिष्णु, असह्य। सम०—**आतपः** भीषण गर्मी,—**घोण** (वि०) लंबी नाक वाला,—**सूर्य** (वि०) उष्ण या जलते हुए सूर्य वाला—**ऋतु०** १।१,१०।

चप (भा) यः [चि+अप्, घञ्, च] 1. संग्रह करना, (फूल आदि) चुनना 2. समुच्चय, मात्रा, संचय, राशि—महाभा० २।१५ 3. वृद्धि, दर्धन 4. साधारण मेलजोल।

चयनम् [चि+ल्युट्] संग्रह करना, एकत्र करना।

चरः [चर्+अप्] 1. मार्ग, पथ, रास्ता 2. प्रथा, रिवाज।

चल (वि०) [चल्+अच्] 1. काँपता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ, -कु० ५।३५, मा० ११३८ 2. प्रचलित, प्रथानुकूल।

चलाकः [चल्+आकन्] 1. धनुर्विद्या 2. मोर की पूंछ 3. सांप।

चलाकिन् (पुं०) [चलाक+इनि] मोर—उत्तर० २।२९।

चलायिक (वि०) [चलाय्+क्त] इधर उधर करवट बदलने वाला, लुढ़कने वाला,—तम् सिर हिलाना (बैठे २ ऊँघते या सोते समय)।

चायिका [चि+णिच्+ण्वुल्+टाप्] (फूल आदि) बारी २ से चुनना 2. चुनने वाली स्त्री।

चारः [चर्+घञ्] 1. विचरण करना, भ्रमण करना 2. इधर उधर टहलना, घूमता—कु० ३।४२, 3. दर्शन, प्रकटीभवन,—उत्तर० १, मुद्रा० १ 4. **चलन**, प्रसिद्धि, रिवाज, व्यवहार, प्रयोग—विलोक्य तैरप्यघुना प्रचारम्- विक्रा० 5. आचरण, व्यवहार 6. प्रथा, रिवाज 8. गोचरभूमि, चरागाह—याज्ञ० २।१६६ 9. रास्ता, पथ—मनु० ९।२९।

चालः [प्रकृष्टश्चालः—प्रा० स०] वीणा की गरदन।

चालनम् [चल्+णिच्+ल्युट्] विलोडन, हिलाना, हलचल।

चित (भू० क० कृ०) [चि+क्त] 1. एकत्र किया हुआ, संचय किया हुआ, तोड़ा हुआ 2. ढेर किया गया, संचित 3. ढका गया, भरा गया।

चुर (वि०) [चुर्+क] 1. अति, यथेष्ट, बहुल, पुष्कल—नित्यव्ययः प्रचुरनित्यधनागमो च—भर्तृ० २।४७, शि० १२।७२ 2. बड़ा, विशाल, विस्तृत —प्रचुर पुरंदरधनुः—गीत० २ 3. (समास के अन्त में) बहुत अधिक, भरपूर, परिपूर्ण,—**रः** चोर। सम०—**पुरुष** (वि०) जनसंकुल, घना आबाद (**थः**) चोर।

चेतस् (पुं०) [चित्+असुन्] 1. करण का विशेषण —कु० २।२१ 2. एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार था—मनु० १।३५।

चेतृ (पुं०) [चि+तृच्] रथवान्, सारथि।

चेलम् [चेल्+अच्] चन्दन की पीली लकड़ी।

चेलकः [चेल्+ण्वुल्] घोड़ा।

प्रचोदः [प्र+चुद्+घञ्] 1. आगे हांकना, बलपूर्वक चलाना, आगे बढ़ने के लिए उकसाना 2. भड़काना, प्रेरित करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रचोदनम् [प्र+चुद्+ल्युट्] 1. हाँक कर आगे बढ़ाना, बलपूर्वक चलाना, उकसाना 2. भड़काना, जमा देना 3. आदेश देना, निर्देश देना 4. नियम, विधि, समादेश।

प्रचोदित (भू० क० कृ०) [प्र+चुद्+क्त] 1. बलपूर्वक बढ़ाया हुआ, उकसाया हुआ 2. भड़काया हुआ 3. निर्देशित, आदिष्ट, नियत किया हुआ—मनु० २।१९१ 4. भेजा गया, प्रेषित 5. निर्णीत, निर्धारित।

प्रच्छ् (तुदा० पर०—पृच्छति, पृष्ट: प्रेर० प्रच्छयति, कर्म० पृच्छयते, इच्छा० पिपृच्छिषति, पूछना, सवाल करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना [द्विकर्मक] पप्रच्छ रामां रमणीमिलाया:—रघु० १४।२७, भट्टि० ६।८, रघु० ३।५, भग० २।७. ब्राह्मणं कुशलं पृच्छति—मनु० २।१२७ 2. ढूँढना, तलाश करना, अनु—, पूछताछ करना, इधर उधर के प्रश्न करना, आ—, पूछना, प्रश्न करना 2. विदा करना 3. विदा होना (आ०) -आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुंगमालिंग्य शैलम् —मेघ० १२, रघु० ८।४९, १२।१०३, परि—, पूछना, प्रश्न करना, पूछताछ करना।

प्रच्छद: [प्र+च्छद्+णिच्+घ] आवरण, आच्छादन, लपेटन, चादर, बिछावन बिस्तरे की चादर—रघु० १९।२३। सम०—पट: बिछावन, चादर।

प्रच्छदनम्,-ना [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछताछ, परिपृच्छा।

प्रच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्र—च्छद्+क्त] 1. ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए, लपेटा हुआ, लिफाफे में बन्द किया हुआ 2. निजी, गोपनीय —भर्तृ० २।६४ 3. छिपा हुआ, गुप्त (दे० प्रपूर्वक छद्), —म् 1. निजी द्वार 2. झरोखा, जाली, खिड़की, —म् (अव्य०) गुप्त रूप से चुपचाप। सम०—तस्कर: गुप्तचर, जो चोरी करता हुआ दिखाई न दे, परन्तु चोरी करे अवश्य।

प्रच्छर्दनम् [प्र+छर्द्+ल्युट्] 1. वमन 2. बाहर निकालना, फेंकना 3. उलटी आने वाली दवा)।

प्रच्छर्दिका [प्र+छर्द्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] उलटी होना, कै आना।

प्रच्छादनम् [प्र+छद्+णिच्+ल्युट् 1. ढकना, छिपाना 2. उत्तरीय,ओढ़नी। सम०—पट: लपेटन, ढकना, चादर।

प्रच्छादित (भू० क० कृ०) [प्र+छद्+णिच्+क्त] 1. ढका हुआ, लपेटा हुआ, वस्त्राच्छादित आदि 2. गुप्त, छिपा हुआ।

प्रच्छायम् [प्रकृष्टा छाया यत्र] सघन छाया, छायादार स्थान—प्रच्छायसुलभनिद्रा: दिवसाः परिणामरमणीयाः —श० १।३, मालवि० ३।

प्रच्छिल (वि०) [प्रच्छ्+इलच्] शुष्क, निर्जल।

प्रच्यव: [प्र+च्यु+अच्] 1. पात, बर्बादी 2. सुधार, प्रगति, विकास 3. वापसी।

प्रच्यवनम् [प्र+च्यु+ल्युट्] 1. विदा होना, मुड़ना, वापसी 2. हानि, बंचना 3. रिसना, झरना।

प्रच्युत (भू० क० कृ०) [प्र+च्यु+क्त] 1. टूट कर गिरा हुआ, झड़ा हुआ 2. भटका हुआ, विचलित 3. स्थान भ्रष्ट, विस्थापित, पतित 4. खदेड़ा हुआ, भगाया हुआ।

प्रच्युति: (स्त्री०) [प्र+च्यु+क्तिन्] 1. विदा होना, वापसी, 2. हानि, वञ्चना, अधःपतन—नित्यं प्रच्युति शंकिया क्षणमपि स्वर्गे न मोदामहे—शा० ४।२० 3. पात, बर्बादी।

प्रज: | प्रविश्य जायायां जायते—जन्+ड | पति, स्वामी।

प्रजन: [प्र—जन्+घञ्] गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पादन—मनु० ३।६१, ९।६१ 2. पशु (नर पशु का मादा पशु से समम) में गर्भाधान करना 3. उत्पन्न करना,—पैदा करना—मनु० ९।९६।

प्रजननम् [प्र+जन्+ल्युट्] 1. प्रसूजन, जनन, योनि में वीर्य सेंसेचन 2. उत्पादन, जन्म, प्रसव 3. वीर्य 4. पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय (लिंग या भग) 5. सन्तान।

प्रजनिका [प्र+जन्+णिच्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] माता।

प्रजनु: [प्र+जन्+उक] शरीर, काया।

प्रजल्प: [प्र—जल्प्—घञ्] बालकलरव, गपशप, असावधान या ऊटपटांग शब्द (प्रेमी का अभिवादन करने में प्रयुक्त) अगृह्येष्यामिदयुजा योऽवधीरणमुद्या, प्रियस्य कौशलोद्गारः प्रजल्पः स तु कथ्यते।

प्रजल्पनम् [प्र+जल्प्+ल्युट्] 1. बातचीत करना, बोलना 2. बालकलरव, गपशप।

प्रजविन् (वि०) स्त्री०—नी) [प्र+जु+इनि] आशु, द्रुतगामी, वेगयान्—पुं० आशुगामी दूत, हरकारा।

प्रजा [प्र+जन्+ड+टाप्] (बहु० समास के अन्त में बदल कर 'प्रजस्' हो जाता है जब कि प्रथम पद अ, सु या दुस् हो, देo रघु० ८।३२, १८।२९) 1. प्रसूजन, प्रसूति, जनन, प्रजोत्पत्ति, जन्म, उत्पादन 2. सन्तान, प्रजा, सन्तति. बच्चे, पक्षिशावक,—प्रजार्थं व्रतकर्शितांगा—रघु० २।७३, प्रजार्थं गृहमेधिनाम् —१।७, मनु० ३।४२, याज्ञ० १।२६९, इसी प्रकार बकस्य प्रजा, सर्पप्रजा आदि 3. लोग, मनुष्य - ननन्दुः सप्रजाः प्रजाः—रघु० ४।३, प्रजाः प्रजाः स्वा इव तंत्रयित्वा श० ५।५, (यहाँ प्रजा का 'सन्तान' अर्थ भी है) रघु० १।७, २।७३, मनु० १।८ 4. वीर्य। सम० अंतकः मृत्यु का देवता यम —रघु० ८।४५,—ईप्सु (वि०) संतान की इच्छा वाला,—ईशः,—ईश्वरः मनुष्यों का राजा, प्रभु—रघु० ३।६८, ५।३२, १८।२९,—उत्पत्तिः,—उत्पादनम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्तान का पैदा करना,—काम (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—तंतुः वंश परम्परा, कुल,—दासम् चाँदी,—नाथः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. राजा, प्रभु, राजकुमार -रघु० 2।४८, १०।८३,—पः राजा, —निषेकः गर्भाधान, (गर्भाशय में स्थापित), बीज —रघु० १४।६०,—पतिः 1. सृष्टि की अधिष्ठात्री देवता -मनु० १२।१२१ 2. ब्रह्मा का विशेषण —अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभून्नंद्रो नु कांतिप्रदः —विक्रम० १।९ 3. ब्रह्मा के दस वंशप्रवर्तक पुत्र —दे० मनु० १।३४ 4. देवशिल्पी विश्वकर्मा का विशेषण 5. सूर्य 6. राजा 7. जामाता 8. विष्णु का विशेषण 9 पिता, जनक 10 लिंग,—पालः, —पालकः राजा, प्रभु,—पालिः—शिव का विशेषण,—बुद्धिः (स्त्री०) सन्तान की वृद्धि,—सृज् ब्रह्मा का विशेषण —जि० १।२८,—हित (वि०) बच्चों के या लोगों के लिए हितकर (तम्) पानी।

प्रजागरः [प्र+जागृ+अप्] 1. रात को जागते रहना, निद्रा का अभाव—प्रजागरात् खिलीभूतः तस्याः स्वप्ने समागमः—श० ६।२१ 2. चौकसी, सावधानी 3. अभिभावक, संरक्षक 4. कृष्ण का विशेषण।

प्रजात (भू० क० कृ०) [प्र+जन्+क्त] पैदा हुआ, उत्पन्न,—ता देह स्त्री जच्चा जिसके बच्चा पैदा हुआ हो।

प्रजातिः (स्त्री०) [प्र+जन्+क्तिन्] 1. प्रसूजन, प्रसूति, उत्पादन, जन्म देना 2. प्रसव 3. प्रजननात्मक शक्ति 4. प्रसववेदना, प्रसवपीड़ा।

प्रजावत् (वि०) [प्रजा+मतुप्] प्रजा या सन्तान वाला 2. गर्भवती,—ती भाई की पत्नी, भाभी—रघु० १४।४५, १५।१३ 2. विवाहिता नारी, मातृका, माता।

प्रजिनः [प्र+जि+नक्] वायु।

प्रजीवनम् [प्र+जीव्+ल्युट्] जीविका, जीवन निर्वाह का साधन।

प्रजुष्ट (वि०) [प्र+जुष्+क्त] अनुरक्त, भक्त, जुटा हुआ।

प्रज्ञ (वि०) [प्र+ज्ञा+क] बुद्धिमान, मेधावी, विद्वान्।

प्रज्ञप्तिः [त+ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1. सहमति, प्रतिज्ञा 2. शिक्षा, सूचना, समाचार देना 3. सिद्धान्त।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अ+टाप्] 1. मेधा, समझ, बुद्धि, बुद्धिमत्ता, आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः —रघु० १।१५, शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकं प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति सुभा० 2. विवेक, विवेचन, निर्णय 3. तरकीब, योजना 4. बुद्धिमती और विदुषी स्त्री। सम० -चक्षुस् (वि०) अंधा, (शा० बुद्धिरूपी एकमात्र आँख रखने वाला), (पुं०) धृतराष्ट्र का विशेषण, (नपुं०) मन की आँख, मानसिक चक्षु, मन—मालवि० १, -वृद्ध (वि०) समझदारी में बूढ़ा,—हीन (वि०) निर्बुद्धि मूर्ख, बेवकूफ।

प्रज्ञात (भू० क० कृ०) [प्र+ज्ञा+क्त] 1. जाना हुआ, समझा हुआ 2. अन्तर्ध्युक्त, विविक्त 3. स्पष्ट, साफ 4. प्रसिद्ध, सुविख्यात, विश्रुत।

प्रज्ञानम् [प्र+ज्ञा+ल्युट्] 1. बुद्धि, जानकारी, समझ 2. चिह्न, प्रतीक, निशान।

प्रज्ञावत् (वि०) [प्रज्ञा+मतुप्] समझदार, बुद्धिमान।

प्रज्ञाल, प्रज्ञिल् (स्त्री०—ली), प्रज्ञिल (वि०) [प्रज्ञा+लच्, इनि, इलच् च] समझदार, बुद्धिमान्, मनीषी।

प्रज्ञु (वि०) [प्रगते विरले जानुनी यस्य—ब० स०, ह्रस्व आदेशः] धनुष्पदी, (जिसकी टांगें धनुष की भांति मुड़ी हों), घुटने पर मुड़ी हुई टांगों वाला। ('प्रज्ञ' भी)।

प्रज्वलनम् [प्र+ज्वल्+ल्युट्] देदीप्यमान होना, लपटें उठना, जलना, दहकना।

प्रज्वलित (भू० क० कृ०) [प्र+ज्वल्+क्त] 1. लपटों में होना, जलना, लपटें उठना, देदीप्यमान होना 2. चमकीला, जगमगाता हुआ।

प्रतीनम् [प्र+ह्री+क्त] 1. हर दिशा में उड़ना 2. आगे दौड़ना, 'होन' के अन्दर दे०, 3. भाग जाना।

प्रण (वि०) [पुरा भवः—प्र+न] पुराना, प्राचीन।

प्रणखः [प्रकृष्टः नखः—प्रा० स०] कील का सिरा।

प्रणत (भू० क० कृ०) [प्र+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, सम्मानवाला, प्रवण 2. प्रणाम करना, नमस्कार करना 3. विनम्र 4. कुशल, चतुर—दे० प्र पूर्वक 'नम्'।

प्रणतिः (स्त्री०) [प्र+नम्+क्तिन्] 1. प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन· तव सर्वविधेयवर्तिनः प्रणतिं विभ्रति के न भूभृतः—शि० १६।५, रघु० ४।८८ 2. विनयशीलता, नम्रता, शिष्टाचार स दर्दशं वेतसवनाचरितां प्रणतिं बलीयसि समृद्धिकरीम् —कि० ६।५, निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये - रघु० ११।८९।

प्रणदनम् [प्र+नद्+ल्युट्] शब्द करना, आवाज करना, शब्द, ध्वनि।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1. विवाह करना, पाणि ग्रहण करना (यथा विवाह में)—मा० ६।१४ 2. (क) प्रेम स्नेह, चाव, अनुरक्ति—अभिरुचि,—प्रीतिसामान्यप्रणयः भयोः प्रणयः स्मरस्य—विक्रम० २।१६, साधारणोऽयं प्रणयः श० ३, ६।७, ५।२३, मेघ० १०५, रघु० ६।१२ भर्तृ० २।४२ (ख) अभिलाषा, इच्छा, लालसा —कु० ५।८५, मा० ८।७, श० ७।१६ 3. मित्रतापूर्ण परिचय, प्रीति, मैत्री, घनिष्ठता—मा० १।९ 4. परिचय, भरोसा, विश्वास—श० ६ 5. अनुग्रह, कृपा, सौजन्य—अलंकृतोऽस्मि स्वयमाग्रहप्रणयेन भवता—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृच्छ० १, १।४५ 6. अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन—तद्भूतनाथानुग नार्हसि त्वं संयमिनो मे प्रणयं विहन्तुम् -- रघु० २।२८, विक्रम० ४।१३ 7. श्रद्धा, भक्ति 8. मोक्ष। सम०—अपराधः प्रेम या मित्रता के विरुद्ध अपजार, -उन्मुख (वि०) 1. प्रेमाविष्ट, अपना प्रेम प्रकट करने को उद्यत मालवि० ४।१३ 2. प्रेमावेश के कारण आतुर, -कलहः प्रेमी का झगड़ा, कृत्रिम या झूठमूठ का झगड़ा-- नाप्यन्यस्मात्प्रेणयकलहाद्विद्धि- प्रयोगोपपत्तिः—मेघ० (मल्लि०—नकली या कल्पित)—, कुपित (वि०) प्रेम के कारण क्रुद्ध—मेघ० १०५,—कोपः किसी नायिका का अपने नायक के प्रति झूठ मूठ का क्रोध, नखरों से भरा क्रोध,—प्रकर्षः अत्यधिक प्रेम, तीव्र अनुराग,—भंगः 1. मित्रता का टूट जाना 2. विश्वासघात,—वचनम् प्रेमाभिव्यक्ति,—विमुख (वि०) 1. प्रेम से पराङ्मुख 2. मित्रता करने में अनिच्छुक - मेघ० २७,--विहतिः,—विघातः (प्रार्थना आदि की) अस्वीकृति, न मानना।

प्रणयनम् [प्र—नी+ल्युट्] 1. लाना, ले आना 2. संचालन करना, पहुँचाना 3. पालन करना, कार्यान्वयन करना, अनुष्ठान करना—कु० ६।९ 4. लिखना, अक्षरयोजन करना 5. निर्णयादेश देना, दण्डाज्ञा देना, परिनिर्णय या पंचनिर्णय देना, यथा दण्डस्य प्रणयनम्।

प्रणयवत् (वि०) [प्रणय+मतुप्] 1. प्रेम करने वाला, प्रीतिकर, स्नेही - रघु० १०।५७ 2. स्पष्टवक्ता, खरा 3. अत्यन्त उत्कण्ठित, आतुर।

प्रणयिन् (वि०) [प्रणय—इनि] 1. प्रेम करने वाला, स्नेही, कृपालु, अनुरक्त—मा० ३।९, 2. प्रिय, अत्यन्त प्यारा 3. दुःखार्त्त, लालायित, उत्कण्ठित—श० ७।१७, मेघ० ३, रघु० ९।५५, ११।३ 4. सुपरिचित, घनिष्ठ पु० 1. मित्र, साथी, कृपापात्र -कु० ५।११ 2. पति, प्रेमी 3. कृताञ्जलि, विनम्र निवेदक, प्रार्थी—स्वार्थाद् सतां गुरूणां प्रणयिक्रियैव -विक्रम० ४।१५, १।२ 4. पूजक, भक्त -कु० ३।६६, -नी 1. गृहिणी, प्रियतमा, पत्नी 2. सखी, सहेली।

प्रणवः [प्र+नु+अप्, णत्वम्] 1. पवित्र अक्षर 'ओम्'—आसीन्निःक्षत्रियामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११, मनु० २।७४, कु० २,६२, भाग० ७।८ 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र (ढोल या मृदंग) 3. विष्णु या परात्पुरुष परमात्मा का विशेषण।

प्रणस (वि०) [प्रगता नासिका यस्य, सादेशः, अच्, णत्वम्] लम्बी नाक वाला, बड़ी नाक वाला।

प्रणाडी [=प्रणाली, लस्य डः] अन्तरावण, अन्तः प्रवेशन, माध्यम।

प्रणादः [प्र+नद्+घञ्] 1. ऊँची आवाज, चीत्कार, क्रंदन 2. दहाड़ना, दहाड़ 3. हिनहिनाना, रेंकना 4. हर्षातिरेक की कलकलध्वनि, वाहवा, क्या खूब 5. दुहाई देना 6. कान का विशेष रोग (इस रोग में कानों में 'भनभनाहट' की ध्वनि होती है)।

प्रणामः [प्र+नम्+घञ्] 1. झुकना, नमस्कार करना, नमन या नति 2. सादर नमस्कार, अभिवादन, दण्डवत् प्रणाम, प्रणति, यथा साष्टांग प्रणाम--कु० ६।९१।

प्रणायकः [प्र+नी+ण्वुल्] 1. नेता, सेनापति 2. पथप्रदर्शक, प्रधान, मुखिया।

प्रणाम्य (वि०)[प्र+नी+ण्यत्] 1. प्रिय, प्यारा 2. खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी 3. अप्रिय, अनभिमत—भट्टि० ६।६६ 4. आवेश शून्य, विरक्त।

प्रणालः,—ली, प्रणालिका [प्र+नल्+घञ्, प्रणाल+ङीप्, प्रणाली+कन्+टाप्, ह्रस्वः] नहर, जलमार्ग, नाली --कुर्वन् पूर्णा नयनपयसां चक्रवालीः प्रणालीः—उ० सं० २, शि० ३।४४ 2. परंपरा, अविच्छिन्न सिलसिला।

प्रणाशः [प्र+नश्+घञ्] 1. विराम, हानि, लोप,—कि० १४।९ 2. मृत्यु, विनाश--रघु० १४।१।

प्रणाशन (वि०) [प्र+नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, हटाने वाला,--नम् समुच्छेदन, उन्मूलन —रघु० ३।६०।

प्रणिसित (वि०) [प्र—निस्+क्त] जिसका चुम्बन किया हो।

प्रणिधानम् [प्र+नि+धा+ल्युट्] 1. प्रयोग करना, नियुक्त करना, व्यवहार, उपयोग 2. महान् प्रयत्न, शक्ति 3. धार्मिक मनन, भावचिन्तन--रघु० १।७४, ८।१९, विक्रम० २ 4. सम्मानपूर्ण व्यवहार (अधि० के साथ) 5. कर्मफलत्याग।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] 1. नीकरा रहने वाला, ताक-झाक करने वाला 2. गुप्तचर भेजना 3. जासूस, भेदिया कु० ३।६, रघु० १७।४८, मनु० ७।१५३, ८।१८२ 4. ठहलुआ, अनुचर 5. देखभाल, ध्यान 6. निवेदन, अनुरोध, प्रार्थना।

प्रणिनादः [प्र+नि—नद्+घञ्] गहरी ध्वनि।

प्रणिपतनम्, प्रणिपातः [प्र+नि+पत्+ल्युट्, घञ् च] 1. पैरों में गिरना, साष्टांग प्रणाम, विनति--रघु० ४।६४ 2. अभिवादन, नमस्कार, सादर प्रणति - कु० ३।९१,४।२५, रघु० ३।२५। सम० रसः शस्त्रास्त्रों पर उच्चारण किया जाने वाला जादू का मंत्र।

प्रणिहित (भू० क० कृ०) [प्र—नि—धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, व्यवहृत 2. जमा किया हुआ 3. फैलाया हुआ, पसारा हुआ-- मेघ० १०५ 4. न्यस्त, समर्पित, सुपुर्द 5. एकाग्रचित्त, लवलीन, जुटा हुआ 6. निर्धारित,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निश्चित 7. सावधान, चौकस 8. अवाप्त, उपलब्ध 9. भेंट लिया हुआ (दे० 'प्रणि' पूर्वक धा)।

प्रणीत (भू० क० कृ०) [प्र+नी+क्त] 1. सामने प्रस्तुत, आगे पेश किया हुआ, उपस्थित 2. सौंपा गया, दिया गया, प्रस्तुत किया गया, उपस्थित किया गया 3. लाया गया, कम किया गया 4. कार्यान्वित, कार्य में परिणत अनुष्ठित 5. सिखाया गया, नियत किया गया 6. फेंका हुआ, भेजा गया, सेवामुक्त (दे० प्र पूर्वक 'नी'),—तः मंत्रों से अभिसंस्कृत की गई यज्ञाग्नि,—तम् पकाया हुआ या संवारा हुआ कोई पदार्थ यथा चटनी, अचार आदि।

प्रणुत (भू० क० कृ०) [प्र+नु+क्त] प्रशंसा किया गया, श्लाघा किया गया।

प्रणुद (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त] 1. हाँककर दूर किया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 2. भगाया हुआ।

प्रणुन्न (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त, नत्वम्] 1. हांक कर दूर भगाया हुआ, 2. गतिशील किया हुआ 3. भगाया हुआ 4. हिलता हुआ, कांपता हुआ।

प्रणेतृ (पुं०) [प्र+नी+तृच] 1. नेता 2. निर्माता, स्रष्टा 3. किसी सिद्धांत का उद्घोषक, व्याख्याता, अध्यापक 4. पुस्तक का रचयिता।

प्रणेय (वि०) [प्र+नी+य] 1. पथप्रदर्शन किये जाने योग्य, नेतृत्व दिये जाने योग्य, शिक्षणीय, विनम्र, विनीत, आज्ञाकारी 2. कार्यान्वित या निष्पन्न किये जाने योग्य 3. निश्चित या स्थिर किये जाने योग्य।

प्रणोद: [प्र+नुद्+घञ्] 1. हांकना 2. निर्देश देना।

प्रतत (भू० क० कृ०) [प्र+तन्+क्त] 1. बिछाया हुआ, ढका हुआ 2. फैलाया हुआ, पसारा हुआ।

प्रततिः (स्त्री०) [प्र+तन्+क्तिन्] 1. विस्तार, फैलाव, प्रसार 2. लता।

प्रतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+तन्+अच्] पुराना, प्राचीन।

प्रतनु (वि०) (स्त्री०—नु—न्वी) [प्रकृष्टः तनुः, प्रा० स०] 1. पतला, सूक्ष्म, मुकुमार 'मेघ० २९, 2. अत्यल्प, सीमित, थोड़ा—प्रतनुतपसाम्—कु० ४३, उत्तर० १।२०, मेघ० ४१ 3. दुबला-पतला, कृश 4. नगण्य, मामूली।

प्रतपनम् [प्र+तप्+ल्युट्] गरमाना, गरम करना।

प्रतप्त (भू० क० कृ०) [प्र+तप्+क्त] 1. तपाया हुआ 2. गर्म, उष्ण 3. संतप्त, सताया हुआ, पीडित।

प्रतरः [प्र+तृ+अप्] पार जाना, पार करना या जाना।

प्रतर्कः, प्रतर्कणम् [प्र—तर्क+अप्, ल्युट् च] 1. अटकल, कल्पना, अनुमान 2. विचारविमर्श।

प्रतलम् [प्रकृष्टं तलम्—प्रा० स०] निम्नलोक के सात विभागों से एक—दे० पाताल,—लः खुले हाथ की हथेली।

प्रतानः [प्र+तन्+घञ्] 1. अंकुरः तन्तु—लताप्रतानोद्ग्रथितैः सकेशैः—रघु० २।८, श० ७।११ 2. लता, नीचे भूमि पर ही फैलने वाला पौधा 3. शाखा-प्रशाखा, शाखा संविभाग 4. धनुर्वात रोग या मिरगी रोग।

प्रतानिन् (वि०) [प्रतान+इनि] 1. फैलाने वाला 2. अंकुर या तन्तु वाला,—नी फैलाने वाली लता।

प्रपातः [प्र+तप्+घञ्] 1. ताप, गर्मी—पंच० १।१०७ 2. दीप्ति, दहकती हुई गर्मी कु० २।२४, 3. आभा, उज्ज्वलता 4. मर्यादा, शान, यश —महावी० २।४ 5. साहस, पराक्रम, शौर्य प्रतापस्तत्र भानोश्च युग-पद्व्यानशे दिशः—रघु० ४।१५, यहाँ 'प्रताप' का अर्थ गर्मी भी है) ४।३० 6. शक्ति, बल, ऊर्जा 7. उत्कण्ठा, उत्साह।

प्रतापन (वि०) [प्र+तप्+णिच्+ल्युट्] 1. गर्माने वाला 2. संताप देने वाला, नम् 1. जलाना, तपाना, गर्माना 2. पीड़ित करना, सताना, दण्ड देना,—न एक नरक का नाम।

प्रतापवत् (वि०) [प्रताप+मतुप्, वत्वम्] 1. कीर्तिशाली, ओजस्वी 2. बलशाली, शक्तिसंपन्न, ताकतवर—पुं० शिव का विशेषण।

प्रतारः [प्र+तृ+णिच्+घञ्] 1. पार ले जाने वाला, 2. धोखा, जालसाजी।

प्रतारकः [प्र+तृ+णिच्+ण्वुल्] ठग, छद्मवेषी।

प्रतारणम् [प्र+तृ+णिच्+ल्युट्] 1. पार ले जाना 2. धोखा देना, ठगना, छल, कपट, या जालसाजी, धोखा, मक्कारी, धूर्तता, बदमाशी, दगाबाजी, पाखंड यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा, उपास्यतां कलौ कल्पलता देवी प्रतारणा, प्रतारणासमर्थस्य विद्यया किं प्रयोजनम् उद्भट।

प्रतारित (वि०) [प्र+तृ+णिच्+क्त] छला हुआ, ठगा हुआ।

प्रति (अव्य०) [प्रथ्+इति] 1. धातु के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर निम्नांकित अर्थ है—(क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, लौट कर, फिर (ग) के विरुद्ध, के मुकाबले में, विपरीत (घ) ऊपर, घृणा (इस उपसर्ग से युक्त कुछ धातुओं को देखिए) 2. संज्ञाओं (कृदन्त से भिन्न) से पूर्व उपसर्ग के रूप में निम्नांकित अर्थ (क) समानता, समरूपता, सादृश्य (ख) प्रतिस्पर्धा—यथा प्रतिचन्द्र (प्रतिस्पर्धीचन्द्रमा), प्रतिपुरुष आदि 3. स्वतंत्र रूप से संबंधबोधक अव्यय के रूप में प्रयुक्त (कर्म० के साथ) निम्नांकित अर्थ —(क) की ओर, की दिशा में, की तरफ—तौ दम्पती स्वां प्रतिराजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठः—रघु० २।७०, १।७५, प्रत्यनिल चिक्षेप—कु० ३।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३१, वृक्षं प्रतिविद्योतते विद्युत्—सिद्धा०, (ख) के विरुद्ध, प्रतिकूल, की विपरीत दिशा में, सम्मुख —तदा यायाद्रिपुं प्रति —मनु० ७।१७१, प्रदुद्रुवुस्तं प्रति राक्षसेन्द्रम् —रामा०, ध्यावेज्ञः प्रत्यरिसैन्यमेव —रघु० ७।५५, (ग) की तुलना में, सममूल्य पर, के अनुपात में, जोड़ का त्वं सहस्राणि प्रति —ऋक्० २।१।८, (घ) निकट, के आसपास, पास की ओर, में, पर—समासेदुस्ततो गंगां शृंगवेरपुरं प्रति—रामा०, गंगां प्रति (ङ) के समय, लगभग, दौरान में—आदित्यस्योदयं प्रति—महा०, फाल्गुनं वाथ चैत्रं वा मासौ प्रति—मनु० ७।१८२, (च) की ओर से, के पक्ष में, के भाग्य में—यदत्र मां प्रतिस्यात् —सिद्धा०, हरं प्रति हलाहलं अभवत्—वोप०, (छ) प्रत्येक में, हरेक में, अलग-अलग (विभागसूचक), वर्षं प्रति, प्रतिवर्षम्, यज्ञं प्रति—याज्ञ० १।११०, वृक्षं वृक्षं प्रति सिंचति —सिद्धा०, (ज) के विषय में, के संबंध में, के बारे में, विषयक, बाबत, विषय में—न हि मे संशीतिरस्या दिव्यतां प्रति—का० १३२, चन्द्रोपरागं प्रति तु केनापि विप्रलब्धास्मि—मुद्रा० १, धर्मप्रति—श० ५, भवौत्सुक्यो ऽस्मि नगरगमनं प्रति— श० १, कु० ६।२७, ७।८३, याज्ञ० ९।२१८, रघु० ६।१२, १०।२०, १२।५१, (झ) के अनुसार, के समनुरूप—मां प्रति (मेरी सम्मति में), (ञ) के सामने, की उपस्थिति में, (ट) क्योंकि, के कारण 4. स्वतंत्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में (अपा० के साथ) इसका अर्थ है, (क) प्रतिनिधि, के स्थान में, के बजाय--प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति—सिद्धा० संग्रामे यो नारायणतः प्रति -भट्टि० ८।८९, अथवा (ख) की एवज में, के बदले--तिलेभ्यः प्रति यच्छति मायान्—सिद्धा०, भक्तेः प्रत्यसृतं शम्भोः—वोप० 5. अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रायः इसका अर्थ है, (क) प्रत्येक में या पर, यथा प्रतिसंवत्सरम्—(प्रतिवर्षं), प्रतिक्षणं, प्रत्यहं आदि, (ख) की ओर, की दिशा में—प्रत्यग्नि शलभा उत्पतन्ति 6. 'प्रति' कभी कभी 'अल्पतार्थ' प्रकट करने के लिए अव्ययीभाव समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है सूप्रति, शाकप्रति (विशे० निम्नांकित समासों में वह सद शब्द जिनका दूसरा पद क्रिया के साथ अव्यवहित रूप से नहीं जुड़ा हुआ है, सम्मिलित कर दिए गए हैं, अन्य शब्द अपने२ स्थानों पर मिलेंगे। सम०—अक्षरम् (अव्य०) प्रत्येक अक्षर में प्रत्यक्षर श्लेषमयप्रबंध - वाल०,—अग्नि (अव्य०) अग्नि की ओर,—अंगम् 1. (शरीर का) गौण या छोटा अंग —जैसे कि नाक 2. प्रभाग, अध्याय, अनुभाग 3. प्रत्येक अंग 4. अत्र (अव्य०—राम्) 1. शरीर के प्रत्येक अंग पर—यथा—प्रत्यंगमालिंगितः—गीत० १ 2. प्रत्येक उपप्रभाग या उपांग के लिए,—अनन्तर (वि०) 1. सट कर पड़ोस में होने वाला 2. उत्तराधिकारी के रूप में) निकटतम विद्यमान 3. तुरन्त बाद का, बिल्कुल जुड़ा हुआ —जीवेत् क्षत्रियधर्मेण स ह्यस्य (ब्रह्मणस्य) प्रत्यनंतरः मनु० १०।८२, ८।१८५,--अनिलम् (अव्य०) हवा की ओर, या हवा के विरुद्ध—अनीक (वि०) 1. विरोधी, विरुद्ध, विद्वेषी 2. मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला —(कः) शत्रु (—कम्) 1. विरोध, शत्रुता, विपरीत ढंग या स्थिति—न शक्नोः प्रत्यनीकेषु स्थातुं मम सुरासुरैः—राम० 2. शत्रु की सेना—यस्य शूरा महेष्वासाः प्रत्यनीकगता रणे—महा०, येऽप्यस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः—भग० ११।३२, (यहां 'प्रति' का अर्थ 'शत्रुता' भी है) 3. (अलं० शास्त्र) अलंकार - इसमें एक व्यक्ति उस शत्रु को जो स्वयं घायल नहीं हो सकता, चोट पहुंचाने का प्रयत्न करता है—प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुं तिरस्क्रिया, या तदीयस्य तत्तुल्ये प्रत्यनीकं तदुच्यते—काव्य० १०,—अनुवनम् प्रतिकूल उपसंहार—अंत (वि०) संलग्न, सटा हुआ, साथ लगा हुआ, सीमावर्ती (तः) 1. सीमा, हद, रघु० ४।२६, 2. सीमावर्ती देश, विशेषतः म्लेच्छों द्वारा अधिकृत प्रदेश, °देशः सीमावर्ती देश, °पर्वतः साथ लगी हुई पहाड़ी—यादाः प्रत्यंग पर्वताः—अमर०, —अपकारः प्रतिशोध, बदले में क्षति पहुंचाना—शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४०,—अब्दम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, —अभियोगः बदले में दोषारोपण, प्रत्यारोप,—अभिमुख (अव्य०) शत्रु की ओर, अर्कः झुठमुठ का सूरज,—अवयवम् (अव्य०) 1. प्रत्येक अंग में 2. प्रत्येक विशेषता के साथ, विवरण सहित, —अवर (वि०) 1. निम्न पद का, कम सम्मानित 2. अधम, पतित, अत्यंत निगण्य,—अहन् (पुं०) गेरु, अहम् (अव्य०) प्रतिदिन, हरएक, रोज--गिरिरत्नमुपचचार प्रत्यहम्—कु० ११६०,—आकारः, कोष, भ्यान, आघातः 1. प्रत्याक्रमण 2. प्रतिक्रिया,—आचारः उपयुक्त आचरण या व्यवहार, आत्मम् अकेला, अलग अलग,--आदित्यः झुठमुठ का सूरज,- आरंभः 1. फिर शुरू करना, दूसरी बार आरंभ करना 2. प्रतिषेध,—आशा 1. उम्मीद, पूर्वधारणा—मा० ९।८ 2. विश्वास, भरोसा, उत्तरम् जवाब, उत्तर का उत्तर,—उलूकः 1. कौवा 2. उल्लू से मिलता-जुलता पक्षी,—ऋचं (अव्य०) प्रत्येक ऋचा में,-एक (वि०) प्रत्येक, हरेक हरकोई (अव्य० कम्) 1. एक एक करके, एक बार में एक, अलग, अलग, अकेला, हर एक में, हर एक को (बहुधा विशेषणात्मक बल के साथ)- विवेश दण्डकारण्यं प्रत्येकं च सतां मनः—रघु०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२।२ (प्रत्येक सज्जन पुरुष के मन में प्रवेश किया) १२।३, ७।३४, कु० २।३१,—**कंचुक**: शत्रु,—**कंठम्** (अव्य०) 1. अलग अलग, एक एक करके 2. गले के निकट, **कक्षः** (वि०) उद्दंड, जो हण्टर से भी वश में न आवे, **कायः** 1. पुतला, प्रतिमा, चित्र, समानता 2. शत्रु की० १३।२८ 3. लक्ष्य, चाँदमारी, निशान, **-कितवः** जुए में प्रतिद्वन्द्वी, **-कुंजरः** प्रतिरोधी हाथी, **-कृपः** परिवार, घराई, **-कूल** (वि०) अननुकूल विरोधी, **प्रतिपक्षी**, विरुद्ध **-प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता -शि० ९।६, कु० ३।२४ 2. कठोर, बेमेल, अप्रिय, अरुचिकर—अप्यन्तपृष्टा प्रतिकूलशब्दा—कु० १।४५ 3. अशुभ 4. विरोधी 5. उलटा, व्युत्क्रान्त 6. विपरीत, आड़ा, कर्कश, कठोर, **°आचरितम्** कुत्सित या आक्रमणात्मक कार्य अथवा आचरण -रघु० ८।८१, **°उक्तम्**, **°क्तिः** (स्त्री०) विरोध, **°कारिन्** (वि०) विरोध करने वाला, **°दर्शन्** (वि०) अशुभ अथवा अभद्र दर्शनों वाला, **°प्रवर्तिन्** —वर्तिन् (अव्य०) विपरीत कार्य करने वाला, उलटा मार्ग ग्रहण करने वाला, **°भाषिन्** (वि०) विरोध करने वाला, असंगत बोलने वाला, **°वचनम्** अरुचिकर या अप्रिय भाषण, **कूलम्** (अव्य०) 1. विरोधी ढंग से, विपरीतता के साथ 2. उलटी तरह से, विपर्यस्त क्रम से, **-क्षणम्** (अव्य०) प्रत्येक क्षण, हर समय, कु० ३।५६, **गजः** आक्रमणकारी हाथी, **—गात्रम्** (अव्य०) प्रत्येक अंग में,—**गिरिः** 1. सामने का पहाड़ 2. छोटा पहाड़, **गृहम्**, **गेहम्** (अव्य०) हर घर में, **ग्रामम्** (अव्य०) हर गाँव में,—**चंद्रः** अठमुठ का चाँद, **चरणम्** (अव्य०) 1. प्रत्येक (वैदिक) सिद्धान्त या शाखा में 2. हर पग पर, **-छाया** 1. प्रतिबिम्ब, परछाईं, साया 2. प्रतिमा, चित्र,—**जंघा** टाँग का अगला भाग —**जिह्वा**, **-जिह्विका** गले की भीतर की घंटी, गाँसवाला, कौमल तालु, **तंत्रम्** (अव्य०) प्रत्येक तंत्र या सम्मति के अनुसार, **-तंत्रसिद्धान्तः** एक ऐसा सिद्धांत जिसको एक ही पक्ष ने माना हो (वादिप्रतिवादिसंकलरवाभ्युपगतः), **त्र्यहम्** (अव्य०) लगातार तीन दिन तक, **दिनम्** (अव्य०) हर रोज, **दिशम्** (अव्य०) हर दिशा में, चारों ओर, सर्वत्र भेष० ५८, **देशम्** (अव्य०) प्रत्येक देश में, **देहम्** (अव्य०) हरेक शरीर में, **-देवतम्** (अव्य०) प्रत्येक देवता के निमित्त,—**द्वंद्वः** 1. प्रतिस्पर्धी, विरोधी, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी 2. शत्रु० (**द्वम्**) विरोध, शत्रुता,—**द्विन्** (वि०) 1. विरोधी, शत्रुतापूर्ण 2. प्रतिकूल—कि० १६।२५ 3. लागडाँट रखने वाला, प्रतिस्पर्धाशील —**श०** ४।४, (—पुं०) विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतिस्पर्धी —रघु० ७।३७, १५।२५,—**द्वारम्** (अव्य०) प्रत्येक दरवाजे पर,—**धुरः** दूसरे घोड़े के साथ जुड़ा हुआ घोड़ा, **नप्तृ** (पुं०) प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र,—**नव** (वि०) 1. नूतन, युवा, ताजा 2. हाल का खिला हुआ, या जिसमें अभी कलियाँ आई हों मेघ० ३६, **-नाडी** प्रशिरा, उपनाड़ी, **नायकः** किसी काव्य का ललनायक जैसे रामायण में रावण, तथा माघकाव्य में शिशुपाल,- **पक्षः** 1. विरोधी पक्ष, दल या गुटबन्दी, शत्रुता 2. प्रतिकूल, शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी, **प्रतिपक्षकामिनी** प्रतिद्वंद्वी पत्नी भामि० २।६४, विक्रमांक० १।७०, ७३, **प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुम् - काव्य०** १०, **क्षमास** में प्रायः '**सम**' या '**समान**' अर्थ में प्रयुक्त 3. प्रतिवादी, मुद्दआलै, **पक्षित** (वि०) 1. विरोध से युक्त, 2. विरोधात्मक प्रतिज्ञा से विफल किया हुआ, (जैसे न्याय में हेतु) (**वह हेतु**) जो सत्प्रतिपक्ष नामक दोष से युक्त हो), **-पक्षिन्** (वि०) विरोधी, शत्रु, **पथम्** (अव्य०) मार्ग के साथ२, रास्ते की ओर, रास्ते की ओर,—**प्रतिपथगतिरासीद्वेगदीर्घीकृतांगः**—कु० ३।७६, **पदम्** (अव्य०) 1. प्रत्येक पग पर 2. प्रत्येक स्थान पर, सर्वत्र 3. प्रत्येक शब्द में,- **पादम्** (अव्य०) प्रत्येक चरण में, **पात्रम्** (अव्य०) प्रत्येक भाग के विषय में, प्रत्येक पात्र के विषय में **प्रतिपात्रमाधीयतां पयः** श० १ (प्रत्येक पात्र की देख रेख की जानी चाहिए,— **पादपम्** (अव्य०) प्रत्येक वृक्ष में, **-पाप** (वि०) पाप के बदले पाप करने वाला, बुराई के बदले बुराई करने वाला, **-पु (पू) रुषः** 1. समान या सदृश पुरुष 2. स्थानापन्न, प्रतिनिधि 3. साथी 4. पुतला आदमी का पुतला जिसे चोर किसी घर में स्वयं घुसने से पहले यह जानने के लिए फेंका करते थे कि कोई जाग तो नहीं रहा है 5. पुतला, **पूर्वाह्णम्** (अव्य०) प्रत्येक मध्याह्नपूर्व, हर दोपहर से पहले, **प्रभातम्** (अव्य०) प्रत्येक सुबह, **प्रकारः** बाहरी परकोटा या फसील, **प्रियम्** बदले में की गई कृपा या सेवा रघु० ५।५६, **बंधुः** जो पद व स्थिति में समान हो, **बल** (वि०) दल में समान, अपने जोड़े का, समान शक्तिशाली (**लम्**) शत्रु की सेना -अस्त्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेरंतरौर्वायमाणे—वेणी० २।५, **बाहुः** भुजा का अगला भाग, कोहनी से नीचे का भाग **बि (वि) ब**, **बम्** 1. परछाईं, प्रतिमूर्ति कु० ६।४२, शि० ९।१८ 2. प्रतिमा, चित्र, भट (वि०) प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी **भटप्रतिभटस्तत्र** वै० १३।५, (**टः**) 1. प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्षी 2 शत्रुपक्ष का योद्धा **समालोक्याजौ त्वां विहरति विकत्थन् प्रतिभटः** काव्य० १०, **भय** (वि०) 1. भयावह भीषण, भयंकर, भयानक 2. खतरनाक पंव०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२।१६६, (पम्) भय, खतरा, -मंडलम् केन्द्रभ्रष्ट परिवेश,—मंदिरम् (अव्य०) प्रत्येक घर में, मल्लः प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी—नै० १।६३, पातालप्रतिमल्लगल्ल आदि - मा० ५।२२, - मायाः जवाकी जादू, मासम् (अव्य०) प्रतिमास, मासिक, मिथ्यम् शत्रु, विरोधी, -मुख (वि०) 1. मुंह के सामने खड़ा हुआ, सामने स्थित प्रतिमुखागत मनु० ८।२९१ 2. निकटवर्ती, उपस्थित (खम्) नाटक की एक घटना या गौणकथा-वस्तु जो नाटक के महान् परिवर्तन या उलट फेर को या तो जल्दी लादे या और भी अधिक देर कर दे —दे० सा० द० ३३४ और ३५१ ३६४,—मुद्रा मुकाबले की मोहर,—मुहूर्तम् (अव्य०) प्रतिक्षण, —मूर्तिः (स्त्री०) प्रतिमा, समानता, -यूथपः आक्रमणकारी हाथियों के झुंड का अगुआ या नेता, —रथः प्रतिपक्षी योद्धा (शा० -युद्ध रथ में बैठ कर लड़ने वाला)—दौर्ग्यतिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य—श० ४।१९, - राजः विरोधी राजा, रात्रम् (अव्य०) हर रात, -रूप (वि०) 1. तदनुरूप, समान, मुकाबले का भाग रखने वाला,—चेष्टाप्रतिरूपिका मनोवृत्तिः —श० १ 2. उपयुक्त, समुचित (पम्) चित्र, प्रतिमा, समानता, -रूपकम् चित्र, प्रतिमा, लक्षणम् निशान, चिह्न, प्रतीक, लिपिः (स्त्री०) लेख की नकल, लिखी हुई प्रति, - लोम (वि०) 1. नैसर्गिक क्रम के विरुद्ध, व्युत्क्रान्त, उलटा 2. जाति विरुद्ध (अपने पति से उच्च वर्ण की स्त्री की संतान) 3. विरोधी 4. नीच, दुष्ट, अधम 5. वाम (अव्य० मम्) बालों के विपरीत, अनाज के विरुद्ध उलटा, विपरस्त रूप से, लोम (वि०) जाति के विपरीत क्रम में उत्पन्न अर्थात् अपने पति से उच्चवर्ण की स्त्री की संतान, -लोमकम् उलटा क्रम, विपरीत क्रम, - वत्सरम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल, - वनम् हर जंगल में, —वर्षम् (अव्य०) हरसाल,—वस्तु (नपु०) 1. समान, प्रतिमूर्ति, प्रतिरूप 2. प्रतिदान 3. समानता, तुल्यता उपमा एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने यह दी है--प्रतिवस्तूपमा तु सा. सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः - काव्य० १०, उदा० तापेन भ्राजते सूर्यः शूरश्चापेन राजते - चन्द्रा० ५।४८,- वातः उलटी हवा (अव्य०—तम्) हवा के विरुद्ध चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य —का० १।३४,—वासरम् (अव्य०) प्रतिदिन —विषटम् (अव्य०) 1. प्रत्येक शाखा पर 2. एक एक शाखा पर, वेदम् (अव्य०) प्रत्येक वेद में या हरेक वेद के लिए,—विषम् विषप्रतीकारक औषधि, —विषाणकः मुचकुन्द वृक्ष, - शोरः विपक्षी, शत्रु, -वृषः आक्रमणकारी बैल,—शेलम् (अव्य०) हर समय, प्रत्येक अवसर पर,—शेषः 1. पड़ोस का घर, आसपास 2. पड़ोसी,—शेशिन् (अ०) पड़ोसी,—शेषमन् (नपु०) पड़ोसी का घर, --शेषः पड़ोसी,—शैरम् वैर प्रतिशोध, बदला, प्रतिहिंसा, प्रतिहिंसा, - शब्दः 1. प्रतिध्वनि, गूंज,—वसुधाधरकन्दराभिसर्री प्रतिशब्दोऽपि हरेर्भिनत्ति मानान् विक्रम० १।१६, कु० ६।६४, रघु० २।२८ 2. गरज, दहाड़,--शशिन् (पुं०) झुठमूठ का चांद,—संवत्सरम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल,—सम (वि०) तुल्य, जोड़ का,--सव्य (वि०) विपर्यस्त क्रम में,—साय्यम् (अव्य०) प्रतिसंध्या, हर सांझ,—सूर्यः,—सूर्यकः 1. झुठमूठ का सूरज 2. छिपकली, गिरगिट—उत्तर० २।१६,—सेना, शत्रु की सेना,—स्थानम् (अव्य०) हर स्थान में, हर स्थान पर,—स्रोतम् (नपुं०) धारा के विपरीत--हस्तः,—हस्तकः प्रतिनिधि, अधिकर्ता, स्थानापन्न, प्रतिपुरुष--आश्रितानां भृतौ स्वामिसेवायां धर्मसेवने, पुत्रस्योत्पादने चैव न संति प्रतिहस्तकाः, हि० २।३३ ।

प्रतिक (वि०) [कार्षापण+ठिठन्, कार्षापणस्य प्रत्यादेशः] कार्षापण के मूल्य का या कार्षापण से खरीदा हुआ।

प्रतिकरः [प्रति+कृ+अप्] प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति।

प्रतिकर्तृ (वि०) (स्त्री०-र्त्री) [प्रति+कृ+तृच्] प्रतिशोध लेने वाला, क्षतिपूर्ति करने वाला—(पुं०) विरोधी, विपक्षी।

प्रतिकर्मन् (नपुं०) [प्रति+कृ+मनिन्] 1. प्रतिशोध, प्रतिहिंसा 2. हजामत, उपचार, प्रतिकार 3. शारीरिक शृंगार, रूपसज्जा, प्रसाधन, शरीर-सज्जा (अबला) प्रतिकर्म कर्तुमुपचक्रिरे समये हि सर्वमुपकारि कृतम् —शि० ९।४३, ५।२७, कु० ७।३ ४. विरोध, शत्रुता।

प्रतिकर्षः [प्रति--कृष्--घञ्] 1. एकत्रीकरण, संयोजन 2. (किसी आगे आने वाले शब्द का) पूर्व विचार।

प्रतिकषः [प्रति--कष्+अच्] 1. रेखा 2. सहायक 3. संदेशहर।

प्रति (ती) कारः [प्रति=कृ--घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. प्रतिशोध, पुरस्कार, प्रतिदान 2. बदला, प्रतिहिंसा, प्रतिफल 3. प्रतिविधान, निवारण, रोकथाम, उपचार, इलाज या चिकित्सा -विकारं खलु परमार्थतोऽजातदोषारंभः प्रतीकारस्य श० ३, प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः—भर्तृ० ३।२९ 4. विरोध। समः- कर्मन् (नपुं०) जीर्णोद्धार करना, सुधार करना,—विधानम् इलाज करना, चिकित्सा करना--अविकारहविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते रघु० ८।४०।

प्रति (ती) क्षाः [प्रति--ईक्ष्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परछाईं 2. दृष्टि, दर्शन, सादृश्य—(प्रायः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समास के अन्त में'–के समान' 'से मिलता-जुलता' अर्थ प्रकट करता है)—दृष्टान्तप्रतीकारः—उत्तर० ३।१।

प्रतिकुंचित (वि०) [प्रति–कुञ्च्+क्त] झुका हुआ, मुड़ा हुआ।

प्रतिकृत (भू० क० कृ०) [प्रति+कृ+क्त] 1. वापिस किया हुआ, लौटाया हुआ, प्रतिशोधित, प्रतिहिंसित 2. प्रतिपादित, उपचार किया हुआ।

प्रतिकृतिः (स्त्री०) [प्रति+कृ+क्तिन्] 1. बदला, प्रतिहिंसा 2. वापसी, प्रतिशोध 3. परछाईं, प्रतिबिंब 4. समानता, चित्र, मूर्ति, प्रतिमा –रघु० ८।९२, १४।८७, १८।५३ 5. स्थानापन्न।

प्रतिकृष्टः (भू० क० कृ०) [प्रति+कृष्+क्त] 1. दोबारा जोता हुआ 2. पीछे ढकेला हुआ, तिरस्कृत, अस्वीकृत 3. छिपाया हुआ, गुप्त 4. नीच, दुष्ट, अधम।

प्रतिकोपः, प्रतिकोषः [प्रति+कुप् (कुष्)+घञ्] क्रोध के प्रति होने वाला क्रोध।

प्रतिक्रमः [प्रति+क्रम्+घञ्] उलटा क्रम।

प्रतिक्रिया [प्रति–कृ+श, इयङ्+टाप्] 1. क्षतिपूर्ति, प्रतिशोध 2. प्रतिहिंसा, बदला प्रतिफल 3. प्रतिविधान, प्रतीकार, दूरीकरण अहेतु पक्षपातो यस्तस्य नाशिता प्रतिक्रिया –उत्तर०—५।१७, रघु० १५।४ 4. विरोध 5. अरोचकता, अरुचि, रूपसज्जा 6. रक्षा 7. सहायता, कुमक या सादृश्य।

प्रतिकृष्ट (वि०) [प्रति+कृष्+क्त] दयनीय, बेचारा, गरीब,

प्रतिक्षः [प्रति+क्षि+अच्] संरक्षक, रखवाला।

प्रतिक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्रति+क्षिप्+क्त] 1. रद्द किया हुआ, अस्वीकृत, हटाया हुआ 2. प्रतिकृत, प्रतिरुद्ध, पीछे ढकेला हुआ, अवरुद्ध किया हुआ 3. अपभाषित, भर्त्सना किया हुआ, बदनाम किया हुआ 4. फेंका हुआ, प्रेषित।

प्रतिक्षुतम् [प्रति–क्षु+क्त] छींक।

प्रतिक्षेपः [प्रति–क्षिप्–घञ्] 1. प्राप्ति स्वीकार न करना, अस्वीकृति 2. विरोध करना, खण्डन करना, प्रतिवाद करना 3. विवाद।

प्रतिख्यातिः [प्रति–ख्या+क्तिन्] विश्रुति, प्रसिद्धि।

प्रतिगत (भू० क० कृ०) [प्रति+गम्+क्त] आगे या पीछे उड़ान भरना, इधर उधर चक्कर काटना।

प्रतिगमनम् [प्रति–गम् + ल्युट्] लौटना, वापिस जाना, वापसी।

प्रतिगर्हित (भू० क० कृ०) [प्रति+गर्ह्+क्त] कलंकित, निन्दित।

प्रतिगर्जना [प्रति–गर्ज्+युच्+टाप्] गर्जन के जवाब में गर्जना करना, किसी की दहाड़ सुनकर दहाड़ना।

प्रतिगृहीत (भू० क० कृ०) [प्रति+ग्रह्+क्त] 1. लिया, ग्रहण किया, स्वीकार किया 2. मान लिया, हामी भरी 3. विवाह किया।

प्रतिग्रहः [प्रति+ग्रह्+अप्] ग्रहण करना, स्वीकार करना 2. दान ग्रहण करना या स्वीकार करना 3. दान ग्रहण करने का अधिकार 4. उपहार ग्रहण करने का अधिकार (जो कि ब्राह्मणों का ही विशेषाधिकार है) मनु० १८८, ४।८६, याज्ञ० १।११८ 4. भेंट, उपहार, दान–राज्ञः प्रतिग्रहीश्यम्–श० १, शि० १४।३५ 5. (भेंट का) ग्रहण करने वाला 6. सादर स्वागत 7. अनुग्रह, शान्त 8. पाणिग्रहण 9. ध्यान पूर्वक सुनना 10. सेना का पिछला भाग 11. पौक दान।

प्रतिग्रहणम् [प्रति+ग्रह्+ल्युट्] 1. उपहार ग्रहण 2. स्वागत 3. पाणिग्रहण।

प्रतिग्रहिन्, प्रतिगृहीतृ (पुं०) [प्रतिग्रह्+इनि.] प्रति+ग्रह्+तृच्] ग्रहण करने वाला, ग्रहीता।

प्रतिग्राहः [प्रति+ग्रह्+घ] 1. उपहार स्वीकार करना 2. थूककदान, पीक दान।

प्रतिघः [प्रति+हन्+ड, कुत्वम्] 1. विरोध, मुकाबला 2. लड़ाई, संघर्ष, आपस की मारपीट 3. क्रोध, रोष 4. मूर्छा 5. शत्रु।

प्रति(ती)घातः [प्रति+हन्+णिच्+अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. दूर हटाना, पीछे ढकेलना 2. विरोध, मुकाबला 3. आघात के बदले आघात, जवाबी आघात 4. प्रतिक्षेप, प्रतिकार 5. प्रतिषेध।

प्रतिघातनम् [प्रति+हन्+णिच्+ल्युट्] 1. पीछे ढकेलना, दूर हटाना 2. वध, हत्या।

प्रतिघ्नम् [प्रति+हन्+क] शरीर।

प्रतिचिकीर्षा [प्रति+कृ+सन्+टाप्] बदले की इच्छा, प्रतिहिंसा की इच्छा, बदला लेने की अभिलाषा।

प्रतिचिन्तनम् [प्रति+चिन्त्+ल्युट्] मनन करना, गहनचिंतन करना।

प्रतिच्छदनम् [प्रति+छद्+ल्युट्] ढकना, चादर।

प्रतिच्छदः, प्रतिच्छदकः [प्रति–छद्–घञ्, कन् च] 1. समानता, चित्र, मूर्ति प्रतिमा 2. स्थानापन्न –शि० १२।२९।

प्रतिच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+छद्+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित, लपेटा हुआ 2. छिपाया हुआ, गुप्त 3. जुताया हुआ, पूर्वसंचित 4. गोट या मगजी लगाया हुआ, जड़ा हुआ।

प्रतिच्छेदः [प्रति+छिद्+घञ्] मुकाबला, विरोध।

प्रतिजल्पः [प्रति+जल्प्+घञ्] उत्तर, जवाब।

प्रतिजल्पकः [प्रतिजल्प+कन्] सादर सहमति।

प्रतिजागरः [प्रति+जागृ+घञ्] निगरानी, देख-रेख, सावधानी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिजीवनम् [प्रति+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन, पुनः सजीवता ।

प्रतिज्ञा [प्रति+ज्ञा+अङ+टाप्] 1. मानना, अंगीकार करना 2. व्रत, वचन, वादा, औपचारिक घोषणा, —दैवात्तीर्थे प्रतिज्ञे मुद्रा० ४।१२, तीर्त्वा जवेनैव निशानदुरन्तां नदीं प्रतिज्ञामिव ता गरीयसीम्—शि० १२।७४ 3. उक्ति, दृढ़ोक्ति, घोषणा, प्रकथन 4. (न्या० में) प्रस्थापना, सवाक्य पंचांगी अनुमान का प्रथम अंग, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ('पर्वतो वह्निमान्' सामान्य उदाहरण है) 5. अभियोग, आरोपपत्र । सम०—**पत्रम्** वंधपत्र, लिखित संविदापत्र, —**भंगः** प्रतिज्ञा का तोड़ देना,—**विरोधः** वचन के विरुद्ध आचरण करना,—**विवाहित** (वि०) जिसकी सगाई हो गई हो,—**संन्यासः** 1. वचन भंग करना, 2. (न्या० में) मूल प्रस्ताव का त्याग कर देना (इसी अर्थ में 'प्रतिज्ञा-हानि' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

प्रतिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+ज्ञा+क्त] 1. उद्घोषित, उक्त, दृढ़ता पूर्वक कथित 2. वचनबद्ध, सहमत 3. माना हुआ, अंगीकृत—**तम्** वचन, वादा ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति+ज्ञा+ल्युट्] । दृढ़ोक्ति, प्रकथन 2. करार, वादा 3. मानना, स्वीकार करना ।

प्रतितरः [प्रति—तृ—अप्] डांड खेने वाला, मल्लाह या नाविक ।

प्रतितालकी [प्रतियता तालम्—प्रा० म० ह्रस्व] (दरवाजे की) कुंजी, चाबी ।

प्रतिदर्शनम् [प्रति+दृश्+ल्युट्] देखना, प्रत्यक्ष करना ।

प्रतिदानम् [प्रति+दा+ल्युट्] । पलटाना, प्रत्यर्पण, वापिस देना, (धरोहर आदि की) पुनरापत्ति 2. विनिमय, वस्तुओं की अदलाबदली ।

प्रतिदारणम् [प्रति—दृ—णिच्+ल्युट्] 1. लड़ाई, युद्ध 2. फाड़ना ।

प्रतिदिवन् (पुं०) [प्रति+दिव्—कनिन्] 1 दिन 2. सूर्य ।

प्रतिदृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+दृश्+क्त] 1. देखा हुआ 2. दृष्टि गोचर, दृश्यमान ।

प्रतिधावनम् [प्रति+धाव्+ल्युट्] धावा बोलना, हमला करना, आक्रमण करना ।

प्रतिध्वनिः, प्रतिध्वानः [प्रति+ध्वन्—इ, घञ् वा] गूंज, प्रतिध्वनन ।

प्रतिध्वस्त [भू० क० कृ०] [प्रति+ध्वंस्+क्त] पछाड़ कर नीचे गिराया हुआ, अधोमुख, चित्त ।

प्रतिनन्दनम् [प्रति—नन्द्+ल्युट्] 1. बधाई देना, स्वागत करना 2. धन्यवाद देना ।

प्रतिनादः [प्रति—नद्—घञ्] गूंज, प्रतिध्वनि ।

प्रति (ती) नाहः [प्रति+नह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] झंडा, पताका ।

प्रतिनिधिः [प्रति+नि+धा+कि] 1.स्थानापन्न, एवजी, वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के बदले काम पर लगाया जाय· सोऽभवत्प्रतिनिधिर्न कर्मणा—रघु० ११।१३, १।८१, ४।५८, ५।६३, ९।४० 2. सहायक, प्रतिनिधि 3. स्थानापत्ति 4. जामिन 5. प्रतिमा, समानता, चित्र ।

प्रतिनियमः [प्रा० स०] सामान्य नियम ।

प्रतिनिर्जित (भू० क० कृ०) [प्रति+नि+जि+क्त] 1. पराजित, परास्त 2. निराकृत, निरस्त ।

प्रतिनिर्देश्य (वि०) [प्रति+निर्+दिश्+ण्यत्] जो पहला कहा हुआ होने पर भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्संबंधी और कुछ भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्संबंधी और कुछ भी कह दिया जाय —तु० काव्य० ७ में दिये गये उदाहरण की—उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च - (यहां 'ताम्र' शब्द की पुनरुक्ति यह बतलाने के लिए की गई कि सूर्य 'लाल' ही निकलता है, 'लाल' ही छिपता है) ।

प्रतिनिर्यातनम् [प्रति+निर्+यत् णिच्+ल्युट्] प्रतिशोध, प्रतिहिंसा ।

प्रतिनिर्बिष्ट (वि०) [प्रति+नि+विश्+क्त] दुराग्रही, हठी, पक्का, जिद्दी । सम०—**मूर्खः** दुराग्रही बेवकूफ, पक्का **बुद्धु**—न तु प्रतिनिर्विष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्—भर्तृ० २।५ ।

प्रतिनिवर्तनम् [प्रति+नि—वृत्+ल्युट्] 1. लौटाना, वापसी 2. मुड़ना ।

प्रतिनोदः [प्रति—नुद्+घञ्] पीछे ढकेलना, पीछे हटाना ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्तिन्] 1. हासिल करना, प्राप्ति, उपलब्धि चन्द्रलोकप्रतिपत्तिः स्वर्ग० आदि 2. प्रत्यक्षज्ञान, अवेक्षण, चेतना, (यथार्थ) ज्ञान · वाग्यर्थप्रतिपत्तये—रघु० १।१, नयौरभेद प्रतिपत्तिरस्ति मे—भर्तृ० २।९९, युधिनामपि निज रूपप्रतिपत्तिः परत एव संभवति—काम० 3. हामी भरना, आज्ञा पालन, स्वीकरण—प्रतिपत्तिपराङ्मुखी—भट्टि० ८।९५ (आज्ञापालन के विरुद्ध, कहा में न आने वाला) 4. मान लेना, अभिस्वीकृति 5. दृढ़ोक्ति, उक्ति 6. समारंभ, शुरु, उपक्रम 7. कार्यवाही, प्रगमन, क्रिया विधि··वयस्य का प्रतिपत्तिस्त्र मालवि० ४. कु० ५।४८, विषादलुप्त प्रतिपत्ति नैगम्—रघु० ३।४०, सेना जो क्या कार्यविधि अपनाई जाय इस बात को विषाद के कारण न जान सकी) 8. अनुष्ठान, करना, प्रगमन करना प्रकृत प्रतिपत्तये· रघु० १५।७९ 9. दृढ़ संकल्प, निश्चित धारणा—व्यवसायः प्रतिपत्ति निष्ठुरः ·रघु० ८।५५ 10. समाचार, शुभ वार्ता कर्मसिद्धा वाप्त प्रतिपत्तिमानय - मुद्रा० ४, श० ६ 11. सम्मान, आदर, पूजनीयता का चिह्न, आदरयुक्त व्यवहार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—सामान्य प्रतिपत्ति पूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया शं० ७।१६, ७।१, रघु० १४।२२, १५।१२ 12. प्रणाली, उपाय 13. बुद्धि, प्रज्ञा 14. रिवाज, प्रथा 15. उन्नति, तरक्की, उच्चपद प्राप्ति 16. यश, प्रसिद्धि, ख्याति 17. साहस, भरोसा, विश्वास 18. सम्प्रत्यय, प्रमाण। सम० दक्ष (वि०) कार्य विधि का ज्ञाता,-पदः एक प्रकार का नगाड़ा,- भेदः मतभेद, दृष्टिकोण में अन्तर, विशारद (वि०) कार्यविधि से परिचित, कुशल, चतुर।

प्रतिपद् (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्विप्] 1. पहुँच, प्रवेश, मार्ग 2. आरम्भ, शुरु 3. प्रज्ञा, बुद्धि 4 शुक्लपक्ष का पहला दिन 5. नगाड़ा। सम० -चन्द्रः (प्रतिपदा का) नया चाँद, (विशेष रूप से पूज्य)—प्रतिपच्चन्द्र-निर्भोयमाल्यजः रघु० ८।६५, तूर्यम् एक प्रकार का नगाड़ा।

प्रतिपदा,-दी [प्रतिपद्+टाप्, ङीप् वा] शुक्लपक्ष का पहला दिन।

प्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+क्त] 1. उपलब्ध, प्राप्त 2. किया गया, अनुष्ठित, कार्यान्वित, निष्पन्न 3. हाथ में लिया हुआ, आरब्ध 4. वचन दिया हुआ, लगा हुआ 5. सहमत, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ 6. ज्ञात समझा हुआ 7. जवाब दिया गया, उत्तर दिया गया 8. प्रमाणित, प्रदर्शित (प्रति पूर्वक पद् देखो)।

प्रतिपादक (वि०) (स्त्री०-दिका) [प्रति+पद्+णिच्+ण्वुल्] 1. देने वाला, स्वीकार करने वाला, प्रदान करने वाला, समर्पित करने वाला 2. प्रदर्शित करने वाला, सहायता करने वाला, प्रमाणित करने वाला, स्थापित करने वाला 3. सोच-विचार करने वाला, व्याख्या करने वाला, सोदाहरण निरूपण करने वाला 4. उन्नत करने वाला, आगे बढ़ाने वाला, प्रगति करने वाला 5. प्रभावशाली, निष्पादन करने वाला।

प्रतिपादनम् [प्रति+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना 2. प्रदर्शन, प्रमाणन, स्थापन 3. अनुशीलन, व्याख्यान विस्तृत रूप से प्रस्तुत करना, सोदाहरण निरूपण 4. कार्यान्विति, निष्पन्नता, पूर्णता 5. जन्म देना, पैदा करना 6. आवृत्ति, अभ्यास 7. आरम्भ।

प्रतिपादित (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, स्वीकृत, प्रस्तुत 2. स्थापित, प्रमाणित, प्रदर्शित 3. व्याख्यात, सविवरण प्रस्तुत 4. उद्घोषित, उक्त 5. जन्म दिया, पैदा किया।

प्रतिपालकः [प्रति+पाल्+ण्वुल्] बचाने वाला, संरक्षक अभिभावक।

प्रतिपालनम् [प्रति+पाल्+णिच्+ल्युट्] संरक्षण, बचाना रक्षा करना, पालन करना, अभ्यास करना।

प्रतिपीडनम् [प्रति+पीड्+णिच्+ल्युट्] अत्याचार करना, सताना।

प्रतिपूजनम्,-पूजा [प्रति+पूज्+ल्युट्, प्रतिपूज्+अ+टाप्] 1. श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना, सम्मान प्रदर्शित करना 2. पारस्परिक अभिवादन, शिष्टाचार का विनिमय।

प्रतिपूरणम् [प्रति+पूर्+ल्युट्] 1. पूरा करना, भरना 2. (मुर्दादार पिचकारी द्वारा किसी तरल पदार्थ को) अन्दर क्षिप्त करना।

प्रतिप्रणामः [प्रति+प्र+नम्+घञ्] बदले में किया गया अभिवादन।

प्रतिप्रदानम् [प्रति+प्र+दा+ल्युट्] 1. वापिस करना, लौटाना 2. विवाह में देना।

प्रतिप्रयाणम् [प्रति+प्र+या+ल्युट्] वापसी, प्रत्यावर्तन।

प्रति प्रश्नः [प्रति+प्रच्छ्+नङ्] के बदले में पूछा गया प्रश्न 2. उत्तर।

प्रति प्रसवः [प्रति+प्र+सू+अप्] 1. प्रत्यपवाद, अपवाद का अपवाद (जहाँ अपवाद के अन्तर्गत उदाहरणों में ही सामान्य नियम का विधान प्रदर्शित किया जाय) -तृतीयकार्ष्यां कर्तरि हेत्वर्थे प्रतिप्रसवोऽयम् (याज्ञिकादिभिरुक्तः) सिद्धा०।

प्रति प्रहारः [प्रति+प्र+हृ+घञ्] बदले में प्रहार करना, थप्पड़ के बदले थप्पड़ लगाना।

प्रतिप्लवनम् [प्रति+प्लु+ल्युट्] पीछे की ओर कूदना।

प्रतिफलः, प्रतिफलनम् [प्रति+फल्+अच्, प्रतिफल+ल्युट्] 1. परछाईं, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, छाया 2. पारिश्रमिक, प्रतिदान 3. प्रतिहिंसा, प्रतिशोध।

प्रतिफुल्लकः (वि०) [प्रति+फुल्ल्+ण्वुल्] खिलने वाला, पूरा खिला हुआ।

प्रतिबद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बंध्+क्त] 1. बाधा गया, बँधा हुआ, कसा हुआ 2. जोड़ा गया 3. अवरुद्ध, रुकावट डाली गई, बाधित 4. रुका हुआ, जकड़ा हुआ —शि० ९।८ 5. समायुक्त, अधिकार में करने वाला 6. फँसा हुआ, अन्तर्ग्रस्त 7. दूर रक्खा हुआ 8. निराश 9. (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न रूप से संयुक्त (जैसे आग और धुआँ)।

प्रतिबंधः [प्रति+बंध्+घञ्] 1. बंधन बाँधना 2. अवरोध, रुकावट, विघ्न- सतां प्रतिबंधमयुक्तम्—रघु० ८।८०, महावी० ५।४ 3. विरोध, मुकाबला 4. आवरण, लपेटबंदी, घेरा 5. संबंध 6. (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न संयोग।

प्रतिबंधकः (वि०) (स्त्री०-धिका) [प्रति+बंध्+ण्वुल्] 1. बाधने वाला, जकड़ने वाला, 2. रुकावट डालने वाला, अवरोध करने वाला, विघ्नकारक 3.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला,- कः शाखा, अंकुर ।

प्रतिबंधनम् [प्रति+बंध्+ल्युट्] 1. बाँधना, कसना 2. कैद, बंधन 3. अवरोध, रुकावट ।

प्रतिबंधिः, -धी [प्रतिबन्ध्+इनि, प्रतिबन्ध+ङीप्] 1. आक्षेप 2. ऐसा तर्क जो विपक्ष पर समान रूप से प्रभाव डाले (इस अर्थ में 'प्रतिबन्दी' शब्द भी है) ।

प्रतिबाधक (वि०) [प्रति+बाध्+ण्वुल्] 1. हटाने वाला, दूर करने वाला 2. रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला ।

प्रतिबाधनम् [प्रति+बाध्+ल्युट्] हटाना, दूर करना, अस्वीकार करना ।

प्रतिबिंबनम् [प्रतिबिम्ब+क्विप्+ल्युट्] 1. परछाईं 2. तुलना -दृष्टांतः पुरस्तेतां मत्तेरां प्रतिबिम्बनम् --काव्य० १० ।

प्रतिबिंबित (भि०) [प्रतिबिम्ब-क्विप्+क्त] जिसकी परछाईं पड़ी हो, दर्पण में प्रतिफलित ।

प्रतिबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बुध्+क्त] 1. जागा हुआ, जगाया हुआ 2. पहचाना हुआ, देखा हुआ 3. प्रसिद्ध, विख्यात ।

प्रतिबुद्धि (स्त्री०) [प्रति+बुध्-क्तिन्] 1. जागरण 2. विरोधी अभिप्राय या इरादा ।

प्रतिबोधः [प्रति+बुध्+घञ्] 1. जागना, जागरण, जगाया जाना -नदंपोहिनुमहंमि प्रिये प्रतिबोधिने विपादमाशु मे रघु० ८।५४, अप्रतिबोधशायिनी --५८, 'सदा के लिए सो जाने वाली' कि० ६।१२, १२।४८ 2. प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 3. अनुदेश, शिक्षण 4. तर्क, तर्कना, मनःशक्ति -किमुत यः प्रतिबोधवत्यः शा० ५।२२ ।

प्रतिबोधनम् [प्रतिबुध्+णिच्+ल्युट्] 1. जगाना 2. शिक्षण, अनुदेश ।

प्रतिबोधित (वि०) [प्रति+बुध्+णिच्+क्त] 1. जगाया हुआ 2. अनुदिष्ट, शिक्षित ।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] 1. दर्शन, दृष्टि 2. प्रकाश, प्रभा 3 बुद्धि, समझ --कि० १६।२, विक्रम० १।१८, २३ 4. मेधा, प्रखर बुद्धि, विशद कल्पना, प्रज्ञा (प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता) 5. प्रतिबिंब, परछाईं 6. धृष्टता, ढिठाई । सम०—अस्थित (वि०) 1. मेधावी, प्रज्ञावान् 2. बेधड़क, साहसी, —मुख (वि०) साहसी, दिलेर,—हानिः (स्त्री०) 1. अंधकार 2. प्रज्ञा या मेधा का अभाव ।

प्रतिभात (भू० क० कृ०) [प्रति+भा+क्त] 1. उज्ज्वल, प्रभायुक्त 2. ज्ञात, अभ्याहृत, अवगत ।

प्रतिभानम् [प्रति+भा+ल्युट्] 1. प्रकाश, दीप्ति 2. बुद्धि या समझ, ज्ञान की चमक—हि० ३।१९ 3 हाजिर जवाबी,-अत्युत्पन्नमतित्व--कालादबोधः प्रतिभानवत्त्वम् --मा० ३।११, दमघोषसुतेन कञ्चन प्रतिशिष्टः प्रतिभानवानथ--शि० १६।१ ।

प्रतिभावः [प्रति+भू+घञ्] तदनुरूप वृत्ति ।

प्रतिभाषा [प्रति+भाष्+अ+टाप्] उत्तर, जवाब ।

प्रतिभासः [प्रति+भास्+घञ्] 1. मन में स्फुरित होना, चमकना झलकना, (अकस्मात्) प्रतीति—सान्ध्य-वैविक्य प्रतिभासादेव--काव्य० १० 2 दृष्टि, दर्शन 3. भ्रम, माया ।

प्रतिभासनम् [प्रति+भास्+ल्युट्] दृष्टि, दर्शन, झलक ।

प्रतिभिन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+भिद्+क्त] 1. पारविद्ध 2. सटा हुआ, जुड़ा हुआ 3. विभक्त ।

प्रतिभूः [प्रति+भू+क्विप्] 1. जमानत, प्रतिभूति, जमानत देने वाला, (उत्तरदायी होने का प्रमाणपत्र), विश्वास, सौभाग्यलाभप्रतिभूः पदानाम्--विक्रम० १।९-साक्ष्य० ११०, १७, ११० १४।४ ।

प्रतिभेदनम् [प्रति--भिद्+ल्युट्] 1. आर पार बींधना, घुसेड़ना 2. काटना, खण्डित करना, फाड़ना 3. (आँख) निकाल लेना 4. विभक्त करना ।

प्रतिभोगः [प्रति+भुज्+घञ्] उपभोग ।

प्रतिमा [प्रति+मा+अङ्+टाप्] 1. प्रतिबिंब, समानता, प्रतिमा, आकृति, वृत्त--रघु० १६।३९ 2. समरूपता, सादृश्य (प्रायः समास में गुरोः कृशानुप्रतिमान् -रघु० २।४९ 3. परछाईं, प्रतिबिंब मृगमिदु-रुज्ज्वलकपोलमयतः प्रतिमाच्छलेन सुदृशामविशत्--शि० ९।४८, ७३, रघु० ७।६४, १२।१०० 4. माप, किनार 5. दोनों दांतों के बीच का हाथी के सिर का भाग । सम० गत (वि०) मूर्ति में वर्तमान,- चंद्रः प्रतिबिंबित चन्द्रमा, चन्द्रमा का प्रतिबिंब--रघु० १०।९५, इसी प्रकार- प्रतिमेंदुः, प्रतिमाशशांकः,- परिचारकः पुजारी, मूर्ति का सेवक ।

प्रतिमानम् [प्रति+मा+ल्युट्] 1. नमूना, प्रतिमूर्ति 2. प्रतिमा, मूर्ति 3. समानता, उपमा, समरूपता 4. बोझ 5 दांतों का मध्यवर्ती सिर का भाग-पृथुप्रतिमानभाग —, शि० ५।३६ 6. परछाईं ।

प्रतिमुक्त (वि०) [प्रति+मुच्+क्त] 1. धारण किया हुआ, पहना हुआ, प्रयुक्त किया हुआ 2. कसा हुआ, बाँधा हुआ, जकड़ा हुआ 3. शस्त्र से सज्जित, हथियारबंद 4. मुक्त, छोड़ा हुआ 5. लौटाया हुआ, वापिस किया हुआ 6. फेंका हुआ, उछाला हुआ (दे० प्रतिपूर्वक 'मुच्') ।

प्रतिमोक्षः, प्रतिमोक्षणम् [प्रति+मोक्ष्+घञ्, ल्युट् वा] मुक्ति, छुटकारा ।

प्रतिमोक्षनम् [प्रति+मुच्+ल्युट्] 1. शिथिल करना 2. प्रतिशोध, प्रतिहिंसा, प्रतिदान--वैरप्रतिमोक्षनाय --रघु० १४।४१ 3. मुक्ति, छुटकारा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतियत्नः [प्रति+यत्+नङ्] 1. प्रयास, उद्योग, चेष्टा 2. तैयारी, परिश्रम द्वारा सम्पादन—शि० ३।५४ 3. पूर्ण या पूरा करना 4. नया पूर्ण सिखाना—सत्तो गुणांतराधानं प्रतियत्नः—पा० २।३।५३ पर काशिका 5. अभिलाषा, इच्छा 6. विरोध, मुकाबला 7. प्रतिहिंसा, प्रतिशोध, बदला 8. बंदी बनाना, कैद करना 9. अनुग्रह।

प्रतियातनम् [प्रति+यत्+णिच्+ल्युट्] प्रतिशोध, प्रतिहिंसा—जैसा कि 'वैरप्रतियातन' में।

प्रतियातना [प्रति+यत्+णिच्+युच्+टाप्] क्लेश, प्रतिहिंसा, मृति—शि० ३।३४।

प्रतियानम् [प्रति+या+ल्युट्] लौटना, प्रत्यावर्तन, वापसी।

प्रतियोगः [प्रति+युज्+घञ्] 1. किसी वस्तु का प्रतिरूप होना या बनाना 2. विरोध, मुकाबला 3 अन्तर्विरोध, वचनविरोध 4. सहयोग 5. विपत्तिनिवारक औषधि, उपचार।

प्रतियोगिन् (वि०) [प्रति+युज्+णिनि] 1. विरोध करने वाला, प्रतीकारक बाधक 2. संबद्ध या तदनुरूप, किसी वस्तु का प्रतिरूप बनाने वाला, प्रायः न्यायविषयक रचनाओं में प्रयुक्त 3. सहयोग करने वाला—(पुं०) 1. विरोधी, विपक्षी, शत्रु—दत्तस्यैवं प्रतियोगिनश्च—विक्रम० १।१।३ 2. प्रतिरूप, जोड़ का।

प्रतियोद्धृ (पुं०) **प्रतियोधः** [प्रति+युध्+तृच्, घञ् वा] शत्रु, विपक्षी।

प्रतिरक्षणम्—रक्षा [प्रति+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] बचाव, संधारण, रक्षा।

प्रतिरंभः [प्रति—रंभ्+घञ्] क्रोध, रोष।

प्रतिरवः [प्रति+रु+अच्] 1. कलह, झगड़ा 2 गूंज, प्रतिध्वनि।

प्रतिरुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध, बाधित, विघ्नयुक्त 2. रुका हुआ, अन्तरित 3. क्षतियुक्त 4. विकलीकृत 5. वेष्टित, घेरा डाला हुआ।

प्रतिरोधः [प्रति+रुध्+घञ्] 1. अटकाव, रुकावट, विघ्न 2. घेरा, नाकेबंदी 3. विपक्षी 4. छिपाना 5. चोरी, डकैती 6. निन्दा, घृणा।

प्रतिरोधकः, प्रतिरोधिन् (पुं०) [प्रति+रुध्+ण्वुल्, णिनि वा] 1. विपक्षी 2. लुटेरा, चोर—मालवि० ५।१० 3. रुकावट।

प्रतिरोधनम् [प्रति+रुध्+ल्युट्] विरोध करना, रुकावट डालना।

प्रतिलंभः [प्रति+लभ्+घञ्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना 2. निन्दा, गाली, खरीखोटी (सुनाना)।

प्रतिलाभः [प्रति+लभ्+घञ्] वापिस लेना, ग्रहण करना, हासिल करना।

प्रतिवचनम्, प्रतिवचस् (नपुं०) **प्रतिवाच्** (स्त्री०) **प्रतिवाक्यम्** [प्रति+वच्+ल्युट्, वच् णिच्+क्विप्] उत्तर, जवाब—प्रतिवाक्यमदत्त्वा केशवः शयमानाय न चेदिभूभुजे—शि० १६।२५, परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्—शि० ४।९.

प्रतिवर्तनम् [प्रति—वृत्+ल्युट्] लौटाना, वापिस करना।

प्रतिवसथः [प्रति+वस्+अथच्] ग्राम, गांव।

प्रतिवहनम् [प्रति+वह्+ल्युट्] वापिस ले जाना, वापिस ले जाने में नेतृत्व करना।

प्रतिवाद [प्रति+वद्+घञ्] 1. उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब 2. इंकार करना, अस्वीकृति।

प्रतिवादिन् (पुं०) [प्रति+वद्+णिनि] 1. विपक्षी 2. प्रतिपक्षी उत्तरवादी (कानून में)।

प्रतिवारः, प्रतिवारणम् [प्रति+वृ+घञ्, प्रति+वृ+णिच्+ल्युट्] परे रखना, दूर रखना।

प्रतिवार्ता [प्रा० स०] वर्णन, सूचना, समाचार, संवाद।

प्रतिवासिन् (वि०) (स्त्री०—नी०) [प्रति—वस्+णिनि] निकट रहने वाला, पड़ौस में रहने वाला—पुं० पड़ौसी।

प्रतिविधातः [प्रति+वि+हन्+घञ्] प्रहार के बदले प्रहार करना, बचाव।

प्रतिविधानम् [प्रति+वि+धा+ल्युट्] 1. प्रतिकार करना, विरोध में कदम करना, विफल करना, विरुद्ध कार्य करना 2. व्यवस्थाक्रम 3. रोक थाम 4. स्वाताप्पन्न संस्कार, सहकारी संस्कार।

प्रतिविधिः [प्रति+वि—धा+कि] 1. प्रतिशोध 2. उपचार, प्रतिक्रिया के उपाय।

प्रतिविशिष्ट (वि०) [प्रति+वि+शास्+क्त] अत्यन्त श्रेष्ठ।

प्रतिवेशः [प्रति+विश्+घञ्] 1. पड़ौसी 2. पड़ौसी का वासस्थान, पड़ौस। समः—वासिन् (वि०) पड़ौस में रहने वाला (पुं०) पड़ौसी।

प्रतिवेशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रतिवेश+इनि] पड़ौसी—दृष्टिं हे प्रतिवेशिनि क्षणमिहाप्यस्मद्गृहे दास्यसि—सा० दा०, मृच्छ० ३।१४।

प्रतिवेश्यः [प्रति+विश्+ण्यत्] पड़ौसी।

प्रतिवेष्टित (भू० क० कृ०) [प्रति+वेष्ट्+क्त] प्रत्यावृत्त विपर्यस्त, पीछे की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतिव्यूढ (भू० क० कृ०) [प्रति+वि+ऊह्+क्त] संग्राम व्यूह रचना में परास्त।

प्रतिव्यूहः [प्रति+वि+ऊह्+घञ्] 1. शत्रु के विरुद्ध सेना की व्यूह रचना 2. समुच्चय, संग्रह।

प्रतिशमः [प्रति+शम्+घञ्] विश्राम, विराम।

प्रतिशयनम् [प्रति+शी+ल्युट्] किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए अनशन करके देवता के सामने पड़े रहना, धरना देना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिशपित (वि०) [प्रति+शप्+क्त] अपने किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए बिना जाने पीछे देवता के सामने धरना देने वाला - अनया च किलास्मै प्रतिशपितोऽयं स्वप्ने यमादिष्टम्—दश० २६१।

प्रतिशापः [प्रति+शप्+घञ्] शाप के बदले शाप, बदले में शाप ।

प्रतिशासनम् [प्रति+शास्+ल्युट्] 1. आदेश देना, दूत के रूप में भेजना, आज्ञा देना 2. किसी दूत को बाहर से बुला भेजना 3. वापस बुलाना 4. विरोधी आदेश, अधिकृत कथन -अप्रतिशासनं जगत् -रघु० ८।२७. (पूर्ण रूप से एक ही शासक के शासन में) ।

प्रतिशिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+शास्+क्त] 1. अभिदिष्ट, प्रेषित शि० १६।१ 2. विसर्जित किया हुआ, अस्वीकृत 3. विख्यात, प्रसिद्ध ।

प्रतिश्रया, प्रतिश्रयानम्, प्रतिश्रयाः [प्रति+श्रि+क+टाप्, ल्युट्, ण वा] जुकाम, गर्दी ।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] शरणगृह, आश्रम 2. घर, आवासस्थान, निवासस्थल- याज्ञ० १।२१० मनु० १०।५१ 3. सभा 4. यज्ञ भवन 5. मदद, सहायता 6. प्रतिज्ञा ।

प्रतिश्रवः [प्रति+श्रु+अप्] 1. स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा 2. गूंज ।

प्रतिश्रवणम् [प्रति+श्रु+ल्युट्] 1. ध्यान पूर्वक सुनना मनु० २।११५ 2. वचन देना, हामी भरना, सहमत होना 3. प्रतिज्ञा ।

प्रतिश्रुत्, प्रतिश्रुतिः (स्त्री०) [प्रति+श्रु+क्विप्, क्तिन्] वही] 1. प्रतिज्ञा 2. गूंज, प्रतिध्वनि रघु० २।४०, १६।३१, शि० १।४८ ।

प्रतिश्रुत (भू० क० कृ०) [प्रति+श्रु+क्त] वचन दिया हुआ, सहमत, हामी भरी हुई ।

प्रतिषिद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+सिध्+क्त] 1. निषिद्ध, वर्जित, अननुमत, अस्वीकृत 2. खण्डित, प्रत्याख्यात ।

प्रतिषेधः [प्रति+सिध्+घञ्] 1. दूर रखना, परे हटाना, हाथ कर दूर कर देना, निकाल देना - विक्रम० १।८ 2. प्रतिषेध यथा 'शास्त्रप्रतिषेध' में 3. मुकरना, अस्वीकृति 4. निषेध करना, विरुद्ध कथन । सम० **अक्षरम्**, **उक्तिः** (स्त्री०) मुकर जाने के शब्द, अस्वीकृति शा० ३।२५, **उपमा** दण्डि द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद, इसकी परिभाषा - न जातु शक्ति-सिद्धोऽस्ते मूर्खेन प्रतिगर्जितुम्, कलंकिनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा काव्या० २।३४ ।

प्रतिषेधकः, प्रतिषेद्धृ (वि०) [प्रति+सिध्+ण्वुल्, तृच् वा] 1. हटाने वाला, निषेध करने वाला, रोकने वाला 2. मना करने वाला (पु०) विघ्नकारक, निवारक ।

प्रतिषेधनम् [प्रति+सिध्+ल्युट्] 1. दूर रखना, परे हटाना, रोकना 2. निवारण करना 3. मुकरना, अस्वीकृति ।

प्रतिष्कः, प्रतिष्कसः [प्रति+स्कंद्+ड, प्रति+कस्+अच्, षुट्] जासूस, संदेशवाहक, दूत ।

प्रतिष्कशः [प्रति+कश्+अच्, षुट्] 1. भेदिया, दूत 2. चाबुक, हंटर ।

प्रतिष्कसः [प्रति+कस्+अच्, षुट्] चाबुक, चमड़े का कोड़ा ।

प्रतिष्टंभः [प्रति+स्तंभ्+घञ्] अवरोध, रुकावट, मुकाबला, विरोध, विघ्न--बाहुप्रतिष्टंभविवृद्धमन्यु:—रघु० ३।३२, ५९ ।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] 1. ठहरना, रहना, स्थिति, अवस्था—अपोऽग्नेरप्रतिष्ठम्—मा० ६, ८० ७।६ 2. घर, निवासस्थान, जन्मभूमि, आधार—रघु० ६।२१, १४।५ 3. स्थैर्य, स्थिरता, दृढ़ता, स्थायित्व, दृढ़ाकार--अप्रतिष्ठे रघुवंशेऽसौ का प्रतिष्ठा कुलस्य नः--उत्तर० ५।२५, अब मालू में पंचप्रतिष्ठा—शा० ७, वंशः प्रतिष्ठां नीतः को० २८०, शि० २।३४ 4. आधार, नींव, ठिकाना जैसा कि 'गृहप्रतिष्ठा' में 5. थाला, टेक, सहारा (अव) कीर्तिभाजन, विभूत अलंकार—व्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा शा० ६।२४, इं प्रतिष्ठे कुलस्य नः ६।२१, कु० ७।२७, महावी० ७।२१ 6. उच्चपद, प्रभुत्वता, उच्च अधिकार —मुद्रा० २।५ 7. ख्याति, यश, कीर्ति, अभिरुचि-सा निषादः प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः- रामा० (उत्तर० २।५) 8. संस्थापना, प्रतिष्ठापन मुद्रा० १।१४ 9. अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति, सिद्धि, (इच्छा की) पूर्ति औत्सुक्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा—शा० १।६ 10. शांति, विश्राम, विश्रान्ति 11. आधार 12. पृथिवी 13. किसी देवप्रतिमा की स्थापना 14. सीमा, हद ।

प्रतिष्ठानम् [प्रति+स्था+ल्युट्] 1. आधार, नींव 2. ठिकाना, स्थिति, अवस्था 3. टांग, पैर 4. गंगा यमुना के संगम पर स्थित एक नगर जो चन्द्रवंश के आदिकालीन राजाओं की राजधानी था—तु० विक्रम० २।५ 5. गोदावरी पर स्थित एक नगर का नाम ।

प्रतिष्ठित (भू० क० कृ०) [प्रति+स्था+क्त] 1. जमाया हुआ खड़ा किया हुआ 2. स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ 3. रक्खा हुआ, अवस्थित 4. संस्थापित, प्रतिष्ठापित, अभिमंत्रित 5. पूर्ण, कार्यान्वित 6. क्रीमती, मूल्यवान् 7. विख्यात, प्रसिद्ध (दे० प्रति पूर्वक स्था)।

प्रतिसंविद् (स्त्री०) [प्रति+सम्+विद्+क्विप्] किसी वस्तु के वियरण का यथार्थ ज्ञान ।

प्रतिसंहारः [प्रति+सम्+हृ+घञ्] 1. पीछे ले जाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वापिस हटाना 2. अल्पता, संपीड़न 3. धारणा शक्ति, समावेश 4. परित्यक्त करना, छोड़ना।

प्रतिसंहृत (भू० क० कृ०) [प्रति+सम्+हृ+क्त] 1. वापिस लिया हुआ, पीछे को खींचा हुआ, एवं प्रतिसंहृतः-शा० १ 2. सम्मिलित करना, अन्तर्गत करना 3. संपीडित।

प्रतिसंक्रमः [प्रति+सम्+क्रम्+घञ्] 1. पुनरच्चारण 2. प्रतिच्छाया, परछाई।

प्रतिसंख्या [प्रति+सम्+ख्या+अङ्+टाप्] चेतना।

प्रतिसंचरः प्रति | सम्+चर्+ट] 1. पीछे मुड़ना 2. पुनरुच्चारण 3. विशेषतः विराट् जगत् का फिर प्रकृति के रूप में लीन हो जाना।

प्रतिसंदेशः [प्रति+सम्+दिश्+घञ्] संदेश का जवाब, संदेश के बदले संदेश।

प्रतिसंधानम् [प्रति+सम्+धा+ल्युट्] 1. एक स्थान पर मिलना, एकत्र होना 2. दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमणकाल 3. उपाय, उपचार 4. आत्मनियंत्रण, आत्म दमन 5. प्रशंसा।

प्रतिसंधिः [प्रति+सम्+धा+कि] 1. पुनर्मिलन 2. गर्भाशय में प्रवेशकरण 3. दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमण काल 4. विराम, उपरम।

प्रतिसमाधानम् [प्रति-सम्+आ+धा+ल्युट्] चिकित्सा, उपचार।

प्रतिसमासनम् [प्रति+सम्+आ+अस्+ल्युट्] 1. सामना होना, जोड़ का होना 2. मुकाबला करना, विरोध करना, टक्कर लेना।

प्रतिसरः,—रम् [प्रति+सृ+अच्] कलाई या गरदन में पहनने का ताबीज,—रः 1. सेवक, अनुचर 2. कंडा, विवाह-कंकण यज्ञस्तोरणप्रतिसरेण करेण पाणिः (अगृह्णात्)—कि० ५।३३ (=कौतुकसूत्र=मल्लि०) 3. पुष्पमाला या हार 4. प्रभात काल 5. सेना का पृष्ठभाग 6. एक प्रकार का जादू 7. घाव का पुराना, या घाव पर पट्टी बांधना।

प्रतिसर्गः [प्रति+सृज्+घञ्] 1. गौण रचना (जैसा कि ब्रह्मा के मानस पुत्रों द्वारा) 2. विघटन, प्रलय।

प्रतिसांवत्सरिकः [प्रतिसंधान+ठक्] भाट, चारण, बंदी।

प्रतिसारणम् [प्रति+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. घाव के किनारों को मलहमपट्टी करना 2. घाव में मलहम लगाने का उपकरण।

प्रतिसीरा [प्रति+सि+कृदु+टाप्, दीर्घ०] परदा, चिक, कनात।

प्रतिसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+सृज्+क्त] 1. भेजा गया, प्रेषित 2. प्रसिद्ध 3. पीछे ढकेला गया, अस्वीकृत 4. नशे में चूर (धरणि के अनुसार 'प्रमत्त')।

प्रतिस्नात (भू० क० कृ०) [प्रति+स्नां+क्त] स्नान किया हुआ।

प्रतिस्नेहः [प्रा० स०] बदले में प्यार, प्रतिप्रेम या बदले में किया गया प्रेम।

प्रतिस्पंदनम् [प्रा० स०] हृदय की धड़कन।

प्रतिस्वनः, प्रतिस्वरः [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि-शि० १३।३१।

प्रतिहत (भू० क० कृ०) [प्रति+हन्+क्त] 1. उलटा मारा हुआ, पछाड़ा हुआ 2. भगाया हुआ, दूर किया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 3. विरोध किया हुआ, अवरुद्ध 4. भेजा हुआ, प्रेषित 5. घृणित, नापसंद 6. हताश, भग्नाश। सम०—मति (वि०) घृणा करने वाला, नापसंद करने वाला।

प्रतिहतिः (स्त्री०) [प्रति+हन्+क्तिन्] 1. उलटकर प्रहार करना, पछाड़ना, ढकेलना 2. पलट पड़ना, परावर्तन-प्रतिहतिं यद्युरर्जनमुष्टयः—कि० १८।५, शि० ९।४९ 3. नाउम्मीदी, भग्नाशा 4. क्रोध।

प्रतिहननम् [प्रति+हन्+ल्युट्] उलट कर प्रहार करना, पछाड़ देना, पलट कर मारना, आघात के बदले आघात करना।

प्रतिहर्तृ (पुं०) [प्रति+हृ+तृच्] पछाड़ने वाला, हटाने वाला, पीछे धकेलने वाला, दूर करने वाला।

प्रति (स्त्री०) हारः [प्रति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. उलट कर प्रहार करना 2. दरवाजा, फाटक 3. दरबान, द्वारपाल 4. जादूगर 5. ऐन्द्रजालिक, जादूभरी चाल। सम०- भूमिः (स्त्री०) (घर की) देहली कु० ३।५८,—रक्षी स्त्री द्वारपाल, प्रतिहारी—रघु० ६।२७।

प्रतिहारकः [प्रति+हृ+ण्वुल्] ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

प्रतिहासः [प्रति-हस्+घञ्] हंसी के बदली हंसी।

प्रतिहिंसा [प्रति+हिंस्+अ+टाप्] प्रतिशोध, बदला।

प्रतिहित (भू० क० कृ०) [प्रति+धा+क्त] साथ जड़ा गया, साथ सटा दिया गया।

प्रतीक (वि०) [प्रति+कन्, दि० दीर्घः] 1. की ओर मुड़ा हुआ 2. विपर्यस्त, उलटा 3. विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत,—कः 1. अवयव, अंग—शि० १८।७९ 2. भाग, अंश,—कम् 1. प्रतिमा 2. मुँह, चेहरा 3. (किसी वस्तु का) अग्रभाग 4. (किसी श्लोक या वाक्य का) प्रथम शब्द।

प्रतीक्षणम्, प्रतीक्षा [प्रति+ईक्ष्+ल्युट्, प्रति+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. इंतजार करना 2. अपेक्षा, आशा 3. ख्याल, विचार, ध्यान।

प्रतीक्षित (भू० क० कृ०) [प्रति+ईक्ष्+क्त] 1. जिसकी इंतजार की गई, अपेक्षा की गई 2. विचार किया गया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतीक्ष्य (सं० कृ०) [प्रति+ईक्ष्+ण्यत्] 1. प्रतीक्षा किये जाने योग्य 2. स्थाल या विचार के योग्य 3. श्रद्धेय, आदरणीय -रघु० ५।१४, शि० २।१०८ 4. अनुसरणीय, प्रतिपालनीय, परिपूरणीय शि० २।१८०।

प्रतीची [प्रति+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च्+ख, नलोपो दीर्घश्च] 1. पश्चिमी, पाश्चात्य 2. भावी, परवर्ती, अनुवर्ती।

प्रतीच्छकः [प्रतिगता इच्छा यस्य प्रा० ब०, कप्] ग्रहण करने वाला।

प्रतीच्य (वि०) [प्रतीची+यत्] पश्चिम में रहने वाला पछाहीं, पाश्चात्यदेशवासी।

प्रतीत (भू० क० कृ०) [प्रति+इ+क्त] 1. प्रस्थित, प्रयात 2. गुजरा हुआ, बीता हुआ, गया हुआ 3. विश्वस्त, भरोसे का 4. प्रमाणित, सत्यापित 5. स्वीकृत, माना हुआ 6. पुकारा गया, ज्ञात, नामक —सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः रघु० १३।५३ 7. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 8 दृढ़सङ्कल्पयुक्त 9. विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला, विश्रब्ध 10. प्रसन्न, खुश-रघु० ३।१२, ५।२६,१४।४७, १६।२२ 11. प्रतिष्ठित 12. चतुर, विद्वान्, बुद्धिमान्।

प्रतीतिः (स्त्री०) [प्रति+इ+क्तिन्] 1. धारणा, निश्चित भरोसा -सं० ७।३१ 2. विश्वास 3. ज्ञान, निश्चय, स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान या समझ अपितु वाच्य-वैचित्र्य प्रतिभासादेव चारुतायप्रतीतिः - काव्य० १० 4. यश, कीर्ति 5. आदर 6. खुशी।

प्रतीत्त (वि०) [प्रति+दा+क्त] वापि दिया हुआ, लौटाया हुआ।

प्रतीपक (पु०) विदेह देश का नाम।

प्रतीप (वि०) [प्रतिगता आपो यत्र, प्रति+अप्+अच्, अपईप् च] 1. विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी —अस्प्रतीपगवादि वंकुत- -रघु० ११।६२ 2. उलटा, विपर्यस्त, बिगड़ा हुआ 3. पिछड़ा हुआ, प्रतिगामी 4. अरुचिकर, अप्रिय 5. अडियल, आज्ञा का उल्लंघन करने वाला, हठी, दुराग्रही पंच० १।४५४ 6. विघ्नकारी, -पः एक राजा का नाम, महाराज शान्तनु के पिता तथा भीष्म के पितामह का नाम, --पम् एक अलंकार का नाम जिसमें तुलना के सामान्य रूप को बदल कर उपमान को उपमेय से तुलना करते हैं—प्रतीपमुपमानस्याप्युपमेयत्वकल्पनम्, त्वल्लोचनसमं पद्मं तद्वक्त्रसमदृशो विधुः--चन्द्रा० ५।९ (और अधिक विवरण तथा परिभाषा को जानकारी के लिए काव्य० १० में वर्णित 'प्रतीप' के अन्तर्गत देखो,—पम् (अव्य०) 1. इसके विपरीत 2. विपरीत क्रमानुसार 3. के विरुद्ध, के विरोध में--भर्तुर्विप्रकृता-ऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः- श० ४।१८। समः - ग (वि०) 1. विरुद्ध चलने वाला 2. विपरीत, प्रतिकूल -रघु० ११।५८,-गमनम्,-गतिः (स्त्री०) उलटा चलना—कुं० २।२५, तरणम् धार के विरुद्ध जाना या नाव चलाना, वि० १।५,—दक्षिणी स्त्री, -वचनम् 1. खण्डन 2. दुराग्रहपूर्ण या टालमटोल करने वाला कहने का ढंग,-विपाकिन् वि०] विपरीत फलदायक (कर्ता पर ही उलटा फल रखने वाला) मा० ५।२३।

प्रतीरम् [प्र+तीर्+क] तट, किनारा।

प्रतीवापः [प्रति+वप्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. (वह औषधि जो काढ़े आदि में) जोड़ी जाय या मिलायी जाय 2. धातु को भस्म करना या पिघलाना 3. छूत की बीमारी, महामारी।

प्रतीवेशः, प्रतीहारः, प्रतीहासः [प्रति+विश्+घञ्, हृ+घञ्] दे० प्रतिवेश आदि।

प्रतीवेशिन् (वि०) [प्रतीवेश+इनि] दे० प्रतिवेशिन्।

प्रतीहारी [प्रतीहार+अच्+ङीष्] 1. स्त्री द्वारपाल 2. डयोढ़ीवान।

प्रतुदः [प्र+तुद्+क] 1. पक्षियों की एक जाति (बाज, तोता, कौवा आदि) 2. चुभोने का उपकरण।

प्रतुष्टिः (स्त्री०) [प्र+तुष्+क्तिन्] तुष्टि, सन्तोष।

प्रतोदः [प्र+तुद्+घञ्] 1. अङ्कुश 2. लम्बा चाबुक 3. चुभोने वाला उपकरण।

प्रतूर्ण (वि०) [प्र+त्वर्+क्त] त्वरित, क्षिप्रगामी, फुर्तीला, तेज।

प्रतोली [प्र+तुल्+घञ्+ङीष्] गली, मुख्य मार्ग, नगर की मुख्य सड़क—प्रापत्प्रतोलीमतुलप्रतापः शि० ३।६४

प्रत्त (भू० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, प्रदान किया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2. विवाह में दिया हुआ, विवाहित।

प्रत्न (वि०) [प्र+त्नप्] 1. पुराना, प्राचीन 2. पहला 3. परम्परा प्राप्त, प्रथागत।

प्रत्यक् (अव्य०) [प्रति--अञ्च्+क्विन्] 1. विरुद्ध दिशा में, पीछे की ओर 2. के विरुद्ध 3. (अपा० के साथ) से पश्चिम में 4. भीतर की ओर, अन्तर की तरफ 5. पहले समय में।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्णः प्रति] 1. दृष्टिगोचर, दृश्य प्रत्यक्षाभिः प्रणतिभिरवतु वस्तामिरष्टाभिरीशः —श० १।१ 2. उपस्थित, दृष्टिगत, आँख के सामने 3. इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियसंज्ञेय 4. स्पष्ट, विशद, साफ 5. सीधा, व्यवधानशून्य 6. सुस्पष्ट, सुव्यक्त 7. शारीरिक, भौतिक, क्षम् 1. प्रत्यक्षज्ञान, आँखों देखा साक्ष्य, इन्द्रियों द्वारा बोध, एक प्रकार का प्रमाण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानम् प्रत्यक्षम्,—तर्क० 2. सुव्यक्तता, सुस्पष्टता (प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षेण, प्रत्यक्षतः, या प्रत्यक्षात् रूप क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त किये जाकर निम्न अर्थ प्रकट करते हैं 1. सामने, की उपस्थिति में, की दृष्टि में 2. खुलकर, सार्वजनिक रूप से 3. सीधे, अव्यवहित रूप से 4. व्यक्तिगत रूप से 5. देखकर 6. स्पष्ट रूप से। सम० -ज्ञानम् आंखों देखी गवाही, सीधा इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान,-दर्शनः-र्शिन् (वि०) आंखों देखा गवाह, -दृष्ट (वि०) स्वयं देखा हुआ,—प्रमा सही ज्ञान या वह जानकारी जो सीधे ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त की जाय, -प्रमाणम् आंखों से देखा सबूत, स्वयं ज्ञानेन्द्रियों का साक्षी होना, फल (वि०) स्पष्ट और दृश्य फलों के रखने वाला,—वादिन् (पु०) वह बौद्ध जो प्रत्यक्ष प्रमाण (आंखों देखी बात) के अतिरिक्त और किसी प्रमाण को न मानता हो,—विहित (वि०) सीधा और स्पष्ट विधान किया हुआ।

प्रत्यक्षिन् (पु०) [प्रत्यक्ष+इनि] आंखों देखा गवाह, प्रत्यक्ष दृष्टा।

प्रत्यग्र (वि०) [प्रतिगतम् अग्रम् श्रेष्ठं यस्य—प्रा० ब०] 1. ताजा, नया, नूतन, अभिनव—प्रत्यग्रहृतानां मासां—वेणी० ३, कुसुमशयनं न प्रत्यग्रम्—चिक्रम० ३।१० मेघ० ४, रघु० १०।५४, रत्न० १।२१ 2. दोहराया हुआ 3. विशुद्ध। सम० वयस् (वि०) अल्पवयस्क, जीवन की परिपक्वावस्था में, तरुण।

प्रत्यंच (वि०) (स्त्री० -प्रतीची), वोपदेव के मतानुसार —प्रत्यची) [प्रति+अञ्च्+क्विन्] 1. की ओर मुड़ा हुआ 2. पश्चवर्ती 3. अनुवर्ती, भावी 4. परे किया हुआ, हटाया हुआ 4. पाश्चात्य, पश्चिम दिशा का। सम० अक्षम् (प्रत्यगक्षम्) आन्तरिक अवयव, -आत्मन् (पु०) प्रत्यगात्मन्) वैयक्तिक जीव, आत्मा,-आशापतिः (प्रत्यगाशापतिः) पश्चिम दिशा का स्वामी, वरुण का विशेषण, -उदच् (स्त्री०) प्रत्यगुदच्) उत्तर पश्चिमी, दक्षिणतः (अव्य० प्रत्यग्दक्षिणतः) दक्षिणपश्चिम की ओर —दृश् (स्त्री०) (प्रत्यग्दृश्) आन्तरिक झांकी, अन्तर्दृष्टि,—मुख (वि०) (प्रत्यङ्मुख) 1. पश्चिमाभिमुखी 2. मुंह मोड़े हुए, स्रोतस् (वि०) (प्रत्यक्स्रोतस्) पश्चिम की ओर बहने वाला —शि० ४।६६ पर मल्लि०, (स्त्री०) नर्मदा नदी का विशेषण।

प्रत्यर्चित (वि०) [प्रति+अर्च्+क्त] सम्मानित, पूजित, अर्चित।

प्रत्यर्पणम् [प्रति+अर्प्+ल्युट्] 1. भोजन करना 2. भोजन।

प्रत्यभिज्ञा [प्रति+अभि+ज्ञा+अङ्+टाप्] जानना, पहचानना —सप्रत्यभिज्ञमिव मामवलोक्य—मा० १।२५।

प्रत्यभिज्ञानम् [प्रति+अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1. पहचानना —प्रत्यभिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्प्रकृतौ—रघु० १२।६।

प्रत्यभिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+ज्ञा+क्त] पहचाना हुआ।

प्रत्यभिभूत (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+भू+क्त] पराजित, जीता हुआ।

प्रत्यभियुक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+युज्+क्त] बदले में अभियोग लगाया हुआ।

प्रत्यभियोगः [प्रति+अभि+युज्+घञ्] 1. अभियोक्ता के विरुद्ध दोषारोप, बदले में दोषारोपण करना —याज्ञ० २।१०।

प्रत्यभिवादः, प्रत्यभिवादनम् [प्रति+अभि+वद्+णिच्+घञ् ल्युट् वा] नमस्कार के बदले नमस्कार, (प्रणाम के बदले आशीर्वाद)—मनु० २।१२६।

प्रत्यभिस्कंदनम् [प्रति+अभि+स्कन्द्+ल्युट्] जवाबी नालिश, प्रत्यारोप।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] 1. धारणा, निश्चित विश्वास, —मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः - मालवि० १।२, संज्ञाप्रत्ययः—पंच० ४ 2. विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, विश्रंभ · कु० ६।२०, शि० १८।६३, भर्तृ० ३।६० 3. संबोध, विचार, भाव, सम्मति 4. यकीन, निश्चयता 5. जानकारी, अनुभव, संज्ञान— स्थानप्रत्ययात् श० ७. 'स्थान की दृष्टि से अन्दाजा लगाते हुए' इसी प्रकार—आकृति प्रत्ययात्· मालवि० १, मेघ० ८ 6. कारण, आधार, क्रिया का साधन—कु० ३।१८ 7. प्रसिद्धि, यश, कीर्ति 8. सुप्, तिङ् आदि प्रत्यय जो शब्द व धातुओं के आगे लगते हैं, कृदन्त व तद्धित के प्रत्यय—शि० १४।६६ 9. शपथ 10. पराश्रयी 11. प्रचलन, अभ्यास, 12. चिह्न 13. वृद्धि, समझ। सम०—कारक, कारिन् (वि०) विश्वास पैदा करने वाला, भरोसा देने वाला, (णी) मुहर, नामांकित मुद्रा या अंगूठी।

प्रत्ययित (वि०) [प्रत्यय+इतच्] 1. विश्वस्त, भरोसे का 2. विश्वासी, विश्वास पूर्वक कहा या लिखा हुआ।

प्रत्ययिन् (वि०) [प्रत्यय+इनि] 1. निर्भर करने वाला, विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला 2. विश्वासपात्र, विश्वास या भरोसे के योग्य।

प्रत्यर्थ (वि०) [प्रति+अर्थ-अच्] उपयोगी, युक्तिसंगत, क्षम 1. उत्तर, जवाब 2. शत्रुता, विरोध।

प्रत्यर्थकः [प्रति ; अर्थ--ण्वुल्] प्रतिपक्षी, विरोधी।

प्रत्यर्थिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति+अर्थ्+णिनि] विपक्षी, विरोधी, शत्रुतापूर्ण,—त्वास्मि भक्तयोरीश्वरनियोगप्रत्यर्थी चिक्रम० २, (पुं०) 1. विपक्षी, विरोधी, शत्रु 2. प्रतिद्वन्द्वी, सम, जोड़ का, बन्दी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलस्य प्रत्यर्थी 3. (कानून में) प्रतिवादी --स धर्मस्थसकः शास्त्रदर्शिप्रत्यर्थिना स्वयम्—रघु० १७।३९, मनु० ८।७९, याज्ञ० २।६ । समः—भूत (वि०) मार्ग में रुकावट, बाधक बना हुआ—कु० १।५९ ।

प्रत्यर्पणम् [प्रति+अर्प+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] वापिस देना, लौटा देना सीताप्रत्यर्पणैषिणः—रघु० १५।८५ ।

प्रत्यर्पित (भू० क० कृ०) [प्रति+अर्प+णिच्+क्त, पुकागमः] लौटाया हुआ, वापिस दिया हुआ ।

प्रत्यवमर्शः, -र्षः [प्रति+अव+मृश्+घञ्] 1. गंभीर चिंतन, गहन मनन 2. परामर्श, नसीहत 3. प्रत्युपसंहार ।

प्रत्यवरोधनम् [प्रति+अव+रुध+ल्युट्] रुकावट, विघ्न ।

प्रत्यवसानम् [प्रति+अव+सो+ल्युट्] खाना या पीना —पा० १।४।५२ ।

प्रत्यवसित (वि०) [प्रति+अव+सो+क्त] खाया हुआ, पीया हुआ ।

प्रत्यवस्कन्दः,—न्दनम् [प्रति+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] विशेष तर्क जिसको कि प्रतिवादी उत्तर के रूप में प्रस्तुत करता है परन्तु वह आरोप के रूप में नहीं समझा जाता, प्रतिवादी का वह उत्तर जिसमें वह वादी के अभियोग का खंडन करता है ।

प्रत्यवस्थानम् [प्रति+अव+स्था+ल्युट्] 1. अपाकरण 2. बाधा, विरोध 3. यथास्थिति, पूर्वस्थिति ।

प्रत्यवहारः [प्रति+अव+हृ+घञ्] 1. वापिस खींचना 2. विश्व का विनाश, (सृष्टि का) प्रलय--सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः रघु० २।४४ ।

प्रत्यवायः [प्रति+अव+अय्+घञ्] 1. ह्रास, न्यूनता 2. अवरोध, रुकावट -उत्तर० १।९ 3. विरुद्ध या विपरीत मार्ग, वैपरीत्य--मनु० ४।२४५ 4. पाप, अपराध, पापमयता--अनुत्पत्तिं तथा चान्यं प्रत्यवायस्य मन्यते—जाबालि० ।

प्रत्यवेक्षणम्, प्रत्यवेक्षा [प्रति+अव+ईक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] ध्यान रखना, ख्याल करना, देखरेख करना—रघु० १७।५३ ।

प्रत्यस्तमयः [प्रति+अस्तम्+अय्+अच्] 1. (सूर्य का) छिपना 2. अन्त, समाप्ति ।

प्रत्याक्षेपक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्रति+आ+क्षिप्+ण्वुल्] ताना मारने वाला, व्यंग्यपूर्ण, उपहासजनक, चिढ़ाने वाला ।

प्रत्याख्यात (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+ख्या+क्त] 1. मना किया हुआ, 2. मुकरा हुआ 3. प्रतिषिद्ध, निषिद्ध 4. एक ओर रखा हुआ, अस्वीकृत 5. पीछे ढकेला हुआ ।

प्रत्याख्यानम् [प्रति+आ+ख्या+ल्युट्] 1. पीछे हटाना, अस्वीकार करना 2. मुकरना, मना करना, इनकार 3. अवहेलना 4. भर्त्सना 5. निराकरण ।

प्रत्यागतिः (स्त्री०) [प्रति+आ+गम्+क्तिन्] वापिस आना, लौटना ।

प्रत्यागमः, —प्रत्यागमनम् [प्रति+आ+गम्+अप्, ल्युट् वा] लौटना, वापिस आना ।

प्रत्यादानम् [प्रति+आ+दा+ल्युट्] वापिस लेना, पुनर्ग्रहण, पुनः प्राप्ति ।

प्रत्यादिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+दिश्+क्त] 1. नियत 2. सूचित 3. अस्वीकृत, पीछे ढकेला हुआ 4. हटाया हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 5. तिरोहित, अंधकार में डाला हुआ—रघु० १०।६८ 6. चेताया हुआ, सावधान किया हुआ ।

प्रत्यादेशः [प्रति+आ+दिश्+घञ्] 1. आदेश, हुक्म 2. सूचना, घोषणा 3. मना करना, मुकरना, अस्वीकृति, पीछे हटाना, निराकरण—प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरता कल्पयामि—मेघ० ११४, ९५, श० ६।९ 4. तिरोहित करना, ग्रस्त करना, तिरोधान, लज्जित करने वाला, अंधकारावृत करने वाला -या प्रत्यादेशो रुग्गदितायाः श्रियः--विक्रम० १, का० ५ 5. सावधानी, चेतावनी 6. विशेष रूप से दिव्य सावधानता, अतिप्राकृतिक चेतावनी ।

प्रत्यानयनम् [प्रति+आ+नी+ल्युट्] वापिस लाना, लौटा लाना ।

प्रत्यापत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+पद्+क्तिन्] 1. वापसी 2. अरुचि, सांसारिक विषयों के प्रति विराग, वैराग्य ।

प्रत्याम्नायः [प्रति+आ+म्ना+घञ्] अनुमान प्रक्रिया का पाँचवाँ अंग अर्थात् निगमन (प्रथम प्रतिज्ञा की आवृत्ति) ।

प्रत्यायः [प्रति+अय्+घञ्] चुंगी, कर ।

प्रत्यायक (वि०) [प्रति+आ+इ+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रमाणित करने वाला, व्याख्या करने वाला 2. विश्वास दिलाने वाला, भरोसा उत्पन्न करने वाला ।

प्रत्यायनम् [प्रति+आ+इ+णिच्+ल्युट्] 1. (दुलहन का) घर ले जाना, विवाह करना 2. (सूर्य का) छिपना ।

प्रत्यालीढम् [प्रति+आ+लिह्+क्त] निशाना लगाते समय का विशेष आसन (विप० आलीढ) ।

प्रत्यावर्तनम् [प्रति+आ+वृत्+ल्युट्] लौटना, वापिस आना ।

प्रत्याश्वस्त (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+श्वस्+क्त] सान्त्वना दिया हुआ, जिलाया हुआ, ताजा दम किया हुआ, ढाढस बंधाया हुआ ।

प्रत्याश्वासः [प्रति+आ+श्वस्+घञ्] फिर से सांस लेना, (सांस का) फिर लौट आना, फिर चलने लगना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्याश्वासनम् [प्रति+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] ढाढस बंधाना, सान्त्वना देना।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] 1. (समय और स्थान की दृष्टि से) अत्यंत सामीप्य, संसक्ति 2. घनिष्ठ संपर्क 3. सादृश्य।

प्रत्यासन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+सद्+क्त] समीप, निकट, संसक्त, सटा हुआ।

प्रत्यास्य (सा) रः [प्रति+आ+स्+अप्, घञ् वा] 1. सेना का पृष्ठभाग 2. एक व्यूह के पीछे दूसरा व्यूह—ऐसी व्यूह रचना या मोर्चाबन्दी।

प्रत्याहरणम् [प्रति+आ+हृ+ल्युट्] 1. वापिस लेना, पुनः ग्रहण करना, वसूली 2 रोकना 3. ज्ञानेंद्रियों का नियन्त्रण करना।

प्रत्याहारः [प्रति+आ+हृ+घञ्] 1. पीछे हटाना, वापिस चलना, प्रत्यावर्तन 2. पीछे रखना, रोकना 3. इन्द्रिय दमन करना 4. सृष्टि का विघटन या प्रलय 5. (व्या० में) एक ही ध्वनि के उच्चारण में कई अक्षरों का बोध, सूत्र के प्रथम अक्षर से लेकर अन्तिम सांकेतिक वर्ण तक जोड़ना या कई सूत्रों के होने पर अन्तिम सूत्र के अन्तिम वर्ण तक—यथा 'अ इ उ ण्' सूत्र का प्रत्याहार 'अण्' तथा 'अ इ उ ण्, ऋलृक्, ए ओङ्, ऐ औच्' इन चार सूत्रों का प्रत्याहार 'अच्' (स्वर) है प्रत्याहार है; व्यंजनों का प्रत्याहार 'हल्' तथा सभी वर्णों का द्योतक 'अल्' प्रत्याहार है।

प्रत्युक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वच्+क्त] उत्तर दिया गया, बदले में कहा गया, जवाब दिया हुआ।

प्रत्युक्ति (स्त्री०) [प्रति+वच्+क्तिन्] उत्तर, जवाब।

प्रत्युच्चारः, प्रत्युच्चारणम् [प्रति+उद्+चर्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] आवृत्ति, दोहराना।

प्रत्युज्जीवनम् [प्रति+उद्+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन होना, जीवन का फिर संचार होना, फिर से जी उठना (आल० भी)।

प्रत्युत (अव्य०) [प्रति+उत द्व० स०] 1. इसके विपरीत—कृतमपि महोपकारं पश्य इव पोतका निरातङ्कं, प्रत्युत हन्तुं यतते काकोदरसोदरः खलो जगति—भामि० १।७६ 2. बल्कि, भी 3. दूसरी ओर।

प्रत्युत्क्रमः, -क्रमणम्,—क्रान्तिः (स्त्री०) [प्रति+उद्+क्रम्+घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1. (किसी कार्य को करने का) बीड़ा उठाना 2. युद्ध की तैयारी 3. शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए प्रयाण 4. गौण कार्य जो मुख्य कार्य में सहायक हो 5. किसी व्यवसाय का समारम्भ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति+उद्+स्था+ल्युट्] 1. किसी के विरुद्ध उठना 2. युद्ध की तयारी करना 3. किसी अभ्यागत का स्वागत करने के लिए (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए) अपने आसन से उठना—मनु० २।२१०।

प्रत्युत्थित (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+स्था+क्त] (किसी मित्र या शत्रु आदि को) मिलने के लिए उठा हुआ।

प्रत्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+पद्+क्त] 1. पुनरुत्पादित, फिर से उत्पन्न 2. उद्यत, तत्पर, फुर्तीला 3. (गणित०)गुणा किया हुआ,—न्नम् गुणा। सम०—मति (वि०) समय पर जिसकी बुद्धि ठीक कार्य करे, हाजिर जवाब 2. साहसी, दिलेर 3. तीव्र, तीक्ष्ण।

प्रत्युदाहरणम् [प्रति+उद्+आ+हृ+ल्युट्] मुकाबले का उदाहरण, विपक्ष का उदाहरण।

प्रत्युद्गत (भू० क० कृ०) [प्रति—उद्+गम्+क्त] अतिथि का स्वागत करने के लिए (सादर अभिवादन स्वरूप) अपने आसन से उठा हुआ - प्रत्युद्गतो मां भरतः ससैन्यः—रघु० १३।६४, १२।६२ 2. किसी के विरुद्ध आगे बढ़ा हुआ।

प्रत्युद्गतिः (स्त्री०), **प्रत्युद्गमः, प्रत्युद्गमनम्** [प्रति+उद्+गम्+क्तिन्, अप्, ल्युट् वा] अतिथि का सत्कार करने के लिए अपने आसन से उठना या बाहर जाना।

प्रत्युद्गमनीयम् [प्रति+उद्+गम्+अनीयर्] स्वच्छ वस्त्र का जोड़ा—गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा—कु० ७।११ प्रत्युद्गमनीय वस्त्रों' का पाठान्तर) दे० 'उद्गमनीय'।

प्रत्युद्धरणम् [प्रति+उद्+हृ+ल्युट्]। पुनः प्राप्त करना, दी हुई वस्तु को वापिस लेना 2. फिर उठाना।

प्रत्युद्यमः [प्रति+उद्+यम्+अप्] 1. प्रतिसंतुलन, समतोलन 2. रोक थाम, प्रतिक्रिया—भर्तृ० ८।८८, पाठान्तर।

प्रत्युद्यात (वि०) [प्रति+उद्+या क्त] दे० 'प्रत्युद्गत'।

प्रत्युल्लम्पनम् [प्रति+उद्+लम्प्+ल्युट्] पुनः उठना, फिर उछलना, पलटा खाकर आना।

प्रत्युपकारः [प्रति+उप+कृ+घञ्] किसी की कृपा या सेवा का बदला चुकाना, उपकार का प्रतिदान, बदले में सेवा।

प्रत्युपकृतिः [प्रति+उप+कृ+क्तिन्, इयङ्, टाप्] सेवा का प्रतिफल।

प्रत्युपदेशः [प्रति+उप+दिश्+घञ्] बदले में परामर्श या उपदेश कु० १।३४।

प्रत्युपपन्न (वि०) [प्रति+उप+पद्+क्त] दे० 'प्रत्युत्पन्न'।

प्रत्युपमानम् [प्रति+उप+मा+ल्युट्] 1. समरूपता का प्रतिरूप 2. नमूना, आदर्श 3. मुकाबले की तुलना —विक्रम० २।३।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्युपलब्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+उप+लभ्+क्त] वापिस प्राप्त, फिर लिया हुआ।

प्रत्युपवेशः, -वेशनम् [प्रति+उप+विश+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] आज्ञा-पालन कराने के लिए किसी को घेरना।

प्रत्युपस्थानम् [प्रति+उप+स्था+ल्युट्] आसपास, पड़ौस।

प्रत्युप्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वप्+क्त] 1. जड़ा हुआ, या जमाया हुआ, जटित, भरा हुआ 2. बोया हुआ 3. स्थिर किया हुआ, गाड़ा हुआ, दृढ़ता पूर्वक टिकाया हुआ, या जमाया हुआ- मा० ५।१०, उत्तर० ३।३५, ४६।

प्रत्युषः, प्रत्यूषस् (नपुं०) [प्रत्योषति नाशयति अन्धकारम् —प्रति+उष्+क, प्रति+उद्+अस्] प्रभात, भोर, तड़का।

प्रत्यूषः, -षम् [प्रति+ऊष्+क] भोर, प्रभात, तड़का —प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः—मेघ० ३१, —षः 1. सूर्य 2. आठ वस्तुओं में से एक वस्तु का नाम।

प्रत्यूषस् (नपुं०) [प्रति+ऊष+असि] भोर, प्रभात, तड़का।

प्रत्यूहः [प्रति+ऊह+घञ्] रुकावट, बाधा, विघ्न, —विस्मयः सर्वथा हेयः प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम्—हि० २।१५।

प्रथ् 1 (भ्वा० आ०—प्रथते, प्रथितम्) 1. (ऐश्वर्य का) बढ़ाना 2. (कीर्ति, अफवाह आदि का) फैलाना—तथा यशोऽस्य प्रथते मनु० ११।१५ 3. सुविख्यात होना, प्रसिद्ध होना —अतस्तदाख्यया तीर्थं पावनं भुवि प्रथ्यते —रघु० १५।१०१, अतोऽस्मि लोके देवे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८, शि० ९।१६, १५।२३, कु० ५।७, मेघ० २४, रघु० ५।६५, ९।७६ 4. प्रकट होना, उदय होना, प्रकाश में आना—श्रमो नु तासां मदनो नु पप्रथे—कि० ८।५३ ॥ (चुरा० उभ०—प्रथयति —ते, प्रथित) 1. फैलाना, उद्घोषणा करना—सज्जना एव साधूनां प्रथयन्ति गुणोत्करम्—दृष्टान्त० १२, भट्टि० १७।१०७ 2. दिखलाना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, सूचित करना परमं वपुः प्रथयतीव जयम्—कि० ५।३५, ५।३, शि० १०।२५, रत्न० ४।१३, शृं० ३।१६ 3. बढ़ाना विस्तृत करना, ऊँचा करना, अधिक करना, बड़ा करना -भर्तृ० २।४५ 4. खोलना।

प्रथनम् [प्रथ्+ल्युट्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2. बखेरना 3. फेंकना, आगे को और बढ़ाना 4. बतलाना, प्रकाशित करना, प्रदर्शन करना 5. वह स्थान जहाँ कोई चीज फैलायी जाय।

प्रथम (वि०) (पुं०, कर्तृ०, ब० व०—प्रथमे या प्रथमाः) [प्रथ्+अमच्] 1. पहला, सबसे आगे का—रघु० ३।४४, हि० २।३६, कि० २।४४ 2. प्रमुख, मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठतम, बेजोड़, अनुपम—शि० १५।४२, मनु० ३।१४७ 3. आदि कालीन, अत्यंत प्राचीन, प्राक्कालीन, प्राथमिक 4. पहले का, पूर्वकालीन, पहला, इससे पूर्व का—प्रथममुकृतापेक्षया—मेघ० १७, रघु० १०।६७ 5. (व्या० में) प्रथम पुरुष (—अन्य पुरुष या पाश्चात्यपदविज्ञान के अनुसार तृतीय पुरुष), मः 1. प्रथम (—अन्य) पुरुष 2. वर्ण का प्रथम व्यंजन,—मा कर्तृकारक,—मम् (अव्य०) 1. पहले, प्रथमतः, सर्वप्रथम, कु० ७।२४, रघु० ३।४ 2. पहले ही, पहले ही से, पूर्वकाल में—रघु० ३।६८ 3. तुरन्त, तत्काल 4. पहले यात्रायें छोड़ियामास तं शक्रेः प्रथमं शरत्—रघु० ४।२४, उत्तिष्ठेत्प्रथमं चास्य चरमं चैव संविशेत्—मनु० २।१९४ 5. अभी अभी, हाल में,- **प्रथमम्, अनन्तरम्, ततः, पश्चात्** पहले, इसके बाद। सम०- **अर्धः** पूर्वार्ध, —**आश्रमः** चार आश्रमों में से पहला आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम,—**इतर** (वि०) 'प्रथम की अपेक्षा और' अर्थात् दूसरा,- **उक्ति** (वि०) पहले उच्चारण किया हुआ—उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः—रघु० ३।२५,—**कल्प**: चलने के लिए बढ़िया मार्ग, प्रथम नियम,—**कल्पित** (वि०) 1. पहले सोचा हुआ 2. पद या महत्त्व की दृष्टि से सर्वोच्च,- **ज** (वि०) सबसे पहले पैदा हुआ,—**दर्शनम्** पहला दर्शन,—**दिवसः** सबसे पहला दिन—मेघ० २, **पुरुषः** प्रथम पुरुष, अन्य पुरुष (अंग्रेजी पद्धति के अनुसार 'तृतीय पुरुष'), —**यौवनम्** युवावस्था का आरंभ, किशोरावस्था, —**वयस्** (नपुं०) बचपन, शैशव,- **विरहः** पहली बार का वियोग,—**वेयाकरणः** 1. अत्यंत पूज्य वैयाकरण 2. व्याकरण में शिशिक्षु,—**साहसः** दण्ड को निम्नतम या प्रथम स्थिति,—**सुकृतम्** पूर्वकृपा या सेवा।

प्रथा [प्रथ+अङ्+टाप्] ख्याति, प्रसिद्धि—हि० १५।२७।

प्रथित (भू० क० कृ०) [प्रथ्+क्त] 1. बढ़ाया हुआ, विस्तार किया हुआ 2. प्रकाशित, उद्घोषित, फैलाया हुआ, घोषणा की हुई,—प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनाम्—मालवि० १ 3. दिखाया गया, प्रदर्शन किया गया, प्रकट किया गया, प्रकाशित किया गया 4. विख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत (दे० 'प्रथ्' भी)।

प्रथिमन् (पुं०) [पृथोर्भावः-पृथु+इमनिच्] चौड़ाई, विशालता, विस्तार, महत्ता—प्रथिमानं दधानेन जघनेन घनेन सः—भट्टि० ४।१७, (गुणा) प्रारंभसूक्ष्माः प्रथिमानमापुः—रघु० १८।४८।

प्रथिवीः (स्त्री०) [=पृथिवी, पृथ्वी०] पृथ्वी, धरती।

प्रथिष्ठ (वि०) [पृथु+इष्ठन्, प्रथादेशः] सबसे बड़ा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सबसे चौड़ा, अत्यन्त विशाल ('पृथु' की अतिशयावस्था)।

प्रथीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [पृथु+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा, विशाल 'पृथु' की तुलनावस्था)।

प्रथु (वि०) [प्रथ्+उ] व्यापक, दूर दूरतक फैला हुआ।

प्रथुकः [पृथ्+उक] चिउड़े, चौले, (तु० पृथुक)।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] 1. दाईं ओर रक्खा हुआ, या खड़ा हुआ दाईं ओर को घूमने वाला 2. सम्मानपूर्ण, श्रद्धालु 3. शुभ, शुभलक्षणयुक्त,—णः, —णम्, —णम् बाईं ओर से दाईं ओर को घूमना जिससे कि दाहिना पार्श्व सदैव उस व्यक्ति या वस्तु की ओर हो जिसकी परिक्रमा की जा रही है, श्रद्धापूर्ण अभिवादन जो इस प्रकार प्रदक्षिणा द्वारा किया जाय —कु० ७।७, याज्ञ० १।२३२,—णम् (अव्य०) 1. बाईं ओर से दाईं ओर को 2. दाईं ओर को, जिससे कि दाहिना पार्श्व सदैव प्रदक्षिणा की गई व्यक्ति या वस्तु की ओर रहे 3. दक्षिण दिशा में, दक्षिण दिशा की ओर—मनु० ४।८७, (प्रदक्षिणी कृ) बाईं ओर से दाईं ओर को जाना (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए) अप्रदक्षिणीकुरुष्व सद्योहुतामग्नीन्—श० ४, प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशनम् रघु० २।७१। सम० **अर्चिस्** (वि०) जिसकी दाईं ओर को ज्वालाएँ उठती हों, दाईं ओर को ज्वालाएँ रखने वाला—प्रदक्षिणार्चिर्विभिनाददादे—रघु० ३।१४ (स्त्री०) दाईं ओर को मुड़ी हुई ज्वालाएँ—रघु० ४।२५,—**क्रिया** प्रदक्षिणा करना, सम्मान प्रदर्शित करने के लिए सम्मानतीय व्यक्ति को दाईं ओर रखना—रघु० १।७६, —**पट्टिका** सहन, आंगन।

प्रदग्ध (भू० क० कृ०) [प्र—दह्+क्त] जलाया गया, भस्म किया गया।

प्रदत्त (भू० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] दे० 'प्रत'।

प्रदरः [प्र+दृ—अप्] 1. तोड़ना, फाड़ना 2. अस्थिभंग होना, दरार पड़ना, फटान, छिद्र, विवर 3. सेना का तितर बितर होना 4. तीर 5. स्त्रियों को होने वाला एक रोग।

प्रदर्पः [प्रा० स०] घमंड, अहंकार।

प्रदर्शः [प्र+दृश्+घञ्] 1. दृष्टि, दर्शन 2. निदेश, आज्ञा।

प्रदर्शक (वि०) [प्र+दृश्+ण्वुल्] दिखलाने वाला, प्रकट करने वाला।

प्रदर्शनम् [प्र+दृश्+ल्युट्] 1. दृष्टि, दर्शन जैसा कि 'गोप्रदर्शन' में 2. प्रकट होना, प्रदर्शन करना, दिखलाना, प्रदर्शनी, नुमायश 3. अध्यापन, व्याख्या करना 4. उदाहरण।

प्रदर्शित (भू० क० कृ०) [प्र+दृश्+णिच्+क्त] दिखलाया हुआ, सामने रक्खा हुआ, प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ, प्रदर्शन किया हुआ 2. जतलाया गया 3. सिखाया हुआ 4. व्याख्या किया गया, उद्घोषित किया गया।

प्रदलः [प्र+दल्+अच्] बाण, तीर।

प्रदवः [प्र+दु+अप्] जलना, ज्वालाएँ उठना।

प्रदातृ (पुं०) [प्र+दा—तृच्] 1. देने वाला, दानी 2. उदार व्यक्ति 3. (विवाह में) कन्या दान करने वाला 4. इन्द्र का विशेषण।

प्रदानम् [प्र+दा+ल्युट्] 1. देना, प्रदान करना, अर्पण करना, प्रस्तुत करना वर°, अग्नि°, काष्ठ° आदि 2. (विवाह में) कन्या दान करना, कन्या° 3. समर्पित करना, अध्यापन करना, शिक्षा देना, विद्या° 4. भेंट, दान, उपहार 5. अंकुश। सम०—**शूरः** अति दानशील पुरुष, दाता।

प्रदानकम् [प्रदान+कन्] पुरस्कार, भेंट, दान, उपहार।

प्रदायम् [प्र+दा+घञ्, युक्] उपहार, भेंट।

प्रदिः, प्रदेयः [प्र+दा+कि, यत् वा] उपहार, भेंट।

प्रदिग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दिह्+क्त] चिकनाई लपेटी हुई, पोती हुई, मालिश किया हुआ,—**ग्धम्** विशेष प्रकार से तला हुआ मांस।

प्रदिश् (स्त्री०) [प्रकृष्टा दिग्यत्र—प्र+दिश्+क्विप्] 1. संकेत करना 2. आदेश, निदेश, आज्ञा 3. परिधि का अन्तर्वर्ती बिन्दु जैसे कि नैर्ऋती, आग्नेयी, ऐशानी और वायवी।

प्रदिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दिश्+क्त] 1. दिखाया हुआ, संकेतित 2. निर्दिष्ट, आदिष्ट 3. स्थिर किया हुआ, आदेश लागू किया हुआ, नियोजित किया हुआ —रघु० २।३९।

प्रदीपः [प्र+दीप्+घञ्+क] 1. दीपक, चिराग (आलं० से भी) अनेल पुराः सुरतप्रदीपाः—कु० १।१०, रघु० २।२४, १६।४, कुलप्रदीपो नृपतिर्दिलीपः रघु० ६।७४, 'कुल का दीपक या अवतंस' ७।२९ 2. जो जानकारी कराता है, या बात को खोलकर कहता है, व्याख्या, विशेषतः ग्रन्थों के नामों के अन्त में प्रयुक्त, यथा महाभाष्य प्रदीप, काव्यप्रदीप आदि।

प्रदीपन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+दीप्+णिच्+ल्युट] 1. जलाना 2. उद्दीपित करना, उत्तेजित करना,—**नम्** सुलगाने की क्रिया, जलाना, उद्दीप्त करना, —**नः** एक प्रकार का खनिज विष।

प्रदीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+दीप्+क्त] 1. सुलगाया हुआ, जलाया हुआ, प्रज्वलित, प्रकाशित 2. देदीप्यमान, जाज्वल्यमान, प्रकाशमान 3. उठाया हुआ, विस्तारित—प्रदीप्तशिरसमाशीविषम् - दश० 4. उद्दीपित, उत्तेजित (क्षुधा आदि)।

प्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दुष्+क्त] 1. बिगड़ा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ, भ्रष्ट 2. दूषित, मलिन, पापमय 3. लम्पट, स्वेच्छाचारी।

प्रदूषित (भू० क० कृ०) [प्र+दूष्+णिच्+क्त] 1. भ्रष्ट, विकृत, विकृत-पतित 2. अपवित्र, मलिन, भ्रष्ट।

प्रदेय (सं० कृ०) [प्र+दा+यत्] दिए जाने के योग्य, (समाचार आदि) दिये जाने के लायक, संवहन किये जाने के उपयुक्त -रघु० ५।१८, ३१।

प्रदेशः [प्र+दिश्+घञ्] 1. संकेत करना, इशारा करना 2. स्थान, क्षेत्र, जगह, देश, प्रदेश, मंडल - पितुः प्रदेशात्सव देवभूमयः—कु० ५।४५, रघु० ५।६०, इसी प्रकार कंठ° तालु° हृदय° आदि 3. बिंता, बालिश्त 4. निश्चय, निर्धारण 5. दीवार 6. (ब्या० में) उदाहरण।

प्रदेशनम् [प्र+दिश्+ल्युट्] 1. संकेत करना 2. उपदेश, अनुदेश 3. भेंट, उपहार, नज़राना विशेष कर देवताओं को या श्रेष्ठतर व्यक्तियों को।

प्रदेश (शि)नी [प्रदेशन+ङीप्, प्र+दिश्+णिनि+ङीप्] तर्जनी अंगुली, अभिसूचक अंगुली।

प्रदेहः [प्र+दिह्+घञ्] 1. लेप करना, तेल या औषधि आदि की मालिश करना 2. लेप, पलस्तर।

प्रदोष (वि०) [प्रकृष्टः दोषो यस्य—प्रा० ब०] बुरा, भ्रष्ट,—षः 1. दोष, त्रुटि, पाप, अपराध 2. अव्यवस्थित स्थिति, विद्रोह, बगावत 3. संध्याकाल, रात्रि का आरंभ—तमः स्वभावास्तेऽध्यन्ये प्रदोषमनुधाविनः—शि० २।७८ (यहाँ प्रदोष का अर्थ मूर्ख रूप से 'भ्रष्ट' और 'पतित' है),—वज्रमुन्दरीजनमनस्तोषप्रदोषः—गीत० ५, कु० ५।४४, रघु० ११९३, ऋतु० १।११। सम०—काल: संध्या समय, रात्रि का आरंभ,—तिमिरम् संध्याकालीन अंधेरा, साँझ का झुटपुटा—कामं प्रदोषतिमिरेण न दृश्यसे त्वम् -मृच्छ० १।३५।

प्रदोहः [प्र+दुह्+घञ्] दुहना, दूध निकालना।

प्रद्युम्नः [प्रकृष्टं द्युम्नं बलं यस्य—प्रा० ब०] कामदेव का विशेषण, कामदेव [यह कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र था। जब यह छः वर्ष की आयु का था तो शंबर नामक दैत्य ने इसका अपहरण कर लिया क्योंकि उसे यह पहले ही ज्ञात हो गया था कि प्रद्युम्न के द्वारा उसकी मृत्यु हो जायगी। शंबर ने उस बालक को घर्घराते हुए समुद्र में फेंक दिया जहाँ उसे एक मछली निगल गई। एक मछुवे ने इस मछली को पकड़ लिया और शंबर के सामने ला रक्खा। जब इस मछली को काटा गया तो इसके पेट से एक सुन्दर बालक मिला। नारद मुनि की इच्छानुसार शंबर की गृहिणी मायावती ने इस बालक का पालनपोषण किया। जब यह बालक जवान हो गया तो स्वयं मायावती का मन इसके सौन्दर्य पर आकृष्ट हो गया। परन्तु प्रद्युम्न ने मायावती का मातृत्व को दूषित करने वाली इस प्रकार की भावनाओं के कारण बुरा-भला कहा, क्योंकि वह तो उसे माता समझता था। परन्तु जब उसे बतलाया गया कि वह विष्णु का पुत्र है, उसे शंबर ने समुद्र में फेंक दिया था, तो उसने क्रोध से आगबबूला होकर शंबर को युद्ध के लिए ललकारा, तथा अपनी माया के द्वारा उसका वध कर दिया। उसके पश्चात् वह और मायावती कृष्ण के घर गए जहां नारद मुनि ने कृष्ण और रुक्मिणी को बतलाया कि यह तो उनका अपना पुत्र है तथा माया-वती उसकी पत्नी है।

प्रद्योतः [प्रकृष्टो द्योतः—प्रा० स०] 1. जग मगाना, प्रकाश, रोशनी 2. आभा, प्रभाव, कान्ति 3. प्रकाश की किरण 4. उज्जयिनी के एक राजा का नाम जिसकी पुत्री से वत्स के राजा उदयन ने विवाह किया था—प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे—मेघ० ३२ (मल्लि० इसे 'प्रक्षिप्त' समझते हैं), रत्न० १।१०।

प्रद्योतनम् [प्र+द्युत्+ल्युट्] 1. जगमगाना, चमकना 2. प्रकाश, नः सूर्य।

प्रद्रवः [प्र+द्रु+अप्] दौड़ना, पलायन।

प्रद्रावः [प्र+द्रु+घञ्] 1. भाग जाना, पलायन, प्रत्यावर्तन, बच निकलना 2. द्रुतगमन, तेजी से जाना।

प्रद्वारः, प्रद्वारम् [प्रगतं द्वारम्—प्रा० स०] दरवाजे या फाटक के सामने का स्थान।

प्रद्वेषः, प्रद्वेषणम् [प्र+द्विष्+घञ्, ल्युट् वा] नापसन्दगी, घृणा, अरुचि।

प्रधनम् [प्र+धा+क्यु] 1. युद्ध, लड़ाई, संग्राम, संघर्ष, -प्रहितः प्रधनाय माधवानहभाकारयितुं महीभृता—शि० १६।५२, क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः—मेघ० ४८, रघु० ११।७७, महावी० ६।३३ 2. युद्ध में लूट का माल 3. विनाश 4. फाड़ना, तोड़ना, चीरफाड़।

प्रधमनम् [प्र+धम्+ल्युट्] 1. लंबा सांस लेना 2. सुंघनी, नस्य।

प्रधर्षः [प्र+धृष्+घञ्] हमला, आक्रमण? बलात्कार।

प्रधर्षणम्, णा [प्र+धृष्+णिच्+ल्युट्] 1. हमला, आक्रमण 2. बलात्कार, दुर्व्यवहार, अपमान।

प्रधर्षित (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+णिच्+क्त] 1. हमला किया गया, आक्रान्त 2. क्षतिग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 3. घमंडी, अहंकारी।

प्रधान (वि०) [प्र+धा+ल्युट्] 1. मुख्य, मूल, प्रमुख, बड़ा, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ जैसा कि प्रधानामात्य, प्रधान-पुरुष आदि में—मनु० ७।२०३ 2. मुख्य रूप से अन्तर्हित, प्रचलित, प्रबल,—नम् 1. मुख्य पदार्थ, अत्यन्त महत्वपूर्ण वस्तु, अधिष्ठाता, मुख्य—न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिचयः मल्लिनाथमतं प्रधानम् –शि० ३।६१, गंगा० १८, प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, शमप्रधानेषु तपोधनेषु श० २।७, रघु० ६।७९ 2. प्रथम विकासकर्ता, जन्मदाता, भौतिक सृष्टि का स्रोत, प्रथम जीवाणु जिसमें से यह समस्त भौतिक संसार विकसित हुआ है (सांख्य० के अनुसार)—न पुनरपि प्रधानवादो अवश्यत्वं प्रधानशास्त्रसिद्धमित्याह –सारी०,दे० प्रकृति भी 3. परमात्मा 4. बुद्धि 5. किसी मिश्रण का मुख्य अंग, नः, नम् 1. राजा का मुख्य सेवक या सहचर (उसका मन्त्री या अन्य विश्वस्त पुरुष) 2. महानुभाव, राजसभासद 3. महत्तत्व, —अङ्गम् 1. किसी वस्तु की मुख्य शाखा 2. शरीर का मुख्य अंग 3. राज्य का प्रधान या प्रमुख व्यक्ति। –अमात्यः प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री,–आत्मन् (पुं०) विष्णु का विशेषण, धातुः शरीर का मुख्य तत्त्व अर्थात् वीर्य, शुक्र, पुरुषः 1. प्रमुख व्यक्ति (राज्य का), 2. शिव का विशेषण, –मन्त्रिन् (पुं०) राज्य का सबसे बड़ा मंत्री, वासस् (नपुं०) मुख्य वस्त्र, वृष्टिः (स्त्री०) वर्षा की भारी बौछार।

प्रधावनः [प्र+धाव्+ल्युट्] वायु, हवा, नम् रगड़ देना, धो देना।

प्रधिः [प्र+धा+कि] 1. पहिये की नाभि या परिणाह —शि० १५।७९, १७।२७ 2. कुआ।

प्रधी (वि०) [प्रकृष्टा धीः यस्य प्रा० ब०] कुशाग्रबुद्धि, (स्त्री०) बड़ी बुद्धि, प्रज्ञा।

प्रधूपित (भू० क० कृ०) [प्र+धूप्+क्त] 1. सुवासित, सुगन्धयुक्त 2. गर्मायी हुआ, तपाया हुआ 3. प्रज्वलित 4. संतप्त, ता 1. दुष्टप्रस्त स्त्री 2. वह दिशा जिस ओर सूर्य बढ़ रहा हो।

प्रधृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+क्त] 1. तिरस्कार पूर्वक वर्तित किया गया 2. घमंडी, अहंकारी, दृप्त या अभिमानी।

प्रध्यानम् [प्र+ध्यै+ल्युट्] 1. गहन विचार या विमर्श 2. विचार या विमर्श।

प्रध्वंसः [प्र+ध्वंस्+घञ्] नाश, सर्वथा विनाश, संहार। सम० –अभावः विनाशजनित अभाव, चार प्रकार के अभावों में से एक, जिसमें विनाश से अभाव की उत्पत्ति होती है, जैसे कि किसी वस्तु की उत्पत्ति के पश्चात्।

प्रध्वस्त (भू० क० कृ०) [प्र+ध्वंस्+क्त] संहार किया हुआ, पूर्ण रूप से नष्ट किया हुआ।

प्रनप्तृ (पुं०) [प्रगतौ नप्तारं जनकतया प्रा० स०] पौत्र का पुत्र, प्रपौत्र।

प्रनष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+नश्+क्त] 1. अन्तर्धान, लुप्त, अदृश्य 2. खोया हुआ 3. मिटा हुआ, मृत 4. बरबाद, समुच्छिन्न, उन्मूलित।

प्रनायक (वि०) [प्रगतो नायको यस्मात् प्रा० स० ब०] 1. जिसका नेता विद्यमान न हो 2. नायक या पथ-प्रदर्शक से रहित।

प्रनाल;-ली (स्त्री०) [प्रा० स०] दे० प्रणाल और प्रणाली।

प्रनिघातनम् [प्र+नि+हन्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रनृत (वि०) [प्र+नृत्+क्त] नाचने वाला, -स्म् नाच।

प्रपक्षः [प्रा० स०] पंख का अंतिम सिरा।

प्रपञ्चः [प्रा० स०] 1. प्रदर्शन, प्रकटीकरण –रागप्रायः प्रपञ्चः—का० १४१ 2. विकास, फैलाव, विस्तार –शि० २०।४४ 3. विस्तारण, विशद व्याख्या, स्पष्टीकरण, विवरण 4. सुविस्तारता, प्रसार बाहुल्य –अलं प्रपञ्चेन 5. बहुविधता, विविधता 6. ढेर, प्राचुर्य, मात्रा 7. दर्शन, दृश्यवस्तु 8. माया, जालसाजी 9. दृश्यमान जगत् जो केवल माया, और नानारूप का प्रदर्शन मात्र है। सम० बुद्धि (वि०) धूर्त, कपटी, –वचनम् विस्तृत प्रवचन, प्रसारयुक्त बातचीत।

प्रपञ्चयति (नामधातु-पर०) 1. दिखलाना, प्रदर्शन करना —प्राञ्चय पञ्चमम् –गीत० १० 2. विस्तार करना, प्रसार करना।

प्रपञ्चित (भू० क० कृ०) [प्र+पंच्+क्त] 1. प्रदर्शित 2. विस्तारित, प्रसारित 3. फैलाया गया, पूरी व्याख्या की गई, विशदीकृत 4. भूल जाने वाला, भटका हुआ 5. धोखे में आया हुआ, छला हुआ।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] 1. उड़ जाना 2. गिराना, अवपात 3. अवतरण 4. मृत्यु, विनाश 5. खड़ी चट्टान, ढलवां चट्टान।

प्रपदम् [प्रा० स०] पैर का अग्रभाग।

प्रपदीन (वि०) [प्रपद+ख] पैर के अग्रभाग से संबद्ध, या अग्रभाग युक्त विस्तृत।

प्रपन्न (भू० क० कृ०) [प्र+पद्+क्त] 1. पधारने वाला, पहुँचने या जाने वाला 2. आश्रय ग्रहण करने वाला, अपनाने वाला–कु० ३।५, ५।५९ 3. शरण लेने वाला, संरक्षण ढूंढने वाला, प्रार्थी, दीन, याचक –शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्—भग० २।७, 4. अनुसरण करने वाला 5. सुसज्जित, युक्त, आविष्टत्व प्राप्त –श० १।१ 6. प्रतिज्ञात 7. हासिल, प्राप्त 8. बेचारा, कष्टग्रस्त।

प्रपप्राडः [प्रपस्य+अल्+अण्, डलयोरभेदः] दे० 'प्रपुनाट'।

प्रपर्ण (वि०) [प्रपतितानि पर्णानि यस्य—प्रा० ब०] पत्तों से रहित (वृक्ष),—जंभ गिरा हुआ पत्ता।

प्रपलायनम् [प्र+परा—अय्+ल्युट्, रस्य लः] भाग खड़ा होना, प्रत्यावर्तन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथा [प्र+पा+अङ्+टाप्] 1. प्याऊ 2. व्याख्यास्थानान्यमल्लसिलिप्ता मस्य कूपाः प्रपाश्च—विक्रमांक० १८।७८ 2. कूआँ, कुण्ड मनु० ८।३१९ 3. पशुओं को पानी पिलाने का स्थान, खेल 4. पानी का भंडार। समः —पालिका बटोहियों को जल पिलाने वाली स्त्री - विक्रमांक० १।८९, १३।१०, वनम् शीतोद्यान।

प्रपाठकः [प्रकृष्टः पाठोऽत्र—प्रा० ब०] 1. पाठ, व्याख्यान 2. किसी की अध्याय या भाग।

प्रपाणिः [प्रकृष्टः पाणिः - प्रा० स०] 1. हाथ का अगला भाग 2. हाथ की खुली हथेली।

प्रपातः [प्र+पत्+घञ्] 1. चले जाना, विदायगी 2. नीचे गिरना, अवपात—मनोरथानामतटप्रपातः - श० ६।९, कु० ६।५७ 3. आकस्मिक आक्रमण 4. वारिप्रवाह, झरना, झाल, वह स्थान जिसके ऊपर पानी गिरता रहता है - रघु० २।२६, 5. तट, बेला, 6. खड़ी चट्टान, ढलवां चट्टान 7. गिरजाना, झड़ जाना —यथा 'केशप्रपात' 8. उत्सर्जन, प्रस्रवण, स्खलन —जैसा कि 'वीर्यप्रपात' में 9 किसी चट्टान से अपने आपको नीचे गिरा देना 10 उड़ान की एक विशेष रीति।

प्रपातनम् [प्र+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, (भूमि पर) गिराना।

प्रपादिकः [प्रा० स०] मोर।

प्रपानम् [प्र+पा+ल्युट्] पीना, पेय पदार्थ।

प्रपानकम् [प्रपान+कन्] एक प्रकार का पेय।

प्रपितामहः [प्रकर्षेण पितामहः—प्रा० स०] 1. पड़ बाबा पड़दादा 2. कृष्ण का विशेषण भग० ११।३९ 3. ब्रह्मा की उपाधि, -ही पड़दादी।

प्रपितृव्यः [प्रा० स०] ताऊ।

प्रपीडनम् [प्र—पीड्+णिच्—ल्युट्] 1. भींचना, निचोड़ना 2 रक्तस्रावावरोधक औषधि।

प्रपीत (न) (वि०) [प्र+पा (प्याय्)+क्त] सूजा हुआ, फूला हुआ।

प्रपुना (ना) ट०, [प्रकर्षेण पुमांसं नाटयति-प्र+पुम्+नट्+णिच्+अण्] चकमदे नाम का वृक्ष, लकवेड़।

प्रपूरणम् [प्र+पूर+ल्युट्] 1. पूरा करना, भरना, पूर्ति करना 2. सन्निविष्ट करना, घुई लगाना 3. सन्तुष्ट करना, तृप्त करना 4. संबद्ध करना।

प्रपूरित (भू० क० कृ०) [प्र+पूर्+क्त] भरा हुआ।

प्रपृष्ठ (वि०) [प्रा० ब०] विशिष्ट पीठ वाला।

प्रपौत्रः [प्रा० स०] पड़पोता—आज० १।७८, —त्री पड़पोती।

प्रफुल्ल (भू०क०कृ०) [प्र+फुल्+क्त]। खिला हुआ, पूर्ण, विकसित—लोध्रद्रुमं मानुमतः प्रफुल्लम्—रघु० २।२९ 'प्रफुल्ल' का पाठान्तर)।

प्रफुल्लिः (स्त्री०) [प्र+फुल्+क्तिन्] खिलना, विस्तरण, पुष्पित होना।

प्रफुल्ल (भू० क० कृ०) [प्र+फल्+क्त, उत्वम् लत्वं च] 1. पूरा खिला हुआ, मंजरित, मुकुलित—न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली—रघु० ६।७९, २।२९, कु० ३।४५, ७।११ 2 खिले हुए फूल की भांति फैली हुई या विस्तारयुक्त (आँख आदि) 3. मुस्कराता हुआ 4. प्रमुदित, उल्लसित, प्रसन्न। समः—नयन, नेत्र,- लोचन (वि०) हर्ष के कारण खिली हुई आंखों वाला,—वदन (वि०) हर्षोत्फुल्ल या हंसमुख, हंसमुख चेहरे वाला।

प्रबद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बंध्+क्त] 1. बांधा हुआ, बंधा हुआ, कसा हुआ 2. रोका हुआ, अवरुद्ध, अटकाया हुआ।

प्रबद्धृ (पुं०) [प्र+बंध्+तृच्] ग्रन्थेता, ग्रन्थकार।

प्रबन्धः [प्र—बन्ध्+घञ्] 1. बंधन, जोड़ या गांठ 2. अविच्छिन्नता, सातत्य, नैरन्तर्य, अविच्छिन्न श्रेणी या परम्परा बिच्छेद मात्र भवि यस्तु कथाप्रबन्धः—का० २३९, क्रियाप्रबन्धादयमध्वराणाम् रघु० ६।२३, ३।५८, मा० ६।३ 3. अविच्छिन्न या सुसंगत वर्णन या प्रवचन अनुज्झितार्थसंबन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः शि० २।७३ 4. साहित्यिक कृति या रचना, विशेषतः काव्यरचना प्रतितिप्रशस्तो नाम्नकविसिंहादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध आदि वास० 5. व्यवस्था, योजना, कल्पना जैसा कि 'कापटप्रबंध' में। समः - कल्पना झूठमूठ की कहानी, किसी तथ्य के उपलक्ष पर आधारित कल्पनाकृति प्रबंधकल्पना स्तोकमस्यां प्राज्ञाः कथां विदुः।

प्रबन्धनम् [प्र—बन्ध्+ल्युट्] बंधन, जोड़ या गांठ।

प्रबभ्रुः (पुं०) इन्द्र का नामान्तर।

प्रभ (व) हूँ (वि०) [प्र+भ (व) हूँ+अच्] सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

प्रबल (वि०) [प्रकृष्टं बलं यस्य - प्रा० ब०] 1. बहुत मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, शूरवीर (पुरुष), रघु० ३।६०, ऋतु० ३।२३ 2. प्रचंड, मजबूत, तीव्र, अत्यधिक, बहुत बड़ा प्रबलपुरोधानया वृष्ट्या —मालवि० ४।२, प्रबलां वेदनाम् रघु० ८।५० 3. महत्त्वपूर्ण 4. भरपूर 5. भयानक, विनाशकारी।

प्रभ (व) **हिका** [प्र+भ (व) ह्लू+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] दे० 'प्रहेलिका'

प्रबाधनम् [प्र+बाध्+ल्युट्] 1. अत्याचार, प्रपीडन 2. अस्वीकृति, मुकरना 3. दूर रखना।

प्रभा (भा) ल०, लम् [प्र+भ (व) ह्लू+णिच्+अच्] 1. कोंपल, अंकुर, किसलय—अपि···प्रवालशोभाम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुबन्धि वीरुधाम्- कु० ५।३४, १।४४, ३।८, रघु० ६।१२, १३।४९ 2. मूंगा 3. द्रोणा की वरदल, ल: 1. शिष्य 2. जन्तु । सम०—अक्षमन्तक: 1. लाल अक्षमंतक वृक्ष 2. मूंगे का वृक्ष, ---पद्मम् लाल कमल, —फलम् लाल चन्दन की लकड़ी, ---भस्मन् (नपुं०) मूंगे की भस्म ।

प्रवाहु: [प्रकृष्टो बाहु:---प्रा० स०] भुजा का अग्रभाग, पहुंचा ।

प्रवाहुकम् (अव्य०) [प्रवाहु+कप्] 1. ऊँचाई पर 2. उसी समय ।

प्रबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बुध+क्त] 1. जगाया हुआ, जागा हुआ 2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर 3. ज्ञाता, जानकार 4. पूरा खिला हुआ, फैला हुआ 5. कार्यारंभ करने वाला, या कार्यान्वित होने वाला (जादू, मंत्र आदि) ।

प्रबोध: [प्र+बुध्+घञ्] 1. जागना (आलं० भी) जागरण, होश में आना, चेतना अप्रबोधाय सुप्तस्य ---रघु० १२।५० मोहादभूत्कष्टतर: प्रबोध: १४।५६ 2. (फूलों का) खिलना, फैलना 3. जागरण, नींद का अभाव 4. सतर्कता, सावधानी 5. ज्ञान, समझ, बुद्धिमत्ता, भ्रम को दूर करना, यथार्थ ज्ञान ---यथा 'प्रबोधचन्द्रोदय' में 6. सांत्वना 7. किसी सुगंध द्रव्य में सुगंध का पुनर्जीवन ।

प्रबोधन (वि०) (स्त्री० नी) [प्र+बुध्+णिच्+ल्युट्] जागरण, जागना,—नम् 1. जागते रहना 2. जाग, जागना 3. सचेत होना 4. ज्ञान, बुद्धिमत्ता 5. शिक्षण, उपदेश देना 6. किसी गंधद्रव्य को सुगंध का पुनर्जीवन ।

प्रबोध (वि) नी [प्रबोधन+ङीप्, प्र+बुध्+णिच्+णिनि+ङीप्] देव उठनी एकादशी, कार्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान् चार मास की नींद लेने के पश्चात् जागते हैं ।

प्रबोधित (भू० क० कृ०) [प्र+बुध+णिच्+क्त] 1. जागा हुआ, जगाया हुआ 2. शिक्षण, प्राप्त, सूचना दिया हुआ ।

प्रभञ्जनम् [प्र+भञ्ज्+ल्युट्] टूकड़े टूकड़े करना,---न: हवा, विशेषकर आँधी, झंझावात नै० १।६१, पंच० १।१२२ ।

प्रभद्र: [प्रगतं भद्रं यस्मात् ---प्रा० ब०] नीम का पेड़ ।

प्रभव: [प्र+भू+अप्] स्रोत, मूल---अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य कु० १।३, अकिंचन: सन् प्रभव: स: संपदाम् —५।७७, रघु० १।७५ 2. जन्म, पैदावश 3. नदी का उद्गमस्थान —तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारै:—मेघ० ५२ 4. उत्पत्ति का कारण, (माता, पिता आदि) जन्मदाता ---तमस्या: प्रभवमवगच्छ —श० १ 5. प्रणेता, रचयिता ---कु० २।५ 6. जन्म स्थान 7. शक्ति, सामर्थ्य, शौर्य, भव्य गरिमा (प्रभाव) 8. विष्णु की उपाधि 9. (समास के अन्त में) उत्पन्न होने वाला, व्युत्पन्न सूर्यप्रभवो वंश: ---रघु० १।२, कु० ३।१५ ।

प्रभवित् (पुं०) [प्र+भू+तृच्] शासक, महाप्रभु ।

प्रभविष्णु (वि०) [प्र+भू+इष्णुच्] मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली, ष्णु: 1. प्रभु, स्वामी ---यत्प्रभविष्णवे रोचते—श० २ 2. विष्णु की उपाधि ।

प्रभा [प्र+भा+अङ+टाप्] 1. प्रकाश, दीप्ति, कान्ति, जगमगाहट, चमक—प्रभास्मि शशिसूर्ययो:—भग० ७।८, प्रभा पतङ्गस्य— रघु० २।१५,३१,६।१८, ऋतु० १।१९, मेघ० ४७ 2. प्रकाश की किरण 3. धूप घड़ी पर सूरज की छाया 4. दुर्गा की उपाधि 5. कुबेर की नगरी का नाम 6. एक अप्सरा का नाम । सम०---कर: 1. सूर्य —रघु० १०।७४ 2. चन्द्रमा 3. अग्नि 4. समुद्र 5. शिव का विशेषण 6. एक विद्वान् लेखक का नाम, मीमांसा दर्शन की उस एक विचारधारा के प्रवर्तक, जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है,---कोटः जुगनू,---तरल (वि०) जगमगाता हुआ न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्—श० १।२६,—मण्डलम् प्रकाश का एक वृत्त, परिवेश—कु० १।२४, ६।४ रघु० ३।६०, १४।१४,—लेखिन् (वि०) कान्तियुक्त, कान्ति का प्रसारक ---विक्रम० ४।३४ ।

प्रभाग: [प्र+भज्+घञ्] 1. भाग, टुकड़ी 2. (गणित०) भिन्न का भिन्न ।

प्रभात (भू० क० कृ०) [प्र+भा+क्त] जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो---ननु प्रभाता रजनी--श० ४, —तम् दिन निकलना, पौ फटना ।

प्रभानम् [प्र+भा+ल्युट्] प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, ज्योति, चमक ।

प्रभाव: [प्र+भू+घञ्] 1. कान्ति, दीप्ति, उजाला 2. गरिमा, यश, महिमा, तेज, भव्य कान्ति—प्रभावानिव लक्ष्यते श० १ 3. सामर्थ्य, शौर्य, शक्ति, अव्यर्थता- पंच० १।७ 4. राजोचित शक्ति (तीन शक्तियों में से एक) 5. अतिमानव शक्ति, अलौकिक-शक्ति रघु० २।४१,६२, ३।४०, विक्रम० १, २, ५, महानुभावता: । सम०---ज (वि०) राजशक्ति से उत्पन्न प्रभाव से युक्त ।

प्रभावणम् [प्र+भाष्+ल्युट्] व्याख्या, अर्थकरण ।

प्रभास: [प्र+भास्+घञ्] दीप्ति, सौन्दर्य, कान्ति, ---स:, -सम् द्वारका के निकट स्थित एक सुविख्यात तीर्थस्थान ।

प्रभासनम् [प्र+भास्+ल्युट्] प्रकाशित होना, जगमग होना, चमकना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभास्वर (वि०) [प्र+भास्+वरच्] उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार।

प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [प्र—भिद्+क्त] 1. अलग किया हुआ, खंडित, फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ 2. टुकड़े २किया हुआ 3. काटा हुआ, विश्लिष्ट किया हुआ 4. मुकुलित, विकसित, खिला हुआ 5. बदला हुआ, परिवर्तित 6. विकसित, विकृत 7. शिथिलित, ढीला 8. नशे में चूर, मदमस्त—कु० ५।८० (दे० प्रपूर्वक भिद्),—नः मतवाला हाथी। सम०—अञ्जनम् काजल।

प्रभु (वि०—भूः—भ्वी) [प्र—भू+डु] 1. बलवान्, मजबूत, शक्तिशाली—ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुं किमुतास्महिक्षाः रघु० २।६२, समाधिभेदप्रभवो भवन्ति—कु० ३।४० 3. जोड़ का—प्रभुर्मल्लो मल्लाय—महा०, भुः 1. अधिपति, स्वामी—प्रभुर्भुगुर्भुवनत्रयस्य यः शि० १।४९ 2. राज्यपाल, शासक, सर्वोच्च अधिकारी 3. स्वामी, मालिक 4. पारा 5. विष्णु 6. शिव 7. ब्रह्मा 8. इन्द्र। सम० —भक्त (वि०) अपने स्वामी में अनुरक्त, राजभक्त (क्तः) बढ़िया घोड़ा, भक्तिः (स्त्री०) अपने स्वामी की भक्ति, राजभक्ति, स्वामिभक्त।

प्रभुता,—त्वम् [प्रभु—तल्+टाप्, प्रभु—त्व] 1. आधिपत्य, सर्वोपरिता, स्वामित्व, शासन, अधिकार श० ५।२५, विक्रम० ४।१२ 2. मिल्कियत।

प्रभूत (भू० क० कृ०) [प्र+भू+क्त] 1. उद्भूत, उत्पन्न 2. प्रचुर, विपुल 3. असंख्य, अनेक 4. परिपक्व, पूर्ण 5. ऊँचा, उत्तुंग 6. लंबा 7. प्रधानत्व में। सम०—यवसेन्धन (वि०) जहाँ हरीघास और ईंधन की बहुतायत हो, वयस् (वि०) वयोवृद्ध, बूढ़ा, उमर-रसीदा।

प्रभूतिः (स्त्री०) [प्र+भू+क्तिन्] 1. उद्गम, मूल 2. शक्ति, सामर्थ्य 3. पर्याप्तता।

प्रभृतिः [प्र+भृ—क्तिन्] 1. आरंभ, शुरू (इस अर्थ में यह बहुधा बहुव्रीहि समास के अन्त में प्रयुक्त इन्द्रप्रभृतयो देवाः आदि)—(अव्य०) 2. से, से लेकर, शुरू करके (अपा० के साथ)—शाश्वात्प्रभृति पोषिता प्रियाम् उत्तर० १।४५, रघु० २।३८,—अद्यप्रभृति आज (अब) से लेकर, अतःप्रभृति, ततःप्रभृति आदि।

प्रभेदः [प्र—भिद्—घञ्] 1. फाड़ना, चीरना, खोलना 2. प्रभाग, वियोग 3. हाथी के गण्डस्थल से मद का बहना—रघु० ३।३७ 4. अन्तर, भेद 5. प्रकार या किस्म।

प्रभ्रंशः [प्र—भ्रंश्—घञ्] गिरना, गिरकर अलग हो जाना।

प्रभ्रंशथुः [प्र—भ्रंश्—अथुच्] नाक का एक रोग, पीनस।

प्रभ्रंशित (भू० क० कृ०) [प्र—भ्रंश्+णिच्+क्त] 1. फेंका गया, डाल दिया गया 2. वञ्चित।

प्रभ्रंशिन् (वि०) [प्र—भ्रंश्+णिनि] टूटकर गिरना, झड़ना।

प्रभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [प्र—भ्रंश्+क्त] गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ, ष्टम् सिर पर विराजमान मुकुट की शिखापर धारण की गई फूल-माला, शिखावलंबिनी फूलमाला।

प्रभ्रष्टकम् [प्रभ्रष्ट+कन्] दे० 'प्रभ्रष्ट'।

प्रमग्न (भू० क० कृ०) [प्र+मस्ज्+क्त] डूबा हुआ, गोता दिया हुआ, डुबोया हुआ।

प्रमत (भू० क० कृ०) [प्र+मन्+क्त] विचारा हुआ।

प्रमत्त (भू० क० कृ०) [प्र+मद्+क्त] 1. नशे में चूर, मदोन्मत्त श० ४।१ 2. उन्मत्त, पागल 3. लापरवाह, उपेक्षक, अनवधान, असावधान, अनपेक्ष (प्रायः अधि० के साथ) 4. उन्मार्गगामी, भूल करने वाला (अपा० के साथ) स्वाधिकाराद्प्रमत्तः—मेघ० १, 5. चौपट करने वाला 6. स्वेच्छाचारी, लम्पट। सम०—गीत (वि०) असावधानतापूर्वक गाया हुआ,—चिरा (वि०) लापरवाह, असावधान, बेखबर।

प्रमथः [प्र—मथ्+अच्] 1. घोड़ा 2. शिव के गण (जो भूत प्रेत माने जाते हैं) जो उसकी सेवा में रत हैं कु० ७।९५। सम०—अधिपः, नाथः पतिः शिव की उपाधि।

प्रमथनम् [प्र—मथ्+ल्युट्] 1 चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, संतप्त करना 2. वध, हत्या 3 मन्थन करना, विलोना।

प्रमथित (भू० क० कृ०) [प्र+मथ्+क्त] 1. पर्याड़ित, कष्टग्रस्त 2. कुचला हुआ 3. कत्ल किया हुआ, वध किया हुआ, मा० २।१८ 4. भली भांति विलोया हुआ, तम् जल रहित छाछ, मट्ठा।

प्रमद (वि०) [प्रकृष्टो मदो यस्य—प्रा० ब०] 1. मदवाला, नशे में चूर (आलं० से भी) 2. आमोदप्रमुद 3. लापरवाह 4. स्वेच्छाचारी, बदचलन,—दः 1. हर्ष, प्रसन्नता, खुशी शि० ३।५४ १३।२ 3. धतूरे का पौधा। सम०—कानन्म्, वनम् राजकीय अन्तःपुर से जुड़ा हुआ, प्रमोद वन, वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रानियों के साथ विहार करता है।

प्रमदक (वि०) [प्रमद+कन्] लम्पट, कामुक।

प्रमदनम् [प्र+मद्+ल्युट्] कामेच्छा।

प्रमदा [प्रमद्+अच्+टाप्] 1. सुन्दरी नवयुवती रघु० ९।३१, श० ५।१७ 2. पत्नी या स्त्री कु० ४।२८, रघु० ८।७२ 3. कन्याराशि। सम०—कानन्म्, —वनम् राजकीय अन्तःपुर के साथ जुड़ा हुआ प्रमोद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्यान (जहां स्त्रियां विहार करती हैं), जनः 1. नवयुवती, तरुणी 2. स्त्री।

प्रमद्वर (वि०) [प्र+मद्+क्वरच्] लापरवाह, अनवधान, असावधान।

प्रमनस् (वि०) [प्रकृष्टं मनो यस्य–प्रा० ब०] 1. खुश, हर्षयुक्त, प्रसन्न, आनन्दित।

प्रमन्यु (वि०) [प्रकृष्टो मन्युः यस्य- प्रा० ब०] 1. क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा चिढ़ा हुआ (अधि० के साथ) रघु० ७।३४ 2 कष्टग्रस्त शोकान्वित, शोकसंतप्त।

प्रमथः [प्र+मी+अच्] 1. मृत्यु 2. बरबादी, नाश, निधन 3. वध, हत्या।

प्रमर्दनम् [प्र+मृद्+ल्युट्] मसल डालना, नष्ट करना, कुचल देना, नः विष्णु का विशेषण।

प्रमा [प्र+मा+अङ्+टाप्] 1. प्रतिबोध, प्रत्यक्षज्ञान 2. (तर्क० में) सही भाव, विशुद्ध ज्ञान, यथार्थ ज्ञानकारी, ठीक ठीक प्रत्यय (यथा रंजते इदं रजतमिति ज्ञानम् तर्क०)।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] 1. (लंबाई चौड़ाई) माप रघु० १८।३८ 2. आकार, विस्तार, परिमाण (लंबाई चौड़ाई) 3. मान, मानक—पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थितः–मुद्रा० २।२१ 4. सीमा, परिमाण 5. साक्ष्य, शहादत, प्रमाण 6. अधिकारी, सम्मोदन, निर्णेता, निश्चायक, वह जिसका शब्द प्रमाण माना जाय श्रुत्वा देवः प्रमाणम् पंच० १, यह सुनकर श्रीमान् ही निर्णय करेंगे (कि क्या करना चाहिए)'–आर्यमिश्राः प्रमाणम्–मालवि० १, मुद्रा० १।१, श० १।२२, व्याकरणे पाणिनिः प्रमाणम् 7. सत्य ज्ञान, यथार्थ प्रत्यय या भाव 8. प्रमाण की रीति, यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का उपाय (नैयायिक केवल चार प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक अनुपलब्धि और अर्थापत्ति दो और मानते हैं। सांख्य केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को ही मानते हैं) 9. मूल्य, मूल 10. एकता 11. वेद, शास्त्र, धर्मग्रन्थ 12. कारण, हेतु, (प्रमाणी कृ) 1. अधिकारी मानना या समझना 2. आज्ञा मानना, अनुमत होना 3. साबित करना, सिद्ध करना 4. यथोचित भाग बांटना। सम० - अधिक (वि०) साधारण से अधिक, अपरिमित, अत्यधिक–श० १।३०,—अन्तरम् प्रमाण की अन्य रीति, –अभावः प्रमाणशून्यता, ज्ञ(–वि०) (तार्किक की भांति) प्रमाण पद्धति का जानकार, (ज्ञः) शिव का विशेषण,—दृष्ट (वि०) अधिकारी द्वारा स्वीकृत,–पत्रम् लिखित अधिकारपत्र, पुरुषः विवादक, निर्णायक, मध्यस्थ,—वचनम्, वाक्यम् अधिकृत वक्तव्य,–शास्त्रम् 1. वेद, धर्मशास्त्र 2. तर्कविज्ञान,–सूत्रम् मापने की डोरी।

प्रमाणयति (ना० धा० पर०) अधिकृत समझना, प्रमाणस्वरूप मानना हि० ११।०।

प्रमाणिक (वि०) [प्रमाण+ठन्] 1. 'साप' का आकार ग्रहण करने वाला 2. प्रमाण या अधिकार का रूप धारण करने वाला।

प्रमातामहः [प्रकृष्टो मातामहः–प्रा० स०] 1. परनाना, ही परनानी।

प्रमाथः [प्र+मथ्+घञ्] 1. प्रपीडन, संताप देना, सताना 2. क्षुब्ध करना, बिलोना 3. वध, हत्या, विनाश सैनिकानां प्रमाथेन शरथमोजायितं त्वया –उत्तर० ५।३१, ४ 4. हिंसा, अत्याचार 5. बलात्कार, बलपूर्वक अपहरण।

प्रमाथिन् (वि०) [प्र+मथ्+णिनि] 1. यन्त्रणा देने वाला, तंग करने वाला, संपीडित करने वाला, कष्ट देने वाला, दुःख पहुंचाने वाला सद्य हृदयप्रमाथिनी सद्य ते विश्वसनीयमायुरुम्–मालवि० ३।२, मा० २।१, कि० ३।१४ 2. वध करने वाला, विनाशकारी 3. क्षुब्ध करने वाला, गतिमान् करने वाला भग० २।६०, ६।३४ 4. फाड़ने वाला, गिराने वाला, पछाड़ने वाला रघु० ११।५८ 5. काट कर गिराने वाला कि० १७।३१।

प्रमादः [प्र+मद्+घञ्] 1. अवहेलना, असावधानी, अनवधान, लापरवाही, भूल-चूक ज्ञातुं प्रमादस्खलितं न शक्यम्—श० ६।२६, चौर० १ 2. मादकता, पागलपन, उन्मत्तता 4. गलती, भारी भूल, गलत निर्णय 5. दुर्घटना, उत्पात, संकट, भयः अहो प्रमादः मा० ३, उत्तर० ३।

प्रमाप्णम् [प्र+मी+णिच्+ल्युट्, पुक्] वध, हत्या।

प्रमार्जनम् [प्र+मृज्+णिच्+ल्युट्] मिटा देना, रगड़ देना, धो देना।

प्रमित (भू० क० कृ०) [प्र+मा (मि)+क्त] 1. नपा तुला, सीमित 2. कुछ, थोड़ा प्रमितविषयां शक्तिं विदन्–महावी० १।५१, शि० १६।८० 3. ज्ञात, समझा हुआ 4. प्रमाणित, प्रदर्शित।

प्रमितिः (स्त्री०) [प्र+मा (मि)+क्तिन्] 1. माप, नाप 2. सत्य या निश्चित ज्ञान, यथार्थ भाव या प्रत्यय 3. किसी प्रमाण या ज्ञान के स्रोत से प्राप्त जानकारी।

प्रमीढ (वि०) [प्र+मिह्+क्त] 1. घना, सघन, सटा हुआ 2. मूत्र बनकर निकला हुआ।

प्रमीत (भू० क० कृ०) [प्र+मी+क्त] मरा हुआ, मृतक, तः यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ या वध किया हुआ पशु।

प्रमीतिः (स्त्री०) [प्र+मी+क्तिन्] मृत्यु, विनाश, निधन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमीला [प्र + मील् + अ + टाप्] 1. तन्द्रा, आलस्य, उत्साहहीनता 2. स्त्रियों के राज्य की प्रभुसत्ताप्राप्त स्त्री का नाम, (जब अर्जुन का घोड़ा उस स्त्री के राज्य में पहुँचा तो उसने अर्जुन के साथ युद्ध किया, परन्तु अर्जुन के विजय हो जाने पर प्रमीला, अर्जुन की पत्नी बन गई)।

प्रमीलित (भू० क० कृ०) [प्र + मील् + क्त] मुँदी हुई आँखों वाला।

प्रमुक्त (भू० क० कृ०) [प्र + मुच् + क्त] 1. शिथिलित 2. स्वाधीन किया हुआ, स्वतंत्र छोड़ा हुआ 3. तितिक्षु, विरक्त 4. डाला हुआ, फेंका हुआ। सम० **कण्ठम्** (अव्य०) फूटफूट कर।

प्रमुग्ध (वि०) [प्रा० ब०] 1. मुँद किये हुए, मुँह मोड़े हुए 2. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, प्रथम 3. (समास के अंत में) (क) प्रधानता में, प्रधान या मुख्य बनाकर—वासुकिप्रमुखाः कु० २।३८ (ख) से युक्त, सहित प्रीतिप्रमुखवचने स्वागतं व्याजहार—मेघ० ४, **खः** 1. आदरणीय पुरुष 2. ढेर, समुच्चय,—**खम्** 1. मुंह 2. अध्याय या परिच्छेद का आरम्भ (**प्रमुखतः, प्रमुखं कृत्वा** विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'के सामने' 'के विरुद्ध' अर्थ को प्रकट करते हैं भग० १।२५, श० ७।२२)।

प्रमुग्ध (वि०) [प्र + मुह् + क्त] 1. मूर्छित, अचेत, 2. अत्यंत प्रिय।

प्रमुद् (स्त्री०) [प्र + मुद् + क्विप्] अत्यंत हर्ष।

प्रमुदित (भू० क० कृ०) [प्र + मुद् + क्त] उल्लसित, आह्लादित, प्रसन्न, आनन्दित। सम०—**हृदय** (वि०) प्रसन्नमना।

प्रमुषित (भू० क० कृ०) [प्र + मुष् + क्त] चुराया हुआ, अपहृत— शि० १७।७१,- **ता** एक प्रकार की पहेली।

प्रमूढ (भू० क० कृ०) [प्र + मुह् + क्त] 1. विस्मित, उद्विग्न, व्याकुल 2. मूर्ख, जड़।

प्रमृत (भू० क० कृ०) [प्र - मृ - क्त] मरा हुआ, मृतक, **तम्** 1. नृत्य 2. खेती।

प्रमृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र + मृज् + क्त] 1. रगड़ दिया गया, धो दिया गया, मिटा दिया गया, साफ किया गया—रघु० ६।४१, ४४ 2. चमकाया हुआ, चमकीला, स्वच्छ।

प्रमेय (वि०) [प्र + मा - यत्] 1. मापे जाने योग्य, निश्चित 2. प्रमाणित किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय, —**यम्** 1. निश्चित ज्ञान की वस्तु, प्रदर्शित उपसंहार, साध्य 2 सिद्ध करने योग्य बात, जो विषय सिद्ध (प्रमाणित) किया जा सके।

प्रमेहः [प्र + मिह् - घञ्] एक प्रकार का मूत्र रोग (धातु क्षीणता या मलमेह आदि) जिसमें मूत्र के साथ धातु या शक्कर गिरती हो।

प्रमोक्षः [प्र + मोक्ष् + घञ्] 1. गिराना, गिरने देना 2. मुक्त करना, स्वतंत्र करना।

प्रमोचनम् [प्र + मुच् + ल्युट्] 1. मुक्त करना, स्वतंत्र छोड़ना 2. उगलना, छोड़ना।

प्रमोदः [प्र + मुद् + घञ्] हर्ष, आह्लाद, उल्लास, प्रसन्नता —प्रमोदनृत्यैः सह वारयोषिताम् रघु० ३।१९, मनु० ३।६१।

प्रमोदनम् [प्र + मुद् + णिच् + ल्युट्] 1. आह्लादित करना आनंदित करना, प्रसन्न करना 2. प्रसन्नता. नः विष्णु का विशेषण।

प्रमोदित (भू० क० कृ०) [प्र - मुद् + णिच् + क्त] प्रसन्न, आह्लादित, हृष्ट, आनंदित,—**तः** कुबेर का विशेषण।

प्रमोहः [प्र - मुह् - घञ्] 1. मूर्छा, बेहोशी, जडता - निरयति करणानां ग्राहकत्वं प्रमोहः मा० १।४१, 2. विकलता, घबड़ाहट।

प्रमोहित (भू० क० कृ०) [प्र - मुह् + णिच् + क्त] आकुलित, उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

प्रयत (भू० क० कृ०) [प्र + यम् + क्त] 1. विनम्रित, जितेन्द्रिय, पूत, पावन, भक्त, धार्मिक अनुष्ठानों एवं साधनाओं से जिसने अपने आपको पवित्र बना लिया है, आत्मसंयमी, - रघु० १।९५, ८।११, १३।७०, कु० १।५८, ३।१६ 2. सोत्साह, अत्युत्सुक 3. सुशील, विनम्र।

प्रयत्नः [प्र - यत् - नङ्] 1. प्रयास, चेष्टा, उद्योग—रघु० २।५६, मुद्रा० ५।२० 2. अनवरत प्रयास, धैर्य 3. श्रम कठिनाई प्रयत्नप्रेक्षणीयः संवृत्तः—श० १, 'दुर्दृश्य' 'दुर्दृष्ट' 4. बड़ी सावधानी, चौकसी—कृतप्रयत्नोऽपि गृहे दिनक्षयति - पंच० १।२०५ 5. (व्या० में) उच्चारण में प्रयास, मुख का वह व्यापार जिसके सहारे वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयस्त (भू० क० कृ०) [प्र + यस् + क्त] अभ्यस्त, सिखाया हुआ, मसाले आदि डाल कर स्वादिष्ट किया हुआ।

प्रयागः [प्रकृष्टो यागफलं यत्र—प्रा० ब०] 1. यज्ञ 2. इन्द्र 3. घोड़ा 4. वर्तमान इलाहाबाद के पास गंगा यमुना के संगम पर बना प्रसिद्ध तीर्थस्थान—मनु० २।२१ (इस अर्थ में शब्द नपुं० भी है)। सम०—**भयः** इन्द्र का विशेषण।

प्रयाचनम् [प्र + याच् + ल्युट्] मांगना, प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

प्रयाजः [प्र + यज् + घञ्] प्रधानयज्ञ संबंधी एक अनुष्ठान।

प्रयाणम् [प्र - या - ल्युट्] 1. कूच करना, प्रस्थान करना, विदा 2. अभियान, यात्रा— मार्ग तावच्छृणु कथयत-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वकप्रयाणानुरूपम् मेघ० १३ 3. प्रगति, अग्रगमन 4. (शत्रु का) अभियान, हमला, आक्रमण, चढ़ाई कार्यं पुरः प्रभूमिव प्रयाणं कुः ३।४३, रघु० ६। ३३ 5. आरंभ, शुरू 6. मृत्यु (इस संसार से) विदा भग० ७।३० 7. घोड़े की पीठ 8. किसी भी जन्तु का पिछला भाग। सम०—भंगः यात्रा के बीच कहीं रुक जाना, ठहरना पंच० १।

प्रयाणकम् [प्रयाण+कन्] यात्रा, प्रस्थान का० ११८, ३०५।

प्रयात (भू० क० कृ०) [प्र+या+क्त] 1. आगे बढ़ा हुआ, गया हुआ, विसर्जित 2. मृतक, मरा हुआ—तः 1. आक्रमण 2. चट्टान, दलदली नट्टल।

प्रयापित (भू० क० कृ०) [प्र+या-णिच्+क्त, पक्] 1. आगे पहुँचाया हुआ, भेजा हुआ 2. भगाया हुआ।

प्रयासः [प्र—यस्+घञ्] 1. अभाव, कमी, (अन्नादि की) महँगाई 2. रोकथाम, नियन्त्रण 3. लम्बाई।

प्रयासः [प्र+यस्+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग रघु० १२।५३ १४।५१ 2. श्रम, कठिनाई।

प्रयुक्त (भू० क० कृ०) [प्र+युज्+क्त] 1. जोड़ा हुआ, काटी जीन आदि कसा हुआ 2. प्रचलित, (शब्द आदि) व्यवहार में लाया हुआ 3. प्रयोग में लाया गया 4. नियत किया हुआ, मनोनीत 5. किया हुआ, प्रतिनिर्दिष्ट 6. उदित, उद्गत, उत्पन्न, फलित 7. युक्त 8. ध्यानमग्न, वेसुध 9. (रुपया आदि) ब्याज पर दिया हुआ 10. प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ (दे० प्र पूर्वक युज्)।

प्रयुक्तिः (स्त्री०) [प्रयुज्+क्तिन्] 1. इस्तेमाल, उपयोग, प्रयोग 2. उत्तेजना, उकसाना 3. प्रयोजन, मुख्य उद्देश्य या ध्येय, अवसर 4. परिणाम, फल।

प्रयुतम् [प्रा० स०] दस लाख की संख्या।

प्रयुत्सुः [प्र+युध्+सन्+उ] 1. योद्धा 2. मेंढा 3. हवा, वायु 4. सन्यासी 5. इन्द्र।

प्रयुद्धम् [प्रा० स०] संग्राम, लड़ाई।

प्रयोक्तृ (वि०) [प्र+युज्+तृच्] 1 उपाय, शब्द आदि का) उपयोग करने वाला 2. अनुष्ठाता, निर्देशक, परिणायक 3. प्रेरक, उत्तेजक, उकसाने वाला 4.प्रणेता, अभिकर्ता - उत्तर० ३।४८ 5. (नाटक का) अभिनयकर्ता 6. ब्याज पर रुपया देने वाला, साहूकार 7. तीरंदाज।

प्रयोगः [प्र+युज्+घञ्] 1. इस्तेमाल, व्यवहार, उपयोग जैसा कि 'शब्द प्रयोग' में अर्थ शब्दों भूरि-प्रयोगाः, अल्पप्रयोगाः इस शब्द का बहुल प्रयोग, या विरल प्रयोग होता है 2. प्रचलित रूप, सामान्य प्रचलन 3. फेंकना, प्रक्षेपण, मुक्त करना (विप० 'संहार')—प्रयोगसंहार विभक्तमंत्रम् —रघु० ५।५७ 4. प्रदर्शनी, अनुष्ठान, (नाटकीय) अभिनयन, नाटक खेलना—देव प्रयोगप्रधानं हि नाटकशास्त्रम् मालवि० १, नाटिका न प्रयोगतो दृष्टा—रत्न० १ 'मंच पर अभिनीत नहीं देखी गई' 5. अभ्यास, (किसी विषय का) प्रायोगिक भाग (विप० शास्त्र या सैद्धान्तिक ज्ञान) तदत्र भवानिमं मां च शास्त्रेष्व योगे च विमृशतु मालवि० १ 6. कार्यविधि का क्रम, सांस्कारिक रूप 7. कृत्य, कार्य 8. पाठ करना, पढ़कर सुनाना 9. आरंभ, शुरू 10. योजना, साधन, युक्ति, तरकीब 11. साधन, उपकरण 12. फल, परिणाम 13 जादू-प्रयोग, ऐन्द्रजालिक रचना, अभिचार 14. ब्याज पर रुपया देना 15. घोड़ा। सम०—अतिशयः प्रस्तावना के पाँच भेदों में से एक जिसमें प्रस्तुत प्रयोग के अन्तर्गत दूसरा प्रयोग इस रीति से उपस्थित किया जाता है कि अकस्मात् पात्र रंगमंच पर प्रवेश करते हैं अर्थात् यहाँ सूत्रधार पात्र प्रवेश का संकेत करता है और इस प्रकार अपने भावी कार्य (नृत्य) की पूर्व सूचना देता है—सा० द० परिभाषा देता है—यदि प्रयोग एकस्मिन् प्रयोगोऽन्यः प्रयुज्यते, तेन पात्रप्रवेशश्चेत् प्रयोगातिशयस्तदा। २६१, निपुण (वि०) नृत्याभ्यास में कुशल—मालवि० ३।

प्रयोजकः (वि०) [प्र+युज्+ण्वुल्] निमित्त बनने वाला, कारण बनने वाला, सम्पन्न करने वाला, नेतृत्व करने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक, —कः 1. नियुक्त करने वाला, जो इस्तेमाल करे या काम ले 2. ग्रंथकर्ता 3. संस्थापक, प्रवर्तक 4. साहूकार, महाजन 5. धर्म शास्त्री, विधायक।

प्रयोजनम् [प्र—युज्+ल्युट्] 1. इस्तेमाल, काम में लगाना, नियुक्ति 2. उपयोग, आवश्यकता, (आवश्यक वस्तु में करण०, तथा उपयोक्ता में संब०) सर्वेषि ····राज्ञा प्रयोजनम्—पंच० १, किसे विभिन्न पृष्ठों पर प्रयोजनम् - का० १४४ 3. ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य, अभिप्राय प्रयोजनमनुद्दिश्य न मंदोऽपि प्रवर्तते, पुत्र प्रयोजना दाराः पुत्रः पिण्डप्रयोजनः, हितप्रयोजनं मित्रं धन सर्वप्रयोजनम् सुभा०, गुणवानऽपि परप्रयोजना —रघु० ८।३१ 4. प्राप्ति का साधन —मनु० ७।१०० 5. कारण, उद्देश्य, निमित्त 6. लाभ, स्वार्थ।

प्रयोज्य (सं० कृ०) [प्र+युज्+ण्यत्] 1. इस्तेमाल करने के योग्य, काम में लाने के योग्य 2. अभ्यास करने के लायक 3. उत्पन्न या पैदा करने के योग्य 4. नियुक्त करने के योग्य 5. चलाने या फेंकने के योग्य (अस्त्र) 6. कार्य आरम्भ करने के योग्य।

प्ररुदित (भू० क० कृ०) [प्र+रुद्+क्त] फूट फूट कर रोया हुआ, मुक्त कंठ से रुदन।

प्ररूढ (भू० क० कृ०) [प्र+रुह्+क्त] 1. पूरा बड़ा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ, पूर्ण विकसित 2. उत्पन्न, उद्भूत, पैदा हुआ —वस्यायमंगात् कृतिनः प्ररूढः - श० ७।१९ 3. बड़ा हुआ 4. गहराई तक गया हुआ यथा 'प्ररूढमूल' में 5. लम्बे बढ़े हुए - यथा 'प्ररूढकेश' 'प्ररूढनख' में।

प्ररूढि: (स्त्री०) [प्र—रुह्—क्तिन्] वर्धन, वृद्धि।

प्ररोचनम् [प्र+रुच्+णिच्+ल्युट्] 1. उत्तेजना, उद्दीपन 2. निदर्शन, व्याख्या 3. (किसी व्यक्ति का) प्रदर्शन जिसमें लोग देख सकें और पसंद करें—अलोकसामान्यगुणस्तनूजः प्ररोचनार्थं प्रकटीकृतश्च -मा० १।१० (यहां 'प्ररोचनार्थं' का अर्थ जगद्धर पंडित 'प्रवृत्ति पाठवार्थं'—'संसार से पूर्णतः परिचित होने के लिए' करते हैं) 4. नाटक में आगे आने वाली बात का रोचक वर्णन 5. ध्येय की पूर्णरूप से प्रतिस्थापना —दे० सा० द० ३८८ (अन्तिम दोनों अर्थ को बतलाने के लिए 'प्ररोचना' भी)।

प्ररोह: [प्र—रुह्—घञ्] 1. अंकुरित होना, अंखुवा निकलना, बढ़ना, बीजांकुरण -यथा शबाकुरप्ररोह 2. अंकुर, अंखुवा (आलं० से भी)—लक्ष्मप्ररोह इव सौवर्णलं त्रिभेद—रघु० ८।९३, प्लक्षात् प्ररोहजटिला-मिव मन्त्रिवृद्धान् १३।७१, कु० ३।६०, ७।१७ 3. किसलय, सन्तान या राजवंशकुलप्ररोह वेणी० ४, महावी० ६।२५ 4 प्रकाशांकुर— कुर्वंति सामंतशिखा-मणीनां प्रभाप्ररोहास्तमयं रजांसि रघु० ६।३३, 5. नवपल्लव या टहनी, शाखा, कोंपल।

प्ररोहणम् [प्र—रुह्—ल्युट्] 1. वर्धन, अंकुरण, स्फुटन 2. कली खिलना, अंकुरण या उगाव 1. टहनी, किसलय स्फुटन, कोंपल।

प्रलपनम् [प्र+लप्—ल्युट्] 1. बात चीत करना, बात, शब्द, संलाप 2. बाचालता, बालकलरव बड़बड़, असंबद्ध बात, बकवास—इदं कस्यापि प्रलपितम् 3. विलाप, रोना-धोना - उत्तर० ३।२९।

प्रलपित (भू० क० कृ०) [प्र+लप्+क्त] कहा हुआ, प्रलाप किया हुआ,—तम् बात दे० ऊपर 'प्रलपन'।

प्रलब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+लभ्+क्त] धोखा दिया हुआ, ठगा हुआ।

प्रलंब (वि०) [प्र+लंब्+अच्, घञ् वा] 1. लटकनशील, नीचे की ओर लटकने वाला—जैसा कि 'प्रलंब केश' में 2. उन्नत—यथा 'प्रलंबनासिक' में 3. मन्थर, विलंबकारी,—बः 1. लटकता हुआ, आश्रित 2. कोई भी नीचे को लटकने वाली वस्तु 3. शाखा 4. कण्ठहार 5. एक प्रकार का हार 6. स्त्री की छाती 7. जस्ता या सीसा 8. एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार डाला था। सम० अंडः वह पुरुष जिसके पोते लटकते हों, -नः, -नम्, हन् (पुं०) बलराम का विशेषण।

प्रलंबनम् [प्र+लम्ब्+ल्युट्] नीचे लटकना, आश्रित रहना।

प्रलंबित (वि०) [प्र+लंब्+क्त] लटकनशील, लटकने वाला, विलंबित।

प्रलंभः [प्र+लभ्+घञ्, मुमागमः] 1. प्राप्त करना, लाभ उठाना, अवाप्ति 2. धोखा देना, छलना, ठगना, प्रवंचना।

प्रलयः [प्र+ली+अच्] 1. विनाश, संहार, विघटन—स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि - भर्तृ० ३।७० ६९, प्रलयं नीत्वा —श० ११।९६, 'तिरोहित करके' (कल्प के अन्त में) 2. संसार का विनाश, विश्वव्यापी विनाश कु० २।९८, मेघ० ७।६ 3. व्यापक विनाश या बरबादी 4. मृत्यु, मरना, निधन,—आरब्धाः प्रलयाय मांसवदहो विक्रेतुमेते वयम् मुद्रा० ५।२१ ।।१४ भग० ११।१४ 5. मूर्छा, बेहोशी, चेतना का न रहना, गश कु० ४।२ 6. (अलं० शा० में) चेतना की हानि (३ व्यभिचारिभावों में से एक—प्रलयः सुख-दुःखादि-गडिमेन्द्रियमूर्छनम्—प्रता० 7. रहस्यध्वनि, 'ओम्' या प्रणव। सम० काल: विश्वनाश का समय, -जलधरः सृष्टि विघटन के अवसर की काली घटा,—वह्निः सृष्टि विघटन के अवसर पर आग,—यौधिः सृष्टि के विनाश का समुद्र।

प्रललाट (वि०) [प्रा० स०] उन्नत मस्तक वाला।

प्रलवः [प्र+लू+अप्] टुकड़ा, कतरा, खंड।

प्रलवित्रम् [प्र+लू+इत्र] काटने का उपकरण।

प्रलापः [प्र+लप्+घञ्] 1. बात, बातचीत, प्रवचन 2. बाचालता, बालकलरव, असंबद्ध बात या बकवाद मनु० १२।६ 3. विलाप, रोना धोना।—उत्तरप्रलापी-पजनिसंकपेः भगवान् वासुदेवः—का० १७५, वेणी० ५।३० । सम०—हन् (पुं० एक प्रकार का अंजन।

प्रलापिन् (वि०) [प्र+लप्+णिनि] 1. बातूनी, बोलने वाला—हं असंबद्धप्रलापिन—वेणी ३ 2. बाचाल, बालकलरव।

प्रलीन (भू० क० कृ०) [प्र+ली+क्त] 1. पिघला हुआ, घुला हुआ 2. लुप्त, विनष्ट 3. निर्बुद्धि, चेतना शून्य।

प्रलून (भू० क० कृ०) [प्र+लू+क्त] काट कर गिराया हुआ।

प्रलेपः [प्र+लिप्+घञ्] लेप, मलहम, चोपड़।

प्रलेपक [प्र+लिप्+ण्वुल्] 1. मलने वाला, लेप करने वाला 2. एक प्रकार का मन्दज्वर।

प्रलेह: [प्र+लिह्+घञ्] एक प्रकार का रसा, शोरवा।

प्रलोठनम् [प्र+लुठ्+ल्युट्] 1. (भूमि पर) लोटना 2. उत्तोलन, उछालना।

प्रलोभः [प्र+लुभ्+घञ्] 1. अतितृष्णा, लालच, लालसा 2. ललचाना, उकसाना।

प्रलोभनम् [प्र+लुभ्+ल्युट्] 1. आकर्षण 2. ललचाना, फुसलाना, लालच देना 3. प्रलोभन की वस्तु, चारा, दाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रलोभनी [प्रलोभन+ङीप्] रेत, बालू।

प्रलोल (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत क्षुब्ध, थरथर करने वाला।

प्रवक्तृ (पुं०) [प्र+वच्+तृच्] 1. वर्णन करने वाला, वक्ता, उद्घोषक 2. अध्यापक, व्याख्याता—मनु० ७।२० 3. सुवक्ता, धाराप्रवाह बोलने वाला।

प्रवगः, प्रवङ्गः, प्रवङ्गमः (पुं०) बंदर, दे० 'प्लवंग' और 'प्लवङ्गमः'।

प्रवचनम् [प्र+वच्+ल्युट्] 1. बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना, पंच० १।१९० 2. अध्यापन, व्याख्यान 3. बोलकर समझाना, व्याख्या करना, अर्थ करना महावी० ४।२५ 4. वाग्मिता 5. धर्मशास्त्र, मनु० ३।१८४। समः पटु (वि०) बात करने में कुशल, वाग्मी।

प्रवटः [प्र+वट्+अच्] गेहूँ।

प्रवण (वि०) [प्र+वण्+अच्] 1. ढलवाँ, ढलान वाला, झुकावदार, नीचे को बहने वाला 2. ढालू, दुरारोह, विषमतायी, चढ़ाव जैसा 3. कुटिल, झुका हुआ, 4. अनुरक्त, प्रवृत्त, संलग्न [प्रायः समास के अन्त में] वचनप्रवणः—हि० ३।१९ 5. भक्त, अनुरक्त, व्यस्त, तुला हुआ, झुका हुआ, भरा हुआ नृभिः प्राणत्राण-प्रवणमतिभिः कैश्चिदधुना - भर्तृ० ३।२९, शि० ८।३५, मुद्रा० ५।२१, कि० २।४४ 6. अनुकूल, उत्सुक—कु० ४।४५ 7. आतुर, तत्पर कि० २।८ 8. युक्त, सम्पन्न 9. विनम्र, सुशील, विनीत 10. मुझाया हुआ, बर्बाद, क्षीण, णः चौराहा, -णम् 1. उतार, ढलवाँ उतार, चढ़ाव 2. पहाड़ का पार्श्वभाग, ढलान, झुकाव।

प्रवत्स्यत् (वि०) (स्त्री०-ती, त्नी) [प्र+वस्+स्य (लृट्) +शतृ] यात्रा पर जाने के लिए तैयार। समः पतिका उस नायक की पत्नी जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार बैठा है (रीतिकाव्यों में आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक)।

प्रवयणम् [प्र+वे+ल्युट्] 1. बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग 2. अङ्कुर्या शि० १३।१९।

प्रवयस् (वि०) [प्रगतं वयो यस्य प्रा० ब०] बड़ी उम्र का, बूढ़ा, बूढ़ा केऽप्यते प्रवयसस्त्वां दिदृक्षवः—उत्तर० ४, रघु० ८।१८।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1. मुख्य, प्रधान, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य, सर्वोत्तम, श्रीमान् सकलैके विरयति प्रवरो विवादः मृच्छ० ३।३, मनु० १०।२७, घट० १६ 2. श्रेष्ठ, रः 1. बुलावा, आह्वान 2. एक विशेष प्रकार का आवाहन जो अग्न्याधान के अवसर पर अग्नि को संयोजित किया जाता है 3. वंश परम्परा 4. कुल, परिवार, वंश 5. पूर्वज 6. गोत्रप्रवर्तक ऋषि 7. सन्तान, वंशज 8. ढकना, चादर, रम् अगर की लकड़ी। समः—वाहनौ (द्वि० व०) अश्विनी-कुमारों का विशेषण।

प्रवर्गः [प्रवृज्यते निः क्षिप्यते हविरादिकमस्मिन्—प्र+वृज्+घञ्] 1. यज्ञीय अग्नि 2. विष्णु का विशेषण।

प्रवर्ग्यः [प्र+वृज्+ण्यत्] सोमयाग से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान।

प्रवर्तः [प्र+वृत्+घञ्] आरंभ, उपक्रम, काम में लगाना।

प्रवर्तक (वि०) (स्त्री०-तिका) [प्र+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. चालू करने वाला, स्थापित करने वाला 2. प्रगतिशील, उन्नति, आगे बढ़ाने वाला 3. पैदा करने वाला, जन्म देने वाला 4. प्रबोधक, प्रोत्साहक, उकसाने वाला, भड़काने वाला (बुरे अर्थ में), -कः जन्मदाता, प्रवर्तक, प्रणेता 2. प्रबोधक, प्रोत्साहक 3. विवाचक, मध्यस्थ।

प्रवर्तनम् [प्र+वृत्+ल्युट्] 1. चलते रहना, आगे बढ़ना 2. आरंभ, शुरू 3. कार्यारम्भ, नींव डालना, संस्थापन, प्रतिष्ठापन 4. प्रोत्साहन, बलपूर्वक चलाना, उद्दीपन 5. व्यस्त होना, काम में लगना 6. होना, घटित होना 7. क्रियता, कार्य 8. व्यवहार, आचरण, कार्यविधि, -ना कार्य में प्रेरित करना, प्रोत्साहन देना।

प्रवर्तयितृ (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+तृच्] संचालन करने वाला, या जो नींव डालता है, संस्थापित करता है और उसे चलाता रहता है या ढकेलता है।

प्रवर्तित (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+(णिच्)+क्त] 1. मोड़ दिया हुआ, चलाया हुआ, लुढ़काया हुआ, चक्कर खाने वाला रघु० ९।६६ 2. नींव डाला हुआ 3. प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ, भड़काया हुआ 4. सुलगाया हुआ 5. जन्म दिया हुआ, निर्मित 6. पवित्र किया हुआ, छाना हुआ मनु० ११।१९६।

प्रवर्तिन् (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+णिन्] 1. प्रगतिशील, आगे बढ़ने वाला 2. सक्रिय रहने वाला 3. जन्म देने वाला, प्रभावी 4. हस्तमैथुन करने वाला।

प्रवर्धनम् [प्र+वृध्+ल्युट्] वृद्धि करना, बढ़ाना।

प्रवर्षः [प्र+वृष्+घञ्] भारी वृष्टि, मूसलाधार वर्षा।

प्रवर्षणम् [प्र+वृष्+ल्युट्] 1. बरसना 2. पहली वृष्टि।

प्रवसनम् [प्र+वस्+ल्युट्] विदेश जाना, विदेश यात्रा, यात्रा पर जाना।

प्रवहः [प्र+वह्+अच्] 1. बहना, धार बनकर बहना 2. वायु 3. वायु के सात मार्गों में से एक (जो ग्रहों को गतिमान् करता है।

प्रवहणम् [प्र+वह्+ल्युट्] 1. बन्द गाड़ी या पालकी (स्त्रियों के लिए) 2. गाड़ी, वाहन, सवारी 3. जहाज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रवल्हिः,—ल्ही [प्र+वल्ह्+इन्, प्रवल्हि+ङीष्] दे० 'प्रहेलिका'।

प्रवाच् (वि०) [प्रा० ब०] वाग्मी, वक्ता—(कुर्वते) उदात्तप्यनुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः—शि० २।२५ 2. बातूनी, वाचाल—मुद्रा० ३।१६।

प्रवाचनम् [प्र+वच्+णिच्+ल्युट्] घोषणा, उद्घोषणा, प्रकथन।

प्रवाणम् [प्र+वे+ल्युट्] बुने हुए कपड़ों के किनारों के गोट लगाना या छाँटना या सम्भालना।

प्रवाणिः,—णी (स्त्री०) [प्रवाण+ङीष्, नि० ह्रस्वो वा] जुलाहे की ढरकी।

प्रवात (भू० क० कृ०) [प्रकृष्टो वातो यस्मिन्—प्रा० ब०] तूफान में पड़ा हुआ—तम् 1. वायु का झोंका, ताजा हवा—प्रवातशयनस्था देवी मालवि० ४ 2. तूफानी हवा, आँधी—ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः श० ६, 3. हवादार स्थान, कु० १।४६।

प्रवादः [प्र+वद्+घञ्] 1. शब्द या ध्वनि का उच्चारण 2. अभिधान करना, उल्लेख करना, प्रकथन करना 3. प्रवचन, वार्तालाप 4. बात, प्रतिवेदन, अफवाह, किंवदन्ती अनुरागप्रवादस्तु वत्सयोः सार्वलौकिकः मा० १।१३, ध्यात्वा मानुषं खादतीति लोकप्रवादो दुर्निवारः—हि० १, रत्न० ४।५ 5. आख्यायिका, गल्प 6. विवाद संबंधी भाषा 7. चुनौती के शब्द, पारस्परिक विरोध—इत्थं प्रवादं युधि संप्रहारं प्रचक्रतुरामनिशाविहारौ—भट्टि० २।३६।

प्रवारः, प्रवारकः [प्र+वृ+घञ्, प्रवार+कन्] चादर, आच्छादन।

प्रवारणम् [प्र+वृ+णिच्+ल्युट्] 1. (इच्छा) पूर्ण करना छाँट की प्राथमिकता 3. निषेध, विरोध 4. काम्यदान।

प्रवालः (पुं०) दे० 'प्रवाल:'।

प्रवासः [प्र+वस्+घञ्] 1. विदेशगमन, विदेशयात्रा, घर पर न रहना, परदेशनिवास रघु० १६।४४। सम० गत, -स्थ,—स्थित (वि०) विदेश की यात्रा करना, घर पर न रहने वाला।

प्रवासनम् [प्र+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. विदेश निवास, अस्थायी रूप से वास करना 2. निर्वासन, देशनिकाला, वध, हत्या।

प्रवासिन् (पुं०) [प्र+वस्+णिनि] यात्री, बटोही, परदेशी।

प्रवाहः [प्र+वह्+घञ्] 1. बहाव, धार बन कर बहना 2. नदी, पेटा या जलमार्ग, धारा प्रवाहस्ते वारां श्रियमयमपारां दिशतु नः—गंगा० २, रघु० ५।४६, १३।१०, ४८, कु० १।५४, मेघ० ४६ 3. बहाव, बहता हुआ पानी 4. अविच्छिन्न बहाव, अटूट शृंखला, नैरन्तर्य 5. घटना क्रम (नदी की धार की भाँति लुढ़कना) 6. क्रियता, सक्रिय व्यस्तता 7. तालाब, झील 8. बढ़िया घोड़ा (प्रवाहे मूत्रितम्) नदी में मूतना (गा०), व्यर्थ कार्य करना (आल०)।

प्रवाहकः [प्र+वह्+ण्वुल्] भूत प्रेत, पिशाच।

प्रवाहणम् [प्र+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. हाँक कर आगे बढ़ना 2. दस्त कराना।

प्रवाहिका [प्र+वह्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] दस्त लग जाना।

प्रवाही [प्रवाह+ङीष्] रेत, बालू।

प्रविकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+कृ+क्त] 1. बखेरा हुआ, इधर उधर छितराया हुआ 2. तितर बितर किया हुआ, फैलाया हुआ।

प्रविख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+वि+ख्या+क्त] 1. नामी, बुलाया हुआ 2. प्रसिद्ध, मशहूर, विश्रुत।

प्रविख्यातिः [प्र+वि+ख्या+क्तिन्] मशहूरी, कीर्ति, प्रसिद्धि।

प्रविचयः [प्र+वि+चि+अच्] परीक्षा, खोज, अनुसंधान।

प्रविचारः [प्रा० स०] विवेचन, विवेक।

प्रविजेतनम् [प्र+वि+जित्+ल्युट्] संगत्र।

प्रवितत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+तन्+क्त] 1. बिछाया हुआ, फैलाया हुआ 2. खिंचे हुए, अलङ्कृत (बाल)।

प्रविदार [प्र+वि+दृ+घञ्] फट कर टूकड़े टूकड़े होना, खुलना।

प्रविदारणम् [प्र+वि+दृ+णिच्+ल्युट्] 1. फाड़ना, विदीर्ण करना, तोड़ना, फट कर टुकड़े टुकड़े होना 2. कली लगना 3. संघर्ष, युद्ध, लड़ाई 4. भीड़भाड़, गड़बड़ी, हल्ला-गुल्ला।

प्रविद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+व्यध्+क्त] डाला हुआ, फेंका हुआ।

प्रविद्रुत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+द्रु+क्त] तितर-बितर किया हुआ, भगाया हुआ, बखेरा हुआ।

प्रविभक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+भज्+क्त] 1. अलग किया गया, वियुक्त, 2. हिस्से किया गया, विभाजन किया गया, बाँटा गया, वितरित किया गया—ज्योतींषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मिः—श० ७।६।

प्रविभागः [प्र+वि+भज्+घञ्] भाग, तकसीम, वितरण, वर्गीकरण—रघु० १६।२ 2. हिस्सा, अंश।

प्रविरः (पुं०) पीला चन्दन।

प्रविरल (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत दूर दूर, वियुक्त, अलगाया 2. बहुत कम, बहुत थोड़े, स्वल्प, थोड़ा —प्रविरला इव मुग्धवधूकथा—रघु० ९।३४।

प्रविलयः [प्र+वि+ली+अच्] 1. पिघलकर बह जाना 2. पूरी तरह घुल जाना या अवशुष्क हो जाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रविलुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+लुप्+क्त] काटा हुआ, निकाला हुआ, हटाया हुआ।

प्रविवादः [प्र+वि+वद्+घञ्] झगड़ा कलह, तकरार।

प्रविविक्त (वि०) [प्रा० स०] 1. बिल्कुल अकेला 2. वियुक्त, अलग किया हुआ।

प्रविश्लेषः [प्र+वि+विलष्+घञ्] वियोग, जुदाई।

प्रविष्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+सद्+क्त] खिन्न, उदास, हतोत्साह।

प्रविष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+क्त] 1. अन्दर गया हुआ, पुसा हुआ—प्रत्यर्थेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्—श० १।७ 2. लगा हुआ, व्यस्त 3. आरब्ध।

प्रविष्टकम् [प्रविष्ट+कन्] रंग भूमि का द्वार।

प्रविस्त (स्ता) रः [प्र+वि+स्तृ+अप्, घञ् वा] परिधि, वृत्त।

प्रवीण (वि०) [प्रकृष्टा संसाधिता वीणा येन प्रा० ब०] चतुर, कुशल, जानकार आमोदानथ हरिदंशुराणि नेतुं नवान्यां जगति समीरणात्प्रवीणः—भामि० १।१५, कु० ७।४८,।

प्रवीर (अ०) [प्रा० स०] 1. अग्रणी, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य · रघु० १४।२९ १६।१, भग० ११।४८ 2. महावृत, शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न,—रः 1 बहादुर व्यक्ति, नायक, योद्धा 2. मुख्य, पूज्य व्यक्तित्व।

प्रवृत (भू० क० कृ०) [प्र+वृ+क्त] चुना हुआ, संकलित, छांटा हुआ।

प्रवृत्त (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+क्त] 1. आरंभ किया गया, शुरु किया गया, प्रगत 2. स्थिर किया हुआ —अविरप्रवृत्ते ग्रीष्मसमयमधिकृत्य—श० १ 3. व्यस्त, संलग्न 4. जाने के लिए उद्यत, कटिबद्ध 5. स्थिर, निश्चित, निर्धारित 6. निर्बाध, विवादरहित 7. गोल, त्तः गोल आभूषण।

प्रवृत्तकम् [प्रवृत्त+कन्] रंग भूमि में अवतरण।

प्रवृत्तिः (स्त्री०) [प्र+वृत्+क्तिन्] 1. निरन्तर प्रगमन, प्रगति, आगे बढ़ना 2. उदय, मूल, स्रोत, (शब्दों का) प्रवाह—प्रवृत्तिरासीच्छब्दानां चरितार्थी चतुष्टयी —कु० २।१७ 3. दर्शन, प्रकटीकरण—कुसुमप्रवृत्तिसमयं—श० ४।१७, रघु० ११।४३, १४।२९, १५।४ 4. उदय, आरंभ, शुरु—आकालिकी वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिं —कु० ३।३४ 5. प्रयोग, व्यसन, झुकाव, रुझान, रुचि, प्रवणता—श० ५।२२ 6. आचरण, व्यवहार रघु० १४।७३ 7. काम में लगाना, व्यवसाय, क्रियाशीलता कु० ६।२६ 8. प्रयोग, नियोजन, (शब्द का) प्रचलन 9. अनवरत प्रयत्न, धैर्य 10. सार्थकता, भावार्थ, (शब्द की) स्वीकृति 11. निरन्तरता, स्थायिता, प्राबल्य 12. सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में सक्रिय भाग लेना (विप० निवृत्ति) 13. समाचार, खबर, गुप्त वार्ता—जीमूतेन स्ववकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम् —मेघ० ४, विक्रम० ४।२० 14. नियम की प्रयोजनीयता या बंधता 15. भाष्य, निर्यात, किस्मत 16. संज्ञान, सीधा प्रत्यक्षज्ञान, समबबोध 17. हाथी का मद (जो मस्ती की अवस्था में उसके गंडस्थल से निकलता है), 18. उज्जयिनी नगरी का नामान्तर। सम० ज्ञः जासूस, भेदिया, दूत, गुप्तचर,— निमित्तम् किसी शब्द का किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने का कारण, —मार्गः सक्रिय या सांसारिक जीवन, कार्य में अनुरक्ति, संसार में सुख तथा आनन्द।

प्रवृद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+वृध्+क्त] 1. पूरा बढ़ा हुआ 2. बड़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विस्तारित, बड़ा किया हुआ 3. पूरा, गहरा 4. घमंडी, अहंकारी 5. प्रचण्ड 6. विशाल।

प्रवृद्धिः (स्त्री०) [प्र+वृध्+क्तिन्] 1. बढ़ना, वृद्धि —रघु० १३।७१, १७।७१ 2. उन्नति, समृद्धि, पदोन्नति, तरक्की, उत्कर्ष।

प्रवेक (वि०) [प्र+विच्+घञ्] उत्तम, मुख्य, छांट का, अत्यंत श्रेष्ठ।

प्रवेगः [प्र+विज्+घञ्] तीव्र चाल, वेग।

प्रवेटः [प्र+वी+ट] जौ, यव।

प्रवेणिः—णी (स्त्री०) [प्र+वेष्+इन्, प्रवेणि+ङीष्] 1. बालों का जूड़ा—रघु० १५।३० 2. बिखरे हुए या शृंगारहीन बाल (पति की अनुपस्थिति में स्त्रियां प्रायः ऐसे बाल धारण करती हैं) 3. हाथी की सूंड 4. रंगीन ऊनी कपड़े का टुकड़ा 5. (नदी का) प्रवाह या धार।

प्रवेतृ (पुं०) [प्र+अच्+तृन् अजेः वी आदेशः] सारथि, रथवान्।

प्रवेदनम् [प्र+विद्+णिच्+ल्युट्] जतलाना, ऐलान करना, घोषणा करना।

प्रवेपः, प्रवेपकः, प्रवेप थुः, प्रवेपनम् [प्र+वेप्+घञ्, प्रवेप+कन्, प्र+वेप+अथुच्, प्र+वेप्+ल्युट्] कंपकंपी, ठिठुरन, थरथराना, सिहरन।

प्रवेरित (वि०) [प्रवेर+इतच्] इधर उधर डाला हुआ, फेंका हुआ।

प्रवेलः [प्र+वेल्+अच्] एक प्रकार की मूंग।

प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1. भीतर जाना, घुसना-पुरःप्रवेशाभिमुखो बभूव—रघु० ७।१, कु० ३।४० 2. अन्तर्गमन, पैठ, पहुँच 3. रंगभूमि में प्रवेश—तेन पात्रप्रवेशश्चेत् – सा० द० ६ 4. (घर का) दरवाजा, घुसने का स्थान 5. आय, राजस्व 6. (किसी काम का) पीछा करना, प्रयोजन की तत्परता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रवेशकः [प्र+विश्+घञ्] परिचायक, निम्नपात्रों (नौकर चाकर) द्वारा अभिनीत विष्कंभक [इसमें श्रोता को रंगमंच पर अप्रस्तुत घटना का आगे होने वाली बातों की जानकारी के लिए ज्ञात कराना आवश्यक है]; (विष्कंभक की भांति वह नाटक की कथा तथा कथावस्तु के अवान्तर भेदों को जो या तो अंकों के अन्तराल में घटित हो चुके हैं या अन्त में होने वाले हैं, जोड़ देता है; यह पहले अंक के आरम्भ या अंतिम अंक के अन्त में कभी प्रयुक्त नहीं होता) साहित्यदर्पणकार इसकी परिभाषा देते हैं—प्रवेशकस्तु-दात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः, अंकद्वयांतर्विज्ञेयः शेषं विष्कंभके यथा ३०८, दे० 'विष्कंभक'।

प्रवेशनम् [प्र+विश्+ल्युट्] 1. दाखिल होना, घुसना, अन्दर जाना 2. परिचय देना, नेतृत्व करना, संचालन 3. घर का मुख्य द्वार, फाटक 4. मैथुन, स्त्री संगम।

प्रवेशित (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+णिच्+क्त] परिचित कराया हुआ, अन्दर पहुँचाया हुआ, अन्दर ले जाया गया, घुसाया हुआ।

प्रवेष्टः [प्र+वेष्ट्+अच्] 1. भुजा 2. कलाई, पहुँचा 3. हाथी की पीठ का मांसल भाग (जहां महावत बैठता है) 4. हाथी के सूंड़ के 5. हाथी की झूल।

प्रव्यक्त (भू० क० कृ०) [प्रकर्षेण अक्तः—प्रा० स०] स्पष्ट, साफ, प्रकट, जाहिर।

प्रव्यक्तिः (स्त्री०) [प्र+वि+अंज्+क्तिन्] प्रकटी भवन, दर्शन।

प्रव्याहारः [प्र+वि+आ+हृ+घञ्] प्रवचन का फैलाव या विस्तार।

प्रव्रजनम् [प्र+व्रज्+ल्युट्] 1. विदेश जाना, अस्थायी रूप से बसना 2. निर्वासित होना 3. वानप्रस्थ हो जाना।

प्रव्रजित (भू० क० कृ०) [प्र+व्रज्+क्त] 1. विदेश गया हुआ या निर्वासित 2. संन्यासी या परिव्राजक बना हुआ,—तः 1. साधु, संन्यासी 3. चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, भिक्षु 3. जैन या बौद्ध भिक्षु का शिष्य, —तम् संन्यासी बन जाना, साधु का जीवन।

प्रव्रज्या [प्र+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1. विदेश जाना, देशान्तरगमन 2. पर्यटन, (साधु के रूप में इतस्ततः) भ्रमण 3. संन्यास आश्रम, संन्यासी का जीवन, ब्राह्मण की जीवनचर्या में चौथा आश्रम (भिक्षु जीवन) —प्रव्रज्यां कल्पवृक्षा इवाश्रिताः कु० ६।६ (यहाँ मल्लि० के अनुसार 'प्रव्रज्या' का तात्पर्य वानप्रस्थ या तृतीय आश्रम है)। समः -अवसितः वह पुरुष जिसने संन्यास ग्रहण करके उस आश्रम को छोड़ दिया हो।

प्रव्रश्चनः [प्र+व्रश्च्+ल्युट्] लकड़ी काटने का उपकरण।

प्रव्राज् (पुं०), **प्रव्राजकः** [प्र+व्रज्+क्विप्, ण्वुल् वा] साधु, संन्यासी।

प्रव्राजनम् [प्र+व्रज्+णिच्+ल्युट्] निर्वासन, देश-निकाला, निर्वासित करना।

प्रशंसनम् [प्र+शंस्+ल्युट्] प्रशंसा करना, स्तुति करना।

प्रशंसा [प्र+शंस्+अङ्+टाप्] प्रशंसा, स्तुति, प्रशस्ति, गुणगान करना—प्रशंसावचनम्, प्रशंसात्मक या सम्मान-सूचक वाणी 2. वर्णन, उल्लेख—जैसा कि 'अप्रस्तुत-प्रशंसा' में 3. कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि। समः —उपमा दण्डिद्वारा वर्णित उपमा के अनेक भेदों में से एक —ब्रह्मणोऽभ्युदयं दृष्ट्वा पद्मसंभव. शंभुशिरोधृतः. तो तूर्णं त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमोच्यते काव्य० १०।३१, -मुखर (वि०) ऊँचे स्वर से प्रशंसा करने वाला।

प्रशंसित (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, गुणगान किया गया, तारीफ किया गया।

प्रशक्वन् (पुं०) [प्र+शक्+क्वनिप्, नुट्+समुद्र शायर।

प्रशक्वरी [प्रशक्वन्+ङीप्, र आदेशः] नदी।

प्रशमः [प्र+शम्+अच्] 1. शमन, शान्ति, स्वस्थ-चित्तता—प्रशमस्थितपूर्वपार्थिवम् - रघु० ८।१५, कि० २।३२ 2. शान्ति, विश्राम 3. बुझाना, उपशमन -कु० २।२० 4. विराम, अन्त, विनाश—शि० २०।७३ 5. सान्त्वना, तुष्टीकरण—शि० १६।५१।

प्रशमन (वि०) (स्त्री०-नी) [प्रम्+णिच्+ल्युट्] शान्त करने वाला, शान्तिस्थापित करने वाला धीरज बंधाने वाला, दूर करने वाला (रोग आदि को),—नम् शान्त करना, शान्ति स्थापित करना, धीरज बंधाना 2. दमन करना, धैर्य बंधाना, दिलासा देना, हलका करना—आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् —मेघ० ५२ 3. चिकित्सा करना, स्वस्थ करना—जैसा कि 'व्याधिप्रशमनम्' में 4. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, दमन करना, मिटा देना 5. विराम, थमना 6. उपयुक्त रूप से प्रदान करना, सम्पादन को प्रदान करना—मनु० ७।५६, (संस्कारे प्रति-पादनम्—कुल्लू०, परन्तु अन्य विद्वान् इसका अगला अर्थ समझते हैं) 7. प्राप्त करना, रक्षा करना, सुरक्षित रखना—लब्धप्रशमनस्वस्थमर्थेन समुपस्थितम् रघु० ४।१४ 8. वध, हत्या।

प्रशमित (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1. सान्त्वना दी गई, धीरज बंधाया गया, स्वस्थचित्त, तुष्टीकृत, शान्त किया गया 2. (आग) बुझाई गई, (प्यास) शान्त की गई 3. शांतचित्त किया गया, परिशोधन किया गया—उत्तर० १।४०।

प्रशस्त (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, तारीफ़ किया गया, श्लाघा की गई,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तुति की गई 2. प्रशंसनीय, तारीफ के योग्य 3. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 4. सौभाग्यशाली, प्रसन्न, आनन्दित, सुखी। सम०—अद्रिः एक पहाड़ का नाम।

प्रशस्तिः (स्त्री०) [प्र+अस्+क्तिन्] 1. प्रशंसा, स्तुति, तारीफ 2. वर्णन उत्तर० ७ 3. किसी की (उदा० संरक्षक) प्रशंसा में लिखी गई कविता 4. श्रेष्ठता, महत्त्व 5. शुभ कामना 6. निर्देशन, शिक्षण, निर्देश-नियम जैसा कि 'लेखप्रशस्ति' (लिखने का एक प्रकार) में।

प्रशस्य (वि०) (म० अ० —श्रेयस् या ज्यायस्, उ० अ० —श्रेष्ठ या ज्येष्ठ) [प्र+शंस्+क्यप्] प्रशंसा के योग्य, तारीफ के लायक, श्रेष्ठ।

प्रशाख (वि०) [प्रशस्ता शाखा यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसकी अनेक शाखाएँ इधर उधर फैली हों 2. गर्भाण्ड की पाँचवीं अवस्था कहते हैं कि इस समय गर्भस्थित बालक के हाथ पैर बन जाते हैं),—खा छोटी शाखा या टहनी।

प्रशाखिका प्रशाखा+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी शाखा, टहनी।

प्रशान्त (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1. शांत, शान्तिप्राप्त, स्वस्थचित्त 2. निश्चल, सौम्य, निस्तब्ध, धीर, निश्चेष्ट—अहो प्रशान्तारमणीजनो-ज्ञानस्य 3. पालतू, वशीकृत, दबाया हुआ 5. समाप्त, विरत, निवृत्त—तत्सर्वमेकपदे एव मम प्रशान्तम्—मा० ९।३६, प्रशान्तमस्त्रम्—उत्तर० ६ 'कार्य करने से रुका हुआ या निवृत्त' 5. मृत, मरा हुआ (दे० प्रपूर्वक-शम्)। सम०—आत्मन् (वि०) स्वस्थमना, शान्ति-पूर्ण, अचंचल,—ऊर्ज (वि०) क्षीणशक्ति, निस्तेज, विषण, काम (वि०) सन्तुष्ट, चेष्ट (वि०) आराम करने वाला, विश्रांत, विरत,—बाध (वि०) जिसकी समस्त बाधाएँ व संकट दूर हो गये हैं—कि० १।१८।

प्रशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. धैर्य, शान्ति, मनकी स्थिरता, निःशब्दता, विश्राम 2. आराम, विराम, ठहराव 3. निराकरण करना, (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना।

प्रशामः [प्र+शम्+घञ्] 1. शान्ति, धैर्य, मनकी स्वस्थता 2. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, निराकरण करना 3 विश्राम।

प्रशासनम् [प्र+शास्+ल्युट्] 1. शासन करना, हुकूमत करना 2. आदेश देना, बल पूर्वक वसूल करना 3. राज्य शासन।

प्रशास्तृ (पुं०) [प्र+शास्+तृच्] राजा, शासक, राज्यपाल।

प्रशिथिल (वि०) [प्रा० स०] बहुत ढीला।

प्रशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य, पड़शिष्य—शिष्य प्रशिष्यैरुपगीयमानमदेहि तन्मंडनमिश्रवेश्म—शंकर०।

प्रशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] स्वच्छता, पवित्रता।

प्रशोषः [प्र+शुष्+घञ्] सूखना, सूख जाना, सूखापन।

प्रश्नोतनम् [प्र+श्नुत्+ल्युट्] छिड़कना, क्षरण—उत्तर० ३।११।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1. सवाल, पूछताछ, परिपृच्छा, परिप्रश्न (अविज्ञातप्रवचनं प्रश्न इत्यभिधीयते) अनामयप्रश्न पूर्वकम्—श० ५, 'कुशलक्षेम के प्रश्न के साथ' 2. अदालती जाँच पड़ताल या गवेषणा 3. विवादपद, विवादास्पद विषय, विवादग्रस्त दृष्टिकोण —इति प्रश्न उपस्थितः 4. समस्या, हिसाब का प्रश्न —अहं ते प्रश्नं दास्यामि—मृच्छ० ५ 5. भविष्य संबंधी पूछताछ 6. किसी ग्रन्थ का अनुभाग या परि-च्छेद। सम०—उपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम (इसमें छः प्रश्न तथा उनके छः उत्तर हैं) —वृत्तिः—वृत्ती (स्त्री०) पहेली, बुझौवल।

प्रश्रथः [प्र+श्रथ्+अच्] शिथिलता, ढीलापन, शिथिली-करण।

प्रश्रयः, प्रश्रयणम् [प्र+श्रि+अच्, ल्युट् वा] 1. आदर, शिष्टता, सुजनता, विनम्रता, सम्मानपूर्ण अथवा शिष्टतायुक्त व्यवहार, विनय—समागतैः प्रश्रयनम्र-मूर्तिभिः—शि० १२।३२, रघु० १०।७०, ८३, उत्तर० ६।२३, सप्रश्रयम् आदरपूर्वक, सविनय 2. प्रेम, स्नेह, आदर—पंच० २।२।

प्रश्रित (भू० क० कृ०) [प्र+श्रि+क्त] सुजन, नम्र, शिष्ट, विनीत, शिष्टाचरणयुक्त।

प्रश्लथ (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत ढीला या पिलपिला 2. उत्साह-हीन, निस्तेज।

प्रश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+श्लिष्+क्त] 1. मरोड़ा दिया हुआ, ऐंठा दिया हुआ 2. तर्कसंगत, युक्तियुक्त।

प्रश्लेषः [प्र+श्लिष्+घञ्] घना संपर्क, संश्लेष।

प्रश्वासः [प्र+श्वास्+घञ्] साँस, श्वसन, श्वास-प्रश्वासक्रिया।

प्रष्ठ (वि०) [प्र+स्था+क] 1. सामने खड़ा हुआ —रघु० १५।२० 2. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, उत्तम, नेता—पुरस्सरप्रष्ठः—महावी० १।३०, ६।३०, शि० १९।३०। सम०—वाह् (पुं०) हल जोतने के लिए सधाया जाता हुआ जवान बैल।

प्रस् (भ्वा०, दिवा० आ० प्रसते, प्रस्यते) 1. बच्चे को जन्म देना 2. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना, बढ़ाना।

प्रसक्त (भू० क० कृ०) [प्र+सञ्ज्+क्त] 1. लगा, युक्त 2. अत्यन्त आसक्त या स्नेहशील—पंच० १।१९३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. अनुगामी, अनुषक्त 4. स्थिर, तुला हुआ, भक्त, व्यस्त, व्यसनग्रस्त, प्रयुक्त—शि० ९।६३, इसी प्रकार घृत,° निद्रा° आदि 5. सटा हुआ, निकटस्थ 6. अविच्छिन्न, निरन्तर, अनवरत—कि० ४।१८, रघु० १३।४०, मा० ४।६, मालवि० ३।१ 7. हासिल, प्राप्त, लब्ध, —क्तम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार—कि० १६।५५।

प्रसक्तिः (स्त्री०) [प्र+सञ्ज्+क्तिन्] 1. आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता, अनुरक्ति 2. संबंध, संयोग, साहचर्य 3. प्रयोजनीयता, संबंध, प्रयोग जैसा कि 'अति प्रसक्ति' (अतिव्याप्ति) में 4. ऊर्जा, धैर्य **सतापे दिशतु शिवः शिवां प्रसक्तिम्**—कि० ५।५० 5. उपसंहार, घटना 6. विषय, प्रवचन का विषय 7. संभावना का घटित होना।

प्रसंख्या [प्रा० स०] 1. कुल योग, राशि 2. विचार विमर्श।

प्रसंख्यानम् [प्र+सम्+ख्या+ल्युट्] 1. गिनना 2. विचारण, मनन, गहन चिन्तन, भाव चिन्तन—श्रुताप्सरोगीतिरपि क्षणेऽस्मिन् हरः प्रसंख्यानपरो बभूव —कु० ४।३० 3. कीर्ति, प्रसिद्धि, विश्रुति, नः अदायगी, भुगतान्।

प्रसंगः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1. आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता—स्वरूपयोग्ये सुरतप्रसंगे—कु० १।१९, तस्यास्त्रियायतकीमलस्य सदृतं धूतं प्रसंगेन किम्—मृच्छ० २।११, शि० ११।२२ 2. मेल-जोल, अन्तःसंपर्क, साहचर्य, संबंध निवर्ततामस्माद् गणिका प्रसंगात्—मृच्छ० ४ 3. अबैध मैथुन 4. व्यस्तता, एकाग्रता, कार्यरता भ्रविक्रियाया विरतप्रसंगः—कु० ३।४७ 5. विषय, शीर्षक (प्रवचन या विवाद का) 6. अवसर, घटना दिग्विजयप्रसंगेन—का० १२१, यात्राप्रसंगेन —मा० १ 7. संयोग, समय, अवसर मनु० ९।५ 8. दैवयोग, घटना, काण्ड, संभावना का होना—नेश्वरो जगतः कारणमुपपद्यते कुतः वैषम्यनैर्घृण्य प्रसंगात्—शारी०, एवं चानवस्था प्रसंगः तदेव, कु० ७।१६ 9. संबद्ध तर्कना, या युक्ति 10. उपसंहार, अनुमान 11. संबद्ध भाषा 12. अविच्छेद्य प्रयोग या संबंध (व्याप्ति) 13. माता पिता का उल्लेख (**प्रसंगेन, प्रसंगतः, प्रसंगात्** यह क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—1. के संबंध में 2. के फल स्वरूप, के कारण, क्योंकि, के रूप में 3. अवसरानुसार 4. के क्रम में (यथा—कथाप्रसङ्गेन 'वार्तालाप के सिलसिले में')। सम०—**निवारणम्** भविष्य में इस प्रकार की स्थिति का रोकना, **-वशात्** (अव्य०) समय के अनुसार, परिस्थितिवश,—**विनिवृत्तिः** (स्त्री०) इस प्रकार की संकटस्थिति की पुनरावृत्ति का न होना।

प्रसंजनम् [प्र+सञ्ज्+ल्युट्] 1. जोड़ने की क्रिया, मिलाना, एकत्र करना 2. व्यवहार में लाना, सदल बनाना, उपयोग में लाना।

प्रसक्तिः (स्त्री०) [प्र+सद्+क्तिन्] 1. अनुग्रह, कृपालुता, शिष्टाचार 2. स्वच्छता, पवित्रता, विशदता।

प्रसंन्धनम् [प्र+सम्+धा+ल्युट्] मिलान, मेल।

प्रसन्न (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+क्त] 1. पवित्र, स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्मल, विमल, पारदर्शी कु० १।२३, ७।७४, शि० ५।२० 2. शुभ, आनन्दित, प्रसृष्ट, शान्त—गंगा शरदयति सिन्धुर्गतिं प्रसन्नाम् मुद्रा० ३।९, गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने—मेघ० ४० (यहाँ प्रथम अर्थ भी अभिप्रेत है), कु० ५।२५, रघु० २।६८ 3. दयालु, अनुग्रहशील, कृपालु, मंगलप्रद — अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्—रघु० २।६३ 4. सरल, सीधा, स्पष्ट, सुबोध (अर्थ) 5. सत्य, सही 'प्रसन्नस्ते तर्कः—विक्रम० २, प्रसन्नप्रायस्ते तर्कः—मा० १, —न्नाः 1. प्रसादन, अनुरंजन 2. खींची हुई मदिरा। सम० **-आत्मन्** (वि०) कृपालुमना, मंगलप्रद,—**-ईरा** खींची हुई मदिरा,—**-कल्प** (वि०) 1. शान्त प्राय 2. सत्यप्राय,—**-मुख-दर्शन** (वि०) कृपालुदृष्टि वाला, प्रसन्न चेहरे वाला, मुस्कराता हुआ,—**-सलिल** (वि०) स्वच्छ पानी वाला।

प्रसभः [प्रगता सभा समानाधिकारो यस्मात्—प्रा० ब०] बल, हिंसा, प्रचण्डता—प्रसभोद्धृतारिः—रघु० २।३०, —भम् (अव्य०) 1. बलपूर्वक, जबरदस्ती,—**-इन्द्रियाभिप्रमाथीनि** हरंति प्रसभं मनः—भग० २।६०, मनु० ८।३३२ 2. बहुत अधिक, अत्यंत—तवास्मिन् गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः शा० १।५, ऋतु० ६।२५ 3. आग्रहपूर्वक—भग० १।४१। सम० **-दमनम्** बलपूर्वक दबाना—शा० ७।३३,—**-हरणम्** बलपूर्वक अपहरण।

प्रसमीक्षणम्, प्रसमीक्षा [प्र+सम्+ईक्ष्+ल्युट्, प्रसम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] विचारण, विचारविमर्श, निर्धारण।

प्रसरः [प्र+सृ+अप्] 1. आगे जाना, प्रगमन करना —शा० १।२९ 2. मुक्त या निर्बाध गति, मुक्त क्षेत्र, पहुँच, गति—रघु० ८।२३, १६।२०, मुद्रा० ३।५. हि० १।१८६ 3. फैलाव, प्रसार, विस्तर, विस्तार, फैलना —शि० ९।७१ 4. विस्तार, आयाम, बड़ी मात्रा शि० ३।३५ 5. प्रचलन, प्रभाव—शि० ३।१०, 6. सरिता, प्रवाह, धारा, बाढ़—पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव दुर्धाभ्रनिकरः—गीत० ११ 7. समूह, 8. समुच्चय युद्ध, लड़ाई 9. लोहे का बाण 10. चाल 11. विनम्र याचना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसरणम् [प्र+सृ+ल्युट्] 1. आगे जाना, दौड़ना, बहना 2. बच निकलना, भाग जाना 3. दूर तक फैलाना 4. शत्रु को घेरना 5. सौजन्य।

प्रसरणिः,-णी [प्र+सृ+अनि, प्रसरणि+ङीप्] शत्रु को घेर लेना।

प्रसर्पणम् [प्र+सृप्+ल्युट्] 1. चलना, सरकना, आगे बढ़ना २. व्याप्त करना, सब दिशाओं में फैलना।

प्रसः (श) ल: [प्र+शल् + अच्, पक्षे पृषो० शस्य सः] हेमंत ऋतु।

प्रसवः [प्र+सू+अप्] 1. जन्म देना, जनन, प्रसूति, जन्म, उत्पादन 2. बच्चे का जन्म, गर्भ मोचन, प्रसूति –पया 'आसन्नप्रसवा' में 3. सन्तान, प्रजा, छोटे बच्चे, बालक –केवलं वीरप्रसवा भूयाः –उत्तर० १, कु० ७।८७ 4. स्रोत, मूल, जन्मस्थान (आलं० से भी) कि० २।४३ 5. फूल, मंजरी – प्रसवविभूतिषु भूरुहां विरेकः–शि० ७।४२, नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः–मेघ०, कुंदप्रसवशिथिलं जीवितम्–११३, रघु० ९।२८, कु० १।५५, ४।४, १४, ८।५, ९, मा० ९।२७, ३१, उत्तर० २।२० 6. फल, उत्पादन। सम०– उन्मुख गर्भ से मुक्त होने वाला, उत्पन्न होने वाला –पतिः प्रतीतः प्रसवोन्मुखीं प्रियां ददर्श–रघु० ३।१२,–गृहम् प्रसूतिकागृह, जच्चाघर,–धर्मिन् (वि०) उपजाऊ, उर्वर, बन्धनम् फूल या पत्ते की डंठल, वृंत वेदना,–व्यया प्रसव काल की पीड़ा, बच्चा जनने का कष्ट,–स्थली माता,–स्थानम् 1. प्रसूतिकागृह, 2. जाल।

प्रसवकः [प्रसवेन पुष्पादिना कायति शोभते प्रसव+कै+क] पिंडाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़।

प्रसवनम् [प्र+सू+ल्युट्] 1. पैदा करना 2. बच्चे को जन्म देना, उपजाऊपन।

प्रसवन्तिः (स्त्री०) [प्र+सू–क्विच्, अन्तादेशः] जच्चा स्त्री।

प्रसवन्ती [प्र+सू+शतृ+ङीप्] जच्चा स्त्री न पश्येत् प्रसवन्तीं न तेजस्कामो द्विजोत्तमः –मनु० ४।४४।

प्रसवित् (पुं०) [प्र+सू+तृ] पिता, प्रजनक।

प्रसवित्री [प्रसवितृ+ङीप्] माता।

प्रसव्य (वि०) [प्रगतं सव्यात् –प्रा० स०] प्रतिकूल, व्युत्क्रांत, बायां, उलटा।

प्रसह (वि०) [प्र+सह्–अच्] सहनशील, सहिष्णु, सहन करने वाला, हः 1. शिकारी जानवर या पक्षी 2. मुकाबला, सहन शक्ति, विरोध।

प्रसहनः [प्र+सह्+ल्युट्] शिकारी जानवर या पक्षी, नम् 1. सामना करना, मुकाबला करना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना 3. पराजित करना, विजय प्राप्त करना 4. आलिंगन, परिरम्भण।

प्रसह्य (अव्य०) [प्र+सह्+(त्वा) ल्यप्] 1. बल पूर्वक, प्रचण्डता के साथ, जबरदस्ती –प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात् भर्तृ० २।४, शि० १।२७, 2. अत्यधिक, अत्यंत।

प्रसातिका [प्रगता सातिः (लाभः) सो+क्तिन्–ह्रस्वः प्रा० ब०, कप्+टाप्] एक प्रकार का चावल (छोटे दानों वाला)।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] 1. अनुग्रह, कृपा, दाक्षिण्य, कल्याणकारिता कुरु दृष्टिप्रसादं कृपा दर्शन दीजिए', इत्याप्रसादसरास्त्वं परिचर्यापरो भव रघु० १।९९, २।२२ 2. अच्छा स्वभाव, स्वभाव में करुणाशीलता 3. धीरता, शान्ति, मन की स्वस्थता, सौम्यता, शांभीर्य, उत्तेजना का अभाव–भग० २।६४ 4. स्वच्छता, निर्मलता, उज्ज्वलता, पारदर्शिता, (पानी या मन आदि की) पवित्रता–गङ्गा रोधःपतनकलुषा गृह्यतोव प्रसादम्–विक्रम० १।८, श० ७।३२, प्राप्तबुद्धिप्रसादाः–शि० ११।६, रघु० १७।१, कि० ९।२५, 5. प्रसादगुणयुक्तता, शैली की विशदता, मम्मट के अनुसार, तीन गुणों में एक–प्रसाद गुण, परिभाषाशुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः, व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोसौ सर्वत्र विहितस्थितिः–काव्य० ८, यावदर्थकपदत्वरूपमर्थवैमल्यं प्रसादः, या श्रुतमात्रा बाक्यार्थं करतलबदरमिव निवेदयन्ती घटना प्रसादस्य –रस०, दे० काव्या० १।४५, सा० द० ६११ भी 6. भगवान् की मूर्ति को भोग लगाया हुआ नैवेद्य का अवशिष्ट 7. चढ़ावा, पुरस्कार 8. शान्तिकर भेंट 9. कुशल, क्षेम। सम०– उन्मुख (वि०) अनुग्रह करने के लिए तत्पर पराङ्मुख (वि०) 1. अनुग्रह को वापिस खींचने वाला 2. जो किसी के अनुग्रह की अपेक्षा न करे,–पात्रम् अनुग्रह का पात्र,–स्थ (वि०) 1. कृपालु, मंगलप्रद 2. शान्त, तुष्ट, आनंदित।

प्रसादक (वि०) (स्त्री०–दिका) [प्र+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्फटिक सदृश विशद करने वाला 2. तसल्ली देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3. आनन्दित करने वाला, खुश करने वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला।

प्रसादन (वि०) (स्त्री० नी) प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, निर्मल या विशुद्ध करने वाला–फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादनम् –मनु० ६।६७ 2. सांत्वना देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3. खुश करने वाला, आनन्दित करने वाला, –नः राजकीय तंबू,–नम् 1. निर्मल करना, पवित्र करना 2. सांत्वना देना, ढाढस बंधाना, शान्त करना, मन स्वस्थ करना, 3. प्रसन्न करना, तुष्ट करना 4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, –ना 1. सेवा, पूजा 2. निर्मली करण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसावित (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+णिच्+क्त] 1. पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. क्षुब्ध किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ 3. पूजा किया हुआ 4. शीराज बंधाया हुआ, सात्त्विना दिया हुआ।

प्रसाधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्र+साध्+ण्वुल्] 1. निष्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला 2. पवित्र करने वाला, छानने वाला 3. सजाने वाला, अलंकृत करने वाला, —कः पार्श्वचर, अपने स्वामी को वस्त्र पहनाने वाला सेवक।

प्रसाधनम् [प्र+साध्+ल्युट्] 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, करवाना 2. व्यवस्थित करना, क्रमबद्ध करना 3. सजाना, अलंकृत करना, विभूषित करना, शरीरसज्जा, वेशभूषा—कु० ४।१८ 4. सजावट, आभूषण, सजाने या विभूषित करने का साधन—कु० ७।१३, ३०,—नः,—नम्,—नी, कंघी। सम० विधिः सजावट, शृंगार,—विशेषः सबसे ऊँचा शृंगार—प्रसाधन विधेः प्रसाधन विशेषः—विक्रम० २।३।

प्रसाधिका [प्रसाधक+टाप्+इत्वम्] सेविका, वह दासी जो अपनी स्वामिनी के शृंगार की देख-रेख करे—प्रसाधिकालम्बितमग्रपादमाक्षिप्य - रघु० ७।७।

प्रसाधित (भू० क० कृ०) [प्र+साध्+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ, पूर्ण किया हुआ 2. विभूषित, सुसज्जित।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2. फैलाव, प्रसृति, विस्तार, प्रसारण 3. बिछावन 4. खाद्यान्वेषण के लिए देश में इधर उधर फैल जाना।

प्रसारणम् [प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. विदर्शों में फैलना, बढ़ना, वृद्धि, प्रसृति, फैलाव 2. फैलाना—यथा 'बाहुप्रसारणम्' में 3. शत्रु को घेरना 4. इंधन और घास के लिए समस्त देश में फैल जाना 5. अर्धस्वर वर्णों (यरलव) का स्वरों (इ, ऋ, ऌ, उ) में बदल जाना, संप्रसारण।

प्रसारिणी [प्र+सृ+णिनि+ङीप्] शत्रु को घेरना।

प्रसारित (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+णिच्+क्त] 1. प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ, प्रसृत किया हुआ, बढ़ाया हुआ 2. (हाथों की भांति) फैलाया हुआ 3. प्रदर्शित किया हुआ, रक्खा हुआ, (बिक्री के लिए) रक्खा हुआ।

प्रसाह् [प्र+सह्+घञ्] अपने प्रभाव में लाना, जीत लेना, पराजित करना।

प्रसित (भू० क० कृ०) [प्र+सि+क्त] 1. बांधा हुआ, कसा हुआ 2. संलग्न, व्यस्त, काम में लगा हुआ 3. तुला हुआ, प्रबल इच्छुक, लालायित (करण० या अधि० के साथ)—लक्ष्म्या लक्ष्म्यां वा प्रसितः—सिद्धा०, रघु० ८।२३,—तम् पीव, मवाद।

प्रसितिः (स्त्री०) [प्र+सि+क्तिन्] 1. जाल 2. पट्टी 3. बंधन, नमदे की पट्टी।

प्रसिद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+सिध्+क्त] 1. विश्रुत, विख्यात, मशहूर 2. सजा हुआ, अलंकृत, विभूषित रघु० १८।४१, कु० ५।९, ७।१६।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) [प्र+सिध्+क्तिन्] 1. कीर्ति, ख्याति, मशहूरी, विश्रुति 2. सफलता, निष्पन्नता, पूर्ति—कि० ३।३९, मनु० ४।३ 3. शृंगार, सजावट।

प्रसीविका [प्रसीव्यतेऽस्याम्—प्र+सद्+ण्वुल्, इत्वम्, टाप्, सीदादेशः] वाटिका, छोटा उद्यान।

प्रसुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+स्वप्+क्त] 1. सोया हुआ, निद्रित 2. प्रगाढ़ निद्रा में।

प्रसुप्तिः (स्त्री०) [प्र+स्वप्+क्तिन्] 1. निद्रालुता, प्रगाढ़ निद्रा 2. लकवे का रोग।

प्रसू (वि०) [प्र+सू+क्विप्] 1. प्रकाशित करने वाला, पैदा करने वाला, जन्म देने वाला—स्त्रीप्रसूश्चाधिवेत्तव्या—याज्ञ० १।७३—(स्त्री०) 1. माता—मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ—अमर० 'जनक-जननी' 2. घोड़ी 3. फैलने वाली लता 4. केला।

प्रसूका [प्र+सू+कन्+टाप्] घोड़ी।

प्रसूत (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त] 1. उत्पन्न, जनित 2. पैदा किया हुआ, जन्म दिया हुआ, उत्पादित,—तम् 1. फूल 2. कोई उपजाऊ स्रोत,—ता जच्चा स्त्री।

प्रसूतिः (स्त्री०) [प्र+सू+क्तिन्] 1. प्रसर्जन, जनन, प्रसव 2. जन्म देना, पैदा करना, गर्भमोचन, बच्चे को जन्म देना—रघु० १४।६६ 3. बछड़े को जन्म देना 4. अंडे देना—नै० १।१३५ 5. जन्म, उत्पादन, जनन —रघु० १०।५३ 6. दर्शन, प्रकट होना, (फूलों का) विकसन रघु० ५।१४, कु० १।४८ 7. फल, पैदावार 8. संतति, प्रजा, अपत्य—रघु० १।२५, ७७, २।४, ५।७, कु० २।७, श० ६।२४ 9. उत्पादक, जनक, प्रश्लेष्टा—रघु० २।६३ 10. माता। सम०—जम् प्रसव से उत्पन्न होने वाली पीड़ा, वायुः प्रसव के समय गर्भाशय में उत्पन्न होने वाली वायु।

प्रसूतिका [प्रसूत+ठन्+टाप्] जच्चा स्त्री, वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चे को जन्म दिया है।

प्रसून (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त, तस्य नत्वम्] पैदा किया गया, उत्पन्न,—नम् 1. फूल—लतायां पूर्वमूलायां प्रसूनस्यागमः कुतः—उत्तर० ५।२०, रघु० २।१० 2. कली, मंजरी 3. फल सम०—द्युतः,—बाणः, —बाणः कामदेव का विशेषण, —वर्षः पुष्पवृष्टि।

प्रसूनकम् [प्रसून+कन्] 1. फूल 2. कली, मंजरी।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1. आगे बढ़ा हुआ 2. पसारा हुआ, बढ़ाया हुआ 3. फैलाया गया, प्रसारित किया गया 4. लंबा, लम्बा किया हुआ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

5. ध्वस्त, लगा हुआ 6. फुर्तीला तेज 7. सुशील, विनीत —तः हाथ की खुली हथेली, अंजलि,—तः, -तम् दो पल का माप,—ता दांग। सम०—ज्ञः पुत्रों का विशिष्ट वर्ग, व्यभिचार जनित पुत्र, कुंडगोलकरूप।

प्रसृतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+क्तिन्] 1. आगे जाना, प्रगति 2. बहना 3. फैलाई हुए हाथ की हथेली, अंजलि 4. मुट्ठी भर (यही दो पल की माप समझी जाती है) – परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये भर्तृ० २।४५, याज्ञ० २।११२।

प्रसृत्वर (वि०) [प्र+सृ+क्वरप्, तुकागमः] इधर उधर फैलने वाला – भामि० ४।१।

प्रसृमर (वि०) [प्र+सृ+क्मरच्] बहता हुआ, चूने वाला, टपकने वाला।

प्रसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+सृज्+क्त] 1. एक ओर डाला हुआ, त्यागा हुआ 2. घायल, क्षतिग्रस्त, —ष्टा फैलाई हुई अंगुली (अङ्गुष्ठः प्रसृता यस्यां सा प्रसृष्टा उदीरिता:)।

प्रसेकः [प्र+सिच्+घञ्] 1. छिड़कना, रिसना, टपकना 2. छिड़कना, आर्द्र करना 3. उद्गिरण, प्रस्रवण —ऋतु० ३।६ 4. उद्गमन, कै।

प्रसेदिका [=प्रसेदिका, पृषो०] छोटा उद्यान, वाटिका।

प्रसेवः, प्रसेवकः [प्र+सिव्+घञ्, प्रसेव+कन्] 1. थैला, (अनाज के लिए) बोरी 2. चमड़े की बोतल 3. काष्ठ का बना छोटा उपकरण जो वीणा की गर्दन के नीचे लगाया जाता है जिससे कि उसका स्वर अपेक्षाकृत कुछ गहरा हो जाय।

प्रस्कन्दनम् [प्र+स्कन्द्+ल्युट्] 1. कूद जाना, छलांग लगाना 2. विरेचन, जुलाब, अतिसार, नः शिव का विशेषण।

प्रस्कन्न (भू० क० कृ०) [प्र+स्कन्द्+क्त] 1. फलांगा हुआ, छलांग लगाकर पार किया हुआ 2. पतित, टपका हुआ 3. परास्त, —न्नः 1. जातिबहिष्कृत 2. पापी, अतिक्रमणकारी।

प्रस्कन्दः [प्रगतः कुन्दं चक्रम् प्रा० स०] गोलाकार वेदी।

प्रस्खलनम् [प्र+स्खल्+ल्युट्] 1. लड़खड़ाना 2. उगमगाना, गिर जाना।

प्रस्तरः [प्र+स्तृ+अच्] 1. पर्णशय्या, पुष्पशय्या 2. पर्यंक, खटिया 3. समतल शिखर, हमवार, समतल 4. पत्थर, चट्टान 5. मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

प्रस्तरणम्, -णा [प्र+स्तृ+ल्युट्] 1. पलंग 2. शय्या 3. बिछौना।

प्रस्तारः [प्र+स्तृ+घञ्] 1. बखेरना, फैलाना, आच्छादित करना 2. पुष्पशय्या, पर्णशय्या 3. पलंग, खाट 4. चपटी सतह, समतल हमवार 5. वनस्थली, जंगल 6. (छन्द० में) संभाविंश भेदों समेत छन्द की ह्रस्व तथा दीर्घ मात्राओं की दोहरी तालिका।

प्रस्तावः [प्र+स्तु+घञ्] 1. आरंभ, शुरू 2. आमुख 3. उल्लेख, संकेत, संदर्भ—नाममात्रप्रस्तावः श० ७ 4. अवसर, मौका, समय, ऋतु, उपयुक्तकाल रेवाप्रस्तावोर्ध्वं न खलु परिहासस्य समयः– भा० ५।४४, शिष्यायं बृहतां पत्युः प्रस्तावमदिशद्वृद्धा - शि० २।८ 5. प्रवचन का प्रयोजन, विषय, शीर्षक 6. नाटक की प्रस्तावना दे० 'प्रस्तावना' नीचे। सम०—यज्ञः ऐसा वार्तालाप जिसमें प्रत्येक अन्तर्वादी भाग ले।

प्रस्तावना [प्र+स्तु+णिच्+युच्+टाप्] 1. प्रशंसित या उल्लिखित होने का कारण बनना, प्रशंसा, सराहना 2. शुरू, आरंभ–आर्यबालचरितप्रस्तावनाडिण्डिमः महावी०१।५४ 3. परिचय, भूमिका, आमुख–प्रस्तावना इव कण्टनाटकस्य -सा० २ 4. नाटक के आरंभ में सूत्रधार तथा किसी एक पात्र के बीच में हुआ परिचयात्मक वार्तालाप (इसमें नाटककार तथा उसकी योग्यता का परिचय देकर श्रोताओं के सम्मुख नाटक की घटनाओं को रक्खा जाता है) परिभाषा के लिए दे० 'आमुख'।

प्रस्तावित (वि०) [प्र+स्तु+णिच्+क्त] 1. आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 2. उल्लिखित, इङ्गित -सा० ३।३।

प्रस्तिरः [=प्रस्तरः नि० इत्वम्] पर्णशय्या, पुष्पशय्या।

प्रस्तोत, -म (वि०) [प्र+स्तुं+क्त, संप्र०, पक्षे तस्य यः] 1. कोलाहल करने वाला, शब्दायमान 2. भीड़-भड़क्का, शुण्ड बनाते हुए।

प्रस्तुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्तु+क्त] 1. जिसकी प्रशंसा की गई हो, या स्तुति की गई हो 2. आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 3. निष्पन्न, कृत, कार्यान्वित 4. घटित 5. उपागत 6. प्रस्तुत किया गया, उद्घोषित, विचाराधीन या विचारणीय (दे० प्रपूर्वक स्तु), -तम् 1. उपस्थित विषय, विचाराधीन विषय —अधुना प्रस्तुतमनुक्रियताम् 2. (अलं० शा०) विचार के विषय की रूपरेखा बनाना, उपमेय, दे० 'प्रकृत'; अप्रस्तुतप्रशंसा सा या सैव प्रस्तुताश्रया —काव्य० १०। सम०—अङ्कुरः एक अलंकार जिसमें श्रोता के मन में निहित किसी बात को प्रकाशित करने के लिए संचारी परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है, दे० चन्द्रा० ५।६४, और कुव० (प्रस्तुतांकुर के नीचे)।

प्रस्थ (वि०) [प्र+स्था+क] 1. जाने वाला, दर्शन करने वाला, पालन करने वाला –प्रथा 'वानप्रस्थ' में 2.यात्रा पर जाने वाला 3.फैलाने वाला, विस्तार करने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला 4. दृढ़, स्थिर, स्थः,—स्थम् 1. समतलभूमि, चौरस मैदान, जैसा कि औषधिप्रस्थ या इंद्रप्रस्थ में 2. पर्वत के शिखर पर समतल या चौरस भूमि,—प्रस्थं हिमाद्रेर्मुनयोभिगन्मि किन्नरक्षणश्लिरसंध्यवासः—कु० १।५४, मेघ० ५८ 3. पहाड़ का शिखर या चोटी —शि० ४।११ (यहाँ यह चौथे अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. एक विशिष्ट माप जो ३२ पलों के बराबर होता है 5. 'प्रस्थ' के तोल के बराबर कोई वस्तु। सम०—पुष्पः तुलसी का एक भेद, दोना मरुआ।

प्रस्थम्पच (वि०) [प्रस्थ+पच्+अच्, मुमागमः] प्रस्थमात्र पकाने वाला।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1. प्रयाण करना, कूच करना, विदा, प्रगमन करना —प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनार्थम् —श० ५।२, रघु० ४।८८, मेघ० ४१, अमरु ३१ 2. पहुँचना—कु० ६।६१ 3. कूच करना, किसी सेना का या आक्रमण का कूच करना 4. प्रणाली, पद्धति 5. मृत्यु, मरण 6. निकृष्ट श्रेणी का नाटक दे० सा० द० २७६, ५४४।

प्रस्थापनम् [प्र+स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. भेजना, तितर-बितर करना, प्रेषित करना 2. दूतावास में नियुक्ति 3. प्रमाणित करना, प्रदर्शन करना 4. उपयोग करना, काम में लगाना 5. पशुओं का अपहरण।

प्रस्थापित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था—णिच्+क्त, पुकागमः] 1. भेजा गया, प्रेषित 2. स्थापित, सिद्ध।

प्रस्थित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+क्त] प्रयात, आगे बढ़ा हुआ, विदा हुआ, विराजित, यात्रा पर गया हुआ (दे० प्रपूर्वक 'स्था')।

प्रस्थितिः (स्त्री०) [प्र+स्था+क्तिन्] 1. चले जाना, विदा होना 2. कूच करना, यात्रा।

प्रस्नः [प्र+स्ना+क] स्नान-पात्र।

प्रस्नवः [प्र—स्नु—अप्] 1. उमड़ कर बहना, बह निकलना, निःस्रवण—उत्तर० ६।२२ 2. (दूध की) धार या प्रवाह—रघु० १।८४।

प्रस्नुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्नु+क्त] टपकता हुआ, रिसता हुआ, बहकर निकलता हुआ। सम०—स्तनी वह स्त्री जिसकी छाती से (मातृस्नेहातिरेक के कारण) दूध टपकता है—उत्तर० ३।

प्रस्नुषा [आ० स०] पौत्रबधू।

प्रस्पन्दनम् [प्र+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कन, थरथराहट, कंपकंपी।

प्रस्फुट (वि०) [प्र—स्फुट्+क] 1. खिला हुआ, विकसित, (फूल आदि) फूला हुआ 2. उद्घोषित, प्रकाशित, (रिपोर्ट आदि) फैलाई हुई 3. सरल, साफ, प्रकट, स्पष्ट।

प्रस्फुरित (भू० क० कृ०) [प्र+स्फुर्+क्त] हिलता हुआ, काँपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान।

प्रस्फोटनम् [प्र+स्फुट्+ल्युट्] 1. फूट निकलना, खिलना, मुकुलित होना 2. स्पष्ट या साफ करना, खोलना, प्रकट करना 3. टुकड़े-टुकड़े करना 4. खिलाना, विकसित करना 5. अनाज फटकना 6. छाज 7. छेतना, पीटना।

प्रस्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र—स्रंस्+णिनि] समय से पूर्व गिर जाने वाला (गर्भ), कच्चा गिरना।

प्रस्रवः [प्र+स्रु+अप्] 1. बूँद-बूँद गिरना, टपकना, बहना रिसना 2. बहाव, धारा 3. औड़ी या स्तन से टपकने वाला दूध—प्रस्रवेण प्रतान्तर 'प्रस्रवैः' अभिवर्धन्तो वत्सालोकप्रहर्षिताना—रघु० १।८४ 4. मूत्र, —वाः—(ब० व०) उमड़ते हुए आँसू।

प्रस्रवणम् [प्र+स्रु+ल्युट्] 1. बह निकलना, उमड़ना, टपकना, झरना, बूंद बूंद गिरना 2. स्तन या औड़ी से दूध बहना—(वृक्षकान्) घटस्तनप्रस्रवणैर्ध्यवर्धयत्—कु० ५।१४ 3. जलप्रपात, प्रपातिका, निर्झर 4. झरना, फौवारा—समाविताः प्रस्रवणैः समन्ततः—ऋतु० २।३ मनु० ८।२४८ याज्ञ० १।१५६ 5. नाली, टोंटी 6. पहाड़ी सरिताओं से बना पोखर, पल्वल 7. स्वेद, पसीना 8. मूत्रोत्सर्ग,—णः एक पहाड़ का नाम - जम्भस्थानमध्यगो गिरिः प्रस्रवणो नाम उत्तर० १।

प्रस्रावः [प्र+स्रु—घञ्] 1. बहाव, उमड़न, मूत्र।

प्रस्रुत (भू० क० कृ०) [प्र—स्रु+क्त] उमड़ा हुआ, टपका हुआ, बूँद-बूँद कर गिरा हुआ, रिसा हुआ।

प्रस्व (स्वा) नः [प्र+स्वन्+अप्, घञ् वा] ऊँची आवाज।

प्रस्वापः [प्र+स्वप्+घञ्] 1. निद्रा 2. स्वप्न 3. निद्रा लाने वाला अस्त्र।

प्रस्वापनम् [प्र+स्वप्+णिच्+ल्युट्] 1. सुलाना, निद्रित करना 2. ऐसा अस्त्र जो आक्रान्त व्यक्ति को सुला दे —रघु० १७।६१।

प्रस्विन्न (भू० क० कृ०) [प्र—स्विद्+क्त] पसीना आया हुआ, पसीने से तर।

प्रस्वेदः [प्र+स्विद्+घञ्] बहुत अधिक पसीना।

प्रस्वेदित (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+णिच्+क्त] 1. स्वेदाच्छन्न, पसीने से सराबोर, पसीना आया हुआ 2. पसीना लाने वाला, गर्म।

प्रहणनम् [प्र+हन्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रहत [प्र—हन्+क्त] 1. घायल, वध किया हुआ, मारा हुआ 2. पीटा हुआ, (ढोल आदि) बजाना—स्वयं प्रहतमुष्करः कृती—रघु० १९।१८, मेघ० ६४ 3. पीछे ढकेला हुआ, विजित, पराजित 4. फैलाया हुआ, फुलाया हुआ 5. सटा हुआ 6. (पगडंडी) घिसा-पिटा, गतानुगतिक 7. निष्पन्न, विद्वान्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रहरः [प्र+हृ+अप्] दिन का आठवाँ भाग, प्रहर (तीन घंटे का समय)—प्रहरे प्रहरेऽलंहोच्चारितानि गोमायने-त्यादिपदानि न प्रमाणम् -तर्क०।

प्रहरकः [प्रहर+कन्] एक पहर।

प्रहरणम् [प्र+हृ—ल्युट्] 1. प्रहार करना, मारना 2. डालना, फेंकना 3. भाला करना, आक्रमण करना 4. घायल करना 5. हटाना, बाहर निकालना 6. शस्त्र अस्त्र, या (उसेशी) सुकुमारं प्रहरणं भर्तृहस्य —विक्रम० १, रघु० १६।७३ भाग० १।९, मा० ८।९ 7. संग्राम, युद्ध, लड़ाई 8. उठी हुई पालकी या डोला।

प्रहरणीयम् [प्र+हृ+अनीयर्] अस्त्र, शस्त्र।

प्रहरिन् (पुं०) [प्रहर+इनि] 1. रखवाला 2. पहरेदार, घंटों वाला।

प्रहर्तृ (वि०) [प्र—हृ+तृच्] 1. प्रहार करने वाला, पीटने वाला, हमला करने वाला 2. लड़ने वाला, संयोधी, योद्धा 3. तीरंदाज, निशाने बाज, धनुर्धर।

प्रहर्षः [प्र+हृष्+घञ्] 1. अत्यधिक हर्ष, अत्यानन्द, उल्लास—गुरुः प्रहर्षः प्रभवश्च तासामिति रघु० ३।१७ 2. लिङ्ग का खड़ा होना।

प्रहर्षणम् [प्र+हृष्+ल्युट्] उल्लसित करना, प्रहृष्ट करना, आनन्दित करना, -णः वृक्ष गृह।

प्रहर्षः (र्षि) णी [प्र+हृष्+णिच्+ल्युट् +ङीप् +प्र —हृष्+णिच्+णिनि —ङीप्] 1. हल्दी 2. एक छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

प्रहर्षुलः [प्र+हृष्+उलच्] वृक्ष गृह।

प्रहसनम् [प्र+हस्+ल्युट्] 1. जोर की हँसी, अट्टहास, खिलखिलाकर हँसना 2. मजाक, ठिठोली, व्यंग्योक्ति, उपहास- धिक् प्रहसनम्—उत्तर० ४ 3. व्यंग्यलेख, व्यंग्य 4. स्वांग, नकाशा, हँसी का सुखान्त नाटक सा० द० में दी गई परिभाषा- -भाषावस्तिधिरारभ्य-ङ्कलास्या द्भाङ्कैर्विनिर्मितम्, भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम् ५५३ तथा आगे, उदा० 'कन्दर्पकेलि'।

प्रहसन्ती [प्र+हस्+शतृ+ङीप्] 1. एक प्रकार की चमेली, जूही, यूथिका, वासन्ती 2. एक बड़ी अंगीठी।

प्रहसित (भू० क० कृ०) [प्र+हस्+क्त] हँसता हुआ,—तम् हँसी, हास्य।

प्रहस्तः [प्रगतः प्रशस्तो हस्तः - प्रा० स०] 1. खुला हाथ जिसकी अंगुलियाँ फैली हों, (थप्पड़) 2. रावण के एक सेनापति का नाम।

प्रहाणम् [प्र+हा+ल्युट्] त्यागना, छोड़ना, भूल जाना -मनु० ५।५८।

प्रहाणिः (स्त्री०) [प्र+हा—नि, णत्वम्] 1. त्यागना 2. कमी, अभाव।

प्रहारः [प्र+हृ—घञ्] 1. वार करना, पीटना, चोट करना -याज्ञ० ३।२८८ 2. घायल करना, मार डालना 3. आघात, मुक्का, चोट, ठोकर, धौल -रघु० ७।४४, मुष्टिप्रहार, तलप्रहार आदि 5. ठोकर- जैसा कि पादप्रहारः और लत्ताप्रहारः में 6. गोली मारना।

प्रहारणम् [प्र+हृ+णिच्+ल्युट्] वाञ्छनीय उपहार।

प्रहासः [प्र+हस्+घञ्] 1. ऊँचे की हँसी, अट्टहास 2. मजाक, दिल्लगी, हँसी 3. व्यंग्योक्ति, व्यंग्य 4. नर्तक, नट, पात्र 5. शिव 6. दर्शन, दिखावा —वेणी० २।२८ 7. एक तीर्थ स्थान का नाम- तु० प्रहास।

प्रहासिन् (पुं०) [प्र+हस्+णिच्+णिनि] विदूषक, मसखरा।

प्रहिः [प्र ; हि+क्विप्] कुआँ।

प्रहित (भू० क० कृ०) [प्र+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ, फैलाया हुआ 3. भेजा हुआ, प्रेषित, निर्देशित विचारमार्गप्रहितेन चेतसा कु० ५।४२ 4. छोड़ा हुआ, निशाना लगाया हुआ (तीर आदि का) 5. नियुक्त किया गया 6. समुचित, उपयुक्त, तम् चोट, चटनी।

प्रहीण (भू० क० कृ०) [प्र—हा—क्त, ईत्, तस्य नः, णत्वम्] छोड़ा गया, खाली किया गया, त्यागा गया, णम् विनाश, निराकरण, घाटा।

प्रहुतः, तम् [प्र+हु+क्त] भूतयज्ञ, बलिवैश्वदेव, दैनिक पाँच यज्ञों में एक, तु० मनु० ३।७४।

प्रहृत (भू० क० कृ०) [प्र—हृ—क्त] पीटा गया, आघात किया गया, चोट किया गया, घायल किया गया। —तम् मुक्का, प्रहार, चोट।

प्रहृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+हृष्+क्त] 1. खुश, प्रसन्न, आनंदित, आह्लादित 2. पुलकित करना, रोमांचित करना (रोंगटे खड़े होना)। सम० **आत्मन्** चित्त, -मनस् (वि०) मन से खुश, हृदय से आनन्दित।

प्रहृष्टकः [प्रहृष्ट—कन्] काक, कौवा।

प्रहेलकः [प्र—हिल्+ण्वुल्] 1. एक प्रकार का सुहाल, मीठी रोटी 2. पहेली—दे० नी० 'प्रहेलिका'।

प्रहेला [प्र+हिल्+अ+टाप्] मुक्त या अनियंत्रित व्यवहार, शिथिल आचरण, रसरेली, विहार।

प्रहेलिः (स्त्री०), प्रहेलिका [प्र ; हिल्+इन्, प्रहेलि+कन्+टाप्] पहेली, बुझौवल, कूट प्रश्न, विदग्धमुख-मंडन में दी गई परिभाषा व्यक्तीकृत्य कम्पत्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्, यत्र बाह्यान्तरावर्थौ कथ्यते सा प्रहेलिका। यह आर्थी और शाब्दी दो प्रकार की है। तरुण्यालिङ्गितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः, गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः। (यहाँ पहेली का उत्तर है 'इषद्गुनजलपूर्णकुम्भः') यह आर्थी का उदाहरण है। सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्त-रक्ताप्युसितैव नित्यं यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम कालेनि निवेदयामः। (यहाँ पहेली का उत्तर है मारिका) यह पहेली का उदाहरण है। दण्डी ने सोलह प्रकार की पहेलियां बतलाई हैं काव्या० ३।९६—१२४।

प्रह्लम्र (भू० क० कृ०) [प्र+ह्लाद्+क्त, ह्रस्वः] खुश, आनंदित, प्रसन्न।

प्रह्लाद (ह्लाद) दः [प्र+ह्लाद्+घञ्, रलयोरैक्यम्] 1. अत्यधिक हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द 2. शब्द, आवाज 3. हिरण्यकशिपु राक्षस के पुत्र का नाम (पद्मपुराण के अनुसार प्रह्लाद अपने पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। जब उसने हिरण्यकशिपु के यहाँ जन्म लिया तो भी उसकी विष्णु के प्रति अनन्यभक्ति बनी रही। उसका पिता यह नहीं चाहता था कि उसका अपना पुत्र ही उसके घोर शत्रु देवों का ऐसा पक्का भक्त बने! अतः उसमें छुटकारा पाने के उद्देश्य से उसने अपने पुत्र प्रह्लाद को नाना प्रकार की यातनाएं दीं। परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा, उसने और भी अधिक उत्साह से इस बात का उपदेश करना आरम्भ कर दिया कि विष्णु सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् हैं। हिरण्यकशिपु ने आज्ञादेश में प्रह्लाद से पूछा कि क्या वह यदि विष्णु सर्वव्यापक है तो इस वृक्ष के स्तंभ में वह मुझे क्यों नहीं दिखाई देता? इस पर प्रह्लाद ने स्तंभ पर मुक्के का आघात किया (दूसरे मतानुसार स्वयं हिरण्यकशिपु ने क्रोध में भरकर अपने पुत्र के विश्वास की सत्यता का उसे विश्वास दिलाने के लिए स्वयं स्तंभ को ठोकर मारी) फलतः विष्णु नरसिंह (अर्ध मनुष्य तथा अर्ध सिंह) के रूप में प्रकट हुआ और हिरण्यकशिपु के टुकड़े टुकड़े कर दिये। प्रह्लाद अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बुद्धिमत्ता पूर्वक, तथा न्यायपूर्वक राज्य किया)।

प्रह्लाद(ह्लाद)न (वि०) [प्र+ह्लाद्+णिच्+ल्युट्, रलयोरैक्यम्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला रघु० १३।४,—नम् हर्ष या प्रसन्नता पैदा करना, आनन्द देना, खुश करना—यथा प्रह्लादनाश्चन्द्रः—रघु० ४।१२।

प्रह्व (वि०) [प्र+ह्वे+क्वन्, वि० साधुः] 1. झुकाया हुआ, तिरछा, झुका हुआ शि० १२।५६ 2. झुकता हुआ, नीचे को झुका हुआ, विनम्र, विनीत एष प्रह्वोऽस्मि भगवन् एषा विज्ञापना च नः—महावी० १।४७, ६।३७ 3. दीन, विनीत, सुशील, विनयी प्रह्वेष्वनिर्वन्धरुषो हि सन्तः— रघु० १६।८० 4. अनुरक्त, भक्त, व्यस्त, आसक्त। सम०—अञ्जलि (वि०) सम्मान के चिह्न स्वरूप दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुकाए हुए।

प्रह्वयति (ना० धा०—पर०) विनीत करना, वशवर्ती बनाना।

प्रह्वलिका (स्त्री०) दे० प्रहेलिका।

प्रह्वायः [प्र+ह्वे—घञ्] बुलावा, आमंत्रण, निमंत्रण।

प्रांशु (वि०) [प्रकृष्टः अंशवो यस्य—प्रा० ब०] 1. ऊँचा, लंबा, कद्दावर, ऊँचे कद का (मनुष्य)—आलम्बेयं प्रांशुः भुज. रघु० १।१३, १५।१९ 2. लंबा, बढ़ाया हुआ—शि० २।१५, शुः लंबा मनुष्य, बड़े कद का आदमी प्रांशुलभ्ये फले लोभाद्बाहूत्क्षिप्त वामनः रघु० १।३।

प्राक् (अव्य०) [प्राप्ति नक्तस्यर्थे अंगिः तस्य लुक्] 1. पहले (अपा० के साथ) नक्तलोनि निमित्तानि प्राक्प्रभातानात्तानी मम भट्टि० ८।१०, ६, प्राक् सृष्टेः केवलात्मने कु० २।४, रघु० १४।७८, शि० ५।२१ 2. सबसे पहले, पहले ही—प्रत्यक्षं प्रामाणि कोऽलङ्क्रे रघु० ७।३४ 3. पहले, पूर्व, पूर्व अंश में (पुस्तक के)—इति प्राक्तेन निर्दिष्टम् मनु० १।७१ 4. पूर्व में, से पूर्व दिशा में—प्राक्प्राक् पर्वत. 5. सामने 6. जहाँ तक हो वहां तक, पर्यंत, तक प्राक् कडारात्।

प्राकटयम् [प्रकट+ष्यञ्] प्रकट करना, प्रकाशित करना, कुख्याति।

प्राकरणिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रकरण+ठक्] विचारणीय विषय से संबंध रखने वाला, प्रस्तुत विषय (अलंकार शास्त्रियों द्वारा प्रायः 'उपमेय' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) से संबंद्ध,—अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुतप्रशंसा—काव्य० १०।

प्राकर्षिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रकर्ष+ठक्] श्रेष्ठतर या अधिक अच्छा समझा जाने का अधिकारी।

प्राकर्षिकः [प्र—आ+कर्ष+इक्वन्] 1. लौंडा, गांड 2. दूसरे की स्त्री से अपनी जीविका चलाने वाला।

प्राकाम्यम् [प्रकाम+ष्यञ्] 1. इच्छा की स्वतन्त्रता —प्राकाम्यं तं विभूतिषु— कु० २।११ 2. स्वेच्छाचारिता 3. अनिवार्य संकल्प, शिव की आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक (जिसकी प्राप्ति से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं) दे० 'सिद्धि'।

प्राकृत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [प्रकृति+अण्] 1. मौलिक, नैसर्गिक, अपरिवर्तित, अविकृत—स्वाभाविकमित्येतौ भिन्नौ च सहजप्राकृतावपि— शि० २।३६, (इस पर देखो मल्लि०) 2. प्रचलित, सामान्य, साधारण 3. असंस्कृत, गंवार, अगभ्य, अशिक्षित प्राकृत इव परिभूयमानमात्मानं न दर्शयति—का० १४६, भग० १८।२४ 4. नगण्य, महत्त्वहीन, तुच्छ मुद्रा० १, 4. प्रकृति से उत्पन्न प्राकृतो लयः 'प्रकृति में ही पुनः लीन होना' 5. प्रान्तीय, देहाती (बोली), दे० नी०,—तः ओछा मनुष्य, साधारण व्यक्ति, देहाती पुरुष,—तम् एक देहाती या प्रान्तीय बोली जो संस्कृत से व्युत्पन्न तथा उससे मिलती-जुलती है—प्राकृतिः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्कृतं तथा भवं तत आगतं च प्राकृतम्—हेम० । (इनमें बहुत सी बोलियां संस्कृत नाटकों में नियत श्रेणी के पात्रों या स्त्री पात्रों द्वारा बोली जाती हैं) चतुर्वत्स्यन्यो देशीभेदैः प्राकृतकम्—काव्या० १।३३, ३८, ३५ तदमध्यसादृशजनयोग्ये प्राकृतमार्गे प्रवर्तार्थम्—विद्ध० १। सम०—अरिः नैसर्गिक शत्रु अर्थात् पड़ोसी देश का शासक दे०, शि० २।२६ पर मल्लि०,—उदासीनः नैसर्गिक तटस्थ अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक मित्र राज्य के परे है,—ज्वरः सामान्य या साधारण बुखार, —प्रलयः विश्व का पूर्ण विघटन,—मित्रम् नैसर्गिक मित्र अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक शत्रु राज्य से मिला हुआ है (अथवा जिसका देश उस देश से पृथक् है जिसके साथ मित्रता का संबंध हो चुका है)।

प्राकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकृति+ठक्] 1. नैसर्गिक, प्रकृति से व्युत्पन्न—महाभा० ७।३९ 2. आनुमानिक, अनुमानात्मक।

प्रावतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राच+ट्यु, तुडागमः] 1 पहला, पूर्व का, पिछला—प्रणीते प्रावतनजन्मनीव—कु० १।० 2. पुराना, प्राचीन, पहले का 3. पूर्व-जन्म से संबद्ध, या पूर्वजन्म में किये हुए कार्य —संस्कृता प्राक्तना उव—रघु० १।२०, कु० ६।१० ।

प्राक्षर्यम् [प्रखर+ष्यञ्] 1. पैनापन 2. तीक्ष्णता 3. धृष्टता ।

प्रागल्भ्यम् [प्रगल्भ+ष्यञ्] 1. साहस, भरोसा—विनयाव-सर्वं प्रागल्भ्यम्—मा० द० 2. घमंड, अहंकार, 3. प्रवीणता, कुशलता 4. विकास, वयस्कता, परिपक्वता —बुद्धिप्रागल्भ्य, तमः प्रागल्भ्य आदि 5. एकत्रीकरण, प्रतीति—अवाप्त प्रागल्भ्य परिचलरुचः शैलसुतया —काव्य० १० 'जो प्रतीत हुआ' 6. शक्तवृद्धता प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य विद्या शस्त्रं यथा कापुरुषस्य हस्ते (यहाँ 'प्रागल्भ्य' का अर्थ 'साहस' भी है)—मा० ३।११ 7 धूमधाम, मनोरंजन 8 बुद्धता, ढिठाई।

प्रागारः [प्रकृष्टः आगारः—प्रा० स०] घर, भवन।

प्राग्र्यम् [प्र+ग्र्य+अण्] उच्चतम बिन्दु। सम०—सर (वि०) प्रथम, अग्रणी,—हर (वि०) मुख्य, प्रधान—रघु० १६।२५ ।

प्राग्राटः [प्राग्र+अट्—अच्] पतला जमा हुआ दूध।

प्राग्र्य (वि०) [प्राग्र+यत्] मुख्य, अग्रणी, उत्तम, अतिश्रेष्ठ।

प्राघातः [प्रकृष्टः आघातः—प्रा० स०] युद्ध, लड़ाई।

प्राघारः [प्र+घृ—घञ्] टपकना, बूंद बूंद गिरना, रिसना।

प्राघुणः, प्राघुणकः, प्राघुणिकः, प्राघूर्णकः, प्राघूर्णिकः [प्र—घृण्+क, प्राघुण+ठक् प्र+आ+घूर्ण्+ण्वुल्, प्राघूर्ण+ठञ्] अतिथि, पाहुना, अभ्यागत, मेहमान-चिरपरिगणयन्मूर्तिमासलोपि रोषः क्षणप्राघुणिको बभूव भामि० २।९९, श्रवण-प्राघुणिकीकृता जनैः (कथाः)—नै० २।५६ ।

प्राङ्गम [प्रकृष्टमगं यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार की छोलक, पपैया।

प्राङ्गण (नपुं) [प्रकृष्टं अंगनं गमनं यत्र—प्रा० ब०] 1. सहन, आंगन 2. (घर का) फर्श 3. एक प्रकार की छोलक।

प्राच् प्राञ्च् (वि०) (स्त्री०—ची) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1. सामने की ओर मुड़ा हुआ, आगे बिल्कुल आगे रहने वाला 2. पूर्वदिशा संबंधी, पूर्व का 3 प्राथमिक, पहला, पूर्वकाल का (पं० ब० व०) 1. पूर्वदेश के लोग 2. पूर्वीय वैयाकरण। सम० अग्र (वि०) (समास) पूर्वदिशा की ओर दृष्टि फेरे हुए, —अभावः (प्रागभावः) पिछला, संसर्ग का अभाव, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का अनस्तित्व, उत्पत्ति से पूर्व की अवस्था,—अभिहित (वि०) (प्राग्भिहित) पूर्वोक्त, —अवस्था (प्रागवस्था) पहली दशा,—न तहि प्राग-वस्थायाः परिहारेण मा० ४, 'पहली अवस्था की अपेक्षा कमी पर नहीं हो,' आयत (वि०) (प्रागा-यत) पूर्वदिशा की ओर बढ़ा हुआ,—उक्तिः (स्त्री०) (प्राग्युक्तिः) पूर्वकथित,—उत्तर (वि०) (प्रागुत्तर) पूर्वोत्तर का,—उदीची (स्त्री०) (प्रगुदीची) पूर्वोत्तर दिशा, कर्मन् (नपुं) (प्राक्कर्मन्) पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य,—कालः (प्राक्कालः) पहला युग,—कालीन (वि०) (प्राक्कालीन) पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, पुराना, प्राचीन,—कूल (वि०) (प्राक्कूल) जिसकी नोक पूर्वदिशा की ओर मुड़ी हुई हो (कुश-ग्राम) मनु० २।७५, कृतम् (प्राक्कृतम्) पूर्वजन्म में किया गया कार्य,—चरण (प्राक्चरण) स्त्री की जननेन्द्रिय, योनि, चित्रम् (अव्य०) (प्राक्चित्रम्) समय रहते, देर न करके,—जन्मन् (नपुं०) (प्राज-न्मन्), —जातिः (स्त्री०) (प्राग्जातिः) पूर्वजन्म —ज्योतिषः (पाल्ययोतिषः) 1 एक देश का नाम, कामरूप देश का नामांतर 2. (ब० व०) इस देश के रहने वाले लोग (वर्ष) एक नक्षत्र का नाम, ज्येष्ठ विष्णु का विशेषण, दक्षिण (वि०) (प्रा-दक्षिण) दक्षिणपूर्वी, देशः (प्राग्देशः) पूर्वदिशा का देश, द्वार,—द्वारिक (वि०) (प्राद्वार, प्राग्द्वारिक) जिसका दरवाजा पूर्वदिशा की ओर हो,—न्यायः (प्राङ् न्याय्य) पहली जांचपड़ताल का तर्क, पहले से ही निर्णीत मुकदमा आवारेणावसमर्थोपि गृह्यलेखयते यदि, सोऽभिधेयो जितः पूर्वं प्राङ्न्यायस्तु स उच्यते 1. —प्रहारः (प्राक्प्रहारः) पहला मुक्का,—फलः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(प्राकफलः) कटहल का पेड़,--फ (फा)ल्गुनी (प्राकफ (फा)ल्गुनी) ग्यारहवाँ नक्षत्र, पूर्वाफाल्गुनी, भवः 1. बृहस्पतियह 2. बृहस्पति का नाम,--फाल्गुनः, फाल्गुनेयः (प्राकफाल्गुनः, प्राकफाल्गुनेयः) बृहस्पतिग्रह, भक्तम् (प्राग्भक्तम्) भोजन से पूर्व औषधिसेवन भागः (प्राग्भागः) 1. सामने का भाग 2. अगला भाग,—भारः (प्राग्भारः) 1. पहाड़ का शिखर या चोटी—मा० ९।१५ 2. सामने का भाग, (किसी चीजका) अगला भाग या किनारा कन्दरोत्कीर्णचण्डाकृतिभूतप्राग्भारभीमस्तटः—मा० ९।१५ 3. बड़ा परिमाण, ढेर, समुच्चय, बाहुल्य—भर्तृ० ३।१२९, मा० ५।२९,—भावः (प्राग्भावः) 1. पूर्वजन्म 2. श्रेष्ठता, उत्तमता, मुख (वि०) (प्राङ्मुख) 1. पूर्व की ओर को मुड़ा हुआ -कु० ७।१३, मनु० २।५१, ८।८७, 2. झुका हुआ, कामना करता हुआ, इच्छुक, वंशः (प्राग्वंशः) 1. यज्ञशाला जिसके स्तंभ पूर्व की ओर मुड़े हुए हों रघु० १६।६१ (प्राचीनस्थूणो यज्ञशालाविशेषः - मल्लि०, परन्तु कुछ लोगों के मतानुसार इस का अर्थ है 'वह कक्ष जहाँ यजमान का परिवार और मित्र इकट्ठे रहते हों') 2. पहला वंश या पीढ़ी, —वृत्तम् --दे० प्राङ् न्याय, --वृत्तान्तः (प्राक्वृत्तान्तः) पहली घटना,--शिरस्, शिरस्क,--शिरस्क (वि०) (प्राक्शिरस् आदि) पूर्वदिशा की ओर सिर मोड़े हुए, --संध्या (प्राक्संध्या) प्रातःकालीन संध्या,—सेवनम् (प्राक्सेवनम्) प्रातःकालीन जलतर्पण या यज्ञ, —स्रोतस् (वि०) (प्राक्स्रोतस्) पूर्व की ओर बहने वाला।

प्राक्षण्डधम् [प्रचण्ड+ष्यञ्] 1. उत्कटता, उग्रता, 2. भीषणता, विकराल दृष्टि—मा० ३।१७।

प्राक्षिका [प्र+अक्ष+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. मच्छर डांस की जाति की एक उंगली मक्खी।

प्राची [प्र+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पूर्व दिशा,--तनयमचिरात् प्राचीवार्काः प्रसूत च पावनम्—श० ४।१८। समः --पतिः इन्द्र का विशेषण, मूलम् पूर्वी क्षितिज --प्राचीमूले तनुमिव कलामात्रशेषां हिमांशोः। मेघ० ८९।

प्राचीन (वि०) [प्राच्+ख] 1. सामने की ओर या पूर्व दिशा की ओर मुड़ा हुआ, पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 2. पहला, पूर्वकाल का, पूर्वोक्त 3. पुराना, पुरातन, —नः, नम् बाड़, दीवार। समः --अग्र (वि०) दे० प्रागग्र, --आवीतम् यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो दाहिने कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहना हुआ हो जैसा कि श्राद्ध के अवसर पर), --आवीतिन्, —उपवीत (वि०) जनेऊ की तरह कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहनने वाला—मनु० २।६३,— कल्पः पहला कल्प,—गाथा पुरानी कहानी, --तिलकः चन्दमा, --पतिः बेल का वृक्ष,- बर्हिस् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, मतम् पुरानी सम्मति।

प्राचीरम् [प्र+आ+चि+क्रन्, दीर्घः] घेरा, बाड़, दीवार।

प्राचुर्यम् [प्रचुर+ष्यञ्] 1. बहुतायत, पर्याप्तता, बहुलता 2. समुच्चय।

प्राचेतसः [प्रचेतसः अपत्यम्-प्रचेतस्+अण्] 1. मनु का पैतृक नाम 2. दक्ष का कुलसूचक नाम 3. वाल्मीकि का गोत्रीय नाम।

प्राच्य (वि०) [प्राचि भवः यत्] 1. सामने से स्थित या विद्यमान 2. पूर्व दिशा में रहने वाला, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 3. प्राथमिक पूर्ववर्ती, पहला 4. प्राचीन, पुराना (ब० व०—च्याः) 1. पूर्वी देश, सरस्वती के दक्षिण में या पूर्व में स्थित देश 2. इस देश के निवासी। समः --भाषा पूर्वी बोली, भारत के पूर्व में बोली जाने वाली भाषा।

प्राच्यक (वि०) [प्राच्य+कन्] पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी।

प्राच्छ (वि०) [प्रच्छ+क्विप्, नि० दीर्घः] (कर्तृ०, ए० व०-प्राट्,प्राड्) पूछने वाला, पूछताछ करने वाला, प्रश्न करने वाला, जैसा कि 'शब्द प्राट्' में। समः - विवाकः (प्राड्विवाकः) न्यायाधीश, कचहरी या अदालत में प्रधान पद पर अधिष्ठित अधिकारी —मनु० ८।७९, १८१, ९।२३४।

प्राजकः [प्र+अज्+णिच्+ण्वुल्] सारथि, चालक, रथवान् मनु० ८।२९३।

प्राजनः-नम् [प्र+अज्+ल्युट्] हंटर, चाबुक, अंकुश —त्यक्तप्राजनरश्मिरङ्कुततनुः पार्थोऽङ्कितैर्मार्गणैः —वेणी० ५।१०।

प्राजापत्य (वि०) [प्रजापति+यक्] प्रजापति से संबंध रखने वाला या जो प्रजापति के लिए पुण्यप्रद हो,—त्यः हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें लड़की का पिता वर से बिना किसी प्रकार का उपहार लिए केवल इस लिए कन्यादान करता है जिससे वह सानन्द, श्रद्धा और भक्तिपूर्वक साथ २ रहकर दाम्पत्य जीवन बिताएँ—सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य च, कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिः स्मृतः- मनु० ३।३०, या, इत्युक्त्वाचरतां धर्मं सह या दीयतेऽग्निे, स कायः (अर्थात्-प्राजापत्यः) पाणिग्रहणजः षट् षड् वंश्यान्सहात्मना- याज्ञ० १।६० 2. गंगा और यमुना का संगम, प्रयाग, -त्यम् 1. एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्रहीन पिता अपनी लड़की के पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियत करने से पूर्व करता है 2. सर्जनात्मक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊर्जा या शक्ति, -त्या संन्यासी बनने से पूर्व अपनी सारी संपत्ति को दान कर देना।

प्राजिकः [प्र+अज् + ऊक्] बाज, पक्षी, श्येन।

प्राजित् प्राजिन् (पुं०) [प्र+अज् + तुच्, प्र+अज् + णिनि] सारथि, चालक, रथवान्- शि० १८।७।

प्राजेशम् प्रजेशो देवताऽस्य-प्रजेश+अण्] रोहिणी नक्षत्र।

प्राज्ञ (वि०) (स्त्री०-ज्ञा, ज्ञी) [प्रकर्षेण जानाति इति -प्र+ज्ञा+क-प्रज्ञ, ततः स्वार्थे-अण्] 1. मनीषी 2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर- किमुच्यते प्राज्ञः खलु कुमारः उत्तर० ४,-ज्ञः 1. बुद्धिमान् पुरुष तेभ्यः प्रज्ञा न विभ्यति वेणी० २।१४, भग० १७।१४ 2. एक प्रकार का तोता, -ज्ञा 1. बुद्धि, समझ 2. चतुर या समझदार स्त्री, -ज्ञी 1. चतुर या विदुषी स्त्री 2. विद्वान् पुरुष की पत्नी 3. सूर्य की पत्नी का नाम।

प्राज्य (वि०) [प्र+अज्+क्यत्] 1. प्रचुर, पर्याप्त, बहुल, अधिक, बहुत तव भवतु विडोजाः प्राज्यवृष्टिः प्रजासु -श० ७।३४, रघु० १३।६२, शि० १४।२५ 2. बड़ा, विशाल, महत्वपूर्ण-प्राज्यविक्रमः -कु० २।१८, अति प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा गया० ५।

प्राञ्जल (वि०) [प्र+अञ्ज्+अलच्] निश्छल, स्पष्टवक्ता, खरा, ईमानदार, निष्कपट।

प्राञ्जलि (वि०) [प्रबद्धा अञ्जलि र्येन-प्रा० ब०] विनम्रता और सम्मान के चिह्नस्वरूप जिसने अपने हाथ जोड़े हुए हैं।

प्राञ्जलिक, प्राञ्जलिन् (वि०) [प्राञ्जलि+कन्, इनि वा] दे० 'प्राञ्जलि'।

प्राणः [प्र+अन्+अच्, घञ् वा] 1. सांस, श्वास 2. जीवन का सांस, जीवनशक्ति, जीवन, जीवनदायी वायु, जीवन का मूलतत्त्व (इस अर्थ में प्रायः ब० व०, क्योंकि प्राण गिनती में पांच हैं -प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान) - प्राणैरुपक्रोशबलीमसेवी -रघु० २।५३, १२।५४ 3. जीवन के पांच प्राणों में से पहला (जिसका स्थान फेफड़े हैं) भग० ४।२० 4. वायु, अन्दर खींचा हुआ सांस 5. ऊर्जा, बल, सामर्थ्य, शक्ति, जैसा कि 'प्राणसार' में 6. जीव या आत्मा (शरीर) 7. परमात्मा 8. ज्ञानेन्द्रिय,—मनु० ४।१४० 9. प्राणों के समान आवश्यक या प्रिय, प्रिय व्यक्ति या पदार्थ,-कोशः कोशवतः प्राणाः प्राणाः प्राणा न भूपतेः--हि० २।९२, अर्थपतेर्विमर्दको बद्धिस्थिराः प्राणाः—दश० 10. कविता का सत्, काव्यमयी प्रतिभा, स्फूर्ति 11. महत्त्वाकांक्षा, त्वासग्रहण —जैसा कि महाप्राण और अल्पप्राण में 12 पाचन 13. समय का मापक सांस 14. लोबान, गोंद। सम०—**अतिपातः** जो वित प्राणी का वध, जान लेना, --**अत्ययः** जीवन की हानि,—**अधिक** (वि०) 1. प्राणों से भी प्रिय, 2. सामर्थ्य और बल में श्रेष्ठ, **अधिनाथः** पति,—**अधिपः** आत्मा,- **अन्तः** मृत्यु, —**अन्तिक** (वि०) 1. घातक, नश्वर 2. जीवन भर रहने वाला, जीवन के साथ ही समाप्त होने वाला 3. फांसी का दण्ड (कम्) वध,—**अपहारिन्** (वि०) घातक, प्राणनाशक,—**अयनम्** ज्ञानेन्द्रिय,— **आघातः** जीवन का नाश, जीवित प्राणी का वध—भर्तृ० ३।९३, **आचार्यः** राजा का बैद्य, **आढ्** (वि०) घातक, नश्वर, प्राणघातक,—**आधारः** जीवन की क्षति,—**आयामः** देवगुणों का मानस-पाठ करते हुए सांस रोकना,—**ईशः**, —**ईश्वरः** प्रेमी, पति -अमरु ६७, भामि० २।५७, - **ईशा**,—**ईश्वरी** पत्नी, प्रिया, गृहस्वामिनी, **उत्क्रमणम्**- **उत्सर्गः** आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ देना, मृत्यु, **उपाहारः** भोजन, **कृच्छ्रम्** जीवन का खतरा, प्राणों का भय, **घातक** (वि०) जीवन का नाश करने वाला,—**घ्न** (वि०) घातक, जीवन-नाशक,—**छेदः** वध, हत्या, **त्यागः** 1. आत्महत्या 2. मृत्यु,—**दम्** 1. पानी 2. सुधिर, —**दक्षिणा** प्राणों की भेंट,- **दण्डः** फांसी का दण्ड, --**दयितः** पति,—**दानम्** प्राणों की भेंट, किसी को जान बचाना, -**द्रोहः** किसी की जान पर आक्रमण,- **धारः** जीवित प्राणी, **धारणम्** 1. भरण-पोषण, जीवन का सहारा 2. जीवनशक्ति, —**नाथः** 1. प्रेमी, पति 2. यम का विशेषण,- **निग्रहः** सांस रोकना, श्वासावरोध,—**पतिः** 1. प्रेमी, पति 2. आत्मा, —**परिक्षयः** जान जोखिम में डालना,—**परिग्रहः** जीवन-धारण करना, जीवन या अस्तित्व रखना,—**प्रद** (वि०) जीवन देने वाला, जीवन बचाने वाला,—**प्रयाणम्** प्राणों का चला जाना, मृत्यु, - **प्रिय**: 'प्राणों के समान प्यारा' प्रेमी, पति,—**भक्ष** (वि०) वायुपायी, - **भृत्** (पुं०) समुद्र, - **भृत्** (पुं०) प्राणधारी जन्तु —अन्नंवै प्राणभृतां हि वेद -रघु० २।४३,—**मोक्षणम्** 1. प्राणों का चला जाना, मृत्यु 2. आत्महत्या, - **यात्रा** जीवन का सहारा, भरण-पोषण, जीविका

प्राणतापात्ययप्राणयात्रा भगवतीम्—मा० १—**योनिः** (स्त्री०) जीवन का स्रोत, —**रन्ध्रम्** 1. मुह 2. नथना, —**रोधः** 1. श्वासावरोध 2. जीवन को खतरा, —**विनाशः**,—**विप्लवः** जीवन की हानि मृत्यु,—**वियोगः** शरीर से आत्मा का विच्छेद, मृत्यु,—**व्ययः** प्राणों का उत्सर्ग, **संयमः** सांस का रोकना, - **संशयः**, - **संकटम्** —**संदेहः** जीवन को खतरा, जीवन का भय, भीषण खतरा,—**सत्त्व** (नपुं०) शरीर, **सारः** (वि०) जीवन ही जिसका बल है, सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, बलिष्ठ —गिरिश्चर इव नागः प्राणसारैः (गात्रम्) बिभर्ति श० २।४,—**हर** (वि०) 1. प्राणघातक, जीवन का अप-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरण करने वाला, घातक--पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि, गीत० ७ 2. फांसी, -हारक (वि०) घातक (कम्) भयंकर वि०।

प्राणक: [प्राण + कै + क] 1. जीवित प्राणी, जीवधारी जन्तु 2. लोबान।

प्राणय: [प्र + अन् + अच] 1. वायु, हवा 2. तीर्थ स्थान 3. प्राणधारियों का स्वामी।

प्राणन: [प्र + अन् + ल्युट्] गला,—नम् 1. श्वासप्रश्वास, सांस लेना 2. जीवन, जीवित रहना।

प्राणन्त: [प्र—अन्+झ, अन्तादेश] वायु, हवा।

प्राणन्ती [प्राणन्त+ङीप्] 1. भूख 2. सुखकना 3. हिचकी।

प्राणाय्य (वि०) (स्त्री० य्यी) [प्र+अन्+णिच्+ण्यत्] उचित, योग्य, उपयुक्त।

प्राणित (वि०) [प्र+अन्+क्त] जीवित, जीवधारी।

प्राणिन् (वि०) [प्राण+इनि] 1. सांस लेने वाला, जीने वाला, जीवित (पु०) जीवित या जीवधारी प्राणी, जीवित जन्तु यथा—प्राणिन: प्राणवत्त: म० १।१,मेघ० ५ 2. मनुष्य। सम० अङ्गम् किसी जन्तु का अंग, -जातम् प्राणीवर्ग, -द्यूतम् (मुर्गों की लड़ाई, भेड़ों की लड़ाई) तीतर बटेर आदि जन्तुओं को लड़ा कर जुआ खेलना, -पीडा जन्तुओं के प्रति क्रूरता, हिंसा जीवन को क्षति, जीवित जन्तुओं को कष्ट देना, -हिंसा क्रूरता, बूट।

प्राणीत्यम् [प्रणीत+ष्यञ्] ऋण।

प्रातर् (अव्य०) [प्र+अत्+अरन्] 1. तड़के, पौ फटने पर, प्रभात काल में 2. कल तड़के, अगले दिन सुबह, कल प्रात: काल। सम० -अह्न: दिन का प्रारम्भिक काल, दोपहर पहले, -आशः प्रात:कालीन भोजन, कलेवा--अन्यथा प्रातराशाय कुर्याम त्वामलं वयम् - भट्टि० ८।२८,—आशिन् (पु०) जिसने कलेवा कर लिया है, या प्रात:काल का भोजन कर लिया है, —कर्मन् (नपु०)—कार्यम्—कृत्यम् (प्रात:कर्म आदि) प्रात:कालीन कर्म,—काल: (प्रात:काल) प्रात: का समय, -गेय: चारण जिसका कर्तव्य किसी राजा या अन्य महापुरुष को उपयुक्त गान द्वारा प्रात: काल जगाना है, -श्रियर्षा (प्रातर्श्रियर्षा) गंगा नदी, -दिनम् दोपहर से पहले,—प्रहर: दिन का पहला पहर, —भोक्तृ (पु०) कौवा,—भोजनम् प्रात: काल का भोजन, कलेवा,—संध्या (प्रात: सन्ध्या) 1. प्रात: काल की सन्ध्या या भजन, -समय: (प्रात: समय:) सवेरे का समय, प्रभातकाल,—सव:, -सवनम् (प्रात: सव: -आदि) सोमयाग द्वारा प्रात:कालीन तर्पण, -स्नानम् (प्रात: स्नानम्) सवेरे ही नहाना, —होम: (प्रातर्होम:) प्रात:काल का यज्ञ।

प्रातस्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रातर्+ट्यु, तुट्] प्रात:काल से संबद्ध, सुबह का।

प्रातस्तराम् (अव्य०) [प्रातर् + तरप्+आम्] सुबह बहुत सवेरे प्रातस्तरां पतत्रिण: प्रबुद्ध इवाग्रमन् रविम् भट्टि० ४।१४।

प्रातस्त्य (वि०) [प्रातर्+त्यक] सुबह का, प्रभात कालीन।

प्रातिः (स्त्री०) [प्र+अत्+इन्] 1. अगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2. भरता।

प्रातिका [प्र+अत्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] जड़ी का पौधा।

प्रातिकूलिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिकूल+ठक्] विरुद्ध, विरोधी, प्रतिकूल रहने वाला।

प्रातिकूल्यम् [प्रतिकूल+ष्यञ्] प्रतिकूलता, विरोध, शत्रुता, अननुकूलता, असंतोषपूर्णता।

प्रातिजनीन (वि०) (स्त्री० नी) [प्रतिजन+खञ्] जन का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त।

प्रातिज्ञम् [प्रतिज्ञा+अण्] विचारणीय विषय।

प्रातिदैवसिक (वि०) (स्त्री० सी) [प्रतिदिवस+ठक्] प्रतिदिन होने वाला।

प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) [प्रतिपक्ष+अण्] 1. विरुद्ध, प्रतिकूल 2. शत्रुतापूर्ण, शत्रुसम्बन्धी।

प्रातिपक्ष्यम् [प्रतिपक्ष+ष्यञ्] शत्रुता, विरोधिता।

प्रातिपद (वि०) (स्त्री० दी) [प्रतिपद्+अण्] 1. उपक्रम करने वाला 2. प्रतिपदा के दिन उत्पन्न, प्रतिपदा से संबद्ध।

प्रातिपदिक: [प्रतिपदा+ठक्] अग्नि, -कम् सामान्य शब्द का परिनिष्ठित रूप, विभक्ति चिह्न के जुड़ने से पूर्व संज्ञा शब्द—अर्थवदधातुरप्रत्यय: प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।

प्रातिपौरुषिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिपुरुष+ठक्] पौरुषेय मर्दानगी या पराक्रम से संबद्ध।

प्रातिभ (वि०) (स्त्री०—भी) [प्रतिभा+अण्] प्रतिभा या विश्वास से संबंध रखने वाला, -भम् प्रतिभा या विश्वास उत्पन्न। जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना।

प्रातिभाव्यम् [प्रतिभू+ष्यञ्] जमानत या प्रतिभूति होना, जामिनदफा, किसी कर्जदार की (कचहरी में) उपस्थिति करने का उत्तरदायित्व होना (क्योंकि वह विश्वासपात्र है तथा कर्ज का रुपया वापिस कर देगा)।

प्रातिभासिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिभास+ठक्] 1. जो केवल दिखाई दे पर वस्तुत: हो उसका अभाव 3. काल्पनिक 2. दिखाई सी देने वाली।

प्रातिलोमिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिलोम—ठक्] लाभ के विरुद्ध, विरोधी, शत्रुतापूर्ण, अरुचिकर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रातिलोम्यम् [प्रतिलोम +ष्यञ्] 1. उलटापन, व्युत्क्रान्त या प्रतिकूल क्रम -मनु० १०।१३ 2. शत्रुता, विरोध, शत्रु जैसी भावना ।

प्रातिवेशिकः, प्रातिवेश्मकः, प्रातिवेश्यकः [प्रतिवेश+ठक्, प्रतिवेश्म +अण् +कन्, प्रतिवेश +ष्यञ् +कन्] पड़ोसी ।

प्रातिवेश्यः [प्रतिवेश +ष्यञ्] 1. सामान्यतः पड़ोसी 2. बराबर के घर में रहने वाला पड़ोसी (निरंतर-गृहवासी—कुल्लू० ।

प्रातिशाख्यम् [प्रतिशाखम् भवः—ष्यञ्] व्याकरण का एक ग्रंथ जिसमें स्वरसंधि तथा अन्य वर्णपरिवर्तनों के नियमों का उल्लेख है जो कि वेद की किसी भी शाखा में पाये जाते हैं तथा जिसमें स्वराघात सहित उच्चारण को पद्धति बतलाई गई है (प्रातिशाख्य चार हैं—एक तो ऋग्वेद की शाकल शाखा का, दो यजुर्वेद की दोनों शाखाओं के लिए, तथा एक अथर्ववेद का) ।

प्रातिस्विक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रतिस्व+ठक्] विशिष्ट, असाधारण, अपना निजी ।

प्रातिहार्यम् [प्रतिहर्तृ+अण्] चमत्कार, प्रतिशोध ।

प्रातिहारः, प्रातिहारकः, प्रातिहारिकः [प्रतिहार +अण्, प्रातिहार +कन्, प्रतिहार +ठक्] जादूगर, ऐन्द्रजालिक ।

प्रातीतिक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रतीति +ठञ्] मानसिक, केवल मन में विद्यमान, काल्पनिक ।

प्रातीपः [प्रतीप +अण्] शब्दन्त का पैतृक नाम ।

प्रातीपिक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रतीप +ठक्] 1. उलटा विरोधी, विपरीत ।

प्रात्यन्तिकः [प्रत्यन्त +ठक्] प्रत्यन्त का एक राजकुमार ।

प्रात्यहिक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रत्यहम् +ठक्] 1. भरोसे का, विश्वासपात्र 2. किसी ऋणी की विश्वासशीलता के हेतु जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना ।

प्रात्यहिक (वि०) [प्रत्यहम्—ठक्] प्रतिदिन होने वाला, नित्य, प्रतिदिन ।

प्राथमिक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रथम +ठक्] 1. प्रारंभिक 2. पूर्व जन्म का, पूर्वकाल का, पहली बार होने वाला ।

प्राथम्यम् [प्रथम +ष्यञ्] प्रथम होना, पहला उदाहरण, प्राथमिकता ।

प्रादक्षिण्यम् [प्रदक्षिण +ष्यञ्] किसी व्यक्ति या पदार्थ के चारों ओर बायें से चल कर दायें को जाना, और प्रदक्षिणा किये जाने वाले पदार्थ को सदैव अपनी दाईं ओर रखना ।

प्रादुस् (अव्य०) [प्र+अद्+डुसि] दिखाई देने के साथ, स्पष्टतः, प्रकटरूप से, दृष्टि में (प्रायः भू, कृ और अस् के साथ प्रयोग, प्रादुः व्याकृ इव जितः पुरः परेण श्या० ८, १२, कृ, भू और अस् के अन्तर्गत भी देखिए) । सम० -करणम् (प्रादुष्करणं) प्रकटीकरण, दृश्यमान करना,—भावः (प्रादुर्भावः) 1. अस्तित्व में आना, उदय होना -वपुः प्रादुर्भावात्—काव्य० १० 2. प्रकट या दृश्यमान होना, प्रकटीकरण, दर्शन 3. सुनने के योग्य होना 4. पृथ्वी पर देवता का प्रगट होना ।

प्रादुष्यम् [प्रादुस् +यत्] प्रकटीकरण ।

प्रादेशः [प्र+दिश् +घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2. स्थान, जगह, प्रदेश ।

प्रादेशनम् [प्र+आ+दिश्+ल्युट्] भेंट, दान ।

प्रादेशिक (वि०) (स्त्री० -की) [प्रदेश +ठक्] 1. पूर्व दृष्टांत वाला 2. सीमित, स्थानीय 3. यथार्थ,—कः एक जिले का स्वामी ।

प्रादेशिनी [प्रादेश+इनि +ङीप्] तर्जनी अँगुली ।

प्रादोष (वि०) (स्त्री० षी), **प्रादोषिक** (वि०) (स्त्री० —की) [प्रदोष +अण्]+प्रादोष+घञ्] सन्ध्याकालीन, संध्या से संबद्ध ।

प्राधनिकम् [प्रधनं संग्रामं, तत्साधनमस्य प्रधन +ठक्] नाशकारक अस्त्र, कोई भी युद्धोपकरण ।

प्राधानिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रधान +ठक्] 1. अत्यंत श्रेष्ठ या प्रमुख, सर्वोपरि, अत्यन्त पूज्य 2. प्रधान से संबद्ध या उससे उत्पन्न ।

प्राधान्यम् [प्रधान+ष्यञ्] 1. प्रमुखता, सर्वोपरिता, प्रभुत्व, उद्यता 2. प्राबल्य, सर्वोच्चता 3. मुख्य या प्रधान कारण (**प्राधान्येन, प्राधान्यात्, प्राधान्यतः** 'मुख्य रूप से' 'विशेष रूप से' तथा 'प्रधान रूप से' भग०- १०।१९) ।

प्राप्तोत (वि०) [प्र+अधि+इ+क्त] भली-भांति पढ़ा लिखा, (ब्राह्मण की भांति) अत्यन्त शिक्षित ।

प्राप्य (वि०) [प्रगतोऽध्वानम्—प्रा० स०] 1. दूर का, दूरवर्ती, दूर 2. झुका हुआ, रुचि रखता हुआ 3. कसा हुआ, बंधा हुआ 4. अनुकूल,—क्यः गाड़ी,—**ध्वम्** (अव्य०) 1. अनुकूलता के साथ, रुचिपूर्वक, समनुरूपता के साथ, उपयुक्तता से युक्त—सभाजने मे भुजमूर्ध्ववैबाहुः सव्येतरं प्राप्यमिव प्रयुङ्क्ते—रघु० १३।४३ 2. टेढ़ेपन से ।

प्रान्तः [प्रकृष्टः अन्तः—प्रा० स०] 1. किनारा, हाशिया, आंचल, भगजी, छोर—प्रान्तस्तोयैर्दलभिः—श० ४।७ 2. (ओष्ठ व आँख आदि का) किनारा—मा० ४।२, ओष्ठ०, नयन० 3. हद, सीमा 4. अन्तिम किनारा, सीमा,—वीक्षनप्रांतः पंच० ४ 5. बिन्दु, नोक । सम०—स्थ (वि०) पास ही रहने वाला,—**दुर्गम्** नगर के बाहर का, नगरांचल, किले के निकट होने वाला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपनगर, --**विरल** (वि०) अन्त में रसहीन,—शून्य (वि०) दे० 'प्रांतरशून्य',-**स्थ** (वि०) जो सीमा पर रहता है।

प्रान्तरम् [प्रकृष्टम् अन्तरं व्यवधानं यत्र—प्रा० ब०] 1. लंबा और सुनसान मार्ग, जनशून्य या वीरान सड़क 2. छायारहित सड़क, निर्जन भूखण्ड 3. जंगल, उजाड़ 4. वृक्ष की कोटर। सम०--**शून्यः** लंबी सुनसान सड़क (जिस पर वृक्ष या छाया न हो)।

प्रापक (वि०) (स्त्री०--पिका) [प्र+आप्+ण्वुल्] 1. ले जाने वाला, पहुँचाने वाला 2. प्राप्त कराने वाला, सामग्री से युक्त कराने वाला 3. स्थापित करने वाला, वैध बनाने वाला।

प्रापणम् [प्र+आप्+ल्युट्] 1. पहुँचना, बढ़ जाना 2. प्राप्त करना, अधिग्रहण, अवाप्ति 3. ले आना, पहुँचाना, ले जाना 4. सामग्री से युक्त करना।

प्रापणिकः [प्र+आ+पण्+ठक्न्] सौदागर, व्यापारी —आढ्यादिव प्रापणिकादजस्रम्—शि० ५।११।

प्राप्त (भू० क० कृ०) [प्र+आप्+क्त] 1. हासिल, अवाप्त, उपलब्ध, अर्जित 2. पहुँचा हुआ, निष्पन्न 3. घटित, मिला हुआ 4. (खर्च) उठाया हुआ, भुगता, सहन किया हुआ 5. पहुँचा हुआ, आया हुआ, उपस्थित 6. पूरा किया हुआ 7. उचित, सही 8. नियम के अनुसार। सम०- **अनुज्ञ** (वि०) जाने के लिए अनुमत, विदा होने के लिए जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है,-**अर्थ** (वि०) सफल (वः) लक्ष्य पदार्थ, —**अवसर** (वि०) जिसे मौका या अवसर मिल चुका है,—**उदय** (वि०) जो उन्नत हो गया है, या जिसने उन्नति अथवा उच्चतर पद प्राप्त कर लिया है,—**कारिन्** (वि०) सही कार्य करने वाला, -**काल** (वि०) 1. समयानुकूल, यथावसर, उपयुक्त दे० 'अप्राप्त काल, 2. विवाह के योग्य 3. नियत, भाग्य में लिखा, (लः) उचित समय, उपयुक्त या अनुकूल क्षण,-**पंचत्व** (वि०) पाँचों तत्वों में समदृष्टि अर्थात् मृत, तु० 'पंचत्व', --**प्रसव** (वि०) जिसने बच्चे को जन्म दे दिया है, --**बुद्धि** (वि०) शिक्षण प्राप्त किया हुआ, प्रकाश युक्त,—**भारः** बोझा ढोने वाला पशु,-**मनोरथ** (वि०) जिसका मनोरथ पूरा हो गया है, -**यौवन** (वि०) तरुण, वयस्क, जवान,-**रूप** (वि०) 1. सुन्दर, मनोहर 2. बुद्धिमान्, विद्वान् 3. उपयुक्त, समुचित, सुयोग्य, ---**व्यवहार** (वि०) वयस्क, बालिग जो कानून की दृष्टि से अपने कार्यों को संभालने का अधिकारी हो, (वि० अवयस्क) **श्री** (वि०) जिसकी उन्नति किसी और के द्वारा हुई हो।

प्राप्तिः (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1. प्राप्त करना, अधिग्रहण, उपलब्धि, अवाप्ति, लाभ 2. द्रव्य,° यशः,° सुख° आदि 2. पहुँचना, प्राप्त करना 3. पहुँच, आगमन 4. देखना, मिलना 5. परास, पहुँच 6. अनुमान, अटकल 7. हिस्सा, अंश, ढेर 8. भाग्य, किस्मत 9. उदय, पैदावार 10. किसी पदार्थ को प्राप्त करने की शक्ति (आठ सिद्धियों में से एक) 11. संघ, समुच्चय, संहति 12. किसी योजना की सफल समाप्ति, सुखागम। सम०- **अशा** किसी चीज की प्राप्त करने की आशा (नाटकीय कथावस्तु के विकास का एक भाग)- उपायापायसंशया प्राप्त्याशा प्राप्तिसंभवा—सा० द० ६।

प्राबल्यम् [प्रबल+ष्यञ्] 1. प्रभुता, सर्वोच्चता, वीरबाला 2. शक्ति, बल, ताकत।

प्राभा (वा) लिकः [प्रभा (वा) ल+ठक्] मृगों का व्यापार करने वाला।

प्रबोध (धि) कः [प्र+आ+बुध्+णिच्+घञ्, प्रबोध+ठन्] 1. तड़का, प्रभात 2. चारण जिसका कर्तव्य प्रातःकाल उपयुक्त भजन गाकर अपने आश्रयदाता राजा को जगाना है।

प्राभञ्जनम् [प्रभञ्जन+अण्] स्वातिनक्षत्र।

प्राभञ्जनिः [प्रभञ्जन+इञ्] 1 हनुमान् का विशेषण 2 भीम का विशेषण।

प्राभवम् [प्रभु+अण्] सर्वोच्चता, सर्वोपरिता, प्रभुता।

प्राभवत्यम् [प्रभवत्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, अधिकार, सत्ता, शक्ति मनु० ८।४१२।

प्राभाकरः [प्रभाकर+अण्] 'प्रभाकर का अनुयायी' मीमांसा के आचार्य प्रभाकर के मत (प्राभाकर) का अनुयायी।

प्राभातिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रभात+ठक्] प्रातःकाल संबंधी, प्रभातकालीन।

प्राभृतम्, प्राभृतकम् [प्र+आ+भृ+क्त, प्राभृत+कन्] 1. उपहार, भेंट, किसी राजा या देवता को भेंट, नजराना 2. शिष्टता।

प्रामाणिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रमाण+ठक्] 1. प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाण पर आधारित या आश्रित 2. शास्त्रसिद्ध 3. अधिकृत, विश्वसनीय 4. प्रमाण संबंधी, कः 1. जो प्रमाण को मानता है 2. जो नैयायिकों के प्रमाणों का ज्ञाता है, तार्किक 3. किसी व्यवसाय का प्रधान।

प्रामाण्यम् [प्रमाण+ष्यञ्] 1. प्रमाण होना या प्रमाण पर आश्रित होना 2. विश्वसनीयता, प्रामाणिकता 3. प्रमाण, साक्ष्य, अधिकार।

प्रामादिक (वि०) [प्रमाद+ठक्] असावधानतावश, गलत, दोषयुक्त, अशुद्ध - इति प्रामादिकः प्रयोगः या पाठः आदि।

प्रामाद्यम् [प्रमाद+ष्यञ्] 1. त्रुटि, दोष, गलती, अशुद्धि, 2. पागलपन, उन्माद 3. नशा, मादकता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रायः [प्र+अय्+घञ्] 1. अपगमन, विदायगी, जीवन से प्रयाण 2. आमरण अनशन, व्रत रखना, किसी इष्टसिद्धि के लिए खाना पीना छोड़ कर धरना देना, (प्राय आस्' 'उपविश्' आदि शब्दों के साथ, देo नीo प्रायोपवेशन 3. बड़े मे बड़ा भोग, अधिकांश अवस्था ४. अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता 5. जीवन की एक दशा, विo (समास के अन्त में लग कर 'प्राय' का अनुवाद निम्नांकित होता है (क) अधिकांश में, बहुधा, अधिकतर, लगभग, तकरीबन,-पतनप्रायो गिरने वाले; मृतप्रायः लगभग मरा हुआ, मरने मे जरा कम, तकरीबन मरा हुआ या (ख) से युक्त, समृद्ध, भरा हुआ, अत्यधिक, प्रचुर कण्टकप्राय शरीरम् उत्तर १, शालीयप्रायो देशः पंच० ३, क्रमेलकोदग्राणि वनानिलाः उत्तर० ३।२४, मृतप्राय से भरा हुआ था (ग) के समान, सिक्त-जलता वर्षशतप्रायं दिनम्, अमृतप्राये वचनम् आदि। समo - **उपगमनम्, उपवेशः उपवेशनम्, उपवेशनिका**, बिना खाये पीये धरना देना और इस प्रकार मरने की तैयारी करना, आमरण अनशन मया प्रायोपवेशनं कृत इति पंच० ४, प्रायोपवेशमतिर्गतिर्विभुवं रघु० ८।५८, प्रायोपवेशसदृश वनमाविशन्त्या वेणी० ३।१५, **उपेत** (वि०) बिना खाये रहकर मृत्यु की बाट जोहने वाला, **उपविष्ट**(वि०) आमरण अनशन करने वाला, **-दर्शनम्** सामान्य घटनास्थल।

प्रायणम् [प्र+अय् ल्युट्] 1. प्रवेश, आरंभ, शुरू 2. जीवनपथ 3. धार्मिक मृत्यु मनु० ९।३२३ 4. शरण लेना।

प्रायणीय (वि०) [प्र+अय्+अनीयर्] प्रस्थानात्मक, आरंभिक, दीक्षात्मक,—**यम्** सोमयाग का प्रथम दिन।

प्रायशस् [अव्य०] [प्राय+शस्] बहुधा, अधिकतर, अधिकांश में, सर्वथा—आजातेरपि कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि - भर्तृ० २०।

प्रायश्चित्तम्, प्रायश्चित्तिः (स्त्री०) [प्रायस्य पापस्य-चित्तं विज्ञानं यस्मात् ब० स०, वि० सुट्] 1. परिशोध, पापनिष्कृति, अतिपूति, पाप से निस्तार पाने के लिए धार्मिक साधना - तातः प्रायश्चित्तं भरतः प्रायश्चित्तमिवाकरोत् रघु० १२।१९ (प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते, तपोनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तमितीर्यते हेमाद्रि) 2. गवेषणा, सुधार।

प्रायश्चित्तिन् (वि०) [प्रायश्चित्त+इनि] जो पापों का परिशोध करे।

प्रायस् (अव्य०) [प्र+अय्+असुन्] 1. अधिकतर, बहुधा, साधारणतः, अधिकांशतः, प्रायः अन्यजनायत्तं स्वर्गापवृत्तमादरः कु० ६।२०, प्रायो भूताभ्युदयेषु प्रवर्तितविधयं स्वामिन सेवमानाः मुद्रा० ४।२१, प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः भर्तृ० २।९३ 2. सर्वथा, अधिकतर, संभवतः, कदाचित् तव प्राप्तं प्रसादाद्धि प्रायः प्राप्स्यामि जीवितम् महा०।

प्रायाणिक, प्रायायिक (वि०) (स्त्री० **की**) [**प्रयाण**—ठक्, प्रस्थान+ठक्] यात्रा के लिए आवश्यक या उपयुक्त।

प्रायिक (वि०) (स्त्री० **की**) [प्राय+ठक्] प्रचलित, सामान्य।

प्रायुद्ढोढिन् (पु०) [प्रायुणि हेवते—प्रायुढ्+ढेण्+णिनि] घोड़ा।

प्रायेण (अव्य०) [करण०] 1. अधिकतर, साधारण विधम के अनुसार प्रायेणैते रमणविरहेष्वङ्गनानां विनोदाः -मेघ०, प्रायेण सत्यपि हितार्थकरे विधौ हि श्रेयांसि लब्धुममुखानि विनान्तरायैः -किo ५।४९, कु० ३।२८, ऋतु० ६।२३।

प्रायोगिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [प्रयोग+ठक्] 1. प्रयुक्त 2. प्रयुज्यमान।

प्रारब्ध (भू० कृ० कृ०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरंभ किया गया, शुरू किया गया, **क्षुद्र** 1. जो शुरू किया गया है, व्यवसाय 2 भाग्य, नियति।

प्रारब्धि (स्त्री०) [प्र+आ+रभ्+क्तिन्] 1. आरंभ शुरू 2. लट्ठा जिससे हाथी बांधा जाय, हाथी को बांधने के लिए रस्सी।

प्रारम्भः [प्र+आ+रभ् घञ्, मुम्] आरंभ, शुरू - प्रारम्भेऽहि त्रियमाणा मनस्वनति निज नीलिमानं वनेषु मा० ५।९, रघु० १०।९, १८।४९ 2. व्यवसाय, कान शास्त्रीय कार्य, आगमें सदृशारम्भाः प्रारम्भसदृशोदयः -रघु० १।१५, फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव - २०।

प्रारम्भणम् [प्र+आ+रभ्+ल्युट्, मुम्] आरम्भ करना, शुरू करना।

प्रारोहः [प्रारोह+अच्] अंकुर, अंखुवा, किसलय, दे० प्ररोह।

प्रार्णम् [पक्कृष्टमृणम्—प्रा० स०] मूल्य ऋण।

प्रार्थक (वि०) (स्त्री०—**थिका**) [प्र+अर्थ+ण्वुल्] पूछने वाला, मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला, निवेदन करने वाला, अनुरोध करने वाला, इच्छा करने वाला, कामना करने वाला,- **कः** आवेदक, प्रार्थी।

प्रार्थना, ना [प्र+अर्थ+ल्युट्] 1. याचना, अनुरोध, प्रार्थना निवेदन ये वर्धन्ते धनपतिपुरः प्रार्थनादुःखभाजः भर्तृ० ३।४७ 2. कामना, इच्छा- लघावकाशा मे प्रार्थना, या न दुरवापेषु खलु प्रार्थना- श० १, उत्सर्पिणी खलु महती प्रार्थना- श० ७, ७।२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. नालिश, आवेदन, विनती, प्रणय-प्रार्थना कदाचिदस्मत्प्रार्थनामन्तःपुरेभ्यः कथयेत्—दश० २। सम० भङ्गः प्रार्थना अस्वीकार करना, सिद्धिः इच्छा की पूर्ति, प्रार्थनासिद्धिशंसिनः—रघु० १।४२।

प्रार्थनीय (सं० कृ०) [प्र+अर्थ+अनीयर्] 1. प्रार्थना या आवेदन किये जाने के उपयुक्त 2. अभिलषणीय, चाहने के योग्य, -यम् तृतीय या द्वापर युग।

प्रार्थित (भू० क० कृ०) [प्र+अर्थ+क्त] 1. याचना किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, पूछा हुआ, आवेदन किया गया 2. अभिलषित, इच्छित 3. आक्रान्त, शत्रु के द्वारा विरोध किया गया—रघु० ९।५६ 4. मारा गया, चोट की गई (दे० प्र पूर्वक अर्थ)।

प्रार्थिन् (वि०) [प्र+अर्थ+णिनि] 1. मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला 2. कामना करने वाला, इच्छा करने वाला—मन्दः कवियशःप्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् रघु० १।३।

प्रालम्ब (वि०) [प्र+आ+लम्ब+अच्] 1. झूलता लटकता हुआ—प्रालम्बद्विगुणितचामरग्रहाः वेणीः २।२८,—बः 1. मोतियों का बना आभूषण 2. स्त्री का स्तन, -बम् छाती तक लटकने वाला कंठहार —प्रालंबमुत्कृष्य यथाक्रमाश्च निनाय साचीकृतवास्यवक्त्रः—रघु० ६।१४, मुक्ताप्रालंबेषु का० ५२।

प्रालम्बकम् [प्रालम्ब+कन्] दे० 'प्रालम्ब'।

प्रालम्बिका [प्रालम्ब+कन्+टाप्, इत्वम्] सोने का हार।

प्रालेयम् [प्र+ली+यत् प्रत्यय+अण्] हिम, कुहरा, ओस, तुषार—ईशाचलप्रालेयप्लवनेच्छया गीत० १ प्रालेयशीतमचलेश्वरमीश्वरोऽपि (अधिशेते)- शि० ४।६४, मेघ० ३९। सम०- अद्रिः,-शैलः हिमाच्छादित पहाड, हिमालय मेघ० ५७ अंशु, करः, - रश्मि 1. चन्द्रमा 2. कपूर, - लेशः ओला।

प्रावटः [प्र+अव+अट्+अच्] जौ।

प्रावणभ् [प्र+आ+वन्+घ] फावड़ा, खुरपा, कुदाल।

प्रावरः [प्र+आ+वृ+अप्] 1. बाड़, घेरा 2. (हेम० के मतानुसार) उत्तरीय वस्त्र 3. एक देश का नाम।

प्रावरणम् [प्र+आ+वृ+ल्युट्] ओढ़नी, चादर दिशेषत. कोई उत्तरीय वस्त्र, चोगा, लबादा या दुपट्टा।

प्रावरणीयम् [प्र+आ+वृ+अनीयर्] उत्तरीय वस्त्र।

प्रावारः [प्र+आ+वृ+घञ्] 1. उत्तरीय वस्त्र, चोगा, लबादा 2. एक जिले का नाम। सम०- कीटः दीमक, पतंग।

प्रावारकः [प्रावार+कन्] उत्तरीय वस्त्र, चोगा या लबादा-यदीच्छसि लाम्बदशाविशालं प्रावारकं गुच्छशतैहि युक्तम्-मृच्छ० ८।२२, जातीकुसुमवासितः प्रावारकोऽनुप्रेषितः मृच्छ० १।

प्रावारिकः [प्रावार+ठक्] उत्तरीय वस्त्रों का निर्माता।

प्रावास (वि०) (स्त्री० सी) [प्रवास+अण्] यात्रा संबंधी, यात्रा में करने या दिये जाने के योग्य।

प्रावासिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रवास+ठक्] यात्रा के लिए उपयुक्त।

प्रावीण्यम् [प्रवीण+ष्यञ्] चतुराई, कुशलता, पटुता, दक्षता-आत्रिकुले कथं प्रावीण्यं वर्णयेत्—उत्तर० ४, १५।६८।

प्रावृत (भू० क० कृ०) [प्र+आ+वृ+क्त] घिरा हुआ, घेरा हुआ, ढका हुआ, परदों वाला,—तः, तम् घूंघट, बुरखा, चादर (स्त्री० भी)।

प्रावृतिः (स्त्री०) [प्र+आ+वृ+क्तिन्] 1. घेरा, बाड़, आड़ 2. आध्यात्मिक अन्धकार।

प्रावृत्तिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रवृत्ति+ठक्] गौण, अप्रधान, कः दूत।

प्रावृष् (स्त्री०) [प्र+आ+वृष्+क्विप्] वर्षा ऋतु, मौसमी हवा, वर्षा काल (आषाढ और श्रावण काल का महीना)—कलापिनां प्रावृषि पश्य नृत्यम् रघु० ६।५१, १९।३७, प्रावृट् प्रावृडिति स्त्रियां शब्दौ क्षारे क्षते प्रक्षिप्त—मृच्छ० ५।१८, मेघ० ११५। सम०- अन्तयः (प्रावृडन्तयः) वर्षा ऋतु का अन्त, -कालः (प्रावृट्कालः) वर्षा ऋतु।

प्रावृषः, -षा [प्र+आ+वृष्+क्विप्, प्रावृट्—टाप्] वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

प्रावृषिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रावृष+ठञ्] वर्षा ऋतु में उत्पन्न, कः मोर।

प्रावृषिज (वि०) [प्रावृषि जायते जन्+ड, अलुक् स०] वर्षा ऋतु में उत्पन्न।

प्रावृषेण्य (वि०) [प्रावृष+एण्य] वर्षा ऋतु में उत्पन्न, वर्षा ऋतु से संबद्ध या कि वरुण जलाधितुस्मिन् प्रावृषेण्यैः वारिदैन भामि० १।३०, ४।६, रघु० १।३६ 2. वर्षा ऋतु में होने वाला (फूल आदि)—ण्यः 1. कदम्ब वृक्ष 2. कुटज वृक्ष,-ण्यम् बहुसंख्यकता, बाहुल्य, प्राचुर्य।

प्रावृषेयः [प्रावृष्+ढक्] 1. एक प्रकार का कदंब का वृक्ष 2. कुटज वृक्ष, ण्यम् वैदूर्यमणि, लहसुनिया।

प्रावेण्यम् (नपुं०) बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेशन (वि०) (स्त्री० नी) [प्रवेशन+ण्] प्रवेश करने पर जो दिया जाय या किया जाय (किसी घर में या रंगमंच पर)।

प्राव्रज्यम्, प्राव्राज्यम् [प्रव्रज्या+ष्यञ्, पक्षे उत्तरपदवृद्धिश्च] धार्मिक साधु या संन्यासी का जीवन।

प्राशः [प्र+अश्+घञ्] 1. खाना, स्वाद चखना, निर्वाह करना, पुष्ट होना मनु० ११।१४३, धूम० आदि 2. आहार, भोजन।

प्राशनम् [प्र+अश्+ल्युट्] खाना, पुष्ट होना, स्वाद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चखना 2. खिलाना, स्वाद चखाना—मनु० २।२९, 3. आहार, भोजन ।

प्राशनीयम् [प्र ---अश् + अनीयर्] आहार, भोजन ।

प्राशस्त्यम् [प्रशस्त + ष्यञ्] श्रेष्ठता, स्तुत्यता, प्रभुता ।

प्राशित (भू० क० कृ०) [प्र + अश् + क्त] खाया हुआ, चखा हुआ, उपभुक्त,—तम् घृत पूरकों के पितरों को उदकदान और पिण्डदान, पितरों के और्ध्वदेहिक संस्कार—प्राशितम् पितृतर्पणम् मनु० ३।७४ ।

प्राश्निकः [प्रश्न + ठक्] 1. परीक्षक 2. मध्यस्थ, विवाचक, न्यायाधीश अहो प्रयोगाभ्यन्तराः प्राश्निकः —मालवि० १ ।

प्राशः [प्र + अस् + घञ्] 1. फेंकना, डालना, (तीर) छोड़ना 2. बर्छी, भाला, फलकदार अस्त्र (जिसमें फल लगाया हुआ हो) । मनु० ६।३२, कि० १६।४ ।

प्रासकः [प्राश + कन्] 1. बर्छी, भाला, या फल लगा हुआ अस्त्र 2. पासा ।

प्रासंगः [प्र + सञ्ज् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] बैलों के लिए जूआ ।

प्रासङ्गिक [वि०] (स्त्री० की) [प्रसंग + ठक्] 1.घनिष्ट संयोग से उत्पन्न 2. संयुक्त, सहज 3.प्रसंगानुकूल, आकस्मिक, आपाती, यदाकदा होने वाला —प्रासङ्गिकीनां विषयः कथानाम्—उत्तर० २।६ 4. संबधानुकूल, ऋतुअनुकूल, अवसरानुकूल 6. उपाख्यान विषयक ।

प्राशहल्यः [प्रासंग + यत्] हल में जूतने वाला बैल ।

प्रासादः [प्रसीदन्ति अस्मिन्— प्रसद् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. महल, भवन, गगनचुंबी विशाल भवन - भिक्षुः कुर्वीत प्रासादे - सिद्धा०, मेघ० ६४ 2. राजभवन 3. मंदिर का देवालय । सम०—**अङ्गनम्** किसी महल या मन्दिर का आंगन, —**आरोहणम्** महल में जाना या प्रविष्ट होना, **कुक्कुटः** पालतू कबूतर, —तलम् महल की समतल चपटी छत,—**पृष्ठः** महल की चोटी पर बना छज्जा,—**प्रतिष्ठा** मन्दिर की प्रतिष्ठा, या अभिमन्त्रण, **शायिन्** (वि०) महल में सोने वाला, **शृङ्गम्** किसी महल या मन्दिर का कलश या मीनार, कंगूरा ।

प्रासिकः [प्रास् + ठक्] भाला रखने वाला, बर्छी-धारी ।

प्रासूतिक (वि०) (स्त्री०-का) [प्रसूति + ठक्] प्रसव से संबंध रखने वाला, बच्चे के जन्म से संबद्ध ।

प्रास्त (भू० क० कृ०) [प्र + अस् + क्त] 1. फेंका गया, (बर्छी भाला आदि) चलाया गया, हाला गया, छोड़ा गया 2. निर्वासित किया गया, बाहर निकाला गया ।

प्रास्ताविक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रस्ताव + ठक्] प्रस्तावना का काम देने वाला, प्रस्तावना या परिचय, भूमिका विषयक— जैसा कि 'प्रास्ताविक विलास' में (भामिनी-विलास का प्रथम या प्रारंभिक अंश) **प्रास्ताविकं वचनम्** भूमिका में दिया गया विवरण 2. ऋतु के अनुकूल, अवसरानुसार, सामयिक 3. संगत, प्रसंगानुकूल, [प्रस्तुत विषय से] संबद्ध—अप्रास्ताविकी महत्यथा कथा—मा० २ ।

प्रास्तुत्यम् [प्रस्तुत + ष्यञ्] विचार विमर्शका विषय होना ।

प्रास्थानिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रस्थान + ठञ्] प्रयाण से संबद्ध या विदा के अवसर के उपयुक्त—रघु० २।७० 2. विदा के अनुकूल ।

प्रास्थिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रस्थ + ठण्] 1. तोल में एक प्रस्थ 2. एक प्रस्थ में मोल लिया हुआ 3. प्रस्थभर तोल का 4. एक प्रस्थ बीज से बोया गया ।

प्रस्रवण (वि०) (स्त्री०-णी) [प्रस्रवण + अण्] झरने से उत्पन्न स्रोत से निकला हुआ ।

प्राहः [प्रकर्षेण 'आह' शब्दो यत्र—प्रा० ब०] नृत्यकला की शिक्षा ।

प्राह्णः [प्रथमं च तदहश्च, कर्म० स०, टच्, अह्नादेशः, पत्वम्] दोपहर से पहले का समय ।

प्राह्णेतन (वि०) (स्त्री०-नी) [प्राह्ण + ट्यु, तुट्, नि० एत्वम्] मध्याह्न से पूर्व होने वाला, या मध्याह्नपूर्व संबंधी ।

प्राह्णेतरम्-तमाम् (अव्य०) [प्राह्ण + तरप् (तमप्), आम्, नि० एत्वम्] प्रातःकाल, बहुत सवेरे ।

प्रिय (वि०) [प्री + क] (म० अ०—प्रेयस्, उ० अ०—श्रेष्ठ) 1. प्रिय, प्यारा, पसन्द आया हुआ, रमणीय, अनुकूल वन्यप्रियाम् कु० १।२९, रघु० ३।२९ 2. सुहावना, रुचिकर—ताम्रजुष्टे प्रियमध्यमिध्याम् —रघु० १४।६ 3. चाहने वाला, अनुरक्त, भक्त —प्रियमण्डना - श० ४।९, प्रियारामा वैदेही—उत्तर० २, यः 1. प्रेमी, पति - स्त्रीणामार्य प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु—मेघ० २८ 2. एक प्रकार का मृग,—**या** प्रिया (पत्नी), स्वामिनी—प्रिये चारुशीले प्रिये रम्यशीले प्रिये—गीत० १० 2. स्त्री 3. छोटी इलायची 4. समाचार, संसूचन 5. खींची हुई मदिरा 6. एक प्रकार का चमेली (का फूल), —**यम्** 1. प्रेम 2. कृपा, सेवा अनुग्रह प्रियमाचरितं लते त्वया मे विफलम० १।१७, प्रतिप्रियार्थीयमीयुषः —मेघ० २२, प्रिय मे प्रिय से, 'मेरी अच्छी सेवा की गई'—भग० १।२३, पंच० १।३६५,१९३ 3. सुखद समाचार—रघु० १२।९१, प्रियनिवेदयितारम् श० ४ 4. आनन्द, सुख,—**यम्** (अव्य०) बड़े सुहावने या रुचिकर ढंग से । सम० **अतिथि** (वि०) आतिथेय, अतिथिसत्कार करने वाला,—**अपायः** किसी प्रिय वस्तु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का अभाव या हानि, —**अप्रिय** (वि०) सुखद और दुःखद, रुचिकर और अरुचिकर (भावनाएँ) (**पम्**) सेवा और अनिष्ट, अनुग्रह और क्षति, **अम्बु**: आम का वृक्ष, **अर्ह** (वि०) 1. प्रेम या कृपा का अधिकारी उत्तर० ३ 2. मिलनसार (**हः**) विष्णु का नाम,—**असु**: (वि०) जीवन का प्रेमी,—**आख्य** (वि०) अच्छा समाचार सुनाने वाला, **-आख्यानम्** रुचिकर समाचार, **आत्मन** (वि०) मिलनसार, सुखद, रुचिकर,—**उक्तिः** (स्त्री०)·—**उदितम्** कृपा से युक्त या नीतिपूर्ण वक्तृता, चापलूसी के वचन—**उपपत्तिः** (स्त्री०) आनन्दप्रद या सुखद घटना, **उपभोगः** किसी प्रेमी या प्रेयसी के साथ रंगरेलियाँ—रघु० १२।२२,—**एषिन्** (वि०) 1. भला चाहने वाला, सेवा करने का इच्छुक 2. मित्रता से युक्त, स्नेही,—**कर** (वि०) सुख देने वाला या सेवा करने वाला, **-कर्मन्** (वि०)अनुग्रह पूर्वक या मित्रता से युक्त व्यवहार करनेवाला,—**कलत्रः** अपनी पत्नी से प्रेम करनेवाला पति, अपनी भार्या को अत्यन्त चाहने वाला. **काम** (वि०) मित्रवत् व्यहार करनेवाला,सेवा करने का इच्छुक.—**कार**, **-कारिन्** वि.)अनुग्रह करने वाला,भला करने वाला,—**कृत्** (पुं०)भला करने वाला, **मित्र**, हितैषी,—**जनः** प्रेमपात्र या प्यारा व्यक्ति,—**जातिः**अपनी स्त्रीको अत्यन्त प्यार करने वाला पति,—**तोषणः** एक प्रकार का रतिबन्ध, मैथुन का आसन विशेष, **दर्श** (वि०) देखने में सुन्दर.~ दर्शन (वि०) देखने में सुहावना, सुन्दर दर्शनों वाला, सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत—अहो प्रियदर्शनः कुमारः—उत्तर० ५, रघु० १।४७, शा० ३।११. (**नः**) 1. लौंग 2. एक प्रकार का छुहारे का वृक्ष 3. गन्धर्वों के राजा का नाम—रघु० ५।५३,—**दर्शिन्** (वि०)राजा अशोक का विशेषण.—**देवन** (वि०,जूआ खेलने का शौकीन,—**धन्वः** शिव का विशेषण, —**पुत्रः** एक प्रकार का पक्षी,—**प्रादानम्** पति को प्रसन्न करना,—**प्राय** (वि०) अत्यन्त कृपालु या सुशील—उत्तर० २।२, (**यम्**)भाषा में चाकरूखा,—**प्रायम्** (नपुं०) जहर हो रोचक बनाना, जैसा कि एक प्रेमी का अपनी प्रेमिका के प्रति कथन.—**प्रेप्सु** (वि०) अपने अभीष्ट पदार्थको प्राप्त करने की इच्छा करने वाला,—**भावः** प्रेम की भावना उत्तर० ६।२१,—**भाषण** कृपापूर्ण या रुचिकर झूठ, —**भाषिन्** (वि०) मधुरभाषी,—**मण्डन** (वि०) अलंकारों का प्रेमी—शृं० शं०,—**मधु** (वि०) मदिरा का शौकीन (**धुः**) बलराम का विशेषण—**रण** (वि०) बहादुर, शूर-वीर,—**वचन** (वि०) रोचक तथा कृपापूर्ण शब्द बोलने वाला (**नम्**) कृपा से युक्त, प्रोत्साहक एवं मधुर शब्द —विक्रम० २।१२, **वयस्यः** प्रिय मित्र,—**वर्णी** प्रियंगु नामक पौधा.—**वस्तु** (नपुं०) प्यारी चीज, **वाच्** (वि०) कृपा से युक्त शब्द बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, (स्त्री०) कृपाभरा और रोचक शब्द, **-वादिका** एक प्रकार का वाद्ययंत्र,—**वादिन्** (वि०) कृपा से युक्त तथा मधुर शब्द बोलने वाला, चापलूस **-शुल्कः** पुराना राजनीतिक सिद्धान्त प्रियवादिनः रामा०, **-श्रवस्** (पुं०) कर्ण का विशेषण,—**संवासः** प्रिय व्यक्ति का सान्निध्य, **सखः** प्रिय मित्र, (स्त्री०—खी) सहेली, अन्तरंग सहेली (किसी स्त्री की), **-सत्य** (वि०) 1. सत्य का प्रेमी 2. सत्य होने पर भी प्रिय, **संदेशः** 1. प्रिय समाचार, प्रेमी का समाचार 2. 'चातक' नाम का वृक्ष,—**समागमः** अपने प्रिय व्यक्ति (या पदार्थ) से मिलन, **सहचरी** प्यारी पत्नी, **सुहृद्** (पुं०) प्रिय या प्राणप्रिय मित्र, हार्दिक मित्र, **स्वप्न** (वि०) सोने का प्रेमी रघु० १२।८१।

प्रियंवद (वि०) [प्रियं वदति प्रिय+वद्+खच्, मुम्] मधुरभाषी, प्रिय बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, मिलनसार कु० ५।२८, रघु० ३।६४, द० 1 एक प्रकार का पक्षी 2. एक गन्धर्व का नाम।

प्रियंकः [प्रिय+कन्]1. एक प्रकार का हरिण—भि० ४।३२ 2 नीम नामक वृक्ष 3. प्रियंगु नाम की लता 4 मधुमक्खी 5 एक प्रकार का पक्षी 6. जाफरान, केसर, **कम्** अशन वृक्ष का फूल भि० ८।४८।

प्रियंकुर, प्रियंकुरण, प्रियंकुर (वि०) [प्रिय+कृ+खच्, ल्युट् अण् वा, मुम्] 1. अनुग्रह दर्शाने वाला, कृपा करने वाला, स्नेह करने वाला,—[प्रियंकुरो में प्रिय इत्यानन्दन् रघु० १४।४८ 2. भलाकर 3 शिल्पकार।

प्रियङ्गुः [प्रिय+गम्+कु] एक लता का नाम (कहते हैं कि यह लता स्त्रियों के स्पर्श मात्र से खिल उठती है) प्रियङ्गुलतावासगृहप्रवेशिनि मा० ३।९, [निम्नांकित श्लोक में इस सभी कवि-समयों को एकत्रित कर दिया गया है जहाँ विभिन्न परिस्थितियों में वृक्षों के फूलों का आना बतलाया गया है] पादाघातादशोक-स्तिलकबकुलयोर्वक्त्रसीधोः स्त्रीणां गण्डात् प्रियङ्गुर्विकसति बकुलः सीधुगण्डूषसेकात्। मन्दारो नर्मवाक्यात् पटुमृदुहसनाच्चम्पकः पुष्पवातात् चूतो गीतान्मनोज्ञाद्विकचति च पुरो नर्मदान्नः कणिकारः। 2. बड़ी इलायची, **-गु** (नपुं०) 1. जाफरान, केसर।

प्रियतम (वि०) [प्रिय+तमप्] अत्यन्त प्रिय, सबसे अधिक प्यारा, **-**या पत्नी, पति जिसका प्रियतम एव प्राणेश्वराऽस्मि—मेघ० २।३७,—**मा** पत्नी, स्वामिनी, वल्लभा, प्रेयसी।

प्रियतर (वि०) [प्रिय+तरप्] अधिक प्रिय, अपेक्षाकृत प्यारा।

प्रियता,—**त्वम्** [प्रिय+तल्+टाप्, प्रिय+त्व] 1. प्रिय होना, प्यार 2. प्रेम, स्नेह।

प्रियम्भविष्णु, प्रियम्भावुक (वि०) [प्रिय+भू+णिच् सुकञ्, वा, मुम्] स्नेह का पात्र, अत्यन्त प्रिय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रियालः [प्रिय+अल्+अच्] पियाल नामक वृक्ष, दे० 'पियाल', -ला अंगूरों की बेल।

प्री i (क्रया०उभ० प्रीणाति, प्रीणीते प्रीत) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना—प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रः भर्तृ० २।६८, सन्तुः पितृन् पितृप्रियुरापगासु -भट्टि २।३८, ५।१०४, ७।६४ 2. प्रसन्न होना, खुश होना—कञ्चिन्मनस्ते प्रीणाति वनवासे महान् 3. कृपामय बर्ताव करना, अनुग्रह दर्शाना 4. प्रसन्न या हँसमुख रहना—प्रेर० (प्रीणयति-ते) प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना।

ii (दिवा० आ०) (प्रीयते—'प्री' क्रिया का कर्मवाच्य का रूप) सन्तुष्ट या प्रसन्न होना, तृप्त होना—प्रकामप्रीयत यज्ञवतां प्रियः—शि० १।१७, रघु० १५।३०, १९।३० याज्ञ० १।२४५ 2. स्नेह करना, प्रेम करना 3. सहमति या मंजूरी देना, सन्तुष्ट होना।

प्रीण (वि०) [प्री+क्त, तस्य न] 1. प्रसन्न, सन्तुष्ट, तृप्त 2. पुराना, प्राचीन 3. पहला।

प्रीणनम् [प्रीण्+ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 2. जो प्रसन्न या सन्तुष्ट करता है।

प्रीत (भू० क० कृ०) [प्री+क्त, नत्वाभावः] प्रसन्न, खुश, प्रहृष्ट, आनन्दित -प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व —रघु० २।६६, १।८१, १२।९४ 2. आनंदयुक्त, आह्लादित, हर्षपूर्ण मेघ० ४ 3. सन्तुष्ट 4. प्रिय, प्यारा 5. कृपालु, स्नेही। सम०—**अन्तस्**, —**चित्त** —**मनस्** (वि०) हृदय से खुश, मन से आनन्दित।

प्रीतिः (स्त्री०) [प्री+क्तिन्] 1. प्रसन्नता, आह्लाद, संतोष, खुशी, आनंद, हर्ष, तृप्ति -सुबनालोकनप्रीतिः कु० २।८२, ६।२१ रघु० २।५१ मेघ० ६२ 2. अनुग्रह, कृपालुता 3. प्रेम, स्नेह, आदर मेघ० ४।१६, रघु० ११५७, १२।५४ 4. पसन्द, चाह, खुशी, व्यसन द्यूत 'मृगया' 5. मित्रता, सौहार्द 6. कामदेव की एक पत्नी का नाम, रति की सौत (सपत्नी संज्ञाता रत्याः प्रीतिरिति श्रुता)। सम०—**कर** (वि०) प्रेम या अनुराग उत्पन्न करने वाला, रुचिकर,—**कर्मन्** (नपुं०) मैत्री या प्रेम का बर्ताव, कृपापूर्ण कार्य,—**दः** नाटक में विदूषक या मसखरा, **दत्त** (वि०) स्नेह के कारण दिया हुआ (**त्तम्**) स्त्री को दी हुई सपत्नि, विशेषकर विवाह के अवसर पर सास या श्वसुर द्वारा, **-दानम्**,—**दायः** प्रेमोपहार, मित्रता के नाते दिया गया उपहार —तदवमरोऽयं प्रीतिदायस्य मा० ४, रघु० १९।३८, **-धनम्** प्रेम या सौहार्द के कारण दिया हुआ धन, **पात्रम्** प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति, या वस्तु, **-पूर्वम्**, **पूर्वकम्** (अव्य०) कृपा के साथ, स्नेहपूर्वक, **-मनस्** (वि०) मन में खुश, प्रसन्न, आनंदित, **युज्**(वि०) प्रिय, स्नेही, प्यारा—कि० १।१०, —**वचस्** (नपुं०),—**वचनम्** मैत्री से भरी हुई या कृपापूर्ण वाणी, **-वर्धन** (वि०) प्रेम या हर्ष को बढ़ाने वाला (**नः**) विष्णु का विशेषण, **-वाद**: मित्रवत् विचारविमर्श, **-विवाहः** प्रीति या प्रेम के कारण होने वाला विवाह, प्रेम-संबंध, (जो केवल प्रेम पर आधारित हो), **श्राद्धम्** पितरों के सम्मानार्थ किया जाने वाला और्ध्वदैहिक संस्कार या श्राद्ध।

प्लु (स्वा० आ०—प्लवते) 1. जाना, चलना-फिरना 2. कूदना, उछलना।

प्लुष् i (स्वा० पर०—प्लोषति, प्लुष्ट) 1. जलाना, खा पी जाना 2. भस्म करना ii (क्रया० पर०—प्लुष्णाति) 1. आर्द्र या तर होना 2. उड़ेलना, छिड़कना 3. भरना।

प्लुष्ट (भू० क० कृ०) [प्लुष्+क्त] जलाया हुआ, खाया-पीया हुआ, जला कर राख किया गया।

प्लुषः [प्लुष्+क्वन्] 1. वर्षा ऋतु 2. सूर्य 3. पानी की बूंद सिद्धा०।

प्रेक्षकः [प्र ईक्ष्+ण्वुल्] दर्शक, तमाशबीन, देखने वाला, दृश्य द्रष्टा।

प्रेक्षणम् [प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि डालना 2. दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3. आँख -चकित हरिणी प्रेक्षणा -मेघ० ८२ 4. तमाशा, सार्वजनिक दृश्य, दिखावा। सम०—**कृतम्** आँख का काजल।

प्रेक्षणकम् [प्रेक्षण+कन्] दिखावा, तमाशा।

प्रेक्षणिका [प्र+ईक्ष्+ल्युट्, ह्रस्वम्] तमाशा देखने की शौकीन स्त्री।

प्रेक्षणीय (वि०) [प्र+ईक्ष्+अनीयर्] 1. दर्शनीय, विचारणीय, निगाह डालने के योग्य 2. देखने के लिए उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर—मेघ० २, रघु० १४।२ 3. विचारणीय, ध्यान देने के योग्य।

प्रेक्षणीयकम् [प्रेक्षणीय+कन्] दिखावा, दृश्य, तमाशा —शि० १०।८३।

प्रेक्षा [प्र+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. दृष्टि डालना, देखना, तमाशा देखना 2. अवलोकन, दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3. तमाशबीन होना 4. कोई सार्वजनिक तमाशा, दिखावा, दृष्टि 5. विशेष कर थियेटर का तमाशा, नाटकीय प्रदर्शन, अभिनय 6. बुद्धि, समझ 7. विमर्श, विचारणा, पर्यालोचन 8. वृक्ष की शाखा। सम०—**अ (आ)गारः, रम्, गृहम्, स्थानम्** 1. थियेटर, नाटकशाला, रंगशाला 2. मन्त्रणा-भवन—**समाजः** श्रोता, दर्शकों की भीड़, सभा।

प्रेक्षावत् (वि०) [प्रेक्षा+मतुप्] विचारशील, बुद्धिमान्, विद्वान् (पुरुष)।

प्रेक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+ईक्ष्+क्त] देखा हुआ, विचार किया हुआ, नजर डाला हुआ, निगाह में से निकाला हुआ, अवलोकन किया हुआ,—**म्**, रूप, छवि, झलक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रेङ्खः,-खम् [प्र+इङ्ख्+घञ्] झूलना, पेंग (झोटा) लेना।

प्रेङ्खण (वि०) [प्र+इङ्ख्+ल्युट्] घूमने वाला, इधर उधर फिरने वाला, प्रविष्ट होने वाला--मट्टि० ९।१०६,—णम् 1. झूलना 2. झूला 3. नायक, सूत्रधार आदि पात्रों से शून्य एकांकी नाटक--सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा--गर्भावमर्शरहितं प्रेङ्खणं हीननायकम्, असूत्रधारमेकाङ्कमविष्कम्भ प्रवेशकम्, नियुद्धस्फोटयुतं सर्ववृत्तिसमाश्रितम् । ५४७, उदा० 'वालिवध' ।

प्रेङ्खा [प्र+इङ्ख्+अङ्+टाप्] 1. झूला 2. नृत्य 3. पर्यटन, घूमना, यात्रा करना 4. एक प्रकार का भवन या घर 5. घोड़े का विशेष कदम ।

प्रेङ्खित (भू० क० कृ०) [प्र+इङ्ख्+क्त] झूला हुआ, हिलाया हुआ, प्रदोलित या डांवाडोल ।

प्रेङ्खोल् (चुरा० उभ०—प्रेङ्खोलयति--ते) झूलना, हिलना डांवाडोल होना ।

प्रेङ्खोलनम् [प्रेङ्खोल्+ल्युट्] 1. झूलना, हिलना, इधर से उधर प्रदोलित होना 2. झूला, पेंग ।

प्रेत (भू० क० कृ०) [प्र+इ+क्त] इस संसार से गया हुआ, --मृत --स्वजनाश्रु किलातिसंतत दहति प्रेतमिति प्रचक्षते--रघु० ८।२६,—तः 1. विवंगत आत्मा, और्ध्वदेहिक क्रिया किय जाने से पूर्व जीव की अवस्था 2. भूत, पिशाच--भग० १७।४, मनु० १२।७१ । समः—**अधिपः** यमका विशेषण, **-अन्नम्** पितरों को अर्पित आहार, **अस्थि** (नपुं) मृतक पुरुष की हड्डी, °**धारिन्** शिव का विशेषण, **-ईशः,—ईश्वरः** यम का विशेषण,—**उद्देशः** पितरों के निमित्त अर्पण,—**कर्मन्** (नपुं०)—**कृत्यम्,,—कृत्या** और्ध्वदेहिक या अन्त्येष्टि संस्कार, **गृहम्** कब्रिस्तान, शवस्थान,—**चारिन्**(पुं०) शिव का विशेषण, **दाहः** मुर्दे का जलाना, शवदाह, —**धूमः** चिता से उठता हुआ धुआं,-- **पक्षः** पितृपक्ष, आश्विन का कृष्णपक्ष जब कि पितरों के सम्मान में श्रद्धांजलियाँ अर्पित की जाती हैं, तु० 'पितृपक्ष'। --**पटहः** अर्थी ले जाते समय बजाया जाने वाला ढोल, **-पतिः** यम का विशेषण, **-पुरम्** यमराज की नगरी, **-भावः** मृत्यु, **भूमिः** (स्त्री०) कब्रिस्तान, शवस्थान,—**शरीरम्** वियुक्त जीव का शरीर, मृत शरीर, **शुद्धिः** (स्त्री), -- **शौचम्** किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर शुद्धि पालक शुद्धि, **श्राद्धम्** किसी मृत संबंधी के निमित्त बरसों से पहले २ किये जाने वाली और्ध्वदेहिक (मासिक) क्रियाएँ, **हारः** 1. मृत शरीर को (श्मशानभूमि तक) ले जाने वाला 2. निकट संबंधी ।

प्रेतिक [प्रकर्षेण इति गमनं यस्य प्रा० ब० प्र+इति +कन्] भूत, प्रेत ।

प्रेत्य (अव्य०) [प्र+इ+क्त्वा+ल्यप्] (इस संसार से) विदा होकर मरने के पश्चात् दूसरे लोक में - न च तत्प्रेत्य नो इह --भग० १७।२८, मनु० २।९,२६ । समः—**जातिः** (स्त्री०) परलोक की स्थिति,—**भावः** मरने के पश्चात् आत्मा की अवस्था ।

प्रेत्वन् (पुं०) [प्र+इ+क्वनिप्, तुकागमः] 1. वायु 2. इन्द्र का विशेषण ।

प्रेप्सा [प्र+आप्+सन्+अ+टाप्] 1. प्राप्त करने की इच्छा 2. इच्छा ।

प्रेप्सु (वि०) [प्र+आप्+सन्+उ] 1. प्राप्त करने की इच्छुक, कामना करता हुआ, अभिलाषी, प्रबल इच्छुक 2. उद्देश्य रखने वाला ।

प्रेमन् (पुं०, नपुं०) [प्रियस्य भावः इमनिच् प्रादेशः एकाच्कत्वात् न टिलोपः तारा०] प्रेम, स्नेह--तत्प्रेम-हेमनिकषोपलतां तनोति—गीत० ११, मेघ० ४४ 2. अनुग्रह, कृपा, कृपापूर्ण या मृदु व्यवहार 3. आमोद-प्रमोद, मनोविनोद 4. हर्ष, खुशी, उल्लास । समः—**अश्रु** (नपुं०) हर्षाश्रु, स्नेहाश्रु, **-बद्धिः** (स्त्री०) स्नेहबंधन, उत्कट प्रेम, **पर** (वि०) स्नेहशील, प्रिय, **पातनम्** 1. (हर्ष के) आंसू 2. (आंसू गिराने वाली) आँख, **पात्रम्** प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति या वस्तु, **बन्धः** बन्धनम् स्नेहबन्धन, प्रेम की फांस ।

प्रेमिन् (वि०)(स्त्री०—णी) [प्रेमन्+इनि] प्रिय, स्नेह-शील ।

प्रेयस् (वि०) (स्त्री०— सी) [अयमनयोः अतिशयन प्रियः - प्रिय--ईयसुन् प्रादेश 'प्रिय' को स० अ०] अधिक प्यारा, अपेक्षाकृत प्रिय या रुचिकर (पुं०) प्रेमी, पति (पुं०,नपुं०) चाप्लूसी, **सी** पत्नी, स्वामिनी ।

प्रेयोपत्यः [अपत्यानां प्रेयः] वगुला, कंक पक्षी ।

प्रेरक (वि०) (स्त्री०—**रिका**) [प्र+ईर्+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रेरित करने वाला, उत्तेजक, उद्दीपक 2. भेजने वाला, निदेशक ।

प्रेरणम्—णा [प्र+ईर्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रेरित करना, उत्तेजित करना, आगे बढ़ाना, उकसाना, भड़काना 2. आवेग, आवेश 3. फेंकना, डालना भवति विफल-प्रेरणा चूर्णमुष्टिः--मेघ० ६८ 4. भेजना, प्रेषित करना 5. आदेश, निदेश 6. (व्या० में) किसी और से कार्य कराने की क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया ।

प्रेरित (भू० क० कृ०) [प्र+ईर्+णिच्+क्त] 1. आगे बढ़ाया गया, उत्तेजित किया गया, उकसाया गया 2. उत्तेजित, उद्दीपित, प्रणोदित 3. भेजा गया, प्रेषित 4. स्पर्श किया गया, **तः** दूत, एलची ।

प्रेव् (व्या० उभ० प्रेवति--ते) जाना, चलना-फिरना ।

प्रेष् [प्र+इष्--घञ्] 1. भेजना, प्रेषण करना 2. दूत के रूप में भेजना, निदेश देना, भार या बोझ डालना, आयुक्त करना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रेषित (भू० क० कृ०) [प्र+इष्+क्त] 1. (संदेश देकर) भेजा हुआ 2. आदिष्ट, निर्देशित 3. मुड़ा हुआ, स्थिर, निर्दिष्ट होकर, (दृष्टि) डाली हुई 4. निर्वासित ।

प्रेष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन प्रियः—प्रिय+इष्ठन्, उ० अ०] अत्यंत प्यारा, प्रियतम, —ष्ठः प्रेमी, पति, ष्ठा पत्नी, स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) [प्र+इष्+ण्यत्] आदेश दिये जाने के योग्य, भेजे जाने या प्रेषित किये जाने के योग्य, ष्यः सेवक, भृत्य, दास, -ष्या सेविका, दासी ,ष्यम् 1. दूतमंडली को भेजना 2. सेवा । सम०—जनः सेवकों का समूह, -भावः सेवक की चारिता, सेवा, बन्धन -मालविं० ५।१२, -वधूः 1. सेवक की पत्नी 2. सेविका, दासी, -वर्गः सेवकवृन्द, अनुचरवर्ग ।

प्रेहि [प्र पूर्वक इ धातु, लोट्, मध्य० पु०, एक व०] । सम० कृता विशेष प्रकार की आचारविधि जिसमें चटाइयों का निषेध है,—कर्दमा एक विशेष अनुष्ठान जिसमें सब प्रकार की अपवित्रता वर्जित है,—द्वितीया एक अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी और की उपस्थिति वर्जित है,—वाणिजा एक अनुष्ठानविशेष जिसमें व्यापारियों की उपस्थिति निषिद्ध है (दे० पा० २।१७२) ।

प्रेयस् [प्रिय+अण्] कृपालु होना, अनुग्रह, प्रेम ।

प्रेषः [प्र+इष्+घञ्, वृद्धि] 1. भेजना, निदेश देना 2. आदेश, समादेश, आमंत्रण 3. दुःख, कष्ट 4. पागलपन, उन्माद 5. कुचलना, दबाना, मर्दन करना, भींचना ।

प्रेष्यः [प्र+इष्+ण्यत्, वृद्धिः] सेवक, भृत्य, दास, ष्या दासी, सेविका, ष्यम् सेवा, दासता । सम० भावः सेवक की क्षमता, सेवक की भांति उपयोग करना, सेवा—कु० ६।५८ ।

प्रोक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वच्+क्त] 1. कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ 2. नियत किया हुआ, निर्धारित किया हुआ ।

प्रोक्षणम् [प्र+उक्ष्+ल्युट्] 1. छिड़काव, पानी छिड़कना, —मनु० ५।११८, याज्ञ० १।१८४ 2. छींटे देकर अभिमंत्रित करना 3. यज्ञ में पशु का वध, पशु छिड़कने या अभिमंत्रण के लिए जल, पुण्यजल (ब० व०, कभी-कभी यह शब्द 'पवित्र जल से पूरित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है, जिस अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होने वाला शब्द 'प्रोक्षणीपात्र' है) ।

प्रोक्षणीयम् [प्र+उक्ष्+अनीयर्] पवित्रीकरण (प्रोक्षण) के लिए उपयुक्त जल ।

प्रोक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+उक्ष्+क्त] 1. जलमार्जन से पवित्र किया हुआ 2. यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ ।

प्रोच्चंड (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त भीषण या भयानक ।

प्रोच्चैः (अव्य०) [प्रा० स०] 1. बहुत ऊँचे स्वर से, जोर से 2. बहुत अधिकता से ।

प्रोच्छ्रित (भू० क० कृ०) [प्रा० स०] अति ऊँचा, उत्तुंग, उन्नत ।

प्रोज्जासनम् [प्र+उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या ।

प्रोज्झनम् [प्र+उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, खाली कर देना, छोड़ना ।

प्रोज्झित (भू० क० कृ०) [प्र+उज्झ्+क्त] त्यागा हुआ, खाली किया हुआ, परित्यक्त, हटाया हुआ ।

प्रोञ्छनम् [प्र+उञ्छ्+ल्युट्] 1. मिटा देना, पोंछ देना, छील देना—नै० ५।३६ 2. अवशिष्ट पड़े हुए को चुन लेना ।

प्रोड्डीन (वि०) [प्र+उद्+डी+क्त] जो ऊपर उड़ गया हो, या उड़ गया हो ।

प्रोढ, प्रौढि [प्र+वह्+क्त, क्तिन् वा, सम्प्रसारण] दे० प्रौढ, प्रौढि ।

प्रोत (भू० क० कृ०) [प्र+वे+क्त, संप्रसारणम्] 1. सिला हुआ, टांका लगाया हुआ,—कु० ७।४९ 2. लंबा या सीधा फैलाया हुआ (विप० ओत) 3. बंधा हुआ, बांधा हुआ, कसा हुआ महावी० ६।३३ 4. विद्ध किया हुआ, आर-पार किया हुआ —रघु० ९।७५ 5. पारित, आर-पार निकला हुआ —तन्त्रिप्रोतान् अर्थात् (चन्द्रकिरणान्) जिसमिति करी संकलयति—काव्य० १० 6. जमाया हुआ, जड़ा हुआ—महावी० १।३५,—तम् वस्त्र, बुना हुआ कपड़ा । सम०—उत्साहनम् 1. छतरी 2. वस्त्र-भंडार, तंबू ।

प्रोत्कण्ठ (वि०) [प्रकर्षेण उत्कण्ठः—प्रा० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए या फैलाये हुए ।

प्रोत्कुष्टम् [प्र+उत्+कुष्+क्त] कोलाहल, हल्ला-गुल्ला ।

प्रोत्खात (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+खन्+क्त] खोदा हुआ ।

प्रोत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] बहुत ऊँचा या उन्नत ।

प्रोत्फुल्ल (वि०) [प्रा० स०] पूरा खिला हुआ, फूला हुआ ।

प्रोत्सारणम् [प्र+उत्+सृ+णिच्+ल्युट्] छुटकारा करना, साफ कर देना, हटाना, निर्वासित करना ।

प्रोत्सारित (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+सृ+णिच्+क्त] 1. हटाया गया, छुटकारा पाया हुआ, निष्कासित 2. आगे बढ़ाया गया, उकसाया 3. परित्यक्त ।

प्रोत्साहः [प्र+उत्+सह्+घञ्] 1. अत्यनुरक्ति, उत्कटता 2. बढ़ावा, उद्दीपन ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रोत्साहकः [प्र+उत्+सह्+णिच्+ण्वुल्] उकसाने वाला, भड़काने वाला ।

प्रोत्साहनम् [प्र+उत्+सह्+णिच्+ल्युट्] उकसाना, उद्दीपन, भड़काना, प्रणोदन ।

प्रोष् (भ्वा० उभ० प्रोषयति-ते) 1. समान होना, जोड़ का होना, मुकाबला करना (सम्प्र० के साथ) पुप्रोषाश्मै ते कश्चन—भट्टि० १४।८४, १५।४०, 2. योग्य होना, यथेष्ट होना, सक्षम होना 3. भरा हुआ या पूरा होना ।

प्रोष (वि०) [प्रोष्+घ] 1. विख्यात, सुविश्रुत 2. रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 3. भ्रमण करना, यात्रा पर जाना, मार्ग चलना—वृक्षान्तमुदकान्तं च प्रियं प्रोष-मनुव्रजेत्—तारा०, —षः,-षम् 1. घोड़े की नाक या नथुना—नै० १।६०, शि० ११।११, १२।७३ 2. सूअर की थूथन,—षः 1. कूल्हा, नितंब 2. खुदाई 3. वस्त्र, पुराने कपड़े 4. गर्भ, कलल ।

प्रोष्णि (पुं०) [प्रोष+इनि] घोड़ा ।

प्रोद्घुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+घुष्+क्त] 1. गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2. कोलाहल करना ।

प्रोद्घोषणम्,-णा [प्र+उद्+घुष्+ल्युट्] 1. ऐलान करना, घोषणा 2. ऊँचा शब्द करना ।

प्रोद्दीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+दीप्+क्त] आग पर रक्खा हुआ, जलता हुआ, देदीप्यमान—भर्तृ० ३।८८ ।

प्रोद्भिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भिद्+क्त] 1. अंकुरित, अंखुवा फूटा हुआ 2. फूट कर निकला हुआ ।

प्रोद्भूत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भू+क्त] फूटा हुआ, निकला हुआ ।

प्रोद्यत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+यम्+क्त] 1. उठाया हुआ 2. सक्रिय, परिश्रमशील ।

प्रोद्वाहः [प्र+उद्+वह्+घञ्] विवाह ।

प्रोन्नत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+नम्+क्त] 1. बहुत ऊँचा या उन्नत 2. उभरा हुआ ।

प्रोल्लाघित (वि०) [प्र+उद्+लाघ्+क्त] 1. रोग से मुक्त हो उठा हुआ, स्वास्थ्योन्मुख 2. सुगठित, हट्टाकट्टा ।

प्रोल्लेखनम् [प्र+उद्+लिख्+ल्युट्] खुरचना, चिह्न लगाना ।

प्रोषित (भू० क० कृ०) [प्र+वस्+क्त] परदेश में गया हुआ, विदेश में रहने वाला, घर से दूर, अनुपस्थित, परदेश में रहने वाला । सम०—भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो, शृंगारकाव्यान्तर्गत आठ नायिकाओं में से एक, मा०द० में दी गई परिभाषा—नानाकार्यवशात्पुंस्त्री दूरदेशे गतः पतिः, सा मनोभव-दुःखार्ता भवेत् प्रोषितभर्तृका—११९ ।

प्रौ (प्रौ) ष्ठः [प्रकृष्टः ओष्ठो यस्य ; प्रा० ब०, परिरूपम्, पक्षे वृद्धिः] 1. बैल, बलीवर्द 2. तिपाई, चौकी 3. एक प्रकार की मछली (ष्ठी—भी) । सम०—पदः भाद्रपद मास (दा) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा नाम का पच्चीसवाँ व छब्बीसवाँ नक्षत्र ।

प्रौ (प्रौ) ढ (वि०) [प्र+वह्+क्त, सम्प्रसारणम्, परिरूपम्, पक्षे वृद्धिः] 1. पूरा बढ़ा हुआ, पूर्णविकसित परिपक्व, पका हुआ, पूरा बना हुआ, पूर्ण (जैसे कि चन्द्रमा)—प्रौढपूर्ण्यः कदम्बैः—मेघ० २५, प्रौढतालोवि-पाण्डु, आदि—मा० ८।१,९।२८ 2. वयस्क, बूढ़ा, वृद्ध —वर्तते हि मन्मथप्रौढसुहृदो निशीथस्य यौवनश्रीः —मा०८—शि० ११।३९ 3. घना, सघन घोर: प्रौढ तमः कुरङ्गतृष्णायैव भद्रम्—मा० ७।३, शि० ४।६२ 4. विशाल, बलवान्, समर्थ 5. प्रचंड, उत्कट 6. भरोसा करने वाला, साहसी, बेधड़क 7. घमंडी, ढा साहसी और बड़ी उम्र की स्त्री, अपने स्वामी के सामने भी निर्भीक और निर्लज्ज, काव्यरचनाओं में वर्णित चार प्रकार की मुख्य स्त्रियों में से एक भेद : आपोडशाद्भ-वेद्बाला विशेषतः तरुणी मता, पञ्चपञ्चाशता प्रौढा भवेद्वृद्धा ततः परम् । सम०—अङ्गना साहसी स्त्री, दे० ऊपर,—उक्तिः (स्त्री०) साहसयुक्त या दर्पपूर्ण उक्ति,—प्रताप (वि०) बड़ा तेजस्वी, बलवान्,—यौवन (वि०) जवानी में बढ़ा हुआ, ढलती जवानी का ।

प्रौ (प्रौ) ढिः (स्त्री०) [प्र+वह्+क्तिन्] 1. पूर्ण वृद्धि या विकास, परिपक्वता, पूर्णता 2. वृद्धि, वर्धन 3. गौरव, ऐश्वर्य, समृद्धि, प्रताप—विक्रम० १।१५ 4. उत्साह, चेष्टा, उद्योग । सम० वादः वाग्विदग्धता से युक्त गर्वीली वाणी 2. साहसपूर्ण उक्ति ।

प्रौण (वि०) [प्र—प्रौण+अच्] चतुर, विद्वान्, कुशल ।

प्लक्षः [प्लक्ष्+घञ्] 1. बटवृक्ष, गूलर का पेड़—प्लक्ष-प्ररोह इव सौम्यलक्षणविभेदः—रघु० ८।१३, १३।७१ 2. संसार के सात द्वीपों में से एक 3. पाँचवें द्वार या पिछवाड़े का दरवाजा, निजी गुप्त द्वार । सम० —जातः, समुद्रवाचक सरस्वती नदी का विशेषण, —तीर्थम्,—प्रस्रवणम्,—राज् (पुं०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती निकलती है ।

प्लव (वि०) [प्लु+अच्] 1. तैरता हुआ, बहता हुआ 2. कूदता हुआ, छलांग लगाता हुआ, वः 1. तैरना, बहना 2. बाढ़, दरिया का चढ़ाव 3. कुलाँच, छलांग 4. बेड़ा, धड़नई, डोंगी, छोटी नौका : नाशयेच्च शनैः पश्चात् प्लवं सलिलपूरवत्—पंच० २।३८, सर्वं जान-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि भग० ४।३६, मनु० ४।१९४. ११।१९, वेणी० ३।२५ 5. मेंढक 6. बन्दर 7. ढलान, ढलुवाँ स्थान 8. शंख 9. भेड़ 10. नीच जाति का पुरुष, चाण्डाल 11. मछली पकड़ने का जाल 12. जंजीर का पेंड 13. कारण्डव पक्षी, एक प्रकार की बतख 14. पद्यरोजना की दीप्ति से जुड़ी हुई पाँच या अधिक पंक्तियाँ, कुलक 15. स्वर का दीर्घीकरण। सम०—ग: 1. बन्दर—रघु० १२।७८ 2. मेंढक 3. जलीय पक्षी, पनडुब्बी पक्षी 4. शिरीष का वृक्ष 5. सूर्य के सारथि का नाम (=गा) कन्या-राशि,—गति: मेंढक।

प्लवक: [प्लु बाहु० अक] 1. मेंढक 2. कूदने वाला व्यक्ति, कलाबाज, रस्से पर नाचने वाला नट 3. बड़ या पाकर का वृक्ष 4. चाण्डाल, जाति-बहिष्कृत 5. बन्दर।

प्लवंग: [प्लव+गम्+खच्, डित्, टिलोप: मुम्] 1. लंगूर, बन्दर 2. हरिण 3. वटवृक्ष, पाकर का वृक्ष।

प्लवङ्गम: [प्लव+गम्+खच्, मुम्] 1. बंदर शि० १२।५५ 2. मेंढक।

प्लवनम् [प्लु+ल्युट्] 1. तैरना 2. स्नान करना, गोता लगाना =म० १।१९ 3. छलांग लगाना, कूदना 4. बड़ी भारी बाढ़, प्रलय 5. ढलान।

प्लवाका [प्लु+आकन्+टाप्] घड़नई, बेड़ा।

प्लाविक (वि०) [प्लव+ठन्] नाव में बिठाकर ले जाने वाला, विवेया।

प्लाक्षम् [प्लक्ष+अण्] प्लक्ष का फल।

प्लाव: [प्लु+घञ्] 1. बह निकलना 2. कूदना, छलांग लगाना 3. इतना भरना कि किनारे से बाहर निकल जाय 4. तरल पदार्थ को छानना (उसका मैल दूर करने के लिए) याज्ञ० १।१९० (दे० इस पर मिता०)।

प्लावनम् [प्लु+णिच्+ल्युट्] 1. स्नान, आचमन 2. बाहर निकल कर बहना, बाढ़ आ जाना, जलमय हो जाना 3. बाढ़, प्रलय।

प्लावित (भू० क० कृ०) [प्लु+णिच्+क्त] 1. तैराया गया, बहाया गया, जलथल किया गया 2. जलमय किया गया, बाढ़ में डुबोया गया, जल से लबालब भरा गया 3. तर किया गया, गीला किया गया, छिड़का गया—शि० १२।२५, कि० ११।३६ 4. डूबा हुआ, आच्छादित।

प्लिह् (स्वा० आ० -प्लेहते) जाना, चलना-फिरना।

प्ली (क्रया० -पर० प्लीनाति) जाना, चलना-फिरना।

प्लीहन् (पुं०) [प्लिह्+क्वनिन्, नि० दीर्घ:] तिल्ली, तिल्ली का बढ़ जाना (प्लिहन् भी)। सम०—उदरम् तिल्ली का बढ़ जाना,—उदरिन् वह पुरुष जो तिल्ली की वृद्धि से पीड़ित हो।

प्लीहा (स्त्री०) तिल्ली।

प्लु (स्वा० आ० -प्लवते, प्लुत) बहना, तैरना—किं नामैतत् मज्जेयमुतानि प्रावाणः प्लवन्त इति—महावी. १, क्लेशोत्तरं रागवशात् प्लवन्ते—रघु० १६।९०, प्लवन्ते धर्मलघवो लोकेऽस्मिन् यथा प्लवा: सुभा० 2. नाव में बैठ कर पार जाना 3. इधर उधर झूलना, थर-थराना 4. कूदना, छलांग लगाना, फलांगना—भट्टि० ५।४८, १४।१३, १५।१६ 5. उड़ना, उड़ान भरना, हवा में मंडराना 6. फुदकना 7. (स्वर का) दीर्घ होना, प्रेर०—प्लावयति—ते 1. तैराना, बहाना 2. हटाना, बहा ले जाना 3. स्नान करना 4. जलथल एक करना, प्रलय लाना, बाढ़ आना, जल में डुबोना घट बढ़ कराना, अभि—, 1. बह निकलना 2. हावी हो जाना, पराभूत करना (आलं०), अव—, कूदना, छलांग लगाकर बाहर होना, उद्—, 1. बहना, तैरना 2. उछलना, फलांगना—मनु० ८।२३, ६३, कूदना, उच्चकना—शि० १२।२२, उप—, 1. बहना, तैरना 2. प्रहार करना, हमला करना, आक्रमण करना 3. अत्याचार करना, कष्ट देना, तंग करना, सताना निशाचरोपप्लुतभर्तृकाणां (तपस्विनीनाम्)—रघु० १४।६४, १०।५, मनु० ४।१८८, परि—, 1. तैरना, बहना 2. स्नान करना, डुबकी लगाना 3. कूदना, उछलना 4. जल प्रलय होना, जलथल होना, बाढ़ आना 5. डकना 6. हावी हो जाना (आलं०), वि—, 1. इधर उधर बहना, इधर उधर डावांडोल होना, घटबढ़ होना 2. (समुद्र में) निरुद्देश्य संचरण करना, तितरबितर होना—हि० ३।२ 3. (मन आदि का) अव्यवस्थित होना 4. बर्बाद होना, नष्ट हो जाना 5. असफल होना, प्रेर०—1. बहाना, तैरना 2. (अयोग्य व्यक्तियों का) अध्यापन करना मनु० ११।१९९ 3. अव्यवस्थित होना, घबड़ाना, उद्विग्न होना, सम्—, 1. घट बढ़ होना, इधर-उधर बहना 2. इकट्ठे बहना, (पानी की भांति) मिलना—भग० २।४६।

प्लुत (भू० क० कृ०) [प्लु+क्त] 1. तैरता हुआ, बहता हुआ 2. जलमय हुआ, जल में डूबा हुआ, जल में बहा हुआ 3. कूदा हुआ, फलांगा हुआ 4. (स्वर) दीर्घीकृत, प्रदीर्घ हुआ 5. उड़ा हुआ (दे० प्लु), तम् 1. कूद, उछल, उच्चक 2. कूद फांद, घोड़े का कदम विशेष। सम० गति: (स्त्री०) 1. उछल कूद कर चलना 2. सरपट दौड़ना, घोड़े की दुलकीदार चाल।

प्लुति: (स्त्री०) [प्लु+क्तिन्] 1. बाढ़, ऊपर से बहना, जलमय होना 2. उछल, कूद, उच्चक जैसा कि 'भेकप्लुति' में 3. कूदफांद कर चलना, घोड़े की एक चाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेष 4. स्वर की ध्वनि का लंबा करना, प्रदीर्घ करना ।

प्लुष् i (स्वा०, दिवा० क्रया० पर० प्लोषति, प्लुष्यति, प्लुष्णाति, प्लुष्ट) जलाना, झुलसना, धकधकाना, गर्म लोहे से दागना -ऋतु० १।२२, भट्टि० २०।३४ । ii (क्रया० पर० प्लुष्णाति) 1. छिड़कना, गीला करना 2. लेप करना 3. भरना ।

प्लुष्ट (भू० क० कृ०) [प्लुष्+क्त] झुलसाया गया, जलाया गया, दागा गया ।

प्लेष् (भ्वा० आ० प्लेवते) सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में उपस्थित रहना ।

प्लोषः [प्लुष्+घञ्] जलाना, अत्यदाह होना ('प्लोष' भी) ।

प्लोषण (वि०) (स्त्री० णी) [प्लुष्+ल्युट्] जलना, झुलसना, जल कर राख हो जाना—तार्तीयीकं पुरारेस्तदवतु मदनप्लोषणं लोचनं वः -मा० १, (पाठान्तर), —णम् जलना, झुलसना ('प्लोषण' भी) ।

प्सा (अदा० पर० प्साति, प्सात) खाना, निगल जाना ।

प्सात (भू० क० कृ०) [प्सा+क्त] 1. खाया हुआ 2. भूला ।

प्सानम् [प्सा+ल्युट्] 1. खाना 2. भोजन ।

फ

फक्क (स्वा० पर०—फक्कति, फक्किति) 1. शनैः-शनैः चलना-फिरना, फुर्ती से जाना, सरकना, धीरे-धीरे चलना 2. गलती करना, दुर्व्यवहार करना 3. फूल उठना ।

फक्किका [फक्क+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक अवस्था, सिद्ध करने के लिए पूर्वपक्ष, उक्ति या प्रतिज्ञा जिसको बनाये रखना है—फणिभाषितभाष्यफक्किका विषमा कुण्डलनामवापिता—नै० २।९५ 2. पक्षपात, पूर्वचिन्तित सम्मति ।

फट् (अव्य०) एक अनुकरणमूलक शब्द जिसे जादू मंत्रादिक के उच्चारण करने में रहस्यमय रीति से प्रयुक्त किया जाता है - अस्त्राय फट् ।

फटः [स्फुट्+अच्, पृषो०] 1. साँप का प्रसारित किया हुआ फण ('फटा' भी इसी अर्थ में) निदिधेषापि सर्पेण कर्तव्या महती फटा (पाठान्तर—फणा) विषं भवतु मा भूद्वा फटाटोपो भयंकरः पंच० १।२०४ 2. दाँत 3. धूर्त, ठग, कितव ।

फडिंगा [फड् इति शब्दमिङ्गति फड्+इङ्ग-+अच् टाप्] झींगुर, टिड्डी, टिड्डा, फतिंगा ।

फण् (स्वा० पर० फणति, फणित) 1. चलना-फिरना, इधर उधर घूमना,—फेरुभेंजिरे फेणुवंद्रुधाहरिराक्षसाः -भट्टि० १४।७८ 2. अनायास उत्पन्न करना, बिना किसी परिश्रमके पैदा करना (यह अर्थ कुछ के मतानुसार प्रेरणार्थक क्रिया का है) ।

फण:,-णा [फण्+अच्, स्त्रियां टाप्] किसी भी साँप का फैलाया हुआ फण - विप्रकृतः पन्नगः फणं (फणां) कुरुते—श० ६।२०, मणिभिः फणस्थैः रघु० १३।१२, कु० ६।६८, वहति भुवनश्रेणि शेषः फणाफलकस्थिताम् भर्तृ० २।३५ । सम०—करः साँप, धरः 1. साँप 2. शिव का नाम भृत् (पुं०) साँप, मणिः साँप के फण में पाई जाने वाली मणि, -मण्डलम् साँप का कुंडलीकृत शरीर करालफलमण्डलम्- रघु० १२।९८, तत्फणामण्डलोदर्चिमणिशोभितविग्रहम्-१०।७ ।

फणिन् (पुं०) [फणा—इनि] 1. फणधारी साँप, सामान्य साँप, सर्प -उद्गिरन्तो यदगरलं फणिनः पुण्यानि परिमिलोद्गारैः भामि० १।१२,५८, फणी मणुरस्य तले निषीदति - ऋतु० १।१३, रघु० १६।१७, कु० ३।२१ 2. राहु का विशेषण 3. पतंजलि का विशेषण, (पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य के प्रणेता)- फणिभाषितभाष्यफक्किका- नै० २।९५ । सम० इन्द्रः, ईश्वरः 1. शेषनाग का विशेषण 2. सांपों के अधिपति अनन्त का विशेषण 3 पतंजलि का विशेषण, -खेलः लंबा, बटेर, तल्पः विष्णु का (शेषनाग जिनकी शय्या है) विशेषण, -पतिः 1. वासुकि या शेषनाग का विशेषण 2. पतंजलि का विशेषण—प्रियः वायु, फेनः अर्शम्, भाष्यम् (पाणिनि के सूत्रों पर किया गया भाष्य) महाभाष्य, भुज् (पुं०) 1. मोर 2. गरुड़ का विशेषण ।

फल्कारिन् (पुं०) [फल्कार+इनि] पक्षी ।

फरम् [फल्-अच्, रलयोरभेदः] ढाल तु० फलक ।

फरुवकम् (नपुं०) पानदान पान रखने का डब्बा ।

फर्फरीकः [स्फुर्+इकन्, ह्रस्वो. फर्फरादेशः] खुले हुए हाथ की हथेली । कम् 1. ताजा अंकुर या टहनी का अंखुवा 2. मदुता, का जूता ।

फल् i (भ्वा० पर० फलति, फलित) 1. फल आना, फल पैदा करना—नानाफलैः फलति कल्पलतेव विद्या—भर्तृ०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२।४०. परोपकारार्थ वृक्षाः फलन्ति—सुभा०—विधानुरूपाः फलतुः च मनोज्ञरूप भवतु—मा० १।१६ (इस अर्थ में प्रायः सकर्मक के रूप में धातु का प्रयोग होता है) · मोघस्यैव फलन्ति विविधश्चेष्टासिः मन्त्रितयः—मुद्रा० २।१६ 'निष्पन्न या घटित करना' 2. परिणामयुक्त होना, सफल होना, पूरा होना, निष्पन्न होना, कामयाब होना 'कैकेयि कामाः फलितास्तवेति—रघु० १३।५०. १५।७८, यदा न फलुः क्षणदाचराणां (मनोरथाः)—भट्टि० १४।११६, १२।६६, नैवाकृति. फलति नैव कुलं न शीलम्—भर्तृ० २।९६,११६ 3. फल निकलना, परिणाम या नतीजा पैदा करना फलितमस्माकं कपटप्रबन्धेन··हि० १. फलितं नस्तहि भगवती शापप्रभावेन—मा० ६. कि० १८।२५, खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु—हि० २।२१. दुष्ट व्यक्ति बुरे कार्य करते हैं और भले पुरुषों को उनका परिणाम भुगतना पड़ता है 4. पकना होना, पक जाना। ii) (भ्वा० पर०—फलति. फुल्ल या फूल्ल (पहले अर्थ में), दूसरे अर्थ में फलिव) 1. बलपूर्वक तोड़ना, खंड २ करना, फट जाना, दरार पड़ना—तस्य मर्मनिधानाद्य फलालम्बिरो हि सः—महा० 2. प्रतिफलित होना, अक्स पड़ना—कि० ५।२८ 3. जानना।

फलम् [फल्—अच्] 1. फल (भाल० से भी) जैसे वृक्ष का—उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—शा० ७।२०, रघु० ४।३३, १।४९ 2 फसल, पैदावार—कृषिफलं—मेघ० १६ 3. परिणाम, फल, नतीजा, प्रभाव··अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८३, फलेन ग्राम्यसि· पंच० १, न सर्वः प्रभुराफलोदयात् स्थिरकर्मा विरराम कर्मणः रघु० ८।२२, १।३३ 4. (अतः) पुरस्कार, अभिपूर्ति, पारितोषिक (शुभ या अशुभ) प्रतिफल· फलमस्योपहासस्य सद्यः प्राप्स्यसि पश्य मोघ्—रघु० १२।३७ 5. कृत्य, कर्म (विप० वचन) · बुधते हि फलेन साधवो न तु कंठेन निजोपयोगितां—नै० २।४८, 'मले पुरुष अपनी उपयोगिता कर्मों से सिद्ध करते हैं न कि वचनों से' 6. उद्देश्य, आशय, प्रयोजन—परैरकृतज्ञानफला हि वृद्धयः—पंच० १।४३, किमपेक्ष्य फलम्—कि० २।२१ 'किस आशय को विचार में रखकर', मेघ० ५४ 7. उपयोग, भलाई, लाभ, हित—जगता वा विफलेन किं फलम्—भामि० २।६१ 8. लाभ या मूलराशि का ब्याज 9. प्रजा, सन्तान—रघु० १४।३९ 10. (फल की) गिरी 11. पट्टिका या फलक 12. (तलवार का) फल 13. तीर की नोक या सिरा, बाण, गीतकार—मुद्रा० ७।१० 14. ढाल 15. अंडकोष 16. उपहार 17. (गणित में) गणना-फल 18. गुणनफल 19. रजःस्राव 20. आयफल 21. हल का फल, फाली। सम०—अशनः—फलाशन, अनुबन्धः परिणामक्रम, फलपरम्परा, अनुमेय (वि०) जिसका अनुमान फल या परिणाम पर निर्भर हो

फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव रघु० १।२०, अन्तः बीज, अन्वेषिन् (वि०) (कर्मों के) पुरस्कार या क्षतिपूर्ति की खोज करने वाला, अपेक्षा (कर्मों के) फल या परिणामों की आशा, नतीजे का ध्यान, अशनः तीरा,—अम्लम् इमली,—अस्थि (नपुं०) नारियल,—आकांक्षा (अच्छे परिणामों की) आशा —दे० फलापेक्षा, आगमः 1. फलों की पैदावार, फलों का भार,—भक्षन्ति नन्दास्तरवः फलागमैः·· शा० ५।१२ 2. फलों का मौसम, पतझड़, आढ्य (वि०) फलों से भरा हुआ,—आढ्या एक प्रकार के अंगूर (जिनमें गुठलियाँ या बीज नहीं होते),—उत्पत्तिः (स्त्री०) 1. फलों की पैदावार 2. फायदा, लाभ (वि०) आम का वृक्ष (कभी-कभी इसी अर्थ को प्रकट करने के लिए 'फलोत्पत्ति' भी लिखा जाता है), —उदयः 1. फलों का दिखाई देना (आना), फल या परिणाम का निकलना, अभीष्ट पदार्थ या सफलता की प्राप्ति—अफलोदयकर्मणाम्—रघु० १।५, उद्देशः फलों का ध्यान, दे० फलापेक्षा,—कामना परिणाम या फल की इच्छा, —कालः फलों का समय, केशरः नारियल का पेड़, ग्रहः हित या लाभ का ग्रहण करने वाला, ग्रहि, ग्रहिन् (वि०) (फले-ग्रहि या फलेग्राहिन्) फलों से भरा हुआ, मौसम में फल देने वाला, ग्लाघ्यतां कुलमुर्पति पैतृकं श्यामनीरग्रहतः फलेग्रहिः कीर्तिः ३।६०, मा० ९।३९, ग्रहि (वि०) 1. उपजाऊ, फलदार, फल देने वाला मनु० ११।१४२ 2. लाभकर या फायदा पहुंचाने वाला (वः) वृक्ष· निवृत्तिः (स्त्री०) परिणामों की समाप्ति,—निष्पत्तिः फलों का उत्पादन, पाकः (फलपाकः भी) 1. फलों का पकना 2. परिणामों की पूर्णता, पादपः फलवृक्ष, · पूरः,—पूरकः सामान्य नीबू का पेड़, · प्रदानम् 1. फलों का देना 2. विवाह के अवसर पर एक संस्कार विशेष, · प्रद्यिन् (वि०) फल को विकसित करने वाला या रूप देने वाला, —भूमिः (स्त्री०) वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने कर्मों का शुभाशुभ फल भोगता है (अर्थात् स्वर्ग या नरक),—भृत् (वि०) फलदायी, फलों से पूर्ण,—भोगः 1. फलों का आनन्द लेना 2. भोगाधिकार,—योगः 1. अभीष्टपदार्थ या फल की प्राप्ति मुद्रा० ७।१० 2. मजदूरी, पारिश्रमिक, राजन् (पुं०) तरबूज —वत्सलम् तरबूज,—वृक्षः फलदारवृक्ष,—वृक्षक कटहल का वृक्ष,—शाखः अनार का पेड़,—सम्पद् 1. फलों की बहुतायत 2. सफलता,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधनम् अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि का उपाय, उद्देश्य की पूर्ति, **स्नेहः** अखरोट का पेड़, हरी काली या दुर्गा का विशेषण ।

फलकम् [फल+कन्] 1. पट्ट, तख्ता, शिला, पटल या पट्टी - बाल: कोष्ठा भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारैः भर्तृ० ३।३९, मुहुः विद्ध आदि 2. चपटी सतह ...कुंभप्रान्तरुपोल फलवत्याम् का० २।८, भूतमुख-मण्डफलकविवरम: -शि० १।४७,३७, तु० पट 3 ढाल 4. पत्र पृष्ठ 5. चिरंजी, कुन्द्रा 6. हाथ की हथेली । **सम०** **-पाणि** (वि०) (चीड़ा की भाँति) ढाल से सुसज्जित, **-यन्त्रम्** भास्कराचार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिर्विषयक उपकरण ।

फलतः (अव्य०) [फल+तसिल्] फलस्वरूप, परिणामरूप, यथार्थतः ।

फलनम् [फल्+ल्युट्] 1. फल आना, फलवान् होना 2. फल या परिणाम उत्पन्न करना ।

फलवत् (वि०) [फल+मतुप्] 1. फलवान्, फलदार 2. फलदायी, परिणामदर्शी सफल, लाभकारी, **ती** 'प्रियंगु' नामक लता ।

फलिता [फल+इतच्+टाप्] रजस्वला स्त्री ।

फलिन् (वि०) [फल+इनि] फलों से पूर्ण, फलदायी, (आलं० भी) पुरुषिका: फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयतः स्मृताः—मनु० १।४७, मृच्छ० ८।१०, (पुं०) वृक्ष ।

फलिन (वि०) [फल्+इनच्] फलों से पूर्ण, फलदायी, **नः** कटहल का पेड़ ।

फलिनी,-फली फलिन्+ङीप्, फल्+अच्+ङीष्] प्रियंगु लता (कवियों के द्वारा इसे 'आम की पत्नी' कहा गया है—उ० रघु० ८।६१) ।

फल्गु (वि०) [फल्+उ, गुक् च] 1. बिना गूदे का, रसहीन, तत्त्वरहित, सारविहीन सारे तत्त्वो ब्राह्मम-पाप्य फल्गु -पंच० १।८ 2. अर्थशून्य, निरर्थक, महत्त्वहीन शि० ३।७६ 3. अल्प, सूक्ष्म 4. निर्फल, व्यर्थ 5. दुर्बल, बलहीन, निस्सार, **ल्गु:** (स्त्री०) 1 वसन्तऋतु 2. गूलर का वृक्ष 3. मगध के पास एक नदी । **सम०** **-उत्सवः** वसन्तोत्सव, होली का त्योहार ।

फल्गुनः [फल्+उनन्, गुक् च] 1. फाल्गुन का महीना 2. इन्द्र का नामान्तर,—**नी** एक नक्षत्र का नाम- कु० ३।६ ।

फल्यम् [फल+यत्] फूल ।

फाणिः, फाणितम् [फण्+णिच्+इञ्, क्त वा] मीठा, रस ।

फाण्ट (वि०) [फण्+क्त, नि० साधु] सुगम प्रक्रिया द्वारा निर्मित, आसानी से बनाया हुआ (जैसे काढ़ा), —**टः,-टम्** अर्क, काढ़ा—फाण्टमनायासमाधः कषाय-विशेषः—सिद्धा०, फाण्टचित्रास्त्रिपाणयः—भट्टि० १।१७, (दे० भाष्य) ।

फाल:,-लम् [फल्+अण्, फल् + घञ् वा] 1. हल का फल, फाली—मनु० ६।१६ 2. बालों की मांग निकालना, सीमन्तभाग नै० १।१६,—**ल:** 1. बलराम का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. नीबू का पेड़, **लम्** 1. सूती कपड़ा 2. जोता हुआ खेत ।

फाल्गुनः [फाल्गुन+अण्] 1. गहीदे का नाम (जो फरवरी-मार्च में आता है) 2. अर्जुन का विशेषण महा० में नाम की व्याख्या इस प्रकार है—उत्तराभ्यां फल्गुनीभ्यां नक्षत्राभ्यामहं दिवा, जातो हिमवतः पृष्ठे तेन मां फाल्गुनं विदुः 3. वृक्ष का नाम, जिसे 'अर्जुन' कहते हैं । **सम०** **-अनुजः** 1. चैत्र का महीना 2. वसंतकाल 3. नकुल और सहदेव का विशेषण ।

फाल्गुनी [फाल्गुनी+अण्+ङीप्] फाल्गुन मास की पूर्णिमा । **सम०** **-भवः** बृहस्पति ग्रह का विशेषण ।

फिरङ्गः (पुं०) फिरंगियों अर्थात् यूरोपियनों का देश ।

फिरङ्गिन् (पुं०) [फिरंग+इनि] फिरंगी, अंग्रेज, यूरोपियन ।

फुकः [फु+कै+क] पंछी ।

फु (फू) त् (अव्य०) अनुकरणमूलक शब्द जो प्रायः 'फ' के साथ प्रयुक्त होता है, उरले पदार्थों में फूंक मारने से पैदा होने वाली ध्वनि, कभी-कभी इससे घृणा सूचित होती है, **फु (फू) त्कृ** (किसी तरल पदार्थ में) फूंक मारना—बालः पायसदध्यो दध्यपि फूत्कृत्य भक्षयति हि० ४।१०३ । **सम०** **-कारः, कृतम्, -कृतिः** (स्त्री०) 1. फूंक मारना 2. सांप की फुफकार 3. सी सी करना, सायं सायं की ध्वनि 4. सुगंधकना 5. चीख मारना, जोर की चीख, चीत्कार ।

फुप्फुसः,-सम् (नपुं०) फेफड़े ।

फुल्ल् (स्वा० पर० फुल्लति, फुल्लित) कली आना, फूलना, फूलाना, (पुष्प का) खिलना ।

फुल्ल (भू० क० कृ०) [फुल्+क्त, उत्वं रुत्वम्] 1. फैलाया हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ- पुष्पं च फुल्लं नव-मल्लिकायाः प्रयाति कान्ति प्रमदाजनानाम्- ऋतु० ३।६, फुल्लारविन्दवदनाम् चौर० १ 2. फूल आना, खिला हुआ रघु० १।६३ 3. विस्तारित, फैलाया हुआ, (आंखों की भांति) खूब खुला हुआ पंच० १।१३६ । **सम०** **-लोचन** (वि०) (हर्ष से) खिली हुई आंखों वाला **(नः)** एक प्रकार का मृग ।

फेत्कारः [फेत्+कृ—घञ्] चीख, हूक (कुत्ते भेड़िये की ध्वनि) ।

फेनः,-नः [स्फाय्+न, फे शब्दादेशः, पक्षे णत्वम्] 1. झाग, फेन (कफ आदि)—गौरीवक्त्रभ्रकुटिरचना या विहस्येव फेनैः -मेघ० ५०, रघु० १३।११, मनु० २।६१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. मुंह का झाग या बुलबुला 3. थूक। सम० पिण्डः 1. बुलबुला 2. खोखला विचार, अनस्तित्व, वाहिन् (पुं०) छानने के काम का कपड़ा।

फेण (न) क |फेण+कन्| दे० 'फेन'।

फेनिल (वि०) |फेण+इलच्| झागदार, बुलबुले वाला, फेनिलमम्बुराशि रघु० १३।२।

फेरः, फेरण्डः |फे+रा+क, फे+रण्ड्+अच्| गीदड़।

फेरवः |फे इति रवो यस्य ब० स०| 1. गीदड़—क्रन्दत्फेरव-चण्डट्टालकुनि-—मा० ५।१९ 2. धूर्त, बदमाश, ठग 3. राक्षस, पिशाच।

फेरुः |फे+रु+डु| गीदड़।

फेलम्, फेला, फेलिका, फेली [फेल्यते दूरे निक्षिप्यते, फेल्+अड्, स्त्रियां टाप्, फेल्+इन्+कन्+टाप्, फेलि+ङीष्] उच्छिष्ट भोजन, भोजन का बचा खुचा भाग, जूठन।

ब

बंह् (भ्वा० आ० बंहते, बंहित) बढ़ाना, उगाना।

बंहिमन् (पुं०) |बहुल+इमनिच्, बेहादेशः| बहुतायत, बाहुल्य।

बंहिष्ठ (वि०) |बहुल, इष्ठन्, बेहादेशः उ० अ०| अत्यन्त अधिक, अत्यन्त बड़ा, बहुत ही ज्यादह।

बंहीयस् (वि०) |बहुल+ईयसुन्, बेहादेशः म० अ०| अपेक्षाकृत अधिक, बहुत ज्यादह, अपेक्षाकृत बहुसंख्यक।

बक: |वञ्च् अच्, पृषो० साधुः| 1. बगला 2. ठग, धूर्त, पाखंडी (बगला बड़ा धूर्त पक्षी है, वह अपने पंजे में दूसरों को फांस लेता है) 3. एक राक्षस का नाम जिसे भीम ने मारा था 4. एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मारा था 5. कुबेर का नामान्तर। सम०—चरः, -वृत्तिः, —व्रतचरः, —व्रतिकः, व्रतिन् (पुं०) बगले की भांति आचरण करने वाला, ढोंगी, पाखंडी—अबोधदृष्टिर्नैकृतिकः, स्वार्थसाधनतत्परः, अहो मिथ्याविनीतश्च बकव्रतचरो द्विजः गरु० ४।१९६,—जित(पुं०)—निषूदनः 1. भीम का विशेषण 2. कृष्ण का विशेषण,—व्रतम् बगले की भांति आचरण, पाखंड।

बकुलः |बञ्च्+उन्च्, रेफस्य लत्वम्, तलोपः| एक (मौलसिरी) वृक्ष (कहा जाता है कि कवियों की प्रियाओं द्वारा मदिरा का गंडूष छिड़कने पर इसमें मंजरी फूट आती है)—कांक्षत्यन्यो (अर्थात् केसर या बकुल) वदनमदिरां दोहदच्छद्मनाऽस्याः—मेघ० ७८, बहुलः मौक्तिकपूरणेकात् (विकसित) (इस प्रकार के अन्यवृक्षों से संबद्ध कविसमयों के लिए प्रियंगु के नीचे उद्धरण देखो), -लम् मौलसिरी वृक्ष का सुगंधित फूल—भामि० १।५४।

बकेरुका |बकानां बकसमूहानाम् ईहकं गतियंत्र—ब० स०| छोटी बगली।

बकोटः (पुं०) बगला।

बद्धः |बद्+क्त, ववयोरभेदः| बालक, लड़का, छोकरा (बहुधा तिरस्कारसूचक) चाणक्यबटुः-आदि दे० 'बटु'।

बडि (लि) शम् (नपुं०) मछली पकड़ने का कांटा—भर्तृ० ३।३१।

बत (अव्य०) |वन्+क्त, ववयोरभेदः| निम्नांकित अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय 1. शोक, खेद—यथं बत विद्रुग्धकमगता पद्मोः कन्यका मा० ३।१८, अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्, भग० १।४५ 2. दया या करुणा बत बत हरिणकानां जीविते चाखिलोऽसि—श० १।१० 3. संबोधन, पुकारना—बत वितरत तोयं तोयवाहाः पिताऽस्मै—गंगा०, रघु० ९।७७ 4. हर्ष या संतोष- अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः कु० ३।२० 5. आश्चर्य, अचंभा, अहो बत महच्चित्रम्—का० १५४, 6. निन्दा ('अहो' के साथ 'बत' के अर्थ 'अहो' के अन्तर्गत दे०)।

बदरः |बद्+अरच्| बेर का पेड़,—रम् बेर का फल,—करबदरसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः, पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः सा जयति सरस्वती देवी—वाम० १, भामि० २।८, सम०—पाचनम् एक पुण्यतीर्थ स्थान।

बदरिका |बदरी—कन्| टाप्, ह्रस्वः| बेर का पेड़ या फल, अग्रे बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरा- हि० १।१४ 2. गंगा का एक स्रोत, जो नर और नारायण के आश्रम के निकट स्थित है, इसे ही बदरीनारायण कहते हैं। सम०—आश्रमः बदरिका का आश्रम।

बदरी [बदर+ङीष्] 1. बेर का पेड़; दे० बादरायण 2.—बदरिका (ऊपर 2)। सम० तपोवनम् बदरीस्थित तपस्या करने का उद्यान- कि० १२।३३, —फलम् बेर के पेड़ का फल, वनम् (षण्) बेर की झाड़ी या जंगल,—शैलः बदरी पर स्थित पहाड़।

बद्ध (भू० क० कृ०) [बन्ध्+क्त] 1. बांधा हुआ, बंधा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ, कसा हुआ 2. शृंखलित, बेड़ियों में जकड़ा हुआ 3. बंदी, पकड़ा हुआ 4. अवरुद्ध, कारावासित 5. कमर कसे हुए 6. संयत, दबाया हुआ, रोका हुआ 7. निर्मित, बनाया हुआ 8. प्यार किया गया, स्नेहा गया 9. मिलाया गया, सहित 10. पक्का जमाया गया, दृढ़ । सम०—अङ्गुलित्राण (वि०) दस्ताना पहने हुए,—अञ्जलि (वि०) हाथ जोड़े हुए, आदर या सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए,—अनुराग (वि०) स्नेह में बंधा हुआ, प्रेम के कारण अनुरक्त, प्रेमबन्धन में जकड़ा हुआ, अनुशय (वि०) पश्चात्ताप करने वाला, आबद्धकक्ष (वि०) जिसकी आकांक्षाएँ बढ़ गई हैं, साहूँकुल,—उत्सव (वि०) उत्सव या त्यौहार मनाने हुए,—उद्यम (वि०) मिलकर प्रयत्न करनेवाले, कक्ष,—कक्ष्य (वि०) दे० 'बद्धपरिकर'—कोष,—मन्यु,—रोष (वि०) 1. क्रोध अनुभव करते हुए, क्रोध या रोष की भावना रखते हुए 2. अपने क्रोध का दमन करने वाला,—चित्त, मनस् (वि०) मन को किसी ओर जमाये हुए, मन को किसी ओर दृढ़तापूर्वक लगाने वाला, जिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा कील दी गई है, —दृष्टि,—नेत्र, लोचन (वि०) आंख को एक ओर जमा कर ताकने वाला, एकटक लगाकर देखने वाला,—धार (वि०) लगातार अविच्छिन्न रूप से बहने वाला, नेपथ्य (वि०) नाटकीय वेशभूषा धारण किये हुए, परिकर (वि०) कमर बांधे हुए, कमर कसे हुए, तैयार, सज्जित, —प्रतिज्ञ (वि०) 1. जिसने कोई व्रत या प्रतिज्ञा की है 2. दृढ़ संकल्प वाला, भाव (वि०) स्नेहशील, दिल लगाये हुए, मुग्ध (अधि० के साथ)—दृढ़ त्वयि बद्धभावोऽयं विषम० २, मुष्टि (वि०) 1. मुट्ठी बांधे हुए 2. मुट्ठी भींचे हुए, कंजूस, मूल (वि०) जिसकी जड़ गहराई तक गई हो, जड़ पकड़ हुए —बद्धमूलस्य मूलं हि मद्वैरतरोः स्थिरः—शि० २।२८,—मौन (वि०) जीभ थामे हुए, मौन रहने वाला, चुप अदृश्यत त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम्—रघु० १३।२३,—राग (वि०) आसक्त, मुग्ध, अनुरक्त—पंच० १।१२३,—वसति (वि०) अपना वास स्थान स्थिर करने वाला, वाच् (व०) जिह्वा रोके हुए, चुप रहने वाला,—वेपथु (वि०) कंपकंपी से ग्रस्त, वैर (वि०) जिसकी किसी से घोर घृणा हो गई हो या पक्की शत्रुता हो गई हो, शिख (वि०) 1. जिसने अपनी चोटी बांध ली है, (चोटी में गांठ दे ली है) 2. जो अभी बच्चा है, बालक,—स्नेह (वि०) अनुराग करने वाला, स्नेहशील ।

बध् (भ्वा० आ०—बीभत्सते- मूल अर्थ को बताने वाले बध् धातु का सन्नन्त रूप) घिन करना, घृणा करना, अरुचि रखना, संकोच करना, झिझकना, ऊबना (अधि० के साथ) येभ्यो बीभत्समानाः उत्तर० १ ।

बधिर (वि०) [बन्ध्+किरच्] बहरा, ध्वनिभिर्जनस्य बधिरीकृतश्रुतेः—शि० १३।३, मनु० ७।१४९ ।

बधिरयति (ना० धा० पर०) बहरा बनाना (आल० से भी) बधिरितशेषदिगन्तरालम् का०, महावी० ६।८० ।

बधिरित (वि०) [बधिर+इतच्] बहरा किया गया, बहरा बनाया गया ।

बधिरिमन् (पुं०) [बधिर+इमनिच्] बहरापन ।

बन्दि, दी (स्त्री०) [बन्द्—इन्, बन्दि+ङीप्] 1. बंधन, कारावास 2. कैदी, बेड़ीदार—कु० २।६१ ।

बन्ध् (क्रया० पर० बध्नाति, बद्ध, कर्म० बध्यते) 1. बांधना, कसना, जकड़ना बद्धुं न संभावित एव नावक्तकेश रुद्रोऽपि च केशपाशः कु० ७।५७, रघु० ७।९, कु०७।५५, भट्टि० १।७५ 2. दबोचना, पकड़ना, जेल में डालना, जाल में फंसाना, बंदी बनाना कर्मभिर्न स बध्यते भग० ४।१४, बलिर्बध्वे —भट्टि० २।३३, १४।५६ 3. जंजीर में बांधना, बेड़ी में जकड़ना 4. रोकना, ठहराना, दमन करना यथा बद्धकोष्ठ, बद्धकोष्ठ आदि में 5. पहनना, धारण करना न हि चूडामणिः पादे प्रभवामीति बध्यते —पंच० १।३२, बध्नन्मुरङ्गुलित्राणि भट्टि० १४।७, 6. (आंख आदि का) आकृष्ट करना, गिरफ्तार करना चक्षुस्त्वं बध्नासि यत्प्रसभं कृष्णे ७।१७, या बध्नाति मे चक्षुः (चित्रकूटः) रघु० १३।६७ 7. स्थिर करना, जमाना, (आंख या मन आदि) निर्देशित करना, डालना (अधि० के साथ) दृष्टिं लक्ष्येषु बध्नन्—मुद्रा० १।२, रघु० ३।४, ६।३६, भट्टि० २०।२२ 8. (बाल आदि) बाँधना, मिलाकर जकड़ना - मुद्रा० ७।१७ 9. निर्माण करना, संरचन करना, रूप देना, व्यवस्थित करना - बद्धोमिनाकवनितापरिभुक्तमुक्तम्—कि० ८।५७, मृगकुल रोमन्थ-मभ्यस्यतु० श० २।९, तस्याञ्जलिं बन्धुमतो बबन्ध —रघु० १६।५, ४।३८, ११।३५, ७८, कु० २।४७, ५।२० भट्टि० ७।७७ 10. एकत्र करना, रचना करना, (कविता श्लोक आदि) निर्माण करना तुटेर्वेदं तदलघु रघुस्वामिनः सच्चरित्रम् —विक्रम० १८।१०७, श्लोक एव त्वया बद्धः—रामा० 11. बनाना, पैदा करना, (फल आदि) जमा देना —रघु० १३।६९, श० ६।४ 12. रखना, अधिकार में करना, ग्रहण करना, संजो कर रखना - उत्तर० २।८, (बध् के अर्थों में उन संज्ञाओं के अनुसार जिनसे वह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संयुक्त होता है, नाना प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उदा०—**भ्रकुटि बन्ध** भौंहों में बल डालना, त्योरी चढ़ाना, **मुष्टि बन्ध** मुट्ठी बाँधना, **अञ्जलि बन्ध** नम्र निवेदन के लिए हाथ जोड़ना, **चित्तं, धियं, मनः, हृदयं, बन्ध** मन लगाना, दिल लगाना, **प्रीतिं, भावं, रागं बन्ध्**, प्रेमपाश में बद्ध होना, मुग्ध होना, **सेतुं बन्ध** पुल बनाना, सेतु का निर्माण करना, **वैरं बन्ध** घृणा पैदा होना, शत्रुता, **सख्यं, सौहृदं बन्ध** मैत्री करना, गोल **बन्ध** गोल बाँधना, **मंडलं बन्ध्**, मंडल बनाना, गोल बाँध कर बैठना, **मौनं बन्ध**, चुप्पी साधना, **परिकर बन्ध**, **कक्षां बन्ध** कमर कसना, तैयार हो जाना दे० बद्ध के नीचे समस्त शब्द, प्रेर० **बंधवाना**, अनवाना, रचवाना, निर्माण करवाना -- रघु० १२।७०, **अनु** , १ बाँधना, जकड़ना -शि० ८।६९ 2. लग जाना, भिड़ना, जुड़ जाना -तान्येवाक्षराणि मामनुबध्नन्ति उत्तर० ३, 3. उपस्थित रखना, चुपचाप अनुसरण करना, पद चिह्नों पर चलना मधुकरकुलैरनुबध्यमानम् का० १३९, को नु खल्वयमनुबाध्यमानस्तपस्विभिरौष्मायणालसत्त्वो बालः श० ७ 4. दबाव डालना, प्रेरित करना, अत्यन्त आग्रह करना, आ - , 1. बाँधना जकड़ना, कसना - मनु० ११।२०५ 2. बनाना, निर्माण करना, व्यवस्थित करना -आबद्धमण्डलो तापसपरिषद् --का० ४९, आबद्धमालाः - मेघ० ९, भट्टि० ३।३०, कि० ५।३३,-आबद्धरेखमभितो नवमञ्जरीभिः--गीत० ११ 3. स्थिर करना, जमाना, निर्देशित करना --रघु० १।४०, उद् -, बाँधना, लटकाना कण्ठमुद्बध्नति --मुद्रा० ६, रघु० १६।६५, नि , बाँधना, कसना जकड़ना, भ्रुकुटिं न्यबध्नन् कम्पनं, बेड़ी में बाँधना आनन्दन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय भग० ४।४१, ९।९, १४।७, १८।१७, मनु० ६।७१, कु० ५।२० 2. स्थिर करना, जमाना स्वयं निबद्धरत्ने विक्रम० ४।२९ 3. बनाना, निर्माण करना, संरचना करना व्यवस्थित करना—हेमनिबद्धं चक्रम्, पाषाणचयबद्धः कूपः आदि 4. लिखना, रचना करना मया निबद्धेय-प्रतिज्ञेयं कथा—क० ५, **निस्** , दबाव डालना, प्रेरित करना, अत्यन्त आग्रह करना, परि -, 1. कसना, बाँधना 2. पहनना 3. घेरा डालना, चारों ओर से बाँधना 4. गिरफ्तार करना, ठहराना 5. विघ्न डालना, रुकावट डालना, **प्रति** , 1. कसना, जकड़ना, बाँधना —पोतप्रतिबद्धवस्त्राम् (धेनुम्) -रघु० २।१ 2. स्थिर करना, निर्देशित करना, कु० ७।९१ 3. खचित करना, जड़ना, मढ़ना—यदि मणिस्त्वयुणि प्रतिबध्यते पंच १।७५, बद्धलानुरागकुसुविन्दलप्रतिबद्धमध्यमिव दिग्वलयम्—शि० ९।८ 4. अवरोध करना, विघ्न डालना, पीछे हटाना, निकाल देना, बंद कर देना—प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः—रघु० १।७९ 5. रोकना, हस्तक्षेप करना—मैत्रमन्तरा प्रतिबन्धीतम् श० ६, **सम्** 1. मिला कर बाँधना या कसना, एकत्र करना, संयुक्त करना, साथ लगाना 2. संरचना करना, बनाना दे० संबद्ध।

बन्धः [बन्ध्+घञ्] 1. ग्रन्थि, बन्धन -यथा-आशाबन्ध) 2. बालों को बाँधने की पट्टी, फीता विक्रम० ४।१०, श० १।३० 3. शृंखला, बेड़ी 4. बेड़ी डालना, कारागार में डालना, जेल में बंद करना -मनु० ८।३१० 5. बोलना, पकड़ना, **पकड़ लेना** --**गजबन्ध** — रघु० १६।२ 6. निर्माण, संरचना, **व्यवस्थापन** -- **सर्गबन्धो महाकाव्यम्**—सा० द० ६ 7. भावना, धारणा, विचारना हे राजानस्यजत सुकविप्रेमबन्धं विरोधम्--विक्रमांक० १८।१०७, रघु० ६।८१ 8. संयोग, मिलन, अन्तः सम्पर्क 9. जोड़ना, मिलाना, मिश्रण करना - रघु० १४।१३, अञ्जलिबन्ध आदि 10. पट्टी, तनी 11. सहमति, सामनस्य 12. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, निरूपण -रघु० १८।५२ 13. बंधन, भवबंधन (विप० मुक्ति०—अर्थात् सांसारिक बंधनों से पूर्ण मोक्ष) **बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी**--भग० १८।३०, बन्धान्मुक्तिं क्वलु मलयुक्तान् कुर्वते कर्म-पाशान्--भामि० ४।२१, रघु० १३।५८, १८।७ 14. फल, परिणाम 15. स्थिति, अंगविन्यास, आसन-बन्धवीरः --रघु० २।६ कु० ३।४५, ५९ 16. मैथुन करते समय विशेष आसन, रतिबंध, (रतिमंजरी में इस प्रकार के १६ आसन बताये गये हैं, जब कि और लेखक ८४ तक बढ़ा देते हैं) 17. गोट, किनारी, रूप रेखा, ढांचा 18. किसी श्लोक का कोई विशिष्ट रूप-उदा० खड्गबंध, पद्मबंध, मुरजबंध—काव्य० ९ 19. स्नायु, कण्डरा 20. शरीर 21. जमानत, मुचेहर। सम० --**करणम्** बेड़ी डालना, कारागार में डालना, -**तन्त्रम्** पूरी सेना या चतुरंगिणी सेना अर्थात् गजा-रोही, अश्वारोही, रथारोही तथा पदाति, --**पाल्यम्** अस्वाभाविक या कृत्रिम शब्दरचना, -**स्तम्भः** पशुओं को बांधने का खूंटा (उदा० हाथी आदि)।

बन्धकः [बन्ध्+ण्वुल्] 1. बांधने वाला, पकड़ने वाला 2. बोझने वाला 3. बंध, गांठ, रस्सी, चमड़े का तस्मा 4. बैंद, किनारा, बांध 5. जरोहर, अमानत 6. शरीर का अंगन्यास 7. अदलाबदली, विनिमय 8. भंग करने वाला, तोड़ने वाला 9. प्रतिज्ञा 10. नगर 11. भाग या अंश (द्विगु समास के अन्त में)--**ऋणं सदशबन्धकम्** --याज्ञ० २।७६,--**कम्** बाँधना, सीमित करना,--**की** 1. असली स्त्री--न मे त्वया कौमारबन्धक्या प्रयोजनम्—मा० ७, वेणी० २ 2. वेश्या, वारांगना--बलात्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृतोसि मयेति बन्धकीधार्ष्ट्यम्—का० २३७, 3. हस्तिनी।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] 1. बाँधने की क्रिया, जकड़ना, कसना, कु० ४।८ 2. चारों ओर से बाँधना, लपेटना, आलिंगन —बिलम्बमालम्बितभुजबन्धनानि—कु० ३।३२, पदम भुजबन्धनम्—गीत० १०, रघु० १९।१७ 3. गाँठ, ग्रन्थि (आल० से भी) रघु० १२।७६, आशाबन्धनम् आदि 4. बेड़ी डालना, जंजीर से बाँधना, कैद करना 5. शृंखला, बेड़ी, पगहा, रज्जु आदि 6. गिरफ्तार करना, पकड़ना 7. बाँधना, कैद, जेल, कारा, जैसा कि 'बन्धनागार' में 8. बन्दीगृह कारागार, जेलखाना. —त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम् शा० ६।२०, मनु० ९।२८६ 9. बनाना, निर्माण, संरचना,—सेतु-बन्धनम्—कु० ४।६ 10. संयुक्त करना, मिलाना, जोड़ना 11. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 12. डंडी, डंठल, (फूल का) वृन्त—श० ३।६, ६।१८, कु० ४।१४ 13. स्नायु, पुट्ठा 14. पट्टी। सम० —आ(आ)गारः,-रम्,-आलयः कारागार, जेलखाना, —ग्रन्थिः 1. पट्टी की गाँठ 2. जाल 3. पशुओं को बाँधने का रस्सा,—पालकः,-रक्षिन् (पुं०) कारापाल, जेल का अधीक्षक,—वेडमन् (नपुं०) कारागार—स्थः बंदी, कैदी,—स्तम्भः खूंटा, (हाथी आदि पशुओं को बाँधने का) खंभा,—स्थानम् अस्तबल, घुड़साल।

बन्धित (वि०) [बंध+इतच्] 1. बंधा हुआ, जकड़ा हुआ 2. कैदी, बंदी।

बन्धिवः [बंध्+इत्र] 1. कामदेव 2. चमड़े का पंखा 3. भस्त्रा, भस्सा।

बन्धुः [बन्ध्+उ] 1. रिश्तेदार, बंधु, बांधव, संबंधी—यत्र हुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे उत्तर० ३।८, मातृ-बन्धुनिवासनम् रघु० १२।१२, श० ६।२२, भग० ६।९ 2. किसी प्रकार के संबंध से बंधा हुआ, भाई, —प्रवासबन्धुः सह यात्रो, धर्म बन्धुः आध्यात्मिक भ्राता —श० ४।९ 3. (विधि में) सजातीय बंधुजन, अपना निजी सगोत्र बंधु (बंधु तीन प्रकार के हैं: आत्म,° पितृ° तथा मातृ°) 4. मित्र (जैसा कि नीचे 'बन्धुकृत्य' में) प्रायः समास के अन्त में—मकरन्दगन्ध-बन्धो—भा० १।३६, 'गंध का मित्र अर्थात् सुवासित' ९।१३ 5. पति—वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे रघु० १४।३३ 6. पिता 7. माता 8. भ्राता 9. बंधुजीव नाम का वृक्ष 10. वह व्यक्ति जिसका किसी जाति या व्यवसाय से नाममात्र का संबंध हो, अर्थात् जो जाति में जन्म लेकर अपनी उस जाति के कर्तव्यों का पालन न करता हो (प्रायः तिरस्कारसूचक शब्द) स्वयमेव बन्धुबन्धूनोद्धिजो दुर्नयोगः—मालवि० ४, तु० क्षत्रबंधु। सम०—कृत्यम् 1. सगोत्रबंधु का कर्तव्य—त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं प्रजानाम्—रघु० ५।८ 2. मैत्रीपूर्ण कार्य या सेवा कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे—मेघ० ११४,—जनः 1. रिश्तेदार, भाई-बंधु 2. बंधुवर्ग, स्वजन, जीवः,-जीवकः वृक्ष का नाम—बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल-सितस्मितशोभम्—गीत० २, रघु० ११।२५,—दत्तम् एक प्रकार का स्त्रीधन या स्त्री की संपत्ति, विवाह के अवसर पर कन्या के संबन्धियों द्वारा कन्या को दिया गया धन—याज्ञ० २।१४४, प्रीतिः (स्त्री०) 1. रिश्तेदार का प्रेम—बन्धुप्रीत्या—मेघ० ४९ 2. मित्र के लिए प्रेम, भावः 1. मित्रता 2. रिश्तेदारी—वर्गः भाई-बन्धु, स्वजन,—होन (वि०) बंधुबांधवों या मित्रों से रहित।

बन्धुकः 1. बंधुजीव नामक पेड़ 2. हरामी (सन्तान) वर्ण-संकर,—का,-की असती स्त्री (दे० बंधकी)।

बन्धुता [बन्धु+तल्+टाप्] 1. रिश्तेदार, भाई-बंधु: स्वजन (सामूहिक रूप से) 2. रिश्तेदारी, संबंध।

बन्धुदा [बन्धु+दा+क+टाप्] असती स्त्री।

बन्धुर (वि०) [बंध्+उरच्] 1. झोंदोडोल, लहरदार, ऊँचा-नीचा—शि० ७।३४, कु० १।४२ 2. झुका हुआ, रुझान वाला, विनत बन्धुरगात्रि—रघु० १३।४७, (=सन्ततांगि) 3. टेढ़ा, बंका 4. सुहावना, मनोहर, सुन्दर, प्रिय—श० ६।१३, (यहाँ इसका अर्थ 'डांवा-डोल' भी है) 5. बहरा 6. हानिकर, उत्पातप्रिय, —रः 1. हंस 2. सारस 3. औपाधि 4. खली 5. गोनि, —राः (ब० व०) मुर्गरे या खाद्य पदार्थ, रा असती स्त्री, रम् मुकुट, ताज।

बन्धुल (वि०) [बन्ध्+उलच्] 1. झुका हुआ, बंका, रुझान वाला 2. सुहावना, खुशनुमा, आकर्षक, सुन्दर, —लः 1. हरामी (संतान) परगृहलिताः परान्नपुष्टाः परपुरुषैर्जनिताः परान्ननासु, परधननिरता गुणेष्ववाच्या गजकलभा इव बन्धुला ललामः—मृच्छ० ४।२८, (विदूषक के प्रश्न 'भो के यूयं बन्धुला नाम ?' का यह उत्तर है जो स्वयं बंधुलों ने दिया) 2. वेश्या का सेवक 3. बंधूक नाम का पेड़।

बन्धूकः [बन्ध्+ऊक] एक वृक्ष का नाम—तव करणिकरेण स्पष्टबन्धूकसूनस्तबकरचितमेते शेखरं बिभ्रतीव—शि० ११।४६, ऋतु० ३।५,—कम् इस वृक्ष का फूल बन्धूकद्युतिबान्धवोऽयमधरः—गीत० १०, ऋतु० ३।२५।

बन्धूर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1. डांवाडोल, उन्नतावनत 2. झुका हुआ, रुझानवाला, विनत 3. सुहावना, खुशनुमा, प्रिय, तु० बंधुर,—रम् छिद्र, सूराख।

बन्धूलिः [बंध्+ऊलि] बन्धुजीव नामक वृक्ष।

बन्ध्य (वि०) [बन्ध्+ण्यत्] 1. बांधे जाने के योग्य, बेड़ी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वारा जकड़े जाने योग्य, कैद किये जाने या बन्दी बनाये जाने के योग्य याज्ञ० २।२४३ 2. मिलाकर बाँधने या जोड़ने के योग्य 3. निर्माण किये जाने के योग्य, बनाये जाने या संचरित किये जाने के योग्य 4. निरुद्ध, निगृहीत 5. बांझ, बंजर, जो उपजाऊ न हो, निष्फल, निरर्थक (आकृति या वस्तु)—बन्ध्यश्रमास्ते —रघु० १६।७५, अबन्ध्यदत्तार्घ्य बभूवतुस्ते—३।२९, कि० १।३३ 6. जिसका मानसिक रजःस्राव आना बन्द हो गया हो 7. (समास के अन्त में) विहीन, विरहित ; सम० फल (वि०) निरर्थक, अर्थहीन, सुस्त।

बन्ध्या [बन्ध्य+टाप्] बांझ स्त्री—न हि बन्ध्या विजानाति गुर्वी प्रसववेदनाम्—शुभा० 2. बांझ गौ 3. एक प्रकार की गन्धद्रव्य (वालछड़)। सम०—तनयः,—पुत्रः —सुतः या दुहितृ, सुता बांझ स्त्री का पुत्र या पुत्री अर्थात् घोर असंभाव्यता, जिसका न अस्तित्व है न हो सकता है, एवं बन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः —दे० 'खपुष्प'।

बंधनम् [बंध्+ल्युट्] बन्धन, गांठ।

बभ्रवी [बभ्रु+अण्+ङीप्, नवद्रि] दुर्गा की उपाधि।

बभ्रु (वि०) [भृ+कु, द्वित्वम् बभ्रु+उ वा] 1. गहरा भूरा, खाकी, लाली लिये हुए भूरा—ज्वालावलभ्रु-शिरोरुहः रघु० १५।१६, १९।२५, बभ्रुवर्णा बालाऋण-बभ्रु वल्कलम्—कु० ५।८ 2 किसी रोग के कारण गंजे सिर वाला, भ्रुः 1. आग, 2. नेवला 3. खाकी रंग 4. भूरे बालों वाला 5. एक यादव का नाम—शि० २।४० 6. शिव का विशेषण 7. विष्णु का विशेषण। सम०—धातुः 1. सोना 2. गेरू, सुवर्णगैरिक,—वाहनः विभावसु के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र, [युधिष्ठिर द्वारा छोड़े गये अश्वमेध के घोड़े की देख-भाल अर्जुन करता था। वह घोड़ा घूमता हुआ मणिपुर देश में चला गया। उस समय वहाँ बभ्रुवाहन राज्य करता था। वह अद्वितीय पराक्रमी था। जब वह घोड़ा उसके पास लाया गया और उसने घोड़े के सिर पर बँधे पट्ट पर 'पांडवों' का नाम पढ़ा तथा यह जाना कि उसके पिता अर्जुन राज्य में आ गए हैं तो शीघ्रता से वह उनके पास गया, बड़े सम्मान, के साथ अपना राज्य और कोष, अश्वसहित उनके सामने प्रस्तुत किया। अर्जुन ने उस बुरे समय में बभ्रुवाहन के सिर पर प्रहार किया और उसकी कायरता के लिए उसे डाँटा, फटकारा और कहा कि यदि वह सच्चा पराक्रमी होता, तथा अर्जुन का सच्चा पुत्र होता तो उसे अपने पिता से डरना नहीं चाहिए था, और न इस प्रकार दीनता दिखलानी चाहिए थी। इन शब्दों से उस वीर युवक को अत्यन्त क्रोध आया, जोश में भरकर उसने अर्जुन पर एक अर्धचन्द्राकार बाण छोड़ा जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया। संयोगवश उस समय वहाँ चित्रांगदा के पास उलूपी विद्यमान थी, उसने अर्जुन को पुनर्जीवित कर दिया। अर्जुन ने भी बभ्रुवाहन को अपना सच्चा पुत्र मान लिया और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया)।

बम्ब् [स्वा० पर० बम्बति] जाना, चलाना-फिराना।

बम्भरः [भृ+अच्, द्वित्वं मुम् च] मधुमक्खी, भौंरा।

बम्भराली [बम्भर+अल्+अच्+ङीष्] मक्खी।

बरटः [वृ+अटन्, बवयोरभेदः] एक प्रकार का अन्न।

बर्ब् (भ्वा० पर बर्बति) जाना, चलना-फिरना।

बर्बटः (बर्ब्+अटन्] एक प्रकार का अनाज, राजमाष।

बर्बटी [बर्बट+ङीष्] 1. एक प्रकार का अन्न, राजमाष 2. वेश्या, रंडी।

बर्बणा (स्त्री०) नीली मक्खी।

बर्बरः [बृ+अरच्, बुट् बवयोरभेदः] 1. जो आर्य न हो, अनार्य, असभ्य, नीच 2. मूर्ख, बुद्धू—शृणु रे बर्बर —शि० २।

बर्बुरः [बर्ब्+उरच्] एक वृक्ष, बाबुल—उपसर्पेम भवन्तं बर्बुरं वद कस्य लोभेन—भामि० १।२४।

बर्ह् (भ्वा० आ० बर्हते) 1. डोलना 2. देना 3. ढकना 4. क्षति पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना 5. फैलाना, वि, मार डालना, नष्ट करना—शि० १।२९।

बर्हः,-र्हम् [बर्ह्+अच्] 1. मोर की पूंछ—दधौ स्कान्दति-शेयबर्हः—रघु० १६।१४ (केशपाशे) सति कुसुम-स्तबके के हरेर्देय बर्हः विक्रम० ४।१०, पाठान्तर 2. पक्षी की पूंछ 3. पूंछ का पंख (विशेषकर मोर की) मेघ० ४४, कु० १।१५, शि० ८।११ 4. पत्ता अपाण्डुरं केतकबर्हमन्यः—रघु० ६।१७ 5. अनुचरवर्ग, नौकर-चाकर। सम०—भारः 1. मोर की पूंछ 2. मोरछल, लाठी की मूठ में बंधा मोर के पंखों का गुच्छा।

बर्हणम् [बर्ह्+ल्युट्] पत्ता।

बर्हिः [बर्ह्+इन्] आग—(नपुं०) कुश नामक घास।

बर्हिणः [बर्ह्+इनच्] मोर—आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि (बनानि) रघु० २।१७, १६।१४, १९।३७। सम०—अजः मोर के पंख से युक्त बाण,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिन् (पुं०) [बर्ह्+इनि] मोर—रघु० १६।६४, विक्रम० ३।२,४।१०, ऋतु० २।६। सम०—कुसुमम्, —पुष्पम् एक प्रकार का गंधद्रव्य, खड्गा दुर्गा का विशेषण,—यानः,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिस् (पु०, नपुं०) [बर्ह्+(कर्मणि) इसि] कुश नामक घास—कुं० १।६० 2. बिस्तरा या कुशघास का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिलौना—(पुं०) 1. आग 2. प्रकाश, दीप्ति (नपुं०) 1. जल 2. यज्ञ । **सम०—केश,**···**ज्योतिः** (पुं०) आग का विशेषण,—**मुखः** (बहिर्मुखः) 1. आग का विशेषण 2. देवता (जिसका मुख अग्नि है),—**शुष्मन्** (पुं०) आग का विशेषण, **सद्** (बहिषद्) (वि०) कुशनामक घास के आसन पर बैठा हुआ (पुं०) पितर (ब० व०) ।

बल् i (भ्वा० पर० बलति) 1. सांस लेना, जीना 2. अनाज संग्रह करना ii (भ्वा० उभ० बलति-ते) 1. देना 2. चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, मार डालना 3. बोलना 4. देखना, चिह्न लगाना। प्रेर०—(बालयति-ते) पालना-पोसना, भरणपोषण करना ।

बलम् [बल्+अच्] 1. सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, वीर्य, ओज 2. जबरदस्ती, हिंसा जैसा कि 'बलात्' में 3. सेना, चमू, फौज, सैन्यदल—भवेदभोममद्रोणं धृतराष्ट्रबलं कथम्- वेणी० ३।२४,४३, भग० १।१०, रघु० १६।३७ 4. मोटापन, पुष्टि (शरीर की) 5. शरीर, आकृति, रूप 6. वीर्य, शुक्र 7. रुधिर 8. गोंद, रसगंध (लोबान की तरह का सुगन्धित गोंद) 9. अंकुर, अँखुवा, **बलेन** 'सामर्थ्य के आधार पर', **की बदौलत**—बाहुबलेन जितः, वीर्यबलेन···; **बलात्** 'बलपूर्वक' 'जबरदस्ती' 'हिंसापूर्वक' 'इच्छा के विरुद्ध' **बलाद्विद्या** समायाता—पंच० १, हृदयमदयें तस्मिन्नेवं पूनर्बलते बलात्—गीत० ७), —**स्थः** 1. कौवा 2. कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी० 'बलराम' 3. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था। **सम०**—**अग्रम्** अत्यधिक सामर्थ्य, शक्ति (ग्रः) सेना का प्रधान,—**अंगकः** वसन्त- -हेम० १५६,—**अञ्चिता** बलराम की वीणा, **अटः** एक प्रकार का शहतीर, —**अधिक** (वि०) सामर्थ्य में बढ़चढ़ कर, अत्यंत बलशाली, **अध्यक्षः** 1. सेनापति मनु० ७।८८, 2. युद्धमंत्री, -**अनुजः** कृष्ण का विशेषण, -**अन्वित** (वि०) सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, शक्तिशाली, -**अबलम्** 1. तुलनात्मक सामर्थ्य और असमर्थता, आपेक्षिक सामर्थ्य तथा दुर्बलता रघु० १७।५९ 2. आपेक्षिक सार्थकता तथा नगण्यता, तुलनात्मक महत्त्व तथा महत्त्वशून्यता- - समय एव करोति बलाबलम् शि० ६।४४, **अभ्रः** बादल के रूप में सेना, —**अरातिः** इन्द्र का विशेषण, -**अवलेपः** सामर्थ्य का अभिमान,- **अशः,—अस्रः** 1. क्षयरोग, तपेदिक 2. कफ का आधिक्य 3. गले में सूजन (आहार नली का अवरोध), **आत्मिका** एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, **हस्तिशुंडी,** -**आहः** पानी, -**उपपन्न,** -**उपेत** (वि०) सामर्थ्य से युक्त, मजबूत, शक्तिशाली, -**ओघः** सैन्य-दल का समूह, असंख्य सेना—शि० ५।२,—**ओजः** में अव्यवस्था, गदर, विद्रोह, -**चक्रम्** 1. उपनिवेश, साम्राज्य 2. सेना, समूह, जमघट 1. नगर का फाटक, मुख्यद्वार 2. खेत 3. अनाज, अन्न का ढेर, शि० १४।७ 4. युद्ध, लड़ाई 5. वसा, मज्जा (जा) 1. पृथ्वी 2. सुन्दरी स्त्री 3. एक प्रकार की चमेली, **दः** बैल, बलीवर्द, -**दर्पः** शक्ति का अभिमान, **देवः** 1. वायु, हवा 2. कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी० 'बलराम', **द्विष्** (पुं०)- **निषूदनः** इन्द्र के विशेषण —बलनिषूदनमर्थपतिं च तम् रघु० ९।३, -**पतिः** 1. सेनापति, सेनानायक 2. इन्द्र का विशेषण,—**प्रद** (वि०) ताकत देने वाला, बलवर्धक, **प्रसूः** बलराम की माता रोहिणी, **भद्रः** 1. बलवान् मनुष्य 2. एक प्रकार का बैल 3. बलराम का नाम, दे० नी० 4. लोध्र नामक वृक्ष, **भिद्**(पुं०) इन्द्र का विशेषण श० २, **भृत्** (वि०) बलवान्, शक्तिशाली, **रामः** 'बलवान् राम' कृष्ण के बड़े भाई का नाम (यह वसुदेव और देवकी का सातवाँ पुत्र था, कंस की क्रूरता का शिकार होने से बचाने के लिए यह रोहिणी के गर्भाशय में स्थानान्तरित कर दिया गया। यह और कृष्ण दोनों का गोकुल में नन्द द्वारा पालन-पोषण किया गया। जब यह बालक ही था तो इसने शक्तिशाली राक्षस धेनुक और प्रलंब को मार गिराया, तथा अपने भाई कृष्ण की भांति अनेक आश्चर्यजनक काम किये। एक बार मदिरा के नशे में जिसका कि वह बहुत शौकीन था यमुना नदी को निकट आने का आदेश दिया जिससे कि वह स्नान कर सके; जब उसकी आज्ञा पर ध्यान नहीं दिया गया तो उसने अपने हल की फाली से यमुना नदी को खींचा; अन्त में यमुना ने मनुष्य का रूप धारण कर उससे क्षमा मांगी। एक दूसरे अवसर पर उसने दीवारों समेत समस्त हस्तिनापुर को अपनी ओर खींचा। जिस प्रकार कृष्ण पांडवों के प्रशंसक थे, उसी प्रकार बलराम कौरवों के प्रशंसक थे जैसा कि उसकी इस बात से प्रकट होता है कि वह अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से करना चाहता था न कि अर्जुन से। इतना होते हुए भी उसने महाभारत के युद्ध में न पांडवों का पक्ष लिया और न कौरवों का। इसका वर्णन नीली देशभूषा धारण किये हुए 'हल' से जो कि उसका अत्यंत प्रभावशाली शस्त्र था, सुसज्जित किया जाता है। उसकी पत्नी का नाम रेवती था। कई बार इसे शेषनाग का अवतार और कई बार विष्णु का आठवाँ अवतार समझा जाता है—तु० गीत०),—**विन्यासः** सैन्य दल की व्यूहरचना, -**व्यसनम्** सेना की हार,—**सूदनः** इन्द्र का विशेषण,—**स्थः** योद्धा, सैनिक, -**स्थितिः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(स्त्री०) 1. शिविर, पड़ाव 2. राजकीय छावनी, —हन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—हीन (वि०) बलहीन, दुर्बल, अशक्त ।

बलज (वि०) [बल स्वार्थेऽत्यसात्—अ+क] श्वेत—द्विरदस्तबलक्षमलद्वयत स्फुरितभृङ्गमृगच्छवि केतकम् —शि० ६।३४ । सम० गुः (यों 'किरण' का रूपान्तर) चन्द्रमा—यथानत्यजुनान्नरमसदृक्षांको बलक्षगुः काव्या० १।४६, (गौडीयों के प्रसाद गुण का एक उदाहरण) ।

बलजः [बल+ल+क] इन्द्र का विशेषण ।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1. मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर—विधिरद्दो बलवानिति मे मतिः —भर्तृ० २।९१ 2. बलिष्ठ, हट्टा-कट्टा 3. सघन, घिनका (अंधकार आदि) 4. अधिभावी, सर्वप्रमुख, प्रभविष्णु —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५ 5. अति महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक—रघु० १४।४० (अव्य०) 1. मजबूती से, शक्ति के साथ -पुनर्वशित्वाद्बलवद्विगृह्य · कुं० ३।९९ 2. अत्यधिक, अत्यंत, अतिशय मात्रा में—बलवदपि शिक्षितात्मान्यप्रत्ययं चेतः—श० १।२, शीतांशुर्बलवदुपैषुषेव नीरैः शि० ८।६२, श० ५।३१ ।

बला [बल्+अच्+टाप्] शक्तिसंपन्न ज्ञान या मन्त्रयोग (यह योग विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को बतलाया था) · तौ बलातिबलयोः प्रभावतः · रघु० ११।९ ।

बलाकः,—का [बल+अक्+अच्, स्त्रियां टाप् च] बगला, —सेविष्यते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः मेघ० ९, मृच्छ० ५।१८, १९,- का प्रिया, कान्ता ।

बलाकिका [बलाका+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी जाति बगला ।

बलाकिन् (वि०) [बलाका+इनि] बगलों या सारसों से भरा हुआ—कालिंदीव निविड़ा बलाकिनी · रघु० ११।१५, कु० ७।३९ ।

बलात्कारः [बल+अत्+विवप्=बलात्+कृ+अण्] 1. हिंसा का प्रयोग करना, बल लगाना 2. सतीत्व-नाशन, विनयभंग, बल, अत्याचार, छीनाझपटी रघु० १०।४७, बलात्कारेण निर्वर्त्य आदि 3. अन्याय 4. (विधि में) उत्तमर्ण द्वारा अधमर्ण को रोकना तथा ऋण की वापसी के लिए बल का प्रयोग करना ।

बलात्कृत (वि०) [बलात्+कृ+क्त] जिसके साथ जबरदस्ती की गई हो या जो परास्त कर दिया गया हो ।

बलाहकः [बल+आ+हा+ण्वुल] 1. बादल बलाहकच्छेदविभक्तरागमकालसन्ध्यामिव धातुताम्रा—कु० १।४ 2. एक प्रकार का बगला या सारस 3. पहाड़ 4. प्रलयकालीन सात बादलों में से एक ।

बलिः [बल्+इन्] 1. आहुति, भेंट, चढ़ावा (प्रायः धार्मिक) नीवारबलिं बिलोकयतः—श० ४।२०, १।४९ 2. दैनिक आहार (चावल, अनाज तथा घी आदि) में से कुछ अंश का सब जीवों को उपहार, (इसे 'भूतयज्ञ' भी कहते हैं) दैनिक पंच महायज्ञों में से एक, बलिवैश्वदेव यज्ञ (दे० मनु० ३।६।९१) इसका अनुष्ठान घर के द्वार के निकट, भोजन करने से पूर्व दैनिक आहार का कुछ अंश बाहर आकाश में फेंक कर किया जाता है यासां बलिः संपदि मद्गृहदेहलीनां हंसैरच सारसगणैश्च विलुप्तपूर्वः—मृच्छ० १।९ 3. पूजा, आराधना—कु० १।६०, मेघ० ५५, श० ४ 4. उच्छिष्ट 5. देवमूर्ति पर चढ़ाया नैवेद्य 6. शुल्क, कर, चुंगी—प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् रघु० १।१८, मनु० ७।८०, ८।०७७, 7. चंवर का डंडा 8. एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम (यह प्रह्लाद के पुत्र विरोचन का पुत्र था, बहुत शक्तिशाली था, देवताओं को अत्यंत पीड़ित करता था । फलस्वरूप देवताओं ने विष्णु से सहायता की प्रार्थना की । विष्णु ने कश्यप और अदिति का पुत्र बन कर वामन का अवतार धारण किया । उसने साधु का वेश धारण किया । और बलि के पास जाकर उससे तीन पग पृथ्वी मांगी । स्वभाव से उदार बलि ने निस्संकोच प्रकट रूप से इस सामान्य प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । परन्तु शीघ्र ही वामन ने अपना विराट् रूप दिखलाया और तीन पग मापना शुरू किया । पहले पग से उसने सारी पृथ्वी को आच्छादित कर लिया, दूसरे से समस्त अन्तरिक्ष को और तीसरे पग के लिए स्थान न पाकर उसे बलि के सिर पर रख दिया, और राजा बलि को उसकी असंख्य सेना समेत पाताल लोक भेज कर वहाँ का शासक बना दिया । इस प्रकार विश्व एक बार फिर इन्द्र के शासन में आ गया)—छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत-वामन-गीत० १, रघु० ७।३५, मेघ० ५७, - लिः (स्त्री०) तह, सुर्री (प्रायः 'वलि' लिखा जाता है) । सम० -कर्मन् (नपुं०) 1. सब जीवजन्तुओं को भोजन देना 2. कर अदायगी, -दानम् 1. देवता को नैवेद्य अर्पण करना 2. सब जीव जंतुओं को भोजन देना, -भक्षिन् (पुं०) विष्णु का अवतार,- तन्दनः · पुत्रः, सुतः बलि के पुत्र बाण का विशेषण, · पुष्टः,—भोजनः कौवा,—प्रियः लोध वृक्ष,—बन्धनः विष्णु का विशेषण, - भुज् (पुं०) 1. कौवा 2. चिड़िया 3. बगला या सारस,—मन्दिरम्, · वेश्मन् · सदनम् (नपुं०) पाताल लोक, बलि का आवासस्थान, · व्याकुल (वि०) पूजा में अथवा सब जीव जन्तुओं को भोजन देने वाला मेघ० ८५—हृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण,- हरणम् सब जीव जन्तुओं को भोजन देना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बलिन् (वि०) [बल+इनि] मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, रघु० १६।३७, मनु० ७।१७४—(पुं०) 1. भैंसा 2. सूअर 3. ऊँट 4. साँड़ 5. सैनिक 6. एक प्रकार की चमेली 7. कफात्मक वृत्ति 8. बलराम का विशेषण।

बलिन्, बलिभ [बलि+न, भ वा, ववयोरभेदः] दे० 'बलिन भ'।

बलिध्वंसः [बलि+दम्+खच्, मुम्] विष्णु का विशेषण।

बलिभत् (वि०) [बलि+मतुप्] 1. पूजा या आहुति की सामग्री तैयार रखने वाला रघु० १४।१५ 2. कर उगाहने वाला।

बलिमन् (पुं०) [बल+इमनिच्] सामर्थ्य, ताकत, शक्ति।

बलिवर्द दे० बलीवर्द।

बलिष्ठ (वि०) [बलवत् (बलिन्)+इष्ठन्] अत्यन्त बलशाली, अत्यन्त मजबूत, अतिशय शक्तिशाली, —ष्ठः ऊँट।

बलिष्णु (वि०) [बल्+इष्णुच्] अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।

बलीकः [बल्+ईकन्] छप्पर की मुंडेर।

बलीयस् (वि०) (स्त्री० -सी) [बलवत् (बलिन्) + ईयसुन्] 1. अपेक्षाकृत मजबूत, अधिक शक्तिशाली 2. अधिक प्रभावी 3. अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण।

बली (ली) वर्दः [वृ+क्विप्=वर्, ई वरच्=ईवरी, तौ ददाति—दा+क, ईवर्दः, बली चासौ ईवर्दश्च कर्म० स०] साँड, बैल—गोरपत्यं पुमान् बलीवर्दः।

बल्य (वि०) [बल+यत्] 1. मजबूत, शक्तिशाली 2. शक्तिप्रद,—ल्यः बौद्ध भिक्षु, ल्यम् वीर्य शुक्र।

बल्लवः [बल्ल्+अच् तं वाति वा+कः] 1. ग्वाला —कुञ्जेष्वाकांत वीरुन्निचयपरिचया बल्लवाः संचरन्तु —वेणी० ६।२, शि० ११।८ 2. रसोइया 3. विराट के यहाँ भीम का नाम जब वह रसोइये का काम करता था,—वी ग्वालिन कि० ४।१७। सम०—युवतिः, ती (स्त्री०) जवान ग्वालिन (गोपी) हरिविरहाकुलबल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम् - गीत० ४।

बल्वजः—जा [?] एक प्रकार का मोटा घास—मनु० २।४३।

बल्हिकाः, बल्हीकाः (ब० व०) एक (बलख) देश का तथा उसके अधिवासियों का नाम।

बव्वय (वि०) [बव्च्+अयत्] बहुत (एक वर्ष का बछड़ा)।

बव्वया (वि० गौ (स्त्री०) [बव्वय+इनि+ङीप्] 1. बहु गाय जिसका बछड़ा पूरा बढ़ गया हो नै० १६।९२ 2. बहुप्रसवी गाय (जिसके बहुत बछड़े पैदा हुए हैं)।

बस्तः [बस्+घञ्] बकरा। सम०—कर्णः साल वृक्ष।

बहल (वि०) [बह्+अलच्] 1. अत्यधिक, यथेष्ट, प्रचुर, पुष्कल, बहुविध, महान्, मजबूत उत्तर० १।३८, ३।२३, शि० ९।८, भामि० ४।२७ 2. घिनका, सघन 3. लोमश (पूंछ की भांति)—लः 1. कठोर, दृढ़, सटा हुआ,—लः एक प्रकार का इक्षुरस, ईख, गन्ना, —ला बड़ी इलायची। सम०—गन्धः एक प्रकार का चंदन।

बहिस् (अव्य०) [बह्+इसुन्] 1. में से, बाहर (अपा० के साथ)—निवसन्प्राविशथे पुराद्बहिः रघु० ८।१५, ११।२९ 2. बाहर की ओर, दरवाजे के बाहर (विप० अन्तः) बहिर्गच्छ 3. बाह्यतः, बाहर की ओर से—अन्तर्बहिः पुरत एव विवर्तमानाम् मा० १।४०, १४—बहिष्कृ 1. बाहर की ओर रखना, से निकालना, हांक कर बाहर कर देना —मनु० ८।३८०, याज्ञ० १।९३ 2. जाति से बाहर करना, बहिर्गम्, —या, —इ बाहर जाना, चले जाना)। सम०—अङ्ग (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का (गम्) 1. बाहरी भाग 2. बाहरी अंग,—उपाधिः (बहिरुपाधिः) बाहरी दशा या परिस्थिति —मा० १।२४, चर (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का, बाहर की तरफ का—बहिश्चराः प्राणाः —दश०,—द्वारम् बाहर का दरवाजा, दहलीज।

बहु (वि०) (स्त्री०—हु,—ह्वी) [बंह्+कु नलोपः—म० अ०—भूयस्, उ० अ०—भूयिष्ठ] 1. अधिक, पुष्कल, प्रचुर, बहुत तस्मिन् बहु एतदपि -ग० ४, 'यह भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितने की उससे अपेक्षा न की जा सके)—बहु प्रष्टव्यमत्र मुद्रा० ३, अलमस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७ 2. अनेक, असंख्य यथा 'बह्वक्षर' और 'बहु प्रकार' में 3. बार-बार किया गया, दोहराया गया 4. बड़ा, विशाल 5. भरापूरा, समृद्ध (समास के प्रथम पद के रूप में)—बहुकण्टको देश —आदि-(अन्य०) अति, बहुतायत से, अत्यधिक, अत्यंत, अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2. कुछ, लगभग, प्रायः जैसा कि 'बहुतृण' में (कि बहुना अधिक कहने से क्या लाभ ? 'संक्षेप में' बहुमन् बहुत सोचना, बहुत मानना, ऊँचा मूल्य लगाना, बहुमूल्य मानना, आदर करना - त्वत्स-भावितमात्मानं बहु मन्यामहे वयम् कु० ६।२०, ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव—शा० ४।६, ७।१, रघु० १६।८९ भग० २।३५, भट्टि० ३।५३, ५।८४, ८।१२)। सम० अक्षर (वि०) अनेक अक्षरों वाला, (शब्द) बहुत से अक्षरों से बना हुआ,—अच्, —अच्क (वि०) अनेक स्वरों से युक्त, बहुत स्वरों वाला,—अप्,—अपं (वि०) जलयुक्त,—अपत्य (वि०) अनेक संतानों से युक्त (त्यः) 1. सूअर 2. मूसा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बूहा, -(त्या) वह गाय जिसके बहुत बछड़े बछड़ियाँ हैं,—अर्थ (वि०) 1. अनेक अर्थों से युक्त 2. बहुत से उद्देश्य रखने वाला 3. महत्त्वपूर्ण,—आशिन् (वि०) बहुभोजी, पेटू,—उदकः एक प्रकार का भिक्षु जो अज्ञात नगर में निवास करता है तथा घर घर भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह करता है—तु० 'कुटीचक', —उपाय (वि०) प्रभावी, क्रियावान्, ऋच् (वि०) अनेक ऋचाओं से युक्त, (स्त्री०) ऋग्वेद का नामान्तर, —एनस् (वि०) अति पापमय,—कर (वि०) अति-क्रियाशील, व्यस्त, उद्योगी, (रः) 1. भङ्गी, झाड़ देने वाला 2. ऊँट, (री) झाड़ू, —कालम् (अव्य०) बहुत देर तक, —कालीन (वि०) बहुत समय का, पुराना, प्राचीन, —कूर्चः एक प्रकार का नारियल का पेड़,—गन्धा कस्तूरी, मृगमद,—गन्धा 1. यूथिका लता 2. चपाकली, —गुण (वि०) 1. अनेक सद्गुणों से युक्त 2. कई प्रकार का, तरह-तरह का 3. अनेक धागों से युक्त, —जल्प (वि०) बहुभाषी, मुखर, वाचाल,—ज्ञ (वि०) बहुत जानकारी रखने वाला, अच्छा जानकार, सुविज्ञ, —तृणम् कोई पदार्थ जो बहुधा घास की भाँति हो अतः महत्त्वशून्य या तिरस्करणीय हो निदर्शनमला-राधा लघुर्बहुतृणं नरः—शि० २।५०,—त्वक्कः,—त्वच् (पुं०) एक प्रकार का भोजवृक्ष,—दक्षिण (वि०) 1. जिसमें बहुत दान और उपहार प्रस्तुत किया जाय 2. उदार, दानशील,—दायिन् (वि०) उदार, दान-शील, उदारतापूर्वक दान देने वाला,—दुग्ध (वि०) बहुत दूध देने वाला, (ग्धः) गेहूँ, (ग्धा) बहुत दूध देने वाली गाय,—दृश्वन् (वि०) बड़ा अनुभवी, जिसने बहुत देखा सुना हो,—दोष (वि०) 1. जिसमें अनेक दोष हों, बहुत सी त्रुटियाँ हों, अतिदुष्ट पाप-पूर्ण 2. अपराधों से युक्त, भयदायी—बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८,—धन (वि०) बहुत धनी, धनाढ्य,—धारम् इन्द्र का वज्र, धेनुकम् दूध देने वाली गौओं की बड़ी संख्या,—नाद: शंख,—पत्रः प्याज, (त्रम्) अभ्रक, (त्री) तुलसी का पौधा,—पद्,-पाद्-पादः (पुं०) बड़ का वृक्ष,—पुत्रः 1. मूंग का पेड़ 2. नीम का वृक्ष,—प्रकार (वि०) बहुत प्रकार का, नाना प्रकार का, विविध प्रकार का,—प्रज (वि०) बहुत सन्तान वाला, अनेक बच्चों वाला, (जः) 1. सूअर 2. मूंज—एक घास,—प्रतिज्ञ (वि०) 1. नाना प्रकार की उक्ति और वाक्यों से युक्त, पेचीदा 2. (विधि में) अभियोग पत्र के रूप में जहाँ कई प्रकार का शुल्क लगे,—प्रद (वि०) अत्यन्त उदार, उदार, दाता,—प्रसूः अनेक बच्चों की माँ, प्रेयसी (वि०) जिसके बहुत से प्रेमी हों,—फल (वि०) फलों से समृद्ध, (लः) कदम्ब का वृक्ष, - बल: सिंह, भाविन् (वि०) मुखर, वाचाल,—मञ्जरी तुलसी का पौधा,—मत (वि०) बहुत माना हुआ, मूल्यवान्, कीमती, सम्मानित, - मतिः (स्त्री०) बड़ा मूल्य, या मूल्यांकन—कि० ७।१५,—मनस् सोना,—मानः बड़ा सम्मान या आदर, ऊँचा मूल्यांकन,—पुरुषबहुमानो विगलितः—भर्तृ० ३।९, वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः—मालवि० १, विक्रम० ११२, कु० ५।३१, (नम्) उपहार जो बड़ों द्वारा छोटों को दिया जाय,—मान्य (वि०) आदरणीय, माननीय, मायं कलामयं, छलयुक्त, द्रोही—पंच० १।३२१,—मार्गा गंगा—रत्न० १।३,—मार्गी जहाँ बहुत सी सड़कें मिलती हों,—मूत्र (वि०) मधुमेह रोग से पीड़ित,—मूर्धन् (वि०) विष्णु का विशेषण, मूल्य (वि०) मूल्यवान्, ऊँची कीमत का,—मृग (वि०) जहाँ बहुत से मृग हों,—रत्न (वि०) रत्नों से समृद्ध,—रूप (वि०) 1. अनेक रूपी, बहुरूपी, विश्वरूपी 2. चितकबरा, धब्बेदार, रंगबिरंगा या चारखानेदार, (पः) 1. छिपकली, गिरगिट 2. बाल 3. सूर्य, 4. शिव 5. विष्णु 6. ब्रह्मा 7. कामदेव, —रेतस् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण,—रोमन् (वि०) बहुलोमी, रोएँदार (पुं०) भेड़, लवणम् लुनिया घरती, - वचनम् (व्या० में) एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने का प्रकार,—वर्ण (वि०) बहुरंगी, रंगबिरंगा,—वार्षिक (वि०) बहुत वर्षों तक रहने वाला,—विघ्न (वि०) अनेक कठिनाइयों से युक्त, नाना विघ्नबाधाओं से भरा हुआ,—विध (वि०) अनेक प्रकार का, तरह-तरह का, विविध प्रकार का, —वी (ही) जम् शरीफा,—व्रीहि (वि०) बहुत चावलों वाला—तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः—उद्भट (यहाँ यह समास का नाम भी है), (हिः) संस्कृत के चार मुख्य समासों में एक (इसमें दो पद पास-पास रख दिये जाते हैं, विशेषणात्मक पद (चाहे वह संज्ञा हो या विशेषण) को पहले रखते हैं, जो दूसरे पद को विशेषित करता है, परन्तु वह दोनों पद पृथक्-पृथक् अभीष्ट अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते, बल्कि मिलकर एक अन्य अर्थ द्योतक शब्द का निर्माण होता है। यह समास विशेषणपरक होता है। परन्तु कभी-कभी इसका प्रयोग संज्ञाओं की भाँति किया जाता है जहाँ यह किसी विशिष्ट व्यक्ति के अर्थ में संनियंत्रित होता है उदा० चक्रपाणि, शशिशेखर, पीतांबर, चतुर्मुख, त्रिनेत्र, कुसुमशर आदि.—शाखः रोएँदार चिड़िया,—सारः खदिरवृक्ष का एक भेद, - सृङ्कः विष्णु का विशेषण, —श्रुत (वि०) 1. विज्ञ पुरुष, प्रविद्वान्—हि० १।१, पंच० २।१, रघु० १५।३६ 2. वेदों का जानकार —मनु० ८।३५०,—सन्तति (वि०) अनेक बाल-बच्चों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाला (तिः) एक प्रकार का बाँस,—सार (वि०) बहुत अधिक मज्जा या रस से युक्त, सारयुक्त, (रः) खदिरवृक्ष, खैर,—सूः 1. अनेक बच्चों की माँ 2. शूकरी, सरी,—सूतिः (स्त्री०) 1. अनेक बच्चों की माँ 2. बहुत बार ब्याने वाली गाय,—स्वन (वि०) कोलाहलपूर्ण (नः), उल्लू,—वार्मिक (वि०) जिसके स्वामी अनेक हों।

बहुक (वि०) [बहु+कन्] महंगा खरीदा हुआ, कः 1. सूर्य 2. मदार का पौधा 3. केकड़ा 4. एक प्रकार का जलकुक्कुट।

बहुतर (वि०) [बहु+तरप्] अपेक्षाकृत असंख्य, अधिक, ज्यादह।

बहुतम (वि०) [बहु+तमप्] अत्यन्त अधिक, अतिशय।

बहुतः (अव्य०) [बहु+तस्] नाना पार्श्वों से, कई तरफ से।

बहुता,-त्वम् [बहु+तल्+टाप्, त्व वा] बहुतायत, प्राचुर्य, असंख्यता।

बहुतिथ (वि०) [बहु+तिथुक] ज्यादह, अधिक, अनेक—काले गते बहुतिथ—शं० ५।३, तस्य भूदि बहुतिथास्तिवयः किं० १२।२।

बहुधा (अव्य०) [बहु+धाच्] 1. कई प्रकार से, विविध प्रकार से, बहुत तरह से- बहुधाप्यागमैर्भिन्नाः —रघु० १०।२६, भग० १३।४ 2. भिन्न-भिन्न रूप से या रीतियों से 3. बारंबार, दोहराकर 4. विविध स्थानों या दिशाओं में।

बहुल (वि०) [बंहू+कुलच्, नलोपः] (म० अ० -बंहीयस्, उ० अ० -बंहिष्ठ) 1. घिनका, सघन, सटा हुआ 2. विशाल, विस्तृत, आयत, विपुल, बड़ा 3. प्रचुर, यथेष्ट, पुष्कल, अधिक, असंख्य—अविनय-बहुलतया—का० १४३ 4. अनेक, बहुत प्रकार का, अगणित -मा० ९।१८ 5. भरापूरा, समृद्ध, प्रभूत—जन्मनि क्लेशबहुले किं नु दुःखमतः परम्—हि० ११८४, भग० २।४३ 6. संयुक्त, संलग्न 7. कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म हुआ है 8. काल, लः 1. मास का कृष्णपक्ष,-पादुरासबहुलक्षपाछत्रिः रघु० ११।१५, करेण भानोर्बहुलावसाने संचुम्ब्यमाणेव शशाङ्करेखा -कु० ७।८,४।१३ 2. अग्नि का विशेषण, —ला 1. गाय 2. इलायची 3. नील का पौधा 4. (ब० व०) कृत्तिकानक्षत्र, —लम् 1. आकाश सफेद मिर्च, (बहुलीकृ) 1. प्रकाशित करना, खोलना, भंडाफोड़ करना 2. सघन या सटाकर बनाना -शि० १३।४४ 3. बढ़ाना, विस्तार करना, वृद्धि करना —भूतेषु किं च करुणा बहुलीकरोति—भामि० १।१२२ 4. फटकना, —बहुलीभू 1. फैलना, विस्तृत करना, बुना करना—छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति -पंच० २।१७५ 2. दूर तक फैलना, प्रकाशित होना, बदनाम होना, सुविदित होना, दूर दूर तक फैल जाना — बहुलीभवन्त·····सोढुं न तत्पूर्वभवर्णमीशैः—रघु० १४।३८। सम०—आलाप (वि०) बातूनी, वाचाल, मुखर, -गन्धा इलायची।

बहुलिका (स्त्री०—ब० व०) कृत्तिकानक्षत्र।

बहुशः (अव्य०) [बहु+शस्] 1. अत्यंत, बहुतायत के साथ, अत्यधिकता के साथ मेघः १०६ 2. बार बार, दोहरा कर, मुहुर्मुहुः—चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्· श० १।२३, कु० ४।३५ 3. साधारणतः, सामान्य रूप से।

बकुलम् [बकुल+अच्] बकुल वृक्ष का फल।

बाढ़ (म्वा० आ० बाढते) 1. स्नान करना 2. गोता लगाना।

बाडवः [बडवा+अण्, ववयोरभेदः] दे० 'वाडव'।

बाडवेय (वि०) [बडवा+ढक्] दे० 'वाडवेय'।

बाडव्यम् [बाडव+यत्] दे० 'वाडव्यम्'।

बाढ (वि०) [वह्+क्त नि० साधुः] (म० अ०-साधीयस्, उ० अ० साधिष्ठ) 1. दृढ़, मजबूत 2. ऊँचे स्वर का,—ढम् (अव्य०) 1. यकीनन, निश्चय ही, अवश्य, वस्तुतः, हाँ (प्रश्न के उत्तर के रूप में) —ज्ञापयः चन्दनदासः, एष ते निश्चयः, चन्दनदासः-बाढम्, एष मे स्थिरो निश्चयः—मुद्रा० १, बाढमेषु दिवसेषु पार्थिवः कर्म साधयति पुत्रजन्मने—रघु० १९।५२ 2. बहुत अच्छा, तथास्तु, शुभम् 3. अत्यंत, बहुत ज्यादह - शि० ९।७७।

बाणः [वण्+घञ्] तीर, बाण, शर—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम्—कु० ३।६६ 2. तीर का निशाना, बाण का लक्ष्य 3. तीर का पंखयुक्त भाग 4. गाय का ऐन या औड़ी 5. एक प्रकार का पौधा (नील-झिंटी भी)—विकचबाणदलावलयोऽधिकं रुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमाः शि० ९।४६ 6. एक राक्षस का नाम, बलि का पुत्र—तु० उषा 7. एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राजा हर्षवर्धन के दरबार में विद्यमान था (दे० परिशिष्ट २), उसने कादंबरी, हर्षचरित तथा और कई पुस्तकें लिखीं (आर्या० के ३७ वें श्लोक में गोवर्धन ने बाण के विषय में निम्नांकित कहा है —आता शिखण्डिनी प्राग्यथा शिखण्डी तथाबाणश्चाभि, प्रागल्भ्यमधिकमाप्नु वाणी बाणी बभूवेति। इसी प्रकार—हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु साक्षा—प्रस० १।२२) 1. 'पांच' की संख्या के लिए प्रतीकात्मक उक्ति। सम० असनम् धनुष,— आवलिः, -ली (स्त्री०) 1. बाणों की श्रेणी 2. एक वाक्य में अन्वित पाँच श्लोकों का एक कुलक, —आभयः तरकस, गोचरः बाण का परास, —आसन्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाणों का समूह, --जित् (पुं०) विष्णु का विशेषण, --तूणः,--धिः तरकस,—पन्थः बाण का परास,--पाणि (वि०) बाणों से सुसज्जित, --पातः 1. तीर की मार (दूरी की माप) 2. तीर की परास,—मुक्तिः,—मोक्षणम् बाण मारना, तीर छोड़ना,—मोजनम् तरकस,—वृष्टिः (स्त्री०) तीरों की बौछार,—वारः वक्षस्त्राण, कवच, उरस्त्राण · तु० वारबाण:, सुतः बाण की पुत्री ऊषा का विशेषण, दे० ऊषा,--हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण ।

बाणिनी [बाण+इनि+ङीप्] दे० बाणिनी ।

बादर (वि०) (स्त्री०-री) [बदर+अण्] 1. बेर के वृक्ष से प्राप्त या संबद्ध 2. रूई का बना हुआ,—रः रूई का पौधा, बाही, —रम् 1. बेर 2. रेशम 3. पानी 4. रूई का वस्त्र 5. दक्षिणावर्त शंख, --रं कपास का पेड़ ।

बादरायणः [बदरी+फक्] वेदान्त दर्शन के शारीरक सूत्रों का प्रणेता बादरायण (जिसे प्रायः व्यास का नामान्तर माना जाता है) । सम० सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र, · सम्बन्धः कल्पित या दूर का सम्बन्ध (आधुनिक रूप) ।

बादरायणिः [बादरायण+इञ्] व्यास का पुत्र शुक ।

बादरिक (वि०) (स्त्री०-की) [बदर+ठक्] बेर एकत्र करने वाला ।

बाध् (भ्वा० आ० बाधते, बाधित) 1. तंग करना, उत्पीडित करना, सताना, अत्याचार करना, छेड़ना, कष्ट देना, दुःखी करना, परेशान करना, पीड़ा देना · ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे रघु० २।१४, न तथा बाधते स्कन्धो यथा बाधति बाधते सुभा०, मेघ० ५३, मनु० ९।२२९, १०।१२२, भट्टि० १४।४५ 2. मुकाबला करना, विरोध करना, निष्फल करना, रोकना, रुकावट डालना, अवरोध करना, हस्तक्षेप करना —कि० १।११, उत्तर० ५।१२ 3. आक्रमण करना, हमला करना, धावा बोलना 4. अनुचित व्यवहार करना, अन्याय करना 5. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 6. हांक कर दूर करना, पीछे ढकेलना, हटाना 7. स्थगित करना, एक ओर रखना, रद्द करना, तोड़ना, मिटाना (नियम आदि) रघु० १७।५७, अभि , 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. दुःख देना, तंग करना, सताना, आ, दुःख देना, सताना, क्षति पहुँचाना, परि ,कष्ट देना, पीडा पहुँचाना —शि० ७।२५, प्र ,1. कष्ट देना, सताना, तंग करना, चिढ़ाना, क्षति पहुँचाना समुच्छ्वासानेव तरून् प्रबाधते (प्रभञ्जनः) हि० १, भट्टि० १२।२ 2. हांक कर दूर हटाना, मिटाना, पार करना—कथं नु दैवं शक्यते पौरुषेण प्रबाधितुम्- महा०, सम् -,कष्ट देना, सताना ।

बाधः,-धा [बाध्+घञ्] 1. पीडा, यातना, कष्ट, सन्ताप—रजन्या सह जृम्भते मदनबाधा · विक्रम० ३ 2. रुकावट, छेड़छाड़, परेशानी—इति धमरबाधां निरूपयति · श० १ 3. हानि, क्षति, घाटा, चोट —चरणस्य बाधा— मालवि० ४, याज्ञ० २।१५६ 4. भय, खतरा 5. मुकाबला, विरोध 6. आपत्ति 7. प्रत्याख्यान, निराकरण 8. स्थगन, रद्द करना 9. अनुमान प्रक्रिया में त्रुटि, हेत्वाभास के पांच रूपों में से · दे० नी० 'बाधित' । सम०—अपवादः अपवाद का लक्षण ।

बाधक (वि०) (स्त्री०-धिका) [बाध्+ण्वुल्] 1. कष्ट देने वाला, सताने वाला, उत्पीडक 2. छेड़छाड़ करने वाला, परेशान करने वाला 3. उन्मूलन 4. बाधा डालने वाला ।

बाधनम् [बाध्+ल्युट्] 1. तंग करना, उत्पीडन, परेशान करना, अशान्ति, पीडा—श० १ 2. मिटाना 3. हटाना, स्थगन 4. निराकरण, प्रत्याख्यान,—ना पीडा, कष्ट, चिन्ता, अशान्ति ।

बाधित (भ० क० कृ०) [बाध+क्त] 1. तंग किया हुआ, उत्पीडित, परेशान 2. पीडित, सन्तप्त, कष्टग्रस्त 3. विरुद्ध, अवरुद्ध 4. रोका हुआ, प्रगृहीत 5. एक ओर रक्खा गया, स्थगित 6. निराकृत 7. (तर्क० में) खण्डित, विवादग्रस्त, असंगत (फलतः व्यर्थ) ।

बाधिर्यम् [बधिर+ष्यञ्] बहरापन ।

बान्धकिनेयः [बन्धकी+ढक्, इनङादेशः] दोगला, वर्ण-संकर ।

बान्धवः [बन्धु+अण] 1. रिश्तेदार, संबंधी—यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः—हि० १, मनु० ५।७४, १०१, ४।१७९ 2. मातृपक्षक रिश्तेदार 3. मित्र—धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके—सुभा० 4. भाई । सम०—जनः, रिश्तेदार, बन्धु-बांधव— दारिद्र्यात्पुरुषस्य बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते · मृच्छ० १।३६, पंच० ४।७८ ।

बान्धव्यम् [बान्धव+ष्यञ्] संगोत्रता, रिश्तेदारी ।

बाभ्रवी [बभ्रु+अण्+ङीप्] दुर्गा का विशेषण ।

बार्बटोरः [?] 1. आम का गूदा 2. जस्त 3. नया अंकुर 4. वेश्या का पुत्र ।

बार्ह (वि०) (स्त्री०-र्ही) [बर्ह+अण्] मोर की पूंछ के चंदवों से बना हुआ ।

बार्हद्रथ, बार्हद्रथिः [बृहद्रथ+अण्, इञ् वा] राजा जरासंध का पितृपरक नाम ।

बार्हस्पत (वि०) (स्त्री०-ती) [बृहस्पति+अण्] बृहस्पति से संबद्ध, बृहस्पति की सन्तान या बृहस्पति को प्रिय ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बार्हस्पत्य (वि०) [बृहस्पति+यक] बृहस्पति से संबंध रखने वाला,—**त्यः** 1. बृहस्पति का शिष्य 2. भौतिकवाद के उपरूप के शिक्षक बृहस्पति का अनुयायी, भौतिकवादी,—**त्यम्** पुष्यनक्षत्र ।

बार्हिण (वि०) (स्त्री०—णी) [बर्हिन्+अण्] मोर से संबद्ध या उत्पन्न ।

बाल (वि०) [वल्+ण या बाल+अच्] 1. बच्चा, शिशुवत्, अवयस्क, न्यूना०—बालेन स्यविरेण वा · मनु० ८।७०, बालशांकमुपोद्घातमुभगं भेदीमुखं तिष्ठति —विक्रम० २।७, इसी प्रकार बालमन्दारवृक्षः · मेघ० ७५, रघु० २।४५, १३।२४ 2. नया उगा हुआ, बाल (रवि या अर्क)—रघु० १२।१०० 3. नूतन, वर्धमान (चन्द्रमा)—पुप्लोष वृद्धि हरिदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः—रघु० ३।२२, कु० ३।२९ 4. बालिश 5. अनजान, अबोध, ल: 1. बालक, शिशु-बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम्· मनु० २।२३९ 2. बालक, युवा, तरुण 3. अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)—बाल आषोडशाद्वर्षाणि · नारद 4. बछेरा, अश्वबच्चे 5. मूर्ख, भोंदू 6. पूंछ 7. बाल 8. पाँच वर्ष का हाथी 9. एक प्रकार का गन्धद्रव्य । सम०—**अग्रम** बाल की नोक, —**अध्यापकः** बच्चों का शिक्षक,—**अभ्यासः** बाल्यावस्था में अध्ययन, (अध्ययन में) शीघ्र लगाना, **अरुण** (वि०) प्रभातकालीन उषा की भाँति लाल, (णः) प्रभातकालीन उषा,—**अर्कः** नवोदित सूर्य—रघु० १२।१००, **अवबोधः** बच्चों की शिक्षा, **अवस्था** (वि०) तरुण, नवयुवक· विक्रम० ५।१८, **अवस्था** बचपन, —**आतपः** प्रातःकालीन धूप,—**इन्दुः** नया बढ़ता हुआ चन्द्रमा—कु० ३।२९, **इष्टः** बेरी, बेर का पेड़, —**उपचारः** (आयु०) बच्चों की चिकित्सा,—**उपवीतम्** लंगोटी, रुमाली, **कदली** केले का नया पौधा, **कुन्दः**, —**दम्** एक प्रकार की नई चमेली (**दम्**) चमेली की नई खिली हुई कली· अलके बालकुन्दानुविद्धम् – मेघ० ६५, **कृमिः** जूं, **कृष्णः** बालक के रूप में कृष्ण,—**क्रीडनम्** बच्चे का खिलौना या खेल,—**क्रीडनकम्** बच्चे का खिलौना, (· कः) 1. गेंद 2. शिव का विशेषण,—**क्रीडा** बच्चों का खेल, बालकों या तरुणों का खेल,· **क्लिन्नः** ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न, अंगूठे के समान आकारवाली दिव्य मूर्तियाँ (जो गिनती में साठ हजार समझी जाती है) तु० रघु० १५।१०, —**गर्भिणी** पहली बार गर्भिणी हुई गाय,—**गोपालः** "तरुण ग्वाला" बालगोपाल के रूप में कृष्ण का विशेषण,· **ग्रहः** बालकों को पीड़ा पहुँचाने वाला पिशाच (या उपग्रह),—**चन्द्रः** · **चन्द्रमस्** (पुं०) दूज का चांद, बढ़ता हुआ चाँद—मा० २।१०,—**चरितम्** 1. तरुणों के खेल 2. बाललीला, बाल्यजीवन के कारनामे—उत्तर० ६,—**चर्यः** कार्तिकेय का नाम, (र्या) बच्चे का व्यवहार, · **ज** (वि०) बालों से उत्पन्न,—**तगरः** खदिर का वृक्ष, खैर,—**तन्त्रम्** बालरोगों की चिकित्सा,· **तृणम्** नई दूब, हरी घास,—**दलकः** खैर,—**धिः** बालों वाली पूंछ—शि० १२।७३, कि० १२।४७,· **पाइया** 1. बालों की माँग में पहने जाने के योग्य आभूषण 2. बालों की चोटी में धारण की जाने वाली मोतियों की लड़ियाँ, · **पुष्टिका**, —**पुष्टी** एक प्रकार की चमेली, **बोधः** 1. बच्चों की शिक्षा 2. अनुभवशून्य नये बालकों की शक्ति के अनुसार कोई कार्य,—**भङ्गकः** एक प्रकार का विष,—**भारः** बालों से भरी हुई लम्बी पूंछ—बाधेतोत्कालकक्षपितचमरी बालभारो दवाग्निः—मेघ० ५३,—**भावः** बचपन, बाल्यावस्था, **भैषज्यम्** एक प्रकार का अंजन,—**भोज्यः** मटर, —**मृगः** मृग छौना, **यज्ञोपवीतकम्** वक्षःस्थल के ऊपर से पहने जाने वाला जनेऊ,—**राजम्** वैदूर्यमणि, नीलम, —**रोगः** बच्चों का रोग,—**लता** नूतन बेल · रघु० २।१०,—लीला बच्चों के खेल, बालकों का मनोविनोद, —**वत्सः** 1. नन्हा बछड़ा 2. कबूतर,—**वायजम्** वैदूर्यमणि नीलम,—**वासस्** (नपुं०) ऊनी वस्त्र, **वाह्यः** जंगली बकरा,—**विधवा** बाल्यावस्था में ही जिसका पति मर गया हो, **व्यजनम्** चंवर, चौरी (मुगशावक के बालों से बनी चौरी जो एक प्रकार का राजचिह्न है)—रघु० ९।६६, १४।११, १६।३३, ५७, कु० १।१३, · **सखिः** बाल्यावस्था से बना मित्र, बचपन का दोस्त,—**संध्या** झुटपुटा,—**सुहृद्** (पुं०) बचपन का मित्र,—**सूर्यः**, · **सूर्यकः** वैदूर्यमणि, नीलम,—**हत्या** बच्चे की हत्या, · **हस्तः** बालों वाली पूंछ ।

बालक (वि०) (स्त्री०—लिका) [बाल+कन्] 1. बच्चों जैसा, नन्हा, अवयस्क 2. अनजान,—**कः** 1. बच्चा, बाल 2. अवयस्क (विधि में) 3. अँगूठी 4. मूर्ख या बुद्धू 5. कड़ा, कंकण 6. हाथी या घोड़े की पूंछ,—**कम्** अँगूठी । सम०—**हत्या**, बच्चे की हत्या ।

बाला [बाल+टाप्] 1. लड़की, कन्या 2. सोलह वर्ष से कम आयु की युवती 3. तरुणी, युवती, जाने तपसो वीर्यं सा बाला परवतीति मे विदितम् श० ३।१, इयं बाला मां प्रयत्नवरतमिन्दीवरदलप्रभाचारु चक्षुः क्षिपति भर्तृ० ३।५७, मेघ० ८३ 4. चमेली का एक भेद 5. नारियल 6. घृतकुमारी का पौधा 7. इलायची 8. हल्दी । सम० **हत्या** स्त्रीहत्या ।

बालिः [बल्+इन्] एक प्रसिद्ध वानरराज का नाम—दे० 'वालि' । सम०—**हन्** हन्तृ (पुं०) राम का विशेषण ।

बालिका [बाला+कन् ; टाप्, इत्वम्] 1. लड़की 2. कान की बाली की घुंडी 3. छोटी इलायची 4. रेत 5. पत्तों की सरसराहट ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बालिन् (पुं०) [बाल+इनि] एक वानर का नाम—दे० 'बालि'।

बालिनी [बालिन्+ङीप्] अश्विनी नक्षत्र।

बालिमन् (पुं०) [बाल+इमनिच्] बचपन, बाल्यावस्था, लड़कपन।

बालिश (वि०) [बाडि स्पर्शे, बाडि+शो+ड डलयोरभेदः] 1. बच्चों जैसा, अबोध, मूर्ख 2. बच्चा 3. मूर्ख, अनजान मनु० ३।१७६ 4. लापरवाह, **शः** 1. मूर्ख, बुद्धू 2. बच्चा, बालक, **शम्** नकिया।

बालिश्यम् [बालिश+ष्यञ्] 1. लड़कपन, बचपन 2. बेवकूफाना, मूर्खता, बेवकूफी।

बाली [बालि+ङीप्] एक प्रकार की कान की बाली।

बालीशः (पुं०) मूत्रावरोध।

बालुः+**बालुकम्** [बल+उण्, बालु+कन्] एक प्रकार का गंध द्रव्य।

बालुका दे० 'बालुका'।

बालुकी, बालुङ्गी, बालुङ्गी [बल+उकञ्+ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

बालूकः [बल+ऊकञ्] एक प्रकार का तिल।

बालेय (वि०) (स्त्री०—यी) [बलि+ढक्] 1. बलि देने के लिए उपयुक्त 2. मृदु, मुलायम 3. बलि की संतान, **यः** गधा।

बाल्यम् [बाल+ष्यञ्] 1. लड़कपन, बचपन, बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्यवास रघु० ५।६३, कु० १।२९ 2. (चन्द्रमा के) बढ़ने की अवधि कु० ७।३५ 3. समझ की अपरिपक्वता, मूर्खता, अबोधता।

बाल्हकः, बाल्हिकः, बाल्हीकः (पुं० ब० व०) [बल्हिदेशो भवः बल्हि+वुञ्, बल्हि+ठक्, पृषो० पक्षे दीर्घत्वम्] बल्हि के अधिवासी, **कः** 1. बाल्हीकों का राजा 2. बलख का घोड़ा, **-कम्** 1. केसर, जाफरान, 2. हींग।

बाल्हिः (पुं०) एक देश का नाम। सम० **-ज** (वि०) बलख देश में पला, बलख देश की नसल।

बाष्पः -ष्पम् [बाष्-पृषो० सत्वं पत्वं वा] 1. आँसू, अश्रु-कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।५ 2. भाप, प्रवाष्प, कुहरा 3. लोहा। सम०—**अम्बु** (नपुं०) आँसू, —**उद्भवः** आँसुओं का आना,—**कण्ठ** (वि०) जिसका गला भर आया हो, गद्गद कंठ वाला,—**दुर्दिनम्** आँसुओं की बाढ़,—**पूरः** आँसुओं का फूट पड़ना, आँसुओं की बाढ़,—**वारिधरं तिरयति दृशोरुद्गमः** बाष्पूरः —मा० १।३५, —**मोक्षः**, —**मोचनम्** आँसू बहाना,—**बिन्दुः** (पुं) आँसू की बूंद, **लंबिन्** (वि०) जो आँसुओं के कारण अस्पष्ट हो।

बाष्पायते (ना० धा० आ०) आँसू बहाना, रोना—तत्किमिति बाष्पायितं भगवत्या—मा० ६, विक्रम० ५।९।

बास्त (वि०) (स्त्री०—स्ती) [बस्त+अण्] बकरे से उत्पन्न या प्राप्त—मनु० २।४१।

बाहुः [=बाहृ, पृषो० बह्+णिच्+अच्, वक्रयोरभेदः] 1. भुजा 2. घोड़ा।

बाहा [दे० बाहु] भुजा,—**र्मा** प्रत्यालिङ्गतोमताभिः शाखाबाहाभिः—श० ३। सम०—**बाहवि** (अव्य०) हस्ताहस्ति, भुजा से भुजा—तु० बाहु-बाहवि।

बाहीकाः (ब० व०) [बह्+ईकन् दवयोरभेदः] पंजाब के अधिवासी, **-कः** 1. पंजाबी 2. बैल।

बाहुः [बाध्+कु, धस्य हः] 1. भुजा—शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य—श० १।१६, इसी प्रकार 'महाबाहुः, आदि 2. कलई 3. पशु का अगला पैर 4. द्वार की चौखट का बाजू 5. (ज्या० में) समकोण त्रिभुज का आधार,—हू (द्वि० व०) आर्द्रा नक्षत्र। सम०—**उत्क्षेपम्** (अव्य०) भुजाओं को ऊपर उठा कर **-बाहूत्क्षेपं क्रन्दितुं च प्रवृत्ता**—श० ५।३०, —**कृष्ण कुक्ष** (वि०) लंबा, जिसका हाथ विकृत हो गया हो,—**कृन्दः** (पक्षी का) बाजू, डैना,—**चापः** पौरुष की मार, अर्थात् दोनों हाथों को फैलाकर मापी हुई दूरी,—**जः** क्षत्रिय वर्ण का व्यक्ति—तु० बाहू राजन्यः कृतः—ऋ० १०।९०।१२, मनु० १।३१, 2. तोता, **-ज्या** (गणि० में) चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा,—**त्रः**,—**त्रम्**—**त्राणम्** भुजाओं की रक्षा करने वाला कवचविशेष, **-दण्डः** 1. डंडे की भांति लंबी भुजा 2. भुजा या मुक्के से दण्डित करना,—**पाशः** 1. मल्लयुद्ध में एक घेरा बनाना जैसा कि आलिंगन के समय किया जाता है, **प्रहरणम्** घूंसों की लड़ाई, मल्लयुद्ध,—**बलम्** भुजा की ताकत मांसपेशियों की शक्ति,—**भूषणम्**,—**भूषा** भुजा में पहना जाने वाला आभूषण, बाजूबंद, अंगद, —**भेदिन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण,—**मूलम्** 1. कांख, 2. कंधे और बाहु का जोड़, **युद्धम्** हाथापाई, मल्लयुद्ध, घूंसों की लड़ाई, **योधः**—**योधिन्** (पुं०) मुष्टि योद्धा, घूंसेबाज,—**लता** भुजा की भांति बेल, **अन्तरम्** स्तन, वक्षःस्थल, **-वीर्यम्** भुजाओं की शक्ति, —**व्यायाम** कसरत,—**शालिन्** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. भीम का विशेषण,—**शिखरम्** भुजा का ऊपरी भाग, कंधा, **-संभवः** क्षत्रिय जाति का पुरुष, **सहस्रभृत्** (पुं०) कार्तवीर्य राजा का विशेषण ('सहस्रार्जुन') भी इसका नामान्तर है।

बाहुकः [बाहु—कै+क] 1. बन्दर 2. कर्कोटक के द्वारा बौना बना दिये जाने पर नल का बदला हुआ नाम।

बाहुगुण्यम् [बहुगुण+ष्यञ्] अनेक सद्गुण और श्रेष्ठताओं का स्वामित्व।

बाहुदन्तकम् [बहुदन्तक+अण्] नैतिक कर्तव्यों का स्मृति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के रूप में निरूपण किसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं।

बाहुदन्तेयः [बहुदन्त+ढक] इन्द्र का विशेषण।

बाहुदा [बाहु+दा+क+टाप्] एक नदी का नाम।

बाहुभाष्यम् [बहुभाष्+ष्यञ्] मुखरता, वाचालता, बातूनीपन।

बाहुरूप्यम् [बहुरूप+ष्यञ्] बहुरूपता, विविधता।

बाहुलः [बहुल+अण्] 1. अग्नि 2. कार्तिक का महीना, —लम् 1. बहुरूपता 2. भुजाओं की रक्षा के लिए कवच विशेष। सम०—**प्रौवः** मोर।

बाहुलकम् [बाहुल+कन्] 1. अनेकरूपता 2. व्याकरण में प्रयुक्त विधिविशेष—बाहुलकाच्छन्दसि, किसी रूप, अर्थ या नियम की विविध या असीम प्रयोजनीयता।

बाहुलेयः [बहुला+ढक्] कार्तिकेय का विशेषण।

बाहुल्यम् [बहुल+ष्यञ्] 1. बहुतायत, प्राचुर्य, यथेष्टता 2. बहुरूपता, अनेकता, विविधता 3. वस्तुओं का सामान्य क्रम या प्रचलित व्यवस्था।

बाहुयुद्धम् [बाहुभिर्बाहुभिः प्रवृत्तं युद्धम्] भुजा से भुजा मिला कर, हस्ताहस्ति, घमासान युद्ध।

बाह्य (वि०) [बहिर्भवः -ष्यञ्, टिलोपः] 1. बाहर का, बाहर की ओर का, बाहरी, बहिर्देश, बाहर स्थित --विरहः किमिवानुतापयेद् वद बाह्यविषयैर्निषेदिचेतसम्--रघु० ८।८९, बाह्योद्याने-मेघ० ७, कु० ६।४६, **बाह्यात्मन्** 'बाहरी नाम', अर्थात् पत्र की पीठ पर लिखा हुआ पता या शिरोनाम, सरनामा--मुद्रा० १ 2. विदेशी, अपरिचित--पंच० १ 3. बहिष्कृत, कटघरे से बाहर--जातास्तदूर्वोरुपमानबाह्याः--कु० १।३६ 4. समाज से बहिष्कृत, जातिबहिष्कृत,—ह्यः 1. अपरिचित,—ह्यम्, **बाह्यात्,** बाह्यां (अव्य०) बाहर, बाहर की ओर, बाहरी ढंग से।

बाह्यधुक्यम् [बह्वृच+ष्यञ्] ऋग्वेद का परम्परागत अध्यापन।

बिट् (भ्वा० पर० बेटति) 1. शपथ लेना 2. अभिशाप देना 3. चिल्लाना, जोर से बोलना।

बिटकः, -कम्, बिटकः [=पिटक, पृषो०] फोड़ा, फुंसी।

बिडम् [बिड्+क] एक प्रकार का नमक।

बिडालः [बिड्+कालन्] 1. बिल्ला, बिलाव 2. आँख का डेला। सम०—**पदकम्** १६ माशे के तोल का बट्टा।

बिडालकः [बिडाल+कन्] 1. बिलाव 2. आँख के बाहरी भाग पर मल्हम लगाना,—**कम्** पीली मल्हम।

बिडौजस् (पुं०) [वेष्टि बिट् व्याप्तकमोजो यस्य बिडौजाः, पृषो० बुद्धिः] इन्द्र का विशेषण, —श० ७।३४।

बिद्, बिंद् (भ्वा० पर० बिंदति) 1. खण्ड खण्ड करना 2. बाँटना।

बिदलम् दे० 'बिदल'।

बिन्दुः [बिन्द्+उ] 1. बूंद, बिंदी जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः "छोटी-छोटी बूंदे मिल कर एक सरोवर बन जाता है", विन्दोर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि मनु० ७।३३, अधुना (कुतूहलस्य) बिन्दुरपि नावशेषितः -श० २ 2. बिंदु, बिंदी 3. हाथी के शरीर पर रंगीन बिंदी या चिह्न--कु० १।७ 4. शून्य, सिफर--न रोमकूपौघमियाजजगत्कृता कृतात्र किं दूषणशून्यबिन्दवः--नै० १।२१। सम०—**चित्रकः** चित्तीदार हरिण, -**जालम्** -**जालकम्** 1. बूंदों का समूह 2. हाथी के सूंड और शरीर पर बनाये गये चित्रण, चित्तियाँ,—**तन्त्रः** 1. पासा 2. शतरंज की बिसात,—**देवः** शिव का विशेषण;—**पत्रः** एक प्रकार का भोजपत्र,—**फलम्** मोती,—**रेखकः** 1. अनुस्वार 2. एक प्रकार का पक्षी,—**रेखा** बिन्दुओं की पंक्ति, -**वासरः** गर्भाधान का दिन।

बिम्बोकः, (बिम्बोक, बिम्बोकः) [?] 1. अभिमान के कारण अपने प्रियतम पदार्थ की ओर उदासीनता का प्रदर्शन -मनाक् प्रियकथालापे बिम्बोकोऽनादरक्रिया--प्रतापरुद्र, या, बिम्बोकस्त्वतिगर्वेण वस्तुनीष्टेऽप्यनादरः--सा० द० १३९ 2. घमंड के कारण उदासीनता 3. केलिपरक या प्रीतिविषयक संकेत--संशय्य क्षणमिति निश्चिकाय कश्चिद्बिम्बोकैर्बकसहवासिनां परीक्षैः --शि० ८।९ (विलासैः--मल्लि०)।

बिभित्सा [भिद्+सन्+अ+टाप्] भेदने की इच्छा, बींधने की या छेद करने की इच्छा।

बिभित्सु (वि०) [भिद्+सन्+उ] छेदने या बींधने की इच्छा।

बिभीषणः [भी+सन्+ल्युट्] एक राक्षस का नाम, रावण का भाई (यद्यपि वह जन्म से राक्षस था परन्तु तोभी सीता के अपहरण के कारण वह बड़ा खिन्न था, उसने रावण को इस दुष्कृत्य के लिए बहुत बुरा भला कहा। उसने बार-बार रावण को समझाया कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो सीता को राम के पास वापिस पहुँचा दो। परन्तु उसने बिभीषण की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। अंत में जब उसने देखा कि रावण का विनाश अवश्यभावी है तो वह राम के पास चला गया और उनका पक्का मित्र बन गया। रावण की मृत्यु के पश्चात् राम ने बिभीषण को लंका की राजगद्दी पर बिठा दिया। बिभीषण सात चिरंजीवियों में गिना जाता है—दे० 'चिरंजीवित्')।

बिभेक्षुः, बिभेत्स्युः [भस्ज्+सन्+उ, विकल्पेन इट्] आग।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिम्बः,-म्बम् [वी+बन् नि० साधुः] सूर्यमण्डल या चन्द्रमंडल—वदनेन निर्जितं तव नीलीयते चन्द्रबिम्बमम्बुधरे सुधा०, इसी प्रकार सूर्य०, रवि० आदि 2. कोई गोल या मंडलाकार समूह, मंडल या गोला जैसे 'नितम्बबिम्ब' गोलाकार कूल्हा, 'श्रोणीबिम्ब' आदि 3. प्रतिमा, छाया, प्रतिबिंब 4. शोभा, दर्पण 5. फलया 6. उपमित पदार्थ (विप० प्रतिबिंब), -म्बम् एक वृक्ष का फल (यह जब पक जाता है तो लाल रंग का हो जाता है, तरुण स्त्रियों के होठों की तुलना इसी से की जाती है)—रक्तशोफरुचा बिम्बैर्निर्गतगुणा बिम्बाधरा-लक्तकः—मालवि० ३।५, पक्वबिम्बाधरोष्ठी मेघ० ८२, कु० ४० २४। समः —ओष्ठ (वि०) (बिंबो (वी)ष्ठ) बिंब फल के समान लाल-लाल सुंदर होठों वाला मालवि० ४।१८, (—ष्ठः) बिंब फल की भांति ओष्ठ—उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे—कु० ३।६७।

बिम्बकम् [बिम्ब+कन्] 1. सूर्यमंडल या चन्द्रमंडल 2. बिंबफल।

बिम्बिका [बिम्ब+कन्+टाप्] 1. सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल 2. बिंब का पौधा।

बिम्बित (वि०) [बिम्ब+इतच्] 1. प्रतिबिंबित, प्रति छाया पड़ी हुई 2. चित्रित।

बिल (तु० पर०, चुरा० उभ० बिलति, बेलयति-ते) खंड खण्ड करना फाड़ना, तोड़ना, बांटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

बिलम् [बिल्+क] 1. छिद्र, बिवर, खूंट (हल चलाने से बनी गहरी गोधी रेखा) स्यन्दालबिलं लिहः··· प्रान्तानि लङ्घयति हि पंच० ३।१७, रघु० १२।५, 2. खिसरयान, गर्त, छिद्र 3. द्वारक, छिद्र, सूराख, 4. केदरा, कोटर -लः इन्द्र के घोड़े 'उच्चैःश्रवा' का नामान्तर। समः ओकस् (पुं०) बिल में रहने वाला जानवर, कारिन् (पुं०) चूहा,—योनि (वि०) बिलजन्तुओं की वंश के जानवर—यद्यश्वा बिल-योनयः कु० २।३१, -वासः संधमार्जार,—वासिन् (बिलेवासिन्) (पुं०) सांप।

बिलेशयः [बिल+शी+अच्, अलुक् स०] 1. सांप 2. मूसा, चूहा 3. मांद में रहने वाला कोई भी जन्तु।

बिल्लः [बिल+ला+क नि० अकार लोपः] 1. गर्त 2. विशेषतः थांवला, आलवाल। समः—सुतः दस बच्चों की मां।

बिल्वः [बिल्+वन्] बेल नामक वृक्ष—ल्वम् 1. बेल का फल 2. एक विशेष तोल, पल भर। समः—देवः शिव का विशेषण,—भेदिका,—भेदी बेल का छिलका (जो लकड़ी के समान कड़ा होता है),—वनम् बेलों का जंगल।

बिल्वकीया [बिल्व+छ, कुक्] वह स्थान जहाँ बेल के पौधे लगाये गए हों।

बिस् (दिवा० प० विस्यति) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. उकसाना, प्रेरित करना, भड़काना 3. फेंकना, डाल देना 4. टुकड़े टुकड़े करना।

बिसम् [बिस्+क] 1. कमल तंतु 2. कमल की तन्तु वाली डंडी-पाथेयमृणालसूत्रं बिसं ग्रहणाय भूयः—विक्रम० ४।१५, बिसमलमशनाय स्वादु पानाय तोयम्—भर्तृ० ३।२२, मेघ० ११, कु० ३।१७, ३।२९। समः —कण्टिका, कण्ठिन् (पुं०) छोटा सारस -कुसुमम्, —पुष्पम्,—प्रसूनम् कमल का फूल,—जक्षुर्बिसं घृतवि-कासिविसप्रयागाः शि० ५।५८, -खादिका 'कमल तन्तुओं को खाने वाली,—ग्रन्थिः कमलडंडी के ऊपर की गाठ, छेदः कमल की तंतुमय डंडी का टुकड़ा, —जम कमल, का फूल, कमल तन्तुः कमल का रेशा, —नाभिः (स्त्री०) कमल का पौधा, पद्मिनी,-नासिका एक प्रकार का सारस।

बिसलम् [बिस+ला+क] नया अंकुर, अंखुवा, कली।

बिसिनी [बिस+इनि] 1. कमलिनी, कमल का पौधा भर्तृ० ३।३६ 2. कमलतंतु 3. कमलों का समूह।

बिसिल (वि०) [बिस+इलच्] बिस से संबद्ध या प्राप्त।

बिस्तः [बिस्+क्त] (८० रत्तियों के बराबर) सोने का तोल।

बिल्हणः (पुं०) विक्रमाकदेवचरित नामक काव्य का रचयिता।

बीजम् [वि+जन्+ड उपसर्गस्य दीर्घः वक्ष्योरभेदः] बीज (आलं० से भी) बीज का दाना, अनाज —अरण्यबीजाजलिदानलालिताः कु० ५।१५, बीजां-जलिः पतति कीटमुखावलीढः—मृच्छ० १।९, रघु० १९।५७, मनु० ९।३३ 2. जीवाणु, तत्त्व 3. मूल, स्रोत, कारण, बीजप्रकृतिः श० १।१, (पाठान्तर) 4. वीर्य, शुक्र,—कु० २।५, ६० 5. किसी नाटक की कथावस्तु का बीज, कहानी आदि,—दे० सा० द० ३१८, 6. गदा 7. बीजगणित 8 बीजमन्त्र,—ज: नीबू का पेड़, (बीजाङ्कः 1. बीज बोना-व्योमनि बीजाङ्कुरोऽभूमिः १।९८ 2. बीज बोने के बाद हल चलाना) । समः —अक्षरम् मन्त्र का प्रथम अक्षर,- अङ्कुरः बीज का अंकुर कु० ३।१८, "न्यायः बीज और अंकुर का न्याय, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, -अध्यक्षः शिव का विशेषण, अश्वः जनवाश्व, सांड घोड़ा,—आहृयः, —पूरः,-पूरकः बिजौरा नीबू, चकोतरा, (रम्,-रकम्) नीबू का फल,-उत्कृष्टम् अच्छा बीज,—उद्वपनम् जोला, -कर्तृ (पुं०) शिव का विशेषण,—कोशः,-कोष 1. बीज पात्र 2. कमल का बीजपात्र,—गणितम् बीजगणित का विज्ञान,—गुप्तिः (स्त्री०) बीजकोश, फली, सेम,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छीमी,—दर्शकः रंगशाला का व्यवस्थापक,—धान्यम् धनिया,—न्यासः नाटक की कथावस्तु के स्रोत को बतलाना,—पुरुषः कुल प्रवर्तक, फलकः बीजपूर का पेड़,—मन्त्रः रहस्यमय अक्षर जिससे मंत्र आरम्भ होता है, -मातृका कमल की बीजकोष,- वृक्षः दाना, अनाज,—वापः 1. बीज बोने वाला 2. बीज का बोना, —वाहनः शिव का विशेषण,—सूः पृथ्वी,—सेक्तृ (पुं०) प्रस्रष्टा, प्रजापति ।

बीजकः [बीज+कन्] 1. सामान्य नींबू 2. नींबू या चकोतरा 3. जन्म के समय बच्चे की भुजाओं की स्थिति, कम् बीज ।

बीजल (वि०) [बीज+लच्] बीजों से युक्त, बीजों वाला ।

बीजिक (वि०) [बीज+ठन्] बीजों से भरा हुआ, जिसमें बहुत बीज हों ।

बीजिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [बीज+इनि] बीजों से युक्त, बीज रखने वाला (पुं०) 1. वास्तविक पिता या प्रजनक (बीज का बोने वाला) (वि०० क्षेत्रिन् —खेत या स्त्री का पति या स्वामी) दे०—मनु० ९। ५१ तथा आगे 2. पिता 3. सूर्य ।

बीज्य (वि०) [बीज + यत्] 1. बीज से उत्पन्न 2. सम्मानित कुल का, सत्कुलोद्भव ।

बीभत्स (वि०) [बिभ्+सन्-, धञ्] 1. घृणोत्पादक, घिनौना, दुर्गंधयुक्त, भीषण, जुगुप्साजनक हन्त बीभत्समेवावां वर्तते मा० ५, 'अहो ! यह निश्चित रूप से घिनौना दृश्य है' 2. ईर्ष्यालु, प्रद्वेषी, विद्वेषपूर्ण 3. बर्बर, क्रूर, खूंखार 4. मन से विरक्त, -त्सः 1. जुगुप्सा, घिनौनापन, गहेणा 2. बीभत्सरस, काव्य के आठ या नौ रसों में से एक जुगुप्सास्थायिभावस्तु बीभत्सः कथ्यते रसः सा० द० २३६ (उदा० मा० ५।१६) 3. अर्जुन का नामान्तर ।

बीभत्सुः [बिभ्+सन्+उ] अर्जुन का विशेषण । महा० इस प्रकार व्याख्या करता है— न कुर्याद्यत्कर्म बीभत्सं युध्यमानः कथंचन, तेन देवमनुष्येषु बीभत्सुरिति विश्रुतः ।

बुक् (अव्य०) [बुक्क्+क्विप् पृषो० उपधालोपः] अनुकरणमूलक शब्द । सम० – कारः सिंह की दहाड़ ।

बुक्क् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० बुक्कति, बुक्कयति-ते) 1. भौंकना—हि० ३।५२ 2. बोलना, बातें करना ।

बुक्कः,-क्कम् [बुक्क+अच्] 1. हृदय 2. दिल, छाती —बुक्काघातैरतिनिकटे प्रौढनायंत्र राधा उद्भूट 3. रुधिर, क्कः 1. बकरा 2. समय ।

बुक्कन् (पुं०) [बुक्क्+शतृ] हृदय, दिल ।

बुक्कनम् [बुक्क्+ल्युट्] भौंकना, भौं भौं करना ।

बुक्कसः [=पुक्कस, पृषो० साधुः] चंडाल ।

बुक्का,-क्की [बुक्क+टाप्, ङीष् वा] हृदय, दिल ।

बुध् (भ्वा० उभ०—बोदति-ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, समझना, पहचानना 2. समझ लेना, जान लेना ।

बुद्ध (भू० क० कृ०) [बुध्+क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ, प्रत्यक्ष किया हुआ 2. जगाया हुआ, जागरूक 3. देखा हुआ 4. प्रकाशमान ।

बुद्धिमान् (दे० बुध्) द्धः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि 2. (बौद्धों के साथ) बुद्धिमान् या ज्ञानज्योति से प्रकाशमान पुरुष जो सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञानद्वारा जन्म-मरण से छुटकारा पा चुका है तथा जो स्वयं मुक्त होने से पूर्व संसार की मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करने की रीति बतलाता है 3. शाक्यसिंह का नाम 'बुद्ध' जो बौद्धधर्म का प्रसिद्ध प्रवर्तक था (उसने कपिलवस्तु में जन्म लिया और ईसा से ५४३ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया, कई बार उसे विष्णु का नवाँ अवतार माना जाता है, जयदेव कहता है: निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदयहृदय दर्शित-पशुघातं केशव धृतबुद्धशरीर ! जय जगदीश हरे –गीत० १) सम०—आगमः बौद्धधर्म के सिद्धान्त और मन्तव्य, उपासकः बुद्ध की पूजा करने वाला, -गया एक पुण्यतीर्थस्थान का नाम, मार्गः, बुद्ध के सिद्धांत और मत, बुद्धवाद ।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1. प्रत्यक्ष ज्ञान, संबोध 2. मति, समझ, प्रज्ञा, प्रतिभा तीक्ष्णा सारूप्यतुल्या बुद्धिः शि० २।१०९, शास्त्रेरवकृष्टिता बुद्धिः—रघु० १।१९ 3. ज्ञान बुद्धिर्यस्य बले तस्य हि० २।१२२ 'ज्ञान ही शक्ति है' 4. विवेक, विवेचना, सूक्ष्म विचारणा 5. मत मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः मालवि० १।२, इसी प्रकार कुपथ° पाप° आदि 6. आसन रहना, प्रत्युत्पन्नमतित्व 7. धारणा, सम्मति, विश्वास, विचार, भावना, भाव दूरात्समग्रबलोक्य व्याघ्रबुद्ध्या पलायन्ते हि० ३, अनया बुद्धया मुद्रया १, 'इस विश्वास से'—अनुकोशबुद्ध्या मेघ० ११५, 8. आशय, प्रयोजन, प्रार्थनाजना (बुद्ध्या) 'इरादतन' 'प्रयोजन से' 'जानबूझ कर 9. सचेत होना, सुध्दी से जागना मा० ४ 10. (सां० द० में) सांख्यशास्त्र में वर्णित पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा । सम० अतीत (वि०) बुद्धि की पहुँच से परे, अवज्ञानम् किसी की समझ का तिरस्कार करना या निकृष्ट मत रखना—अप्राप्तकाल वचनं बृहस्तातिरपि ब्रुवन्, प्राप्नोति बुद्धवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्, पंच० १।६३,- इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय, (दि०-कर्मेन्द्रिय) (यह पांच हैं—कान, त्वचा, आंख जिह्वा और नाक -श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी, इनमें कभी कभी 'मनस्' जोड़ा जाता है) —ग्राह्य-ग्राह्य (वि०) पहुंच के भीतर, उपलब्ध करने योग्य, प्रतिभा, -जीवन् (वि०) 'तर्क' का

बुध् (भ्वा० उभ०—बोदति-ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, समझना, पहचानना 2. समझ लेना, जान लेना ।

बुद्ध (भू० क० कृ०) [बुध्+क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ, प्रत्यक्ष किया हुआ 2. जगाया हुआ, जागरूक 3. देखा हुआ 4. प्रकाशमान ।

बुद्धिमान् (दे० बुध्) द्धः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि 2. (बौद्धों के साथ) बुद्धिमान् या ज्ञानज्योति से प्रकाशमान पुरुष जो सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञानद्वारा जन्म-मरण से छुटकारा पा चुका है तथा जो स्वयं मुक्त होने से पूर्व संसार की मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करने की रीति बतलाता है 3. शाक्यसिंह का नाम 'बुद्ध' जो बौद्धधर्म का प्रसिद्ध प्रवर्तक था (उसने कपिलवस्तु में जन्म लिया और ईसा से ५४३ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया, कई बार उसे विष्णु का नवाँ अवतार माना जाता है, जयदेव कहता है: निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदयहृदय दर्शित-पशुघातं केशव धृतबुद्धशरीर ! जय जगदीश हरे –गीत० १) सम०—आगमः बौद्धधर्म के सिद्धान्त और मन्तव्य, उपासकः बुद्ध की पूजा करने वाला, -गया एक पुण्यतीर्थस्थान का नाम, मार्गः, बुद्ध के सिद्धांत और मत, बुद्धवाद ।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1. प्रत्यक्ष ज्ञान, संबोध 2. मति, समझ, प्रज्ञा, प्रतिभा तीक्ष्णा सारूप्यतुल्या बुद्धिः शि० २।१०९, शास्त्रेरवकृष्टिता बुद्धिः—रघु० १।१९ 3. ज्ञान बुद्धिर्यस्य बले तस्य हि० २।१२२ 'ज्ञान ही शक्ति है' 4. विवेक, विवेचना, सूक्ष्म विचारणा 5. मत मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः मालवि० १।२, इसी प्रकार कुपथ° पाप° आदि 6. आसन रहना, प्रत्युत्पन्नमतित्व 7. धारणा, सम्मति, विश्वास, विचार, भावना, भाव दूरात्समग्रबलोक्य व्याघ्रबुद्ध्या पलायन्ते हि० ३, अनया बुद्धया मुद्रया १, 'इस विश्वास से'—अनुकोशबुद्ध्या मेघ० ११५, 8. आशय, प्रयोजन, प्रार्थनाजना (बुद्ध्या) 'इरादतन' 'प्रयोजन से' 'जानबूझ कर 9. सचेत होना, सुध्दी से जागना मा० ४ 10. (सां० द० में) सांख्यशास्त्र में वर्णित पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा । सम० अतीत (वि०) बुद्धि की पहुँच से परे, अवज्ञानम् किसी की समझ का तिरस्कार करना या निकृष्ट मत रखना—अप्राप्तकाल वचनं बृहस्तातिरपि ब्रुवन्, प्राप्नोति बुद्धवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्, पंच० १।६३,- इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय, (दि०-कर्मेन्द्रिय) (यह पांच हैं—कान, त्वचा, आंख जिह्वा और नाक -श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी, इनमें कभी कभी 'मनस्' जोड़ा जाता है) —ग्राह्य-ग्राह्य (वि०) पहुंच के भीतर, उपलब्ध करने योग्य, प्रतिभा, -जीवन् (वि०) 'तर्क' का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यवहार करने वाला, तर्कयुक्त बात करने वाला -पूर्वम्,-पूर्वकम् पुरः=सरम् (अव्य०) इरादतन, जानबूझ कर स्वेच्छा से, --भ्रमः मन का उचाट, मन की विषयगामिता, -योगः ब्रह्म से बौद्धिक सायुज्य, --लक्षणम् बुद्धिमत्ता या प्रतिभा का चिह्न --प्रारब्धस्थानंगमनम् द्वितीय बुद्धिलक्षणम्, -वैभवम् प्रतिभा की शक्ति, -शस्त्र (वि०) समझ या बुद्धि से युक्त, शालिन्-संपन्न (वि०) बुद्धिमान् समझदार, -सखः,-सहायः परामर्शदाता, -हीन (वि०) प्रतिभाशून्य, मूर्ख, विवेकशून्य।

बुद्धिमत् [बुद्धि+मतुप्] 1. समझ से युक्त, प्रज्ञावान्, विवेकपूर्ण 2. समझदार, विद्वान् 3. तेज, चतुर, तीक्ष्ण।

बुद्बुदः (पुं०) बुलबुला, सतत जातविनष्टाः पयसामिव बुद्बुदाः गयसि—पंच०५।७।

बुध् (भ्वा० उभ०, दिवा० आ०—बोधति-ते, बुध्यते, बुद्ध) 1. जानना, समझना, संबोध होना—कमादमु नारद इत्थं बोधि मः—शि० १।३, ९।२४, नाबुद्ध कल्पद्रुमतो विहाय जातं तमात्मन्यसिपत्रवृक्षम्—रघु० १४।४८, यदि बुध्यते हरिश्चिरिणः स्तनगन्धयः—भामि० १।५३ 2. प्रत्यक्ष करना, देखना, पहचानना, ध्यान से देखना हिरण्मयं हंसमबोधि नेपथः—नै० १।११७, अपि लक्ष्मीसमुद्भवान् बुबुधे न बुधोपमः—रघु० १।४७, १२।३९ 3. सोचना, विचार करना, समझना, मानना आदि 4. ध्यान देना, चित्त लगाना 5. सोचना, विमर्श करना 6. जागना, सचेत होना, सोकर उठना —ददर्दपि गिरमन्तर्बुध्यते नो मनुष्यः - शि० ११।४, ते च प्रापुरुदन्तं बुबुधे चादिपूरुषः—रघु० १०।६ 7. फिर से सचेत होना, होश में आना शनैर्बोधि सुग्रीवः सोऽलुञ्चीत्कर्ण नासिकम्—भट्टि० १५।५७, प्रेर०—बोधयति-ते 1. जतलाना, ज्ञात करना, सूचित करना, परिचित करना 2. अध्यापन करना, समाचार देना, (शिक्षा आदि) प्रदान करना 3. परामर्श देना, चेताना —बोधयन्तं हितार्हितम्, भट्टि० ९।८२, भाग० १०।९ 4. पुनर्जीवित करना, फिर जान डालना, होश दिलाना, सचेत करना 5. फिर ध्यान दिलाना, याद दिलाना--श० ४।१ 6. जगाना, उठाना, उत्तेजित करना (आलं०)—अकाले बोधितो भ्राता—रघु० १२।८१, ५।७५ 7. (गंधद्रव्य को) फिर से सुवासित करना 8. फैलाना, खिलाना —मधुरया मधुबोधितमाधवी—शि० ६।२० 9. द्योतित करना, सवहन करना, संकेत करना --इच्छा० बुबुत्(बो) विषति-ते, दुभूषते—। जानने की इच्छा करना आदि, अनु , 1. जानना, समझना 2. सीखना, जानकार होना, सचेत होना, प्रेर०—1. परामर्श देना, चेताना--रघु० ८।७५ 2. ध्यान दिलाना—आर्ये सम्यगनुबोधितोऽस्मि—श० १, अव—, जानना, ज्ञात करना, समझना—मनु० ८।५३, भट्टि० १५।१०१, प्रेर०--1. ज्ञात कराना, सूचित करना, परिचय देना -ब्रह्मचोदनानुरूपमवबोधयत्येव केवलम् शाबरी० 2. उठाना, जगाना रघु० १२।२४, उद्—, 1. जगाना, उठाना 2. फैलाना, खिलाना—प्रेर० जागरूक करना, उत्तेजित करना, प्रबुद्ध करना, जगाना, नि—, 1. जानना, समझना, ज्ञात करना —निबोध साधो नव चेतकुतूहलम्—कु० ५।५२, ३।१४, मनु० १।६८, याज्ञ० १।२ 2. मानना, विचार करना, समझना, प्र—, जागना, उठना, आंख खोलना --श० ५।११, शि० ९।३० 2. खिलाना, फैलाना, खिलना साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् मेघ० ९०,—प्रेर० 1. सूचित करना, जतलाना—रघु० ३।६८ 2. जगाना, उठाना रघु० ५।६५ ६।५६ 3. फैलाना, खिलाना --कु० १।१५, प्रति-, जागना. उठना—मनु० १।७४, याज्ञ० १।३३०, प्रेर० 1. सूचित करना जतलाना, परिचित करना, समाचार देना रघु० १।७४, शि० ६।८, 2. जगाना, उठाना, -- वि—, जागना, उठना—कु० ५।५७। प्रेर० 1. जगाना, उठाना 2. फिर से सचेत करना - अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता—कु० ४।१, सम्—,जानना, समझना, ज्ञात करना, जानकार होना -भट्टि० १२।३०, प्रेर०--1. सूचित करना, परिचित कराना, सूचना देना- तवागतिं समबोधयन्माम्--रघु० १३।२५ 2. संबोधित करना।

बुध (वि०) [बुध्+क] बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान्,—धः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष निपोष यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि--नै० १।१ 2. देव, नै० १।१ 3. बुध ग्रह रक्षत्येनं तु बुधयोगः—मुद्रा० १।६, (यहा 'बुध' का अर्थ 'बुद्धिमान्' भी है) रघु० १।४७, १३।७६। सम० -जनः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, तातः चन्द्रमा, दिनम्, -वारः-वासरः बुधवार,—रत्नम् मरकतमणि, पन्ना, —सुतः पुरूरवा का विशेषण।

बुधानः [बुध्+आनच्, कित् च] 1. बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि 2. धर्मोपदेष्टा, अध्यात्मपथदर्शक।

बुधित (वि०) [बुध्+क्त] जाना हुआ, समझा हुआ।

बुधिल (वि०) [बुध्+किलच्] विद्वान्, बुद्धिमान्।

बुध्नः [बन्ध्+नक्, बुधादेशः] 1. वर्तन की तली 2. पेड़ की जड़ 3. निम्नतम भाग 4. शिव का विशेषण (लक्षित अर्थ में 'बुध्न्य' भी)।

बुध्, बुन्ध् (भ्वा० उभ० बुन्दति-ते, बुन्धति—ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, भांपना 2. विमर्श करना, समझना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुभुक्षा [भुज्+सन्+अ+टाप्] 1. खाने की इच्छा, भूख 2. किसी भी पदार्थ के उपभोग की इच्छा।

बुभुक्षित (वि०) [बुभुक्षा+इतच्] भूखा, भूखमरा, क्षुधा-पीडित—बुभुक्षितः किं न करोति पापम्—पंच० ४।१५, या बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुङ्क्ते—उद्भट।

बुभुक्षु (वि०) [भुज्+सन्+उ] 1. भूखा, सांसारिक उपभोगों की इच्छुक (विप० मुमुक्षु)।

बुभुक्षा [भू+सन्+अ+टाप्] होने की इच्छा।

बुभूषु (वि०) [भू+सन्+उ] बनने की या होने की इच्छा वाला।

बुस् (चुरा० उभ० तोलयति-ते) 1. डुबना, गोता लगाना बोलयति प्लवः पयसि 2. डुबोना।

बुलिः (स्त्री०) [बुल्+इन्, कित्] 1. भय: डर।

बुस् (दिवा० पर० बुष्यति) छोड़ना, उगलना, उडलना।

बुसं (वस्) [बुस्+क पक्षे पृषो० पत्वम्] 1. बूर, भूसी 2. कूड़ा, गंदगी 3. गाय का सूखा गोबर 4. धन, दौलत।

बुस्त (चुरा० उभ० बुस्तयति ते) 1. सम्मान करना, आदर करना 2. अनादर करना, निरस्कारपूर्वक अर्थात् घृणायुक्त व्यवहार करना।

बुस्तम् [बुस्त+घञ्] भुने हुए मांस का टुकड़ा।

बूकम् - बुक।

बूचे, बूची (स्त्री) [बूचन्तोऽत्र्या सीदन्ति—बूचन्+सद्+ड+ङीष् पृषो० साधुः] किसी संन्यासी या साधु महात्मा की गद्दी।

बूह् (म्वा० तुदा० पर० बूंहति, बूंहित) 1. बढ़ना, उगना -बूंहितमन्युवेगः—भट्टि० ३।६९ 2. दहाड़ना। प्रेर०—पालन-पोषण करना।

बृंहणम् [बृंह्+ल्युट्] (हाथी के) चिंघाड़ने का शब्द —शि० १८।३।

बृंहित (भू० क० कृ०) [बृंह्+क्त] 1. उगा हुआ, बढ़ा हुआ—भामि० २।१०९ 2. चिंघाड़ा हुआ,—तम् हाथी की चिंघाड़—शि० १२।४५, कि० ६।३९।

बृह् (भ्वा० तुदा० पर० बर्हति, बृहति) 1. उगना, बढ़ना, फैलना 2. दहाड़ना, उद्+, 1. उठाना, ऊपर को करना - मनु० १।१४, भट्टि० १४।९, नि+, नष्ट करना, हटाना - शि० १।२९।

बृहत् (वि०) (स्त्री०—ती) [बृह्+अति] 1. विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल -सा० ९।५ 2. चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ दिलीपसूनोः स बृहद्-भुजान्तरम् -रघु० ३।५४ 3. विस्तृत, यथेष्ट, प्रचुर 4. मजबूत, शक्तिशाली 5. लम्बा, ऊँचा —देवदारु-बृहद्भुजः कु० ६।५१ 6. पूर्णविकसित 7. सटा हुआ सघन—स्त्री० वाणी—शि० २।६८,—नपुं० 1. वेद 2. सामवेद का मंत्र (साम)—भग० १०।३५ 3. ब्रह्म।

सम०—अङ्ग, —काय (वि०) स्थूलकाय, विशालकाय (गः) बड़े डीलडौल का हाथी,—**आरण्यम्, —आरण्यकम्** एक प्रसिद्ध उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्याय,—**एला** बड़ी इलायची,—**कुक्षि** (वि०) तुंदिल, बड़े पेट वाला,—**केतुः** अग्नि का विशेषण, —**गृहः** एक देश का नाम,—**गोलम्** तरबूज,—**चिल्लः** नींबू का पेड़,—**जघन** (वि०) प्रशस्तकूल्हों वाला, —**जीवन्तिका, —जीवन्ती** एक प्रकार का पौधा,—**दत्तकः** बड़ा ढोल, **नटः, —नलः—ला**, राजा विराट के दरबार में नृत्य और संगीत शिक्षक के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम,—**नेत्र** (वि०) दूरदर्शी, मनीषी, —**पाटलिः** धतूरा, —**पालः** बड़ा या मूलर का वृक्ष, —**भट्टारिका** दुर्गा का विशेषण, —**भानुः** अग्नि,—**रथः** 1. इन्द्र का विशेषण 2. एक राजा का नाम, जरासंध का पिता, —**रात्रिः** (पुं०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, —**स्फिच्** (वि०) प्रशस्त कूल्हों वाला, बड़े नितंबों वाला।

बृहतिका [बृहत्+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, चोगा, चादर।

बृहस्पतिः [बृहत् वाचः पतिः—पारस्करादि०] 1. देवों के गुरु, (इनकी पत्नी 'तारा' के चन्द्र द्वारा अपहरण के लिए देव तारा या सोम के नीचे) 2. बृहस्पति ग्रह बृहस्पतियोगदूषयः—रघु० १३।७६ 3. एक स्मृतिकार का नाम—याज्ञ० १।४। सम०—**पुरोहितः** इन्द्र का विशेषण, —**वारः, —वासरः** गुरुवार।

बेडा [बिड+टाप्] नाव, किश्ती।

बेह् (स्वा० आ० बेहते) उद्योग करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना।

बैजिकः (वि०) (स्त्री०—की) [बीज+ठक्] 1. वीर्यसंबंधी 2. मौलिक 3. गर्भाधिपयक 4 मैथुनसम्बन्धी, —कः अंखुवा, नया अंकुर, —कम् कारण, स्रोत, मूल।

बैडाल (वि०) (स्त्री०—ली) [विडाल+अण्] 1. बिलाव से संबंध रखने वाला 2. बिलाव की विशिष्टता को रखने वाला। सम०—**व्रतम्** 'बिलाव जैसा व्रत' अर्थात् बिलाव की भांति अपना ढोंग तथा दुर्भावनाओं को पवित्रता और सरलता की आड़ में छिपाये रखना। —**व्रतिः** जो स्त्री सहवास न मिलने के कारण ही साधु जीवन बिताये (इस लिए नहीं कि उसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है)—**व्रतिकः**—**त्विन्** (पुं०) धर्म का आडंबर करने वाला, पाखंडी, ढोंगी।

बैडल [विडल+अण् बयोरभेदः] दे० 'बैडल'।

बैम्बिकः [बिम्ब+ठक्] जो महिलाविषयक कार्यों में मनोयोगपूर्वक लगनेवाला हो, प्रेमनिपुण, प्रेमी दाक्षिण्य नाम बिम्बोष्ठि बैम्बिकानां कुलव्रतम्—मालवि० ४।१४।

बैल्व (वि०) (स्त्री०—ल्वी) [बिल्व+अण्], 1. बेल के वृक्ष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या लकड़ी से संबद्ध या निर्मित 2. बेल के पेड़ों से ढका हुआ,- **त्वम्** बेल के पेड़ का फल ।

बोधः [बुध् + घञ्] 1. प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, समझ, आलोचना, विचार---वालानां सुखबोधाय---तर्क० 2. विचार, चिन्तन 3. समझ, प्रतिभा, प्रज्ञा, बुद्धिमत्ता 4. जागना, जागरूक होना, जागृति की स्थिति, चेतनता 5. खिलना, फूलना, फैलना 6. शिक्षण, परामर्श, चेतावनी 7. जगाना उठाना 8. उपाधि, पद । सम० **अतीत** (वि०) अज्ञेय, ज्ञान के परे,- **कर** (वि०) सिखाने वाला, सूचित करने वाला, (रः) 1. चारण या भाट (जो उपयुक्त भजन गाकर प्रातःकाल अपने स्वामी को जगाता है) 2. शिक्षक, अध्यापक, **पूर्व** (वि०) सप्रयोजन, सचेत तु० 'अबोधपूर्वं', **वासरः** कार्तिक शुक्ला एकादशी, जब विष्णु भगवान् अपनी चार मास की निद्रा को त्याग कर जागे हुए समझे जाते हैं - दे० मेघ० ११०, और 'प्रबोधिनी' ।

बोधक (वि०) (स्त्री० -धिका) [बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1. सूचना देने वाला, (स्थिति से) अवगत कराने वाला 2. शिक्षण देने वाला, अध्यापन करने वाला 3. अभिसूचक 4. जगाने वाला, उठाने वाला,—कः भेदिया, जासूस ।

बोधनः [बुध् + णिच् + ल्युट्] बुधग्रह,- **नम्** संसूचन, अध्यापन, शिक्षण, ज्ञान देना भयरुपोदय तदिच्छित्त-बोधनम् रघु० ९।४९ 3. ज्ञापन करना, निर्देश करना 3. जगाना, उठाना समयेन तेन चिरमुत्तमनो-भवबोधनं समभवद्विगत शि० ९।२४ 4. घूस देना,

नी 1. कार्तिकशुक्ला एकादशी जब भगवान् विष्णु अपनी चार मास की नींद त्याग कर उठते हैं, देव उठनी एकादशी 2. बड़ी पीपल ।

बोधानः [बुध् + आनच्] 1. बुद्धिमान् गुरु 2. बृहस्पति का विशेषण ।

बोधिः [बुध्-इन्] 1. पूर्ण मति या ज्ञान का प्रकाश 2. बुद्ध की ज्ञान से प्रकाशित प्रतिभा 3. पावन वट-वृक्ष 4. मुर्गा 5. बुद्ध का विशेषण । सम० **तरुः**, ---**द्रुमः** **वृक्षः** पावन वटवृक्ष, **वः** (जैनियों का) अर्हत्, **सत्त्वः** बौद्ध संन्यासी या महात्मा जो पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि के मार्ग पर अग्रसर है तथा जिसके केवल कुछ ही जन्म अवशिष्ट हैं जिनको पार करके वह पूर्णबुद्ध की स्थिति को प्राप्त कर लेगा और जन्ममरण के दुःख से छुटकारा पा जायगा (यह स्थिति पावन तथा सत्कर्मों की दीर्घशृंखला को पार करके प्राप्त की जाती है)---एवंविधैरतिविलसितैरतिबोधिसत्त्वैः---मा० १०।२१ ।

बोधित (भू० क० कृ०) [बुध् + णिच् + क्त] 1. जताया गया, सूचित किया गया, अवगत कराया गया 2. फिर ध्यान दिलाया गया 3. परामर्श दिया गया, शिक्षण प्रदान किया गया ।

बौद्ध (वि०) (स्त्री०-द्धी) [बुद्धि+अण्] 1. बुद्धि या समझ से संबंध रखने वाला 2. बुद्ध विषयक, -द्धः बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म का अनुयायी ।

बौधः [बुध+अण्] बुध का पुत्र, पुरूरवा का विशेषण ।

बौधायनः [बोधस्यापत्यं पुमान्—बोध+फक्] एक प्राचीन मुनि का पितृपरक नाम जिसने श्रौतादि सूत्रों की रचना की ।

ब्रध्नः [बन्ध्+नक्, धभादेशः] 1. सूर्य 2. वृक्ष की जड़ 3. दिन 4. मदार का पौधा 5. सोंसा (पु० ?) 6. घोड़ा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण ।

ब्रह्मन् [बृंह्-मनिन्, नकारस्थाकारे ऋतो रत्वम्—ये ये नान्ताः ते अकारान्ता अपि इत्युक्तेः अकारान्तोऽयं शब्दः] परमात्मा ।

ब्राह्म्य (वि०) [ब्रह्मन्+यत्] 1. ब्रह्मा से संबद्ध 2. ब्रह्मा या प्रजापति से संबद्ध 3. पूर्वोक्त ज्ञान के ग्रहण से संबद्ध, पवित्र, पावन 4. ब्राह्मण के योग्य 5. ब्राह्मण के लिए सौहार्दपूर्ण या आतिथ्यकारी,—**ब्यः** 1. वेदों में निष्णात व्यक्ति महावीर० ३।२६ 2. गहतूत का वृक्ष 3. ताड़ का पेड़ 4. मूंज नामक घास 5. शनिग्रह 6. विष्णु का विशेषण 7. कार्तिकेय का विशेषण,---**ब्या** दुर्गा का विशेषण । सम० **देवः** विष्णु का विशेषण ।

ब्राह्मण्वत् (पुं०) [ब्रह्मन्—मतुप्, वत्वम्] अग्नि का विशेषण ।

ब्राह्मता, त्वम् [ब्रह्मन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. परमात्मा में लीन होना 2. दिव्य प्रकृति ।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बृंह्-मनिन्, नकारस्याकारे ऋतो रत्वम्] 1. परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है (वेदान्तियों के मतानुसार ब्रह्म ही इस दृश्यमान संसार का निमित्त और उपादान कारण है; यही सर्वव्यापक आत्मा और विश्व की जीव शक्ति है, यही वह मूलतत्त्व है जिससे संसार की सब वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा जिसमें फिर वह लीन हो जाती हैं---अस्ति तावन्नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं ब्रह्म-शारी०) समीभूता दृष्टिस्त्रि-भुवनमपि ब्रह्म मनुते---भर्तृ० ३।८४, कु० ३।१५ 2. स्तुतिपरक सूक्त 3. पुनीत पाठ 4. वेद - कु० ६।१६, उत्तर० १।१५ 5. ईश्वरपरक पावन अक्षर ,ॐ' ---एकाक्षरं परं ब्रह्म---मनु० २।८३ 6. पुरोहितवर्ग या ब्राह्मण समुदाय---मनु० ९।३२० 7. ब्राह्मण की शक्ति या सामर्थ्य---रघु० ८।४ 8. धार्मिक साधना या तपस्या 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्व—शाश्वते ब्राह्मणि वर्तते —श० १ 10. मोक्ष या निर्वाण 11. ब्रह्मज्ञान,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्यात्मविद्या 12. वेदों का ब्राह्मणभाग 13. धनदौलत, संपत्ति,—(पुं०) परमात्मा, ब्रह्मा, पावन त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रथम जिनको संसार की रचना का कार्य सौंपा गया है (संसार की रचना का वर्णन बहुत सी बातों में भिन्न २ है, मनुस्मृति के अनुसार यह विश्व अंधकारावृत था, स्वयंभू भगवान् ने अंधकार को हटा कर स्वयं को प्रकट किया। सबसे पहले उसने जल पैदा किया तथा उसमें बीजवपन किया। यह बीज स्वर्णिम अंडे के रूप में हो गया, जिससे ब्रह्मा (संसार का स्रष्टा) के रूप में वह स्वयं उत्पन्न हुआ। फिर ब्रह्मा ने इस अंडे के दो खण्ड किये—जिससे उसने द्युलोक और अंतरिक्ष को जन्म दिया, उसके पश्चात् उसने दस प्रजापतियों (मानस पुत्रों) को जन्म दिया जिन्होंने सृष्टि के कार्य को पूरा किया। दूसरे वर्णन (रामायण) के अनुसार आकाश से ब्रह्मा का आगमन हुआ। उससे फिर मरीचि का जन्म हुआ, मरीचि से कश्यप और कश्यप से फिर विवस्वान् ने जन्म लिया। विवस्वान् से मनु की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार मनु ही मानव संसार का रचयिता है। तीसरे वृत्तान्त के अनुसार स्वयंभू ने सुनहरे अंडे को दो खण्डों (नर और नारी) में विभक्त किया उनसे विराज और मनु का जन्म हुआ तु० कु० २।७, मनु० १।३२ तथा आगे। पौराणिक कथा के आधार पर ब्रह्मा का जन्म उस कमल से हुआ जो विष्णु की नाभि में उगा था। स्वयं अपनी पुत्री सरस्वती से उसने अवैध संबंध द्वारा सृष्टि रचना की। ब्रह्मा के प्रारम्भ में पाँच सिर थे, परन्तु एक सिर शिव ने अपनी अनामिका से काट दिया या तृतीय नेत्र की आग से भस्म कर दिया। ब्रह्मा की सवारी हंस है। उसके अनंत विशेषण हैं जिनमें से अधिकांश उसकी कमल में उत्पत्ति का संकेत करते हैं) 2. ब्राह्मण श० ४।४ 3. मंत्र 4. सोमयाग में नियुक्त चार ऋत्विजों (पुरोहितों) में से एक 5. धर्मज्ञान का ज्ञाता 6. सूर्य 7. प्रतिभा 8. सात प्रजापतियों (मरीचि, अत्रि, अंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ) का विशेषण 9. बृहस्पति का विशेषण 10. शिव का विशेषण। सम०—**अक्षरम्** पावन अक्षर 'ओ३म्',—**अङ्गभूः** घोड़ा,—**अञ्जलिः** वेद पाठ करते समय हाथ जोड़ कर सादर अभिवादन 2. आचार्य या गुरु का सम्मान (वेद पाठ के आरम्भ तथा समाप्ति पर),—**अण्डम्** 'ब्रह्मा' का अंडा', बीजभूत अंडा जिससे यह समस्त संसार या विश्व का उद्भव हुआ—**ब्रह्माण्डच्छदपट्टः**—दश० १, —**पुराणम्** 1. अठारह पुराणों में से एक पुराण, —**अभिज्ञाता** गोदावरी नदी का एक विशेषण, - **अधिगमः**, —**अधिगमनम्** वेदों का अध्ययन, —**अभ्यासः** वेदों का अभ्यास,- **अश्वत्थः** पीपल का वृक्ष, — **अयनः**, **नः** नारायण का विशेषण, **अर्पणम्** 1. ब्रह्मज्ञान का अर्पण 2. परमात्मा में अनुरक्ति 3. एक प्रकार का जादू या मन्त्र,—**अस्त्रम्** ब्रह्मा से अधिष्ठित एक अस्त्र, **आत्मभूः** घोड़ा, —**आनन्दः** ब्रह्म में लीन होने का आत्यंतिक सुख या आनंद ब्रह्मानन्द साक्षात्क्रिया महावीर० ७।३१, **आरम्भः** वेदों का पाठ आरंभ करना—मनु० २।७१, **आवर्तः** (हस्तिनापुर के पश्चिमोत्तर में) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का मार्ग सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तर, तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते मनु० २।१७, १९. मेघ० ४८,- **आसनम्** गहन समाधि के लिए विशिष्ट आसन, **आहुतिः** (स्त्री०) प्रार्थनापरक मंत्रों का पाठ, स्वस्तिवाचन, दे० **ब्रह्मयज्ञ**,- **उज्झता** वेदों को भूल जाना या उनकी उपेक्षा करना—मनु० ११।५७, (अधीतेवेदस्यानभ्यासेन विस्मरणम्—कुल्लू०), **उद्यम** वेद की व्याख्या करना, **ब्रह्मजानविषयक** रामस्वामी पर विचार विमर्श, **उपदेशः** ब्रह्मज्ञान या वेद का शिक्षण, **ऐतः** (पुं०) ढाक का वृक्ष, **ऋषिः** (ब्रह्मर्षि या ब्रह्म ऋषि) ब्राह्मण ऋषि, **देशः** मंडल, जिला (कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः, एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः- मनु० २।१९) - **कन्यका** सरस्वती का विशेषण, - **करः** पुरोहित वर्ग को दिया जाने वाला गुरुक, - **कर्मन्** (नपुं०) 1. ब्राह्मण के धार्मिक कर्तव्य 2. यज्ञ के चार मुख्य पुरोहितों में ब्राह्मण का पद, **कल्पः** ब्रह्मा की आयु, —**काण्डम्** ब्रह्मज्ञान से संबद्ध वेद का भाग, **काष्ठः** शहतूत का पेड़, - **कूर्चम्** एक प्रकार की साधना अहोरात्रोषिता भूत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः, पंचगव्यं पिबेत् प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम्,— **कृत्** (वि०) स्तुति करने वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण, **गुप्तः** एक ज्योतिर्विद् का नाम जो सन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुआ था,- **गोलः** विश्व, - **गौरवम्** ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र का सम्मान भट्टि० ९।७६, (**मा भून्मोघो** अस्त्रः पाय इति),- **ग्रन्थिः** शरीर का विशिष्ट जोड़, ब्रह्मगांठ, **ग्रहः**, **पिशाचः**—**पुरुषः**,- **रक्षस्** (नपुं०), - **राक्षसः** एक प्रकार का भूत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस जो जीवन भर घृणित वृत्ति में संलग्न रहता है दूसरों की पत्नियों का तथा ब्राह्मणों की संपत्ति का अपहरण करता है (परस्य योषितं हृत्वा ब्रह्मस्वमपहृत्य च, अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षसः याज्ञ० ३।२१२, तु० मनु० १२।६० भी), **घातकः** ब्राह्मण को हत्या करने वाला,—**घातिनी** ऋतु के दूसरे दिन की रजस्वला स्त्री, **घोषः** 1. वेद का सस्वर पाठ 2. पावन शब्द,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेदत्रयी—उत्तर० ६।९ (पाठांतर), **घ्नः** ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—**चर्यम्** 1. धार्मिक शिष्यवृत्ति, वेदाध्ययन के समय ब्राह्मण बालक का ब्रह्मचर्यजीवन, जीवन का प्रथम आश्रम —**अविप्लुतब्रह्मचर्या** गृहस्थाश्रममाचरेत्—मनु० ३।२, २।२४९, महावीर० १।२४ 2. धार्मिक अध्ययन, आत्मसंयम 3. कौमार्य, सतीत्व, विरति, इन्द्रियनिग्रह, (**र्यः**) वेदाध्ययनशील, —दे० ब्रह्मचारिन् ((**र्या**) सतीत्व, कौमार्य, °**व्रतम्** सतीत्व रक्षण की प्रतिज्ञा °**स्खलनम्** सतीत्व या ब्रह्मचर्य से गिर जाना, इन्द्रियनिग्रह का अभाव —**चारिकम्** वेदों के विद्यार्थी का जीवन, **चारिन्** (पुं०) 1. वेद का विद्यार्थी, जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण जो यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् दीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गुरु के साथ रहता है तथा वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता रहता है जब तक कि वह गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट नहीं हो जाता है—मनु० २।४१, १७५, ६।८७ 2. जो आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है, **चारिणी** 1. दुर्गा का विशेषण 2. वह स्त्री जो सतीत्व व्रत का पालन करती है, **जः** कार्तिकेय का विशेषण,—**जारः** ब्राह्मण की पत्नी का प्रेमी, —**जीविन्** (पुं०) जो ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही अपनी आजीविका कमाती है,—**ज्ञ** (वि०) जो ब्रह्म को जानता है (**ज्ञः**) 1. कार्तिकेय का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण,—**ज्ञानम्** सत्यज्ञान, दिव्यज्ञान, विश्व की ब्रह्म के साथ एकरूपता का ज्ञान,—**ज्येष्ठः** ब्राह्मण का बड़ा भाई, **ज्योतिस्** (नपुं०) ब्रह्म या परमात्मा की ज्ञानज्योति:, **तत्त्वम्** परमात्मा का यथार्थ ज्ञान, **तेजस्** (नपुं०) 1. ब्रह्मा की कीर्ति 2. ब्रह्म की कान्ति, वह कीर्ति या कान्ति जो ब्राह्मण को चारों ओर से घेरे हुए समझी जाती है, **दः** वेदज्ञान के प्रदाता गुरु,—**दण्डः** 1. ब्राह्मण का शाप 2. ब्राह्मण को दिया गया उपहार 3. शिव का विशेषण,—**दानम्** 1. वेद पढ़ाना 2. वेद का ज्ञान जो उत्तराधिकार में या वंशानुक्रम से प्राप्त होता है, —**दायादः** 1. ब्राह्मण, जो वेदों को आनुवंशिक उपहार के रूप में प्राप्त करता है 2. ब्राह्मण का पुत्र, —**दारुः** ब्रह्मवृक्ष का पेड़,—**दिनम्** ब्रह्मा का दिन, **दैत्यः** वह ब्राह्मण जो राक्षस बन जाय—स्तु०, **ब्रह्मग्रह**,—**द्विष्**,-**द्वेषिन्** (वि०) 1. ब्राह्मणों से घृणा करने वाला 2. वेदविहित कृत्यों या भक्ति का विरोधी, अपावन, निरीश्वरवादी,—**द्वेषः** ब्राह्मणों की घृणा,—**नदी** सरस्वती नदी का विशेषण,—**नाभः** विष्णु का विशेषण,—**निर्वाणम्** परमब्रह्म में लीन होना, **निष्ठ** (वि०) परमात्मचिन्तन में लीन, (**ष्ठः**) शहतूत का पेड़,—**पदम्** 1. ब्राह्मण का पद या दर्जा 2. परमात्मा का स्थान, —**पवित्रः** कुश नामक घास,—**परिषद्** (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा,—**पादपः** ढाक का पेड़, **पारायणम्** वेदों का पूर्ण अध्ययन, सारे वेद —उत्तर० ४।९, महावीर० १।१४,—**पाशः** ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित अस्त्र विशेष —भट्टि० ९।७५, **पितृ** (पुं०) विष्णु का विशेषण, —**पुत्रः** 1. ब्राह्मण का बेटा 2. हिमालय की पूर्वी सीमा से निकलने वाला तथा गंगा के साथ मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाला 'ब्रह्मपुत्र' नाम का दरिया, (**त्री**) सरस्वती नदी का विशेषण, —**पुरम्**,-**पुरी** 1. (स्वर्ग में) ब्रह्मा का नगर 2. वाराणसी, —**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक का नाम, —**प्रलयः** ब्रह्मा के सौ वर्ष बीतने पर सृष्टि का विनाश जिसमें स्वयं परमात्मा भी विलीन माना जाता है,—**प्राप्तिः** (स्त्री०) परमात्मा में लीन होना,—**बन्धुः** ब्राह्मण के लिए तिरस्कार-सूचक शब्द, अयोग्य ब्राह्मण—मा० ४, विक्रम० २ २, जो केवल जाति से ब्राह्मण हो, नाम मात्र का ब्राह्मण,—**बीजम्** ईश्वरवाचक अक्षर ॐ, —**ब्रुवाणः** जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है,—**भवनम्** ब्राह्मण का आवास, —**भागः** शहतूत का वृक्ष,—**भावः** परमात्मा में लीन होना, **भुवनम्** ब्रह्मा की सृष्टि —भग० ८।१६,—**भूत** (वि०) जो ब्रह्म के साथ एक रूप हो गया है, परमात्मा में लीन,—**भूतिः** (स्त्री०) संध्या, **भूयस्** 1. ब्रह्म के साथ एकरूपता 2. ब्रह्म में लीनता, मोक्ष, निर्वाण—स ब्रह्मभूयं गतिमाजगाम रघु० १८।२८, ब्रह्मभूयाय कल्पते —भग० १४।२६, मनु० ११।९८ 2. ब्राह्मत्व, ब्राह्मण का पद या स्थिति, **भूयस्** (नपुं०) ब्रह्म में लय, —**मंगलदेवता** लक्ष्मी का विशेषण —**मीमांसा**, वेदान्तदर्शन जिसमें ब्रह्म या परमात्मविषयक चर्चा है,—**मूर्ति** (वि०) ब्रह्म का रूप रखने वाला, **मूर्धभूत** शिव का विशेषण,—**मेखलः** मूंज घास का पौधा,—**यज्ञः** (गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय) दैनिक पंचयज्ञों में से एक, वेद का अध्यापन तथा सस्वर पाठ—अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः —मनु० ३।७० (अध्यापनब्रह्मेति अध्ययनमपि गृह्यते—कुल्लू०), **योगः** ब्रह्मज्ञान का अनुशीलन या अभिग्रहण,—**योनि** (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न,—**रत्नम्** ब्राह्मण को दिया गया मूल्यवान् उपहार,—**रन्ध्रम्** मूर्धा में एक प्रकार का बिवर जहाँ से जीव इस शरीर को छोड़ कर निकल जाता है, **राक्षसः** दे० ब्रह्मग्रह, —**रातः** शुकदेव का विशेषण, **राशिः** 1. ब्रह्मज्ञान का मंडल या समस्त राशि, संपूर्ण वेद 2. परशुराम का विशेषण, **रोहिः** (स्त्री०) एक प्रकार का पीतल —**रेखा**-**लिखितम्**,-**लेखः** विधाता के द्वारा मस्तक पर लिखी गई पंक्तियाँ जिनसे मनुष्य का भाग्य प्रकट होता है, मनुष्य का प्रारब्ध, **लोकः** ब्रह्मा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का लोक,— **वसु** (पुं०) वेदों का व्याख्याता, **-वसम्** ब्रह्म का ज्ञान,—**वधः**,—**वध्या**,—**हत्या** ब्राह्मण की हत्या,—**वर्चस्** (नपुं०),—**वर्चसम्** 1. दिव्य आभा या कीर्ति, ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मशक्ति या तेज (तस्य हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्—रघु० १।६३, मनु० २।३७, ४।९४ 2. ब्राह्मण की अन्तर्हित पवित्रता या शक्ति, ब्रह्मतेज—पा० ६, **-वर्चसिन्**, —**वर्चस्विन्** (वि०) ब्रह्म तेज से पवित्रीकृत, शुद्धात्मा (पुं०) प्रमुख या श्रद्धेय ब्राह्मण,—**वर्तः** देο ब्रह्मावर्त,—**वर्चस्यम्** तांबा,—**वादिन्** (पुं०) 1. जो वेदों का अध्यापन करता है, वेदव्याख्याता -उत्तर० १, मा० १ 2. वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—**वासः** ब्राह्मण का आवासस्थल,—**विद्-विद** (दि०) परमात्मा को जानने वाला, ब्रह्मज्ञ (पुं०) ऋषि, ब्रह्मवेत्ता, वेदान्ती, **विद्या** ब्रह्मज्ञान,—**वि** (**बि**) **ष्** वेद का पाठ करते समय मुँह से निकलने वाला थूक का छींटा, —**विवर्धनः** इन्द्र का विशेषण, **-वृक्षः** 1. ढाक का पेड़, 2. गूलर का वृक्ष,—**वृत्तिः** (स्त्री०) ब्राह्मण की आजीविका,—**वृन्दम्** ब्राह्मणों की समूह,—**वेदः** 1. वेदों का ज्ञान 2. ब्रह्म का ज्ञान 3. अथर्ववेद का नाम, —**वेदिन्** (वि०) वेदवेत्ता, तु० ब्रह्मविद्, **संवर्तम्** अठारह पुराणों में से एक,—**व्रतम्** सतीत्व या शुचिता की प्रतिज्ञा, **शिरस्**—**शीर्षन्** (नपुं०) एक विशिष्ट अस्त्र का नाम, **-संसद्** (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा, —**सती** सरस्वती नदी का विशेषण,—**सत्रम्** 1. वेद का पढ़ना-पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञ 2. परमात्मा में लय होना, **-सद्म** (नपुं०) ब्रह्मा का निवासस्थान,—**सभा** ब्रह्मा का दरबार, ब्रह्मा की सभा या भवन,—**संभव** (वि०) ब्रह्मा से उत्पन्न या प्राप्त, (वः) नारद का नामान्तर, **सर्पः** एक प्रकार का साँप, **सायुज्यम्** परमात्मा के साथ पूर्ण एकरूपता—तु० ब्रह्मैक्य, —**सारूप्यम्** ब्रह्म के साथ एक रूपता— मनु० ४।२३२, —**सावर्णिः** दसवें मनु का नामान्तर,—**सुतः** 1. नारद का नामान्तर, मरीचि आदि 2. एक प्रकार का केतु, —**सूः** 1. अनिरुद्ध का नामान्तर 2. कामदेव का नामान्तर,—**सूत्रम्** 1. जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसे ब्राह्मण या द्विजमात्र कंधे के ऊपर से धारण करते हैं 2. बादरायण द्वारा रचित वेदान्तदर्शन के सूत्र, —**सृष्टिन्** (वि०) जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो, यज्ञोपवीतधारी,—**सृज्** (पुं०) शिव का विशेषण, —**स्तम्ब** संसार, विश्व—महावीर० ३।४८,—**स्तेयम्** अनेक उपायों से उपार्जित वेदज्ञान,—**स्वम्** ब्राह्मण की संपत्ति या धनदौलत,—याज्ञ० ३।२१२, °**हारिन्** (वि०) ब्राह्मण का धन चुराने वाला,—**हन्** (वि०) ब्रह्महत्यारा, ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—**हतम्** दैनिक पाँच यज्ञों में से एक जिसमें अतिथिसत्कार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं मनु० ३।७४,—**हृदयः**,—**यम्** एक नक्षत्र का नाम जिसे अंग्रेजी में कैपेल्ला कहते हैं।

ब्राह्मण्य (वि०)[ब्रह्मन्+यमट्] 1. वेद से युक्त या व्युत्पन्न, वेद या वेदज्ञान से संबद्ध ज्वलन्निव ब्रह्मण्येन तेजसा —कु० ५।३० 2. ब्राह्मण के योग्य, **यम्** ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र।

ब्राह्मवत् (वि०) [ब्रह्म+मतुप्] वेदज्ञान रखने वाला।

ब्राह्मसात् (अव्य०) [ब्रह्मन्+साति] 1. ब्रह्म या परमात्मा की स्थिति 2. ब्राह्मणों की देखरेख में।

ब्राह्मणी [ब्रह्मन्+अण्+ङीप्] 1. ब्रह्मा की पत्नी 2. दुर्गा का विशेषण 3. एक प्रकार का गन्धद्रव्य (रेणुका) 4. एक प्रकार का पोतल।

ब्रह्मिन् (वि०) [ब्रह्मन्+इनि, टिलोपः] ब्रह्मा से संबद्ध, (पुं०) विष्णु का विशेषण।

ब्रह्मिष्ठ (वि०) [ब्रह्मन्+इष्ठन्, टिलोपः] वेदों का पूर्ण पंडित, अतिशय विद्वान्, या पुण्यात्मा—ब्रह्मिष्ठ-माधाय निजेऽधिकारे ब्रह्मिष्ठमेव स्वतनुप्रभूतम्—रघु० १८।२८,—ष्ठा दुर्गा का विशेषण।

ब्रह्मी [ब्रह्मन्+अण्+ङीप्] ब्राह्मी बूटी का पौधा।

ब्रह्मोदयः [ब्रह्माणि तपसि शेते शी+अच्, पृषो० साधुः] 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. विष्णु की उपाधि।

ब्राह्म (वि०) (स्त्री०—ह्मी) [ब्रह्मन्+अण्, टिलोपः] ब्रह्मा, विधाता या परमात्मा से संबद्ध,—रघु० १३।६०, मनु० २।४०, भग० २।७२ 2. ब्राह्मणों से संबद्ध 3. वेदाध्ययन या ब्रह्मज्ञान से संबद्ध 4. वेदविहित, वैदिक 5. विशुद्ध, पवित्र, दिव्य 6. ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित जैसा कि मुहूर्त (दे० ब्राह्ममुहूर्त), या अस्त्र,—**ह्यः** हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक; जिसमें आभूषणों से अलंकृत कन्या, वर से बिना कुछ लिये, उसे दान कर दी जाती है (यही आठों भेदों में सर्वश्रेष्ठ प्रकार है)। —**ह्यो विवाह आहूय दीयते अलंकृत्य कन्या**—याज्ञ० १।५८, मनु० ३।२१,२७ 2. नारद का नामान्तर, —**ह्यम्** हथेली का अंगुष्ठमूल के नीचे का भाग 2. वेदाध्ययन। सम० **अहोरात्रः** ब्रह्मा का एक दिन और एक रात,- **वेधा** ब्राह्म विवाह की रीति से विवाहित की जाने वाली कन्या,—**मुहूर्तः** दिन का विशिष्ट भाग, दिन का सर्वथा सवेरे का समय (रात्रेश्च पश्चिमे यामे मुहूर्तौ ब्राह्म उच्यते) ब्राह्मे मुहूर्ते किल तस्य देवी कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् —रघु० ५।३६।

ब्राह्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [ब्रह्म वेदं शुद्धं चैतन्यं वा वेत्त्यधीते वा—अण्] 1. ब्राह्मण का 2. ब्राह्मण के योग्य 3. ब्राह्मण द्वारा दिया गया,—**णः** 1. हिंदू

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्म के माने हुए चार वर्णों में सर्वप्रथम वर्ण का, (पुरुष-ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न--ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक्० १०।९०।१२, मालवि० १।३१, ९६) ब्राह्मण---जन्मना जायते शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते, विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते, या—जात्या कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च, एभिर्युक्तो हि सस्पिष्टोऽग्र्यं स द्विज उच्यते) 2. पुरोहित, ब्रह्मज्ञानी या धर्मशास्त्री 3. अग्नि का विशेषण 4. वेद का वह भाग जो विविध यज्ञों के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है, साथ ही उनके मूल तथा विस्तारात्मक व्याख्या को तत्संबंधी निदर्शनों के साथ जो उपाख्यानों के रूप में विद्यमान है, प्रस्तुत करता है; वेद के मन्त्रभाग से यह बिल्कुल पृथक् है 5. वैदिक रचनाओं का समूह जिसमें ब्राह्मण भाग सम्मिलित है (वेद के मंत्रों की भाँति अपौरुषेय या श्रुति माना जाता है) प्रत्येक वेद का अपना पृथक्-पृथक् ब्राह्मण है, ये हैं ऋग्वेद के ऐतरेय या आश्वलायन, और कौशीतकी या सांख्यायन ब्राह्मण हैं, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का पंचविंश, षड्विंश तथा छः और है, अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है) । सम०--अतिक्रम: ब्राह्मणों के प्रति सदोष या तिरस्कार सूचक व्यवहार, ब्राह्मणों का अनादर ---ब्राह्मणातिक्रमत्यागो भवतामेव भूतये महावीर० २।८०,—अभयः ब्राह्मणों की शरण में जाना, —अभ्युपपत्तिः (स्त्री०) ब्राह्मण की रक्षा या पालन-पोषण, ब्राह्मण के प्रति प्रदर्शित कृपा मनु० ९।८७, --घ्नः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,--जातम्,—जातिः (स्त्री०) ब्राह्मण की जाति, जीविका ब्राह्मण के लिए विहित वृत्ति के साधन, द्रव्यम्,--स्वम् ब्राह्मण की संपत्ति, निन्दकः ब्राह्मणों की निन्दा करने वाला, —ब्रुवः जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है, नाम मात्र का ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति के विहित कर्तव्यों का पालन नहीं करता है बहवो ब्राह्मणब्रुवा निवसन्ति दश०, मनु० ७।८५, ८।२०, भूयिष्ठ (वि०) जिसमें अधिकतर ब्राह्मण ही रहते हों,—वधः ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या, संतर्पणम् ब्राह्मणों को खिलाना या तृप्त करना।

ब्राह्मणकः [ब्राह्मण+कन्] 1. अयोग्य या नीच ब्राह्मण, नाम मात्र का ब्राह्मण 2. एक देश का नाम जहाँ योद्धा ब्राह्मणों का वास हो।

ब्राह्मणत्रा (अव्य०) [ब्राह्मण+त्राच्] 1. ब्राह्मणों में 2. ब्राह्मण की पदवी को—जैसा कि 'ब्राह्मणात् भवति धनम्' में।

ब्राह्मणाच्छंसिन् (पुं०) [ब्राह्मणे विहितानि शास्त्राणि शंसति द्वितीयार्थे पंचम्युपसंख्यानम्—अलुक् स०, शस्+इनि] एक पुरोहित का नामान्तर, ब्रह्मा नामक ऋत्विज् का सहायक।

ब्राह्मणी [ब्राह्मण+ङीष्] 1. ब्राह्मण जाति की स्त्री 2. ब्राह्मण की पत्नी 3. प्रतिभा (नीलकंठ के मतानुसार 'बुद्धि') 4. एक प्रकार की छिपकली 5. एक प्रकार की भिरड़ 6. एक प्रकार का घास। सम० ---गाभिन् (पुं०) ब्राह्मण स्त्री का प्रेमी।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्राह्मण+ष्यञ् या यत्] ब्राह्मण के योग्य,—ष्यः वर्णनिग्रह का विशेषण,---ष्यम् 1. ब्राह्मण की पदवी या दर्जा, पौरोहित्य या याजकीय वृत्ति, —सत्ये यशे ब्राह्मण्येन—मृच्छ० ५, पंच० १।६६, मनु० ३।१७,७।४२ 2. ब्राह्मणों का समुदाय।

ब्राह्मी [ब्राह्मण+ङीष्] 1. ब्रह्मा की मूर्तिमती शक्ति 2. वाणी की देवी सरस्वती 3. वाणी 4. कहानी, कथा 5. धार्मिक प्रथा या रिवाज 6. रोहिणी नक्षत्र 7. दुर्गा का नामान्तर 8. ब्राह्मविवाह की विधि से परिणीता स्त्री 9. ब्राह्मण की पत्नी 10. एक प्रकार की बूटी 11. एक प्रकार का पीपल 12. नदी का नामान्तर। सम० कन्दः बारहही कंद,—पुत्रः ब्राह्मी का पुत्र—दे० ऊ०, मनु० ३।२७,३७।

ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री०—ह्मी) [ब्रह्मन्+ष्यञ्] 1. ब्रह्मा अर्थात् विधाता से संबंध रखने वाला 2. परमात्मा से संबद्ध 3. ब्राह्मणों से संबद्ध,—ह्मम् आश्चर्य, अचम्भा विस्मय। सम० मुहूर्तः=ब्राह्ममुहूर्तः,—हुतम् अतिथि-सत्कार दे० 'ब्रह्मयज्ञ'।

ब्रुव (वि०) [ब्रू+क] बनने वाला, बहाना करने वाला, अपने आपको उस नाम से पुकारने वाला जो उसका वास्तविक नाम न हो, (समास के अन्त में) यथा ब्राह्मणब्रुव, क्षत्रियब्रुव में।

ब्रू (अदा० उभ० अवीति-ब्रूते या आह) (आर्धधातुक लकारों में इस धातु में असाधारण परिवर्तन होता है, इसके रूप 'वच्' धातु से बनाये जाते हैं) 1. कहना बोलना, बात करना (द्विकर्मक धा०) तां ···ब्रूया एवम् मेघ० १०४, रामं यथास्थितं सर्वं भ्राता ब्रूते स्म विस्तरम्, भट्टि० ६।८, या मानवकं धर्मं ब्रूते—सिद्धा०, कि त्वां प्रतिब्रूमहे—भामि० १।४६ 2. कहना, बोलना, संकेत करना (किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर) अहं तु शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि शा० २, 3. घोषणा करना, प्रकथन करना, प्रकाशित करना, सिद्ध करना ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगितां नै० २।४६, रत्न० २।१३ 4. नाम लेना, पुकारना, नाम रखना, छन्दसि दृक्षा ये कवय-स्तन्मणिमध्ये ते ब्रुवते श्रुत० १५ 5. उत्तर देना —ब्रूहि मे प्रश्नान्, अनु- कहना, बोलना, घोषणा करना, निस्,- व्याख्या करना, व्युत्पत्ति बतलाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्र—,कहना बोलना, बात करना—भट्टि० ८।८५, प्रति - , उत्तर में बोलना, उत्तर या जवाब देना —प्रत्यग्रवीच्चैनम् –रघु० २।४२ वि —, 1. कहना, बोलना 2. गलत कहना, मिथ्या बतलाना। **श्लेष्मन्** (नपुं०) फंदा, जाल, पाश।

भ

भः [भा+ड] 1. शुक्र ग्रह का नामान्तर 2. भ्रम, भ्रान्ति, आभास, – **भम्** 1. तारा 2. नक्षत्र 3. ग्रह 4. राशि 5. सत्ताइस की संख्या 6. मधुमक्खी। **समः –ईनः**, –**ईशः** सूर्य,—**गणः**,– **वर्गः** 1. तारापुंज, नक्षत्रपुंज 2. राशिचक्र 3. ग्रहों का राशिचक्र में भ्रमण,—**गोलः** तारामंडल, –– **चक्रम् मण्डलम्** राशिचक्र, – **पतिः** चन्द्रमा,––**सूचकः** ज्योतिषी।

भक्तिका [?] जीगुर।

भक्त (भू० क० कृ०) [भज्+क्त] 1. विभक्त, नियतीकृत, निर्दिष्ट 2. विभाजित 3. सेवित, पूजित 4. व्यस्त, दत्तचित्त 5. अनुरक्त, संलग्न, श्रद्धालु, निष्ठावान् —भग० ९।३४ 6. प्रसाधित, (भोजन आदि) पक्व, दे० भज्,– **क्तः** पूजक, आराधक, उपासक, पुजारी या दास, स्वामिभक्त नौकर —भक्तोऽसि मे सखा चेति - भग० ४।३, ९।३१, ७।२३,– **क्तम्** 1. हिस्सा, भाग 2. भोजन -भर्तृ० ३।७४ 3. उबाला हुआ चावल, भात उत्तर० ४।१ 4. पानी में डाल कर पकाया हुआ कोई भी अन्न। **समः—अभिलाषः** भोजन की इच्छा, भूख, **उपसाधकः** रसोइया,—**कंसः** भोजन की थाली, **करः** नाना प्रकार के गंध द्रव्यों से तैयार की गई धूप,—**कारः** रसोइया,–**छन्दम्** भूख,—**दासः** भोजन पात्र पर दूसरों को सेवा करने वाला नौकर, जिसे सेवा के बदले केवल भोजन ही मिलता है– मनु० ८।४१५, –**द्वेषः** भोजन से अरुचि, मंदाग्नि, –**मण्डः** भात का मांड, **रोचन** (वि०) भूख को उत्तेजित करने वाला,—**वत्सल** (वि०) अपने पूजक और भक्तों के प्रति कृपालु,– **शाला** 1. श्रोतृ-कक्ष (प्राचियों की बात सुनने का कमरा) 2. भोजन-गृह।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1. वियोजन, पृथक्करण, विभाजन 2. प्रभाग, अंश, हिस्सा 3. उपासना, अनुरक्ति, सेवा, स्वामिभक्ति कु० ७।३७, रघु० २।६३, मुद्रा० १।१५ 4. सम्मान, सेवा, पूजा, श्रद्धा 5. विन्यास, व्यवस्था–रघु० ५।७४ 6. सजावट, अलंकार, शृंगार ––आबद्धमुक्ताफलभक्तिचित्रे – कु० ७।१०, ९४, रघु० १३।५९, ७५, १५।३० 7. विशेषण। **समः**—**नम्र** (वि०) विनम्र अभिवादन करने वाला, – **पूर्वकम्** (अव्य०) भक्तिपूर्वक, सम्मानपूर्वक,—**भाज्** (वि०) 1. धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु 2. दृढ़ अनुराग रखने वाला, निष्ठावान्, श्रद्धालु,– **मार्गः** भक्ति की रीति अर्थात् परमात्मा की उपासना (शाश्वत शान्ति और मोक्ष प्राप्ति की रीति 'भक्ति या उपासना' ही समझी जाती है), **योगः** सानुराग निष्ठा, श्रद्धापूर्वक उपासना, **वादः** अनुराग का विश्वास।

भक्तिमत् (वि०) [भक्ति+मतुप्] 1. उपासक, श्रद्धालु 2. निष्ठावान्, स्वामिभक्त, अनुरागी।

भक्तिल (वि०) [भक्ति+ला+क] स्वामिभक्त, विश्वासपात्र (जैसे कि घोड़ा)।

भक्ष् (चुरा० उभ०–भक्षयति–ते, भक्षित) 1. खाना, निगलना–यथाभिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि —पंच० १ 2. उपयोग में लाना, उपभोग करना 3. बर्बाद करना, नष्ट करना 4. काटना।

भक्षः [भक्ष्+घञ्] 1. खाना 2. भोजन।

भक्षक (वि०) (स्त्री०–**शिका**) [भक्ष्+ण्वुल्] 1. खाने वाला, निर्वाह करने वाला 2. पेटू, भोजनभट्ट।

भक्षण (वि०) (स्त्री०–**णी**) [भक्ष्+ल्युट्] खाने वाला, निगलने वाला, –**णम्** खाना, खिलाना, जीविका चलाना।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लायक,—**क्यम्** कोई भी भोज्य पदार्थ, खाद्य पदार्थ, आहार, (आल० भी) - भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम् हि० १।५५, मनु० ११।१३। **समः कारः** ('भक्ष्यकारः' भी) पाचक, रसोइया।

भगः [भज्+घ] 1. सूर्य के बारह रूपों में एक, सूर्य 2. चन्द्रमा 3. शिव का रूप 4. अच्छी किस्मत, भाग्य, सुखद नियति, प्रसन्नता आस्ते भग आसीनस्य–ऐ० ब्रा०, भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः– भाग० ११२८२ 5. सम्पन्नता, समृद्धि 6. मर्यादा, श्रेष्ठता 7. प्रसिद्धि, कीर्ति 8. लावण्य, सौन्दर्य 9. उत्कर्ष, श्रेष्ठता 10. प्रेम, स्नेह 11. प्रेममय रंगरेलियां, केलि, आमोद 12. स्त्री की योनि—याज्ञ० ३।८८, मनु० ९।२३७ 13. सद्गुण, नैतिकता, धर्म की भावना 14. प्रयत्न, चेष्टा 15. इच्छा का अभाव, सांसारिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दियों में विरति 16. मोक्ष 17. सामर्थ्य 18. सर्वशक्तिमत्ता (नपुं० भी अन्तिम १५ अर्थों में),—गम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र। सम०—अङ्कुरः (आयु० में) चिकु, योनिद्वार पर की गुटिका, —आधानम् दाम्पत्य-सुख प्रदान करना, ईशः शिव का विशेषण, देवः पूर्ण स्वेच्छाचारी, लम्पट - देयता विवाह की अधिष्ठात्री देवता, देवतम् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, -नन्दनः विष्णु का विशेषण,—भक्षकः बिट, दलाल, भड़ुआ, —वेदनम् वैवाहिक आनन्द की उद्घोषणा।

भगन्दरः [भग—दृ+णिच्+अच्, मुम्] एक रोग जो गुदाद्वार में व्रण के रूप में होता है।

भगवत् (वि०) [भग+मतुप्] 1. यशस्वी, प्रसिद्ध 2. सम्मानित, श्रद्धेय, दिव्य, पवित्र (देव, उपदेव तथा अन्य प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय व्यक्तियों का विशेषण) —अथ भगवान् कुशली काश्यपः श० ५, भगवत्परवानयं जनः रघु० ८।८१, इसी प्रकार भगवान् वासुदेवः आदि (पुं०) 1. देव, देवता 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. जिन का विशेषण 5. बुद्ध का विशेषण।

भगवदीयः [भगवत्+छ] विष्णु का पूजक।

भगालम् [भज्+कालन्, कुत्वम्] खोपड़ी।

भगालिन् (पुं०) [भगाल+इनि] शिव का विशेषण।

भगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [भग+इनि] 1. फलता-फूलता, संपन्न, भाग्यशाली 2. वैभवशाली, शानदार।

भगिनिका [भगिनी+कन्+टाप्, इत्वम्] बहन।

भगिनी [भगिन्+ङीप्] 1. बहन 2. सौभाग्यवती स्त्री 3. स्त्री०। सम०—पतिः, भर्तृ (पुं०) बहन का पति, बहनोई।

भगिनीयः [भगिनी+छ] बहन का पुत्र, भानजा।

भगीरथः [?] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा का नाम, सगर का प्रपौत्र, जो अतिशय घोर साधना करके स्वर्ग से दिव्य गंगा को उतार कर इस पृथ्वी पर लाया, तथा राजा सगर के ६० हजार पुत्रों (पूर्वपुरुषों) की भस्म को पवित्र करने के लिए इस पृथ्वी से पाताल लोक को ले गया। सम०—प्रयत्नः भगीरथ का प्रयास जो किसी अतिदुष्कर कार्य या भीम कर्म को आलंकारिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, सुता गंगा का विशेषण।

भग्न [भञ्ज्+क्त] 1. टूटा हुआ, हड्डी टूटी हुई, टूटा फूटा, फटा-पुराना 2. हताश, ध्वस्त, निराश 3. अवरुद्ध, गृहीत, निलंबित 4. बिगाड़ा हुआ, तोड़ा-फोड़ा हुआ 5. पराजित, पूर्णरूप से परास्त, छिन्न-भिन्न किया हुआ उत्तर० ५ 6. दहाया हुआ, क्विनाइन (दे० भञ्ज्),—नम् पैर की हड्डी का टूटना। सम०—आत्मन् (पुं०) चन्द्रमा का विशेषण,—आशय (वि०) जिसने कठिनाइयों और आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है, —आश (वि०) निराश —भर्तृ० २।८४, हताश—भर्तृ० ३।५२., उत्साह (वि०) जिसका उत्साह टूट गया हो, जिसकी शक्ति अवसन्न हो गई हो, जिसका उत्साह, भग्न हो गया हो, —उद्यम (वि०) जिसके उद्योग निष्फल कर दिये गये हों, निराश, जिसका विकास अवरुद्ध हो गया हो, क्रमः,—प्रक्रमः अभिव्यक्ति या निर्माण में सममिति का अतिक्रमण, दे० प्रक्रमभंग', —चेष्ट (वि०) निराश, हताश,—दर्प (वि०) विनीत, जिसका घमंड टूट गया हो,—निद्र (वि०) जिसकी नींद में बाधा डाल दी गई हो,—पार्श्व (वि०) जिसके पार्श्व में पीड़ा होती हो, —पृष्ठ (वि०) 1. जिसकी कमर टूट गई हो 2. सामने आता हुआ,—प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी हो,- मनस् (वि०) निरुत्साहित, हतोत्साहित, व्रत (वि०) जो अपने व्रतों में निष्ठावान् न हो,—संकल्प (वि०) जिसकी योजनाओं को उत्साहहीन कर दिया गया हो।

भग्नी [भगिनी, पृषो० साधुः] बहन।

भञ्जन (ना) रो [भंजति शब्दं करोति - भञ्+क+जण्+ङीप्] डाम, गोमक्षी।

भङ्गवितः (स्त्री०) [भञ्ज्+क्तिन्] टूटना, (हड्डी का) टूटना।

भङ्गः [भञ्ज्+घञ्] 1. टूटना, टूट जाना, छिन्न-भिन्न होना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना—कार्यगंलाभङ्ग इव प्रवृत्तः—रघु० ५।४५, 2. टूट, हड्डी का टूटना, विच्छेद 3. उखाड़ना, काटना —आम्रकलिका भङ्गः—श० ६ 4. पार्थक्य, विश्लेषण 5. अंश, टुकड़ा, खंड, वियुक्त अंश—पुष्पोच्चयः पल्लवभङ्गभिन्नः - कु० ३।६१, रघु० १६।१६ 6. पतन, अधःपतन, ध्वंस, विनाश, बर्बादी जैसा कि राज्य°, सत्त्व° आदि में 7. अलग अलग करना, तितर-बितर करना—यात्राभङ्गः मा० १ 8. हार, पलायन, पराभव, पराजय—पंच० ४।४१, शि० १६।७२ 9. असफलता, निराशा, हताश० रघु० २।४२, आशाभंग आदि 10. अस्वीकृति, इंकारी—कु० १।४२, 11. छिद्र, दरार 12. विघ्न, बाधा, रुकावट —निद्रा° गति° आदि 13. अनुष्ठान, निलंबन, स्थगन 14. भगदड़ 15. मोड़, तह, लहर 16. सिकुड़न, झुकाव, संकोच या सटाना उत्तर० ५।३३ 17. गति, चाल 18. लकवा, फालिज 19. जालसाजी, धोखेबाजी 20. नहर, जलमार्ग, नाली 21. गोलगोल या घुमघुमाकर कहने या करने का ढंग—दे० भंगि 22. पटसन। सम०—नयः बाधाओं को हटाना,—द्राक्षा हल्दी,—सार्थ (वि०) बेईमान, जालसाज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भङ्गा [भञ्ज्+अ+टाप्] 1. पटसन 2. पटसन से तैयार किया एक मादक पेय। सम०—कटम् पटसन का पराग।

भङ्गिः,—गी (स्त्री०) [भञ्ज्+इन्, कुरच्; भङ्गि+ङीष्] 1. टूटना, हड्डी का टूटना, विच्छेद, प्रभाग 2. हिलोर 3. झुकाव, सिकुड़न—दृग्भङ्गीभिः प्रथम-मथुरासंगमे चुम्बितोऽस्मि—उद्भट, श० १३ 4. लहर 5. बाढ़, धारा 6. टेढ़ा मार्ग, घुमावदार या चक्करदार मार्ग 7. गोलमोल या घूमघुमाकर कहने या करने का ढंग, वाग्जाल—भङ्ग्यन्तरेण कथनात्—काव्य० १०, बहुभङ्गिविशारदः—दश० 8. बहाना, छद्मवेष, आभास —यः पाञ्चजन्यप्रतिबिम्बभङ्गया धाराभ्रमः फेनमिव व्यनक्ति—विक्रम० १।१ 9. दावपेंच, जालसाजी, धोखा 10. व्यंग्योक्ति 11. व्यंग्योत्तर, आशूत्तर 12. पग—रघु० १३।६९ 13. अन्तराल 14 हो, लज्जा-शीलता। सम०—भक्तिः (स्त्री०) तरंगवत् कदमों या तरंगों की श्रृंखला में विभाजन, लहरियेदार शैली —वेणी० ६०।

भङ्गिन् (वि०) [भङ्ग+इनि] 1. शीघ्र टूटने वाला, भंगुर, अस्थायी—तदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चेत्—भर्तृ० २। ९१ 2. किसी अभियोग में पछाड़ा हुआ।

भङ्गिमत् (वि०)[भङ्गि+मतुप्] लहरियेदार, करारा।

भङ्गिन् (पुं०) [भङ्ग+इनिच्] 1. (हड्डी का) टूटना, तोड़ना 2. झिकोर, हिलोर 3. घुंघरालापन 4. छद्मवेश, धोखा 5. आशूत्तर, व्यंग्योक्ति 6. कुटिलता।

भङ्गिलम् [भङ्ग+इलच्] ज्ञानेन्द्रियों में कोई दोष।

भङ्गुर (वि०) [भञ्ज्+घुरच्] 1. टूटने के योग्य, भिदुर, कड़कड्डल 2. ढुलना-पतला, अस्थिर, अनित्य, नश्वर —आमरणान्तात् प्रणयाः कोपास्तत्क्षणभङ्गुराः हि० १।१८८, शि० १९।७२ 3. परिवर्तनशील, चर 4. कुटिल, टेढ़ा 5. वक्र, घुंघरादार—शशिमृगेव तव भाति भङ्गुरभ्रूः—गीत० १० 6. जालसाज, बेईमान, चालाक,—रः किसी नदी का मोड़।

भज्। (भजा० उभ०—भजति ते, परन्तु व्यवहारतः आ०, भक्त) 1. (क) हिस्से करना, विभक्त करना, बांटना—भजेरन् पैतृकं रिक्थम् मनु० ९।१०४, न तत्पुत्रैर्भजेत्सार्धम्—२०९, ११९, (ख) निर्दिष्ट करना, नियत करना, अनुभाजन करना—गायत्री-मन्वेष्टभजत् ऐ० ब्रा० 2. किसी के लिए प्राप्त करना, हिस्सा लेना, भाग लेना पित्र्य वा भजते शीलम् मनु० १०।५९ 3. स्वीकार करना, ग्रहण करना—मा० ९।२५ 4. (क) आश्रय लेना, (अपने आप को) समर्पण करना, पहुँच रखना—शिलातलं भेजे—का० १७९, मातर्लक्ष्मि भजस्व कैटभरिपुम्—भर्तृ० ३।६४, न कश्चिद्दहनीनामपथमपकृष्टोऽपि भजते —य० ५।१०, भामि० १।८३, रघु० १७।२८, (ख) अभ्यास करना, अनुगमन करना, पालन करना—भेजे धर्ममनातुरः—रघु० १।२१ 5. उपभोग करना, अधिकृत करना, रखना, भोगना, अनुभव करना, मनोरंजन करना—विधुरपि भजतेतरां कलङ्कम्—भामि० १।७४, न भेजिरे भीमविशेण भीतिम्—भर्तृ० २।८०, व्यक्तं भजत्यापगाः का० ७।८, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु —रघु० ८।४३, मा० ३।९, उत्तर० १।३५ 6. सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना—रघु० २।२३ पंच० १।१८१, मृच्छ० १।३२ 7. आराधना करना, सत्कार करना (देव मान कर) पूजा करना 8. छाँटना, चुनना, पसंद करना स्वीकार करना सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते—मालवि० १।२ 9. शारीरिक सुखोपभोग करना,—पंच० ४।५० 10. अनुरक्त होना, भक्त बनना 11. अधिकार में करना 12. भाग्य में पड़ना (इस धातु के अर्थ—सज्ञाओं के साथ जुड़कर विविध रूप ग्रहण कर लेते हैं उदा० निद्रां भज् सोना, मूर्छां भज् बेहोश होना, भावं भज् प्रेम प्रदर्शित करना आदि) वि—, 1. विभक्त करना, बाँटना—विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः—नै० १।१६, पत्रिणां व्यभजदाश्रयाभृद्भिः—रघु० ११।२५, १०।५४, शि० १।३ 2. अलग २ करना, (संपत्ति, पैतृक जायदाद आदि) बांटना विभक्ता भ्रातरः—'बंटे हुए भाई' 3. भेद करना 4. सम्मान करना, पूजा करना, संवि , हिस्सा लेना, हिस्से में किसी को प्रविष्ट करना विलं यदा यस्य च संविभक्तम् ।। (चुरा० उभ० भाजयति ते —कई विद्वानों के मतानुसार यह 'भज्' के ही प्रेर० रूप हैं) 1. पकाना 2. देना।

भजकः [भज् ण्वुल्] 1. बांटने वाला, वितरक 2. पूजक, भक्त, उपासक।

भजनम् [भज्+ल्युट्] 1. हिस्से बनाना, बांटना 2. स्वत्व 3. सेवा, आराधना, पूजा।

भजमान (वि०) [भज्+शानच्] 1. बांटने वाला 2. उपभोक्ता 3. योग्य, सही, उचित।

भञ्ज्। (भजा० प० भनक्ति, भग्न इच्छा० विभंक्षति) 1. तोड़ना, फाड़ डालना, छिन्नभिन्न करना, चूर चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, खण्डशः करना भनज्मि सर्वमर्यादाः भट्टि० ६।३८, भङ्क्त्वा भुजौ—४।३, बभञ्जुर्वेलयानि च ३।२२, धनुरभाजि यत्त्वया—रघु० ११।७६ 2. उजाड़ना, उखाड़ना—भनक्त्यूषवनं करिः—भट्टि० १।२ 3. (किले में) दरार डालना 4. भग्नाश करना, प्रयत्न व्यर्थ करना, निराश करना, प्रगति रोकना—पिनाकिना भग्नमनोरथा सती—कु० ५।१ 5. पकड़ना, रोकना, विघ्न डालना, निलंबित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना जैसा कि 'भग्ननिद्रः' में 6. हराना, परास्त करना।—क्षत्राणि रामः परिभूय रामात् क्षत्राद्यधाऽभज्यत स द्विजेन्द्रः—नै० २२।१३३, अव—, तोड़ डालना, ध्वस्त करना—कु० ३।७४, प्र—, 1. तोड़ डालना, ध्वस्त करना, धज्जियाँ उड़ाना 2. रोकना, गिरफ्तार करना, निलंबित करना 3. भग्नाश करना, निराश करना।

ii (चुरा० उभ०—भञ्जयति—ते) उज्ज्वल करना, चमकाना।

भञ्जक (वि०) (स्त्री०-जिका) [भञ्ज्+ण्वुल्] तोड़ने वाला, बाँटने वाला।

भञ्जन (वि०) (स्त्री०-नी) [भञ्ज्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, टुकड़े करने वाला 2. गिरफ्तार करने वाला, रोकने वाला 3. भग्नाश करने वाला 4. प्रबल पीड़ा पहुँचाने वाला, —नम् 1. तोड़ डालना, ध्वस्त करना, विनष्ट करना 2. हटाना, दूर करना, भगा देना —तदुदितभयभञ्जनाय यूनाम्—गीत० १० 3. पराजित करना, हराना 4. भग्नाश करना 5. रोकना, विघ्न डालना, बाधा पहुँचाना 6. कष्ट देना, पीड़ित करना, —नः दांतों का गिरना।

भञ्जनकः [भञ्जन+कन्] मुख का एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते हैं, होठ टेढ़े हो जाते हैं।

भञ्जरः [भञ्ज्+अरच्] मंदिर के पास उगा हुआ वृक्ष।

भट i (भ्वा० पर० भटति, भटित) 1. पोषण करना, पालना पोसना, स्थिर रखना 2. भाड़े पर लेना 3. मजदूरी लेना ii (चुरा० उभ० भटयति-ते) बोलना, बातें करना।

भटः [भट्+अच्] 1. योद्धा, सैनिक, लड़ने वाला —तद्भटचातुरीतुरी—नै० १।१२, वादित्रसृष्टिर्घटते भटस्य २२।२२ -भट्टि० १४।१०१ 2. भृतिभोगी, भाड़ैत सैनिक, भाड़े का टट्टू 3. जातिबहिष्कृत, वर्णसंकर 4. पिशाच।

भटित्र (वि०) [भट+इत्र] शलाका पर रखकर पकाया गया मांस।

भट्टः [भट्+तेन्] 1. प्रभु, स्वामी (राजाओं को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि) 2. विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि भट्टगोपालस्य पौत्रः—मा० १, इसी प्रकार 'कुमारिल भट्टः' आदि 3. कोई भी विद्वान् पुरुष या दार्शनिक 4. एक प्रकार की मिश्र जाति जिसका व्यवसाय भाट या चारणों का व्यवसाय अर्थात् राजाओं का स्तुति गान है—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां भट्टो जातोऽनुवाचकः 5. भाट, बन्दीजन। सम०—आचार्यः प्रसिद्ध अध्यापक या विद्वान् पुरुष को दी गई उपाधि 2. विज्ञ,—प्रयागः —प्रयाग, इलाहाबाद।

भट्टारः (वि०) [भट्टं स्वामित्वमिच्छति ऋ—अण्] 1. श्रद्धास्पद, पूज्य 2. व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होने वाली सम्मानसूचक उपाधि—यथा—भट्टार-हरिश्चन्द्रस्य पद्यबन्धो नृपायते—हर्ष०।

भट्टारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [भट्टार+कन्] श्रद्धेय, पूज्य- -आदि दे० ऊ० 'भट्टार'। सम०—वासरः रविवार,।

भट्टिनी [भट्ट+इनि+ङीप्] 1. (अनभिषिक्त) रानी, राजकुमारी, (नाटकों में दासियों द्वारा रानी को संबोधन करने में बहुधा प्रयुक्त) 2. ऊँचे पद की महिला 3. ब्राह्मण की पत्नी।

भट्टिः [भण्ड्+इलच्, नि० नलोपः] विशेष प्रकार की एक मिश्र जाति।

भडिलः [भण्ड्+इलच्, नि० नलोपः] 1. नेता, योद्धा 2. टहलुआ, नौकर।

भण् (भ्वा० पु० भणति,) 1. कहना, बोलना—पुरुषोत्तम इति भणितव्ये—विक्रम० ३, भट्टि० १४।१६ 2. वर्णन करना—काव्यः स काव्येन सभामभाणीत्—नै० १०।५९ 3. नाम लेना, पुकारना।

भणनम्, भणितम्, भणितिः (स्त्री०) [भण्+ल्युट्, क्त, क्तिन्] 1. कहना, बोलना, बातें करना, वचन, प्रवचन, वार्तालाप—न यैर्यमानन्दं जनयति जगन्नाथ भणितिः—भामि० ४।३९, २।७७, श्रीजयदेव भणितं हरिरभितम्—गीत० ७, इह रसभणनं—तदेव।

भण्ड् i (भ्वा० आ० भण्डते) 1. भर्त्सना करना, छिड़कना 2. खिल्ली उड़ाना, व्यंग्य करना 3. बोलना 4. उपहास करना, मखौल करना ii (चुरा० उ० —मण्डयति-ते) 1. सौभाग्यशाली बनाना 2. चकमा देना (शुद्धपाठ—भट्)।

भण्डः [भण्ड+अच्] 1. भांड, मसखरा, विदूषक—त्र्यंबेदस्य कर्तारौ भण्डधूर्तपिशाचकाः—सर्व० 2. एक मिश्रजाति का नाम—तु० 'भड'। सम०—तपस्विन् (पुं०) बनावटी सन्यासी, ढोंगी,—हासिनी वेश्या, वारांगना।

भण्डकः [भण्ड+कन्] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

भण्डनम् [भण्ड्+ल्युट्] 1. कवच, बख्तर 2. संग्राम, युद्ध 3. उत्पात, दुष्टता।

भंण्डिः-डी (स्त्री०) [भण्ड्+इ, भण्ड्+ङीप्] लहर, तरंग।

भण्डिल (वि०) [भण्ड्+इलच्] सुखद, शुभ, सम्पन्न, सौभाग्यशाली,—लः 1. अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, कल्याण 2. दूत 3. कारीगर, दस्तकार।

भदन्तः [भन्द्+झच्, अन्तादेशः, नलोपश्च] 1. बौद्ध धर्मानुयायी के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक शब्द —भदन्त तिथिरेव ते शुध्यति—मुद्रा० ४ 2. बौद्धभिक्षु।

भदाकः [भन्द्+आक, नलोपः] सम्पन्नता, सौभाग्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नि० नलोपः] 1. भला, सुखद, समृद्धिशाली 2. शुभ, भाग्यवान् जैसा कि 'भद्रमुख' में 3. प्रमुख, सर्वोत्तम, मुख्य—पक्षच्छ भद्रं विजिता-रिभद्रः—रघु० १४।३१ 4. अनुकूल, मंगलप्रद 5. कृपालु, सदय, श्रेष्ठ, सौहार्दपूर्ण, प्रिय: (संबोधन एक वचन में प्रयुक्त होकर अर्थ होता है 'पूज्य श्रीमान्' 'प्रिय मित्र' 'पूज्य महिले' 'पूज्य श्रीमति' 6. सुहावना, उपभोज्य, प्रिय, सुन्दर—पंच० १।१८१ 7. स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय 8. प्रियतम, प्यारा 9. चटकदार, बाह्यतः रमणीय, पाखण्डी, द्रम् उल्लास, सौभाग्य, कल्याण, आनन्द, समृद्धि भद्रं भद्रं क्रियर भगवन् भूयसे मंगलाय—मा० १।३, ६।७, स्वयि वितरतु भद्रं भूयसे मंगलाय उत्तर० ३।४८, (इस अर्थ में बहुधा व० व० में प्रयोग), सर्वे भद्राणि पश्यंतु भद्रं ते 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे' तुम्हें ऐश्वर्यशाली बनाए' 2. सोना 3. लोहा. इस्पात, द्रः 1. बैल 2. एक प्रकार का खंजन पक्षी 3. विशेष प्रकार का हाथी 4. छद्मवेषी, पाखंडी—मनु० ९।२५८ 5. शिव का नामान्तर 6. मेरुपर्वत का विशेषण 7. एक प्रकार का कदम्बवृक्ष (भद्रा कृ हजामत करना, बाल मूंडना भद्राकरणम् मुण्डन) । सम०—अङ्गः बलराम का विशेषण, -आकारः, -आकृति (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, आत्मजः तलवार, -आसनम् 1. राजासन, राजगद्दी, सिंहासन 2. समाधि की विशेष अंगस्थिति, योग का आसन,--ईशः शिव का एक विशेषण, एला बड़ी इलायची,—कपिलः शिव का एक विशेषण, कारक—(वि०) मंगलप्रद, —काली दुर्गा का नामान्तर, कुम्भः—किसी तीर्थ के जल से (विशेषकर गंगाजल से) भरा हुआ सुनहरी घड़ा,—गणितम् जादू के रेखाचित्रों की बनावट,—घटः, घटकः एक बड़ा जिसमें भाग्य की पर्चियां डाली जाय, -दारु (पुं० नपु०) चीड़ का वृक्ष,—नामन् (पुं०) खंजनपक्षी,—पीठम् 1. राजगद्दी, राज-कुर्सी, सिंहासन - रघु० १७।१० 2. एक प्रकार का पंखदार कीड़ा, -बलः बलराम का विशेषण, --मल्ल (वि०) 'मांगलिक चेहरे वाला', (नित्र सम्बो-धन के रूप में प्रयुक्त 'मान्यवर महोदय' 'पूज्य श्रीमन्'—श० ७,--मृगः एक विशेष प्रकार के हाथी का विशेषण, रेणुः इन्द्र के हाथी का नाम, वर्षिन् (पुं०) एक प्रकार की नवमल्लिका,—शाखः कार्तिकेय का विशेषण, -श्रेयस्, —श्रियम् चन्दन का काष्ठ,—श्रीः (स्त्री०) चन्दन का वृक्ष,— सोमा गंगा का विशेषण ।

भद्रक (वि०) (स्त्री०—द्रिका) [भद्र—कन्] 1. शुभ, मङ्गलमय 2. मनोहर, सुन्दर, —कः देवदार का वृक्ष ।

भद्रकुर (नपुं०) [भद्र+कु+रन्, मुम्] सुख सम्पत्ति का दाता, समृद्धकारी ।

भद्रदारु (वि०) [भद्र+मनुप्] मंगलमय, (नपुं०) देवदार का वृक्ष ।

भद्रा [भद्र+टाप्] 1. गाय 2. चान्द्रमास के पक्ष की दोयज, सप्तमी और द्वादशी 3. स्वर्गंगा 4. नाना प्रकार के पौधों के नाम । सम०—अयस् चन्दन की लकड़ी ।

भद्रिका [भद्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. तालीज 2. दोयज, सप्तमी व द्वादशी तिथि को तिथियां ।

भद्रिलम् [भद्र+इलच्] 1. समृद्धि, सौभाग्य 2. कपनशील या चरपराहट वाली मिर्च ।

भम्भः [भम्+भा+क] 1. मकड़ी 2. धूआं ।

भम्भरालिका, भंभरावली [भम् इत्यव्यक्तशब्दस्य भरं वाहयत्यम् आलाति—भम्भर+आ+ला+क+ङीष्—भम्भरालो । कन् टापु, ह्रस्वः] 1. गोमक्षी 2. डांस ।

भम्भारवः [भम्भा+रु+अच्] गाय का रंभाना ।

भयम् [बिभेत्यस्मात्- भी+अपादाने अच्] 1. डर, आतंक, विभीषा, आशंका (प्रायः अण० के साथ) भीषे रोग-भयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयम् भर्तृ० २।३३ यदि स्मरभयास्य नास्ति मृत्योर्भयम् वेणी० ३।४ 2. डर, त्रास जगद्भयम् आदि 3. खतरा, जोखिम, संकट -तावद्भयस्य भेतव्यं यावद्भयमनागतम्, आगतं तु भयं दृष्ट्वा नरः कुर्याद्यथोचितम्—हि० १।५७,—यः बीमारी, रोग । सम०—अन्वित,—आक्रान्त (वि०) ज्वरग्रस्त—आतुर,—आर्त (वि०) डरा हुआ, आत-द्विग्न, भयभीत,—आवह (वि०) 1. भयोत्पादक 2. जोखिम वाला—स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः—भग० ३।३५,—उत्तर (वि०) भय से युक्त, -कर ('भयंकर' भी) 1. डराने वाला, भयानक, भयपूर्ण 2. खतरनाक, संकटपूर्ण इसी प्रकार 'भयकारक' 'भयकृत्', डिण्डिमः युद्ध में प्रयुक्त किया जाने वाला ढोल, मारू बाजा, -द्रुत (वि०) भय के कारण भागने वाला, पराजित, भगोड़ा हुआ, प्रतीकारः भय को दूर करना, डर हटाना, प्रद (वि०) भयदायक, भयपूर्ण, भयानक, प्रस्तावः भय का अवसर,—ब्राह्मणः डरपोक ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो अपनी जान बचाने के लिए (यह समझ कर कि ब्राह्मण अवध्य है) अपने ब्राह्मण होने की दुहाई देता है, -विप्लुत (वि०) आतंक-पीड़ित, व्यूहः डर की अवस्था होने पर सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था ।

भयानक (वि०) [बिभेत्यस्मात्-भी+आनक] भयंकर, भीषण, भयजनक, डरावना—किमतः परं भयानकं स्यात्—उत्तर० २, हि० १७।२०, भग० ११।२३,

—कः 1. व्याघ्र 2. राहु का नामान्तर 3. भयानक रस, काव्य के आठ या नौ रसों में एक—दे० 'रस' के अन्तर्गत, -कम् त्रास, डर ।

भर (वि०) [भृ+अच्] धारण करने वाला, देने वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भरणपोषण करने वाला आदि,—रः 1. बोझा, भार, वजन –खुरत्रये भरं कृत्वा पंच० १, "अपने तीन खुरों पर ही अपने आपको सहारा देने वाला", फल-भरपरिणामध्यामजम्बू–आदि—उत्तर० २।२०, भर-व्यथा –मुद्रा० २।१८ 2. बड़ी संख्या, बड़ा परिमाण, संग्रह, समुच्चय– धत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनाम् —भामि० १।९४,५४, शि० ९।४७ 3. प्रकाय, राशि 4. आधिक्य–निर्यद्धसौहृदभरेति गुणोज्ज्वलेति—मा० ६।१७,शोभाभरैः संभृता–भामि० १।१०३, कोषभरेण गीत० ३।७ तोल की एक विशेष माप।

भरटः [भृ | अटन्] 1. कुम्हार 2. सेवक।

भरण (वि०) (स्त्री०–णी) [भृ+ल्युट्] धारण करने वाला, निर्वाह करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला, **णम्** 1. पालन-पोषण, निर्वाह करना, सहारा देना—रघु० १।२१, श० ७।३३ 2. वहन करने या ढोने की क्रिया 3. लाना, प्राप्त करना 4. पुष्टिकारक भोजन 5. भाड़ा, मजदूरी, –णः भरणी नामक नक्षत्र।

भरणी [भरण | ङीष्] तीन तारों का पुंज जो दूसरा नक्षत्र है, सम०–भूः राहु का विशेषण।

भरतः [भृ+अतच्] 1. स्वामी, प्रभु 2. राजा, शासक 3. बैल, साँड़ 4. फीहा।

भरण्यम् [भरण+यत्] 1. लालन-पालन करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला 2. मजदूरी, भाड़ा 3. भरणी नक्षत्र, –ण्या मजदूरी, भाड़ा। सम०–भुज् (पुं०) भृति-सेवक, भाड़े का नौकर।

भरण्युः [भरण्य् (कंडूवा०)–उ] 1. स्वामी 2. प्रेरक 3. मित्र 4. अग्नि 5. चन्द्रमा 6. सूर्य।

भरतः [भरं तनोति–तन् + ड] 1. शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था। इसीके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष है। यह कौरव और पांडवों का दूरवर्ती पूर्वपुरुष था 2. दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैकेयी का बेटा, राम का एक भाई, यह बड़ा धर्मात्मा और पुण्यशील व्यक्ति था, राम के प्रति इसकी इतनी अगाध भक्ति थी कि जब कैकेयी की गर्हित मांग के अनुसार राम वन में जाने को तैयार हुए तो भरत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि इसकी अपनी माता ने ही राम को निर्वासित किया फलतः उसने अपनी प्रभुसत्ता को अस्वीकार कर राम के नाम (राम की खड़ाउओं को लाकर उनको राज्यप्रतिनिधि के रूप में सिंहासन पर रखकर) से तब तक राज्यप्रशासन किया जबतक कि चौदहवर्ष का निर्वासन समाप्त करके राम वापिस अयोध्या नहीं आये 3. एक प्राचीन मुनि का नाम जो नाट्यकला तथा संगीतविद्या के प्रवर्तक माने जाते हैं 4. अभिनेता रंगमंच पर अभिनय करने वाला पात्र –तत्किमित्यु-दासते भरताः—मा० १।५ 5. भाड़े का सैनिक, केवल धन के लिए काम करने वाला नौकर 6. जंगली, पहाड़ी 7. अग्नि का विशेषण। सम०–अग्रजः 'भरत का ज्येष्ठ भ्राता', राम का विशेषण—रघु० १४।७३, –खण्डम् भारत के एक भाग का नामान्तर, ज्ञ (वि०) भरतशास्त्र या नाट्यशास्त्र का ज्ञाता, –पुत्रकः अभिनेता—वर्षः भरत का देश अर्थात् भारत, वाक्यम् नाटक के अन्त में दिया गया श्लोक, एक प्रकार की नान्दी (नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक भरत मुनि के सम्मानार्थ कहा गया) तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् (प्रत्येक नाटक में उपलब्ध)।

भरण्यः [भृ+अथ] 1. प्रभुसत्ता प्राप्त राजा 2. अग्नि 3. संसार के किसी एक प्रदेश की अधिष्ठात्री देवी, लोकपाल।

भरद्वाजः [भ्रियते मरद्भिः भृ+अप्=भर, द्वाभ्यां जायते द्वि+जन् + ड–द्वाज, भरश्चासौ द्वाजश्च–कर्म० स०] 1. सात ऋषियों में से एक का नाम 2. बातक पक्षी।

भरित (वि०) [भर+इतच्] 1. परवरिश किया गया, पाला-पोसा गया 2. भरा हुआ, भरपूर—जगज्जालं कर्ता कुसुमभरसौरभ्यभरितम्—भामि० १।५४, ३३।

भरुः [भृ+उन्] 1. पति 2. प्रभु 3. शिव का नामान्तर 4. विष्णु का नाम 5. सोना 6. समुद्र।

भरुजः –जा,—जी (स्त्री०) [भ इति शब्देन रुजति –भ+रुज्+क] गीदड़।

भरूटकम् [भृ+उट+कन्] तला हुआ मांस।

भर्गः [भृज्–घञ्] 1. शिव का नाम 2. ब्रह्मा का नाम।

भर्ग्यः [भृज्+ण्यत्] शिव का विशेषण।

भर्जन (वि०) [भृज्+ल्युट्] 1. भूनने वाला तलने वाला, पकाने वाला 2. नष्ट करने वाला,—नम् 1. भूनने या तलने की क्रिया 2. कड़ाही।

भर्तृ (पुं०) [भृ+तृच्] 1. पति –यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम्—भर्तृ० २।८, स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम् मा० ६।१८ 2. प्रभु, स्वामी, महत्तर– भर्तुः शापेन मेघ० १, गर्ण०, भूत० आदि 5. नेता, सेना-पति, मुख्य रघु० ७।४१ 4. भरणपोषण कर्ता, भारवहनकर्ता, प्रदर्शक। सम०–स्त्री अपने पति का वध करने वाली स्त्री, बारकः युवराज, राजकुमार, उत्तराधिकारी, कुमार (नाटक में बहुधा प्रयुक्त संबोधन),–दारिका युवराज्ञी (नाटकों में प्रयुक्त संबोधन शब्द),—व्रतम् पातिव्रत, पतिभक्ति (ता) साध्वी पतिव्रता पत्नी—तु० पतिव्रता, शोकः पति की मृत्यु पर शोक, –हरिः एक प्रसिद्ध राजा जो तीन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतक (शृंगार, नीति, वैराग्य), वाक्यपदीय तथा भट्टिकाव्य का रचयिता है।

भर्तृमती [भर्तृ+मतुप्+ङीप्] विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित हो।

भर्तृसात् (अव्य०) [भर्तृ+सात्] पति के अधिकार में, °कृता विवाहित हुई।

भर्त्स् (चुरा० आ०—भर्त्सयते, कभी २ पर० भी) 1. धमकाना, घुड़कना 2. झिड़कना, बुरा भला कहना, अपशब्द कहना 3. व्यंग्य करना; **निस्**—, 1. झिड़कना, निन्दा करना, गाली देना 2. आगे बढ़ जाना, ग्रहण लगना, लज्जित करना - कु० ३।५३।

भर्त्सकः [भर्त्स्+ण्वुल्] धमकी देने वाला, घुड़कने वाला।

भर्त्सनम्, भर्त्सना, भर्त्सितम् [भर्त्स्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्, क्त वा] 1. धमकाना, घुड़कना 2. धमकी, झिड़की 3. बुरा भला कहना, गाली देना 4. अभिशाप।

भर्मन् [भृ+मनिन्, नि० नलोपः] 1. मजदूरी, भाड़ा 2. सोना 3. नाभि।

भर्मभ्या [भर्मन्+यत्—टाप्] मजदूरी, भाड़ा।

भर्मन् (नपुं०) [भृ+मनिन्] 1. सहारा, संधारण, पालन-पोषण 2. मजदूरी, भाड़ा 3. सोना 4. सोने का सिक्का 5. नाभि।

भल् I (चुरा० आ०—भालयते, भालित) देखना, अवलोकन करना, **—नि** —, (पर० भी) 1. देखना, अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना, निगाह डालना—निभाल्य भूयो निजमौरिमाणं सा नाम यानं सहसैव यासीः—भामि० ३।१७६, **या**—यन्यां न भामिनि निभालयसि प्रभातनीलारविन्दमदभङ्गिपदैः कटाक्षैः—३।४ II (भ्वा० आ०) दे० 'भल्ल्'

भल्ल् (भ्वा० आ० भल्लते, भल्लित) 1. वर्णन करना, बयान करना, कहना 2. घायल करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3. देना।

भल्लः,-ल्ली-ल्लम् [भल्ल्+अच्, स्त्रियां ङीप्] एक प्रकार का अस्त्र या बाण—**क्वचिदाकर्णाविकृष्टभल्लवर्षी**—रघु० ९।६६, ४।६३, ७।५८,—ल्लः 1. रीछ 2. शिव का विशेषण 3. भिलावे का पौधा, ('भल्ली' भी)।

भल्लकः [भल्ल+कन्] रीछ।

भल्लातः, भल्लातकः [भल्ल्+अत्+अच्, भल्लात+कन्] भिलावे का पौधा।

भल्लूकः, भल्लूकः [भल्ल्+ऊक, पक्षे पृषो० ह्रस्वः] 1. रीछ, भालू—दक्षति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनाम्—उत्तर० २।२१ 2. कुत्ता।

भव (वि०) [भवत्यस्मात्-भू+अपादाने अप्] (समास के अन्त में) उदय होता हुआ या उत्पन्न, जन्म लेता हुआ,—**वः** 1 होना, होने की स्थिति, सत्ता 2. जन्म, उत्पत्तिः—**भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्**—रघु० ३।१४, श० ७।२७ 3. स्रोत, मूल 4. सांसारिक अस्तित्व, सांसारिक जीवन, जीवन—जैसा कि भवार्णव, भवसागर आदि में—कु० २।५१ 5. संसार 6. कुशल-क्षेम, स्वास्थ्य, समृद्धि 7. श्रेष्ठता, उत्तमता 8. शिव का नाम दक्षस्य कन्या भवपूर्वपत्नी—कु० १।२१ ३।७२ 9. देव, देवता 10 अभिग्रहण, प्राप्ति। सम०—**अतिग** (वि०) सांसारिक जीवन पर विजय पाने वाला, वीतराग,—**अन्तकृत्** ब्रह्मा का विशेषण—**अन्तरम्** दूसरा जीवन (भूत या भावी) पंच० १।१२१,—**अब्धिः,—अर्णवः, -समुद्रः**—**सागरः,—सिन्धुः** सांसारिक जीवन रूपी समुद्र,—**अपगा,—नी** गंगा नदी, **अरण्यम्** 'सांसारिक जीवन रूपी जंगल' 'सुनसान संसार,—**आत्मजः** गणेश या कार्तिकेय का विशेषण, **उच्छेदः** सांसारिक जीवन का विनाश—रघु० १४।७४, **क्षितिः** (स्त्री०) जन्मस्थान, **-दम्भरः** दावानल, जंगल की आग,—**छिद्** (वि०) सांसारिक जीवन के बंधनों को काटने वाला, जन्म को पुनरावृत्ति को रोकने वाला—**-भवच्छिदस्यम्बकपादपांशवः**—**का०** १,—**छेदः** पुनर्जन्म का रोकना शि० १।३५,—**दारु** (नपुं०) देवदारु का वृक्ष,—**भूतिः** एक प्रसिद्ध कवि का नाम, (दे० परि० २) **भवभूतेः संबन्धाद्भुधरभुरेव भारती भाति, एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा**। आर्या सप्त० ३६, —**रुद्** (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर बजने वाला ढोल, **-वीतिः** (स्त्री०) सांसारिक जीवन से छुटकारा—कि० ६।४१।

भवत् (वि०) (स्त्री०—त्नी) [भू+शत्] 1. होने वाला, घटित होने वाला, घटने वाला 2. वर्तमान—**समतीत च भवं च भावि च**—रघु० ८।७८, (सार्व० वि०) (स्त्री०—त्नी) आदरसूचक, या सम्मानसूचक सर्वनाम—जिसका अनुवाद है—'आदरणीय श्रीमन्' 'पूज्य श्रीमति' (मध्यम पुरुष, पुरुषवाचक सर्वनाम के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त, परन्तु क्रिया अन्य पुरुष की)—अथवा कथं भवान् मन्यते—मालवि० १, भवन्त एव जानन्ति रघूणां च कुलस्थितिम्—उत्तर० ५।२३, रघु० २।४०, ३।४८, ५।१६, प्रायः इसके साथ 'अत्र' या 'तत्र' भी जोड़ दिया जाता है (शब्दों की देखो) कभी कभी 'स' के साथ लगा दिया जाता है यन्मां विधेयविष यैसभवान्निर्युनक्ति—मा० १।९।

भवदीय (वि०) [भवत्+छ] माननीय महोदय का, आपका, तुम्हारा।

भवनम् [भू+ल्युट्] 1. होना, अस्तित्व 2. उत्पत्ति, जन्म 3. आवास, निवास, घर, भवन—अथवा भवन-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्ययात् प्रविष्टोऽस्मि—मृच्छ० ३, मेघ० ३२ 4. स्थान, आवास, आधार जैसा कि 'अभिनयभवनम्' में पंच० १।१९१ 5. इमारत 6. प्रकृति । सम० —उदरम् घर का मध्यवर्ती भाग, **पतिः**, —**स्वामिन्** (पुं०) घर का स्वामी, कुल का पिता ।

भवन्तः—तिः [भू+झच् (झित्) अन्तादेशः] इस समय, वर्तमान काल में ।

भवन्ती [भू+शतृ+ङीप्] गुणवती स्त्री ।

भवानी [भव+ङीप्, आनुक्] शिव की पत्नी या पार्वती का नाम —आलम्बनायकरत्न भवो भवान्याः—कि० ५।२९, कु० ७।८४, मेघ० ३६, ४४, । सम० **गुरुः** हिमालय पर्वत का विशेषण, **पतिः** शिव का विशेषण —अधिवसति सदा यदेन जनैरविदितविभवो भवानीपतिः किं० ५।२१ ।

भवादृश (वि०) (स्त्री० **शी**) **भवादृश** (वि०) **भवादृक्ष** (वि०) (क्षी) (वि०) आपकी भांति, तुम्हारी भांति ।

भविक (वि०) (स्त्री०—**की**) 1. दाता, उपयुक्त, उपयोगी 2. सुन्दर, फलता-फूलता हुआ,—**कम्** सपन्नता, कल्याण ।

भवितव्य (वि०) [भू+तव्यत्] होने वाला, घटित होने वाला, होनहार (बहुधा भाववाच्य में प्रयोग होता है अर्थात् करणकारक को कर्ता के रूप में तथा क्रिया नपुं०, ए० व० में रखकर—त्वया मम सहायेन भवितव्यम् —श० २, गुरुणा कारणेन भवितव्यम् —श० ३), —**व्यम्** अवश्यंभावी; भवितव्यं भवत्येव यद्विधेर्मनसि स्थितम्—सुभा० ।

भवितव्यता [भवितव्य+तल्+टाप्] अनिवार्यता, होनी, प्रारब्ध, भाग्य —भवितव्यता बलवती—श० ६, सर्वं कृपा भगवती भवितव्यतैव— मा० १।२३ ।

भवितृ (वि०) (स्त्री०—**त्री**) [भू+तृच्] होने वाला, भावी— रघु० ६।५२, कु० १।५० ।

भविष्णुः [भवाय इतः सूर्यः, पृषो० साधुः] कवि: (भविनिन्-पुं० भी इसी अर्थ में) ।

भविष्णु [भू+इष्णुच्]=भूष्णु, होने वाला ।

भविष्य (वि०) [भू+लृट्—स्य+शतृ, पृषो० त् लोपः] 1. आगे आने वाला 2. भावी, आसन्न, निकटवर्ती, —**ष्यम्** भावी काल, उत्तर काल । सम०—**कालः** भविष्यत् काल, **ज्ञानम्** आगे होने वाली बातों की जानकारी,—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक का नाम ।

भविष्यत् (वि०) (स्त्री०—**ती**, —**न्ती**) भू+लृट् स्य +शतृ] होने वाला, आगामी समय में होने वाला । सम० —**कालः** उत्तर काल,—**वक्तृ-वादिन्** (वि०) आगे होने वाली घटनाओं को बताने वाला, भविष्यवाणी करने वाला ।

भव्य (वि०) [भू+यत्] 1. विद्यमान, होने वाला, प्रस्तुत रहने वाला 2. आगे होने वाला, आने वाले समय में घटित होने वाला 3. होनहार 4. उपयुक्त, उचित, लायक, योग्य -कि० ११।१३ 5. अच्छा, बढ़िया, उत्तम 6. शुभ, भाग्यवान्, आनन्दप्रद—कु० १।२८, कि० १।१२, १०।५१ 7. मनोहर, प्रिय, सुन्दर 8. सौम्य, शान्त, मृदु 9. सत्य,—**व्या** पार्वती, **-व्यम्** 1. सत्ता 2. भावी काल 3. परिणाम, फल 4. अच्छा फल, समृद्धि —रघु० १७।५३ 5. हड्डी ।

भष् (भ्वा० पर० भषति) 1. भौंकना, गुर्राना, भूंकना 2. गाली देना, झिड़कना, डाटना—फटकारना, धमकाना ।

भषः, भषकः [भष्+अच्, क्वुन् वा] कुत्ता ।

भषणः [भष्+ल्युट्] कुत्ता, **-णम्** कुत्ते का भौंकना, गुर्राना ।

भसत् (पुं०) [भस्+अदि] 1. सूर्य 2. मांस 3. एक प्रकार की वनस्पति 4. समय 5. डोंगी 6. पिछला भाग (स्त्री० और नपु० भी) 7. योनि ।

भसनः [भस्+ल्युट्] मधुमक्खी ।

भसन्तः [भस्+झच् अन्तादेशः] काल, समय ।

भसित (वि०) [भस्+क्त] जल कर भस्म बना हुआ, —**तम्** भस्म भामि० १।८४ ।

भस्त्रका, भस्त्रा, भस्त्रिः (स्त्री०) [भस्+ष्ट्रन्+कन् +टाप्, भस्त्र+टाप्+भस्त्र+इञ्] 1. धौंकनी 2. जल भरने के लिए चमड़े का पात्र, मशक 3. चमड़े का थैला, झोली ।

भस्मकम् [भस्मन्+कन्] 1. सोना या चांदी 2. एक रोग जिस में जो कुछ खाया जाय तुरत पचा जैसा ज्ञात हो (परन्तु वस्तुतः पचता नहीं) और तीव्र भूख लगे रहना 3. आंखों का एक रोग ।

भस्मन् (नपुं०) [भस्+मनिन्] 1. राख (कल्पते) —भूयं चिताभस्मरजो विशुद्धये—कु० ५।७९ 2. विभूति या पवित्र राख (जो शरीर में मली जाती है), (भस्मनि हु राख में आहुति देना अर्थात् व्यर्थ कार्य करना,—**भस्मकृ**, **भस्मीकृ**, जला कर राख करना, भस्मीभू जल कर राख हो जाना —भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः सर्वं०) । सम० **अग्निः** भोजन के जल्दी पच जाने से तीव्र भूख का लगे रहना, —**अवशेष** (वि०) जो केवल राख के रूप में रह जाय—कु० ३।७२,—**आहृयः** कपूर, **-उद्धूलनम्** गुण्ठनम् शरीर पर राख मलना भस्मोद्धूलन भद्रमस्तु भवते —काव्य० १०,—**कारः** धोबी,—**कूटः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राख का ढेर,—गन्धाः,-गन्धिका,-गन्धिनी एक प्रकार का गंधद्रव्य, तूलम्, 1. कुहरा, हिम 2. धूल की बौछार 3. गौवों का समूह, - प्रियः शिव का विशेषण,—रोग एक प्रकार की बीमारी -नु० भस्माग्नि, लेपनम् शरीर पर राख मलना, विधिः राख से किया जाने वाला अनुष्ठान, वेधकः कपूर, स्नानम् राख मल कर निर्मल करना।

भस्मता [भस्मन्+तल्+टाप्] राख का होना।

भस्मसात् (अव्य०) [भस्मन्+सात्] राख की स्थिति में, °कृ जलाकर राख कर देना।

भा (अदा० परo—भाति, भात, प्रेरo भासयति—ते, इच्छाo बिभासति) चमकना, उज्ज्वल होना, चमकदार या चमकीला होना पंद्रहवीं विना सरो भाति सदः खलजनैर्विना, बटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं विषयैर्विना—भामि० ११११६, समलीव्हे भाति जगती जगती—कि० ५।२५, रघु० ३।१८ 2. दिखाई देना, प्रतीत होना - बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्—महाभाष्य 3. होना, विद्यमान होना 4. इलगना, अभि-,चमकना दिवि स्थितिः सूर्य इवाभिभाति—महा०, आ-,1. चमकना, जगमगाना, शानदार प्रतीत होना- नरेन्द्रकन्यास्तमवाप्य सत्पतिं तमोनुदं दक्षसुता इवाबभुः—रघु० ३।३३ 2. दिखाई देना, प्रकट होना रघु० ५।१५, ७०, १३।१४, निस् ,1. चमक उठना, जगमगाना - अक्षबीजवलयेन निर्बभौ रघु० ११।६६ 2. प्रगति करना, उन्नति करना, विचारों में आगे बढ़ना- वेदाढ्यमों हि निर्बभौ मनु० ५।४४, २।१०, प्र-, 1. प्रकट होना 2. चमकना, प्रकाशित होने लगना, प्रभात काल होना ननु प्रभातारजनी शo ४, प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी - रघु० २।३, प्रति-, 1 चमकना, चमकदार या चमकीला प्रकट होना -प्रतिभान्त्यद्य वनाचि केतकानाम् घट० १५ 2. इतराना, बनना 3. दिखाई देना, प्रकट होना—स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे शo २।१, रघु० २।४७, कु० ५।३८, ६।५४ 4. सूझना, मन में आना—नोनरं प्रतिभाति मे, वि-, 1. चमकना —भर्तृ० २।७१ 2. दिखाई देना, प्रकट होना, व्यति-, (आ०) बहुत चमकना, जगमगाना अपि लोकयुगं दृशावपि श्रुतदृष्टा रमणीगुणा अपि. श्रुतिगामितया दमस्वगुन्यतिभाते तिरश्चां धरणीते मैo २।२२, (यहां क्रिया इसी प्रकार 'युगम्', 'दृशौ' और 'गुणाः' के साथ भी बन सकती है तु० पा० १।३।१४)।

भा [भा+अङ्+टाप्] 1. प्रकाश, आभा, कान्ति, सौन्दर्य —तावद्भूरि भारवेभाति यावत्साक्ष्ये न सोदयः—उद्भट 2. छाया, प्रतिबिंब। सम०—ओजः—वः सूर्य, गणः तारापुंज, तारकावली,—निकरः प्रकाशपुंज, किरणों का समूह,—नेमिः सूर्य,—मंडलम् प्रभामंडल तेजोमंडल।

भाकर दे० भास्कर 'भास्' के अन्तर्गत।

भाक्त (वि०) [भक्त—अण्] 1. जो नियमित रूप से दूसरे से भोजन पाता हो, पराश्रित, सेवा के लिए प्रतिश्रुत अर्थात् अनुजीवी 2. भोजन के योग्य 3. घटिया, गौण (विप० मुख्य) 4. गौण अर्थ में प्रयुक्त।

भाक्तिकः [भक्त+ठक्] अनुजीवी, पराश्रयी।

भाक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [भक्षा+अण्] पेट, भोजनभट्ट।

भागः [भज्+घञ्] 1. खण्ड, अंश, हिस्सा, प्रभाग, टुकड़ा जैसा कि भागहर, भागशः आदि में 2. नियंत्रण, वितरण, विभाजन 3. भाग्य, किस्मत निर्माणभागः परिणतः उत्तर० ४ 4. किसी पूर्ण का एक खण्ड, भिन्न 5. किसी भिन्न का अंश 6. चौथाई, चतुर्थ भाग 7. किसी वृत्त की परिधि का ३६० वां भाग या अंश 8. राशिचक्र का तीसवां अंश 9. लक्ष्य 10. कक्ष, अन्तराल, जगह, क्षेत्र, स्थान रघु० १८।४७। सम० अर्ह (वि०) दाय या पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी, कल्पना हिस्सों का विभाजन, -जातिः (स्त्री०) (गणि० में) भिन्न राशियों के घटा कर हर समान करना, -धेयम् 1. हिस्सा, खण्ड, अंश नीवारभागधेयीकृतेर्मेगैः रघु० १।५० 2. किस्मत, भाग्य, प्रारब्ध 3. अच्छी किस्मत, सौभाग्य - तद्भूगधेयं परमं पशूनां भर्तुः २।१२ 4 सम्पत्ति 5. आनन्द, (थः) 1. कर -शo २ 2. उत्तराधिकारी, -भाज् (वि०) स्वार्थपर, हिस्सेदार, साझीदार, भुज् (पुं०) राजा, प्रभु,- लक्षणा लक्षणा वाच्यशक्ति का एक भेद या शब्द का गौण प्रयोग जिसमें शब्द अपने अर्थ को अंशतः रखता है तथा अंशतः खो देता है, 'जहदजहल्लक्षणा' भी इसे ही कहते हैं उदा० सोऽयं देवदत्तः, हरः 1. सहउत्तराधिकारी 2. (गणि० में) भाग या तक्सीम, हारः (गणि० में) भाग।

भागवत (वि०) (स्त्री० ती) [भगवत् भगवत्या वा इदं सोऽस्य देवता वा अण्] 1. विष्णु से संबंध रखने वाला या विष्णु की पूजा करने वाला 2. देवता संबंधी 3. पवित्र, दिव्य, पुण्यशील, तः विष्णु या कृष्ण का अनुचर अथवा भक्त,—तम् अठारह पुराणों में से एक।

भागशस् (अव्य०) [भाग—शस्] 1. खण्डों में या अंशों में, खण्ड खण्ड करके 2. हिस्से के अनुसार।

भागिक (वि०) [भाग—ठक्] 1. खण्ड सम्बन्धी 2. खण्ड बनाने वाला 3. भिन्न सम्बन्धी 4. भाग वहन करने वाला (भागिकं शतम्) 'सौ में से एक भाग अर्थात् एक प्रतिशत', इस प्रकार भागिक विंशतिः आदि)।

भागिन् (वि०) [भज्+घिनुण्] 1. हिस्से या भागों से युक्त 2. हिस्सा रखने वाला, हिस्सेदार 3. हिस्सा लेने वाला, भाग लेने वाला, साथी यथा दुःख°

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. सम्बन्धित, ग्रस्त 5. अधिकृतधारी, स्वामी— मनु० ९।५३ 6. हिस्से का अधिकारी मनु० ९।१३५, याज्ञ० २।१२५ 7. भाग्यवान्, किस्मत वाला 8. घटिया, गौण ।

भागिनेयः [भगिनी + ढक्] बहन का पुत्र, भानजा—**यी** भानजी ।

भागीरथी [भगीरथ+अण् + ङीप्] 1. गंगा नदी का नामान्तर - भागीरथी निर्झरशीकराणाम् कु० १।१५ 2. गंगा की तीन मुख्य शाखाओं में एक ।

भाग्यम् [भज्-ष्यत्] 1. किस्मत, प्रारब्ध, तकदीर, सौभाग्य या दैव - स्त्रियाश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः - सुभा० (बहुधा ब० व० में) श० ५।२० 2. अच्छा भाग्य या किस्मत २।१० ३।१३ 3. समृद्धि, सम्पन्नता—भाग्येष्वनुत्सेकिनी श० ४।१७ 4. आनन्द, कल्याण । समः **आपत्ति** (वि०) भाग्य पर आश्रित-भाग्यायत्तमतः परम् - श० ४।१६, उदयः सौभाग्य का प्रभात, भाग्यशाली घटना, क्रमः भाग्य की चाल, किस्मत का फेर -भाव्य क्रमेण हि यतन्ति भवन्ति शान्ति मृच्छ० १।१३, - **योगः** भाग्य की वेला, किस्मत का मेल,- **विप्लवः** बदी किस्मत, दुर्भाग्य-रघु० ८।४७, **वशात्** (अव्य०) विधि की इच्छा से, भाग्य से, किस्मत से, भाग्यवश ।

भाग्यवत् (वि०) [भाग्य + मतुप्] 1. भाग्यशाली, सौभाग्यसम्पन्न, आनन्दित 2. समृद्धिशाली ।

भाङ्ग (वि०) (स्त्री० गी) [भङ्गा + अण्] पटसन से निर्मित, सन का बना हुआ ।

भाङ्गकः [भाङ्ग + कन्] फटा पुराना कपड़ा, जीर्ण शीर्ण, चिथड़ा ।

भाङ्गीनम् [भङ्गाया भवनं क्षेत्रम् खञ्] सन या पटसन का खेत ।

भाज् (चुरा० उभ०) बाँटना वितरित करना, दे० 'भज्' प्रेर० ।

भाज (वि०) [भाज् + क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) 1. हिस्सेदार, साझी, भागी 2. रखने वाला, उपभोग करने वाला, अधिकार करने वाला, प्राप्त करने वाला सुखं, रिक्थं 3. अधिकारी 4. भावुक, अनुभव करने वाला, सचेतन 5. अनुरक्त 6. रहने वाला, आवासी, निवास करने वाला यथा 'कुहरभाज्' 7. जाने वाला, सहारा लेने वाला, खोजने वाला 8. पूजा करने वाला 9. भाग्य में बदा हुआ 10. अवश्यकरणीय, कर्तव्य भट्टि० २।२१ ।

भाजकः [भाज्+ण्वुल्] 1. बांटने वाला 2. (गणि० में) वह अंक जिससे भाग किया जाय ।

भाजनम् [भाज्यतेऽनेन भाज्+ल्युट्] 1. हिस्से बनाना, बाटना 2. (अंक में) भाग 3. पात्र, बर्तन, प्याला, थाली पुष्पभाजनम्—श० ४, रघु० ५।२२ 4. (आल०) आधार, ग्रहण करने वाला, आश्रय स श्रियो भाजनं नरः पंच० १।४३, कल्याणानां त्वमसि महतां भाजनं विश्वमूर्ते सा० १।२, उत्तर० ३।१५, मालवि० ५।८ 5 योग्य या पात्र, योग्य पदार्थ या व्यक्ति—भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम् - का० १०८ 6. प्रतिभियान 7. ६४ पलों की माप ।

भाजितम् [भाज्+क्त] हिस्सा, अंश ।

भाजी [भाज्+घञ्+ङीप्] चावल, भात का माड़, दलिया ।

भाज्यम् [भाज् + ण्यत्] 1. अंश, हिस्सा, दाय, 3. (अंक में) लाभांश ।

भाटम्, भाटकम् [भट्+घञ्, ण्वुल् वा] मजदूरी, भाड़ा, किराया ।

भाटिः (स्त्री०) [भट् + णिच् + इञ्] 1. मजदूरी, भाड़ा, 2. बेड़ा की कमाई ।

भाट्टः [भट्ट - अण्] भट्ट का अनुयायी, कुमारिल भट्ट द्वारा स्थापित मीमांसादर्शन के सिद्धांतों का अनुयायी ।

भाणः [भण् + घञ्] नाट्यकाव्य का एक भेद; इसमें केवल रंगमंच पर एक ही पात्र होता है, जो अन्तर्वाणियों के स्थान को आकाशभाषित का यथेष्ट प्रयोग करके पूरा कर देता है **भाणः** स्वाद्धर्तचरितो भाषानाव्याहारात्मकः, एकाङ्क एक एवात्र निपुणः पण्डितो विटः सा० द० ५१३, आगे के श्लोक भी देखिये, उदा० वसन्तिलकः, मुकुंदानन्द, लीलामधुकर, आदि ।

भाणकः [भण् ण्वुल्] उद्घोषक, घोषणा करने वाला ।

भाण्डम् [भाण्ड् + अच्, भण् + ड स्वार्थे अण् वा—ताश०] 1. पात्र, बर्तन, बासन (थाली, कटोरी गिलास आदि) नीलभाण्डम् 'नील रखने का मटका' इसी प्रकार 'क्षीरभाण्डम्' 'दूध की हांडी' सुरा', मद्य' आदि, 2. संदूक, ट्रंक, पेटी, संदूकची क्षुरभाण्ड —पंच० १ 3. औजार या उपकरण, यंत्र 4. संगीत-उपकरण 5. सामान, बर्तन, माल, पण्यसामग्री, दुकानदार की वाणिज्यवस्तु मधुरागाभीनि भाण्डानि—पंच० १ 6. माल की गाँठ 7. (आलं०) कोई भी मूल्यवान् संपत्ति, निधि शान्तं वा रघुनन्दने तदुभयं तत्पुत्र-भाण्ड हि मे उत्तर० ४।२४ 8. नदी का तल 9. घोड़े की जीन या साज 10. भंडैती, मसखरापन,— **भक्ताः** (पुं०,ब०व०) बर्तन, पण्यसामग्री । सम० अ(आ)गार, —**रम्** भंडारघर, सामान का कोठा (शा० जहाँ घर का सामान और बर्तन आदि रक्खे जाते हैं) भांडागाराध्यकृत विदुषां सा स्वयं भोगभाजि--विक्रमांक० १८।४५ 2. कोष, ज्ञान 3. संग्रह, गोदाम, भंडार, —**पतिः** सौदागर,—**पुटः** नाई,—**प्रतिभाण्डकम्** विनिमय, सामान की अदलाबदली की संगणना,—**भरकः** बर्तन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को अन्तर्वस्तु, -मूल्यम् बर्तनों के रूप में पूंजी,—शाला : गोदाम, भण्डार ।

भाण्डकः,-कम् [भाण्ड+कन्] छोटा बर्तन, कटोरा,-कम् माल, पण्यसामग्री, बर्तन ।

भाण्डारम् [भाण्ड + ऋ+अण्] गोदाम, भण्डार ।

भाण्डारिन् (पु०) [भाण्डार+इनि] गोदाम या भंडार का रखवाला ।

भाण्डिः (स्त्री०) [भण्ड्+इन् पृषो० साधुः] उस्तरे का घर, पेटी । सम०- **वाहः** नाई, -**शाला** नाई की दुकान ।

भाण्डिकः,-लः [भाण्ड+ठन्, भाण्डि+लच्] नाई ।

भाण्डिका [भाण्डि+कन्+टाप्] उपकरण, औजार, यन्त्र ।

भाण्डिनी [भाण्ड + इनि +ङीप्] पेटी, टोकरी ।

भाण्डीरः [भण्ड् +ईरच्, पृषो० साधुः] बड़ का या गूलर का वृक्ष ।

भात [भू० क० कृ०] [भा+क्त] चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, चमकीला,--तः उषःकाल, प्रभात, प्रातःकाल ।

भातिः (स्त्री०) [भा+क्तिन्] 1. प्रकाश, चमक, कान्ति, आभा 2. प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान या प्रतीति ।

भानुः [भा+नुन्] सूर्य ।

भाद्रः, भाद्रपदः [भाद्रपदी या पौर्णमासी अस्मिन् मासे भादौ (भाद्रपदी) : अण्] चान्द्रवर्ष के एक मास का नाम (अगस्त और सितम्बर के मास में आने वाला), —दाः (स्त्री०-ह० व०) पच्चीसवीं और छब्बीसवीं नक्षत्र (पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा) ।

भाद्रपदी, भाद्री [भाद्रपद +ङीप्, भद्रा+अण्+ङीप्] भाद्रपद मास की पूर्णिमा ।

भाद्रमातुरः [भद्रमातुरपत्यम् --भद्रमातृ+अण्, उकारादेशः] सती साध्वी माता का पुत्र ।

भानम् [भा भावे ल्युट्] 1. प्रकट होना, दृश्यमान 2. प्रकाश, कान्ति 3. प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान ।

भानुः [भा+नु] 1. प्रकाश, कान्ति, चमक 2. प्रकाशकिरण-मण्डितानिलदिक्प्रान्ताश्चण्डांशोः पान्तु भानवः —भामि० १।१२९, शि० २।५३, मनु० ८।१३२ 3. सूर्य, -भानुः सकुचुवतुरंग एव-- शि० ५।४, भीमभानौ निदाघे--भामि० १।३० 4. सौन्दर्य 5. दिन 6. राजा, राजकुमार, प्रभु 7. शिव का विशेषण —स्त्री० सुन्दर स्त्री । सम०--केश (स) रः सूर्य, -जः शनिग्रह —दिनम्, -वारः रविवार, इतवार ।

भानुमत् (वि०) [भानु+मतुप्] 1. ज्योतिर्मान्, चमकीला, जगमग करता हुआ 2. सुन्दर, मनोहर पु० सूर्य कु० ३।६५, रघु० ६।३६ ऋतु० ५।२, ती दुर्योधन की पत्नी का नाम ।

भामिनी [भामु+णिनि+ङीप्] 1. सुन्दर तरुणी, कामिनी --रघु० ८।२८ 2. कामुकी स्त्री (बहुत प्यार के कारण ऐसी स्त्री के लिए 'चंडी' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है)—उपचीयते एव कापि शोभा परितो भामिनि ते मुखस्य निरवम्- भामि० २।१ ।

भारः [भृ+घञ्] 1. बोझ, वजन, तोल (आलं० से भी) कुचभारानमिता न योषितः भर्तृ० ३।२७, इसी प्रकार—श्रोणीभार--मेघ० ८२, भारः कायो जीवितं वल्कलैश्च --मा० ९।३७, 2. (आक्रमण आदि का) धक्का, (युद्ध आदि का) अत्यन्त पिचपिच भाग उत्तर० ५।५ 3. अतिरेक, मार या उड़ान -रघु० १४।६८ 4. श्रम, मेहनत, आयास 5. राशि, बड़ी मात्रा -कर्ज०, जटा० 6. २००० पल सोने के तोल के बराबर 7. बोझा होने के लिए जुआ । सम०—**आक्रान्त** (वि०) बोझ से अत्यन्त दबा हुआ, अधिक बोझा लिए हुए, - **उद्वहः** कुली, बोझा ढोने वाला, **उपजीवनम्** बोझा ढोकर जीवन-यापन करना, कुली का जीवन,—**यष्टिः** बोझ उठाने की लकड़ी,—**वाह** (वि०) (स्त्री०-**वाही**), बोझा ढोने वाला, **वाहः** बोझा ले जाने वाला, कुली, —**वाहनः** बोझा ढोने वाला जानवर (नम्) गाड़ी, मालगाड़ी का डिब्बा, **वाहिकः** कुली, - **सह** (वि०) जो अधिक बोझा उठा सके, (अतः) बहुत मजबूत, बलवान्, हरः, हारः बोझा ढोने वाला, कुली, **हारिन्** (पुं०) कृष्ण का विशेषण ।

भारण्डः [?] एक प्रकार का काल्पनिक पक्षी जिसका वर्णन केवल बौद्धनियों में पाया जाता है (भारुंड' भी) पंच० ५।१०२ ।

भारत (वि०) (स्त्री० ती) [भरत+अण्] भरत से संबन्ध रखने वाला या भरत की सन्तान,—तः 1. भरत की सन्तान 2. भारतवर्ष या हिन्दुस्तान का निवासी 3. अभिनेता, **तम्** 1. भरत का देश, भारत शि० १४।५ 2. संस्कृत में लिखा हुआ एक अत्यन्त प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें अनन्त उपाख्यानों के साथ भरतवंशी राजाओं का इतिहास पाया जाता है (व्यास या कृष्णद्वैपायन इसके रचयिता माने जाते हैं परन्तु वह जिस विशाल रूप में आज मिलता है निश्चित रूप से अनेक व्यक्तियों की रचना है) **श्रवणाञ्जलिपुटेषु यैः विरचितावतारा भारताख्यममृतं यः, तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वंदे—वेणी० १।४, व्यासगिरा निर्यासं सारं विश्वस्य भारतं वन्दे, भूषणतयैव संज्ञा यदकृत्रिमा भारती वहति आर्या० ३१,—ती** वाणी, वाक्य, वचन, वाणी-प्रवाह भारतीनिधोषः --उत्तर० २, तमर्थमिव भारतीसुतवा योक्तुमर्हसि--कु० ६।७९ नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति --काव्य० १ 2. वाणी की देवता, सरस्वती 3. विशेष प्रकार की शैली --भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नटाश्रयः—सा० द० २।८५ 4. लवा, बटेर ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारद्वाजः [भरद्वाजस्यापत्यम् –अण्] 1. कौरव पांडवों की सैनिक शिक्षा के आचार्य गुरु द्रोण 2. अगस्त्य का नामान्तर 3. मङ्गलग्रह 4. चातक पक्षी,- जम् हड्डी ।

भारवः [भारं वाति वा+क] धनुष की डोरी ।

भारविः [?] किरातार्जुनीय नामक संस्कृतकाव्य के रचयिता, तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः, उदिते च पुनर्माघे भारवेर्भा स्वेरिव, भारवेरर्थगौरवम् - उद्भट ।

भारिः [इभस्य अरिः पृषो० साधु:] सिंह ।

भारिक, भारिन् (वि०) [भार+ठक्, इनि वा] भारी –पुं० बोझा ढोने वाला, कुली ।

भार्गः [भर्ग+अण्] भर्ग देश का राजा ।

भार्गवः [भृगोरपत्यम् अण्] 1. शुक्राचार्य, शुक्रग्रह का शास्ता और असुरों का आचार्य 2. परशुराम, दे० परशुराम 3. शिव का विशेषण 4. धनुर्धर 5. हाथी । **सम०** प्रियः हीरा ।

भार्गवी [भार्गव+ङीप्] 1. दुर्गा 2. लक्ष्मी का विशेषण ।

भार्यः [भृ+ण्यत्] सेवक, पराश्रयी (भरण-पोषण किये जाने के योग्य) ।

भार्या [भर्तुं योग्या+भार्य+टाप्] 1. धर्मपत्नी –सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती, सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता हि० १।१५६ 2. मादा जानवर । **सम०**—आह (वि०) अपनी पत्नी के वेश्यागमन से जीवन निर्वाह करने वाला,—ऊढ (वि०) विवाहित (पुरुष) –भार्योढं तमवज्ञाय—भट्टि० ४।१५, —जितः पत्नी से प्रभावित पति, जोरू का गुलाम ।

भार्याभूः [भार्या+भू+उण्] 1. एक प्रकार का मृग 2. उस बालक का पिता जो अन्य पुरुष की पत्नी से उत्पन्न हो ।

भालम् [भा+कलच्] मस्तक, ललाट –यद्भाव्यं निजभाल-पट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनम् भर्तृ० २।४९, (स्मरस्य) वपुः सद्यो भालानलअसितजालास्पदमभूत्–भामि० १।८४ 2. प्रकाश 3. अंधकार । **सम०** अक्षः 1. भाग्यवान् पुरुष जिसके मस्तक पर भाग्य रेखा विराजमान है 2. शिव का विशेषण 3. आरा 4. कबूतर, चन्द्रः 1. शिव का विशेषण 2. गणेश का विशेषण,- दर्शनम् सिंदूर, दर्शिन् (वि०) मस्तक या ललाट को देखने वाला अर्थात् वह नौकर जो अपने स्वामी की इच्छाओं के प्रति सावधान रहता है, - दृश् (पुं०) लोचनः शिव का विशेषण, पट्टः,—ट्टम् मस्तक, ललाट ।

भालुः [भू+उण्, वृद्धिः, रस्य लः] सूर्य ।

भालुक, भालूक, भाल्लुक, भाल्लूक [भल्ल+उक (ऊक) +अण्, भल्लु (ल्लू) +क +अण्] रीछ, भालू ।

भावः [भू भावे घञ्] 1. होना, सत्ता, अस्तित्व नासतो विद्यते भावः भग० २।१६ 2. होना, घटित होना, घटना 3. स्थिति, अवस्था, होने की अवस्था लताभावेन परिणतमस्या रूपम् विक्रम० ४; कातरभावः, विवर्णभावः आदि 4. रीति, ढंग 5. दर्जा, स्थिति, पद, हैसियत –देवीभाव गमिता काव्य० १०, इसी प्रकार प्रेष्यभावम्, किंकरभावम् 6. (क) यथार्थ दशा या स्थिति, यथार्थता, वास्तविकता भग० १०।८ (ख) निष्कपटता, भक्ति – त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः –रघु० ८।५२, ३।२६ 7. सहज गुण, चित्तवृत्ति, प्रकृति, स्वभाव उत्तर० ६।१४ 8. झुकाव या मनोवृत्ति, भावना, विचार, मत, कल्पना—पंच० ३।४३, मनु० ८।२५ ४।६५ 9. भावना, संवेग, रस या मनोभाव एको भावः पंच० ३।६६, कु० ६।९५, (नाट्य विज्ञान या काव्यरचना में भाव बहुधा दो प्रकार के होते हैं—प्रधान या स्थायीभाव, तथा गौण या व्यभिचारिभाव । स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं, तदनुसार अपने २ स्थायिभाव से युक्त रस भी आठ या नौ हैं । व्यभिचारिभाव गिनती में तेंतीस या तीसेक हैं तथा स्थायिभावों का विकास करने एवं संवर्धन करने में सहायक होते हैं, इनके कुछ भेदों की परिभाषा तथा गिनती के लिए—रस० का प्रथम आनन या काव्य० का चौथा समुल्लास देखो) 10. प्रेम, स्नेह, अनुराग द्वन्द्वानि भावं क्रियया विवव्रुः कु० ३।३५, रघु० ६।३६ 11. अभिप्राय, प्रयोजन, सारांश, आशय; इति भावः (प्रायः भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त) 12. अर्थ, आशय, तात्पर्य, व्यंजना मा० १।२५ 13. प्रस्ताव, संकल्प 14. हृदय, आत्मा, मन–तयोर्विवृतभावत्वात्—मा० १।१२, भग० १८।१६ 15. विद्यमान पदार्थ, वस्तु, चीज, तत्त्वार्थ,—जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः मा० १।१७, ३६, रघु० ३।४१, उत्तर० ३।२२ 16. प्राणी, जीवधारी जन्तु 17. भावमय मनन, चिन्तन (=भावना) 18. आचरण, गतिविधि, हावभाव 19. प्रीति द्योतक हावभाव या रस की अभिव्यक्ति, प्रेम संकेत –श० २।१ 20. जन्म, 21. संसार, विश्व 22. गर्भाशय 23. इच्छाशक्ति 24. अतिमानव शक्ति 25. उपदेश, अनुदेश 26. (नाटकों में) विद्वान् और सम्माननीय व्यक्ति, योग्य पुरुष (संबोधनशब्द)–भाव अयमस्मि विक्रम० १, तां खलु भावेन तर्कये सर्वे वर्यां: पाटिताः–मा० १ 27. (व्या० में) भाववाचक संज्ञा का आशय, भावात्मक विचार –भावे क्तः 28. भावबाध्य 29. (ज्योति०) जन्मकुंडली के स्थान 30. नक्षत्र । **सम०**—अनुग (वि०) स्वाभाविक, (गा) छाया,—अन्तरम् भिन्न स्थिति –अर्थः 1. स्पष्ट अर्थ या ध्वनि (किसी शब्द या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पदोच्चय की) 2. विषय–सामग्री, · आकूतम् मन के (गुप्त) विचार अमर ४, आत्मक (वि०) वास्तविक, यथार्थ,—आभासः भावना का अनुकरण, बनावटी या मिथ्या संवेग,– आलीनः छाया, एकरस (वि०) केवल (निष्कपट) प्रेम के रस से प्रभावित कु० ५।८३.—गम्भीरम् (अव्य०) 1. हृदय से, हृदयतल से 2. गंभीरता के साथ, संजीदगी से, गम्य (वि०) मन से जाना हुआ—मेघ० ८५, ग्राहिन् (वि०) 1. आशय को समझने वाला 2. मनोभाव को कदर करने वाला,· ज्ञः कामदेव,—ज्ञ विद् (वि०) हृदय को जानने वाला, दर्शिन् (वि०) दे० 'भावदर्शिन्', —बन्धन (वि०) हृदय को मुग्ध करने वाला या आँखों वाला, हृदयों की कड़ी को जोड़ने वाला रघु० ३।२४, बोधक (वि०) किसी भी भावना को प्रकट करने वाला, भिश्रः योग्य व्यक्ति, सज्जन पुरुष (नाटकों में प्रयुक्त), रूप (वि०) वास्तविक, यथार्थ, —वचनम् भावात्मक विचार को प्रकट करने वाला, क्रिया की भावाशयता को वहन करने वाला,- वाचकम् भाववाचक संज्ञा,—शबलत्वम् नाना प्रकार के संवेगों और भावों का मिश्रण (भावानां बाध्यबाधकभाव-मापन्नानामुदासीनानां वा व्यामिश्रणम्–रस० तदुदाहरण दे०),· शून्य (वि०) यथार्थ प्रेम से रहित, —सन्धिः दो संवेगों का मेल या सह-अस्तित्व–(भाव-सन्धिरन्योन्यानभिभूतयोरन्योन्याभिभावनगोय्ययोः सामानाधिकरण्यम्–रस० दे० तदुदाहरण), —सम्बाहित (वि०) भावमनस्क, भक्त,—सर्गः मानसिक सृष्टि अर्थात् मानव की मनःशक्तियों की सृष्टि और उनका प्रभाव (विप० भौतिक सर्ग या भौतिक सृष्टि), —स्थ (वि०) आसक्त, अनुरक्त, कु० ५।५८,–स्थिर (वि०) मन में दृढ़तापूर्वक जमा हुआ· शा० ५।२, —स्निग्ध (वि०) स्नेहशिक्त, सत्यनिष्ठा पूर्वक आसक्त—पंच० १।२८५।

भावक (वि०) [भू+णिच्+ण्वुल्] 1. उत्पादक, प्रकाशक 2. कल्पनाकारक 3. उत्प्रेक्षक, कल्पना करने वाला 4. उदात्त और सुन्दर भावनाओं के प्रति रुचि रखने वाला, काव्यात्मकरुचि रखने वाला,—कः 1. भावना मनोभाव 2. मनोभावों (विशेष कर प्रेम के) को बाहर प्रकट करना।

भावन (वि०) (स्त्री० –नी) [भू+णिच्+ल्युट्] उत्पादक—दे० ऊ० भावक,· नः 1. निमित्तकारण 2. सृष्टिकर्ता—मा० ९।४ 3. शिव का विशेषण–नम् ना 1. पैदा करना, प्रकट करना 2. किसी के हितों को अनुप्राणित करना 3. संप्रत्यय, कल्पना, उत्प्रेक्षा, विचार, धारणा –मधुरिपुरहमिति भावनशीला–गीत० ६. या भावनया यमि लीना–४, पंच० ३।१६२ 4. भक्ति भावना, निष्ठा पंच० ५।१०५ 5 मनन, अनुष्ठान, भावात्मक चिन्तन 6. कल्पना, ध्यान–कल्पना 7. निरीक्षण, गवेषणा 8. निश्चयन, निर्धारण–याज्ञ० २।१४९ 9. याद करना, प्रत्यास्मरण 10. प्रत्यक्ष ज्ञान, संज्ञान 11. (तर्क० में) प्रत्यक्ष ज्ञान से उत्पन्न स्मृति का कारण–दे० त० में 'भावना' और 'स्मृति' 12. प्रमाण प्रदर्शन, युक्ति 13. शिक्षा करना, तरावीर करना, किसी सूखे चूर्ण को रस में भिगोना 14. सुवासित करना, फूलों और सुगंधित द्रव्यों से गंजाना।

भावाटः [भावं भावेन वा अटति अट् + अण्, अच् वा] 1. संकेत, आवेग, मनोभाव 2. प्रेम की भावना का बीज सकेत 3. पुण्यात्मा या पुण्यशील व्यक्ति 4. रसिक व्यक्ति 5. अभिनेता 6. गजारोह, वेशभूषा।

भाविक (वि०) (स्त्री० की) 1. प्राकृतिक, वास्तविक, अन्तर्हित, अन्तर्जात 2. भावुकतापूर्ण, भावुकता या भावना से व्याप्त 3. भावी समय,—कम् 1. उत्कृष्ट प्रेम से पूर्ण नाटक 2. (अलं० में) एक अलंकार का नाम जिसमें भूत और भविष्यत् का इस विशदता से वर्णन किया गया हो कि वस्तुतः वर्तमान प्रतीत हो। काव्य० की दी हुई परिभाषा—प्रत्यक्षा इव यद्भूतार्थाः क्रियन्ते भूतभाविनः, तद्भूतभविकम् · काव्य० १०।

भावित (भू० क० कृ०) [भू+णिच् + क्त] 1. पैदा किया गया, उत्पादित 2. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, निदर्शित —भावितविपर्वनर्विकिपः दश० 3. लालन-पालन किया गया, पाला पोसा गया 4. संस्कृत किया गया, कल्पना किया गया, कल्पित, कल्पना में उत्पन्न 5. चिन्तित, मनन किया गया 6. बसाया गया, रूपान्तरित किया गया 7. मनन द्वारा पावन किया गया—दे० भावितात्मन् 8. सिद्ध, स्थापित 9. व्याप्त, भरा हुआ, संतृप्त, प्रेरित 10. डुबाया गया, सराबोर, मग्न 11. सुवासित, सुगंधित 12. मिश्रित,–तम् गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल। सम० आत्मन्– बुद्धि (वि०) 1. जिसका आत्मा परमात्म-चिन्तन से पवित्र हो गया है, जिसने परमात्मा को प्रत्यक्ष कर लिया है 2. विशुद्ध, भक्त, पुण्यशील–पंच० ३।९६ 3. चिन्तनशील, मननशील रघु० १।७४ 4. व्यस्त, व्यापृत · शि० १२।३८।

भावितकम् [भावित–कन्] गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल, तथ्यविवरण।

भाविप्रभम् [भू+णि+वन्] तीन लोक (स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताल लोक)।

भाविन् (वि०) [भू+इनि, णिच्] 1. होनहार, होने वाला,–भूत्यभावि –रघु० ११।४९ 2. होने वाला, भविष्य में घटने वाला, आगे आने वाला–लोकेन भावी पितुरेव तुल्यः—रघु० १८।३८, मेघ० ४१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. भविष्य - समतीतं च भवच्च भावि च रघु० ८।७८. प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः -काव्य० १०, नै० २।११ 4. होने के योग्य 5. अवश्यभावी, भवितव्यता, प्राक्तनिकता या पूर्वनिर्दिष्ट यदभावि न तद्भावि भाविचेन्न तदन्यथा हि० १ 6. उत्कृष्ट, सुन्दर, भव्य, - नौ 1. सुन्दर स्त्री 2. उत्तम या साध्वी महिला- कु० ५।३८ 3. स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

भावुक (वि०) [भू+उकञ्] 1. होने वाला, घटने वाला 2. होनहार 3. समृद्ध, प्रसन्न 4. शुभ, मंगलमय 5. काव्य में रुचि रखने वाला, गुणग्राही, -क: बहुरूपी (बहुधा नाटकों में प्रयुक्त),—कम् 1. प्रसन्नता, कल्याण, समृद्धि स एतु वो दुरध्यवसो भावुकानां परंपराम् काव्य० ७ ('अप्रयोक्तृत्व' नाम काव्य रचना के दोष का उदाहरण 2. प्रेम और प्रणयोन्माद से पूर्ण भाषा।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1. होने वाला, घटित होने वाला, प्रायः 'भावुकजनों की भांति भावरूप में प्रयुक्त कि नैर्भाव्यं गम मुद्दिवसैः भर्तृ० ३।४ 2. भविष्य 3. अनुष्ठेय या जो पूरा किया जाय 4. सोचे जाने या कल्पना किये जाने योग्य 5. सिद्ध या प्रदर्शित किये जाने योग्य 6. निर्धारण या गवेषणा किये जाने योग्य, -व्यम् 1. प्रारब्ध, अवश्यभावी 2. भवितव्यता।

भाष् (भ्वा० आ० भाषते, भाषित) 1. कहना, बोलना, उच्चारण करना- स्वयंकर्मोचितं प्रति सखं भाषितम् -कु० ५।८१, बहुधा द्विकर्मक,—भीता प्रियामित्य वचो बभाषे—रघु० ७।६६, अलण्डलः कामसिदं बभाषे -कु० ३।१९, भट्टि० ९।१२२ 2. बोलना, संबोधित करना किंचिदिहस्यार्यपति बभाषे रघु० २।४६, ३।५१ 3. बोलना, घोषणा करना, प्रकथन करना—क्षितिपालमवेक्ष्य प्रोद्यतं तमेवार्थमभाषतेव - रघु० २।५१ 4. बोलना, बातें करना 5. नाम लेना, पुकारना 6. वर्णन करना, -अनु 1. बोलना, कहना 2. समाचार देना, घोषणा करना -मनु० ११।२२८, अप-—झिड़कना, बुरा भला कहना, भर्त्सना करना, निन्दा करना, बुराई करना—अहमणुमात्रं न किंचिदपभाषे —भामि० ४।२७. न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक् —कु० ५।८३, अभि—, 1. बोलना, भाषण देना—मनु० २।१२८ 2. बोलना, कहना 3. प्रकथन करना, घोषणा करना, कहना, समाचार देना 4. वर्णन करना, आ—, 1. बोलना, भाषण देना,— वैशम्पायनश्चखद्भपीडितभाषाभ् का० ११७ 2. कहना, बोलना,—आभाषि रामेण वचः फनीयान् भट्टि० ३।५१, परि ,परिपाटी स्थापित करना, औपचारिक रूप से बोलना, प्र -,कहना, बोलना---स्थितधीः किं प्रभाषेत—भग० २।५४, प्रति ,1. बदले में कहना, उत्तर देना—भट्टि० ५।३९ 2. कहना, वर्णन करना 3. एक के बाद बोलना, सुनकर बोलना 4. नाम लेना, पुकारना - कामिनि तामपगतीह प्रतिभाषन्ते महाकवयः श्रुत० ६, वि -, ऐच्छिक नियम के रूप में निर्धारित करना, सम--, मिलकर बोलना, बातचीत करना- मनु० ८।५५।

भाषणम् [भाष्+ल्युट्] 1. बोलना, बातें करना, कहना 2. वक्तृता, शब्द, बात 3. कृपापूर्ण शब्द।

भाषा [भाष्+अङ+टाप्] 1. वक्तृता, बात यथा 'चारुभाषः' में 2. बोली, जबान -मनु० ८।१६४ 3. सामान्य या देहाती बोली (क) बोली जाने वाली संस्कृत भाषा (विप० छंदस् या वेद)-विभाषा भाषायाम्- पा० ६।१।१८१ (ख) कोई प्राकृत बोली (विप० संस्कृत) मनु० ८।३३२ 4. परिभाषा, वर्णन -स्थितप्रज्ञस्य का भाषा-भग० २।५४ 5. सरस्वती का विशेषण, वाणी की देवी 6. (विधि में) अभियोग की चार अवस्थाओं में से पहली, शिकायत, आरोप, दोषारोपण। सम० - अन्तरम् 1. अन्य वाणी या बोली 2. अनुवाद,- पादः आरोप, शिकायत--दे० 'भाषा' 6 ऊपर, समः एक अलंकार का नाम जिसमें शब्दक्रम का न्यास इस प्रकार किया जाता है कि चाहे आप उसे संस्कृत समझें और चाहे प्राकृत (कोई न कोई भेद)-उदा०—मञ्जुलमणिमञ्जीरे कलगम्भीरे विहारसरसीतीरे, विरसासि केलिकीरे किमालि धीरे च मन्यसारसमीरे सा० द० ६४२, (एक श्लोक संस्कृतप्राकृतशौरसेनीप्राच्यावन्तीनागरापभ्रंशोच्चकविध एव), किं त्वं भणासि विच्छेदारुणायासकारिणि, कामं कुरु वरारोहे देहि मे परिरंभणम्— मा० ६।११, (यह संस्कृत या शौरसेनी में है) इसी प्रकार ६।१०।

भाषिका [भाषा+कन्+टाप्, ह्रस्वः, इत्वम्] वक्तृता, भाषा, बोली।

भाषित [भू० क० कृ०) [भाष्+क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, उच्चारण किया हुआ, तम् भाषण, उच्चारण, शब्द, बोली—मनु० ८।२६। सम०—पुरस्कृत =उक्तपुरस्कृत।

भाष्यम् [भाष्+ण्यत्] 1. बोलना, बातें करना 2. सामान्य या देहाती भाषा की कोई रचना 3. व्याख्या, वृत्ति, टीका जैसा कि 'वेदभाष्य' में 4. विशेषकर सूत्रों की वृत्ति जिसमें शब्दशः व्याख्या और टिप्पण होते हैं (सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः, स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः)-संक्षिप्तस्यापतोऽर्थस्य वाक्यसूत्रार्थवर्णनैः, सुविस्तरतरा वाक्यो भाष्यभूता भवन्तु मे—शि० २।२४ 5. पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि का महाभाष्य। सम०—कारः—कारः—कृत्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(पुं०) 1. भाष्यकार, टीकाकार 2. पतंजलि ।

भास् (स्वा० आ० भास्ते, भासित) 1. चमकना, जगमगाना, जगमग करना -तावत्कामनुगातपत्रसुषमं बिम्बं बभासे विधोः- भामि० २।७४, ४।१८, कु० ६।११, भट्ट० १०।६१ 2. स्पष्ट होना, विशद होना, मन में होना—त्वदङ्गमार्दवे दृष्टे कस्य चित्ते न भासते, मालतीशशभृल्लेखाकदलीनां कठोरता—चन्द्रा० ५।४२ 3. प्रकट होना—प्रेर० (भासयति-ते) 1. चमकाना, देदीप्यमान करना, प्रकाशित करना - अधिवसंस्तन्-मध्वरदीक्षितामसमभासमभासयदीश्वरः—रघु० ९।२१, भग० १५।६ 2. जाहिर करना, स्पष्ट करना, प्रकट करना--भट्टि० १५।४२, **अव**—, 1. चमकना, कि० ३।४६, 2. प्रकट होना, प्रकाशित होना, स्पष्ट होना —आहोस्विन्मुखमवभासते युवत्याः—शि० ८।२९, **आ**—, प्रकट होना,...के समान चमकना,...की तरह दिखलाई देना--स्थानान्तरं स्वर्ग इवावभासे—कु० ७।३, रघु० ७।४३, १४।१२, **उद्**—, चमकना, के समान दिखाई देना, **निस्**—,चमकना--कि० ७।३६, **प्रति**--, 1. चमकना 2. दिखलाई देना 3. स्पष्ट होना, प्रकट होना, **वि**- , चमकना ।

भास् (स्त्री०) [भास्+क्विप्] 1. प्रकाश, कान्ति, चमक —वृथा निशेन्दीवरचारुभासाः- नै० २२।४३, रघु० ९।२१, कु० ७।३ 2. प्रकाश की किरण—कि० ५।३८, ४६, ९।६, रत्न० १।२४, ४।१६ 3. प्रतिबिंब, प्रतिमा 4. महिमा, कीर्ति, विभूति 5. लालसा, इच्छा । **सम०—कर**: 1. सूर्य—शि० ११।६९ रघु० ११।७, १२।२५ कु० ६।४९ 2. नायक 3. अग्नि 4. शिव का विशेषण 5. एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जो ११ वीं शताब्दी में हुए हैं, **(रम्)** सोना, **प्रियः** लाल, **सप्तमी** माघशुक्ला सप्तमी, **—करिः** शनिग्रह ।

भासः [भास् भावे घञ्] 1. चमक, प्रकाश, कान्ति 2. उत्प्रेक्षा 3. मुर्गा 4. सिद्ध, 5. गोष्ठ, सीशाला 6. एक कवि का नाम—भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः— प्रसप्र० १।२२, मालवि० १ ।

भासक (वि०) (स्त्री०-सिका) [भास्+ण्वुल्] 1. प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला, रोशनी करने वाला 2. दिखलाने वाला, विशद करने वाला 3. बोधगम्य बनाने वाला,—**कः** एक कवि का नाम ।

भासनम् [भास्+ल्युट्] 1. चमकना, जगमगाना 2. ज्योति-र्मय, द्युतिमान् ।

भासन्त (वि०) (स्त्री०-न्ती) [भास्+शतृ, अन्तादेशः] 1. चमकदार 2. सुन्दर, मनोहर,-न्तः 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. नक्षत्र, तारा, -न्ती नक्षत्र ।

भासुः [भास्+उन्] सूर्य ।

भासुर (वि०) [भास्+उरच्] 1. चमकीला, चमकदार भव्य कि० ५।५, रघु० ५।३० 2. भयानक, -रः 1. नायक 2. स्फटिक ।

भास्मन् (वि०) (स्त्री०-नी) [भस्मन्+अण्, मन्नन्तत्वात् न टिलोपः] राख से बना हुआ, राख वाला--वि० ४।६५ ।

भास्वत् (वि०) [भास्+मतुप्, मस्य वः] चमकीला, चमकदार दीप्तिमान, देदीप्यमान् कु० १।२, ६।६०, पुं० 1. सूर्य भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजालिः सुभा०, रघु० १५।४४ 2. प्रकाश, कान्ति, आभा 3. नायक,—ती सूर्य की नगरी ।

भास्वर (वि०) [भास्+वरच्] चमकीला, प्रकाशमान, चमकदार, उज्ज्वल --रः 1. सूर्य 2. दिन ।

भिक्ष् (स्वा० आ० भिक्षते, भिक्षित) 1. पूछना, प्रार्थना करना, मांगना (द्विकर्मक) भिक्षमाणो वरं प्रियां — भट्टि० ६।९ 2. याचना करना (भिक्षा की) न यज्ञार्थं शूद्राद्विप्रो भिक्षेत कहिंचित् मनु० ११।२४, २५ 3. बिना प्राप्त हुए पूछना 4. कंगाल या दुखी होना ।

भिक्षणम् [भिक्ष्+ल्युट्] मांगना, भिक्षा मांगना, भिक्षावृत्ति, भिखारीपन ।

भिक्षा [भिक्ष्+अ+टाप्] 1. मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना - मनु० ६।५६ 2. दान के रूप में जो चीज़ दी जाय, भीख,—भवति भिक्षां देहि 3. मजदूरी, भाड़ा 4. सेवा । सम० **अटनम्** भीख मांगते हुए घूमना **(नः)** भिखारी, साधु-**अन्नम्** मांग कर प्राप्त किया गया अन्न, भीख, **अयनम्** (नम्)--भिक्षाटन, --**अशिन्** (वि०) भीख माँगने वाला(पुं०) भिखारी, -**अर्ह** (वि०) भिक्षा के लाभ, दान के लिए उपयुक्त पदार्थ,--**आशिन्** (वि०) १. भिक्षा पर निर्वाह करने वाला 2. बेईमान, **उपजीविन्** (वि०) भिक्षा पर जीने वाला, भिखारी, - **करणम्** भिक्षा लेना, भीख मांगना,-**चरणम्,-चर्यम्,-चर्या** भीख मांगते हुए घूमना, पात्रम् भिक्षा ग्रहण करने का बर्तन, भीख के लिए कटोरा -इसी प्रकार भिक्षाभाण्डम्, भिक्षाभाजनम्, —**भागवः** भिखारी वृत्ति (तिरस्कार-सूचक शब्द), - **वृत्तिः** (स्त्री०) भीख मांग कर जीना, साधु या भिक्षुक का जीवन ।

भिक्षाकः (स्त्री०-की) [भिक्षा+कन्] भिखारी, साधु, भिक्षुक ।

भिक्षित (भू० क० कृ०) [भिक्ष्+क्त] याचना की गई, मांगा गया ।

भिक्षुः [भिक्ष्+उन्] 1. भिखारी, साधु भिक्षां च भिक्षवे दद्यात्--मनु० ३।९४ 2. साधु, चौथे आश्रम में पहुँचा हुआ ब्राह्मण (जब कि वह कुटुम्ब, घर द्वार छोड़ कर केवल भिक्षा पर निर्वाह करता है), संन्यासी 3. ब्राह्मण का चौथा आश्रम, संन्यास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. बौद्ध भिक्षुक। सम० —चर्या भिक्षा माँगना, साधु का जीवन,—सङ्घः बौद्ध भिक्षुओं का समाज —सङ्घाटी फटे पुराने कपड़े, चीवर।

भिक्षुकः [भिक्ष्+उक्] भिखारी, साधु-—मनु० ६।५१।

भित्तम् [भिद् ; क्त] 1. भाग, अंश 2. खण्ड, टुकड़ा 3. दीवार, विभाजक दीवार।

भित्तिः [भिद्+क्तिन्] 1. तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना, बाँटना 2. दीवार, विभाजक दीवार, समया सौध-भित्तिम्—दश०, शि० ४।६७ 3. (अतः) कोई स्थान, जगह या भूमि जिस पर कुछ किया जा सके, आधार, आश्रय -चित्र-कर्म रचनाभित्तिं विना वर्तते —मुद्रा० २।४ 4. खण्ड, लव, टुकड़ा, अंश 5. कोई भी टूटी हुई वस्तु 6. दरार, तरेड़ 7. चटाई 8. कमी, खोट 9. ऊसर। सम० —खातनः चूहा, चोरः सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर,—पातनः 1. एक प्रकार का चूहा 2. चूहा।

भित्तिका [भिद्+तिकन्+टाप्] 1. दीवार, विभाजक दीवार 2. घर की छोटी छिपकली।

भिद् i (रुधा० पर०—भिन्दति) बाँटना, टुकड़े २ करके बाँटने वाला। ii (रुधा० उभ० भिनत्ति, भित्ते, भिन्न) तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, काटकर अलग २ करना, फट जाना, छिद्र करना, बीच में से तोड़ना अतिशीतलमप्यम्भः किं भिनत्ति न भूभृतः —हि० ३।४५ तेषां कथं नु हृदयं न भिनत्ति लज्जा-मुद्रा० ३।३४, शि० ८।३९, मनु० ३।३३ रघु० ८।५५, १२।७७ 2. खोदना, उखेड़ना, खुदाई करना-उत्तर० १।२३ 3. बीच में से निकल जाना पंच० १।२११, २१२ 4. बाँटना, पृथक्-पृथक् करना -द्विधा भिन्ना शिखण्डिभिः - रघु० १।३९, अप्रसन्न करना रघु० १३।३ 5. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, तोड़ना, भंग करना -समयं लक्ष्मणोऽभिनत् --रघु० १५।९४, निहतश्च स्थितिं भिन्दन् दानवोऽसौ बलद्विषा मट्टि० ७।६८ 6. हटाना, दूर करना शि० १५।८७ 7. विघ्न डालना, रुकावट डालना जैसा कि 'समाधिभेदिन्' में 8. बदलना, परिवर्तन करना, (न) भिदन्ति मन्दाः गतिमप्रवयम्यः कु० १।११ या विवस्वत्सोपानमाहभिन्नमतयः शब्दं सहन्ते मृगाः —श० १।१४ 9. खिलाना, फुलाना, फैलाना -सूर्यांशुभिन्नमिवारविन्दम् कु० १।१२, नवोषसा भिन्नमिवेक्षुकाण्डम् श० ७।१६, भेद० १०७, 10. तितरबितर करना, बखेरना, उड़ा देना—भिन्नसा-रङ्गयूथः श० १।३३, विक्रम० १।१९ 11. जोड़ खोलना, वियुक्त करना, पृथक् २ करना मुद्रा० ३।१३ 12. ढीला करना, विश्राम करना, घोलना —पर्यङ्कबन्धं निविडं विभेद कु० ३।५९ 13. भेद खोलना, भण्डाफोड़ करना 14. भटकाना, उचाट करना 15. भेद करना, विच्छिन्न करना। कर्मवाच्य—भिद्यते, 1. टुकड़े २ होना, फटना, थरथराना—मृच्छ० ५।२२ 2. बाँटा जाना, वियुक्त किया जाना 3. फैलाना, खिलना, खिलाना 4. शिथिल या विश्रांत किये जाना - प्रस्थानभिन्नां न बबन्ध नीवीम् --रघु० ७।९, ६६ 5. ···पृथक् होना (अपा० के साथ) रघु० ५।३७, उत्तर० ४ 6. नष्ट किया जाना 7. भंडाफोड़ किया जाना, धोखा दिया जाना, दूर चले जाना —षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः—पंच १।९९ 8. तंग, पीड़ित, या व्यथित किये जाना —प्रेर० भेदयति —ते 1. खण्ड २ करना, फाड़ना, बाँटना फाड़ना आदि 2. नष्ट करना, विघटित करना 3. जोड़ खोलना, पृथक् २ करना 4. भटकना 5. सतीत्व या सत्पथ से डिगाना। इच्छा० (बिभित्सति —ते) तोड़ने की अभिलाषा करना, अनु—, बाँटना, तोड़ डालना, उद्—, फूटना, जमना (पौधा) पैदा होना—कु० १।२४ -रघु० १३।२१, निस्—, 1. फाड़ना, फटकर अलग २ होना, टूटना—भट्टि० ९।९७ 2. खोलना, धोखा देना - उत्तर ३।१, प्र—, 1. तोड़ना, फाड़ना, फाड़कर पृथक् २ करना 2. चूना, (हाथी के गण्डस्थल से) कु० ५।५०, प्रति—, पाड़ लगाना, भेदना, घुसना 2. भेद खोलना, धोखा देना 3. झिड़कना, गाली देना, निन्दा करना--प्रतिभिद्य कालत्मपरावकृतम्--शि० ९।५८, रघु० १९।२२ 4. अस्वीकार करना, मुकरना, 5. छूना, सम्पर्क करना --कु० ७।३५, वि—, 1. तोड़ना फाड़ना 2. छेद करना, घुसना 3. बाँटना, अलग २ करना 4. हस्तक्षेप करना 5. बखेरना, तितरबितर करना, सम्—, 1. तोड़ना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, टुकड़े २ होना 2. मिल जाना, संगठित होना, सम्बद्ध होना, मिश्रित होना, मिलाना, एक जगह रखना -अन्योन्यसंभिन्नदृशां सखीनाम् - मा० १।३३, भट्टि० ७।५।

भिदकः [भिद्+क्वुन्] तलवार,—कम् 1. हीरा, 2. इन्द्र का वज्र।

भिदा [भिद्+अङ्+टाप्] 1. तोड़ना, फटना, फाड़ना, चीरना--शि० ६।५ 2. वियोग 3. अन्तर 4. प्रकार, जाति, किस्म।

भिदिः, भिदिरम्, भिदुः [भिद्+इ, किरच् कु वा] इन्द्र का वज्र।

भिदुर (वि०) [भिद्+कुरच्] 1. तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े टुकड़े करने वाला 2. भुरभुरा, शीघ्र टूटने वाला 3. सन्धिश्लिष्ट, चितकबरा, मिला हुआ, संश्लिष्ट-नीलाद्रिमधुतिभिदुराम्भसोऽपरत्र-शि० ४।२६, १९।५८, —रः पक्ष्म वृक्ष, —रम् वज्र।

भिद्यः [भिद्+क्यप्] 1. वेग से बहने वाला दरिया 2. एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेष नद का नाम—तोयदागम इतीदृशभिन्नयोर्नाभघेयसदृशं विचेष्टितम्–रघु० ११।८ (दे० मल्लि०)।

भिन्नम् [भिद्+रक्] वज्र।

भिन्द (वि) **पालः** [भिन्द्+इन्=भिन्दि पालयति-पाल्+अण्] 1. हाथ से फेंका जाने वाला छोटा भाला 2. गोफिया, (गोफिया या गुलेल जैसा एक उपकरण जिसमें रखकर पत्थर फेंके जायँ)।

भिन्न (भू० क० कृ०) [भिद्+क्त, तस्य नः] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, फाड़ा हुआ 2. विभक्त, वियुक्त 3. पृथक्कृत, विच्छिन्न, अलगाया हुआ 4. फैलाया हुआ, फूलाया हुआ, खुला हुआ 5. अलग, इतर (अपा० के साथ)–तस्मादयं भिन्नः 6. नानारूप विविध, 7. ढीला किया हुआ 8. संश्लिष्ट, मिलाया हुआ, मिश्रित 9. विचलित 10. परिदलित 11. प्रचण्ड, मदोन्मत्त 12. रहित, हीन, वंचित, (दे०भिद्),—**भः** किसी रत्न में दोष या खोट,—**भम्** 1. लव, खण्ड, टुकड़ा 2. मंजरी 3. घाव, (छुरे आदि भोंकने का) आघात 4. भिन्न राशि। सम०—**अञ्जनम्** बहुत सी औषधियों को पीसकर तैयार किया गया सुर्मा—**प्रयात्ति**·····भिन्नाञ्जनवर्णतां घनाः-शि० १२।६८ मेघ० ५९, ऋतु० ३।५,—**अर्थः** स्पष्ट, विशद, सुबोध,—**उदरः** दूसरी माता से उत्पन्न सौतेला भाई,—**करटः** मदोन्मत्त हाथी (जिसके मस्तक से मद रिसता है),—**कूट** (वि०) नेतृहीन (सेना आदि),—**कम** (वि०) क्रमहीन, क्रमरहित, **गति** (वि०) 1. पग छोड़ कर चलने वाला, 2. तेज चाल चलने वाला, **गर्भ** (वि०) (केन्द्र में) टूटा हुआ, अव्यवस्थित,—**गुणनम्** भिन्न राशियों की गुणा,—**घनः** भिन्नराशि का त्रिघात, **दर्शिन्** (वि०) अन्तर देखने वाला, आंशिक, **-प्रकार** (वि०) अलग प्रकार या किस्म का, **-भाजनम्** टूटा बर्तन, ठीकरा, **मर्मन्** (वि०) मर्मस्थल में घाव खाया हुआ, प्राणघातक चोट से आहत, **मर्यादि** (वि०) जिसने उचित सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है, निरादरयुक्त,–आः, तातापवाभिन्नमर्यादि—उत्तर० ५ 2. असंयत, अनियन्त्रित, **-रुचि** (वि०) अलग रुचि रखने वाला,—भिन्नरुचिर्हि लोकः-रघु० ६।३०,–**लिङ्गम् वचनम्** रचना में लिंग और वचन की असंगति दे० काव्य० १०, **-वर्चस्, -वर्चस्क** (वि०) मलीनता करने वाला, **वृत्त** (वि०) बुरा जीवन बिताने वाला, परित्यक्त, **-वृत्ति** (वि०) 1. बुरा जीवन बिताने वाला, कुमार्ग का अनुसरण करने वाला 2. अलग प्रकार की भावनाएँ, रुचि या संवेग रखने वाला 3. नाना प्रकार के व्यवसाय करने वाला, **संहति** (वि०) न जुड़ा हुआ, वियटित, **-स्वर** (वि०) 1. बदली हुई आवाज वाला, हकलाने वाला 2. बेसुरा,– **हृदय** (वि०) जिसका हृदय चीर दिया गया हो-रघु० ११।१३।

भिरिटिका (स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, स्वर्णयूथी, सफेद चुपची।

भिल्लः [भिल्+लक] एक जंगली जाति। सम० **गवी** नील गाय, **तरः** लोध्रवृक्ष, **-भूषणम्** घुंघची का पौधा।

भिल्लोटः, टकः [भिल्लप्रियम् उटं पत्रं यस्य ब० स०, भिल्लोट+कन्] लोध्रवृक्ष।

भिषज् (पुं०) [विभेत्यस्मात् रोगः भी+षुक्, ह्रस्वश्च] 1. वैद्य, चिकित्सक-भिषजामसाध्यम्—रघु० ८।९३ 2. विष्णु का नाम। सम०—**जितम्** औषधि या दवा, —**पाशः** कठवैद्य, **-वरः** श्रेष्ठ वैद्य।

भिष्मा, भिष्मिका, भिस्सटा, भिस्सिटा (स्त्री०) भुना हुआ या तला हुआ अनाज।

भिस्सा (स्त्री०) [भस्+स, टाप्, इत्वम्] उबाले हुए चावल।

भी (जुहो० पर० विभेति, भीत) 1. डरना, भय खाना, भयभीत होना–मृत्योर्बिभेषि किं बाल, न स भीतं विमुंचति 1. रावणाद्विभ्यती भृशम्-भट्टि० ८।७०, शि० ३।४५ 2. आतुर या उत्कंठित होना (आ०) -प्रेर० (भाषयति) डराना, कुलिकर्षंगं भाषयति सिद्धा० (भाषयते, भीषयते) डराना, त्रास देना, संत्रस्त करना —मुंडो भाषयते—सिद्धा०, स्तनितेन भीषयित्वा धारा-हस्तः परामृशति-मृच्छ० ५।२८।

भी (स्त्री०) [भी+क्विप्] भय, डर, आतंक, संत्रास, त्रास, अभीः 'निर्भय'–रघु० १५।८, वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते-मनु० ७।६४।

भीत (भू० क० कृ०) [भी+क्त] 1. संत्रस्त, डराया हुआ, आतंकित, त्रस्त (अपा० के साथ)—न भीतो मरणादस्मि—मृच्छ० १०।२७ 2. खतरे में डाला हुआ, आपद्ग्रस्त। सम०—**भीत** (वि०) अत्यन्त डरा हुआ।

भीतङ्कार (वि०) [भीतं+कृ+अण्] डराने वाला।

भीतत्कारम् (अव्य०) [भीतं+कृ+णच्] किसी को कायर के नाम से पुकारना।

भीतिः (स्त्री०) [भी+क्तिन्] 1. डर, आशंका, भय, त्रास 2. कंपकंपी, थरथराहट। सम०—**नाटितकम्** भयभीत होने का नाट्य करना या हावभाव दिखलाना।

भीम (वि०) [विभेत्यस्मात्, भी अपादाने मक्] भयानक, त्रास देने वाला, भयावह, उत्तावना, भीषण—न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्-भट्टे० २।८०, रघु० १।१६, ३।५४, **-मः** 1. शिव का विशेषण 2. द्वितीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाण्डव राजकुमार (यह पवन देव द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था, बचपन से ही यह अपनी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगा, अतः इसका नाम भीम पड़ा। बहुभोजी होने के कारण इसे वृकोदर 'भेड़िये के पेट वाला' भी कहते थे। इसका अचूक शस्त्र इसकी गदा थी। महाभारत के युद्ध में इसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया और युद्ध के अन्तिम दिन अपनी अमोघ गदा से दुर्योधन की जंघा को चीर दिया। इसके जीवन की कुछ पहली मुख्य घटनाएँ हैं हिडिंब और बक राक्षस को पछाड़ना, जरासंध को परास्त करना, कौरवों के विशेष कर दुःशासन के (जिसने द्रौपदी के प्रति अपमानजनक आचरण किया) विरुद्ध भीषण प्रतिज्ञा, दुःशासन के रक्त को पीकर प्रतिज्ञा की पूर्ति, जयद्रथ का पराजित करना, राजा विराट के यहाँ रसोइये के रूप में कीचक के साथ मल्लयुद्ध, तथा कुछ और कारनामें जिनमें उसने अपनी असाधारण वीरता दिखलाई। इसका नाम अपनी अमीम शक्ति व साहस के कारण लोक प्रसिद्ध हो गया)। सम० **उदरी** उमा का विशेषण, **—कर्मन्** (वि०) भयंकर पराक्रम वाला भय० १।१५, दर्शन डरावनी शक्ल का, विकराल. **नाद** (वि०) डरावना शब्द करने वाला, (दः) 1. भयानक या ऊँची आवाज शि० १५।१०, 2. सिंह 3. उन सात बादलों में से एक जो सृष्टि के प्रलय के समय प्रकट होंगे, **पराक्रम** (वि०) भयानक पराक्रम वाला,—**रथी** मनुष्य के सप्तनरवें वर्ष में सातवें महीने की सातवीं रात (यह अत्यंत संकट का काल कहा जाता है) (सप्तसप्तमिमे वर्षे सप्तमे मासि सप्तमी, शान्तिर्भीमरथी नाम नराणामतिदुस्तरा।), — **रूप** (वि०) भयानक रूप का. **विक्रम** (वि०) भयानक विक्रमशील,—**विक्रान्तः** सिंह, **विग्रह** (वि०) विशालकाय, डरावनी सूरत का, **शासनः** यम का विशेषण, **सेनः** 1. द्वितीय पाण्डवराजकुमार 2. एक प्रकार का रघूर।

भीमरथ् (नपुं०) युद्ध, लड़ाई।

भीमा [भीम+टाप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य, रोचना 3. हरैर।

भीरु (वि०) (स्त्री० रु, रू) [भी+कु] 1. डरपोक, कायर, भयभीत,—सप्त्या भीरुः हि० २।२६ 2. डरा हुआ (बहुधा समास में) पाप,° अर्थ,° प्रतिज्ञाभंग° आदि,- **रुः** 1. गीदड़ 2. बाघ, **रू** (नपुं०) चाँदी, स्त्री० 1. डरपोक स्त्री 2. बकरी 3. छाया 4. कानखजूरा। सम० **चेतस्** (पुं०) हरिण, **स्तब्धः** चूल्हा, भट्ठी,—**सत्त्व** (वि०) कायर, डरा हुआ,—**हृदयः** हरिण।

भीरु (लु) क (वि०) [भी+कु+कन्, वलुकन् वा] 1. डरपोक, कायर, बुजदिल, साहसहीन 2. संकोची, —**कः** 1. रीछ 2. उल्लू 3. एक प्रकार का गन्ना,-**कम्** जंगल, वन।

भीरु (लु) (स्त्री०) [भीरु+ऊङ्, पक्षे रलयोरभेदः] डरपोक स्त्री, त्वं रक्षसां भीरु यतोऽवगीता—रघु० १३।२४।

भीलु (लू) कः [भी+क्लुकन्] रीछ, भालू।

भीषण (वि०) [भी+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] त्रासजनक, विकराल, डरावना, घोर, दारुण **विस्मयविशेषलक्षणभीषणाभ्यः**—शि० ३।४५, **णः** (साहित्य में) 1. भयानक रस— दे० भयानक 2. शिव का नाम 3. कबूतर, कपोत,—**णम्** भय को उत्तेजित करने वाली कोई भी वस्तु।

भीषा [भी+णिच्+अङ्+टाप्, पुकागमः] 1. त्रास देने या डराने की क्रिया, धमकाना 2. डराना, त्रास देना।

भीषित (वि०) [भी+णिच्+क्त, पुकागमः] डराया हुआ, संत्रस्त।

भीष्म (वि०) [भी+णिच्+मक् पुकागमः] भयानक, डरावना, भीषण, कराल, **ष्मः** (साहित्य में) 1. भयानक रस, दे० भयानक 2. राक्षस, पिशाच, दानव, भूत-प्रेत 3. शिव का विशेषण 4. शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र (शंतनु से गंगा में आठ पुत्र हुए, आठवाँ पुत्र यही था, पहले सात पुत्रों के मर जाने के कारण यह आठवाँ पुत्र ही अपने पिता की राजगद्दी का उत्तराधिकारी था। एक बार राजा शंतनु नदी के किनारे घूम रहे थे तो उनकी दृष्टि सत्यवती नामक एक लावण्यमयी तरुणी कन्या पर पड़ी, वह एक मछुवे की बेटी थी। यद्यपि राजा ढलती उमर का था फिर भी उसके मन में उसके लिए उत्कट उत्कंठा जागरित हुई, फलतः उसने इस अपने पुत्र को बातचीत करने के लिए भेजा। लड़की के माता पिता ने कहा कि यदि शन्तनु द्वारा हमारी पुत्री के कोई पुत्र हुआ तो, राजगद्दी का उत्तराधिकारी शंतनु का पुत्र विद्यमान होने के कारण, उसे राजगद्दी न मिल सकेगी। परन्तु शंतनु के पुत्र ने अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए उनके सामने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं कभी राजगद्दी पर नहीं बैठूँगा, और न कभी विवाह करूँगा जिससे कि किसी समय भी किसी पुत्र का पिता न बन सकूँ अतः यदि आपकी पुत्री से मेरे पिता का कोई पुत्र होगा तो निश्चित रूप से वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। यह भीषण प्रतिज्ञा शीघ्र ही लोगों में विदित हो गई और तब से लेकर उसका नाम भीष्म पड़ गया। वह आजीवन अविवाहित रहा, और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया तथा काशिराज की दो कन्याओं के साथ उसका विवाह कराया, एवं अपने पुत्र तथा पौत्रों (कौरव पाडवों) का अभिभावक बना रहा। महाभारत के युद्ध में वह कौरवों की ओर से लड़ा, परंतु शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने युद्ध में भीष्म को घायल कर दिया, तब उसे 'शरशय्या' पर रक्खा गया। परन्तु अपने पिता से इच्छामृत्यु का वरदान पाने के कारण वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि उत्तरायण में न प्रविष्ट हो, जब सूर्य ने वसन्त विषुव को पार किया तब कहीं उसने अपने प्राण त्यागे। वह अपने संयम, बुद्धिमत्ता, संकल्प की दृढ़ता तथा ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति के कारण अत्यंत प्रसिद्ध हो गया)। सम०—**जननी** गंगा का विशेषण, —**एकादशम्** कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन (यह पाँच दिन भीष्म के लिए पावन माने जाते हैं)। —**सूः** (स्त्री०) गंगा नदी का विशेषण।

भीष्मकः [भीष्म+कन्] 1. शान्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र 2. विदर्भ के राजा का नाम, जिसकी पुत्री रुक्मिणी को कृष्ण उठा लाया था।

भुक्त (भू० क० कृ०) [भुज्+क्त] 1. खाया हुआ 2. उपभुक्त, प्रयुक्त 3. भोगा, अनुभव किया 4. अधिकृत किया, (विधि में) अधिकार में लिया- दे० भुज्, —**क्लम्** 1. उपभोग करने या खाने की क्रिया 2. जो खाया जाय, आहार 3. वह स्थान जहाँ किसी ने खाया है। सम०—**उच्छिष्टम्**, —**शेषः**, **सभुज्जितम्** किये हुए भोजन का अवशिष्ट, जूठन, उच्छिष्ट अंश, —**भोग** (वि०) 1. जिसने कुछ भोगा है, या आनन्द उठाया है, उपभोक्ता 2. जो प्रयुक्त किया गया है, उपभुक्त, नियुक्त,—**सुप्त** (वि०) भोजन करके सोया हुआ।

भुक्तिः (स्त्री०) [भुज्+क्तिन्] 1. खाना, उपभोग करना 2. (विधि में) अधिकृत सामग्री, सुखोपभोग- पंच० ३।९४, याज्ञ० २।२२ 3. खाना 4. यह की दैनिक गति। सम०—**प्रदः** एक प्रकार का पौधा, मूंग, —**वर्जित** (वि०) जिसके उपभोग करने की अनुमति नहीं है।

भुग्न (भू० क० कृ०) [भुज्+क्त, तस्य नः] 1. झुका हुआ, दबित, प्रवण - वायुभुग्न, रुजाभुग्न आदि 2. टेढ़ा, वक्र,--भट्टि० ११।८. विक्रम० ४।३२ 3. टूटा हुआ (भग्न का अर्थ)।

भुज् I (तुदा० पर० भुजति, भुग्न) 1. झुकाना 2. मोड़ना, टेढ़ा करना। II (रुधा० उभ० भुनक्ति, भुंक्ते) 1. खाना, निगलना, खा पी जाना (आ०)—शयनस्थो न भुञ्जीत—मनु० ४।७४, ३।१४६, भट्टि० १४।९२, भग० २।५, 2. उपभोग करना, प्रयोग करना, (सम्पत्ति, भूमि आदि को)अधिकार में करना—विक्रम० ३।१, मनु० ८।१४६, याज्ञ० २।२४ 3. शारीरिक उपभोग करना (आ०)—सदय दुभुजे महाभुजः—रघु० ८।७, ४।७, १५।१, १८।४, सुरूप या कुरूप वा पुमानित्येव भुञ्जते—मनु० ९।१४, 4. हुकूमत करना, शासन करना, प्ररक्षा करना, रखवाली करना (पर०) - राज्यं न्यासमिवाभुनक्-रघु० १२।१८, एकः कृत्स्नां(धरित्री) नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति०—श० २।१४, 5. भोगना, सहन करना, अनुभव करना—वृद्धो नरो दुःखशतानि भुङ्क्ते—सिद्धा० 6. बिताना, (समय) यापन करना -प्रेर० (भोजयति-ते) खिलाना, भोजन कराना, इच्छा० (बुभुक्षति-ते) खाने की इच्छा करना आदि। अनु--उपभोग करना, (बुरे या भले का) अनुभव करना, (बुरे फल) भुगताना—मेघमुक्तविशदां सचन्द्रिकाम् (अन्वभुक्त)—रघु० १९।३९, कु० ७।५, उप—, 1. मजा लेना, चखना—तपसामुपभुञ्जानाः फलानि - कु० ६।१०, 2. शारीरिक रूप से मजे लेना (यथा स्त्रीसंभोग) 3. खाना या पीना—अर्घोपभुक्तेन विसेन -कु० ३।३७, पयः पुत्रोपभुक्तम्—रघु० २।६५, १।९७, भट्टि० ८।४०, 4. भोगना, सहन करना, झेलना—मनु० १२।८, 5. अधिकार में करना रखना, परि- 1. खाना 2. उपयोग करना, आनन्द लेना—न खलु च परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम्—श० ५।१९, कि० ५।५, ८।५७, सम्- 1. खाना 2. उपभोग करना 3. शारीरिक रूप से मजे लेना।

भुज् (वि०) [भुज्+क्विप्] (समास के अन्त में) खाने वाला, मजे लेने वाला, भोगने वाला, राज्य करने वाला, शासन करने वाला, स्वधाभुज्, हुतभुज्, पार्थ° क्षितिं° महीं° आदि, (स्त्री०) 1. उपभोग 2. लाभ, हित।

भुजः [भुज्+क] 1. भुजा—**ज्यास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति** मौर्वीकिणाङ्कः इति—श० १।१३ रघु० १।३४, २।७४, २।५, 2. हाथ 3. हाथी का सूँड 4. झुकाव, वक्र, मोड़ 5. गणितविषयक आकृति का एक पार्श्व, यथा त्रिभुज 'त्रिकोण' 6. त्रिकोण आधार। सम० —**अन्तरम्**,—**अन्तरालम्** हृदय, छाती- रघु० २।५४ १९।३२, मालवि० ५।१०,—**आयोगः** भुजपाश में जकड़ना, बाहों में लिपटाना,—**कोटरः** बगल,—**ज्या** आधार की लम्बरेखा,—**दण्डः** -बाहुदंड, दलः,—**लभ्** हाथ, —**बन्धनम्** लिपटना, आलिंगन करना—घटय भुजबन्धनम्—गीत० १०, कु० ३।३९,—**बलम्**—**ओजस्** भुजा की सामर्थ्य, पुट्ठों की ताकत, —**मध्यम्** छाती -रघु० १३।७३,—**मूलम्** कंधा,—**शिखरम्**—**शिरस्** (नपुं०) कंधा,—**सूत्रम्** आधार लंबरेखा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुजगः [भुज् भक्षणे क, भुजः कुटिलीभवन् सन् गच्छति गम्+ड] साँप, सर्प--भुजगावलेपसंवीतजानोः—मृच्छ० १।१, मेघ० ६०। सम०--अन्तकः, अशनः—आयोजिन् (पुं०),—धारणः,—भोजिन् (पुं०) 1. गरुड़ 2. मोर 3. और नेवले का विशेषण,—ईश्वरः--राजः शेष के विशेषण।

भुजङ्गमः [भुजः सन् गच्छति गम्+खच्, मुम् डिच्च] साँप, सर्प--भुजङ्गमपि कोपित शिरसि पुष्पबद्धारयेत्—भर्तृ० २।४ 2. उपपति, रसिया या सौन्दर्यप्रेमी—अभूमिरेषा भुजङ्गमङ्गिभाषितानाम्—का० १९६ 3. पति, प्रभु 4. लौंडा, इल्लती 5. राजा का लम्पट मित्र 6. आश्लेषा नक्षत्र 7. आठ की संख्या। सम०—इन्द्रः नागराज शेषनाग का विशेषण, ईशः 1. वासुकि का विशेषण 2. शेषनाग का विशेषण 3. पतञ्जलि का विशेषण 4. पिंगल मुनि का विशेषण—कन्या साँप की तरुणी कन्या, भम् अश्लेषा नक्षत्र,—भुज् (तुं०) 1. गरुड़ का विशेषण 2. मोर,—लता पान की बेल, तांबूली,—हन् (पुं०) गरुड़ का विशेषण दे० भुजगांतक आदि।

भुजङ्गमः [भुजं+गम्+खच्, मुम्] 1. साँप 2. राहु का विशेषण 3. आठ की संख्या।

भुजा [भुज्+टाप्] 1. बाहु, हाथ निहितभुजा लतयैकयोपकण्ठम्- शि० ७।७१ 2. हाथ 3. साँप की कुंडली 4. चक्कर, घेरा। सम०—कण्ठः अँगुली का नाखून, -बलः हाथ,—मध्यः 1. कोहनी 2. छाती,—मूलम् कन्धा।

भुजिष्यः [भुज्+किष्यन्] 1. दास, नौकर 2. साथी 3. पोंहची, मूत्र जो कलाई पर पहना जाय 4. रोग, -ष्या 1. परिचारिका, सेविका, दासी--अयांगदाशिलष्टभुजं भुजिष्या--रघु० ६।५३, मृच्छ० ४।८, याज्ञ० २।९० 2. वारांगना, वेश्या।

भुज् (म्वा० आ० भुञ्जते) 1. सहारा देना, स्थापित रखना 2. चुनना, छाँटना।

भुर्भुरिका, भुर्भुरी (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

भुवनम् [भवत्यत्र, भू—आधाराधौ—क्युन्] 1. लोक (लोकों के नाम या तो तीन हैं - त्रिभुवनम् - या चौदह—इह हि भुवनान्यपे धीराश्चतुर्दश भुञ्जते --भर्तृ० ३।२३ दे० 'लोक' भी, भुवनालोकनप्रीतिः --कु० २।४५, भुवनाविदितम् मेघ० ६ 2. पृथ्वी 3. स्वर्ग 4. प्राणी, जीवधारी जन्तु 5. मनुष्य, मानव 6. पानी 7. चौदह की संख्या। सम० ईशः पृथ्वी का स्वामी, राजा, ईश्वरः 1. राजा 2. शिव का नाम,—ओकस् (पुं०) देवता, त्रयम् त्रिलोकी (भूलोक, अन्तरिक्ष और द्युलोक; या स्वर्गलोक भूलोक और पाताल लोक),- पावनी गंगा का विशेषण, शास्त्रिन् (पुं०) राजा, शासक।

भुवन्यु [भू+कन्युच्] 1. स्वामी, प्रभु 2. सूर्य 3. अग्नि 4. चन्द्रमा।

भुवर्, भुवस् (अव्य०) [भू+असुन्] 1. अन्तरिक्ष, आकाश (तीनों लोकों में से दूसरा, भूलोक से ठीक ऊपर) 2. रहस्यमय शब्द, तीन व्याहृतियों में से एक (भूर्भुवः स्वः)।

भुविम् (पुं०) [भू+इसिन्, कित्] समुद्र।

भुशुण्डिः,—डी (स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्र या अस्त्र।

भू I (म्वा० पर०—(आ० विरल)—भवति, भूत 1. होना, घटित होना- कथमयं भवेन्नाम, अस्याः किमभवत् --मा० ९।२९ 'उसके भाग्य का क्या हुआ'-- उत्तर० ३।२७, यद्भावि तद्भवतु,— उत्तर० ३, 'होने दो जो कुछ होता है' इसी प्रकार दुःखितो भवति, हृष्टो भवति आदि 2. उत्पन्न होना- यदपत्यं भवेदस्याम् - मनु० ९।१२७, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति - मृच्छ० १।१३ 3. फूटना, निकालना, उदय होना - कोषाद्भवति संमोहः—भग० २।६३, १४।१७ 4. घटित होना, होना, उपस्थित होना—नातताप्यिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन मनु० ८।३५१, यदि संशयो भवेत् आदि 5. जीवित रहना, विद्यमान रहना —अभूदभूतपूर्वः राजा चित्तामणिर्नाम वास०, अभूत्पो दिवधसखः परन्तपः—भट्टि० १।१ 6. जीवित रहना, जिंदा रहना, साँस लेना- त्वमिदानीं न भविष्यसि-श० ६, आः चाण्डालहतक अयं न भवसि --मृच्छ० ४, दुरात्मन् प्रहर नन्वयं न भवसि मा० ५ (तुम मर चुके हो, अब तुम्हें साँस नहीं आवेगा) भग० ११।३२ 7. किसी भी दशा या अवस्था में रहना, अच्छी या बुरी तरह बीतना भवान् स्थले कथं भविष्यति पंच० २ 8. ठहरना, डटे रहना, रहना उत्तर० ३।३७ 9. सेवा करना, काम आना —इदं पादोदकं भविष्यति- श० १ 10. संभव होना (इस अर्थ में प्रायः लृट् लकार)—भवति भवान् याजयिष्यति सिद्धा० 11. नेतृत्व करना, संचालन करना, प्रकाशित करना (संप्र० के साथ)—वातायं कपिला विद्युत्--पीता भवति सस्याय दुर्भिक्षाय सिता भवेत्

महाभा०, सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव—कु० १।२३ संस्मृतिर्भव भवद्यभत्राय कि० १८।२७, न तस्या रुचये बभूव—रघु० ६।३४ 12. साथ देना, सहायता करना, देवा अर्जुनतोऽभवन् 13. संबन्ध रखना, पास रखना—तस्य ह शतं जाया बभूवुः ऐत० ब्रा०, मनु० ६।३९ 14. व्यस्त होना, व्यापृत होना (अधि० के साथ)—चरणक्षालनं कृष्णो ब्राह्मणानां स्वयं ह्यभूत्

महा० 15. पूर्ववर्ती संज्ञा या विशेषण से आगे 'भू' धातु का अर्थ है 'वह होना जो पहले नहीं था' या केवल मात्र 'होना'--श्वेतीभू सफेद होना, कृष्णीभू

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काला होना, **यथोचरोभू** स्तन का काम देना, इसी प्रकार **अरणीभू** साधु होना, **प्रणिधीभू** गुप्तचर का काम करना, **अङ्गीभू** विचलना, **भस्मीभू** राख बन जाना. **विषयीभू** विषय बनाना, इसी प्रकार एक मतीभू, तरुणीभू आदि विशे०, 'भू' धातु का अर्थ संबद्ध क्रिया विशेषण के अनुसार नाना प्रकार से परिवर्तित होता रहता है, उदा० **अग्रेभू** आगे रहना, **नेतृत्व करना अंतर्भू** लीन होना, सम्मिलित होना —ओजस्यन्तर्भवत्यस्य--काव्य० ८, **अन्यथाभू** और तरह होना, बदलना -- न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति -- श० ४, **आविर्भू** प्रकट होना, उदय होना, स्पष्ट होना दे० आविस्, **तिरोभू** ओझल होना, **दोषाभू** संध्या होना, सायंकाल होना, **पुनर्भू** फिर विवाह करना, **पुरोभू** अग्रसर होना, आगे खड़े होना **प्रादुर्भू** उदय होना, दिखाई देना, प्रकट होना, **मिथ्याभू** अट निकलना, **वृथाभू** व्यर्थ होना आदि) प्रेर० (भावयति–ते) 1. उत्पन्न करना, अस्तित्व में लाना, सत्ता बनाना 2. कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 3. प्रकट करना, प्रदर्शन करना, निदर्शन करना 4. पालना, परवरिश करना,सहारा देना,संधारण करना, जान डालना - पुनः सृजति वर्धयि भगवान् भावयन् प्रजाः —महा०, देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः, परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ भग० ३।११, भट्टि० १६।२७ 5. सोचना, विमर्श करना, विचारना, खयाल करना, कल्पना करना 6. देखना **समझना**, मानना – **अर्थमनर्थं भावय नित्यम्** मोह० २ 7. **सिद्ध करना**, साबित करना, पक्का याज्ञ० २।११ 8. **पवित्र करना** 9. हासिल करना, प्राप्त करना 10. मिलाना, मिश्रण, तैयार करना 11. परिवर्तन करना, रूपान्तरित करना 12. डुबोना,–शराबोर करना । **इच्छा**--**भूयति**, होने की या बनने की इच्छा करना, **अति**,—**अतिरिक्त** होना आगे बढ़ जाना, अधिक हो जाना, **अनु**--,1. मजे लेना, अनुभव करना महसूस करना, भोगना (बुरा या भला)--असकृत् सुखमन्वभूत- रघु० ११२१, **कु०** २।४५ रघु० ७।२८, आत्मकृतानां हि दोषाणां फलमनुभवितव्यमात्मनैव –का० १२१, श० ५।७ 2. प्रत्यक्ष करना, बोध होना, समझना 3. जांच करना, परीक्षण करना,—प्रेर०

आनन्द मनवाना, अनुभव या महसूस करवाना —आमोदो न हि कस्तूर्याः शपथेनानुभाव्यते --भामि० १।१२०, **अभि**–, 1. विजय प्राप्त करना, दमन करना, परास्त करना, आगे बढ़ जाना, उत्तम होना--भग० १।३९, कि० १०।२३, रघु० ८।३६ 2. आक्रमण करना, हमला करना **विपदोऽभिवर्त्यविक्रमम्** कि० २।१४ **अभ्यभावि भरतायशस्त्वया**--रघु० ११।१६ 3. नीचा दिखाना, अपमान करना 4. प्रभुत्व रखना, प्रभाव रखना, व्याप्त होना, **उद्**–उदय होना, उगना

उद्भूतत्वनिः, प्रेर० पैदा करना, सृजन करना, जन्म देना रघु० २।६२, **परा** - , 1. हराना, पराजय करना, जीत लेना 2. चोट पहुंचाना, क्षति पहुँचाना, सताना, **परि**—, 1. हराना, दमन करना, जीतना, हावी होना (अतः) आगे बढ जाना, पछाड़ देना

लम्बोदरेण परिभूय पदम् मुद्रा० ७।१६, रघु० १०।३५ 2. तुच्छ समझना, उपेक्षा करना, घृणा करना, अनादर करना, अपमान करना, मा मा महात्मन् परिभूः भट्टि० १।२२, ४।३७ 3. क्षति पहुँचाना, नष्ट करना, बर्बाद करना 4. कष्ट पहुँचाना, दुःख देना 5. नीचा दिखाना, लज्जित करना, प्र - , 1. उदय होना, निकलना, फूटना, जन्म लेना, उपजना, पैदा होना (अपा० के साथ)–लोभात्क्रोधः प्रभवति हि० १।२७, स्वायं भुवान्मरीचेर्यः प्रबभूव प्रजापतिः —प्र० ७।९, पुरुषः प्रथमभाग्नेविस्मयेन सहाधिजाम् --रघु० १०।५०, भग० ८।१८ 2. प्रकट होना, दिखाई देना हि० ४।८४ 3. गुणी करना, बढ़ाना, दे० प्रभूत 4. मजबूत होना, शक्तिशाली होना, छा जाना, प्रभुत्व होना, बल दिखाना प्रभवति हि महिम्ना स्वेन योगीश्वरोयं मा० ९।५२, प्रभवति भगवान् विधिः का० ५, 5. योग्य होना, समान होना, **शक्ति** रखना (तुमुन्नन्त के साथ)–कुसुमान्यपि गात्रसङ्गमात् प्रभवत्यायुरगोहितुं यदि–रघु०८।४८, श० ६।३०, विक्रम० १।९, उत्तर० २।४ 6. नियन्त्रण रखना, प्रभाव रखना, छा जाना, स्वामी होना (बहुधा संब० के. कभी २ सप्त० या अधि० के साथ)--यदि प्रभवित्र्यास्मन्यनः —श० १, उत्तर० १, प्रभवति **भिक्षस्य कन्यकाजनस्य** महाराजः--मा० ४, तत्प्रभवति अनुज्ञासने देवी–वेणी० २ 7. जोड़ा का होना -प्रभवति मल्लो मल्लाय --महाभा० 8. **पर्याप्त होना**, यथेष्ट होना–कु० ६।५९ 9. रक्षा जाना (अधि० के साथ)–मुद्रा. प्रहर्षं. प्रबभूव नात्मनि–रघु० ३।१७ 10. उपयोगी होना 11. याचना करना, अनुनय-विनय करना, **वि**–(प्रेर०) 1. सोचना, विमर्श करना, विचारना 2. जानकार होना, जानना, प्रत्यक्ष करना, देखना -श० ४ 3. फैसला करना, निर्णय करना, स्पष्ट करना, **सम्**--, 1. उदय होना, पैदा होना, उपजना, फूटना कथमग्नि भवनैरिमस्ता-दृशाः सम्भवन्ति—मा० ३।१, घर्मसंभवगतार्थाय सम्प्रतीमि युगे युगे --भग० ४।८, कि० ५।२२, भट्टि० ६।१३८, भग० ८।१५५ 2. होना, बनना, विद्यमान होना 3. घटित होना, घटना होना 4. संभव होना, 5. यथेष्ट होना, सक्षम होना (तुमुन्नन्त के साथ) —न यन्नियन्तुं समभावि भानुना—शि० १।२७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

6. मिलना, एक होना, सम्मिलित होना- संभूयाम्भो-निमग्नेति महानद्या नगाधपा—भि० २।१००, संभूयैव मुखानि चेतसि मा० ५।१५ 7. सगत होना 8. पकड़ने के योग्य, (प्रेर०) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना 2. कल्पना करना, सोचना, उद्भावन करना, चिन्तन करना 3. अनुमान लगाना, अटकल लगाना —शा० ५, 4. सोचना, ख्याल करना 5. सम्मान करना, आदर करना, आदर प्रदर्शित करना - प्राप्तोऽसि संभा-वयितुं वनानाम्—रघु० ५।११, ७।८ 6. सम्मान करना, उपहार देना, बर्ताव करना —कु० ३।३७ 7. मकृना, बोधना मुच्छ० १।३६ ।

ii (भ्वा० उभ० भवति ते) हासिल करना, प्राप्त करना ।

iii (चुरा० अ० भावयते) प्राप्त करना, उपलब्ध करना ।

iv (चुरा० उभ० भावयति ते) 1. सोचना, विमर्श करना 2. मिलाना, मिश्रित करना 3. पवित्र होना ('भू' के प्रेर० रूप से संबद्ध) ।

भू (वि०) [भू—क्विप्] (समास के अन्त में) होने वाला, विद्यमान, बनने वाला, फूटने वाला, उगने वाला, उपजने वाला, दिनभू, आत्मभू, कमलभू, क्षितिभू आदि – (पु०) विष्णु का विशेषण ।

भूः (स्त्री०) [भू+क्विप] 1. पृथ्वी (त्रिः० अंतरिक्ष या स्वर्ग–दिवं पतत्यनिच भोक्ष्यते भुवम्—रघु० ३।४, १८।४, मेघ० १८; मत्तेभकुंभदलने भुवि सन्ति शूराः 2. विश्व, भूमण्डल 3. भूमि, फर्श प्रासादांपरिभूमयः -मुद्रा० ३, मणिमयभूवः (प्रासादाः) —मेघ० ६४ 4. भूमि, भूसंपत्ति 5. जगह, स्थान, क्षेत्र, भूखण्ड —कानिनभूवि, उपवनभुवि आदि 6. सामग्री, विषय-वस्तु 7. 'एक' की संख्या की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 8. ज्यामिति की आकृति की आधाररेखा 9. (धरती का प्रतिनिधान करने वाली) सबसे पहली (तीनों में) व्याहृति या रहस्यमूलक अक्षर 'ओं' जिसका उच्चारण प्रतिदिन संध्या के समय मंत्रपाठ करते हुए किया जाता है । सम०—उत्तमम् सोना, कदम्बः कदम्ब वृक्ष का भेद,—कम्पः भूचाल, कर्णः धरती का व्यास, कृष्णपः कृष्ण के पिता वासुदेव का विशेषण,—काकः 1. एक प्रकार का बगुला 2. नेवमुर्गी 3. एक प्रकार का कबूतर,—केतः वट-वृक्ष,—केशा राक्षसी, पिशाचिनी, क्षित् (पु०) सूअर,—गरम् विशेष प्रकार का जहर, -गर्भः भवभूति का विशेषण, गृहम् गेहम् भूमि के नीचे का गोदाम, तलप्रासः, गोलः भूमिगोल, भूमंडल भूगोलबुद्धिमने गीत० १, छिद्रा भूगोल, धनः काला, शरीर, -चक्रम् त्रिभुजरेखा, भूमध्यरेखा चर (वि०) भूमि पर घूमने वाला या रहने वाला (रः) शिव का विशेषण,—छाया, छायम् 1. भू छाया, (इसे ही ग्रामीण 'राहु' कहते हैं) 2. अंधकार—जम्बुः 1. एक जमीन का कीड़ा 2. हाथी, जम्बू, -द्रुः गेहूँ -तलम् धरातल, पृथ्वीतल, तृणः (भूस्तृणः) एक प्रकार का सुगंधयुक्त घास,—दारः सूअर,—देवः,—सुरः ब्राह्मण, धनः राजा धरः 1. पहाड़ 2. शिव का विशेषण 3. कृष्ण का विशेषण 4. 'सात' की संख्या °ईश्वरः °राजः हिमालय पहाड़ का विशेषण °जः वृक्ष,— नागः एक प्रकार का धरती का कीड़ा, केंचुवा,—नेतृ (पुं०) प्रभु, शासक, राजा,—पः प्रभु, शासक, राजा,—पतिः 1. राजा, 2. शिव का विशेषण 3. इन्द्र का विशेषण,—पदः वृक्ष,—पद्मी एक विशिष्ट प्रकार की चमेली,—परिधिः पृथ्वी का घेरा, —पालः राजा, प्रभु—पालनम् प्रभुता आधिपत्य —पुत्रः,- सुतः मंगलग्रह,—पुत्री,—सुता 'धरती की बेटी' सीता का विशेषण,—प्रकंपः भूचाल,—प्रदानम् भूदान,—बिम्बः,—बम् भूलोक, भूमंडल,—भर्तृ (पुं०) राजा, प्रभु,—भागः क्षेत्र, स्थान, जगह, भुज् (पुं०) राजा, भृत् (पुं०) पहाड़ - दाता मे भूभृतां नाथः प्रमाणीक्रियतामिति—कु० ६।१, रघु० १७।७८ 2. राजा, प्रभु—निष्प्रभश्च विपुरास भूभृताम्- रघु० ११।८१ 3. विष्णु का विशेषण - मण्डलम् पृथ्वी, भूमण्डल, धरती, - रुहू (पुं०),- रुहः वृक्ष, - लोकः (भूर्लोकः) भूमण्डल, - वलयम् भूमण्डल, - वल्लभः राजा, प्रभु, वृत्तम् भूमध्यरेखा,— शक्रः 'धरती पर इन्द्र, राजा, प्रभु, - शयः विष्णु का विशेषण, - श्रवस् (पुं०) बर्मी, दीमक का मिट्टी का टीला,—सुरः ब्राह्मण, स्पृश् (पुं०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3. वैश्य, स्वर्गः मेरु पहाड़ का विशेषण,—स्वामिन् (पुं०) भूमिधर, भूमि का स्वामी ।

भूकः, - कम् [भू+कक्] 1. विवर, रन्ध्र, गर्त 2. झरना 3. काल ।

भूकलः [भुवि कलयति -कल्+अच्] अडियल घोड़ा ।

भूत (भू० क० कृ०) [भू+क्त] 1. जो हो चुका हो, होने वाला, वर्तमान 2. उत्पन्न, निर्मित 3. वस्तुतः होने वाला, जो वस्तुतः घट चुका हो, यथार्थ 4 ठीक, उचित, सही 5. अतीत, गया हुआ 6. उपलब्ध 7. मिश्रित या मिलाया हुआ 8. सदृश, समान दे० 'भू', तः 1. पुत्र, बच्चा 2 शिव का विशेषण 3. चान्द्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का दिन,—तम् 1. प्राणी (मानव, दिव्य, या अचेतन)—कु० ४।४५, पंच० २।८७ 2. जीवित प्राणी, जन्तु, जीवधारी —भूतेषु किं च करुणा बहुली करोति -भामि० १।१२२, उत्तर० ४।६ 3. प्रेत, भूत, पिशाच, दानव 4. तत्त्व (वे पाँच हैं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वायु और आकाश)—तं वेधा विदधे नूनं महाभूत-समाधिना रघु० १।२९ 5. वास्तविक घटना, तथ्य, वास्तविकता 6. अतीत, भूतकाल 7. संसार 8. कुशल-क्षेम, कल्याण 9. पाँच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। समः—अनुकम्पा सब प्राणियों के लिए करुणा—भूतानुकम्पा तव चेत् —रघु० २।४८, **अन्तकः** मृत्यु का देवता यम, **अर्थः** तथ्य, वास्तविक तथ्य, यथार्थ स्थिति, सचाई, वास्तविकता —आर्ये कथयामि ते भूतार्थम् उ० १, भूतार्थशोभाह्लियमाणनेत्राः—कु० ७।१३, कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति -मृच्छ० ३।२४, °**कथनम्**, °**व्याहृतिः** (स्त्री०) तथ्यवर्णन—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुतिः परमेष्ठिनः —रघु० १०।३३,—**आत्मक** (वि०) तत्त्वों से युक्त या तत्त्वों से बना हुआ, —**आत्मन्** (पुं०) 1. जीवात्मा (विप० परमात्मा), आत्मा 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. मूलतत्त्व 5. शरीर 6. युद्ध, संघर्ष,—**आदिः** 1. परमात्मा 2. (सांख्य० में) अहंकार का विशेषण, - **आर्त** (वि०) प्रेताविष्ट, - **आवासः** 1. शरीर 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, - **आविष्ट** (वि०) भूता प्रेतादि से प्रभावित, - **आवेशः** भूत या प्रेत का किसी पर सवार होना, —**इज्यम्**,—**इज्या** भूतों को आहुति देना, **इष्टा** कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, **ईशः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव का विशेषण - भूतेशस्य मुजङ्गवल्लिवलयस्खलदुद्धजूटाजटाः मा० १।२, —**ईश्वरः** शिव का विशेषण—रघु० २।४६, **उन्मादः** भूत प्रेतादि के चढ़ने से उत्पन्न पागलपन,—**उपसृष्ट**, —**उपहृत** (वि०) पिशाच से पीड़ित,— **ओदनः** चावलों की थाली, - **कर्तृ** कृत् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, **कालः** 1. बीता हुआ समय (व्या० में) अतीत या भूतकाल, - **केशी** तुलसी,—**क्रान्तिः** (स्त्री०) भूत-प्रेत की सवारी, **गणः** उत्पन्न प्राणियों का समुदाय 2. भूतप्रेत या पिशाचों का समूह भग० १८।४, - **ग्रस्त** (वि०) जिसपर भूतप्रेत सवार हो गया हो, —**ग्रामः** 1. जीवित प्राणियों का समूह, समस्त जीव, सृष्टि—उत्तर० ७, भग० ८।१९ 2. भूतप्रेतों का समूह 3. शरीर,—**घ्नः** 1. ऊँट 2. लहसुन, (घ्नी) तुलसी —**चतुर्दशी** कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, —**चारिन्** (पुं०) शिव का विशेषण, - **जयः** तत्त्वों के ऊपर विजय,—**दया** सब प्राणियों के प्रति करुणा, प्राणिमात्र पर दया,—**धरः**, - **धात्री**.—**धारिणी** पृथ्वी, - **नाथः** शिव का विशेषण, - **नाथिका** दुर्गा का विशेषण,—**नाशनः** 1. भिलावे का पौधा 2. सरसों 3. कालीमिर्च,—**निचयः** शरीर,—**पतिः** 1. शिव का विशेषण—कु० ३।४३, ७४ 2. अग्नि का विशेषण 3. काली तुलसी,—**पूणिमा** आश्विन मास का पूर्णमासी,—**पूर्व** (वि०) पहले से विद्यमान, पहला - भूतपूर्वकरालयम् —उत्तर० २।१७, - **पूर्वम्** (अव्य०) पहले,—**प्रकृतिः** (स्त्री०) सब प्राणियों का मूल,— **बलिः**=भूतयज्ञ दे०, **ब्राह्मण** (पुं०) अधम ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मूर्ति पर चढ़ावे से करता है दे० देवल,— **भर्तृ** (पुं०) शिव का विशेषण, **भावनः** ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,- **भाषा**—**भाषित** पिशाचों की भाषा,—**महेश्वरः** शिव का विशेषण, - **यज्ञः** सब प्राणियों की बलि या आहुति देना, दैनिक पाँच यज्ञों में से एक बलिवैश्वदेव, - **योनिः** उत्पन्न प्राणियों का मूलस्रोत,—**राजः** शिव का विशेषण, - **वर्गः** भूत-प्रेतों का समुदाय, - **वासः** बहेड़े का वृक्ष, - **वाहनः** शिव का विशेषण, —**विद्या** 1. अपस्मार, मिरगी 2. भूत या पिशाच की सवारी,—**विद्यातमः**, - **विद्या** पिशाच विज्ञान,-**वृक्षः** बिभीतक वृक्ष, बहेड़े का पेड़, - **संसारः** मर्त्यलोक, - **संहारः** भूत विशाच का आवेश,—**संप्लवः** विश्व का जलप्रलय, या विनाश,—**सर्गः** संसार की सृष्टि, उत्पन्न प्राणियों का समुदाय, - **सूक्ष्म** सूक्ष्म-तत्त्व, - **स्थानम्** 1. जीवधारी प्राणियों का आवास 2. पिशाचों का वासस्थान, - **हत्या** जीवधारी प्राणियों की हत्या।

भूतमय (वि०) [भूत+मयट्] 1. सब प्राणियों समेत 2. उत्पन्न प्राणियों या मूलतत्त्वों से निर्मित।

भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1. होना, अस्तित्व 2. जन्म, उत्पत्ति 3. कुशल-क्षेम, कल्याण, आनन्द, समृद्धि —प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् - रघु० १।१८, नरपतिकुलभूत्यै २।७४, स वोऽस्तु भूत्यै भगवान मुकुन्दः—विक्रमांक० १।२ 4. सफलता, अच्छा भाग्य 5. धन-दौलत, सौभाग्य विपत्प्रतीकार-परेण मंगलं निषेव्यते भूतिसमुत्सुकेन वा कु० ५।७६ 6. गौरव, महिमा, विभूति 7. राख -भूतभूतिपरिग्रह-भोगभाक् - शि० १६।७१ (यहाँ 'भूति' शब्द का अर्थ 'धन' भी है), स्फुटोपमं भूतिसितेन शंभुना—१।४ 8. रंगीन धारियों से हाथी का शृंगार करना भक्ति-च्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य - मेघ० १९ 9. तपस्या या अभिचार के अनुष्ठान से प्राप्य अति-मानव शक्ति 10. तला हुआ मांस 11. हाथियों का मद, - **तिः** 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. शिवगण का विशेषण। समः—**कर्मन्** (नपुं०) कोई भी शुभ कृत्य या उत्सव, **काम** (वि०) समृद्धि का इच्छुक (**मः**) 1. राज्यमन्त्री 2. बृहस्पति का विशेषण, **कालः** शुभ या सुखद समय, **कीलः** 1. छिद्र, गर्त 1. खाई 3. भूगर्भगृह, तहखाना,—**कृत्** (पुं०) शिव का विशेषण, **गर्भः** भवभूति का विशे-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षण, द: शिव का विशेषण, - **नियानम्** धनिष्ठा नक्षत्र, - **भूषण:** शिव का विशेषण, **-वाहन:** शिव का विशेषण।

भूतिकम् [भूति-+-कन्] 1. कपूर 2. चन्दन की लकड़ी 3. औषधि का पौधा, कायफल।

भूमन् [भू+मनुप् [भूमिवर—पुं० राजा, प्रभु।

भूमन् (पुं०) [बहोर्भावः बहु--इमनिच् इलोपे म्वादेशः] 1. सारी परिमाण, प्राचुर्य, यथेष्टता, बड़ी संख्या --भूमना रसानां गहना: प्रयोगाः - मा० १।४, संभूयेव सुखानि चेतसि परं भूमानमातन्वते ४।९ 2. दौलत नपु० 1. पृथ्वी 2. प्रदेश, जिला, भूखण्ड 3. प्राणी, जन्तु 4. बहुवचनता (संख्या की) आप: स्त्रीभूम्नि अमर० नु० पंभूमन्]

भूमय (वि०) (स्त्री० यी) [भू+मयट्] मिट्टी का, मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न।

भूमि: (स्त्री०) [भवन्त्यस्मिन् भूताति-भू-+-मि किच्च वा डीप्] 1. पृथ्वी (विप० स्वर्ग, गगन या पाताल) द्यौर्भूमिरापोहृदयं शमरुचर्पच० १।१८२, रघु० २।७४ 2. मिट्टी, भूमि -उत्खातिनी भूमिः -श० १, कु० १।२४ 3. प्रदेश, जिला, देश, भू - विदर्भभूमि: 4. स्थान, जगह, जमीन, भूखण्ड प्रमदवनभूमयः - श० ६, अधित्यकाभूमि: -मै० २२।४१, रघु० ११५३ ३।६१, कु० ३।५८ 5. स्थल, स्थिति 6. जमीन, भूसंपत्ति 7. कहानी, घर का फर्श यथा 'सप्तभूमिक: प्रासाद:' में 8. अभिरुचि, हावभाव 9. (नाटक में) किसी पात्र का चरित्र या अभिनय---नु० भूमिका 10. विषय, पदार्थ, आधार विश्वासभूमि, स्नेहभूमि आदि 11. दर्जा, विस्तार, सीमा -कि० १०।५८ 12. जिह्वा, जबान। सम० **अन्तर:** पड़ोसी राज्य का राजा, **इन्द्र:**, **-ईश्वर:** राजा, प्रभु,—**कदंब:** कदम्ब का एक भेद, -गृहा भूमि में बिवर या गुफा,—**गृहम्** भूगर्भगृह, भौरा, तहखाना, **-चल:** -**चलनम्** भूचाल **-ज:** 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण 3. मनुष्य 4. भूमिज नाम का पौधा, (जा) सीता का विशेषण, **—जीवि** (पुं०) वैश्य, **तलम्** भूतल, पृथ्वी की सतह,—**दानम्** भूदान,-**देव:** ब्राह्मण **धर:** 1. पहाड़ 2. राजा 3. सात की संख्या,—**नाथ:**,--**प:**, **पति:**, -**पाल:**,—**भुज्** (पुं०) राजा, प्रभु--रघु० १।४७, —**पक्ष:** तेज घोड़ा, **पिशाचम्** ताड़ का वृक्ष (जिससे ताड़ी तैयार की जाती है),—**पुत्र:** मंगलग्रह,—**पुरंदर:** 1. राजा 2. दिलीप का नाम,-**भृत्** 1. पहाड़ 2. राजा, **—भृङ्गा** एक प्रकार की चमेली,-**रक्षक:** तेज घोड़ा,—**लाभ:** मृत्यु (शा० मिट्टी में मिल जाना), **—लेपनम्** गोबर -**वर्धन:**—**नम्** मृतक शरीर, शव,- **शय** (वि०) भूमि पर सोने वाला (य:) जंगली कबूतर, **—शयनम्** -शय्या भूमि पर सोना, -**संभव:**—**सुत:** 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण, (-वा-ता) सीता का विशेषण, **संनिवेश:** देश का सामान्य दर्शन,—**स्पृश्** (पुं०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3. वैश्य 4. जोर।

भूमिका [भूमि +-कै-+क + टाप्] 1. पृथ्वी, जमीन, मिट्टी 2. स्थान, प्रदेश, स्थल (भूका०) 3. कहानी, सभास्थल 4. पद, दर्जा -मनुस्मृतीसंज्ञा भूमिका साक्षात्कुर्वत: —योग० या नैर्याणिकादिभिरात्मा प्रथमभूमिकाया-मवतारित: - सांख्यप्र० 5. लिखने के लिए तख्ता --दे० अक्षरभूमिका 6. नाटक में किसी पात्र का चरित्र या अभिनय या यस्य वृत्त्यते भूमिका तां खलु तथैव भावेन सर्वे वर्णा: पाठिता:, कामन्दक्या: प्रथमे भूमिकां भाव एवाधीते--मा० १, लक्ष्मीभूमिकायां वर्तमानोर्वशी वारुणीभूमिकायां वर्तमानया मेनकया पृष्टा -विक्रम० ३, वि० १।६९ 7. नाटक के पात्र की अभिनय सम्बन्धी पोशाक 8. सजावट 9. किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय।

भूमी [भूमि+ ङीप्] पृथ्वी, दे० भूमि। सम० **-कदम्ब** -भूमिकदंब:,--**प्रति:**, **भुज्** (पुं०) राजा, **रुह्** (पुं०) **रुह:** वृक्ष।

भूयम् (क्यङ्) होने की स्थिति--जैसा कि 'ब्रह्मभूयम्' में -दाशरथिभूयम् शि० १४।८१।

भूयशस् (अव्य०) [भूय +-शस्] 1. अधिकतर, बहुधा, सामान्यत:, साधारण नियम के रूप में 2. अत्यधिक, बड़े परिमाण में 3. फिर, और आगे।

भूयस् (वि०) (स्त्री०-सी) [बहु+ईयसुन्, ईलोपे म्वादेश:] 1. अधिकतर, अपेक्षाकृत संख्या में अधिक या बहुत 2. अधिक बड़ा, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत—कु० ६।१३ 3 अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण 4. बहुत बड़ा या विस्तृत, अधिक:, बहुत, असंख्य भवति च पुनर्भूयान्भेद: फलं प्रति तद्यथा—उत्तर० २।४, भद्रं भद्रं क्रियत इतरं भगवद्भूयसे मङ्गलाय -मा० १।३, उत्तर० ३।४, रघु० १७।४१, उत्तर० २।३ 5. सम्पन्न, बहुल—एवं प्रायगुणभूयसी स्वकृति -मा० १, अव्य० 1. अधिक, अत्यधिक, अत्यन्त, अधिकतर, बहुत करके 2. और अधिक, फिर, आगे, और फिर, इसके अतिरिक्त, —पार्थेयमुत्सृज्य किमर्हणाय भूय:— विक्रम० ४।१६ रघु० २।१६. मेघ० १११ 3. बार बार, मुहुर्मुहु: --(इस शब्द का रूप भूयसा जब त्रि० वि० के रूप में प्रयुक्त होता है तो निम्नांकित अर्थ होते हैं 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, अत्यन्त, अपरिमित, अधिकांश में—न खरो न च भूयसा मृदु: रघु० ८।८, पश्चार्धेन प्रविष्ट: शरपतनभयात् भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2. बहुधा, साधारणत:- भूयसा जीविधर्म एष:—उत्तर० ५)। सम० **-वचनम्** 1. बार बार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखना 2. बार बार व्यापक दर्शन पर आधारित अनुमान,—भूयस् (अव्य०) पुनः पुनः, बार बार —भूयोभूयः शविवनगरीरथ्यापर्यटनात्—मा०१।१५. —विद्य (वि०) 1. अपेक्षाकृत विद्वान् 2. अत्यन्त विद्वान्।

भूयस्त्वम् [भूयस् + त्व] 1. बहुतायत, बहुलता 2. बहुसंख्यकता, प्रबलता।

भूयिष्ठ (वि०) [अतिशयेन बहु + इष्ठन् म्वादेश्च युक् च] 1. अत्यंत, अत्यंत असंख्यक या प्रचुर 2. अत्यंत महत्त्वपूर्ण, प्रधान, मुख्य 3. बहुत बड़ा या विस्तृत, अत्यधिक, बहुत, बहुत से, असंख्य 4. मुख्य रूप से, अत्यंत स्वस्थचित्त, अत्यंत संचरित या मुक्त, मुख्यतः भरा हुआ या चरित्र से युक्त (समास के अन्त में) अभिरूपभूयिष्ठा परिषद् श० १, शून्यमासभूयिष्ठ आहारोऽद्यते --श० २, रघु० ४।७० 5. प्रायः अधिकतर, लगभग सब (बहुधा क्तांत रूप के पश्चात्) -अर्थ उदितभूयिष्ठ एष तपनः- मा० १, निर्वाणभूयिष्ठमयास्य वीर्यम् -कु० ३५२, विक्रम० १।८, ष्ठम् (अव्य०) 1. अधिकांशतः, अत्यंत श० १।३१ 2. अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अधिक से अधिक —भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने श० ४।१७, रघु० ६।४, १३।१४।

भूर् (अव्य०) [भू + रुक्] तीन व्याहृतियों में से एक।

भूरि (वि०) [भू + क्रिन्] 1. बहुत, प्रचुर, असंख्य, यथेष्ट 2. बड़ा, विस्तृत, (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. इन्द्र का विशेषण (नपुं०) सोना, (अव्य०) 1. बहुत, अधिक, अत्यधिक नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घनाः—श० ५।१२ 2. बार बार प्रायः मुहुर्मुहुः। समः—गर्भः गधा,—तेजस् (वि०) अतिकान्तियुक्त (पुं०) अग्नि, —दक्षिण (वि०) 1. मूल्यवान् उपहार या पुरस्कारों से युक्त 2. पुरस्कार देने में उदार, दानशील,—दानम् उदारता,—धन (वि०) दौलतमंद, धनाढ्य,—धामन् (वि०) अतिकांति से युक्त,—प्रयोग (वि०) जिसका बहुत उपयोग हुआ है, सामान्य व्यवहार में आने वाला (शब्द),—प्रेमन् (पुं०) चकवा,—भागः (वि०) धनाढ्य, समृद्धिशाली,—रावः गौदड़ या लोमड़ी, रसः गन्ना,—लाभः बहुत फायदा,—विक्रम (वि०) बड़ा बहादुर, बड़ा योद्धा, —वृष्टिः (स्त्री०) बहुत बारिश, —श्रवस् (पुं०) कौरवों के पक्ष से लड़ने वाले एक योद्धा का नाम जिसे सात्यकि ने यमपुर भेजा था।

भूरिज् (स्त्री०) [भू + इजि, पृषो० साधुः] पृथ्वी।

भूर्जः [भू + ऊर्ज् + अच्] भोजपत्र का पेड़- भूर्जगतीस्तरुविन्यासः वि० २, कु० १।७। समः - कण्टकः वर्णसंकर जाति का पुरुष, जाति से बहिष्कृत ब्राह्मण की उसी वर्ण की स्त्री से उत्पन्न सन्तान आत्रेय्या तु जायते विप्रादाण्डालिन्यां भूर्जकण्टकः -मनु० १०।२१, पत्रः भोजपत्र का वृक्ष।

भूमिः (स्त्री०) [भू + मि, नि० ऊत्वम्] पृथ्वी।

भूष् (स्वा० पर०, चुरा० उभ०-भूषति, भूषयति-ते, भूषित) 1. अलंकृत करना, सजाना, शृंगार करना -धृधि भूषयति धृतं वपुः भट्टि० २०।१५ 2. अपने आपको सजाना (भ्वा०) भूषयते कन्या स्वयमेव 3. फैलाना, बखेरना, बिछाना -रघु० २।३१, अभि,— अलंकृत करना, भूषित करना, सौन्दर्य देना -शि० ७।३८, वि -, अलंकृत करना, सजाना -केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषम् भर्तृ० २।१९, शि० १।३२, कु० १।२८।

भूषणम् [भूष्+ल्युट्] 1. अलंकरण, गहनावट 2. अलंकार, शृंगार, सजावट का सामान भूष्यतेऽनेन खलु भूषणानि सतत्वं वाभूषणं भूषणम्—शब्दा० २।१९, रघु० ७।२, १३।५७।

भूषा [भूष् + क + टाप्] 1. सजावट, भूषित करना 2. आभूषण, सजावट जैसा कि 'कर्णभूषा' 3. रत्न।

भूषित (भू० क० कृ०) [भूष् + क्त] सजाया हुआ, सुभूषित, -मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः।

भूष्णु (वि०) [भू + ष्णु] 1. होने वाला, बनने वाला जैसा कि अलंभूष्णु 2. धन या समृद्धि की इच्छा करने वाला—मनु० ४।१३५।

भृ (स्वा० जुहो० उभ० भरति —ते, बिभर्ति—बिभृते, भृत, कर्मवा० भ्रियते, इच्छा० बिभरिषति या बुभूर्षति)। भरना 1. जठर को न बिभर्ति केवलम्-पंच० १।२२ 2. भरना, व्याप्त होना, पूर्ण होना अभार्षीद् ध्वनिना लोकान् भट्टि० १५।२४ 3. रखना, सहारा देना, संभालना, पोषण करना अरं धरित्र्या विभराम्बभूव—रघु० १८।४४ कूर्मो बिभर्ति धरणीं खलु पृष्ठदेशे - चौर० ५०, भट्टि० १७।२६ 4. संधारण करना, दूध पिलाना, लालन-पालन करना, प्रतिपालन करना, संभाल रखना, परवरिश करना दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्—हि० १।१५ 5. धारण करना, रखना, अधिकार में लेना—मिन्धोर्बभार सलिलं शयनीयलब्धसीमेव—कि० ७।५७, शिशुजनन खलु बिभर्ति क्षितीन्द्राः—भामि० १।७४, हस्तिवय चाक्ष बभार वाला —कु० १।३२, इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तिर्बिभर्ति —मेघ० ८४, श० २।४ 6. पहनना- बिभ्रज्जटामण्डलम् श० ७।११, ६।५ विवाहकौतुकं ललितं बिभ्रत एक तस्य) रघु० ८।१, १०।१० जटाश्च बिभृयात्रित्यम्- मनु० ६।६ 7. सहसा करना, अनुभव करना, भोगना, सहन करना (हर्ष या दुःख आदि) भावशुद्धिसहितैर्मदं जनो नाटकैश्चि बभार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोजनैः—शि० १८।५०, सत्रासमबिभः शक्रः—भट्टि० १७।१०८, श० ७।२१ 8. समर्पण करना, प्रदान करना, देना, पैदा करना यौवनेन मदलेखाराः शोभां बिभ्रति सुभ्रुवः सुभा० 9. रखना, थामना, धारण करना (स्मृति में) 10. भाड़े पर लेना—मनु० ११।६२, याज्ञ० ३।२३५ 11. लाना, या ले जाना, उद्—, धारण करना, सहारा देना, सँभालना—भुजालम्बविभ्रान्ते—गीत० १, सम् , 1. एकत्र करना, जोड़ना, इकट्ठा रखना त्र्यायाय संभृतानाम्: रघु० १७, ५।५, ८।३, भट्टि० ६।८० 2. उत्पन्न करना, पैदा करना प्रकाशित करना, सम्पन्न करना—मुखश्रमसंभृतो मुखे स्वेदलवः —रघु० ८।५१, किं० ९।४९, मेघ० ११५ 3. संधारण करना, पालन-पोषण करना, दूध पिलाना 4. तैयार करना, सज्जित करना विक्रम० ५, रघु० १९।५४ 5. देना, अर्पित करना, प्रस्तुत करना।

भृकुंश (सः) [भ्रुवा कुंशः (कुंश् (ग)+अच्] भावप्रकाश इमिताज्ञापने यज्ञ, नि० संप्रसारण] स्त्री का वेष धारण करने वाला नट।

भृकुटि, टी [भ्रुवः कुटिः (कुट्+इन्) कौटिल्य, नि० सप्र० भौंह। दे० भ्रू (भ्रृ) कुटि।

भृग् (अव्य०) अग्नि की चटपटाहट आवाज की अभिव्यक्ति करने वाला अनुकरणात्मक (शब्द)।

भृगुः [भ्रस्ज्+कु, सप्र. दुग्वम्] एक ऋषि जो भृगुवंश का पूर्वपुरुष माना जाता है, इस वंश का वर्णन मनु० १।३५ में मिलता है; मनु से उत्पन्न दश मूलपुरुषों में से एक (एक बार जब ऋषियों का इस बात पर एक मत न हो सका कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव में से कौन सा देवता ब्राह्मणों की पूजा का श्रेष्ठ अधिकारी है तो भृगु को इन तीनों देवों के चरित्र का परीक्षण करने के लिए भेजा गया। वह पहले ब्रह्मा के निवास स्थान पर गया और जानबूझ कर प्रणाम नहीं किया इस बात पर ब्रह्मा ने उसे बहुत फटकारा परन्तु क्षमा माँगने पर वह शांत हो गए। उसके पश्चात् वह कैलाश पर्वत पर शिव जी के पास गया तथा पहले की भाँति प्रणामादि के शिष्टाचार का पालन नहीं किया। प्रतिहिंसापरायण शिव क्रुद्ध होकर भृगु का उस समय भस्म कर देता यदि मृदु शब्दों से भृगु ने उन्हें शांत न किया होता। (एक दूसरे वृत्तान्त के अनुसार भृगु का ब्रह्मा ने आदर सत्कार नहीं किया, इसलिए भृगु ने शाप दे दिया कि संसार में उसकी आराधना और पूजा नहीं होगी; शिव को भी 'लिंग' बन जाने का अभिशाप दिया क्योंकि जब भृगु शिव के पास गया तो उस समय वह उससे मिल न सका क्योंकि उस समय शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ विराजमान थे; अन्त में वह विष्णु के पास गया और जब उसे सोता हुआ पाया तो उसने विष्णु की छातीपर ठोकर मारी जिससे उसकी आँख खुल गई। की बरिखाने के बजाय उस समय विष्णु ने भृगुता के साथ भृगु से पूछा कि कहीं उनके पैर में चोट तो नहीं लग गई, और यह कहने के साथ ही भृगु का पैर शनैः२ मलने लगा। तब भृगु ने कहा कि यह विष्णु ही सबसे अधिक बलशाली देवता हैं क्योंकि इसने अपने सबसे शक्तिशाली शस्त्र कृपालुता और उदारता से अपना स्थान सबसे प्रमुख बना लिया है, इसलिए विष्णु ही सब की पूजा का सर्वोत्तम अधिकारी समझा गया।) 2. जमदग्नि ऋषि का नाम 3. शुक्र का विशेषण 4. शुक्र ग्रह 5. उत्प्रपात, झलबां चट्टान भृगुपतनकारणमपृच्छम् - दश० 6. समतल भूमि, पहाड़ की समतल चोटी 7. कृष्ण का नाम। सम०—उद्वहः परशु राम का विशेषण, जः, तनयः शुक्र का विशेषण, —नन्दनः 1. परशुराम का विशेषण बीरो न वस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽपि - उत्तर० ५।३४ 2. शुक्र,—पतिः परशुराम का विशेषण—भृगुपतियशोवर्त्म यत् क्षौद्यचन्द्रम् मेघ० ५७, इसी प्रकार भृगूणां पतिः, —वंशः परशुराम से प्रवर्तित वंश, वारः वासरः शुक्रवार, जुमा,—शार्दूलः, श्रेष्ठः—सत्तमः परशुराम का विशेषण, सुतः, सूनुः 1. परशुराम का विशेषण 2. शुक्र का विशेषण।

भृङ्गः [भृ+गन् कित्, नुट् च] भौंरा भामि० १।५, रघु० ८।५३ 2. एक प्रकार की भिर्र, तितैया 3. एक प्रकार का पक्षी, भीम राज 4. लम्पट, कामुक, व्यभिचारी, तु० भ्रमर 5. सोने का कलश,—गम् अभ्रक,—री भौरी—भृंगी पुष्पं पुरुषं स्त्री वांछति नवं नवम्। सम०—अभीष्टः आम का पेड़,—आनन्दा यूथिका बेल, आवली भौंरों की पांत, मक्खियों का झुण्ड,—जम् 1. अगर 2. अभ्रक (जा) भांग का पौधा,—पर्णिका छोटी इलायची,—राज् (पुं०) 1. एक प्रकार की बड़ी मक्खी 2. भंगरा नाम का पौधा, रिटिः, —रीटिः शिव का एक गण (जो बहुत कुरूप कहा जाता है), —रोलः एक प्रकार की भिर्र, वल्लभः कदंब वृक्ष का एक भेद।

भृङ्गारः, —रम् [भृङ्ग+ऋ+अण्] 1. सोने का कलश या घट 2. विशेष आकार का कलश, झारी शिशिर सुरभि-सलिल पूर्णोऽयं भृङ्गारः वेणी० ६ 3. राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला घड़ा, —रम् 1. स्वर्ण 2. लौंग।

भृङ्गारिका, भृङ्गारी [भृङ्गार+कन्+टाप्, इत्वम्] झीगुर।

भृङ्गिन् (पुं०) [भृङ्ग+इनि] 1. वट वृक्ष 2. शिव के एक गण का नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृङ्गिरि (री) टिः [भृङ्ग+रट्+इन्, पृषो० साधुः] दे० भृङ्गरिटि ।

भृङ्गिरिटि [भृङ्गे+रिट्+इ, अलुक् स०] शिव के एक गण का नाम ।

भृज (भ्वा० आ० भर्जते) भूनना, तलना ।

भृंटिका [=भिरिण्टिका, पृषो० साधुः] एक प्रकार का घुघची का पौधा ।

भृण्डिः (स्त्री०) [?] लहर ।

भृत ((भृ० क० कृ०) [भृ+क्त] 1. धारण किया हुआ 2. सहारा दिया हुआ, संधारित, पालन पोषण किया गया, दुध पिला कर पाला गया 3. अधिकृत, सहित, सज्जित 4. परिपूर्ण, भरा हुआ 5. भाड़े पर लिया गया, वैतनिक,—तः भाड़े का नौकर, भाड़े का टट्टू, वेतनभोगी,- उत्तमस्त्वात्मधीयो यो मध्यमस्तु कृषीवलः, अधमो भारवाही स्यादित्येवं त्रिविधो भृतः- मिता० ।

भृतक (वि०) [भृतं भरणं वेतनमुपजीवति कन्] मजदूरी पर रक्खा हुआ, वैतनिक,—कः भाड़े का नौकर । **समः - अध्यापकः** भाड़े का अध्यापक, **अध्यापित** (वि०) भाड़े के अध्यापक द्वारा शिक्षित (तः) वह विद्यार्थी जो अपने अध्यापक को फीस देकर पढ़ा है (आधुनिक काल का फीस देकर पढ़ने वाला विद्यार्थी) मनु० ३।१५६ ।

भृतिः (स्त्री०) [भृ+क्तिन्] 1. धारण करना, संभालना, सहारा देना 2. संपालन, संधारण 3. नेतृत्व करना, मार्ग-प्रदर्शन 4. परवरिश, सहायता, संपोषण 5. आहार 6. मजदूरी, भाड़ा 7. भाड़े के बदले सेवा 8. पूजा, **मूलधन** । **समः—अध्यापनम्** वेतन लेकर पढ़ाना (विशेषतः 'वेदाध्ययन'),—भुज् (पुं०) वेतनभोगी नौकर, भाड़े का टट्टू, —रूपम् किसी विशेष काम के लिए पारिश्रमिक के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार ।

भृत्य (वि०) [भृ+क्यप् तक् च] जिसकी परवरिश की जानी चाहिए, पालन-पोषण किये जाने के योग्य, - त्यः 1. कोई भी सहायता चाहने वाला व्यक्ति 2. नौकर, आश्रयी, दास 3. राजा का नौकर, राज्य मन्त्री, **त्या** पालन-पोषण करना, दूध पिलाना, परवरिश करना, देखभाल करना - जैसा कि 'कुमारभृत्य' में 2. संधारण, संपोषण 3. जीवित रहने का साधन, आहार 4. मजदूरी 5. सेवा । **समः—जनः** 1. सेवक, परिचित 2. सेवकजन, **भर्तृ** (पुं०) कुल का स्वामी **वर्गः** सेवकों का समूह,—**वात्सल्यम्** नौकरों के प्रति कृपा, **वृत्तिः** (स्त्री०) नौकरों का भरण-पोषण मनु० ११।७ ।

भृत्रिम (वि०) [भृ+क्रिमप्] पाला पोसा गया, परवरिश किया गया ।

भृमिः [भ्रम्+इ, संप्र०] भंवर, जलावर्त ।

भृश (दिवा० पर० भृश्यति) नीचे गिरना, दे० भ्रंश ।

भृश (वि०) [भृश्+क] (म० अ० भ्रशीयस्, उ० अ० भ्रशिष्ठ) मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, गहन, अत्यधिक, बहुत ज्यादह, **शम्** (अव्य०) 1. ज्यादह, बहुत ज्यादह अत्यंत, गहराई के साथ, प्रचण्डता के साथ, अत्यधिक, बहुत ही अधिक, बहुत करके तमवेक्ष्य रुरोद सा भृशम् कु० ४।२५, रघुर्भृशं वक्षसि नेन ताडितः रघु० ३।६१, चुकोप तस्मै स भृशम् ३।५६, मनु० ७।१७०, ऋतु० १।११ 2. प्रायः, बारबार 3. अपेक्षाकृत अच्छी रीति से । समः **कोपन** (वि०) अत्यन्त क्रोधी, **दुःखित**,—**पीडित** (वि०) अत्यन्त कष्टग्रस्त, **संहृष्ट** (वि०) अत्यन्त प्रसन्न ।

भृष्ट (भृ० क० कृ०) [भृज्+क्त] तला हुआ, भुना हुआ, सेका हुआ । समः **अन्नम्** उबाला हुआ या तला हुआ धान्य, अन्न,—**शवाः** (ब० व०) भुने हुए जौ ।

भृष्टिः (स्त्री०) [भ्रस्ज्+क्तिन्] 1. तलना, भूनना, सेंकना 2. उजाड़ हुआ बाग या उपवन ।

भृ (क्रया० पर० भृणाति) 1. धारण करना, परवरिश करना, सहारा देना, पालन-पोषण करना 2. तलना 3. कलंकित करना, निन्दा करना ।

भेकः [भी+कन्] मेंढक,—पङ्क्ति निमग्ने करिणि भेकी भवति मूर्धगा. 2. डरपोक आदमी 3. बादल को 1. छोटा मेंढक 2. मेंढकी । **गमः** भुज् (पुं०) साँप, **रवः, शब्दः** मेंढकों का टर्राना ।

भेडः [भी+ड] 1. भेंडा, भेड़ 2. बेड़ा, घन्टई ।

भेडः [=भेंड, पृषो० साधु०] भेंडा ।

भेदः [भिद्+घञ्] 1. टूटना, टुकड़े टुकड़े होना, फाड़ना, (लक्ष्यपर) आघात करना 2. चीरना, फाड़ना 3. विभक्त करना, विभुक्त करना 4. बींधना, छिद्रण 5. भंग, विदारण 6. बाधा, विघ्न 7. विभाजन, विभोजन 8. छिद्र, गर्त, विवर, दरार 9. चोट, क्षति घाव 10. भिन्नता, अन्तर-तयोरभेदप्रतिपत्तिरस्मिन् मे-भर्तृ० ३।९९, अगौरवभेदेन -कु० ६।१२, भग० १८।१९, २१, रस०, काल" आदि 11. परिवर्तन, विकार बुद्धिभेदम् भग० ३।२६ 12. फूट, असहमति 13. विवृति, भेद खोलना जैसा कि 'रहस्यभेद' में 14. विश्वासघात, देशद्रोह 15. किस्म, प्रकार- भेदाः पद्मस्यैतादयो नित्यं-अमर० शिरीषपुष्पभेदः 16. द्वैधवाद (राजनय में) शत्रुपक्ष में फूट डालकर उसको जीत कर किसी की ओर करना, शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के चार उपायों में से एक दे० 'उपाय' और 'उपायचतुष्टय' 18. पराजय 19. (आयु० में) **रेचन विधि**, अंतःकोष्ठ साफ करना । **समः—अर्हः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(द्वि० व०) 1. फूट और मेल, असहमति और सहमति 2. भिन्नता और एकरूपता भेदाभेदज्ञानम् **उन्मुख** (वि०) फूटने वाला, खिलने वाला विकस० २।७,—**कर**,—**कृत्** (वि०) फूट के बीज बोने वाला **दर्शिन्—दृष्टि**,—**बुद्धि**, (वि०) विश्व को परमात्मा से भिन्न समझने वाला,—**प्रत्ययः** द्वैतवाद में विश्वास, **—वादिन्** (पु०) जो द्वैत सिद्धांत को मानता है, सह (वि०) 1. जो विभक्त या वियुक्त हो सके 2. फलुवित होने योग्य, दूषणीय, प्रलोभन द्वारा जो फंसाया जा सके।

भेदक (वि०) (स्त्री० **दिका**) [भिद्+ण्वुल्] 1. तोड़ने वाला, खण्ड खण्ड करने वाला, विभक्त करने वाला, अलग अलग करने वाला 2. बोधने वाला, छिद्र करने वाला 3. नष्ट करने वाला, विनाशक 4. भेद करने वाला, अन्तर करने वाला 5. परिभाषा देने वाला, —**कः** विशेषण या विभेदकारी विशेषता।

भेदनम् [भिद्+ल्युट्] 1. टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना, फाड़ना 2. बाँटना, अलग-अलग करना 3. भेद करना 4. फूट के बीज बोना, मनमुटाव पैदा करना 5. भंग कर, शिथिल करना 6. उद्घाटन, खोलना,—**नः** मुअर।

भेदिन् (वि०) [भिद्+णिनि] तोड़ने वाला, विभक्त करने वाला, भेद करने वाला आदि।

भेदिरम्, भेदुरम् [भिद्+किरच्, कुरच् वा, पृषो० दीर्घ] वज्र।

भेद्यम् [भिद्+ण्यत्] विशेषण, संज्ञा। **समo—लिंग** (वि०) लिंग द्वारा जो पहचाना जा सके।

भेरः [विभेत्यस्मात्—भी+रन्] घौंसा, ताशा (बड़ा ढोल)।

भेरिः,—री (स्त्री०) [भी+क्रिन्, डा० गुण, नेर्→र्इयङ्] घौंसा, ताशा (बड़ा ढोल)। भग० १।१३।

भेरुण्ड (वि०) भयानक, भयपूर्ण, डरावना, भयंकर, दे० पक्षियों का एक भेद,—**डम्** कर्मधारय, कर्मधारिन्।

भेरुण्डकः [भेरुण्ड+कन्] भेड़िया, शृगाल।

भेल (वि०) [भी+एलच्, रस्य लः] 1. डरपोक, भीरु 2. मूर्ख, अनजान 3. अस्थिर, चंचल 4. लंबा 5. फुर्तीला, चुस्त,—**लः** नाव, बेड़ा, तिनई।

भेलकः,—कम् [भेल+कन्] नाव, बेड़ा।

भेष् (स्वा० उभ०—भेषति-ते) डरना, त्रस्त होना, भयभीत होना।

भेषजम् [भेषं रोगभयं जयति—जि+ड तारा०] औषधि, भैषज्य या दवा नरनाभ्य आयुं स्वर्धिदृ परमं भेषजं-सिंह—गया० १५, अतिवीर्यवर्तीव भेषजं बहुरल्पीयसि दूषयते गुणः—कि० २।४ 2. चिकित्सा या इलाज 3. एक प्रकार का सोंचा। **समo—अ** (आ) **गारः,** —**रम्** अत्तार (औषधविक्रेता) की दुकान,—**अङ्गम्** कोई चीज जो दवा खाने के बाद ली जाय।

भैक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [भिक्षैव तत्समूहो वा—अण्] भिक्षा पर जीवन-निर्वाह करने वाला, **क्षम् 1.** मांगना भीख —मनु० ६।५५, याज्ञ० ३।४२ 2. जो कुछ भिक्षा में प्राप्त हो, भीख, दान—भैक्षेण वर्तयेच्छियम् मनु० २।१८८, ४।५। **समo—अन्नम्** भिक्षा में प्राप्त आहार, भिक्षा का अन्न,—**आशिन्** (वि०) भिक्षा में प्राप्त अन्न को खाने वाला, (पु०) भिखारी, साधु, —**आहारः** भिखारी, **कालः** भीख मांगने का समय, **चरणम्,—चर्यम्,—चर्या** भीख मांगने के लिए इधर उधर फिरना, भीख मांगना, भिक्षा एकत्र करना, **जीविका,—वृत्तिः** (स्त्री०) भिखारीपन,—**भुज्** (पु०) भिखारी, भिक्षमंगा।

भैक्षवम्, भैक्षकम् [भिक्षूणां समूहः—अण्] भिखारियों का समूह।

भैक्ष्यम् [भिक्षा+ष्यञ्] मांग कर प्राप्त किया हुआ अन्न, भिक्षा, भीख, दान दे० 'भैक्ष'।

भैम (वि०) (स्त्री०—**मी**) [भीम+अण्] भीमविषयक, —**मी 1.** भीम की पुत्री, नल की पत्नी दमयन्ती का पितृपरक नाम 2. माघ शुक्ला एकादशी, या उस दिन किया जाने वाला उत्सव।

भैमसेनिः,—न्यः [भीमसेन+इञ्, ष्यञ् वा] भीमसेन का पुत्र।

भैरव (वि०) (स्त्री०—**वी**) [भीरु—अण्] 1. भयानक, डरावना, भीषण, भयावह 2. भैरवसंबंधी, —**वः** शिव का (इसके आठ रूप गिनाये गये हैं) एक रूप। —**वी 1.** दुर्गादेवी का एक रूप 2. हिन्दू-संगीत पद्धति में एक विशेष रागिनी का नाम 3. बारह वर्ष की कन्या का किशोरी जो दुर्गा-पूजा के उत्सव पर दुर्गा की प्रतिनिधित्व करे, **वम्** ज्ञान, भीगणता। **समo—ईशः** विष्णु का विशेषण, शिव का विशेषण,—**तर्जकः,** —यातना देकर्ती में आकर शरीर लगाने वाले व्यक्तियों की आत्मा को परमात्मा में लीन होने के योग्य बनाने के लिए भैरव द्वारा उनकी विशुद्धि के लिए उनको दी जाने वाली यातना।

भैषजम् [भेषज+अण्] औषधि, दवा,—**जः** लम्बा पक्षी, लावक।

भैषज्यम् [भिषज. कर्म भेषज+स्वार्थे वा ष्यञ्] 1. औषधियां देना, चिकित्सा करना 2. दवादारू, औषधि, दवाई 3. आरोग्यशक्ति, नीरोगकारिता।

भैष्मकी [भीष्मक+अण्+ङीप्] विदर्भराज भीष्मक की पुत्री, रुक्मिणी का पितृपरक नाम।

भोक्तृ (वि०) [भुज्+तृच्] 1. उपभोक्ता 2. कब्जा करने वाला 3. उपभोग में लाने वाला, प्रयोक्ता 4. महसूस करने वाला, अनुभव करने वाला, भोगने वाला, (पुं०) 1. काविज, उपभोक्ता, उपयोक्ता 2. पति 3. राजा, शासक 4. प्रेमी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोगः [भुज्+घञ्] 1. खाना, खा पी जाना 2. सर्प का फण, आस्फोद 3. स्वामित्व 4. उपयोगिता, उपादेयता 5. हकदार करना, शासन, सरकार 6. प्रयोग, (घरोहर आदि का) व्यवहार 7. भोगना, झेलना, अनुभव करना 8. प्रतीति, प्रत्यक्षज्ञान 9. स्त्रीसंभोग, मैथुन, विषयसुख 10. उपभोग, उपभोग की वस्तु —भोगे रोगभयम् भर्तृ० ३।३५, भग० १।३३ 11. भोजन, दावत, भोज 12. आहार 13. नैवेद्य 14. लाभ, फायदा 15. आय, राजस्व 16. धनसंपत्ति 17. वेश्या को दी गई मजदूरी 18. वक्र, घमाव, चक्कर 19. सांप का फैलाया हुआ फण —स्वसदृशितभुजङ्ग-भोगाङ्गदग्रन्थि आदि मा० ५।२३, रघु० १०।७, ११।५९ 20. सांप। सम० **अर्ह** (वि०) उपभोग्य (**र्हम्**) संपत्ति, दौलत, **-अन्नम्** अनाज, अन्न,—**आधिः** बन्धक में रक्खी हुई वस्तु जिसका उपभोग तब तक किया जाय जब तक कि वह छुड़ाई न जाय, **आवली** किसी व्यावसायिक प्रशस्तिवाचक द्वारा स्तुतिगान —**तल्पः** स्तुतिव्रतस्तस्य ग्रंथौ भोगावली भवेत् हेम०, —**आवासः** जनानखाना, अन्तःपुर, **कर** (वि०) सुखद या उपभोगप्रद,—**कुच्छ्रम्** वेश्याओं को दी गई मजदूरी, **गृहम्** महिलाकक्ष, अन्तःपुर, जनानखाना, —**तृष्णा** सांसारिक उपभोगों की इच्छा तदुपार्जितस्वर्गादिजः **पितृव्रतेन न भोगतृष्णया** रघु० ८।२, स्वार्थपूर्ण उपभोग' मा० २, **-देहः** 'भोग-शरीर' सूक्ष्मशरीर या कारणशरीर जिसके द्वारा व्यक्ति परलोक में अपने पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों का सुखदुःख भोगता है, **धरः** सांप, **-पतिः** राज्यपाल या विषयाधिपति,—**पालः** साईस, **पिशाचिका** भग्न,- **भृतकः** जो केवल जीविका के लिए नौकरी करता है, **वस्तु** (नपुं०) उपभोग की वस्तु या पदार्थ, **स्थानम्** (नपुं०) भोगावास, दे०—**स्थानम्** 1. उपभोग का आसन शरीर 2. अन्तःपुर।

भोगवत् (वि०) [भोग+मतुप्] 1. सफल, प्रसन्नता देने वाला, खुशी देने वाला 2. प्रसन्न, समृद्ध 3. वक्र वाला, मंडलाकार, कुण्डलाकार, (पुं०) 1. सांप 2. पहाड़ 3. नृत्य, अभिनय, और गायन (स्त्री०—ती) 1. पाताल गंगा का विशेषण 2. सर्पाधिष्ठात्रिका 3. पाताल लोक में नाग—पिशाचिकाओं का नगर 4. चान्द्रमास की द्वितीया तिथि की रात।

भोगिकः [भोग ; ठन्] साईस, घोड़े का रखवाला।

भोगिन् (वि०) [भोग+इनि] 1. खाने वाला 2. उपभोक्ता 3. भोगने वाला, अनुभव करने वाला, सहन करने वाला 4. उपभोक्ता, स्वामी—इन उपयुक्त चार अर्थों में (समास के अन्त में प्रयोग) 5. मोड़दार 6. फणदार 7. उपभोग में मग्न, विषयवासनाओं में लिप्त पंच० २।६५, (यहां इसका अर्थ 'फण से युक्त' भी है) 8. सम्राट्, सम्पत्तिशाली, (पुं०) 1. भारत सम्राटों की विशेष उपाधि का रुद्र० ५। ७८ रघु० २।२३, ४।४८, १०।७, १२।१२ 2. राजा 3. विष्णु 4. नाग 5. गाय का बछिया 6. आश्लेषा नक्षत्र, -नी राजा के अन्तःपुर की स्त्री जो रानी के रूप में अभिषिक्त न हुई हो, उपपत्नी। सम० —**इन्द्रः** ईश्वर या सार्वभौम,—**कान्तः** धाय, दवा, -**भुज्** (पुं०) 1. नेवला 2. मोर, **वल्लभम्** चंदन।

भोग्य (वि०) [भुज् ण्यत्, कुत्वम्] 1. उपभोग के योग्य, या काम में लाने योग्य- मेघ० ८।१४, पंच० १।१।७ 2. भोगने योग्य या सहन करने योग्य —मेघ० १ 3. व्यभिचारिणी, **ग्यम्** 1. उपभोग का कोई पदार्थ 2. दौलत, सम्पत्ति, जायदाद 3. अनाज, अन्न, **ग्या** वेश्या, वारांगना।

भोजः [भुज् अच्] 1. खाना या (या धारा) का प्रसिद्ध राजा, (ऐसा माना जाता है कि राजा भोज ईसवीं शताब्दी के अन्त में या पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में हुए थे, वे संस्कृत ज्ञान के बड़े अभिभावक थे, सरस्वतीकंठाभरण आदि कई ग्रंथों का उन्हें प्रणेता समझा जाता है) 2. एक देश का नाम 3. विदर्भ के राजा का नाम भोजेन दूतो रघवे विसृष्ट: रघु० ५।२६, ७।१-२६, ३५, **जाः** (पं० व० व०) एक जाति का नाम। सम०- **अधिपः** 1. कंस का विशेषण, **इन्द्रः** भोजों का राजा,-**कटम्** स्वयं द्वारा स्थापित एक नगर का नाम, **देवः, राजः** 1. राजा भोज दे० (1) ऊपर, **पतिः** 1. राजा भोज, 2. कंस का एक विशेषण।

भोजनम् [भुज् ल्युट्] 1. खाना, भोजन करना,-अजीर्णे भोजनं विषम् 2. आहार 3. भोजन (खाने के लिए) देना, खिलाना 4. उपयोग करना, उपभोग करना 5. उपभोग की सामग्री 6. जिसका उपभोग किया जाय 7. संपत्ति, दौलत, जायदाद, -नः लिंग का विशेषण। सम०- **अधिकारः** खाने का कार्यभार, **खाद्य-सामग्री** का अधीक्षण, कार्याध्यक्ष का पद,—**आच्छादनम्** खाना-कपड़ा, **कालः, वेला, समयः** भोजन करने का समय, खाने का समय, **त्यागः** आहार का त्याग, उपवास, **भूमिः** (स्त्री०) भोजनकक्ष, खाने का कमरा, — **विशेषः** स्वादिष्ट भोजन, विशिष्ट भोजन, **वृत्तिः** (स्त्री०) भोजन, आहार, **व्ययः** (वि०) खाने में व्यस्त, **व्ययः** खाने-पीने का खर्च।

भोजनीय (वि०) [भुज्—अनीयर्] भक्ष्यनीय, खाने योग्य, **यम्** आहार।

भोजयितृ (वि०) [भुज्+णिच्+तृच्] जो दूसरों को भोजन कराये, खिलाने वाला।

भोज्य (वि०) [भुज्+ण्यत्] 1. जो खाया जा सके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. उपभोग के योग्य, अधिकार में करने के योग्य 3. भोगने के योग्य, अनुभव करने लायक 4. संभोग सुख के योग्य. **ज्यम्** 1. आहार, खाना -स्वं भोक्ता अहं न भोज्यभूतः-पंच० २, कु० २।१५, मनु० ३।२४० 2. खाद्य सामग्री का भंडार, खाद्य पदार्थ 3. स्वादिष्ट भोजन 4. उपभोग। **समः कालः** भोजन करने का समय, **संभवः** आमरस, शरीर का प्राथमिक रस।

भोज्या [भोज्य + टाप्] भोज की एक रानी- रघु० ६।५९ सुभ० १३।

भोटः एक देश का नाम, (कहते हैं कि 'तिब्बत' का ही यह नाम है)। **समः-अंशः** 'भूटान' कहलाने वाला प्रदेश।

भोटीय (वि०) [भोट + छ] तिब्बतवासी।

भोभीरा (स्त्री०) संगा. विद्धम।

भोस् (अव्य०) [भो + डोस्] संबोधन सूचक अव्यय जिसका अनुवार होता है 'अरे, ओ, अहो, ओहू, अहं' के कीड़ब भोः मुभ० २. (स्वर या संयोग व्यंजन परे होने पर पदान्त विसर्ग का लोप हो जाता है) अयि, भो महाधिपुत्र-श० ७, कभी-कभी इसकी दोहराया जाता है भो भोः शकुन्तलापरिवारिकाः जानपदाः मा० १, इसके अतिरिक्त 'भो' का प्रयोग 'शोक' तथा 'प्रश्न-वाचकता' के लिए भी होता है।

भोजङ्गः (वि०) (स्त्री० गी) [भुजङ्ग-अण्] सर्पिल, साप जैसा **गम्** 'आश्लेषा' नामक नक्षत्र।

भौट्टः [भोट-अण् पृषो०] तिब्बती, तिब्बतवासी।

भौत (वि०) (स्त्री० ती) [भूतानि प्राणिनोऽधिकृत्य प्रवृत्तः, तानि देवता वा अस्य अण्] 1. जीवित प्राणियों से संबंध रखने वाला 2. मूलभूत, भौतिक 3. पैशाचिक 4. पागल, विक्षिप्त, -तः भूतग्रस्त व पिशाचों की पूजा करने वाला, देवरु, पुजारी,- **तम्** भूत प्रेतों का समूह।

भौतिक (वि०) (स्त्री०-की) [भूत+ठक्] 1. जीवित प्राणियों से संबंध रखने वाला भनु० ३।७४ 2. स्थूल तत्त्वों से निर्मित, भौतिक, भौतिक एषैषणाभ्यो खलु भौतिकेषु रघु० २।५७ 3. भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला, -कः शिव का नाम, **-कम्** मोती। **समः -मतः** विज्ञान, **विद्या** जादूगरी, अभिचार।

भौम (वि०) (स्त्री०) [भूमि + अण्] 1. पार्थिव 2. पृथ्वी पर होने वाला, मिट्टी का बना हुआ, लौकिक भोभी मनेः स्थानपरिग्रहोऽयम् -रघु० १३।२६, १५।५९ 3. मिट्टी का, मिट्टी से निर्मित 4. मंगल से संबद्ध, **मः** 1. मंगलग्रह 2. तन्त्रासुर का विशेषण 3. अज्ञ 4. प्रकाश। **समः -दिवसः, वारः, वासरः** मंगल-वार, -वि० १५।१७. **रत्नम्** मूंगा।

भौमनः [भूमन्+अण्] देवों के लिए निर्धारकर्मों का नाम।

भौमिक (वि०) (स्त्री० -की) [भूमि ठक्यत् वा]

भौम्य (वि०) पार्थिव, लौकिक, पृथ्वी पर रहने वाला या विद्यमान।

भौरिकः [भूरि सुवर्णमस्यधिकरोति - ठक्] राजकीय कोश में सुवर्णाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष।

भौवनः देव० भौमन।

भौवादिक (वि०) (स्त्री—की) [भ्वादि+ठक्] भ्वादि अर्थात् भू से आरम्भ होने वाली धातुओं से सम्बन्ध रखने वाला।

भ्रंश् (स्था० आ, दिवा० पर० भ्रंशते, भ्रश्यति, भ्रष्ट (अधिकर० अण० के साथ) 1. गिरना, टपकना, उलटकर जाना,-हस्तादभ्रष्टमिदं त्रिसाभरणम्- श० ३।२६ 2. गिरना, विचलित होना, अलग छूट जाना - बुद्धाद्भ्रष्टः हि० ४, रघु० १४।१६ 3. वञ्चित होना, खो देना वभ्रंशेऽसौ धृतेस्ततः-- भट्टि० १४।७१, पंच २।१०८ ४।३७ 4. बच निकलना, भाग जाना, संयमाद्व वभ्रंशुः कंचित्-- भट्टि० १४।१०५, १५।५१ 5. क्षीण होना, सूखना, घटना 6. ओझल होना, नष्ट होना, अलग होना- मालवि० १।८, १२, प्रेर० भ्रंशयति-ते। गिराना, पछाड़ देना 2. वञ्चित करना, **परि** , 1. गिरना, टपकना, उलटना, फिसलना 2. बहकना, भटकना 3. अलग हो जाना, पथभ्रष्ट होना, विचलित होना 4. खोना, वञ्चित होना- मनु० १०।२० **प्र** , 1. गिरना, टपकना फिसलना, - प्रभ्रश्यमानाभरणप्रयत्नम्-रघु० १४।५४ 2. खो देना, वञ्चित होना प्रभ्रश्यते तेजसः मृच्छ० ५।१४, प्रेर० फड़ाना, नीचे डालना, नीचे गिराना रघु० १३।३६, **वि-** . 1. गिरना, टपकना 2. बर्बाद होना, क्षीण होना 3. गिराना, भटकाना, पथ भ्रष्ट होना 4. खो देना।

भ्रंशः, सः [भ्रंश् भावे घञ्] 1. गिर पड़ना, टपक पड़ना, गिरना, फिसलना, नीचे गिरना—सेहेऽस्य न भ्रंशमतो न लाघवात्—रघु० १६।७४, कनकवलय-भ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः मेघ० २ 2. क्षीण होना, घटना, ह्रास होना 3. पतन, नाश, बर्बादी, विध्वंस 4. भाग जाना 5. ओझल हो जाना 6. खो जाना, हानि, वञ्चना--स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः—मनु० २।६३ इसी प्रकार 'ज्ञानभ्रंश' 'स्मृतिभ्रंश' 7. नष्टकने वाला, खण्ड हो जाने वाला, विघलित।

भ्रंशथुः [भ्रंश् + अथुच्] देo 'भ्रंशथु'।

भ्रंश (त्र) न (स्त्रि०) (स्त्री० नी) [भ्रंश्+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देने वाला, —**नम्** 1. गिर पड़ने की क्रिया 2. गिरना लुढ़कर जाना, खो देना।

भ्रंशिन् (वि०) [भ्रंश्+णिनि] 1. नीचे गिरने वाला, 2. नश्वर 3. क्षीण होने वाला 4. भटकने वाला, 5. अधीर होने वाला, नष्ट होने वाला।

भ्रंस् देo 'भ्रंश'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भकुंसः [भुवा कुंशो भावणं यस्य ब० स०, अकारादेशः] स्त्री की वेशभूषा में नट (नाटक का पात्र)।

भक्ष् (स्वा० उभ० अक्षति ते) खाना, निगलना।

भक्षणम् [भक्ष्+ल्युट्] तलने की क्रिया, भूनना, सेंकना।

भक्ष् (स्वा० पर० अक्षति) शब्द करना।

भक्षंगः=वै० भृंगः।

भ्रम् (स्वा०, दिवा० पर० भ्रमति, भ्रम्यति, भ्राम्यति, भ्रान्त) 1. इधर उधर घूमना, हिलना-जुलना, मारा मारा फिरना, टहलना, (आलं से भी)—भ्रमति भुवने कन्दर्पाज्ञा - मा० १।१४, मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च—३१, (बहुधा स्थान में कर्म) भुवं बभ्राम दश०,—दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस चापलेन—भर्तृ० ३।७७, इसी प्रकार भिक्षां भ्रम् 1. इधर उधर मांगते फिरना 2 मुड़ना, चक्कर काटना, घूमना, वर्तुलाकार गति होना—सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने—भर्तृ० २।९५, भ्रमता भ्रमरेण नीत० ३, 3. भटक जाना, भटकाना, इधर-उधर होना, विचलित होना 4. डगमगाना, लड़खड़ाना, डांवाडोल होना, सदृह में अवस्था में होना, झिझकना मा० ५।२० 5. भूल करना, भूल में ग्रस्त होना, गलती पर होना,—आभरणकारस्तु तालव्य इति बभ्राम 6. फुरफुराना, फड़फड़ाना, कांपना, चंचल होना—चक्षुर्भ्रमति पंच० ४।७८ 7. घेरना, प्रेर० (भ्रमयति—ते, भ्रामयति—ते) टहलाना, फिराना, घुमाना, चक्कर दिलाना, आवर्तित करना- अभय जलदांते भोगभृत् - मा० ९।४१ 2. भुलाना, भ्रम में डालना, गुमराह करना, उलझाना, उद्विग्न करना, अंगद में डालना, चकरा देना, डांवाडोल करना—विकारदर्शनार्थं भ्रमयति च संमोहयति च उत्तर० १।३५ 3. लहराना, (तलवार) घुमाना, दोलायमान करना - लीलारविन्दं भ्रमयाञ्चकार—रघु० ६।१३. उद्, 1. भ्रमण करना, इधर उधर घूमना, गड़बड़ा जाना —धावत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युत्पाति मूर्छत्यपि —गीत० ४ 2. भूलना, भूल में पड़ना 3. विशुब्ध होना, व्याकुल होना रघु० १२।७४, परि 1. टहलना, घूमना, भ्रमण करना, इधर-उधर हिलना-जुलना —परिभ्रमसि किं वृथा क्वचन चित्त विश्राम्यताम् —भर्तृ० ३।१३७ 2. मंडराना, चक्कर लगाना - परिभ्रमन्मूर्धजपदाकुलैः—कि० ५।१४ 3. घूमना, परिक्रमा करना, मुड़ना, 4. घूमना, मारा मारा फिरना (कर्म० के साथ) 5. मोड़ना, प्रदक्षिणा करना, वि-, 1. घूमना, इधर उधर चक्कर काटना 2. मंडराना, आवर्तित होना, चक्कर खाना 3. उड़ा देना, तितर बितर करना, इधर उधर बखेरना 4. गड़बड़ा जाना, अव्यवस्थित होना, व्याकुल होना, विस्मित होना—भग० १६।१६, (प्रेर०) खबरा देना, उद्विग्न करना प्रभामण्डलच्चन्द्रो जगद्विभ्रमयति -काव्य० १०, सम—, 1. घूमना, टहलना 2. गलती पर होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, घबड़ा जाना।

भ्रमः [भ्रम्+घञ्] 1. घूमना, टहलना, चहलकदमी करना 2. चक्कर खाना, आवर्तित होना, घूम जाना 3. चक्राकार गति, परिक्रमा 4. भटकना, विचलित होना 5. भूल, गलती अशुद्धि, गलतफहमी, भ्रान्ति —धुक्तौ रजतभिति ज्ञान भ्रमः 6. गड़बड़ी, व्याकुलता, उलझन 7. भंवर, जलावर्त 8. कुम्हार का चक्र 9. चरखी का पाट 10. खरहट 11. वृणि 12. फौवारा, जल प्रवाह। सम०- आकुल (वि०) घबराया हुआ, —आसक्त मिथ्याज्ञानग्रस्त, भ्रान्तमार्गक।

भ्रमणम् [भ्रम्+ल्युट्] 1. इधर-उधर घूमना, टहलना 2. मुड़ना, क्रान्ति 3. विचलन, पथभ्रंशन 4. कांपना, डगमगाना, चंचलता, लड़खड़ाना 5. गलती करना 6. घूर्णन, घुमेरी,—णी 1. एक प्रकार का खेल 2. जोंक।

भ्रमत् (वि०) [भ्रम्+शतृ] घूमना, टहलना आदि। सम० - कुटी एक प्रकार का छाता।

भ्रमरः [भ्रम्+करन्] 1. मधूपकवी, भौंरा मल्लिनेऽपि रसपूर्णा विकसितवदनामवलोक्यालोलैपि, स्वयि चपलेऽपि च सरसा भ्रमर कथं वा सरोजिनी त्यजसि—भामि० १।१०० (यहां द्वितीय अर्थ भी सुझाया जाता है) 2. प्रेमी, सौन्दर्यप्रेमी, लम्पट 3. कुम्हार का चाक, - रम् घूर्णन, घुमेरी। सम० अतिथिः चम्पा का पौधा,- अभिलीन (वि०) मक्खियों से लिपटा हुआ, रघु० ३।८,—अलकः मस्तक पर की लट,—इष्टः ज्योत्स्नालता का वृक्ष,—उत्सवा माधवी लता, - करण्डकः मक्खियों से भरी हुई पेटी (इसे चोर अपने साथ रखते हैं और जब चोरी करने जाते हैं तो इन मक्खियों को छोड़ देते हैं जिससे कि यह वस्ती बुझा दें),—कोटः भिर्रों की जाति,—प्रियः कदम्ब वृक्ष का एक भेद, —बाधा भौंरे द्वारा सताया जाना-शं० १, - मण्डलम् मक्खियों (भौंरों) का झुंड।

भ्रमरकः [भ्रमर+कन्] 1. भौंरा 2. जलावर्त, भंवर, —कः,- कम् 1. मस्तक पर लटकने वाली बालों की लट 2. खेलने के लिए गेंद 3. लट्टू।

भ्रमरिका [भ्रमरक+टाप् इत्वम्] सब दिशाओं में घूमने वाली।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] 1. आवर्तन, मोड़, चक्राकार गति, इधर-उधर घूमना, क्रान्ति-उत्तर० ३।१९, ६।३, मा० ५।२३ 2. कुम्हार का चाक 3. खैरादी की खराद 4. भंवर 5. बवंडर 6. गोलाकार सैनिक क्रमव्यवस्था 7. भूल, गलती।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रंश् दे० भ्रंस् ।

भ्रंशिमन् (पुं०) [भ्रंशस्य भावः इमनिच्, ऋतो र] प्रचंडता, अत्यधिकता, उग्रता, उत्कटता ।

भ्रष्ट (वि०) [भ्रंश्+क्त] 1. पतित, नीचे पड़ा हुआ 2. गिरा हुआ 3. भटका हुआ, विचलित 4. वियुक्त, वञ्चित, निष्कासित, निकाला हुआ—यथा 'भ्रष्टाधिकार' में 5. मूर्छित हुआ, क्षीण, बर्बाद 6. ओझल, खोया हुआ 7. दुश्चरित्र, दुष्टितचरित्र । समः —**अधिकार** (वि०) अपनी शक्ति या पद से वञ्चित, पदच्युत, **क्रिय** (वि०) विहित कर्मों को जिसने नहीं किया,—**गुद** (वि०) एक प्रकार के गुदरोग से ग्रस्त, **योगः** जो धर्मच्युत हो गया हो ।

भ्रस्ज् (तुदा० उभ०—भृज्जति, भ्रष्ट प्रेर० भर्जयति—ते भ्रज्जयति—ते, इच्छा० बिभर्ज्जयिति, विभ्रज्जिषति, विभ्रज्जिषति) तलना, भूनना, सेकना कील पर मांस भूनना, (आल० से भी)—यभ्रज्ज निहते तस्मिन् शोको रावणमग्निवत्—भट्टि० १४।८६ ।

भ्राज् (भ्वा० आ० भ्राजते) चमकना, दमकना, चमचमाना, जगमगाना—रुरुजुर्भ्राजिरे फेणुर्बभूवा हरिराक्षामाः भट्टि० १४।७८. १५।२४, वि जगमग करना, देदीप्यमान होना—विभ्राजसे मकरकेतनमर्चयन्ती रत्न० १।२१ ।

भ्राजः [भ्राज्+क] सात सूर्यों में से एक,—**जम्** एक प्रकार का साम ।

भ्राजक (वि०) [स्त्री०—जिका] [भ्राज्+ण्वुल्] चमकाने वाला, देदीप्यमान, **कम्** पित्त, त्वचा में व्याप्त पित्त ।

भ्राजथुः [भ्राज्+अथुच्] आभा, कान्ति, उज्ज्वलता, सौन्दर्य ।

भ्राजिन् (वि०) [भ्राज्+णिनि] चमकने वाला, जगमगाने वाला ।

भ्राजिष्णु (वि०) [भ्राज्+इष्णुच्] चमकने वाला, देदीप्यमान, उज्ज्वल, दीप्तिकेन्द्र, **ष्णुः** 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण ।

भ्रातृ (पुं०) [भ्राज्+तृच् पृषो०] 1. भाई, सहोदर 2. घनिष्ठ मित्र या संबंधी 3. निकटवर्ती रिश्तेदार 4. मित्रवत् संबोधन का चिह्न (प्रिय मित्र,) भ्रातः कष्टमहो—भर्तृ० ३।३७. २।२४, तत्त्वं चिन्तय तदिदं भ्रातः मोहः । समः—**गन्धि**, **—गन्धिक** (वि०) जिसका भाई केवल नाम के लिए हो, नाम मात्र का भाई, **जः** भतीजा (जा) भतीजी—**जाया** (भ्रातृजाया भी) भाई की पत्नी, भाभी, मेघ० १०,—**दत्तम्** बहन के विवाह पर भाई द्वारा बहन को दी गई संपत्ति, —**द्वितीया** कार्तिक शुक्ला द्वितीया (इस दिन बहनें अपने भाइयों को अपने घर पर आमंत्रित करती हैं और उनको खातिर करती हैं, भाई भी इस दिन बहनों को उपहार देते हैं, संभवतः यह दिन इस लिए मनाया जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई को आमंत्रित किया था—तु० यमद्वितीया),—**पुत्रः** (भ्रातृपुत्रः) भतीजा,—**बधूः** भाई की पत्नी, **श्वशुरः** पति का बड़ा भाई, जेठ,—**हत्या** भाई की हत्या ।

भ्रातृक (वि०) [भ्रातृ+कन्] भाई से संबंध रखने वाला ।

भ्रातृव्यः [भ्रातुः पुत्रः अत्] 1. भाई का बेटा, भतीजा 2. शत्रु, विरोधी ।

भ्रातृबल (वि०) [भ्रातृ+वलच्] जिसके एक या अधिक भाई हों ।

भ्रात्रीयः, भ्रात्रेयः [भ्रातृ+छ] भाई का पुत्र, भतीजा ।

भ्रात्रेयम् [भ्रातृ+ष्यञ्] भाईचारा, भ्रातृभाव ।

भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1. इधर उधर घूमा फिरा हुआ 2. मुड़ा हुआ, चक्कर खाया हुआ, घुमाया हुआ, 3. भूला हुआ, कुपथगामी, भटका हुआ 4. घबड़ाया हुआ, गड़बड़ाया हुआ, इधर उधर घूमते फिरते वाला इधर से उधर और उधर से इधर घूमने फिरने वाला, चक्कर काटने वाला, **न्तम्** 1. घूमना, इधर उधर फिरना, वर पर्यटनदुर्गेष भ्रान्तं वनचरैः सह—भर्तृ० २।१४ 2. गलती, भूल ।

भ्रान्तिः (स्त्री०) [भ्रम्+क्तिन्] 1. इधर उधर फिरना, घूमना 2. घूमकर मुड़ना, मटरगश्त करना 3. क्रान्ति, गोलाकार या चक्राकार घूमना—चक्रभ्रान्तिरराल्रेषु वितनोत्यन्याभिसारावलीम्—विक्रम० १।५ 4. भूल, गलती, भ्रम, व्यामोह, मिथ्याभाव—श्रितासि चन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाकं विषद्रुमम्—उत्तर० १।४६ 5. घबराहट, उद्विग्नता 6. संदेह, अनिश्चय, शंका । समः—**कर** (वि०) विह्वल करने वाला, भ्रम में डालने वाला,—**नाशनः** शिव का विशेषण,—**हर** (वि०) संदेह या भूल को दूर करने वाला ।

भ्रान्तिमत् (वि०) [भ्रान्ति+मतुप्] 1. घूमने वाला, मुड़ने वाला,—भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम्—मालवि० २।१३ 2. भूल करने वाला, गलती करने वाला, भ्रमयुक्त—पुं० एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की पारस्परिक समानता के कारण एक वस्तु को भूल से अन्य वस्तु समझ लिया जाता है,—भ्रान्तिमानन्यसंवित्तुल्यदर्शने—काव्य० १०, उदा० कपाले मार्जारः पय इति करान् लेढि शशिनः, आदि—विक्रम० ३।२, मा० १।२, भी ।

भ्रामः [भ्रम्+घञ्] 1. इधर-उधर घूमना 2. मोह, भूल, गलती ।

भ्रामक (वि०) (स्त्री०—मिका) [भ्रम्+णिच्+ण्वुल्] 1. घुमाने वाला 2. आयोजित करने वाला 3. उलझाने वाला, धोखा देने वाला—कः 1. सूरजमुखी फूल 2. एक प्रकार का चुंबक पत्थर 3. धोखेबाज, बदमाश, ठग 4. गीदड़ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रामर (वि०) (स्त्री०—री) [भ्रमरेण संभूतं भ्रमरस्येदं वा अण्] भ्रमर संबंधी,- र:,- **रम्** एक प्रकार का चुंबक पत्थर -**रम्** 1. चक्कर काटना, 2. आघूर्णन 3. अपस्मार, मिरगी 4. शहद 5. एक प्रकार का रति-बंध, सम्भोग का आसन विशेष **री** 1. दुर्गा का विशेषण 2. चारों ओर घूमना, प्रदक्षिण करना—यीयता भ्रामर्यः—कर्पू० ४, विद्ध० २।

भ्रा (भ्वा) श् (भ्वा० दिवा० आ० भ्राशते, भ्राश्यते, भ्लाशते, भ्लाश्यते) चमकना, दमकना, जगमगाना।

भ्राष्ट्रः, ष्ट्रम् [भ्रस्ज्+ष्ट्रन्, भ्रष्ट्र+अण् वा] कड़ाही, ष्ट्र 1. प्रकाश 2. अन्तरिक्ष।

भ्राष्ट्रमिन्ध (वि०) [भ्राष्ट्र+इन्ध्+अण्, मुम्] तलने वाला या भूनने वाला, भड़भूजा।

भ्रा (भ्ला) स् दे० 'भ्रा (भ्ला) शृ'।

भ्रु (भ्रू) **कुंशः** (सः) [भ्रुवा कुंशो (सो) भाषण यस्य ब० स० ह्रस्वो वैकल्पिकः] स्त्री की वेशभूषा में नाटक का पुरुषपात्र।

भ्रुकुटिः—टी [भ्रुवः कुटिः कौटिल्यम्—प० त०] दे० 'भृकुटि'।

भ्रुच् (तुदा० पर० भ्रुचति) 1. संचय करना, एकत्र करना 2. हकना।

भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+क्विप्] भौंह, आँख की भौंह—कान्ति-भ्रुवोरायत्तलेखयोर्या- कु० १।४७। रामा० -**कुटिः, —टी** (स्त्री०) भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता, त्यौरी चढ़ाना, °**बंध, °रचना** भ्रूभंग या भ्रूभंगिमा, **भ्रुकुटि बंध या रच्** भौंहें सिकोड़ना, त्यौरी चढ़ाना **क्षेपः** भौंहों को सिकोड़ना—भ्रूक्षेपमात्रात्मुतप्रेम्णः—कु० ३।६०,—**जाहम्** भौंह का मूल,—**भङ्गः, -भेदः** भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता,—त्यौरी-चढ़ा-भ्रूभङ्गा क्षुभितविहगश्रेणिरशना—विक्रम० ४।२८, सभ्रूभङ्गम् **सभिव-पेयः** २४, **सभ्रूभङ्गम्** त्यौरी-चढ़ा कर', —**भेदिन्** (वि०) त्यौरी चढ़ाये हुए,— **मध्यम्** भौंहों के बीच का स्थान, लता बेल की भांति भौंह, महराबदार या कुटिल भौंह, **विकारः, -विक्रिया, —विक्षेपः** भौंहों की सिकुड़न, - **विचेष्टितम्, -विभ्रमः, —विलासः** भौंहों का मोहक संचालन, भौंहों की काम केलि,—सभ्रूविलासमथ सोऽयमितीरयित्वा माघ० १। २४, मेघ० १६।

भ्रूणः [भ्रूण+घञ्] 1. गर्भ, कलल 2. (गर्भस्थ) बच्चा, बालक। सम० **घ्न हन्** (वि०) भ्रूण हत्या करने वाला, **-हतिः,— हत्या** भ्रूण का गिराना, गर्भपात कराना— भ्रूणहत्यां वा एते घ्नन्ति—पाञ्च० १।६४।

भ्रेज् (भ्वा० आ० भ्रेजते) चमकना।

भ्रे (भ्ले) **प्** (स्त्री० उभ०—भ्रेपति ते, भ्लेपति ते) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. गिरना लड़खड़ाना, डगमगाना, फिसलना 3. डरना 4. पोषण करना।

भ्रेषः [भ्रेष्+घञ्] 1. हिलना-डुलना, गति 2. डगमगाना, लड़खड़ाना, फिसलना 3. विचलित होना, भटकना, पथभ्रष्ट 4. सत्य से विचलन, अतिक्रमण, पाप 2. हानि, वंचना।

भ्रौणहत्यम् [भ्रूणहत्या+अण्] गर्भस्थ शिशु की हत्या।

म्लक्ष् दे० म्लेच्छ्।

म्लाश् दे० म्लेच्छ्।

म

मः [मा+क] 1. काल 2. विष्णु 3. जादू का गुरु 4. चन्द्रमा 5. ब्रह्मा 6. विष्णु 7. शिव 8. **वम्, -मम्** 1. जल 2. प्रसन्नता, कल्याण।

मकरः [मं+विष किरति-कृ+अच्-तारा०] 1 एक प्रकार का समुद्री-जन्तु, घड़ियाल, मगरमच्छ, झषाणां मकरश्चास्मि—भग० १०।३१, मकरवक्त्र—भर्तृ० २।४ ('मकर' कामदेव का प्रतीक या कुलचिह्न माना जाता है, नीचे निम्नांकित समस्त पदों को) 2. मकरराशि 3. मकरव्यूह, सेना की मकराकार स्थिति में क्रमबद्ध करना 4. मकर के आकार का कुंडल 5. मकर के रूप में हाथी को बांधना 6. कुबेर की नौ निधियों में से एक। सम० **अङ्कः** 1. कामदेव का विशेषण 2. समुद्र का विशेषण,- **अक्षः** वरुण का विशेषण,—**आकरः, —आलयः, आवासः** समुद्र, सागर, **कुण्डलम्** मकर की आकृति का कुंडल,— **केतनः, केतुः केतुमत्** (पुं) कामदेव के विशेषण, - **ध्वजः** 1. कामदेव का विशेषण - तदेतन्मकरध्वजताप्रहारि चोरः ४।१ 2. सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था, **राशिः** (स्त्री०) मकर राशि,- **संक्रमणम्** सूर्य की मकरराशि में गति,—**सप्तमी** माघ शुक्ला सप्तमी।

मकरन्दः [मकरमपि यति रागजनकत्वात् दो—अवखण्डने क, पृषो० गुण-साधु०] 1. फूलों से प्राप्त शहद,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मधु फूलों का रस मकरन्दपुन्दिलानामरविन्दानामय महामधुप: भामि० १।६, ८ 2. एक प्रकार की चमेली 3. कोयल 4. भौंरा 5. एक प्रकार का सुगन्धित आसव,—दम् फूलों का केसर।

मकरन्दवत् (वि०) [मकरन्द+मतुप्] मधु से पूर्ण, -ती पाटल की वृक्ष या पाटल का फूल।

मकरिन् (पु०) [मकर+इनि] समुद्र का विशेषण।

मकरी [मकर+ङीष्] मादा घड़ियाल। सम०—पत्रम्, —लेखा लक्ष्मी के मुखपर 'मकरी' का चिह्न,—प्रस्थः एक नगर का नाम।

मकुटम् [मङ्क्+उटच्, अनुनासिकलोपः] ताज—तु० 'मुकुट'।

मकुलिः [मङ्क्+उलि पृषो०] शब्दशासन, राजा की ओर से लड़ने के लिए आदेश।

मकुरः [मङ्क्+उरच्, पृषो०] 1. शीशा, दर्पण 2. बकुल का वृक्ष 3. काली 4. अरब की चमेली 5. कुम्हार के चाक का डंडा।

मकुलः [मङ्क्+उलच्, पृषो०] 1. बकुल का वृक्ष 2. काली।

मकुष्टः, मकुष्टकः [मङ्क्+उष्टन् पृषो० नलोपः, मकुं भूपां स्वकीयं प्रतिदानिं-गच्छ+स्वक+अच्] एक प्रकार की ओषधि।

मकुष्ठः [मङ्क्+स्था+क] गांठ, (लोहियें का एक प्रकार)।

मकूलकः [मङ्क्+ऊलक्+कन् पृषो० नलोपः] 1. कली 2. दंती नामक वृक्ष।

मक्क् (म्वा० आ०—मक्कते) जाना, हिलना-जुलना।

मक्कुलः [मक्क्+उलच्] धूप, सुगुल, गूगल।

मक्कोलः [मक्क्+ओलच्] खड़िया मिट्टी।

मक्ष् (म्वा० पर० मक्षति) 1. इकट्ठा होना, देर लगना, सञ्चय करना 2. कूद होना।

मक्षः [मक्ष्+घञ्] 1. क्रोध 2. पापबन्ध 3. समुच्चय, संग्रह। सम० **वीर्यः** विशाल वृक्ष।

मक्षि (क्षी) का [मक्ष्+ऊकङ् (ङीष्) इत्व] मक्खी, मधुमक्खी भो उपरिस्थितं नयनमधु मनिहिता मक्षिका व मालवि० २। सम०—**क्षलम्** मोम।

मक्ष्, मंक्ष् (म्वा० पर० मक्षति, मङ्क्षति) जाना, चलना, सरकना।

मखः [मख्+घञ्] यज्ञ, यज्ञविषयक कृत्य, अकिंचनत्वं मन्त्रज व्यनक्ति रघु० ५।१६, मनु० ४।२४, रघु० ३।३२। सम०—**अग्निः**—**अनलः** यज्ञाग्नि, —**असुहृद्** (पुं०) शिव का विशेषण **क्रिया** यज्ञ विषयक कोई कृत्य, —**भ्रातृ** (पुं०) राम का विशेषण, —**द्विष्** (पुं०) पिशाच, राक्षस रघु० ११।२७ **हविस्** (पुं०) शिवका विशेषण, —**हन्** (पुं०) 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण।

मगधः [मगध्+अच्, मगं दोषं दधाति वा मन+धा+क] एक देश का नाम, बिहार का दक्षिणी भाग —अस्ति मगधेषु पुष्पपुरी नाम नगरी— दश० १ अगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठः—रघु० ६।२१ 2. भाट, बन्दी, चारण,—धाः (ब० व०) 1. मगध देश के अधिवासी, मागध 2. बड़ी पीपल। सम०—**उद्भवा** बड़ी पीपल,—**पुरी** मगध की नगरी,—**लिपिः** (स्त्री०) मागधी लिपि या लिखावट।

मग्न (भू० क० कृ०) [मस्ज्+क्त] 1. गोता लगा हुआ, डुबकी लगाई हुई 2. सराबोर, डूबा हुआ 3. लीन, लिप्त (दे० मस्ज्)।

मघः [मह्+अच्, पृषो०] 1. विश्व के एक द्वीप या प्रभाग का नाम 2 एक देश का नाम 3. एक प्रकार की ओषधि 4. सुख 5. मघा नाम का दसवां नक्षत्र, **घम्** एक प्रकार का फूल।

मघव, मघवत् (पु०) [मघवन्+तृ अन्तादेशः, ऋकारस्य इत्वंजा] इन्द्र का नाम।

मघवन् (पु०) [मह् पूजायां कनिन्, नि० ह्रस्व धः, वृपागमश्च] (कर्तृ० ए० व० मघवा, कर्म० ब० व० - मघोनः) 1. इन्द्र का नाम—दुदोहगां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम् रघु० १।२६, ३।४३, कि ३।५२, कु० ३।१ 2. उल्लू, पेचक 3. व्यास का नाम।

मघा [मह्+घ, ह्रस्व चत्वम्, टाप्] दसवां नक्षत्र, जो पांच तारों का समूह है। सम० **त्रयोदशी** भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी, **भवः, भूः** शुक्रग्रह।

मङ्क् (म्वा० आ०—मङ्कते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. सजाना, अलंकृत करना।

वाङ्कलः [मङ्क्+अलच्] दावानल, जंगल की आग।

मङ्कुरः [मङ्क्+उरच्] दर्पण, शीशा।

मङ्क्षणम् [मङ्क्ष+ल्युट्, पृषो० खस्य क्षत्वम्] टांगों की रक्षा के लिए कवच, पिंडलियों की रक्षार्थ कवच।

मङ्क्षु (अव्य०) [मङ्क्ष्+उ, पृषो० खस्य क्षत्वम्] तुरन्त, जल्दी से, शीघ्र,—मङ्क्षूत्पतति परितः पटलेरलीनाम् - शि० ५।३७ 2. अत्यन्त, बहुत अधिक।

मङ्गुः [मङ्ग्+अच्] 1. राजा का चारण 2. एक विशेष प्रकार की ओषधि।

मङ्ग् (म्वा० उभ० मङ्गति-ते) जाना, हिलना-जुलना।

मङ्गः [मङ्ग्+अच्] 1. नाव का अगला भाग 2. नाव का एक पार्श्व।

मङ्गल (वि०) [मङ्ग्+अलच्] 1. शुभ, भाग्यशाली, कल्याणकारी, हिन्दूधर्म—यथा मङ्गलदिवसः, मङ्गलस्नपम' में, 2. समृद्ध, कल्याणप्रद 3. बहादुर, **लम्** 1. (क) शुभत्व, कल्याणकारिता जनकानां रघूणां च यस्कृतस्न गोत्रमंगलम् उत्तर० ६।४२, रघु० ६।९, १०।६७, (ख) प्रसन्नता, सौभाग्य, अच्छी किस्मत, आनन्द,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उल्लास मा० १।३, उत्तर० ३।४८, (व) कुशल, क्षेम, कल्याण, मंगल --सङ्गः सतां किमु न मङ्गलमातनोति भामि० १।१२२ 2. शुभ शकुन, कोई भी शुभ घटना 3. आशीर्वाद, नादी, शुभकामना 4. शुभ या मंगलकारी पदार्थ 5. शुभावसर, उत्सव 6.(विवाह आदि) शुभ संस्कार 7. कोई पुरानी प्रथा 8. हल्दी, लः मंगलग्रह,—ला पतिव्रता स्त्री। सम०—अक्षताः (पुं०, ब० व०) आशीर्वाद देते समय ब्राह्मणों के द्वारा लोगों पर फेंके जाने वाले चावल,—अगुरु (नपुं०) चन्दन का एक भेद, अयनम् आनंद या समृद्धि का मार्ग,—अलङ्कृत (वि०) शुभ अलंकारों से अलंकृत कुं० ६।८७, —अष्टकम् विवाह के अवसर पर वरवधू की मंगलकामना के लिए पढ़े जाने वाले आशीर्वादात्मक श्लोक, —आचरणम् (सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से) किसी भी ग्रन्थ के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली प्रार्थना के रूप में मंगल-प्रस्तावना,—आचारः 1. शुभ, पवित्र प्रथा 2. आशीर्वादोच्चारण, नादी,—आतोद्यम् उत्सव के अवसर पर बजाया जाने वाला ढोल, --आवेशवृत्तिः भाग्य में लिखे को बताने वाला ज्योतिषी,--आरम्भः मंगल का विशेषण--आलम्भनम् किसी शुभ वस्तु को स्पर्श करना,--आलयः, --आवासः देवालय, मन्दिर,—आह्निकम् मंगल-कामना के लिए नित्य अनुष्ठेय धार्मिक कृत्य,--इच्छु आनन्द या समृद्धि का इच्छुक,—करणम् किसी (वि०) भी कार्य की सफलता के लिए पढ़ी जाने वाली प्रार्थना,--कारक,-कारिन् (वि०) शुभ, मंगलकारी,—कार्यम् उत्सव का अवसर, कोई भी मांगलिक कृत्य—श० ४, क्षौमम् उत्सव के अवसर पर पहना जाने वाला रेशमी वस्त्र—रघु० १२।८, —गृहः शुभगृह वधूः,—पात्रम् उत्सव के अवसर पर पानी से भरा कलश जो देवताओं अर्पित किया जाय, छायः प्लक्ष का वृक्ष, पाकः का पेड़,—तूर्यम्,—वाद्यम् एक वाद्य यंत्र विशेष, या ढोल आदि —जो उत्सवादिक के शुभ अवसरों पर बजाया जाय-रघु० ३।२०, देवता शुभ या रक्षक देवता,—पाठकः भाट, चारण, बन्दीजन —आः दुरात्मन् वृथामंगलपाठक शैलूषापसर --वेणी०१,—पुष्पम् शुभ फूल,—प्रतिसरः,—सूत्रम् शुभ डोरी, शुभ डोरा जो सौभाग्यवती स्त्रियां अपने गले में तब तक पहनती हैं जब तक उनका पति जीवित है, —अन्यैः कल्पितमङ्गलप्रतिसराः (अङ्गनाः)—मा० ५।१८ 2. ताबीज को डोरा -प्रद (वि०) शुभ (द्या) हल्दी, —प्रस्थः एक पहाड़ का नाम, भाजनम् वि० शुभ अलंकार अर्थात् जनेऊ या कस्तूरी-तिलक आदि से सुभूषित,—वचस् (पुं०)—वादः मंगलात्मक अभिव्यक्ति आशीर्वचन, मंगलाचरण,—वाद्यम् दे० 'मंगलतूर्यम्', —वारः,-- वासरः मंगलवार,—विधिः उत्सव या कोई शुभकृत्य,—शब्दः अभिनन्दन, आशीर्वादात्मक अभिव्यक्ति,--सूत्रम् दे० 'मंगलप्रतिसर', स्नानम् मंगल कामना के लिए किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मङ्गलीय (वि०) [मङ्गल + छ] शुभ, सौभाग्यसूचक।

मङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+यत्] 1. शुभ सौभाग्यशाली, सानंद, किस्मतवाला, समृद्ध—मनु० २।३१ 2. सुखद, रुचिकर, सुन्दर 3. पवित्र, विशुद्ध, पावन उत्तर० ४।१०,—ल्यः 1. बट-वृक्ष 2. नारियल का पेड़ 3. एक प्रकार की दाल, मसूर की दाल,—ल्या 1. सुगन्धित चन्दन का भेद 2. दुर्गा का नाम 3. अगर की लकड़ी 4. एक विशेष सुगंध द्रव्य 5. एक प्रकार का पीला रंग,—ल्यम् (अनेक तीर्थ स्थानों से लाया गया) 1. राजा के राज्याभिषेक के लिए शुभ तीर्थजल 2. सोना 3. चन्दन की लकड़ी 4. सिंदूर 5. खट्टा दही।

मङ्गल्यकः [मंगल्य+कन्] एक प्रकार की दाल, मसूर।

मङ्ग्, । (भ्वा० पर० मङ्कति) अलंकृत करना, सजाना।

2 (भ्वा० आ० मङ्कते) 1. ठगना, धोखा देना 2. आरम्भ करना 3. कलंकित करना 4. निन्दा करना 5. जाना, जल्दी से जाना 6. आरंभ करना प्रस्थान करना।

मच् (भ्वा० आ० मचते) 1. दुष्ट होना 2. ठगना, धोखा देना 3. शेखी बघारना 4. घमण्डी या अहंकारी होना।

मचर्चिका [मशभ्यु चर्चति-म+चर्च्+ण्वुल्--टाप्, इत्वम्] 'पेछता या सर्वोत्तमता' को प्रकट करने के लिए संज्ञा के अन्त में लगाया जाने वाला शब्द यथा गोमचर्चिका 'एक बढ़िया गाय या बैल, तु० उद्धः।

मच्छः [मद्+क्विप्-शो+ड] (मत्स्य का भ्रष्ट रूप) मछली।

मज्जन् (पुं०) [मस्ज्+कनिन्] मास और हड्डियों में रहने वाली मज्जा, पौधे का रस। सम०—कूल (नपुं०) हड्डी, समुद्भवः वीर्य, शुक्र।

मज्जनम् [मस्ज् भावे ल्युट्] 1. डुबकी लगाना, गोता लगाना, पानी में डुबकी, सराबोर होना 2. स्नान करना, नहाना--प्रत्यग्रमज्जनविशेषविविक्तकान्तिः -रत्न० १।२१, रघु० १६।५७ 3. डूबना 4. मांस और हड्डियों के बीच की मज्जा।

मज्जा [मस्ज्+अच्+टाप्] 1. मांस और हड्डियों के बीच का रस या वसा 2. पौधों का रस। सम० —रजस् (नपुं०) 1. एक विशेष नरक 2. गुग्गुल —रसः वीर्य, शुक्र,—सारः जायफल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मञ्जुषा दे० मञ्जूषा ।

मञ्च् (म्वा० आ० मञ्चते) 1. यामना 2. ऊँचा या लम्बा होना 3. जाना, चलना-फिरना 4. चमकना 5. अलंकृत करना ।

मञ्चः [मञ्च् + घञ्] 1. शय्या, चारपाई, पलंग, बिस्तरा 2. उभरा हुआ आसन, वेदी, सम्मान का आसन, राज्यासन, सिंहासन—तत्र मञ्चेषु मनोज्ञवेषान् —रघु० ६।१, ३।१० 3. मकान, टांड (खेत के रखवाले के लिए) 4. व्यासपीठ, ऊँचा आसन ।

मञ्चकम् [मञ्च + कन्] 1. शय्या, बिस्तरा, पलंग 2. उभरा हुआ आसन या वेदी 3. आँख सुरक्षित रखने का हारा । सम० आश्रयः खटमल, खाट में रहने वाला कीड़ा ।

मञ्चिका [मञ्चक + टाप्, इत्वम्] 1. कुर्सी 2. कठौती, थाली, 3. मांची (चार पायों से बनाया हुआ स्टैण्ड जिसपर बुगचों में भरा सामान लदा रहता है) ।

मञ्जरम् [मञ्ज् + अर] 1. फूलों का गुच्छा 2. मोती 3. तिलक नाम का पौधा ।

मञ्जरिः,—री (स्त्री०) [मञ्जु + ऋ + इन् शक० पररूपम्, पक्षे ङीप्] 1. कोंपल, अंकुर, बौर—निवेपः सहकार-मञ्जरीः—कु० ४।३८, सदृशकान्तिरलक्ष्यत मञ्जरी —रघु० ९।४४, १६।५१, इसी प्रकार—स्फुरनु कुच-कुम्भयोरुपरिमणिमञ्जरी—गीत० १०, मुखं मुक्ताहरिचो-धत्ते घर्मभिःकेणमञ्जरी—काव्य० २।७१, 2. फूलों का गुच्छा 3. फूल कली 4. फूल का वृन्त 5. समामान्तर रेखा 6. मोती 7. लता 8. तुलसी 9. तिलक का पौधा । सम०—चामरम् मंजरी की शक्ल का चंवर, पंखे जैसी मञ्जरी विकम० ४।४, वल्लः 'बेतस' का पौधा ।

मञ्जरित (वि०) [मञ्जर + इतच्] 1. फूलों या बौरों के गुच्छों से युक्त 2. वृंत पर लगी हुई कली आदि ।

मञ्जा [मञ्ज् + अच् + टाप्] 1. बकरी 2. बौरों (फूलों) का गुच्छा 3. लता ।

मञ्जिः,—जी [मञ्ज् + इन्, पक्षे ङीप्] 1. फूलों (या बौरों) का गुच्छा 2. लता । सम० फलम् केले का पौधा ।

मञ्जिका [मञ्ज् + ण्वुल् + टाप् + इत्वम्] वेश्या, वारांगना, बाजारू स्त्री, रंडी ।

मञ्जिमन् (पुं०) [मञ्जु + इमनिच्] सौन्दर्य, मनोहरता ।

मञ्जिष्ठा [अतिशयेन मञ्जिमती इष्ठन् मतुपो लोपः तारा०] मंजीठ । सम० प्रमेहः एक प्रकार का मूत्र-रोग, —रागः 1. मंजीठ का रंग 2. मंजीठ के रंग जैसा आकर्षक और टिकाऊ अर्थात् स्थायी अनुराग ।

मञ्जीरः—रम् [मञ्ज् + ईरन्] नूपुर, पैर का आभूषण —सिञ्जानमञ्जुमञ्जीरं प्रविवेश निकेतनम् · गीत० ११, या मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम् ५, मा० १,—रम् वह स्थूणा जिसमें रस्सी लपेटी जाती है ।

मञ्जीलः (पुं०) वह गाँव जिसमें धोबियों का निवास हो ।

मञ्जु (वि०) [मञ्ज् + उन्] प्रिय, सुन्दर, मनोहर मधुर, सुखद, रुचिकर, आकर्षक—स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते (स्मरामि), उत्तर० ४।४, अविदलदरविन्द स्यन्दमानं परन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः—भामि० १।५, तन्मञ्जुमन्दहसितं श्वसितानि तानि—२।५ । सम० —केशिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण, —गमन (वि०) सुन्दर गति वाला, (गा) 1. हंसिनी 2. राजहंस, —गतः नेपाल देश का नाम, —गिर् (वि०) मधुर स्वर वाला—एते मञ्जुगिरः शुकाः—काव्य० २।९, —गुञ्जः प्यारी गूंज, —घोष (वि०) मधुर स्वर बोलने वाला, —नाशी 1. सुन्दर स्त्री 2. दुर्गा का विशेषण 3. इन्द्र की पत्नी शची का विशेषण, —पाठकः तोता, —प्राणः ब्रह्मा का विशेषण, भाषिन्,—वाच् (वि०) मधुर बोलने वाला · गिरमनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक् पञ्जरस्थः—रघु० ५।७४, १२।३९, —वक्तृ (वि०) सुन्दर मुख वाला, मनोहर, स्वन,—स्वर (वि०) मीठे स्वर वाला ।

मञ्जुल वि०) [मञ्ज् + उ + लच् वा] प्रिय, सुन्दर, रुचिकर, मनोहर, मधुर, सुरीली (आवाज़), सप्रति मञ्जुल-वञ्जुल सौमनि केलिशयनमनुशयितम् · गीत० ११, कूजितं राजहंसानां वर्धते मदमञ्जुलम्—काव्य० २।३३४, —लम् 1. लतामण्डप, कुंज, लतागृह 2. निर्झर, कुआँ,—लः एक प्रकार का जलकुक्कुट ।

मञ्जूषा [मञ्ज् + ऊषन् + टाप्] 1. संदूक, हब्बा, पेटी, आधार—मदीयपद्यरत्नानां मञ्जूषेयं मया कृता —भामि० ४।४५, 2. बड़ी टोकरी, पिटारा 3. मंजीठ 4. पत्थर ।

मटकी, मटली [मट् + अप् = मट + चि + ङि + ङीष्, मट् + शत् + ङीष्] ओला ।

मटस्फटिः [मट + स्फट् + इ] 'घमंड का आरम्भ', आरम्भ अभिमान ।

मट्टकम् (नपुं०) छत की मुंडेर ।

मठ् (म्वा० पर० मठति) 1. रसना, बसना 2. जाना, 3. पोसना ।

मठः,—ठम् [मठस्यच मठ् घञर्थे क] 1. संन्यासी की कोठरी, साधक की कुटिया 2. विहार, शिक्षालय 3. विद्यामंदिर, महाविद्यालय, ज्ञानपीठ 4. देवालय, मन्दिर 5. बैलगाड़ी,—ठी 1. कोठरी 2. मढ़ी, विहार । सम०—आयतनम् विद्यामन्दिर, महाविद्यालय ।

मठर (वि०) [मठ् + अर्, ठ अन्तादेशः] नशे में चूर, मद्य पीकर मतवाला ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मठिका [मठ+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी कोठरी, कुटी, कुटीर।

मड्डुः, मड्डुकः [भस्ज्+डु, मड्डु+कन्] एक प्रकार का ढोल।

मण् (म्वा० पर० मणति) बजाना, गुनगुनाना।

मणिः (स्त्री० भी, परन्तु विरल प्रयोग) [मण्+इन्, स्त्रीत्वपक्षे वा ङीप्] 1. रत्नजडित आभूषण, रत्न, मूल्यवान् जवाहर—अलब्धशाणोल्लिखणा गुणाना न जातु मौली मणयो वसन्ति- -भामि० १।७३, मणी वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः—रघु० १।४, ३।१८ 2. आभूषण 3. कोई भी उत्तम वस्तु तु० रत्न 4. चुम्बक, लोहमणि 5. कलाई 6. जलकलश 7. निकुंज, भर्याकुर 8. लिंग का अगला भाग (इन अर्थों में 'मणी' भी लिखा जाता है)। समः—इन्द्रः, —राजः हीरा, —कण्ठः नीलकण्ठ पक्षी, —कण्ठकः मूंगा, —कर्णिका, —कर्णी वाराणसी में विद्यमान एक पवित्र कुण्ड, काचः बाण का वह भाग जहां पंख लगा रहता है, कानलम् ग्रीवा, कारः रत्नाजीव, जौहरी, तारकः सारस पक्षी, दर्पणः रत्नजटित शीशा, द्वीपः 1. अनन्त नाग का फण 2. अमृत सागर में विद्यमान एक काल्पनिक टापू, —धनुः, —धनुस् (नपुं०) इन्द्रधनुष, पाली जौहरिन, रत्न आभूषणों की देखभाल करने वाली स्त्री, —पुष्पकः सहदेव के शंख का नाम—भग० १६, —पूरः 1. नाभि 2. रत्नजटित चोली, (रम्) कलिंग देश में विद्यमान एक नगर, —बन्धः 1. कलाई—श० ७, 2. रत्नों का बांधना रघु० १२।१०२, —बन्धनम् 1. रत्नों का (कलाई में) बांधना, मोतियों की लड़ी 2. कंकण या अंगूठी का वह भाग जहां उसमें नग जड़े जाते हों श० ६ 3. कलाई - श० ३।१३, बीजः, —बीजः अनाज का पेड़, —भित्तिः (स्त्री०) शीशमहल, भूः (स्त्री०) रत्नजटित फर्श, —भूमिः (स्त्री०) 1. रत्नों की खान 2. रत्नजटित फर्श, वह फर्श जिसमें रत्न जड़े हों, मन्थम् सेंधा नमक, —माला 1. रत्नों का हार 2. कान्ति, आभा, सौन्दर्य 3. (कामकेलि में) दांत से काटे का गोल निशान 4. लक्ष्मी 5. एक छन्द का नाम, - यष्टिः (पुं०, स्त्री) रत्नजटित लकड़ी, रत्नों की लड़ी, -रत्नम् आभूषण, जडाऊ गहना, रत्न, जवाहर, -रागः रत्नों का रंग (रम्) सिंदूर, - शिला रत्नजटित शिला, -सरः रत्नों का हार, —सूत्रम् मोतियों की लड़ी, सोपानम् रत्नजटित पौड़ी, जीना, —स्तम्भः रत्नों से जड़ा हुआ खंभा, हर्म्यम् रत्नजटित या स्फटिक का महल।

मणिकः कम् [मणि+कन्] जलकलश, कः रत्न, जवाहर।

मणितम् [मण्+क्त] एक अस्पष्ट सी गीत्कार जो स्त्री—सम्भोग के समय उच्चरित होती है शि० १०।७५।

मणिमत् (वि०) | मणि+मतुप्] रत्नजटित (पुं०) 1. सूर्य 2. एक पर्वत का नाम 3. एक तीर्थस्थान का नाम।

मणीचकः [मणी+चक्+अच्] रामचिरैया, कम् चन्द्रकान्तमणि।

मणीवकम् [मणीव कायति मणी ! के+क] फूल, पुष्प।

मण्ड् (स्वा० आ० मण्डते) 1. प्रबल अभिलाष करना 2. सचेत स्मरण करना, शौक के साथ चिन्तन करना।

मण्डः [मण्ड्+अच्] एक प्रकार का पका हुआ मिष्टान्न।

मण्ड् I (म्वा० पर०, चुरा० उभ० मण्डयति—ते मण्डित) 1. अलंकृत करना, सजाना—प्रभवति मण्डयितुं वसुन्धरां—कि० १०।५९, भट्टि० १०।२३ 2. हर्ष मनाना।

II (म्वा० आ० मण्डते) 1. वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना 2. घेरना, घेरा डालना 3. विभूषित करना, बांटना।

मण्डः,—डम् [मण्ड्+अच्, मन्—ड तस्य नेत्वम् वा] 1. गाढ़ा चिकना पदार्थ जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर जम जाता है 2. उबाले हुए चावलों का मांड—नीवारी-दनमण्डसुपभक्षयम्—उत्तर० ४।१ 3. (दूध की) मलाई 4. झाग, फेनक, फाहरन 5. उफान 6. भात का मांड 7. रस, सत् 8. शिर, डः 1. आभूषण, शृंगार 2. मेंढक, 3. एरंड का वृक्ष, डा 1. पीसी हुई शराब, 2. आंवले का वृक्ष। समः उदकम् 1. चर्बी, 2. उत्तेजनात्मक के अवसर पर फर्श व दीवारों को सजाना 3. मानसिक क्षोभ या उत्तेजना, प (वि०) मांड पीने वाला, मलाई खाने वाला, —हारकः शराब खींचने वाला।

मण्डकः [मण्ड+कन्] 1. कुम्हार, एक प्रकार का पकाया हुआ मैदा 2. फुलका, पतली रोटी।

मण्डनम् [मण्ड्+ल्युट्] 1. सजाने या सुभूषित करने की क्रिया अलंकृत करना—सामग्रमं मण्डनकालहानेः रघु० १३।१६, मण्डनविधिः—शा० ६।५ 2. आभूषण, शृंगार, सजावट—सा मण्डनान्मण्डनमन्यभूषणं—कु० ७।५, कि० ८।४०, रघु० ८।७१, —नः (मण्डन-मिश्रः) दर्शन शास्त्र के एक विद्वान् पंडित जो शास्त्रार्थ में शङ्कराचार्य से हार गये थे।

मण्डपः[मण्ड्+पा+क, मण्ड्+कपन् वा] 1. विवाहादि संस्कारों के अवसर पर बनाया गया अस्थायी मण्डप, खुला कमरा, विवाह मंडप 2. तंबू, मंडवा —रघु० ५।७२ 3. लता कुंज, लतागृह, लतामंडप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघ०७८ 4. किसी देवता को अर्पित किया गया भवन। सम०—प्रतिष्ठा देवालय की प्रतिष्ठा।

मण्डयन्तः [मण्ड्+णिच्+झच्] 1. आभूषण, शृंगार 2. अभिनेता 3. आढ़ार 4. स्त्री सभा,—स्त्री स्त्री।

मण्डरी [मण्ड्+अरन्+ङीष्] झिल्ली, झींगुर विशेष।

मण्डल (वि०) [मण्ड्+कलच्] गोल, वृत्ताकार,—लः 1. गेंदिकी का गोलाकार क्रमव्यवस्थापन 2. कुत्ता 3. एक प्रकार का साँप, **लम्** 1. गोलाकार पिण्ड, गोलक, चक्र, गोलाकार वस्तु, परिधि, कोई भी गोल वस्तु —कराळफणमण्डलम् —रघु० १२।९८, आदर्श मण्डलनिभानि समुल्लसन्ति किं० ५।४१, रफुरत्प्रभामण्डल, चापमण्डल, मुखमण्डल, स्तनमण्डल आदि 2. (जादूगर द्वारा खींची हुई) गोलाकार रेखा—मुद्रा० २।१ 3. बिंब, विशेषतः चन्द्र या सूर्य का बिंब,—अपवेषि प्रह्लकुलेन्दुमण्डलां (विभावरीं) माल्वि० ४।१५, जिनमणिमण्डनमण्डपभयखण्डने ए गीत० 4. परिवेश, सूर्य-चन्द्र के इर्द गिर्द पड़ने वाला घेरा 5. ग्रहपथ या ग्रहकक्ष 6. समुदाय, समूह, संग्रह, संघात, टोली, वृन्द—एवं गिल्लितेन कुमारमण्डलेन—दश०, अखिल चारिमण्डलम्—रघु० ४।४ 7. समाज, सम्मेलन 8. बड़ा वृत्त 9. दृश्य क्षितिज 10. जिला या प्रान्त 11 पड़ौस का जिला या प्रदेश 12. (राजनीति में) किसी राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ौसियों का गुट —उपगतोऽपि मण्डलतामिताम् रघु० २।१५ (मल्लि० द्वारा उद्धृत कामन्दक के अनुसार राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ौसियों के गुट में बारह राजा सम्मिलित हैं। एक तो केन्द्रीय राजा या विजिगीषु, पांच अग्रवर्ती राज्यों के राजा, चार पश्चवर्ती राज्यों के राजा, एक मध्यम या अन्तर्वर्ती राजा तथा एक उदासीन अथवा तटस्थ राजा। अग्रवर्ती और पश्चवर्ती राजाओं की विशेष संज्ञाएं हैं—दे० तदगत मल्लि० तु० शि० २।८१ भी तथा इसके ऊपर मल्लि०। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार ऐसे राजाओं की संख्या, चार, छः, आठ, बारह या इससे भी अधिक है दे० याज्ञ० १।३४५ पर मिता० और दूसरे विद्वानों के अनुसार गुट में केवल तीन ही राजा होते हैं—प्राकृतारि या स्वाभाविक शत्रु (बगलवाले देश का प्रभु), प्राकृत मित्र या स्वाभाविक दोस्त (केन्द्रीय राजा से मिले हुए दूसरे अन्य राज्यों के बाद जिसका राज्य हो) और प्राकृतादासीन या स्वाभाविक तटस्थ (जिसका राज्य स्वाभाविक मित्रराष्ट्र से भी परे हो)। 13. बन्दूक का निशाना लगाते समय विशेष पैंतरा 14. दिव्य विभूतियों का आवाहन करने के लिए एक प्रकार का गुप्त रेखाचित्र या तंत्र, 15. ऋग्वेद का एक खण्ड (समस्त ऋग्वेद दस मण्डलों या आठ अष्टकों में विभक्त है) 16. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें गोल चकत्ते पड़ जाते हैं 17. एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—ली वृत्त, समूह, संघात (**मण्डलीकृ** कुण्डलाकार या वृत्ताकार बनाना, लपेटना, **मण्डलीभू** वृत्त बनाना) सम०—**अग्रः** झुकी हुई या टेढ़ी तलवार, खड्ग, —**अधिपः, अधीशः,—ईशः—ईश्वरः** 1. किसी जिले या प्रान्त का राज्यपाल या शासक 2. राजा, प्रभु,—**आवृत्तिः** (स्त्री०) गोलाकार गति उत्तर० ३।१९,—**कार्मुक** (वि०) गोलाकार धनुष को धारण करने वाला,—**नृत्यम्** मंडलाकार घूमते हुए नाचना, गोलाकार नाच,—**व्याख्यः** वृत्त का वर्णन करना,—**पुच्छकः** एक प्रकार का कीड़ा,—**वटः** गोलाकार रूप में बढ़ का पेड़,—**वर्तिन्** (पुं०) एक छोटे प्रान्त का शासक, **वर्षः** राजा के समस्त प्रदेश में बारिश का होना, देशव्यापी वर्षा।

मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1. वृत्त, 2. बिंब 3. जिला, प्रांत 4. समूह, संग्रह 5. गेंदिकों की चकाकार-व्यूहरचना 6. सफेद कोढ़ जिसमें गोल चकत्ते होते हैं 7. दर्पण।

मण्डलयति (ना० धा० पर०) गोल या वृत्ताकार बनाना।

मण्डलायित (वि०) [मण्डलवत् आचरितम्—मण्डल+क्यङ्, दीर्घः, मण्डलाय+क्त] गोल, वर्तुल, —**तम्** मेंढ, गोलक।

मण्डलित (वि०) [मण्डलं कृतं—मण्डल+क्विप्=मण्डल्+क्त] गोल बना हुआ, वर्तुल या गोल बनाया हुआ।

मण्डलिन् (वि०) [मण्डल+इनि] 1. वृत्त बनाने वाला, कुण्डलाकृत 2. देश का शासन करने वाला, (पुं०) 1. एक प्रकार का साँप 2. सामान्य सर्प 3. बिलाव 4. ऊदबिलाव 5. कुत्ता 6. सूर्य, 7. बटवृक्ष 8. किसी प्रांत का शासक।

मण्डित (वि०) [मण्ड्+क्त] अलंकृत, भूषित।

मण्डूकः [मण्डयति वर्षासमयं—मण्ड्+ऊकण्] मेंढक निपानमिव मण्डूकाः सोद्योगं नरमायान्ति विबुधाः सर्वसंपदः, सुभा०, —**कम्** स्त्रीसंभोग का एक प्रकार, रतिबन्धविशेष,—**की** 1. मेंढकी 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. कुछ पौधों के नाम। सम०—**अनुप्लुतिः** (स्त्री०) 'मेंढकों की उछल कूद' बीच बीच में छोड़ देना, बीच में छोड़कर आगे फलांग जाना (व्याकरण में यह शब्द कुछ सूत्र छोड़ कर उनके पूर्ववर्ती सूत्र से आपूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है)—**क्रिया** ग्रहणं मण्डूकप्लुत्यानुवर्तते—सिद्धा०—**कुलम्** मेंढकों का समूह,—**योगः** भाव-समाधि का एक प्रकार जिसमें साधक मेंढक की भांति निश्चल होकर समाधिस्थ होता है, **सरस्** (नपुं०) मेंढकों से भरा हुआ सरोवर।

मण्डूरम् [मण्ड्+ऊरच्] लोहे का ढेर, लोहे का मैल (यह पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मत (भू० क० कृ०) [मन्+क्त] 1. चिंतित, विश्वसित, कल्पित 2. सोचा हुआ, माना हुआ, खयाल किया हुआ, समझा हुआ 3. मूल्यवान् माना हुआ, सम्मानित, प्रतिष्ठित—रघु० २।१६, ८।८ 4. प्रशंसित, मूल्यवान् 5. अटकल लगाया हुआ, अनुमान लगाया हुआ 6. मनन किया हुआ, चिन्तन किया हुआ, प्रत्यक्ष किया गया, पहचाना गया 7. सोचा गया 8. अभिप्रेत उद्दिष्ट 9. अनुमोदित, स्वीकृत (दे० मन्),—तम् चिन्तन, विचार, सम्मति, विश्वास, पर्यवेक्षण—निश्चितं-मतमुत्तमम्—भग० १८।६, केषांचिन्मतेन-आदि 2. सिद्धांत, उसूल, पन्थ, धर्ममत, विश्वास—ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः—भग० ३।३१ 3. उपदेश, अनुदेश, सलाह 4. उद्देश्य, योजना, अभिप्राय, प्रयोजन 5. समनुमोदन, स्वीकृति प्रशंसा। सम०—अक्ष (वि०) पासे के खेल में प्रवीण,—अन्तरम् 1. भिन्न दृष्टि 2. भिन्न पन्थ,—अवलम्बनम् विशेष प्रकार की सम्मति रखना।

मतङ्गः [मातंति अनेन—मद्+अङ्गच् दस्यतः तारः] 1. हाथी 2. बादल 3. एक ऋषि का नाम—रघु० ५।३३।

मतङ्गजः [मतङ्ग+जन्+ड] हाथी न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गजः—मालवि० ३, कि० ५।४७, रघु० १२।७३।

मतल्लिका [मतं मतिम् अलति भूषयति—मत+अल्+ण्वुल् पृषो० साधुः] सर्वोत्तमता, सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए इस शब्द को संज्ञाओं के अन्त में जोड़ दिया जाता है, गोमतल्लिका 'श्रेष्ठ गौ' तु० उद्धः।

मतल्ली दे० मतल्लिका।

मतिः (स्त्री०) [मन्+क्तिन्] 1. बुद्धि, समझदारी, भाव, ज्ञान, संकल्प—मतिरेव बलादगरीयसी—हि० २।८६, अल्पविषया मतिः—रघु० १।२ 2. मन, हृदय—मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात्—भामि० ४।२६, इसी प्रकार दुर्मति, सुमति 3. सोचना, विचार, विश्वास, सम्मति, भाव, कल्पना, संस्कार पर्यवेक्षण—विधिरहो बलवानिति मे मतिः—भर्तृ० २।९१, भग० १८।७८ 4. अभिप्राय, योजना, प्रयोजन—दे० मत्या 5. प्रस्ताव निर्धारण 6. सम्मान, प्रतिष्ठा, आदर—कि० १०।९ 7. अभिलाष, इच्छा, कामना—प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव—रघु० ८।९४ 8. सलाह, परामर्श 9. याद, प्रत्यात्मस्मरण (मतिकृ, धा, - आधा, मन लगाना, निश्चय करना, सोचना, मत्या (क्रि० वि०) 1. जानबूझकर, साभिप्राय, स्वेच्छा से मत्या भुक्त्वाचरेत् कृच्छ्रम्—मनु० ४।२२३, ५।१९ 2. इस विचार से कि ध्याद्यमत्या पलायन्ते)। सम०—ईश्वरः विश्वकर्मा का विशेषण, गर्भ (वि०) प्रज्ञावान्, बुद्धिमान्, चतुर,—द्वैधम् मतभिन्नता, —निश्चयः निश्चित विश्वास, दृढ़ विश्वास,—पूर्व (वि०) साभिप्राय, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ,—पूर्वम्, —पूर्वकम् (अव्य०) सप्रयोजन, साभिप्राय, स्वेच्छा से, खुशी से,—प्रकर्षः बुद्धि की श्रेष्ठता, चतुराई,—भेदः विचारभिन्नता,—भ्रमः,—विपर्यासः 1. व्यामोह, मानसिक भ्रम, मन की भ्रान्ति—श० ६।९ 2. त्रुटि, गलती, भूल, गलतफहमी,—विभ्रंशः,—विभ्रंशः मन की अव्यवस्था या दीवानापन, पागलपन, उन्माद, —शालिन् (वि०) बुद्धिमान्, चतुर,—हीन (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, मूढ़।

मत्क (वि०) [अस्मद्+कन्, मदादेशः] मेरा—संभृणुष्व रूपे मत्के संगच्छत्व वनैः शुभैः—भट्टि० ८।१६, —कः खटमल।

मत्कुणः [मद्+क्विप्, कुण्+क, ततः कर्म० स०] 1. खटमल—मत्कुणाविव पुरापरिप्लवौ—शि० १४।६८, 2. बिना दाँत का हाथी 3. छोटा हाथी 4. बिना दाढ़ी का मनुष्य 5. भैंस 6. नारियल का पेड़,—णम् टाँगों या जंघाओं के लिए कवच। सम०—अरिः पटसन का पौधा।

मत्त (भू० क० कृ०) [मद्+क्त] 1. नशे में चूर, मतवाला, मदोन्मत्त (आलं० से भी)—ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मत्ताश्चकोराङ्गनाः—विद्ध० १।११, प्रभामण्डलचन्द्रो जगदिदमहो विभ्रमयति—काव्य० १०, इसी प्रकार ऐश्वर्य० धन० बल० आदि 2. पागल, विक्षिप्त 3. मदवाला, भीषण (हाथी)—रघु० १२।९३ 4. घमंडी, अहंकारी 5. खुश, अतिहृष्ट, हर्षोद्दीप्त 6. प्रीतिविषयक, केलिपरायण, स्वैरी,—त्तः 1. पियक्कड़ 2. पागल मनुष्य 3. मदवाला हाथी 4. कोयल 5. भैंसा 6. धतूरे का पौधा। सम०—आलम्बः (किसी धनी पुरुष के) विशाल भवन की बाड़, इभः मदवाला हाथी °गमना मस्त हाथी के समान चाल वाली स्त्री अर्थात् अलसगति, काशि (सि) नी एक सुन्दर लावण्यवती स्त्री,—दन्तिन् (पुं०)—नागः, —वारणः मदवाला हाथी, (-णः—णम्) 1. विशालभवन के चारों ओर बाड़ 2. किसी विशालभवन के ऊपर बनी अटारी 3. बरांडा, अलिंद 4. भवन का सुसज्जित बहिर्भाग,—(णम्) कटी हुई सुपारी।

मत्यम् [मत—यत्] 1. हल द्वारा बनाया खूड 2. ज्ञान प्राप्त करने का साधन 3. ज्ञान का अभ्यास।

मत्स्यः [मद्+सन्] 1. मछली 2. मत्स्य देश का स्वामी।

मत्सरः [मद्+सरन्] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2. अतृप्त लालची, लोभी 3. दरिद्र 4. दुष्ट, रः 1. ईर्ष्या, डाह—अद्यतावत्काशो मत्सरस्य का० ४५, परवृद्धिषु बद्धमत्सराणा—कि० १३।७, शि० ९।६२,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कु० ५।१७ 2. विरोधिता, शत्रुता - रघु० ३।६० 3. घमंड - शि० ८।७१. 4. लोभ, लालच 5. क्रोध, कोपावेश 6. डाह या मत्सर।

मत्सरिन् (वि०) [मत्सर + इनि] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला—परवृद्धिमत्सरी हि मानिनाम्—शि० १५।१, २।११५ दुष्टात्मा परगुणमत्सरी मनुष्यः —मृच्छ० ९।२७, रघु० १८।१९ 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण 3. लालायित, स्वार्थरत (अधि० के साथ) 4. दुष्ट।

मत्स्यः [मद् + स्यन्] 1. मछली—शूले मत्स्यानिवा-पयन् दुर्ग्रहान्वहलवलतः मनु० ७।२० 2. मछलियों का विशेष जाति 3. मत्स्य देश का राजा, **-स्यौ** (द्वि० व०) मीन राशि, **-स्याः** (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम—मनु० २।१९ याज्ञ० १।८३, । **सम०**—**अक्षकः,**—**अक्षी** एक विशेष प्रकार की सीमलता, **अद्,**- **अदः**— **आद** (वि०) मछलियाँ खाकर पलने वाला, मत्स्यभक्षी,—**अवतारः** विष्णु के दस अवतारों में सबसे पहला अवतार (सातवें मनु के शासनकाल में दूषित हुई सारी पृथ्वी बाढ़ग्रस्त हो गई और पावन मनु तथा सप्तर्षियों (इनको विष्णु ने मछली बनकर बचा लिया था) को छोड़कर सब जीवधारी प्राणी कालकवलित हो गये) तु० इस अवतार का जयदेवरचित वर्णन—प्रलयपयो-धिजले धृतवानसि वेद विहितवहित्रचरित्रमखेदं केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे गीत० १, - **अशनः** 1. रामचिरैया (एक शिकारी पक्षी) 2. मत्स्यभक्षी,—**असुरः** एक राक्षस का नाम, - **आजीवः** मछुवा, आधानी - **धानी** मछलियाँ रखने की टोकरी (जिसे मछुवे प्रयुक्त करते हैं) —**उदरिन्** (पुं०) विराट का विशेषण, - **उदरी** सत्यवती का विशेषण — **उदरीयः** व्यास का विशेषण, - **उपजीविन्** (पुं०) मछुवा,—**करण्डिका** मछलियाँ रखने की टोकरी, **गन्ध** (वि०) मछली की गंध रखने वाला, (**धा**) सत्यवती का नाम - **घण्टः** एक प्रकार की मछली की चटनी - **घातिन्—जीवत्, -जीविन्** (पुं०) मछुवा,—**जालम्** मछलियाँ पकड़ने का जाल, **देशः** मत्स्यवासियों का देश,—**नारी** सत्यवती का विशेषण,—**नाशकः—नाशनः** मत्स्यभक्षी उकाब, **कुररपक्षी**—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक,—**बन्धः,**—**बन्धिन्** (पुं०) मछुवा —**बन्धनम्** मछली पकड़ने का कांटा, बंसी, - **बन्ध** (धि) **नी** मछलियाँ रखने की टोकरी,—**रङ्गः,**—**रङ्गी,** —**रङ्गकः** रामचिरैया (मछली खाने वाला एक शिकारी पक्षी),—**वेधनम्,**—**वेधनी** मछली पकड़ने की बंसी,—**सङ्घातः** मछलियों का झुंड,—**मत्स्याण्डिका, मत्स्याण्डी** मोटी या बिना साफ की हुई चीनी ही ही इयं सीधुपानोद्वेजितस्य मत्स्याण्डिकोपनता—मालवि० ३।

मथ् दे० मन्थ।

मथ भाष।

मथन (वि०) (स्त्री० नी) [मथ् + ल्युट्] 1. बिलोने वाला, मंथन करने वाला 2. चोट पहुँचाने वाला, क्षति देने वाला 3. मारने वाला, नष्ट करने वाला, नाशक—मुग्धे मधुमथननतुसतमनुसर राधिके - गीत० २ —**नः** एक वृक्ष का नाम,—**नम्** 1. मन्थन करना, बिलोना, विक्षुब्ध करना 2. घिसना, रगड़ना 3. क्षति, चोट, नाश। **सम०**—**अचलः, पर्वतः** मन्दराचल पहाड़ जिसको रई का डंडा बनाया गया था।

मथिः [मथ् + इ] रई का डंडा।

मथित (भू० क० कृ०) [मथ् + क्त] 1. मथा गया, बिलोया गया, विक्षुब्ध किया गया, खूब हिलाया गया 2. कुचला गया, पीसा गया, चूरा की काटी गई 3. कष्ट-ग्रस्त, दुखी, अत्याचार पीड़ित 4. वध किया हुआ, नाश किया हुआ 5. स्थानभ्रष्ट (दे० मन्थ्), **-तम्** (बिना पानी डाले) मथा हुआ विशुद्ध मट्ठा।

मथिन् (पुं०) [मथ् + इनि] (कर्तृ० ए० ब०—**मथाः** कर्म० ब० व० **मथः**) रई का डंडा—मुहुः प्रणुन्नेषु मथां विवर्तनैर्नदत्सु कुम्भेषु मृदङ्गमन्थरम् कि० ४।१६, नै० २२।४४, 2. वायु 3. ऊख, 4. पुरुष का लिंग।

मधु (यू) रा [मध् + उ (ऊ) रच् + टाप्] यमुना नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर, कृष्ण की जन्मभूमि तथा उसके कारनामों का स्थल, यह भारत की सात पुण्यनगरियों में एक है, (दे० अवन्ति) और आज भी हजारों की संख्या में भक्त लोग दर्शनार्थ यहाँ जाते हैं। कहा जाता है कि इस नगर को शत्रुघ्न ने बसाया था जिसमें निर्मलोऽयं मथुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।८, कलिन्दकन्या मथुरा गतापि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति —९।४८, । **सम०** - **ईशः**,—**नाथः** कृष्ण का विशेषण।

मद् उत्तमपुरुष सर्वनाम के एक वचन का रूप जो प्रायः समस्त शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है —यथा मदर्थं, 'मेरे लिए' 'मेरी खातिर' 'मच्चित्त' 'मेरे विषय में सोचकर' मद्वचनम्, मत्सन्देशः, मत्प्रियम् आदि।

मद् i (दिवा० परo आत्मने, मत्त) 1. मस्त होना, नशे में चूर होना—वीक्ष्य मद्यमितरा तु ममाद—शि० १०।२७. 2. पागल होना 3. आनन्द मनाना, खुशी मनाना 4. प्रसन्न या हृष्ट होना। प्रेरo (मादयति) 1. नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना, पागल बना देना 2. (मदयति) उल्लसित करना, प्रसन्न करना, खुश करना—मा० १।३६ 3. प्रणयोन्माद को उत्तेजित करना —मा० ३।६, उद् —, 1. मस्त या नशे में चूर होना (आलo से भी) 2. पागल होना—मनु० ३। १६१, प्रेरo—नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अद्यापि मे हृदयमुन्मदयन्ति हस्त ˚भामि० २।५, **प्र** , 1. नशे में चूर होना, मस्त होना 2. उपेक्षक होना, लापरवाह या अवधान रहित होना (अधि० के साथ) अतोऽधुनि प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः मनु० २।२१३ 3. भूलचूक होना, भटक जाना, विचलित होना यथा स्वाधिकारात्प्रमत्तः मेघ० १ में, 4. गलती करना, भूल करना राह भूल जाना-भट्टि० ५।८, १७।२०, १८।८. सम्-, 1. नशे में चूर चूर होना, 2. हर्षयुक्त होना, प्रसन्न होना।

II (चुरा० आ० मादयते) प्रसन्न करना, खुश करना।

मदः [मद्+अच्] 1. मादकता, मस्ती, मदोन्मत्तता —मदोन्मथ्यं—दश०, मदविकाराणां दर्पकः-का० ४५, दे० नी० समस्त पद 2. पागलपन, विक्षिप्तता 3. उग्र प्रणयोन्माद, लालसापूर्ण उत्कण्ठा, गाढाभिलाषा, कामुकता, मैथुनेच्छा इति मदमदनाभ्यां रागिणः स्पष्टरागान् शि० १०।५१ 4. मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मद मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः चन्द्र० ५।४५, इसी प्रकार दे० मदकल, मदोन्मत्त, मेघ० २०, रघु० २।७, १२।१०२ 5. प्रेम, उत्कंठा 6. घमण्ड, अहंकार, अभिमान पंच० १।२४० 7. उल्लास, आनन्दातिरेक 8. चीची हुई शराब 9. मधु, शहद 10. कस्तूरी 11. वीर्य, शुक्र। समः अत्ययः,- आतङ्कः मृगया के परिणामस्वरूप होने वाला विकार (सिरदर्द आदि), -अन्ध (वि०) 1. मद से अन्धा, पीकर बेहोश, तीव्र उत्कण्ठा से पीते हुए अक्षरशिव मद्यान्धा पातुमिष्टा प्रवृत्ता विक्रम० ४।१३, 2. अभिमान से अंधा, घमंडी, -अपनयनम् नशा दूर करना,—अम्बरः 1. मदवाला हाथी 2. इन्द्र का हाथी ऐरावत, -अलस (वि०) नशे या जोश से निढाल,—अवस्था 1. पीकर मदहोशी की हालत 2. स्वेच्छाचारिता, कामासक्ति 3. मद चूने की स्थिति रघु० २।७, -आकुल (वि०) मदोन्मत्त, -आढ्य (वि०) पीकर मस्त, नशे में चूर (हृदयः) साढ़ का पेड़, -आत्मजः हाथी की पीठ पर बजाया जाने वाला ढोल या नगाड़ा, -आलिन् (पुं०) कोयल, -आर्द्रवः कस्तूरी, -उत्कट (वि०) 1. नशे में चूर, मद्यपान से उत्तेजित 2. तीव्र प्रणयोन्मत्त, कामुक 3. अभिमानी, घमंडी, दर्पयुक्त 4. मदवाला, मदमस्त रघु० ५।७, (टः) 1. मदवाला हाथी 2. पेंडुकी, (टा) खींची हुई शराब, -उद्धत, -उन्मत्त (वि०) 1. पीकर मस्त, नशे में चूर 2. भयंकर, जोश से भरा हुआ—मदोद्धताः ककुभन्तः करिणां कूलमुज्जाः ˚भट्टि० ४।२५, 3. अभिमानी, घमंडी, अहंकारी, -उद्भव (वि०) जोश से भरा हुआ -हृद० ३।२१ 2. घमण्ड से फूला हुआ, —उत्क्षालिन् (पुं०) कोयल, -कर (वि०) मादक, नशे में चूर करने वाला,- -कारिन् (पुं०) मदवाला हाथी,—कल (वि०) मदभरी, अव्यक्तभाषी, अस्पष्टभाषी रघु० ९।३७, प्रेम की मंद ध्वनि उच्चारण करने वाला 3. जोश से भरा हुआ उत्तर० १।३१, मा० ५।१४ 4. अस्पष्ट परन्तु मधुर - मदकल कूजित तारसानाम् मेघ० ३१, 5. मदवाला, प्रचण्ड, मदोन्मत्त विक्रम० ४।२४, (लः) मदवाला हाथी —कीहलः (श्वेच्छा से भ्रमण करने के लिए) मुक्त सांड, -खेल (वि०) प्रणयोन्माद के कारण केलिप्रिय -विक्रम० ४।१९, —गन्धा 1. मादकपेय 2. पटसन, -गमनः भैंसा,—च्युत् (वि०) 1. (हाथी की भांति) मद चुवाने वाला 2 कामुक, स्वेच्छाचारी, पीकर धुत 3. आनन्ददायक, उल्लासमय (पुं०) इन्द्र का विशेषण, -जालम्, -वारि (नपु०) मदरस, मदवाले हाथी के गण्डस्थल से चूने वाला मद, -ज्वरः एमण्ड या जोश का बुखार भर्तृ० ३।२३,—द्विपः उन्मत्त हाथी, मदमस्त हाथी,-- प्रयोगः,-प्रहेकः,-प्रस्रवणम् स्रावः, --स्रुतिः (स्त्री०) हाथी के गण्डस्थल से मद का चूना, -भुज् (वि०) 'मद टपकाने वाला' मदोन्मत्त, नशे में चूर—उत्तर० ३।१५,- -रक्त (वि०) जोशीला,—रागः 1. कामदेव 2. मूंगा 3. पीकर धुत्त,—विक्षिप्त (वि०) 1. मदमस्त, मदोन्मत्त 2. कामलालसा से विह्वल -विह्वल (वि०) 1. घमण्ड या काम लालसा से पागल 2. नशे के कारण निश्चेष्ट,- -वृन्दः एक हाथी, -शौण्डकम् जायफल,—सारः वाडी,—स्थलम्,—स्थानम् भविशालय, जलाशय, मधुशाला।

मदन (वि०) (स्त्री० नी) [माद्यति अनेन मद करणे ल्युट्] 1. मादक, पागलपन लाने वाला 2. आनन्ददायक, उल्लासमय, मः 1. कामदेव व्यापारेषीह मदनस्य नियोक्तव्यम् शा० १।२३, इतमधि निर्दयमेव मदन.- भर्तृ० ३।१४ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद, उत्कण्ठा, कामुकता विनयव्यतिवृत्तिरलसत्वा न विवृतो मदनो न च संवृतः -शा० २।११, सम्भिन्नीतं मदनस्य दीपकम् - ऋतु० १।३, रघु० ५।६२, इसी प्रकार 'मदनातुर' 'मदनपीडित' आदि 3. वसन्त ऋतु 4. मधुमक्खी, भौंरा 5. सोम 6. एक प्रकार का आलिंगन 7. धतूरे का पौधा 8. बकुल का वृक्ष, चैत्र, —ना,—नी 1. खींची हुई शराब 2. कस्तूरी 3. अतिमुक्त लता (—नी केवल इन दो अर्थों में),—नम् 1. मादक 2. प्रसन्न करने वाला, 3. आनन्ददायक। समः —अरिः एक सान्यविशेष, कोदों,- -अङ्कुशः 1. पुरुष का लिंग 2. नाखून या नखक्षत (सम्भोग के समय हुआ)।-अन्तकः,—अरिः, दमनः, दहनः, नाशनः, -रिपुः शिव के विशेषण,—अवस्था (वि०) प्रेमासक्त,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सानुराग **आतुर**--आर्त, **विलुप्त पीडित** (वि०) कामार्त, प्रेमविह्वल, कामरोगी -रघु० १२।३२, शि० ३।१०, **आयुधम्** 1. स्त्री की भग या योनि 2. 'कामदेव का अस्त्र' अर्थात् लावण्यमयी स्त्री.

आल्यः, यम् 1. स्त्री की योनि 2. कमल 3. राजा, - **इक्षुकोदण्डः** आमों का राजा. **उत्सवः** कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला वसन्तकालीन उत्सव, (**वा**) अप्सरा, **उत्सुक** (वि०) प्रेम के कारण उत्कण्ठित या निढाल,—**उद्यानम्** 'प्रमोद वन' एक उद्यान का नाम, -**कण्टकः** 1. प्रेमभावना से उत्पन्न रोमांच 2. वृक्ष का नाम **कलहः** प्रेमकलह, **कैथुन** छेदगुच्छभाम्, मा० ७।१२, - **काकुरवः** पंडुकी या कबूतर, **गोपालः** कृष्ण का विशेषण, **चतुर्दशी** चैत्रशुक्ला चतुर्दशी, इसी दिन कामदेव के सम्मानार्थ मनाया जाने वाला उत्सव, -**त्रयोदशी** चैत्रशुक्ला त्रयोदशी या नाम के सम्मान में उस दिन मनाया जाने वाला उत्सव, -**तालिका** अनीस, स्त्री, -**पक्षिन्** (पुं०) खंजन पक्षी, --**पाठकः** कोयल, - **पीडा**,—**बाधा** प्रेमवेदना, प्रेम की टीस, **महोत्सवः** कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला महोत्सव, --**मोहनः** कृष्ण का विशेषण, —**ललितम् प्रेमकेलि**, रंगरेली, कामक्रीडा, —**लेखः** प्रेम-पत्र, -**वश** (वि०) प्रेमपाश, मोहित, शैलाक्षा 1. कोयल (मादा) 2. कामोद्दीपक।

मदनकः [मदन + कन्] एक पौधे का नाम, दमनक।

मदयन्तिका, मदयन्ती [मदयन्ती+कन्-टाप् ह्रस्वः, मद्--णिच्+झच्+ङीष्] एक प्रकार की चमेली (अरब की)।

मदयित्नु (वि०) [मद्--णिच्+इत्नुच्] 1. मादक, पागल बनाने वाला 2. आनन्द देने वाला, **त्नुः** 1. कामदेव 2. बादल 3. कलबार 4. पीकर घुत हुआ 5. खींची हुई शराब, (इस अर्थ में 'नपुं' भी)।

मदारः [मद्+आरन्] 1. मदवाला हाथी 2. सूअर 3 चतुरा 4 प्रेमी, कामुक 5 एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 6 ठग या बदमाश।

मदिः (स्त्री०) [मद्+इन्] पटेला, पैडा।

मदिर[वि०] [मद्यादि अनेन मद् करणे किरच्] 1. मादक, दीवाना करने वाला 2 आनंददायक, आकर्षक, (आंखों को) हर्ष कर, -**रः** (लाल फूलों का) खैर का वृक्ष। सम० **अक्षी, -ईक्षण** -**नयना**,—**लोचना** मनोहर और आकर्षक आंखों वाली स्त्री मधुकर मदिराक्ष्याः शब्द, तत्पश्चात् प्रवृत्ति -विक्रम० ४।२२, रघु० ८।८६, —**आयतनयन** (वि०) बड़ी और मनोहर आंखों वाला —श० ३।५,—**आसवः** मादक पेय।

मदिरा [मदिर+टाप्] 1. खींची हुई शराब -कांक्षत्यन्यो वदनमदिरां दोहदच्छद्मनास्याः--मेघ०७८, शि० ११।४९ 2. एक प्रकार का खंजन पक्षी 3. दुर्गा का नामान्तर। सम० **उत्कट**,-- **उन्मत्त** (वि) शराब के नशे में चूर, - **गृहम्**,—**शाला** मदिरालय, शराबखाना, मधुशाला,—**सखः** आम का पेड़।

मदिरेक्षा [अतिशयेन मदिरा-ईक्षत्, इसी लोपः, टाप्] खींची हुई शराब।

मदीय (वि०) [अस्मद्+छ, मदादेशः] मेरा, मुझसे संबद्ध, —रघु० २।४५, ६५, ५।२५।

मदगुः [मरज्+उ नुडागमश्च] 1. एक प्रकार का जलचर जन्तु, जलकाक, पनडुब्बी पक्षी 2 एक प्रकार का सांप 3 एक प्रकार का जंगली जानवर 4 विशाल नौका या युद्धपोत कांपि मदुगुरम्भोभावत् दश० 5 एक पतित वर्णसंकर जाति, भाट जाति की स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान—दे० मनु० १०।४८ 6. जाति-बहिष्कृत।

मदगुरः [मद्+गुद्+उरच्, नुडागमश्च] 1. गोताखोर, मोती निकालने वाला 2. जर्मनमछली 3. एक पतित वर्ण संकर जाति -दे० मदगु (5)।

मद्य (वि०) [माद्यत्यनेन करणे यत्] 1. मादक 2. आनंददायक, उल्लासमय, - **द्यम्** खींची हुई शराब, मदिरा, मादकपेय -रणक्षितिः शोणितमद्यकुल्या —रघु० ७।४९, —मनु० ५।५६, ९।८४ १०।८९। सम०—**आमोदः** मौलसिरी का पेड़,-**कोटः** एक प्रकार का कीड़ा, **द्रुमः** एक प्रकार का वृक्ष, माडवृक्ष, --**पः** पियक्कड़, शराबी, नशेबाज, **पानम्** 1. मादक पदार्थ पीना 2. कोई भी मादक पेय,—**पीत** (वि०) पीकर नशे में चूर -**पुष्पा** धातकी नामक पौधा, धो,—**बीजा** (**जी**) जम् खमीर उठाने वाली ओषधि, खमीर पैदा करने वाली लेई, **भाजनम्** शराब का गिलास, इसी प्रकार **मद्य-भाण्डम्**,--**मण्डः** शराब का झाग, **मसूफेन**,—**वासिनी** धातकी नामक पौधा,—**संधानम्** मदिरा खींचना।

मद्रः [मद्+रक्] 1. देश का नाम 2. उस देश का शासक, —**द्राः** (ब. व०) मद्र देश के अधिवासी, **द्रम्** हर्ष प्रसन्नता (**भद्राक्ष**--**भद्राक्ष** बालकाटना, कैंची से कतरना, मूंडना)। सम०—**कार** (वि०) ('मद्रकार' भी) हर्षोत्पादक।

मद्रकः [मद्र+कन्] मद्र देश का शासक या अधिवासी, —**का** [ब०व०] दक्षिण देश की एक पतित जाति।

मधव्य[मधु+यत्] वैशाख का महीना।

मधु (त्रि०) (स्त्री० -धु या -ध्वी) [मन्यत इति मधु, मन्+उ तस्य धः] मधुर, सुखद, रुचिकर, आनन्द युक्त—नपुं० (**धु**) 1. शहद एतास्ता मधुनो द्यारश्चोतन्ति सिंधवस्त्वयि -उत्तर० २।३४, मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम् 2. पुष्परस या फूलों का रस --कु० ३।३६ देहि मुखकमलमधुपानं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—गीत० १० 3. मीठा मादक, पेय, शराब, खींची हुई शराब— वितरन्ते स्म तद्योधा मधुमिश्रिजयश्रमम् —रघु० ४।६५, ऋतु० १।३ 4. पानी 5. शक्कर 6. मिठास. पु०(धुः) 1. वसन्त ऋतु -क्व नु हृदय-ङ्गमः सखा कुसुमायोजितकार्मुको मधुः—कु० ४।२४-२५, ३।१०, ३० चैत्र का महीना भास्करस्य मधुमाधवाविव-- रघु० ११।७, मासे मधौ मकरकोकिलनूपुराद्यै रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् -- ऋतु० ६।२४ 3. एक राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मारा था 4. एक और राक्षस जिसके पिता का नाम लवण था तथा जिसे शत्रुघ्न ने मारा था 5. अशोक वृक्ष 6. कार्त वीर्य राजा का नाम। सम० —अष्टोला शहद का लौंदा, जमा हुआ शहद, —आयारः सोम, आपात (वि०) पहली बार शहद चखने वाला- मनु० ११।९. -आम्रः एक प्रकार का आम का वृक्ष,- आसवः (शहद से) खींची हुई मीठी शराब,—आस्वाद (वि०) शहद का स्वाद चखने वाला, आहुतिः (स्त्री०) यज्ञ में मिष्टान्न की आहुति देना —उच्छिष्टम्,-- उत्थम्,—उत्थितम् मधुमक्खियों का मोम,-- उत्सवः वसन्तोत्सव,—उदकम् 'मधुजल', शहद मिला हुआ पानी, जलमधु, उद्यानम् वसन्तोद्यान, —उपवनम् 'मधु का आवास' मथुरा का नामान्तर -- रघु० १५।१५,—कण्ठः कोयल, करः 1. भौंरा —कुजे खलु तेनैव हा मधुकरेण कथम् --भामि० १।१०, रघु० ९।३०, मेघ० ३५।४७ 2. प्रेमी, कामुक, गणः, श्रेणिः (स्त्री०) मक्खियों का झुंड, —ककेटी 1. मोटा नींबू, चकोतरा 2. एक प्रकार का छुहारा, कान्तनम्,—वनम् मधुराक्षस का वन, -- कारः, कारिन् (पुं० मधुमक्खी कुक्कुटिका, कुक्कुटी एक प्रकार का नींबू का पेड़, कुल्या मधु की नदी, कृत् (पुं०) मधुमक्खी.-- केशवः मधु-मक्खी,—कोशः,—पः मधुमक्खियों का छत्ता, क्रमः शहद की मक्खियों का छत्ता (ब० व०) मदिरा पीने की होड़, आपानक,—क्षीरः, क्षीरकः खजूर का पेड़, — गायनः कोयल, —ग्रहः मधु का तर्पण,—ग्रीवः कोयल, —जम् मोम, —जा 1. मिसरी 2. पृथ्वी, जम्बीरः एक प्रकार का नीबू जित्, द्विष्,—निषूदन, —निहन्तृ (पुं०), मथः, मथनः,- रिपुः, शत्रुः, सूदनः, विष्णु के विशेषण —इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता, गीत० ५, रघु० ९।४८, शि० १५।१, —तृणः पण्य गन्ना, द्वीप, —त्रयम् तीन मीठे पदार्थ अर्थात् शक्कर, शहद और घी, —दीपः कामदेव, दूतः आम का पेड़, दोहः मधु या मिठास खींचना, —द्रुः 1. भौंरा 2. कामुक,— द्रवः लाल फूलों का एक वृक्ष, —द्रुमः आम का पेड़,—धातुः एक प्रकार का पीला माक्षिक,—धारा शहद की धार,- धूलिः राब, गुड़, नालिकेरकः एक प्रकार का नारियल, नेतृ (पुं०) भौंरा, पः मधुकर, या पिपककड़- राजप्रियाः केर-विण्यो रमन्ते मधुपैः सह-- भामि० १।१२९, १।३३, (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं), पटलम् शहद की मक्खियों का छत्ता, -पतिः कृष्ण का विशेषण, -पर्कः 'शहद का मिश्रण' एक सम्मानयुक्त उपहार जो किसी अतिथि को या कन्या के पिता के द्वार पर आ जाने पर दूल्हे को अर्पित किया जाता है, उसमें निम्नांकित पांच पदार्थ डाले जाते हैं—दधि सर्पिर्जलं क्षौद्रं सिता चैतैश्च पंचभिः, प्रोच्यते मधुपर्कः, नमोस्तो मधुपर्कः --उत्तर० ७, अग्निस्वदग्नमधुपर्कमर्पितं स तद् व्यधात्तर्कमुदर्कदर्शिताम्, पर्दय पायन्यधु भीमजाक्षर-मिवेण पुण्याहविधि तदा कृतम् - नै० १६।१२, मनु० ३।११९ तथा आगे, पर्वय (वि०) मधुपर्क का अधिकारी, पर्णिका,—पर्णी नील का पौधा, पायिन् (पुं०) भौंरा,- पुरम्, री, मथुरा का विशेषण— संप्रत्युज्जितवाक्षरं मधुपुरीमध्ये हरिः सेव्यते -भामि० ४।४४, पुष्पः 1. अशोक वृक्ष 2. मौलसिरी का वृक्ष 3. देसी वृक्ष 4. सिरस का पेड़, प्रणयः शराब की लत, प्रमेहः मधुमेह, शर्करायुक्त मूत्र, प्राशनम् शुद्धीकरण के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें नव-जात शिशु को मधु चटाया जाता है, प्रियः बलराम का विशेषण, फलः एक प्रकार का नारियल,-फलिका एक प्रकार का छुहारा,— बल्लः मालती लता, - बी (बी) जअनार का वृक्ष,—बो(बी) जपुरः एक प्रकार की नींबू, चकोतरा, मक्षः,—क्षा, —क्षिका मधुमक्खी, - मज्जनः अखरोट का पेड़,—मद्यः शराब का नशा —मल्लिः, ल्ली (स्त्री०) मालती लता, -माधवी 1. एक प्रकार का मादक पेय 2. कोई भी वसंत ऋतु का फूल,—माध्वीकम् एक प्रकार की मादक मदिरा —मारकः भौंरा,—मेहः=मधुप्रमेह दे०,—यष्टिः(स्त्री०) गन्ना. ईख, मुलेठी, रसः 1. ताड़ का वृक्ष (जिससे ताड़ी बनती है) 2. गन्ना, ईख 3. मिठास, (सा) 1. अंगूरों का गुच्छा 2. अंगूरों की बेल,—लताः एक वृक्ष का नाम, लिह्, लेहृ, लेहिन् (पुं०), —लोलुपः भौंरा इसी प्रकार 'मधुनो लिह्', वनम् वह जंगल जहां मधु नामक राक्षस रहा करता था जिसको शत्रुघ्न ने मथुरा नगरी बसाई थी, (नः) कोयल, वारः (पुं०, ब० व०) दर्द २ पीने वाले, शराब के जाम पर जाम चढ़ाने वाले, डटकर शराब पीने वाले जैसे बहुमताः प्रमदाना मोष्ठ-यादकतटी मधुवारः--कि० ९।५९, क्षालितं नु शशिन नु मधुनां दावितं नु हृदयं मधुवारैः- शि० १०।१४, (कभी कभी यह शब्द एक वचनांत भी होता है) दे०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कि० ८।५७, **व्रतः** भौंरा मालिकः की मरन्दानामन्त्रेण मधुव्रतम् भामि० १।११७, तस्मिन्नद्य मधुव्रते विधिदशान्माध्वीकपात्रोन्नति ४६, **शर्करा** शहद से तैयार की हुई शक्कर, **-शाल:** एक प्रकार का (महुए का) पेड़, **-शिष्टम्,—शेषम्** मोम, **सखः, सहायः, -सारथिः,—सुहृद्** कामदेव,—**सिक्थकः** एक प्रकार का विष,—**सूदनः** भौंरा, **-स्थानम्** मधुमक्खियों का छत्ता, **स्वरः** कोयल, **हृ** (पु०) 1. शहद का नष्ट करने वाला या एकत्र करने वाला 2. एक प्रकार का शिकारी पक्षी 3. ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 4. विष्णु का नामान्तर।

मधुकः [मधु—कन्, कै—क वा] 1. एक वृक्ष (—मधूक, महुआ) का नाम 2. अशोक वृक्ष 3. एक प्रकार का पक्षी, **कम्** 1. जस्ता 2. मुलैठी।

मधुर (वि०) [मधु माधुर्यं राति रा—क मधु अस्त्यर्थेर वा] 1. मीठा 2. शहदयुक्त, मधुमय 3. सुखद, मनोहर, आकर्षक, हृदिकर—अहो मधुरमासां दर्शनम् श० १, कु० ५।९, उत्तर० १।२० 4. सुरीला (स्वर), —**रः** लाल रंग का गन्ना. ईख 2. चावल 3. शब, गुड़ 4. एक प्रकार का आम, **रम्** 1. माधुर्य 2. मधुपर्क, शर्बत 3. विष 4. जस्ता, **रम्** (अव्य०) मिठास के साथ सुहावने ढंग से, रोचकता के साथ। समः—**अक्षर** (वि०) मधुर ध्वनि वाला, मिष्टभाषी, रसीला, **आलाप** (वि०) मधुर शब्दों का उच्चारण करने वाला (**पः**) मधुर या सुरीले स्वर **मधुरालापनिमर्ग पण्डितानाम्** —कु०४।१६, **(-पा)** मैना, मदनसारिका, **-कण्टकः** एक प्रकार की मछली,—**जम्बीरम्** नीबू की एक जाति, **-त्वयम्**—**मधुत्रयम्** दे०,—**फलः** एक प्रकार का पेंवदी बेर,—**भाषिन्,—भाष्** (वि०) मधुरभाषी, —**खदिरः** एक प्रकार का छुहारे का पेड़, **स्वर,—स्वन** (वि०) मधुर स्वर से अलापने वाला, मधुरस्वर वाला।

मधुरता,—त्वम् [मधुर—तल् [—टाप्, त्व वा] माधुर्य, सुहावनापन, रोचकता।

मधुरिमन् (पुं०) [मधुर [—इमनिच्] माधुर्य, रोचकता मधुरिमातिशयेन वचोमयम्—भामि० १।११३।

मधुलिका [मधुल [—कन्—टाप्, इत्वम्] काली मरसों, राई)

मधूकः [मद्—ऊक नि० हृस्य धः] 1. भौंरा 2. एक वृक्ष का नाम महुआ. **कम्** मधूक (महुए) वृक्ष का फूल—दूर्वाबन्ध-मधूकमालिकाः—कु० ७।१४, जिसकी पाकलवर्णगण्डः—मीन० १०, रघु० ६।२५।

मधूलः [मधु—लाति ला [क पृषो०] एक प्रकार का वृक्ष, लो आम का पेड़।

मधूलिका [मधूल [—कन्—टाप् इत्वम्] एक प्रकार का वृक्ष।

मध्य (वि०) [मद्—यत्, नस्य धः, तारा०] 1. बीच का, केन्द्रीय मध्यवर्ती, केन्द्रवर्ती मेघः ६६, मनु० २।२१ 2. अन्तर्वर्ती, मध्यवर्ती 3. बीच के दर्जे का, मध्यक, दर्मियाने कद का, बीच का प्रारम्भ त्रिष्ठावहता विरवन्ति मध्याः नर्तुः २।२७ 4. तटस्थ, निष्पक्ष 5. न्याय. यथार्थ 6. (अर्थ० में) मध्यभाग,—**ध्यः,—ध्यम्** 1. मध्य, केन्द्र, मध्य या केन्द्रीय भाग अह्नः मध्यम् दोपहर, दिन का मध्य—सहस्रदीधितिरलङ्करोति मध्यमह्नः मा० १, पूर्वं शिरोबिन्दु पर है। अर्थात् 'ठीक सिर के ऊपर' है, ध्योमध्यगे विक्रम० २।१ 2. शरीर का मध्यभाग, कमर- मध्ये क्षामा - मेघ० ८२, वेदिविलग्नमध्या कु० १।३९ विशालवक्षास्तनुवृत्तमध्यः -रघु० ६।३२ 3. पेट, उदर मध्यम''वलित्रय चार बबार बाला कु० १।३१ 4. किसी वस्तु का भीतरी भाग 5. बीच की स्थिति या दशा 6. घोड़े की कोख 7. संगीत में मध्यवर्ती सप्तक 8. किसी श्रेणी की मध्यवर्ती राशि, **ध्या** बीच की अंगुली, **-ध्यम्** दस अरब की संख्या ('मध्य' के कर्म०, करण० अर्था० और अधि० के रूप क्रि० वि० की भांति प्रयुक्त होते हैं) (क) **मध्यम्** में, के बीच में (ख) **मध्यैन** में से, बीच से (ग) **मध्यात्** में से, के बीच (संबं० के साथ) से लेना मध्यात् काकः प्रोवाच पंच० १ (घ) **मध्ये** 1. बीच में, में, मध्य में रघु० १२।२९ 2. में, के अन्दर, के भीतर, बहुधा (जैसे कि अव्ययीभाव समास के आदि पद के रूप में प्रयोग हो) उदा० गङ्गेव दूरम् गगा में, 'मध्येजलरम् पद में भामि० १।६१, मध्येनगरम् 'नगर के भीतर' मध्येनदि 'नदी के बीच में' मध्येपृष्ठम् 'पीठ पर' मध्येभवत्रम् भोजन करने के पश्चात् फिर दोबारा भोजन करने से पूर्व बीच में लो जाने वाली औषधि, मध्येरणम् 'युद्ध में' भामि० १।१२८, मध्येसभ 'सभा में या सभा के सामने' —नि० ६।७६, मध्येसमुद्रम् 'समुद्र के बीच में' शि० ३।३३)। समः —**अङ्गुलिः, लो** (स्त्री०) बीच की अंगुली —**अह्नः** ('अह्नः' के स्थान में) मध्याह्न, दोपहर, **कृत्यम्, क्रिया** दोपहर के समय की जाने वाली क्रिया, **कालः, वेलाः समयः** दोपहर का समय, **स्नानम्** दोपहर का नहाना, —**कर्णः** अर्धनाम, **ग** (वि०) बीच में जाने वाला **गत** (वि०) केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बीच में होने वाला, **गन्धः** आम का वृक्ष, **ग्रहणम्** ग्रहण का मध्य, **दिनम्** ('मध्यंदिनम्' भी) 1. मध्य दिन, दोपहर 2. दोपहर का उत्तहार, **दीपकम्** दीपक अलंकार का एक भेद, इसमें सामान्य विशेषण जो समस्त चिन्तन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर प्रकाश डालता है बीच में स्थापित किया जाता है, उदा०—भट्टि० १०।२४,—देशः 1. मध्यवर्ती स्थान या प्रदेश, किसी चीज़ का मध्यवर्ती भाग 2. कमर 3. पेट 4. याम्योत्तर रेखा 5. केन्द्रीय प्रदेश, हिमालय तथा विंध्य पर्वत के बीच का भाग हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि, प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः स कीर्तितः -मनु० २।२१, -देहः शरीर का प्रमुख भाग, पेट, पदम् मध्यवर्ती पद, °लोपिन् (वि०) मध्यमपदलोपिन्, पातः गर्हणमंबारिणा, समागम, —भागः 1. मध्य भाग 2. कमर,—भावः बीच की स्थिति, सामान्य स्थिति,—यवः पीली जन्सों के छः दानों के बराबर का एक तोल, -रात्रः, —रात्रिः (स्त्री०) आधी रात, रात का बीच,—रेखा केन्द्रीय या प्रधानयाम्योत्तर रेखा,—लोकः तीनों लोक के बीच का लोक अर्थात् मर्त्यलोक या संसार, °ईशः, ईश्वरः राजा, वयस् अधेड़ उम्र-वाला, वर्तिन् (वि०) बीच में स्थित, केन्द्रवर्ती (पुं०) विवाचक, मध्यस्थ, वृत्तम् नाभि, -सूत्रम्-मध्यरेखा दे०,—स्थ (वि०) 1. बीच में स्थित या विद्यमान, केन्द्रीय 2. मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3. बीच का 4. बीच-बचाव करने वाला, दो दलों के बीच मध्यस्थता करने वाला 5. निष्पक्ष, तटस्थ 6. उदासीन, लगाव-रहित —श० ५, (स्थः) निर्णायक, विवाचक, मध्यस्थ 2. शिव का विशेषण, स्थलम् 1. मध्य या केन्द्र 2. मध्य स्थान या प्रदेश 3. कमर,—स्थानम् 1. बीच का पड़ाव 2. बीच का स्थान अर्थात् नाभि 3. तटस्थ प्रदेश, —स्थित (वि०) केन्द्रीय, अन्तर्वर्ती।

मध्यतः (अव्य०) [मध्य + तसिल्] 1. बीच से, मध्य से, में से 2. में।

मध्यम (वि०) [मध्ये भवः - मध्य+-म] बीच में स्थित या वर्तमान, बीच का, केन्द्रीय स्थितः पदं मध्यममुत्सृजन्ती—विक्रम० ४।१९, दूसरी प्रकार 'मध्यमलोकपालः' मध्यमपदम् मध्यमरेखा 2. मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3. बीच का, बीच की स्थिति या विशेषता का, बीच के दर्जे का यथा 'उत्तममध्यमअधम' में 4. बीच का, औसत दर्जे का तेन मध्यमशक्तीनि मित्राणि स्थापितान्यतः -रघु० १७।५८ 5. बीच के कद का 6. न सबसे छोटा न सबसे बड़ा, (भाई) बीच में उत्पन्न —प्रणमति पितरौ वां मध्यमः पाण्डवोऽयम्—वेणी० ५।२६ 7. निष्पक्ष, तटस्थ,—मः 1. संगीत में पंचम स्वर 2. विशेष संगीत पद्धति 3. मध्यवर्ती देश, दे० मध्यदेश 4. (ज्या० में) मध्यम पुरुष 5. तटस्थ प्रभु - धर्मोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते -रघु० १३।७ 6. प्रान्त का राज्यपाल, ‌मा 1. बीच की अंगुली 2. विवाह योग्य कन्या, वयस्क कन्या 3. कमल का बीजकोष 4. काव्यशास्त्रों में वर्णित एक नायिका, अपनी जवानी की उम्र के बीच पहुँची हुई स्त्री, तु० सा० द० १००,

मम् कमर। रामः - अङ्गुलिः बीच की अंगुली,

आहरणम् (बौद्ध० में) समीकरण म बीच की राशि का निरसन, कक्षा बीच का आंगन, जात (वि०) दो के बीच में उत्पन्न, मसाला, पदम् (समास के) बीच का पद, °लोपिन् (पुं०) तत्पुरुष समास का एक अवांतर भेद जिसमें कि रचना के बीच का शब्द लुप्त कर दिया जाता है, इसका सामान्य उदाहरण 'शाकपार्थिवः' है, इसका विग्रह है शाकप्रियः पार्थिवः, यहाँ बीच के शब्द 'प्रिय' का लोप कर दिया गया, इसी प्रकार लाभालाभ व गुडधानाः आदि शब्द हैं, पाण्डवः अर्जुन का विशेषण, पुष्पः (व्या० में) मध्यमपुरुष -बहु पुरुष जिसको सम्बोधित किया जाए, - भृतकः किराना, सेविहर (जो अपने लिए और अपने स्वामी के लिए खेती का काम करता है), - रात्रः आधी रात,—लोकः बीच का संसार, भूलोक, °पालः राजा रघु० २।१६, वयस् (नपु०) प्रौढ़ावस्था, बीच की उम्र, वयस्क (वि०) प्रौढ़, बीच की उम्र का, संग्रहः बीच के दर्जे का गृहप्रेम, जैसे कि गहने कपड़े, पुष्प आदि उपहार भेंज कर परस्त्री को फुसलाना, व्यास ने इसकी निम्नांकित परिभाषा की है—प्रैषणं गन्धमाल्यानां धूपभूषणवाससाम्, पलीभिनं चान्यासांनेच्यमः संग्रहः स्मृतः, साहसः तीन प्रकार के दण्डभेदों में द्वितीय प्रकार मनु० ८।१३८, (सः —सम्) मध्यवर्ग के प्रति अपराध या अत्याचार,—स्थ (वि०) बीच में होने वाला।

मध्यमक (वि०) (स्त्री०-मिका) [मध्यम + कन्] बीच का, बिलकुल बीचोंबीच का।

मध्यमिका [मध्यमक + टाप्, इत्वम्] वयस्क कन्या, जो विवाह योग्य उम्र की हो गई हो।

मध्ये दे० 'मध्य' के अन्तर्गत।

मध्यः एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्रप्रणेता, वेदान्त संप्रदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्तसूत्रों के भाष्यकर्ता।

मध्वकः [मधु+अक+अच्] भौंरा।

मध्विज्या [मधु ईजते प्राप्नोति—मधु+ईज्+क+टाप्, पृषो० ह्रस्वः] कोई भी मादक पेय, खींची हुई शराब।

मन् (स्वा० पर० मनति) 1. घमण्ड करना 2. पूजा करना ii (ज्ञा० आ० मानयते) घमण्डी होना. iii (दिवा० तना० आ० मन्यते, मनूते, मत) 1. सोचना, विश्वास करना, कल्पना करना, चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, विचारना—अङ्गे केऽपि शशाङ्कदूरे जलनिधे. पङ्कं परे मेनिरे —सुभा०, वत्स मन्ये कुमारेणात्मनेव जुम्भकास्त्रमामन्त्रितम्- उत्तर० ५, कथं भवान्मन्यते 'आपकी क्या सम्मति है' 2. खयाल करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदर करना, मानना, देखना, समझना, **मान लेना** -समीमृशा दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनते—भर्तृ० ३।८४, अमरैरप्यनेन पराध्यंजन्मना स्थितेरभेत्ता स्थितिमल्लसन्वयम्—रघु० ३।२७, १।३२, ६।८४, भग० २।२६, ३५, भट्टि० ९।१३७, स्तनविनिहितमपि हारमुदारं ना मनुते कृशतनुरिव भारम्—गीत० ४ 3. सम्मान करना, आदर करना, मान करना, मूल्यवान् समझना, बड़ा मानना, वरेण्य समझना -यस्यानुपङ्क्तिम इमे भुवनाधिपत्य भोगादयः कृपणलोकमता भवन्ति -भर्तृ० ३।७६ 4. जानना, समझना, प्रत्यक्ष करना, पर्यवेक्षण करना, लिहाज करना- भद्रा देवं वनपति-सखं पत्र साक्षाद्धसन्तम् शेष० ७३ 5. स्वीकृति देना, हामी भरना, अमल करना तत्मन्यस्व मम वचनम् मृच्छ० ८ 6. सोचना, विचार विमर्श करना 7. इरादा करना, कामना करना, आशा करना 8. मन लगाना, 'मन्' धातु के अर्थ उस शब्द के अनुसार जिसके साथ इसका प्रयोग होता है, विविध प्रकार से बदलते रहते हैं -उदा० **बहु मन्** बहुत मानना, बड़ा समझना, बहुत मूल्य आंकना, वरेण्य समझना, पूज्य मानना बहु मनुते तनु ते त्वसंगत-सङ्गनलालितमपि रेणुम्—गीत० ५, 'बहु' के अन्तर्गत भी दे०; **लघु मन्** तुच्छ समझना, घृणा करना, अपमान करना—श० ७।१; **अन्यथा मन्** और तरह सोचना, संदेह करना, **साधु मन्** भला सोचना, अनुमोदन करना, संतोषजनक समझना, श० १।२, **असाधु मन्** नापसंद करना, **तृणाय मन्** या **तृणवत् मन्** तिनके जैसा समझना, हलका मूल्य लगाना, तुच्छ समझना —अरिष्यमंसत्ते तृणाय त्रिः १५।६१, **न मन्** अवज्ञा करना, अवहेलना करना, प्रेर० (मानयति-ते) सम्मान करना, श्रद्धा दिखाना, आदर करना, अभिवादन करना, मूल्यवान् समझना मान्यान्मानय -भर्तृ० २।७७, इच्छ०(मीमांसते) 1. विचार विमर्श करना, परीक्षण करना, अन्वेषण करना, पूछताछ करना 2. संदेह करना, पूछताछ के लिए बुलाना, (अधि० के साथ), **अनु**—स्वीकृति देना, हामी भरना, अनुमोदन करना, स्वीकार करना, अनुमति देना, अनुज्ञा देना, मंजूरी देना—राजन्यास्त्वपुरिनिवृत्तयेऽनुमेने रघु० १४।८७, १४।२०, तत्र नाहमनुमन्तुमुत्सहे मोघवृत्ति कलभस्य चेष्टितम्—रघु० ११।३९, कु० १।५९, ३।६०, ५।६८, भर्तृ० ३।२२, रघु० १६।८५, प्रेर०—छुट्टी मांगना, अनुमति मांगना, स्वीकृति मांगना-अनुमान्यतां महाराजः विक्रम० २, **अभि**—, 1. कामना करना, इच्छा करना, लालायित होना -मनु० ९०।२५ 2. अनुमोदन करना, हामी भरना 3. सोचना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, मानना, **अव**—, घृणा करना, हेय समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना, तुच्छ समझना - चतुर्दशीज्ञानवमत्य मानिनी—कु० ५।५३, मनु० ४।१२५, **विक्रम०** २।११ **प्रति**—, सोचना, विचारना प्रेर० 1. सम्मान करना, सम्मानित समझना, आदर करना 2. अनुमोदन करना, प्रशंसा करना 3. अनुज्ञा देना, अनुमति देना, **वि**, (प्रेर०) अनादर करना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना--स्त्रीभिर्विमानितानां कापुरुषाणां विक्लवैते मदनः -मृच्छ० ८।९, **सम्**—, 1. सहमत होना, एकमत होना, एक मत का होना 2. हामी भरना, स्वीकृति देना, अनुमोदन करना, पसंद करना 3. सोचना, खयाल करना, मानना 4. स्वीकृति देना, अधिकार देना 5. मान करना, सम्मान करना, महत्त्वपूर्ण समझना, -कच्चिदभिनिवातायां काले संमन्यसेऽतिथिम् --भट्टि० ६।९५, **सममंस्त वन्यून् १।२** 6. अनुज्ञा देना, अनुमति देना (प्रेर०) सम्मान करना, आदर करना, प्रतिष्ठा करना।

मननम् [मन्+ल्युट्] 1. सोचना, विचार विमर्श करना, गहनचिन्तन करना, अवधारणा करना -मननान्मुनिरेवासि—हरि० २. प्रज्ञा, समझ 3. तर्कसंगत अनुमान 4. अटकल, अंदाजा।

मनस् (नपुं०) [मन्यतेऽनेन मन् करणे असुन्] 1. मन, हृदय, समझ, प्रत्यक्षज्ञान, प्रज्ञा, जैसा कि सुमनस्, दुर्मनस् आदि में 2. (दर्शन में) संज्ञान और प्रत्यक्ष-ज्ञान का आन्तरिक अंग या मन, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ आत्मा को प्रभावित करते हैं, (न्या० द० में मन एक द्रव्य या पदार्थ माना गया है जो आत्मा से सर्वथा भिन्न है)—तदेव सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं प्रतिजीवं भिन्नमणु नित्यं च—त० कौ० 3. चेतना, निर्णय या विवेचन की शक्ति 4. सोच, विचार, उत्प्रेक्षा, कल्पना, प्रत्यय, पश्यन्नदूरान्मनसाभ्यधूषयत्—कु० २।५१, रघु० २।२७, कायेन वाचा मनसापि शश्वत् ५।५ 5. योजना, प्रयोजन, अभिप्राय 6. संकल्प, कामना, इच्छा, रुचि; इस अर्थ में 'मनस्' शब्द का प्रयोग बहुधा धातु के तुमुन्नंत रूप के साथ (तुम् के अन्तिम 'म्' का लोप करके) होता है, और विशेषण शब्द बनते हैं—अयं जनः प्रष्टुमनास्तपोनिधिं कु० ५।४०, तु० काम 7. विचारविमर्श 8. स्वभाव, प्रकृति, मिजाज 9. तेज, ओज, सत्त्व 10. मानस नामक सरोवर (**मनसा गम्** सोचना, चिन्तन करना, याद करना--कु० २।६३, **मनः कृ** मन को स्थिर करना, विचारों को निर्दिष्ट करना, (संप्र० या अधि० के साथ), **मनः बन्ध्** मन लगाना, स्नेह हो जाना —अभिलाषे मनो बबन्धान्यरसान् विलंघ्य सा—रघु० ३।४, **मनः समाधा** अपने आपको स्वस्थ करना, **मनसि-**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्यम् मन को पार करना, **मनसि कृ** सोचना, ध्यान रखना, दृढ़ संकल्प करना, निर्धारण करना, मन में रखना)। सम०—**अधिनाथः** प्रेमी, पति, —**अनवस्थानम्** अनवधानता,—**अनुग** (वि०) मनोनुकूल, रुचिकर,—**उपहारिन्** (वि०) हृदयहारी, —**अभिनिवेशः** खूब मन लगाना, प्रयोजन की दृढ़ता, —**अभिराम** (वि०) मन के लिए सुखद, हृदय को तृप्त करने वाला—रघु० १।३९,—**अभिलाषः** मन की लालसा या इच्छा,—**आप** (वि०) हृदयहारी, आकर्षक, सुहावना, —**कान्त** (वि०) (मनःकान्त या मनः, कान्त) मन का प्रिय, सुहावना, रुचिकर, **कारः** पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान (सुख या दुःख का) पूरी चेतना, **क्षेभः** मन की उचाट, मानसिक अव्यवस्था, **गत** (वि०) मन में विद्यमान, हृदय में छिपा हुआ, आन्तरिक, अन्तरङ्ग, गुप्त, नैयं न वक्ष्यति मनोगतमाधिक्षेतुम् —३।१२ 2. मन पर प्रभाव डालने वाला, वांछित (**शम्**) 1. कामना, चाह—मनोगतं सा न शशाक शासितुम्—कु० ५।५१ 2. विचार, चिन्तन, भाव, **सद्मति**,—**गतिः** (स्त्री०) हृदय को इच्छा, —**गवी** कामना, चाह,—**गुप्ता** मैनसिल, —**ग्रहणम्** मन को हराना,—**ग्राहिन्** (वि०) मन को हराने वाला या आकृष्ट करने वाला,—**ज**,—**जन्मन्** (वि०) मनोजात, (पु०) कामदेव,—**जव** (वि०) विचार की भांति, फुर्तीला, आशुगामी 2. चिन्तन और विचारण में तेज, 3. पैतृक, पितृ तुल्य संबन्ध रखने वाला—**जवस्** (वि०) पिता के समान, पितृतुल्य,—**जात** (वि०) मन में उत्पन्न, मन में उदित या पैदा हुआ,—**जिह्म** (वि०) मन से सूंघने वाला अर्थात् दूसरों के मन के विचार भांपने वाला, —**ज्ञ** (वि०) सुहावना प्रिय, रुचिकर, सुन्दर, लावण्यमय 'सुमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० १।२०, रघु० ३।७, ६।७ (**ज्ञः**) एक गन्धर्व का नाम, (**-ज्ञा**) 1. मैनशिल 2. मादक पेय 3. राजकुमारी,—**ताप**:, —**पीडा** 1. मानसिक पीडा या वेदना व्यथा 2. पश्चात्ताप, पछतावा, —**तुष्टिः** (स्त्री०) मन का संतोष,—**तोका** दुर्गा का विशेषण, —**दण्डः** मन या विचारों पर पूर्ण नियन्त्रण -मनु० १०।१० तु० त्रिदण्डिन्, —**दस्त** (वि०) दलित, जिसका मन किसी वस्तु में पूरी तरह लग रहा हो, मन से दिया हुआ, —**बाह**:,—**बुध्नः** मन का कलेवा, पीडा, मनस्ताप - **नाशः** बुद्धि का नाश, विक्षिप्तता, पागलपन,—**नीत** (वि०) पसंद किया हुआ, चुना हुआ, **पतिः** विष्णु का विशेषण,—**पूत** (वि०) 1. मन जिसे पवित्र मानता हो, अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित, —**मनःपूतं समाचरेत्**—मनु० ६।४६ 2. शुद्धात्मा, सच्चेत, **प्रणीत** (वि०) मन को रुचिकर या सुखद, —**प्रसादः** चित्त की स्वस्थता, मानसिक शान्ति, —**प्रीतिः** (स्त्री०) मानसिक सन्तोष, हर्ष, खुशी, —**भवः**, **भूः** 1. कामदेव मनोज—रे रे मनो मम मनोभवशासनस्य पादाम्बुजद्वयमनारतमानमन्तम्—भामि० ४।३३, कु० ३।२७, रघु० ७।२२ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद, कामुकता—अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः —रघु० १२।३३,—**मथनः** कामदेव,—**मय** (वि०) पृथक् देखिये,—**यायिन्** (वि०) 1 इच्छानुसार गमन करने वाला 2. तेज, फुर्तीला,—**योगः** दत्त चित्तता, खूब ध्यान देना,—**योनिः** कामदेव, **रंजनम्** 1. मन को प्रसन्न करना 2. सुहावनापन, **रथः** 1. मन की गाडी, कामना, चाह अवतरतः सिद्धिपथं शब्दः स्वमनोरथस्येव—मालवि० १।२२, **मनोरथानामगतिर्न विद्यते** कु० ५।६८, रघु० ३।७२, १२।५९ 2. अभीष्ट पदार्थ—मनोरथाय नाशंसे—श० ७।१३ 3. (नाटक में) संकेत, परोक्ष रूप से या गुप्त से प्रकट की गई कामना, **लयक** (वि०) किसी एक व्यक्ति की आशाओं को पूरा करने वाला, (—क:) कल्प वृक्ष का नाम, **सिद्धिः** (स्त्री०) कल्पना की सृष्टि, हवाई किले बनाना, **रम** (वि०) आकर्षक, सुखद, रुचिकर, प्रिय सुन्दर—अरुणनखमनोरमासु तस्याः(अङ्गुलीषु)—श० ६।१०,(—**मा**) 1. कमनीय स्त्री 2. एक प्रकार का रंग, —**राज्यम्** 'कल्पना का राज्य' हवाई किला —मनोराज्य विजृम्भणमेतत् 'यह हवाई किले बनाना है',—**लयः** चेतना का नाश, **-लौल्यम्** मन की चंचलता, मन की लहर या मौज, **-वाञ्छा**,—**वाञ्छितम्** हृदय की अभिलाष, इच्छा, —**विकारः**, **विकृति** (स्त्री०) मन का संवेग,—**वृत्तिः** (स्त्री०) 1. मन की क्रियाशैली, इच्छाशक्ति 2. स्वभाव, चित्तवृत्ति, **वेगः** विचारों की तेजी,—**व्यथा** मानसिक पीडा या वेदना, **शोलः**, —**ला** मैनसिल मनः शिलाविच्छिदिला निषेदुः कु० १।५५, रघु० १२।८०, **शीघ्र** (वि०) मन की भांति तेज, **संगः** मन की किसी वस्तु में) आसक्ति, **सन्तापः** मन की व्यथा, **स्थ** (वि०) हृदय में स्थित, मानसिक, —**स्थैर्यम्** मन की दृढ़ता,—**हत** (वि०) निराश, **हर** (वि०) सुखद, लावण्यमय, आकर्षक, कमनीय, प्रिय—अन्यासमनोहरं वपुः—श० ११।७, कु० ३।३९, रघु० ३।३२ (—**रः**) एक प्रकार की चमेली, (—**रम्**) सोना, **-हर्तृ**—**हारिन्** (वि०) हृदय को हरण करने वाला, मनोहर, रुचिकर, सुखद हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः— कि० १।४, **-हारी** असती या व्यभिचारिणी स्त्री,—**ह्लादः** हृदय का उल्लास,—**ह्वा** मैनसिल।

मनसा [मनस्+अच्+टाप्] कश्यप की एक पुत्री का नाम, नागराज अनन्त की बहन तथा जरत्कारु मुनि की पत्नी, इसी प्रकार 'मनसादेवी'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनसिजः [मनसि जायते–जन्+ड, अलुक् स०] 1. कामदेव रघु० १८।५२ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद मनसिजरुजं सा वा दिव्या ममालमपोहितुम् विक्रम० ३।१०, अ० ३।९ ।

मनसिशयः [मनसि शेते–शी+अच् सप्तम्या अलुक्] कामदेव शि० ७।२ ।

मनसः (अव्य०) [मनस्+तस्] मन से, हृदय से – रघु० १४।८१ ।

मनस्विन् (वि०) [मनस्+विनि] 1. बुद्धिमान्, प्रज्ञावान्, चतुर, ऊँचे मन वाला, उच्चात्मा –रघु० १।३२ पंच० २।१२० 2. स्थिरमना, दृढ़निश्चय, दृढ़ संकल्प वाला कु० ५।६, – नी 1. उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री मनस्विनीमानविघातदक्षम् – कु० ३।३२, मालवि० १।१९ 2. बुद्धिमती या सती स्त्री 3. दुर्गा का नाम ।

मनाक् (अव्य०) [मन्+आक्] 1. जरा, थोड़ा सा, अल्पमात्रा में, न मनाक् बिल्कुल नहीं 'रे पाल्य विह्वलमना न मनागपि स्याः– भामि० १।३७, १११ 2. शनैः शनैः, विलंब से । मम०–कर (वि०) थोड़ा करने वाला, (रस्) एक प्रकार की गंधयुक्त अगर की लकड़ी ।

मनाका [मन्–आक+टाप्] द्रौपदी ।

मनित (वि०) [मन्–क्त] ज्ञात, प्रत्यक्षज्ञान, समझा हुआ ।

मनीकम् [मन्–कीकन्] सुर्मा, अंजन ।

मनीषा [मनस् ईषा ष० त०, अक०] 1. चाह, कामना, – यां दूरेनं वयमिवृतुं तनुते मनीषां भामि० १।२५ 2. प्रज्ञा, समझ 3. सोच, विचार ।

मनीषिका [मनीषा+कन्–टाप्, इत्वम्] समझ, प्रज्ञा ।

मनीषित (वि०) [मनीषा+इतच्] 1. अभिलषित, वांछित, पसंद किया गया, प्यारा, प्रिय –मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवताः– कु० ५।४ 2. रुचिकर,—तम् कामना, उच्छा, अभीष्ट पदार्थ –मनीषितं वीरसुवा येन दुग्धा रघु० ५।३३ ।

मनीषिन् (वि०) [मनीषा–इनि] बुद्धिमान्, विद्वान्, प्रज्ञावान्, चतुर, विचारशील, समझदार – रघु० १।१५, (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, मुनि, पंडित —मानसीयो मनीषिणाम्– रघु० १।११, संस्कारवत्येव गिरा मनीषी कु० १।२८, ५।३६, रघु० ३।४४ ।

मनुः [मन् + उ] 1. एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो मानव का प्रतिनिधि और मानवजाति का पिता माना जाता है (कभी कभी यह दिव्य व्यक्ति समझे जाते हैं) 2. विशेषतः चौदह क्रमागत प्रजापति या भूलोक प्रभु –मनु० १।६३ (जिसमें पहिले मनु का नाम स्वायंभुव मनु है, जो एक प्रकार से गौण ब्रह्मा समझा जाता है, इसने दस प्रजापति या महर्षियों का जन्म हुआ । इसी को मनुस्मृति नामक धर्मसंहिता का प्रणेता माना जाता है सातवाँ मनु वैवस्वत मनु कहलाता है क्योंकि उसका जन्म विवस्वान् (सूर्य) से हुआ । यही जीवधारी प्राणियों की वर्तमान जाति का प्रजापति समझा जाता है । जल प्रलय के समय मत्स्यावतार के रूप में विष्णु ने इसी मनु की रक्षा की थी । अयोध्या पर शासन करने वाले सूर्यवंशी राजा के सूर्यवंश का प्रवर्तक भी यही मनु समझा जाता है—रे० उत्तर० ६।१८ रघु० १।११, चौदह मनुओं के क्रमशः निम्नलिखित नाम हैं—1. स्वायंभुव 2. स्वारोचिष 3. औत्तमि 4. तामस 5. रैवत 6. चाक्षुष 7. वैवस्वत 8. सावर्णि 9. दक्षसावर्णि 10. ब्रह्मसावर्णि 11. धर्मसावर्णि 12. रुद्रसावर्णि 13. रौच्यदैवसावर्णि 14. इन्द्र सावर्णि । 3. चौदह की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति, —नुः (स्त्री०) मनु की पत्नी । सम० अन्तरम् एक मनु का काल (मनु० १।७९ के अनुसार यह काल मनुष्यों के ४३२०००० वर्षों का होता है, इसी को ब्रह्मा का १।१४ दिन मानते हैं, क्योंकि इस प्रकार के १४ कालों का योग ब्रह्मा का एक पूरा दिन होता है । इन चौदह कालों में से प्रत्येक का अधिष्ठातृ-मनु पृथक् २ है, इस प्रकार के छः काल बीत चुके हैं, इस समय हम सातवें मन्वन्तर में रह रहे हैं, और सात और मन्वंतर अभी आने हैं), –ज्ञः मानवजाति °अधिपः, °अधिपतिः, °ईश्वरः, °पतिः, °राजः राजा, प्रभु, °लोकः मानवों की सृष्टि—अर्थात् भूलोक, –जातः मनुष्य,–ज्येष्ठः तलवार,—प्रणीत (वि०) मनु द्वारा शिक्षित या व्याख्यात,—भूः मनुष्य, मानव, जाति,—राज् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—श्रेष्ठः विष्णु का विशेषण,—संहिता धर्मसंहिता जो प्रथम मनु द्वारा रचित मानी जाती है, मनु द्वारा प्रणीत विधिविधान ।

मनुष्यः [मनोरपत्यं यक् सुक् च] 1. आदमी, मानव, मर्त्य 2. नर । सम०–इन्द्रः,—ईश्वरः राजा, प्रभु–रघु० २।२, जातिः मानव जाति, इंसान, देवः 1. राजा रघु० २।५२ 2. मनुष्यों में देव, ब्राह्मण,—धर्मः 1. मनुष्य का कर्तव्य 2. मानव चरित्र, इंसान की विशेषता,—धर्मन् (पुं०) कुबेर का विशेषण, –भारः मानवबहुत्व, पतिः आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार, गृहस्थ के पाँच दैनिक कृत्यों में एक, देव नृयज्ञ,—लोकः मरणशील (मर्त्यों) मनुष्यों का संसार, भूलोक, विश्, विशा (स्त्री०), –विशम् ईशान, मानवजाति,—शोणितम् मानवरक्त—(पपौ) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम् रघु० ३।५४,—सभा 1. मनुष्यों की सभा 2. भीड़, जमाव ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनोमय (वि०) [मनस्+मयट्] मानसिक, आत्मिक। सम० -कोशः, -वः आत्मा को आवृत करने वाले पाँच कोशों में से दूसरा कोष।

मन्तुः [मन्+तुन्] 1. दोष, अपराध--मुर्वैव मन्तुं परिकल्प्य भामि० २।१३ 2. मनुष्य, मानवजाति, तु० (स्त्री०) समझ।

मन्तृ (पुं०) [मन्+तृच्] ऋषि, मुनि, बुद्धिमान्, मनुष्य, पराभर्शदाता, सलाहकार।

मन्त्र्(चुरा० आ० मंत्रयते, कभी कभी 'मन्त्रयति' भी, मन्त्रित) 1. सलाह लेना, विचार करना, सोच विचार करना, मन्त्रणा करना, परामर्श लेना—न हि स्त्रीभिः सह मन्त्रयितुं युज्यते पंच० ५, मनु० ७।१४६ 2. उपदेश देना, सलाह देना, परामर्श देना - अतीतलाभस्य च रक्षणार्थं···यत्नन्यते इसौ परमो हि मन्त्रः—पंच० २।१८२ 3. वेदपाठ को अभिमंत्रित करना, जादू से मुग्ध करना 4. कहना, बोलना, बातें करना, गुनगुनाना—किमपि हृदये कृत्वा मन्त्रयेथे—श०१, किमेकाकिनी मन्त्रयसि—श० ६, हला संगीतशालापरिसरेऽवलोकिता द्विसीया त्वं कि मन्त्रयन्त्यासीः मा० २, अनु—,1. अभिमंत्रित करना, जादू करना -विसृष्टश्च वामदेवानुमन्त्रितोऽभवः—उत्तर० २ 2. आशीर्वाद देकर विदा करना -रथमारोप्य कृष्णेन यत्र कर्णोऽनुमन्त्रितः—महा०, अभि—,1. वेदमंत्रों द्वारा अभिमंत्रित करना,—पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः—अमर०, याज्ञ० २।१०२, ३।३२६ 2. मृग्य करना, मोहना, आ—,1. विदा करना, विसर्जन करना, आमन्त्रयस्व सहचरम्—श० ३, कु० ६।९४ 2. बोलना, बुलाना, कहना, संबोधित करना, वार्तालाप करना तमामन्त्रयांबभूव - का० ८१, वेणी० १ 3. कहना, बोलना - परिजनोऽप्येवमामन्त्र्यते का० १९५, भट्टि० ९।९८ 4. बुलाना, निमंत्रित करना, उप ,उपदेश देना, उकसाना, फुसलाना, नि ,न्योता देना, बुलाना, बुला भेजना - विश्वयोनिमन्त्रिताश्चेतमभिजग्मुर्महर्षयः—रघु० १५।५९, ११।३२, याज्ञ० १।२२५, ,जादू से अभिमंत्रित करना सम् , सलाह करना, परामर्श या सलाह लेना,—मम हृदयेन सह संमन्त्रयेवानसि मुद्रा० १।

मन्त्रः [मन्त्र्—अच्] 1. (किसी भी देवता को संबोधित) वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वेद मंत्र, (वेद का पाठ तीन प्रकार का है—यदि छन्दोबद्ध और उच्चस्वर से बोला जाने वाला है तो ऋक् है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर से बोला जाने वाला है तो यजुस् है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो साम्न् है) 2. वेद का संहिता पाठ (ब्राह्मण भाग को छोड़कर) 3.मोहन, वशीकरण तथा आवाहन के मंत्र,—न हि जीवन्ति जना मनागमन्त्राः—भामि० १।१११, आचक्ष्वो हि मणिमंत्रौषधीनां प्रभावः रत्न० २, रघु० २। ३२, ५।५७ 4. (प्रार्थना परक) यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो 'ओं नमः शिवाय' आदि 5. गुप्तवार्ता, मंत्रणा, परामर्श, उपदेश, संकल्प, योजना तस्य संवृतमन्त्रस्य - रघु० १।२०, १७।२०, पंच० २।१८२, मनु० ७।१८ 6. गुप्त योजना या मंत्रणा, रहस्य। सम०—आराधनम् मोहन परक या आवाहन के मंत्रों से सिद्धि की चेष्टा —मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः —-ऋतुः ३।४, उद्यमम्,—जलम्, तोयम् वारि (नपुं०) मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित जल, मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ पानी, उपष्टम्भः परामर्श द्वारा समर्थन करा,—करणम् 1. वेदपाठ 2. सस्वर वेदपाठ करना, -कारः वैदिक सूक्तों का कर्ता,—कालः मंत्रणा या परामर्श का समय,—कुशल (वि०) परामर्श देने में चतुर, -कृत् (पुं०) वैदिक सूक्तों का प्रणेता या रचयिता - रघु० ५।४, ११।३१, १५।३१ 2. वेद पाठी 3. सलाहकार, परामर्शदाता 4. राजदूत, गन्धकः ज्ञान, विज्ञान, -गुप्तिः (स्त्री०) गुप्त सलाह,—गृहः गुप्तघर, गुप्तदूत या अभिकर्ता,—जिह्वः अग्नि—शि० २।१०७, -ज्ञः 1. सलाहकार, परामर्शदाता 2. विद्वान् ब्राह्मण 3. गुप्तचर, दः, वातु (पुं०) आध्यात्मिक गुरु या आचार्य, -दर्शिन् (पुं०) 1. वैदिक सूक्तों का द्रष्टा 2. वेदों में निष्णात ब्राह्मण, -दीधितिः अग्नि, दृश् (पुं०) 1. वैदिक सूक्तों का द्रष्टा, ऋषि 2. परामर्शदाता, सलाहकार, देवता मन्त्र द्वारा आहूत देवता, -धरः सलाहकार, -निर्णयः मंत्रणा के पश्चात् अन्तिम निर्णय, पूत (वि०) मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ, प्रयोगः मंत्रों का प्रयोग, -बी (बी) जम् मंत्र का प्रथमाक्षर, -भेदः गुप्त परामर्श का प्रकट कर देना, भेद खोल देना, -मूर्तिः शिव का विशेषण, मूलम् जादू,—यन्त्रम् जादू के संकेत से युक्त एक रहस्यमूलक रेखाचित्र, ताबीज, -योगः 1. मंत्रों का प्रयोग 2. जादू, वर्जम् (अव्य०) बिना मंत्र बोले,—विद् दे० ऊ० 'मंत्रज्ञ', -विद्या मंत्रविज्ञान, जादू,—संस्कारः वेदपाठ में युक्त कोई संस्कार या अनुष्ठान,—संहिता वेद के समस्तसूक्तों का संग्रह, साधकः जादूगर, बाजीगर, —साधनम् 1. जादू द्वारा वश में करना, या कार्य सिद्धि 2. मोहनमंत्र, आवाहनमंत्र,—साध्य (वि०) जादू के मंत्रों से वशीकरण या कार्यसिद्धि के योग्य 2. मंत्रणा द्वारा प्राप्य,—सिद्धिः (स्त्री०) 1. किसी मंत्र की क्रियाशीलता, या सम्पन्नता 2. मंत्रज्ञान से प्राप्त होने वाली शक्ति,—स्पृश् (वि०) मन्त्रों द्वारा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किसी सिद्धि को प्राप्त करने वाला,—होन (वि०) वेदमंत्रों से रहित अथवा विरुद्ध ।

मन्त्रणम्,—णा [मन्त्र्+ल्युट्] विचार, परामर्श ।

मन्त्रवत् (वि०) [मन्त्र+मतुप्] मंत्रों से युक्त—रघु० ३।३१ ।

मन्त्रिः=मन्त्रिन्, दे० ।

मन्त्रित [भू० क० कृ०) [मन्त्र्+क्त] 1. जिसका परामर्श लिया जा चुका है 2. जिस पर सलाह ली गई, परामर्श किया गया है 3. कहा हुआ, बोला हुआ 4. मंत्र पढ़ा हुआ, अभिमंत्रित 5. निश्चित, निर्धारित ।

मन्त्रिन् (पु०) [मन्त्र्+णिनि] मन्त्री, सलाहकार, राजा का मन्त्री रघु० ८।१७, मनु० ८।१ । सम०—धुर (वि०) मंत्रालय के भार को संभालने में समर्थ,—पतिः, —प्रधानः, प्रमुखः मुख्यः, वरः,—श्रेष्ठः प्रधान मन्त्री, मुख्यमंत्री,—प्रकाण्ड श्रेष्ठ या प्रमुख मन्त्री, —श्रोत्रियः वेदों में निष्णात मन्त्री ।

मन्थ्, **मन्थ्** (भ्वा० क्र्या० पर० मन्थति, मथति, मथ्नाति, मथित, कर्म० वा० मथ्यते) 1. बिलोना, मथना (प्रायः हिकर्मक)—सुधां सागरं ममन्थुः—या देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्मथ्यते—कि० ५।३० 2. खुदा करना, हिलाना घुमाना, ऊपर नीचे करना तस्मात् समुद्रादिव मथ्यमानात् —रघु० १६।७९ 3. पीस डालना, अत्याचार करना, सताना, कष्ट देना दुःखी करना —मन्मथो मां मन्थ-भिजनाम सान्वयं करोति—दश०, आतो मन्थे शिशिर-मथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् मेघ० ८३ 4. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5. नष्ट करना, मार डालना, संहार करना, कुचल डालना मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपात् वेणी० १।१५, अमर्षोच्चैः पराजी-कम्—भट्टि० १५।४६, १४।३६ 6. फाड़ डालना, विदारित करना, उद्—, 1. प्रहार करना, मारना, नष्ट करना—भीमासाकृतमुन्मथ्य सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्—पंच० २।३३, वैयंमुन्मथ्य—मा० १।१८, नष्ट करके या उखाड़ कर 2. हिलाना, अशान्त करना 3. फाड़ना, काटना या छीलना—रघु० २।३७, नि—, 1. बिलोना, हिलाना, घुमाना—अमृत-स्यार्थे निर्मथिष्यामहे जलम् महा० 2. रगड़ से आग पैदा करना 3. खरोंचना, पीसना 4. पूर्णतः नष्ट करना, कुचल डालना, प्र—, 1. बिलोना (समुद्रः) प्रमथ्य-मानो गिरिमेव भूयः रघु० १३।१४ 2. तंग करना, अत्यन्त कष्ट देना, दुःखी करना, सताना 3. प्रहार करना, खरोंचना, शीघ्रता करना 4. फाड़ डालना, काट देना 5. उजाड़ देना 6. मार डालना, नष्ट करना मा० ४।२, २।५ ।

मन्थः [मन्थ करणे घञ्] 1. बिलोना, इधर उधर हिलाना, आलोडित करना, क्षुब्ध करना मन्थादिव क्षुभ्यति गाङ्गमम्भः—उत्तर० ७।१६, रघु० १०।३ 2. संहार करना, नष्ट करना 3. मिश्रित पेय 4. रई का डंडा ('मथा' भी) 5. सूर्य 6. सूर्य की किरण 7. आँख का मैल, ढीठ, सोत्रियांविद 8. घर्षण से अग्नि सुल-गाने का उपकरण । सम० अचल,—अद्रिः, —गिरिः, —पर्वतः, शलः मन्दर पर्वत (जो रई के डंडे के रूप में प्रयुक्त हुआ) भाग्नि० १।५५,—उदकः, उदधिः क्षीर सागर, गुणः बिलोने के रस्सी, नेता, —जम् मक्खन,—दण्डः, दण्डकः रई का डंडा ।

मन्थनः [मन्थ्+ल्युट्] रई का डंडा,—नम् बिलोना, क्षुब्ध करना, विलोडित करना, इधर उधर हिलाना 2. घर्षण द्वारा आग सुलगाना,—नी मथनी, बिलौनी । सम० दण्डी बिलौनी, मथनी ।

मन्थर (वि०) [मन्थ्+अरच्] 1. शिथिल, मन्द, ढिलंब-कारी, सुस्त, अकर्मण्य—मन्थमन्थरा—श० ४, प्रत्यभि-ज्ञानमथरो भवेत् तदेव, दरमन्थरचरणविहारम्—गीत० ११—शि० ६।४०, ७।१८, ५।६२, रघु० १९।२१ 2. जड़, मूढ़, मूर्ख—मंथरकौलिकः 3. नीच, गहरा, खोखला, मंदस्वर 4. विस्तृत, विशाल, चौड़ा, बड़ा 5. झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र, रः 1. भंडार, कोष 2. सिर के बाल 3. कांच, घुस्सा 4. ताजा मक्खन 5. रई का डंडा 6. रुकावट, बाधा 7. गढ़ 8. फल 9. गुप्तचर, सूचक 10. वैशाख मास 11. मन्दर पर्वत 12. हरिण, रा कैकेयी की कुब्जादासी जिसने अपनी स्वामिनी को, राम के राज्याभिषेक के अवसर पर, अपने दो पूर्वदत्त वरदान (एक से राम का चौदह वर्ष के लिए निर्वासन, दूसरे से भरत का राज्यारोहण) राजा से मांगने के लिए उकसाया,—रम् कुमुद्म । सम० विवेक (वि०) निर्णय करने में मन्द, विवेक-शक्ति से शून्य मा० १।१८ ।

मन्थरः [मन्थ्+अरु] बंदर डुलाने से उत्पन्न हवा ।

मन्थानः [मन्थ्+आनच्] 1. रई का डंडा, मथानी 2. शिव का विशेषण ।

मन्थानकः [मन्थान+कन्] एक प्रकार का घास ।

मन्थिन् (वि०) [मन्थ्+णिनि] 1. बिलोने वाला, मंथन करने वाला 2. कष्ट देने वाला, तंग करने वाला (पुं०) वीर्य, शुक्र,—नी बिलोनी, मथनी ।

मन्थ् (भ्वा० आ० मन्थते—बहुधावादिक प्रयोग) 1. पीकर चुर होना 2. प्रसन्न होना, हर्षोन्मत्त होना 3. ढीला-ढाला होना, शिथिल होना 4. चमकना 5. शनैः २ चलना, टहलना, घूमना ।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1. धीमा, विलंबकारी, अक-र्मण्य, सुस्त, मंद, मटरगश्ती करने वाला—(न०) सिन्धुस्त्वं मन्दा गतिमदयमूल्यः—कु० १।११, तच्चरित्रं गोविन्दे मनसिजमन्दे सखी प्राह—गीत० ६ 2. निरु-

For Private and Personal Use Only

त्साही, तटस्थ—उदासीन 3. जड, मंदबुद्धि, मूढ, अज्ञानी, निर्बल-मस्तिष्क, मन्दाऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः -मालवि० २।८, मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्यामि-म्युहास्यतां · रघु० १।३, द्विपन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम् कु० ५।७५ 4. धीमा, गहरा, खोखला (ध्वनि आदि) 5. कोमल, धुंधला, मृदु तथा 'मंदस्मितम्' में 6. थोड़ा, अल्प, जरा सा, मन्दोदरी, दे० 'अमन्द' भी 7. दुर्बल, दलहीन, कमजोर यथा 'मंदाग्नि' में 8. दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा 9. मुर्झाया हुआ 10. दुष्ट, दुश्चरित्र 11. शराब की लत वाला, -दः 1. शनिग्रह 2. यम का विशेषण 3. सृष्टि का विघटन 4. एक प्रकार का हाथी—शि० ५।४९, -दम् (अव्य०) 1. धीमे से, क्रमशः, धीरे-धीरे —वातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मंदं विलासादिव—श० २।१ 2. धीरे २, हल्के २, शान्ति से—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्—मेघ० ९ 3. धीमे-धीमे, मंद गति से, मंद स्वर से, हल्केपन से 4. मद्धमस्वर में, गहराई के साथ (मन्दी कृ ढीलढाल करना, -मन्दीकृतो वेगः-श० १, मन्दी भू ढीला होना, कम ताकतवर होना) । सम० अक्ष (वि०) कमजोर आँखों वाला (—क्षम्) लज्जा का भाव, लज्जाशीलता, शर्मीलापन, -—अग्नि (वि०) दुर्बल पाचन शक्ति वाला, (निः) अग्निमांद्य, पाचनशक्ति की मंदता,—अनिल मृदु पवन, —असु (वि०) दुर्बल श्वास वाला,—आक्रान्त एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १, —आयन् मन्दबुद्धि वाला, मूर्ख, अज्ञानी—मन्दात्मानुजिघृक्षया मल्लिं०, —आदर (वि०) कम आदर प्रदर्शित करने वाला, अवज्ञा करने वाला, लापरवाह 2. असावधान,—उत्साह (वि०) हताश, उत्साहहीन-मन्दोत्साहः कृतोऽस्मि मुनयणवादिता माधवेन—श० २, —उदरी रावण की पत्नी का नाम, पाँच सती स्त्रियों में से एक—कु० अहल्या,—उरण (वि०) कोण, गुनगुना (—ण्यम्) कोणता, गुनगुनापन,—औत्सुक्य (वि०) धीमी उत्सुकता वाला, परावृत्मुख, कचिच्छून्य—मन्दौत्सुक्यो स्मि नगरगमन प्रति—श० १,—कण (वि०) कुंठ बहरा, सुनिने —बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान् , 'अभाव की अपेक्षा कुछ होना अच्छा है'—कान्ति चन्द्रमा, —कारिन् (वि०) धीमे २ काम करने वाला, गः शनि, गति, गामिन् (वि०) शनैः २ चलने वाला, धीमी गति वाला,—चेतस् (वि०) 1. मन्दबुद्धि, मूर्ख, मूढ 2. अन्यमनस्क 3. सुस्त, अचेत,—ज्ञान (वि०) धुंधला, मद्धम आभाशून्य —मेघ० ८०,—जननी शनि की माता,—धी,—प्रज्ञ, —मति, मेधस् मंद बुद्धि, मूर्ख, मूढ़, भागिन्,—भाग्य (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा, दयनीय, बेचारा,—रश्मि (वि०) धुंधला, वीर्यः दुर्बल, वृष्टिः (स्त्री०) हल्की बारिश, स्मितः,—हासः, हास्यम् हल्की हँसी, मंद मुस्कान ।

मन्दः [मन्द् + अच्] 1. मूर्ख का वृक्ष । **मन्दनम्** [मन्द् + ल्युट्] प्रशंसा, स्तुति ।

मन्दन्ती [मन्द्-णिच्+शतृ+ङीप्] दुर्गा का विशेषण ।

मन्दर (वि०) [मन्द्+अर] 1. धीमा, विलम्बकारी, सुस्त 2. मोटा, सघन, दृढ़ 3. विस्तृत, स्थूल,—रः 1. एक पहाड़ का नाम (इसको समुद्रमंथन के समय देवासुरों ने मथानी—रई का डंडा बनाया था, और तब सुधा का मंथन किया था)—पूर्वतैर्मन्दरोद्भूतैः क्षीरोर्मेव इवाब्धयुतम्—रघु० ४।२७, अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए—गीत० १ शोभेव मन्दरसुन्धुभूतां-भोधिवर्णना-शि० २।१०७, कि० ५।८० 2. मोतियों (आठ या सोलह लड़ियों का) का हार 3. स्वर्ग 4. दर्पण 5. इन्द्र के नन्दनकानन में स्थित पाँच वृक्षों में से एक मन्दार वृक्ष, दे० मंदार । सम० -आवासा, -वासिनी दुर्गा का विशेषण ।

मन्दसानः [मन्द्+सानच्] 1. अग्नि 2. जीवन 3. निद्रा ('मन्दमानं' भी लिखा जाता है) ।

मन्दाकः [मन्द+आक] द्वार, बड़ी ।

मन्दाकिनी [मन्दमकति -अक्+णिनि+ङीप्] 1. गंगा नदी-मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः-रघु० १३।४८, कु० १।२९ 2. स्वर्गगा, वियद्गंगा (मंदाकिनी भिन्दरा ह्रा)-मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भिः—मेघ० ६७ ।

मन्दायते (ना० धा० आ०) 1. शनैः शनैः चलना, विलंब करके चलना, पिछड़ना, मटरगश्त करना, देर लगाना —मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः-मेघ० ४०, विक्रम० ३ १५ 2. दुर्बल होना, कृश होना, धुंधला होना—रघु० ४।४९ ।

मन्दारः [मन्द+आरक] 1. मूर्ख का पेड़, इंद्र के नन्दनकाननस्थित पाँच वृक्षों में से एक—हस्ताप्रावरणत्वकन्मितां बालमन्दारवृक्षः—मेघ ७५, ६७, विक्रम० ४।३५ 2. आक का पौधा, मदार वृक्ष 3. धतूरे का पौधा 4. स्वर्ग 5. हाथी,—रम् मूर्ख के वृक्ष का फूल—कु० ५।८०, रघु० ६।३३ सम०—माला मंदार के फूलों की माला—मंदारमालाहरिणा सिनवा—श० ७।२, षष्ठी माघशुदी छठ ।

मन्दारकः मन्दारतरुः, मन्दारः [मन्दार+कन्, मन्द+आ+रु+अन्, मन्द+आरू] मूर्ख का वृक्ष दे० 'मदार' ।

मन्दिमन् (पुं०) [मन्द+इमनिच्] 1. धीमापन, विलंबकारिता 2. सुस्ती, जड़ता, भुलक्कड़ ।

मन्दिरम् [मन्दतेऽत्र मन्द्+किरच्] 1. रहने का स्थान, आवास, महल, भवन—कु० ७।५५, भट्टि० ८।९६,

रघु० १२।८३ 2. आवास, रहने का घर यथा श्रीरङ्गमन्दिरम् में 3. नगर 4. शिविर 5. देवालय। सम०—पक्षः विल्ली **मणिः** शिव का विशेषण।

मंदिरा | मंदिर + टाप्] घुड़साल, अस्तबल।

मंदुरा [मन्द् + उरच् + टाप्] 1. अश्वशाला, घुड़साल अस्तबल प्रभ्रष्टोऽथ प्लवंगः प्रविशति नृपतेर्मंदुरायाः रत्न० २।२, रघु० १६।४१ 2. शय्या, चटाई।

मन्द्र (वि०) [मन्द् + रक्] 1. नीचा, गहरा, गंभीर, खोखला, चरमराता -यथोदमंद्रध्वनिना धरित्री – कि० १६।३, ७।२२, मेघ० ९९, रघु० ६।५६,—द्रः 1. मन्द्रध्वनि 2. एक प्रकार का ढोल 3. एक प्रकार का हाथी।

मन्मथः [मन्+क्विप्, मथ् + अच्, ष० त०] 1. कामदेव. प्रेम का देवता मन्मथो मां मन्थन्निव लाल सान्वयं करोति दश० २१, मेघ० ७३ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद प्रवोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः ऋतु० १।८ इसी प्रकार 'परीक्षणमन्मथः' दश० ३।१८ 3. कैथ। सम० **आनंदः** एक प्रकार का आम का पेड़—**आम्रः** 1. आम का पेड़ 2. स्त्री की भग, **-कर** (वि०) प्रेमोत्तेजक, **-युद्धम्** प्रेमकेलि, संभोग, मैथुन लेखः प्रेम-पत्र—द्रः ३।२६।

मन्मनः (पुं०) 1. गुप्त कानाफूसी (दंष्टयोर्जेल्हितम् मंदम्) करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्करः, मन्मनो मन्मनीभावेषु मनकोकिलनिस्वनः काव्या० ३।११ 2. कामदेव।

मन्युः [मन् + युच्] 1. क्रोध, दोष, नाराजगी, कोप, गुस्सा रघु० २।३२, ४१, ११।४६ 2. व्यथा, शोक, कष्ट दुःख उत्तर० ४।३, कि० १।३५, भट्टि० ३।४९ 3. विषदग्रस्त या दयनीय स्थिति, कमीनापन 4. यज्ञ 5. अग्नि का विशेषण 6. शिव का विशेषण

मन्श् (भ्वा० पर० मन्शति) जाना, हिलना-जुलना।

मम | अस्मद् शब्द-सर्वनाम उत्तमपुरुष-मेघ० ए० व०] मेरा। सम० **कारः, कृत्यम्** मेरापन, ममता, स्वार्थ।

ममता [मम + तल् + टाप्] 1. अपने मन की भावना, स्वार्थ, स्वहित 2. घमंड, अभिमान, आत्मनिर्भरता 3. व्यक्तित्व।

ममत्वम् [मम + त्व] 1. मेरापन, अपनापन, स्वामित्व की भावना 2. स्नेहयुक्त आदर, अनुराग, मानना कु० १।१२ 3. अहंकार, घमंड।

ममायतालः [मम्य + आल, यलोपः, मकारादेशः, आय तुलनमः] ज्ञानेन्द्रिय का विषय।

मम्ज् (स्वा० पर०) जाना, हिलना-जुलना।

मम्मटः 'काव्यप्रकाश' का प्रणेता।

मय (स्वा० आ० मयते) जाना, हिलना-जुलना।

मय (वि०) (स्त्री०-यी) 'पूर्ण' 'से युक्त' 'संरचित' 'से बना हुआ' अर्थ को प्रकट करने वाला तद्धित का प्रत्यय, उदा० कनकमय, काष्ठमय, तेजोमय और जलमय आदि, **यः** 1. एक दानव, दानवों का शिल्पी (कहते हैं कि इसने पांडवों के लिए एक भव्य भवन का निर्माण किया था 2. घोड़ा 3. ऊँट 4. खच्चर।

मयटः [मय + अटन्] वासकूस की झोंपड़ी, पर्णशाला।

मयट् (यु) प्रत्ययः [=मयट्क, पृषो० साधु]

मयुः [मय + कु] 1. किन्नर, स्वर्गीय संगीतज्ञ 2. हरिण, बारहसिंगा। सम० **राजः** कुबेर का विशेषण।

मयूखः [मा + ऊख मयादेशः] 1. प्रकाश की किरण, रश्मि, अंशु, कांति, दीप्ति—विमुञ्चति हिमगर्भरश्मिमिन्दुर्मयूखैः श० ३।२, रघु० २।४६, शि० ४।५६, कि० ५।५, ८ 2. सौन्दर्य 3. ज्वाला 4. धूपघड़ी की कील।

मयूरः [मी + ऊरन्] 1. मोर स्मरति गिरिमयूर एष देव्याः उत्तर० ३।२०, फणी मयूरस्य तले निषीदति —ऋतु० १।१३ 2. एक प्रकार का फूल 3. ('मयूर शतक' का प्रणेता) एक कवि यस्याश्चोरश्चिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूरः प्रसन्न० १।२२,—**रौ** पोरनी - सूक्ति वरं तत्कालोपनता तित्तिरी न पुनर्दिवसांतरिता मयूरी विद० १, या - वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः 'हाथ में आया एक पक्षी, झाड़ी में बैठे दो पक्षियों से अच्छा है' अर्थात् नौ नकद न तेरह उधार। सम० **अरिः** छिपकली,—**केतुः** कार्तिकेय का विशेषण, **पोवकम्** तूतिया, **चटकः** गृह कुक्कुट चूहा मोर की शिखा, **तुत्थम् तूतिया - पत्रिन्** (वि०) पंखयुक्त, मोर के पंखों से युक्त (बाण आदि) रघु० ३।५६, **रथः** कार्तिकेय का विशेषण,—**व्यंसकः** चालाक मोर, **शिखा** मोर की शिखा।

मयूरकः [मयूर + कन्] मोर, **-कम्**,-- **कम्** तूतिया, नीलाथोथा।

मरकः [मृ + वुन्] महामारी, पशुओं का एक संक्रामक रोग, प्लेग प्रभारक रोग, संक्रामक रोग।

मरकतम् मरकं तरत्यनेन—तृ + ड] पन्ना बाधी चामिन् मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा— मेघ० ७६, शि० ४।५६, ऋतु० ३।२१,(कभी-कभी 'मरकत' भी लिखा जाता है) 1. सम० **मणिः** (पुं०, स्त्री०) पन्ना, — **शिला** पन्ने की सिल्ली।

मरणम् [मृ + भावे ल्युट्] 1. मरना, मृत्यु-- मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम् रघु० ८।८७ या-संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते- -भग० २।३४ 2. एक प्रकार का विष। सम० **अंत, अंतक** (वि०) मृत्यु के साथ समाप्त होने वाला,—**अभिमुख**,- **उन्मुख** (वि०) मृत्यु के निकट, मरणासन्न, म्रियमाण,-- **धर्मन्**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(वि०) मर्त्य, मरणशील, -निश्चय (वि०) मरने के लिए दृढ़ निश्चय वाला पंच० १।

मरतः [मृ-अतच्] मृत्यु।

मरन्दः, दकः [मरणं याति खण्डयति - मर+दो+क, पृषो०, मरन्द+कन्] फूलों का रस -भामि० १।५, १०।१५, सम०—**ओकस्** (नपुं०) फूल।

मरारः [मरं मरणमलति निवारयति मर+अल्+अण् लस्य रत्वम्] खत्ती, धान्यागार, अनाज का भंडार।

मरालः (वि०) [मृ+आलच्] 1. मृदु, चिकना, स्निग्ध 2. सौम्य कोमल, लः (स्त्री०—ली) 1. हंस, बलाक, राजहंस—मरालकुलनायकः कथय रे कव वर्तताम्—भामि० १।३, विशेष हि मरालविकारम्—गीत० ११, नै० ६।७२ 2. एक प्रकार का जलचर पक्षी, कारण्डव 3. घोड़ा 4. बादल 5. अंजन 6. अनारों का बाग 7. बदमाश, ठग।

मरिः (री) चः [म्रियते नश्यति अनेनमादिकमनेन—मृ+इन्, इत्वञ्च] काली मिर्च की झाड़ी,—चम् काली मिर्च।

मरीचिः (पुं० स्त्री०) [मृ+इचि] 1. प्रकाश की किरण —न चन्द्रमरीचयः—विक्रम ३।१०, सवितुर्मरीचिभिः —ऋतु० १।१६, रघु० ९।१३, १३।४ 2. प्रकाश का कण 3. मृगतृष्णा,—चिः प्रजापति, प्रथम मनु से उत्पन्न दस मूल पुरुषों में से एक, या —ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में एक, यह कश्यप का पिता था 2. एक स्मृतिकार 3. कुष्ठ का नामान्तर 4. कंजूस। सम०—**तोयम्** मृगतृष्णा,—**मालिन्** किरणों से घिरी हुई, उज्ज्वल, चमकदार (पुं०) सूर्य।

मरीचिका [मरीचि+कन्+टाप्] मृगतृष्णा।

मरीचिन् (पुं०) [मरीचि+इनि] सूर्य।

मरीचिमत् (पुं०) [मरीचि+मतुप्] सूर्य।

मरीमृज (वि०) [मृज् (यङन्तत्वात् द्वित्वम्)+अच्] बार २ मलने वाला।

मरुः [म्रियतेऽस्मिन् -मृ+उ] 1. रेगिस्तान, रेतीली भूमि, वीराना, जल से हीन प्रदेश 2. पहाड़ या चट्टान (पुं०) ब० व०), एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। सम०—**उद्भवा** 1. कपास का पौधा 2. ककड़ी,—**कच्छः** एक जिले का नाम, **जः** एक प्रकार का गन्धद्रव्य, **देशः** 1. एक जिले का नाम 2. जलशून्य प्रदेश, **द्विपः**,—**प्रियः** ऊंट,—**धन्वन्**,—**धान्वन्** (पुं०) वीराना, उजाड़, —**पथः**, **पृष्ठम्** रेतीली मरुभूमि वीराना—रघु० ४।३१, —**भूः** (ब० व०) मारवाड़ देश,—**भूमिः** (स्त्री०) मरुस्थल, रेतीला मरुप्रदेश,—**संभवः** एक प्रकार की मूली,—**स्थलम्**, —**स्थली** वीराना, उजाड़, बंजर—तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम्—भर्तृ० २।४९।

मरुकः [मरु+कः] मोर।

मरुत् (पुं०) [मृ+उति] 1. हवा, वायु, पवन—दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः -रघु० ३।१४ 2. वायु का देवता—कि० २।२५ 3. देवता, देवी- वैमानिकानां महतामपश्यदाकृष्टलीलाञ्चर लोक पालान् रघु ६।१, १२।१०१ 4. एक प्रकार का पौधा, मरुवक (नपुं०) ग्रंथिपर्ण नाम का पौधा। सम० **आदोलः** (हरिण या भैंसे की खाल से बना) एक प्रकार का पंखा, **करः** एक प्रकार की मेंस, लोहिया, —**कर्मन्** (पुं०) -**क्रिया** उदर,—**वायु**, अफारा,— **कोणः** पश्चिमोत्तर दिशा, **गणः** देवसमूह,—**तनयः**,—**पुत्रः**—**सुतः**, -**सूनुः** 1. हनुमान के विशेषण 2. भीम के विशेषण, **ध्वजम्** हवा में लहराने वाला झण्डा (सूत का बना कपड़ा),—**पटः** बादबान,—**पतिः**,—**पालः** इन्द्र का विशेषण, **पथः** आकाश, अन्तरिक्ष,—**प्लवः** सिंह, —**फलम्** ओला, **बद्धः** 1. विष्णु का विशेषण 2. एक प्रकार का यज्ञ-पात्र,—**रथः** वह गाड़ी जिसमें देव प्रतिमाएँ रख कर इधर उधर ले जाई जाती हैं,—**लोकः** वह लोक जिसमें 'मरुत' देवता रहते हैं,—**वर्धन्** (नपुं०) आकाश, अन्तरिक्ष,—**वाहः** 1. धूआं 2. अग्नि, —**सखः** 1. अग्नि का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण।

मरुतः [मृ+उत] 1. वायु 2. देवता।

मरुतः [मरुत+तप्] सूर्यवंश का एक राजा, कहते हैं उसने एक यज्ञ किया जिसमें देवताओं ने प्रतीक्षक सेवक का कार्य किया तु० तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे, आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

मरुत्तकः [मरुदिव तकति हसति मरुत+तक्+अच्] मरुवक पौधा।

मरुत्वत् (पुं०) [मरुत्+मतुप्, मस्य वः] 1. बादल 2. इन्द्र का नामान्तर 3. हनुमान का नामान्तर।

मरुलः [मृ+उल] एक प्रकार की वनस्पति, कारंडव।

मरुवः [मरु+वा+क, नि० दीर्घः] 1. एक पौधे का नाम, मरुआ 2. राहु का विशेषण।

मरुवा (ब) कः [मरुव+कन्, द्वयोरभेदः] 1. एक प्रकार का पौधा, मरुआ 2. चूने का एक भेद 3. व्याघ्र 4. राहु 5. सारस।

मरूकः [मृ+ऊक] 1. मोर 2. बारहसिंगा हरिण।

मर्कटः [मर्क+अटन्] 1. लंगूर, बन्दर हारं वक्षसि केनापि दत्तमेतेन मर्कट., लेडि जिघ्रति सांप्रत्य करोत्युन्नतमासनम् - भामि० १।२९ 2. मकड़ी 3. एक प्रकार का सारस 4. एक प्रकार का रत्निचष, लभोग, मैथुन 5. एक प्रकार का विष। सम०—**आस्य** (वि०) बन्दर जैसे मुंह वाला (**स्यम्**) तांबा, -**इन्दुः** आबनूस,—**तिंदुकः** एक प्रकार का आबनूस, **पोतः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्दर का बच्चा, जालः मकड़ी का जाला, शीर्षम् सिंदूर।

मर्कटकः [मर्कट+कन्] 1. लगूर 2. मकड़ी 3. एक प्रकार की मछली 4. एक प्रकार का अनाज, धान्य विशेष।

मर्करा [मर्क्+अर+टाप्] 1 पात्र, बर्तन 2. अन्तःकक्षीय छिद्र, सुराख, बिवर, खोह, गुफा 3. बांझ स्त्री।

मर्च् (चुरा० उभ०—मर्चयति—ते) 1. लेना 2. साफ करना 3. शब्द करना।

मर्ज् [मृज्+ऊ] 1. धोबी 2. इल्लती, लोंदा, (स्त्री०) साफ करना, धोना, पवित्र करना।

मर्तः [मृ+तन्] 1. मनुष्य, मानव, मर्त्य 2. भूलोक, मर्त्यलोक।

मर्त्य (वि०) [मर्त+यत्] मरणशील, क्षयः 1. मरणधर्मा मानव, मनुष्य—मर्त्य० ५।९७ 2. मर्त्यलोक, भूलोक -त्यम् शरीर। सम०—धर्मः मरणशीलता,—धर्मन् (वि०) मरणशील आदमी,—निवासिन् (पु०) मनुष्य, मानव,—भावः मानव-स्वभाव,—भुवनम् मर्त्यलोक, भूलोक,—सहितः देवता, मुखः किन्नर, इसका मुख मनुष्य के मुख जैसा तथा और शेष शरीर जानवर के शरीर जैसा होता है, यह कुबेर का सेवक समझा जाता है),—लोकः मनुष्यलोक, भूलोक—क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति—भग० ९।२१।

मर्द (दि०) [मर्द्+क्विप्] कुचलने वाला, चूर चूर कर देने वाला, पीसने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयोग), दः 1. पीसना, चूरा करना 2. प्रबल प्रहार।

मर्दन (वि०) (स्त्री० नी) [मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला, पीसने वाला, नष्ट करने वाला, सताने वाला -नम् 1. कुचलना, पीसना 2. रगड़ना, मालिश करना 3. लेप करना (उबटन आदि से) 4. दबाना, माड़ना 5. पीड़ा देना, सताना, कष्ट देना 6. नष्ट करना, उजाड़ना।

मर्दलः [मर्द्+ला+क] एक प्रकार का ढोल-शि० ६।३१, ऋतु० २।१।

मर्ब् (स्वा० पर० मर्बति) जाना, हिलना-जुलना।

मर्मन् (नपुं०) [मृ+मनिन्] शरीर का सजीव प्राण-मूलक भाग, जीवावाश्रक तथैव तीव्रा हृदि शोक-शंकुमर्माणि कृन्तन्नपि किं न लोढः—उत्तर० २।२५, याज्ञ० १।१५३ भट्टि० १६।१५, स्वहृदयमर्माणि वर्म करोति गोत० ४ 2. कोई भी दुर्बल या आलोच्य बिन्दु, दोष, त्रुटि 3. अन्तस्तल, सजीव 4. (किसी भी अंग का) सन्धिस्थान 5. गूढार्थ, (किसी बात का) तत्त्व काव्यमर्म प्रकाशिका टीका; सत्वा गगाधरं मर्मप्रकाशं तनुते गुरुम्—नागेश० 6. रहस्य भेद। सम०—अतिग (वि०) मर्मवेधी—शि० २०। ७०—अन्वेषणम् 1. शलाकापरीक्षण करना 2. दुर्बल और आलोच्य बातों को जांच पड़ताल करना,—आवरणम् कवच, जिरहबख्तर,—आविध्, —उपघातिन् (वि०) (हृदय के) मर्म स्थलों को बेधने वाला महावी० ३।१०, कीलः पलि,—ग (वि०) मर्मभेदी, तीव्र, घोर,—ज्ञ (वि०) मूल पर आघात करने वाला, अत्यन्त पीड़ाकर,—तरम् हृदय,—छिद्, —भिद् (इसी प्रकार छेदिन्, भेदिन्) (वि०) मर्म-स्थानों का भेदने वाला, हृदय पर चोट करने वाला, अत्यन्त कष्टदायक —उत्तर० ३।३१ 2. प्राणघातक चोट करने वाला, प्राणहर,—ज्ञ (वि०),—विद् (वि०) 1. दूसरे के दोष या दुर्बलताओं को जानने वाला 2. किसी विषय की अत्यन्त गूढ़ बातों को समझने वाला 3. किसी विषय गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, अत्यन्त निपुण या चतुर, (—ज्ञः) कोई भी प्रकाण्ड विद्वान्,—त्रम् जिरहबख्तर,—पारग (वि०) गहन अन्तर्दृष्टि रखने वाला, पूरा जानकार, दूसरे के रहस्यों को जानने वाला,—भेदः 1. मर्मस्थानों को छेदना 2. दूसरों के रहस्य या दुर्बलताओं को प्रकट करना, -भेदनः,—भेदिन् (पुं०) बाण, तीर,—विद् दे० 'मर्मज्ञ', -स्थलम्, -स्थानम् 1. भावग्रवण या सजीव भाग 2. कमजोरियाँ, आलोच्य बातें, -स्पृश् 1. मर्मस्पर्शी, हृदयस्पर्शी 2. अतितीव्र, तीक्ष्ण, तेज या कटु (शब्द आदि)।

मर्मर (वि०) [मृ+अरन्, मुट् च] (पत्तों की) खड़-खड़ाहट, (वस्त्रों की) सरसराहट -तीरेषु तालीवन-मर्मरेषु—रघु० ६।५७, ४।७३, १९।४१, मदोद्धताः प्रत्यनिलं विचेरुर्वनस्थलीमर्मरपत्रमोक्षाः—कु० ३।३१, —रः 1. खरखराहट की ध्वनि 2. सरसराहट।

मर्मरी [मर्मर+ङीष्] 1. देवदारु का एक भेद 2. हल्दी।

मर्मरीकः [मृ+ईकन्, मुट्] 1. निर्धन पुरुष, गरीब 2. दुष्ट मनुष्य।

मर्या [मृ+यत्+टाप्] सीमा, हद।

मर्यादा [मर्याया सीमाया दीयते मर्या+दा+अङ+टाप्] 1. सीमा, हद (आल से भी) छोर, सीमान्त, सरहद, किनारा मर्यादाव्यतिक्रमः—पंच १ 2. अन्त, अवसान, अन्तिम मंजिल, उद्देश्य 3. तट, किनारा 4. चिह्न, सीमाचिह्न 5 नीति का बंधन, निश्चित प्रथा या व्यवस्थित नियम, नैतिक विधि 6. शिष्टाचार या औचित्य का नियम, औचित्य की सीमा, सदाचरण का औचित्य—आस्तामाप्तवादमिन्नमर्याद—उत्तर० ५, पंच० १।१४२ 7. संविदा, अनुबंध, करार। सम०—अचलः,—गिरिः, पर्वतः सरहद पर स्थित पहाड़, भेदकः सीमाचिह्नों को नष्ट करने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मर्यादिन् (पुं०) [मर्यादा+इनि] पड़ोसी, सीमान्त वासी ।

मर्ष् [भ्वा० पर० मर्षति] 1. जाना, हिलना-जुलना 2. भरना ।

मर्षः [मृष्+घञ्] 1. विचारणा 2. परामर्श, संमन्त्रणा 3. नस्य, छींकलाने वाला ।

मर्षणम् [मृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना 2. परीक्षण, पूछताछ 3. विचारणा, संमन्त्रणा 4. उपदेश देना, सलाह देना 5. मिटाना, मल देना ।

मर्षः, **मर्षणम्** [मृष्+घञ्, ल्युट् वा] सहनशीलता, सहिष्णुता, धैर्य ।

मर्षित (भू० क० कृ०) [मृष्+क्त] 1. सहन किया हुआ, सब्र के साथ सहा हुआ 2. क्षमा किया गया, माफ किया गया, -तम् सहनशीलता, धैर्य ।

मर्षिन् (वि०) [मृष्+णिनि] सहन करने वाला, धैर्यशील ।

मल् [भ्वा० आ०, चुरा० पर० मलते, मलयति] थामना, अधिकार में रखना ।

मलः,-लम् [मृज्यते शोध्यते मृज्+कल् डिलोपः,-तारा०] 1. मैल, गंदगी, अपवित्रता, धूल, अशुद्ध सामग्री मलदायकाः खलाः-का० २, छाया न मूर्छति मलीपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा-शि० ७।३२ 2. लछट, कूड़ाकरकट, गाद, पुरीष, गोबर 3. (धातुओं का मैल, जंग, खोट 4. दैनिक दोष या अपवित्रता, पाप 5. शरीर का कोई भी अपवित्र स्राव (मनु के अनुसार इस प्रकार के बारह स्राव हैं :वसा शुक्रमसृङ् मज्जा मूत्रविड् घ्राणकर्णविट्, श्लेष्माश्रुदूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः मनु० ५।१३५) 6. कपूर 7. 'मसीक्षेपों' जलचरविशेष का प्रमार्जन के काम आने वाला भीतरी कवच 8. कमाया हुआ चमड़ा, चमड़े का वस्त्र, -लम् एक प्रकार की खोटी धातु । सम० **अपकर्षणम्** 1. मैल दूर करना पवित्र करना 2. पाप दूर करना, **अरिः** एक प्रकार की सब्जी, —**अवरोधः** कोष्ठबद्धता, कब्ज **आक्षिन्** (पुं०) झाड़ देने वाला, भंगी,—**आवह** (वि०) 1. मैल पैदा करने वाला, मैला करने वाला, मलिन करने वाला 2. दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला, **आशयः** पेट,—**उत्सर्गः** टट्टी जाना, पेट से मल निकालना, **घ्न** (वि०) परिमार्जक, शोधक **जम्** पीप, मवाद,— **दूषित** (वि०) मैला, गंदा, मलिन,—**द्रवः** रेचन, अतिसार, **धात्री** दाई जो बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, **पृष्ठम्** किसी पुस्तक का पहला पृष्ठ, आवरणपृष्ठ (ब्राह्म पृष्ठ),- **भुज्** (पुं०) कीड़ा, —**मलकः** कौपीन, लंगोट,—**मासः** अंतरीय या लौंद का महीना ('मलमास' इसी लिए कहलाता है कि इस अधिक मास में कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं किया जाता है), **वाससः** (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, जो स्त्री कपड़ों से हो,- **विलगः**, **-विसर्जनम्**, **शुद्धिः** (स्त्री०) मलत्याग, कोष्ठशुद्धि,—**हारक** (वि०) मैल या पाप को दूर करने वाला ।

मलनम् [मल्+ल्युट्] कुचलना, पीसना, -नः तबू ।

मलयः [मलते गच्छति चन्दनादिकम् मल्+कयन्] 1. भारत के दक्षिण में एक पर्वत शृंखला जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं (कविसमुदाय प्रायः मलयपर्वत से चलने वाली पवन का उल्लेख किया करता है, यह पवन चन्दन तथा अन्य सुगंधित पौधों की सुगंध को इधर उधर फैलाने के साथ-साथ कामार्त व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित करती है) -स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ - रघु० ४।५१, ९।२५, १३।२ 2. मलयशृंखला के पूर्व में स्थित देश, मलाबार 3. उद्यान 4. इन्द्र का नन्दन-कानन । सम०-**अचलः**,-**अद्रिः**,-**गिरिः**,-**पर्वतः** मलय पहाड़,—**अनिलः**,- **वातः**,—**समीरः** मलयपहाड़ से चलने वाली पवन, दक्षिणीपवन -ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे गीत० १, तु० अपगतदाक्षिण्यदक्षिणानिलहृतक पूर्णास्ते मनोरथाः कृतं कर्तव्यं बहेदानीं यत्नेष्टम् -का०,- **उद्भवम्** चन्दन की लकड़ी, -जः चन्दन का वृक्ष अपि मलयजं महिमायं कस्य विराधमस्तु विषयस्ते -भामि० १।११, (जः-जम्) चन्दन की लकड़ी (—जम्) गुग्गुल का विशेषण, **°रजस्** (नपुं०) चन्दन का चूरा,—**द्रुमः** चन्दन का पेड़, **वासिनी** दुर्गा का विशेषण ।

मलाका [मलिन मनोमालिन्यमेनं अकति कुटिलं गच्छति-मल+अक्+अच्+टाप्] 1. शृंगारप्रिय या कामुक स्त्री 2. दूती, अन्तरंग सखी 3. हथिनी ।

मलिन (वि०) [मल्+इनन्] 1. मैला, गन्दा, घिनौना अपवित्र, अशुद्ध, भ्रष्ट, कलंकित, कलुषित (आलं० से भी) धन्यास्तदङ्गस्पर्शसुखस्य मलिनीभवन्ति श० ७।५७, किमिति मुधा मलिनं यशः, कुरुषे वेणी० ३।४ 2. काला, अंधकारमय मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति मा० १।२०, अतिमलिने कर्तव्ये भवति खलानामतीव निपुणा धीः-भामि०, शि० ५।१८ 3. पापी, दुष्ट, दुश्चरित्र मलिनाचरितं कर्म सुरभेरन्वेत्यप्रतम् काव्या० २।१७८ 4. नीच, दुष्ट, अधम लघवः प्रकटी भवन्ति मलिनाश्चयत्नतः शि० १।२३ 5. मेघाच्छन्न, तिरोहित, -नम् 1. पाप, दोष, अपराध 2. मट्ठा, 3. सोहागा,—नः,—नी रजस्वला स्त्री । सम०—**अंबु** (नपुं०) 'काला पानी' मसी, स्याही,—**आस्य** (वि०) 1. काले या मैले मुंह वाला 2. नीच, गंवार 3. बदशी, क्रूर—**प्रभ** (वि०) तिरोहित, दूषित, मेघाच्छन्न,—**मुख** (वि०) मलिनास्य, दे०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ख:) 1. अग्नि 2. भूत, प्रेत 3. एक प्रकार का बंदर, गोलांगूल ।

मलिनयति (ना० धा० पर०) 1. मैला करना, मलिन करना, कलंकित करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, बिगाड़ना—यदा मेधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १, 'बदनामी कमाता है या कलंकित होता है' 2. भ्रष्ट करना, बदचलन करना ।

मलिनिमन् (पु०) [मलिन+इमनिच्] 1. मैलापन, गंदगी अपवित्रता 2 कालिमा, कालापन—मलिनिमालिनि माधवयोषितां—शि० ६।४ 3. नैतिक अपवित्रता, पाप ।

मलिम्लुचः [मलौ मलं म्लोचति—मलिम्लुच्+क] 1. लुटेरा, चोर—शि० १६।५३ 2. राक्षस 3. डांस, मिम्मू, मच्छर 4. लौंद का महीना 5. वायु, हवा 6. अग्नि 7. वह ब्राह्मण जो दैनिक पंच महायज्ञों को नहीं करता है ।

मलीमस (वि०) [मल+ईमसच्] 1. मैला, गन्दा, अपवित्र, अस्वच्छ, कलंकित, मलिन—मा ते मलीमसविकारदर्शना मतिर्भूत्—मा० १।३२, रघु० २।५३ 2. कृष्ण, काला, कलि रंग का—पणिता न जनारविन्दैर्यदि कुञ्जन्तमलि मलीमसम्—नै० २।९८, विशशिताम्रजिह्वं कौकिला-वलीमलीमिसा अलिदृमदावृतोजयः—शि० १७।५७, १५।८ 3. दुष्ट, पापपूर्ण, सदोष, वर्तमान—मलीमसां मादृदते न पद्धतिम् रघु० ३।४६,—सः 1. लोहा 2. हरा कमीस ।

मल्ल् (भ्वा० आ० मल्लते) थामना, अधिकार में करना ।

मल्ल (वि०) [मल्ल+अच्] 1. हृष्टपुष्ट, व्यायामशील, बलिष्ठ कि० १८।८ 2. अच्छा, उत्तम—ल्लः 1. बलवान् पुरुष 2. कसरती, मुक्केबाज, पहलवान—प्रभुर्मल्लो मल्लाय—भट्टा० 3. पान पात्र, प्याला 4. हत्थेदार 5. गाल, कपोल, गण्डस्थल । सम० अरिः 1. कृष्ण का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—क्रीडा मुक्केबाजी या मल्लयुद्ध,—जम् काली मिर्च,—तूर्यम् एक प्रकार का ढोल,—भूः,—भूमिः (स्त्री०) 1. अखाड़ा, मल्लयुद्ध का मैदान 2. एक देश का नाम,—युद्धम् कुश्ती करना या मुक्केबाजी, मुष्टियुद्धीय भिड़न्त या मुठभेड़, —विद्या मल्लयुद्ध की कला,—शाला व्यायामशाला, अखाड़ा ।

मल्लकः [मल्ल+कन्, मल्ल्+ण्वुल् वा] 1. दीवेट 2. दीवा, तैलपात्र 3. दीपक 4. नारियल का बना हुआ प्याला 5. दांत 6. एक प्रकार की चमेली ।

मल्लिः,—ल्ली (स्त्री०) [मल्ल्—इन्, मल्लि—ङीष्] एक प्रकार की चमेली । सम०—गंधि (नपु०) अगर, —नाथः एक प्रसिद्ध भाष्यकार जो चौदहवीं या पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ (उसने 'रघुवंश' 'कुमार-संभव', 'मेघदूत' 'किरातार्जुनीय', 'नैषधचरित' और शिशुपालवध पर टीकाएँ लिखी), पत्रम् छत्राक, सर्प की छतरी ।

मल्लिकः [मल्लि+कन्] 1. एक प्रकार का हंस जिसकी टांगें और चोंच भूरे रंग की होती हैं 2. माघ का महीना 3. जुलाहे की डरकी, फिरकी । सम०—अक्षः, —आख्यः एक प्रकार का हंस जिसकी टांगें और चोंच भूरे रंग की होती हैं—एतस्मिन्मदकलमल्लिकाक्षपर-रुध्याघूतस्फुरदुरुदण्डपुण्डरीकाः (भुवो बिभागाः) —उत्तर० १।३१, मा० २।१४,—अर्जुनः श्रीशैल नामक पर्वत पर विराजमान शिव का एक लिंग, —आख्य एक प्रकार की चमेली ।

मल्लिका [मल्लिक+टाप्] 1. एक प्रकार की चमेली वनेषु सायंतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु —रघु० १६।४७ 2. इस चमेली का फूल—विन्यस्त सायंतनमल्लिकेषु (केशेषु)—रघु० १६।५० —काव्या० २।२१५ 3. दीवट 4. किसी विशेष आकृति का मिट्टी का बर्तन । सम०—गंधं एक प्रकार की अगर ।

मल्लीकरः [अमल्लमपि आत्मानं मल्लमिव करोति मल्ल +च्वि, ईत्वम्, कृ+अच्] कोरा ।

मल्लूः [मल्ल+ऊ] रीछ, भालू ।

मव् (स्वा० पर० मवति) कसना, बांधना ।

मव्य (भ्वा० पर० मव्यति) बांधना ।

मश् (स्वा० पर० मशति) 1. भिनभिनाना, गुंजन करना ऊं ऊं करना 2. क्रोध करना ।

मशः [मश्+अच्] 1. मच्छर 2. भूजना, गुनगुनाना 3. क्रोध, सम०—हरी मच्छरदानी, मसहरी ।

मशकः [मश्+वुन्] 1. मच्छर, पिस्सू, डांस -सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति—हि० १।७८, मनु० १।४५ 2. चमड़ी का एक विशेष रंग 3. मशक, चमड़े का बना पानी भरने का थैला । सम० कुटिः, टी (स्त्री०), वरणम् मच्छर उड़ाने का चंवर (—हरी मसहरी, मच्छरदानी ।

मशकिन् (पु०) [मशक—इनि] गूलर का पेड़ ।

मशुनः (पु०) कुत्ता ।

मष् (भ्वा० पर० मषति) चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना, नष्ट करना ।

मषिः—षी (स्त्री०) [मष्+इन्, ङीष्]—मसी दे० ।

मस् (दिवा० पर० मस्यति) 1. तोलना, मापना, पैमाइश करना 2. रूप बदलना ।

मसः [मस्+अच्] माप, तोल ।

मसनम् [मस्+ल्युट्] 1. मापना, तोलना 2. एक प्रकार की बूटी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मसरा [मस्+अरच्+टाप्] एक प्रकार की दाल, मसूर ।

मसारः, मसारकः [मस्+घिवप्, मसं परिमाणम् क्षुच्छति मस्+क्षु+अण्, मसार+कन्] पन्ना ।

मसिः (पुं० स्त्री०) [मस्+इन्] 1. स्याही 2. दीवे की स्याही, काजल 3. आंखों में लगाने की काली काजल । सम० **आधारः**, **कूपी, धानम्**, **—धानी, भाण्डः** स्याही रखने की बोतल, दवात, **—जलम्** रोशनाई, **—पत्त्रम्** लेखक, लिपिकार, **—पत्रः** कलम, लेखनी, **प्रसूः** (स्त्री०) 1. लेखनी 2. स्याही की बोतल, **—वर्धनम्** लोबान ।

मसिकः [मसि+कन्] शरीर का तिल ।

मसी [मसि+ङीष्] दे० ऊपर 'मसि' । सम०—**जलम्** स्याही, **—धानी** दवात, **—पटलम्** काजल लगाना **—शिरसि मसीपटलम्** दर्शाति दीपः भामि० १।७४ ।

मसृ (सृ) रः [मस्+उरन्, ऊरन् वा] 1. एक प्रकार की दाल, मसूर 2. टिकिया, **—रा** 1. मसूर की दाल 2. वेश्या, रंडी ।

मसूरिका [मसूर+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का शीतला रोग, खसरा 2. मसहरी 3. कुट्टिनी, दूती ।

मसूरी [मसूर+ङीष्] छोटी चेचक ।

मसृण (वि०) [मृज् (दीप्ति)+क, पृषो० साधुः] 1. स्निग्ध, चिकना—**मसृणचंदनचर्चितगौरी** चौर० ७, या, रासे मसृणमणि मलयजपंकम् गीत० ४ 2. मृदु, कोमल, सरल—उत्तर० १।३८ 3. सौम्य, मृदु, मधुरमसृणवाणि गीत० १० 4. प्रिय, मनोहर विनयमसृणे वाचि नियमः उत्तर० २।५, ४।२१ 5. चमकीला, उज्ज्वल—मा० १।२९, ४।२, **णा** अलसी ।

मस्क् (म्वा० पर० मस्कति) जाना, हिलना-डुलना ।

मस्करः [मस्क+अरच्] 1. बांस 2. खोखला बांस 3. गति, चाल 4. ज्ञान ।

मस्करिन् (पुं०) [मस्कर+इनि] 1. संन्यासी या साधु, संन्यास आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण · धारयन् मस्करिनम् भट्ट० ५।६२ 2. चन्द्रमा ।

मस्ज् (तुदा० पर० मज्जति, मग्न—प्रेर० मज्जयति—इच्छा० मिमज्जिषति) 1. स्नान करना, डुबकी लगाना, पानी में गोता लगाना रघु० १५।१०१, भामि० २।९५ 2. डूबना, ढलना, डूबजाना, नीचे बैठना, गोता लगाना (अधि० या कर्म० के साथ) सीदत्रधे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा—उत्तर० ३।३८, मा० ९।३० —सोऽप्तवृत तामं तम. सह तेनैव मज्जति—मनु० ४।८१, रघु० १६।५२ 3. डूबना, पानी में नष्ट होना 4. दुर्भाग्यग्रस्त होना 5. हतोत्साह होना, निराश या उत्साहहीन होना, उद्· पानी से बाहर आना, दृष्टिगोचर होना, उठना—**उन्मज्ज सरितो गज उन्मज्जन्ति**—रघु० ५।४३, १६।७९, कि० ९।२३, भामि० ९।३०, **नि** डूबना, नीचे बैठना, ढल जाना (आकाश में भी) यथा प्लवेनौपलेन निमज्जन्त्युदके तरन्, तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञौ यात् प्रतीच्छकौ—मनु० ४।१९४, ५।७२, शोके मुहूर्तमायस्तं न्यमीलीत् भट्ट० ३।३०, १५।३१, शि० ९।७४ गीत० १ 2. घुल जाना, डूब जाना. ओझल होना, नजर से बच निकलना,· एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः—कु० १।३ ।

मस्तम् [मस्+क्त] सिर माथा । सम०· **दारु** (नपुं०) देवदारु का पेड़, **—मूलकम्** गर्दन ।

मस्तकः, कम् [मस्यति परिमाणयतेन मस् करणेऽर्थे स्वार्थे क तारा०] 1. सिर, माथा, खोपड़ी अतिलोभा (पाठा० तृष्णा) भिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके पंच० ५।२२ 2. किसी चीज की चोटी या सिर न च पर्वतमस्तके —मनु० ४।४७, वृक्ष की चोटी, **ज्वरः**, **शूलम्** तीव्र शिरदर्द, **पिंडकः**, **कम्** मदोन्मत्त हाथी के गडस्थल पर का गोल उभार, **मूलकम्** गर्दन, **स्नेहः** मस्तिष्क ।

मस्तिकम् [मस्तकम्, पृषो० इत्वम्] सिर ।

मस्तिष्कम् [मस्तं मस्तकम् ध्यति स्वाधारत्वेन प्राप्नोति मस्त+इष्+क, पृषो०] दिमाग । सम० **ज्वर** (स्त्री०) मस्तिष्क पर चारों ओर लिपटी हुई झिल्ली ।

मस्तु (नपुं०) [मस्+तुन्] 1. खट्टी मलाई 2. छाछ । सम०— **स्नेहः**, **रसः**, **लुंगकः**, **कम्** मस्तिष्क, दिमाग ।

महँ i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—महति, महयति—ते, महित) सम्मान करना, आदर करना, बड़ा मानना, पूजा करना, श्रद्धा रखना, महत्त्वपूर्ण समझना गोत्तारं न नियोगिनां महयति महेश्वरम् विदुधाः सुभा०, जयश्री विश्वस्तैर्महित इव मेदाकुसुमैः—गीत० ११, कु० ५।२५, ५।१२, कि० ५।७, २४, भट्टि० १०।२, रघु० ११।४९ ।

ii (भ्वा० आ० महते) विकसित होना, बढ़ना ।

महः [मह् घञर्थे क] 1. उत्सव, त्योहार बंधुताहृदयकौमुदीमहः मा० ९।२१, स खलु दूरमतोप्यतिवर्तते महमसाविति बंधुतयोदितैः शि० ६।१९, मदनमहम्, रत्न० १ 2. उपहार, यज्ञ 3. भैंसा 4. प्रकाश, कांति तु 'महस्' से भी ।

महकः [मह+कन्] 1. प्रमुख पुरुष 2. कछुवा 3. विष्णु का नामान्तर ।

महत् (वि०) [प० अ० महीयस्, उ० अ० महिष्ठ, कर्तृ० (पुं०) महान् महान्तौ महांतः, कर्म० (ब० व०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महतः [मह्+अति] 1. बड़ा, वृहद्, विस्तृत, विशाल, विस्तीर्ण -महान् सिंहः व्याघ्रः आदि 2. पुष्कल, यथेष्ट, विपुल, बहुत से,असंख्य—महाजनः, महान्, द्रव्यराशिः, 3. लम्बा, विस्तारित, व्यापक, महान्तौ बाहू यस्य स महाबाहुः इसी प्रकार महती कथा, महान्तश्च 4. हृष्टपुष्ट, बलवान्, ताकतवर जैसे महान् वीरः 5. प्रचंड, गहन, अत्यधिक महती शिरोवेदना, महती पिपासा 6. स्थूल, निविड़, सघन —महानंधकारः 7. महत्त्वपूर्ण, गुरुतर, भारी महत्कार्यमुपस्थितम्, महती वार्ता 8. ऊँचा, उन्नत, प्रभुत,पूज्य, उदात्त महत्कुलम्, महान् जनः 9. उत्साल—महान् घोषः, ध्वनिः 10. सवेरे या देर से महति प्रत्यूषे, 'प्रातःकाल सवेरे' महत्यपराह्णे 'दोपहर बाद देर में' 11. ऊँचा-महार्घ (पुं०) 1. ऊंट 2. शिव का विशेषण 3. (सांख्य में) महत्तत्त्व, बुद्धि तत्त्व (मन से भिन्न) सांख्य० द्वारा माने गये पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा मनु० १२।१४, सां० ३।८।२२ आदि नपुं० 1. वड़प्पन, अनन्तता, असंख्यता 2. राज्य, उपनिवेश 3. गणितज्ञान (अव्य०) बहुत अधिक, अत्यधिक, बहुतज्यादा, अत्यन्त (विशे० 'महत्' शब्द तत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य स्थानों पर अपरिवर्तित ही रहता है, परन्तु कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में बदल कर 'महा' बन जाता है) । सम० **आवासः** विशालभवन, **आशा** ऊँची आशा, **आश्चर्य** (वि०) अत्यंत आश्चर्यजनक,—**आश्रयः** बड़ों का सहारा, बड़ों की शरण,—**कक्ष** (वि०) बड़ों द्वारा कथित या उल्लिखित, बड़े लोगों के मुंह में,—**क्षेत्र** (वि०) विस्तृत प्रदेश पर अधिकार करने वाला,—**तात्त्विम्** सांख्यों के पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा,—**बिलम्** अन्तरिक्ष,—**सेवा** बड़ों की सेवा.—**स्थानम्** ऊँचा स्थान, उन्नत स्थान ।

महती [महत्+ङीप्] 1. एक प्रकार की वीणा 2. नारद की वीणा अवेक्षमाणं महती मुहंमुहुः-शिशु० १।१० 3. सफेद बैंगन का पौधा 4. बड़प्पन, महत्त्व ।

महत्तर (वि०) [महत्+तरप्] अपेक्षाकृत बड़ा, विशाल —रः 1. प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्माननीय पुरुष—उत्तर० ४ 2. कंचुकी या राज भवन का महाप्रतिहार 3. दरबारी 4. गांव का मुखिया या सबसे बड़ा आदमी ।

महत्तरकः [महत्तर+कन्] दरबारी आदमी, किसी राजभवन का महा प्रतिहार ।

महत्त्वम् [महत्+त्व] 1. बड़ापन, विशालता, विस्तृति, महाविस्तार 2. शक्तिमत्ता, विभूति, ऐश्वर्य 3. आवश्यकता 4. उन्नत अवस्था, ऊँचाई, उन्नयन 5. गहनता, प्रचण्डता, ऊँचा परिमाण ।

महनीय (वि०) [मह्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित, श्रीमान्, यशस्वी, उदात्त, श्रेष्ठ;—महनीयशासनः -रघु० ३।६९, महनीयकीर्तिः -२।२५ ।

महंतः [मह्+झच्] किसी पद का मुख्याधिष्ठाता ।

महद् (महस्) (अव्य०) [मह् + असुन्] भूलोक से ऊपर के लोकों में से चौथा लोक (स्वर् और जनस् के बीच का लोक) (इसी अर्थ में 'महर्लोक' शब्द भी) ।

महल्लः, महल्लिकः [अरबी भाषा से व्युत्पन्न शब्द महत्+ला+क] राजा के अन्तःपुर में रहने वाला खोजा या हिजड़ा ।

महल्लकः [महल्ल+कन्] निर्बल, कमजोर, पुराना, —कः 1. राजा के अन्तःपुर का खोजा या हिजड़ा 2. विशाल भवन, महल ।

महस् (नपुं०) [मह्+असुन्] 1. उत्सव, त्योहार का अवसर 2. उपहार, आहुति, यज्ञ 3. प्रकाश, आभा -कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते—मा० १।३, उत्तर० ४।१० 4. सात लोकों में से चौथा दे० 'महर्' ।

महस्वत्, महस्विन् (वि०) [महस्+मतुप्, विनि वा] भव्य, उज्ज्वल, चमकीला, प्रकाशयुक्त, आभामय ।

महा [मह्+घ+टाप्] गाय ।

महा [कर्म० स० और ब० स० में प्रथम पद के रूप में, तथा कुछ अन्य अनियमित शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त 'महत्' का स्थानापन्न रूप] (विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद 'महा' है, बहुत अधिक है; तथा और अनेक शब्द बन सकते हैं, उनमें से अपेक्षाकृत आवश्यक या जो कोई विशिष्ट अर्थ रखते हैं नीचे दिए गए हैं । सम० —**अक्षः** शिव का विशेषण,—**अंग** (वि०) स्थूल, महाकाय (गः) 1. ऊँट 2. एक प्रकार का चूहा, घूस 3. शिव का नामान्तर,—**अंजनः** एक पहाड़ का नाम, -**अत्ययः** संकट का भारी खतरा, **अध्वनिक** (वि०) 'दूर तक गया हुआ' महाप्रयाण, मृत,—**अध्वरः** बड़ा यज्ञ, **अनसम्** भारी गाड़ी (-सः, -सम्) रसोई, **अनुभाव** (वि०) महाप्रतापी, ओजस्वी, उदात्त, यशस्वी, महाशय, उदार, श्रीमान्-शि० शि० १।१७, श० ३ 2. गुणवान् ईमानदार, धर्मात्मा, (वः) प्रतिष्ठित या आदरणीय व्यक्ति,—**अंतकः** 1. मृत्यु 2. शिव का विशेषण,—**अंधकारः** 1. घोर अन्धेरा 2. आध्यात्मिक अज्ञान,—**अंध्राः** (ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम,— **अन्वय**,— **अभिजन** (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, सत्कुलोद्भव (वः,—नः) उत्तम जन्म, ऊँचा कुल, **अभिषवः** सोम का अत्यन्त खींचा हुआ रस,—**अमात्यः** (राजा का) मुख्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या प्रधानमन्त्री, -अंडकः शिव का विशेषण, अंडजम् दय खरब, अम्ल (वि०) बहुत खट्टा (- म्लम्) इमली का फल, अरण्यम् सुनसान जंगल, विशाल जंगल, अर्घ (वि०) अतिमूल्यवान्, ऊँची कीमत वाला (-र्घः) एक प्रकार की घंटेर, -अर्घ्य (वि०) मूल्यवान्, कीमती, --अर्चिस् (वि०) ऊँची ज्वालाओं वाला, अर्णव: 1. महासागर 2. शिव का नामान्तर, --अर्थ्यम् एक अरब अर्ह (वि०) 1. अतिमूल्यवान्, बहुत कीमती कु० ५।१२ 2. अनमोल, अनन्तमेय उत्तर० ६।११, (र्हम्) सफेद चन्दन की लकड़ी,--अवरोहः वटवृक्ष, अशनिध्वजः वज्र के रूप में एक बड़ा झंडा -रघु० ३।५६,-अशन (वि०) पेटू, भोजनभट्ट, अश्मन् (पुं०) मूल्यवान् पत्थर, लाल, अष्टमी आश्विन शुक्ला अष्टमी, दुर्गाष्टमी, —असिः बड़ी तलवार,- असुरी दुर्गा का नामान्तर, अह्नः दोपहर बाद का समय,--आकार (वि०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा,—आचार्यः 1. प्रधान अध्यापक शिव का विशेषण,—आढ्य (वि०) धनवान्, अमीर (-द्रुः) कदम्ब का वृक्ष, आत्मन् (वि०) 1. महाशय, महामनस्क, उदारचेता, महोदय, अय दुरात्मा अथवा महात्मा कौटिल्यः—मुद्रा० ७, द्विर्लिते मन्दाश्चरिते महात्मनां -कु० ५।७५, उत्तर० १।४१ 2. श्रीमान्, पूज्य, श्रेष्ठ, प्रमुख (पुं०) परमात्मा मनु० १।५४ (महात्मवत् का भी वही अर्थ है जो 'महात्मन्' शब्द का), --आनकः एक प्रकार का बड़ा ढोल,- आनंदः, नन्दः 1. बड़ा हर्ष या उल्लास 2. विशेष कर मोक्ष का आनंद, आपगा बड़ा दरिया,— आयुधः शिव का विशेषण,—आरम्भ (वि०) बड़े-बड़े कार्यों में हाथ में लेने वाला, साहसिक (-भः) कोई बड़ा साहसिक कार्य,— आलयः 1. देवालय 2. पवित्र स्थान, आश्रम 3. बड़ा आवासस्थान 4. तीर्थस्थान 5. ब्रह्मलोक 6. परमात्मा (-श्रा) एक विशेष देवता का नाम, - आशय (वि०) महात्मा, महामनस्क, उदारचेता, उदात्तचरित्र देo महात्मन् (-यः) 1. उदारमना या उदारचेता व्यक्ति --महाशयचक्रवर्ती--भामि० १।७० 2. समुद्र,—आस्पद (वि०) 1. उत्तम पद पर अधिकार करने वाला 2. ताकतवर, बलवान्, —आह्वः बड़ा या महानामक, --इच्छ (वि०) 1. उदारचेता, उदारमना महामना, उदात्तचरित्र --रघु० १८।३३ 2. महान् उद्देश्य और आशाएँ रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, इन्द्रः 1. महेन्द्र अर्थात् महान् इन्द्र कु० ५।५३, रघु० १३।२०, मनु० ७।७ 2. मूलिया या मेता 3. एक पर्वत श्रृङ्खला, 'चापः इन्द्रधनुष, 'नगरी इन्द्र की राजधानी अमरावती, 'मन्त्रिन् (पुं०) बृहस्पति का विशेषण, —इष्वासः बड़ा धनुर्धर, बड़ा भारी योद्धा भग० १।४, ईशः,—ईशानः शिव का नाम, ईशानी पार्वती का नाम, -ईश्वरः 1. महाप्रभु, स्वामी 2. शिव का नामान्तर 3. विष्णु का नाम, (-री) दुर्गा का नाम, उक्षः 'उक्षन्' के स्थान पर) महाकाय बैल, हृष्टपुष्ट बैल -महाक्षतो वर्षसतः स्पृशन्निव- रघु० ३।३२, ४।२२, ६।७२, शि० ५।६३, --उत्पलम् एक बड़ा नील कमल, - उत्साह (वि०) ऊर्जस्वी, ओजस्वी, धैर्यशाली (-हः) धैर्य, - उदधिः 1. महासागर रघु० ३।१७ 2. इन्द्र का विशेषण ँजः शंख, सीपी,—उद्यम (वि०) बड़ा समृद्धिशाली या भाग्यवान्, बड़ा यशस्वी या भव्य, अतिसमृद्ध (-मः) 1. प्रारंभ, उपक्रम, बड़प्पन, समृद्धि रघु० ८।१८ 2. मोक्ष 3. प्रभु, स्वामी 4. कान्यकुब्ज या कन्नौज नामक जिला 5. कन्नौज की राजधानी का नाम 6. मधुपर्क, उदर (वि०) बड़े पेट वाला, मोटा (-रम्) 1. बड़ा पेट 2. जलोदर,—उदार (वि०) अतिदानशील या उदारचेता, वदान्य,-उद्यम (वि०) =महोत्साह देo,—उद्योग (वि०) अतिपरिश्रमी, मेहनती, परिश्रमशील,--उन्नत (वि०) अत्यंत ऊँचा (-तः) पंक्तिया खजूर का वृक्ष,- उन्नतिः (स्त्री०) प्रकर्ष, उच्चपद (आल० भी) उत्कृष्ट पद, --उपकारः बड़ा आभार,—उपाध्यायः मुख्य गुरु, विद्वान् अध्यापक, -उरसः बड़ा भाग रघु० १२।९८, उरस्क (वि०) विशाल वक्षस्थल वाला (-स्कः) शिव का विशेषण, उल्का 1. एक बड़ा टूटा तारा 2. बड़ी जलती हुई लकड़ी, ऋद्धिः (स्त्री०) बड़ी समृद्धि या सम्पन्नता, ऋषभः साँड, ऋषिः 1. बड़ा ऋषि या सन्त (मनु० १।३४ में यह शब्द मानवजाति के मूलपुरुष या दस प्रजापतियों के लिए प्रयुक्त हुआ है, परन्तु यह 'बड़ा ऋषि' के सामान्य अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 2. शिव का नाम, - ओष्ठ (वि०) बड़े होठों वाला (-ष्ठः) शिव का विशेषण,—ओजस् बहुत ताकतवर, अतिबलशाली, प्रतापी, यशस्वी, महौजसो मानवना धनाजिताः कि० १।१९, (पुं०) बड़ा शरवीर या योद्धा, मल्ल, -ओजसम् विष्णु का चक्र, ओषधिः (स्त्री०) 1. अमोघ औषधि का पौधा, अचूक दवा 2. दूर्वा घास, औषधम् सर्वोपरि उपचार, रामबाण, सब रोगों की अचूक दवा 3. अदरक 4. लहसुन 5. एक प्रकार का विष, वत्सनाभ, - कच्छः 1. समुद्र 2. बरगद का नाम 3. पहाड़ का नाम, कंदः लहसुन, —कपर्दः एक प्रकार की सीपी, कौड़ी, कपित्थः 1. बेल का पेड़ 2. लाल लहसुन, - कंबु (वि०) बिल्कुल नंगा (कुः) शिव का विशेषण, - कर (वि०) 1. लंबे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाथों वाला 2. जिससे बहुत राजस्व मिलता हो—कर्णः शिव का विशेषण, -कर्मन् (वि०) बड़े-बड़े काम करने वाला (पुं०) शिव का विशेषण,—काला शुक्ल पक्ष की द्वितीया की रात, कविः 1. कविशिरोमणि कालिदास भवभूति, बाण और भारवि आदि महाकवि 2. शुक्राचार्य का विशेषण-कान्तः शिव का विशेषण (—ता) पृथ्वी,—काय (वि०) स्थूलकाय, बड़ा महाकाय, अंतिकाय (··यः) 1. हाथी 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण 4. शिव का एक अनुचर, नंदी बैल,··कार्तिकी कार्तिक मास की पूर्णिमा,

काल: प्रलयकर्ता के रूप में शिव का एक रूप 2. एक प्रसिद्ध मन्दिर या शिव (महाकाल) का मन्दिर, ('महाकाल' का यह मन्दिर उज्जैन में विद्यमान है, कालिदास ने अपने मेघदूत की रचना द्वारा इसे अमर कर दिया है, वहाँ (महाकाल=शिव) देवता, उसका मन्दिर, पूजा आदि के साथ-साथ नगरी का सचित्र वर्णन मिलता है तु० मेघ० ३०-३८, रघु० ६।३४ 3. विष्णु का विशेषण 4. एक प्रकार की लौकी या कद्दू, °पुरम् उज्जयिनी की नगरी, काली दुर्गा देवी का उराधना रूप,—काव्यम् लौकिक काव्य, महाकाव्य (इसके विषय में पूरा विवरण जो साहित्य शास्त्रियों ने किया है सा० द० ५५९ में दे०) (महाकाव्य गिनती में पाँच हैं रघुवंश, कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, और नैषधचरित। यदि खंडकाव्य—मेघदूत भी सूचीमें सम्मिलित किया जाय तो छः महाकाव्य हो जाते हैं परन्तु यह गणना केवल परम्परा-प्राप्त, क्योंकि भट्टिकाव्य, विक्रमांकदेवचरित और हरविजय आदि का भी महाकाव्य की दृष्टि से विचार किया जाने का समान अधिकार है), —कुमारः राजा का सबसे बड़ा पुत्र, युवराज,-कुल (वि०) सत्कुलोत्पन्न, उच्चकुलोद्भव, ऊँचे कुल में उत्पन्न (लम्) उच्चकुल में जन्म, ऊँचा कुल, कृष्णम् घोर साधना, भारी तपस्या, · कोशः शिव का विशेषण, ··क्षयः महायज्ञ, उदा० अश्वमेध—रघु० ३।४६, —क्षः विष्णु का विशेषण, क्रोधः शिव का विशेषण,—क्षत्रियः महाराज्यपाल, उपशासक,—खीरः गन्ना, ईख,—खर्वः,···र्वम् (बड़ी संख्या सौ खरब की संख्या) —गजः बड़ा हाथी दे० दिक्करिन्, गजपतिः गणेश देवता का एक रूप, गंधः एक प्रकार की बेत (धम्) एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, · गवः सुराग्राय, गुप्त (वि०) अमोघ, अचूक (औषधि आदि), · गृष्टिः विशाल डील की गाय, ग्रहः राहु का विशेषण, ग्रीवः 1. ऊँट 2. शिव का विशेषण,—ग्रीविन् (पुं०) ऊँट घूर्णा खींची हुई शराब,—घोषम् मंडी, मेला (—घः) ऊँचा शोर, कोलाहल, घुलघपाढा, —चक्रवर्तिन् (पुं०) सार्वभौम नरेश,—चमूः (स्त्री०) विशाल सेना,—छायः वटवृक्ष,—जटः शिव का विशेषण, जत्रु (वि०) जिसकी हंसली को हड्डी बहुत बड़ी हो (-त्रु) शिव का विशेषण, जनः 1. लोगों का समूह, बहुत से प्राणी, साधारण जनता—महाजनो येन गतः स पन्थाः—महा० 2. जनसंख्या, भीड़-भाड़ —महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति कु० ५।७० 3. बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित पुरुष, प्रमुख व्यक्ति—महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नति कारकः, पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ता फलश्रियम् —सुभा० 4. किसी व्यवसाय का मुखिया 5. सौदागर, व्यापारी···जातीय (वि०) 1. दान-शील 2. उत्तम जाति का, -·ज्योतिस् (पुं०) शिव का विशेषण,—तपस् (पुं०) 1. कठोर तप करने वाला 2. विष्णु का विशेषण,—तलम् नीचे के सात लोकों में से एक, दे० पाताल, -·तिक्तः निंबवृक्ष, तीव्र (वि०) अत्यंत तेज या तीव्र (व्रा) भिलावाँ,—तेजस् (वि०) 1. बड़ी भारी कांति या दीप्ति से युक्त 2. तेजस्वी, शक्तिशाली, शौर्ययुक्त (पुं०) 1. शूरवीर, योद्धा 2. अग्नि 3. कार्तिकेय का विशेषण (न०) पारा,—दण्डः—दंतः 1. बड़े दाँतों वाला हाथी 2. शिव का विशेषण 1. लंबी भुजा 2. भारी दंड वृक्षा (मनुष्य के भाग्य पर) प्रबल ग्रह का प्रभाव, —दारु (न पुं०) देवदारु वृक्ष,—देवः शिव का नामांतर (—वी) पार्वती का नामांतर, द्रुमः पीपल का वृक्ष,—धन (वि०) 1. धनाढ्य 2. कीमती, मूल्यवान् (—नम्) 1. सोना, 2. गंध, धूप 3. मूल्यवान् वेशभूषा,—धनुस् (पुं०) शिव का विशेषण,—धातुः 1. सोना 2. शिव का विशेषण 3. मेरु का विशेषण,—नदः शिव का विशेषण —नदः बड़ा दरिया,—नदी 1. गंगा, कृष्णा जैसी बड़ी नदी ··संभूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगा यथा—शि० २।१०० 2. बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी,—नंदः 1. खींची हुई शराब 2. एक नदी का नाम,—नरकः इकतीस नरकों में से एक,—नलः एक प्रकार का नरकुल, नेड़ा,— नवमीकाष्ठिम क्षुद्रा नौमी, दुर्गानवमी,—नाटकम् 'महानाटक' एक नाटक' का नाम जिसे 'हनुमन्नाटक' (हनुमान् के नाम से सर्वप्रिय होने के कारण) भी कहते हैं, नादः 1. ऊंची आवाज शोर 2. बड़ा ढोल 3. नरकने वाला कायर, 4. शंख 5. हाथी 6. सिंह 7. काल 8. ऊँट 9. शिव का विशेषण, (दम्) एक वाद्ययंत्र,— नालः क्षिव का विशेषण,—निद्रा 'महानिद्रा', मृत्यु,—नियमः विष्णु का विशेषण,— निर्वाणम् (दीक्षा के अनुसार) व्यष्टि-सत्ता का पूर्ण नाश,··निशा 1. आधीरात, रात का दूसरा या तीसरा पहर ··महानिशा तु विज्ञेया मध्यमें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रहरणम्,—नीलः दोषी,—नील (वि०) गहरा नील (लः) एक प्रकार का नीलम या पन्ना—शि० ११६, ४।४४, रघु० १८।४२, °उपलः नीलम,—नृत्यः शिव का विशेषण, नेमिः कौवा,—पक्षः 1. गरुड़ का विशेषण 2. एक प्रकार की बत्तख, (स्त्री) उल्लू,—पंचमूलम् पाँच पेड़ों की जड़ों का योग—दिव्योनिमन्थः श्योनाकः कादमरी पाटला तथा, सर्वेष्वेतु मिलितेरेतैः स्यात्महापंचमूलकम्, पंञ्चविधम् पाँच घातक विषों का योग—शृंगी च कालकूटश्च मुस्तको वत्सनाभकः, शंखकर्णीति योगोऽयं महापंचविषाभिधः, —पर्णः 1. मुख्य सड़क, प्रधान वीथी, राजमार्ग —कु० ७।३ 2. परलोक अर्थात् मृत्यु का मार्ग 3. कुछ पर्वत के शिखर जहाँ से भक्त लोग स्वर्गप्राप्ति करने के लिए अपने आपको फेंका करते थे 4. शिव का एक विशेषण, पक्षः एक विशिष्ट बड़ी संख्या, (सौ नख की संख्या ?) 2. नारद का नामान्तर 3. कुबेर की नौ निधियों में से एक (क्षम्) 1. श्वेत कमल 2. एक नगर का नाम, °पतिः नारद का नामान्तर,—पराङ्मुखः देर में, दोपहर बाद, - पातकम् बहुत बड़ा पाप, अधर्म अपराध ब्रह्महत्यां सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः, महान्ति पातकान्याहुस्तत्संसर्गश्च पंचमम् —मनु० ११।५४ 2. कोई बड़ा पाप, या अतिक्रमण, - पात्रः प्रधान मंत्री, - पादः शिव का विशेषण, पाप्मन् (वि०) अत्यंत पापपूर्ण या दुर्वृत्त, पुंसः महान् पुरुष - पुरुषः 1. बड़ा आदमी, एक प्रमुख या पूज्य व्यक्ति —शब्दं महापुरुषसंविहित निशम्य उत्तर० ६।७ 2. परमात्मा 3. विष्णु का विशेषण, - पूजः एक प्रकार का कौड़ा, पूजा बड़ी पूजा, असाधारण अवसरों पर अनुष्ठित गहन पूजा, पृष्ठः एक ऊँट, - प्रभंजनः विश्व का विराट्रूप, प्रभ (वि०) बड़ी भारी कान्ति वाला (भः) दीपक का प्रकाश,—प्रभुः 1. परमेश्वर 2. राजा महाप्रभु 3. मुख्य 4. इन्द्र का विशेषण 5. शिव का विशेषण 6. विष्णु का विशेषण,—प्रलयः 'महाविघटन' ब्रह्मा की जीवन समाप्ति पर विश्व का पूर्ण विनाश जब कि अपने अधिवासियों सहित समस्त लोक, देव, सन्त, ऋषि आदि स्वयं ब्रह्मा समेत सभी विनाश को प्राप्त हो जाते हैं ;—प्रसादः 1. एक बड़ा अनुग्रह 2. (भगवान् की मूर्ति पर लगाया हुआ भोग) एक बड़ा उपहार,—प्रस्थानम् इस जीवन से विदा लेना, मृत्यु ऊँचा श्वास, या श्वासाधिक्य जो ऊष्म वर्णों के उच्चारण में की जाती है 2. द्वासातिरेक से युक्त वर्ण—अर्थात् ख् घ् छ् झ् ठ् ढ् थ् ध् फ् भ् ष् ष् स् ह् 3. पहाड़ी कौवा,—फलः भारी बाद, जलप्लावन,—फल (वि०) बहुत फल देने वाला (ला) 1. कड़वी लौकी 2. एक प्रकार की बर्छी, (लम्) बड़ा फल या पुरस्कार,—बल बहुत मजबूत (लः) हवा (लम्) सीसा °ईश्वरः वर्तमान महाबलेश्वर के निकट स्थापित शिव का लिंग,—बाहु (वि०) लंबी भुजाओं वाला, शक्तिशाली (हुः) विष्णु का विशेषण,—बि (वि) लम्—1. अन्तरिक्ष 2. हृदय 3. जलकलश, घड़ा 4. बिवर, गुफा,—बी (वी) जः शिव का विशेषण, —बी (वी) ज्यम् मूलाधार,—बोधिः बौद्धभिक्षु,

ब्रह्मन्, - ब्राह्मन् परमात्मा,—ब्राह्मणः 1. एक बड़ा या विद्वान् ब्राह्मण 2. एक नीच या तिरस्करणीय ब्राह्मण, - भाग (वि०) 1. अतिभाग्यवान्, सौभाग्यशाली, समृद्ध 2. श्रीमान्, पूज्य, सरकारी —महाभागः काम नरपतिरभिवर्धितस्तो—श० ५।२०, मनु० ३।१९२ 3. अत्यन्त निर्मल या पवित्र, अत्यंत गुणवान्, —भागिन् (वि०) अतिभाग्यवान् या समृद्ध,—भारतम् प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें धृतराष्ट्र और पाडु के पुत्रों की प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष का वर्णन है (इसके अठारह पर्व या अध्याय हैं, कहा जाता है कि इसकी रचना व्यास ने की, तु० 'भारत' शब्द का भी),- भाष्यम् 1. एक बड़ी टीका 2. विशेषकर पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि द्वारा लिखा गया महाभाष्य (विस्तृत टीका), - भोजः राजा शान्तनु का विशेषण, - भौरुः एक प्रकार का कौड़ा, गुदगुदी, भुज (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, शक्तिशाली, - भूतम् मूलतत्त्व दे० भूत—तं वेधाविदधेनूनं महाभूतसमाधिना रघु० १।२६, मनु० १।६, (तः) एक बड़ा जानवर, - भोगा दुर्गा का विशेषण,—मणिः कीमती या मूल्यवान् मणि, आभूषण, जवाहर, - मति (वि०) 1. उच्चमनस्क 2. चतुर (तिः) बृहस्पति का नाम,—मद (वि०) नशे में अत्यन्त चूर (दः) मतवाला हाथी, - मनस्,—मनस्क (वि०) 1. उच्चमना, उदात्तमनस्क, उदारहृदय 2. उदार 3. घमण्डी, अभिमानी (पुं०) 'शरभ' नाम का एक कल्पनाप्रसूत जन्तु,—मंत्रिन् (पुं०) प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, —महोपाध्यायः 1. बहुत बड़ा उपाध्याय, अध्यापक, महापंडित, विद्वान् और प्रसिद्ध पंडितों को दी जाने वाली उपाधि उदा० महामहोपाध्याय-मल्लिनाथ सूरि आदि, - मांसम् 'मूल्यवान् मांस' विशेषकर नरमांस-मा० ५।१२,—मात्रः 1. राज्य का बड़ा अधिकारी, उच्च राज्याधिकारी, मुख्यमन्त्री —मन्त्रे कर्मणि भृत्यां विन्ये मात्ये परिच्छदे, मात्रा च महती येषां महामात्रास्तु ते स्मृताः मनु० ९।२५९ 2. महावत, हाथियों पर नियन्त्री रखने वाला पंच० १।१३१ 3. हाथियों का अधीक्षक (त्री) 1. मुख्यमन्त्री की पत्नी 2. आध्यात्मिक गुरु की पत्नी, मायः विष्णु का विशेषण, माया सांसारिक कारण भूता अविद्या जिससे यह समस्त भौतिक जगत् वास्तविक प्रतीत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होता है, **मारी** हैजा, बड़ाई रोग, संक्रामक बीमारी, **माहेश्वरः** शिव या महेश्वर का बड़ा भक्त, **मुखः** मगरमच्छ, घड़ियाल, **मुनिः** बड़ा ऋषि 2. व्यास (नपु० नि) आयुर्वेद की जड़ीबूटी, **मूर्धन्** (पुं०) शिव का विशेषण, **मूलम्** एक बड़ी मूली (लः) एक प्रकार का प्याज, **मूल्य** (वि०) अत्यन्त क़ीमती (ल्यः) लाल, **मृगः** 1. कोई भी बड़ा जानवर 2. हाथी, **मेदः** मुंगे का पेड़,—**मोहः** मन का भारी आकर्षण (-हा) दुर्गा का विशेषण, **यज्ञः** 'महायज्ञ' गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पांच यज्ञ या और कोई धर्मकृत्य –अध्यापन ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्, होमो दैवो (देवयज्ञः) बलिर्भौतो (भूत यज्ञ) नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् मनु० ३।७०–७२,—**यमकम्** 'बृहद्यमक' अर्थात् किसी श्लोक के चारों चरण जहां शब्दशः एक से हैं, परन्तु अर्थतः भिन्न हैं, उदा० दे० कि० १५।५२, यहां विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणाः' पंक्ति के चार भिन्न २ अर्थ हैं, तु० भट्टि० १०।१९ की भी, **यात्रा** 'बड़ी तीर्थयात्रा' काशी यात्रा, मृत्यु,—**याम्यः** विष्णु का विशेषण, **युगम्** 'बृहद् युग' मनुष्यों के चार युगों का समाहार अर्थात् ३२०००० मानववर्ष, -**योगिन्** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. सूर्य,--**रजतम्** 1. सोना 2. धतूरा, --**रजनम्** 1. केसर 2. सोना,--**रत्नम्** बहुमूल्य रत्न, -**रथः** 1. बड़ी गाड़ी या रथ 2. बड़ा योद्धा या नायक -कुतः प्रभावो धनंजयस्य महारथजयद्रथस्य, विचिन्तिमुत्पादयितुम् वेणीः २, रघु० ९।१, शि० ३।२२ (महारथ की परिभाषा - एको दशसहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनां, शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च विज्ञेयः स महारथः),—**रस** (वि०) अत्यन्त रसीला (सः) 1. गन्ना, ईख 2. पारा 3. बहुमूल्य धातु (सम्) चावलों का जागीरदार मांड,—**राजः** 1. बड़ा राजा, प्रभु, या सम्राट् 2. राजाओं या बड़े २ व्यक्तियों को सम्मान संबोधित करने की रीति (महाराज, देव, प्रभु, महामहिम), -**द्यूतः** एक प्रकार का आम, —**राजिकाः** (पुं०, ब० व०) एक देवसमूह का विशेषण (गिनती में यह देव २२० या २३६ माने जाते हैं),--**राज्ञी** मुख्य रानी, राजा की प्रधान पत्नी, —**रात्रिः**,—**री** (स्त्री०) दे० महाप्रलय,--**राष्ट्रः** 1. 'महाराष्ट्र' भारत के पश्चिम में मराठों का एक देश 2. महाराष्ट्र देश के अधिवासी, मराठे (ब० व०) (ष्ट्री) मुख्य प्राकृत बोली, महाराष्ट्र के अधिवासियों की भाषा -तु० दण्डी 'महाराष्ट्राश्रयां भाषा प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः --काव्या० १।३४,--**रूप** (वि०) रूप में बलवान् (**पः**) 1. शिव का विशेषण 2. राल, —**रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण, -**रौद्र** (वि०) बड़ा डरावना (—द्री) दुर्गा का विशेषण, **रौरवः** इक्कीस नरकों में से एक मनु० ४।८९–९०, **लक्ष्मी** 1. नारायण की शक्ति या महालक्ष्मी 2. दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा बनने वाली कन्या,--**लिंगम्** बृहल्लिंग (गः) शिव का विशेषण, --**लोलः कीवा**,—**लोहम्** चुम्बक, **वनम्** 1. एक बड़ा जंगल 2. विध्यवन में एक बड़ा जंगल,- **वराहः** 'महावराह' विष्णु का विशेषण, तृतीय अवतार 'वराह शूकर' के रूप में, **वसः** शिशुमार, सूंस,--**वाक्यम्** 1. लंबा वाक्य 2. अविच्छिन्न रचना या कोई साहित्यिक कृति 3. महत्वपूर्ण प्रकाशक वाक्य—जैसे तत्त्वमसि, ब्रह्मवेदं सर्वम् आदि, --**वातः** आंधी, झंझावात, **वार्तिकम्** पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा रचित वार्तिक,--**विद्या** योगदर्शन में प्रदर्शित मन की अवस्थाविशेष या वृत्तिविशेष, -**विधाय** सविकल्प नियम,—**विषुवम्** मेष की संक्रान्ति 'संक्रान्ति वसन्तविषुव (जब सूर्य मीन राशि से मेषराशि पर संक्रमण करता है),--**वीरः** 1. बड़ा शूरवीर या योद्धा 2. सिंह 3. इन्द्र का वज्र 4. विष्णु का विशेषण 5. गरुड़ का विशेषण 6. हनुमान् का विशेषण 7. कोयल 8. सफ़ेद घोड़ा 9. यज्ञाग्नि 10. यज्ञपात्र 11. एक प्रकार का बाज पक्षी, -**वीर्य** सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, -**वृषः** भारी बैल, सांड, **वेग** (वि०) बहुत तेज़, प्रबलवेग वाला (गः) 1. लंबी चाल, प्रबल वेग 2. लंगूर 3. गरुड़ पक्षी, —**वेल** (वि०) तरंगमय, -**व्याधिः** (स्त्री०) 1. भारी बीमारी 2. (काला कोढ़) कोढ़ का भयानक रूप, --**व्याहृतिः** (स्त्री०) अत्यन्त गूढ़ शब्द अर्थात् भूर्, भुवस् और स्वर्, -**व्रत** (वि०) अत्यंत धर्मनिष्ठ, कठोरतापूर्वक व्रत का पालन करने वाला (तम्) 1. महाव्रत, बहुत बड़ा कठिन व्रत, महान् धर्मकृत्य का पालन 2. कोई भी महान् या प्रधान कर्तव्य --प्राणैरपि हितावृत्तिरद्रोहो व्याजवर्जनम्, आत्मनीव प्रियाधानमेतन्मैत्रंमहाव्रतम्—महावी० ५।५९, **व्रतिन्** (पुं०) 1. भक्त, संन्यासी 2. शिव का विशेषण, —**शक्तिः** 1. शिव का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण, --**शंखः** 1. बड़ा शंख—भग० १।१५ 2. कनपटी की हड्डी, मस्तक 3. मानव अस्थि 4. विशिष्ट ऊँची तड़ंगी, -**शब्द** (वि०) ऊँची ध्वनि करने वाला, अत्यंत कोलाहलपूर्ण, ऊधम मचाने वाला, **शल्कः** समुद्री केकड़ा या सीमा मछली मनु० ३।२७२,— **शालः** बड़ा गृहस्थ, **शिरस्** (पुं०) एक प्रकार का सांप, — **शुक्तिः** (स्त्री०) मोतियों की सीपी,—**शुक्ला** सरस्वती का विशेषण,—**शुभ्रम्** चांदी,--**शूद्रः** (स्त्री० —द्री) 1. उच्चपदस्थ शूद्र 2. श्मशानम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाराणसी का विशेषण, **अमणः** बुद्ध का विशेषण, **—हवासः** एक प्रकार का दमा, - **इवेता** 1. सरस्वती का विशेषण 2. दुर्गा का विशेषण 3. सफेद खांड, **संक्रांतिः** (स्त्री०) मकर संक्रान्ति, - **सती** बड़ी सती साध्वी स्त्री, - **सत्ता** असीम अस्तित्व, **सत्यः** यम का विशेषण, **—सत्त्वः** कुबेर का विशेषण, **संधिविग्रहः** शान्ति और युद्ध के मन्त्री का पद, - **सखः** कुबेर का विशेषण, **— सर्जः** कटहल, **—सांतपनः** एक प्रकार की घोर तपस्या —दे० मनु० ११।२१२, **—साधिविग्रहिकः** शान्ति और युद्ध का (परराष्ट्र) मंत्री, **—सारः** एक प्रकार का खैर का वृक्ष, - **सारथिः** अरुण का विशेषण, **—साहसम्** अतिसाहस, बलात्कार, अत्यधिक दिलेरी, **—साहसिकः** डाकू, बटमार, साहसीलुटेरा, **—सिंहः** शरभ नाम का एक कथा से वर्णित जन्तु, **—सिद्धिः** (स्त्री०) एक प्रकार की जादू की शक्ति, - **सुखम्** 1. बड़ा आनन्द 2. संभोग, **—सूक्ष्मा** रेत, **—सूतः** सैनिक ढोल, **—सेनः** 1. कार्तिकेय का एक विशेषण 2. विशाल सेना का सेनापति (**ना** बड़ी सेना, **—स्कंधः** ऊँट, **—स्थली** पृथ्वी, **—स्थानम्** बड़ा पद, **—स्नः** एक प्रकार का ढोल - **हसः** विष्णु का विशेषण, **—हविस्** (नपुं०) घी, **—हिमवत्** (पुं०) एक पहाड़ का नाम।

महिका [मह्+क्वुन्+टाप्, इत्वम्] कोहरा, धुंध।

महित [भू० क० कृ०] [मह्+क्त] सम्मानित पूजित, **अहमहमिति, अहंयु**—दे० मह्+क्यच् शिव का त्रिशूल।

महिम्न् (पुं०) [महत्+इमनिच् टिलोपः] 1. बड़प्पन आदि से भी) —**अयि भवतज महिमायं कस्य गिरामस्तु विषयस्ते**—नामि० १।११ 2. यश, गौरव, ताकत, शक्ति कु० २।६, उत्तर० ४।२१ 3. ऊँचा पद, उन्नत **एदवी, वह ऊँची प्रतिष्ठा 4. सिद्धियों में से एक—अपना** शरीर फुलाना—दे० सिद्धि।

महिरः [मह्+इलच्, लस्य रत्वम्] सूर्य।

महिला [मह्+इलच्+टाप्] 1. स्त्री 2. मदमत्त या विलासिनी स्त्री—विरहेण विकलहृदया निर्जलमीनायते महिला -भामि० २।६८ 3. प्रियंगु नाम की लता 4. एक प्रकार का गंधद्रव्य या सुगंधित पौधा —रेणुका। सम०—**आह्वया** प्रियंगु लता।

महिलारोप्यम् दक्षिण भारत में स्थित एक नगर का नाम।

महिषः [मह्+इषच्] 1. भैंसा (यम का वाहन माना जाता है) गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृंगैर्मुहुस्ताडितम् - श० २।६, एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार गिराया था। सम०—**—अर्जनः** कार्तिकेय का विशेषण, **—असुरः** महिष नाम का राक्षस °**घातिनी**, °**मथनी**, °**मर्दनी**, °**भुवनी** दुर्गा के विशेषण, - **ध्वजः** यम का विशेषण, **—पालकः** भैंस रखने वाला, **वहनः**—**वाहनः** यम के विशेषण —**कृतान्तः** कि साक्षान्महिषवहनोऽसाविति पुनः - काव्य० १०।

महिषी [महिष+ङीष्] 1. भैंस, मनु० ९।५५, याज्ञ० २।१५९ 2. पटरानी, राजमहिषी—महिषीसखः—रघु० १।४८ २।२५, ३।९ 3. रानी 4. पक्षी की मादा 5. स्त्रीदासी, सेविका, सैरंध्री 6. व्यभिचारिणी स्त्री 7. अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति से अर्जित धन तु० माहिषिक। सम०—**पालः** भैंसों के रखने वाला, **स्तनभः** भैंस के सिर से अलंकृत खंभा।

महिष्मत् (वि०) [महिष+मतुप्, पृषो० टिलोपः] बहुत सी भैंसे रखने वाला, या जहाँ भैंसे बहुतायत से हों।

मही [मह्+अच्+ङीप्] 1. पृथ्वी—जैसा कि महीपाल और महीभृत् आदि में—मही रक्ष्या यथा—भर्तृ० ३।७९ 2. भूमि, मिट्टी 3. भूसम्पत्ति, जमीन-जायदाद 4. देश, राज्य 5. एक नदी का नाम जो खंभात की खाड़ी में गिरती है 6. (ज्या० में) समतल आकृति की आधाररेखा। सम०—**—इन्द्रः** राजा, **—ईश्वरः** राजा, **—ऊनं मही** नमहीनपराक्रमम् रघु० ९।५, **—कंपः** भूचाल **क्षित्** (पुं०) राजा, प्रभु=रघु० १।११, ८५, १९। २० - **—जः** 1. मंगलग्रह 2. वृक्ष (**जम्**) हरा अदरक, **— तलम्** धरातल, **—दुर्गम्** मिट्टी का किला, भूदुर्ग **—धरः** 1. पहाड़ —रघु० ६।५२, कु० ६।८९ 2. विष्णु का विशेषण, **—ध्रः** 1. पहाड़ भर्तृ० २।१०, शि० १५।२४, रघु० ३।६० १३।७ 2. विष्णु का विशेषण, **— नाथः, पः, पतिः, भुज** (पुं०), **मघवन्** (पुं०), **—महेन्द्रः** राजा - भग० १।२०, रघु० २।२४, ६।१३, **—पुत्रः, सुतः, —सुनुः** 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण, **पुत्री, सुता** सीता का एक विशेषण, **प्रकंपः** भूचाल, **प्ररोहः, रुहः** (पुं०) - **रुहः** वृक्ष कि० ५।१०, शि० २०।४९, **प्राचीरम्**, - **प्रावरः** समुद्र, **—भर्तृ** (पुं०) राजा, **भृत्** (पुं०) 1. पहाड़ —कु० १।२७, कि० ५।१ 2. राजा, प्रभु,- **लता** केंचुआ, **—सुरः** ब्राह्मण।

महीयस् (वि०) [म० अ०, महत्+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, विशाल, अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली भारी या महत्त्वपूर्ण अधिक ताकतवर, मजबूत पुं० महामना, उदारचेता - **प्रकृतिः** खलु सा महीयसः सहते नान्य समुन्नतिं यया— कि० २।२१, शि० २।१३।

महीला, महेला [=महिला, पृषो० साधु] स्त्री, नारी।

मा (अव्य) [मा+क्विप्] प्रतिषेधबोधक अव्यय, (मकारात्मक विरलतः) प्रायः लोट् लकार की क्रिया के साथ जुड़ा हुआ—यद्वाणि मा कुरु विवादमनादरेण —भामि० ४।४१, (क) लुङ् लकार की क्रिया के साथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जबकि उसके आगम 'अकार' का लोप भी हो जाता है—पापे रतिं मा कृथाः—भर्तृ० २।७७, मा मुमुहुत् खलु भवंतमनन्यजन्मा मा ते मलीमसविकारचमत्कृतिभूतं—मा० १।३२ (ख) लङ् लकार की क्रिया के साथ भी (यहाँ भी आगम 'अकार' का लोप हो जाता है) मा जैनमभिभाषथाः—राम० (ग) लुट् लकार या विधि लिङ् की क्रिया के साथ भी, 'ऐसा न हो कि' 'ऐसा नहीं कि' अर्थ को प्रकट करने में—लघु एनां परित्रायस्व मा कस्यापि तपस्विनो हस्ते पतिष्यति—श० २, मा कश्चिन्मामाध्यनर्थो भवेत्—पंच० ५, मा नाम देव्याः किमप्यनिष्टमुत्पन्नं भवेत्—का० ३०७, (घ) जब अभिशाप अभिप्रेत हो तो शत्रन्त (वर्तमानकालिक विशेषण) के रूप में प्रयुक्त—मा जीवन्यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति—शि० २।४५ या (ङ) समावनार्थक कर्मवाच्य-प्रत्ययांत क्रियाओं के साथ—मैवं प्रार्थ्यम्, या कभी कभी बिना किसी क्रिया की अपेक्षा किये प्रयुक्त होता है—मा तावत् 'अरे ऐसा मत (कहो) मा मैवम् मा नामरक्षिणः—मृच्छ० ३, 'कहीं कोई पुलिस का आदमी न हो' दे० 'नाम' के अन्तर्गत। कभी कभी 'मा' के बाद 'स्म' लगा दिया जाता है, और उस समय क्रिया में लङ् या लुङ् लकार का प्रयोग होता है तथा आगम 'अकार' का लोप हो जाता है, विधि-लिङ् के साथ प्रयोग विरलतः देखा जाता है—कर्तव्यं मा स्म गमः पार्थ—भग० २।३, मा स्म प्रतीपं गमः—श० ४।१७, मास्म सीमंतिनी कांचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम्।

मा [मा+क—टाप्] 1. धन की देवी लक्ष्मी—तमालपत्रं राजेन्द्र भज मा ह्लादयाकम् सुभा० 2. माता 3. माप। सम०—पः—पतिः विष्णु के विशेषण।

मा (अदा० पर०, जुहो०, दिवा० आ०—मिमीते, मिमीते, मीयते, मित) 1. मापना—न्यधित मिमान इवाचिनं पदानि शि० ७।१३ 2. नापतोल करना; चिह्न लगाना, सीमांकन करना—दे० 'मित' 3. (ढोल ढौल में) तुलना करना, किसी भी मापदण्ड से मापना कु० ५।१५ 4. अन्दर होना, अन्दर स्थान ढूंढना, युक्त या सहित होना—तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विषः तपोधनास्त्यागमसंभवा मुदः—शि० १।२३, वृद्धि गतेऽप्यात्मनि नैव मान्तीः ३।७३ १०।५०, मानि मातुमशक्योऽपि यशोराशिर्यदत्र ते काव्य० १० प्रेर० (मापयति—ते) मपवाना, नाप करवाना एतेन मापयति भित्तिषु कर्मशार्मण्य—मृच्छ० ३।१६, इच्छा० (मित्सति—ते) मापने की कामना करना। अनु—, 1. अनुमान लगाना, घटाना (कुछ कारणों के आधार पर) धूमादग्निमनुमाय—तर्क०, कु० २।२५, अन्दाज लगाना, अटकल लगाना—अन्वमीयत शुद्धेति शातेन वपुषैव सा—रघु० १५।७७, १७।११ 2. समाधान करना, पुनर्मिलित करना, उप—, तुलना करना, समानता करना—तेनोपमीयते तमालनीलम्—शि० ३।८, स्तनौ मांसग्रंथी कनककलशावित्युपमितौ—भर्तृ० ३।२०, निस्—, बनाना, सृजन करना, अस्तित्व में लाना निर्मातुं प्रभवेन्मनोहरमिदं रूपं पुराणो मुनिः—विक्रम० १।४, यस्मादेव मुरेरणां मात्राभ्यो निर्मितो नृपः—मनु० ७।५ १।१३ 2. (क) बनाना, रूप बनाना, संरचना करना—स्तानुनिर्मिता एते पाशाः—हि० १ (ख) बसाना, (नगर पुर आदि) नई बस्ती बसाना—निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मधुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।२८ 3. उत्पन्न करना, पैदा करना,—शलाकाञ्जननिर्मितेव—कु०४।४७, निर्मातु मर्म-व्यथाम्—गीत० ३ 4. रचना करना, लिखना—स्वनिर्मितया टीकया समेतं काव्यम् 5. तैयार करना, निर्माण करना, परि—, 1. मापना 2. माप कर निशान लगाना, सीमांकन करना, प्र—, 1. मापना 2. सिद्ध करना, स्थापित करना, प्रदर्शित करना, सम्—, 1. मापना 2. समान बनाना, बराबर करना—कान्तासंमिततयोपदेशयुजे—काव्य० १, दे० संमित 3. समानता करना, तुलना करना 4. युक्त या सहित होना—मृणालसूत्रमपि ते न संमाति स्तनान्तरे—सुभा०।

मांस् (नपुं०)[?] मांस (इस शब्द के पहले पाँच वचनों के रूप नहीं होते, और उसके पश्चात् इसके स्थान में विकल्प से 'मांस' आदेश हो जाता है।)

मांसम् [मन्—स दीर्घश्च] 1. मांस, गोश्त, —समांसो मधुपर्कः उत्तर० ४ (इस शब्द की व्युत्पत्ति की उद्भावना मनु० ५।५५ में इस प्रकार की गई है—मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्, एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः) 2. मछली का मांस 3. फल का गूदा,—सः 1. कीड़ा 2. मांस बेचने वाली एक वर्ण संकर जाति। सम०—अद्—अद—आदिन्—भक्षक (वि०) मांस खाने वाला, आमिषभोजी (जैसे कि एक जानवर)—भट्टि० १६।२८, मनु० ५।१५—अर्गलः—लम् मांस का टुकड़ा जो मुंह से नीचे लटकता है, —अशनम् मांस खाना,—आहारः पाशव भोजन, —उपजीविन् (पुं०) मांस बेचने वाला,—ओदनः 1. मछली का भोजन 2. मांस के साथ पकाये हुए चावल,—कारि (नपुं०) रक्त, ग्रन्थिः मांस की गिल्टी, जम्, तेजस् (नपुं०) चर्बी, वसा, —द्राविन् (पुं०) खटमिट्ठा चोका, खट्टी भाजी,—निर्यासः शरीर के बाल, पिटकः,—कम् 1. मांस की टोकरी 2. मांस का बड़ा ढेर,—पिण्डम् हड्डी,—पेशी 1. पुट्ठा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. मांस का टुकड़ा 3. आठ से चौदह दिन तक के गर्भ का विशेषण,—भेत्तृ,—भेदिन् (वि०) मांस काटने वाला, —योनिः रक्त-मांस से बना जीव, —विक्रयः मांस की बिक्री, - सारः,—स्नेहः चर्बी, वसा, - हासा खाल, चमड़ा।

मांसल (वि०) [मांस+लच्] 1. मांस से भरा हुआ, 2. पुट्ठेदार, मोटा ताजा, बलवान्, हृष्टपुष्ट—उत्तर० १ 3. स्थूलकाय, मजबूत, शक्तिशाली—शाखाः शत मांसलाः -भामि० १।३४ 4. (ध्वनि की भांति) गहरा—उत्तर० ६।२५ 5. महाकाय, हट्टाकट्टा - मा० ९।१३।

मांसिकः [मांस पण्यमस्य ठक्] कसाई, मांस बिक्रेता।

माकन्दः [मा+किप् माः परिमितः सुघटितः कन्द इव फलं अस्य] आम का पेड़—भामि० १।२९,—ही 1. आँवले का पेड़ 2. पीला चन्दन 3. गंगा के किनारे स्थित एक नगर का नाम।

माकर (वि०) (स्त्री०—री) [मकर+अण्] मगरमच्छ से संबद्ध, माघ मास से संबद्ध।

माकरन्द (वि०) (स्त्री०—न्दी) [मकरन्द+अण्] फूलों के रस से प्राप्त या, पुष्परस से संबद्ध, शहद से भरा हुआ, मधुमिश्रित—मा० ८।१, ९।१२।

माकलिः (पुं०) 1. इन्द्र का सारथि मातलि 2. चन्द्रमा।

माकि (की) क (स्त्री०-की) [मक्षिकाभिः संभृत्य कृतम्—अण् पक्षे नि० दीर्घः] मधुमक्खियों से उत्पन्न या प्राप्त,—कम् 1. मधु भामि० ४।३३ 2. मधु की भांति एक खनिज पदार्थ। सम०- आश्रयम्, —जम् मोम,—फलः एक प्रकार का नारियल, --शर्करा कंदयुक्त खांड।

मागध (वि०) (स्त्री०-धी) [मगध+अण्] मगध देश में रहने वाला, या उससे संबद्ध, या मगध के अधिवासी, —धः 1. मगध का राजा 2. एक मिश्रजाति (कहा जाता है कि यह जाति वैश्य पिता और क्षत्रिय माता की संतान, इस जाति का कर्तव्य कर्म व्यावसायिक भाटों का कार्य है)—मनु० १०।११।१७, याज्ञ० १।९४ 3. चारण या बन्दीजन, धाः (ब० व०) मगध के अधिवासी,- धी 1. मगध देश की राजकुमारी—रघु० १।५७ 2. मागधी भाषा, चार मुख्य प्राकृतों में से एक 3. बड़ी पीपल 4. सफेद जीरा 5. परिष्कृत खांड 6. एक प्रकार की चमेली 7. छोटी इलायची।

मागधा, मागधिका [मागध--टाप्, मागध--ठक्+टाप्] बड़ी पीपल।

मागधिकः [मगध+ठक्] मगध का राजा।

माघः [मघानक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी माघी साऽत्र मासे अण्] 1. चान्द्रवर्ष के एक महीने का नाम (यह जनवरी-फरवरी मास में आता है) 2. एक कवि का नाम जिसने शिशुपालवध या माघकाव्य की रचना की (कवि ने शि० २०।८०-८४ में अपने कुल का वर्णन इस प्रकार किया है- श्रीशब्दरम्यकृतसर्गसमाप्तिलक्ष्म लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनचारु माघः तस्यात्मजः सुकवि-कीर्तिदुराशयादः काव्यं व्यधत्त शिशुपालवधाभिधा-नम्)—उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्, दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः उद्भट.—घी माघ मास की पूर्णिमा।

माघमा (स्त्री०) मादा केकड़ा।

माघवत् (वि०) (स्त्री०—ती) [मघवत्+अण्] इन्द्र से संबन्ध रखने वाला,—ती पूर्वदिशा। सम०- चापम् इन्द्रधनुष -उत्तर० ५।११।

माघवन (वि०) (स्त्री०—नी) [मघवन्+अण्] इन्द्र से शासित या संबद्ध- ककुभं समस्कृत माघवनीम् —शि० ९।२५, अवनीतलभेव साधु मन्ये न मनी माघ-वनी विलासहेतुः जग०।

माघ्यम् [माघे जातम्—माघ--यत्] कुन्द लता का फूल।

माङ्क्ष् (स्वा० पर० मांक्षति) कामना करना, इच्छा करना, लालसा करना।

माङ्गलिक (वि०) (स्त्री० -की) [मंगल+ठक्] 1. शुभ, मंगलसूचक, भाग्यवान्—मुदमस्य मांगलिक-तूर्यकृतां ध्वनयः प्रतेनुरनुबप्रमपाम् किं० ६।४, महावी० ४।३५, भामि० २।५७ 2. सौभाग्यशाली।

माङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+ष्यञ्] शुभ, सौभाग्यसूचक शि० ४।५,—ल्यम् 1. मांगलिकता, समृद्धि, कल्याण, सौभाग्य 2. आशीर्वाद, शुभकामना 3. पर्व, त्यौहार, कोई भी शुभ कृत्य। सम०- सूत्रकृत् शुभ अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल - उत्तर० ६।२५।

माचः [मा+अच्+क] सड़क, मार्ग।

माचलः [मा+चल्+अच्] 1. चोर, लुटेरा 2. मगर-मच्छ।

माचिका [मा+अञ्च्+क+कन्+टाप्, इत्वम्] मक्खी।

माञ्जिष्ठ (वि०) (स्त्री० ष्ठी) [मञ्जिष्ठया रक्तम् अण्] मजीठ की भांति लाल, ष्ठम् लाल रंग।

माञ्जिष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [मञ्जिष्ठा+ठक्] मजीठ के रंग से रंगी हुई उत्तर० ४।२०, महावी० १।१८।

माठरः [मठ+अरन्, ततः अण्] 1. व्याध का नाम 2. ब्राह्मण 3. शौण्डिक, कलवार, शराब बेचने वाला 4. मृग का एक सेवक।

माठी (स्त्री०) कवच, जिरहबख्तर।

माडः (पुं०) 1. विशेष जाति का वृक्ष 2. तोल, माप।

माडिः (स्त्री०) [माड्+क्तिन्] 1. किसलय (जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभी खुला न हो) 2. सम्मान करना 3. उदासी, खिन्नता 4. निर्धनता 5. क्रोध, आवेश 6. वस्त्र की किनारी या झालर (घोट) 7. दुहरा दाँत

माणवः [मनोरपत्यम् अण्, अल्पार्थे तत्वम्] 1. लड़का, बालक, छोकरा, बच्चा 2. छोटा मनुष्य, मुण्डा (तिरस्कार सूचक) 3. सोलह (बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवकः [माणव ; कन्] 1. लड़का, बालक, बच्चा, छोकरा (प्रायः तिरस्कारसूचक के रूप में प्रयुक्त) 2. छोटा मनुष्य, बौना, मुंडा— मायामाणवकं हरिम् भाग० 3. मूर्ख व्यक्ति 4. छात्र धर्मशास्त्र पढ़ने वाला, विद्यार्थी 5. सोलह (या बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवीन (वि०) [माणवस्येदं खञ्] बालकों जैसा, बच्चों जैसा।

माणव्यम् [माणवानां समूहः यत्] बच्चों या छोकरों की टोली।

माणिका [मान्+घञ्+ नि० णत्वम्+कन्+टाप् इत्वम्] एक विशेष बाट (आठ पल वजन के बराबर) या तोल।

माणिक्यम् [मणि +कन्+ष्यञ्] लाल।

माणिक्या [माणिक्य+टाप्] छिपकली।

माणिबन्धम्, माणिमन्थम् [मणिबंध (मन्थ) +अण्] सेंधा नमक।

माण्डलिक (वि०) (स्त्री० की) [मण्डल+ठक्] किसी प्रान्त पर शासन करने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला,—कः प्रान्त का शासक, राज्यपाल।

मातङ्गः [मत+ङ्गस्य मुनेरयम् अण्] 1. हाथी—शि० १।६४ 2. नीचतम जाति का पुरुष, चाण्डाल 3. किरात, भील पहाड़ी या बर्बर 4. (समास के अन्त में) कोई भी सर्वोत्तम वस्तु—उदा० बलाहक मातंगः। सम०—विद्याकरः एक कवि का नाम,—नक्रः हाथी जैसा विशाल मगरमच्छ—रघु० १३।११।

मातरिपुरुषः [अलुक् समास] 'वह जो घर में अपनी माता के सामने ही अपनी शूरवीरता जताता हो' डरपोक, कायर, शेखीखोरा, बुजदिल।

मातरिश्वन् (पुं०) [मातरि अन्तरिक्षे श्वयति वर्धते श्वि+कनिन् डिच्च, अलुक् स०] वायु—पुनरुपैति विविक्तैः मातरिश्वावचूर्ण्य ज्वलयति मदनाग्निं मालतीनां रजोभिः शि० ११।१७, कि० ५।३६।

मातलिः [मतलस्यापत्यं पुमान्—मतल+इञ्] इन्द्र के सारथि का नाम। सम० सारथिः इन्द्र का विशेषण।

माता [मान् पूजायां तृच् न लोपः] माता, माँ।

मातामहः [मातृ+डामहच्] नाना, —ही (द्वि० व०) नाना नानी,—ही नानी।

मातिः (स्त्री०) [मा +क्तिन्] 1. माप 2. चिन्तन, विचार, प्रत्यय।

मातुलः [मातुरिदं मातृ+डुलच्] 1. मामा—मनु० २।१३२, मनु० २।१३०, ५।८१ 2. धतूरे का पौधा 3. एक प्रकार का साँप। सम० पुत्रकः 1. मामा का बेटा 2. धतूरे का फल।

मातुलङ्गः दे० मातुलिंगः।

मातुला, मातुलानी, मातुली [मातुल+टाप्, ङीप्, वा, पक्षे आनुक् च] 1. मामी, मामा की पत्नी—मनु० २।१३१, याज्ञ० २।२३२ 2. पटसन।

मातुलिङ्गः, मातुलुङ्गः [मातुल+गम्+खच्, मुम्, पृषो० साधुः] एक प्रकार का नींबू का वृक्ष— (भूयो) भागाः प्रेक्षितमातुलुङ्गवृतयः प्रेयो विधास्यन्ति वाम्—भा० ६।१९,—गम् इस वृक्ष का फल, चकोतरा।

मातुलेयः (स्त्री० यी) [मातुल+छ, मातुली+ढक् वा] मामा का पुत्र।

मातृ (स्त्री०) [मान् पूजायां तृच् न लोपः] 1. माँ, माता —मातृवत्परदारेषु यः पश्यति स पश्यति, सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते सुभा० 2. माता (आदर तथा वात्सल्य सूचक)—मातर्लक्ष्मि भजस्व कंचिदपरम् —भर्तृ० ३।६४, ८७, अयि मातर्वेपथजनसंभवे देवि सीते—उत्तर ४ 3. गाय 4. लक्ष्मी का विशेषण 5. दुर्गा का विशेषण 6. अन्तरिक्ष, आकाश 7. पृथ्वी 8. देव माता—मातृभ्यो बलिमुपहर—मच्छ० १ (ब० व०) देव माताओं का विशेषण, जो शिव की परिचारिका कही जाती हैं परन्तु बहुधा स्कन्द की परिचर्या में लिप्त रहती हैं (ये गिनती में आठ हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चंडी वाराही वैष्णवी तथा, कौमारी चैव चामुंडा चर्चिकेत्यष्टमातरः। कुछ के मत में वह केवल सात हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा, माहेन्द्री चैव वाराही चामुंडा सप्त मातरः। कुछ लोग इनकी संख्या १६ तक बतलाते हैं)। सम०—केशवः मामा,—गणः देव माताओं का समूह,—गामिन् (पुं०) माता के साथ गमन करने वाला,—गोत्रम् मातृकुल,—घ्नः, —घातकः, —घातिन् (पुं०), घ्नः माता की हत्या करने वाला, घातुकः 1. मातृहन्ता 2. इन्द्र का विशेषण,—चक्रम् देवमाताओं का समूह,—देव (वि०) जो माता को ही अपना देवता मानता है, माता को देवता की भाँति पूजने वाला,—नन्दनः कार्तिकेय का विशेषण, पक्ष (वि०) मातृकुल से संबद्ध, (—क्षः) मामा, नाना आदि,—पितृ (द्वि० व०) (मातापितरौ या मातरपितरौ) माता-पिता,—पुत्रौ (मातापुत्रौ) माँ और बेटा,—पूजनम् देवमातृकाओं की पूजा,—बन्धुः, बान्धवः मातृकुल के संबंधी—रघु० १२।१२, (ब०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व०) मातृकुल के रिश्तेदारों का समूह, वे ये हैं—मातुः पितुः स्वसुः पुत्राः मातुर्मातुः स्वसुः सुताः मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबांधवाः, **मण्डलम् देवमातृकाओं** का समूह,—**मातृ** (स्त्री०) पार्वती का विशेषण,—**मुखः** मूर्ख व्यक्ति, भौंदू,—**यज्ञः** देवमातृकाओं के निमित्त किया गया यज्ञ,—**सुतः** कार्तिकेय का विशेषण,—**स्वसृ** (स्त्री०) (मातृष्वसृ या मातुःस्वसृ) माता की बहन, मौसी,—**स्वसेयः** (मातृष्वसेयः) माता की बहन का पुत्र (पी) मौसी की पुत्री, इसी प्रकार **मातृष्वस्रीयः**—**या**।

मातृक (वि०) [मातृ+ठक्] 1. माता से आया हुआ, या उत्तराधिकार में प्राप्त—मातृकं च धनुर्जितं दशरथं—रघु० ११।६४, ९० 2. माता संबंधी,—**कः** मामा,—का 1. माता 2. दादी 3. धाय, दाई 4. स्रोत, मूल 5. देवमातृका 6. अक्षरों में लिखे हुए कुछ रेखाचित्र जो जादू की शक्ति रखने वाले कहे जाते हैं 7. इस प्रकार प्रयुक्त की गई वर्णमाला (ब० व०)।

मात्र (वि०) (स्त्री०—त्रा, त्री) [मा+अत्र] 'इतनी मात्र का जितना कि' 'इतना ऊँचा लंबा या चौड़ा जितना कि' 'वहाँ तक पहुँचता हुआ जहाँ तक कि' अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञाओं के साथ जोड़ा जाने वाला प्रत्यय, जैसा कि ऊष्मात्री भित्तिः (इस अर्थ में समास के अन्त में 'मात्रा' शब्द का प्रयोग भी चिन्तनीय है, दे० नी०), —**त्रम्** 1. एक माप (चाहे वह लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई की हो; चाहे डोलडौल, स्थान, दूरी या संख्या की हो, प्रयोग बहुधा समास के अन्त में - उदा० अंगुलिमात्रम् अंगुलि के बराबर चौड़ाई; **किञ्चिन्मात्रं** गत्वा कुछ दूरी, **क्रोशमात्रे** एक कोस की दूरी पर **रेखामात्रमपि** रेखा तक की चौड़ाई भी, इतनी चौड़ाई जितनी कि एक रेखा की होती है;—रघु० १।१७, इसी प्रकार **क्षणमात्रम् निमिषमात्रम्** एक क्षण का अन्तराल, **शतमात्रम्** संख्या में सौ, **गजमात्रम्** इतना ऊँचा या बड़ा जितना कि हाथी **तालमात्रं, यवमात्रम्** आदि 2. किसी चीज का पूरा माप, वस्तुओं की पूर्ण समष्टि, राशि—जीवमात्र या प्राणिमात्रम् जीवधारियों प्राणियों का समस्त समुदाय, मनुष्यमात्रो मर्त्यः, प्रत्येक मनुष्य मरणशील है 3. किसी चीज का सामान्य माप, केवल एक बात का उससे अधिक नहीं, इसका अनुवाद प्रायः 'केवल,' 'सिर्फ' या 'भी, ही' आदि शब्दों से किया जाता है; —**जातिमात्रेण** हि० १।५८, केवल जाति से; टिट्टिभमात्रेण समुद्रो व्याकुलीकृतः—२।१४९, केवल टिटहरे के द्वारा, वाचामात्रेण जप्यसे—श० २, केवल वाणी द्वारा' इसी प्रकार **अर्थमात्रम्, संमानमात्रम्**—पंच० १।८३ क्तान्त शब्दों के साथ जुड़ कर 'मात्र' शब्द का अनुवाद 'ज्योंही' 'हो' आदि है, **विद्धमात्रः**—रघु० ५।५१, 'ज्योंही वह बेधा गया त्योंही' **'दीपे जाने पर हो', भुक्तमात्रे**, 'खाने के बाद ही', **प्रविष्टमात्र एव तत्रभवति** श० ३ आदि।

मात्रा [मात्र+टाप्] 1. माप - देखो 'मात्रम्' ऊपर 2. मापदंड, मानक, नियम 3. सही माप 4. माप की इकाई, एक फुट 5. क्षण 6. कण, अणु 7. भाग, अंश —सुरेन्द्रमात्राश्रितगर्भगौरवात्—रघु० ३।११ 8. अल्पांश, अल्प परिमाण, छोटी माप - दे० मात्र (३) 9. अर्थ, महत्त्व—राजेति कियती मात्रा—पंच० १।४०, 'राजा किस अर्थ का है, क्या महत्त्व है उसका' अर्थात् मैं उसे कोई महत्त्व नहीं देता—कायस्थ इति लघ्वी मात्रा मु० १ 10. धन, संपत्ति 11. (छन्दः शास्त्र में) एक मात्रा का लघु ह्रस्व स्वर को उच्चारण करने में लगने वाला काल 12. तत्त्व 13. भौतिक संसार, भूतद्रव्य 14. नागरी के अक्षरों का ऊपरी (अतिरिक्त) भाग, अर्थात् मात्रा 15. कान की बाली 16. आभूषण, अलंकार। सम०—**छन्दस्**, **आवृत्तिमात्रा** का छन्द, —**छन्दस्**, —**वृत्तम्**, वह छंद जिसका विनिमय मात्राओं की गिनती के आधार पर होता है—उदा० आर्या,—**भरत्वा** चटवा,— **सङ्गः** गार्हस्थ्य सामग्री या संपत्ति में आसक्ति या अनुराग—मनु० ६।९७,—**समकः** एक प्रकार के छंदों का समूह दे० परिशिष्ट १,- **स्पर्शाः** भौतिक संपर्क, भौतिक तत्त्वों के साथ इन्द्रियों का संयोग, - भग० २।१४।

मात्रिका [मात्रा+ठक्+टाप्] मात्रा, या छन्दः शास्त्र का ह्रस्वस्वर के उच्चारण में लगने वाला क्षण (=मात्रा)।

मात्सर (वि०) (स्त्री० री), **मात्सरिक** (वि०) (स्त्री० की) [मत्सर+अण्, ठक् वा] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, विद्वेषी, असूयायुक्त।

मात्सर्यम् [मत्सर+ष्यञ्] ईर्ष्या, डाह, असूया, विद्वेष - अहो वस्तुनि मात्सर्यम्- कथा० २।४९, कि० ३।५३।

मात्स्यिक [मत्स्य+ठक्] मछुवा, माहीगीर।

माथः [मथ्+घञ्] 1. विलोना, मंथन, बिलोडन करना 2. हत्या, विनाश 3. मार्ग, सड़क।

माथुर (वि०) (स्त्री०-री) [मथुरा+अण्] 1. मथुरा से आया हुआ 2. मथुरा में उत्पन्न 3. मथुरा में रहने वाला।

मादः [मद्+घञ्] 1. नशा, मस्ती 2. हर्ष, खुशी 3. घमंड, अहंकार।

मादक (वि०) (स्त्री०—विका) [मद्+णिच्+ण्वुल्] 1. नशा करने वाला, उन्मत्त बनाने वाला, बेहोश करने वाला 2. आनन्ददायक,—**कः** जलकुक्कुट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मादन (वि०) (स्त्री०—नी) [मद्+णिच्+ल्युट्] नशे में चूर करने वाला—दे० मादक—**नः** 1. कामदेव 2. धतूरा,—**नम्** 1. नशा करना 2. आनन्द देना, उल्लास देना 3. लौंग।

मादनीयम् [मद्+णिच्+अनीयर्] एक नशीला पेय।

मादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी), **मादृश** (वि०) **मादृश** (वि०) (स्त्री०—शी) [अस्मद्+दृश्+क्स (क्विप्, कञ् वा) मदादेशः, आत्वम्] मेरी भाँति, मुझसे मिलता जुलता—प्रवृत्तिसारा: खलु मादृशां गिरः—कि० १।२५, उत्तर० २, उपचारो नैव कल्प्य इति तु मादृशाः—रस०।

माद्रकः [मद्र+वुञ्] मद्र देश का राजकुमार।

माद्रवती [मद्र+मतुप्, वत्वम् अण् ङीप्,] पाण्डु की द्वितीय पत्नी का नाम।

माद्री [मद्र+अण्+ङीप्] पाण्डु की द्वितीय स्त्री का नाम। **सम०—तनयः** नकुल और सहदेव का विशेषण, —**पतिः** पाण्डु का एक विशेषण।

माद्रेयः [माद्री+ढक] नकुल और सहदेव का विशेषण।

माधव (वि०) (स्त्री० वी) [मधु+अण्, विष्णुपक्षे माया लक्ष्म्याः धवः ष० त०] 1. मधु की तरह मीठा 2. शहद से बना हुआ 3. वासन्ती 4. मधु दैत्य के वंशजों से संबंध रखने वाला, —**वः** कृष्ण का नाम —राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः—गीत० १, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये 2. कामदेव का मित्र वसन्त ऋतु—स्मर पर्युत्सुक एष माधवः—कु० ४।२८, स माधवेनाभिमतेन सख्या (अनुप्रयातः) ३। २३ 3. वैशाख मास भास्करस्य मधुमाधवाविव —रघु० ११।७ 4. इन्द्र का नाम 5. परशुराम का नाम 6. यादवों का नाम (ब० व०) शि० १६।५२ 7. मायण का पुत्र एक प्रसिद्ध ग्रन्थकर्ता, सायण और भोगनाथ इसके भाई थे, लोगों की मान्यता है कि माधव पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। यह बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान् था, कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना का श्रेय इसे प्राप्त है। ऐसा माना जाता है कि सायण और माधव दोनों ने मिल कर संयुक्त रूप से चारों वेदों पर भाष्य लिखा—श्रुतिस्मृतिसदाचारपालको माधवो बुधः, स्मार्तं व्याख्यायि सर्वार्थं द्विजार्थं श्रौत उद्यतः। जै० न्या० वि०। **सम०—वल्ली**=माधवी दे०, —**श्री** वसन्त कालीन सौन्दर्य।

माधवकः [माधव+वुञ्] एक प्रकार की नशीली शराब (मधु से बनाई गई)।

माधविका [माधवी+कन्+टाप्, ह्रस्व] माधवी लता। **माधविका परिमललालिते** गीत० १।

माधवी [मधु+अण्+ङीप्] 1. कन्दयुक्त खांड 2. शहद से बनाया हुआ एक प्रकार का पेय 3. वासंती लता जिसके सुगंधि श्वेत फूल आते हैं—एत्राणामिव शोषणेन मरुता स्पृष्टा लता माधवी—श० ३।१० मेघ० ७८ 4. तुलसी 5. कुट्टिनी, दूती। **सम०—लता** वासंती लता, **वनम्** माधवी लताओं का उद्यान।

माधवीय (वि०) [माधव+छ] माधवसंबंधी।

माधुकर (वि०) (स्त्री०—री) [मधुकर+अण्] भौंरे से संबद्ध या मिलता-जुलता, जैसा कि 'माधुकरी वृत्ति' में,—**री** 1. घर २ जाकर भिक्षा मांगना, जिस प्रकार मधुमक्खी एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर मधु एकत्र करती है 2. पाँच भिन्न २ स्थानों से प्राप्त भिक्षा।

माधुरम् [मधुर+अण्] मल्लिका लता का फूल।

माधुरी [माधुर+ङीप्] 1. मिठास, मधुर या मजेदार स्वाद बदने तव यत्र माधुरी सा—भामि० २।१६१, —कामालसस्त्रवंमाधरमाधुरीमधरयन् वाचां विपाको मम—४।४२, ३७।४३ 2. खींची हुई शराब।

माधुर्यम् [मधुर+ष्यञ्] 1. मिठास, सुहावनापन—माधुर्यमौष्ट हरिणात् ग्रहीतुम्,—रघु० १८।१३ 2. आकर्षक सौंदर्य, उत्कृष्ट सौन्दर्य,—रूपं किमप्यनिर्वाच्यं तनोर्माधुर्यमुच्यते 3. (काव्य० में) मिठास, (मम्मट के अनुसार) काव्य रचनाओं में पाये जाने वाले तीन मुख्य गुणों में से एक—चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते—सा० द० ६०६, दे० काव्य० ८ भी।

माध्य (वि०) [मध्य+अण्] केन्द्री, मध्यवर्ती।

माध्यन्दिनः [मध्यंदिन+अण्] वाजसनेयिसंहिता की एक शाखा,—**नम्** शुक्लयजुर्वेद की एक शाखा जिसका अनुसरण माध्यदिन करते हैं।

माध्यम (वि०) (स्त्री०—मी) [मध्यम+अण्] मध्यवर्ती अंश से संबद्ध, केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बिल्कुल मध्य का।

माध्यमक (वि०) (स्त्री०—मिका), **माध्यमिक** (वि०) (स्त्री०—की) [मध्यम+वुञ्, ठक् वा] मध्यवर्ती, केन्द्रीय।

माध्यस्थ्यं, माध्यस्थ्यम् [मध्यस्थ+अण्, ष्यञ् वा] 1. निष्पक्ष होना, तटस्थता, उदासीनता—अभ्यर्थनाभङ्गभयेन साधुमध्यिस्थमिष्टेष्वलंबतेऽर्थे—कु० १।५२, 3. मध्यस्थीकरण, बीचबचाव करना।

माध्याह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [मध्याह्न+ठक्] दोपहर से संबंध रखने वाला।

माध्व (वि०) (स्त्री०—ध्वी) [मधु+अण्] मधुर, मीठा, —**ध्वः** [मध्व+अण्] मध्वाचार्य का अनुयायी,—**ध्वी** एक प्रकार की शराब जो मधु से तैयार की जाती है।

माध्वीकम् [मधुना मधूकपुष्पेण निर्वृत्तम्—ईकक्] एक प्रकार की शराब जो मधूक वृक्ष के फूलों से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तैयार की जाती है—चचाम मधु माध्वीकम्- भट्टि० १४।९४ 2. अंगूरों से खींची हुई शराब साध्वी माध्वीकचिन्ता न भजति भवतः---गीत० १२ (=मधु—टी०) 3. अंगूर। सम०—फलम् एक प्रकार का नारियल।

मान् i (स्वा० आ० 'मन्' का इच्छा०=मीमांसते) ii (स्वा० पर०, चुरा० उभ०=मन्' का प्रेर०)

मानः [मन्+घञ्] आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, सादर विचार—मानद्रविणात्पता-पंच० २।१५९, भग० ६।७, इसी प्रकार 'मानधन' आदि 2. गर्व (अच्छे भाव में) आत्मनिर्भरता, आत्मप्रतिष्ठा—जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समागतिः पंच० १।१०६, रघु० १६।८१ 3. अहंकार, घमण्ड, अवलेप, आत्मविश्वास 4. सम्मान की आहत भावना 5. ईर्ष्यायुक्त क्रोध, डाह के कारण उद्दीप्त रोष (विशेषतः स्त्रियों में), क्रोध, मुझ मयि मानमनिदानम्—गीत० १०, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये—९, शि० ९।८४, भामि० २।५६—नम् 1. मापना 2. माप, मापदण्ड 3. आयाम, संगणना 4. मापदण्ड, मापने का डंडा, मानदण्ड 5. प्रमाण उत्ताधिकार, प्रमाण या प्रदर्शन के साधन,—येऽमी माधुर्योज:प्रसादा रसमात्रधर्मतयोक्तास्तेषां रसधर्मत्वे किं मानम्- रस०, मानाभावात्, (विवादास्पद भाषा में बहुधा प्रयुक्त) 6. समानता, मिलना-जुलना। सम०—आसक्त (वि०) दर्पवान्, अहंकारी, घमंडी,—उन्नतिः (स्त्री०) बहुत आदर, भारी सम्मान,- उन्मादः घमंड का नाश,- कलहः,- कलिः ईर्ष्यायुक्त क्रोध से उत्पन्न झगड़ा,—क्षतिः (स्त्री०) —क्षयः,- हानिः (स्त्री०) सम्मान की क्षति, दीनता, अपमान, अप्रतिष्ठा,—ग्रन्थिः सम्मान या गर्व की क्षति—द्र (वि०) 1. सम्मान करने वाला 2. घमंडी,—दण्डः मापने का डंडा, गज—स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः—कु० ११।१, —धन (वि०) सम्मानरूपी धन से समृद्ध—मद्दीजसो मानधना धनार्चिताः किं० १।१९, —धानिका ककड़ी, —परिच्छदनम् मानच्छेदः, दीनता,—भङ्गः दे० 'मानक्षति', —महत् (वि०) गौरव से समृद्ध, अत्यंत दर्बीला —किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९, - योगः माप तोल की ठीक रीति—मनु० ९।३२०, - रन्ध्रा एक प्रकार की जलमड़ी, एक छिद्र-युक्त जलकलश जो पानी में रखा हुआ शनैः शनैः भरता रहता है, उसी से समय की माप की जाती है, सूत्रम् 1. मापने की डोरी 2. (सोने की) जंजीर जो शरीर में पहनी जाय, करधनी।

मानःशिल (वि०) [मनःशिला+अण्] मैनसिल से युक्त।

मानकं,-का [मान्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् च] 1. सम्मान करना, आदर करना 2. हत्या—शि० १६।२।

माननीय (वि०) [मान्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, औदरणीय, प्रतिष्ठित होने का अधिकारी (सब० के साथ) मेनां मुनीनामपि माननीयाम्—कु० १।१८, रघु० १।११।

मानव (वि०) (स्त्री० -वी) [मनोरपत्यम् अण्] मनु से संबंध रखने वाला, या मनु के वंश में उत्पन्न —मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रसवितारं सवितारम्—उत्तर० ३, मनु० १२।१०७ 2. मानवसंबंधी,—वः 1. मनुष्य, आदमी, इंसान,- मनोर्वंशो मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽभवत्, ब्रह्मक्षत्रादयस्तस्मान्मनोर्जातास्तु मानवाः—महा०, मनु० २।९, ५।३५ 3. मनुष्यजाति (द० द०),—वम् एक विशेष प्रकार का दंड। सम०—इन्द्रः,—देवः, —पतिः मनुष्यों का स्वामी, राजा, प्रभु—रघु० १४।३२ —धर्मशास्त्रम् मनुसंहिता, मनुस्मृति,- राक्षसः मनुष्य के रूप में राक्षस या पिशाच तेऽमी मानव-राक्षसा. परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये—भर्तृ० २।७४।

मानवत् (वि०) [मान+मतुप्, वत्वम्] घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, दर्पवान्, - ती घमंडी या दर्पोद्धत स्त्री (ईर्ष्या के कारण क्रुद्ध)।

मानव्यम् [मानव+यत्] (माणव्यम् भी) लड़कों का समूह।

मानस (वि०) (स्त्री०-सी) [मन एव, मनस इदं वा अण्] 1. मन से संबंध रखने वाला, मानसिक, आत्मिक (विप० शारीरिक) 2. मन से उत्पन्न, इच्छा से उदित—कि मानसीं सृष्टिः—श० ४, कु० ११।८, भग० १०।६ 3. केवल मनसा विचारणीय, कल्पनीय 4. उपलक्षित, ध्वनित 5. 'मानस' सरोवर पर रहने वाला,—सः विष्णु का एक रूप,—सम् 1. मन, हृदय —सादि मदनानलो दहति मम मानसम्—गीत० १०, अपि च मानसमण्डनविधिः—भामि० १।११३, मानस विषयेवेना (भाति) ११६ 2. कैलास पर्वत पर स्थित एक पुनीत सरोवर—कैलासशिखरे रम्ये मनसा निर्मितं सरः, चक्रुणा प्रागिदं यस्मान्मानसं भूरमानसं सरः। रामा० (कहा जाता है कि यह सरोवर ही राजहंसों की जन्मभूमि है, राजहंस प्रतिवर्ष प्रसवकाल के आरंभ होने के अवसर पर या दरसाती हवाओं के आगमन पर इस सरोवर के तट पर आ विराजते हैं—मेघ-श्यामा दिशो दृष्ट्वा मानसोत्सुकचेतसाम्, कूजितं राजहंसानां नेदं नूपुरशिञ्जितम्—विक्रम० ४।१४, १५, यस्यास्तोयं कृतवसतयो मानसं संनिकृष्टं नाध्यास्यन्ति व्यगतमुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसाः—मेघ० ७९ दे० मेघ० ११, घट० ९ भी) रघु० ६।२६, मेघ० ६२, भामि० १।३ 3. एक प्रकार का नमक। सम०—आलयः राजहंस, मराल, उत्क (वि०) मानसरोवर जाने के लिए उत्सुक मेघ० ११,—ओकस्,—चारिन् (पुं०) राजहंस—जन्मन् (पुं०) 1. कामदेव 2. राजहंस।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानसिक (वि०) (स्त्री० की) [मनस् + ठञ्] मन से उत्पन्न, मन सम्बन्धी, आत्मिक,—कः विष्णु का विशेषण।

मानिका [मन्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार की खींची हुई शराब 2. एक प्रकार का तोल।

मानित [भू० क० कृ०) [मान+इतच्] सम्मानित, आदर-प्राप्त, प्रतिष्ठित।

मानिन् (वि०) [मान्+णिनि] 1. मानने वाला, समझने वाला, अभिमान करने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि 'पंडितमानिन्' में 2. सम्मान करने वाला, आदर करने वाला (समास के अन्त में) 3. अभिमानी, घमण्डी आत्माभिमानी—पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्—किं० १।४१, परवृद्धिमसूरि मनो हि मानिनाम्—शि० १५।१ 4. आदरणीय, अतिसम्मानित —भट्टि० १९।२४ 5. अवज्ञापूर्ण, क्रोधयुक्त, रुष्ट (पुं०) सिंह, —नी 1. आत्माभिमानिनी स्त्री, दृढ़ संकल्प वाली, पक्के निश्चयवाली, गर्वयुक्त (अच्छे अर्थों में)—चतुर्दि-गीक्षानवमत्यमानिनी कु० ५।५३, रघु० १३।३८ 2. कुपित स्त्री, (ईर्ष्यायुक्त गर्व के कारण) अपने पति से रुष्ट—माधवे मा कुरु मानिनि मानमये—गीत० १, कि० २।३६ 3. एक प्रकार का सुगन्धयुक्त या महकदार तौधा।

मानुष (वि०) (स्त्री०—षी) [मनोरयम् अण्, मुक् च] 1. मनुष्य की, मानवी, इंसानी—मानुषी तनुः, मानुषी वाक् - रघु० १।६०, १६।२२, मृग० ४।१२, ६।११, मनु० ४।१२४ 2. कृपालु, दयालु,—षः 1. मनुष्य, मानव, इंसान 2. मिथुन, कन्या और तुला राशियों का विशेषण,—षी स्त्री,—षम् 1. मनुष्यत्व 2. मानव प्रयत्न या कर्म।

मानुषक (वि०) (स्त्री—की) [मानुष+कन्] मनुष्य सम्बन्धी, इंसानी, मरणशील, मर्त्य।

मानुष्यम्, मानुष्यकम् [मनुष्य—अण्, वुन् वा] 1. मानव प्रकृति, मनुष्यत्व, इंसानियत 2. मनुष्य जाति, मानव-संतति 3. मानवसमुदाय।

मानोज्ञकम् [मनोज्ञ+वुञ्] सौन्दर्य, प्रियता, मनोहरता।

मान्त्रिकः [मन्त्र+ठक्] वह जो मंत्र-तंत्र से सुपरिचित है, जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक।

मान्द्यम् [मन्थर+ष्यञ्] 1. मन्थरता, मन्दता, अकर्मण्यता 2. दुर्बलता।

मान्दारः, मान्दारवः [मन्दार+अण्] एक प्रकार का वृक्ष।

मान्द्यम् [मन्द+ष्यञ्] 1. मन्दता, सुस्ती, मन्थरता 2. जड़ता 3. दुर्बलता, निर्बल स्थिति, अग्निमांद्य 4. विराग, अनासक्ति 5. रोग, बीमारी, अस्वस्थता।

मान्धातृ(पुं०) [मां धास्यति—मान्+धे+तृच्] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा (जो पिता के पेट से उत्पन्न हुआ था), ज्योंही वह पेट से बाहर निकला कि ऋषियों ने पूछा 'कम् एष धास्यति', इस पर इन्द्र नीचे उतरा और उसने कहा "मां धास्यति", इसीलिए वह बालक 'मांधातृ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मान्य (वि०) (स्त्री०—र्या) [मन्मथ+अण्] काम से संबंध रखने वाला या काम से उत्पन्न—आचार्यकं विजयि मान्मथमाबीरासीत्—मा० १।२६, २।४।

मान्य (वि०)[मान् अर्चायां कर्मणि ण्यत्] 1. मान करने के योग्य, आदरणीय—अहमपि तव मान्या हेतुभिस्तैश्च तैश्च—मा० ६।२६ 2. आदर किये जाने के योग्य, सम्माननीय, श्रद्धेय ··· रघु० २।४५, याज्ञ० १।११।

मापनम् मा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. मापना 2. रूप बनाना, बनाना, —नः तराजू।

मापत्यः [मा विद्यते अपत्यं यस्य] कामदेव।

माम (वि०) (स्त्री०—मी) [मम इदम्—अस्मद्+अण्, ममादेशः] 1. मेरा 2. (संबोधन में) चाचा।

मामक (वि०) (स्त्री०—मिका)[अस्मद्+अण्, ममकादेशः] मेरा मेरे पक्ष से संबंध रखने वाला,—मामकाः पाण्ड-वाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय—भग० १।१ 2. स्वार्थी, लालची, लोभी,—कः 1. कंजूस 2. माया।

मामकीन (वि०) [अस्मद्+खञ्, ममकादेशः] मेरा —यो मामकीनस्य मनसो द्वितीयम् निबंधनम्—मा० २, भामि० २।३२, ३।६।

मायः [माया अस्ति अस्य—माया—अच्] 1. जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक 2. राक्षस, भूत प्रेत।

माया [मीयते अनया—मा+य+टाप् दा० नेत्वम्] 1. धोखा, जालसाजी, कपट, धूर्तता, दाँव, युक्ति, चाल - पंच० १।३५९ 2. जादूगरी, अभिचार, जादू-टोना, इन्द्रजाल—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श० ६।७ 3. अवास्तविक या मायावी बिंब, कल्पनासृष्टि, मनोलीला, अवास्तविक आभास, छाया—मायां मयो-द्भाव्य परीक्षितोऽसि · रघु० २।६२, प्रायः समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'मिथ्या' 'आभास' 'छाया' अर्थ को प्रकट करता है —उवा० मायावचनम् 'मिथ्या शब्द', मायामृग आदि 4. राजनैतिक दांवपेंच, चाल, युक्ति, कूटनीति की चाल 5. (वेदान्त० में) अवास्तविकता, एक प्रकार की भ्रान्ति जिसके कारण मनुष्य इस अवास्तविक विश्व को वास्तविक तथा परमात्मा से भिन्न अस्तित्ववान् समझता है 6. (सांख्य० में) प्रधान या प्रकृति 7. दुष्टता 8. दया, करुणा 9. बुद्ध की माता का नाम। सम०—आकार धोखे से काम करने वाला, -आत्मक (वि०) मिथ्या, भ्रान्तिमान्,—उपजीविन् (वि०) जालसाजी और कपटपूर्ण जीवन बिताने वाला—पंच० १।२८८, —कार, कृत्, -जीविन् (पुं०) जादूगर, बाजीगर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—द्वः मगरमच्छ,—देवी बुद्ध की माता का नाम, °सुतः बुद्ध, भर (वि०) कपटपूर्ण, भ्रमात्मक,—पद् (वि०) धोखा देने में कुशल, जालसाज, ठग,—प्रयोगः 1. धोखा, जालसाजी या दाँवपेंच का प्रयोग 2. जादू का प्रयोग,—मृग (वि०) मिथ्याहरिण, भ्रमात्मक या छाया मृग,—यंत्रम् जादू-टोना,—योगः जादू करना, —वचनम् झूठे या कपटपूर्ण शब्द,—वादः भ्रान्ति का सिद्धांत इस सिद्धान्त के अनुसार सारी सृष्टि मिथ्या समझी जाती है, वुद्धवाद, विद् (वि०) कपट जाल रचने में कुशल, या जादू की कला,—सुतः बुद्ध का विशेषण।

मायावत् (वि०) [माया+मतुप्] 1. कपटपूर्ण, जालसाज 2. भ्रान्तियुक्त, अवास्तविक, भ्रमोत्पादक 3. इन्द्रजाल की कला में कुशल, जादू की शक्ति लगाने वाला —पुं० कंस का विशेषण,—ती प्रद्युम्न की पत्नी का नाम।

मायाविन् (वि०) [माया अस्त्यर्थे विनि] 1. धोखेबाजी या चाल से काम लेने वाला, कूटयुक्ति का प्रयोग करने वाला, धोखेबाज, जालसाज—अर्जन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः—किं० १।३० 2. जादू के कार्य में कुशल 3. अवास्तविक, भ्रान्तिजनक, (पुं०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर 2. बिल्ली, नपुं० मांसफल।

मायिक (वि०) [माया+ठन्] 1. कपटमय, जालसाज 2. भ्रान्तिमान्, अवास्तविक,—कः जादूगर,- कम् मांसफल।

मायिन् (वि०) [माया+इनि] दे० मायाविन्,—पुं० 1. बाजीगर 2. धूर्त, ठग 3. ब्रह्मा या काम का नामान्तर।

मायुः [भि+उण्] 1. सूर्य 2. पित्त, पैत्तिक रस (इस अर्थ में नपुं० भी)।

मायूर (वि०) (स्त्री० °री) [मयूर+अण्] 1. मोर से संबंध रखने वाला, या मोर से उत्पन्न होने वाला 2. मोर के पंखों से बना हुआ 3. (गाड़ी की भांति) मोर द्वारा खींचा जाने वाला 4. मोर को प्रिय, -रम् मोरों का समूह।

मायूरकः, मायूरिकः [मयूर+वुञ्, ठक् वा] मोर पकड़ने वाला।

मारः [मृ+घञ्] 1. हत्या, वध, कतल अशेषप्राणिनामासीदमारो देश वत्सरान् राजत० ५।६४ 2. बाधा, विघ्न, विरोध 3. कामदेव,—स्यात्मा कुटिलः करोतु कबरीभारोऽपि भारोत्तमम् - गीत० ३ (यहाँ 'भार' का मुख्य अर्थ 'हत्या' है) —नाग० १।१ 4. प्रेम, प्रणयोन्माद 5. धतूरा 6. अनिष्ट, (बौद्धों के अनुसार) विनाशक। सम०—अङ्क (वि०) 'प्रेमचिह्नित' प्रेम के संकेत करने वाला मारांङ्क रतिकेलिसंकुलरणारम्भे —गीत० १२, अनिभृ (भृः ?) बुद्ध का विशेषण,—अरिः °रिपु शिव,—आत्मक (वि०) हत्यारा—कथं भारात्मके त्वयि विश्वासः कर्तव्यः —हि० १,—जित् (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. बुद्ध का विशेषण।

मारकः [मृ+णिच्+ण्वुल्] 1. कोई घातक रोग, महामारी, 2. कामदेव 3. हत्या करने वाला, विनाशकर्ता 4. बाज।

मारकत (वि०) (स्त्री०-ती) [मरकत+अण्] पन्ने से संबद्ध,—काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम् —हि० प्र० ४१।

मारणम् [मृ+णिच्+ल्युट्] 1. हत्या, वध, कतल, विनाश —पश्यामारणकर्मदारुणः—शृं० ६।१ 2. शत्रु का विनाश करने के लिए किया गया जादूटोना 3. फूंकना, राख कर देना 4. एक प्रकार का विष।

मारिः (स्त्री०) [मृ+णिच्+इन्] 1. घातकरोग, महामारी 2. हत्या, बर्बादी, विनाश।

मारिच (वि०) (स्त्री० °ची) [मरिच+अण्] मिर्च का बना हुआ।

मारिषः [मा रिष्यति हिनस्ति—भा+रिष्+क] किसी मुख्य पात्र को सूत्रधार द्वारा नाटक में संबोधित करने के लिए सम्मानयुक्त रीति, आदरणीय, श्लाघ्य—दे० उत्तर० १, मा० १।

मारी [मारि+ङीष्] 1. प्लेग, घातक रोग, संक्रामक रोग 2. घातक या मारक रोगों की अधिष्ठात्री देवता दुर्गा।

मारीचः (पुं०) 1. ताड़का और सुन्द राक्षस की सन्तान, मारीच नाम का राक्षस। यह स्वर्णमृग का रूप धारण करके राम को सीता से दूर भगा ले गया जिससे कि रावण को सीता का अपहरण करने का अवसर मिल गया 2. एक विशाल या राजकीय हाथी 3. एकांर का पौधा,—चम् मिर्च की झाड़ियों का समूह।

मारुतः (पुं०) 1. सांप का अण्डा 2. गोबर 3. पथ, मार्ग, सड़क।

मारुत (वि०) (स्त्री०-ती) [मरुत्+अण्] 1. मरुत् संबंधी या मरुत् से उत्पन्न होने वाला 2. वायु से संबंध रखने वाला, वायवी, हवाई,—तः 1. हवा—रघु० २।१२, ३४, ४।५४, मनु० ४।१२२ 2. वायु का देवता, पवन की अधिष्ठात्री देवता 3. श्वास लेना 4. प्राण, शरीर के तीन मूल रसों (वात, पित्त, कफ) में से एक 5. हाथी की सूंड,—तम् स्वाति नाम का नक्षत्र। सम०—अशनः सांप—आत्मजः—सुतः, —सूनुः 1. हनुमान् के विशेषण 2. भीम के विशेषण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारुतिः [मरुतोऽपत्यम् इञ्] 1. हनुमान् का विशेषण रघु० १२।६० 2. भीम का विशेषण।

मार्कंडः, मार्कण्डेयः [मृकण्डोः अपत्यम्—अण्, मृकण्डु+ढक्] एक प्राचीन ऋषि का नाम। सम०—**पुराणम्** (इस ऋषि द्वारा प्रणीत) एक पुराण।

मार्ग् । (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मार्गेति, मार्गयति-ते) 1. खोजना, ढूंढना 2. तलाश करना, पीछे पड़ना 3. प्राप्त करने का प्रयत्न करना, कोशिश करते रहना—आत्मोत्कर्षं न मार्गेत परेषां परिनिन्दया, स्वगुणैरेव मार्गेत विप्रकर्षं पृथग्जनात्—सुभा० 4. निवेदन करना, प्रार्थना करना, याचना करना—वरं वरेण्यो नृपतेरमार्गितुः भट्टि० १।१२, याज्ञ० २।६६, 5. विवाह के लिए मांगना।

ii (चुरा० उभ० मार्गयति ते) 1. जाना, हिलना-जुलना, 2. सजाना, अलंकृत करना। **परि**—, खोजना, ढूंढना।

मार्गः । मार्ग्+घञ् । 1. रास्ता, सड़क, पथ (आङ० भी) अग्निशरणमार्गमादेशय—श० ५, इसी प्रकार—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२, रघु० २।७२ 2. क्रम, रास्ता, भूखंड (जो पार कर लिया गया हो)—वार्योरिमं पारंवहस्य वदन्ति मार्गम्—श० ७।७ 3. पहुंच, परास—कि० १८।४० 4. किण, व्रणचिह्न रघु० ४।४८ १४।४ 5. प्रहपथ 6. खोज, पूछताछ, गवेषणा 7. नहर कुल्या, जलमार्ग 8. साधन, रीति 9. सही मार्ग, उचित पथ सुयोग, अभार्ग 10. पद्धति, रीति, प्रणाली, क्रम, चलन-शांति°—रघु० ७।७१, इसी प्रकार कुल° शास्त्र° धर्म० आदि 11. शैली, वाक्यविन्यास—इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दश गुणाः स्मृताः—काव्य० १।४१, वाचां विचित्रमार्गाणाम्—१।९ 12. गुदा, मलद्वार 13. कस्तूरी 14. 'मृगशिरस्' नाम का नक्षत्र 15. मार्गशीर्ष का महीना। सम०—**तोरणम्** सड़क पर बनाया गया उत्सवसूचक महराबदार द्वार—रघु० ११।५, **दर्शकः** पथप्रदर्शक, **धेनुः, धेनुकम्** चार कोस की दूरी, **बन्धनम्** रोक, आड़, —**रक्षकः** सड़क का रखवाला, सड़क पर पहरा देने वाला,—**शोधकः** दूसरे के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला, त्य (वि०) यात्रा करने वाला, बटोही, —**हर्म्यम्** राजपथ पर बना हुआ महल।

मार्गकः [मार्ग+कन्] मार्गशीर्ष का महीना।

मार्गणम्,—ना [मार्ग्+ल्युट्] 1. याचना करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना 2. खोजना, तलाश करना, ढूंढना 3. गवेषणा करना, पूछताछ करना, जांचपड़ताल करना,—**णः** 1. भिक्षुक, अनुनय विनय करने वाला, साधु 2. बाण—दुर्वारः स्मरमार्गणः—काव्य० १०, अभेदि तत्तादृगनङ्गमार्गणैर्यदस्य पौष्पैरपि धैर्यकञ्चुकम्—नै० १।४६, विक्रम १।७७, रघु० ९।१७, ६५ 3. 'पांच' की संख्या।

मार्गशिरः, मार्गशीर्षः (पुं०) **मार्गशीर्षी** [मृगशिरा+अण्, मृगशीर्ष+अण्] (नवंबर और दिसंबर में पड़ने वाला) हिन्दुओं का नवां महीना जिसमें कि पूर्णचन्द्रमा मृगशिरस् नक्षत्र में विद्यमान है।

मार्गशिरी, मार्गशीर्षी [मार्गशिर+ङीष्, मार्गशीर्ष+ङीष्] मार्गशीर्ष के महीने में आने वाली पूर्णमासी का दिन।

मार्गिकः [मृगान् हन्ति—मृग+ठक्] 1. यात्री 2. शिकारी।

मार्गित (भू० क० कृ०) [मार्ग्+क्त] 1. खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, पूछताछ किया हुआ, 2. जिसके पीछे २ फिरा गया हो, अभीष्ट, निवेदित।

मार्ज् (चुरा० उभ० मार्जयति-ते) 1. निर्मल करना, स्वच्छ करना, पोंछना—तु० मृज् 2. ध्वनि करना।

मार्जः [मृज् (मार्ज् वा)+घञ्] 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना 2. धोबी 3. विष्णु का विशेषण।

मार्जक (वि०) (स्त्री० **जिका**) [मृज्+ण्वुल्] स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला, धोने वाला।

मार्जन (वि०) (स्त्री० **नी**) स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला,—**नम्** 1. स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2. पोंछ देना, रगड़ कर मिटा देना 3. साफ कर देना, पोंछ डालना 4. उबटन से मल मल कर शरीर स्वच्छ करना 5. हाथ से या कुशा से शरीर पर जल के छींटे डालना,—**नः** लोध्रवृक्ष,—**ना** 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, साफ करना 2. ढोल की आवाज—मायूरी मदयति मार्जना मनांसि—मालवि० १।१८,—**नी** बुहारी, लंबी झाड़ू या ब्रुश।

मार्जारः (लः) बिलाव कपाले मार्जारः पय इति करालेहि शशिनः—काव्य० १० 2. गंधमार्जार। सम०—**कण्डः** मोर, **-करणम्** एक प्रकार का मैथुन या रतिबन्ध।

मार्जारिकः 1. बिलाव 2. मोर।

मार्जारी 1. बिल्ली 2. मूषक बिलाव, ओतु 3. कस्तूरी।

मार्जारीयः 1. बिलाव 2. शूद्र।

मार्जितम्* (भू० क० कृ०) 1. स्वच्छ किया हुआ, मल-मल कर मांजा हुआ, निर्मल किया हुआ 2. बुहारा हुआ, झाड़ू या ब्रुश से साफ किया हुआ 3. अलंकृत किया हुआ।

मार्जिता दही में चीनी और मसाले डाल कर बनाया गया स्वादिष्ट पदार्थ, श्रीखंड।

मार्तण्डः 1. सूर्य—अयं मार्तण्डः कि स खलु नृपतिः सप्तभिरितः—काव्य० १०, उत्तर० ६।३ 2. मदार का पौधा 3. सूअर 4. बारह की संख्या ('मार्तण्ड' भी)।

मार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) मिट्टी का बना हुआ, मिट्टी का,—**कः** 1. एक प्रकार का घड़ा 2. घड़े का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठक्कुर, पाली, कम् मिट्टी का लौंदा गुरुमध्ये हरिनाखी मालिकशकलैर्निरन्तरकामं मार्ष्म्—भामि० २।४९।

मार्त्यम् मरणशीलता।

मार्दङ्गः—ढोलकिया, मृदंग बजाने वाला,—ग्रम् नगर, कस्बा।

मार्दङ्गिकः मृदंग बजाने वाला, ढोलकिया।

मार्दवम् मृदुता (शा० और आलं०) लचीलापन, दुर्बलता अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु रघु० ८।४३, 'मृदु हो जाता है', स्वशरीर-मार्दवम् कु० ५।१८ 2 नरमी, कृपा, कोमलता, उदारता भग० १६।२।

मार्दीक (वि०) (स्त्री० की) अंगूरों से बनाया हुआ, कम् शराब शि० ८।३०।

मार्मिक (वि०)—गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, तत्त्व सौन्दर्यादिक से पूर्ण परिचित,(मर्मज्ञ दे०)—मार्मिकः को मरन्दनामन्तरेण मधुव्रतम् भामि० १।११७, ९।८, ४।४०।

मार्ग्यः दे० मार्गिय।

मार्ष्टिः (स्त्री०) स्वच्छ करना, मलमलकर मांजना, निर्मल करना।

मालः 1. बंगाल के पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम में एक जिले का नाम 2. एक बर्बर जाति का नाम, पहाड़ी 3. विष्णु का नाम,—लम् 1. मैदान 2. ऊँची भूमि, उठी हुई या उन्नत की हुई भूमि (मालमुन्नतभूतलम्) क्षेत्रमारुह्य मालम् मेघ० १६ (शैलप्रायमुन्नतस्थलम् मल्लि०) 3. धोखा, जालसाजी। सम०—चक्रकम् कूल्हे का जोड़।

मालकः 1. नीम का पेड़ 2. गांव के पास का जंगल 3. नारियल के खोल से बना पात्र,—कम् माला।

मालतिः, ती (स्त्री०) (सुगंधित श्वेत फूलों से युक्त) एक प्रकार की चमेली—तन्मध्ये क्वचिदुद्भूतकरुणं नास्वादिता मालती—गण०, जालकैर्मालतीनाम्—मेघ० ९८ 2. मालती का फूल—शिरसि बकुलमालां मालतीभिः समेतां—ऋतु० २।२४ 3. कली, सामान्य फूल 4. कन्या, तरुणी 5. रात 6. चांदनी। सम०—आरकः सुहागा, —पत्रिका जायफल का छिलका,—फलम् जायफल,—माला मालती या चमेली के फूलों की माला।

मालय (वि०) (स्त्री० यी) मलय पर्वत से आने वाला, यः चंदन की लकड़ी।

मालवः 1. एक देश का नाम, मध्यभारत में वर्तमान मालवा 2. राग का नाम, या स्वरग्राम की रीति, —वाः (ब० व०) मालवा प्रदेश के अधिवासी। सम०—अधीशः—इन्द्रः,—नृपतिः मालवा का राजा।

मालवकः—1. मालव जातियों का देश 2. मालवा का निवासी।

मालसी एक पौधे का नाम।

माला 1. हार, स्रज्, गजरा अनधिगतपरिमलाऽपि हि हरति दृशं मालतीमाला वाम० 2. रेखा, पंक्ति, सिलसिला, श्रेणी या तांता गण्डोड्डीनालिमाला ··मा० १।१, आब्रह्ममालाः मेघ० ९ 3. समूह, झुरमुट, समुच्चय 4. लड़ी, कण्ठहार जैसा कि 'रत्नमाला' में 5. जपमाला, जंजीर—जैसा कि 'अक्षमाला' में 6. लकीर, लहर, काँच जैसा कि 'तडिन्माला' और 'विद्युन्माला' में 7. विशेषणों का सिलसिला 8. (नाटक में) अपने मनोरथ की सिद्धि के लिए नाना वस्तुओं का उद्धार। सम० उपमा उपमा का एक भेद जिसमें एक उपमेय की अनेक उपमानों से तुलना की जाती है उदा० अन्वयेनेव राज्ञोर्दैन्येनेव मनस्विता, मल्लौ साथ विपादेन पथिनीव हिमाम्भसा काव्य० १०, करः, कारः 1. हार बनाने वाला, फूल-विक्रेता, माली, कृती मालाकारो बकुलमपि कुर्वाणि निदधे भामि० १।५४, पंच० १।२२० 2. मालियों की एक जाति,—तृणम् एक प्रकार का सुगंधित घास, —दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, मम्मट ने इसकी परिभाषा बताई है मालादीपकमाद्यं चेद्यथोत्तरगुणावहम् —काव्य० १०, उदा० देखें उसी स्थान पर।

मालिकः 1. फूलों का व्यापारी, माली 2. रंगने वाला, रंगरेज।

मालिका 1. माला 2. पंक्ति, रेखा, सिलसिला 3. लड़ी, कण्ठहार 4. चमेली का एक प्रकार 5. अलसी 6. बेटी 7. मडूल 8. एक प्रकार का पक्षी 9. मादक पेय।

मालिन् (वि०) 1. माला पहनने वाला 2. (समास के अन्त में) मालाओं से सम्मानित, हारों से सुशोभित गजरों से लपेटा हुआ समुद्रमालिनी पृथ्वी, अंशुमालिन्, मरीचिमालिन्, ऊर्मिमालिन् आदि, नपुं० फूलमाली, हार बनाने वाला,—नी 1. फूलमालिन्, हार बनाने वाले की पत्नी 2. चम्पा नगरी का नाम 3. सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे 4. दुर्गा का नाम 5. स्वर्गंगा 6. एक छंद का नाम दे० परिशिष्ट १।

मालिन्यम् 1. मैलापन, गंदगी, अपवित्रता 2. मलिनता, दूषण 3. पापपूर्णता 4. कालिमा 5. कष्ट, दुःख।

मालुः (स्त्री०) 1. एक प्रकार की लता 2. एक स्त्री। सम०—घानः एक प्रकार का साँप।

मालूरः 1. बेल का वृक्ष 2. कैथ का वृक्ष।

मालेया बड़ी इलायची।

माल्य (वि०) हार के उपयुक्त या हार से संबद्ध,—ल्यम् 1. हार, गजरा—माल्येन तां निर्वचनं जघान कु०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७।१९, कि० १।२१ 2. फूल -भग० ११।११, मनु० ४।७२ 3. सुमिरनी या शिरोमाल्य। सम० **आपणः** फूलों की मंडी, **जीवकः** फूलमाली, मालाकार,—**पुष्पः** पटसन,—**वृत्तिः** फूलों का व्यापारी।

माल्यवत् (वि०) माला धारण किए हुए, हारों से सुशोभित (पुं०) 1. एक पर्वत या पर्वतश्रृंखला का नाम —उत्तर० १।३३, रघु० १३।२६ 2. सुकेतु का पुत्र एक राक्षस (माल्यवान् रावण का मामा और मंत्री था, उसकी बहुत सी योजनाओं में वह महायता देता था, अपने पूर्वकाल में घोर तपस्या द्वारा उसने ब्रह्मा को प्रसन्न किया। इसके फलस्वरूप उसके लंकाद्वीप की सृष्टि की गई। कुछ वर्षों तक अपने भाइयों समेत वहाँ रहा, परन्तु बाद में उसने लंका को छोड़ दिया। कुबेर ने फिर लंका पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् फिर जब रावण ने कुबेर को निर्वासित कर दिया तो माल्यवान् फिर अपने बंधु-बांधवों समेत वहाँ आ गया और बरसों रावण के साथ रहा)।

माल्यः एक प्रकार की वर्णसंकर जाति।

माल्लवी कुश्ती या मुक्केबाजी की प्रतियोगिता।

माषः 1. उड़द (एक बचन पौधे के अर्थ में तथा ब० व० फल या बीज के अर्थ में) निलेभ्यः प्रतियच्छति मायान् सिद्धः 2. सोने की एक विशेष तौल, माशा - मापो विंशतिमो भागः पणस्य परिकीर्तितः—या— गुञ्जाभिर्दशभिर्माषः 3. मूर्त, बूंदबू। सम० **अदः**, **आदः** कलुआ— **आढ्यम्** धी के साथ पकाये हुए उड़द, **आशः** घोड़ा, **ऊन** (वि०) एक माशा कम, — **वर्धकः** सुनार।

माषिक (वि०) (स्त्री० **की**) एक माशे के मूल्य का।

माषीणम्, माष्यम् उड़दों का खेत।

मास् (गु०) = मास देo (पहले पांच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि० के द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से 'मास' के स्थान में 'मास्' आदेश हो जाता है)।

मासः, सम्—महीना (यह चांद्र, सौर, सावन, नाक्षत्र या बार्हस्पत्य में से कोई भी हो सकता है)—न मासे प्रतिपत्तासे मां वेन्मतीसि मैथिलि—भट्टि० ८।९५, 2. 'बारह' की संख्या। सम० **अनुमासिक** (वि०) प्रतिमास होने वाला, - **अन्तः** अमावस्या का दिन, - **आहार**(वि०)मास में केवल एक बार खाने वाला, — **उपवासिनी** 1. पूरा महीना भर उपवास रखनेवाली स्त्री 2. कुट्टिनी, लम्पट या दुश्चरित्र स्त्री (व्यंग्योक्ति-पूर्वक), - **कालिक** (वि०) मासिक,—**जात** (वि०) एक मास का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना हो चुका है, -**ज्ञः** एक प्रकार का जलकुक्कुट,—**शेष** (वि०) जिसे महीने भर में चुकाना हो,—**प्रमितः** अमावस्या या प्रतिपदा का चंद्रमा, -**प्रवेशः** महीने का आरम्भ,—**मानः** वर्ष।

मासकः महीना।

मासरः उबले हुए चावलों की पीच, मांड।

मासलः वर्ष।

मासिक (वि०) (स्त्री०—**की**) 1. महीने से संबंध रखने वाला 2. प्रतिमास होने वाला 3. एक महीने तक रहने वाला 4. एक महीने में चुकाया जाने वाला 5. एक महीने के लिए नियुक्त,—**कम्** प्रत्येक मृत्युतिथि को किया जाने वाला श्राद्ध (मनुष्य के मरने के प्रथम वर्ष में)—पितृणां मासिकं श्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः।

मासीन (वि०) 1. एक मास की आयु का 2. मासिक।

मासुरी दाढ़ी।

माह् (भ्वा० उभ० माहति - ते) मापना।

माहाकुल (वि०) (स्त्री० **ली**), **माहाकुलीन** (वि०) (स्त्री०—**नी**) 1. सत्कुलोत्पन्न, उत्तम कुल का, नामी घराने या प्रख्यात कुल का।

माहाजनिक (वि० स्त्री०—**की**), **माहाजनीन** (वि०) (स्त्री०—**नी**) 1. सौदागरों के लिए उपयुक्त 2. महाजनोचित, बड़े आदमी के योग्य।

माहात्मिक (वि०) (स्त्री०—**की**) उन्नत-मना, उदाराशय, उत्तम, महानुभाव, यशस्वी।

माहात्म्यम् 1. उदाराशयता, महानुभावता 2. ऐश्वर्य, महिमा, उत्कृष्ट पद 3. किसी इष्ट देव या दिव्य विभूति के गुण, या ऐसी कृति जिसमें इस प्रकार के देवी देवताओं के गुणों का वर्णन किया गया हो—जैसा कि देवीमाहात्म्य, शनियामाहात्म्य आदि।

माहाराजिक (वि०) (स्त्री०—**की**) सम्राट् के उपयुक्त, साम्राज्यसंबंधी, राजकीय या राजोचित।

माहाराज्यम् प्रभुता।

माहाराष्ट्री दे० महाराष्ट्री।

माहिरः इन्द्र का विशेषण।

माहिष (वि०) (स्त्री—**षी**) भैंस का या भैंस से उत्पन्न या प्राप्त, जैसा कि 'माहिषं दधि'।

माहिषिकः 1. भैंस रखने वाला, ग्वाला 2. असती या व्यभिचारिणी स्त्री का यार - माहिषीत्युच्यते नारी या च स्याद् व्यभिचारिणी, तां दृष्ट्वा कामयति यः स वै माहिषिकः स्मृतः—कालिका पुराण 3. जो अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति पर निर्वाह करता है—महिषीत्युच्यते नार्या भोगेनोपार्जितं धनम्, उपजीवति यस्तस्याः स वै माहिषिकः स्मृतः—वि० पु० पर श्रीधर०।

माहिष्मती एक नगर का नाम, हैहय राजाओं की कुलक्रमागत राजधानी -रघु० ६।४३।

माहिष्यः क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक मिश्र या वर्णसंकर जाति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माहेन्द्र (वि०) (स्त्री०—द्री) इन्द्र से संबंध रखने वाला -कु० ७।८४, रघु० १२।८६,—द्रो 1. पूर्व दिशा 2. गाय 3. इन्द्राणी का नाम।

माहेय (वि०) (स्त्री०—यी) भौतिक,—यः 1. मंगल ग्रह 2. सूंगा।

माहेयी गाय।

माहेश्वरः शिव की पूजा करने वाला।

मि (स्वा० उभ० मिनोति, मिनुते लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग) 1. फेंकना, डालना, बखेरना 2. निर्माण करना (मकान) खड़ा करना 3. मापना 4. स्थापित करना 5. व्यानपूर्वक देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना।

मिञ्छ (तुदा० पर० मिञ्छति) 1. विक्षप डालना, बाधा डालना 2. तंग करना।

मित (भू० क० कृ०) 1. मापा हुआ, नपा तुला 2. नाप कर निशान लगाया हुआ, हदबन्दी की हुई, सीमाबद्ध किया हुआ 3. सीमित, परिमित, सर्यादित, थोड़ा, स्वल्प, वचा रखने वाला, संक्षिप्त (शब्द आदि) —पुष्टः सत्यं मितं ब्रूते स भूत्योऽर्द्धो महीभुजाम्—पंच० १।८७, रघु० ९।३४ 4. मापने में, माप का (समास के अन्त में) जैसा कि 'यद्दृवसुकरिवन्दमिते वर्षे' अर्थात् १८८९ 5. जांच पड़ताल किया हुआ, परीक्षित (दे० मा०)। सम० अक्षर (वि०) 1. संक्षिप्त, नपा-तुला, थोड़े में, सामासिक —कु० ५।६३ 2. छन्दोबद्ध, पद्यात्मक, -अर्थ (वि०) नपे-तुले अर्थ वाला —आहार (वि०) थोड़ा खाने वाला, (—रः) परिमित आहार, —भाषिन्,—वाच् कम बोलने वाला, नपेतुले शब्दों में अपनी बात कहने वाला -मेधीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः —शि० २।१३।

मितङ्गम (वि०) धीरे-धीरे चलने वाला —मः हाथी।

मितम्पच (वि०) 1. नपा-तुला अन्न पकाने वाला, थोड़ा पकाने वाला 2. मितव्ययी, दरिद्र कंजूस।

मितिः (स्त्री०) 1. नापना, माप, तोल 2. यथार्थ ज्ञान 3. प्रमाण, साक्ष्य।

मित्रः 1. सूर्य 2. आदित्य (इसका वर्णन प्रायः वरुण के साथ मिलता है), त्रम् 1. दोस्त—तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् भर्तृ० २।६८, मेघ० १७ 2. मित्रराष्ट्र, पड़ोसी राजा -तु० 'मण्डल'। सम० —आचारः मित्र के प्रति व्यवहार,—उदयः 1. सूरज का उगना 2. मित्र का कल्याण या समृद्धि,—कर्मन् (नपुं०)—कार्यम्,—कृत्यम् मित्र का कार्य, मित्रता-पूर्ण कार्य या सेवा रघु० १९।३१,—घ्न (वि०) विश्वासघाती, —द्रुह्,—द्रोहिन् (वि०) मित्र से घृणा करने वाला, मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला, झूठा या विश्वासघाती मित्र, -भावः मित्रता, दोस्ती, —भेदः मैत्रीभंग, -वत्सल (वि०) मित्रों के प्रति कृपालु, शिष्टाचारयुक्त, हत्या मित्र का वध करना।

मित्रय (वि०) 1. मित्रवत् आचरण करने वाला, हितैषी 2. स्नेहशील, मिलनसार।

मिथ् (म्वा० उभ० मेथति—ते) 1. सहकारी बनना, 2. एकत्र मिलाना, मैथुन करना, जोड़ा बनाना 3. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, प्रहार करना, वध करना 4. समझना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, जानना 5. झगड़ा।

मिथस् (अव्य०) 1. परस्पर, आपस में, एक दूसरे को मनु० २।१४७, (प्रायः समास में)—मिथः प्रस्थाने -श० २, मिथः समयात् श० ५ 2. गुप्त रूप से, व्यक्तिगत रूप से, चुपचाप, निजी रूप से -भर्तुः प्रसाद प्रतिपद्य मूर्ध्ना वक्तुं मिथः प्राक्रमतैवमेनम्—कु० ३।२, ६।१, रघु० १३।१।

मिथिलः एक राजा का नाम,—लाः (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—ला नगर का नाम, विदेह देश की राजधानी।

मिथुनम् 1. जोड़ा, दम्पती— मिथुनं परिकल्पितं त्वया सहकारः फलिनी च नन्दिनी—रघु० ८।६१, मेघ० १८, उत्तर० २।६ 2. यमज, 3. समागम, संगम 4. मैथुन, संभोग, सहवास 5. मिथुन राशि 6. (व्या० में) उपसर्ग से युक्त धातु। सम०—भावः 1. जोड़ी बनाना, जोड़ा बनने की स्थिति 2. संभोग,—वृत्तिन् (वि०) सहवास करने वाला।

मिथुनेचरः चकवाक, चकवा—तु० 'द्वद्वचरः'।

मिथ्या (अव्य०) 1. झूठमूठ, धोखे से, गलत तरीके से, अशुद्धता के साथ बहुधा विशेषण का बल रखते हुए यथा न मिथ्या स्थितलक्षणा हि प्रभावादल्पप्रमाणेऽपि यथा न मिथ्या -रघु० १८।४२, यद्वाच्य न तन्मिथ्या -१७।४२, मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामोदृग्विनोदः कुतः श० २।५ 2. विपर्यस्त रूप से, विपरीततया 3. निष्प्रयोजन, व्यर्थ, निष्फलता के साथ—मिथ्या कारयते चारैर्योषणां राक्षसाधिपः —भट्टि० ८।४४, भग० १८।५९, मिथ्या वद् (वच्) मिथ्या कहना, झूठ बोलना, मिथ्या कृ —, मिथ्या सिद्ध करना, मिथ्या भू—, झूठ निकलना, झूठ होना, मिथ्या ग्रह, गलत समझना, भूल होना या करना समास के आरंभ में प्रयुक्त 'मिथ्या' का अनुवाद 'झूठा' असत्य, अवास्तविक, झूठमूठ, छलयुक्त, आली आदि शब्दों से किया जा सकता है। सम०—अध्यवसितिः एक अलंकार जिसमें किसी असंभव घटना पर आश्रित होने के कारण किसी वस्तु की असंभावना की अभिव्यक्ति हो—किंचिन्मिथ्यात्वसिद्ध्यर्थं, मिथ्यार्थान्तरकल्पनम्, मिथ्याध्यवसितिर्वेद्यां वक्रोक्तेः खलजः वहन्—कुव०, —अपवादः झूठा आरोप—अभिधानम् झूठी युक्ति,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—अभियोगः झूठा या निराधार आरोप, **—अभिशंसनम्** झूठा आक्षेप, मिथ्या दोषारोपण, **—अभिशापः** 1. झूठी भविष्यवाणी 2. झूठा या अन्याय्य दावा, **—आचारः** गलत या अनुचित आचरण, **—आहारः** गलत भोजन, **—उत्तरम्** झूठा या गोलमोल जवाब, **—उपचारः** बनावटी कृपा या सेवा, **—कर्मन्** (नपुं०) झूठा कार्य, **—कोपः, —क्रोधः** झूठ मूठ का गुस्सा, **—क्रयः** मिथ्या मूल्य, **—ग्रहः, ग्रहणम्** समझने में भूल होना, गलत समझना, **—चर्या** पाखंड, **—ज्ञानम्** अशुद्धि, त्रुटि, गलतफहमी, **—वर्त्मन्** गलतरास्ता, नास्तिकता, **—दृष्टिः** (स्त्री०) मतविरोध, नास्तिकता के सिद्धान्तों को मानना, **पुरुषः** छाया पुरुष, **—प्रतिज्ञ** (वि०) झूठी प्रतिज्ञा करने वाला, दगाबाज, **—फलम्** काल्पनिक लाभ, **—मतिः** भ्रम, अशुद्धि, त्रुटि, **—वचनम्—वाक्यम्** मिथ्यात्व, झूठ, **—वार्ता** झूठा विवरण, **—साक्षिन्** (पुं०) झूठा गवाह।

मिद् I (भ्वा० आ०, दिवा०, चुरा०, उभ० मेदते, मेदयति-ते, मेहयति ते) 1. चिकना या स्निग्ध होना। 2. घिघलना 3. मोटा होना 4. प्रेम करना, स्नेह करना। II (भ्वा० उभ० मेदति—ते) दे० मिथ्।

मिद्धम् 1. कब्ज़ा, निठल्लापन, सुस्ती 2. जड़ता, निद्रालुता, मन्दता (उत्साह की भी)।

मिन्द् (भ्वा० चुरा० पर० मिन्दति, मिन्दयति) दे० मिद् II।

मिभ् (भ्वा० पर० मिम्भति) 1. छिड़कना, तर करना 2. सम्मान करना, पूजा करना।

मिल् (तुदा० उभ० मिलति ते, सामान्यतः मिलति, मिलित) 1. सम्मिलित होना, मिलना, साथ होना —रुक्मवतो मिलिता हि० १।२१०; यावत् कि न मिलन्ति अमरु १०; मिलितोऽसीत्युक्त्वा गीत० १, स पात्रे समितोऽन्यत्र भोजनान्निलिलो न यः —विक्रा० 3. मिश्रित होना, मिलना, संपर्क में आना —मिलति नव लोचनमंचलः—गंगा० ७ 4. मिलना, मुकाबला करना (युद्धादि में) संघटन होना, सटना, 5. घटित होना, होना 6. मिलना, साथ आ पड़ना —प्रेर० मेलयति—ते, एकत्र लाना, इकट्ठे होना, सम्मेलन बुलाना।

मिलनम् 1. सम्मिलित होना, मिलना, एक स्थान पर एकत्र होना 2. मुकाबला करना 3. सम्पर्क, मिश्रित होना, संपर्क में आना उत्पलिप्तमिलनेन गरलमिव कलयति मलयजपंकराग् गीत० ४।

मिलित (भू० क० कृ०) 1. एक स्थान पर आया हुआ, एकत्र हुआ, मुकाबला किया गया, मिश्रित 2. मिला हुआ, मुठभेड़ हुई 3. मिश्रित 4 एक स्थान पर रक्खे हुए, सबको ग्रहण किया हुआ।

मिलिन्दः मधुमक्खी, भौंरा परिणतमकरन्दमार्मिकास्ते जगति भवन्तु चिरायुषो मिलिन्दाः भामि० १।८,१५।

मिलिन्दकः एक प्रकार का साँप।

मिश् (भ्वा० पर० मेशति) 1. शोर करना, कोलाहल करना 2. क्रुद्ध होना।

मिश्र (चुरा० उभ० मिश्रयति ते 'मिश्र' की ना० धा०) मिलाना, गड्डमड्ड करना, जोड़ना, बोलना, संयुक्त करना, बढ़ाना वाचं न मिश्रयति यद्यपि ये वचोभिः—शं० १।३१, न मिश्रयति लोचने भामि० २।१४०।

मिश्र (वि०) 1. मिला हुआ, घोला हुआ, गड्डमड्ड किया हुआ, मिलाया हुआ गद्य पद्य मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम् —काव्या० १।११, ३१, ३२, रघु० १६। ३२ 2. साथ लगा हुआ, संयुक्त 3. बहुविध, नाना प्रकार का 4. उलझा हुआ, अन्तर्वलित 5. (समास के अन्त में) **मिश्रणसमेत, अधिकाशित**। युक्त, **श्रः** 1. आदरणीय या योग्य व्यक्ति, यह शब्द प्रायः बड़े बड़े पुरुषों और विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता है जामदग्न्यमिश्रः प्रमाणम् मालवि० १, वसिष्ठमिश्रः, मंडनमिश्रः आदि 2. एक प्रकार का हाथी, **श्रम्** 1. मिश्रण 2. एक प्रकार की मूली, सलजम। सम० **—ज्ञः** खच्चर, **—वर्ण** (वि०) मिश्रित रंग का (—र्णम्) एक प्रकार की काली अगर की लकड़ी, **—शब्दः** खच्चर।

मिश्रक (वि०) 1. मिश्रित, गड्डमड्ड किया हुआ 2. फुटकर, **—कः** मध्यस्थ 3. व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट करने वाला, **कम्** तीखी मिट्टी से पैदा किया गया नमक।

मिश्रणम् मिलाना, घोलना, संयुक्त करना।

मिश्रित (भू० क० कृ०) 1. मिला हुआ, घुला हुआ, संपृक्त 2. बढ़ाया हुआ 3. आदरणीय।

मिष् I (तुदा० पर० मिषति) 1. आंख खोलना, झपकना 2. देखना, विवक्षतापूर्वक देखना —जातवेदो मुखान्मायी मिषतामाच्छिनत्ति नः—कु० २।४६ 3. प्रतीक्षा करना, होड़ लेना, प्रतिस्पर्धा करना, **उद्—**, 1. आंखें खोलना—उन्मिषन्निमिषन्नपि—भग० ५।९, 2. (आंखों की तरह) खोलना—कु० ४।२ 3. खुलना, खिलना, फूलित्ना होना 4. उदय होना 5. चमकना, जगमगाना, **नि—**, आंखें मूंदना—भग० ५।९। II (भ्वा० पर० मेषति) आर्द्र करना, तर करना, छिड़कना।

मिषः प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता, **—षम्** बहाना छद्मवेष, धोखा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दांवपेंच, जालसाजी, झूठा आभास--बालमेनमेकेन मिषेणानीय—दश०, (उत्प्रेक्षा प्रकट करने के लिए बहुधा 'छल' की भांति प्रयुक्त होता है)--स रोमकूपोद्गमप्रज्वलत्पुलकां कृतोऽहं कि दूषणशून्यबन्धवः ---नै० १।२१, वदने विनिवेशिता भुजङ्गी शिशुनाग रसनामिषेण बाला—भामि० १।११९।

मिष्ट (वि०) 1. मधुर 2. स्वादिष्ट, मजेदार—किं मिष्टमन्न खरसूकराणाम्, तु० व्हाई कास्ट पर्ल्स बिफोर स्वाइन' (Why cast pearls before the swine ?) अर्थात् बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद 3. तर किया हुआ, गोला किया हुआ, —ष्टम् मिष्टान्न, मिठाई।

मिह् (भ्वा० पर० मेहति, मीढ) 1. मूत्रोत्सर्ग करना 2. गीला करना, तर करना, छिड़कना 3. वीर्यपात करना।

मिहिका पाला, हिम।

मिहिरः 1. सूर्य —मयि तावन्मिहिरोऽपि निर्दयोऽभूत्—भामि० २।३४, याते मय्यचिरनिद्रादायं मिहिरज्वालाशतैः शुष्कताम्—१।१६, नै० २।३६, १३।५४ 2. बादल 3. चन्द्रमा 4. हवा, वायु 5. बूढ़ा आदमी।

मिहिराणः शिव का विशेषण।

मी I (क्रया० उभ० मीनाति मीनीते, श्रेष्ठ्य साहित्य में विरल प्रयोग) 1. भार डालना, विनाश करना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 2. घटना, कम करना 3. बदलना, परिवर्तित करना 4. अतिक्रमण करना, उल्लघन करना II (भ्वा० पर० चुरा० उभ० मयति, माययति - ते) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. जानना, समझना (गतिमत्योर्धः) III (चुरा० आ० मीयते) मरना, नष्ट होना।

मीढ (भू० क० कृ०) 1. मूत्रोत्सृष्टि, पेशाब किया गया 2. (मूत्र की भांति) बहाया गया।

मीढुष्टमः, मीढ्वस् (पुं०) शिव का विशेषण।

मीनः 1 मछली—सुप्तमीन इव ह्रदः—रघु० १।७३, मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु—भामि० १।१७ 2. बारहवीं अर्थात् मीन राशि 3. विष्णु का पहला अवतार दे० मत्स्यावतार। सम०—अण्डम् मछली का अंडा, मछली के अंडों का समूह —आघातिन्, घातिन् (पुं०) 1. मछुआ 2. सारस, आलयः समुद्र,—केतनः कामदेव, —गन्धा सत्यवती का विशेषण, गन्धिका जोहड़, पल्वल,—रङ्गः—रङ्गः रामचिरैया, बहरी (एक शिकारी पक्षी)।

मीनरः मगरमच्छ नाम का समुद्री-दानव।

मीम् (भ्वा० पर० मीमति) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. शब्द करना।

मीमांसकः 1. जो अनुसंधान करता है, पूछताछ करता है, अनुसंधानकर्ता, परीक्षक 2. मीमांसादर्शनशास्त्र का अनुयायी।

मीमांसनम् अनुसंधान, परीक्षण, पूछताछ।

मीमांसा गहन विचार, पूछताछ, परीक्षण, अनुसंधान, रसगङ्गाधरनाम्नीं करोति कुचकेन काव्यमीमांसाम् रस०, इसी प्रकार दशक° अलकार° आदि 2. भारत के छः मुख्य दर्शनशास्त्रों में से एक। (मूल रूप से यह दो भागों में विभक्त है,—जैमिनि द्वारा प्रवर्तित पूर्वमीमांसा, और बादरायण के नाम से विख्यात उत्तरमीमांसा या ब्रह्ममीमांसा। परन्तु इन दोनों दर्शनों में समानता की कोई बात नहीं है। पूर्वमीमांसा तो मुख्यतः वेद के कर्मकाण्डपरक मंत्रों की सही व्याख्या तथा वेद के मूलपाठ के संदिग्ध अंशों का निर्णय करता है। उत्तर मीमांसा मुख्यतः ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। अतः पूर्वमीमांसा को केवल 'मीमांसा' के नाम से तथा उत्तरमीमांसा को 'वेदान्त' के नाम से पुकारते हैं। उत्तरमीमांसा में जैमिनी के दर्शनशास्त्र को उत्तरवर्ती की कोई बात नहीं है. इसी लिए उसको अब एक पृथक् दर्शन माना जाता है), मीमांसाकृतमुन्मथ्य सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्—पच० २।३३।

मीरः 1. समुद्र 2. सीमा, हद।

मील् (भ्वा० पर०+मीलति, मीलित) 1. आंखें मूंदना, पलकों को बन्द करना, आंख झपकाना, झपकी--पत्रे विभ्रति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकनात् गीत० १० 2. मूंदना, (आंख या फूलों का) मुंदना या बन्द होना नयनयुगममीलत्- शि० ११।२, तस्यां मिमीलतुर्नेत्रे-- भट्टि० १४।५४ 3. मुर्झाना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना 4. मिलना, एकत्र होना- प्रेर० (मीलयति ते) बन्द करवाना, मुदवाना, (आंख या फूल आदि का) बन्द करना शेषान्मासानमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, आ—, प्रेर० बन्द करना, नेत्रे चामीलयन्—काव्या० २।११, उद्—1. आंखें खोलना—उदमीलीच्च लोचने—भट्टि० १५।१०२, १६।८ 2. जगाया जाना, उद्बुद्ध किया जाना शि० १०।७२ 3. फूलना, फूंक मारना कि० ४।३, मा० १।३८ 4. प्रसूत किया जाना, फैलाया जाना, गुच्छे बनना, झुण्ड हो जाना उन्मीलन्मधुगंध- गीत० १, उत्तर० १।२० 5. दिखाई देना, अंकुर फूटना खं वायुर्ज्वलनो जलं क्षितिरिति त्रैलोक्यमुन्मीलति —प्रबोध० १।२, भामि २।७२ (प्रेर०) खुलना तदेतदुन्मीलय चक्षुरायत विक्रम० १।५, मुच्छ० १।३३ नि , 1. आँखें मूंदना रघु० १२।५५ मनु० १।५२ 2. मृत्यु के कारण आँखें मूंदना, मरना निमिमील नरोत्तमश्रिया हृतचंद्रा तमसेव कौमुदी- रघु० १।६८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र. (आम्र या फूल आदि का) मूंदना या बन्द होना | निर्मीलिनासिव पंकजानाम् रघु० ७।६४ 5. ओझल होना, नष्ट होना, अस्त होना (आलं०) नरेशे जीवलोकाद्य निर्मीलति निर्मीलति- हि० ३।१४५, यों-निर्मीलितनलजा हरि० (पैर०) बंद करना, मूंदना उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवाधकारेण मृच्छ० १।३३, त्यमिमीलदञ्जनयनं नलिनां—शंभ० ९। ११, लोचनाद्य त्वमीलयत् - काव्या० २।२६१, कु० ३।२६ ५।५७, रघु० १९।२८, सम्—,बंद होना, मूंदना (पैर०) 1. बन्द करना या मूंदना, उपात्तनिमिलिलालोचनो नृपः रघु० ३।२६, १३।१० 2. मलिन करना, अंधेरा करना, धुंधला करना विकार-हेतौ सत्यपि यन्न समीलयति न उत्तर० १।३६ ।

मीलनम् 1. आंखों का मुंदना, झपकना, झपकी लेना 2. आंखों का मूंदना 3. फूल का बन्द होना ।

मीलित (भू० क० कृ०) 1. बन्द, मुंदा हुआ 2. झपकी हुई 3. अदृश्य, बिना खिला 4. नष्ट हुआ, ओझल - तम् (अलं० में) एक अलंकार जिसके बीच का अन्तर या भेद उनकी प्राकृतिक या कृत्रिम समानता के कारण पूर्णरूप से अस्पष्ट रहता है, मम्मट इसकी परिभाषा करता है संज्ञेन लक्षणा वस्तु वस्तुना यत्रि-गूह्यते, निजेनाप्युता वापि तन्मीलितमिति स्मृतम् — काव्य० १० ।

मीव् (स्वा० पर० भीवति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2. मोटा होना ।

मीवरः सेना का नायक, सेनानायक ।

मीवा [मी + वन्] 1. पेट, अवकोट, कोख 2. वायु ।

मुः [मुच् + डु] 1. शिव का विशेषण 2. बन्धन, कैद 3. मोक्ष 4. चिंता ।

मुकन्धकः प्याज ।

मुक्तः [मुच्+क्त. पुंधा०] मुक्ति, छुटकारा, विशेषतः मोक्ष ।

मुकुटम् [मक् + उटत्, पुंधा०] 1. ताज, किरीट, राज-मुकुट मुकुटरत्नमरीचिभिरस्पृशत् — रघु० ९।१३ 2. शिखा 3. शिखर, चोटी या सिरा ।

मुकुटी [मुकुट+ङीष्] अंगुलियां चटकाना ।

मुकुन्दः [मुकुन्द् + डाति दा—क पृषो० मुम्०] 1. विष्णु या कृष्ण का नाम 2. पारा 3. मूल्यवान् पत्थर या रत्न 4. कुबेर की नौ निधियों में से एक 5. एक प्रकार का ढोल ।

मुकुरः [मक् + उरच्, उत्वम्] मुंह देखने का शीशा—गजि-नापि निजरूपप्रतिपत्ति. परत एव संभवति, स्वमहिम-दर्शनमक्षणोर्मुकुरतले जायते यस्मात्—वाम०, शि० ९।७३, न० २२।४३ 2. कली, दे० 'मुकुल' 3. कुम्हार के चाक का डंडा 4. मौलसिरी का पेड़ ।

मुकुलः,—लम् [मुच्+उलच्] 1. कली - आविर्भूत प्रथम-मुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्—मेघ० २१, रघु० ९।३१, १५।९९ 2. कली जैसी कोई वस्तु—आलक्ष्यदन्तमुकु-लान् (तनयान्)— श० ७।१७ 3. शरीर 4. आत्मा, जीव (मुकुलीकृ. कली की भांति मुंदना—कु० ५।६३) ।

मुकुलित (वि०) [मुकुल + इतच्] 1. कलियों से युक्त, कलीदार, फूल 2. अधमुंदा, आधावद - दरमुकुलित नयनसरोजम् —गीत० २, कु० ३।७६ ।

मुकुष्ठः, मुकुष्ठकः [मुकु + स्था + क, मुकुष्ठ | कन्] एक प्रकार का लोबिया, मोठ ।

मुक्तः (भू० क० कृ०) [मुच् + क्त] 1. ढीला किया हुआ, शिथिलित, मंद या धीमा किया हुआ 2. स्वतंत्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, विश्राम दिया हुआ 3. परित्यक्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ, एक ओर फेंका हुआ, उतार दिया हुआ 4. फेंका हुआ, डाला हुआ, कार्यमुक्त किया हुआ, अकेला हुआ 5. गिरा हुआ, अवपतित 6. म्लान, अवसन्न 7. निकाला हुआ, उत्सृष्ट 8. मोक्ष प्राप्त किया हुआ (दे० मुच्),—क्तः जो सांसारिक जीवन के बन्धनों से मुक्ति पा चुका है, जिसने सांसारिक आसक्तियों को त्याग कर पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लिया है, अपमुक्त संतः - सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया, मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तो अथवा पशुः - सुभा० । सम०—अम्बरः दिगंबर संप्रदाय का जैन साधु, - आत्मन् (वि०) जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है (पुं०) 1. सांसारिक वासनाओं और पापों से मुक्त आत्मा 2. वह व्यक्ति जिसकी आत्मा अपमुक्त हो गई है,—आसन (वि०) अपने आसन से उठा हुआ, कच्छः बौद्ध, कञ्चुकः वह सांप जिसने अपनी केंचुली उतार दी है, कच्छ (वि०) बुहारी मचाने वाला (अव्य० - क्षम्) फूट फूट कर, ऊँचे स्वर से, जोर से - रघु० १४।६८, - कर, हस्त (वि०) उदार, खुले हाथ वाला, दानी, केसरिन् (पुं०) सिंह, वसन दे० मुक्ताबर ।

मुक्तकम् [मुक्त + कन्] 1. अस्त्र आयुधास्त्र 2. सरल गद्य 3. एक पृथक्कृत श्लोक जिसका अर्थ स्वयं अपने में पूर्ण हो दे० काव्या० १।१३ मुक्तक श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम् ।

मुक्ता [मुक्त + टाप्] 1. मोती—हारीदृश्य हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, मुक्तानामप्यदस्त्येयं के वयं स्मर-किङ्कराः अमरु १०० (यहां 'मुक्तानां' का अर्थ 'दोषमुक्त संत' भी है) मोती अनेक स्रोतों से उपलब्ध बतलाये जाते हैं परन्तु विशेष कर समुद्री सीपी से प्राप्त होते हैं; —करीन्द्र जीमूतवराहसंख्यमत्स्यादि शुक्त्युद्भवेषुजानि, मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि— अमि०) 2. वेश्या,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गणिका । सम०—अगारः, आगारः मोती का घोंघा, आवलिः,—ली (स्त्री०)- कलापः मोतियों का हार गुणः मोतियों का हार, मोतियों की लड़ी मेघ० ४६, रघु० १६।१८, जालम् मोतियों की लड़ी या करधनी, -दामन् (नपुं०) मोतियों की लड़ी, पुष्पः एक प्रकार की चमेली, प्रसूः (स्त्री०) मोती की शुक्ति, प्रालम्बः मोतियों की लड़ी, फलम् 1. मोती कु० १।६, रघु० ६।२८ १६।६२ 2. एक प्रकार का फूल 3. रीठाफल या कुम्हड़ा 4. कपूर, मणिः मोती, मातृ (स्त्री०) मोती का घोंघा, लता, - स्रज्, हारः मोतियों की माला, शुक्तिः स्फोटः वह घोंघा या सीपी जिसमें से मोती निकलते हैं।

मुक्तिः (स्त्री०) [मुच्—क्तिन्] 1. छुटकारा, निस्तार, उन्मोचन 2. स्वातंत्र्य, उद्धार 3. मोक्ष, आवागमन के चक्र से आत्मा का मोचन 4 छोड़ना, त्याग, परित्याग, टालना—संसर्गमुक्तिः खलेषु भर्तृ० २।६२ 5. फेंकना, गिरा देना, छोड़ देना, मुक्त करना 6. आजाद करना, खोलना 7. ऋण मुक्त होना, ऋण परिशोध करना। सम० क्षेत्रम् वाराणसी का विशेषण, मार्गः मोक्ष का रास्ता, मुक्तः लोबान।

मुक्त्वा (अव्य०) [मुच्+क्त्वा] 1. छोड़कर, परित्याग करके 2. सिवाय, छोड़ कर, बिना।

मुखम् [खन्+अच्, डित् पाली० पूर्व मुद् च] 1. मुंह (आलं० से भी) ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक् -१०।९०।१२ सभ्रूभङ्गं मुखमिव -मेघ० २४, त्वं मम मुखे भव - विक्रम० १, 'मेरे मुखपात्र या प्रतिनिधिवक्ता बनिये 2. चेहरा, मुखमण्डल परिवृत्तार्धमुखी मयाऽव दृष्टा - विक्रम० ११५, नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः शि० ७।२१, इसी प्रकार चन्द्रमुखी, मुखचन्द्र आदि 3. (किसी जानवर की) थूथन, थूथनी या मोंहरी 4. अग्रभाग, हरावल, पुरोभाग 5. किनारा, नोक, (बाण का) फल, प्रमुख पुरोधिप्राप्तमुखः शिलीमुखः कु० ५।५४, रघु० ३।५७, ५९ 6. (किसी उपकरण का) धार या तीक्ष्ण नोक 7. चूचुक, स्तनाग्र कु० १।४०; रघु० ३।८ 8. पक्षी की चोंच 9. दिशा, तरफ जैसा कि 'दिङ्मुखम्', अन्तर्मुखं' में 10. विवर, द्वार, मुंह—नोदाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरुग्रामवः। शि० १।१६, मदोमुत्तेव समुद्गमाविशत् रघु० ३।२८, कु० १।८ 11. प्रवेश द्वार, दरवाजा, गमन मार्ग 12. आरंभ, शुरू, मुखीलनोद्घीक्षणकोमुदीमुखम् रघु० ३।१, दिनमुखानिरविद्विगुणत्विषः -विमलयन् मलयं नगमत्यजत् -९।२५; ५।७६, घट० २ 13. प्रस्तावना, 14. मुख्य, प्रधान, प्रमुख (इस अर्थ में प्रयोग समास के अन्त में) वन्द्योमुक्तर्ये खलु मन्दमुखान्कुवंते कर्मणाशान् भामि० ४।२१. इसी प्रकार 'इन्द्रमुखा देवाः' आदि 15. सतह, ऊपरी पार्श्व 16. साधन 17. स्रोत, जन्मस्थान, उत्पत्ति 18. उच्चारण (जैसा कि 'मुखसुद्ध' में 19. वेद, श्रुति 20. (काव्य में) नाटक में अभिनयादि कर्म का मूलस्रोत, एक संधि। सम० अग्निः 1 दावानल 2. आग के मुख वाला बेताल 3. अभिमन्त्रित या यज्ञीय अग्नि 4. चिता में अग्न्याधान के अवसर पर शव के मुख पर रक्खी जाने वाली आग, अनिलः, उच्छ्वासः सांस, अस्त्रः कैकड़ा, आकारः चेहरा, मुखछवि, दर्शन,—आस्रवः अधरामृत,—आस्रावः, स्रावः थूक, मुंह की लार, इन्दुः चन्द्रमा जैसा मुंह अर्थात् गोल सुन्दर मुख, उल्का दावानल, कमलम् कमल जैसा मुख, खुरः दांत, - गंधकः प्याज,—चपल (वि०) बातूनी, वाचाल, चपेटिका मुंह पर लगाई जाने वाली चपत, चोरिः (स्त्री०) बिल्ली,—जः ब्राह्मण, जाड्यम् मुंह की जड़, कण्ठ,—दूषणः प्याज, दुग्धिका मुहासा, निरीक्षकः सुस्त, आलसी, मुंह की ओर ताकने वाला, निवासिनी सरस्वती का विशेषण,—पटः घूघट—कुंवर् कामं क्षणमुखपटप्रीतिमैरावतस्य मेघ० ६२, पिण्डः (भोजन का) ग्रास, पूरणम् 1. मुंह को भरना 2. एक कुल्ला पानी, मुहभर, प्रसादः प्रसन्नवदन, मुख की प्रसन्नमुद्रा, प्रियः सेतरा, बंधः भूमिका, प्रस्तावना, बन्धनम् 1. भूमिका 2. ढक्कन, ओवरण, भूषणम् पान लगाना-दे० ताम्बूल, भेदः चेहरे का विकृत हो जाना, मधु (वि) मिष्टभाषी, मधुरधार, मार्जनम् मुंह धोना, वल्गम् लगाम की सुन्दरी या वल्गा, रागः चेहरे का रंग रघु० १२।८, १७। ३१, लालूलः सूअर, लेपः 1. (डाक्टर के) चेहरे पर विकृत हो जाना, मधु (वि) मिष्टभाषी, मधुरधार, मार्जनम् मुंह धोना, वल्गम् लगाम की सुन्दरी या वल्गा, रागः चेहरे का रंग रघु० १२।८, १७। ३१, लालूलः सूअर, लेपः 1. (डाक्टर के) ऊपरी भाग पर लेप करना 2. कफ प्रकृति वाले पुरुष की एक बीमारी, वल्लभः अनार का पेड़, वाद्यम् 1. मुंह से बजाया जाने वाला बाजा, फूंक मार कर बजाया जाने वाला बाजा 2. मुंह से 'यम् यम्' शब्द करना, वासः, वासनः स्वांग को सुगंधित बनाने वाला एक गंधद्रव्य, विलम्बिका ठकरी, व्यादानम् मुंह फाड़ना, जंभाई लेना, शफ (वि०) गाली देने वाला, अश्लीलभाषी, बेजबान, शुद्धिः (स्त्री०) मुंह को धोना या निर्मल करना, शेषः राहु का विशेषण,—शोधन (वि०) 1. मुंह को स्वच्छ करने वाला 2. तीक्ष्ण, तीखा, (नः) चरपराहट, तीक्ष्णपन, (नम्) मुंह को साफ करना, श्री (स्त्री) मुख का सौन्दर्य प्रिय मुखमुद्रा, सुखम् उच्चारण की सुविधा, ध्वन्यात्मक सुख, सूत्रम् होंठों की तराजू।

मुखम्पचः [मुख+पच्+खच्, मुम्] भिखारी, साधु।

मूखर (वि) [मुख मुखव्यापार कथनं राति रा +क]। वाचाल, बातूनी, बकवादू - मूखरा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खल्वेषा गर्भदासी रत्न २, मुखरतायसरे हि विराजते —कि० ५।१६ 3. कोलाहलमय, लगातार शब्द करने वाला, टनटन बजने वाला, (घण्टे की भांति) रुनझुन करने वाला —स्तंभेरमा मुखरशुद्धुलकांचिणस्ते रघु० ५।७१, अ-नः कूजन्मुखरसकुनौ यत्र रम्यो वनान्तः उत्तर० २।२५, २०. मा० ९।५, मुखरमधोरं व्यज मञ्जीरं रिपुभिव कैतिव लोलम् गीत०५, मुच्छ० १।३५ 3. ध्वननशील, अनुनादी, गूंजने वाला (प्रायः समास के अन्त में)—स्थाने-स्थाने मुखरकुभो झङ्कुर्वन्निर्झराणाम् उत्तर० २।१४. मण्डली मुखरशिखरे (लतागृहे) गीत० २; रघु० १३।४६ 4. अभिव्यञ्जक या सूचक 5. अश्लीलभाषी, गाली देने वाला, बदजबान 6. उपहास करने वाला, हँसी दिल्लगी करने वाला (मुखरीकृ, शब्द करवाना, बुलवाना, प्रतिध्वनित करवाना), रः 1. कौवा 2. नेता मुख्य या प्रधान पुरुष यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते हि० १।२९ 3. अंग ।

मुखरयति (ना० धा० पर०) 1. प्रतिध्वनित या कोलाहलमय करना, गुंजाना 2. बुलवाना या बातें करवाना, अत एव अधूरा सा मुखरयति—मुद्रा० ३ 3. अधिसूचित करना, घोषणा करना, अभिज्ञापन करना ।

मुखरिका, मुखरी [मुखर+ठन्+टाप्, ङीष्, मुखर+ङीष्] लगाम की वल्गा, लगाम का इहाना ।

मुखरित (वि०) [मुखर+इतच्] कोलाहलमय या अनुनादित किया हुआ, बजता हुआ, कोलाहलपूर्ण—गाण्डीडोलालिमाला मुखरितकुभस्थण्डले मूलपार्णे: मा० १। १।

मुख्य (वि०) [मुखे आदौ भवः- यत्] 1. मुख या चेहरे से संबंध रखने वाला 2. बड़ा, प्रधान, प्रमुख, प्रथम, सबसे प्रधान, उत्तम, द्विजातिमुख्यः, वारमुख्याः, गोधमुख्याः आदि. रथ्यः नेता, पथप्रदर्शक ह्यस्य 1. प्रधान यज्ञकृत्य या धार्मिक संस्कार 2. वेदों का पठनपाठन । सम० अर्थः शब्द का मुख्य या मूल (विप० गौण) आशय,—चान्द्रः मुख्य चांद मासः नृपः नृपतिः प्रभुसत्ताप्राप्त राजा, सर्वोपरि प्रभु,—मन्त्रिन् (पुं०) प्रधान मंत्री ।

मुगुहः एक प्रकार का जल कुक्कुट ।

मुग्ध (वि०) [मुह्+क्त] 1 जड़ीकृत, मूर्छित 2. हतबुद्धि, प्रणयोन्मत्त 3. मूढ, अज्ञानी, मूर्ख, जड़—गणाद्गुरुकेन मुग्धेन गुर्वाशुरिति भाषितः—भामि० २।२१ 4. सरल, सीधासादा, भोला-भाला —उत्तर० १।४६ 5. भूल करने वाला, भूल में पड़ा हुआ 6. बालोचित सरलता से मंडित करने वाला (अभी प्रेमरस से अपरिचित), बालसुलभ, (कः) अक्षमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु अ० १।२५, रघु० ९।३४, (अतः) सुन्दर, प्रिय, मनोहर, कांत हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसित केलिपरे गीत० १, उत्तर० ३।५,—ध्या कुमारी सुलभ भोलेपन से आकर्षक किशोरी, सुन्दर तरुणी, (काव्यकृतियों में यह एक नायिका का भेद माना जाता है) । सम०—अक्षी सुन्दर आँखों वाली युवती वियोगो मुग्धाक्ष्याः स खलु रिपुघातावधिरभूत् उत्तर० ३।४४, आनना सुन्दर मुख वाली, धी, बुद्धि, मति (वि०) मूर्ख, मूढ़, जड़, भोला-भाला, भावः सादगी, भोलापन ।

मुच् I (स्वा० आ० मोचते) धोखा देना, ठगना; दे० मुष्च् ।

II (तुदा० उभ०—मुञ्चति-ते, मुक्त) शिथिल करना, मुक्त करना, छोड़ना, जाने देना, ढीला होने देना, स्वतंत्र करना, छुटकारा करना (बन्धन आदि से)

वनाय वत्सावतरो धेनुमुषभमोक्षय —रघु० २।१, ३।२०, मनु० ८।२०९, मोक्ष्यते सुरबन्दीनां वैणवीर्यविभूतिभिः कु० २।६१, रघु० १०।४७, मा भवान् ङ्गानि मञ्जतु विक्रम० २, भगवान् करे आपके अंग म्लान न हों, —हतोत्साह न होइए' 2. आजाद करना, ढीला छोड़ना (वाणी की भांति)—कण्ठं मुञ्चन्ति बर्हिणः समदनः मृच्छ० ५।१४, 'अपनी वाणी या कंठ को ढील देता है अर्थात् चीत्कार करता है' 3. छोड़ना, परित्याग करना, उन्मुक्त करना, छोड़ देना, एक ओर डाल देना, उत्सर्ग करना रात्रिर्गता मनिमतां वर मुञ्च शय्याम् रघु० ५।६६, मुनिसुता प्रणयस्मृतिरोधिनी मम च मुक्तगिदं तमसा मनः श० ६।७, मौनं मुञ्चति किं च कैरवकुले भामि० १।४, आविर्भूते गौरीनि तमसा मुच्यमानेव रात्रिः विक्रम० १।८, मेघ० ९६, ४१, रघु० ३।११ 4. अलग रखना, अपहरण करना, अलगाना, दे० मुक्ता 5. डालना, फेंकना, उछाल देना, पटक देना, बौछा उतारना मृगेषु शरान्मुमुक्षोः रघु० ९।५८, भट्टि० १५।५३ 7. निकालना, गिराना, उड़ेलना, टपकाना (आंसू) ढलकाना —आसनपाद्यपुष्पा मुञ्चत्यश्रूणीव लताः—शा० ४।११, चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् मेघ० १२, भट्टि० ७।२ 8 उच्चारण करना, बोलना मा० ९।५, भट्टि० ७।५७ 9. प्रदान करना, अनुदान देना, अर्पण करना 10. पहनना (आ०) 11. उत्सर्ग करना (मलमूत्र का)—कर्मवा० (मुच्यते) ढीला किया जाना, छुटकारा पाना, स्वतंत्र होना, दीपमुक्त होना; —मुच्यते सर्वपापेभ्यः प्रेर० (मोचयति-ते) 1. स्वतंत्र या मुक्त कराना 2. छिरवाना 3. ढीला छोड़ना, आजाद करना, छुटकारा देना 4. उद्धार करना, सुलझाना 5. जुआ हटाना, (घोड़े आदि पर से) साज उतारना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

6. प्रदान करना, अर्पण करना 7. प्रसन्न करना, आनन्दित करना इच्छा० 1. (मुमुक्षति) मुक्त या स्वतंत्र करने की इच्छा करना 2. मुमुक्षते,-मोक्षते) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा करना। **अव** ,उतार देना, उड़ा देना **आ**, 1. पहनना, धारण करना, चारों ओर बाँधना या कसना आमुञ्चतीवाभरणं द्वितीयम् रघु० १३।२१, १२।८६, १८।७४, कि० ११।१५, आमुञ्चद्वर्म रत्नाढ्यम्--भट्टि० १७।२ 2. डालना, फेंकना, दागना आमोक्ष्यन्ते त्वयि कटाक्षान्—मेघ० ३५, **उद्**, 1. खोलना, रघु० ६।२८ 2. ढीला करना, मुक्त करना, स्वतंत्र करना 3. उतारना, खींच ले जाना, एक ओर करना, छोड़ना, परित्याग करना भट्टि० ३।२२ **निस्**, 1. स्वतंत्र करना, आजाद करना, मुक्त करना हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्रा चन्द्रमसोरिव रघु० १।४६, भग० ७।२८ 2. छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना, **परि** ,1. स्वतंत्र करना, छुटकारा देना, मुक्त करना, -मेघापरोधपरिमुक्तशशाङ्कपात्रा ऋतु० २।७, चौर० ९ 2. छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना

प्र ,1. स्वतंत्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, 2. फेंकना, डालना, उछालना 3. गिराना, उत्सर्जित करना, बीज बिखेरना, **प्रति** ,1. स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, आजाद करना,—गृहीतप्रतिमुक्तस्य रघु० ४।३३, अमुं तुरङ्गं प्रतिमोक्तुमर्हसि २।४६ 2. धारण करना, पहनना 3. खाली कर देना छोड़ना, परित्याग करना, 4. फेंकना, डालना, दागना, **वि**—, 1. स्वतंत्र करना, मुक्त करना 2. छोड़ देना, एक ओर डाल देना, परित्याग करना, खाली कर देना विमुच्य वासांसि गुरूणि साम्प्रतम् ऋतु० १।७ 3. जाने देना, ढील देना भट्टि० ७।५० 4. अलग होना, अलग रखना; कु० ३।३१ 5. गिराना, (आँसू) ढलकाना **चिरमश्रूणि विमुच्य राघवः** रघु० ८।२५ 6. फेंकना, डालना, **सम्**—,गिराना, भारमुक्त करना।

मुचकः लाख।

मुचु (च) **कुन्दः** 1. एक वृक्ष का नाम 2. मांधाता के पुत्र एक प्राचीन राजा का नाम (देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता के बदले उसे बिना किसी रोक के लम्बी नींद का सुख प्राप्त करने का वरदान मिला था। देवों का आदेश था कि जो कोई उसकी नींद में विघ्न डालेगा भस्म हो जायगा। जब कृष्ण ने बलवान् कालयवन को मारना चाहा तो उसे मुचकुंद की गुफा में धकेल दिया। वहाँ प्रविष्ट होते ही मुचकुंद राजा की नेत्राग्नि से कालयवन भस्म हो गया।) सम० **प्रसादकः** कृष्ण का विशेषण।

मुचिरः [मुच्+किरच्] 1. देवता 2. गुण 3. वायु।

मुचिलिन्दः एक प्रकार का फूल, तिलपुष्प।

मुचुटी 1. अंगुलियां चटकाना 2. मुक्का।

मुज्, मुञ्ज (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० भोजति, भुञ्जति, भोजयति ते, भुञ्जयति ते) 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना 2. शब्द करना।

मुञ्जः [मुञ्ज्+अच्] एक प्रकार का घास (जिससे कि ब्राह्मण की तड़ागी तैयार करनी चाहिए)--मनु० २।४३ 2. धारापति राजा भुंज का नाम (कहते हैं कि मुंज राजा भोज का चाचा था)। सम० **केशः** 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण, **केशिन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण, **बन्धनम्** यज्ञोपवीत पहनना अर्थात् तड़ागी धारण करना, अर्थात् उपनयन संस्कार, **वासस्** (पुं०) शिव का विशेषण।

मुञ्जरम् [मुञ्ज्+अरन्] कमल की रेशेदार जड़।

मुट् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मोटति, मोटयति ते) 1. कुचलना, तोड़ना, पीसना, चूरा करना 2. कलंकित करना, बुरा भला कहना (इस अर्थ में धातु तुदा० की भी है)।

मुण् (तुदा० पर० मुणति) प्रतिज्ञा करना।

मुण्ड् (भ्वा० पर० मुण्डति) कुचलना, पीसना।

मुण्ड I (भ्वा० पर० मुण्डति) 1. क्षौर कर्म करना, मुंडना 2. कुचलना, पीसना। II (भ्वा० आ० मुण्डते) ढूंढना।

मुण्ड (वि०) [मुण्ड्+अच्] 1. मुंडा हुआ 2. कतरा हुआ, छोटा हुआ 3. कुण्ठित 4. अधम, नीच, **डः** 1. जिसका सिर मुंडा हुआ हो या गंजा हो 2. मुंडा हुआ या गंजा सिर 3. मस्तक 4. नाई 5. पेड़ का तना जिसकी ऊँची ऊँची शाखाएँ छांग दी गई हों, **डा** किसी विशेष आश्रम की स्त्रीभिक्षुणी, --**डम्** 1. सिर 2. लोहा। सम०—**अयसम्** लोहा, **फलः** नारियल का पेड़, **मण्डली** ऐसा जनसमूह जिनके सिर मुंडे हुए हों,—**लोहम्** लोहा,—**शालिः** एक प्रकार का चावल।

मुण्डकः [मुण्ड-कन्] 1. नाई 2. पेड़ का तना जिसकी बड़ी बड़ी शाखाएँ छांग दी गई हों, ठूंठ,--**कम्** सिर। सम०--**उपनिषद्** (स्त्री०) अथर्ववेद की एक उपनिषद् का नाम।

मुण्डनम् [मुण्ड्-ल्युट्] सिर मुंडना, मुंडन।

मुण्डित (भू० क० कृ०) [मुण्ड्+क्त] 1. मुंडा हुआ 2. कतरा हुआ या छोटा हुआ, छांगा हुआ,—**तम्** लोहा।

मुण्डिन् (पुं०) [मुण्ड+इनि] 1. नाई 2. शिव का विशेषण।

मुत्थम् मोथा।

मुद् I (चुरा० उभ० मोदयति-ते) 1. मिलाना, घोलना 2. स्वच्छ करना, निर्मल करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मो (म्वा० आ० मोदते, प्रेर० मोदयति ते, इच्छा० मुमुदिषते या मुमोदिषते) हर्ष मनाना, प्रसन्न होना, हृष्ट या आनन्दित होना यथा दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः भग० १६।१५, मनु० ३।२३२, २६१. भट्टि० १५।९६, अनु, अनुमोदन करना, मंजूरी देना, अनुमति देना, स्वीकृति देना, रघु० १४।४३, आ , 1. प्रसन्न या हर्षित होना, हर्ष मनाना 2 सुगंधित होना, (प्रेर०) सुगंधित करना, सुवासित करना, परिमलैरमोदयन्ती दिशः भामि० १।५६, प्र ,अत्यंत प्रसन्न होना बहुत खुश होना, रघु० ६। ८६, मा० ५।२६ ।

मुद्, मुदा (स्त्री०) [मुद्+(भावे) विवप्, मुद्+टाप्] हर्ष, आनंद, प्रसन्नता, खुशी, मनोज शिवमुदं तेन ततान माधवः रघु० ३।२५, अत्यन्त पुरो हार्दिकीं मुदमादधानः शि० ५।५८, २।२३, विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।२५, द्विगुणं मुदा गीत० ११, कि० ५।२५, रघु० ७।३० ।

मुदित (भू० क० कृ०) [मुद्+क्त] प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, खुश, हर्षयुक्त, **तम्** 1. प्रसन्नता, आनंद, खुशी हर्ष 2. एक प्रकार का मैथुनाभिकर्षण, **ता** हर्ष, आनंद ।

मुदिरः [मुद्+किरच्] 1. बादल प्रचुर पुरन्दरधनुरञ्जित-नवमुदिरसुदिर सुवेषम् गीत० २, या, मुञ्चसि माद्यापि रयं भामिनि मुदिरालिरिवाय भामि० २।८८ 2. प्रेमी, कामासक्त 3. मेंढक ।

मुद्गः [मुद्+मक्] 1. एक प्रकार का लांगिया, मूंग 2. ढक्कना, आवरण 3. एक प्रकार का समुद्री-पशु । समः भुज्, भोजिन् (पुं०) घोड़ा ।

मुद्गरः [मुद्गं किरति गृ+अच्] 1. हथौड़ा, सोंगरी, जैसा कि 'मोहमुद्गर' शंकराचार्य कृत एक छोटा काव्य) में—रघु० १२।७३ 2. गदका, गदा 3. मिट्टी के ढेले तोड़ने वाली सोंगरी 4. डम्बल, लोहे के छोटे मुगदर 5. कली 6. एक प्रकार की चमेली (इस अर्थ में यह शब्द नपुं भी होता है) ।

मुद्गलः [मुद्गं+ला+क] एक प्रकार का घास ।

मुद्गदृष्टः (पुं०) एक प्रकार की मूंग ।

मुद्रणम् [मुद्+रा+ल्युट्, पृषो०] । मोहर लगाना, मुद्रांकित करना, छापना, चिह्न लगाना 2. मूंदना, बंद करना ।

मुद्रयति (ना० धा० पर०) 1. मोहर लगाना अथवा मुद्रा या मुद्रयेनम्—मुद्रा० १ 2. मुद्रांकित करना, चिह्न लगाना, अंकित करना 3. ढकना, मूंदना (आलं०) त्रिवरणि मुद्रयन् द्वागूर्णायुरिव सज्जनो जयति —भामि० १।९० ।

मुद्रा [मुद्+रक्+टाप्] । मोहर लगाने या मुद्रांकित करने का उपकरण, विशेषतः मोहर लगाने की अंगूठी नामांकित अंगूठी—अथवा मुदयत मुद्रयेनम् मुद्रा० १, नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य परस्परमवलोकयन्तः श० १ 2. मोहर, छाप, अंक, चिह्न चतुःसमुद्रमुद्रः का० १९१, सिन्दूरमुद्राङ्कितः (बाहुः), गीत० ४ 3. प्रवेश-पत्र, पारपत्र (जैसा कि मुद्राङ्कित रूप में दिया जाता है) अगृहीतमुद्रः काटकान्निष्क्रामसि—मुद्रा० ५ 4. मोहर लगा सिक्का, रुपया पैसा आदि सिक्के 5. एक, तमगा 6 प्रतिभा चिह्न, बिल्ला, प्रतीकात्मक चिह्न 7. बंद करना, मूंदना, मोहर लगा देना संज्ञा-मुद्रा स च कर्णपाशः—उत्तर० ६।२०, क्षिप्तद्रिद्रामुद्रां मदनकलहच्छेद सुलभाम् मा० २।१५ 8. रहस्य 9. सर्वनिष्ठ भक्ति में अंगुलियों की विशिष्ट मुद्रा । समः अक्षरम् 1. मोहर का अक्षर 2. टाइप (छापने के अक्षर आधुनिक प्रयोग), कारः मोहर बनाने वाला, मार्गः मस्तक के बीच में होने वाला रंध्र जिसके द्वारा (योगियों का) प्राणवायु बाहर निकल जाता है, ब्रह्मरंध्र ।

मुद्रिका [मुद्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] मोहर लगाने की अंगूठी दे० 'मुद्रा'

मुधित (वि०) [मुद्रा+इतच्] 1. मोहर लगा हुआ, चिह्नित, अंकित, मुद्रांकित त्यागः सप्तसमुद्रमुद्रित-मही निजगाद नाववधिः—महावी० २।३६, काश्मीर-मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य गीत० १, स्वयं सिन्दूरेण द्विपेण मुद्रामुद्रित इव ११ 2. बन्द किया हुआ, मुहरबंद 3. अनखिला ।

मुधा (अव्य०) [मुह्+का, पृषो० हृस्व धः] 1. व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निश्चेष्टता के कारण, बिना किसी लाभ के—यत्किंचिदपि संवीक्ष्य कुरुते हसित मुधा—सा० द० 2. बकवास रीति से, मिथ्यारूप से रात्रिः सैव पुनः स एव दिवसो मत्वा मुधा जन्तवः—भर्तृ० ३।७८ (पाठान्तर) ।

मुनिः [मन्+इन्, उत्वं मनते जानाति यः] 1. ऋषि, महात्मा, सन्त, भक्त, संन्यासी मतीवात्मयहं व्यासः भग० १०।३७, पृथ्वी मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः श्र० २।२४, रघु० १।८, ३।६५, भग० २।५६ 2. अगस्त्य मुनि का नाम 3. व्यास का नाम 4. बुद्ध का नाम 5. आम का पेड़ 6. 'सात' की संख्या (व० व०) सप्तर्षि । समः—अन्नम् (व० व०) संन्यासियों का भोजन, इन्द्रः—ईशः—ईश्वरः एक बड़ा ऋषि, त्रयम् 'मुनित्रय' अर्थात् पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि (जो कि अन्तःप्रेरणा प्राप्त मुनि माने जाते हैं)—मुनित्रयं नमस्कृत्य या, त्रिमुनि व्याकरणम् सिद्धा०,—पितृलम् तीर्थ, पुङ्गवः महान् या प्रमुख ऋषि,—पुत्रः 1. खंजनपक्षी 2. दमनक वृक्ष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

+भेषजम् 1. आँवला 2. उपवास,—व्रतम् संन्यासी की प्रतिज्ञा—कु० ५।४८।

मुम्च् (म्वा० पर० मुंचति) जाना, हिलना—डुलना।

मुमुक्षा [मोक्तुमिच्छा - मुच्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] छुटकारे या मोक्ष की इच्छा।

मुमुक्षु (वि०) [मुच्+सन्+उ] 1. बरी या स्वतंत्र होने का इच्छुक 2. कार्यभार से मुक्त होने का इच्छुक 3. (बाण आदि) छोड़ने को प्रस्तुत रघु० ९।५८ 4. सांसारिक जीवन से मुक्त होने का इच्छुक, मोक्ष, प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील,—क्षुः मोक्ष के लिए प्रयत्नशील ऋषि कु० २।५१, भग० ४।१५, विक्रम० १।१।

मुमुक्षुतः [मुच्+आनच्, सन्वद्भावाद्द्वित्वम्] बादल।

मुमूर्षा [मृ+सन्+अ+टाप्] मरने की इच्छा – भट्टि० ९।५७।

मुमूर्षु (वि०) [मृ+सन्+उ] मरणासन्न, मृत्यु के निकट।

मुर् (तुदा० पर० मुरति) घेरना, अन्तर्वृत्त करना, परिवृत्त करना, लिपटना।

मुरः [मुर्+क] एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मार गिराया था, रम् परिवृत्त करना, घेरना। सम०—अरिः 1. कृष्ण का विशेषण—मुरारिमारादुपदर्शयन्—यसौ गीत० १ 2. 'अनर्घराघव' नाटक का प्रणेता, —जित्, —द्विष्, भिद्, मर्दनः,—रिपुः,—वैरिन्, हन् (पुं०) कृष्ण या विष्णु के विशेषण —प्रकीर्णसिन्दूरजयेति भूजदण्डो मुरजितः—गीत० १, मुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम् १०।

मुरजः [मुरात् वेष्टनात् जायते—जन्+ड] 1. एक प्रकार का ढोल या मृदंग -- सानन्दं नन्दिहस्ताहतं मुरजरवः····मा० १।१, संगीताय प्रहृतमुरजाः—मेघ० ४४, ५६, मालवि० १।२२, कु० ६।४१ 2. किसी श्लोक की भाषा को मुरज के रूप में व्यवस्थित करना, मुरजबंध भी इसे ही कहते हैं काव्य० ९ ; सम०—फलः कटहल का पेड़।

मुरजा [मुरज+टाप्] 1. एक बड़ा ढोल 2. कुबेर की पत्नी का नाम।

मुरन्दला एक नदी का नाम (इसे ही अहुधा 'नर्मदा' मानते हैं)।

मुरला [मुर+ला+क+टाप्] केरल देश से निकलने वाली एक नदी का नाम (उत्तर० ३ में 'तमसा' के साथ इसका उल्लेख आता है) मुरलामारुतोद्धूत-मगमत् कैतकं रजः -- रघु० ४।५५।

मुरली [मुरम् अङ्गुलिवेष्टनं लाति—मुर+ला+क+ङीष्] बांसुरी, वंशी, वेणु। सम०—धरः कृष्ण का विशेषण।

मुर्छ् (म्वा० पर० मूर्छति, मूर्छित, या मूर्त, इस धातु को 'मूर्छ्' या 'मूर्च्छ' भी लिखते हैं) 1. ठोस बनाना, जमना, गाढ़ा होना 2. मूर्छित होना, बेहोश होना, मुर्झा जाना, अचेतन होना, संज्ञारहित होना—पतत्युद्याति मूर्छत्यपि---गीत० ४ क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छित-जनाधीनं किं पौरुषम्· गीत० ३, भट्टि० १५।५५ 3. उगना, -बढ़ना, बलवान् या शक्तिशाली होना —मुमूर्छ सहजं तेजो हविर्धेव हविर्भुजः---रघु० १०।७९, मुमूर्च्छ सख्यं रामस्य १२।५७, मूर्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१८ 4. बल एकत्र करना, मोटा होना, सघन होना तमसा निशि मूर्छताम्--विक्रम० ३।७ 5. (क) प्रभाव डालना —छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा--श० ७।३२, (ख) छा जाना, प्रभावित करना--न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य- रघु० २।३४ 6. भरना, व्याप्त होना, प्रविष्ट होना, फैल जाना कु० ६।५९, रघु० ६।९ 7. जोड़ का होना 8. बार बार होना 9. ऊँचे स्वर से शब्द करवाना--प्रेर० (मूर्छयति—ते) जडीभूत करना, मूर्छित करना--क्लेशैर्मोहमूर्छयते -गीत० १, वि—, मूर्छित होना, बेहोश होना, सम्—, 1. मूर्छित होना, बेहोश होना 2. ताकतवर या शक्तिशाली होना, बलवान् होना, प्रबल होना, कि० ५।४१।

मुर्मुरः [मुर्+क पृषो० द्वित्वम्] 1. तुषाग्नि, तुष या भूसी से तैयार की हुई अग्नि स्मरहुताशनमुर्मुरयूर्णतां रघुरिवाश्रवणस्य रजःकणाः—शि० ६।६ 2. कामदेव 3. सूर्य का एक घोड़ा।

मुर्व् (म्वा० पर० मुर्वति) बांधना, कसना।

मुशली [मुष्+अटन्+ङीप्, पृषो० षस्य सः] एक प्रकार का अन्न।

मुश (स)ली छोटी छिपकली।

मुष् (क्रया० पर० मुष्णाति, मुषित, इच्छा० मुमुषिषति) 1. चुराना, उठा लेना, लूटना, डाका डालना, अपहरण करना (द्विक० भाषों जाती हैं, देवदत्तं शतं मुष्णाति परन्तु लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग), पुषाण रत्नानि-- शि० १।५१, ३।३८. क्षत्रस्य मृष्णन् वसु जैत्रमोजः—कि० ३।४१ 2 ग्रहण लगना, ढकना, लपेटना, छिपाना –सैन्यरेणुमुषितार्कदीधितिः —रघु० ११।५१ 3. बन्दी बनाना, मुग्ध करना, लुभाना 4. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना—मुष्णन् प्रियमशोकानां रक्तैः पल्लवसम्पदः, गीतैर्वंशकृजितानां च कोकिलभ्रमरकलिम्—कथा० ५५।११३, रत्न० १।२४, भट्टि० ९।३२, मेघ० ४७, परि—, लूटना, वंचित करना—परिमुषितरत्नं त्रिभुवनम् —मा० ५।३०, प्र—, अपहरण करना, निस्तेज करना भट्टि० १७।६०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ii (स्वा० पर० मोषति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, हत्या करना।
iii (दिवा० पर० मुष्यति) 1. चुराना 2. तोड़ना, नष्ट करना—भट्टि० १५।१६।

मुषकः [मुष्+ण्वुल्] चूहा।

मुषल दे० 'मुसल'।

मुषा-थी [मुष्+क+अप्, ङीप् वा] कुठाली।

मुषित [भू० क० कृ०] [मुष्+क्त] 1 लूटा गया, चोरी किया गया, अपहृत 2. अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया 3. वञ्चित, मूर्ख 4. ठगा गया, धोखा दिया गया दैवेन मुषितोऽस्मि का०।

मुषितकम् [मुषित+कन्] चुराई हुई संपत्ति।

मुष्कः [मुष्+कक्] 1. अंडकोष 2. फोता 3. गठीला तथा हृष्ट-पुष्ट पुरुष 4. राशि, ढेर, परिमाण, समुच्चय 5. चोर। सम०—देशः अण्डकोष का स्थान, शून्यः हिजड़ा, बधिया किया हुआ पुरुष, शोफः फोते की सूजन।

मुष्ट [भू० क० कृ०] [मुष्+क्त] चुराया हुआ धन ५।२८, ८ष्टम् चुराई हुई सम्पत्ति।

मुष्टिः(पुं०, स्त्री०) [मुष्+क्तिच्] 1. भींचा हुआ हाथ, मुट्ठी—कणाश्चभक्त्वा विभिदे निविडोऽपि मुष्टिः—रघु० ९।५८, १५।२१, शि० १०।५९ 2. मुट्ठीभर, जितना एक मुट्ठी में आवे, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः शा० ४।१४, रघु० १२।५७, कु० ७।६९, मेघ० ६८ 3. मूठ, दस्ता 4. एक विशेष तौल, (=एक पल के बराबर) 5. पुरुष का लिंग। सम०—देशः धनुष का बीच का भाग, वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है, यूतम् एक प्रकार का खेल, जुआ, पातः मुक्केबाजी, बंधः 1. मुट्ठी बांधना 2. मुट्ठीभर, —युद्धम् मुक्केबाजी, घूंसेबाजी।

मुष्टिकः [मुष्टिर्मोषण प्रयोजनमस्य कन्] 1. सुनार 2. हाथों की विशिष्ट स्थिति 3. एक राक्षस का नाम, कम् मुक्केबाजी, घूंसेबाजी। सम० अन्तकः बलराम का विशेषण।

मुष्टिका [मुष्टिक+टाप्] मुट्ठी।

मुष्टिन्धयः [मुष्टिं धे+खश् मुम्] बच्चा, बालक, शिशु।

मुष्टीमुष्टि (अव्य०) [मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मुक्केबाजी, घूंसेबाजी, हस्ताहस्ति युद्ध।

मुष्टिकः रोई, काली सरसों।

मुस् (दिवा० पर० मुस्यति) फाड़ना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना।

मुसलः, लम् [मुस्+कलच्] 1. गदका, गदा 2. मूसल (चावल कूटने के काम आता है) मुसलमिदमियं च पातकाले मुहुरनु याति कलेन डुकृतेन—मुद्रा० १।४, भनु० ६।५६। सम० आयुधः बलराम का विशेषण, उलूखलम् मूसली और खरल।

मुसलामुसलि (अव्य०) [मुसलैः मुसलैः प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मूसल या गदाओं से लड़ना।

मुसलिन् (पुं०) [मुसल+इनि] 1. बलराम का विशेषण 2. शिव का विशेषण।

मुसल्य (त्रि०) [मुसल-यत्] गदा से चूर-चूर किये जाने अथवा मार दिये जाने योग्य।

मुस्त् (चुरा० उभ० मुस्तयति-ते) ढेर लगाना, इकट्ठा करना, संग्रह करना, संचय करना।

मुस्तः,—तम्, स्ता [मुस्त्+क, स्त्रियां टाप्] एक प्रकार की घास, गोथा विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ता-क्षतिः पल्वले—श० २।९, रघु० ९।५९, १५।१५। सम० अदः आदः सूअर।

मुस्तम् [मुस्+रक्] 1. मुसली 2. आँसू।

मुह् (दिवा० पर० मुह्यति, मुग्ध या मूढ़) मूर्छाना, मूर्छित होना, चेतना नष्ट होना, बेहोश होना इष्टाहं द्रष्टुमाद्रा तां स्मरश्चेव मुमोह सः—भट्टि० ६।२१; १।२०, १५।१६ 2. उद्विग्न होना, विह्वल होना, घबराना 3. मूढ़ बनना, जड़ होना, मोहित होना 4. गलती करना, भूल होना—प्रेर० (मोहयति ते) 1. जड़ करना, मोहित करना मा मामुमुह्यलु भवन्त-मनन्यजन्मा मा० १।३२ 2. अस्तव्यस्त करना, घबराना, उद्विग्न होना भग० २।२, ४।१६, परि—, घबराया जाना, उद्विग्न हो जाना (प्रेर० आ०) फुसलाना, बहकाना, ललचाना—भट्टि० ८।६३, प्र—, जडीभूत होना, मुग्ध होना, वि—, अव्यवस्थित होना, घबराना, उद्विग्न होना, विह्वल होना भग० २।६२, ३।६, २७ 2. मुग्ध होना या मोहित होना, सम्—, 1. व्याकुल होना 2. मूर्ख या अज्ञानी होना (प्रेर०) मोहित करना, जडीभूत करना—अधर-मधुस्यन्दन संमोहिता गीत० १२।

मुह्र (वि०) [मुह्+किरच्] मूर्ख, मूढ़, जड़, रः 1. कामदेव 2. मूर्ख, बुद्धू।

मुहुस् (अव्य०) [मुह्+उसिक्] बहुधा, लगातार, निरंतर, बार बार—गीताभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः श० १।७, २।६, (इस अर्थ में प्रायः 'द्विरुक्त' कर दिया जाता है) मुहुर्मुहुः 1. बार बार, फिर फिर, प्रायः बहुशः गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः 2. कुछ समय या क्षण के लिए, थोड़ी देर के लिए मेघ० ११५, उत्तरोत्तर वाक्यखंडों में 'अब, अब' एक बार, दूसरी बार' अर्थ को प्रकट करने में प्रयुक्त होता है गुहुरनुपतते वाला मुहुः पतति विह्वला, मुहुरालभ्यते भीता मुहुः क्रोशति रोदिती सुभा०, मुद्रा० ५।३। सम०—भाषा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचस् (नपुं०) पिष्टपेषण, पुनरुक्ति, **भज्** (पुं०) घोड़ा।

मुहूर्त:,-र्तम् [मुह्+क्त धातोः पूर्व मुट् च] 1. एक क्षण, समय का अल्पांश, **निमिष**--नवाब्दानीकमुहूर्तलाञ्छने रघु० ३।५३, संध्याभ्रेरेव मुहूर्तरागः --पंच० १।११४, मेघ० १९, कु० ७।५० 2. काल, समय (शुभ या अशुभ) 3. अड़तालीस मिनट का काल,-- **तः** ज्योतिषी।

मुहूर्तकः [मुहूर्त+कन्] 1. निमिष, क्षण 2. अड़तालीस मिनट का काल।

मू (भ्वा० पर० मवते) बांधना, जकड़ना, कसना।

मूक (वि०) [मू+कक्] 1. गूंगा, मौन, चुप्पा, वाक्-शून्य मूक करोति वाचाल, मूकाम्डजं (कानलम्) कु० ३।४०, सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकाम् गीत० ७ 2. बेचारा, दीन, दुःखी, **कः** 1. गूंगा मौनान्मूकः --हि० २।२६ (पाठांतर), मनु० ७।१४९ 2. बेचारा, दीन 3. मछली। सम०--अम्बा दुर्गा का एक रूप, **भावः** चुप्पी, मूकता, वाक्शून्यता।

मूकिमन् (पुं०) [मूक+इमनिच्] गूंगापन, मूकता, चुप्पी।

मूढ (भू० क० कृ०) [मुह्+क्त] 1. जड़ीभूत, मोहित 2. उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल, सूझबूझ से हीन--किं कर्तव्यतामूढः करणीय कर्तव्य की सूझ से हीन व्यक्ति' इसी प्रकार 'ह्रीमूढ' मेघ० ६८ 3. नासमझ, मूर्ख, मन्दबुद्धि, जड, अज्ञानी अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्--रघु० २।४७ 4. भ्रान्त, भ्रममूर्ण, प्रताग्नि, विचलित 5. अपरुष-जन्मा 6. सशयोत्पादक, **ढः** मूर्ख, जड़, मन्दमति, अज्ञानी पुरुष--मूढः परप्रत्यनयबुद्धिः मालवि० १।२। सम० **आत्मन्** 1. मन से जड़ीभूत 2. निर्बुद्धि, **जड़, मूर्ख**, --**गर्भः** मृत गर्भ,- **चारः** अशुद्ध भाव, गलत, विचारण, गलत धारणा, **चेतस्, चेतस्** (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी- अवगच्छति मूढचेतनः प्रिय-नाशं हृदि शल्यमर्पितं रघु० ८।८८, **धी, बुद्धि, मति** (वि०) निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, सीधासादा --कि० १।३०, **सत्त्व** (वि०) मोहित, दीवाना।

मूत (वि०) [मू+क्त] 1. बांधा हुआ, करता हुआ 2. बंदी किया हुआ।

मूत्रम् [मूत्र्+घञ्] मूत, पेशाब, वाष्प मत्रं समुन्मु-ञ्चेत्--मनु० ४।५६, मूत्रं चकार मूता, लघुशंका की सम० **आघातः** मत्रसंबंधी रोग, **आशयः** पेट के नीचे का स्थल जहां मूत्र भरा रहता है, **उत्सङ्ग** दे० 'मूत्रसंग', **कृच्छ्रम्** पीड़ा के साथ मूत्र का आना, मूत्रक्षरण, बूंद २ पेशाब का पीड़ा देकर आना, **--कोशः** अंडकोश, पोता,--**क्षयः** मूत्र का स्राव कम होना, **जठरः**, **रम्** मूत्र रुक जाने से पेट की सूजन, --**दोषः** मूत्रसंबंधी रोग, **निरोधः** मूत्र का रुक जाना, **--पतनः** मूत्रभाजीर,--**पथः** मूत्रनलिका, **परीक्षा** मूत्र-निरीक्षण, मूत्र की परीक्षा करना, **पुटम्** पेट का निचला भाग, मूत्राशय, **मार्गः** मूत्रनलिका मूत्रद्वार, **वर्धक** (वि०) अधिक पेशाब लाने की दवा, मूत्रल, **शूलः**, **लम्** मूत्रसंबंधी पीड़ा,-- **संग** पेशाब आने में रुकावट, पीड़ा के साथ रक्त पेशाब आना।

मूत्रयति (ना० धा० पर०) पेशाब, लघुशंका करना तिष्ठन्मूत्रयति महा०।

मूत्रल (वि०) [मूत्र+ला+क] पेशाब लाने वाली (दवा), मूत्रवर्धक औषधि।

मूत्रित (वि०) [मूत्र+इतच्] मूत्र के रूप में निकला हुआ।

मूर्ख (वि०) [मुह्--ख, मूर् आदेशः] जड़ मन्दमति, बुद्धू, मूढ़, अनजान **खः** 1. मन्दमति, बुद्धू न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्-- भर्तृ० २।६, ८, मूर्खबेलादयो राधिनं मां प्रतिपादयिष्यसि विक्रम० 2. एक प्रकार का लोबिया। सम० **भूयम्** मूर्खता, जड़ता, अज्ञानता।

मूर्च्छन (वि०) (स्त्री०--नी) [मूर्च्छ्+णिच् + ल्युट्] 1. जड़ीभूत करने वाला, जड़ता या बेहोशी पैदा करने वाला, (कामदेव के एक बाण का विशेषण) 2. बढ़ाने वाला, वर्धन करने वाला, बल देने वाला,--**नम्** 1. मूर्छित होना, बेहोश होना 2. (संगी० में) स्वरा-रोहण, स्वरविन्यास, स्वरों का नियमित आरोहणाव-रोहण, सुखद स्वरसंस्थान करना, लयपरिवर्तन करना, स्वरग्रामंजस्य, स्वरमाधुर्य --स्फुटीभवद्ग्रामविशेष-मूर्च्छनाम् शि० १।१०, भृशोभृशः स्वयमपि कृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ति मेघ०८६, वर्णानामपि मूर्च्छना-न्तरगतां तारं विरावे मृदु मूर्च्छ० ३।५, सप्त स्वरा-स्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनाश्चैकविंशतिः पंच० ५।५४ (सूर्च्छा या मूर्च्छना की परिभाषा कमान्स्वराणां सज्जनामारोहरूचावरोहणम्, सा मूर्च्छेत्युच्यते ग्रामस्था एताः सप्त सप्त च, अधिक विवरण के लिए दे० शि० १।१० पर मल्लि०।

मूर्च्छा [मुर्च्छ् (भावे) अङ्+टाप्] 1. बेहोशी, संज्ञा हीनता - रघु० ७।४४ 2. आत्म अज्ञान या व्यामोह 3. धातु फूंक कर भस्म बनाने की प्रक्रिया,-मूर्च्छा गतो मृतो वा निदर्शनं पारदोऽत्र रसः--भामि० १।८५।

मूर्च्छित (वि०) [मूर्च्छा+इतच्] बेहोश, अचेत, चेतना-रहित।

मूर्च्छित (भू० क० कृ०) [मूर्च्छा जाता अस्य-इतच्, मूर्च्छ् + क्त वा] 1. बेहोश, संज्ञाहीन, चेतनारहित 2. मूर्ख, जड़, मूढ 3. बढ़ाया हुआ, वर्धित 4. प्रचंड

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया हुआ, तीव्र किया हुआ 5. उद्दिग्न, व्याकुल 6. भरा हुआ, 7. फूंका हुआ।

मूर्त (वि०) [मूर्च्छ्+क्त] 1. देहोश, संज्ञाहीन 2. जड़, मूढ़ 3. शरीरधारी, मूर्तिमान् मूर्तो विघ्नास्तपस इव नो भिन्नसार इवूर्ध्वः—श० १।३६, प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः—उत्तर० ३।१४, रघु० २।६९, ७।७०, कु० ७।४२, पंच० २।९९ 4. भौतिक, पार्थिव 5. ठोस, कड़ा।

मूर्ति: (स्त्री०) [मूर्च्छ्+क्तिन्] 1. निश्चित आकार और सीमा की कोई वस्तु, भौतिक तत्त्व, द्रव्य, सत्त्व 2. रूप, दृश्यमान आकृति, शरीर, आकृति, मुद्रा० २।२, रघु० ३।२७, १।४५ 3. मूर्तिमत्ता, शरीरधारण, प्रतिबिंब, स्पष्टीकरण करुणस्य मूर्तिः उत्तर० ३।४, पंच० २।१५९ 4. प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, पुतला, बुत 5. सौन्दर्य 6. ठोसपना, कड़ापन। समः -धर, संधर (वि०) शरीरधारी, मूर्तिमान् उत्तर० ६, पः प्रतिमा का पुजारी, जो किसी देव प्रतिमा के पूजाकृत्य में लगाया गया है।

मूर्तिमत् (वि०) [मूर्ति+मतुप्] 1. भौतिक, पार्थिव 2. शरीरधारी, देहवान्, साकार शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया—श० ५।१५, तव मूर्तिमानिव गंहोत्सवः करः—उत्तर० १।१८, रघु० १२।६४ 3. कड़ा, ठोस।

मूर्धन् (पुं०) [मुह्यत्यस्मिन्नाहते इति मूर्धा -मुह+कनि, उपधायाः दीर्घो धोऽन्तादेशो रमागमश्च] 1. मस्तक, भौ 2. सिर; —नतेन मूर्ना हरिरग्रहीदपः—शि० ११।८, रघु० १६।८१, कु० ३।१२ 3 उच्चतम या प्रमुख भाग, चोटी, शिखर, शृंग, सिर —अभिख्यन्मनुजेन्द्राणां मूर्धनि देवपतिर्यथा महा० "सब राजाओं के शीर्षभाग पर" आदि —भूम्यां पर्वतमूर्धनि —श० ५।७, मेघ० १७ 4. (अतः) नेता, मुखिया, मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख 5. सामने का, हरावल, अग्रभाग -स किल संयुगमूर्ध्नि सहायतां मघवतः प्रतिपद्य महारथः—रघु० ९।९१ समः —अन्तः सिर का मुकुट,—अभिषिक्त (वि०) अभिमंत्रित, किरीटधारी, यथाविधि पद पर प्रतिष्ठापित,—रघु० १६।८१ (क्तः) 1. अभिमंत्रित या अभिषिक्तराजा 2. क्षत्रिय जाति का पुरुष 3. मंत्री 4.मूर्धाभिषिक्त (1)—अभिषेकः अभिमंत्रण, प्रतिष्ठापन,—अवसिक्तः 1. ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति 2. अभिमंत्रित राजा —कर्णी कर्परी (स्त्री०) छत्री, जः 1. (सिर के) बाल —पर्याकुला मूर्धजाः—श० १।३०, विललाप विकीर्णमूर्धजा—कु० ४।४, 'शोकातिरेक में उस स्त्री ने अपने बाल नोच डाले' 2. अयाल, -ज्योतिस् (नपुं०) दे० ब्रह्मरन्ध्र या मुद्रा-मार्ग पुष्पः शिरीष का पेड़, -रसः उबले चावलों का मांड, -वेष्टनम्, साफा, मुकुट, शिरोमाल्य।

मूर्धन्य (वि०) [मूर्धनि भवः -यत्] 1. सिर पर विद्यमान 2. मूर्धन्य अर्थात् मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण ऋ, ॠ, ऌ ॡ ड ढ ड् ढ् ण् र् और ष्, ऋटुरषाणां मूर्धा 3. मुख्य, प्रमुख, सर्वोत्तम।

मूर्धन् दे० 'मूर्धन्'।

मूर्वा, -र्वी, मूर्विका [मुर्व+अच्+टाप्, ङीष् वा; मूर्वा +कन्+टाप् इत्वम्] एक प्रकार की लता जिसके देशों से धनुष की डोरी या क्षत्रियों की (कटिसूत्र) तड़ागी तैयार की जाती है।

मूल: (भ्वा० उभ० मूलति—ते, जड़ जमना, दृढ़ होना, स्थिर होना ii) (चुरा० उभ० मूलयति—ते मूलित) पौधा लगाना, उगाना, पालना, उद्—, उखाड़ना, जड़ से काटना, मूलोच्छेदन करना—कि० १।४१, विनष्ट करना, विध्वंस करना, निस्—, जड़ से उखाड़ना, उन्मूलित करना।

मूलम् [मूल+क] 1. जड़ (आलं० से भी) -तरुमूलानि गृहीभवंति तेषाम् -श० ७।२०, या, पालिनो धौतमूलाः १।२०, मूलबन्ध जड़ पकड़ना, जड़ जमना, —बद्धमूलस्य मूलं हि महद्भैरतरोः स्थिरः—शि० २।३८ 2. जड़, किसीवस्तु का सबसे नीचे का किनारा या छोर -कल्पाश्चवासीद्गसना तदानीम-द्गुण्डमूलार्पित सूत्रशेषा —रघु० ७।१०, इसी प्रकार 'प्राचीमूले —मेघ० ९१ 3. नीचे का भाग या किनारा, आधार, किसी भी वस्तु का किनारा जिसके सहारे वह किसी दूसरी वस्तु से जुड़ी हो —बाहुर्मूलम् —शि० ७।३२, इसी प्रकार पादमूलं, कर्णमूल, ऊरुमूलम् आदि 4. आरंभ, शुरू -आमूलाच्छ्रोतुमिच्छामि श० १ 5. आधार, नींव, स्रोत, मूल, उत्पत्ति —सर्वेषामर्हस्थमूलकाः—महा०, रक्षोगृहे स्थितिर्मूलम्—उत्तर० १।९, इति केनाप्युक्तं तत्र मूलं मृग्यम्, 'इसका स्रोत या प्रमाण मालूम किया जाना चाहिए' 6. किसी वस्तु का तल या पैर, पर्वतमूलम्, गिरिमूलम् आदि 7. पाठ, मूल सबद्ध (भाष्य से विवेचित) 8. पड़ौस, आस पास, सामीप्य 9. मूलधन, मूलपूंजी 10. कुलक्रमागत सेवक 11. वर्णमूल 12. राजा का अपना निजी प्रदेश -स गुप्तमूलप्रत्यन्तः -रघु० ४।२६, मनु० ७।१८४ 13. विक्रेता जो स्वयं विक्रेयवस्तु का स्वामी न हो—मनु० ७।२०२, (अस्वामिविक्रेता कुल्लू०) 14. ग्यारह तारकाओं का पुंज जो सत्ताइस नक्षत्रों में से उन्नीसवां (मूलनक्षत्र) है 15. झाड़ी, झाड़-झंखाड़ 16. पोपरा मूल 17. अंगुलियों की विशेष स्थिति। समः —आधारम् 1. नाभि 2. जननेन्द्रिय के ऊपर एक रहस्य मय वृत्त,—आत्मन्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूली,—आयतनम् मूल आवासस्थान—आश्रित् (वि०) जो कन्दमूलादि खाकर जीवित रहे,—आहृतम् मूली —उच्छेदः पूर्णध्वंस, पूर्णविनाश, पूरी तरह उखाड़ फेंकना,—कर्मन् (नपुं०) जादू,—कारणम् मूलहेतु, आदि कारण, कु० ६।१३,—कारिका भट्टी, चूल्हा —कृच्छ्रः—कृच्छ्रम् एक प्रकार की तपस्या, केवल जड़ें खाकर निर्वाह करना,—केशरः नीबू, गुणः किसी मूल का गुणांक,—जः जड़ बोने से उत्पन्न होने वाला पौधा,(जम्) हरा अदरक,—द्वेषः कंस का विशेषण, —द्रव्यम् धनम् मूलधन, माल, वाणिज्यवस्तु, पूंजी, —धातुः लसीका,—निकृन्तन (वि०) जड़ से काट डालने वाला,—पुरुष 'पशुपाल' किसी परिवार का वंशप्रवर्तक पुरुष,—प्रकृतिः (स्त्री०) लक्ष्मी का प्रधान या प्रकृति, फलः कटहल का पेड़,—भद्रः कंस का विशेषण,—भृत्यः पुराना तथा कुलक्रमागत सेवक,—वचनम् मूलपाठ, वित्तम् पूंजी, वाणिज्य वस्तु, माल, —विभुजः रथ, शाकटः,—शाकिनम् वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मूल-पौधे बोये जाते हैं, —स्थानम् 1. आधार, नींव 2. परमात्मा 5. हवा, वायु,—स्रोतस् (नपुं०) प्रधान धारा या किसी नदी का उद्गम स्थान।

मूलकः, -कम् [मूल+कन्] 1. मूली 2. भक्ष्य जड़, —कः एक प्रकार का विष। सम०—पोतिका मूली।

मूला [मूल+अच्+टाप्] 1. एक पौधे का नाम, सतावर 2. मूल नक्षत्र।

मूलिक (वि०) [मूल+ठन्] मूलभूत, मौलिक,—कः भक्त, संन्यासी।

मूलिन् (पुं०) [मूल+इनि] वृक्ष।

मूलिन् (वि०) [मूल+इन] जड़ वाले से उगने वाला।

मूली [मूल+ङीष्] एक छोटी छिपकली।

मूलेरः [मूल+एरक्] 1. राजा 2. जटामांसी, बालछड़।

मूल्य (वि०) [मूल+यत्] 1. उखाड़ देने योग्य 2. मोल लेने के योग्य, ल्यम् 1. कीमत, मोल, लागत—कौणन्ति स्म प्राणमूल्यधराणि -शि० १८।१५, शान्ति० १।१२ 2. मजदूरी, किराया या भाड़ा, वेतन 3. लाभ 4. पूंजी, मूलधन।

मूष् (स्वा० पर० मूषति, मूषित) चुराना, लूटना, अपहरण करना।

मूषः [मूष्+क] 1. चूहा, मूसा 2. गोल खिड़की, मोघा रोशनदान।

मूषकः [मूष+कन्] 1. चूहा, मूसा 2. चोर। सम०—अरातिः बिलाव, —आहनः गणेश।

मूषणम् [मूष्+ल्युट्] चुराना, चुपके से किसका लेना, उठा लेना।

मूषा, मूषिका [मूष+टाप्, मूषिक+टाप्] घूंहिया कुठाली।

मूषिकः [मूष्+ठिकन्] 1. चूहा 2. चोर 3. शिरीष का पेड़ 4. एक देश का नाम। सम०—अङ्कः, -अञ्चनः —रथः गणेश के विशेषण,—अदः बिलाव,—अरातिः बिलाव, —उत्करः, स्थलम् बांबी।

मूषिकारः (पुं०) चूहा।

मूषी, मूषीकः, मूषीका [मूष+ङीष्, मूष्+ईकन्, स्त्रियां टाप् च] चूहा, मूसा, मूसी।

मृ (तुदा० आ० [परन्तु लिट्, लुट्, लृट् और लृङ् में पर०] म्रियते, मृत) मरना, नष्ट होना, मृत्यु को प्राप्त होना, जीवन से विदा ले लेना प्रेर० (मारयति —ते) वध करना, हत्या करना—इच्छा० (मुमूर्षति) 1. मरने की इच्छा करना 2. मरने के निकट होना, मरणासन्न अवस्था में होना, अनु—, बाद में मरना, मर कर अनुगमन करना—रघु० ८।८५।

मृक्ष् दे० म्रक्ष्।

मृग् (दिवा० पर०, चुरा० आ० मृग्यति, मृगयते, मृगित) 1. ढूंढना, खोजना, तलाश करना, न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् -कु० ५।४५, गता दूता दूरं ववधिदपि परेतान् मृगयितुम् —वेणी० २५ 2. शिकार करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3. लक्ष्य बांधना, यत्न करना 4. परीक्षण करना, अनुसंधान करना—अविज्ञातिमनोभिः साधकैर्मृग्यमाणः मा० ५।१, अन्तर्यत्तश्च गुप्तमृक्षभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते विक्रम० १।६, अन्दर से खोजा गया, और अनुसंधान किया गया 5. मांगना, याचना करना—एतावदेव मृगये प्रतिगृह्यहेतोः मा० ५।२०।

मृगः [मृग्+क] 1. चौपाया, जानवर नाभिपेकों न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने., विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता। दे० नी० 'मृगाधिप' 2. हरिण, बारहसिंगा विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः —श० १।१४, रघु० १।४९, ५०, आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यः -श० १।६, आषेट २. चन्द्रमा का लाञ्छन जो हरिण के रूप में लगा हुआ है 5. कस्तूरी 6. खोज, तलाश, 7. पीछा करना, अनुसरण, शिकार 8. पूछ ताछ, गवेषणा, 9. प्रार्थना, निवेदन 10. एक प्रकार का हाथी 11. मनुष्यों की एक विशिष्ट श्रेणी मृगे नष्टा च चित्रिणी, वदति मधुरवाणी दीर्घनेत्रातिभीरुश्चलपदमभिगुच्छेद् क्षीद्रवेषी मृगीत्थम् -शब्द० 12. 'मृगशिरा' नक्षत्र 13. 'मार्गशीर्ष' का महीना 14. मकर राशि। सम० अक्षी हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—अङ्कः 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3 हवा,—अङ्गना हरिणी, अजिनम् मृगछाला, -अण्डजा कस्तूरी,—अद्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(पुं०),—अन्तकः छोटा शेर या चीता, लकड़बग्घा,—अधिपः, अधिराजः सिंह,—केशरी सिंहः, रक्षिप्तमृगयवो मृगाधिपः—शि० २।५३, मृगाधिराजस्त्वया वनो निष्प्राण —रघु० २।४१, - अरातिः 1. सिंह 2. कुत्ता,—अरिः 1. सिंह 2. कुत्ता 3. शेर 4. वक्ष का नाम, अशनः सिंह,—आविध् (पुं०) शिकारी, आस्यः मकर राशि, इन्द्रः 1. सिंह तत्रा मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी —रघु० २।३० 2. शेर 3. सिंह राशि °आसनम् सिंहासन °आहयः सिंह का विशेषण °चटकः बाज पक्षी,—इष्टः चमेली का एक भेद, —ईक्षणा हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—ईश्वरः 1. सिंह 2. सिंहराशि,—उत्तमम् उत्तमाङ्गम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज, कानलम् उद्यान,—गन्धिनी एक प्रकार का औषधद्रव्य, - जलम् मृगमरीचिका स्नानम् मृगमरीचिका के जल में स्नान करना अर्थात् असम्भावना, जीवनः शिकारी, बहेलिया, - तृष्, तृषा -तृष्णा, तृष्णिका (स्त्री०) मृगमरीचिका—मृगतृष्णाम्भसि स्नानः, दे० 'तृष्ण',—दंशकः कुत्ता, दृश् हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—दोषद्विस्त्रारि स्तनयुगलभासीन्मृगदृशः -उत्तर० ६।३५,—द्युः शिकारी,—द्विष (पुं०) सिंह, -धरः चन्द्रमा, धूतः -धूर्तकः गीदड़, नयना हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—नाभिः 1. कस्तूरी—कु० १।५४, कुं० ६।१२, चौ० ८, रघु० १७।२४ 2. हरिण जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है रघु० ४।७४, °जा कस्तूरी, - पतिः 1. सिंह 2. हरिण 3. शेर, - पालिका कस्तूरीमृग,—पिप्लुः चन्द्रमा, प्रभुः सिंह, ब(व)धाजीवः शिकारी,—बन्धिनी हरिणों को पकड़ने का जाल,—भदः कस्तूरी कुचकटोरासौ शोभनाभोगमेलित तव तोयेमृगमदः—गंगा० ७, मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे गीत० ७, °धारा कस्तूरी का थैला - मन्दः हाथियों की एक श्रेणी, मातृका हरिणी, मुखः मकरराशि, यूथम् हरिणों का झुण्ड, राज् (पुं०) 1. सिंह शि० २।१८ 2. शेर 3 सिंह राशि, राजः 1. सिंह रघु० ६।३ 2. सिंह राशि 3. शेर 4. चन्द्रमा °धारिन्, °लक्षमन् (पुं०) चन्द्रमा,—रिपुः सिंह,—रोमन् ऊन, जम् ऊनी कपड़ा,—लाञ्छनः चन्द्रमा अङ्गुधिरोत्तितमृगश्चन्द्रमा मृगलाञ्छनः—शि० २।५३, °जः बुधग्रह,—लेखा चन्द्रमा में हरिण जैसी धारी—मृगलेखामपश्यीव चन्द्रमाः —रघु० ८।४२, लोचनः चन्द्रमा (—ना नी) हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—वाहनः हवा, - व्याधः 1. शिकारी 2. तारामंडल या नक्षत्रपुंज 3. शिव का विशेषण, व्रातः छौना, हरिण का बच्चा—मृगव्रातैः समभेधितो जनः —श० २।१८,—शिरः,—शिरस् (नपुं०) —शिरा पांचवें नक्षत्र (मृगशिरस्) का नाम जो तीन तारों का पुंज है,— शीर्षम् मृगशिरा नाम का नक्षत्रपुंज, (र्षः) मार्गशीर्ष का महीना, - शीर्षन् (पुं०) मृगशिरा नाम का नक्षत्र,—श्रेष्ठः शेर, - हन् (पुं०) शिकारी।

मृगण [मृग्+यच्+टाप्] खोजना, तलाश करना, पूछताछ, अनुसंधान।

मृगया [मृग यात्यनया या घञर्थे क] शिकार, पीछा करना—मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः श० २।५, मृगाणप्यादिनां मांसहेतोन श० २ मृगयाविहारिन् आदि।

मृगयुः [मृग अस्त्यर्थे युच्] 1. शिकारी, बहेलिया हन्ति नीपमपेक्षतेऽपि शवालुमृगयुर्मृगान्—शि० २।८० 2. गीदड़ 3. बहा का विशेषण।

मृगयुम् [मृग+व्यध्+उन्] 1. पीछा करना, शिकार करना 2. निशाना, लक्ष्य।

मृगी [मृग—ङीष्] 1. हरिणी, मृगी 2. मिरगी रोग 3. स्त्रियों की एक विशिष्ट श्रेणी। सम० दृश् (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आंखें हरिणी जैसी होती हैं, पतिः कृष्ण का विशेषण।

मृग्य (वि०) [मृग्+ण्यत्] खोजे जाने या तलाश किये जाने योग्य, शिकार किये जाने के योग्य - तत्र मूलम् मृग्यम्।

मृज् I (क्र्या० पर० मार्ष्टि) शब्द करना।

II (अदा० पर०, चुरा० उभ० मार्ष्टि, मार्जयति—ते, इच्छा० मिमृक्षति या मिमार्जयिषति) 1. पोंछना, धो डालना, स्वच्छ करना, साफ करना 2. बुहारी देकर साफ करना (आलं० से भी) स्वेदलवान्मम्रार्ज शि० ३।७९ 3. चिकना करना, (घोड़े आदि को) खरहरे से रगड़ना 4. सजाना, अलंकृत करना 5. निर्मल करना, पानी से धोना, साफ करना - ललू खड्गान्मार्ष्टीव ममुजुश्च परश्वधान् भट्टि० १४।९२, (शुद्धान् चक्रुर्या शोधितवन्तः), अव , 1. मलना, गुदगुदाना 2. धो डालना, उद्—, पोंछ देना, हटाना,—रघु० १५।३२, निस् , पोंछना, धो देना, परि - , पोंछ डालना, धो देना, हटाना—(वाच्यं) स्नानेन परित्याः परिमार्ष्टुमैच्छत्—रघु० १४।३४ 2. मलना, गुदगुदाना, प्र , पोंछ डालना, हटाना, प्रायश्चित्त करना स्वभावलोलिप्य यशः प्रमृष्टुम् रघु० ६।३१, प्रणिपातलङ्घनं प्रसादं कामा -विक्रम० ३, मालवि० ४, वि , 1. पोंछ डालना, पोंछ देना 2. निर्मल करना, स्वच्छ करना सम् - , 1. बुहार कर साफ करना, निर्मल करना 2. पोंछ देना, पोंछ डालना, हटाना 3. मलना, गुदगुदाना 4. निचोड़ना, छानना।

मृज्रः [मृज्+क] 'मुरज' नाम का वाद्यविशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृजा [मृज्+अङ्+टाप्] 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, नहाना-धोना 2. स्वच्छता, निर्मलता ·-भट्टि० २।१३, शुद्धि 3. आकार-प्रकार, निर्मल त्वचा और स्वच्छ मुखमण्डल।

मृजित (वि०) [मृज्+क्त] धो डाला गया, स्वच्छ किया गया, हटाया गया।

मृडः [मृड्+क] शिव का विशेषण।

मृडा, मृडानी, मृडी [मृड+टाप्, मृड+ङीष्, पक्षे आनुक्] पार्वती का विशेषण शङ्क सुन्दरि कालकूटमपिबत् मृडो मृडानीपतिः गीत० १२।

मृण् (तुदा० पर० मृणति) वध करना, हत्या करना, नष्ट करना।

मृणालः, -लम् [मृण्+कालन्] कमल की तन्तुमय जड़, कमल-तन्तु· भङ्क्तेऽपि हि मृणालानामनुबन्धस्तिलन्तवः - हि० १।९५, सूत्रं मृणालादिव राजहंसी विक्रम० १।१९, ऋतु० १।१२, विक्रम० ३।१३,—**लम्** सुगन्धित घास की जड़, वरिणमूल। सम **भङ्गः** कमलतंतु का टुकड़ा, **सूत्रम्** कमलवृन्त का तन्तु।

मृणालिका, मृणाली [मृणाल+कन्+टाप्, इत्वम्, मृणाल +ङीष्] कमलवृन्त या तन्तु—परिमृदितमृणालीम्लानभङ्ग—मा० १।२२, या, परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४।

मृणालिन् (पुं०) [मृणाल+इनि] कमल।

मृणालिनी [मृणालिन्+ङीष्] 1. कमल का पौधा 2. कमलों का समूह 3. जहाँ कमल बहुतायत से मिलते हों।

मृत (भू० क० कृ०) [मृ+क्त] 1. मरा हुआ, मृत्यु को को प्राप्त 2. मृतक जैसा, व्यर्थ, निष्फल मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं मैथुनमप्रजम्, मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः· पंच० २।९४ 3. भस्म किया हुआ, फूँका हुआ ·-मूर्च्छां गतो मृतो वा निदर्शनं पारदोऽत्र रसः· भामि० १।८२, **तम्** 1. मृत्यु 2. भिक्षा में प्राप्त अन्न, दान या भिक्षा दे० अमृत (८)। सम० **-अङ्गम्** शव,—**अण्डः** सूर्य, **-अशौचम्** किसी संबंधी की मृत्यु से उत्पन्न अपवित्रता, अशौच, दे० 'अशौच', **-उद्धवः** समुद्र, सागर,- **कल्प** (वि०) मृतप्राय, बेहोश, मूर्छित कबर, **-दारः** रंडवा, विधुर, —**निर्यातकः** जो शवों को कब्रिस्तान में ढोकर ले जाता है, **-मातृकः**-**मातृकः** गीदड़, **संस्कारः** अन्त्येष्टि या और्ध्वदेहिक कृत्य, **संजीवन** (वि०) मुर्दों को जिलाने वाला [**जम्**, **नी** मुर्दों का पुनर्जीवित करना, [**नी** मुर्दों को जिलाने का मंत्र, गंडा या तावीज, **सूतकम्** मरे हुए (मृत जात) बच्चे को जन्म देना,—**स्नानम्** किसी की मृत्यु होने पर स्नान करना।

मृतकः, कम [मृत+कन्] मुर्दा शव ·ध्रुवं ते जीवन्तोऽप्यहह मृतका मन्दमतयो, न येषामानन्दं जनयति जगन्नाथभणितिः· भामि० ४।१९, **कम्** किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर उत्पन्न अशौच। सम० **अंतकः** गीदड़।

मृतप्रभः (पुं०) सूर्य।

मृतालकम् [मृत+अल्+णिच्+ण्वुल्] एक प्रकार की मिट्टी, पिंडोर या चिक्कण मृत्तिका।

मृतिः (स्त्री०) [मृ+क्तिन्] मृत्यु, मरण।

मृत्तिका [मृद्+तिकन्+टाप्] 1. पिंडोर, मिट्टी मनु० १।१८२ 2. ताजी मिट्टी 3. एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी।

मृत्युः [मृ+त्युक्] 1. मरण जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च -भग० २।२७ 2. मृत्यु का देवता यमराज 3. ब्रह्मा का विशेषण 4. विष्णु का विशेषण 5. माया का विशेषण 6. कलि का विशेषण 7. कामदेव। सम० **तूर्यम्** एक प्रकार का ढोल जो और्ध्वदेहिक संस्कार के अवसर पर बजाया जाता है,—**नाशकः** पारा, **पाः** शिव का विशेषण, **पाशः** मृत्यु या यम का फंदा ·**पुण्यः** ईख, गन्ना, **प्रतिबद्ध** (वि०) मरणशील, मर्त्य **फला, -ली** केला, **-बीजः, -बीजम्** बांस, **-राजः** (प्र०) मौत का देवता, यमराज, **-लोकः** 1 मुर्दों की दुनिया, यमलोक 2. भूलोक, मर्त्यलोक-तृ० मर्त्यलोक **वचनः** 1. शिव का विशेषण 2. पहाड़ी कौवा, **सूतिः** (स्त्री०) केंकड़ी।

मृत्युञ्जयः [मृत्यु+जि+खच्, मुम्] शिव का विशेषण।

मृत्सा, मृत्स्ना [मृद्+स (स्न)+टाप्] 1. मिट्टी, पिंडोर 2 अच्छी मिट्टी या पिंडोर, चिक्कण मिट्टी 3. एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी।

मृद् (क्रया० पर० मृद्नाति, मृदित) 1. निचोड़ना, दबाना भींचना मम च मृदित कोमल बाल्यलतेव नूनमविरतैः वेणी० ५।४० 2. कुचलना, रौंदना, टुकड़े-टुकड़े कर देना, हत्या करना, नष्ट करना, पीस देना, रगड़ देना, चकनाचूर कर देना—तागमदीदरदादीरच·- भट्टि० १५।९५. बालाग्यमृद्नाज्जलिनाभवदतः रघु० १८।५ 3. मसलना, गुदगुदाना, छिलना, स्पर्श करना शि० ४।६१ 4. जीत लेना, आगे बढ़ जाना 5. पीछे देना, रगड़ देना, हटाना. अभि , निचोड़ना, भींचना, कुचलना, **अव** रौंदना, कुचलना, **उप**-, 1. निचोड़ना भींचना 2. नष्ट करना, मार डालना, कुचल देना —**पीडिकानलनुगमुद** नै० ५।११०. **परि**--, भींचना निचोड़ना—परिमृदितमृणाली दुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४ 2. मार डालना, नष्ट करना 3. पीछे देना, रगड़ देना, **प्र** : कुचलना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या कर देना, **वि** - , 1. भींचना, निचोड़ना 2. चकनाचूर करना, कुचलना, पीसना ·मनु० ४।७० 3. मार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डालना, रुष्ट करना, **सम्**—, इकट्ठा कर निचोड़ना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या करना।

मृद् (स्त्री०) [मृद्+क्विप्]। पिंडोर, मिट्टी, मिट्टी का गारा—आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते मृद्गंधं न हि-कुसुमानि धारयन्ति—मुभा०, प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः उत्तर० २।४ 2. मिट्टी का ढेला, चिकनी मिट्टी का लौंदा 3. मिट्टी का टीला 4. एक प्रकार की सुगंधित मिट्टी। सम०—**अः** मिट्टी की डली या लौंदा,—**करः** कुम्हार, **कांस्यम्** मिट्टी का बर्तन, **नः** एक प्रकार की पटेली, **चयः** (मृच्चयः) मिट्टी का ढेर,—**पचः** कुम्हार, **पात्रम्**, **भाण्डम्** मिट्टी का बर्तन, चिकनी मिट्टी के बने पात्र, **पिण्डः** मिट्टी का लौंदा, **बुद्धिः** 'आलसी' बुद्धि,—मया च मत्पिण्डबुद्धिना तथैव गृहीतम्—श० ६, **लोष्टः** मिट्टी का ढेला, **शकटिका** (मृच्छकटिका) मिट्टी की छोटी गाड़ी; (शूद्रक द्वारा लिखित इस नाम का एक नाटक)।

मृदङ्गः [मृद्+अंगच् किच्च] 1. एक प्रकार का ढोल या मुरज, डफली 2. बांस। सम०—**फलः** कटहल का वृक्ष।

मृदर (वि०) [मृद्+अरच्] 1. क्रीडाशील, खिलाड़ी 2. क्षणभङ्गुर, क्षणिक, अस्थायी।

मृदा दे० 'मृद' (स्त्री०)।

मृदित (भू० क० कृ०) [मृद्+क्त] 1. भींचा हुआ, निचोड़ा हुआ—सुरतमृदिता बालवनिता—भर्तृ० २।४४ 2. कुचला गया, पीसा गया, पीस डाला गया, रौंदा गया, मार डाला गया 3. मसल दिया गया, हटाया गया (दे० मृद्)।

मृदिमन् [मृद्+क+इनि+ङीप्] अच्छी, चिकनी मिट्टी।

मृदु (वि०) (स्त्री०—दु—द्वी) [मृद्+कु] (म० अ० अदीयस्, उ०अ० अदिष्ठ) 1. चिकना, कोमल, पतला, लचीला, सुकुमार—मृदु तीक्ष्णतरं वदुच्यते तदिदं सम्प्रति दृश्यते स्वयि—मालवि० ३।२, अथवा मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते प्रजान्तकः रघु० ८।४५, ५७ श० १।१०, ४।१०, 2. कोमल, सुकुमार, नम्र—न खरो न च भूयसा मृदुः—रघु० ८।९; बाणः कृपामृदुमनाः प्रतिसंजहार—९।४७ 'दया के कारण कोमल मन वाला' ११।८३, श० ६।१ महीयसां दुःखमगच्छत् रघु० ५।५४, 'दयार्द्र' क्षतामूलमनिलो नदीरयैः पातयत्यपि मृदुस्तटद्रुमम्—११।७६, 'मृदु और मन्द पवन भी' 3. दुर्बल, कमजोर—सर्वथा मृदुरसौ राजा—हि० ३, तत्तस्ते मृदवोऽभूवन् गन्धर्वाः फल्गु-पीडिताः—सह० 4. मध्यम, संयत,—**दुः** शनिग्रह, —**दु** (अव्य०) कोमलता से, मन्दस्वर में, मधुर ढंग से—स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः श० १।२३, वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५। सम०—**अङ्ग** (वि०) कोमल अंगों वाला, (—**गम्**) तीन, जस्त (—**गी**) कोमल अंगों वाली स्त्री, —**उत्पलम्** कोमल अथवा नीलकमल, **कार्ष्ण्यसम्** सीसा, **कोष्ठ** (वि०) नरम कोठे वाला जिसे हलके विरेचन से दस्त आ जाय, —**गमन** (वि०) मन्द या अलसपूर्ण चाल वाला, (**ना**) हंसी, राजहंसी,—**चर्मिन्**,—**छद**, **त्वच्**, **त्वचः** (पुं०) एक प्रकार के भोजपत्र का वृक्ष,—**पत्र**, सरकंडा या नरकुल,—**पर्वकः**, **पर्वन्** (नपुं०) नरकुल, बेंत, **पुष्पः** शिरिष का वृक्ष,—**पूर्व** (वि०) जो आरंभ में मंद हो, स्निग्ध हो, सौम्य तथा सुहावना हो, —**भाषिन्** (वि०) मधुर बोलने वाला, —**रोमन्** (पुं०) —**रोमकः** खरगोश, **स्पर्श** (वि०) छूने में नरम।

मृदुष्णकम् [मृद+उद्+नी+ड+कन्] सोना, स्वर्ण।

मृदुल (वि०) [मृदु+लच्] 1. स्निग्ध, कोमल, सुकुमार 2. ऋजु, सरल, साधु, —**लम्** 1. जल 2. अगर की लकड़ी का एक भेद।

मृद्वी, मृद्वीका [मृदु+ङीप्, पक्षे कन्+टाप् च] अंगूरों की बेल या गुच्छा—वाचं तदीयां परिपीय मृद्वीं मृद्वीकया तुल्यरसां स हंसः—नै० ३।६०, भामि० ४।१३, ३७।

मृद्य् (स्वा० उभ मर्वेत्ति-ते) भोला होना, या गीला करना।

मृध्म् [मृध्+क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई—सत्त्वविहितमतुलं भुजयोर्बलमस्य पश्यत मृधेष्वधिकृष्यतः - कि० १२।३९, रघु० १३।६५, महावी० ५।१३।

मृन्मय (वि०) [मृद्+मयट्] मिट्टी का बना हुआ, रघु० ५।२।

मृश् (तुदा० पर० मृशति, मृष्ट) 1. स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना 2. मलना, गुदगुदाना 3. सोचना, विमर्श, विचार करना, **अभि** —, स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना, **आ** —, स्पर्श करना, हाथ लगाना, हाथ डालना (आलं० भी); नवातपामृष्टसरोरुहाननम्—कि० ४।१४, धरासनञ्चाप्युपगूहमानमृषे - कु० ३।६४; शि० ९।३४ 2. झपट्टा मारना, खा जाना—रघु० ५।९ 3. आक्रमण करना, हमला करना; **आमृष्ट** नः पदं परैः—कु० २।३१, **परा**—, 1. स्पर्श करना, मलना, गुदगुदाना; परामृशत् हर्षजडेन पाणिना तदीयमङ्गं कुलिशव्रणाङ्कितम्—रघु० ३।६८, शि० १७।११, मृच्छ० ५।२८ 2. किसी पर हाथ डालना, आक्रमण करना, हमला करना, पकड़ लेना—मृच्छ० १।३९, 3. दूषित करना, भ्रष्ट करना, बलात्कार करना, 4. विचार विमर्श करना, चिंतन करना—किं भक्तिरेति सशङ्कं पाङ्कजनयना परामृशति भामि० २।५३ 5. मन से सोचना, प्रशंसा करना—ग्रन्थारम्भे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत्परामृशति—काव्य० १, **परि**—, 1. स्पर्श करना, जरा छू जाना—शिखरशतैः परिपृष्टदेवलोकम्—भट्टि० १०।४५ 2. ज्ञात करना, वि—,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

1. स्पर्धा करना 2. चिन्तन करना, सोचना, विचार करना, मनन करना—दृष्ट्वैते हि विमुह्यन्ति कारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः किं० २।३०, रामप्रभावो ब्रह्मशापदोषं जनापवादं सनरेन्द्रमृत्युम्—भट्टि० ३।७, १२।२४, कु० ६।८७, भग० १८।६३ 3. प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, पर्यवेक्षण करना 4. परीक्षा लेना, परीक्षण करना—तदवगतानिमं मां च शास्त्रे प्रयोगे च विमृशतु—मालवि० १।

मृष् i (भ्वा० पर० मर्षति) छिड़कना ii (भ्वा० उभ० मर्षति—ते) बर्दाश्त करना, सहन करना—आदि (प्राय: दिवा० उभ०) iii (दिवा०, चुरा० उभ०—मृष्यति—ते, मर्षयति—ते, मर्षित) 1. झेलना, भोगना, सहन करना, साथ रहना—तत्किमिदमकार्यमनुष्ठितं दैवेन, लोको न मृष्यतीति—उत्तर० ३ रघु० १।६२ 2. अनुमति देना, इजाजत देना 3. क्षमा करना, माफ करना, दोषमुक्त करना, क्षमाशील होना—मृष्यन्तु लवस्य बालिशतां तातपादाः—उत्तर० ६, प्रथममिति प्रेक्ष्य दुर्विनीतजनस्यैकोऽपराधो भगवता मर्षयितव्यः—श० ४, आर्ये मर्षय मर्षय देवीं० १, महाब्राह्मण मर्षय मृच्छ० १।

मृषा (अव्य०) [मृष्+का] मिथ्या, गलती से, असत्यता के साथ, झूठमूठ—यद्वत्त्वं मुहुरीक्षसे न धनिनां वृथा न वाटुं मृषा—भर्तृ० ३।१४७, मृषाभाषासिन्धी—भामि० २।२४ 2. व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थक। सम० —अध्यायिन् (पुं०) एक प्रकार का सारस,—अर्थक (वि०) 1. असत्य 2. बेहदा (—कम्) असंगति, असंभावना, उद्यम् मिथ्यात्व, झूठ, झूठी उक्ति तावत्किं मत्सखे राजपुत्रि मृषोक्तिं तोदंति उत्तर० ४, -ज्ञानम् अज्ञान, अशुद्धि, भूल, -भाषिन्, -वादिन् (पुं०) झूठा, झूठ बोलने वाला,- वाच् (स्त्री०) असत्योक्ति, झूठ, मिथ्या 2. कपटपूर्ण उक्ति, चापलूसी 3. व्यंग्य, व्यंग्योक्ति।

मृषालकः [मृषा अल+कै+क] आम का पेड़।

मृष्ट (भू० क० कृ०) [मृज्+क्त (वा०+त)] 1. स्वच्छ किया हुआ, निर्मल किया हुआ 2. लीपा हुआ 3. प्रक्षालित, पकाया हुआ 4. छुआ हुआ 5. सींचा हुआ, बिखारा हुआ 6. चटपटा मसालेदार, रुचिकर। सम० गन्धः चटपटी और रोचक गंध।

मृष्टिः (स्त्री०) [मृज् (मृष्)+क्तिन्] 1. स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2. पकाना, प्रक्षालन करना, तैयारी करना 3. स्पर्श, संपर्क।

मे (भ्वा० आ० मयते, मित, इच्छा० मिमयते) विनिमय करना, अदला बदली करना, नि , विनि , विनिमय या अदला बदली करना।

मेकः [मे इति कायति शब्दं करोति मे+कै+क] बकरा।

मेकलः (मेकल+ङीप्) 1. एक पहाड़ का नाम 2. बकरा। सम० अद्रिजा, कन्यका, कन्या नर्मदा नदी के विशेषण।

मेखला [मीयते प्रक्षिप्यते कार्यमस्यामिति मी+खल+टाप्, गुणः] 1. करधनी, तगड़ी, कमरबन्द, कटिबन्ध (प्रायः ३ से ७ तक की), कोई वस्तु जो चारों ओर से लपेट सके—यही सागरमेखला 'सागरावेष्टिनि भूमण्डले'—मन्वालुद्धिद्धणवेमेखलायाः दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः रघु० ६।६३, ऋतु० ६।२ 2. विशेष कर स्त्री की तगड़ी नितम्ब विम्बैः सुवृत्तमेखलैः ऋतु० १।८, न्यू० ८।६४, केयूरमणिबन्धं मेखलाबन्धनानि कुं० ४।८ 3. तीन लड़ों वाली मेखला जो पहले तीन वर्णों के ब्रह्मचारियों द्वारा पहनी जाती है तु० मनु० २।४२ 4. पहाड़ का ढलान,—आलेखं संसरन्तो घनानाम् कु० १।५, मेघ० १२ 5. कूल्हा 6. तलवार की मूठ 7. तलवार की मूठ से बंधी हुई डोरी की गाठ 8. घोड़े की रंग 9. नर्मदा नदी का नाम। सम० पदम् कूल्हा, बन्धः करधनी पहनना।

मेखलालः [मेखला+अल्+अच्] शिव का विशेषण।

मेखलिन् (पुं०) [मेखला+इनि] 1. शिव का विशेषण 2. धर्मशिक्षा ग्रहण करने वाला ब्रह्मचारी।

मेघः [मेहति वर्षति जलम्, मिह्+घञ्, घत्वं, कुत्वम्] 1. बादल, पुर्वजन्मन्यमेघा इव निर्गता मेघा: समुत्तिष्ठते मृच्छ० ५।२३, २, ३ आदि 2. ओला, समुच्चयम् उच्छ्वसितमेघम् घन मेदुरेषु। सम० अध्वन् (पुं०) -पथः,—मार्गः आदमी का मार्ग अन्तरिक्ष,—अन्तः शब्द ऋतु,—अरिः वायु, अश्वि (नपुं०) ओला —आडम्बरः मेघगर्जन, आटोपः सघन मोटा बादल, आडम्बरः मेघों की गर्जन,—आनन्दा एक प्रकार का सारस, आनन्दिन् (पुं०) मोर,—आलोकः बादलों का दिखाई देना मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः—मेघ० ३, आस्पदम् आकाश, अन्तरिक्ष,—उदकम् वृष्टि,- उदयः बादलों का घिर आना, कफः ओला, कालः वृष्टि, वर्षा ऋतु, -गर्जनम्, गर्जना चिलकः चातक पक्षी, जः बड़ा मोती, जालम् 1. बादलों का सघन समूह 2 सेलखड़ी, जीवकः, -जीवनः चातक पक्षी, ज्योतिस् (पुं०, नपुं०) बिजली, डम्बरः बादलों की गरज, दोषः बिजली, द्वारम् आकाश, अन्तरिक्ष, नादः 1 बादलों की गरज, मण्डलाहृतः 2 रावण का विशेषण 3 रावण के पुत्र इन्द्रजित् का विशेषण °अनुत्रासिन्, °अनुलासकः मोर, °जित् (पुं०) लक्ष्मण का विशेषण, -निर्घोषः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बादलों की गरज, पंक्तिः, माला बादलों की श्रेणी, **पुष्पम्** 1. पानी 2. ओला 3. नदियों का पानी, **प्रसवः** पानी, **भूतिः** वज्र, **मण्डलम्** अन्तरिक्ष, आकाश, **मालः, मालिन्** (वि०) बादलों से घिरा हुआ, **योनिः** धूप, धूआँ,—**रवः** गरज,—**वर्ण** नील का पौधा, **वर्त्मन्** (नपुं०) अन्तरिक्ष, **वह्निः** बिजली, **वाहनः** 1 इन्द्र का विशेषण अर्थात् स्म मेघामिव मेघवाहन. शि० १३।१८ 2. शिव का विशेषण, —**विस्फूर्जितम्** 1. गरज, बादलों की गड़गड़ाहट 2. एक छन्द का नाम दे० परि० १,—**वेश्मन्** (नपुं०) अन्तरिक्ष. **सारः** एक प्रकार का कपूर, **सुहृद्** (पुं०) मोर, **स्तनितम्** गरज ।

मेघङ्कर (वि०) [मेघं करोतीति कृ+अच्] बादलों को पैदा करने वाला ।

मेचक (वि०) [मच्+वुन्, टुन् वा] काला, श्यामवर्णीला, काले रंग का कुर्वभ्रेजनमेचकश्च दृव दिशो मेघः समुत्तिष्ठते मालवि० ५।२३. उत्तर० ६।२५, मेघ० ५९, कः । काजिया, गहरा नीला वर्ण 2. मोर की पूंछ (पंख) की आँख (चंद्रा) 3 बादल 4. घोड़ा 5. चुम्बक 6. एक प्रकार का रत्न, —**कण्ठ** अँधेरा, **आपगा** यमुना का विशेषण ।

मेट्, मेड् (म्वा० पर मेटति, मेडति) पागल होना ।

मेट्टुला आँवले का पेड़ ।

मेठः 1. मेष 2 हाथी का रखवाला, महावत ।

मेठिः, मेथिः 1. लम्बा, स्थाणु 2. खलिहान में गड़ा हुआ खंभा जिससे बैल बांधे जाते हैं 3 गाय भैंस आदि बांधने का खूंटा 4. गाड़ी के बम को सहारने के लिए बल्ली ।

मेढ्रः [मिह्+ष्ट्रन्] मेढ़ा, मेष, **कुम्** पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग (वस्य) मेढ्रं चोन्मादशोफाभ्यां हीनं क्लीवः स उच्यते । सम० **चर्मन्** (नपुं०) लिंग की मुंडासी का चमड़ा,—**जः** शिव का विशेषण,—**रोगः** लिंग संबंधी रोग ।

मेढ्रकः [मेढ्र+कन्] 1. भुजा 2. लिंग, पुरुष की जननेन्द्रिय ।

मेण्ठः, मेण्ढ्रः हाथी का रखवाला, महावत ।

मेंढ्रः, मेढ्रकः मेष, मेढ़ा ।

मेंढ्र दे० मेढ्र ।

मेथ् (म्वा० उभ० मेथति ते) 1. मिलना 2. एक दूसरे से मिलत होना (आ०) 2. बुरा भला कहना 4. जानना, समझाना 5. चोट मारना, क्षति पहुँचाना, जान से मार डालना ।

मेथिका, मेथिनी [मेथ्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, मेथ+णिनि+ङीप्] एक प्रकार का घास, मेथी ।

मेदः [मेदते स्निह्यति—मिद्+असुन्] 1. चर्बी 2. एक विशेष प्रकार की वर्णसंकर जाति 3. एक नाग राक्षस का नाम । सम० **जम्** एक प्रकार का गूगल,—**भिल्लः** एक पतित जाति का नाम ।

मेदकः [मिद्+ण्वुल्] अर्क जो शराब खींचने के काम आता है ।

मेदस् (नपुं०) [मेदते स्निह्यति मिद्+असुन्] 1. **चर्बी** वसा (शरीर के सात धातुओं में से एक जिसका पेट में विद्यमान होना माना जाता है) मनु० ३।१८२, याज्ञ० १।४४ 2. मांसलता, शरीर का मोटापा—मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः—शृं० २।५ । सम० **अर्बुदम्** एक मोटी रसौली,—**कृत्** (पुं०, नपुं०) मांस, —**ग्रन्थिः** मेद युक्त गांठ या रसौली, **जम्**,—**तेजस** (नपुं०) हड्डी,—**पिण्डः, चर्बी** का डला,—**वृद्धिः** (स्त्री०) 1. चर्बी की वृद्धिः, मोटापा 2. फोतों का बढ़ जाना ।

मेदस्विन् (वि०) [मेदस्+विनि] 1. मोटा, स्थूलकाय 2. मजबूत, हृष्टपुष्ट शि० ५।६४ ।

मेदिनी [मद्+इनि+ङीप्] 1. पृथ्वी—न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी । रघु० १।६५, चञ्चलं वसु निस्तात्स्मृद्धता मेदिनीमपि हरन्त्यराजयः—कि० १३।५३ 2. जमीन, भूमि, मिट्टी 3. स्थान, जगह 4. एक कोश का नाम । सम०—**ईशः**—**पतिः** राजा, **रजः** धूल ।

मेदुर (वि०) [मिद्+उरच्] 1. मोटा 2. चिकना, स्निग्ध मृदु 3. ठोस, सघन । मा० ८।११, फूला हुआ, भरा हुआ, ढका हुआ (प्रायः करण० के साथ या समास के अन्त में)—मेघैर्मेदुरमम्बरम्- गीत० १, मकरन्दसुन्दरगलन्मन्दाकिनीमेदुरं (पदारविन्दं)—७ ।

मेदुरित (वि०) [मेदुर+इतच्] मोटा, फूलाया हुआ, सघन किया हुआ—उत्तर० १ ।

मेद्य (वि०) [मेद+यत्] 1. चर्बीयुक्त 2. सघन, मोटा ।

मेध् (भ्वा० उभ० देo 'मेथ्' ।

मेधः [मेध्यते हन्यते पशुः अत्र—मेध्+घञ्] 1. यज्ञ जैसा कि 'नरमेध' में 2. यज्ञीय पशु, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु । सम०—**जः** विष्णु का विशेषण ।

मेधा [मेध्+अङ्+टाप्] (ब० स० में सु, दुस्, तथा नकारात्मक अ पूर्व आने पर मेधा का बदल कर 'मेधस्' रूप रह जाता है) 1. धारणात्मक शक्ति, (स्मरण शक्ति की) धारणाशक्ति· धीर्धारणावती मेधा अमर० 2. प्रज्ञा· बुद्धि—भग० १०।३४, मनु० ३।२६३, याज्ञ० ३।१७४ 3 **सरस्वती** का एक रूप 4. यज्ञ । सम०—**अतिथिः** मनुस्मृति का एक विद्वान् भाष्यकार, **रुद्रः** कालिदास का विशेषण ।

मेधावत् (वि०) [मेधा+मतुप्, वत्वम्] बुद्धिमान्, समझदार ।

मेधाविन् (वि०) [मेधा+विनि] 1. बहुत समझदार, अच्छी स्मरणशक्ति वाला 2. बुद्धिमान्, समझदार, प्रज्ञावान्—पुं० 1. विद्वान् पुरुष, ऋषि, विद्यासंपन्न 2. तोता 3. मादक पेय ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेधि दे० 'मेधि'।

मेध्य (वि०) [मेध्+यत्] 1. यज्ञ के लिए उपयुक्त याज्ञ० १।१२४; मनु० ५।५४ 2. यज्ञ संबंधी, यज्ञीय मेध्येनाश्वमेधेन, रघु० १३।५, 3. विशुद्ध, पुण्यशील, पवित्रात्मा; रघु० १।८४, ३।३१, १४।८१, ध्यः 1. बकरा 2. खैर का पेड़ 3. जौ (मेदिनी के अनुसार), ध्या कुछ पौधों के नाम।

मेनका [मन्+वुन् अकारस्य एत्वम्] 1. एक अप्सरा (शकुन्तला की माता) का नाम 2. हिमालय की पत्नी का नाम। सम०-आत्मजा पार्वती का नाम।

मेना [मान+इनच्, न०+साधु] 1. हिमालय की पत्नी का नाम मेनां मुनीनामधि मानलीयां (उपयेमे) कु० १।१८, ५।५ 2. एक नदी का नाम।

मेनाद: [मे इति नादो यस्य] 1. गीदड़ 2. बिलाव 3. बकरा।

मेधिका, मेधी (स्त्री०) एक पौधा जिसे मछली कहते हैं (इसके पत्तों से लाल या रंग निकाला जाता है, जिससे कि अंगुलियों के नाखून, पैरों के तलवे तथा हाथ की हथेलियां रंगी जाती हैं)।

मेय् (भ्वा० आ० मेयते) जाना, हिलना-डुलना।

मेय (वि०) [मा (मि)+यत्] 1. नापने योग्य, जो नापा जा सके 2. जिसका अनुमान लगाया जा सके 3. पहचाने जाने के योग्य, ज्ञेय, जो जाना जा सके।

मेरु: [मि+रु] उपाख्यानों में वर्णित एक पर्वत का नाम (ऐसा माना जाता है कि समस्त यह इसके चारों ओर घूमते हैं, यह भी कहते हैं कि मेरु सोने और रत्नों से भरा हुआ है) त्रिदिवस्य मेरुनेव कथितसालक्षितः —नै० १।१६, स्वात्मन्येव समाप्तहेममहिमा मेरुर्न मे रोचते भर्तृ० ३।१५१ 2. रुद्राक्षमाला के बीच का गुरिया 3. हार के बीच की मणि। सम०—धामन् (पुं०) शिव का विशेषण, यन्त्रम् तकुवे के आकार की बनी एक आकृति।

मेरुक: [मेरु+कन्] थन, घुंडी।

मेल: [मिल्+घञ्] मिलाप, एकता, संलाप, समवाय, सभा ('मेलक' भी)।

मेलनम् [मिल्+णिच्+ल्युट्] 1. एकता, संयोग 2. समाज 3. मिश्रण।

मेला [मिल्+णिच्+अच्+टाप्] 1. मिलना, समागम 2 समवाय, सभा, समाज 3. सुपारी 4. नील का पौधा 5. स्याही, मसी 6. संगीत की माप, स्वरग्राम। सम०-अग्रुक:,—अग्रुः-मन्दः,-नन्दा-मन्दा कलम दान, दवात।

मेव् (स्वा० आ० मेवते) पूजा करना, सेवा करना, टहल करना।

मेष: [मिषति अन्योऽन्यं स्पर्धते—मिष्+अच्] 1. मेढ़ा, भेड़ 2. मेष राशि। सम० अण्ड: इन्द्र का विशेषण, कम्बल: एक ऊनी कंबल या धुस्सा, फाल:,-पालक: गड़रिया, मांसम् भेड़ या बकरे का मांस, यूथम् भेड़ों का रेवड़।

मेषा [मिष्यतेऽसौ मिष्+घञ्+टाप्] छोटी इलायची।

मेषिका, मेषी [मेष+कन्—टाप्, इत्वम्, मेष+ङीष्] भेड़ (मादा)।

मेह: [मिह्+घञ्] 1. लघुशंका करना, मूत्र करना 2. मूत्र 3. मूत्र संबंधी रोग 4. मेढ़ा 5. बकरा। सम० घ्नी हल्दी।

मेहनम् [मिह्+ल्युट्] 1. मूत्रोत्सर्ग करना 2. मूत्र 3. लिंग।

मैत्र (वि०) (स्त्री० -त्री) [मित्र+अण्] 1. मित्रसंबंधी 2. मित्र द्वारा किया गया 3. दोस्ताना, कृपापूर्ण, सौहार्दपूर्ण, कृपालु मनु० २।८७, भग० १२।१३ 4. मित्र नाम के देवता से संबंध रखने वाला (जैसा कि 'मुहूर्त') कु० ७।६, त्रः 1. ऊंचा या पूर्ण ब्राह्मण 2. एक विशेष वर्णसंकर जाति मनु० १०। २३ 3. गवा, त्री 1. मित्रता, दोस्ती, सद्भाव 2. घनिष्ठ संबंध या साहचर्य, मित्राय, सपर्क प्रत्ययेषु लक्षणिकमलामादमैत्रीकथाय: मेघ० ३१ 3. अनुराधा नाम का नक्षत्र, त्रम् 1. मित्रता, दोस्ती 2. मलोत्सर्ग करना—मनु० ४।१५२ 3. अनुराधा नाम का नक्षत्र, (इसी अर्थ में 'मैत्रभम्' शब्द भी)।

मैत्रकम् [मैत्र+कन्] मित्रता, दोस्ती।

मैत्रावरुणः [मित्रश्च वरुणश्च द्व० स०, मित्रस्यानङ्; मित्रावरुण+अण्] 1. वाल्मीकि का विशेषण 2. अगस्त्य का विशेषण 3. यज्ञ के प्रतिनिधि ऋत्विजों में से एक।

मैत्रावरुणिः [मित्रावरुण+इञ्] 1. अगस्त्य का विशेषण 2. वसिष्ठ का विशेषण 3. वाल्मीकि का विशेषण।

मैत्रेय (वि०) (स्त्री० यी) [मैत्र+ढक्] दोस्त या मित्र से संबंध रखने वाला, दोस्ताना, -यः एक वर्णसंकर जाति का नाम।

मैत्रेयकः [मैत्रेय+कन्] एक वर्णसंकर जाति का नाम मनु० १०।३३।

मैत्रेयिका [मैत्रेयक+टाप्, इत्वम्] मित्रों या मित्रराष्ट्रों में संघर्ष, मित्रयुद्ध।

मैत्र्यम् [मित्र+ष्यञ्] मित्रता, दोस्ती, मैत्री।

मैथिलः [मिथिलायां भवः—अण्] मिथिला का राजा रघु० ११।३२, ४८,—ली सीता का नाम रघु० १२।२९।

मैथुन (वि०) (स्त्री०—नी) [मिथुनेन निर्वृत्तम्—अण्] 1. युग्ममय, जुड़ा हुआ 2. विवाहसूत्र में आबद्ध 3. संभोग से संबन्ध रखने वाला,—नम् 1. रति क्रीड़ा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संभोग, गुप्तं मैथुनमब्रह्मम् पंच० २।१४ 2. विवाह 3. मिलाप, संयोग। सम० उदरः मैथुनोन्माद की उत्तेजना, -धर्मिन् (वि०) सहवासी, वैराग्यम् स्त्री-संभोग से विरक्ति।

मंथुनिका [मंथुन+कन्+टाप्, इत्वम्] विवाह द्वारा मिलाप, वैवाहिक गठबंधन।

मंधात्रकम् (नपुं०) समता, बुद्धि।

मेनाकः [मेनकायां भवः अण्] हिमालय और मेना के पुत्र (एक पर्वत) का नाम, यही एक ऐसा पर्वत था जिसके पंख समुद्र से मित्रता होने के कारण अक्षुण्ण रहे जबकि इन्द्र ने और दूसरे पर्वतों के बाकू काट डाले। गुरु कुरु १।२०। सम० स्वसृ (स्त्री०) पार्वती का विशेषण।

मेनालः (पुं०) मछुआ, माहीगीर।

मेन्धः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मार गिराया था। सम० हन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण।

मेरेयः,-यम्, मरेयकः,-कम् [मिरा देशभेदे भवः-ढक्] एक प्रकार का मादक पेय अधिजनि अधुभिः पीत-मैरेयनिष्ठुर दि० ११।५१, गंगा० ३४।

मैलिन्दः [मिलिंद + अण्] मधुमक्खी, भौंरा।

मोकम् (नपुं०) किसी जानवर की उतरी हुई खाल।

मोक्ष [म्वा० पर०, चुरा० उभ० मोक्षति, मोक्षयति-ते] 1. छोड़ना, स्वतंत्र करना, मुक्त करना, मुक्ति देना 2. ढीला करना, खोलना, बिगाड़ना 3. बलपूर्वक छीनना 4. डालना, फेंकना, उछालना 5. उलकाना।

मोक्षः [मोक्ष् + घञ्] 1. मुक्ति, छुटकारा, बचाव, स्वतंत्रता सांख्यैस्तत्र वर्त्म यदि मोक्षे न प्रभवति का०; मेघ० ६१, लक्ष्मीक्षामः मुकादयः रघु० १७।२० धूर्वाणां च धुरो मोक्षम् -१७।१२, 2. उद्धार, परित्राण, मोचन 3. परममुक्ति, आवागमन अर्थात् पुनर्जन्म के चक्कर से आत्मा की मुक्ति। मानवजीवन के चार उद्देश्यों में से अन्तिम दे० अर्थ, भग० ५।२८, १८।३०, रघु० १०।८४, मनु० ६।३५ 4. मृत्यु, 5. अपरदन, अपकर्षन, गिरना वनस्थलीमर्मरपत्र-मोक्षा.-कु० ३।३१ 6. ढीला करना, खोलना, बन्धन-मुक्त करना वेणिमोक्षोत्सुकानि मेघ० ९९ 7. डालकाना, गिराना, बहाना बाष्पमोक्षः, अश्रुमोक्षः 8. निशाना लगाना, फेंकना, दगाना बाणमोक्षः द० ३।५ 9. बसेरना, छितराना 10. (किसी ऋण आदि का) परिशोध करना 11. (ज्योतिष में) ग्रहणग्रस्त ग्रह की मुक्ति। सम० उपायः मोक्ष प्राप्त करने का साधन, देवः प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनत्सांग के साथ अवहून होने वाला विशेषण, -द्वारम् सूर्य, -पुरी कांची नामक नगरी का विशेषण।

मोक्षणम् [मोक्ष + ल्युट्] 1. छोड़ना, मुक्त करना, परम मुक्ति, स्वतंत्रता देना 2. उद्धार, छुटकारा 3. ढीला करना, खोलना 4. छोड़ना, परित्याग करना, त्याग देना 5. डंकारकरना 6. अपव्यय करना।

मोघ (वि०) [मुह्+घ अच् वा, कुत्वम्] 1. व्यर्थ, अर्थ-हीन, निष्फल, लाभरहित असफल-याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा- मेघ०६, मोघवृत्ति कलभस्य चेष्टितम्-रघु० ११।३९, १४।६५, भग० ९।१२ 2. निरुद्देश्य, निष्प्रयोजन, अनिश्चित 3. छोड़ा गया परित्यक्त 4. आलसी, -घः बाड़, घेरा, झाड़बन्दी, -घम् (अव्य०) व्यर्थ, बिना किसी प्रयोजन के, बिना किसी उपयोग के। सम०-कर्मन् (वि०) अनुपयुक्त कार्यों में व्यस्त,-पुष्पा बांझ स्त्री।

मोघोलिः झाड़बन्दी, बाड़।

मोचः [मुच् + अच्] 1. केले का पौधा 2. शोभाञ्जन या सोहञ्जने का पेड़,-चा 1. केले का वृक्ष 2. कपास का पौधा 3. तोल का पौधा, चम् केले का फल।

मोचकः [मुच् + ण्वुल्] 1. भक्षा, संन्यासी 2 परममुक्ति, छुटकारा 3. केले का पौधा।

मोचनं (वि०) (स्त्री०-नी) [मुच् + ल्युट्] छोड़ने वाला, स्वतन्त्र करने वाला, -नम् 1. छोड़ना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना, मोक्ष 2. जूआ उतारना 3. निर्वहण करना, उत्सर्जन करना 4. किसी कर्तव्यभार या ऋण का परिशोध करना। सम०- पट्टकः छल्ला, (कपड़ा जिससे हुए जल आदि छाना जाय)।

मोचयितृ (वि०) [मुच्+णिच्+तृच्] छुड़ाने वाला, स्वतन्त्र करने वाला।

मोचाटः [मुच्+णिच्+अच्+अट्+अच्] 1. केले का गुदा या फल 2. कदली की लकड़ी।

मोटकः,-कम् [मुट्+ण्वुल्] लूटो, गोली, -कम् कुशा घास की दो पत्तियां जो श्राद्ध के अवसर पर दी जाती हैं, (भस्मकुशपत्रद्वयम्)।

मोट्टायितम् [मुट्+घञ्, टा० तुक्, +क्यङ्+क्त (भावे) क्त] जब कभी बातचीत चलती है या अन्यमनस्का होकर नासिका कान आदि कुरेदती है तो उस समय चुप-चाप बिना इच्छा के अपने प्रिय के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति। उज्ज्वल मणि ने इसकी परिभाषा दी है :- कान्तस्मरणवार्तादौ हृदि तद्भावभावितः। प्राकट्यमभिलाषस्य मोट्टायितमुदीरयेत्॥ दे० सा० द० १४१ भी।

मोदः [मुद्+घञ्] 1. आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, सुखी यज्ञानन्दादयं मोदादयः उत्तर० २।२, रघु० ५।१५ 2. गंधद्रव्य, सुगंधि। सम०- आख्यः आम का पेड़।

मोदक (वि०) (स्त्री०-का,-की) [मोदयति-मुद्+णिच् +ण्वुल्] सुहावना, आनंदप्रद, प्रसन्नतादायक,-कः-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

---कम् मिठाई, लड्डू याज्ञ० १।२८९,—कः एक वर्ण संकर जाति (क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न)।

मोदनम् [मुद्+ल्युट्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. प्रसन्न करने की क्रिया 3. मोम।

मोदयन्तिका, न्मोदयन्ती [मुद्+णिच्+शतृ+ङीष्=मोदयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार की चमेली।

मोदिन् (वि०) [मुद्+णिनि] 1. प्रसन्न, सुखी, खुश 2. प्रसन्नता-दायक, आनन्दप्रद, नी 1. नाना प्रकार (अमोद, मल्लिका, जूही) के पौधों के नाम 2. कस्तूरी 3. मादक या खींची हुई शराब।

मोरटः [मुर्+अटन्] 1. मीठे रस वाला एक पौधा 2. ताजी ब्याई गाय का दूध,—टम् गन्ने की जड़।

मोचः [मुच्+घञ्] 1. चोर, लुटेरा 2. चोरी, लूट 3. लूटखसोट, चोरी, उठा ले जाना, हटाना (आलं० से भी)—न पुष्पमोघमर्हत्युद्यानलता:—मल्छ० १, दृष्टिमोघे प्रदोषे—गीत० ११ 4. चुराई हुई संपत्ति। सम० कृत् (पुं०) चोर।

मोषकः [मुष्+ण्वुल्] लुटेरा, चोर।

मोषणम् [मुष्+ल्युट्] 1. लूटना, खसोटना, चोरी करना, ठगना 2. काटना, 3. नष्ट करना।

मोषा [मुष्+अ+टाप्] चोरी, लूट।

मोहः [मुह्+घञ्] 1. चेतना की हानि, मूर्छित होना, निःसंज्ञा, बेहोशी—मोहेनान्तर्वरत्नानुरियं लक्ष्यते मूर्च्यमाना—विक्रम० १।८, कु० ३।७३ 2. घबराहट, व्यामोह, उद्विग्नता, अव्यवस्था—पञ्चात्वा न पुनर्मोहमेवं व्यवससि पाण्डव—भग० ४।३५ 3. मूर्खता, अज्ञान, दोषानापन—तिर्यग्दुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनेवास्मि सागरम्—रघु० १।२, श० ७।२५ 4. त्रुटि, भूल, अशुद्धि 5. आश्चर्य, अचम्भा 6. कष्ट, पीड़ा 7. जादू की कला जो शत्रु को परास्त करने में प्रयुक्त की जाय 8. (दर्शन० में) व्यामोह जो सत्य को पहचानने में अवरोधक है, (इसके अनुसार मनुष्य की सांसारिक पदार्थों की वास्तविकता में विश्वास होना है, और वह विषय सुखों से तृप्ति करने का अभ्यस्त हो जाता है)। सम० -कल्लिल मोटा और व्यामोहक जाल, -निद्रा अन्धविश्वास, मन्त्रः व्यामोहक जादू,—रात्रिः (स्त्री०) प्रलय की रात जब कि समस्त विश्व नष्ट हो जायगा, -शास्त्रम् मिथ्या सिद्धान्त या गुरु।

मोहन (वि०) (स्त्रियो०-नी) [मुह्+णिच्+ल्युट्] 1. जड़ीभूत करने वाला 2. व्याकुल करने वाला, उद्विग्न करने वाला, विह्वल करने वाला 3. व्यामोहक, संभ्रामक 4. आकर्षक, नः 1. शिव का विशेषण 2. काम के पाच बाणों में से एक धतूरा, नम् 1. जड़ीभूत करना 2. सुस्त करना, घबरा देना, विह्वल करना, 3. जड़ता, बेहोशी 4. दीवानापन, व्यामोह, गलती 5. फुसलाना, प्रलोभन करने के लिये जादू-टोना। सम०—अस्त्रम् एक ऐसा आयुध-अस्त्र जो उस व्यक्ति को जिस पर कि चलाया जाय, मुग्ध कर ले।

मोहनकः [मोहन+कन्+क] चैत्र का महीना।

मोहित (भू० क० कृ०) [मुह्+णिच्+क्त] 1. जड़ीभूत किया हुआ 2. घबराया हुआ, विह्वल 3. व्यामुग्ध, आकृष्ट, मुग्ध किया हुआ, फुसलाया हुआ।

मोहिनी [मुह्+णिच्+णिनी+ङीप्] 1. एक अप्सरा का नाम 2. मनोहारिणी स्त्री (अमृत बांटते समय राक्षसों को ठगने में विष्णु ने यही रूप धारण किया था) 3. एक प्रकार का चमेली का फूल।

मौक (कु) लिः (पुं०) कौवा—उत्तर० २।२९।

मौक्तिकम् [मुक्तैव स्वार्थे ठक्] मोती- मौक्तिक न गजे गजे सुभा०। सम०—आवली मोतियों की लड़ी -शुक्तिका मोती की मालाएं गूंथने वाली स्त्री,-दामन् (नपुं०) मोतियों की लड़ी—प्रसवा मोतियों को जन्म देने वाली सीपी, सूतिका (स्त्री०) मोतियों की सीपी, सरः मोतियों की लड़ी, या हार।

मौक्यम् [मूक+ष्यञ्] गूंगापन, मूकता, मौन।

मौञ्जरिः [मुञ्ज+इञ्] एक कुल का नाम १९६ गदे मौञ्जरिभिः कृतार्चनम्—का०।

मौखर्यम् [मुखरस्य भावः ष्यञ्] 1. बातूनीपना, बहुभाषिता 2. गाली, मानहानि, झूठा आरोप।

मौख्यम् [मुख+ष्यञ्] पूर्ववर्तिता, वरिष्ठता।

मौग्ध्यम् [मुग्ध+ष्यञ्] 1. मूर्खता, मूढ़ता 2. कलाहीनता सरलता, भोलापन 3. लावण्य, सौन्दर्य।

मौक्षम् [मोच+अण्] केले का फल।

मौञ्ज (वि०) (स्त्री० ञ्जी) [मुञ्ज+अण्] मूंज की घास का बना हुआ,—ञ्जः मूंज की घास का पत्ता।

मौञ्जी [मौञ्ज+ङीप्] मूंज की घास की तीन लड़की बनी, ब्राह्मण की तगड़ी—कु० ५।१०, मनु० २।४२। सम०—निबन्धनम्,—बन्धनम् मूंज की घास का बना कटिसूत्र पहनना, उपनयन संस्कार,—मनु० २।२७,१६९।

मौढ्यम् [मूढ+ष्यञ्] 1. अज्ञान, जड़ता, मूर्खता 2. लड़कपन।

मौत्रम् [मूत्रस्येदम् अण्] मूत्र की मात्रा।

मौदकिकः [मोदक+ठक्] हलवाई।

मौद्गलिः [मुद्गल+इञ्] कौवा।

मौद्गीन (त्रि०) [मुद्ग+खञ्] (खेत) जो लोबिया (मूंग) बोने के उपयुक्त हो।

मौनम् [मुनेर्भावः अण्] चुप्पी, मूकभाव; मौनं सर्वार्थसाधनम्, मौनं त्यज 'होठ हिलाओ' -मौनं सम्मतं 'जीभ को ताला लगाओ'। सम० मुद्रा मौन धारण की अभिरुचि,—व्रतम् चुप रहने की प्रतिज्ञा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मौनिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मौन+इनि] चुप रहने की प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, चुप, मूक, भग० १२।१९· पुं० एक पुण्यशील ऋषि, संन्यासी, साधु।

मौरजिकः [मुरज+ठक्] मृदंग बजाने वाला।

मौर्ख्यम् [मूर्ख+ष्यञ्] मूर्खता, बुद्धूपन, जड़ता।

मौर्यः [मुरायाः अपत्यम् मुरा+ण्य] चन्द्रगुप्त से आरंभ करके राजाओं का एक वंश मौर्य नवे राजनि · मुद्रा० ४।१५, मौर्यहिरण्यार्थिभिरर्चाः प्रकल्पिताः —महा० (इस संदर्भ में मौर्य शब्द के अर्थ में विद्वानों में मतविभिन्नता है)।

मौर्वी [मुरायाः विकारः अण्—ङीप्] 1. धनुष की डोरी —मौर्वीकिणाङ्को भुजः श० १।१३, मौर्वी धनुषि चातना रघु० ११।९, १८।४८, कु० ३।५५ 2. मूर्वा घास की बनी तगड़ी (क्षत्रियों के धारण किये जाने योग्य मनु० २।४२।

मौल (वि०) (स्त्री०—ला-ली) [मूलं वेत्ति मूलादागतो वा अण्] 1. मूलभूत, मौलिक 2. प्राचीन, पुराना, (प्रथा आदि) बहुत समय से चली आती हुई 3. सत्कुलोद्भव, उच्च कुल में उत्पन्न ४. पीढ़ियों से राजा की सेवा में पला हुआ, प्राचीन काल से पदारूढ़, आनुवंशिक—मनु० ७।५४, रघु० १९।५७. लः पुराना या वंशानुगत मन्त्री.—रघु० १२।१२, १४।१०, १८।३८।

मौलि (वि०) [मूलस्यादूरभवः इञ्] प्रधान, प्रमुख, सर्वोत्तम—अखिलपरिमलानां मौलिना सौरभेण, भामि० १।१२१, लिः 1. प्रधान, शिरोमणि मौली वा रचयाञ्चलिम् वेणी० २।४०, रघु० १३।५२, कु० ५।७१, 2. किसी वस्तु का सिर या चोटी, उच्चतम बिन्दु, उत्तर० २।३० 3. अशोकवृक्ष, लिः (पुं० या स्त्री०) 1. ताज, किरीट, मुकुट—भामि० १।७३ 2. सिर की चोटी के बाल, शिखा· जटामौलि कु० २।१६ (जटाजूट मल्लि०) 3. मौंरी, केशविन्यास —वेणी० ६।२४, लिः—ली (स्त्री०) पृथ्वी। सम०

मणिः,—**रत्नम्** मुकुट की मणि, मुकुट में लगा रत्न, **मण्डनम्** शिरोभूषण,—**मुकुटम्** ताज, किरीट।

मौलिक (वि०) (स्त्री० की) [मूल+ठक्] 1. मूलभूत 2. मुख्य, प्रधान 3. घटिया।

मौल्यम् [मूल्य+अण्] मूल्य, कीमत।

मौष्टा [मुष्टि प्रहरण अस्यां क्रीडायाम्—मुष्टि+ण] मुक्के बाजी, घूंसे बाजी, मुष्टामुष्टि मुठभेड़।

मौष्टिकः [मुष्टि+ठक्] उचक्का, ठग, धूर्त।

मौसल (वि०) (स्त्री० ली) [मुसल+अण्] 1. मूसल की भांति बना हुआ, मूसल के आकार का 2. (युद्ध आदि) जो गदाओं से लड़ा जाय 3. (पर्व आदि) जो गदा युद्ध से संबद्ध हो।

मौहूर्तः, मौहूर्तिकः [मुहूर्त+अण्, ठक् वा] ज्योतिषी।

म्ना (भ्वा० पर० म्नति, म्नात) 1. (मन में) दोहराना 2. परिश्रम पूर्वक याद करना 3. स्मरण करना, आ—, 1. सोचना, मनन करना—पादाम्बुजद्वयमनारतमामनन्त · —भामि० ४।०२ 2. परंपरानुसार दे देना, निर्धारित करना, उल्लेख करना, सोचना, बोलना—स्वामाम्नन्ति प्रकृति गुरुस्वार्थप्रवर्तिनीम्—कु० २।१३, ५।८१, ६।३१ 3. अध्ययन करना, सीखना, याद करना यद्ब्रह्म सम्यगाम्नातम्· —कु० ६।१६; भट्टि० १७। ३०; **समा** · , 1. आवृत्ति करना 2. निर्धारित करना, निश्चित करना, तं हि धर्मसूत्रकाराः समाम्नन्ति· उत्तर० ४।

म्नात (भ० क० कृ०) [म्ना+क्त] 1. दोहराया गया 2. याद किया गया, अध्ययन किया गया।

म्रक्ष् (भ्वा० पर० म्रक्षति) 1. रगड़ना 2. देर लगाना, संचय करना, इकट्ठा करना 3. लेप करना, रगड़ना, मलना 4. मिश्रण करना, मिलाना।

म्रक्षः [म्रक्ष्+घञ्] पाखंड, कपटाचरण।

म्रक्षणम् [म्रक्ष्+ल्युट्] 1. शरीर पर उबटन मलना 2. लेप करना, सानना 3. संचय करना, ढेर लगाना 4. तेल, मल्हम।

म्रद् (भ्वा० आ०—म्रदते—प्रेर० म्रदयति ते) पीसना, चूरा करना, कुचलना, रौंदना।

म्रदिमन् (पुं०) [मृदीभावः इमनिच्] 1. कोमलता, मृदुता, 2. ऋजुता, दुर्बलता, (स्वभावतः)—हिमांशुमाशु ग्रसते तन्मदिम्नः स्फुटं फलम्—शि० २।४९।

म्रुच् (म्वा० पर० म्रोचति) जाना, हिलना-जुलना।

म्लुच् (भ्वा० पर० म्रुचति) जाना, हिलना-जुलना।

म्लक्ष् चुरा० उभ० म्लक्षयति—ते काटना, विभक्त करना।

म्लात (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त] मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

म्लान (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त कर्तरि नः] 1. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 2. क्लांत, थका हुआ, निढाल 3. निर्मलीकृत, क्षीण, दुर्बल, कृश 4. उदास, खिन्न अवसन्न 5. गन्दा, मलिन। सम०· अङ्ग (वि०) क्षीणकाय (—गी) रजस्वला स्त्री,—**मनस्** (वि०) उदास मन वाला, उत्साहहीन, हताश।

म्लानिः (स्त्री०) [म्लै+क्तिन्] 1. मुर्झाना, कुम्हलाना, ह्रास 2. क्लान्ति, शैथिल्य, थकान 3. उदासी, खिन्नता 4. गंदगी।

म्लायत्,—म्लायिन् (वि०) [म्लै+शतृ, णिनि वा] कुम्हलाता हुआ, पतला और कृश होता हुआ।

म्लास्नु (वि०) [म्लै+स्नु] 1. मुर्झाया हुआ या कुम्हलाया हुआ या होने वाला 2. पतला और कृश होने वाला 3. निढाल और क्लान्त होने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्लिष्ट (वि०) [म्लेच्छ्+क्त नि० साधु०] 1. अस्फुट बोला हुआ (मानो बर्बर लोगों ने बोला हो) 2. असभ्य असभ्य (बर्बर), असंस्कृत 3. कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ, -ष्टम् अस्फुट या असंस्कृत भाषण।

म्लुच्, म्लुञ्च्, दे० म्रुच्, म्रुञ्च्।

म्लेच्छ या म्लेष् (म्वा० पर०, चुरा० उभ० म्लेच्छति, म्लेच्छयति, म्लिष्ट, म्लेच्छित) अव्यवस्थित रूप से बोलना, अस्फुट स्वर से बोलना, या बर्बरतापूर्वक बोलना।

म्लेच्छ [म्लेच्छ्+घञ्] 1. असभ्य, अनार्य (जो संस्कृत भाषा न बोलता हो, जो हिन्दू या आर्य पद्धतियों का पालन न करता हो), विदेशी,—ब्राह्मा म्लेच्छप्रतिष्ठितेषु विरोधादर्शने सति- जै० न्या०, म्लेच्छान् मूर्छयते या—म्लेच्छनिवहनिधन कलयसि करवालम् —गीत० १ 2. जाति से बहिष्कृत, नीच मनुष्य, **वौधायन** 'म्लेच्छ' शब्द की परिभाषा देता है —गौतमखलादको यस्तु विरुद्धं बहु भाषते, सर्वाचार-विहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते 3. पापी, दुष्ट पुरुष, —च्छम् ताँबा। सम० **आख्यम्** तांवा,—**आज्ञः** गेहूँ —**आस्यम्**,—**मुखम् तांबा**—**कन्दः** लहसुन, **जातिः** (स्त्री०) असभ्य, जंगली (बर्बर) जाति, पहाड़ी, बर्बर, —**देशः**,—**मण्डलम्** वह देश जहां अनार्य लोग (बर्बर) रहते हों, विदेश या असभ्य देश मनु० २।२३, -**भाषा** विदेशी भाषा,—**भोजनः** गेहूँ (—नम्) जौ, -**वाच्** (वि०) बर्बर जाति की या विदेशी भाषा बोलने वाला।

म्लेच्छित (भू० क० कृ०) [म्लेच्छ्+क्त] अस्फुट रूप से या बर्बरतापूर्वक बोला हुआ,—तम् विदेशी भाषा 2. व्याकरण विरुद्ध शब्द या भाषण।

म्लेट, म्लेड् (म्लेटं ड ति) पागल होना।

म्लेव् (म्वा० आ० म्लेवते) पूजा करना, सेवा करना।

म्लै (म्वा० पर० म्लायति, म्लान) मुर्झाना, कुम्हलाना —म्लायतां भूरुहाणा- भामि० १।३६, शि० ५।४३ 2. थक जाना, निढाल होना, श्रान्त या क्लान्त होना; पथि····· श्रम्यतुर्न मणिकुट्टिमोचितौ रघु० ११।८; भट्टि० १४।६ 3. उदास या खिन्न होना; उत्साहहीन या हतोत्साह होना म्लानी साथ विषादेन याज्ञ० १०, म्लायते मे मनो हीदम्—महा० 4. पतला या कृशकाय होना 5. ओझल होना, नष्ट होना **परि** , 1. मुर्झाना, कुम्हलाना, परिम्लानगुन्द्रश्रियम् कु० २।२ रघु० १४।५० 2. खिन्न या निरुत्साहित होना, **प्र** , 1. मुर्झाना, कुम्हलाना 2. उदास या खिन्न होना 3. निढाल होना 4. मलिन या गन्दा होना, मैला होना।

य

यः [या+ड] 1. जो चलता है या गतिमान् है, जाने वाला, गस्ता 2. गाड़ी 3. हवा, वायु 4. मिलाप 5. यश 6. जौ।

यकन् (नपुं०) जिगर (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, कर्म०, द्वि० व०, के पश्चात् 'यकृत्' शब्द का ही यह वैकल्पिक रूप है)।

यकृत् (नपुं०) [न संयमं करोति कृ विक्विप् तुक् च] जिगर, या तद्गत प्रसादशक्तिका। सम०- **आत्मिका** तेलचोर (भौंरे के आकार का एक छोटा सा कीड़ा)।

उदरम् जिगर की वृद्धि, -**कोषः** जिगर की दर्दनाक झिल्ली।

यक्षः [यक्षयति-यक्ष्+(कर्मणि) घञ्] एक देवयोनि विशेष जो धनसंपत्ति के देवता कुबेर के सेवक हैं तथा इसके कोष और उद्यानों की रक्षा करते हैं - यक्षोत्तमा गक्षपति धनेश रक्षन्ति वै प्रायमदाहिरुताः - हरि०, मेघ० १, ६६, भग० १०।२३, ११।२२ 2. एक प्रकार का भूत-प्रेत 3. इन्द्र का महल 4. कुबेर,— **औ** यक्ष जाति की स्त्री। सम०—**अधिपः, अधिपतिः,—इन्द्रः** यक्षों का राजा कुबेर, **आवासः** बेंगीर का वृक्ष, **कर्दमः** एक प्रकार का लेप जिसमें कपूर, अगर, कस्तूरी और केसर समान मात्रा में डाले जाते हैं (कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार चन्दन और केसर भी उसमें सम्मिलित किये जाते हैं (कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलैर्यक्षकर्दमः अमर०, कुङ्कुमागुरुकस्तूरी कर्पूर चन्दनैः तथा। महागुरुगन्धमिश्रयुक्त सामतो यक्ष कर्दमः॥), **ग्रहः** यक्ष या भूत प्रेतादि की बाधा से युक्त व्यक्ति, **तरुः** बटवृक्ष, **धूपः** गुग्गल, लोबान, **रसः** एक प्रकार का मादक पेय,—**राज्** (पुं०) —**राजः** कुबेर का नाम, **रात्रिः** दीपावली का उत्सव, **वित्तः** यक्ष जैसा अर्थात् जो विपुलधनसंपत्ति का स्वामी हो परन्तु व्यय कुछ न करे।

यक्षिणी [यक्ष+ङीष्] 1. यक्ष जाति की स्त्री 2. कुबेर की पत्नी का नाम 3. दुर्गा की सेवा में रहने वाली यक्षस्त्री 4. एक अप्सरा (इसका संबन्ध सत्यलोक वासियों से कहा जाता है)।

यक्ष्मः, यक्ष्मन् (पुं०) [यक्ष्+मनिन् वा] 1. फेफड़ों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का रोग, क्षयरोग 2 रोगमार्ग। सम० **ग्रह** क्षयरोग का आक्रमण, **-ग्रस्त** (वि०) क्षयरोगी, **द्राक्षा** अंगूर।

यक्ष्मिन् (वि०) [यक्ष्म+इनि] जो क्षयरोग से ग्रस्त या पीड़ित है मनु० ३।१५४।

यज् (स्वा० उभ० यजति—ते, इष्ट, कर्मवा० इज्यते, इच्छा० यियक्षति—ते) 1. यज्ञ करना, त्याग पूर्वक पूजा करना। (प्रायः 'यज्ञादिक' शब्दों के करण० से संबद्ध); —यजेत राजा क्रतुभिः—मनु० ७।७०, ५।५३, ६।३६, ११।४०, भट्टि० १४।२०, इसी प्रकार 'अश्वमेधेनेजे, पाकयज्ञेजे—आदि 2. आहुति देना (देवतापरक कर्म० तथा यज्ञीय साधन या आहुतिपरक करण० के साथ) —पशुना रुद्रं यजेत—सिद्धा० यष्टिभिः यजते षिवन्—महा०, मनु० ८।१०५, ११।११८ 3. पूजा करना, सुभूषित करना, सम्मान करना, आदर करना प्रेर० (याजयति—ते) 1. यज्ञ करवाना 2. यज्ञ में सहायता देना। **अ, परि, प्र** यज्ञ करना, आहुति देना, **सम्** अलंकृत करना, पूजा करना समष्टयस्मयण्डलम् भट्टि० १५।९६।

यजतिः [यज्+क्तिच्] 1. उन यज्ञीय अनुष्ठानों का पारिभाषिक नाम जिनके साथ 'यजति' क्रिया का प्रयोग होता है। आगे के विवरण के लिए 'जुहोति' शब्द देखो)।

यजत्रः [यज्+अत्र] 1. वह गृहस्थ जो यज्ञीय अग्नि को स्थिर रखता है, अग्निहोत्री, **वह्नि** अभिमन्थित अग्नि का स्थापित रखना।

यजनम् [यज्+ल्युट्] 1. यज्ञ करने की क्रिया 2. यज्ञ, —देवयजन संभवे देवि सीते उत्तर० ४ 3. यज्ञ करने का स्थान।

यजमानः [यज्+शानच्] 1. वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है और उसका व्यवभार स्वयं वहन करता है 2. वह व्यक्ति जो अपने लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को नियुक्त करता है 3. आतिथेयी, संरक्षक, धनी व्यक्ति 4. कुल का प्रधान पुरुष। सम० **शिष्यः** स्वयं यज्ञ करने वाले ब्राह्मण का शिष्य—शा० ४।

यजिः [यज्+इन्] 1. यज्ञकर्ता 2. यज्ञ करने की क्रिया 3. यज्ञ—दानमध्ययनं यजिः मनु० १०।७९।

यजुस् (नपुं०) [यज्—उसि] 1. यज्ञीय प्रार्थना या मन्त्र, 2. यजुर्वेद का पाठ, यजुर्वेद के गद्यात्मक मन्त्रों का संग्रह जो यज्ञ के अवसर पर पढ़े जाय—तु० मन्त्र 3. यजुर्वेद का नाम। सम० **विद्** (वि०) यज्ञीय विधि का ज्ञाता, **वेदः** तीन (अथर्व वेद को सम्मिलित करके) या चार प्रधान वेदों में द्वितीय (यह यज्ञ सम्बन्धी पवित्र पाठ का गद्यात्मक संग्रह है; इसकी दो मुख्य शाखाएं हैं तैत्तिरीय या कृष्णयजुर्वेद; तथा वाजसनेयि या शुक्लयजुर्वेद।

यज्ञः [यज्+(भावे)नङ्] 1. याग या मख, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य—**-यज्ञेन** यज्ञमयजन्त देवाः, तस्माद्यज्ञाः सर्वे हुताः —आदि 2. पूजा का कार्य, कोई भी पवित्र या भक्ति सम्बन्धी क्रिया (प्रत्येक गृहस्थ, विशेषतः ब्राह्मण को प्रति पाँच ऐसे भक्तिपरक कृत्य प्रतिदिन करने पड़ते हैं, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ, यही पाँचों सम्मिलित रूप से 'पञ्च महा यज्ञ' कहलाते हैं, दे० 'महायज्ञ' और 'पाँच' शब्द पृथक्-पृथक्) 3. अग्नि का नाम 4. विष्णु का नाम। सम० **अंशः** यज्ञ का एक भाग, **भुज्** (पुं०) देवता देव० कु० ३।१४ **अ(आ)गारः, -रम्** एक यज्ञीय भूमि, **-अङ्गम्** 1. यज्ञ का एक भाग 2. कोई भी यज्ञीय आवश्यकता, यज्ञ का साधन यज्ञाङ्गयोर्निरवयवेश्च यस्य—कु० १।१७, (—गः) 1. गूलर का पेड़ 2. विष्णु का नाम, **अरिः** शिव का विशेषण, **-अशनः** देव, **आत्मन्** (पुं०), **ईश्वरः** विष्णु का नाम, **उपकरणम्** यज्ञपात्र या यज्ञ का कोई आवश्यक उपकरण,—**उपवीतम्** द्विजों द्वारा पहना जाने वाला यज्ञोपवीत (अब आज कल और निम्न जातियां भी पहनती हैं) जो बायें कन्धे के ऊपर तथा दाहिनी भुजा के नीचे पहना जाता है —दे० मनु० २।६३ (मूल रूप से 'यज्ञोपवीत' उपनयन संस्कार का ही नाम है जिसमें जनेऊ पहना जाय), **कर्मन्** (वि०) यज्ञकार्य में व्यस्त (नपुं०) यज्ञीय कृत्य, **-कल्प** (वि०) यज्ञ की प्रकृति का, या यज्ञ के समान, **कोलकः** वह खूंटा जिसके साथ यज्ञीय बलि-पशु बाँधा जाता है, **कुण्डम्** हवनकुण्ड, अग्निकुण्ड, **कृत** (वि०) यज्ञानुष्ठान करने वाला, (पुं०) 1. विष्णु का नाम 2. यज्ञ कराने वाला पुरोहित,—**क्रतुः** 1. यज्ञीय कृत्य 2. पूर्णकृत्य या मुख्य अनुष्ठान 3. विष्णु का विशेषण,—**घ्नः** वह राक्षस जो यज्ञों में विघ्न डालता है, **-दक्षिणा** यज्ञीय उपहार, यज्ञानुष्ठान कराने वाले पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा, **दीक्षा** 1. किसी यज्ञीय कृत्य में प्रवेश या उपक्रम 2. यज्ञ का अनुष्ठान मनु० ५।१६९, **द्रव्यम्** यज्ञ के लिए प्रयुक्त होने वाली कोई वस्तु (उदा० यज्ञ पात्र आदि), **पतिः** 1. जो किसी यज्ञ को स्थापना या प्रतिष्ठा करता है दे० 'यजमान' 2. विष्णु का नाम, —**पशुः** 1. यज्ञ के लिए पशु, यज्ञीय बलि 2. घोड़ा, **पुरुषः, फलदः** विष्णु के विशेषण, **भागः** 1. यज्ञ का एक अंश, यज्ञ के उपहारों में हिस्सा 2. देव, देवता, —**भुज्** (पुं०) देव, देवता, **भूमिः** (स्त्री०) यज्ञ के लिए स्थान, यज्ञीय भूमि, **भृत्** (पुं०) विष्णु का विशेषण, **भोक्तृ** (पुं०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसः, –रेतस् (नपुं०) सोम, वराहः शूकरावतार में विष्णु, वल्लिः, ल्ली (स्त्री०) सोम की बेल या पौधा, वाटः यज्ञ के लिए तैयार की गई या घेरी गई भूमि,—वाहनः विष्णु का विशेषण,—वृक्षः वट वृक्ष, वेदिः,–दी (स्त्री०) यज्ञ की वेदी, शयनम् यज्ञकक्ष या अस्थायी छप्पर जिसके नीचे बैठकर यज्ञ किया जाय, शाला यज्ञ का कमरा,—शेषः, षम् यज्ञ का अवशिष्ट—यज्ञशेषं तथामृतम् मनु० ३।२८५, –श्रेष्ठा सोम का पौधा,—सदस् (नपुं०) यज्ञ में उपस्थित जनमण्डली, संभारः यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री, सारः विष्णु का विशेषण,–सिद्धिः (स्त्री०) यज्ञ की पूर्ति, –सूत्रम् दे० यज्ञोपवीत, सेनः राजा द्रुपद का विशेषण,–स्थाणुः यज्ञ का खम्भा,–हन् (पुं०) हनः शिव का विशेषण।

यज्ञिकः [यज्ञ+ठन्] ढाक का पेड़।

यज्ञिय (वि०) [यज्ञाय हितः–घ] 1. यज्ञसम्बन्धी, यज्ञोपयुक्त, या यज्ञपरक 2. पुनीत, पवित्र, दिव्य 3. अर्चनीय, पूजनीय 4. भक्त, पुण्यशील, –यः 1. देव, देवता 2. तीसरा युग, द्वापर। सम० देशः यज्ञों का देश कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः, स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्ततः परः मनु० ९।२३, शाला यज्ञमण्डप।

यज्ञीय (वि०) [यज्ञ+छ] यज्ञ संबंधी,—यः गूलर का पेड़। सम०—ब्रह्मपादपः विकंकत नामक पेड़।

यज्वन् (वि०) (स्त्री०–ज्वरी) [यज्+क्वनिप्] यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला आदि, (पुं०) 1. जो वेदविहितविधि के अनुसार यज्ञानुष्ठान करता है, यज्ञों का अनुष्ठाता—नीपान्वयः पार्थिव एष यज्वा रघु० ६।४६, १।४४, ३।३९, १८।११, कु० २।४६ 2. विष्णु का नाम।

यत् (भ्वा० आ० यतते, यतित) 1. यत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, उद्योग करना (बहुधा संप्र० या तुमुन्नन्त के साथ) सर्वः कल्ये वसिसि यतते लब्धुमर्थान् कुटुम्बी विक्रम० ३।१ 2. प्रयास करना, उत्सुक या आतुर होना, उत्कण्ठित होना—या न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः सारसरावमना यतमानम् –शि० ९।४५, रघु० ९।७ 3. हाथ पैर मारना, निरन्तर उद्योग करना, श्रम करना 4. सावधानी बरतना, खबरदार रहना—भग० २।६०—प्रेर० (वातयति-ते) 1. लौटाना वापिस करना, बदला देना, हरजाना देना, फेर देना 2. घृणा करना, निन्दा करना 3. प्रोत्साहन देना, प्राण फूंकना, सजीव बनाना 4. सताना, दुःखी करना, परेशान करना 5. तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, आ –, 1. प्रयास करना कोशिश करना 2. भरोसे पर रहना, निर्भर रहना, (अधि० के साथ)—वयं स्वव्ययतामहे महावी० १।४९, नि– , प्रेर० 1. लौटाना, फेर देना –निर्यातय हस्तिनाम्—विक्रम० ५; मनु० ११।१६४ 2. बदला देना, वापिस करना, प्रतिहिंसा करना रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै –रामा०, प्र –, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, प्रति– , चेष्टा करना (प्रेर०) फेर देना, वापिस करना दे० निस् पूर्वक यत्, सम् , संघर्ष करना, तर्क वितर्क करना देवासुरा वा एषु लोकेषु संयेतिरे।

यत (भू० क० कृ०) [यम्+क्त] 1. प्रतिबद्ध, दमन किया हुआ, नियंत्रित, पराभूत 2. सीमित, संयत, मर्यादित, तम् महावत द्वारा हाथी को एड़ लगाना। सम० आत्मन् (वि०) स्वयं अपने को अनुशासित करने वाला, स्वसंयत, जितेन्द्रिय, (तस्मै) यतात्मने रोचयितुं यतस्व –कु० ३।१६, १।४५,—आहार (वि०) मिताहारी, संयमी, इन्द्रिय (वि०) जितेन्द्रिय, पवित्र, धर्मात्मा, चित्त, मनस् –मानस (वि०) मन को वश में रखने वाला,—वाच् (वि०) मितभाषी, मौनी, मौनावलंबी—दे० 'वाग्यत',—व्रत (वि०) 1. प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, अपने व्रत को पूरा करने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ।

यतनम् [यत्+ल्युट्] चेष्टा, प्रयत्न।

यतम (वि०) (नपुं० –मत्) [यद्+डतमच्] जो या जौन सा (बहुतों में से)।

यतर (वि०) (नपुं० रत्) [यद्+डतरच्] जो (दो में से)।

यतस् (अव्य०) [यद्+तसिल्] (बहुधा सर्वनामबोधक सर्वनाम 'यद्' के अपा० के रूप में प्रयुक्त) 1. जहां से (व्यक्ति या वस्तु का उल्लेख करते हुए) जिस जगह से, जिस स्थान से या जिस दिशा से यतस्त्वया ज्ञानमशेषमाप्तम् रघु० ५।४ (यतः = यस्मात् जिस से)—यतश्च भयमाशङ्क्येताचीं तां कल्पयेद्दिशम् मनु० ७।१८९ 2. जिस कारण, जिस लिए 3. क्योंकि, चूंकि, के कारण से, इस लिए कि –उवाच चैनं परमार्थतो हरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम् –कु० ५।७५, रघु० ८।७६, प्रायः सहवर्ती 'ततः' के साथ; रघु० १६।७४ 4. जिस समय से लेकर, जब से कि 5. ताकि, जिससे कि (यतस्ततः 1. जिस किसी जगह से, किसी भी दिशा से 2. चाहे किसी व्यक्ति से 3. चाहे जहां, चारों ओर, किसी भी दिशा में, मनु० ४।१५, यतो यतः 1. चाहे जिस जगह से 2. चाहे जिस से, किसी भी व्यक्ति से 3. चाहे जहां, चाहे जिस दिशा में –यतोयतः पद्चरणोऽभिवर्तते —शा० १।२४, भग० ६।२६; यतः प्रभृति जिस समय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से लेकर)। सम० भव (वि०) जिससे उत्पन्न, मूल (वि०) जिसमें जन्म लेने वाला, या जिससे उदित।

यति (सर्व० वि०) [यद् परिमाणे अति] (रूप केवल बहुवचन में, कर्तृ० और कर्म० यति) जितने, जितनी बार, जितने कि।

यतिः (स्त्री०) [यम्+क्तिन्] 1. प्रतिबंध, रोक, नियंत्रण 2. रोकना, ठहरना, आराम 3. दिग्दर्शन 4. संगीत में विराम 5. (छन्द० में) विश्राम—यतिर्जिह्वोष्ठ-विश्रामस्थानं कविभिरुच्यते सा विच्छेदविरामार्द्धः पर्दार्द्धस्था निजेच्छया—छं० १, अमरैर्यानां त्रयेण त्रिसप्तियतिर्यत्र सम्बरा कीर्तितेयम् 6. विधवा, —तिः संन्यासी, जिसने संसार को त्याग दिया है और अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है यथा दानं विना हस्ती तथा ज्ञानं विना यतिः भामि० १।११९।

यतित (वि०) [यत्+क्त] चेष्टा की गई, प्रयत्न किया गया, कोशिश की गई, प्रयास किया गया।

यतितृ (पु०) [यत+इनि] संन्यासी।

यतिनी [यतिन्+ङीप्] विधवा।

यत्नः [यत् (भावे) नङ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, प्रयास, कोशिश, उद्योग—यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः हि० प्र० ३१ 2. मेहनत, गंभीर मनोयोग, अध्यवसाय 3. देखरेख, उत्साह, सावधानता, जागरूकता—महान्हि यत्नस्तव देवदारौ रघु० २।५६, प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः—श० १ 4. पीड़ा, कष्ट, श्रम, कठिनाई शेषाङ्गनिर्माणविधौ विधातुर्वैफल्य उत्पाद्य हसन्ति यत्नः—कु० १।३५, ७।६६, रघु० ७।१४।

यत्र (अव्य०) [यद्+त्रल्] 1. जहाँ, जिस स्थान में, जिधर सर्वत्र या (प्रायः) चलति यत्र हि चित्तम् नै० ५।५७, कु० १।७, १० 2. जब, जैसा कि 'यत्र काले' में 3. चूँकि क्योंकि, जब से, जहाँ (**यत्रयत्र** जहाँ कहीं -यत्र यत्र धूमस्तत्र वह्निः—तर्क० **यत्र यत्र** चाहे जिस स्थान में, सर्वत्र, **यत्रकुत्र यत्रक्वचन क्वापि** 1. जहाँ कहीं, चाहे जिस जगह 2. जब कभी

यत्रत्य (वि०) [यत्र+त्यप्] जिस स्थान का, जिस स्थान पर रहता हुआ।

यथा (अव्य०) [यद् प्रकारे थाल्] 1. स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर इसके निम्नांकित अर्थ हैं—(क) कथितरीति के अनुसार—यथाज्ञापयति महाराजः—'जैसा कि महाराज आज्ञा करते हैं'' (ख) नामतः, जैसा कि आगे आता है तत्रयथानुश्रूयते पं० १, उत्तर० २।४ (ग) जैसा कि, की भाँति (तुलनात्मोतक तथा समानता के चिह्न का सूचक) आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः —उत्तर० ४।८, कु० ४।३४, प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा (न मुंचति)· काव्य० १० (घ) जैसा कि उदाहरणस्वरूप,—दृष्टान्ततः यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निर्यथा महानसे तर्क०, पंच० १।२८८, (ङ) प्रत्यक्ष उक्ति को आरंभ करने के समय प्रयुक्त, अन्त में चाहे 'इति' हो या न हो अकथितोऽपि ज्ञापित एव यथायमाभोगस्तवोद्वहनस्येति—श० १, विदित खलु ते यथा स्मरः क्षणमप्युत्सहते न मां विना· कु० ४।३६, (स्त्री०) जिससे कि, इसलिए कि—दर्शय तं चोरसिंह यथा व्यापादयामि पंच १ 2. तथा के सहसंबंधित्व में प्रयुक्त होकर 'तथा' के निम्नलिखित अर्थ हैं :—(क) जैसा, वैसा (इस अवस्था में तथा के स्थान में 'एवं' और 'तद्वत्' भी बहुधा प्रयुक्त होते हैं) तथा वृत्तस्थो फलम् —या यथाबीजं तथाङ्कुरः—भग० ११।२९ (इस अवस्था में संबंध की समानता को अधिक आश्चर्यजनक और प्रभावशाली बनाने के लिए 'एवं' शब्द यथा के साथ, अथवा दोनों के साथ जोड़ दिया जाता है)—वधूचतुष्टयेऽपि यथैव शान्ता प्रिया तनूजास्य तथैव सीता—उत्तर० ४।१६, न तथा बाधते रुक्मी (या प्रीतम्) यथा बाधति बाधते, (इतना-जितना, जैसा कि)—कु० ६।७०, उत्तर० २।४, विक्रम० ४।३३, इस अर्थ में 'तथा' का बहुधा लोप कर दिया जाता है, तब उस अवस्था में 'यथा' का अर्थ उपर्युक्त (ग) में दिया हुआ है, (ख) ताकि जिससे कि (यहाँ 'यथा' 'जिससे' और तथा 'कि' को सूचित करता है)· यथा वन्दूजनशोच्या न भवति तथा निर्वोढ्यं श० ३, तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यसे जनैः का०—१०१, तस्मान्मुच्ये यथा तात संविधातुं तथार्हसि रघु० १।७२, ३६, ३।६६ १५।६८, (ग) क्योंकि इसलिए, क्योंकि, अतः—यथा इतोमुत्रागतिरपि कल्पकालः श्रुतस्तथा तर्कयामि आदि या० ८, कभी-कभी 'तथा' को लुप्त कर दिया जाता है—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्· सेवियन्तेनयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः—मेघ० ९ (ङ) यदि -तो, इतने विश्वास से कि, बड़े निश्चय से (उक्ति और अनुरोध का दृढ़ रूप) वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे तथा विश्वम्भरे देवि मामन्तर्धातुमर्हसि ·रघु० १५।८१, **यथा यथा-तथा तथा**—जितना अधिक···उतना ही···जितना कम···उतना ही—यथायथा यौवनमतिक्रामति तथा तथावर्धतास्य संतापः—का० ५९, मनु० ८।२८६, १२।३३, **यथा-तथा** किसी रीति से, किसी भी ढंग से, **यथाकथंचित्** किसी न किसी प्रकार। (निरो० अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'यथा' का प्रायः अनुवाद किया जाता है : के अनुसार, के अनुरूप, तदनुसार, तदनुरूप, के अनुपात से, अधिक न होकर; दे० समस्त शब्द नीचे,—**अंशम्**,—**अंशतः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अव्य०) ठीक-ठीक अनुपातानुरूप में, **अधिकारम्** (अव्य०) अधिकार या प्रमाण के अनुसार, **अधीत** (वि०) जैसा पढ़ा हुआ या अध्ययन किया हुआ है, मूलपाठ के समरूप,—**अनुपूर्वम्**—**अनुपूर्व्यम्**, **अनुपूर्व्या** (अव्य०) नियमित क्रम या परम्परा में, क्रमशः, यथा-क्रम, - **अनुभूतम्** (अव्य०) 1. अनुभव के अनुसार 2. पूर्वानुभव के अनुरूप,—**अनुरूपम्** (अव्य०) यथार्थ समानुरूपता में, उचित रूप से, **अभिप्रेत** - **अभिमत, अभिलषित, अभीष्ट** (वि०) जैसा कि चाहा था, जैसा कि इरादा था या इच्छा की थी, इच्छा के अनुकूल, **अर्थ** (वि०) 1. सचाई के अनुरूप, सत्य, वास्तविक, सही —सौम्येति वाक्यमाद्य यथार्थमाधीः रघु० १।४४, इसी प्रकार 'यथार्थानुभव' (सही या शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान) और 'यथार्थवक्ता' 2. सत्य अर्थ के समनुरूप, अर्थ के अनुसार सही तौर, उपयुक्त, सार्थक करिष्यन्निव नामार्थं (अर्थात् शत्रुघ्न) यथार्थमभिनिष्प्रभात् रघु० १५।९, यदि सत्यः शिशुपालो वा यथार्थो दि० १६।८५, वि० ८।३९ कु० १।१६ 3. योग्य, उपयुक्त (**र्थम् - र्थतः**) सत्यतापूर्वक, सही, उचित प्रकार से, **अक्षर** (वि०) सार्थक, अक्षरशः सत्य वि० १।१, **नामन्** (वि०) जिसका नाम अर्थ की दृष्टि से सही है या पूर्णतः सार्थक है (जिसके कार्य नाम के अनुरूप है) -ध्रुव-सिद्धेरपि यथार्थनामः भिद्धि न मन्यते—मालवि० ४, परन्तपो नाम यथार्थनामा रघु० ६।२१, **वर्णः** गुप्तचर (यथादेशं के स्थान पर), **अर्ह** (वि०) 1. गुणों के अनुसार अधिकारी 2. समुचित, उपयुक्त न्यायोचित, **वर्णः** गुप्तचर, दूत, **अर्हम्, अर्हतः** (अव्य०) गुण या योग्यता के अनुरूप —रघु० १६।४०, **अर्हणम्** (अव्य०) 1. औचित्य के अनुरूप 2. गुण या योग्यता के अनुरूप, — **अवकाशम्** (अव्य०) 1. कक्ष या स्थान के अनुसार 2. जैसा कि अवसर हो, अवसरानुकूल, अवकाशानुकूल, औचित्यानुकूल 3. ठीक स्थान पर **प्राप्तावसरकृत्य** यथावकाशं निवेदय —रघु० ६।१४, **अवश्यम्** (अव्य०) दशा या परिस्थिति के अनुकूल, **आख्यात** (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पूर्वोल्लिखित, - **आत्मतम्** (अव्य०) जैसा कि पहले बतलाया गया है, **आगत** (वि०) भूत, जात, (अव्य० **तम्**) जैसा कि कोई आया, इसी रीति से जैसे कि कोई आया यथागतं मातलिसारथेर्यथौ - रघु० ३।६७,—**आचारम्** अव्य०) प्रथा के अनुसार, जैसा कि प्रचलन है, **आम्नातम्, आम्नायम्** (अव्य०) जैसा कि वेदों में विहित है, **आरब्धम्** (अव्य०) आरंभ के अनुसार, नियमित क्रम या अनुक्रम में, - **आवासम्** (अव्य०) अपने रहने के अनुसार, प्रत्येक अपने अपने निवास के अनुसार, —**आशयम्** (अव्य०) 1. इच्छा या आशय के अनुसार 2. करार के अनुसार, **आश्रमम्** (अव्य०) आश्रम या किसी व्यक्ति के धार्मिक जीवन के विशिष्ट के अनुसार, **इच्छा, इष्ट, ईप्सित** (वि०) इच्छा या कामना के अनुसार, अपनी रुचि के अनुकूल, यथेष्ट, जैसा कि चाहा गया हो या कामना की गई हो, (अव्य० **च्छम्, ष्टम्, तम्**) 1. इच्छा या कामना के अनुसार, इच्छा या मन के अनुकूल रघु० ४।५१ 2. जितनी आवश्यकता हो, मन भर कर यथेष्टं बुभुजे मांसम् चौर० ३, **ईक्षितम्** (अव्य०) जैसा कि स्वयं देखा हो, जैसा कि वस्तुतः प्रत्यक्ष किया हो, **उक्त, उदित** (वि०) जैसा कि ऊपर कहा गया है, पूर्वोक्त, उपर्युल्लिखित यथोक्तासूचना. पंच० १, यथोक्तकारिणा इव० १, रघु० १३७०, **उचित** (वि०) उपयुक्त, उचित, वाञ्छित, योग्य (अव्य० - **तम्**) ठीक-ठीक, उपयुक्त रूप से, उचित रूप से, - **उत्तरम्** (अव्य०) नियमित क्रम या परंपरा में, क्रमशः, संवत्सरोऽयं यथोत्तरम् शा० द० ७२१, **उत्साहम्** (अव्य०) 1. अपनी शक्ति या ताकत के अनुसार 2. अपनी पूरी शक्ति से, **उद्दिष्ट** (वि०) जैसा कि वर्णन किया गया है या संकेतित है, (**ष्टम्**) या **उद्देशम्** (अव्य०) संकेतित रीति से, **उपजोषम्** (अव्य०) मन या इच्छा के अनुसार, - **उपदेशम्** (अव्य०) जैसा कि परामर्श या आदेश दिया गया है, **उपयोगम्** (अव्य०) आवश्यकता या कार्य की दृष्टि से, परिस्थिति के अनुसार, **काम** (वि०) इच्छा के अनुकूल (अव्य० **मम्**) रुचि के अनुकूल, इच्छा के अनुरूप, मन भर कर यथाकामा-हुतिधौतमम् रघु० १।९, ४।५१, **कामिन्** (वि०) स्वतंत्र, प्रतिबंधरहित, **कालः** ठीक या सही समय, उचित समय—रघु० १।९, (अव्य०—**लम्**) ठीक समय पर, समयानुकूल, नीमम के अनुसार, —यात्पर्वजैर्जातमपाकालं स्वयमप्यहः —रघु० १७।५१, **कृत** (वि०) जैसा कि मान लिया गया है, किसी नियम या प्रथा के अनुसार किया गया, प्रथानुकूल —मनु० ८।१८३,—**क्रमम्, क्रमेण** (अव्य०) ठीक क्रम या परंपरा से, निर्धारित रूप से, सही रूप में, उचित रीति से रघु० ३।१०, ९।२६, **क्षमम्** (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना संभव हो, **ज्ञातृ** (वि०) मूर्ख, अज्ञानी जड, **ज्ञातम्** (अव्य०) व्यक्ति की अधिक से अधिक जानकारी या बुद्धि के अनुसार, **ज्येष्ठम्** (अव्य०) पद के अनुसार, वरिष्ठता के अनुसार,—**तत्त्व** (वि०) 1. सत्य, सही 2. परिशुद्ध, खरा, (—**त्वम्**) किसी वस्तु के विवरण या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेषताओं का आख्यान, विवरण मूलक या सूक्ष्म कथन, (अव्य० **थम्**) 1. यथार्थतः, सूक्ष्मतया 2. सही तौर पर, उचित रूप से, जैसा कि वस्तुतः बात हो, --**दिक्, --दिशम्** (अव्य०) सब दिशाओं में, **निर्दिष्ट** (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है, जैसा कि ऊपर विशेषता बता दी गई है -यथानिर्दिष्ट-व्यापारा सर्वा आदि, --**न्यायम्** (अव्य०) न्यायतः, नहीं रूप से, उचित रीति से मनु० ११६, **पुरम्** (अव्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अवसरों पर था, -**पूर्व** (वि०), **पूर्वक** (वि०) जैसा कि पहले था, पूर्ववर्ती- रघु० १२।४८, (--**वम्**)-**पूर्वकम्** (अव्य०) 1. जैसा कि पहले था मनु० ११।१८७ 2. क्रम या परंपरा में, क्रमशः -पुत्रे सर्वा यथापूर्वम् याज्ञ० १।३५, --**प्रदेशम्** (अव्य०) 1. उचित या उपयुक्त स्थान में—यथाप्रदेशं विनियोजितान्—कु० १।४९, **आसज्जयामास यथाप्रदेशं** कंठे गुणम् —रघु० ६।८३, ७।३४ 2. विधि या निदेश के अनुसार, --**प्रधानम्**, --**प्रधानतः** (अव्य०) पद या स्थिति के अनुकूल, पूर्ववर्तिता के अनुसार, -आलोकमार्गेण सुरा-नरेशान् यथाप्रधानम् स्वयमप्रधानम् कु० ७।४६, **प्राणम्** (अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, अपनी पूरी शक्ति से, --**प्राप्त** (वि०) परिस्थितियों के अनुरूप, --**प्राथितम्** (अव्य०) प्रार्थना के अनुकूल, --**बलम्** (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के साथ, अपनी शक्ति से,—**भागम्, -भागशः** (अव्य०) 1. प्रत्येक के भाग के अनुसार, ठीक अनुपात से 2. प्रत्येक अपने क्रमिक स्थान पर-यथाभागमवस्थिताः भग० १।११ 3. ठीक स्थान पर यथाभागमधिरोपिते रघु० ६।१६, --**भूतम्** (अव्य०) जो कुछ हो चुका उसके अनुसार, सचाई के अनुसार, सत्यतः, यथार्थतः,--**भूषण** (वि०) ठीक सामने देखने वाला (शब्द के साथ) (मुखं) यथाभूषणं नीतवती पुलिन्दे बहु कोमलम् भट्टि० ५।४८, **यथ्य** (अव्य०) 1. यथा योग्य, जैसा कि योग्य है, यथोचित किं० ८।१२ 2. नियमित क्रम में, पृथक् पृथक् एक एक करके बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकर्षणा यथाक्रमम् सा० द० ३३७ **युक्तम्, योग्यम्** (अव्य०) परिस्थितियों के अनुकूल, यथायोग्य, उपयुक्त रूप से, **योग्य** (वि०) उपयुक्त, योग्य, उचित, सही, **रुचम्, रुचि** (अव्य०) अपनी पसन्द या रुचि के अनुकूल, **रूपम्** (अव्य०) 1. रूप या दर्शन के अनुसार 2. ठीक-ठीक, यथोचित, यथायोग्य, --**वस्तु** (अव्य०) जैसा कि कहा है, यथार्थतः, विशुद्ध रूप से, सचमुच, **विधि** (अव्य०) नियम या विधि के अनुसार, ठीक-ठीक, यथोचित -यथाविधिहुताग्नीनाम् रघु० १।६, संचस्करोधर्म-पत्नीर्या मैथिलेयी यथाविधि-- १५।३१, ३।७०,--**विभवम्** (अव्य०) अपनी आय के अनुपात से, अपने साधनों के अनुरूप, **वृत्त** (वि०) जैसा कि हो चुका है, किया गया है, (--**सम्**) वास्तविक तथ्य, किसी घटना की परिस्थितियों का विवरण, --**शक्ति, शक्तया** (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के अनुसार, जहां तक संभव हो, --**शास्त्रम्** (अव्य०) धर्मशास्त्रों के अनुसार जैसा कि धर्मशास्त्रों में विहित है मनु० ६।८८,--**श्रुतम्** (अव्य०) 1. जैसा कि सुना है, या बताया गया है 2. (**यथाश्रुति**) वैदिक विधि के अनुसार, **संख्यम्** अलंकार शास्त्र में एक अलंकार यथासंख्यं क्रमेणैव अभिकाणां समन्वयः,—काव्य० १० उदा० शत्रुं मित्रं विपाप च जय रञ्जय भञ्जय चन्द्रा० ५।१०७, (--**ख्यम्**), **संख्येन** (अव्य०) संख्या के अनुसार, क्रमशः, संख्या के संदर्भ याज्ञ० १।२१, --**समयम्** (अव्य०) 1. उचित समय पर करार के अनुसार, सर्वसम्मत प्रचलन के अनुसार, **संभव** (वि०) शक्य, जो हो सके, **सुखम्** (अव्य०) 1. मन या इच्छा के अनुसार 2. आराम से, सुखपूर्वक, इच्छानुकूल, जिससे सुख हो,—अङ्गैर्निधाय करणैः यथासुखं ते संवाहयाम्बि करेणयुतं पतत्राम्बी० ३।२२, रघु० ८।४८, ४।४३, स्थाने रहो और उचित स्थान, (अव्य० -**नम्**) उचित स्थान पर, ठीक-ठीक, **स्थित** (वि०) 1. वास्तविक तथ्य या परिस्थितियों के अनुकूल, जैसी कि स्थिति हो यद्दि० ८।८ 2. सचमुच, उचित रूप से,—**स्वम्** (अव्य०) 1. अपने अपने क्रम से, क्रमशः अध्यासते वीरभूतः यथास्वम् रघु० १३।२७, कि० १४।४३ 2. वैयक्तिक रूप से रघु० १७।६५, 3. ठीक ठीक, यथोचित, सही रूप से।

यथावत् (अव्य०) [यथा+वति] 1. ठीक ठीक, ज्यों का त्यों, यथोचित, सही रूप से; प्राय. विशेषण के बल के साथ अध्यायिन्दृ गाधिनृतो यथावत् --भट्टि० २।२१, लिंगैर्यथावद्ग्रहणेन- रघु० ३।२८ 2. विधि या नियम के अनुसार, जैसा कि नियमों द्वारा विहित है,-तदों यथावद् विहिताध्वराय- रघु० ५।१९, मनु० ३।१, ८।२१४।

यद् (सर्व० वि०) [अज् + अदि, डित्] (कर्तृ० ए० व०, पुं० का०, स्त्री० या, नपुं० **यत्** द) संबंधवाचक सर्वनाम जो जीव सा, जो कुछ (क) इसका उपयुक्त सहसंबंधी 'तद्' है, -यस्य बुद्धिर्बले तस्य, परन्तु कभी-कभी 'तद्' के स्थान पर इदम्, अदस् या एतद् को भी प्रयुक्त किया जाता है, कभी कभी 'यद्' शब्द अकेला ही प्रयुक्त होता है, तथा उसके सहसंबंधी सर्वनाम का ज्ञान प्रकरण से ही कर लिया जाता है, दोनों संबंध-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाक्य सर्वनाम बहुधा एक ही वाक्य में प्रयुक्त किये जाते हैं यदेव रोचते यस्मै भवेत्तस्य सुन्दरम् (सः) जब इस शब्द की आवृत्ति कर दी जाती है तो इसका अर्थ होता है 'समष्टि' तथा इस शब्द का अनुवाद होता है 'जो कोई' 'जो कुछ'; इस अवस्था में सहसंबंधी सर्वनाम 'तद्' की भी आवृत्ति की जाती है—यो यः शस्त्र विभर्ति स्वभुजमुरुबलः पाण्डवानां वृकोदरः ··· क्रोधाच्चस्मात्स्य तस्य स्वयंमिह जगतोमस्तकस्थान्तकोऽहम् -वेणी० ३।३० (ग) जब 'यद्' को किसी प्रश्नवाचक सर्वनाम या उसके व्युत्पन्न किसी और शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है, साथ में निपात 'चिद् चन, वा या अपि' लगे हों या न लगे हों, तो इसका अर्थ होता है 'कुछ भी' 'चाहे जो कोई' 'कोई'; **येन केन प्रकारेण** जिस किसी प्रकार से, किसी न किसी प्रकार से; यत्र कुत्रापि, यो यो को वा, यः कश्चन आदि; **यत्किंचिदेतद्** 'यह तो केवल तुच्छ बात है'। यानि कानि च मित्राणि आदि. (अव्य०) अव्यय के रूप में 'यद्' नाना प्रकार से प्रयुक्त होता है 1. किसी प्रत्यक्ष या आधित वाक्य को आरम्भ करने में अन्त में चाहे 'इति' हो या न हो सत्योक्तं जनप्रवादो यत्सप्तपदमनुव्रजनादोहि— का० ७२,—तस्य कदाचिच्चिन्ता समुपस्था यदर्थोत्पत्तयुपायाश्चिन्तनीयाः कर्तव्याश्च—पंच० १ 2. क्योंकि, चूंकि प्रियमाचरितं खलु त्वया मे ·····यदियं पुनरप्यधोहनेश्वा परिवृत्तावसुखी मयाद्य दृष्टा—विक्रम० १।१७, या किं शक्यमुपेक्षितुं भवत्या वपुषि क्षमा न क्षिपतेषवे यतः —मुद्रा० २।१८, रघु० १।२७, ८७, इस अर्थ में 'यद्' के पश्चात् इसका सहसम्बन्धी तद् या यतः आता है; दे० नै० २२।४६। सम० **अपि** (अव्य०) यद्यपि, अगर्चे - वक्रः पन्था यदपि भवतः —मेघ० २७.—**अर्थम्**,—**अर्थे** (अव्य०) 1. जिस लिए, जिस कारण, जिस वास्ते, जिस हेतु, श्रुयतां यदर्थमस्मिन् दुःखिनां भवत्सकाशं प्रेषितः शा० ६, कु० ५।५२ 2. चूंकि, क्योंकि—नन्वं देवं न शक्यं हि पुरुषेणातिवर्तितुं, यदर्थं रत्नवत्नेन न लभ्ये विप्रतो विभो महा०, **कारणम्**,—**कारणात्** (अव्य०) 1. जिस लिए, जिस कारण 2. चूंकि, क्योंकि.—कृते (अव्य०) जिस लिए, जिस वास्ते, जिस पुरुष या वस्तु के लिए,—**भविष्य**: भाग्यवादी (जो कहता है - 'जो होना है वह होगा') —पंच० १।३१८, **वा** (अव्य०) अथवा, या, —नैषधिः कलयत्रो गरीयो बद्धा जयेम यदि वा नो जयेयुः— भग० २।६ (भाष्यकार बहुधा इस शब्द को विकल्पार्थ प्रयुक्त समझ प्रयुक्त करते हैं), **वृत्तम्** साहसिकता, - **सत्यम्** (अव्य०) निश्चय ही, सचाई तो यह है कि, सत्यतः सत्यभुजः—अमङ्गलाशंसयः वो वचनस्य यत्सत्यम् कल्पितमिदं मे हृदयम्—वेणी० १, मुद्रा० १, मृच्छ० ४।

यदा (अव्य०) [यद्+काले दाच्] 1. जब, उस समय जब कि, **यदायदा** जब कभी, **यदेवतदेव** उसी समय, ज्योंही, **यदाप्रभृति**·····**तदाप्रभृति** जब से लेकर·····तब से लेकर 2. यदि· पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्—भर्तृ० २।९३ 3. जब कि, चूंकि, यतः।

यदि (अव्य०) [यद्+इन्चि·/-इस्, णिलोपः] 1. अगर, जो (दर्शासूचक, और इस अर्थ में प्रायः विधिलिङ् के साथ प्रयोग, परन्तु कभी-कभी भविष्यत्काल अथवा वर्तमानकाल के साथ भी; प्रायः इसके साथ्वात् 'तर्हि' और कभी कभी 'तत्' तदा, तत् या अन्य का प्रयोग किया जाता है) प्राणैस्तपोभिरधवाभिमतं मदीयैः कृत्वं घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात्—मा० १।९, वदसि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम्· -गीत० १०, गत्वं कुतं यदि न सिध्यति कोऽत्र (- कस्तर्हि) दोषः -हि० प्र० ३५ 2. चाहे, अगर यद प्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणायं कल्पते·-कु० ५।८४ 3. जानें कि, जब कि 4. यदि कदाचित्, शायद ···यदि तावदेवं विद्याः शायद आप ऐसा कर सकें' पूर्व स्पष्टं कृतं किल भवेदङ्गमेभिस्तदेति मेघ० १०३, याज्ञ० ३।१०४, **(यद्यपि)** हालांकि, अगर्चे—शि० १६।८७, भग० १।३८, श० १।३१, **यदि वा** या, पड़ा जयेम यदि वा नो जयेयुः—भग० २।६, भर्तृ० २।८३, या शायद, कदाचित्, भले ही, प्रायः, निजवाचक सर्वनाम से भी आवश्यकतानुसार आशय अभिव्यक्त कर दिया जाता है उत्तर० १।१२, ४५।

यदुः [यज्+उ पृषो० जन्य वः] एक प्राचीन राजा का नाम, ययाति और देवयानी का ज्येष्ठ पुत्र, यादवों का वंश प्रवर्तक। सम०—**कुलोद्वहः**—**नन्दनः**,—**श्रेष्ठः** कृष्ण का विशेषण।

यदृच्छा | यद्+ऋच्छ+अङ्+टाप् | 1. मनमानन्द कल्पना, स्वेच्छा, (कार्य करने की) स्वतंत्रता 2. संयोग, घटना, इस अर्थ में प्रायः करणः एक व० में प्रयोग होता है और 'घटनावश', 'संयोगवश' शब्दों से अनुवाद किया जाता है—किंनरमिथुनं यदृच्छयाऽऽढाश्रीत् -का०, 'देखने का संयोग हुआ', आदि वसिष्ठेक्षणेनच यदृच्छयाऽऽगता श्रुतप्रभावा दृष्टेश्च नन्दिनी ··· रघु० ३।४२, विक्रम० १।१०, कु० १।१४। सम० **अभिज्ञः** ऐच्छिक अथवा स्वपुरस्कृत साक्षी, ····**संवादः** 1. अकस्मात् जानकारी 2 स्वतःस्फूर्त अथवा संयोगवश मिलन, घटनावश मिलाप।

यदृच्छातस् (अव्य०) [यदृच्छा+तसिल्] अकस्मात्, घटनावश, संयोग से।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यन्तृ (पुं०) [यम् + तृच्] 1. निदेशक, सञ्चालक, प्रबन्धक 2. चालक (जैसे कि हाथी का, गाड़ी का), कोचवान सारथि यन्ता गजस्यास्यापतद्गजस्थं रघु० ७।३७, अथ यन्तारमादिश्य धूर्वान् विश्रामयेति च ४।५४ 3. महावत, हस्ति चालक, हस्तिसादी ।

यन्त्र (स्वा० चुरा० उभ० यन्त्रति, ते) नियंत्रण में करना, दमन करना, रोकना, बांधना, कसना, बाध्य करना: क्षणपरिचितपोलस्यस्थलात्कारकन्धरं। रघु० १०।४७, नि , 1. दमन करना, नियंत्रण में करना बेड़ियां डालना से कसना, बांधना, सम् , रोकना, नियंत्रण में करना, ठहराना सर्वान्त्रिणी सेना रथः शा० ७ ।

यन्त्रम् [यन्त्र्+अच्] 1. जो नियन्त्रण करता है, या कसता है, धूर्ण, खंभा, सहारा, टेक जैसा कि गृहकर्म में (इस शब्द के नीचे उद्धरण देखिये) 2. बेड़ी, पट्टी, कसना, कठबंध या ग्रंथि, चमड़े का तस्मा 3. शल्यक्रियोपयोगी उपकरण विशेष कर ठोस उपकरण (विप० शस्त्र) 4. कोई भी उपकरण या मशीन, यन्त्र, साधन, सामान्य उपकरण -कृषियन्त्रम्-मुच्छ० १०।५९, 'कूएं से पानी निकालने वाली मशीन' इसी प्रकार तैल० , जल० आदि 5. चटकनी, कुंडी, ताला 6. नियंत्रण, बल 7. तावीज, एक रहस्यमय ज्योतिष का रेखानित्र जो तावीज की भांति प्रयुक्त किया जाय । सम० उपलः चक्की, का पाट, कर्णधिका एक प्रकार का जादू का पिटारा, कर्मकृत् (पुं०) कलाकार, शिल्पकार, गृहम् 1. वेली का कोल्हू 2. निर्माणशाला, शिल्पगृह, -चेष्टितम् जादू का करतब, जादूगरी, दृढ (वि०) (द्वार) कुंडी या चटखनी जिसमें लगी हुई है, नालम् यन्त्रमूलक कोई नली, -पुत्रकः, पुत्रिका यन्त्रचालित गुड़िया, या पुतली जिसमें डोरी या तार आदि कोई ऐसी कल लगी हो जिससे कि पुतली नाचे, प्रवाहः पानी की एक कृत्रिम सरिता रघु० १६।४९,—मार्गः एक नली या पतनाला, -शरः कोई तीर या अस्त्र जो किसी यंत्र द्वारा छोड़ा जाय ।

यन्त्रकः [यन्त्र+क्वुल्] 1. जो कल-पुर्जों से सुपरिचित हो 2. कुशल यान्त्रिक, -कम् 1. पट्टी (आयु० में) 2. खैराद ।

यन्त्रणम् [यन्त्र्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 नियंत्रण, दमन, रोक-थाम करयन्त्रणदन्तुरास्तरे श्लथिलश्चञ्चुपुटेन पक्षतिः, -नैष० २।२ 2. नियन्त्रण, प्रतिबंध, रोक —स्त्रीयन्त्रणा तत्क्षणमन्यभूवन्नन्योन्यलोलानि विलोचनानि कु०७।७५, रघु० ७।२३ 3. कसना, बांधना, -निबिडोपनिकुचद्वयंत्रणा तमपरायसधात् प्रतिबध्नती -नैष० ४।१० 4. बल, बाध्यता, निग्रह, कष्ट, पीड़ा या वेदना (जो विवक्षता से उत्पन्न हो) अलमलमुपचारयन्त्रणया मालवि० ४ 5. अभिरक्षा, 6. पट्टी ।

यन्त्रणी, यन्त्रिणी [यन्त्रण + ङीप्, यन्त्र् + णिनि + ङीप्] पत्नी की छोटी बहन, छोटी साली ।

यन्त्रिन् [वि०, [यन्त्र+इनि, यन्त्र् + णिनि वा] 1. (घोड़ा आदि) जो जीन व साज से सुसज्जित हो 2. पोढ़क, यत्नशील वाला, 3. जिसमें तावीज बांधा हुआ हो ।

यम् (भ्वा० पर० यच्छति, यत, इच्छा० यियंसति) 1. रोकना, दमन करना, नियन्त्रण करना, वश में करना, दबाना, ठहराना, बन्द करना - यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञः कर्म०, यतचित्तात्मन्—भग० ८।२१, वै० यत 2. प्रदान करना, देना, अर्पण करना-पैर० (यच्छति-ते) नियंत्रण करना, रोकना आदि, आ , 1. विस्तार करना, लंबा करना, फैलाना,—तस्मात् पाणिमायच्छते —सिद्धा०, स्वाङ्गमायच्छमानः शा० ४ (पाठान्तर) 2. ऊपर खींचना, बाहिर खींचना, आयच्छति कूपादज्जम्, सिद्धा०, बाणायुधत्वमायत्तं भट्टि० ६।११९ 3. नियन्त्रित करना, थामना, दबाना, (श्वास आदि) रोकना -मनु० ३।२१७, ११।१००, याज्ञ० १।२४, अंगड़ाई लेना, (आ०) लम्बा बढ़ जाना 5. ग्रहण करना, अधिकार करना, स्वकृतः क्रियमायच्छमानाभिरुत्तमाभिरनुत्तमाम् भट्टि० ८।४६ 6. ले आना, नेतृत्व करना, उद , (प्रायः आ०) 1 उठाना, ऊपर करना, उन्नत करना- बाहू उद्यम्य -शा०१, परस्य दण्डं नोद्यच्छेत् मनु० ४।१६५, रघु० ११।१७, १५।२३, भट्टि० ४।३१ 2. तैयार होना, प्रस्थान करना, आरंभ करना, (संप्र० या तुमुन्नंत के साथ) उद्यच्छ मानो गमनाय भूपः—रघु० १६।२९, भट्टि० ८।४७ 3. प्रयास करना, घोर प्रयत्न करना उद्यच्छते वेदम् -सिद्धा० 4. शासन करना, प्रबन्ध करना, हुकूमत करना, उप (आ०) 1. विवाह करना -भवान्यिथः समयादिमामुपायस्त शा० ५, (सेना) आत्मानुरूपां विभिनोदयेमे कु० १।१८ रघु० १४।८७, शि० १५।२५ 2. पकड़ना, थामना, लेना, स्वीकार करना, अधिकार करना -शस्त्राण्युपायंस्त जिदरराणि— भट्टि० ११६, १५।१, ८।३३ 3. प्रकट करना, संकेत करना—भट्टि० ७।१०१, नि- , 1. नियंत्रित करना, दमन करना, रोकना, वश में करना, शासन करना---प्रकृत्या नियतः स्वया —भर्तृ० ७।२०, (सूता) शशाक सेना न नियन्तुमुद्यमात् कु० ५।५, 'उसे हटा नहीं सका' आदि 2. दबाना, नियंत्रित करना, रोकना, (श्वास आदि) - मनु० २।१९२ न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति मनु० १०।५९, 'न दबाता है न छुपाता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है' आदि 3. डाव करना, देना—को नः कुले नियमानानि नियच्छतीति —प० ३।२४ 4. लगा देना, दण्ड देना नियन्तव्यश्च राजभिः मनु० ९।२।१३ 5. विनियमित करना या निर्देशित करना 6. प्राप्त करना, अधीन करना —तत्तद्विषयाग्रहणेन संस्कारमात्रं नियच्छति शाब० ३।१।१५, मनु० ९।९३ 7. धारण करना (प्रेर०) 8. नियंत्रित करना, वश में करना, विनियमित करना, रोकना, दण्ड देना— नियमयति विमानमभिचरना-दण्डः ब० ५।८ 2. बांधना, कसना शि० ७।५०, रघु० ३।७३ 3. अपोहित करना, हटाना करना, निवारण देना कु० १।६१, **विनि** , दमन करना, नियंत्रण रखना, भग० ६।२४, **सम्** 1 नियंत्रित करना, दमन करना, रोकना, नियंत्रण में रखना (आ०) —मन० ६।३६, मनु० २।१०० 2 बांधना, कैद करना, कसना, जंजीर बनाना —बानरं मा न संयमीः भट्टि० ९।२०, मालवि० १।७, रघु० ३।६०, ४२ 3 एकत्र करना (आ०) : शीर्हांस्यसंयच्छते भिक्षा० के. बन्द करना, भेड़ना भग० ८।१२ ।

यमः [यम्—घञ्] 1. संयत करना, नियंत्रित करना, दमन करना 2 नियन्त्रण, संयम 3 आत्मनिग्रह 4. कोई महान् नैतिक कर्तव्य या धर्मशास्त्रीय (विधि० नियम)—वस्तुं यमेन नियमेन त्रयोदशमुवैव —वे० १३।१६, यम और नियम की निम्न प्रकार से भिन्नता दर्शायी गई है—शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः, नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमानन्तुसाधनम् अमर०, दे० हि० १०।१० पर मल्लि० भी; यमों की संख्या बहुधा दस बतलाई जाती है, परन्तु भिन्न भिन्न लेखकों ने उनके भिन्न भिन्न नाम दिये हैं उदा० ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमलोलता, अहिंसाऽऽर्जवं मार्दवं च यमाः स्मृता बाज्ञ० ३।३१३, या आनृशंस्यं दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्, प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश। कभी-कभी यम केवल पाँच ही बताये जाते हैं - अहिंसा सत्यवचनं ब्रह्मचर्यमकल्कता, अस्तेयमिति पंचैव समाख्यानि व्रतानि च 5. योग प्राप्ति के आठ अंगों या साधनों में पहला साधन। आठ अंग यह हैं —यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि 6. मृत्यु का देवता, मृत्यु का मूर्त रूप, यह सूर्य का पुत्र माना जाता है—दत्तोभये स्वयं यमादपि दण्डधरो ऽत्तरः २।११ 7 यमल—धर्मात्मज इति यमौ च (अर्थात् नकुलसहदेवौ) कर्यद रास्ति वेणी० २।२५, यमसोदर्यं गर्भस्थ जन्मतो ज्येष्ठता मता मनु० २।१२६ 8. जोड़े में एक —**मम्** जोड़ा, जोड़ी। रामः **अनुयः अनुचरः** यम का सेवक या टहलुआ, **अन्तकः** 1. शिव का विशेषण 2. यम का विशेषण **किङ्करः** यम का सेवक, मृत्यु का दूत, **कीलः** विष्णु, **ज** (वि०) जन्म से जुड़वा, यमल आतरौ आवां यमजौ उत्तर० ६, **दूतः** 1. मृत्यु का दूत 2. कौवा, **द्वितीया** कार्तिक शुक्ला दूज जब बहनें अपने भाइयों का सत्कार करती हैं, भाईदूज, तु० भ्रातृद्वितीया, **धात्री** यम का निवास स्थान तरः सालाग्रमे विततिर यमधात्रीजय-निकाम् भर्तृ० ३।१९, **भगिनी** यमुना नदी, **यातना** मरणोत्तरकाल पापियों को यम के द्वारा दी जाने वाली पीड़ा (कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग 'भीषण यातनाएं' या 'घोर पीड़ा' प्रकट करने के लिए भी किया जाता है), **राज्** (पुं०) यम, मृत्यु का देवता, **सभा** यमराज की व्यायसभा. **सूर्यम्** एक भवन जिसमें केवल दो कमरे हों, एक का मुंह पश्चिम की तथा दूसरे का उत्तर की हो ।

यमकः [यम+स्वार्थे कन्] 1. प्रतिबंध, रोक 2. यमक या जुड़वां 3. एक महान् नैतिक या धार्मिक कर्तव्य दे० यम.—**कम्** 1. डोरी पट्टी 2. (अलं० में) एक ही श्लोक में किसी भी स्थान पर शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति परन्तु अर्थ की भिन्नता के साथ, एक प्रकार की लय (इसके कई भेदों का वर्णन काव्या० ३।२।५२ में किया है) आवृत्ति वर्णसंघातसोऽयं यमकं विदुः काव्या० १।६१, ३।१, सा० द० ६४० ।

यमन (वि०) (स्त्री० **नी**) [यम्+ल्युट्] संयमी, दमन करने वाला, शासक आदि,—**नम्** 1. संयम करना, दमन करना, बांधना 2. ठहरना, थमना 3. विराम, विश्राम, -नः मृत्यु का देवता यम ।

यमनिका [यमन+कन्+टाप्, इत्वम्] परदा, ओट, तु० जवनिका ।

यमल (वि०) [यम+ला+क] जोड़वां, जोड़ी में से एक, -लः दो की संख्या, **ली** (द्वि० व०) जोड़ी, **लम्** -ली मिथुन, जोड़ी ।

यमवत् (वि०) [यम+मतुप्, वत्वम्] जिसने अपनी वासनाओं पर संयम कर लिया है, आत्म नियंत्रित —यमवतामवतां च धुरि स्थितः रघु० ८।१ ।

यमसात् (अव्य०) [यम+सात्] यम के हाथों में, यमकी शक्ति में, **यमसात् कृ** मृत्यु को सौंपना ।

यमुना [यम्+उनन्+टाप्] एक प्रसिद्ध नदी का नाम (जो यम की बहन मानी जाती है)[1]। सम० **भ्रातृ** (पुं०) मृत्यु का देवता यम ।

ययातिः [यस्य वायोरिव याति: सर्वत्र रथगतिर्यस्य] एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा का नाम, नहुष का पुत्र, [ययाति ने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दासी के रूप में देवयानी के साथ गई, क्योंकि इसने किसी समय देवयानी का अपमान किया था और उस अपमान की क्षति पूर्ति के लिए आज शर्मिष्ठा को देवयानी की सेविका बनना पड़ा (द० देवयानी)। परन्तु ययाति की इन दासी से प्रेम हो गया, फलतः इसने गुप्त रूप से उससे विवाह कर लिया। इस बात से खिन्न होकर देवयानी अपने पिता के पास चली गई और उनसे अपने पति के आचरण की शिकायत की। शुक्राचार्य ने ययाति को शक्तिकालिक वार्धक्य तथा अशक्तता से ग्रस्त कर दिया। ययाति ने अब बहुत अनुनय-विनय किया तो प्रसन्न होकर शुक्राचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बुढ़ापे को जिस किसी को दे सकता है यदि वह उसे स्वीकार करे। उसने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा, परन्तु सब ने छोटे पुरु को छोड़कर किसी ने भी बुढ़ापा लेना स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप ययाति ने अपना बुढ़ापा पुरु को देकर उसकी जवानी ले ली। इस प्रकार इस समृद्ध यौवन को पाकर ययाति फिर विषयवासनाओं तथा आमोद प्रमोद में व्यस्त रहने लगा। इस प्रकार का क्रम १००० वर्ष तक चला परन्तु ययाति की तृप्ति नहीं हुई। आखिरकार, बड़े प्रबन्ध के साथ ययाति ने इस विलासी जीवन को छोड़कर, पुरु की जवानी उसको वापिस कर दी और उसे राज्य का उत्तराधिकारी बना स्वयं परिव्राजीवन बिताने तथा परमात्मचिन्तन करने के लिए वन को प्रस्थान किया।

ययावरः=यायावर दे०।

ययिः, यी (पुं०) [या+ई, किन्, ह्रस्वोऽन्तादेशश्च] अश्वमेध या अन्य किसी यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा—शि० १५।६९ 2. घोड़ा।

यर्हि (अव्य०) [यद्+हिल्] 1. जब, जब कि, जब कभी 2. क्योंकि, अतः, चूंकि, (इसका उपयुक्त सहसंबन्धी 'तर्हि' या 'एतर्हि' है परन्तु अन्यत्र साहित्य में इसका विरल प्रयोग है)।

यवः [यु+अच्] 1. जौ यवाः प्रकीर्णाः न भवन्ति शालय. मृच्छ० ४।१७ 2. जौ के दाने या जौ के दानों का भार 3. लम्बाई की एक नाप एक अंगुल का १/६ या १/८ 4. हाथ की अंगुलियों में बना जौ के दाने का चिह्न जो धनधान्य, प्रजा, और सौभाग्य का सूचक है। समः—अङ्कुरः, प्ररोहः जौ का अंखुवा या पत्ती, आग्रयणम् जौ की खेती का पहला फल, क्षारः जवाखार, शोरा, सज्जी, शूकः,—शूकजः जौ की भूसी को जला कर उसकी राख से तैयार किया गया क्षारीय नमक, सज्जी,—सुरम् जौ की शराब, यवमद्य।

यवनः [यु+ल्युट्] 1. ग्रीस देश का निवासी, यूनान देश का वासी 2. विदेशी, जंगली मनु० १०।४४ (आजकल इस शब्द का प्रयोग मुसलमान और यूरोपियन के लिए भी किया जाता है) 3. गाजर।

यवनानी [यवनानां लिपिः यवन+आनुक्, ङीप् च] यवनों की लिपि का लिखावट।

यवनिका, यवनी [यु+ल्युट्+ङीप्+यवनी+कन्+टाप् ह्रस्वः] 1. यवनस्त्री, ग्रीस देश की स्त्री या मुसलमानी, यवनी नवनीतकोमलांगी—जग०, यवनीमुखरपटान। नेह प्रवेष्टव्यं त्वया ब० ४।६१. (नाटकों में ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व काल में यवन बालाएँ राजाओं की दासियों के रूप में नियुक्त की जाया करती थीं जिसलिए राजाओं के अन्तःपुर और बन्धुओं को संभालने के लिए, इन एवं अन्यानहस्याभियंक्तनीभिः परिवृत इव एवागच्छति प्रियतमस्यः—ज० ४, प्रविश्य शार्ङ्गरवेणा यवनी ब० ६, प्रविश्य चतुरिका यवनी—विक्रम० ५ आदि) 2. परदा।

यवसम् [यु+असच्] घास, चारा, चरागाहों का घास यवसेधनम् पंच० १, यावा० ३।२०, मनु० ७।७५।

यवागू (स्त्री०) [यूयते मिश्रयते यु+आगू] चावलों का गाढ़ा चावलों के मांड की कांजी, या जौ आदि किसी और अन्न की कांजी यवागूविलदवा—सुश्रु०, मक्षाय कलाते यवागूः पंचा०।

यवानिका, यवानी [छोटी यवा यवानी—यव+ङीप्, आनुक्, पक्षे कन्—टाप् ह्रस्वः] अजवायन।

यविष्ठ (वि०) [युवन्—इष्ठन्, यवादेशः] कनिष्ठ, सबसे छोटा, छः भाइयों में सबसे छोटा भाई, कनिष्ठ भ्राता।

यवीयस् (वि०) [युवन्+ईयसुन् यवादेशः] छोटा, बच्चा,—पुं० 1. छोटा भाई 2. शूद्र।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुती असुन् शांतौ यट् च] प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्ति, विश्रुति त्रिलोकेषु यशो लोके त्रैलोक्यविश्रुतिवाग्मिभिः भर्तृ० ७।३४, लक्षस्तु रक्ष्य परतो यशोधनैः—रघु० ३।४८, २।४०। समः —कर (वि०) (यशस्करः) कीर्ति देने वाला यशस्वी मनु० ८।३८७, काम (वि०) (यशस्कामः) 1. प्रसिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक 2. उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी, —कायम्, शरीरम् प्रसिद्धि के रूप में शरीर, कीर्तिदेह,—यशः शरीरे भव गे दयालुः— रघु० २।५७, रघु० ११५७, भर्तृ० २।३४,—दा (वि०) (यशोदः) कीर्तिकर (दः) पारा (दा) नन्द की पत्नी और कृष्ण की पालक माता का नाम, धन (वि०) (वि०) कीर्ति ही जिसका धन है, ख्याति में समृद्ध, अत्यंत विश्रुत—अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थात् यशोधनानां हि यशो गरीयः—रघु० १४।३५, २।१,—पताकः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यशरूपी ढोल,—**शेष** (वि०) जिसकी केवल ख्याति शेष हो, सिवाय कीर्ति के जिसका और कुछ न बचा हो,—अर्थात् मृतव्यक्ति, तु० कीर्तिशेष, (कः) मृत्यु।

यशस्य (वि०) [यशसे हितं—यत्] 1. सम्मान या कीर्ति की ओर ले जाने वाला—मनु० २।५२ 2. विष्णु, प्रसिद्ध, विख्यात।

यशस्विन् (वि०) [यशस्—विनि] प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत।

यष्टिः,—ष्टी (स्त्री०) [यज् + क्तिन्, नि० न संप्रसारणम्]। 1. लकड़ी, लाठी 2. भाला, गदका, गदा 3. खम्भा, सतून, स्तम्भ 4. अड़ा जैसा कि 'वाग्यष्टि' में 5. वस्त्र, महारा 6. झंडे का डंडा जैसा कि 'ध्वजयष्टि' में 7 डंडल, वृन्त 8. शाखा, टहनी 'कदम्बयष्टिः स्फुट-कोरकेव—उत्तर० ३।४१, इसी प्रकार 'चूतयष्टिः—कु० ३।२, सहकारयष्टिः आदि 9. डोरी, लड़ी, (जैसे मोतियों की) हार,—विमुच्य सा हारमहार्यनिश्चया विलोल-यष्टिः प्रकिलुप्तचन्दनम् कु० ५।८, रघु० १३।५६ 10. कोई लता 11. कोई भी पतली या सुकुमार वस्तु (शरीर अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों के पश्चात् समास के अन्त में प्रयोग)—तें वीक्ष्य वेणुमली सरसा-ङ्गयष्टिः कु० ५।८५, 'सीने से तर सुकुमार अंगों वाली'। सम० ग्रहः मदाधारी, लाठी रखने वाला —**निवासः** मोर आदि पक्षियों के बैठने का अड्डा · वृक्षशाखा नष्टोत्रिवासमधुत्रान् रघु० १६।१६ 2. खड़े हुए डंडों पर स्थित कबूतरों का घर या छतरी, -**प्राण** (वि०) 1. निर्बल, शक्तिहीन 2. प्राणहीन।

यष्टिकः [यष्टि - कन्] टिटिहरी पक्षी।

यष्टिका [यष्टिक - टाप्] 1. लाठी, डंडा, भाला, गदका 2. (एक लड़का) मोतियों का हार।

यष्टी दे० यष्टि।

यष्टृ (पुं०) [यज् + तृच्] पूजा करने वाला, यजमान।

यस् (भ्वा० दिवा० पर० यसति, यस्यति, यस्त) प्रयास करना, कोशिश करना, परिश्रम करना। प्रेर० (यासयति—ते कष्ट देना, **आ**—1. प्रयास करना, कोशिश करना, चेष्टा करना मुद्रा० ३।१४ 2. थका देना, थक जाना—नायस्यमि तापस्यन्ती -भट्टि० ६।६९, १५।५४, (प्रेर०) कष्ट देना, सताना, पीड़ा देना **प्र** -, प्रयास करना, कोशिश करना।

या (अदा० पर० याति, यात) 1 जाना, हिलना—डुलना, चलना, आगे बढ़ना,—ययौ नदीरामबलम्ब्य वाहनूलिम् · रघु० ३।२५, अध्वन्यया मध्यमलोकपालः · २।१६ 2. चढ़ाई करना, आक्रमण करना मनु० ७।१८३ 3. जाना, प्रयाण करना, कूच करना (कर्म० या संप्र० के साथ अथवा 'प्रति' के साथ) 4. गुजर जाना, वापिस होना, विदा होना 5. नष्ट होना, ओझल होना—यातस्तवापि च विवेकः -भामि० १।६८, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति मुच्छ० १।१३ 6. गुजर जाना, बीतना (समय का)—यौवनमनि-वर्ति यातं तु काव्यः १० 7. टिकना 8. होना, घटित होना 9. जाना, चटना, होना (प्रायः भाव-वाचक संज्ञा के कर्म० के साथ) 10 उत्तरदायित्व सम्भालना न स्वस्य सिद्धौ वास्थामि सर्वव्यापार-मात्मना कु० २।५४ 11. मैथुनसंबंध स्थापित करना 12 प्रार्थना करना, याचना करना 13. ढूंढना, खोजना ('गम्' की भांति 'या' के अर्थ भी संयुक्त संज्ञा शब्द के अनुसार जाना प्रकार से बदलते रहते हैं - **उदा०** **अग्रे या** आगे आगे चलना, नेतृत्व करना, मार्ग दिखाना, **अधो या** डूबना, **अस्तं या** छिपना, अस्त होना क्षीण होना, **उदयं या** उदय होना **नाशं या** नष्ट होना, **निद्रां या** सो जाना **पदं या** पद प्राप्त करना, **पारं या** पार जाना, स्वार्थी होना, पार कर जाना, **आगे** बढ़ जाना, **प्रकृतिं या** फिर स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करना, **लघुतां या** हलका होना, **वशं या** वश में होना, अधिकार में आना, **वाच्यतां या** वक्तव्य होना निन्दित होना, **विपर्यासं या** परिवर्तित होना, रूप बदलना, **शिरसा महीं या** भूमि पर सिर झुकाना आदि)। प्रेर० (यापयति—ते) 1. चलाना, आगे बढ़ाना 2. हटाना, दूर हांकना - रघु० ९।३१ 3. व्यय करना, (समय) बिताना—तावत्कौलिक विश्रान्त्यापाय विश्रमान्—भामि० १।७, मघ० ८९ ४. सहारा देना, पालनपोषण करना, इच्छा० (यियासति) जाने की इच्छा करना, जाने को होना; **अति** —, 1. पार जाना, अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना 2. आगे बढ़ना, **अधि**—, चले जाना, आगे बढ़ना, वध निकलना कृतोऽधियास्यामि कुरु निर्व-तस्तेन पतिभिः भट्टि० ८।९०, **अनु** -, 1. अनुसरण करना, पीछे जाना (आत्मे० में भी) अनुसास्यन्मुनि-तनयां - शं० १।२९, कु० ४। १, भट्टि० २।३७ २. नकल करना, बराबर करना - स किलानुययुस्तरं राजानो रक्षितुर्यशः—रघु० १।२३, ९।६, शि० १२।३ 3 साथ चलना, **अनुसम्**—, क्रमशः चलना, **अप** ,चले जाना, विदा होना, वापिस होना, **अभि** ,पहुँचना, जाना, नजदीक होना—अभियायौ ग हिमाचलमुच्छ्रितम्—कि० ५।१, रघु० ९।२७ 2. प्रयाण करना, आक्रमण करना—रघु० ५।३० 3. संलग्न करना, **आ** - , 1. आना, पहुँचना, निकट होना 2. पहुँचना, प्राप्त करना, भुगतना, किसी भी अवस्था में होना, क्षयं, तुलां, नाशम् आदि, **उप** , 1. पहुँचना, निकट जाना - कि० ६।१६ 2. (किसी विशेष अवस्था को) प्राप्त होना—मृत्युं, तनुताम्,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुजम् आदि, निस्- , 1. निकलना, बाहर जाना रघु० १२।८३ 2. गुजरना, (समय) बीतना, परि- , चारों ओर घूमना चक्कर काटना, प्रदक्षिणा करना, प्र , 1. चलना, जाना—तस्ताद्भुतं नगरदेवतवत्प्रयाति मृच्छ० १।२७ 2. प्रयाण करना, कूच करना, प्रति , वापिस जाना, लौटना रघु० १।७५, १५।१८, ८।९०, प्रत्युद्- , (आदर स्वरूप) उठकर मिलना, अभिवादन करना, सत्कार करना—तानर्घ्यार्घ्यादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरिः कु० ६।५०, मेघ० २२, रघु० १।४९, विनिस्—, बाहर जाना, निकल जाना, में से चले जाना प्राणास्तस्या विनिर्ययुः, —सम् , 1. चले जाना, विदा होना, मार्ग पार कर लेना वम० १५।८ 2. जाना, प्रविष्ट होना—तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही —भग० २।२२ 3. पहुँचना ।

यागः [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1. उपहार, यज्ञ, आहुति 2. कोई भी अनुष्ठान जिसमें आहुतियाँ दी जायं —रघु० ८।३० ।

याच् (भ्वा० आ० याचते–विरल प्रयोग–याचति याचित) मांगना, याचना करना, निवेदन करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना, अनुनय-विनय करना (द्विकर्म० के साथ)–बलिं याचते वसुधाम्—सिद्धा०, पितरं प्रणिपत्य पादयोरपरित्यागमयाचतात्मनः—रघु० ८।१२, भट्टि० १४।१०५ (उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई प्रज्ञान् परिवर्तन नहीं होता) ।

याचकः (स्त्री०–की) [याच्+ण्वुल्] भिक्षुक, भिखारी, आवेदक–तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः–सुभा० ।

याचनम्,–ना [याच्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. मांगना, याचना करना, निवेदन करना, 2. प्रार्थना, अनुरोध, आवेदन याचना माननाशाय, वध्यतामभययाचना-ञ्जलिः रघु० ११।७८ ।

याचनकः [याचन्+कन्] भिखारी, अभियोक्ता, आवेदक ।

याचिष्णु (वि०) [याच्+इष्णुच्] भीख मांगने पर उतारू याचनाशील, मांगने के स्वभाव वाला ।

याचित (भू० क० कृ०) [याच्+क्त] मांगा गया, निवेदन किया गया, याचना किया गया, अनुरोध किया गया, प्रार्थना की गई ।

याचितकम् [याचित+कन्] भिक्षा में प्राप्त वस्तु, उधार ली हुई कोई वस्तु ।

याच्ञा [याच्+नङ+टाप्] 1. मांगना, याचना करना 2. भिखारीपन 3. प्रार्थना, निवेदन, अनुरोध–याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा–मेघ० ६ ।

याजकः [यज्+णिच्+ण्वुल्] 1 यज्ञ कराने वाला, यज्ञ कराने वाला पुरोहित 2. राजकीय हाथी 3. मदोन्मत्त हाथी ।

याजनम् [यज्+णिच्+ल्युट्] यज्ञ का संचालन या अनुष्ठान कराने की क्रिया मनु० ३।६५, १।८८ ।

याज्ञसेनी [यज्ञसेन+अण्+ङीप्] द्रौपदी का पितृपरक नाम ।

याज्ञिक (वि०) (स्त्री०–की) [यज्ञाय हितं, यज्ञः प्रयोजनमस्य वा ठक्] यज्ञसंबंधी, कः यज्ञ कराने वाला, या यज्ञ करने वाला, या यज्ञ कराने वाला पुरोहित ।

याज्य (वि०) [यज्+ण्यत्] 1. त्याग करने के योग्य 2. यज्ञ संबंधी 3. जिसके लिये यज्ञ किया जाय 4. शास्त्र द्वारा जो यज्ञ करने का अधिकारी माना है,–ज्यः यज्ञकर्ता, यज्ञसंस्थापकः,–ज्यम् उपहार या दक्षिणा जो यज्ञ कराने के उपलक्ष्य में प्राप्त हो ।

यात (भू० क० कृ०) [या+क्त] 1. गया हुआ, प्रयात, चला हुआ 2. गुजरा हुआ, विसर्जित, दूर गया हुआ (दे० 'या'),–तम् 1. चाल, गति 2. प्रयाण 3. भूतकाल । सम० यामन् (वि०) 1. बासी, इस्तेमाल किया हुआ, विकृत, परित्यक्त, जो निरर्थक हो गया है अर्थात्यामं वयः दश० 2. कच्चा, अधपका (भोजन आदि)–यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्–भग० १७।१० 3. जीर्ण, थका हुआ, घिसा हुआ ।

यातनम् [यत्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रतिकार, बदला, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा जैसा कि 'वैरयातन' में 2. प्रतिहिंसा, वैरशोधन, ना 1. प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति, बदला 2. संताप संपीड़न, वेदना 3. यम के द्वारा पापियों को दी गई यातना, नरक की यन्त्रणा (ब० व०) ।

यातुः [या+तुन्] 1 यात्री, बटोही 2. हवा 3. समय, पुं०, नपुं० भूतप्रेत, पिशाच, राक्षस । सम० –धान भूतप्रेत, पिशाच, –भट्टि० २।२१, रघु० १२।४५ ।

यातृ (स्त्री०) [यत्+ऋन्, वृद्धिश्च] जिठानी या देवरानी ।

यात्रा [या+ष्ट्रन्+टाप्] 1. जाना, गति, सफर, महायी० ६।१, रघु० १८।१६ 2. सेना का प्रयाण, चढ़ाई, आक्रमण–मार्गशीर्षे शुभे मासि ययायात्रां महीपतिः —मनु० ७।१८१, पंच० ३।२७, रघु० १७।५६ 3. तीर्थाटन यथा तीर्थयात्रा 4. तीर्थ यात्रियों का समूह 5. उत्सव, पर्व, किसी उत्सव या संस्कार का अवसर—कालप्रियानाथस्य यात्राप्रसङ्गेन—मा० १, उत्तर० 6. जुलूस, उत्सवयात्रा, प्रवृत्ता खलु यात्राभिर्मुखं शालती—मा० ६, ६।२ 7. सड़क 8. जीवन का सहारा, जीविका, निर्वाह, यात्रामात्र प्रसिद्ध्यर्थं—मनु० ४।३, शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः —भग० ३।८ 9. (समय का) बीतना 10. संव्यवहार —यात्रा चैव हि लौकिकी—मनु० ११।१८४, लौकिकयात्रा वेत्ति १, मनु० ९।२७ 11. रीति, उपाय,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरकीब 12. प्रथा, प्रचलन, दस्तूर, रीति एवोदिता लोकयात्रा नित्यं स्त्रीपुंसयोः परा - मनु० ९।२५, (लोकचारः—कुल्लू०) 13. वाहन, सवारी।

यात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [यात्रा+ठक्] 1. यात्रा करता हुआ 2. किसी यात्रा या आन्दोलन से सम्बद्ध 3. जीवन-धारण की आवश्यक सामग्री 4. प्रचलित, प्रथानुकूल, रूढ़ः यात्री, कम् 1. प्रयाण, अभियान या चढ़ाई 2. खाद्य सामग्री, (यात्रा के लिए) रसद, सम्भरण।

यात्यातथ्यम् [यथातथ+ष्यञ्] 1. वास्तविकता, सचाई 2. न्याय्यता, औचित्य।

यात्यार्थ्यम् [यथार्थ+ष्यञ्] 1. वास्तविक या सही प्रकृति, सचाई, सच्चा चरित्र न सन्ति यात्यार्थ्यविदः पिनाकिनः—कु० ५।७७, रघु० १०।२४ 2. न्याय्यता, उपयुक्तता 3. उद्देश्य की पूर्ति या निष्पन्नता।

यादवः [यदोरपत्यम् - अण्, यदु की संतान, यदुवंशी।

यादस् (नपुं०) [यान्ति वेगेन -या+असुन्, दुगागमः] कोई भी विशालकाय जलजन्तु, समुद्री दानव—यादांसि जलजन्तवः—अमर०, वरुणो यादसामहम्—भग०, १०।२९, कि० ५।२९, रघु० १।१६। सम०—पतिः, —नाथः (यादसां पतिः, यादसां नाथः भी) 1. समुद्र, 2. वरुण का नाम—रघु० १७।२१।

यादृक् (वि०) (स्त्री०—शी), **यादृश्, यादृश** (वि०) (स्त्री० शी) [यद्+दृश्+क्विन्, कञ् वा, आत्वम्] जिस प्रकार का, जिसके समान, जिस प्रकृति का, जैसा।

यादृच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) [यदृच्छा+ठक्] 1. ऐच्छिक, स्वतः स्फूर्त, स्वतंत्र 2. आकस्मिक, अप्रत्याशित।

यानम् [या भावे ल्युट्] 1. जाना, हिलना-जुलना, चलना डुलना, सवारी करना जैसा कि गजयानम्, उष्ट्र° आदि 2. जलयात्रा, यात्रा - समुद्रयानकुशलाः —मनु० ८।१५७, याज्ञ० १।१४ 3. अभियान करना, आक्रमण करना (राजनीति के छः गुणों में से एक) —अहितान् प्रत्यभीतस्य रणे यानम्—अमर०, मनु० ७।१६० 4. जलयुग, परिजन 5. सवारी, वाहन, गाड़ी, रथ्यानं संस्मार कौबेरम्—रघु० १५।४५, १३।६९, कु० ६।७६, मनु० ४।१२०। सम०—पत्रम् जहाज, नौका, भङ्गः जहाज का टूट जाना,—मुखम् गाड़ी का अगला भाग, गाड़ी का वह भाग जहाँ जूआ बांधा जाता है।

यापनम्,—ना [या+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, स्त्रियां टाप् च] 1. जाने देना, हांक कर बाहर निकालना, निष्कासन, हटाना 2. (किसी रोग की) चिकित्सा या प्रशमन 3. समय बिताना जैसा कि 'कालयापन' में 4. विलम्ब, दीर्घसूत्रता 5. सहारा, निर्वाह 6. प्रचलन, अभ्यास।

याप्य (वि०) [या+णिच्+ण्यत्, पुकागमः] 1. हटाये जाने के योग्य, निकाले जाने के योग्य अथवा अस्वीकार किये जाने के योग्य 2. नीच, तिरस्करणीय, मामूली, अनावश्यक। सम०—यानम् शिविका या पालकी, डोली।

यामः [यम्+घञ्] 1. निरोध, धैर्य, नियन्त्रण 2. पहर, दिन का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय—पश्चिमाद्यामिनीयामात्प्रसादमिव चेतसः—रघु० १७।१, इसी प्रकार यामवती, त्रियामा आदि। सम०—घोषः 1. मुर्गा 2. घण्टा या घड़ियाल जिससे रात के पहरों की उद्घोषणा होती है - मन्द्रध्वनिर्न्यायजितयामघोषः—रघु० ६।५६, यमः प्रत्येक घण्टे के लिए नियुक्त कार्य, —वृत्तिः (स्त्री०) पहरा देना, चौकीदारी करना।

यामलम् [यमल+अण्] जोड़ी, मिथुन।

यामवती [याम+मतुप्, वत्वम्, ङीप्] रात - कि० ८।५६,

यामिः,—मी (स्त्री०) [यामि कुलात् कुलान्तरम्—या+मि, ङीप् च] 1. बहन (दे० जामि)—शि० १५।५२ 2. रात।

यामिकः [यामे नियुक्तः याम+ठक्] पहरेदार, रात को पहरे पर नियुक्त, चौकीदार—नै० ५।११०।

यामिका, यामिनी [यामिक+टाप्, याम+इनि+ङीप्] रात—मविता विधवति वियुरपि सवितरति दिनन्ति यामिन्यः, यामिनयन्ति दिनानि च सुखदुःखवशीकृते मनसि - काव्य० १०। सम०—पतिः 1. चन्द्रमा 2. कपूर।

यामुन (वि०) (स्त्री० नी) [यमुना+अण्] यमुना से संबद्ध, या निकला हुआ, पः यमुना से उत्पन्न, नम् एक प्रकार का अंजन, सुर्मा।

यामुनेष्टलम् [यमुना+इष्टलच्] सीसा, रांग।

याम्य (वि०) [यम+ष्यञ्] 1. दक्षिणी—द्वारं रराक्षुर्यामीयम्—भट्टि० १४।१५ 2. यम से संबंध रखने वाला या यम से मिलता जुलता। सम०—अयनम् दक्षिणायन, मकरसंक्रांति, उत्तर (वि०) दक्षिण से उत्तर को जाने वाला।

याम्या [याम्य+टाप्] 1. दक्षिणदिशा 2. रात्रि।

यायजूकः [यज्+यङ्+ऊक] बार २ यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला, जो लगातार यज्ञ करता रहता है, हव्यशीलं तं यायजूकः सह भिक्षुमुख्यैः—भट्टि० २।२०।

यायावर (वि०) [पुनः पुनः याति देशान्तरं गच्छति या+यङ्+वरच्] परिव्रज्याशील साधु, संत,—यायावराः पुण्यफलेन चान्ये प्रावर्तयंस्तां जगदर्चनीयम्- भट्टि० २।२०, महाभागस्तस्मिन्नयमजनि यायावरकुले

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—त्रालरा० १।१३ (यहाँ 'यायावर' एक कुल का नाम है)।

यावः,—यावकः,—कम् [यु+अच्+अण् याव | कन्] 1. जौ से तैयार किया हुआ आहार 2. लाल, लाल रंग, महावर—लक्षणं स्म परिरक्ततयात्मा यावकेन विषतापि यवेव्यः शि० १०।९, १५।१३, कि० ५।४०।

यावत् (वि०) (स्त्री०—त्री) [यद्+वतुप्, आत्वम्] ('त्रावत्' का महत्त्वबोधक) 1. जितना, कितने ('जितने' के लिए यावत् तथा 'उतने' के लिए तावत् का प्रयोग होता है) पूरे यावत्तमेवार्थ्य ननीति रविरात्मनम् । दीधकाकमलान्मेयो यावन्माक्षेण साध्यते—कु० २।३३, तं तु यावन्त एवाजौ तावन्तोऽप ददृशे सचैः—रघु० १२। ४५, १७।१७ 2. जितना बड़ा, जितना विस्तृत, कितना बड़ा या कितना विस्तृत यावानयं उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके, तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः भग० २।४६, १८।५५ 3. सब, समस्त (यहाँ दोनों मिल कर सर्वदृष्टि या सार्वत्व का अर्थ प्रकट करते हैं) —यावद्गतं यावदूक्तम् गण० अष्ट०, 'यावत्' अकेला प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जहाँ तक, तक, पर्यन्त, अब तक कि, (कर्म० के साथ)—स्तन्यस्यागे यावत् पुत्रस्यारोक्षरव उत्तर० ७, कियन्तमध्वि यावदसमञ्चरितं चित्रकारेणालिखितम् उत्तर० १, सर्पकोटरं यावत् पंच० १ (ख) तभी, ठीक उसी समय, इसी बीच में (तुरन्त किये जाने वाले कार्य को दर्शाने वाला)।—सद्यावत् गृहिणीमाहूय संगीतकमनुतिष्ठामि श० १, यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि श० ३ 2. यदि यावत् और तावत् मिलकर प्रयुक्त हों तो निम्नांकित अर्थ प्रकट होता है (क) इतनी देर कि, इतने समय तक कि, —यावद्वित्तोपार्जनशक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः—मोह० ८ (ख) ज्योंही, अभी-अभी, इसी समय एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छामि''' तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे हि० १।२०४, मेघ० १०५, कु० ३।७२ (ग) जबकि, उसी समय तक आश्रमवासिनो यावदवेक्षेऽहमुपावर्ते तावदार्यपृच्छाः क्रियन्तो वाजिनः —श० १, प्रायः 'न' के साथ भी प्रयोग जब कि 'यावत्' का अर्थ होता है 'इससे पूर्व कि' यावदेते सरसः नोत्पतन्ति तावदेतैस्तैः प्रवृत्तिरवगमयितव्या —विक्रम० ४ (घ) जब, जिस समय यावदुत्थाय निरीक्षते तावद् हंसोऽवलोकितः हि० ३। समः **अन्तम्**,—**अन्तात्** (अव्य०) अन्त तक, आखीर तक,—**अर्थे** (वि०) आवश्यकता के अनुसार, उतने जितने कि अर्थ प्रकट करने के लिए आवश्यक है (शब्द)—यावदर्थपदो वाक्यमादाय साधवः विरराम —शि० २।१२, (अव्य० **अर्थम्**) 1. उतना जितना उपयोगी हो 2. सभी अर्थों में—वयमपि च गिरामीश्महे यावदर्थम्—भर्तृ० ३।३० (पाठान्तर),—**इष्टम्**, —**ईप्सितम्** (अव्य०) यथेच्छ, इच्छा के अनुकूल, —**इत्थम्** (अव्य०) आवश्यकता के अनुसार, जितना आवश्यक हो,—**जन्म**,—**जीवम्**,—**जीवन** (अव्य०) जीवन भर, जीवनपर्यंत, आजीवन,—**बलम्** (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना अधिक से अधिक बल हो,—**भाषित उक्त** (वि०) उतना जितना कहा जा चुका है, मात्र (वि०) 1. इतना बड़ा, इतना विस्तृत, जहाँ तक व्याप्त हो—कु० २।३३ 2. नगण्य, तुच्छ, मामूली,—**शक्तिम्**,—**शक्ति** (अव्य०) जहाँ तक संभव हो, अपनी शक्ति के अनुसार—इसी प्रकार 'यावत्संहृत्य'।

यावन (वि०) (स्त्री०—नी) [यवन+अण्, यु+णिच् —ल्युट् वा] यवनों से संबंध रखने वाला, न वर्बरावनी भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि—सुभा०,—**नः** लोबान।

यावसः [यवस+अण्] 1. घास का ढेर 2. चारा, खाद्य-सामग्री।

याष्टीक (वि०) (स्त्री०—**की**) [यष्टिः प्रहरणमस्य ठक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—**कः** लाठी से सुसज्जित योद्धा।

यास्कः [यस्कस्यापत्यम् यस्क+अण्] निरुक्तकार का नाम।

यु I (अदा० पर० यौति, युत; प्रेर० यावयति, इच्छा० यियविषति या यूयूषति) 1. सम्मिलित होना, मिलना 2. मिलाना, गड्डमड्ड करना।

II (जुहो० पर० युयोति) अलग-अलग करना।

III (क्रया० उभ० नुनाति, नुनीते) बाँधना, जकड़ना, सम्मिलित होना, मिलना।

प्र, थामना, अनुष्ठान करना, **व्याप्ति**, मिश्रण करना अन्योन्यं स्म व्यतियुतः शब्दाऽशब्दैस्तु भीषणान्—भट्टि० ८।६।

युक्त (भू० क० कृ०) [युज्+क्त] 1. सम्मिलित, मिला हुआ 2. जकड़ा हुआ, जुए में जोता हुआ, साज-सामान से संनद्ध 3. युक्त किया हुआ, सुव्यवस्थित 4. संहित 5. सुसज्जित, युक्त, भरा हुआ, सहित (समास में या करण० के साथ) 6. स्थिर, तुला हुआ, लीन, व्यस्त (अधि० के साथ) 7. कर्मपरायण, परिश्रमी 8. कुशल अनुभवी, चतुर 9. योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त (सर्व० या अधि० के साथ) 10. आदिकालीन, मौलिक (शब्द), —**क्तः** महात्मा जो परब्रह्म परमात्मा से सायुज्य प्राप्त कर चुका है,—**क्तम्** जोड़ी, जुआ या युग्म। समः—**अर्थ** (वि०) समझदार, विवेकी, सार्थक, **कर्मन्** (वि०) जिसे किसी कर्तव्य कर्म पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लगाया गया है,—दण्ड (वि०) न्यायोचित दंड देने वाला—रघु० ४।८, -मनस् (वि०) सावधान,-रूप (वि०) योग्य, उचित, लायक, उपयुक्त (संब० या अधि० के साथ) —जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव श० १।७, अनुकारिणि पूर्वेषां युक्तरूपमिदं त्वयि २।१६।

युक्तिः (स्त्री०) [युज्+क्तिन्] 1. मिलाप, संगम, सम्मिश्रण 2. प्रयोग, इस्तेमाल, काम में लाना 3. जुए में जोतना 4. व्यवहार, प्रचलन 5. उपाय, तरकीब, योजना, जुगुत 6. कपटयोजना, कूटयुक्ति, दाव-पेंच 7. औचित्य, योग्यता, सामंजस्य, संगति, उपयुक्तता 8. कौशल, कला 9. तर्कना, युक्ति, दलील 10. अनुमान, निगमन 11. हेतु, कारण 12. क्रमबद्धता, रचना -यत्र लक्ष्म्यिं वाचोयुक्तिः 'मा० १ 13. (विधि में) संभावना, परिस्थिति की गणना या विशेषता (समय, स्थान आदि की दृष्टि से)—युक्तिप्राप्तिक्रियाचिह्नसंबंधाभोगहेतुभिः याज्ञ० २।९२, २।२ 14. (नाटकों में) घटनाओं की नियमित शृंखला, तु० सा० द० ३४३ 15. (अलं० में) किसी के प्रयोजन या अभिकल्प की प्रच्छन्न अथवा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 16. कुल राशि, योग 17. धातु में खोट मिलाना। सम० कथनम् हेतुओं का वर्णन, -कर (वि०) 1. उपयुक्त, योग्य 2. सिद्ध, ज्ञ (वि०) तरकीब या उपायों में कुशल, आविष्कार कुशल, युक्त (वि०) 1. उपयुक्त, योग्य 2. विशेषज्ञ, कुशल 3. स्थापित, सिद्ध 4. तर्कयुक्त।

युगम् [युज्+घञ् कुत्वम्, गुणाभावः] 1. जुआ (पुं० भी इस अर्थ में) —युगव्यायत बाहु रघु० ३।३४, १०।६७, शि० ३।६८ 2. जोड़ा, दम्पती, युगल —कुजयोर्युगेन तरसा कलिता शि० ९।७२, स्तनयुग -शि० १।१९ 3. श्लोकार्ध जिसमें दो चरण होते हैं, युग्म 4. सृष्टि का युग (युग चार हैं: कृत या सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि—प्रत्येक की अवधि क्रमशः १७२८०००, १२९६०००, ८६४००० और ४३२००० वर्ष है, चारों को मिलाकर ४३२०००० वर्ष का एक महायुग होता है) ऐसा माना जाता है कि युगों की उत्तरोत्तर घटती हुई अवधि के अनुसार शारीरिक और नैतिक शक्ति भी मनुष्यों में बराबर गिरती गई है; संभवतः इसीलिए कृतयुग को स्वर्णयुग और कलियुग को लौहयुग कहते हैं)- धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे -भग० ४।८, युगशतपरिवर्तनि—शा० ७।३४ 5. पीढ़ी, जीवन,—आ सप्तमाद्युगात् - मनु० १०।६४, आत्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पञ्चमे सप्तमेऽपि वा याज्ञ० १।९६ (युगे=अन्यत्र मिता०) 6. 'चार' की संख्या की अभिव्यक्ति, 'बारह' की संख्या के लिए विरलप्रयोग। सम० अन्तः 1. जुए का किनारा 2. युग का अन्त, सृष्टि का अन्त या विनाश युगान्तकालप्रलिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत शि० १।२३, रघु० १३।६ 3. मध्याह्न, दोपहर, अवधिः सृष्टि का अन्त या विनाश शि० १७।४०, कीलकः जुए की कीली -पादवंग (वि०) जुए के पास जाने वाला, जुए में जुतने वाला बैल, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला—कु० २।१८।

युगन्धरः—रम् [युग+धृ+खच्, मुम्] गाड़ी की जोड़ी जिसके साथ जुआ कस दिया जाता है।

युगपद् (अव्य०) [युज्+पद्+क्विप्] एक ही समय, सब एक साथ, सब मिलकर उसी समय कु० ३।१ प्रायः समास में श० ४।२।

युगलम् [युज्+कलच्, कुत्वम्] जोड़ा दम्पती - बाहुर्हस्त° चरण° आदि।

युगलकम् [युगल+कन्] 1. जोड़ी, 2. श्लोकार्ध, जो दो मिलकर पूरा श्लोक या वाक्य बनाएं, दे० युग्म।

युग्म (वि०) [युज्+मक्, कुत्वम्] सम०—युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु, तस्मादयुग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्तवे स्त्रियम्—मनु० ३।४८, याज्ञ० १।७९ 1. जोड़ी, दम्पती, दे० अयुग्म 2. संगम, मिलाप 3. (नदियों का) संगम 4. जुड़वां 5. श्लोकार्ध- जिन दो से मिलकर पूरा एक वाक्य बने - द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तम् 6. मिथुन राशि।

युग्य (वि०) [युगाय हितः-यत्] 1. जोतने के योग्य 2. जुता हुआ, साज सामग्री से संनद्ध 3. खींचा गया जैसा कि 'अश्वयुग्यो रथः' में,—ग्यः जुता हुआ या खींचने वाला जानवर, विशेषतः रथ का घोड़ा—हरियुग्य रथं तस्मै—प्रजिघाय पुरन्दरः—रघु० १२।८४।

युज् I (रुधा० उभ० युनक्ति, युङ्क्ते, युक्त) 1. संमिलित होना, मिलना, अनुरक्त होना, संबद्ध होना, जुड़ना —तमर्थमिव भारत्या सुनया योक्तुमर्हसि—कु० ६।७९, दे० कर्मवा० नीचे 2. जोतना, जीन कसकर संनद्ध करना, लगाना—भानुः सकुम्भुक्ततुरङ्ग एव रघु० ५।४, भग० १।१४ 3. सुसज्जित करना, से युक्त करना जैसा कि गुणयुक्त में 4. प्रयुक्त करना, काम में लगाना, इस्तेमाल करना—प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते—भग० १७।२६, मनु० ७।२०४ 5. नियुक्त करना, स्थापित करना (अधि० के साथ) 6. निर्देशित करना, (मन आदि का) स्थिर करना, जमाना 7. अपना ध्यान संकेन्द्रित करना —मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः —भग० ६।१४, युञ्जन्नेवं सदात्मानं—१५ 8. रखना, स्थिर करना, जमाना (अधि० के साथ)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

9. तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सज्जित करना, युक्त करना 10. देना, प्रदान करना, सादर समर्पित करना—आप्रिय युयुजे, कर्मवा० (युज्यते) 1. सम्मिलित होने के योग्य—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी -कु० ४।४४, रघु० ८।१७ 2. प्राप्त करना, स्वामी होना—इष्टेन युज्यस्व—श० ५, महावी० ७, रघु० २।६५ 3. योग्य या सही होना, समुचित होना, उपयुक्त होना (अधि० या संबंध के साथ) या पक्ष्य युज्यते भूमिका तां खलु भावेन तर्थव सर्वे वर्ण्याः पाठिता मा० १, त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते—हि० १ 4. तैयार होना—ततो युद्धाय युज्यस्व भग० २।३८, '१० 5. तुल जाना, लीन होना, निर्देशित होना —मनु० ३।७५, १४।३५, कि० ७।१३। प्रेर० (योजयति—ते) 1. सम्मिलित होना, मिलना एकत्र करना —रघु० ७।१४ 2. उपहार देना, समर्पण करना, प्रदान करना—रघु० १०।५६ 3. नियुक्त करना, काम पर लगाना, इस्तेमाल करना —शत्रुभिर्योजयेच्छत्रुम्-पंच० ४।१७ 4. भड़ना, किसी ओर निर्देशित करना—पाणाग्निवारयति योजयते हिताय-भर्तृ० २।७२ 5. उत्तेजित करना, प्रेरित करना, भड़काना 6. सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 7. तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सुसज्जित करना 8. इच्छा० (युयुक्षति-ते) सम्मिलित होने की इच्छा करना, जोतने की इच्छा करना, देने की कामना करना, अनु-,(आ०) 1. पूछना प्रश्न करना -अन्वयुंक्त गुरुमीश्वरः क्षितेः रघु० ११।६२, ५।१८, शि० १०।६८ 2. परीक्षण करना, जांच करना मनु० ७।७९, अभि ,(आ०) चेष्टा करना, काम में पिल जाना 2. आक्रमण करना, धावा करना भवन्तमभियोक्तुमुद्युक्ते--दश० 3. दोषारोपण करना, दोषी ठहराना मनु० ८।१८३ 4. अधिकार जताना, मांग प्रस्तुत करना (जैसे कि किसी कानूनी अभियोग में) —विभावितकवेषेन देव यदभियुज्यते-विक्रम० ४।१७, याज्ञ० २।९, 5. कहना, बोलना उद्-,

उत्तेजित करना, सक्रियता उद्दीप्त करना 2. कोशिश करना, प्रयास करना भवन्तमभियोक्तुमुद्युक्ते—दश० 3. तैयार करना, उप- ,(आ०) 1. इस्तेमाल करना, काम में लगाना—पाङ्गुण्यमुपयुञ्जीत—शि० २।९३, पणबन्धमुखान्युपानजः पदुपायुक्त समीक्ष्य तत्फलम् रघु० ८।२१, मालवि० ५।१२ 2. चखना, स्वाद लेना अनुभव करना (आलं० से भी) रघु० १८।४६, भट्टि० ८।३९ 4. उपभोग करना, खाना—मनु० ८।४०, नि (आ०) 1. नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना, आदेश देना (अधि० के साथ) - यन्मां विषयविषये स भवान्नियुङ्क्ते—मा० १।९, असाधुदर्शी तत्र भवान् काश्यपः य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते श० १, कु० ३।१३, रघु० ५।२९ 2. सम्मिलित होना, मिलना 3. नियत करना आदिष्ट करना। (प्रेर०) 1. सम्मिलित करना, मिलाना, से युक्त करना, प्रदान करना—कु० ४।४२ 2. जोतना, संनद्ध करना, 3. उकसाना, प्रेरित करना—मग० ३।१, प्र-,(आ०) 1. इस्तेमाल करना, काम में लाना —अयमपि च गिरं नस्त्वत्प्रबोधप्रयुक्ताम्—रघु० ५।७५, सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते—भग० १७।२६ 2. नियत करना, काम में लगाना, निर्देशित करना, आदेश देना—मा मां प्रयुङ्क्ष्वाः कुलकीर्तिलोपे--भग० ३।५४, प्रायुङ्क्त राज्ये वत दुष्करे त्वाम्-३।५१, कु० ७।८५ 3. देना, प्रदान करना, अभिदान करना -- अधिपं प्रयुयुजे न वाहिनीम्—रघु० ११।६, २।७०, ५।२५, १५।८ 4. हिलना-डुलना, गतिदेना—मरुत्प्रयुक्ताः (बाललताः) —रघु० २।१० 5. उत्तेजित करना, प्रेरित करना, प्रेरणा देना, हांकना—कु० १।२१, भग० ३।३६ 6. संपन्न करना, करना—रघु० ७।८६, १७।१२ 7. रंगमंच पर प्रतिनिधित्व करना, अभिनय करना, नाट्य करना उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते -- उत्तर० १।२, परिषदि प्रयोक्ष्यामि मम कु० १. 8. इस्तेमाल करने के लिए उधार देना, (धन आदि) ब्याज पर देना मनु० ८।१४६, वि -,(आ०) 1. छोड़ना, परित्याग करना-कि० २।४९, रघु० १३।६३ 2. अलग-अलग करना-- पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती कु० ५।२६ 3. ढीला करना, शिथिल करना, विनि -, 1. इस्तेमाल करना, व्यय करना 2. नियुक्त करना, काम में लगाना 3. बांटना, अनुभाजन करना, वितरण करना - प्रत्येकं विनियुक्तात्मा कथं न शास्यसि प्रभो—कु० २।३१ 4. वियुक्त करना, अलग करना, सम् -,सम्मिलित होना (कर्मवा० में)—संयोक्ष्यसे स्वैन वपुर्महिम्ना - रघु० ५।२५, (प्रेर०) मिलाना, सम्मिलित करना।

i)(म्वा० चुरा० पर० योजति, योजयति) जोड़ना, मिलाना, जोतना दे० ऊपर 'युज्'।

iii)(दिवा० आ० युज्यते) मन को संकेन्द्रित करना ('युज्' के कर्मवा० रूप के समरूप)।

युज् (वि०) [युज्+क्विन्] (समास के अन्त में) 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ, जुता हुआ, खींचा जाता हुआ 2. सम, अविषम, पुं० 1. लम्लेलक, जो जोड़ देता है, मिला देता है 2. ऋषि मुनि, जो अपने आपको भाव-समाधि में संलग्न रखता है 3. जोड़ा, दंपती (इस अर्थ में नपुं० भी)।

युञ्जान: [युज्+शानच्] 1. हांकने वाला, रथवान् 2. वह ब्राह्मण जो परमात्मा से सायुज्य प्राप्त करने के लिए योगाभ्यास में व्यस्त है।

युत [भू० क० कृ०] [यु+क्त] 1. जुड़ा हुआ, सम्मिलित,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिला हुआ 2. से युक्त या सहित – जैसा कि 'गुणगण-युतो वरः' में ।

युतकम् [युत+कन्] 1. जोड़ी 2. मिलाप, मित्रता, मैत्री 3. विवाहोपहार 4. स्त्रियों की एक प्रकार की वेश-भूषा 5. स्त्रियों के वस्त्र की किनारी या झालर ।

युतिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्] 1. मिलाप, संगम 2. सुसज्जित होना, 3. स्वामित्व प्राप्त करना 4. जोड़, योग 5. (ज्योति० में) संयुक्ति, दो ग्रहों का स्पष्ट योग ।

युद्ध [युध्+क्त] 1. संग्राम, समर, लड़ाई, भिड़न्त, मुठभेड़, संघर्ष, द्वन्द्व जैसे केय वार्ता युद्ध मुद्धभिति ...उत्तर० ६ 2. (ज्योति० में) ग्रहों का संघर्ष या विरोध । **सम०—अवसानम्** युद्ध की समाप्ति, सुलह, —**आचार्यः** सैन्यशिक्षा का गुरु, —**उन्मत्त** (वि०) युद्ध के लिए पागल, रणोन्मत्त,—**कारिन्** (वि०) लड़ने वाला, संघर्षशील,—**भू:, भूमिः** (स्त्री०) रणक्षेत्र, —**मार्गः** सैनिक कूटचाल या छलबल, युद्धाभिनय, तिकडमबाजी,—**रङ्गः** रणक्षेत्र, लड़ाई का अखाड़ा,—**वीरः** 1. योद्धा, शूरवीर, मल्ल 2. (अलं० में) सैन्यविक्रम से उत्पन्न वीरता का मनोभाव, वीर-रस दे० सा० द० २३४, 'युद्धवीर' के नीचे ...रस०, —**सारः** घोड़ा ।

युध् (दिवा० आ० युध्यते, युद्ध) लड़ना, संघर्ष करना, विवाद करना, युद्ध करना—भग० १।२३, भट्टि० ५।१०१, प्रेर० (योधयति-ते) 1. लड़वाना 2. युद्ध में सामना करना या विरोध करना—रघु० १२।५० ...इच्छा० (युयुत्सते) लड़ने की इच्छा करना, **नि-**, मल्लयुद्ध करना, विरोध करना, **प्रति-**, युद्ध में सामना करना, विरोध करना ।

युध् (स्त्री०) [युध्+क्विप्] संग्राम, जंग, लड़ाई, मुठभेड़ —**निघातयिष्यन् यधि यातुधानान्**—भट्टि० २।२१, **सदसि वाक् पटुता युधि विक्रमः** भर्तृ० २।६३ ।

युधानः [युध्+आनच्, स च कित्] योद्धा, क्षत्रिय जाति का पुरुष ।

युप् (दिवा० पर० यूप्यति) 1. मिटा देना, विलुप्त करना 2. कष्ट देना ।

युयुः [या+यङ्+डु] घोड़ा ।

युयुत्सा [युध्+सन्+अङ्+टाप्] लड़ने की इच्छा, विरोधी इरादा ।

युयुत्सु (वि०) [युध्+सन्+उ] लड़ने की इच्छा वाला

युवतिः,—**ती** (स्त्री०) [युवन्+ति, ङीप् वा] तरुणी स्त्री, तरुणी मादा (चाहे मनुष्य की हो या किसी पशु की हो) **सुरयुवतिसभव किल सुतेरपत्यम्**—शि० २।८, इसी प्रकार 'इभयुवतिः' ।

युवन् (वि०) (स्त्री० **युवतिः, ती, यूनी**—म० ब्र० —**यवीयस्** या **कनीयस्**, उ० अ०—**यविष्ठ** या **कनिष्ठ**) [यौतीति युवा, यु+कनिन्] 1. तरुण, जवान, वयस्क, परिपक्वावस्था को प्राप्त 2. हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ 3. श्रेष्ठ, उत्तम । पुं० (कर्तृ० **युवा, युवानौ, युवानः**, कर्म० ब० व० **यूनः**, करण० ब० व० **युवभिः** आदि) 1. जवान आदमी, तरुण,—सा मुनिव स्मितप्रभिन्नाधरबन्धं शशांक शालीनतया न वक्तुम्—रघु० ६।८१ 2. छोटी सन्तान (बड़ी सन्तान जीवित रहते हुए) —**जीवति तु वंश्ये युवा**—पा० ४।१।११३ (दे० इस पर सिद्धा०) । **सम०—खलति** (वि०) (स्त्री०-**तिः,-ती**) जवानी में ही गंजा, —**जरत्** (स्त्री०-**ती**) जवानी में ही बूढ़ा दिखाई देने वाला, समय से पूर्व बूढ़ा हो जाने वाला, —**राज** (पुं०) राजा प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी, राज्याधिकारी राजकुमार, राजा का उत्तराधिकारी पुत्र,- (असौ) नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्—रघु० ३।३५ ।

युष्मद् [युष्+मदिक्] मध्यमपुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक रूप (कर्तृ० **त्वम्, युवाम्, यूयम्**) **तू, तुम** (कई समासों के आरंभ में प्रयुक्त) ।

युष्मादृश्, श (वि०) [युष्मद्+दृश्+क्विन्, आत्वम्] तुम्हारी तरह ।

यूकः,—का [यु+कन्, दीर्घः, स्त्रियां टाप्] जूं, मनु० ११४५ ।

यूतिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्, ति० दीर्घः] मिश्रण, मिलाप, संगम, संबंध, करोमि वो बर्हियूतीन् पिधध्वं पाणिमिर्दृशः —भट्टि० ७।६६ ।

यूथम् [यु+थक्, पृषो० दीर्घः] रेवड़, लहंडा, भीड़, टोली झुण्ड (जैसे वन्य पशुओं का)—स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं दशा—विक्रम० ४।२५, श० ५।५ । **सम०—नाथः...पः, पतिः** 1. किसी टोली या दल का नेता 2. किसी रेवड़ या भीड़ (प्रायः हाथियों की) का मुखिया, विशालकाय हाथी —**गजयूथप यूथिकाशवलकेशी**—विक्रम० ४।२४ ।

यूथिका, यूथी [यूथं पुष्पवृन्दमस्ति अस्याः—यूथ+ठन्+टाप्, यूथ+अच्+ङीष्] एक प्रकार की चमेली, जूही, बेला या इसका फूल **यूथिकाशवलकेशी** ...विक्रम० ४।२४, मेघ० २६ ।

यूपः [यु+पक्, पृषो० दीर्घः] 1. यज्ञ की स्थूणा (यह प्रायः बाँस या खदिर वृक्ष की लकड़ी से बनाई जाती है) जिसके साथ बलि दिया जाने वाला पशु, मेध के समय बाँध दिया जाता है अपेक्ष्यते सावुजनेन 'बैदिकी दमशान-शूलस्य न यूपसत्क्रिया कु० ५।७२ 2. विजय-स्मारक, विजयोपहार ।

यूषः,—षम्, यूषन् (पुं०, नपुं०) [यूष्+क, कनिन् वा] रसा, शोरवा, मटर का रसा ('यूषन्' शब्द के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहले पांच वचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'यूप्' के स्थान में विकल्प से यूयवत् हो जाता है)।

येन (अव्य०) ['यद्' शब्द का करण० का एक वचनांत रूप जो क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त होता है] 1. जिससे, जिसके द्वारा, जिस लिए, जिस कारण से, जिसके साधन से कि तद् येन मनो हर्तुमलं स्यात्ना न शृण्वताम् रघु० १५।६४, १४।७४ 2. जिससे कि दर्शय तं चौरसिंहं येन व्यापादयामि पंच० ४ 3. चूंकि, क्योंकि।

यौक्त्रम् [युज्+ष्ट्रन्] 1. डोरी, रस्सी, तस्मा, रज्जु 2. हल के जुए की रस्सी 3. वह रस्सी जिसके द्वारा किसी पशु को गाड़ी के जोड़े से बांध दिया जाता है।

योगः [युज् भावादौ घञ्, कुत्वम्] 1. जोड़ना, मिलाना 2. मिलाप, संगम, मिश्रण, उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम्--श० ७।२२, गुणमहतां महते गुणाय योगः--कि० १०।२५, (वां) योगस्तडित्तोयदयोरिवास्तु रघु० ६।६५ 3. संपर्क स्पर्श, संबंध तमष्टकमारोप्य शरीरयोगजैः सुरैर्विमिश्चन्तमिवा मृतं त्वचि रघु० ३।२६ 4. काम में लगाना, प्रयोग, इस्तेमाल—एतैरुपायैर्योगेषु शक्यास्तैः परिरक्षितुम् —भग० १।१०, रघु० १०।८६ 5. पद्धति, रीति, क्रम, साधन—कथायोगेन बुध्यते--हि० १, 'बातचीत के क्रम में, 6. फल, परिणाम (अधिकतर समास के अन्त में या अपा० के साथ) रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति—श० २।१४, कु० ७।५५ 7. जुआ 8. वाहन, सवारी, गाड़ी 9. जिरहबख्तर, कवच 10. योग्यता, औचित्य, उपयुक्तता 11. व्यवसाय, कार्य, व्यापार 12. दाव-पेंच, जालसाजी, कूट चाल 13. तरकीब, योजना, उपाय 14. कोशिश उत्साह, परिश्रम, अध्यवसाय—मनु० ७।४४ 15. उपचार, चिकित्सा 16. इन्द्रजाल, अभिचार, मंत्रयोग, जादू, जादू-टोना 17. लब्धि, अवाप्ति, अभिग्रहण 18. धन दौलत, द्रव्य 19. नियम, विधि 20 पराश्रय, संबंध, नियमित आदेश या संयोग, एक शब्द की दूसरे शब्द पर निर्भरता 21. निर्वचन, या अर्थ की दृष्टि से शब्द व्युत्पत्ति 22. शब्द के निर्वचनमूलक अर्थ (विप० रूढि) 23. गंभीर भावचिन्तन, मन का संकेन्द्रीकरण, परमात्मचिन्तन, जिसे योगदर्शन में 'चित्तवृत्तिनिरोध' कहते हैं,--सती सती योगविसृष्ट-देहा—कु० १।२१, योगेनान्ते तनुत्यजाम् --रघु० १।८ 24. पतंजलि द्वारा स्थापित दर्शन पद्धति जो सांख्य दर्शन का ही दूसरा भाग समझा जाता है, परन्तु व्यवहारतः यह एक पृथक् दर्शन है (योगदर्शन का मुख्य सिद्धांत उन उपायों की शिक्षा देना है जिनके द्वारा मानव आत्मा पूर्ण रूप से परमात्मा में मिल जाय और इस प्रकार मोक्ष की प्राप्ति हो जाय। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गंभीर भावचिन्तन ही मुख्य साधन बताया गया है, इस प्रकार के योग या मन के संकेन्द्रीकरण के समुचित अभ्यास के लिए विस्तार के साथ नियमों का प्रतिपादन किया गया है) 25. (अंक में) जोड़, संकलन 26. (ज्योति० में) संपृक्ति, दो ग्रहों का योग 27. तारापुंज 28. विशेष प्रकार का ज्योतिषीय समय-विभाग (इस प्रकार के बहुधा २७ योग गिनाये गये हैं) 29. किसी नक्षत्र पुंज का मुख्य तारा 30 भक्ति, परमात्मा की पवित्र खोज 31. भेदिया, गुप्तचर 32. ढोंगी, विश्वास-घाती। सम०- अंगम् योग की प्राप्ति के साधन (यह गिनती में आठ हैं, नामों के लिए दे० यम 5.) —आचारः 1. योग का अभ्यास या पालन 2. बुद्ध के उस संप्रदाय का अनुयायी जो केवल विज्ञान या प्रज्ञा के शाश्वत अस्तित्व को ही मानता है,—आचार्यः, 1. जादू का शिक्षक 2. योग दर्शन का अध्यापक, —आधानम् जालसाजी से भरी बन्धकावस्था—मनु० ८।१६५,—आरूढ (वि० (सूक्ष्मभावचिन्तन में निमग्न, —आसनम् सूक्ष्मभावचिन्तन के अनुरूप अंग-स्थिति, —इन्द्रः,—ईश्वरः 1. योग में निष्णात या सिद्धहस्त 2. जिसने अलौकिक शक्ति सम्पादन कर ली है 3. जादूगर 4. देवता 5. शिव का विशेषण 6. याज्ञवल्क्य का विशेषण,--क्षेमः 1. सामान की सुरक्षा, संपत्ति की देखभाल 2. दुर्घटनाओं से संपत्ति की सुरक्षित रखने के लिए शुल्क, बीमा 3. कल्याण, कुशलक्षेम, सुरक्षा समृद्धि तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्—भग० ९।२२, मुरुधाया मे जनन्या योगक्षेमं बहुश्व मालवि० ४ 4. संपत्ति, लाभ, फायदा (पु०, नपु० द्वि० व०, मौ,—मे, नपु० ए० व० अम्) (संपत्ति का) अभिग्रहण और परिरक्षण, उपलब्धि और सुरक्षा, पुराने का परिरक्षण तथा नूतन का अभिग्रहण (जो पहले से अप्राप्त हो) अलब्धस्यलाभो योगः स्यात् क्षेमो लब्धस्य पालनम् दे० याज्ञ० १।१०० और उस पर मिता०, -चूर्णम् जादू का चूर्ण, जादू की शक्ति वाला चूरा,-कल्पितमनेन योगचूर्णमिश्रितमौषधं चन्द्रगुप्ताय—मुद्रा० २,—तारका, -तारा नक्षत्रपुंज का मुख्य तारा,—दानम् 1. योग के सिद्धांतों का संचारण 2. जालसाजी से युक्त उपहार, -धारणा सतत भक्ति, अनवरतभजन -नाथः शिव का विशेषण,—निद्रा अर्धचिन्तन और अर्धनिद्रित अवस्था, जागरण और निद्रा के मध्य की स्थिति अर्थात् लघुनिद्रा—योगनिद्रां गतस्य मम—पंच० १, हि० ३।७५, भर्तृ० ३।४१ 2. युग के अन्त में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विष्णु की निद्रा - रघु० १०।१४, १३।६,—पट्टम् भावसमाधि के अवसर पर संन्यासियों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र जो पीठ से लेकर घुटनों तक शरीर को ढक लेता है, -पतिः विष्णु का विशेषण,- बलम् 1. भक्ति की शक्ति, भावचिंतन की शक्ति, अलौकिक शक्ति 2. जादू की शक्ति,--माया 1. योग की जादू जैसी शक्ति 2. ईश्वर की सर्जन शक्ति जिससे कि देवता के रूप में मूर्त धरा की रचना की जाती है (भगवत्: सर्जनाधा शक्तिः) 3. दुर्गा का नाम,—रूढ़ः नारंगी, रूढ (वि०) वह शब्द जिसके निर्वचनमूलक अर्थ भी हैं, साथ ही उसका विशेष परंपरागत अर्थ है, उदा० 'पंकज' इसका व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है 'कीचड़ से उत्पन्न होने वाला कोई भी पदार्थ' परन्तु प्रचलन या परंपरा के प्रयोगानुसार इसका अर्थ 'कीचड़ में उत्पन्न किसी वस्तु अर्थात् कमल' में प्रतिबद्ध हो जाता है, तु० 'आतपत्र' छतरी, —रोचना एक प्रकार का जादू का लेप जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य और अभेद्य हो जाता है तेन च परितुष्टेन योगरोचना मे दत्ता --मुच्छ० ३,—वर्तिका जादू का लैम्प या बत्ती, -वाहिन् (पुं०, नपुं०) औषधियों को मिलाने का माध्यम—उदा० शहद - नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु - सुश्रु०, -वाही 1. रेह, सज्जी 2. मधु 3. पारा, -विक्रयः शोरे की बिक्री, -विद् (वि०) योग का जानकार (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. योगाभ्यासी 3. योग-सिद्धांतों का अनुयायी 4. जादूगर 5. दवाइयों के बनाने वाला, विक्षेपः बहुधा एक स्थान पर जुड़े हुओं को अलग-अलग करना, विशेषतः सूत्र के शब्दों को अलग अलग करना, एक ही नियम के दो तीन टुकड़े करना (महाभाष्य में पतंजलि ने इसका बहुत प्रयोग किया है—उदा० अदसो मातु: पा० १।१।१२), शास्त्रम् योगदर्शन,--समाधिः आत्मा का गूढ़ भावचिन्तन में लीन होना --तमसः परमापदव्यं पुरुषं योगसमाधिना रघु:—रघु० ८।२४, योगविधि ८।२२, सारः सब रोगों को एक दवा, रामबाण, सर्वव्याधिहर,—सेवा भावचिंतन का अभ्यास करना ।

योगिन् (वि०) [युज्+घिनुण्, योग+इनि वा] 1. से युक्त, या सहित 2. जादू की शक्ति से युक्त, पुं० 1. चिन्तनशील महात्मा, भक्त, संन्यासी —सेवाधर्मः परमगहनो योगिनाप्यन्यगम्यः --पंच० १।२८५, बभूव योगी किल कार्तवीर्यः--रघु० ६।३८ 2. जादूगर, ओझा, बाजीगर 3. योगदर्शन के सिद्धांतों का अनुयायी, —नी 1. जादूगरनी, जादिकारिका, ओझाइन, मायाविनी 2. भक्तिनी 3. शिव या दुर्गा की सेविकाओं की टोली (यह गिनती में आठ माने जाते हैं) ।

योगोष्टम् (नपुं०) सीसा, रांग ।

योग्य (वि०) [योगमर्हति यत्, युज्+ण्यत् वा] 1. लायक, उचित, उपयुक्त, योग्यता-प्राप्त योग्यो ऽप्य दृश्यते नरः 2. योग्य, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त, सक्षम, अर्ह (अधि० सप्त० संबं० के साथ तथा समास में प्रयुक्त) 3. उपयोगी, सेवा करने के योग्य 4. योग या भाव-चिन्तन के योग्य,--ग्यः युक्ति या तरकीबों का कल्पिता,—ग्या 1. अभ्यास, व्यवहार - अपरः प्रणिधान-योग्यया मरुतः पंचशरीरगोचरान् - रघु० ८।१९, इसी प्रकार 'मानयोग्या' काव्या० २।२४३, धनुर्योग्या अस्त्रयोग्या आदि 2. सैनिक कवायद, अभ्यास,—ग्यम् 1. सवारी, गाड़ी, वाहन 2. चन्दन की लकड़ी 3. रोटी 4. दूध ।

योग्यता [योग्य+तल्+टाप्] 1. सामर्थ्य, सक्षमता. - न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः --रामा० 2. अनुरूपता, औचित्य 3. समुपयुक्तता 4. (न्या० में) ज्ञान की अनुरूपता या संगति, शब्दों द्वारा संकेतित वस्तुओं के पारस्परिक संबंध की असंगति का अभाव - उदा० 'अग्निना सिंचति' में योग्यता नहीं है, इसकी परिभाषा यह है: -एकपदार्थेऽपरपदार्थसंसर्गो योग्यता —त० कौ० ।

योजनम् [युज् भावादौ ल्युट्] 1. जोड़ना, मिलाना, जोतना 2. प्रयोग करना, स्थिर करना 3. तैयारी, व्यवस्था 4. व्याकरणसम्मत रचना, शब्दान्वय 5. आठ यानी मील अथवा चार कोस की दूरी की माप—न योजन-शतं दूरं वाह्यमानस्य तृष्णया—हि० १।१४६ 6. उत्तेजित करना, भड़काना 7. मन का संकेन्द्रीकरण, भाव (=योग), ना 1. संगम, मिलाप, संबंध 2. व्याकरणसंमत शब्दान्वय । सम०—गन्धा 1. कस्तूरी 2. व्यास की माता सत्यवती ।

योत्रम् दे० योक्त्रम् ।

योधः [युध्+अच्] 1. योद्धा, सैनिक, लड़ाकू, सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः महा० 2. संग्राम, लड़ाई । सम० —आगारः, -गृहम् सैनिकों का निवास, सैन्यावास, बारक, -धर्मः सैनिकों का कानून, सैन्यविधि या नियम, संराव: लड़ाकू सिपाहियों की पारस्परिक ललकार, आह्वान ।

योधनम् [युध भावे ल्युट्] संग्राम, लड़ाई, मुठभेड़ ।

योधिन् (पुं०) [युध्+णिनि] योद्धा, सिपाही, लड़ाकू ।

योनिः (पुं०,स्त्री०) [यु+नि] 1. गर्भाशय, बच्चेदानी, भग, स्त्रियों की जननेन्द्रिय 2. जन्मस्थान, मूलस्थान, उद्गम, मूल, जननात्मक कारण, निर्झर, फौवारा ना योनिः सर्ववैराणां ना हि लोकस्य निर्ऋतिः उत्तर० ५।३०, कु० २।९, ४।४३, उत्पन्न या उदित के अर्थ में प्रयोग प्रायः समास के अन्त में भग०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५।२२ 3. स्थान 4. आवास, स्थान, भाजन या पात्र, आसन, आधार 5. घर, गोद 6. कुल, गोत्र, वंश, जन्म, अस्तित्व का रूप --जैसा कि 'मनुष्ययोनि, पक्षि°, पशु° आदि 7. जल। सम०--गुप्तः जन्मस्थान या गर्भाशय का गुप्त,--ज (वि०) गर्भाशय से जन्म लेने वाला, जरायुज,--देवता पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, भंगः वच्चेदानी का अपने स्थान से हट जाना, रजःस्रवः रजःस्राव, लिंगम् भगांकुर, चिकु,--संकरः असवर्ण अन्तर्जातीय विवाहों से उत्पन्न वर्ण संकर जाति।

योनी दे० योनिः।

योषणम् [युष्+ल्युट्] 1. मिटाना, विलुप्त करना 2. कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय 3. विकलता, घबराहट 4. उत्पीडन, अत्याचार, ध्वंस।

योषा, योषित् (स्त्री०), योषिता [यौति मिश्रीभवति-यु+स+टाप्, योषति पुमांसम् युष्+इति, योषित्+टाप्] स्त्री, लड़की, तरुणी, जवान स्त्री--मच्छन्तीनां रमणवसति योषितां तत्र नक्तं--मेघ० ३७, शि० ४।४२, ८।२५।

यौक्तिक (वि०) (स्त्री०--की) [युक्तित आगतः ठक्] 1. उपयुक्त, योग्य, उचित 2. तर्क संगत, तर्क या हेतु पर आधारित 3. तर्कय, अनुमेय 4. प्रचलित, प्रथानुकूल, कः राजा का आमोदविधि साथी --नु० 'नर्मसचिव'।

यौगः [योग+अण्] योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी।

यौगपद्यम् [युगपद्+ष्यञ्] समकालिकता, समसामयिकता।

यौगिक (वि०) (स्त्री० की) [योग+ठक्] 1. उपयोगी, सेवा के योग्य, उचित 2. प्रचलित 3. व्युत्पन्न, निर्वचनमूलक, शब्दव्युत्पत्ति के अनुरूप (विप० रूढ या परम्परागत) 4. उपचार परक 5. योग संबंधी, योग से व्युत्पन्न।

यौतक (वि०) (स्त्री०--की) [युते विवाहकाले अधिगतं वृण्] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति जिस पर उसका एकान्ततः अपना ही अधिकार हो, ऐसी सम्पत्ति जिस पर यथार्थतः उसका ही एकमात्र अधिकार हो --'विभागभावना ज्ञेया गृहक्षेत्रैश्च यौतकैः'--याज्ञ० २।१४६--कम् 1. निजी सम्पत्ति 2. स्त्री का दहेज, स्त्रीधन (विवाह के अवसर पर कन्या को उपहार में दिया गया धन) -मातुस्तु यौतकं यत् स्यात् कुमारी भाग एव सः मनु० ९।१३१।

यौतवम् [यु+तु=योतु+अण्] एक प्रकार की माप।

यौध (वि०) (स्त्री० धी) [योध+अण्] लड़ाकू, लड़ने-वाला।

यौन (वि०) (स्त्री०--नी) [योनितः योनि संबन्धात् वा आगतम् अण्] 1. सोदर 2. वैवाहिक, विवाह संबंधी --मनु० २।१०,--नम् विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध --मनु० ११।१८०।

यौवतम् [युवतीनां समूहः--अण्] तरुणियों या जवान स्त्रियों का समूह- अवधुत्य दिवोऽपि यौवतैर्न सहाधीतवतीमिमामहम्-- नैष० २।४१ 2. तरुणी स्त्री का गुण (सौन्दर्य आदि) तरुणी स्त्री होने की अवस्था - अहो बिबूधयौवतं वहसि तन्वि पृथ्वीगता--गीत० १०, (सुरसुन्दरी रूपम्)।

यौवनम् [यूनां भावः अण्] 1. जवानी (आलं० से भी) तारुण्य, तरुणाई, वयस्कता--मुग्धत्वस्य च यौवनस्य च सखे मध्ये मधुश्रीः स्थिता--विक्रम० २।७, यौवनेऽप्यस्तविद्यानाम् रघु० १।८, ६।५० दिनयौवनोद्यान्--१३।२० 2. जवान व्यक्तियों का विशेष कर तरुणियों का समूह। सम०--अन्त (वि०) जवानी में समाप्त होने वाला, लंबी जवानी होना कु० ६।४४,--आरम्भः जवानी का उभार, खिलती हुई जवानी,--दर्पः 1. जवानी भरा अभिमान 2. जवानी में सहजसुलभ अविवेक,--लक्षणम् 1. जवानी का चिह्न 2. आकर्षण, लावण्य 3. स्त्रियों के कुच।

यौवनकम् [यौवन+कन्] जवानी।

यौवनाश्वः [युवनाश्व+अण्] युवनाश्व का पुत्र मान्धाता।

यौवराज्यम् [युवराज+ष्यञ्] युवराज का पद या अधिकार, यौवराज्येऽभिषिक्तः, (युवराज पद का मुकुट धारण किये हुए)।

यौष्माक (वि०) (स्त्री०--की), यौष्माकीण (वि०) [युष्मद्+अण्, खञ् वा, युष्माक आदेशः] तुम्हारा, आपका।

र

रः [रा+ड] 1. अग्नि 2. गर्मी 3. प्रेम, इच्छा 4. चाल, गति।

रंह् (भ्वा० पर० रंहति) हिलना--जुलना, वेग से चलना, जल्दी करना--न ररंहाश्ववकुंजरम्--भट्टि० १४।९८, प्रेर०--(रंहयति ते--कुछ के अनुसार चुरा० उभ०) 1. जल्दी से चलाना, प्रेरणा देना 2. बहाना 3. आना 4. बोलना।

रंहतिः (स्त्री०) [रंह्+क्तिप्] चाल, वेग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंहस् (पुं०) [रंह्+असुन्, हृक् च] 1. चाल, वेग, रघु० २।३४ शि० १२।७, कि० २।४० 2. आतुरता, प्रचण्डता, उत्कटता, उग्रता।

रक्त [भू० क० कृ०] [रञ्ज् करणे क्तः] 1. रंगीन, रंगा हुआ, हलके रंग वाला, रंग लिप्त--आभाति बालातपरक्तसानुः --रघु० ६।६० 2. लाल, गहरा लाल रंग, लोहितवर्ण, सांध्य तेजः प्रतिनवजवाधुष्परक्तं दधानः मेघ० ३६, इसीप्रकार रक्ताशोक, रक्तांशुक आदि 3. मुग्ध, सानुराग, अनुरक्त, प्रेमासक्त--अयमेत्रीमुखं पश्य रक्तश्चुम्बति चन्द्रमाः--चन्द्रा० ५।५८ (यहां यह द्वितीयार्थ भी रखता है) 4. प्रिय, वल्लभ 5. सुहावना, आकर्षक, मधुर, सुखद श्रोत्रेषु संश्लेषि रक्तमासां गीतानुगं वारिमृदङ्गवाद्यम्--रघु० १६।६४ 6. खेल का शौकीन, खिलाड़ी, क्रीडाप्रिय,--क्तः 1. लाल रंग 2. कुसुम्भ,--क्ता 1. लाल 2. गुंजा का पौधा,--क्तम् 1. रुधिर 2. तांबा 3. आकराम 4. सिन्दूर। सम०--अक्ष (वि०) 1. लाल आंखों वाला 2. डरावना (--क्षः) 1. भैंसा 2. कबूतर,--अंकः मूंगा,--अंगः 1. खटमल 2. मङ्गलग्रह 3. सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल,--अभिषंधः आंखों की सूजन **अंबरम्** लाल वस्त्र (--रः) गेरुआ वस्त्रधारी परिव्राजक, --**अर्बुदः** रसौली,--**अशोकः** लाल फूलों वाला अशोक वृक्ष --**मालवि०** ३।५,--**आधारः** चमड़ी, खाल, --आभ (वि०) लाल दिखाई देने वाला, **आशयः** एक प्रकार का आशय जिसमें रुधिर रहता है तथा जिससे निकलता रहता है (हृदय, तिल्ली और जिगर आदि),--**उत्पलम्** लालकमल,--**उपलः** गेरु, लाल मिट्टी,--**कण्ठ, कण्ठिन्** (वि०) सफ़रकण्ठवाला (पुं०) कोयल **कंदः, कंदलः** मूंगा,- **कमलम्** लाल कमल **चन्दनम्** 1. लाल चन्दन, जाफरान, केसर,-- **चूर्णम्** सिन्दूर,--**छदिः** (स्त्री०) रुधिर की कै करना, **जिह्वः** सिंह,--**तुण्डः** तोता,--**दृश्** (पुं०) कबूतर,--**धातुः** 1. गेरु या हरताल 2. तांबा --**पः** पिशाच, भूत-प्रेत,--**पल्लवः** अशोकवृक्ष, **पा** जोंक --**पातः** नरहत्या,-- **पाद** (वि०) लाल पैरों वाला, (--**दः**) 1. लालपैरों का पक्षी, तोता 2. युद्धरथ 3. हाथी,--**पायिन्** (पुं०) खटमल,- **पायिनी** जोंक, --**पित्तम्** 1. लाल रंग की फुंसी 2. नाक और मुंह से रक्तस्राव होना,--**प्रमेहः** मूत्र के साथ रक्त का निकलना, **भवम्** मांस, --**मोक्षः**,--**मोक्षणम्** रुधिर निकलना, --**वटी**,--**वरटी** घेघक, **वर्णः** 1. लाख 2 अनार का पेड़ 3. कुसुम्भ, **वर्ण** (वि०) लाल रंग का (**र्णः**) 1. लाल रंग 2. श्वेतबहेड़ी नामक क्रीडा (--**र्णम्**) सोना, **वसन,- वाससं** (वि०) लाल रंग की वस्त्र भूषा धारण किये हुए, सारस,--**शासनम्** सिन्दूर,-- **शैलेयकः** एक प्रकार का सारस, -- **सन्ध्याकम्** लाल कमल,--**सारम्** लाल चन्दन।

रक्तक (वि०) [रक्त+कन्] 1. लाल, 2. सानुराग, अनुरक्त, स्नेहशील 3. सुहावना, विनोदप्रिय 4. रक्तरञ्जित --**कः** 1. लाल रंग की वेशभूषा 2. सानुराग व्यक्ति, शृङ्गार-प्रिय पुरुष 3. खिलाड़ी।

रक्तिः (स्त्री०) [रञ्ज् + क्तिन्] 1. सुहावनापन, प्रियता, आकर्षण, लावण्य 2. आसक्ति, स्नेह, निष्ठा, भक्ति।

रक्तिका [रक्ति+कन्+टाप्] गुंजा का पौधा या इसका बीज जो तोलने (एक रत्ती) के काम आता है।

रक्तिमन् (पुं०) रक्त+इमनिच्] ललाई।

रक्ष् [भ्वा० पर० रक्षति, रक्षित] 1. रक्षा करना, चौकीदारी करना, देखभाल करना, पहरा देना, (पशु आदि) पालना, राज्य करना, (पृथ्वी पर) शासन करना - भवानिमां प्रतिकृतिं रक्षतु--श० ६, ज्ञास्यसि क्रियदभुजो मे रक्षति मौर्वीक्वणांक इति --श० १।१३ 2. सुरक्षित रखना, (भेद) न खोलना --हृस्यं रक्षति 3. सम्भारण करना, बचाना, बचा कर रखना (बहुधा अपा० के साथ) अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेदवेक्षया---हि० २।८, आपदर्थे धनं रक्षेत्--हि० १।१२१, रघु० २।५०, १११७७ 4. टालमटूल करना--मुद्रा० १।२, (अभि, परि, सम आदि उपसर्ग जोड़ने पर इस धातु के अर्थों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता)।

रक्षक (वि०) (स्त्री--क्षिका) [रक्ष्+ण्वुल्] चौकसी रखने वाला, रक्षा करने वाला--**कः** रखवाला, अभिभावक, चौकीदार, पहरेदार।

रक्षणम् [रक्ष्+ल्युट्] रक्षा करना, बचाव, संधारण, चौकसी, देखभाल आदि ('रक्षणम्' भी) पी रास, लगाम।

रक्षस् (नपुं०) [रक्ष्यतेहविरस्मात्, रक्ष्+असुन्] भूत-प्रेत पिशाच, भूतना, बैताल--चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम्, जघ्नुश्च दूषणत्रिशिरोऽतिकायान् रणे हताः--उत्तर० २।१५। सम०--**ईशः, नाथः** रावण का विशेषण **जननी** राक्षिस,--**सभम्** राक्षसों की सभा।

रक्षा [रक्ष्--भावे अ+टाप्] 1. बचाव, संधारण, चौकसी **भयि सृष्टिहि लोकानां रक्षा युग्मा स्ववग्यिता**--कु० २।२८,शि० १८।३१,शा० १।१४,रघु० २।४, मेघ० ४३ 2. देखभाल, सुरक्षा 3. चौकसी, पहरा 4. ताबीज या गण्डा, परिरक्षी, जैसे कि नीचे 'रक्षाकरण्ड में' 5. अभिभावक देवता 6. भस्म, राख 7. रक्षाबन्धन, पहुँची (विशेषकर श्रावण पूर्णिमा के दिन कलाई में बांधी जाने वाली रेशम या सूत की डोरी) ताबीज या गण्डे के रूप में (इस अर्थ में 'रक्षी' शब्द भी प्रयुक्त है)। सम०--**अधिकृतः** जिसे प्ररक्षण या अधीक्षण कार्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुपुर्द किया गया हैं, अधीक्षक या शासक अथवा राज्य-पाल 2. दण्डनायक, मजिस्ट्रेट 3. मुख्य आरक्षाधिकारी **अधेक्षकः** 1. कुली, द्वारपाल 2. अन्तःपुर का पहरेदार 3. भांड, लौंडा ४. नाटक का पात्र अभिनेता,—**करण्डः** करण्डकम् तबीज़ की डिबिया, गण्ड, जादू की डिबिया अहो रक्षाकरण्डकस्य मणिबन्धे न दृश्यते —शा० ७,—**गृहम्** प्रसूति का गृह, रक्षागृहगता दीपाः प्रत्यादिष्टा इवाभवन् - रघु० १०।५९,—**पात्रः** एक प्रकार का भोजपत्र,—**पालः**,—**पुरुषः** पहरेदार, चौकीदार, प्रारक्षी,—**प्रदीपः** वह दीपक जो भूत प्रेत से बचाव के लिए जलता हुआ रखा जाता है,—**भूषणम्**, - **मणिः**, —**रत्नम्** एक प्रकार का आभूषण जो ताबीज की भांति भूत प्रेतादि की बाधा से बचाव के लिए पहना जाता है।

रक्षित्, रक्षिन् (वि०) [रक्ष्+तृच्, णिनि वा] बचाने वाला, चौकसी करने वाला, राज्य करने वाला-- नै० १।१ (पुं०) 1. रक्षा करने वाला, संरक्षक, बचाने वाला 2. चौकीदार, सन्तरी, प्रारक्षी –अयं पदशब्द इव मा नाम रक्षिणः --मृच्छ० ३।

रघुः [लंघति ज्ञानसीमानं प्राप्नोति—लंघ्—कु, न लोपः, लस्य रः] एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता (ऐसा प्रतीत होता है कि इसका नाम रघु (रघ या रघ् - जाना) इस कारण पड़ा हो क्योंकि इसके पिता ने गर्भ में ही जान लिया कि यह लड़का विद्या के ही पार नहीं जायगा अपि युद्धे में अपने शत्रुओं को भी परास्त कर देगा—तु० रघु० ३।२१ अपने नाम की सार्थकता के अनुसार उसने दिग्विजय आरम्भ किया, समस्त ज्ञात भूमण्डल का चक्कर लगाया और कीर्ति तथा विजयोपहार के साथ वापिस आया। आ कर उसने विश्वजित् यज्ञ का आयोजन किया और दक्षिणा में ब्राह्मणों को सर्वस्व दे डाला, तथा अज को अपने राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया)। सम० **नन्दनः**, **-नथः-पतिः-श्रेष्ठः-सिंहः** राम के विशेषण।

रङ्कः (वि०) [रमते तुष्यति रम्+कः] 1. अधम, दरिद्र भिक्षुक, अभागा, दयनीय 2. मन्थर,—**कः** भिखारी, मन्द-भाग्य, भूखा, क्षुधार्त, भूखमरा--प्रेतरङ्कः --मा ५।२६, बुभुक्षित या 'भूखमरी आत्मा' पञ्च० १।२५४।

रङ्कुः [रम् + कु] हरिण, कुरङ्ग, कृष्णसार मृग नै० २।८३।

रङ्गः [रञ्ज् भावे घञ्] 1. रङ्ग, वर्ण, रङ्गने का मसाला रङ्गलेप या रोगन 2. रङ्गमंच, नाटकशाला, नाट्यगृह अखाड़ा, सार्वजनिक आमोदस्थली—जैसा कि रङ्ग-विघ्नोपशान्तये सा० द० २८१ 3. सभा-भवन, श्रोतृवर्ग--अहो रागबद्धचित्तवृत्तिरालिखित इव सर्वतो रङ्गः शा० १, रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात्, पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः शर्व० 5. रणक्षेत्र 6. नाचना, गाना, अभिनय 7. आमोद, मनोविनोद 8. सुहागा 9. स्वर का अनुनासिक उच्चारण— सरंगम् कम्पयत्कंपम् रवीवेति निदर्शनम्—शिक्षा० ३०, इसी प्रकार २६, २७,२८,

गः गम् रंग, टिन।

सम०— **अङ्गणम्** अखाड़ा, नाचघर,—**अवतरणम्** 1. रङ्गमंच पर प्रवेश 2. अभिनेता या नाटकपात्र का व्यवसाय,—**अवतारकः**—**अवतारिन्** (पुं० अभिनेता, नाटक का पात्र,—**आजीवः** 1. अभिनेता 2. चित्रकार, इसी प्रकार, - **उपजीविन्** (पुं०),—**कारः** **जीवकः** चित्रकार, रंगवेषक,— **चूरः** 1. अभिनेता, नाटक का पात्र 2. वाग्भी,— **जम्** सिन्दूर,—**देवता** क्रीड़ा तथा सार्वजनिक आमोद-प्रमोद की अधिष्ठात्री देवता,- **द्वारम्** 1. रङ्गशाला का द्वार 2. किसी नाटक का मंगलाचरण या प्रस्तावना,—**भूमिः** (स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा की रात,—**भूमिः** (स्त्री०) 1. रङ्गमंच, नाटकशाला 2. अखाड़ा, रणक्षेत्र, - **मंडपः** रङ्गशाला, —**मातृ** (स्त्री०) 1. लाख, लालरङ्ग, महावर, इसे पैदा करने वाला कीड़ा 2. कुटनी, दूती,—**वस्तु** (नपुं०) रङ्गलेप, **वाटः** अखाड़ा, बाड़ा जहां नाटक नाच आदि होते हों,-- **शाला** नाचघर, नाट्यगृह, नाटकघर।

रन्ध् (स्वा० उभ० रन्धति-ते) 1. जाना 2. शीघ्र जाना, जल्दी करना—द्वारम् रन्ध्रानुयाम्यम्—भट्टि० १४।१५।

रच् (चुरा० उभ० रचयति-ते ,रचित) 1. व्यवस्थित करना, सज्जित करना, तैयार करना, बना लेना, रचना करना—पुष्पाणां प्रकरः क्लिप्तेव रचितो नौ कुन्दलाताभिः—अमरु ४०,रचयति शयनं सचकितनयनम्—गीत० ५ 2. बनाना, रूप देना, कार्यान्वित करना, रचना करना पैदा करना—मायाविकल्परचितैः स्यंदनैः—रघु० १३।७५, माधुर्यं मधुविद्रुवा रचयितुं क्षारांबुधेरीहते—भर्तृ० २।६, मौलौ वा रचयांजलिम् वेणी० ३।४० 3. लिखना, रचना करना, (किसी कृति आदि को) एकत्र करना—अश्ववाटीं जगन्नाथो विश्वहृद्यामरीरचत्—अश्व० २६, शं० ३।१५ 4. रखना, स्थिर करना, जमाना—रचयति चिकुरे कुरबककुसुमं—गीत० ७, कु० ४।१८, ३४, शा० ६।१७ 5. अलंकृत करना, सजाना मेघ० ६६ 6. (मन को) लगाना,- **आ** ,व्यवस्थित करना, **वि**—, 1. व्यवस्थित करना 2. रचना करना 3. कार्यान्वित करना, पैदा करना, बनाना— मेघ० ९५, भामि० १।३०।

रचनम्—ना [रच्+युच्, स्त्रियां टाप्] [1. व्यवस्था, तैयारी, विन्यास--अभिषेक°, संगीत° आदि 2. बनाना सर्जन करना, उत्पन्न करना—अन्यैव कापि रचना वचनावलीनां—भामि० १।९९, इसी प्रकार—**भ्रुकुटि रचना**—मेघ० ९५ 3. सम्पन्नता, पूर्ति, निष्पत्ति,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्यान्वयन—कुरु मम वचनं सत्वररचनम्—गीत० ५, रघु० १०।७७ 4. साहित्यिक रचना या सृजन, निर्माण, संरचना—संक्षिप्तता वस्तु रचना—सा० द० ४२२ 5. बाल संवारना 6. सैन्यव्यूहन 7. मन की सृष्टि, कृत्रिम उद्भावना।

रजः दे० रजस्।

रजक: [रज्+ण्वुल्, नलोपः] धोबी।

रजका,—की [रजक+टाप्, ङीष् वा] धोबन।

रजत (वि०) [रज्+अतच्, नलोपः] 1. चांदी के रंग का, चांदी का बना हुआ 2. उज्ज्वल—तम् 1. चांदी—शुक्तौ रजतमिदमिति ज्ञानं भ्रमः कि० ५।४१, नै० २२।५२ 2. स्वर्ण 3. मोतियों का आभूषण या माला 4. रुधिर 5. हाथी दांत 6. नक्षत्रपुंज, तारासमूह।

रजनिः,—नी (स्त्री०) [रज्यतेऽत्र, रज्ज्+कनि वा ङीप्] रात—हरिरभिमानो रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम्—गीत० ५। सम० करः चन्द्रमा - चरः रात को घूमने वाला, पिशाच, बेताल,—जलम् ओस, तुषार, —पतिः, रमणः चन्द्रमा,—मुखम् सन्ध्या, सायंकाल।

रजनिमन्य (वि०) (वह दिन) जो रात जैसा बीते या रात जैसा दिखाई दे - भट्टि० ७।१३।

रजस् (पुं०) [रज्ज्+असुन्, नलोपः] 1. धूल, रेणु, गर्द—धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति - श० ७।१७, आत्मोद्धतैरपि रजोभिरलंघनीयाः १।८, रघु० १।४२, ६।३२ 2. फूल की रेणु या पराग भृंगाकृशेशयरजोमुदुरेणुरस्याः (पंथाः)—श० ४।१०, मेघ० ३३,६५ 3. सूर्य किरणों में फैले हुए कण, कोई भी छोटा सा कण - तु० मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६२ 4. उड़ती हुई भूमि, कृषियोग्य खेत 5. अन्धकार, अन्धेरा 6. मलिनता, आवेश, संवेग, नैतिक या मानसिक अन्धकार—अपश्यं पदमर्षयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपिरजोनिमीलिताः रघु० ९।७४ 7. सब प्रकार के भौतिक द्रव्यों के घटक गुणों अथवा तीन गुणों में से दूसरा - (दूसरे दो गुण हैं सत्त्व और तमस्, जीवजन्तुओं में बड़ी भारी क्रियाशीलता का कारण 'रजस्' समझा जाता है, यह गुण मनुष्यों में बहुतायत से पाया जाता है जैसे कि देवताओं में सत्त्व तथा राक्षसों में तमस् पाया जाता है), अन्तर्गतमपास्तं में रजसीवोपि परं तमः—कु० ६।६९, भग० ६।२७, मा० १।२० 8. रजःस्राव, ऋतुस्राव मनु० ४।४१, ५।६६। सम० - गुणः दे० (7) ऊपर, तमस्क (वि०) रज और तम दोनों गुणों से प्रभावित, तोकः, -कम्, - पुत्रः 1. लोलुपता, लालच 2. 'ज्ञोश का पुतला' यह प्रकट करने के लिए कि यह व्यक्ति तुच्छ है, नगण्य है, इस शब्द का प्रयोग किया जाता है,—वर्षीमस् प्रथम बार रजोधर्म का होना, सबसे पहला रजःस्राव,—वन्धः रजोधर्म का बन्द हो जाना,—वलः अन्धेरा,— शुद्धिः रजोधर्म की विशुद्ध दशा, - हरः 'मैल हटाने वाला' धोबी।

रजसानुः [रज्यतेऽस्मिन्-रज्ज्+असानुः] 1. बादल 2. आत्मा, दिल।

रजस्वल (वि०) [रजस्+वलच्] 1. मैला, धूल से भरा हुआ—रघु० ११।६०, शि० १७।६१, (यहां इसका अर्थ 'रजोधर्म में होने वाली' भी है) 2. आवेश या संवेग से भरा हुआ—मनु० ६।७७,—क: भैंसा,—ला 1. रजस्वला स्त्री - रजस्वलाः परिमलिनांबरश्रियः—शि० १७।६१, याज्ञ० ३।२२९, रघु० ११।६० 2. विवाह के योग्य कन्या।

रज्जुः (स्त्री०) [सृज्+उ, असुमागमः धातोस्सलोपः, आगमसकारस्य जश्त्वं ककारः, तस्यापि चुत्वं जकारः] 1. रस्सा, डोरी, सुतली 2. कपोलका स्तम्भ से निकलने वाली स्नायु 3. स्त्रियों के सिर की चोटी। सम० बालकम् एक प्रकार का जंगली मृग, इसी प्रकार रज्जुबालः,—वेष्ट सुतली से बनी हुई टोकरी।

रञ्ज् (भ्वा० दिवा० उभ०—रजति—ते, रज्यति—ते, रक्त, कर्मवा० रज्यते, इच्छा० रिरंक्षति) 1. रंगना, जाने के योग्य, लाल रंग से रंगना, लाल होना, चमकना, कोपरज्यन्मुखश्रीः—उत्तर० ५।२, नेत्रे स्वयं रज्यतः—५।२६, नै० ३।१२०, ७।६०, २२।५२ 2. रंगना, हलका रंग देना रंगीन बनाना, रंगलेप करना 3. अनुरक्त होना, भक्त बनना (अधि० के साथ) देवानियं निधध्यराजरुचस्यजंती रूपादरव्यत नलेन विदर्भसुभ्रूः—नै०.१३।३८, सा० द० १११ 4. मुग्ध होना, प्रेमासक्त होना, स्नेह की अनुभूति होना 5. प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, खुश होना—प्रेर० (रंजयति—ते) 1. रंगना, हलका रंगना, रंगीन बनाना, लाल करना, रंगलेप करना —सा रंजयित्वा चरणौ कृतासीः—कु० ७।१९, ६।८१, कि० १।४०, ४।१४ 2. प्रसन्न करना, तुष्ट करना, मनाना, सन्तुष्ट करना ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मा नरं न रंजयति—भर्तृ० २।३ (इस अर्थ में रजयति भी दे० कि० ६।२५) स्फुरतु कुचकुंभयोरुपरि मणिमंजरी रंजयतु तव हृदयेशम्—गीत० १० 3. मैल करना, जीत लेना, सन्तुष्ट रहना मनु० ७।१९ 4. हरिण का शिकार करना (इस अर्थ में केवल 'रंजयति'), अनु—, 1. लाल होना, शि० ९।७ 2. स्नेहशील होना, भक्त होना, अनुरक्त बनना, प्रेम करना, पसन्द करना (अधि० के साथ कर्म० के भी) पंच० १।१०१, मनु० ३।१७३ 3. खुश होना—भग० ११।३६ अप—, 1. असन्तुष्ट होना, सन्तोषरहित होना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अया० के साथ, नयहीनादपरज्यते जनः --कि० २।४९ 2. पीला होना, विवर्ण होना स्वासापरक्ता-धरः श० ६।५, उप--, 1. ग्रहणग्रस्त होना, उपरज्यते मृगवादचन्द्रः--मुद्रा० १ 2. हल्के रंग का होना, रंगीन होना शि० २।१० 3. कष्टग्रस्त या विपद्ग्रस्त होना वि--, १. रंगरहित होना, मलिन होना, पटिया या भद्दा होना--केशा अपि विरज्यंते निःस्नेहाः कि न सेवकाः--पंच० १।८२ (यहाँ यह द्वितीयार्थ भी रखता है) 1. असन्तुष्ट होना, निर्लिप्त होना, नापसंद करना, घृणा करना--चिरानुरक्तोऽपि विरज्यते जनः--मृच्छ० १।५३, या चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता--भर्तृ० २।२, भर्तृ० १८।२२, संसार से विरक्त होना, सांसारिक आसक्तियों का छोड़ देना।

रंजकः [रंजयति-रंज्+णिच्+ण्वुल्] 1. चित्रकार, रंगलेपक, रंगरेज 2. उत्तेजक, उद्दीपक,--कम् 1. लाल चन्दन 2. सिन्दूर।

रंजनम् [रज्यतेऽनेन-रञ्ज् करणे ल्युट्] 1. रंग करना, हलका रंगना, रंगलेप करना 2. वर्ण, रंग 3. प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट रहना, तृप्त होना प्रसन्नता देना--राजा प्रजारंजनलब्धवर्णः --रघु० ६।२१, तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरंजनात्-- ४।१२ 4. लाल चन्दन की लकड़ी।

रंजनी [रंजन+ङीप्] नील का पौधा।

रद् (भ्वा० पर० रदति रदित) 1. चिल्लाना, चीत्कार करना, चीखना, क्रंदन करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना --घोरारावाराटिषु शिवाः--भट्टि० १५।२७, पपात राक्षसो भूमौ ररादं च भयंकरम्- १४।८१ 2. जोर से बोलना, उद्घोषणा करना 3. प्रसन्नता से चिल्लाना, प्रशंसा करना आ--, पुकारना, चिल्लाना --प्रियसहचरमपश्यत्यातुरा चक्रवाक्यारटति--श० ४।

रदनम् [रद्+ल्युट्] 1. क्रन्दन की क्रिया, चिलाना, जोर से आवाज देना 2. प्रशंसा का चीत्कार, पसंदगी।

रण् (स्वा० पर० रणति, रणित) ध्वनि करना, टनटनाना, झनझनाना, झनझनाना (पायजेब आदि का)--रणद्भिरावृतनया नभस्वतः पृथग्विभिन्नश्रुतिमंजलैः स्वरैः शि० ११।१०, चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम्--गीत० २।

रणः,-णम् [रण्+अप्] 1. संग्राम, समर, युद्ध, लड़ाई --रणः प्रववृते तत्र भीमः प्लवगरक्षसाम्--रघु० १२।७२, वचोजीवितयोरासीद्बहिर्निःसरणे रणः सुभा० 2. युद्धक्षेत्र,--णः 1. शब्द, शोर 2. सारंगी बजाने का गज 3. गति, चाल। सम०--अग्रम् युद्ध का अगला भाग,--अंगम् युद्धास्त्र, शस्त्र तलवार, संयदे क्षोणितं व्योम रणांगणे प्रजज्वलुः--भट्टि० १४।९६,--अंगण,-नम् युद्धक्षेत्र,--अर्थ (वि०) युद्ध से भागने वाला, भगोड़ा--स बभार रणार्थेतां चमूं पंचादवस्थिताम्--कि० १५।३३,--आतोद्यम्,--तूर्यम्, --दुंदुभिः सैनिक ढोल, मारू बाजा,--उत्साहः युद्ध में प्रदर्शित विक्रम,--क्षितिः (स्त्री०),--क्षेत्रम्,--भूः (स्त्री०), -भूमिः (स्त्री०), स्थानम् युद्धक्षेत्र,--धुरा युद्ध में आगे रहना, युद्ध का वार--ताते चाग्रद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्थावकाशाः--वेणी० ३।५, -प्रिय (वि०) युद्ध का शौकीन, लड़ाकू,--मत्तः हाथी --मुखम्, -मूर्धन् (पुं०),- शिरस् (नपुं०) 1. युद्ध का अगला भाग, लड़ाई का मुख्य वार--श० ६।३०, ७।२६ 2. सेना का अग्रभाग,--रंकः हाथी के दाँतों के मध्य का फासला, रंगः युद्धक्षेत्र,--रणः डांस, मच्छर (-णम्) 1. प्रबल इच्छा, उत्कण्ठा 2. खोई हुई वस्तु के लिए खेद,--रणकः,--कम् 1. चिंता, बेचैनी, खेद, (किसी प्रिय वस्तु के लिए) कष्ट या संताप (प्रेम से उत्पन्न) रणरणकविवृद्धि बिभ्रदावर्तमानम्--मा० १।४१, उत्तर० १ 2. प्रेम, इच्छा (-कः) कामदेव,--वाद्यम् मारू बाजा, सैनिक संगीत बाजा,--शिक्षा सैन्यविज्ञान, युद्धकला, या युद्ध विज्ञान, -संकुलम् घोर-युद्ध, तुमुल-युद्ध,--सज्जा युद्ध की सामग्री, सैनिक साज-सामान -सहायः मित्र, सहायक, -स्तंभः विजयस्मारक, विजयचिह्न।

रणत्कारः [रण्+शतृ, ष० त०] 1. खड़खड़ाहट, झनझनाहट या छनछन की आवाज 2. (मक्खियों का) भनभनाना।

रणितम् [रण्+क्त] खड़खड़ाहट, टनटन, झनझनाहट या छनछन की आवाज।

रंडः [रम्+ड] 1. वह पुरुष जो पुत्रहीन मरे 2. बंजर वृक्ष, -डा फूहड़स्त्री, पुंश्चली, स्त्रियों को संबोधित करने में निंदापरक शब्द रंडे पंडितमानिनि--पंच० १।३९२, (पाठान्तर) प्रतिकूलामकुलजा पापा पापानुवर्तिनीम्, केशेष्वाकृष्य तां रंडां पादप्रहारेषु नियोजय - प्रबो० २ 2. विधवा स्त्री--रंडाः पीनपयोधराः कति मया तोदगाढमालिंगिताः प्रबो० ३।

रत (भू० क० कृ०) [रम्+क्त] 1. प्रसन्न, खुश, तृप्त 2. प्रसन्न या खुश, स्नेहशील, मुग्ध, अनुरक्त 3. लगा हुआ, व्यस्त, संलग्न, (वे० रम्),--तम् 1. प्रसन्नता 2. मैथुन, संभोग--रघु० १९।२३, २५, मेघ० ८९ 3. उपस्थ इन्द्रिय। सम०--अयनी वेश्या, रंडी,--अर्थिन् (वि०) कामुक, कामासक्त,--उद्वह: कोयल,--उद्विद्या 1. दिन 2. आनन्द के लिए स्नान,--क्रीड: कुत्ता, --कूजितम् कामासक्त व्यक्ति की मैथुन के समय की सीत्कार,--क्षरः कौवा,--शालिन् (पुं०) स्वेच्छाचारी, कामासक्त,--शाली कुटनी, दूती,--सारोचः 1. विषयी 2. कामदेव, मदन 3. कुत्ता 4. मैथुन के समय की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामार्त व्यक्ति की सी-सी ध्वनि, **बंधः** मैथुन, संभोग, **—हिंडकः** 1. स्त्रियों को फुसलाकर उनसे बलात्कार करने वाला 2. विलासी।

रतिः (स्त्री०) [रम्+क्तिन्] 1. आनन्द, खुशी, सन्तोष, हर्ष —पं० २।१ 2. स्नेहशीलता, भक्ति, अनुराग, आनन्दानुभूति (अधि० के साथ) पाषे रतिं मा कृथाः —भर्तृ० २।७७, स्वयोषिति रतिः— २।६२, रघु० १।२३ कु० ५।६५ 3. प्रेम, स्नेह, सा० द० द्वारा की गई परिभाषा रतिर्मनोऽनुकूलेऽर्थे मनसः प्रवणायितम् —२०७, नु० २०६ से भी 4. सम्भोग का आनन्द दाक्षिण्योदकवाहिनी विगलिता वामा स्वदेशं रतिः मृच्छ० ८।३८, इसी प्रकार 'रतिसर्वस्वम्' दे० नी० 5. मैथुन, संभोग, सहवास 6. रतिदेवी, कामदेव की पत्नी —साक्षात्कामं तवमिव रतिर्मालती माधवं यत् मा० १।१६, कु० २।२३, ४।४५, रघु० ६।२ 7. योनि, भग। सम०—**अंगम्, कुहरं** योनि, भग, **—गृहम्, —भवनम्, —मन्दिरम्** 1. क्रीडा गृह 2. चकवा, रंडीखाना 3. योनि, भग, **तस्करः** फुसलाने वाला, व्यभिचारी, **—दूतिः—ती** (स्त्री०) प्रेम का संदेश ले जाने वाली—कु० ४।१६,—**पतिः,** · **प्रियः—रमणः** कामदेव, अपि नाम मनागवनीर्णोऽसि रतिरमणबाणगोचरम् मा० १, दधति स्फुटं रतिरतेरिवैः शितनखा यदुपल्लवाभ्रदयः शि० ९।६६, **रसः** संभोग का आनन्द, **लंपट** (वि०) कामी, कामासक्त, कामुक, **—सर्वस्वम्** रतिक्रीडा का अत्युत्तम रस, अत्यानन्द **—कर व्याधुन्वत्याः** पिदंसि रतिसर्वस्वमधरम् श० १।२४।

रत्नम् [रमतेऽत्र, रम्+न, तान्तादेशः] 1. मणि, आभूषण, हीरा—कि रत्नमस्माकं मतिः भामि० १।८६, न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्—कु० ५।४५, (रत्न गिनती में पांच, नौ या चौदह बतलाये जाते हैं—दे० शब्द पंचरत्न, नवरत्न, और चतुर्दशरत्न) 2. कोई भी मूल्यवान् पदार्थ, कीमती खजाना 3. अपने प्रकार की अत्युत्तम वस्तु (समास के अन्त में) जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते मल्लि०, कन्यारत्नमयोनिजम्म भवताप्यास्ते दयं चार्थिनः महावी० १।३०, इसी प्रकार पुष्प०, स्त्री०, अश्व० आदि · चुम्बक। सम०—**अनुविद्ध** (वि०) रत्नों से जड़ा हुआ, **आकारः** 1. रत्नों की खान 2. समुद्र. रत्नैर्न लुप्तैः बहुरत्नमेदैरप्याकरः एव सिंधुः—विक्रम० १।१२, रत्नाकरं क्षोभ्य—रघु० १३।१,—**आलोकः** मणि की कान्ति,—**आवली,—माला** रत्नों का हार, **—कंबलः** मूंगा, **खचित** (वि०) रत्न या मणियों से जड़ा हुआ,—**गर्भः** समुद्र (भा) पृथ्वी,—**दीपः,** —**प्रदीपः** 1. रत्नों का बना दीपक 2. रत्न जो दीपक का काम, दे० अविरतरुगानभिभूयभपि प्राप्य रत्न प्रदीपान् मेघ० ६८, **—मुख्यम्** हीरा, **-राज्** (पुं०) लाल, **राशिः** 1. रत्नों का ढेर 2. समुद्र, **-सानुः** मेरु पर्वत, · **-सू** (वि०) रत्नों को उत्पन्न करने वाला · रघु० १।६५,—**सू,** सूतिः (स्त्री०) पृथ्वी।

रत्निः (पुं०, स्त्री०) [ऋ+कत्निच्, वण्] 1. कोहनी 2. कोहनी से मुट्ठी तक की दूरी, एक हाथ का परिमाण (पुं०) बन्द मुट्ठी (यह शब्द 'अरत्नि' का ही भ्रंश प्रतीत होता है)।

रथः [रम्यतेऽनेन अत्र वा · रम्+क्थन्] गाड़ी, जलूसी गाड़ी, यान, वाहन, विशेषकर युद्धरथ 2 सायेक (रथिन्) 3. पैर, 4. अवयव, भाग, अंग 5. शरीर, तु० आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु कठ० 6. नरकुल। सम०—**अक्षः** गाड़ी का धुरा **अंगम्** 1. गाड़ी का कोई भाग 2. विशेषकर गाड़ी के पहिये —रथी रथांगध्वनिता विजज्ञे रघु० ७।६१, मा० ७।१० 3. चक्र, विशेषकर विष्णु का,—चक्रधर इति रथांगमदः सततं बिभर्षि भुवनेषु रूढये—शि० १५।२६ 4. कुम्हार का चाक **°आह्वयः, °नामकः, °नामन्** (पुं०) चकवा, चक्रवाक रथांगनामन् प्रियतमे रथांगश्रोणिविरहः अयं त्वां पृच्छति स्थी मदनरथतनैवृंतः— विक्रम० ४।१८, कु० ३।२७, रघु० ३।२४, (निशिसमय के अनुसार चकवा रात होने पर चकवी से बिछुड़ जाता है, फिर सूर्योदय होने पर उनका मेल होता है) **°पाणिः** विष्णु का नाम,—**युद्धः** रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा, **-ईशः** या गाड़ी का जोड़ा (गाड़ी में लगने वाली सबसे लम्बी दो लकड़ियां जिन पर गाड़ी का सारा ढांचा जमाया जाता है),— **उद्वहः, —उपस्थः** रथ का वह स्थान जहां सारथि बैठता है, चालक का आसन,— **कटधा, —कड्या** रथों का समूह, **—कल्पकः** राजा के रथों की व्यवस्था का अधिकारी, **—कारः** गाड़ी बनाने वाला, बढई, पहिये पकड़ने वाला रथकारः स्वकां भार्यां सजारां शिरसावहत्— पंच० ४।५४, **- कुटुंबिकः, कुटुंबिन्** (पुं०) रथवान्, सारथि, **कूबरः,—रम्** गाड़ी की शहतीरी—**केतुः** रथ का झण्डा,— **क्षोभः** रथ का हचकोला—रघु १।५८, · **गर्भकः** डोली, पालकी,—**गुप्तिः** (स्त्री०) रथ के चारों ओर लगा लोहे या लकड़ी का ढांचा जिससे रथ की किसी से टकराने पर रक्षा हो सके, **चरणः,** —**पादः** 1. रथ का पहिया 2. चकवा,· **चर्या** रथ का इधर उधर घुमना, रथ का उपयोग, रथ पर सवारी करना—अनभ्यस्तरथचर्यायाः- उत्तर० ५, **धुर्** (स्त्री०) गाड़ी के जोड़े की शहतीरी,· **नाभिः** (स्त्री०) रथ के पहिये की नाह या नाभि,—**नीडः** रथ के अन्दर का भाग या आसन,— **बंधः** रथ का साज-सामान, रस्सी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि,—**महोत्सवः**,—**-यात्रा** रथ में देव प्रतिमा स्थापित कर जलूस निकालना (ऐसे रथ की प्रायः मनुष्य स्वयं खींचते हैं), **-मुखम्** गाड़ी का अगला भाग, **युद्धम्** 'रथों का युद्ध' वह युद्ध जिसमें योद्धा रथों पर बैठ कर युद्ध करते हैं,—**-अक्षेण** (नपुं०), **वीथिः** राजमार्ग, मुख्य सड़क,—**वाहः** 1. रथ का घोड़ा 2. सारथि, **शक्तिः** (स्त्री०) वह ध्वज जिस पर रथ शूद्ध की पताका लहराती रहती है,—**शाला** गाड़ीघर, गाड़ियां रखने का स्थान, **सप्तमी** माघशुक्ला सप्तमी का दिन।

रथिक (वि०) (स्त्री०—की) [रथ + ठन्] 1. रथ पर सवारी करने वाला 2. रथ का स्वामी।

रथिन् (वि०) [रथ + इनि] 1. रथ में सवारी करने वाला, या रथ हांकने वाला 2. रथ को रखने वाला या रथ का स्वामी—(पुं०) 1. गाड़ी का स्वामी 2. वह योद्धा जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है —रघु० ७।३७।

रथिन, रथिर (वि०) [रथ + इन, इरच् वा] दे० ऊ० 'रथिन्'।

रथ्यः [रथं वहतिः—यत्] 1. रथ का घोड़ा धावत्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः—शि० १।८ 2. रथ का एक भाग।

रथ्या [रथ्य—टाप्] 1. गाड़ियों के आने जाने के लिए सड़क, राजमार्ग, मुख्य सड़क भूयोभूयः सविधनगरीरथ्यया पर्यटन्तम्—मा० १।१४ 2. वह स्थान जहां कई सड़कें मिलती हों 3. गाड़ियों या रथों का समूह—शि० १८।३।

रद् (भ्वा० पर० रदति) 1. टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ना, 2. खुरचना।

रदः [रद्—अच्] 1. टुकड़े टुकड़े करना, खुरचना 2. दांत, (हाथी का) दांत—पाताध्वेन्द्र पराञ्चन्ति दिग्दन्ता रदा इव—भामि० १।६५। सम० **खण्डनम्** दांत से काटना, जनय रदखण्डनम् गीत० १०,—**च्छदः** ओष्ठ।

रदनः [रद्+ल्युट्] दांत। सम०—**च्छदः** ओष्ठ।

रध् [दिवा० पर० रध्यति, रद्ध, प्रेर० रन्धयति, इच्छा० रिरधिषति या रिरन्त्सति] 1. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, संताप देना मार डालना, नष्ट करना—अक्षं रधिनुमारेभे—भट्टि० ९।२९ 2. भोजन बनाना (खाना) पकाना या तैयार करना।

रन्तिदेवः [रम्—तिक्, रन्तिश्चासौ देवश्च-कर्म० स०] एक चन्द्रवंशी राजा, भरत के बाद छठी पीढ़ी में (यह अत्यन्त पृण्यात्मा और उदार व्यक्ति था, उसके पास अपार धनराशि थी जो इसने बड़े २ यज्ञों के अनुष्ठान में व्यय की। उसके राज्य में यज्ञ में बलि दिये गये तथा उसकी रसोई में उपयुक्त किये गये पशुओं की इतनी बड़ी संख्या थी कि उनकी खालों से रुधिर की नदी निकली मानी जाती है, इसी नदी का बाद में 'चर्मण्वती' नाम पड़ गया तु० मेघ० ४५, और चर्मण्वति मल्लि०)।

रन्तुः [रम्—तुन्] 1. रास्ता, मार्ग 2. नदी।

रन्धनम्, रन्धिः (स्त्री०) [रध्+ल्युट्, इन् वा, नुगागमः] 1. क्षति पहुंचाना, संताप देना, नष्ट करना 2. पकाना।

रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागमः] 1. छिद्र, छेद, गर्त, मूंह खाई, दरार रन्ध्रेष्विवालक्ष्यनमः प्रदेशा—रघु० १३।५६, १५।२, नासारन्ध्रम् मा० १।१; कीचरन्ध्रम् किरा० ५।३ 2 (क) बलहीन स्थान, वह जगह जहां आक्रमण किया जा सके रन्ध्रापनिपातनिरीक्षणाः पं० ६, रन्ध्रान्वेषणदक्षाणां द्विजानामिवानां यथा रघु० १८।११, १५।१७, १७।३१, (ख) त्रुटि, दोष, कमी। सम०- **अन्वेषिन्, अनुसारिन्** (वि०) दूसरों के कमजोर स्थलों को ढूंढने वाला मृच्छ० ८।५७, **वभ्रुः** चूहा, **वंशः** खोखला या पोला बांस।

रभ् (भ्वा० आ० रभते, रब्ध, प्रेर० रम्भयति—ते; इच्छा० रिप्सते) आरंभ करना, आ **-प्रा** -,1. आरंभ करना शुरू करना, काम में लग जाना, जिम्मेवारी ले लेना प्रारभन्ते न खलु विघ्नभयेन नीचैः भर्तृ० २।४७, आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः सुभा०, भट्टि० ५।३८, रघु० ८।४५ 2. व्यस्त होना, सोत्साह होना —शि० २।९१, **परि** ,कौली भरना, आलिङ्गन करना हृत्यक्तवन्तं परिरभ्य दोर्भ्याम् -कि० ११।८०, भामि०१।५५, कु० ५।३, शि० ९।७२, **सम्** -, 1. क्षुब्ध होना भाव त्रिभोर होना, प्रभावित होना 2. कुपित होना, उत्तेजित होना, क्रोधोन्मत्त या चिड़-चिड़ा होना (प्रायः क्तान्त रूप प्रयुक्त) रघु० १६।१६।

रभस (नपुं०) [रभ्—असुन्] 1. प्रचण्डता, उत्साह 2. बल, सामर्थ्य।

रभस (वि०) [रभ्—असच्] 1. प्रचण्ड, उग्र, भीषण, प्रखर 2. प्रबल, गहन, उत्कट, शक्तिशाली, तीक्ष्ण, तीव्र (उत्कण्ठा आदि) रभसया नु दिगन्तदिदृक्षया —कि० ५।१, रघु० ९।६१, मुद्रा० ५।२४, **सः** 1. प्रचण्डता, भीषणता, उग्रता, शीघ्रता, वेग, आतुरता, उत्कटता—आलोक्य केलीरभसेन बाला मुहुर्ममालापमगालपन्ती भामि० २।१२, स्वेदाम्बिसरणरभसेन वलन्ती गीत० ६, शि० ५।१३, ११।२३, कि० ९।४७ 2. उतावलापन, साहसिकता, जल्दबाजी —अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाहो शल्यतुल्यो विपाकः—भर्तृ० २।९९ 3. क्रोध, आवेश,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोप, भीषणता 4. खेद, शोक 5. हर्ष, आनंद, खुशी—मनसि रभसन्निभवे हरिरुदयतु सुकृतेन —गीत० ५ ।

रम् (म्वा० आ० रमते, परन्तु वि, आ, परि उपसर्ग लगने पर पर०, रत) 1. प्रसन्न होना, खुश होना, हर्ष मनाना, तृप्त होना रहसि रमते—मा० ३।२—मनु० २।२२३ 2. हर्षित होना,—प्रसन्न होना, आनन्द मनाना, स्नेहशील होना (करण० और अधि० के साथ) लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि —मेघ० २७, व्यञ्जेष्ट षड्वर्गसरस्त नीतौ भट्टि० १।२ 3. खेलना, क्रीडा करना, प्रेमालिङ्गन करना, जी बहलाना, राजप्रियाः कैरविण्यो रमन्ते मधुपैः सह —भामि० १।१२६ (यहाँ दूसरा अर्थ भी संकेतित है) भट्टि० ६।१५, ६७ 4. संभोग करना—सा तत्पुत्रेण सह रमते हि० ३ 5 रहना, ठहरना, टिकना। प्रेर०—(रमयति ते) प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना—इच्छा० (रिरंसते) क्रीडा करने की इच्छा करना—शि० १५।८८, **अभि**—हर्ष मनाना, प्रसन्न या आनन्दित होना, अत्यनुरक्त होना—भट्टि० १।७, भग० १८।४५, **आ**—, (पर०) 1. आनन्द लेना, खुशी मनाना भट्टि० ८।५२, ३।३८ 2. ठहरना, थमना, छोड़ देना (बोलना आदि), समाप्त करना—मनु० २।७३, **उप**—, (पर० और आ०) 1. रुकना, अन्त करना, समाप्त करना—सङ्कल्पादुपरराम च लज्जा—शि० ९।४४, १३।६९ 2. रुकना, थमना —भवाद्रणादुपरते मंस्यन्ते त्वां महारथाः —भग० २।३५, भट्टि० ८।५४, ५५, कि० ४।१७ 3. चुप होना, शांत होना, भग० ६।२० 4. मरना—दे० उपरत, **परि**—, (पर०) प्रसन्न होना, खुश होना —भट्टि० ८।५३, **वि**—, (पर०) 1. अन्त होना, समाप्त होना, अवसान होना अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्—उत्तर० १।२७ 2. रुकना, बन्द होना थमना, छोड़ देना (बोलना आदि)—एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे—रघु० २।५१, शि० २।१३, प्रायः अपा० के साथ, हा हतं किमिति चित्तं विरमति नाद्यापि विषयेभ्यः—भामि० ४।२५, उत्तर० १।३३, **सम्**—(आ०) प्रसन्न होना, हर्ष मनाना—भट्टि० १९।३०।

रम (वि०) [रम्+अच्] सुहावना, आनन्दप्रद, संतोषजनक, आदि,—मः 1. हर्ष, खुशी 2. प्रेमी, पति 3. कामदेव.

रमठम् [रमे: अठ्।] हींग। सम०—**व्यक्ति**: हींग।

रमण (वि०) (स्त्रीणी—) [रमयति-रम्+णिच्+ल्युट्] सुहावना, संतोषजनक, आनन्दप्रद, मनोहर—भट्टि० ६।७२,—णः 1. प्रेमी, पति पद्मच्छ रामां रमणोऽभिलाषम्—रघु० १४।२७, मेघ० ३७,८७, कु० ४।२१, शि० ९।६० 2. कामदेव 3. गधा 4. अंडकोष —णम् 1. क्रीड़ा करना 2. प्रेमालिंगन, जी बहलाना, केलिक्रीडा 3. रति, मैथुन 4. हर्ष, उल्लास 5. कूल्हा, पुट्ठा।

रमणक, रमणी [रमण+टाप्,ङीप् वा] 1. सुन्दर तरुण स्त्री, लता रम्या सेयं भ्रमरकुलरम्या न रमणी —भामि० २।९० 2. पत्नी, स्वामिनी—भोगः को रमणी विना सुधा०।

रमणीय (वि०) [रम्यतेऽत्र-रम् आधारे अनीयर्] सुहावना, आनन्दप्रद, प्रिय, मनोहर, सुन्दर—स्मित नैतस्किन्नु प्रकृतिरमणीयं विकसितम् भामि० २।९०।

रमा [रमयति रम्+अच्+टाप्] 1. पत्नी, स्वामिनी 2. लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी तथा धनदौलत की देवी 3. धन। सम०—**कान्तः**, —**नाथः**, **पतिः** विष्णु का विशेषण,—**वेष्टः** तारपीन।

रम्भा [रभ्+अच्+टाप्] 1. केले का पौधा-विजित-रम्भमूरुद्वयम्—गीत० १०, पिबोरुरम्भास्तणीवरोरु—नै० २२।४३ २।३७ 2. गौरी का नाम, नलकूबर की पत्नी जो इन्द्र के स्वर्ग में अत्यंत सुन्दरी मानी जाती है —तरुमरुस्थगेन सुन्दरीं किमु रम्भां परिणाहिना परम्, तरुणीमपि जिष्णुरेव तां धनदापत्यतपःफलस्तनीम्—नै० २।३७, सम०—**ऊरु** (वि०) (स्त्री०—रु,—क्) केले के अन्तर भाग के समान जंघाओं वाला या वाली—शि० ८।१९, रघु० ६।३५।

रम्य (वि०) [रम्यतेऽत्र यत्] 1. सुहावना, सुखद, आनन्दप्रद, हृदिकरं रम्यास्तपोवनानां क्रियाः समवलोक्य —श० १।१३ 2. सुन्दर प्रिय, मनोहर—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं—श० १।२०, ५।२, —म्यः कदम्ब नाम का वृक्ष,—म्यम् वीर्य।

रय् (स्वा० आ०-रयते, रयित) जाना, हिलना-डुलना।

रयः [रय्+अच्] 1. नदी की धारा, प्रवाह,—जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः—मेघ० २० 2. बल, बाल, वेग उत्तर० ३।३६ 3. उत्साह, उत्कण्ठा, उत्कटता, उग्रता।

रल्लकः [रमणं रत्=इच्छा तां लाति ला+क=रल्ल +कन्] 1. ऊनी वस्त्र, कंबल 2. एलक मारना युवतिरल्लक-भल्लसमाहृतो भवति को न यवा गत-चेतनः 3. एक प्रकार का हरिण।

रवः [रु+अप्] 1. क्रन्दन, चीख, चीत्कार, हू हू, (जानवरों की) चिंघाड़ 2. गाना, (पक्षियों की) कूजनध्वनि —रघु० ९।२९ 3. अनुनादाहृत 4. शब्द, कोलाहल —घंटा°, भूषण° नाद° आदि।

रवण (वि०) [रु+ल्युट्] 1. क्रंदन करने वाला, चिंघाड़ने वाला, चीखने वाला 2. ध्वन्यात्मक, शब्दायमान—उत्कण्ठाकलकण्ठैः शुभ्रं रवणरम्बरं ततम् भट्टि० ७।१४ 3. तीक्ष्ण, तप्त 4. चंचल, अस्थिर,—णः 1. ऊँट —णम् 1. क्रंदन, चीख 2. कोयल,—णम् पीतल, कांसा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रविः [रु+इ] सूर्य - सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८। सम०--कान्तः सूर्यकान्तमणि, -जः, —तनयः, पुत्रः, सूनुः 1. शनिग्रह 2. कर्ण के विशेषण 3. वालि के विशेषण 4. वैवस्वत मनु के विशेषण 5. यम के विशेषण 6. सुग्रीव के विशेषण, -दिनं, -वारः, वासरः,—वासरम् रविवार, आदित्यवार, -संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

रशना, रसना [अश्+युच्, रशादेशः] 1. रस्सी, डोरी 2. रास, लगाम 3. कटिबंध, कमरबंद, स्त्रियों की करधनी -रसनं रसनापि तव घनजघनमण्डले घोषयतु मन्मथनिदेशम्—गीत० १०, रघु० ७।१०, ८।५७, मेघ० ३५ 4. जिह्वा भामि० १।१११। सम०—उपमा उपमा अलंकार का एक भेद, यह उपमाओं की एक शृंखला है जिसमें पूर्व उपमेय, बाद वाला उपमान बनता जाता है दे० सा० द० ६६४।

रश्मिः [अश्+मि धातोरुट्, रश् : मि वा] 1. डोर, डोरी, रस्सी 2. लगाम, रास. मुक्तेषु रश्मिषु नियंत्रणपूर्वकावाः -शं० १।८, रश्मिसंयमनात् - शं० १ 3. सांटा, हंटर 4. किरण, प्रकाश किरण—शं० ७।६, नै० २२।५६. इसी प्रकार 'हिमरश्मि' आदि। सम०—कलापः चौदह लड़ियों की मोतियों की माला।

रश्मिमत् (पुं०) [रश्मि+मतुप्] सूर्य।

रस् i (स्वा० पर० रसति, रसित) 1. दहाड़ना, हूह करना, चिल्लाना, चीखना -करीव वन्यः परुषं रसास —रघु० १६।७८, शि० ३।४८ 2. शब्द करना, कोलाहल करना, टनटन करना, झनझन करना राजन्योपनिमन्त्रणाय रसति स्फीतं यशोदुन्दुभिः वेणी० १।२५, रसनु रसनापि तव घनजघनमण्डले गीत० १० 3. प्रतिध्वनि करना, गूंजना।

ii (चुरा० उभ० रसयति-ते, रसित) चखना, स्वाद लेना —मृद्वीका रसिता भामि० ४।१३, शि० १०।२७।

रसः [रस्+अच्] 1. सार, (वृक्षों का) दूध, रस, इक्षुरसः कुसुमरसः आदि 2. तरल द्रव कु० १।७ 3. पानी —सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१९ भामि० २।१४४ 4. मदिरा, शराब—मनु० २।१७७, 5. घूंट एक मात्रा, खुराक 6. चखना, रस, स्वाद (आलं० से भी) (वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों में से एक; रस छः हैं—कटु, अम्ल, मधुर, लवण, तिक्त, और कषाय)—परायत्तः प्रीतेः कथमिव रस वेत्तु पुरुषः -मुद्रा० ३।४, उत्तर० २।२ 7. चटनी, मिर्च मसाला 8. कोई स्वादिष्ट पदार्थ-रघु० ३।४ 9. किसी वस्तु के लिए स्वाद या रुचि, गन्धर्वी, इच्छा इष्टे वस्तुन्यधिकारजः प्रेमसंभोगभावना —मेघ० ११२ 10. प्रेम, स्नेह... अरसा परिहासेषु रस:--उत्तर० १।३९, प्रसरति रसो निर्वृतिघनः ६।११, 'प्रेम की अनुभूति'—कु० ३।३७ 11. आनन्द, प्रसन्नता, खुशी—रघु० ३।२६ 12. लावण्य, अभिरुचि, सौन्दर्य, लावण्य 13. करुणरस, भाव-भावना 14. (काव्य रचनाओं में) रस—नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति काव्य० १, (रस प्रायः आठ हैं:—शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः। बीभत्सादभुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसा स्मृताः॥ परन्तु कभी कभी 'शांत' रस को जोड़ कर नौ रस बना दिये जाते हैं,-निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः काव्य० ४; कभी कभी दसवां रस 'वात्सल्य' और मिला दिया जाता है। प्रत्येक काव्यरचना के रस आवश्यक घटक हैं, परन्तु विश्वनाथ के मतानुसार 'रस' काव्य की आत्मा है वाक्यं रसात्मकं काव्यम् —सा० द० ३) 15. सत्, सार, तत्त्व, सर्वोत्तम भाग 16. शरीर के संघटक द्रव 17. वीर्य 18. पारा 19. दिख, जहरीला पेय, जैसा कि 'तीक्ष्णरसदायिनः' में 20. कोई भी खनिज या धातुसंबंधी लवण।

सम०—अञ्जनम् रसौत, एक प्रकार का अंजन, —अम्लः अमलबेत, —अयनम् 1. अमृत, कोई भी औषध जो बुढ़ापे को रोक कर जीवन को लम्बा करे, —निखिलरसायनमहितो गन्धर्वोयेण लक्षण इव—रस० 2. (आलं०) अमृत का काम देने वाला अर्थात् जो मन को तृप्त भी करे साथ ही हर्षित भी करे, आनन्दनानि हृदयंकरसायनानि - मा० ६।८, मनसश्च रसायनानि - उत्तर० १।३६, श्रोत्र कर्णे° आदि ३. रससिद्धि, रसायन °श्रेष्ठः पारा, —आत्मक (वि०) 1. रसीला, रसदार 2. तरल, द्रव, - आभासः किसी रस का वर्णनरूप या केवल प्रतीति 2. किसी रस का अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन, —आस्वादः 1. सत् या रस आदि चखना 2. काव्यरस की अनुभूति, काव्य सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण -जैसा कि 'काव्यामृतरसास्वादः' में,—इन्द्रः 1. पारा 2. पारसमणि, चिन्तामणि (कहते हैं कि इसके स्पर्श से लोहा, सोना बन जाता है),—उद्भवम्,—उपलम् मोती,—कर्मन् (नपुं०) उन वस्तुओं को तैयार करना जिनमें पारा इस्तेमाल किया जाता है,- केशरम् कपूर, —गन्धः, धम् लोबान की तरह का सुगंधदार गोंद, रसगन्ध,—ज्ञ (वि०) 1. रसों का ज्ञाता 2. आनन्द मनाने वाला, —जः राब, शीरा,—जम्बु स्थिर,—ज्ञ (वि०) 1. जो रस की उत्तमता को परखता है, जो स्वाद जानता है, सांसारिकेषु च सुखेषु वयं रसज्ञाः -उत्तर० २।२७ 2. वस्तुओं के सौन्दर्य को पहचानने में सक्षम (—ज्ञः) 1. स्वाद का जानकार, भावुक, विवेचक, काव्यमर्मज्ञ, कवि 2. रससिद्धि का ज्ञाता 3. पारे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के योग से बनने वाली औषधियों के तैयार करने वाला वैद्य, (—ज्ञा) जिह्वा, —भामि० २।५९, तेजस् (नपुं०) रुधिर —द्वः वैद्य, —धातु (नपुं०) पारा, —ग्रन्थः कोई भी काव्य-रचना, विशेष कर नाटक, —फलः नारियल का पेड़, भङ्गः रस का टूट जाना या अजरोध, भवम् रुधिर, —राजः पारा, विक्रयः मदिरा की बिक्री, —शास्त्रम् रससिद्धि का विज्ञान, —सिद्ध (वि०) 1. काव्य-सम्पन्न, रसवेत्ता —जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कवीश्वराः—भर्तृ० २।२४ 2. रस-सिद्धि में कुशल, —सिद्धिः (स्त्री०) रससिद्धि में कुशलता।

रसनम् [रस्+ल्युट्] 1. क्रन्दन करना, चिल्लाना, चिंघाड़ना, शोर मचाना, टनटन करना, कोलाहल करना 2. बादलों की गड़गड़ाहट, बादलों की गरज 3. स्वाद, रस 4. स्वाद लेने की इन्द्रिय, जिह्वा —इन्द्रियं रसग्राहकं रसनं जिह्वाप्रवर्ति—तर्क०, भग० १५।९ 5. प्रत्यक्षीकरण, गुणागुणविवेचन, ज्ञान—सर्वेऽपि रसनाद्रसाः—सा० द० २४४।

रसना दे० रशना। सम०—रवः पक्षी, —लिह् (पुं०) कुत्ता।

रसवत् (वि०) [रस+मतुप्] 1. रसेदार, रसीला 2. स्वादिष्ट, मशालेदार, मजेदार, सुरस संसारसुखवृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले, काव्यामृतरसास्वादः सम्पर्कः सज्जनैः सह 3 तर, गीला, पानी से आर्द्र 4. मनोहर, शानदार, प्रांजल, परिष्कृत 5. भावों से भरा हुआ, जोशीला 6. स्नेहसिक्त, प्रेमपूरित 7. साहसी, रसिक,—ती रसोई।

रसा [रस्+अच्=टाप्] 1. निम्नतर नारकीय प्रदेश, नरक 2. पृथ्वी, भूमि, मिट्टी—भामि० १।५९, स्मरस्य युद्धरङ्गतां रसारसारसारसा—नलो० २।१० 3. जिह्वा। सम०—तलम् 1. पृथ्वी के नीचे सात पातालों में से एक, दे० पाताल 2. नीचे की दुनिया, नरक, राज्यं यातु रसातलं पुनरिदं न प्राणितुं कामये भामि० २।६३ जातिर्यातु रसातलम्—भर्तृ० २।३९।

रसालः [रसमालाति—आ+ला+क, ष० त०] 1. आम का पेड़, —भृङ्गाः रसालकुसुमानि समाश्रयन्ते—भामि० १।२७ 2. गन्ना, ईख, —ला 1. जिह्वा 2. वह दही जिसमें शक्कर तथा मसाले मिला दिए गये हों 3. 'दूर्वा' घास, दूब 4. अंगूरों की बेल या अंगूर, —लम् लोबान।

रसिक (वि०) [रसोऽस्यास्य ठन्] 1. मसालेदार, मजेदार, स्वादिष्ट 2. शानदार, ललित, सुन्दर 3. जोशीला 4. उत्तमता या रस को पहचानने वाला, स्वादयुक्त, गुणग्राही, विवेचक —तद् वृत्तं प्रवदन्ति काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितम्—श्रुत० ४० 5. आनन्द लेने वाला, लुत्फी मनाने वाला, प्रसन्नता अनुभव करने वाला, भक्त (प्रायः समास में) इमं मालतीं भगवता सहृदय-संयोगरसिकेन वेधसा मन्मथेन मया च दुःखं दीयते —मा० ६, इसी प्रकार 'कामरसिकः'—भर्तृ० ३।११२, परोपकाररसिकस्य—मृच्छ० ६।१९,—कः 1. रसिया, गुणग्राही, सहृदय पुरुष तु० अरसिक 2. स्वेच्छाचारी 3. हाथी 4. घोड़ा, का 1. ईख का रस, राब, मीठा 2. जिह्वा 3. स्त्रियों की करधनी—दे० 'रसना' भी।

रसित (भू० क० कृ०) [रस्+क्त] 1. चखा हुआ 2. रस या मनोभाव से युक्त 3. मुलम्मा चढ़ा हुआ, तम् 1. शराब या मदिरा 2. क्रंदन, दहाड़, गरज, चिंघाड़, कोलाहल, शोर—हेरम्बकल्पस्रसितप्रतिमानमेति —मा० ९।३।

रसोनः [रसेनैकेन ऊनः] लहसुन तु० लशुन।

रस्य (वि०) [रस+यत्] रसवाला, मजेदार, सुस्वादु, रुचिकर रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः भग० १७।८।

रह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० रहिति, रहयति ते, रहित) छोड़ देना, त्याग देना, परित्याग करना, तिलाजलि देना, छोड़कर अलग हो जाना—रहयत्यापदुपेतमाशयतिः—कि० २।१४।

रहणम् [रह्+ल्युट्] छोड़ कर भाग जाना, परित्याग कर देना, अलग हो जाना सहकारवृंदे समये सह का रहणस्य केन सम्भार पदम् नलो० २।१४।

रहस् (नपुं०) [रह्+असुन्] 1. एकान्तता, एकान्तवास, अकेलापन, एकाकीपन, निर्जनता—रघु० ३।३, १५।९२, पंच० १।१३८ 2. उजड़ा हुआ या सुनसान स्थान, छिपने की जगह 3. भेद की बात, रहस्य 4. मैथुन, संभोग 5. गुप्त इन्द्रिय —(अव्य०) चुपचाप, आँख बचा कर, गुप्त रूप से, एकान्त में, निर्जनस्थान में, अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्सकृतं रहः—शि० ५।२४, प्रायः समास में—वृत्तं रहः प्रणयसम्प्रतिपद्यमानं ५।२३।

रहस्य (वि०) [रहसि भवः—यत्] 1. गुप्त, निजी, प्रच्छन्न 2. भेदभरा, स्यम् 1. भेद (आलं० से भी) —स्वयं रहस्यभेदः कृतः —विक्रम० २ 2. रहस्य से भरा जादू, मंत्र, (अस्त्रसंबंधी) भेद, गुप्त बात—सरहस्यानि जृम्भकास्त्राणि—उत्तर० १ 3. आचरण का भेद या रहस्य, गुप्त बात रहस्यं साधुनामनुपधि विशुद्धं विजयते—उत्तर० २।२ 4. गुह्य या गोपनीय शिक्षा, एक रहस्यमय सिद्धान्त—भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्—भग० ४।३, मनु० २।१५०, (अव्य० —स्यम्) चुपचाप, गुप्तरूप से—याज्ञ० ३। ३०१ (यहाँ यह विशेषण के रूप में भी समझा जा सकता है)। सम०—आद्यायिन् (वि०) भेद की बात

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बनाने वाला—रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचर.—श० २।२४,—भेदः—विभेदः किसी भेद या गुप्त बात का खोलना, —व्रतम् 1. गुप्त प्रतिज्ञा या साधना 2 जादू के शस्त्रास्त्रों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए एक रहस्यमय विज्ञान ।

रहित (भू० कृ० कृ०) [रह् कर्मणि क्त] 1. छोड़ा गया, छोड़ दिया गया, परित्यक्त, सम्परित्यक्त 2. वियुक्त, मुक्त, वञ्चित, हीन, के बिना (करण० के साथ या समास के अन्त में रहिते भिक्षुधर्मे याज्ञ० ३।५९, गुणरहितः, सत्त्वरहितः आदि 3. अकेला, एकाकी, तम् गोपनीयता, परदा या ओट ।

रा (अदा० पर० रौति, रात) देना, अनुदान देना, समर्पण करना—स रातु वो दुष्टरीवतो भावुकाता परम्पराम् काव्य० ७ ।

राका [रा+क+टाप्] 1. पूर्णिमा का दिन, विशेषरूप से रात्रि, दारिद्र्य भजते कलानिधिरयं राकाघुना म्लायति—भामि० २।७२, ५४, ९४, १५०, १६५, १७५, ३।११ 2. पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी 3. बहु कन्या जिसे अभी रजोधर्म होना आरंभ हुआ है 4. खजली, खाज ।

राक्षस (वि०) (स्त्री०-सी) [रक्षस इदम् अण्] दैत्य या राक्षस से संबंध रखने वाला, पैशाची, निशाचर के स्वभाव वाला -उत्तर० ५।३०, भग० ९।१२,—सः 1. पिशाच, भूतप्रेत, बैताल, दानव, शैतान 2. हिन्दू-धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित विवाह के आठ भेदों में से एक प्रकार जिसमें दुलहिन के सम्बन्धियों को युद्ध में परास्त कर कन्या को बलात् उठाकर ले जाया जाता है राक्षसो युद्धहरणात्—याज्ञ० १।६१, तु० मनु० ३।३३ भी (इसी ढंग से कृष्ण रुक्मिणी को उठा लाया था) 3. ज्योतिषविषयक एक योग 4. नन्द राजा का मन्त्री, जो मुद्राराक्षस नाटक में एक प्रधान पात्र है, —सी पिशाचिनी ।

राक्षा दे० लाक्षा (कदाचित् अशुद्ध रूप है) ।

रागः [रञ्ज् भावे घञ्, तलोपश्चान्तस्य] 1. वर्ण, रंग, रंजक वस्तु 2. लाल रङ्ग, लालिमा, अधरः किसलयरागः—द० १।२१ 3. लाल रङ्ग, लाल रङ्ग की लाख, महावर,—रागेण बालारुणकोमलेन चूतप्रवालोष्ठमलञ्चकार—कु० ३।३०, ५।१६ 4. प्रेम, प्रणयोन्माद, स्नेह, प्रीतिविषयक या काम-भावना, मलिनेऽपिरागपूर्णाम् —भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'लाली भी है) —अथ मनस्तामन्तरेण कीदृशोऽस्या दृष्टिरागः श० २, दे० 'चक्षुराग' भी 5. भावना संवेग, सहानुभूति, हित 6. हर्ष, आनन्द 7. क्रोध रोष 8. प्रियता, सौन्दर्य 9. संगीत के राग या स्वरग्राम मूलरागः छः हैं भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा । श्रीरागः षेपरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः—भरत । दूसरे लेखकों ने भिन्न-भिन्न नाम बतलाये हैं, प्रत्येक राग के अनुरूप उनके साथ छः छः रागिनियाँ होती हैं, इस प्रकार सबको मिलाकर संगीत के अनेक राग हो जाते हैं) 10. संगीत की संगति, संगीतमाधुर्य—तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, अहो रागपरिवाहिणी गीतिः—श० ५ 11. खेद, शोक 12. लालच, ईर्ष्या । सम०—आत्मक (वि०) जोशीला, -चूर्णः 1. खैर का वृक्ष 2. सिन्दूर 3. लाख 4. होली के उत्सव पर एक दूसरे पर फेंका जाने वाला गुलाल या अबीर 5. कामदेव,—द्रव्यम् रंगने वाला पदार्थ, रङ्गलेप, रङ्ग,—बन्धः भावना का प्रकटीकरण, (नाना प्रकार संवेगों के) उपयुक्त वर्णन से उत्पन्न रुचि- भावो भाव नुदति विषयाद्रागबन्धः स एव—मालवि० २।९, -युक्त(पुं०) लाल,—सूत्रम् 1. रङ्गीन धागा 2. रेशमी धागा 3. तराजू की डोरी ।

रागिन् (वि०) [राग+इनि] 1. रङ्गीन, रङ्गा हुआ 2. रङ्ग करने वाला, रङ्गलेप करने वाला 3. लाल 4. भावना और आवेश से पूर्ण, जोशीला 5. प्रेमपूरित 6. सावेश, स्नेहशील, श्रद्धानुरागपूर्ण, अभिलाषी, लालायित (समास के अन्त में), (पुं०) 1. चित्रकार 2. प्रेमी 3. स्वेच्छाचारी, कामासक्त, —णी 1. संगीत के स्वरग्राम की विकृतियों जिनमें से तीस या छत्तीस भेद गिनाये जाते हैं 2. स्त्रैणिनी, पुंश्चली, कामुकी ।

राघवः [रघोर्गोत्रापत्यम्-अण्] 1. रघुवंशी, रघु की संतान विशेषतः राम 2. एक प्रकार का बड़ा मच्छ—भामि० १।५५ ।

राङ्कव (वि०) (स्त्री०-वी) [रङ्कोरयं विकारो वा तल्लोमजातत्वात् अण्] रङ्कु नाम की हरिण जाति से सम्बन्ध रखने वाला, या इसके बालों से बना हुआ, ऊनी विक्रमांक० १८।३१, -वम् 1. हरिण के बालों से बनाया हुआ ऊनी कपड़ा, ऊनी, वस्त्र 2. कम्बल ।

राज् (स्वा० उभ० राजति-ते, राजित) 1. (क) चमकना, जगमगाना, शानदार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमुख होना—रेजे यद्गमयीव सा—भट्ट० ९।१७, राजन् राजति वीरवैरिवनिता वैधव्यदस्ते भुजः -काव्य० १०, रघु० ३।७, कि० ४।२४, ११।६: (ख) प्रतीत होना, झलक दिखाई देना,—तोयान्तर्भास्करावलीव रेजे मुनिपरम्परा—कु० ६।४९ 2. हुकूमत करना, शासन करना—प्रेर० (राजयति-ते) चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना । निस्—प्रेर० चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना, अलंकृत करना, देदीप्यमान करना—दिव्याश्चस्फुरद्रुचिदीधितिशिखानीराजितज्यं धनुः—उत्तर० ६।१८, नीराजयन्ति भूपालाः पादपीठान्तभूतलम्—प्रबो० २ 2. आरती उतारना, नीराजन करना (पूजा या सम्मान की दृष्टि के कारण जलते हुए दीपकों के थाल को घुमाना)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—नानायोधसमाकीर्णो नीराजितहयद्विपः काम० ४।६६ वि , 1. चमकाना, भामि० १।८८ 2. दिखाई देना, प्रतीत होना रघु० २।२०।

राज् (पुं०) [राज्+क्विप्] राजा, सरदार, युवराज।

राजकः [राजन्+कन्] छोटा राजा, मामूली राणा, कम् राजा या राणाओं का समूह, प्रभुसत्ता प्राप्त राजाओं का समुदाय सहते न जनोऽप्यवज्ञां किमु लोकाधिकधाम राजकम्—कि० २।४७, शि० १४।४३।

राजत (वि०) (स्त्री० ती) [रजत+अण्] चांदी का, चांदी का बना हुआ, शि० ४।१३, तम् चांदी।

राजन् (पुं०) [राज्+कनिन्, रञ्जयति रञ्ज् + कनिन् नि० वा] 1. राजा, शासक, युवराज, सरदार या मुखिया (तत्पुरुष समास के अन्त में 'राजन्' का बदल कर 'राज्' बन जाता है) वंगराजः, महाराजः आदि —तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्— रघु० ४।१२ 2. सैनिक जाति का पुरुष, क्षत्रिय शि० १४।१४ 3. युधिष्ठिर का नाम 4. इन्द्र का नाम 5. चन्द्रमा भामि० २।१२६ 6. यक्ष। समः —अङ्गनम् राजकीय कचहरी या दरबार, महल का आंगन, अधिकारिन्, अधिकृतः 1. राजकीय अधिकारी या अफ़सर 2. न्यायाधीश,—अधिराजः, इन्द्रः राजाओं का राजा, सर्वोपरि राजा, प्रमुख प्रभु, सम्राट्,—अनकः 1. बढ़िया राजा, छोटा राणा, 2. एक प्रकार की उपाधि जो पहले पूजनीय विद्वानों और कवियों को दी जाती थी, अपसदः अयोग्य या पतित राजा,—अभिषेकः राजा का राजतिलक,—अर्हम् अगर की लकड़ी, एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, —अर्हणम् राजकीय सम्मानसूचक उपहार,—आज्ञा राजा का अनुशासन, अध्यादेश, अथवा आदेश, —आभरणम् राजा का आभूषण, आवलिः,—ली राजकीय वंशावली, राजवंशावली, उपकरणम् (ब० व०) राजकीय साज-सामान, राजचिह्न,—ऋषिः (राज ऋषिः या राजर्षिः) राजकीय ऋषि, सन्तसमान राजा, क्षत्रिय जाति का पुरुष जिसने अपने पवित्र जीवन तथा सात्त्वमय भक्ति से ऋषि का पद प्राप्त किया हो। जैसे पुरूरवा, जनक और विश्वामित्र, —करः राजा को दिया जाने वाला शुल्क—कार्यम् राज्य का कार्य,—कुमारः युवराज,—कुल 1. राजकीय परिवार, राजा का कुटुम्ब 2. राजा का दरबार 3. न्यायालय (राजकुले कथ, या निविद् (त्रैर०) न्यायालय में किसी के विरुद्ध अभियोग चलाना, या नालिश करना) 4. राजा का महल 5. राज, महाराज (बोलने की सम्मानसूचक रीति), गामिन् (वि०) राज्याधीन या राजाधिकार में होने वाली सम्पत्ति आदि (जिस सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न हो),—गृहम् 1. राजकीय निवास, राजा का महल 2. मगध के मुख्य नगर या राजधानी का नाम (जो पाटलिपुत्र से लगभग ७५ या ८० मील की दूरी पर स्थित है)—चिह्नम् राजचिह्न, राजाधिकार या राजशक्ति,—तालः, तालो सुपारी का पेड़,—दण्डः 1. राजा के हाथ का डंडा 2. राज शासन या राजाधिकार 3. राजाद्वारा दिया गया दण्ड,—दन्तः (दन्तानो राजा) आगे का दाँत वे० ७।४६,—दूतः राजदूत, राजा का प्रतिनिधि,—द्रोहः राजा के विरुद्ध विश्वासघात, राजसत्ता के विरुद्ध आन्दोलन, राजविद्रोह,—द्वार् (स्त्री०), द्वारम् राजा के महल का मुख्य द्वार या फाटक,—द्वारिकः राजमहल का दरबानी वान्,—धर्मः 1. राजा का कर्तव्य 2. राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला नियम या विधि (प्रायः ब० व० में)

—धानम्,—धानिका,—धानी राजा का निवास स्थान, मुख्य नगर, राजधानी, शासन के कार्यालय का स्थान,—रघु० २।२०, धुर् (स्त्री०), धुरा शासन का उत्तर दायित्व या भार, नयः,—नीतिः (स्त्री०) राज्य का प्रशासन, सरकार का प्रशासन, राजनय, राजनीतिज्ञता, नीलम् पन्ना, मरकत मणि,—पट्टः पटिया हीरा,—पथः,—पद्धतिः (स्त्री०)—राज-मार्ग दे०, पुत्रः 1. राजकुमार, युवराज 2. क्षत्रिय, सैनिक जाति का पुरुष 3. वृक्षगंध, पुत्री राजकुमारी, पुरुषः 1. राजा का सेवक 2. मन्त्री, प्रेष्यः राजा का सेवक (—ष्यम्) राजा की सेवा (अधिक शुद्ध 'राजप्रैष्य'), बीजिन्, - वंश्य (वि०) राजा की सन्तान, राजवंशज, भृतः राजा का सिपाही, भृत्यः 1. राजा का सेवक या मंत्री 2. कोई सरकारी अधिकारी, भोगः राजा का भोजन, खाना, भोज्यं राजा का विदूषक या हँसोकड़ा, मात्रधरः, मन्त्रिन् (पुं०) राजा का सलाहकार,—मार्गः 1. मुख्य मार्ग, मुख्य सड़क, राजकीय या मुख्य पथ, मुख्य रास्ता या प्रधान मार्ग 2. राजाओं की कार्य-विधि प्रणाली, या रीति, मुद्रा राजा की मोहर, यक्ष्मन् (पुं०) क्षयरोग, फुफ्फुसीय क्षयरोग, तपेदिक,—राजयक्ष्मणा परिगृहीतस्य कामयानसंबन्धया तुलम् रघु० १६।२५, राजयक्ष्मेव रोगाणां समूहः स महीभृताम्— शि० २।९६ (इस शब्द की व्याख्या के लिए दे० यक्ष्मन् ऊपर और शि० १३।२९ पर),—यानम् राजा की सवारी, पालकी, योगः 1. जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों का ऐसा संस्थापन जिससे उस व्यक्ति के राजा होने का संकेत मिले 2. धार्मिक चिन्तन का एक सरल योग (राजाओं द्वारा अभ्यास करने योग्य) जो हठ योग (दे०) जैसे और कठोर योगों से भिन्न है,- रङ्गम् चांदी, -राजः 1. प्रमुख राजा, सर्वोपरि प्रभु, सम्राट्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. कुबेर का नाम--अलबांपेण्डिरयमनुचरो राज-राजस्य दर्यो--मेघ० ३ 3. चन्द्रमा, **रोनिः** (स्त्री०) कामा, फूल, **लक्षणम्** 1. मनुष्य के शरीर पर कोई ऐसा चिह्न, जो उसकी भावी राजकीयता को प्रकट करे 2. राजकीय चिह्न, राजचिह्न, राज-शक्ति,--**लक्ष्मीः,श्रीः** (स्त्री०) राजा का सौभाग्य या समृद्धि, (देवी का पर्यायवाची) राजा की कीर्ति या महिमा--रघु० २।७, **वंशः** राजाओं का वंश, --**वंशावली** राजाओं की वंशावली, राजाओं का वंश-विवरण, **विद्या** 'राजकीय नीति' राजा का कौशल, राज्य की नीति, राजनीति (नु० राजनय) इसी प्रकार 'राजशास्त्रम्'--**विहारः** राजकीय शिक्षालय,--**शासनम्** राजा का अनुशासन, **शृङ्गम्** सुनहरी डंडी का राज-कीय छाता, **संसद्** (स्त्री०) न्यायालय,--**सदनम्** महल, **सर्षपः** काली सरसों, **सायुज्यम्** प्रभुसत्ता, --**सारसः** मोर, --**सूयः**, --**यम्** एक बृहद् यज्ञ जिसका अनुष्ठान शक्तवर्ती राजा (इसमें सहायक राजा लोग भी भाग लेते हैं) इसलिए करते हैं जिससे कि प्रकट हो कि उनका राजतिलक बिना किसी विरोध के सर्व-सम्मति से हो रहा है --राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति श०१०, नु० 'सम्राट' से भी, **स्कन्धः** घोड़ा, **स्वम्** 1. राजकीय सम्पत्ति 2. राजा को दिया जाने वाला शुल्क, मालगुजारी, **हंसः** मराल (श्वेत-रंग का हंस जिसकी चोंच और टांगें लाल हों)

सपदि रचयन्ति नलिनि भवती राजहंसाः सहायाः --मेघ० ११, --**हस्तिन्** (पुं०) राजकीय हाथी अर्थात् शाही तथा सुन्दर हाथी।

राजन्य (वि०) [राजन्+यत्] शाही, राजकीय, **न्यः** 1. क्षत्रिय जाति का पुरुष, राजकीय व्यक्ति--राजन्यान् स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमने रघु० ४।८७, ३।३८, मेघ० ४८ 2. श्रेष्ठ या पूज्य व्यक्ति।

राजन्यकम् [राजन्य+कन्] क्षत्रियों या योद्धाओं का समूह।

राजन्वत् (वि०) [राजन्+मतुप्, वत्वम्] न्यायपरायण या उत्तम राजा द्वारा शासित (देश के रूप में, यह शब्द राजवत्--केवल राजा से युक्त--शब्द से भिन्न है) सुराजि देशे राजन्वान् स्यात् ततोऽन्यत्र राजवान् अमा०, राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम् रघु० ६।२५, कथा० ३१६।

राजस (वि०) (स्त्री०-सी) [रजसा निर्मितम्--अण्] रजोगुण से प्रभावित या सबद्ध, रजोगुण से युक्त --ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः भग० १४।१८, ७।१२, १७।२।

राजसात् (अव्य०) [राजन्+सात्] राज्य में सम्मिलित या राजा के अधिकार में।

राजिः-जी (स्त्री०) [राज्+इन् या ङीष्] धारी, रेखा, पंक्ति, कतार सर्वे पण्डितराजराजितिलकेनाकारि लोकोत्तरम्--भामि० ४।४४, **दानराजिः**--रघु० २।७, कि० ४।५।

राजिका [राजि+कन्+टाप्] 1. रेखा, पंक्ति, कतार 2. खेत 3. काली सरसों 4. सरसों (एक परिमाण, तोल)।

राजिलः [राज्+इलच्] सांपों की एक सरल जाति जिसमें विष नहीं होता---कि महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते --रघु० ११।२७, तु० 'डुडुभ'।

राजीवः [राजी दलराजी अस्त्यस्य अ] 1. एक प्रकार का हरिण 2. सारस 3. हाथी,--**वम्** नील कमल, कु० ३।४६। सम०--**अक्ष** (वि०) कमल जैसी आंखों वाला।

राज्ञी [राजन्+ङीप्, अकारलोपः] रानी, राजा की पत्नी।

राज्यम् [राज्ञो भावः कर्म वा, राजन्+यत्, नलोपः] 1. राजकीयता, प्रभुसत्ता, राजकीय अधिकार--राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः --रघु० २।५३, ४।१ 2. राजधानी, राज्य, साम्राज्य रघु० १।५८ 3. हकूमत, राज्य, शासन, राज्य का प्रशासन। सम०--**अङ्गम्** राज्य का संविधायी सदस्य, राजप्रशासन की आवश्यक सामग्री, यह बहुधा सात बतलाई जाती है स्वाम्य-मात्यसुहृत्कोषराष्ट्रदुर्गबलानि च--अमर०, **अधिकारः** 1. राज्य पर अधिकार 2. प्रभुसत्ता का अधिकार, --**अपहरणम्** हड़पना, बलात् ग्रहण करना, **अभि-षेकः** राजा का राजतिलक या सिंहासनारोहण,--**करः** वह शुल्क जो एक अधीनस्थ राजा द्वारा दिया जाता है, **च्युत** (वि०) गद्दी से उतारा हुआ, **सिंहासन**--च्युत, **तन्त्रम्** शासनविज्ञान, प्रशासन पद्धति, राज्य का शासन या प्रशासन मुद्रा० १, **धुरा**, --**भारः** शासन का जुआ, सरकार का उत्तरदायित्व या प्रशा-सन, --**भङ्गः** प्रभुसत्ता का विनाश, **लोभः** उपनिवेश बनाने की इच्छा, प्रादेशिक वृद्धि की इच्छा,--**व्यव-हारः** प्रशासन, सरकारी काम-काज,--**सुखम्** राजकीय-माधुर्य।

राढा (स्त्री०) 1. आभा 2. बंगाल के एक जिले का नाम, उसकी राजधानी गौड़ राष्ट्रमनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राढापुरी प्रदो० २।

रात्रिः-त्री (स्त्री०) [रांति सुखं भयं वा रा+त्रिप् वा ङीप्] रात, रात्रिसेवा मतिमतां वर मुञ्च शय्याम् रघु० ५।६३, दिवा ज्ञाकरवाङ्कीता रात्रौ तरति नर्मदाम्। सम०--**अटः** 1. बेताल, पिशाच, भूत-प्रेत 2. चोर, **अन्ध** (वि०) जिसे रात को दिखाई न दे, --**करः** चन्द्रमा,--**चरः** ('रात्रिचर' भी) (स्त्री० री) 1. निशाचर, डाकू, चोर 2. पहरेदार, आरक्षी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौकीदार 3. पिशाच, भूत, प्रेत—(तं) घातं वने रात्रिचरो दुष्टोके—भट्टि० २।२३, —चर्या 1. रात में इधर उधर घूमना 2. रात को होने वाला कार्य या संस्कार, —जम् तारा, नक्षत्रपुंज, —जलम् ओस, —जागरः 1. रात को पहरा देना, रात को जागते रहना, रात में बैठे रहना—रघु० १९।३४ 2. कुत्ता, —तरा आधी रात, मध्यरात्रि, —पुष्पम् कुमुद (जो रात को ही खिलता है), —योगः रात का आ जाना, रक्षः, —रक्षकः पहरेदार, रखवाला,—रागः अंधकार, घना अंधेरा,—वासस् (नपुं०) 1. रात की वेशभूषा 2. अंधकार विगमः रात का अंत, दिन का निकलना, पौ फटना, प्रभात का प्रकाश—वेदः—वेदिन् (पुं०) मुर्गा।

रात्रिन्दिवम्, रात्रिन्दिवा (अव्य०) [द्व० स०] रात दिन, लगातार, अनवरत —रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति —श० ५।४।

रात्रिन्दिव (वि०) [रात्रिम्+मन्+खश्] रात की भांति दिखाई देने वाला (जैसे दुर्दिन या मेघाच्छादित दिन हो) तु० 'रजनिमन्य'।

राद्ध (भू० क० कृ०) [राध् कर्तरि कर्मणि वा क्त] 1. आराधित, प्रसादित, मनाया गया 2. कार्यान्वित सम्पन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित 3. पकाया हुआ, (खाना) राधा हुआ 4. तैयार किया हुआ 5. प्राप्त किया हुआ हासिल किया हुआ 6. सफल, सौभाग्यशाली, प्रसन्न 7. जादू की शक्ति से पूर्ण, दे० राध्। सम०—अन्तः सिद्ध या स्थापित तथ्य, प्रदर्शित उपसंहार या सचाई, अन्तिम निर्णय, सिद्धांत, मत सर्वदैनाशिकराद्धान्तो नितरामनपेक्षितव्य इतीदानीमुपपादयामः शारी०, —अभित (वि०) प्रदर्शित, प्रमाणों द्वारा स्थापित, तर्कसिद्ध।

राध् i. (स्वा० पर० राध्नोति, राद्ध; इच्छा० रिरात्सति, परन्तु 'मारना चाहता है' के लिए रित्सति) 1. राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना 2. सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, पूरा करना, अनुष्ठान करना, निष्पन्न करना 3. प्रस्तुत करना, तैयार करना 4. क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, मार डालना, उखाड़ना बानरा भूयसात् रेधुः—भट्टि० १४।१९।

ii. (दिवा० पर० राध्यति, राद्ध) 1. अनुकूल या दयालु होना, 2. सम्पन्न, या पूर्ण होना 3. सफल होना, कामयाब होना, समृद्ध होना 4. तैयार होना 5. मार डालना, नष्ट करना, प्रेर० (राधयति—ते) 1. राजी करना 2. सम्पन्न करना, पूरा करना, अनु—, आराधना करना, पूजा करना, मनाना, अप—, 1. नष्ट करना, ठेस पहुँचाना, पाप करना (संब० या अधि० के साथ, अथवा स्वतंत्र रूप से) अस्मिन्कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला—श० ४, अपराद्धोऽस्मि तत्र भवतः कण्वस्य—श० ७ 2. चूक जाना, लक्ष्यवेध न कर सकना, शि० २।२७ 3. सताना, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना—न तु शीष्मस्यैव सुभगमपराद्धं युक्तमिदं —श० ३।९, आ—, आराधना करना (प्रेर०) 1. राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना परेषां चेतांसि प्रतिदिवसमाराध्य बहुधा —भर्तृ० ३।३४, २।४, ५ 2. पूजा करना, सेवा करना मेघ० ४५, वि—, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, रुष्ट करना, ठेस पहुँचाना, —क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः—शि० २।४३, विराद्धः एवं भवता विराद्धा बहुधा च नः—२।४१।

राधः [राध्+असुन्] वैशाख का महीना।

राधा [राध्नोति साध्नोति कार्याणि—राध्+अच्+टाप्] 1. समृद्धि, सफलता 2. प्रसिद्ध गोपिका जिस पर कृष्ण भगवान् का बड़ा अनुराग था (इसकी छद्मप्रीति को जयदेव ने अपने गीतगोविन्द की रचना द्वारा अमर कर दिया है)—तदिमं राधे गृहं प्रापय—गीत० १ 3. अविवाह की पत्नी तथा कर्ण की पालिका माता का नाम 4. विशाखा नाम का नक्षत्र 5. बिजली।

राधिका दे० 'राधा'।

राधेयः [राधा+ढक्] कर्ण का विशेषण।

राम (वि०) [रम् कर्तरि घञ्, णे वा] 1. सुहावना, आनंदप्रद, हृदयंगम 2. सुन्दर, प्रिय, मनोहर 3. मलिन, धूमिल, काला 4. श्वेत,—मः 1. तीन प्रसिद्ध व्यक्तियों का नाम—(क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जो कृष्ण का भाई था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र या सीताराम, रामायण का नायक। [जब राम बालक ही थे तो विश्वामित्र, दशरथ की अनुमति लेकर लक्ष्मण समेत राम को, राक्षसों से अपने यज्ञों की रक्षा करने के लिए अपने आश्रम में ले गये। राम ने अनायास ही उन सब राक्षसों को मार गिराया और पुरस्कार के रूप में ऋषि से कई चमत्कारयुक्त अस्त्र प्राप्त किये। उसके पश्चात् राम विश्वामित्र के साथ जनक की राजधानी मिथिला नगरी गये, वहां शिव के धनुष को तोड़ने का आश्चर्यजनक कारनामा दिखाकर सीता से विवाह किया और वापिस अयोध्या आ गये। यह देखकर कि राम ही राज्य का उपयुक्त अधिकारी हो रहा है, दशरथ ने उसे अगला युवराज बनाने का निश्चय किया, परन्तु ठीक राज्याभिषेक के दिन दशरथ को विमाता कैकेयी ने, अपनी दुष्ट दासी मन्थरा के द्वारा भड़काये जाने पर, दशरथ को अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वरदान पूरा करने के लिए कहा, एक से उसने रामको चौदह वर्ष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का निर्वासन तथा दूसरे से अपने प्रिय पुत्र भरत का युवराज के रूप में राज्याभिषेक मांगा। राजा को इस मांग से भयानक धक्का लगा, उसने कैकेयी को उन दुष्ट मांगों से हटाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु अन्त में उसे झुकना पड़ा। तुरन्त ही आज्ञाकारी पुत्र राम अपनी सुन्दर तरुण पत्नी सीता तथा भक्त भ्राता लक्ष्मण के साथ निर्वासित होने को तैयार हो गये। उसका निर्वासन काल बड़ी-बड़ी घटनाओं से भरा हुआ है, दोनों भाइयों ने कई शक्तिशाली राक्षसों का काम तमाम कर दिया, फलतः रावण की द्वेषाग्नि भड़क उठी। दुष्ट रावण ने मारीच की सहायता से राम की शक्ति को देखने के लिए उसकी प्रिय पत्नी सीता का बलात् अपहरण किया। सीता का पता लगाने के लिए अनेक निष्फल पृच्छाओं के पश्चात् हनुमान् ने यह निश्चय किया कि सीता लंका में है, और फिर उसने राम को प्रेरित किया कि लंका के ऊपर चढ़ाई की जाय तथा दुष्ट रावण को मौत के घाट उतारा जाय। वानरों ने समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया जिसके ऊपर से अपनी असंख्य सेना के साथ पार होकर राम लंका में प्रविष्ट हुए तथा उसे जीत कर सब राक्षसों समेत रावण का वध किया। उसके पश्चात् राम अपनी पत्नी सीता, तथा अन्य युद्ध-मित्रों के साथ, विजयपताका फहराते हुए, वापिस अयोध्या आये जहां वशिष्ठ द्वारा उनका राज्याभिषेक किया गया। राम ने बहुत वर्षों तक न्यायपूर्वक राज्य किया उसके पश्चात् कुश युवराज बनाया गया। राम, विष्णु भगवान् का सातवां अवतार माना जाता है, तु० जयदेव—विहरसि दिक्षु रणे दिक्पति-कमनीय दशमुखमौलिबलिं रमणीयं। केशव धृतरघुपतिरूप जय जगदीश हरे—गीत० १। सम०—अनुजः एक प्रसिद्ध सुधारक, वेदान्ती संप्रदाय के प्रवर्तक तथा कई पुस्तकों के प्रणेता, वैष्णव,—अयनम् (णम्) 1. राम के साहसिक कार्य 2. वाल्मीकिप्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें सात काण्ड तथा २४००० श्लोक हैं। गिरिः एक पहाड़ का नाम,—(चके) स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु—मेघ० १, —चन्द्रः,—भद्रः दशरथ के पुत्र राम का नाम—दूतः, हनुमान् का नाम, —नवमी चैत्रशुक्ला नवमी, राम की जयंती,—सेतुः 'राम का पुल' भारत और लंका को मिलाने वाला रेत का पुल जिसे आजकल 'एडम्स ब्रिज' कहते हैं।

रामठः,-ठम् [रम्+अठ, धातोर्द्वित्वं] हींग।

रामणीयक (वि०) (स्त्री० की) [रमणीय+कन्] प्रिय, सुन्दर सुखद, -कम् प्रियता, सौन्दर्य -सा रामणीयकमनिधेरविदेत्ता वा मा० १।२१, ९।४७, तरुणीस्तन एव मणिहारावलिरामणीयकम्—नै० २। ४४, कि० १।३३ ४।४।

रामा [रमतेऽनया रम् करणे घञ्] 1. सुन्दरी स्त्री, मनोहारिणी तरुणी—अथ रामा विकसन्मुखी बभूव -- भामि० २।१६, ३।६ 2. प्रिया, पत्नी, गृहस्वामिनी —रघु० १२।२३ १४।२७ 3. स्त्री,—रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम्—ऋतु० ६।२५ 4. नीच जाति की स्त्री 5. सिंदूर 6. हींग।

राम्भः [रम्भा+अण्] बांस की लाठी जिसे ब्रह्मचारी या संन्यासी रखते हैं।

रावः [रु+घञ्] 1. क्रन्दन, चीत्कार, चीख, दहाड़, किसी जानवर की चिंघाड़ 2. शब्द, ध्वनि—मुरज-वाद्यराव:—मालवि० १।२१, मधुरिपुरावम्—गीत० ११।

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु+णिच्+ल्युट्]

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु+णिच् + ल्युट्] क्रन्दन करने वाला, चीखने वाला, दहाड़ने वाला, शोक के कारण रोने धोने वाला, -णः एक प्रसिद्ध राक्षस, लंका का राजा, राक्षसों का मुखिया (रावण के पिता का नाम विश्रवा तथा माता का कैकिसी या कैकसी था, इसी लिए वह कुबेर का सौतेला भाई था। पुलस्त्य ऋषि का पौत्र होने के कारण वह पौलस्त्य कहलाता है। मूल रूप से लङ्का पर पहले कुबेर का अधिकार था, परन्तु रावण ने उसे वहां से निकाल दिया और लंका को अपनी राजधानी बनाया। उसके दस सिर (इसीलिए वह दशग्रीव, दशवदन, आदि कहलाता है) और बीस भुजाएँ थीं, कुछ के अनुसार उसकी टांगें भी चार थी (तु० रघु० १२।८८ और उस पर मल्लि०) ऐसा वर्णन मिलता है कि रावण ने ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए दस हजार वर्ष तक कठोर तपश्चर्या की; और प्रति हजार वर्ष के पश्चात् अपना सिर ब्रह्मा के आगे प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने नौ सिर प्रस्तुत किये और दसवां सिर प्रस्तुत करने लगा ही था कि ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि उसकी मृत्यु न मनुष्य द्वारा होगी और न देवता द्वारा। इस शक्ति से सम्पन्न होकर वह बड़ा अत्याचार करने लगा, उसने लोगों को सब प्रकार से सताना आरम्भ किया। उसकी शक्ति इतनी अधिक हो गई कि देवता भी उसके घरेलू नौकरों की भांति उसकी सेवा करने लगे। उसने अपने समय के प्रायः सभी राजाओं को जीत लिया, परन्तु कार्तवीर्य ने उसे कारागार में डाल दिया जब कि रावण ने उसके देश पर आक्रमण किया। एक बार उसने कैलास पर्वत उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु शिव ने ऐसा दबाया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कि उसकी अंगुलियाँ कुचल गईं। फलतः उसने शिव की एक हजार वर्ष तक इतने ऊँचे स्वर से स्तुति की कि उसका नाम रावण पड़ गया, और उसे शिव ने उस पीड़ा से मुक्त कर दिया। परन्तु यद्यपि वह इतना बलवान् और अजेय था, तो भी उसका अन्तिम दिन निकट आ गया। राम जिन्होंने इस राक्षस का वध करने के लिए ही विष्णु का अवतार धारण किया था, अपना निर्वासित जीवन जंगल में रहकर बिता रहा था। एक दिन रावण ने उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया और उससे अपनी पत्नी बन जाने का अनुरोध करने लगा--परन्तु उसने रावण की प्रार्थना को ठुकराया और वह उसके यहाँ रहती हुई भी पवित्रता, सती साध्वी बनी रही। अन्त में राम ने अपनी वानरसेना की सहायता से लंका पर चढ़ाई की और रावण तथा उसकी सेना का काम तमाम किया। वह राम का उपयुक्त शत्रु था और इसीलिए यह कहावत प्रसिद्ध हुई--रामरावणयोर्युद्धम् रामरावणयोरिव)।

रावणि: [रावणस्यापत्यम्-इञ्] 1. इन्द्रजित् का नाम, --राक्षसेश्वरव्यो योद्धुमारब्ध च महीपतः --भट्टि० १५।७८, ८९ 2. रावण का कोई पुत्र--भट्टि० १५।७९, ८०।

राशि: [अश्नुते व्याप्नोति-अश्+इञ्, धातोरुकारागमश्च] 1. ढेर, अंबार, संग्रह, परिभाषा, समुदाय धनराशि:, तोयराशि:, यशोराशि: आदि 2. अंक या संख्याएं जो अंकगणित की किसी विशेष प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त की जायें (जैसे जोड़ना, गुणा करना आदि) 3. ज्योतिश्चक्र, बारह राशियाँ। सम०-- **अधिप**: कुण्डली में किसी विशेष घर का स्वामी, **चक्रम्** तारामण्डल, बारह राशियाँ, **त्रयम्** त्रैराशिक गणित, **-भाग**: किसी राशि का भाग या अंश,-- **भोग**: सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का राशिचक्र में से होकर मार्ग अर्थात् किसी ग्रह का किसी राशि पर रहने का काल।

राष्ट्रम् [राज्+ष्ट्रन्] 1. राज्य, देश, साम्राज्य--राष्ट्रदुर्बलानि च--अमर०, मनु० ७।१०९, १०।६१ 2. जिला, प्रदेश, देश, मण्डल जैसा कि 'महाराष्ट्र' में --मनु० ७।३२ 3. अधिवासी, जनता, प्रजा--मनु० ९।२५४, **-ष्ट्र**:--**ष्ट्रम्** कोई राष्ट्रीय या सार्वजनिक संकट।

राष्ट्रिक: [राष्ट्र+ठक्] 1. किसी राज्य या देश का वासी मनु० १०।६१ 2. किसी राज्य का शासक, राज्यपाल।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय (वि०) [राष्ट्रे भव: यत्] राज्य से सम्बन्ध रखने वाला, य: 1. राज्य का शासक, राजा --जैसा कि 'राष्ट्रियस्याल: में, --मृच्छ० ९ 2. राजा का साला (रानी का भाई) श्रुतं राष्ट्रियमुखाद् यावदङ्गुलीपर्वदर्शनम् श० ६।

रास् (भ्वा० आ० रासते) क्रंदन करना, चिल्लाना, किलकिलाना, शब्द करना, हुङ्कार करना।

रास: [रास्-घञ्] 1. होहल्ला, कोलाहल, शोरगुल 2. शब्द, ध्वनि 3. एक प्रकार का नाच जिसका अभ्यास, कृष्ण और गोपिकाएं करती थीं, विशेषतः वृन्दावन की गोपियाँ- -उत्सृज्य रासे रसं गच्छन्तीम् -वेणी० १।२, रासे हरिभिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृत परिहासम् गीत० २, १ भो। सम०- **क्रीडा, मण्डलम्** क्रीडामूलक नाच, कृष्ण और वृन्दावन की गोपिकाओं का वर्तुलाकार नाच।

रासकम् [रास+कन्] एक प्रकार का छोटा नाटक दे० सा० द० ५४८।

रासभ: [रासेः अभाच्] गधा, गर्दभ।

राहित्यम् [रहित+ष्यञ्] बिना किसी वस्तु के रहना, अभाव, किसी वस्तु का न होना।

राहु: [रह्-उ, उण्] एक राक्षस का नाम, विप्रचित्ति और सिंहिका का पुत्र, इसीलिए कई बार यह सैंहिकेय कहलाता है (जब समुद्रमंथन के परिणाम स्वरूप समुद्र से निकला अमृत देवताओं को परोसा जाने लगा तो राहु ने वेश बदलकर उनके साथ स्वयं भी अमृत पीना चाहा। परन्तु सूर्य और चन्द्रमा की इस षड्यन्त्र का पता लगा तो उन्होंने विष्णु को इस चालाकी का ज्ञान कराया। फलतः विष्णु ने राहु का सिर काट डाला, परन्तु चूंकि थोड़ा सा अमृत वह चख चुका था, तो उसका सिर अमर हो गया। परन्तु कहते हैं कि पूर्णिमा या अमावस्या को वे दोनों चन्द्र और सूर्य को अब भी सताते रहते हैं--तु० भर्तृ० २।३४। ज्योतिष में राहु भी केतु की भाँति समझा जाता है, यह आठवाँ ग्रह है, या चन्द्रमा का आरोही शिरोबिन्दु है) 2. ग्रहण, या ग्रस्त होने का क्षण। सम०- **ग्रसनम्**,--**ग्रास**:, --**दर्शनम्**,--**संस्पर्श**: (चाँद या सूर्य का) ग्रहण, --**सूतकम्** राहु का जन्म अर्थात् (चाँद या सूर्य का) ग्रहण याज्ञ० १।१४६ तु० मनु० ४।११०।

रि i (तुदा० पर० रियति, रीण) जाना, हिलना-जुलना।
ii (कथा० उभ० --दे० 'री')।

रिक्त (भू० क० कृ०) [रिच्+क्त] 1. खाली किया गया, साफ किया गया, रिताया गया 2. खाली, शून्य 3. से रहित, वञ्चित, के बिना 4. खोखला किया गया (जैसे हाथ की अंजलि) 5. दरिद्र 6. विभक्त, वियुक्त (दे० रिच्), **क्तम्** 1. खाली स्थान, शून्यक निर्वसिता 2. जंगल, उजाड़, बियाबान। सम०--**पाणि, हस्त** (वि०) खाली हाथ वाला, (फूल आदि के) उपहार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से रहित अहमपि देवीं प्रेक्षितुमरिस्तपाणिभंशमि मालवि० ४।

रिक्तक [वि०] [रिक्त+कन्] दे० 'रिक्त'।

रिक्ता [रिक्त+टाप्] चान्द्रमास के पक्ष की चतुर्थी, नवमी या चतुर्दशी का दिन।

रिक्थम् [रिच्+थक्] 1. दायभाग, उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति, मरने के पश्चात् विरासत में छोड़ी हुई सम्पत्ति बिभजेरन् सुता. पित्रोरूर्ध्वं रिक्थमृणं समम् - याज्ञ० २।११७, मनु० ९।१०४,—ननु गर्भः पित्र्यं रिक्थमर्हति - श० ६ 2. सम्पत्ति धनदौलत, सामान मनु० ८।२७, 3. सोना। सम० आवः, ग्राहः,—भागिन् (पुं०), -हरः,—हारिन् (पुं०) उत्तराधिकारी।

रिङ्ख्, **रिङ्ग्** (तुदा० पर० रिङ्खति, रिङ्गति) 1. रेंगना, दबे पाँव चलना 2. मन्दगति से चलना।

रिङ्गणम्, **रिङ्गनम्** [रिङ्ख्+(ग्)+ल्युट्] 1. रेंगना, पेट के बल चलना (गुडलियां चलना) 2. (सदाचार से) विचलित होना, उन्मार्गगामी होना।

रिच् (रुधा० उभ० रिणक्ति, रिङ्क्ते, रिक्त) 1. खाली करना, रिसाना, साफ करना, निर्मल करना —रिणच्मि जलधेस्तोयम् —भट्टि० ६।३६, आविर्भूते शशिनि तमसा रिच्यमानेव रात्रिः - विक्रम० १।८ 2. वञ्चित करना, विरहित करना (प्रायः भू० क० कृ०) दे० रिक्त, अति—, आगे बढ़ना, प्रगति करना, पीछे छोड़ देना (कर्म वा० में और अपा० के साथ) - गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते पंच० ४।८१, हि० ४।१३१,भग० २।३६, वाचः कर्मातिरिच्यते -"उपदेश से निदर्शन उत्तम है" एग्जांपल इज बैटर दैन प्रिसैप्ट Example is better than Precep) —उद्, 1. आगे बढ़ना, पीछे छोड़ देना, प्रगति करना 2. बढ़ाना, विस्तार करना,—व्यति बढ़ जाना, पीछे छोड़ना स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते - रघु० १०।३०।

ii (श्वा० चुरा० पर० रेचति, रेचयति, रेचित 1. विभक्त करना, वियुक्त करना, अलग-अलग करना 2. परित्याग करना, छोड़ना 3. सम्मिलित होना, मिलना, आ—, सिकोड़ना, खेल-खेल में चलना - आरेचितभ्रूचतुरैः कटाक्षैः—कु० ३।५।

रिटिः [रिं+टिन्] 1. एक प्रकार का बाजा 2. शिव के एक सेवक (गण) का नाम—तु० 'भृङ्गि (गी) रिटिः'।

रिणुः [रण्+उनु, पृषो० इत्वम्] शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी।

रिप् (तुदा० पर० रिपति, रिपित) 1. कटकटाने का शब्द करना 2. बुरा भला कहना, कलङ्क लगाना।

रिष् (म्वा० पर० रेषति, रिष्ट) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, ठेस पहुँचाना - तस्येहार्थो न रिष्यते—महा०, तेन यास्यत्सार्थं मार्गास्तेन गच्छन् न रिष्यते—मनु० ४।१७८ 2. मार डालना, नष्ट करना - भट्टि० ९।३१।

रिष्ट (भू० क० कृ०) [रिष्+क्त] 1. क्षतिग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ, 2. अभागा, -ष्टम् 1. उत्पात, क्षति, ठेस 2. बदकिस्मत, दुर्भाग्य 3. विनाश, हानि 4. पाप 5. सौभाग्य, समृद्धि।

रिष्टिः (स्त्री०) [रिष्+क्तिन्] दे० ऊ० 'रिष्टम्',—पुं० तलवार।

री । (दिवा० आ० रीयते) टपकना, बूंद-बूंद गिरना, रिसना, पसीजना, बहना।

ii (क्रया० उभ० रिणाति, रिणीते, रीण-प्रेर० रेपयति-ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3 हु हू करना।

रीज्या (स्त्री०) 1. निन्दा, झिड़की, कलंक 2. शर्म, हया।

रीतकः (पुं०) मेरु दण्ड, रीढ़ की हड्डी।

रीढा [रिह्+क्त+टाप्] अनादर, तिरस्कार, अपमान।

रीण (भू० क० कृ०) [री+क्त] टपका हुआ, बहा हुआ, बूंद-बूंद करके गिरा हुआ।

रीतिः (स्त्री) [री+क्तिन्] 1. हिलना-जुलना, बहना 2. गति, क्रम 3. धारा, नदी 4. रेखा, सीमा 5. प्रणाली, ढंग, तरीका, मार्ग, शैली, विधा, प्रक्रिया—रीतिं गिराममृतवृष्टिकरीं तदीयां—भामि० ३।१९, सर्वत्रैषा हिताहिता रीतिः—मोह० २, उक्तरीत्या, अनयैव रीत्या आदि 6. रिवाज, प्रथा, प्रचलन 7. शैली, वाक्यविन्यास—पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्था विशेषवत्। उपकर्त्री रसादीनां सा पुनः स्यात्चतुर्विधा। वैदर्भी चाथ गौडी च पाञ्चाली लाटिका तथा—सा० द० ६२४–५ 8. पीतल, कांसा (इस अर्थ में 'रीती' भी) 9. लोहे का जंग, मुर्चा 10 धातु के तल पर लगा जारेय।

रु (अदा० पर० रौति, रवीति, रुत) क्रंदन करना, दुहू करना, चिल्लाना, चीखना, जोर से बोलना, दहाड़ना (भक्खियों का) भनभनाना, शब्द करना-- कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्वितित्रम्—हि० १।८१, भट्टि० ३।१७, १२।७२, १४।२१, वि 1.क्रन्दन करना, विलाप करना शोक में रोना—ननु सहचरी दूरे मत्वा विरौषि समुत्सुकः - विक्रम० ४।२०, भट्टि० ५।५४, ऋतु० ६।२७, 2. कोलाहल करना, शोर मचाना - न स विरौति न चापि स शोभते -पंच० १।७५, जीर्णत्वाद् गृहस्थ विरौति कपाटः—मृच्छ० ३, एते त एव गिरयो विरुवन्मयूराः—उत्तर० २।२३।

रुक्म (वि०) [रुच्+मन्, नि० कुत्वम्] उज्ज्वल, चमकदार, क्मः सोने का आभूषण—शि० १५।७८,-क्मम् 1. सोना, 2. लोहा। सम० कारकः सुनार,--पृष्ठक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(वि०) सोने के मुलम्मे से युक्त, सोना चढ़ा हुआ, —वाहनः द्रोणाचार्य का नामान्तर।

रुक्मिन् (पुं०) [रुक्म+इनि] भीष्मक के ज्येष्ठ पुत्र तथा रुक्मिणी के भाई का नाम।

रुक्मिणी [रुक्मिन्+ङीप्] विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री का नाम (रुक्मिणी की सगाई रुक्मिणी के पिता ने शिशुपाल से कर दी थी, परन्तु रुक्मिणी गुप्त रूप से कृष्ण से प्रेम करती थी। उसने कृष्ण को एक पत्र भेज कर प्रार्थना की कि उसका अपहरण कर लिया जाय, बलराम सहित कृष्ण आया और रुक्मिणी के भाई को युद्ध में परास्त कर रुक्मिणी को उठा कर ले गया। रुक्मिणी से कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जन्म हुआ)।

रुक्ष (वि०)=रूक्ष, दे०।

रुग्ण (भू० क० कृ०) [रुज्+क्त] 1. टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट 2. व्यर्थीकृत 3. झुका हुआ, वक्रीकृत 4. क्षति ग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 5. रोगी, बीमार (दे० रुज्)। सम०—रव (वि०) जिसका आक्रमण रोक दिया गया हो, जिसका धावा विफल कर दिया गया हो।

रुच् (स्वा० आ० रोचते, रुचित) 1. चमकना, सुन्दर या शानदार दिखलाई देना, जगमगाना—रुरुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमाः—शि० ६।४६, मनु० ३।६२ 2. पसन्द करना, (अन्य व्यक्तियों से) प्रसन्न होना, (वस्तुओं से) प्रसन्न होना, रुचिकर होना; (प्रसन्न व्यक्ति के लिए संप्र० तथा वस्तु के लिए कर्तृ०)—न मज्जो रुरुचिरे रमणीभ्यः—कि० ९।३५, यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत् तस्य सुन्दरम् · हि० २।५३, कई बार व्यक्ति के लिए संब०,—दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्-मृच्छ० १।११, प्रेर०—(रोचयति-ते) पसन्द कराना, रुचिकर या सुहावना करना—कु० ३।१६,—इच्छा० (रुरु-रोचिषते) पसन्द करने की इच्छा करना, अभि—, पसन्द करना, रुचिकर होना—यदभिरोचते भवते—विक्रम २, प्र—, 1. बहुत चमकना 2. पसन्द किया जाना, वि० चमकना, जगमगाना—रघु० ६।५, १७।१४, भट्टि० ८।६६।

रुच, रुचा (स्त्री०) [रुच्+क्विप्, रुच्+टाप्] 1. प्रकाश, कान्ति, उज्ज्वलता,—क्षणदासु पत्र च रुचेकतां गताः—शि० १३।५६ ९।२३, २५, शिखरमणिरुचः कि० ५।४३, मेघ० ४८ 2. रङ्ग, छवि (समास के अन्त में) चलयन्मृगशब्दस्तालकान् रघु० ८।५३, कु० ३।६५, कि० ५।४५ 3. अभिरुचि, इच्छा।

रुचक (वि०) [रुच्+क्वुन्] 1. रुचिकर, सुखद 2. क्षुधा-वर्धक या भूख बढ़ाने वाली (औषधि) 3. तीक्ष्ण, जर्परा, —कः 1. नीबू 2. कबूतर, कम् 1. दांत 2. सोने का आभूषण विशेषकर हार 3. पौष्टिक या पाचनशक्ति-वर्धक 4. माला, हार 5. काला नमक।

रुचा दे० 'रुच्'।

रुचिः (स्त्री०) [रुच्+कि]। प्रकाश, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता,—रुचिमिन्दुरले करोत्यजः परिपूर्णेन्दुरुचिर्मही-पतिः—शि० १६।७१, रघु० ५।६७, मेघ० १५ 2. प्रकाश किरण जैसा कि 'रुचिभर्तृ' में 3. छवि, रङ्ग, सौन्दर्य बहुधा समास के अन्त में—पटलं बर्हिबर्हलपहकरुचि —शि० ९।१९ 4. स्वाद, मजा —जैसा कि 'रुचिकर' में 5. सुस्वाद, भूख, क्षुधा 6. कामना, इच्छा, तृप्ती,—स्वयम्वा स्वेच्छा से, खुशी से 7. अभिरुचि, स्वाद—विमार्गगायाश्च रुचिः स्वकान्ते—भामि० १।१२५, 'अभिरुचि या प्रेम' —न स क्षितीशो रुचये बभूव, भिन्नरुचिर्हि लोकः रघु० ६।३०, नाटचं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् मालवि० १।४; 'खलेषा' 'व्यस्त' या 'अनुरक्त' के अर्थ में प्रयोग बहुधा समास के अन्त में हिंसारुचेः मा० ५।२९ 8. प्रणयोन्माद, किसी की बात में लवलीनता। सम०—कर (वि०) 1. स्वादिष्ट, चटपटा, मजेदार 2. इच्छा का उत्तेजक 3. पाचनशक्तिवर्धक, पौष्टिक,—भर्तृ (पुं०) 1. सूर्य- शि० ९।१७ 2 पति।

रुचिर (वि०) [रुचि राति ददाति—रुच्+किरच्] 1. उज्ज्वल, चमकदार, प्रकाशमान, जगमगाता, —हेम-रुचिराम्बर चौरः १४, कनकरुचिरम्, रुक्मरुचिरम् आदि 2. स्वादिष्ट, मजेदार 3. मधुर, ललित 4. क्षुधा-वर्धक, भूख बढ़ाने वाला 5. पुष्टिदायक, बलवर्धक, —रा 1. एक प्रकार का पीला रंग 2. वृत्तविशेष दे० परिशिष्ट १, - रम् 1. केसर 2. लौंग।

रुच्य (वि०) [रुच्+क्यप्] उज्ज्वल, प्रिय आदि, दे० 'रुचिर'।

रुज् (तुदा० पर० रुजति, रुग्ण) 1. तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करना, नष्ट करना—रघु० ९।६३।१२।७३, भट्टि० ४।४२ 2. पीड़ा देना, क्षति पहुँचाना, अरक्षण करना, रोगग्रस्त करना राक्षसास्ते रोक्ष्यन्ति कपयो भीम-विक्रमाः - भट्टि० ८।१२० 3. झुकना।

रुज्, रुजा (स्त्री०) [रुज्+क्विप्, रुज्+टाप्] 1. भग, अस्थिभंग 2. पीड़ा, संताप, यातना, वेदना—अनिश-मपि मकरकेतुर्गात्रसंगं रुजमाददभिमतासु मे पुरः ३।४, क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी मालवि० ३।२, चरणं रुजापरिगतम् · ४।३ 3. बीमारी, व्याधि, रोग—रघु० ४९।५२ 4. थकावट, श्रम, प्रयत्न, कष्ट। सम० - प्रतिक्रिया प्रतिकार या रोग की चिकित्सा, इलाज, चिकित्सा का व्यवसाय,- भेषजम् औषध, सद्यस् (नपुं०) दिठौना, मल।

रुण्डः,-ण्डम् [रुड्+ड, रुण्ड्+अच् वा] सिर रहित शरीर, धड़मात्र, कबन्ध—वेल्लद्धेरवरुण्डमुण्डनिकरैर्वीरो विधत्ते भुवम्—उत्तर० ५।६, मा० ३।१७।

रुतम् [रु+क्त] क्रन्दन, किलकिलाना, दहाड़ना, शब्द

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, कोलाहल, (पक्षियों का) कूजना, (मक्खियों का) भनभनाना, पक्षि°, हंस°, कोकिल° अलि°। सम० -ज्ञः भविष्यवक्ता, नजूमी,—व्याजः 1. कूट-क्रंदन 2. स्वांग।

रुद् (अदा० पर० रोदिति, रुदित,--इच्छा० रुरुदिषति) 1. क्रंदन करना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना, आँसू बहाना निरावारं हा रोदिमि कथय केवामिह पुरः—गंगा० ४, अपि ग्राहा रोदिति अपि दलतिवज्रस्य हृदयम् --उत्तर० १।२८ 2. हूह करना, दहाड़ना, चिल्ली मारना, प्र---, फूट फूट कर रोना।

रुदनम्, रुदितम् [रुद्-ल्युट्, क्त वा] रोना, क्रन्दन करना, विलाप करना, शोक में रोना-धोना अत्यन्तमासी-दुदितं वनेऽपि— रघु० १४।६९, ७७, मेघ० ८४।

रुद्ध (भू० क० कृ०) [रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध, बाधायुक्त, विरोधी 2. घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, घेरा हुआ।

रुद्र (वि०) [रौदिति-रुद्-+-रक] भयानक, भयंकर, डरावना, भीषण,—द्रः 1. देवसमूह विशेष, (गिनती में ग्यारह), ऐसा माना जाता है कि शंकर या शिव के ही यह अपकृष्ट रूप हैं, शिव स्वयं इस समूह के मुखिया हैं रुद्राणां शंकरश्चास्मि भग० १०।२३, रुद्राणामपि मृर्धानः क्षत्रहुंकारशालिनः कु० २।२६ 2. शिव का नाम। सम० अक्षः एक प्रकार का वृक्ष, (अक्ष) इसी वृक्ष के फल के बीज, जिनसे रुद्राक्षमाला बनाई जाती है—भस्माद्धूलन भद्रमस्तु भवते रुद्राक्षमाले शुभम् - काव्य० १०,—आवासः 1. रुद्र का निवासस्थल, कैलास पर्वत 2. वाराणसी, 3. श्मशान -तु० पितृसदगोचरः।

रुद्राणी [रुद्र+ङीप्, आनुक्] रुद्र की पत्नी, पार्वती का नामान्तर।

रुन्ध् (रुधा० उभ० रुणद्धि, रुद्धे, रुद्ध,---इच्छा० रुरुत्सति —ते) 1. अवरुद्ध करना, ठहराना, गिरफ्तार करना, रोकना, विरोध करना, विघ्न डालना, बाधा डालना, मना करना इदं रुणद्धि मां पर्यायस्तः कूजितषट्पदम् —विक्रम० ४।२१, हृदयालोके नरपतिपथे—मेघ० ३७, ९१, प्राणापानगती रुध्वा०—भग० ४।२९ 2. थामना, संधारण करना, (गिरने से) बचाना, आशाबन्ध. कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि, मेघ० १० 3. बन्द करना, ताला लगाना, रोकना, भेड़ना, बन्द कर देना --अधि० के साथ, परन्तु कभी-कभी द्वितीया कर्म० के साथ —भट्टि० ६।२५, अजं रुणद्धिगाम्—सिद्धा० 4. बांधना, सीमित करना --व्याप्तं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते—भर्तृ० २।६ 5. घेरा डालना, घेरना, नाकेबन्दी करना--रुन्धन्तु वारणघटा नगरं मदीयाः -- मुद्रा० ४।१७ अरुणद् यवनः साकेतं-या-माध्य-मिकान् - महा०, भट्टि० १४।२९ 6. छिपाना, ढकना, ओझल करना, गुप्त करना 7. अत्याचार करना, सताना, अत्यन्त कष्ट देना; अनु---, (बहुधा प्रयोग ऐसा होता है मानो धातु दिवा० की है) 1. अवेक्षण करना, अभ्यास करना—मनु० ५।६३ 2. प्रेम करना, अनुरक्त होना - स्वधर्मंमनुरुध्यते —कि० ११।७८, नानुरोत्स्ये जगल्लक्ष्मीः--भट्टि० १६।२३ 3. आज्ञा मानना, अनुसरण करना, अनुरुध होना--नियति लोक इवानुरुध्यते—कि० २।१२, अनुरुध्यस्व चन्द्र-केतोर्वचनं—उत्तर० ५, मद्वचनमनुरुध्यते वा भवान् - कि० १८१ 4. स्वीकृति देना, सहमत होना, अनु-मोदन करना 5. प्रेरित करना, दबाव डालना, अव , 1. रोकना, अटकाना—शा० २।२ 2. बन्दी बनाना, कैद करना, बन्द करना (कभी-कभी दो कर्मों के साथ) —शोकं चित्तमवारुधत्—भट्टि० ६।९ 3. घेरा डालना, उप---, 1. अवरुद्ध करना, विघ्न डालना--उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्--शा० ४ 2. तंग करना, दुःखी करना, कष्ट देना - पौरास्तपोवनमुपरुन्धन्ति शा० १ 3. पार कर लेना, दबा देना रघु० ४।८३ 4. कैद करना, बन्दी बनाना, नियन्त्रण में रखना 5. छिपाना, ढक लेना, नि- ,1. अवरुद्ध करना, रोकना, विरोध करना बन्द करना- न्यरुध्यास्य पन्थानम्—भट्टि० १७।४९ १६।२०, मुच्छ० १।२२ 2. बन्दी बनाना, कैद करना —मनु० ११।७६, भग० ८।१२ 3. ढकना, छिपाना —मनु० १४।१६, प्रति--,अवरुद्ध करना, वि---,विरोध करना, अवरोध करना 2. विवाद करना, झगड़ना 3. भिन्नमत का होना, सम्--- ,1. अवरुद्ध करना, अटकाना, रोकना—स चैत्यं पयि संरुद्धः पशुभिर्वा रथेन वा- मनु० ८।२९५ 2. बाधा डालना, रुकावट डालना, रोकना—रघु० २।४३ 3. बलपूर्वक थामना, शृंखलाबद्ध करना- तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि--भर्तृ० २।१७ 4. अधिकार में करना, बलात् अभिग्रहण करना, पकड़ना -मनु० ८।३५।

रुधिरम् [रुध्+किरच्] 1. लहू 2. जाफरान, केसर, द: मंगलग्रह। सम०—अशनः 'खून पीने वाला' राक्षस, भूत-प्रेत,—आमयः रक्तस्राव, पायिन् (पुं०) पिशाच।

रुरुः [रौति रु+कुरु] एक प्रकार का हरिण--रघु० १।५१, ७२।

रुष् (तुदा० पर० रुषति] चोट पहुँचाना, जाते से मार डालना, नष्ट करना।

रुषत् (वि०) [रुष्+शतृ] चोट पहुँचाने वाला, अरुचि-कर, (शब्द आदि जो) बुरे लगें।

रुष् (दिवा० पर० रुष्यति—विरलप्रयोग-रुष्यते, रुषित, रुष्ट) रूसना, नाराज होना, क्रुद्ध होना—ततोऽरुष्यदत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दैन्य—भट्टि० १७।४०, मामुहो मा रूपोज्झना —१५।१६, ९।२०।
ii (भ्वा० पर० रोषति) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. नाराज करना, सताना।

रुष्, रुषा (स्त्री०) [रुष्+क्विप्, रुष्+टाप्] क्रोध, रोष, गुस्सा,—निर्बन्धसञ्जातरुषा रघु० ५।२१, प्रहर्त्तुर्व्यर्थनिर्बन्धरुषा हि सन्तः —१६।८०, १९।२०।

रुह् (भ्वा० पर० रोहति, रूढ) 1. उगना, फूटना, अंकुरित होना, उपजना—रूढरागप्रवालः—मालवि० ४।१, केसरैरपि रूढैः —मेघ० २३, क्षितिरपि रोहति तरः —भर्तृ० २।८७ 2. उपजना, विकसित होना, बढ़ना 3. उठना, ऊपर चढ़ना, उन्नत होना 4. पकना, (व्रण आदि को) स्वस्थ होना—प्रेर० (रोपयति ते, रोहयति···ते) 1. उगाना, पौधा लगाना, भूमि में (बीज) बखेरना 2. उठाना, उन्नत करना 3. सींचना, सुपुर्द करना, देखरेख में देना,—गुणवत्सुतरोपितश्रियः ---रघु० ८।११ 4. स्थिर करना, निर्देशित करना, जमाना -रघु० ९।२२, इच्छा० (रुरुक्षति) उगाने की इच्छा करना, - अधि , चढ़ना, सवार होना, सवारी करना --रघु० ७।३७, कु० ७।५२ (प्रेर०) उन्नत होना, ऊपर उठाना, बिठाना -रघु १९।४४, अव —, नीचे जाना, उतरना श० ७।८, आ —, चढ़ना, सवार होना, पकड़ लेना, सवारी करना, (आ पूर्वक रुह् धातु के अर्थ प्रयुक्त संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार के होते हैं—उदा० प्रतिज्ञाम् आरुह् वचन देना, प्रतिज्ञा करना, तुलाम् आरुह् समानता के स्तर पर होना, संशयं आरुह् जोखिम उठाना, सन्दिग्धावस्था में होना आदि), (प्रेर०) 1. उन्नत होना, उठाना 2. रखना, जमाना, निर्देशित करना 3. मढ़ना, थोपना, आरोपित करना 4. (धनुष पर) प्रत्यंचा चढ़ाना 5. नियुक्त करना, कार्य भार सौंपना, प्र —, उगना, अंकुरित होना—न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति –मुच्छ० ४।१७, वि···, उगना, अंकुर फूटना - रघु० २।२६, मुच्छ० १।९ (प्रेर०) (व्रण आदि का) स्वस्थ होना, सम् , उगना, रघु० ६।४७।

रुह्, **रुह** (वि०) (समास के अन्त में) [रुह्+क्विप्, क का] उगा हुआ या उत्पन्न, जैसा कि 'महीरुह्' और 'पङ्केरुह्' में।

रुहा [रुह्+टाप्] दूर्वा घास, दूबड़ा।

रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1. खुरदरा, कठोर, (स्पर्श या शब्द आदि) जो मृदु न हो, रूखा—रूक्षाक्षरं वाचति वायसोऽयम् मृच्छ ९।१०, कु० ७।२७ 2. कसैला (स्वाद) 3. ऊबड़-खाबड़, असम, कठिन, कर्कश 4. दूषित, मलिन, मैला रघु० ७।७०, मुद्रा० ४।५ 5. क्रूर, निर्दय, कठोर निताम्बरूक्षाभिनिवेशसीधम् रघु० १।४३, श० ७।३२, पंच० ५।९१ 6. नीरस, भुना हुआ, सूखा, वीरान निस्पन्दशाखाः कवचिच्चरन्ती भीषणा भोगरूक्षाः उत्तर० २।१४, (रूक्षीकृ ---, ऊबड़-खाबड़ करना, मैला करना, मिट्टी लथेड़ना)।

रूक्षणम् [रूक्ष्+ल्युट्] 1. गुनाना, पसंद करना 2. (आयु० में) (शरीर की) मैल को घटाने की चिकित्सा।

रूढ (भू० क० कृ०) [रुह्+क्त] 1. उगा हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ, उपजा हुआ 2. जमा हुआ. उत्पन्न 3. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विकसित 4. उठा हुआ, चढ़ा हुआ 5. विस्तृत बड़ा, स्थूलकाय 6. बिखरा, इधर उधर फैला हुआ 7. विदित, ज्ञात, व्यापक —क्षत्रोचितैर्बान्धवकृत्यैरस्मान् क्षत्रियशब्दाद्भुवनेषु रूढः रघु० २।५३, (यहाँ क्षत्र का अर्थ यौगिक है) 8. सर्वजनस्वीकृत, परंपराप्राप्त, प्रचलित, गर्वपूर्ण (शब्द या अर्थ, विप० यौगिक या निर्वचनलभ्य अर्थ) —व्युत्पत्तिग्रहणाः शब्दा रूढा आश्रयन्त्यजातान्, नाम रूढमर्षि च व्युदपादि शि० १०।२३ 9 विदित, निश्चित किया हुआ।

रूढि (स्त्री०) [रुह्+क्तिन्] 1. उगना, उपजना, 2. जन्म, पैदायश 3. वृद्धि, विकास, वर्धन, प्रवृद्धता 4. ऊपर उठना, चढ़ना 5. प्रसिद्धि, ख्याति, वदनामी —शि० १५।२६ 6. परम्परा, प्रथा, परंपरागत रिवाज, —शास्त्रादपि रूढिर्बलीयसी, 'विधि से प्रथा अधिक बलवती है' 7. सामान्य प्रचार, साधारण व्यवहार या प्रचलन 8. सर्वमान्य अर्थ, शब्द का प्रचलित अर्थ मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्—काव्य० २।

रूप् (चुरा० उभ०—रूपयति—ते, रूपित) 1. रूप बनाना, गढ़ना 2. रूप धर कर रंगमंच पर आना, अभिनय करना, हावभाव प्रदर्शित करना 'रूपयेगं निरूप्य—श० १ 3. चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक पालन करना, देखना, नजर डालना 4. मालूम करना, ढूंढना 5. खयाल करना, विचार करना 6 तय करना, निश्चय करना 7. परीक्षा करना, अन्वेषण करना 8. निश्चित करना, वि —, विरूपित करना, रूप बिगाड़ना।

रूपम् [रूप्+क, भावे अच् वा] 1. शक्ल, आकृति, सूरत विरूपं रूपवत्सु वा पुमांसिदेव भुञ्जते पंच० १।१४३, इसी प्रकार 'कुरूप' 'सुरूप' 2. रूप या रंग का प्रकार (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में एक)—चक्षुर्ग्राह्यजातिमान् गुणो रूपम्··· तर्क० (यह छः प्रकार का है: शुक्ल, कृष्ण, पीत, रक्त, हरित और कर्बुर, यदि 'चित्र' को जोड़ दिया जाय तो सात हो जाते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है) 3. कोई भी दृश्य पदार्थ या वस्तु 4. मनोहर रूप या आकृति, सुन्दर सूरत, सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य —मानपीए कवं वा स्वादस्य रूपस्य संभवः—शृं० १। २६, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम्—भर्तृ० २।२०, रूपं तरा हन्ति आदि 5. स्वाभाविक स्थिति या दशा, प्रकृति, गुण, लक्षण, मूलतत्त्व 6. ढंग, रीति 7. चिह्न, चेहरा-मोहरा 8. प्रकार, भेद, जाति 9. प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया 10. सादृश्य, समरूपता, 11. समूना, प्रकार, वर्ग 12. किसी क्रिया या संज्ञा का व्युत्पन्न रूप, विभक्ति या लकार के चिह्न से युक्त रूप, 13. एक' की संख्या, गणित की एक इकाई 14. पूर्णांक 15. नाटक, खेल, दे० रूपक 16. किसी ग्रंथ को बार बार पढ़ कर या कंठस्थ करके पारंगत होने की क्रिया 17. संबंधी 18. ध्वनि, शब्द, ('रूप' का प्रयोग बहुधा समास के अन्त में होता है यदि निम्नांकित अर्थ हो—'बना हुआ' 'से युक्त' के रूप में' 'नाम का' 'सूरत वाला में' तपोरूपं धनं बन्धरूपः सागरः) । सम० **अधिबोधः** ज्ञानेन्द्रियों द्वारा किसी पदार्थ के रंग रूप का प्रत्यक्ष करना, **अभिधाहित** (वि०) काम करते हुए पकड़ा गया, मौके पर पकड़ा गया,—**आजीवा** वेश्या, रंडी, गणिका,—**आश्रयः** अत्यंत सुन्दर व्यक्ति, **इन्द्रियम्** आँख, रंगरूप को प्रत्यक्ष करने वाली इन्द्रिय, **उच्चयः** ललित रूपों का समूह शृं० २।९, **कारः**, **-कृत्** (पुं०) मूर्तिकार, शिल्पी, **तत्त्वं** अन्तर्हित गुण, मूलतत्त्व, **धर** (वि०) रूप धरे हुए, छद्मवेषी, **नाशनः** उल्लू, **लावण्यम्** रूप की उत्कृष्टता, चारुता, **विपर्ययः** विरूपण, शारीरिक रूप में विकृत परिवर्तन, **शालिन्** (वि०) सुन्दर, **संपद्, संपत्तिः** (स्त्री०) रूप की उत्कृष्टता, सौन्दर्य की वृद्धि, सौन्दर्यातिरेक ।

रूपकः [रूप+कन्, ह्रस्वः, रूप+कन् वा] विशेष सिक्का, रुपया.—**कम्** 1. शक्ल, आकृति, सूरत, (समास के अन्त में) 2. कोई वर्णन या प्रकटीकरण 3. चिह्न, चेहरा-मोहरा 4. प्रकार, जाति 5. नाटक, खेल नाट्य-कृति (नाट्य रचनाओं के प्रमुख दो भेदों में से एक, दृश्य, इसके फिर आगे दस भेद हैं, इसके अतिरिक्त इसके और अवान्तर भेद हैं जो गिनती में अठारह हैं तथा 'उपरूपक' नाम से विख्यात हैं) —दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात् रूपकम्—सा० द० २७२, २७३ 6. (अलं० में) अंग्रेजी के मैटाफर (metaphor) के अनुरूप एक अलंकार जिसमें उपमेय को उपमान के ठीक सदृश्यरूप वर्णित किया जाता है—तद्रूपकमभेदो य उपमा नोपमेययोः—काव्य० १० (विवरण के लिये देखो यही स्थान) 7. एक प्रकार का ढोल । सम०—**ताल**: संगीत में विशेष समय,—**शब्दः** आलंकारिक या रूपकोक्ति ।

रूपणम् [रूप्+ल्युट्] 1. सारोप वर्णन या आलंकारिक वर्णन 2. गवेषण, परीक्षा ।

रूपवत् (वि०) [रूप+मतुप्, वत्वम्] 1. रंगरूप वाला 2. शारीरिक, दैहिक 3. सशरीर 4. मनोहर, सुन्दर, **-ती** सुन्दरी स्त्री ।

रूपिन् (वि०) [रूप+इनि] 1. के सदृश दिखाई देने वाला 2. सशरीर, मूर्तिमान् 3. सुन्दर ।

रूप्य (वि०) [रूप+यत्] सुन्दर ललित. **प्यम्** 1. चांदी 2. चांदी (या सोने) का सिक्का, मुद्रांकित सिक्का, रुपया 3. शुद्ध किया हुआ सोना ।

रूष् । (स्वा० पर० **रूषति, रूषित**) 1. अलंकृत करना, सजाना 2. पोतना, चुपड़ना, मण्डित करना, लीपना (मिट्टी आदि से) ।

रूष् (चुरा० उभ० रूषयति—ते) 1. कांपना 2. फट जाना ।

रूषित (भू० क० कृ०) [रूष्+क्त] 1. अलंकृत 2. पोता हुआ, लेपा हुआ, विलेपा हुआ 3. मिट्टी में लथेड़ा हुआ 4. खुरदरा, ऊबड़ खाबड़ 5. कूटा हुआ, चूर्ण किया हुआ ।

रे (अव्य०) [रा+के] संबोधनात्मक अव्यय—रे रे शंकर-गृहाधिवासिनो जानपदाः मा० ३ ।

रेखा [लिख्+अच्+टाप्, लस्य रः] 1. लकीर, धारी, मदरेखा, दानरेखा, रागरेखा आदि 2. लकीर की मार, अल्पांश, लकीर इतना—न रेखामात्रमपि व्यतीयुः रघु० ११।७ 3. पंक्ति, परास, लकीर, श्रेणी 4. आलेखन, रूपरेखा, चित्राकन लावण्यं रेखया किंचिदन्वितं—शृं० ६।१४ 5. भारतीय ज्योतिषियों की प्रथम याम्योत्तर रेखा जो लंका से उज्जैन होते हुए मेरु पर्वत तक खिंची हुई है 6. पूर्णता, सन्तोष 7. धोखा, जालसाजी । सम०—**अंशः** रेखांश, ग्राधिमांश के घात, देशान्तरीय घात, **-अन्तरम्** प्रथम याम्योत्तर रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी, किसी स्थान का देशान्तर,—**आकार** (वि०) परम्परा प्राप्त, रेखामय, धारीदार, **गणितम्** ज्यामिति ।

रेक दे० 'रेचक' ।

रेचक (वि०) (स्त्री०—**चिका**) [रेचयति रिच्+णिच्+ण्वुल्] 1. रिक्त करने वाला, निर्मल करने वाला 2. दस्तावर, मूलत्यन (मल को ढीला करने वाला) 3. फेफड़ों को खाली करने वाला, श्वास को बाहर फेंकने वाला,—**कः** 1. श्वास का बाहर निकालना बहिःश्वसन, निःश्वसन विशेष कर एक नथने से (विप० **पूरक** अर्थात् अन्तः श्वसन, सांस अन्दर ले जाना और **कुम्भक**, श्वास को जहां का तहाँ रोकना) 2. वस्तियन्त्र या पिचकारी 3. जवाखार, शोरा, **कम्** दस्तावर, विरेचन ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेचनम्, **-ना** [रिच्+ल्युट्] 1. रिक्त करना 2. घटाना, कम करना 3. श्वास बाहर निकालना 4. निर्मल करना 5. मल बाहर निकालना।

रेचित (वि०) [रिच्+णिच्+क्त] रिताया गया, साफ़ किया गया, **-तम्** घोड़े की दुलकी चाल।

रेणुः (पुं०, स्त्री०) [रीयतेः णुः नित्] 1. धूल, धूलकण, रेत आदि—तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः—शि० १।३१ 2. पराग, पुष्परज।

रेणुका [रेणु+कै+क+टाप्] जमदग्नि की पत्नी तथा परशुराम की माता—दे० जमदग्नि।

रेतस् (नपुं०) [री+असुन्, तुट् च] वीर्य, धातु।

रेफ (वि०) [रेफ्+अच्] नीच, कमीना, तिरस्करणीय, **—फः** 1. कर्कश ध्वनि, खड़खड़ध्वनि 2. 'र्' वर्ण 3. प्रणयोन्माद, अनुराग।

रेवटः [रेव्+अटच्] 1. सूअर 2. बाँस की छड़ी 3. बवंडर।

रेवतः [रेव्+अतच्] नीबू का पेड़।

रेवती [रेवत+ङीप्] 1. सत्ताइसवां नक्षत्रपुंज जिसमें बत्तीस तारे होते हैं 2. बलराम की पत्नी का नाम—शि० २।१६।

रेवा [रेव्+अच्+टाप्] नर्मदा नदी का नाम,—रेवा-रोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते—काव्य० १, रघु० ६।४३, मेघ० १९।

रेव् (भ्वा० आ० रेवते, रेवित) 1. दहाड़ना, हूह करना, किलकिलाना 2. हिनहिनाना।

रेवणम्, रेवा [रेव्+ल्युट्, रेव्+अ+टाप्] दहाड़ना, हिनहिनाना।

रै (पुं०) [रातेः डैः] (कर्तृ० राः रायौ रायः) दौलत, सम्पत्ति, धन।

रैवतः, रैवतकः [रेवत्या अदूरे देशः—खेतों+अण्—रैवत+कन्] द्वारका के निकट विद्यमान पहाड़, (इस पहाड़ के विवरण के लिए दे०, शि० ४)।

रोकम् [रु+कन्] 1. छिद्र 2. नाव, जहाज 3. हिलता हुआ, लहराता हुआ।

रोगः [रुज्+घञ्] रुजा, बीमारी, व्याधि, मनोव्यथा या आधि, अशक्तता सतापयन्ति कमण्यान्भुजं न रोगाः—हि० ३।११७, भोगे रोगभयम् भर्तृ० ३।३५, सम० **-आयतनम्** शरीर,—**आर्त** (वि०) रोगग्रस्त, बीमार, **-शान्तिः** (स्त्री०) रोग का उपशमन या चिकित्सा, **हर** (वि०) चिकित्सापरक (—**रम्**) औषधि,—**हारिन्** (वि०) चिकित्साविषयक, (—पुं०) वैद्य, डाक्टर।

रोचक (वि०) [रुच्+ण्वुल्] 1. सुखद, रुचिकर 2. भूख बढ़ाने वाला, क्षुधोत्तेजक,—**कम्** 1. भूख 2. मन्दाग्नि को दूर करने वाली कोई पुष्टि कारक औषधि उद्दीपक, पोष्टिक 3. काँच की चूड़ियां या अन्य बनावटी आभूषण बनाने वाला।

रोचन (वि०) (स्त्री० **ना, -नी**) [रुच्+ल्युट्, रोचयति वा] 1. प्रकाश करने वाला, रोशनी करने वाला, जगमगा देने वाला 2. उज्ज्वल, शानदार, सुन्दर, प्रिय, सुहावना, रुचिकर भट्टि० ६।७३ 3. क्षुधावर्धक, **—नः** भूख बढ़ाने वाली औषधि,—**नम्** उज्ज्वल आकाश, अन्तरिक्ष।

रोचना [रोचन+टाप्] 1. उज्ज्वल आकाश, अन्तरिक्ष 2. सुन्दरी स्त्री 3. एक प्रकार का पीला रंग—°गोरोचना रघु० ६।६५, १७।२४, शि० ११।५१।

रोचमान (वि०) [रुच्+शानच्] 1. चमकदार, उज्ज्वल 2. प्रिय, सुन्दर, मनोहर, **नम्** घोड़े की गर्दन के बालों का गुच्छा।

रोचिष्णु (वि०) [रुच्+इष्णुच्] 1. उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार, देदीप्यमान 2. लैल-छबीला, भड़कीले कपड़ों वाला, अफूलब्दन 3. क्षुधावर्धक।

रोचिस् (नपुं०) [रुचेः इसिः] प्रकाश, आभा, उज्ज्वलता, ज्वाला -शि० १।५।

रोदनम् [रुद्+ल्युट्] 1. रोना, दे० रुदन 2. आंसू।

रोधस् (नपुं०) (स्त्री० द्वि० व० **-रोधसी**) [रुद्+असुन्] आकाश और पृथ्वी—रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः—वेणी० ३।२, वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थित रोदसी—विक्रम० १।१, शि० ८।१५।

रोधः [रुध्+घञ्] 1. रोकना, पकड़ना, रुकावट डालना शि० १०।८९ 2. अवरोध, ठहराना, बाधा, रोक, प्रतिषेध, दवाना—शापादस्ति प्रतिहता स्मृतिरोधरूढे—श० ७।३२, उपलरोध—कि० ५।१५, माल० २।२२० 3. बन्द करना, रोकना, नाकेबंदी करना, घेरा डालना—प्रीतिरोधसहिष्टं सा पुरी—रघु० ११।५२ 4. बाँध।

रोधनः [रुध्+ल्युट्] बुधग्रह, **नम्** ठहराना, रोकना, बन्दी बनाना, नियन्त्रण, रोक थाम।

रोधस् (नपुं०) [रुध्+असुन्] 1. तट, पुश्ता, बाँध—गङ्गा रोधःपतनंकलूपा गृहणतीव प्रसादम् विक्रम० १।८, रघु० ५।४२, मेघ० ५१ 2. किनारा, ऊंचा तट—रघु० ८।३३। सम० **-वक्रा, -वती** 1. नदी 2. वेग से बहने वाली नदी।

रोधः [रुध्+रन्] एक प्रकार का वृक्ष, लोध्रवृक्ष। **द्रुः, -द्रुमः** पाप, **द्रुम्** अपराध, क्षति।

रोपः [रुह्+णिच्+अच्, ह्रस्य पः] 1. उगाना, बोना 2. पौधा लगाना 3. बाण—शि० १९।१२० 4. छिद्र, गड्ढा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोपणम् [रुह्+णिच्+ल्युट् ह्रस्य पः] 1. सीधा खड़ा करना, जमाना, उठाना 2. पौध लगाना 3. स्वस्थ होना, 4. (व्रण आदि पर) स्वास्थ्यप्रद औषध का प्रयोग।

रोमकः [रोमन्+कन्] 1. रोम नाम का नगर 2. रोमवासी, रोम नगर का निवासी (ब० व० में)। सम० **पत्तनम्** रोम नगर, **सिद्धान्तः** पांच मुख्य सिद्धान्तों में से एक (रोमवासियों से प्राप्त होने के कारण ही संभवतः इसका यह नाम पड़ा)।

रोमन् (नपुं०) [रु+मनिन्] मनुष्य और अन्य जीव जंतुओं के शरीर पर होने वाले बाल, विशेषतः, छोटे-छोटे बाल, कड़े बाल मनु० ४।१४४, ८।११६। सम० **अङ्कः** बाल का चिह्न, बिभ्रती श्वेतरोमाङ्कम् ---रघु० १।८३, **-अञ्चः** (हर्षातिरेक, बीभत्सिका या आश्चर्य आदि में; पुलक, रोंगटे खड़े होना हर्षाद्भुतभयादिभ्यो रोमाञ्चो रोमविक्रिया---सा० द० १६७, ---**अञ्चित** (वि०) हर्ष के कारण पुलकित,- **अन्तः** हथेली की पीठ पर के बाल, **आली,—आवलिः,** - **ली** (स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट पर ठीक नाभि के ऊपर को गई हो—शिखा धूमस्येयं परिणमति रोमावलिरपुः--काव्य० १०, दे० 'रोमराजि' भी, **उद्गमः, —उद्भेदः** (शरीर पर) बालों का खड़ा होना, पुलक, रोमांच कु० ७।७७, **कूपः, - गर्तः,** चमड़ी के ऊपर के छिद्र जिनमें रोम उगे हों, लोमच्छिद्र, **केशरम्,—केसरम्** मुरछल, चंवर,—**पुलकः** रोंगटे खड़े होना, हर्षातिरेक---चौर० ३४, **भूमिः** 'बालों का स्थान' अर्थात् खाल, चमड़ी,—**रन्ध्रम्** रोमकूप, **राजिः,--जी, लता** (स्त्री०) पेट पर ठीक नाभि के ऊपर रोमावली - रराज तन्वी नवरोमराजिः—कु० १।३८, शि० ९।२२,—**विकारः,** ---**विक्रिया,—विभेदः** पुलक, रोमांच,---कि० ९।४६, कु० ५।१०, **हर्षः** बालों या रोंगटों का खड़े होना, पुलक वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते---भग० १।२९, - **हर्षण** (वि०) पुलक या रोमांच करने वाला, रोंगटे खड़े कर देने वाला, विस्मयोत्पादक—एतानि खलु सर्वभूतरो (लो) महर्षणानि - उत्तर० २, संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्—भग० १८।७४ (—**णः**) सूत का नामान्तर, व्यास का एक शिष्य जिसने शौनकमुनि को कई पुराण सुनाये थे, (—**णम्**) शरीर पर रोंगटे खड़े होना, पुलक।

रोमन्थः [रोमं मन्थनाति—मन्थ्+अण्, पृषो० णत्वोदः] 1. जुगाली करना, खाये हुए घास को चर्वण करना, खायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु - श० २।८ 2. (अतः) लगातार पिष्टपेषण।

रोमन्थ (वि०) [रोमाणि सन्त्यस्य थ] बालों वाला, बहुत से रोओं से युक्त, पशमदार या ऊर्णामय,—**क्षः** 1 मेढ़, मेंढा 2. कुत्ता, सूअर।

रोरुदा [रुद्+यङ्+अ+टाप्] प्रचंडक्रंदन, अत्यन्त विलाप लक्ष्मण मृगीको भृशरो रुदावान्- भट्टि० ३।३२।

रोलम्बः [रो+लम्ब्+अच्] भौंरा—तस्या रोलम्बावली केशजाल---दश०, भामि० १।११८।

रोषः [रुष्+घञ्] क्रोध, कोप, गुस्सा **रोषोऽपि निर्मलधियां रमणीय एव** भामि० १।७१, ४४।

रोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [रुष्+युच्] क्रोधी, चिड़चिड़ा, गुस्सैल, आवेशी, **णः** 1. कसौटी 2. पारा 3. बंजर पड़ी हुई रिहाली जमीन।

रोहः [रुह्+अच्] 1. उठान, ऊंचाई, गहराई 2. किसी चीज का ऊपर उठाना (जैसे कि एक छोटी संख्या को बड़ी संख्या बनाना) 3. वृद्धि, विकास (आलं०) 4. कली, बौर, अंकुर।

रोहणः [रुह्+ल्युट्] लंका के एक पहाड़ का नाम,—**णम्** सवार होने, सवारी करने, **चढ़ने और स्वस्थ होने** की क्रिया। सम० **द्रुमः**, चन्दन का पेड़।

रोहणः [रुहे: अच्] वृक्ष,—**णी** लता।

रोहिः [रुह्+इन्] 1. एक प्रकार का हरिण 2. धार्मिक पुरुष 3. वृक्ष 4. बीज।

रोहिणी [रुह्+इनन्+ङीप्] 1. लाल रंग की गाय 2. गाय—शि० १२।४० 3. **चौथा नक्षत्रपुंज** (जिसमें पांच तारे हैं) जिसकी आकृति 'गाड़ी' की है, दक्ष की एक पुत्री जो चन्द्रमा की अत्यन्त प्रिय संगिनी है—उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम् - श० ७।२२ 4. वसुदेव की एक पत्नी तथा बलराम की माता का नाम 5. तरुण कन्या जिसे अभी रजोधर्म होना आरंभ हुआ है **नववर्षा च रोहिणी** 6. बिजली। सम० **पतिः,--प्रियः,—वल्लभः** चन्द्रमा, 1. सांड 2. चन्द्रमा,- **शकटः** 'गाड़ी' की आकृति का रोहिणी नक्षत्रपुंज—रोहिणी शकटभेदनोद्यतेति रुधिरोक्षिता यथा शशी पंच० १।२१३ (=वराह० ४७।१४)।

रोहित (वि०) (स्त्री० **रोहिणी, रोहिता**) [रुहे: इतच्, रश्च लो वा] लाल, लालरंग का,—**तः** 1. लाल रंग 2. लोमड़ी 3. एक प्रकार का हरिण 4. मछली की एक जाति, **तम्** 1. रुधिर 2. जाफरान, केसर। सम० **—अश्वः** अग्नि।

रोहिषः [रुह्+इषन्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार का हरिण।

रौक्ष्यम् [रूक्ष+ष्यञ्] 1. कठोरता, सूखापन, अनुपजाऊपन 2. खुरदुरापन, कर्कशता, क्रूरता प्रतिपथरौक्ष्यम् -रघु० ५।५८, निदेश० १४।५८।

रौद्र (वि०) (स्त्री०—द्री, द्री) [रुद्र+अण्] 1. 'रुद्र जैसा प्रचंड, चिड़मिड़ा, गुस्सैल 2. भीषण, बर्बर, भयानक,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जंगली,—द्रः 1. रुद्र का उपासक 2. गर्मी, उत्कण्ठा, सरगर्मी, जोश, मन्यु या भीषणता का मनोभाव दे० सा० द० २३२ या काव्य० ४,- द्रम् 1. क्रोध, कोप 2. उग्रता, भीषणता, बर्बरता 3. गर्मी, उष्णता, सूर्यताप।

रौप्य (वि०) [रूप्य+अण्] चांदी का बना हुआ, चांदी, चांदी जैसा,—प्यम् चांदी।

रौरव (वि० (स्त्री०—वी) [रुरु+अण्] 1. 'रुरु' मृग की खाल का बना हुआ—रघु० ३।३१ 2. डरावना, भयानक 3. जालसाजी से भरा हुआ, बेईमान, -वः 1. बर्बर 2. एक नरक का नाम—मनु० ४।८८।

रौहिणः [रोहिण+अण्] 1. चन्दन का वृक्ष 2. बटवृक्ष।

रौहिणेयः [रोहिणी+ढक्] 1. बछड़ा 2. बलराम का नामान्तर 3. बुधग्रह, -यम् पन्ना, मरकतमणि।

रौहिष (पुं०) एक प्रकार का हरिण।

रौहिषः [रुह्+टिषच्, धातोश्च वृद्धिः] दे० 'रोहिष',-षम् एक प्रकार का घास।

ल

लः [ली+ड] 1. इन्द्र का विशेषण 2. (छन्द० में) लघु, ह्रस्व मात्रा 3. पाणिनि द्वारा प्रयुक्त (दस लकारों के लिए) पारिभाषिक शब्द, जो दस काल तथा अवस्थाओं को प्रकट करते हैं।

लक् (चुरा० उभ० लाकयति—ते) 1. स्वाद लेना 2. प्राप्त करना।

लकः [लक्+अच्] 1. मस्तक 2. जंगली चावलों की दाल।

लकुचः, लकुचः [लक्+अचन्, उचन् वा] बड़हर का पेड़, —चम् बड़हर का फल।

लकुटः [लक्+उटन्] मुद्गर, सोटा।

लकुटकः [लकुट+कन्, रक्त+कै—क, रस्य लत्वं वा] 1. लाख, महावर 2. चिथड़ा, जीर्ण कपड़ा।

लक्षिका [लक्षक+टाप्, इत्वम्] छिपकली।

लक्ष् i (भ्वा० आ० लक्षते, लक्षित) प्रत्यक्ष करना, समझना, अवलोकन करना, देखना।

ii (चुरा० उभ० लक्षयति ते, लक्षित) 1. देखना, अवलोकन करना, निरखना, ज्ञात करना, प्रत्यक्ष करना—आर्यपुत्रः शून्यहृदय इव लक्ष्यते विक्रम० २, रघु० १।७२. १६।७ 2. चिह्न लगाना, प्रकट करना, चरित्रचित्रण करना, संकेत करना सर्वभूत-प्रसूतिहि वीजलक्षणलक्षिता मनु० ९।३५ 3. परिभाषा करना -इदानीं कारणं लक्षयति—आदि 4. गौण रूप से संकेत करना, गौण अर्थ में सार्थक करना -यथा गंगा शब्दः स्रोतसि संबाधे इति तटे लक्ष्यति नद्यां यदि तटेऽपि संबाधः स्यात्तत्प्रयोजनं लक्ष्येत् काव्य० २, अत्र गंगाशब्दो वाहीकार्थं लक्षयति —सा० द० २ 5. लक्ष्य करना 6. खयाल करना, आदर करना, सोचना, अभि—, अंकित करना, देखना, आ—, देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना—आलक्ष्य दन्तमुकुलान्—का० ७।१७, नाभिप्रायंकियालक्षण मत्कुक्षेरश्च भोजनम्—रघु० १५।१८, उप—, 1. देखना, अवलोकन करना, निगाह डालना, अंकित करना, -सम्यग्गुणलक्षितं भवत्या—श० ३ 2. अंकित करना, चिह्न लगाना—याज्ञ० १।३०. २।१५१ 3. प्रकट करना, मनोनीत करना 4. अनिश्चित उपलक्षित होना, वस्तुतः अभिव्यक्त की अपेक्षा अधिक सम्मिलित करना- लक्षणाशब्देन ज्योतिःशास्त्रमुपलक्ष्यते मनु० ३।१६२ पर कुल्लू० 5. मनन करना, विचारकोटि में लाना 6. खयाल करना, मानना, वि—, 1. अवलोकन करना, ध्यान देना, देखना 2. चरित्रचित्रण करना, अन्तर प्रकट करना 3. व्याकुल होना, चकित होना, घबरा जाना—निर्व्यापारविशिक्षितानि सान्निध्यं बलानि—उत्तर० ६. सम्—, 1 अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना, देखना, ध्यान देना

आश्चर्यदर्शनः सलक्ष्यते मनुष्यलोकः, श० ७, संलक्ष्यते न छिद्रेष्वपि हारः- रघु० १६।९२, 'ध्यान नहीं दिया जाता या ज्ञात नहीं होता' ८।४५ 2. परीक्षण करना, सिद्ध करना, निर्याचित करना

हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा —रघु० १।१० 3. सुनना, जानना, समझना 4. चरित्रचित्रण करना, भेद बताना।

लक्षम [लक्ष+अच्] 1. सौ हजार, (इस अर्थ में पुं० भी), —इच्छन्ति पतीं सहस्रं सहस्री लक्षमीहते -सुभा०, त्रयो लक्षास्तु विज्ञेयाः—याज्ञ. ३।१०२ 2. चिह्न, बाँदमारी, लक्ष्य, निशाना—प्रत्यक्षवदाकाशं लक्षं बध्वा—मुद्रा० १ 3. निशान, निशानी, चिह्न 4 दिखावा, बहाना, जालसाजी, छद्मवेश, जैसा कि 'लक्षमुप्त' में 'झूठमूठ सोया हुआ'। सम०—अधीशः लाखों की सम्पत्ति का स्वामी।

लक्षक (वि०) [लक्ष+ण्वुल्] अप्रत्यक्षरूप से सूचित करने वाला, गौण रूप से अभिव्यक्त करने वाला, **कम्** सौ हजार, एक लाख।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्षणम् [लक्ष्यतेऽनेन-लक्ष् करणे ल्युट्] 1. चिह्न, निशानी, निशान, संकेत, विशेषता, भेद बोधक चिह्न,—वंधुकुलकलङ्कलक्षणम्—कु० ५।७३, अनारंभो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम् सुभा० अव्यारोपो भविष्यत्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६, १९।४७, गर्भलक्षण—श० ५, पुरुषलक्षणम्, वीर्यवत्ता का चिह्न या पुंस्त्वद्योतक इन्द्रिय 2. (रोग का) लक्षण 3. विशेषण, खूबी 4. परिभाषा, यथार्थ वर्णन 5. शरीर पर भाग्यसूचक चिह्न (यह गिनती में ३२ हैं)—द्वात्रिंशल्लक्षणोपेतः 6. (शुभाशुभ भाग्य का सूचक) शरीर पर बना कोई चिह्न क्व तद्विधस्त्वं क्व च पुण्यलक्षणा कु० ५।३७, क्लेशावहा भर्तृलक्षणाहम्—रघु० १४।५ 7. नाम, पद, अभिधान (प्रायः समास के अन्त में) —विदिशालक्षणां राजधानीम्—मेघ० २५, नै० २२।४१ 8. श्रेष्ठता उत्कर्ष, अच्छाई जैसा कि 'आहितलक्षण' —रघु० ६।७१ में (यहाँ मल्लि० इस शब्द का अनुवाद करता है 'प्रख्यातगुण' और अमर० का उद्धरण—गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणी—देता है) 9. उद्देश्य, क्रियाक्षेत्र या लक्ष्य, ध्येय 10. (कर आदि का) निश्चित भाव—मनु० ८।४०५ 11. रूप, प्रकार प्रकृति 12. कर्तव्यनिर्वाह, कार्यप्रणाली 13. कारण, हेतु 14. सिर, शीर्षक, विषय 15. बहाना, छद्मवेश (=लक्ष) - प्रसुप्तलक्षणः —मा० ७,—णः सारस,—णा 1. उद्देश्य, ध्येय 2. (अलं० में) शब्द का परोक्षप्रयोग या गौण सार्थकता, शब्द की एक शक्ति, इसकी परिभाषा इस प्रकार है :—मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथप्रयोजनात्, अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपितक्रिया: काव्य० २, दे० सा० द० १३ भी 3. हंस। सम० अन्वित (वि०) शुभलक्षणों से युक्त,—ज्ञ (वि०) (शरीर पर विद्यमान) चिह्नों की व्याख्या करने में संलग्न,—भ्रष्ट (वि०) अभागा, दुर्भाग्यग्रस्त, लक्षणा—अहल्लक्षणा, दे०,—संनिपातः दाग लगाना, कलंकित करना।

लक्षण्य (वि०) [लक्षण +यत्] 1. चिह्न का काम देने वाला 2. अच्छे लक्षणों से युक्त।

लक्षशस् (अव्य०) [लक्ष +शस्] लाख-लाख करके अर्थात् बड़ी संख्या में।

लक्षित (भू० क० कृ०) [लक्ष्+क्त] 1. दृष्ट, अवलोकित चिह्नित, निगाह डाली गई 2. प्रकट किया गया, संकेतित 3. चरित्रचित्रित, चिह्नित, अन्तर बताया गया 4. परिभाषित 5. उद्दिष्ट 6. परोक्ष रूप से अभिव्यक्त संकेतित, इशारा किया गया 7. पूछताछ की गई, परीक्षित।

लक्ष्मण (वि०) [लक्ष्मन् +अण्, न वृद्धिः] 1. चिह्नों से युक्त 2. शुभलक्षणों से युक्त, सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला 3. समृद्धिशाली, फलता-फूलता —णः 1. सारस 2. सुमित्रा नामक पत्नी से उत्पन्न दशरथ का एक पुत्र (वचपन से ही लक्ष्मण राम में इतना अधिक अनुरक्त था कि वह उसकी वनयात्रा में जाने को तैयार हो गया। राम के चौदह वर्ष के निर्वासन काल में घटित घटनाओं में लक्ष्मण का बड़ा हाथ था। लङ्का के युद्ध में उसने कई बलवान् राक्षसों को, विशेष कर रावण के पुत्रों में अत्यंत शक्तिशाली मेघनाद को मार डाला। सबसे पहले तो स्वयं लक्ष्मण ही मेघनाद की शक्ति का शिकार हुआ, परन्तु हनुमान् द्वारा लाई गई संजीवन बूटी के उपयोग से सुषेण वैद्य ने उसे फिर जीवित कर दिया। एक दिन काल साधु के वेश में राम के पास आया और कहा कि "जो कोई उनकी एकान्त में वार्तालाप करते हुए कभी देख ले तो तुरन्त उसका परित्याग किया जाना चाहिए" यह बात मान ली गई। एक बार लक्ष्मण ने राम व सीता की एकान्तता में भंग डाल दिया, फलतः लक्ष्मण ने अपने भाई राम के वचन की 'स्वयं सरयू में छलांग लगा कर सत्य सिद्ध करके दिखा दिया (दे० रघु० १५।९२-५, उस का विवाह अंगिदा से हुआ, तथा अंगद और चन्द्रकेतु नामक दो पुत्र हुए), —णा हंसिनी,—अग्र्य 1. नाम अभिधान 2. चिह्न, संकेत, निशानी। सम०—प्रसूः लक्ष्मण की माता सुमित्रा।

लक्ष्मन् (पुं०) [लक्ष्+मनिन्] 1. चिह्न, निशान, निशानी, विशेषता—शि० ११।३७, कि० ११।२८, १४।६४, रघु० १०।३० कु० ७।४३ 2. चिन्ती, धब्बा —मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति—श० १।२०, मा० ९।२५ 3. परिभाषा —पुं० 1. सारस पक्षी, 2. लक्ष्मण का नामान्तर।

लक्ष्मीः (स्त्री०) [लक्ष्+ई, मुट् +च] 1. सौभाग्य, समृद्धि, धनदौलत —सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्—कि० ८।१८, तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नव तान् संरुणद्धि —मर्तृ० २।१७ 2. सौभाग्य, अच्छी किस्मत 3. सफलता, सम्पन्नता उत्तर० २।१८ 4. सौन्दर्य, प्रियता, अनुग्रह, लावण्य, आभा, कान्ति—मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति - श० १।२०, मा० ९।२५, ५।३९, ५२, ९।२, कु० ३।४९ 5. सौभाग्यदेवी, समृद्धि, सौन्दर्य, लक्ष्मी विष्णु की पत्नी मानी जाती है (देवासुरों द्वारा अमृत प्राप्ति के लिए समुद्रमंथन किये जाने पर अन्य मूल्यवान् रत्नों के साथ लक्ष्मी भी समुद्र से निकली)—इयं गेहे लक्ष्मीः उत्तर० १।३८, राजकीय या प्रभुशक्ति, उपनिवेश, राज्य (यह बहुधा रानी की सपत्नी के रूप में मानी जाती है, और राजा की रानी के रूप में इसका मूर्तवर्णन किया जाता है)—तामेकभार्यां परिवादभीरोः साध्वीमपि त्यक्तवतो नृपस्य, वक्षस्यसंघट्टसुखं वसन्ती रेजे सपत्नी-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहितेक्ष लक्ष्मीः—रघु० १४।८६, १२।२६ 7. नायक की पत्नी 8. मोती 9. हल्दी । सम०—ईशः 1. विष्णु का विशेषण 2. आम का वृक्ष 3. समृद्ध या भाग्यशाली पुरुष,—कान्तः 1. विष्णु का विशेषण 2. राजा, —गृहम् लाल कमल का फूल, तालः एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष,—नाथः विष्णु का विशेषण,—पतिः 1. विष्णु का विशेषण, 2. राजा - विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्य कार्मुकम् कि० १।४४ 3. सुपारी का पेड़, लौंग का वृक्ष,—पुत्रः 1. घोड़ा 2. कामदेव का नामान्तर,—पुष्पः लाल,—पूजनम् लक्ष्मी के पूजा करने का कृत्य (दुलहन को विवाह करके घर लाने के पश्चात् दूल्हे द्वारा दुलहन के साथ मिलकर किया जाने वाला अनुष्ठान),- पूजा कार्तिकमास की अमावस्या के दिन किया जाने वाला लक्ष्मीपूजन (मुख्य रूप से साहूकार और व्यापारियों के द्वारा - जिनका कि दीपावली, आज के दिन समाप्त होकर नया वर्ष आरम्भ होता है),- फलः जिल्व वृक्ष, रमणः विष्णु का विशेषण,-वसतिः (स्त्री०) लक्ष्मी का निवास लाल कमल का फूल, वारः बृहस्पतिवार, वेष्टः तारपीन,—सखः लक्ष्मी की कृपा का पात्र,—सहजः, —सहोदरः चन्दमा के विशेषण ।

लक्ष्मीवत् (वि०) [लक्ष्मी+मतुप्, वत्वम्] 1. सौभाग्यशाली, किस्मत वाला, अच्छे भाग्य वाला 2. दौलतमंद, धनवान्, समृद्धिशाली 3. मनोहर, प्रिय, सुन्दर ।

लक्ष्य (सं० कृ०) [लक्ष्+यत्] 1. देखने के योग्य, अवलोकन करने योग्य, दृश्य, अदेक्षणीय, प्रत्यक्ष जानने के योग्य -दुर्लक्ष्यचित्ता महतां हि वृत्तिः-कि० १७।२३ 2. संकेतित या अभिज्ञेय (करण० के साथ या समास में)—दूरालक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन—मेघ० ७५, प्रवेपमानावरलक्ष्यकोपया -कु० ५। ७४, रघु० ४।५, ७।६० 3. ज्ञातव्य या प्राप्य, सुराग लगाने योग्य -कु० ५।७२, ८१ 4. चिह्नित या चित्रित किया जाना 5. परिभाषा के योग्य 6. उद्दिष्ट किये जाने योग्य 7. अभिव्यक्त किया जाना या परोक्ष रूप से प्रकट किया जाना 8. खयाल किये जाने योग्य, चिन्तनीय,—क्यच् 1. उद्देश्य, निशाना, चिह्न, बाजारी, उद्दिष्ट चिह्न, (आलं० से भी) —उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले -श० २।५, दृष्टि लक्ष्येषु बध्नन् —मुद्रा० १।२, रघु० १।६८, ६।११, ९।६७, कु० ३।४७, ६४, ५।४९ 2. निशान, निशानी 3. वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है (विप० लक्षण)—लक्ष्यैकदेशे लक्षणस्यावर्तनमव्याप्तिः—तर्क० 4. परोक्ष या गौण अर्थ जो लक्षणा शक्ति से प्रतीत हों, -वाच्यलक्ष्यव्यंग्या अर्थाः - काव्य० २ 5. बहाना, झूठमूठ, छद्मवेश इदानीं परीक्षे किं लक्ष्यसुप्तसुप्त परमार्थसुप्तमिदं द्वयं मुच्छ० ३, ३।१८, कन्दर्प प्रणामनः सखीसिमिश्चालक्ष्येण प्रतियुवमञ्जलि चकार—शि० ८।३५, रघु० ६।५८ 6. लाख, सौ हजार । सम० —कम (वि०) ध्वनि आदि अर्थ जिसकी प्रणाली (गौणरूप से) प्रत्यक्षज्ञेय है,—भेदः,- वेधः निशाना लगाना—कि० ३।२७,—सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ,- हन् (वि०) निशाना मारने वाला, (पुं०) बाण, तीर ।

लक्ष, लक्ष् (भ्वा० पर० लाक्षति, लक्ष्यति) जाना, हिलना जुलना ।

लग् I (भ्वा० पर० लगति, लग्न) 1. लग जाना, दृढ़ रहना, चिपकना, जुड़ जाना—व्यायामाद्धि हंसस्य करानलाप्तेर्मन्दाक्षलक्ष्या लगति स्म पश्चात्—नै० ३।८, गमनसमय कण्ठे लग्ना निरुध्य माम् —मा० ३।२ 2. स्पर्श करना, संपर्क में आना - कर्णे लगति चास्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते—पंच० १।३०५, यथा यथा लगति शीतवातः—मृच्छ०, ५।११ 3. स्पर्श करना, प्रभावित करना, लक्ष्य स्थान तक जाना - दिदिहेऽभिते हि पूर एव जने सपदीरिताः खलु लगन्ति गिरः —शि० ९।६९ 4. मिल जाना, सम्मिलित होना, (रेखा आदि) काटना 5. ध्यानपूर्वक अनुसरण करना, अनुघटित होना, बाद में घटित होना,- अनावृष्टिः संपद्यते लग्ना—पंच० १ 6. नियुक्त करना, अटकाना, (किसी को) धन्धे में लगाना—तत्र दिनानि कतिचिल्लगिष्यन्ति- पंच० ४, 'मुझे कुछ दिन वहाँ लग जायगें', अव—, जुड़ जाना, चिपक जाना—रघु० १६।६८, आ—, जमे रहना,—काव्या० ३।५०, वि ,चिपकना, लग जाना, जुड़ जाना ।

II (चुरा० उभ०—लागयति—ते) 1. स्वाद लेना 2. प्राप्त करना ।

लग्न (वि०) [लग्+अलच्, डलयोः ऐक्यात् ङः] प्रिय, मनोहर, सुन्दर ।

लगित (भू० क० कृ०) [लग्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ 2. संबद्ध, अनुसक्त 3. प्राप्त, उपलब्ध ।

लगुडः, लगुरः, लगुलः [लग्+उलच्, पक्षे लस्य डः, रः वा] सुदगर, छड़ी, लाठी, सोटा ।

लग्न (भू० क० कृ०) [लग्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, सटा हुआ, दृढ़ थामा हुआ—लताविटपे एकावली लग्ना—विक्रम० १ 2. स्पर्श करना, संपर्क में आना 3. अनुषक्त, संबद्ध 4. चिपटा हुआ, जुड़ा हुआ, साथ लगा हुआ 5. काटना, (रेखा आदि का) मिलाना 6. ध्यानपूर्वक अनुसरण करना, आसन्न या निकटवर्ती 7. व्यस्त, काम में लगा हुआ 8. शुभ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(दे० लग्), —ग्नः 1. भाट, चारण 2. मदोन्मत्त हाथी, —ग्नम् 1. संपर्क बिन्दु, मिथश्छेदन-बिंदु, वह बिन्दु जहाँ कि क्षितिज और क्रान्ति-वृत्त या ग्रहपथ मिलते है 2. क्रान्ति वृत्त का बिन्दु जो एक समय क्षितिज या याम्योत्तर-रेखा पर होता है 3. वह क्षण जिसमें सूर्य का प्रवेश किसी राशि विशेष में होता है 4. बारह राशियों की आकृति 5. शुभ या सौभाग्य प्रद क्षण 6. (अतः) कार्यारंभ का उचित समय। सम०—अहः, दिनम्, दिवसः, —वासरः, शुभदिन ज्योतिषियों द्वारा (विवाहादि संस्कार के लिए) बताया गया शुभ समय, नक्षत्रम् शुभ नक्षत्र,—मण्डलम् राशिचक्र,—मासः शुभ महीना,—शुद्धिः (स्त्री०) किसी धर्मकृत्य के अनुष्ठान के लिए बताये गये मुहूर्त की मांगलिकता।

लग्नकः [लग्न+कन्] प्रतिभू, जमानत, वह जो जमानत करे।

लग्निका [लग्न+कन्+टाप्, इत्वम्] 'लग्निका' का अपभ्रंश रूप, दे०।

लघयति (ना० धा० पर०) 1. हलका करना, भार कम करना (शा०)—नितान्तगुर्वी लघयिष्यता धुरम्—रघु० १३।३५ 2. कम करना, घटाना, धीमा करना, न्यून करना—विक्रम० ३।१३, रघु० ११।६२ 3. तुच्छ समझना, तिरस्कार करना, घृणा करना—कि० २।१८, महत्त्वहीन या नगण्य समझना—कि० ५।४, १३।२८।

लघिमन् (पुं०) [लघु+इमनिच्] 1. हलकापन, भार का अभाव 2. लघुता, अल्पता, नगण्यता 3. तुच्छता, ओछापन, नीचता, कमीनापन-मानुषतासुलभो लघिमा प्रश्नकर्मणि यां नियोजयति—का० 4. नासमझी, छिछोरपन 5. इच्छानुसार अत्यंत लघु हो जाने की अलौकिक शक्ति, आठ सिद्धियों में से एक।

लघिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन लघुः—इष्ठन्] हलके से हलका, निम्नतम, अत्यंत हलका ('लघु' शब्द की उ० अ०)।

लघीयस् (वि०) [अयमनयोः अतिशयेन लघुः ईयसुन्] अपेक्षाकृत हलका, निम्नतर, बहुत हलका ('लघु' शब्द की उ० अ०)।

लघु (वि०) (स्त्री०—घ्वी, -ध्वी) [लङ्घेः कुः नलोपश्च] 1. हलका, जो भारी न हो—तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः—सुभा०, रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय—मेघ० २० (यहाँ शब्द का अर्थ 'तिरस्करणीय' भी है) रघु० ९।६२ 2. तुच्छ, अल्प, न्यून-पंच० १।२५३, शि० ९।३८, ७८ 3. ह्रस्व, संक्षिप्त, मामूलिक-लघुसंदेशपदा सरस्वती—रघु० ८।७७ 4. क्षुद्र, तृणप्राय, नगण्य, महत्त्वहीन-कायस्थ इति लघ्वी मात्रा—मुद्रा० १ 5. नीच, अधम, निंद्य, तिरस्करणीय शि० ९।२६, पंच० १।१०६ 6. अशक्त, दुर्बल 7. ओछा, मन्दबुद्धि 8. फुर्तीला, चुस्त, चपल, स्फूर्त शि० २।५ 9. तेज, द्रुतगामी, त्वरित-किंचित् पश्चात् व्रज लघुगतिः मेघ० १६, रघु० ५।४५ 10. सरल, जो कठिन न हो-रघु० १२।६६ 11. सुलभ, सुपाच्य, हलका (भोजन) 12. ह्रस्व (जैसे कि छन्दः शास्त्र में स्वर) 13. मृदु, मन्द, कोमल 14. सुखद, रुचिकर, वांछनीय —रघु० ११।१२ ८० 15. प्रिय, मनोहर, सुन्दर 16. विशुद्ध, स्वच्छ अव्य० 1. हलकेपन से, क्षुद्रभाव से, अनादरपूर्वक 2. शीघ्र, फुर्ती से, लघु लघूत्पत्ति-शि० ४, 'सवेरे उठा हुआ', (नपुं०) 1. काला अगर, या विशेष प्रकार का अगर 2. समय की विशेष माप। सम०-आशिन्, -आहार (वि०) थोड़ा खाने वाला, मितभोजी, मिताहारी,—उक्तिः (स्त्री०) अभिव्यक्ति का संक्षिप्त प्रकार,—उत्थान,—समुत्थान (वि०) फुर्तीला, द्रुतगति से कार्य करने वाला,—काय (वि०) हलके शरीर वाला, (यः) बकरा,—क्रम (वि०) शीघ्र पग रखने वाला, जल्दी चलने वाला,—खट्विका खटोला, छोटी खाट, गोधूमः छोटी जाति का गेहूँ,—चित्त, चेतस्, मनस्,—हृदय (वि०) 1. हलके मन वाला, नीचहृदय, क्षुद्रमन का, कमीने दिल का 2. मन्दबुद्धि 3. चंचल, अस्थिर,—अङ्गलः लंबा पक्षी,—आक्षा बिना बीज का अंगूर, किशमिश,—द्राविन् (वि०) अनायास पिघल जाने वाला,—पाक (वि०) सुपाच्य,—पुष्पः एक प्रकार का कदंब का वृक्ष,—प्रयत्न (वि०) 1. (वर्ण आदि) थोड़े से जिह्वाव्यापार से उच्चरित 2. निठल्ला, आलसी,—बदरः,—बदरी (स्त्री०) एक प्रकार का बेर, भवः नीच योनि या क्षुद्र शरीर में जन्म,—भोजनम् हलका भोजन,—मांसः एक प्रकार का तीतर,—मूलम् समीकरण की राशि का न्यूनतर मूल, -मूलकम् मूली, -लयम् एक प्रकार सुगन्धित जड़, खस, वीरणमूल, -वासस् (वि०) हलके और निर्मल वस्त्र धारण करने वाला, -विक्रम (वि०) तेज क़दम वाला, शीघ्र पग उठाने वाला, -वृत्ति (वि०) 1. बदचलन, नीच, दुष्ट 2. क्षुद्र, मंदबुद्धि, कुव्यवस्थित, दुर्वृत्त, -वेधिन् (वि०) बारीक निशाना लगाने वाला, -हस्त (वि०) -स्तः (वि०) 1. हलके हाथ का, चतुर, दक्ष, विशेषज्ञ रघु० ९।६३ 2. सक्रिय, फुर्तीला, (स्तः) विशेषज्ञ या कुशल धनुर्धर।

लघुता, त्वम् [लघु+तल्+टाप्+लघु+त्व वा] 1. हलकापन, ओछापन 2. छोटापन, थोड़ापन 3. नगण्यता, महत्त्वहीनता, तिरस्कार, मर्यादा का अभाव -इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः 4. अपमान, निरादर—पंच० १।१४०, ३५३ 5. क्रिया-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीलता, फूर्ती 6. संक्षेप, संक्षिप्तता 7. सुगमता, सुविधा 8. नासमझी, निरर्थकता 9. स्वेच्छाचारिता।

लङ्घी [लङ्घ्+ङीष्] 1. कोमलांगिनी स्त्री 2. हलकी गाड़ी—शि० १२।२४।

लङ्का [लङ्+अच्, मुम् च] 1. रावण का निवास और राजधानी, वर्तमान सीलोन टापू या तद्वर्ती राजधानी उस समय की लंका है; परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार वह लंका सीलोन के वर्तमान टापू से कहीं अधिक बड़ी थी। मूलरूप से यह माल्यवान् के लिए बनाई गई थी 2. व्यभिचारिणी स्त्री, रंडी, वेश्या 3. शाखा 4. एक प्रकार का अनाज। सम०—अधिपः, —अधिपति,—ईशः,—ईश्वरः,—नाथः, —पतिः लंका का स्वामी अर्थात् रावण या विभीषण, —अरिः राम का विशेषण,—दाहिन् (पुं०) हनुमान् का विशेषण।

लङ्गरी [लङ्ग्+ल्युट्+ङीष्] लगाम की बल्गा (लोहे का बना वह भाग जो मुँह में रहता है), मुखरी।

लङ्गूल [लङ्ग्+ऊलच् पृषो०] जानवर की पूँछ, तु० 'लांगूलम्' से।

लङ्घ् (भ्वा० उभ० लङ्घति-ते, लङ्घित, इच्छा० लिलङ्घिषति-ते) 1. उछलना कूदना, छलांग लगाना 2. सवारी करना, चढ़ना अग्ने चालङ्घिषुः शैलान् —भट्टि० १५।३२ 3. परे चले जाना, अतिक्रमण करना —लङ्घते स्म मुनिरेष विमानिन्—नै० ५।४ उपवास करना, अनशन करना 5. सूखना, सूख जाना (घर०) 6. झपट्टा मारना, आक्रमण करना, खा जाना, क्षति पहुँचाना—पल्लवान् हरिणी लङ्घयितुमागच्छति—मालवि० ४, प्रेर० या चुरा० उभ० (लङ्घयति —ते) 1. ऊपर से कूद जाना, छलांग लगा देना, परे जाना—सागरः प्लवगेन्द्रेण क्रमेणैकेन लङ्घितः—महा०, मनु० ४।३८ 2. तय कर लेना, चल कर पार कर लेना (दूरी आदि) रघु० १।४७ 3. सवारी करना, चढ़ना रघु० ४।५२ 4. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना रघु० ९।९ याज्ञ० २।१८७ 5. रुष्ट करना, अपमान करना, तिरादर करना, उपेक्षा करना —हस्त इव भूतिमलिनो यथा लंघयति खलः सुजनम्, दर्पणमिव तं क्षुद्रो तथा-तथा निर्मलच्छायम्—वास० 6. रोकना, विरोध करना, ठहराना, टालना, हटाना —भाग्यं न लङ्घयति कोऽपि विधिप्रणीतम् —सुभा०, मृच्छ० ६।२ 7. आक्रमण करना, झपट्टा मारना, क्षतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना—रघु० ११।९२ 8. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अपेक्षाकृत अधिक चमकना, ग्रहणग्रस्त करना,—(यशः) जगत्प्रकाशं तदशेषमिज्यया भवद्गुरुर्लङ्घयितुं प्रमोद्यतः —रघु० ३।४८ 9. उपवास करवाना 10. चमकना 11. बोलना, अभि —, 1. परे चले जाना, ऊपर से छलांग लगा देना 2. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना, उद्—, 1. पार जाना, पार कर लेना, परे चले जाना—शि० ७।७४ 2. सवारी करना चढ़ना 3. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना—मुद्रा० १।१०, शि० १२।५७, वि —, 1. पार जाना, उछलकर पार करना, यात्रा करना—निवेशयामास विलङ्घिताध्वा —रघु० ५।४२, १६।३२, शि० १२।२४ 2. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, बाहर कदम रखना, अवहेलना करना, उपेक्षा करना—यन्तु प्रकृत्ते समयं विलङ्घ्य कु० ५।२५, रघु० ५।४८ 3. औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना—रघु० १।७४ 4. उठाना, चढ़ना, ऊपर जाना —कि० ५।१, नै० ५।२ 5. छोड़ देना, परित्याग करना एक ओर फेंक देना —मनोवज्रान्यस्मरान् विलङ्घ्य सा —रघु० ३।८ 6. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना इति कर्णीतिलं प्रायस्तव दृष्ट्वा विलङ्घ्यते—काव्या० २।२२४ 7. उपवास करना।

लङ्घनम् [लङ्घ+ल्युट्] 1. छलांग लगाना, कूदना 2. उछल कर चलना, यात्रा करना, पार जाना, चलना, गतिशील होना यूएसेव पथि शीघ्रलङ्घनाः—घट० ८ 3. सवारी करना, चढ़ना, उठना (आलं० से भी) नभोलङ्घन —रघु० १६।३३, जनाःस्यमूर्च्चे पदलङ्घनोत्सुकः—कु० ५।६४, उच्चपद प्राप्त करने को उच्छुक 4. बाधा बोलना, एकाएक आक्रमण द्वारा दुर्गादि हथिया लेना, अधिकार में कर लेना—जैसा कि 'दुर्गलङ्घनम्' में 5. आगे बढ़ना, परे चले जाना, बाहर कदम रखना, उल्लंघन, अतिक्रमण 'आज्ञालङ्घनम्' नियमलङ्घनम्' आदि 6. अवहेलना करना, घृणा करना, तिरस्कार पूर्वक व्यवहार करना, अपमान करना —प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामा —वि० ३, मालवि० ३।२२ 7. अन्यायाचरण, मानहानि, अपमान 8. अनिष्ट, क्षति, जैसा कि आतपलङ्घनम् में दे० 9. उपवास करना, संयम शि० १२।२५ (यहाँ इसका अर्थ छलांग भी होता है) 10. घोड़े का एक कदम।

लङ्घित (भू० क० कृ०) [लङ्घ्+क्त] 1. ऊपर से कूदा हुआ पार गया हुआ 2. यात्रा द्वारा पार किया हुआ 3. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया हुआ 4. अवज्ञात, अपमानित, भनादृत (दे० 'लङ्घ्')।

लङ्घ् (स्वा० पर० लङ्घ्नोति) चिह्न लगाना, देखना, तु० 'लक्ष्'।

लज् i (तुदा० आ० लज्जते) लज्जित होना।

ii (स्वा० पर० लजति) कलंकित करना आदि, दे० 'लज्ज्' स्वा०।

iii (चुरा० पर० लजयति) 1. दिखाई देना, प्रतीत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होना, चमकना 2. डूबना, छिपाना (कुछ विद्वानों के मतानुसार इसी अर्थ में 'लाजयति' रूप भी बनता है)।

लज्ज् (तुदा० आ० लज्जते लज्जित) लज्जित होना, शर्मिंदा होना।

लज्जका [लज्ज्+अच्+कन्+टाप्] जंगली कपास का पौधा।

लज्जा [लज्ज्+अ+टाप्] 1. शर्म— कामातुराणां न भयं न लज्जा—सुभा०, विहाय लज्जाम् रघु० २।४०, कु० १।४८ 2. शर्मीलापन, विनय—मूढ़गारलज्जां निरूपयति—दश० १, कु० ३।३, रघु० ७।२५ 3. छुईमुई का पौधा। सम०—अन्वित (वि०) विनयशील, शर्मीला,—आवह,—कर (वि०) (स्त्री०—री, —रो) लज्जाजनक, शर्मनाक, अकीर्तिकर, कलंकी, शील (वि०) शर्मीला, शालीन,—रहित—शून्य,—हीन (वि०) निर्लज्ज, ढीठ, बेहया।

लज्जालु (वि०) [लज्जा+आलुच्] विनयशील, शर्मीला पु०, स्त्री० छुईमुई का पौधा।

लज्जित (भू० क० कृ०) [लज्ज्—क्त] 1. विनयशील, शर्मीला 2. लजाया हुआ, शर्मिंदा।

लञ्ज् i (भ्वा० पर० लञ्जति) 1. कलंक लगाना, निन्दा करना, बदनाम करना 2. भूनना, तलना।

ii (चुरा० उभ० लञ्जयति—ते) 1. क्षतिग्रस्त करना, प्रहार करना, मार डालना 2. देना 3. बोलना 4. सबल या शक्तिशाली होना 5. निवास करना, 6. चमकना।

लञ्जः [लञ्ज्+अच्] 1. पैर 2. धोती की लांग या किनारा जो पीछे कमर में टांग लिया जाता है तु० कक्षा 3. पूंछ।

लञ्जा [लञ्ज+टाप्] 1. चोर 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. लक्ष्मी का नामान्तर 4. निद्रा।

लञ्जिका [लञ्ज्—ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] रण्डी, वेश्या।

लट् (भ्वा० पर० लटति) 1. बालक बनना 2. बालकों की तरह व्यवहार करना 3. बच्चों की भांति तोतली बातें करना, तुतलाना 4. क्रन्दन करना, रोना।

लटः [लट्+अच्] 1. मूर्ख, बुद्धू 2. त्रुटि, दोष 3. लुटेरा।

लटकः [लट्+ण्वुल्] ठग, बदमाश, पाजी, दुष्ट।

लटभ (वि०) [प्राकृत 'लडह' शब्द से संबद्ध, स्वयं 'लडह' शब्द भी इस 'लटभ' से ही बना प्रतीत होता है] लावण्यमय, मनोहर, सुन्दर, आकर्षक, प्रिय,—अति—अत्यन्त काली लटभललनाभोगगुल्फः—भर्तृ० ३।३२, (यहां भाष्यकार 'लटभ' का अर्थ 'सौन्दर्य' करते हैं), तस्याः पादनखश्रेणिः शोभते लटभभुवः—विक्रमांक० ८।६, विल्हण ने इस शब्द को इसी पुस्तक में और तीन स्थानों पर प्रयुक्त किया है जहां इसका अर्थ 'तरुणी स्त्री' या 'सुन्दरी स्त्री' प्रतीत होता है—उदा० कि वा वर्णनया समस्तलटभाल-ङ्कारतामेष्यति—८।८६, अनघ्यलावण्यनिधानभूमिर्न कस्य लोभं लटभा तनोति—९।६८ केशबन्धविभवैर्लटभानां पिण्डतामिव जगाम तमिस्रम् ११।१८।

लट्टः (पुं०) दुष्ट, बदमाश, दे० 'लटक'।

लट्वः [लट्+वन्] 1. घोड़ा 2. नाचने वाला लड़का 3. एक जाति का नाम,—ट्वा 1. एक प्रकार का पक्षी 2. मस्तक पर बालों का घूघर, अलक 3. चिड़िया, गौरैया 4. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 5. एक खेल 6. जाफ़रान, केसर 7. व्यभिचारिणी स्त्री।

लड् i (भ्वा० पर० लडति) खेलना, क्रीडा करना, हाव-भाव दिखलाना।

ii (भ्वा० पर०, चुरा० पर० लडति, लडयति) 1. फेंकना, उछालना 2. कलंक लगाना 3. जीभ लपलपाना 4. तंग करना, सताना।

iii (चुरा० उभ० लाडयति—ते) 1. लाड प्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2. सताना।

लडह (वि०) [प्राकृत शब्द] सुन्दर, मनोहर।

लडु—लटक दे०।

लड्डुः, लड्डुकः (पुं०) एक प्रकार की मिठाई, लड्डू, मोदक (चीनी, आटा, घी आदि पदार्थों को मिलाकर बनाये हुए गोल गोल पिंड)।

लण्ड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लण्डति, लण्डयति—ते) 1. ऊपर को उछालना, ऊपर की ओर फेंकना 2. बोलना।

लण्डम् [लण्ड्+घञ्] विष्ठा, मल।

लण्ड्रः [संभवतः फ्रेंच् भाषा के लौंड्रेज (Landress) शब्द का आधुनिक रूप] लन्दन।

लता [लत्+अच्+टाप्] 1. बेल, फैलने वाला पौधा लताभावेन परिणतमस्या रूपम् विक्रम० ४, लतेव संवर्द्धमनोज्ञपल्लवा रघु० ३।७, (विशेष रूप से 'भुजा' 'भौं' 'बिजली' आदि अर्थों को प्रकट करने वाले शब्दों के साथ समास के अन्त में, सौन्दर्य, कोमलता तथा पतलेपन को प्रकट करने के लिए प्रयोग भुजलता, बाहुलता, भ्रूलता, विद्युल्लता, इसी प्रकार खड्ग°, अलक° आदि, तु०, कु० २।६४, मेघ० ४७, श० ३।१५, रघु० ९।४५) 2. शाखा 3. प्रियंगु लता 4. माधवी लता 5. कस्तूरी लता 6. हंटर या कोड़े का सड़ाका 7. मोतियों की लड़ी 8. सुकुमार स्त्री। सम०—अन्तम् फूल, अग्र्यजम् एक प्रकार की ककड़ी, —अर्कः हरा प्याज, अलर्कः हाथी, —आनन्दः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा, उद्गमः लता का ऊपर को चढ़ना,—करः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा, —कस्तूरिका, कस्तूरी कस्तूरी की बेल, —गृहः, —हम् लतागृह, लताकुंज—कु० ४।४१, —जिह्वः,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—रसनः सांप,—तरुः 1. साल का वृक्ष 2. संतरे का पेड़, वनसः तरबूज,- प्रतानः लतातन्तु रघु० २।८, —भवनम् लतागृह, लताकुंज, - मणिः मूंगा,— मण्डपः लताकुंज लतागृह,—मृगः बन्दर, यावकम् अंकुर, अंखुवा, वलयः,-यम् लताकुंज, वृक्षः नारियल का पेड़, वेष्टः एक प्रकार का रतिबंध, संभोग का प्रकार,—वेष्टनम्,— वेष्टितकम् आलिङ्गन का प्रकार।

लतिका [लता+कन्—टाप्, इत्वम्] 1. छोटी लता, बेल 2. मोतियों की लड़ी।

लतिका [लत्+तिकन्+टाप्] एक प्रकार की छिपकली।

लप् (भ्वा० पर० लपति) 1. बोलना, बातें करना 2. चायें चायें करना, चीं चीं करना 3. कानाफूसी करना - कपोलतले भिखिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले -गीत० १, प्रेर०—(लापयति—ते) बातें करवाना, अनु, दोहराना, बार बार बातें करना, अप—,मुकरना, स्वीकार नहीं करना, इन्कार कर देना—शतमपलपति - सिद्धा० 2. छिपाना, ढकना, आ—, 1. बातें करना, वार्तालाप करना 2. बातें करना बोलना 3. चायें चायें करना, चीं चीं करना, उद्—, ज़ोर से पुकारना, प्र—, 1. बातें करना, बोलना —वचो वै देहीति (वेदेहीति) प्रतिपदमुदयु प्रलपितम्—सा० ८० ६ 2. यूं ही बोलना, असंगत बातें करना, चायें चायें करना, चीं चीं करना, बक-बक करना, निरर्थक बातें करना, वि—, 1. कहना, बोलना 2. विलाप करना, शोक मनाना, क्रन्दन करना, रोना विललाप विकीर्णमूर्धजा कु० ४।४, विललाप स बाष्पगद्गदं रघु० ८।४३, ७०, भट्टि० ६।११, तामिह वृथा कि विलापामि गीत० ६, विप्र, झगड़ा करना, विरोध करना, वादविवाद करना, तू तू मैं मैं करना, सम्, 1. बातें करना, वार्तालाप करना संलपतो जनसमाजात्- दश० 2. नाम लेना, पुकारना।

लपनम् [लप्+ल्युट्] 1. बातें करना, बोलना 2. मुख।

लपित (भू० क० कृ०) [लप्+क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, चीं चीं किया हुआ, तम् वाणी, आवाज़।

लब्ध (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त] 1. हासिल किया, प्राप्त किया, अवाप्त 2. लिया, ग्रहण किया 3. प्रत्यक्ष-ज्ञान प्राप्त किया, बोध पाया 4. उपलब्ध किया (भाग आदि से), दे० लभ् अथम् जो प्राप्त कर लिया गया, या सुरक्षित हो गया - लब्धं स्वोदयवक्षणात् हि० २।८, रघु० १९।३ । सम०— अन्तर (वि०) 1. जिसने कोई अवसर प्राप्त कर लिया है 2. जिसकी कहीं पहुंच हो गई है या प्रवेश मिल गया है रघु० १६।७, अवकाश, अवसर (वि०) 1. जिसे किसी बात का अवसर मिल गया है 2. (कोई भी बात) जिसे (कार्य के लिए) क्षेत्र मिल गया है - लब्धावकाशो मे प्रार्थना श० १ 3. जिसने फ़ुरसत प्राप्त करली है, जिसे अवकाश का समय मिल गया है, इसी प्रकार 'लब्धक्षण',— आस्पद (वि०) जिसने कहीं पैर जमा लिया है, या कोई पद प्राप्त कर लिया है - मालवि० १।१७, उदय (वि०) 1. जन्मलिया हुआ, उत्पन्न, उदित लब्धोदया चांद्रमसीव लेखा — कु० १।२५ 2. समृद्धिशाली, या उन्नत—स त्वतो लब्धोदयः 'उसकी उन्नति तुम्हारी बदौलत हुई', —काम (वि०) जिसे अभीष्ट पदार्थ मिल गया है कीर्ति (वि०) विश्रुत, प्रसिद्ध विख्यात,—चेतस्,—संज्ञ (वि०) जिसे होश आ गया है, जिसकी बेहोशी दूर हो गई है,— जन्मन् (वि०) उत्पन्न, पैदा,—नाशन् —शब्द (वि०) विश्रुत, विख्यात, नाशः प्राप्त की हुई वस्तु का नाश लब्धनाशो यथामृत्युः, - प्रशमनम् 1. प्राप्त की हुई वस्तु को सुरक्षापूर्वक रखना 2. सुपात्र को दान या धनसमर्पण मनु० ७।५६ पर कुल्लू०, लक्ष,—क्ष (वि०) 1. जिसने ठीक निशाने पर आघात किया है 2. अस्त्रप्रयोग में कुशल,—वर्ण (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान् चित्रं स्वदोषे विषये समन्तात् सर्वेऽपि लोकाः किल लब्धवर्णाः—राजत० 2. प्रसिद्ध, विश्रुत, विख्यात मृच्छ० ४।२६, °भाज् (वि०) विद्वानों का आदर करने वाला— कृच्छ्र-लब्धमपि लब्धवर्णभाक् तं दिदेश मुनये सलक्षणम् रघु० ११।२, विद्य (वि०) विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्, सिद्धि (वि०) जिसने अभीष्ट पदार्थ (सफलता) या पूर्णता प्राप्त कर ली है।

लब्धिः (स्त्री०) [लभ्+क्तिन्] 1. अभिग्रहण, प्राप्ति, अवाप्ति 2. लाभ, फ़ायदा 3. (गणि० में) भजनफल।

लब्धिमत् (वि०) [लभ्+क्त्वि, मतुप्] प्राप्त, अवाप्त, उपलब्ध।

लभ् (भ्वा० आ० लभते, लब्ध) 1. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अवाप्त करना लभेत सिक-तासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् भर्तृ० २।५, चिराय याचायर्यमलम्भि दिग्गजैः - शि० १।६४, रघु० ९।२९ 2. रखना, अधिकार में लेना, कब्जे में होना 3. लेना, प्राप्त करना 4. पकड़ना, लेना, दबोचना रघु० ११३ 5. मालूम करना, मुकाबला होना - यत्किंचिल्लभते पथि 6 वसूल करना, उगाहना 7. जानना, सीखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना भ्रमणं""गमनादेव लभ्यते - भाषा० ६, सत्यमलभमान मनु० ८।१६९ पर कुल्लू० 8. (किसी बात को करने के) योग्य होना ('तुमुन्' के साथ) भर्तृमपि न लभ्यते, साधर्मा लभ्यते कर्तुं लोके वैद्याग्रणे (संज्ञाशब्दों के साथ प्रयुक्त होकर 'लभ्' के अर्थों में तदनुकूल परिवर्तन हो जाता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं, उदा० **गर्भलभ्** गर्भवती होना, गर्भ धारण करना, **पदं लभ्, आस्पदं लभ्** पैर जमाना, प्रभाव रखना, दे० 'पद' के नीचे, **अन्तरं लभ्** पग रखना, प्रविष्ट होना, लेभेऽन्तरं चेतसि नोपदेशः—रघु० ६।६६, मन पर प्रभाव नहीं पड़ा, **चेतनां लभ्**—, **संज्ञां लभ्** होश में आना, **जन्म लभ्** पैदा होना, – कि० ५।४३, **दर्शनं लभ्** भेंट होना, साक्षात्कार होना, दर्शन करना **स्वास्थ्यं लभ्** स्वस्थ होना, आराम में होना)—प्रेर० (लम्भयति—ते) 1. प्राप्त करवाना, दिलवाना कि० २।५८ 2. देना, प्रदान करना, अर्पण करना मोदकशरावं माणवकं लम्भय विक्रम० ३ 3. कष्ट उठाना 4. प्राप्त करना, लेना 5. मालूम करना, खोजना -इच्छा० (लिप्सते) प्राप्त करने की इच्छा करना, प्रबल लालसा रखना—अलब्धं चैव लिप्सेत—हि० २।८. आ—, 1. स्पर्श करना यामालभ्यार्कमीक्ष्य वा—मनु० ५।८७, भट्टि० १४।९१ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, पहुँचना—येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमालप्स्यते ते—मेघ० १५ (पाठान्तर) 3. मार डालना, (यज्ञ में पशु का बलिदान करना—मर्दभं पशुमालभ्य—याज्ञ० ३।२८०, **उप**—, 1. जानना, समझना, देखना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना पंच० १।७६ 2. निश्चय करना, मालूम करना –ब्रूहि वदुपलभ्यधम्—उत्तर० १, तत्पद एवामुपलप्स्ये—श० १ 3. हासिल करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपभोग करना, अनुभव प्राप्त करना उपलब्धसुखस्तदा स्मरं वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति—कु० ४।४२, विक्रम० २।१०, रघु० ८।८२, १०।२, १८।२१, मनु० ११।१७, **उपा** , 1. कलंक लगाना, बुरा भला कहना, चुभती बात कहना, झूठी खोटी सुनाना पयोधरविस्तारपितृकमात्मनो यौवनमुपालभस्व मां किमुपालभसे श० १, कु० ५।५८, रघु० ७।४४, शि० ९।९०, **प्रति**—, 1. वसूल करना, फिर से उपलब्ध करना 2. हासिल करना, प्राप्त करना, **विप्र**—, 1. ठगना, धोखा देना, आँख में धूल झोंकना 2. वसूल करना, फिर से प्राप्त करना 3. अपमान करना, अनादर करना, **सम्**– हासिल करना।

लभनम् [लभ्+ल्युट्] 1. हासिल करने की क्रिया, प्राप्त करना 2. प्रत्यय (पहचानने) की क्रिया।

लभ्रः [लभ्+असच्] 1. दौलत, धन 2. जो निवेदन करता है, निवेदक, **–सम्**, घोड़े को बाँधने की रस्सी (पुं० भी)।

लभ्य (वि०) [लभ् कर्मणि यत्] 1. प्राप्त होने के योग्य, पहुँचने के योग्य अवाप्त होने या प्राप्त करने के योग्य प्रांशुलभ्ये फले लोभाद्बाहुरिव वामनः रघु० १।३, ४।८८ कु० ५।१८ 2. मिलने के योग्य कु० १।४० 3. योग्य, उपयुक्त, उचित 4. सुबोध।

लमकः [रम्+क्वुन्, रस्य लत्वम्] प्रेमी, जार (उपपति)।

लम्पट (वि०) [रम्+अटन्, पुक, रस्य लः] 1. लालची, लोलुप, लालायित 2. विषयी, विलासी, कामुक, व्यसनी, इन्द्रियपरायण, **–टः** स्वेच्छाचारी दुश्चरित्र, दुराचारी ('लम्पाक' शब्द भी इसी अर्थ में)।

लम्फः [लम्फ्+घञ्] कूद, उछाल, छलांग।

लम्फनम् [लम्फ्+ल्युट्] कूदना, उछलना।

लम्ब् (स्वा० आ० लम्बते, लंबित) 1. लटकना, टांगना, दोलायमान होना ऋषयो ह्रस्व लम्बन्ते - महा० 2. अनुवक्त होना, चिपकना, सहारा लेना, आश्रित होना—ललिम्बिरे सदसि लताः प्रिया इव शि० ७।७५, प्रस्थाने ते कथमपि सखे लम्बमानस्य भावि—मेघ० ४१ (यहां लं० का अर्थ है 'नीचे लटकता हुआ' या 'कूल्हों का सहारा लिये हुए') 3. नीचे जाना, डूबना, (सूर्य आदि का) अस्त होना या डूबना, नीचे गिरना लम्बमाने दिवाकरे–शि० ९।३०, कि० ९।१, खद्योतचुम्बनलोलितकज्जलमुज्ज्वलयं प्रियलोचनं गीत० १२ (=गलित) 4. पीछे गिरना या पड़ना, पिछड़ना 5. विलंब करना, ठहरना 6. ध्वनि करना - प्रेर० (लम्बयति–ते), 1. हराना, नीचे लटकाना 2. ऊपर लटकाना, स्थगित करना 3. बिछाना, (हाथ आदि) फैलाना करेण वातायनलम्बितेन - रघु० १३।२१, **को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्** ६।७५, **अव**—, लटकना, लटकाना, स्थगित होना कनकभृङ्खलावलम्बिनी - मुद्रा० २ 2. नीचे डूब जाना, उतरना 3. थामना, जुड़ना, झुकना या सहारा लेना, पालनपोषण करना दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थितः - श० २, **यथो तदीयामवलम्ब्य** बाहुगुल्मि–रघु ३।२५ 4. थामना, संभालना, पालनपोषण करना, जीवित रहना (आल० से भी) ले लेना हस्तेन तस्यावलम्ब्य दामः - रघु ७।९, कु० ३।५५, ६।६८, हृदयं न त्ववलम्बितुं क्षमाः—रघु० ८।६० 5. निर्भर रहना, टिकना—व्यवहारोऽयं चारदत्तमवलम्बते मृच्छ० ९, भट्टि १८।४१ 6. सहारा लेना, आश्रय लेना, भरोसा करना, **धैर्यमवलम्ब्** धैर्य या साहस से काम लेना,–**कि स्वात्मन्यमवलम्बसे**—श० ५, **माध्यस्थ्यमिष्टेऽप्यवलम्बतेऽर्थे**—कु० १।५२, शि० २।१५, **आ** , 1. आराम करना (किसी के सहारे) झुकना 2. लटकना, स्थगित होना विक्रम० ५।२, 3. हथियाना, पकड़ना—अथालम्ब्य धनुः रामः—भट्टि० ६।३५, १४।९५ 4. पालनपोषण करना, थामना, उत्तर दायित्व लेना –आधोरणालम्बितं—रघु० १८।३९ 5. निर्भर होना—तमालम्ब्य रसोद्गमान्–सा० द० ६३ 6. सहारा लेना, आसरा लेना, हाथ पकड़ना, धारण करना—**अमुमेवार्थमालम्ब्य न जिजीविषाम्**—मुद्रा० २।२०, **कि** १७।३४, **उद्**—, खड़ा होना, सीधा खड़ा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होना,—पादेनैकेन गगनं द्वितीयेन च भूतले, तिष्ठाम्यु-ल्लम्बितस्तावद्यावत्तिष्ठति भास्करः – मृच्छ० २।१० वि —, 1. लटकाना, लटकना, स्थगित होना रघु० १०।६२ 2. अस्त होना, क्षीण होना (सूर्यादि का) 3. ठहरना, पिछड़ना, रह जाना– कु० ७।१३, 4. देर करना, मन्दगति होना – विलम्बितफलैः कालं निनाय स मनोरथैः–रघु० १।३३, कि विलम्ब्यते त्वरितं तं प्रवेशय—उत्तर० १।

लम्ब (वि०) [लम्ब्+अच्] 1. नीचे की ओर लटकता हुआ, झूलता हुआ, लम्बमान, दोलायमान – पाण्डयो-ऽयंसाप्तिलम्बहारः—रघु० ६।६०, ८४, मेघ० ८४ 2. लटकता हुआ, अनुषक्त 3. बड़ा, विस्तृत 4. विस्तीर्ण 5. लंबा, ऊँचा, बः 1. लम्बमापक 2. सह-अक्ष-रेखा, किसी स्थान के ऊर्ध्वबिन्दु और ध्रुव-बिन्दु का मध्यवर्ती जाप, अक्षरेखा का पूरक। सम० –उदर (वि०) बड़े पेट वाला, तोंदवाला, स्थूलकाय भारीभरकम (रः) 1. गणेश का नामांतर 2. भोजन भट्ट, –ओष्ठः (लम्बो–ष्ठः) ऊँट, –कर्णः 1. गधा, 2. बकरा 3. हाथी 4. बाज, शिकरा 5. पिशाच, राक्षस,—जठर (वि०) मोटे पेट वाला, भारीभरकम, –पयोधरा वह स्त्री जिसके स्तन भारी हों और नीचे को लटकते हों,—स्फिच् (वि०) जिसके नितंब भारी और उभरे हुए हों।

लम्बकः [लम्ब+कन्] (ज्या० में) 1. लंबरेखा 2. अक्षरेखा का पूरक, (ज्यो० में) सह-अक्षरेखा।

लम्बनः [लम्ब्+ल्युट्] 1. शिव का विशेषण 2. कफ–प्रधान प्रकृति, नम् 1. नीचे लटकना, निर्भर रहना, उतरना आदि 2. झालर 3. (चन्द्रमा के) देशान्तर में स्थान-भ्रंश 4. एक प्रकार का लंबा हार।

लम्बा [लम्ब+टाप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2. लक्ष्मी का विशेषण।

लम्बिका [लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कोमल तालुका लटकता हुआ मांसल भाग, उपजिह्वा, कण्ठ के अन्दर का कौवा।

लम्बित [भू० क० कृ०) [लम्ब्+क्त] 1. नीचे लटकता हुआ, झूलता हुआ 2. स्थगित 3. डूबा हुआ, नीचे गया हुआ 4. सहारा लिये हुए, अनुषक्त (दे० लम्ब्)।

लम्बुषा (स्त्री०) सात लड़ियों का हार।

लम्भः [लभ्+घञ्, नुम्] 1. सिद्धि, अवाप्ति 2. मिलन 3. पुनः प्राप्ति 4. लाभ।

लम्भनम् [लभ्+ल्युट्, नुम्] 1. सिद्धि, अवाप्ति 2. पुनः प्राप्ति।

लम्भित [भू० क० कृ०) [लभ्+क्त, नुम्] 1. उपार्जित, हासिल, प्राप्त 2. दत्त, सुधारा हुआ 4. नियुक्त, प्रयुक्त 5. संयोग 6. कहा गया, संबोधित।

लय् (भ्वा० आ० लयते) जाना, हिलना-जुलना।

लयः [ली+अच्] 1. चिपकना, मिलाप, लगाव 2. प्रच्छन्न, छिपा हुआ 3. संगलन, पिघलना, घोल 4. लदर्शन, विघटन, बुझाना, विनाश, लयं या विघटित होना, नष्ट होना 5. मन की लीनता, गहन एकाग्रता अनन्य भक्ति (किसी भी पदार्थ के प्रति)–पश्यन्ती शिवरूपिणं लयवशादात्मानमभ्यागता—मा० ५।२, ७, ध्यानलयेन - गीत० ४ 6. संगीत की लय (तीन प्रकार की - द्रुत, मध्य और विलंबित)—किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः—रघु० ९।३५, पादन्यासो लयवनुगतः - मालवि० २।९ 7. संगीत में विश्राम 8. आराम 9. विश्राम स्थान, आवास, निवास --अलया–शि० ४।५७, 'कोई स्थिर निवास न रखते हुए, घूमते हुए' 10 मन की शिथिलता, मानसिक अकर्मण्यता 11. आलिंगन। सम०—आरम्भः, आलम्भः पात्र, अभिनेता, नर्तक,—कालः (सृष्टि का) प्रलयकाल,—गत (वि०) विघटित, पिघला हुआ,–पुत्री नटी, अभिनेत्री, नर्तकी।

लयनम् [ली+ल्युट्] 1. अनुषक्त होना, जुड़ना, चिपकना 2. विश्राम, आराम 3. विश्रामस्थल, घर।

लवं (भ्वा० पर० लवति) जाना, हिलना-जुलना।

लल् i (भ्वा० उभ० ललति—ते) खेलना, क्रीडा करना, इठलाना, किलोल करना—पनसफलानीव वानरा ललन्ति—मृच्छ० ८।८, गजकलभा इव बन्धुला ललामः ४।२८।

ii (चुरा० उभ० या प्रेर० लालयति —ते, लालित) खेलने की प्रेरणा देना, पुचकारना, लाड-प्यार करना, दुलार करना, प्रेमालिंगन करना - लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः, तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत् –सुभा०—कु० ५।१५ 2. इच्छा करना।

iii (चुरा० उभ० लालयति ते) 1. लाड-प्यार करना, मृच्छ० ४।२८ 2. जीभ लपलपाना 3. इच्छा करना।

लल (वि०) [लल्+अच्] 1. क्रीडासक्त, विनोद प्रिय 2. लपलपाने वाला 3. अभिलाषी, इच्छुक। सम० —जिह्व=ललजिह्व, जीभ से लपलप करने वाला।

ललत् (वि०) [लल्+शतृ] 1. खेलने वाला, विहार करने वाला 2. लपलपाता हुआ। सम० - जिह्व (वि०) (ललजिह्व) 1. जीभ से लपलपाने वाला 2. बर्बर, भीषण (ह्वः) 1. कुत्ता 2. ऊँट।

ललनम् [लल्+ल्युट्] 1. क्रीडा, खेल, आमोद, रंगरेली 2. जीभ बाहर निकालना।

ललना [लल्+णिच्+ल्युट्+टाप्] स्त्री,—शठ नाकलोक-ललनाभिरविरतरतं रिरंसासे --शि० १५।८८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3. जिह्वा। सम०—प्रियः कदंब का पेड़।

ललनिका [ललना+कन्+टाप् ह्रस्वः] छोटी स्त्री, अभागी स्त्री—काव्या० ३।५०।

ललन्तिका [लल्+शतृ+ङीप्+कन्+टापू, ह्रस्वः] 1. लंबी माला 2. छिपकली।

ललाकः [लल्+आकन्] पुरुष का लिंग, जननेन्द्रिय।

ललाटम् [लड्+अच् डस्य लः, ललमटति अट्+अण् वा] मस्तक—लिखितमपि ललाटे प्रोञ्छितुं कः समर्थः—हि० १।२१, नै० १।१५। सम०—अक्षः शिव का विशेषण,—तटम् मस्तक का ढलान, माथा,—पट्टः, पट्टिका 1. मस्तक का सपाट तल 2. (तेहरा) शिरोवेष्टन, त्रिमुकुट, सिर की चोटी, केशबंध,—लेखा मस्तक की रेखा।

ललाटकम् [ललाट+कन्] 1. मस्तक 2. सुन्दर माथा।

ललाटन्तप (वि०) [ललाट+तप्+खश्, मुम्] 1. (मस्तक) को जलाने या तपाने वाला—ललाटन्तपस्तपति तपनः मा० १, उत्तर० ६, 'सूर्य ऊपर ठीक सिर पर चमक रहा है'—ललाटन्तपसन्तप्तिः—रघु १३।४१ 2. (अतः) बहुत पीड़ाकर—लिखिलेलाटन्तपनिष्ठुराक्षरा—नै० १।१३८, -पः सूर्य।

ललाटिका [ललाट+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. मस्तक पर पहना जाने वाला आभूषण, टीका 2. मस्तक पर चन्दन का या अन्य किसी सुगंधित चूर्ण का तिलक—कु० ५।५५।

ललाटुल (वि०) उन्नत और सुन्दर मस्तकवाला।

ललाम (वि०) (स्त्री०-मी) [लड्+विषपू, डस्य लत्वम्, तम् अमति-अम्+अण्] सुन्दर, प्रिय, मनोहर, —मयू मस्तक का आभूषण, टीका, सामान्य अलंकार (इस अर्थ में पुं० भी)—अहं तु तामाश्रमललामभूतां शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि—श० २, शि० ४।२८ 2. कोई भी श्रेष्ठ वस्तु 3. मस्तक का तिलक 4. चिह्न, प्रतीक, तिलक 5. झण्डा, पताका 6. पंक्ति, माला, रेखा 7. पूँछ 8. अयाल, गरदन के बाल 9. प्राधान्य, मर्यादा, सौन्दर्य 10. सींग,—मः घोड़ा।

ललामकम् [ललाम+कन्] फूलों का गजरा जो मस्तक पर धारण किया जाता है।

ललामन् (नपुं०) [लल्+डमनिन्] 1. अलंकार, आभूषण, 2. (अतः) कोई भी अपने प्रकार की श्रेष्ठवस्तु—कन्यालोक कमनीयमजस्य लिप्सोः—रघु० ५।६४ 'कन्याओं में श्रेष्ठ या अलंकारभूत' 3. झंडा पताका 4. साम्प्रदायिक चिह्न, तिलक, संकेत, प्रतीक 6. पूंछ।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1. क्रीड़ासक्त, खेलने वाला, इठलाने वाला 2. शृंगारप्रिय, क्रीड़ाप्रिय, स्वेच्छाचारी, विषयासक्त 3. प्रिय, सुन्दर मनोहर, प्रांजल, — ललीललललितललितैर्ज्योत्स्नाप्रायैरकृत्रिमविभ्रमैः (अंगकैः) उत्तर० १।२०, विधाय सृष्टिं ललितां विधातुः—रघु० ६।३७, १९।३९, ८।१, मा० १।१५, कु० ३।७५, ६।४५, मेघ० ३२,६४ 4. सुहावना, लावण्यमय, रुचिकर, बढ़िया—प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ—रघु० ८।६७, संदर्शितेदं ललिताभिनयस्य शिक्षा—मालवि० ४।९, विक्रम० २।१८ 5. अभीष्ट 6. मृदु, कोमल शि० ७।६४ 7. थरथराता हुआ, कम्पायमान,—तम् 1. क्रीड़ा, रंगरेली, खेल 2. शृंगार परक विनोद, गतिलावण्य, स्त्रियों में प्रीति विषयक हावभाव—शि० ९।७९, कि० १०।५२ 3. सौन्दर्य, लावण्य, आकर्षण 4. कोई भी प्राकृतिक या स्वाभाविक क्रिया 5. सरलता, भोलापन। सम०—अर्थ (वि०) सुन्दर या प्रीतिविषयक अर्थ वाला-विक्रम० २।१४,—पद (वि०) प्रांजलरचनायुक्त—श० ३, —प्रहारः मृदु या कोमल आघात।

ललिता [ललित+टाप्] 1. स्त्री 2. स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3. कस्तूरी 4. दुर्गा का एक रूप 5. विभिन्न छन्दों के नाम सम,—पञ्चमी आश्विनशुक्ल का पांचवां दिन,—सप्तमी भाद्रपद के शुक्लपक्ष का सातवां दिन।

लवः [लू+अप्] 1. उत्पाटन, उल्लुंचन 2. कटाई, (पके अनाज की) लावनी 3. अनुभाग, टुकड़ा, खण्ड, कवल या ग्रास 4. कण, बूंद, अल्पमात्रा, थोड़ा (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—जललवमुचः-मेघ० २०,७०, आचामति स्वेदलवान् मुखे ते—रघु० १३।२०, ६।५७, १६।६६, अश्रु० १५।९७, अमृत०—कि० ५।४४, श्लक्ष्णपलक्ष्मीलवकीर्तेः दास इव- गीत० ११, इसी प्रकार तृण०, अपराध०, ज्ञान०, सुख० घन० आदि 5. ऊन, पक्षम 6. क्रीडा 7. समय का सूक्ष्म विभाग (=एक निमेष का छठा भाग) 8. किसी भिन्न राशि अंश 9. (ज्योति० में) घात 10. हानि, विनाश 11. राम का एक पुत्र, यमल (जोड़वां) में से एक—दूसरे का नाम कुश था, लव का अपने भाई कुश के साथ वाल्मीकि मुनि के द्वारा पालनपोषण हुआ, सभास्थल आदि स्थानों में पाठ करने के लिए दोनों को महा कवि द्वारा रामायण की शिक्षा दी गई, (इस नाम की व्युत्पत्ति के लिये दे० रघु० १५।३२), वम् 1. लौंग, 2. जायफल,—वम् (अव्य०) कुछ, थोड़ा सा—लवमपि लवङ्गे न रमते—सरस्वती० १।

लवङ्गः [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा द्वीपान्तरानीतलवङ्गपुष्पैः—रघु० ६।५७, ललित लवङ्गलता परिशीलन कोमल मलयसमीरे गीत० १,—गम् लौंग। सम० कलिका लौंग।

लवङ्गकम् [लवङ्ग+कन्] लौंग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लवण (वि०) [लू+ल्युट्, पृषो० णत्वम्] 1. क्षारीय, सलोना, नमकीन 2. प्रिय, मनोहर, णः 1. खारी स्वाद 2. नमकीन पानी का समुद्र 3. एक राक्षस का नाम, मधुका पुत्र, यह शत्रुघ्न के द्वारा मारा गया था - रघु० १५।२, ५,१६, २६ 4. एक नरक का नाम, णम् 1. नमक 2. समुद्री नमक, लूण 3. कृत्रिम नमक । सम०—अन्तकः शत्रुघ्न का विशेषण,—अब्धिः खारी समुद्र, °जम् समुद्रीनमक,—अम्बुराशिः समुद्र,—आमाति वेला लवणाम्बुराशेः--रघु० १३।१५, विक्रम० १।१५, अम्भस् (पुं०) समुद्र--रघु० १२।७०, १७।५४, (नपुं०) नमकीन पानी,—आकरः 1. नमक की खान 2. नमकीन जलाशय अर्थात् समुद्र 3. (आलं०) लावण्य की खान —आलयः समुद्र, उत्तमम् 1. सेंधा नमक 2. यवक्षार, --उदः 1. समुद्र 2. नमकीन पानी का समुद्र,—उदकः, —उदधिः—अलः समुद्र,—क्षारम् एक प्रकार का नमक,—नेहः एक प्रकार का मूत्ररोग, समुद्रः नमकीन समुद्र, सागर ।

लवणा [लवण+टाप्] कान्ति, सौन्दर्य।

लवणिमन् (पुं०) [लवण+इमनिच्] 1. नमकीनपना लावण्य 2. सौन्दर्य, मनोहरता, चारुता ।

लवनम् [लू भावे कर्मणि च ल्युट्] 1. लुनाई, लावनी, (पके अनाज की) कटाई 2. काटने का उपकरण, दरांती, हँसिया ।

लवली [लव+ला+क+ङीष्] एक प्रकार की लता, —मया लब्धः पाणिर्ललितलवलीकन्दलनिभः उत्तर० ३।४० ।

लवित्रम् [लूयतेऽनेन+लू+इत्र] काटने का उपकरण, दरांती, हँसिया ।

लश् (चुरा० उभ० लशयति ते) किसी कला का अभ्यास करना, सु० 'लस्' ।

लशु (शू) नः, - नम् [अशे: उनन्, लशश्च] लहसुन, —निखिलरसायनमहितो गन्धेनोग्रेण लशुन इव—रस० (-भामि० १।८१), यशः सौरभलशुनः -भामि० १।९३ ।

लष् (भ्वा० दिवा० पर० लषति, लष्यति, लषित) चाहना, इच्छा करना, लालायित होना, उत्सुक होना (प्रायः 'अभि' उपसर्ग के साथ), अभि—, चाहना, इच्छा करना, लालायित होना—मानुषानभिलेषुरद्यनाः -रघु० १९।१२ ।

लषित (भू० क० कृ०) [लष्+क्त] चाहा हुआ, वाञ्छित ।

लष्ठः [लष्+वन्] नाटक का पात्र, अभिनेता, नट, नर्तक ।

लस् (स्वा० पर० लसति, लसित) 1. चमकना, दमकना, जगमगाना, - मुक्ताहारेण लसता हसतीव स्तनद्वयम् —काव्य० १०, करेणाणि चरणद्वयं सरसलसदलक्तकरागं --गीत० १०, अमर १६, नै० २।५३ 2. प्रकट होना, उगना, प्रकाश में आना 3. आलिंगन करना 4. खेलना, किलोल करना, उछल-कूद करना, नाचना प्रेर० (लासयति—ते) 1. चमकना, शोभा बढ़ाना, अलंकृत करना 2. नचाना 3. कला का अभ्यास करना, उद्—, 1. क्रीडा करना, खेलना, लहराना, फड़फड़ाना शि० ५।४७ 2. चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना—उल्लसत्काञ्चनकुण्डलाढ्यम्—शि० ३।५, ३३, ५।१५, २०।५६ 3. उदित होना, उगना शि० ४।५८, ६।११, मा० ९।३८ 4. फूंक मारना, खुलना, विस्तीर्ण होना, (प्रेर०) रोशनी करना, उज्ज्वल करना, परि—, चमकना, सुन्दर लगना, वि—, 1. चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना,—विथति व विलसत्तहदिन्दुविलसति चन्द्रमसो न यद्वदन्यः—भट्टि० १०।६८, मेघ० ४७, रघु० १३।७६ 2. दिखाई देना, उदय होना, प्रकट होना 'प्रेम विलसति महत्तदहो- शि० १५।१४, ९।८७ 3. क्रीडा करना, मनोविनोद करना, खेलना, किलोल करना,--कापि चपला मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा गीत० ७, हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे गीत० १, 4. ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना ।

लसा [लसति-लस्+अच्+टाप्] 1. जाफरान, केसर 2. हल्दी ।

लसिका [लस्+अच्+कन्+टाप् इत्वम्] थूक लार ।

लसित (भू० क० कृ०) [लस्+क्त] खेला, क्रीडा की, दिखाई दिया, प्रकट हुआ, इधर उधर उछल कूद करने वाला, दे० 'लस्' ।

लसीका [लस+ङीष्+कन्+टाप्] 1. थूक 2. पीप, मवाद 3. ईख का रस 4. टीके का रस ।

लज्ज् (भ्वा० आ० लज्जते, लज्जित) 1. शर्मिन्दा होना, लज्जा अनुभव करना (बहुधा करण० या तुमुन्नंत के साथ)—स्त्रीजनं प्रहरन्कथं न लज्जसे—रत्न० २, भट्टि० १५।३३ 2. शर्माना, लजाना प्रेर० (लज्जयति —ते) लज्जित करना रघु० १९।१४, वि—, शर्मीला, या विनीत होना, संकोच करना यत्राशुकाक्षेपविलज्जितानां—कु० १।१४, रघु० १४।२७ ।

लस्त (वि० [लस्+क्त] 1. आलिङ्गित, भुजपाशबद्ध 2. दक्ष, कुशल ।

लस्तकः [लस्+कन्] धनुष का मध्यभाग, वह भाग जहां हाथ से पकड़ा जाता है ।

लस्तकिन् (पुं०) [लस्तक+इनि] धनुष ।

लहरिः, री (स्त्री०) [लिन इन्द्रेण हव ह्रियते ऊर्ध्वगमनाय ल+ह+इन्, पक्षे ङीप्] लहर, तरंग, बड़ी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहर, झाल—करेणोल्लिप्यास्ते जननि विजयन्तां लहर्यः –गंगा० ४०, इमां पीयूषलहरीं जगन्नायेन निर्मिताम्—५३, इसी प्रकार आनन्द°, तरुणा°, सुधा° आदि।

ला (अदा० पर० लाति) लेना, प्राप्त करना, ग्रहण करना सम्भालना—लः खङ्गान्—भट्टि० १४।९२, १५।५३।

लाकुटिक (वि०) (स्त्री०-की) [लकुटः प्रहरणमस्य ठक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—कः सन्तरी, पहरेदार पंच० ४।

लाक्षकी (स्त्री०) सीता का नाम।

लाक्षणिक (वि०) (स्त्री०-की) [लक्षणया बोधयति ठक्] 1. वह जो चिह्न या निशानों से परिचित हो 2. विशिष्ट, संकेतक 3. गौण अर्थ रखने वाला, गौण अर्थ में प्रयुक्त (शब्द आदि—लक्षक जो वाच्य और व्यंजक से भिन्न हो) —स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा—काव्य० २ 4. गौण, निकृष्ट 5. पारिभाषिक,—कः पारिभाषिक शब्द।

लाक्षण्य (वि०) [लक्षणं वेत्ति—ष्यञ्] 1. चिह्न संबंधी, संकेतद्योतक 2. लक्षणों का ज्ञाता, लक्षण या संकेतों की व्याख्या करने के योग्य।

लाक्षा [लक्ष्यतेऽनया लक्ष्+अच्, पृषो० वृद्धिः] एक प्रकार का लाल रंग, महावर, लाख (प्राचीनकाल में यह स्त्रियों की एक प्रसाधन सामग्री थी, वे इससे अपने पैर के तलवे तथा ओष्ठ रंगती थीं, तु० 'अलक्तक')। कहते हैं कि वीरबहूटी नामक कीड़े से अथवा किसी विशेष वृक्ष की राल से यह रंग तैयार किया जाता था)—निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित् (तृष्णा)—श० ४।५, ऋतु० ६।१३, कि० ५।२३ 2. 'वीरबहूटी' जिससे यह रंग बनता है। सम०—तरुः—वृक्षः एक वृक्ष का नाम, पलाश, ढाक —प्रसादः,—प्रसाधनः लाल लोध्रवृक्ष, रक्त (वि०) लाख से रंगा हुआ।

लाक्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [लाक्षा+ठक्] 1. लाख से संबंध रखने वाला, लाख से बना हुआ या रंगा हुआ 2. एक लाख (संख्या) से संबद्ध।

लाख् (भ्वा० पर० लाखति) 1. सूख जाना, नीरस होना 2. अलंकृत करना 3. पर्याप्त होना, सक्षम होना 4. प्रदान करना 5. रोकना।

लागुडिक (वि०) [लगुड+ठक्] दे० 'लाकुटिक'।

लाघ् (भ्वा० आ० लाघते) बराबर होना, पर्याप्त होना, सक्षम होना।

लाघवम् [लघोर्भावः अण्] 1. अल्पता, क्षुद्रता 2. लघुता, हलकापन 3. अविचार, निष्फलता 4. नगण्यता 5. अनादर, घृणा, अपमान, अप्रतिष्ठा—सेवां लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने ववर्षुर्न विदुः—मुद्रा० ३।१४, भग० २।३५ 6. फुर्ती, चुस्ती, वेग 7. क्रियाशीलता, दक्षता, तत्परता—हस्तलाघवम् 8. सर्वतोमुखी प्रतिभा —बुद्धिलाघवम् 9. संक्षेप, (अव्यक्ति की संक्षिप्तता) 10. (कविता में) मात्रा की कमी।

लाङ्गलम् [लिङ्ग्+कलच्, पृषो० वृद्धिः] 1. हल 2. हल की शकल का शहतीर 3. ताड़ का वृक्ष 4. शिश्न, लिंग, 5. एक प्रकार का फूल। सम०—ग्रहः हाली, किसान, —दण्डः हल का लट्ठा, हलसः, ध्वजः बलराम का नामान्तर,—पद्धतिः (स्त्री०) खूड, हल से बनी रेखा, सीता,—फालः हलकी फाली।

लाङ्गलिन् (पुं०) [लाङ्गल+इनि] 1. बलराम का नाम —बन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली याः सिषेवे—मेघ० ४९ 2. नारियल का पेड़ 3. साँप।

लाङ्गली [लाङ्गल+अच्+ङीष्] नारियल का पेड़।

लाङ्गलीषा [लाङ्गल+ईषा] हलसः, हल का लट्ठा।

लाङ्गूलम् [लिङ्ग्+ऊलच्; बा० वृद्धिः] 1. पूँछ 2. शिश्न, लिंग।

लाङ्गूलम् [लिङ्ग्+ऊलच् पृषो०] 1. पूँछ—लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातम्'''''श्वा पिण्डदस्य कुरुते—भर्तृ० २।३१, 'कुत्ता पूंछ हिलाता है' 2. शिश्न, लिंग।

लाङ्गूलिन् (पुं०) [लाङ्गूल+इनि] बन्दर, लंगूर।

लाज् लाज्ज् (भ्वा० पर० लाजति, लाज्जति) 1. कलंक लगाना, निन्दा करना 2. भूनना, तलना।

लाजः [लाज+अच्] गीला धान,—जाः (ब० व०) भूना हुआ, या तला हुआ धान (स्त्री० भी)। (ते) अवाकिरन्बालतताः प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्याः —रघु० २।१०, ४।२७, ७।२५, कु० ७।६९, ८०।

लाञ्छ् (भ्वा० पर० लाञ्छति) 1. भेद करना, चिह्नित करना, विशिष्ट बनना 2. सजाना, अलंकृत करना।

लाञ्छनम् [लाञ्छ् कर्मणि ल्युट्] 1. चिह्न, निशान, निशानी, विशिष्टतासूचक चिह्न- नवाम्बुदानीकमुरुतलाञ्छने (वनपि)- रघु० ३।५३, प्रायः समास के अन्त में 'चिह्नित' 'विशिष्टीकृत' अर्थ बतलाने के लिए—जातेऽथ देवस्य तया विवाहमहोत्सवे साहसलाञ्छनस्य विक्रमांक० १०।२, रघु० ६।१८, १६।८४, इसी प्रकार 'श्रीकण्ठपदलाञ्छनः' मा० १, 'श्रीकण्ठ' विशेषण को धारण करते हुए 2. नाम, अभिधान 3. दाग, धब्बा, अपकीर्ति का चिह्न 4. चन्द्रमा का कलंक (काला धब्बा) कु० ७।३५ 5. सीमान्त।

लाञ्छित (वि०) [लाञ्छ्+क्त] 1. चिह्नित, अन्तरयुक्त, विशिष्ट 2. नामी, नामक 3. विभूषित 4. सुसज्जित।

लाट (पुं०, ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम—एष च (लाटानुप्रासः)- प्रायेण लाटजनप्रियत्वाल्लाटानुप्रासः- सा० द० १०,—टः 1. लाट देश का राजा 2. पुराने जीर्णशीर्ण वस्त्र 3. कपड़े

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. बच्चों जैसी भाषा। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास अलंकार के पाँच भेदों में से एक, शब्द या शब्दों की पुनरावृत्ति उसी अर्थ में परन्तु भिन्न प्रयोग के साथ, मम्मट ने उसका सोदाहरण निरूपण किया है: —शब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः —उदा० वदनं वरवर्णिन्यास्तस्याः, सत्यं सुधाकरः सुधाकरः क्व नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत्—या—यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य·· काव्य० ९।

लाटक (वि०) (स्त्री०—टिका) [लाट्+वुन्] लाट देश से संबद्ध।

लाटिका, लाटी [लट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, लाट्+अच्+ङीष्] रचना, की एक विशेषशैली—दे० सा० द० ६२९ 2. एक प्राकृतिक बोली का नाम दे० काव्य० १।३५।

लाड् (चुरा० उभ० लाडयति ते) 1. लाड प्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2. कलाकृत करना, निन्दा करना 3. फेंकना, उछालना—तु० 'लड्'।

लाण्डनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।

लात (भू० क० कृ०) [ला+क्त] लिया, ग्रहण किया।

लापः [लप्+घञ्] 1. बोलना, बातें करना 2. किल-किलाना, तुतला कर बोलना।

लापः, लापकः [लू+घञ्, पृषो०] एक प्रकार का लंबा पक्षी, बटेर।

लाबुः (बूः) (पुं०) एक प्रकार की लौकी, तूमड़ी।

लाबुकी (स्त्री०) एक प्रकार की सारंगी।

लाभः [लभ्+घञ्] 1. उपलब्धि, प्राप्ति, अवाप्ति, अधिग्रहण-शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभमभन्यत—रघु० १२।१०, स्त्रीरत्नलाभम्—७।३४, ११।९२, क्षणभव्य-वतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्नन् लाभवानसौ—रघु० ८।८७ 2. नफा, मुनाफा फायदा सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ·· भग० २।३८, याज्ञ० २।२५९ 3. सुखोपभोग 4. लूट का माल, विजित प्रदेश 5. प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, संबोध। सम० कर, कृत् (वि०) लाभकारी, फायदेमंद,—लिप्सा लाभ की इच्छा, लोलुपता, लालच।

लाभकः [लाभ+कन्] फायदा, मुनाफा।

लाभज्जकम् [ला+विप्, ला आदीयमानो भज्जो सारो यस्य ब० स०, कप्] एक सुगंधयुक्त घास विशेष की जड़, खस, वीरणमूल।

लाम्पट्यम् [लम्पट+ष्यञ्] लम्पटता, कामुकता, भोगासक्ति।

लालनम् [लल्+ल्युट्] 1. दुलारना, लाड प्यार करना, पुचकारना—सुतलालनम् आदि 2. तुष्ट करना, आवश्यकता से अधिक स्नेह करना, आत्मरंजन, अत्यधिक लाडप्यार—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः दे० लल्।

लालस (वि०) [लस्+घञ्, लुक् द्वित्वम्, अच्] 1. अत्यंत लालायित, बहुत इच्छुक, आतुर प्रणाम-लालसाः का० १४, ईशानसंदर्शनलालसानां कु० ७।५६, शि० ४।६ 2. आनन्द लेने वाला, भक्त, अनुरागी, लीला-विलासलालसम्·· गीत० १, शोक,° मृगया° आदि।

लालसा [लस् स्पृहायां घञ् लुक् भावे अ] 1. प्रबल इच्छा उत्कण्ठा, बड़ी अभिलाषा, उत्सुकता 2. याचना, निवेदन, अभ्यर्थना 3. खेद, शोक 4. दोहद, गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

लालसीकम् (नपुं०) चटनी।

लाला [लल्+णिच्+अच्+टाप्] लार, थूक भर्तृ० २।९। सम०—स्रवः मकड़ा—स्रावः 1. लार बहाना 2. मकड़ा।

लालाटिक (वि०) (स्त्री० की) [ललाटं प्रभोर्भालं पश्यति ठञ्] 1. मस्तक पर स्थित या मस्तकसंबंधी 2. भाग्य से मिलना या भाग्य पर निर्भर रहने वाला - प्राप्तिस्तु लालाटिकी उद्भट 3. निकम्मा, नीच, कमीना, कः 1. सावधान सेवक (शा० जो अपने स्वामी की मूकमुद्रा से समझ लेता है कि अब क्या क्या करना आवश्यक है) 2. निठल्ला, लापरवाह, निरर्थक व्यक्ति 3. एक प्रकार का आलिंगन।

लालाटी [ललाट+अण्+ङीप्] मस्तक, माथा।

लालिकः [लाला+ठन्] भैंगा।

लालित (भू० क० कृ०) [लल्+णिच्+क्त] 1. दुलार किया गया, लाडप्यार किया गया, लालन किया गया, अत्यंत स्नेह किया गया 2. सत्यपथ से डिगाया गया 3. प्रेम किया गया, अभिलषित,—तम् आनन्द, ऐश, हर्ष।

लालितकः [लालित+कन्] लाडला, दुलारा, प्रिय, स्नेह-भाजन।

लालित्यम् [ललित+ष्यञ्] 1. प्रियता, लावण्य, सौन्दर्य, आकर्षण, माधुर्य, दण्डिनः पदलालित्यम्- उद्भट 2. प्रीति विषयक हाव भाव।

लालिन् (पुं०) [लल्+णिच्+णिनि] लहकानेवाला, फुसलाने वाला।

लालिनी [लालिन्+ङीप्] स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

लालुका (स्त्री०) एक प्रकार की माला, हार।

लाव (वि०) (स्त्री०-वी) [लू कर्तरि घञ्] 1. काटने वाला, लुनाई करने वाला, उखाड़नेवाला-कुशमुच्चिलाव-मः रघु० १३।४३ 2. उत्पाटन करने वाला, एकत्र करने वाला 3. काट कर गिराने वाला, गारने वाला, नष्ट करने वाला भट्टि० ६।८७, वः 1. काटना 2. लवा नामक पक्षी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लावकः [लू+ण्वुल्] 1. काटने वाला, खंड-खंड करने वाला 2. लावनी करने वाला, एकत्र करने वाला 3. लवा, बटेर।

लावण (वि०) (स्त्री०-णी) [लवणं संस्कृतम् अण्] 1. नमकीन 2. लवण से युक्त, लवण द्वारा संस्कृत।

लावणिक (वि०) (स्त्री०-की) [लवणे संस्कृतं ठण्] 1. नमकीन, नमक से प्रभावित 2. नमक का व्यापारी 3. प्रिय, सुन्दर, लावण्यमय—शि० १०।३८, (यहाँ इसका अर्थ 'नमक का व्यापारी' भी है), कः नमक का व्यापारी, कम् लवण-पात्र, नमक की बर्तन।

लावण्यम् [लवण+ष्यञ्] 1. नमकीनपना 2. सौन्दर्य सलोनापन मनोहरता तथापि तस्या लावण्यं रेखया किंचिदन्वितम् श० ६।१३, कु० ७।१८, शब्द० में 'लावण्य' की परिभाषा भुक्ताफलेषु छायायास्तरलस्वभिवान्तरा प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते। सम० अजितम् विवाहिता स्त्री की निजी सम्पति जो विवाह के अवसर पर उसे अपने पिता या सास से प्राप्त हुई हो।

लावण्यमय, लावण्यवत् (वि०) [लावण्य+मयट्, मतुप् वा] प्रिय, मनोहर।

लावाणकः [लू+आनकः] मगध के निकट एक ज़िले का नाम।

लाविकः [लाव+ठक्] भैंसा।

लालुक (वि) (स्त्री०-का,-की) [लल् + उकञ्] लोलुप, लोभी लालची।

लासः [लस्+घञ्] 1. कूदना, खेलना, उछलना, नाचना 2. प्रेमालिंगन, केलि क्रीडा 3. स्त्रियों का नाच, रासलीला 4. रसा, झोल।

लासक (वि०) (स्त्री०-सिका) [लस्+ण्वुल्] 1. खेलने वाला, किलोल करने वाला, विहार करने वाला 2. इधर उधर घूमने वाला, कः 1. नर्तक 2. भोर 3. आलिंगन 4. शिव का नामान्तर, कम् चौबारा, बुर्ज।

लासकी [लासक+ङीष्] नर्तकी।

लासिका [लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. नर्तकी 2. वेश्या, स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

लास्यम् [लस्+ष्यञ्] 1. नाचना, नृत्य,—आस्ये वास्यति कस्य लास्यमधुना...वाचां विपाको मम-भामि० ४।४२, रघु० १६।१४ 2. गाने बजाने के साथ नाच 3. वह नृत्य जिसमें प्रेम की भावनाएँ विभिन्न हाव भाव तथा अंगविन्यासों द्वारा प्रकट की जाती हैं, -स्यः नट, नर्तक, अभिनेता, स्या नर्तकी।

लिकुचः [लक्+उच, पृषो० इत्वम्] दे० 'लकुच'।

लिक्षा [रिषेः स कित्] 1. ह्वीक, जूओं के अंडे 2. अत्यन्त सूक्ष्म माप (जो चार या आठ त्रसरेणु के बराबर मानी जाती है)—जालान्तरगते भानौ यच्चाणु दृश्यते रजः, तैरेवतुर्भिर्भवेल्लिक्षा, या, त्रसरेणवोष्टौ विज्ञेया लिक्षैका परिमाणतः मनु० ८।१३३, दे० याज्ञ० १।३६२ भी।

लिक्षिका [लिक्षा+कन्+टाप्, इत्वम्] ह्वीक।

लिख (तुदा० पर० लिखति, लिखित) 1. लिखना, लिख रखना, अंतरंकण करना, रेखांकन करना, उत्कीर्ण करना,—अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख उद्भट, तारास्तैर्यामिति क्रठिन्या निशाःलिखद् व्योम्नि तमः प्रशस्तिम्—नै० २२।५४, याज्ञ० २।८७, शि० ७।५ 2. रंगना, चित्रकारी करना, रेखा खींचना, आलेखन, चित्रित करना, रङ्ग भरना—मुखमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनिकरे - गीत० ७, मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती—मेघ० ८५, ८०, कु० ६।४८, स्मिरवा पाणौ खड्गलेखां लिलेख - काव्य० १० 3. खुरचना, रगड़ना, घिसना, फाड़ देना—न किंचिदूचे चरणेन केवलं लिलेख बाष्पाकुललोचना भृशम् कि० ८।१४, मूर्ध्नां दिवमिवालेखीत्—भट्टि० १५।२२ 4. शल्यक्रिया करना, खाल काटना 5. स्पर्श करना, खरोंच डालना करना 6. (पक्षी की भाँति) चोंचें मारना 7. चिकना करना 8. स्त्री के साथ सहवास करना, आ—, 1. लिखना, चित्रित करना, रेखाएँ खींचना - मा० १।३१ 2. रङ्ग भरना, चित्र बनाना आलिखित इव सर्वतो रङ्गः-- श० १, स्वामालिख्य प्रणयकुपितां—मेघ० १०५, रघु० १९।१९ 3. खुरचना, छीलना, उद् , 1. खुरचना, छीलना, फाड़ना, खींचा लगाना शि० ५।२०, मनु० १।२३ 2. पीस डालना, रोगण करना—स्वरुटा विस्वन्तमिवोल्लिलेख,—कि० १७।४८, रघु० ६।३२, शि० ६।६ 3. रङ्ग भरना, लिखना, चित्रित करना—कु० ५।५८ 4. खोदना, काटकर बनाना, प्रति - ,उत्तर देना, जवाब देना, बदले में लिखना, वि—,लिखना, अन्तरंकण करना 2. रेखांकन करना, रङ्ग भरना, चित्रित करना, चित्र बनाना लिलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम् गीत० ४ 3. खुरचना, छीलना, फाड़ना—मन्दं शब्दायमानो विलिखति शयनादुत्थितःक्ष्मां खुरेण—काव्य० १०, व्यलिखच्चञ्चुपुटेन पक्षती—नै० २।२, पादेन हैमं विलिलेख पीठम् - रघु० ६।१५, कु० २।२३ 4. रोपना, जमाना—हि० ४।७२ पाठान्तर, सम्—,खुरचना, छीलना।

लिखनम् [लिख्+ल्युट्] 1. लिखना, अन्तरंकण 2. रेखांकन रङ्ग भरना 3. खुरचना 4. लिखित दस्तावेज़, लेख या हस्तलेख।

लिखित (भू० क० कृ०) [लिख्+क्त] लिखा हुआ, रङ्ग भरा हुआ, खुरचा हुआ आदि दे० लिख्, -तः विधि या धर्मशास्त्र के एक प्रणेता का नाम ('शंख के साथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस नाम का उल्लेख मिलता है),--तम् 1. लेख, दस्तावेज 2. कोई पुस्तक या रचना।

लिंगः [लिंग्+कु] 1. हरिण 2. मूर्ख, बुद्धू, --नपुं० हृदय।

लिङ्ग (भ्वा० पर० लिखति) जाना, हिलना-जुलना।

लिङ्ग i (भ्वा० पर० लिङ्गति, लिङ्गित) जाना, हिलना-जुलना, **आ** - ,आलिङ्गन करना, परिरंभण करना।

ii (चुरा० उभ० लिङ्गयति-ते) रङ्ग भरना, चित्रित करना 2. किसी संज्ञाशब्द की उसके लिङ्ग के अनुसार रूपरचना करना।

लिङ्गम् [लिङ्ग्+अच्] 1. निशान, चिह्न, निशानी, प्ररूप, बिल्ला, प्रतीक, विभेदक चिह्न, लक्षण- यतिपाषिण्ड-लिङ्गधारिणी रघु० ८।१६ मुनिर्दोहदलिङ्गदर्शी १४।७१, मनु० १।३०, ८ २५, २५२ 2. अवास्तविक या मिथ्या चिह्न, वेश, छद्मवेश, धोखे में डालने वाला बिल्ला -लिङ्गेमृदः संवृतविक्रियास्ते रघु० ७।३०, क्षपणकलिङ्गधारी मुद्रा० १, न लिङ्गं धर्मकारणम्-हि० ४।८५, दे० नी० लिङ्गिन् 3. लक्षण, रोग के चिह्न 4. प्रमाण के साधन, प्रमाण, संवृत साक्ष्य 5. (तर्क० में) किसी प्रतिज्ञा का विधेय 6. लिङ्गचिह्न 7. योनि

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गम् न च वयः - उत्तर० ४।११ 8. पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 9. (व्या० में) स्त्री या पुरुषवाची शब्द पहचानने का चिह्न, लिङ्ग 10. शिवलिङ्ग 11. देवमूर्ति, प्रतिमा 12. एक प्रकार का संबंध या अभिसूचक (जैसे कि संयोग, वियोग और साहचर्य आदि) जो किसी शब्द के किसी विशेष संदर्भ में अर्थ निश्चित करने का काम देता है उदा० कुपिती मकरध्वजः में कुपित शब्द मकरध्वज शब्द के अर्थ का 'काम' के अर्थ में बंधेज कर देता है --काव्य० २, तथा तत्स्थानीय भाष्य 13. (वेदांत० में) सूक्ष्म शरीर, दृश्यमान स्थूल शरीर का अविनश्वर मूल शरीर, तु० पंचकोष। सम० --अग्रम् लिङ्ग की मणि, सुपारी,--अनुशासनम् व्याकरण विषयक लिङ्ग ज्ञान, वे नियम जिनसे शब्द के लिङ्गों का ज्ञान मिलता है, **अर्चनम्** शिव की लिङ्ग के रूप में पूजा,--**देहः**-शरीरम् सूक्ष्म शरीर --दे० लिङ्ग (१३) ऊपर,--**धारिन्** (वि०) बिल्लाधारी, --**नाशः** 1. विशिष्ट चिह्नों का लोप 2. शिश्न का न रहना 3. दृष्टिशक्ति का अभाव, एक प्रकार का आँखों का रोग, **परामर्शः** (तर्क० में) विचिह्न को ढूंढना या विचारना (उदा० 'अग्नि' का सूचक चिह्न 'धूआँ' है), --**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक पुराण, **प्रतिष्ठा** 'लिङ्ग' अर्थात् शिवजी की पिण्डी की स्थापना, - **वर्धन** (वि०) पुरुष की जननेन्द्रिय में उत्तेजना पैदा करने वाला,--**विपर्ययः** लिङ्गपरिवर्तन,--**वृत्तिः** (वि०) पाखंड से भरा हुआ, --**वृतिः** धर्म के कार्यों में पाखण्ड करने वाला,- **वेदी** वह आधार जिस पर शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है।

लिङ्गकः [लिङ्ग+कै+क] कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड़।

लिङ्गनम् [लिङ्ग्+ल्युट्] आलिङ्गन करना।

लिङ्गिन् (वि०) [लिङ्गमस्त्यस्य इति] 1. चिह्न या निशान रखने वाला 2. विशेषतायुक्त 3. बिल्ला या निशान रखने वाला, दिखाई देने वाला, छद्मवेशी, पाखंडी, झूठे बिल्ले लगाने वाला (समास के अन्त में) स वर्णिलिङ्गी विदितः समायया युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः —कि० १।१, इसी प्रकार 'लिङ्गिन्' 4. लिङ्ग से युक्त 5. सूक्ष्म शरीरधारी 1. --पुं०, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण संन्यासी - पंच० ४।३९ 2. शिवलिङ्ग की पूजा करने वाला 3. पाखण्डी, बना हुआ भक्त, संन्यासी 4. हाथी 5. (तर्क० में) प्रतिज्ञा का विषय।

लिपिः, पी [लिप्+इक, ङीप् वा] 1. लीपना, पोतना 2. लिखना, लिखावट 3. लिखित अक्षर, वर्ण, वर्णमाला —वचनालिप्याम् -वा०, लिपेर्यथावद् ग्रहणेन वाङ्मयं नदीमुखेनैव समुद्रमाविशत्--रघु० ३।२८, ४६ 4. लिखने की कला 5. (अक्षर, दस्तावेज, या हस्तलेख आदि) लिखना—अयं दरिद्रो भविताऽस्मिन् वंशे लिपिं ललाटेऽधिजनस्य जाग्रतीम्--नै० ११५, १३८ 6. चित्रकला, रेखांकण। सम० --**करः** 1. पलस्तर करने वाला, सफेदी करने वाला, राज 2. लेखक, लिपिक 3. उत्किरक (उभरा हुआ लिखने वाला, नक्काशी करने वाला) (**'लिपिकर'** भी),--**कारः** लेखक, लिपिक, **ज्ञ** (वि०) जो लिख सकता है, --**न्यासः** लिखने या नकल करने की कला,—**फलकम्** लिखने का पट्ट या तख्ता,- **शाला** वह स्कूल जहाँ लिखना सिखाया जाय, - **सज्जा** लिखने का सामान या उपकरण।

लिपिका [लिपि+कन्+टाप्] दे० 'लिपी'।

लिप्त (भू० क० कृ०) [लिप्+क्त] 1. लीपा हुआ, पोता हुआ, साना हुआ, ढका हुआ 2. दाग लगा, बिगड़ा हुआ, दूषित, मलिन 3. विषयुक्त, (बाण आदि) जहर में बुझाया हुआ 4. खाया हुआ 5. जुड़ा हुआ, मिला हुआ।

लिप्तकः [लिप्त+कन्] जहर में बुझा तीर।

लिप्सा [लभ्+सन्-भावे अ] 1. प्राप्त करने की इच्छा, भाभि० १।१२५ 2. अभिलाषा।

लिप्सु (वि०) [लभ्+सन्+उ] प्राप्त करने का इच्छुक।

लिपिः,- **पी** (स्त्री०) [लिप्+इन्, वा० पस्य वः] दे० 'लिपि'।

लिखिङ्कारः [लिखि करोति कृ+ट, पृषो० द्वितीयायाः अलुक्] लिपिक, लेखक, लिपिकार।

लिम्प् (तुदा० उभ० लिम्पति-ते, लिप्त) 1. लीपना, पोतना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सानना—लिम्पतीव तमोऽङ्गानि—मृच्छ० १।०४ 2. ढक देना, बिछा देना - शि० ३।४८ 3. दाग लगाना, दूषित करना, मलिन करना, कलंकित करना, कलुषित करना—यः करोति स लिप्यते—पंच० ४।६४, न मां कर्माणि लिम्पन्ति—भग० ४।१४, १८।१७, मनु० १०।१०६ 4. प्रज्वलित करना, भुलगाना—तस्यालिप्त शोकाग्निः स्वास्तं काष्ठमिव ज्वलन्—भट्टि० ६।२२, अनु—, लीपना, पोतना वपुरन्वलिप्त न वधूः—शि०९।५१ १५ 2. ढक देना, फैलाना, घेर लेना रघु० १०।१०, श० ७।७, अव—, लीपना, पोतना (क्रमवा०) फूल जाना घमंडी बनना, उन्नत होना, आ—, 1. लीपना पोतना —उत्तर० ३।३९, ऋतु० ६।१२ 2. दूषित करना, दाग लगाना, उप—, धब्बा लगाना, मलिन करना, -भग०१३।३२, वि—, लीपना, पोतना, मलना, —कु० ५।७९, भट्टि० २।२०, १५।६, शि० १६।६२ ।

लिम्प: [लिप्+श, मुम्] लेप, पोतना, मालिश ।

लिम्पट (वि०) [=लम्पट, पृषो०] कामासक्त, विषयी, —ट: व्यभिचारी, दुश्चरित्र ।

लिम्पाक: [लिप्+आकन्, पृषो०] 1. नींबू या चकोतरे का वृक्ष 2. गधा, कम् चकोतरा, नींबू ।

लिश् 1 (तुदा० पर० लिशति) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. चोट पहुँचाना दे० रिश् ।

ii (दिवा० उभ० लिश्यति ते) छोटा होना, घटना ।

लिष्ट (भू० क० कृ०) [लिश्+क्त] जो छोटा हो गया हो, घट गया हो या न्यून हो गया हो ।

लिष्प: [लिप्+क्त] अभिनेता, नर्तक ।

लिह् (अदा० उभ० लेढि, लीढे, लीढ्, इच्छा० लिलिक्षति ते) 1. चाटना—कपाले मार्जारः पय इति करोल्लेढि शशिनः—काव्य० १९, भामि० १।१९, कि० ५।३८, शि० १।४० 2. चाट जाना, चखना, घूंट-घूंट से पीना, लप-लप करके पीना नै० २।९९, १००, अव—, 1. चाटना, लपलप करके पीना, थोड़ा थोड़ा करके चखना—भवद्भ्यालावलीढात्मनः गंगा० ५०, वेणी० ३।५, भामि० १।१११ 2. चबाना, खाना दर्भैरर्धावलीढैः श० १।७, मृच्छ० १।९, आ—, 1. चाटना, लपलप करके पीना 2. घायल करना, आघात पहुँचाना—सेनान्यमालीढमिवामुरास्त्रैः—रघु० २।३७ 3. (आँखों से) ग्रहण करना, देखना,—न्त याम्या-मालीढा परमरमणीया तव तनुः गंगा० ३२, उद्—, चमकाना, घर्षण द्वारा चिकना बनाना, रगड़ना —मणिः शाणोल्लीढः—भर्तृ० २।४४, परि , सम्—, चाटना—भट्टि० १३।४२ ।

ली 1 (श्या० पर० लयति) पिघलना, द्रवित होना ।

ii (क्रया० पर० लिनाति) 1. जुड़ जाना 2. पिघलना —प्रायः 'वि' उपसर्ग के साथ ।

iii (दिवा० आ० लीयते, लीन) 1. चिपकना, दृढ़ता पूर्वक जमे रहना, जुड़ जाना - मालवि० ३।५ 2. भुजपाश में बांधना, आलिंगन करना 3. लेटना, विश्राम करना, टेक लेना, ठहरना, रहना, दुबकना, छिपना, लुकना - (भृङ्गाङ्गनाः) लीयन्ते मुकुलान्तरेषु शनकैः संजातलज्जा इव —रत्न० १।२६, रघु० ३।९, श० ६।१६, कु० १।१२, ७।२१, भट्टि० १८।१३, कि० ५।२६ 4. विघटित होना, पिघलना 5. चिपचिपा, लसलसा 6. लीन हो जाना, भक्त या अनुरक्त होना, - माधवमनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना गीत० ४ 7. नष्ट होना लोप होना, -प्रेर० (लापयति - ते) लाययति-ते, लीनयति-ते लालयति-ते) पिघलाना, विघटित करना, तरल बनाना, गलाना ('लापयते' रूप सम्मान या सम्मानित करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है—जटाभिर्लापयते -पूजामधिगच्छति -तु० पा० १।३।७०), अभि—, 1. जुड़ना, चिपकना-रघु० ३।८ 2. ढक लेना, ऊपर फैला देना - पक्षाद्वयेनैभ्रु-जतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः मेघ० ३८, आ , 1. बस जाना, छिपना, दुबकना, विक्रम० २।२३, 2. जुड़ना, चिपकना—रघु० ४।५१, नि , 1. चिपकना, जमे रहना, लेट जाना, आराम करना, बस जाना, उतर पड़ना निलिल्ये मूर्ध्नि गृध्रोऽस्य -भट्टि० १४।७६, २।५ 2. दुबकना, छिपना, अपने आपको छिपा लेना गुहास्वन्ये व्यलेषत - भट्टि० १५।३२ निशि रहसि निलीय—गीत० २ 3. अपने आपको छिपा लेना (अपा० के साथ)—मातुर्निलीयते कृष्णः - सिद्धा० 4. मरना, नष्ट होना, प्र—, 1. लीन होना, विघटित होना, गल जाना—आत्मना कृतिना च त्वन्मात्मन्येव प्रलीयसे—कु० २।१०, राज्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके भग० ८।१८, मनु० १।५४ 2. नष्ट होना, लोप होना 3. नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना, वि—, 1. जुड़ना, चिपकना, जमे रहना 2. विश्राम करना, बस जाना, उतर पड़ना—पुरोऽस्य याज्ञन्न भुवि व्यलीयत - शि० १।१२ 3. बिगलित होना, पिघल जाना, लीन होना महावीर० ६।६०, ७।१४ 4. लोप होना, ओझल होना 5. नष्ट होना, सम् , 1. चिपकना, जुड़ना 2. लेट जाना, बस जाना, उतरना 3. दुबकना, छिपना 4. पिघलना ।

लीवक (स्त्री०) लीख, यूकांड, दे० लिक्षा ।

लीढ (भू० क० कृ०) [लिह्+क्त] चाटा गया, चुसकी ली गई, चखा गया, खाया गया आदि०, दे० 'लिह्' ।

लीन (भू० क० कृ०) [ली+क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, चूसा हुआ 2. दुबकाया हुआ, छिपाया हुआ, प्रच्छन्न 3. विश्राम करता हुआ, टेक लगाये हुए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. पिघला हुआ, विगलित मा० ५।१० 5. पूर्णरूप से विलीन, या निगलित, गहरा जुड़ा हुआ - नद्यः सागरे लीना भवन्ति 6. भक्त, छोड़ा हुआ 7. ओझल लुप्त (दे० ली)।

लीला [ली+क्विप् लियं लाति ला+क वा] 1. खेल, क्रीडा, विनोद, दिलबहलावा, आनन्द, मनोरंजन -क्लमं ययौ कन्दुकलीलयापि या कु० ५।१९ (प्रायः समास के प्रथमखण्ड के रूप में प्रयुक्त) लीला कमल, लीलाशुकः आदि 2. प्रीतिविषयक मनोविनोद, स्वेच्छाचारिता, रतिक्रीडा, केलिकीडा-उत्सृष्टलीलागतिः रघु० ७।७, ४।२२, ५।७०, क्षुभ्यन्ति प्रसभं महो विनाऽपि हेतोर्लीलाभिः किमु सति कारणे रमण्यः -शि० ८।२४, मेघ० ३५, (उज्ज्वलनीलमणि ने इस अर्थ में 'लीला' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है -अप्राप्तवल्लभसमागमनायिकायाः सख्याः पुरोऽत्र निजचित्तविनोदबुद्ध्या । आलापवेशगतिहास्य विलोकनाद्यैः प्राणेश्वरानुकृतिमावलयन्ति लीलाम् ॥) 3. आसानी से, सुविधा, क्रीडामात्र, बच्चों का खेल -लीलया जघान 'आसानी से मार डाला' 4. दर्शन, आभास, हावभाव, छवि-यः संगति प्राप्तपिनाकिलीलः-रघु० ६।७२, 'पिनाकी की भांति दिखलाई देने वाला' 5. सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य -मुद्रवलोकित मण्डलीला-गीत० ६, रघु० ६।१, १६।७१ 6. बहाना, छद्मवेश, ढोंग, बनावट यथा लीलामनुष्यः, लीलानटः। सम० -ल (आ) गारः, -रस, -गृहम्, -गोहम्, -वेश्मन् (नपुं०) आनन्दभवन रघु० ८।९५, -अङ्क (वि०) लक्षित अंगों वाला, -अब्जम् · अम्बुजम्, -अरविन्दम्, -कमलम्, -तामरसम्, -पद्मम् 'कमल-खिलौना' कमल का फूल जो खिलौने की भांति हाथ में लिया हुआ हो रघु० ६।१३, मेघ० ७५, कु० ६।८४, **अवतारः** (विष्णु का) पृथ्वी पर मनोरंजन के लिए उतरना, -उद्यानम् 1. प्रमोदवन 2. देवबन, इन्द्र का स्वर्ग, -कलहः 'क्रीडामय कलह' तु० प्रणय कलह, -चतुर (वि०) विशुद्ध मनोहर, -मनुष्यः कपटी मनुष्य, छद्मवेशी, -मात्रम् क्रीडापात्र, केवल खेल, बच्चों का खेल, अनायास, -रतिः (स्त्री०) मनोविनोद, क्रीडा, -वापी आनन्दबावडी, -शुकः आनन्द के लिए पाला हुआ तोता।

लीलायितम् [लीला+क्यच्+क्त] खेल, क्रीडा, मनोरंजन, आनन्द।

लीलावत् (वि०) [लीला+मतुप्, मस्य वः] क्रीडामय, खिलाड़ी, जी 1. मनोहर या लावण्यवती स्त्री 2. शृंगारप्रिय या स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3. दुर्गा का नाम।

लुक् (अव्य०) पाणिनि द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो प्रत्ययों का लोप करने के लिए काम में आता है।

लुञ्च् (स्वा० पर० लुञ्चति, लुञ्चित) 1. तोड़ना, खींचना, छीलना, काटना 2. फाड़ देना, उखाड़ देना, खींच डालना।

लुञ्चः,-चनम् [लुञ्च्+घञ्, ल्युट् वा] छीलना, उखाड़ना।

लुञ्चित (भू० क० कृ०) [लुञ्च्+क्त] 1. छीला हुआ 2. तोड़ा हुआ, उखाड़ा हुआ, फाड़ा हुआ।

लुट् i (स्वा० आ० लोटते) 1. मुकाबला करना, पीछे धकेलना, विरोध करना 2. चमकना 3· कष्ट उठाना,।
ii (चुरा० उभ० लोटयति-ते) 1. बोलना 2. चमकना
iii (स्वा० दिवा० पर० लोटति, लुट्यति) 1. लोटना, जमीन पर लुढ़कना तु० लुट् 2. संबद्ध होना, 3. अपहरण करना, लूटना, खसोटना (संभवतः 'लुण्ठ्' या 'लुण्ठ्')।

लुठ् i (स्वा० पर० लोठति) प्रहार करना, पछाड़ देना।
ii (भ्वा० आ० लोठते) 1. भूमि पर लोटना, इधर उधर करवटें बदलना, गड्ढा खोदा खाना, लुढ़कना, इधर उधर घूमना -मणिर्लुठति पादेषु काचः शिरसि धार्यते हि० २।६८, लुठति न सा हिमकरकिरणेन -गीत० ७, हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले-अमरु १००, भट्टि० १४।५४, भामि० २।१७६, प्र-, वि-, लोटना, लुढ़कना, आदि, भट्टि० ५।१०८।

लुठनम् [लुठ्+ल्युट्] लोटना, लुढ़कना, इधर उधर घूमना।

लुठित (भू० क० कृ०) [लुठ्+क्त] लोटा हुआ, लोटता हुआ या जमीन पर लुढ़कता हुआ।

लुड् i (स्वा० पर० लोडति) हरकत देना, क्षुब्ध करना, विलोना, आलोडित करना-प्रेर० (लोडयति · ते) हरकत करना, विलोना, विलोडित करना (इसी अर्थ में 'वि' उपसर्ग के साथ प्रयुक्त)-शि० १९।८, १९।६९।
ii (तुदा० पर० लुडति) 1. जुड़ना, चिपकना 2. ढकना।

लुण्ट् i (भ्वा० पर० लुण्टति) 1. जाना 2. चुराना, लूटना, खसोटना 3. लँगड़ा या विकलांग होना 4. आलसी या सुस्त होना।
ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लुण्ठयति-ते) 1. लूटना, खसोटना, चुराना 2. अवज्ञा करना, घृणा करना।

लुण्ठाक (वि०) (स्त्री०-की) [लुण्ट्+घाकन्] चोरी करने वाला (आलं० से भी) लुटेरा, डाकू-तरुणानां हृदयलुण्ठाकी परिपक्वकर्माणां निवारयति काव्य० १०, आः सितशकुनयः केयं लुण्ठाकता बालरा० ५।

लुण्ड् (भ्वा० पर० लुण्ठित) 1. जाना 2. हरकत देना, क्षुब्ध करना, गति देना 3. सुस्त होना 4. लँगड़ा होना 5. लूटना, खसोटना 6. मुकाबला करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लुण्ठकः [लुण्ठ् + ण्वुल्] लुटेरा, डाकू, चोर।

लुण्ठनम् [लुण्ठ् + ल्युट्] खसोटना, लूटना, चुराना, —यदस्य दैत्या इव लुण्ठनाय काव्यार्थचौराः प्रभुणोभवन्ति - विक्रमांक० १।११।

लुण्ठा [लुण्ठ् + अ + टाप्] 1. लूट, खसोट 2. लुढ़क-पुढ़क।

लुण्ठाकः [लुण्ठ् + णाकृ] 1. लुटेरा 2. कौआ।

लुण्ठिः, ठी (स्त्री०) [लुण्ठ् + इन्, लुण्ठि + ङीष्] खसोटना, लूटना, डकैती डालना।

लुण्ड् (चुरा० उभ० लुण्डयति-ते) खसोटना, लूटना डकैती डालना।

लुण्डिका [लुण्ड् + इन् + कन् + टाप्] 1. गोल पिंडी, गेंद 2. उचित चाल चलन।

लुण्डी [लुण्डि + ङीष्] उचित या शोभन चालचलन।

लुण्ट् (भ्वा० प० लुण्टति) 1. प्रहार करना, चोट पहुंचाना, मार डालना 2. भुगतना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना।

लुत् I (दिवा० पर० लुत्यति) 1. घबड़ा देना, विस्मित करना 2. विस्मित हो जाना या घबड़ा जाना।

लुत् II (तुदा० उभ० लुत्पति-ते, लुत्त) 1. तोड़ना, भंग करना, काट देना, नष्ट करना, क्षतिग्रस्त करना अनुभवं वचसां सचिवं लुलितं - नै० ४।१०५ 2. अपहरण करना, वञ्चित करना, ठगना, लूटना 3. छीन लेना, झपट्टा मार लेना 4. लोप करना, दबा देना, ओझल करना कर्मवा० (लुत्यते) 1. भंग होना, टूट जाना 2. लुप्त होना, नष्ट होना, ओझल या लोप होना, (क्या० में) प्रेर० (लोतयति-ते) 1. तोड़ना, भंग करना, उच्छृंखल करना, अवरोध करना 2. भूल जाना, उपेक्षा करना, विलुप्त करना रघु० १२।९, इच्छा० (लुलुप्सति, लुलोप्तुमिति)—पंचम० लोलुप्यते या लोलोप्ति अप-, प्र-, अपहरण करना, नष्ट करना वि-, 1. तोड़ देना, चीर कर भग्न कर देना, काट देना 2 छीन लेना, खसोटना, लूट लेना, उड़ा कर भाग जाना 3. किनाड़ना 4. नष्ट करना, बर्बाद करना, ओझल करना—विप्रलब्धव्यविलुप्तदर्शनम् — कु० ४।२. 'सदा के लिए ओझल हो गया' उत्तर० ३।२४ 5. पोंछ देना, मिटा देना।

लुप्त (भू० क० कृ०) [लुप् + क्त] 1. टूटा हुआ, भग्न, क्षतिग्रस्त, नष्ट 2. खोया हुआ, वञ्चित रघु० १४।५६ 3. लूटा गया, ठगा गया 4. छिपाया गया, लोप किया गया, ओझल या लोप हुआ (क्या० में) 5. भूल से रहा हुआ, उपेक्षित 6. व्यवहारातीत, अप्रयुक्त, अप्रचलित उत्तर ३।३३, दे० लुप् **लुप्त चुराई हुई संपत्ति, लूट का माल। सम०** **उपमा** खंडित या न्यून पद उपमा अर्थात् वह उपमा जिसमें उपमा के आवश्यक चारों अंगों में से एक, दो, अथवा तीन पद लुप्त हो गये हों—दे० काव्य० १० उपमा के अन्तर्गत, **पद** (वि) न्यून पदों से युक्त, **पिंडोदक-क्रिया** (वि०) श्राद्धकर्म से विरहित,—**प्रतिज्ञ** (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है, श्रद्धाहीन, विश्वास-घाती, **प्रतिभ** (वि०) तर्कनाशक्ति से हीन।

लुब्ध (भू० क० कृ०) [लुभ् + क्त] 1. लालची, लोभी, लोलुप 2. इच्छुक, लालायित, उत्सुक यथा धनलुब्ध, मांसलुब्ध और गुणलुब्ध आदि में, **धः** 1. शिकारी 2. स्वेच्छाचारी, लम्पट।

लुब्धकः [लुब्ध + कन्] 1. शिकारी, बहेलिया, मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम्, लुब्धक धीवर-पिशुना निष्कारणवैरिणो जगति - भर्तृ० २।६१ 2. लोभी या लालची पुरुष 3. स्वेच्छाचारी 4. उत्तरी गोलार्द्ध का एक तेजस्वी तारा।

लुभ् (दिवा० सर० लुभ्यति, लुब्ध) 1. लालच करना, लालायित होना, उत्सुक होना (सम्प्र० या अधि० के साथ) तथापि रामो लुभ्यते मृगाय 2. रिझाना, फुसलाना 3. पकड़ा जाना, विस्मित होना, भटकना—प्रेर० (लोभयति - ते) 1. ललचाना, लालायित करना, उत्कंठित करना—पुप्लुवे बहु लोभयन् मनः १।४४ 2. वासना को उत्तेजित करना 3. फुसलाना, बहकाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना—लोभ्यमान-नयनः प्रलयांशुकैर्मेखलागुणपदीनतिरिचिभिः रघु० १६।२६ 4. असावधान करना, अव्यवस्थित करना, व्याकुल करना, प्र- ललचाना या इच्छुक होना (प्रेर०) रिझाना, आकृष्ट करना, फुसलाना, वि-, अव्यवस्थित या असन्तुलित होना भट्टि० ९।४०, (प्रेर०) रिझाना फुसलाना, आकृष्ट करना स्मर यावत्र विलोभ्यसे धिया - कु० ४।२०, अङ्गनास्तमधिक व्यलोभयन् (भर्तृ०) - रघु० १९।१० 2. बहलाना, मनोरंजन करना, रिझाना क्व दृष्टिं विलोभयामि—दश० ६।

लुभ्य (भ्वा० प० चुरा० उभ० लुम्बति, लुम्बयति ते) संताप, तंग करना।

लुम्बिका [लुम्ब + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

लुल् (भ्वा० पर० लोलति लुलित) 1. लोटना, इधर-उधर लुढ़कना, इधर उधर घूमना, करवटें बदलना—लुलित-दुर्दिन-दाडिम-दर्शनैः - कि० १८।६, शि० ३।७२, १०।३६ 2. हिलाना, हुक्कत देना, शुब्ध करना, कंपायमान करना, अव्यवस्थित करना 3. दबाना, कुचलना - दे० नी० लुलित्, प्रेर० (लोलयति ते) हिलाना, झालित करना शि० ९।५, आ—, जरा छूना मालवि० २।७, वि—, 1. इधर उधर चक्कर काटना 2. हिला देना, कम्पायमान करना 3. अव्यवस्थित करना, अस्तव्यस्त करना, (बालों को) छितराना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लुलापः, लुलायः [लूल् घञर्थे क, तमाप्नोति अण्] भैंसा, —क्षुरबिधुरधारिभी चित्रकायो लुलायः।

लुलित (भू० क० कृ०) [लुल्+क्त] 1. हिलाया हुआ, करवट बदला हुआ, इधर उधर लुढ़का हुआ, कम्पायमान, लहराता हुआ—मुरालप्रापितनिमित्तमन्मर्स्वे-लोतसं नौलुलितं वदन्दे · रघु० १६।३४,५९ 2. अशान्त किया हुआ, दुःखित-लुलितमकरन्दो मधुकरैः—वेणी० १।१ 3. अव्यवस्थित, (बाल) छितराये हुए ऋतु० ४।१४ 4. दबाया हुआ: कुचला हुआ, क्षतिग्रस्त · श० ३।२७ 5 दबाने वाला, मर्मस्पर्शी,—अनलिलुलितज्या-घातांके (कनकवलयम्)—श० ३।१४ 6. थका हुआ, झुका हुआ—अलसलुलितमृधान्यस्तवंसाजातखेदात् (अंगकानि) उत्तर० १।२४, मा० १।१५ ३।६ 7. प्रांजल, सुन्दर वनं लुलितपल्लवम् भट्टि० ९।५६।

लुल् (स्वा० पर० लोपति) दे० 'लुप्'।

लुलुभः [रुषेः अभच् नित् लुभ् च] मदोन्मत्त हाथी।

लुह् (स्वा० पर० लोहति) लालच करना, उत्सुक होना, लालायित होना। तु० 'लुभ्'।

लू (क्रया० उभ० लुनाति लुनीते, लून-प्रेर० लवयति —ते, इच्छा० लुलूषति-ते) 1. काटना, कतरना, चूंटकी से पकड़ना, वियुक्त करना, विभक्त करना, तोड़ना, लुनाई करना, (फूल) चुनना · शरासनज्या-लवनाद् विडौजसः—रघु० ३।५९, ७।४५, १२।४३ —पूरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम्—शि० १।५१, क्रीडन्ति कार्कीव लूनपक्षैः—पंच० १।१८७, कु० ३।६१, भग० ९।८० 2. काट देना, पूर्णतः नष्ट कर देना, विध्वस्त करना—लोकानलाहीद्विजितांश्च तस्य—भट्टि० २।५३, आ —, आहिस्ता से उखाड़ना—कु० २।४१, छिन्न—, काटना, छाँटना, उखाड़ देना—उत्तर० २।५।

लूता [लू+तक्+टाप्] 1. मकड़ी 2. चींटी। सम० —तन्तुः मकड़ी का जाल, मर्कटकः 1. लंगूर 2. एक प्रकार का चमेली का फूल।

लूतिका [लूता+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] मकड़ी।

लून (भू० क० कृ०) [लू+क्त] 1. काटा गया, छाँटा गया, वियुक्त किया गया, काट दिया गया 2. तोड़ा गया, (फूल आदि) चुने गये 3. नष्ट किया हुआ 4. कर्तन किया गया, कुतरा गया 5. घायल किया गया,—नम् पूँछ।

लूषयम् [लू+मक्] पूंछ। सम०—विषः 'जहरीली पूँछ वाला' वह जानवर जो अपनी पूँछ से डंक मारता है।

लूष् (स्वा० पर० लूषति) 1. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 2. लूटना, डकैती डालना, चुराना।

लेखः [लिख्+घञ्] 1. लिखावट, दस्तावेज, (किसी-प्रकार का) लिखा हुआ दस्तावेज, पत्र · लेखोऽयं ते मयेति तोत्तरमिदं मुद्रा मदीया यतः मुद्रा० ५।१८, निर्धारितेऽर्थे लेखेन यदुक्तं खलु वाचिकम् हि० २।७०. अनृणलेख- कु० १।७, मन्मथलेख - श० ३। २६ 2. देव, सुर। सम० अधिकारिन् (पुं०) पत्र लिखने का कार्य भारवाहक, (राजा का) सचिव, · अर्हः एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष, ऋषभः इन्द्र का नामांतर, पत्रम्, पत्रिका 1. पत्र में लिखी कविता, पत्र, लेख या लिखावट 2. लेख्य या पट्टा, दस्तावेज (विधि), संदेशः लिखा हुआ संदेसा,—हारः —हारिन् (पुं०) पत्रवाहक।

लेखकः [लिख्+ण्वुल्] 1. लिखने वाला, लिपिक, लिपिकार 2. चितेरा। सम० दोषः,— प्रमादः, लिपिक की भूल-चूक, लिपिकार की त्रुटि।

लेखन (वि०) (स्त्री०—नी) [लिख्+ल्युट्] लिखने वाला, चितेरा, खुरचने वाला आदि,—नः एक प्रकार का नरकुल जिससे कलम बनते हैं,—नम् 1. लिखना, प्रतिलिपि करना 2. खुरचना, छीलना 3. चराई, स्पर्श करना 4. पतला करना, कृश या दुबला करना 5. ताड़पत्र (लिखने के लिए),—नी 1. कलम, लिखने के लिए नरकुल, नरकुल का कलम 2. चम्मच। सम० साधनम् लिखने की सामग्री या उपकरण।

लेखनिकः [लेखन+ठन्] पत्रवाहक।

लेखिनी [लेख्+ल्युट्+ङीप्] 1. कलम 2. चम्मच।

लेखा [लिख्+अ+टाप्] 1. रेखा, धारी, लकीर-कान्तिश्रु-वोरायतलेखयोर्या कु० १।४७. कु० ७।१६, ८७, कि० १६।२, मेघ० ४४, बिद्युल्लेखा, केनलेखा, मदलेखा आदि 2. लकीर, सीधा या खड़ा, पंक्ति, चौड़ी धारी 3. लिखावट, रेखांकन, आलेखन, चित्रण · पाणिर्लेखाविधिषु नितरां वर्तते किं करोमि · मा० ४।३५ 4. दूज का चाँद, चाँद की रेखा · लक्ष्मोदया चाडसमीव लेखा कु० १।२५, २।३४, कि० ५।४४ 5. आकृति, समानता, छाप, निशान उपसि सयावक-सख्यपादलेखा—कि० ५।४० 6. कोर, किनारी, अंचल, झालर 7. चोटी।

लेख्य (वि०) [लिख्+ण्यत्] अंकित किये जाने के योग्य, लिखे जाने योग्य, रंग भरे जाने योग्य, खुरचे जाने योग्य, —ख्यम् 1. लिखने की कला 2. लिखना, प्रतिलिपि करना 3. लेख पत्र, दस्तावेज, हस्तलेख 4 शिलालेख 5. चित्रण, रेखांकन 6. चित्रित आकृति। सम० आरूढ, कृत (वि०) लिख लिया गया, लिख कर रखा गया,- गत (वि०) चित्रित, चित्रचित्रित, चूर्णिका कूची, तूलिका, - पत्रम्, —पत्रकम् 1. लेख, पत्र, दस्तावेज 2. ताड़ का पत्ता, प्रसङ्गः दस्तावेज, —स्थानम् लिखने का स्थान।

लेण्डम् (नपुं०) विष्ठा, मल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेतः,–तम् (पुं०, नपुं०) आँसू ।

लेप् (भ्वा० आ० लेपते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. पूजा करना ।

लेपः [लिप् + घञ्] 1. लीपना, पोतना, मालिश करना, -याज्ञ० १।१८८ 2. उबटन, मलहम, अनुलेप 3. पलस्तर करना (सफ़ेदी करना या चूना पोतना) 4. हाथों की पोंछन 3. हाथों में चिपके भोजन का अवशेष) जब कि श्राद्ध में सबसे पहले तीन पुरुषाओं पितृ, पितामह और प्रपितामह–को श्राद्ध में आहुतियाँ प्रस्तुत करने के पश्चात्, (प्रपितामह के पश्चात्; यह पोंछन तीन पूर्वपुरुषों को प्रस्तुत की जाती है अर्थात् चौथी पांचवीं और छठी पीढ़ी के पितृतुल्य पूर्वपुरुषों को)–लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः 5. धब्बा, दाग, दूषण, कालुष्य 6. नैतिक अपवित्रता, पाप 7. भोजन । सम० करः पलस्तर करने वाला, सफ़ेदी करने वाला, ईंट की चिनाई करने वाला, –भागिन्, भुज् (पुं०) चौथी, पांचवीं और छठी पीढ़ी के पितृसदृश पूर्वपुरुष मनु० ४।८१६ ।

लेपकः [लिप् + ण्वुल्] पलस्तर करने वाला, राज, सफ़ेदी करने वाला ।

लेपनः [लिप् + ल्युट्] पुता, लीपाना, –नम् 1. मालिश करना पोतना, लीपना याज्ञ० १।१८८ 2. पलस्तर, मलहम 3. चूना, सफ़ेदी 4. मांस, मोठाई ।

लेप्य (वि०) [लिप् + ण्यत्] लीपे या पोते जाने के योग्य, –प्यम् 1. लीपना, पोतना 2. ढालना, मूर्ति बनाना, आदर्श या प्रतिरूपण बनाना । सम० –कृत् (पुं०) 1. प्रतिमाकार 2. ईंट का रद्दा लगाने वाला, (स्त्री) वह स्त्री जिसने उबटन का लेप किया तथा तैलादिक से शरीर सुवासित किया हुआ है ।

लेप्यमयी [लेप्य + मयट् + ङीप्] गुड़िया, पुतली ।

लेलायमाना [लेला इवाचरति क्यच् + शानच् + टाप्] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

लेलिहः [लिह् + यङ्, लुक् द्वित्वादि, ततः अच्] सर्प, सांप ।

लेलिहानः [लिह् + यङ्, लुक्, द्वित्वादि, ततः शानच्] 1. सर्प, साँप 2. शिव का विशेषण ।

लेशः [लिश् + घञ्] 1. थोड़ा सा टुकड़ा, अंश, कण, अणु, अत्यन्त तुच्छ मात्रा, कलेश (पाठा० स्वेद)–लेशैरभिन्नम् –शृ० २।४, श्रमवारिलेशैः –कु० ३।३८, इसी प्रकार भक्ति°, गुण° आदि 2. समय की माप (दो कलाओं के बराबर 3. (अल० में) एक प्रकार का अलंकार जिस में इष्ट का अनिष्ट के रूप में तथा अनिष्ट का इष्ट के रूप में वर्णन विद्यमान होता है, रस० में इसकी परिभाषा - गुणत्यागोऽनिष्टसाधनतया दोषत्वेन दोषस्यैष्टसाधनतया गुणत्वेन च वर्णनं लेशः; उदाहरणों के लिए दे० तत्सम्बन्धीय (प्रतीत होता है कि मम्मट ने इस अलंकार को 'विशेष' के साथ मिलाया है–दे० काव्य० १०, 'विशेष' के नीचे तथा भाष्य) । सम०–उक्त (वि०) सुझावमात्र, संकेतित, वक्रोक्ति द्वारा सूचित ।

लेश्या (स्त्री०) प्रकाश, रोशनी ।

लेष्टुः [लिष्+ तुन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा । सम०–भेदनः वह उपकरण जिससे ढेले फोड़े जाते हैं ।

लेलिमः (पुं०) गजारोही, हाथी पर चढ़ने वाला ।

लेहः [लिह् + घञ्] 1. चाटना, आचमन, जैसा कि 'मधुनो लेहः'–भट्टि० ६।८२ में 2. चखना 3. चाट, चटनी 4. भोज्य पदार्थ ।

लेहनम् [लिह् + ल्युट्] चाटना, जिह्वा से आचमन करना ।

लेहिनः [लिह् + इनन्] सुहागा ।

लेह्य (वि०) [लिह् + ण्यत्] चाटे जाने या चाट कर खाये जाने के योग्य, जीभ से लपलप पीने के योग्य,—ह्यम् 1. कोई भी चाटकर खाई जाने वाली वस्तु (जैसे कि कोई भोज्यपदार्थ), चाट 2. भोजन,

लैङ्गम् [लिङ्गस्य इदम्—लिङ्ग + अण्] अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम ।

लैङ्गिक (वि०) (स्त्री० की) [लिङ्ग + ठञ्] 1. किसी चिह्न या निशान पर निर्भर या तत्सम्बंधी 2. अनुमित, —कः प्रतिमाकार, मूर्तिकार ।

लोक् i (भ्वा० आ० लोकते, लोकित) देखना, नजर डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, अब ,देखना, निगाह डालना - नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् –भर्तृ० २।९२, आ–,देखना, निगाह डालना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना - भट्टि० २।२४ ।

ii (चुरा० उभ० या प्रेर० लोकयति ते, लोकित) 1. देखना, निगाह डालनी, निहारना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2. जानना, जानकार होना 3. चमकना 4. बोलना, अव —, 1. देखना, निहारना, निगाह डालना परिक्ष्याऽवलोक्य (नाटकों में) 2. मालूम करना, जानना, निरीक्षण करना—अवलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्याः –श० ४ 3. परखना, मनन करना, विमर्श करना—कु० ८।५०, रघु० ८।७४, आ –, 1. देखना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निहारना, निगाह डालना 2. खयाल करना, विचार करना, ध्यान देना तृणमिव जगज्जालमालोकयामः भर्तृ० ३।६६ 3. जानना, मालूम करना 4. अभिवादन करना, बधाई देना, वि , 1. देखना, निहारना, निगाह डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना विलोक्य वृद्धोक्षमधिष्ठितं त्वया महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति कु० ५।७०, रघु० २।११, ६।५९ 2. तलाश करना, ढूंढना ।

लोकः [लोक्यतेऽसौ लोक् + घञ्] 1. दुनिया, संसार, विश्व का एक प्रभाग (स्थूलरूप यदि कहा जाय तो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोक तीन हैं स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक; अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौदह हैं; सात तो पृथ्वी से आरम्भ करके ऊपर क्रमशः एक दूसरे के ऊपर अर्थात् भूर्लोक भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, और सत्य या ब्रह्मलोक, तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक दूसरे के नीचे—अर्थात् अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल. महातल और पाताल) 2. भूलोक, पृथ्वी इहलोक 'इस संसार में' (विप० परत्र) 3. मानव जाति, मनुष्य जाति, मनुष्य - लोकातिग, लोकोत्तर इत्यादि 4. प्रजा, राष्ट्र के व्यक्ति (विप० राजा) स्वभृत्य-निरभिलाषः क्रियसे लोकहेतोः भा० ५।७, रघु० ४।८ 5. समुदाय, समूह, समिति आकृष्टलीलान् नरलोकपालान् रघु० ६।१, शशाम तेन क्षितिपाल-लोकः - ७।३ 6. क्षेत्र, इलाका, जिला प्रान्त 7. सामान्य जीवन, (संसार का) सामान्य व्यवहार ---लोकवत्तु लीलाकैवल्यम् ब्रह्म० २।१।३३, यथा लोके कस्यचिदाप्तैषणस्य राज्ञः शारी० (इसी ग्रन्थ के और अन्य स्थल) 8. सामान्य लोक प्रचलन (विप० वैदिक प्रयोग या व्याख्या- वेदोक्ता वैदिकाः शब्दाः सिद्धा लोकाच्च लौकिकाः; प्रियतद्धिता दाक्षिणात्याः; यथा लोके वेदे चेति प्रयोक्तव्ये यथा लौकिकवैदिकेष्विति प्रयुञ्जते महा० (और अन्य अनेक स्थानों पर)—अतोऽस्मिन् लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः-भग० १५।१८ 9. दृष्टि, दर्शन 10. 'सात' या चौदह की संख्या। सम० अतिग (वि०) असाधारण, अति-प्राकृतिक, अतिशय (वि०) संसार के लिए श्रेष्ठ, असाधारण, - अधिक (वि०) असाधारण, असामान्य, सर्व पंडितराजराजिलिकेनलेखकारि लोकाधिकम् —भामि० ४।४४, कि० २।४७, अधिपः 1. राजा 2. सुर, देव, --अधिपतिः संसार का स्वामी,—अनुरागः 'मनुष्य जाति से प्रेम' विश्वप्रेम, साधारण हितैषिता, परोपकार, अन्तरम् 'परलोक' दूसरी दुनिया, भावी जीवन रघु० १।९९, ६।४५, लोकान्तरं गम्, प्राप् मरना, अपवादः सब लोगों में बदनामी, सार्वजनिक निन्दा लोकापवादो बलवान्मतो मे रघु० १४।४०, —अभ्युदयः लोककल्याण,—अयनः नारायण का नामांतर, अलोकः एक काल्पनिक पहाड़ जो इस पृथ्वी को घेरे हुए है और निर्मल जल के उस समुद्र से परे स्थित है जिसने सात महाद्वीपों में से अन्तिम द्वीप को घेर रक्खा है, इस लोकालोक से परे घोर अन्धकार है, और इस ओर प्रकाश है इस प्रकार यह पहाड़ इस दृश्यमान संसार को अन्धकार के प्रदेश से विभक्त करता है---प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः- रघु० १।६८. (आगे की व्याख्या के लिए दे० मा० १०।७९, पर डा० भाण्डारकर का नोट), (की) दृश्यमान और अदृष्ट लोक, आचारः सामान्य प्रचलन, सार्वजनिक या साधारण प्रथा, लोकव्यवहार. आत्मन् (पु०) विश्व की आत्मा, आदिः 1. संसार का आरंभ 2. संसार का रचयिता,—आयत (वि०) नास्तिकतासंबंधी, अनात्मवाद संबंधी, (-तः) भौतिकवादी, नास्तिक, चार्वाक दर्शन का अनुयायी, (तम्) भौतिकवाद नास्तिकता, (इसके वर्णन को सर्वदर्शनसंग्रह के प्रथम अध्याय में देखिये), -आयतिकः नास्तिक, अनात्मवादी, ईशः 1. राजा (संसार की प्रभु) 2. ब्रह्मा 3. पारा, उक्तिः (स्त्री०) 1. कहावत, लोकोक्ति 2. सामान्य चर्चा, लोकमत, उत्तर (वि०) असाधारण, असामान्य, अप्रचलित लोकोत्तरा न कृतिः - भामि० १।९९, ७०, उत्तरः २।७, (रः) राजा. एषणा स्वर्ग की इच्छा, कण्टकः कष्ट देने वाला या दुष्ट पुरुष, मानवजाति का अभिशाप दे० कण्टक, कथा सर्वप्रिय कहानी, कर्तृ, कृत् (पुं०) संसार का रचयिता, गाथा परंपरा से लोगों में गाया जाने वाला गान, चक्षुस् (नपुं०) सूर्य, चारित्रम् लोकव्यवहार, जननी लक्ष्मी का विशेषण, जित् (पुं०) 1. बुद्ध का विशेषण 2. संसार का विजेता, --ज्ञ (वि०) संसार को जानने वाला, ज्येष्ठः बुद्ध का विशेषण,—तन्त्रम् मनुष्यजाति का ज्ञान, तन्त्रम् जनतंत्र, तुषारः कपूर, त्रयम्, त्रयी सामूहिक रूप से तीनों लोक,- उल्लासलीलाकलयैकहेलया रघु० १४।७२, द्वारम् स्वर्ग का दरवाजा,- धातुः संसार का विशेष प्रकार का विभाजन, धातु (पुं०) शिव का विशेषण, नाथः 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. शिव 4. राजा, प्रभु 5. बुद्ध, नेतृ (पुं०) शिव का विशेषण, पः, पालः दिक्पाल ललितभिन्नय इमम् भर्ता भक्तां द्रष्टुमना: सलीकपालः विक्रम० २।१८, रघु० २।७५, २।८२, १७।७८, (लोक पाल गिनती में आठ हैं -दे० अष्ट दिक्पाल) 2. राजा, प्रभु,--पतिः (स्त्री०) मनुष्यजाति का आदर, साधारण आदरणीयता, पतिः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. राजा, प्रभु,--पद्धः, पद्धतिः (स्त्री०) साधारण व्यवहार, दुनिया का तरीका,- पितामहः ब्रह्मा का विशेषण,—प्रकाशनः सूर्य,—प्रवादः किंवदन्ती अफ़वाह, सर्वसाधारण में प्रचलित बात. प्रसिद्ध (वि०) सुज्ञात, विश्वविख्यात,—बन्धुः- बान्धवः सूर्य,- बाह्य, बाह्य (वि०) 1. समाज से बहिष्कृत, बिरादरी से खारिज 2. दुनिया से भिन्न, सनकी, अकेला (- ह्यः) जातिच्युत व्यक्ति, मर्यादा मानी हुई या प्रचलित प्रथा, मातृ (स्त्री०) लक्ष्मी का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेषण. **मार्गः** लोकसम्मत प्रथा,—**यात्रा** 1. दुनिया के मामले, लौकिक जीवनचर्या, लोकव्यवहार—एवं किल्यं लोकयात्रा महाभा० ७, यावदयं संसारस्तावत्स्थितिर्वैषां लोकयात्रा भा० ४ 3. आजीविका, वृत्ति, रक्षः राजा, प्रभु- रञ्जनम् जनता को संतुष्ट करना, संप्रियता, **स्थः** जनश्रुति, सार्वजनिक चर्चा, **लोचनम्** सूर्य, **वचनम्** सार्वजनिक किंवदन्ती, अफवाह,—**वादः** किंवदन्ती, गतानुगतिक चर्चा, सार्वजनिक अफवाह—मां लोकवादश्रवणादहासीः—रघु० १४।६१;—**वार्ता** किंवदन्ती, अफवाह, **विदिष्ट** (वि०) जिससे सब लोग घृणा करते हों, जिसे लोग पसंद न करते हों, **विधिः** 1. कार्य विधि का प्रकार, लोक में प्रचलित प्रक्रिया 2. संसार का रचयिता, -**विश्रुत** (वि०) दूर दूरतक मशहूर, जगद्विख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी,—**वृत्तम्** 1. लोक व्यवहार, संसार में प्रचलित प्रथा 2. इधर उधर की बातें, गपशप, **वृत्तान्तः, व्यवहारः** 1. लोकाचार, लोकरीति, साधारण प्रथा—श्रु० ५ 2. घटनाक्रम,—**श्रुतिः** (स्त्री०) 1. जनश्रुति 2. विश्वविख्यात कीर्ति, **संकरः** संसार की साधारण अव्यवस्था, **संग्रहः** 1. समस्त विश्व, 2. लोककल्याण 3. लोगों की भलाई चाहना,—**साक्षिन्** (पुं०) 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. अग्नि,—**सिद्ध** (वि०) 1. लोगों में प्रचलित, रिवाजी, प्रथागत 2. लोक या समाज द्वारा स्वीकृत, -**स्थितिः** (स्त्री०) 1. विश्व का अस्तित्व या संचालन, सांसारिक अस्तित्व 2 विश्वविधम,—**हास्य** (वि०) संसार द्वारा उपहसित, उपहासित, लोकनिंदित, **हित** (वि०) मनुष्य जाति के लिए कल्याणकारी, (**तम्**) जनसाधारण का कल्याण।

लोकनम् [लोक्+ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निहारना।

लोकयृण (वि०) [लोक+पृण्+क, गुणागमः] संसार में व्याप्त या संसार को भरनेवाला, **लोकस्पृशः परिभवः** परिगृहीतस्य काश्मीरजस्य कटुगन्धोऽपि निर्नाडन्तरम्या —भामि० १।७०।

लोक् [भ्वा० आ० लोकते] देखना, निहारना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निरीक्षण करना :: (चुरा० उभ० या प्रेर० लोकयति-ते) दिखलाना, आ , 1. देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2. विचारना, विमर्श करना, चिंतन करना, सोचना आलोकयन्तो दिक्तारमभ्यमुः क्षिप्तोऽप्येषः - भट्टि० ७।८० ।। चुरा० उभ० लोकयति-ते) 1. बोलना 2. चमकना।

लोकम् [लोच्+अच्] आंसू।

लोकः [लोच् घञ्] 1. पूर्व पुरुष 2. आँख की पुतली 3. दीपक की कालिख, काजल 4. एक प्रकार का कान का कुंडल 5. काली या नीली वेगभूषा 6. धनुष की डोरी 7. स्त्रियों द्वारा मस्तक पर धारण किया जानेवाला आभूषण, टीका 8. मांसपिंड 9. साँप की केंचुली 10. मूरीदार चमड़ी 11. भौं जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हैं 12. केले का पौधा।

लोचनम् [लोच्+ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि, दर्शन 2. आँख —शैलात्सामान्य समय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११० । मम० **गोचरः**,—**पथः, मार्गः** दृष्टि परास, दृष्टिक्षेत्र।

लोट् (भ्वा० पर० लोटति) पागल या मूर्ख होना।

लोठः [लुठ्+घञ्] भूमि पर लोटना, लुढ़कना।

लोड् (भ्वा० पर० लोडति) पागल या मूर्ख होना।

लोडनम् [लोड्+ल्युट्] अशान्त करना, उद्विग्न करना, आलोडित करना।

लोणारः [लवण+ऋ+अण्, पृषो०] नमक का एक प्रकार।

लोतः [लू+तन्] 1. आँधू 2. निशान, चिह्न, निशानी।

लोत्रम् [लू+ष्ट्रन्] चुराई हुई सम्पत्ति, लूट का माल, लोप्त्रेण (लोप्त्रेण) गृहीतस्य कुम्भीलकस्यास्ति वा प्रतिबन्धनम्—विक्रम० २।

लोध्रः, लोध्रः [रुणद्धि औण्ण्यम्, रुध्+रन्] लाल या सफ़ेद फूलों वाला वृक्ष विशेष -लोध्रद्रुम सानुमतः प्रफुल्लं रजुः २।२९, मुखेन सालक्ष्यत लोध्रपाण्डुना ३।२, कु० ५।५।

लोपः [लुप् भावे घञ्] 1. हटा लेना, वंचना 2. हानि, घिनाश 3. उन्मूलन, अपाकरण, (प्रभाओं का) उत्सादन, अस्तव्यस्तता, अप्रचलन 4. उल्लंघन, अतिक्रमण रघु० १।७६ 5. अभाव, असफलता, अनुपस्थिति रघु० १।६८ 6. भूल-चूक, छूट—तद्वद्धर्मस्य लोपे स्यात् काव्य० १० 7. अदर्शन, वर्णलोप (व्या० में), अदर्शनं लोपः—पा० १।१।६०।

लोपनम् [लुप्+ल्युट्] 1. उल्लंघन, अतिक्रमण 2. भूल-चूक, छूट।

लोपा, लोपामुद्रा [लुप्+णिच्+अच्+टाप्, लोपा+अमुद्रा कर्म० स०] विदर्भराज की एक कन्या, अगस्त्य मुनि की पत्नी (कहा जाता है कि विभिन्न जन्तुओं के अवयव सुन्दर भागों से मुनि ने स्वयं इस कन्या का, निर्माण किया था जिससे कि उसे अपने मनोनुकूल पत्नी मिल सके; उसके पश्चात् इसे चुपचाप विदर्भराज के महल में पहुँचा दिया गया जहाँ यह राजा की पुत्री के रूप में पली रही। बाद में अगस्त्य मुनि के साथ इसका विवाह हो गया। लोपामुद्रा ने अगस्त्य मुनि से कहा कि मुझ से संबंध रखने के लिए विपुल धनराशि प्राप्त करो। तदनुसार मुनि पहले तो राजा श्रुतर्वन् के पास गया, वहाँ से फिर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और राजाओं के पास; इस प्रकार वह अत्यन्त धनाढ्य राक्षस हल्वल के पास गया, और उसे परास्त कर उसकी विपुलधनराशि से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट किया)।

लोपाकः, लोपापकः [लोपम् आदर्शनमाप्नोति, लोप+आप्+ण्वुल्] एक प्रकार का गीदड़, शृगाल।

लोपाशः, लोपाशकः [लोपमाकुलीभावं चकितभवनाति लोप-आश्+अण्, लोप+अश्+ण्वुल्] गीदड़, लोमड़।

लोपिन् (वि०) [लुप्+णिनि] 1. क्षतिग्रस्त करने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला 2. लुप्त होने वाला।

लोप्त्रम् [लुप्+पत्र] दे० 'लोत्रम्'।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1. लोलुपता, लालसा, लालच, अतितृष्णा—लोभश्चेदगुणेन किम् भर्तृ० २।५५ 2. इच्छा, उत्कण्ठा (सर्व० के साथ या समास में) —कङ्कणस्य तु लोभेन—हि० १।५, आननस्पर्शलोभात्—मेघ० १०५। सम०—अन्वित (वि०) लोलुप, लालची, लोभी,—विरहः लोलुपता का अभाव —हि० १।

लोभनम् [लुभ्+ल्युट्] 1. प्रलोभन, ललचाना, बहकाना, फुसलाना 2. सोना।

लोभनीय (वि०) [लुभ्+अनीयर्] फुसलाने वाला प्रलोभन देने वाला, आकर्षक, इसी प्रकार 'लोभ्य'।

लोमः (पुं०) पूछ।

लोमकिन् (पुं०) [लोमक+इनि] एक पक्षी।

लोमन् (नपुं०) [लू+मनिन्] मनुष्य और जानवरों के शरीर पर उगने वाले बाल—दे० रोमन्। सम०—अञ्चः=रोमाञ्च दे०, आलिः,—ली, आवलिः, —ली,—राजिः (स्त्री०) छाती से लेकर नाभि तक बालों की पंक्ति—दे० रोमावली आदि,—कर्णः खरगोश, —कीटः, जूँ, यूका,—कूपः,—गर्तः, रंध्रम्,—विवरम् खाल में छिद्र,—हर्षम् दृप्ति गंज,—मणिः बालों से बनाया हुआ तावीज,—वाहिन् (वि०) पलचारी, —संहर्षण (वि०) पुलकित करने वाला, रोमांच पैदा करने वाला, —सारः पशा, हर्षः, —हर्षणः,—हर्षिन् —दे० रोमहर्ष,—हृत् (पुं०) हरताल।

लोमश (वि०) [लोमानि सन्ति अस्य लोमन्+श] 1. बालों वाला, ऊनी, रोएँदार 2. ऊनी 3. बालों वाला,—शः भेड़, मेंढा, शा 1. लोमड़ी 2. गीदड़ी 3. लंगूर 4. कास्तीस। सम०—मार्जारः गंधबिलाव।

लोमशाशः [लोमन्+अश्+अण्] गीदड़, शृगाल।

लोल (वि०) [लोड्+अच्, डस्य लः, लुल्+घञ् वा] 1. हिलता हुआ, लोटता हुआ, काँपता हुआ, दोलायमान, थरथराता हुआ, बहता हुआ, लहराता हुआ (जैसे कि बाल, अलकें) —परिस्फुरल्लोल शिखाप्रजिह्व जग-जिघत्सन्तमिवान्तवह्निम्—कि० ३।२०, लोलांशुकस्य पवनाकुलितांशुकान्तम्—वेणी० २।२२, लोलापाङ्गैः लोचनैः मेघ० २७, रघु० १८।४३ 2. विक्षुब्ध अशान्त, बेचैन, परेशान 3. चंचल, चपल, परिवर्ती, अस्थिर येन श्रियः संश्रयदोषरूढं स्वभावलोलेत्य यशः प्रमृष्टम् —रघु० ६।४१, इसी प्रकार कु० १।४३ 4. अस्थायी, नश्वर—भा० १।१० 5. लालुच, उत्सुक, उत्कण्ठित (प्रायः समास में;—अर्थे लोलः करिकलभको यः पुरा पोषितोऽभूत्—उत्तर० ३।६, कर्णे लोलः कथयितुमभूदाननस्पर्शलोभात्—मेघ० १०३, शि० १।६१, १८।४६, १०।६६, कि० ४।२०, मेघ० ६१, रघु० ७।२३, ९।३७, १६।५४, ६१,—ला 1. लक्ष्मी का नाम 2. बिजली 3. जिह्वा। सम० अक्षि (नपुं०) चंचल नेत्र, अक्षिका चंचल नेत्रों वाली स्त्री,—जिह्व (वि०) चंचल जिह्वा से युक्त, लालची, —लोल (वि०) अत्यंत थरथराने वाला, सदैव बेचैन।

लोलुप (वि०) [लुभ्+यङ् अच्, पृषो० भस्य पः] बहुत उत्सुक, अत्यंत इच्छुक, लालायित, लालची अभिनवमधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुंब्य चूतमञ्जरीम्, कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोऽस्येता कथम्—शा० ५।१, मिथस्त्वदाभाषणलोलुपं मनः शि० १।४०, रघु० १९।२४,—पा लालसा, उत्कण्ठा, उत्सुकता।

लोलुभ (वि०) [लुभ्+यङ्+अच्] अत्यन्त लालसायुक्त, लालची —दे० 'लोलुप'।

लोष्ट (भ्वा० आ० लोष्टते) ढेर लगाना, अंबार लगाना।

लोष्टः, ष्टम् [लुष्+तन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा—परद्रव्येषु लोष्टवत् यः पश्यति स पश्यति, समलोष्टकाञ्चनः —रघु० ८।२१,—ष्टम् लोहे का मोर्चा, जंग। सम०—घ्नः,—भेदनः,—नम् ढेलों को फोड़ने का उपकरण, पटेला, हेंगा।

लोष्टः [लुष्+तुन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा।

लोह (वि०) [लूयतेऽनेन, लू+हन्] 1. लाल, लाल रंग का 2. तांबे का बना हुआ, ताम्रमय 3. लोहे का बना हुआ, हः हम् 1. तांबा 2. लोहा 3. इस्पात 4. कोई धातु 5. सोना 6. रुधिर 7. हथियार मनु० ९।३२१ 8. मछली पकड़ने का काँटा,—हः लाल बकरा,—हम् अगर की लकड़ी। सम०—अजः लाल बकरा,—अभिसारः, —अभिहारः 'नीराजन' से मिलता जुलता एक सैनिक-संस्कार, उत्तमम् सोना,—कान्तः लोहमणि, चुम्बक, कारः लुहार,—किट्टम् लोहे का जंग,—घातकः लुहार,—चूर्णम् रेतने से निकला हुआ लोहे का चूरा, लोहे का जंग, जम् 1. कांसा 2. लोहे का बुरादा, —जालम् कवच,—जित् (पुं०) हीरा,—ग्रावन् (पुं०) सुहागा,—नालः लोहे का बाण, पृष्ठः एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकार का बगला, कंकपक्षी, **प्रतिमा** 1. घन 2. लोहमूर्ति, **बद्ध** (वि०) लोहे से युक्त या जिसकी नोक पर लोहा जड़ा हो, **-मुक्तिका** लाल मोती, -- **रजस्** (नपुं०) लोहे का जंग, मोर्चा, -- **रामकम्** चांदी, **-वरम्** सोना, **शङ्कुः** लोहे की सलाख, - **श्लेषणः** सुहागा, **संकरम्** नीले रंग का इस्पात।

लोहल (वि०) [लोहमिव जातिः—ला + क] लोहे का बना हुआ 2. अस्पष्टभाषी, तुतला कर बोलने वाला।

लोहिका [लोह+टाप्, इत्व] लोहे का पात्र।

लोहित (वि०) (स्त्री०—**लोहिता, लोहिनी**) [रुह् + इतन्, रस्य लः] 1. लाल, लाल रंग का,—**स्रस्ता-सावतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्स्थेपणात्**—श० १।३०, कु० ३।२९, **मुहुरवलपल्लवलोहिनीभिरुच्चैः शिखाभिः शिखिनावलीढाः**— कि० १६।५३ 2. तांबा, ताबे से बना हुआ,—**तः** 1. लाल रंग, 2. मंगल ग्रह 3. सांप 4. एक प्रकार का हरिण 5. एक प्रकार के चावल,—**ता** आग की सात जिह्वाओं में से एक,—**तम्** 1. तांबा 2. रुधिर मनु० ८।२८४, 3. जाफरान, केसर 4. युद्ध 5. लाल चन्दन 6. एक प्रकार का चन्दन 7. इन्द्र धनुष का अधूरा रूप। सम०—**अक्षः** 1. लाल रंग 2. एक प्रकार का सांप 3. कोयल 4. विष्णु का विशेषण,—**अङ्गकः** मंगलग्रह, —**अयस्** (नपुं०) तांबा, **अशोकः** (लाल फूलों का) अशोक वृक्ष, - **अक्षः** आग, —**आनतः** नेवला,—**ईक्षणः** (वि०) लाल आँखों वाला, **उद्** (वि०) लाल या रुधिर के समान लाल पानी वाला, **कल्माष** (वि०) लाल धब्बों वाला, **क्षणः** रुधिर का नाग, **ग्रीवः** अग्नि का विशेषण, - **चन्दनम्** केसर, जाफ़रान, **-पुष्पकः** अनार का वृक्ष, - **मूलिका** लाल खड़िया, गेरु, —**शतपत्रम्** लाल कमल का फूल।

लोहितक (वि०) (स्त्री० **तिका**) [लोहित+कन्] लाल, **कः** 1. लालमणि, -शि० १३।५२ 2. मंगल ग्रह 3. एक प्रकार का चावल, - **कम्** कांसा।

लोहितमन् (पुं०) [लोहित+इमनिच्] लालिमा, लाली।

लोहिनी [लोहित+ङीष्, तकारस्य नकारः] वह स्त्री जिसकी चमड़ी लाल रंग की हो।

लौकायतिकः [लोकायतमधीते वेद वा—लोकायत+ठक्] चार्वाकमतानुयायी, नास्तिक, अनीश्वरवादी, भौतिकवादी।

लौकिक [वि०; स्त्री० की] [लोके विदितः प्रसिद्धो हितो वा ठण्] 1. सांसारिक, दुनियावी, भौमिक, पार्थिव 2. साधारण, सामान्य, प्रचलित, मामूली, गंवारू - उत्तर० १।१० 3. दैनिक जीवन संबंधी, सामान्यतः माना हुआ, सर्वप्रिय, प्रयागत—कु० ७।८८ 4. सामयिक, धर्मनिरपेक्ष (विप० आर्ष, या शास्त्रीय) मनु० ३।२८२ 5. जो वैदिक न हो, सांसारिक (शब्द या उसका अर्थ) **वाक्यं द्विविधं वैदिकं लौकिकं च** —तर्क० (दे० लोक ८ के नीचे उद्धृत महा०) 6. संसार से संबंध रखने वाला—जैसा कि 'अलौकिक' में,—**काः** (ब० व०) सामान्य मनुष्य, संसार के लोग, **कम्** कोई साधारण लोकाचार। सम० - **ज्ञ** (वि०) लोकव्यवहार को जानने वाला, लोक प्रथाओं से परिचित—**वनौकसोऽपि सन्ती लौकिकज्ञा वयम्** —श० ४।

लौकिक्य (वि०) [लोके भवः - लोक+ष्यञ्] 1. सांसारिक, दुनियावी, ऐहिक, मानवी 2. सामान्य, मामूली, रिवाजी।

लौड् (म्वा० पर० लौडति) पागल या मूर्ख होना।

लौल्यम् [लोलस्य भावः ष्यञ्] 1. चंचलता, अस्थिरता, चाञ्चल्य 2. उत्सुकता, उत्कण्ठा, लालच, लालसापूर्णता, अत्यन्त प्रणयोन्माद या अभिलाषा, **जिह्वालौल्यात्** - पंच० १, रघु० ७।६१, १६।७६, १८।३०, कु० ६।३०।

लोह (वि०) (स्त्री०—**ही**) [लोह्+अण्] 1. लोहे का बना हुआ, लोहा 2. ताम्रमय 3. धातु का बना 4. ताबे के रंग का, लाल,—**हम्** लोहा, भट्टि० १५।५४, **हा** कड़ाही। सम०—**आत्मन्** (पुं०)—**भूः** (स्त्री०) बायलर, कड़ाही, कड़ाह,—**कारः** लुहार, -- **जम्** लोहे का जंग,—**बन्धः** **जम्** लोहे की बेड़ी, जंजीर, —**भाण्डम्** लोहे का पात्र,—**मलम्** लोहे का जंग, —**शङ्कुः** लोहे की सलाख।

लोहितः [लोहित+अण्] शिव का त्रिशूल।

लौहित्यः [लोहितस्य भावः ष्यञ्, स्वार्थे ष्यञ् वा] एक नदी का नाम, ब्रह्मपुत्र—**चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः** - रघु० ८।८१, (यहाँ मल्लि० बिना किसी प्रमाण के कहता है **तीर्णा लौहित्या नाम नदी येन**),—**त्यम्** लाली।

ल्यो, ल्यी (क्रया० पा० ल्यिनाति, ल्यिनाति) मिलना, सम्मिलित होना, मेलजोल करना।

ल्वी (क्रया० पर० ल्विनाति) जाना, हिलना-जुलना, पहुँचना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वः [वा+ड] 1. वायु, हवा 2. भुजा 3. वरुण 4. संधान 5. संबोधित करना 6. मांगलिकता 7. निवास, आवास 8. समुद्र 9. व्याघ्र 10. कपड़ा 11. राहु, **वम्** वरुण (मेदिनी) –अव्य० की भांति, के समान 'जैसा कि' मणौ वोत्कीर्य्य लभ्यते प्रियौ वत्सतरौ यम-–सिद्धा० (यहाँ शब्द 'व' अथवा 'वा' हो सकता है)।

वंश: [वमति उद्गिरति वम्+श तस्य नेत्वम्] 1. बांस–धनुर्वंशविधुद्धोऽपि तिर्गुण: किं करिष्यति–हि० प्र० २३, वंशभवो गुणवानपि संगविशेषेण पूज्यते पुरुष: भामि० १।८० (यहां 'वंश' का अर्थ 'कुल या परिवार' भी है) मेघ० ७९ 2. जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा–स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम् हि० २, क्व सूर्यप्रभवो वंश:—रघु० १।२, दे० वंशकरम्, वंशस्थिति आदि 3. लाठी 4. बांसुरी, मुरली, अलगोझा या विपंचीनाद कूजद्भिरापादित-वंशकृत्यं –रघु० २।१२ 5. संग्रह, संघात, समुच्चय (प्राय: एक समान वस्तुओं का)—सान्द्रोकृत: स्यन्दन-वंशचक्रै: रघु० ७।३९ 6. आर-पार, शहतीर 7. (बांस में) जोड़ 8. एक प्रकार का ईख 9. रीढ़ की हड्डी 10. साल का वृक्ष 11. लम्बाई नापने का एक विशेष माप (दस हाथ के बराबर)। समः —**अङ्कुर:**, **अङ्कुर:** 1. बांस का किनारा 2. बांस का अंखुआ, **अनुकीर्तनम्** वंशावली, –**अनुक्रम:** वंशावली, –**अनुचरितम्** एक परिवार या कुल का परिचय, –**आवली**, वंशपरंपरा, वंशविवरण, –**आह्व:** वंसलोचन, –**कठिन:** बांसों का झुरमुट, –**कर** (वि०) 1. कुल-प्रवर्तक 2. वंशस्थापक रघु० १८।३२ (–र:) मूल-पुरुष, **कर्पूररोचना**, **रोचना**, **लोचना** वंसलोचन, तवाशीर, –**कृत्** (पुं०) कुल संस्थापक, या वंशप्रवर्तक, –**क्रम:** वंशपरंपरा, –**क्षीरे** वंसलोचन, –**चरितम्** कुलपरिचय, –**च्छिन्नक:** वंशावली जानने वाला, **छेत्तृ** (वि०) किसी कुल का अंतिम पुरुष, –**ज** (वि०) 1. कुल में उत्पन्न–रघु० १।३१ 2. सत्कुलोद्भव (–ज:) 1. प्रजा, संतान, औलाद 2. बांस का बीज (–**जम्**) वंसलोचन, **नर्तक** (पुं०) नट, मसखरा, –**नाडि** (ली) का बांस की बनाई बांसुरी, –**नाथ:** किसी वंश का प्रधान पुरुष, –**नेत्रम्** ईख की जड़, **पत्रम्** बांस का पत्ता (त्र:) नरकुल, **पत्रक:** 1. नरकुल 2. पौंड़ा, गन्ने का श्वेत प्रकार, (–**कम्**) हरताल, **परंपरा** वंशानुक्रम, कुलपरंपरा, **पूरकम्** गन्ने की जड़, **भोज्य** (वि०) आनुवंशिक, (–**ज्यम्**) आनुवंशिक भूसंपत्ति, –**लक्ष्मी:** (स्त्री०) कुल का सौभाग्य, **वितति:** (स्त्री०) 1. परिवार, संतान 2. बांसों का झुरमुट, **शर्करा** वंसलोचन, **शलाका** वीणा में लगी बांस की खूंटी, **स्थिति:** (स्त्री०) कुल की अविच्छिन्नता रघु० १८।३१।

वंशक: [वंश+कन्] 1. एक प्रकार का घास 2. बांस का जोड़ 3. एक प्रकार की मछली,—**कम्** अगर की लकड़ी।

वंशिका [वंश+ठन्+टाप्] 1. एक प्रकार की बांसुरी, अगर की लकड़ी।

वंशी [वंश+अच्+ङीष्] 1. बांसुरी, मुरली—न वंशी-मञ्जासीद्भुवि करसरोजाहितगतिम्–हंस० १०८, कंसरिपोर्वंशीपूरितहतु स वोऽव्येत्रांसि वंशीरव: गीत० ९ 2. शिरा या धमनी 3. वंसलोचन 4. एक विशेष तौल। समः **धर:**, –**धारिन्** (पुं०) 1. कृष्ण का विशेषण 2. वंशी बजाने वाला।

वंश्य (वि०) [वंशे भव: यत्] 1. मुख्य शहतीर से संबंध रखने वाला 2. मेरुदण्ड से संबंध रखने वाला 3 परिवार से संबंध रखने वाला 4. अच्छे कुल में उत्पन्न, उत्तम कुल का 5. वंशधर, वंशप्रवर्तक,—**श्य:** 1. संतान परंपरा (ब० व०) इतरेऽपि रघोर्वंश्यास्त्रय:—रघु० १५। ३५ 2. पूर्वज, पूर्वपुरुष नूनं मत्त: परं वंश्या पिण्ड-च्छित्तेदर्शिन: रघु० १।६६ 3. परिवार का कोई सदस्य 4. आरपार, शहतीर 5. भुजा या टांग की हड्डी 6. शिष्य।

वंह् दे० वह्।

वक् दे० वच्।

वकुल दे० बकुल।

वक्क (स्वा० आ०–वक्कते) जाना, हिलना-डुलना।

वक्तव्य (सं० कृ०) [वच्+तव्यत्] 1. कहे जाने या बोले जाने के योग्य, बात किये जाने या प्रवचन के योग्य - तन्नहि वक्तव्यं न वक्तव्यम् (महा० में अनेक बार) 3. किसी विषय में कहे जाने के योग्य 3. कहनीय, द्रूषणीय, निन्दनीय 4. नीच, दुष्ट, कमीना 5. स्पष्टव्य, उत्तरदायी 6. आश्रित, **व्यम्** 1. बोलना, भाषण 2. विधि, नियम, सिद्धान्त वाक्य 3. कलंक, निन्दा, भर्त्सना।

वक्तृ (वि०, या पुं०) [वच्+तृच्] 1. बोलने वाला, बातें करने वाला, वक्ता 2. धर्मोपदेष्टा, प्रवक्ता—कि करिष्यन्ति वक्तार: श्रोता यत्र न विद्यते, उदूरा यत्र वक्तारस्तत्र भीमं हि शोभनम्–सुभा० 3. अध्यापक, व्याख्याता 4. विद्वान पुरुष, बुद्धिमान व्यक्ति।

वक्त्रम् [वक्ति अनेन वच्–करणे ष्ट्रन्] 1. मुख 2. चेहरा –यद्वक्त्रं मधुरीक्षते न धनितां धूपं न चाटून्मृगा: भर्तृ० ३।१४७ 3. घूपन, प्रोथ, चोंच 4. आरम्भ 5. (बाण की) नोक, किसी पात्र की टोंटी 6. एक प्रकार का वस्त्र 7. अनुष्टुप् से मिलता-जुलता एक छन्द, दे०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा० द० ५६७, काव्या० १।२६। सम० आस्रवः लार,—खुरः दांत, —जः बाण, —ह्रदम् मुंह से बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र, —दलम् तालु, —पटः परदा, —रन्ध्रम् मुखविवर, —परिस्पन्दः भाषण, भेदिन् (वि०) चरपरा, तीक्ष्ण, —शस्त्रः सन्तरा, —शोधनम् 1. मुंह साफ करना 2. नोंक, चकोतरा, —शोधिन् (नपुं०) चकोतरा (पुं०) चकोतरे का वृक्ष।

वक्र (वि०) [वङ्क्-|-रन्, पृषो० नलोपः] 1. कुटिल (आलं० से भी) झुका हुआ, टेढ़ा, नक्करदार, घुमावदार,—वक्रः पन्थाः यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशाम् मेघ० २७, कु० ३।२९ 2. गोलमोल, परोक्ष, टालमटूल, मण्डलाकार, घुमा फिरा कर बात कहना, वर्धर्क या सन्दिग्ध (भाषण)—किमेतैर्वक्रभणितैः रत्न० २, वक्रवाक्यरचनारमणीयः शुश्रुवां प्रवृत्ते परिहासः शि० १०।१२ दे० 'वक्रोक्ति' भी 3. छलिया, लहरियेदार, घुघराले (बाल) 4. प्रतिगामी (गति आदि) 5. बेईमान जालसाज, कुटिल स्वभाव का 6. क्रूर, घातक (ग्रह आदि) 7. छन्दःशास्त्र की दृष्टि से गुरु (दीर्घ),—क्रः 1. मंगलग्रह 2. शनिग्रह 3. शिव के त्रिशूल सदृश,—क्रम् 1. नदी का मोड़ 2. (ग्रह का) प्रतिगमन। सम० अङ्गम् टेढ़ा, अवयव (गः) 1. हंस 2. चकवा 3. सीप, उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार का नाम जिसमें टालमटोल करने वाली बात या तो श्लेषपूर्ण ढंग से कही जाती है या स्वर बदल कर। मम्मट इसकी परिभाषा इस प्रकार देता है:—यदुक्तमन्यथान्येन वाक्यमन्यथाश्लेषेण योज्यते, श्लेषेण काकवा वा सैषा सा वक्रोक्तिरुच्यते द्विधा—काव्य० ९, उदाहरण के लिए मुद्रा० का आरम्भिक श्लोक (अन्या वेयं स्थिता) देखिए 2. वाक्कौशल, कटाक्ष, व्यंग्य—सुबन्धुर्बुधिसद्वच कविराज इति त्रयः, वक्रोक्तिमार्गनिपुणश्चतुर्थो विद्यते न वा 3. वक्रता, टेढ़ापन, कण्टः बेर का पेड़, कण्टकः बेर का वृक्ष,—कण्डूः, कण्डूरः कटार, टेढ़ी तलवार, गति, गामिन् (वि०) 1. टेढ़ी चाल वाला, चक्करदार 2. जालसाज, बेईमान,—ग्रीवः ऊँट —चञ्चुः तोता, तुण्डः 1. गणेश का विशेषण 2. तोता, —दंष्ट्रः सूअर, —दृष्टि (वि०) 1 भैंगी आँख वाला. ऐंचाताना 2. विद्वेषपूर्ण दृष्टि रखने वाला 3. हानि करने वाला, (स्त्री०) तिरछी निगाह, तिर्यग्दृष्टि, नक्रः 1. तोता 2. चोंच पुरुष, नासिकः उल्लू, —पुच्छः, पुच्छिकः कुत्ता, पुष्पः डाक वृक्ष, बालधिः, लाङ्गूलः कुत्ता, भागः 1. टेढ़ापन 2. धोखा, —वक्रः सूकर।

वक्रयः (पुं०) मूल्य, कीमत (अवक्रयः के बदले)।

वक्रिन् (वि०) [वक्र+इनि] 1. कुटिल 2. प्रतिगामी (पुं०) जैन या बुद्ध।

वक्रिमन् (पुं०) [वक्र+इमनिच्] 1. कुटिलता, वक्रता, 2. वाकछल, टालमटोल, संदिग्धता, चक्कर, घुमाव, (वाणी की) परोक्षता,—तदहंक्राम्बुजसौरभं स च सुधास्यन्दी गिरां वक्रिमा गीत०, ३ 3. चूर्तता, चालाकी, मक्कारी।

वक्रोष्टिः, वक्रोष्टिका (स्त्री०) [वक्रः ओष्टो यस्या ब० स०, कप्-|-टाप् इत्वम्] मृदु सुसकान।

वक्ष् (भ्वा० पर० वक्षति) 1. वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना 2. शक्तिशाली होना 3. क्रुद्ध होना 4. संचित होना।

वक्षस् (नपुं०) [वह्+असुन्, सुट् च] छाती, हृदय, सीना कपाटवक्षाः परिघोद्धकन्धरः रघु० ३।३४। सम०—जः, रुह्, रुहः (वक्षोजः, वक्षोरुह्, वक्षोरुहः) स्त्री की छाती भामि० २।१७, स्थलम् (वक्ष या वक्षः स्थलम्) छाती या हृदय।

वक्ष्, वंक्ष् (वक्षति, वंक्षति) जाना, हिलना-डुलना।

वगाहः [भागूरिमते 'अवगाह' इत्यत्र अकारलोपः] दे० 'अवगाह'।

वङ्कः [वङ्क्-अच्] नदी का मोड़।

वङ्का [वङ्क्+टाप्] घोड़े की जीन की अगली मेंडी।

वङ्कालिः [वङ्क्-|-इलच्] कौटा।

वङ्किः [वङ्कि+कि, इदित्वात् घातोर्नुम्] 1. (किसी जानवर या भवन की पसली), (कुछ लोग इस शब्द को स्त्रीलिंग बताते हैं) 2. छत का शहतीर 3. एक प्रकार का वाद्य यन्त्र (इन दो अर्थों में नपुं० भी)।

वङ्क्षुः [वह्+क्षुन्, नुम्] गंगा नदी की एक शाखा।

वङ्क्ष् (भ्वा० पर० वङ्क्षति) 1. जाना 2. लंगड़ाना, लंगड़ा कर चलना।

वङ्गाः (ब० व०) [वङ्ग+अच्] बंगाल प्रदेश तथा उसके अधिवासियों का नाम—वङ्गानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान्- रघु० ४।३६, रत्नाकरः समारभ्य ब्रह्मपुत्रान्तम् प्रिये, वङ्गदेश इति प्रोक्तः,—गः 1. कपास, बैंगन का पौधा,—गम् 1. सीसा 2. रांगा। सम० अरिः हरताल,—जः 1. पीतल 2. सिंदूर, —जीवनम् चाँदी, शूल्यजम कांसा।

वञ्च् (भ्वा० आ० वञ्चते) 1. जाना 2. तेजी से चलना, 3. आरम्भ करना, 4. निन्दा करना, दूषित करना।

वच् (अदा० पर०) (आर्धधातुक लकारों में आ० भी, कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि सार्वधातुक लकारों में, अन्यपुरुष बहुवचन के रूप सदोष होते हैं, तथा कुछ के अनुसार समस्त बहुवचन में वक्ति, उक्तम्) 1. कहना, बोलना—वैराग्यादिव अक्षि—काव्य० १०,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(प्रायः दो कर्मों के साथ)–ताम्चतुस्ते प्रियमप्यमिथ्या –रघु० १४।६, कभी कभी 'भाषण' अर्थ को बतलाने वाले शब्दों के साथ दूसरी विभक्ति में –उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः रघु० ३।५०, २।५९, क एवं वक्ष्यते वाक्यम् रामा० 2. वर्णन करना, बयान करना रघूणामन्वयं वक्ष्ये रघु० १।९ 3. कहना, समाचार देना, घोषणा करना, प्रकथन करना उच्यतां मद्वचनात् सारथिः –श० २, मेघ० ९८ 4. नाम लेना, पुकारना—तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्यते मनु० १।७९, प्रेर०—(वाचयति ते) 1. बुलवाना 2. निमंत्रण डालना, पढ़ना, अवलोकन करना 3. कहना, बोलना, प्रकथन करना 4. प्रतिज्ञा करना, इच्छा० (वक्तुकाम) बोलने की इच्छा करना, (कुछ) कहने का इरादा करना, अनु–बाद में कहना, आवृत्ति करना, पाठ करना, (प्रेर०) मन में पढ़ना –नामसूद्राक्षराण्यनुवाच्य– श० १, निस् 1. अर्थ करना, व्याख्या करना वेदा निर्वक्तुमक्षमाः 2. वर्णन करना, बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना 3. नाम लेना, पुकारना, प्रति , उत्तर में बोलना, जवाब देना, प्रतिवाद करना न वेदस्यं प्रतिवक्तुमर्हसि—कु० ५।४२, रघु० ३।४८, वि –, व्याख्या करना, सम्– कहना, बोलना।

वचः [वच्+अच्] 1. तोता 2. सूर्य, **चा** 1. मैना पक्षी 2. एक सुगन्धित जड़, **चम्** बोलना, बातें करना।

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1. बोलने, उच्चारण करने या कहने की क्रिया 2. भाषण, उद्गार, उक्ति. वाक्य—ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः –कु० २।५, प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार –मेघ० ४ 3. बोलवाना, पाठ करना 4. मूल, वाक्य विन्यास, नियम, विधि, धार्मिक ग्रन्थ का सन्दर्भ –शास्त्रवचनं, श्रुतिवचनं, स्मृतिवचनम् आदि 5. आदेश, हुक्म, निर्देश, 'मद्वचनात्' मेरे नाम से अर्थात् मेरे आदेश से 6. उपदेश, परामर्श, अनुदेश 7. घोषणा, प्रकथन 8. (व्या० में) (वर्ण का) उच्चारण 9. शब्द की यथार्थता–अथ पयोधर शब्दः मेघवचनः 10. (व्या० में) वचन, (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इस प्रकार वचन तीन होते हैं) 11. सूखा अदरक। सम० **उपक्रमः** प्रस्तावना, आमुख, **कर** (वि०) आज्ञाकारी, आदेश का पालन करने वाला, **कारिन्** (वि०) आज्ञा पालन करने वाला, आज्ञाकारी, **क्रमः** प्रवचन, **ग्राहिन्** (वि०) आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, **-पटु** (वि०) बोलने में चतुर, **विरोधः** विधियों की असङ्गति, विरोध, पाठ की अननुरूपता, **-शतम्** सौ भाषण, अर्थात् बार बार घोषणा, पुनरुक्ति, **स्थित** (वि०) ('वचने स्थितः' भी) आज्ञाकारी, अनुवर्ती।

वचनीय (वि०) [वच् + अनीयर्] 1. कहे जाने, बोले जाने या वर्णन किये जाने के योग्य 2. निन्दनीय, दूषणीय, **यम्** कलंक, निन्दा, निर्भर्त्सना न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२, **वचनीयभिदं व्यवस्थितं रमण त्वामनुगामि यद्यपि–४।२१, भवति योऽभिलषितुर्वचनीयता—पंच० १।७५, कि० ९।३९, ६५, मृच्छ० ४।१।

वचरः (पुं०) 1. मूर्ख 2. बदमाश, नीच, शठ, दुष्ट।

वचस् (नपुं०) [वच्–असुन्] 1. भाषण, वचन, वाक्य, –उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः –रघु० ३।२५, ४७, इत्यव्यभिचारि तद्वचः कु० ५।३६, वचस्तव प्रयोक्तव्यं यत्तोक्तं लभते फलम् सुभा० 2. हुक्म, आदेश, विधि, निषेधाज्ञा 3. उपदेश, परामर्श 4. (व्या० में) वचन। सम० **कर** (वि०) 1. आज्ञाकारी, अनुवर्ती 2. दूसरों की आज्ञा पालन करने वाला,–**कर्मः** प्रवचन, –**ग्रहः** काम, **प्रवृत्तिः** (स्त्री०) भाषण करने का प्रयत्न श० ७।१७।

वचस्पतिः [वचसां वाचां पतिः षष्ठ्या अलुक्] बृहस्पति का विशेषण, गुरु ग्रह।

वज् : (भ्वा० पर० वजति) जाना, हिलना-डुलना, इधर-उधर घूमना। ii (चुरा० उभ० वाजयति–ते) काटछांटकर ठीक करना, तैयार करना 2. बाण की नोक में पर लगाना 3. जाना, हिलना-डुलना।

वज्रः,–ज्रम् [वज्+रन्] 1. वज्र, बिजली, इन्द्र का शस्त्र, (कहते हैं कि इन्द्र का वज्र दधीचि की हड्डियों से बना था) –आशासते समिन्धि सुराः सकलैरेव हि दैवेयं रक्षाधिज्ये धनुषि विजयं गौरवहते च वज्रे–श० २।१५, 3. इन्द्र के वज्र जैसा कोई भी घातक या विनाशकारी हथियार 5. हीरे की अणि, मणि माणिक्यों को बींधने का उपकरण—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः रघु० १।४ 4. हीरा, वज्र– वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि उत्तर० २।७, रघु० ६।१९ 5. काँजी, **ज्रः** 1. एक प्रकार का सैनिकव्यूह 2. एक प्रकार का कुश नामक घास 3. अनेक गौओं के नाम, –**ज्रम्** 1. इस्पात 2. अभ्रक 3. वज्र जैसी या कठोर भाषा 4. बालक, बच्चा 5. आवला। सम०–**अङ्गः** सौंफ,—**अश्मजः** अनुप्रस्थगुणन, **अशनिः** इन्द्र का वज्र, **आकरः** हीरों की खान, रघु० १८।२१, **आख्यः** एक बहुमूल्य पत्थर, मणि,–**आघातः** 1. बिजली का प्रहार 2. (अतः आलं० से) आकस्मिक धक्का या संकट,–**आयुधः** इन्द्र का हथियार, —**कूटः** हनुमान् का विशेषण, **कीलः** वज्र, बिजली, **वज्र** की कील जीवित वज्रकीलम् मा० ९।३७,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तु० उत्तर० १।४७, क्षारम् रिहाली मिट्टी,—गोपः, इन्द्रगोपः वीरबहूटी, वज्रः गिद्ध, चर्मन् (पुं०) गेंडा, -जित् (पुं०) गरुड़,—ज्वलनम्, ज्वाला बिजली, -तुण्डः 1. गिद्ध 2. मच्छर, डाँस 3. गरुड़ 4. गणेश, -तुल्यः मोलम्, दंष्ट्रः एक प्रकार का कीड़ा, दन्तः 1. सूअर 2. चूहा,—वशः एक चूहा, देहः,—देहिन् (वि०) दृढ़ शरीर वाला, -धरः इन्द्र का विशेषण—वज्रधरप्रभावः रघु० १८।२१,—नाभः कृष्ण का (सुदर्शन) चक्र, निर्घोषः,—निर्ह्रादः बिजली की कड़क, पाणिः इन्द्र का विशेषण—वज्रं मुमुक्षुरिव वज्रपाणिः रघु० २।४२, पातः बिजली का गिरना, बिजली का आघात,—पुष्यम् तिल का फूल भृत्यः (पुं०) इन्द्र का विशेषण, मणिः हीरा, कड़ा पत्थर भर्तृ० २।६,—मुष्टिः इन्द्र का विशेषण, -रवः सूअर,—लेपः एक प्रकार बड़ा कड़ा सीमेंट, वज्रलेपघटितेव मा० ५।१०, उत्तर० ४ (इसके योग से बनने वाले पदार्थों के लिए दे० बृहत्० अ० ५७) —लोहकः चुम्बक,—व्यूहः एक प्रकार का सैनिक व्यूह, शल्यः साही नामक जानवर, —सार (वि०) पत्थर की भांति कठोर, बिजली की शक्तिवाला, अत्यन्त कड़ा—वज्र च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते शा० १।१०, त्वमपि कुसुमबाणान्वज्रसारीकरोषि···३।३,—सूचिः,—ची (स्त्री०) हीरे की सुई,—हृदयम् पत्थर जैसा कड़ा दिल।

वज्रिन् (पुं०) [वज्र+इनि] 1. इन्द्र—ननु वज्रिणि एव वीर्यमेनद्विजन्मते द्विपतो यदस्य पक्ष्याः—विक्रम० १।५, रघु० ९।२४ 2. उल्लू।

वञ्च् (भ्वा० पर० वञ्चति) 1. जाना, पहुँचना—ववञ्चुश्चाहवक्षितिम्—भट्टि० १४।७४, ७।१०६ 2. घूमना 3. चुपचाप चले जाना, खिसक जाना -प्रेर० (वंचयति—ते) 1. टालना, बचना, खिसकना, विदकना —अहि वञ्चयति, अवञ्चयत मायाश्च स्वमायाभिरेर्द्विषाम् -भट्टि० ८।४३ 2. ठगना, धोखा देना, जालसाजी करना (आ० भी जाती है, पर बहुधा पर० भी)—मुर्वास्त्वामदवञ्चयत्—भट्टि० १५।१५, कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमप्रशरव्यरहृतम् गीत० ८, (बन्धनं) वञ्चयन् प्रत्यपाद सः -रघु० १९।१७, कु० ४।१०, ५।४९, रघु० १२।५३ 3. वंचित करना, दरिद्र करना रघु० ७।८।

वञ्चक (वि०) [वञ्च्+णिच्+ण्वुल्] 1. जालसाज, धोखेबाज, मक्कार 2. ठगने वाला, धोखा देने वाला, —कः 1. बदमाश, ठग, उचक्का 2. गीदड़ 3. छछूंदर 4. पालतू नेवला।

वञ्चतिः (पुं०) अग्नि, आग।

वञ्चनः [वञ्च्+ल्युट्] 1. ठगना, बदमाशी, धोखा, चालाकी 2. ठग, बदमाश, उचक्का 3. कोयल।

वञ्चनम्,-ना [वञ्च्+ल्युट्] 1. ठगना, 2. दावपेंच, धोखा, जालसाजी, धोखादेही, चालाकी वञ्चना परिहर्तव्या बहुदोषा हि शर्वरी—मुच्छ० १।५८, स्वर्गाभिसन्धिसुकृतं वञ्चनामिव मेनिरे—कु० ५।४७ 3. माया, भ्रम 4. हानि, क्षति, अङ्गवञ्चना—मा० ३, रघु० ११।३६।

वञ्चित (भू० क० कृ०) [वञ्च्+क्त] 1. प्रतारित, ठगा गया 2. विरहित,—ता एक प्रकार की पहेली या बुझौवल।

वञ्चुक (वि०) (स्त्री०—की) [वञ्च्+उकन्] धोखे से पूर्ण, जालसाज, मक्कार, बेईमान,—कः गीदड़।

वञ्जुलः [वञ्च्+उलच्, पृषो० चस्य जः] 1. बेंत या नरकुल —आमञ्जुवञ्जुललतानि च तान्यमूनि नीरन्ध्रनील निचुलानि सरित्तटानि—उत्तर० २।२३, या, मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूलं—गीत० १ 2. एक प्रकार का फूल 3. अशोकवृक्ष 4. एक प्रकार का पक्षी। सम०-द्रुमः अशोकवृक्ष,—प्रियः बेंत।

वट् i (भ्वा० पर० वटति) घेरना।

ii (चुरा० उभ० वाटयति—ते) 1. कहना, 2. बाँटना, विभाजन करना 3. घेरना, घेरा डालना।

वटः [वट्+अच्] 1. बड़ का पेड़—अयं च चित्रकूटायिनि वर्त्मनि वटः श्यामो नाम उत्तर० १, रघु० १३।५३ 2. छोटी शुक्ति या कौड़ी 3. छोटी गेंद, गोलिका, वटिका 4. गोलअंक, शून्य 5. एक प्रकार की रोटी 6. डोरी, रस्सी (इस अर्थ में नपुं० भी) 7. रूपसादृश्य। सम०—पत्रम् श्वेत तुलसी का एक भेद (ग्रा) चमेली,—वासिन् (पुं०) यक्ष।

वटकः [वट+कन्, वट्+क्वुन् वा] 1. बाटी, एक प्रकार की रोटी 2. छोटा पिंड, गेंद, गोली, वटिका।

वटरः [वट्+अरच्] 1. सुर्मा 2. चटाई 3. पगड़ी 4. चोर, लुटेरा 5. रई का डंडा 6. सुगंधित घास।

वटाकरः, वटाराकः (पुं०) डोरा, डोरी।

वटिकः [वट्+इन्+कन्] शतरंज का मोहरा।

वटिका [वट्+इन्+कन्+टाप्] 1. टिकिया, गोली 2. शतरंज का मोहरा।

वटिन् (वि०) [वट्+इन्] डोरीदार, वर्तुलाकार—पुं० =वटिक।

वटी [वट्+अच्+ङीष्] 1. रस्सी या डोरी 2. गोली, वटिका।

वटुः [वटति अल्पवस्त्रम् वट्+उः] 1. छोकरा, लड़का अबाल, किशोर (बहुधा अंग्रेजी के 'चैप'—chap या फैलो—fellow शब्द के समान प्रयोग) चपलोऽयं वटुः -श० २, निश्चार्यतामालि किमप्ययं वटुः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः—कु० ५।८३, तु० 'बटु' से भी 2. ब्रह्मचारी।

बटुकः [बट्+कन्] 1. छोकरा, लड़का 2. ब्रह्मचारी 3. मूर्ख, बुद्धू।

बद् (भ्वा० पर० बठति) 1. बलवान् या शक्तिशाली होना 2. मोटा होना।

बठर (वठ्+अरच्) 1. मन्दबुद्धि, जड़ 2. दुष्ट, रः 1. मूर्ख या बुद्धू 2. बदमाश, या दुष्ट 3. बैल या डाकिया 4. जल-पात्र।

बडभिः,—भी दे० बलभिः, - भी।

बडवा [बलं वाति बल+वा+क+टाप्, डलयोरैक्यात् लस्य डत्वम्] 1. घोड़ी 2. अश्विनी नाम की अप्सरा जिसने घोड़ी के रूप में सूर्य के द्वारा अश्विनीकुमार नाम के दो पुत्र उत्पन्न करवाये दे० संज्ञा 3. दासी 4. वेश्या रण्डी 5. ब्राह्मण जाति की स्त्री, द्विजपत्नी। सम० अग्निः, अनलः समुद्र के भीतर रहने वाली अग्नि, मुखः 1. समुद्र के भीतर रहने वाली आग 2. शिव का नाम।

बडा [बड्+अच्+टाप्] एक प्रकार की रोटी।

बडिशम् [बलिनं सम्यान् इयति नाशयति शी+क, लस्य डत्वम्] दे० 'बंडिश'।

बड् (वि०) [बड्+रक्] विशाल, बड़ा, महान्।

बण् (भ्वा० पर० बणति) शब्द करना, ध्वनि करना।

बणिज् (पु०) [पणायते व्यवहरति पण्+इजि पस्य वः] 1. सौदागर, व्यापारी—वस्त्यागमः केवलजीविकार्थं तं ज्ञानपण्यं बणिजं वदन्ति—मालवि० १।७ 2. तुला राशि (स्त्री०) पण्यवस्तु, व्यापार। सम० कर्मन् (नपु०),—क्रिया क्रयविक्रय, व्यापार,—जनः 1. (सामूहिक रूप से) व्यापारी वर्ग 2. व्यापारी, सौदागर, पथः 1. व्यापार, क्रयविक्रय 2. सौदागर 3. बनिये की दुकान, आपणिका 4. तुलाराशि, वृत्तिः (स्त्री०) व्यापार, क्रयविक्रय भर्तृ० ३।८१,—सार्थः व्यापारियों का दल, टोली।

बणिजः [बणिज्+अच् (स्वार्थे)] 1. सौदागर, व्यापारी 2. तुला राशि।

बणिजकः [बणिज्+कन्] सौदागर, बनिया।

बणिज्यं, बणिज्या [बणिज्+यत्, स्त्रियां टाप् च] व्यापार, क्रयविक्रय।

बण्ड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० बण्डति, बण्डयति—ते) बांटना, अंश बनाना, विभाजन करना, हिस्से करना।

बण्डः [बण्ड्+घञ्] 1. भाग या खण्ड, अंश, हिस्सा 2. दराती का दस्ता 3. अविवाहित पुरुष, कुँआरा।

बण्डकः [बण्ड+घञ्, स्वार्थे क] 1. बाँटने वाला, वितरण करने वाला 2. वितरक 3. भाग, अंश, हिस्सा।

बण्डनम् [बण्ड्+ल्युट्] विभाजन करना, अंश बनाना, बाँटना या विभक्त करना।

बण्डालः, बण्डालः [बण्ड+आलच्, पक्षे पृषो० टस्य डत्वम्] 1. शूरवीरों की प्रतियोगिता 2. कुदाल, खुर्पा 3. नाव।

बण्ड् (भ्वा० आ० बण्डते) अकेले जाना, बिना किसी की साथ लिए चलना।

बण्ड (वि०) [बण्ड्+अच्] 1. अविवाहित 2. ठिगना 3. विकलाङ्ग, डः 1. अविवाहित पुरुष, कुँआरा 2. सेवक 3. ठिगना 4. भाला, नेज़ा।

बण्डरः [बण्ड्+अरच्] 1. बाँस का आवेष्टन, बाँस का मोटा पत्ता 2. ताड़ का नया किसलय 3. (बकरे की) बाँधने के लिए रस्सी 4. कुत्ता 5. कुत्ते की पूँछ 6. बादल 7. स्त्री की छाती।

बण्ड् (भ्वा० आ० बण्डते) 1. बाँटना, हिस्से करना, अंश बनाना 2. घेरना, चारों ओर से आवेष्टित करना। ii (चुरा० उभ० बण्डयति—ते) हिस्से करना, बाँटना, अंश बनाना।

बण्ड (वि०) [बण्ड्+अच्] 1. अपाङ्ग, अपाहिज, विकलाङ्ग 2. अविवाहित 3. नपुंसक बनाया हुआ, डः 1. वह आदमी जिसकी खतना हो चुकी है या जिसकी जननेन्द्रिय के अग्रभाग को ढकने वाला चमड़ा नहीं है 2. बिना पूँछ का बैल, डा व्यभिचारिणी स्त्री —नु० 'रण्डा'।

बण्डरः [बण्ड्—अरन्] 1. कञ्जूस, मक्खीचूस 2. हिजड़ा।

बत् (वि०) [एक प्रत्यय जो 'स्वामित्व' की भावना को प्रकट करने के लिए 'गोत्रार्थशब्दों' के साथ लगाया जाता है—उदा० धनवत्—धनाढ्य, रूपवत् सुन्दर, इसी प्रकार भगवत्, भाग्यवत् आदि, (इस प्रकार बने हुए शब्द विशेषण होते हैं) 2. भू० क० कृ० के आधार से 'वत्' लगा कर कर्तृवा० का रूप बना लिया जाता है—इत्युक्तवन्तं जनकात्मजायाम् —रघु० १४।४३ 3. अव्य० 'समानता' और 'सादृश्य' अर्थ को प्रकट करने के लिए संज्ञा या विशेषण शब्दों के साथ 'वत्' जोड़ दिया जाता है उदा० आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्यति स पण्डितः।

बत [बन्—क्त] दे० बत।

बतंसः [अवतंस—अच् वा घञ्, भागुरिमते 'अव' इत्यस्य अकारलोपः] दे० 'अवतंस'—कर्णोत्पलविलोलबतंसं—गीत० २।

बतोष्ठा [अवतं ओष्ठ यस्याः—अवतंस्य अकार लोपः] ओंठ या निम्नतर स्त्री, वह नाच या स्त्री जिसका किसी दुर्घटनावश गर्भपात हो गया हो।

बत्सः [बद्+सः] 1. बछड़ा, किसी जानवर का बच्चा, तेनाद्य वत्समिव लोकमन्यं पुपाण—भर्तृ० २।५६, यं सर्वसौरभः परिकल्प्य वत्सं—कु० १।२ 2. लड़का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र, (यह शब्द इस अर्थ में बहुधा संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है, वात्सल्य द्योतक शब्द 'मेरे प्रिय' 'मेरे लाल' आदि शब्दों से व्यवहृत)—अयि वत्स कृतं कृतमतिविनयेन किमपराद्धं वत्सेन—उत्तर० ६ 3. सन्तान, बच्चे, जीवदत्सा 'जिसके बच्चे जीवित हों' 4. वर्ष 5. एक देश का नाम (इसकी राजधानी कौशाम्बी थी जहां उदयन राज्य करता था) या उसके अधिवासी, तस्या 1. बछिया 2. छोटी लड़की 'वत्से सीते' (बेटी सीता) आदि,—त्सम् छत्ती। -सम० अक्षी एक प्रकार की ककड़ी,—अदनः भेड़िया, -ईशः,—राजः वत्स देश का राजा, लंबे हाथ के वत्सराज-चरित नाटक में दक्षा वत्सम्—नाम० १,—काम (वि०) बच्चों को प्यार करने वाला, [मा] वह गाय जो बछड़े से मिलने की प्रबल लालसा रखती है,—नाभः 1. एक वृक्ष का नाम 2. एक प्रकार अत्यंत कठोर विष,- पालः बछड़ों को पालने वाला, कृष्ण या बलराम,—शाला गौशाला।

वत्सकः [वत्स+कन्] 1. नन्हा बछड़ा, बछड़ा 2. बच्चा 3. 'कुटज' नाम का पौधा,—कम् पुष्पकासन।

वत्सतरः [वत्स+तरप्] वह बछड़ा जिसने अभी हाल में दूध चूंघना छोड़ा है, जवान बैल जिसके ऊपर अभी जुआ नहीं रक्खा गया है-- महोक्षता वत्सतरः स्पृशन्निव रघु० ३।३२,—री बछिया, कलौर श्रोत्रियान्यागताय वत्सतरीं वा महोक्षं वा निर्वपन्ति गृहमेधिनः—उत्तर० ४।

वत्सरः [वस्+सरन्] 1. वर्ष याज्ञ० १।२०५ 2. विष्णु का नाम। सम०-अन्तकः फाल्गुन का महीना, —ऋणम् वह ऋण जो वर्ष की समाप्ति पर वापिस किया जाय।

वत्सल (वि०) [वत्सं लाति ला--क] 1. बच्चों को प्यार करने वाला, बच्चों के प्रति स्नेह शील जैसा कि वत्सला धेनुः माता 2. स्नेहशील, अभिप्रिय, स्नेहानुरागी, दयालु,-करुणामयवत्सलाः सख स तपस्विजनस्य हन्त को० ८।८, ६।१४, रघु० २।६३, ८।४६, इसी प्रकार शरणागतवत्सलः, दीनवत्सलः आदि, लः घास से प्रच्छादित अग्नि, ला अपने बछड़े को प्यार करने वाली गाय,—ल्यम् स्नेह, प्यार।

वत्सलयति (ना० धा० पर०) उत्कण्ठा पैदा करना, उत्सुक बनाना, स्नेहयुक्त करना--नूनमनया वत्सलयति मां वत्सलयति श० ७।

वत्सा, वत्सिका [वत्स—टाप्, वत्सा--कन्+टाप् इत्वम्] बछिया, बछड़ी।

वत्सित्वम् (पुं०) [वत्स+इमनिच्] बचपन, कौमार्य, उम्रती जवानी।

वत्सोपः [वत्स+छ] गोप, ग्वाला।

वद् (भ्वा० पर० वदति, परन्तु कुछ अर्थों में तथा कुछ उपसर्गों के साथ आ०, दे० नी०, उदित, कर्म० वा० उद्यते, इच्छा० विवदिषति) 1. कहना, बोलना, उच्चारण करना, संबोधित करना, बातें करना--वदप्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणांशु कल्पते —कु० ५।४४, वक्तारं वरः रघु० १।५९, 'वाक्पटुओं में श्रेष्ठतम' 2. घोषणा करना, कहना, समाचार देना, सूचित करना यां गोत्रादि वदति स्वयम् 3. किसी के विषय में कहना, वर्णन करना, भग० २।२९ 4. अंकित करना, निर्धारित करना, वचन मनु० २।९, ४।१४ 5. नाम लेना, पुकारना वदन्ति वर्णविज्ञानं धर्मवर्ष दीपकं बुधाः— चन्द्र० 6. संकेत करना, आभास देना कृतान्तोऽस्य वदन्ति संसरः - कि० १।२४ 7. स्वर ऊंचा उठाना, फब्बन करना, गायन करना वीकिरः पक्षीन वदति, वदन्ति मयूरा वाचः—आदि 8 ज्योतिषियों का प्रवीणता दर्शाना, किसी विषय पर अधिकारी होना (आ०) शास्त्रे वदते, पाणिनिर्वेत्ते—वोप० 9. चमकना, उज्ज्वल या देदीप्यमान दिखलाई देना (आ०), भट्टि० ८।२७ 10. उद्योग करना, चेष्टा करना, परिश्रम करना (आ०) क्षेत्रे वदते सिद्धा०, प्रेर० (चाडयति-ते) 1. कहलवाना 2. शब्द करवाना, बाजा बजवाना—वीणामिव वादयन्तीं—विक्रम० १।१०, वादयते मृदु वेणुमू गीत० ५, अनु-, 1. बोलने में नकल करना, दोहराना शिरसा० अनुवदति शुकस्ते मञ्जु-भाषणञ्जरथः--रघु० ५।७४ 2. प्रतिध्वनि करना, गूंजना (पर० और आ०) अनुवदति पीणा 3. अनु-मोदन करना (उसी मनोभाव की प्रतिध्वनि करके) शि० २।६७ . नकल करना (आ०) भट्टि० ८।२९ 5. समर्थन के रूप में आवृत्ति करना, अप-, (सदैव आ०, परन्तु कभी कभी पर० भी) 1. बुरा भला कहना, गाली देना, निन्दा करना शि० १७।१९, मनु० ४।२३६, कभी कभी सह के साथ--भट्टि० ८।४५, 2. न अपनाना 3. मिलना विरोध करना, अभि-, 1. अभिव्यक्त करना, उच्चारण करना, मूल्य या वजन रखना --यद्वाचाऽभ्युदितं येन वाग्मिनां यदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केन०, 2. नमस्कार करना, अभिवादन करना, (प्रेर०) प्रणाम करना—भगवन्नभिवादये, उप-, (आ०) 1. लुभाना, चापलूसी करना, फुसलाना--भट्टि० ८।२८, 2. मनाना, अनुनय करना, परि-, गाली देना, निन्दा करना, बुरा भला कहना, प्र-, 1. बोलना, उच्चारण करना 2. बातें करना, संबोधित करना भट्टि० ७।२४ 3. नाम लेना, पुकारना 4. खयाल करना, सोचना, प्रति-, उत्तर में बोलना, जवाब देना—रघु०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३।६४ 2. बोलना, उच्चारण करना 3. दोहराना वि–, (आ०) 1. झगड़ा करना, विवाद करना–परस्पर विवदमानौ भ्रातरौ 2. भिन्नमत का होना, प्रतिकूल होना, विरोधी होना–परस्पर विवदमानानां शास्त्राणां हि० १ 3. (न्यायालय आदि में) दुराग्रह पूर्वक कहना, विप्र–, (पर० आ०) वादविवाद करना, कलह करना, झगड़ा करना भट्टि० ८।८९, विसम् , 1. असंगत होना, भिन्नमत का होना 2. असफल होना (प्रेर०) असंगत बनाना सम् , 1. बातें करना, संबोधित करना 2. मिलकर बोलना, बातचीत करना, प्रवचन करना 3. सदृश होना, अनुरूप होना, समान होना (करण० के साथ)–अस्य सूर्य सोमाभो मुखब्रह्मेण संवदत्येव–उत्तर० ४ 4. नाम लेना, पुकारना 5. बोलना, उच्चारण करना (प्रेर०) 1. परामर्श करना, सलाह-मशवरा (करण० के साथ) करना 2. शब्द करवाना, वाद्ययंत्र बजाना, संप्र , (आ०) (मनुष्यों की तरह) ऊँचे स्वर से या स्पष्ट बोलना संप्रवदन्ते ब्राह्मणाः–सिद्धा० 2. कथन करना, फरदन ध्वनि का उच्चारण करना (पर०)–वरतनु संप्रवदन्ति कुक्कुटाः महा०।

वद (वि०) [वद्+अच्] बोलने वाला, बातें करने वाला, अच्छा बोलने वाला।

वदनम् [वद्+ल्युट्] 1. चेहरा आनीद्विकलवदना च विमोचयन्ती श० २।१०, इसी प्रकार 'मुखदना' कमलवदना आदि 2. मुख–वदने विनिवेशिता नुजङ्गी पिशुनाना रसनामिषण धाता–भामि० १।१११ 3. पहलू, छवि, दर्शन 4. अगला भाग 5. (किसी माला का) पहला शब्द। समः–अम्बुजः लार।

वदन्ती [वद्+शतृ+ङीप्] भाषण, प्रवचन।

वदान्य (वि०) [वद्–आन्य, पृषो० ह्रस्वः] दे० 'वदान्य'।

वदरः [वद्+अरच्] दे० 'बदर'।

वदालः [वद्+क, अल् –अच्] 1. वाचाल, भँवर 2. एक प्रकार की जंगली मछली।

वदावद [अत्यर्थं वदति वद् + अच्, द्वि०]
1. बोलने वाला, वाकपटु 2. बातूनी, बाचाल।

वदान्य (वि०) [वद्+आन्यः] 1. धारा प्रवाह से बोलने वाला, वाकपटु 2. सानुप्रास बोलने वाला 3. उदार, दयालु, दानशील मनु० ४।२२४, न्यः उदार या दानशील व्यक्ति, दाता, अन्यदार व्यक्ति–शिरसा वदान्यपूरुषः मादरमेनं वहन्ति गुरुतरवः भामि० १।१९, या तस्मै वदान्यपुरुषे नरके नमोऽस्तु–१।२४ नै० ५।११, रघु० ५।२४।

वदि (अव्य०) (चान्द्रमास का) कृष्णपक्ष, ज्येष्ठवदि (विप० सुदी)।

वद्य (वि०) [वद्+यत्] 1. कहने के योग्य, दूषण देने के अयोग्य तु० अवद्य 2. कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का एक पक्ष वद्यपक्षः=कृष्णपक्षः),—द्यम् भाषण, इधर-उधर की बातें करना।

वध् (स्वा० पर० वधति) मारना, कतल करना (लौकिक या शास्त्रीय संस्कृत में इसका प्रयोग केवल लङ् व आशीर्लिङ् में 'हन्' धातु के स्थान पर होता है)।

वधः [हन्+अप्, वधादेशः] 1. मार डालना, हत्या, कतल, विनाश–आत्मनो वधमाहर्ता बलाद्वा विहृतस्करः विक्रम० ५।१, मनुष्यवधः मानवहत्या, पशुवधः आदि 2. आघात, प्रहार 3. लकवा, 4. लोप, अन्तर्धान 5. (गणित में) गुणा, सम० **अङ्गकम्** वि०, **अर्हः** (वि०) फांसी के दण्ड का अधिकारी –**उद्यत** (वि०) 1. हत्या संबंधी 2. हत्यारा, कातिल **उपायः** हत्या की तरकीब, **कर्माधिकारिन्** (वि०) फांसी पर लटकाने वाला, जल्लाद, **जीविन्** (पुं०) 1. शिकारी 2. कसाई, **दण्डः** 1. शारीरिक दण्ड (हंटर आदि लगाना) 2. फांसी, **भूमिः** (स्त्री०) —**स्थली** (स्त्री०)—**स्थानम्** 1. फांसी की जगह 2. वूचड़खाना, **स्तम्भः** फांसी मृच्छ० १०।

वधकः [हन्+ण्वुल्, वध च] 1. जल्लाद, फांसी पर लटकाने वाला 2. कातिल, हत्यारा।

वधत्रम् [वध+अत्रन्] घातक हथियार।

वधित्रम् [वध्+इत्र] 1. कामदेव 2. कामोन्माद, कामातुरता।

वधूः, वधूका [–वधू+क, नि० ह्रस्व] 1. पुत्रवधू, स्नुषा 2. युवती स्त्री।

वधूः (स्त्री०) [उह्यते पितृगेहात् पतिगृहं वह्+ऊधुक्] 1. दुलहिन–वरः स वध्वा सह राजमार्गं प्राप ध्वजच्छायनिवारितातपम्–रघु० ७।४. १९, समानयस्तुल्यगुणं वधूवरं चिरस्य श्लाघ्यं न गतः प्रजापतिः श० ५।१५, कु० ६।८२ 2. पत्नी, भार्या–इयं तमालि वः सखीरिवालवालधारिनि– कु० ६।८९, रघु० १।९० 3. पुत्रवधू, एवा च स्पृकुलमहत्तराणां वधूः –उत्तर० ४, ४।१६, तेषां वधूस्तत्रमसि नन्दिनि पार्थिवानाम्–१।९ 4. महिला, तरुणी, स्त्री–हरिहि मुखबधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे –गीत०, स्वयशांसि विक्रमवतामवतां न वधूरधानि विभुशब्दि धियः—कि० ३।४५, नै० २२।४७, मेघ० १६, ४७, ६५, 5. अपने से छोटे रिश्तेदार की पत्नी, नाते में छोटी स्त्री 6. किसी भी पशु की मादा–(हरिणी) व्याघ्रवधूः, गजवधूः आदि। समः–**गृह प्रवेशः**,–**प्रवेशः** दुलहिन का अपने पति के घर में सर्व प्रथम प्रवेश समारंभ, **ऋतः** पत्नी, स्त्री, **पक्षः** (विवाह के अवसर पर) कन्या पक्ष के लोग,–**वस्त्रम्** दुलहिन की वेशभूषा, वैवाहिक पोशाक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वधूटी [अल्पवयस्का वधूः वधू+टि+ङीष्] 1. तरुणी, स्त्री, नवयुवती—रथं वधूटीमारोप्य पापः क्वाप्यद्य गच्छति—महावीर० ५।१७, गोपवधूटीदुकूलचौराय (कृष्णाय)—भाषा० १, पुत्रवधू।

वध्य (वि०) [वधमर्हति वध+यत्] 1. मारे जाने के योग्य, हत्या किये जाने के योग्य 2. जिसे प्राण दण्ड की आज्ञा मिल चुकी है 3. शारीरिक दण्ड दिये जाने के योग्य, शारीरिक रूप से दण्ड्य,—ध्यः 1. शिकार, मृत्यु की तलाश में मुद्रा० १।९ 2. शत्रु०। सम०—पटहः वह ढोल जो किसी को फांसी पर लटकाते समय बजाया जाय। —भूमिः (स्त्री०) स्थलम्, स्थानम् फांसी घर, माला फूलों की माला जो फांसी पर लटकाने के लिए तैयार व्यक्ति को पहनाई जाय।

वध्या [वध्+दाप्] बंध, हत्या, कत्ल।

वध्रम् [वध्+ड्रन्] 1. चमड़े का तस्मा—शि० २०।५० 2. सीमा,—ध्री चमड़े की पट्टी।

वध्र्यः [वध्र+यत्] जूता।

वन् I (स्वा० पर० वनति) 1. सम्मान करना, पूजा करना 2. सहायता करना 3. शब्द करना 4. व्याप्त या व्यस्त होना।

II (तना० उभ० वनोति, वनुते) 1. याचना करना, कहना, प्रार्थना करना (द्विक० धातु मानी जाती है) लोकादित्यं नैव जातकौ वनुते जलम् 2. खोज करना, प्राप्त करने की चेष्टा करना 3. जीतना, स्वाधिकार प्राप्त करना।

III. (स्वा० पर० त्रुगा० उभ० वनति, वानयति—ते) 1. अनुग्रह करना, सहायता करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3. ध्वनि करना 4. विश्वास करना।

वनम् [वन्+अच्] अरण्य, जंगल, वृक्षों का झुरमुट —एको दासः पचने या वने वा भर्तुः ३।१२०, वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणाम् 2. गुलम, गुच्छ, सघन बगीचों में उगे हुए पौधे या अन्य पौधों का समुच्चय,—चित्रद्विजाः पद्मवनावतीर्णाः रघु० १६।२६, ६।८६ 3. आवासस्थल, निवासस्थान, घर 4. फौवारा (पानी का) झरना 5. पानी—शि० ६।७३ 6. लकड़ी, काष्ठ (समास) में प्रथमपद के रूप में इसका प्रयोग 'जंगली' 'जैसा' अर्थों में होता है उदा० वनवराह, वनकदली, वनगुप्तम् आदि)। सम०—अग्निः दावानल, —अजः जंगली बकरा,—अन्तः 1. किसी जंगल की सीमा या दामन—रघु० २।५४ 2. वनप्रदेश, जंगल —उत्तर० २।२५,—अन्तरम् 1. दूसरा जंगल 2. जंगल का भीतरी प्रदेश विक्रम० ४।२६, अरिष्टा जंगली हल्दी,—अलक्तम् लाल मिट्टी, गेरु या लाल खड़िया, —अलिका सूरजमुखी, आकः खरगोश,—आखुकः एक प्रकार का लोमड़िया,—आपगाः जंगली नदी, अरण्यसरिता, आर्द्रकं जंगली अदरक,—आश्रमः जंगल में आवासीय, वानप्रस्थ-जीवन का तीसरा आश्रम, आश्रमिन् (पुं०) वानप्रस्थी, संन्यासी, तपस्वी, आश्रयः 1. वनवासी 2. एक प्रकार का पहाड़ी कौवा,—उत्साहः गैंडा,—उद्भवा जंगली कपास का पौधा,—उपलब्धः दावानल,—ओकस् (पुं०) 1. वनवासी, जंगल में रहने वाला 2. संन्यासी, तपस्वी 3. जंगली जानवर, जैसे कि बन्दर, सूअर, कणा वनपिप्पली,—कदली जंगली केला, करिन् (पुं०) कुञ्जरः,—गजः जंगली हाथी, कुक्कुटः जंगली मुर्गा,—खण्डम् जंगल का एक भाग, गवः जंगली बैल, गहनम् झुरमुट, जंगल का सघन भाग, गुप्तः भेंदिया जोमस गुल्मः जंगली झाड़ी,—गोचर (वि०) चारे-चार जंगल में जाने वाला, (रः) 1. शिकारी 2. वनवासी (रम्) वन, जंगल, चन्दनम् 1. देवदारु का वृक्ष 2. अगर की लकड़ी, चन्द्रिका, ज्योत्स्ना एक प्रकार की चमेली, चम्पकः जंगली चम्पा का पौधा, चर (वि०) वनवासी, वन में विचरने वाला, वन देवता, (रः) 1. वनवासी, वन में रहने वाला, जंगली आदमी उपलस्रुग्भिर्घृतविषदाग्नियः शतयज्वनो वनचरा वसतिम् -द्वि० ६।२९, मेघ० १२ 2. वन्य पशु 3. आठ पैरों वाला शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु, चर्या जंगल में घूमना या निवास, छागः 1. जंगली बकरा 2. शूकर, जः 1 हाथी 2. एक प्रकार का सुगन्धित घास 3. जंगली नीबू का पेड़ (—जम्) नीलकमल,—जा 1. जंगली अदरक 2. जंगली कपास का पौधा— जीविन् वनवासी, जंगली आदमी,—दः बादल,—दाहः दावानल,—देवता वनदेवी, जंगल-परी, रघु० २।१२, १५, ५।५२, शि० ४।४, कु० ३। ५२, ६।३९, —द्रुमः जंगली पेड़, धारा पुष्पावलि, छतादार पर्दा,—धेनुः (स्त्री०) गाय, जंगली बैल की मादा, पांसुलः शिकारी, पाशर्यम् जंगल के आस पास का क्षेत्र, वनप्रदेश, पुष्पम् जंगली फूल, —पूरकः जंगली नीबू का पेड़, प्रदेशः तपस्विजीवन का आरम्भ, प्रायः अधिकांश या पहाड़ में स्थित जंगल, —प्रियः कोयल, (यम्) दारुचीनी का पेड़, बह्निः, —वह्निः जंगली भोर,—भूः जंगल की भूमि—मक्षिका गोमक्षी, डांस,—मल्ली जंगली चमेली,—माला जंगली फूलों की माला जैसा कि श्रीकृष्ण पहनते थे रघु० ९।५१, इसका वर्णन है: आजानुलम्बिनी माला सर्वर्तु कुसुमोज्ज्वला। मध्ये स्थूलकदम्बाढ्या वनमालेति कीर्तिता ॥ °धरः श्रीकृष्ण का विशेषण, मालिन् (पुं०) कृष्ण का एक विशेषण धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५, तव विरहे वनमाली सलिलं सीदसि गीत० ५, —मालिनी द्वारका नगर का नाम, —मृग वि० जंगली हरिण, —मृग वि० जल डालने वाला, रघु० ९।२२, (पुं०) - भूतः बादल, —सूदयः एक प्रकार की मूंग, मोथा जंगली केला, रक्षकः वन का रखवाला, —राजः सिंह, **वहम्** कमल का फूल, —**लक्ष्मीः** (स्त्री०) १. जंगल का आभूषण या सौंदर्य 2. केला **लता** जंगली बेल, लता दूरीकृताः खलपूर्णकलालताः वन-शतकम्—द० १।१७, **वह्निः**—**हुताशनः** दावानल, **वासः** १. जंगल में रहना, वन में वास श० ४।१० 2. जंगली या यायावरीय (घुमक्कड़) जीवन 3. जंगलवासी, वन में रहने वाला, **वासनः** गंधविकार, **वासिन्** (पुं०) 1. जंगल में रहने वाला, वनवासी २. तपस्वी इसी प्रकार 'वनस्थायिन्', **व्रीहिः** जंगली चावल, **शोभनम्** कमल, **श्वन्** (पुं०) 1. कोढ़ 2. दाद्रु 3. गंधविलाव, —**संकटः** एक प्रकार की दाल, मसूर **सद्**—**संवासिन्**(पुं०)वनदेवी **सरोजिनी**(स्त्री०) जंगली कपास का पौधा, **हरः** 1. हरिण 2. तपस्वी **स्था** बरगद का पेड़, **स्थली** जंगल, जंगल की भूमि, **स्रज्** (स्त्री०) जंगली फूलों की माला।

वनरः (पुं०) दे० 'वानर'।

वनस्पतिः [वनस्य पतिः, नि० मुट्] १. एक बड़ा जंगली वृक्ष, विशेषकर वह जिसमें बिना बौर आये फल लगता है 2. वृक्ष, पेड़, तमाम् विघ्नं तपस्तप्तश्चनो वनस्पतिं वज्र इवावभस्य कु० ३।७४।

वनायुः [वन + इण्—उण्, वन् आयुच् वा] एक जिले का नाम रघु० ५।७३। मत्त० अ (पुं०) वनायु में उत्पन्न घोड़ा आदि।

वनिः (स्त्री०) [वन्+इ] कामना, इच्छा।

वनिका [वनी—कन् + टाप्, ह्रस्व] छोटा जंगल, जैसे कि 'अशोकवनिका'।

वनिता [वन्+क्त+टाप्] १. स्त्री, महिला, पतिव्रतेति वनितां सर्वः श्लाघते मनु, तुमसे परिग्रहण किंव तपस्विनी मां मम साभि० २।१२७, पथिकवनिताः—मेघ० ८ 2. पत्नी, गृहवनितानां—अनेकासां वनिता-सखानाम् कु० १।१०. रघु० २।१९ ३. कोई भी प्रेयसी स्त्री ४. किसी भी जानवर की मादा। सम०—**द्विष्** (पुं०) स्त्रीद्वेषी, स्त्रियों से घृणा करने वाला,—**विलासः** स्त्रियों का इच्छानुकूल मनोरंजन।

वनिन् (पुं०) [वन—इनि] १. वृक्ष 2. सोम लता 3. वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में रहने वाला।

वनिष्णु (व०) [वन्+इष्णुच्] मांगने वाला, याचना करने वाला।

वनी [वन+ङीष्] जंगल, अरण्य, (वृक्षों का) गुल्म या झुरमुट अवनीतलमेव साधु मन्ये न वनी माधवनी विलासभूमिः—नव०।

वनीयकः, वनीयकः [वनीय याचनामिच्छति - वनि + क्यच्, + ण्वुल्] भिक्षुक, साधु—वनीयकानां स हि कल्पभूरुहः नै० १५।६०।

वनौकिशुकः (द० व०) [वने किंशुक इव, सप्तम्या अलुक्] जंगल में किंशुक अर्थात् ही मिलने वाला पदार्थ।

वनेचरः [वने चरति—चर्—ट, सप्तम्या अलुक्] जंगल में रहने वाला, रघु० १. वनवासी, जंगल में रहने वाला आर्याः वनेचराणां वनितासखानाम् कु० १।१०, ११ २. संन्यासी, तपस्वी ३. वन्य पशु 4. वनदेवता, वनाधिपुरुष 5. शिकारी।

वनेजम्यः [वने ज्यः, स० त०] एक प्रकार का आम।

वंद (स्वा० आ० वंदते, वंदित) प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना, **अभिवंद** प्रणाम करना—जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ—रघु० १।१, १३।७७, १४।५ 2. आराधना करना, पूजा करना 3. प्रशंसा करना, स्तुति करना, **अभि** , प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना—रघु० १६।८१।

वंदकः [वन्द्—ण्वुल्] प्रशंसक।

वंदथः [वन्द्+अथ] प्रशंसक, चारण या भाट, स्तुति गायक।

वंदनम् [वन्द् —ल्युट्] १. नमस्कार, अभिवादन 2. श्रद्धा, सत्कार 3. किसी ब्राह्मणादि को (चरणस्पर्श करते हुए) प्रणाम— १. प्रशंसा, स्तुति —ना १. पूजा, अर्चना 2. प्रशंसा, **नी** 1. पूजा, अर्चना 2. प्रशंसा 3. याचना, ४. मूसर की पुत्रजीवित करने वाली औषधि। सम० —**माला**, —**मालिका** किसी द्वार पर लगाई गई पुष्पमाला।

वंदनीय (वि०) [वन्द् अनीयर्] अभिवादन के योग्य, सत्कार के योग्य, श्रद्धेय, आराधनीय।

वंदा [वन्द्+क्त + टाप्] भिक्षुणी, भीख मांगने वाली स्त्री।

वंदारु (वि०) [वन्द्+आरुच्] १. प्रशंसा करने वाला २. अभिवादनशील, सम्मानपूर्ण, विनीत, शिष्ट ३. श्रद्धानुग्रहीतो महानुभिवंदारुः मुद्रा० ७, रघु० प्रशस्त।

वंदिन् (पुं०) [वन्द् + इनि] १. स्तुति गायक, चारण, भाट, भवद्वृत (भाट या चारण एक विशिष्ट जाति है जो क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की सन्तान है) 2. बंदी, कैदी।

वंदी (स्त्री०) [वन्दि + ङीष्] दे० बंदी। सम० **पालः** कारारक्षक, जेलर।

वंद्य (वि०) [वन्द्+ण्यत्] १. सत्कार के योग्य, श्रद्धेय २. सादर नमस्करणीय रघु० १३।७८, कु० ६।८३, मेघ० १२ ३. स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंद्रः [वंद्+रक] पूजा करने वाला, भक्त, इभ्य समृद्धि ।

वंधुर (वि०) दे० 'बंधुर' ।

वंध्य, वंध्या दे० बंध्य, बंध्या ।

वन्य (वि०) [वने भवः यत्] 1. जंगल से संबंध रखने वाला, जंगल में उगने वाला या उत्पन्न, जंगली कल्पवित्कल्पयामास वन्यमेवास्य संविधाम्--रघु० १।९४, वन्यानां मार्गशाखिनाम् ४५ 2. बर्बर, जो पालतू या घरेलू न हो रघु० २।८, ३७, ५।४३, न्यः जंगली जानवर,--न्यम् जंगली पैदावार (जैसे कि फल, मूल क्षादि) रघु० १२।२० । सम० --इतर (वि०) पालतू, घरेलू, गजः,-- द्वीपः जंगली हाथी ।

वन्या [वन्य+टाप्] 1. विशाल जंगल, झुरमुटों का समूह 2. जलराशि, बाढ़, जल-प्लव ।

वप् (भ्वा० उभ० वपति, वपते, उप्तः, कर्मवा० उप्यते, इच्छा० विवप्सति ते) 1. बोना, (बीज) बिखेरना, पौधा लगाना यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम्-मनु० ३।१४२, न विद्यामिरिणे वपेत्--२।११३, यादृशं वपते बीजं तादृशं लभते फलम् सुभा०, कु० २।५, श० ६।२३ 2. फेंकना, (फांसा) डालना 3. जन्म देना, पैदा करना 4. बुनना 5. मूंडना, बाल काटना (प्रायः वैदिक), प्रेर० (वापयति--ते) बोना, पौधा लगाना, भूमि में डालना, आ 1. बिखेरना, इधर उधर फेंकना 2. बोना 3. यज्ञ आदि में आहुति देना उद्, उडेलना नि 1. (बीज) इधर-उधर बिखेरना 2. (आहुति) देना, विशेषत. पितरों को, न्यप्य पिण्डास्ततः मनु० ३।२१६, (स्मरमुद्दिश्य) निवपेः शाहकार मंजरीः- कु० ४।३८ 3. बलि चढ़ाना, यज्ञ के पशु का वध करना निस्---, 1. बिखेरना, (बीज आदि) छितराना 2. प्रस्तुत करना, पेश करना--श्रोत्रियायाभ्यागताय वत्सतरीं वा महोक्षं वा निर्वपेत गृहमेधिनः उत्तर० ४ 3. तर्पण करना, विशेषकर पितरों का 4. अनुष्ठान करना प्रति---, 1. बोना 2. पौधा लगाना, जमाना, रोपना = उत्तर०३।४६, मा० ५।१० 3. जमाना, (रत्नादिक) जड़ना, प्र---, फेंकना डालना, प्रस्तुत करना --भट्टि० ९।९८ ।

वपः [वप्+घ] 1. बीज बोना 2. जो बीज बोता है, बोने वाला 3. मूंडना 4. बुनना ।

वपनम् [वप्+ल्युट्] 1. बीज बोना 2. मूंडना, काटना मनु० ११।१५१ 3. वीर्य, शुक्र, बीज---नी 1. नाई की दुकान 2. बुनने का उपकरण 3. तन्तु शाला ।

वपा [वप्+अच्+टाप्] 1. चर्बी, वसा--याज्ञ० ३।९४ 2. छिद्र, रन्ध्र 3. वमी, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला । सम०---कृत् (पुं०) वसा, मज्जा ।

वपिः [वप्+इलच्] प्रजापति, पिता ।

वपुनः (पुं०) सुर, देवता ।

वपुष्मत् (वि०) [वप्+उसि+मतुप्] 1. मूर्त, देहधारी, शरीरधारी---ददृशे जगतीभुजा मुनिः स वपुष्मानिव पुण्यसंचयः--किं० २।५६ 2. सुन्दर, मनोहर, पुं० विश्वेदेवों में से कोई एक ।

वपुस् (नपुं०) [वप्+उसि] 1. (क) शरीर, देह (स्मरं) वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति---कु० ४।४२, नवं वयः कांतमिदं वपुश्च रघु० २।४७, शि० १०।५०, (ख) रूप, आकृति, सूरत या छवि--लिखितवपुषौ शलभदर्शी व दृष्ट्वा मेघ० ८०, परिघः क्षतजतुल्यवपुः बृहत्० ३०।२५ 2. रस, प्रकृति मनु० ५।९६ 3. सौन्दर्य, सुन्दर रूप या छवि । सम० गुणः, प्रकर्षः रूप की श्रेष्ठता, वैयक्तिक सौन्दर्य --संपृक्षयंतीव वपुर्गुणेन--कु० ३।५२, वपुः प्रकर्षादजयद् गुरुं रघुः रघु० ३।३४, कि० ३।२, धर (वि०) 1. मूर्त 2. सुन्दर स्रवः शरीर से चूने वाला तरल रस ।

वप्तृ (पुं०) [वप्+तृच्] 1. (बीज का) बोने वाला, पौधा लगाने वाला, किसान न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते--मुद्रा० १।३, मनु० ३।१४२ 2. पिता, प्रजापति 3. कवि, अन्तःस्फूर्त या प्रणोदित ऋषि ।

वप्रः---प्रम् [उप्यते अत्र वप्+रन्] दुर्गप्राचीर, मिट्टी की दीवार, गारे की भित्ति वेलावप्रवलयां (उर्वीम्) रघु० १।३० 2. तटबंध या टीला (जिसमें कि सांड या हाथी टक्कर लगाते हैं) रघु० १३।४७, दे० नी० वप्रक्रीडा 3. किसी पहाड़ या चट्टान का ढलान बृहच्छिलावप्रघनेन वक्षसा---किं० १४।४० 4. चोटी, शिखर, अधित्यका---तीर्थं महाव्रतभिवाग्र्य चरन्ति वप्राः शि० ४।५८, ३।३७, किं० ५।३६, ६।७ 5. नदीतट, पार्श्व, किनारा, वेलातट,---ध्वनयः प्रतेनरत्नव्रजवप्रभाम्---किं० ६।४, ७।११, १७।५८ 6. किसी भवन की नींव 7. शहरपनाह या दुर्गप्राचीर से युक्त नगर का फाटक 8. खाई 9. वृत्त का व्यास 10. खेत 11. मिट्टी का टीला (जिसको कि हाथी या सांड टक्कर मारे) = प्रः पिता,---प्रम् सीसा । सम० --अभिघातः (किसी पहाड़ या नदी आदि के) तटबंध पर टक्कर मारना---कि० ५।४२, तु० 'तटाघात' ---क्रिया, --क्रीडा किसी टीले या तटबन्ध पर हाथी (या सांड) का टक्कर मार कर विहार करना--वप्रक्रियामक्षततत्तटेषु- रघु० ५।४४, वप्रक्रीडापरिणत गजप्रेक्षणीयं ददर्श---मेघ० २ ।

वप्रिः [वप्+क्रिन्] 1. खेत 2. समुद्र ।

वप्री [वप्रि+ङीष्] मिट्टी का टीला, पहाड़ी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वञ्च (भ्वा० पर० वञ्चति) जाना, हिलना-डुलना।

वम् (भ्वा० पर० वमति, वांति, प्रेर० वामयति, वमयति, परन्तु उपसर्गयुक्त होने पर केवल 'वमयति') 1. दमन करना, थूक देना, मुँह से बाहर निकालना—रक्तं वाक्समिषुर्मुखः—भट्टि० १५।६२, ९।१०, १४।३० 2. बाहर भेजना, उडेलना, बाहर करना, उद्गीरण करना, बाहर निकालना, उत्सर्जन करना (आलं० से भी) किमाग्नेयग्रहा विकृत इव तेजांसि वमति —उत्तर० ६।१४, शा० २।७, रघु० १६।९६, मेघ० २०, अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्—वास० 3. बाहर फेंकना, नीचे डाल देना—वान्तमाश्यः—रघु० ७।६ 4. अस्वीकृत करना, छोड़—1. थूक देना, उद्गम करना 2. कै करना, भेज देना, उडेल देना—उद्वामेन्द्रसिक्ता भुविलमन्नादिवोरगी —रघु० १२।५, मुद्रा० ६।१३।

वमः [वम्+अप्] कै करना, वमन करना, बाहर निकालना।

वमथुः [वम्+अथुच्] 1. कै करना, उद्गमन, थूकना 2. हाथी के द्वारा अपनी सूंड से फेंका गया पानी।

वमनम् [वम्+ल्युट्] 1. कै करना, उलटी 2. बाहर खींचना, बाहर निकालना, जैसा कि 'स्वर्गाभिष्यन्द-वमनम्' में, रघु० १५।२९, कु० ६।३७ 3. उलटी लानेवाली 4. आहुति देना - न. गांजा—नी जोक।

वमनीया [वम्+अनीयर्+टाप्] मक्खी।

वमिः [वम्+इन्] 1. आग 2. ढेर, बदमाश-मिः (स्त्री०) 1. बीमारी, जी मिचलाना 2. उलटी लाने वाली (औषधि)।

वमी [वमि+ङीष्] उलटी करना।

वंभारवः [ष० त०] पशुओं के रोंकने की आवाज़।

वल्कः—ली [वल्+रक्, वल्क+ङीष्] चिकौटी। सम०—सूत्र बाँधी।

वय् (स्वा० आ०—वयते) जाना, हिलना-डुलना।

वयनम् [वे+ल्युट्] बुनना।

वयस् (नपुं०) [अज्+असुन्, वीभावः] 1. आयु, जीवन का कोई काल या समय,—गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः—उत्तर० ४।११, नव वयः —रघु० २।४७, पश्चिमे वयसि— १९।१, न खलु वयस्तेजसो हेतुः—भर्तृ० २।३८, तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते —रघु० ११।१, कु० ५।१६ 2. जवानी, जीवन का प्रमुख अंश—वयोगते किं वनिताविलासः—सुभा० इसी प्रकार 'अतिक्रान्तवया' 3. पक्षी—स्मरणीयाः समये वयं वयः—नै० २।६२, मृगयोगवयोपचितं वनम् रघु० ९।५३, ३।९, शि० ३।५५, ११।४७ 4. कौवा —पंच० १।२३ (यहाँ इसका अर्थ 'पक्षी' भी हो सकता है)। सम०—अतिग—अतीत (वि०) (वयोतिग आदि) बड़ी आयु का, बूढ़ा, जीर्ण, शक्तिहीन,—अधिक (वि०) (वयोधिक) आयु में अधिक, वयोवृद्ध, वरिष्ठ अवस्था (वयोऽवस्था) जीवन की एक अवस्था, आयु की माप,—मा० ९।२९,— कर (वि०) स्वास्थ्य देनेवाला, जीवन को पुष्ट करनेवाला, आयु बढ़ानेवाला गत (वि०) 1. वयस्क 2. वयोवृद्ध परिणतिः, परिणामः आयु की परिपक्वावस्था, वयोवृद्धता—प्रमाणम् 1. जीवन का माप या लम्बाई 2. जीवन की अवधि,—वृद्ध (वि०) (वयोवृद्ध) बूढ़ा, बड़ी आयु का,—सन्धिः 1. जीवन के एक काल से दूसरे काल में सम्क्रमण—त्रयो वयः सन्धयः 2. वयस्कता, परिपक्वावस्था (वयस्क होने का काल),—स्थ (वि०) (वयस्थ-या-वयस्य) 1. जवान 2. वयः प्राप्त, बालिग 3. बलवान्, शक्तिशाली (—स्था) सखी, सहेली,—हानिः (वयोहानिः) 1. जवानी का ह्रास 2. यौवन का ह्रास।

वयस्य (वि०) [वयसा तुल्यः यत्] 1. समान आयु का 2. समसामयिक,—स्यः मित्र, सखा, साथी (प्रायः समान ही आयु का)—स्या सखी, सहेली।

वयुनम् [वय्+उनन्] 1. ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति 2. मन्दिर (उणादिसूत्रों में इस शब्द को इसी अर्थ में पुंल्लिङ्ग भी बतलाया गया है)।

वयोऽस (पुं०) [वयोः यौवनं दयाति—वयस्+धा-क-असि] युवा या प्रौढ़ व्यक्ति।

वयोरंगम् [वयसा रंगमिव] सीसा

वर् (चुरा० उभ० वरयति-ते, वृ या वृ का प्रेर० रूप) माँगना, चुनना, छाँटना, खोज करना,—दे० 'वृ'।

वर (वि०) [वृ कर्मणि अप्] 1. श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दरतम, या अत्यंत मूल्यवान्, छांटा हुआ, बढ़िया (संब० या अधि० के साथ अथवा समास के अन्त में) वदतां वरः— रघु० १।५९, वेदविदां वरेण—५।२३, ११।५४, कु० ६।१८, नृवरः, तरुवरः, सरिद्वरः आदि 2. अपेक्षाकृत अच्छा, दूसरे से अच्छा, प्रार्थिभ्यो वारिणो वराः मनु० १२।१०३, याज्ञ० १।३५१,—रः 1. चुनने और छाँटने की क्रिया 2. छाँट, चुनाव 3. वरदान, आशीर्वाद, अनुग्रह, वरं वृ या याच् वर माँगना, प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व—रघु० २।६३, भवत्प्रसादवरोदीर्णः—कु० २।३२, ('वर' और 'आशिस्' का अन्तर जानने के लिए दे० 'आशिस्') 4. भेंट, उपहार, पारितोषिक, पुरस्कार 5. कामना, इच्छा 6. याचना, अनुरोध 7. दूल्हा, पति—वरं वरयते कन्या, दे० वधू (२) के नीचे भी 8. पाणिग्रहणार्थी, विवाहार्थी 9. स्त्रीधन, दहेज 10. जामाता 11. कामुक, कामासक्त 12. चिड़िया,—रम् जाफ़रान, केसर, (वरम् को पृथक् देखिये)। सम०—अंग (वि०) उत्तम रूप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला (—गः) हाथी (,—गी) हल्दी, (,—गम्) 1. सिर 2. उत्तम भाग 3. प्राञ्जल रूप 4. योनि, 5. हरी दारचीनी,—अंगना कमनीय स्त्री—अर्ह (वि०) वर पाने के योग्य,—आजीवत (पु०) ज्योतिषी, —आरोह (वि०) सुन्दर कूल्हों वाला (—हः) उत्तम सवार(—हा) सुन्दर स्त्री,—आलिः चाँद,-- आसनम् 1. उत्तम चौकी 2. मुख्य आसन, सम्मान की कुर्सी 3. चीनी गुलाब,—उरुः, रूः (स्त्री०) सुन्दर स्त्री (शा० सुन्दर जंघाओं से युक्त स्त्री), ऋतुः इन्द्र का विशेषण, --चन्दनम् 1. एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी 2. देवदारु, चीड़ का पेड़, —तनु (वि०) सुन्दर अवयवों वाला (स्त्री० नुः) सुन्दर स्त्री—वरतनुरथवासी नैव दृष्टा त्वया मे--विक्रम० ४।२२,—तंतुः एक प्राचीन मुनि का नाम—रघु० ५।१,—त्वचः नीम का पेड़ द (वि०) 1. वर देने वाला, वरदान प्रदान करने वाला 2. मंगलप्रद (—दः) 1. उपकारी 2. पितृवर्ग (—दा) 1. नदी का नाम मालवि० ५।१ 2. कुमारी, कन्या,—दक्षिणा दुलहिन के पिता द्वारा दूल्हे को दिया गया उपहार,—दानम् वर प्रदान करना द्रुमः अगर का वृक्ष,—निश्चयः दूल्हे का चुनाव, —पक्षः (विवाह में) दूल्हे के दल के लोग -रघु० ६।८६, --प्रस्थानम्,— यात्रा विवाह संस्कार के लिए दूल्हे का जलूस के रूप में दुलहिन के घर की ओर कूच करना, --फलः नारियल का पेड़, बाह्लिकम् जाफरान, केसर,—युवतिः,—ती (स्त्री०) सुन्दर तरुणी स्त्री,—रुचिः एक कवि और वैयाकरण का नाम (विक्रमादित्य राजा के दरबार के नवरत्नों में से एक, दे० नवरत्न; कुछ लोग पाणिनि के सूत्रों पर प्रसिद्ध वार्तिककार कात्यायन से इसकी अभिन्नता सिद्ध करते हैं),—लक्ष्म (वि०) जिसने वरदान प्राप्त कर लिया है (क्ष्मः) चम्पक वृक्ष,—वल्कला साल, वलशू,—वर्णम् सोना,—वर्णिनी 1. उत्तम और सुन्दर रंगरूप वाली स्त्री 2. स्त्री 3. हल्दी 4. लाख 5. लक्ष्मी का नामांतर 6. दुर्गा का नामांतर 7. सरस्वती का नाम 8. 'प्रियंगु' नाम की लता,—स्रज् 'दूल्हे की माला' वह माला जो दुलहिन, दूल्हे के गले में डालती है।

वरकः [वृ+वुन्] 1. इच्छा, प्रार्थना, वर 2. चोगा लोहे की एक प्रकार, कम् 1. नाव को ढकने की चादर 2. तौलिया, अंगोछा।

वरटः [वृ+अटन्] 1. हंस 2. एक प्रकार का अनाज 3. एक प्रकार की बर, भिड़,—टा,—टी 1. हंसिनी, नवप्रसूति-वरटा तपस्विनी—नै० १।१३५ 2. भिड़, बर्र या उसके प्रकार भो वयस्य एते खलु दास्याः पुत्रा अर्थकल्यवती वरटा भीता इव गोपालदारका आरण्ये मत्तवत् न खायंते तत्र-तत्र गच्छंती—मृच्छ० १,—टम् कुंद का फूल।

वरणम् [वृ+ल्युट्] 1. छांटना, चुनना 2. मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना 3. घेरना, घेरा डालना 4. ढकना, परदा डालना, प्ररक्षा करना 5. दुलहिन का चुनाव,—णः 1. परकोटा, फ़सील 2. पुल 3. वरुण नामक वृक्ष 4. वृक्ष वह सिंधवच्च वरणा-वरणाः करिणा मुदे सनलदानलदाः--किं० ५।२५ 5. ऊँट। सम०—माला,—स्रज् दे० वरस्रज्।

वरणसी (अधिक प्रचलित रूप=वाराणसी)—दे०।

वरत्रः [वृ+अंडच्] 1. समुदाय, वर्ग 2. मुंह पर निकली फुंसी 3. थरासदा 4. घास का ढेर 5. झोला (यदि-दानीमहं वरण्डल्लम्बुक इव दूरमुल्लिप्य पतितः—मृच्छ० में 'वरण्डल्लंबुक' शब्द का अर्थ सन्दिग्ध है, इसका अर्थ प्रतीत होता है 'ऊपर लटकती हुई या उभरी हुई दीवार' जो यदि और ऊपर उठाई गई तो उसका लुढ़का जाना निश्चित है; यही बात सूत्रधार के विषय में है जिसकी आशाएँ अत्यंत ऊंची उठी परन्तु केवल निराशा में परिणत होने के लिए)।

वरंडकः [वरंड+कन्] 1. मिट्टी का टीला 2. हाथी की पीठ पर बना हौदा 3. दीवार 4. मुंह पर मुंहासा।

वरंडा [वरंड+टाप्] 1. यष्टी, छड़ी 2. एक पक्षी -सारिका 3. दीपक की बत्ती।

वरत्रा [वृ+अत्रन्+टाप्] फ़ीता, (चमड़े का) तस्मा या पट्टी, शि० ११।४४ 2. घोड़े या हाथी का तंग।

वरम् (अव्य०) [वृ+अप्] अपेक्षाकृत, श्रेष्ठतर, श्रेयस्कर, अधिक अच्छा, कभी कभी यह अपा० के साथ प्रयुक्त होता है—समुद्यमन् भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः—किं० ४।८, परन्तु इस शब्द का प्रयोग बहुधा बिना किसी शर्त के होता है, 'वरम्' प्रायः उस वाक्य खंड के साथ प्रयुक्त होता है जिसमें अपेक्षित वस्तु विद्यमान है; तथा 'न च' 'न तु' और 'न पुनः' उस वाक्यखंड के साथ जिनमें वह वस्तु विद्यमान है जिसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती को प्रयुक्ता ही गई है। (दोनों कर्तृ० में रक्खे जाते हैं), वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतं.....वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनसुखम्—हि० १, वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः—सुदेव०, कभी कभी 'न' का प्रयोग 'च, तु, और पुनः' के बिना भी होता है—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६।

वरलः [वृ+अलच्] एक प्रकार की बर, भिड़,—ला 1. हंसिनी 2. एक प्रकार की भिड़, बर्र।

वरा [वृ+अच्+टाप्] 1. त्रिफला 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3. हल्दी 4. पार्वती का नाम।

वराक (वि०) (स्त्री०—की) [वृ+पाकन्] बेचारा, दयनीय आर्त, मन्दभाग्य दुःखी, अभागा (बहुधा दया दिखाने के लिए प्रयुक्त) तन्मया न युक्तं कृतं वत्स

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वराकोऽप्यमानितः—पंच० १, तत्किमुज्जिहानजोवितां वराकीं नानुकंपसे—मा० १०,—कः 1. शिव 2. संग्राम, युद्ध ।

वराटः [वरमल्पमटति अट्+अण्] 1. कौड़ी 2. रस्सी, डोरी ।

वराटकः [वराट+कन्] 1. कौड़ी—प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुंच माम्—भर्तृ० ३।४ 2. कमल फूल का बीजकोष 3. डोरी, रस्सी (इस अर्थ में 'नपुं०' भी) । सम०—रजस् (पुं०) नाग केसर नामक वृक्ष ।

वराटिका [वराट+कन्+टाप्, इत्वम्] कौड़ी—भाभि० २।४२ ।

वराणः [वृ+शान च्] इन्द्र का विशेषण ।

वाराणसी दे० वाराणसी ।

वरारकम् [वर+ऋ+ण्वुल्] हीरा ।

वरालः, वरालकः [वृ+आलच् स्वार्थे कन् च] लौंग ।

वरांशिः—सिः [वरम् आवरणमश्नुते वर+अंश्+इन्, वरः श्रेष्ठः अस्यते क्षिप्यते--वर+अस्+इन्] मोटा कपड़ा ।

वराहः [वराय अभीष्टाय मुस्ताद्यिलाभाय आहन्ति भूमिम्—आ+हन्+ड] सूअर, वधिया किया गया सूअर,—विलग्नं क्रियता वराहततिभिर्भुस्तास्थितिः पल्वले—श० २।६ 2. मेंढ़ा 3. बैल 4. बादल 5. मगरमच्छ 6. शूकराकृति में बना सैनिक व्यूह 7. विष्णु का तीसरा वराह-अवतार—तु० वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलङ्क कलेव निमग्ना । केशव धृतशूकररूप जय जगदीश हरे—गीत० १ 8. एक विशेष माप 9. वराहमिहिर का नामान्तर 10. अठारह पुराणों में से एक । सम०—अवतारः विष्णु का तीसरा अवतार, वराहावतार,—कंदः वाराहीकंद, एक खाद्य पदार्थ,—कर्णः एक प्रकार का बाण, —कर्णिका एक प्रकार का अस्त्र,—कल्पः वराहावतार का समय, वह काल जब विष्णु का वराह का अवतार धारण किया,—मिहिरः एक विख्यात ज्योतिर्वेत्ता, बृहत्संहिता का प्रणेता (राजा विक्रमादित्य की राज-सभा के नवरत्नों में से एक),—शृंगः शिव का नाम ।

वरिमन् (पुं०) [वर+इमनिच्] श्रेष्ठता, सर्वोपरिता, प्रमुखता ।

वरिवसि (स्या) त [वरिवस् (स्या)+इतच्] पूजा गया, सम्मानित, अर्चित, सत्कृत ।

वरिवस्या [वरिवसः पूजायाः करणम्—वरिवस्+क्यच्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, अर्चना, भक्ति ।

वरिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वरः उरुर्वा उरु+इष्ठन् वरादेशः उरु की उ० अ०] 1. सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ, अत्यन्त पूज्य, प्रमुख 2. अत्यन्त विशाल, उत्कृष्ट 3. अत्यन्त विस्तृत 4. गुरुतम,—ष्ठः 1. तिलिर पक्षी, तीतर 2. संतरे का पेड़,—ष्ठम् 1. तांबा 2. मिर्च ।

वरी [वृ+अच्+ङीष्] 1. सूर्य की पत्नी छाया 2. शतावरी नाम का पौधा ।

वरीयस् (वि०) [अयमनयोरतिशयेन वरः उरुर्वा उरु+ईयसुन्, वरादेशः, उरु की म० अ०] 1. अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ, अधिमान्य 2. अत्यन्तम, बहुत अच्छा—मा० १।१६ 3. अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा या विस्तृत ।

वरी (स्त्री) **वरः** [वृ+क्विप्=वर्, ई वरं च=ईवरी, तौ ददाति दा+क=ईवरः, बड़ी बासी ईवरश्च, कर्म० त०] बैल, साँड ।

वरीषुः [वरः श्रेष्ठः इषुः अस्य, पृषो०] कामदेव का नाम ।

वरुटः (पुं०) म्लेच्छ जाति का नाम ।

वरुडः (पुं०) एक नीच जाति का नाम ।

वरुणः [वृ+उनन्] 1. आदित्य का नाम (बहुधा 'मित्र' के साथ युक्त होकर) 2. परवर्ती पौराणिकता के अनुसार) समुद्र की अधिष्ठात्री देवता, पश्चिम दिशा की देवता (हाथ में पाश लिए हुए) यामां राजा वरुणो यात्ति मध्ये सत्यानृते अव पश्यञ्जनानाम्, वरुणो यादसामहम्—भग० १०।२९, प्रतीची वरुणः पतिः—महा० अतिसंक्रितमेत्य वरुणस्य दिशां भृशम्-वव-रज्यदतुधारकरः दि० ९।७ 3. समुद्र 4. अन्तरिक्ष । सम० अंगरहः अगस्त्य का विशेषण, --आत्मजा मदिरा (समुद्र से निकलने के कारण इसका यह नाम पड़ा),---आलयः, आवासः समुद्र,—पाशः घड़ियाल लोकः 1. वरुण का संसार 2. जल ।

वरुणानी [वरुण+ङीप्, आनुक्] वरुण की पत्नी ।

वरुत्रम् [वृ+उत्र] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा ।

वरूथम् [वृ—ऊथन्] 1. एक प्रकार का लकड़ी का बना, आवरण जो रथ की टक्कर हो जाने पर रथ की रक्षा करे (इस अर्थ में पुं० भी) वरूथो रथसृप्तिर्यां तिरीयते रथस्थितिम् 2. कवच बख्तर 3. ढाल 4. वर्ग, समुच्चय, समवाय,—थः 1. कौवल 2. काल ।

वरूथिन् (वि०) [वरूथ+इन्] 1 कवचधारी, बख्तरयुक्त 2. अंगारगुप्ति या बचाऊ जंगले से सुरक्षित---अवनिमेकरथेन वरूथिना जितवतः किल रक्ष्य धनुर्भृतः---रघु० ९।११ 3. बचाने वाला, आश्रय देने वाला 4. गाड़ी में बैठा हुआ, पुं० 1. रथ 2. अभिरक्षक, प्रतिरक्षक,—नी सेना स्खलितलिलामुल्लुण्ठैर्नो जगाम वरूथिनी -शि० १२।७७, रघु० १२।५० ।

वरेण्य (वि०) [वृ+एन्य] 1. अभिलषणीय, वांछनीय, पात्र वरणीय---अनेन चेदिच्छसि गृह्यमाणं पाणिं वरेण्येन रघु० ६।२४ 2. (अतः) सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, प्रमुख, पूज्यतम, मुख्य—वेश विधाय पुनरुक्त-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिवेन्दुबिंबं दूरीकरोति न कथं विदुषां वरेण्यः—भामि० २।१५८, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ऋक् ३।३२।१०, रघु० ६।८४, मुद्रि० १।४, कु० ७।९०, —क्लम् ज़ाफ़रान, केसर ।

वरोटः [वराणि श्रेष्ठानि उटानि दलानि यस्य ब० स०] मसूर का पौधा,—टम् मसूर का फूल ।

वरोलः [वृ+ओलच्] बर्र, भिड़ ।

वर्करः [वृक्+अरच्] 1. मेंढ़ या बकरी का बच्चा मेमना 2. बकरा 3. कोई पालतू जानवर का बच्चा 4. आमोद, क्रीडाविहार, मनोरंजन । सम० **कर्करः** चमड़े की रस्सी या तस्मा जिससे बकरी या भेड़ बांधी जाय ।

वर्कराटः [वर्करं परिहासम् अटति गच्छति वर्कर+अट+अण्] 1. तिरछी नजर, कटाक्ष 2. स्त्री के कुचों पर उसके प्रेमी के नखक्षतों के चिह्न ।

वर्कुटः (पुं०) कील, अर्गला, चटखनी ।

वर्गः [वृज्+घञ्] 1. श्रेणी, प्रभाग, समूह, दल, समाज, जाति, संग्रह (एक समान वस्तुओं का), त्रयोविंशो वर्गोऽध्यनुगाविवर्गः—रघु० २।४, ११।७, इसी प्रकार पौरवर्गः, नक्षत्रवर्गः आदि 2. टोली, पक्ष, कु० ७।७२ 3 प्रवर्ग 4. एक स्थान पर वर्गीकृत शब्दसमूह यथा मनुष्यवर्गः, वनस्पतिवर्गः आदि 5. वर्णमाला में व्यंजनों का समूह 6. अनुभाग, अध्याय, या पुस्तक का परिच्छेद 7. विशेषरूप से ऋग्वेद के अध्यायान्तर्गत अवभाग, सूक्त 8. घात दो समान अंकों का गुणनफल 9. सामर्थ्य । सम०—**अन्त्यम्**, **उत्तमम्** पांचों वर्गों में से प्रत्येक का अन्तिम वर्ण अर्थात् अनुनासिक अक्षर, —**घनः** वर्ग का घनफल,—**पदम्**, **मूलम्** वर्गमूल, वह अंक जिसके घात से को वर्गांक दें,—**वर्गः** वर्ग का वर्ग ।

वर्गणा (स्त्री०) गुणन, घात ।

वर्गशस् (अव्य०) [वर्ग+शस्] समूहों में श्रेणीवार ।

वर्गीय (वि०) [वर्ग+छ] किसी श्रेणी या प्रवर्ग से संबद्ध, —**यः** सहपाठी ।

वर्ग्य (वि०) [वर्गे भवः यत्] एक ही श्रेणी का,—**ग्यः** एक ही श्रेणी या दल से संबद्ध, सहयोगी, सहपाठी, सहाध्यायी (शिक्षा में) या यस्य युज्यते भूमिका तां खलु भावेन तत्रैव सर्वे वर्ग्याः पाठिताः भा० १, शि० ५।१५ ।

वर्च् (म्वा० आ० वर्चते) चमकना, उज्ज्वल या आभायुक्त होना ।

वर्चस् (नपुं०) [वर्च्+असुन्] 1. वीर्य, बल, शक्ति 2. प्रकाश, कान्ति, उजाला, आभा 3. रूप, आकृति, शकल 4. विष्ठा, मल । सम० —**ग्रहः** कोष्ठ बद्धता, कब्ज ।

वर्चस्कः [वर्चस्+कन्] 1. उजाला, कान्ति 2. वीर्य 3. विष्ठा ।

वर्चस्विन् (वि०) [वर्चस्+विनि] 1. शक्तिशाली, ओजस्वी, सक्रिय 2. देदीप्यमान्, उज्ज्वल, तेजस्वी ।

वर्जः [वृज्+घञ्] छोड़ देना, परित्याग ।

वर्जनम् [वृज्+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्याग, तिलांजलि 2. वैराग्य 3. अपवाद, बहिष्करण 4. चोट, क्षति, हत्या ।

वर्जम् (अव्य०) निकाल कर, बाहर करके, सिवाय (समास के अन्त में) गौतमीवर्जमितरा निष्क्रांताः भा० ४, कु० ७।७२ ।

वर्जित (भू० कृ० कृ०) [वृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, अलगाया हुआ 2. परित्यक्त, उत्सृष्ट 3. बहिष्कृत 4. वंचित, विरहित, हीन जैसा कि 'गुणवर्जित' में ।

वर्ज्य (वि०) [वृज्+ण्यत्] 1. टाले जाने के योग्य, निवर्तनीय 2. बहिष्कृत किये जाने के योग्य 3. छोड़कर, सिवाय के, ।

वर्ण (चुरा० उभ० वर्णयति-ते, वर्णित) 1. रंग करना, रंगना, रंगना—यथा हि भरतो वर्णैर्वर्णयत्यात्मनस्तनुम् सुभा० 2. बयान करना, वर्णन करना, व्याख्या करना, लिखना, चित्रित करना, अंकित करना, निरूपण करना—वर्णितं जयदेवेन हरेरिदं प्रबंधेन गीत० ३, कि० ५।१० 3. प्रशंसा करना, स्तुति करना 4. फैलाना, विस्तृत करना 5. रोशनी करना, उप—बयान करना, वर्णन करना मिश्र—1. ध्यान से देखना, सावधानता पूर्वक अंकित करना 2. देखना, निहारना ।

वर्णः [वर्ण्—घञ्] 1. रंग, रोगन—अतः शुद्धस्त्वमपि भवितुं वर्णमात्रेण कृष्णः—मेघ० ४९ 2. रोगन, रंग, दे० वर्ण (1), 3. रंग, रूप, सौन्दर्य, स्वव्यादातुं बलभवनते शार्ङ्गिणो वर्णचोरे—मेघ० ४६, रघु० ८।४२ 4. मनुष्य श्रेणी, जनजाति या कबीला, जाति (मुख्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण के लोग) वर्णानामानुपूर्व्येण—वार्ति० न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि मज्जते—शि० ५।१०, रघु० ५।१९ 5. श्रेणी, वर्ग, जनजाति, प्रकार, जाति जैसा कि 'सर्वपुंस् अक्षरम्' में 6. (क) अक्षर, वर्ण, ध्वनि कि वर्णविचारस्तमादृष्टिः—विक्रम० ५, (ख) शब्द, मात्रा—सा० द० ९ 7. ख्याति, कीर्ति, प्रसिद्धि, विश्रुति—राजा प्रजारंजनलब्धवर्णः—रघु० ६।२१ 8. प्रशंसा 9. वेशभूषा, सजावट 10. बाहरी छवि, रूप, आकृति 11. चादर, दुपट्टा 12. ढकने के लिए लेपन, चपनी 13. किसी विषय का क्रमगीत में, गीतक्रम उपात्तवर्णे चरिते पितामहेः कु० ५।५६, 'गीतिख्यातं' अर्थात् गान का विषय बना हुआ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

14. हाथी की झूल 15. गुण, धर्म 16. धर्मानुष्ठान 17. अज्ञात राशि · **वर्म** 1. केसर, जाफरान 2. रंगदार उबटन या सुगन्धद्रव्य । सम० **अंका** लेखनी, **—अपसदः** जातिच्युत—अपेत (वि०) जातिशून्य, जातिच्युत, पतित **—अहः** एक प्रकार का लोबिया, **—आगमः** किसी अक्षर का जोड़ना भवेद्वर्णागमाद्वर्णः —सिद्धा०, **—आख्यन्** (पुं०) शब्द, **—उदकम्** रंगीन पानी रघु० १६।७०, **—कूपिका** दवात, **—क्रमः** 1. वर्ण व्यवस्था, रंगों का क्रम 2. वर्णमाला—**चारकः** चितेरा, **ज्येष्ठः** ब्राह्मण, · **तूलिः**, · **तूलिका**, —**तूली** (स्त्री०) कूची, चितेरे का ब्रुश, —**द** (वि०) रंगसाज (—**दम्**) दारुहल्दी—**द्राक्षी** हल्दी—**द्रुतः** पत्र, **—धर्मः** प्रत्येक जाति के विशिष्ट कर्तव्य, —**पातः** किसी अक्षर का लोप हो जाना, **—पुष्पम्** पारिजात का फूल, **—पुष्पकः** पारिजात, **—प्रकर्षः** रंग की श्रेष्ठता, **प्रसादनम्** अगर की लकड़ी, —**मातृ** (स्त्री०) लेखनी, पैंसिल, कूची, **—मातृका** सरस्वती, —**माला**, **राशिः** (स्त्री०) अक्षरों को यथाक्रमसूची, वर्णमाला, —**वर्तिः**, —**वर्तिका** (स्त्री०) रंग भरने की तूलिका, — **विपर्ययः** वर्णों का उलट फेर—(अवर्ते) सिंहो वर्ण विपर्ययात्-सिद्धा०, **विलासिनी** हल्दी, — **विलोडकः** 1. संध लगाकर घर में घुसने वाला 2. साहित्य चोर (शा० शब्दचोर), —**वृत्तम्** वर्णों की गणना के आधार पर विनियमित छन्द या वृत्त (विप० मात्रावृत्त), **व्यवस्थितिः** (स्त्री०) **वर्णव्यवस्था**, **वर्णविभागः**, **शिक्षा** वर्णमाला सिखलाना, —**श्रेष्ठः** ब्राह्मण, · **संयोगः** एक ही वर्ण के लोगों में विवाहसंबंध होना, · **संकरः** 1. अन्तर्जातीय विवाह के कारण वर्णों का सम्मिश्रण 2. रंगों का मिश्रण —**चित्रेषु वर्णसंकरः**—का० (यहां, दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) शि० १४।३७, **संघातः**, **समाम्नायः** वर्णमाला ।

वर्णकः [वर्णयति—वर्ण्+ण्वुल्] 1. मुखावरण, नकाब अभिनेता की वेशभूषा 2. चित्रकारी, चित्रकारी के लिए रंग · शि० १६।६२ 3. रंगलेप या कोई उबटन के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तु · एतैः पिष्टैर्माल वर्णकविधिर्लिप्तमभ्योषधैः · मृच्छ० ५।४६, मद्वि० १९।११ 4. भाट, चारण, स्तुतिगायक 5. चन्दन (वृक्ष)·—**का** 1. कस्तूरी 2. रंगलेप, चित्रकारी के लिए रंग 3. उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, **कम्** 1. रंगलेप, रंग, वर्ण शा० ६।१५ 2. चन्दन 3. परिच्छेद, अध्याय, प्रभाग ।

वर्णनम् ना [वर्ण्+ल्युट्] 1. चित्रकारी 2. वर्णन, आलेखन, चित्रण स्वभावोक्तिस्तु डिंभादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्—काव्य० १० 3. लिखना 4. वक्तव्य, उक्ति 5. प्रशंसा, संस्तव (—**ना** केवल इसी अर्थ में) ।

वर्णितः [वृञ्+असि, नुक्] जल ।

वर्णिः [वर्ण+अट्+अच्] 1. चित्रकार 2. गायक 3. जो अपनी आजीविका अपनी पत्नी के द्वारा करता है, स्त्रीकृताजीव ।

वर्णिका [वर्णा अक्षराणि लेख्यत्वेन सन्त्यस्याः ठन्] 1. अभिनेता की वेशभूषा या नकाब 2. रंग, रंगलेप 3. स्याही, मसी 4. लेखनी, पैंसिल । सम०—**परिग्रहः** स्वांग भरना या नकाब धारण करना ततः प्रकरण नायकस्य मालतीवल्लभस्य माधवस्य वर्णिकापरिग्रहः कथम्—मा० १।

वर्णित (भू० क० कृ०) [वर्ण्+क्त] 1. चित्रित 2. वर्णन किया गया, बयान किया गया 3. स्तुति की गई, प्रशंसा की गई ।

वर्णिन् (वि०) [वर्णोऽस्त्यस्य इनि] (समास के अंत में प्रयुक्त) 1. रंग रूप वाला 2. जाति से संबंध रखने वाला·—पुं० 1. चित्रकार 2. लिपिकार, लेखक 3. ब्रह्मचारी, दे० ब्रह्मचारिन्,—अथाह वर्णी—कु० ५।६६, ५२, वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी चिचक्षणः प्रस्तुत माचचक्षे—रघु० ५।१६ 4. इन चार मुख्य वर्णों में से किसी एक वर्ण का व्यक्ति । सम० · **लिङ्गिन्** (वि०) ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण किए हुए, या उसके चिह्नों को धारण करने वाला स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः किरा० १।१ ।

वर्णिनी [वर्णिन्+ङीष्] 1. स्त्री 2. चारों वर्णों में से किसी एक वर्ण की स्त्री 3. हल्दी ।

वर्ण्यः [वृ+ण्यत्] सूर्य ।

वर्ण्य (वि०) [वर्ण्+ण्यत्] वर्णन करने के योग्य (प्रकृत और प्रस्तुत शब्दों की भांति यह 'वर्ण्य' शब्द भी काव्य ग्रन्थों में प्रायः प्रयुक्त होता है),—**व्यम्** केसर, जाफरान ।

वर्तः [वृत्+घञ्] (प्रायः समास के अन्त में) जीविका, वृत्ति—जैसा कि 'कल्पवर्तम्' में । सम० · **वर्मन्**

वर्तक (वि०) [वृत्+ण्वुल्] जीवित, विद्यमान, वर्तमान · **कः** 1. बटेर, लवा 2. घोड़े का सुम, · **कम्** एक प्रकार का पीतल या कांसा ।

वर्तकः,—की [वर्तक+टाप्, ङीष् वा] बटेर, लवा ।

वर्तन (वि०) [वृत्+ल्युट्] 1. टिकाऊ, रहने वाला, ठहरने वाला, विद्यमान 2. स्थिर·—**नः** ठिगना, बौना —**नी** 1. मार्ग, सड़क 2. जीना, जीवन 3. पीसना, चूर्ण बनाना 4. तकुआ,—**नम्** 1. जीना, विद्यमान रहना 2. ठहरना, डटे रहना, निवास करना 3. कर्म, गति, जीने का ढंग या तरीका, स्मरसि च तदुपालम्भावयोर्वर्तनानि—उत्तर० १।२६, (यहां शब्द का अर्थ 'आवास या निवास' भी है) 4. जीवित रहना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवनयापन करना (समास के अन्त में) 5. आजीविका, जीवन निर्वाह, वृत्ति 6. जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, व्यवसाय 7. चालचलन, व्यवहार, आचरण 8. मजदूरी, देतन, भाड़ा 9. व्यापार, लेन-देन 10. तकड़ा 11. गोलक, गेंद।

वर्तनिः [वर्तन्तेऽस्यां जनाः, वृत्+निः] 1. भारत का पूर्वी भाग, पूर्ववर्ती प्रदेश 2. सूक्त, प्रशंसा, स्तोत्र, —निः (स्त्री०) मार्ग, सड़क।

वर्तमान (वि०) [वृत्+शानच मुक्] 1. मौजूद, विद्यमान 2. जीता हुआ, जीवित रहने वाला, समसामयिक —प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमित्रादीनां प्रबंधानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः—मालवि० १ 3. मुड़ना, चक्कर काटना, घूम जाना —नः (व्या० में) वर्तमान काल—वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा—पा० ३।३।१३१।

वर्तकः [वर्त+रा+ऊक] 1. पीखर, जोहड़ 2. भँवर, बवंडर, जलावर्त 3. कौवे का घोंसला 4. द्वारपाल 5. नदी का नाम।

वर्तिः—र्ती (स्त्री०) [वृत्+इन् या ङीप्] 1. कोई भी लिपटी हुई गोल वस्तु, पत्रावली, वही 2. उबटन, मलहम, आंखों का लेप, काजल, अंगराग (गोली या टिकिया के रूप में)—सा पुनर्मम प्रथमदर्शनात्प्रभृत्यमृतवर्तिरिव चक्षुषोरानन्दमुत्पादयन्ती मा० १, इयमञ्जनवर्तिर्नयनयोः उत्तर० १।३८, कर्पूरवर्तिरिव लोचनतापहर्त्री—भामि० २।१६, विद्ध० १ 3. दीपक की बत्ती मा० १०।४ 4. (कपड़े की) झालर, फलवे, किनारी 5. जादू का लेप 6. बर्तन के चारों ओर का उभार 7. जर्राही उपकरण (रम्भनाल आदि) 8. धारी, रेखा।

वर्तिकः [वृत+निकन्] बटेर, लवा।

वर्तिका [वर्तेः तिकन्+टाप्] 1. चित्तेरे की कूंची तदुपनय चित्रफलकं चित्रवर्तिकाश्च मा० १, अंगुलिक्षरणसम्भवर्तिकाः—रघु० १९।१९ 2. दीपक की बत्ती 3. रंग, रंगलेप 4. बटेर, लवा।

वर्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वृत्+णिनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1. हटा रहने वाला, होने वाला, सहारा लेने वाला, टिकने वाला, स्थित 2. जाने वाला, गतिशील, मुड़ने वाला 3. अभिनय करने वाला, व्यवहार कर ने वाला 4. अनुष्ठाता, अभ्यास करने वाला।

वर्तिः (र्ती) रः [वृत्+इरच्, पक्षे पृषो० दीर्घः] बटेर, लवा

वर्तित्रु (वि) [वृत्+इत्रुच्] 1. चक्कर काटने वाला 2. वर्तमान, टटा रहने वाला 3. वर्तुलाकार।

वर्तुल (वि०) [वृत्+उलच्] गोल, कुण्डलाकार, मण्डलाकार —लः 1. एक प्रकार की दाल, मटर 2. गेंद, —लम् वृत्त।

वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] 1. रास्ता, सड़क, पथ, मार्ग पगडंडी —वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० १९, पारसीकास्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना, 'स्थलमार्ग से' आकाशवर्त्मना 'आकाश के मार्ग से' 2. (आल०) रीति, मार्ग, सर्वसम्मत तथा निर्धारित प्रचलन, प्रचलित रीति या आचरण क्रम —मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः भग० ३।२३, रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्, न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियंतुर्नियमातीयुः—रघु० १।१७ (यहाँ पर शाब्दिक अर्थ भी अभिप्रेत है), अहमेव्य पतंगवर्त्मना पुनरर्कश्रयिणी भवामि ते कु० ४।२०, 'परवाने के ढंग से' 3. स्थान, कर्म के लिए क्षेत्र न वर्त्म कर्म्मविदपि प्रदीयताम् कि० १४।१४ 4. पलक 5. धार, किनारा। सम० पातः मार्ग से व्यतिक्रम,—रोगः,—वंधकः पलकों का एक रोग।

वर्त्मनिः—नी (स्त्री०) सड़क, रास्ता।

वर्ध् (चुरा० उभ० वर्धयति—ते, वर्धायति भी) 1. काटना छाँटना, मूँडना 2. पूरा करना।

वर्धः [वर्ध्+अच्, घञ् वा] 1. काटना, छाँटना 2. बढ़ाना, वृद्धि या समृद्धि करना 3. वृद्धि, बढ़ोतरी, धंस 1. सोना 2. सिंदूर।

वर्धकः, वर्धकिः, वर्धकिन (पुं०)) [वृध्+णिच्+ण्वुल्, वर्ध+कच्+कि, वर्ध्+अच्+कन्+इनि] बढ़ई।

वर्धन (वि०) [दृध्+णिच्+ल्युट्] 1. बढ़ने वाला, उगने वाला 2. बढ़ाने वाला, विस्तृत करने वाला, आवर्धन करने वाला, नः 1. समृद्धिदाता 2. वह दाँत जो दाँत के ऊपर उगता है 3. शिव का नाम—नी 1. बुहारी, झाड़ू 2. विशेष आकार का झलझट,— नम् 1. उगना, फलना फूलना 2. विकास, वृद्धि, समृद्धि, आवर्धन, विस्तार 3. उन्नति 4. उल्लास, सजीवता 5. शिक्षा देना, पालन-पोषण करना 6. काटना, बाँटना जैसा कि 'नाभिवर्धनम्' में।

वर्धमान (वि०) [वृध्+शानच्] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला नः 1. एरंड का पौधा 2. एक प्रकार की पहेली 3. विष्णु का नाम 4. एक जिले का नाम (इसको लोग वर्तमान बर्दवान मानते हैं),—नम्, —नम् 1. एक विशेष सूरत की तश्तरी, ढक्कन 2. एक रहस्यमय रेखाचित्र 3. वह भवन जिसका दक्षिण की ओर कोई द्वार न हो, —नः या एक जिले का नाम (वर्तमान बर्दवान)। सम० पुरम् बर्दवान नामक नगर।

वर्धमानकः [वर्धमान+कन्] एक प्रकार का पात्र, तश्तरी, ढक्कन, चपनी।

वर्धापनम् [वर्धं छेदं करोति—वृध्+णिच्+आप् ततो भावे ल्युट्] 1. काटना, छाँटना 2. बोलच्छेदन या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्संबंधी कोई संस्कार 3. जन्मदिन का उत्सव 4. कोई सामान्य उत्सव जब समृद्धि की मंगलकामनाएँ तथा बधाइयों की अभिव्यक्ति की जाती है।

वर्धित (भू० क० कृ०) [वृध्+णिच्+क्त] 1. विकसित बढ़ा हुआ 2. विस्तृत किया हुआ, विशाल बनाया हुआ।

वर्धिष्णु (वि०) [वृध्+इष्णुच्] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला, फलने फूलने वाला।

वर्म्मन् [वृध्+रन्] 1. चमड़े का तस्मा या पट्टी 2. चमड़ा 3. सीसा।

वर्मिका, वर्मी [वर्म+ङीष्, वर्मी+कन्+टाप्, ह्रस्व] चमड़े का तस्मा या पट्टी।

वर्मन् (नपुं०) [आवृणोति अंगम्-वृ+मनिन्] 1. कवच, जिरहबख्तर स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति सज्जल-नलिनीदलजालम्—गीत० ४, रघु० ४।५६, मुद्रा० २।८ 2. छाल, वल्कल, पुं० क्षत्रियों के नामों के साथ लगने वाला एक प्रत्यय· यथा चंडवर्मन्, प्रहारवर्मन् तु० दास। सम०—हर (वि०) 1. कवचधारी 2. इतना बड़ा जो कवच धारण कर सके (अर्थात् युद्ध में भाग लेने के योग्य)—सभ्यविनीतमथ वर्महरं कुमारम्—रघु० ८।९४।

वर्मरः (पुं०) नारङ्गी का पेड़।

वर्मिः (पुं०) मत्स्य विशेष, वामी मछली।

वर्मित (वि०) [वर्मन्+इतच्] जिरहबख्तर पहने हुए, कवच से सुसज्जित।

वर्य (वि०) [वृ+यत्] 1. चुने जाने या छांटे जाने के योग्य पात्र 2. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान (बहुधा समास के अन्त में) अन्वीतः स कतिपयैः किरातवर्यैः- कि० १२।५४,—र्यः कामदेव—र्या 1. वह कन्या जो स्वयं अपना पति वरण करे 2. कन्या।

वर्वट दे० 'बर्बट'।

वर्वणा दे० 'बर्बणा'।

वर्वरः (वि०) [वृ+अरच्, वुट् च] 1. हकलाने वाला 2. बल खाता हुआ, रः 1. बर्बर देश का वासी 2. बुद्ध, प्रलापी मूर्ख 3. जातिच्युत 4. घुंघराले बाल 5. हथियारों की झनकार 6. नृत्य की एक भावमुद्रा —रा,—री 1. एक प्रकार की मक्खी 2. वनतुलसी —रम् 1. पीला चन्दन 2. सिन्दूर 3. लोबान।

वर्वरकम् [वर्वर+कन्] एक प्रकार का चन्दन की लकड़ी।

वर्वरीकः [वृ+ईकन्, द्वेर्क अभ्यासस्य] 1. घुंघराले बाल 2. एक प्रकार की तुलसी 3. एक झाड़ी विशेष।

वर्षु (पुं०) रः [वृ+वुरच् पक्षे वुरच्] एक वृक्ष विशेष, बबूल, कीकर।

वर्षः,-र्षम् [वृष् भावे घञ्, कर्तरि अच् वा] 1. वर्षा, बारिश, वृष्टि की बौछार विद्युत्तानिततर्षुकः—मनु० ४।१०३ मेघ० ३५ 2. छिड़कना, उत्सरण, फेंकना, बौछार सुरभि सुरदिमुक्तम् पुष्पवर्षं पपात रघु० १२।१०२, इसी प्रकार शरवर्षः, शिलावर्षः, तथा लाजवर्षः आदि 3. दीर्घपात ४. वर्ष, साल (प्रायः नपुं०) इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रमस्यस्तपो वत्समासियारम्—रघु० १३।६७, न वर्षं वर्षाणि द्वादश दक्षशतापक्षः—दश०, वर्षभोग्येण शापेन—मेघ० १ 5. सृष्टि का प्रभाग, महाद्वीप (इस प्रकार के प्रायः नौ महाद्वीप गिनाये गये हैं· 1. कुरु 2. हिरण्मय 3. रम्यक 4. इलावृत 5. हरि 6. केतुमाला 7. भद्राश्व 8. किंपुरुष और 9. भारत) एतद्गुह्यगुह्यं भारतस्यास्य वर्षस्य मम वर्तते वर्षे—शि० १४।५ 6. भारतवर्ष, हिन्दुस्तान 7. बादल (हेमचन्द्र के अनुसार केवल पुं०)। सम०—अंशः,—अंशकः,—अंगः महीना, मास,—अंबु (नपुं०) बारिश का पानी,—अयुतम् दस हजार वर्ष —आत्मन् (पुं०) मंगलग्रह,—अवसानम् शरद् ऋतु, —अधीशः मेंढक,—आमदः मोर,—उपलः ओला,—करः बादल (—रौ) झींगुर,—कोशाः,—वः 1. मास, महीना 2. ज्योतिषी,—गिरिः,—पर्वतः 'वर्ष-पहाड़' अर्थात् वह पर्वतशृंखला जो सृष्टि के भिन्न भिन्न प्रभागों को एक दूसरे से पृथक् करती है,—ज (वि०) ('वर्षेज' भी) बरसात में उत्पन्न,—धरः 1. बादल 2. हिजड़ा अन्तःपुर का रक्षक, खोजा—मालवि० ४, (इसी अर्थ में वर्षधर शब्द भी है),—पूगः वर्षों का समुच्चय, —प्रतिबन्धः सूखा, अनावृष्टि,—प्रियः चातक पक्षी, वरः हिजड़ा, अन्तःपुर का रक्षक, खोजा,—वृद्धिः (स्त्री०) जन्मदिन,—शतम् शताब्दी, सौ वर्ष,—सहस्रम् एक हजार वर्ष।

वर्षक (वि०) [वृध्+ण्वुल्] बरसने वाला।

वर्षणम् [वृष्+ल्युट्] 1. वृष्टि, वर्षा 2. छिड़कना, बौछार, (आलं० से भी) द्रव्यवर्षणम्, 'धन की बौछार या धन बखेरना'।

वर्षणिः (स्त्री०) [वृष्+अनिः] 1. वृष्टि 2. यज्ञ, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य 3. क्रिया, कर्म 4. टिकना, रहना, डटे रहना, वर्तन।

वर्षा [वृष्+अच्+टाप्] (प्रायः स्त्री०, ब० व०) 1. बरसात, वर्षाऋतु, वर्षावायु ग्रीष्मे पंचाग्निमध्यस्थो वर्षासु स्थण्डिलेशयः—याज्ञ० ३।५२, भट्टि० ७।१ 2. बारिश, वृष्टि (इस अर्थ में एक वचन)। सम० —कालः बरसात, वर्षाऋतु, इसी प्रकार 'वर्षासमयः', —कालीन (वि०) वर्षा से उत्पन्न या संबंध रखने वाला—भू (पुं०) 1. मेंढक 2. एक कृषि विशेष, इन्द्रगोप,—भूः, स्त्री (स्त्री०) मेंढकी या छोटा मेंढक,—रात्रः 1. बरसात की रात 2. बरसात।

वार्षिक (वि०) [वर्ष+ठिणक्] बरसने वाला, बौछार करने वाला,—कम् अगर की लकड़ी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्षितम् [वृष्+क्त] वृष्टि, वर्षा।

वर्षिष्ठ (वि०) [अतिशयेन वृद्धः, वृद्ध+इष्ठन्, वर्षादेशः] वृद्ध की उ० अ०] 1. अत्यंत बूढ़ा, बहुत बड़ा 2. अत्यंत बलवान् 3. विशालतम, अत्यंत विस्तृत।

वर्षीयस् (वि०) स्त्री०—सी) [अमनयोरतिशयेन वृद्धः वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादेशः, वृद्ध की म० अ०] 1. अपेक्षाकृत बड़ा, बहुत बूढ़ा 2. अपेक्षाकृत बलवान्।

वर्षुक (वि०) (स्त्री०—की) [वृष्+उकञ्] बरसने वाला, जलमय, पानी डालने वाला —वर्षुकस्य किमवः कृतोऽतेरंबुदस्य परिहार्यमूषरम् शि० १४।४६, भट्टि० २।३७। सम० अम्भः, —अंबुकः बारिश करने वाला बादल।

वर्ष्मन् [वृष्+मनिन्] शरीर, दे० नी०।

वर्ष्मन् [वृष्+मनिन्] 1. शरीर, देह 2. माप, ऊँचाई —वर्ष्म द्विपानां विरुवंत उच्चकैर्वनेचरेभ्यश्चिरमाचचक्षिरे—शि० १२।६४, रघु० ४।७६ 3. सुन्दर या मनोहर रूप।

वर्ह्, वर्ह, वर्हण, वर्हिण, } दे० वर्ह्, वर्ह, वर्हण, बर्हिण,
वर्हिन्, वर्हिस् } बर्हिन्, वर्हिस्।

वल् (स्वा० आ० वलते—परन्तु कभी कभी 'वलति' भी, वलित) 1. जाना, पहुंचना, जल्दी करना, अन्योऽन्यं शरवृष्टिरेव वलते महावी० ६।४१, प्रणयिनं परिरब्धुमथांगनां ववलिरे वलिरेचितमध्यमाः - शि० ६।३१, ६।११, १९।४२, त्वदभिसरणरभसेन वलंती पतति पदानि कियंति चलंति—गीत० ६ 2. हिलना-जुलना, मुड़ना, घूम जाना। —वैलितकंधर - मा० १।२९ 3. मुड़ना आक्रुष्ट होना, अनुरक्त होना हृदयमदयं तस्मिन्नेव पुनर्वलते बलात् —गीत० ७, नलो० ३।५ 4. बढ़ाना बलभुपुरनिस्वना - सा० द० ११६, आनन्द कन्दर्पज्वरजनितचिन्ताकुलतया वलद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी—गीत० १ 5. उकना, घेरना 6. ढका जाना, घेरा जाना या घिर जाना, वि —, इधर-उधर सरकना, इधर-उधर लुढ़कना स्विद्यति कूणति वेल्लति विवलति निमिषति विलोकयति तिर्यक् —काव्य० १०, सन्, —, 1. मिलाना, गढ़वद्ध करना 2. संबद्ध करना, जोड़ना (बहुधा क्तान्त रूप - दे० संवलित)।

वल, दे० बल।

वलक्ष, दे० बलक्ष।

वलग्नः, —ग्नम् [अवलग्न इत्यत्र भागुरिमते अकारलोपः] कमर।

वलनम् [वल् भावे ल्युट्] 1. सरकना, मुड़ना 2. वर्तुलाकार घूमना 3. (ज्यो० में) ग्रह की वक्रगति।

वलभिः, —भी [वल्यते आच्छाद्यते वल्+अभि वा ङीप्] ('वलभि', —भी' का प्रयोग भी अनेक बार होता है)

1. बलवां छत, लकड़ी का बना छप्पर का ढांचा —धूपेजलिविनिःसृतैर्बलभयः संदिग्धपारावतः—विक्रम० ३।२, मालवि० २।१३ 2. (घर का) सबसे ऊँचा भाग, दृष्ट्वा दृष्ट्वा भवनवलभीतुंगवातायनस्था —मा० १।१५, मेघ० ३८, शि० ३।५३ 3. सौराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत एक नगर का नाम—अस्ति सौराष्ट्रेषु वलभी नाम नगरी—दश०, मट्टि० २२।३५।

वलंब [अवलंब इत्यत्र भागुरिमते अकारलोपः] दे० 'अवलंब'।

वलयः, -[वल्+अयन्] कंकण, बाजूबंद— विहितविशद बिसकिसलयवलया जीवति परमिह तव रचिनिरूपा —गीत० ६, भट्टि ३।२२, मेघ० २, ६०, रघु० १३। २१, ४३ 2. छल्ला, कुंडल शि० १।३३, ७।११ 3. विवाहित स्त्री की कलाई 4. वृत्त, परिधि (प्रायः समास के अन्त में) आतंभ्रवलयः दश० वेलावप्रवलयाम् (उर्वीम्)—रघु० १।३०, दिग्वलय—शि० ९।८ 5. बाड़ा, निकुंज—यथा 'लतावलयमंडप' में, —यः 1. दाद, झाड़वन्दी 2. गलगण्ड रोग (वलयी कृ कंकण बनाना, वलयी भू कलाई या कंकण का काम देना)।

वलयित (वि) [वलय+इतच्] घिरा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ।

वलाक दे० 'बलाक'।

वलाकिन् दे० 'बलाकिन्'।

वलाहक दे० 'बलाहक'।

वलिः, ली (स्त्री०) (वलिः—ली भी लिखा जाता है) [वल्+इन्, एकं ङीष्] 1. (खाल पर) शिकन या झुर्री वलिभिर्मुखमाक्रान्तम् 2. पेट के ऊपरी भाग में चमड़े पर पड़ी शिकन, झुर्री, सिकुड़न, (विशेष कर स्त्रियों के यह एक सौन्दर्य का चिह्न समझा जाता है) मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या वलित्रयं चारु बभार बाला - कु० १।३९ 3. छप्पर की छत की बंदेरी। सम० भृत् (वि०) घुंघर वाला, घुंघराले बालों वाला —कुसुमोल्लसितान् वलीभृतश्चलयत् भृंगरुचस्तवालकान् रघु० ८।५३,—मुखः,—वदनः बंदर, मा० ९।३१।

वलिकः, कम् [वलि+कन्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती।

वलित (भू० क० कृ०) [वल्+क्त] 1. गतिशील 2. हिला-जुला, घूमा हुआ, मुड़ा हुआ 3. घिरा हुआ, लिपटा हुआ 4. झुर्रीदार - किं० ११।४।

वलिन्, वलिभ (वि०) [वलि+न (भ) वा] झुर्रीदार, सिकुड़नदार, झुर्रियों के रूप में आकुंचित, जिसमें झुर्रियां पड़ी हुई हों, पिलपिला—शि० ६।१३।

वलिमत् (वि) [वलि+मतुप्] झुर्रीदार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्गि (वि) [वल्ग्+किरच्] भैंगी आँख वाला, ऐंचाताना, कनखी से देखने वाला।

वल्गिसम्,—शी [वल्गि+शो+क, वल्गि+कीष्] मछली पकड़ने का काँटा।

वल्गीकम् [वल्ग्+कीकन्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती—हि० ३।५३।

वल्गूकः [वल्ग्+ऊकः] एक पद्मादिशेष,—कम् कमल की जड़, बिस।

वल्गुल (वि०) [वल्ग्+लच्, ऊक्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली।

वाल्ग् (चुरा० उभ० वल्गयति-ते) बोलना।

वल्कः,—कम् [वल्+क, कस्य नेरवम्] 1. वृक्ष की छाल—स वल्कवासांसि तवानुना हरन् करोति मन्युं न कथं धनंजयः—कि० १।३५, रघु० ८।११, भट्टि० १०।१ 2. मछली की खाल की परत या पपड़ी 3. भाग, खण्ड। सम०—तरुः वृक्षदीशेष,—लोध्रः लोध्र वृक्ष का एक भेद।

वल्कलः,—लम् [वल्+कलच्, कस्य नेरवम्] 1. वृक्ष की छाल 2. वल्कल से बनाई गई पोशाक, छाल से बने वस्त्र—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० १।२०, १९, रघु० १२।८, कु० ५।८, हैमवल्कलाः—६।६, 'सुनहरी छालवस्त्र धारी' (तु० चीरपरिग्रहाः कु० ६।९२)। सम० संवीत (वि०) छालवस्त्रधारी।

वल्कवम् (वि०) [वल्क+मतुप्] मछली (जिसके शरीर पर पपड़ी हो)।

वल्किलः [वल्क्+इलच्] काँटा।

वल्कुटम् (नपुं०) छाल, वल्कल।

वल्ग् (भ्वा० उभ० वल्गति ते, वल्गित) हिलना-डुलना, जाना, इधर उधर घूमना, fig० १२।२० 2. कूदना, उछलना, चौकड़ी भरना, छलांग भर कर चलना, सरपट दौड़ना (आलं० से भी)—पंच० १।६२. 3. नाचना—भट्टि० ३।१२५, शि० १८।५३ 4. प्रसन्न होना—भट्टि० १३।२८ 5. खाना, fig० १४।२९ 6. अकड़ कर चलना, डींग मारना—माघ० १।७२।

वल्गनम् [वल्ग्+ल्युट्] उछलना, कूदना, सरपट दौड़ना। रघु० ९।५१।

वल्गा [वल्ग्+अच्+टाप्] लगाम, रास—आत्मानं गृह्यते हस्ती बाजी वल्गासु गृह्यते—मृच्छ० १।५०।

वल्गित (भू० क० कृ०) [वल्ग्+क्त] 1. कूदा हुआ, छलांग लगाई हुई, उछला हुआ 2. गतिशील किया गया, नचाया गया—काव्या० २।७३, -तम् 1. सरपट दौड़, घोड़े की एक प्रकार की दौड़ 2. अकड़ कर चलना, शेखी बघारना, डींग मारना -निमित्तादपराद्धेपोर्धनुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२७।

वल्गु (वि०) [वल्ग् संवरणे उ गुक् च] 1. प्रिय, सुन्दर, मनोहर, आकर्षक - रघु० ५।६८, शि० ५।२९, कि० १८।११ 2. मधुर—माघ० २।१३६ 3. मूल्यवान्, —ग्वः ककरा। सम०—पत्रः एक प्रकार की जंगली दाल।

वल्गुकः [वल्गु+कन्] मनोहर, प्रिय, सुन्दर—कम् 1. चन्दन 2. मूल्य 3. लकड़ी।

वल्गुलः [वल्ग्+उलच्] गीदड़।

वल्गुलिका [वल्गुल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. तैलबीर 2. पेटी, डब्बा।

वल्भ् (भ्वा० आ०) खाना, निगलना।

वल्मिकः,—वाल्मिकि (पुं०, नपुं०) दे० 'वाल्मीक'।

वल्मी [वल्+अच्, मुम्, ङि० ङीष्] चिऊँटी। सम० कूटम् बामी, दीमकों द्वारा बनाया मिट्टी का टीला।

वल्मीकः,—कम् [वल्+ईक, मुट् च] बामी, दीमकों से बनाया गया मिट्टी का टीला,—घर्मे शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिकाः सुभा०, मेघ० १५, श० ७।११,—कः 1. शरीर के कुछ भागों का सूज जाना, हाथी पाँव 2. वाल्मीकि कवि। सम०—शीर्षं एक प्रकार का सुरमा (जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है)।

वल्य (स्त्री०) ल् (चुरा० पर० वल्यूलयति) 1. काट डालना 2. निर्मल करना।

वल्ल् (भ्वा० आ० वल्लते) 1. ढकना 2. ढका जाना 3. जाना, हिलना-डुलना।

वल्लः [वल्ल्+अच्] 1. चादर 2. सौ गुंजाओं के बराबर भार (वजन) 3. दूसरा वाट जो डेढ़ या दो गुंजा के बराबर होता है (आयु० में) 4. प्रतिषेध।

वल्लकी [वल्ल्+क्वुन्+ङीप्] वीणा—अजस्रमास्फालितवल्लकीगुणक्षतांङ्गुलग्रन्थिगुणच्छलाद्रुधिरप्लवा इव—शि० १।९, ४।५७, ऋतु० १।८, रघु० ८।४१, १९।१३।

वल्लभ (वि०) [वल्ल्+अभच्] 1. प्यारा, अभिलषित, प्रिय 2. सर्वोपरि,—भः 1. प्रेमी, पति—माघ० ३।८, शि० ११।३३ 2. कृपापात्र,—पंच० १।५३ 3. अधीक्षक, अध्यवेक्षक 4. मूल्य गोप 5. उत्तम घोड़ा (शुभ लक्षणों से युक्त)। सम०—आचार्यः वैष्णव संप्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक का नाम,—पाल्कः साईस।

वल्लभायितम् [वल्लभ+क्यङ+क्त] सुरतानन्द का आसन विशेष, रतिबंध, तु० 'पुरुषायित'।

वल्लम् [वल्ल्+अरन्] 1. अगर की लकड़ी 2. निकुंज 3. झरोखा।

वल्लरी,—री (स्त्री०) [वल्ल्+अरि या ङीष्] 1. बेल, लता—अनपायिनि संश्रयद्रुमे पतनाय वल्लरी—कु० ४।३१, तमोवल्लरी—माघ० ५।६ 2. मंजरी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लवः (स्त्री०-वी) [वल्ल+वा+क] दे० 'वल्लव'। शि० १२।३९।

वल्लिः (स्त्री०) [वल्ल्+इन्] 1. लता, बेल—भूतेशस्य भुजंगवल्लिवलयस्फुरणोद्गता जटाः—मा० १।२ 2. पृथ्वी। सम०—दूर्वा एक प्रकार का घास।

वल्ली (स्त्री०) [वल्लि+ङीष्] बेल, घुमावदार पौधा, लता। सम०—अम्ल भिर्ब,—वृक्षः साल का वृक्ष।

वल्लुरम् [वल्ल्+उरन्] 1. निकुञ्ज, पर्णशाला 2. वनस्थली, झुरमुट 3. मंजरी 4. अनजुता खेत 5. रेतिस्तान, जंगल, उजाड़ 6. सूखा मांस।

वल्लूरम् [वल्ल्+ऊरन्] 1. सूखा मांस 2. (जंगली) सूअर का मांस,—रम् 1. झुरमुट 2. उजाड़, बीरान 3. अनजुता खेत।

वल्ह् i (भ्वा० आ० वल्हते) 1. प्रमुख होना, सर्वोत्तम होना 2. ढकना 3. मार डालना, चोट पहुंचाना 4. बोलना 5. देना।

ii (चुरा० उभ० वल्हयति-ते) 1. बोलना 2. चमकना।

वल्हिक, वल्हीक दे० बल्हिक, बल्हीक।

वश् (अदा० पर० वष्टि, उशित) 1. चाहना, इच्छा करना, लालसा करना निःस्वो वष्टि शतं शती दशशतम्—शान्ति० २।६, अमी हि वीर्यप्रभवं भवस्य जयाय सेनान्यमुशन्ति देवाः—कु० ३।१५, शि० ७।२० 2. अनुग्रह करना 3. चमकना।

वश (वि०) [वश् कर्तरि अच् भावे अप् वा] 1. अधीन, प्रभावित, प्रभावगत, नियन्त्रणगत (प्रायः समास में) लोकवशः, मृत्युवशः आदि 2. आज्ञाकारी, विनीत, अनुवर्ती 3. वितन्त्र, वशीकृत 4. मुग्ध, आकृष्ट 5. जादू द्वारा वश में किया हुआ,—शः,—शम् 1. अभिलाषा, चाह, इच्छा 2. शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण, स्वामित्व, अधिकार, अधीनता, दीनता, स्ववशः 'अपने अधीन' स्वतन्त्र, परवशः 'दूसरों के प्रभाव में'—अनयत् प्रभुशक्तिसम्पदा वशमेको नृपतीनतन्द्रितान्—रघु० ८।१९, वशं नी,- आनी अधीन करना, वश में करना जीत लेना, वशं गम्,—इ,—या, अधीन होना, मार्ग से हट जाना, दब जाना, विनीत होना न शुचो वशं वशिनामुत्तम गन्तुमर्हसि—रघु० ८।१०, वशे कृ या वशीकृ वश में करना, हावी होना, जीत लेना, मुग्ध करना, जादू से वश में करना, वशात् (अपा०) क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'शक्ति के द्वारा' 'प्रभाव के द्वारा' 'के कारण' 'प्रयोजन से' अर्थ प्रकट करता है, दैववशात्, वायुवशात्, कार्यवशात् आदि 3. पालतू, रहने वाला 4. जन्म,—शः वेश्याओं का वासस्थान, चकला। सम०—अनुज,—वर्तिन् (इसी प्रकार 'वशगत') (वि०) आज्ञाकारी, दूसरे की इच्छा का वशवर्ती, विनीत, अधीन (पुं०) सेवक, —आख्यकः सूंस, —क्रिया जीतना, अधीन करना—ग (वि०) अधीन, आज्ञाकारी—भर्तृ० २।९४ (—गा) आज्ञाकारिणी पत्नी।

वशंवद (वि०) [वश+वद्+खच्, मुम्] आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, अधीन, प्रभावित (शः० तथा आल०) कोऽस्य कि नु करभोरु वशंवदाऽभूः मालवि० ३।९, २।१३६, १५७, मै० १।३३, सा दर्शं गुरुहर्षवशंवदं ननन्दनंगनिवासम् गीत० ११।

वशका [वश+कै+क+टाप्] आज्ञाकारिणी पत्नी।

वशा [वश्+अच्+टाप्] 1. स्त्री, अबला 2. पत्नी 3. पुत्री 4. ननद 5. गाय 6. बांझ स्त्री 7. बंध्या गाय 8. हथिनी स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं वशा—विक्रम० ४।२५।

वशिः [वश्+इन्] 1. अधीनता 2. सम्मोहन, मन्त्रमुग्धता (नपुं०) वशक्ता।

वशिक (वि०) [वश+ठन्] शून्य, रहित,—का अदरक की लकड़ी।

वशिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [वशः अस्त्यस्य इनि] 1. शक्तिशाली 2. नियन्त्रण में, वशीभूत, अधीन, विनीत 3. जिसने अपनी विषयवासनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है, जितेन्द्रिय (संज्ञा शब्द की भांति भी प्रयुक्त)—रघु० २।७०, ८।९०, १९।१, शि० ५।२८।

वशिनी [वशिन्+ङीप्] शमीवृक्ष, जैंडी का पेड़।

वशिरः [वश्+किरच्] एक प्रकार की मिर्च,—रम् समुद्रीनमक।

वशिष्ट दे० 'वसिष्ठ'।

वश्य (वि०) [वश्+यत्] 1. वश में होने के योग्य, नियन्त्रणीय, शासित होने के योग्य—आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति—भग० २।६४ 2. वशीभूत, विजित, सधा हुआ, विनीत—भग० ६।३६ 3. प्रभाव या नियन्त्रण में, अधीन, आश्रित, आज्ञाकारी—तस्य पुत्रो मदेद्वश्यः समृद्धो धार्मिकः सुधीः—हि० प्र० १८, (प्रायः समास में) (मनः) हृदि व्यवस्थाप्य समाधिवश्यम्—कु० ३।५७,—श्यः सेवक, आश्रित,—श्या विनम्रा या आज्ञाकारिणी पत्नी—यं ब्रह्मागमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते उत्तर० १।२ (जिसका भाषा पर पूरा आधिपत्य है),—श्यम् लौंग।

वश्यका [वश्य+कन्+टाप्] दे० 'वश्या'।

वश् (भ्वा० पर० वशति) क्षति पहुँचाना, चोट मारना, वध करना।

वषट् (अव्य०) [वह्+षुक्+डषटि] किसी देवता को आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द (देवता के लिए संप्र० के साथ) इन्द्राय वषट्, पूषणे वषट्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि। सम०—कर्तृ (पुं०) पुरोहित जो 'वषट्' का उच्चारण करके आहुति देता है, -कार: 'वषट्' शब्द का उच्चारण करना।

वष्क् (भ्वा० आ० वष्कते) जाना, हिलना-जुलना।

वष्कयः [वष्क+अयन्] एक वर्ष का बछड़ा।

वष्कयणी, वष्कयिणी (स्त्री०) [वष्कय+नी+विवप्+ङीष्, णत्वम्, वष्कय+इनि+ङीष्, णत्वम्] वह गाय जिसके बछड़े बहुत बड़े हो गये हैं, चिर प्रसूता, बहुत दिनों की ब्यायी हुई।

वस् i (भ्वा० पर० वसति—कभी कभी—वसते, उषित) 1. रहना, बसना, निवास करना, ठहरना, डटे रहना, वास करना (प्राय: अधि० के साथ, परन्तु कभी कभी कर्म० के साथ)—वीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत० ५ 2. होना, विद्यमान होना, मौजूद होना,—वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि कि० ८।३७, प्रत्याकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति, मूर्ति: श्रीर्ह्रीर्धृति: कीर्तिर्देक्षे वसति तालसे—सुधा० 3. वेग से चलना, (समय) बिताना (कर्म० के साथ), प्रेर० बसाना, आवास देना, आबाद करना—इच्छा० (विवत्सति) रहने की इच्छा करना; अधि-, (कर्म० के साथ) 1. रहना, बसना, निवास करना, बस जाना यानि प्रियासहस्रदयितैरभिरम्यवासम् उत्तर० ३।८, बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्यवास—रघु० ५।६३, ११।६१, शि० ३।५९, मेघ० २५, भट्टि० १।३ 2. उतरना, या अड्डे पर बैठना अनु-, (कर्म० के साथ) निवास करना, आ-, (कर्म० के साथ) निवास करना, बसना —रविमावसते सती क्रियार्थं विकम० ३।७, मनु० ७।६९ 2. कार्यवाही प्रारम्भ करना—मनु० ३।२ 3. व्यय करना, (समय) बिताना उप-, 1. रहना, ठहरना (इस अर्थ में कर्म० के साथ) 2. उपवास रखना, अनशन करना—मनु० २।२२०, ५।२०, (आलं० से भी) उपोषितास्याभिव नेत्राभ्यां पिबन्ती—दश०, नि-, 1. रहना, निवास करना, ठहरना—अहो निवत्स्यति सभे हरिणाङ्कनाभि:—श० १।२७, निवसिष्यसि मय्येव—भग० १२।८ 2. भीतर होना, विद्यमान होना,—पंच० १।३१ 3. अधिकार करना, बसना, अधिकार में लेना, निस्-, रह चुकना, अर्थात् (किसी विशेष काल) की समाप्ति तक जाना, प्रेर०—निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, देश निकाला देना,—रघु० १४।६७, परि-, 1. निवास करना, ठहरना 2. रात बिताना—क्त पर्युषित, प्र-, 1. रहना, निवास करना 2. विदेश जाना, यात्रा करना, घर से बाहर जाना, देशाटन करना—विधाय वृत्तिं भार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नर:—मनु० ९।७४, रघु० ११।४, (प्रेर०) देशनिकाला देना, निर्वासित करना प्रति-, निकट रहना, पास में होना, वि-, परदेश में रहना (प्रेर०) देश निकाला देना, निर्वासित करना—भट्टि० ४।३५, विप्र-, देशाटन करना, घर से बाहर जाना—रघु० १२।११, सम्-, 1. रहना, निवास करना 2. साथ रहना, साहचर्य करना—मनु० ४।७९, याज्ञ० ३।१५।

ii (अदा० आ० वस्ते) पहनना, धारण करना—वसते परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, शि० ९।७५, रघु० १२।८, कु० ३।५४, ७।९, भट्टि० ४।१०, प्रेर० (वासयति—ते) पहनवाना, सि-, सुसज्जित करना —भट्टि० १५।७, वि-, धारण करना, पहनना—भट्टि० ३।२०।

iii (दिवा० पर० वस्यति) 1. सीधा होना 2. दृढ़ होना 3. स्थिर करना।

iv (चुरा० उभ० वासयति—ते) 1. काटना, छाँटना, काट डालना 2. रहना 3. लेना, स्वीकार करना 4. चोट पहुँचाना, हत्या करना।

v (चुरा० उभ० वसयति—ते) सुगन्धित करना, सुवासित करना।

वसति:,—ती (स्त्री०) [वस्+अति वा ङीप्] 1. रहना, निवास करना, टिके रहना आश्रमेषु वसतिं चक्रे —मेघ० १, 'अपना निवास स्थिर किया'—श० ५।१ 2. घर, आवास, निवास, वासस्थान—हर्षो हर्षो हृदय-वसति: पञ्चबाणस्तु बाण:—प्रसन्न० १।२२, श० २।१४ 3. आधार, आशय, पात्र (आलं०) कु० ६।३७, इसी प्रकार 'दिनयवसति:' 'धर्मैकवसति:' 4. शिविर, पड़ाव 5. ठहरने और आराम करने का समय—अर्थात् रात्रि, तस्य मार्गवशादेका बभूव वसतिर्यत:—रघु० १५।११, (वसति:=रात्रि:, मल्लि०) 'उसने रात को विश्राम किया', तिस्रो वसतीरुषित्वा—७।३३, ११।३३।

वसनम् [वस्+ल्युट्] 1. रहना, निवास करना, ठहरना 2. घर, निवास स्थान 3. प्रभावित करना, वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना 4. वस्त्र, कपड़ा, परिधान, कपड़े वसने परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, उत्सर्गे वा मलिनवसने सौम्य निक्षिप्य वीणाम् मेघ० ८६, ४१ 5. करधनी, तगड़ी।

वसंत: [वस्+अन्च्] 1. वसंत ऋतु, बहार का मौसम (चैत्र और वैशाख यह दो मास वसंत ऋतु के होते हैं) मधुमाधवौ वसंत:—सुधा०, सर्वे प्रिये चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, विहरति हरिरिह सरसवसंते—गीत० १ 2. मूर्त या मानवीकृत वसंत जो काम-देव का साथी माना जाता है—सुहृद: पर: वसंत किं स्थितम्—कु० ४।२७ 3. पेचिस 4. चेचक, शीतला। सम०—उत्सव: वसन्तोत्सव, वसन्त ऋतु की रंगरेलियां (यह आनंदमंगल पहले चैत्र की प्रतिभा को होली—उत्सव के अवसर पर मनाये जाते हैं),

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—कालः वसन्त की लहर, वसन्त ऋतु,—घोषिन् (पुं०) कोयल, आ 1. वासन्ती या माधवी लता 2. वासन्ती चहल-पहल, दे० वसन्तोत्सव,- तिलकः -कम् वसन्त ऋतु का अलंकार—कुल्लं वसन्ततिलकं तिलकं वनाल्याः छंद० ५, (कः का, कम्) एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १, दूतः 1. कोयल 2. चैत्र का महीना 3. हिंदोल राग 4. आम का वृक्ष, दूती शृंगवल्ली का फूल,—द्रुः,—द्रुमः आम का वृक्ष, पंचमी माघ शुक्ला पंचमी, बंधुः सखः कामदेव के विशेषण।

वसा [वस्+अच्+टाप्] 1 मेद, चरबी, मज्जा, पशुमज्जा, पशुओं के गुर्दे की चर्बी—मुद्रा० ३।२८, रघु० १५।१५ 2. कोई तेल या चर्बीवाला स्राव 3. मस्तिष्क। सम० - आढ्यकः- आढ्यकः सूंस, छटा भेजा—पायिन् (पुं०) कुत्ता।

वसिः [वस्+इन्] 1. काड़े 2. निवास, आवास।

वसित (भू० क० कृ०) [वस्+णिच्+क्त] 1. पहना हुआ, धारण किया हुआ 2. निवास 3. (अनाज आदि) संगृहीत।

वसिरम् [वस्+किरच्] समुद्री नमक।

वसिष्ठः ('वशिष्ठ' भी लिखा जाता है) 1. एक विख्यात मुनि का नाम, सूर्यवंशी राजाओं का कुल पुरोहित, कई वैदिक सूक्तों के ऋषि, विशेष कर ऋग्वेद के सातवें मंडल के; ब्राह्मणोचित प्रतिष्ठा तथा शक्ति के आदर्श प्रतिनिधि, विश्वामित्र ने उनकी समानता करने का बहुत प्रयत्न किया, और इसी कारण तत्संबन्धी अनेक उपाख्यान प्रचलित हो गये—तु० विश्वामित्र 2. स्मृति के प्रणेता का नाम (कभी-कभी ऋषि के नाम पर ही इसका नाम 'वसिष्ठ स्मृति' लिया जाता है)।

वसु (नपुं०) [वस्+उन्] 1. दौलत, धन स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुत्सुका वसूनि वसुधयानस्य वसूनि मेदिनी—कि० १।१८, रघु० ८।३१, ९।६ 2. मणि, रत्न 3. सोना 4. पानी 5. वस्तु, द्रव्य 6. एक प्रकार का नमक 7. एक जड़ी-विशेष, वृद्धि (पुं०) 1. एक देव समूह (इस अर्थ में ब० व०) जो गिनती में आठ हैं—1. आप 2. ध्रुव 3. सोम 4. धर या धव 5. अनिल 6. अनल 7. प्रत्यूष और 8. प्रभास, कभी-कभी 'आप' के स्थान में 'अह' को गिनते हैं—धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः, प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः 2. आठ की संख्या 3. कुबेर 4. शिव 5. अग्नि 6. वृक्ष 7. सरोवर, तालाब 8. रास 9. जुवा बांधने की रस्सी १० बागडोर 11. प्रकाश की किरण—निरकाश यद्विमपेतवसुं विषदा-लयादपरदिग्गणिका—शि० ९।१०, शिथिलंवसुमगाधे मग्नमापत्सयोभी—कि० १।४६, (दोनों अवस्थाओं में 'वसु' शब्द का अर्थ धन दौलत भी है) 12. सूर्य—स्त्री० प्रकाश, किरण। सम०—आ (आ) कतारा 1. इन्द्र की नगरी अमरावती 2. कुबेर की नगरी अलका 3. एक नदी का नाम जो अलका या अमरावती से संबद्ध है, कीटः,- कृमिः भिक्षुक, दा पृथ्वी,—देवः कृष्ण के पिता और सूर के पुत्र का नाम एक वसुदेवंशी, भुः,- सुतः कृष्ण के विशेषण देवता,- देव्या धनिष्ठा नाम का नक्षत्र, धमिका स्फटिक,- धा 1. पृथ्वी वसुधेयमवेक्ष्यतां त्वया—रघु० ८।८३ 2. भूमि—कु० ८।४, °अधिपः राजा धरः पहाड़ विक्रम० १।७ °नगरम् वरुण की राजधानी —धारा, भारा कुबेर की राजधानी,—प्रभा अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, प्राणः अग्नि का विशेषण,—रेतस् (पुं०) अग्नि, श्रेष्ठम् 1 तपाया हुआ सोना 2. चाँदी,- श्रेणः कर्ण का नाम, स्थली कुबेर की नगरी का विशेषण।

वसु (सू) कः [वसु+कै+क] भाक का पौधा, —कम् 1. समुद्री नमक 2. शिलीभूत लवण।

वसुन्धरा [वसूनि धारयति—वसु+धृ+णिच्+खच् +टाप्, मुम्] पृथ्वी, नानारत्ना वसुन्धरा रघु० ४।७।

वसुमत् (वि०) [वसु+मतुप्] दौलतमंद, धनवान,—ती पृथ्वी—वसुमत्या हि नृपाः कलत्रिणः—रघु० ८।८२, शि० १।२५।

वसुलः [वसु+ला+क] सुर, देवता।

वसूरा [वस् ऊरच्+टाप्] वेश्या, रंडी गणिका।

वस्क् [भ्वा० आ० वस्कते] जाना, हिलना-जुलना।

वस्त्यय दे० 'वस्कय'।

वस्कयणी दे० 'वस्कयणी'।

वस्करादिका (स्त्री०) बिच्छू।

वस्त् (चुरा० उभ० वस्तयति-ते) 1. क्षति पहुंचाना, हत्या करना 2. मांगना, निवेदन करना, याचना करना 3. जाना, हिलना-जुलना।

वस्म् [वस्त्+अच्] आवासस्थान—स्तः बकरा दे० 'वस्त'।

वस्तकम् [वस्त+कै+क] कृत्रिम लवण।

वस्तिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+तिः] 1. निवास, आवास, टिकना 2. उदर, पेट का नाभि से नीचे का भाग 3. पेडू 4. मूत्राशय 5. पिचकारी, एनीमा। सम० मलजू मूत्र,—शिरस् (नपुं०) 1. एनीमा की नली, —शोधनम् (मूत्राशय साफ करने की) मूत्र बढ़ाने वाली दवा।

वस्तु (नपुं०) [वस्+तुन्] 1. वस्तुतः विद्यमान चीज, वास्तविक, वास्तविकता।—वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽज्ञानम् 2. चीज, पदार्थ, सामग्री, द्रव्य, सामला—अथवा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते कृतांतकः—रघु० ८।४५, कि वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम् ५।१८, ३।५, वस्तुनोऽप्येष्यनादरः—मा० द० २. धनदौलत, सम्पत्ति, वैभव 4. सत्, प्रकृति, नैसर्गिक या प्रधान गुण 5 सामान (जिससे कोई वस्तु बन सके), सामग्री, मूलपदार्थ (आलं० से भी) आकृतिप्रत्ययादेर्वस्तूनामनुत्वं वस्तुकं संभावयामि—मालवि० १ 6. (नाटक की) कथावस्तु, किसी काव्यकृति की विषयवस्तु, कालिदासप्रथितवस्तुना नवेनाभिज्ञानशकुंतलाख्येन नाटकेनोपस्थातव्यमस्माभिः—वि० १, अथवा सद्वस्तु पुरुषवहुमानात् विक्रम० १।२. अशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्—सा० द० ६, वेणी० १ 7. किसी वस्तु का नाप २. योजना, रूपरेखा। सम० - अभावः 1. वास्तविकता की कमी 2. सम्पत्ति की हानि, उत्थापनम् ओझाई या झाड़फूंक अथवा अभिचार के द्वारा (नाटकों में) किसी उपस्थान की रचना —सा० द० ४८०, उपमा, दण्डी के अनुसार उपमा का एक भेद, दण्डी द्वारा निरूपित लक्षण राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव, इव प्रतीयमानैकधर्मा वस्तूपमैव सा काव्या० २।१६, (यह एक ऐसी उपमा की बात है जहां साधारण धर्म का लोप हो गया है), - उपहित (वि०) उपयुक्त पदार्थ के साथ व्यवहृत, उपयुक्त सामग्री पर अर्पित रघु० ३।२९, - साम्यम् किसी विषय की केवल रूपरेखा या ढांचा (जिसे बाद में विकसित किया जा सके)।

वस्तुतस् (अव्य०) [वस्तु+तस्] 1. दरअसल, वास्तव में, सचमुच, वाकई २. अनिवार्यतः, यथार्थतः, तत्त्वतः 3. इसका स्वाभाविक फल यह है कि, सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह।

वस्त्यम् [वस्ति+यत्] घर, आवासस्थान, निवासस्थान शि० १३।६३।

वस्त्रम् [वस्+ष्ट्रन्] 1. पहिनावा, कपड़ा, कपड़े, पहनावा 2. वेशभूषा, पोशाक। सम० - अगारः,-रम्,-गृहम्, तम्बू,—अंचलः,—अंतः कपड़े की किनारी या वस्त्र की झालर,—कुट्टिमम् २. तम्बू 2. छतरी,—ग्रंथिः धोती या साड़ी की गांठ (जो नाभि के निकट कपड़े में लगाई जाती है), तु० नीवि,—निर्मोचकः धोबी, —परिधानम् कपड़े पहनना, वस्त्रधारण करना, —पुत्रिका गुड़िया, पुत्तलिका, - पूत (वि०) कपड़े में छाना हुआ—वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्—मनु० ६।४६, —भेदकः,— भेदिन् (पुं०) दर्जी, -योनिः कपड़े का उपादान (कपास आदि),— रंजनम् कुसुंभ।

वस्नम् [वस्+न] 1. भाड़ा, मजदूरी (इस अर्थ में पुं० भी) 2. निवासस्थान, आवासस्थान 3. दौलत, द्रव्य 4. वस्त्र, कपड़े 5. चमड़ा 6. मूल्य 7. मूल्य।

वस्त्रनम् [वस्+नन] करधनी, पटका या तागड़ी।

वस्नसा [वस्नं चर्म सीव्यति—सिव्+ड+टाप्] कथरा, स्लाय्।

वह् (चुरा० उभ० वंहयति-ते) उज्ज्वल करना, चमकाना, रोशनी करना।

वह् (भ्वा० उभ० वहति ते, ऊह, कर्म० उह्यते) 1. ले जाना, नेतृत्व करना, धारण करना, वहन करना, परिवहन करना, (प्रायः दो कर्म० के साथ)- अजां ग्रामं वहति, वहति विधिहुतं या हविः—श० १।१, न च हव्यं वहत्यग्निः—मनु० ४।२४० 2. होना, आगे चलाना, वहा कर ले जाना, धकेलना—जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्यपोद्वाहमनु राजधानीम्—रघु० १३।६१, निश्वासैः वहति यो गगनप्रतिष्ठाम् - श० ७।७, रघु० ११।२० 3. जाकर लाना, ले आना —वहति जलमियम् मुद्वा० १।४ 4. धारण करना, सहारा देना, थाम लेना, जीवित रहना न गर्भो वाजिधुरं वहति मुच्छ० ४।१७, ताते चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्थाश्चकाशे—वेणी० ३।५, 'अब मेरे पिता हरावल का नेतृत्व कर रहे हैं, वहति भुवनश्रेष्ठौ शेषः फणाफलकस्थिताम् - भर्तृ० २।३५, श० ७।१७, मेघ० १७ 5. उठाकर ले जाना, अपहरण करना—अद्रेः शृंगं वहति (पाठांतर—'हरति') पवनः किं रिवद्—मेघ० १४ 6. विवाह करना—वधूढा वारणराजहार्यया—कु० ५।७०, मनु० ३।३८ 7. रखना, अधिकार में करना, भारवहन करना - वहसि हि धनहार्यं पण्यभूतं शरीरम्—मृच्छ० १।३१, वहति विषधरान् पटीरजन्मा भामि० १।७४ 8. धारण करना, प्रदर्शित करना, दिखाना—ललाटीमुद्वाहं सकलस्य शशांकभूतेः—कि० ५।९२, ९।२ 9. मुंह ताकना, सेवा करना, देखभाल करना—मुग्धायां मे जनन्यां योगक्षेमं वहत्यम्—मालवि० ४, तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्—गीता० ९।२२ 10. भुगतना, टटोलना, अनुभव करना, भामि० १।२४, इसी प्रकार - दुःखं, हर्षं, शोकं तोषं आदि 11. (इस अर्थ में तथा निम्नांकित अर्थों में अकर्मक) धारण किया जाना, ले जाया जाना, चलते रहना, बहते चलीदर्दो वहतम्—मृच्छ० ६, उत्थाय पुनरवहत्—का०, पंच० १।४३, २९१ 12. (नदी आदि का) बहना—प्रत्यागूहमहानद्यः - महा०, परोपकाराय वहंति नद्यः—सुभा० 13. (हवा का) चलना, - मंदं वहति मारुतः - रामा०, वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय गीत० ५, प्रेर० (वाहयति - ते) 1. धारण कराना, भिजवाना, मँगवाना, ले जाया जाना 2. हाँकना, ठेलना, निर्देश देना 3. आर पार जाना, पारगमन करना - सबाहुतें राजपथः शिवाभिः रघु० १६।१२, भवान् वाहयदध्वशेषम्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघ० ३८ 4. उपयोग करना, ले जाना--भट्टि० १४।२३, इच्छा० (विवक्षति--ते) ले जाने की इच्छा करना, **अति** --, गुजारना, (समय) बिताना, मुख्य रूप से प्रेर०, भा० ६।१३, रघु० ९।७०, **अप**--, 1. हाँक कर दूर भगा देना, हटाना, दूर ले जाना रघु० १३। २२, १६।६ 2. छोड़ना, त्यागना, तिलांजलि देना रघु० ११।२५ 3. घटाना, व्यवकलन करना, **आ**--, 1. पूरी तरह समझा देना 2. जन्म देना, पैदा करना **प्रवृत्त** होना या झुकना --द्वीडभावहृति मे स संप्रति रघु० ११।७३, शि० ३।४ 3. वहन करना, कब्जे में करना, रखना चौर० १८ 4. पहना 5. प्रयोग करना, उपयोग करना (प्रेर०) (देवता का) आवाहन करना, **उद्** --, 1. विवाह करना पाणिर्बाभुदवह-दबूदहः रघु० ११।५८, गतु० ३।८, भट्टि० २।४८ 2. ऊपर उठाना, उन्नत होना 3. संभालना, जीवित रखना, ऊँचे उठाना, सहारा देना--रघु० १६।६० 4. भुगतना, अनुभव करना 5. अधिकार में करना, रखना, पहनना, धारण करना, कु० ११९, विक्रम० ४।४२ 6. समाप्त करना, पूरा करना, **उप** --, 1. निकट लाना 2. उपक्रम करना, आरम्भ करना, **नि**---, संभाले रखना, जीवित रखना, सहारा देना वेदानुद्धरते जगन्निवहते--गीत० १, **निस्**--, 1. समाप्त होना 2. अवलंबित होना, ---की सहायता से निर्वाह करना.(प्रेर०) -समाप्ति तक ले जाना, पूरा करना, समाप्त करना, प्रबंध करना--श० ३, **परि** --, छल-कना, **प्र** --, वहन करना, ले जाना, खींचते रहना 2. बहा ले जाना, ले जाना, वहन करते जाना--भट्टि० ८।५२ 3. सहारा देना, (भार) वहन करना, 4. बहना 5. खिलना 6. रखना, अधिकार में करना, स्पर्श करना या महसूस करना, **वि** --, विवाह करना, **सम्**, --, 1. ले जाना, धारण किये जाना 2. मसलना, दबाना, दे० प्रेर० 3. विवाह करना, दिखाना, प्रदर्शित करना, प्रस्तुत करना, (प्रेर०) मसलना, या मालिश करना श० ३।२१।

वहः [वह्+कर्तरि अच्] 1. वहन करने वाला, ले जाने वाला, सहारा देने वाला 2. बैल के कंधे 3. सवारी यान 4. विशेष करके घोड़ा 5. हवा, वायु 6. मार्ग सड़क 7. नद, नाला 8. चार द्रोण की माप।

वहत्तः [वह्+अतच्] 1. यात्री 2. बैल।

वहत्तिः [वह्+अत्तिः] 1. बैल 2. हवा, वायु 3. मित्र, परामर्शदाता, सलाहकार।

वहती, वहा [वहति+ङीप्, वह+टाप्] नदी, सरिता।

वहतुः [वह्+अतु] बैल।

वहनम् [वह्+ल्युट्] 1. ले जाना, धारण करना, ढोना 2. सहारा देना 3. बहना 4. गाड़ी, यान 5. नाव, डोंगी।

वहत्तः [वह्+अत्च्] 1. वायु 2. शिशु।

वहल (वि०) दे० 'बहल'।

वहित्रम्, वहित्रकम्, वहित्री [वह्+इत्र, वहित्र+कन्, वह्+इनि+ङीप्] डोंगी, बेड़ा, नाव, किश्ती,--प्रत्य-क्षस्यदृश्यत किमपि वहित्रम्--दश०, प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदम्--गीत० १।

वहिस् दे० 'बहिस्'।

वहिष्क (वि०) [वहिस्+कन्] बाहरी, बाह्यसंबंधी।

वहेडकः (पुं०) बहेड़े का पेड़, विभीतक का वृक्ष।

वह्निः [वह्+निः] 1. अग्नि --अनृणे पतितो वह्निः स्वयमे-वोपशाम्यति सुभा० 2. पाचनशक्ति, आमाशय का रस 3. हाजमा, भूख लगना 4. यात। सम० ~कर (वि०) 1. अन्तर्दाहक 2. पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला, क्षुधावर्धक,—**काष्ठम्** एक प्रकार की अगर की लकड़ी, **गंधः** धूप, लोबान,—**गर्भः** 1. बांस 2. शमी या जैडी का वृक्ष, तु० अग्निगर्भ',—**दीपकाः** कुसुंभ का पेड़, **भोग्यम्** घी,—**मित्रः** हवा, वायु, ~-**रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**लोहम्, लोहकम्** तांबा, **वर्चस्** लाल रंग का कुमुदु, रक्तोत्पल, **वल्लभः** लाल, ~**बीजम्** 1. सोना 2. चूना--**शिखम्** 1. केसर 2. कुसुंभ, **सखः** हवा, ~**संज्ञकः** चित्रकवृक्ष।

वह्निम् [वह्+यत्] 1. गाड़ी 2. यान, सवारी,—**ह्या** एक मुनि की पत्नी।

वह्निक, वह्नीक दे० बह्लिक, बह्लीक'।

वा (अव्य०) [वा+किवप्] 1. विकल्प द्योतक अव्यय, या, परंतु संस्कृत में इसकी स्थिति भिन्न है, या तो यह प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है, अथवा अन्तिम के साथ, परन्तु यह वाक्य के आरंभ में कभी प्रयुक्त नहीं होता, तु० 'च' 2. इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) और, भी,--वसुधां दहतो वा--रघु०, अस्ति ते साधा स्मरति वा तातम् उत्तर० ४, (ख) के समान, जैसा कि जातां मन्ये तुहिनसथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्--मेघ० ८३, मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः --सिद्धा०, क्रुष्टो गर्जति वातिदर्पितबलो दुर्वोधनो वा शिखी--मृच्छ० ५।६, मालवि० ५।१२, शि० ३।६३, ४।३५, ७।६४, कि० ३।१३ (ग) विकल्प से—(इस अर्थ में बहुधा इसका प्रयोग व्याकरण के नियमों में --जैसा कि पाणिनि के सूत्र --होता है) दीर्घो णौ वा क्वित्यङि --पा० ६।४।९०, ९१ (घ) संभावना (इस अर्थ में 'वा' बहुधा प्रश्नवाचक सर्वनाम और उससे व्युत्पन्न 'इव' 'नाम' जैसे शब्दों के साथ जोड़ दिया जाता है तथा 'संभवतः' या 'कदाचित्' शब्दों से उसे अनूदित किया जाता है --कस्य वान्यस्य वचसि मया स्थातव्यम् का०, परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते—पंच०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१।२७, (ङ) कभी-कभी केवल पादपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है 3. जब 'वा' की पुनरुक्ति की जाती है तो इसका अर्थ होता है 'या—या' सा वा शंसोत्सवीया वा मूर्तिर्जलमयी मम—कु० २।६०, तदत्र परिश्रमानुरोधाद्वा उदात्तकथादस्तूरोवाद्वा नवनाटकदर्शनकुतूहलाद्वा भवद्भिरवधानं दीयमानं प्रार्थये—विक्रम० १, (अथवा या, कुछ-कुछ, अन्यथा देο 'अथ' के नीचे, न तो नहीं, न तो, न, यदि या अगर, अन्यथा, कि या कि, क्या, आया कि आदि।

वा (स्वा० अदा० पर० वाति, वात या वान) 1. हवा का चलना बहना बाला बाला दिशि दिशि न वा सप्तधा सप्तभिन्ना—वेणी० ३।६, दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४, मेघ० ४२, भट्टि० ७।१, ८।६१ 2. जाना, हिलना-डुलना 3. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना—प्रेर० (वापयति—ते) 1. हवा चलवाना 2. बाजयति—ते हिलना, आ—, हवा का चलना—श्रद्धां वद्धां मितिलकामनुप्रिमात्रावानात्मानदिश्वा निहन्ति—कि० ५।३६, भट्टि० १४।९७, निस्—, 1. खिलना 2. ठंडा होना, शान्त होना, (आल० से भी) वपुर्जलोद्रीपवनैर्न निर्ववौ—शि० १।६५, स्वयि दृष्ट एव तस्मा निर्याति मनो मनोभवज्वलिते शुभा० 3. फूंक मारना, बुझना, तिरोभाव होना—निर्वाणदीपे किमु तैल दानम्, निर्वाणमूषिष्ठनयास्य वीर्यं रघु०—यंतोयं धुपुर्णेन कु० ३।५२, शि० १४।८५, (प्रेर०) 1. फूंक मारना, बुझाना 2. शांत करना, गर्मी दूर करना, शीतल करना—रघु० २।११, रघु० १९।५९ 3. जिज्ञासा, शान्तिसा देना, आराम पहुँचाना रघु० १२।६३, प्र—, वि—, हवा का चलना—वायुर्विवाति हरयश्चि हरयश्चाणाम्—ऋतु० ६।२३।

वांश (वि०) (स्त्री० शी) [वंश+अण्] बांस का बना हुआ, शी बंसलोचन।

वांशिकः [वंश+ठक्] 1. बांस काटने वाला 2. बांसुरी बजाने वाला, बांसुरिया।

वाकम् [वक+अण्] सारसों का समूह या उड़ान।

वाकुल दे० 'बाकुल'।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1. वक्तृता, वचन, वक्तव्य, उक्ति, कथन शृणु मे वाक्यम् 'मेरे वचन सुनो', वाक्ये न संतिष्ठते 'आज्ञा पालन नहीं करता है'—शि० २।२४ 2. बात, उपवाक्य (किसी विचार का पूर्णोच्चारण)—वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः—सा० द० ६, औत्पत्तिकी च भवेद्वाक्ये समासे तद्धिते तथा—काव्य १० 3. तर्क, अनुमान (तर्क में) 4. विधि, नियम, सूत्र। सम०—अर्थः वाक्य का अर्थ, °उपमा दण्डी के अनुसार उपमा का एक भेद—दे० काव्या० २।४३,—आलापः बातालिप, बातचीत, प्रवचन, —खंडनम् किसी उक्ति या तर्क का निराकरण,—पद्धतिः (स्त्री०) वाक्य बनाने की रीति, वाक्यविन्यास, लेखनशैली,—प्रबंधः 1. पुस्तक, सबद्ध रचना 2. वाक्य प्रवाह,—प्रयोगः वक्तृता की काम में लाना, भाषा का उपयोग,—भेदः भिन्न उक्ति, विभिन्न वक्तव्य मुद्रा० २, -रचना, विन्यासः वाक्य में शब्दों का क्रम, शब्द योजना, वाक्यरचनाविचार, शेषः 1. किसी वस्तु का अवशिष्ट भाग, पूरा न किया गया या अपूर्ण वाक्य सदोषावकाश इव ते वाक्य शेषः विक्रम० ३ 2. न्यून पद वाक्य।

वाकरः [वाचा इयर्ति गच्छति, वाच्+कृ+अच्] 1. ऋषि, मुनि, पुण्यात्मा 2. विद्वान ब्राह्मण, विद्यार्थी 3. शूर, वीर, सूरमा 4. स्नान, सिल्ली 5 बाधा, रुकावट 6. निश्चिवेत 7. बहुवचनल 8. भेड़िया।

वाका (स्त्री०) लगाम।

वाकुरा [वा हिंसने उरच् गुण च] खटकेदार पिंजड़ा, जाल, पाश, फन्दा, जालीदार फन्दा -को वा दुर्जनवाकुरासु पतितः क्षेमेण याति पुमान्—पंच० १।१४६। सम०—वृत्तिः जंगली जानवरों को पकड़ कर शस्त्र होने वाली आजीविका (—त्तिः) बहेलिया, शिकारी।

वाकुरिकः [वाकुरा+ठक्] बहेलिया, शिकारी, हरिण पकड़ने वाला -रघु० ९।५३।

वाग्मिन् (वि०) [वाच् अस्त्यर्थे मिनिः चस्य कः] 1. वाक्पटु, वाकपुटु 2 बातूनी 3. शब्दाडम्बरपूर्ण, शब्दसंकलन पुं० 1. प्रवक्ता सुवक्ता—अनिर्लोडितकार्यस्य वाग्जाले वाग्मिनो वृथा—शि० २।२७, १०९, कि० १४।६, पंच० ४।८६ 2. बृहस्पति का नाम।

वाग्य (वि०) [वाचं यच्छति—यम्+ड] 1. कम बोलने वाला, मितभाषी 2. सत्य बोलने वाला, स्पः विनय, नम्रता।

वाङ्कः (पुं०) समूह।

वाङ्क्ष (स्वा० पर० वांक्षति) अभिलाषा करना, इच्छा करना।

वाङ्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [वाच्+मयट्] 1. शब्दों से युक्त रघु० ३।२८ 2. वाणी या वचनों से संबन्ध रखने वाला—मनु० १२।९, भग० १७।१५ 3. वाणी से युक्त 4. वाक्पटु, अलंकारपूर्ण, वाग्विदग्ध,—यम् 1. वाणी, भाषा—स्मरस्तज्जन्यानीलीरेभिर्दशभिरक्षरैः समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना—छन्द० १, कु० ७।९०, शि० २।७२ 2. वाग्मिता 3. आलंकारिक,—यी सरस्वती देवी।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप् दीर्घोऽसंप्रसारणं च] 1. वचन, शब्द, पदावली (विप० अर्थ) वागर्थाविव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्पत्तौ वाग्यर्थप्रतिपत्तये --रघु० १।१ 2. वचन, बात, भाषा, वाणी--वाचि पुण्यापुण्यहेतवः --मा० ४, लोकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते, ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति उत्तर० १।१०, विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे कि० १।१०, 'यह वचन कहे', निम्नांकित कहा' १४।२, रघु० १।५९, शि० २।१३, २३, कु० २।३ 3. वाणी, शब्द - अशरीरिणी वागुदचरत्--उत्तर० २, मनुष्यवाचा--रघु० ३।५३ 4. उक्ति, वक्तव्य 5. भरोसा, प्रतिज्ञा 6 पदोच्चय, कहावत, लोकोक्ति 7. विद्या की देवी सरस्वती। सम०---अर्थः (वाग्यर्थः) शब्द और उसका अर्थ--रघु० १।१, ऊ० दे०, --आडम्बरः (वागाडम्बरः) शब्दाडम्बर, वाग्जाल, ---आत्मन् (वागात्मन्) (वि०) शब्दों से युक्त उत्तर० २, ईशः (वागीशः) 1. सुवक्ता, वाक्पटु 2. देवताओं के गुरु बृहस्पति का विशेषण 3. ब्रह्मा का विशेषण---कु० २।३, (-शा) सरस्वती का नाम, --ईश्वरः (वागीश्वरः) 1. सुवक्ता, वाक्पटु 2. ब्रह्मा का विशेषण, (-री) वाणी की देवता सरस्वती देवी, ऋषभः (वाग्ऋषभः) बोलने में प्रमुख, वाक्पटु या विद्वान् पुरुष, कलहः (वाक्कलह) झगड़ा, उत्पात, ---कीरः (वाक्कीरः) पत्नी का भाई,---गुदः (वाग्गुदः) एक प्रकार का पक्षी, ---गुलिः,---गुलिकः (वाग्गुलि आदि) राजा का पानदान-वाहक---तु० 'तांबूलकरंकवाहिन्',---चपल (वि०) (वाक्चपल) बकवास करने वाला, निरर्थक और असंगत बातें करने वाला, चापल्यम् (वाक्चापल्यम्) निरर्थक बातें, बकवास, गंभीर, - छलम् (वाक्छलम्) शब्दों के द्वारा बेईमानी, टालमटूल उत्तर, गोलमाल--मुद्रा० १,--जालम् (वाग्जालम्) शब्दाडंबरपूर्ण अनर्थक बातें शि० २।२७, डंबरः (वाडंबरः) 1. निस्सार उक्ति 2. बड़े बोल, डंडः (वाग्दंडः) 1. भर्त्सनापूर्ण वचन, डांट-फटकार, जिह्वकी 2. बोलने पर नियन्त्रण, शब्दों या वचनों पर रोक--तु० त्रिदंडः, दत्त (वाग्दत्त) (वि०) प्रतिज्ञात, संवद्ध, जिसकी सगाई हो चुकी हो, (त्ता) संवद्ध या सगाई हुई कन्या,--दरिद्र (वाग्दरिद्र) (वि०) वचनों में दरिद्र अर्थात् कम बोलने वाला, दलम् (वाग्दलम्) ओष्ठ---दानम् (वाग्दानम्) सगाई, दुष्ट (वाग्दुष्ट) (वि०) 1. गाली देने वाला, दबदबान, अश्लीलभाषी 2. व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषा बोलने वाला, (ष्टः) 1. निन्दक 2. वह ब्राह्मण जिसका उपनयनसंस्कार ठीक समय पर न हुआ हो,---देवता,---देवी (वाग्देवता, वाग्देवी) वाणी की देवता सरस्वती देवी वाग्देवतायाः सामुख्यमाधत्ते---सा० द० १,---दोषः (वाग्दोषः) 1. (अशुद्ध उच्चारण --वाग्दोषाद् गर्दभो हतः हि० ३ 2. अपशब्द, मानहानि 3. व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषण,---निबंधन (वाग्निबंधन) (वि०) बचनों पर आश्रित रहने वाला, निश्चयः (वाङ्निश्चयः) मुंह के वचन से मंगनी, विवाह-संविदा, निष्ठा (वाङ्निष्ठा) (अपने वचनों या प्रतिज्ञा) के प्रति भक्ति या श्रद्धा, पटु (वि०) (वाक्पटु) बोलने में कुशल, वाक्चतुर, ---पति (वि०) (वाक्पति) वाक्चतुर, अलंकारयुक्त, (तिः) बृहस्पति का नाम (इस अर्थ में 'वाचस्पतिः' का भी प्रयोग होता है),---पारुष्यम् (वाक्पारुष्यम्) 1. भाषा की कर्कशता 2. शब्दों द्वारा अपमान, अपशब्दयुक्त भाषा, मानहानि, प्रबोधनम् (वाक्प्रबोधनम्) वचनों में अभिव्यक्त किया गया आदेश, प्रतोदः (वाक्प्रतोदः) वचनों द्वारा उकसाना, भड़काने वाली या उत्तेजनायुक्त भाषा,---प्रलापः (वाक्प्रलापः) वाग्मिता,---बंधनम् (वाग्बंधनम्) भाषण बंद करना, चुप करना अमरु० १३,---मनसे (द्वि० व०-वाङ्मनसी---वैदिक भाषा में) वाणी और मन,---मात्रम् (वाङ्मात्रम्) केवल वचन,---मुखम् (वाङ्मुखम्) किसी वक्तृता का आरंभ या प्रस्तावना, आमुख, भूमिका,---यत (वि०) (वाग्यत) जिसने अपनी वाणी को नियंत्रित कर लिया है या दमन कर लिया है, मौनी, - यमः (वाग्यमः) जिसने अपनी बोली को नियंत्रित कर लिया है, मुनि, ऋषि,---याम्यः (वाग्यामः) मूक पुरुष, युद्धम् (वाग्युद्धम्) शब्दों की लड़ाई, गरमागरम वादविवाद या चर्चा, विवादास्पद विषय, वज्रः (वाग्वज्रः) 1 कठोर (वज्र की भांति) शब्द अहह दारुणो वाग्वज्रः--उत्तर० १ 2. कठोर भाषा,---विदग्ध (वाग्विदग्ध) (वि०) बोलने में कुशल (ग्धा) मधुरभाषिणी और मनोहारिणी, - विभवः (वाग्विभवः) शब्दों का भंडार, वर्णनशक्ति, भाषा पर आधिपत्य--मा० १।२६, रघु० १।९, विलासः (वाग्विलासः) ललित या प्रांजल भाषा,---व्यवहारः (वाग्व्यवहारः) मौखिक विचारविमर्श प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रं किमत्र वाग्व्यवहारेण मालवि० १, व्ययः (वाग्व्ययः) शब्दों का ह्रास, व्यापारः (वाग्व्यापारः) 1. बोलने की रीति 2. भाषणशैली या अभ्यास, संयमः (वाक्संयमः) भाषण या बोलने पर नियंत्रण।

वालः [वच्+णिच्+अच्] 1. एक प्रकार की मछली 2. मदन नाम का पौधा।

वाचंयम (वि०) [वाचो वाग्यतं यच्छति विरमति---वाच्+यम्+खच् नि० अम्] जिह्वा को रोकने वाला, पूर्ण निस्तब्धता रखने वाला, चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी --उपस्थिता देवी तद्वाचंयमो भव---विक्रम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३, सिद्धांसो वसुधातले परवचः श्लाघासु वाचंयमाः —भामि० ४।४२, रघु० १३।४४,—मः मौन रहने वाला मुनि ।

वाचक (वि०) [वक्ति अभिधावृत्त्या बोधयति अर्थान् वच् + ण्वुल्] 1. बोलने वाला, घोषणा करने वाला, व्याख्यात्मक 2 अभिव्यक्त करने वाला, अर्थ बतलाने वाला, प्रत्यक्ष संकेत करने वाला (शब्द के रूप में, 'लाक्षणिक' और 'व्यंजक' से भिन्न) दे० काव्य० २ । 3. मौखिक—कः 1. वक्ता 2. पाठक 3 महत्त्वपूर्ण शब्द 4. दूत ।

वाचनम् [वच्+णिच्+ल्युट्] 1. पढ़ना, पाठ करना 2. घोषणा, प्रकथन, उच्चारण जैसा कि 'स्वस्ति-वाचनं' 'पुण्याहवाचनम्' में ।

वाचनकम् [वाचन+कन्] पहेली, बुझौवल ।

वाचनिक (वि०) (स्त्री०-की) [प्रवर्तने निर्वृत्तम् ठक्] मौखिक, शब्दों में अभिव्यक्त ।

वाचस्पतिः [वाचः पतिः षष्ठ्यलुक्] 'वाणी का स्वामी', देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण ।

वाचस्पत्यम् [वाचस्पति + ष्यञ्] वाक्पटुतायुक्त भाषण, वक्तृता, प्रभावशाली भाषण -तदूरीकृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते हि० ३।९६ (=शि० २।३०)।

वाचा [वाक्+आप्] 1. भाषण 2 धार्मिक ग्रन्थों का पाठ, सूत्र 3. शपथ ।

वाचाट (वि०) वाच्+आटच्, चस्य न कः] बातूनी, वाचाल, बहुत बातें करने वाला अरेरे वाचाट —वेणी० ३, महावीर० ६, भट्टि० ५।२३ ।

वाचाल (वि०) [वाच्+आलच्, चस्य न कः] 1. कोलाहलपूर्ण, शब्दायमान, क्रन्दनशील 2. बातूनी, बकवास करने वाला, दे० वाचाट, शि० १।४० ।

वाचिक (वि०) (स्त्री०-का-की) [वाचाकृतं वाच्+ठक्, पस्य कः] 1. शब्दों से युक्त या अभिव्यक्त वाचिक पाठ्यम् 2. मौखिक, शाब्दिक. मौखिक रूप से अभिव्यक्त,—कम् 1. संदेश, मौखिक या शाब्दिक समाचार —वाचिकमप्यार्येण सिद्धार्थकाच्छ्रोतव्यमिति लिखितम् -मुद्रा० ५, निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम् शि० २।७० 2. समाचार, वार्ता, खबर ।

वाचीयुक्ति (वि०) [वाचो युक्तिः यस्य ब० स०, षष्ठ्या अलुक्] बोलने में कुशल, वाक्पटु, -क्तिः (स्त्री०) 'शब्दों का क्रम' घोषणा, अभिशापन, भाषण—यत्र लक्ष्यिवं वाचोयुक्तिः—मा० १ ।

वाच्य (वि) [वच्+कर्मणि ण्यत्] 1. कहे जाने या बतलाये जाने के योग्य, संबोधित किये जाने योग्य-वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा—रघु० १४।६१, 'मेरी ओर से राजा को कहिए' 2. अभिधानीय, गुणवाचक, विशेषक 3. अभिव्यक्त (शब्दार्थ आदि) तु० लक्ष्य व्यंग 4. दूषणीय, निन्दनीय, डांटने-फटकारने योग्य —शि० २०।६४, हि० ३।१२९,—च्यम् 1. कलंक, निन्दा, झिड़की- प्रमदामनु संहितः शुचा नृपतिः सन्निति: वाच्यदर्शनात् रघु० ८।७२, ८४, चिरस्थ वाच्यं न गतः प्रजापतिः शि० ५।१५, शि० ३।५८ 2. अभिव्यक्त अर्थ जो अभिधा द्वारा ज्ञात हो, तु० लक्ष्य, व्यंग्य; अपि तु काव्यवैचित्र्यप्रतिभासादेव चारुताप्रतीतिः-काव्य० १० 3. विधेय 4. क्रिया की कर्मवाच्यता (कर्मवाच्य या भाववाच्य) । सम०—अर्थः अभिव्यक्त अर्थ,—चित्रम् अधम काव्य के दो भेदों में से एक, इसमें काव्य सौन्दर्य चमत्कार एवं तथा उद्भावना युक्त विचारों की अभिव्यंजना में निहित है (विप० शब्द चित्र), दे० 'चित्र' भी, -वज्रम् कठोर और कर्कश भाषा ।

वाज: [वज्+घञ्] 1. बाज, डैना 2. पंख 3. बाण का पंख 4. युद्ध, लड़ाई 5. ध्वनि, जम् 1. घी 2. श्राद्ध या और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रदान किया गया पिण्ड 3. भोज्यसामग्री 4. जल 5. यज्ञ की पूर्णाहुति का मन्त्र । सम० - पेयः, यम् एक विशेष यज्ञ का नाम,—सनः 1. विष्णु का नाम 2. शिव का नाम,—सनिः सूर्य ।

वाजसनेय: [वाजसनेः सूर्यस्य छात्रः वाजसनि+ढक्] शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता के प्रणेता याज्ञवल्क्य का नाम ।

वाजसनेयिन् (पुं०) [वाजसनेय+इनि] 1. शुक्लयजुर्वेद के प्रवर्तक तथा प्रणेता याज्ञवल्क्य मुनि का नाम 2. शुक्लयजुर्वेद का अनुयायी, वाजसनेयि संप्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला ।

वाजिन् (पुं०) [वाज+इनि] 1. घोड़ा—न गर्दभा वाजिपुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, रघु० ३।४३, ४।२५, ६७, शि० १८।३१ 2. बाण 3. पक्षी 4. यजुर्वेद की वाजसनेयिशाखा का अनुयायी । सम०—पृष्ठः गोलसदाबहार,—भक्षः छोटी मटर,—भोजनः एक प्रकार का लोबिया,—मेधः अश्वमेध यज्ञ,—शाला अस्तबल, घुड़शाला ।

वाजीकर (वि०) [वाज+च्वि+कृ+अच्] कामकेलि इच्छाओं का उद्दीपक ।

वाजीकरण [वाज+च्वि+कृ+ल्युट्] कामोद्दीपकों द्वारा कामनाओं को उत्तेजित या उद्दीप्त करना ।

वांछ् (स्वा० पर० वांछति, वांछित) अभिलाषा करना, चाहना -न संहतास्तस्य न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वांछत्यसुभिः समीहितुम्—कि० १।१९, अभि -, सम् , कामना करना, अभिलाषा करना, इच्छा करना, —भट्टि० १७।५३ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वांछनम् [वांछ्+ल्युट्] कामना, इच्छा करना।

वांछा [वांछ्+अ+टाप्] कामना, इच्छा, अभिलाषा, —वांछा सज्जनसंगमे भर्तृ० २।६२।

वांछित (भू० क० कृ०) [वांछ्+क्त] अभीष्ट, इच्छित, —तम् अभिलाष, इच्छा।

वांछिन् (वि०) [वांछ्+णिनि] 1. अभिलाषी 2. विलासी।

वाट:,—टम् [वट्+घञ्] 1. बाड़ा, घिरा हुआ भूभाग, अहाता—स्ववाटकुक्कुटविजयहृष्ट:—दश०, इसी प्रकार देश°, श्मशान° आदि 2. उद्यान, उपवन, फलोद्यान 3. सड़क 4. तट पर लगाया गया लकड़ी के तख्तों का बांध 5. अन्न विशेष। सम० धात: ब्राह्मण स्त्री में पतित ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान —देo मनु० १०।२१।

वाटिका [वट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाना हो 2. फलोद्यान, बगीचा —अये दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते—श० १, इसी प्रकार पुष्प°, अशोक° आदि।

वाटी [वाट+ङीष्] 1. वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाया है 2. घर, आवास स्थान 3. अहाता, बाड़ा 4. उद्यान, उपवन, फलोद्यान वाटीभुवि क्षिति-भुजाम्—आश्व० ५ 5. लड़क 6. पत्नी रोकने के लिए लकड़ी के तख्तों का बाँध 7. एक प्रकार का अन्न।

वाट्या, वाट्यालः, वाट्यालो [वाटो+यत्+टाप्, वाटी +अल्+अण्, वाट्यालय+ङीष्] एक पौधे का नाम, अतिबला।

वाड् (म्वा० आ० वाडते) स्नान करना, गोता लगाना।

वाडवः [वडवाया अपत्यं वडवानां समूहो वा अण्] 1. वडवानल 2. ब्राह्मण, —वम् घोड़ियों का समूह। सम० —अग्नि:,—अनल: समुद्र के भीतर रहने वाली आग।

वाडवेयः [वडवा+ढक्] 1. साँड़ 2. घोड़ा, यौ (पुं०, द्वि० व०) दोनों अश्विनी कुमार।

वाड्व्यम् [वाड्व+यत्] ब्राह्मणों का समूह।

वाढ दे० 'बाढ'।

वाण दे० 'बाण'।

वाणिः (स्त्री०) वण्+इण्] 1. बुनना 2. जुलाहे की खड्डी, करघा।

वाणिजः [वणिज्+अण् (स्वार्थे)] व्यापारी, सौदागर।

वाणिज्यम् [वणिज्+ष्यञ्] व्यापार, बनिज, लेन देन।

वाणिनी [वण्+णिनि+ङीप्] 1. चतुर और धूर्त स्त्री 2. नर्तकी, अभिनेत्री 3. भक्त स्त्री (शा० या आलं० रूप से) शृङ्गारप्रिय स्वेच्छाचारिणी स्त्री—रघु० ६।७५।

वाणी [वण्+इण्+ङीप्] 1. भाषण, वचन, भाषा · वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते —भर्तृ० २।१९ 2. बोलने की शक्ति 3. ध्वनि, आवाज़—केका वाणी मयूरस्य—अमर०, इसी प्रकार आकाशवाणी 4. साहित्यिक कृति या रचना—मद्वाणि मा कुरु विषादमनादरेण मात्सर्यमग्नमनसां सहसा खलानाम् भामि० ४।४१, उत्तर० ७।२१ 5. प्रशंसा 6. विद्या की देवी सरस्वती।

वात् (चुरा० उभ० वातयति—ते) 1. हवा का चलना 2. पंखा करना, हवादार करना 3. सेवा करना 4. प्रसन्न करना 5. जाना।

वात (भू० क० कृ०) [वा+क्त] 1. बही हुई 2. इच्छित या अभीष्ट, प्रार्थित,—त: 1. हवा, वायु 2. वायु का देवता, वायु की अधिष्ठात्री देवता 3. शरीर के तीन दोषों में से एक 4. गठिया, सन्धिवात। सम०—अक्ष: 1. जातमृग, बारहसिंगा 2. सूर्य का घोड़ा,—अंड: फोतों का रोग, अंडकोषवृद्धि, अतिसार: शरीरगत वायु के विकृत होने से उत्पन्न पेचिश,—अयम् पत्ता, —अयन: घोड़ा, (नम्) 1. खिड़की, झरोखा—मा० २।११, कु० ७।५९, रघु० ६।२४, १३।२१ 2. अलिन्द, द्वारमण्डप 3. मंडवा मंडप, अमु: बारहसिंगा,—अरि: एरण्ड का वृक्ष, अश्व: बहुत तेज चलने वाला घोड़ा, —आलोला कस्तूरी,—आलि: (स्त्री०) भंवर, आहत (वि०) 1. हवा से हिलाया हुआ 2. गठिया रोग से ग्रस्त,—आहति: (स्त्री०) हवा का प्रचंड झोंका, —ऋद्धि: (स्त्री०) 1. वायु की अधिकता 2. गदा, मुद्गर, लोहे की स्याम से जटित लाठी,—कर्मन् (नपुं०) पाद मारना, कुंडलिका मूत्ररोग जिसमें मूत्र पीड़ा के साथ बूंद-बूंद उतरता है,—कुंभ: हाथी का गंडस्थल, केतु: धूल, केलि: 1. प्रेमरसपक्व बातचीत, प्रेमियों की कानाफूसी 2. प्रेमी या प्रेमिका के शरीर पर नख क्षत,—गुल्म: 1. आँधी, अंधड़ 2. गठिया,—ज्वर: विषाक्त वायु से उत्पन्न बुखार ध्वज: बादल, —पुत्र: भीम, हनुमान्,—पोथ:,—पोथक: पलाश का वृक्ष, ढाक का पेड़,—प्रकोप: वायु की अधिकता,—प्रमी (पुं०, स्त्री०) तेज चलने वाला हरिण,—भंजनो भंवर,—मृग: वेग से दौड़ने वाला हरिण,—रक्तम्,—शोणितम् तीक्ष्ण गठिया,—रोग: मूलर का वृक्ष,—रूप: 1. तूफान, प्रचंड हवा, आँधी 2. इन्द्रधनुष 3. रिश्वत,—रोग:,—व्याधि: गठिया का रोग,—वस्ति: (स्त्री०) मूत्ररोकना,—वृद्धि: (स्त्री०) अंडकोष की सूजन,—शीर्षम् पेड़ू, शूलम् उदर पीड़ा के साथ अफारा होना,—सारथि: आग।

वातक: [वात+कन्] 1. उपपति, जार 2. एक पौधे का नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वातकिन् (वि०) (स्त्री० –नी) [वातोऽतिशयितोऽस्ति अस्य मतुप्+इनि, कुक्] गठिया रोग से ग्रस्त।

वातगजः [वातमभिमुखीकृत्य अजति गच्छति—वात+अज्+खश्, मुम्] तेज दौड़ने वाला हरिण।

वातर (वि०) [वात+रा+क] 1. तूफानी, झंझामय 2. तेज, चुस्त। सम०—अयनः 1. बाण 2. बाण की उड़ान, तीर के लक्ष्य तक पहुंचने की दूरी, शरणरास 3. चोटी, शिखर 4. आरा 5. पागल या नशे में उन्मत्त पुरुष 6. निठल्ला 7. सरल वृक्ष, चीड़ का पेड़।

वातल (वि०) (स्त्री०–ली) [वातं रोगभेदं लाति ला+क] 1. तूफानी, झंझामय 2. हवा से फूला हुआ —लः 1. वायु 2. चना।

वातापिः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसको अगस्त्य ने खा कर पचा लिया। सम० द्विष् (पुं०),—सूदनः, —हन् (पुं०) अगस्त्य के विशेषण।

वातिः [वा+क्तिच्] 1. सूर्य 2. वायु, हवा 3. चन्द्रमा। सम०—गः,—गमः वैगने ('वातिगण' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है)।

वातिक (वि०) (स्त्री०–की) [वातादागतः+ठक्] 1. तूफानी, हवाई, झंझामय 2. गठियाग्रस्त, सन्धिवात से पीड़ित 3. पागल, —कः वायु की विकृत अवस्था से उत्पन्न ज्वर।

वातीय (वि०) [वात+छ] हवादार, —यम् भात का मांड।

वातुल (वि०) [वात+उलच्] 1. वायु रोग से ग्रस्त, गठिया पीड़ित 2. पागल, वायुप्रकोप के कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो– हि० २।२६, —लः भँवर।

वातुलिः [वा+उलि, तुट्] बड़ा चमगीदड़।

वातूल (वि०) [वात+ऊलच्] दे० 'वातुल'।

वातृ (पुं०) [वा+तृच्] हवा, वायु।

वात्या [वातानां समूहः यत्] तूफान, अन्धड़, भँवर, तूफान या झंझामय वायु वात्याभिः परुषीकृता दश दिशश्चण्डातपो दुःसहः भामि० १।१३, रघु० ११। १६, कि० ५।३९, वेणी० २।२१।

वात्सकम् [वत्स+वुञ्] बछड़ों का समूह।

वात्सल्यम् [वत्सलस्य भावः ष्यञ्] 1. (अपने बच्चों के प्रति) स्नेह, वत्सलता सुकुमारता—न पुत्रवात्सल्य-मपाकरिष्यति—कु० ५।१४, पतिवात्सल्यात्—रघु० १५।९८, इसी प्रकार भार्या° प्रजा° शरणागत° आदि 2. लाड़प्यार या पक्षपात।

वात्सिः,–सी (स्त्री०) शूद्र स्त्री की ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न पुत्री।

वात्स्यायनः [वत्सस्य गोत्रापत्यं–वत्स+वञ्+फक्] 1. कामसूत्र (रतिशास्त्र पर लिखा गया एक ग्रन्थ) के प्रणेता 2. न्यायसूत्र पर किये गये भाष्य के प्रणेता।

वादः [वद्+घञ्] 1. बातें करना, बोलना 3. भाषण, वचन, बात सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः —शि० २।५५, इसी प्रकार 'कैतववादः' शीत० ८, माध्यवादः आदि 3. वक्तृत्व, उक्ति, आरोप–अवाच्य-वादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः—भग० २।३६ 4. वर्णन, वृत्त—शाकुलादीनिहासवादान् मा० ३।३ 5. विचार विमर्श, विवाद, शास्त्रविवाद, तर्क-वितर्क बादे बादे जायते तत्त्वबोधः सूक्ति०, सोमा० मनु० ८।२६५ 6. उत्तर 7 विवृति, व्याख्या 8. प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धान्त, तत्त्व—क्षणिकी परमाणुकारणवाद निराकरोति—शारी० (यहां पुस्तक के अन्य विभिन्न स्थलों पर) 9. कथन, श्लोक 10, विवरण, अफवाह 11. (विधि में) अभियोग, नालिश। सम०–अनुवादी (पुं० द्वि० व०) 1. उक्ति और उत्तर, अभियोग तथा उसका उत्तर, दोषारोपण तथा उसका बचाव 2. वादविवाद, शास्त्रार्थ,–कर,–कृत् (वि०) विवाद करने वाला, —ग्रस्त (वि०) विवादास्पद, विवादग्रस्त—वाद-ग्रस्तोऽयं विषयः, चंचु (वि०) श्लेषयुक्त उत्तर देने में निपुण, हास्तिजबाब, प्रतिवादः शास्त्रार्थ, —युद्धम् विवाद, तर्कवितर्क, विवादः तर्कवितर्क, विचारविमर्श, वाक्प्रतियोगिता।

वादकः [वद्+णिच्+ण्वुल्] बजाने वाला।

वादनम् [वद्+णिच्+ल्युट्] 1. ध्वनि करना 2. बाजा, वाद्ययन्त्र।

वादर (वि०) (स्त्री० री) [वदरायाः कार्पण्याः विकारः वादरा+अण्] कपास से युक्त या कपास से निर्मित, —रा कपास का पौधा, रम् सूती कपड़ा।

वादरंगः [वादर+गम्+खच्, डित्] पीपल का पेड़, गूलर का वृक्ष।

वादरायण दे० 'बादरायण'।

वादालः [वाद+ला+क, पृषो०] जर्मन मछली।

वादि (वि०) [वादयति व्यक्तमुच्चारयति+वद्+णिच्+इञ्] बुद्धिमान्, विद्वान्, कुशल।

वादित (भू० क० कृ०) [वद्+णिच्+क्त] 1. उच्चरित कराया गया, बुलवाया गया 2. बजाया गया, ध्वनि किया गया।

वादित्रम् [वद्+णित्रन्] 1. बाजा नै० २२।२२ 2. संगीत।

वादिन् (वि०) [वद्+णिनि] 1. बोलने वाला, बातें करने वाला, प्रवचन करने वाला 2. दृढ़तापूर्वक कहने वाला 3. तर्क-वितर्क करने वाला, जिरही मुद्रा० ५।१०, रघु० १२।९२ 3. दोषारोपण करने वाला, अभियोक्ता 4. व्याख्याता, अध्यापक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाडिज: (पु०) विद्वान् पुरुष, ऋषि, विद्याव्यसनी।

वाद्यम् [वद्+णिच्+यत्] 1. बाजा 2. बाजे की ध्वनि रघु० १६।६४, (वाद्यध्वनि: मल्लि०)। सम०—कर: संगीतज्ञ, —भाण्डम् 1. बाजों का समूह, वाद्य यंत्रों का ढेर 2. मृदंग आदि बाजे।

वाध्, वाध, वाधक, वाधन-ना, वाधा दे० 'बाध्, बाध, बाधना-ना, बाधा'।

वाधु (धू) वयम् [वध् (धू)+यत्, कुक्] विवाह।

वाध्रीणस: [=वार्ध्रीणस, पृषो०] गैंडा।

वान (वि०) [वन्+अण्] 1. खिला हुआ, 2. (हवा से) सूखा हुआ, शुष्क 3. जंगली, —नम् 1. सूखा फल (पुं० भी) 2. (हवा का) चलना 3. जीना 4. लुढ़कना, हिलना-डुलना 5. गन्ध द्रव्य, सुगन्धू 6. वृक्षों का समूह या झुरमुट 7. बुनना 8. तिनकों से बनी चटाई 9. घर की दीवार में छिद्र।

वानप्रस्थ: [वानं वनसम्बन्धं प्रतिष्ठते-स्था+क] 1. अपने धार्मिक जीवन के तीसरे आश्रम में प्रविष्ट ब्राह्मण 2. वैरागी, साधु 3. मधूक वृक्ष 4. पलाश वृक्ष, ढाक।

वानर: [वानं वनसम्बन्धं फलादिकं राति गृह्णाति रा+क, या विकृतेन नरो वा] बन्दर, लंगूर। सम०—अक्ष: जंगली बकरा,—आह्वत: लोध्र नामक वृक्ष इन्द्र: सुग्रीव या हनुमान्, प्रिय: खिरनी (क्षीरिन्) का पेड़।

वानल: [वानं वनभावं निवित्सति लाति ला+क] तुलसी का पौधा (काली तुलसी)।

वानस्पत्य: [वनस्पति+ष्यञ्] वह वृक्ष जिसका फल उसकी मंजरी से उत्पन्न होता है, उदा० आम का पेड़।

वाना [वान+टाप्] बटेर, लवा।

वानायु: [=वनायु: पृषो०] भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित देश। सम०—ज: वनायु घोड़ा अर्थात् वनायु देश में उत्पन्न घोड़ा।

वानीर: [वन्+ईरन्—अण्] एक प्रकार का बेंत—समरामि वानीरगृहेषु सुप्त: रघु० १३।२५, मेघ० ४१, मा० ९।१५, रघु० १३।३०, १६।२१।

वानीरक: [वानीर+कन्] मूंज नामक घास, एक प्रकार का नड।

वानेयम् [वन—ढक्] एक सुगंधित घास, मोथा।

वान्त [भू० क० कृ०] [वम्+क्त] 1. कै की गई, थूका गया 2. उगला गया, प्रक्षिप्त, उड़ेला हुआ। सम०—अद: कुत्ता।

वान्ति: (स्त्री०) [वम्+क्तिन्] 1. वमन 2. प्रक्षेप, उगाल। सम०—कृत्, द वमन कराने वाला।

वान्य: [वन+यत्+टाप्] उपवनों या जंगलों का समूह।

वाप: [वप्+घञ्] 1. बीज बोना 2. बुनना 3. क्षौरकर्म करना, बाल मूंडना मनु० ११।१०८। सम०—दण्ड: जुलाहे का करघा।

वापनम् [वप्+णिच्+ल्युट्] 1. बुवाना 2. मुंडन, क्षौर।

वापित [भू० क० कृ०] [वप्+णिच्+क्त] 1. बोया हुआ 2. मूंड़ा हुआ।

वापि:,-पी (स्त्री०) [वप्+इञ्, या ङीप्] कुआँ, बावड़ी पानी का विस्तृत आयताकार जलाशय —वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा—मेघ० ७६। सम०—हू: चातक पक्षी।

वाम (वि०) [वम्+ण, अथवा वा+मन्] बायां (विप० दायां) विलोचनं दक्षिणमंजनेन संभाव्य तद्वंचितवाम-नेत्रा—रघु० ७।८, मेघ० ७८, ९६ 2. बाईं ओर स्थित या विद्यमान—वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगंध: —मेघ० ९ (वामेन क्रिया विशेषण के रूप में इसी अर्थ को प्रकट करता है - उदा० वामेनात्र वटस्तमध्व-गजन: सर्वात्मना सेवते - काव्य० १०) 3. (क) उलटा, विरुद्ध, विरोधी, विपरीत, प्रतिकूल—तदहो कामस्य वामा गति: गीत० १२, मा० ९।८, भट्टि० ६।१७, (ख) विरुद्ध-कार्य करने वाला, विपरीत प्रकृति का,—श० ४।१८, (ग) कुटिल, वक्रप्रकृति, दुराग्रही, हठी,—श० ६ 4. दुष्ट, दुर्वृत्त, अधम, नीच, कमीना कि० ११।२४ 5. प्रिय, सुन्दर, लावण्यमय जैसा कि 'वामलोचना', म: 1. सजीव प्राणी, जन्तु 2. शिव 3. प्रेम का देवता, कामदेव 4. सांप 5. औंडी, ऐंठ, स्त्री की छाती,—मम् धनदौलत, जायदाद। सम०—आचार:,—मार्ग: तांत्रिक मत में प्रतिपादित अनु-ष्ठानपद्धति,—आवर्त: शंख जिसका घुमाव दाईं ओर से बाईं ओर को गया हो,—उरु,—ऊरू (स्त्री०) सुंदर जंघाओं वाली स्त्री,—दृश् (स्त्री) (मनोहर आँखों से युक्त) स्त्री,—देव: 1. एक मुनि का नाम 2. शिव का नाम,—लोचना मनोहर आँखोंवाली स्त्री—विरूपाक्षस्य अयिनीस्ता: स्तुवे वामलोचना:—काव्य० १०, रघु० १९।१३, शील (वि०) कुटिल या वक्र प्रकृति का (ल:: कामदेव का विशेषण।

वामक (वि०) [वाम+कन्] 1. बायां 2. विपरीत, विरुद्ध - मा० १।८ (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं)।

वामन (वि०) [वम्+णिच्+ल्युट्] 1. (क) क़द में छोटा, ठिगना, बौना छलवामनम्—शि० १३।१२ (ख) (अत:) स्वल्प, ह्रस्व, थोड़ा, लंबाई में कम—वामनीचरिव दीपभाजनम्—रघु० १९।५१, कथं कथं तानि (दिनानि) च वामनानि—नै० २२।५७ 2. विनत, नम्र—शि० १३।१२ 3. दुष्ट, नीच, ओछा,—न: 1. बौना, ठिगना—प्रांशुलभ्ये फले लोभाद्दुद्वाहुरिव वामन: रघु० १।३, १०।६० 2. विष्णु का पाँचवां अवतार जब उन्होंने बलि राक्षस को विनम्र करने के लिए बौने के रूप में जन्म लिया, (दे० बलि)—छलयति विक्रमणे बलिमद्भुतवामन पदनखनीरजनितजनपावन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे गीत० १ 3. दक्षिण दिशा का दिक्पाल हाथी 4. पाणिनि के सूत्रों पर काशिकावृत्ति नामक भाष्य के प्रणेता 5. अंकोट नामक वृक्ष। सम० आकृति (वि०) ठिगना, -पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वामनिका [वामनी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] ठिगनी स्त्री।

वामनी [वामन+ङीप्] 1. बौनी स्त्री 2. घोड़ी 3. एक स्त्रीविशेष।

वामलूरः [वाम+लू+रक्] बांबी, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का ढेर।

वामा [वामति सौन्दर्यम्-वम्+अण्+टाप्] 1. स्त्री 2. मनोहारिणी स्त्री—भामि० ४।३९, ४२ 3. गौरी 4. लक्ष्मी 5. सरस्वती।

वामिल (वि०) [वाम+इलच्] 1. सुन्दर, मनोहर 2. घमंडी, अहंकारी 3. चालाक, कपटपूर्ण।

वाम्बी [वाम+ङीष्] 1. घोड़ी-अधोष्टवाम्बीशतवाहितार्थं रघु० ५।३२ 2. रंडी 3. हथिनी 4. गीदड़ी।

वायः [वे+घञ्] बुनना, सीना। सम०-दंडः जुलाहे का करघा।

वायकः [वे+ण्वुल्] 1. जुलाहा 2. ढेर, समुच्चय, संग्रह।

वायनम्, वायनकम् [वे+णिच्+ल्युट्, वायन+कन्] नैवेद्य, उत्सव के अवसर पर किसी देवता या ब्राह्मण को दिया गया मिष्टान्न, उपवास रखना आदि।

वायव (वि०) (स्त्री०-वी) [वायु+अण्] वायु से संबद्ध या प्राप्त 2. हवाई।

वायवीय, वायव्य (वि०) [वायु+छ, यत् वा] हवा से सम्बन्ध रखने वाला, हवाई। सम०—पुराणम् एक पुराण का नाम।

वायसः [वयोऽस्त्यस्य इति] 1. कौवा—वलिमिव परिभोक्तुं वायसास्तर्कयन्ति—मृच्छ० १०।३ 2. सुगन्धित अगर की लकड़ी, अगुरुकाष्ठ 3. तारपीन। सम०-अरातिः, —अरिः उल्लू,—आह्वा एक प्रकार भक्ष्य शाक,-इक्षुः एक प्रकार का लम्बा बांस।

वायुः [वा उण् युक् च] 1. हवा, पवन—वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् कवि० (इसकी उत्पत्ति के लिए दे० मनु० १।७६—सात पवनमार्ग हैं -आवहः प्रवहश्चैव संवहश्चोद्वहस्तथा, विवहाख्यः परिवहः परावह इति क्रमात्) 2. वायुदेवता, पवनदेवता 3. जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण पांच प्रकार का वायु गिनाया गया है -प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान 4. वातप्रकोप, वातरोग में ग्रस्तता। सम०-आश्रयम् आकाश, अन्तरिक्ष,—केतुः धूल, कोणः पश्चिमोत्तरी कोना,—गन्धः अफारा (जो अनपच के कारण हुआ हो),—गुल्मः 1. आंधी, तूफान 2. भंवर, —गोचरः पवन का परास,—ग्रस्त (वि०) 1. वातरोग से ग्रस्त, जिसे अफारा हो गया हो 2. गठिया रोग से ग्रस्त, —जातः, तनयः, नन्दनः, पुत्रः,—सुतः, सूनुः हनुमान् या भीम के विशेषण,—दोषः बादल,—निघ्न (वि०) वात प्रकोप से पीड़ित सनकी, पागल, उन्मत्त, -पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,—फलम् 1.ओला 2. इन्द्रधनुष,—भक्षः,—भक्षणः,—भुज् (पुं०) 1. जो केवल वायु पीकर रहे, संन्यासी 2. सांप—नु० पवनाशनः, -रोधा रात्रि,- वर्ण (वि०) वायुप्रकोप के कारण अस्वस्थ—रघु० ९।६३,—वर्त्मन् (पुं०, नपुं०) आकाश, अन्तरिक्ष,- वाहः घुआं,—वाहिनी शिरा, धमनी, शरीर की नाड़ी, वेग,—सख (वि०) पवन की भांति तेज,—सखः,—सखिः (पुं०) आग।

वार् (नपुं०) [वृ+णिच्+क्विप्] जल—भामि० १।३०। सम०—आसनम् जलाशय,—किटिः (वाः किटिः) सूस, —हंसी मिनी या हंस—दः बादल,— वरम् 1. जल 2. रेशम 3. भाषण 4. आम का बीज 5. घोड़े के गरदन की भौंरी 6. शंख,—धिः समुद्र, °भवम् एक प्रकार का नमक,—पुष्पम् (वाः पुष्पम्) लौंग,—भटः मगरमच्छ, घड़ियाल,—मुच् (पुं०) बादल, -राशिः समुद्र,- वटः किश्ती, नाव, -सदनम् (वाः सदनम्) जलाशय, टंकी,—स्थ (वि०) (वाः स्थान) जल में विद्यमान।

वारः [वृ+घञ्] 1. आवरण, चादर 2. समुदाय, बड़ी संख्या - जैसा कि 'वारयुवति' में 3. ढेर, परिमाण 4. रेवड़, लहंडा दि० १८।५६ 5. सप्ताह का एक दिन यथा बुधवार, शनिवार 6. समय, बारी- शशाकस्य वारः समायातः—पंच० १, रघु० १९।१८, अंग्रेजी के 'टाइम्ज'—Times शब्द की भांति बहुधा ब० व० में प्रयुक्त, बहुवारान् बहुत बार, कतिवारान् कितनी बार) 7. अवसर, मौका 8. दरवाजा, फाटक 9. नदी का सामने का तट 10. शिव,—रम् 1. मदिरापात्र 2. जलौघ, जल का ढेर। सम०—अंगना-नारी, —युवति (क्रो०), -योषित् (स्त्री०), -वनिता, —विलासिनी,—सुन्दरी,—स्त्री गणिका, बाजारू स्त्री, वेश्या, पतुरिया, रण्डी—रत्नम् १।२६, शृंगार० १६,—कोरः 1. पत्नी का भाई, साला (त्रिका० के अनुसार) 2. वडवाग्नि 3. कंघी 4. जूं 5. युद्ध का घोड़ा (यह अर्थ मेदिनीकोश में दिये हुए हैं) वु (वू) वा केले का वृक्ष,—मुख्या प्रधान वेश्या —वा (वा) नः, शस्त्र कवच, जिरह बख्तर—रघु० ४।८४, —वाणिः 1. बांसुरिया, मुरली बजाने वाला 2. वादित्र-कुशल 3. वर्ष 4. न्यायाधीश, (—णिः) वेश्या, वाणी वेश्या,—सेवा 1. वेश्यावृत्ति, रंडी का व्यवसाय 2. वेश्याओं का समुदाय।

वारक (वि०) [वृ+णिच्+ण्वुल्] रुकावट डालने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाला, विरोध करने वाला,- -क: 1. एक प्रकार का घोड़ा 2. सामान्य घोड़ा 3. घोड़े का कदम, कम् 1. पीड़ा होने का स्थान 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, हौबेर ।

वारकिन् (पुं०) [वारक+इनि] 1. विरोधी, शत्रु 2. समुद्र 3. शुभ लक्षणों से युक्त एक घोड़ा 4. वह संन्यासी जो केवल पत्ते खाकर रहता है ।

वारंक: (पुं०) पक्षी ।

वारंग: [वृ+अंगच् णित्] किसी चाकू का दस्ता या तलवार की मूठ ।

वारटम् [वृ+णिच्+अटच्] 1. सेना 2. सेनाओं का समूह, -टा हस्तिनी ।

वारण (वि०) (स्त्री० -णी) [वृ+णिच् +ल्युट्] हटाने वाला, मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, नम् हटाना, रोकना, अड़चन डालना -न भवति विघ्नपुरुषैरारब्धानाम् भर्तृ० २।१७ 2. रुकावट, विघ्न 3. मुकाबला, विरोध 4. प्रतिरक्षा, संरक्षा, प्रदर्शा, -ण: 1. हाथी -न भवति विम्लेतुर्वारणावारणाभ्याम् भर्तृ० २।१७, कु० ५।७०, रघु० १२।९२, शि० १८।५६ 2. कवच, शिरस्त्राण, -र: 1. बादल -वृषा, -सा, वल्लभा केले का वृक्ष, -साह्वयम् हस्तिनापुर का नाम ।

वारणसी दे० 'वाराणसी' ।

वारणावत (पु०, नपु०) एक नगर का नाम ।

वारत्रम् [वृत्रा+अण्] चमड़े का तस्मा ।

वारंवारम् (अव्य०) [वृ+णमुल्, द्वित्वम्] प्राय:, बहुधा, बार बार, फिर फिर वारंवारं निरवति दृशोरुद्गमं वाष्पपूर: मा० १।३५ ।

वारला [वार+ला+क+टाप्] 1. वर्ष, भिड़ 2. हस्तिनी, नु० 'वरटा' ।

वाराणसी [वरणा च असी च तयोर्नद्योरूरे भवा इत्यर्थे अण्+ङीप्, पृषो० साधु:] बनारस का पावन नगर ।

वारंनिधि: [वारां जलानां निधि:, षष्ठ्यलुक् स०] समुद्र ।

वाराह (वि०) (स्त्री० ही) [वराह+अण्] शूकर से सम्बद्ध, मुद्रा० ८।१९, याज्ञ० १।२५९, ह: 1. शूकर 2. एक प्रकार का वृक्ष । सम० -कल्प: वर्तमान कल्प (जिसमें हम रह रहे हैं) का नाम, पुराणम् अठारह पुराणों में से एक ।

वाराही [वाराह+ङीप्] 1. शूकरी 2. पृथ्वी 3. 'वराह' के रूप में विष्णु भगवान की शक्ति 4. माष । सम० -कंद: महाकंद, घेंटी ।

वारि (नपुं०) [वृ+इञ्] 1.जल यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति सुभा० 2. तरल पदार्थ 3. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, हौबेर, री (स्त्री०) 1. हाथी को बांधने का तस्मा वारी धारै: संस्मरे वारणानाम् शि० १८।५६, रघु० ५।४५ 2. हाथी को बांधने का रस्सा 3. हाथियों को पकड़ने का गड्ढा या पिंजरा 4. बंदी, कैदी 5. जलधारा 6. सरस्वती का नाम । सम०-ईश: समुद्र, उद्भवम् कमल, ओक: जोंक, कर्पूर: एक प्रकार की मछली, दुर्गीश, कुञ्जक: सिंघाड़ा, शृंगाटक का पौधा-किमी: जोंक, -चर: चरक: जलाशय, -चर (वि०) जलचर (-र:) 1. मछली 2. कोई जलजन्तु ज (वि०) जल में उत्पन्न, (ज:) 1. कमल -शि० १५।७२ 2. कोई भी द्विकोशीय (जम्) 1. कमल -शि० ४।६६ 2. एक प्रकार का नमक 3. एक प्रकार का पौधा, गौरसुवर्ण 4. लौंग, तस्कर: बादल, त्रा छतरी, द: बादल -दिनैर वारिद वारि दत्वातुरे-सुभा०, भामि० १।३०, (दम्) एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—द्र: चातक पक्षी, धर: बादल—नववारिधरोदयादहोभिर्विततं च निरातपत्वरम्यै:--विक्रम० ४।३, धारा वृष्टि की बौछार,—धि: समुद्र—वारिधिसुतामक्ष्णां दिदक्षु: शतै: -गीत० १२, नाथ: 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण 3. बादल, निधि: समुद्र, -पथ:,-थम् 'समुद्र यात्रा' जलयात्रा, -प्रवाह: झरना, जलप्रताप, भसि:,-मुच्, —द: बादल, यन्त्रम् जलघटिका, घड़ी । मालवि० २।१३, -रथ: डोंगी, नाव, घड़नई, -राशि: 1. समुद्र सरोवर, सहम् कमल,--वास: कलाल, शराब बेचने वाला,—वाह,-वाहन: बादल, श: विष्णु का नाम, संभव: 1 लौंग 2. अंजनविशेष 3. खस की सुगन्धित जड़, उशीर ।

वारित (भू० क० कृ०) [वृ+णिच्+क्त] 1. हटाया हुआ, मना किया हुआ, रोका हुआ 2. प्रतिरक्षित, प्रदर्शित ।

वारी दे० (स्त्री०-रि) ।

वारीड: [वारी+इट्+क] हाथी ।

वार्य: [वार्यति रिपून् वृ+णिच्+उण्] विजयकुंजर, जंगी हाथी ।

वार्धट: (पुं०) अरथी, (वह टिकटी जिस पर शव रख कर श्मशानभूमि में ले जाया जाता है) ।

वार्षण (वि०) (स्त्री०-णी) [वरुणस्येदम्-अण्] 1. वरुण-संबंधी 2. वरुण को सादर समर्पित 3. वरुण को दिया हुआ, ण: भारतवर्ष के नौ प्रभागों या खण्डों में से एक, णम् पानी ।

वार्षणि: [वरुण+इञ्] 1. अगस्त्य मुनि 2. भृगु ।

वार्षणी [वारुण+ङीप्] 1. पश्चिम दिशा (वरुण के द्वारा अधिष्ठित दिशा) 2. कोई मदिरा-पयोपि शौंडिकीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते—हि० ३।११, पंच० १।१७८,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) कु० ४।१२ 3. शतभिषज् नामक नक्षत्र 4. एक प्रकार का घास, दूब। सम० वल्लभः वरुण का विशेषण।

वारुडः [वृ+णिच्+उडै] नाग जाति का प्रधान, डः, डम् 1. आँख का मैल या ढोंड 2. कान का मैल 3 नाव में से पानी उलीच कर बाहर निकालने का बर्तन।

वारेन्द्री बंगाल के एक भाग का नाम, वर्तमान राजशाही।

वार्क्ष (वि०) (स्त्री०-क्षी) [वृक्ष+अण्] वृक्षों से युक्त क्षम् जंगल।

वार्णिकः [वर्ण+ठक्] लिपिकार, लेखक।

वार्तिकः, वार्तिकिः (स्त्री०) **वार्तिकिन्** (पुं०) } [वृत्
वार्तिकी (स्त्री०) **वार्तिकुः** (पुं०, स्त्री०) } +ठक्कु अत्व वृद्धिश्च, वार्तिक+इञ् इनि वा, वृत्+ठक्कु, ईत्वं वृद्धिश्च, वृत्+ठक्कु, वृद्धिः] बैंगन का पौधा।

वार्तिका (स्त्री०) बटेर, लवा।

वार्त्त (वि०) [वृत्ति+अण्] 1. स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त 2. हलका, कमजोर, सारहीन 3. व्यवसायी, त्तम् 1. कल्याण, अच्छा स्वास्थ्य —सर्वत्र नो वार्त्तमवेहि राजन्—रघु० ५।१३, १३।७१, स पृष्टः सर्वतो वार्त्तामाख्यद्राजे न संततिम्—१५।४१, शि० ३।६८ 2. कुशलता, दक्षता—अनुयुक्त इव स्ववार्त्तमुन्वैः—कि० १३।३४ 3. भूसी, दूरा।

वार्त्ता [वार्त्त+टाप्] 1. ठहरना, डटे रहना 2. समाचार खबर, गुप्त बात, सगारिकायाः को वार्ता—रत्न० ४ 3. आजीविका, वृत्ति 4. खेती, वैश्य का व्यवसाय रघु० १६।२, मनु० १०।८०, याज्ञ० १।३१० 5. बैंगन का पौधा। सम०—आरंभः व्यापारिक उपक्रम, या व्यवसाय—वहः,—हरः 1. दूत 2. अंगराग, मोमबत्ती आदि पदार्थ बेचने वाला,—वृत्तिः जो खेती के व्यवसाय से निर्वाह करे,—व्यतिकरः सामान्य विवरण।

वार्त्तायनः [वार्त्तानिमयनमनेन] समाचारवाहक, दूत, भेदिया, जासूस।

वार्त्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [वृत्ति+ठक्] 1. समाचार संबन्धी 2. समाचार लाने वाला 3. व्याख्यात्मक, कोष सम्बन्धी,—कः 1. दूत, भेदिया 2. किसान (वैश्यवर्ण का व्यक्ति),—कम् एक व्याख्यापरक अतिरिक्त नियम जो उक्त, अनुक्त, या किसी अधूरी बात की व्याख्या करता है अथवा किसी छूटी हुई बात को जोड़ देता है—उक्तानुदुरुक्तार्थव्यक्ति (चिंता) कारि तु वार्त्तिकम् (यह शब्द पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा निर्मित व्याख्यापरक नियमों के लिए विशेषरूप से प्रयुक्त होता है)।

वार्हतः [बृहन्+अण्] अर्जुन का नाम-कु० १५।१।

वार्द्धकम् [वृद्धानां समूहः तस्य भावः कर्म वा वुञ्] 1. बुढ़ापा—किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्द्धकयोग्यि वल्कलम्—कु० ५।४४, रघु०, १।८ नै० १।७७ 2. बुढ़ापे की दुर्बलता 3. बूढ़ों का समुदाय।

वार्द्धक्यम् [वार्द्धक+ष्यञ्] 1. बुढ़ापा 2. बुढ़ापे की दुर्बलता।

वार्धुषिः, वार्द्धुषिकः, वार्द्धुषिन् [पुं०] [=वार्द्धुषिक पृषो० कलोप, वृद्ध्यर्थं द्रव्यं वृद्धिः, तां प्रयच्छति वृद्धिठक् वृधि आदेशः, वार्द्धुषं वेत्ति इनि] सूदखोर, ब्याज पर रुपया देने वाला।

वार्द्धुष्यम् [वार्द्धुषि+ष्यञ्] सूद, अत्यन्त ऊँचा सूद, हद से ज्यादह ब्याज।

वार्ध्रम्, वार्ध्रो [वार्ध्र+अण्, ङीप् वा] चमड़े का तस्मा।

वार्ध्रोणसः [वार्ध्रीव नासिका अस्य ब० स०, नासिकाया नसा देशः, ष्यत्वम्] गैंडा, दे० 'वाध्रीणस' भी।

वार्मणम् [वर्मन्+अण्] कवच से सुसज्जित पुरुषों का समूह।

वार्यम् [वृ+ण्यत्] आशीर्वाद, वरदान (ब० व०) सम्पत्ति, जायदाद।

वार्ष्णेय [वर्ष्णा+अण्+टाप्] नीले रंग की मक्खी।

वार्ष (वि०) (स्त्री०-र्षी) [वर्ष+अण्] 1. वर्षा से संबंध रखने वाला 2. वार्षिक।

वार्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [वर्ष+ठक्] 1. वर्षा संबंधी वार्षिकं संजहारेन्द्रो धनुर्ज्यं रघुर्दधौ—रघु० ४।१६ 2. सालाना, प्रतिवर्ष घटित होने वाला 3. एक वर्ष तक रहने वाला—यानुपाणा प्रमाणं स्याद्भुक्तिर्वै दशवार्षिकी, इसी प्रकार वार्षिकमन्नम्-याज्ञ० १।१२४,—कम् जड़ी बूटी।

वार्षिला [वार्षिला शिला, पृषो० शस्य षः] ओला।

वार्ष्णेयः [वृष्णि+ढक्] 1. वृष्णि की सन्तान 2. विशेष रूप से कृष्ण 3. तल के सारथि का नाम।

वार्हि, वार्हद्रथ, वार्हद्रथि, वार्हस्पत, वार्हस्पत्य, वार्हिण, वार्ल, वार्लक } दे० बार्हि, बार्हद्रथ, बार्हद्रथि, बार्हस्पत, बार्हस्पत्य, बार्हिण, बार्ल, बार्लक।

वार्लखिल्य दे० 'बालखिल्य'।

वालिः [बाले केशे जाते वाल+डञ्] प्रसिद्ध वानरराज वालि जो उसके छोटे भाई सुग्रीव की इच्छानुसार राम के द्वारा मारा गया।

(वर्णन ऐसा मिलता है कि वानरराज वालि अत्यन्त बलवान् था, कहते हैं कि उसने रावण को जब वह उससे लड़ने गया, पकड़ कर अपनी काख में रख लिया। जब वालि दुंदुभि के भाई को मारने के लिए किष्किंधापुरी से बाहर गया तो उसके भाई सुग्रीव ने वालि को युद्ध में मरा जान, उसका सिंहासन हथिया लिया। जिस समय वालि वापिस आया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो सुग्रीव को भाग कर ऋष्यमूक पर्वत पर शरण लेनी पड़ी। सुग्रीव की पत्नी तारा को वालि ने छीन लिया, परन्तु राम के द्वारा वालि का वध होने पर वह फिर सुग्रीव को मिल गई)।

वालुका [वल्+उण्+कन्+टाप्] 1. रेत, बजरी—अकृतज्ञस्योपकृतं वालुकास्विव मूत्रितम् 2. चूर्ण 3. कपूर, —का,—की एक प्रकार की ककड़ी। सम०—आत्मिका शर्करा।

वालेय दे० बालेय।

वाल्क (वि०) (स्त्री०—की) [वल्क+अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ।

वाल्कल (वि०) (स्त्री०—ली) [वल्कल+अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ,—लम् बल्कल की पोशाक,—ली मदिरा, शराब।

वाल्मीकः, वाल्मीकिः [वल्मीके भवः अण् इञ् वा] एक विख्यात मुनि तथा रामायण के प्रणेता का नाम (जन्म से यह ब्राह्मण था, परन्तु बचपन में मातापिता द्वारा परित्यक्त होने पर यह कुछ बर्बर पहाड़ियों को मिल गया जिन्होंने इसे चोरी करना सिखलाया। यह शीघ्र ही चौर्यकला में प्रवीण हो गया और कुछ वर्षों तक बटोहियों को मारने और लूटने का कार्य करता रहा। एक दिन उसे एक महामुनि मिला जिसको इसने मार डालने का भय दिखा कर कहा कि जो कुछ पास है सब निकाल कर रख दो। परन्तु मुनि ने इसे कहा कि पहले घर जाकर अपनी पत्नी और बच्चों की पूछो कि क्या वह लोग तुम्हारे इस अनन्त अत्याचार व लूटमार के जो तुम अब तक करते रहे हो, साझीदार हैं। वह तुरन्त घर गया परन्तु उनकी अनिच्छा को जानकर बड़ा उद्विग्न हुआ। तब मुनि ने उसे 'मरा' 'मरा' (जो 'राम' प्रतीत है) उच्चारण करने के लिए कहा और अन्तर्धान हो गया। यह लुटेरा इस शब्द का बड़ा जप करता रहा, यहां तक कि उसका शरीर दीमकों द्वारा लाई गई मिट्टी से ढक गया। वही मुनि फिर आया और उसने इसे बांबी से निकाला, वल्मीक (बांबी) से निकलने के कारण इसका नाम वाल्मीकि पड़ गया। यही बाद में बड़ा प्रसिद्ध मुनि हुआ। एक दिन जब कि वह स्नान कर रहा था, उसने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को बहेलिये द्वारा मरते हुए देखा, इस पर इस ऋषि के मुख से उस दुष्ट बहेलिये के लिए अनजान में कुछ अभिशाप के शब्द निकल गये जिन्होंने अनुष्टुप् छन्द में श्लोक का रूप धारण किया। रचना की यह नई शैली थी। ब्रह्मा के आदेश से इसने 'रामायण' नामक प्रथम काव्य की रचना की। जब राम ने सीता का परित्याग कर दिया तो इस ऋषि ने सीता को अपने आश्रम में शरण दी, उसके दोनों पुत्रों का पालन पोषण किया, उन्हें शिक्षा दी। बाद में इसने इनको राम के सुपुर्द कर दिया।

वाल्लभ्यम् [वल्लभ+ष्यञ्] प्रिय होने का भाव, वल्लभता।

वावदूक (वि०) [पुनः पुनरतिशयेन वा वदति—वद्+यङ्, लुक्, द्वित्वम्=वावद्+ऊकञ्] 1. बातूनी, मुखर 2. वाक्पटु।

वाशयः [वश्+यङ्, लुक्, द्वित्वम्, अच्] एक प्रकार की तुलसी।

वावूटः (पुं०) नाव, डोंगी।

वावृत् (दिवा० आ० वावृत्यते) 1. छांटना, पसन्द करना, चुनना, प्रेम करना ततो वावृत्यमानासौ रामशालां न्यवीक्षत भट्टि० ४।२८ 2. सेवा करना।

वावृत (वि०) [वावृत्+क्त] छांटा गया, चुना गया, पसंद किया गया।

वाश्[1] (दिवा० आ० वाश्यते, वाशित) 1. दहाड़ना, क्रंदन करना, चीत्कार करना, चिल्लाना, हू हू करना, (पक्षियों का) गुनगुनाना, ध्वनि करना—(शिवाः) तां शिवाः प्रतिभयं ववाशिरे—रघु० ११।६१, शि० १८।७५, ७६, भट्टि० १४।१४, ७६ 2. बुलाना।

वाशकः [वाश्+ण्वुल्] 1. दहाड़ने वाला, मुखर, निनादी। **वाशनम्** [वाश्+ल्युट्] 1. दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, आक्रोश करना 2. पक्षियों का चहचहाना, कूजना, (मक्खियों का) भिनभिनाना।

वाशिः [वाश्+इञ्] अग्नि देवता, आग।

वाशितम् [वाश्+क्त] पक्षियों का कलरव।

वाशिता वाशिता [वाशित+टाप्, वस्+णिच्+क्त+टाप्] 1. हथिनी लक्ष्मणस्तत स वाशितासखः पुप्लुवतः कमलिनीरिव द्विपः—रघु० १९।११ 2. स्त्री।

वाशः [वाश्+रक्] दिन—अम् 1. आवास स्थान, घर 2. चौराहा 3. गोबर।

वाश्यः, श्यम् दे० 'वाश्य'।

वास्[1] (चुरा० उभ० वासयति—ते) 1. सुगंधित करना, सुवासित करना, धूप देना, धूनी देना, खुशबूदार करना वासितानन्दविशेषितगंधा—कि० ९।८०, प्रकटित पटवासैर्वासयन् काननानि—गीत० १, उत्तर० ३।१६, रघु० ४।७४, मेघ० २० ऋतु० ५।५ 2. सिक्त करना, भिगोना 3. मसाला डालना, मसालेदार बनाना।

ii (दिवा० आ०) दे० 'वाश्'।

वासः [वास्+घञ्] 1. सुगंध 2. निवास, आवास—वासो यस्य हरेः करे—भामि० १।६३, रघु० १९।२,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भग० १।४४ 3. आवास, रहना, घर 4. जगह, स्थित 5. कपड़े, पोशाक। सम० अ(आ)गारः,—रम्, —गृहम्, वेश्मन् (नपुं०) घर का आन्तरिक कक्ष, विशेषतः शयनागार - धर्मासनाद्विशति वासगृहं नरेन्द्रः —उत्तर० १।७, विक्रम० १,-कर्णी वह कमरा जहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन (नाच, कुश्ती, तथा अन्य प्रतियोगिताएँ) होते हैं, -ताम्बूलम् अन्य सुगन्धित मसालों से युक्त पान, -भवनम्, -मन्दिरम्, सदनम् निवासस्थान, घर, -यष्टिः (स्त्री०) पक्षियों के बैठने का डंडा, छतरी, अड्डा, -वेणी० २।१, मेघ० ७९, —योगः एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण, सज्जा= वासक सज्जा दे०।

वासक (वि०) (स्त्री० -सिका) [वास्+णिच्+ण्वुल्] 1. सुगन्धित करने वाला, सुवासित करने वाला, धुपाने वाला, धूप देने वाला 2. बसाने वाला, आबाद करने वाला, -कम् वस्त्र, कपड़े। सम० —सज्जा सज्जिका वह स्त्री जो अपने प्रेमी का स्वागत, सत्कार करने के लिए अपने आपको वस्त्राभूषणों से भूषित करती तथा घर को साफ सुथरा रखती है, विशेषतः उस समय जब कि प्रेमी का मिलन नियत किया हुआ हो; भावी नायिका, नायिका का भेद साहित्यदर्पणकार परिभाषा देता है: कुरुते मण्डनं यस्याः (या तु) सज्जिते वासवेश्मनि, सा तु वासकसज्जा स्याद्विदितप्रियसंगमा ।२०; भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा विलपति रोदिति वासकसज्जा —गीत० ६।

वासतः [वास्+अनच्] गधा।

वासतेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वसतये हितं साधुर्वा ढक्] निवास करने के योग्य,— यी रात।

वासयत् [वास्+ल्युट्] 1. सुगन्धित करना, सुवासित करना 2. धुपाना 3. निवास करना, टिकना 4. आवासस्थान, निवासस्थान 5. कोई पात्र, आधार, टोकरी, सन्दूक, बर्तन आदि—याज्ञ० २।२५, (वासनं निक्षेपाधारभूतं संपुटादिकं समुद् ग्रन्थादियुतम्) 6. ज्ञान 7. वस्त्र, परिधान 8. गिलाफ, लिफाफा।

वासना [वास्+णिच्+युच्+टाप्] 1. स्मृति में प्राप्त ज्ञान, तु० भावना 2. विशेषतः अपने पहले शुभाशुभ कर्मों का अनजाने में मन पर पड़ा हुआ संस्कार जिससे सुख या दुःख की उत्पत्ति होती है 3. उत्प्रेक्षा, कल्पना, विचार 4. मिथ्या विचार, अज्ञान 5. अभिलाषा, इच्छा, रुचि—संसारवासनाबद्धशृंखला—गीत० ३ 6. आदर, रुचि, सादर मान्यता लेषां (पक्षिणां) मध्ये वयं तु महती वासना चातकेषु-भामि० ४।१७।

वासंत (वि०) (स्त्री० -ती) [वसन्त+अण्] 1. वसन्त कालीन, माधवी, बहार के लायक, वसन्तर्तु में उत्पन्न 2. जीवन का वसन्त, जवान 3. परिश्रमी, सावधान (कर्तव्यपालन में),—तः 1. ऊँट 2. जवान हाथी 3. कोई भी जवान जन्तु 4. कोयल 5. दक्षिणी पवन, मलय पहाड़ से चलने वाली हवा तु० मलय समीर 6. एक प्रकार का लोबिया 7. लंपट, दुराचारी, ती 1. एक प्रकार की चमेली (सुगन्धित फूलों से लदी हुई) वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवैः—गीत० १ 2. बड़ी पीपल 3. जूही का फूल 4. कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव—तु० वसंतोत्सव।

वासंतिक (वि०) (स्त्री०-की) [वसन्त+ठक्] वसन्त ऋतु से संबद्ध,—कः 1. नाटक का विदूषक या हंसोकड़ा 2. अभिनेता।

वासरः रम् [सुखं वासयति जनान् वास्+अर] (सप्ताह का) एक दिन। सम० संगः प्रातः काल।

वासव (वि०) (स्त्री० वी) [वसुरेव स्वार्थे अण्, वसूनि सन्त्यस्य अण् वा] इन्द्र सम्बन्धी पांडुता वासवी दिगयासीत् का०, वासवीनां चमूनाम् मेघ० ४२, वः इन्द्र का नाम कु० ३।२, रघु० ५।५। सम० वत्ता 1. सुबन्धु की एक रचना 2. कई कहानियों में वर्णित नायिका (इस स्त्री) का वर्णन भिन्न-भिन्न कवि विविध प्रकार से करते हैं। 'कथासरित्सागर' के अनुसार वह उज्जयिनी के महाराजा चण्डमहासेन की पुत्री थी जिसका अपहरण वत्स के राजा उदयन ने किया था। श्रीहर्ष उसे प्रद्योत राजा की पुत्री बतलाते हैं (दे० रत्न० १।१०) और मल्लि० की टीका के अनुसार—प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वासराजोऽत्र जहे ··· वह उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री थी। भवभूति कहते हैं कि उसके पिता ने उसकी सगाई राजा संजय के साथ की थी, परन्तु उसने अपने आपको उदयन की सेवा में अर्पित किया (दे० मा० २)। परन्तु सुबन्धु की वासवदत्ता की वास की कहानी से कोई समानता नहीं। हाँ, उसका नाम अवश्य एक ही था। भवभूति के अनुसार उसके पिता ने उसकी सगाई पुष्पकेतु के साथ की थी, परन्तु कंदर्पकेतु उसे अपहृत कर ले गया। यह संभव है कि 'वासवदत्ता' नाम की कई नायिकाएँ हों)।

वासवी [वासव+ङीप्] व्यास की माता का नाम।

वासस् (नपुं०) [वस् आच्छादने असि णिच्च] वस्त्र, परिधान, कपड़े वाससि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि भग० २।२२, कु० ७।९, मेघ० ५९।

वासिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+इञ्] बसूला, छोटी कुल्हाड़ी, छेनी,—सिः निवास, आवास।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वासित (भू० क० कृ०) [वास्+क्त] 1. सुवासित, या सुगन्धित 2. भिगोया, तर किया हुआ 3. मसालेदार, मसाला डाला गया 4. कपड़े पहने हुए, वस्त्रों से सज्जित 5. जनसंकुल, आबाद 6. विख्यात, प्रसिद्ध, —तम् 1. पक्षियों का कलरव या कूजना 2. ज्ञान —तु० वासना (२)।

वासिता [वास्+क्त+टाप्] दे० 'वाशिता'।

वासिष्ठ (शि) ष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [वसिष्ठ+शिष्ठ+अण्] वशिष्ठ संबंधी, वशिष्ठ द्वारा रचित (बल्कि दृष्ट) जैसा कि ऋग्वेद का दसवाँ मण्डल,—ष्ठः वशिष्ठ की सन्तान।

वासुः [सर्वत्र वसति-वस्+उण्] 1. आत्मा 2. विश्वात्मा, परमात्मा 3. विष्णु।

वासुकिः, वासुकेयः [वसुक+इञ्, ढक् वा] एक विख्यात नाग का नाम, नागराज (कहते हैं कि यह कश्यप का पुत्र था)—कु० २।३८, भग० १०।२८।

वासुदेवः [वसुदेवस्यापत्यम् अण्] 1. वसुदेव की संतान 2. विशेष रूप से कृष्ण।

वासुरा [वस्+उरण्+टाप्] 1. पृथ्वी 2. रात 3. स्त्री 4. हल्दी।

वासूः (स्त्री०) [वास्+ऊ] तरुणी कन्या, कुमारी, (मुख्यतः नाटकों में प्रयुक्त)—एषासि वासु शिरसि गृहीता—मृच्छ० १।४१, वासु प्रसीद—मृच्छ०।

वास्त दे० वास्तु।

वास्तव (वि०) (स्त्री०—वी) [वस्तु+अण्] 1. असली, सच्चा, सारयुक्त 2. निर्धारित, निश्चित,—वम् कोई भी निश्चित या निर्धारित बात।

वास्तवा [वास्तव+टाप्] प्रभात, उषा।

वास्तविक (वि०) (स्त्री०—की) [वस्तुतो निर्वृत्तं ठक्] सच्चा, असली, सारगर्भित, यथार्थ विशुद्ध।

वास्तिकम् [वस्त+ठक्] बकरों का समूह।

वास्तव्य (वि०) [वस्+तव्यत्, णित्] 1. निवासी, वासी, रहने वाला—पुरेऽस्य वास्तव्यकुटुंबितां ययुः—शि० १।६६ 2. रहने के योग्य, वास करने के योग्य —व्यः 1. आवासी, रहने वाला, निवासी—नानादिगंतवास्तव्यो महाजनसमाजः—मा० १, व्यम् 1. रहने के योग्य स्थान, घर 2. वसति, निवासस्थान।

वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुण्] 1. घर बनाने की जगह, भवनभूखण्ड, जगह 2. घर, आवास, निवास भूमि,—वेश्मविधये वास्तु किं न दीपः प्रकाशयेत्—सुभा० मनु० ३।८९। सम०—आगः घर की आधारशिला रखते समय किया जाने वाला यज्ञानुष्ठान।

वास्तेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वस्ति+ढक्] 1. रहने के योग्य, निवास करने के योग्य 2. पेडू संबंधी।

वास्तोष्पतिः [वास्तोः पतिः, नि० षष्ठ्या अलुक्, परत्वम्] 1. एक वैदिक देवता (घर की आधारशिला की अधिष्ठात्री देवता मानी जाती है) 2. इन्द्र का नाम।

वास्त्र (वि०) [वस्त्र+अण्] वस्त्र से निर्मित,—त्रः कपड़े से ढकी हुई गाड़ी।

वास्प दे० 'बाष्प'।

वास्प्येयः [वास्पाय हितं वाष्प+ढक्] 'नागकेशर' नाम का वृक्ष।

वाह् (भ्वा० आ० वाहते) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, उद्योग करना।

वाह (वि०) [वह्+घञ्] धारण करने वाला, ले जाने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि अंबुवाह, और तोयवाह में,—हः 1. ले जाना, धारण करना 2. कुली 3. खींचने वाला जानवर, बोझा ढोने वाला जानवर 4. घोड़ा—रघु० ४।५६, ५।७३ १४।५२ 5. साँड़—कु० ७।४९ 6. भैंसा 7. गाड़ी, यान 8. भुजा 9. वायु हवा 10. एक मापविशेष जो दस कुंभ या चार भार के तुल्य होती है। वाही भारचतुष्टयं। सम०—द्विषत् (पुं०) भैंसा, —श्रेष्ठः घोड़ा।

वाहकः [वह्+ण्वुल्] 1. कुली 2. गड़वाला, गाड़ीवान् 3. घुड़ सवार।

वाहनम् [वाहयति-वह्+णिच्+ल्युट्] 1. धारण करना, ले जाना, ढोना 2. (घोड़े आदि को) हाँकना 3. गाड़ी, किसी प्रकार की सवारी—मनु० ७।७५, मे० २२।४५ 4. खींचने वाला या सवारी का जानवर, जैसा कि घोड़ा—स दुर्धापयशाः प्रापयाभ्यं श्रांतवाहनः—रघु० १।४८, ९।२५, ६० 5. हाथी।

वाहसः [न वहति नगच्छति, वह्+असच्] 1. पतनाला, जलमार्ग 2. बड़ा नाग, अजगर।

वाहिकः [वाह+ठक्] 1. बड़ा ढोल 2. बैलगाड़ी 3. बोझ ढोने वाला।

वाहितम् [वह्+णिच्+क्त] भारी बोझ।

वाहित्थम् [वाहित्+स्था+क] हाथी के मस्तक का ललाट से नीचे का भाग।

वाहिनी [वाहो अस्त्यस्याः इनि ङीप्] 1. सेना, आशिषं प्रयुयुजे न वाहिनीम्—रघु० ११।६, १३।६६ 2. अक्षौहिणी सेना जिसमें ८१ गजारोही, ८१ रथारोही, २४३ अश्वारोही तथा ४०५ पदाति सम्मिलित हैं 3. नदी। सम० निवेशः सेना का पड़ाव, शिविर,—पतिः 1. सेनापति, सेनाध्यक्ष 2. (नदियों का स्वामी) समुद्र।

वाहीक दे० 'बाहीक'।

वाहुक दे० 'बाहुक'।

वाह्य दे० 'बाह्य'।

वाह्लिकः (पुं०) एक देश का नाम, (आधुनिक बलख)। सम० —जः बुलख देश का घोड़ा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाह्लि (ह्ली) कः (पुं०) 1. एक देश का नाम (आधुनिक बलख) 2. बल्ख देश का घोड़ा, बलख देश में पला घोड़ा,—कम् 1. जाफरान, केसर 2. हींग।

वि (अव्य०) [वा+इण्, स च डित्] 1. धातु और संज्ञा शब्दों के पूर्व जुड़ कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है:—(क) पृथक्करण, वियोजन (एक ओर, अलग-अलग, दूर, परे आदि) यथा वियुज्, विहृ, विचल् आदि (ख) किसी कर्म का उलट, यथा क्री खरीदना, विक्री बेचना, स्मृ याद करना विस्मृ भूल जाना (ग) प्रभाग यथा विभज्, विभाग (घ) विशिष्टता—यथा दिशिष्, विशेष; विविच्, विवेक (ङ) विभेदीकरण व्यवच्छेदः (च) क्रम, व्यवस्था यथा विधा, विरच् (छ) विरोध यथा विरुध्, विरोध; अभाव यथा विनी, विनयन (ज) विचार, यथा विचर्, विचार (झ) तीव्रता-विध्वंस 2. संज्ञा या विशेषण शब्दों में (जो कि क्रिया से सटे हुए न हों) जुड़कर 'वि' निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) निषेध या अभाव (ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग अधिकतर उसी प्रकार होता है जैसे कि 'अ' या 'निर्' का, अर्थात् इसके लगने पर बहुव्रीहि समास बनता है—विधवा, व्यभ्रः आदि (ख) तीव्रता, महत्ता—यथा विकराल (ग) वैविध्य-यथा विचित्र (घ) अन्तर—यथा विलक्षण (ङ) बहुविधता—यथा विविध (च) वैपरीत्य, विरोध—यथा विलोम (छ) परिवर्तन—यथा विकार (ज) अनौचित्य —यथा विजन्मन्।

विः (पुं० स्त्री०) [वा+इण्, स च डित्] 1. पक्षी 2. घोड़ा।

विंश (वि०) (स्त्री०—शी) [विंशति+डट्, तेः लोपः] बीसवाँ,—शः बीसवाँ भाग।

विंशक (वि०) (स्त्री०—की) [विंशति+क्वुन्, तिलोपः] बीस।

विंशतिः (स्त्री०) [द्वे दश परिमाणमस्य नि० सिद्धिः] बीस, एक कोड़ी। समः ईशः, ईशिन् (पुं०) बीस गाँवों का शासक।

विकम् [विगतं कं जलं सुखं वा यत्र] ताड़ी देने वाली गाय का दूध।

विकटङ्कः,-टः [वि+कंट्+अटन्, अतच् वा] एक वृक्ष विशेष (जिसकी लकड़ी से खुवा बनते हैं) —रघु० ११।२५।

विकच (वि०) [विकच्+अच्] 1. खिला हुआ, फूला हुआ, खुला हुआ, (जैसा कि कमल आदि);—विकचकिंशुकसंहतिरुच्यते:—शि ६।२१, रघु० ९।३७ 2. फैलाया हुआ, बखेरा हुआ —भामि० १।३ 3. बालों से शून्य, —चः 1. बौद्धसाधु 2. केतु।

विकट (वि०) [वि+कटच्] 1. विकराल, कुरूप 2. (क) दुर्धर्ष, भयानक, भीषण डरावना—पृथुललाटतटघटित विकट भ्रुकुटिना वेणी०१, विद्युदिव विकटविधुतुददंतदलनगलितामृतधारम्—गीत० ४. (ख) दारुण, खूंखार, बर्बर 3. बड़ा, विस्तृत, विशाल, प्रशस्त, व्यापक जृम्भातिडम्बिविकटोदरमस्तु चापम्—उत्तर० ४।२९, आबद्धविकटेन त्रिपुरदुर्वक्षसैव कुचनष्टहलमन्या—शि० १०।४२, १३।१०, मा० ७ 4. घमंडी, अभिमानी विकटपरिकरोऽपि उत्तर०६, महावीर० ६।३२ 5. सुन्दर मृच्छ० ९ 6. त्योरी चढ़ाये हुए, 7. गूढ 8. अकल प्रयुक्त हुए, —टम् फोड़ा, अर्बुद या रसौली।

विकत्थन [वि+कत्थ्+ल्युट्] 1. शेखी बघारने वाला, डींग मारने वाला, आत्मश्लाघा करने वाला, अपनी प्रशंसा करने वाला विद्वांसोऽप्यात्मिकत्थनां भवंति मुद्रा० ३, रघु० १४।७३ 2. व्यंग्योक्ति पूर्वक प्रशंसा करने वाला,—नम् 1. दर्पोक्ति, शेखी जमाना 2. व्याजोक्ति, मिथ्या प्रशंसा।

विकत्थना [वि+कत्थ्+अच्+टाप्] शेखी बघारना, डींग, आत्मश्लाघा, दर्पोक्ति 2. प्रशंसा 3. मिथ्या प्रशंसा, व्यंग्योक्ति।

विकत्थ्य (वि०) [विशेषेण कत्थो यस्य-प्रा० ब०] 1. दीर्घ निःश्वास लेने वाला 2. अस्थिर, चंचल।

विकरः [विकीर्यते हस्तपादादिकमनेन-वि+कृ+अप्] बीमारी, रोग।

विकरणः [वि+कृ+ल्युट्] क्रियारूपरचनापरक निर्दिष्ट ओढ़ (अनुपगी), क्रिया के रूपों की रचना के समय धातु और लकार के प्रत्ययों के बीच में रक्खा जाने वाला गणद्योतक चिह्न।

विकराल (वि०) [विशेषेण कराल: प्रा० स०] अत्यंत डरावना या भयानक, भयपूर्ण।

विकर्ण: [विशिष्टौ कर्णौ यस्य प्रा० ब०] एक कुरुवंशी राजकुमार का नाम भग० १।८।

विकर्तनः [विशेषेण कर्तनं यस्य प्रा० ब०] 1. सूर्य—उत्तर० ५ 2. मदार का पौधा 3. वह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

विकर्मन् (वि) [विरुद्धं कर्म यस्य प्रा० ब०] अनुचित रीति से कार्य करने वाला, नपुं० अवैध या प्रतिनिषिद्ध कार्य, पापकर्म भग० ४।१७, मनु० २।२२६। समः —क्रिया अवैध कार्य, अवाछनीय आचरण,—स्थ (वि०) प्रतिषिद्ध कार्यों को करने वाला, दुर्व्यसनों में ग्रस्त।

विकर्षः [वि+कृष्+घञ्] 1. अलग-अलग रेखांकन करना, स्वतंत्र रूप से खींचना 2. तीर, बाण।

विकर्षणः [वि+कृष्+ल्युट्] कामदेव के पाँच बाणों में

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से एक, -थम् 1. रेखांकन, खींचना, अलग-अलग खींचना 2. तिरछा फेंकना।

विकल (वि०) [विगतः कलो यत्र प्रा० ब०] 1. किसी भाग या अंग से वञ्चित, सदोष, अधूरा, अपाहज, विकलांग कुटबुद्धिकलेन्द्रियाः—याज्ञ० २।७०, मनु० ८।२६, उत्तर० ४।२४ 2. डरा हुआ, त्रस्त 3. शून्य, विरहित आरामाधिपतिर्विवेकविकलाः—भामि० १। ३१, मृच्छ० ५।४१ 4. विक्षुब्ध, कमजोर, उत्साह शून्य, हतोत्साह, म्लान, अवसन्न, स्फूर्तिहीन—किमिति विरौद्रसि रोदिषि विकला विहसति युवतिसभा तव सकला—गीत० ९, विरहेण विकलहृदया—भामि० २।७१, १६४, श्रुतिमूले पिकरुतविकले—गीत० १२, उत्तर ३।३१, मा० ७।१, ९।१२ 5. मुर्झाया हुआ, क्षीण। सम० अंग (वि०) अधिक या कम अंगों वाला, -इन्द्रिय (वि०) जिसकी ज्ञानेन्द्रियाँ दूषित या विकृत हैं, -पाणिकः लूला-लंगड़ा।

विकला [विगतः कलां यस्याः—प्रा० ब०] कला का साठवाँ भाग।

विकल्पः [वि+क्लृप्+घञ्] 1. सन्देह, अनिश्चय, अनिर्णय, संकोच तत् सिषेवे नियोगेन स विकल्पपराङ्मुखः—रघु० १७।४९, २. शंका, मुद्रा० १ 3. कूटयुक्ति, कला मायाविकल्परचितैः रघु० १३।७५ 4. वरणस्वतन्त्रता, (अर्थ० में) ऐकल्पिक 5. प्रकार, भेद 6. अशुद्धि, भूल, अज्ञान। सम० -उपहारः वैकल्पिक पुरस्कार, -जालम् जाल की तरह का अनिर्णय, दुविधा।

विकल्पनम् [वि—क्लृप्+ल्युट्] 1. सन्देह में पड़ना 2. इच्छा की छूट 3. अनिर्णय।

विकल्मष (वि०) [विगतः कल्मषो यस्य प्रा० ब०] निष्पाप, कलंकरहित, निर्दोष।

विकषा (सा) [वि+कष् (ष्)+अच्+टाप्] बंगाली मजीठ।

विकसः [वि—कस्+अच्] चन्द्रमा।

विकसित (भू० क० कृ०) [वि+कस्+क्त] खिला हुआ, पूरा खुला हुआ या फूला हुआ—भामि० १।१००।

विकस्वर (श्व) र (वि०) [विकस्+वरच्] 1. खुला हुआ, फूला हुआ—कुशेशयैरत्र जलाशयोत्थितां मुदा रमन्ते कलभा विकस्वरैः—शि० ४।३३ 2. ऊँचे स्वर वाला, (ध्वनि आदि) जो स्पष्ट सुनाई दे, उदढीयत वैकुंताल्करयहृजादस्य विकस्वरस्वरैः—नै० २।५।

विकारः [वि+कृ+घञ्] 1. रूप या प्रकृति का परिवर्तन, रूपान्तरण, प्राकृतिक अवस्था से व्यत्यय, तु० विकृति 2. परिवर्तन, अदल-बदल, सुधार—पंच० १।४४ 3. बीमारी, रोग, व्याधि विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽऽरम्भः प्रतीकारस्य—श० ४, कु० २।३८ 4. मन या अभिप्राय का बदलना—मूर्च्छत्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१९ 5. भावना, संवेग—उत्तर० १।३५, ३।२५, ३६ 6. विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग -कि० १७।२३ 7. विकृत रूप, आकुंचन (मुखमुद्रा, हावभाव आदि) प्रथममुल्लविकारैर्हसितयामास गुहम् -कु० ७।९५ 8. (सांख्य० में) जो पूर्वस्रोत या प्रकृति से विकसित हो। सम०—हेतुः प्रलोभन, फुसलाना, उद्वेग का कारण—विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः—कु० १।५९।

विकारित (वि०) [वि+कृ+णिच्+क्त] परिवर्तित, पथभ्रष्ट, भ्रष्टाचारग्रस्त।

विकारिन् (वि०) [वि+कृ+णिनि] परिवर्तनशील, संवेग तथा अन्य संस्कारों को ग्रहण करने वाला, भ्रमति भुवने कंदर्पाज्ञा विकारि च यौवनम्—मा० १।१७।

विकालः, विकालकः [विरुद्धः कालः प्रा० स०] संध्या, सांध्यकालीन छुट्टी, दिन की समाप्ति।

विकालिका [विज्ञातः कालो यया—प्रा० ब०] पानी में रक्खा हुआ छिद्रयुक्त ताम्रकलश जो क्रमशः पानी भरने के द्वारा समय का अंकन करता है—तु० मानरन्ध्रा।

विकाशः [वि+कश्+घञ्] 1. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखलावा 2. खिलना, फूलना (इस अर्थ में प्रायः विकाश लिखा जाता है)—कु० ३।२९ 3. खुला सीधा मार्ग—कि० १५।५२ 4. टेढ़ा मार्ग—कि० १५।५२ 5. हर्ष, आनन्द—कि० १५।५२ 6. उत्सुकता, प्रबल उत्कंठा—शि० ९।४१, (यहाँ इसका अर्थ खिलना, भी है) 7. एकान्तवास, एकाकीपन, सूतापन।

विकाशक (वि०) [स्त्री० -शिका] [वि+काश्+ण्वुल्] 1. प्रदर्शन करने वाला 2. खोलने वाला।

विकाशनम् [वि+काश्+ल्युट्] 1. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखावा 2. खिलना, (फूलों का) फूलना।

विकाशि (सि) न् (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+काश् (श्)+णिनि] 1. दिखाई देने वाला, चमकने वाला 2. फूलने वाला, खुलने वाला, खिलने वाला।

विकासः [वि+कस्+घञ्] खिलना, फूलना—दे० ऊ० विकाश।

विकासनम् [वि+कस्+ल्युट्] फूलना, खुलना, खिलना।

विकिरः [वि+कृ+अप्] 1. बिखरा हुआ भाग या गिरा हुआ नन्हा टुकड़ा 2. जो फाड़ता या बखेरता है पक्षी -ककोलीफलजग्धिमुग्धविकिरव्याहारिणस्तद्भुवो भागाः—मा० ६।१९ 3. कूआँ 4. वृक्ष।

विकिरणम् [वि+कृ+ल्युट्] 1. बखेरना, इधर उधर फेंकना छितराना 2. दूर-दूर तक फैलाना 3. फाड़ डालना 4. हिंसा करना 5. ज्ञान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+कृ+क्त] 1. बखेरा हुआ छितराया हुआ 2. प्रसृत 3. विख्यात । सम०—केश, - मूर्धज (वि०) बालों को नोचने वाला, बालों को बिखेरने या उलझा-पुलझा करने वाला,—शल्य एक प्रकार की सुगन्ध ।

विकुण्ठः [विगता कुंठा यस्य प्रा० ब०] विष्णु का स्वर्ग ।

विकुर्वाण (वि०) [वि+कृ+शानच्] 1. परिवर्तित होने वाला, या परिवर्तन करने वाला 2. प्रसन्न, खुश, हृष्ट ।

विकुलः [वि+कस्+रक्, उत्वम्] चन्द्रमा ।

विकूजनम् [वि+कूज्+ल्युट्] 1. गुटुरगूं करना, कलरव करना 2. (अंतड़ियों या नलों में) गुड़गुड़ाहट ।

विकूणनम् [वि+कूण्+ल्युट्] तिरछी चितवन, कटाक्ष ।

विकूणिका [वि+कूण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] नाक ।

विकृत (भू० क० कृ०) 1. परिवर्तित, बदला हुआ, सुधारा हुआ 2. रोगी, बीमार 3. क्षतविक्षत, विरूपित, जिसकी सूरत बिगड़ गई हो 4. अपूर्ण अधूरा 5. आवेशग्रस्त 6. पराङ्मुख, ऊबा हुआ 7. बीभत्स 8. अनोखा, असाधारण (दे० वि पूर्वक कृ),—तम् 1. परिवर्तन, सुधार 2. और भी बिगड़ जाना, बीमारी 3. अरुचि, जुगुप्सा ।

विकृतिः (स्त्री०) [वि+कृ+क्तिन्] (अभिप्राय, मन, रूप आदि का) बदलना—चित्तविकृतिः, अंगुलीयकं सुवर्णस्य विकृतिः 2. अस्वाभाविक, अचानक घटित होने वाली परिस्थिति, दुर्घटना—मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः —रघु० ८।८७ 3. बीमारी 4. उत्तेजना, उद्वेग, क्रोध, रोष—किं० १३।५६, शि० १५।११, ४०, दे० 'विकार' और 'विक्रिया' भी ।

विकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+कृष्+क्त] 1. अलग-अलग घसीटा हुआ, इधर-उधर खींचा हुआ 2. आकृष्ट, खींचा हुआ, किसी की ओर आकृष्ट 3. विस्तारित, फैलाया हुआ 4. शब्दायमान (दे० वि पूर्वक कृष्) ।

विकेश (वि०) (स्त्री० - शी) [विकेशाः केशायस्य —प्रा०व० [1. बिखरे बालों वाला 2. बिना बालों का गंजा (सिर), -शी 1. ढीले बालों वाली स्त्री 2. बालों के शून्य (गंजी) स्त्री 3. मौंढी, या बालों की छोटी छोटी लटों को मिला कर बनाई हुई चोटी, वेणी ।

विकोश वि० (वि०) [विगतः कोशो यस्य—प्रा० ब०] 1. बिना भूसी का 2. बिना म्यान का, बिना ढका हुआ—किं० १७।४५, रघु० ७।४८ ।

विक्कः [विक्+कै+क] तरुण हाथी ।

विक्रमः [वि+क्रम्+घञ्, अच् वा] 1. कदम, डग, पग —शि० ७।६, तु० त्रिविक्रम 2. कदम रखना, चलना 3. पकड़ लेना, प्रभाव डाल लेना 4. वीरता, शौर्य, नायक की बहादुरी, अनुत्सेकः खलु विक्रमालंकारः —विक्रम० १, रघु० १२।८७, ९३ 5. उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध राजा का नाम —दे० परि० २ 6. विष्णु का नाम । सम०—अर्कः आदित्यः दे० विक्रम, —कर्मन् (नपुं०) शूरवीरता का कार्य, पराक्रम के करतब ।

विक्रमणम् [वि+क्रम्+ल्युट्] (विष्णु का) एक डग —छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन गीत० १ ।

विक्रमिन् (वि०) [वि+क्रम्+णिनि] पराक्रमी, शूरवीर—पुं० 1. सिंह 2. नायक 3. विष्णु का विशेषण ।

विक्रयः [वि+क्री+अच्] बिक्री, बेचना मनु० ३।५४ । सम०—अनुशयः बिक्री का खण्डन करना,—पत्रम् बिक्री का पत्र, बैनामा ।

विक्रयिकः, विक्रयिन् (पुं०) [बिक्री+इकन्, णिनि वा] व्यापारी, विक्रेता, बेचने वाला ।

विक्रान्तः [वि+कस्+रक्, अत्वं, रेफादेशः] चाँद ।

विक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+क्रम्+क्त] 1. परे तक गया हुआ, डग रखते हुए 2. शक्तिशाली, शूरवीर, बहादुर, पराक्रमी 3. जेता, (अपने शत्रुओं को) परास्त करने वाला,—न्तः 1. शूरवीर, योद्धा 2. सिंह, न्तम् 1. पद, डग 2. घोड़े की सरपट चाल 4. शूरवीरता, बहादुरी, पराक्रम ।

विक्रान्तिः (स्त्री०) [वि+क्रम्+क्तिन्] 1. कदम रखना, डग भरना 2. घोड़े की सरपट चाल 3. शूरवीरता बहादुरी, पराक्रम ।

विक्रान्तृ (वि०) [वि+क्रम्+तृच्] बहादुर, विजयी, पुं० सिंह ।

विक्रिया [वि+कृ+श+टाप्] 1. परिवर्तन, सुधार, बदलना—समभूत्पद्धतिर्जनितानन्दविक्रियान्—रघु० १२। ७१, १०।१७ 2. विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग, जोश आना—अथ तेन निगृह्य विक्रियामभिभाषः फलमेतदन्वभूत् कु० ४।४१, ३।३४ 3. क्रोध, गुस्सा, अप्रसन्नता—साधोः प्रकोपित्स्यापि मनो नायाति विक्रियाम् —सुभा०, लिंगमूर्देः संवृतविक्रियास्ते—रघु० ७।३० 4. उलट, अनिष्ट—कु० ६।२९ (विक्रियायै वैकल्योत्पादनाय 'दोष' मल्लि०) 5. (भोजे इरयादि) बुनना, आकुंचन वा (माँहों की) सिकुड़न—भ्रूविक्रियायां विरतप्रसर्गैः कु० ३।४७ 6. आकस्मिक आन्दोलन जैसा कि 'रोमविक्रिया' में —विक्रम० १। १२, 'रोमांच होना' 7. अकस्मात् रोगग्रस्तता, बीमारी 8. उल्लंघन, (उचित कर्तव्य का) बिगाड़ देना, रघु० १५।४८ । सम० उपमा दण्डी द्वारा वर्णित 'उपमा का एक भेद दे० काव्य० २।४१ ।

विक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+कृष्+क्त] 1. चीत्कार किया, चिल्लाया 2. कठोर, क्रूर, निर्दय,—ष्टम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

1. सहायता प्राप्त करने के लिए क्रंदन करना, दुहाई देना 2. गाली।

विक्रेय (वि०) [वि+क्री+यत्] बेचने के योग्य, (कोई वस्तु) बिक्री कर दी जाने के योग्य।

विक्रोशनम् [वि+क्रुश्+ल्युट्] 1. चिल्लाना, चीत्कार करना 2. गाली देना।

विक्लव (वि०) [वि+क्लु+अच्] 1. भयभीत, भड़का हुआ, चौंका हुआ, त्रस्त —आवर्कांक्ष घनशब्दविक्लवाः—रघु० १९।३८, कु० ४।११ 2. डरपोक —शि० ७।४३, मेघ० ३७ 3. रोगग्रस्त, परास्त —कि० १।६ 6. विक्षुब्ध, उत्तेजित, घबराया हुआ, विह्वल श० ३।२६ 5. दुःखी, कष्टग्रस्त, संतप्त—शि० १२।६३, कु० ४।३९ 6. ऊबा हुआ, अरुचिवान् —मृगयाविक्लवं चेतः श० २ 7. हकलानेवाला, लड़खड़ानेवाला —प्रस्थानविक्लवगतेरवलंबनार्थो श० ५।३।

विक्लिन्न (भू० क० कृ०) [वि+क्लिद्+क्त] 1. अत्यंत गीला, पूरी तरह भीगा हुआ 2. मुर्झाया हुआ, सूखा हुआ 3. पुराना।

विक्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+क्लिश्+क्त] 1. अत्यंत कष्टग्रस्त, दुःखी 2. घायल, नष्ट किया हुआ, ध्वस्त 3. उच्चारण दोष।

विक्षत (भू० क० कृ०) [वि+क्षण्+क्त] फाड़ कर अलग अलग किया हुआ, घायल, चोट पहुंचाया हुआ, आघातग्रस्त।

विक्षवः [वि+क्षु+घञ्] 1. खांसी, छींक आना 2. ध्वनि।

विक्षिप्त (भू० क० कृ०) [वि+क्षिप्+क्त] 1. बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ, छितराया हुआ, डाला हुआ 2. अलग करना, पदच्युत करना 3. भेजा गया, प्रेषित 4. भ्रान्त, व्याकुल, विक्षुब्ध 5. निराकृत (दे० वि पूर्वक क्षिप्)।

विक्षीणकः (पुं०) 1. शिव के सेवकगण का मुखिया 2. देवसभा।

विक्षीरः [विशिष्टं विगतं वा क्षीरं यस्य प्रा० ब०] मदार का पौधा।

विक्षेपः [वि+क्षिप्+घञ्] 1. इधर-उधर फेंकना, बखेरना 2. डालना, फेंकना 3. कर्तव्य निर्वाह करना (विप० संहार) रघु० ५।४५ 4. भेजना, प्रेषण 5. ध्यान हटाना, हड़बड़ी, व्याकुलता—मा० १ 6. खटका, भय 7. तर्क का निराकरण 8. ध्रुवीय अक्षरेखा।

विक्षेपणम् [वि+क्षिप्+ल्युट्] 1, फेंकना, डालना, निकाल बाहर करना 2. प्रेषण, भेजना 3. बखेरना, छितराना 4. हड़बड़ी, व्याकुलता।

विक्षोभः [वि+क्षुभ्+घञ्] 1. हिलाना, हलचल, आन्दोलन, वीचि°—रघु० १।४३ 2. मन की हलचल, ध्यान हटाना, खलबली 3. द्वन्द्व, संघर्ष।

विक्ष, विक्षु, विक्ष्य, } [विगता नासिका यस्य ब० स०
विक्षु, विक्षू, विक्ष } नासिकायाः लु, ल्य, ल्, क्ष्, य् वा आदेशः] नासिका से रहित, बिना नाक।

विक्षिप्त (भू० क० कृ०) [वि+खण्ड्+क्त] 1. टूटा हुआ, विभक्त किया हुआ 2. दो खण्डों में किया हुआ।

विखानसः (पुं०) एक प्रकार का साधु।

विखुरः (पुं०) 1. राक्षस, पिशाच 2. चोर।

विख्यात (भू० क० कृ०) [वि+ख्या+क्त] 1. प्रख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, मशहूर 2. नामवर, नामधारी 3. स्वीकृत, माना हुआ।

विख्यातिः (स्त्री०) [वि+ख्या+क्तिन्] प्रसिद्धि, कीर्ति, यश, नाम।

विगणनम् [वि+गण्+ल्युट्] 1. गिनना, संगणन, हिसाब लगाना 2. विचारना, विचारविनिमय करना 3. ऋण का परिशोध करना।

विगत (भू० क० कृ०) [वि+गम्+क्त] 1. जिसने प्रयाण कर लिया है, जो चला गया है, लुप्त 2. जो अलग किया गया है, वियुक्त 3. मृतक 4. विरहित, शून्य, मुक्त (समास में) विगतभयः 5. खोया हुआ 6. धुंधला, अस्पष्ट। सम०—आर्तवा वह स्त्री जिसे बच्चा होना (या रजोधर्म होना) बन्द हो चुका हो,—कल्मष (वि०) निष्पाप, पवित्र,—भी (वि०) निर्भय, निडर, —लक्षण (वि०) भाग्यहीन, अशुभ।

विगन्धकः [विरुद्धः गंधो यस्य ब० स०] इंगुदी नाम का पेड़।

विगमः [वि+गम्+अप्] 1. प्रस्थान करना, अन्तर्धान, समाप्ति, अन्त —चारुनूत्यविगमे च तन्मुखम् रघु० १९।१५, ईतिविगम °मालवि० ५।२०, ऋतु० ६।२२ 2. परित्याग—करणविगमात्—मेघ० ५५ (देहत्यागात्) 3. हानि, नाश 4. मृत्यु।

विगरः (पुं०) 1. नग्न रहने वाला संन्यासी 2. पहाड़ 3. वह पुरुष जिसने भोजन करना त्याग दिया हो।

विगर्हणम्,-णा [वि+गर्ह्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] निन्दा, कलंक, भर्त्सना, अपशब्द वेणी० १।१२।

विगर्हित (भू० क० कृ०) [वि+गर्ह्+क्त] 1. निन्दित, फटकारा हुआ, गाली दिया हुआ 2. तिरस्कृत 3. दोषी ठहराया गया, बुरा भला कहा गया, प्रतिषिद्ध 4. नीच, दुष्ट 5. बुरा, बदमाश।

विगलित (भू० क० कृ०) [वि+गल्+क्त] 1. बूंद बूंद चूआ हुआ, मन्द मन्द निःसृत 2. अन्तर्हित, गया हुआ 3. अधः पतित 4. पिघला हुआ, घुला हुआ 5. तितर-बितर हुआ 6. ढीला किया हुआ, खोला हुआ —विक्रम० ४।१० 7. खुला हुआ, बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त (बाल आदि) (दे० वि पूर्वक 'गल')।

विगानम् [विरुद्धं गानं प्रा० स०] 1. निन्दा, भर्त्सना, मान-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हानि, अदलाबदली 2. परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध, असंगति (शांकरभाष्य में पौनःपुन्येन प्रयोग)।

विगाहः [वि-गाह्-घञ्] डुबकी लगाना, स्नान, गोता।

विगीत (भू० क० कृ०) [वि+गै+क्त] 1. निन्दित, बुराभला कहा गया, डांटा फटकारा गया 2. विरोधी, असंगत।

विगीतिः (स्त्री०) [वि-गै+क्तिन्] 1. निन्दा, बुराभला कहना, झिड़कना 2. परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध।

विगुण (वि०) [विगतः विपरीतो वा गुणो यस्य ब० स०] 1. गुणों से शून्य, निकम्मा, बुरा -भग० ३।३५, शि० ९।१२, मुद्रा० ६।११ 2. गुणों से हीन 3. बिना रस्सी का -मुद्रा० ७।११।

विगूढ (भू० क० कृ०) [वि+गूह्+क्त] 1. भेद, गुप्त, छिपा हुआ 2. निर्लज्जित, निन्दित।

विगृहीत (भू० क० कृ०) [वि+ग्रह्-क्त] 1. विभक्त, भग्न किया हुआ, विश्लिष्ट किया हुआ, (समास के रूप में) विघटित - विग्रह किया हुआ 2. पकड़ा हुआ 3. मुकाबला किया गया, विरोध किया गया (दे० वि पूर्वक ग्रह्)।

विग्रहः [वि+ग्रह्+अप्] 1. फैलाव, विस्तार, प्रसार 2. रूप, आकृति, शक्ल 3. शरीर -त्रयो विग्रहवत्येव समयव्यात्मविद्यया—मालवि० १।१४, पूत विग्रहः रघु० ३।३९, ९।५२, कि० ४।११, १२।४३ 4. पृथक्करण, विघटन, विश्लेषण, वियोजन (यथा समास के घटक पदों को पृथक् पृथक् करना) वृत्त्यर्थं समासार्थं वाक्यं वाक्यं विग्रहः 5. कलह, झगड़ा, (बहुधा प्रणयकलह) विग्रहाच्च शमने पराङ्मुखी-नीतिनेतुमदलाः स तत्परे—रघु० ९।३८, ९।४७, शि० ११।३५ 6. संग्राम, झगड़ा, लड़ाई, युद्ध, (विप० संधि) नीति के छः गुणों में से एक दे० गुण 7. अननुग्रह 8. भाग, अंश, प्रभाग।

विघटनम् [वि+घट्+ल्युट्] अलग-अलग करना, बर्बादी, विनाश।

विघटिका [विभक्ता घटिका यथा-ष० त०] समय की माप, एक घड़ी का साठवां भाग, पल (या लगभग चौबीस सेकेण्ड के बराबर समय)।

विघटित (भू० क० कृ०) [वि+घट्+क्त] 1. वियुक्त, अलग-अलग किया हुआ 2. विभक्त।

विघट्टनम्, -ना [वि+घट्ट्+ल्युट्] 1. प्रहार करना, टक्कर मारना 2. घिसना, रगड़ना 3. विभोजन, बिगाड़ना, खोलना 5. ठेस पहुंचाना, चोट पहुंचाना।

विघट्टित (भू० क० कृ०) [वि+घट्ट्+क्त] 1. विभक्त किया हुआ, वियुक्त किया हुआ, अलग-अलग किया हुआ, तितर-बितर किया हुआ-भर्तृ० ३।५४ 2. खोला हुआ, ढीला किया हुआ, विवृत किया हुआ 3. रगड़ा हुआ, स्पर्श किया हुआ 4. हिलाया हुआ, विलोया हुआ 5. चोट पहुंचाया हुआ, आघात किया हुआ।

विघनः [वि+हन्+अप्, घनादेशः] मोगरी, हथौड़ा।

विघसः [वि+अद्+अप् घसादेशः] 1. आधा चर्वण किया हुआ ग्रास, भोज्य पदार्थ का अवशेष या जूठन-विघसो भक्तशेषं तु-मनु० ३।२८५, उत्तर० ५।१४ 2. भोजन, सम् भोम। सम० -आशः, आशिन् (पुं०) भुक्तशेष या चक्रार्थ के जूठन को खाने वाला।

विघातः [वि-हन्+घञ्] 1. विनाश, हटाना, दूर करना-क्रिया दधानां मघवा विघातम् -कि० ३।५२ 2. हत्या, वध 3. बाधा, रुकावट, विघ्न क्रिया विघातायं कथं प्रवर्तसे -रघु० ३।४४, अध्वरविघातायांतये—११।१ 4. थप्पड़, प्रहार 5. परित्याग करना, छोड़ना। सम० —सिद्धि (स्त्री०) बाधाओं का दूर करना।

विघूर्णित (भू० क० कृ०) [वि-घूर्ण्+क्त] लुढ़काया हुआ, डोलायित, (आंखें आदि) चारों ओर घुमाई हुई।

विघृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+घृष्+क्त] 1. अत्यंत रगड़ा हुआ, घिसा हुआ 2. पीड़ित।

विघ्नः (विरलतः नपुं०) [वि+हन्+क] 1. बाधा, हस्तक्षेप, रुकावट, अड़चन कृतो धर्मक्रियाविघ्नः सतां रक्षितरि त्वयि म० ५।१४, १।३३, कु० ३।४० 2. कठिनाई, कष्ट। सम०-ईशः,—ईशानः, —ईश्वरः गणेश का विशेषण, °वाहनम् चूहा,-कर्,—कर्तृ, कारिन् (वि०) विरोध करने वाला, अवरोध करने वाला -ध्वंसः, विघातः बाधाओं को दूर करना, -नायकः,—नाशकः,—नाशनः गणेश के विशेषण, —प्रतिक्रिया बाधाओं को दूर करना- रघु० १५।२, —राजः,—विनायकः -हारिन् (पुं०) गणेश के विशेषण, -सिद्धिः (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना।

विघ्नित (वि०) [विघ्न+इतच्] बाधायुक्त, अड़चनों से भरा हुआ, अवरुद्ध, रुकावटग्रस्त।

विघ्रः (पुं०) घोड़े का खुर।

विज् (जुहो० उभ० अक० वेवेक्ति, वेविक्ते, विनक्ति, विङ्क्ते, विक्त) 1. वियुक्त करना, विभक्त करना, अलग-अलग करना 2. विवेचन करना, विभेद करना, अन्तर पहचानना 3. वञ्चित करना, हटाना (करण० के साथ)—भट्टि १४।१०३, वि—, 1. वियुक्त करना, दूर करना विविनक्ति दिवः सुरान् -भट्टि ६।३६ 2. अन्तर पहचानना, विवेचन करना 3. निर्णय करना, निश्चय कर, निर्धारण करना -रे खल तव खलु चरितं विदुषामग्रे विविच्य वक्ष्यामि—शामि० १।१०८ 4. वर्णन करना, बताना, कहना 5. फाड़ देना।

विजकिलः [विज्+क, किल्+क, क० स०] एक प्रकार चमेली, मदन नामक वृक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचक्षण (वि०) [वि+चक्ष्+ल्युट्] 1. स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, सावधान 2. बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान् रघु० ५।१९ 3. विशेषज्ञ, कुशल, योग्य—रघु० १३।६९, —णः विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् आदमी—न दत्वा कस्यचित्कन्या पुनर्विद्याद्विचक्षणः—मनु० ९।७१ ।

विचक्षुस् (वि०) [विगतं विनष्टं वा चक्षुर्यस्य] अंधा, दृष्टिहीन 2. व्याकुल, उदास ।

विचयः [वि+चि+अप्] 1. खोज, ढूंढ, तलाश—उत्तर० १।२३ 2. छानबीन, तहकीकात ।

विचयनम् [वि+चि+ल्युट्] खोजना, छानबीन करना ।

विचर्चिका [विशेषेण चर्च्यते पालिपादस्य त्वक् विदार्यतेऽत्र या वि+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] खुजली, विसर्पिका, खाज ।

विचर्चित (वि०) [वि+चर्च्+क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मालिश किया हुआ ।

विचल (वि०) [वि+चल्+अच्] 1. इधर उधर घूमने वाला, हिलने वाला, थरथराने वाला, लड़खड़ाने वाला, चंचल 2. अभिमानी, घमंडी ।

विचलनम् [वि+चल्+ल्युट्] 1. स्पन्दन 2. व्यतिक्रम 3. अस्थिरता, चंचलता 4. अभिमान ।

विचारः [वि+चर्+घञ्] 1. विमर्श, विनिमय, चिंतन, सोच—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२ 2. परीक्षा, विचारविमर्श, गवेषणा, तत्त्वार्थविचार 3. (किसी बात की) जांच-पड़ताल मुच्छ० ९।४३ 4. निर्णय, विवेचन, विवेक, तर्कना विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् रघु० २।४७ 5. निश्चय, निर्धारण 6. चयन 7. संदेह, संकोच 8. दूरदर्शिता, सतर्कता । सम०—ज्ञ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्णायक, —भूः (स्त्री०) 1. न्यायाधिकरण, न्यायासन 2. विशेष कर यज्ञ की न्यायासन, शील (वि०) विचारपूर्ण, सचेत, दूरदर्शी, —स्थलम् 1. न्यायाधिकरण 2. तर्कसंगत चर्चा ।

विचारकः [वि+चर्+ण्वुल्] छानबीन या तहकीकात करने वाला, न्यायाधीश ।

विचारणम् [वि+चर्+णिच्+ल्युट्] 1. चर्चा, चिन्तन, परीक्षा, पर्यालोचन, अन्वेषण 2. संदेह, संकोच ।

विचारणा [वि+चर्+णिच्+युच्+टाप्] 1. परीक्षण, विचारविमर्श, गवेषणा 2. पुनर्विचार, सोच-विचार, चिन्तन 3. संदेह 4. दर्शनशास्त्र की मीमांसापद्धति ।

विचारित (भू० क० कृ०) [वि+चर्+णिच्+क्त] 1. सोचा गया, पूछताछ की गई, परीक्षा की गई, विचारविमर्श किया गया 2. निश्चित, निर्धारित ।

विचिः (पुं०, स्त्री०) **विची**ः (स्त्री०) [विच्+इन् स च कित्, विचि+ङीप्] लहर, तरंग ।

विचिकित्सा [वि+कित्+सन्+अ+टाप्] 1. सन्देह, शक 2. भूल, चूक ।

विचित (भू० क० कृ०) [वि+चि+क्त] खोजा, तलाशी ली गई ।

विचितिः (स्त्री०) [वि+चि+क्तिन्] ढूंढना, खोज, तलाश करना ।

विचित्र (वि०) [विशेषेण चित्रम्, प्रा० स०] 1. रंग-बिरंगा, चितकबरा, चित्तीदार, धब्बेदार 2. नानाविध, बहुविध 3. रंगलिप्त 4. सुन्दर, मनोहर—सवचित्रचित्रं जलयंत्रमंदिरम् ऋतु० १।२ 5. आश्चर्ययुक्त, अचंभे वाला, अजीब—हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः—शि ११।६४, भ्रम्—1. बहुरङ्गी रङ्ग 2. आश्चर्य । सम० —अंग (वि०) चितकबरे शरीर वाला, (—गः) 1. मोर 2. व्याघ्र,—वेह (वि०) मनोहर शरीर वाला (हः) बादल, रूप (वि०) विविध प्रकार का,—वीर्यः एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, (यह सत्यवती नामक पत्नी से उत्पन्न राजा शन्तनु का एक पुत्र तथा भीष्म का सौतेला भाई था। जब निस्सन्तानावस्था में इसकी मृत्यु हो गई तो इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र (विवाह होने से पहले ही उत्पन्न) व्यास को बुलाया और नियोग की विधि से विचित्रवीर्य के नाम पर सन्तानोत्पादन के लिए प्रार्थना की। व्यास ने माता की आज्ञा का पालन किया और फलतः अम्बिका तथा अम्बालिका (उसके भाई की विधवा पत्नियाँ) में क्रमशः धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ) ।

विचित्रकः [विचित्र+कप्] भोजपत्र का पेड़,—कम् आश्चर्य, ताज्जुब, अचंभा ।

विचिन्तकः [वि+चि+शतृ+कन्] 1. खोज 2. गवेषणा 3. शूरवीर ।

विजीर्ण (वि०) [वि+जृ+क्त] 1. अधिकृत, व्याप्त 2. प्रविष्ट ।

विचेतन (वि०) [विगता चेतना यस्य प्रा० ब०] 1. चेतना-रहित, निर्जीव, अचेतन, मृतक 2. प्राणहीन ।

विचेतस् (वि०) [विगतं चेतो यस्य—प्रा० ब०] 1. संज्ञा-हीन, मूढ, अज्ञानी 2. व्याकुल, घबड़ाया हुआ, उदास ।

विचेष्टा [विशिष्टा चेष्टा प्रा० स०] प्रयत्न, उद्यम, कोशिश ।

विचेष्टित (भू० क० कृ०) [वि+चेष्ट्+क्त] 1. उद्योग किया गया, कोशिश की गई, संघर्ष किया गया 2. परीक्षण किया गया, गवेषणा की गई 3. दुष्कृत, सूलनापूर्वक किया गया,—तम् 1. कार्य, कार्य 2. प्रयत्न, आन्दोलन, उद्योग, साहसिक कार्य 3. भावभंगी 4. कार्यकरण, संवेदना, खेल—विक्रम० २।९ 5. कूट प्रबन्ध, षड्यन्त्र ।

विच्छ् । (तुदा० पर० विच्छति—विच्छ्यति-ते भी—) जाना, हिलना-डुलना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ii (चुरा० उभ० विच्छपयति-ते) 1. चमकना 2. बोलना।

विच्छन्दः, विच्छन्दकः [विशिष्टः छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन् —ब० स०. पक्षे कन् च] महल, विशालभवन जिसमें कई खण्ड या मञ्जिल हों।

विच्छर्दकः [वि+छर्द्+ण्वुल्] महल, प्रासाद, दे० ऊ० 'विच्छर्द'।

विच्छर्दनम् [वि+छर्द्+ल्युट्] कै करना, उलटी करना, उगलना।

विच्छर्दित (भू० क० कृ०) [वि०+छर्द्+क्त] 1. कै किया हुआ, उगला हुआ 2. जिसकी अवज्ञा की गई हो, जिसको उपेक्षा की गई हो 3. टूटा-फूटा, त्यक्तीकृत।

विच्छाय (दि०) [विगता छाया यस्य—प्रा० ब०] निष्प्रभ, धुन्धला,—रत्न० १।२६,—यः मणि, रत्न।

विच्छित्तिः (स्त्री०) [वि+छिद्+क्तिन्] 1 काट डालना, फाड़ देना- भर्तृ० ३।११ 2. बाँटना, अलग-अलग करना 3. अन्तर्धान, अनुपस्थिति, लोप 4. विराम 5. शरीर को उबटन या रङ्गलेप से रङ्गना, रङ्ग-चित्रण, महावर—शा० ७।५, शि० १६।८४ 6. सीना (घर आदि की) हद 7. कविता में विराम, यति 8. विशेष प्रकार की शृङ्गारप्रिय भावभंगिमा, जिसमें वेशभूषा के प्रति उपेक्षा भी सम्मिलित हो (अपने व्यक्तिगत सौन्दर्य के अभिमान के कारण)—स्तोकाप्या-कल्परचना विच्छित्तिः कांतिपोषकृत् सा० द० १३८।

विच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि+छिद्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, काटा हुआ 2. तोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ, विभक्त, वियुक्त अर्थ विच्छिन्नम् अ० १।९ 3. हस्तक्षेप किया गया, रोका गया 4. अन्त किया गया, बन्द किया गया, समाप्त किया गया 5. चितकबरा 6. गुप्त 7. उबटन आदि रंगलेप से पोता गया (दे० वि पूर्वक छिद्)।

विच्छुरित (भू० क० कृ०) [विच्छुर्+क्त] 1. ढका गया, ऊपर से फैलाया गया, पोता गया 2. जड़ा गया 3. लीपा गया, पोता गया।

विच्छेदः [वि+छिद्+घञ्] 1. काट डालना, काटना, विभक्त करना, वियोग—मा० ६।११ 2. तोड़ना—शि० ६।५१ 3. रोक, हस्तक्षेप, विराम, बन्द कर देना - विच्छेदमार भुवि यस्तु कथाप्रबंधः का०, निष्प्र-विच्छेददर्शिनः - रघु० १।६६ 4. हटाना, प्रतिषेध 5. फूट अनबन 6. पुस्तक का अनुभाग या परिच्छेद 7. अन्तराल, अवकाश।

विच्युत (भू० क० कृ०) [वि+च्यु+क्त] 1. अधः पतित, नीचे गिरा हुआ 2. विस्थापित, पातित 3. व्यतिक्रांत, पथविचलित।

विच्युतिः (स्त्री०) [वि+च्यु+क्तिन्] 1. अधः पतन, पृथक् होना, वियोग 2. ह्रास, क्षय, पतन 3. विचलन 4. गर्भस्राव, असफलता जैसा कि 'गर्भविच्युति' में।

विज् 1 (जुहो० उभ० वेवेक्ति, वेविक्ते, विक्ते) 1. वियुक्त करना, विभक्त करना 2. भेद करना, अन्तर पहचानना, विवेचन करना (प्रायः वि पूर्वक, तथा विपूर्वक विच् के समान)।

ii (तुदा० आ०, रुधा० पर० विजते, विनक्ति, विन्ते) 1. हिलना, काँपना 2. विक्षुब्ध होना, भय से काँपना 3. डरना, भयभीत होना—चकम्रे विप्रा कुररीव भूयः —रघु० १४।६८ 4. दुखी होना, कष्टग्रस्त होना, प्रेर० (वेजयति ते) त्रास देना, डराना, आ-, डरना, ,उद् , भयभीत होना, डरना (प्रायः अपा० के साथ, कभी कभी संप्र० के साथ) तीक्ष्णादु द्विजते मृदुः ३।५, यस्मान्नोद्विजते लोको लोका-न्नोद्विजते च यः भग० १२।५, भट्टि० ७।९२ 2. खिन्न या कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् भग० ५।२० 3. ऊबना (अपा० के साथ) जीवितादुद्विजमानेन मा० ३, मनो नोद्विजते तस्य दहतोऽर्थमहर्निशम्, उद्विजन्ति तु संसारादसारात्सारदर्शिनः कवि० 4. डराना, कष्ट देना, (प्रेर०)· 1. कष्ट देना, तंग करना कु० १।५, ११ 2. डराना।

विजन (वि०) [विगतो जनो यस्मात् - ब० स०] अकेला, सेवानिवृत्त, एकाकी, नम् एकान्त स्थान, सुनसान स्थान (विजने निजी रूप से)।

विजनत्वम् [वि+जन+त्वल्] जनम प्रसूचित, प्रसव।

विजन्मन् (वि० या पुं०) [विरुद्धं जन्म यस्य प्रा० ब०] हरामी, जो अवैधरूप से उत्पन्न हुआ है।

विजपिलम् [विज्+क, पिल्+क, कर्म० स] गारा, कीचड़।

विजयः [वि+जि+घञ्] 1. जीतना, हराना, परास्त करना 2. जीत, फतह, जय यात्रा—कि० १०।३५, रघु० १२।४४, कु० ३।१९, शि० २।१४ 3. देवताओं का रथ, दिव्य रथ 4. अर्जुन का नाम - महा० नाम की व्याख्या करता है—अभिप्रयामि संग्रामे यदहं युद्धदुर्मदान्, नाजित्वा विनिवर्तामि तेन मां विजयं विदुः 5. यम का विशेषण 6. बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष 7. विष्णु के सेवक का नाम। **सम०** -**अभ्युपायः** विजय का साधन या उपाय,—**कुंजरः** लड़ाई का हाथी,—**छत्रः** पाँचसरी लड़ी का हार,—**डिंडिमः** सेना का विशाल ढोल, **नगरम्** एक नगर का नाम, **मंदलः** एक विशाल सैनिक ढोल,—**सिद्धिः** (स्त्री०) सफलता, जीत, फतह।

विजयंतः (पुं०) इन्द्र का नाम।

विजया [विजय+टाप्] 1. दुर्गा का नाम 2. उसकी सेवि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काओं में से एक मुद्रा० १।१ 3. एक विशेष विद्या जो विश्वामित्र ने राम को सिखाई थी– भट्टि० २।२१ 4. भाग 5. एक उत्सव का नाम –विजयोत्सव, दे० नी० 6. हरीतकी। समः–उत्सवः दुर्गादेवी के सम्मान में उत्सव जो आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाता है, -दशमी आश्विनशुक्ला दशमी।

विजयिन् (पुं०) [वि+जि+इनि] विजेता, जीतने वाला।

विजरम् [विगता जरा स्मात् प्रा० ब०] वृक्ष का तना।

विजल्पः [वि० +जल्प+घञ्] 1. बाल कलरव, ऊटपटांग या मूर्खतापूर्ण बात 2. सामान्य वार्ता 3. दुर्भावनापूर्ण या विद्वेषपूर्ण भाषण।

विजल्पित (भू० क० कृ०) [वि+जल्प+क्त] 1. कहा गया, जिससे बातें की गई 2. भोली भाली बात, बाल सुलभ तुतलाहट।

विजात (भू० क० कृ०) [विरुद्धं जातं जन्म यस्य—प्रा० ब०] 1. नीच कुलोत्पन्न, वर्णसंकर 2. उत्पन्न, जन्मा हुआ 3. रूपान्तरित, –ता माता, मातृका वह स्त्री जिसके अभी सन्तान हुई हो।

विजातिः (स्त्री०) [विभिन्ना जातिः प्रा० स०] 1. भिन्न मूल या जाति 2. भिन्न प्रकार, जाति, या कुटुम्ब।

विजातीय (वि०) [विजाति+छ] 1. भिन्न प्रकार या जाति का, असमान. विषम 2. भिन्न वर्ण या जाति का 3. मिली जुली जाति का।

विजिगीषा [वि+जि+सन्+अ+टाप्] 1. जीतने की या विजय प्राप्त करने की इच्छा 2. आगे बढ़ने की इच्छा, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, महत्त्वाकांक्षा।

विजिगीषु (वि०) [वि+जि+सन्+उ] 1. जीत की इच्छुक, विजय करने की इच्छा वाला –यशसे विजिगीषूणां –रघु० १।७ 2. प्रतिस्पर्धी, महत्त्वाकांक्षी,—षुः 1. योद्धा, शूरवीर 2. प्रतिद्वन्द्वी, झगड़ालू, प्रतिपक्षी।

विजिज्ञासा [वि+ज्ञा+सन्+आ] स्पष्ट जानने की इच्छा।

विजित (भू० क० कृ०) [वि+जि+क्त] परास्त किया हुआ, जीता हुआ, जिसके ऊपर विजय प्राप्त की गई हो, हराया हुआ। समः आत्मन् (वि०) जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर दिया है, जितेन्द्रिय, -इन्द्रिय (वि०) जिसने इन्द्रियों का दमन कर दिया है, या नियन्त्रण कर लिया है।

विजितिः (स्त्री०) [वि+जि+क्तिन्] जीत, फतह, विजय—काव्या० ३।८५।

विजिनः नम् (ल०, –लम्) [विज्+इनच्, इलच् वा] चटनी (कांजी मिश्रित)।

विजिह्म (वि०) [विशेषेण जिह्मः–प्रा० स०] 1. कुटिल झुका हुआ, मुड़ा हुआ कि० १।२१, रघु० १९।३५ 2. बेईमान।

विजुलः [विज्+उलच्] शाल्मलि या सेमल का पेड़।

विजृम्भणम् [वि+जृम्भ्+ल्युट्] 1. मुँह फाड़ना, जम्हाई लेना 2. और आना, कली आना, खिलना, उन्मुक्त होना, वनेषु सायंतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्गंधिषु कुड्मलेषु रघु० १६।४७ 3. दिखलाना, प्रदर्शन करना, खोलना 4. फैलाना 5. मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, रंगरेलियाँ।

विजृम्भित (भू० क० कृ०) [वि+जृम्भ्+क्त] 1. मुँह फाड़ा, जम्हाई ली–मृच्छ० ५।५१ 2. उद्घाटित, विकसित, फैलाया हुआ 3. प्रदर्शित, दिखाया गया, प्रकट किया गया—रघु० ७।४२ 4. दर्शन दिये गये 5. खेला गया,– तम् 1. क्रीड़ा, मनोरंजन 2. अभिलाषा, इच्छा 3. प्रदर्शन, प्रदर्शनी अज्ञानविजृम्भितमेतत् 4. कृत्य, कर्म, आचरण—मा० १०।२१।

विज्ञनम्,–ज्ञप् [विज्ञ+जन् (जड़ डलयोरभेदः)+अच्] 1. एक प्रकार की चटनी, दे० 'विजुल' 2. तीर, बाण।

विज्वलम् (नपुं०) दारचीनी।

विज्ञ (वि०) [वि+ज्ञा+क] 1. जानने वाला, प्रतिभावान्, बुद्धिमान्, विद्वान् 2. चतुर, कुशल, प्रवीण, –ज्ञः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष।

विज्ञप्त (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञप्+क्त] सादर कहा गया, प्रार्थित।

विज्ञप्तिः [वि+ज्ञप्+क्तिन्] 1. सादर उक्ति या समाचार, प्रार्थना, अनुरोध 2. घोषणा।

विज्ञात (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+क्त] 1. विदित, जाना हुआ, प्रत्यक्ष ज्ञान किया हुआ 2. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध।

विज्ञानम् [वि+ज्ञा+ल्युट्] 1. ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ,—विज्ञानमयः कोशः, 'प्रज्ञा का स्थान' (आत्मा के पाँच कोशों में से पहला) 2. विवेचन, अन्तर पहचानना 3. कुशलता, प्रवीणता -प्रयोगविज्ञानम् –शा० १।२ 4. सांसारिक या लौकिक ज्ञान, सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान (विप० 'ज्ञानम्' ब्रह्म या परमात्मविषयक जानकारी)—भग० ३।४१, ७।२, (भग० का समस्त सातवाँ अध्याय ज्ञान और विज्ञान की व्याख्या करता है) 5. व्यवसाय, नियोजन 6. संगीत। समः ईश्वरः याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा नामक टीका का प्रणेता, दासः व्यास का नाम, भार्गवः बुद्ध का विशेषण, वादः ज्ञान का सिद्धान्त, बुद्ध द्वारा सिखाया गया सिद्धान्त।

विज्ञानिक (वि०) [विज्ञान+ठन्] बुद्धिमान्, विद्वान् दे० 'विज्ञ'।

विज्ञापकः [वि+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्, पुकागमः] 1. सूचना देने वाला 2. अध्यापक, शिक्षक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्ञापनम्,—ना [वि+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. शिष्ट उक्ति या संवाद, प्रार्थना, अनुरोध —काल-प्रयुक्ता खलु कार्यविद्धिविज्ञापना भर्तुः सिद्धिमेति —कु० ७।९३, रघु० १७।४० 2. सूचना, वर्णन 3. शिक्षण ।

विज्ञापित (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] 1. शिष्टतापूर्वक कहा हुआ या संवाद दिया हुआ 2. प्रार्थित 3. सूचित 4. शिक्षित ।

विज्ञप्तिः [वि+ज्ञा+णिच्+क्तिन्, पुकागमः] दे० 'विज्ञप्ति' ।

विज्ञाप्यम् [वि+ज्ञा+णिच्+यत्, पुकागमः] प्रार्थना —उत्तर० १ ।

विज्वर (वि०) [विगतो ज्वरो यस्य—ब० स०] ज्वर से मुक्त, चिन्ता या दुःख से मुक्त ।

विज्ञासरम् (नपुं०) आँखों की सफेदी, नेत्रों का श्वेत भाग ।

विज्योलिः, ली (स्त्री०) [विज्+उल, पृषो० साधुः] रेखा, पंक्ति ।

विट् (स्वा० पर० वेटति) 1. ध्वनि करना 2. अभिशाप देना, दुर्वचन कहना ।

विटः [विट्+क] 1. जार, यार, उपपति—मा० ८।८, शि० ४।४८ 2. लंपट, कामुक 3. (नाटकों में) किसी राजा या दुश्चरित्र युवक का साथी, किसी ऐसी वेश्या का साथी, जिसको गायन, संगीत तथा कविता निर्माण की कला में कुशलता प्राप्त हो, नायक पर आश्रित परान्नभोजी जो विदूषक का कार्य करे—दे० मृच्छ० अंक ८१, ५ व ८) परिभाषा के लिए दे० सा० द० ७८ 4. धूर्त, ठग 5. भांड, इल्लती 6. चूहा 7. खैर या खदिर का पेड़ 8. नारंगी का पेड़ 9. पल्लवयुक्त शाखा । सम०—साक्षिकम् एक प्रकार का खनिजपदार्थ, सोनामाखी, लवणम् रोग-नाशक नमक ।

विटङ्कः [विशेषेण टंकयते बध्यते इति—वि+टंक्+घञ्] 1. चिड़िया-घर, कबूतर का दरबा 2. सबसे ऊंचा सिरा, कलश या कंगूरा, ऊंचाई—अभ्रंलिह महीधर विटंकः—मा० १०, विक्रम० ५।७७ ।

विटङ्कुकः [विटंक+कन्] दे० विटंक ।

विटङ्कित (वि०) [वि+टंक्+क्त] चिह्नित, मुद्रांकित ।

विटपः [विटं विस्तारं वा पाति स्थिति—पा+क] 1. शाखा, (लता या वृक्ष की) टहनी—कोमलविटपानु-कारिणौ बाहू —शा० १।२१, ३१, यदनेन तरूनं पातितः क्षपिता तद्विटपाश्रिता लता—रघु० ८।४७, शि० ४।४८, कु० ६।४१ 2. झाड़ी 3. नया अंकुर या किसलय—शि० ७।५३ 4. गुल्म, झुण्ड, झुरमुट 5. विस्तार 6. अंडकोष पटल ।

विटपिन् (पुं०) [विटप+इनि] 1. वृक्ष परितो दृष्टाश्च विटपिनः सर्वे मामि० १।२१, २९ 2. वटवृक्ष, गूलर । सम०—मृगः बन्दर, लंगूर ।

विट्ट (ठ्ठ) लः (पुं०) विष्णु या कृष्ण का रूप (बंबई प्रान्त में स्थित पंढरपुर में इस रूप की पूजा होती है) ।

विठङ्कु (वि०) बुरा, दुष्ट, अधम, नीच ।

विठरः (पुं०) बृहस्पति का नाम ।

विड् (स्वा० पर० वेडति) 1. अभिशाप देना, दुर्वचन कहना, बुरा भला कहना 2. जोर से चिल्लाना ।

विड्म् [विड्+क] एक प्रकार का कृत्रिम नमक ।

विडंगः,—गम् [विड्+अंगच्] एक प्रकार का शाक, बायविडंग (कृमिनाशक औषधि के रूप में बहुधा प्रयुक्त) ।

विडम्बः [विडम्ब्+अप्] 1. नकल 2. दुःखी करना, तंग करना, कष्ट देना ।

विडम्बनम्, ना [विडंब्+ल्युट्] 1. नकल 2. छद्मवेश, छलमुद्रा 3. धोखेबाजी, जालसाजी 4. क्लेश, संताप 5. पीड़ित करना, दुःख देना 6. निराश करना 7. मजाक, उपहास, परिहासविषय इयं च तेऽग्रे पुरतो विडम्बना कु०५।७०, असति त्वयि गाहणीमदः प्रमदानामधुना विडंबना— ४।१२ ।

विडंबित (भू० क० कृ०) [विडंब्+क्त] 1. अनुकरण किया गया, नकल किया गया, परिहास किया गया, मजाक बनाया गया 3. ठगा गया 4. क्लेश पहुंचाया गया, संतप्त किया गया 5. हताश किया गया 6. नीच, कमीना, दीन ।

विडारकः [विडाल+कन्, लस्य रः] बिलाव ।

विडालः, विडालकः (पुं०) दे० बिडाल, बिडालक ।

विडीनम् [वि+डी+क्त] पक्षियों की एक उड़ानविशेष । दे० डीन ।

विडुलः [विड्+कुलन्] एक प्रकार की बेंत ।

विडूरजम् [विडूर+जन्+ड] वैदूर्य, नीलम ।

विडौ (ओ) जस् (पुं०) [विट् व्याप्तकम् ओजो यस्य —ब० स०] इन्द्र का नाम, दे० 'विडौजस्' ।

वितंसः [वि+तंस्+घञ्] 1. पक्षियों का पिंजरा 2. रस्सी, शृंखला, जाल या जंजीर आदि जिनसे बनैले पशु-पक्षी क़ैद किये जाय ।

वितंडः [वि+तंड्+अच्] 1. हाथी 2. एक प्रकार का ताला या चटखनी ।

वितंडा [वितंड+टाप्] 1. सदोष आक्षेप, मिथ्याचार छिद्रान्वेषण, ओछा तर्क, निरर्थक तर्कवितर्क—स (जल्पः) प्रतिपक्षस्थापनाहीनो वितंडा—गौत० 2. तूतू-मैंमैं, दोषपूर्ण आलोचना 3. चम्मच, खुदा 4. गुलूल, धूप ।

वितत (भू० क० कृ०) [वि+तन्+क्त] 1. फैलाया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ, विस्तृत किया हुआ, बिछाया हुआ 2. आयत, विशाल, विस्तीर्ण 3. सम्पन्न, निष्पन्न, कार्यान्वित —वितनयन्नः श० ७।३४ 4. ढका हुआ 5. प्रसूत —दे० वि पूर्वक तन्, °तम् कोई भी ऐसा उपकरण जिसमें तार लगे हों वीणा आदि। सम° -धन्वन् (वि०) जिसने अपने धनुष को पूरी तरह तान लिया है।

वितति: (स्त्री०) [वि+तन्+क्तिन्] 1. विस्तार, प्रसार 2. परिमाण, संग्रह, गुल्म, शुण्ड 3. रेखा, पंक्ति—मा० ९।४७।

वितथ (वि०) [वि+तन्+कथन्] 1. झूठ, मिथ्या—आज मनो न भवता वितथं विलोक्यम् वेणी ३।१३, ५।४१, रघु० ९।८ 2. व्यर्थ, निरर्थक—यथा 'वितथ-प्रयत्न' में।

वितथ्य (वि०) [वितथ+यत्] मिथ्या, दे० ऊपर।

वितस्ता: (स्त्री०) [वि+तन्+रु, दुट्] पंजाब की एक नदी का नाम, वितस्ता या झेलम नदी।

वितस्तु: (पुं०) अच्छा घोड़ा स्त्री० विघवा।

वितरणम् [वि+तृ+ल्युट्] 1. पार जाना 2. उपहार, दान 3. छोड़ देना, त्याग करना, तिलांजलि देना।

वितर्क: [वि+तर्क+अच्] 1. युक्ति, दलील, अनुमान 2. अन्दाज अटकल, कल्पना, विश्वास -शिरीषपुष्पा-धिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्क: —कु० १।४१ 3. उद्भावन, चिन्तन भर्तृ० ३।४५ 4. सन्देह, कि० ४।५, १३।२ 5. विचारविनिमय, विचारविमर्श।

वितर्कयम् [वि+तर्क+ल्युट्] 1. तर्क करना 2. अटकल करना, अन्दाज लगाना 3. सन्देह 4. तर्क वितर्क।

वितर्दि:,—र्दी वितर्दिका, (स्त्री०) [वि+तर्द्+इन्, वितर्दि+ङीप्, वितर्दि+कन्+टाप्] 1. आंगन में बना हुआ चौकोर चबूतरा 2. छज्जा, बरामदा।

वितर्द्धि:,—र्द्धी, वितर्द्धिका (स्त्री०) दे० वितर्दि आदि।

वितलम् [विशेषेण तलम्—प्रा०स०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात तलों में से दूसरा—दे० पाताल या लोक।

वितस्ता (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसको यूनानी Hydaspes कहते हैं तथा जो आजकल 'झेलम' या 'वितस्ता' के नाम से विख्यात है।

वितस्ति: [वि+तस्+क्ति] बारह अंगुल की लम्बाई की माप (हाथ को पूरा फैला कर अंगूठे से कनी अंगुली तक की दूरी)।

वितान (वि०) [वि+तन्+घञ्] 1 खाली, रीता 2. सार-3. हतोत्साह, उदास—रघु० ४।८६, 4. बुद्धू, जड 5. दुष्ट, परित्यक्त न:, नम् 1. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना—शि० ११।२८ 2. शामियाना, चंदोवा विद्युल्लेखाकनकरुचिरश्रीवितानं महाभ्रम् —विक्रम० ४।१३, रघु० १९।१९, कि० ३।४२, शि० ३।५० 3. गद्दी 4. संग्रह, परिमाण, समवाय—कि० १७।६१, मा० ६।५ 5. यज्ञ, आहुति—वितानेष्वध्वर्यवं तव मम च सोमे विधिरभूत्— वेणी० ६।३०, ३।१६, शि० १४।१० 6. यज्ञ की वेदी 7. ऋतु, मौसम, °नम् अवकाश, विश्राम।

वितानक:, कम् [वितान+कन्] 1. प्रसार 2. ढेर, परिणाम, संग्रह राशि शि० २।६ 3. शामियाना, चंदोवा 4. मांड नामक वृक्ष।

वितीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+तृ+क्त] 1. पार किया हुआ, पास से गुजरा हुआ 2. दिया हुआ, अर्पित, प्रदत्त शि० ७।६७, १७।६५ 3. नीचे गया हुआ, अवतरित रघु० ६।७७ 4. छोड़ा गया 5. दमन किया गया, जीत लिया गया (दे० वि पूर्वक तृ)।

वितुन्नम् [वि+तुद्+क्त] 1. 'सुनिषण्णक' नामक शाक, सुसना 2. शैवाल नाम का पौधा, सेवार।

वितुन्नकम् [वितुन्न+कन्] 1. घनिया 2. तूतिया, क: तालकको नामक पौधा।

वितुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+तुष्+क्त] असन्तुष्ट, अप्रसन्न, सन्तोष से शून्य।

वितृष्ण (वि०) [वितृता तृष्णा यस्य प्रा० ब०] इच्छा से मुक्त, सन्तुष्ट।

वित्त [चुरा० उभ० वित्तयति—ते, कुछ के मतानुसार वित्तापयति—ते भी) पुरस्कार देना, दान देना।

वित्त (भू० क० कृ०) [विद् लाभे+क्त] 1. पाया, खोजा 2. लब्ध, अवाप्त 3. परीक्षित, अनुसंहित 4. विख्यात, प्रसिद्ध, °तम् 1. धन दौलत जायदाद, संपत्ति, द्रव्य 2. शक्ति। सम°- आगम:,- °उपार्जनम् धन का अधिग्रहण,—ईश: कुबेर का विशेषण, भग० १०।२३, मनु ७।४, °द: दानी, दाता,—मात्रा संपत्ति।

वित्तवत् (वि०) [वित्त+मतुप्] धनवान्, दौलतमंद।

वित्ति (स्त्री०) [विद्+क्तिन्] 1. ज्ञान 2. निर्णय, विवेचन, चिन्तन 3. लाभ, अधिग्रहण 4. संभावना।

वित्रास: [वि+त्रस्+घञ्] भय, खटका, त्रास या डर।

वित्सनः [विद्+क्विप्, सन्+अच्] बैल, सांड।

विद् (स्वा० आ० वेदते) प्रार्थना करना, निवेदन करना।

विदुर: [आध्+उरच्, संप्रसारणं च] 1. राक्षस 2. चोर।

विद् (अदा० पर० वेत्ति या वेद, विदित, इच्छा० विवि-दिषति) 1. जानना, समझना, सीखना, मालूम करना, निश्चय करना, खोजना -अवेल्लवणतोयस्य स्थिता दक्षिणतः कथम्—भट्टि० ८।१०६, तं मोहांधः कथमयं ममुं वेत्तु देवं पुराणम् वेणी० १।२३, ३।२९, श० ५।२७, भग० ४।३५, १८।१ 2. महसूस करना, अनुभव करना मुद्रा० ३।४ 3. मूल्य आंकना, सम्मान करना, मानना, जानना, समझना विद्धि व्याधिग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् मोह० ५, भग०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२।१७, रघु० ३।३९, मनु० १।३३, कु० ६।३०, प्रेर० —(वेदयति ते) 1. जतलाना, सूचना देना, सूचित करना, अवगत कराना, बताना 2. अध्यापन करना, व्याख्या करना,—वेदार्थस्तानवेदयत् – सिद्धा० 3. महसूस करना, अनुभव करना –मनु० १२।१३, आ , (प्रेर०) 1. घोषणा करना, कहना, प्रकथन करना —क्रिमिति नावेदयति अथवा किमावेदितेन—वेणी० १, रघु० १२।५५, कु० ६।२१, भट्टि० ३।४९ 2. प्रदर्शन करना, दिखाना इंगित करना—आवेदयंति प्रत्यासन्नमानंदमयजातानि शुभानि निमित्तानि का० 3. प्रस्तुत करना, देना, नि--, (प्रेर०) 1. बताना, समाचार देना, सूचित करना (संप्र० के साथ)—रघु० २।६८ 2. अपनी उपस्थिति की घोषणा करना—कथ मात्मानं निवेदयामि—श० १ 3. इंगित करना, दिखलाना दिगंबरत्वेन निवेदितं वसु—कु० ५।७२ 4. प्रस्तुत करना, उपस्थित होना, भेंट चढ़ाना—मनु० २।५१, याज्ञ० १।२७ 5. देख रेख में सौंपना, दे देना, प्रति—(प्रेर०) समाचार देना सूचित करना, सम् --, (आ०) जानना, सावधान होना –भट्टि० ५।३७, ८।१७ 2. पहुंचाना, (प्रेर०) जतलाना, प्रत्यक्ष ज्ञान कराना –भट्टि० १७।६३ ।

ii (विदा० आ० विद्यते, वित्त) होना, विद्यमान होना अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते –मृच्छ० ९।३७, नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः भग० २।१६ (तु० √अस्) ।

iii (तुदा० उभ० विंदति—ते, वित्त) 1. हासिल करना प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपलब्ध करना—एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विंदते फलम्—भग० ५।४, याज्ञ० ३।१९२ 2. मालूम करना, खोजना, पहचानना, यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विंदति मातरम्—सुभा०, कु० १।६, मनु० ८।१०९ 3. महसूस करना, अनुभव करना—रघु० १४।५६, भग० ५।२१, ११।२४, १८।४५ 4. विवाह करना—मनु० ९।६९, अनु--, 1. हासिल करना, प्राप्त करना 2. भुगतना, अनुभव करना, महसूस करना –पांथ मंदमते किं वा संतापमनु विंदसि —भामि० २।११२, गीत० ४ ।

iv (दिवा० आ० विंते, वित्त या विन्न) 1. जानना, समझना 2. मानना, लिहाज करना, समझना—न तृणं ह्रीति लोकोऽयं विंते भीं निष्प्रराक्रमम्—भट्टि० ६।३९ 3. मालूम करना, भेंट होना 4. तर्क करना, विमर्श करना 5. परीक्षण करना, पूछताछ करना ।

v (चुरा० आ० वेदयते) 1. कहना, प्रकथन करना, घोषणा करना, समाचार देना 2. महसूस करना, अनुभव करना 3. रहना (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न रूपों का उल्लेख है-- वेत्ति सर्वाणि शास्त्राणि गर्वस्तस्य न विद्यते, वित्ते धर्मं सदा सद्भिस्तेषु पूजां च विंदति) ।

विद् (वि०) [विद्+क्विप्] (समास के अन्त में) जानने वाला, जानकार, वेदविद् आदि, (पुं०) 1. बुधग्रह 2. विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य (स्त्री०) 1. ज्ञान 2. समझ, बुद्धि ।

विदः [विद्+क] 1. विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य, पंडितजन 2. बुधग्रह, दा 1. ज्ञान, अधिगम 2. समझदारी ।

विदंश: [वि+दंश्+घञ्] चटपटा भोजन जिसके खाने से प्यास अधिक लगे ।

विदग्ध [भू० क० कृ०] [वि+दह्+क] 1. जला हुआ, आग से भस्म हुआ 2. पका हुआ 3. पचा हुआ 4. नष्ट किया हुआ, गला-सड़ा 5. चतुर, कुशाग्रबुद्धि, निपुण, सूक्ष्मदर्शी 6. धूर्त, कलाभिज्ञ, षड्यंत्रकारी 7. अनजला या अनपचा,—ग्धः 1. बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष, विद्याव्यसनी 2. स्वेच्छाचारी, -ग्धा चालाक, चतुर स्त्री, कलाविद् स्त्री ।

विदग्धः [विद्+कथ्+क] 1. सिद्धान् पुरुष, विद्याव्यसनी 2. संन्यासी, मुनि ।

विदरः [वि+दृ+अप्] तोड़ना, फटना, विदीर्ण होना, —रम् कटिदारी नाशपाती, फकारी वृक्ष ।

विदर्भाः (पुं०, ब० व०) [विगता दर्भाः कुशा यतः] 1. एक जिले का नाम, आधुनिक बरार–अस्ति विदर्भो नाम जनपदः—दश०, अस्ति विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम् मा० १, रघु० ५।४०, ६०, नै० ११५० 2. विदर्भ के निवासी, -र्भः 1. विदर्भ देश का राजा 2. सूखी या मरुभूमि । सम०— जा, --तनया, -- राजतनया,--सुधूः विदर्भ- राज की पुत्री दमयन्ती के विशेषण ।

विदल (वि०) [विघट्टितानि दलानि यस्य वि+दल्+क] 1. टुकड़े टुकड़े हुए, आरपार चीरा हुआ 2. खुला हुआ, (फूल आदि) खिला हुआ, लः 1. विभक्त करना, अलग अलग करना 2. फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना 3. रोटी 4. पहाड़ी आबनूस, लम् 1. बाँस की खपच्चियों की बनी टोकरी, या लंबोली डालियों की बनी वस्तुएँ 2. अनार की छाल 3. टहनी 4. किसी द्रव्य की फाँक ।

विदलनम् [वि+दल्+ल्युट्] खण्ड खण्ड करना, फाड़ कर अलग अलग करना, काटना, विभक्त करना ।

विदारः [वि+दृ+घञ्] 1. फाड़ना, चीरना, खण्ड खण्ड करना 2. संग्राम, युद्ध 3. (किसी नदी बाढ़ तालाब का) ऊपर से बहना, जलप्लावन ।

विदारकः [वि+दृ+ण्वुल्] 1. फाड़ने वाला, बाँटने वाला 2. नदी की धार के मध्य में स्थित वृक्ष या चट्टान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जो नदी के मार्ग को विभक्त कर दे) 3. किसी शुष्क नदी के पाट में पानी के लिए बनाया गया छिद्र ।

विदारण: [वि+दृ+णिच् +ल्युट्] 1. नदी के मध्य में स्थित चट्टान या वृक्ष (जिससे नाव बाँध दी जाय) 2. संग्राम, युद्ध 3. कर्णिकार या कनियर का वृक्ष, णा संग्राम, युद्ध, णम् 1. फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, चीरना, छिन्न करना, तोड़ना—श्रुतं सखे श्रवणविदारणं वचः—मृदा० ५।६, युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले गीत० १, कि० १४। ५४. (यहाँ 'विदारण' विशेषण का कार्य करता है) 2. काट देना, सन्तार देना 3. वध, हत्या ।

विदारुः [वि+दृ+णिच्+उ] छिपकली ।

विदित [भू० क० कृ०] [विद्+क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ, सीखा हुआ 2. सूचित 3. विश्रुत, विख्यात, प्रसिद्ध भुवनविदिते वंशे—मेघ० ६ 4. प्रतिज्ञात, इकरार किया हुआ,—तः विद्वान पुरुष, विद्याव्यसनी, —तम् ज्ञान, सूचना ।

विदिश् (स्त्री०) [दिग्भ्यो विगतः] दो दिशाओं का मध्यवर्ती बिन्दु ।

विदिशा (स्त्री०) दशार्ण नामक प्रदेश की राजधानी (वर्तमान भेलसा नगर) तेषां (दशार्णानां) दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्—मेघ० २४ 2. मालवा प्रदेश की एक नदी का नाम 3. =विदिश् दे० ।

विदीर्ण [भू० क० कृ०] [वि+दृ+क्त] 1. फाड़ा हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ, विदारण किया हुआ, फाड़ कर खोला हुआ 2. खोला हुआ, फैलाया हुआ (दे० विपूर्वक 'दृ') ।

विदुः [विद्+कु] हाथी के गंडस्थल का मध्य भाग, हाथी का ललाट, (हस्तिकुंभमध्यभागः) ।

विदुर (वि०) [विद्+कुरच्] बुद्धिमान्, मनीषी, रः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष् 2. धूर्त आदमी, षड्यन्त्रकारी 3. पाण्डु के छोटे भाई का नाम (जब सत्यवती को ज्ञात हुआ कि व्यास द्वारा उसको दोनों पुत्रवधुओं से उत्पन्न दोनों पुत्र शारीरिक रूप से सिंहासन के अयोग्य हैं क्योंकि धृतराष्ट्र अन्धा था तथा पांडु पीला एवं अस्वस्थ था—तो उसने उन्हें एक बार फिर व्यास को सहायता मांगने के लिए कहा। परन्तु व्यास मुनि की तपोमय उग्र दृष्टि से भयभीत होकर बड़ी विधवाने अपनी एक दासी को अपने वस्त्र पहना कर उसके पास भेजा और यही दासी विदुर की माता बनी। वह अपनी बड़ी बुद्धिमत्ता, सचाई और घोर निष्पक्षता के कारण प्रसिद्ध है, वह पांडवों से विशेष स्नेह रखते थे, तथा कई बार उन्हें अनेक संकटग्रस्त विपत्तियों से बचाया) ।

विदुलः [वि+दुल्+क] 1. एक प्रकार का कांटा, बेंत 2. लोहार की तरह का एक सुगठित गँवरू ।

विदून [भू० क० कृ०] [वि+दू+क्त] कष्टग्रस्त, संतप्त, दुःखी (दे० वि पूर्वक 'दु') ।

विदूर (वि०) [विशेषण दूरः प्रा० स०] जो बहुत दूर हो, दूरस्थित—सरिद्विदूरातरमावतन्वी—रघु० १३।४८, -रः पहाड़ का नाम जहाँ से वैदूर्यमणि निकलती है—विदूरभूमिर्नवमेघशब्दादुद्भिद्भया रत्नशलाकयेव—कु० १।२४, दे० इस पर तथा शि० ३।४५ पर मल्लि० **विदूरम्, विदूरेण, विदूरतः, विदूरात्** शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'दूर से' 'दूरी पर' 'दूर' अर्थ को प्रकट करते हैं। सम०-ग (वि०) दूर दूर तक फैला हुआ,—जम् वैदूर्य मणि ।

विदूषक (वि०) (स्त्री०-की) [विदूषयति स्वं परं वा—वि +दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1. दूषित करने वाला, मलिन करने वाला, छूत फैलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला 2. बदनाम करने वाला, गाली-गलौज बकने वाला 3. रसिक, मसखरा, ठिठोलिया —कः 1. हंसोड़, भांड, परिहासक 2. विशेषतः नाटक में नायक का दिल्लगीबाज साथी और अन्तरंग मित्र जो अपनी अनोखी वेशभूषा, बातचीत, हावभाव, मुखमुद्रा आदि से तथा अपने आपको परिहास का पात्र बना कर उल्लास में वृद्धि करता है, सा० द० ७९ पर दी गई परिभाषा कुसुमवसंताद्यभिधः कर्मवपुर्वेशभाषाद्यैः, हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः 3. स्वेच्छाचारी, लंपट ।

विदूषणम् [वि+दूष्+ल्युट्] 1. मलिनीकरण, भ्रष्टाचार 2. दुर्वचन, झिड़की, परिवाद ।

विदृतिः [वि+दृ+क्तिन्] जीवन, सन्धि ।

विदेशः [विप्रकृष्टो देशः प्रा० स०] दूसरा देश, परदेश भजते विदेशमधिकेन जितस्तदनुप्रवेशमयया कुशलः —शि० ९।४८। राम० ज (वि०) विदेशी, परदेशी ।

विदेशीय (वि०) [विदेश—छ] परदेशी, विदेशी ।

विदेहाः (पु० ब० व०) [विगतो देहो देहसंबंधो यस्य —प्रा० ब०] एक देश का नाम, प्राचीन मिथिला (दे० परि० ३)—रघु० ११।३६, १२।३६ 2. इस देश के निवासी,—हः विदेह का जिला, हा विदेह ।

विद्ध [भू० क० कृ०] [व्यध्+क्त] 1. बींधा हुआ, चुभा हुआ, घायल, छुरा भोंका हुआ 2. पीटा हुआ, कशाहत, बेंताहत 3. फेंका गया, निर्देशित, प्रेषित 4. विरोध किया गया 5. मिलता जुलता, द्धम् चाव । सम०-कर्ण (वि०) जिसके कान छिदे हों ।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1. ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान -(तां) विद्यामभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—रघु० १।८८, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्न-गुप्तं धनम् -मर्तृ० २।२०, (कुछ विद्वानों के मतानुसार विद्या चार है—आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दंडनीतिश्च शाश्वती - काम०, कि० २।६, इन चारों में मनु० ७।४३ पांचवीं विद्या—आत्मविद्या को और जोड़ देता है। परन्तु विद्या साधारणतः चौदह मानी जाती है—अर्थात् चार वेद, छः वेदांग, धर्म, मीमांसा, तर्क या न्याय, और पुराण—दे० चतुर्दश के नीचे चतुर्दश विद्या, तथा मनु० १।४) 2. यथार्थ ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान—उत्तर० ६।६, तु० अविद्या 3. जादू, मन्त्र 4. दुर्गादेवी 5. ऐन्द्रजालिक कुशलता। समः—अनुपालिन्—अनुसेविन् (वि०) ज्ञानोपार्जन करने वाला, आगमः—अर्जनम्, —अभ्यासः, ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा ग्रहण करना, अध्ययन, अर्थः ज्ञान की खोज, —अर्थिन् (वि०) छात्र, विद्याव्यसनी, शिष्य, —आलयः विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामन्दिर, उपार्जनम् =विद्यार्जनम्, —करः विद्वान् पुरुष, —चक्षुस्, —चक्षुः (वि०) अपने ज्ञान एवं शिक्षा के लिए प्रसिद्ध, देवी सरस्वती देवी, —धनम् विद्यारूपी दौलत, धरः (स्त्री० री) एक देवयोनि विशेष, अर्धदेवता, —प्राप्तिः =विद्यार्जन, —लाभः 1. ज्ञान की प्राप्ति 2. ज्ञान के द्वारा प्राप्त किया गया धन आदि, विहीन (वि०) निरक्षर, अज्ञानी, —वृद्ध (वि०) ज्ञान में बड़ा हुआ, शिक्षा में प्रगतिशील, —व्यसनम्, व्यवसायः ज्ञान की खोज।

विद्युत् (स्त्री०) [विशेषेण द्योतते -वि+द्युत्+क्विप्] बिजली -वातोय कपिला विद्युत्—महा०, मेघ० ३८, ११५ 2. वज्र। समः —उन्मेषः बिजली की कौंध, —जिह्वः एक प्रकार का राक्षस, —ज्वाला, —द्योतः बिजली की कौंध या कांति -दामन् (नपुं०) वक्र गति से युक्त बिजली की कौंध या चमक, —पातः बिजली का गिरना या प्रहार, प्रियम् कांसा, —लता, लेखा (विद्युल्लता, विद्युल्लेखा) 1. बिजली की कौंध या लहर 2. वक्रगतिशील या कुटिल बिजली।

विद्युल्लत (वि०) [विद्युत्+मतुप्] बिजली से युक्त —मेघ० ६४. (पुं०) बादल कु० ६।२७।

विद्योतन (वि०) स्त्री० नी) [वि+द्युत्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला 2. सोदाहरण निरूपण करने वाला, व्याख्या करने वाला।

विद्रः [व्यथ्+रक्, दान्तादेशः, सम्प्रसारणम्] 1. फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, छेद करना 2. दरार, छिद्र, बिवर।

विद्रधिः [विद्+रुध्+कि, पृषो०] पीपदार फोड़ा।

विद्रव [वि+द्रु+अप्] 1. भाग जाना, उड़ान, प्रत्यावर्तन 2. आतंक 3. प्रवाह 4. पिघलना, गलना।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त] नींद से जागा हुआ, उद्बुद्ध।

विद्रावणम् [वि+द्रु+णिच्+ल्युट्] 1. भगाना, खदेड़ना, हांक कर दूर करना, परास्त करना 2. गलाना, पिघालना।

विद्रुमः [विशिष्टो द्रुमः] 1. मूंगे का वृक्ष (लाल रंग के मूल्यवान मूंगों (मणियों) को पैदा करने वाला) 2. मूंगा प्रवाल· तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु—रघु० १३।१३, कु० १।४४ 3. कोंपल या किसलय। समः -लता 1. मूंगे की शाखा 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य, -लतिका 'नलिका' नामक एक गंध द्रव्य।

विद्वस् (वि०) [विद्+क्वसु] (कर्तृ० ए० व०, पुं० विद्वान्; स्त्री० विदुषी, नपुं० विदत्) 1. जानने वाला (कर्म० के साथ) आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचन; तव विद्वानरिं तापकारणम्—रघु० ८।७६, कि० ११।३० 2. बुद्धिमान्, विद्वान् (पुं०) विद्वान् मनुष्य या बुद्धिमान्, व्यक्ति, विद्याव्यसनी कि वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम् रघु० ५।१८। समः कल्प, —देशीय, —देश्य (वि०) विद्वत्कल्प, विद्वद्देशीय, विद्वद्देश्य) थोड़ा पढ़ा लिखा, कम विद्वान्, —जनः (विद्वज्जनः) विद्वान् या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि।

विद्विष् (पुं०) **विद्विषः** [वि+द्विष्+क्विप् क वा] शत्रु, दुश्मन—विद्विषोऽप्यनुनय भर्तृ० २।७७, रघु० ३।६०, याज्ञ० १।१६२।

विद्विष्ट (भू० क० कृ०) [वि+द्विष्+क्त] घृणित, अनीप्सित, कुत्सित।

विद्वेषः [वि+द्विष्+घञ्] 1. शत्रुता, घृणा, कुत्सा, मनु० ८।३४६ 2. तिरस्करणीय घमण्ड, गर्हा (मानहानि)—विद्वेषोऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः—भारत।

विद्वेषणः [वि+द्विष्+ल्युट्] 1. घृणा करने वाला, शत्रु, णी रोषपूर्ण स्वभाव की स्त्री, —णम् घृणा और शत्रुता पैदा करना 2. शत्रुता, घृणा।

विद्वेषिन्, विद्वेष्टृ (वि०) [विद्विष्+णिनि, तृच् वा] घृणा करने वाला, शत्रुतापूर्ण (पुं०) घृणक, शत्रु।

विध् (तुदा० पर० विधति) 1. चुभोना, काटना 2. सम्मान करना, पूजा करना 3. राज्य करना, शासन करना, प्रशासन करना।

विधः [विध्+क] 1. प्रकार, किस्म यथा बहुविध, नानाविध में 2. ढंग, रीति, रूप 3. तह (समास के अन्त में, विशेष कर अंकों के पश्चात्) त्रिविध, अष्टविध आदि 4. हाथियों का आहार 5. समृद्धि 6. छेद करना।

विधवनम् [वि+धू+ल्युट्] 1. हिलाना, विक्षुब्ध करना 2. थरथराहट, कंपकंपी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विधवा [विगतो धवो यस्याः सा] रांड, बेवा सा नारी विधवा जाता गृहे रोदिति तत्पतिः सुभा० । सम० —आवेदनम् बेवा स्त्री से विवाह करना, गामिन् जो विधवा स्त्री से सहवास करता है।

विधव्यम् [वि÷धू+ण्यत्] थरथराहट, विक्षोभ।

विधस् (पुं०) सर्व सृष्टि का उत्पादक ब्रह्मा।

विधा [वि—धा+विच्] 1. ढंग, रीति, रूप 2. प्रकार, किस्म 3. समृद्धि, सम्पन्नता 4. हाथी घोड़ों का चारा, खाद्य पदार्थ 5. छेद करना 6. किराया, मजदूरी।

विधातृ (पुं०) [वि÷धा+तृच्] 1. निर्माता, स्रष्टा —कु० ७।३६ 2. स्रष्टा, ब्रह्मा—विधाता भद्रं नो दिशतु मनोज्ञाय विधये —मा० ६।७, रघु० १।३५, ६।११, ७।३५ 3. अनुदाता, दाता, प्रदाता -कु० १।५७ 4. भाग्य, दैव—हि० १।४० 5. विश्वकर्मा 6. कामदेव 7. मदिरा। सम० आयुस् (पुं०) 1. सूर्य की चमक, धूप 2. सूरजमुखी फूल,—भूः नारद का विशेषण।

विधानम् [वि+धा÷ल्युट्] 1. क्रम से रखना, व्यवस्था करना 2. अनुष्ठान, निर्माण, करण,—कार्यान्वयननेपथ्य-विधानम् श० १, आज्ञा° यज्ञ° आदि 3. सृष्टि, रचना रघु० ६।११, ७।१४, कु० ७।६६ 4. नियोजन, उपयोग, प्रयोग प्रतिकारविधानम् रघु० ८।४० 5. नियत करना, विहित करना, आदेश देना 6. नियम, उपदेश, अध्यादेश, धार्मिक नियम या विधि, निषेध —मनु० ९।१४८, भग० १६।२४, १७।२४ 7. ढंग, रीति 8. साधन या तरकीब 9. हाथियों का आहार (जो उन्हें मदोन्मत्त करने के लिए दिया जाता है) विधानसंपादितदानशौंडैः —का० (यहाँ 'विधान' का अर्थ 'नियम' भी है) शि० ५।५१ 10. धन दौलत 11. पीड़ा, वेदना, सन्ताप, दुःख 12. शकुन का कार्य। सम० ज्ञः, ज्ञः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, —युक्त (वि०) वेदविधि के अनुरूप, या अनुकूल।

विधानकम् [विधान +कन्] दुःख, कष्ट, पीड़ा।

विधायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [वि÷धा+ण्वुल्] 1. क्रमबद्ध करने वाला, व्यवस्थित करने वाला 2. बनाने वाला, निर्माण करने वाला, सम्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला 3. रचना करने वाला 4. व्यवस्थित करने वाला, विहित करने वाला, निर्धारित करने वाला 5. अर्पण करने वाला, सौंपने वाला, (किसी की देख रेख में) हवाले करने वाला।

विधिः [वि+धा+कि] 1. करना, अनुष्ठान, अभ्यास कृत्य, कर्म —वह्वध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां यतस्थ —भर्तृ० ३।४१, योगविधि —रघु० ८।२२, लेखा-विधि—मा० १।३५ 2. प्रणाली, रीति, पद्धति, साधन, ढंग पंच० १।३७६ 3. नियम, समादेश, कोई विधि जो सबसे किसी बात को लागू करती है (यह 'विधि' शब्द नियम और परिसंख्या से भिन्न है) विधिरत्यन्तमप्राप्तौ —वेद विधि या नियम, अध्यादेश, निषेध, कानून, वेदाज्ञा, धार्मिक समादेश (विप० 'अर्थवाद' अर्थात् व्यवहारपरक उक्ति जिसमें आख्यान और दृष्टान्तों का चित्रण हो दे० अर्थवाद) श्रद्धा चित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् भा० ७।२९, रघु० २।१६ 5. कोई धार्मिक कृत्य या संस्कार, धार्मिक रस्म, संस्कार—स चेत् स्वयं कर्मसु धर्मचारिणां स्वमतरायो भवसि व्यृतो विधिः रघु० ३।४५, १।३४ 6. व्यवहार, आचरण 7. दशा विक्रम० ४ 8. रचना, बनावट सामग्र्यविधौ कु० ३।२८, कल्याणी विधिषु विचित्रता विधातुः कि० ७।७ 9. सृष्टा 10. भाग्य, दैव, किस्मत विधौ वामारंभे मम समुचितैवेयं परिणतिः मा० ४।४ 11. हाथियों का खाद्य पदार्थ 12. काल 13. डाक्टर, वैद्य 14. विष्णु। सम० ज्ञ (वि०) कर्मकाण्ड का ज्ञाता (ज्ञः) कर्मकाण्ड में निष्णात ब्राह्मण, कर्मकाण्डी, दृष्ट, विहित (वि०) नियत, विहित, ईक्षम् नियमों की विविधता, विधि या समादेश की विभिन्नता, पूर्वकम् (अव्य०) नियमानुकूल, प्रयोगः नियम का व्यवहार, योगः भाग्य का बल या प्रभाव, वधूः (स्त्री०) सरस्वती का विशेषण, हीन (वि०) नियम शून्य, अनधिकृत, अनियमित।

विधित्सा [वि÷धा+सन्+अ+टाप्] 1. सम्पन्न करने की इच्छा 2. आयोजन, प्रयोजन, इच्छा।

विधित्सित (वि०) [वि+धा÷सन्+क्त] किये जाने के लिये अभिप्रेत, तम् इरादा, अभिप्राय, आयोजन।

विधुः [व्यध+कु] 1. चन्द्रमा, सविता विधुरपि सवितरति दिनांति यामिन्यः काव्य० १० 2. कबूर 3. पिशाच, दानव 4. प्रायश्चित्तपरक आहुति 5. विष्णु का नाम 6. ब्रह्मा। सम० क्षयः चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, कृष्ण पक्ष का समय, पंजरः (पिंजरः भी) खजूर, कटार, प्रिया रोहिणी नक्षत्र।

विधुत दे० 'विधूत'।

विधुतिः (स्त्री०) [वि+धू+क्तिन्] हिलना, संक्षोभ, थरथराहट वैनायक्यश्चिरं वो वदनविधुतयः पांतु चौरीकरास्यः मा० १।१।

विधुनम् [वि+धू+णिच्+ल्युट्, नुट्, पृषो० ह्रस्वः] 1. हिलना, झूलना, विक्षुब्ध होना 2. कंपकंपी, थरथराहट।

विधुन्तुदः [विधुं तुदति पीडयति —विधु+तुद्+खश्,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुम्] राहु विधुमिव विधुन्तुद दंतदलनगलितामृत-धारम् गीत० ४, नै० ४७१, शि० २।६१ ।

विधुर (वि०) [विगता धूः कार्यभारो यस्मात् प्रा० ब०] 1. दुःखी, विषद्ग्रस्त, कष्टग्रस्त, शोकाकुल, दयनीय -मा० २।३, ९।११, उत्तर० ३।१८, ६।४१, कि० ११।२६ 2. जिससे प्रेम करने वाला कोई न रहा हो, शोकग्रस्त, पत्नी या पति की विरहव्यथा से व्याकुल -मयि च विधुरे भावः कांता प्रवृत्तिपराङ्मुखः -विक्रम० ४।२०, विधुरा ज्वलनातिसर्जनान्नु मां प्रापय पत्युरन्तिकम् -कु० ४।३२, शि० ६।२९, १२।८ 3. शून्य, वञ्चित, विरहित, मुक्त -सा मे कलंक-विधुरा मधुराननश्रीः -भामि० २।५ 4. विरोधी, वैरी, शत्रु पंच० २।८१,-रः रडदा,-रम् 1. खटका, भय, चिन्ता 2. पति या पत्नी से वियोग, प्रेमी या प्रेमिका द्वारा शोकाकुलता ।

विधुरा [विधुर+टाप्] दही जिसमें चीनी व मसाले डाले हुए हों ।

विधुवनम् [वि+धू+ल्युट्, कुटादित्वात् षत्वाभावः] हिलना, थरथरी, कंपकपी ।

विधूत (भू० क० कृ०) [वि+धू+क्त] 1. हिला हुआ, उथलपुथल हुआ, तरंगित 2. थरथराता हुआ 3. उखड़ा हुआ, मिटाया हुआ, हटाया हुआ 4. अस्थिर 5. परित्यक्त,—तम् विरक्ति, अरुचि ।

विधूतिः (स्त्री०) **विधूतनम्** [वि+धू+क्तिन्, वि+धू+णिच्+ल्युट्, नुक्] हिलना, थरथरी, कंपकपी विक्षोभ ।

विधृत (भू० क० कृ०) [वि+धृ+क्त] 1. पकड़ा हुआ, थामा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2. वियुक्त, अलग-अलग रक्खा गया 3. धारण किया गया, कन्धे में किया गया 4. रोका गया, नियन्त्रित किया गया 5. सहारा दिया गया, प्ररक्षित, समर्थित (दे० वि पूर्वक धृ),-तम् 1. आदेश की अवहेलना 2. अस्वीकार ।

विधेय (सं० कृ०) [वि+धा+यत्] 1. किये जाने के योग्य, अनुष्ठेय 2. विहित या नियत किये जाने के योग्य 3. (क) आश्रित, निर्भर अप्र विधिविधेयः परिचयः—मा० २।१३ (ख) अधीन, प्रभावित, नियन्त्रित, दमन किया गया, परास्त किया गया (प्रायः समास में) निद्राविधेयं नरदेवसैन्यम्—रघु० ७।६२, संभाव्यमानस्नेहरसेनाभिसंधिना विधेयीकृतोऽपि मा० १, भग० २।६४, मुद्रा० ३।१, शि० ३।२०, रघु० १९।४ 4. आज्ञाकारी, शासनीय, अनुवर्ती, वश्य, —अविधेयेंद्रियः पुंसां गौरिवैति विधेयताम्—कि० ११।३३ 5. (अर्थ०) विधेय—(कर्ता के संबंध में कही गई बात) होने के योग्य-अत्र मिथ्यामहिमतं नानुवाद्यं अपि तु विधेयम् -काव्य ७, -यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य,—कि० १६।६२ 2. प्रतिज्ञा या प्रस्थापना की उक्ति, यः सेवक, भृत्य । सम० -अविमृष्ट: रचनासंबंधी दोष जिससे विधेय आश्रित स्थिति का हो जाय या उसका अधूरा कथन किया जाय—अविमृष्टः प्राधान्येनानिर्दिष्टो विधेयांशो यत्र —काव्य० ७, उद्दा० उस स्थान पर देखो, अंशमत् (तुं०) विण्णु० ज्ञ (वि०) जो अपना कर्तव्य जानता है—पंच० १।३३७, **पदम्** 1. सम्पन्न किया जाने वाला उद्देश्य 2. कर्ता के संबंध में कही गई उक्ति विधेय ।

विध्वंसः [वि+ध्वंस्+घञ्] 1. बरबादी, विनाश 2. शून्यता, अरुचि, नापसन्दगी 3. अपमान, अपशब्द ।

विध्वंसिन् (वि०) [वि+ध्वंस्+णिनि] बरबाद होने वाला, टुकड़े टुकड़े हो जाने वाला ।

विध्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+ध्वंस्+क्त] 1. बरबाद हुआ, विनष्ट 2. इधर उधर बिखेरा हुआ, छितराया हुआ 3. अस्थिर, चंचला 4. ग्रहणग्रस्त ।

विनत (भू० क० कृ०) [वि+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, नवा हुआ 2. अवनत हुआ, लटकता हुआ, मुड़ा हुआ श० ३।११ 3. डूबा हुआ, अवसन्न 4. झुका हुआ, कुटिल, वक्र 5. विनीत, शिष्ट (दे० वि पूर्वक नम्) ।

विनता [विनत—टाप्] 1. अरुण और गरुड़ की माता जो कश्यप की एक पत्नी थी दे० गरुड़ 2. एक प्रकार की टोकरी । सम०—नंदनः, सुतः, सूनुः गरुड़ या अरुण के विशेषण ।

विनतिः (स्त्री०) [वि+नम्—क्तिन्] 1. नमना, झुकना, नीचे की ओर होना 2. विनय, विनम्रता 3. प्रार्थना ।

विनदः [वि+नद्+अच्] 1. ध्वनि, कोलाहल 2. एक वृक्ष का नाम ।

विनमनम् [वि+नम्+ल्युट्] झुकना, नमना, सिर और कंधे झुका कर चलना ।

विनम्र (वि०) [वि+नम्+र] 1. झुका हुआ, झुक कर चलता हुआ कि० ४।३ 2. अवसन्न, डूबा हुआ 3. विनयशील, विनीत ।

विनम्रकम् [विनम्र+कन्] 'तगर' वृक्ष का फूल ।

विनय (वि०) [वि+नी+अच्] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ 2. गुप्त 3. अशिष्टाचारी, यः 1. निर्देश, अनुशासन, अनुदेश (अपने कर्तव्यक्षेत्र में) नैतिक प्रशिक्षण —रघु० १।२४, मा० १०।५ 2. औचित्य, शिष्टाचार, सुशीलता—श० १।२९ 3. शिष्ट आचरण, सज्जनोचित व्यवहार, सच्चरित्र, अच्छा चलन—रघु० ६।७९, मा० १।१८ 4. शालीनता, विनम्रता—सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र एतेन विनयमाहात्म्येन—उत्तर० १, विद्या ददाति विनयम्; तथापि नीचैर्विनयादद्दृश्यत रघु० ३।३४, १०।७१, (यहां मल्लि० 'विनय' शब्द का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ 'इन्द्रियजय' बतलाता है जो हमारे मतानुसार अनावश्यक है) 5. श्रद्धा, शिष्टता, सौजन्य 6. सदाचरण 7. खींच लेना, दूर करना, हटाना – शि० १०। ४२ 8. जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है जितेन्द्रिय 9. व्यापारी, सौदागर। सम०—अवनत (वि०) झुका हुआ, विनम्र, वाहिन् (वि०) शासनीय, आज्ञाकारी अनुवर्ती,—वाद् (वि०) मृदुभाषी, मिलनसार,—स्थ (वि०) विनयशील, शालीन।

विनयनम् [वि+नी+ल्युट्] 1. हटाना, दूर करना—मेघ० ५२ 2. शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुशासन।

विनशनम् [वि+नश्+ल्युट्] नाश, हानि, विनाश, लोप, —नः उस स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी रेत में लुप्त हो गई है तु० मनु० २।२१।

विनष्ट (भू० क० कृ०) [वि+नश्+क्त] 1. ध्वस्त, उच्छिन्न, बर्बाद 2. ओझल, लुप्त 3. बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट।

विनस (वि०) (स्त्री०—सा,—सी) [विगता नासिका यस्य, नासिकाशब्दस्य नसादेशः] बिना नाक का, नाकरहित —भट्टि० ५।८।

विना (अव्य०) [वि+ना] बगैर, सिवाय (कर्म०, करण० या अज्ञा० के साथ) यथा तान् विना रागो यथा मानं विना नृपः, यथा दानं विना हस्तौ तथा ज्ञानं विना यतिः भामि० १।११९, पंकैर्विना सरो भाति सदः खलजनैर्विना, कटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं विषयैर्विना १।११६, विना वाहनहस्तिभ्यः क्रियतां सर्वमोक्षः—मुद्रा० ७, शि० २।९, (विना कृ छोड़ना, परित्याग करना, विरहित करना, वञ्चित करना—मदनेन विनाकृता रतिः कु० ४।२१, 'काम से विरहित')। सम०—उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें 'बिना' काव्य की दृष्टि से सुन्दर ढंग से प्रयुक्त होता है,—विनार्थसम्बन्ध एव विनोक्तिः—रस०, दे०, काव्य० १० भी।

विनाडिः, विनाडिका [विगता नाडिः नाडिका वा यस्या] समय को एक माप जो घड़ी के साठवें भाग के बराबर होती है, एक पल या चौबीस सेकंड।

विनायक: [विशिष्टो नायकः प्रा० स०] 1. (बाधाओं के) हटाने वाला 2. गणेश 3. बुद्ध धर्म का देवरूप अध्यापक 4. गरुड़ 5. रुकावट, अड़चन।

विनाशः [वि+नश्+घञ्] 1. ध्वंस, बर्बादी, भारी हानि, क्षय 2. हटाना। सम० उन्मुख (वि०) नष्ट होने वाला, मरने के लिए तैयार, -धर्मन्, धर्मिन् (वि०) क्षीण होने वाला, नष्ट होने वाला, क्षणभंगुर विषयेषु विनाशधर्मसु त्रिदिवस्थेष्वपि निःस्पृहाः भवत —रघु० ८।१०।

विनाशनम् [वि+नश्+णिच्+ल्युट्] विनाश, बर्बादी, उन्मूलन,—नः विनाशक, विनाशकर्ता।

विनाहः [वि+नह्+घञ्] कुएँ के मुंह का ढकना। तु० 'वीनाह'।

विनिक्षेपः [वि+नि+क्षिप्+घञ्] फेंक देना, भेज देना।

विनिग्रहः [वि+नि+ग्रह्+अप्] 1. नियंत्रण करना, दमन करना, वश में करना—भग० १३।७, १७।१६, मनु० ९।२६३ 2. पारस्परिक विरोध या अर्थान्तरन्यास।

विनिद्र (वि०) [विगता निद्रा यस्य—प्रा० ब०] 1. निद्रारहित, जागा हुआ (आलं० से भी) रघु० ५।६५ 2. मुकुलित, खुला हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ —विनिद्रमन्दारतरुजीर्णगुल्मो कु० ५।८०।

विनिपातः [वि+नि+पत्+घञ्] 1. अधःपतन, गिराव 2. भारी अवपात, संकट, बुराई, हानि, बर्बादी, विनाश —विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः—भर्तृ० २।१० (यहाँ यह 'प्रथम अर्थ' भी प्रकट करता है) कि० २।२४ 3. क्षय, मृत्यु 4. नरक, नारकीय यन्त्रणा—श० ५ 5. घटना, घटित होना 6. पीड़ा, दुःख 7. अनादर।

विनिमयः [वि—नि+मी+अप्] 1. अदला-बदली, वस्तु के बदले वस्तु का लेन-देन—कार्यं विनिमयेन—मालवि० १, संपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्—रघु० १।२६ 2. न्यास, धरोहर, अमानत।

विनिमेषः [वि+नि+मिष्+घञ्] (आंखों का) झपकना।

विनियत (भू० क० कृ०) [वि+नि+यम्+क्त] नियंत्रित, रोका गया, प्रतिबद्ध, विनियमित—यथा विनियतहारं तथा विनियतवाचं आदि म।

विनियमः [वि+नि+यम्+अच्] नियन्त्रण, प्रतिबन्ध, रोक।

विनियुक्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+युज्+क्त] 1. अलग किया हुआ, ठीला, विच्छिन्न 2. अनपमत, नियुक्त 3. व्यवहृत 4. समादिष्ट, विहित।

विनियोगः [वि+नि+युज्+घञ्] 1. अलग होना, जुदा होना, विच्छिन्न होना 2. छोड़ना, त्यागना, तिलांजलि देना 3. काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग, नियंत्रण बभूव विनियोगज्ञः साधनीयेषु वस्तुषु —रघु० १७।६७, प्राणायामे विनियोगः—, किसी कर्तव्य पर लगाना, कार्याधिकार, कार्यभार—विनियोगप्रसादाः हि किंकराः प्रभविष्णुषु— कु० ६।६२ 5. रुकावट, अड़चन।

विनियोज्यः [वि—निर्+जि+अच्] पूर्ण विजय।

विनिर्णयः [वि—निर्—नी+अच्] 1. पूर्ण रूप से निबटारा या निर्णय, पूरा फैसला 2. निश्चय 3. निश्चित नियम।

विनिर्बंधः [वि+नि+र्+बंध्+घञ्] आग्रह, वृढ़ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनिर्मित (भू० क० कृ०) [वि+निर्+मा+क्त] 1. बनाया हुआ, निर्माण किया हुआ 2. बना हुआ, रचा हुआ।

विनिवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+वृत्+क्त] 1. लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2. ठहरा हुआ, थमा हुआ, रुका हुआ 3. (सेवा) मुक्त, फारिग।

विनिवृत्तिः (स्त्री०) [वि+नि+वृत्+क्तिन्] 1. विश्रान्ति, रोकना, हटाना –शक्राभ्यसूयाविनिवृत्तये–रघु० ६।७४ 2. अन्त, अवसान, समाप्ति।

विनिश्चयः [वि+निस्+चि+अच्] 1. स्थिर करना, तय करना, निश्चय करना 2. फैसला, पक्का निश्चय।

विनिश्वासः [वि+नि+श्वस्+घञ्] कठिनाई से सांस लेना, आह भरना, आह (गहरी सांस)।

विनिष्पेषः [वि+निस्+पिष्+घञ्] चूर चूर करना, कुचलना, पीस डालना।

विनिहत (भू० क० कृ०) [वि+नि+हन्+क्त] 1. आहत, घायल 2. मार डाला हुआ 3. पूरी तरह परास्त किया हुआ, –तः 1. कोई बड़ा या अनिवार्य संकट, जैसे कि भाग्य-दोष से या दैवात् आपद्ग्रस्त होना 2. अपशकुन, धूमकेतु।

विनीत (भू० क० कृ०) [वि+नी+क्त] 1. दूर ले जाया गया, हटाया हुआ 2. सुप्रशिक्षित, अनुशासित 3. संस्कृत, आचारशील 4. सुशील, विनम्र, विनीत, सौम्य 5. शिष्ट, शालीन, सौजन्यपूर्ण 6. प्रेषित, विसर्जित 7. पालतू, सधाया गया 8. सीधा, सरल (वेशभूषा आदि) 9. आत्म संयमी, जितेन्द्रिय 10 सजा प्राप्त, दंडित 11. शासनीय, शासन किये जाने के योग्य (2. प्रिय, मनोहर (दे० वि पूर्वक नी), –तः 1 सधाया हुआ घोड़ा 2. व्यापारी।

विनीतकम् [विनीत+कन्] 1. गाड़ी, सवारी (डोली आदि 2. ले जाने वाला, वाहक।

विनेतृ (पुं०) [वि+नी+तृच्] 1. नेता, पथ प्रदर्शक 2. अध्यापक, शिक्षक रघु० ८।९१ 3. राजा, शासक 4. सजा देने वाला, दण्ड देने वाला अयं विनेता दुष्टानाम्– महावी० ३।४६, ४।१, रघु० ६।३१, १४।२३।

विनोदः [वि+नुद्+घञ्] 1. हटाना, दूर करना –श्रम विनोदः 2. मनोरंजन, दिल बहलाव, कोई भी रोचक या रंजनकारी व्यवसाय प्रायेणैते रमणविहेष्वेव-नाना विनोदाः भेष० ८७, यः २।५ 3. खेल, क्रीडा, आमोद-प्रमोद 4. उत्सुकता, उत्कण्ठा 5. आनन्द, प्रसन्नता, परितृप्ति किलपवनविनोदोऽप्य-सुलभः –उत्तर० ३।३०, जनयन्तु रसिकजनेषु मनोरम-रतिरसभावविनोदम् - गीत० १२ 6. एक प्रकार का रतिबंध।

विनोदनम् [वि+नुद्+ल्युट्] 1. हटाना 2. मनोरंजन आदि दे० 'विनोद'।

विन्दु (वि०) [विन्द्+उ, नुमागमः] 1. मनीषी, बुद्धिमान् 2. उदार,–न्दुः बूंद, दे० 'बिन्दु'।

विन्ध्यः [विदधाति करोति भयम्] एक पर्वत श्रेणी जो उत्तर भारत को दक्षिण से पृथक् करती है, यह सात कुल पर्वतों में से एक है, यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा है, दे० मनु० २।२१. (एक उपाख्यान के अनुसार विन्ध्य पर्वत को मेरु पर्वत हिमालय पहाड़) से ईर्ष्या हुई। अतः उसने सूर्य से मांग की कि जिस प्रकार वह मेरु के चारों ओर घूमता है, उस प्रकार उसे विन्ध्य के चारों ओर घूमना चाहिए. सूर्य ने विन्ध्य पर्वत की मांग ठुकरा दी। फलतः विन्ध्य पर्वत ने ऊपर को उठना आरंभ किया जिससे कि सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग रोका जा सके। देवताओं में आतंक छा गया, उन्होंने अगस्त्य मुनि से सहायता मांगी। अगस्त्य विन्ध्य पर्वत के पास गया और उससे निवेदन किया कि जरा नीचे झुक जाओ जिससे कि मुझे दक्षिण में जाने का मार्ग मिले, और जब तक मैं वापिस न आऊँ, इसी प्रकार झुके रहो। विन्ध्य पर्वत ने इस बात को मान लिया (क्योंकि एक वर्णन के अनुसार अगस्त्य मुनि विन्ध्य पर्वत का गुरु माना जाता है) परन्तु अगस्त्य फिर दक्षिण से वापिस न लौटा, और विन्ध्य को मेरु जैसी उत्तुंगता न मिल सकी) 2. शिकारी। सम०–अटवी, विन्ध्य महाबन, –कूटः, कूटनम् अगस्त्य ऋषि के विशेषण, –वासिन् पुंवियाकरण व्याडि का विशेषण, –नी; दुर्गा का विशेषण।

विन्न (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1. ज्ञात 2. हासिल, प्राप्त 3. विचार विमर्श किया हुआ, अनुसंहित 4. रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 5. विवाहित (दे० विद्)।

विन्नकः [विन्न–कन्] अगस्त्य का नाम।

विन्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+अस्+क्त] 1. रक्खा हुआ, डाला हुआ 2. जड़ा हुआ, फर्श जमाया हुआ या खड़िया लगाया हुआ 3. स्थिर 4. क्रमबद्ध 5. समर्पित 6. उपस्थित किया गया, प्रस्तुत 7. जमा किया हुआ, निक्षिप्त।

विन्यासः [वि+न्यस्+घञ्] 1. सौंपना, जमा करना 2. धरोहर 3. क्रमपूर्वक रखना, समंजन, निपटारा, अक्षरविन्यासः अक्षर उत्कीर्ण करना–प्रत्यक्षरश्लेषमय-प्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिः –वास० 4. किसी ग्रन्थ की रचना 4. संग्रह समवाय 6 स्थान, आधार।

विपक्तिम (वि०) [वि+पच्+क्तिन्–मप्] 1. पूर्ण रूप से पका हुआ, परिपक्व 2. विकसित, (पूर्वकृत्यों के परिणाम स्वरूप) पूर्णता को प्राप्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विपक्व (वि+पच्+क्त) 1. पूर्णरूप से पका हुआ, परिपक्व 2. विकसित, पूर्ण अवस्था को प्राप्त—कि० ६।१६ 3. पकाया हुआ।

विपक्ष (वि०) [विरुद्धः पक्षो यस्य प्रा० ब०] वैरी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल, विरुद्ध, क्षः 1. शत्रु, विरोधी, प्रतिरोधी—रघु० १७।७५, शि० ११।५९ 2. वह पत्नी जिसकी दूसरी के साथ प्रतिद्वन्द्विता चल रही हो—रघु० १०।२० 3. अगढ़ल् कि० १७।४३ 4. (तर्क में) नकारात्मक दृष्टान्त, विपक्षियों की ओर से दिया गया दृष्टान्त (अर्थात् वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो), निश्चितसाध्याभाववान् विपक्षः—तर्क०, मुद्रा० ५।१०।

विपंचिका, विपंची [विपंची+कन्+टाप्] 1. वीणा 2. खेल, क्रीडा, मनोरंजन।

विपणः, विपणनम् [वि+पण्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बिक्री मनु० ३।१५२ 2. छोटा व्यापार।

विपणिः, णी (स्त्री०) [विपण्+इन्, विपणि+ङीष्] 1. बाजार, मण्डी, हाट,—हा हा नश्यति मन्मथस्य विपणिः सौभाग्यपण्याकरः मृच्छ० ८।३८, शि० ५।२४, रघु० १६।४१ 2. बिक्री के लिए रक्खा हुआ माल, सामान 3. वाणिज्य, व्यापार—मनु० १०।११६।

विपणिन् (पुं०) [विपण+इनि] व्यापारी, सौदागर, दुकानदार शि० ५।२४।

विपत्तिः (स्त्री०) [वि+पद्+क्तिन्] 1. संकट, दुर्भाग्य, अनर्थ, अनिष्टपात, आफत संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता—सुभा० 2. मृत्यु, बिनाश अति रभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः—भर्तृ० २।१९, रघु० १९।५६, वेणी० ४।६, हिमसेकविपत्तिः नलिनी रघु० ८।४५ 3. वेदना, यातना—तिः (पुं०) श्रेष्ठ पदाति, पैदल-सिपाही—कि० १५।१६।

विपथः [विरुद्धः पन्थाः—प्रा० स०] बुरी सड़क, कुमार्ग (शा० तथा आलं०)।

विपद् (स्त्री०) [वि+पद्+क्विप्] 1. संकट, दुर्भाग्य, आपदा, दुःख तत्त्वनिकप्यावा तु तेषां (मित्राणां) त्रिदश हि १।२१० 2. मृत्यु सिंहादप्यापदं नृनिहः रघु० १८।३५। सम०—उद्धरणम्—उद्धारः, मुसीबत से छुटकारा, विपत्ति से मुक्ति,—कालः आवश्यकता का समय, संकट-काल, मुसीबत, युक्त (वि०) अभागा, दुःखी।

विपदा—दे० 'विपद्'।

विपन्न (भू० क० कृ०) [विपद्+क्त] 1. मरा हुआ 2. लुप्त, नष्ट 3. अभागा, कष्टग्रस्त, दुःखी, मुसीबतज़दा 4. क्षीण 5. अयोग्य, अशक्त (दे० वि पूर्वक पद्),—न्नः साँप।

विपरिणमनम्, विपरिणामः [वि+परि+नम्+ल्युट्, घञ् वा] 1. परिवर्तन, बदलना 2. रूपपरिवर्तन, रूपान्तरण।

विपरिवर्तनम् [वि+परि+वृत्+ल्युट्] इधर उधर मुड़ना, लुढ़कना।

विपरीत (वि०) [वि+परि+इ+क्त] 1. प्रतिवर्तित, विपर्यस्त 2. प्रतिकूल विरोधी, प्रतिवर्ती, औंधा—रघु० २।५३ 3. अशुद्ध, नियमविरुद्ध 4. मिथ्या, असत्य—भामि० २।७७ 5. अननुकूल, उलटा 6. व्यस्तस्त, उलटे ढंग से अभिनय करने वाला 7. अपचिकर, अशुभ, तः एक रतिबंध,—ता 1. दुश्चरित्रा, असती पत्नी 2. पुंश्चली स्त्री। सम० कर,—कारक—कारिन्, —कृत् (वि०) कुमार्गी, विरुद्ध ढंग से कार्य करने वाला शि० १४।६६,—चेतस्,—मति (वि०) जिसका दिमाग फिर गया हो,—रतम् रतिक्रिया का उलटा आसन. तु० 'पुरुषायित'।

विपर्णकः [विशिष्टानि पर्णानि यस्य प्रा० ब०] पलाश का वृक्ष, ढाक का पेड़।

विपर्ययः [वि+परि+इ+अच्] 1. वैपरीत्य, व्यतिक्रम, औंधापन—आहितो जयविपर्ययोऽपि मे श्लाघ्य एव परमेष्ठिना त्वया रघु० ११।८६, ८।८९, नभसः स्फुटतारस्य रात्रेरिव विपर्ययः (न भाजनम्) कि० ११।४४, विपर्यये तु—श० ५, 'यदि अन्यथा हुआ' यदि इसके विपरीत हुआ' 2. (अभिप्राय, वेश आदि बदलना—कथमेतस्य मतिर्विपर्ययं करिणो पंकमिवावसीदति—कि० २।६, इसी प्रकार 'वेषविपर्ययः'—पंच० १ 3. अभाव, अनस्तित्व—समुद्गारूपविपर्ययेऽपि कु० ७।४२, त्यागे श्लाघाविपर्ययः रघु० १।२२ 4. लोप, हानि निद्रा संज्ञाविपर्ययः कु० ६।४४, 'सुबुद्ध न रहना' 5. पूर्ण विनाश, ध्वंस 6. विनिमय, अदल बदल 7. त्रुटि, उल्लंघन, भूल, कुछ का कुछ समझना 8. संकट, दुर्भाग्य, उलटा भाग्य 9. शत्रुता, दुश्मनी।

विपर्यस्त (भू० क० कृ०) [वि—परि+अस्+क्त] 1. परिवर्तित, व्युत्क्रान्त, उलटा हुआ हंत विपर्यस्तः संप्रति जीवलोकः उत्तर० १ 2. विरोधी, प्रतिकूल 3. भूल से वास्तविक समझा हुआ।

विपर्यायः [वि+परि+इ+घञ्] 1. उलटापन, वैपरीत्य, दे० 'विपर्यय'।

विपर्यासः [वि+परि+अस्+घञ्] 1. परिवर्तन, वैपरीत्य, व्यतिक्रम—विपर्यासे यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् उत्तर० २।२७ 2. विपरीतता, अननुकूलता यथा 'दैवविपर्यासात्' में 3. अस्तः परिवर्तन, अदलबदल—प्रवहणविपर्यासेनागता मृच्छ० ८ 4. त्रुटि, भूल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विपलम् [विभक्तं पलं येन—प्रा० ब०] क्षण, समय का अत्यंत छोटा प्रभाग (जो पल का साठवां या छठा भाग समझा जाता है)।

विपलायनम् [विशेषेण पलायनम्—प्र० स०] दौड़ जाना, विभिन्न दिशाओं को भाग जाना।

विपश्चित् (वि०) [विप्रकृष्टं चिनोति चेतति चिन्तयति वा—वि+प्र+चित्+क्विप्, पृषो०] विद्वान्, बुद्धिमान् विपश्चितो विनियुरेन गुरवो गुरुप्रियम् —रघु० ३।२९, पुं० एक विद्वान या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि भवनि ते सम्प्रतमा विपश्चितां मनोगतं वाचि निवेशयंति ये—कि० १४।४।

विपाकः [वि+पच्+घञ्] 1. खाना पकाना, भोजन बनाना 2. पाचनशक्ति 3 पकना, पक्वता, परिपक्वता, विकास (आलं० भी)—अभी पृथुस्तंबभृतः पिशाङ्गतां गता विपाकेन फलस्य शालयः—कि० ४।२६, वाचां विपाको मम मानिम० ४।४२, 'मेरे परिपक्व, पूर्ण विकसित अथवा गौरवान्वित शब्द' 4. परिणाम, फल, नतीजा, पूर्वजन्म अथवा इस जन्म के कर्मों का फल,—अहो मे दारुणतरः कर्मणां विपाकः- का० ३५४, मनैव जन्मान्तरपातकानां विपाकवित्स्फूर्जथुरप्रसह्यः रघु० १४।६२, भर्तृ० २।९९ महावी० ५।१६, 5. (क) अवस्थापरिवर्तन उत्तर० ४।६, (ख) असंभावित बात या घटनाव्यतिक्रम, भाग्य का पलटा खाना, दुःख, संकट, उत्तर० ३।३, ४।१२ 6. कठिनाई, उलझन 7. रसास्वाद, स्वाद।

विपाटनम् [वि—पट्—णिच्+ल्युट्] 1. खण्ड खण्ड करना, फाड़ कर खोलना 2. उपाड़ना 3. अपहरण।

विपाठः (पुं०) एक प्रकार का लंबा तीर।

विपाण्डु, विपाण्डुर (वि०) [विशेषेण पाण्डुः, पाण्डुरः प्रा० स०] विवर्ण, पीला, फि० ५।६, शि० ९।३, इसी प्रकार 'विपांडुर' शि० ४।५, रत्न० २।४।

विपादिका (स्त्री०) 1. पैर का एक रोग, बिवाई 2. प्रहेलिका, पहेली।

विपाश्, विपाशा (स्त्री०) [पाशं विमोचयति—वि+पाश्+क्विप्, वि+पश्+णिच्+अच्—टाप्] पंजाब की एक नदी, वर्तमान व्यास नदी।

विपिनम् [वेपन्ते जनाः अत्र वेप्+इनन्, ह्रस्वश्च] जंगल, वन, वे दिक्षा झुषमुट्—बन्धावत विपिने लक्षितं वित्तनोनु शुनानि यशस्यम् गीत० १, विपिनानि प्रकाशानि शक्तिमत्वंऽप्यकारणः रघु० ४।३१।

विपुल (वि०) [विशेषेण पालति वि+पुल्+क] 1. विशाल, विस्तृत, आयत, विस्तीर्ण, चौड़ा, प्रशस्त विपुल नितम्बदेशे—मालवि० ३।७, शिरसि तनुविपुलश्च मध्यदेशे—मृच्छ० ३।२७, इसी प्रकार विपुलम् पृष्ठम्, विपुलः कुक्षिः 2. बहुत, पुष्कल, पर्याप्त, —कि० १८।१४ 3. गहरा, अगाध—महावी० १।२, रोमाञ्चित, पुलकित शि० १९।३, (यहां 'प्रथम' अर्थ भी घटता है, **लः** 1. मेरु पर्वत 2. हिमालय पर्वत 3. समाननीय पुरुष। समः—**छाय** (वि०) छायादार, छायामय, **-जघना** विशाल कूल्हों वाली स्त्री,—**मति** (वि०) मनीषी, प्रज्ञावान्, **-रसः** गन्ना, ईख।

विपुला [विपुल+टाप्] पृथ्वी।

विपूयः [वि+पू+क्यप्] मूंज नामक घास।

विप्रः [वप्+रन् पृषो० अत इत्वम्] 1. ब्राह्मण, उच्चवर्ण, दे० 'ब्राह्मण' के अन्तर्गत 2. मुनि, बुद्धिमान् पुरुष 3. पीपल का पेड़। समः **ऋषिः**—ब्रह्मर्षि दे०, **काष्ठम्** रुई का पौधा, **प्रियः** पलाश का वृक्ष, ढाक,—**समाजम्** ब्राह्मणों का समाज या धर्मपरिषद्, **-स्वम्** ब्राह्मणों की संपत्ति।

विप्रकर्षः [वि+प्र—कृष्+घञ्] दूरी, फासला।

विप्रकारः [वि+प्र—कृ—घञ्] 1. अपमान, कटु व्यवहार, दुर्वचन, तिरस्कारयुक्त व्यवहार फि० ३।५५ 2. क्षति, अपराध 3. दुष्टता 4. विरोध, प्रतिक्रिया 5. प्रतिहिंसा।

विप्रकीर्ण (वि०) [वि+प्र—कृ+क्त] 1. इधर उधर फैलाया हुआ, तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ 2. ढीला, (बाल आदि) बिखरे हुए 3. प्रसारित, बिछाया हुआ 4. चौड़ा, विस्तृत।

विप्रकृत (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृ+क्त] 1 आहत, जिसे क्षति पहुंचाई गई है, घायल 2. अपमानित, जिसे गाली दी गई है, जिसके साथ कटु व्यवहार किया गया है 3. जिसने विरोध किया गया है 4. प्रतिहिंसित, जिससे बदला ले लिया गया है (दे० विप्र पूर्वक कृ)।

विप्रकृतिः (स्त्री०) 1. क्षति, आघात 2. अपमान, अपशब्द, कटुव्यवहार 3. प्रतिहिंसा, बदला।

विप्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृष्+क्त] 1. खींचा गया, हटाया हुआ 2. फासले पर, दूर का, दूरवर्ती 3. सुदीर्घ, लम्बा किया गया, विस्तारित।

विप्रकृष्टक (वि०) [विप्रकृष्ट+कन्] दूरवर्ती, फासले पर।

विप्रतिकारः [वि+प्रति+कृ+घञ्] 1 प्रतिक्रिया विरोध, वचनविरोध 2. प्रतिहिंसा।

विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [वि—प्रति—पद्+क्तिन्] 1. पारस्परिक असंगति, प्रतियोगिता, संघर्ष, झगड़ा, विरोध (मतों का या हितों का) 2. असहमति, आपत्ति 3. हैरानी, घबड़ाहट 4. पारस्परिक सम्बन्ध परिचय, जानपहचान।

विप्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [वि+प्रति+पद्+क्त]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

1. परस्परविरुद्ध, विरोधी, असहमत 2. घबड़ाया हुआ, व्याकुल, हैरान 3. मुकाबले का, विवादग्रस्त 4. परस्परसंयुक्त या सम्बद्ध।

विप्रतिषेधः [वि + प्रति + सिध् + घञ्] 1. नियन्त्रण में रखना, वश में रखना 2. समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो बातों का विरोध, दो समान हितों का संघर्ष —हरिविप्रतिषेधं तमाचचक्षे विचक्षणः शि० २।६, (तुल्यबलविरोधो विप्रतिषेधः मल्लि०) 3. (व्या० में) दो नियमों का (जिनमें दो भिन्न नियमों के अनुसार व्याकरण की दो भिन्न प्रक्रियाएं सम्भव हों) संघर्ष, समानरूप से महत्त्वपूर्ण दो नियमों की टक्कर विप्रतिषेधे परं कार्यम् परि० १।४।२, इस पर दे० काशिका या महाभाष्य) 4. रोक, वर्जन।

विप्रति (ती) सारः [वि + प्रति + सृ + घञ्, पक्षे दीर्घः] 1. पछतावा, शि० १०।२० 2. क्रोध, रोष, गुस्सा 3. दुष्टता, अनिष्ट।

विप्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [वि + प्र + दुष् + क्त] 1. दूषित, विकृत, मलिन 2. भ्रष्ट।

विप्रनष्ट (भू० क० कृ०) [वि + प्र + नश् + क्त] 1. खोया हुआ, लुप्त 2. व्यर्थ, निरर्थक।

विप्रमुक्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + मुच् + क्त] 1. स्वतन्त्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, खुला छोड़ा हुआ 2. गोली का निशाना बनाया गया, बन्दूक से दागा गया 3. छुटकारा पाया हुआ।

विप्रयुक्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र + युज् + क्त] 1. पृथक् किया हुआ, वियुक्त, विच्छिन्न 2. अलग हुआ, अनुपस्थित मेघ० २ 3. मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ वञ्चित, विरहित, बिना (समास में)।

विप्रयोगः [वि + प्र + युज् + घञ्] 1. अनैक्य पार्थक्य, वियोग, अलगाव, जैसा कि प्रिय° में 2 विशेषकर प्रेमियों का विछोह—या भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः मेघ० ११५, १०, रघु० १३।२६, १४।६६ 3. कलह, असहमति।

विप्रलब्ध (भू० क० कृ०) [वि + प्र—लभ् + क्त] 1. धोखा दिया गया, ठगा गया 2. निराश किया गया 3. चोट पहुंचाया गया, क्षतियस्त,—ब्धा वह स्त्री जो अपने प्रियतम को नियत स्थान पर न पाकर निराश हो गई हो (काव्यग्रन्थों में वर्णित एक नायिका) —सा० द० ११८ पर दी गई परिभाषा प्रियः कृत्वापि संकेतं यस्या नायाति सन्निधिम् । विप्रलब्धेति सा प्रेया नितान्तमवमानिता ॥

विप्रलम्भः [वि + प्र + लभ् + घञ्] 1. धोखा, छल, चालाकी · कि० ११।२७ 2. विशेषकर मिथ्या उक्तियों या झूठी प्रतिज्ञाओं से छलना 3. कलह, असहमति 4. अनैक्य, पार्थक्य, अलगाव 5. प्रेमियों का बिछोह शून्ये प्रियजनस्य कातरं विप्रलम्भपरिशङ्किनां वयः रघु० १९।१८, वेणी० २।१२ 6. (अलं० में) विप्रलम्भ शृंगार (इसमें नायक नायिका के विरह-जन्य सन्ताप आदि का वर्णन किया जाता है) शृंगार के दो मुख्य भेदों में से एक, (त्रिप० संभोग) आरः (विप्रलम्भः) अभिलाष विरहेर्ष्या प्रवासप्रमहेतुक इति पंचविधः काव्य० ४, यतोरत्युत्कर्षाभावो युक्तयोर्वाञ्छितः प्रियः । अभीष्टालिङ्गनादीनामनवाप्तौ प्रहृष्यते । विप्रलम्भः स विज्ञेयः उज्ज्वलनीलमणिः, तु० सा० द० २१२, तथा आगे।

विप्रलापः [वि + प्र—लप् घञ्] 1. व्यर्थ या निरर्थक बात, बकवास, अनाप-शनाप, निस्सार 2. पारस्परिक वचनविरोध, विरोधी उक्तियों 3. झगड़ा, तू-तू मैं-मैं 4. अपनी प्रतिज्ञा तोड़ना, वचन पूरा न करना।

विप्रलयः [विशेषेण प्रलयः प्रा० स०] पूर्ण विनाश या विघटन, सर्वनाश, विद्याकलोपे मलता वेपानां भूय-सामपि, ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कुतः -- उत्तर० ६।६।

विप्रलुप्त (भू० क० कृ०) [वि + प्र—लुप् · क्त] 1. अपहृत, छीना हुआ 2. बाधायुक्त, हस्तक्षेप किया गया।

विप्र,लोभिन् (पुं०) [वि + लुभ् + णिच् - णिनि] दो वृक्षों के नाम, अशोक और किंकिरात।

विप्रवासः [वि + प्र + वस् + घञ्] परदेश में रहना, विदेश में निवास करना (अपनी जन्मभूमि से दूर रहना)।

विप्रशिक्षा [विशेषेण प्रश्नो यस्याः वि + प्रश्न + कप् + टाप्, इत्वम्] स्त्री ज्योतिषी, जो भाग्य की बातें बतलाए।

विप्रहीण (वि०) [वि + प्र + हा + क] वञ्चित, विरहित।

विप्रिय (त्रि०) [वि + प्री + क, इत्वं] अरुचिकर, जो पसन्द न हो, जो सुखद न हो, जो स्वादिष्ट न हो, यस् अपराध, अनिष्ट, अरुचिकर कार्य मनसापि न विप्रियं मया कृतपूर्वं तव किं जहासि माम् - रघु० ८।५२, कु० ४।७, कि० ९।३९, शि० १५।११।

विप्रुष् (स्त्री०) [वि + प्रुष् + क्विप्] 1. (पानी या किसी अन्य द्रव की) बूंद संतापं नवजलविप्रुषो गृहीत्वा -- शि० ८।४०, स्वेदविप्रुषः २।१८ 2. चिह्न, बिन्दु, धब्बा।

विप्रोषित (भू० क० कृ०) [वि + प्र + वस् + क्त] 1. परदेश में रहना, जन्मभूमि से दूर होना, अनुपस्थित 2. निर्वासित, देशनिकालाप्राप्त रघु० १२।११। सम० भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हुआ है।

विप्लवः [वि + प्लु + अप्] 1. बहना, इधर-उधर टहलना, विभिन्न दिशाओं में बहना 2. विरोध, वैपरीत्य,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. हैरानी, व्याकुलता 4. हुल्लड़, हंगामा, हल्ला-गुल्ला मालवि० १ 5. निर्जनीकरण, वह संग्राम जिसमें लूटपाट खूब हो, शत्रु से भय 6. बलात् लूटपाट 7. हानि, विनाश--सत्त्वविप्लवात् रघु० ८।४१ 8. आपदा, आपत्काल अथवा मन भाग्यविप्लवात् --रघु० ८।४७ 9. दर्पण पर जमी हुई धूल या जंग --अपवर्जितविप्लवे मुकुरे--मलिनादर्शे इवाभिदृश्यते --कि० २।२६, (यहाँ 'विप्लव' का 'प्रमाणबाध' अर्थात् तर्कीभाव भी है) 10. अतिक्रमण, उल्लंघन --कि० १।१३ 11. अनिष्ट, संकट 12. पाप दुष्टता, पापमयता।

विप्लावः [वि+प्लु+घञ्] 1. जलप्लावन, बाढ़ 2. उपद्रव 3. घोड़े की सरपट दौड़।

विप्लुत (भू० क० कृ०) [वि+प्लु+क्त] 1. जो इधर उधर बह गया हो 2. डूबा हुआ, निमग्न, बाइज्जत, किनारों से बाहर होकर बहा हुआ 3. हैरान, परेशान 4. विध्वस्त, उजाड़ा, हुआ 5. लुप्त. ओझल 6. अपमानित, अनादृत 7. बर्बाद 8. तिरोहित, विरूपित 9. दुश्चरित्र, लम्पट, दुराचारी, लुच्चा 10. विपरीत, उलटा 11. मिथ्या, झूठा उत्तर० ४।१८।

विप्लुष दे० 'विप्रुष्'।

विफल (वि०) [विगतं फलं यस्य -प्रा० ब०] 1. फलरहित, अनुपयोगी, व्यर्थ, प्रभावशून्य, अलाभकर--मम विफलमेतदनुरूपमपि यौवनं गीत० ७, जगता वा विफलेन किं फलम् रस०, शि० ९।६, कु० ७।६६, मेघ० ६८ 2. बेकार, निरर्थक।

विबंधः [वि+बन्ध्+घञ्] 1. कोष्ठ बद्धता 2. रुकावट।

विबाधा [विशिष्टा बाधा-प्रा० स०] पीड़ा, वेदना, संताप, मानसिक कष्ट।

विबुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+बुध्+क्त] 1. उठाया हुआ, जगाया हुआ, जागरूक -स० २ 2. फुलाया हुआ, मंजरीयुक्त, पूरा खिला हुआ 3. चतुर, कुशल।

विबुधः [विशेषेण बुध्यते बुध्+क] 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि, मुनि- सख्यं साप्तपदीनं भो इत्याहुर्विबुधा जनाः- पंच० २।४३ 2. सुर, देवता,—अभूत्सुधा विबुधसखः परंतपः भट्टि० १।१, सोत्तारं न निधीनां महेश्वरं विबुधाः सुधा० 3. चाँद। सम०—अधिपतिः, इन्द्रः, ईश्वरः इन्द्र का विशेषण,—द्विष्, शत्रुः राक्षस --विक्रम १।३।

विबुधानः [वि+बुध्+शानच्] 1. विद्वान् पुरुष 2. अध्यापक।

विबोधः [विबुध्+घञ्] 1. जागरण, जागते रहना 2. प्रत्यक्षज्ञान, खोजना 3. बुद्धि, प्रतिभा 4. जाग जाना, सचेत होना, अलं० में ३३ या ३४ व्यभिचारी भावों में से एक,--निद्रानाशोत्तरं जायमानो बोधो विबोधः,—रस०।

विब्बोक दे० 'विब्बोक'।

विभक्त (भू० क० कृ०) [वि+भज्+क्त] 1. बाँटा हुआ, विभाजित की हुई संपत्ति आदि) 2. बटा हुआ, स्वार्थ की दृष्टि से अलग अलग किया हुआ, 'विभक्ता आतरः' में 3. जुदा किया हुआ, अलग किया हुआ, भिन्न किया हुआ,-शि० १।३ 4. विभिन्न, विविध 5. सेवा-निवृत्त, एकान्तवासी 6. नियमित, समभिन्न 7. विभुक्ति (दे० वि पूर्वक भज्),- क्तः कार्तिकेय।

विभक्तिः (स्त्री०) [वि+भज्+क्तिन्] 1. बाँटना, प्रभाग, विभाजन, बंटवारा 2. पार्थक्य, स्वार्थ में अलगाव 3. हिस्सा, दायभाग 4. (व्या० में) संज्ञा शब्दों के साथ लगा कारक या कारक चिह्न।

विभंगः [वि ; भंज्+घञ्] 1. टूटना, अस्थिभंग 2. ठहराव, अवरोध, पड़ाव भग० २।२६ 3. झुकना, (भौंहों आदि का) सिकोड़ना भ्रूविभंगकुटिलं च वीक्षितं—रघु० १९।१७ 4. शिकन, झुर्री 5. पंख, सींढ़ी रघु० ६।३ 6. फूट पड़ना, प्रकटीकरण विविधविकार विभंगम् गीत० ११।

विभवः [वि+भू+अच्] 1. दौलत, धन, सम्पत्ति—अतनुषु विभवेषु जातस्तन्वी नाम शं० ५।८, रघु० ८।९९ 2. ताकत, शक्ति, पराक्रम, बहपन एकाग्रतान्यस्य मतिविभवः -विक्रम०२, वाग्विभवः मा० १।२०, रघु० १।९, कि० ५।२१ 3. उच्चतर अवस्था, पद, प्रतिष्ठा 4. महत्ता 5. मोक्ष, मुक्ति।

विभा [वि+भा+क्विप्] 1. प्रकाश, आभा 2. प्रकाश, किरण 3. सौन्दर्य। सम०- करः सूर्य,—वत वत लसत्तेजःपुञ्जो विभाति करःकाव्य० १० 2. मदार का पौधा 3. चन्द्रमा, वसुः 1. सूर्य 2. अग्नि रुचिरुद्गमि तनुं विभादसौ—कु० ४।३४, रघु० ३।३७, १०।८३, भग० ७।९ 3. चन्द्रमा 4 एक प्रकार का हार।

विभागः [वि+भज्+घञ्] 1. प्रभाग, विभाजन, अंश (दायभाग आदि का) —समस्तस्य विभाग स्यान्--मनु० ९।१२०, २१०, याज्ञ० २।११४ 2. दायभाग 3. भाग या हिस्सा 4. बाँटना, अलग-अलग करना, पार्थक्य (स्या० में यह एक गुण माना जाता है)—कु० २४, भग० ३।२९ 5. अंश 6 अनुभाग। सम०—कल्पना हिस्सों का नियत करना—याज्ञ० २।१४२, धर्मः दायभाग की विधि, बंटवारे का कानून,—पत्रिका विभाजन की दस्तावेज, भाज् (पुं०) पहले से बंटी हुई सम्पत्ति का हिस्सेदार याज्ञ० १।१२२।

विभाजनम् [वि+भज्+णिच्+ल्युट्] बंटवारा, वितरण करना।

विभाज्य (वि०) [वि+भज्+ण्यत्] 1. अंशों में विभक्त किये जाने के योग्य, बाँटे जाने के योग्य 2. विभाजनीय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभातम् [वि+भा+क्त] प्रभात, पौ फटना।

विभावः [वि+भू+घञ्] मन या शरीर को किसी विशेष स्थिति में विकसित करने वाली दशा, रस-भाव की उद्बोधक स्थिति, तीन मुख्य भावों में से एक (दूसरे दो हैं --अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव) रत्याद्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः - सा० द० ६१, (इसके मुख्य अवान्तर भेद हैं—आलंबन और उद्दीपक—दे० आलंबन) 2. भित्र, परिचित।

विभावनम्,—ना [वि+भू+णिच्+ल्युट्,] 1. स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान, या निश्चय, विवेक, निर्णय 2. विचार विमर्श, गवेषण, परीक्षा 3. प्रत्यय, कल्पना, ना आलं में) एक अलंकार जिसमें बिना कारण के कार्यों का होना वर्णित होता है—क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना - काव्य० १०।

विभावरी [वि+भा-वनिप्+ङीप्, र आदेश] 1. रात—अगर्वाणि ग्रहकलपेदुमंडला विभावरी कथय कथं भविष्यति मालवि० ४।१५, ५।७, कु० ५।४४ 2. हल्दी 3. कुटनी 4. वेश्या 5. वाभाचारिणी स्त्री 6. मुखरा स्त्री, बातूनी।

विभावित (भू० क० कृ०) [वि+भू+णिच्+क्त] 1. प्रकटीकृत, स्पष्ट रूप से दर्शनीय किया हुआ 2. ज्ञात, जाना हुआ, निश्चित किया हुआ 3. देखा हुआ, सोचा हुआ 4. निर्णीत, विवेचन किया हुआ 5. अनुमित, संकेतित 6. सिद्ध, समर्थित। सम०—**एकदेश** (वि०) जिसके साथ एक भाग का पता लगाया गया' अर्थात् जो (विवादास्पद विषय के) एक भाग के संबंध में अपराधी पाया गया—विभावितैकदेशेन देयं यदभियुज्यते विक्रम० ४।१७।

विभाषा [वि+भाष्+अ+टाप्] 1. ईप्सित वस्तु, विकल्प 2. नियम की वैकल्पिकता।

विभासा [वि+भास्+अ+टाप्] प्रकाश, कान्ति, आभा।

विभिन्न (भू० क० कृ०) [वि+भिद्+क्त] 1. तोड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ दीर्घा हुआ, घायल 3. दूर हटाया हुआ, भगाया हुआ, तितर बितर किया 4. हैरान, परेशान, व्याकुल, 5 इधर उधर डोला हुआ 6. निराश किया हुआ 7. विविध, नानाप्रकार के 8. मिश्रित, मिलाया हुआ, चितकबरा, रंगबिरंगा विभिन्नवर्णा गरुडाग्रजेन सूर्यस्य रथ्याः परितः स्फुरंत्या - शि० ४।१४, (दे० वि पूर्वक भिद्),- ज: शिव का नाम।

विभीतः, तम्, विभीतकः, कम्, } [विशेषेण भीतः, **विभीतकी विभीता** } विभीत+कन्, विभीतक+ङीप्, विभीत+टाप्] एक वृक्ष का नाम, बहेड़ा, (त्रिफला में से एक) बहेड़े का पेड़।

विभीषक (वि०) [विशेषेण भीषयते वि+भी+णिच्+ण्वुल् युक् आगमः] डरावना, त्रास या भय देने वाला।

विभीषिका [वि+भी+णिच्+ण्वुल्+टाप्, पुकागमः, इत्वं च] 1. त्रास 2. डराने के साधन, हौवा (चिड़ियों को डराने के लिए फूंस का पुतला, जू जू) —यदि ते संति सत्येव केयमन्या विभीषिका—उत्तर० ४।२९।

विभु (वि०) (स्त्री०- भ्वी,—स्त्री०) [वि+भू+डु] 1. ताकतवर, शक्तिशाली 2. प्रमुख, सर्वोपरि 3. योग्य, समर्थ (तुमुन्नत के साथ)--(धनुः) पूरयितुं भवंति विभवः शिखरमणिरुचः-कि० ५।४३ 4. आत्मसंयमी, धीर, जितेन्द्रिय—कमपरमवशं न विप्रकुर्यु विभुमपि तं यदमी स्पृशंति भावाः—कु० ६।९५ 5. (न्या० में) नित्य०, सर्वव्यापक, सर्वगत,—भूः 1. अन्तरिक्ष 2. आकाश 3. काल 4. आत्मा 5. स्वामी, शासक, प्रभु, राजा 6. सर्वोपरि शासक भग० ५।१४, १०।१२ 7. सेवक 8. ब्रह्मा 9. शिव—कु० ७।३१ 10 विष्णु।

विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] वक्र, झुका हुआ, टेढ़ा, कुटिल।

विभूतिः (स्त्री०) [वि+भू+क्तिन्] 1. ताकत, शक्ति, वक्तृत्व- शि० १४।५, कु० २।६१ 2. समृद्धि, कल्याण 3. प्रतिष्ठा, उच्च पद 4. धन, प्राचुर्य, महिमा, क्रान्ति अहो राजाधिराजमंत्रिणो विभूतिः—मुद्रा० ३, रघु० ८।३६ 5. दौलत, धन- रघु० ४।१९, ६।७६, १७।४३ 6. अतिमानव शक्ति (इसमें आठ शक्तियां सम्मिलित हैं अणिमन्, लघिमन्, प्राप्ति, प्राकाम्यम्, महिमन्, ईशिता, वशिता और कामावसायिता) --कु० २।११ 7. कब्रों की राख।

विभूषणम् [वि+भूष्+ल्युट्] अलंकार, सजावट,—विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम् भर्तृ० २।७, रघु० १६।८०।

विभूषा [वि+भूष्+अ+टाप्] अलंकार, सजावट,— संपेदे अप्सरश्चित्तोद्गमो विभूषा—कि० ७।५, रघु० ४।५४ 2. प्रकाश, कान्ति 3. सौंदर्य, आभा।

विभूषित (भू० क० कृ०) [वि+भूष्+णिच्+क्त] अलंकृत, सुशोभित, सुभूषित।

विभृत (भू० क० कृ०) [वि+भृ+क्त] संभाला गया, सहारा दिया गया, संधारित या संपोषित।

विभ्रंशः [वि+भ्रंश्+घञ्] 1. गिरना, टूट पड़ना 2. ह्रास, क्षय, बर्बादी 3. चट्टान।

विभ्रंशित (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1. झुकाया गया, फुसलाया गया 2. वंचित, विरहित।

विभ्रमः [वि+भ्रम्+घञ्] 1. इधर उधर टहलना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घूमना 2. भ्रमण, फेरा, इधर उधर लुढ़कना 3. त्रुटि, भूल, गलती 4. उतावली, अव्यवस्था, हड़बड़ी, गड़बड़ी विशेषतः प्रेम के कारण उत्पन्न मन की अस्थिरता —चित्तवृत्त्यनवस्थान शृङ्गाराद्विभ्रमो भवेत् 5. (अतः) हड़बड़ी के कारण अलंकारादिक का उलटा-सीधा पहनना विन्नमस्त्वरयाऽकाले भूषास्थान विपर्ययः, दे० कु० १।४ तदुपरि मल्लि० 6. रंगरेलियाँ, कामकेलि, आमोद-प्रमोद ; मा० १।२६, ९।३८ 7. सौन्दर्य, लालित्य, लावण्य —नै० १५।२५, उत्तर० १।२०, ३४, ६।४, शि० ६।४६, ७।१५, १६।६४ 8. सन्देह, आशंका 9. सनक, वहम।

विभ्रमः [वि+भ्रम्+अच्+टाप्] बुढ़ापा।

विभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1. गिरा हुआ, पड़ा हुआ, अलग किया हुआ 2. क्षीण, लुप्त, पतित, बर्बाद 3. ओझल, अन्तर्हित।

विभ्राज् (वि०) [वि+भ्राज्+क्विप्] चमकीला, दीप्तिमान्, प्रकाशमान।

विभ्रांत (भू० क० कृ०) [वि+भ्रम्+क्त] 1. चक्कर खाया हुआ 2. विक्षुब्ध, व्याकुल, अव्यवस्थित, हड़-बड़ाया हुआ 3. भ्रम में पड़ा हुआ, भूल करने वाला। सम० नयन (वि०) विलोलदृष्टि, चंचल आँखों वाला, शील (वि०) 1. जिसका चित्त अव्यवस्थित हो 2. नशे में चूर, मतवाला, -रूः 1. बन्दर 2. सूर्य-मंडल या चन्द्रमंडल।

विभ्रान्तिः (स्त्री०) [वि+भ्रम्+क्तिन्] 1. चक्कर, फेरा 2. हड़बड़ी, त्रुटि, गड़बड़ी 3. उतावली, जल्दबाजी।

विभ्रांत (भू० क० कृ०) [वि+मन्+क्त] 1. असहमत, असम्मत, भिन्न मत रखने वाला 2. विषम, असंगत 3. अनावृत, अपमानित, उपेक्षित, तः शत्रु।

विभ्रांति (वि०) [विरुद्धा विगता वा मतिर्यस्य प्रा० ब०] मूर्ख, प्रज्ञाशून्य, भद्र,—तिः (स्त्री०) 1. असम्मति, असहमति, मतविभिन्नता 2. अरुचि 3. जड़ता।

विमत्सरम् (वि०) [विगतः मत्सरो यस्य—प्रा० ब०] ईर्ष्या से मुक्त, ईर्ष्यारहित —भग० ४।२२।

विमद (वि०) [विगतः मदो यस्य प्रा० ब०] 1. नशे से मुक्त 2. हर्षशून्य, ईर्ष्यालु।

विमनस्, विमनस्क (वि०) [विरुद्धं मनो यस्य, पक्षे कप्, प्रा० ब०] 1. उदास, विषण्ण, अवसन्न, खिन्न, म्लान —उत्तर० १।७ 2. अनमना 3. हैरान, परेशान 4. अप्रसन्न 5. जिसका मन या भावना बदली हुई हो।

विमन्यु (वि०) [विगतः मन्युर्यस्य प्रा० ब०] 1. क्रोध से मुक्त 2. शोक से मुक्त।

विमयः [वि+मी+अच्] विनिमय, अदला-बदली।

विमर्दः [वि+मृद्+घञ्] 1. चूरा करना, कुचलना, चकना चूर करना 2. मसलना, रगड़ना—विमर्द-सुरभिर्वकुलावलिका खल्वहम् -मालवि० ३, रघु० ५।६५ 3. स्पर्श 4. उबटन आदि शरीर पर मलना 5. संग्राम, युद्ध, लड़ाई, भिड़न्त विमर्दक्षमा भूमि-मवतारवः -उत्तर० ५ 6. विनाश, उजाड़,—रघु० ६।६२ 7. सूर्य और चन्द्रमा का मेल 8. ग्रहण।

विमर्दकः [वि+मृद्+ण्वुल्] 1. पीसने वाला, चूरा करने वाला, चकनाचूर करने वाला 2. गन्ध द्रव्यों की पिसाई 3. ग्रहण 4. सूर्य और चन्द्र का मेल।

विमर्दनम्,—ना [वि+मृद्+ल्युट्] 1. चूरा करना, कुचलना, रौंदना 2. आपस में मसलना, रगड़ना 3. विनाश, हत्या 4. गंध द्रव्यों की पिसाई 5. ग्रहण।

विमर्शः [वि+मृश्+घञ्] 1. विचार विनिमय, सोच विचार, परीक्षण, चर्चा 2. तर्कना 3. विपरीत निर्णय 4. संकोच, संदेह 5. पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी छाप, दे० वासना।

विमर्षः [वि+मृष्+घञ्] 1. विचार, विचारविनिमय 2. अधीरता, असहिष्णुता 3. असन्तोष, अप्रसन्नता 4. (नाटकों में) नाटकीय कथा वस्तु की सफल प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रेमाख्यान के सफल प्रक्रम में किसी अवुष्ट दुर्घटना के कारण परिवर्तन, सा० द० ३३६ पर इसकी परिभाषा यह है —यत्र मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः, शापाद्यैः सातरायश्च स विमर्ष इति स्मृतः दे० मुद्रा० ४।३, (इन सब अर्थों के लिए बहुधा विमर्श लिखा जाता है)।

विमल (वि०, [विगतो मलो यस्मात् —प्रा० ब०] 1. पवित्र, निर्मल, मलरहित, स्वच्छ (आल० से भी) 2. साफ, शुभ्र, स्फटिक जैसा, पारदर्शी (जैसे जल) विमलं जलम् 3. श्वेत, उज्ज्वल, -लम् 1. चांदी की कलई 2. तालक, सेलखड़ी। सम० दानव् देवता के लिए चढ़ावा, -मणिः स्फटिक।

विमांसः,-सम् [विरुद्धं मांसम् प्रा० स०] अस्वच्छ मांस (जैसे कुत्ते का)।

विमातृ (स्त्री०) [विरुद्धा माता—प्रा० स०] सौतेली माँ। सम० -जः सौतेली माँ का बेटा।

विमानः,-नम् [वि+मन्+घञ्, वि+मा+ल्युट् वा] 1. अनादर, अपमान 2. माप 3. गुब्बारा, व्योमयान (आकाश में घूमने वाला) पदं विमानेन विगाह-मानः रघु० १३।१, ७।५१, १२।१०४, कु० २।४५, ७।४०, विक्रम० ४।४३, कि० ७।११ 4. यान, सवारी रघु० १६।६८ 5. कमरा, शानदार कमरा या सभाभवन—रघु० १७।९ 6. (सात मंजिलों का) महल —नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमीः मेघ० ६९ 7. घोड़ा। सम०—चारिन्, यान (वि०) गुब्बारे में बैठ कर घूमने वाला,- राजः 1. श्रेष्ठ व्योमयान उत्तर० ३ 2. व्योमयान को संचालक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विमानना [वि+मन्+णिच्+युच्+टाप्] अनादर, निरादर, अपमान, प्रतिष्ठा भंग विमानना शुभ्रं कुतः गिनुगंहे कु० ५।४३, अभवन्नस्य विमानना क्वचित् —रघु० ८।८ ।

विमानित [भू० क० कृ०] [वि+मन्+णिच्+क्त] अनादृत, निरादृत ।

विमार्गः [विरुद्धो मार्गः—प्रा० स०] 1 खराब सड़क 2. कुपथ, दुराचरण, अनैतिकता 3. झाड़ । सम० -गा असती स्त्री विमार्गगायाश्च रुचिः स्वकांति -भामि० १।१२५, -स्मिन्, -स्थित (वि०) असदाचारी—श० ५।८ ।

विमार्गणम् [वि+मार्ग्+ल्युट्] ढूंढना, खोजना, तलाश करना ।

विमिश्रित, विमिश्रित (वि०) [वि+मिश्र्+अच्, क्त वा] मिला हुआ, सम्पृक्त, गड्डमड्ड किया हुआ (करण० के साथ या समास में)—पुंभिर्विमिश्रा नार्यश्च—महा०, इंपत्यारिह को न कों न तमसि द्रौद्यविमिश्रो रसः गीत० ५ ।

विमुक्त (भू० क० कृ०) [वि+मुच्+क्त] 1. आजाद किया हुआ, रिहा किया हुआ, स्वतन्त्र किया हुआ, 2. परित्यक्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, पीछे रहा हुआ 3. स्वतंत्र 4. जोर से फेंका गया, (बन्दूक से) दागा गया 5. अभिव्यक्त । सम० कंठ (वि०) क्रन्दन करने वाला, फूट फूट कर रोने वाला ।

विमुक्तिः (स्त्री०) [वि+मुच्+क्तिन्] 1. रिहाई, छुटकारा 2. वियोग 3. मोक्ष, उद्धार ।

विमुख (वि०) (स्त्री०-खी) [विरुद्धमननुकूलं मुखं यस्य प्रा० ब०] 1. मुंह मोड़े हुए 2. पराङ्मुख, अनिच्छुक, विरुद्ध -न क्षुद्रोऽपि प्रथममुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः मेघ० १७,२७, (रघुणा) मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति रघु० १६।८, १९।४७ 3. शत्रु—हि० १।१३० 4. रहित, शून्य (समास में) करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम् रघु० ८।६७ ।

विमुग्ध (वि०) [वि+मुह्+क्त] अव्यवस्थित घबराया हुआ, व्याकुल ।

विमुद्ध (वि०) [विगता मुद्रा यस्य प्रा० ब०] 1. बिना मोहर लगा 2. खुला हुआ, मुकुलित, खिला हुआ ।

विमूढ (भू० क० कृ०) [वि+मुह्+क्त] 1. घबराया हुआ, व्याकुल 2. बहकाया हुआ, लुभाया हुआ, फुसलाया हुआ 3. जड़ ।

विमृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+मृज्+क्त] 1. मला हुआ, पोंछा गया, साफ किया गया 2. सोचा हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तन किया हुआ ।

विमोक्षः [वि+मोक्ष्+घञ्] 1. रिहाई, मुक्ति, छुटकारा 2 मोली दागना, निशाना लगाना 3. मुक्ति ।

विमोक्षणम्,-ना [वि+मोक्ष्+ल्युट्] 1. छुटकारा, रिहाई मुक्त करना 2. गोली दागना 3. त्यागना, छोड़ना, परित्यक्त करना 4. (अण्डे) देना ।

विमोचनम् [वि+मुच्+ल्युट्] 1. खोल देना, जूआ हटा लेना 2. रिहाई, स्वतन्त्रता 3. छुटकारा, मोक्ष ।

विमोहन (वि०) (स्त्री० ना,-नी) [वि+मुह्+णिच्+ल्युट्] 1. भ्रमाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना, -नः, -नम् नरक का एक प्रभाग, -नम् फुसलाना, लुभाना, आकृष्ट करना ।

विंबः, -बम् दे० 'बिम्ब' ।

विंबकः दे० 'बिम्बक' ।

विंबटः [विंब्+अट्+अच्, शक० पररूपम्] राई का पौधा ।

विंबिका दे० 'बिंबिका' ।

विंबा,-बी (स्त्री) [विंब्+अच्+टाप्, ङीप् वा] एक बेल का नाम ।

विंबित दे० 'बिंबित' ।

विंबुः (पुं०) सुपारी का पेड़ ।

विंयत् (नपुं०) [वियच्छति न विरमति वि+यम्+क्विप्, म लोपः, तुकागमः] आकाश, अन्तरिक्ष, निरवलम्बोयं पश्यतोदण्ड्डतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति श० १।७, रघु० १३।४० । सम० -गंगा 1. स्वर्गीय गंगा 2. आकाशगंगा,—चारिन् (वियच्चारिन्) (पुं०) चील,--भूतिः (स्त्री०) अंधकार, मणिः (वियन्मणिः) सूर्य ।

वियतिः (पुं०) पक्षी ।

वियमः [वि+यम्+अप्] 1. प्रतिबंध, रोक, नियन्त्रण 2. दुःख, पीड़ा, कष्ट 3. विराम, पड़ाव ।

वियात (वि०) [विरुद्धं निंदां यातः—प्रा० स०] 1. भ्रष्ट 2. साहसी, निर्लज्ज, ढीठ ।

वियाम दे० 'वियम' ।

वियुक्त (भू० क० कृ०) [वि+युज्+क्त] 1. विच्छिन्न, पृथक्कृत, अलग किया हुआ 2. जुदा किया हुआ, परित्यक्त 3. मुक्त, वंचित (करण० के साथ या समास में) ।

वियुत (भू० क० कृ०) [वि+यु+क्त] वियुक्त, विरहित, वञ्चित विक्रम० ४।१८ ।

वियोगः [वि+युज्+घञ्] 1. जुदाई, विच्छेद,—अयमेकपदे तया वियोगः सहसा जीवनतः सुदुःसहो मे—विक्रम० ४।३, स्वयोपरिस्थतिर्वियोगस्य तपोवनस्यापि समवस्था दृश्यते श०४, संगते भुशमरति हि सद्वियोगः कि० ५।४१, रघु० १२।१०, शि० १२।६३ 2. अभाव, हानि 3. व्यवकलन ।

वियोगिन् (वि०) [वियोग+इनि] वियुक्त-(पुं०) चक्रवाक ।

वियोगिनी [वियोगिन्+ङीप्] 1. अपने पति या प्रेमी से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वियुक्त स्त्री,—शुकनिःश्वसितैः कविर्मनीषी निरणैषीदथ तां वियोगिनीति भामि० ४।३५ 2. एक छन्द या वृत्त का नाम (दे० परि०१)।

वियोजित (भू० क० कृ०) [वि+युज्+णिच्+क्त] 1. अलगाया हुआ 2. जुदा किया हुआ, वञ्चित।

वियोनिः,—नी [विविधा विरुद्धा वा योनिः प्रा० स०] 1. नाना जन्म 2. पशुओं का गर्भाशय (मनु० १२।७७ पर कुल्लू०) 3. हीन या कलंकपूर्ण जन्म।

विरक्त (भू० क० कृ०) [वि+रंज्+क्त] 1. बहुत लाल, लालिमा से युक्त—रघु० १३।६४ 2. बदरंग 3. अनुरागहीन, स्नेहशून्य, अप्रसन्न—भर्तृ० २।२ 4. सांसारिक राग या लालसा से मुक्त, उदासीन 5. आवेश पूर्ण।

विरक्तिः (स्त्री०) [वि+रञ्ज्+क्तिन्] 1. चित्तवृत्ति में परिवर्तन, असन्तोष, असंतुष्टि, स्नेहशून्यता 2. अलगाव 3. उदासीनता, इच्छा का अभाव, सांसारिक लालसा या आसक्तियों से मुक्त।

विरचनम्—ना [वि+रच्+ल्युट्] 1. क्रम व्यवस्थापन—दि० ५।२१ 2. रचना करना, संरचन 3. निर्माण करना, सृजन करना 4. साहित्य-रचना करना, संकलन करना।

विरचित (भू० क० कृ०) [वि+रच्+क्त] 1. क्रम से रक्खा गया, बनाया गया, निर्मित, तैयार किया गया 2. घटित किया हुआ, संरचना किया हुआ 3. लिखा हुआ, साहित्य-सृजन किया हुआ 4. काट-छांट किया गया, संवारा गया, परिष्कृत किया गया, बनाव-सिंगार किया गया 5. धारण किया गया, पहनाया गया 6. जड़ा गया, बैठाया गया।

विरज (वि०) [विगतं रजो यस्मात्—प्रा० ब०] जिस पर धूल या गर्द न हो, जिसमें राग न हो,—जः विष्णु का विशेषण।

विरजस्, विरजस्क (वि०) [विगतं रजः यस्मात् यस्य वा प्रा० ब०] 1. जिस पर धूल न पड़ी हो, राग रहित शि० २०।८० 2. जिसका रजोदर्शन आना बंद हो गया हो।

विरजस्का [विरजस्+कप्+टाप्] वह स्त्री जिसका रजोधर्म आना बन्द हो गया हो।

विरंचः, चिः [वि+रच्+अच्, इन् वा, मुम्] ब्रह्मा।

विरटः (पुं०) एक प्रकार का काला अगुरु, अगर का वृक्ष।

विरणम् [विशिष्टो रणो मूलं यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार का सुगन्धित घास, तु० वीरण।

विरत [वि+रम्+क्त] 1. बन्द किया हुआ, रुका हुआ (अपा० के साथ) 2. विश्रान्त, थका हुआ, ठहरा हुआ 3. समाप्त, उपसंहृत, समाप्ति पर निरत गेयमृतुनिरुत्सवः रघु० ८।६६।

विरतिः (स्त्री०) [वि०+रम्+क्तिन्] 1. बन्द करना, ठहरना, रोकना 2. विश्राम, अवसान, यति 3. सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता भर्तृ० ३।७९।

विरमः [वि+रम्+अप्] 1. रोक, थाम 2. सूर्य का छिपना।

विरल (वि०) [वि+रा+कलन्] 1. छिदों से युक्त, जिसके बीच में अन्तराल हों, पतला, जो सघन न हो, सटा हुआ न हो विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरहाम् उत्तर० २।२७, भवति विरलभक्तिम्लान पुष्पोपहारः रघु० ५।७४ 2. पतला, कोमल 3. ढीला, विस्तृत 4. निराला, दुर्लभ, अनठा,—पद्य० १।२९ 5. कम, थोड़ा (संख्या या परिमाण संबंधी)—तत्त्व किमपि काव्यानां जानाति विरलो भुवि—भामि० १।११७, विरला तपस्विनः—शि० ९।३ 6. दूरवर्ती, दूरस्थ, लम्बा (समय या दूरी आदि),—लम् दही, जमाया हुआ दूध, लम् (अव्य०) कठिनाई से, कभी कभी, जो बहुतायत से न हो, नहीं के बराबर। सम० जानुक (वि०) घनुः पदी, जिसके घुटनों में अधिक दूरी हो,—द्रवा, एक प्रकार की लपसी।

विरस (वि०) [विगतः रसो यस्य प्रा० ब०] 1. स्वादरहित, फीका, नीरस 2. अप्रिय, अरुचिकर, पीड़ाकर—तावत्कोकिल विरसान् यापय दिवसान् वनान्तरे निबसन् - भामि० १।७ 3. क्रूर, निर्दय,—सः पीड़ा।

विरहः [वि+रह्+अच्] 1. बिछोह, वियोग 2. विशेषतः प्रेमियों की जुदाई—सा विरहे तव दीना गीत० ४, क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे तदेव, मेघ० ८, १२, २९, ८५, ८७ 3. अनुपस्थिति 4. अभाव 5. उजड़ना, परित्याग, छोड़ देना। सम० आतुरः वियोगाग्नि, अवस्था वियोगदशा, आर्त, उत्कण्ठ, उत्सुक (वि०) वियोग का कष्ट भोगने वाला, विछोह के कारण दुःखी, उत्कण्ठिता वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के वियोग से दुःखी है, काव्यग्रंथों में वर्णित एक नायिका दे० सा० द० १२१, ज्वरः वियोग की वेदना या ज्वर।

विरहिणी [विरहिन्+ङीप्] 1. अपने पति या प्रेमी से वियुक्त स्त्री 2. मजदूरी, भाड़ा।

विरहित (भू० क० कृ०) [वि+रह्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2. वियुक्त 3. अकेला, एकाकी 4. हीन, शून्य, मुक्त (बहुधा समास में)।

विरहिन् (वि०) (स्त्री० विरहिणी) [विरह+इनि] अनुपस्थित, अपनी प्रेयसी या प्रेमी से वियुक्त होने वाला, नूनयति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्तः गीत० १।

विरागः [वि+रञ्ज्+घञ्] 1 रंग का बदलना 2. वृत्तिपरिवर्तन, स्नेहाभाव, असन्तुष्टि असन्तोष,—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरागकारणेषु परिहृतेषु - मुद्रा० १ 3. अरुचि, इच्छा न होना 4. सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता, राग से मुक्ति ।

विराज् (पुं०) [वि+राज्+क्विप्] 1. सौन्दर्य, आभा 2. क्षत्रिय जाति का पुरुष 3. ब्रह्मा की प्रथम सन्तान, तु० मनु० १।३२, तस्मात् विराडजायत ऋग् १०। ९०।५, (यहाँ 'विराज्' को पुरुष से उत्पन्न बतलाया गया है) 4. शरीर, स्त्री० एक वैदिक वृत्त या छन्द का नाम ।

विराज दे० 'विराज्' ।

विराजित (भू० क० कृ०) [वि+राज्+क्त] 1. देदीप्यमान, प्रकाशित 2. प्रदर्शित, प्रकटीकृत ।

विराटः [विशेषो राटो यत्र] 1. भारतवर्ष के एक जिले का नाम 2. मत्स्य देश के एक राजा का नाम (पाण्डव लोगों ने एक वर्ष तक इस राजा की सेवा में छद्मवेश में रहकर अपने अज्ञात वास का समय बिताया) यह उनके निर्वासन का तेरहवाँ वर्ष था। विराटराज की कन्या उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ। उत्तरा परीक्षित् की माता थी। परीक्षित् ने हस्तिनापुर में युधिष्ठिर के बाद राज्य की बागडोर सम्भाली । समः ज्ञः एक प्रकार का घटिया हीरा, पर्वन् (नपुं०) महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटकः [विराट+कन्] घटिया प्रकार का हीरा, हीरे की घटिया प्रकार ।

विराणिन् (पुं०) [वि+रण्+णिनि] हाथी ।

विराद्ध (भू० क० कृ०) [वि+राध्+क्त] 1. विरुद्ध, प्रतिकूल 2. कुपित, क्षतिग्रस्त, घृणापूर्वक व्यवहृत, उद्धरण देखिए वि पूर्वक 'राध्' के नीचे ।

विराधः [वि+राध्+घञ्] 1. विरोध 2. सताना, सन्तप्त करना, छेड़छाड़ 3. राम के द्वारा मारा गया एक बलवान् राक्षस ।

विराधनम् [वि+राध्+ल्युट्] 1. विरोध करना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रकुपित करना 3. पीड़ा, वेदना ।

विरामः [वि+रम्+घञ्] 1. रोकना, बन्द करना 2. अन्त, समाप्ति, उपसंहार रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् गीत० ५, उत्तर० ३।१६, मा० ९।३४ 3. यति, ठहरना 4. आवाज का रुकना या थमना मृच्छ० ३।५ 5. एक छोटी तिरछी लकीर जो व्यञ्जन के नीचे लगाई जाती है, प्रायः वाक्य के अन्त में, हलन्तचिह्न 6. विष्णु का नाम ।

विराल दे० 'बिडाल' ।

विरावः [वि+रु+घञ्] कोलाहल, शोर, ध्वनि - आलोकशब्द वयसां विरावैः - रघु० २।९, १६।३१ ।

विरावित् (वि०) [विराव+इनि] 1. रोने वाला, चिल्लाने वाला, शोर मचाने वाला 2. विलाप करने वाला, —णी 1. रोने या चिल्लाने वाली 2. आह ।

विरिञ्चः, विरिञ्चनः [वि+रिच्+अच्, ल्युट् वा, मुम्] ब्रह्मा ।

विरिञ्चिः [वि+रिच्+इन्, मुम्] 1. ब्रह्मा विक्रम० १।४६, नै० ३।४४, शि० ९।९ 2. विष्णु 3. शिव ।

विरिष्ण (भू० क० कृ०) [वि+रुज्+क्त] 1. टूकड़े टूकड़े हुआ 2. विनष्ट 3. झुका हुआ 4. ठूंठा ।

विरुत (भू० क० कृ०) [वि+रु+क्त] 1. चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ 2. गुंजायमान, चीत्कारपूर्ण, तम् 1. चिल्लाना, चीखना, दहाड़ना आदि 2. चिल्लाहट, ध्वनि, शोर, कोलाहल, घोष 3. गाना, भिनभिनाना, कूजना, गुंजारना परभृतविरुतं कलं यथा श्रुतवचनाङ्कितमेभिरीदृशम् शि० ४।९ ।

विरुद:,—दम् (पुं०, नपुं०) 1. घोषणा करना 2. जोर से चिल्लाना 3. स्तुतिपरक कविता गद्यपद्यमयी राजस्तुतिर्विरुदमुच्यते सा० द० ५७०, नदन्ति मददन्तिनः परिलसन्ति वाजिराजाः, पठन्ति विरुदावली महिममन्दिरे वन्दिनः रस० ।

विरुदितम् [विरुद+इतच्] जोरजोर से रोना धोना, विलाप करना उत्तर० ३।३० (पाठान्तर) ।

विरुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+रुध्+क्त] 1. बाधित, रोका गया, विरोध किया गया, रुकावट डाली गई 2. घेरा हुआ, कैद में बन्द किया हुआ 3. विपरीत, घेरा डाला हुआ, ताकेबन्दी की गई 4. विपरीत, असंगत, बेमेल, असम्बद्ध 5. प्रतिकूल, विरोधी, गुणों में विपरीत 6. परस्पर विरोधी, वैपरीत्य को सिद्ध करने वाला (जैसा कि तर्क० में 'हेतु') उदा० शब्दो नित्यः कृतकत्वात् तर्क० 7. विरोधी, उलटा, अयुक्तापूर्ण 8. अननुकूल, अनुपयुक्त, 9. प्रतिषिद्ध, वर्जित (भोजन आदि) 10. अशुद्ध, अनुचित, - ता 1. विरोध, वैपरीत्य, शत्रुता 2. बेमेलपन, असहमति ।

विरूक्षणम् [वि+रूक्ष्+ल्युट्] 1. रूखा करना 2. रक्तस्राव को रोकने का कार्य करने वाली (औषधि) 3. कलंक, निन्दा 4. अभिशाप, कोसना ।

विरू (भू० क० कृ०) [वि+रूह्+क्त] 1. उगाया हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ मृच्छ० १।९ 2. उत्पादित, उपजाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ 3. उगा हुआ, अभिवर्धित 4. मुकुलित, खिला हुआ 5. चढ़ा हुआ, सवारी की हुई ।

विरूप (वि०) स्त्री० पा, पी) [विकृतं रूपं यस्य प्रा० ब०] 1. विरूपित, कुरूप, बदशकल, बदसूरत पञ्च० १।१४३ 2. अप्राकृतिक, विकटाकार 3. विश्वरूप, विविधरूपों वाला, पम् 1. कुत्सित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूप, कुरूपता 2. रूप, स्वभाव या चरित्र की विभिन्नता। सम० अक्ष (वि०) भद्दी आँखों वाला--वपुर्विरूपाक्षम् कु० ५।७२, (क्षः) शिव (विषम संख्या की आँखें होने के कारण) –दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दृशैव याः, विरूपाक्षस्य ता नीताः स्तुत्ये बामलोचनाः विद्ध० १।२, कु० ६।२१,—करणम् 1. बदसूरत बनाना 2 क्षति पहुँचाना,—अक्षम् (पुं) शिव का विशेषण, रूप (वि०) भद्दा, बेडौल।

विरूपिन् (वि०) (स्त्री० णी) [विरूपं रूपमस्ति अस्य ---विरूप+इनि] भद्दा, कुरूप, बदसूरत।

विरेक: [वि+रिच्+घञ्] 1. मलाशय को रिक्त करना, साफ करना 2. विरेचक, जुलाब की दवा।

विरेचनम् दे० 'विरेक'।

विरेचित (वि०) [वि+रिच्+णिच्+क्त] पेट साफ किया गया, पेट निर्मल और रिक्त किया गया।

विरेफ: [विशिष्टो रेफो यस्य वि+रिफ्+अच्] 1 नदी, सरिता 2. 'र' अक्षर का अभाव।

विरोक:,—कम् [वि+रुच्+घञ्, अच् वा] छिद्र, सूराख, दरार, कः प्रकाश की किरण।

विरोकन: [विशेषण रोचते वि+रुच्+ल्युट्] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. अग्नि 4. प्रह्लाद के पुत्र और बालि के पिता का नाम। सम० सुतः बालि का विशेषण।

विरोध: [वि० रुध्+घञ्] 1. प्रतिरोध, रुकावट, विघ्न 2. नाकेबंदी, घेरा, आवरण 3. प्रतिबन्ध, रोक 4. असंगति, असंबद्धता, परस्परविरोध 5. अर्थ विरोध वैषम्य 6. शत्रुता, दुश्मनी- विरोधो विश्वासः--उत्तर० ६।११, पंच० १।३२२, रघु० १०।१३ 7. कलह, असहमति 8. संकट, दुर्भाग्य 9. (अलं० में) प्रतीयमान असंगति जो केवल शाब्दिक हो, तथा सदर्भ को ठीक से अन्वित करने पर स्पष्ट हो जाय; इसमें परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले शब्द (जो वस्तुतः वैसे न न हों) सम्मिलित रहते हैं, वस्तुओं का ऐसा वर्णन करना जो मिली हुई प्रतीत हो, परन्तु वस्तुतः हों भिन्न भिन्न, (इस अलंकार का बाण और सुबंधु ने बहुत उपयोग किया है पुष्पदन्तयपि पवित्रा, कृष्णोऽप्यसुदर्शनः, भरतोऽपि शत्रुघ्नः आदि उदाहरण प्रसिद्ध हैं) मम्मट ने इसकी परिभाषा दी है--विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः - काव्य० १०, इस अलंकार का नाम विरोधाभास भी है। सम०—उक्तिः (स्त्री०), वचनम् परस्परविरोध, विरोध, कारिन् (वि०) झगड़ा करने वाला, कृत् (वि०) विरोधी (पुं०) शत्रु।

विरोधनम् [वि+रुध्+ल्युट्] 1. बाधा डालना, विघ्न डालना, रुकावट डालना 2. घेरा डालना, नाकेबंदी करना 3. प्रतिरोध करना, मुकाबला करना 4. परस्परविरोध, असंगति।

विरोधिन् (वि०) (स्त्री० नी) [वि+रुध्+णिनि] 1. मुकाबला करने वाला, प्रतिरोध करने वाला, अवरोध करने वाला 2. घेरा डालने वाला 3 परस्पर विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, असंगत, तपोवन° श० १ 4. विद्वेषी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल -विरोधिसस्त्रोज्झित-पूर्वमत्सरम् कु० ५।१७ 5. झगड़ालू—पुं० शत्रु ---शि० १६।६४।

विरोप (हु) णम् [वि+रुह्+ल्युट्] (घाव आदि का) भरना व्रणविरोपणं तैलम् श० ४।१४।

विल् [तुदा० पर० विलति] 1. ढकना, छिपाना 2. तोड़ना, बाँटना ii [चुरा० उभ० वेलयति—ते] फेंकना, धकेलना।

विलम् दे० 'बिल'।

विलक्ष [विगतं लक्षणं यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हों 2. व्याकुल, विह्वल 3. आश्चर्यान्वित, अचंभे में पड़ा हुआ 4. लज्जित, शर्मिंदा, अशान्त गोत्रेषु स्खलितस्तदा भवति च व्रीडाविलक्षश्चिरम् श० ६।५, अनोखा, अनूठा।

विलक्षण (वि०) [विगतं लक्षणं यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हों 2. भिन्न, इतर 3. अनोखा, असाधारण, अनूठा 4. अशुभ लक्षणों से युक्त, णम् व्यर्थ या निरर्थक स्थिति।

विलक्षित (भू० क० कृ०) [वि+लक्ष्+क्त] 1. विश्रुत, प्रत्यक्षीकृत, दृष्ट, आविष्कृत 2. विवेचनीय 3. उद्विग्न, घबराया हुआ, विह्वल, व्याकुल 4. प्रकुपित, नाराज।

विलग्न (वि०) [वि+लस्ज्+क्त] 1. चिपटा हुआ, चिपका हुआ, अवलंबित, बंधा हुआ श० ७।२५, शि० ९।२० 2. डाला हुआ, स्थिर किया हुआ, निर्दिष्ट कु० ७।५० 3. विगत, बीता हुआ (समय आदि) 4. पतला, छरहरा, सुकुमार मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या कु० १।३९, विक्रम० ४।३७, ग्नम् कमर 2. कूल्हा 3. तारामण्डल का उदित होना।

विलङ्घनम् [वि+लंघ्+ल्युट्] 1. अतिक्रमण करना, लाँघ जाना 2. अपराध, अतिक्रमण, क्षति।

विलङ्घित (भू० क० कृ०) [वि+लंघ्+क्त] 1. पार या परे गया हुआ, दूसरा हुआ 2. अतिक्रांत 3. आगे गया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4. परास्त, पराजित।

विलज्ज (वि०) [विगता लज्जा यस्य प्रा० ब०] निर्लज्ज, बेशर्म।

विलपनम् [वि+लप्+ल्युट्] 1. बातें करना 2. निकम्मी बातें करना, चहचहाना, बहकना 3. विलाप करना, रोना-धोना,—विलपनविनोदोऽप्यसुलभः—उत्तर० ३।३० 4. चीकट, नलछट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलपितम् [वि+लप्+क्त] 1. विलाप करना, क्रन्दन 2. रोदन ।

विलम्बः [वि+लम्ब्+घञ्] 1. लटकना, दोलायमानता 2. बाधापन, देरी, दीर्घसूत्रता ।

विलम्बनम् [वि+लम्ब्+ल्युट्] 1. लटकना, निर्भरता 2. देरी, टालमटोल न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनम् --गीत० ५, या तन्मुग्धे विफलं विलम्बनमसौ रम्योऽभिसारक्षणः—तदेव ।

विलम्बिका [वि+लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कब्जी, कोष्ठबद्धता ।

विलम्बित (भू० क० कृ०) [वि+लम्ब्+क्त] 1. लटकना, निर्भरता 2. लम्बमान, लटकाने वाला 3. आश्रित, सुसम्बद्ध --, मन्द, दीर्घसूत्री, आलसी 5. मन्थर, धीमा (संगीत में काल आदि), दे० वि पूर्वक 'लम्ब्',—तम् देरी ।

विलम्बिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [विलम्ब+णिनि] 1. नीचे लटकता हुआ, निर्भर, लटकन --नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः शि० ५।१२, अलघुविलम्बिपयोधरोपरुद्धाः शि० ४।२९, ५९, कु० १।१४, कि० ५।६, रघु० १६।८४, १८।२५, मृच्छ० ५।१३ 2. देर करने वाला, टालमटोल करने वाला, मन्द रहने वाला, --भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा विलपति रोदिति वासकसज्जा गीत० ६ ।

विलम्भः [वि+लभ्+घञ्, मुम्] 1. उदारता 2. भेंट, दान ।

विलयः [वि+ली+अच्] 1. विघटन, पिघलना 2. विनाश, मृत्यु, अन्त उत्तर० ७ 3 संसार का विघटन या विनाश, (विलयं गम् घुल जाना, अन्त हो जाना, समाप्त हो जाना विवसोऽनुभित्रममलद्विलयम्—शि० ९।१७ ।

विलयनम् [वि+ली+ल्युट्] 1. घुल जाना, पिघल जाना, घोल या विघटन 2. जग लग जाना, मूर्छा खा जाना 3. हटाना, दूर करना 4. पतला करना 5. पतला करने वाली औषधि ।

विलसत् (शत्रन्त वि०) (स्त्री० ती) [वि+लस्+शतृ] 1. चमकने वाला, प्रकाशमान, उज्ज्वल 2. चमचमाने वाला, सहसा कौंधने वाला 3. लहराने वाला 4. क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय ।

विलसनम् [वि+लस्+ल्युट्] 1. दमकना, चमचमाना चमकना, जगमगाना 2. क्रीडा करना, इठलाना, बोचले करना ।

विलसित (भू० क० कृ०) [वि+लस्+क्त] 1. दमकता हुआ, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ 2. प्रकट हुआ, प्रकटीकृत 3. क्रीडाप्रिय, स्वेच्छाचारी, तम् 1. दमकना, जगमगाना 2. चमक, दमक—रोधोमुखां मुहुरमुत्र हिरण्मयीनां भासस्तडिद्विलसितानि विडम्बयन्ति कि० ५।४६, मेघ० ८१, विक्रम० ४ 3. दर्शन, प्रकटीकरण : जैसा कि अज्ञातविलसितम् आदि में 4. क्रीडा, खेल, रंगरेली, सानुराग हावभाव ।

विलापः [वि+लप्+घञ्] क्रन्दन, शोक करना, रोदन, कराहना लंकास्त्रीणां पुनरुचकैर्विलापाचार्यकं शरैः रघु० १२।७८ ।

विलालः [वि+लल्+घञ्] 1. विलाप 2. उपकरण, यन्त्र ।

विलासः [वि+लस्+घञ्] 1. क्रीडा, खेल, मनोरंजन 2. केलिपरक मनोविनोद, दिलबहलावा, प्रसन्नता जैसा कि 'विलासमेखला'—रघु० ८।६४ में, इसी प्रकार विलासकाननम्, विलासमन्दिरम् आदि 3. ललित अभिनय, रंगरेली, अनुराग, कामुकता, सुन्दर चाल, गतिद्योतक कोई भी स्त्रियोचित हावभाव शि० २।२, कु० ५।१३, शि० ९।२६ 4. लालित्य सौन्दर्य, चारुता, लावण्य मा० २।६ 5. चमक, दमक ।

विलासनम् [विलस्+णिच्+ल्युट्] 1. क्रीडा, खेल मनोरंजन 2. कामुकता, रंगरेली ।

विलासवती [विलास+मतुप्+ङीप्, मस्य वः] स्वेच्छाचारिणी या कामुक स्त्री --रघु० ९।४८, ऋतु० १।१२ ।

विलासिका [वि+लस्—ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] प्रेमलीला से पूर्ण एकाङ्की नाटक, इसकी परिभाषा सा० द० ५५२ पर इस प्रकार दी है शृङ्गारबहुलैर्भावैः दक्षलास्याङ्गसंयुता, विदूषकविटाभ्यां च पीठमर्दन भूषिता । हीना गर्भविमर्शाभ्यां संधिभ्यां हीननायका । स्वल्पवृत्ता मुनेर्वृत्त्या विख्याता सा विलासिका ॥

विलासिन् (वि०) (स्त्री० नी) [विलास्+इनि] क्रीडा युक्त, लीलापर, रंगरेली में व्यस्त, कामुक, चोंचले करने वाला, रघु० ६।१४, पं० 1 विषयी, भोगासक्त, रसिकजन, उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्र कान्तिमत्तया कु० ४।५ 2. अग्नि 3. चन्द्रमा 4. साँप 5. कृष्ण या विष्णु का विशेषण 6. शिव का विशेषण 7. कामदेव का विशेषण ।

विलासिनी (विलासिन्+ङीप्) 1. रमणी 2. हावभाव करने वाली स्त्री,—हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनी विलसति केलिपरे गीत० १, कु० ७।५९, शि० ८।७०, रघु० ६।१७ 3. स्वेच्छाचारिणी, वेश्या ।

विलिखनम् [वि+लिख्+ल्युट्] खुरचना, कुरेदना, लिखना ।

विलिप्त (भू० क० कृ०) [वि+लिप्+क्त] लीपा हुआ, पोता हुआ, चुपड़ा हुआ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलीन (भू० क० कृ०) [वि+ली+क्त] 1. चिपकने वाला, चिपटा हुआ, अनुषक्त 2. अड्डे पर बैठा हुआ, बसा हुआ उतरा हुआ 3. संसक्त, संस्पर्शी 4. पिघला हुआ, घुला हुआ, गलाया हुआ 5. अन्तर्हित, ओझल 6. मृत, नष्ट।

विलुंचनम् [वि+लुच्+ल्युट्] फाड़ डालना, छीलना।

विलुंठनम् [वि+लुंठ्+ल्युट्] लूटना, डाका डालना।

विलुप्त (भू० क० कृ०) [वि+लुप्+क्त] 1. तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ—पंच० २।२ 2. पकड़ा हुआ, छीना हुआ, अपहरण किया हुआ 3. लूटा हुआ, डाका डाला हुआ 4. विनष्ट, बर्बाद 5. बिगाड़ा हुआ, तोड़ा-फोड़ा हुआ।

विलुंपकः [वि+लुप्+ण्वुल, मुम्] चोर, लुटेरा, अपहर्ता।

विलुलित (भू० क० कृ०) [वि+लुल्+क्त] 1. इधर उधर घूमने वाला, अस्थिर, हिला हुआ, लुढ़का हुआ, थरथराता हुआ 2. क्रमरहित, क्रमशून्य गणित कुसुमदलविलुलितकेशा—गीत० ७।

विलून (भू० क० कृ०) [वि+लू+क्त] कटा हुआ, काट डाला हुआ, चीरा हुआ, काट कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विलेखनम् [वि+लिख्+णिच्+ल्युट्] 1. खुरचना, कुरेदना, गूदना 2. खोदना 3. उखाड़ना।

विलेपः [वि+लिप्+घञ्] 1. उबटन, मलहम 2. चूना 3. लिपाई-पुताई।

विलेपनम् [वि+लिप्+ल्युट्] 1 लीपना, पोतना 2. मलहम, उबटन, कोई भी शरीर पर लेप करने के योग्य सुगन्धित पदार्थ (केसर व चन्दन आदि) —यान्यैव सुरभिकुसुमधूपविलेपनादीनि का०।

विलेपनी [विलेपन+ङीप्] 1. सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित स्त्री 2. सुरेखा 3. चावल का माड।

विलेपिका, विलेपी, विलेप्यः [विलेपी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, विलेप+ङीप्, वि+लिप्+ण्यत्] चावल का माड।

विलोकनम् [वि+लोक्+ल्युट्] 1. देखना, निहारना, दृष्टि डालना कि० ५।१६ 2. दृष्टि, निरीक्षण —शि० १।२९।

विलोकित (भू० क० कृ०) [वि+लोक्+क्त] 1. देखा गया, निरीक्षण किया गया, समीक्षित, निहारा गया 2. परीक्षित, चिन्तन किया गया,—तम् दृष्टि, नजर —श० २।३।

विलोचनम् [वि+लोच्+ल्युट्] आँख रघु० ७।८, कु० ४।१, ३।६७। सम० अम्बु (नपुं०) आँसू।

विलोडनम् [वि+लोड्+ल्युट्] विक्षुब्ध होना, दोलायमान होना, हिल-डुल, मन्थन करना शि० १४।८३।

विलोडित (भू० क० कृ०) [वि+लोड्+क्त] डुलाया हुआ, बिलोया हुआ, हिलाया हुआ, विक्षुब्ध, -तम् बिलोया हुआ दूध।

विलोपः [वि+लुप्+घञ्] 1. ले जाना, अपहरण करना, पकड़ना, लूटना 2. लोप, हानि, नाश, अदर्शन।

विलोपनम् [वि+लुप्+ल्युट्] 1. काट डालना 2. अपहरण 3. नष्ट करना, विनाश।

विलोभः [वि+लुभ्+घञ्] आकर्षण, फुसलाहट, प्रलोभन।

विलोभनम् [वि+लुभ्+णिच्+ल्युट्] 1. मोह लेना, ललचाना 2. रिझाना, प्रलोभन, फुसलाना 3. प्रशंसा खुशामद।

विलोम (वि) (स्त्री०—मी) [विगतं लोम यस्य—प्रा० ब०] 1. व्युत्क्रान्त, प्रतिकूल, प्रतिलोम, विपरीत, विरुद्ध 2. प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न 3. पिछड़ा हुआ, मः विपरीत क्रम, प्रतिलोम 2. कुत्ता 3. साँप 4. वरुण, मम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र। सम० -उत्पन्न —ज, -जात, वर्ण (वि०) प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न अर्थात् ऐसी माता से जन्म लेना जो पिता की अपेक्षा उच्च वर्ण की हो—तु० प्रतिलोमक भी, -क्रिया, -विधिः 1. प्रतिकूल कर्म 2. प्रतिलोम नियम (गणि० में), जिह्वः हाथी।

विलोकी [विलोम+ङीष्] आँवला।

विलोल (वि०) [विशेषेण लोलः—प्रा० स०] 1. दोलायमान, काँपता हुआ, थरथर करने वाला, अस्थिर, डोलने वाला, चंचल, इधर उधर लुढ़कने वाला पपतीषु विलोलमौक्तिकम् रघु० ८।५९, शि० ८।८ १५।६२, २०।४२, वेणी० २।२८, रघु० ७।४१, १६।६८ 2. ढीला, विपर्यस्त, बिखरे हुए (बाल आदि)—उत्तर० ३।४।

विलोहितः [विशेषेण लोहितः प्रा० स०] रुद्र का नाम।

बिल्व दे० 'बिल्ल'।

बिल्व दे० 'बिल्व'।

विवक्षा [वच्+सन्+अ+टाप्] 1. बोलने की इच्छा 2. अभिलाषा, इच्छा 3. अर्थ, आशय 4. इरादा, प्रयोजन।

विवक्षित (वि०) [विवक्षा+इतच्] 1. कहे जाने या बोले जाने के लिए अभिप्रेत—विवक्षितं हानुक्तमनुलापंजनयति-श० ३ 2. अर्थयुक्त, अभिप्रेत, उद्दिष्ट 3. अभिलषित इच्छित 4. प्रिय, तम् 1. प्रयोजन, अभिप्राय 2. आशय, अर्थ।

विवक्षु (वि०) [वच्+सन्+उ] बोलने की इच्छा वाला,—कु० ५।८३।

विवत्सा [विगतः वत्सो यस्याः प्रा० ब०] बिना बछड़े की गाय।

विवधः [विवधो विगतो वा वधः हननं गतिर्वा यत्र प्रा० ब०] 1. बोझा ढोने के लिए जुआ 2. मार्ग, सड़क 3. बोझा, भार 4. अनाज का संग्रह 5. घड़ा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवधिकः [विवध+ठन्] 1. बोझा ढोने वाला, कुली 2. फेरी वाला, आवाज़ लगा कर बेचने वाला।

विवरम् [वि+वृ+अच्] 1. दरार, छिद्र, रन्ध्र, खोखलापन, रिक्तता यच्चकार विवरं शिलाघने ताडकोरसि स रामसायकः रघु० ११।१८, ९।६१, १९।७ 2. अन्तर्धान, अन्तराल, बीच की जगह श० ७।७ 3. एकान्त स्थान कि० १२।३७ 4. दोष, त्रुटि, ऐब, कमी 5. विच्छेद, घाव 6. 'नौ' की संख्या। सम०—नालिका बंसरी, बंसी, मुरली।

विवरणम् [वि+वृ+ल्युट्] 1. प्रदर्शन, अभिव्यंजन, उद्घाटन, खोलना 2. अनावृत करना, खुला छोड़ना 3. विवृति, व्याख्या, वृत्ति, टीका, भाष्य।

विवर्जनम् [वि+वृज्+ल्युट्] छोड़ना, निकाल देना, परित्याग करना याज्ञ० १।१८१।

विवर्जित (भू० क० कृ०) [वि+वृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 2. परिहृत 3. वञ्चित, विरहित, के बिना (प्रायः समास में) 4. प्रदत्त, वितरित।

विवर्ण (वि०) [विगतः वर्णो यस्य—प्रा० ब०] 1. विनारंग का, निष्प्रभ, पाण्डु, फीका—नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः—रघु० ६।६७ 2. जिस पर कोई रंग न चढ़ा हो, निर्जल, श० ३।१४, 3. नीच, दुष्ट 4. अज्ञानी, मूढ़, निरक्षर, ॰ः जाति-बहिष्कृत, नीच जाति से संबंध रखने वाला।

विवर्तः [वि+वृत्+घञ्] 1. गोल चक्कर खाना, चारों ओर घूमना, भंवर 2. आगे को लुढ़कना 3. पीछे को लुढ़कना, लौटना 4. नृत्य 5. बदलना, सुधारना, रूप में परिवर्तन, बदली हुई दशा या अवस्था —शब्दब्रह्मविवर्तोऽयमितिहासं रामायणं प्रणिनाय उत्तर० २, एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् उत्तर० ३।४७, महावी० ५।१७ 6. (वेदान्त० में) एक प्रतीयमान भ्रान्तिजनक रूप, अविद्या या मानव की भ्रांति से उत्पन्न मिथ्या रूप, (यह वेदान्तियों का एक प्रिय सिद्धांत है जिसके अनुसार यह समस्त संसार एक माया है मिथ्या और भ्रान्तिजनक रूप जब कि ब्रह्म या परमात्मा ही वास्तविक रूप है; जैसे कि सांप, रस्सी का विवर्त है, इसी प्रकार यह संसार उस पर ब्रह्म का विवर्त है, यह भ्रान्ति या माया सत्य ज्ञान अथवा विद्या से ही दूर होती है, तु० भवभूति विद्याकल्पेन मरुता मेधानां भूयसामपि, ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः—उत्तर० ६।६ 7. ढेर, समुच्चय, संग्रह, समवाय। सम० वादः वेदान्तियों का सिद्धांत कि यह दृश्यमान संसार माया है केवल ब्रह्म ही एक वास्तविकता है।

विवर्तनम् [वि+वृत्+ल्युट्] 1. चक्कर खाना, क्रान्ति, भंवर 2. इधर उधर लुढ़कना, करवटें बदलना शि० ५।६ 3. पीछे लुढ़कना, लौटना 4. नीचे की लुढ़कना, उतरना 5. विद्यमान रहना, दृढ़ रहना 6. ससम्मान अभिवादन 7. नाना प्रकार की सत्ताओं व स्थितियों में से गुज़रना 8. परिवर्तित दशा—उत्तर० ४।१५, मा० ४।७।

विवर्धनम् [वि+वृध्+ल्युट्] 1. बढ़ना 2. वृद्धि, वर्धन, बढ़ती 3. विस्तार, अभ्युदय।

विवर्धित (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2. प्रगत, प्रोन्नत, आगे बढ़ाया हुआ 3. संतृप्त, संतुष्ट।

विवश (वि०) [वि+वश्+अच्] 1. अनियन्त्रित, जो वश में न किया गया हो 2. लाचार, आश्रित, अधीन, दूसरे के नियन्त्रण में, असहाय—परीता रक्षोभिः श्वपंतिं विवशा कामपि दशाम् —भामि० १।८३, मुद्रा० ३।१८, शि० २०।५८, हि० १।१७२, महावी० ६।३२, ६३ 3. बेहोश, जो अपने आपको काबू में न रख सके विवशा कामवधूविबोधिता—कु० ४।१ 4. मृत, नष्ट—उपलभ्यते च दिवश्च्युतं विवशा यापनिवृत्तिकारणम् रघु० ८।८२ 5. मृत्युकामी, मृत्यु की आशंका करने वाला।

विवसन (वि०) [विगतं वसनं यस्य प्रा० ब०] नंगा, विवस्त्र, ॰नः जैन साधु।

विवस्वत् (पुं०) [विशेषेण वस्ते आच्छादयति—वि+वस्+क्विप्+मतुप्] 1. सूर्य—स्वष्टा विवस्वतमिवोल्लिलेख कि० १७।४८, ५।४८, रघु० १०।३०, १७।४८ 2. अरुण का नाम 3. वर्तमान मनु का नाम 4. देव 5. अर्क का पौधा, मदार।

विवहः [वि+वह्+अच्] आग की सात जिह्वाओं में से एक।

विवाकः [विशिष्टो वाको यस्य—प्रा० ब०] न्यायाधीश, तु० 'प्राड्विवाक'।

विवादः [वि+वद्+घञ्] (क) कलह, प्रतियोगिता, संघर्ष विषय, शास्त्रार्थ, विचारविमर्श, वाद—विवाद, झगड़ा, झंझट—अलं विवादेन,—कु० ५।८३ एतयोर्विवादे एव मे न रोचते—मालवि० १, एकाध्वरः प्रार्थितयोर्विवादः रघु० ७।५३ (ख) तर्क, तर्कना, चर्चा 2. वचन विरोध एवं विवाद एव प्रत्यायवति—शि० ७ 3. मुकदमेबाजी, क़ानूनी नालिश, क़ानूनी संघर्ष, सीमाविवादः, विवादपदम् आदि, परिभाषा इस प्रकार की गई है —ऋणादिदायकलहे द्वयोर्बहुतरस्य वा विवादो व्यवहारस्य, दे० 'व्यवहार' भी 4. उच्च-क्रंदन, ध्वनन 5. आदेश, आज्ञा—रघु० १८।४३। सम०—अर्थिन् (पुं०) 1. मुकदमेबाज़ 2. वादी, अभियोक्ता, प्रार्थियोक्ता,—पदम् कलह का शीर्षक, —वस्तु (नपुं०) कलह का विषय, विचारणीय विषय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवादिन् (वि०) [विवाद+इनि] 1. कलह करने वाला, तर्क वितर्क करने वाला, तर्कप्रिय, कलहशील 2. (क़ानूनी पहलू पर) विवाद करने वाला—पुं० मुक़दमेबाज़, क़ानूनी अभियोग में भाग लेने वाला।

विवारः [वि+वृ+घञ्] 1. मुंह, विस्तार 2. अक्षरों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विस्तार (एक अभ्यंतर प्रयत्न, विप० संवार, दे० पा० १।१।९ पर सिद्धा०)।

विवासः, विवासनम् [वि+वस्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] देश निर्वासन, देशनिकाला, निष्कासन, रामस्य गात्र-मसि दुर्वहगर्भक्लिन्नसीताविवासनघटोः करुणा कुतस्ते —उत्तर० २।१०।

विवासित (भू० क० कृ०) [वि+वस्+णिच्+क्त] देश से निर्वासित किया गया, देश निकाला दिया गया, निष्कासित।

विवाहः [वि+वह्+घञ्] शादी, ब्याह (हिन्दू स्मृति-कारों ने आठ प्रकार के विवाह बताये हैं ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गांधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः मनु० ३।२१, दे० याज्ञ० १। ५८, ६१ भी, इन रूपों की व्याख्या के लिए उस शब्द को देखो। सम० चतुष्टयम् चार पत्नियों से विवाह करना, दीक्षा विवाह संस्कार या कर्म।

विवाहित (भू० क० कृ०) [वि+वह्+णिच्+क्त] ब्याहा हुआ।

विवाह्यः [वि+वह्+ण्यत्] 1. जामाता 2. दूलहा।

विविक्त (भू० क० कृ०) [वि+विच्+क्त] 1. वियुक्त, पृथक्कृत, अलगाया हुआ, वंचित 2. अकेला, एकाकी, निवृत, विलग्न 3. एकल, एकी 4. प्रभिन्न, विवेचन किया हुआ 5. विवेकशील 6. पवित्र, निर्दोष रत्न० १।२१,—क्तम् 1. एकान्त स्थान, निर्जन स्थान शि० ८।७० 2. अकेलापन, निर्जनता, एकान्तस्थान—क्ता भाग्यहीन या अभागी स्त्री, जो अपने पति को प्यारी न हो, दुर्भगा।

विविक्त (वि०) [विशेषेण विक्तः वि+विच्+क्त] अत्यंत क्षुब्ध, या डरा हुआ रघु० १८।१३।

विविध (वि०) [विभिन्ना विधा यस्य-प्रा० ब०] नाना प्रकार का, विभिन्न प्रकार का, बहुरूपी, विश्वरूपी, प्रकीर्ण मनु० १।८, ३९।

विवीतः [विभिद्यते वीतं गवादिप्रचारस्थानं यत्र प्रा० ब०] घिरा हुआ स्थान, बाड़ा, जैसे चरागाह।

विवृक्त (भू० क० कृ०) [वि+वृज्+क्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त, संपरित्यक्त।

विवृक्ता [विवृक्त+टाप्] वह स्त्री जिसको उसका पति प्यार नहीं करता, तु० 'विविक्ता'।

विवृत (भू० क० कृ०) [वि+वृ+क्त] 1. प्रदर्शित, प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2. स्पष्ट, सामने खुला हुआ 3. खुला हुआ, अनावृत, नंगा पड़ा हुआ 4. खोला, प्रकट किया हुआ, नग्न, उद्घाटित 5. उद्घोषित 6. भाष्य किया गया, व्याख्या की गई, टीका की गई 7. विस्तारित, फैलाया गया 8. विस्तृत, विशाल, प्रशस्त। सम० अक्ष (वि०) बड़ी बड़ी आंखों वाला, (क्षः) मुर्गा, द्वार (वि०) खुले दरवाजों वाला—कु० ४।३६।

विवृतिः (स्त्री०) [वि+वृ+क्तिन्] 1. प्रदर्शन, प्रकटी-करण 2. विस्तार 3. अनावरण, व्यक्तीकरण 4. भाष्य, टीका, वृत्ति, वाच्यान्तर।

विवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+वृत्+क्त] 1. मुड़ कर आया हुआ 2. मुड़ना, चक्कर काटना, लुढ़कना, भंवर।

विवृत्तिः (स्त्री०) [वि+वृत्+क्तिन्] 1. मुड़ना, भंवर, चक्कर 2. (व्या०) उच्चारण भंग।

विवृद्ध (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1. विकसित 2. बढ़ा हुआ, आवर्धित, ऊँचा किया हुआ, बढ़ाया हुआ, तीव्र (शोक हर्षादिक) 3. विपुल, विशाल, प्रचुर।

विवृद्धिः (स्त्री०) [वि+वृध्+क्तिन्] 1. बढ़ना, वर्धन, बढ़ती, विकास प्रयुः शरीरावयवा विवृद्धिम् रघु० १७।४९, विवृद्धिमन्नादनुवते वसुनि- १३।४, इसी प्रकार शोक हर्ष आदि 2. समृद्धि।

विवेकः [वि+विक्+घञ्] 1. विवेचन, निर्धारण, विचारणा, विज्ञता,—कार्यापि यात्तस्यापि च त्रिवेकः भामि० १।६८,६६, ज्ञातोऽयं जलधर तावकां विवेकः—९६ 2. विचार, विचारविमर्श, गवेषणा यच्छृंगारविवेकतत्त्वमपि यत्काव्येषु लीलायितम्- गीत० १२, इसी प्रकार द्वैत° धर्म° 3. भेद, अन्तर, (दो वस्तुओं में) प्रभेद नीरक्षीर विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेतः भामि० १।५२, भट्टि० १७।६० 4. (वेदान्त० में) दृश्यमान जगत् तथा अदृश्य आत्मा में भेद करने की शक्ति, माया या केवल बाह्य रूप से वास्तविकता को पृथक् करना 5. सत्य ज्ञान 6. जलाशय, पात्र, जलाधार। सम०—ज्ञ (वि०) विवेकशील, विवेचक,—ज्ञानम् विवेचन करने की शक्ति, दृश्वन् (पुं०) सूक्ष्मदर्शी पुरुष, पदवी पुनर्विमर्श, विचार, चिन्तन।

विवेकिन् (वि०) [विवेक+इनि] विवेचक, विचारवान्, विवेकशील, पुं० 1. न्यायकर्ता, गुणदोषविवेचक 2. दार्शनिक।

विवेक्तृ (पुं०) [वि+विच्+तृच्] 1. न्यायकारी 2. ह्रषि, दार्शनिक।

विवेचनम्, ना [वि+विच्+ल्युट्] 1. गुणदोषविचारणा 2. विचारविमर्श, विचार 3. फ़ैसला, निर्णय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवोढृ (पुं) [वि+वह्+तृच्] दूल्हा, पति।
विव्योक द० **विव्योक**--[विव्+ओकस्+घञ्] वस्त्रागारी बभूव--उ० स० ४३।
विश् (तुदा० पर० विशति, विष्ट) 1. प्रविष्ट होना, जाना, दाखिल होना--विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम् --कु० ५।३०, रघु० ६।१०, १२, मेघ० १०२, भग० ११।२९ 2. जाना या पहुंचना, अधिकार में आना किसी के हिस्से में पड़ना--उदपा विविशुः दाशरथेरसेकाः कोशलेश्वरम् रघु० ४।७० 3. बैठ जाना, बस जाना 4. घुस जाना, व्याप्त हो जाना 5. स्वीकार करना, उत्तरदायित्व लेना. प्रेर० (वेशयति--ते) घुसाना, प्रविष्ट कराना इच्छा० (विविक्षति) प्रविष्ट होने की इच्छा करना. अनु --, 1. सम्मिलित होना 2. किसी का अनुगमन करना, बाद में प्रविष्ट होना, **अनुप्र** सम्मिलित होना (आत्मं० से) दूसरे की इच्छानुसार अपने आप को ढालना, यस्य यस्य हि यो भावस्तस्य तस्य हितं नरः, अनुप्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं नयेत् -पंच० १।६८, **अभि नि** (आ०) 1. सम्मिलित होना, अधिकार करना 2. सहारा लेना, अधिकार कर लेना अभिनिविशते सन्मार्गम् सिद्धा०. भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते --मुद्रा० ५।१२, भट्टि० ८।८०, **आ** 1. प्रविष्ट होना --रघु० २।२६ 2. अधिकार करना, कब्जे में ले लेना, काबू कर लेना 3. पहुंचना 4. किसी विशेष स्थिति पर पहुंचना, **उप**--, 1. बैठ जाना, आसन ग्रहण करना भग० १।४६ 2. हेरा डालना 3. स्वीकार करना, अभ्यास करना -प्रायमुपविशति 4. उपवास करना भट्टि० ७।७५, **नि** --, (आ०) 1. बैठ जाना, आसन ग्रहण करना--नवांबुदश्यामवपुर्न्यवेक्षत (आसने) --शि० १।१९ 2. पड़ाव डालना, डेरा लगाना रघु० १२।६८ 3. प्रविष्ट होना, रामशाला न्यविक्षत --भट्टि० ४।२८, ६।१४३, ८।७, रघु० ९।८२ 4. स्थिर किया जाना, निर्दिष्ट किया जाना- सूर्यनिर्दिष्टदृष्टिः -- रघु० १४।६६ 5. व्यस्त होना, अनुरक्त होना, तुल जाना, अभ्यास करना श्रुतिप्रमाणपदो विद्वान्स्वधर्मे निविशेत वै मनु० २।८ 6. विवाह करना ('निविश्' के स्थान पर), (प्रेर०) 1. जमाना, निर्दिष्ट करना, (मन, चित्त) लगाना, भग० १२।८ 2. स्थित करना, बसना, रखना रघु० ६।१६, ४।३९ ७।६३ 3. बिठाना, स्थापित करना रघु० १५।९७ 4. जीवन में स्थित कराना, विवाह करवाना--श० ४।१९ 5. (सेना आदि का) डेरा डालना रघु० ५।४२, १६।३७ 6. रेखांकन करना. चित्रित करना, चित्र बनाना चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा --श० २।९, मालवि० ३।११ 7. लिख लेना, उत्कीर्ण करना--विक्रम० २।१४ 8. सुपुर्द करना, सौंपना रघु० १९।४, **निस्** , 1. सुखोपभोग करना --ज्योत्स्नावतीं निविशति प्रदोषान् रघु० ६।३४, निविष्टविषयस्नेहः स दशात्मयुद्धेषिवान्-- रघु० १२।१, ४।५१, ६।५०, ९।३५, १३।६०, १४।८०, १८।३, १९।४७, मेघ० ११० 2. अलंकृत करना, आभूषित करना 3. विवाह करना, **प्र** - , 1. प्रविष्ट होना 2. आरम्भ करना, शुरू करना, (-प्रेर०) प्रस्तुत करना, प्रवेश के रूप में आगे आगे चलना, **विनि** रक्खा जाना, बिठाया जाना, (प्रेर०) 1. स्थिर करना, रखना कु० १।४९, रघु० ६।६३, मदुरसि कुचकलशे विनिवेशय --गीत० १२ 2. बसाना, नई बस्ती बसाना--कु० ६।३७, **सम्**--, 1. प्रविष्ट होना 2 सोना, लेटना, आराम करना--संविष्टः कुशयने निशां निनाय - रघु० १।९५ मनु० ४।५५, ७।२२५ 3. सहवास करना, मैथुन करना - षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणां तस्मिन् युग्मासु संविशेत् याज्ञ० १।७९, मनु० ३।४८ 4. सुखोपभोग करना, **समा**--, 1. प्रविष्ट होना, भट्टि० ८।२७ 2. पहुंचना 3. लग जाना, तुल जाना, **सं**नि, (प्रेर०)--1. रखना, धरना 2. स्थापित करना, ऊपर धरना--रघु० १२।५८।

विश् (पुं०) [विश्+क्विप्] 1. तीसरे वर्ण का मनुष्य, वैश्य 2. मनुष्य 3. राष्ट्र, स्त्री० 1. राष्ट्र, प्रजा 2. पुरी। सम०--**पत्यम्** सामान, व्यापारिक माल, **पतिः** (विशांपतिः भी) राजा, प्रजा का स्वामी।

विशम् [विश्+क] कमल की गड़ी के तन्तु, रेशे--तु० बिस। सम० **आकरः** एक प्रकार का पौधा, भद्रचूड, कंटा सारस।

विशङ्कट (वि०) (स्त्री०--टा,--टी) [वि+शंक्+अटच्] 1. बड़ा, विशाल, बृहत्--विशङ्कटो वक्षसि बाणपातिः --भट्टि० २।५०, शि० १३।३४ 2. मजबूत, प्रचंड, शक्तिशाली।

विशङ्का [विशिष्टा विगता वा शङ्का प्रा० स०] डर, आशङ्का।

विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] 1. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, विमल, विशुद्ध--योगनिद्रान्तविशदैः पावनैरवलोकनैः - रघु० १०।१४, १९।३९, रत्न० २।९, कि० ५।१२ 2. सफेद, विशुद्धश्वेत रङ्ग का--निर्धौतहारगुलिकाविशदं हिमांभः --रघु० ५।७०, कु० १।४०, ६।२५, शि० ९।२६, कि० ४।२३ 3. उज्ज्वल, चमकीला, सुन्दर कु० ३।३३, शि० ८।७० 4. साफ, स्पष्ट, प्रकट 5. शान्त, निश्चिन्त आराम सहित--जातो ममायं विशदः प्रकामं (अन्तरात्मा) --श० ४।२२।

विशयः [वि+शी+अच्] 1. सन्देह, अनिश्चयता. अधिकरण के पांच अंगों में से दूसरा 2. शरण, सहारा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशरः [वि+शृ+अप्] 1. टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ डालना 2. वध, हत्या, विनाश।

विशल्य (वि०) [विगतं शल्यं यस्मात्—प्रा० ब०] कष्ट और चिन्ता से मुक्त, सुरक्षित।

विशसनम् [वि+शस्+ल्युट्] 1. वध, हत्या, पशुमेध —उत्तर० ४।५ 2. बलिदी,—नः 1. कटार, टेढ़े फल की तलवार 2. तलवार।

विशस्त (भू० क० कृ०) [वि+शंस्+क्त] 1. काटा हुआ, चीरा हुआ 2. उजड्ड, अशिष्ट 3. प्रशस्त, विख्यात।

विशस्तृ (पुं०) [वि+शस्+तृच्] 1. हत्या करने वाला या बलि के लिए वध करने वाला व्यक्ति 2. चाण्डाल।

विशस्त्र (वि०) [विगतः शस्त्रं यस्य] बिना हथियारों के, शस्त्ररहित, जिसके पास बचाव के लिए कुछ न हो।

विशाखः [विशाखानक्षत्रे भवः · विशाखा+अण्] 1. कार्तिकेय का नाम महाभा० २।३८ 2. धनुष से तीर छोड़ते समय की स्थिति (इसमें धनुर्धारी एक पग पीछे तथा एक जरा आगे करके खड़ा होता है) 3. भिक्षुक, आवेदक 4. तकुवा 5. शिव का नाम। सम०—अः नारंगी का पेड़।

विशाखल दे० विशाख (2)।

विशाखा [विशिष्टा शाखा प्रकारो यस्य—प्रा० ब०] (प्रायः द्विवचनान्त) सोलहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित होते हैं—किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्कलेखामनुवर्तते —श० ३।

विशारः [वि+शॄ+घञ्] बारी-बारी से सोना, शेष पहरेदारों का बारी-बारी से पहरा देना।

विशारणम् [वि+शृ+णिच्+ल्युट्] 1. टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ना 2. हत्या, वध।

विशारद (वि०) [विशाल+दा+क, लस्य रः] 1. चतुर, कुशल, प्रवीण, विज्ञ, जानकार (प्रायः समास में) —मधुदान विशारदाः रघु० ९।२९, ८।१७ 2. विद्वान्, बुद्धिमान् 3. मशहूर, प्रसिद्ध 4. साहसी, भरोसे का,—दः बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़।

विशाल (वि०) [वि+शाल्च्] 1. विस्तृत, बड़ा, दूर तक फैला हुआ, प्रशस्त, व्यापक, चौड़ा,—गृहैर्विशालैरपि भूरिशालः—शि० ३।५०, ११।२३, रघु० २।२१, ६।३२, भग० ९।२१ 2. समृद्ध, भरपूरा · श्रीविशालां विशालाम्—मेघ० ३० 3. प्रमुख, श्रीमान् महान्, उत्तम, प्रशस्त, लः 1. एक प्रकार का हरिण 2. एक प्रकार का पक्षी, ला 1. उज्जयिनी नगर का नाम पुराणेतिहासमनुसर पुरी श्रीविशालाम्—मेघ० ३० 2. एक नदी का नाम। सम० अक्ष (वि०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला, (—क्षः) शिव का विशेषण (क्षी) पार्वती का विशेषण।

विशिख (वि०) [विगता शिखा यस्य प्रा० ब०] मुकुट रहित, बिना चोटी का, बिना नोक का, - खः 1. बाण, माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना—गीत० ४, रघु० ५।५०, महावी० २।३८ 2. एक प्रकार का नेवला 3. एक लोहे का कौवा।

विशिखा [विशिख + टाप्] 1. फावड़ा 2. नकुवा 3. सुई या पिन 4 बारीक बाण 5. राजमार्ग 6. नाई की पत्नी।

विशित (वि०) [वि+शो+क्त] तीव्र, तीक्ष्ण।

विशिष्यम् [विशि: कर्पण] 1. मन्दिर 2 आवासस्थान, घर।

विशिष्ट (भू० क० कृ०) [वि : शिष्—क्त] 1. विलक्षण, स्वतंत्र 2. विशेष, असामान्य, असाधारण, प्रभेदक 3. विशेषगुणसम्पन्न, लक्षणयुक्त, विशेषणायुक्त, सविशेष 4. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख, उत्कृष्ट, बढ़िया। सम० अद्वैतवादः रामानुज का एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार ब्रह्म और प्रकृति समरूप तथा वास्तविक सत्ता मानी जाती हैं अर्थात् मूलतः दोनों एक ही हैं, —बुद्धिः (स्त्री०) प्रभेदक ज्ञान, प्रभेदीकरण,—वर्ण (वि०) प्रमुख या श्रेष्ठ रंग का।

विशीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+शृ+क्त] 1. छिन्न-भिन्न किया हुआ, तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 3. गिरा हुआ, कु० ५।२८ 4. सिकुड़ा हुआ, संकुचित, या झुर्रियाँ जिसमें पड़ गई हों। सम० पर्णः नीम का पेड़, - मूर्ति (वि०) जिसका शरीर नष्ट हो गया हो, वनय कु० ५।५४, (तिः) काम देव का विशेषण।

विशुद्ध (वि०) [वि+शुध्+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ 2. पवित्र, निर्व्यसन, निष्पाप 3. वेदाग, निष्कलंक 4. सही, यथार्थ 5. सद्गुणी, पुण्यात्मा, ईमानदार, खरा मा० ७।१ 6. निर्दोष।

विशुद्धिः (स्त्री०) [वि+शुध्+क्तिन्] 1. पवित्रीकरण, शुद्धिकरण तदगसंसर्गमवाप्य कल्पते ध्रुवं चितामस्मरजो विशुद्धये कु० ५।७९, भग० ६।१२, मनु० ६।९९, ११।५३ 2. पवित्रता, पूर्णपवित्रता · रघु० १।१०, १२।४८ 3. याथातथ्य, यथार्थता 4. परिष्कार, भूलसुधार 5. समानता, समता।

विशूल (व०) [विगतं शूलं यस्य · प्रा० ब०] बिनाबर्छी, जिसके पास बर्छी न हो · रघु० १५।५।

विशृङ्खल (वि०) [विगता शृङ्खला यस्य—प्रा० ब०] 1. जो शृङ्खला में न बंधा हो (आ०) 2. विशृङ्खलित, अनियंत्रित, अप्रतिबद्ध, निरंकुश, बेरोक—शि० १२।७—भामि० २।१७७ 3. सब प्रकार के नैतिक बंधनों से मुक्त, लम्पट—भर्तृ० २।५९।

विशेष (वि०) [विगतः शेषो यस्मात्—प्रा० ब०] 1. असीम 2. पूर्णतः, प्रचुर · रघु० २।१४, षः 1. विवेचन, विभेदीकरण 2. प्रभेद, अन्तर निर्विशेषो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेषः —भर्तृ० ३।५० 3. विशिष्टतायुक्त अन्तर, अनोखा चिह्न, विशेष गुण, विशे षता, वैशिष्ट्य,प्रायः समास में प्रयुक्त तथा 'विशिष्ट' और 'अजीब' शब्दों से अनूदित श० ६।६ 4. अच्छा मोड़, रोग में मोड़, अर्थात् अपेक्षाकृत अच्छा परिवर्तन —अस्ति मे विशेषः श० 3, अब अपेक्षाकृत अच्छा हूँ 5. अवयव, अंग उपोढ लावण्यमयान् विशेषान् कु० १।२५ 6. जाति, प्रकार, प्रभेद, भेद, अंग (प्रायः समास के अंत में)—भूतविशेषः उत्तर० ४, परिमलविशेषान् पंच० १, कदलीविशेषाः कु० १।३६ 7. विविध उद्देश्य, नाना प्रकार के विवरण (व० व०) मेघ० ५८, ६४ 8. उत्तमता, श्रेष्ठता, भेद, प्रायः समास के अन्त में, उत्तम, पूज्य, प्रमुख, उत्कृष्ट . अनुभावविशेषान् रघु० १।३७, वपुर्विशेषेण कु० ५।३१, रघु० २।७, ६।५, किं० ६।५८, इसी प्रकार आकृति विशेषा. 'उत्तम रूप' अतिथिविशेषः 'पूज्य अतिथि' आदि 9. अनोखा विशेषण, नौ द्रव्यों में से प्रत्येक की शाश्वत विभेदक प्रकृति 10. (तर्क० में) वैयक्तिकता (विप० सामान्य) अनुष्ठान 11. प्रवर्ग, वर्ग 12. मस्तक पर चन्दन या केसर का तिलक 13. वह शब्द जो किसी अन्य शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है, दे० विशेषण 14. ब्रह्मांड का नाम 15. (अलं० में) एक अलंकार का नाम जिसके तीन भेद बताये गये हैं, मम्मट ने इसकी परिभाषा यह दी है:—विना प्रसिद्धाधारमाधेयस्य व्यवस्थितिः, एकःतथा युगपद् वृत्तिरेकस्यानेकगोचरा। अन्यत्रकुर्वतः कार्यमशक्त्याऽन्यस्य वस्तुनः, तथैव करणं चेति विशेषस्त्रिविधः स्मृतः काव्य० १०। सम० अतिदेशः विशेष अतिरिक्त नियम, विशेष विस्तारित प्रयोग, —उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें कारण के विद्यमान रहते हुए भी कार्य का होना नहीं पाया जाता . विशेषोक्तिरखण्डेयं कारणेषु फलावचः काव्य० १०, उदा० हृदि श्लेक्ष्यसि नाभूस्मरशीघ्रं ज्वलय्यपि, —ज्ञ, विद् (वि०) 1. भेदों को जानने वाला, गुणदोषविवेचक, पारखी 2. विद्वान्, बुद्धिमान् भर्तृ० २।३, लक्षणम्,—लिंगम् विशेष या लक्षणदर्शी चिह्न, वचनम् वि पात्र या विधि, विधिः, शास्त्रम् विशेष नियम।

विशेषक (वि०) [वि+शिष्+ण्वुल्] प्रभेदक, कः, कम् 1. एक प्रभेदक विशिष्टता या लक्षण विशेषण 2. चन्दन या केसर का माथे पर लगा तिलक मालवि० ३।५ 3. रंगीन उबटन तथा अन्य सुगंधित पदार्थों से मुख या शरीर पर रेखांकन करना—स्वेदोद्गमः किंपुरुषांगनानां चक्रे पदम् पत्रविशेषकेषु—कु० ३।३३, रघु० ९।२९, शि० ३।६३, १०।१४, कम् तीन श्लोकों का समूह जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य बनता है द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तं त्रिभिः श्लोकैर्विशेषकम्, कलापकं चतुर्भिः स्यात्तदूर्ध्वं कुलकं स्मृतम्।

विशेषण (वि०) [वि+शिष्+ल्युट्] गुणवाचक, णम् 1. विभेदन, विवेचन 2. प्रभेदन, अन्तर 3. वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करता है, गुणवाचक शब्द, गुण, विशेषता, (विप० विशेष्य), (विशेषण तीन प्रकार का बताया जाता है व्यावर्तक, विशेष और हेतुगर्भ) 4. प्रभेदक लक्षण या चिह्न, 5. जाति, प्रकार।

विशेषतस् (अव्य०) [विशेष+तस्] विशेष रूप से, खास तौर से।

विशेषित (भू० क० कृ०) [वि+शिष्+णिच्+क्त] 1. विलक्षण 2. परिभाषित, जिसके विवरण बता दिये गए हों 3. विशेषण के द्वारा जिसकी भिन्नता दर्शा दी गई हो 4. श्रेष्ठ, बढ़िया।

विशेष्य (वि०) [वि+शिष्+ण्यत्] 1. विलक्षण होने के योग्य 2. मुख्य, बढ़िया, ष्यम् वह शब्द जिसे विशेषण के द्वारा सीमित कर दिया गया हो, वह पदार्थ जो किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित, या विशिष्ट कर दिया गया हो, संज्ञाशब्द, विशेष्य निाभिधा गच्छेल्लक्षणशक्तिर्विशेषणे काव्य० २।

विशोक (वि०) [विगतः शोको यस्य प्रा० ब०] शोक से मुक्त, प्रसन्न, कः अशोक वृक्ष,—का शोक से छुटकारा।

विशोधनम् [वि+शुध्+ल्युट्] 1. शुद्ध करना, स्वच्छ करना (अलं० से) —राज्यकंटक विशोधनोद्यतः —विक्रम० ५।१ 2. परिष्कारण, निष्पाप या दोषरहित होना 3. प्रायश्चित्त, परिशोधन।

विशोध्य (वि०) [वि+शुध्+ण्यत्] पवित्र किये जाने के योग्य, निर्मल या शुद्ध किये जाने के योग्य।

विशोषणम् [वि+शुष्+ल्युट्] सुखाना, शुष्कीकरण।

विश्राणनम्, विश्राणनम् [वि+श्रण्+ल्युट्, पक्षे णिच्] प्रदान करना, समर्पण करना, अनुदान, उपहार, दान—विश्राणनाच्चान्यपरायणानाम् रघु० २।५४।

विश्राब्ध (भू० क० कृ०) (विश्रब्ध भी) [वि+श्रम्भ+क्त] 1. श्रद्ध किया गया, विश्वास किया गया, सौंपा गया 2. विस्वस्त, निडर, भरोसा करने वाला मुद्रा० ३।३ 3. विश्वसनीय, भरोसे का 4. निश्चल, सौम्य, शान्त, निश्चिन्त 5. दृढ़, स्थिर 6. नम्र, विनीत 7. अत्याधिक, बहुत ज्यादह, ब्धम् (अव्य०) विश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ, बिना डर व संकोच के विश्रब्धं क्रियतां वराहततिभिः मुस्ताक्षतिः पल्वले —श० २।६।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्रमः [वि+श्रम्+अप्] 1. आराम, विश्रान्ति 2. विराम, विश्राम ।

विश्रम्भः [वि+श्रम्भ्+घञ्] 1. विश्वास, भरोसा, अन्तरंग विश्वास, पूर्ण घनिष्ठता या अन्तरंगता विश्रम्भादुरसि निपत्य लब्धनिद्रां—उत्तर० १।४९, मा० ३।१ 2. गुप्त बात, रहस्य विश्रम्भेरूह्यन्तरीकरणीया का० 3. आराम, विश्राम 4. स्नेहसिक्त परिपृच्छा 5. प्रेम-कलह, प्रीतिविषयक झगड़ा 6. हत्या । सम० **आलापः, भाषणम्** गुप्त वार्तालाप, वार्तालाप, **पात्रम्, भूमिः, स्थानम्** विश्वास करने के योग्य पदार्थ या व्यक्ति, विश्वस्त, विश्वसनीय व्यक्ति ।

विश्रयः [वि+श्रि+अच्] शरण, आश्रयस्थल ।

विश्रवस् (पुं०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, जो कैकसी से उत्पन्न रावण, कुंभकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा का पिता था, कुबेर के एक पुत्र का नाम जो उसकी पत्नी इडाविडा से उत्पन्न हुआ था ।

विश्राणित [भू० क० कृ०] [वि+श्रण्+णिच्+क्त] प्रदान किया गया, अर्पित किया गया निःशेषविश्राणितकोशजातम् रघु० ५।१ ।

विश्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+श्रम्+क्त] 1. बन्द किया हुआ, रोका गया 2. आराम किया हुआ, विश्राम किया हुआ 3. सौम्य, शान्त, स्वस्थ ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) [वि+श्रम्+क्तिन्] 1. आराम, विश्राम 2. रोक, थाम ।

विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] 1. रोक, थाम 2. आराम, चैन विश्रामो हृदयस्य यत्र उत्तर० १।३९ 3. शान्ति, सौम्यता, स्वस्थता ।

विश्रावः [वि+श्रु+घञ्] 1. चूना, टपकना, बहना ('विस्राव' के स्थान में) 2. ख्याति, कीर्ति ।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि+श्रु+क्त] प्रख्यात, लब्धप्रतिष्ठ, यशस्वी, प्रसिद्ध 2. प्रसन्न, आनन्दित, खुश 3. बहता हुआ ।

विश्रुतिः (स्त्री०) [वि+श्रु+क्तिन्] प्रसिद्धि, ख्याति ।

विश्लथ (वि०) [विशेषण शब्दः प्रा० स०] 1. ढीला, शिथिल, खुला हुआ,—रघु० ६।७३ 2. रफूर्तिहीन, निस्तेज ।

विश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+क्त] वियुक्त, पृथक्कृत, अलग अलग किया हुआ रघु० १२।७९ ।

विश्लेषः [वि+श्लिष्+घञ्] 1. अलगाव, वियोजन 2. विशेषतः प्रेमियों अथवा पति-पत्नी का विच्छेद 3. वियोग तनयाविश्लेषदुःखैः शा० ४।५, चरणारविंदविश्लेष—रघु० १३।२३ 4. अभाव, हानि, शोकावस्था 5. दरार, छिद्र ।

विश्लेषित (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+णिच्+क्त] अलग किया हुआ, वियुक्त, जुदा किया हुआ ।

विश्व (सा० वि०) [विश्+क्व] 1. सारा, समस्त, सार्वलौकिक 2. प्रत्येक, हरेक, (पुं० ब० व०) दस देवों का समूह ('यह विश्वा' के पुत्र समझे जाते हैं, इनके नाम हैं वसुः सत्यः क्रतुर्दक्षः कालः कामो धृतिः कुरुः, पुरूरवा माद्रवश्च विश्वेदेवाः प्रकीर्तिताः-

श्वम् 1. सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त संसार इदं विश्वं पाल्यम्- उत्तर० ३।३०, विश्वस्मिन्नधुनान्य- कुलव्रतं पालयिष्यति कः भामि० १।१३ 2. सूखा अदरक, सोंठ । सम० **आत्मन्** (पुं) 1. परमात्मा (विश्व की आत्मा) 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. शिव का विशेषण—अथ विश्वात्मनः गौरी सविदेश मिथः सखीम् कु० ६।१ 4. विष्णु का विशेषण, **-ईशः, ईश्वरः** 1. परमात्मा, विश्व का स्वामी 2. शिव का विशेषण, **कटु** (वि०) दुष्ट, नीच, दुष्टेषु, (द्वः) 1. शिकारी कुत्ता, मायाशुकुक्कुर 2. स्वस्थ, **-कर्मन्** (पुं०) 1. देवों का शिल्पी, त्वष्टृ 2 सूर्य का विशेषण, **-जा, सुता**; सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, **कृत्** (पुं०) 1. सब प्राणियों का स्रष्टा 2. विश्वकर्मा का विशेषण—**केतुः** अनिरुद्ध का विशेषण, **गंधः** प्याज, **(-न्धम्)** लोबान, गुग्गुल, **-गंधा** पृथ्वी, **जनस्** मानवजाति, **जनीन,—जन्य** (वि०) मानवमात्र के लिए हितकर, मनुष्य जाति के उपयुक्त, सब मनुष्यों के लिए लाभकर—भट्टि० २।४८, २१।१७, **जित्** (पुं०) 1. वज्र विशेष का नाम रघु० ५।१ 2. वरुण का पाश, **देव** विश्व (पुं०) के नीचे दे०, **धारिणी** पृथ्वी, **धारिन्** (पुं०) देव नाथः विश्व का स्वामी, शिव का विशेषण, **धा** (पुं०) 1. सब का रक्षक 2. सूर्य 3. चन्द्रमा 4. अग्नि, **-पावनी, पूजिता** तुलसी का पौधा, **पस्** (पुं०) 1. देव 2. सूर्य 3. चन्द्रमा 4. अग्नि का विशेषण **भुज्** (वि० सर्वभोक्ता, सब कुछ खाने वाला (पुं०) इन्द्र का विशेषण, **भेषजम्** सूखा अदरक, सोंठ, **मूर्ति** (वि०) सब रूपों में विद्यमान, सर्वव्यापक, विश्वव्यापी,— सा० १।५, **-योनिः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण, **राज्, राजः** विश्वप्रभु, **रूप** (वि०) सर्वव्यापक, सर्वत्र विद्यमान (पः) विष्णु का विशेषण, (**पम्**) अगर को लकड़ी, **-रेतस्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, **वाह** (वि०) (स्त्री० विश्ववाही) सब कुछ ढोने वाला, सब का भरण पोषण करने वाला, **सहा** पृथ्वी, **सृज्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, स्रष्टा प्रायेण सामग्रयविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः- कु० ३।२८, १।४९ ।

विश्वंकरः [विश्वं सर्वं करोति प्रकाशयति कृ+ट, द्वितीयायाः अलुक्] आंख, (कुछ के अनुसार—नपुं०) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्वतस् (अव्य०) [विश्व+तसिल्] सब ओर, सर्वत्र, सब जगह भाभि० १।३०। सम० **मुख** (वि०) सब ओर मुख किये हुए -भग० ९।१५।

विश्वधा (अव्य०) [विश्व+धाल्] सर्वत्र, सब जगह।

विश्वंभर (वि०) [विश्वं बिभर्ति विश्व+भृ+खच्, मुम्] सब का भरणपोषण करने वाला, रः 1. सर्व व्यापक प्राणी, परमात्मा 2. विष्णु का विशेषण 3. इन्द्र का विशेषण, रा पृथ्वी -विश्वंभरा भगवती भवतीमसूत उत्तर० १।९, विश्वंभराप्यतिलघुर्नरनाथ तवातिके नियतम् -काव्य० १०।

विश्वसनीय (सं० कृ०) [वि+श्वस्+अनीयर्] 1. विश्वास किये जाने के योग्य, विश्वासपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके 2. विश्वास उत्पन्न करने के योग्य शा० २, मालवि० ३।२।

विश्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+श्वस्+क्त] 1. जिस पर विश्वास किया गया है, निष्ठ, जिस पर भरोसा किया गया है 2. विश्वास करने वाला, भरोसा करने वाला 3. निडर, विश्वस्त 4. विश्वास के योग्य, जिस पर भरोसा किया जा सके।

विश्वाधायस् (पुं०) [विश्वं दधाति पालयति -विश्व+धा+असुन्, पूर्वदीर्घः] देव, सुर।

विश्वानरः [विश्व+नरः, पूर्वपददीर्घः] सविता का विशेषण।

विश्वामित्रः [विश्वं+मित्रः, विश्वमेव मित्रं यस्य ब० स०, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक विख्यात ऋषि का नाम। यह कान्यकुब्ज का राजा होने के कारण क्षत्रिय था, इसके पिता का नाम गाधि था। एक बार यह मृगया के लिए घूमता-घूमता वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ अनेक गौओं को देख कर उसने अनंत धन राशि देकर भी उनको लेना चाहा और न मिलने पर बलात् उनको छीनने का प्रयत्न किया। इस बात पर एक महान् संघर्ष हुआ, और राजा विश्वामित्र पूर्ण-रूप से परास्त हो गया। इस पराजय से विश्वामित्र अत्यंत क्षुब्ध हुआ और साथ ही वसिष्ठ के ब्राह्मणत्व की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या करता रहा। यहाँ तक कि बाद में उसे क्रमशः राजर्षि, ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली, परन्तु उसे सन्तोष न हुआ क्योंकि वसिष्ठ ने अपने मुख से उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहा। विश्वामित्र हजारों वर्ष तपस्या करता रहा, तब कहीं जाकर वसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहा। विश्वामित्र ने कई बार वसिष्ठ को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया, उदाहरणतः वसिष्ठ के सौ पुत्रों को विश्वामित्र ने मौत के घाट उतार दिया, परन्तु वसिष्ठ तब भी नहीं घबराया। अन्तिमरूप से ब्रह्मर्षि बनने से पहले विश्वामित्र की शक्ति बहुत अधिक थी, उदाहरणतः उसने त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने, इन्द्र के हाथ से शुनःशेपकी रक्षा करने तथा ब्रह्मा की भाँति पुनः सृष्टि की रचना करने में अत्यधिक बल का प्रदर्शन किया। यह बालक राम का साथी और परामर्श दाता था, इसने राम को अनेक आश्चर्य जनक अस्त्र प्रदान किये)।

विश्वावसुः [विश्वं+वसुः, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक गन्धर्व का नाम।

विश्वासः [वि+श्वस्+घञ्] 1. भरोसा, प्रत्यय, निष्ठा, विश्रम्भ,—दुर्जनः प्रियवादीति नैतद्विश्वासकारणम् -श० १।१४, रघु० १।५१, हि० ४।१०३ 2. भेद, रहस्य, गोपनीय समाचार। सम० **घातः, भंगः** विश्वास को तोड़ देना, धोखा देही, द्रोह, **घातिन्** (पुं०) धोखा देने वाला मनुष्य, द्रोही, **पात्रम्, भूमिः, स्थानम्** भरोसे की वस्तु, विश्वसनीय या भरोसे का मनुष्य, विश्वासी पुरुष।

विष् i (जुहो० उभ० वेषेष्टि, वेविष्टे, विष्ट) 1. घेरना 2. फैलाना, विस्तार करना, व्यापक होना 3. सामने जाना, मुकाबला करना (परिनिष्ठित संस्कृत में इसका प्रयोग बहुधा नहीं होता)।

ii (क्र्या० पर० विष्णाति) वियुक्त करना, अलग-अलग करना।

iii (भ्वा० पर० वेषति) छिड़कना, उड़ेलना।

विष् (स्त्री०) [विष्+क्विप्] 1. मल, विष्ठा, लीद 2. फैलाना, प्रसारण 3. लड़की जैसा कि 'विट्पति' में। सम०—**कारिका** (विट्कारिका) एक प्रकार का पक्षी, **ग्रहः** (विड्ग्रहः) कोष्ठबद्धता, कब्ज, —**चरः, वराहः** (विट्चरः, विड्वराहः) पालतू या गाँव का सुअर,—**लवणम्** (विड्लवणम्) एक प्रकार का औषधियों में प्रयुक्त होने वाला नमक, **सङ्गः** (विट्सङ्गः) कोष्ठबद्धता, कब्ज,—**सारिका** (विट्सारिका) एक प्रकार का पक्षी, मैना।

विषम् [विष्+क] 1. जहर, हलाहल (इस अर्थ में 'पुं०' भी कहा जाता है) -विषं भवतु सा भूद्वा फटाटोपो भयङ्करः—पंच० १।२०४ 2. जल, विषं जलघरैः पीतं मूर्छिता: पथिकाङ्गनाः -चन्द्रा० ५।८२, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत है) 3. कमलडण्डी के तन्तु या रेशे 4. लोबान, एक सुगन्धित द्रव्य का गोंद, रस-गन्ध। सम० **अक्त,—विग्ध** (वि०) विषैला, जहरीला, -**अंकुरः** 1. बर्छी 2. विष में बुझा तीर,—**अंतकः** शिव का विशेषण,—**अघ्नः,—घ्न** (वि०) विषनाशक, विषनिवारक औषधि, **आतनः,—आयुधः, आस्यः,** सर्पि,—**आस्रावः** (वि०) जहर उगलने वाला, **कुम्भः** जहर से भरा हुआ घड़ा,—**क्रीडिः** जहर में पला हुआ कीड़ा, -**न्यायः** दे० न्याय के अन्तर्गत,—**ज्वरः** भैंसा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--दः बादल (वम्) तूतिया, -दन्तकः साँप, -दर्शन-मृत्युकः, -मृत्युः एक पक्षी (इसे चकोर कहते हैं), --धरः साँप—भामि० १।७४, °निलयः निम्नतर प्रदेश, साँपों का बिल, -पुष्पम् नील कमल,- प्रयोगः जहर का इस्तेमाल, जहर देना,—भिषज्,- वैद्यः विषनाशक औषधियों का चिकित्सक, साँपों के काटने की चिकित्सा करने वाला—संप्रति विषवैद्यानां कर्म-मालवि० ४,--मन्त्रः 1. साँप के काटे का विष उतारने का मन्त्र 2. सपेरा, बाजीगर,- वृक्षः जहरीला पेड़, विषबुझीऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्—कु० २।५५, °न्याय न्याय के नीचे देखो,—वेगः जहर का संचार या प्रभाव,—शालूकः कमल की जड़, -शूकः,—शृङ्गिन्, सूकन् (पुं०) भिड़, ततैया, —हृदय (वि०) विषाक्त दिलवाला अर्थात् दुष्टहृदय, मलिनात्मा।

विषक्त (भू० क० कृ०) [वि+सञ्ज्+क्त] 1. दृढ़ता-पूर्वक जमा हुआ, सटा हुआ 2. चिपटा हुआ, चिपका हुआ।

विषण्डम् [विशेषेण षंडम्—प्रा० स०] कमलडण्डी के तन्तु या रेशे।

विषण्ण (भू० क० कृ०) [वि+सद्+क्त] खिन्न, मूह लटकाये हुए, उदास, दुःखी, निरुत्साह, हताश। सम०—मुख, वदन (वि०) उदास दिखाई देने वाला, —रूप (वि०) उदासी की अवस्था में पड़ा हुआ।

विषम (वि०) [विगतो विरुद्धो वा समः—प्रा० स०] 1. जो सम या समान न हो, खुरदरा, ऊबड़-खाबड़ -पथिषु विषमेष्वप्यचलता मुद्रा० ३।३, पञ्चत० १६४, मेघ० १९ 2. अनियमित, असमान—मा० ९।४३ 3. उच्चा-वच, असम 4. कठिन, समझने में दुष्कर, आश्चर्य-जनक कि० २।३ 5. अगम्य, दुर्गम--कि० २।३ 6. मोटा, स्थूल 7. तिरछा मा० ४।२ 8. पीड़ाकर, कष्टदायक—भर्तृ० ३।१०५ 9. बहुत मजबूत, उत्कट —मा० ३।९ 10. खतरनाक, भयानक मुच्छ० ८।१, २७ मुद्रा० १।१८, २।२० 11. बुरा, प्रतिकूल, विपरीत-- पञ्च० ४।१६ 12. अजीब, अनोखा, अनु-पम 13. बेईमान, कैलापूर्ण, नम् 1. असमता 2. अनोखापन 3. दुर्गम स्थान, चट्टान, गड्ढा आदि 4. कठिन या खतरनाक स्थिति, कठिनाई, दुर्भाग्य, सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा-कृतानि भर्तृ० २।९७, भग० २।२ 5. एक अलंकार का नाम जिसमें कार्य कारण के बीच में कोई अनोखा या अशटनीय संबंध दर्शाया जाता है· यह चार प्रकार का माना जाता है --दे० काव्य०, का० १२६ व १२७, -मः विष्णु का नाम। सम० अक्षः, —ईक्षणः, -नयनः,- नेत्रः,- लोचनः शिव के विशेषण, -अन्नम् अनोखा या अनियमित आहार आयुधः,—इषुः, शरः कामदेव के विशेषण, -कालः अननुकूल ऋतु, चतुरस्रः, चतुर्भुजः विषम कोण वाला चतुष्कोण, छदः सप्तपर्ण नाम का पेड़, ज्वरः कभी कम तथा कभी अधिक होने वाला बुखार, लक्ष्मीः दुर्भाग्य, विभागः सम्पत्ति का असमान वितरण,- स्थ (वि०) 1. दुर्गम स्थिति में होने वाला 2. कठिनाई में रहने वाला, अभागा।

विषमित (वि०) [विषम+इतच्] 1. ऊबड़-खाबड़ किया हुआ, असम, कुटिल 2. सिकुड़न वाला, त्योरीदार 3. कठिन या दुर्गम बनाया गया।

विषय: [विषिणक्ति स्वात्मकतया विषयिणं संधत्ते—वि+सि+अच्, पत्वम्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त पदार्थ (यह पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के अनुरूप गिनती में पाँच हैं रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द जिनका संबंध क्रमशः आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है),— श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् --श० १।१ 2. लौकिक पदार्थ, या वस्तु, मामला, लेन-देन 3. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त आनन्द, लौकिक या मैथुनसंबन्धी उपभोग, वासनात्मक पदार्थ (प्रायः ब० व० में), यौवने विषयैषिणाम् --रघु० १।८, निर्विष्ट विषयस्नेहः--१२।१, ३।७०, ८।१०, १९।४९, विक्रम० १।९, भग० २।५९ 4. पदार्थ, वस्तु, मामला, बात —हार्यो न जन्मविषयान्तराणि— रघु० ७।१२, ८।८१ 5. उद्दिष्ट पदार्थ या वस्तु, चिह्न, निशान भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः शि० १।२१, शि० ९।४० 6. कार्यक्षेत्र, घेरा, पहुँच, परिधि सौमित्रेरपि पत्रिणामविषये तत्र त्रिये वस्तुनि भो: उत्तर० ३।४५, सकलजनतानामविषयः- मा० १।३०, ३६, उत्तर० ५।१९, कु० ६।१७ 7. विभाग, क्षेत्र, प्रान्त, भूमि, तत्रैव सकलौदरिकस्याभ्यवहार्यमेव विषयः विक्रम० ३ 8. विषयवस्तु, आलोच्य विषय, प्रसंग, -भामि० १।१०. इसी प्रकार 'शृङ्गारविषयिकः ग्रन्थः' ऐसी पुस्तक जिसमें प्रीतिविषयक बातों का उल्लेख हो 9. व्याख्येय प्रसंग या विषय, शीर्षक, अधिकरण के पाँचों अंगों में से पहला 10. स्थान, जगह —परिसरविषयेषु लोडयमुस्ताः कि० ५।३९ 11. देश, राष्ट्र, राज्य, प्रदेश, मंडल, साम्राज्य 12. शरण, आश्रय 13. वामों का समूह 14. प्रेमी, पति 15. वीर्य, शुक्र 16. यौगिक अनुष्ठान (विषय की बाबत, के विषय में, के संबंध में, इस मामले में के बारे में, बाबत —या तवास्ते युक्तिविषये सृष्टिरा-धेव धातुः- मेघ० ८२, स्त्रीणां विषये, धनविषये आदि)। सम० अभिरतिः 1. सांसारिक विषय वासनाओं में आसक्ति कि० ६।४४, इसी प्रकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिलाषः–कि० ३।१३, –**आत्मक** (वि०) सांसारिक पदार्थों से युक्त, **आसक्त**,– **निरत** (वि०) विषयवासनाओं में लिप्त, विषयी, विलासी, इन्द्रियासक्त,– **आसक्ति उपसेवा, निरतिः** (स्त्री०), –**प्रसंगः** भोगविलास, कामासक्ति, **ग्रामः** उन पदार्थों का समूह जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाने जाते हैं,–**ग्रसम्** इन्द्रियासक्ति, विषयोपभोग ।

विषयायिन् (पुं०) [विषयान् अयते प्राप्नोति विषय+अय्+णिनि] 1. इन्द्रियसुखों में लिप्त, भोगविलासी 2. संसार के कार्यों में लिप्त मनुष्य 3. कामदेव 4. राजा 5. ज्ञानेन्द्रिय 6. भौतिकवादी ।

विषयिन् (वि०) [विषय+इनि] इन्द्रियसुखसंबंधी, शारीरिक, पुं० 1. सांसारिक पुरुष, विषयी, दुनियादार आदमी 2. राजा 3. कामदेव 4. भोगविलासी, लंपट पंच० १।१४६, श० ५, नपुं० 1. ज्ञानेन्द्रिय 2. ज्ञान ।

विषलः (पुं०) जहर, हलाहल ।

विषह्य (वि०) [वि+सह्+यत्] 1. सहन करने के योग्य, जो बर्दाश्त किया जा सके अविषह्यव्यसनेन धूमितम् · कु० ४।३०, रघु० ६।४७ 2. जो बसाया जा सके जो निर्धारित किया जा सके मनु० ८।२६५, संभव, शक्य ।

विषा [विष्+अच्+टाप्] 1. विष्ठा, मल 2. प्रतिभा, समझ ।

विषाणः, –णम्, णी [विष्+कानच्, स्त्रियां ङीप्] 1. सींग साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः· भर्तृ० २।१२, कदाचिदपि पर्यटन्शशविषाणमास्वादयेत् –२।५ 2. हाथी या सूअर के दांत–तप्तानासुपदग्धिरे विषाणभिन्नाः प्रह्लाद सुरकरिणां घनाः झरन्तः · कि० ७।२३, शि० १।६० ।

विषाणिन् (वि०) [विषाण+इनि] सींगों वाला या दांतों वाला, · पुं० 1. वह जानवर जिसके सींग हों या दांत बाहर निकले हों 2. हाथी शि० ४।६३, १२।७७ 3. सांड ।

विषादः [वि–सद्+घञ्] 1. खिन्नता, उदासी, उत्साहहीनता, रंज, शोक मद्वाणि मा कुरु विषादम् · भामि० ४।४१ विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।३५, रघु० ८।५४ 2. निराशा, हताशा, नैराश्य, विषादलुप्तप्रतिपत्तिसैन्यम्—रघु० २।४० (विषादश्चेतसो भंग उपायाभावनाशयोः) 3. थकान, म्लान अवस्था,– मा० २।५ 4. मन्दता, जड़ता, संज्ञाहीनता ।

विषादिन् (वि०) [विषाद+इनि] 1. खिन्न, उद्विग्न 2. उदास, विषण्ण ।

विषारः [विष+ऋ+अच्] साँप ।

विषालु (वि०) [विष+आलुच्] विषैला, जहरीला ।

विषु (अव्य०) [विष्+कु] 1. दो समान भागों में, समान रूप से 2. भिन्नतापूर्वक, विविध प्रकार से 3. समान, सदृश ।

विषुवम् [विषु+पा+क] दो स्थलबिन्दु जहां पर सूर्य विषुवत् रेखा को पार करता है ।

विषुवत् [विषु+वा+क] मेषराशि या तुलाराशि का प्रथम बिन्दु जिसमें सूर्य शारदीय या आह्निक विषुव में प्रविष्ट होता है, विषुवीय बिन्दु । **सम०**—**छाया** मध्याह्नकाल में ध्रुवघड़ी के शंकु की छाया,– **दिनम्** विषुवीय दिन, **रेखा** विषुवीय रेखा,–**संक्रान्तिः** (स्त्री०) सूर्य का विषुवीय मार्ग ।

विषूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, पत्वम्, इत्वम्] हैजा ।

विष्क् (चुरा० उभ० विष्कयति ते) 1. वध करना, चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना (इस अर्थ में केवल आत्मनेपदी) 2. देखना, प्रत्यक्ष करना ।

विष्कन्दः [वि+स्कन्द्+अच्, पत्वम्] 1. तितरबितर होना 2. जाना, गमन ।

विष्कम्भः [वि+स्कंभ्+अच्] 1. अवरोध, रुकावट, बाधा 2. दरवाजे की सांकल, चटकनी 3. घर में लगा शहतीर 4. धुरी, खंभ 5. वृक्ष 6. (नाटकों में) नाटकों के अंकों के मध्य में मध्यरंग का दृश्य जो दो मध्यम या निम्नवर्ग के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, तथा जिसमें श्रोताओं के सामने अंकों के अन्तराल में तथा बाद में होने वाली घटनाओं को संक्षेप में कह कर नाटक की कथावस्तु के अवान्तर भागों को नाटक की मुख्य कथा से संबन्ध स्थापित कर दिया जाता है । साहित्यदर्पण में इसकी निम्नांकित परिभाषा दी गई है वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः । संक्षिप्तार्थस्तु विष्कंभः आद्यावंकस्य दर्शितः । मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां संप्रयोजितः । शुद्धः स्यात् स तु संकीर्णो नीचमध्यमकल्पितः–३।८८ 7. वृत्त का व्यास 8. योगियों की विशेष मुद्रा 9. विस्तार, लम्बाई ।

विष्कंभक दे० विष्कंभ ।

विष्कंभित (वि०) [विष्कंभ+इतच्] बाधायुक्त, अवरुद्ध ।

विष्कंभिन् (पुं०) [विष्कंभ्+इनि] द्वार की अर्गला, सांकल या चटखनी ।

विष्किरः [वि+कृ+क, सुट्, षत्वम्] 1. इधर उधर बखेरना, फाड़ डालना 2. मुर्गा 3. पक्षी, तीतर की जाति का पक्षी–छायापस्किरमाणविष्किरमुखव्याकृष्टकीटस्रजः उत्तर० २।९ ।

विष्टपः, –पम् [विष्+कपन्, तु] संसार, भुवन–कुं०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३।२०, तु० त्रिविष्टप । सम० –हारिन् (वि०) जो संसार को प्रसन्न करता है भर्तृ० २।२५ ।

विष्ठब्ध (भू० क० कृ०) [वि+स्तंभ्+क्त] 1. पक्का जमाया हुआ, भली भांति आश्रित 2. टेक लगा हुआ, सहारा दिया हुआ 3. अवरुद्ध, संबाध 4. लकवा के रोग से ग्रस्त, गतिहीन ।

विष्टंभः [वि+स्तंभ्+घञ्] 1. पक्की तरह से जमाना 2. अवरोध, रुकावट, बाधा 3. मूत्रावरोध, मलावरोध कोष्ठबद्धता 4. लकवा 5. ठहरना, टिकाव ।

विष्टरः [वि+स्तृ+अप्, पत्वम्] 1. आसन, (स्थूल, कुर्सी आदि) –रघु० ८।१८ 2. तह, परत, बिस्तरा (कुश आदि घास का) 3. मुट्ठीभर कुशाघास 4. यज्ञ में ब्रह्मा का आसन 5. वृक्ष । सम० –भाज् (वि०) आसन पर बैठा हुआ, आसन पर विराजमान—कु० ७।७२, –श्रवस् (पुं०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण –शि० १४।१२ ।

विष्टिः (स्त्री०) [विष्+क्तिन्] 1. व्याप्ति 2. कर्म, व्यवसाय 3. भाड़ा, मजदूरी 4. बेगार 5. प्रेषण 6. नरकवास ।

विष्ठलम् [विडूरं स्थलम् प्रा० स०] दूरवर्ती स्थान, फासले पर स्थित ।

विष्ठा [वि+स्था+क+टाप्, षत्वम्] 1. मल, लीद, पाखाना, –मनु० ३।१८०, १०।९१ 2. पेट ।

विष्णुः [विष्+नुक्] देवत्रयी में दूसरा, जिसकी संसार का पालनपोषण सौंपा गया है, (इस कर्तव्य को भिन्न भिन्न अवतार धारण करके संपन्न किया जाता है, अवतारों के विवरण के लिए दे० अवतार) इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है यस्माद्विश्वमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः, तस्मादेवोच्यते विष्णु-विष्णुधातोः प्रवेशनात्— 2. अग्नि 3. पुण्यात्मा 4. विष्णु-स्मृति के प्रणेता । सम० कांची एक नगर का नाम, –क्रमः विष्णु के पग, गुप्तः चाणक्य का नाम, –तैलम् एक प्रकार औषधियों से बनाया गया तेल, –देवत्या प्रत्येक पक्ष (चान्द्रमास के) की एकादशी और द्वादशी, –पदम् 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. क्षीर-सागर 3. कमल, पदी गंगा का विशेषण,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, प्रीतिः (स्त्री०) विष्णुपूजा को स्थापित रखने के लिये ब्राह्मणों को अनुदान के रूप में दी गई शुल्क से मुक्त भूमि, –रथः गरुड़ का विशेषण, रिंगी बटेर, लवा, –लोकः विष्णु का संसार,—वल्लभा 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. तुलसी का पौधा, –वाहनः, वाह्यः गरुड़ के विशेषण ।

विष्पन्दः [वि+स्पन्द+घञ्] फड़कन, स्पन्दन, धक-धक होना।

विष्फारः [वि+स्फुर+णिच्, उकारस्य आत्वम्] 1. धनुष की टंकार 2. फरफराहट ।

विष्य (वि०) [विशेषेण वध्यः—विष+यत्] विष देकर मारे जाने योग्य, जिसको जहर देकर मार दिया जाय ।

विष्यन्दः [वि+स्यन्द्+घञ्] बहना, टपकना ।

विष्व (वि०) पीठाकर, क्षतिकर, उत्पातकारी ।

विष्वच्, विष्वञ्च् (वि०) [विषूम् अञ्चति विषु+अंच् क्विन्] (कर्तृ०, ए० व० पुं० विष्वङ्, स्त्री० विषूची, नपुं० विष्वक्) 1. सर्वत्र जाने वाला, सर्वव्यापक,—विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि —उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 2. भावों में अलग अलग करने वाला 3. भिन्न, (विष्वक् शब्द किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इस का अर्थ है 'सर्वत्र' 'सब ओर' 'चारों तरफ' कि० १५।५९, पञ्च० २।२, मा० ५।४, ९।२५) । सम० –सेनः (विष्वक्सेनः, या विष्वक्सेणः) विष्णु का विशेषण साम्यमाप कमलासखविष्वक्सेनसेवितयुगान्त-पयोधेः—शि० १०।५५, विष्वक्सेनः स्वतनुसविशरसर्वं लोकप्रतिष्ठाम् रघु० १५।१०३, –प्रिया लक्ष्मी का नाम ।

विष्वयनम्, विष्वायः [वि+स्वन्+ल्युट्, घञ् वा, षत्वणत्वे] भोजन करना, खाना ।

विष्वग्रूप (द्वय) च् (वि०) (स्त्री० विष्वग्रूची) [विष्वच्+अञ्च्+क्विन् अदि आदेशः] सर्वग, सर्वव्यापक, विष्वग्रूचीविक्षिपन् सैन्यरीचीः—शि० १८।२५, विष्वग्रूच्या भुवनमभितो भासते यस्य भासा भामि० ४।१८ ।

विस् I (दिवा० पर० विस्यति) डालना, फेंकना, भेजना ।

II (भ्वा० पर० वेसति) जाना, हिलना-जुलना ।

विस् दे० 'बिस' ।

विसंयुक्त (भू० क० कृ०) [वि+सम्+युज्+क्त] अलग-अलग किया हुआ, पृथक् पृथक् किया हुआ ।

विसंयोगः [वि+सम्+युज्+घञ्] अलग-अलग होना, बिछोह, वियोग ।

विसंवादः [वि+सम्+वद्+घञ्] 1. धोखा, प्रतिज्ञा भंग करना, निराशा 2. असंगति, असंबद्धता, असहमति 3. वचनविरोध ।

विसंवादिन् (वि०) [विसंवाद+इनि] 1. निराश करने वाला, धोखा देने वाला 2. असंगत, विरोधात्मक 3. भिन्न मत रखने वाला, असहमत—रघु० १२।९७ 4. जालसाज, धूर्त, मक्कार ।

विसंष्ठुल (वि०) [वि+सम्+स्था+उलच्] 1. अस्थिर, विशृङ्खल 2. असम ।

विसंकट (वि०) [विशिष्टः संकटो यस्मात्—प्रा० ब०]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भयानक, डरावना—मा० ५।१३—तु० विशंकट, —टः 1. सिंह 2. इंगुदी का वृक्ष ।

विसंगत (वि०) [वि ॰सम् ॰गम् +क्त] अयोग्य, असम्बद्ध, बेमेल ।

विसंधिः [विरुद्धः सन्धि,- प्रा० स०] अनभिमत सन्धि या सन्धि का अभाव [यह साहित्यरचना में एक दोष माना जाता है] दे० काव्य० ७ ।

विसरः [वि+सृ+घञ्] 1. जाना 2. फैलाना, विस्तार करना 3. भीड़, समुच्चय, रेवड़, लहण्डा 4. बड़ी राशि, ढेर मा० १।३७ ।

विसर्गः [वि+सृज्+घञ्] 1. भेंट देना, उद्गार 2. गिराना, उंडेलना, बूंद-बूंद करके गिराना रघु० १६।३८ 3. डालना, फेंकना 4. प्रदान करना, भेंट, दान —आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, (यहाँ शब्द का अर्थ 'उंडेलना' भी है) 5. भेज देना, विसर्जन 6. परित्याग, छोड़ देना 7. उत्सर्जन, मलत्याग जैसा कि 'पुरीष विसर्ग' में 8. जुदाई, वियोग 9. मोक्ष 10. प्रकाश, ज्योति 11. लिखने में एक प्रतीक, जो स्पष्ट रूप से महाप्राण है तथा दो बिन्दु (:) लगा कर प्रकट किया जाता है 12. सूर्य का दक्षिणायन 13. लिङ्ग, शिश्न ।

विसर्जनम् [वि+सृज्+ल्युट्] 1. उद्गार, प्रेषण, उंडेलना—समतया वसुवृष्टिविसर्जनैः—रघु० ९।६ 2. प्रदान करना, भेंट, दान रघु० ९।६ 3. मलत्याग, मनु० ४।४८ 4. डाल देना, त्याग देना, परित्याग करना—रघु० ८।२५ 5. भेज देना, विदा करना, 6. (देवता को) विदा करना (विप० आवाहन) 7. किसी विशेष अवसर पर साँड को छोड़ देना ।

विसर्जनीय (वि०) [वि+सृज्+अनीयर्] परित्यक्त किये जाने के योग्य, ॰यः ॰विसर्ग (:) दे० ।

विसर्जित (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+णिच्+क्त] 1. उद्गीर्ण, उगला गया 2. प्रदत्त 3. छोड़ा गया, त्याग दिया गया, परित्यक्त 4. भेजा गया, प्रेषित 5. विदा किया गया, तितर-बितर किया गया ।

विसर्पः [वि+सृप्+घञ्] 1. रेंगना, सरकना 2. इधर से उधर आना और जाना 3. फैलाव, संचार—उत्तर० १।३५ 4. किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनवेक्षित फल 5. एक प्रकार का रोग, सूजी खुजली । सम० —जनम् मोम ।

विसर्पणम् [वि+सृप्+ल्युट्] 1. रेंगना, सरकना, शनैः शनैः चलना 2. प्रसारण, फैलाव, विस्तारण ।

विसर्पिः, विसर्पिका दे० उ० विसर्प (5) ।

विसल दे० 'बिसल' ।

विसारः [वि+सृ+घञ्] 1. फैलाना, बिछाना, प्रसारण 2. रेंगना, सरकना 3. मछली,—रम् 1. लकड़ी 2. शहतीर ।

विसारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [वि+सृ+णिनि] 1. फैलाने वाला, प्रसार करने वाला 2. रेंगने वाला, सरकने वाला, पुं० मछली ।

बिसिनी दे० 'बिसिनी' ।

बिसिल दे० 'बिसिल' ।

विसूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] हैजा ।

विसूरणम्,-णा [वि+सूर्+ल्युट्] दुःख, शोक ।

विसूरितम् [वि+सूर्+क्त] पश्चात्ताप, दुःख, -ता बुखार, ज्वर ।

विसृत (भू० क० कृ०) [वि+सृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, विस्तृत किया हुआ, प्रसारित किया हुआ 2. विस्तारित, ताना हुआ 3. कहा हुआ ।

विसृत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [वि+सृ+क्वरप्, तुक्] 1. इधर उधर फैलने वाला, व्याप्त होने वाला ॰विसृत्वरैरंबुहृतां रजोभिः-शि० ३।११ 2. रेंगना, सरकना ।

विसृमर (वि०) [वि+सृ+क्मरच्] 1. रेंगने वाला, सरकने वाला, शनैः शनैः चलने वाला-विसृमरहेषितहयः—वेणी० ४ ।

विसृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+क्त] 1. उद्गीर्ण, उगला हुआ 2. उत्पन्न, निःसृत 3. झलकाया हुआ, टपकाया हुआ 4. भेजा हुआ, प्रेषित—रघु० ५।३९ 5. विदा किया गया, जाने दिया गया, कार्यभार से मुक्त किया गया—रघु० २।९ 6. निकाल बाहर किया गया, फेंका गया 7. दिया गया, प्रदत्त, स्वीकृतप्रामेष्वात्मविसृष्टेषु रघु० १।४४ 8. परित्यक्त, उन्मुक्त, हटाया गया (दे० वि पूर्वक सृज्) ।

विस्त दे० 'बिस्त' ।

विस्तरः [वि+स्तृ+अप्] 1. विस्तार, फैलाव 2. सूक्ष्म विवरण, ब्यौरेवार वर्णन, सूक्ष्म ब्यौरे ॰संक्षिप्तस्यापीतरेऽर्थेव वाक्यस्यार्थगरीयसः, सुविस्तरतरा वाचो भाष्यभूताः भवंतु मे शि० २।२४ (**विस्तरेण विस्तरतः, विस्तरशः** ब्यौरेवार, विस्तारपूर्वक, पूरी तरह से, सूक्ष्म विवरण सहित, पूरी विशेषताओं के साथ,-अंगुलिमुद्राधिगमं विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि-मुद्रा० १, भग० १०।१८) 3. सुविस्तरता, प्रसार—अलं विस्तरेण 4. बहुतायत, परिमाण, समुच्चय, संख्या 5. बिस्तरा, तह, स्तर 6. आसन, तिपाई ।

विस्तारः [वि+स्तृ+घञ्] 1. फैलाव, विस्तृति, प्रसारण—प्रांतविस्तारभाजम्—मा० १।२७ 2. आयाम, चौड़ाई —विलोकयंत्यो बपुरायुरुद्यणं प्रकामविस्तारफलं हरिण्यः रघु० २।११, भग० १३।३० 3. फैलाव, विपुलता, विशालता—मध्यः श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपांडुः -मेघ० १८ 4. विवरण, पूरा ब्यौरा कण्डोऽपि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तावच्छ्रुतविस्तारः क्रियताम्—श०७ 5. वृत्त का व्यास 6. झाड़ी 7. नूतन पल्लवों से युक्त पेड़ की शाखा।

विस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. बिछाया गया, फैलाया गया, विस्तार किया गया 2. चौड़ा, विस्तृत 3. विशाल, बड़ा, विस्तारयुक्त। सम०—पर्णम् एक प्रकार की जड़, मानक।

विस्तृत (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. प्रसारित, फैलाया गया, विस्तारयुक्त 2. चौड़ा, फैला हुआ 3. विपुल 4. सुविस्तर, लंबा-चौड़ा।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि+स्तृ+क्तिन्] 1. विस्तार, फैलाव 2. चौड़ाई, फासला, विशालता 3. वृत्त का व्यास।

विस्पष्ट (वि०) [विशेषेण स्पष्टः-प्रा० स०] 1. सीधा, साफ, सुबोध 2. प्रकट, स्फुट, सुव्यक्त, खुला, प्रत्यक्ष।

विस्फारः [वि+स्फुर्+घञ्, उकारस्य आकारः] 1. धरधराहट, कम्पन, फड़कन 2. धनुष की टंकार।

विस्फारित (भू० क० कृ०) [विस्फार+इतच्] 1. थरथरी पैदा की गई 2. कम्पमान, थरथराता हुआ 3. टंकारयुक्त 4. विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ 5. प्रकटित, प्रदर्शित।

विस्फुरितः (भू० क० कृ०) [वि+स्फुर्+क्त] 1. थरथराने वाला, काँपने वाला 2. सूजा हुआ, विस्तारित।

विस्फुलिंगः [वि+स्फुर्+डु=विस्फु तादृशं लिंगमस्ति अस्य] 1. आग की चिनगारी अग्नेर्ज्वलतो विस्फुलिंगा विप्रतिष्ठेरन्—शारी० 2. एक प्रकार का विष।

विस्फूर्जथुः [वि+स्फूर्ज्+अथुच्] 1. दहाड़ना, गरजना, कड़कना 2. बादल की गरज, बिजली की कड़क 3. बिजली जैसी कड़क, अकस्मात् आभास या आघात—मर्मैव जन्मांतरपातकानां विषाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः—रघु० १४।६२ 4. (लहरों का) आन्दोलित होना, लहरों का उठना—महीमिवविस्फूर्जथुनिधिशोषाः—रघु० १३।१२।

विस्फूर्जितम् [वि+स्फूर्ज्+क्त] 1. दहाड़, चीत्कार 2. लुढ़कना 3. फल, परिणाम भर्तृ० २।१२५, ३। १४८।

विस्फोटः,—टा [वि+स्फुट्+घञ्] 1. फोड़ा, अर्बुद, रसौली 2. शीतला, चेचक।

विस्मयः [वि+स्मि+अच्] 1. आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा, अचरज—पुरुषः प्रबभूवाग्नेर्विस्मयेन सहस्रिधाम्—रघु० १०।५१ 2. आश्चर्य या अचम्भे की भावना, जिससे अद्भुत रस की निष्पत्ति होती है, सा० द० २०७ पर इसकी परिभाषा दी गई है: विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु, विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः 3. घमंड, अभिमान,—तपः क्षरति विस्मयात्—मनु० ४।२३७ 4. अनिश्चय, सन्देह। सम०—आकुल, आविष्ट (वि) आश्चर्ययुक्त, अचरज से भरा हुआ।

विस्मयंगम (वि०) [विस्मयं गच्छति-विस्मय+गम्+खश्, मुम्] अचरज से भरा हुआ, आश्चर्यजनक।

विस्मरणम् [वि+स्मृ+ल्युट्] भूल जाना, विस्मृति, स्मृति का न रहना, बिसर जाना—श० ५।२३।

विस्मापन (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+स्मि+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, आत्वम्] आश्चर्यजनक,—नः 1. कामदेव 2. चाल, धोखा, भ्रम,—नम् 1. आश्चर्य पैदा करना 2. कोई भी आश्चर्यजनक वस्तु 3. गंधर्वों का नगर (पुं० भी कहा जाता है)।

विस्मित (भू० क० कृ०) [वि+स्मि+क्त] 1. आश्चर्यान्वित, चकित, भौचक्का, हक्काबक्का 2. उत्फुल्ल किया गया 3. घमंडी।

विस्मृत (भू० क० कृ०) [वि+स्मृ+क्त] भूला हुआ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि+स्मृ+क्तिन्] भूल जाना, बिसार देना, अस्मरण।

विस्मेर (वि०) [वि+स्मि+रन्] भौचक्का, आश्चर्यान्वित, चकित।

विस्रम् [विस्+रक्] कच्चे मांस की गंध के समान गंध। सम०—गंधिः हरताल।

विस्रंसः,—सा [वि+स्रंस्+घञ्] 1. नीचे गिरना 2. क्षय, शैथिल्य, कमजोरी, निर्बलता।

विस्रंसन (वि०) [वि+स्रंस्+ल्युट्] 1. पतनशील या बिन्दुपाती—अंतर्मोहनमौलिपूर्णचलन्मन्दारविस्रंसनः—गीत० ३ 2. खोलने वाला, ढीला करने वाला—नीवीविस्रंसनः करः—काव्य० ७. —नम् 1. अधःपतन 2. बहना, टपकना 3. खोलना, ढीला करना 4. रेचक, दस्तावर।

विस्रब्ध, विस्रंभ दे० विश्रब्ध, विश्रम्भ।

विस्रसा [वि+स्रंस्+क+टाप्] क्षय, निर्बलता, अजैरता।

विस्रस्त (भू० क० कृ०) [वि+स्रंस्+क्त] 1. ढीला किया हुआ 2. दुर्बल, बलहीन।

विस्रावः, विस्रावः [वि+स्रु+अप्, घञ् वा] बहना, बूँद बूँद टपकना, चूना, रिसना।

विस्रावणम् [वि+स्रु+णिच्—ल्युट्] रक्त बहाना।

विस्रुतिः (स्त्री०) [वि+स्रु+क्तिन्] बह जाना, चूना, रिसना।

विस्वर (वि०) [विरुद्धः विगतो वा स्वरो यस्य-प्रा० ब०] बेसुरा।

विहगः [विहायसा गच्छति गम्+ड, नि०] 1. पक्षी—मेघ० २८, ऋतु० १।२३ 2. बादल 3. बाण 4. सूर्य 5. चाँद 6. नक्षत्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहंगः [विहायसा गच्छति गम्+खच्, मुम्] 1. पक्षी -रघु० १।५१, मनु० ९।५५ 2. बादल 3. बाण 4. सूर्य 5. चन्द्रमा । सम०-इन्द्रः,-ईश्वरः,---राजः गरुड़ के विशेषण ।

विहंगमः [विहायसा गच्छति—गम्+खच्, मुम्, विहादेशः] पक्षी (गृह दीधिकाः) मदकलोलकलोलविहंगमाः रघु० ९।३७, मनु० १।३९, हि० १।३७ ।

विहंगमा, विहंगिका [विहंगम+टाप्, विहंग+कन्+टाप्, इत्वम्] चिड़ी, वह बांस जिसके दोनों सिरों पर बोझ बांध कर लटका दिया जाता है ।

विहत (भू० क० कृ०) [वि+हन्+क्त] 1. पूरी तरह आहत, वध किया गया 2. चोट पहुंचाई गई 3. अवरुद्ध, विरोध किया गया, मुकाबला किया गया ।

विहतिः [वि+हन्+क्तिच्] मित्र, साथी, ---(स्त्री०) 1. हत्या करना, प्रहार करना 2. असफलता 3. पराजय, हार ।

विहननम् [वि+हन्+ल्युट्] 1. हत्या करना, प्रहार करना 2. चोट, क्षति 3. अवरोध, रुकावट, अड़चन 4. रुई धुनने की धुनकी ।

विहरः [वि+हृ+अप्] 1. अपहरण करना, हटना 2. वियोग, बिछोह ।

विहरणम् [वि+हृ+ल्युट्] 1. दूर करना, अपहरण करना 2. सैर करना, हवाखोरी, इधर उधर टहलना 3.आमोद-प्रमोद, मनोरञ्जन ।

विहर्तृ (पुं) [वि+हृ+तृच्] 1. भ्रमणशील 2. लुटेरा ।

विहर्षः [विशिष्टो हर्षः-प्रा० स०] बहुत अधिक प्रसन्नता, उल्लास ।

विहसनम् विहसितम् विहासः [वि+हस्+ल्युट्, क्त घञ् वा] मन्द हंसी, मुस्कान ।

विहस्त (वि०) [विगतः हस्तो यस्य-प्रा० ब०] 1. हस्तरहित 2. घबराया हुआ, व्याकुल, पराभूत, शक्तिहीन किया हुआ,—मा० १, रघु० ५।५९ 3. अशक्त (उपयुक्त कार्य करने के लिए) अक्षम, -- रुजा विहस्तचरणम् मालवि० ४ 4. विद्वान्, बुद्धिमान् ।

विहा (अव्य०) [वि+हा+आ, नि०] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

विहापित (भू० क० कृ०) [वि+हा+णिच्+क्त, पुकागमः] 1. परित्यक्त कराया गया 2. तोड़ मरोड़ कर निकाला गया, छुड़ाया गया, तम् भेंट, दान ।

विहायस् (पुं० नपुं०) [वि+हृ+असुन्, नि० वृद्धि], आकाश, अन्तरिक्ष कि० १६।४३, (पुं) पक्षी नै० ३।९९ ।

विहायस दे० 'विहायस्' ।

विहारः [वि+हृ+घञ्] 1. हटाना, दूर करना 2. सैर सपाटा, हवाखोरी, भ्रमण, सैर करना 3. क्रीडा, खेल, मनोविनोद, मनोरञ्जन, आमोद-प्रमोद, विलास—विहारशैलानुगतेव नागाः - रघु० १६।२६, ७६, ५।४१, ९।६८, १३।३८, १९।३७ 4. पग रखना, कदम बढ़ाना,—दरमन्थरचरणविहारम्—गीत० १२, कि० ४।१५ 5. वाटिका, उद्यान, विशेषतः प्रमोदवन 6. कन्वा 7. जैनमन्दिर या बौद्धमन्दिर, मठ, आश्रम या संघाराम 8. मन्दिर 9. वाग्विन्यास का बृहद् विस्तार । सम०---गृहम् प्रमोदभवन, वासी संन्यासिनी, भिक्षुणी ।

विहारिका [विहार+कन्+टाप्, इत्वम्] बौद्धमठ ।

विहारिन् (वि०) [विहार+इनि] मनोविनोदी या दिलबहलावा करने वाला - मृगयाविहारिणः—रघु० १ ।

विहित (भू० क० कृ०) [वि+धा+क्त] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, कृत, बनाया हुआ 2. क्रमबद्ध किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सुव्यवस्थित, नियोजित, निर्धारित 3. आदिष्ट, विधान किया हुआ, समादिष्ट 4. निर्मित, संरचित 5. रक्षा हुआ, जमा किया हुआ, 6. सुसज्जित, सम्पन्न 7.किये जाने के योग्य 8. वितरित, बांटा गया (दे० वि पूर्वक धा),—तम् आदेश, आज्ञा ।

विहितिः (स्त्री०) [वि+धा+क्तिन्] 1. अनुष्ठान, क्रिया, कर्म 2. व्यवस्था ।

विहीन (भू० क० कृ०) [वि+हा+क्त] 1. छोड़ा गया, परित्यक्त, त्यागा गया 2. शून्य, रहित, वञ्चित (प्रायः समास में) - विद्याविहीनः पशुः --भर्तृ० २।२० 3. अधम, नीच, कमीना । सम०---जाति - योनि (वि०) नीच घर में उत्पन्न, नीच कुल में पैदा हुआ ।

विहृत (भू० क० कृ०) [वि+हृ+क्त] 1. क्रीडा की, खेला हुआ 2. फूलाया हुआ, तम् स्त्रियों द्वारा प्रेम प्रदर्शित करने की दस रीतियों में से एक -दे० सा० द० १२५, १४६, (इस अर्थ में 'विकृत' भी लिखा जाता है) ।

विहृतिः (स्त्री०) [वि+हृ+क्तिन्] 1. हटाना, दूर करना 2. क्रीडा, मनो विनोद, विहार 3. प्रसार ,

विहेठकः [वि+हेठ्+ण्वुल्] क्षति पहुँचाने वाला ।

विहेठनम् [वि+हेठ्+ल्युट्] 1. क्षति पहुँचाना, घायल करना 2. मसलना, पीसना 3. कष्ट देना 4. पीड़ा, दुःख, सताना ।

विह्वल (वि०) [वि+हृ वल्+अच्] 1. विलुप्त, अशान्त, व्याकुल, घबराया हुआ रघु० ८।३७ 2. डरा हुआ, संत्रस्त 3. उन्मत्त, आपे से बाहर 4. कष्टग्रस्त, दुःखी-कु० ४।४ 5. विषादपूर्ण 6. गला हुआ, पिघला हुआ ।

वी (अदा० पर० वेति—शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. पहुँचना 3. व्याप्त होना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. लाना, पहुँचाना 5, फेंक देना, डालना 6. खाना, उपभोग करना 7. प्राप्त करना 8. गर्भधारण करना, उत्पन्न करना 9. पैदा होना, जन्म लेना 10. चमकना, सुन्दर होना।

वीकः [अज्+कन्, वी आदेशः] 1. वायु 2. पक्षी, 3. मन।

वीकाक्ष दे 'विकाक्ष'।

वीक्षणम् [वि+ईक्ष्+अच्] 1. दृश्य पदार्थ 2. अचम्भा, आश्चर्य, -क्षः,—क्षा, देखना, ताकना।

वीक्षणम्,—णा [वि+ईक्ष्+ल्युट्] देखना, निहारना, दृष्टि डालना।

वीक्षितम् [वि+ईक्ष्+क्त] दृष्टि, झलक।

वीक्ष्य (वि०) [वि+ईक्ष्+ण्यत्] 1. देखे जाने के योग्य 2. दृश्य, दृष्टिगोचर,—क्ष्यः 1. नर्तक, नट, अभिनेता, पात्र 2. घोड़ा, क्ष्यम् 1. देखे जाने के योग्य कोई भी वस्तु, दृश्यमान पदार्थ 2. आश्चर्य, अचंभा।

वीक्षा [वि+ईक्ष्+अ+टाप्] 1. जाना, हिलना-जुलना, प्रगति 2. घोड़े का कदम 3. नाच 4. संगम, मिलन।

वीचिः (पुं०, स्त्री०) **वीची** [वे+ईचि, डिच्च, वीचि —ङीष्] 1. लहर—समुद्रवीचीव चलस्वभावाः—पंच० १।१९४, रघु० ६।५६, १२।१००, मेघ० २८ 2. असंगति, विचारशून्यता 3. आनन्द, प्रसन्नता 4. विश्राम, अवकाश 5. प्रकाश की किरण 6. स्वल्पता। सम० —मालिन् (पुं०) समुद्र।

वीची दे 'वीचि'।

वीज् i (भ्वा० आ० वीजते) जाना।

ii (चुरा० उभ० वीजयति ते) पंखा करना, पंखा करके ठंडा करना - सं वीज्यते मणिमयैरिव तालवृन्तैः —मृच्छ० ५।१३, कु० २।४२, अभि —, उप—, परि —, पंखा करना -हेतु० ३।४, अ० ३।

वीज दे० **बीजक, बीजल,** } दे० बीज, बीजक, बीजल,
वीजिक वीजिन्, वीज्य } बीजिक, बीजिन् और बीज्य।

वीजनः [वीज्+ल्युट्] 1. चक्रवाक 2. एक प्रकार का चकोर, -नम् 1. पंखा करना कु० ४।३६ 2. पंखा।

वीटा [वि+इट्+क+टाप्] 1. लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, गुल्ली (लगभग एक बालिश्त) जिसको लड़के डंडा मार कर खेलते हैं, गुल्ली डंडा।

वीटिः, वीटिका, वीटी [वि—इट्+इन्, स च कित्, वीटि +कन्+टाप्, वीटि+ङीष् वा] 1. पान की बेल, 2. पान लगाना 3. बंधन, गाँठ, ग्रंथि (पहने जाने वाले वस्त्र की) 4. चोली की तनी अमरु २३।

वीणा [वेति वृद्धिमात्रमपगच्छति—वी+न, निo णत्वम्] 1. सारंगी, वीणा मूकीभूतायां वीणायाम् -का०, मेघ० ८६ 2. बिजली। सम० **आस्यः** नारद का विशेषण, **-दण्डः** वीणा की गर्दन—भामि० १।८०, **-वादः, वादकः** वीणा बजाने वाला।

वीत (भू० क० कृ०) [वि+इ+क्त] 1. गया हुआ, अंतर्हित 2. जो चला गया, बिदा हो गया 3. जिसको जाने दिया गया, ढीला, उन्मुक्त 4. अलगाया हुआ, विमुक्त किया हुआ 5. अनुमोदित, पसंद किया गया 6. युद्ध के अयोग्य 7. पालतू, शान्त 8. मुक्त, शून्य (बहुधा समास में) वीतचित, वीतस्पृह, वीतमी, वीतशंक आदि,—तः हाथी या घोड़ा जो युद्ध के अयोग्य हो या सधाया न गया हो, **तम्** (हाथी को) अंकुश से गोदना तथा पैरों से प्रहार करना, -वीतवीतभया नागाः कु० ६।३९ (पाठांतर—दे० इस पर मल्लि०) शि० ५।४७। सम० **दम्भ** (वि०) विनम्र, विनीत, —भय (वि०) निर्भय, निडर (यः) विष्णु का विशेषण, **मल** (वि०) पवित्र, निर्मल, **राग** (वि०) 1. इच्छारहित कु० ६।४३ 2. निरावेश, सौम्य, शान्त 3. विवर्ण, बिना रंग का, (गः) एक ऋषि जिसने अपने रागों का दमन कर लिया था,—**श्रोकः** (—अशोकः) अशोक वृक्ष।

वीतंसः [विशेषेण वहिरेव तंसयते भृज्यते वि+तंस+ घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. पींजरा या जाल जिसमें पक्षी या अन्य वन्य पशु फंसाये जाते हैं 2. चिड़ियाघर, शिकार के पशुओं को पालने का स्थान।

वीतनी (पुं०, द्वि० व०) [विशिष्टं तनोति - वि+तन् +अच्, पृषो० दीर्घः] गले के अगल बगल के पार्श्व।

वीतिः [वी+क्तिन्] घोड़ा,—तिः (स्त्री०) 1. गति, चाल 2. पेदावार, उपज 3. सुखोपभोग 4. भोजन करना 5. प्रकाश, कान्ति। सम०—होत्रः 1. अग्नि 2. सूर्य।

वीथिः, थी (स्त्री०) [विथ+इन्, ङीप् वा, पृषो०] 1. सड़क, मार्ग, फि० ७।१७ 2. पंक्ति, कतार 3. हाट, आपणिका, मंडी में दुकान -शि० ९।३२ 4. नाटक का एक भेद। इसकी परिभाषा सा० द० निम्नांकित है वीथ्यामेकोऽथवाऽनेके भवदुद्धः कश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते, आकाशभाषितैस्तस्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिभाश्रितः। सूच्यर्थैर्भूरि शृङ्गारं किञ्चिदन्यान्सानपि। मुखनिर्वहणे सन्धी अर्थप्रकृतयोऽखिलाः, ५२०।

वीथिका [वीथि+कन्+टाप्] 1. सड़क आदि 2. चित्रशाला, चित्रसारी (जिस पर चित्र चित्रित किये जाते हैं) चित्रागार, चित्रावली—आर्यस्य चरित्रमस्यां वीथिकायामालिखितम् - उत्तर० १।

वीध्र (वि०) [विशेषेण इन्यते वि+इन्ध्+क्रन्, उपसर्गस्य दीर्घः] निर्मल, स्वच्छ, -ध्रम् 1. आकाश 2. वायु, हवा 3. अग्नि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीनाहः [वि+नह्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] कुएँ का ढक्कन या मणि ।

वीपा (स्त्री०) विद्युत्, बिजली ।

वीप्सा [वि+आप्+सन्+अ+टाप्, इत्वम्] 1. परिव्याप्ति 2. (निरंतर प्रकट करने के लिए) शब्द द्विरुक्ति—यथा वृक्षं वृक्षं सिंचति इति वीप्सायां द्विरुक्तिः 3. सामान्य पुनरुक्ति ।

वीभ् (म्वा० आ० वीभते) डोली मारना, डींग मारना ।

वीर (वि) [अजेः रक् वीभावश्च] 1. शूर, वीर 2. ताकतवर, शक्तिशाली, रः 1. शूरवीर, योद्धा, प्रजेता' —कौऽयेष संप्रति नवः पुरुषावतारो वीरो न यस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽपि उत्तर० ५।३४ 2. (आलं० में) वीरभावना, वीररस, इसके चार भेद (दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर) किये गये हैं, स्पष्टीकरण के लिए दे० इन शब्दों को 3. अभिनेता 4. आग 5. यज्ञ की अग्नि 6. पुत्र 7. पति 8. अर्जुन वृक्ष 9. विष्णु का नाम, रम् 1. नरकुल 2. भिर्च 3. चावल का माड़ 4. उशीर का उड़, खस । सम० – आशंसनम् 1. निगरानी रखना 2. युद्ध में जोखिम से भरा पद 3. छोड़ी हुई आशा, -आसनम् 1. योगाभ्यास करते समय एक विशेष मुद्रा, परिभाषा के लिए दे० पर्यंक (३) 2. एक घुटना मोड़ कर बैठना 4. संतरी की चौकी, ईशः,—ईश्वरः 1. शिव के विशेषण 2. महान् वीर, उच्चः वह ब्राह्मण जो यज्ञाग्नि में आहुति नहीं डालता, अग्निहोत्र न करने वाला ब्राह्मण,—कीटः तुच्छ सैनिक, अमन्तिका 1. रणनृत्य 2. संग्राम, युद्ध, तरुः अर्जुनवृक्ष, दर्पकन् (पुं०) कामदेव,—पानम् (नम्) एक उत्तेजक या श्रमापहारक तेज जो सैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर पीते हैं, - भद्रः 1. एक शक्तिशाली शूरवीर जिसे शिव ने अपनी जटाओं से निकाला था दे० 'दक्ष' 2. माना हुआ योद्धा 3. अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा 4. एक प्रकार का सुगन्धित घास, -मुद्रिका पैर की मध्यमा अंगुली में पहना जाने वाला छल्ला, रजस् (नपुं०) सिन्दूर, रस 1. वीरता का भाव 2. सामरिक भावना,—रेणुः भीमसेन का नाम, विप्लावकः शूद्र से धन लेकर हवन करने वाला,—वृक्षः 1. अर्जुन वृक्ष 2. भिलावे का वृक्ष,—सूः (स्त्री०) शूरवीर पुरुष की माता (इसी प्रकार वीरप्रसवा, प्रसूः, —प्रसविनी), -सैन्यम् लड़ाकू, —स्कन्धः भैंसा,—हन् (पुं०) 1. वह ब्राह्मण जिसने दैनिक अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है 2. विष्णु ।

वीरणम् [वि+ईर्+ल्युट्] एक सुगन्धित घास, उशीर (जिसकी जड़ें—खस—शीतलता प्रदान करने के लिए प्रयुक्त होती हैं) ।

वीरणी [वीरण+ङीष्] 1. तिरछी चितवन, कटाक्ष 2. गहरा स्थान ।

वीरतरः [वीर+तरप्] 1. महान् वीर 2. बाण,—रम् एक प्रकार का सुगन्धित घास, उशीर ।

वीरध्वरः [वीर+धू+खच्, मुम्] 1. मोर 2. वन्य पशुओं के साथ लड़ाई 3. जंगली की जाकेट ।

वीरवत् (वि०) [वीर+मतुप्] शूरवीरों से भरा हुआ, ती वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों ।

वीरा [वीर+टाप्] 1. शूरवीर पुरुष की स्त्री 2. पत्नी 3. माता, गृहिणी 4. मुरा नामक एक गन्धद्रव्य, 5. शराब 6. अगर की लकड़ी 7. केले का पेड़ ।

वीरिणम् दे० 'ईरिण' ।

वीरुध्,—धा (स्त्री०) [विशेषेण रुणद्धि अन्यान् प्रकाशं – वि+रुध्+क्विप् पक्षे टाप्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. लहलहाने वाली लता लता प्रतानिनी दीप्तेः —भट्टि०, आहोस्वित्प्रसवो क्षमापचरितैर्विष्टपंस्तितो वीरुधाम् श० ५।९, कु० ४।३४, रघु० ८।६६ 2. शाखा, अङ्कुर 3. काटने पर ही बढ़ने वाला पौधा 4. बेल, लता, झाड़ी—कि० ४।१९ ।

वीर्यम् [वीर+यत्] 1. शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी —वीर्यविदानेषु कृतावतर्षः—कि० ३।४३, रघु० २।४, ३।६२, ११।७८, वेणी० ३।३ 2. बल, क्षमता, सामर्थ्य 3. पुंस्त्व 4. ऊर्जा, दृढ़ता, साहस 5. शक्ति, क्षमता श० ३।२ 6. (औषधियों की) अचूकता, अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः कि० २।२४, कु० २।४८ 7. शुक्र, वीर्य—कु० ३।१५, पंच० ४।५० 8. आभा, कान्ति 9. गौरव, महिमा । सम० - जः पुत्र,—प्रपातः वीर्य का क्षरण या स्खलन ।

वीर्यवत् (वि०) [वीर्य+मतुप्] मजबूत, हृष्टपुष्ट, बलवान् 2. अचूक, अमोघ ।

वीवधः [वि+वध्+घञ्, वृद्धभावो दीर्घश्च] 1. बोझा ढोने के लिए जूआ, बहंगी 2. बोझा 3. अनाज का भंडार भरना 4. मार्ग, सड़क ।

वीवधिकः [वीवध+ठन्] बहंगी ढोने वाला ।

वीहारः [वि+हृ+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. जैन विहार या बौद्धमठ 2. देवालय ।

वृक् (म्वा० पर० वृङ्क्ते) छोड़ना, परित्याग करना ।

वृक्ष्ट् (चुरा० उभ० वृष्टयति-ते) 1. चोट पहुँचाना वध करना 2. नष्ट करना ।

वृक्ष्व् (वि०) [वृ+सन्+उ] पसन्द करने का इच्छुक । वृक्ष दे० 'वृस्' ।

वृक्त (वि०) [वृ+क्त] छांटा हुआ, चुना हुआ ।

वृ । (म्वा०, स्वा०, क्रया० उभ० वरति-ते, वृणोति-वृणुते, वृणाति-वृणीते, वृत, कर्मवा० विवृते) 1. छांटना, चुनना, पसन्द करना—वृत तेनेदमेव प्राक्—कु० २।५६, वव्रार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रामस्य वनप्रयाणम्–भट्टि० ३।६ 2. अपने लिए चुनना (आ०) वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः–कि० २।३०, रघु० ३।६ 3. विवाह के लिए वरण करना, प्रणय-प्रार्थना करना, प्रणययाचना करना –महावी० १।२८, अनर्घ० ३।४२ 4. प्रार्थना करना, निवेदन करना, याचना करना 5. ढकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना –मेघैर्वृतश्चन्द्रमाः –मृच्छ० ५।१४ 6. घेरना, लपेटना भट्टि० ५।१०, रघु० १२।६१ 7. परे हटना, दूर करना, नियंत्रण करना, रोकना 8. विघ्न डालना, विरोध करना, अड़चन डालना, प्रेर०–(वारयति-ते) 1. ढकना, छिपाना 2. (किसी वस्तु से) आँख फेर लेना (अपा० के साथ) 3. रोकना, हटाना, नियंत्रण करना, दबाना, जांच पड़ताल करना, विघ्न डालना –शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्–भर्तृ० २।११, इच्छा० वुवूर्षति-ते, विविरिषति-ते, विवरिषति-ते, चुनने की इच्छा करना, अप , खोलना (प्रेर०) ढकना, छिपाना अपा–, खोलना आ–, 1. ढकना, छिपाना, गुप्त रखना आवृणोदात्मनो रन्ध्रं रन्ध्रेषु प्रहरन् रिपून् रघु० १७।६१, भट्टि० ९।२४ 2. पूरना, व्याप्त होना –भग० १३।१३, मनु० २।१४४ 3. चुनना, इच्छा करना 4. निवेदन करना, प्रार्थना करना 5. घेरना, नाके बन्दी करना, रोकना –रघु० ७।३१ 6. दूर रखना भट्टि० १४।१०९, वि—, घेरा डालना, घेरना भट्टि० १४।१९, (प्रेर०)—परे हटना दूर करना, आँख फेरना (अपा० के साथ) –पापाच्चिवारयति योजयते हिताय –भर्तृ० २।७२, विस् , (बहुधा क्तांत रूप) प्रसन्न होना, संतुष्ट या संतृप्त होना निर्वार मधुनीन्द्रियवर्गः—शि० १०।३, दे० निर्वृत, परि —, घेरना, प्र–, 1. ढकना, लपेटना –प्रावारिषुरिव क्षोणीं क्षिप्ता वृक्षाः समन्ततः भट्टि० ९।२५ 2. पहनना, धारण करना 3. चुनना, छाँटना, आ –, पहनना, धारण करना, वि—, 1. ढक देना, ठहरना 2. खोलना–कु० ४।२६ 3. तह खोलना, भंडाफोड़ करना, भेद खोलना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना नै० ९।१, कु० ३।१५, रघु० ६।८५, भट्टि० ७।७३ 4. सिखाना, व्याख्या करना, स्पष्ट करना—महावी० २।४३ 5. फैलाना, भामि० १।५ 6. चुनना विशि–, (प्रेर०) रोकना, दूर हटाना, दबाना विनयं विनिवार्य मा० १।१८ सम्–, 1. छिपाना, ढकना, प्रच्छन्न करना–मुह्यद्भिरुत्पुलिसंवृतान्यरोष्टम्–शा० ३।१५, २।१०, रघु० १।९७, ७।३० 2. दबाना, नियंत्रित करना, विरोध करना भट्टि० ९।२७ 3. बन्द करना।

ii (चुरा० उभ० वरयति–ते) 1. वरण करना, चुनना –वरं वरयते कन्या माता वित्तम् पिता श्रुतम्–पंच० २।६७ 2. विवाह के लिए पसंद करना 3. याचना करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना।

वृंह्, वृंहित वे 'बृह्' बृंहित।

वृक् (भ्वा० आ० वर्कते) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।

वृक: [वृ+कक्+] 1. भेड़िया 2. लकड़बग्घा 3. गीदड़ 4. कौवा 5. उल्लू 6. लुटेरा 7. क्षत्रिय 8. तारपीन 9. गन्धद्रव्यों का मिश्रण 10 एक राक्षस का नाम 11 एक वृक्ष का नाम, वकवृक्ष 12. जठराग्नि। सम० -अरातिः, अरिः कुत्ता,—उदरः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. द्वितीय पांडव राजकुमार भीम का विशेषण भग० १।१५, कि० २।१,—बंधः कुत्ता, भूः 1. तारपीन 2. मिश्रगंध,—भूर्तः गीदड़।

वृक्कः,-क्का 1. हृदय 2. गुर्दा (इस अर्थ में द्वि० व०)।

वृक्ण (भू० क० कृ०) [वृश्च्+क्त] 1. कटा हुआ, बाँटा हुआ 2. फाड़ा हुआ 3. तोड़ा हुआ।

वृक्त (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] स्वच्छ किया गया, साफ़ किया गया, निर्मल किया गया।

वृक्ष् (ध्वा० आ० वृक्षते) 1. स्वीकार करना, चुनना 2. ढकना।

वृक्षः [वृश्च्+क्स] 1. पेड़–आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम्। सम०–अदनः 1. बढ़ई की चौरसी 2. कुल्हाड़ी 3. बड़ का पेड़ 4. पियाल वृक्ष, -अम्लः आमड़ा,—आलयः एक पक्षी, –आवासः 1. एक पक्षी 2. संन्यासी, आश्वयिन् (पुं०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, कुक्कुटः जंगली मुर्गा, -खंड निकुंज, वृक्षों का समूह,—चरः बन्दर, -छाया वृक्ष की छाया (पद्म) सघन छाया, बहुत से वृक्षों की (गाड़ी) छाया,—जूषः तारपीन, -नाथः बड़ का पेड़, –निर्यासः गोंद, राल, पाकः बड़ का पेड़,—भिद् (स्त्री०) कुल्हाड़ी, -मल्लिका गिलहरी, -वाटिका, वाटी उद्यान, उपवन, शः छिपकली,—शायिका गिलहरी।

वृक्षकः [वृक्ष+कन्] 1. छोटा पेड़ –कु० ५।१४ 2 पेड़।

वृच् (रुधा० पर० वृणक्ति) छाँटना, चुनना।

वृज् । (अदा० आ० वृक्ते) टाल जाना, कतराना, परित्याग करना।

ii (रुधा० पर० वृणक्ति) 1. टाला जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना 2. चुनना –आत्मानेकतमां वृण्वि सवर्णां स्वर्गभूषणाम् भाग० 3. प्रायश्चित करना, पौंछ डालना, निर्मल करना तन्ये रेतः पिता वृंक्तामित्यस्यैतन्निदर्शनम् –मनु० ९।२० 4. मुड़ना, आँख फेरना।

iii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० वर्जति, वर्जयति–ते, वर्जित) 1. कतराना, टाल जाना 2. छोड़ना, परित्याग करना 3. निकाल देना, एक ओर रख देना 4. अलग रहना 5. टुकड़े टुकड़े कर देना (कविरहस्य से उद्धृत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निम्नांकित पद्य धातु के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है वृणक्ति वृजिनं संगं वृक्ते च वृषलैः सह, वर्जयत्यनार्जवोपेतैः स वर्जयति दुर्जनैः, अप 1. नष्ट करना 2. समाप्त करना 3. छोड़ना, त्याग देना रघु० १७।१९, कि० १।२९ 4. उंडेलना, फेंकना शि० १३।३७ आ -, 1. झुकना, मुड़ना, -आवर्जय सखाः सदयं च यासां—रघु० १६।१९, १३।१७, आवर्जय दृष्टीः- मेघ० ४६ 2. प्रस्तुत करना, देना रघु० १।६२, ६७, ८।२६, कु० ५।३४ 3. परास्त करना, जीतना, परि--, टाल जाना, कतराना, वि - 1. कतराना, टाल जाना 2. विरहित करना, वञ्चित करना।

वृजनः [वृजे: क्यु:] 1. बाल 2. घुंघराले बाल,—नम् 1. पाप 2. संकट 3. आकाश 4. घेर, बाड़ा, विशेषतः एक गोचरभूमि।

वृजिन [वृजे: इनज् कित् च] 1. कुटिल, झुका हुआ, वक्र 2. दुष्ट, पापी, नः 1. बाल, घुंघराले बाल 2. दुष्ट पुरुष—वृणक्ति वृजिनैः संगम्--कवि०,—नम् 1. पाप,—सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि - भग० ४।३६, रघु० १४।५७ 2. पीड़ा, दुःख (इस अर्थ में पुं० भी माना जाता है)।

वृञ् (तना० उभ० वृणोति, वृणुते) खाना, उपभोग करना

वृत् I (दिवा० आ० वृत्यते) 1. चुनना, पसंद करना-- तु० वावृत् 2. वितरण करना, बटिना।

II (चुरा० उभ० वर्तयति ते) चमकना।

III (स्वा० आ० वर्तते, परन्तु लृट्, लृट्, लृङ् तथा लृङ् लकार में एवं सनंत में परः भी, वृत्त) 1. होना, विद्यमान होना, डटे रहना, मौजूद होना, जीते रहना, टिके रहना इदं में मनसि वर्तते,—श० १, अत्र विषयेऽस्माकं महत्कुतूहलं वर्तते पंच० १, मरालकुलनायकः कथयं रे कथं वर्तताम्- भामि० १।३, केवल संयोजक के रूप में बहुधा प्रयुक्त, अतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः--श० १ 2. किसी विशेष दशा या परिस्थिति में होना—पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य-का०, इसी प्रकार दुःखे, हर्षे, विषादे-वर्तते 3. होना, घटित होना, आ पड़ना, सामने आना—सीता देव्याः किं वृत्तमित्यस्या काचित्प्रवृत्तिः-उत्तर० २, सायं संप्रति वर्तते पथिक रे स्थानान्तरं गम्यताम् सुभा०, 'अब सायंकाल हो गया है' ..... मृच्छ० ६, भग० ५।२६ 4. चलते रहना, प्रगतिशील रहना--सर्वथा वर्तते यत्नः-मनु० २।१५, निर्व्याजमिज्या वर्तते-भट्टि० २।३७, रघु० १२।५६ 5. संधारित या संपोषित होना, जीवित रहना, जीते रहना (आल० से भी) —फलमूलवारिभिर्वर्तमाना-का० १७२, मनु० ३।७७ 6. मुड़ना, लुढ़कते रहना, चक्कर खाना—यावदियं लोकयात्रा वर्तते -वेणी० ३ 7. अपने आप को कार्य में लगाना, काम में लगना, आरम्भ करना (अधि० के साथ) - भगवान् काश्यपः शाश्वते ब्रह्मणि वर्तते श० १, इतरो दहने स्वकर्मणां वपुषे ज्ञानमयेन वह्निना - रघु० ८।२०, मनु० ८।३४६, भग० ३।२२ 8. कर्तव्य निभाना, व्यवहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना (प्रायः अधि० के साथ या स्वतंत्र रूप से)-- आर्योऽस्मिन् विनयेन वर्तताम् उत्तर० ६, कविनिसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः मा० १, औदासीन्येन वर्तितुम्—रघु० १०।२९, मनु० ७।१०४, ८।१७३, ११।३० 9. कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना—साध्वीं वृत्तिं वर्तते- 'वह सत्कार्य में प्रवृत्त होता है' 10. अर्थ रखना, अभिप्राय बतलाना, अर्थ में प्रयुक्त होना —पुष्यसमोपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दो वर्तते—पा० ४।२।३ पर महाभाष्य (प्रायः कोशों में इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) 11. प्रवृत्त करना, प्रेरित करना -(संप्र० के साथ)--पुत्रेण किं फलं यो वै पितुर्दुःखाय वर्तते 12. सहारा लेना, आश्रित होना—प्रेर० (वर्तयति--ते 1. प्रवृत्त कराना 2. घुमाना, चक्कर दिलाना श० ७।६ 3. (अस्त्र-शस्त्र) घुमाना, पैंतरे बदलना, घुमा कर फेंकना—भट्टि० १५।३७ 4. कार्य करना, अभ्यास करना, प्रदर्शित करना- मा० ९।३३ 5. संपन्न करना, निबटाना, ध्यान देना, नजर डालना सोऽधिकारमभिकः कुलोचितं कांचनं स्वयमवर्तयत्समाः —रघु० १९।४, महावी० ३।२३ 6. बिताना, (समय आदि) गुजारना 7. जीवन निर्वाह करना जीते रहना - कि० २।१८, रघु० १२।२० 8. वर्णन करना, बयान करना—इच्छा० (विवृत्सति, विवर्तयिषते), अति--, 1. परे जाना, आगे बढ़ जाना, मा० १।२६ 2. आगे निकल जाना, सर्वोत्कृष्ट होना कि० ३।४०, शि० १४।५९ 3. उल्लंघन करना, बाहर कदम रखना, अतिक्रमण करना—शि० ६।१९ 4. उपेक्षा करना, अवहेलना करना- मनु० ५।१६ 5. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, नाराज करना 6. पराजित करना, वशीभूत करना 7. (समय का) बिताना 8. विलंब करना, देरी करना—मनु० २।३८, अनु -, 1. अनुसरण करना, अनुरूप होना, अनुकूल कार्य करना - प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते—शि० १५।४१, मा० ३।२ 2. अनुरंजन करना, दूसरे की इच्छा के अनुसार अपने आपको बनाना, दूसरे के द्वारा पथप्रदर्शन प्राप्त किया जाना 3. आज्ञा मानना 4. मिलना-जुलना, नकल करना 5. प्रसन्न करना, खुश करना 6. (व्या० में) किसी पूर्ववर्ती सूत्र से आवृत्ति प्राप्त करना (प्रेर०) 1. मुड़ना 2. अनुगमन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, आज्ञा मानना, अप --, 1. मुड़ जाना, पीठ मोड़ना तस्मादपावर्तत दूरकृष्टा नीत्येव लक्ष्मीः प्रतिकूलदैवात्—रघु० ६।५८, ७।३३ 2. व्यवस्त या व्युत्क्रान्त होना, उलटा हो जाना -कि० १२।४९ 3. मुँह नीचे कर लेना - मा० ३।१७, (प्रेर०) एक ओर हो जाना, झुकना मा० १।४०, कि० ४।१५, अभि --, 1. पहुँचाना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना —इत एवाभिवर्तते—श० १, रघु० २।१० 2. आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना —कि० १३।३ 3. आरम्भ करना, (दिन), निकलना 4. सर्वोपरि होना, सबसे ऊपर होना 5. होना, मौजूद होना, घटित होना, आ--, 1. चक्कर खाना 2. वापिस आना—रघु० १।८९, २।१९ 3. पास जाना, 4. बेचैन होना, चक्कर खाना-मा० १।४१, उद्--,1. चढ़ना 2.उदित होना, बढ़ना 3. घमंडी या अभिमानी होना 4. उमड़ना, बह निकलना—उद्वृत्तः क इव सुखावहः परेषाम् —शि० ८।१८, मुद्रा० ३।८, रघु० ७।५६, उप --, 1. पहुँचना 2. लौटना नि --, 1, वापिस आना, लौटना - न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्--श० ३।१, कु० ४।३०, रघु० २।४३, भग० ८।२१, १५।४ 2. भाग जाना, पलायन करना—भट्टि० ५।१०२ 3. मुड़ जाना, आँखें फेर लेना—रघु० ५।२३, ७।६१ 4. अलग रहना प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात् मनु० ५।४९, ११५३, भट्टि० १।१८, निवृत्तमांसस्तु जनकः—उत्तर० ४ 5. मुक्त होना, बच निकलना -भग० १।३९ 6. बोलना बन्द कर देना, रुक जाना, ठहर जाना 7. हट जाना, अन्त होना, बन्द हो जाना, अन्तर्धान होना—भग० २।५९, १४।२२, मनु० ११।१८५, १८६ 8. रुकवाना, निकलवाना, (प्रेर०) 1. लौटाना, वापिस भेजना रघु० २।३, ३।४७, ७।४४ 2. वापिस लेना, दूर रहना, मुड़ जाना, मन फेर लेना - रघु० २।२८, कु० ५।११, निस् , 1. समाप्त होना, अन्त होना, भट्टि० ८।६९ 2. संपन्न होना—रघु० १७।६८, मनु० ७।१६१, 3. रुक जाना, न होना,—भट्टि० १६।६, (प्रेर०) 1. सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना—रघु० २।४५, ३।३३, ११।३०, परा--, लौटना, वापिस आना, परि --, 1. घूमना, चक्कर खाना—कु० १।१६ 2. इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर आना जाना 3. बदलना, विनिमय करना, अदला-बदली करना 4. पीठ मोड़ना रघु० ४७२, विक्रम० १।१७ 5. होना, आ पड़ना—मा० ९।८ 6. क्षीण होना, नष्ट होना, लुप्त होना--मा० १०।६, प्र—, 1. आगे चलना, चलते जाना, प्रगति करना, पंच० १।८१ 2. उदित होना, उत्पन्न होना, फूट निकलना 3. होना, घटित होना, आ पड़ना 4. आरंभ करना, शुरू करना, (प्रायः तुमुन्नन्त)—हन्त प्रवृत्तं संगीतकं --मालवि० १, कु० ३।२५ 5. प्रयत्न करना, जोर लगाना—प्रवर्तताँ प्रकृतिहिताय पार्थिवः— श० ७।३५ 6. अमल करना, अनुसरण करना, पंच० १।११६, 7. कार्य में लगना, व्यस्त होना,—श० १, कु० ५।२३ 8. करना, कार्य में लगना—श० ६, 9. व्यवहार करना 10. व्याप्त होना, विद्यमान होना -- राजन् प्रजासु ते कश्चिदपचारः प्रवर्तते—रघु० १५।४७ 11. ठीक उतरना 12. बिना रुकावट के प्रगति करना, फलना-फूलना,—भग० १७।२४, मनु० ३।६१, (प्रेर०) 1. प्रगति करना, जारी रखना —मुद्रा० १ 2. सूत्रपात करना 3. जारी करना, स्थापित करना, बुनियाद रखना 4. हांकना, प्रेरित करना, उकसाना, उद्दीप्त करना 5. उन्नति करना. प्रगति करना, प्रतिनि—, 1. पीठ मोड़ना, लौटना —गत्वैव पुनः प्रतिनिवृत्तः श० १।२९, विक्रम० १ 2. चक्कर काटना, वि , 1. मुड़ना, लुढ़कना, चक्कर काटना, घूमना मा० १।४० 2. एक ओर हो जाना, झुकना—रघु० ६।१६, श० २।११ 3. होना, घटित होना, विनि--, 1. लौटना 2. रुक जाना, अन्त होना भ० २।५९, मनु० ५।७ 3. हाथ खींचना, मुड़ जाना, अलग रहना —देवनातृ, युद्धात् आदि, विपरि -, चक्कर काटना (आलं० से भी) भग० ९।१०, व्यप—, 1. लौटना, वापिस मुड़ना—चेतः कर्थ कथमपि व्यपवर्तते—मा० १।१८ 2. हाथ खींचना छोड़ देना उत्तर० ५।८, व्या—, 1. वापिस होना, मुड़ना सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया—रत्न० १।२ 2. मुड़ना, हटना, उल्टा होना—विषयव्यावृत्तकौतूहलः - विक्रम० १।९, (प्रेर०) प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना, निकाल देना, गिरफ्तार करना—तु शब्दः पूर्वपक्षं व्यावर्तयति शारी०. अपवादं इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः रघु० १५।७, सम् , 1. होना, घटित होना—ते यथोक्ताः संवृत्ताः—पंच० १ 2. पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना 3. घटित होना, आ पड़ना 4. सम्पन्न होना।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृ+क्त] 1. छांटा गया, चुना गया 2. ढका गया, पर्दा डाला गया 3. छिपाया गया 4. घेरा गया, लपेटा गया 5. सहमत या सम्मत 6. किराये पर लिया गया 7. बिगाड़ा गया, विकृत किया गया 8. संवित, सेवा किया गया।

वृत्तिः (स्त्री०) [वृ+क्तिन्] 1. छांटना, चुनना 2. छिपाना, ढकना, गुप्त रखना 3. याचना करना, निवेदन करना 4. अनुरोध, प्रार्थना 5. घेरना, लपेटना 6. झाड़दंडी, बाड़, बाड़ा —मेघ० ७८।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृतिकर (वि०) [वृति+कृ+ट, मुम्] घेरने वाला, लपेटने वाला, —रः विकंकत नाम का पेड़।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृत्+क्त] 1. जीवित, विद्यमान 2. घटित, संभूत 3. सम्पूरित, समाप्त 4. अनुष्ठित, कृत, किया गया 5. गुजरा हुआ, बीता हुआ 6. गोल, वर्तुलाकार—रघु० ६।३२ 7. मृत, स्वर्गगत 8. दृढ़, स्थिर 9. पठित, अधीत 10. व्युत्पन्न 11. प्रसिद्ध (दे० वृत्), —तः कछुवा,—त्तम् 1. बात, घटना 2. इतिहास, वर्णन रघु० १५।६४ 3. समाचार, खबर 4. प्रवर्तन, पेशा, जीवनवृत्ति, व्यवसाय—सर्ता वृत्तमनुष्ठिताः—मनु० १०।१२७, (पाठांतर) ७।१२२, याज्ञ० ३।४४ 5. आचरण, व्यवहार, रीति, कर्म, कृत्य, जैसा कि सद्वृत्त या दुर्वृत्त में 6. साधु या सत्य आचरण पंच० ४।२८ 7. माना हुआ नियम, प्रचलन या कानून, प्रथा, इस प्रकार के नियम या प्रचलन का पालन करना, कर्तव्य, रघु० ५।३३ 8. गोल घेरा, वृत्त की परिधि 9. छन्द, विशेषकर मात्राओं की गणना के आधार पर विनियमित (विप० जाति) दे० परि० १। सम०—अनुपूर्व (वि०) गोल शुंडाकार,—कुः १।३५,—अनुसारः 1. विहित नियमों की अनुरूपता 2. छन्द की अनुरूपता, अन्तः 1. अवसर, घटना, बात अनेतारण्यकवृत्तान्तेन पर्याकुलाः स्मः ज० १, रघु० ३।६६, उत्तर० २।१७ 2. समाचार, खबर, गुप्तचारी को नु खलु वृत्तान्तः विक्रम० ४, रघु० १४।८७ 3. वर्णन, इतिहास, कथा, आख्यान, कहानी 4. विषय, प्रकरण 5. प्रकार, किस्म 6. ढंग, रीति 7. अवस्था, दशा 8. कुलयोग, समष्टि 9. विश्राम, अवकाश 10. गुण, प्रकृति,—इवर्षः, —कर्कटी तरबूज, सरदा,—गन्धि (नपुं०) एक प्रकार का गंध जो पढ़ने में पद्म जैसा आनन्द दे, चूड,—चील (वि०) मुंडित, जिसका मुंडन संस्कार हो चुका हो —उत्तर० २, पुष्पः 1. बेत, बानीर 2. सिरस का पेड़ 3. कदम्ब का पेड़, फलः 1. बेर, उन्नाव का पेड़ 2. अनार का पेड़, शस्त्र (वि०) जिसने शस्त्र विज्ञान में पांडित्य प्राप्त कर लिया है—भट्टि० ९।१९।

वृत्तिः [वृत्+क्तिन्] 1. अस्तित्व, सत्ता 2. टिकना, रहना, रुख, किसी विशेष स्थिति में होना जैसा कि विरुद्धवृत्ति या विपक्षवृत्ति में 3. अवस्था, दशा 4. कार्य, गति, कृत्य, कार्यवाही—शतैस्तमक्षणामनिमेषवृत्तिभिः रघु० ३।४३, कु० ३।७३, श० ४।१५ 5. क्रम, प्रणाली, श० २।११ 6. आचरण, व्यवहार, चालचलन, कार्यपद्धति—कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने —श० ४।१८, मेघ० ८, वेतसीवृत्ति, बकवृत्ति आदि 7. पेशा, व्यवसाय, काम-धंधा, रोजगार, जीवनचर्या (प्रायः समास के अन्त में)—तार्थके मुनिवृत्तीनाम् —रघु० १।८, श० ५।६, पंच० ३।१२५ 8. जीविका, संपोषण, जीविका के उपाय (बहुधा समास में)—रघु० २।३८, श० ७।१२, कु० ५।२८, (जीविका के विभिन्न उपायों के लिए दे० मनु० ४।४-६ 9. मजदूरी, भाड़ा 10. क्रियाशीलता का कारण 11. सम्मानपूर्ण बर्ताव 12. भाष्य, टीका, विवृति—सद्वृत्तिः सन्निबन्धना —शि० २।११२, काशिकावृत्तिः आदि 13. चक्कर काटना, मुड़ना 14. किसी वृत्त या पहिये की परिधि 15. (व्या०) जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े 16. शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिधान, संकेत अथवा व्यंजना की जाय (यह शक्तियाँ अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के नाम से विख्यात) 17. रचना की शैली (यह चार हैं—कैशिकी, भारती, सात्वती और आरभटी)। सम० अनुप्रासः एक प्रकार का अनुप्रास,—दे० काव्य० ९,—उपायः जीविका का उपाय,—वर्जित (वि०) जीविका के अभाव में अत्यन्त दुःखी—मनु० ८।४११, चक्रम् राज चक्र पञ्च० १।८१,—छेदः जीविका के साधनों से वञ्चित,—भगः, —वैकल्यम् जीविका का अभाव—पञ्च० १।१५३, —स्थ (वि०) 1. किसी भी स्थिति या नियुक्ति में रहने वाला 2. सदाचारी, अच्छा बर्ताव करने वाला, (स्थः) छिपकली, गिरगिट।

वृत्रः [वृत्+रक्] 1. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था (वह अन्धकार का मूर्तरूप माना जाता है), दे० 'इन्द्र' 2. बादल 3. अन्धकार 4. शत्रु 5. ध्वनि 6. पर्वत। सम०—अरिः—हन् (पुं०) शत्रुः—हन् (पुं०) इन्द्र के विशेषण—क्रुद्धेव पक्षिच्छिदि वृत्रशत्रौ -कु० १।२०, वाचा हरिं वृत्रहणं स्मितेन—७।४६।

वृथा (अव्य०) [वृ+थाल् किच्च] 1. बिना किसी अभिप्राय के, व्यर्थ, निरर्थक, बिना किसी लाभ के, (बहुधा विशेषण की शक्ति से युक्त)—व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे वीर्यं हरीणां वृथा—उत्तर० ३।४५, दिव यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः—कु० ५।४५ 2. अनावश्यक रूप से 3. भूलचूक से, आलस्य पूर्वक, बेलगाम 4. गलत तरीके से, अनुचित रूप से (समास के आरम्भ में 'वृथा' शब्द का अनुवाद 'व्यर्थ, निरर्थक', अनुचित, मिथ्या या आलसी, किया जा सकता है)। सम०—अटनम् अलसता के साथ टहलना, सामोद भ्रमण करना, आकारः मिथ्या रूप, खाली लक्षणा,—कथा बेहूदी बात, —जन्मन् (नपुं०) अलाभकर या व्यर्थ जन्म,—दानम् वह उपहार जो प्रतिग्रहीता होने पर भी न दिया गया हो,—मतिः (वि०) दुर्बुद्धि, मूर्ख, मांसम् वह मांस जो देवताओं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या पितरों के लिए अभिप्रेत न हो, दाक्षिन् (वि०) । मिथ्या भाषी,—अमः व्यर्थ चेष्टा या कष्ट उठाना ।

वृद्ध (वि०) [वृध्+क्त] (म० अ० ज्यायस् या वर्षीयस्, उ० अ० ज्येष्ठ या वर्षिष्ठ) 1. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2. पूर्णविकसित, बड़ी उम्र का 3. बूढ़ा, वयोवृद्ध, बहुत वर्षों का वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः—उत्तर० ५।२५ 4. प्रगत या विकसित (समास के अन्त में), तु० वयोवृद्ध, धर्मवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, आगमवृद्ध 5 बड़ा, विशाल 6. एकत्रित, संचित 7. बुद्धिमान्, विद्वान्, ङः 1. बूढ़ा व्यक्ति हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् - रघु० १।४५, ९।८, मेघ० ३० 2. योग्य या आदरणीय पुरुष 3. मुनि, सन्त 4. वंशज, द्रुम् गुग्गुल । सम०—अङ्गुलिः (स्त्री०) पैर का अंगूठा, - अवस्था बुढ़ापा, —आचारः प्राचीन प्रथा, - उक्षः बूढ़ा बैल,—काकः पहाड़ी कौवा, —गामि (वि०) स्थूलकाय, मोटे पेट वाला,—भावः बुढ़ापा,—मतः प्राचीन ऋषियों का उपदेश, वाहनः आम का पेड़, श्वर्षम् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—संघः वृद्धजनों की सभा, सूत्रकम् रूई का पल्हा, कपास का गाला, इन्द्रतूल ।

वृद्धा [वृद्ध+टाप्] 1. बूढ़ी स्त्री 2. बकरी (स्त्री०) ।

वृद्धिः [वृध्+क्तिन्] 1. विकास, बढ़ोत्तरी, वर्धन, सम्वर्धन पुष्पेष वृद्धि हरिदश्वदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः रघु० ३।२२, तपोवृद्धि, ज्ञानवृद्धि आदि 2. (चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना, पर्यायपीतस्य सुरैहिमांशोः कलाक्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः - रघु० ५।१६, कु० ७।१ 3. धन की वृद्धि, समृद्धि, धनाढ्यता—पंच०२।११२ 4. सफलता, बढ़ावत, उन्नति, प्रगति परिवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनां—शि० १५।१ 5. दौलत, जायदाद 6. ढेर, परिमाण, समुच्चय 7. सूद, ब्याज, सरला वृद्धिः, चक्रवृद्धिः 8. सूदखोरी 9. लाभ फायदा 10. अंडकोष की वृद्धि 11. शक्ति या राजस्व का विस्तार 12. (व्या० में) स्वरों का लंबा करना या वृद्धि, अ, इ, उ, ऋ (चाहें ह्रस्व हों या दीर्घ) और ऌ को क्रमशः आ, ऐ, औ, आर् और आल् में बदलना 13. परिवार में, (प्रसव के कारण) उत्पन्न अशौच, जननाशौच । सम० आजीवः,—आजीविन् (पुं०) सूदखोर, साहूकार, ब्याज पर रुपया उधार देनेवाला,—जीवनम्,—जीविका सूदखोरी, साहूकारी, —द (वि०) समृद्धि को उन्नत करने वाला, पत्रम् एक प्रकार का उस्तरा, श्राद्धम् पुत्रजन्मादि के उत्सवों पर पितरों का श्राद्ध, नान्दीमुख श्राद्ध ।

वृध् I (भ्वा० आ०—परस्मै० वृधे, वृत, वृधः, वृधे और सन्नन्त में पर०, वर्धते, वृद्ध, इच्छा० विवृत्सति या विवर्धिषते) 1. विकसित होना, बढ़ना, विस्तृत होना, मजबूत या बलवान् होना, फलना, समृद्ध होना—अन्योन्यजनसंरम्भो ववृधे वादिनोरिव - रघु० १२।९२, १७।७८, धनश्चये वर्धति जाठराग्निः सुश्रु०, शरीर० १४।१३, १९।२६ 2. जारी रखना, टिकाऊ रहना 3. उठना, चढ़ना 4. बधाई का कारण होना—(प्रायः 'दिष्ट्या' के साथ) दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान् वर्धते श० ७, "धर्मपत्नी के मिलने के उपलक्ष्य में आपकी बधाई हो, प्रेर० (वर्धयति—ते, वर्धापयति—ते भी) 1. विकसित कराना, बढ़ाना, वृद्धियुक्त करना, ऊँचा उठाना, ऊँचा करना, उन्नत करना - वर्धयन्निव तत्कूटानुद्धूतैर्धातुरेणुभिः - रघु० ४।७१ 2. समृद्ध कराना, यशस्वी बनाना, विस्तीर्ण करना, बढ़ाई करना हि० २।३ 3. बधाई देना, अभिनन्दन करना (इस अर्थ में वर्धापयति), अभि—, विकसित होना बढ़ना - क्षीणः क्षीणोऽपि शशी भूयोऽभिवर्धते नित्यम् - काव्य० १०, परि प्र वि—, विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना, सम्—, बढ़ना, - रघु० ५।६ ।

II (चुरा० उभ० वर्धयति-ते) 1. बोलना, चमकना ।

वृषसानः [वृषेः छन्दसि असानच्, कित्] मनुष्य ।

वृषसानुः [वृष्+असानुच्] 1. मनुष्य 2. पत्ता 3. कर्म, कार्य ।

वृन्तम् [वृ+क्त, नि० मुम्] 1. किसी फल या पत्ते का डंठल, डंडी—वृन्ताच्छ्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९ 2. घड़ौंची 3. स्तन की बौंडी या अग्रभाग ।

वृन्ताकः, - को [वृन्त+अक्+अण्] बैंगन का पौधा ।

वृन्तिका [वृन्त+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटा डंठल ।

वृन्दम् [वृ+दन्, नुम्, गुणाभावः] 1. समुच्चय, समूह बड़ी संख्या, दल—अनुगतमलिवृन्दैर्गण्डभित्तीर्विहाय - रघु० १२।१०२, मेघ० ९९, इसी प्रकार अभ्र० 2. ढेर, परिमाण ।

वृन्दा [वृन्द+टाप्] 1. पवित्र तुलसी 2. गोकुल के निकट एक वन । सम० अरण्यम्, वनम् गोकुल के निकट एक जंगल—वृन्दारण्ये वसतिरधुना केवलं दुःखहेतुः पदा० ३८।४१, रघु० ६।५०,—वनी तुलसी का पौधा ।

वृन्दार (वि०) [वृन्द+ऋ+अण्] 1. अधिक, बड़ा, विशाल 2. प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3. सुहावना, आकर्षक, सुन्दर ।

वृन्दारक (वि०) (स्त्री०—का,—रिका) [वृन्द+आरकन्, पक्षे टाप्, इत्वम् च] 1. अधिक, बड़ा, बहुत 2. प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3. सुहावना, आकर्षक, सुन्दर, मनोहर 4. आदरणीय, सम्मानीय,—कः 1. देव, सुर,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रितो वृंदारण्यं नतनिखिलवृंदारकवृतः · भामि० ४।५ 2. किसी भी चीज का मुख्य (समास के अन्त में) दे० (२) ऊपर।

वृन्दिष्ठ (वि) [अयमेषामतिशयेन वृन्दारकः - इष्ठन्, वृन्दादेशः] 1. अत्यन्त बड़ा या विशालतम 2. अत्यन्त मनोहर, सुन्दरतम।

वृन्दीयस् (वि०) [वृन्दारक' की म० श० अयमनयोरतिशयेन वृन्दारकः+ईयसुन्, वृन्दादेशः] 1. अपेक्षाकृत बड़ा, विशालतर 2. अपेक्षाकृत मनोहर, सुन्दरतर।

वृश् (दिवा० पर० वृश्यति) छाँटना, चुनना।

वृशः [वृश् + क] चूहा,—श्रा एक औषधि, अड़ूसा, -शम् अंदरक।

वृश्चिकः [वृश्च्+किकन्] 1. बिच्छू 2. वृश्चिक राशि 3. केंकड़ा 4. कानखजूरा 5. वसूलना, गोबर का कीड़ा 6. एक रोएँदार कीड़ा।

वृष् i (स्वा० पर० वर्षति, वृष्ट) 1. बरसना (वृद्धावा 'इन्द्र' 'पर्जन्य' या बादल आदि सार्थक शब्दों के साथ कर्ता के रूप में, या कभी-कभी भावात्मक रूप से) —द्वादशवर्षाणि न ववर्ष दशशताक्षः— दश०, काले वर्षतु मेघाः, गर्ज वा वर्ष वा शक्र—मृच्छ० ५।३१, मेघा वर्षन्तु गर्जन्तु मुञ्चन्त्वसनिसेव वा—५।१६ 2. बारिश करना, उड़ेलना, बौछार करना—वर्षतीवाञ्जनं नभः —मृच्छ० १।३४ इसी प्रकार—शरवृष्टिम् कुसुमवृष्टि वर्षति आदि 3. बरसाना ढलकाना 4. अनुदान देना, अर्पण करना 5. तर करना 6. पैदा करना, उत्पन्न करना 7. सर्वोपरि शक्ति रखना 8. प्रहार करना, चोट मारना, अभि—, 1. बौछार करना, बरसाना, उड़ेलना, छिड़कना रघु० १।८४, १०।४८ 2. प्रदान करना, अर्पण करना, प्र—, बरसाना, बौछार करना—वस्त्रायमभितः पुष्पैः प्रवृष्ट इव केसरः—राम० (=उत्तर० ६।३६)।

ii (चुरा० आ० वर्षयते) 1. शक्तिशाली या प्रमुख होना, 2. उत्पन्न करने की शक्ति रखना।

वृषः [वृष्+क] 1. साँड—असंपदस्तस्य वृषेण गच्छतः —कु० ५।८०, मेघ० ५२, रघु० २।३५, मनु० ९।१२३ 2 वृष राशि 3. किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम, अपने दल का सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्त में) मुनिवृषः, कपिवृषः आदि 4. कामदेव 5. मजबूत या व्यायाम शील व्यक्ति 6. कामातुर, रतिग्रंथों में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक दे० रति० ३७ 7. शत्रु, विपक्षी 8. चूहा 9. शिव का नंदी बैल 10 नैतिकता, न्याय 11. गुण, सत्कर्म या पुण्यकार्य—न सदगतिः स्याद् वृषदूषितानाम्—कोर्ति० ९।६२, (यहाँ 'वृष' का अर्थ साँड भी है) 12. कर्ण का नामान्तर 13. विष्णु का नाम 14. एक विशेष औषधि का नाम —पत्र मोर का पंख। सम० अङ्क: शिव का विशेषण— रघु० ३।२३ 2. पुण्यात्मा, सद्गुणी 3. भिलावाँ 4. षंढ, -ज: छोटा ढोल, अञ्चनः शिव का विशेषण —अन्तकः विष्णु का विशेषण, -आहारः बिलाव, —उत्सर्गः मृत पुरुष के नाम पर दाग कर साँड छोड़ना, -दंशः,—दंशकः बिलाव, ध्वजः 1. शिव का विशेषण—रघु० ११।४४ 2. गणेश का विशेषण 3. सद्गुणी, पुण्यात्मा,— पतिः शिव का विशेषण, - पर्वन् (पु०) 1. शिव का विशेषण 2. एक राक्षस का नाम जिसने असुराचार्य शुक्र की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं से संघर्ष किया, इसकी पुत्री शर्मिष्ठा का विवाह ययाति के साथ हुआ—दे० ययाति और देवयानी 3. वर्र, भिरड़, भासा इन्द्र और देवताओं का आवास—अर्थात् अमरावती, —लोचनः बिलाव,—वाहनः शिव का विशेषण।

वृषणः [वृष्+क्यु] अंडकोष, अंड या फोते।

वृषन् (पुं०) [वृष्+कनिन्] 1. साँड 2. वृषराशि 3. किसी वर्ग का मुखिया—महादो० १।७ 4. बीजाश्व, साँड, घोड़ा 5. पीड़ा, शोक 6. पोड़ा के प्रति असंवेदता 7. इन्द्र का नाम—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षाताम्—कु० ५।६१, ८०, रघु० १०।५२, १७।७७ 8. कर्ण का नाम 9. अग्नि का नाम।

वृषभः [वृष्+अभच् किच्च] 1. साँड 2. कोई भी नर जानवर 3. अपने वर्ग का मुखिया (समास के अन्त में) द्विजवृषभः—रत्न० १।५, ४।२१ 4. वृषराशि, 5. एक प्रकार की औषधि—तु० ऋषभ 6. हाथी का कान 7. कान का विवर। राम०—गतिः,—ध्वजः शिव के विशेषण—रघु० २।३६, कु० ३।६२।

वृषभी (स्त्री०) [वृषभ+ङीष्] 1. विधवा 2. कवच।

वृषलः [वृष्=कलच्] 1. शूद्र 2. घोड़ा 3. लहसुन 4. पापी, दुष्ट, अधर्मी 5. जाति से बहिष्कृत 6. चन्द्रगुप्त का नाम (विशेषतः चाणक्य द्वारा प्रयुक्त—दे० मुद्रा० अंक १, ३)।

वृषलकः [वृषल+कन्] तिरस्करणीय शूद्र।

वृषली [वृषल+ङीष्] 1. बारह वर्ष की अविवाहित कन्या, रजस्वला होने पर भी विवाह न होने के कारण पिता के घर रहने वाली कन्या—पितुर्गेहे च या नारी रजः पश्यत्यसंस्कृता, भ्रूणहत्या पितुस्तस्याः सा कन्या वृषली स्मृता 2. रजस्वला 3. बाल स्त्री 4. सद्योजात बच्चे की माता 5. शूद्र की पत्नी या शूद्रा स्त्री। सम०—पतिः शूद्र स्त्री का पति, सेवनम् शूद्रा स्त्री के साथ संभोग।

वृषलत्वकी (स्त्री०) वर्र, भिरड़।

वृषस्यन्ती [वृष+क्यच्, सुक्, शतृ+ङीप्, नुम्] 1. संभोग करने की इच्छा वाली स्त्री (पुरुष में कर्म० के साथ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–रघुनन्दनं वृषस्यन्ती सूर्णणखा प्राप्ता—महावी० ५, भट्टि० ४।३०, रघु० १२।३४ 2. कामासक्ता या कामातुरा स्त्री 3. गर्भायी हुई गाय ।

वृषाकपायी [वृषाकपेः पत्नी—वृषाकपि+ङीप्, ऐ आदेशः] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. गौरी का विशेषण 3. शची का विशेषण 4. अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण 5. सूर्य की पत्नी ऊषा का विशेषण ।

वृषाकपिः [वृषः कपिः अस्य—ब० स०, पूर्वपददीर्घः] 1. सूर्य का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. इन्द्र का विशेषण 5. अग्नि का विशेषण ।

वृषायणः (पु०) 1. शिव का विशेषण 2. गोरैया चिड़िया ।

वृषिन् (पु०) [वृष+इनि] मोर ।

वृषी (स्त्री०) संन्यासी या ब्रह्मचारी का आसन (कुश घास से बना हुआ) ।

वृष्ट (भू० क० कृ०) [वृष्+क्त] 1. बरसा हुआ 2. बरसता हुआ 3. बौछार करता हुआ, उंडेलता हुआ ।

वृष्टिः (स्त्री०) [वृष्+क्तिन्] 1. बारिश, बारिश की बौछार आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः मनु० ३।७६ 2. (किसी भी वस्तु की) बौछार —अस्त्रवृष्टि - रघु० ३।५८, पुष्पवृष्टि २।६०, इसी प्रकार शर° धन° उपल° आदि । सम० - कालः बरसात का समय,—औदक (वि०) बारिश द्वारा सिंचित (प्रदेश), तुच देवमातृक, भूः मेंढक ।

वृष्टिमत् (वि०) [वृष्टि+मतुप्] बरसने वाला, बरसाती, (पुं०) बादल ।

वृष्णि (वि०) [वृषेः निः किच्च] 1. धर्मभ्रष्ट, पाखंडी 2. क्रूर, कोपाविष्ट, (पुं०) 1. बादल 2. मेंढा 3. प्रकाश की किरण 4. कृष्ण के किसी पूर्वज का नाम 5. कृष्ण का नाम 6. इन्द्र 7. अग्नि । सम० गर्भः कृष्ण का विशेषण ।

वृष्य (वि०) [वृष्+क्यप्] 1. जिसके ऊपर बरस सके, बौछार की जा सके 2. कामोद्दीपक, वाजीकर, पुंस्त्व बढ़ाने वाला,– ध्यः मांस, उड़द ।

वृह्, बृहत्, बृहतिका दे० वृह्, बृहत्, बृहतिका ।

बृहती [वृह्+अति+ङीष्] 1. नारद की वीणा 2. छत्तीस की संख्या 3. दुपट्टा, चोगा, ओवरकोट 4. भाषण आशय (जैसे जलाशय) दे० 'बृहती' भी । सम० —पतिः बृहस्पति का विशेषण ।

बृहस्पति दे० 'बृहस्पति' ।

वृ (क्रया० उभ० वृणाति, वृणीते, वूर्ण, कर्मवा० वूर्यते, इच्छा० विवूर्षति-ते, विवरिषति-ते) छांटना, चुनना (दे० 'वृ' 1) ।

वे (स्वा० उभ० वयति-ते, उत, प्रेर० वाययति-ते) 1. बुनना –सितांशुवर्णैर्वयति स्म तद्गुणैः—नै० १।१२ 2. बाल गूंथना, पौधे लगाना 3. सीना 4. बनाना, रचना, तत्पर करना. प्र—, 1. बुनना 2. बांधना, कसना 3. जमाना, स्थिर करना 4. परस्पर बुनना, संश्लेषित करना, दे० 'प्रोत' ।

वेकटः (पुं०) 1. हंसोकड़ा 2. जौहरी 3. युवा पुरुष ।

वेगः [विज्+घञ्] 1. आवेग, संवेग 2. गति, प्रवेग, शीघ्रता 3. विक्षोभ 4. अतिवेगशीलता, प्रचण्डता, बल 5. प्रवाह, धारा जैसा कि 'अम्बुवेगः' में 6. तेज, क्रियाशीलता, संकल्प 7. शक्ति, सामर्थ्य,–मदनज्वरस्य वेगात् का० 8. संचार, क्रिया, (विष —आदि का) प्रभाव उत्तर० २।२६, विक्रम० ५।१८ 9. शीघ्रता, जल्दबाजी, आकस्मिक आवेग - पंच० १।१०९ 10. बाण की गति—कि० १३।२४ 11. प्रेम, प्रणयोन्माद 12. आन्तरिक भाव का बाहर प्रकट होना 13. आनन्द, प्रसन्नता 14. मलत्याग 15. शुक्र, वीर्य । सम० अनिलः 1. आंधी का झोंका विक्रम० १।४ 2. प्रचण्ड वायु,—आघातः 1. अकस्मात् वेग का अवरोध, गति को रोकना, 2. मलावरोध, कोष्ठबद्धता,—नाशनः श्लेष्मा, कफ,— वाहिन् (वि०) स्फूर्त, तेज,– विधारणम् गति का रोकना, सरः खच्चर ।

वेगिन् (वि०) (स्त्री०–नी) [वेग+इनि] तेज, चुस्त, द्रुतगामी, प्रचण्ड, फुर्तीला (पुं०) 1. हरकारा 2. बाज, —नी नदी ।

वेङ्कटः (पुं०) एक पहाड़ का नाम, वेंकटाचल ।

वेतना [विद्+अच्+टाप्] भाड़ा, मजदूरी ।

वेतस् [विद्+असुन्] एक प्रकार का चन्दन ।

वेडा [वेड+टाप्] किश्ती, नाव ।

वेत्, वेद् (भ्वा० उभ० वेदयति-ते, वेदति-ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. जानना, पहचानना, प्रत्यक्ष करना 3. विचारविमर्श करना, सोचना 4. लेना 5. बाजा बजाना ।

वेणः [वेण्+अच्] 1. गायक जाति का पुरुष—तु० मनु० १०।१९, वेणानां भांडवादनम्—१०।२९ 2. एक राजा का नाम, अङ्ग का पुत्र और स्वायंभुव मनु का वंशज (जब यह राजा बना तो उसने सब प्रकार की पूजा व यज्ञादि को बन्द करने की घोषणा कर दी। ऋषियों ने इसका बड़ा विरोध किया, परन्तु जब उसने उनकी एक न सुनी तो उन्होंने अभिमन्त्रित कुशतृण की पत्ती से उसकी हत्या कर दी। अब देश में कोई शासक न रहा। अतः उन्होंने उस मृतक शरीर की जंघा को मसला, तब उसमें से एक निषाद निकला जो शरीर का गिट्टा तथा चौड़े मुख वाला था। उसके पश्चात् उन्होंने उसकी दक्षिण भुजा को रगड़ा जहां से भव्य पृथु (दे० पृथु) का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार वह भली भांति शासन करने लगा, परन्तु बाद में वह जैन-नास्तिकता में फंस गया। यह भी कहा जाता है कि उसने वर्णव्यवस्था में गड़बड़ी फैलाई, तु० मनु० ७।४१, ९।६६-६७)।

वेणा [वेण+टाप्] एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है)।

वेणिः,-णी (स्त्री०) [वेण्+इन्, ङीप् वा] 1. गुंथे हुए बाल, बालों की मींढी,—तरङ्गिणी वेणिरिवातिभाति भुवः —शि० १२।७५, मेघ० १८ 2. बालों की एक अलंकृत चोटी जो पीठ पर लटकती रहती है (कहा जाता है कि वही स्त्रियां ऐसी चोटी करती हैं जिनके पति घर पर न हों) दनाम्नि वृत्तेन रघुत्तमेन मुक्ता स्वयं वेणिरिवाबभासे—रघु० १४।१२, अंदसावेणि मोक्षोत्सुकानि—मेघ० ९९, कु० २।६१ 3. अनवच्छिन्न प्रवाह, धारा, सरिता जलवेणिरम्यां रेखा यदि प्रेक्षितुमस्ति कामः—रघु० ६।४३, मेघ० २९, तु० 'त्रिवेणी' शब्द की भी 4. दो या अधिक नदियों का संगम 5. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम 6. एक नदी का नाम। सम०—बन्धः गुंथे हुए बाल, मींढी —रघु० १०।४७,—बेलनी जोंक,—वैणिकी कंघी, —संहारः 1. बालों को गूंथ कर मींढी बनाना वेणी० ६ 2. भट्टनारायणकृत एक नाटक का नाम।

वेणुः [वेण्+उण्] 1. बांस, मलयेऽपि स्थितो वेणुर्न गुरुत्वं न चन्दनम् सुभा०, रघु० १२।४१ 2. नरकुल 3. बंसरी, मुरली —नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५। सम० —ज: बांस का बीज, —ध्न: बांसुरी बजाने वाला, मुरलीवाला, त्रिवृतिः ईख,—यष्टिः बांस की लकड़ी,—वादः, —वादकः मुरली वाला, बांसुरी बजाने वाला, बीजम् बांस का बीज।

वेणूलम् [वेणु+कन्] बांस की मूठ वाला अंकुश।

वेणूलस [वेणु+उनन्] काली मिर्च।

वेत (दे०) ः [पुं०) हाथी भाग्नि० ११६२।

वेतनम् [अज्+ल्युट्, तनादेशः] 1. किराया, मजदूरी, भृति, तलबाह, वृत्ति—रघु० १७।६६ 2. आजीविका, जीवननिर्वाह का साधन। सम०—अधानम्,—अनपाकर्मन् (नपुं०),—अनपाक्रिया 1. पारिश्रमिक या मजदूरी न देना 2. मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न, —जीविन् (पुं०) वृत्ति पाने वाला, वैतनिक।

वेतसः [अज्+असुन् नुक् च, वीभावः] 1. नरसल, नरकुल, बेत—अविलम्बितमेधि वेतसस्तरुजन्मायव मा स्म भज्यथाः—शि० १६।५३, रघु० ९।७५ 2. नींबू, बिजौरा।

वेतसी [वेतस्+ङीप्] नरसल,—वेतसीतरुतले—काव्य० १।

वेतस्वत् (वि०) (स्त्री०—ती) [वेतस+इमतुप्, मस्य वः] जहां नरकुल बहुतायत से पाये जायं।

वेतालः [अज्+विच्, वी आदेशः, तल्+घञ् कर्म० स०] 1. एक प्रकार की भूतयोनि, पिशाच, प्रेत, विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत—मा० ५।२३, शि० २०।६० 2. द्वारपाल।

वेत्तृ (पुं०) [विद्+तृच्] 1. ज्ञाता 2. ऋषि, मुनि 3. पति, पाणिग्रहीता।

वेत्रः [अज्+त्रल्, वी भावः] 1. बेत, नरसल 2. लाठी, छड़ी, विशेष कर द्वारपाल की छड़ी,—वामप्रकोष्ठार्पित-हेमवेत्रः—कु० ३।४१। सम०—आसनम् बेंत की बनी गद्दी,—धरः,—धारकः 1. द्वारपाल 2. आसाधारी, छड़ीबरदार।

वेत्रकीय (वि०) [वेत्र+छ, कुक्] वेत्रवहुल, जहां नरकुल बहुत पाये जायं।

वेत्रवती [वेत्र+मतुप्+ङीष्] 1. स्त्री द्वारपाल 2. एक नदी का नाम मेघ० २४।

वेत्रिन् (पुं०) [वेत्र+इनि] 1. द्वारपाल, दरबान 2. चोबदार।

वेद् (स्वा० आ० वेद्यते) प्रार्थना, निवेदन करना, कहना।

वेदः [विद्+घञ्, अच् वा] 1. ज्ञान 2. आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ (मूलरूप से केवल तीन वेद थे, ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद जिन्हें समष्टिरूप से 'त्रयी' कहते थे, परन्तु बाद में 'अथर्ववेद' उनके साथ जोड़ दिया गया। प्रत्येक वेद के दो भाग हैं—मन्त्र या संहिता पाठ तथा ब्राह्मण भाग। हिन्दुओं की निरी धर्मनिष्ठता के अनुसार वेद अपौरुषेय (जो पुरुषों द्वारा की गई रचना न हो) हैं, क्योंकि वह परमात्मा से प्रकट हुए या सुने गये हैं, इसीलिए उन्हें 'श्रुति' कहते हैं, इसके विपरीत 'स्मृति' अर्थात् जो याद रक्खे जाय या जो पुरुषों की कृति हो; दे० 'श्रुति' तथा 'स्मृति' भी, इसीलिए बहुत से ऋषि जिनका नाम वेद के सूक्तों से संबद्ध है 'द्रष्टारः' देखने वाले कहलाते हैं, उन्हें 'कर्तारः' या 'स्रष्टारः' अर्थात् रचयिता नहीं कहा जाता) 3. कुशा घास का गुच्छा मनु० ४।३६, 4. विष्णु का नाम। सम०—अङ्गम् 'वेद का अंग' एक प्रकार के ग्रन्थ जो मंत्रोच्चारण, व्याख्या और संस्कारों में यत्र-तत्र सही विनियोग में सहायता देने के लिए प्रयुक्त होते हैं अतः वेदाध्ययन में सहायक हैं, (वेदांग गिनती में छः हैं 1. शिक्षा, अर्थात् उच्चारण-विज्ञान 2. छंदस्—छन्दः शास्त्र, 3. व्याकरण 4. निरुक्त अर्थात् वेद के कठिन शब्दों की निर्वचनपरक व्याख्या 5. ज्योतिष अर्थात् नक्षत्र-विद्या या गणितज्योतिष और 6. कल्प अर्थात् कर्म-काण्ड या अनुष्ठानपद्धति),—अधिगमः, —अध्ययनम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन, **अध्यापकः** वेद का पढ़ाने वाला, धर्मगुरु,—**अन्तः** 1. 'वेद का अन्त' (वेद के अन्त में आने वाली) उपनिषद् 2. हिन्दुओं के छः मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन ('वेदान्त' इसलिए कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्य-क्षेत्र को शिक्षा देता है, या इसलिए कि यह उन उपनिषदों पर आधारित है जो वेद का अन्तिम भाग है), (दर्शन की इस पद्धति को कभी-कभी 'उत्तरमीमांसा' के नाम से पुकारते हैं, यही जैमिनि की पूर्वमीमांसा का उत्तरार्ध, या अन्तिम भाग है, परन्तु व्यवहारतः यह एक स्वतन्त्र शास्त्र है, दे० मीमांसा, यह हिन्दुओं के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सर्वेश्वरवाद का प्रवर्तक है, इसके अनुसार समस्त विश्व एक ही अनादि शक्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा का संश्लिष्ट रूप है, दे० 'ब्रह्मन्' भी) °**गः**, °**ज्ञः**, वेदान्त दर्शन का अनुयायी, —**अन्तिन्** (पुं०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—**अर्थः** वेदों का अर्थ,—**अवतारः** वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय संदेश,—**आदि** (नपुं०), —**आदिवर्णः** —**आदिबीजम्** 'ओम्' की पुनीत ध्वनि, **उक्त** (वि०) शास्त्रसम्मत, वेदविहित, **कौलेयकः** शिव का विशेषण,—**गर्भः** 1. ब्रह्म का विशेषण 2. वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण, **ज्ञः** वेदों को जानने वाला ब्राह्मण, —**त्रयम्**, **त्रयी** सामूहिक रूप से तीनों वेद, —**निन्दकः** नास्तिक, पाखण्डी, श्रद्धाहीन (जो वेद के स्वरूप तथा उसके अपौरुषेयत्व पर विश्वास नहीं करता है),—**निन्दा** अविश्वास, पाखण्ड,—**पारगः** वेदों में पारंगत ब्राह्मण,—**मातृ** (स्त्री०) वैदिक पुनीत मन्त्र, गायत्रीमंत्र, **वचनम्**,—**वाक्यम्** वेद का मूलपाठ, **वदनम्** व्याकरण,—**बाह्यः** ब्राह्मण,—**बाह्य** (वि०) वेद के विरुद्ध, जो वेद में उपलब्ध न हो, —**विद्** (पुं०) वेदविशारद ब्राह्मण,—**विहित** (वि०) वेदों में जिसका विधान पाया जाय, **व्यासः** व्यास का विशेषण जिसने वेदों को वर्तमान रूप दिया है, दे० व्यास,—**संन्यासः** वेदों के कर्मकाण्ड का त्याग।

वेदनम्, **वेदना** [विद्+ल्युट्] 1. ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान 2. भावना, संवेदन 3. पीड़ा, संताप, क्लेश, आधि —अवेदनार्द्रं कुलिशक्षतानाम् कु० १।२०, रघु० ८।५० 4. अधिग्रहण, दौलत, जायदाद 5. विवाह —मनु० ३।४४, ९।६५, याज्ञ० १।६२।

वेदारः [वेद+कृ+अण्] गिरगिट।

वेदिः [विद्+इन्] विद्वान् पुरुष, ऋषि, पंडित, —**दी** (स्त्री०) 1. यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी, 2. वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों—मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या—कु० १।३७ (कुछ लोग इस शब्द का अर्थ इस स्थान पर 'मोहर की अंगूठी' समझते हैं 3. किसी मन्दिर या महल का चौकोर सहन 4. मुद्रा—अंगूठी 5. सरस्वती 6. भूखण्ड, प्रदेश। समः—**जा** द्रौपदी का विशेषण, क्योंकि यह राजा द्रुपद की यज्ञवेदी के मध्य से उत्पन्न हुई थी।

वेदिका [वेदी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1. यज्ञभूमि या वेदी 3. चबूतरा, उच्चसमतलभूमि (जो प्रायः धर्मकृत्यों के लिये ठीक की गई हो—**सप्तपर्णवेदिका** - श०१, कु० ३।४४ 3. आसन 4. वेदी, ढेर, टीला, मन्दाकिनीसैकतवेदिकाभिः कु० १।२९, 'वेदी या रेत के टीले बना कर' 5. आंगन में बीच में बना चौकोर चबूतरा 6. लतामंडप, निकुंज।

वेदिन् (वि०) [विद्+णिनि] 1. ज्ञाता जैसा कि 'कृतवेदिन्' में 2. विवाह करने वाला, (पुं०) 1. जानकार 2. अध्यापक 3. विद्वान् पुरुष 4. ब्राह्मण का विशेषण।

वेदी दे० 'वेदि (स्त्री०)।

वेद्य (वि०) [विद्+ण्यत्] 1. ज्ञात होने के योग्य 2. व्याख्येय या शिक्षणीय 3. विवाहित होने के योग्य।

वेधः [विध्+घञ्] 1. छेद करना, बींधना, छिद्र युक्त करना 2. घायल करना, घाव 3. छिद्र, खुदाई या गर्त 4. (खुदाई की) गहराई 5. समय की माप विशेष।

वेधकः [विध्+ण्वुल्] 1. नरक के एक प्रभाग का नाम 2. कपूर, **कम्** बाल में विद्यमान चावल।

वेधनम् [विध्+ल्युट्] 1. छेदने या बींधने की क्रिया 2. प्रवेशन, छेदन 3. शून्यीकरण, वेधन 4. चुभोना, घायल करना 5. (खुदाई की) गहराई।

वेधनिका [वेधनी+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक तेज नोक वाला उपकरण जिससे मणि या सीप आदि में छिद्र किये जाते हैं, बर्मा।

वेधनी [वेधन+ङीप्] 1. हाथी का कान बींधने वाला उपकरण 2. एक तेज नोक का सीप व मणि आदि को बींधने वाला उपकरण, बर्मा।

वेधस् (पुं०) [विधा+असुन्, गुणः] 1. स्रष्टा—मा० १।२१ 2. ब्रह्मा, विधाता न वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना रघु० १।२९, कु० २।१६, ५।४१ 3. गौण सृष्टिकर्ता (जैसे कि ब्रह्मा से उत्पन्न दक्ष प्रजापति) कु० २।१४ 4. शिव 5. विष्णु 6. सूर्य 7. मदार का पौधा 8. विद्वान् पुरुष।

वेधसम् [वेधस्+अन्] अंगूठे की जड़ के नीचे का हथेली का भाग।

वेधित (भू० क० कृ०) [वेध+इतच्] बींधा हुआ, छिद्रित।

वेन् (म्वा० उभ० वेनति—ते) दे० वेण्।

वेन्ना दे० 'वेणा'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेप् (स्वा० आ० वेपते, वेपित) काँपना, हिलना, थरथराना, लरजना ·कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी,—भग० ११।३५, रघु० ११।६५, प्र ,थरथराना, थड़कना, काँपना—कु० ५।२७,७४।

वेपथुः [वेप्+अथुच्] थरथरी, कम्पकपी, (स्तनों का) हिलना अद्यापि स्तनवेपथुः जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः···श० १।३०, शि० ९।२२, ७३, रघु० १९। २३, कु० ४।१७, ५।८५।

वेपनम् [वेप्+ल्युट्] थरथरी, कंपकपी।

वेमः, वेमन् (पुं०, नपुं०) [वे+मन्, मनिन् वा] करघा, खड्डी ·महासिक्थेभ्यः सहकूत्वरी बहुम्—नै० १।१२, तुरीवेमादिकम् तर्क०।

वेरः, ·रम् [अज्+रन्, दीर्घादेः] 1. शरीर 2. केसर ·जाफरान 3. बैंगन।

वेरटः (पुं०) नीच वृक्ष, छोटी जाति का पुरुष, टम् बेर का फल।

वेल् i (स्वा० पर० वेलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. हिलना, इधर उधर घूमना, काँपना।

ii (चुरा० उभ० वेलयति ते) समय की गणना करना।

वेलम् [वेल्+अच्] उद्यान, वाटिका।

वेला [वेल् + टाप्] 1. समय —वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि —श० ४ 2. ऋतु, अवसर 3. विश्राम का अन्तराल, अवकाश 4. लहर, प्रवाह, धारा 5. समुद्र तट, समुद्री किनारा वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गाः रघु० १३।१२,१५. १।३०, ८।८०, १७।३७, शि० ३।७९, ९।३८ 6. सीमा, हृदबन्दी 7. भाषण 8. बीमारी 9. सहज मृत्यु 10. मसूड़े। सम० कूलम् ताम्रलिप्त नामक जिला, -मूलम् समुद्र-तट, ··वनम् समुद्रीकिनारे का जंगल।

वेल्ल् (स्वा० पर० वेल्लति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. हिलाना, काँपना, इधर-उधर फिरना भीम० १।५५, शि० ७।७२।

वेल्लः, वेल्लनम् [वेल्ल्—घञ्, ल्युट् वा] 1. हिलना, गतिशील होना 2. (भूमि पर) लोटना।

वेल्लहलः [वेल्ल्+हवल्+अच्, पृषो०] लम्पट, दुराचारी।

वेल्लिः (स्त्री०) [वेल्ल्+इन्] लता, बेल तु० वल्लि'।

वेल्लित (भू० क० कृ०) [वेल्ल्—क्त] 1. कंपायमान, थरथराने वाला, हिलाया हुआ 2. टेढ़ा-मेढ़ा, ·तम् 1. जाना, चलना—फिरना 2. हिलना।

वेवी (अदा० आ० वेवीते) 1. जाना 2. प्राप्त करना 3. गर्भधारण करना, गर्भवती होना 4. व्याप्त करना 5. डाल देना, फेंकना 6. खाना 7. कामना करना, चाहना (शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग)।

वेशः [विश्+घञ्] 1. प्रवेशद्वार 2. अन्तः प्रवेश, पैठना 3. घर, आवासस्थल 4. वेश्याओं का घर, चकला,—तरुणजनसहायश्चिन्त्यतां वेशवासः —मृच्छ० १।३१ 5. पोशाक, वस्त्र, कपड़े (इस अर्थ में 'वेष' भी लिखा जाता है) मृगयावेशधारी,—विनीतवेशेन —श० १, कृतवेशे कथंचे - गीत०११। सम० —दासम् सूरजमुखी फूल,—धारिन् (वि०) छद्मवेशी, कपटरूपधारी,—नारी, वनिता वेश्या—मुद्रा० ३।१०,···वासः वेश्याओं का घर, चकला।

वेशकः [वेश+कन्] घर।

वेशनम् [विश्+ल्युट्] 1. प्रवेश करना, प्रवेशद्वार 2. घर।

वेशन्तः [विश्+झच्] 1. छोटा तालाब, पोखर 2. आग।

वेशरः [वेश+रा+क] खच्चर।

वेशमन् (नपुं०) [विश्+मनिन्] घर, निवासस्थान, आवास, भवन, महल—रघु० १४।१५, मेघ० २५, मनु० ४।७३, ९।८५। सम०—कर्मन् (नपुं०) घर बनाना, कलिङ्गः एक प्रकार की चिड़िया, नकुलः छछून्दर,—भूः (स्त्री०) वह स्थान जहाँ घर बनाना है, भवननिर्माण के लिए भूखण्ड।

वेशयम् [विश्—ण्यत्, वेशाय हितं वा यत्] वेश्याओं का घर, चकला।

वेश्या [वेशेन पण्ययोगेन जीवति··· वेश्+यत्+टाप्] बाजारू स्त्री, रंडी, गणिका, रखैल मृच्छ० १।३२, मेघ० ३५, याज्ञ० १।१४१। सम०—आचार्यः 1. वह पुरुष जो वेश्याओं का स्वामी हो, उन्हें रखता हो 2. भड़ुवा 3. लौंडा, गाँड़,—आश्रयः वेश्याओं का वासस्थल, चकला, - गमनम् व्यभिचार, रंडीबाजी, ·गृहम् चकला, जनः रंडी, पण्यः भोग के लिए रंडी को दी जाने वाली मजदूरी।

वेशवरः (पुं०) खच्चर।

वेष दे० 'वेश'।

वेष्टनम् [विष्+ल्युट्] अधिकृत वस्तु, स्वामित्व, कब्जा।

वेष्ट् (स्वा० आ० वेष्टते) 1. घेरना, अहाता बनाना, घेरा डालना, लपेटना 2. जाली देना, मरोड़ना 3. वस्त्र पहनना। प्रेर० (वेष्टयति ते) 1. घेरना 2. घेराबन्दी डालना, आ , तह करना, परि · , सम्—,परस्पर तह करना, लपेटना, मरोड़ना, उमेठना।

वेष्टः [वेष्ट्+घञ्] 1. घेरा, घिराव 2. बाड़ा, बाड़ 3. पगड़ी 4. गोंद, राल, रस 5. तारपीन। सम० —वंशः एक प्रकार का बांस, सारः तारपीन।

वेष्टकः [वेष्ट्+ण्वुल्] 1. बाड़ा, बाड़ 2. लौकी,—कम् 1. पगड़ी 2. चादर, लबादा 3. गोंद, रस 4. तारपीन।

वेष्टनम् [वेष्ट्+ल्युट्] 1. लपेटना, चारों ओर से घेरना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेराबन्दी करना,—**अङ्गुलिवेष्टकम्**, 1. अंगूठी 2. कुंडलित होना, गोल मरोड़ी लेना,—रघु० ४।३८ 3. लिफ़ाफ़ा, लपेटन 4. ओढ़नी, ढकना, संदूक 5. पगड़ी, शिरोभूषण—**अस्पृष्टालकवेष्टनौ**—रघु० १।४२, शिरस्त्राण **वेष्टनशोभिना**—८।१२ 6. बाड़ा, घेर—**क्रीडाशैलः कनकवलीवेष्टनप्रेक्षणीयः**—मेघ० ७७ 7. तगड़ी, कमरबन्द 8. पट्टी 9. बाहरी कान 10. गुग्गुल 11. नृत्य की विशेष मुद्रा।

वेष्टनकः [वेष्टन+कन्] संभोग के अवसर की विशेष अंगस्थिति।

वेष्टित (भू० क० कृ०) [वेष्ट्+क्त] 1. घिरा हुआ, घेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ, बन्द किया हुआ 2. लिपटा हुआ, वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ 3. ठहराया हुआ, रोका हुआ, विघ्न डाला हुआ 4. घेराबन्दी किया हुआ।

वेष्यः, वेष्यः [विषे: यः] जल, पानी।

वेष्याः दे० 'वेधया'।

वेसरः [वेस्+अरन्] खच्चर—शि० १२।१९।

वेसर (रा) वारः [वेस्+वृ+अण्] गर्म मसाला, (जीरा, राई, मिर्च, अदरक आदि के योग से तैयार किया गया मसाला)।

वेहः [श्वा० आ० वेहते] दे० 'वेह्'।

वेहत् (स्त्री०) [विशेषेण हन्ति गर्भम्—वि+हन्+अति] बांझ गौ।

वेहारः [=विहारः, पृषो०] एक देश का नाम, बिहार।

वेह् [श्वा० पर० वेहूते] जाना, हिलना-जुलना।

वै (भ्वा० पर० वायति) 1. सूखना, शुष्क होना 2. म्लान, निढाल, अवसन्न।

वै (अव्य०) [वा+डै] स्वीकृति या निश्चयबोधक अव्यय (निःसन्देह, सचमुच, वस्तुतः) परन्तु केवल पूरक के रूप में प्रयुक्त -आपो वै नरसूनवः -मनु० १।१०, २।२२१, ९।४९, ११।७७, यह कभी कभी सम्बोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा कभी कभी अनुनय को प्रकट करता है।

वैशतिक (वि०) (स्त्री० -की) [विंशतिक+अण्] बीस में मोल लिया हुआ।

वैकक्षम् [विशेषेण कक्षाति व्याप्नोति—अण्] 1. एक माला जो यज्ञोपवीत की भांति एक कंधे के ऊपर से तथा दूसरे कंधे के नीचे से धारण की जाती है 2. उत्तरीय वस्त्र, चोगा, ओढ़नी।

वैकक्षिकम्, वैकक्षिकम् [वैकक्ष+कन्, ठन् वा] यज्ञोपवीत की भांति बायें कन्धे के ऊपर तथा दायें कन्धे के नीचे से पहनी जाने वाली माला।

वैकटिकः [पुं०] जोहरी।

वैकर्णकः [विकर्तनस्यापत्यम्—अण्] कर्ण का नाम।

वैकल्पम् [विकल्प+अण्] 1. ऐच्छिकता 2. संशय, संदिग्धता 3. अनिश्चय, असमंजस।

वैकल्पिक (वि०) (स्त्री० -की) [विकल्प+ठक्] 1. ऐच्छिक 2. संदिग्ध, संशयित, अनिश्चित, अनिर्णीत।

वैकल्यम् [विकल+ष्यञ्] 1. त्रुटि, कमी, अपूरापन 2. अङ्गभङ्ग, विकलाङ्ग या पंगु होना 3. अक्षमता 4. विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना, 5. अनस्तित्व।

वैकारिक (वि०) [स्त्री०-की] [विकार+ठक्] 1. विकार-विषयक 2. विकारशील 3. विकृत।

वैकालः [विकाल+अण्] तीसरा पहर, मध्याह्नोत्तर काल, सायंकाल।

वैकालिक (वि०) (स्त्री०-की) (वि०) [विकाल+ठक्, ख वा] सायंकालसम्बन्धी या सायंकाल के समय घटित होने वाला।

वैकुण्ठः [विकुण्ठायां मायायां भवः अण्] 1. विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण 3. तुलसी का पौधा, —ण्ठम् 1. विष्णु का स्वर्ग 2. अभ्रक। सम०—चतुर्दशी कार्तिकशुक्ला चौदस, **लोकः** विष्णु की दुनिया।

वैकृत (वि०) (स्त्री०—ती) [विकृत+अण्] 1. परिवर्तित 2. बदला हुआ,—तम् 1. परिवर्तन, अदल-बदल, हेर-फेर 2. अरुचि, जुगुप्सा, घिनौनापन 3. अवस्था या सूरत शक्ल में परिवर्तन, विरूपता आदि—नै० ४।५ 4. अपशकुन, कोई भी अनिष्टसूचक घटना तत्प्रतीपपवनादि वैकृतं प्रेक्ष्य रघु० ११।६२। सम० **विवर्तः** दुर्दशा, दयनीय दशा, कष्टग्रस्त—वैकृतविवर्तदर्शनः—मा० १।३९।

वैकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकृति+ठक्] 1. परिवर्तित, संशोधित 2. विकृति सम्बन्धी (सांख्य में)।

वैकृत्यम् [विकृत+ष्यञ्] 1. परिवर्तन, अदल-बदल 2. दुःखद स्थिति, दयनीय दशा 3. जुगुप्सा।

वैकल्लम् [विकल्लस्या दीप्यति—विकल्ल+अण्] एक प्रकार का रत्न।

वैक्लव, वैक्लव्यम् [विक्लव+अण्, ष्यञ् वा] 1. गड़बड़ी, विक्षोभ, घबराहट 2. हुल्लड़, हलचल 3. कष्ट, दुःख, शोक, रंज हा० ४।६, वेणी० ५, मृच्छ० ३।

वैखरी [विशेषेण खं राति—रा+क+अण्+ङीप्] 1. स्पष्ट-उच्चारण, ध्वनि-उत्पादन, दे० कु० २।१७ पर मल्लि० 2. वाक्शक्ति 3. वाणी, भाषण।

वैखानस (वि०) (स्त्री०-सी) [वैखानसस्य इदम्-अण्] किसी वानप्रस्थ, सन्यासी, या भिक्षु आदि से सम्बद्ध, —वैखानसं किमनया व्रतमात्मदानाद् व्यापारधीरधि मदनस्य निषेवितव्यम् हा० १।२७, **सः** वैरागी, वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में वास करने वाला ब्राह्मण —रघु० १४।२८, भट्टि० ३।४९।

वैगुण्यम् [विगुण+ष्यञ्] 1. गुण या विशेषण का अभाव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. सद्गुणों का अभाव, त्रुटि, दोष, कमी 3. गुणों की भिन्नता, विविधता, विरोधिता 4. घटियापन, तुच्छता 5. अकुशलता।

वैचक्षण्यम् [विचक्षण+ष्यञ्] कौशल, निपुणता, प्रवीणता।

वैचित्यम् [विचित्त+ष्यञ्] शोक, मानसिक विकलता, अफसोस -मा० ३।१।

वैचित्र्यम् [विचित्र+ष्यञ्] 1. विविधता, विभिन्नता 2. बहुविधता 3. अचरज 4. विस्मयोत्पादकता जैसा कि 'वाच्यवैचित्र्य' में, काव्य० १० 5. आश्चर्य।

वैजनन्यम् [विजनन+अण्] गर्भ का अन्तिम मास।

वैजयन्तः [वैजयन्ती+अण्] 1. इन्द्र का महल 2. इन्द्र का झण्डा 3. ध्वज, पताका 4. घर।

वैजयन्तिकः [वैजयन्ती+ठक्] झण्डा उठाने वाला।

वैजयन्तिका [वैजयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1. झण्डा, पताका (आल० से भी) संचारिणीव देवस्य मकरकेतोर्जगद्विजयवैजयन्तिका काप्यागतवती -मा० १ 2. एक प्रकार की मोतियों की माला।

वैजयन्ती [वि+जि+मच् = विजयन्त+अण्+ङीप्] 1. झंडा, पताका -स्तनपरिणाहविलासवैजयन्ती-मा० ३।१५ 2. चिह्न 3. माला, हार 4. विष्णु का हार 5. एक शब्दकोश का नाम।

वैजात्यम् [विजात+ष्यञ्] 1. जाति या प्रकार की भिन्नता 2. जाति या वर्ण की भिन्नता 3. अचरज 4. जातिबहिष्कार 5. बदचलनी, स्वेच्छाचारिता।

वैजिक (वि०) दे० 'बैजिक'।

वैज्ञानिक (वि०) (स्त्री० -की) [विज्ञान-ठक्] चतुर, कुशल, प्रवीण।

वैडाल दे० 'बैडाल'।

वेणः [वेणु+अण्, उकारस्य लोपः] बांस का कार्य करने वाला।

वैणव (वि०) (स्त्री०—वी) [वेणु+अण्] 1. बांस से उत्पन्न या बांस का बना हुआ,—वः 1. बांस की छड़ी 2. बांस का कार्य करने वाला, बंसोड़,—वी वंशलोचन, —वम् बांस का फल या बीज।

वैणविकः [वैणव+ठक्] मुरली बजाने वाला, बांसुरी बजाने वाला।

वैणविन् (पुं०) [वैणव+इनि] शिव की उपाधि।

वैणिकः [वीणा+ठक्] वीणा बजाने वाला।

वैणुकः [वेणुक+अण्] मुरली बजाने वाला, बांसुरी बजाने वाला,—कम् अंकुश दे० 'वेणुक'।

वैतंसिकः [वितंस+ठक्] मांस विक्रेता।

वैतण्डिकः [वितण्डा+ठक्] वितंडावादी, व्यर्थ विवाद करने वाला, छिद्रान्वेषी।

वैतनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वेतन+ठक्] वेतन से निर्वाह करने वाला,—कः 1. वेतन लेकर काम करने वाला, श्रमिक 2. वेतन भोगी (कर्मचारी)।

वैतरणिः,—णी (स्त्री०) [वितरेण दानेन लभ्यते —वितरण+अण्+ङीप्, पक्षे पृषो० ह्रस्वः] 1. नरक की नदी का नाम 2. कलिङ्ग देश की नदी का नाम।

वैतस (वि०) (स्त्री० सी) [वेतस+अण्] 1. बेंत से संबन्ध रखने वाला 2. नरकुल जैसा अर्थात् अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के सामने घुटने टेक देने वाला —जैसा कि 'वैतसी वृत्तिः' रघु० ४।३५, पंच० ३।१९।

वैतान (वि०) (स्त्री० -नी) [वितान+अण्] यज्ञीय, पवित्र, वैतानास्त्वां वहन्तुः पावयन्तु - श० ४।७, —नम् 1. यज्ञीय कृत्य 2. यज्ञीय आहुति।

वैतानिक (वि०) (स्त्री०—की) [वितान+ठक्] दे० 'वैतान'।

वैतालिकः [विविधस्तालस्तेन व्यवहरति—ठक्] 1. भाट, चारण 2. जादूगर, बाजीगर, विशेषकर वह जो वेताल का भक्त हो।

वैत्रक (वि०) (स्त्री० की) [वेत्र+वुञ्] बेंत से युक्त, नरकुल का।

वैदः [वेद+अण्] बुद्धिमान् मनुष्य, विद्वान् पुरुष।

वैदग्ध्यम्, वैदग्धी, वैदग्ध्यम् [विदग्ध+अण्=वैदग्ध+ङीप्, विदग्ध+ष्यञ्] 1. कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता—अहो वैदग्ध्यम्—मा० १, प्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिः—वास०, शि० ४।२६ 2. क्रमस्थापन में कौशल, सौन्दर्य—मा० १।३७ 3. बुद्धिमत्ता, स्फूर्ति, चतुराई—रत्न० २ 4. बुद्धि।

वैदर्भः [विदर्भ+अण्] विदर्भ देश का राजा—र्भी 1. दमयन्ती 2. रुक्मिणी 3. रचना की विशेष शैली, सा० द० में दी गई परिभाषा—माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका। अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वदर्भी रीतिरिष्यते ॥ ६२६, दण्डी ने इसी सक्षमता पूर्वक गौडी रीति से इसकी विभिन्नता दर्शायी है—दे० काव्या० १।४१-५३।

वैदल (वि०) (स्त्री०—ली) [विदलस्य विकारः विदल +अण्] 1. बेंत या टहनियों से बनाया हुआ,—लः एक प्रकार की रोटी 2. कोई भी दाल का अनाज, —लम् 1. भिक्षुओं का कमण्डलु भिक्षापात्र 2. बांस या टहनियों की बनी डलिया, या आसन।

वैदिक (वि०) (स्त्री०—की) [वेदं वेत्त्यधीते वा ठक्, वेदेषु विहितः वेद+ठक्] 1. वेदों से व्युत्पन्न या वेदों के समानरूप, वेदविषयक 2. पवित्र, वेदविहित, धर्ममिमा —कु० ५।७३, कः वेदों में निष्णात ब्राह्मण। सम० पाशः वेद का अल्पज्ञान रखने वाला, कठशाखी, जिसे वेद का अधूरा ज्ञान हो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैदुषी (स्त्री०) **वैदुष्यम्** [विदुस्+अण्+ङीप्, विदुस् ष्यञ्] ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता ।

वैदूर्य (वि०) (स्त्री०-र्री,-र्यी) [विदूर+ष्यञ्] विदूर से उत्पन्न या लाया गया, -र्यम् वैदूर्य मणि, लहसन —सुभा० ७।१०, शि० ३।४५ ।

वैदेशिक (वि०) (स्त्री०-की) [विदेश+ठञ्] दूसरे देश से संबंध रखने वाला, अन्य देश का, और देशों से लाया हुआ,—कः अन्य देश का व्यक्ति, विदेशी ।

वैदेश्यम् [विदेश+ष्यञ्] विदेशीपन, विदेशी होना ।

वैदेहः [विदेह+अण्] 1. विदेह देश का राजा 2. विदेह का रहने वाला 3. व्यापारी वैश्य 4. ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान - मनु० १०।११, हाः (पुं०, ब० व०) विदेह देश के राष्ट्रजन,—ही सीता —वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे - रघु० १४।३३ (यहां 'वैदेही' शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व कर दिया गया है) ।

वैदेहकः [वैदेह+कन्] 1. व्यापारी 2. - वैदेह (४) ।

वैदेहिकः [विदेह+ठक्] सौदागर ।

वैद्य (वि०) (स्त्री०-द्यी) [वेद+यत्] 1. वेद सम्बन्धी, आध्यात्मिक 2. आयुर्वेद सम्बन्धी, आयुर्वेद विषयक, —द्यः [विद्या अस्ति अस्य विद्या+अण्] 1. विद्वान् पुरुष, विद्यावान्, पण्डित 2. आयुर्वेदाचार्य, चिकित्सक —वैद्यमन्त्रपरिज्ञानिनं गदं न प्रबीप इव वायुमत्यगात् - रघु० १२।५३, वैद्यानामातुरः श्रेयान्— सुभा० 2. वैश्य जाति का पुरुष, जो वर्णसङ्कर समझा जाता है (वैश्य स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान) । सम० -क्रिया वैद्य का व्यवसाय, चिकित्सक के रूप में अभ्यास, -नाथः 1. धन्वन्तरि 2. शिव ।

वैद्यकः [वैद्य+कन्] वैद्य, चिकित्सक,—कम् चिकित्सा-विज्ञान ।

वैद्युत (वि०) (स्त्री०-ती) [विद्युत+अण्] बिजली से सम्बद्ध या उत्पन्न, बिजली—वृक्षस्य वैद्युत इवाग्नि-रुपस्थितोऽयम्—विक्रम० ४।१६, उत्तर० ५।१३ । सम० - अग्निः, - अनलः वह्निः बिजली की आग ।

वैध (वि०) (स्त्री०-धी), **वैधिक** (वि०) (स्त्री०-की) [विधि+अण्, ठक् वा] 1. नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, निश्चित, कर्मकाण्डविषयक 2. कानूनी, विधि या कानून सम्मत ।

वैधर्म्यम् [विधर्म+ष्यञ्] 1. असमानता, भिन्नता 2. लक्षण गुणों का अन्तर 3. कर्तव्य या आभार का अन्तर 4. वैपरीत्य 5. अवैधता, अनौचित्य, अन्याय 6. पाखण्ड ।

वैधवेयः [विधवा+ढक्] विधवा का पुत्र ।

वैधव्यम् [विधवा+ष्यञ्] विधवापन, कु० ४।१, मालवि० ५ ।

वैधूर्यम् [विधुर+ष्यञ्] 1. शोकावस्था 2. विक्षोभ परस्परी, सिहरन ।

वैधेय (वि०) (स्त्री०-यी) [विधि+ढक्] 1. नियमानुकूल, विहित 2. मूर्ख, बुद्धू, जड, यः मूढ, जडमति-प्रलपत्येष वैधेयः—श० २, विक्रम० २ ।

वैनतेयः [विनता+ढक्] 1. गरुड, —वैनतेय इव विनता-नन्दनः—का०, रघु० ११।५९, १६।८८, भग० १०।३० 2. अरुण ।

वैनयिक (वि०) (स्त्री०-की) [विनय+ठक्] 1. शिष्टता, सौजन्य, सदाचरण या अनुशासनसम्बन्धी 2. शिष्टाचार का व्यवहार करने वाला, कः सांसारिक रय ।

वैनायक (वि०) (स्त्री०-की) [विनायक+अण्] गणेशसम्बन्धी - मा० १।१ ।

वैनायिकः [विनायं खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः विनाय +ठक्] 1. बौद्ध सम्प्रदाय के दर्शन-सिद्धान्त 2. उस सम्प्रदाय का अनुयायी ।

वैनाशिकः [विनाश+ठक्] 1. दास 2. मकड़ी 3. ज्योतिषी 4. बौद्धों के सिद्धान्त 5. उन सिद्धान्तों का अनुयायी ।

वैनीतक दे० 'विनीतक' ।

वैपरीत्यम् [विपरीत+ष्यञ्] 1. विरोधिता, विरोध 2. असंगति ।

वैपुल्यम् [विपुल +ष्यञ्] 1. विस्तार, विशालता 2. पुष्कलता, बहुतायत ।

वैफल्यम् [विफल+ ष्यञ्] निरर्थकता, विफलता ।

वैबोधिकः [विबोध+ठक्] 1. चौकीदार 2. विशेषकर वह जो रात में सोने वालों को, पहरा देते समय, समय की घोषणा करके जगाता रहता है कि० १।७४ ।

वैभवम् [विभु+अण्] 1. बड़प्पन, यश, महिमा, चमक-दमक, ठाठ-बाट, दौलत 2. शक्ति, ताकत कि० १२।३ ।

वैभाषिक (वि०) (स्त्री० की) [विभाषा+ठक्] ऐच्छिक, वैकल्पिक ।

वैभ्राम (नपुं०) विष्णु का वैकुण्ठ ।

वैभ्राजम् [विभ्राज्+अण्] स्वर्गीय उपवन या उद्यान ।

वैमत्यम् [विमत+ष्यञ्] 1. मतभेद, अनबन 2. नापसंदगी, अरुचि ।

वैमनस्यम् [विमनस्+ष्यञ्] 1. मन का उचटना, मानसिक अवसाद, शोक, उदासी—श० ६ 2. रोग ।

वैमात्रः, वैमात्रेयः [विमातृ+अण्, ढक् वा] सौतेली मां का बेटा ।

वैमात्रा, वैमात्री, वैमात्रेयी [वैमात्र+टाप्, ङीप् वा, वैमात्रेय+ङीप्] सौतेली मां की बेटी ।

वैमानिक (वि०) (स्त्री० की) [विमान+ठक्] देवयान में आसीन,—कः गगनविहारी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैमुख्यम् [विमुख+ष्यञ्] 1. मुँह मोड़ना, पलायन, प्रत्यावर्तन 2. अरुचि, जुगुप्सा।

वैमेयः [विमेय+अण्] बदला, विनिमय।

वैयग्र्यम्, वैयग्र्यम् [व्यग्र+अण्, ष्यञ् वा] 1. व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट 2. अनन्य भक्ति, तल्लीनता महावी० ७।३८।

वैयधर्म्यम् [व्यधर्म+ष्यञ्] व्यर्थता, अनुत्पादकता।

वैयधिकरण्यम् [व्यधिकरण+ष्यञ्] भिन्न स्थानों में होने का भाव, दे० 'व्यधिकरण'।

वैयाकरण (वि०) (स्त्री०—णी) [व्याकरणमधीते वेत्ति वा - अण्] व्याकरणविषयक, व्याकरणसंबन्धी,—णः व्याकरण जानने वाला वैयाकरणकिरातावपशब्दमृगाः वव यातु संत्रस्ताः—सुभा०। सम०—पाशः जिसे व्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो, भार्या: जिसकी पत्नी व्याकरण को जानने वाली हो।

वैयाघ्र (वि०) (स्त्री० - घ्री) [व्याघ्र+अञ्] 1. चीते की तरह का 2. चीते की खाल से ढका हुआ —घ्रः चीते की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

वैयात्यम् [वियात+ष्यञ्] 1. साहस, अविनय, निर्लज्जता—अन्यदाभूषणं पुंसां क्षमा लज्जेव योषिताम्, पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव—शि० २।४४ 2. उजड्डपन, अक्खड़पन।

वैयासिकः [व्यासस्य अपत्यम्, व्यास+इञ्, अकङ् आदेश, यकारात् पूर्वं ऐच्] व्यास का पुत्र।

वैरम् [वीरस्य भावः—अण्] 1. विरोध, शत्रुता, दुश्मनी वैमनस्य, द्रोह, प्रतिपक्ष, कलह—दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशनम् सुभा०, अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्—श० ५।२३, 'वैरभाव में परिणत हो जाता है,' विधाय वैरं सामर्षं नरोऽरौ य उदासते, प्रक्षिप्योदधिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम् शि० २।४२ 2. घृणा, प्रतिहिंसा 3. शूरवीरता, पराक्रम। सम०—अनुबन्धः शत्रुता का आरंभ,—अनुबन्धिन् (वि०) शत्रुता की ओर ले जाने वाला,—आतङ्कः अर्जुनवृक्ष,—आनृण्यम्, —उद्धारः,—निर्यातनम्,—प्रतिक्रिया,—प्रतीकारः—यातना,—शुद्धिः (स्त्री०),—साधनम् शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा,—करः, करः, कृत् (पुं०) शत्रु,—भावः शत्रुतापूर्ण रवैया—रक्षिन् (वि०) शत्रुता का निवारण करने वाला।

वैरक्तम्,—क्त्यम् [विरक्त+अण्, ष्यञ् वा] 1. सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव 2. अप्रसन्नता, नापसन्दगी, अरुचि।

वैरङ्गिकः [विरङ्गं विरागं नित्यमर्हति ठक्] जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, संन्यासी, वैरागी।

वैरल्यम् [विरल+ष्यञ्] 1. न्यूनता, विरलता 2. ढीलापन 3. मृदुता।

वैराग्यम् दे० 'वैरल्यम्'।

वैरागिकः, वैरागिन् (पुं०) [विराग+ठक्, विराग+अण् +इनि] वह संन्यासी जिसने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है।

वैराग्यम् [विरागस्य भावः—ष्यञ्] 1. सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बंधनों से उदासीनता, विरक्ति भग० ६।३५, १३।८ 2. असंतृप्ति, अप्रसन्नता, असंतोष—कामं प्रकृतिवैराग्यं सद्यः शमयितुं क्षमः—रघु० १७।५५ 3. अरुचि, नापसन्दगी 4. रंज, शोक, अफ़सोस।

वैराज (वि०) (स्त्री०—जी) [विराज्+अण्] ब्रह्मासंबंधी—उत्तर० २।

वैराट (वि०) (स्त्री० - टी) [विराट+अण्] विराट संबंधी,—टः एक प्रकार का मिट्टी का कीड़ा, इन्द्रगोप।

वैरिन् (वि०) [वैर+इनि] विरोधी, शत्रुतापूर्ण (पुं०) शत्रु,—रीयं वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम् —भर्तृ० २।३९, भग० ३।२७, रघु० १२।१०४।

वैरूप्यम् [विरूप+ष्यञ्] 1. विरूपता, कुरूपता—रघु० १२।४० रूपों की विभिन्नता या वैविध्य।

वैरोचनः, वैरोचनिः, वैरोचिः [विरोचनस्यापत्यम् अण्, इञ् वा, विरोच+घञ्] विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण।

वैलक्षण्यम् [विलक्षणस्य भावः—ष्यञ्] 1. आश्चर्य 2. वैपरीत्य, विरोध 3. अन्तर, भेद।

वैलक्ष्यम् [विलक्ष+ष्यञ्] 1. उलझन, गड़बड़ी 2. अस्वाभाविकता, कृत्रिमता—वैलक्ष्यस्मितम् 'कृत्रिम या बलपूर्वक की गई मुस्कान 3. लज्जा 4. वैपरीत्य, व्युत्क्रम।

वैलोम्यम् [विलोम+ष्यञ्] विरोध, व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

वैल्व (वि०) दे० 'बैल्व'।

वैवधिकः [विवध+ठक्] 1. फेरी वाला, आवाज़ लगा कर बेचने वाला 2. (बहँगी में रख कर) भार ढोने वाला।

वैवर्ण्यम् [विवर्णस्य भावः—ष्यञ्] 1. रंग या चेहरे की आभा का परिवर्तन, फीकापन, निष्प्रभता 2. विभिन्नता, विविधता 3. जाति से बिचलना।

वैवस्वतः [विवस्वतोऽपत्यम् अण्—1. सातवाँ मनु०, जो वर्तमान युग का अधिष्ठाता है, मनु के नीचे दे० वैवस्वतो मनुर्नाम मानवीयो मनीषिणाम् - रघु० १।११, उत्तर० ६।१८ 2. यम - रघु० १५।४५ 3. शनिग्रह,—तम् विवस्वान् के पुत्र सातवें मनु, द्वारा अधिष्ठित वर्तमान युग या मन्वन्तर।

वैवस्वती [वैवस्वत+ङीप्] 1. दक्षिण दिशा 2. यमुना नदी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैवाहिक (वि०) (स्त्री०- की) [विवाह+ठक्] विवाहसंबंधी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला - कु० ७।२,—कः,—कम् विवाह, शादी,—कः पुत्र वधू का श्वसुर, या दामाद का श्वसुर।

वैशद्यम् [विशद+ष्यञ्] 1. स्वच्छता, निर्मलता (आलं०) 2. स्पष्टता 3. सफेदी 4. शान्ति, (मन की) स्वस्थता।

वैशसम् [विशस+अण्] 1. विनाश, हत्या, वध—कु० ४।३१, उत्तर० ४।२४, ६।४० 2. दुःख, सन्ताप, पीड़ा, कष्ट, कठिनाई—उपरोधवैशसम्—मुद्रा० २, मा० ९।३५।

वैशस्त्रम् [विशस्त्र+अण्] 1. असुरक्षा 2. राजकीय शासन।

वैशाखः [विशाख+अण्] 1. चान्द्रवर्ष का दूसरा महीना (अप्रैल-मई) 2. रई का डण्डा - द्रुतरकरदक्षाः क्षिप्तवैशाखशैले···कलशिम्बुदधिगुर्वीं वल्लवा लोडयन्ति —शि० ११।८, -खम् बाण चलाते समय की एक मुद्रा, दे० 'विशाख'—स्त्री वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशिक (वि०) [वेशेन जीवति वेश+ठक्] वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त—वैशिकी कलाम् -मृच्छ० १।३, वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त कलाएँ,—कः जो वेश्याओं के साहचर्य में रहता है, शृङ्गार-साहित्य में पाया जाने वाला एक नायक, कम् वेश्यावृत्ति, वेश्याओं की कलाएँ।

वैशिष्ट्यम् [विशिष्ट+ष्यञ्] 1. भेद, अन्तर 2. विशिष्टता, विशेषता, अनूठापन—वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत्तार्थसम्भवा --सा० द० २७ 3. श्रेष्ठता—सा० द० ७८ 4. विशिष्टलक्षणसम्पन्नता।

वैशेषिक (वि०) (स्त्री०- की) [विशेषं पदार्थभेदमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः-विशेष+ठक्] 1. विशेषता युक्त 2. वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों से संबंध रखने वाला, -कम् छः हिन्दूदर्शनशास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे, गौतम के न्यायदर्शन से इसकी भिन्नता इस बात में है कि इसमें सोलह के बजाय केवल सात तत्त्वों का विवेचन है तथा 'विशेष' पर विशेष बल दिया गया है।

वैशेष्यम् [विशेष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोत्तमता।

वैश्यः [विश+ष्यञ्] तृतीय वर्ण का पुरुष, इसका व्यवसाय व्यापार और कृषि है—विशत्यार्षाणु पशुभ्यश्च कृष्यादावरुचिः शुचि, वेदाध्ययनसम्पन्नः स वैश्य इति संज्ञितः पद्म०। सम० कर्मन् (नपुं०) —वृत्तिः (स्त्री०) वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, खेती आदि।

वैश्रवणः [विश्रवणस्यापत्यम्—अण्] 1. धन का स्वामी कुबेर,—विभाति यस्यां ललितालकायां मनोहरा वैश्रवणस्य लक्ष्मीः—भामि० २।१० 2. रावण का नाम। सम०—आलयः,—आवासः 1. कुबेर का आवासस्थल 2. वह का वृक्ष,—उदयः बड़ का पेड़।

वैश्वदेव (वि०) (स्त्री०-वी) [विश्वदेव+अण्] विश्वेदेवों से सम्बन्ध रखने वाला,—वम् 1. विश्वेदेवों को प्रस्तुत किया गया उपहार 2. सभी देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वदेव यज्ञ में आहुति देकर)।

वैश्वानरः [विश्वानर+अण्] 1. अग्नि का विशेषण,—त्वत्तः खाण्डवरक्षिताण्डवनटो दूरेऽस्तु वैश्वानरः—भामि० १।५७ 2. जठराग्नि,—अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् (वेदान्त०) 3. परमात्मा।

वैश्वासिक (वि०) (स्त्री०-की) [विश्वास+ठक्] विश्वसनीय, सोपनीय।

वैषम्यम् [विषम+ष्यञ्] 1. असमता 2. खुरदरापना, कठोरता 3. असमानता 4. अन्याय 5. कठिनाई, विपत्ति, संकट 6. एकाकीपन।

वैषयिक (वि०) (स्त्री०-की) [विषय+ठक्] 1. किसी पदार्थ-सम्बन्धी 2. विषयों से सम्बन्ध रखने वाला, वासनात्मक, शारीरिक,--कः कामी, लम्पट।

वैष्टुतम् [विष्टुत्या निर्वृत्तम्—विष्टुति+अण्] भस्मीकृत आहुतियों की राख।

वैष्णुः [विश+ष्णुन्, वृद्धि] 1. अन्तरिक्ष, आकाश 2. हवा, वायु 3. लोक, विश्व का एक प्रभाग।

वैष्णव (वि०) (स्त्री०-वी) [विष्णु+अण्] 1. विष्णु सम्बन्धी, रघु० ११।८५ 2. विष्णु की पूजा करने वाला, -वः तीन महत्त्वपूर्ण आधुनिक हिन्दू-संप्रदायों में से एक, दूसरे दो हैं शैव और शाक्त, -वम् भस्मीकृत आहुतियों की राख। सम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वैसारिणः [विशेषेण सरति विसारी मत्स्यः स एव-विसारिन्+अण्] मछली।

वैहायस (वि०) (स्त्री०-सी) [विहायस्+अण्] हवा में विद्यमान, हवाई।

वैहार्य (वि०) [विशेषेण ह्रियते-वि+हृ+ण्यत्+अण्] जिससे हंसी दिल्लगी की जाय, जिसे उपहास का विषय बनाया जाय (जैसे पत्नी का भाई, या ससुराल का कोई रिस्तेदार)।

वैहासिकः [विहासं करोति-विहास+ठक्] हंसोकड़ा, विदूषक।

वोढ्रः [वह+उड्] 1. एक प्रकार का साँप 2. एक तरह की मछली।

वोढ्री [वोढ्र+ङीष्] पक्ष का चौथा भाग।

वोढृ (पुं०) [वह्+तृच्] 1. ढोने वाला, कुली 2. नेता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. पति 4. साँड़ 5. रथवान् 6. खींचने वाला घोड़ा।

वौंडः (पुं०) डंठल, वृन्त।

वोध (वि०) [अवसिक्तमुदकं यत्र-प्रा० ब०, उदकस्य उदादेशः, भागुरिमते अकार लोपः—] तर, गीला, आर्द्र।

वोवालः [वोद+आई: सन् अलति –वोद+अल्+अच्] जर्मन-मछली।

वोर (ल) क: [अवनतं लेखन काले उरो यस्य-प्रा० ब०, कप्, अवस्य अकारलोपः, पृषो० सलोपः, पक्षे रलयोरभेदः] लिपिकार, लेखक।

वोरटः [वो इति रटति भृङ्गा यत्र-वो+रट्+क] कुंद का एक भेद।

वोलः [वुल्+अच्] गुग्गुल, रसगंध।

वोल्लाहः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा।

वौद्ध (वि०) दे० 'बौद्ध'।

वौषट् (अव्य०) [उह्यतेऽनेन हविः –वह्+डौषट्] पितरों या देवों को आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला उद्गार या सांकेतिक शब्द।

व्यंशकः [विशिष्टः अंशो यस्य-प्रा० ब०, कप्] पहाड़।

व्यंशुकः (वि०) [विगतम् अंशुकं यस्य-प्रा० ब०] वस्त्रहीन, विवस्त्र, नंगा–कि० ९।२४।

व्यंसकः [वि+अंस्+ण्वुल्] धूर्त, ठग, जैसा कि 'मधुर व्यंसक' 'वचन मोर'–षष्ठमधुर'।

व्यंसनम् [वि+अंस्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना।

व्यक्त (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज+क्त] 1. प्रकटीकृत, प्रदर्शित 2. विकसित, रचित—कु० २।११ 3. स्पष्ट, प्रकट, साफ, सरल, भिन्न, विशद रूप से विद्यमान 4. विशिष्ट, ज्ञित, विख्यात 5. अकेला मनुष्य 6. बुद्धिमान्, विद्वान्,—क्तम् (अव्य०) स्पष्ट, स्पष्ट रूप से, साफ़तौर पर, निश्चित रूप से। सम०—गणितम् अंकगणित, वृष्टार्थः वह साक्षी जिसने घटना अपनी आँखों से देखी है, गवाह,—राशिः ज्ञात अंक, रूपः विष्णु का विशेषण,–विक्रम (वि०) शक्ति प्रदर्शित करने वाला

व्यक्तिः (स्त्री०) [वि+अञ्ज्+क्तिन्] 1. प्रकटीकरण, दृश्यमानता, विशद प्रत्यक्षज्ञान,—राज्ञः समक्षमेवाधरोत्तरव्यक्तिर्भविष्यति–मालवि० 1. स्नेहव्यक्तिः—मेघ० १२ 2. दृश्यमान सूरत, स्पष्टता, विशदता श० ७।८ 3. भेद, विवेचन,—तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः—रघु० १।१० 4. वास्तविक रूप या प्रकृति, सच्चरित्र,—न हिं ते भगवान् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः –भग० १०।१४ 5. वैयक्तिकता (विप० जाति) भग० ८।१८ 6. अकेला मनुष्य, पुरुष 7. (व्या० में) लिंग 8. विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय।

व्यग्र (वि०) [विरुद्धम् अगति वि+अग्+रक] 1. व्याकुल, विस्मित, उचाट 2. आतंकित, भयभीत 3. किसी कार्य में साभिप्राय व्यस्त (अधि० या करण० के साथ अथवा समास में)—रघु० १७।२७, महावी० १।१३, ४।२८, कु० ७।२, उत्तर० १।२३, मालवि० १।१२३, शि० २।७९।

व्यङ्ग (वि०) [विगतं दा अङ्गं यस्य-प्रा० ब०] 1. देहहीन 2. अङ्गहीन, विरूप, विकलाङ्ग, अपाहज, लुञ्जा,—गः 1. लुञ्जा 2. भेंडक 3. गाल पर पड़े काले धब्बे।

व्यङ्गुलम् (नपुं०) लम्बाई का अत्यन्त छोटा माप, अंगुल का ६० वां अंश।

व्यङ्ग्य (वि०) [वि+अञ्ज्+ण्यत्] 1. व्यञ्जना शक्ति द्वारा ध्वनित, परोक्षसंकेत द्वारा सूचित 2. व्यक्तित (अर्थ), ध्वन्य उपलक्षित अर्थ, व्यङ्ग्योक्ति, परोक्ष संकेत (विप० वाच्य 'मुख्यार्थ' और लक्ष्य 'गौण या संकेतित अर्थ')–इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः – काव्य० १।

व्यच् (तुदा० पर० विचति, कर्मवा० विच्यते) ठगना, धोखा देना, चाल चलना।

व्यजः [वि+अज्+घञ्] पंखा।

व्यजनम् [वि+अज्+ल्युट्] पंखा, निवर्तव्यजनम्—हि० २।१९५, रघु० ८।४०, १०।५२ तु० 'बालव्यजन'।

व्यञ्जक (वि०) (स्त्री० - जिका) [वि+अञ्ज्+ण्वुल्] 1. स्पष्ट करने वाला, संकेतक, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला 2. अर्थ को उपलक्षित या ध्वनित करने वाला (शब्द), (विप० वाचक और लाक्षणिक), —कः 1. नाटकीय हावभाव, आत्मारिक भावों को उपयुक्त हावभाव द्वारा प्रकट करने वाला बाह्य संकेत 2. संकेतक, प्रतीक।

व्यञ्जनम् [वि+अञ्ज्+ल्युट्] 1. स्पष्ट करना, संकेत करना, प्रकट करना 2. चिह्न, निशान, संकेत 3. स्मारक-मा० ९ 4. छद्मवेश, परिधान—शि० २।५६, तपस्विव्यञ्जनोपेतः आदि 5. व्यञ्जन अक्षर 6. लिङ्गद्योतक चिह्न अर्थात् स्त्री या पुरुष का परिचायक अङ्ग 7. अधिकार-चिह्न, बिल्ला 8. वशस्करता का चिह्न 9. दाढ़ी 10. अङ्ग, सदस्य 11. मिर्च मसाला, चटनी, सिझाई हुई वस्तु—नै० १६।१०४ 12. तीनों शब्दशक्तियों में अन्तिम जिससे अर्थ उपलक्षित या ध्वनित होता है, दे० अञ्जन, या (8) (इस अर्थ में यह 'व्यञ्जना' भी लिखा जाता है)। सम० उदय (वि०) वह जिसके पश्चात् व्यञ्जन अक्षर आता हो, - सन्धिः व्यञ्जन वर्णों का संयोग या संश्लेष।

व्यञ्जना दे० ऊ० 'व्यञ्जन' (12)।

व्यञ्जित (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज्+क्त] 1. साफ किया गया, प्रकट किया गया, संकेत किया गया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. चिह्नित, भिन्न, चित्रित 3. सुझाव दिया गया, ध्वनित ।

व्यडम्बक: व्यडम्बन: [डम्ब्+ण्वुल्, ल्युट् वा, विशेषेण न डम्बक:] अरण्ड का पेड़ ।

व्यतिकर: [वि+अति+कृ+अप्] 1. मिश्रण, अन्त: मिश्रण, इकट्ठा मिला देना तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वो: —रघु० ८।९५, व्यतिकर इव भीमस्तामसो वैद्युतश्च—उत्तर० ५।१२, मा० ९।५२ 2. सम्पर्क, मिलाप, सम्मिलन मालवि० १।४, शि० ४।५३, ७।२८ 3. रगड़ना कु० ५।८५ 5. घटना, सम्भूति, वृत्तान्त, वस्तु, मामला एवंविधे व्यतिकरे —'ऐसी बात होने पर' 6. अवसर 7. मुसीबत, संकट 8. पारस्परिक सम्बन्ध, पारस्परिकता 9. विनिमय, अदलाबदली ।

व्यतिकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+अति+कृ+क्त] 1. मिला हुआ, मिश्रित 2. संयुक्त ।

व्यतिक्रम: [वि+अति+क्रम्+घञ्] 1. अतिक्रमण, विचलन, भटकना 2. उल्लंघन, भंग, अननुष्ठान —यथा 'सविद् व्यतिक्रम:—रघु० १।७९ 3. अवहेलना, उपेक्षा, भूल 4. वैपरीत्य, उलट, व्यत्यास 5. पाप, दुर्व्यसन, जुर्म 6. आपत्काल, दुर्भाग्य ।

व्यतिक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+क्रम्+क्त] 1. पार किया गया, अतिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया, उपेक्षित 2. औंधा, विपर्यस्त 3. बीता हुआ, गुजरा हुआ (समय) ।

व्यतिरिक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+रिच्+क्त] 1. वियुक्त, भिन्न अव्यतिरिक्तेयमस्माच्छरीरात् —कु०, कु० १।३१, ५।२२ 2. आगे बढ़ने वाला, सर्वोत्कृष्ट होने वाला, आगे निकल जाने वाला 3. प्रत्याहृत, रोका हुआ 4. असगाया हुआ ।

व्यतिरेक: [वि+अति—रिच्+घञ्] 1. भेद, अन्तर 2. वियोग 3. निष्कासन, अपवर्जन 4. श्रेष्ठता, आगे बढ़ जाना, आगे निकल जाना 5. वैषम्य, असमानता 6. (तर्क० में) अनन्वय (विप० अन्वय) उदा० 'यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमो नास्ति' यह व्यतिरेक व्याप्ति का उदाहरण है 7. (अलं० में) एक अर्थालंकार जिसमें किन्हीं विशेष दशाओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतर बताया जाता है - उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेक: स एव स:—काव्य० १० ।

व्यतिरेकिन् (वि०) [व्यतिरेक+इनि] 1. भिन्न 2. आगे बढ़ जाने वाला, आगे निकल जाने वाला 3. बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला 4. अभाव या अनस्तित्व दर्शाने वाला जैसा कि 'व्यतिरेकि लिङ्गम्' में ।

व्यतिषक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+सञ्ज्+क्त] 1. आपस में मिला हुआ, पारस्परिक संबंधयुक्त, शृङ्खलाबद्ध या एकत्र जुड़ा हुआ 2. अन्त: मिश्रित 3. अन्तर्जातीय विवाह करने वाला ।

व्यतिषंग: [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1. पारस्परिक संबन्ध, अन्योन्यसम्बन्ध 2. अन्त: मिश्रण 3. संयोग, या मिलाप ।

व्यति (ती) हार: [वि+अति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य इकारस्य दीर्घ:] 1. अदल-बदल, विनिमय 2. पारस्परिकता, अन्त: परिवर्तन रघु० १२।९३ ।

व्यतीत (भू० क० कृ०) [वि+अति+इ+क्त] 1. गुजरा हुआ, गया हुआ, बीता हुआ, पार किया हुआ—रघु० १५।१४ 2. मृत 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, विसर्जित 4. अवज्ञात ।

व्यतीपात: [वि+अति+पत्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घ:] 1. समुचा प्रयाण, सम्पूर्णविचलन 2. भारी उत्पात, भारी संकट को सूचित करने वाला अपशकुन 3. अनादर, तिरस्कार ।

व्यत्यय: [वि+अति+इ+अच्] 1. पार करना 2. विरोध, वैपरीत्य 3. व्यत्यस्त क्रम, व्युत्क्रान्ति 4. अन्त:परिवर्तन, रूपान्तरण 5. अवरोध, अड़चन ।

व्यत्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+अस्+क्त] 1. व्युत्क्रांत, विपर्यस्त 2. विपरीत, विरोधी 3. असंगत व्यत्यस्तं जपति—भाम० २।८४ 4. विरेखित, इस प्रकार रक्खी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरी को काटती हो -व्यत्यस्तं पाद:, व्यत्यस्त भुज: आदि ।

व्यत्यास: [वि+अति+अस्+घञ्] 1. व्युत्क्रांत स्थिति या क्रम 2. विरोध, वैपरीत्य ।

व्यथ (भ्वा० आ० व्यथते, व्यथित) 1. शोकान्वित होना, पीड़ित होना, कष्टग्रस्त होना, विक्षुब्ध या अशांत होना—विश्वंभराऽपि नाम व्यथते इति जितमपत्यस्नेहेन -उत्तर० ७, न विव्यथे तस्य मन: कि० १।२, २४ 2. आन्दोलित होना, दोलायमान होना-कि० ५।११ 3. कांपना 4. भयभीत होना 5. सूखना, शुष्क होना, प्रेर० (व्यथयति-ते) पीड़ा देना, कष्ट देना, नाराज करना, दुःखी करना -उत्तर० १।२८, प्र अत्यन्तं क्रूर होना भम० ११।२० ।

व्यथक (वि०) (स्त्री० -थिका) [व्यथ्+णिच्+ण्वुल्] पीड़ाजनक, दुःखद, कष्टकर कि० २।४ ।

व्यथनम् [व्यथ्+ल्युट्] पीड़ा देना, सताना ।

व्यथा [व्यथ्+अङ्+टाप्] 1. पीड़ा, वेदना, आधि—तां च व्यथां प्रसवकालकृताभिवाप्य—उत्तर० ४।२३, १।१२ 2. भय, आतंक, चिन्ता—स्वन्तमित्यलघयत्स तदव्यथाम्—रघु० ११।६२ 3. विक्षोभ, अशान्ति 4. रोग ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यथित (भू० क० कृ०) [व्यथ्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, दुःखी, पीड़ित 2. आतङ्कित 3. विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन ।

व्यध् (दिवा० पर० विध्यति, विद्ध) 1. बींधना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, छुरा भोंकना, मार डालना - अक्षितारासु विव्याध द्वियतः स तनुत्रिषः शि० १९।९९, विद्धमात्रः—रघु० ५।५१, ९।६०, १४।७०, भट्टि० ५।५२, ९।६६, १५।६२ 2. सुराख करना, छिद्र करना, आरपार बींधना 3. खोदना, गड्ढा करना, अनु—, 1. बींधना, चोट पहुँचाना, घायल करना 2. गूंथना, बेरना 3. जड़ना, जटित करना—दे० अनुविद्ध, अप—, 1. फेंकना, डालना, उछालना —महावी० २।२३, रघु० १९।४४ 2. बींधना - हृदयमशरणं मे पक्ष्मलाक्ष्याः कटाक्षैरपहृतमपविद्धं पीतमून्मूलितं च —मा० १।२८ 3. त्यागना, परित्यक्त करना, आ—, 1. बींधना 2. फेंकना, डालना, दे० आविद्ध, परि—, सम्—, बींधना, घायल करना ।

व्यधः [व्यध्+अच्] 1. बींधना, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना—शि० ७।२४ 2. आघात करना, घायल करना, प्रहार 3. छिद्र करना ।

व्यधिकरणम् [वि+अधि+कृ+ल्युट्] भिन्न आधार या स्तर पर जीवित रहना (जैसा कि 'व्यधिकरण बहुव्रीहि' में, अर्थात् वह बहुव्रीहि समास जहाँ पहला पद दूसरे पद से नितान्त भिन्न कारक का हो, यदि उनका विग्रह करके देखा जाय—उदा० चक्रपाणिः चन्द्रमौलिः आदि ।

व्यध्यः [व्यध्+यत्] चांदमारी के पीछे का टीला, निशाना, लक्ष्य ।

व्यध्वः [विरुद्धः अध्वा—प्रा० स०] कुमार्ग, बुरी सड़क ।

व्यनुनादः [विशिष्टः अनुनादः प्रा० स०] प्रतिध्वनि, ऊँची गूंज ।

व्यन्तरः [विशिष्टः अन्तरो यस्य—प्रा० ब०] 1. पिशाच, यक्ष आदि एक प्रकार का अतिप्राकृतिक प्राणी ।

व्यप् (चुरा० उभ० व्यपयति-ते) 1. फेंकना 2. घटाना, बरबाद करना, कम करना ।

व्यपकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+अप्+कृष्+क्त] एक ओर खींचा हुआ, दूर किया हुआ, हटाया हुआ ।

व्यपगत (भू० क० कृ०) [वि+अप्+गम्+क्त] 1. गया हुआ, विसर्जित, अन्तर्हित—मदो मे व्यपगतः भर्तृ० २।८, मेघ० ७६ 2. हटाया हुआ 3. गिराया हुआ ।

व्यपगमः [वि+अप+गम्+अप्] विसर्जन, अन्तर्धान ।

व्यपत्रप (वि०) [विगता अपत्रपा यस्य—प्रा० ब०] निर्लज्ज, ढीठ ।

व्यपदिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+अप+दिश्+क्त] 1. नामाङ्कित 2. बतलाया गया, प्रस्तुत किया गया, द्योतित 3. बहाने या छल के रूप में प्रतिपादित किया गया ।

व्यपदेशः [वि+अप+दिश्+घञ्] 1. निरूपण, सन्देश, सूचना 2. नामकरण, नाम रखना 3. नाम, अभिधान, उपाधि - एवं व्यपदेशभाजः—उत्तर० ६।४, परिवार, वंश,—अथ कौक्ष्य व्यपदेशः—शा० ७, व्यपदेशमाविलयितुं किमीहसे जनमिमं च पातयितुम् - शि० ५।२० 5. कीर्ति, यश, प्रसिद्धि 6. चाल, बहाना, दाँव, उपाय 7. जालसाजी, चालाकी ।

व्यपदेष्टृ (पुं०) [वि+अप+दिश्+तृच्] छलिया, धोखेबाज ।

व्यपरोपणम् [वि+अप+रुह्+णिच्+ल्युट्, ह्रस्व पः] 1. उन्मूलन, उखाड़ना 2. भगाना, हटाना, दूर करना 3. काट डालना, फाड़ डालना, तोड़ लेना—चुकोप तस्मै स भृशं सुरस्त्रियः प्रसह्य केशव्यपरोपणादिव —रघु० ३।५६ ।

व्यपाकृतिः (स्त्री०) [वि+अप+आ+कृ+क्तिन्] 1. निष्कासन, दूरीकरण, निकाल देना 2. मुकरना ।

व्यपायः [वि+अप+इ+घञ्] अन्त, लोप, समाप्ति, —कु० ३।३३, रघु० ३।३७ ।

व्यपाश्रयः [वि+अप+आ+श्रि+अप्] 1. उत्तराधिकारिता 2. शरण लेना, सहारा लेना, भरोसा करना भग० ३।१८ 3. निर्भर होना - धर्मो रामव्यपाश्रयः — रामा० ।

व्यपेक्षा [वि+अप+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. प्रत्याशा, आशा 2. लिहाज, विचार रघु० ८।२४ 3. पारस्परिक सम्बन्ध, अन्योन्याश्रय 4. पारस्परिक लिहाज 5. व्यवहार 6. (व्या० में) दो नियमों का पारस्परिक प्रयोग ।

व्यपेत (भू० क० कृ०) [वि+अप+इ+क्त] 1. वियुक्त अलगाया हुआ 2. गया हुआ, विसर्जित, (प्रायः समास में व्यपेतकल्मषः, व्यपेतभी, व्यपेतहर्ष आदि) ।

व्यपोढ (भू० क० कृ०) [वि+अप्+वह्+क्त] 1. निकाला गया, हटाया गया 2. विपरीत, विरोधी कि० ४।१२ 3. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, बतलाया गया ।

व्यपोहः [वि+अप+ऊह्+घञ्] निकालना, दूर करना, अलग रखना ।

व्यभि (भी) चारः [वि+अभि+चर्+घञ्] 1. दूर चले जाना, विचलन, सन्मार्ग छोड़ देना, कुमार्ग का अनुसरण करना,—मंत्रज्ञमव्यभिचारिणं व्यभिचारविजितम् हि० ३।१६, भग० १४।२६ 2. अतिक्रमण, उल्लंघन मनु० १०।२४ 3. अधुद्धि, जुर्म, पाप 4. विच्छेदता, अलग होने की सामर्थ्य 5. अभक्ति, अनास्था, पति-पत्नी में अविश्वास, पतिव्रत या पत्नी-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रत का अभाव,—व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति गर्ह्यताम् —मनु० ५।१६४, वाङ्मनः कर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे --रघु० १५।८१, याज्ञ० १।७१ 6. असंगति, अनियमितता, अपवाद 7. (तर्क० में) आभासी हेतु, हेत्वाभास, साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता।

व्यभिचारिणी [व्यभिचारिन्+ङीप्] असती स्त्री, परपुरुषगामिनी स्त्री।

व्यभिचारिन् (वि०) [व्यभिचार+इनि] 1. भटका हुआ, भूला हुआ, पथभ्रष्ट, भ्रान्त, नियम भंग करने वाला 2. अनियमित, असंगत 3. असत्य, मिथ्या —दे० अव्यभिचारिन् 4. श्रद्धाहीन, जो ब्रह्मचारी न हो, परस्त्रीगामी, (पुं०—**व्यभिचारिभावः** संचारिभाव, सहकारी भाव (विप० स्थायी भाव) यद्यपि स्थायी भावों की भाँति यह सहकारी भाव रस का कोई आधारभूत रूप नहीं बनाते, फिर भी यह प्रवहमान रस के पोषक हैं, अतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह रस की पुष्टि करते हैं। इनकी संख्या तेंतीस या चौंतीस है, इनकी गणना के लिए दे० काव्य० ४, कारिका ३१–३४, सा० द० १६९, या रस० प्रथम आनन, तु० विभाव और स्थायिभाव की।

व्यय् i (चुरा० उभ० व्यययति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. व्यय करना, प्रदान करना, अर्पण करना। ii (भ्वा० उभ० व्ययति ते) जाना, हिलना-जुलना। iii (चुरा० उभ० व्याययति -ते, व्यापयति -ते भी) 1. फेंकना, डालना 2. हाँकना।

व्यय (वि०) [वि-इ+अच्] परिवर्तनीय, परिणामशील, विकारवान् तु० अव्यय, यः 1. (क) हानि, लोप, विनाश—आपद्यते न व्ययमन्तरायैः कच्चित्मनस्तेऽविविधं तपस्तत्—रघु० ५।५, १२।३३, (ख) लागत लगाना, त्याग—प्राणव्ययेनापि मया विधेयः --भा० ४।४, कु० ३।२३ 2. रुकावट, अड़चन—रघु० १५।३७, 3. क्षय, ह्रास, पराजय, अधःपतन 4. खर्च, मूल्य, परिव्यय, विनियोग, प्रयोग, (विप० आय) --आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः—पंच० १।१६३, आयाधिकं व्ययं करोति 'अपनी आय से अधिक व्यय करता है'—रघु० ५।१२, १५।३, मनु० ९।११ 5. अपव्यय, फिजूलखर्ची। सम०—पर (वि०) मुक्तहस्त से खर्च करने वाला,—पराङ्मुख (वि०) कृपण, कंजूस, मक्खीचूस,—शील (वि०) अतिव्ययी, फिजूलखर्च,—शुद्धिः (स्त्री०) हिसाब चुकाना।

व्ययनम् [व्यय्+ल्युट्] 1. खर्च करना 2. बर्बाद करना, विनष्ट करना।

व्ययित (भू० क० कृ०) [व्यय्+क्त] 1. व्यय किया गया, खर्च किया गया 2. बर्बाद किया गया, क्षयग्रस्त।

व्यर्थ (वि०) [विगतोऽर्थो यस्मात्—प्रा० ब०] 1. अनुपयोगी, निरर्थक, विफल, अलाभकर-- व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि से—उत्तर० ३।४५ 2. अर्थहीन, निरर्थक, बेकारी।

व्यलीक (वि०) [विशेषेण अलति वि+अल्+कीकन्] 1. मिथ्या, झूठा 2. कुत्सित, अनभिमत, असुखद 3. जो मिथ्या न हो—शि० ५।१,—कः 1. स्वेच्छाचारी 2. गंडू, लोण्डा,—कम् कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु, अप्रियता—इत्थं गिरः प्रियतमा इव सोऽव्यलीकाः शुश्राव सूततनयस्य तदा व्यलीकाः—शि० ५।१ 2. बेचैनी का कारण, पीड़ा, शोक या रंज का कारण—सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते श० ७।२४, कि० ३।१९, कु० ३।२५, रघु० ४।८७ 3. दोष, अपराध, अतिक्रमण, अनुचित कार्य, सव्यलीकमवधीरितस्त्रिभिः प्रस्थितं सपदि कौपपदेन—कि० ९।४५, शि० ९।८५, रत्न० ३।५ 4. जालसाजी, चाल, धोखा—पंच १।१२०, २४२ 5. मिथ्यापन 6. व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

व्यवकलनम् [वि+अव+कल्+ल्युट्] 1. वियोग 2. (गणि० में) घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि कम करना।

व्यवकोशनम् [वि+अव+कुश्+ल्युट्] तू तू मैं मैं, आपस में गाली-गलौज।

व्यवछिन्न (भू० क० कृ०) [वि+अव+छिद्+क्त] 1. काट डाला गया, चीरा गया, फाड़ा गया 2. वियुक्त, विभक्त 3. विशिष्ट किया गया, विशिष्ट 4. अंकित, विलक्षण—शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली —काव्या० १।१० 5. अवरुद्ध, बाधित।

व्यवछेदः [वि+अव+छिद्+घञ्] 1. काट डालना, फाड़ देना 2. विभाजन, वियोजन 3. चीर-फाड़ करने 4. विशिष्टीकरण 5. विभेदक, विशिष्ट 6. वैषम्य, वैशिष्ट्य 7. निर्धारण 8. अन्दूक दागना, तीर छोड़ना 9. किसी पुस्तक का अध्याय या अनुभाग।

व्यवधा [वि+अव+धा+अङ्+टाप्] 1. व्यवधायक 2. आड़, पर्दा, व्यंजन 3. छिपाव, दुराव।

व्यवधानम् [वि--अव-|-धा+ल्युट्] 1. हस्तक्षेप, अन्तःक्षेप, वियोग 2. अवरोध, दृष्टि से गुप्त रखना —दृष्टि विभानव्यवधानमुक्तां पुनः सहस्रांचिषि संनिवत्ते रघु० ३३।४४ 4. छिपाना, अन्तर्धान 5. पर्दा, व्यंजन 6. ढकना, आवरण—कु० ३।४४, 7. अन्तराल, अवकाश 8. (व्या० में) किसी अक्षर या मात्रा का बीच में आ पड़ना।

व्यवधायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [वि+अव+धा+ण्वुल्] 1. बीच में आ पड़ने वाला, आवरण, ढकने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला 2. अवरोध करने वाला, छिपाने वाला 3. मध्यवर्ती।

व्यवधिः [वि+अव+धा+कि] आवरण, हस्तक्षेप आदि, दे० व्यवधान।

व्यवसायः [वि+अव+सो+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, ऊर्जा, उद्योग, धैर्य—करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः हि० २।१४ 2. संकल्प, प्रस्ताव, निर्धारण —मन्दीचकार मरणव्यवसायबुद्धिम्—कु० ४।४५, 'मरने के संकल्प का विचार' भग० २।४१, १०।३६ 3. कृत्य, कर्म, क्रिया—व्यवसायः प्रतिपत्तिनिष्ठुरः रघु० ८।६५ 4. व्यापार, नौकरी, वाणिज्य 5. आचरण, व्यवहार 6. उपाय, कूटयुक्ति, जुगत 7. शेखी बघारना 8. विष्णु।

व्यवसायिन् (वि०) [व्यवसाय+इनि] 1. ऊर्जस्वी, उद्योगी, परिश्रमी 2. दृढ़ संकल्पी, धैर्यवान्।

व्यवसित (भू० क० कृ०) [वि+अव+सो+क्त] 1. प्रयास किया गया कोशिश की गई,—या० ६।९ 2. जिम्मेवारी ली गई, 3. संकल्प किया गया, निर्धारित, निश्चित 4. प्रकल्पित, आयोजित 5. प्रयत्नशील, दृढ़ निश्चयी 6. धैर्यवान्, ऊर्जस्वी 7. ठगा गया, छला गया, —तम् निश्चयन, निर्धारण।

व्यवस्था [वि+अव+स्था+अङ्+टाप्] 1. समंजन, क्रमस्थापन, निपटारा—यथा—वर्णाश्रम व्यवस्था 2. स्थिरता, निश्चितता, रघु० ७।५४ 3. दृढ़ता, दृढ़ आधार—आजह्नुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविंदश्रियमव्यवस्थाम्—कु० १।३३ 4. संदर्भ स्थिति 5. निश्चित नियम, कानून, संविधि आदेश, निर्णय, कानूनी सलाह, क़ानून की लिखित घोषणा (विशेष कर संदिग्ध स्थलों पर या जहाँ विरोधी पाठों का समंजन करना हो 6. सहमति, संविदा 7. अवस्था, दशा।

व्यवस्थानम्, व्यवस्थितिः (स्त्री०) [वि+अव+स्था+ल्युट्, क्तिन् वा] 1. क्रमबन्धन, समाधान, निर्धारण, फ़ैसला 2. नियम, विधान, निश्चय 3. स्थिरता, अचलता 4. दृढ़ता, धैर्य 5. वियोग।

व्यवस्थापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [वि+अव+स्थापिच्+ण्वुल्, पुक्] 1. क्रमस्थापन करने वाला, उपयुक्त क्रम में रखने वाला, समंजन करने वाला, स्थिर करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फ़ैसला करने वाला 2. वह जो कानूनी सलाह देता है 3. प्रबन्धक (वर्तमान प्रयोग)।

व्यवस्थापनम् [वि+अव+स्था+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. क्रमस्थापन, उपयुक्त समंजन 2. स्थिर करना, निर्धारण, निश्चय करना, फ़ैसला करना।

व्यवस्थापित (भू० क० कृ०) [वि+अव+स्था+णिच्+क्त, पुक्] क्रमबद्ध; निश्चित आदि, °वाद्—कु० ५।६८।

व्यवस्थित (भू०क०कृ०) [वि+अव+स्था+क्त] 1. क्रम में रक्खा हुआ, समंजित, क्रमविन्यस्त 2. निश्चित, स्थिर—किं अवस्थितविषयाः क्षात्रधर्माः—उत्तर० ५ 3. फ़ैसला किया गया, निर्धारित, क़ानून द्वारा घोषित 4. एक ओर रक्खा हुआ, वियुक्त 5. निकाला हुआ (रस आदि) 6. आधारित, अवलम्बित। सम०—विभाषा निश्चित इच्छा।

व्यवस्थिति दे० 'व्यवस्थान'।

व्यवहर्तृ (पुं०) [वि+अव+हृ+तृच्] 1. किसी व्यवसाय का प्रबंधकर्ता 2. नालिश करने वाला, अभियोक्ता, वादी या मुद्दई 3. न्यायाधीश 4. साथी, संगी।

व्यवहारः [वि+अव+हृ+घञ्] 1. आचरण, वर्ताव, कर्म 2. मामला, व्यवसाय, काम 3. पेशा, धंधा 4. लेनदेन, काम-काज 5. वाणिज्य, तिजारत, सौदागरी 6. रुपये पैसे का लेनदेन, सूदखोरी 7. प्रचलन, प्रथा, दस्तूर, रिवाज 8. संबन्ध, मेलजोल—पंच० १।७९ 9. न्यायालयी या अदालती कार्यविधि, किसी अभियोग या मामले की छान-बीन, न्याय प्रशासन; —व्यवहारस्तमाह्वयति, अलं लज्जया व्यवहारस्त्वां पृच्छति—मृच्छ० ९ 10. कानूनी झगड़ा, अभियोग, नालिश, क़ानूनी मुक़दमा, मुक़दमेबाज़ी, व्यवहारोऽयं चारुदत्तमवलम्बते, इति लिख्यतां व्यवहारस्य प्रथमः पादः, केन सह मम व्यवहारः—मृच्छ० ९, रघु० १७।३९ 11. क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुक़दमेबाज़ी का अवसर। सम०—अङ्गम् दीवानी और फ़ौजदारी क़ानूनों का समूह, अभिज्ञात (वि०) अभियोजित, दोषारोपित,—आत्मन् न्यायाधिकरण. न्यायासन—रघु० ८।१८, ज्ञः 1. जो व्यवसाय की समझता है 2. वयस्क युवा, बालिग, 3. जो न्यायालयीन कार्यविधि से परिचित हो,—तन्त्रम् आचरणक्रम, मा०४, —दर्शनम् जांच, न्यायिक जांच-पड़ताल, पदम् व्यवहार विषय,—पादः 1. क़ानूनी कार्यवाही की चार अवस्थाओं में से कोई सी एक 2. चौथी अवस्था अर्थात निर्णयपाद जिसमें व्यवस्था या फ़ैसला बतलाया गया है, —मातृका 1. क़ानूनी प्रक्रिया 2. न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी कर्म या विषय, (इसके तीस शीर्षक गिनाये गये हैं),—विधिः कानून का नियम, विधिसंहिता, विषयः (इसी प्रकार—पदम्,—मार्गः,—स्थानम्) क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय (यह विषय अठारह हैं, इनके नामों की जानकारी के लिए दे० मनु० ८।४-७)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यवहारकः [वि+अव+हृ+ण्वुल्] विक्रेता, व्यापारी, सौदागर ।

व्यवहारिक (वि०) (स्त्री०-की,-की) [व्यवहार+ठन्] 1. व्यवसाय सम्बन्धी 2. व्यवसाय में लगा हुआ, अभ्यासप्राप्त 3. न्यायालयसंबंधी, कानूनी 4. मुकदमेबाज 5. प्रचलित, रूढ़ या प्रथानुसार ।

व्यवहारिका [वि+अव+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. रिवाज, प्रथा 2. झाड़ू 3. इंगुदी का वृक्ष ।

व्यवहारिन् (वि०) [व्यवहार+इनि] 1. व्यवसायी, कर्मशील, अभ्यासपरायण 2. अभियोग में व्यस्त, मुकदमेबाज 3. चिरप्रचलित, प्रथानुसार ।

व्यवहित (भू० क० कृ०)[वि+अव+धा+क्त] 1. अलग अलग रक्खा हुआ 2. किसी अन्तःक्षिप्त वस्तु के कारण वियुक्त किया गया –शि० २।८५ 3. बाधित, रोका गया, अवरुद्ध, अड़चन से युक्त 4. दृष्टि से ओझल, छिपाया हुआ, गुप्त 5. जिसका निरन्तर सम्बन्ध न हो 6. किया गया, सम्पन्न 7. भूला हुआ, छोड़ा हुआ 8. आगे बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ 9. विपक्षी, विरोधी ।

व्यवहृतिः (स्त्री०) [वि+अव+हृ+क्तिन्] 1. अभ्यास, प्रक्रिया 2. कर्म, सम्पादन ।

व्यवायः [वि+अव+अय् + अच्] 1. वियोजन, विश्लेषण (अवयवों का) पृथक्करण 2. वियोग 3. आवरण, छिपाव 4. हस्तक्षेप, अन्तराल अट्कुण्डाङ्नुमव्यवायेऽपि 5. अड़चन, रुकावट 6. मैथुन, सम्भोग 7. पवित्रता, –यम् दीप्ति, आभा ।

व्यवायिन् (पुं०) [व्यवाय+इनि] 1. विलासी, स्वेच्छाचारी 2. कामोद्दीपक, वाजीकरण ।

व्यवेत (भू० क० कृ०) [वि+अव+इ+क्त] 1. वियोजित, विशिलष्ट 2. भिन्न ।

व्यष्टि (स्त्री०) [वि i-अश् +क्तिन्] 1. वैयक्तिकता, एकाकीपन 2. वितरणशील फैलाव 3. (वेदान्त० में) समष्टि को उसके पृथक्-पृथक् अवयवों के रूप में देखना, एक अंश (विप० समष्टि) ।

व्यसनम् [वि+अस्+ल्युट्] 1. फेंक देना, दूर कर देना, वियोजन, विभाजन 3. उल्लंघन, व्यतिक्रमण 4. हानि विनाश, पराजय, पतन, दोष, दुर्बलपक्ष अमात्यव्यसनम्—पंच० ३, स्ववलव्यसने –कि० १३।१५ 5 (क) विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, संकट, अभाग्य–अज्ञातभर्तृव्यसना मुहूर्तं कृतोपकारेव रतिर्बभूव –कु० ३।७३, ४।३०, रघु० १२।५७ (ख) आपत्काल, आवश्यकता–स सुहृद् व्यसने यः स्यात्—पंच० १।३२७ 'आवश्यकता पड़ने पर जो मित्र रहे वही मित्र है' 6. (सूर्य आदि का) अस्त होना–तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्याम् श० ४।१, (यहाँ 'व्यसन' का अर्थ 'पतन' भी है) 7. दुर्व्यसन, बुरी लत, बुरी आदत - मिथ्यैव व्यसनं वदति मृगयामीदृग् विनोदः कुतः–श० ४।५, रघु० १८।१४, याज्ञ० १।३०९ (इस प्रकार के दुर्व्यसन दस बताये गये हैं मनु० ७।४७–८) समानशीलव्यसनेषु सख्यम्–सुभा० 8. सलग्नता, जुट जाना, परिश्रमपूर्वक आसक्ति —विद्यायां व्यसनं भर्तृ० २।६२-३ 9. बहुत ज्यादा आदी होना 10. जुर्म, पाप 11. दण्ड 12. अशीर्यता, अक्षमता 13. निष्फल प्रयत्न 14. हवा, वायु । सम० -अतिभारः भारी अनर्थ या संकट–रघु० १४।६८, -अन्वित,—आर्त, पीडित (वि०) संकटग्रस्त, दुःख में फंसा हुआ ।

व्यसनिन् (वि०) [व्यसन+इनि] 1. किसी दुर्व्यसन में ग्रस्त, दुश्चरित्र 2. अभागा, भाग्यहीन 3. किसी कार्य में अत्यन्त संलग्न (प्रायः समास में) ।

व्यसु (वि०) [विगताः असवः प्राणाः यस्य–प्रा० ब०] निर्जीव, मृतक शि० २०।३ ।

व्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ, उछाला हुआ–मा० ५।२३ 2. तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ उत्तर० ५।१४ 3. हटाया हुआ, दूर फेंका हुआ 4. वियुक्त, विभक्त अलगाया हुआ –विक्रम० ५।२३ 5. पृथक् रूप से विचारित, एक एक करके ग्रहण–किं पुनर्व्यस्तैः–उत्तर० ५, तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने—कु० ५।७२ 6. सरल, समासरहित (शब्द आदि) 7. बहुविध, 8. हटाया गया, निकाला गया 9. विक्षुब्ध, कष्टमय, अव्यवस्थित 10. क्रमरहित, भग्नक्रम, विशृंखलित 11. उलटाया हुआ, उलट-पुलट किया हुआ 12. विपर्यास (अनुपात आदि) ।

व्यस्तारः (पुं०) हाथी के गंडस्थलों से मद का निकलना ।

व्याकरणम् [व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः येन–वि+आ+कृ+ल्युट्] 1. विग्रह, विश्लेषण 2. व्याकरण सम्बन्धी शब्द-पृथक्करण-प्रक्रिया, छः वेदांगों में से एक, व्याकरण–सिद्धो व्याकरणस्य कर्तुरवरप्रसादात् प्रियान् पाणिनेः–पंच० २।३३ ।

व्याकारः [वि+आ+कृ+घञ्] 1. रूपान्तरण, रूप-परिवर्तन 2. विरूपता ।

व्याकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि : आ+कृ+क्त] 1. बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ 2. अस्तव्यस्त किया हुआ ।

व्याकुल (वि०) [विशेषेण आकुलः–प्रा० स०] 1. विक्षुब्ध, विस्मित, घबराया हुआ, किंकर्तव्य विमूढ, शोकव्याकुल, बाष्प° 2. आतंकित, उद्विग्न, भयभीत –वृष्टिव्याकुलगोकुलं गीत० ४ 3. भरापूरा, घिरा हुआ 4. संलग्न, व्यस्त आलोके ते निपतति पुरा सा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बलिव्याकुला वा --मेघ० ८५ 5. इसकने वाला, इधर उधर हिलजुल करने वाला—उत्तर० ३।४३ ।

व्याकुलित (वि०) [वि+आ+कुल्+क्त] विक्षुब्ध, हतबुद्धि, घबराया हुआ, उद्विग्न आदि ।

व्याकृतिः (स्त्री०) [विशिष्टा आकृतिः—प्रा० स०] जालसाजी, छद्मवेश, धोखा ।

व्याकृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] 1. विश्लिष्ट, वियुक्त 2. व्याख्यात, स्पष्ट किया गया 3. विकृत, व्याकुल, बिगाड़ा हुआ, विरूपित ।

व्याकृतिः (स्त्री०) [वि+आ+कृ+क्तिन्] 1. विग्रह 2. विश्लेषण, व्याख्या 3. रूप परिवर्तन, विकास 4. व्याकरण ।

व्याकोश (ष) (वि०) [वि+आ+कुश् (ष्)+अच्] 1. फूलाया हुआ, प्रफुल्लित, पुष्पित, मुकुलित—व्याकोशकोकनदतां दधते नलिन्यः-शि० ४।४६ 2. विकसित —भर्तृ० ३।१७ ।

व्याक्षेपः [वि+आ+क्षिप्+घञ्] 1. इधर उधर उछालना 2 अवरोध, रुकावट 3. विलम्ब अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम् – रघु० १०।६ 4. उल्लंघन ।

व्याख्या [वि+आ—ख्या+अङ्+टाप्] 1. वृत्तान्त, वर्णन 2. स्पष्टीकरण, विवृति, टीका, भाष्य ।

व्याख्यात [वि+आ+ख्या+क्त] 1. कथित, वर्णित 2. स्पष्टीकृत, विवृत, टीकायुक्त ।

व्याख्यातृ (पुं०) [वि+आ+ख्या+तृच्] व्याख्याकार, भाष्यकार ।

व्याख्यानम् [वि+आ+ख्या+ल्युट्] 1. संभूवन, वर्णन 2. भाषण, वक्तृता 3. स्पष्टीकरण, विवृति, अर्थकरण, टीका ।

व्याघट्टनम् [वि+आ+घट्+ल्युट्] 1. बिलोना, मथना 2. रगड़ना, घर्षण ।

व्याघातः [वि+आ+हन्+क्त] 1. रगड़ना 2. थप्पड़, प्रहार 3. विघ्न, रुकावट 4. वचन विरोध 5. एक अलंकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण से उत्पन्न दिखाये जाते हैं, मम्मट इसकी परिभाषा निम्नांकित करता है तथया साधितं केनाप्यपरेण तत्त्वया । तर्षय यद्विधीयेत स व्याघात इति स्मृतः ॥। काव्य० १०, उदा० दे० विद्ध० १।२, या विरूपाक्ष के नीचे दिया गया उद्धरण ।

व्याघ्रः [व्याजिघ्रति–वि+आ+घ्रा+क] 1. बाघ, चीता 2. (समास के अन्त में) सर्वोत्तम, प्रमुख, मुख्य --जैसा कि नरव्याघ्र या पुरुषव्याघ्र में 3. लालरंग का एरंड का पौधा,--स्त्री मादा चीता --व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती —भर्तृ० ३।१०९ । सम० —अहः घातक पक्षी,—आस्यः बिलाव, नखः, नम् 1. बाघ का पंजा 2. एक प्रकार का गन्धद्रव्य 3. खरौंच, नखक्षत,--मायकः गोंड ।

व्याजः [व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन—वि+अज्+घञ्] 1. धोखा, चाल, छल, जालसाजी 2. कला कौशल अव्याज मनोहरं वपुः श० १।१८, 'स्वाभाविक रूप से प्रिय' 3. बहाना, व्यपदेश, आभास ध्यानव्याजमुपेत्य –नाग० १।१, रघु० ४।२५, ५८, १०।६६, ११।६६ 4. युक्ति, चाल, कूटयुक्ति व्याजायमन्दशिनमखलानि–रघु० १३।४२ । सम०—उक्तिः (स्त्री०) एक अलङ्कार जिसमें किसी कारण के स्पष्ट फल का जानबूझ कर कोई दूसरा कारण बताया जाना है, जहां वास्तविक भावना को कोई दूसरा कारण बताकर छिपा लिया जाता है दे० काव्य० १० 'व्याजोक्ति' के नीचे 2. परोक्ष सङ्केत, व्यंग्योक्ति, —निद्रा छल या कपट से की गई निन्दा, सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ, स्तुतिः (स्त्री०) अंग्रेजी के 'आइरनी' (Irony) से मिलता जुलता एक अलङ्कार जिसमें व्यक्त की गई प्रशंसा से निन्दा तथा प्रत्यक्ष निन्दा से स्तुति उपलक्षित होती है–व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा रूढिरन्यथा—काव्य० १० ।

व्याडः [वि–आ+अड्+अच्] 1. मांस भक्षी जानवर, जैसे कि चीता, शेर आदि 2. बदमाश, गुण्डा 3. साँप 4. इन्द्र तु० 'व्याल' ।

व्याडिः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण ।

व्यात्त (भू० क० कृ०) [वि–आ+दा+क्त] विवृत, फैलाया गया, फुलाया गया ।

व्यात्यधी [वि+आ+अति+धा+क्विप्+अङ्+ङीष्] जलविहार, जलक्रीडा ।

व्यादलनम् [वि–आ+दल्+ल्युट्] खोलना, उद्घाटन ।

व्यादिशः [विशेषेण आदिशति स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति –वि+आ+दिश्+क] विष्णु का विशेषण ।

व्याधः [व्यध्+घञ्] 1. शिकारी, बहेलिया (जाति से या पेशे के कारण) 2. दुष्ट मनुष्य, अधम पुरुष । सम० --भीतः हरिण ।

व्याधाभः, व्याधावः [व्याध+अभ्+णिच्+अच्] इन्द्र का वज्र ।

व्याधिः [वि+आ+धा+कि] 1. बीमारी, रोग, रुजा, अस्वस्थता (प्रायः शारीरिक—विप० 'आधि' अर्थात् मानसिक रोग दुःख, चिन्ता आदि)–रिपुरुन्नतधीरचेतसः सततव्याधिरनीतिरस्तु ते शि० १६।११ (यहाँ 'व्याधि' का अर्थ 'आधि से मुक्त' भी है) तु० आधि 2. कोढ़ । सम० कर (वि०) अस्वास्थ्यकर,—ग्रस्त (वि०) रोगाक्रान्त, बीमार ।

व्याधित (वि०) [व्याधिः सञ्जातोऽस्य इतच्] रोगाक्रान्त, बीमार ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्याधूत (भू० क० कृ०) [वि+आ+धू+क्त] झंझोड़ा हुआ, काँपता हुआ, थरथराता हुआ।

व्यानः [व्याप्नोति सर्वशरीरं व्याप्नोति - वि+आ+अन्+अच्] शरीरस्थ पाँच प्राणों में से एक जो समस्त शरीर में व्याप्त है।

व्यानतम् [वि+आ+नम्+क्त] मैथुन का एक विशेष प्रकार, रतिबन्ध।

व्यापक (वि०) [स्त्री०-पिका] [विशेषेण आप्नोति वि+आप+ण्वुल्] 1. फैला हुआ, बहुग्राही, प्रसारी, विस्तृत रूप से फैलने वाला, सर्वतोमुखी—तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्च व्यापकौ महिमा हरेः—कु० ६।७१ 2. नितान्त सहवर्ती,—कः नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित विशेषण, कम् नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित गुण।

व्यापत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्तिन्] 1. बर्बादी, संकट, दुर्भाग्य—मनु० ६।२० 2. स्थानापन्नता 3. मृत्यु रघु० १२।५६।

व्यापद् (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्विप्] 1. संकट, दुर्भाग्य, भर्तृ० ३।१०५ 2. रोग 3. विपद्ग्रस्तलता, चित्तविक्षेप 4. मृत्यु, निधन।

व्यापनम् [वि+आप्+ल्युट्] फैलना, पैठना, सर्वत्र फैल जाना।

व्यापन्न (भू० क० कृ०) [वि+आ+पद्+क्त] 1. दुर्भाग्यग्रस्त, बर्बाद 2. विफल, उलट गया (गर्भस्राव हो गया) 3. चोट लगा हुआ, घायल 4. मृत, उपरत, मरा हुआ जैसा कि 'अव्यापन्न' में 5. विक्षिप्त, विकृत 6. स्थानापन्न, परिवर्तित।

व्यापादः, व्यापादनम् [वि+आ+पद्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. हत्या, वध 2. बर्बादी, विनाश 3. दुर्भावना, द्वेष।

व्यापादित (भू० क० कृ०) [वि+आ+पद्+णिच्+क्त] 1. वध किया हुआ, क़त्ल किया हुआ, विनष्ट किया हुआ 2. बर्बाद, घायल, चोटिल।

व्यापारः [वि+आ+पृ+घञ्] 1. नियोजन, संलग्नता, व्यवसाय, धन्धा -ततः प्रविशति यथोक्तव्यापारा शकुन्तला श० १, कु० २।५४ 2. प्रयोग, काम -मु० २।४ 3. पेशा, वाणिज्य, व्यवसाय, कार्य यथा 'शस्त्रव्यापार' में 4. कर्म, क्रिया, निष्पादन 5. कार्यपद्धति, प्रक्रिया, कृत्य, प्रभाव-(क्रत) व्यापारशैथिल्यं प्रदनस्य निवेदितव्यम्—श० १।२७, तस्यानुमेने भगवान् विसृष्टव्यापारमात्मन्यपि सायकानाम् कु० ७।९३, विक्रम० ३।१७ 6. ऊपर रक्खा जाने वाला, -मालवि० ४, १४ 7. उद्योग, प्रयत्न —आर्याप्यनुवर्तते तत्र व्यापारं कर्तुमर्हति -कु० ६।३२, 'उस दिशा में कार्य करने के लिए प्रसन्न होंगी' (व्यापारं कृ 1. माग लेना 2. प्रभाव डालना 3. हाथ डालना —जैसा कि 'अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति पंच० १।२१)।

व्यापारित (भू० क० कृ०) [वि+आ+पृ+णिच्+क्त] 1. काम पर लगाया हुआ, स्थापित, नियोजित, नियुक्त - रघु० २।३८ 2. रक्खा हुआ, निश्चित, जमाया हुआ वेणी० ३।१९।

व्यापारिन् (पुं०) [व्यापार+इनि] 1. जीतेरा, व्यापार करने वाला 2. व्यवसायी।

व्यापिन् (वि०) [वि+आप्+णिनि] 1. व्याप्त होने वाला, अपूर्ण करने वाला, अधिकार करने वाला (समास के अन्त में) 2. सर्वव्यापक, सहविस्तृत, नितान्त सहवर्ती 3. आधारक (पुं०) विष्णु का विशेषण।

व्यापृत (भू० क० कृ०) [वि+आपृ+क्त] 1. काम में लगा हुआ, व्यस्त, नियोजित (अधि० के साथ) 2. स्थापित, स्थिर किया हुआ—(पुं०) कर्मचारी, मन्त्री।

व्यापृतिः (स्त्री०) [व्यापृ+क्तिन्] 1. काम में लगाना व्यस्त करना, व्यवसाय स्वस्वव्यापृतिमग्नमानसतया भामि० १।५७ 2. प्रकार्य, कर्म 3. चेष्टा 4. पेशा, व्यवसाय दे० 'व्यापार'।

व्याप्त (भू० क० कृ०) [वि+आप्+क्त] 1. चारों ओर फैला हुआ, पैठा हुआ, व्यापक, विस्तार किया हुआ, आच्छादित, ढका हुआ 2. व्यापक, सर्वत्र फैला हुआ 3. मरा हुआ, पूर्ण 4. चारों ओर से लपेटा हुआ, घिरा हुआ 5. स्थापित, जमाया हुआ 6. प्राप्त किया हुआ, अधिकृत 7. समझा हुआ, सम्मिलित 8. नितांत संसक्त (तर्क० में) 9. प्रसिद्ध, विख्यात 10. फूलाया हुआ, बिछाया हुआ।

व्याप्तिः (स्त्री०) [वि+आप्+क्तिन्] 1. प्रसार, फैलाव 2. (तर्क० में) विश्वतः फैलाव, नितांत सहवर्तिता, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला होना—यत्र-यत्र धूमस्तत्र वह्निरिति साहचर्यं नियमो व्याप्तिः—तर्क० 3. सार्वजनिक नियम, विश्वव्यापकता 4. पूर्णता 5. प्राप्ति। सम० ग्रहः सार्वजनिक सहवर्तिता का बोध, ज्ञानम् सार्वजनिक सहवर्तिता की जानकारी।

व्याप्य (वि०) [वि+आप्+ण्यत्] व्यापकता के योग्य भरे जाने के योग्य, व्याप्यम् (तर्क० में) अनुमान प्रक्रिया का चिह्न (=हेतु, साधन)।

व्याप्यत्वम् [व्याप्य+त्व] नियतता। सम० असिद्धिः (स्त्री०) अधूरी अटकल, अपूर्ण अनुमान।

व्याभ्रुको=व्यात्यूक्षी (दे०)।

व्यामः-व्यामम् [वि+आ+अम्+घञ्, ल्युट् वा] एक माप विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फैलायें हों तो हाथों की अंगुलियों के कोरों के बीच की दूरी।

व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र+अच्] मिला हुआ मिश्रित, गड्ड-मड्ड किया हुआ।

व्यामोहः [वि+आ+मुह्+घञ्] 1. प्रणयोन्माद 2. व्याकुलता, परेशानी, बेचैनी कंसस्यालभभूज्जितं जितमिति व्यामोहकोलाहलः गीत० १०, काव्या० ३।१०१।

व्यायत (भू० क० कृ०) [वि+आ+यम्+क्त] 1. लम्बा, विस्तृत यदा युगव्यायतबाहुरंसलः—रघु० ३।३४ 2. फैलाया हुआ, खुला हुआ 3. जिसने व्यायाम किया है, अनुशिष्ट 4. व्यस्त, काम में लगा हुआ, अधिकृत 5. कठोर, दृढ़ 6. मजबूत, गहन, अत्यधिक 7. ताकतवर, शक्तिशाली 8. गहरा कु० ५।५४।

व्यायतत्वम् [व्यायत+त्व] पुट्ठों का विकास श० २।४।

व्यायामः [वि+आ+यम्+घञ्] 1. विस्तार करना, फैलाना 2. कसरत, शारीरिक व्यायामों का अभ्यास —शि० २।९४ 3. थकान, श्रम 4. प्रयत्न, चेष्टा 5. बाह्युद्ध, संघर्ष 6. दूरी की माप विशेष (=व्याम दे०)।

व्यायामिक (वि०) (स्त्री० की) [व्यायाम+ठक्] मल्लविद्या-विषयक, शारीरिक कसरत संबंधी।

व्यायोगः [वि+आ+युज्+घञ्] नाट्यसाहित्य में एक प्रकार का एकांकी नाटक, सा० द० ५१४ पर इसकी निम्न परिभाषा दी गई है—ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः। हीनो गर्भविमर्षाभ्यां नरैर्बहुभिराश्रितः। एकांकश्च भवेदस्मिन्निमित्तस्त्रीनिमित्तकः। कैशिकीवृत्तिरहितः प्रख्यातस्तत्र नायकः। राजर्षिरथ दिव्यो वा भवेद्वीरोद्धतश्च सः। हास्यशृङ्गारशान्तेभ्य इतरे ध्वाङ्क्षगिनो रसाः॥

व्याल (वि०) [वि+आ+अल्+अच्] 1. दुष्ट, दुर्व्यसनी —व्यालाश्रया यन्त्रभिरुन्मथिष्णवः—शि० १२।२८, यंता गजं व्यालमिवापराद्धः—कि० १७।२५ 2. बुरा, पापिष्ठ 3. क्रूर, भीषण, बर्बर कि० १३।४, सः 1. खूनी हाथी व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते भर्तृ० २।६ 2. शिकारी का जानवर 3. साँप—हि० ३।२९ 4. बाघ, मा० ३।५ 5. चीता 6. राजा 7. ठग, डकैत 8. विष्णु। सम० ग्राहः, —ग्रहः एक प्रकार की बूटी, ग्राहः, ग्राहिन् (पुं०) सपेरा, —मृगः 1. जंगली जानवर 2. शिकारी चीता, रूपः शिव का विशेषण।

व्यालकः [व्याल+कन्] दुष्ट या खूनी हाथी।

व्यालम्बः [विशेषेण आलम्बते वि+आ+लम्ब्+अच्] एक प्रकार का एरंड का पौधा।

व्यालोल (वि०) [वि+आ+लोड्+अच्, पृषो०] 1. काँपने वाला, थरथराने वाला 2. अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त व्यालोलः केशपाशः गीत० ११।

आवकलनम् [वि+आ+अव+कल्+ल्युट्] घटाना।

व्यावक्रोशी, व्यावक्रोशा [वि+आ+अव+क्रुश् (भाष) +णिच्+अङ्+ङीष्] परस्पर दुर्वचन कहना, आपस की गालीगलौज।

आवर्तः [वि+आ+वृत्+घञ्] 1. घेरना, लपेटना 2. क्रान्ति, भ्रमण, चक्कर खाना 3. फटी हुई अर्थात् आगे की निकली हुई नाभि।

आवर्तक (वि०) (स्त्री० —तिका) [वि+आ+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. लपेटने वाला, घेरा डालने वाला 2. निकालने वाला, अपयजन करने वाला, वियुक्त करने वाला 3. मोड़ने वाला 4. गोद खाने वाला।

व्यावलित (भू० क० कृ०) [वि+आ+वल्+क्त] पसीजा हुआ, द्रवित, विक्लिन्न।

व्यावहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [व्यवहार+ठक्] 1. व्यवसाय संबंधी, प्रयोगात्मक 2. कानूनी, वैध 3. प्रथागत, प्रचलित 4. भ्रमात्मक—तु० प्रातिभासिक,—कः परामर्शदाता, मंत्री।

व्यावहारी [वि+आ+अव+हृ—णिच्+अञ्+ङीष्] पारस्परिक बंधन, लेन देन।

व्यावहासी [वि+आ+अव+हस्+णिच्+अञ्+ङीष्] पारस्परिक अवज्ञा, एक दूसरे की हँसी उड़ाना।

व्यावृत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+वृत्+क्तिन्] 1. आवरण, परदा डालना 2. निकाल देना, निष्कासन।

व्यावृत्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+वृत्+क्त] 1. हटाया हुआ, वापिस लिया हुआ—व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः श्रुतौ तस्करता स्थिता—रघु० १।२१, विक्रम० १।९ 2. वियुक्त किया गया, अलग हटाया हुआ 3. निकाला हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 4. चक्कर खाया हुआ, मुड़ा हुआ 5. लपेटा हुआ, घिरा हुआ 6. रुका हुआ, उपरत—कु० २।६५ 7. फाड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

व्यासः [वि—अस्+घञ्] 1. वितरण, विभाजन 2. समास का विग्रह या विश्लेषण 3. अलगाव, पृथक्ता 4. प्रसार, फैलाव 5. अर्ज, चौड़ाई 6. वृत्त का व्यास 7. उच्चारणदोष 8. व्यवस्था, संकलन 9. व्यवस्थापक, संकलयिता 10. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह पराशर का पुत्र था, सत्यवती इसकी माता थी) (सत्यवती का शन्तनु के साथ विवाह होने से पूर्व इसका

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्म हुआ था) और जन्म होते ही यह वन में चला गया। जहाँ यह वानप्रस्थ होकर घोर तपस्साधना में लीन रहा जब तक कि इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियों में सन्तान उत्पन्न करने के लिए इसे नहीं बुलाया। इस प्रकार यह पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर का पिता था। पहले पहले यह रंग का काला होने तथा एक द्वीप पर सत्यवती से जन्म लेने के कारण 'कृष्णद्वैपायन' कहलाया, परन्तु बाद में इसका नाम व्यास पड़ा क्योंकि इसने ही वेदों के मन्त्रों को क्रमबद्ध कर वर्तमान रूप दिया। "विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इतिस्मृतः"। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसी ने महाभारत की रचना कर उसे गणपति द्वारा लेखबद्ध करवाया। अठारह पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का रचयिता भी इसी को माना जाता है, यह सात चिरजीवियों में से एक है तु० 'चिरजीविन्' 11. वह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणों की कथा करता है।

व्यासक्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+सञ्ज्+क्त] 1. जो दृढ़ता पूर्वक डटा रहे 2. जुड़ा हुआ, लगा हुआ, तुला हुआ व्यस्त, (अधि० के साथ) 3. नियुक्त, पृथक् किया हुआ, अलग किया हुआ 4. परेशान, व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

व्यासङ्गः [वि+आ+सञ्ज्—घञ्] 1. सटा होना, डटे रहना, तुला रहना 2. एकनिष्ठता, भक्ति—भामि० १।७९ 3. सपरिश्रम अध्ययन 4. ध्यान 5. पृथक्ता, संयोग।

व्यासिद्ध (भू० क० कृ०) [वि+आ+सिध्+क्त] 1. प्रतिषिद्ध, वर्जित 2. निषिद्धपण्य, चोरी का माल।

व्याहत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हन्+क्त] 1. अवरुद्ध, रोका हुआ 2. हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 3. विफल किया हुआ, निराश - शि० ३।४० 4. व्याकुल, घबड़ाया हुआ, आतंकित। सम० **अर्थता** रचना का एक दोष - दे० काव्य० ७।

व्याहरणम् [वि+आ+हृ+ल्युट्] 1. बोलना, उच्चारण करना 2. भाषण, वर्णन।

व्याहारः [वि+आ+हृ+घञ्] 1. भाषण, बोलना, वचन - उत्तर० ४।१८, ५।२९ 2. आवाज, स्वर, ध्वनि - मालवि० ५।१।

व्याहृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हृ+क्त] कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ।

व्याहृतिः (स्त्री०) [वि+आ+हृ+क्तिन्] 1. उच्चारण, भाषण, वचन न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्—कु० ३।६० 2. वक्तव्य, अभिव्यक्ति—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुतिः परमेष्ठिनः —रघु० १०।३३ 3. सन्ध्या करते समय प्रतिदिन प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारित ईश्वर परक शब्द विशेष (यह व्याहृतियाँ तीन हैं=भूर्, भुवस्, तथा स्वर् जिनका 'ओ३म्' के पश्चात् उच्चारण किया जाता है, कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार व्याहृतियाँ गिनती में सात हैं)।

व्युच्छित्तिः (स्त्री०), **व्युच्छेदः** [वि+उत्+छिद्+क्तिन्, घञ् वा] काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश।

व्युत्क्रमः [वि+उत्+क्रम्+घञ्] 1. अतिक्रमण, विचलन 2. उलटा क्रम, बेपरीत्य 3. अव्यवस्था, गड़बड़ी।

व्युत्क्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+उत्+क्रम्+क्त] 1. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया गया 2. जो विदा हो गया हो, छोड़कर चला गया हो, बीत गया हो।

व्युत्थानम् व्युत्थितिः (स्त्री०) [वि+उ+स्था+ल्युट्, क्तिन्वा] 1. महान् क्रियाकलाप 2. किसी के विरुद्ध खड़े होना, विरोध, रुकावट 3. स्वतन्त्र कर्म, मनोऽनुकूल कार्य 4. (योग० में) धार्मिक मनोयोग की पूर्ति या भावात्मक मनन 5. एक प्रकार का नृत्य 6. (हाथी को) उठाना - शि० १८।२६

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) [वि+उत्+पद्+क्तिन्] 1. मूल, उत्पत्ति 2. व्युत्पादन, निर्वचन 3. पूरी प्रवीणता, पूरी जानकारी 4. विद्वत्ता, ज्ञान --व्युत्पत्तिरावर्जितकोविदापि न रञ्जनाय क्रमते जडानाम् विक्रम० १।१५, १८।१०८।

व्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [वि+उत्+पद्+क्त] 1. उत्पादित, पैदा किया गया 2. निर्वचन द्वारा निर्मित 3. व्याकरण द्वारा निष्पन्न, निरुक्त, (शब्द) जिसके निर्वचन का पता लग गया हो (विप० अव्युत्पन्न या मूल) 4. पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया - महावी० ४।५७ 5. पूरी तरह प्रवीण, विद्वान्, पण्डित।

व्युप्त (भू० क० कृ०) [वि+उन्द्—क्त] क्लिन्न, आर्द्र, भिगोया हुआ।

व्युदस्त (भू० क० कृ०) [वि+उद्+अस्+क्त] एक ओर फेंका हुआ, अस्वीकृत, दूर किया हुआ।

व्युदासः [वि+उद्+अस्+घञ्] 1. एक ओर फेंकना, अस्वीकृति 2. (व्या० में) निकाल देना 3. प्रतिषेध 4. उपेक्षा, उदासीनता 5. हत्या, विनाश शि० १५।३७

व्युपदेशः [वि+उप+दिश्+घञ्] व्याज, बहाना।

व्युपरमः [वि+उप+रम्+अप्] विराम, यति, समाप्ति।

व्युपशमः [वि+उप+शम्+अच्] 1. विराम का अभाव 2. अशान्ति 3. पूर्ण विराम (यहाँ 'वि' का अर्थ 'तीव्रता' है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्फुट (भ० क० कृ०) [वि ! स्फुट्+क्त] 1. जलाया गया। 2. फीफटो, फलाया हुआ 3. जो उछला या स्फुरित हो 4. खिला हुआ, **स्टम्** 1. पौ फटना, प्रभात -शि० १२।८ 2. दिन 3. फल।

स्फुटिः (स्त्री०) [वि !स्फुट्+क्तिन्] 1. प्रभात 2. समृद्धि 3 प्रज्ञा 4. फल, परिणाम।

स्फूढ (भ० क० कृ०) [वि ! वह्+क्त] 1. फूलाया हुआ, विकसित, विशाल, व्यापक 2. पुष्टकरकी वृष-स्कन्धः- रघु० १।१३ 2. बढ़ा, गढ़ा हुआ 3. कृतबद्ध, व्यवस्थित, (सेना आदि) सुविन्यस्त—भग० १।३ 4. अव्यवस्थित, क्रमहीन 5. विभाजित। सम० **कङ्कट** (वि०) कवचित, जिरह बख्तर पहने हुए।

स्यूत (वि०) [वि ! सि+क्त] 1. अन्तर्वलित, सीया गया, बुना गया।

स्यूतिः [स्त्री०] [वि !-सि+क्तिन्] 1. बुनाई, सिलाई 2. बुनाई की मजदूरी।

स्यूहः [वि !-ऊह्+घञ्] 1. सैनिक विन्यास--मनु० ७।१८७ 2. सेना, दल, टुकड़ी -व्यूहावुभौ तावितरे-तरस्मात् भङ्गं जय चापुरुष्यवत्यम् रघु० ७।५४ 3. बड़ीमात्रा, संचयन, समुच्चय, संग्रह 4. भाग, अंश, हिस्सा 5. शरीर 6. संरचन, निर्माण 7. तर्कना, तर्क। सम० **पार्ष्णिः** (स्त्री०) सेना का पिछला भाग, **भङ्गः**, भेदः सैनिक व्यूह को तोड़ देना।

व्यूहनम् [वि !ऊह्+ल्युट्] 1. सेना की व्यवस्थिति करना, सेना को क्रमबद्ध करना 2. शरीर के अंगों की संरचना।

व्यूहिः (स्त्री०) [विगत ऊहिः --प्रा० ब०] 1. समृद्धि का अभाव, बुरी किस्मत, दुर्भाग्य (विपरीता ऊहिः-व्यूहिः) जैसा कि व्यवसाया व्यूहिर्दुर्दैवेनैतम् -सिद्धा०।

व्ये (स्त्री० द्विक० व्यायति ते, ऊर्ण, प्रेर० व्यापयति ते, इच्छा० विव्यासति) 1. ढकना 2. तानना।

व्योकारः [व्यो+कृ-+अण्] लुहार।

व्योमन् (नपुं०) [व्ये !-मनिन्, पृषो०] आकाश, अन्तरिक्ष —अन्धैर्वं जडयामला इव भवतो यद् व्योम्नि विस्फूर्जसे -काव्य० १०, मेघ० ५१, रघु० १२।६७, मे० २२।५४ 2. जल 3. सूर्य का मन्दिर 4. अभ्रक। सम०-**उदकम्** वारिश का पानी, ओस, **केशः**,—**केशिन्** (पुं०) शिव का विशेषण, —**गंगा** स्वर्गिय गंगा, **चारिन्** (पुं०) 1. देव 2. पक्षी 3. ग्रह, महत्सवा 4. ब्राह्मण 5. तारा, नक्षत्र, —**धूम्रः** बादल,—**नाशिका** एक प्रकार की बटेर, लवा, —**मंजरम्**, —**मंडलम्** झंडा, पताका, —**मुद्गरः** हवा का झोंका, -**यानम्** विमानसवारी, आकाशयान, --**सद्** (पुं०) 1. देव, सुर 2. गन्धर्व 3. भूत-प्रेत, —**स्थली** पृथ्वी,—**स्पृश्** (वि०) गगनचुंबी, बहुत ऊँचा।

व्रज् (भ्वा० प० अ० व्रजति) 1. जाना, चलना, प्रगति करना, नाविनीतव्रजेद् धुर्यः मनु० ४।६७ 2. पधारना, पहुँचना दर्शन करना - मामेकं शरणं व्रज--भग० १८।६६ 3. विदा होना, सेवा से निवृत्त होना, पीछे हटना 4. (समय को) बीतना -इयं व्रजति यामिनी त्यज वरेन्द्र निद्रारसम् --विक्रम० ११।७४, (यह धातु प्रायः भग् या याव् या धातु की भाँति प्रयुक्त होती है), अनु , 1. बाद में जाना, अनुगमन करना मनु० ११।१११ कु० ७।३८ 2. अभ्यास करना, सम्पन्न करना 3 सहारा लेना, आ--, आना, पहुँचना, **परि** , भिक्षु या साधु के रूप में इधर-उधर घूमना, संन्यासी या परिव्राजक हो जाना, **प्र** --, 1. निर्वासित होना 2. सांसारिक वासनाओं को छोड़ देना, चौथे आश्रम में प्रविष्ट होना, अर्थात् संन्यासी हो जाना--मनु० ६।३८, ८।३६३।

व्रजः [व्रज्+क] 1. समुच्चय, संग्रह, रेवड़, समूह —नेतव्रजाः पौरजनस्य तस्मिन् विहाय सर्वान्पतीन्निषेतुः --रघु० ६।७, ७।६७, शि० ६।६, १४।३३ 2. ग्वालों के रहने का स्थान 3. गोष्ठ, गौशाला - शि० २।६४ 4. आवास, विश्रामस्थल 5. सड़क, मार्ग 6. बादल 7. मथुरा के निकट एक जिला। सम०—**अङ्गना**, **युवतिः** (स्त्री०) व्रज में रहने वाली स्त्री, ग्वालन भामि० २।१६५, --**अजिरम्** गोशाला, **किशोरः** —नाथः,—**मोहनः**,—**वरः**,—**वल्लभः** कृष्ण के विशेषण।

व्रजनम् [व्रज्+ल्युट्] 1. घूमना, फिरना, यात्रा करना 2. निर्वासन, देश निकाला।

व्रज्या [व्रज्+क्यप्]-राज्] 1. साधु या भिक्षु के रूप में इधर-उधर घूमना 2. आक्रमण, हमला, प्रस्थान 3. क्षेत्र, समुदाय, जनजाति या कबीला, संप्रदाय 4. रंगभूमि, नाट्यशाला।

व्रण् (भ्वा० प० अ० व्रणति) ध्वनि करना।

(चुरा० उभ० व्रणयति -ते) चोट पहुँचाना, घायल करना।

व्रणः, व्रणम् [व्रण्--अच्] 1. घाव, क्षत, जख्म, चोट —रघु० १२।५५ 2. फोड़ा, नासूर। सम०—**भरिः** बेल नामक गंधद्रव्य, --**कृत्** (वि०) घाव करने वाला, (पुं०) भिलावे का पेड़,—**विरोपण** (वि०) घाव भरने वाला - शा० ४।१३, - **शोधनम्** घाव का साफ करना तथा पट्टी बाँधना, ह्रः एरंड का पौधा।

व्रणित (वि०) [व्रण+इतच्] घायल, जिसके खरोंच आ गई हो -उत्तर० ४।३।

व्रतः, व्रतम् [व्रज्+घ, अस्य तः] 1. भक्ति या साधना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञात का पालन, प्रतिज्ञा, पण--अन्य-स्मतीव व्रतमात्मविचारम्--रघु० १३।६७, २।४, २५, (भिन्न भिन्न पुराणों में अनेक व्रतों का वर्णन किया गया है,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परन्तु उनकी संख्या निश्चित नहीं हो सकी क्योंकि बराबर नये नये व्रतों की रचना प्रतिदिन होती रहती है यथा सत्यनारायण व्रत 2. संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्चय—सोऽभूत् भग्नव्रतः शत्रुनुद्भूत्य प्रतिरोपयन् रघु० १७।४२, इसी प्रकार 'सत्यव्रत, दृढ़व्रत' इत्यादि 3. भक्ति या आस्था का पदार्थ, भक्ति, जैसा कि पतिव्रता (पतिर्व्रतं यस्याः सा)—यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः—भग० ९।२५ 4. संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास, जैसा कि 'अर्कव्रत' में 5. जीवन-चर्या, आचरण, चालचलन—श० ५।२६ 6. अध्यादेश, विधि, नियम 7. यज्ञ 8. कर्म, करतब, कार्य। सम० आचरणम् किसी प्रतिज्ञा का पालन करना, आदेशः (किसी द्विज के) बालक का यज्ञोपवीत संस्कार, —उपवासः किसी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अनशन करना, प्रहणम् किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए संकल्प लेना,—चर्यः ब्रह्मचारी, वेददिद्यार्थी—दे० ब्रह्मचारिन्, चर्या ब्रह्मचर्य का पालन करना,—पारणम्, णा उपवास खोलना या प्रतिज्ञा की सकल समाप्ति,—भङ्गः 1. संकल्प तोड़ना 2. प्रतिज्ञा तोड़ना,—भिक्षा उपनयन संस्कार के अवसर पर भिक्षा मांगना,—लोपनम् प्रतिज्ञा को तोड़ना,—वैकल्यम् किसी धार्मिक संकल्प का अधूरा रह जाना,—संग्रहः व्रत को दीक्षा लेना,—स्नातकः वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था को पूरा कर लिया है अर्थात् ब्रह्मचर्य नामक प्रथम आश्रम—दे०स्नातक।

व्रतितः,-ती (स्त्री०) [व्रत+तल्+क्त च, पृषो० पस्य वः] व्रतति+ङीष्] 1. बेल, लता पादाकृष्टव्रततिवलया-संगसंजातपाशाः श० १।३३, रघु० १४।१ 2. फैलाव, विस्तार।

व्रतिन् (वि०) [व्रत+इनि] प्रतिज्ञा पालन करने वाला, भक्त, पुण्यात्मा, (पुं०) 1. ब्रह्मचारी 2. संन्यासी, भक्त—श० ५।९ 3. जो यज्ञ का उपक्रम करता है—दे० 'यजमान'।

व्रश्च् दे० 'वृश्च्'।

व्रह्मन् दे० 'ब्रह्मन्'।

व्रघ् (तुदा० परः वृघ्नोति, वृघ्णुते, प्रेर० व्रघ्नयति—ते, इच्छा० विव्रित्सति या विव्रक्षति) 1. काटना, काट डालना, फाड़ना, चीरना 2. घायल करना।

व्रघ्नः [व्रघ्+क्नु] 1. छोटी आरी 2. बारीक रेती जिसे सुनार काम में लाते हैं,—नम् काटना, फाड़ना 2. घायल करना।

व्राजिः (स्त्री०) [व्रज्+इञ्] हवा का झोंका, तूफानी हवा, झंझावात।

व्रातः [वृ+अतच्, पृषो० वातुः] समुदाय, रेवड़, समुच्चय —खपाकानां व्रातैः—गंगा० २९, रघु० १२।९४, शि० ४।३५, तम् 1. शारीरिक श्रम, मजदूरी 2. दैनिक मजदूरी 3. यदा-कदा कार्य में नियुक्ति।

व्रातीन (वि०) [व्रातेन जीवति—व्रात+खञ्] दैनिक-मजदूरी से जीविका चलाने वाला, किराये का मजदूर, बेलदार, झल्ली वाला।

व्रात्यः [व्रातात् समूहात् च्यवति-यत्] 1. प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो मुख्य संस्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (जिसका उपनयन संस्कार नहीं हुआ); व्रातिविहिष्कृत भवत्या हि बाल्याद्यमपत्निपाखण्ड परित्यत्परिज्ञानस्नेहः गंगा० ३७ 2. नीच पुरुष, अधम पुरुष 3. विशेष नीच जाति (शूद्रस्त्री और क्षत्रिय माता की सन्तान) का पुरुष। सम०—बृह वह अपने आपको 'व्रात्य' कहता है,—स्तोमः उपर्युक्त संस्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण खोये गये अधिकारों को फिर से प्राप्त करने के लिए किया गया यज्ञ।

व्री i (क्रया० पर० विणाति-लीणाति) छांटना, चुनना, तु० 'वृ'।

ii (दिवा० आ० व्रीयते, व्रीण) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. चुना जाना।

व्रीड् (दिवा० पर० व्रीडयति) 1. लज्जित होना, शर्मिन्दा होना 2. फेंकना, डालना, भेज देना।

व्रीडः, -डा [व्रीड्+घञ्—व्रीड+अ+टाप्] 1. लज्जा व्रीडादिवाभ्यासगतैर्विलित्ये शि० ३।४०, व्रीडमावहति मे स (शब्दः) संप्रति—रघु० ११।७३ 2. विनय, लज्जाशीलता शि० १०।१८।

व्रीडित (भू० क० कृ०) [व्रीड्+क्त] लज्जित किया गया, शर्मिन्दा, लज्जाशील।

व्रीस् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० व्रीसति, व्रीसयति—ते) क्षति पहुंचाना, हत्या करना।

व्रीहिः [व्री+हि, किच्च] 1. चावल, जैसा कि 'सप्तव्रीहि' में 2. चावल का दाना। सम० -अगारम् धान्यागार, खत्तौ, काञ्चनम् मसूर की दाल,—राजिकम् चना, कंगू या कांगनी चावल।

व्रुज् (तुदा० पर० व्रुजति) 1. उकना 2. इकट्ठा होना 2. एकत्र करना, संचय करना 4. डूबना, नीचे जाना।

व्रुस् (भ्वा० पर०, उभ०) दे० 'व्रीस्'।

व्रैहेय (वि०) (स्त्री०—यी) [व्रीहि+ढक्] 1. चावलों के योग्य 2. चावल के साथ बोया हुआ,—यम् चावल का खेत, वह खेत जिसमें चावल बोये जाने चाहिए।

श्लि (क्रया० पर० श्लिनाति—श्लीनाति) विरल प्रयोग—प्रेर० श्लेपयति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. वरण- पोषण करना, थामे रखना, निर्वाह करना 3. छांटना, चुनना।

श्लेष् (चुरा० उभ० श्लेषयति—ते) देखना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शः [शो+ड] 1. काटने वाला, विनाशकर्ता कि० १५। ४५ 2. शस्त्र 3. शिव,—**शम्** आनन्द—भर्तृ० २।१६।

शंयु (वि०) [शं शुभम् अस्त्यस्य—शम्+युस्] प्रसन्न, समृद्ध—भट्टि० ४।१८।

शंवः [शम्+व] 1. प्रसन्न, भाग्यशाली—(पुं०) 1. ठीक दिशा में हल चलाना 2. इन्द्र का वज्र 3. मूसल का सिर जो लोहे का बना होता है।

शंस् (भ्वा० पर० अंसति, शस्त, कर्मवा० शस्यते) 1. प्रशंसा करना, स्तुति करना, अनुमोदन करना—साधु साध्विति भूतानि शशंसुर्मारुतात्मजम्—राम०, भग० ५।१ 2. कहना, बयान करना, अभिव्यक्त करना, प्रकथन करना, संसूचित करना, घोषणा करना, विवरण देना (संप्र० या कभी संब० के साथ अथवा स्वतंत्र रूप से) · प्रशंस सीता परिदेवनान्तमनुष्ठितं शासनमप्रजाय--रघु० १४।८३, न मे हिंसा शंसति किंचिदीप्सितम् -- ३।५, २।६८, ४।७२, ९।७७. ११।८४, कु० ३।६०, ५।५१ 3. संकेत करना, कह रखना, जताना—यः (अशोकः) सावज्ञो माधवश्री-नियोगै पुष्पैः शंसत्यादरं त्वत्प्रयत्ने--मालवि० ५।८, कि० ५।२३, कु० २।२२ 4. आवृत्ति करना, पाठ करना 5. चोट मारना, क्षति पहुँचाना 6. बुरा भला कहना, बदनाम करना, **अभि**—, 1. अभिशाप देना 2. दोषारोपण करना, निन्दा करना, बदनाम करना - याज्ञ० ३।२८६ 3. प्रशंसा करना, **आ**—(प्रायः आ) 1. आशा करना, प्रत्याशा करना, इच्छा करना, अभिलाषा करना—स्वकार्यसिद्धिं पुनराशशंसे - कु० ३। ५७, संग्रामं चाशशंसिरे--भट्टि० १४।७०, ९०, मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा · श० ७।१३, २।१५ 2. आशीर्वाद देना, सदिच्छा प्रकट करना, मंगलकामना करना एवं ते देवा आशंसन्तु -मृच्छ० १, राज्ञः शिवं सावरजस्य भूयादित्याशशंसे करणै-रबाहोः रघु० १४।५० 3. कहना, वर्णन करना --आशंसता वाणगतिं वृधाके कार्यं त्वया नः प्रतिपन्न-रूपम्—कु० ३।१४ ·· प्रशंसा करना 5. दोहराना, **प्र**—, सराहना, स्तुति करना, अनुमोदन करना, गुण-कथन करना, श्लाघा करना—हरिणाधुवतिः प्रशशंसे ·-गोत्र० १, यच्च वाचा प्रशस्यते--मनु० ५।१२७, आशंसीत्तं निशाचरः—भट्टि० १२।६५, रघु० ५।२५, १७।३६।

शंसनम् [शंस्+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना 2. कहना, वर्णन करना 3. पाठ करना।

शंसा [शंस्+अ+टाप्] 1. श्लाघा 2. अभिलाषा, इच्छा, आशा 3. दोहराना, वर्णन करना।

शंसित [भू० क० कृ०] [शंस्+क्त] 1. जिसकी श्लाघा की गई हो, स्तुति की गई हो 2. बोला गया, कहा गया, उक्त, घोषित 3. अभिलषित, इच्छित 4. निश्चय किया गया, स्थापित, निर्धारित 5. जिस पर मिथ्या दोषारोपण किया गया हो, कलंकित।

शंसितृ (वि०) [शंस्+इनि] (प्रायः समास के अन्त में) 1. श्लाघा करने वाला 2. कहने वाला, घोषणा करने वाला, संसूचित करने वाला,--प्रजावती दोहद-शंसिनी ते ·रघु० १४।४५ 3. संकेत करने वाला, पहले से कह रखने वाला मूर्धानः क्षतहुंकारशंसिनः —कु० २।२६, प्रार्थनासिद्धिशंसिनः · रघु० १।४२, शि० ९।७७ 4. शकुन बताने वाला, भविष्य कथन करने वाला—रघु० ३।१४, १२।९०।

शक् i (स्वा० पर० शक्नोति, शक्त) 1. योग्य होना, सक्षम होना, सबल होना, अमल में लाना (प्रायः 'तुमुन्नन्त' के साथ, प्रयुक्त होकर 'सकना' अर्थ प्रकट करना)—अदर्शयन् वक्षुमयशरुनुवस्यः शास्त्राभिरार्जित-पल्लवाभिः· रघु० १३।२४, भट्टि० ३।६, मेघ० २० कभी कभी कर्म० या संप्र० के साथ—मनु० ११।१९४ 2. सहन करना, बर्दाश्त करना 3. शक्तिशाली होना कर्मवा० समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के योग्य होना (निम्नांकित तुमुन्नंत को कर्मवा० का अर्थ देना) · तत्कर्तुं शक्यते 'यह किया जा सकता है', इच्छा० (शिक्षति) 1. समर्थ होने की इच्छा करना 2. सीखना।

ii (दिवा० उभ०—शक्यति—ते, शक्त) 1. समर्थ होना, अमल में लाने की शक्ति रखना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना।

शकः [शक्+अच्] 1. एक राजा (विशेषतः 'शालि-वाहन', परन्तु इस शब्द के सही अर्थ तथा क्षेत्र के विषय में अभी तक विद्वानों में मतैक्य नहीं हो सका) 2. काल, सम्वत् (यह शब्द विशेष रूप से शालिवाहन सम्वत् के लिए जो खीस्ताब्द से ७८ वर्ष के पश्चात् आरम्भ हुआ, प्रयुक्त होता है), · काः (पु० ब० व०) 1. एक देश का नाम 2. एक विशेष जन-जाति या राष्ट्र का नाम (मनु० १०।४४ में 'पौण्ड्रक' के साथ इस शब्द का भी प्रयोग मिलता है) समः—अन्तकः, —अरिः राजा विक्रमादित्य के विशेषण जिसने शकों का उन्मूलन किया,· अब्दः शकसंवत् का वर्ष, कर्तृ, —हन् (पुं०) संवत् का प्रवर्तक।

शकटः, टम् [शक्+अटन्] गाड़ी, छकड़ा, भार ढोने की गाड़ी—रोहिणी शकटम्—पंच० १।२१३, २११, याज्ञ० ३।४२, ·· टः 1. सैनिक व्यूहविशेष—मनु० ७।१८७ 2. एक विशेष प्रकार की तोल जो एक गाड़ी-भर बोझ या २००० पल के बराबर है 3. एक राक्षस का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही, मार डाला था 4. तिनिश नामक पेड़ । सम०—अरिः,—हन् (पुं०) कृष्ण के विशेषण, आर्द्रा रोहिणी नामक नक्षत्र (इसका आकार 'शकट' जैसा होता है), बिलः जलकुक्कुट ।

शकटिका [शकट+कीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] छोटी गाड़ी, खिलौना-गाड़ी जैसा कि 'मृच्छकटिका' में ।

शकृत् (नपुं०) मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों का मल, लीद गोबर आदि (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० से आगे विकल्प से 'शकृत्' आदेश हो जाता है) ।

शकलः [शक्+कलच्] 1. भाग, अंश, हिस्सा, टुकड़ा, खण्ड (इस अर्थ में नपुं० भी) उपशकलमेतद्भेदकं गोमयानां—मुद्रा० ३।१५, रघु० २।४६, ५।७० 2. बक्कल, छिलका 3. (मछली की) खाल, परत ।

शकलित (वि०) [शकल+इतच्] खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।

शकलिन् (वि०) [शकल+इनि] मछली ।

शकारः (पुं०) राजा की रखैल का भाई, राजा को उस पत्नी का भाई जिससे विधिपूर्वक विवाह न किया गया हो, अनुढा भ्राता (इसका वर्णन बहुधा मिश्रित मिलता है, नीच कुल में जन्म लेने के कारण मूर्खता, घमंड, आदि अवगुणों के विद्यमान रहते हुए भी राजा का साला होने के कारण इसे उच्चपद मिल जाता है, शूद्रकरचित मृच्छकटिक नाटक में यह प्रमुख भाग लेता है, मिथ्या यश, छलकापन तथा ओछापन इसके चरित्र की विशेषता है, बार-बार उसके उच्चसम्बन्ध का उल्लेख, उसकी उपहासास्पद मूर्खता, एवं प्रमाद तथा अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर नायिका का गला घोटने की क्रूरता इसकी योग्यता के परिचायक हैं साहि० द० ८१ में इसकी परिभाषा दी गई है भवमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः । सोऽयमनूढ्राभ्राता राज्ञः श्यालः शकार इत्युक्तः ॥

शकुनः [शक्+उनन्] 1. पक्षी—शकुनोच्छिष्टम्—याज्ञ० १।१६८ 2. पक्षिविशेष, चील, गिद्ध, —नम् 1. सगुन, लक्षण, शुभाशुभ बतलाने वाला चिह्न शि० ९।८३ 2. शकुनसूचक सगुन । सम०—ज्ञ (वि०) सगुनों को जानने वाला,—ज्ञानम् सगुनों का ज्ञान, भवितव्यता, होनहार,—शास्त्रम् वह शास्त्र जिसमें सगुनसम्बन्धी विचार किये गये हैं, सगुन शास्त्र ।

शकुनिः [शक्+उनि] 1. पक्षी—उत्तर० २।२५, मनु० १२।६३ 2. गिद्ध, चील, बाज 3. मुर्गा 4. गांधारराज सुबल का एक पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का भाई, इस प्रकार यह दुर्योधन का मामा था । इसी ने पाण्डवों को उखाड़ने के लिए दुर्योधन की अनेक दुरभियोजनाओं में सहायता दी । आजकल इस नाम का प्रयोग उस दुर्वृत्त रिश्तेदार के लिए होता है जिसका परामर्श बर्बादी का कारण बने । सम० ईश्वरः गरुड़, प्रपा पक्षियों को पानी पिलाने की कुंड —वादः 1. पक्षी की कूजन 2. मुर्गे की बांग ।

शकुनी [शकुन+ङीष्] 1. चिड़िया, गौरैया 2. एक पक्षिविशेष ।

शकुन्तः [शक्+उन्त] 1. एक पक्षी —अंशुपायिशकुन्तनीडनिर्वृत्तिं विभ्रदुटजमण्डलम् शि० ७।११ 2. नीलकंठ पक्षी 3. पक्षिविशेष ।

शकुन्तकः [शकुन्त+कन्] पक्षी ।

शकुन्तला [शकुन्तैः लायते—ला+क+टाप्] विश्वामित्र ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गई मेनका अप्सरा से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री (जब मेनका स्वर्ग गई तो वह इस बच्ची को एकान्त जंगल में छोड़ गई, वहां पक्षियों ने इसका पालन पोषण किया, इसी लिए इसका नाम शकुन्तला पड़ा । बाद में वह महर्षि कण्व को मिली । कण्व ने उसे अपनी पुत्री की भांति पाला । जब आखेट करता हुआ दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम की ओर आया तो वह शकुन्तला के लावण्य से आकृष्ट हो गया । उसने शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे राजी कर उससे गांधर्व विवाह कर लिया (देo दुष्यन्त) । शकुन्तला से एक पुत्र पैदा हुआ, इसका नाम भरत था, यह चक्रवर्ती राजा बना, इसी के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा ।

शकुन्तिः [शक्+उन्ति] पक्षी कण्वर्षिस्त्यक्तः शकुन्तिभिः शकुन्तयः उत्तर० ३।२४ ।

शकुन्तिका [शकुन्ति+कन्+टाप्] 1. पक्षी—उत्तर० १।४५ 2. पक्षिविशेष 3. टिट्टी, झींगुर ।

शकुलः, स्त्री [शक्+उलच्] एक प्रकार की मछली । सम०—अवनी एक जड़ीबूटी, कड़वी घीकुवार, —अर्भकः एक प्रकार की मछली ।

शकृत् (नपुं०) [शक्+ऋत्] मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों की लीद, गोबर आदि । सम०—करिः (पुं०; स्त्री०)—करी बलड़ा,—शकृत्करिवत्सः—सिद्धा०, द्वारम् गुदा, मलद्वार, पिण्डः, पिण्डकः गोबर का गोला शाब्दायति प्रकिरति शकृत्पिण्डकानास्य-मात्रान् उत्तर० ४।२७ ।

शक्करः, शक्करिः [शक्+किप्, कृ+अच्, कर्म० स०] बैल, सांड ।

शक्करी [शक्कर+ङीष्] 1. नदी 2. करधनी, मेखला 3. नीच जाति की स्त्री ।

शक्त (भू० क० कृ०) [शक्+क्त] 1. योग्य, समर्थ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(सम्ब०, अधि० या तुमुन्नन्त के साथ) – बहवोऽस्य । कर्मणः शक्ताः वेणी० ३, तस्योपकारे शक्तस्त्वं किं जीवन् किमुताम्यया—द० 2. मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली 3. धनाढ्य, समृद्धिशाली—मनु० ११।९ 4. सार्थक, अभिव्यञ्जक (शब्द) 5. चतुर, प्रज्ञावान् 6. प्रियवादी ।

शक्तिः (स्त्री०) [शक्+क्तिन्] 1. बल, योग्यता, धारिता, सामर्थ्य, ऊर्जा, पराक्रम दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या –पंच० १।३६१, ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ रघु० १।२२, इसी प्रकार यथाशक्ति, स्वशक्ति आदि, राज्यशक्ति (इस के तीन तत्त्व हैं 1. प्रभुशक्ति या प्रभावशक्ति 'राजा की अपनी प्रमुख पदवी' 2. मन्त्रशक्ति 'सत्परामर्श की शक्ति' तथा 3. उत्साह शक्ति 'प्रेरकशक्ति') · राज्यं नाम शक्तित्रयायत्तम् दश०, विसाधना शक्तिरिवार्थसञ्चयम् –रघु० ३।१३, ६।३३, १७।९३, शि० २।२६ 2. रचनाशक्ति, काव्य शक्ति या प्रतिभा—शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् काव्य० १, दे० तत्स्थानीय वार्त्ताका 3. देव की सक्रिय शक्ति, यह शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी, दिव्यता (इनकी गिनती विविध प्रकार से की जाती है कहीं आठ, कहीं नौ और कहीं पचास तक) —स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः—मा० ५।१, शि० ७।३५ 4. एक प्रकार का अस्त्र,—शक्तिखण्डाभिषेतेन गाण्डीवविनोक्तम् वेणी० ३, ततो विभेद पोलस्त्यः शक्त्या वक्षसि लक्ष्मणम् रघु० १२।७७ 5. बर्छी, नेजा, शूल, भाला 6. (न्या० में) किसी पदार्थ का उसके बोधक शब्द से सम्बन्ध 7. कारण की अन्तर्हित शक्ति जिससे कार्य की उत्पत्ति होती है 8. (काव्य० में) शब्दशक्ति या शब्द की अर्थशक्ति (यह संख्या में तीन है अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना) सा० द० ११ 9. अभिधाशक्ति, शब्दस्य द्वैत (वि० लक्षणा और व्यञ्जना), 10. स्त्री की जननेन्द्रिय, भग, शक्तिसम्प्रदाय के अनुयाइयों द्वारा पूजित शिवलिङ्ग की मूर्ति । सम० अर्थः उद्योग तथा श्रम के फलस्वरूप होना तथा शरीर का पसीने से तर होना, अपेक्षा, अपेक्षिन् (वि०) सामर्थ्य का ध्यान रखने वाला,–कुण्ठनम् शक्ति को कुण्ठित करना, –भृत् (वि०) 1. बल या अर्थ को धारण करने वाला 2. बर्छीधारी, (–भृत्) बल या अर्थ का बोध अथवा शब्दशक्ति का ज्ञान 3. बर्छीधारी, भालाधारी 4. शिव का विशेषण 5. कार्तिकेय का विशेषण,–वाहनम् (वि०) शब्द के अर्थ को स्थापना या निर्धारण करने वाला, (–नः) कार्तिकेय का विशेषण, त्रयम् राज्यशक्ति के संघटक तीन तत्त्व –दे० शक्ति (2) ऊपर, · धर (वि०) मजबूत, शक्तिशाली (–रः) 1. बर्छीधारी 2. कार्तिकेय का विशेषण,– पाणिः, भृत् (पुं०) 1. बर्छीधारी 2. कार्तिकेय का विशेषण, पातः शक्ति क्षय, पराजय, –पूजकः शाक्त, · पूजा शक्ति की पूजा, —वैकल्यम् शक्तिक्षय, दुर्बलता, अक्षमता,–हीन (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, बलरहित; नपुंसक,—हेतिकः भाला धारी, बर्छीधारी ।

शक्तितः (अव्य०) [शक्ति+तसिल्] शक्ति के अनुसार, यथायोग्य, यथाशक्ति ।

शक्तन, शक्तल (वि०) [शक् +न, कल वा] मिष्टभाषी, प्रियवादी ।

शक्य (सं० कृ०) [शक्+यत्] 1. संभव, क्रियात्मक, किये जाने के योग्य, (प्रायः तुमुन्नन्त के साथ) शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् भर्तृ० २।११, रघु० २।४९, ५४ 2. कार्यान्वयन के योग्य 3. कार्यान्वयन में सरल 4. प्रत्यक्ष कहा गया, अभिहित (शब्दार्थ आदि) —शक्योऽर्थोऽभिधया ज्ञेयः सा० द० ११ 5. सभाव्य (कभी-कभी 'शक्यम्' शब्द कर्मवा० में तुमुन्नन्त के साथ विधेय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, उस समय तुमुन्नंत का वास्तविक अभिप्राय कर्तृ० में होता है एवं हि प्रणयवती सा शक्यमुपेक्षितुं कुपिता —मालवि० ३।२२, शक्यं...अविरलनालिङ्गितुं पश्यतः · श० ३।६, विभूतयः शक्यमवाप्तमर्थिताः—सुभा०, भग० १८।११ । सम० अर्थः प्रत्यक्ष अभिहितार्थ ।

शक्रः [शक्+रक्] 1. इन्द्र—एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते · कुलक० 2. अर्जुन का वृक्ष 3. कुटज का पेड़ 4. उल्लू 5. ज्येष्ठा नक्षत्र 6. चौदह की संख्या । सम०–अशनिः कुटज का वृक्ष, आख्यः उल्लू, —आत्मजः 1. इन्द्र का पुत्र जयन्त 2. अर्जुन,—उत्थानम्, –उत्सवः भाद्रपदशुक्ला द्वादशी को इन्द्र के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव, पर्व, गोपः एक प्रकार का लाल कीड़ा, तृ० इन्द्रगोप–जः, जातः कौवा,—जित्, भिद् (पुं०) रावण के पुत्र मेघनाद के विशेषण, द्रुमः देवदारु का वृक्ष, –धनुस्, शरासनम् इन्द्रधनुष, ध्वजः इन्द्र के सम्मान में स्थापित झंडा, पर्यायः कुटज का वृक्ष, –पादपः 1. कुटज का पेड़ 2. देवदारु वृक्ष, प्रस्थ इन्द्रप्रस्थ, भवनम्, –भुवनम्, वासः स्वर्ग, वैकुण्ठ, मूर्धन् (नपुं०) शिरस् (नपुं०) बांबी, वल्मीक, · लोकः इन्द्र का संसार,–वाहनम् बादल, शार्ङ्गिन् (पुं०) कुटज का वृक्ष, · सारथिः इन्द्र का रथवान्, मातलि का विशेषण, –सुतः 1. जयंत का विशेषण 2. अर्जुन का विशेषण, 3. वालि का विशेषण ।

शक्राणी [शक्र+ङीष् आनुक्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

शक्रिः [शक्+क्रिन्] 1. बादल 2. इन्द्र का वज्र 3. पहाड़ 4. स्त्री ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शक्वरः [शक्+वन्, र] सांड, बैल, तु० शक्कर ।

शङ्क् (स्वा० आ० शङ्कते, शङ्कित) 1. संदेह करना, अनिश्चित होना, संकोच करना, संदिग्ध होना - शङ्कते जीवति वा न वा--राम० 2. डरना, भय होना, त्रस्त होना (अपा० के साथ)—नाशङ्किष्ट विवस्वतः—भट्टि० १५।३९—अशङ्कितेभ्यः शङ्कत शङ्कितेभ्यश्च सर्वतः—सुभा० 3. शंका करना, अविश्वास करना, भरोसा न करना—स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः--मृच्छ० ४।२ 4. सोचना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, संभव समझना, शंका करना, डरना -- त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्याः—मेघ० ९५, नाहं पुनस्तथा त्वयि यथा हि मां शङ्कसे भीरु - विक्रम० ३।१४, भट्टि० ३।२६, नै० २२।४२ 5. आक्षेप करना, अपनी शंका या ऐतराज उठाना —अत्रेदं शङ्क्यते, (बहुधा विवादास्पद भाषा में प्रयुक्त) —न च ब्रह्मणः प्रमाणान्तरगम्यत्वं शङ्कितुं शक्यम्--सर्व०, अभि , 1. शंका करना 2. संदिग्ध या अनिश्चयी होना—मनु० ६।६६, आ , शङ्का करना, भरोसा न करना, संदेह रखना - भट्टि० २१।१ 2. सन्देह करना, विश्वास करना, सोचना—आङ्कसे यदपि तद्दिवं स्पर्शक्षमं रत्नम्—शृं० १।२८, वि० ३।७२ भट्टि० ६।६ मनु० ७।१८५ 3. डरना, आशंका करना, भरतागमनं पुनः आशङ्क्य—रघु० १२।२४, पंच० १।३, ९२ 4. आक्षेप करना, संदेह करना अत एव न ब्रह्मशब्दस्य जात्याद्यर्थान्तरमाशङ्कितव्यम् - शारी० (तथा कुछ अन्य स्थानों पर), परि--1. शंका करना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना पत्रेऽपि संचारिणि प्राप्तं त्वां परिशङ्कते--गीत० ६ 2. संदेह करना, संदेहशील होना 3. डरना, भयभीत होना, रघु० ८।७८, वि , 1. शंका करना, डरना, संदेहशील या शंकालु होना,--विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम् --शृं० ३।१४, सलीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते ५।१७ 2. सत्य का चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना विशङ्कमाना रमितं कयाऽपि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह—गीत० ७ ।

शङ्कः [शङ्क्+अच्] कर्षक बैल, (गाड़ी) खींचने वाला बैल ।

शङ्कर (वि०) (स्त्री० रा,- री) [शं सुखं करोति --कृ+अच्] आनन्द या समृद्धि देने वाला, शुभ, मङ्गलमय,—रः 1. शिव 2. विख्यात आचार्य और ग्रन्थप्रणेता शंकराचार्य दे० परि० २, री 1. शिव की पत्नी पार्वती 2. मंजिष्ठा, मजीठ 3. शमीवृक्ष ।

शङ्का [शङ्क्+अ+टाप्] 1. संदेह, अनिश्चितता 2. संकल्प-विकल्प, दुविधा 3. आशंका, अविश्वास, अनिष्टशंका, अपायशंका, अरिष्टशंका आदि 4. डर, आशंका, त्रास, आतंक—जातशङ्कैर्देवैर्मेनका नामाप्सराः प्रेषिता - शृं० १, कैकेयीशङ्कयोद्वाह—रघु० १२।२, १३।४२, मेघ० ६९ 5. आशा, प्रत्याशा 6. (भ्रान्त) विश्वास, आशंका, (मिथ्या) धारणा—त्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया शृं० ७।२४, कुर्वन् वधूजनमनःसु शशाङ्कशङ्काम्—कि० ५।४२, हरितृणोद्गमशङ्कया ५।३८ ।

शङ्कित (भू० क० कृ०) [शङ्क्+क्त] 1. सन्दिग्ध, आशंकायुक्त, त्रस्त 2. शंकालु, आशंका करने वाला, अविश्वासपूर्ण 3. अनिश्चित, संदिग्ध 4. भयपूर्ण, सशंक, आतंकित (दे० शङ्क्) । सम०—चित्त,—मनस् (वि०) भीरु, कातरहृदय 2. शंकाकुल, अविश्वासपूर्ण 3. संदिग्ध ।

शङ्किन् (वि०) [शङ्का+इनि] सन्देह करने वाला, शंका करने वाला, डरने वाला, विश्वास करने वाला (समास के अंत में) - त्वदुपावर्तनशङ्कि मे मनः-- रघु० ८।५३, अतिस्नेहः पापशङ्की शृं० ४ ।

शङ्कुः [शङ्क्+उण्] 1. नेजा, बर्छी, नुकीली कील, शक्ति, कटार, (प्रायः समास के अन्त में)—शोकशङ्कुः 'शोकरूपी कटार' अर्थात् तीक्ष्ण एवं हृदयविदारक शोक —उत्तर० ३।३५, रघु० ८।९३ 2. खूंटा, खम्बा, स्तम्भ, शूल या नोकदार छड़ 3 कील, मेख, खूंटी —रघु० १२।९५ 4. बाण की तीखी नोक, काँटा या अंकुड़ा 5. (कटे हुए वृक्ष का) तना, पेड़ का ठूंठ, मुंडा पेड़ 6. घड़ी की सूई 7. बारह अंगुल की माप 8. गज, मापने का डंडा 9. (ज्यो० में) लंबरेखा या ऊँचाई 10. सौ खरब या एक नील की संख्या 11. पत्तों के रेशे 12. वल्मीक, बमी 13. पुरुष की जननेन्द्रिय 14. एक प्रकार की मछली, तनुका 15. राक्षस 16. विष 17. पाप 18. जलचर, विशेषकर कलहंस 19. शिव 20. साल का पेड़ । सम० - कर्ण (वि०) जिसके कान शंकु के समान लंबे और नुकीले हों, (र्णः) गधा—तरुः वृक्षः साल का पेड़ ।

शङ्कुला [शङ्कु+उलच्] 1. एक प्रकार का चाकू या दो धार वाला नश्तर 2. सरौता । सम०—खंडः सरौते से काटा हुआ टुकड़ा ।

शङ्खः,-खम् [शम्+ख] 1. शंख, घोंघा--न श्वेतभावमुज्झति शङ्खः शिक्षितमुत्तमतोऽपि पंच० ४।११०, शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक्—भग० १।१८ 2. मस्तक की हड्डी, कु० ७।३३ 3. कनपटी की हड्डी 4. हाथी के दोनों दाँतों के बीच का भाग 5. दस नील की संख्या 6. सैनिक ढोल या मारूबाजा 7. एक प्रकार का गन्धद्रव्य, नखी 8. कुबेर की नवनिधियों में से एक 9. एक राक्षस जिसको विष्णु ने मार डाला था 10. एक स्मृतिकार ('लिखित' के साथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संयुक्त नाम का उल्लेख)। सम०- उदकम् शंख में डाला हुआ पानी, कारः, कारकः शंखकार नाम की एक वर्णसंकर जाति, चरी, चर्ची (मस्तक पर लगाया गया) चन्दन का तिलक - पूरणम् शंख को पीस कर बनाया गया चूरा, ध्मः, ध्मातकः एक प्रकार का ढोल जिसमें शंख भी एल जाता है, ध्मः —ध्मा (पुं०) शंख बजाने वाला, ध्वनिः शंख की आवाज (कभी-कभी, परन्तु प्रायः आतंक या निराशा की द्योतक ध्वनि), प्रस्थः चन्दन का कलंक,—भृत् (पुं) विष्णु का विशेषण, मुखः घड़ियाल, मगर, स्वनः शंखध्वनि।

शङ्कटः,-कम् [शंख + कन्] 1. शंख 2. कनपटी की हड्डी, कः (शङ्कु का बना) कड़ा—शि० १३।४१।

शङ्खणकः, (-खः) एक छोटा शंख या घोंघा।

शङ्खिन् (पुं०) [शङ्ख + इनि] 1. समुद्र 2. विष्णु 3. शंख बजाने वाला।

शङ्खिनी [शङ्खिन् + ङीप्] काम शास्त्र के लेखकों के अनुसार स्त्रियों के किये गये चार भेदों में से एक, रतिमञ्जरी में लिखा है: दीर्घातिदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता। रेखात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा संभोगकेलिरसिका किल शङ्खिनी सा—६. तु० चित्रिणी, हस्तिनी और पद्मिनी भी 2. प्रेतात्मा, अप्सरा, परी।

शङ्क् (भ्वा० आ० शङ्कते) बोलना, कहना, बतलाना।

शचिः,-ची (स्त्री०) [शच् + इन्, शचि + ङीप्] इन्द्र की पत्नी रघु० ३।१३, २३। सम०—पतिः,—भर्तृ (पुं०) इन्द्र के विशेषण।

शञ्च् (भ्वा० आ० शञ्चते) जाना, हिलना-जुलना।

शट् (भ्वा० पर० शटति) 1. बीमार होना 2. बांटना, वियुक्त करना।

शट (वि०) [शट् + अच्] खट्टा, अम्ल, कसैला।

शटा [शट + टाप्] सन्यासी के उलझे बाल—तु० जटा।

शटिः (स्त्री०) [शट् + इन्] कचूर का पौधा, आमा हल्दी।

शठ् (भ्वा० पर० शठति) 1. धोखा देना, ठगना, जालसाजी करना 2. चोट मारना, मार डालना 3. कष्ट उठाना।

॥ (चुरा० पर० शाठयति) 1. समाप्त करना 2. असमाप्त छोड़ देना 3. जाना, हिलना-जुलना 4. आलसी या सुस्त होना 5. धोखा देना, ठगना (इस अर्थ में 'शठयति')।

शठ (वि०) [शठ् + अच्] 1. चालाक, धोखेबाज, जालसाज, बेईमान, कपटी 2. दुष्ट, दुर्वृत्त, ठः 1. बदमाश, ठग, धूर्त, मक्कार मनु० ४।३०, भग० १८।२८ 2. झूठा या धोखेबाज प्रेमी (जो एक स्त्री के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है परन्तु मन किसी दूसरी स्त्री में रमाया रहता है)—ध्रुवमस्मि शठः शुचिस्मिते विदितः कैतववत्सलस्तव—रघु० ८।४९, १९।३१, मालवि० ३।१९, सा० द० 'शठ' की इस प्रकार परिभाषा देता है —शठोऽप्यमेकत्र बद्धभावो यः वर्णितव्रहिरनुरागो विप्रियमन्यज्ञ गूढमाचरति —७४ 3. मूढ, बुद्धू 4. मध्यस्थ, विवाचक 5. घतूरे का पौधा 6. आलसी पुरुष, सुस्त व्यक्ति, ठम् 1. लोहा 2. केसर, जाफरान।

शठम् [शठ् + अच्] सन, पटसन। सम०—सूत्रम् 1. सन की बनी डोरी या रस्सी 2. सन का बना जाल 3. रस्सियां, डोरियां।

शण्डः [शण्ड् + अच्] 1. नपुंसक, हिजड़ा 2. सांड 3. छोड़ा हुआ सांड़,—डम् संग्रह, समुच्चय—तु० खंड या खण्ड की।

शण्डः [शाम्यति शाम्यधर्मात्—शम् + ड] 1. हिजड़ा, नपुंसक 2. अन्तःपुर में रहने वाला टहलुआ, पुरुषसेवक (हिजड़ों या बधिया किये गये पुरुषों में से चुना हुआ) 3. सांड 4. छोड़ा हुआ सांड़ 5. पागल आदमी।

शतम् [दश दशतः परिमाणमस्य—दशन् + त, श आदेशः नि० साधु:] सौ की संख्या—निःस्वो वष्टि शतं—शान्ति० २।९, शतमेकोऽपि संधत्ते प्रकारस्यो धनुर्धरः पंच० १।२२९ ('शत' शब्द किसी भी लिंग के बहुवचनांत संज्ञा शब्दों के साथ एक वचन में ही प्रयुक्त होता है—शतं नराः, शतं गावः, या शतं गृहाणि, इस दशा में यह संख्यावाचक विशेषण माना जाता है, परन्तु कभी कभी द्विवचन तथा बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है - द्वे शते, दश शतानि आदि। सर्व० के संज्ञा-शब्द के साथ भी प्रयुक्त होता है—गवां शतम्,; समास के अन्त में यह अपरिवर्तित रूप में रह सकता है भव भर्ता शरच्छतम्, या बदल कर 'शती' हो जाता है यथा गोवर्धनाचार्य की कृति 'आर्यासप्तशती') 2. कोई भी बड़ी संख्या। सम० अक्षी 1. रात्रि, 2. दुर्गादेवी, अङ्गः गाड़ी, छकड़ा विशेषतः युद्धरथ, -अनीकः बूढ़ा आदमी,—अरम्, आरम् इन्द्र का वज्र, आलकम् श्मशान, कबरिस्तान, आलम्भः 1. ब्रह्मा 2. विष्णु, कृष्ण 3. विष्णु का वाहन 4. गौतम और अहिल्या का पुत्र, जनकराज का कुलपुरोहित—उत्तर० १।१६, आयुस् (वि०) सौ वर्ष तक जीवित रहने वाला या टिकने वाला, आवर्तः, —आवर्तिन् (पुं०) विष्णु, ईशः 1. सौ के ऊपर शासन करने वाला, 2. सौ गांव का शासक मनु० ७।११५, —कुम्भः एक पहाड़ का नाम (कहते हैं कि यहां पर सोना पाया जाता है), भम् सोना,—घ्नः (अव्य०) सौ गुणा, कोटि (वि०) सौ बार वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(दिः) इन्द्र का वज्र, (स्त्री०) एक अरब या सौ करोड़ की संख्या, **क्रतुः** इन्द्र का विशेषण रघु० ३।३८, **खण्डम्** सोना,—**गु** (वि०) सौ गायों का स्वामी, **गुण, गुणित** (वि०) सौगुणा बड़ा हुआ —**विक्रम** ३।२२, **शल्यिः** (स्त्री) दूर्वा घास, —**स्त्री** 1. एक प्रकार का शस्त्र जो अस्त्र की भांति प्रयुक्त किया जाय (कुछ विद्वानों के मतानुसार यह एक प्रकार का राकेट है, परन्तु दूसरों के मतानुसार यह एक प्रकार का विशाल पत्थर है जिसमें लोहे की शलाकाएँ जड़ी हुई हैं यह लम्बाई में 'चार ताल' है —शतघ्नी च चतुस्तालो लोहकण्टकसंचिता, या, अयः कण्टकसञ्छन्ना शतघ्नी महती शिला) रघु० १२।९५ 2. बिच्छू की मादा 3. गले का एक रोग **जिह्वः** शिव का विशेषण,—**तारका,—भिषज्,—भिषा** (स्त्री०) सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र,—**दला** सफ़ेद गुलाब,—**द्रुः** (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसका वर्तमान नाम सतलज है,—**धामन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण, **धार** (वि०) सौ धारों वाला, (—**रम्**) इन्द्र का वज्र,—**धृतिः** 1. इन्द्र का विशेषण, 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. स्वर्ग,—**पत्रः** 1. मोर 2. सारस 3. खट-बढ़ई पक्षी, 4. तोता या सोते की जाति, (**आ**) स्त्री (**म्**) कमल आवृत्तवृत्तशतपत्रनिभं (आननम्) बहृत्या—मा० १।२९, °**योनिः** ब्रह्मा का विशेषण,—**कम्पेन मूर्धन्** शतपत्रयोनि (संभावयामास) कु० ७।३६, —**पत्रक** खटबढ़ई,—**पद्, पाद्** (वि०) सौ पैरों वाला, **पद्दी** कानखजूरा, **पद्यम्** 1. वह कमल जिसमें सौ पंखड़ियां हों 2. श्वेत कमल, —**पर्वन्** (पुं०) बांस (स्त्री०) 1. आश्विन मास की पूर्णिमा 2. दूर्वा घास 3. कटुक का पौधा, °**ईशः** सूक, ग्रह, —**भीरुः** (स्त्री०) अरबदेश की चमेली, **मख,** —**मन्युः** 1. इन्द्र के विशेषण, कि० २।२३, भट्टि० १।५, कु० २।५४, रघु० ९।१३ 2. उल्लू, **मुख** (वि०) 1. जिसके सौ रास्ते हों 2. सौ द्वार या मुंह वाला—विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः —भर्तृ० २।१०, (यहाँ शब्द का (१) अर्थ भी है) (—**खम्**) सौ रास्ते या द्वार, (—**खी**) बुहारी, झाड़ू, —**मूला** दूर्वा घास, दूबड़ा, —**यज्ञम्** (पुं०) इन्द्र का विशेषण, —**यष्टिकः** सौ लड़ियों का हार, रूपा ब्रह्मा की एक पुत्री (जो ब्रह्मा की पत्नी भी मानी जाती है, अपने पिता के साथ इस व्यभिचार के परिणाम स्वरूप उससे स्वायम्भुव मनु का जन्म हुआ), —**वर्षम्** सौ बरस, शताब्दी, **वेधिन्** (पुं०) एक प्रकार का खटमिठा शाक, चौका, —**सहस्रम्** 1. सौ हजार 2. कई हजार अर्थात् एक बड़ी संख्या,—**साहस्र** (वि०) 1. सौ हजार से युक्त 2. सौ हजार में मोल लिया हुआ, ह्रदा 1. बिजली, कु०७।३९, मृच्छ० २।१८८ 2. इन्द्र का वज्र।

शतक (वि०) [शत—कन्] 1. सौ 2. सौ से युक्त, **कम्** 1. शताब्दी 2. सौ श्लोकों का संग्रह जैसा कि नीति,° वैराग्य° और शृङ्गार°, अर्थात् नीति आदि विषयक सौ श्लोकों का संग्रह।

शततम (वि०) (स्त्री०—मी) [शत+तमप्] सौवाँ।

शतधा (अव्य०) [शत+धाच्] 1. सौ तरह से 2. सौ भागों में या सौ टुकड़ों में 3. सौगुना।

शतशस् (अव्य०) [शत+शस्] 1. सौ सौ करके 2. सौ बार—शतशः शपे—प्रबो० ३, मनु० १२।५८ सौगुना, 3. सौ तरह से, विविध प्रकार से, नाना प्रकार से —भग० ११।५।

शतिक (वि०) (स्त्री० **की**), **शत्य** (वि०) [शत+ठन् यत् वा] 1. सौ से युक्त —याज्ञ० २।२०८ 2. सौ से सम्बन्ध रखने वाला 3. सौ से प्रभावित 4. सौ में मोल लिया हुआ 5. सौ से बदला किया हुआ 6. प्रतिशत शुल्क या ब्याज देने वाला 7. सौ का सूचक।

शतिन् (वि०) [शत+इनि] 1. सौगुणा 2. असंख्य—पुं० सौ का स्वामी निःस्वो वष्टि शतं शती दशशतं शास्ति० २।९, पंच० ५।८२।

शत्रिः [शद्+त्रिप्] हाथी।

शत्रुः [शद्+त्रुन्] 1. परास्त करने वाला, विनाशक, विजेता 2. दुश्मन, वैरी, प्रतिपक्षी—क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्—सुभा० 3. राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी, पड़ोस का प्रतिद्वन्द्वी राजा। **समः उपजापः** दुश्मन की गुपचुप कानाफूसी, **शत्रु** का विश्वासघाती प्रस्ताव, **कर्षणः, दमनः, निबर्हणः** (वि०) शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला, **-घ्नः** 'शत्रुओं को नष्ट करने वाला' सुमित्रा का पुत्र होने के कारण लक्ष्मण का सगलभ्राता, राम का भाई। इनसे 'लवण' नामक राक्षस का वध किया, मथुरा को बसाया। सुबाहु और बहुश्रुत नाम के इसके दो पुत्र थे दे० रघु० १५, **पक्षः** 1. शत्रु का पक्ष या दल 2. प्रतिपक्षी, विरोधी, **विनाशनः** शिव का विशेषण,—**हत्या** शत्रु की हत्या,—**हन्** (वि०) शत्रु का वध करने वाला।

शत्रुञ्जयः [शत्रु+जि+खच् मुम्] 1. हाथी 2 एक पहाड़ का नाम, गिरनार पर्वत।

शत्रुन्तपः (वि०) [शत्रु+तप्+खच् मुम्] अपने शत्रु को परास्त करने वाला या नष्ट करने वाला।

शत्वरी (स्त्री०) रात।

शद् । (श्यन् परः (परन्तु सार्वधातुक लकारों में आः) —शीयते. शन्न) 1. पतन होना, नष्ट होना, मुर्झाना, कुम्हलाना 2. जाना—प्रेरः (शादयति-ते) 1. पहुँचाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठेलना 2. शातयति-ते (क) गिराना, नीचे फेंक देना, काट डालना शि० १४।८०, १५।२४ (ख) वध करना, नष्ट करना।

ii (भ्वा० पर० शदति) जाना (प्रायः 'आ' पूर्वक)।

शदः [शद्+अच्] खाद्य, शाकभाजी (फल मूल आदि)।

शद्रिः [शद्+त्रिन्] 1. हाथी 2. शार्दूल 3. अर्जुन, —द्रिः (स्त्री०) बिजली।

शद्वुः (वि०) [शद्+रु] 1. जाने वाला, गतिशील 2. पतनशील, नश्वर, क्षय होने वाला।

शनकैः (अव्य०) [शनैः+अकच्] शनैः शनैः दे० शनैः।

शनिः [शो+अनि किच्च] 1. शनिग्रह (सूर्य का पुत्र, जो काले रंग का या काले वस्त्रों से सज्जित बतलाया गया है) 2. शनिवार 3. शिव। सम० —जप् काली मिर्च,—प्रदोषः शिव की (सांध्यकालीन) पूजा जो शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को शनिवार आ पड़ने पर की जाती है,—प्रियम् नीलममणि, —वारः,—वासरः शनिवार का दिन।

शनैस् (अव्य०) [शण्+डैस्, पृषो० नुक्] 1. आहिस्ता से, धीमे, चुपचाप 2. यथाक्रम क्रमशः, थोड़ा थोड़ा करके धर्म-सञ्चिनुयाच्छनैः-कु० ३।५९, मनु० ३।२१७ 3. उत्तरोत्तर, उपयुक्त क्रम में मनु० १।१५, 4. मृदुता से, नरमी से 5. सुस्ती के साथ, आलस्यपूर्वक शनैः शनैः आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता। सम० चर (वि०) शनैः शनैः घूमने वाला या चलने वाला—शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा—भट्टि० १।१७, (यहाँ इसका अर्थ 'शनि' भी है) (—रः) शनिग्रह।

शन्तनुः [शं मंगलात्मकं तनुर्यस्य ब० स०] एक चन्द्रवंशी राजा जिसने गंगा व सत्यवती से विवाह किया। गंगा का पुत्र भीष्म था, तथा सत्यवती के चित्रांगद और चित्रविचीर्य नामक दो पुत्र हुए। भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहा, तथा इसके छोटे भाई निस्सन्तान स्वर्ग सिधारे, तु० 'भीष्म'।

शप् (भ्वा० दिवा० उभ० शपति ते, शप्यति ते, शप्त) 1. अभिशाप देना, कोसना अथवद्भूत मानुषीति ताम्—रघु० ८।८०, सोऽभूत् परामृश्य भूमिपति शशाप (वृद्धः) ९।७८, १।७७ 2. शपथ लेना, कसम उठाना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना, सौगंध खाना (प्रायः प्रतिज्ञात में संप्र० तथा प्रतिज्ञाता के लिए करण० प्रयुक्त होता है)—भरतेनात्मना चाहं शपे ते मनुजाधिप। यथा नान्येन तुष्येयमृते रामविवासनात् रामा०, कर्मरहित प्रयोग होने पर शपथवस्तु में करण० तथा जिसके द्वारा शपथ की जाय उसमें संप्र० प्रयुक्त होता है सत्यं शपामि ते पादपङ्कजस्पर्शेन—का०, घट० २२, अशप्त निह्नवानोसौ सीतायै स्मरमोहितः भट्टि० ८।७४, ३३, कभी कभी 'शप्' का सजातीय कर्म के अनुसार प्रयोग होता है सहस्रशोऽसौ शपथानशप्यत्—भट्टि० ३।३२ 3. कलंकित करना, धमकाना, बुरा-भला कहना, गाली देना (संप्र० के साथ या स्वतंत्ररूप से)—द्विषद्भ्यश्चाशपत्सदा भट्टि० १७।४, प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे शि० ४।२५,—प्रेर० (शापयति ते) शपथद्वारा बाँध लेना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना—शापितोऽसि गोब्राह्मणकाम्यया मृच्छ० ३, मा० ८।

शपः [शप्+अच्] 1. अभिशाप, सरापना, कोसना 2. शपथ, सौगन्ध।

शपथः [शप्+अथन्] 1. कोसना 2. अभिशाप, आक्रोश, फटकारा 3. सौगन्ध, कसम खाना, शपथ लेना या दिलवाना, शपथोक्ति—आमोदो न हि कस्तूर्याः शपथेनानुभाव्यते—भामि० १।१२०, मनु० ८।१०९ 4. शपथपूर्वक अनुरोध, सौगन्ध से बांधना—मा० ३।२।

शपथम् [शप्+क्थुट्] दे० 'शपथ'।

शप्त (भू० क० कृ०) [शप्+क्त] 1. अभिशप्त 2. जिसने सौगन्ध खाली है 3. बुरा भला कहा गया, दुर्वचन कहा गया (दे० शप्)।

शफः, —फम् [शप्+अच्, पृषो० पस्य फः] 1. सुम 2. वृक्ष की जड़।

शफरः (स्त्री० री) [शफ राति—रा+क] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली—मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि—मेघ० ४०, शि० ८।२४। कु० ४।३९। सम०—अक्षिन् 'इलीश' नामक मछली।

शब (ब) रः [शव्+अरन्] 1. पहाड़ी, असभ्य, भील, जंगली —राजन् गुञ्जाफलानां स्रज इति शबरा नैव हारं हरन्ति —काव्य० १० 2. शिव 3. हाथ 4. जल 5. एक शास्त्र विशेष या धार्मिक पुस्तक 6. मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार, —री 1. भीलनी 2. राम की अनन्य भक्त एक भीलनी। सम० आलयः जंगली, पहाड़ियों और भीलों का निवासस्थान, —लोध्र जंगली लोध्र का वृक्ष।

शब (व) ल (वि०) [शप्+अल, वच्च] 1. धब्बेदार, रंग-बिरंगा, चितकबरा रघु० ५।४४, १३।५६, महावीर० ७।२६ 2. नानारूप, अनेक भागों में विभक्त, —लः नानाप्रकार का रंग,—ला,—ली 1. धब्बेदार या चितकबरी गाय 2. कामधेनु, —लम् पानी।

शब्द (चुरा० उभ० शब्दयति-ते, शब्दित) 1. ध्वनि करना, शोर मचाना 2. बोलना, बुलाना, आवाज़ देना -विततमृदुकराग्रः शब्दयन्त्या वयोभिः परिपतति दिवोऽङ्के हैलया बालसूर्यः—शि० ११।४७ 3. नाम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acyarya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेना, पुकारना 'इत एव सामरिकेति शब्दयते रत्न० ४, अभि–, नाम रखना, प्र , व्याख्या करना, सम् , बुलाना।

शब्दः [शब्द् +घञ्] 1. ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय, आकाशगुण, रघु० १२।१ 2. आवाज, कलरव (पक्षियों का या मनुष्यादिकों का), कोलाहल, विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः श० १।१४, भग० १।१३, श० ३।१, मनु० ४।११३, कु० १।४५, 3. बाजे की आवाज वाद्यशब्दः पंच० २।२४, कु० १।४५ 4. वचन, ध्वनि, सार्थक ध्वनि, शब्द (परिभाषा के लिए दे० महाभाष्य की प्रस्तावना) –एकः शब्दः सम्यग्घीतः सम्यक् प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग्भवति, इसी प्रकार 'शब्दार्थौ' 5. विकारीशब्द, संज्ञा, प्रातिपदिक 6. उपाधि, विशेषण यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति वालव्यजनैश्चमर्यः–कु० १।१३, श० २।१४, नूपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।३५, २।५३, ६४, ३।४९, ५।२२, १८।४१, विक्रम० १।१ 7. नाम, केवल नाम जैसा कि 'शब्दपति' में 8. शाब्दिक प्रामाणिकता (नैयायिकों के द्वारा 'शब्द प्रमाण' माना जाता है)। सम० अतीत (वि०) शब्दों की शक्ति से परे, अनिर्वचनीय, अधिष्ठानम् कान, अध्याहारः (शब्दव्युत्पत्ति को पूरा करने के लिए) शब्दपूर्ति,–अनुशासनम् शब्दों का शास्त्र अर्थात् व्याकरण, अर्थः शब्द के अर्थ (पो–द्वि० व०) शब्द और उसका अर्थ अदोषौ शब्दार्थौ– काव्य० १, अलङ्कारः वह अलङ्कार जो अपने शब्द सौन्दर्य पर निर्भर करता है, तथा जब उसी अर्थ को प्रकट करने वाला दूसरा शब्द रख दिया जाता है तो उसका सौन्दर्य लुप्त हो जाता है (विप० अर्थालङ्कार) उदा० दे० काव्य० ९, आख्येय (वि०) शब्दों में भेजा जाने वाला समाचार –मेघ० १०३ (यम्) मौखिक या शाब्दिक सन्देश, आडम्बरः वाग्जाल, वाक्प्रपंच, शब्दाधिक्य, अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द, आदि (वि०) 'शब्द' से आरम्भ होने वाले (ज्ञान के विषय) –रघु० १०।२५, कोशः अभिधान, शब्दसंग्रह, गत (वि०) शब्द के अन्दर रहने वाला, ग्रहः 1. शब्द पकड़ना 2. कान, चातुर्यम् शैली की निपुणता, वाक्पटुता, चित्रम् कविता की अन्तिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक (अवर या अधम) (इस प्रकार के काव्य में सौन्दर्य उन शब्दों के प्रयोग में है जो कर्णमधुर होते हैं, 'चित्र' के अन्तर्गत दिया हुआ उदाहरण देखो), चोरः 'शब्दचोर' साहित्यचोर, तन्मात्रम् ध्वनि का सूक्ष्म तत्त्व, –पतिः नाममात्र का स्वामी, नाम का प्रभु–तनु शब्दपतिः क्षितेरहं त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः –रघु० ८।५२, पातिन् (वि०) शब्द सुन कर ही अदृश्य निशाना लगाने वाला, शब्दवेधी, निशाना लगाने वाला –रघु० ९।७२, प्रमाणम् शाब्दिक या मौखिक प्रमाण, बोधः मौखिक साक्ष्य से प्राप्त ज्ञान ब्रह्मन् (नपुं०) 1. वेद 2. शब्दों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मा या परमात्मसम्बन्धी ज्ञान – उत्तर० २।७ २० 3. शब्द का गुण, 'स्फोट', भेदिन् (वि०) शब्दवेधी निशाना लगाने वाला (पुं०) 1. अर्जुन का विशेषण 2. गृद्ध 3. एक प्रकार का बाण, योनिः (स्त्री०) धातु, मूल शब्द,—विद्या, शासनम्, शास्त्रम् शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण –अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्–पंच० १, शि० २।११२, १४।२४, विरोधः (शास्त्र में) शब्दों का विरोध, –विशेषः ध्वनि का एक भेद,– वृत्तिः (स्त्री०) साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग, वेधिन् (वि०) ध्वनि सुनकर ही शब्दवेधी निशाना लगाने वाला दे० 'शब्दपातिन्' (पुं०) 1. अर्जुन का विशेषण 2. एक प्रकार का बाण, शक्तिः (स्त्री०) शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की सार्थकता—दे० शक्ति, शुद्धिः (स्त्री०) 1. शब्दों की पवित्रता 2. शब्दों का शुद्ध प्रयोग,–श्लेषः शब्दों में अनेकार्थता, द्व्यर्थकता (यह अलङ्कार 'अर्थश्लेष' से इसलिए भिन्न है कि इसके संघटक शब्दों को हटाकर समानार्थक शब्दों को रख देने मात्र से श्लिष्टता नष्ट हो जाती है, जबकि 'अर्थश्लेष' अपरिवर्तित ही रहता है शब्द-परिवृत्ति सहत्वमर्थश्लेषः),–संग्रहः शब्दकोश, शब्दावली, सौष्ठवम् शब्दों का लालित्य, ललित और प्राञ्जल शैली सौकर्यम् अभिव्यक्ति की सरलता।

शब्दन (वि०) [शब्द + ल्युट्] 1. शब्द करने वाला, ध्वननशील नम् ध्वनन, कोलाहल करना, शब्द करना 2. आवाज, कोलाहल 3. पुकारना, बुलाना 4. नाम लेना।

शब्दायते (नामधातु आ०) 1 कोलाहल करना, शोर करना –शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः – मेघ० ५६ 2. क्रन्दन करना, दहाड़ना, चिल्लाना, चीं चीं करना भट्टि० ५।५२, १७।९,१ 3. बुलाना, पुकारना– एते हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दायन्ते श० ४, मुद्रा० १, मृच्छ० १, वेणी० ३।

शब्दित (भू० क० कृ०) [शब्द-णिच्+क्त] 1. ध्वनित, आवाज निकाली गई, (वाद्ययंत्रादिक) बजाया गया 2. कहा गया, उच्चारण किया गया 3. बुलाया गया, पुकारा गया नाम रक्खा गया, अभिहित।

शम् (अ०) [शम्–क्विप्] कल्याण, आनन्द, समृद्धि, स्वास्थ्य को द्योतन करने वाला अव्यय, आशीर्वाद या मंगल कामना प्रकट करने के लिए प्रयुक्त (संप्र० या संबं० के साथ) शं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(आधुनिक पत्रों में शुभ समाप्तिसूचक प्रयोग--इति शम्)। सम०—कर दे० धातु के नीचे, दाति (वि०) आनन्द प्रदान करने वाला, मंगलमय, शुभ -पाकः 1. लाख, महावर, लाल रंग 2. पकाना, परिपक्व करना, -भू दे० धातु के नीचे।

शम् १ (दिवा० पर० शाम्यन्ति, शान्त) 1. शान्त होना, चुप होना, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः कुव० २।४०, रघु० ७।३, शान्तो लवः—उत्तर० ६।७ 2. थमना, ठहरना, समाप्त होना 'चिन्ता शशाम सकलाऽपि सरोरुहाणाम् —भामि० ३।७, न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति मनु० २।९४, 'संतुष्ट नहीं होता' 3. शांत होना, बुझना—शशाम वृष्ट्यापि विना दवाग्निः रघु०—२।१४, उत्तर० ५।७ 4. काम तमाम करना, नष्ट करना, मार डालना (इसी अर्थ में कृपा० भी) —प्रेर० (शमयति—ते, परन्तु देखना अर्थ में 'शाम्यति' से दे० शम् १) 1. प्रसन्न करना, उपशमन करना, शान्त करना, धीरज देना, सांत्वना देना, ढाढस बंधाना कः शीतलैः शमयिता वचनैस्तवाग्निम् —भामि० ३।१, श० ५।७ 2. अस्त करना, रोकना —कुव० २।५६ 3. हटाना, परे करना—प्रतिकूलं दैवं शमयितुम् श० २ 4. दमन करना, पालतू बनाना, हराना, छीनना, परास्त करना शमयति गजानन्यान् गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्—विक्रम० ५।१८, रघु० ३।१२, ११।९३ 5. मार डालना, नष्ट करना, वध करना—वेणी० ५।५ 6. शान्त करना, बुझाना भेष० ५३, हि० १।८८ 7. त्याग देना, रुकना, थमना, उप ०, 1. शान्त करना भट्टि० २०।५ 2. थमना, ठहरना, बुझना 3. हट जाना, बीतना, नष्ट होना 4. परे रहना, बुझ जाना,—प्रशान्त पापकारणम् उत्तर० ६ 5. मुझाना, कुम्हलाना (प्रेर०) 1. सान्त्वना देना, प्रसन्न करना, शान्त करना,—मनु० ८।३९६ 2. दूर करना, बुझाना, शीतल करना, दबा देना —स्वासायाप्रशमितदवोत्पल्लवम्—मेघ० १७ 3. हटाना, अन्त करना—तम् (अपचारं) अन्विष्यं प्रशमयेत्—रघु० १५।४७ 4. जीतना, परास्त करना, पशीभूत करना—मृच्छ० १०।६० 5. प्रतिष्ठित होना, समंजस करना, स्वस्थचित्त होना प्रशमयसि विवादं कथमिव रक्षणाय—श० ५।८, सम्, 1. शान्त करना 2. निराकृत होना, बुझना, लुप्त होना—सत्त्वं संशाम्यतीव मे—भट्टि० १८।२८ 3. हट जाना।

शम् २ (चुरा० उभ० शामयति—ते) 1. देखना, निगाह डालना, निरीक्षण करना 2. बतलाना, प्रदर्शन करना, नि , 1. देखना, अवलोकन करना 2. सुनना, कान देना विशामय प्रियसखि—मा० ७।

शमः [शम्+घञ्] 1. मूकता, शान्ति, धैर्य 2. विश्राम, ठहराव, आराम, निवृत्ति 3. वासनाओं पर प्रतिबन्ध या अभाव, मानसिक शान्ति, विरक्ति—शमरतैरमरतेजसि पार्थिवे रघु० ९।४, कि० १०।१०, १६।४८, शि० २।९४ श० २।७, भग० १०।४ 4. निराकरण, लघूकरण, उन्नयन, सन्तोषीकरण, (शोक, प्यास, भूख आदि का) प्रशमन शमयत्युपयातु ममापि चित्त-दाहः उत्तर० ६।८, शमयेय्यति मम शोकः कथं नु वत्से श० ४।२० 5. शान्ति, जैसा कि 'शमोपन्यास' वेणी० ५ 6. (संसार की समस्त भ्रान्तियों व आसक्तियों से) मोक्ष 7. हाथ। सम० -अन्तकः कामदेव (मानसिक शान्ति को नष्ट करने वाला), —वर (वि०) शान्त, मूक, विषयविरागी।

शमथः [शम्+अथच्] 1. शान्ति, स्थिरता, विशेषतः मानसिक शान्ति, आवेशाभाव 2. परामर्शदाता, मन्त्री।

शमन (वि०) (स्त्री०- नी) [शम्+णिच्+ल्युट्] शमन करने वाला, दमन करने वाला, वशीभूत करने वाला आदि, -नम् 1. प्रसन्न करना, निराकरण करना, ढाढस बंधाना जीतना, उन्नयन करना 2. सूर्यास्त, शान्ति 3. अस्त, ठहराव, समाप्ति, विनाश 4. चोट पहुँचाना, घायल करना 5. यज्ञ के लिए पशुवध करना, पशुमेध 6. निगल जाना, चबाना,-नः 1. एक प्रकार का हरिण, कारहसिंगा 2. मृत्यु का देवता, यम। सम० स्वसृ (स्त्री०) 'यमस्वसा' यमुना नदी का विशेषण।

शमनी [शमन+ङीप्] रात। सम० सदः (षदः) राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत।

शमलम् [शम्—कलच्] 1. मल, लीद, विष्ठा 2. अपवित्रता, गोद, तलछट 3. पाप, नैतिक मलिनता।

शमित (भू० क० कृ०) [शम्—णिच्+क्त] 1. प्रसन्न किया गया, निराकृत, ढाढस बंधाया गया, शान्त 2. धीमा किया गया, चिकित्सा की गई, भारविमुक्त किया गया 3. विश्राम दिया गया 4. शान्त, सौम्य परिगति किया गया, मृदु किया गया।

शमिन् (वि०) [शम+इनि] 1. सौम्य, शान्त, प्रशान्त 2. जिसने अपने आवेशों का दमन कर लिया है, आत्मनियंत्रित भट्टि० ७।५।

शमी (शमि) [शम्+इन्, ङीप् वा] 1. एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसमें आग रहती है) अग्निगर्भा शमी-सिव श० ४।२, मनु० ८।२४७, याज्ञ० १।३०२, 2. फली, छीमी, सेम। सम० गर्भः 1. अग्नि का विशेषण 2. ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण, धान्यम् फलियों में उत्पन्न या दाल आदि, द्विदलीय अन्न।

शम्पा [शम्+पा+क] बिजली।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शम्ब् i (भ्वा० पर० शम्बति) जाना, हिलना-डुलना। ii (चुरा० पर० शम्बयति) संचय करना, ढेर लगाना।

शम्ब (ब) [शम्ब्+अच्] 1. प्रसन्न, भाग्यशाली 2. बेचारा, अभागा,—ब: 1. इन्द्र का वज्र 2. मूसली का लोहे का बना सिर 3. लोहे की जञ्जीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय 4. नियमित रूप से हल चलाना 5. जुते हुए खेत में हल चलाना (शंबाड़ दोबारा हल चलाना)।

शम्बर: [शम्ब्+अरच्] 1. एक राक्षस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था 2. पहाड़ 3. एक प्रकार का हरिण 4. एक प्रकार की मछली 5. युद्ध,—रम् 1. जल 2. बादल 3. दौलत 4. संस्कार या कोई धार्मिक अनुष्ठान। सम०—अरि:, सूदन: प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण, असुर: शंबर नामक राक्षस।

शम्बरी [शम्बर+ङीप्] 1. माया, जादू 2. स्त्री जादूगरनी।

शम्बल:,—लम् [शम्ब्+कलच्] 1. तट, किनारा 2. पाथेय, मार्गव्यय, राहखर्च 3. स्पर्धा, ईर्ष्या।

शम्बली [शम्बल+ङीष्] कुटनी।

शम्बु:, शम्बुक:, शम्बूक: [शम्ब्+उण्, शम्बु+कन्] त्रिकोणीय घोंघा।

शम्भूक: [शम्+ऊक:] 1. त्रिकोणीय घोंघा 2. शंख 3. घोंघा 4. हाथी की सूंड़ की नोक 5. एक शूद्र (इसे राम ने उसकी जाति के लिए वर्जित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था, दे० उत्तर० २, तथा रघु० १५)।

शम्भ: [शम्+भ] 1. प्रसन्न मनुष्य 2. इन्द्र का वज्र।

शम्भली [शम्भल+ङीष्] दूती, कुटनी।

शम्भु (वि०) [शम्+भू+डु] आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला—भु: 1. शिव 2. ब्रह्मा 3. ऋषि, श्रद्धेय पुरुष 4. एक प्रकार का सिद्ध। सम०—तनय: कार्तिकेय या गणेश के विशेषण, प्रिया 1. दुर्गा 2. आमल की,—वल्लभम् श्वेत कमल।

शम्या [शम्+यत्+टाप्] 1. लकड़ी की छड़ी या धूणी 2. डंडा 3. जूए की कील, सिलम 4. एक प्रकार की झांझ 5. यज्ञीय पात्र।

शय (वि०) (स्त्री०—या, यी) [शी+अच्] लेटने वाला, सोने वाला, (प्राय: समास के अन्त में) —रात्रिजागरपरो दिवाशय:—रघु० १९।३४, इसी प्रकार उत्तानशय, पार्श्वशय, वृक्षशय, विलेशय आदि,—य: 1. नींद 2. बिस्तरा, शय्या 3. हाथ 4. साँप विशेषत: अजगर 5. दुर्वचन, कोसना, अभिशाप।

शयण्ड (वि०) [शी+अण्डन्] निद्रालु, सोने वाला।

शयंथ (वि०) [शी+अथच्] निद्रालु, सोया हुआ,—थ: 1. मृत्यु 2. एक प्रकार का साँप, अजगर 3. मछली।

शयनम् [शी+ल्युट्] 1. सोना, निद्रा, लेटना 2. बिस्तरा, शय्या—शयनस्थो न भुञ्जीत—मनु० ४।७४, रघु० रघु० १।९५ विक्रम० ३।१० 3. मैथुन, संभोग। सम०—अ (आ) गार:,—रम्,—गृहम् शयनकक्ष, सोने का कमरा,—एकादशी आषाढ़ शुक्ला एकादशी (इस दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए लेट जाते हैं),—सखी एक शय्या पर साथ सोने वाली सहेली स्थानम् सोने का कमरा, शयनकक्ष।

शयनीयम् [शी+अनीयर्] बिस्तरा, शय्या,—परिहृत्य शयनीयमस्य मे रघु० ८।६६ कान्तासङ्गस्य शयनीय शिलातलं ते—उत्तर० ३।२१ (इसी अर्थ में शयनीयकम्)।

शयनक: [शी+शानच्+कन्] 1. गिरगिट 2. एक साँप, अजगर।

शयालु (वि०) [शी+आलुच्] निद्रालु, तन्द्रालु, आलसी शि० २।८०,—लु: 1. एक प्रकार का साँप, अजगर 2. कुत्ता 3. गीदड़।

शयित (भू० क० कृ०) [शी कर्तरि क्त] 1. सोने वाला, विश्रान्त, सुप्त 2. लेटा हुआ।

शयु: [शी+उ] बड़ा साँप, अजगर।

शय्या [शी आधारे क्यप्+टाप्] 1. बिस्तरा, बिछौना —शय्या भूमितलम्—शान्ति० ४।९, मही रम्या शय्या भर्तु० ३।७९, रघु० ५।६६ 2. बाँधना, नत्थी करना। सम०—अध्यक्ष:,—पाल: राजा के शयनकक्ष का अधीक्षक,—उत्सङ्ग: पलंग का एक पार्श्व, —गत (वि०) 1. पलंग पर लेटा हुआ 2. रोगी, —गृहम् शयन-कक्ष,—रघु० १६।४।

शर: [शृ+अच्] 1. बाण, तीर—शरं च निशितनिपाता वज्रसारा: शरास्ते शा० १।१० 2. एक प्रकार का सफेद सरकंडा या घास—शरकाण्डपाण्डुगण्डस्थला —मालवि० ३।८, मुखेन सीता शरपाण्डुरेण—रघु० १४।२६, शि० ११।३० 3. कुछ जमे हुए दूध की मलाई, मलाई 4. चोट, क्षति, घाव 5. पाँच की संख्या,—रम् पानी। सम० अग्रम: बढ़िया तीर, अभ्यास: तीरंदाजी,—असनम्,—आस्यम् धनुष, कमान—रघु० ३।५२, कु० ३।६४, आक्षेप: तीरों की वर्षा,—आरोप, आधाप: धनुष,—आश्रय: तरकस, —आहत (वि०) जिसके तीर लगा हो,—ईषिका बाण, इष्ट: आम का वृक्ष, ओघ: बाणों का समूह, बाणवर्षा—काण्ड: 1. नरकुल की डंडी 2. बाण की लकड़ी, घात: बाण से लक्ष्यवेध करना, तीरंदाजी, जम् ताजा मक्खन,—जन्मन् (पुं०) कार्तिकेय का विशेषण—रघु० ३।२८,—जालम् बाणों का समूह या ढेर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--धिः तरकस, पातः बाण का छोड़ना, °स्थानम् बाण का निशाना,—पुङ्खः, पुङ्खा बाण का पंखदार किनारा, -फलम् बाण का फल -भृङ्गः एक ऋषि जिसके दर्शन राम ने दण्डकारण्य में किये थे रघु० १३।४५,—भृः कार्तिकेय,—मल्लः धनुर्धर, तीरंदाज, --वनम् (वणम्) नरकुलों का झुरमुट मेघ० ४५, °उद्भवः, °भवः कार्तिकेय के विशेषण,—वर्षः बाणों की वर्षा या बौछार, वाणिः 1. बाण का सिरा 2. धनुर्धर 3. बाणनिर्माता 4. पंक्तिः,—वृष्टिः (स्त्री०) बाणों की बौछार--व्रातः बाणों का समूह,—संधानम् बाण का निशाना लगाना --शरसंधानं नाटयति—श० १, -संधाय (वि०) बाणों से ढका हुआ, स्तम्बः नरकुलों का गुच्छा।

शरटः [शृ+अटन्] 1. गिरगिट 2. कुसुम्भ।

शरणम् [शृ+ल्युट्] 1. प्ररक्षा, सहायता, साहाय्य, प्रतिरक्षा रघु० १४।६४, विक्रम० १।३, उत्तर० ४।२३ 2. आसरा आश्रयस्थान—कु० ३।८, पंच० २।२३ 3. ओट, सहारा, विश्रामस्थल (व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त)—मुरासुरस्य जगतः शरणम्—कि० १८।२२, सतप्तानां त्वमसि शरणम् मेघ० ७, शरणं गम् ई -या शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना यामि हे कमिह शरणम् गीत० ७ 4. देवालय, शोचागार, कक्ष—अग्निशरणमार्गमादेशय श० ५ 5. आवास, घर, निवासस्थल- मुद्रा० ३।१५, भट्टि० ६।९ 6. भट, बिल, माँद 7. क्षति, हत्या। सम० -आदिन् (वि०) क्षतिन् (वि०) शरण या रक्षा ढूँढने वाला,—भृत्यु० २।७६,—आगत, आपन्न (वि०) प्ररक्षा या शरण में गया हुआ, आश्रय लेने वाला, आश्रयार्थी, उन्मुख (वि०) शरण या प्ररक्षा खोजने वाला—रघु० ६।२१।

शरण्डः [शृ+अंडच्] 1. पक्षी 2. गिरगिट 3. ठग, धूर्त 4. लम्पट, स्वेच्छाचारी 5. एक प्रकार का आभूषण।

शरण्य (वि०) [शरणे साधुः यत्] 1. रक्षा करने के योग्य, शरण देने वाला, प्ररक्षक, आश्रय असौ शरण्यः शरणोन्मुखानाम् रघु० ६।२१, शरण्यो लोकानाम् महावी० ४।१, रघु० २।३०, १४।६४, १५।२, कु० ५।७६ 2. जिसे रक्षा की आवश्यकता है, दीन, दयनीय, -ण्यः शिव का विशेषण, -ण्यम् 1. आश्रयस्थल, शरणगृह 2. प्ररक्षक, जो शरणागत की रक्षा करता है 3. प्ररक्षा, प्रतिरक्षा 4. क्षति, चोट।

शरण्युः [शृ+अन्यु] 1. प्ररक्षक 2. बादल 3. हवा।

शरद् (स्त्री०) [शृ+अदि] 1. पतझड़, शरदृतु (आश्विन तथा कार्तिक मास में होने वाली ऋतु),--यात्रायै चोदयामास तं शक्रः प्रथमं शरद् रघु० ४।२४ 2. वर्ष,—त्व जीव शरदः शतम्—रघु० १०।१, उत्तर० १।१५, मालवि० १।१५। सम०—अन्तः शरद् का अन्त, सर्दी का मौसम, अम्बुधरः शरदृतु का बादल, --उदाशयः शरत्कालीन सरोवर, कामिन् (पुं०) कुत्ता, कालः शरत् काल, पतझड़ का मौसम, घनः, -मेघः शरदृतु का बादल, चन्द्रः (शरच्चन्द्रः) शरत्कालीन चन्द्रमा, त्रियामा शरत्कालीन रात्रि, —पद्मः,—म् उत्तेल कमल, पर्वन् (नपुं०) वह जागर नाम का उत्सव, मुखम् शरदृतु का आरम्भ।

शरदा [शरद्+टाप्] 1. पतझड़ 2. वर्ष।

शरदिज (वि०) [शरदि जायते--जन्+ड, सप्तम्या अलुक्] पतझड़ या शरदृतु से सम्बन्ध रखने वाला।

शरभः [शृ+अभच्] 1. हाथी का बच्चा 2. आख्यायिकाओं में वर्णित आठ पैर का जन्तु जो सिंह से बलवान् होता है शरभकुलमजिह्मं प्रौढरत्यम्बुकूपात् —ऋतु० १।२३, अष्टपादः शरभः सिंहघाती महा० 3. ऊँट 4. टिड्डा 5. टिड्डी।

शरयुः (यूः) (स्त्री०) [शृ+अयुः, पक्षे ऊङ्] एक नदी, सरयू, दे० सरयू (यू)।

शरल (वि०) [शृ--अलच्] दे० 'सरल'।

शरलकम् [शरल+कन्] पानी।

शरव्यम् [शरवे शरशिक्षायै हितं—शरु+यत्] (तीर मारने का) निशाना, लक्ष्य (आलं० से भी)—तौ शरव्यमकरोत्स नैतरान् रघु० ११।२७, कृताः शरव्यं हरिणा नवासुराः--श० ६।२९, रघु० ७।४५, शि० ७।२४, व्यसनशतशरव्यतां गताः का०।

शरारिः, रिः [शर | अद् (अत्)+इन्] एक प्रकार का पक्षी।

शरारु (वि०) [शृ--आरुन्] अहितकर, अनिष्टकर, क्षतिकारक।

शरावः,--वम् [शरं दध्यादिसारमभवति अव--अण्] 1. कम गहरा बर्तन, थाली, मिट्टी का तौला, कसोरा, तस्तरी --मोदकशरावं गृहीत्वा—विक्रम० ३, मनु० ६।५५ 2. इकरा, दक्कन 3. दो कुडव के बराबर नाप।

शरावती [शर | मतुप् | ङीप्, दीर्घ वकारश्च] वह नगर जिसका शासक राम ने लव को बनाया था रघु० १५।९७।

शरिमन् (पुं०) [शृणाति यौवनम् शृ+इमन्] पैदा करना, जन्म देना।

शरीरम् [शृ+ईरन्] (जड चेतन पदार्थों की) काया, देह, --शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् --कु० ५।३३ 2. संघटक तत्त्व—काव्या० १।१० 3. दैहिक शक्ति 4. मृत शरीर, शव। सम०--अन्तरम् 1. शरीर का आन्तरिक भाग 2. दूसरा शरीर,—आवरणम् 1. खाल, चमड़ी,—कर्तृ (पुं०) पिता,—कर्षणम् शरीर की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुशता,- ज्वः 1. रोग 2. काम, प्रणयोन्माद 3. कामदेव 4. पुत्र, सन्तान—कि० ४।३१,—तुल्य (वि०) समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर,—दण्डः 1. शारीरिक दंड 2. कार्य-साधना (जैसा की तपस्या में),- धृक् (वि०) शरीरधारी, पतनम् पातः मृत्यु, मौत, -पक्षः (शरीर की) कुशता,--बद्ध (वि०) शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी- कु० ५।३०, -बन्धः 1. शारीरिक ढांचा रघु० १६।२३ 2. शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का जन्म—रघु० १३।५८,—बन्धकः सशरीर प्रतिभू,—भाज् (वि०) शरीरधारी, शरीरी (पुं०) अन्तु, शरीरधारी प्राणी,—भेदः (आत्मा से) शरीर का वियोग, मृत्यु, --यष्टिः (स्त्री०) पतला शरीर, सुकुमार, दुबला-पतला,---यात्रा आजीविका, विभोक्षणम् आत्मा का शरीर से छुटकारा, मुक्ति, वृत्तिः (स्त्री०) शरीर का पालनपोषण—रघु० २।४५,- वैकल्यम् शारीरिक रोग, बीमारी, व्याधि,--शुश्रूषा व्यक्तिगत सेवा, --संस्कारः 1. व्यक्ति की शवयात्रा 2. नाना प्रकार के शुद्धिसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल करना,—संपत्तिः (स्त्री०) शरीर की समृद्धि, (अच्छा) स्वास्थ्य,—सादः शरीर की दुर्बलता, कृशता—रघु० ३।२, - स्थितिः (स्त्री०) 1. शरीर का पालन-पोषण —रघु० ५।९ 2. भोजन करना, खाना (क०० में बहुधा प्रयुक्त)।

शरीरकम् [शरीर+कन्] 1. देह 2. छोटा शरीर,—कः आत्मा।

शरीरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शरीर+इनि] शरीरधारी, शरीरयुक्त, शरीरी—करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यवेध इमामेति जानकी—उत्तर० ३।४, मालवि० १।१० 2. जीवित (पुं०) 1. कोई भी शरीरधारी वस्तु (चाहे जड़ हो चाहे चेतन) शरीरिणी स्थावरजंगमानां सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव—कु० १।२३, रघु० ८।४३ 2. सजीव प्राणी 3. मनुष्य आत्मा (शरीर से युक्त)—रघु० ८।८९, भग० २।१८।

शर्करजा [शृ+करन्+जन्+ड+टाप्] कंदयुक्त चीनी, मिश्री।

शर्करा [शृ+करन्+टाप्] 1. कंदयुक्त चीनी 2. ककड़ी, रोड़ी, बजरी मुच्छ० ५ 3. कंकरीला रूप 4. बालू से युक्त भूमि, रेत 5. टुकड़ा, खण्ड 6. ठीकरा, 7. कोई भी कड़ा कण जैसा कि 'जलशर्करा', पानी का कण अर्थात् ओला 8. पथरी का रोग। सम० --उदकम् खांडमिश्रित जल, चीनी डाल कर मीठा किया हुआ पानी, - सप्तमी वैशाख शुक्ला सप्तमी के दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान।

शर्करिक (वि०) (स्त्री०—की) शर्करिल (वि०) [शर्करा+ठक्, इलच् वा] कंकरीला, बजरीदार, किरकिरा।

शर्करी (स्त्री०) 1. नदी 2. करधनी, मेखला।

शर्धः [शृध्+घञ्] 1. अपानवायु का त्याग, अफारा (इस अर्थ में नपुं० भी होता है) 2. दल, समूह 3. सामर्थ्य, शक्ति।

शर्धज (वि०) [शर्ध+हा+खश्, मुम्] अफारा उत्पन्न करने वाला,--हः उड़द या गाय की दाल।

शर्धनम् [शृध्+ल्युट्] अपानवायु को छोड़ने की क्रिया।

शर्ध् (भ्वा० पर० शर्धति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

शर्मन् (पुं०) [शृ+मनिन्] ब्राह्मण के नाम के आगे जोड़ी जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशर्मन्, गुप्त वर्मन्, दास, गुप्त (नपुं०) 1. प्रसन्नता, आनन्द, खुशी --त्यजन्ति सुखशर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न स्वकमव्यचित्तं व्रतम्-- नै० १।५०, रघु० १।६२, भर्तृ० ३।९७ 2. आशीर्वाद 3. घर, आधार (इस अर्थ में बहुधा वैदिक)। सम० द (वि०) आनन्ददायक (—दः) विष्णु का विशेषण।

शर्मरः [शर्मन्+रा+क] एक प्रकार का परिधान, वस्त्र।

शर्वा [शृ+वन्+टाप्] 1. रात्रि 2. अंगुली।

शर्व् (भ्वा० पर० शर्वति) 1. जाना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना।

शर्वः [शृ+व] 1. शिव -रघु० ११।९२, कु० ६।१४ 2. विष्णु।

शर्वरः [शृ+वरच्] कामदेव, रम् अन्धकार।

शर्वरी [शृ+वनिप्, ङीप्, वनोर च] 1. रात शशिनं पुनरेति शर्वरी रघु० ८।५३, ९।२, ११।९३, शि० ११।५ 2. हल्दी 3. स्त्री। सम०—ईशः चन्द्रमा।

शर्वाणी [शर्व+ङीष्, आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शर्शरीक (वि०) [शृ+ईकन्, द्वित्वादि] उपद्रवी, क्रूर, --कः धूर्त, पाजी, दुर्जन।

शल् (भ्वा० आ० शलते) 1. हिलाना, हरकत देना, क्षुब्ध करना 2. छोपना।

II (भ्वा० पर० शलति) 1. जाना 2. तेज दौड़ना।

III (चुरा० आ० शालयते) प्रशंसा करना।

शलः [शल्+अच्] 1. जांघ, बर्छी 2. मेख 3. भूंगे नाम का शिव का एक गण 4. बह्मा, लम् साही का कांटा (कुछ के अनुसार पुं० भी)।

शलकः [शल+कन्] मकड़ा, मकड़ा।

शलभः [शल+अभच्] राजा, प्रभु।

शलभः [शल्+अभच्] 1. टिड्डा, टिड्डी—शि० १।३२ 2. पतंगा- कौरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते —वेणी० १।१९, शि० २।११७, कु० ४।४०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शलकम् [शल्+अलच्] साही का कांटा, लो 1. साही का कांटा 2. छोटी साही।

शलाका [शल्+आक+टाप्] 1. छोटी छड़ी, खूंटी, डण्डा, कील, टुकड़ा, पतला सीखचा- अयस्कान्तमणि-शलाका-- मा० १ 2. पेन्सिल (आँख में सुर्मा आंजने की) सलाई—अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ शिक्षा० ५८, कु० १।४७, रघु० ७।८ 3. बाण 4. सींग, नेजा 5. एक नोकदार शस्त्रीकरण (घाव की गहराई नापने के लिए) 6. छत्री की तीली 7. (हाथ पैर की अंगुलियों की जड़ की) हड्डी—याज्ञ० ३।८५ 8. अंकुर, फुनगी, कोंपल—कु० ४।२४ 9. रंग करने की कूंची 10. दाँत साफ करने की कूची, दांत-कुरेदनी 11. साही 12. छायी छोटे या हड्डी का बना जुआ खेलने का आयताकार (पासा) टुकड़ा। सम०—धूर्तः (शलाकाधूर्तः) उचक्का, ठग, परि (अव्य०) जूए में मनहूस पासा पड़ना, तु० परि, अक्षपरि।

शलाटु (वि०) [शल्+आटु] अनपका, दृढ़ कन्द-विशेष।

शलाभोलिः (पुं०) ऊँट।

शल्कम्, शल्कलम् [शल्+कन्, कलच् वा] 1. मछली का वल्कल या छिलका मनु० ५।१५, याज्ञ० १।१७८ 2. वल्कल, छाल (वृक्षों की) 3. भाग, अंश, खण्ड।

शल्कालिन्, शल्किन् (पुं०) [शल्कल (शल्क) इनि] मछली।

शल्म् (स्वा० आ० शल्मते) प्रशंसा करना।

शल्मलिः, ली (स्त्री०) [शल्+मलच्] इन् पक्षे ङीप्] रेशमी रूई का वृक्ष, सेमल।

शल्यम् [शल्+यत्] 1. बर्छी, नेजा, सांग 2. बाण, तीर, शल्यं निखातमुद्धारयतामभूत्तः रघु० ९।७८, शल्य-प्रोतम्-- ९।७५, श० ६।९ 3. कांटा, खपच्ची 4. मेख, खूंटी, धूणी (उपर्युक्त चारों अर्थों में पुं० भी होता है) 5. शरीर में घुसा हुआ कोई पीड़ा कारक कांटा आदि अलातशल्यम्- उत्तर० ३।२५ 6. (अलं०) हृदयविदारक शोक या किसी तीक्ष्ण पीड़ा का कारण —उद्धृतविषादशल्यः कथयिष्यामि--श० ७ 7. हड्डी 8. कठिनाई, कष्ट 9. पाप, जुर्म 10. विष, स्थः 1. साही, झाऊ चूहा 2. कटिदार झाड़ी 3. (आयु० में) शल्यचिकित्सा में खपचियों का उखेड़ना 4. बाड़, सीमा 5. एक प्रकार की मछली 6. मद्रदेश का राजा, पाण्डु की द्वितीय पत्नी माद्री का भाई, नकुल और सहदेव का मामा (महाभारत के युद्ध में उसने पांडवों की ओर से लड़ने का विचार किया परन्तु दुर्योधन ने चालाकी से उस पर प्रभाव डाल कर उसे अपनी ओर कर लिया, अन्ततः वह कौरवों की ओर से लड़ा। कर्ण के सेनापति बनने पर वह उसका सारथि बना, और कर्ण की मृत्यु हो जाने पर उसे कौरव सेना का सेनापतित्व मिला। एक दिन तक उसने सेनापतित्व का भार संभाला, परन्तु दूसरे दिन युधिष्ठिर ने उसे मौत के घाट उतार दिया)। सम०- अरिः युधिष्ठिर का विशेषण, आहरणम्, उद्धरणम्, उद्धारः, क्रिया,- शास्त्रम् कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है,—कण्डः झाऊ चूहा, लोमन् (नपुं०) साही का कांटा, हृत् (पुं०) निरैया, निराने वाला।

शल्यकः [शल्य+कन्] 1. सींग, नेजा, तलाश 2. खपच्ची, फांस, कांटा 3. झाऊ चूहा, साही।

शल्लः [शल्+अच्] मेंढक,--ल्लम् वल्कल, छाल।

शल्लकः [शल्ल+कन्] वृक्ष, शोण वृक्ष,—कम् वल्कल, छाल।

शल्लकी [शल्लक+ङीष्] 1. साही 2. एक वृक्ष विशेष जो हाथियों को बहुत प्रिय है तु० उत्तर० २।२१, ३।६, मा० २।६, विक्रम० ४।२३। सम०—द्रवः धूप, लोबान।

शल्वः [शल्+वन्] एक देश का नाम, दे० 'शाल्व'।

शश् (स्वा० पर० शशति) 1. जाना, पहुँचना 2. बदलना, परिवर्तन करना, रूपान्तर करना।

शवः, वम् [शव्+अच्] लाश, मुर्दा शरीर मनु० १०।५५, वम् जल, आच्छादनम् मृतक शरीर का आवरण, कफन,--आश (वि०) मुर्दा खाकर जीने वाला—भट्टि० १२।७५,---काम्यः कुता यानम्, रथः मुर्दा ढोने की गाड़ी, अरथी, एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं।

शवर, शबल दे० शबर शबल।

शवसानः [शव+असानच्] 1. यात्री 2. मार्ग, सड़क, --नम् कब्रिस्तान, श्मशानस्थान।

शशः [शश्+अच्] 1. खरगोश, खरहा—मनु० ३।२७०, ५।१८ 2. चन्द्रमा का कलंक (जो खरगोश की आकृति का समझा जाता है) 3. कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक भेद। ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं मृदुवचनसुशीलः कोमलांगः सुकेशः, सकलगुणनिधानं सत्यवादी शशोऽयम्—शब्द०, दे० रति० ३५ भी 4. लोध्र वृक्ष 5. बोल नामक खुशबूदार गोंद। सम०—अङ्कः 1. चांद 2. कपूर—°अर्धमुखः (वि०) अर्धचन्द्राकार सिर वाला (बाण आदि) °भृत्, °भृतः चन्द्रमा का विशेषण °लेखा चाँद की कला, चन्द्रकला, —अदः 1. बाज, श्येन 2. पुरंजय के पिता इक्ष्वाकु का एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र, अक्षन: बाज, श्येन,--ऊर्णम्, --लोमम् खरगोश के बाल, खरहे की त्वचा, अर: 1. चन्द्रमा--प्रसरति शशधरबिंबे गीत० ७ 2. कपूर °भौलिः शिव का विशेषण, लुप्तकम् नखक्षत, नाखून का घाव, भृत् (पुं०) चाँद °भृत् (पुं०) शिव का विशेषण,--लक्षणः चाँद का विशेषण,—लाञ्छनः 1. चन्द्रमा —कु० ७।६, 2. कपूर--वि(वि) बुः 1. चाँद 2. विष्णु का विशेषण, - विषाणम् - शृंगम् खरगोश का सींग (असंभव बात का संकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितान्त (असंभावना) कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत् --भर्तृ० २।५, शशभृल्लघनुर्धरः - दे० 'खपुष्प', -स्थली गंगा यमुना के बीच की भूमि, दोआबा।

शशाङ्कः [शश+कन्] 1. खरगोश, खरहा 2. शश (३)।

शशिन् (पुं०) [शशोऽस्त्यस्य इनि] 1. चाँद शशिनं पुनरेति शर्वरी रघु० ८।५६, ६।८५, मेघ० ४१ 2. कपूर। सम०- ईशः शिव का विशेषण,—कला चन्द्रमा की एक लेखा--मुद्रा० १।१,—कान्तः चन्द्रकांतमणि (-न्तम्) कमल,—कोटिः चन्द्रशृङ्ग, - ग्रहः चन्द्रमा का ग्रहण, - जः बुध का विशेषण (चन्द्रमा का पुत्र),—प्रभ (वि०) चन्द्रमा की कांति वाला, चाँद जैसा उज्ज्वल और श्वेत--रघु० ३।१६, (-भम्) कुमुदिनी,-प्रभा चाँद का प्रकाश,—भूषणः, भृत्, (पुं०) मौलिः, - शेखरः शिव के विशेषण, --लेखा चन्द्रमा की कला।

शश्वत् (अव्य०) [शश्+वत्, वा] 1. लगातार, अनादि काल से, सदा के लिए 2. सतत, बार-बार, सदैव, बहुशः, पुनः पुनः--रघु० २।४५, ४।७०, मेघ० ५५ 3. समास में प्रयुक्त होने पर 'शश्वत्' का अर्थ है 'टिकाऊ, नित्य' यथा शश्वच्छान्ति अर्थात् नित्य शान्ति।

शष्कुः (स्कु) ली [शष् (स्)+कुलच्+ङीष्] कान का विवर, श्रवण-मार्ग --अवलम्बितकर्णशष्कुलीकलसीकं रचयन्नवोचत नै० २।८, याज्ञ० ३।९६ 2. एक प्रकार की पकी हुई रोटी, याज्ञ० १।१७३ 3. चावल की कांजी 4. कान का एक रोग।

शष्पः (स्पा) [शष्+पक्] प्रतिभाक्षय, औसान का अभाव, --प्यम् नया घास -- उत्तर० ४।२७, रघु० २।२६।

शस् i (भ्वा० पर० शसति) काटना, मारडालना, नष्ट करना, वि—काट डालना, मार डालना--उत्तर० ४। ii (अदा० पर० शस्ति) सोना, तु० 'शंस्' से भी।

शसनम् [शस्+ल्युट्] 1. घायल करना, मार डालना 2. बलि, मेध, (यज्ञ में पशु का)।

शस्त (भू० कृ० कृ०) [शस्+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया 2. शुभ आनन्द प्रद 3. यथार्थ, सर्वोत्तम 4. क्षतिग्रस्त, घायल 5. वध किया हुआ, —स्तम् 1. आनन्द, कल्याण 2. श्रेष्ठता, मांगलिकता 3. शरीर 4. अंगुलित्राण (इसी अर्थ में 'शस्त्रकम्' भी)।

शस्तिः (स्त्री०) [शंस्+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1. हथियार, आयुध - क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति सुभा०--रघु० २।४०, ३।५१, ६२, ५।२८ 2. उपकरण, औजार 3. लोहा 4. इस्पात, 5. स्तोत्र। सम० अभ्यासः शस्त्रास्त्रों के चलाने का अभ्यास, सैनिक व्यायाम, —अयसम् 1. इस्पात 2. लोहा,—अस्त्रम् प्रहार करने और फेंक कर मारने वाले हथियार, आयुध और अस्त्र 3. आयुध या शस्त्र,--आजीवः उपजीविन् (पुं०) पेशेवर सिपाही,—उद्यमः (प्रहार करने के लिए) शस्त्र उठाना, उपकरणम् युद्ध के उपकरण या शस्त्रास्त्र, सैनिक सामग्री,— कारः शस्त्रनिर्माता --कोषः किसी हथियार का म्यान, आवरण,--ग्राहिन् (वि०) (युद्ध के लिए) शस्त्रास्त्र धारण करने वाला उत्तर० ५।३३,—जीविन्, वृत्ति (पुं०) शस्त्र प्रयोग के द्वारा जीवन यापन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक, देवता 1. आयुधों की अधिष्ठात्री देवता 2. देवरूपकृत हथियार, - धरः शस्त्रभृत्,—न्यासः हथियार डाल देना, इसी प्रकार शस्त्र (परि) त्यागः, --पाणि (वि०) शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रों से सुसज्जित (पुं०) सशस्त्र योद्धा, पूत (वि०) 'शस्त्रों द्वारा पवित्रीकृत' युद्धक्षेत्र में मारे जाने से मुक्त--अशस्त्रपूतं निर्व्याजं (महामांसं)--मा० ५।१३ (दे० शब्द की जगद्धरकृत व्याख्या) अहमपि तस्य मिथ्याप्रतिज्ञावैलक्ष्यसंपादितमशस्त्रपूतं मरणमुपदिशामि वेणी० २, - प्रहारः हथियार से किया गया आघात, —भृत् (पुं०) सैनिक, योद्धा--रघु० २।४०,—मार्जः हथियार साफ़ करने वाला, शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर, —विद्या - शास्त्रम् शस्त्र विज्ञान,—संहतिः (स्त्री०) 1. शस्त्रसंग्रह 2. आयुधागार, संपातः हथियारों का अकस्मात् गिरना, - हत (वि०) हथियार से मारा गया,—हस्त (वि०) शस्त्रधर (स्तः) शस्त्रधारी मनुष्य।

शस्त्रकम् [शस्त्र+कन्] 1. इस्पात 2. लोहा।

शस्त्रिका [शस्त्रक+टाप्, ह्रस्वम] चाकू।

शस्त्रिन् (वि०) [शस्त्र+इनि] शस्त्रधारी, हथियारबंद, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित।

शस्त्री [शस्त्र+ङीष्] चाकू--पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिका शस्त्रीषु रज्यते कः--सुभा०, शि० ४।४०।

शस्यम् [शस्+यत्] 1. वध्य, घात्य—दुहोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम्—रघु० १।२६ 2. किसी वृक्ष या पौधे का फल या उपज—शस्यं क्षेत्र-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गतं प्राहुः सतुषं धान्यमुच्यते –दे० 'तंडुल' भी 3. गुण। सम० क्षेत्रम् अन्न का खेत, भक्षक (वि०) अन्नहारी, अनाज खाने वाला, मञ्जरी अनाज की बाल,—मालिन् (वि०) जिसका खेत हरा भरा खड़ा हो,—शालिन्, संपन्न (वि०) अन्न या धान्य से परिपूर्ण, शूकम् अनाज का सिट्टा,—संपद् (स्त्री०) अनाज की बहुतायत, सस्य (स्य) रः शाल का वृक्ष, साल का पेड़।

शाकः, कम् [शक्यते भोक्तुम् –शक्+घञ्] शाक, साग—भाजी, खाद्यपत्ते, फल या कन्द जो शाक की भांति उपयोग में लाये जायं—दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा मनोरथान् पूरयितुं समर्थः, अन्यें नृपालेः परिदीयमानं शाकाय वा स्यात्फलाय वा स्यात् जग०,—कः 1. शक्ति, सामर्थ्य, ऊर्जा 2. सागौन का वृक्ष 3. शिरीष का वृक्ष 4 एक जाति का नाम—दे० शक 5. वर्ष, विशेषतः शालिवाहन संवत्सर। सम०—अङ्कुरः मिर्च, अम्लम् महादा, इमली, -आख्यः सागौन का वृक्ष, (ख्यम्) शाकभाजी, —आहारः शाकभाजी खाने वाला (वनस्पति खाकर जीवित रहने वाला),-चुञ्चिका इमली,—तरुः सागौन का वृक्ष,—पत्रः 1. मुट्ठीभर भार के बराबर तोल 2. मुट्ठीभर शाकभाजी,—पार्थिवः अपने नाम से वर्ष चलाने का शौकीन, दे० मध्यमपदलोपिन्, -प्रतिः(अव्य०) थोड़ी सी वनस्पति, —योगः धनिया, —वृक्षः सागौन का पेड़, -शाकटम् शाकिनम् साग भाजी का खेत, रसोई के योग्य सब्जियों का उद्यान।

शाकट (वि०) (स्त्री०—टी) [शकट+अण्] 1. गाड़ी सम्बन्धी 2. गाड़ी में बैठकर जाने वाला,—टः 1. गाड़ी खींचने वाला बैल 2. लैब्मान्तक वृक्ष (नपं०) खेत—तु० शाकशाकटम्।

शाकटायनः [शकटस्यापत्यम् शकट+फक्] भाषा-विज्ञान और व्याकरण का पंडित जिसका पाणिनि और यास्क ने कई बार उल्लेख किया है तु० व्याकरणे शाकटस्य च लोकम् –निरु०।

शाकटिक (वि०) (स्त्री० की) [शकट+ठक्] 1. गाड़ीसम्बन्धी 2. गाड़ी में बैठकर जाने वाला।

शाकटीनः [शकट+खञ्] गाड़ी में लगाने योग्य बोझ, बीस तुला के समान बोझ की तोल।

शाकल (वि०) (स्त्री० ली) [शकल+अण्] टुकड़े से सम्बन्ध रखने वाला,—लः ऋग्वेद की एक शाखा, इस शाखा के अनुयायी (ब०व०)। सम० प्रातिशाख्यम् ऋग्वेद का प्रातिशाख्य, शाखा ऋग्वेद का परम्परागत पाठ जो शाकल शाखा में प्रचलित है।

शाकल्यः [शकलस्यापत्यम् यञ्] एक प्राचीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है (कहा जाता है कि इसी ने ऋग्वेद के पद-पाठ को व्यवस्थित किया था)।

शाकारी (स्त्री०) प्राकृत का एक निम्नतम रूप, चाकर द्वारा बोली गई बोली जैसा कि मृच्छकटिक में।

शाकिनम् [शाक+इनच्] खेत जैसा कि 'शाकशाकिन' में।

शाकिनी [शाकिन्+ङीप्] 1. साग-भाजी का खेत 2. दुर्गा-देवी की सेविका (जो एक पिशाचिनी या परी समझी जाती है)।

शाकुन (वि०) (स्त्री०—नी) [शकुन+अण्] 1. पक्षियों से सम्बन्ध रखने वाला—मनु० ३।२६८ 2. सगुन सम्बन्धी 3. शकुनसम्बन्धी।

शाकुनिकः [शकुनेन पक्षिवधादिना जीवति ठञ्] बहेलिया, चिड़ीमार—मृच्छ० ६, मनु० ८।२६०, कर्म शकुनों की व्याख्या।

शाकुनेयः [शकुनि+ढक्] छोटा उल्लू।

शाकुन्तलः [शकुन्तला+अण्] भरत का मातृपरक नाम (शकुन्तला का पुत्र) सम् कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक।

शाकुलिकः [शकुल+ठक्] मछुआ, मछली मारने वाला।

शाक्करः [शक्कर+अण्] बैल।

शाक्त (वि०) (स्त्री०—क्ती) [शक्ति+अण्] 1. शक्ति-सम्बन्धी 2. दिव्यशक्ति की स्त्री प्रतिमा से सम्बन्ध रखने वाला, कतः शक्तिपूजक (शाक्त लोग प्रायः दुर्गा के उपासक होते हैं, दुर्गा ही दिव्यशक्ति की स्त्रीमूर्ति है, अनुष्ठान पद्धति दो प्रकार की है, पवित्र अर्थात् दक्षिणाचार तथा अपवित्र अर्थात् वामाचार)।

शाक्तिकः [शक्ति+ठक्] 1. शक्ति का पूजक 2. बर्छी-धारी, भाला रखने वाला।

शाक्तीकः [शक्ति+ईकक्] बर्छी रखने वाला, भालाधारी।

शाक्तेयः [शक्ति+ढक्] शक्ति का उपासक।

शाक्यः [शक्+घञ्, तत्र साधुः यत्] 1. बुद्ध के कुटुम्ब का नाम 2. बुद्ध। सम० भिक्षुकः बौद्धभिक्षु, मुनिः, -सिंहः बुद्ध के विशेषण।

शाक्री [शक्र+अण्+ङीप्] 1. इन्द्र की पत्नी शची 2. दुर्गादेवी।

शाक्वरः [शक्वर+अण्] बैल, तु० 'शाक्कर'।

शाखा [शाखति गगनं व्याप्नोति—शाख्+अच्+टाप्] 1. (वृक्ष आदि की) डाली, शाख—आचार्यं शाखाः -रवं० १६।१९ 2. भुजा 3. दल, अनुभाग, गुट 4. किसी कार्य का भाग या उपभाग 5. सम्प्रदाय, आम्नाय, पन्थ 6. परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी सम्प्रदाय द्वारा मान्यताप्राप्त परम्परागत पाठ यथा शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि। सम० चन्द्रन्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, —नगरम्, -पुरम् नगराञ्चल, नगर परिसर, पित्तः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों म सृजन,—भृत् (पुं०) वृक्ष. भेदः (वेद की) शाखाओं का अन्तर, —मृगः 1. बन्दर, लंगूर 2. गिलहरी, रुग्णः अपनी शाखा के प्रति द्रोह करने वाला, वह ब्राह्मण जिसने अपनी वैदिक शाखा को बदल दिया है, रथ्या गली, वीथिका।

शाखालः [शाखा+ला+क] एक प्रकार का बेंत, बानीर।

शाखिन् (वि०) [शाखा+इनि] 1. शाखाधारी आलं० से भी) 2. शाखाओं से युक्त, शाखामय 3. (वेद के) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाला—(पुं०) 1. वृक्ष श० १।१५ 2. वेद 3. वेद की किसी भी शाखा का अनुयायी।

शाखोटः, शाखोटकः [शाख्+ओटन्, शाखोट+कन्] एक वृक्ष, पेड़ —कस्त्वं भोः कथयामि देवहृतकं मां विद्धि शाखोटकम्—काव्य० १०।

शाङ्गुरः [शङ्कुर+अण्] बेल।

शाङ्गुरिः [शङ्कुर+इञ्] 1 कार्तिकेय 2. गणेश 3. अग्नि।

शाङ्कुकः [शङ्कु+ठक्] 1. शङ्खकार, शङ्ख को काट कर उसकी चीजें बनाने वाला 2. एक वर्णसङ्कर जाति 3. शङ्ख बजाने वाला—शि० १५।७२।

शाटः, शाटी [शट्+घञ्, शाट+ङीप्] 1. वस्त्र, कपड़ा 2. अधोवस्त्र, साड़ी।

शाटकः,-कम् [शाट+कन्] 1. वस्त्र, कपड़ा, अधोवस्त्र, साड़ी—पंच० ११।४४।

शाठ्यम् [शठ+ष्यञ्] बेईमानी, छल, कपट, चालाकी, जालसाजी, दुष्कर्म—आजन्मनः शाठ्यमशिक्षितो यः —श० ५।२५, मुद्रा० १।१।

शाण (वि०) (स्त्री०—णी) [शणेन निर्वृत्तम्—अण्] सन का बना हुआ, पटसन का बना हुआ,—णः 1. कसौटी—भामि० १।७३, भर्तृ० २।४४, 2. सान रखने वाला पत्थर 3. आरा 4. चार माशे की तोल, —णम् 1. मोटा कपड़ा, बोरे या थैले आदि बनाने का कपड़ा 2. सन का बना वस्त्र—मनु० २।४१ १०।८७। सम०—आजीवः शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर।

शाणिः [शण्+इण्] एक पौधा जिसके रेशों से वस्त्र बनता है, पटुआ।

शाणित (भू० क० कृ०) [शण्+णिच्+क्त] सान पर रक्खा हुआ, पीसा हुआ, (शाण पर रख कर) पैनाया हुआ।

शाणी [शाण+ङीप्] 1. कसौटी 2. सान 3. आरा 4. सन का बना वस्त्र 5. फटा कपड़ा, चिथड़ा 6. छोटा पर्दा या तंबू 7. अंगविक्षेप, हाथ या आंख आदि से संकेत करना।

शाणीरम् [शण्+ईरन्] शोण नदी का तट, शोण नदी का भूभाग।

शाण्डिल्यः [शण्डिल+यञ्] 1. एक ऋषि जिसने विधि-शास्त्र पर ग्रन्थ लिखा 2. बिल्ववृक्ष, बेल का पेड़ 3. अग्नि का रूप। सम० गोत्रम् शाण्डिल्य का परिवार।

शात (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1. तीक्ष्ण किया हुआ, पैनाया हुआ 2. पतला, दुबला 3. दुर्बल, कमजोर 4. सुन्दर, मनोहर 5. प्रसन्न, फलता-फूलता,—तः धतूरे का पौधा, तम् आनन्द, प्रसन्नता, खुशी मानिनी-जनजनितशातम्—गीत० १० । सम०—उदरी कृशोदरी, पतली कमर वाली स्त्री शि० ५।२३, रघु० १०। ६९,—शिख (वि०) तेज नोक वाला, तीक्ष्ण नोकदार।

शातकुंभम् [शतकुंभे पर्वते भवम् अण्] 1. सोना,—शि० ९।९, नै० १६।३४ 2. धतूरा।

शातकौम्भम् [शातकुम्भ+अण्] सुवर्ण, सोना।

शातनम् [शो+णिच्+ल्युट्] 1. पैनाना, तेज करना 2. काटने वाला, विनाशकर्ता रघु० ३।४२ 3. गिराना या नष्ट करना 4. कुम्हलाहट पैदा करना 5. पतला या छोटा होना, पतलापन 6. मुर्झाना, कुम्हलाना।

शातपत्रकः,-की [शतपत्र ; अण्+कन्] चौंद का प्रकाश।

शातभीरुः [शातां दुर्बलां पान्थां भीरवो यस्याः—ब० स०] एक प्रकार की मल्लिका।

शातमान (वि०) (स्त्री० नी) [शतमानेन क्रीतम् अण्] एक सौ में मोल लिया हुआ।

शात्रव (वि०) (स्त्री०—वी) [शत्रु+अण्] 1. शत्रुसंबंधी, -रघु० ४।४२ 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण, वः दुष्मत —शि० १४।४४, १८।२०, वेणी० ५।१, भट्टि० ५। ८१, कि० १४।२, मुद्रा० २।५, -वम् 1. शत्रुओं का समूह 2. शत्रुता, दुश्मनी—त्रयीशात्रवशान्त्रये—रस०।

शात्रवीय (वि०) [शत्रु+छ] 1. शत्रुसंबंधी 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

शाद्वः [शद्+घञ्] 1. छोटी घास 2. कीचड़। सम० —हरितः—तम् नये घास के कारण हरियाली भूमि, वह भूमि जिस पर हरियाली छा गई है।

शाद्वल (वि०) [शाद्वाः सन्त्यत्र वलच्] 1. तृणयुक्त 2. जहां नई घास, या हरी हरी घास उग आई हो 3. हरा भरा, सब्ज, हरियाली से युक्त,—लः, —लम् घास से युक्त भूमि, हरियाली, चरागाह—शय्या शाद्वलम्—शान्ति०।

शान् (श्वा० उभ० शीशांसति-ते—निश्चित रूप से 'शान्' का इच्छा० रूप, मूल अर्थ में प्रयुक्त—) तेज करना, पैनाना।

शानः [शान्+अच्] 1. कसौटी 2. सान का पत्थर। सम०—वादः 1. चन्दन पीसने का पत्थर 2. पारि-यात्र पर्वत।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शान्त (भू० क० कृ०) [शम्+क्त] 1. प्रसन्न किया हुआ, दमन किया हुआ, धीरज दिलाया हुआ, सन्तुष्ट किया हुआ, प्रशान्त-रघु० १२।२० 2. चिकित्सित, सान्त्वना दिया हुआ -शान्तरोगः 3. घटाया हुआ, कम किया हुआ, समाप्त किया हुआ, हटाया हुआ, बुझाया हुआ शान्तरघसोऽपरिश्रमम्-रघु० १।५८, ५।४७, शान्तिषं दीपमिव प्रकाशः -किं० १७।१६ 4. विरत, ठहराया हुआ -कु० ३।४२ 5. मृत, उपरत 6. शान्त किया हुआ, दबाया हुआ 7. सौम्य, चुपचाप, बावाहीन, निस्तब्ध, मूक, मौन - शान्तमिदमाश्रमपदम् श० १।१६, ४।१९ 8. सधाया हुआ, पाला हुआ—रघु० १४।७९ 9. आवेशरहित, आराम से, सन्तुष्ट 10. छायादार 11. पवित्रीकृत 12. शुभ (शकुन) - (शान्तं पापम् 'अहो ! नहीं, यह कैसे हो सकता है, भगवान् करे ऐसी अशुभ या दुर्भाग्यपूर्ण घटना न घटे' - श० ५, मुद्रा० १), - तः 1. वैरागी, संन्यासी 2. शान्ति, निस्तब्धता, मौनभाव, सांसारिक विषय वासनाओं के प्रति तटस्थता की प्रभावना, दे० निर्वेद और रस,—तम् (अव्य०) बस, और नहीं, ऐसा नहीं, शर्म की बात है, चुप रहो, भगवान् न करे शान्तं कथं दुर्जनाः पौरजानपदाः -उत्तर० १, तामेव शान्तमथवा किमिहोत्तरेण -३।२६। सम० आत्मन्,-चेतस् (वि०) सौम्य, शान्तमना, धीर, स्वस्थमना,—दोष (वि०) जिसका पानी स्थिर हो,—रसः मौनभाव-दे० ऊ० शान्तम्।

शान्तनवः [शन्तनु+अण्] शन्तनु का पुत्र भीष्म।

शान्ता [शान्त+टाप्] दशरथ की पुत्री जिसे लोमपाद ऋषि ने गोद ले लिया था तथा जो ऋष्यशृङ्ग को ब्याही गई थी। दे० उत्तर० १।४, 'ऋष्यशृङ्ग' भी।

शान्तिः (स्त्री०) [शम्+क्तिन्] 1. प्रशमन, निराकरण, सान्त्वना, हटाव—अन्धकविघातशान्तये रघु० ११।१, ६२ 2. धैर्य, प्रशान्तता, निःशब्दता, अमन-चैन, विश्राम—कु० ४।१७, मा० ६।१ 3. वैरनिरोध -भामि० १।२५ 4. विराम, निवृत्ति 5. आवेश का अभाव, मौनभाव, सभी सांसारिक भोगों के प्रति पूर्ण उदासीनता—रघु० ७।७१ 6. सान्त्वना, ढाढस 7. सामञ्जस्यविधान, विरोधोपशमन 8. भूख की तृप्ति 9. प्रायश्चित्त अनुष्ठान, पाप को दूर करने के लिए तुष्टिप्रद अनुष्ठान 10. सौभाग्य, बधाई, आशीर्वाद, माङ्गलिकता 11. दोषमार्जन, कलंक से मुक्ति, परिरक्षण। सम०—उदक्,—उदकम्,—जलम् शान्तिकर तथा प्रमादपूर्ण जल - श० ३,—कर, कारिन् (वि०) सान्त्वक, प्रशामक, गृहम् विश्रामकक्ष,—होमः पाप का निस्तारण करने के लिए यज्ञ करना - मनु० ४।१५०।

शान्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [शान्ति+कन्] प्रायश्चित्तात्मक, सान्त्वनाप्रद, तुष्टिकर,—कम् संकट को दूर करने के लिए किया गया अनुष्ठान।

शान्त्व् दे० 'सान्त्व्'।

शापः [शप्+घञ्] 1. अभिशाप, अवक्रोश, फटकार -शापेनास्तं गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः - मेघ० १, ९२, रघु० १।७८, ५।५६, ५९, ११।१४ 2. सौगन्ध, शपथोक्ति 3. दुर्वचन, मिथ्या आरोप। सम०—अन्तः —अवसानम्, निवृत्तिः (स्त्री०) अभिशाप की समाप्ति, मेघ० ११०, रघु० ८।८२, अस्त्रः 'अभिशाप को ही जिसने अपना आयुध बनाया है' ऋषि, महात्मा रघु० १५।३,—उत्सर्गः अभिशाप का उच्चारण, उद्धारः,—मुक्तिः,—मोक्षः अभिशाप से छुटकारा, -ग्रस्त (वि०) अभिशाप से दबकर परिश्रम करने वाला, मुक्त (वि०) अभिशाप से जिसने छुटकारा पा लिया है,- ग्रन्थित (वि०) अभिशाप के कारण नियन्त्रणपूर्ण।

शापित (भू० क० कृ०) [शप्+णिच्+क्त] 1. सौगन्ध से बंधा हुआ, शपथपूर्वक उक्त 2. गृहीशपथ, जिसने शपथ ले ली है।

शाफरिकः [शफरान् हन्ति-शफर+ठक्] मछुआ, मछली पकड़ने वाला।

शाब (ब) र (वि०) (स्त्री०-री) [शब (ब) र+अण्] 1. असभ्य, जंगली 2. नीच, कमीना, अधम -रः 1. अपराध, दोष 2. पाप, दुष्टता 3. लोध्र नामक वृक्ष 4. प्राकृत बोली का एक निम्नरूप (पहाड़ी लोगों से बोला जाने वाला। सम०-भेदाख्यम् (भेदाक्षम् भी) तांबा।

शाब्द (वि०) (स्त्री०-ब्दी) [शब्द+अण्] 1. शब्द संबंधी या शब्द से व्युत्पन्न 2. ध्वनि पर निर्भर या ध्वनि सम्बन्धी (विप० आर्थ) 3. शाब्दिक, मौखिक 4. ध्वननशील, मुखर,—बः वैयाकरण। सम०-बोधः शब्दों के अर्थ का अवबोध या प्रत्यक्षीकरण, व्यंजना शब्दों पर आधारित व्यंग्योक्ति।

शाब्दिक (वि०) (स्त्री०-की) [शब्द+ठक्] 1. जबानी, मौखिक 2. निनादी,—कः वैयाकरण।

शामनः [शमन+अण्] यम नम् 1. हत्या, वध 2. शान्ति, अमन-चैन 3. अन्त, नी दक्षिण दिशा।

शामित्रम् [शम्+णिच्+इत्रच्] 1. यज्ञ करना 2. मेघ, यज्ञ में पशुवध करना 3. यज्ञ के लिए बलिपशु बांधना 4. यज्ञीय पात्र।

शामिलम् [शमी+लच्] भरण, रक्षा।

शामिली [शामिल+ङीष्] यज्ञीय स्रुवा, स्रुच्।

शाम्बरी [शम्बर+अण्+ङीप्] 1. बाजीगरी, जादूगरी 2. जादूगरनी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाम्बविकः [शम्बु+ठक्] शंखों का व्यापारी ।

शाम्बु (बू) रु, [शम्बुक+अण्] द्विकोषीय घोंघा ।

शाम्भव (वि०) (स्त्री० - वी) [शम्भु+अण्] शिव-सम्बन्धी अतुं वाञ्छति शाम्भवो गणयतेरालुं क्षुधार्तः फणी पंच० १।१५९,—वः 1. शिवोपासक 2. शिव जी का पुत्र 3. कपूर 4. एक प्रकार का विष,—वम् देवदारु वृक्ष ।

शाम्भवी [शाम्भव+ङीप्] 1. पार्वती 2. एक पौधा, नीलदूर्वा ।

शायकः [शो+ण्वुल्] 1. बाण 2. तलवार, तु० सायक ।

शार् (चुरा० उभ० शारयति ते) 1. दुर्बल करना 2. कमजोर होना ।

शार (वि०) [शार्+अच्, शृ+घञ् वा] चितकबरा, धब्बेदार चित्तीदार, शबल, रः 1. रंगबिरंगा रंग, 2. हरा रंग 3. हवा, वायु 4. शतरंज का मोहरा, गोट भर्तृ० ३।३९ 5. क्षति पहुँचाने वाला, आघात करने वाला ।

शारङ्गः [शारम् अङ्गम् यस्य --ब० स०] 1. चातक पक्षी 2. मोर 3. भौंरा 4. हरिण 5. हाथी, तु. सारंग ।

शारङ्गी [शारङ्ग+ङीप्] एक संगीत वाद्य विशेष जो गज से बजाया जाता है, तु० सारंगी ।

शारद (वि०) [शरदि भवम् - अण्] 1.पतझड़ से संबंध रखने वाला, शरत्कालीन (इस अर्थ में स्त्री०-शारदी है) --विमलशारदचन्दिरश्चन्द्रिका--भामि० १।११३, रघु० १०।९ 2. वार्षिक 3. नया, नूतन 4. अनुभव-हीन, नौसिखिया 5. विनीत, शर्मीला, लज्जालु 5. शकालु, साहसहीन, दः 1. वर्ष 2. शरत्कालीन बीमारी 3. शरत्कालीन धूप 4. एक प्रकार का लोबिया या उड़द 5. बकुल का वृक्ष, मौलसिरी,—दी कार्तिक मास की पूर्णिमा,—दम् 1. अनाज, धान्य 2. श्वेत कमल, दा 1. एक प्रकार की वीणा या सारंगी 2. दुर्गा 3. सरस्वती ।

शारदिकः [शरद्+ठक्] 1. शरत्कालीन रोग 2. शरत्कालीन धूप या गर्मी, कम् शरत्कालीन या वार्षिक श्राद्ध ।

शारदीय (वि०) [शरद्+छ] शरत्कालीन, पतझड़ संबन्धी ।

शारिः [शृ+इञ्] 1. शतरंज का मोहरा, गोट 2. छोटी गोल गेंद 3. एक प्रकार का पासा, रि (स्त्री०) 1. सारिका पक्षी, मैना 2. जालसाजी, चाल 3. हाथी की भूल । सम०-पट्टः,-फलम्,-फलकः,-कम् शतरंज खेलने की बिसात, ।

शारिका [शारि+कन्+टाप्] 1. एक पक्षी, मैना 2. तन्त्रयुक्त वाद्ययन्त्रों को बजाने वाला गज 3. शतरंज खेलना 4. शतरंज का मोहरा, गोटी ।

शारी [शारि+ङीष्] एक पक्षी, मैना ।

शारीर (वि०) (स्त्री०—री) [शरीर+अण्] 1. शरीर से संबद्ध शारीरिक, दैहिक 2. शरीरधारी, मूर्तिमान्, - रः शरीरधारी, जीवात्मा, मानवात्मा, वैयक्तिक आत्मा 2. साँड 3. एक प्रकार की औषधि ।

शारीरक (वि०) (स्त्री०-की) [शरीर+कन्+अण्] शरीर सम्बन्धी, —कम् 1. मूर्तिमान् जीव, जीव के स्वरूप की पूछ्छा (ब्रह्मसूत्रों पर शङ्कराचार्य द्वारा किया गया भाष्य)। सम० - सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र ।

शारीरिक (वि०) (स्त्री०-की) [शरीर+ठक्] दैहिक, शरीर संबन्धी, भौतिक ।

शार्दक (वि०) (स्त्री०-की) [शृ+उत्कञ्] अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला, उपद्रवी ।

शार्कः [शर्क+अण्+कन्] दानेदार चमकीली खांड़, सिसरी ।

शार्कर (वि०) (स्त्री०—री) [शर्करा+अण्] 1. चीनी का बना हुआ, शर्करामिश्रित 2. पथरीला, कंकरीला, --रः कंकरीला स्थान 2. दूध का झाग, पपड़ी 3. मलाई ।

शार्ङ्ग (वि०) [शृङ्ग+अण्] 1. सींग का बना हुआ, सींग वाला 2. धनुर्धारी, धनुष से सुसज्जित —भट्टि० ८।१२३ ङ्गः,-ङ्गम् 1. धनुष 2. विष्णु का धनुष । सम०-धन्वन् (पुं०),—धरः,--पाणिः,—धृत् विष्णु के विशेषण ।

शार्ङ्गिन् (पुं०) [शार्ङ्ग+इनि] 1. तीरंदाज, धनुर्धारी 2. विष्णु का विशेषण धर्मसंरक्षणार्थाय प्रवृत्तिर्भुवि शार्ङ्गिणः--रघु० १५।४, १२।७०, मेघ० ४६ ।

शार्दूलः [शृ+ऊलच् दुक् च] 1. व्याघ्र 2. चीता 3. राक्षस 4. एक पक्षी 5. (समास के अन्त में) प्रमुख या पूज्य पुरुष, अग्रणी जैसा कि 'नरशार्दूल' में, तु० कुंजर । सम०—चर्मन् (नपुं०) व्याघ्र की खाल,—विक्रीडितम् 1. चीते की क्रीड़ा--कन्दर्पोऽपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् --गीत०४ 2. छन्द या वृत्त--दे० परि० १ ।

शार्वर (वि०) (स्त्री०—री) [शर्वरी+अण्] 1. रात्रि-कालीन--कु० ८।५८ 2. उपद्रवी, प्राणहर,---रम् अंधकार, घुप अंधेरा,—री रात ।

शास् (भ्वा० आ० शासते) 1. प्रशंसा करना, खुशामद करना 2. चमकना 3. पूरित होना—कि० ५।४४ पर मल्लि० 4. कहना ।

शालः [शल्+घञ्] 1.एक वृक्ष (बड़ा लंबा, और शानदार, —रघु० १।३८, शि० ३।४० 2.वृक्ष, पेड़,—रघु० १।१३, वेणी० ४।३ 3. बाड़ा, बाड़ 4. एक प्रकार की मछली 5. राजा शालिवाहन । सम० ग्रामः विष्णु भगवान्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की आदर्श प्रस्तरमूर्ति जैसा कि शिवलिंग, °गिरि पर्वत का नाम, °शिला शालग्राम पत्थर,—ऋः,—निर्यासः सालवृक्ष का प्रस्राव, राव रघु० १।३१, भञ्जिका 1. गुड़िया, पुत्तलिका, मूर्ति —विद्ध० १, नै० २।८३ 2. वेश्या, रंडी,—भञ्जी गुड़िया, पुत्तलिका,—वेष्टः साल के पेड़ से निकली राल, तु० 'साल',—सारः 1 उत्कृष्ट-वृक्ष 2. हीरा ।

शालवः [शाल+वल्+ड] लोध्र वृक्ष ।

शाला [शाल्+अच्+टाप्] 1. कक्ष, प्रकोष्ठ, बैठक, कमरा—गृहेविशालेरुचि भूरिशालैः —शि० ३।५०, इसी प्रकार संगीतशाला, रंगशाला आदि 2. घर, आवास —रघु० १६।४१ 3. वृक्ष की मुख्य शाखा 4. वृक्ष का तना । सम०—अङ्गिरः, रम् मिट्टी का कसोरा, —मृगः गीदड़,—वृकः 1. कुत्ता —भामि० १।७२ 2. भेड़िया हरिण 4. बिल्ली 5. गीदड़ 6. बन्दर ।

शालाकः (पुं०) पाणिनि ।

शालाकिन् (पुं०) [शालाक+इन्] 1. भाला रखने वाला, बर्छीधारी 2. जर्राह 3. नाई ।

शालातुरीयः [शालातुर+छ] पाणिनि का विशेषण (जन्म स्थान 'शलातुर' होने के कारण 'शालोत्तरीय' भी लिखा जाता है) ।

शालारम् [शाला+ऋ+अण्] 1. छोटा, सोढी 2. पिंजरा ।

शालिः [शाल्+णिनि] चावल—न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते मुद्रा० १।१३, यवाः प्रकीर्णाः न भवन्ति शालयः मृच्छ० ४।१६ 2. गंधबिलाव । सम० —ओदनः,—नम् भात (उत्कृष्टतर प्रकार का) —गोपी चावल के खेत की रखवाली करने वाली स्त्री, रघु० ४।२०, चूर्णः,—जम् चावल का आटा —पिष्टम् स्फटिक, भवनम् चावल का खेत,—वाहनः भारत का एक विख्यात राजा जिसके नाम से ईस्वीसन् ७८ में एक संवत्सर आरंभ हुआ,—होत्रः 1. पशुचिकित्सा पर ग्रन्थप्रणेता 2. घोड़ा,—होत्रिन् (पुं०) घोड़ा ।

शालिकः [शालि+कै+क] 1. चुलाहा 2. मार्गकर, शुल्क ।

शालिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [शाला+इनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1. सहित, युक्त, सम्पन्न, चमकीला, चमकदार—कि० ८।१७, ५५, भट्टि० ४।२ 2. घरेलू ।

शालिनी [शालिन्+ङीप्] 1. घर की स्वामिनी, गृहिणी 2. छन्द का नाम दे० परि० १ ।

शालीन (वि०) [शाला+खञ्] 1. विनीत, लज्जाशील, शर्मीला, लज्जालु निसर्गशालीनः स्त्रीजनः—मालवि० ४, रघु० ६।८१, १८।१७, शि० १६।८३ 2. सदृश, समान, नः गृहस्थ (शालीनं कृ विनयी बनाना, विनम्र करना) ।

शालूः [शाल्+ऊण्] 1. मेंढक 2. एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, लु (नपुं०) कुमुदिनी की जड़ ।

शालु (लू) कम् [शाल्+ऊकण्] 1. कुमुदिनी की जड़ 2. जायफल, कः मेंढक ।

शालु (लू) रः [शाल्+ऊर्] मेंढक ।

शालेयम् [शालि+ढक्] चावलों का खेत ।

शालोत्तरीयः [शालोत्तरे ग्रामे भवः—छ] पाणिनि का विशेषण—दे० शालातुरीय ।

शाल्मलः [शाल्+मलच्] 1. सेमल का पेड़ 2. भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक ।

शाल्मलिः [शाल्+मलिच्] 1. सेमल का पेड़—भामि० १।११५, मनु० ८।२४६ 2. भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक 3. नरक का एक भेद । सम० ध्वः गरुड़ का विशेषण ।

शाल्मली [शाल्मलि+ङीष्] 1. सेमल का पेड़ 2. पाताल लोक की एक नदी 3. नरक का एक भेद । सम० वेष्टः, वेष्टकः सेमल के पेड़ का गोंद ।

शाल्वः [शाल्+व] 1. एक देश का नाम 2. शाल्व देश का राजा ।

शाव (वि०) (स्त्री०—वी) [शव+अण्] शवसम्बन्धी, (किसी रिश्तेदार की) मृत्यु से उत्पन्न —दशाहं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते—मनु० ५।५९, ६१ 2. भूरे रङ्ग का, गहरे पीले रङ्ग का, वः किसी जानवर का छोटा बच्चा, कुरङ्गक, मृगछौना, वन्यपशुशावक वद वयं वत परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितौ जनः —रघु० ९।७८, मृगराजशावः रघु० ६।३, १८।३७ ।

शावकः [शाव+कन्] किसी भी वन्य पशु का बच्चा ।

शावर दे० 'शाबर' ।

शाश्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [शश्वद् भवः अण्] नित्य, सनातन, चिरस्थायी शाश्वतीः समाः रामः (=उत्तर० २।५) 'अविच्छिन्न वर्षों के लिए,' 'सदा के लिए' 'समस्त आगामी समय के लिए' उत्तर० ५।२७, रघु० १४।१४, —तः 1. शिव 2. व्यास 3. सूर्य, तम् (अव्य०) नित्य, निरन्तर, सदा के लिए ।

शाश्वतिक (वि०) (स्त्री०—की) [शाश्वत+ठक्] नित्य, स्थायी, सनातन, सतत—शाश्वतिकी विरोधः "नैसर्गिक विरोध" ।

शाश्वती [शाश्वत+ङीप्] पृथ्वी ।

शाष्कुल (वि०) (स्त्री०—ली) [शष्कुल+अण्] मांस (या मत्स्य) भक्षी ।

शाष्कुलिकम् [शाष्कुली+ठक्] पूरियों का ढेर ।

शास् (अदा० परं० शास्ति, शिष्ट) 1. अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, प्रशिक्षित (इस अर्थ में धातु द्विकर्मक है) माणवकं धर्मं शास्ति—सिद्धा०, भट्टि० ६।१०, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् भग०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२।७ 2. राज्य करना, शासन करना, --अनन्यशासना-मुर्वीं शशांसैकपुरोगिरव--रघु० १।३०, १०।१, १४।८५, १९।५७, शि० १।१४, भट्टि० ३।५३ 3. आज्ञा देना, समादिष्ट करना, निदेश देना, हुक्म देना -रघु० १२।३४, कु० ६।२४, भट्टि० ९।९८ 4. कहना, सम्वाद देना, सूचित करना, (संप्र० के साथ) --तस्मिन्नायोधन वृत्तं लक्ष्मणायाविषन्नहृत्--भट्टि० ६।२७, मनु० ११।८२ 5. उपदेश देना—स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम् कि० १।५ 6. आदेश देना, राजाज्ञा लागू करना 7. दण्ड देना, सजा देना, निर्दोष बनाना, मनु० ४।१७५, ८।२९ 8. साधना, वशीभूत करना, महावी० ६।२०, अनु० , 1. (क) उपदेश देना, प्रेरित करना--कुं० ५।५, (ख) अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, आज्ञा देना, आदेश करना -रघु० ६।५९, १३।७५, भट्टि० २०।१७ 2. राज्य करना, शासन करना 3. सजा देना, दण्ड देना - वेणी० २ 4. प्रशंसा करना, स्तुति करना, आ—, (बहुधा आ०) 1. आशीर्वाद देना, आशीर्वाद उच्चारण करना, ऋक्छन्दसा आशास्ते - शा० ४, उत्तर० १ 2. आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना (इस अर्थ में पर०) भट्टि० ६।४ 3. इच्छा करना, खोजना, आशा करना, प्रत्याशा करना—सर्वस्मिन्नयमाशास्महे शा० ७, आशासतं ततः शान्तिमस्तु-रग्नीनहावयत् —भट्टि० १७।१, ५।१६, मनु० ३।८० 4. प्रशंसा करना, प्र , 1. अध्यापन करना, शिक्षण देना, उपदेश करना, भट्टि० १९।१९ 2. आदेश देना, समादिष्ट करना—प्रशास्ति यन्मया कार्यम् -- मार्कण्डेय० 3. राज्य करना, शासन करना, प्रभु बनना—द्यां प्रशास्ति गलितावधिकालम् नै० ५।२४, रघु० ६।७६, ९।१ 4. दण्ड देना, सजा देना 5. प्रार्थना करना, याचना करना, तलाश करना, (आ०)—इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे उत्तर० १।१ (आपूर्वक शास् के अर्थ में प्रयुक्त)।

शासनम् [शास्+ल्युट्] 1. शिक्षण, अध्यापन, अनुशासन 2. राज्य, प्रभुत्व, सरकार अनन्यशासना-मुर्वीम्—रघु० १।३०, इसी प्रकार 'अप्रतिशासनम्' 3. आज्ञा, आदेश, निदेश --तदभिरधि देवस्य शासनं प्रमाणीकृतम्-- शा० ६, रघु० ३।६९, १४।८३, १८।१८ 4. राजविज्ञप्ति, अधिनियम, राजाज्ञा 5. विधि, नियम 6. अग्रहार, राजा द्वारा दान की हुई भूमि, अधिकार-पत्र, अहं त्वां शासनशतेन योजयिष्यामि --पंच० १, याज्ञ० २।२४०, २९ 7. पट्टा, दस्तावेज, लिखित समझौता 8. आदेशों का नियन्त्रण (समास के अन्त में प्रयुक्त 'शासन' का अर्थ है, दण्ड देने वाला, विनाशक, जो मारक या स्मरशासनः, पाकशासनः)। सम०—**पत्रम्** 1. वह ताम्रपत्र जिस पर भूदान की राजाज्ञा खोदी गई हो 2. वह कागज जिस पर कोई राजाज्ञा अंकित हो, **हारिन्** (पुं०) राजदूत, संदेशवाहक - रघु० ३।६८।

शासित (भू० क० कृ०) [शास्+क्त] 1. राज्य किया गया, शासन किया गया 2. दण्डित।

शासितृ (पुं०) [शास्+तृच्] 1. राज्य करने वाला, शासक 2. दण्ड देने वाला -शा० १।२५।

शास्तृ (पुं०) [शास्+तृच्, इडभावः] 1. अध्यापक, शिक्षक 2. शासक, राजा, प्रभु 3. पिता 4. बुद्ध या जैन धर्म का गुरु, आचार्य।

शास्त्रम् [शिष्यतेऽनेन-शास्+ष्ट्रन्] 1. आज्ञा, समादेश, नियम, विधि 2. वेदविधि, धर्मशास्त्र की आज्ञा 3. धार्मिक ग्रन्थ, वेद, धर्मशास्त्र, दे० नी० समस्तपद 4. विज्ञानभाग, विज्ञान इति गुह्यतमं शास्त्रम् - भग० १५।२०, शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिः—रघु० १।१९; प्रायः समास के अन्त में विषयद्योतक शब्द के पश्चात्, या उस विषय पर समष्टि-अध्ययन का संचित भण्डार वेदान्त शास्त्र, न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, अलंकार शास्त्र आदि 5. पुस्तक, ग्रन्थ तत्कैः पंचभिरेतच्चकार सुमनोहरं शास्त्रम्—पंच० १ 6. सिद्धान्त (विप० प्रयोग या अभ्यास)—मालवि० १। सम०—**अतिक्रमः, अतिलङ्घनम्** वैदिक विधियों का उल्लंघन, धार्मिक प्रामाणिकता की अवहेलना,—**अनुष्ठानम्** वेदविधि का पालन या तदनुरूपता, **अभिज्ञ** (वि०) शास्त्रों में निष्णात, **अर्थः** 1. वेदविधि का अर्थ 2. वैदिक विधि या शास्त्रीय वक्तव्य,—**आचरणम्** वेदविधि का पालन, --**उक्त** (वि०) शास्त्रविधि से विहित, शास्त्रों की आज्ञा, वैध, कानूनी, **कारः**--**कृत्** (पुं०) 1. किसी धर्मशास्त्र का रचयिता 2. ग्रन्थ प्रणेता,—**कोविद** (वि०) शास्त्रों में निष्णात,—**गन्धः** दियासलाई पाटक, हलका अध्ययन करने वाला विद्यार्थी, पहलवानही, **चक्षुस्** (नपुं०) व्याकरण (शास्त्रों को समझने के लिए 'आँख'), **ज्ञ, विद्** (वि०) शास्त्रों का जानकार, **ज्ञानम्** धर्मशास्त्र का ज्ञान, वेद की जानकारी,—**तत्त्वम्** शास्त्रों में वर्णित सचाई, वैदिक तत्त्व, **दर्शिन्** (वि०) धर्मशास्त्रों का ज्ञाता,—**दृष्ट** (वि०) धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त,—**दृष्टिः** (स्त्री०) शास्त्रीय दृष्टिकोण, **धीनिः** शास्त्रों का स्रोत या उद्गमस्थान,—**विधानम्**,-- **विधिः** शास्त्रीय विधि, वेदाज्ञा, --**विप्रतिषेधः, --विरोधः** 1. शास्त्रीय विधियों का पारस्परिक विरोध, विधि-विधान की असंगति 2. वेद विधि के विरुद्ध आचरण, **विमुख** (वि०) अध्ययन से पराङ्मुख -पंच० १, **विरुद्ध** (वि०) शास्त्रों के विपरीत, अवैध, गैरकानूनी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) धर्मशास्त्रों का अन्तरंग ज्ञान, शास्त्रों में प्रवीणता, **शिल्पिन्** (पुं०) काश्मीरदेश, **—सिद्ध** (वि०) धर्मशास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित।

शास्त्रिन् (वि०) (स्त्री०—**णी**) [शास्त्र + इनि] शास्त्रों में अभिज्ञ, कुशल (पुं०) शास्त्रों में पारंगत, विद्वान् पुरुष, महान् पंडित।

शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रेण विहितः छ] 1. वेदविहित, शास्त्रानुमोदित 2. वैज्ञानिक।

शास्य (वि०) [शास्+ण्यत्] 1. सिखलाये जाने योग्य, उपदेश दिये जाने योग्य 2. विनियमित या शासित किये जाने के योग्य 3. दण्डनीय, दण्डार्ह।

शि (स्वा० उभ० शिनोति, शिनुते) 1. तेज करना, पैनाना 2. क्रूर करना, पतला करना 3. उत्तेजित करना 4. सावधान होना 5. तीक्ष्ण होना।

शिः [शि + क्विप्] 1. साङ्गलिकता, स्वरसाम्यता 2. स्वस्थता, सौम्यता, शान्ति, अमन-चैन 3. शिव का विशेषण।

शिंशपा [शिवं पाति–शिव + पा + क, पृषो० साधुः] 1. शीशम का पेड़ 2. अशोक वृक्ष।

शिक्कु (वि०) [सिच् – कु, पृषो०] सुस्त, आलसी, अकर्मण्य।

शिक्थम् [सिच् – थक्, पृषो०] मोम, तु० सिक्थ।

शिक्यम्, शिक्या [सिच् + यत्, कुगागमः, शि आदेशः –शिक्य + टाप्] 1. (रस्सों से बुना हुआ) छींका, झोला 2. बहंगी पर लटका कर ले जाये जाने वाला बोझ।

शिक्षित (वि०) [शिक्ष + णिच् + क्त] छींके में लटकाया हुआ।

शिक्ष् (भ्वा० आ० शिक्षते शिक्षित) सीखना, अध्ययन करना, ज्ञानार्जन करना अशिक्षितास्त्र पितुरेव मन्त्रवत् —रघु० ३।३१।

शिक्षकः (स्त्री० **शिक्षकरः, शिक्षिका**) [शिक्ष् + णिच् + ण्वुल्] 1. सीखने वाला 2. अध्यापक, सिखाने वाला,—यस्योभयं (अर्थात् क्रिया और संक्रान्ति) सासु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६।

शिक्षणम् [शिक्ष् + ल्युट्] 1. सीखना, अधिगम, ज्ञानार्जन 2. अध्यापन, सिखाना।

शिक्षमाणः [शिक्ष् + शानच्] शिष्य, विद्यार्थी, विद्याभ्यासी।

शिक्षा [शिक्ष् भाव अ + टाप्] 1. अधिगम, अध्ययन, ज्ञानाभिग्रहण —रघु० १।६३ 2. किसी कार्य को करने के योग्य होने की इच्छा, निष्णात होने की इच्छा 3. अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण—काव्यशिक्षयाभ्यासः काव्य० १, अभ्युच्च नम्रः प्रणिपातशिक्षया —रघु० ३।२५, मालवि० ४।९, रथशिक्षा 'युद्ध-विज्ञान' 4. छः वेदांगों में से एक जिसके द्वारा शब्दों का सही उच्चारण तथा सन्धि के नियम सिखाये जाते हैं 5. विनय, विनम्रता। **समः करः** 1. अध्यापक, शिक्षक 2. व्यास, **नरः** इन्द्र का विशेषण, **शक्तिः** (स्त्री०) कुशलता।

शिक्षित (भू० क० कृ०) [शिक्ष् + क्त, शिक्षा जातास्य –तारे० इतच्] 1. अधिगत, अर्जित 2. अध्यापित, सिखाया गया—अशिक्षितपटुत्वम् श० ५।२१ 3. प्रशिक्षित, अनुशासित 4. सभ्यता हुआ, विनयशील 5. कुशल, चतुर 6. विनीत, लज्जाशील। **समः—अक्षरः** शिष्य, **आयुध** (वि०) हथियारों के संचालन में अभिज्ञ।

शिखण्डः [शिखामर्हति–अम् + इ, शक० पररूपम्] 1. मुंडन संस्कार के अवसर पर रखी गई शिखा, चोटी, या दोनों पार्श्व में छोड़े गये बाल, काकपक्ष 2. मोर की पूँछ।

शिखण्डकः [शिखण्ड इव + कन्] 1. चूडाकर्म संस्कार के अवसर पर सिर पर रक्खी गई चोटी 2. सिर के पार्श्वभागों में छोड़े गये बाल (क्षत्रियों के लिए यह चोटी तीन या पाँच होती है) उत्तर० ४।१९, 3. कलंगी, बालों का गुच्छा, चूडा या शेखर 4. मयूर पुच्छ।

शिखण्डिकः [शिखण्डिन् + कै + कः] मुर्गा।

शिखण्डिका दे० शिखण्ड (1)।

शिखण्डिन् (वि०) [शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि] कलगीदार, शिखाधारी। (पुं०) 1. मोर—नदति स एष बर्हिणः शिखण्डी—उत्तर० ३।१८, रघु० १।३९, कु० १।१५ 2. मुर्गा 3. बाण 4. मोर की पूँछ 5. एक प्रकार की चमेली 6. विष्णु 7. द्रुपद के एक पुत्र का नाम (शिखण्डी मूलरूप से स्त्री था, क्योंकि अंबा ने भीष्म से बदला चुकाने के लिए द्रुपद के घर जन्म लिया (दे० अंबा)। परन्तु जन्म से ही उस कन्या की पुत्ररूप में घोषणा की गई और पुत्र की भांति ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई। समय पाकर उसका विवाह हिरण्यवर्मा की पुत्री से हुआ, परन्तु जब हिरण्यवर्मा को ज्ञात हुआ कि मेरा जामाता तो वस्तुतः स्त्री है तो उसे बड़ा दुःख हुआ, इसलिए उसने इस धोखा दिये जाने के कारण द्रुपद की राजधानी पर चढ़ाई करने की सोची। परन्तु शिखंडी ने एक जंगल में रह कर घोर तपस्या की, और किसी उपाय से उसने अपना स्त्रीत्व यक्ष को देकर उसका पुरुषत्व बदले में प्राप्त किया और इस प्रकार द्रुपद के ऊपर आए हुए संकट को टाला। बाद में महा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारत के युद्ध में भीष्म पितामह को मारने का एक साधन बना। जब अर्जुन ने शिखंडी को अपने योद्धा के रूप में आगे कर दिया तो भीष्म पितामह ने स्त्री के साथ युद्ध करने से हाथ खींच लिया। बाद में अश्वत्थामा ने शिखंडी को मार डाला।

शिखण्डिनी [शिखण्डिन्+ङीप्] 1. मोरनी 2. एक प्रकार की चमेली 2. द्रुपद की पुत्री दे० ऊ० 'शिखंडिन्'।

शिखरः, -रम् [शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः] 1. चोटी, पहाड़ का सिरा या शृंग—जगाम गौरी शिखरं शिखण्डिमत् कु० ५।७, १।४, मेघ० १८ 2. वृक्ष का सिर या चोटी 3. कलगी, चूड़ा 4. तलवार की नोक या धार 5. चोटी, शृंग, शीर्षबिन्दु 6. काख, बगल 7. बालों का कड़ा होना 8. अरबी चमेली की कली 9. एक लाल की भांति मणि। सम०—वासिनी दुर्गा का विशेषण।

शिखरिणी [शिखरिन्+ङीप्] 1. नारीरत्न 2. चीनी मिश्रित दही जिसमें मसाले पड़े हों, श्रीखंड 3. रोमावली जो वक्षःस्थल से चलकर नाभि की पार कर जाती है 4. एक छन्द का नाम—दे० परि० १।

शिखरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शिखरमस्त्यस्य इनि] 1. चोटी वाला, शिखाधारी 2. नुकीला, शिखरयुक्त—शिखरिदशना मेघ० ८२, (पुं०) 1. पहाड़—इतश्च शरणार्थिनां शिखरिणां गणाः शेरते—भर्तृ० २।७६, मेघ० १३, रघु० ९।१२, २२ 2. पहाड़ी दुर्ग 3. वृक्ष 4. टिटिहरी 5. अपामार्ग का पौधा।

शिखा [शि+खक् तस्य नेत्वम्, पृषो०] 1. सिर की चोटी पर बालों का गुच्छा मुद्रा० ३।३०, शि० ४।५०, मा० १०।६ 2. चोटी, शिखाग्रन्थि 3. चूड़ा, कलगी 4. चोटी, शिखर, शीर्षबिन्दु—कि० ६।१७ 5. तेज सिरा, धार, नोक या सिरा—शृं० १।४, भामि० १।२ 6. वस्त्र का छोर, शृं० १।१४ 7. अग्नि ज्वाला प्रभामहत्या शिखयेव दीपः कु० १।२८, रघु० १७।३४ 8. प्रकाश की किरण कु० २।३८ 9. मोर की कलगी 10 जटायुक्त जड़ 11. शाखा (विशेष रूप से जड़ पकड़ती हुई) 12. प्रधान या मुखिया 13. कामज्वर। सम० तरुः दीपाधार, दीवट,—धरः मोर, °अम् मोर का पंख, -धारः मोर, -मणिः चूड़ामणि, मुकुट 1. गाजर 2. मूली,—धरः कटहल का पेड़,—वत् (वि०) नुकीला कलगीदार, (-क्तः) मोर, वृक्षः दीपाधार, दीवट, —वृद्धिः (स्त्री०) प्रतिदिन बढ़ने वाला ब्याज।

शिखालुः [शिखा+आलुच्] मोर की कलगी।

शिखावत् (वि०) [शिखा+मतुप्] 1. कलगीदार 2. ज्वालामय, (पुं०) 1. दीपक 2. आग।

शिखिन् (वि०) [शिखा अस्त्यस्य इनि] 1. नुकीला 2. कलगीदार, शिखाधारी 3. घमंडी (पुं०) 1. मोर—पंच० १।१५९, विक्रम० २।२३, शि० ४।५० 2. अग्नि रिपुरित्र सलीसंवासलोऽयं शिखीव हिमानिलः गीत० ७, पंच० ४।११०, रघु० १९।५४, शि० १५।७ 3. मुर्गा 4. बाण 5. वृक्ष 6. दीपक 7. सांड़ 8. घोड़ा 9. पहाड़ 10. ब्राह्मण 11. साधु 12. केतु 13. तीन की संख्या 14. चित्रक वृक्ष। सम० -कण्ठम् -ग्रीवम् तूतिया, नीला थोथा -ध्वजः 2. कार्तिकेय का विशेषण 2. धूआं -पिच्छम् —पुच्छम् मोर की पूंछ, दुम,—यूपः बारहसिंगा, -वर्धकः गोल लौकी,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण —शिखा 1. ज्वाला 2. मोर की कलगी।

शिग्रुः [शि+रुक् गुक् च] 1. सागवाली 2. सहिजन का पेड़।

शिङ्ख् (म्वा० पर० शिङ्खति) जाना, हिलना-डुलना।

शिङ्ख् (म्वा० पर०) सूंघना।

शिङ्खणकः [शिङ्ख्+आणक, पृषो० कलोपः] 1. पपड़ी, झाग 2. बलगम, कफ,—णम् 1. नाक की मैल, सिंघक 2. लोहे का जंग 3. शीशे का बर्तन।

शिङ्खाणकः, कम् [शिङ्ख्+अणक] नासिकामल, सिंघक, कः कफ, बलगम।

शिञ्ज् (म्वा० अदा० आ०, चुरा० उभ०—शिञ्जते, शिञ्जते, शिञ्जयति ते, शिञ्जित) टनटनाना, झनझनाना, खड़खड़ाना—शि० १०।६२।

शिञ्जः [शिञ्ज्+घञ्] टंकार, झनझनाहट, टनटन या झनझन की ध्वनि, विशेषकर आभूषण आदि गहनों की झंकार।

शिञ्जक्षिका (स्त्री०) कटिबंध, करधनी।

शिञ्जा [शिञ्ज्+अ+टाप्] 1. टंकार, झंकार आदि 2. धनुष की डोरी।

शिञ्जित (भू० क० कृ०) [शिञ्ज्+क्त] टंकृत, झंकृत तम् टंकार, (झांझर आदि गहनों की) झंकार, -कूजितं राजहंसानां नेदं नूपुरशिञ्जितम्—विक्रम० ४।१४।

शिञ्जिनी [शिञ्ज्+णिनि+ङीप्] 1. धनुष की डोरी 2. झांझर नूपुर (पैरों में पहना जाने वाला गहना)।

शिट् (म्वा० पर० शेटति) तुच्छ समझना, घृणा करना, तिरस्कार करना।

शितः (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1. तेज किया हुआ, पैनाया हुआ 2. पतला, कृश 3. छोजा हुआ- क्षीण दुर्बल, बलहीन। सम० अग्रः कांटा, -धारा (वि०) तेज धार वाला, शूकः 1. जौ 2. गेहूँ।

शितद्रुः (स्त्री०) सतलुज नाम की नदी दे० 'सतद्रु'।

शितिः (वि०) [शि+क्तिच्] 1. श्वेत 2. काला—शि० १५।४८—तिः भूर्जवृक्ष। सम०—कक्षः 1. शिव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का विशेषण—तस्यात्मा शितिकण्ठस्य सेनापत्यमुपेत्य वः -कु० २।६१, ६।८१ 2. मोर—अवनतशितिकण्ठ कण्ठलक्ष्मीमिह दधति स्फुरितारुणेणुजालाः—शि० ४।५६ 3. जलकुक्कुट,—छदः,—पक्षः हंस,—रत्नम् नीलम,—वाहस् (पुं०) बलराम का विशेषण -विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम् - शि० १।६ ।

शिथिल (वि०) [श्लथ्+किलच्, पृषो०] 1. ढीला, धीमा, सुस्त, विश्रान्त 2. बिनबंधा, खुला हुआ शा० २।६ 3. वियुक्त, डाल से टूटा हुआ—शा० २।८, 4. निढाल, निश्शक्त, असमर्थ 5. दुर्बल, कमजोर--अशिथिलपरिरम्भ --उत्तर० १।३४, २७, गाढ या दृढ़ालिंगन 6. पिलपिला, ढीलाढाला 7. घुला हुआ 8. मुर्झाया हुआ 9. निष्क्रिय, निरर्थक, व्यर्थ 10. असावधान 11. ढीलेढाले ढंग से किया हुआ, पूरी पाबन्दी के साथ जिसको सम्पन्न न किया गया हो 12. फेंका हुआ, परित्यक्त, क्त्म् 1. ढीलापन, शिथिलता 2. सुस्ती (**शिथिली कृ** 1. ढीला करना, खोलना, खुला छोड़ना, 2. छूट देना, ढील डालना 3. दुर्बल करना, निर्बल करना, कमजोर बनाना 4. छोड़ देना, परित्यक्त करना रघु० २।४१. **शिथिली भू** 1. ढीला होना, सुस्त होना 2. गिर पड़ना—मृच्छ० ११३) ।

शिथिलयति (ना० धा० पर०) 1. विश्राम करना, धीमा करना, ढीला करना 2. छोड़ देना, परित्याग करना वेणी० ५।६ 3. कम करना, शान्त होने देना —विक्रम० २ ।

शिथिलित (वि०) [शिथिल+इतच्] 1. ढीला किया हुआ 2. विश्रान्त, खोला हुआ 3. घुला हुआ, प्रविलीन ।

शिनिः [शी+निः हस्वश्च] यादवों के पक्ष का एक योद्धा (**शिनेर्नप्तृ** (पुं०) सात्यकि) ।

शिपिः [शी+क्विप्, शी+पा+क, पृषो० ह्रस्वः इत्वं च] प्रकाश की एक किरण--(स्त्री०) त्वचा, चमड़ा (नपुं०) जल शैत्यान्छथनयोगाच्च शिपिदारि प्रचक्षते—व्यास । सम०--विष्ट (वि०) (शिपविष्ट, तथा शिविविष्ट भी लिखा जाता है) 1. किरणों से व्याप्त 2. गंजा, गंजेसिर वाला 3. कोढ़ी (ष्टः) 1. विष्णु 2. शिव 3. गंजी खोपड़ी वाला 4. शिश्नाग्रच्छदविहीन 5. कोढ़ी ।

शिप्रः [शि+रक्, पुक्] हिमालय पर्वत पर स्थित एक सरोवर ।

शिप्रा [शिप्र+टाप्] शिप्र सरोवर से निकली एक नदी का नाम जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है—शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः —मेघ० ३१ ।

शिफः दे० 'शिफा' ।

शिफा (स्त्री०) 1. रेशेदार जड़ 2. कमल की जड़ 3. जड़ 4. कोढ़ की मार 5. मां 6. एक नदी । सम०--**धरः** शाला,—**वृक्षः** वटवृक्ष ।

शिफाकः [शिफा+कन्] कमल की जड़ ।

शिबिः (वि) [शि+बि] 1. शिकारी जानवर 2. भूर्जवृक्ष 3. एक देश का नाम (कहते हैं कि कबूतरी के रूप में इसने बाज रूपधारी इन्द्र से अग्नि की रक्षा की थी, और तोल में कबूतर के बराबर अपना मांस इन्द्र के सामने प्रस्तुत किया था) तु० मुद्रा० ६।१७ ।

शिबि (वि) का [शिवं करोति शिव+णिच्+क्विप्] 1. पालकी, डोली 2. अरथी ।

शिबिर (वि) रम् [शेरते राजबलानि अत्र—शी+किरच्, बुकागमः, ह्रस्वः] 1. तंबू—घृष्टद्युम्नः स्वशिबिरमयं याति सर्वं सहध्वम्—वेणी० ३।१८, शि० ५।६८ 2. राजकीय तंबू, या सेना की रक्षा के लिए अकाट्य निवेश 4. एक प्रकार का अन्न ।

शिबिः (वि) रथः [शिबेः भूर्जवृक्षस्य ईः शोभा यत्र तादृशो रथः] पालकी, डोली ।

शिम्बः [शम्+इम्बच्, पृषो०] फली, छीमी, सेम ।

शिम्बिका [शिम्बा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. फली, सेम 2. एक प्रकार के काले उड़द (कुछ के अनुसार पुं० भी) ।

शिम्बी (स्त्री०) 1. फली, सेम 2. एक प्रकार का पौधा ।

शिरम् [शृ+क] 1. सिर 2. पिप्परामूल (इन अर्थों में कुछ के अनुसार पुं० भी),—रः 1. शय्या 2. अजगर । सम०—**ज** बाल ।

शिरस् (नपुं०) [शृ+असुन्, निपातः] 1. सिर - शिरसा श्लाघते पूर्वं (गुणं) परं (दोषं) कण्ठे नियच्छति —सुभा० 2. खोपड़ी 3. शृङ्ग, चोटी, शिखर (पहाड़ आदि का)—हिमगौरैरचलाधिपः शिरोभिः किरा० ५। ११, शि० ४।५४ 4. वृक्ष की चोटी 5. किसी चीज का सिर या शिरोबिन्दु—शिरसि मक्षीपटलं वधाति दीपः - भामि० १।७४ 6. कंगूरा, कलश, उच्चतम बिन्दु 7. अग्रभाग, अगला भाग, सेना का अगला भाग —शा० ७।२६, उत्तर० ३।५ 8. मुख्य, प्रधान, मुखिया (बहुधा समास के अन्त में) (सघोष व्यंजनों के पूर्व 'शिरस्' बदल कर समास में 'शिरो' हो जाता है) । सम०--**अस्थि** (**शिरोऽस्थि**) खोपड़ी,—**कपालिन्** (पुं०) मनुष्य-खोपड़ी रखने वाला संन्यासी, --**गृहम्** सबसे ऊपर का घर, चन्द्रशाला, अट्टालिका, --**ग्रहः** सिर पीड़ा, सिर दर्द, **छेदः** **छेदनम्** (**शिरश्छेदः** आदि) सिर काट देना, सिर कलम कर देना,—**तापिन्** (पुं०) हाथी,—**त्रम्** त्राणम् 1. लोहे की टोप व्युत्पत्तिः शिरस्त्रैरुपचक्रोत्तरेव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—रघु० ७।४९, ६६, अपनीतशिरस्त्राणाः–४।६४ 2. सिर की टोपी, पगड़ी,–धरा,–धिः शीशा, गरदन, शि० ४।५२, ५।६५,–पीड़ा सिर दर्द - फलः नारियल का पेड़, - भूषणम् सिर पर पहनने का आभूषण —मणि 1. मस्तक पर धारण करने का रत्न 2. चूड़ामणि 3. विद्वान् पुरुषों के लिए सम्मानसूचक उपाधि, —मर्मन् (पुं०) सूअर,—मालिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रत्नम् शिरोमणि,—वज्रा सिरदर्द, रुह् (पुं०) - रुहः (शिरसिरुह्-रुहः भी) सिर के बाल —ऋतु० १।४, कु० ५।९, रघु० १५।१६,—वर्तिन् (वि०) मुखिया (पुं०) मुख्य, प्रधान के रूप में रहने वाला, वस्त्रम् सिरबंद, वेष्टः,—वेष्टनम् सिर पर पहनने का वस्त्र, पगड़ी, शूलम् सिरदर्द,- हारिन् (पुं०) शिव का विशेषण ।

शिरसिजः [शिरसि जन्+ड सप्तम्या अलुक्] सिर के बाल,—शि० ७।६२ ।

शिरस्कम् [शिरस्+कन्] 1. लोहे का टोप 2. पगड़ी, टोपी ।

शिरस्का [शिरस्क+टाप्] पालकी ।

शिरस्तस् (अव्य०) [शिरस्+तस्] सिर से कु० ३।४९, भर्तृ० २।१० ।

शिरस्य (वि०) [शिरसि भवः यत्] सिर संबंधी या सिर पर स्थित,—स्यः स्वच्छ केश ।

शिरा (शॄ+क+टाप्) नलिका के आकार की शरीर की वाहिका, नाड़ी, खून की नाड़ी, रक्तवाहिनी नाड़ी । सम०—पत्रः कपित्थ, कैथफूल,—वृत्तम् सीसा ।

शिराल (वि०) [शिरा+लच्] स्नायुवाला, शिरायुक्त, शिराबहुल ।

शिरिः [शॄ+कि] 1. तलवार 2. वध करने वाला, कतल करने वाला 3. बाण 4. टिड्डी ।

शिरीषः [शॄ+ईषन्, किच्च] सिरस का पेड़,—षम् सिरस का फूल (यह सुकुमारता का नमूना समझा जाता है) –शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्या बाहू तदीयाविति मे विनर्कः —कु० १।४१, ५।४, रघु० १६।४८, मेघ० ६५ ।

शिल् (तुदा० पर० शिलति) शिलोंछन, सिला चुगना, बालें इकट्ठा करना ।

शिल,-म् [शिल्+क] शिलोंछन, बालें चुनना,—दे० मनु० १०।११२ पर कुल्लू० । सम०—उञ्छः 1. शिलावृत्ति 2. अनियमित वृत्ति ।

शिला [शिल+टाप्] 1. पत्थर चट्टान 2. चक्की 3. चौखट की नीचे की लकड़ी 4. खंभे की चोटी 5. कंडारा, रक्तवाहिका 6. मनः शिला, मैनसिल 7. कपूर । सम० - अष्टकः 1. छिद्र 2. बाड़, बाड़ा 3. चौबारा, अटारी,—आत्मजम् लोहा,–आत्मिका कुठाली, घरिया, —आरम्भा काष्ठकदली, जंगली केला, आसनम् 1. पत्थर का आसन, चौकी आदि 2. शैलेय गन्धद्रव्य, गुग्गुल,—आह्वम् शिलाजतु, - उच्चयः पहाड़, विशाल चट्टान—रघु० २।३४,– - उत्थम् शैलेयगन्धद्रव्य, गुग्गुल, उद्भवम् 1. शैलेयगन्धद्रव्य 2. बढ़िया किस्म की चन्दन की लकड़ी, - ओकस् (पुं०) गरुड़ का विशेषण —कुट्टकः पत्थर तोड़ने की छेनी, टाँकी,—कुसुमम्, पुष्पम्, शैलेय गन्धद्रव्य, - ज (वि०) शिलाजीत, खनिजद्रव्य (—जम्) 1. शिलाजीत 2. शैलेयगन्धद्रव्य 3. पेट्रोल 4. लोहा 5. कोई भी शिलीभूत पदार्थ, - जतु (नपुं०) 1. शिलाजीत 2. गेरु, - जित् (स्त्री०), —द्रुः शिलाजीत, - धातुः 1. खड़िया मिट्टी 2. गेरु 3. सफेद शिलीभूत पदार्थ,– पट्टः, पत्थर की शिला जिस पर बैठा जाय, शिलासन,—पुत्रः,–पुत्रकः मसाला पीसने की छोटी शिला, सिल, प्रतिकृतिः (स्त्री०) प्रस्तर मूर्ति, फलकम् पत्थर की सिल, भवम् शैलेयगन्धद्रव्य,—भेदः संगतराश की छेनी, टाँकी,–रसः 1. शैलेयगन्धद्रव्य 2. धूप, वल्कलम् एक प्रकार की काई जो पत्थर पर जम जाती है, वृष्टिः (स्त्री०) 1. पत्थरों की वर्षा 1. ओलों की बारिश, —वेश्मन् (नपुं०) गुफा, पत्थर की दरार, व्याधिः शिलाजीत ।

शिलिः [शिल्+कि] भूर्जवृक्ष (स्त्री०) चौखट की नीचे की लकड़ी ।

शिलिन्ध्रः [शिल+दा+क, पृषो० मुम्] एक प्रकार की मछली ।

शिली [शिलि+ङीष्] 1. दरवाजे की चौखट की नीचे की लकड़ी 2. एक प्रकार का भूकीट, केंचुआ 3. खंभे की चोटी 4. भाला 5. बाण 6. गण्डूपद 7. मेंढकी । सम० मुखः भौंरा -मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृत स्मरतूणविलासे–गीत० १, रघु० ४।५७ 2. बाण–सा कुसुमधटितशिलीमुखमनोहरान्मदनचापाद्वि प्रमदवनात् वर्त्यस्ति—का० २२५, या, मृगपक्षिका शमुदयदृगमिते शलिनः शिलीमुखगणोऽलभत भि० ९।४१, (दोनों संदर्भों में शब्द (1.) तथा (2.) अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) 3. भ्रमर ।

शिलीन्ध्रः [शिली धरति–धृ+क पृषो० मुम्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक वृक्ष,– ध्रम् 1. कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, जैसा कि 'उच्छिलीन्ध्र' में 2. केले के वृक्ष का फूल–अधिपुरन्ध्रि शिलीन्ध्रमुगन्धिभिः—शि० ६।३२, या, अलिनारमतालिनो शिलीन्ध्रे—७२ 3. ओला ।

शिलीन्ध्रकम् [शिलीन्ध्र+कन्] कुकुरमुत्ता, खुंब, साँप की छतरी ।

शिलीन्ध्री [शिलीन्ध्र+ङीष्] 1. मृत्तिका, मिट्टी 2. केंचुआ ।

शिल्पम् [शिल्+पक्] 1. कला, ललितकला, यान्त्रिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कला, (इस प्रकार की कलाएँ साँसठ गिनाई गई हैं) 2. (किसी भी कला में) कुशलता, कारीगरी —मालवि० १।६, मृच्छ० ३।१५ 3. विदग्धता, पटुता 4. कार्य, शारीरिक श्रम या कार्य 5. कृत्य, अनुष्ठान 6. यज्ञीय चमचा, स्रुवा। सम०—कर्मन् (नपुं०)—क्रिया कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी, —कारः,—कारकः,—कारिन् दस्तकार, कारीगर, —शालम्,—शाला कारखाना, निर्माणी, शिल्पविद्यालय, शिल्पगृह, शास्त्रम् 1. कला विषय पर (चाहे ललित हो या यान्त्रिक) लिखा गया ग्रंथ 2. शिल्पविज्ञान।

शिल्पिन् (वि०) [शिल्प+इनि] 1. ललित या यांत्रिक-कला संबंधी 2. यांत्रिक, यंत्रवत् (पुं०) 1. दस्तकार, कलाकार, कारीगर 2. जो किसी भी कला में प्रवीण हो।

शिव (वि०) [श्यति पापम्—शो+वन्, पृषो०] 1. शुभ, मांगलिक, सौभाग्यशाली—इयं शिवाया नियतेरिवाकृतिः —कि० ४।२१, १।३८, रघु० ११।३३ 2. स्वस्थ, प्रसन्न, समृद्ध, सौभाग्यशाली शिवानि वस्तीर्थजलानि कञ्चित् रघु० ५।८, (—अनुपप्लवानि 'शान्त') शिवास्ते सन्तु पन्थानः 'भगवान् आपकी यात्रा सफल करें',—वः हिन्दुओं के तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति) में से तीसरा देव जिसका कार्य सृष्टि का संहार करना है, जिस प्रकार ब्रह्मा का कार्य उत्पादन तथा विष्णु का सृष्टि-पालन है—एको देवः केशवो वा शिवो वा —भर्तृ० २।११५ 2. पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 3. शुभ ग्रहों का योग 4. वेद 5. मोक्ष 6. पशुओं का बाँधने का खूँटा 7. सुर, देवता 8. पारा 9. गुग्गुल 10. काला धतूरा, वौ (पुं०, द्वि व०) शिव और पार्वती—कि० ५।४०,—वम् 1. समृद्धि, कल्याण, मंगल, आनन्द—तव वर्त्मनि वर्ततां शिवम्—नै० २।६२, रत्न० १।२, रघु० १।६० 2. परमानन्द, मांगलिकता 3. मोक्ष 4. जल 5. समुद्री नमक 6. सेंधा नमक 7. शुद्ध सोहागा। सम०—अक्षम्=रुद्राक्ष, दे०,—आत्मकम् सेंधा नमक,—आदेशकः 1. शुभ समाचार लाने वाला 2. भविष्यवक्ता, आलयः 1. शिव का आवास 2. लाल तुलसी (यम्) 1. शिव मन्दिर 2. श्मशान,—इतर (वि०) अशुभ, दुर्भाग्यपूर्ण—शिवेतर-क्षतये—काव्य० १, कर ('शिवंकर' भी) (वि०) आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद, —कीर्तनः भूंगी का नाम, गति (वि०) समृद्ध, आनन्दित,—धर्मजः मंगलग्रह, तात (वि०) जिसका अन्त कल्याणकारी हो, आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद—प्रयत्नः कृतनोऽयं फलतु शिवतातिश्च भवतु मा० ६।७ 2. मृदु, जो राक्षसी न हो—मा पुतनात्वमुपगाः शिवतातिरेषि —९।४९, (तिः) मांगलिकता, आनन्द, वृक्षम् विष्णु का चक्र,—दारु (नपुं०) देवदारु का पेड़ द्रुमः बेल का पेड़,—द्विष्टा कँटकी का पेड़,—धातुः पारा, पुरम्,—पुरी बनारस, वाराणसी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,—प्रियः 1. स्फटिक 2. बक नाम का पेड़ 3. धतूरा,—वल्लभः अर्जुनवृक्ष,—राजधानी वाराणसी,—रात्रिः (स्त्री०) फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी जब शिव के सम्मान में कठोरव्रत का पालन किया जाता है,—लिङ्गम् शिव जिसकी पिंडी या लिंग के रूप में पूजा होती है,—लोकः शिव का संसार —वल्लभः आम का वृक्ष,(—भा) पार्वती,—वाहनः साँड़, —वीजम् पारा,—शेखरः 1. चाँद 2. धतूरा, —सुन्दरी दुर्गा का विशेषण।

शिवकः [शिव+कन्] 1. वह खूँटा जिसके साथ प्रायः गौ आदि पशु बाँधे जाते हैं 2. वह खंभा जिससे पशु अपना शरीर रगड़ता है, पशुओं के शरीर को खुजलाने के लिए खूँटा।

शिवा [शिव+टाप्] 1. पार्वती 2. गीदड़ी जहाँसि निद्रामशिवैः शिवारुतैः · कि० १।३८, हरेरव द्वारे शिवशिव शिवानां कलकलः—भामि० १।३२, रघु० ७।५०, ११।६१, १२,३९ 3. मोक्ष 4. शमी (जँडी) का वृक्ष 5. आँवला 6. दुर्वाघास, दूब 7. पीला रंग 8. हल्दी, सम० अरातिः कुत्ता,—प्रियः बकरा,—फला शमी (जँडी) का वृक्ष,—रुतम् गीदड़ का रोना—कि० १।३८।

शिवानी [शिव+ङीप्, आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शिवारुतः [शिव+आलुच्] गीदड़।

शिशिर (वि०) [शश्+किरच्—नि] ठंडा, शीतल, सर्द जमा हुआ—कुरु यदुनन्दनचन्दनशिशिरतरेण करेण पयोधरे—गीत० १२, रघु ९।५९, १४।३, १६।४९, —रः,—रम् 1. ओस, तुषार या पाला—पद्मानां शिशिरा-द्भयम्, जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् —मेघ० ८३ 2. जाड़े का मौसम, (माघ और फाल्गुन की) सर्दी—कण्ठेषु स्खलितं गतेऽपि शिशिरे पुंस्कोकिलानां रुतम् श० ६।३ 3. ठंडक, शीतलता। सम० अंशुः,—करः,—किरणः,—रौधितिः,—रश्मिः चन्द्रमा —वृष इव शिशिरांशोः—विक्रम० ५।२१, शिशिरकिरण-कान्तं वासरान्तेऽभिसार्य —शि० ११।२१, शिशिररोधितिना रजन्याः ऋतु० ३।२, अत्ययः, अपगमः, जाड़े का अन्त, वसन्त ऋतु · स्वहस्तलूनः शिशिरात्ययस्य (पुष्पोच्चयः)—कु० ३।६१, उपहितं शिशिरात्यय-गर्भश्रिया · रघु० ९।३१,—कालः, समयः जाड़े की ऋतु,—नः अग्नि का विशेषण।

शिशुः [शो+कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्] 1. बालक, बच्चा, शिशुर्वा शिक्ष्या वा—उत्तर० ४।११ 2. किसी भी जानवर का बच्चा (लड़का, पिल्ला, छौना आदि)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श० १।१४, ७।१४,१८ 3. आठ या सोलह वर्ष से कम आयु का बालक । सम०—क्रन्दः,—क्रन्दनम् बच्चे का रोना,—गन्धा एक प्रकार की मल्लिका, पालः दमघोष का पुत्र तथा चेदि देश का राजा (विष्णुपुराण के अनुसार यह राजा पूर्वजन्म में राक्षसों का राजा पापी हिरण्यकशिपु था जिसे नरसिंह का रूप धारण कर विष्णु ने मार गिराया था । उसके पश्चात् इसने दस सिर वाले रावण के रूप में जन्म लिया, और राम ने इसको मार डाला । फिर इसी ने दमघोष के घर जन्म लिया और विष्णु के अष्टम अवतार कृष्ण भगवान् से और भी अधिक निष्ठुरता के साथ निरन्तर द्वेष करता रहा (दे० शि०१) जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण से मिला तो उसे बुरा भला कहने लगा, कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काट डाला । इसकी मृत्यु ही माघकवि के प्रसिद्धकाव्य का विषय है), °हन्, (पुं०) कृष्ण का विशेषण, मारः सूंस नाम का जलजन्तु,—वाहकः, —वाहनः जंगली बकरा ।

शिशुकः [शिशु+कन्] 1. बालक, बच्चा 2. किसी भी जानवर का बच्चा 3. वृक्ष 4. सूंस ।

शिश्नम्, शिस्नम् [शश्+नक् इत्वम्] पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग—याज्ञ० १।१७, मनु० ११।१०४ ।

शिश्निदेवाक (नि०) [शिश्न+सन्+आनच्, सनो लुक्, द्वित्वम्, रकारस्य दकारः 1. पवित्र आचरण वाला, सद्गुणी, पुण्यात्मा 2. दुष्ट, पापी ।

शिष् i (म्वा० पर०, शेषति) चोट पहुँचाना, मार डालना ।

ii (भ्वा पर०, दुरा० उभ० शेषति, शेषयति—ते) अवशिष्ट छोड़ देना, बचा देना ।

iii (दिवा० पर० शिश्यति, शिष्ट) 1. बाकी छोड़ना, बचा रखना, अवशिष्ट छोड़ना 2. दूसरों से भिन्नता करना—प्रेर० (शेषयति—ते) छोड़ना, अव—, बाकी छोड़ना, पीछे छोड़ना (प्रायः कर्मवा० में) स्तम्बेन नीवार इवावशिष्टः···रघु० ५।१५, कियदवशिष्टं रजन्याः श० ४, निद्रायमसीमन्तः कियदवशिष्टम् —महावी० ६, भग० ७।२, उद्—, बाकी छोड़ना —दे० 'उच्छिष्ट', परि—, अवशिष्ट छोड़ना (प्रेर० भी — भवितां करेणुपरिशेषिता मही—भामि० १।५३, वि—, १. विशिष्ट करना, विशेषता देना, विशेष रूप से कहना, परिभाषा करना 2. भेद करना, विवेचन करना 3. बढ़ाना, ऊँचा करना, वृद्धि करना, गहरा करना पुनरुक्तविवर्तनदाहणो विधिरहो विशिनष्टि मनोरुजम्—भा० ४।४, उत्तर० ४।१५ (कर्मवा०) 1. भिन्न होना ··रघु० १७।६२ 2. अपेक्षाकृत अच्छा या ऊँचे दर्जे का होना, आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, (अपा० के साथ) अपेक्षाकृत बढ़िया और दूसरों से अच्छा होना मनु० २।८३, ३।२०३, (प्रेर०) आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना—मृच्छ० ४।४, मालवि० ३।५ ।

शिष्ट (भू० क०कृ०) [शास्+क्त, शिष्+क्त वा] 1. छोड़ा हुआ, बचा हुआ, अवशिष्ट, बाकी 2. आदिष्ट, समादिष्ट 3. प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट 4. सधाया हुआ, पालतू, वश्य 5. बुद्धिमान्, विद्वान् शि० २।१० 6. सद्गुणसंपन्न, माननीय 7. शिष्ट, नम्र 8. मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य, प्रमुख,—ष्टः प्रमुख या पूज्य व्यक्ति 2. बुद्धिमान् पुरुष 3. परामर्शदाता । सम० आचारः 1. बुद्धिमान् मनुष्यों का आचरण शिष्टाचरण, सच्चरित्र,—सभा विद्वान् या श्रेष्ठ पुरुषों की सभा, राज्यसभा ।

शिष्टिः (स्त्री०) [शास्+क्तिन्] 1. राज्य, शासन 2. आज्ञा, आदेश 3. सजा, दण्ड ।

शिष्यः [शास्+क्यप्] 1. छात्र, चेला, विद्यार्थी, —शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् भग० २।७ 2. क्रोध, आदेश । सम० परम्परा चेलों का अनुक्रम, किसी गुरु—संप्रदाय की परंपरित शिष्यमंडली, —शिष्टिः (स्त्री०) छात्र का शोधन, भर्त्सना ।

शिल्पः, शिल्पकः [शिल्+लक्, नि० सस्य शः] शैलेय गन्धद्रव्य ।

शी (अदा० आ० शेते, शयित, कर्मवा० शय्यते, इच्छा० शिशयिषते) 1. लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, आराम करना, इतश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते—भर्तृ० २।७६ 2. सोना, (बाल० से भी) —कि निःशङ्कं शेषे-शेषे वयसः समागतो मृत्युः । अथवा सुखं शयीथा निकटे जागर्ति जाह्नवी जननी··भामि० ४।३०, भर्तृ० ३।७९, कु० ५।१२, प्रेर० (शाययति —ते) सुलाना, लिटाना, अति—, १. सोने में पहल करना 2. बाद में सोना- अपेक्षाकृत देर तक सोना अहं पतीन्नातिशये महा० 3. श्रेष्ठ होना, आगे बढ़ जाना—पूर्वान्महाभाग तथातिशेषे रघु० ५।१४, चरितेन चातिशयिता मुनयः···कि० ६।३२, भट्टि० ७।४६, (प्रेर०) आगे बढ़ने का कारण बनना—धाम्यातिशाययति धाम सहस्रधाम्नः··मुद्रा० ३।१७, अधि—, (स्थान में कर्म० के साथ) लेटना, सोना, आराम करना··अध्यशयिष्ट गाम् भट्टि० १५।१४, अमुं युगान्तोक्षितयोगनिद्रः संहृत्य लोकान् पुरुषोऽधिशेते रघु० १३।६, १६।४९, १९।३२, कि० १।३८, 2. बसना, रहना,- भट्टि० १०।३५, उप—, सोना, निकट लेटना, सम—, संदेह में होना—संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः—कि० ३।४४, ४२, भामि० २।११५ ।

शी [शी+क्विप्] 1. निद्रा, विश्राम 2. शान्ति ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीक् i (भ्वा० आ० शीकते) 1. तर करना, छिड़कना 2. शनैः शनैः जाना, हिलना-जुलना।
ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० शीकति, शीकयति—ते) 1. क्रोध करना 2. आर्द्र करना, गीला करना।

शीकरः [शीक्+अरन्] 1. वायुप्रेरित छींटें, सूक्ष्मवृष्टि, बौछार, तुषार—कुं० १।१५, २।५२, रघु० ५।४२, ९।६८, किं० ५।१५ 2. जलकण, वृष्टिकण—गतमुपरिघनानां वारिगर्भोदराणां पिशुनयति रयस्ते शीकरक्लिन्ननेमिः—श० ७।७, रघु० १७।६२,—रम् 1. सरलवृक्ष 2. इस वृक्ष का राल।

शीघ्र (वि०) [शिक्षु+रक्, नि०] फुर्तीला, त्वरित, सत्वर—विवधुस्त्रिदशैः मण्डलचारशीघ्रः विक्रम०५।२, -घ्रः (ज्योति० में) ग्रहयोग, -घ्रम् (अव्य०) फुर्ती से, तेजी से, जल्दी से। सम०—उच्चैः (ज्योति० में) ग्रहयोग, **कारिन्** (वि०) फुर्तीला, चुस्त, —**कोपिन्** (वि०) चिड़चिड़ा, क्रोधी, **चेतनः** कुत्ता, **बुद्धि** (वि०) तीक्ष्णबुद्धि वाला, तेज बुद्धिवाला, -**लङ्घन** (वि०) तेजी जाने वाला, पैर फुर्ती से रखने वाला—घटः ८, **वेधिन्** (पुं०) तेज धनुर्धर।

शीघ्रिन् (वि०) [शीघ्र+इनि] सत्वर, फुर्तीला।

शीघ्रिय (वि०) [शीघ्र+घ] चुस्त,—यः 1. विष्णु 2. शिव विल्लियों को लड़ाई।

शघ्रम् [शीघ्र+यत्] चुस्ती, शीघ्रता।

शीत् (अव्य०) आकस्मिक पीड़ा या आनन्द को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनि (विशेषकर आनन्दोद्रेक की वह ध्वनि जो सम्भोग के समय होती है)। सम०—**कारः,-कृत्** (पुं०) उपर्युक्तध्वनि, सिसकारी।

शीत (वि०) [शी+क्त] 1. ठण्डा, शीतल, जमा हुआ, तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्दोः—श० ३।२ 2. मन्द, सुस्त, उदासीन, आलसी 3. अलस, सुस्त, जड़, तः 1. एक प्रकार का नरकुल 2. नील का वृक्ष 3. जाड़े की ऋतु, (नपुं० भी) 4. कपूर, तम् 1. ठण्डक, शीतलता, सर्दी आः शीतं तुहिनाचलस्य करणाः—काव्य० १० 2. जल 3. दारचीनी। सम०—**अंशुः** 1. चाँद बबन्धेन्दौ तव सत्यां यदपरः शीतांशुरुज्जृम्भते काव्य० १० 2. कपूर, **अङ्गः** मनुष्यों के पक्षाघात या उनमें व्रण हो जाने का रोग, पायरिया, **अद्रिः** हिमालय पहाड़,—**अश्मन्** (पुं०) चन्द्रकान्तमणि,—**आर्त** (वि०) ठंड से व्याकुल, जाड़े से ठिठुरा हुआ, **उत्तमम्** पानी, **कालः** जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम, **कालीन** (वि०) जाड़े में होने वाला, **कृच्छ्रः**,—**च्छ्रम्** एक प्रकार की धार्मिक साधना, **गन्धम्** सफेद चन्दन,—**गुः** 1. चाँद 2. कपूर, **चम्पकः** 1. दीपक 2. दर्पण, **दीधितिः** चाँद,—**पुष्पः** शिरीष का वृक्ष, शिरस का पेड़, **पुष्पकम्** बेलिय गन्धद्रव्य, **प्रभः** कपूर, **भानुः** चाँद, **-भीरुः** एक प्रकार की मल्लिका, **मयूखः, मरीचिः, रश्मिः** 1. चाँद 2. कपूर,—**रम्यः** दीपक, **वल्कः** गूलर का पेड़, **वीर्यकः** बड़ का पेड़,—**शिवः** शमीवृक्ष, जैंडी का पेड़, (**वम्**) 1. सैंधानमक 2. सुहागा,—**शूकः** जौ, **स्पर्श** (वि०) ठंडक पहुँचाने वाला।

शीतक (वि०) [शीत+कन्] ठण्डा, दे० 'शीत', **कः** 1. कोई ठण्डी वस्तु 2. जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम 3. मन्थर, दीर्घसूत्री 4. आनन्दित, निश्चिन्त 5. बिच्छू।

शीतल (वि०) [शीतं लाति-ला+क, शीतमस्त्यस्य लच् वा] ठण्डा, शीतलगुण युक्त, सर्द, (ठण्ड के कारण) जमा हुआ (आलं० से भी)—अतिशीतलमप्यम्भः किं भिनत्ति न भूभृतः—सुभा०, महदपि परदुःखं शीतलं सज्जनानाम्—विक्रम० ४।१३, **लः** 1. चाँद, 2. एक प्रकार का कपूर 3. एक प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान, —**लम्** 1. ठण्डक, ठण्डापन 2. जाड़े की ऋतु 3. क्लेदगन्धद्रव्य 4. सफेद चन्दन, या चन्दन 5. मोती 6. तूतिया 7. कमल 8. वीरण नामक मूल। सम०—**छदः** चम्पक वृक्ष,—**जलम्** कमल,—**प्रदः**—**वम्** चन्दन, —**षष्ठी** माघ शुक्ला छठ।

शीतलकम् [शीतल+कन्] सफेद कमल।

शीतला [शीतल+टाप्] 1. चेचक 2. चेचक (शीतला) की अधिष्ठात्री देवता। सम० **पूजा** शीतला देवी की पूजा।

शीतली [शीतल+ङीष्] चेचक।

शीता दे० 'सीता'।

शीतालु (वि०) [शीतं न सहते शीत+आलुच्] सर्दी से ठिठुरता हुआ, जिसे सर्दी लग गई है, जाड़े के कारण कष्ट पाता हुआ शि० ८।१९।

शीत्य दे० 'सीत्य'।

शीधु (पुं०, नपुं०) [शी+धुक्] 1. कोई भी प्रासुत मदिरा, अंगूरी शराब 2. शराब। सम० **गन्धः** बकुल वृक्ष, मौलसिरी का पेड़, **पः** शराबी।

शीन (वि०) [शीं+क्त] 1. जमा हुआ, घनीभूत, नः 1. जड़, बुद्धू 2. अजगर।

शीभ् (भ्वा० आ० शीभते) 1. शेखी बघारना 2. बतलाना, कहना, बोलना, (कथने ?)।

शीभ्य [शीभ्+ण्यत्] 1. साँड 2. शिव।

शीरः [शीङ्+रक्] अजगर दे० 'सीर' भी।

शीर्ण (भू० क० कृ०) [शॄ+क्त] 1. कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ, सड़ा हुआ 2. सूखा, शुष्क 3. टूटा फूटा, चूर चूर हुआ 4. दुबला-पतला, कृश (दे० शॄ), **-र्णम्** एक प्रकार का गन्ध द्रव्य। सम० **अङ्गीः,—याः** 1. यम का विशेषण 2. शनिग्रह का विशेषण,—**पर्णम्**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुम्हलाया हुआ पत्ता (इसी प्रकार 'शीर्णपत्रम्' (णः) नीम का पेड़, - **द्रुतम्** तरबूज ।

शीर्णि (वि०) [शृ+क्विन्] विनाशकारी, आघातयुक्त, अनिष्टकर, क्षतिकर ।

शीर्षम् [शिरस् पृषो० शीर्षादेशः, शृ+क सुक् च वा] 1. सिरशीर्ष सर्पो देशान्तरे वैद्यः - कर्पूर०, मुद्रा० १।२१ 2. काला अगर । सम० - **अवशेषः** केवल सिर ही बचा हुआ,—**आमयः** सिर का कोई भी रोग, —**छेदः** सिर काट डालना, **छेद्य** (वि०) जिसका सिर काट डालना चाहिए, सिर काट कर मारे जाने के योग्य - उत्तर० २।८, रघु० १५।५१, - **रक्षकम्** लोहे का टोप ।

शीर्षकः [शीर्ष +कन्] राहु का विशेषण, **कम्** 1. सिर 2. खोपड़ी 3. लोहे का टोप 4. सिर का वस्त्र, (टोपी, टोप आदि) 5. व्यवस्था, निर्णय, न्यायालय का निर्णय ।

शीर्षण्यः [शीर्षन्+यत्] साफ़ तथा सुलझे हुए सिर के बाल, - **म्यम्** 1. लोहे का टोप 2. टोप, टोपी ।

शीर्षन् (नपुं०) [शिरस् शब्दस्य पृषो० शीर्षन् आदेशः] सिर, (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'शिरस्' या 'शीर्ष' को विकल्प से आदेश हो जाता है) ।

शील् (भ्वा० पर० शीलति) 1. मध्यस्थता करना, भली भाँति सोचना 2. सेवा करना, सम्मान करना, पूजा करना 3. सम्पन्न करना, अभ्यास करना ।

(चुरा० उभ० शीलयति-ते) 1. सम्मान करना, पूजा करना 2. बार बार अभ्यास करना, प्रयोग करना, अध्ययन करना, चिन्तन करना, ध्यान करना - श्रुतिशतमपि भूयः शीलितं भारतं वा भामि० २।३५, शीलयन्ति मुनयः सुशीलताम् किं० १३।४३ 3. धारण करना, पहनना - चल सखि कुञ्जं सतिमिर-पुञ्जं शीलय नीलनिचोलम्-गीत० ५ 4. जाना, दर्शन करना, बार बार जाना - यदनुस्मरतश्च निशि गहनमपि शीलितम् गीत० ७, स्मरानना सपदि शीलय सौधमौलिम्—भामि० २।४, अनु —, परि , बार बार अभ्यास करना, सुधारना, चिन्तन करना—शश्वच्छ्रुतोऽपि मनसा परिशीलितोऽसि- - राज० ।

शीलः [शील्+अच्] अजगर, **लम्** 1. स्वभाव, प्रकृति, चरित्र, प्रवृत्ति, रुचि, आदत, प्रथा समानशीलव्यसनेषु सख्यम् सुभा०, 'अनुसक्त' 'दुर्व्यस्त' 'प्रवण' 'लीन' 'अभ्यास' आदि अर्थ प्रकट करने के लिए बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त, **कलहशील** 'कलह करने के स्वभाव वाला' 'झगड़ालू' **भावनशील** चिन्तनशील, इसी प्रकार **दान°**, **मृगया°**, **दया°**, **पुण्य°**, **आश्वासन°** आदि 2. आचरण, व्यवहार 3. अच्छा स्वभाव, अच्छी प्रकृति - **शीलं परं भूषणम्**—भर्तृ० २।८२ पंच० ५।२ 4. सद्गुण, नैतिकता, सदाचरण, सज्जीवन, शुचिता, ईमानदारी—**दोमन्त्र्याभ्रपतिविनश्यति**.....**शीलं खलोपासनात्**—भर्तृ० २४२, ३९, तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदेशतां गतम्—कु० ५।३६, कि० ११।२५, रघु० १०।७० 5. सौन्दर्य, सुन्दर रूप । सम० - **खण्डनम्** शुचिता या नैतिकता का उल्लंघन-पंच० १, **धारिन्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**स्खलना** शुचिता का उल्लंघन, प्राप्तेयं शीलस्खलना—मृच्छ० १।४४ ।

शीलनम् [शील्+ल्युट्] 1. बार बार अभ्यास, प्रयोग, अध्ययन, संवर्धन 2. निरन्तर प्रयोग 3. सम्मान करना, सेवा करना 4. वस्त्र पहनना ।

शीलित (भू० क० कृ०) [शील्+क्त] 1. अभ्यस्त, प्रयुक्त 2. धारण किया हुआ 3. बार-बार किया हुआ, देखा हुआ 4. कुशल 5. युक्त, सहित, सम्पन्न ।

शीवन् (पुं०) [शीङ्+क्वनिप्] अजगर ।

शुंशुमारः ['शिशुमार' का भ्रष्ट रूप] सूँस नामक जल जन्तु ।

शुक् (भ्वा० पर० शोकति) जाना, हिलना-जुलना ।

शुकः [शुक्+क] 1. तोता—आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिकाः-सुभा० । तुंडैरताम्रकुटिलैः पर्धैर्हरितकोमलैः । त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मंजुगिरः शुकाः - काव्या० २।९ 2. सिरस का पेड़ 3. व्यास का एक पुत्र (कहा जाता है कि 'शुक' व्यास के वीर्य से उत्पन्न हुआ था, जब घृताची नाम की अप्सरा शुकी के रूप में इस पृथ्वी पर घूम रही थी तो उसको देख कर व्यास का वीर्यपात हो गया था । शुक जन्म से ही दार्शनिक था, उसने अपनी नैतिक वाक्पटुता से स्वर्गीय अप्सरा रम्भा के काम मार्ग पर प्रेरित करने के प्रत्येक प्रयत्न को सफलता पूर्वक मुकाबला किया । कहते हैं कि उसी ने राजा परीक्षित को भागवत पुराण सुनाया । अत्यन्त कठोर साधक के रूप में उसका नाम किंवदन्ती की तरह प्रसिद्ध हो गया,—**कम्** 1. कपड़ा, वस्त्र 2. लोहे का टोप 3. पगड़ी 4. वस्त्र की किनारी या मगजी । सम०—**अवतः** अनार का पेड़,—**तरुः**,—**द्रुमः** सिरस का पेड़ - **नास** (वि०) तोते जैसी नाक वाला, **नासिका** तोते की नाक जैसी नाक, - **पुच्छः** गन्धक, **पुष्पः**, —**प्रियः** सिरस का पेड़,—**पुष्पा** जामुन का पेड़,—**वल्लभः** अनार का पेड़, **बाहुः** कामदेव का विशेषण ।

शुक्त (भू० क० कृ०) [शुच्+क्त] 1. उज्ज्वल, विशुद्ध, स्वच्छ 2. अम्ल, खट्टा 3. कर्कश, खरखरा, कड़ा, कठोर 4. संयुक्त, जुड़ा हुआ 5. परित्यक्त, एकाकी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्तम् 1. मांस 2. काजी 3. एक प्रकार का खट्टा तरल पदार्थ, (सिरका आदि)।

शक्तिः (स्त्री०) [शुच्+क्तिन्] 1. सीप का खोल —मोती की सीप ··पात्रविशेषन्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः। जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य—मालवि० १।६, भर्तृ० २।६७ रघु० १३।१७ 2. शंख 3. छोटी सीप, पुटठा 4. खोपड़ी का एक भाग 5. घोड़े की सीप (पाँव पर) पर बालों का घूँघर, शि० ५।४, दे० उस पर मल्लि० 6 एक प्रकार का गंधद्रव्य 7. दो कर्ष के समान विशेष तौल। सम०—**उद्भवं जम्** मोती, **पुटम्**,—**पेशी** मोती की सीप का खोल,—**वपः** मोती की सीप, **बीजम्** मोती।

शुक्तिका [शुक्ति+कन्+टाप्] मोती का सीप सीपी।

शुक्रः [शुच्+रक्, नि० कुत्वम्] 1. शुक्रग्रह 2. राक्षसों के गुरु जिसने अपने जादू के मंत्रों से युद्ध में मरे हुए राक्षसों को पुनर्जीवित कर दिया था—दे० 'कच' ,देवयानी' और 'ययाति' 3. उशेष्टमास 4. अग्नि, **क्रम्** 1. वीर्य ··पुमान् पुमोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियः। मनु० ३।६९, ५।६३ 2. किसी भी वस्तु का सत्व। सम०—**अङ्गः** मोर,—**कर** (वि०) शुक्र या वीर्य सम्बन्धी, (**रः**) हड्डियों में रहने वाली मज्जा,—**वारः, वासरः** भृगुवार, जुमा —**शिष्यः** राक्षस।

शुक्ल, शुक्लिय (वि०) [शुक्र+ला+क, शुक्र+घ] 1. वीर्यसम्बन्धी 2. शुक्र या वीर्य को बढ़ाने वाला।

शुक्ल (वि०) [शुच्+लुक्, कुत्वम्] सफेद, विशुद्ध, उज्ज्वल जैसा कि 'शुक्लपाङ्ग' में, **क्लः** 1. सफेद रंग 2. चांद्रमास का उज्ज्वल या सुदी पक्ष 3. शिव, **क्लम्** 1. चाँदी 2. आंखों की सफेदी में होने वाला रोग विशेष 3. ताजा मक्खन 4. (खट्टी) कांजी। सम०—**अङ्गः** ··अपाङ्गः मोर (आंखों के श्वेत कोण होने के कारण) **शुक्लापाङ्गः** सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः ··मेघ० २२—**अम्लम्** एक प्रकार का खट्टा साग, चूक,—**उपला** रवेदार चीनी,—**कण्ठकः** एक प्रकार का जल कुक्कुट,—**कर्मन्** (वि०) शुद्धाचारी, सद्गुणी, ··**कुष्ठम्** सफेद कोढ़,—**धातुः** खड़िया मिट्टी,—**पक्षः** मास का सुदी पक्ष,—**वस्त्र** (वि०) श्वेत वस्त्रधारी, —**सारसः** सारस

शुक्लक (वि०) [शुक्ल+कन्] सफेद,—**कः** 1. सफेद रंग, 2. चान्द्र मास का सुदी पक्ष।

शुक्लल (वि०) [शुक्ल+ला+क] सफेद।

शुक्ला [शुक्ल+टाप्] 1. सरस्वती 2. रवेदार चीनी 3. श्वेतवर्ण वाली स्त्री 4. काकोली नाम का पौधा।

शुक्लिमन् (पुं०) [शुक्ल+इमनिच्] श्वेतता, सफेदी।

शुक्षिः [शुष्+क्सि:] 1. वायु, हवा 2. प्रकाश, कान्ति 3. अग्नि।

शुङ्गः [शुभ्+ग, नि० साधुः] 1. बड़ का पेड़ 2. ऐंवदी बेर का पेड़ 3. अनाज का टूँड, किशारु।

शुङ्गा [शुङ्ग—टाप्] 1. नूतन कली का कोष 2. जौ या अनाज की बाल, किशारु।

शुङ्गिन् (पुं०) [शुङ्गा+इनि] बड़ का पेड़, वटवृक्ष।

शुच् : (भ्वा० पर० शोचति) खिन्न होना, दुःखी होना, शोक करना, विलाप करना—अरोदीद्भावणोऽशोचीन्मोहं चाशिश्रियत्परम्—भट्टि० १५।७१, २१।६, भग० १६।५ 2. खेद प्रकट करना, पछताना, अनु ,शोक मनाना, विलाप करना, खेद प्रकट करना · नष्टं मृतमतिक्रान्तं नानुशोचन्ति पंडिताः पंच० १।३३३ —भग० २।११, वेणी० ५।४, उत्तर० ३।३२, **परि**—, विलाप करना, शोक मनाना।

ii (दिवा० उभ० शुच्यति ते) 1. खिन्न होना, दुःखी होना 2. आर्द्र होना 3. चमकना 4. स्वच्छ या निर्मल होना 5. कुम्हलाना, मुर्झाना।

शुच, शुचा (स्त्री०) [शुच्+क्विप्, टाप् वा] रंज, शोक, कष्ट, दुःख—विकलकरणः पाण्डुच्छायः शुचा परिदुर्बलः —उत्तर० ३।२२, कामं जीवति ते नाथ इति सा विजहौ शुचम्—रघु० १२।७५, ८।७२, मेघ० ८८, श० ४।१८।

शुचि (वि०) [शुच्+कि] 1. विमल, विशुद्ध, स्वच्छ ··सकलहसगुणं शुचिमानसं—कि० ५।१३ 2. श्वेत, कि० १८।१८ 3. उज्ज्वल, चमकदार—प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः—उत्तर० २।४ 4. सद्गुणी, पवित्रात्मा, पुण्यात्मा, निष्पाप, निष्कलंक · अथ तु वेत्सि शुचिव्रतमात्मनः ·· श० ५।२७, **पदः** शुचेर्दीपितार ईश्वराः—रघु० ३।४६, कि० ५।१३ 5. पवित्रीकृत, निर्मल किया हुआ, पुनीत बनाया हुआ—रघु० १।८१, मनु० ४।७१ 6. ईमानदार, खरा, निष्ठावान्, सच्चा, निश्छल—पंच० १।२०० 7. सही यथार्थ,—**चिः** 1. श्वेत वर्ण 2. पवित्रता, पवित्रीकरण 3. भोलापन, सद्गुण, भद्रता, खरापन 4. शुद्धता, यथार्थता 5. ब्रह्मचारी की दशा 6. पवित्रात्मा 7. ब्राह्मण 8. ग्रीष्म ऋतु—उपययौ विदधन्नभलिकाः शुचिरसौ चिरसौरभसंपदः शि० ६।२२, १।५८, रघु० ३।३, कु० ५।२० 9. ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने 10. निष्ठावान् या सच्चा मित्र 11. सूर्य 12 चन्द्रमा 13. अग्नि 14. शृंगार रस 14. शुक्रग्रह 16. चित्रक वृक्ष। सम०—**द्रुमः** पवित्र वटवृक्ष,—**मणिः** स्फटिक,—**मल्लिका** एक प्रकार की चमेली, नवमल्लिका,—**रोचिस्** (पुं०) चन्द्रमा,—**व्रत** (वि०) पुण्यात्मा, सद्गुणी,—**स्मित** (वि०) मधुर मुस्कान वाला—कु० ५।२०, रघु० ८।४८।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुचिस् (नपुं०) [शुच्+इसुन्] प्रकाश, कान्ति ।

शुच्य् (भ्वा० पर० शुच्यति) 1. स्नान करना, नहाना-धोना 2. निचोड़ना, (रस) निकालना 3. अर्क खींचना 4. बिलोना ।

शुटीरः [=शोटीरः, पृषो०] वीर, नायक ।

शुठ् i (भ्वा० पर० शोठति) 1. बाधा डाला जाना, रुकावट डाली जाना 2. लड़खड़ाना, लंगड़ा होना 3. मुकाबला करना ।
ii (चुरा० उभ० शोठयति-ते) सुस्त होना, आलसी होना, मन्द होना ।

शुष्ठ् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० शुण्ठति, शुण्ठयति-ते) 1. पवित्र करना 2. सूखना, दे० शुठ् (1) भी ।

शुण्ठिः-ठी (स्त्री०), **शुण्ठ्यम्** [शुण्ठ्+इन् शुंठि+ङीष्, शुण्ठ्+यत्] सोंठ, सूखा अदरक ।

शुण्डः [शुण्ड्+अच्] 1. मदमाते हाथी के गण्डस्थल से निकलने वाला रस 2. हाथी की सूँड ।

शुण्डकः [शुण्ड+कन्] 1. शराब खींचने वाला, कलाल 2. एक प्रकार का सैनिक संगीत या वाद्ययन्त्र ।

शुण्डा [शुण्ड+टाप्] 1. हाथी की सूँड 2. खींची हुई शराब 3. मद्यपानगृह, मधुशाला 4. कमल डण्डी 5. वेश्या, रंडी 6. कुटनी, दूती । सम०—पानम् मदिरालय, शराबखाना ।

शुण्डारः [शुण्ड+ऋ+अण्] 1. शराब खींचने वाला 2. हाथी की सूंड या नासावृद्धि—महावी० १।५३ ।

शुण्डालः [=शुण्डारः, रलयोरभेदः] हाथी ।

शुण्डिका [शुण्डा +कन्+टाप्, इत्वम्] दे० 'शुण्डा' ।

शुण्डिन् (पुं०) [शुण्ड+णिनि] 1. शराब खींचने वाला, कलाल 2. हाथी । सम० भूषिका छछूंदर ।

शुतुद्रिः,-द्रुः (स्त्री०) सतलुज नदी—तु० 'शतद्रु' ।

शुद्ध (भू० क० कृ०) [शुध्+क्त] 1. विशुद्ध, विमल, परिष्कृत-अन्तः शुद्धस्त्वमपि भवितां वर्णमात्रेण कृष्णः -मेघ० ४९ 2. पूनीत, अकलुषित, शुचि, निर्दोष —अन्वमीयत शुद्धेति शास्त्रेण वपुषैव सा —रघु० १५।७७, १४।१४ 3. श्वेत, उज्ज्वल 4. निष्कलंक, बेदाग 5. भोला-भाला, सीधा-सादा, निर्दोष 6. ईमानदार, खरा 7. सही, अशुद्धिरहित, यथार्थ 8. ऋण चुकाया गया, कर्ज अदा किया गया 9. केवल, मात्र 10. सरल, विशुद्ध, अनमिश्रित, (विप० मिश्र) 11. अद्वितीय 12. अधिकृत 13. पैनाया हुआ, तेज किया हुआ 14. अननुवासिक, -द्धः शिव का विशेषण, —द्धम् 1. कोई भी विशुद्ध वस्तु 2. विशुद्ध सुरा 3. सेंधा नमक 4. काली मिर्च । सम० अन्तः राजा का अन्तःपुर, रनवास, अन्दर महल—शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि सकृत्—श० १।१७, कु० ६।५२, °चारिन् (पुं०) अन्तःपुर का सेवक, कंचुकी —उत्तर० १, °पालकः, °रक्षक अन्तःपुर का रखवाला, आत्मन् (वि०) शुद्धात्मा, ईमानदार —ओदनः (शुद्धोदनः) विख्यात बुद्ध का पिता °सुतः बुद्ध चैतन्यम् विशुद्ध, प्रतिभा, प्रज्ञा ·संघः गधा ···धी,--भाव, मति (वि०) विशुद्धमना, निर्दोष, ईमानदार ।

शुद्धिः (स्त्री०) [शुध्+क्तिन्] 1. विशुद्धता, स्वच्छता 2. चमक, कान्ति —मुक्तागुणशुद्धयोऽपि (चन्द्रपादाः) —रघु० १६।१८ 3. पवित्रता, पुण्यशीलता—तीर्थाभिषेकजां शुद्धिमादधानाः महीक्षितः--रघु० १।८५ 4. पवित्रीकरण, प्रायश्चित्त, परिशोधन, प्रागश्चित्त परक कृत्य—शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभमभन्यत —रघु० १२।१० 5. पवित्रीकरणमूलक या प्रायश्चित्त परक संस्कार 6. (ऋण) परिशोध 7. प्रतिहिंसा, प्रतिशोध 8. छुटकारा, (जांच द्वारा सिद्ध) निर्दोषता 9. सचाई, यथार्थता, याथातथ्यता 10. समाधान, संशोधन 11. व्यवकलन 12. दुर्गा । सम०—पत्रम् ऐसी सूची जिसमें अशुद्ध शब्द शुद्ध रूपों सहित लिखे गये हों 2. प्रायश्चित्त के द्वारा हुई शुद्धि का प्रमाणपत्र ।

शुध् (दिवा० पर०) शुध्यति, शुद्ध) 1. शुद्ध या पवित्र होना, (आल० से भी) मुखेभ्यः शुध्यते शोध्यं नदी बर्हेण शुध्यति । अद्भिर्गात्राणि शुध्यति मनः सत्येन शुध्यति -मनु० ५।१०८—९ 2. शुभ होना, अनुकूल होना, पात्र होना तिथिरेव यावन्न शुध्यति—मुद्रा०५ 3. स्पष्ट किया जाना, संदेह दूर करना—न शुध्यति मे अन्तरात्मा—मृच्छ० ८ 4. व्यय किया जाना, (खर्च) चुकाया जाना—व्ययः शुध्यति - पंच० ५, प्रेर०—(शोधयति - ते) 1. पवित्र करना, निर्मल करना धो डालना 2. (ऋण) परिशोध करना, चुकाना, परि , वि—, सम्—, पवित्र किया जाना, - रघु० १२।१०४, मनु० ५।६४ ।

शुन् (तुदा० पर० शुनति) जाना, हिलना-डुलना ।

शुनःशेपः (पुं०) [शुन इव शेपः यस्य—अलुक् स०] एक वैदिक ऋषि, अजीगर्त का पुत्र (ऐतरेय ब्राह्मण में बताया गया है कि राजा हरिश्चन्द्र ने निस्सन्तान होने के कारण यह प्रतिज्ञा की कि यदि मुझे पुत्र लाभ हुआ तो मैं वरुण देवता के लिए उसकी बलि दे दूंगा । अन्त में उसके घर पुत्र ने जन्म लिया, उसका नाम रोहित रखा गया । राजा अपनी प्रतिज्ञा को किसी न किसी बहाने टालता रहा । अन्ततः रोहित ने सौ गौओं के बदले अजीगर्त के मध्यम पुत्र शुनःशेप को अपने स्थान पर बलि दिये जाने के लिए खरीद लिया । परन्तु बालक शुनःशेप ने विष्णु, इन्द्र तथा अन्य देवताओं की स्तुति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करके अपने आपको मृत्यु से बचा लिया। उसके पश्चात् विश्वामित्र ने उस लड़के को अपने कुल में गोद ले लिया और उसका नाम रक्खा 'देवरात'।

शुनकः [शुन्+क-शुन्+कन्] 1. भृगुवंश में उत्पन्न एक ऋषि का नाम 2. कुत्ता।

शुनासी (सी) रः [शुनाशीरो वायुसूर्यौ अस्य स्तः इति अच्] 1. इन्द्र का विशेषण 2. उल्लू।

शुनिः [शुन्+इन्] कुत्ता।

शुनी (स्त्री०) [श्वन्+ङीष्] कुतिया, कुक्कुरी।

शुनीरः [शुनी+र] कुतियों का समूह।

शुन्ध् (भ्वा० उभ०) शुन्धति—ते, शुन्धयति—ते) 1. पवित्र या विमल होना 2. निर्मल करना, पवित्र करना।

शुन्ध्युः [शुन्ध्+युच्] हवा, वायु।

शुभ् (भ्वा० आ० शोभते) 1. चमकना, शानदार होना, सुन्दर या मनोहर दिखाई देना—सुष्ठु शोभसे एतेन विनयमाहात्म्येन—उत्तर० १, रघु० ८।६ 2. लाभकर प्रतीत होना सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते—मृच्छ० १।१० 3. उपयुक्त होना, शोभा देना, योग्य होना (संबं० के साथ)—रामभद्र इत्येवीपचारः शोभते तात पारिजनस्य—उत्तर० १, प्रेर० (शोभयति ते) सजाना, संवारना, अलंकृत करना, परि—, वि—, चमकना, शानदार दिखाई देना।

शुभ (वि०) [शुभ्+क] 1. चमकीला, उज्ज्वल 2. सुन्दर, मनोहर —जडधे शुभे सप्तदवतस्टीमे—कु० १।३५ 3. मांगलिक, सौभाग्यशाली, प्रसन्न, समृद्धिशाली 4. प्रमुख, भद्र, सद्गुणी-पंच० १ ३५८,—भम् मांगलिकता, कल्याण, अच्छा भाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि —मा० १।२३ 2. अलंकार 3. जल 4 एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी। सम०—अक्षः शिव का विशेषण, —अंग (वि०) सुन्दर (गी) 1. सुन्दर स्त्री 2. कामदेव की पत्नी रति,—अपांगा सुन्दर स्त्री,—अशुभम् सुख-दुःख, भला-बुरा, आचार (वि०) पवित्र आचरण वाला, सदाचारी,—आनना मनोरम स्त्री,—इतर (वि०) (वि०) 1. बुरा, खराब 2. अशुभ, अमांगलिक, —उदर्क (वि०) जिसका अन्त आनन्ददायक हो,—कर (वि०) कल्याणकर, मंगलप्रद,—कर्मन् (नपुं०) पुण्यकार्य, गंधकम् एक गन्धद्रव्य, बोल,—ग्रहः अनुकूल ग्रह,—द्रुः बटवृक्ष,—दंती सुन्दर दांतों वाली,—नाम्नः, —नम् शुभ मुहूर्त, मंगल घड़ी,—वार्ता शुभ समाचार, —वासनः युद्ध को सुझाया करने वाला गंधद्रव्य, —शंसिन् (वि०) शुभसूचक, मंगल की सूचना देने वाला—रघु० ३।१४, स्थली 1. वह मवन जहां यज्ञों का अनुष्ठान होता हो, यज्ञभूमि 2. मंगलभूमि।

शुभंयु (वि०) [शुभमस्यास्ति-युस्] 1. मंगलमय, सौभाग्य-सूचक, भाग्यशाली, मंगलान्वित—अधिकं शुशुभे शुभंयुना हितयेन दयमेव संगतम् - रघु० ८।६, भट्टि० १।२०।

शुभंकर (वि०) [शुभ+कृ+खच्, मुम्] 1. कल्याणकारी 2. आनन्ददायक।

शुभंयावुक (वि०) [शुभम्+भू+णिच्+उकञ्] सजाया हुआ, सुभूषित, अलंकृत, उज्ज्वल।

शुभा [शुभ+टाप्] 1. कान्ति, प्रकाश 2. सौन्दर्य 3. इच्छा 4. पीलारंग, गोरोचन 5. क्षमी वृक्ष 6. देवसभा 7. द्रव 8. प्रियंगु लता।

शुभ्र (वि०) [शुभ्+रक्] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. श्वेत पश्यति पितोपहूतः शशिशुभ्रं शंखमपि पीतं—काव्य० १०, रघु० २।६९, -भ्रः 1. श्वेत रंग 2. चन्दन (नपुं०), भ्रम् 1. चांदी 2. अभ्रक 3. सेंधा नमक 4. कसीस। सम०—अंशुः, करः 1. चन्द्रमा 2. कपूर, रश्मिः चन्द्रमा।

शुभ्रा [शुभ्र+टाप्] 1. गंगा 2. स्फटिक 3. वंशलोचन।

शुभ्रिः [शुभ्+क्रिन्] ब्रह्मा का विशेषण।

शुभ् (भ्वा० पर० शुम्भति) 1. चमकना 2. बोलना 3. आघात पहुंचाना, क्षति पहुंचाना।

शुम्भः [शुम्भ्+अच्] एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार डाला था। सम०—घातिनी, मर्दिनी दुर्गा का विशेषण।

शु (शू) र् (दिवा० आ० शूर्यते) 1. चोट पहुंचाना, मार डालना 2. दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना।

शुल्क् (चुरा० उभ० शुल्कयति—ते) 1. लाभ उठाना 2. अदा करना, देना 3. रखना करना 4. कहना, वर्णन करना 5. छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना।

शुल्कः -ल्कम् [शुल्क्+घञ्] 1. चुंगी, कर, महसूल, सीमाशुल्क, विशेषतः वह कर जो राज्य द्वारा घाट या बाग आदि पर लिया जाता है—क्रः सुधीः सत्यजेद्भाण्ड शुल्कस्यैवात्मानमाव्ययात्—हि० ३।१२५, मनु० ८।१५९, याज्ञ० २।४७ 2. किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अगाऊ धन 3. (कन्या का) विक्रय मूल्य, कन्या के पिता को कन्या के बदले दिया गया धन पीडितो दुहितृशुल्कसंस्थया—रघु० ११।४७, न कन्यायाः पिता विद्वान् गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि मनु० ३।५१, ८।२०४, ९।९३, ९८ 4. विवाहोपहार 5. विवाह निश्चित करने के लिए दिया गया धन, दहेज 6. वर पक्ष की ओर से दुलहिन को दिया गया उपहार। सम०—ग्राहक,—दायिन् (वि०) शुल्कसंग्रहकर्ता, —दः 1. विवाहोपहार देने वाला 2. वारदत्त विवाहार्थी, शाला, स्थानम् शुल्क जमा करने की जगह, चुंगीघर।

शुल्बम् [शुल्ब्+अच्, पृषो०] 1. सुतली, रस्सी, डोरी 2. तांबा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुल्व (ल्वृ) (चुरा० उभ० शुल्व-ल्व-यति,—ते) देना, प्रदान करना 2. भेजना, तितर बितर करना, 3. मापना ।

शुल्वम् (ल्वम्) [शुल्व+अच्] 1. रस्सी, डोरी 2. तांबा 3. यज्ञीय कर्म 4. जल का सामीप्य, जल का निकटवर्ती स्थान 5. नियम, कानून, विधिसार,—ल्वा, —स्त्री दे० ऊपर ।

शुश्रू (स्त्री०) [शु+यङ् लुक्, द्वित्वादि+क्विप्] माता ।

शुश्रूषक (वि०) [शु+सन्, द्वित्वादि+ण्वुल्] सावधान, आज्ञाकारी, कः सेवक, टहलुआ ।

शुश्रूषणम्, -षा [शु+सन्+इत्वादि+ल्युट्] 1. सुनने की इच्छा 2. सेवा, टहल 3. आज्ञाकारिता, कर्तव्यपरायणता ।

शुश्रूषा [शु+सन्, द्वित्वादि+अ+टाप्] 1. सुनने की इच्छा—अतएव शुश्रूषा या मुखरयति मुद्रा० ३ 2. सेवा, टहल 3. कर्तव्यपरायणता, आज्ञाकारिता 4. सम्मान 5. बोलना, कहना ।

शुश्रूषु (वि०) [शु+सन्, द्वित्वादि+उ] 1. सुनने का इच्छुक 2. सेवा या टहल करने की इच्छा वाला 3. आज्ञाकारी, सावधान ।

शुष् (दिवा० परः० शुष्यति, शुष्क) 1. सूखना, शुष्क होना, खुश्क होना—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि —भर्तृ० ३।९२ 2. मुर्झा जाना, प्रेर० (शोषयति-ते) 1. सुखाना, मुर्झाना, खुश्क होना 2. क्रुश करना, उद्—, परि—, 1. सूखाया जाना, सुखाना —भट्टि० १०।४१, भग० ११२९ 2. म्लान होना, कुम्हलाना, मुर्झाना, वि , सम् , सुखाया जाना ।

शुषः, शुषी [शुष्+क, शुष+ङीष्] 1. सूखना, सुखाना 2. बिल, भूरन्ध्र ।

शुषिः [शुष्+कि] 1. सुखाना 2. रन्ध्र, छिद्र 3. सांप के विषैले दांत का पोला भाग ।

शुषिर (वि०) [शुष्+किरच्] छिद्रयुक्त, रन्ध्रमय,—रः 1. आग 2. चूहा, —रम् 1. छिद्र 2. अन्तरिक्ष 3. हवा या फूंक से बजने वाला बाजा ।

शुषिरा [शुषिर+टाप्] 1. नदी 2. एक प्रकार का गन्धद्रव्य ।

शुषिलः [शुष्+इलच्, स च कित्] हवा, वायु ।

शुष्क (भू० क० कृ०) [शुष्+क्त] 1. सूखा, सुखाया हुआ 2. शाखायां शुष्कं करिष्यामि—मृच्छ० ८ 2. भुना हुआ, म्लान 3. खरीदार, सिकुड़न वाला, कृश 4. ठूंठ मूठ, व्याजयुक्त, नकली कामिनः स्म कुरुते करभोरुहोरि शुष्कदयितं च सुखेऽपि शि० १०।६९ 5. रिक्त, व्यर्थ, अनुपयोगी, अनुत्पादक —मालवि० २ 6. निराधार, निष्कारण 7. बुरा लगने वाला, कठोर —तस्मै नाकुशलं ब्रूयान्न शुष्कां गिरमीरयेत् —मनु० ११।२५ । सम०—अङ्ग (वि०) कृशकाय, (गी) छिपकली, अन्नम् वह अनाज जिसमें से भूसा अलग नहीं किया गया, कलहः 1. व्यर्थ या निराधार झगड़ा 2. बनावटी झगड़ा—मुद्रा० ३,—वैरम् निराधार वैर, —व्रण वह घाव जो अच्छा हो गया है, घाव का चिह्न ।

शुष्कलः,—लम् [शुष्क+ला+क] 1. सूखा मांस 2. मांस ।

शुष्मः [शुष्+मन्, कित्च] 1. सूर्य 2. आग 3. वायु, हवा 4. पक्षी,—ष्मम् 1. पराक्रम, सामर्थ्य 2. प्रकाश, कान्ति ।

शुष्मन् (पुं०) [शुष्+कनिन्] अग्नि—शि० १४।२२, —(नपुं०) 1. सामर्थ्य, पराक्रम 2. प्रकाश, कान्ति ।

शूकः,—कम् [शिव+कक्, संप्रसारणम्] 1. जौ की बाल, दाढ़ी 2. पौधों के कड़े रोएं, वृत्त के खरदुरे शूकैः—भामि० १।२४ 3. नोक, सिरा, तेज किनारा 4. सुकोमलता, कणपा 5. एक प्रकार का विषैला कीड़ा । सम० —कीटः,—कीटकः एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएं खड़े हों, धान्यम् कोई भी ऐसा अन्न जो बालों टूंडों में से निकलता है (जौ आदि), पिण्डिः, —डी,—शिम्बा,—शिम्बिका,—शिम्बि केवांच, कपिकच्छु ।

शूकरः [शूक+कन्] 1. एकार का अन्न 2. सुकोमलता करुणा ।

शूकरः [शू इत्यव्यक्तं शब्दं करोति शू+कृ+अच्] सूअर—गच्छ शूकर भद्रं ते वद सिंहो मया हतः, पण्डिता एव जानन्ति सिंहशूकरयोर्बलम्—सुभा० । सम० छत्रः एक प्रकार का घास, मोथा ।

शूकलः [शूकवत् बलेशं ददाति—शूक+ला+क] अड़ियल घोड़ा ।

शूद्रः [शुच्+रक्, पृषो० चस्य दः, दीर्घः] चौथे वर्ण का पुरुष, हिन्दुओं के चार मुख्य वर्णों में से अन्तिम वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह 'पुरुष या ब्रह्मा' के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्भ्यां शूद्रो अजायत—ऋक्० १०।९०।१२, मनु० १।८७, उसका मुख्य कर्तव्य तीनों उच्चवर्णों की सेवा करना है—तु० मनु० १।९१) । सम०—आह्निकम् शूद्र का दैनिक अनुष्ठान,—उदकम् शूद्र के स्पर्श से दूषित जल,—कृत्यम्,—धर्मः शूद्र का कर्तव्य,—प्रियः प्याज,—प्रेष्यः तीनों उच्चवर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो शूद्र का सेवक हो —भूयिष्ठ (वि०) जहां अधिकांश शूद्र रहते हों,—याजकः जो शूद्र के लिए यज्ञ का संचालन करता है,—वर्गः शूद्रश्रेणी या सेवकवर्ग,—सेवनम् शूद्र की सेवा करना, शूद्र का सेवक बनना ।

शूद्रकः [शूद्र+कन्] एक राजा, मृच्छकटिक का प्रख्यात प्रणेता ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शूद्रा [शूद्र+टाप्] शूद्र वर्ण की स्त्री। सम०—भार्यः जिसकी पत्नी शूद्रवर्ण की हो. -वेदनम् शूद्रस्त्री से विवाह करना,-सुतः (किसी भी जाति के पिता द्वारा) शूद्र माता का पुत्र।

शूद्राणी, शूद्री [शूद्र+ङीप् पक्षे आनुक्] शूद्र की पत्नी।

शून (भू० क० कृ०) [श्वि+क्त] 1. सूजा हुआ 2. वर्धित उगा हुआ, समृद्ध।

शूना [श्वि अधिकरणे क्त, संप्र० दीर्घश्च] 1. मृदु तालु, घंटी, उपजिह्विका 2. चूल्हाखाना 3. कोई भी वस्तु (जैसे कि घर गृहस्थी का कुछ सामान) जिससे जीव हिंसा होती हो (यह गिनती में पांच हैं—चूल्हा, चक्की बुहारी, ओखली और जलपात्र)-पञ्च शूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः। कण्डणी चोदकुम्भश्च वध्यते यास्तु वाहयन् —मनु० ३।६८।

शून्य (वि०) [शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्] 1. रिक्त, खाली 2. सूना (हृदय, तथा चितवन आदि के लिए भी प्रयुक्त) गमनमलस शून्या दृष्टिः मा० १।१७ दे० नी० शून्यहृदय 3. अविद्यमान 4. एकान्त, निर्जन, विविक्त, वीरान-शून्येषु शूरा न के काव्य० ७, मट्टि० ६।९, उत्तर० ३।३८, मा०, ९।२० 5. खिन्न, उदास, उत्साहहीन शून्या जगाम भवनाभिमुखी कथंचित् —कु० ३।७५, कि० १७।३९ 6. नितान्त रहित, वञ्चित, विहीन, अभावयुक्त (करण० के साथ या समास में) -अंगुलीयकशून्या मे अंगुलिः -श० ५, दया° ज्ञान° आदि 7. तटस्थ 8. निर्दोष 9. अर्थहीन, निरर्थक शि० ११।४ 10. विवस्त्र, नंगा,—न्यम् 1. निर्वातता. रिक्त, खोखलापन 2. आकाश, अन्तरिक्ष 3. सिफर, बिन्दु 4. अस्तित्वहीनता, (पूर्ण, असीम) अविद्यमानता—दूषण शून्य विन्दवः नै० १।२१ 1. सम० मध्यः खोखला नरकुल,-मनस्—मनस्क (वि०) अन्यमनस्क, भटकचेता -भुज, बाहु (वि०) हक्का-बक्का, उदास, किंकर्तव्य विमूढ, वादः वह दार्शनिक सिद्धांत जो (जीव ईश्वर आदि) किसी भी पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करता, बौद्ध दर्शन, वादिन् (पु०) 1. नास्तिक 2. बौद्ध, -हृदय (वि०) 1. अन्यमनस्क विक्रम० २, श० ४ 2. खुले दिल वाला, जो दूसरों पर किसी प्रकार का संदेह न करें।

शून्या [शून्य+टाप्] 1. खोखला नरकुल 2. बांझ स्त्री।

शूर (चुरा० उभ० शूरयति-ते) 1. शौर्य के कार्य करना, शक्तिशाली होना 2. प्रबल उद्योग करना।

शूर (वि०) [शूर्+अच्] बहादुर, वीर, पराक्रमी, ताकतवर—शून्येषु शूरा न के काव्य० ७, रः 1. सूरमा, योद्धा, पराक्रमी 2. सिंह 3. सूअर 4. सूर्य 5. साल का पेड़ 6. कृष्ण का दादा, एक यादव। सम०—कोटः तिरस्करणीय योद्धा, महावीर० ६।३२,—मानम् अभिमान, अहंकार, सेन (पु० ब० व०) मथुरा के निकट एक देश या उस देश के अधिवासी रघु० ६।४५।

शूरणः [शूर्+ल्युट्] सूरन नामक एक खाद्यमूल, कंद।

शूरंमन्य (वि०) [आत्मानं शूरं मन्यते-शूर+मन्+खश्, मुम्] जो व्यक्ति अपने आपको पराक्रमी समझता है।

शूर्पः, र्पम् [शृ+पः ऊचच नित्] छाज,-र्पः दो द्रोण का तोल। सम०—कर्णः हाथी,—नखा, खी (नखा के स्थान पर) जिसके नख छाज जैसे लंबे चौड़े हों, रावण की बहन का नाम (वह राम के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उनसे विवाह करने की प्रार्थना करने लगी। परन्तु राम ने कहा कि मेरे साथ तो मेरी पत्नी है, अच्छा हो कि तुम लक्ष्मण के पास जाओ। परन्तु जब लक्ष्मण ने भी उसकी प्रार्थना न मानी तो वह वापिस राम के पास आई। इस बात पर सीता को हंसी आ गई। फलतः शूर्पणखा ने अपने आपको अत्यधिक अपमानित समझकर बदला लेने की इच्छा से भीषण रूप धारण किया और सीता को खाने के लिए दौड़ी। परन्तु उसी समय लक्ष्मण ने उसके कान और नाक काटली और उसका रूप बिगाड़ दिया —रघु० १२।३२ ४०),—वातः छाज को हिलाने से उत्पन्न हवा —श्रुतिः, हाथी।

शूर्पी [शूर्प+ङीष्] 1. छोटा छाज या पंखा 2. शूर्पणखा।

शूर्मिः, -र्मी [शूर्+कनिन्, शूर्म् [सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्याः, पक्षे अच्; शूर्मि+कन्+टाप्, शूर्मि ङीप्] 1. लोहे की बनी प्रतिमा 2. घन, निहाई।

शूल (भ्वा० पर० शूलति) 1. बीमार होना 2. कोलाहल करना 3 गड़बड़ करना, बिगाड़ना।

शूलः, -लम् [शूल्+क] 1. पैना या नोकदार हथियार, नुकीला कांटा, नेजा, बर्छी, भाला 2. शिव का त्रिशूल 3. लोहे की सलाख (जिस पर मांस भूना जाता है) शूले संस्कृतं शूल्यम्-नु० अयः शूल 4.एक स्थूण जिसके सहारे अपराधियों को सूली दी जाती थी—(विस्तृत) स्कन्धेन शूल हृदयेन शोकम्—मृच्छ० १०।२१, कु० ५।७३ 5. तीव्र पीड़ा 6. उदरशूल 7. गठिया, जोड़ों में दर्द 8. मृत्यु 9. झण्डा, ध्वज (शूलाङ्क लोहे की सलाख पर रख कर भूनना)। सम० अग्रम् सलाख की नोक, ग्रन्थिः (स्त्री०) एक प्रकार का घास, दूब, घातनम् लोहे का बुरादा, लोहे का चूरा जो लोहे को रेतने से निकलता है, घ्न (वि०) शामक औषधि, वेदनाहर, -धन्वन्, -धर, -धारिन्,—धृक्, पाणि, भृत् (पु०) शिव के विशेषण,-अधिगतधवलिम्नः शूलपाणेरभिख्याम्—शि० ४।६५, रघु० २।३८, शत्रुः एरण्ड का पौधा,--स्थ (वि०) सूली

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर चढ़ाया गया, फांसी एक प्रकार का वध, —हस्तः भालाधारी।

शूलकः [शूल+कन्] अश्विल घोड़ा।

शूला [शूल+टाप्] 1. अपराधियों को सूली देने की स्थूना 2. वेश्या।

शूलाकृतम् [शूल+डाच्+कृ+क्त] भुना हुआ मांस।

शूलिकः (वि०) [शूल+ठन्] 1. शूलधारी 2. सलाख पर भूना हुआ, —कः खरगोश, —कम् भुना हुआ मांस।

शूलिन् (वि०) [शूलमस्त्यस्य इनि] 1. बर्छीधारी दुर्जनो लवणः शूली—रघु० १५।५ 2. उदरशूल से पीड़ित (पुं०) 1. बर्छीधारी 2. खरगोश 3. शिव कुर्वन् सन्ध्यबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम् --मेघ० ३६, कु० ३।५७।

शूलिकः [शूल+इनन्] बरगद का पेड़।

शूल्य (वि०) [शूल+यत्] 1. सलाख पर भूना हुआ —श० २ 2. सूली पाने के योग्य, —म्यम् भुना हुआ मांस।

शूव् (भ्वा० पर० शूवति) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना 2. जन्म देना।

शृगालः [=शृगालः] गीदड़ —दे० 'शृगाल'।

शृंगालः [असृज् लाति-ला+क, पृषो०] 1. गीदड़ 2. ठग, धूर्त, उचक्का 3. भीरु 4. दुष्ट प्रकृति, कटुभाषी 5. कुत्ता। सम० केलिः एक प्रकार का बेर, —जम्बुः, —कः (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी, खीरा, —योनिः गीदड़ की योनि में जन्म लेना, —व्रतः शिव का विशेषण।

शृगालिका, शृगाली [शृगाल+ङीष्, पक्षे कन्+टाप् ह्रस्वः] 1. गीदड़ी 2. लोमड़ी 3. पलायन, प्रस्थावर्तन।

शृङ्खलः,—ला,—लम् [शृङ्खात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो०] 1. लोहे की जञ्जीर, बेड़ी 2. जञ्जीर, हथकड़ी (आल० भी) —भट्टि० ९।९०, लीलाकटाक्ष-मालाशृङ्खलाभिः --रसा०, संसारश्रासलबद्ध शृङ्खलाम् --गीत० ३ 3. हाथी के पैरों को बांधने की जञ्जीर —स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षितस्ते—रघु० ५।७२, कि० ७।३१ 4. कमर की पेटी, करधनी 5. नापने की जञ्जीर 6. जञ्जीर, श्रेणी, परम्परा। सम०—बन्धकम् एक अलङ्कार का एक भेद दे० कि० १५।४२।

शृङ्खलकः [शृङ्खल+कन्] 1. जञ्जीर 2. ऊँट।

शृङ्खलित (वि०) [शृङ्खला+इतच्] जञ्जीर में जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ, बँधा हुआ।

शृङ्गम् [शृ+गन्, पृषो० मुम् ह्रस्वश्च] 1. सींग—दन्त-रिवानीं महिषैस्तदम्भः शृङ्गाहतं क्षोभति दीधिकाणाम् —रघु० १६।१३, माहन्ती महिषा निपानसलिलं शृङ्गै-र्मुहुस्ताडितम्— श० २।६ 2. पहाड़ की चोटी अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किं स्विदित्युन्मुखीभिः—मेघ० १४, ५२, कि० १५।४२, रघु० १३।२६ 3. भवन की चोटी, बुर्जी 4. उत्तुंगता, ऊँचाई 5. प्रभुता, स्वामित्व, सर्वोपरिता, प्रमुखता शृङ्गं स दृप्तविनयाधिकृतः परेषा-मात्मव्युच्छित्तं न ममृषे न तु दीर्घमायुः रघु० ९।६२, (यहाँ शब्द का अर्थ 'सींग' भी है) 6. वज्रचूड़ा, चाँद की नोक 7. चोटी, नोक, अग्रभाग 8. (भैंस आदि का) सींग जो फूंक मार कर बजाया जाता है 9. पिचकारी वर्णादकः काञ्चनशृङ्गमुक्तैः—रघु० १६।७० 10. कामोद्रेक, अभिलाषोदय 11. निशान, चिह्न 12. कमल। सम० अन्तरम् (गो आदि पशुओं के) सींगों का मध्यवर्ती स्थान, —उच्छ्रयः ऊँची चोटी, —ऋः बाण (क्ष) अगर की लकड़ी, —प्रहारिन् (वि०) सींग से मारने वाला, —प्रियः शिव का विशेषण, —बेरिन् (पुं०) चम्पक वृक्ष, —वेरम् 1. वर्तमान भिजौपुर के निकट गंगा के किनारे बसा हुआ एक नगर—उत्तर० १।२१ 2. अबरक।

शृङ्गकः,—कम् [शृङ्ग+कन्] 1. सींग 2. चन्द्रमा की नोक, चन्द्रचूड़ा 3. कोई भी नोकीली वस्तु 4. पिचकारी रघु० १।

शृङ्गवत् (वि०) [शृङ्ग+मतुप्] चोटीवाला—(पुं०) पहाड़।

शृङ्गाटः, शृंगाटकः [शृङ्गं प्रधान्यम् अटति—शृङ्ग+अट्+अण्] 1. एक पहाड़ 2. एक पौधा—कम्, —कम् चौराहा।

शृङ्गारः [शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ+अण् प्रणयरस, कामोन्माद, रतिरस (काव्यरचनाओं में वर्णित आठ या नौ प्रकार के रसों में सबसे पहला रस, यह दो प्रकार का है—संभोग शृंगार और विप्रलंभ शृंगार) --शृङ्गारः खलु मूर्तिमानिव मथो मृगयौ हरिः क्रीडति --गीत० १, (इसकी परिभाषा यह है —पुंसः स्त्रियां स्त्रियाः पुंसि संभोगं प्रति या स्पृहा। स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारत्यादिकारकः॥ दे० सा० द० २१० भी) 2. प्रेम, प्रणयोन्माद संभोगेच्छा विक्रम० १।९ 3. शृङ्गारिक समालापों के उपयुक्त वेश, ललित वेशभूषा 4. मैथुन, संभोग 5. हाथी के शरीर पर बनाये गए सिंदूर के निशान 6. चिह्न, रघु० 1. लौंग 2. सिंदूर 3. अबरक 4. शरीर या वस्त्रों के लिए सुगन्धित चूर्ण 5. काला अगर। सम०—चेष्टा कामानुरक्ति का संकेत --रघु० ६।१२, —चामित्रम् प्रेमोन्माद, प्रणयकथा, —भूषणम् सिंदूर, —योनिः कामदेव का विशेषण, --रसः साहित्यशास्त्र में वर्णित शृंगाररस, प्रणयरस, —विधिः, —वेषः प्रेमालापों के उपयुक्त वेशभूषा (जिसे पहन कर प्रेमी अपने प्रिय से मिलता है), —सहायः प्रेमव्यापार में सहायक व्यक्ति, सखि-सचिव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शृङ्गारकः [शृङ्गार+कन्] प्रेम, कम् सिंदूर।
शृङ्गारित (वि०)[शृङ्गार+इतच्] 1. प्रेमाविष्ट, प्रणयोन्मत्त 2. सिंदूर से लाल 3. अलंकृत, सजा हुआ।
शृङ्गारिन् (वि०) [शृङ्गार+इनि] शृङ्गारप्रिय, प्रेमासक्त, प्रणयोन्मत्त (पुं०) 1. प्रणयोन्मत्त, प्रेमी 2. लाल 3. हाथी 4. बैशाखा, सजावट 5. सुपारी का पेड़ 6. पान का बीड़ा दे० 'ताम्बूल'।
शृङ्गिः [=शृङ्गी, पृषो० ह्रस्वः] आभूषणों के लिए सोना (स्त्री०) सिंगी मछली।
शृङ्गिकम् [शृङ्ग+ठन्] एक प्रकार का विष, का एक प्रकार का भूर्जवृक्ष।
शृङ्गिणः [शृङ्ग+इनच्] मेढ़ा, मेंढ़ा।
शृङ्गिणी [शृङ्गिन्+ङीप्] 1. गाय 2. एक प्रकार की मल्लिका, मोतिया।
शृङ्गिन् (वि०) (स्त्री० णी) [शृङ्ग+इनि] 1. सींगों वाला 2. शिखाधारी, चोटी वाला, (पुं०) 1. पहाड़ 2. हाथी 3. वृक्ष 4. शिव 5. शिव के एक गण का नाम शृङ्गी भृङ्गी रिटीस्तुण्डी —अमर०।
शृङ्गी [शृङ्ग+ङीप्] 1.आभूषणों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सोना 2. एक औषधि—मूल, काकड़ासिंगी, अतीस 3. एक प्रकार का विष 4. सिंगी मछली। सम०—कनकम् गहना बनाने के लिए सोना।
शृङ्गिः (स्त्री०) [शृ+क्विन्, पृषो० तस्य नः, ह्रस्वश्च] अंकुश, प्रतोद।
शृत (भू० क० कृ०) [शृ+क्त] 1. पकाया हुआ 2. उबाला हुआ (पानी, दूध आदि)।
शृध् i (भ्वा० आ०—परन्तु स्तृद्, स्तुड् और स्तृड् में पर० भी दर्शाते) अपान वायु छोड़ना, पाद मारना। ii (क्या० उभ० शर्धति—ते) 1. आदर करना, गोला करना 2. काट डालना। iii. (चुरा० उभ० शर्धयति—ते) 1. प्रयत्न करना, 2. लेना, ग्रहण करना 3. अपमान करना (पाद मार कर) नकल करना, मजाक उड़ाना।
शृधुः [शृध्+कु] 1. वृद्धि 2. गुदा।
शृ (क्रया० पर० शृणाति, शीर्ण) 1. फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर डालना 2. चोट पहुँचाना, क्षति ग्रस्त करना 3. मार डालना, नष्ट करना कि० १४।१३, कर्मवा० (शीर्यते) 1. चिथड़े-चिथड़े होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बर्बाद होना, अव + , जबरन ले भागना (कर्मवा०) मुझाना, कुम्हलाना—मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्येत वनेऽथवा—भट्ट० २।१०४।
शेखरः [शिख्+अरच्, पृषो०] 1. चूड़ा, कलगी, कूंची का गजरा, सिर पर लपेटी हुई माला—कपालि या स्यादवबेन्दुशेखरम् कु० ५।९८, ७।३२, नवकर निकरेण स्पष्टबन्धूकसूनस्तबकरचितमेते शेखरं बिभ्रतीव शि० ११।४६, ३।५०, मनसदेशयोश्वरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी—दश० 2. किरीट, मुकुट, 3. चोटी, शृंग 4. (समास के अन्त में प्रयुक्त) किसी भी श्रेणी का सर्वोत्तम या प्रमुखतम 5. गौण का ध्रुव विशेष, —रम् सींग।
शेफः, शेफस् (नपुं०) शेकः, कम्, शेकस् (नपुं०) [शी+पन्, शी+असुन्, पुट्, शी+फन्, शी+असुन्, कुक्] 1. लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय 2. अंडकोष 3. पूँछ।
शेफालिः, ली, शेफालिका (स्त्री०) [शेफाः शयनशालिनः अलयो यत्र—ब० स०, शेफालि+ङीष्, कन्+टाप् वा] एक प्रकार का पौधा, निर्गुण्डी, नीलिका, नील सिंधुवार का पौधा।
शेमुषी [शी ; विप + शेः मोहं तं मुष्णाति—शे+मुष्+क+ङीप्] बुद्धि, समझ।
शेल् (भ्वा० पर० शेलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. कांपना।
शेवः [शुक्यते सति शेते—शी+वन्] 1. सांप 2. लिंग 3. ऊंचाई, उत्तुंगता 4. आनन्द 5. दौलत, खजाना, —वम् 1. लिंग 2. आनन्द। सम०—धिः 1. मूल्यवान् कोष विद्या वाद्वाणमाह्याह शेवधिस्तेऽहिम रक्षामम् मनु० २।११४, सर्वान् कामान् शेवधिर्जीवितं वा स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम्—मा० ६।१८ 2. कुबेर के नौ कोषों में से एक।
शेवलम् [शी+विच् तथा भूतः सन् वलते वल्+अच्] मांसे की भांति हरे रंग का पदार्थ जो पानी के ऊपर उग आता है, काई 2. एक प्रकार का पौधा।
शेवलिनी [शेवल+इनि+ङीप्] नदी।
शेवालः दे० 'शेवल'।
शेष (वि०) [शिष्+अच्] बचा हुआ, बाकी, अन्य सब —उपेक्षितोऽपि शेषानुयायिनि:—रघु० २।४, ४।६४, १०।३०, मेघ० ३०।८७, मनु० ३।४७, कु० २।४४; इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—भक्षितशेष, आलेख्यशेष, आदि, षः, —षम् 1. बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट ऋणशेषोऽग्निशेषश्च व्याधिशेषस्तथैव च। पुनश्च वर्धते यस्मात्तस्मात्तं शेषयेत् बुधः॥ ४०, अध्वशेष—मेघ० २८, विभागशेष कु० ५।५७, वाक्यशेषः—विक्रम० ३ 2. छोड़ी हुई कोई बात, या भूली हुई बात, ('इतिशेषः' बहुधा भाष्यकारों द्वारा रचना को पूरा करने के लिए किसी आवश्यक न्यून पद की पूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है) 3. बचाव, मुक्ति, श्रान्ति,—षः 1. परिणाम, प्रभाव 2. अन्त, समाप्ति, उपसंहार 3. मृत्यु, विनाश 4. एक विख्यात नाग का नाम, जिसके एक हजार फणों का होना कहा जाता है, तथा जिस का वर्णन विष्णु की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शय्या के रूप में; या समस्त संसार को अपने सिर पर सम्भाले हुए मिलता है—किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्षमा न क्षिप्यते यत्—मुद्रा० २।१८, कु० ३।१३, ६।६८, मेघ० ११०, रघु० १०।१३ 5. बलराम (जो शेष का अवतार माना जाता है, या फूल तथा अन्य चढ़ावा जो मूर्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है) और उसके पुष्प अवशेष के रूप में पूजा करने वालों में बाँट दिया जाता है—श० ३, कु० ३।२२, ७म् उच्छिष्ट अन्न, चढ़ावे का अवशेष (शेषं क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ है—1. अन्त में, आखिरकार 2. अन्य विषयों में)। सम० अन्नम् जूठन, अवस्था बुढ़ापा,—भागः शेष, बाक़ी,—भोजनम् जूठनखाना, —रात्रिः रात का चौथा पहर,—शयनः,—शायिन् (पुं०) विष्णु के विशेषण।

शैक्षः [शिक्षां वेत्त्यधीते अण् वा] 1. शिक्षा अर्थात् उच्चारण शास्त्र को पढ़ने वाला विद्यार्थी, जिसने वेदाध्ययन अभी अभी आरम्भ किया है 2. नौसिखिया, नवशिष्य।

शैक्षिकः [शिक्षा+ठक्] शिक्षाशास्त्र में निष्णात।

शैक्ष्यम् [शिक्षा+यत्] अधिगम, प्रवीणता।

शैघ्र्यम् [शीघ्र+ष्यञ्] फुर्ती, सत्वरता।

शैत्यम् [शीत+ष्यञ्] ठंडक, शीतलता, जमाव—शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य—रघु० ५।६४, कु० १।३४।

शैथिल्यम् [शिथिल+ष्यञ्] 1. ढीलापन, नरमी 2. मन्थरता 3. दीर्घसूत्रता, अनवधानता 4. कमजोरी, भीरुता।

शैनेयः [शिनि+ढक्] सात्यकि का नाम।

शैन्याः (पुं०, ब० व०) [शिनि+यञ्] शिनि की सन्तान, शिनि के वंशज।

शैब्य दे० 'शैव्य'।

शैलः [शिला+अण्] 1. पर्वत, पहाड़—शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे—चाण० ५५, शैलो मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१ 2. चट्टान, बड़ा भारी पत्थर,—लम् 1. सुहागा, धूप, गुग्गुल 2. शिलाजीत 3. एक प्रकार का अंजन। सम०—अंशः एक देश का नाम,—अग्रम् पहाड़ की चोटी,—अटः 1. पहाड़ी, असभ्य 2. किसी देवमूर्ति का पुजारी 3. सिंह 4. स्फटिक,—अधिपः,—अधिराजः, इन्द्रः,—पतिः, —राजः हिमालय पर्वत के विशेषण, आख्यम् शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप,—कटकः पहाड़ की ढलान,—गन्धम् एक प्रकार का चन्दन,—जम् 1. शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप 2. शिलाजीत, —जा, तनया,—पुत्री,—सुता पार्वती के विशेषण—अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये—काव्य० १०, कु० ३।६८,—भव्वत् (पुं०) शिव का विशेषण,—भरः कृष्ण का विशेषण,—निर्यासः गैलेयगन्धद्रव्य, धूप,—पत्रः बेल का पेड़,—भित्तिः (स्त्री०) पत्थर काटने का उपकरण, टाकी, रन्ध्रम् गुफा, कन्दरा, - शिविरम् समुद्र,—सार (वि०) पत्थर की तरह सबल, चट्टान की तरह दृढ़ किं० १०।१४।

शैलकम् [शैल+कन्] 1. शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप 2. शिलाजीत।

शैलादिः [शिलादस्यापत्यम्-शिलाद+इञ्] शिव का गण, नन्दी।

शैलालिन् (पुं०) [शिलालिना मुनिना प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते —शिलालि+णिनि] अभिनेता, नर्तक।

शैलिकः [गर्हितं शैलमस्त्यस्य-ठन्, शैलिक+ष्यञ्] पाखण्डी, दम्भी, ठग।

शैली [शैलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि यलोपः] 1. व्याकरण सूत्र की संक्षिप्त वृत्ति 2. अभिव्यक्ति या अर्थकरण का एक प्रकार - प्रायेणाचार्याणामियं शैली यत्स्वाभिप्रायमपि परोपदेशमिव वर्णयन्ति—मनु० १।४ पर कुल्लू० 3. व्यवहार, काम करने का ढंग, आचरण, क्रम।

शैलूषः [शिलूषस्यापत्यम्-शिलूष+अण्] 1. अभिनेता, नर्तक आः शैलूषापसद—वेणी० १, एते पुरुषाः सर्वमेव शैलूषजनं व्याहरन्ति—तदेव, अवाप्य शैलूष इवप भूमिकाम् शि० १।६९ 2. वाद्यित्र-कुशल —वैतालिकों का नायक, संगीत मण्डली का प्रधान 3. संगीत सभा में तालधारक 4. धूर्त 5. बेल का पेड़।

शैलूषिकः [शैलूषं तद्वृत्तिम् अन्वेष्टा-ठक्] जो अभिनेता का व्यवसाय करता हो।

शैलेय (वि०) (स्त्री०—यी) [शिलायां भवः, शिला+ढक्] 1. पहाड़ी 2. चट्टानों से उत्पन्न 3. पत्थर की तरह कड़ा, पथरीला,—यः 1. सिंह 2. भ्रमर,—यम् 1. पर्वत संभवद्रव्य, धूप,—शैलेयगन्धीनि शिलातलानि —रघु० ६।५१, कु० १।५५ 2. सुगंधित राल 3. सेंधा नमक।

शैल्य (वि०) (स्त्री०—त्या) [शिला+ष्यञ्] पथरीला, —त्यम् चट्टान जैसी कठोरता, कड़ापन।

शैव (वि०) (स्त्री० वी) [शिवो देवताऽस्य—अण्] शिवसंबंधी,—वः 1. हिन्दुओं के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक 2. शैव संप्रदाय का पुरुष,—वम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम।

शैवलः [शी+वलच्] एक प्रकार का जलीय पौधा, पद्मकाष्ठ, सेवार, काई, मोथा—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०,—लम् एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी।

शैवलिनी [शैवल+इनि+ङीप्] नदी।

शैवाल दे० 'शैवल'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शैव्यः [शिवि+ष्य] 1. कृष्ण के चार घोड़ों में से एक 2. पांडव सेना का एक योद्धा, एक राजा का नाम 3. घोड़ा ।

शैशवम् [शिशोर्भावः अण्] बचपन, बाल्यावस्था (सोलह वर्ष से नीचे का समय) -शैशवात्प्रभृति पोषिता प्रियाम् - उत्तर० १।४५, शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्-रघु० १।८ ।

शैशिर (वि०) (स्त्री०—री) [शिशिर+अण्] जाड़े के मौसम से सबन्ध रखने वाला,—रः काले रंग का चातकपक्षी ।

शैश्योपाध्यायिका [शिश्योपाध्याय+वुञ्] किशोरावस्था के छात्रों को पढ़ाना ।

शो (दिवा० पर० श्यति, शात या शित, कर्मवा० शायते —प्रेर० शाययति, इच्छा० शिशासति) 1. पैनाना, तेज करना 2. पतला करना, कृश करना, नि—, तेज करना ।

शोकः [शुच्+घञ्] अफसोस, रंज, दुःख, कष्ट, विलाप, रुदन, वेदना—श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः—रघु० १४।७०, भग० १।६ । सम० अग्निः, -अनलः शोक रूपी आग,—अपनोदः रंज को दूर करना,—अभिभूत,—आकुल,—आविष्ट, उपहत,—विह्वल (वि०) कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त,—च्छाया शोक में लीन, —ाशः अशोकवृक्ष, —परायण, —लासक (वि०) शोक से ग्रस्त, पीड़ाभिभूत,—विकल (वि०) शोकाकुल,—स्थानम् शोक का कारण ।

शोचनम् [शुच्+ल्युट्] रंज, अफसोस, विलाप ।

शोचनीय (वि०) [शुच्+अनीयर्] विलाप करने योग्य, चिन्त्य, शोच्य, दुःखद ।

शोच्य (वि०) [शुच्+ण्यत्] 1. शोचनीय, विलाप करने योग्य, चिन्तनीय, दयनीय शा० २।१० 2. कमीना, दुश्चरित्र ।

शोचिस् (नपुं०) [शुच्+इसि] 1. प्रकाश, कान्ति, चमक 2. ज्वाला । सम०—केशः (शोचिष्केशः) अग्नि का विशेषण ।

शौटीर्यम् [शुटीर+ष्यञ्, 'शौटीर्यम्' इति साधुः] पराक्रम, शौर्य, शूरवीरता ।

शौठ (वि०) [शुठ+अच्] 1. मूर्ख 2. कमीना, अधम 3. आलसी, सुस्त,—ठः 1. मूर्ख 2. निकम्मा, आलसी 3. अधम या कमीना पुरुष 4. धूर्त, ठग ।

शौण् (स्वा० पर० शौणति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. लाल होना ।

शौण (वि०) (स्त्री०—णा, णी) [शोण्+अच्] 1. लाल, गहरा लाल रंग, हल्का लालका रंग—स्यानावनद्धघनशोणितशोणपाणिरुत्तसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः—वेणी० १।२१, मुद्रा० १।८, कु० १।७ 2. लाख के रंग का, लालिमायुक्त भूरा,—णः 1. लोहित वर्ण, लाल रंग 2. आग 3. एक प्रकार का लाल रंग का गन्ना, ईख 4. कुम्मैत घोड़ा 5. एक दरिया का नाम जो गोंडवाना से निकलकर पटना के निकट गंगा में गिरती है—प्रस्थप्रहीतं पाथेयवाहिनी तां भागीरथीं शोण इवोत्तरङ्गः—रघु० ७।३६ 6. मंगलग्रह तु० लोहित, णम् 1. रुधिर 2. सिंदूर । सम०—अम्बुः एक प्रकार का बादल जो प्रलय के समय उठता है, —अश्मन् (पुं०)—उपलः 1. लाल पत्थर 2. लाल, एक माणिक्य, पद्मम् लाल रंग का कमल,—रत्नम् लाल नामक माणिक्य, पद्मरागमणि ।

शोणित (वि०) [शोण+इतच्] 1. लाल, लोहित, रक्त वर्ण का,—तम् 1. रुधिर —उपस्थिता शोणितपारणा मे—रघु० २।३९, वेणी० १।२१, मुद्रा० १।८ 2. केसर, जाफरान । सम०—आह्वयम् केसर, जाफरान,—क्षित (वि०) रक्तरंजित, —उपलः पद्मरागमणि,—चन्दनम् लाल चंदन,—प (वि०) रुधिर पीने वाला,—पुरम् बाणासुर का नगर ।

शोणिमन् (पुं०) [शोण+इमनिच्] लालिमा, लाली ।

शोथः [शु+घञ्] सूजन, स्फीति । सम० —घ्न,—जित् (वि०) सूजन को दूर करने वाला, सूजन या स्फीति को हटाने वाली औषधि, —जिह्वः पुनर्नवा,—रोगः हाथ पाँव आदि में सूजन होने का रोग, जलोदर, —हृत् (वि०) सूजन हटाने वाली दवा (पुं०) भिलावाँ ।

शोधः [शुध्+घञ्] 1 शुद्धिसंस्कार 2. संशोधन, समाधान 3. ऋणभुगतान, (ऋण) परिशोध 4. प्रतिहिंसा, प्रतिदान, बदला ।

शोधक (वि०) (स्त्री०—का, धिका) [शुध्+णिच्+ण्वुल्] 1. शुद्ध करने वाला 2. रेचक 3. संशोधन करने वाला

शोधन (वि०) (स्त्री०—नी) [शुध्+णिच्+ल्युट्] शुद्ध करने वाला, स्वच्छ करने वाला,—नम् 1. शुद्ध करना, स्वच्छ करना 2. संशोधन, (ऋण) परिशोधन करना 3. यथार्थ निर्धारण 4. अदायगी, देनदारी, ऋण चुकाना 5. प्रायश्चित्त, परिशोधन 6. धातुओं को साफ़ करना 7. प्रतिहिंसा, प्रतिदान, दण्ड 8. (गणि० में) व्यवकलन 9. तूतिया 10. मल, विष्ठा ।

शोधनकः [शोधन+कन्] दंड-न्यायालय का एक अधिकारी, मुच्छ० ९, फ़ौजदारी अदालत का अफ़सर ।

शोधनी [शोधन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी ।

शोधित (भू० क० कृ०) [शुध्+णिच्+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. संस्कृत 3. छाना हुआ 4. संशोधित, समाहित 5. ऋण परिशोध किया हुआ, चुकाया हुआ 6. बदला लिया हुआ, प्रतिहिंसा की हुई ।

शोध्य (वि०) [शुध्+णिच्+यत्] शुद्ध किये जाने के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योग्य, संस्कृत किये जाने के योग्य ऋण परिशोध किये जाने के योग्य,—ध्यः अभियुक्तव्यक्ति, वह पुरुष जिसने लगाये हुए आरोप से अपने आप को मुक्त करना है।

शोकः [शुच्+फन्] सूजन, अर्बुद, रसौली, शोथ। सम०—जित्,—घ्न् (पुं०) भिलावे का पौधा।

शोभन (वि०) (स्त्री०—नी) [शोभते-शुभ्+ल्युट्] 1. चमकीला, शानदार 2. मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय 3. भद्र, शुभ, सौभाग्य शाली 4. खूब सजाया हुआ 4. सदाचारी, पुण्यात्मा, —नः 1. शिव 2. बुध 3. अच्छे परिणामों की प्राप्ति के लिए यज्ञाग्नि में दी गई आहुति,—ना 1. हल्दी 2. सुन्दर या सती स्त्री—कु० ४।४४ 3. एक प्रकार का पीला रंग, गोरोचना,—नम् 1. सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति 2. कमल।

शोभा [शुभ्+अ+टाप्] 1. प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, चमक 2. (क) वैभव, सौन्दर्य, लालित्य, चारुता, लावण्य —वपुरभिनवशोभापुष्यति स्वां न शोभाम्—श० १।१९, मेघ० ५२,५९ (ख) नैसर्गिक सौन्दर्य, (पर्वत आदि की) गरिमा,—अद्रिशोभा रघु० २।२७ 3. अलंकार, ललित अभिव्यक्ति—शोभैव मन्दरलुब्धक्षुभिताम्भोधि-वर्णना -शि० २।१०७ 4. हल्दी 5. एक प्रकार का रंग, गोरोचना। सम०—अञ्जनः एक अत्यंत उपयोगी वृक्ष, सौहंजना।

शोभित (भू० क० कृ०) [शुभ्+णिच्+क्त] 1. अलंकृत, चारु, सजाया हुआ 2. सुन्दर, प्रिय।

शोषः [शुष् |-घञ्] 1. सूखना, सूखापन —हृदशोषविवल-वाम्—कु० ४।३९, इसी प्रकार आस्यशोषः, कंठशोषः 2. कृशता, कुम्हलान—शरीरशोषः, कुसुमशोष आदि 3. फुफ्फुसीय क्षय, या क्षयरोग संशोषणाद् रसादीनां शोष इत्यभिधीयते—सुश्रु०। सम०—संभवम् पिप्पला-मूल।

शोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप् च] 1. सूखना, शुष्क करना 2. सुखाना, कृश करना, —णः कामदेव का एक बाण,—णम् 1. सूखना, शुष्क होना 2. चूसना, रसाकर्षण, अवशोषण 3. निः शोषण, क्लांति 4. कृशता, कुम्हलाहट 5. सोंठ।

शोषित (भू० क० कृ०) [शुष्+णिच्+क्त] 1. सुखाया गया 2. कृश हुआ, कुम्हलाया हुआ 3. परिश्रान्त।

शोषिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+णिच्+णिनि] सुखाने वाला, कुम्हलाता हुआ, क्षीण होने वाला।

शौकम् [शुक+अण्] तोतों की लार, तोतों का झुण्ड।

शौक्त (वि०) (स्त्री०—क्ती) [शुक्ति |-अण्] अम्ल, सिरके का।

शौक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [शुक्ति+ठक्] 1. मोती से सम्बन्ध रखने वाला 2. खट्टा, सिरके का, सेजावी।

शौक्तिकेयम्, शौक्तेयम् [शुक्तिका+ढक्, शुक्ति+ढक्] मोती।

शौक्तिकेयः [शुक्तिका+ढक्] एक प्रकार का विष।

शौक्ल्यम् [शुक्ल+ष्यञ्] श्वेतता, सफेदी, स्वच्छता।

शौचम् [शुचेर्भावः अण्] 1. पवित्रता, स्वच्छता—पञ्च० १।१४७ 2. मलत्याग के कारण दूषित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण, विशेषतः किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु होने पर (लोक-व्यवहार के अनुसार निश्चित समय पर क्षौरकर्म आदि करा कर) शुद्ध होना 3. स्वच्छ होना, निर्मल होना 4. मलत्याग करना 5. खरापन, ईमानदारी। सम० आचारः, कर्मन् (नपुं०) —कल्पः शुद्धि विषयक संस्कार, कूपः सप्तास, गौचालय।

शौचेयः [शुचि+ढक्] धोबी।

शौट् (म्वा० पर० शौटति) घमण्डी या अहंकारी होना।

शौटीर (वि०) [शौटैः ईरन्] घमण्डी, अहंकारी, —रः 1. शूरवीर, मल्ल, योद्धा 2. घमण्डी मनुष्य 3. सन्यासी।

शौटीर्यम्, शौण्डीर्यम् [शौटीर (शौण्डीर)+ष्यञ्] घमण्ड, अभिमान, दर्प।

शौडति (म्वा० पर० शौडति) दे० 'शौट्'।

शौण्ड (वि०) (स्त्री० ण्डी) [शुण्डायां सुरायामभिरतः अण्] 1. शराबी, शराब पीने का शौकीन, मद्यप 2. उत्तेजित, मतवाला, नशे में चूर—(आलं०) अ-विकृतिनिपूणं ते चेष्टितं मानशौण्ड—वेणी० ५।२१, अभिमान में चूर, घमण्डी 3. कुशल, दक्ष (अधि० के साथ या समास में) अक्षशौण्ड, दानशौण्ड आदि।

शौण्डिकः, शौण्डिन् (पुं०) [शुण्डा सुरा पण्यमस्य ठक्, इनि वा] शराब खींचने वाला, कलाल, शराब विक्रेता, सुराजीवी, की,—नी कलाली, शराब बिक्री पर्योपि शौण्डिकीहस्ते चारुणीयमिधीयते हि० ३।११।

शौण्डिकेयः [शुण्डिका+ढक्] राक्षस।

शौण्डी [शुण्डा करिकरः तदाकारः अस्ति अस्याः -शुण्डा +अण्+ङीप्] गजपिप्पली, बड़ी पीपल।

शौण्डीर (वि०) [शुण्डा गर्वोऽस्ति अस्य—शुण्डा+ईरन् +अण्] 1. घमण्डी, अभिमानी 2. उत्तुङ्ग, उन्नत।

शौद्धोदनिः [शुद्धोदन+इञ्] बुद्ध का विशेषण, शुद्धोदन का पुत्र।

शौद्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [शूद्र+अण्] शूद्र सम्बन्धी, —द्रः शूद्रा स्त्री का पुत्र जिसका पिता (तीन वर्णों में से) किसी भी वर्ण का हो—दे० मनु० ९।१६०।

शौनम् [शुना |-अण्] कसाईखाने में रक्खा हुआ मांस।

शौनकः [शुनक+अण्] एक महर्षि, ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य अनेक वैदिक रचनाओं के प्रणेता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शौनिकः [शुना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्] 1. कसाई, —छद्मना परिदधामि मृत्यवे, शौनिको गृहशकुन्तिका-मिव—उत्तर० १।४५ 2. बहेलिया, चिड़ीमार 3. शिकारी, आखेटी ।

शौभः [शोभार्थं हितम्- शोभा+अण्] 1. देवता, दिव्यता 2. सुपारी का पेड़ ।

शौभाञ्जनः [शोभाञ्जन+अण्] एक वृक्ष का नाम, दे० 'शोभाञ्जन' ।

शौभिकः [शौभं द्यौमपुरं शिल्पमस्य -शौभ+ठक्] 1. मदारी, बाजीगर 2. शिकारी, बहेलिया इति चिन्तयतो हृदये पिकस्य समयामि शौभिकेन शरः -भामि० १।११४ ।

शौरसेनी [शूरसेन+अण्+ङीप्] एक प्रकार की प्राकृत बोली का नाम ।

शौरिः [शूर+इञ्] 1. कृष्ण या विष्णु 2. बलराम 3. शनिग्रह ।

शौर्यम् [शूरस्य भावः ष्यञ्] 1. पराक्रम, शूरता, वीरता, —शौर्यं वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम् —भर्तृ० २।३९, नये च शौर्ये च वसन्ति संपदः—सुभा० 2. सामर्थ्य, शक्ति, ताकत 3. युद्ध और अतिप्राकृतिक घटनाओं का रंगमंच पर अभिनय करना—हु० 'आरभटी' ।

शौल्कः, शौल्किकः [शुल्के तदादानेऽधिकृतः अण्, ठक् वा] चुंगी का अवीक्षक, शुल्काधिकारी ।

शौल्वि (ल्बि) कः [शुल्व+ठक्] तांबे के बर्तन बनाने वाला, कसेरा ।

शौव (वि०) (स्त्री०—वी) [श्वन्+अण्, टिलोपः] कुत्तों से संबन्ध रखने वाला, कुक्कुरसंबंधी, वम् 1. कुत्तों का झुंड 2. कुत्तों का स्वभाव ।

शौव (त्रि०) आगामी कल संबन्धी ।

शौवन (वि०) (स्त्री०—नी) [श्वन्+अण्] 1. कुक्कुर संबन्धी 2. कुत्ते के गुणों से युक्त,—नम् 1. कुत्ते का स्वभाव 2. कुत्ते की संतति ।

शौवस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [श्वस्+ठक्, तुट् च] आगामी कल संबन्धी या आगामी कल तक ठहरने वाला, एकदिवसीय, अल्पजीवी ।

शौल्कः [शुल्कं+अण्] 1. मांस बिक्रेता 2. मांसभक्षी, वम् शुष्क मांस का मूल्य ।

श्च्युत् दे० नी० 'श्च्युत्' ।

श्च्युत् (भ्वा० पर० श्च्युतीति) 1. टपकना, रिसना, बहना, चूना,—शि० ८।६३, कि० ५।२९ 2. डालना, उड़ेलना, फैलाना, बखेरना, वि —, बहना, रिसना, टपकना: निश्च्योतन्त सुतनु कबरीबिन्दवो यावदेते —मा० ८।२ ।

श्च्यो (श्चो) तः, **श्च्योद (श्चोद)** तनम् [श्च्यु (श्चु)+घञ्, ल्युट् वा] रिसना, बहना, स्रवित होना, चूना ।

श्मशानम् [श्मानः शयाः शेरतेऽत्र —शी+आनच्, डित्त्व, अथवा श्मन् शब्देन शवः प्रोक्तः तस्य शानं शयनम्] शवस्थान, क़ब्रिस्तान, शवदाह स्थान, मरघट—राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः—सुभा० । सम०—अग्निः मरघट की आग,—आलयः क़ब्रिस्तान, —गोचर (वि०) मसान में घूमने वाला—मनु० १०। ३९, —निवासिन्, —वसिन् (पुं०) भूत, —भाज्, —वासिन् (पुं०) शिव के विशेषण,—वैराग्यम् क्षणिक विरक्ति, श्मशान भूमि के दर्शन से उत्पन्न अस्थायी संसार त्याग की भावना, —शूलः,—शूलम् श्मशान भूमि में स्थित लोहे या लकड़ी की सूली कु० ५।७३, —साधनम् भूत-प्रेतों को वश में करने के लिए श्मशान में तांत्रिक मन्त्रों की साधना करना ।

श्मश्रु (नपुं०) [श्म पुं० मुखं श्रूयते लक्ष्यतेऽनेन—श्रु+क्रु] दाढ़ी-मूँछ ज्योतिष्कणाहृतश्मश्रु कण्ठनालादपावतत् —रघु० १५।५२। सम०—प्रवृद्धिः दाढ़ी का बढ़ना, -रघु० १३।७१, —वती दाढ़ी-मूँछ वाली स्त्री, वर्मकः नाई ।

श्मश्रुल (वि०) [श्मश्रु+लच्] दाढ़ी मूंछ वाला, श्मश्रुधारी भल्लापदलितैस्तेषां शिरोभिः श्मश्रुलैर्महीं (तस्तार) रघु० ४।६३ ।

श्मील् [भ्वा० पर० श्मीलति) आँख झपकना, पलक मारना, आँखें मटकाना ।

श्मीलनम् [श्मील्+ल्युट्] आँख मीचना, पलक झपकना ।

श्यान (भू० क० कृ०) [श्यै+क्त] 1. गया हुआ 2. जमा हुआ, पिंडीभूत 3. घनीभूत, चिपकना, साद्र 4. सिकुड़ा हुआ, सूखा-भर्तृ० २।४४, वम् घुआँ ।

श्याम (वि०) [श्यै+मक्] 1. काला, गहरा नीला, काले रंग का प्रत्याख्यातविशेषकं कुरबकं श्यामावदातारुणम्-मालवि० ३।५, विक्रम० २।७ कुवलयदलश्यामस्निग्धः—उत्तर० ४।१९, मेघ० १५, २३ 2. भूरा 3. गहरा-हरा,—मः 1. काला रंग 2. बादल 3. कोयल 4. प्रयाग में यमुना के किनारे स्थित बरगद का पेड़ —अयं च कालिन्दीतटे वटः श्यामो नाम—उत्तर० १, सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः—रघु० १३।५३, —मम् 1. समुद्री नमक 2. काली मिर्च । सम० —अङ्ग (वि०) काला, (गः) बुध ग्रह,—कण्ठः 1. शिव (नीलकंठ) का विशेषण 2. मोर,—कर्णः अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा, पत्रः तमाल वृक्ष,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—भास्,—रुचि (वि०) चमकीला काला,—सुन्दरः कृष्ण का विशेषण ।

श्यामल (वि०) [श्याम+लच्, ला+क वा] काला, गहरानीला, सांवला, निशितश्यामलस्निग्धमुखी शपितः · वेणी० ४, शि० १८।३६, उत्तर० २।२५, —लः 1. काला रंग 2. काली मिर्च 3. भौंरा 4. वटवृक्ष ।

श्यामलिका [श्यामल+कन्+टाप्, इत्वम्] नील का पौधा ।

श्यामलिमन् (पुं०) [श्यामल+इमनिच्] कालिमा, कालापन · श्यामां श्यामलिमानमानयत भोः सान्द्रैः मषीकूर्चकैः —विद्ध० ३।१ ।

श्यामा [श्याम+टाप्] रात, विशेषतः काली रात, —श्यामां श्यामलिमानमानयत भोः सान्द्रैर्मषीकूर्चकैः —विद्ध० ३।१ 2. छाँह, छाया 3. काली स्त्री 4. स्त्री विशेष (नै० ३।८ पर मल्लि० के अनुसार 'यौवनमध्यस्था'—शि० ८।३६, मेघ० ८२, या, शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे या सुखशीतला । तप्तकांचनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कथ्यते भट्टि० ५।१८ तथा ८।१०० पर एक टीकाकार के अनुसार) 5. निस्सन्तान स्त्री 6. गाय 7. हल्दी 8. मादा कोयल 9. प्रियंगुलता—मालवि० २।७, मेघ० १०४ 10. नील का पौधा 11. तुलसी का पौधा 12. कमल का बीज 13. यमुना नदी 14. कई पौधों का नाम ।

श्यामाकः [श्याम+अक्+अण्] एक प्रकार का अन्न, धान्य, सावाँ चावल—(नं) श्यामाकनुटिप्रविवित्तो जहाति —शं० ४।१३, (श्यामक भी) ।

श्यामिका [श्याम+ठन् भावे] 1. कालिमा, श्यामता कु० ५।२१ 2. मलिनता, खोटापन (चन्दु प्रतिकौ का) —हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा —रघु० ११।० ।

श्यामित (वि०) [श्याम+इतच्] काला किया हुआ, कृष्ण रंग का किया हुआ, कलूटा ।

श्यालः [श्यै+कालन्] पत्नी का भाई, साला ।

श्यालकः [श्याल+कन्] 1. पत्नी का भाई 2. साला ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली [श्यालक+ङीप्+टाप् इत्वं वा, श्याल+ङीष्] पत्नी की बहन, साली ।

श्याव (वि०) (स्त्री० वा,—वी) [श्यै+वन्] कपिश, गहरा भूरे रंग का, काला, धूसर, धूमैला 2. लाल के रंग का, भूरा, —वः भूरा रंग । सम०—तैलः ग्राम का वृक्ष ।

श्वेत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [श्वै+इतच्] सफेद, —तः श्वेत रंग ।

श्वेतः [श्वै+इनन्] 1. सफेद रंग 2. सफेदी 3. बाज, शिकरा 4. हिंसा, प्रचण्डता । सम०—करणम्, —करणिका 1. अलग चिता पर दाह करना 2. बाज की भाँति झपट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना, —चित्,—जीविन् (पुं०) बाज को पकड़ कर तथा उसे बेच कर जीवन निर्वाह करने वाला ।

श्वै [भ्वा० आ० श्वायते, श्यान, शीत या शीन] 1. जाना, हिलना-डुलना 2. जम जाना 3. सूख जाना, कुम्हलाना, आ · सूख जाना रघु० १७।२७, दे० 'आश्यान' भी ।

श्वेनपातः [श्वेनस्य पातोऽत्र अण्, मुम् च] बाज की भाँति झपटना, शिकार, आखेट ।

श्वेतोनाकः, श्वेतोनाकः [श्वै+ओणा (ना) क] एक वृक्ष का नाम, सोना पाठा ।

श्वस् (स्वा० आ० श्वसते) जाना, रेंगना ।

श्वञ्च् (भ्वा० पर० श्वञ्चति) जाना, हिलना-डुलना, रेंगना ।

श्वण् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० श्वणति, श्वाणयति-ते) देना, प्रदान करना, अर्पण करना (प्रायः वि पूर्वक) · रघु० ५।१ ।

श्वत् (अव्य०) [श्वि+डति] एक प्रकार का उपसर्ग जो 'धा' धातु के पूर्व में लगता है, दे० 'धा' के अन्तर्गत ।

श्वथ् i (भ्वा० पर०, स्वा० पर० श्वथति श्वथ्नाति) चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, मार डालना ।

ii (भ्वा० पर० पर० चुरा० उभ० श्वथति, श्वाथयति-ते) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. खोलना, ढीला करना, स्वतन्त्र करना, मुक्त करना ।

iii (चुरा० उभ० श्वथयति-ते) 1. प्रयत्न करना, व्यस्त रहना 2. विवेक होना, कमजोर होना 3. प्रसन्न होना ।

श्वथनम् [श्वथ्+ल्युट्] 1. मारना, विनाश करना 2. खोलना, ढीला करना, मुक्त करना 3. प्रयत्न, चेष्टा 4. बांधना, बन्धन में डालना ।

श्रद्धा [श्रत्+धा+अङ्+टाप्] 1. आस्था, निष्ठा, विश्वास, भरोसा 2. देवीसन्देशों में विश्वास, धार्मिक निष्ठा—श्रद्धा चित्तं त्रिविश्वेति त्रितयं तन्मागतम् —शं० ७।२९, रघु० २।१६, भग० ६।३७, १७।३ 3. शान्ति, मन की स्वस्थता 4. घनिष्ठता, परिचय 5. आदर, सम्मान 6. प्रबल या उत्कट इच्छा—तथापि दैविश्वरहस्यश्रद्धा श्रद्धां विधास्यन्ति सचेतसोऽत्र विक्रम० १।१३, मालवि० ६।१८ 7. दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा ।

श्रद्धालु (वि०) [श्रद्धा+आलुच्] 1. विश्वास करने वाला, निष्ठावान् 2. इच्छुक, (किसी वस्तु का) अभिलाषी, लुः (स्त्री०) दोहदवती, गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु की कामना करे ।

श्रन्थ् i (भ्वा० आ० श्रन्थते) 1. दुर्बल होना 2. निढाल या विश्रान्त होना 3. ढीला करना, विश्राम करना ।

ii (क्रया० पर० श्रन्थ्नाति) 1. ढीला करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना 2. खूब प्रसन्न होना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रन्थः [श्रन्थ्+घञ्] 1. ढीला करना, स्वतन्त्र करना 2. ढीलापन, 3. विष्णु ।

श्रन्थनम् [श्रथ्+ल्युट्] 1. ढीला करना, खोलना 2. चोट पहुँचाना, मार डालना, विनाश करना 3. बाँधना, बन्धन में डालना ।

श्रपणम्,-णा [श्रा+पच्+ल्युट्] उबलवाना, गरम करना ।

श्रपित [मू० क० कृ०] [श्रा+पच्+क्त] गरम किया गया या उबलाया गया, तप्त मांड, कांजी ।

श्रम् (दिवा० पर० श्राम्यति, श्रान्त) 1. चेष्टा करना, उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना 2. तपश्चर्या करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना —क्रियच्चिरं श्राम्यसि गौरि—कु० ५।५० 3. श्रान्त होना, थकना, परिश्रान्त होना—रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणी गाढमुरसि—काव्य० १०, शि० १४।३८, भट्टि० १४।११० 4. कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना —यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानाम् —मेघ० ९९, प्रेर० (श्र—श्रा—श्रमयति-ते) थकाना, परि—, अत्यन्त थक जाना,—श० १, वि—, 1. विश्राम करना, आराम करना, ठहरना कु० ३।९ 2. थमना, अन्त होना, दे० 'विश्रान्त' भी रघु० १।५४, उतरवाना, बसाना ।

श्रमः [श्रम्+घञ्, न वृद्धिः] 1. मेहनत, परिश्रम, चेष्टा, प्रयत्न अलं महीपाल तव श्रमेण—रघु० २।३४, जानाति हि पुनः सम्यक् कविरेव कवेः श्रमम्-सुभा० —रघु० १६।७५, मनु० ९।२०८ 2. थकावट, थकान, परिश्रान्ति, विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।३५, ६७, मेघ० १७।५२, कि० ५।२८ 3. कष्ट, दुःख 4. तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन,—दिवं यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः कु० ५।४५ 5. व्यायाम, विशेषतः सैनिक व्यायाम, कवायद 6. घोर अध्ययन । सम०—अम्बु (नपुं०)—जलम् पसीना, -कर्षित (वि०) थका-मांदा,—साध्य (वि०) परिश्रम द्वारा सम्पन्न होने योग्य, कष्टसाध्य ।

श्रमण (वि०) (स्त्री०—णा,-णी) [श्रम्+ल्युट्] 1. पारिश्रमी, मेहनती 2. नीच, अधम, कमीना,-णः 1. संन्यासी, भक्त, साधु 2. बौद्धभिक्षु, णा, ओ 1. भक्तिनी, भिक्षुणी 2. लावण्यमयी स्त्री 3. नीच जाति की स्त्री 4. बंगाली मजीठ 5. जटामांसी, बालछड़ ।

श्रम्भ् (भ्वा० आ० श्रम्भते, श्रब्ध) 1. उपेक्षक होना, असावधान होना, लापरवाह होना 2. गलती करना, वि—, विश्वास करना, भरोसा करना-दे० 'विश्रब्ध' ।

श्रयः, श्रयणम् [श्रि+अच्, ल्युट् वा] शरण, पनाह, बचाव, आश्रय ।

श्रवः [श्रु+अप्] 1. सुनना, जैसा कि 'सुश्रवः' में 2. कान 3. किसी त्रिकोण का कर्ण ।

श्रवणः,-णम् [श्रु+ल्युट्] 1. कान—ध्वनति मधुपः समूहे श्रवणमपि दधाति गीत० ५ 2. किसी त्रिकोण का कर्ण, णः,—णा इस नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित हैं), णम् 1. सुनने की क्रिया,—श्रवणसुभगम् मेघ० ११ 2. अध्ययन 3. ख्याति, कीर्ति 4. जो सुना गया या प्रकट हुआ,—वेद, इति श्रवणात् 'वैदिक पाठ ऐसा होने के कारण' 5. दौलत । सम० **इन्द्रियम्** श्रोत्रेन्द्रिय, कान,—**उद्देशः** कान का बाह्यविवर, **गोचर** (वि०) श्रवणपरास के अन्तर्गत (रः) सुनाई देने की सीमा तक, यथा 'श्रवणगोचरे तिष्ठ, अर्थात् जहां तक सुनाई देता रहो वहीं तक रहो,—**पथः,** —**विषयः** कान की पहुँच, श्रवण परासः—वृत्तान्तेन श्रवणविषयप्रापिणा- रघु० १४।८७,—**पालिः**—ली (स्त्री०) कान का सिरा,—**सुभग** (वि०) कर्णसुखद ।

श्रवस् (नपुं०) [श्रु+असि] 1. कान 2. ख्याति कीर्ति, 3. दौलत 4. सूत्र ।

श्रवस्यम् [श्रवस्+यत्] ख्याति, कीर्ति, विश्रुति ।

श्रवाप्यः,-प्यः [श्रु+आप्य] यज्ञ में बलि दिये जाने के योग्य पशु ।

श्रविष्ठा [श्रवः ख्यातिः अस्ति अस्याः श्रव+मतुप्, इष्ठनि मतुबो लुक्] 1. धनिष्ठा नाम का नक्षत्र 2. श्रवणा नाम का नक्षत्र । सम० —**जः** बुधग्रह ।

श्रा [अदा० पर० श्राति, श्राण या श्रृत, प्रेर० श्रपयति-ते) पकाना, उबालना, भोजन बनाना, परिपक्व करना, पकना ।

श्राण (वि०) [श्रा+क्त] 1. पकाया हुआ, भोजन बनाया हुआ, उबाला हुआ 2. आर्द्र, गीला, तर ।

श्राणा [श्राण+टाप्] कांजी, थवागू ।

श्राद्ध (वि०) [श्रद्धा हेतुत्वेनास्यस्य अण्] निष्ठावान्, विश्वास करने वाला, -द्धम् 1. मृतक सम्बन्धियों की दिवङ्गत आत्माओं के सम्मान में अनुष्ठेय संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार—श्रद्धया दीयते यस्मात्तस्माच्छ्राद्धं निगद्यते; यह तीन प्रकार का है—नित्य, नैमित्तिक और काम्य 2. और्ध्वदैहिक आहुति, श्राद्ध के अवसर पर उपहार या भेंट । सम०—**कर्मन्** (नपुं०)—**क्रिया** अन्त्येष्टि संस्कार, **कृत्** (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला, **दः** अन्त्येष्टि आहुति या श्राद्ध भेंट करने वाला, **दिनः,**—**नम्** उस स्वर्गीय सम्बन्धी की बरसी जिसके सम्मान में श्राद्ध किया जाय, **देवः,** —**देवता** 1. अन्त्येष्टि संस्कार की अधिष्ठात्री देवता 2. यम का विशेषण 3. विश्वदेव दे० 4. पिता, प्रजनक, **भुज्,**—**भोक्तृ** (पुं०) दिवङ्गत, पूर्व पुरुष ।

श्राद्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [श्राद्धेयं, श्राद्धं तदहंत्यं भक्ष्यत्वेनास्यस्य वा ठन्] श्राद्ध सम्बन्धी और्ध्व दैहिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भेंट को स्वीकार करने वाला,—कम् श्राद्ध के अवसर पर दिया गया उपहार ।

श्राद्धीय (वि०) [श्राद्ध+छ] श्राद्ध सम्बन्धी ।

श्रान्त (भू० क० कृ०) [श्रम्+क्त] 1. थका हुआ, थका-मांदा, क्लान्त, परिश्रांत 2. शान्त, सौम्य,—तः संन्यासी ।

श्रान्तिः (स्त्री०) [श्रम्+क्तिन्] क्लान्ति, परिश्रान्ति, थकावट ।

श्राम्नः [श्राम्+अच्] 1. मास 2. समय 3. अस्थायी छाजन ।

श्रायः [श्रि+घञ्] आश्रय, बचाव, शरण, सहारा ।

श्रावः [श्रु+घञ्] सुनना, कान देना ।

श्रावकः [श्रु+ण्वुल्] 1. श्रोता 2. छात्र, शिष्य—श्रावकावस्थायाम्—मा० १०, अर्थात् छात्रावस्था में 3. बौद्ध-भिक्षु, बौद्ध सन्त, महात्मा 4. बौद्ध भक्त 5. पाखण्डी, 6. कौवा ।

श्रावण (वि०) (स्त्री०—णी) [श्रवण+अण्] 1. कान सम्बन्धी 2. श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न,—णः सावन का महीना, (जुलाई—अगस्त में आने वाला) 2. पाखण्डी 3. छपवेशी 4. एक वैश्य संन्यासी जिसको दशरथ ने अन जाने मार डाला, बाद में उसके माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया कि वह अपने पुत्रों के वियोग से दुःखी हृदय होकर मरेगा ।

श्रावणिक (वि०) [श्रावण+ठक्] श्रावण मास सम्बन्धी, —कः सावन का महीना ।

श्रावणी [श्रवणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी—श्रवण+अण्+ङीप्] 1. श्रावण मास की पूर्णिमा 2 एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत बदले जायें, सलोनों, रक्षाबन्धन ।

श्रावस्तिः,—स्ती (स्त्री०) गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा स्थापित एक नगर ।

श्रावित (वि०) [श्रु+णिच्+क्त] कहा हुआ, सुनाया गया, वर्णन किया गया ।

श्राव्य (वि०) [श्रु+णिच्+यत्] 1. सुने जाने के योग्य (विप० दृश्य) 2. जो सुना जा सके, स्पष्ट ।

श्रि (भ्वा० उभ० श्रयति—ते, श्रित; प्रेर० श्राययति—ते, इच्छा० शिश्रीषति—ते, शिश्रयिषति—ते) जाना, पहुँचना, सहारा लेना, दौड़ होना, बचाव के लिए पहुँच होना,—यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्—हि० १।१७१, रघु० ३।७०, १९।१ 2. जाना, पहुँचना, भुगतना, (अवस्था) धारण करना—परीता रक्षोभिः श्रयति विवशा कामपि दशाम् - भामि० १।८३, द्विपेन्द्रभावं कलभः श्रयन्निव —रघु० ३।३२ 3. चिपकना, झुकना, आश्रित होना, निर्भर रहना—उत्तर० १।३२ 4. निवास करना, बसना 5. सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना 6. सेवन करना काम पर लगाना, 7. संलग्न करना, अनुषक्त होना । **अधि**—, 1. निवास करना 2. सवारी करना, चढ़ना, आ—, 1. सहारा लेना, आश्रय लेना, अवलम्ब लेना, विक्रम० ५।१७, भट्टि० १४।११३ 2. अनुगमन करना—रघु० ४।३५ 3. शरण लेना, निवास करना, बसना—रघु० १३।७, पंच० १।५१ 4. आश्रित होना,—मनु० ३।७७ 5. पार जाना, अनुभव प्राप्त करना, भुगतना, धारण करना एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान्—उत्तर० ३।४७ 6. जमे रहना, डटे रहना 7. चुनना, छांटना, पसन्द करना 8. सहायता करना, मदद करना, **उद्**—, ऊपर उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना, **उप**—, पहुँच या अवलम्ब होना,—भग० १४।२, उत्तर० १।३७, **सम्**—, 1. पहुँच होना, सहारा होना, शरण में जाना, सहायता के लिए पहुँचना 2. अवलम्बित होना, आश्रित होना —उत्तर० ६।१२, मा० १।२४ 3. हासिल करना, प्राप्त करना 4. अभिगमन करना, संभोग के लिए पहुँचना 5. सेवा करना ।

श्रित (भू० क० कृ०) [श्रि+क्त] 1. गया हुआ, पहुँचा हुआ, शरण में पहुँचा हुआ 2. चिपका हुआ, सहारा लिया हुआ, बैठा हुआ 3. संयुक्त, सम्मिलित, सबद्ध 4. बचाया हुआ 5. सम्मानित, सेवित 6. अनुसेवी, सहकारी 7 आच्छादित, बिछाया हुआ 8. युक्त, पूरित 9. समवेत, एकत्रित 10. सहित, संपन्न ।

श्रितिः (स्त्री०) [श्रि+क्तिन्] अवलम्ब, सहारा, पहुँच ।

श्रियंमन्य (वि०) 1. अपने आप को योग्य मानने वाला 2. घमंडी ।

श्रियापतिः (पुं०) शिव का विशेषण ।

श्रिय् (भ्वा० पर० श्रयति) जलाना ।

श्री (क्र्या० उभ० श्रीणाति, श्रीणीते) पकाना, भोजन बनाना, उबालना, तैयार करना ।

श्री (स्त्री०) [श्रि+क्विप्, नि०] 1. धन, दौलत, प्राचुर्य, समृद्धि, पुष्कलता अनिषदः श्रियां मूलम् —रामा०, साहसे श्रीः प्रतिवसति—मृच्छ० ४, 'सौभाग्य डोरों पर अनुग्रह करता हूँ'—मनु० ९।३०० 2. राजसत्ता, ऐश्वर्य, राजकीय धनदौलत—कि० १।१ 3. गौरव महिमा, प्रतिष्ठा—श्रीलक्षण कु० ७।४६, अर्थात् महिमा या गौरव का चिह्न 4. सौन्दर्य, चारुता, लालित्य, कान्ति (मुखं) कमलश्रियं दधौ—कु० ५।२१, ७।३२, रघु० ३।८, कि० १।७५ 5. रंग, रूप, कु० २।२ 6. विष्णु की पत्नी लक्ष्मी जो धन की देवी है,—आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः—उत्तर०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४।९, शि० २।१४, शि० १।१ 7. गुण, श्रेष्ठता 8. सजावट 9. बुद्धि, समझ 10. अतिमानव शक्ति 11. मानवजीवन के तीन उद्देश्यों की समष्टि (धर्म, अर्थ, और काम) 12. सरल वृक्ष 13. बेल का पेड़ 14. हींग 15. कमल (श्री' शब्द सम्मान सूचक पद है जो पूज्य व्यक्तियों तथा देवों के नामों के पूर्व लगाया जाता है-- श्रीकृष्णः श्रीरामः, श्री वाल्मीकिः, श्रीजयदेवः, कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थों के पूर्व भी जिनका विषय धार्मिक है--श्रीभागवत, श्रीरामायण आदि, किसी पाण्डुलिपि या पत्रादिक के आरम्भ में भी मंगलाचरण के रूप में प्रयुक्त होता है; माघ ने अपने 'शिशुपालवध' काव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में इस शब्द का प्रयोग किया है, जिस प्रकार भारवि ने 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है)। सम० आह्लम् कमल,--ईशः विष्णु का विशेषण --कण्ठः 1. शिव का विशेषण 2. भवभूति कवि का विशेषण-- श्रीकण्ठपदलाञ्छनः --उत्तर० १, सखः कुबेर का विशेषण,-- करः विष्णु का विशेषण (--रम्) लाल कमल, करणम् लेखनी, कान्तः विष्णु का विशेषण, कारिन् (पुं०) एक प्रकार का बारहसिंगा, --खण्डः,--डम् चन्दन की लकड़ी श्रीखण्डविलेपनं सुखयति--हि० १।९७, चरितम् एक प्रकार का छोटा नाटक, - गर्भः 1. विष्णु का विशेषण 2. तलवार, - गृहः पक्षियों को पानी पिलाने की कुण्डी, घनम् लट्ठी दही, (नः) बौद्ध महात्मा,--चक्रम् 1. भूवृत्त, भूमण्डल 2. इन्द्र के रथ का पहिया, जः काम का विशेषण,--ढः कुबेर का विशेषण, दयितः, --धरः विष्णु के विशेषण, - नगरम् एक नगर का नाम --नन्दनः राम का विशेषण,--निकेतनः,-- निवासः विष्णु के विशेषण,--पतिः 1. विष्णु का विशेषण शि० १३।६९ 2. राजा, प्रभु,--पथः मुख्य सड़क, राजमार्ग, पर्णम् कमल,--पर्वतः एक पहाड़ का नाम --भा० १,--पिष्टः तारपीन, पुष्पम् लौंग, - फलः बेल का पेड़ (लम्) बेल का फल,--फला,--फली 1. नील का पौधा 2. आमलकी आँवला,--भातृ (पुं०) 1. चाँद 2. घोड़ा, वत्सकः लहसुन, सुडा वैष्णवों का विशेष तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है,--मूर्तिः (स्त्री०) 1. विष्णु या लक्ष्मी की प्रतिमा 2. कोई भी प्रतिमा,--युक्त,--युत,--, 1. सौभाग्यशाली, प्रसन्न 2. धनवान्, समृद्धिशाली (प्रायः पुरुषों के नामों के पूर्व लगाया जाने वाला सम्मान सूचक पद,--रङ्गः विष्णु का विशेषण,--रसः 1. तारपीन 2. राल,--वत्सः 1. विष्णु का विशेषण, विष्णु की छाती पर बालों का घूंघर या चिह्नविशेष--प्रभानुलिप्तश्रीवत्सं लक्ष्मीविभ्रमदर्पणम् रघु० १०।१०, °अङ्कः °धारिन्, °भृत्, °लक्ष्मन्, °लाञ्छन, (पुं०) विष्णु के विशेषण कु० ७।४३, वत्सलिन् (पुं०) एक घोड़ा जिसकी छाती पर बालों का घूंघर होता है,- वरः, वल्लभः 1. विष्णु के विशेषण,--वल्लभः लक्ष्मी का प्रिय, सौभाग्यशाली या सुखी व्यक्ति, वासः 1. विष्णु का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. कमल 4. तारपीन,--वासस् (पुं०) तारपीन, - वृक्षः 1. बेल का पेड़ 2. अश्वत्थवृक्ष 3. घोड़े के मस्तक और छाती पर बालों का घूंघर, वेष्टः 1. तारपीन 2. राल, संज्ञम् लौंग, - सहोदरः चन्द्रमा, - सूक्तम् एक वैदिक सूक्त का नाम, हरिः विष्णु का विशेषण, - हस्तिनी सूर्यमुखी फूल का पौधा।

श्रीमत् (वि०) [श्री+मतुप्] 1. दौलतमन्द, धनवान् 2. सुखी, सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली, फलता-फूलता 3. सुन्दर, सुहावना, सुखद --किं० १।१ 4. विख्यात, प्रसिद्ध, कीर्तिशाली, प्रतिष्ठित (प्रसिद्ध और सम्मानित पुरुष या वस्तुओं के नामों के पूर्व आदरसूचक शब्द (पुं०) विष्णु का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. तिलक वृक्ष 5. अश्वत्थवृक्ष।

श्रील (वि०) [श्रीः अस्ति अस्य लच्] 1. धनवान्, दौलतमन्द 2. सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली 3. सुन्दर 4. विख्यात, प्रसिद्ध।

श्रु १ (स्वा० पर० श्रवति) जाना, हिलना, चूलना--तु० 'स्रु'।

श्रु २ (स्वा० पर० शृणोति, श्रुत) 1. सुनना, (ध्यानपूर्वक) श्रवण करना, कान देना - शृणु मे सांप्रतंयेय वचः विक्रम० २, स्तनि शाश्वत षट्पदानाम्--भट्टि० २।१०, संदेश मे तदनु जलद श्रोष्यसि, श्रोत्रपेयम्--मेघ० १३ 2. अधिगम करना, अध्ययन करना--द्वादशवर्षाभिर्व्याकरणं श्रूयते --पंच० १ 3. सावधान होना, आज्ञा मानना (इतिश्रूयते--(ऐसा सुना जाता है अर्थात् वेदों में इसका विधान है, ऐसा धर्मविधि), प्रेर० (श्रावयति--ते) सुनवाना, समाचार देना, कहना बयान करना --इच्छा० (शुश्रूषते) 1. सुनने की इच्छा करना 2. सावधान होना, आज्ञाकारी होना, वुश्रूषमाणा मानना --पंच० ४।७८ 3. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना--शुश्रूषस्व गुरून्--श० ४।१७, कु० १।५९, मनु० २।४४, अनु--, 1. सुनना मनु० ९।१००, तथाचानुश्रूयते--पंच० १ 2. गुरुपरम्परा से प्राप्त करना--, 1. सुनना 2. ध्यान देकर सुनना, आ--, 1. सुनना 2. प्रतिज्ञा करना (व्यक्ति में संप्र०)--याज्ञ० २।१९६, तु० पा० १।४।४०, उप--, 1. सुनना 2. जाना, निश्चय करना--केशिना हुताभुर्वशी नारदादुपश्रुत्य गन्धर्वसेना समादिष्टा विक्रम० १, परि--, सुनना, प्रति--, प्रतिज्ञा करना (उस व्यक्ति में संप्र० जिसके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिए प्रतिज्ञा की जाय—तस्यै प्रतिश्रुत्य रघुप्रवीरस्तदीप्सितम्—रघु० १४।२९, २।५६, ३।६७ १५।४, कि ,सुनना (प्रायः क्तांत रूप प्रयुक्त), सम्—सुनना, ध्यान लगा कर सुनना—संशृणोति न चोक्तानि—भट्टि० ५।१९, ६।५, (परन्तु अकर्मक प्रयोग में आ०)—हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः किं०१।५।

श्रुच्चिका (स्त्री०) शोरा, सज्जी, खार।

श्रुत (भू० क० कृ०) [श्रु+क्त] 1. सुना हुआ, ध्यान लगा कर श्रवण किया हुआ 2. वर्णित, कर्णगोचर 3. अधिगत, निर्धारित, समझा गया 4. सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत रघु० ३।४०, १४।६१ 5. नामक, पुकारा हुआ, **तम्** 1. सुनने का विषय 2. जो दैवी संदेश से सुना गया, अर्थात् वेद, पवित्र अधिगम, पुनीत ज्ञान—श्रुतप्रकाशम् रघु० ५।२ 3. सामान्य अधिगम, विद्या, —श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन (विभाति) भर्तृ० २।७१, रघु० ३।२१, ५।२२, पंच० २।४७, ४।६१। समः अध्ययनम् वेदों का पढ़ना,—अन्वित (वि०) वेदों का ज्ञाता अर्थः लौकिक रूप से या जबानी कहा गया तथ्य, -कीर्ति (वि०) प्रसिद्ध, विश्रुत, (पुं०) 1. उदार व्यक्ति 2. दिव्य ऋषि (स्त्री०) शत्रुघ्न की पत्नी,—देवी सरस्वती,—धर (वि०) सुनी हुई बात को याद रखने वाला, मेधावी।

श्रुतवत् (वि०) [श्रुत+मतुप्] वेदज्ञाता, वेददेखा, वेदज्ञ, —रघु० २।७४।

श्रुतिः (स्त्री०) [श्रु+क्तिन्] 1. सुनना चन्द्रस्य ग्रहणमिति श्रुतेः—मुद्रा० १।७, रघु० १।२७ 2. कान,—श्रुतिसुखभ्रमरध्वनगीतवः—रघु० ३।३५, श० १।१, वेणी० ३।२३ 3. विवरण, अफवाह, समाचार, मौखिक संवाद 4. ध्वनि 5. वेद (दिव्य संदेश होने के कारण—विप० स्मृति—देo 'वेद' के अन्तर्गत) 6. वैदिकपाठ वेदमन्त्र,—इतिश्रुतेः या इति श्रुतिः ऐसा वेद कहता है' 7. वेदज्ञान, पुनीतिज्ञान, पुण्य अधिगम 8. (संगीत में) सप्तक का प्रभाग, स्वर का चतुर्थांश या अन्तराल—शि० १।१०, ११।१, (दे० तत्स्थानीय मल्लि०) 9. श्रवण नक्षत्र। समः—अनुप्रासः अनुप्रास का एक भेद—दे० काव्य० २,—उक्त,—उदित (वि०) वेदविहित,—कटुः 1. साँप 2. तपश्चर्या, प्रायश्चित्त साधना, —कटु (वि०) सुनने में कड़वा (टुः) कर्णकटु, अमधुर ध्वनि, (यह रचना का एक दोष माना जाता है), —चोदनम्,—ना शास्त्रीय विधि, वेदविधि,—जीविका धर्मशास्त्र, विधिसंहिता,—दृष्टम् वेदविधियों का परस्पर विरोध या निष्फलता,—धर (वि०) सुनने वाला, —निदर्शनम् वेदों का साक्ष्य,—पथः कर्ण-परास -मालवि० ४।१,—प्रसादन (वि०) कर्णप्रिय,—प्रामाण्यम् वेदों की प्रामाणिकता या स्वीकृति,—मध्यलम् कान का बाहरी भाग,—मूलम् 1. कान की जड़,—लिपितुं किमपि श्रुतिमूले -गीत० १ 2. वेद का संहितापाठ, —मूलक (वि०) वेद पर आधारित,—विषयः 1. सुनने का विषय, अर्थात् ध्वनि—श० १।१ 2. कर्ण परास -एतत्प्रावेण श्रुतिविषयमापतितमेव —का० 3. वेद का विषय 4. धार्मिक अध्यादेश,—वेधः कान बींधना, —स्मृति (स्त्री०) (द्वि० व०) वेद और धर्मशास्त्र।

श्रुक् [श्रु+क] 1. यज्ञ 2. यज्ञीय चमच, तु० स्रुवा। समः —वृक्षः विकटक वृक्ष।

श्रेढी [श्रेण्यै राशीकरणाय ढौकते—श्रेणी+ढौक्+ड, पृषो०] (गणि० में) भिन्न जातीय द्रव्यों को मिलाने के लिए गणनांग भेद। समः—फल श्रेढ़ी का योग जोड़।

श्रेणि (पुं०, स्त्री०) **श्रेणी** (स्त्री०) [श्रि+णि, वा ङीप्] 1. रेखा, शृंखला, पंक्ति, तरङ्गभ्रूभङ्गा क्षुभितविहग-श्रेणिरसना—वेणी० ४।२८, न पद्मदशश्रेणिरिव पङ्कज सर्शवलासङ्गमपि प्रकाशते -कु० ५।९, मेघ० २८, ३५ 2. दल, संचय, समूह—उत्तर० ४ 3. व्यापारियों का संघ, शिल्पियों का संघटन, निगम 4. बोझा, बालटी। समः धर्माः (पुं०, ब० व०) व्यापारिवर्ग या शिल्पकार-संघों के नियम, रीतियाँ आदि।

श्रेणिका [श्रेणि+कन्+टाप्] तम्बू, खेमा।

श्रेयस् (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यम्—ईयसुन्, आदेशः] 1. अपेक्षाकृत अच्छा, वरीयस्, श्रेष्ठतर, वर्धनाद्रक्षणं श्रेयः—हि० ३।३, भग० ३।३५, २।५ 2. सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम 3. अधिक सुखी या सौभाग्यशाली 4. अधिक आनन्ददायक, प्रियतर (पुं०) 1. सद्गुण, पुण्यकर्म, नैतिक गुण, धार्मिक गुण 2. आनन्द, सौभाग्य, मंगल, शुभ, कल्याण, आशीर्वाद, शुभ परिणाम—पूर्वाचीरिवं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते श० ७।१३, प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः—रघु० १।७९, उत्तर० ५।२७, ७।२०, रघु० २।३४ 3. शुभ अवसर श० ७ 4. मोक्ष, मुक्ति। समः—अर्थिन् (वि०) 1. आनन्द का अन्वेषक, आनन्द का इच्छुक 2. हितैषी, —कर 1. आनन्दप्रद, अनुकूल 2. मंगलमय, शुभ, —परिश्रमः मुक्ति प्राप्त करने की चेष्टा।

श्रेष्ठ (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यः, इष्टन्, आदेशः] 1. सर्वोत्तम, अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रमुखतम (संब० या अधि० के साथ) 2. अत्यन्त प्रसन्न या समृद्ध 3. प्रियतम, अत्यन्त प्रिय 4. सबसे अधिक पुराना, वृद्धतम, —ष्ठः 1. ब्राह्मण 2. राजा 3. कुबेर का नाम 4. विष्णु का नाम, ष्ठम् गाय का दूध। समः—आश्रमः 1. मनुष्य के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आश्रम अर्थात् गृहस्थाश्रम 2. बृहस्थ,—वाच् (वि०) वाग्मी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेष्ठिन् (वि०) [श्रेष्ठं धनादिकमस्त्यस्य इनि] किसी व्यापारसंघ या शिल्पिसंस्थान का प्रधान या अध्यक्ष—निक्षेपे पतिते हस्तं श्रेष्ठी स्तौति स्वदेवताम्—पंच० १।१४ ।

श्रै (भ्वा० पर० श्रायति) 1. स्वेद आना, पसीना निकलना 2. पकाना, उबालना ।

श्रोण् (भ्वा० पर० श्रोणति) 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2. एकत्र होना, संचित होना ।

श्रोण (वि०) [श्रोण्+अच्] विकलांग, लंगड़ा,—णः एक प्रकार का रोग ।

श्रोणा [श्रोण+टाप्] 1. कांजी 2. श्रवण नक्षत्र ।

श्रोणिः,—णी (स्त्री०) [श्रोण्+इन् वा ङीप्] 1. कूल्हा, नितम्ब, चूतड़ श्रोणीभारादलसगमना—मेघ० ८२. श्रोणीभारस्त्यजति तनुताम् काव्य० १० 2. सड़क, मार्ग । सम० लटः कूल्हों की ढलान, -फलकम् 1. विशाल कूल्हे 2. नितम्ब, बिम्बम् 1. गोल कूल्हे विक्रम० ४।१८ 2. कमर-पट्टा, सूत्रम्—1. मेखला 2. कमर से लटकती हुई तलवार का बन्धन ।

श्रोतस् (नपुं०) [श्रु+असुन् तुट् च] 1. कान 2. हाथी की सूंड 3. ज्ञानेन्द्रिय 4. सरिता, प्रवाह ('स्रोतस्' के स्थान पर) । सम० रन्ध्रम् सूंड का छिद्र, नयना—मेघ० ४२, ('स्रोतोरन्ध्र' भी लिखा जाता है) ।

श्रोतृ (पुं०) [श्रु—तृच्] 1. सुनने वाला 2. छात्र ।

श्रोत्रम् [श्रूयतेऽनेन —श्रु करणे+ष्ट्रन्] 1. कान—भर्तृ० २।७१ 2. वेदों में प्रवीणता 3. वेद । सम० पेय (वि०) कान से ग्रहण करने के योग्य, ध्यानपूर्वक सुनने के योग्य -संदेशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम् मेघ० १३, -मूलम् कान की जड़ ।

श्रौत्रिय (वि०) [छन्दो वेदमधीते वेत्ति वा —छन्दस्+घ, श्रोत्रादेशः] 1. वेद में प्रवीण या अभिज्ञ 2. शिष्य, अनुशासित होने के योग्य,—यः विद्वान् ब्राह्मण, धर्मज्ञाने में सुविज्ञ -जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते । विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते —मा० १।५, रघु० १६।२५ । सम०—स्वम् विद्वान् ब्राह्मण की संपत्ति ।

श्रौत (वि०) (स्त्री०—ती) [श्रुतौ विहितम् अण्] 1. कान से संबंध रखने वाला 2. वेदसंबंधी, वेद पर आधारित, वेदविहित,—तम् 1. वेदविहित कोई भी कर्म या अनुष्ठान 2. वेदप्रतिपादित कर्मकाण्ड 3. यज्ञाग्नि को संधारण करना 4. तीनों यज्ञाग्नियों की समष्टि (अर्थात् गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण) । सम० —कर्मन् (नपुं०) वैदिक कृत्य, सूत्रम् वेद पर आधारित सूत्रग्रन्थों का संग्रह (आश्वलायन, सांख्यायन और कात्यायन आदि के नाम से अभिहित) ।

श्रौत्रम् [श्रोत्र+(स्वार्थे) अण्] 1. कान 2. वेदों में प्रवीणता ।

श्रौषट् (अव्य०) [श्रु+ऊषट्] दिवंगत आत्मा या देवों को उद्देश्य करके यज्ञाग्नि में आहुति देते समय उच्चारित होने (बोला जाने) वाला अव्यय, तु० वषट् या वौषट् ।

श्लक्ष्ण (वि०) [श्लिष्+कनि, लिं०] 1. कोमल, मृदु, सौम्य, स्निग्ध (शब्द आदि) 2. चिकना, चमकदार, शि० ३।४६ 3. स्वच्छ, सूक्ष्म, पतला, सुकुमार 4. सुन्दर, लावण्यमय 5. निश्छल, ईमानदार, खरा ।

श्लक्ष्णकम् [श्लक्ष्ण+कन्] सुपारी, पूगीफल ।

श्लङ्क् (भ्वा० आ० श्लङ्कते) जाना, हिलना-डुलना ।

श्लङ्ग् (भ्वा० आ० श्लङ्गते) जाना, हिलना-डुलना ।

श्लथ् (चुरा० उभ० श्लथयति ते) 1. शिथिल या ढीला-ढाला होना 2. दुर्बल या बलहीन होना 3. शिथिल होना, ढीला होना, विश्राम करना (आल० भी) श्लथयित्वा क्षणभक्षमतां ज्ञात्वा न सहसा सहसा कृतवेपथुः —शि० ६।५७, परित्राणस्नेहः श्लथयितुमशक्यः खलु यथा—गंगा० ३७ 4. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना ।

श्लथ (वि०) [श्लथ्+अच्] 1. बिना बँधा, बिना जकड़ा 2. शिथिल, विश्रांत, खुला हुआ, फिसला हुआ --वल्काच्छलयं हरति पुष्पमनोकहानाम्— रघु० ५।३७, १९।२६ 3. बिखरे हुए (जैसे बाल) । सम० —उद्यम (वि०) जिसने अपने प्रयत्न ढीले कर दिये हों, लम्बिन् (वि०) ढीला-ढाला, नीचे लटकता हुआ, कु० ५।४७ ।

श्लाघ् (भ्वा० पर० श्लाघति) व्याप्त होना, प्रविष्ट होना ।

श्लाघ् (भ्वा० आ० श्लाघते) प्रशंसा करना, स्तुति करना, सराहना, गुणगान करना शिरसा श्लाघते पूर्वं (गुणं) परं (दोषं) कण्ठे निवध्नाति —सुभा०, यथैव श्लाघ्यते गङ्गा पादेन परमेष्ठिनः कु० ६।७० (कुछ लोग यहाँ 'श्लाघ्यते' के स्थान पर 'श्लाघ्यते' पाठ समझते हैं, और अगला अर्थ घटाते हैं) 2. शेखी बघारना, घमंड करना, श्लाघिष्ये केन को बन्धूल्लेख्यत्युन्नतिमुन्नतः —भट्टि० १६।४ 3. खुशामद करना, फुसलाकर काम निकालना (संप्र० के साथ) -गोपी कृष्णाय श्लाघते स्त्रिया०, भट्टि० ८।७३ ।

श्लाघनम् [श्लाघ्+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना, स्तुति करना 2. खुशामद करना ।

श्लाघा [श्लाघ्+अ+टाप्] 1. प्रशंसा, स्तुति, सराहना, —कर्ण-जयद्रथयोर्वा कात्र श्लाघा --वेणी० २ 2. आत्म-प्रशंसा, शेखी बघारना —हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्, या श्लाघा पाण्डुपुत्राणां सैवास्माकं भविष्यति—वेणी० २।४ 3. खुशामद 4. सेवा 5. कामना, इच्छा । सम० —विपर्ययः डींग मारने का अभाव, -स्थाणे श्लाघा विपर्ययः - रघु० १।२२ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्लाघित (भू० क० कृ०) [श्लाघ्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, सराहा गया।

श्लाघ्य (वि०) [श्लाघ्+ण्यत्] 1. प्रशंसनीय, योग्य —उत्तर० ४।९, १३ 2. आदरणीय, श्रद्धेय।

श्लिङ्गुः [श्लिष्+कु, पृषो०] 1. कामुक, लंपट 2. दास, आश्रित (नपुं०) नक्षत्र विद्या, फलित ज्योतिष।

श्लिङ्ग्युः [श्लिष्+क्यु, पृषो०] 1. लंपट 2. सेवक।

श्लिष् I (स्वा० पर० श्लेष्यति) जलना।

II (दिवा० पर० श्लिष्यति, श्लिष्ट) आलिंगन करना, श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पं हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् गीत० ६ 2. जमे रहना, चिपके रहना, डटे रहना 3. संयुक्त होना, सम्मिलित होना 4. ग्रहण करना, लेना, समझना -नैं० ३।६९, आ—, उप—, आलिंगन करना, परिरंभण करना, वि—, 1. वियुक्त होना, दूर होना 2. फट जाना, फट कर उड़ जाना, भट्टि० १४।६७, (प्रेर०) अलग-अलग करना, मेघ० ७, सम्—, 1. डटे रहना, चिपके रहना 2. सम्मिलित होना, मिलना।

III (चुरा० उभ० श्लेषयति—ते) जोड़ना, सम्मिलित करना, मिलाना।

श्लिष्ट [श्लिष्+अ+टाप्] 1. आलिंगन 2. चिपकना, जुड़े जाना।

श्लिष्ट (भू० क० कृ०) [श्लिष्+क्त] 1. आलिंगित 2. चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 3. टिका हुआ, झुका हुआ 4. श्लेष से युक्त, दो अर्थों की संभावना से युक्त—अत्र विषमादयः शब्दाः श्लिष्टाः—काव्य० १०।

श्लिष्टिः (स्त्री०) [श्लिष्+क्तिन्] 1. आलिंगन 2. परिरंभण।

श्लीपदम् [श्री युक्तं वृत्तियुक्तं पदम् अस्मात्, पृषो०] सूजी हुई टांग या फूला हुआ पैर, फीलपाँव। सम०—भ्रमः आम का पेड़।

श्लील (वि०) [श्रीः अस्ति अस्य—लच्, पृषो०] 1. भाग्यशाली, समृद्ध, दे० श्रील, 2. शिष्ट तु० 'अश्लील'।

श्लेषः [श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन 2. चिपकना, जुड़ना 3. मिलाप, संगम, संपर्क—निरन्तरश्लेषघनाः—का० (यहाँ इसमें अगला अर्थ भी अंतर्हित होता है) 4. अनेकार्थ शब्द प्रयोग, एक से अधिक अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग, द्व्यर्थक, किसी शब्द या वाक्य की दो या दो से अधिक अर्थों की संभाव्यता, (यह एक अलंकार समझा जाता है, कवि इसका बहुत प्रयोग करते हैं, परिभाषा के लिए दे० काव्य० कारिका ८४ तथा ९६)—आश्लेषि न श्लेषकवेर्मर्मवत्यः श्लोकद्वयार्थः सुधिया मया किम्—नैं० ३।६९, दे० 'शब्दश्लेष' भी। सम०—अर्थः अनेकार्थ शब्द प्रयोग, द्व्यर्थक शब्द प्रयोग,—भिक्षिक (वि०) श्लेष पर टिका हुआ (शा० —आधारित)।

श्लेष्मकः [श्लेष्मन्+कन्] कफ, बलगम।

श्लेष्मजः (वि०) [श्लेष्मन्+जन्+ड] कफ से उत्पन्न, कफमूलक।

श्लेष्मन् (पुं०) [श्लिष्+मनिन्] कफ, बलगम, कफ की प्रकृति। सम० अतिसारः कफविकार से उत्पन्न पेचिश, मरोड़ ओजस् (नपुं०) कफ की प्रकृति,—दला —ली 1. मल्लिका, एक प्रकार का मोतिया 2. केतकी, केवड़ा।

श्लेष्मल (वि०) [श्लेष्मन्+लच्] कफ प्रकृति का, बलगमी।

श्लेष्मातकः, श्लेष्मान्तकः [श्लेष्मन्+अत्+अच्, पक्षे कन् च] एक वृक्ष विशेष, लिसोड़े का पेड़।

श्लोक् (स्वा० आ० श्लोकते) 1. प्रशंसा करना, पद्य रचना करना, छन्दोबद्ध करना 2. अवाप्त करना 3. त्यागना, छोड़ना।

श्लोकः [श्लोक्+अच्] 1. कथितामय प्रशंसन, स्तुतीकरण 2. स्तोत्र मनु० ७।२६ 3. ख्याति, प्रसिद्धि, विश्रुति, यश, यथा 'पुण्यश्लोक' में 4. प्रशंसा का विषय 5. किंवदन्ती, कहावत 6. पद्य, कविता—रघु० १४।७० 7. अनुष्टुप् छन्द में कोई पद्य या कविता।

श्लोणृ (स्वा० पर० श्लोणति) एकत्र करना, इकट्ठा करना, बीनना तु० 'श्रोण'।

श्लोणः [श्लोण्+अच्] लंगड़ा पुरुष, विकलांग।

श्वङ्क् (स्वा० आ० श्वङ्कते) जाना, हिलना-डुलना।

श्वच्, श्वञ्च् (स्वा० आ० श्वचते, श्वञ्चते) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. खुला होना, मुँह बाना, फटना, दरार हो जाना।

श्वज् (स्वा० आ० श्वजते) जाना, हिलना-डुलना।

श्वठ् (चुरा० उभ० श्वठयति ते) 1. निन्दा करना (कुछ के मतानुसार 'श्वठयति') 2. (श्वठयति—ते) (क) जाना, हिलना-डुलना (ख) अलंकृत करना (ग) समाप्त करना, सम्पन्न करना (कुछ के मतानुसार इन अर्थों में केवल 'श्वठयति')।

श्वड्ड् (चुरा० उभ० श्वण्डयति ते) निन्दा करना।

श्वन् (पुं०) [श्वि+कनिन्, नि०] (कर्तृ० श्वा, श्वानौ, श्वानः कर्म० ह्व० व० शुनः, स्त्री० शुनी) कुत्ता —श्वा यदि क्रियते राजा स तमश्नात्यु पानहम् सुभा० भर्तृ० २।३१, मनु० २।२०१। सम० —कीडिन् (पुं०) शिकारी कुत्तों को पालने वाला, गणः कुत्तों का झुंड, गणिकः 1. शिकारी, 2. कुत्तों को खिलाने वाला, धूर्तः गीदड़, नरः कमीना आदमी, नीच व्यक्ति, निशम्थ्, निशा वह रात जिसमें कुत्ते भौंकते हों, पद (पुं०)—पदः 1. अग्निगीध और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पतित जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत, चांडाल,—भामि० ४।२३ 2. कुत्तों को खिलाने वाला,—पद्म् कुत्ते का पैर, - पाकः जाति से बहिष्कृत, चाण्डाल गंगा० २५, - फल्गु खट्टा नींबू या चकोतरा,—फल्गुः अक्रूर के पिता का नाम, —भीदः गीदड़, - यूथ्यम् कुत्तों का झुंड, - वृत्तिः (स्त्री०) कुत्ते का जीवन, (बहुधा 'नौकरी' की समता इससे की जाती है)—सेवां लाघवकारिणीं कृतवियः स्वानेन वर्त्तामि विदुः मुद्रा० ३।१४, मनु० ४।६ 2. सेववृत्ति, सेवा— मनु० ४।४, -- व्याघ्रः 1. शिकारी जानवर 2. बाघ 3. चीता, - हन् (पुं०) शिकारी।

श्वभ्र् (चुरा० उभ० श्वभ्रयति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. घीघना, सूराख करना, छिद्र करना 3. दरिद्रता में रहना।

श्वभ्रम् [श्वभ्र्+अच्] रन्ध्र, विवर,—विक्रम० १।१८, कि० १४।३३।

श्वयः [शि+अच्] सूजन, शोथ, वृद्धि।

श्वयथुः [शि+अथुच्] सूजन, शोथ।

श्वयीची [शि+ईचि+ङीप्] बीमारी, रोग।

श्वल् (भ्वा० पर० श्वलति) दौड़ना, फुर्ती से जाना।

श्वल्क् (चुरा० उभ० श्वल्कयति—ते) कहना, वर्णन करना।

श्वस्स् (श्वा० पर० श्वस्सति) दौड़ना दे० 'श्वल्'।

श्वशुरः [क आशु अश्नुते आशु+अश्+उरच् पृषो०] ससुर, पत्नी या पति का पिता—मनु० ३।११९।

श्वशुरकः [श्वशुर+कन्] ससुर।

श्वशुर्यः [श्वशुरस्यापत्यम् श्वशुर+यत्] 1. साला पत्नी या पति का भाई 2. पति का छोटा भाई, देवर।

श्वश्रूः (स्त्री०) [श्वशुर+ऊङ, उकार अकारलोपः] सास, पत्नी या पति की माँ - रघु० १४।१३। सम०—श्वशुर (पुं०) द्वि० व०) सास और ससुर।

श्वस् (अदा० पर० श्वसिति, श्वस्त—श्वसित) 1. सांस लेना, सांस निकालना, सांस खींचना स कर्मकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति - हि० २।११, रघु० ८।८७ 2. आह भरना, हांफना, ऊंचा सांस लेना, श्वसिति विहगवर्गः ऋतु० १।१३ 3. फूत्कार करना, खर्राटे भरना, प्रेर०—(श्वासयति-ते) सांस दिलाना, जीवित रखना, आ -, 1. सांस लेना, महावीर० ५।५१ 2. सांस लेने लगना, साहसी बनना, हिम्मत करना - मेघ० ८ 3. पुनर्जीवित करना भट्टि० ९।५६, (प्रेर०) सांत्वना देना आराम देना, प्रसन्न करना उद्—, 1. सांस देना, जीना वेणी० ५।१५, मनु० ३।७२ 2. उत्साह बढ़ाना, जी उठना, हिम्मत बांधना कि० ३।८, शि० १८।५८ 3. खुलना, खिलना, (जैसे कमल का) शि० १०।५८,११।१५ 4. हांफना, गहरा सांस लेना—भट्टि० ६।१२०, १४।५५ 5. ऊंचा सांस लेना, झड़कना 6. उन्मूलन होना, नि- निस्-, आह भरना, ऊँचा सांस लेना, वि—, विश्वास करना, भरोसा करना, विश्वास रखना (प्रायः अधि० के साथ)—पुंसि विश्वसिति कुत्र कुमारी—नै० ५।११० --कु० ५।१५,(कभी कभी सर्वत के साथ) 2. सुरक्षित रहना, निर्भय या विश्वस्त होना—विश्वस्तैस्ते पक्षिगणैः सभन्तात्—भट्टि० ८।१०५, समा—, साहसी होना, हिम्मत बांधना, ढाढस रखना (प्रेर०) सांत्वना देना, प्रोत्साहित करना, उत्साह बढ़ाना।

श्वस् (अव्य०) [आगामि अहः पृषो०] 1. आने वाला कल,—वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः—सुभा० 2. भविष्य काल (समास के आरंभ में)। सम०—भूत (वि०) (श्वोभूत) कल होने वाला—,वसीय,-वसीयस् (श्वोवसीय, श्वोवसीयस्) (वि०) प्रसन्न, शुभ, भाग्यशाली, (नपुं०) प्रसन्नता, सौभाग्य,—श्रेयस् (श्वः श्रेयस्) (वि०) प्रसन्न, समृद्धि, (सम्) 1. प्रसन्नता, समृद्धि 2 ब्रह्मा या परमात्मा का विशेषण।

श्वसनः [श्वसित्यनेन-श्वस्+ल्युट्] 1. हवा, वायु,—श्वसनसुरभिगन्धिः—शि० ११।२१ 2. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था -, नम् 1. श्वास, सांस लेना, सांस निकालना श्वसनचलितपल्लवाधरोष्ठे —कि० १०।३४, रत्न० २।४, (यहाँ यह प्रथम अर्थ भी प्रकट करता है) शि० ९।५२ 2. आह भरना कि० २।४५। सम०—अशनः सांप, ईश्वरः अर्जुन वृक्ष,—उत्सुकः सांप,—ऊर्मिः (स्त्री०) हवा का झोंका।

श्वसित (भू० क० कृ०) [श्वस्+क्त] 1. सांस लिया हुआ, आह भरी हुई 2. सांस लेने वाला, - तम् 1. सांस लेना, सांस निकालना 2. ऊंचा सांस लेना।

श्वस्तन (वि०) (स्त्री०- नी) श्वस्त्य (वि०) [श्वस्+ट्युल्, तुट् श्वस्+त्यप् वा] आगामी कल से संबंध रखने वाला, भावी, आगे आने वाला।

श्वाकर्णः [शुनः कर्णः ष० त०, अन्येषामपीति दीर्घः] कुत्ते का कान।

श्वागणिकः [श्वगणेन चरति—श्वगण+ठञ्] कुत्ते रखने वाला, कुत्ते पाल कर अपनी जीविका चलाने वाला।

श्वादन्तः [शुनो दन्तः ष० त०, अन्येषामपीति दीर्घः] कुत्ते का दाँत।

श्वाभ्रः [श्वभ्र+अण् न टिलोपः] कुत्ता। सम०— निद्रा कुत्ते की नींद, बहुत हलकी नींद,—वंक्षरी क्रुद्ध कुत्ते का गुर्राना।

श्वापद (वि०) (स्त्री०- दी) [शुन इव आपद् अस्यात्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब० स, श्वन्+अपद्+अच्,] बर्बर, हिंस्र, -दः 1. शिकारी जानवर, जंगली जानवर 2. बाघ।

श्वापुच्छः—च्छम् [शुनः पुच्छम् -प० त०, नि० दीर्घ] कुत्ते की पूंछ, दुम।

श्वाविध् (पुं०) [शुना आविध्यते—श्वन्+आ—व्यध्+क्विप्] साही, शल्यक।

श्वासः [श्वस्+घञ्] साँस लेना, साँस, श्वासप्रश्वास क्रिया, ऊँचा साँस -अद्यापि स्तनवेपथू जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः —श० १।२९, कु० २।४२ 2. आह, हांफना 3. हवा, वायु 4. दमा। सम० **कासः** दमा, —**रोधः** साँस का रोकना, **हिक्का** एक प्रकार की हिचकी, —**हेतिः** (स्त्री०) नींद।

श्वासिन् (वि०) [श्वास+इनि] साँस लेने वाला—(पुं०) 1. हवा, वायु 2. श्वास लेने वाला जानवर, जीवित प्राणी 3. जो फूत्कार की ध्वनि के साथ (वर्ण) उच्चारण करता है।

श्वि (भ्वा० पर० श्वयति, श्वूत) 1. विकसित होना, बढ़ना (आलं० से भी) सूजना (जैसे आँख का) —रुदतोऽशिश्वियच्चक्षुरास्यं हेलास्तवाश्रयीत् -भट्टि० ६।१९, ३१, १४।७९, १५।३० 2. फलना-फूलना, समृद्ध होना 3. जाना, पहुँचना, अभिमुख चलना, **उद्**—, सूजना, बढ़ना, विकसित होना -प्रबलरुदितो-च्छूनेत्रं (मुखम्)—मेघ० ८४ 2. घमण्डी होना, घमण्ड से फूल जाना।

श्वित् (भ्वा० आ० श्वेतते) श्वेत होना, सफ़ेद होना —व्यतिकरितदिगन्तः श्वेतमार्तंयशोभिः—भा० २।९।

श्वित (वि०) [श्वित्+क] सफ़ेद।

श्वितिः (स्त्री०) [श्वित्+इन्] सफ़ेदी।

श्वित्य (वि०) [श्वित्+यत्] सफ़ेद।

श्वित्रम् [श्वित्+रक्] 1. सफ़ेद कोढ़ 2. फूलबहरी, कोढ़ का दाग (त्वचा पर)—तदप्यपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथंचन। स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम् काव्या० १।७।

श्वित्रिन् (वि०) [स्त्री०—णी] [श्वित्र+इनि] कोढ़ के रोग से ग्रस्त (पुं०) कोढ़ी।

श्विन्द् (भ्वा० आ० श्विन्दते) सफ़ेद होना।

श्वेत (वि०) (स्त्री०—ता, ती) [श्वित्+घञ्, अच् वा] सफ़ेद,—ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ—भग० १।१४, तः 1. सफ़ेद रङ्ग 2. शङ्ख 3. कौड़ी 4. रति कूट पौधा 5. शुक्र ग्रह, शुक्र ग्रह की अधिष्ठात्री देवता 6. सफ़ेद बादल 7. जौरा 8. पर्वतश्रेणी दे० कुलाचल या कुलपर्वत 9. ब्रह्माण्ड का एक प्रभाग,—**तम्** चाँदी। सम० **अम्बरः,—वासस्** (पुं०) जैन सन्यासियों का एक सम्प्रदाय, **इक्षुः** एक प्रकार का ईख, गन्ना, **—उदरः** कुबेर का विशेषण, **कमलम्, पद्मम्** सफ़ेद कमल **कुञ्जरः** इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण, **-कुष्ठम्** सफ़ेद कोढ़, **केतुः** बौद्ध श्रमण या जैनसाधु, **कोलः** एक प्रकार की मछली, शफर, **गजः द्विपः** 1. सफ़ेद हाथी 2. इन्द्र का हाथी, **गरुत्** (पुं०) **गरुतः** हंस, **छदः** 1. हंस 2. एक प्रकार की तुलसी, सफ़ेद तुलसी, **द्वीपः** इस महाद्वीप के अठारह लघु प्रभागों में से एक,—**धातुः** 1. सफ़ेद खनिज पदार्थ 2. खड़िया मिट्टी, 3. धूधिया पत्थर, **धामन्** (पुं०) 1. चाँद 2. कपूर 3. समुद्रफेन, **नीलः** बादल, **—पत्रः** हंस, **°रथः** ब्रह्मा का विशेषण, पाटला भृङ्गवल्ली का फूल **—पिङ्गः** सिंह, **—पिङ्गलः** 1. सिंह 2. शिव का विशेषण, **भरिचम्** सफ़ेद मिर्च, **मालः** 1. बादल 2. धूआँ, **रक्तः** गुलाबी रङ्ग, **—रञ्जनम्** सीसा, **रत्नः** शुक्र-ग्रह, **रोहिस्** (पुं०) चन्द्रमा, **—रोहितः** गरुड़ का विशेषण, **-वल्कलः** गूलर का पेड़, **वाजिन्** (पुं०) 1. चन्द्रमा 2. अर्जुन का विशेषण, **—वाह्** (पुं०) इन्द्र का विशेषण, **वाहः** 1. अर्जुन का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण, **वाहनः** 1. अर्जुन का विशेषण 2. चन्द्रमा 3. समुद्री दानव, मगरमच्छ, घड़ियाल, **वाहिन्** (पुं०) अर्जुन का विशेषण, **-शुङ्गः, -शृङ्गः** जौ, **हयः** 1. इन्द्र का घोड़ा 2. अर्जुन का विशेषण, **-हस्तिन्** (पुं०) इन्द्र का हाथी ऐरावत।

श्वेतकः [श्वेत—कन्] कौड़ी, **कम्** चाँदी।

श्वेता [श्वित्+अच्+टाप्] 1. कौड़ी 2. पुनर्नवा 3. सफ़ेद दूब 4. स्फटिक 5. खैरसार पीनी 6. बंसलोचन 7. अनेक पौधों के नाम (श्वेत कण्टकारी, श्वेत दूहली आदि)।

श्वेतोही (स्त्री०) [श्वेतवाह+ङीष्] इन्द्र की पत्नी, शची।

श्वेत्रम् (नपुं०) सफ़ेद कोढ़।

श्वेत्यम् [श्वेत+ष्यञ्] 1. सफ़ेदी 2. सफ़ेद कोढ़।

श्वैत्रम्, श्वैत्र्यम् [श्वित्र+अण्, ष्यञ् वा] सफ़ेद कोढ़।

ष

वि०—बहुत सी धातुएँ जो 'स्' से आरंभ होती हैं, धातु पाठ में 'ष्' पूर्वक लिखी जाती हैं जिससे कि यह प्रकट हो सके कि कुछ उपसर्गों के पश्चात् 'स्' बदल कर 'ष्' हो जाता है। इस प्रकार की धातुएँ 'स्' के अन्तर्गत ही अपने उचित स्थान पर मिलेंगी।

ष (वि०) [सो+क, पृषो० पत्वम्] सर्वोत्तम, सर्वो-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्लृप्त, -ष: 1. हानि, विनाश 2. अन्त 3. शेष, अवशिष्ट 4. मोक्ष।

षट्क (वि०) [षड्भिः क्रीतम् -षष्+कन्] छः गुना, -कम् छः की समष्टि मासषट्क, उत्तर षट्क आदि।

षड्धा दे० षोढा।

षण्ढः [सन्+ड, पृषो० पत्वम्] 1. साँड 2. नपुंसक (भिन्न-भिन्न लेखकों ने नपुंसकों के १४ से २० तक अनेक भेद लिखे हैं) 3. समूह, समुच्चय, संग्रह, ढेर, राशि, (इस अर्थ में नपुं० भी) -कलरकमुपगते षट्पदीधेन धत्तः कुमुदकमलषण्डे तुल्यरूपामवस्थाम्-शि० ११।१५, तु० 'खंड' भी।

षण्ढकः [षण्ढ+कन्] नपुंसक, हिजड़ा।

षण्ढाली [षण्ढ+अल्+अच्+ङीप्] 1. तालाब, जोहड़ 2. व्यभिचारिणी या असती स्त्री।

षण्ढः [सन्+ड, पृषो० पत्वम्] 1. नपुंसक, हिजड़ा, याज्ञ० १।२१५ 2. नपुंसकलिंग निर्देशः शिविरं षण्ढे--अमर०। सम० तिलः बंध्य तिल, वह तिल जो उग न सके।

षत् (संख्या० वि०) [सो+क्विप्, पृषो०] (केवल ब० व० में प्रयुक्त कर्तृ० षट्, संब० षण्णाम्) छः-मनु० १।१६, ८।४०३। सम०-अक्षीणः (षडक्षीणः) मछली, -अङ्गम् समष्टि रूप से ग्रहण किये गये शरीर के छः भाग--जंघे बाहू शिरोमध्य षडङ्गमिदमुच्यते 2. वेद के छः अंग सहायक भाग,- शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चितिः। ज्योतिषामयनं चैव षडङ्गो वेद उच्यते, दे० 'वेदांग' भी 3. छः शुभ वस्तुएँ -अर्थात् गोमाता से प्राप्त छः पदार्थ--गोमूत्रं गोमयं क्षीरं सर्पिर्दधि च रोचना। षडंगमेतन्मांगल्यं पठितं सर्वदा गवाम् अङ्घ्रिः (षडङ्घ्रिः) भौंरा, -अधिक (वि०) (षडधिक) वह जिसमें छः अधिक हों, -मा० ५।१, -अभिज्ञः (षडभिज्ञः) देवरूप बौद्ध महात्मा,—अशीत (वि०) (षडशीत) छयासीवाँ, -अशीतिः (स्त्री०) (षडशीतिः) छयासी, अहः (षडहः) छः दिन का समय या अवधि, आननः —वक्त्रः,—वदनः (षडाननः, षडवक्त्रः, षडवदनः) कार्तिकेय के विशेषण षडाननापीतपयोधरासु नेता चमूनामिव कृत्तिकासु-रघु० १४।२२, आम्नायः (षडाम्नायः) छः तन्त्र,--ऊर्मणम् (षडूर्मणम्) समष्टि रूप से ग्रहण किये हुए छः मसाले--पंचकोलं स मरिचं षड्वर्णमुदाहृतम्, -कर्ण (वि०) (षट्कर्ण) छः कानों से सुना गया, अर्थात् वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा भी सुना गया, एक से अधिक श्रोताओं को सुनाया गया (परामर्श, भेद आदि)-षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः पंच० १।१९९, (णः) एक प्रकार की वीणा, -कर्मन् (नपुं०) (षट्कर्मन्) 1. ब्राह्मणों के लिए विहित छः कर्तव्य—अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा। दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्माण्यग्रजन्मनः मनु० १०।७५ 2. छः कर्म जो ब्राह्मण की जीविका के लिए विहित हैं -उञ्छ प्रतियहो भिक्षा वाणिज्यं पशुपालनम्। कृषिकर्म तथा चेति षट्कर्माण्यग्रजन्मनः 3. जादू के छः करतब शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन तथा मारण 4. योगाभ्यासग्रंथों छः क्रियाएँ -धौतिर्वस्ती तथा नेती (नौलिकी) त्राटकस्तथा। कपालभाती चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत्॥ (पुं०) ब्राह्मण, -कोण (वि०) (षट्कोण) 1. छः कोणों से युक्त (णम्) 1. षड्भुज, छः कोनिया 2. इन्द्र का वज्र, -गवम् (षड्गवम्) 1. छः बैलों की जोड़ी 2. वह जुवा जिसमें छः बैल जोते जायं (कभी कभी अन्य जानवरों के साथ पर) उदा० °हस्ति, °अश्व छः हाथी छः घोड़े आदि, -गुण (वि०) (षड्गुण) 1. छः गुना 2. छः विशेषणों से युक्त (णम्) 1. छः गुणों का समुदाय 2. किसी राजा की विदेशनीति में प्रयोक्तव्य छः उपाय दे० 'गुण' के अन्तर्गत (२१), तु० 'षाड्गुण्य' के साथ भी, ग्रन्थि (वि०) (षड्ग्रन्थि) पिप्पलीमूल,- ग्रन्थिका (षड्ग्रन्थिका) शटी, आमाहल्दी, चक्रम् (षट्चक्रम्) शरीर के छः रहस्यमय चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा),—चत्वारिंशत् (षट्चत्वारिंशत्) छयालीस,--चरणः (षट्चरणः) 1. मधुमक्खी 2. टिड्डी 3. जूँ,- जः (षड्जः) भारतीय स्वरग्राम के सात प्राथमिक स्वरों में से पहला स्वर (कुछ के अनुसार पहला) क्योंकि यह स्वर छः अंगों से व्युत्पन्न है नासाकंठमुरस्तालु जिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन्। षड्ज: संजायते (षड्भ्यः संजायते) यस्मात् तस्मात् षड्ज इति स्मृतः, कहते हैं कि मोर के स्वर से यह स्वर मिलता-जुलता है, षड्जं रौति मयूरस्तु नारः षड्जसम्वादिनी: केकाः द्विधा भिन्नाः शिखण्डिभिः -रघु० १।३९,--त्रिंशत् (स्त्री०) (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (षट्त्रिंश) (वि०) छत्तीसवाँ,—दर्शनम् (षड्दर्शनम्) हिन्दू दर्शन के छः मुख्य शास्त्र -सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त,— दुर्गम् (षड्दुर्गम्) छः प्रकार के गढ़ों की समष्टि धन्वदुर्गं महीदुर्गं गिरिदुर्गं तथैव च। मनुष्यदुर्गं मृद्दुर्गं वनदुर्गमितिक्रमात् नवतिः (षण्णवतिः) छयानवे, पञ्चाशत् (स्त्री०) (षट्पञ्चाशत्) छप्पन,—पदः (षट्पदः) 1. भौंरा—न षट्पदं तद्यदलीनपट्पदं न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलम् भट्टि० २।१९, कु० ५।९, रघु० ६।६९ 2. जूँ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

°क्षितिपः आम का वृक्ष, °आम्रवर्धनः अशोक या किंकिरात वृक्ष, °अस्र (वि०) जिस की डोरी भौरों से बनी हुई (जैसे कि कामदेव का धनुष)—प्रायश्चित्त न बहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम् मेघ० ७३, °त्रिधः नागकेशर नाम का वृक्ष, °पदी (षट्पदी) 1. छः पंक्तियों का श्लोक 2. भ्रमरी 3. जूँ,—प्रज्ञः (षट्प्रज्ञः) जो छः विषयों से सुपरिचित है अर्थात् चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानव-जीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, ब्रह्मप्रकृति—धर्मार्थ-काममोक्षेषु लोकतत्त्वार्थयोरपि। षट्सु प्रज्ञा तु यस्यासौ षट्प्रज्ञः परिकीर्तितः॥ 2. विलासी, कामासक्त पुरुष —बिन्धुः (षड्बिन्धुः) विष्णु का विशेषण, भागः (षड्भागः) छठा भाग, $\frac{1}{6}$ भाग—शः २।१३, मनु० ७।१३१, ८।३३, भुज (वि०) (षड्भुज) 1. छः हैं सहायक जिसके, छः कोनों वाला, (जः) षट्कोण (जा) 1. दुर्गा का विशेषण 2. तरवृक्ष, - मासः (षण्मासः) छः महीने का समय,—मासिक (वि०) (षाण्मासिक) छमाही, अर्धवार्षिक, - मुखः (षण्मुखः) कार्तिकेय का विशेषण - रघु० १७।६७, (-खा) तरवृक्ष,—रसम्—रसाः (पुं० ब० व०) (षड्रसम् आदि) छः रसों की समष्टि - दे० 'रस' के अन्तर्गत, - रात्रम् (षड्रात्रम्) छः रातों का समय या अवधि, वर्गः (षड्वर्गः) 1. छः वस्तुओं की समष्टि 2. विशेष रूप से मनुष्य के छः शत्रु, ('षड्रिपु' भी कहते हैं) - कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः। कृतारिषड्वर्ग-जयेन—कि० १।९, ज्यजेष्ट षड्वर्गम्— भट्टि० १।२, —विंशतिः (स्त्री०) (षड्विंशतिः) छब्बीस (षड्-विंश छब्बीसवाँ),—विध (षड्विध) (वि०) छः प्रकार का, छः गुना—रघु० ४।२६,—षष्टिः (स्त्री०) (षड्षष्टिः) छासठ,—सप्ततिः (षट्-सप्ततिः) छिहत्तर।

षष्टिः (स्त्री०) [षड्गुणिता दशतिः नि०] साठ—मनु० ३।७७, याज्ञ. ३।८४, °तम साठवाँ। सम०—भागः शिव का विशेषण,—मत्तः साठ वर्ष की आयु का हाथी जिसके मस्तक से मद चूता है, योजनी (स्त्री०) साठ योजन का विस्तार या यात्रा, —संवत्सरः साठ वर्ष की अवधि या समय,—हायनः 1. (साठवर्ष की आयु का) हाथी 2. एक प्रकार का चावल।

षष्ठ (वि०) (स्त्री० —ष्ठी) [षण्णां पूरणः - षष्+डट्, वुक्] छठा, छठा भाग - षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्यात्-त्वेतुकाद्धनात् मनु० ९।१६४, ७।३०, षष्ठे भागे —विक्रम० २।१, रघु० १७।७८। सम०—अंशः 1. सामान्य छठा भाग—याज्ञ० ३।३५ 2. विशेष कर उपज का छठा भाग जिसको कि राजा अपनी प्रजा से भूमिकर के रूप में ग्रहण करता है - रक्ष्यस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुं षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितायाः—रघु० २।६६, (उपज के भिन्न भिन्न भेद जिनके छठे भाग का अधिकारी राजा है—मनु० ७।१३१-२ में बताये गये हैं) °वृत्तिः उपज के छठे भाग का अधिकारी राजा, —षष्ठाशवृत्तेरपि धर्म एषः-शा० ५।४, —अन्नम् छठा भोजन, °कालः तीन दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला, जैसा कि प्रायश्चित्तस्वरूप किया जाता है।

षष्ठी [षष्ठ+ङीप्] 1. चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ 2. (व्या० में) छठी विभक्ति या सम्बन्ध कारक 3. कात्यायनी के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो सोलह दिव्य मातृकाओं में से एक है। सम० —तत्पुरुषः छठी विभक्ति के लोप वाला तत्पुरुष समास, ऐसे समास में विग्रह करने पर पहला पद सदैव छठी विभक्ति का होता है, पूजनम्, पूजा बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना।

षष्ठानुः [सह+आनु, असुक्, पृषो० षत्वम्] 1. सोर 2. यज्ञ।

षाट् (अव्य०) [सह+णिच्, पृषो० षत्वं टत्वम् सम्बोधक अव्यय।

षाट्कौशिक (वि०) (स्त्री०—की) [षट्कोश+ठक्] छः तहों में लिपटा हुआ।

षाडवः [षड्+अन्+अच् ततः स्वार्थे अण्] 1. राग, मनोवेग 2. गाना, संगीत 3. (संगीत में) एक राग जिस में संगीत के सात स्वरों में से छः स्वर प्रयुक्त होते हैं—पञ्चभिः पञ्चभिः प्रोक्तः स्वरैः षड्भिस्तु षाडवः।

षाड्गुण्यम् [षड्गुण+ष्यञ्] 1. छः गुणों की समष्टि 2. राजा के द्वारा प्रयुक्त छः युक्तियाँ, राजनीति के छः उपाय,—शि० २।९३, दे० 'गुण' के अन्तर्गत 3. छः से किसी संख्या का गुणन। सम०—प्रयोगः राजनीति के छः उपाय, या छः युक्तियों का प्रयोग।

षाण्मातुरः [षण्णां मातृणाम् अपत्यम्, षण्मातृ+अण्, उत्व, रपर] छः माताओं वाला, कार्तिकेय का विशेषण।

षाण्मासिक (वि०) (स्त्री० —की) [षण्मास+ठक्] 1. छमाही, अर्धवार्षिक 2. छः महीने का, - मौखिताकानां षाण्मासिकानाम्—विक्र० १।१७।

षाष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [षष्ठ+अण् स्वार्थे] छठा।

षिड्गः [सिट्+गन्, पृषो० षत्वम्] 1. विलासी, ऐयाश, कामुक, कामासक्त 2. प्रेमनिपुण, असंगत प्रेमी, विट—षिड्गैरगतं ससंभ्रममेत्र काश्चित्—शि० ५।३४।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षुः [सु+ड, पृषो० षत्वम्] प्रसूति, प्रजनन ।

षोडश (वि०) (स्त्री०—शी) [षोडशन्+डट्] सोलहवाँ—मनु० २।६५,८६।

षोडशन् (संख्या० वि०) ब० व०, सोलह । सम०—अंशुः शुक्रग्रह,—अङ्ग (वि०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य, —अङ्गुलक (वि०) छः अंगुल की चौड़ाई का,—अङ्गिः केकड़ा,— अक्षिन् (पुं०, ब० व०) शुक्र ग्रह,— आवर्तः शंख, —उपचारः (पु०, ब० व०) किसी देवता को श्रद्धांजलि अर्पित करने की सोलह रीतियाँ, जिनकी गिनती यह है—आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । मधुपर्कस्तथास्नानं वसनाभरणानि च । गंधपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वन्दनं तथा,—कलः चन्द्रमा की सोलह कलाएं, जिनके नाम यह हैं— अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः । शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरेव च । अङ्गदा च तथा पूर्णामृता षोडश वै कलाः,—भुजा दुर्गा की एक मूर्ति,—मातृका (स्त्री०) ब० व०, सोलह दिव्य माताएँ जिनके नाम निम्नांकित हैं— गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः । शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिः कुलदेवताश्चमदेवताः ॥

षोडशधा (अव्य०) [षोडशन्+धाच्] सोलह प्रकार से ।

षोडशिक (वि०) (स्त्री०—की) [षोडशन्+ठक्] सोलह भागों से युक्त, सोलह गुना - षोडशिकी देवतोपचारः ।

षोडशिन् (पुं०) [षोडशन्+इनि] अग्निष्टोम यज्ञ का रूपान्तर ।

षोढा (अव्य०) [षष्+धाच्, षष्य उत्वम्, मस्य ष्टुत्वम्] छः प्रकार से । सम०—न्यासः मंत्र पढ़ते हुए शरीर स्पर्श के छः प्रकार,—मुखः छः मुंह वाला, कार्तिकेय, —ह्रोढा जनोर्जनितषोढामुखः समिति षोढा सा हाटकगिरेः —अश्व० ७ ।

ष्ठिव् (स्वा० दिवा० पर० ष्ठीवति, ष्ठीव्यति, ष्ठ्यूत) 1. थूकना, मुँह से खखार निकालना, 2. राल टपकना, —भट्टि० १२।१८, वि —, 1. प्रक्षेपण करना, निकालना, फेंकना—ऋ० ४।४, रघु० २।७५ भट्टि० १४।१००, १७।१०, १८।१४, काव्या० १।९५ 2. मुँह से खखार निकालना मनु० ४।१३२, याज्ञ० ३।२१३ ।

ष्ठीवनम्, ष्ठेवनम् [ष्ठीव्+ल्युट्, ष्ठिव्+ल्युट्] 1. थूकना 2. खार, थूक, खखार ।

ष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [ष्ठिव्+क्त, ऊ] थूका हुआ, खखारा हुआ ।

ष्वष्क्, ष्वस्क् (भ्वा० आ० ष्वष्कते, ष्वस्कते) जाना, हिलना-डुलना ।

स

स (अव्य०) सह, सम्, तुल्य या सदृश, और एक अथवा समान शब्दों के स्थान पर आदेश होने वाला उपसर्ग, जो विशेषण अथवा क्रियाविशेषण बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ समास में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) के साथ, मिला कर, के साथ साथ, संयुक्त होकर, युक्त, सहित - सपुत्र, सभार्य, सतृष्ण, सघन, सरोषम्, सकोपम्, सहरि आदि (ख) समान, सदृश, सधर्मन् 'समान प्रकृति का', इसी प्रकार सजाति, सवर्ण (ग) वही, सोदर, सपक्ष, सपिंड, सनाभि आदि, (पुं०) 1. साँप 2. वायु, हवा 3. पक्षी 4. 'षड्ज' नामक संगीत स्वर की संक्षिप्त 5. शिव का नाम 6. विष्णु का नाम ।

सः [सम्+यम्+ड] कंकाल, पंजर ।

संयत् (स्त्री०) [सम्+यम्+क्विप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई यः संयति प्राप्तमिनाकिलीलः रघु० ६।७२, ७।३९, १८।२०, कि० १।१९, शि० १६।१५ । सम० वरः राजा, राजकुमार ।

संयत (भू० क० कृ०) [सम्+यम्+क्त] 1. रोका हुआ, दबाया हुआ, वश में किया हुआ 2. जकड़ा हुआ, एक स्थान पर बाँधा हुआ 3. बेड़ियों से जकड़ा हुआ 4. बन्दी, कैदी, कारावासी—रघु० ३।२० 5. उद्यत, तैयार 6. व्यवस्थित, दे० सम् पूर्वक 'यम्' । सम०—अञ्जलि (वि०) जिसने विनम्र प्रार्थना के लिए हाथ जोड़े हुए हैं,—आत्मन् (वि०) जिसने मन को वश में कर लिया है, नियंत्रितमना, आत्मनियंत्री । आहार (वि०) मिताहारी,—उपस्कर (वि०) जिसका घर सुव्यवस्थित हो, जिसके घर का सामान सब क्रमपूर्वक रक्खा हो, चेतस्, मनस् (वि०) मन को नियन्त्रण में रखने वाला, - प्राण (वि०) जिसका श्वास नियंत्रित किया हुआ है, प्राणायाम का अभ्यास करने वाला,—वाच् (वि०) मूक, मौन रहने वाला, मितभाषी ।

संयत्त (वि०) [सम्+यत्+क्त] 1. सन्नद्ध, तत्पर, तैयार महावीर० ५।५१ 2. सावधान, सतर्क ।

संयमः [सम्+यम्+अप्] 1. प्रतिबंध, रोकथाम, नियंत्रण—श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति—भग०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४।२६, २७ 2. मन की एकाग्रता, योग की अंतिम तीन अवस्थाओं को प्रकट करने वाला शब्द—बारणा-ध्यानसमाधित्रयमन्तरङ्गं सयमपदवाच्यम् सर्व०, कु० २।५९ 3. धार्मिक व्रत 4. धार्मिक भक्ति, तपस्साधना, —श० ४।१९ 5. दयाभाव, करुणा की भावना।

संयमनम् [सम्+यम्+ल्युट्] 1. प्रतिबन्ध, रोकथाम 2. अंतःकर्षण श० १ 3. बाँधना—उत्तर० १, विक्रम० ३।६ 4. कैद 5. आत्मोत्सर्ग, नियन्त्रण 6. धार्मिक व्रत या आभार 7. चार घरों का वर्ग, —नः नियामक, शासक,—नी यम की नगरी का नाम।

संयमित (भू० क० कृ०) [संयम्+णिच्+क्त] 1. नियन्त्रित 2. बद्ध, बेड़ी से जकड़ा हुआ 3. निरुद्ध, रोका हुआ।

संयमिन् (वि०) [सम्+यम्+णिनि] दमन करने वाला, रोकने वाला, नियन्त्रित करने वाला—(पुं०) जिसने अपने आवेगों को रोक लिया या नियंत्रण में कर लिया, ऋषि, संन्यासी रघु० ८।११, मेघ० २।६९।

संयाग: [सम्+या+घञ्] सोना, —नम् 1. साथ-साथ जाना, मिलकर चलना 2. यात्रा करना, प्रगति करना 3. शव को उठा कर ले जाना।

संयाज: [सम्+यज्+घञ्] दे० 'संयम'।

संयाव: [सम्+यु+घञ्] गेहूँ के आटे का मिष्टान्न, हलुवा—मनु० ५।७।

संयुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+युज्+क्त] 1. मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सम्मिलित 2. सम्मिश्रित, मिला हुआ, संपृक्त 3. सहित 4. संपन्न, से युक्त 5. अन्वित, बना हुआ।

संयुग: [सम्—युज्+क, अस्य गः] 1. संयोजन, मिलाप, मिश्रण 2. लड़ाई, संग्राम, युद्ध, संघर्ष—संयुगे सायुरीनं तमुद्यतं प्रसहेत कः कु० २।५७, रघु० ९।१९। सम० गोण्यदम् भिड़न्त, नगण्य या तुच्छ झगड़ा, मामूली बात पर कलह।

संयुज् (वि०) [सम्+युज्+क्विन्] संबद्ध, संबंध रखने वाला शि० १४।५५।

संयुत (भू० क० कृ०) [सम्+यु+क्त] 1. मिला हुआ, एकत्र जोड़ा हुआ, संबद्ध 2. संपन्न, सहित, दे० सम् पूर्वक 'यु'।

संयोग: [सम्+युज्+घञ्] 1. संयोजन, मिलाप, मिश्रण, संगम, मिलना-जुलना, घनिष्ठता संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् भुभा० 2. जोड़ना, (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में से एक) 3. जोड़, मिलाना 4. संचय आभरणसंयोगाः—मा० ६ 5. दो राजाओं में किसी एक से समान उद्देश्य के लिए मित्रता 6. (व्या० में) संयुक्त व्यंजन 7. (ज्यो० में) दो तारिकाओं का मिलन 8. शिव का विशेषण। सम०—पृथक्त्वम् अनित्य संबंधों का पार्थक्य,—विरुद्धम् साथ-साथ मिलाकर खाने से रोग उत्पन्न करने वाला खाद्यपदार्थ।

संयोगिन् (वि०) [संयोग+इनि] 1. मिलाया हुआ, सम्मिलित 2. मिलने वाला।

संयोजनम् [सम्+युज्+ल्युट्] 1. मिलाप, एक साथ जोड़ना 2. मैथुन, संभोग।

संरक्त [भू० क० कृ०] [सम्+रञ्ज्+क्त] 1. रंगीन, लाल 2. आवेशपूर्ण, प्रणयाग्नि में दग्ध 3. क्रुद्ध, चिड़चिड़ा, क्रोधाग्नि से जलता हुआ 4. मोहित, मुग्ध 5. लावण्यमय, सुन्दर।

संरक्षः [सम्+रक्ष्+घञ्] प्ररक्षण, देख-भाल, संधारण।

संरक्षणम् [सम्+रक्ष्+ल्युट्] 1. प्ररक्षण, संधारण 2. उत्तरदायित्व, निगरानी।

संरब्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रभ्+क्त] 1. उत्तेजित विक्षुब्ध 2. प्रज्वलित, संक्षुब्ध, क्रुद्ध, भीषण 3. वर्धित 4. शूजा हुआ 5. अभिभूत।

संरंभः [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1. आरंभ 2. हुल्लड़, खलबली, उग्रता, प्रचण्डता—श० ७ 3. विक्षोभ, उत्तेजना, हड़बड़ी—कु० ३।४८ 4. ऊर्जा, उत्साह, उत्कण्ठा—रघु० १२।९६ 5. क्रोध, रोष, कोप—प्रणिपातप्रतीकारः संरंभो हि महात्मनाम् रघु० ४।६४, १२।३६, विक्रम० २।२१, ४।२८ 6. घमंड, अहंकार 7. शोथ और जलन (फोड़े फुंसी की)। सम०—परुष (वि०) जो गुस्से के कारण कठोर हो गया हो, रस (वि०) अत्यंत क्रुद्ध, वेगः क्रोध की उग्रता।

संरम्भिन् (वि०) (स्त्री० ग्नी) [संरम्भ+इनि] 1. उत्तेजित, विक्षुब्ध, हड़बड़ी से युक्त शि० २।६७ 2. क्रुद्ध, प्रकुपित, रोषाविष्ट 3. घमंडी, अहंकारी।

संराग: [सम्+रञ्ज्+घञ्] 1. रंगत 2. प्रणयोन्माद, अनुरक्ति 3. रोष, क्रोध।

संराधनम् [सम्+राध्+ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, मेल-करना, पूजा आदि के द्वारा तुष्ट करना 2. सम्पन्न करना 3. प्रकृष्ट या गहन मनन।

संराव: [सम्+रु+घञ्] 1. गुलगपाड़ा, हल्लागुल्ला, शोरगुल 2. कोलाहल।

संरुग्ण (भू० क० कृ०) [सम्+रुज्+क्त] जो टुकड़े टुकड़े हो गया हो, चूर-चूर, छिन्नभिन्न।

संरुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रुध्+क्त] 1. रोका गया, बाधित, अवरुद्ध 2. रुका हुआ, भरा हुआ 3. घेरा डाला हुआ, वेष्टित, उपरुद्ध 4. ढका हुआ, छिपाया हुआ 5. अस्वीकृत, अटकाया हुआ, दे० सम् पूर्वक रुध्।

संरूढ (भू० क० कृ०) [सम्+रुह्+क्त] 1. साथ-साथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उगा हुआ 2. किण्वान्वित, खाद भरा हुआ, जैसा कि 'संरूढव्रण' में 3. फूटा हुआ, अंकुर निकला हुआ, मुकुलित, उपजा हुआ - रघु० ६।४७ 4. पक्का जमा हुआ, जिसकी जड़ दृढ़ हो गई हो 5. साहसी, भरोसे का।

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] 1. पूरी रुकावट या विघ्न, अड़चन, रोक, रोक थाम 2. घेराबंदी, घेरना 3. बंधन, बेड़ी 4. फेंकना, डालना।

संरोधनम् [सम्+रुध्+ल्युट्] रुकावट, ठहराना, रोकना।

संलक्षणम् [सम्+लक्ष्+ल्युट्] निशान लगाना, पहचानना, चित्रण करना।

संलग्न (भू० क० कृ०) [सम्+लग्+क्त] 1. चिपका हुआ, सटा हुआ, संहत, जुड़ा हुआ 2. गुत्थमगुत्था होना, भिड़ जाना।

संलयः [सम्+ली+अच्] 1. लेटना, सोना 2. घुल जाना 3. प्रलय।

संलयनम् [सम्+ली+ल्युट्] 1. जुड़ जाना, चिपक जाना 2. घुल जाना।

संललित (भू० क० कृ०) [सम्+लल्+क्त] लाड लगाया हुआ, प्यार किया हुआ।

संलापः [सम्+लप्+घञ्] 1. समालाप, बातचीत, प्रवचन 2. गोपनीय या गुप्त बातें, अंतरंग वार्तालाप, 3. (नाटकों में) एक प्रकार का संवाद, सम्भाषण।

संलापकः [संलाप+कन्] एक प्रकार का उपरूपक, संवादात्मक प्रकार का, -दे० सा० द० ५४९।

संलीढ (भू० क० कृ०) [सम्+लिह्+क्त] चाटा हुआ, उपभुक्त।

संलीन (भू० क० कृ०) [सम्+ली+क्त] 1. चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 2. साथ साथ मिलाया हुआ 3. छिपाया हुआ, गुप्त रक्खा हुआ 4. दहला हुआ 5. सिकुड़ा हुआ, सिकन पड़ा हुआ। सम०-कर्ण (वि०) जिसके कान नीचे लटके हों,-मानस (वि०) खिन्नमना, उदास।

संलोडनम् [सम्+लोड्+ल्युट्] बाधा डालना, गड़बड़ करना।

संवत् (अव्य०) [सम्+वय्+क्विप्, यलोपः तुक् च] 1. वर्ष 2. विशेष कर विक्रमादित्य वर्ष, (जो ईस्ताब्द से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था।

संवत्सरः [संवसन्ति ऋतवोऽत्र-संवस्+सरन्] 1. वर्ष 2. विक्रमादित्याब्द 3. शिव। सम०-करः शिव का विशेषण,-भ्रमि (वि०) एक वर्ष में पूरा चक्कर करने वाला (सूर्य),-रथः एक वर्ष में पूरा होने वाला मार्ग।

संवदनम् [सम्+वद्+ल्युट्] 1. वार्तालाप करना, मिल कर बातें करना 2. समाचार देना 3. परीक्षण, खयाल करना 4. जादू मंत्र के द्वारा वश में करना 5. मन्त्र, ताबीज।

संवरः [सम्+वृ+अप् वा अच्] 1. ढक्कन 2. समाज 3. संपीडन, संकोचन 4. बाँध, सेतु, पुल 5. एक प्रकार का हरिण 6. एक राक्षस का नाम--दे० शंबर,-रम् 1. छिपाव 2. सहनशीलता, आत्मनियंत्रण 3. जल 4. बौद्धों का एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान।

संवरणम् [सम्+वृ+ल्युट्] 1. आवरण, आच्छादन 2. छिपाव, दुराव--मा० १ 3. बहाना, छद्मवेश -दे० 'संवर' भी।

संवर्जनम् [सम्+वृज्-ल्युट्] 1. आत्मसात्करण 2. उपभोग करना, खा जाना।

संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] 1. मुड़ना 2. चूल्हा, बिसाध 3. संसार का नियतकालिक प्रलय--महावीर० ६।२६ 4. बादल 5. (जल से भरा हुआ) बादल 6. संसार में प्रलय होने पर उठने वाले सात बादलों में से एक 7. वर्ष 8. संग्रह, समुच्चय।

संवर्तकः [सम्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. एक प्रकार का बादल 2. प्रलयाग्नि, विश्वप्रलय के समय संसार को भस्म करने वाली आग--इतोऽपि बडवानलः सह समस्तसंवर्तकैः--भर्तृ० २।७६ 3. बड़वानल 4. बलराम का नाम।

संवर्तकित्र (पुं०) [संवर्तक+इनि] बलराम का नाम।

संवर्तिका [संवर्तक+टाप्, इत्वम्] 1. कमल का नया पत्ता 2. पराग केशर के पास की पंखड़ी 3. दीप शिखा आदि (दीपादेः शिखा--तारा०)।

संवर्धक (वि०) (स्त्री०--धिका) [सम्+वृध्+णिच्+ण्वुल्] 1. पूर्ण विकसित करने वाला, बढ़ाने वाला 2. सत्कार करने वाला, स्वागत करने वाला (अभ्यागतों का), आतिथ्यकारी।

संवर्धित (भू० क० कृ०) [सम्+वृध्+णिच्+क्त] 1. पाला-पोसा हुआ, पालन-पोषण किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ।

संवलित (भू० क० कृ०) [सम्+वल्+क्त] 1. साथ मिला हुआ, मिलाया हुआ, मिश्रित मा० ६।५ 2. तर किया हुआ,--मा० ४।९ 3. संबद्ध, संयुक्त 4. टूटा हुआ उदितोपलस्खलनसंवलिताः (ध्वनयः) कि० ६।४।

संवलित (वि०) [सम्+वल्+क्त] पवदलित किया हुआ, तम् ध्वनि मा० ५।१९।

संवसथः [सम्+वस्+अथच्] मिलकर रहने का स्थान, ग्राम, बस्ती।

संवहः [सम्+वह्+अच्] वायु के सात मार्गों में से तीसरा मार्ग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवादः [सम्+वद्+घञ्] 1. मिलकर बोलना, बात चीत, वार्तालाप, कथोपकथन, –महावीर० १।१२ 2. चर्चा, वादविवाद 3. समाचार देना 4. सूचना, समाचार 5. स्वीकृति, सहमति 6. समरूपता, मेल-जोल, समानता, सादृश्य–रूपसंवादाच्च संशयादनया पृष्टः––दश०, (नादः) चित्राकर्षी परिचित इव श्रोत्र-संवादमेति –मा० ५।२०।

संवादिन् (वि०) [संवाद+इनि] 1. बोलने वाला, बातचीत करने वाला 2. सदृश, समान, मिलता-जुलता, अनुरूप–यद्दृशसंवादिनी: केकाः:–रघु० १। ३९, अस्मदङ्गसंवादिन्याकृतिः – उत्तर० ६।

संवारः [सम्+वृ+घञ्] 1. आवरण, आच्छादन 2. वर्णोच्चारण के समय कण्ठादिकों का संकोचन, मन्द उच्चारण (विप० विवार) 3. न्यूनता 4. प्ररक्षण, संरक्षण 5. सुव्यवस्थापन।

संवासः [सम्+वस्+घञ्] 1. मिलकर रहना 2. समाज, मण्डली, –पंच० १।२५० 3. घरेलू व्यवहार 4. घर, आवास स्थान 5. मनोरंजन के या सभा आदि के लिए खुला मैदान।

संवाहः [सम्+वह्+घञ्] 1. ले जाना, ढोना 2. मिलकर दबाना 3. मालिश करना, मुट्ठी भरना 4. वह नौकर जो मालिश करने या मुट्ठी भरने के लिए रक्खा गया हो।

संवाहकः [सम्+वह्+ण्वुल्] मालिश करने वाला, दे० ऊपर संवाह (4)।

संवाहनम्,–ना [सम्+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. बोझा ढोना, उठाकर ले जाना 2. मालिश करना, मुट्ठी भरना,—उत्तर० १।२४, मा० ९।२५।

संविक्तम् [सम्+विज्+क्त] अलग किया हुआ, विशिष्ट।

संविग्न [सम्+विज्+क्त] 1. विक्षुब्ध, उत्तेजित, अशान्त, उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ जैसा कि 'संविग्न-मानस' में 2. त्रस्त, भीत।

संविज्ञात (भू० क० कृ०) [सम्+वि+ज्ञा+क्त] भिन्नविदित, सबके द्वारा माना हुआ, सर्वसम्मत।

संविति: (स्त्री०) [सम्+विद्+क्तिन्] 1. ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान चेतना, भावना · श्वसत्स्वया सुखसंविति: स्मरणीयाऽधुनातनी–कि० ११।३४, १९।३२ 2. समझ, बुद्धि 3. पहचान, प्रत्यभिस्मरण 4. (भावना का) सामनस्य, मानसिक समझौता।

संविद् (स्त्री०) [सम्+विद्+क्विप्] 1. ज्ञान, समझ, बुद्धि, —कि० १८।४२ 2. चेतना, प्रत्यक्षज्ञान · मा० ६।१३ 3. इकरार, वचन, संविदा, अनुबन्ध, प्रतिज्ञा · रघु० ७।३१ 4. स्वीकृति, सहमति 5. माना हुआ प्रचलन, विहित प्रथा 6. संग्राम, युद्ध, लड़ाई 7. युद्ध की ललकार, प्रहरी-संकेत 8. नाम, अभिधान 9. चिह्न, संकेत 10. प्रसन्न करना, खुश करना, तुष्टीकरण · शि० १६।३७ 11. सहानुभूति, साथ देना 12. मनन 13. वार्तालाप, संलाप 14. भाँग। सम० –व्यतिक्रमः प्रतिज्ञा भंग करना, संविदा का उल्लंघन।

संविदा [संविद्+टाप्] करार, प्रतिज्ञा, ठेका।

संविदात (वि०) जानने वाला, प्रतिभाशाली 2. सामनस्य पूर्ण।

संविदित (भू० क० कृ०) [सम्+विद्+क्त] 1. जाना हुआ, समझा हुआ 2. पहचाना हुआ 3. सुविदित, विश्रुत 4. खोजा हुआ 5. सम्मत 6. उपदिष्ट, समझाया बुझाया हुआ—दे० सम् पूर्वक विद्,—तम् करार, प्रतिज्ञा।

संविधा [सम्+वि+धा+अङ्+टाप्] 1. व्यवस्था, उपक्रमण, आयोजन–रघु० ७।१७, १४।१७ 2. जीवन यापन का ढंग, जीवनचर्या के साधन—रघु० १।९४।

संविधानम् [सम्+वि+धा+ल्युट्] 1. व्यवस्था, प्रबन्ध – मा० ६ 2. अनुष्ठान 3. आयोजन, रीति 4. कृत्य 5. (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम—मा० ६।

संविधानकम् [संविधान+कन्] 1. (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम, किसी नाटक की कथावस्तु–अहो संविधान-कम्—उत्तर० ३ 2. अद्भुत कर्म, असाधारण घटना।

संविभागः [सम्+वि+भज्+घञ्] 1. विभाजन, बाँटना 2. भाग, अंश, हिस्सा।

संविभागिन् (पुं०) [संविभाग+इनि] सहभागी, हिस्सेदार, साझीदार।

संविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+वि+विश्+क्त] 1. सोता हुआ, लेटा हुआ · रघु० १।९५ 2. साथ-साथ घुसा हुआ 3. मिलकर बैठा हुआ 4. वस्त्र पहने हुए, कपड़े धारण किये हुए।

संवीक्षणम् [सम्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] सब दिशाओं में देखना, खोज, खोई हुई वस्तु की तलाश।

संवीत (भू० क० कृ०) [सम्+व्ये+क्त] 1. वस्त्रों से सज्जित, कपड़े पहने हुए 2. ढका हुआ, लिपटा हुआ, अधिच्छादित 3. अलंकृत 4. लपेटा हुआ, घेरा हुआ, बन्द किया हुआ, परिवेष्टित 5. अभिभूत।

संवृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+वृज्+क्त] 1. खाया हुआ, उपभुक्त 2. नष्ट।

संवृत (भू० क० कृ०) [सम्+वृ+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं (मुखम्)—श० ३।२६ 2. प्रच्छन्न, गुप्त · श० २।११ 3. रहस्य 4. समाप्त, बन्द, सुरक्षित 5. अवकाश प्राप्त, एकान्त-सेवी 6. सकुचित, भींचा हुआ 7. बलपूर्वक छीना हुआ, जब्त किया हुआ 8. भरा हुआ, पूर्ण 9. सहित, दे० सम् पूर्वक वृ, तम् 1. गुप्त स्थान, एकान्त स्थान,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोपनीयता 2. उच्चारण का एक प्रकार। सम०
--आकार (वि०) जो अपनी आन्तरिक भावनाओं को बाहर प्रकट नहीं होने देता है, जो अपने मन के विचारों का अता -पता नहीं देता, -मन्त्र (वि०) जो अपनी योजनाओं को गुप्त रखता है—रघु० १।२०।

संवृतिः (स्त्री०) [सम्+वृ+क्तिन्] 1. आवरण, आच्छादन 2. छिपाव, दबाना, गुप्त रखना कि० १०।४४ 3. गुप्त प्रयोजन, अभिसंधि।

संवृत्त (भू० क० कृ०) [सम्+वृत्+क्त] 1. हुआ, घटा, घटित हुआ 2. भरा गया, सम्पन्न 3. संचित, एकस्थान पर राशीकृत 4. बीता हुआ, गया हुआ 5. ढका हुआ 6. सुसज्जित,—त्तः वरुण का नाम।

संवृत्तिः (स्त्री०) [सम्+वृत्+क्तिन्] 1. होना, घटना घटित होना 2. निष्पन्नता 3. आवरण।

संवृद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+वृध्+क्त] 1. पूर्णविकसित, बढ़ा हुआ, पूर्ण वृद्धि को प्राप्त 2. ऊँचा या लंबा, बढ़ा हुआ, बड़ा विशाल 3. समृद्धिशाली, खिलता हुआ, फलता फूलता हुआ।

संवेगः [सम्+विज्+घञ्] 1. क्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना महावीर० १।३९ 2. प्रचंड गति, शीघ्रगामिता, प्रचंडता—उत्तर० २।२४, मा० ५।६ 3. जल्दी, चाल 4. तड़पाने वाली पीड़ा, वेदना, तीक्ष्णता।

संवेद्यः [सम्+विद्+घञ्] प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, चेतना, भावना।

संवेदनम्, -ना [सम्+विद्+ल्युट्] 1. प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 2. तीव्र अनुभूति, भावना, अनुभूति, भोगना -दुःखसंवेदनायैव रामे चैतन्यमर्पितम्—उत्तर० १।४७ 3. देना, आत्मसमर्पण करना—मुद्रा० १।२३।

संवेशः [सम्+विश्+घञ्] 1. निद्रा, विश्राम रघु० १।९३ 2. स्वप्न 3. आसन (कुर्सी आदि) 4. मैथुन, संभोग या रतिबंध विशेष।

संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] मैथुन, संभोग।

संव्यानम् [सम्+व्ये+ल्युट्] 1. आवरण, परिवेष्टन 2. वस्त्र, कपड़ा, परिधान 3. उत्तरीय वस्त्र शि० १८।६९।

संशप्तकः [सम्यक् शप्तमङ्गीकारो यस्य कप्] वह योद्धा जिसने युद्ध से न भागने की शपथ खायी हो और जो दूसरे योद्धाओं को भागने से रोकने के लिए रक्खा गया हो 2. छटा हुआ योद्धा 3. सहयोगी योद्धा 4. वह पदोन्नतिकारी जिसमें किसी को मार डालने का बीड़ा उठाया हो।

संशयः [सम्+शी+अच्] 1. संदेह, अनिश्चिति, चपलता, संकोच, मनस्तु मे संशयमेव गाहते—कु० ५।४६, त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न हि उपपद्यते - भग० ६।३९ 2. शंका, डर 3. संदेह, या अनिर्णय (न्या० में) न्यायदर्शन में वर्णित सोलह भेदों में से एक —एक धर्मिविरुद्धभावाभवप्रकारकं ज्ञानं संशयः 4. डर, खतरा, जोखिम -न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति—हि० १।७, माता पुनः संशयमन्यदैव—मा० १०।१३, कि० १३।१६, वेणी० ६।१ 5. संभावना। सम०—आत्मन् (वि०) संदेह करने वाला, शंकाशील, -आपन्न,—उपेत,—स्थ (वि०) संदेहपूर्ण, अनिश्चित, अस्थिर,—गत (वि०) खतरे में पड़ा हुआ—शा० ६, —छेदः संदेह का निवारण, निर्णय, -छेदिन् (वि०) सभी संदेहों को मिटाने वाला, निर्णयात्मक—शा० ३।

संशयान, संशयालु (वि०) [सम्+शी+शानच्, संशय+आलुच्] सन्देहपूर्ण, अस्थिर, अनिश्चित, चंचल।

संशारणम् [सम्+शृ+ल्युट्] युद्ध का आरम्भ, आक्रमण, चढ़ाई, धावा।

संशित (भू० क० कृ०) [सम्+शो+क्त] 1. तेज किया हुआ, प्रोत्तेजित किया हुआ 2. तेज, तीक्ष्ण 3. सर्वथा पूरा किया हुआ, क्रियान्वित, निष्पन्न 4. निर्णीत, सुनिश्चित, निश्चयित, निश्चित। सम०, --आत्मन् (वि०) जिसका मन सर्वथा परिपक्व या अनुशिष्ट है, —व्रत (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली है।

संशुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+शुध्+क्त] 1. पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, पवित्र 2. पालिश किया हुआ, संस्कृत 3. प्रायश्चित्त के द्वारा विशुद्ध किया हुआ।

संशुद्धिः (स्त्री०) [सम्+शुध्+क्तिन्] 1. नितान्त पवित्रीकरण, भग० १५।१ 2. स्वच्छ करना, विमल करना 3. संशोधन, समाधान, परिशोधन 4. स्वच्छता, सफाई 5. (ऋण का) भुगतान।

संशोधनम् [सम्+शुध्+ल्युट्] पवित्रीकरण, स्वच्छता आदि।

संश्चल् (नपुं०) [सम्+श्चु+डति] दाव-पेंच, जादूगरी, इन्द्रजाल, मरीचिका—पुं० जादूगर।

संश्यान (भू० क० कृ०) [सम्+श्यै+क्त] 1. संकुचित, सिकुड़ा हुआ 2. जमा हुआ, ठिठुरा हुआ 3. लपेटा हुआ 4. अवसन्न।

संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] विश्रामस्थल, आवास स्थान, निवासस्थान, वासस्थान-परस्पर विरोधिन्योरेकसंश्रय-दुर्लभम् विक्रम० ५।२४, रघु० ६।४१, इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में, 'साथ रहने वाला' 'सबद्ध या विषयक' 'निर्देशानुसार'—ज्ञातिकुलैकसंश्रयम्—शा० ५।१७, नौसंश्रयः—रघु० १६।५७, मनोरथोऽस्याः शशिमौलिसंश्रयः—कु० ५।६०, द्विसंश्रयां प्रीतिमवाप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्ष्मीः--१।४३ एकार्थसंश्रयमुभयोः प्रयोगम् --मालवि० १ 2. प्रस्थान या शरण की खोज, शरण के लिए दौड़ना, मित्रता करना, पारस्परिक प्रश्रयण के लिए संघटित होना, राजनीति में वर्णित छः उपायों में से एक, दे० 'गुण' के अन्तर्गत भी, मनु० ७।१६० 3. आश्रय, शरण, आश्रम, प्रस्थान, पनाह -अनपायिनि संश्रयदूषणे गजभगे पतनाय वल्गरी--कु० ४।३१, मेघ० १७, पंच० १।२२ ।

संश्रवः [सम्+श्रु+अप्] 1. ध्यानपूर्वक सुनना 2. प्रतिज्ञा, करार, वादा ।

संश्रवणम् [सम्+श्रु+ल्युट्] 1. सुनना 2. कान ।

संश्रित (भू० क० कृ०) [सम्+श्रि+क्त] 1. शरण में गया हुआ 2. सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ।

संश्रुत (भू० क० कृ०) [सम्+श्रु+क्त] 1. प्रतिज्ञात, करार किया हुआ 2. भली भांति सुना हुआ ।

संश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+श्लिष्+क्त] 1. बांधा हुआ, साथ साथ मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त 2. आलिंगित 3. संबद्ध, साथ साथ जुड़ा 4. सटा हुआ, संस्पर्शी, संसक्त 5. सुसज्जित, युक्त, सहित ।

संश्लेषः [सम्+श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, परिरम्भण 2. मिलाप, संबंध, संपर्क ।

संश्लेषणम्,--णा [सम्+श्लिष्+ल्युट्] 1. मिला कर भींचना 2. साथ साथ बांधने का साधन ।

संसक्त (भू० क० कृ०) [सम्+सञ्ज्+क्त] 1. साथ जुड़ा हुआ, चिपका हुआ 2. जमा हुआ, संलग्न, आसक्त, सटा हुआ 3. साथ मिलाया हुआ, शृंखलाबद्ध, पास पास मिला हुआ -रघु० ७।२४ 4. निकट, आसन्न, सटा हुआ 5. अव्यवस्थित मिला हुआ, मिश्रित, गड्डमड्ड किया हुआ--मदमुखरमयूरीमुक्तसंसक्तकेकः - मा० ९।५, फलिन्दकन्या मधुरां गतापि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति--रघु० ६।४८, मा० ५।११ 6. डटा हुआ, तुला हुआ 7. संपन्न, सहित 8. जकड़ा हुआ, प्रतिबद्ध । सम०--मनस् (वि०) जिसका मन किसी विषय पर जमा हुआ हो, युग (वि०) जूए में जुता हुआ, जोन कसा हुआ--शि० ३।६३ ।

संसक्तिः [सम्+सञ्ज्+क्तिन्] 1. सटे रहना, घनिष्ठ मिलन या संगम -कि० ७।२७ 2. घनिष्ठ संपर्क, सामीप्य 3. आपसी मेलजोल, घनिष्ठता, घनिष्ट परिचय -शि० ९।६७ 4. बांधना, मिला कर जकड़ना 5. भक्ति, (किसी कार्य में) दुर्व्यस्तता ।

संसद् (स्त्री०) [सम्+सद्+क्विप्] 1. सभा, सम्मिलन, मंडल--संसत्सुजाते पुरुषाधिकारे कि० ३।५१, छात्रसंसदि लब्धकीर्तिः-पंच० १, रघु० १६।२४ 2. न्यायालय -मनु० ८।५२ ।

संसरणम् [सम्+सृ+ल्युट्] 1. जाना, प्रगति करना, चक्कर काटना 2. संसार, सांसारिक जीवन, लौकिक सत्ता प्रोन्मज्जन्डकरमण्डलभीष्मज्वालासंसरणतापितमूर्तेः--भाग० ४।६ 3. जन्म और पुनर्जन्म 4. सेना का निर्बाध कूच 5. युद्ध का आरम्भ 6. राजमार्ग 7. नगर के दरवाजों के समीप की धर्मशाला ।

संसर्गः [सम्+सृज्+घञ्] 1. सम्मिश्रण, संगम, मिलाप 2. सम्पर्क, संगति, साहचर्य, समाज--संसर्गमुक्तिः खलेषु--भर्तृ० २।६२, शा० २।३ 3. सामीप्य, संस्पर्श 4. मेल-जोल, परिचय 5. मैथुन, संभोग- मनु० ६।७२ 6. सह-अस्तित्व, घनिष्ठ संबंध । सम०--अभावः अभाव के दो मुख्य भेदों में से एक, सापेक्ष अभाव जो तीन प्रकार का है (प्रागभाव=पूर्ववर्ती अभाव, प्रध्वंसाभाव=आपाती अभाव, और अत्यन्ताभाव=निरपेक्ष, अनस्तित्व),--दोषः साहचर्य या संगति के विशेषकर कुसंगति के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली बुराई या दोष ।

संसर्गिन् (वि०) [संसर्ग+इनि] संयुक्त, मिला हुआ, (पुं०) सहचर, साथी ।

संसर्जनम् [सम्+सृज्+ल्युट्] 1. सम्मिश्रण 2. छोड़ना, परित्याग करना 3. खाली करना, शून्य करना ।

संसर्पः [सम्+सृप्+घञ्] 1. सरकना, रेंगना 2. मलमास, लौंद का महीना जो क्षयमास वाले वर्ष में होता है ।

संसर्पणम् [सम्+सृप्+ल्युट्] 1. सरकना 2. अचानक आक्रमण, सहसा धावा ।

संसर्पिन् (वि०) [संसर्प+इनि] सरकने वाला, रेंगने वाला, कु० ७।८१ ।

संसदः [सम्+सद्+घञ्] सभा ।

संसारः [सम्+सृ+घञ्] 1. मार्ग, रास्ता 2. सांसारिक जीवनचक्र, धर्मनिरपेक्ष जीवन, लौकिक जिंदगी, दुनिया असारः संसारः -उत्तर० १, मा० ५।३०, संसारबन्धभवि कि सारमपशिशिरासाद्यते शुभगते -अश्व० २२, या, परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते--पंच० १।२७ 3. आवागमन, जन्मान्तर, जन्मपरंपरा 4. सांसारिक भ्रम । सम०--गमनम् आवागमन, --गुरुः कामदेव का विशेषण, मार्गः 1. लौकिक बातों का क्रम, सांसारिक जीवन 2. योनिमुख, भगद्वार, मोक्षः,--मोक्षणम् ऐहिक जीवन से मुक्ति ।

संसारिन् (वि०) (स्त्री०--णी) [संसार+इनि] लौकिक, दुनियावी, देहान्तरगामी पुं० 1. सजीव प्राणी, जीवजन्तु 2. जीवधारी, जीवात्मा ।

संसिद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+सिध्+क्त] 1. सर्वथा निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2. जिसे मोक्ष की सिद्धि प्राप्त हो गई है, मुक्त ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संसिद्धिः (स्त्री०) [सम्+सिध्+क्तिन्] 1. पूर्णता, पूर्ण निष्पन्नता स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम्—भाग०, कु० २।६३ 2. कैवल्य, मोक्ष—संसिद्धिं परमां गताः—भग० ८।१५ ३।२० 3. प्रकृति, नैसर्गिक वृत्ति, अवस्था या गुण 4. प्रणयोन्मत्त या नशे में चूर स्त्री।

संसूचनम् [सम्+सूच्+ल्युट्] 1. प्रकट करना, सिद्ध करना 2. सूचित करना, कहना 3. संकेत करना, भेद खोलना—अर्थस्य संसूचनम् 4. भर्त्सना, झिड़कना।

संसृतिः (स्त्री०) [सम्+सृ+क्तिन्] 1. मार्ग, धारा, प्रवाह 2. लौकिक जीवन, संसारचक्र 3. देहान्तरगमन, आवागमन—कि मां निपातयसि संसृतिगर्तमध्ये—भामि० ४।३२, शि० १४।६३, तु० 'संसार'।

संसृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+सृज्+क्त] 1. मिश्रित, मिला हुआ, साथ साथ मिलाया हुआ, सम्मिलित किया हुआ 2. साझीदारों की भाँति साथ साथ संबद्ध 3. प्रशांत 4. पुनर्युक्त 5. फँसा हुआ, 6. निर्मित 7. स्वच्छ वस्त्रों से सुसज्जित।

संसृष्टता-त्वम् [सम्+सृज्+क्त+ता (त्वम्)] 1. समाज, संघ 2. (विधि में) आर्थिक हित की दृष्टि से बंधु बांधवों का ऐच्छिक पुनर्मिलन (जैसे कि पिता और पुत्र का अथवा संपत्ति के विभाजन के पश्चात् भाइयों का)।

संसृष्टिः (स्त्री०) [सम्+सृज्+क्तिन्] 1. संबंध, मिलाप 2. साहचर्य, मेल-जोल, सहभागिता, साझीदारी 3. एक ही परिवार में मिलकर रहना—देव संसृष्टता (2) 4. संग्रह 5. संचय करना, जोड़ना 6. (सा० में) एक ही संदर्भ में दो या दो से अधिक अलंकारों का स्वतंत्र रूप से सह-अस्तित्व मिथोऽनपेक्षयैतेषां (शब्दार्थालङ्काराणाम्) स्थितिः संसृष्टिरुच्यते—सा० द० ७५६।

संसेकः [सम्+सिच्+घञ्] छिड़कना, जल से तर करना।

संस्कर्तृ (पुं०) [सम्+कृ+तृच्] 1. जो सुसज्जित करता है, खाना बनाता है, या किसी प्रकार की तैयारी करता है -मनु० ५।५१ 2. जो अभिमंत्रित करता है, पहल करता है -उत्तर० ७।१३।

संस्कारः [सम्+कृ+घञ्] 1. पूर्ण करना, संस्कृत करना, पालिश करना,—(अपि:) प्रयुक्तसंस्कार इवाधिकं बभौ—रघु० ३।१८ 2. सक्रियता, पूर्णता, व्याकरण की दृष्टि से (शब्दों की) विशुद्धता—कु० १।२८ (यहाँ मल्लि० 'व्याकरणजन्या शुद्धिः' लिखता है) रघु० १५।७६ 3. शिक्षा, अनुशीलन (मानसिक) प्रशिक्षण—निसर्गसंस्कारविनीत इत्यसौ नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्—रघु० ३।३५, कु० ७।२० 4. तैयार करना, आसज्जा 5. खाना बनाना, भोज्य पदार्थ तैयार करना 6. शृंगार, सजावट, अलंकार—स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते—दृष्टान्त० ४९, शृं० ७।२३, मुद्रा० २।१० 7. अभिमन्त्रण, अन्तःशुद्धि, पवित्रीकरण 8. छाप, रूप, साँचा, कार्यवाही, प्रभाव—यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्—हि० प्र० ८, भर्तृ० ३।८४ 9. विचार भाव, प्रत्यय 10. मनःशक्ति या धारिता 11. कार्य का प्रभाव, किसी कर्म का गुण—रघु० १।२० 12. अपनी पूर्वजन्म की वासनाओं को पुनर्जीवित करने का गुण, छाप डालने की शक्ति, वैशेषिकों द्वारा माने हुए चौबीस गुणों में से एक (यह गुण तीन प्रकार का है—भावना, वेग और स्थिति-स्थापकता) 13. प्रत्यास्मरणशक्ति, संस्मरण—संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः—तर्क० 14. शुद्धिसंस्कार, पुनीत कृत्य पुण्यसंस्कार—संस्कारार्थं शरीरस्य—मनु० २।६६, रघु० १०।७९ (मनु बारह संस्कारों का उल्लेख करता है—दे० मनु० २।२७, कुछ लेखक इस संख्या को सोलह तक बढ़ाते हैं) 15. धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान 16. उपनयन संस्कार 17. अन्त्येष्टि संस्कार 18. मांजकर चमकाने के काम आने वाला पत्थर, झाँवाँ—रघु० ६।६, (यहाँ 'संस्कार' का अर्थ 'मांजना' भी है)।

सम०—पूत (वि०) 1. पुण्यकृत्यों द्वारा शुद्ध किया हुआ 2. शिक्षा या अन्य संस्कारों द्वारा पवित्र किया हुआ,—रहित, वर्जित,—हीन (वि०) वह द्विज जो संस्कार हीन हो, अथवा जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, और इस लिए जो व्रात्य (पतित, जाति-बहिष्कृत) हो गया हो—तु० 'व्रात्य'।

संस्कृत (भू० क० कृ०) [सम्+कृ+क्त] 1. पूरा किया गया, परिष्कृत, मांज कर चमकाया हुआ, आवर्धित—वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९ 2. कृत्रिम रूप से बनाया गया, सुरचित, सुनिर्मित, सुसम्पादित 3. तैयार किया गया, संवारा गया, सुसज्जित किया गया, पकाया गया (भोजन) 4. अभिमन्त्रित, पुनीत किया गया 5. सांसारिक जीवन में दीक्षित, विवाहित 6. स्वच्छ किया गया, पवित्र किया गया 7. अलंकृत किया गया, सजाया गया 8. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम,—तः 1. व्याकरण के नियमों के अनुसार सिद्ध किया गया शब्द, नियमित व्युत्पन्न शब्द 2. द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका शुद्धिसंस्कार हो चुका हो 3. विद्वान् पुरुष,—तम् 1. परिष्कृत या अत्यन्त परिमार्जित भाषा, संस्कृत भाषा 2. धार्मिक प्रचलन 3. चढ़ावा, आहुति (बहुधा वैदिक)।

संस्क्रिया [सम्+कृ+श, इयङ्, टाप्] 1. शुद्धिसंस्कार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. अभिमन्त्रण 3. और्ध्वदैहिकक्रिया, अन्त्येष्टि संस्कार ।

संस्तम्भः [सम्+स्तम्भ्+घञ्] 1. सहारा, टेक 2. दृढ़ करना, सबल बनाना, जमाना 3. विराम, यति 4. जड़ता, लकवा ।

संस्तरः [सम्+स्तृ+अप्] 1. शय्या, पलंग, बिस्तर -- नवपल्लवसंस्तरेऽपि ते रघु० ८।५७ नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं विभावसौ--कु० ४।३४ 2. यज्ञ ।

संस्तवः [सम्+स्तु+अप्] 1. प्रशंसा, स्तुति 2. जानपहचान, घनिष्ठता, परिचय गुणाः प्रियत्वेऽधिकृता न संस्तवः—कि० ४।२५, नवैर्गुणैः सम्प्रति संस्तवं स्थिरं विरोहितं प्रेम घनागमश्रियः ४।२२, शि० ७।३१ ।

संस्तावः [सम्+स्तु+घञ्] 1. प्रशंसा, ख्याति 2. सम्मिलित स्तुतिपाठ, 3. यज्ञ में स्तुति पाठक ब्राह्मणों के बैठने का स्थान ।

संस्तुत (भू० क० कृ०) [सम्+स्तु+क्त] 1. प्रशस्त, जिसकी स्तुति की गई हो 2. मिलकर प्रशंसा किया गया 3. सम्मत, संदादी 4. घनिष्ठ, परिचित ।

संस्तुतिः (स्त्री०) [सम्+स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति ।

संस्त्यायः [सम्+स्त्यै+घञ्] 1. संचय, राशि, संघात 2. सामीप्य 3. फैलाव, प्रसार, विस्तार 4. घर, निवासस्थान, आवास - संस्त्यायमेव गच्छावः - मा० १।९ 5. परिचय, मित्रों या परिचितों की बातचीत ।

संस्थ (वि०) [सम्+स्था+क] 1. ठहरने वाला, डटा रहने वाला, टिकाऊ 2. रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, स्थित (मास के अन्त में)—शिष्टा क्रिया कस्य चिदात्मसंस्था --मालवि० १।५६, कु० ६।६०, मा० ५।१६ 3. पालतू, घरेलू बनाया हुआ, सधाया हुआ 4. स्थिर, अचल 5. समाप्त, नष्ट, मृत,- स्थः 1. निवासी, वास्तव्य 2. पड़ौसी, स्वदेशवासी, 3. गुप्तचर ।

संस्थः [सम्+स्था+अङ्+टाप्] 1. संघात, सभा 2. स्थिति, प्राणी की अवस्था या दशा 3. रूप, प्रकृति -- रघु० ११।३८ 4. धंधा, व्यवसाय, रहन-सहन का बंधा हुआ तरीका पृथक् संस्थाश्च निर्मिमे—मनु० १।२१ 5. शुद्ध और उचित आचरण 6. अन्त, पूर्ति 7. विराम, यति 8. हानि, विनाश 9. प्रलय 10. अनुरूपता 11. राजकीय आज्ञा 12. सोम यज्ञ का एक रूप ।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1. संचय, राशि, मात्रा 2. प्राथमिक अणुओं की समष्टि 3. संरक्षण, विन्यास आकृतिरवयवसंस्थानविशेषः 4. रूप, आकृति, दर्शन, सूरत, शक्ल स्त्री संस्थानं चाप्सरस्तीर्थमागतादुल्लिख्यन्तां ज्योतिरेकं जगाभ—श० ५।२९, मनु० ९।२६१ 5. संरचना, निर्माण 6. पड़ौस 7. आवास का सामान्य स्थल, सार्वजनिक स्थान 8. स्थिति अवस्था 9. कोई स्थान या जगह 10. चौराहा 11. निशान, चिह्न, विशेषक चिह्न 13. मृत्यु ।

संस्थापनम् [सम्+स्था+णिच्+ल्युट्] 1. एक स्थान पर रखना, संचय करना 2 जमाना, निर्धारण करना, दिनियमित करना कुर्वीत चैषां प्रत्यक्षमप्रमर्घसंस्थापनं नृपः—मनु० ८।४२२ 3. स्थापित करना, पुष्ट करना 4. नियंत्रित करना, दमन करना, ना 1. नियन्त्रण, दमन 2. शान्त करने के उपाय, संस्थापना प्रियतरा विरहातुरताम् मृच्छ० ३।३ ।

संस्थित (भू० क० कृ०) [सम्+स्था+क्त] 1. साथ साथ खड़ा होने वाला, 2. विद्यमान, ठहरने वाला —नियोगसंस्थित—पंच० १।९२ 3. डटा हुआ, मिला हुआ 4. मिलता-जुलता, समान 5. संचित, राशीकृत 6. स्थिर, जमा हुआ, स्थापित 7. अन्दर या ऊपर रक्खा हुआ, अन्तर्वर्ती 8. अचल 9. रोका हुआ, पूरा किया हुआ, अन्त तक निष्पन्न, समाप्त --श० ३ 10. मृत, उपरत दे० सम् पूर्वक 'स्था' ।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्] 1. साथ-साथ होना, मिल कर रहना 2. डटा होना, निकटता, सामीप्य 3. निवासस्थान, आवासस्थल, विश्रामगृह, यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्—मनु० ६।९० 4. संचय, ढेर 5. अवधि, कालावधि—हि० १।४३ 6. अवस्थान, स्थिति, जीवन की दशा 7. प्रतिबंध 8. मृत्यु ।

संस्पर्शः [सम्+स्पृश्+घञ्] 1. संपर्क, छूना, सम्मिलन, मिश्रण 2. छूआ जाना, प्रभावित होना 3. प्रत्यक्षज्ञान, संवेदन ।

संस्पर्शी [सम्+स्पृश्+अच्+ङीष्] एक प्रकार का गंधयुक्त पौधा ।

संस्फालः [सम्यक् स्फालः स्फुरणं यस्य प्रा० ब०] 1. मेंढा 2. बादल ।

संस्फेटः, संस्फोटः [सम्=स्फिट् (स्फुट्)+घञ्] संग्राम, युद्ध ।

संस्मरणम् [सम्+स्मृ+ल्युट्] याद करना, मन में लाना ।

संस्मृतिः (स्त्री) [सम्+स्मृ+क्तिन्] याद, प्रत्यास्मरण, संस्मृतिर्भव भव्यभवाय—कि० १८।२७ ।

संह्लावः, संह्लादः [सम्+ह्लु+अप्, घञ्] वा 1. बहना, टपकना, रिसना 2. सन्तिा 3. तर्पण का अवशिष्टांश 4. एक प्रकार का चढ़ावा या तर्पण ।

संहत (भू० क० कृ०) [सम्+हन्+क्त] 1. मिलकर आघात किया हुआ, घायल 2. बन्द, अवरुद्ध, 3. सुगठित, दृढ़तापूर्वक जुड़ा हुआ 4. मिलाकर जोड़ा हुआ, मित्रता में बंधा हुआ कि० १।१९ 5. सम्पृक्त,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दृढ़, ठोस 6. संबद्ध, युक्त, मिलाकर रक्खा हुआ, शरीर का अंग बना हुआ, सटा हुआ जालमादाय गच्छन्ति संहताः पक्षिणोऽप्यमी पंच० २।९, ५।१०१, हि० १।३७ 7. एकमत 8. संघात, संचित । सम० जानु (वि०) जिसके घुटने आपस मे टकराते हों, लग्नजानुक, ध्न (वि०) सघन भौंहों से युक्त, स्तनी वह स्त्री जिसके दोनों स्तन सटे हुए हों ।

संहतता, त्वम् [संहत+तल्-टाप् (त्व)] 1. घना संपर्क, संयोजन 2. सम्पृक्तता 3. सहमति, एकता 4. सामंजस्य, समेकता ।

संहतिः (स्त्री०) [सम्+हन्+क्तिन्] 1. दृढ़ या घना संपर्क, घनिष्ट मेल—कु० ५।८ 2. मेल, सम्मिलन, संहतिः कार्यसाधिका, संहतिः श्रेयसी पुंसां हि० १, तु० "संघे शक्तिः" 3. संपृक्तता, दृढ़ता, ठोसपन 4. पुंज, राशि—गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहतिः—कि० १२।१० 5. सहमति, सौमनस्य 6. संचय, ढेर, संघात, समुच्चय—वनान्यवाञ्जीव चकार संहतिः—कि० १४।३४, २७, ३।२०, ५।४, मुद्रा० ३।२ 7. सामर्थ्य 8. पिण्ड, समवाय ।

संहननम् [सम्+हन्+ल्युट्] 1. गाढ़नता, दृढ़ता 2. देह, व्यक्ति—अमुतश्चमातजीमूतस्निग्धसंहननस्य ते उत्तर० ६।२१, महावीर० २।४६ 3. सामर्थ्य, दे० 'संहतिः' भी ।

संहरणम् [सम्+हृ+ल्युट्] 1. एकत्र करना, साथ-साथ मिलाना, संचय करना 2. लेना, ग्रहण करना 3. सिकोड़ना 4. नियंत्रित करना 5. नष्ट करना, बर्बाद करना ।

संहर्तृ (पुं०) [सम्+हृ+तृच्] विनाशक, नष्ट करने वाला ।

संहर्षः [सम्+हृष+घञ्] 1. रोमांच होना, भय या हर्ष से पुलकित होना 2. आनन्द, हर्ष, खुशी 3. प्रतियोगिता, होड़, प्रतिद्वन्द्विता 4. वायु 5. साथ-साथ रगड़ना ।

संहारः [सम्+हृ+घञ्] 1. मिलाकर खींचना, या साथ-साथ लाना, संचय करना अनुभवतु वेणीसंहार-महोत्सवम्—वेणी० ६ 2. संकोचन, भींचना, संक्षेपण 3. रोकदेना, पीछे खींच लेना, वापिस लेना (विप० प्रयोग या विक्षेप)—प्रयोगसंहारविभक्तमन्त्रम्—रघु० ५।५७, ४५ 4. प्रतिबंध लगाना, रोक लेना 5. विनाश, विशेषकर सृष्टि का, प्रलय, विश्वनाश 6. समाप्ति, अन्त, उपसंहार 7. संघात, समूह 8. उच्चारण दोष 9. जादू के शस्त्रास्त्रों को वापिस हटाने के लिए मंत्र या जादू 10. व्यवसाय, कुशलता 11. नरक का एक प्रभाग । सम० भैरवः भैरव का एक रूप, मुद्रा तन्त्र-पूजा में विशेष प्रकार की मुद्रा, इसकी परिभाषा अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वास्ये दक्ष हस्तकम् । मिथोऽङ्गुलीरङ्गुलीभिः संगृह्य परिवर्तयेत् ।।

संहित [भू० क० कृ०] [सम्+धा+क्त, हि आदेशः] 1. साथ-साथ रक्खा हुआ, मिला हुआ संयुक्त 2. सहमत, समानरूप, अनुकूल 3. सम्बन्धी 4. संचित 5. अन्वित, सुसज्जित, सहित, युक्त 6. उत्पन्न दे० सम् पूर्वक धा ।

संहिता [संहित+टाप्] 1. सम्मिश्रण, संघ, संयोजन 2. संचय, संकलन, संग्रह 3. कोई ग्रंथ या ग्रंथसंग्रह जिसका क्रम सुव्यवस्थित हो 4. विधि या कानूनों का संग्रह या संकलन, (किसी विषय के) नियम, नियमावली, सारसंग्रह, मनुसंहिता 5. वेद का क्रमबद्ध मंत्रपाठ, या विभिन्न शाखाओं के अनुसार उच्चारण-सम्बन्धी परिवर्तनों से युक्त पदपाठ—पदप्रकृतिः संहिता नि० 6. (व्या० में) सन्धि के नियमों के अनुसार वर्णों का मेल पा० १।४।१०९, वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात् सिद्धा०, या वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता 7. विश्व को संघटित रखने वाली शक्ति, परमात्मा ।

संहृतिः (स्त्री०) [सम्+हृ+क्तिन्] चीखना, चिल्लाना, भारी हंगामा, अत्यन्त शोरगुल ।

संहृत [भू० क० कृ०] [सम्+हृ+क्त] 1. मिलाकर खींचा हुआ 2. सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ 3. वापिस लिया हुआ, पीछे खींचा हुआ 4. संचित, संगृहीत 5. पकड़ा हुआ, हाथ डाला हुआ 6. दबाया हुआ, नियन्त्रण में रक्खा हुआ 7. नष्ट किया हुआ ।

संहृतिः (स्त्री०) [सम्+हृ+क्तिन्] 1. सिकुड़न, भींचना 2. विनाश, हानि 3. लेना, पकड़ना 4. प्रतिबन्ध 5. संचय ।

संहृष्ट [भू० क० कृ०] [सम्+हृष+क्त] 1. पुलकित, या हर्ष से रोमांचित, प्रसन्न 2. जिसके रोंगटे खड़े हैं या जो कांप रहा है 3. स्पर्धा के भाव से उद्दीप्त ।

संहादः [सम्+ह्लद्+घञ्] 1. शोरगुल, चीत्कार, होहल्ला 2. कोलाहल ।

संह्रीण (वि०) [सम्+ह्री+क्त] 1. विनयशील, शर्मीला 2. सर्वथा लज्जित ।

सकट (वि०) [कटेन अशुचिना शवादिना सह वर्तमानः] बुरा, कुत्सित, दुष्ट ।

सकण्टक (वि०) [कण्टेन सह कप्, ब० स०] 1. काटेदार चुभने वाला 2. कष्टप्रद, भयानक,—कः जलीय पौधा सेवल दे० ।

सकम्प, सकम्पन (वि०) [कम्पेन कम्पनेन सह वा, ब० स०] कांपता हुआ, थरथराता हुआ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकरुण (वि०) [करुणया सह ब० स०] कोमल, दयालु ।

सकर्ण (वि०) (स्त्री० र्णा,—र्णी) [कर्णेन श्रवणेन सह—ब० स०] 1. कान वाला, जिसके कान हों 2. सुनने वाला, श्रोता ।

सकर्मक (वि०) [कर्मणा सह कप् ब० स०] 1. कर्मशील या कर्मकर्ता 2. (व्या० में) कर्म रखने वाला, (क्रिया) कर्म से युक्त ।

सकल (वि०) [कलया कलेन सह वा—ब० स०] 1. भागों सहित 2. सब, समस्त, पूरा, पूर्ण 3. सब अंकों से युक्त, पूरा (जैसे कि चाँद) यथा 'सकलेन्दु-मुखी' में 4. मृदु या मन्द स्वर वाला । सम० **वर्ण** (वि०) (अर्थात् पद या वाक्य) क और ल वर्णों से युक्त अर्थात् झगड़ालू, (अर्थात् क+ल=कल) नल० २।१४ ।

सकल्प (वि०) [कल्पेन सह ब० स०] यज्ञ संबन्धी कृत्यों से युक्त, वेद के कर्मकाण्ड का अनुष्ठाता,—मनु० २।१४०,—**त्वः** शिव ।

सकाकोलः [काकोलेन सह- ब० स०] इक्कीस नरकों में से एक नरक देo मनु० ४।८९ ।

सकाम (वि०) [कामेन सह—ब० स०] 1. प्रेमपूरित, प्रणयोन्मत्त, प्रिय 2. कामनायुक्त, कामी 3. लब्धकाम, तुष्ट, तृप्त,—काम इदानीं सकामो भवतु—श० ४, **मम्** (अव्य०) 1. प्रसन्नतापूर्वक 2. संतोष के साथ 3. विश्वासपूर्वक, निस्सन्देह ।

सकाल (वि०) [कालेन सह, ब० स०] ऋतु के अनुकूल, समयोचित, **लम्** (अव्य०) कालानुरूप, समय से पूर्व, ठीक समय पर, तड़के ।

सकाश (वि०) [काशेन-सह —ब० स०] दर्शन देने वाला, दृश्य, प्रस्तुत, निकटवर्ती, **शः** उपस्थिति, पड़ोस; सामीप्य, (**सकाशम्, सकाशात्**—क्रि० वि० की भांति प्रयुक्त, 1. निकट 2. निकट से, पास से)

सकुक्षि (वि०) [सह समानः कुक्षिः यस्य —ब० स०] एक ही कोख से उत्पन्न, एक ही माता से जन्म लेने वाला, सहोदर, (भाई आदि) ।

सकुल (वि०) [कुलेन सह ब० स०] 1. उच्चवंश से सम्बन्ध रखने वाला 2. एक ही कुल में उत्पन्न 3. एक ही परिवार का 4. सपरिवार, **लः** 1. रिश्तेदार 2. एक प्रकार की मछली **सकुली** ।

सकुल्यः [समाने कुले भवः—सकुल+यत्] 1. एक ही परिवार का 2. एक ही गोत्र का परन्तु दूर का रिश्तेदार, जैसे कि चौथी, पांचवीं, छठी या सातवीं, आठवीं अथवा नवीं पीढ़ी का 3. दूरवर्ती रिश्तेदार ।

सकृत् (अव्य०) [एक+सुच्, सकृत् आदेश, सुचो लोपः] 1. एक बार: सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते । सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् मनु० ९।४७ 2. एक समय, एक अवसर पर, पहले, एक दफा- सकृदुच्चरितप्रणयोऽयं जनः- श० ५ 3. तुरन्त 4. साथ साथ पुं०, स्त्री० मल, विष्ठा (प्रायः 'शकृत्' लिखा जाता है । सम० **-गर्भा** 1. खच्चर 2. एक ही बार गर्भवती होने वाली स्त्री,—**प्रजः** कीदा,—**प्रसूता, प्रसूतिका** 1. वह स्त्री जिसके केवल एक ही सन्तान हुई हो 2. वह गाय जो केवल एक ही बार ब्याई हो,—**फला** केले का वृक्ष ।

सकैतव (वि०) [कैतवेन सह—ब० स०] धोखा देने वाला, जालसाज, बः ठग, धूर्त ।

सकोप (वि०) [कोपेन सह—ब० स०] क्रुद्ध, कुपित, **पम्** (अव्य०) क्रोधपूर्वक, गुस्से से ।

सक्त (भू० क० कृ०) [सज्+क्त] 1. चिपका हुआ, लगा हुआ, संपृक्त 2. व्यसनग्रस्त, भक्त, अनुरक्त, शौकीन सक्तासि किं कथय वैरिणि मौर्यपुत्रे—मुद्रा० २।६ 3. जमाया हुआ, जड़ा हुआ—रघु० २।२८ 4. सम्बन्ध रखने वाला । सम०—**वैर** (वि०) शत्रुता में प्रवृत्त, लगातार विरोध करने वाला—श० २।१४ ।

सक्तिः (स्त्री०) [सज्ज्+क्तिन्] 1. संपर्क, स्पर्श 2. मेल, सङ्गम, —सक्ति जवादपनयन्त्यनिलो लतानाम्- कि० ५।४६ 3. अनुराग, आसक्ति, भक्ति (किसी वस्तु के प्रति) ।

सक्तु (पुं० ब० व०) [सज्ज्+तुन्-किच्च] सत्तू, जौ को भून कर फिर पीस कर बनाया हुआ आटा, जौ से तैयार किया गया भोजन भिक्षासक्तुभिरेव संप्रति वयं वृत्तिं समीहामहे—भर्तृ० ३।६४ ।

सक्थि (नपुं०) [सज्ज्+थिन्] 1. जंघा (समास में उत्तर, पूर्व तथा मूल शब्द के पश्चात् या जब समास में तुलना अभिप्रेत हो तो 'सक्थि' को बदल कर 'सक्थ' हो जाता है, दे० पा० ५।४।१८) 2. हड्डी 3. गाड़ी का लट्ठा ।

सक्रिय (वि०) [क्रियया सह—ब० स०] फुर्तीला, गतिशील ।

सक्षण (वि०) [क्षणेन सह—ब० स०] जिसके पास अवकाश हो ।

सखि (पुं०) [सह समानं ख्यायते ख्या+डिन् नि०] (कर्तृ० सखा, सखायौ सखायः, कर्म० सखायं, सखायौ, संबo, ए० ब० सख्युः अधि० ए० ब० सख्यौ) मित्र, साथी, सहचर, तस्मात्सखा त्वमसि नन्वसि तत्त्वदेव —उत्तर० ५।१०, सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः —कि० १।१०, (समास के अन्त में 'सखि' शब्द बदल कर 'सख' हो जाता है वनितासखानाम्—कु० १।१०, **सचिवसखः**—रघु० ४।८७, १।४८, १२।९, भट्टि० १।१) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सखी [सखि + ङीष्] सहेली, सहचरी, नायिका की सहेली, नूपुरवति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते गीत०, १।

सख्यम् [सख्युर्भावः यत्] 1. मित्रता, घनिष्ठता, मैत्री, - मुमूर्षुं सख्यं रामस्य समानव्यसने हरौ रघु० १२। ५७, समानशीलव्यसनेषु सख्यम् - मुमा० 2. समानता, ख्यः मित्र ।

सगण (वि०) [गणेन सह --ब० स०] दल बल सहित उपस्थित, -णः शिव का विशेषण ।

सगर (वि०) [गरेण सह --ब० स०] विषैला, जहरीला,-रः एक सूर्यवंशी राजा । (यह बाहुराजा का पुत्र था, गर सहित पैदा होने के कारण इसका सगर पड़ा क्योंकि इसकी माता को इसके पिता को दूसरी पत्नी ने विष दे दिया था । सुमति नामं की इसकी पत्नी से इसके साठ हजार पुत्र हुए । इसने ९९ यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न किये, परन्तु जब सौवाँ यज्ञ होने लगा तो इन्द्र ने इसका घोड़ा उड़ा लिया और पाताल लोक ले गया! इस बात पर सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों को घोड़ा ढूंढने का आदेश दिया, जब इस पृथ्वी पर घोड़े का पता न लगा तो वह पाताल में जाने के लिए इस पृथ्वी को खोदने लगे, ऐसा करने पर समुद्र की सीमाएँ बढ़ गई और इसी लिए वह 'सागर' के नाम से विख्यात हुआ – तु० रघु० १३।३, जब उन्हें कपिल ऋषि के दर्शन हुए तो उन्होंने उस पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाकर बुरा भला कहा । ऋषि के शाप से वे साठ हजार पुत्र तुरन्त भस्म हो गए । फिर कई हजार वर्ष के पश्चात् उन्हीं का वंशज भगीरथ गंगा को पाताल लोक ले जाने में सफल हुआ, वहाँ उसने उनकी भस्म को गंगा जल से सींच कर पवित्र किया तथा इस प्रकार उनकी आत्माओं को स्वर्ग में भिजवाया) ।

सगर्भः,-र्भ्यः [सह समानो गर्भो यस्य--ब० स०, समाने गर्भे भवः यत् वा] सहोदर भाई —महावीर० ६।२७ ।

सगुण (वि०) [गुणेन सह--ब० स०] 1. गुणवान् गुणों से युक्त 2. अच्छे गुणों से युक्त, सद्गुणी 3. भौतिक 4. (धनुष की भाँति) डोरी से सुसज्जित, ज्यायुक्त 5. साहित्यिक गुणों से युक्त ।

सगोत्र (वि०) [सह समानं गोत्रमस्य—ब० स०] एक ही कुल में उत्पन्न, बन्धु, रिश्तेदार, त्रः 1. एक ही पूर्वज की सन्तान, श० ७ 2. एक ही कुल का, श्राद्ध, पिण्ड, तर्पण साथ करने वाला व्यक्ति 3. दूर का रिश्तेदार 4. परिवार, कुल, वंश ।

सङ्घः (स्त्री०) [अद् + क्तिन् नि० घि, सहस्य सः] साथ-खाना, मिलकर भोजन करना ।

सङ्कुल (वि०) [सम् + कटच्, सम् + कट् + अच् वा] 1. संकरा, सिकुड़ा हुआ, भीड़ा, सकीर्ण 2. अबेध, अगम्य 3. पूर्ण, भरा हुआ, जड़ा हुआ, झालरदार --संकटा ह्याहितास्मीना प्रश्नवाधैर्गृहस्थता—महावीर० ४।३३, उत्तर० १।६, ल्म् 1. भीड़ा रास्ता, सकीर्ण घाटी, तंग दर्रा 2. कठिनाई, दुर्दशा, जोखिम, डर, खतरा संकटेष्वविषण्णधीः--कि०, संकटं हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च संगरे कथा० ३१।९३ ।

सङ्कथा [सम् --कथ् + अ --टाप्] समालाप, वार्तालाप ।

सङ्करः [सम् + कृ + अप्] 1. सम्मिश्रण, मिलावट, अन्तर्मिश्रण श० २ 2. साथ मिलाना, मेल 3. (जातियों का) मिश्रण या अवर्णव्यवस्था, अन्तर्जातीय अवैध विवाह जिसका परिणाम मिश्रजातियाँ हैं चित्रेषु वर्णसंकरः का०, भग०, १।४२, मनु० १०।४० 4. (अल०) दो या दो से अधिक आश्रित अलंकारों का एक ही सन्दर्भ में मिश्रण (विप० संसृष्टि जिसमें अलंकार स्वतन्त्र होते हैं अविश्रान्ति-जुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु संकरः—काव्य० १०, या —अङ्गाङ्गित्वेऽलङ्कृतीनां तद्वदेकाश्रयस्थितौ । संदिग्धत्वे च भवति संकरस्त्रिविधः पुनः सा० द० ७५७ 5. धूल, बुहारन, कूड़ाकरकट, -री दे० नी० संकारी ।

सङ्कर्षणम् [सम् + कृष् + ल्युट्] 1. मिलकर खींचने की क्रिया, सिकुड़न 2. आकर्षण 3. हल चलाना, खूंट निकालना—णः बलराम का नाम--संकर्षणस्तु गर्भस्थ स हि संकर्षणो युवा हरि० ।

सङ्कलः [सम् + कल् + अच् (भावे)] 1. संग्रह, संचय 2. जोड़ ।

सङ्कलनम् - ना [सम् + कल् + ल्युट्] 1. ढेर लगाने की क्रिया, 2. संपर्क, संगम 3. टक्कर 4. मरोड़ना, ऐंठना 5. (गणि० में) योग, जोड़ ।

सङ्कलित (भू० क० कृ०) [सम् + कल + क्त] 1. ढेर लगाया गया, चट्टा लगाया गया, संचित किया गया 2. साथ-साथ मिलाया गया, अन्तर्मिश्रित 3. पकड़ा गया, हाथ में लिया गया 4. जोड़ा गया ।

सङ्कल्पः [सम् + कृप् + घञ्, गुणः, रस्य लः] 1. इच्छा-शक्ति, कामनाशक्ति, मानसिक दृढ़ता,—कः कामः संकल्पः—दश० 2. प्रयोजन, उद्देश्य, इरादा, विचार 3. कामना, इच्छा सङ्कल्पमात्रोदितसिद्धयस्ते—रघु० १४।१७ 4. चिन्तन, विचार, विमर्श, उत्प्रेक्षा, कल्पना तत्संकल्पोपहितजडिमस्तम्भमभ्येति गात्रम् —मा० १।३५, वृथैव सङ्कल्पशतैरजस्रमनङ्ग नीतोऽसि मया विवृद्धिम्--श० ३।४ 5. मन, हृदय,—मा० ७।२ 6. कोई धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा 7. किसी ऐच्छिक पुण्यकार्य से फल की आशा । सम० —ज,—जन्मन् (पुं०) योनिः कामदेव के विशेषण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–भगवन्त् ब्रूलपयोने–मालवि० ४, कु० ३।२४,–रूप (वि०) 1. ऐच्छिक 2. इच्छा के अनुरूप।

सङ्कुसुक (वि०) [सम्+कस्+उकञ्] 1. अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, अनिश्चित 2. अनिश्चित, संदिग्ध 3. दृढ़ नहीं 4. निर्बल, कमजोर।

सङ्कूरः [सम्+कृ+घञ्] 1. धूल, बुहारन, कूड़ाकरकट 2. ज्वालाओं के चटखने का शब्द।

सङ्कूरी [संकर+ङीष्] वह लड़की जिसका कौमार्य अभी अभी भंग हुआ हो, नई दुलहिन।

सङ्काश (वि०) [सम्+काश्+अच्] 1. सदृश, समान, मिलता-जुलता (समास के अन्त में) अग्नि°, हिरण्य° 2. निकट, पास, नज़दीक, शः 1. दर्शन, उपस्थिति 2. पड़ोस।

सङ्किलः [सम्+किल्+क] जलती हुई लकड़ी, जलती हुई मशाल।

सङ्कीर्ण (भू० क० कृ०) [सम्+कृ+क्त] 1. साथ साथ मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित 2. अव्यवस्थित, विभिन्न 3. बिखरा हुआ, फैला हुआ, खचाखच भरा हुआ 4. अस्पष्ट 5. दान बहाता हुआ, नशे में चूर हि० ४।२७ 6. वर्णसंकर जाति का, अपवित्रकुल या संकरजाति में जन्मा हुआ 7. हरामी, दोगला 8. तंग, संकुचित, र्णः 1. संकर जाति का व्यक्ति, 2. मिश्रस्वर 3. वह हाथी जिसके मस्तक से मद बहता हो, मस्तहाथी,–र्णम् कठिनाई। सम० **जाति, योनि** (वि०) वर्णसंकर, दोगली नस्ल का, (जैसे कि खच्चर),–**युद्धम्** अव्यवस्थित लड़ाई, रणसंकुल।

सङ्कीर्तनम्,–ना [सम्+कृत्+णिच्+ल्युट्, ईट्वम्] 1. प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना 2. (किसी देवता का) यशोगान करना 3. भजन के रूप में किसी देवता के नाम का जप करना।

सङ्कुचित (भू० क० कृ०) [सम्+कुच्+क्त] 1. सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ **लङ्कापतेः सङ्कुचितं यशो वत्**–विक्रमांक० १।२७ 2. सिकुड़न वाला, झुर्रियां पड़ा हुआ 3. ढका हुआ, बंद किया हुआ 4. आवरण।

सङ्कुल (वि०) [सम्+कुल्+क] 1. अव्यवस्थित 2. आकीर्ण, खचाखच भरा हुआ, पूर्ण–**नक्षत्रतारागृह–सङ्कुलाविज्योतिष्मती चन्द्रमसेव रात्रिः**–रघु० ६।२२, मा० १।२ 3. विकृत 4. असंगत,–**लम्** 1. भीड़, जमघट, भीड़भाड़, संग्रह, छत्ता, झुंड,–महत्तः परिजनस्य सङ्कुलेन विघटितायां तस्यामागतोऽस्मि–मा० १ 2. अव्यवस्थित लड़ाई, रणसंकुल 3. असंगत या परस्पर-विरोधी भाषण–उद्यो०–**यावज्जीवमहं मौनी, ब्रह्मचारी च मे पिता। माता तु मम वन्ध्यैव पुत्रहीनः पितामहः॥**

सङ्केतः [सम्+कित्+घञ्] 1. इशारा, इंगित 2. निशान, अभिचेष्टा, सुझाव–मुद्रा० १ 3. इंगितपरक चिह्न, निशानी, प्रतीक 4. सहमति, सम्मिलन **सङ्केतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च**–सा० द० १२ 5. प्रेमी प्रेमिका का पारस्परिक ठहराव, **नियुक्ति**, (प्रेमी या प्रेमिका के मिलने का) निर्दिष्ट स्थान **नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुम्** गीत० ५ 6. (प्रेमियों का) मिलन-स्थल, समागम-स्थान **कान्तायिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका** अमर० 7. प्रतिबंध, शर्त 8. (व्या० में) संक्षिप्त विवृति, सूत्र। सम० **-गृहम्,–निकेतनम्,–स्थानम्** निर्दिष्ट स्थान, प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान।

सङ्केतकः [सङ्केत+कन्] 1. सहमति, सम्मिलन 2. नियुक्ति, निर्देशन 3. प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान 4. वह प्रेमी या प्रेमिका जो मिलने के लिए समय या स्थान का संकेत करे **सङ्केतके चिरयति प्रवरो विनोदः**–मृच्छ० ३।३।

सङ्केतित (वि०) [सङ्केत+इतच्] 1. ठहराया हुआ, मिलकर नियमानुसार निर्धारित, **साक्षात्सङ्केतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः**–काव्य० 2. आमन्त्रित, बुलाया हुआ।

सङ्कोचः [सम्+कुच्+घञ्] 1. सिकुड़ना, शिकन पड़ना 2. संक्षेपण, न्यूनीकरण, भींचना 3. त्रास, भय 4. बंद करना, मूंदना 5. बांधना 6. एक प्रकार की मछली, **-चम्** केसर, ज़ाफ़रान।

सङ्कन्दनः [सम्+क्रन्द्+ल्युट्] श्री कृष्ण का नाम।

सङ्क्रमः [सम्+क्रम्+घञ्] 1. सहमति, संगमन, साथ जाना 2. संक्रान्ति, यात्रा, स्थानान्तरण, प्रगति 3. किसी ग्रह का एक राशिचक्र से दूसरी राशि में जाना 4. गमन करना, यात्रा करना,–**मः** नम् 1. कठिन या संकरा मार्ग 2. सेतु, पुल **नदीमार्गेषु च तथा संक्रमानवसादयेत्**–महा० 3 किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन, तामेव संक्रमीकृत्य दश०, सोऽतिथिः स्वर्गसङ्क्रमः–पंच० ४।२।

सङ्क्रमणम् [सम्+क्रम्+ल्युट्] 1. संगमन, सहमति 2. संक्रान्ति, प्रगति, एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाना 3. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना 4. सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन 5. मार्ग।

सङ्क्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+क्रम्+क्त] 1. ...में से गया हुआ, प्रविष्ट हुआ 2. स्थानान्तरित, न्यस्त, समर्पित–उत्तर० १।२२ 3. पकड़ा, ग्रस्त 4. प्रतिफलित, प्रतिबिंबित 5. चित्रित।

सङ्क्रान्तिः (स्त्री०) [सम्+क्रम्+क्तिन्] 1. संगमन, मेल 2. एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक का मार्ग, अवस्थांतर 3. सूर्य या किसी और ग्रहपुंज का एक राशि से

For Private and Personal Use Only

दूसरी राशि में जाने का मार्ग 4. स्थानान्तरण, (किसी दूसरे को) सौंपना–संक्रान्तिता··· पयसो गण्डूषसङ्क्रान्तत्वः उत्तर० ३।१६ 5. (अपना ज्ञान दूसरों तक) हस्तान्तरित करना, (दूसरों को) विद्यादान की शक्ति ··विवादे दर्शयिष्यन्त क्रियासङ्क्रान्तिमात्मनः—मालवि० १।१८, शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था सङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता···।।१।६ 6. प्रतिमा, प्रतिबिंब 7. चित्रण।

सङ्क्राम दे० 'संक्रम'।

सङ्क्रीडनम् [सम्+क्रीड्+ल्युट्] मिल कर खेलना।

सङ्क्लेदः [सम्+क्लिद्+घञ्] 1. तरी, नमी 2. गर्भावान के पश्चात् प्रथम मास में स्रवित होने वाला रस जिससे भ्रूण के आरम्भिक रूप का निर्माण होता है।

सङ्क्षयः [सम्+क्षि+अच्] 1. विनाश 2. पूर्ण विनाश या उपभोग 3. ह्रास, बर्बादी 4. अन्त 5. प्रलय।

सङ्क्षिप्तिः (स्त्री०) [सम्+क्षिप्+क्तिन्] 1. साथ साथ फेंकना 2. भींचना, संक्षेपण 3. फेंकना, भेजना 4. धातु में रहना।

सङ्क्षेपः [सम्+क्षिप्+घञ्] 1. साथ साथ फेंकना 2. भींचना, छोटा करना 3. लाघव, संहृति 4. निचोड़, सारांश 5. फेंकना, भेजना 6. अपहरण करना 7. किसी अन्य व्यक्ति के कार्य में सहायता देना (संक्षेपेण, संक्षेपतः (क्रि० वि०) थोड़े अक्षरों में, संहरण करके, संक्षेप में)

सङ्क्षेपणम् [सम्+क्षिप्+ल्युट्] 1. ढेर लगाना 2. छोटा करना, लघूकरण 3. भेजना।

सङ्क्षोभः [सम्+क्षुभ्+घञ्] 1. आन्दोलन, कंपकपी 2. बाधा, हलचल – मुल्ल० । 3. उथल पुथल, उलट पुलट 4. घमंड, अहंकार।

सङ्ख्यम् [सम्+ख्या+क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई **सङ्ख्ये क्षियां** वीररसे चकार विक्रम० १।६७, ७० वेणी० ३।२५, शि० १८।७०।

सङ्ख्या [सम्+ख्या+अङ्+टाप्] 1. गणना, गिनती, हिसाब लगाना सङ्ख्यामिवैषां भ्रमरश्चकार रघु० १६।४७ 2. अंक 3. अंकबोधक 4. जोड़ 5. हेतु, समझ, प्रज्ञा 6. विचार, विमर्श 7. रीति। सम०—अतिग, ··अतीत (वि०) असंख्य, अनगिनत, गणनातीत, — वाचक (वि०) संख्या बोधक (कः) अंक।

सङ्ख्यात (भू० क० कृ०) [सम्+ख्या+क्त] 1. गिना गया 2. हिसाब लगाया गया, गिना हुआ, **तम्** अंक, **ता** एक प्रकार की पहेली।

सङ्ख्यावत् (वि०) [सङ्ख्या+मतुप्] 1. संख्या वाला 2. हेतु से युक्त पुं० विद्वान् पुरुष।

सङ्गः [सञ्ज्+भावे घञ्] 1. साथ मिलना, सम्मिलन 2. मिलना, मेल, संगम (जैसे नदियों का) 3. स्पर्श, सम्पर्क 4. संगति, साहचर्य, मैत्री, अनुराग सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति—उत्तर० २।१, **संगमनुज्झ** संगति में रहना, मंडली में रहना,—मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति सुभा० 5. अनुरक्ति, प्रीति, अभिलाषा ··व्यावृतो विषयान्प्रति सङ्गस्तेषूपजायते भग० २।६२ 6. सांसारिक विषयों में आसक्ति, मनुष्यों के साथ साहचर्य – दौर्मेथ्यान्पुपतिर्विनश्यति यतिः सङ्गात् भर्तृ० २।४२ 7. मुठभेड़, लड़ाई।

सङ्गणिका [सम्+गण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] श्रेष्ठ या अनुपम प्रवचन।

सङ्गत (भू० क० कृ०) [सम्+गम्+क्त] 1. मिला, हुआ, जुड़ा हुआ, साथ साथ आया हुआ, साहचर्य से युक्त 2. एकत्रित, संचित, संयोजित, सम्मिलित 3. प्रणयग्रन्थि में आबद्ध, विवाहित 4. मैथुन द्वारा मिला हुआ 5. साथ साथ भरा हुआ, समुचित, युक्तियुक्त, संवादी ··श० ३ 6. से युक्त (जैसे कि ग्रहों से) 7. शिकनवाला सिकुड़ा हुआ, दे० सम् पूर्वक 'गम्', **तम्** 1. मिलाप, सम्मिलन, मैत्री,–विक्रम० ५।२४, श० ५।२३ 2. समाज, मण्डली 3. परिचय, मित्रता, घनिष्टता—कु० ५।३९ 4. सामंजस्यपूर्ण या मुसंगत वाणी, युक्तियुक्त टिप्पण।

सङ्गतिः (स्त्री०) [सम्+गम्+क्तिन्] 1. मेल, मिलना, संगम 2. संसर्ग, सहयोगिता, साहचर्य, पारस्परिक मेलजोल मनो हि जन्मान्तरसङ्गतिज्ञम् रघु० ७।१५ 3. मैथुन 4. दर्शन करना, बार बार आना-जाना 5. योग्यता, उपयुक्तता, प्रयोगात्मकता, संगत, सम्बन्ध 6. दुर्घटना, दैवयोग, आकस्मिक घटना 7. ज्ञान 8. अधिक जानकारी के लिए पृच्छा।

सङ्गमः [सम्+गम्+अप्] 1. मिलना, मेल – विक्रम० ४।३७, रघु० १२।६६, ९० 2. साहचर्य, संगति, सहयोगिता, पारस्परिक मेलजोल जैसा कि 'सद्भिःसंगमः' में 3. सम्पर्क, स्पर्श रघु० ८।४४ 4. मैथुन या रतिक्रिया अयं स ते तिष्ठति सङ्गमोत्सुकः श० ३।१४, रघु० १९।३३ 5. (नदियों का) मिलना; संगम स्थान गङ्गायमुनयोः सङ्गमः 6. योग्यता, अनुकूलन 7. मुठभेड़, लड़ाई 8. (ग्रहों का) संयोग।

सङ्गमनम् [सम्+गम्+ल्युट्] मिलना, मेल, दे० 'सङ्गम'।

सङ्गरः [सम्+गृ+अप्] 1. प्रतिज्ञा, करार, –तथैति तस्यावितथं प्रतीतः प्रत्ययग्रहीत्सङ्गरमग्रजन्मा - रघु० ५।२६, ११।४०, १३।०५ 2. स्वीकृति, हाथ में लेना 3. सौदा 4. संग्राम, युद्ध, लड़ाई–अतरस्त्वबुजौजसा मुहुर्महतः सङ्गरसागरानसौ शि० १६।६७ 5. ज्ञान 6. निगल जाना 7. दुर्भाग्य, संकट 8. विष।

सङ्गवः [संगता गावो दोहनाय अत्र–नि०] प्रातःस्नान के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पाँच भागों में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से दूसरा है, और जब गायें दूहने के बाद चरने के लिए ले जाई जाती हैं।

सङ्गावः [सम्+गद्+घञ्] प्रवचन, समालाप, बातचीत।

सङ्गिन् (वि०) [सञ्ज्+घिनुण्] 1. संयुक्त, मिला हुआ 2. अनुरक्त, भक्त, स्नेहशील—शि० ५।११, रघु० १९।१६, मालवि० ४।२, भग० ३।२६, १४।१५।

सङ्गीत (भू० क० कृ०) [सम्+गै+क्त] मिलकर गाया हुआ, सहगान, सम्मिलित कण्ठों से गाया हुआ, तम् 1. सामूहिक गान, बहुत से कण्ठों से मिलकर गाया जाने वाला गान,—जगुः सुकण्ठ्यो गन्धर्व्यः सङ्गीतं सहभर्तृकाः—भाग० 2. गायन, मधुर गायन, विशेषतः वह गायन जो नृत्य तथा वाद्ययन्त्रों के साथ गाया जाय, ताल युक्त गान गीतं वाद्यं तनर्तनं त्रयं सङ्गीतमुच्यते; किमत्यदभ्यः परिषदः श्रुतिप्रसादनतः सङ्गीतात् दश १, भृच्छ० १ 3. संगीत गोष्ठी, सहसंगीत 4. नृत्य वाद्य के साथ गाने की कला—भर्तृ० २।१२। समः अर्थः 1. संगीत प्रदर्शन का विषय 2. संगीतशाला के लिए आवश्यक सामग्री या उपकरण —मेघ० ५६,—शाला गायनालयः—मा० २,—शास्त्रम् गानविद्या।

सङ्गीतकम् [सङ्गीत+कन्] 1. संगीतगोष्ठी, मुरताल से युक्त गान 2. सार्वजनिक मनोरंजन जिसमें नाच-गाना हो।

सङ्गीर्ण (भू० क० कृ०) [सम्+गृ+क्त] 1. सम्मत, स्वीकृत 2. प्रतिज्ञात।

सङ्ग्रहः [सम्+ग्रह्+अप्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना 2. मुट्ठी बाँधना, जंगुल, पकड़ 3. स्वागत, प्रवेश 4. संरक्षण, प्रश्रय—तथा ग्रामशतानां च कुर्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम् मनु० ७।११४ 5. अनुग्रहण, प्रसादन, आदर-सत्कार करना, पालन-पोषण करना मनु० ३।१३८, ८।३११ 6. भरना, संग्रह करना, एकत्र करना, संचय करना तैः कृतप्रकृतिसङ्ग्रहः रघु० १२।५५, १७।६० 7. शासन करना, प्रतिबंध लगाना, नियन्त्रण करना 8. राशीकरण 9. संयोजन 10. संघट्टीकरण (एक प्रकार का 'संयोग') 11. सम्मेल करना, अवधारणा 12. संकलन 13. सारांश, सार, संक्षेपण, सारसंग्रह —सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये भग० ८।११, इसी प्रकार तर्क सङ्ग्रह 14. जोड़, राशि, समष्टि करणं कर्म कर्तरि त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः भग० १८।१८ 15. तालिका, सूची 16. भंडारगृह 17. प्रयत्न, चेष्टा 18. उल्लेख, हवाला 19. बढ़ापन, ऊँचापन 20. वेग 21. शिव का नाम।

सङ्ग्रहणम् [सम्+ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना, ले लेना 2. सहारा देना, प्रोत्साहित करना 3. संकलन करना, संचय करना 4. गड्ड-मड्ड करना 5. मंढना, जड़ना —कनकभूषणसङ्ग्रहणोचितः (मणिः)—पंच० १।७५ 6. मैथुन, स्त्रीसंभोग 7. व्यभिचार मनु० ८।६, ७२, याज्ञ० २।७२ 8. आशा करना 9. स्वीकार करना, प्राप्त करना, भी पेखिज।

सङ्ग्रहीतृ (पुं०) [सम्+ग्रह्+तृच्] सारथि।

सङ्ग्रामः [सङ्ग्राम्—अच्] रण, युद्ध, लड़ाई—सङ्ग्रामाङ्गणमागतेन भवता चापे समारोपिते—काव्य० १०। समः —जित् (वि०) युद्ध में जीतने वाला,—पटहः युद्ध में बजाया जाने वाला एक बड़ा भारी ढोल।

सङ्ग्राहः [सम्+ग्रह्+घञ्] 1. हाथ डालना, ले लेना 2. बलात् लौट लेना 3. मुट्ठी बाँधना 4. तलवार की मूठ।

सङ्घः [सम्+हन्+अप्, टिलोपः, धत्वम्] 1. समूह, संग्रह, समुच्चय, झुण्ड जैसा कि महर्षिसङ्घः, मनुष्यसङ्घ 2. एक साथ रहने वाले लोगों का समूह। समः चारिन् (पुं०) मछली, जीविन् (पुं०) किराये का मजदूर, कुली, वृत्ति (स्त्री०) संघटनवृत्ति।

सङ्घटना [सम्+घट्+णिच्+युच्+टाप्] साथ साथ मिलना, मेल, सम्मेल—रत्न० ४।२०।

सङ्घट्ट [सम्+घट्ट्+अच्] 1. संघर्षण के एक साथ घिसना, रगड़ना सरलकन्धरसङ्घट्टजन्मा (दवाग्निः) मेघ० ५३, मा० ५।३ 2. टक्कर, खटपट, मुठभेड़ शि० २०।२६ 3. भिड़न्त, संघर्ष 4. मिलना, सम्मिलन, टक्कर या स्पर्श (जैसे कि पतियों की)—रघु० १४।८६ 5. आलिंगन—हा एक बड़ी लता, बेल।

सङ्घट्टनम्,-टना [सम्—घट्ट्+ल्युट्] 1. मिला कर रगड़ना, संघर्षण 2. टक्कर, खटपट 3. घनिष्ठ संपर्क, लगाव 4. संपर्क, मेल, विपकाव 5. पहलवानों का परस्पारिक लिपटना 6. मिलना, मुठभेड़।

सङ्घशस् (अव्य०) [सङ्घ+शस्] झुंडों में, दल बनाकर।

सङ्घर्ष [सम्+घृष्+घञ्] 1. दो चीजों की रगड़, घृष्टि 2. पीस डालना, चूरा करना 3. टक्कर, खटपट 4. प्रतिद्वन्द्विता, प्रतिस्पर्धा, श्रेष्ठता के लिए होड़, —लब्धाश्च मम नक्तन्दिवमेतेनैव दश० नाट्यायायोगमंहान् ज्ञानसङ्घर्षो जातः मालवि० १ 5. ईर्ष्या, डाह 6. सरकना, मन्द मन्द बहना।

सङ्घाटिका [सम्+घट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. जोड़ा, दम्पती 2. दूती, कुटनी 3. गंध।

सङ्घाणकः, कम् [शिघाण पृषो०] नाक का मल, सिणक।

सङ्घातः [सम्+हन्+घञ्] 1. संघ, मिलाप, समाज 2. समुदाय, समवाय, समुच्चय, उपायसङ्घात इव प्रवृद्धः—रघु० १४।११, कु० ४।६ 3. बध, हत्या 4. कफ 5. सम्मिश्रणों का निर्माण 6. नरक के एक प्रभाग का नाम।

सचकित (वि०) विस्मित, भयभीत, तम् (अव्य०) कांपते हुए, चौंक कर, चौकन्ना होकर, विस्मित होकर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सचिः [सच्+इन्] 1. मित्र 2. मैत्री, घनिष्ठता स्त्री० इन्द्र की पत्नी, दे० 'शची'।

सचिल्लक (वि०) [सह चिल्लनेत्र, सहस्य सः, कपू, नि०] चिल्लाक्ष, चौंधाई आँखों वाला।

सचिवः [सचि+वा+क] 1. मित्र, सहचर 2. मन्त्री परामर्श दाता—सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् मनु० ७।५४, रघु० १।३४, ४।८७, कार्यान्तरसचिवः—मालवि० १।

सची दे० 'शची'।

सचेतन (वि०) [सह चेतनया ब० स०, सहस्य सः] चेतनायुक्त, जीवधारी, विवेकपूर्ण।

सचेतस् (वि०) [सह चेतसा ब० स०] 1. प्रज्ञावान् 2. भावुक 3. एकमत।

सचेल (वि०) [सह चेलेन ब० स०] वस्त्रों से सुसज्जित।

सचेष्टः [सच्+अच्, तथाभूतः सन् इष्टः] आम का वृक्ष।

सज्जन (वि०) [सह जनेन ब० स०] मनुष्यों या जीवधारी प्राणियों से युक्त, नः एक ही परिवार का व्यक्ति, बंधु, संबन्धी।

सजल (वि०) [सह जलेन ब० स०] जलमय, जलपूर्ण, आर्द्र, गीला, तर।

सजाति, सजातीय (वि०) [समाने जातिः अस्य, ब० स०, समानस्य सः, समानो जातिर्यस्मिंस्तत्—समान+छ] 1. एक ही जाति का, एक ही वर्ग का 2. समान, एक सा—पुं० एक ही जाति के स्त्री और पुरुष से उत्पन्न पुत्र।

सजुष् (स्) (वि०) [सह जुषते जुष्—क्विप्, सहस्य सः] 1. प्रिय, अनुरक्त 2. साथ लगा हुआ—पुं० (कर्तृ० सजूः, सजूषौ, सजूषः, करण० द्वि० सजूर्भ्याम्) मित्र, साथी (अथ०), गठित, युक्त।

सज्ज (वि०) [सज्ज्+अच्] 1. तत्पर, तैयार किया हुआ, तैयार कराया हुआ—सज्जो रथः—उत्तर० १ 2. वस्त्रों से सुसज्जित, कपड़े धारण किये हुए 3. संलग्न हुआ, सन्नद्ध या दीक्षाप्त से तैयार हुआ 4. पूर्णतः सुसज्जित, शस्त्र धारण किये हुए 5. क्रियान्वयी रूप से सुसज्जित।

सज्जनम् [सज्ज् णिच् ल्युट्] 1. जकड़ना, बाँधना 2. वेशभूषा धारण करना 3. तैयारी करना, शस्त्रास्त्र धारण करना, सुसज्जित करना 4. चौकीदार, पहरेदार 5. भाट,—नः भद्र पुरुष, दे० 'सत्' के अन्तर्गत, ना 1. सजावट, संधारना, सुसज्जित करना 2. वस्त्राभूषण धारण करके तैयार होना, सजावट।

सज्जा [सज्ज्+अ+टाप्] 1. वेशभूषा, सजावट 2. सुसज्जा, परिच्छद 3. सैनिक साज सामान, कवच, जिरहबख्तर।

सज्जित (वि०) [सज्जा+इतच्] 1. वस्त्र धारण किये हुए 2. सजाया हुआ 3. तैयार किया हुआ, साज-सामान से लैस 4. सवारा हुआ, हथियारों से लैस।

सज्य (वि०) [सह ज्यया ब० स०, सहस्य सः] 1. धनुष की डोरी से युक्त 2. डोरी से कसा हुआ (धनुष आदि)।

सज्योत्स्ना [सह ज्योत्स्नया ब० स०] चाँदनी रात।

सञ्चः [सञ्चयते अत्र—सम्+चि+ड] ग्रंथ लेखन के काम आने वाले पत्रों का संग्रह।

सञ्चत् (पुं०) [सम्+चत्+क्विप्] ठग, धूर्त, बाजीगर।

सञ्चयः [सम्+चि+अच्] 1. ढेर लगाना, एकत्र करना 2. ढेर, राशि, संग्रह, भंडार, वाणिज्यवस्तु कर्तव्यः सञ्चयो नित्यं कर्तव्यो नातिसञ्चयः—सुभा० 3. भारी परिमाण, संग्रह।

सञ्चयनम् [सम्+चि+ल्युट्] 1. एकत्र करना, संग्रह करना 2. फूल चुनना, शव भस्म हो जाने के बाद भस्मास्थिचय करना।

सञ्चरः [सम्+चर्+क] 1. मार्ग, एक राशि से दूसरी राशि पर स्थानान्तरण 2. रास्ता, पथ यत्रौषधिप्रकाशेन तत्रैव दर्शितसंचरः—कु० ६।४३, रघु० १६। १२ 3. भोंड़ी सड़क, संकरा मार्ग, संकीर्ण पथ 4. प्रवेश द्वार 5. शरीर 6. हत्या 7. विकास।

सञ्चरणम् [सम्+चर्+ल्युट्] जाना, गमन करना, यात्रा करना।

सञ्चल (वि०) [सम्+चल्+अच्] काँपने वाला, ठिठुरने वाला।

सञ्चलनम् [सम् चल्+ल्युट्] विक्षोभ, कंपकंपी, हिलना, थरथरी अञ्जलसञ्चलनाहरणो रणः—कि० १८।८।

सञ्चायः [सम्+चि+घञ्, नि०] विशेष प्रकार का एक यज्ञ।

सञ्चारः [सम्+चर्+घञ्] 1. गमन, गति यात्रा, पर्यटन—स पुनः पार्श्वसञ्चार सञ्चरत्खचनीपतिः—काव्य० १०. रघु० २।१५ 2. धारण, मार्ग, संक्रम 3. पथ, रास्ता, सड़क, दर्रा 4. कठिन प्रगति या यात्रा 5. कठिनाई, दुःख 6. गतिमान् करना 7. भड़काना 8. नेतृत्व करना, मार्ग प्रदर्शन करना 9. संक्रामण, रोगसंचार 10. सांप की फण में पाई जाने वाली मणि।

सञ्चारक (वि०) [सम्+चर्+ण्वुल्] संचार करने वाला, संक्रमण करने वाला, कः 1. नेता, पथ प्रदर्शक 2. उकसाने वाला।

सञ्चारणम् [सम्+चर्+णिच्+ल्युट्] गतिशील होना, प्रणोदित करना, संप्रेषण, नेतृत्व करना आदि।

सञ्चारिका [सम्+चर्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. दूती, (दो प्रेमियों की) परस्पर संदेशवाहिका 2. दूती, कुटनी 3. जोड़ा, दम्पती 4. गंध, बू।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सञ्चारिन् (वि०) (स्त्री०–णी) [सम्+चर्+णिनि] 1. गतिशील,गमनीय–सञ्चारिणी नगर देवतेव–मा० १, कु० ३।५४, ६।६७ 2. पर्यटन, भ्रमण 3. परिवर्तनशील, अस्थिर, चंचल 4. दुर्गम, अगम्य 5. क्षणभंगुर जैसे कि भाव, दे० नी० 6. प्रभावशाली 7. आनुवंशिक, वंशपरम्पराप्राप्त (रोग आदि) 8. छूत का रोग 9. प्रणोदन, पुं० 1. वायु, हवा 2. घृत 3. वह क्षणभंगुर भाव जो स्थायी को शक्ति-सम्पन्न करता है दे० व्यभिचारिन्।

सञ्चाली [सम्+चल्+ण+ङीप्] गुंजा की झाड़ी।

सञ्चित (भू० क० कृ०) [सम्+चि+क्त] 1. ढेर लगाया हुआ, संगृहीत, जोड़ा गया, इकट्ठा किया गया 2. रक्खा गया, जमा किया गया 3. गिना गया, गणना की गई 4. भरा हुआ, सुसम्पन्न, युक्त 5. बाधित, अवरुद्ध 6. सघन, घिनका (जैसे कि जंगल)।

सञ्चितिः (स्त्री०) [सम्+चि+क्तिन्] संग्रह, सञ्चय।

सञ्चिन्तनम् [सम्+चिन्+ल्युट्] विचार, विमर्श।

सञ्चूर्णम् [सम्+चूर्ण्+ल्युट्] चूर चूर करना।

सञ्छन्न (भू० क० कृ०) [सम्+छद्+क्त] 1. लिपटा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ 2. वस्त्र पहने हुए।

सञ्छादनम् [सम्+छद्+णिच्+ल्युट्] ढकना, छिपाना।

सञ्ज् (स्था० पर० सजति, सक्त, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के लगाने पर धातु का 'स्' बदल कर ष् हो जाता है) 1. संलग्न होना, जुड़े रहना, चिपके रहना, –तुल्यगन्धिषु मत्तेभकटेषु फलरेणवः (ससञ्जुः)–रघु० ४।४७ 2. जकड़ना कर्मवा० (सज्यते) संलग्न होना, चिमटना, जुड़े रहना प्रेर० (सञ्जयति-ते) --इच्छा० (सिसंक्षति); अनु–, 1. चिपकना, चिमटना 2. जुड़ना, साथ होना—मृत्युरेनं च व्याधिश्च दुःख चानेकारणम्। अनुषक्त सदा देहे महा०, उत्तर० ४।२, (कर्मवा०) चिमटना, जुड़ जाना (आलं० से भी)–धर्मपूते च मनसि नभसीव न जातु रजोऽनुषज्यते दश०, भग० ६।४, १८।१०, अव–, निलम्बित करना, संलग्न करना, चिमटना, फैंकना, रखना–शि० ५।१६, ७।१६, ९।७, कु० ७।२३ 2. सौंपना, सुपुर्द करना, निर्दिष्ट करना, (कर्मवा०) 1. सम्पर्क में होना, मिलते रहना भृच्छ० १।५४ 2. व्यस्त होना, तुल जाना, उत्सुक होना, आ–, 1. जकड़ना, जमाना, जोड़ना, मिलाना, रखना–चापमासज्य कण्ठे कु० २।६४, शि० ३।२६ (भूजे) भुजः स भूमेर्घरमाससञ्ज --रघु० २।७४ 2. अभिदान करना, प्रेरित करना कि० १३।४४ 3. सिपुर्द करना, निर्दिष्ट करना 4. चिमटना, लगे रहना नि–, 1. जमे रहना, चिमटना, डाल दिया जाना, रक्खा जाना–कण्ठे स्वयंग्राहनिषक्तबाहुं कु० ३।७, रघु० ९।५०, ११।७०, १९।४५ 2. प्रतिबिम्बित होना–कु० १।१०, ७।३६ 3. संलग्न होना प्र०, 1. चिमटना, जुड़ना 2. प्रयुक्त होना, अनुकरण करना, प्रयुक्त किया जाना, सही उतरना, ठीक बैठना - इतरेतराश्रयः प्रसज्यते, वैधव्यमेधांस्ये नेश्वरस्य प्रसज्यते— शा०रो० 3. संलग्न होना, तस्यामसौ प्रासजत् - दश०, व्यति , मिलाना, साथ-साथ जोड़ना, व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः - उत्तर० ६।१२।

सञ्जः [सम्+जन्+ड] 1. ब्रह्मा का नाम 2. शिव का नाम।

सञ्जयः [सम्+जि+अच्] धृतराष्ट्र के सारथि का नाम, (संजय ने कौरवों और पाण्डवों के झगड़े में शान्तिपूर्ण समझौता कराने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल रहा। इसी ने अंधे राजा धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाया–तु० भग० १।१)।

सञ्जल्पः [सम्+जल्प्+घञ्] 1. वार्तालाप 2. अव्यवस्थित बातचीत, बकवाद करना, गड़बड़ 3. शोरगुल, हंगामा।

सञ्जवनम् [सम्+जु+ल्युट्] चतुःशाल, आमने सामने के चार घरों का समूह जिनके बीच में आंगन बन गया हो।

सञ्जा [सञ्ज+टाप्] बकरी।

सञ्जीवनम् [सम्+जीव्+ल्युट्] 1. साथ साथ रहना 2. जीवित करना, जीवन देना, पुनर्जीवन, पुनः सजीवता 3. इक्कीस नरकों में से एक नरक, दे० मनु० ४।८९ 4. चार घरों का समूह, चतुःशाल ...नी एक प्रकार का अमृत (कहते हैं कि इसके सेवन से मृतक भी पुनर्जीवित हो जाता है)।

सञ्ज्ञ (वि०) [सम्+ज्ञा+क] 1. जिसके घुटने चलते समय आपस में टकराते हों 2. होश में आया हुआ 3. नामवाला, नामक दे० नी० संज्ञ,---ज्ञम् एक प्रकार का पीला सुगंधित काष्ठ।

सञ्ज्ञपनम् [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, ह्रस्वः] हत्या, वध।

सञ्ज्ञा [सम्+ज्ञा+अङ्+टाप्] 1. चेतना, होश—सञ्ज्ञां लभ, आपद् या प्रतिपद् फिर चैतन्य प्राप्त करना, होश में आना 2. जानकारी, समझ 3. बुद्धि, मन 4. संकेत, इंगित, निशान, हाव-भाव—मुखापिधैकांगुलिसञ्ज्ञयैव मा बापलायेति गणान् व्यनैषीत्—कु० ३।४१ 5. नाम, पद, अभिधान, इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैः - भग० १५।५ 6. (व्या० में) 1. विशेष अर्थ रखने वाला नाम या संज्ञा, व्यक्ति वाचक संज्ञा 7. 'प्रत्यय' का पारिभाषिक नाम 8. गायत्री मन्त्र, दे० गायत्री 9. विश्वकर्मा की पुत्री और सूर्य की पत्नी, यम, यमी और दोनों अश्विनी कुमारों की माता, (इस विषय में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक उपाख्यान प्रसिद्ध है, कहते हैं एक बार संज्ञा अपने पितृगृह जाने की इच्छा करने लगी, उसने अपने पति सूर्य से अनुमति मांगी, परन्तु वह न मिल सकी। संज्ञा ने अपनी इच्छापूर्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया, अतः अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा उसने ठीक अपने जैसी एक स्त्री का निर्माण किया, जो मानो उसकी छाया थी (और इसी लिए उसका नाम छाया पड़ा)। उस निर्मित स्त्री को अपने स्थान पर रख कर वह सूर्य को बिना बताये अपने पितृगृह चली गई। बाद में सूर्य के छाया से तीन बालक उत्पन्न हुए (दे० छाया), छाया मुख पूर्वक सूर्य के साथ रहती जब संज्ञा वापिस आई तो सूर्य ने उसे घर में नहीं रक्खा। अपमानित और निराश होकर संज्ञा ने घोड़ी का रूप धारण कर लिया और पृथ्वी पर घूमने लगी। समय पाकर सूर्य को वस्तुस्थिति का पता लगा, उसने जाना कि उसकी पत्नी घोड़ी के रूप में घूमती है। फलतः उसने भी घोड़े के रूप धारण कर अपनी पत्नी से समागम किया। उससे उसके अश्विनी कुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए)। सम० **-अधिकारः** एक प्रधान नियम जिसके अनुसार तदन्तर्गत नियमों का विशेष नाम रक्खा जाता है, और वे सब नियम उससे प्रभावित होते हैं, **-विधयः** विशेषण,—**-सुतः** शनि का विशेषण।

सञ्जानम् [सम्+ज्ञा+ल्युट्] जानकारी, समझ।

सञ्जापनम् [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. सूचित करना 2. अध्यापन 3. वध, हत्या।

सञ्जावत् (वि०) [सञ्ज्ञा+मतुप्] 1. सचेतन, होश में आया हुआ, पुनर्जीवित 2. नाम वाला।

सञ्जित (वि०) [सञ्ज्ञा+इतच्] नाम वाला, नामक, नाम धारी।

सञ्जिन् (वि०) [सञ्ज्ञा+इनि] 1. नामवाला 2. जिसका नाम रक्खा जाय।

सञ्जु (वि०) [संहते जानुनी यस्य—ब० स०, जानुस्थाने ञुः] जिसके घुटने चलते समय टकराते हों।

सञ्ज्वरः [सम्+ज्वर्+अप्] 1. अतिताप, बुखार 2. गर्मी 3. क्रोध।

सट् i (भ्वा० पर सटति) बांटना, भाग बनाना।

ii (चुरा० उभ० साटयति—ते) प्रकट करना, प्रदर्शन करना स्पष्ट करना।

सटम्, सटा [सट्+अच्, +टाप् वा] 1. संन्यासी की जटाएँ 2. (सिंह की) अयाल 'मुखं० ७।६, शि० १।४७ 3. सूअर के खड़े बाल विद्युन्तमुद्गतसटाः प्रतिहन्तुमीयुः—रघु० ९।६० 4. शिखा, चोटी। सम० **-भृत्** सिंह।

सट्ट् (चुरा० उभ० सट्टयति ते) 1. क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. बलवान् होना 3. देना 4. लेना, 5. रहना।

सट्टकम् [सट्ट्+ण्वुल्] प्राकृत भाषा का एक उपरूपक, उदा० कर्पूरमंजरी—दे० सा० द० ५४२।

सट्टा (स्त्री०) [सट्+क, पृषो०] 1. एक पक्षिविशेष 2. एक वाद्ययंत्र।

सठ् (चुरा० उभ० साठयति—ते) 1. समाप्त करना, पूरा करना 2. अधूरा छोड़ देना 3. जाना, हिलना-डुलना 4. अलंकृत करना, सजाना।

सणसूत्रम् [=शणसूत्र, पृषो०] सन की बनी डोरी या रस्सी।

सण्ड दे० 'षण्ड'।

सण्डिशः [=सन्दंश, पृषो०] चिमटा या संडासी।

सण्डीनम् [सम्+डी+क्त] पक्षियों को विभिन्न उड़ानों में से एक; दे० 'डीन'।

सत् (वि०) (स्त्री० —) [अस्+शतृ, अकारलोपः] 1. वर्तमान, विद्यमान, मौजूद—सन्तः स्वतः प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम् भामि० १।१२० श० ७।१२ 2. वास्तविक, असली, सत्य 3. अच्छा, सद्गुणसंपन्न, धर्मात्मा या सती—सती योगविसृष्टदेहा ··· कु० १।२१, श० ५।१७ 4. कुलीन, योग्य, उच्च, जैसा कि 'सत्कुलम्' में 5. ठीक, उचित 6. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 7. सम्माननीय, आदरणीय 8. बुद्धिमान्, विद्वान् 9. मनोहर, सुन्दर 10. दृढ़, स्थिर,—(पुं०) भद्रपुरुष, सद्गुणी व्यक्ति, ऋषि—आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव रघु० ४।८६, अविरतं परकार्यकृतां सतां मधुरिमातिशयेन वचोऽमृतम् भामि० १।११३, भर्तृ० २।१८, रघु० १।१०, (नपुं०) 1. जो वस्तुतः विद्यमान हो, सत्ता, अस्तित्व, सर्वनिरपेक्ष सत्ता, 2. वस्तुतः विद्यमान, सचाई, वास्तविकता 3. भद्र, जैसा कि 'सदसत्' में 4. ब्रह्म या परमात्मा, (**सत्कृ**) आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

सम० **असत्** (**सदसत्**) (वि०) 1. विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2. असली और नकली 3. सत्य और मिथ्या 4. भला और बुरा, ठीक और गलत 5. पुण्यात्मा और दुष्ट (नपुं० द्वि० व०) 1. अस्तित्व और अनस्तित्व 2. भलाई और बुराई, ठीक और गलत, °**विवेकः** भलाई और बुराई में अथवा सच और झूठ में विवेक, °**व्यक्तिहेतुः** भलाई और बुराई में विवेक का कारण—तैः सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः रघु० १।१०, **-आचारः** (**सदाचारः**) 1. सद्व्यवहार, शिष्ट आचरण 2. मानी हुई रस्म, परंपराप्राप्त पर्व, स्मरणातीत प्रथा मनु० २।१८, **-आत्मन्** (वि०) गुणी, भद्र, **उत्तरम्** उचित या अच्छा जवाब, **-कर्मन्**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(नपु०) 1. गुणयुक्त. या पुण्यकार्य 2. सद्गुण, पावनता 3. आतिथ्य, **काष्ठः बाज, चील, कारः** 1. कृपा तथा आतिथ्यपूर्ण व्यवहार, सत्कारयुक्त स्वागत 2. सम्मान, आदर 3 देखभाल, ध्यान 4. भोजन 5. पर्व, धार्मिक त्योहार, **कुलम्** सत्कुल, उत्तम कुल, **कुलीन** (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव, **कृत** (वि०) 1. भलीभांति या उचित ढंग से किया गया 2. सत्कार पूर्वक स्वागत किया गया 3. पूज्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित 4. पूजित, **अलंकृत** 5. स्वागत किया गया, **(लः)** शिव का विशेषण, **(तम्)** 1. आतिथ्य 2. सद्गुण, शुचिता —**हुति**, (स्त्री०) 1. सादर व्यवहार, आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 2. सद्गुण, सदाचार,—**क्रिया** 1. सद्गुण, भलाई शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया-श० ५।१५ 2. धर्मार्थता, सत्कर्म, पुण्यकार्य 3. आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 4. शिष्टाचार, अभिवादन 5. शुद्धिसंस्कार 6. अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदैहिक क्रिया, **गतिः** (स्त्री०) **(सद्गतिः)** उत्तम स्थिति, **आनन्द, स्वर्गसुख, गुण** (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, पुण्यात्मा, **(णः)** पुण्यकार्य, उदारता, भलाई, **नेकी**—**चरित**,—**चरित्र** (वि०) **(सच्चरित्र)** सदाचारी, ईमानदार गुणात्मा, धर्मात्मा - सूनुः सच्चरितः—भर्तृ० २।२५, (नपु०) 1. सदाचार, पुण्याचरण 2. भद्रपुरुषों का इतिहास-श० १, **चारा (सच्चारा)** हल्दी, **चित्** (नपु०) **(सच्चित्)** परमात्मा, °**अंशः** सत् और चित् का भाग, °**आत्मन्** (पुं०) सत् और चित् से युक्त आत्मा °**आनन्दः** 'सत् या अस्तित्व, ज्ञान और हर्ष' परमात्मा का विशेषण, **जनः (सज्जनः)** भद्र पुरुष, पुण्यात्मा, —**पद्मम्** कमल का नया पत्ता, **पथः** 1. अच्छा मार्ग 2. कर्तव्य का सन्मार्ग, शुद्धाचरण, पुण्याचरण 3. शास्त्रविहित सिद्धांत,—**परिग्रहः** योग्य व्यक्ति से (दान) ग्रहण करना,—**पशुः** यज्ञ में दी जाने वाली बलि के लिए उपयुक्त पशु, सुयोग्य यज्ञीय बलि,— **पात्रम्** योग्य व्यक्ति, पुण्यात्मा, °**वर्षः** योग्य आदाता के प्रति अनुग्रह की वर्षा, योग्यव्यक्ति के प्रति उदारता का बर्ताव, °**वार्चिन्** (वि०) पात्रता का विचार कर दान आदि देने वाला,—**पुत्रः** 1. भला पुत्र, योग्य पुत्र 2. वह पुत्र जो पितरों के सम्मान में सभी विहित कर्मों का अनुष्ठान करे,—**प्रतिपक्षः** (तर्क० में) पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, प्रति संतुलित हेतु, वह हेतु जिसके विपक्ष में अन्य समकक्ष हेतु भी हो, उदा० 'शब्द नित्य है क्योंकि यह श्रव्य है, · · शब्द अनित्य है क्योंकि यह उत्पन्न हुआ है',—**फलः** अनार का पेड़, **भावः (सद्भावः)** 1. सत्ता, विद्यमानता, **अस्तित्व** 2. वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3. सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, सौजन्य 4. भद्रता, साधुता, —**मातुरः (सन्मातुरः)** धर्मपरायण माता का पुत्र,—**मात्रः (सन्मात्रः)** जिसका केवल अस्तित्व माना जाय, जीव, आत्मा, **मानः (सन्मानः)** भद्रपुरुषों का सम्मान, **मित्रम् (सन्मित्रम्)** विश्वासपात्र मित्र, **युवतिः** (स्त्री०) सती साध्वी स्त्री, **वंश** (वि०) अच्छे कुल का, कुलीन, **वचस्** (नपु०) **रुचिकर तथा सुखद भाषण**,- **वस्तु** (नपु०) 1. अच्छी वस्तु 2. अच्छी कथावस्तु - **चित्रम०** १।२,—**विद्य** (वि०) सुशिक्षित, बहुश्रुत,— **वृत्त** (वि०) 1. अच्छे व्यवहार का, सदाचारी, पुण्याचरण करने वाला, खरा 2. बिल्कुल गोल, वर्तुलाकार **सद्वृत्तः स्तनमण्डलस्तव कथं प्राणेश्वर क्रीडति**—गीत० ३, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं, **(रामः)** 1. सदाचार, पुण्याचरण 2. अच्छा स्वभाव, रोचक प्रकृति,—**संसर्गः, सन्निधानम्, सङ्गः, -सङ्गतिः, समागमः**, भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों की संगति -तथा सत्संनिधानेन मूर्खा याति प्रवीणताम् हि० १ **संप्रयोगः** सही प्रयोग,—**सहाय** (वि०) अच्छे मित्र जिसके सहायक हैं, **(यः)** अच्छा साथी, - **सार** (वि०) अच्छे रस वाला **(रः)** 1. एक प्रकार का वृक्ष 2. कवि 3. चित्रकार,— **हेतुः (सद्धेतुः)** निर्दोष अथवा वैध कारण।

सतत (वि०) [सम् - तन् - क्त, समः अन्त्यलोपः] निरंतर नित्य, सदा रहने वाला, शाश्वत,—**तम्** (अव्य०) लगातार, अविच्छिन्न रूप से, नित्य, सदा, हमेशा - मुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः—राम०। समः—गः—**गतिः** वायु—सलिलतले सततगतीनन्तः संचारिणः सनिगृह्य शय्यां कार्या · · दश०, सततगास्तत्तगानगिरोऽल्लिभिः शि० ६।५, नेत्रा नीताः सतत गतिना यद्विमानाग्रभूमीः मेघ० ६९, **वायिन्** (वि०) 1. सदैव गतिशील 2. क्षयशील।

सतर्क (वि०) [तर्केण सह ब० स०] 1. तर्क करने में निपुण 2. सचेत, सावधान।

सतिः (स्त्री०) [सम् + क्तिन् मलोपः] 1. उपहार, दान 2. अन्त, विनाश।

सती (स्त्री०) [सत् + ङीप्] 1. साध्वी स्त्री (या पत्नी) कु० १।२१ 2. संन्यासिनी 3. दुर्गादेवी— कु० १।२१।

सतीत्वम् [सती + त्व] सती होने का भाव, सतीपन।

सतीनः [सती + नी + ड] 1. एक प्रकार की दाल, मटर 2. बाँस।

सतीर्थः, सतीर्थ्यः [समानः तीर्थः गुरुर्यस्य- ब० स०, तीर्थे गुरौ वसति इत्यर्थे यत् प्रत्ययः—समानस्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सः] सहाध्यायी, साथ अध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी ।

सतीलः [सती+लच्] 1. बांस 2. हवा, वायु 3. मटर, दाल (स्त्री० भी) ।

सतेरः [सत्+एरच्, तान्तादेशः] भूसी, चोकर ।

सत्ता [सत्+तल्+टाप्] 1. अस्तित्व, विद्यमानता, होने का भाव 2. वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3. उच्चतम जाति या सामान्यता 4. उत्तमता, श्रेष्ठता ।

सत्त्रम् [बहुधा सत्रम् -- किया जाता है, सद्+ष्ट्रन्] 1. यज्ञीय अवधि जो प्रायः १३ से १०० दिन तक होने वाले यज्ञों में पाई जाती है 2. यज्ञमात्र 3. आहुति, चढ़ावा, उपहार 4. उदारता, वदान्यता 5. सद्गुण 6. घर, निवासस्थान 7. आवरण 8. धनदौलत 9. जंगल, वन --कि० १३।९ 10. तालाब, पोखर 11. जोलाहों, बुनना 12. शरणगृह, आश्रय, आश्रयस्थान । सम०- अयनम् (णम्) यज्ञों का चलने वाला दीर्घ कार्यकाल ।

सत्रा (अव्य०) [सद्+त्रा] के साथ, मिल कर, सहित । सम० -हन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण ।

सत्रिः [सद्+क्रि] 1. बादल 2. हाथी ।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र+इनि] जो निरन्तर यज्ञानुष्ठान करता रहता है, उदार गृहस्थ शि० १८।३२ ।

सत्त्वम् (प्रथम दस अर्थों में पुं० भी होता है) [सतो भावः सत्+त्व] 1. होने का भाव, अस्तित्व, सत्ता 2. प्रकृति, मूलतत्त्व 3. स्वाभाविक चरित्र, सहज स्वभाव 4. जीवन, जीव, प्राण, जीवनी शक्ति, प्राणशक्ति का सिद्धान्त शा० २।९ 5. चेतना, मन, ज्ञान 6. भूत 7. तत्त्वार्थ, वस्तु, सम्पत्ति 8. मूलतत्त्व, जैसे कि पृथ्वी, वायु, अग्नि आदि 9. प्राणधारी जीव, जानदार, जन्तु,-त्वान्! विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्-रघु० २।८, १५।१९, शा० २।७ 10. भूत, प्रेत, पिशाच 11. भद्रता, सद्गुण, श्रेष्ठता 12. सचाई, वास्तविकता, निश्चय 13. सामर्थ्य, ऊर्जा, साहस, बल, शक्ति, अन्तर्हित शक्ति, वह तत्त्व जिससे पुरुष पुरुष बनता है, पुरुषार्थ क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे -सुभा०--रघु० ५।३१, मुद्रा० ३।२२ 14. बुद्धिमत्ता, अच्छी समझ 15. भद्रता और शुचिता का सर्वोत्तम गुण, सात्त्विक, (देवों तथा स्वर्गीय प्राणियों में यह बहुतायत से पाया जाता है) 16. स्वाभाविक गुण या लक्षण 17. संज्ञा, नाम । सम० अनुरूप (वि०) अनुरूप के सहज स्वभाव या अन्तर्हित चरित्र के अनुसार-भर्तृ० २।२० 2. अपने साधन या सम्पत्ति के अनुसार रघु० ७।३२, (यहाँ मल्लि० व्याख्या प्रकरणानुकूल उपयुक्त प्रतीत नहीं होती),---उद्रेकः 1. भद्रता के गुण का आधिक्य 2. साहस या सामर्थ्य में प्रमुखता, लक्षणम् गर्भ के लक्षण--शा० ५, ---विप्लवः चेतना की हानि, विहित (वि०) 1. प्राकृतिक 2. सद्गुणी, पुण्यात्मा, खरा, संशुद्धिः (स्त्री०) प्रकृति की पवित्रता या स्वरापन, संपन्न (वि०) सद्गुणों से युक्त, पुण्यात्मा,--संप्लवः 1. बल या सामर्थ्य की हानि 2. विश्वविनाश, प्रलय, —सारः 1. सामर्थ्य का सार, असाधारण साहस 2 अत्यन्त शक्तिशाली पुरुष, —स्थ (वि०) 1. अपनी प्रकृति में स्थित 2. पशुओं में अन्तर्हित 3. सजीव 4. सत्त्वगुण विशिष्ट, उत्तम, श्रेष्ठ ।

सत्त्वयेजय (वि०) [सत्त्व+एज्+णिच्+खश्, मुम्] पशुओं या जीवधारी प्राणियों को डराने वाला ।

सत्य (वि०) [सते हितम् -सत्+यत्] 1. सच्चा, वास्तविक, असली, जैसा कि सत्यवत, सत्यसन्ध में 2. ईमानदार, निष्कपट, सच्चा, विश्वासवान् 3. सद्गुणसम्पन्न, खरा, -त्यः ब्रह्मलोक, सत्यलोक, भूमि के ऊपर सात लोकों में सबसे ऊपर का लोक—दे० लोक 2. पीपल का पेड़ 3. राम का नाम 4. विष्णु का नाम 5. नांदीमुख श्राद्ध की अधिष्ठात्री देवता,—त्यम् 1. सचाई -मौनात्सत्यं विशिष्यते--मनु० २।८३, सत्यं ब्रू 1. सच बोलना 2. निष्कपटता 3. भद्रता, सद्गुण, शुचिता 4. शपथ, प्रतिज्ञा, गंभीर दृढोक्ति—सत्यादृ गुरुमलोपयत्-रघु० १२।९, मनु० ८।११३ 5. सचाई, प्रदर्शित सत्यता या रूढ़ि 6. चारों युगों में पहला युग, स्वर्णयुग, सत्ययुग 7. पानी,—त्यम् (अव्य०) सचमुच, वस्तुतः, निस्संदेह, निश्चय ही, वस्तुतस्तु—सत्यं शपामि ते पादगुरुजस्यशेन—का०, कु० ६।१९ । सम० —अनृत (वि०) 1. सच और मिथ्या सत्यानृता च परुषा -हि० २।१८३ 2. सच प्रतीत होने वाला परन्तु मिथ्या (—तम्,—ते) 1. सचाई और झूठ 2. झूठ और सच का अभ्यास अर्थात् व्यापार, वाणिज्य —मनु० ४।४, ६, अभिसन्धि (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला, निष्कपट,—उत्कर्षः 1. सचाई में प्रमुखता 3. सच्ची श्रेष्ठता, -उक्त (वि०) सत्यभाषी, -उपाचयन (वि०) प्रार्थना पूरी करने वाला,—कामः सत्य का प्रेमी, तपस् एक ऋषि का नाम,—दर्शिन् (अव्य०) सचाई को देखने वाला, सत्यता को भाँपने वाला, -धन (वि०) सत्य के गुण से समृद्ध, अत्यन्त सच्चा --धृति (वि०) परम सत्यवादी,--पूरुष विष्णुलोक, -पूत (वि०) सत्यता से पवित्र किया हुआ (जैसे कि वचन) सत्यपूतां वदेद्वाणीं-मनु०-५।१४६,—प्रतिज्ञ (वि०) वादे का पक्का, अपने वचन का पालन करने वाला, भामा सत्राजित् की पुत्री तथा कृष्ण की प्रिय पत्नी का नाम, (इसी सत्यभामा के लिए कृष्ण ने इन्द्र से युद्ध किया, तथा नन्दनवन से पारि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जात वृक्ष लाकर उसके उद्यान में लगाया), युगम् स्वर्णयुग, दे० ऊ० सत्य (६) **वचस्** (वि०) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, (पुं०) 1. सन्त, ऋषि 2. महात्मा (नपु०) सचाई, ईमानदारी, **वक्त्र** (वि०) सत्यभाषी (**क्त्रम्**) सचाई, ईमानदारी, - **वाच्** (वि) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, खरा (पुं०) 1. सन्त, महात्मा, ऋषि, **कौवा**, — **वाक्यम्** सत्यभाषण, खरापन,— **वादिन्**(वि०) 1. सत्यभाषी 2. निष्कपट, स्पष्टभाषी, खरा, - **व्रत**, — **संगर**,—**संध** (वि०) 1. वादे का पक्का, अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, निष्कपट, **शपथम्** शपथग्रहण, **संकाश** (वि०) प्रशस्त, गुणाढ्य वाला, देखने में ठीक जचता हुआ, सत्याभ ।

सत्यकारः [सत्य+कृ+घञ्, मुम्] सत्य करना, वादा पूरा करना, सौदे या संविदा की शर्तें पूरी करना 2. बयाने की रकम, अगाऊ दिया गया धन, ठेके का काम पूरा करने के लिए जमानत के रूप में दी गई अग्रिम राशि –कि० ११।५० ।

सत्यवत् (वि०) [सत्य+मतुप्] सत्यभाषी, सत्यनिष्ठ, पुं० एक राजा का नाम, सावित्री का पति, -**ती** एक मछुए की लड़की जो पराशर मुनि के सहवास से व्यास की माता बनी, °**सुतः** व्यास ।

सत्या [सत्यमस्ति अस्याः –सत्य+अच्+टाप्] 1. सचाई, ईमानदारी 2. सीता का नाम 3. द्रौपदी का नाम, —कि० ११।५० 4. व्यास की माता सत्यवती का नाम 5. दुर्गा का नाम 6. कृष्ण की पत्नी सत्यभामा का नाम ।

सत्यापनम् [सत्य+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. सत्यभाषण करना, सत्य का पालन करना 2. (किसी संविदा या सौदे आदि की) शर्तें पूरी करना ।

सत्र दे० 'सत्र' ।

सत्रप (वि०) [सह त्रपया—ब० स०] लज्जाशील, विनयी ।

सत्राजित् (पुं०) निघ्न का पुत्र तथा सत्यभामा का पिता (सत्राजित् को सूर्य से स्यमन्तक नाम की मणि प्राप्त हुई थी, और उसने उसको अपने कण्ठ में पहन लिया था। बाद में सत्राजित् ने इस मणि को अपने भाई प्रसेन को दे दिया प्रसेन से यह मणि वानरराज जाम्बवान् के हाथ लगी, जब कि उसने प्रसेन का वध किया। फिर कृष्ण ने जांबवान् से युद्ध किया और उसे परास्त कर दिया। अतः जांबवान् ने अपनी पुत्री के साथ यह मणि कृष्ण को दे दी। दे० जाम्बवत्। कृष्ण ने इस मणि को इसके मूल अधिकारी सत्राजित् को दे दिया। सत्राजित् ने भी कृतज्ञता के कारण यह मणि, अपनी पुत्री सत्यभामा समेत कृष्ण को ही अर्पित कर दी। उसके पश्चात् एक बार जब इस मणि के साथ सत्यभामा अपने पिता के घर विद्यमान थी तो अक्रूर नामक यादव के भड़काने पर, जो स्वयं इस मणि को लेना चाहता था, शतधन्वा ने सत्राजित् को मार डाला और वह मणि लेकर अक्रूर को दे दी। उसके बाद कृष्ण ने शतधन्वा को मार डाला। परन्तु जब उन्हें पता लगा कि वह मणि तो अक्रूर के पास है तो उन्होंने कहा कि एक बार वह मणि सब लोगों को दिखा दी जाय तथा फिर अक्रूर भले ही उस मणि को अपने पास रक्खें) ।

सत्वर (वि०) [सह त्वरया –ब० स०] फुर्तीला, द्रुतगामी, चुस्त,—रम् (अव्य०) शीघ्र, जल्दी से ।

सथूत्कार (वि०) [सह थूत्कारेण] वह मनुष्य जिसके मुँह से बोलते समय थूक निकले, **रः** बात के साथ मुँह से थूक निकलना ।

सद् (भ्वा० पर०—कुछ के अनुसार तुदा० पर०—सीदति, सन्न, 'प्रति' को छोड़कर अन्य इकारान्त तथा उकारान्त उपसर्ग के लगने पर सद् के स् को ष् हो जाता है) 1. बैठना, बैठ जाना, आराम करना, लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, बस जाना,—अमदाः सेदुरेकस्मिन् नितम्बे निखिला गिरेः–भट्टि० ९।५८ 2. डूबना, गोते लगाना—तेन स्वं विदुषां मध्ये पङ्के गौरिव सीदसि—हि० प्र० २४ (यहाँ इस शब्द का अर्थ –४–भी है) 3. जीना, रहना, बसना, वास करना 4. खिन्न होना, हतोत्साह होना, निराश होना, हताश होना, भग्नाशा में डूब जाना नाथ हरे जय नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे - गीत० ६ 5. म्लान होना, नष्ट होना, बर्बाद होना, छीजना, नष्ट होना —विषण्णायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत्—हि० २।७७, रघु० ७।६४, हि० २।१३० 6. दुःखी होना, पीड़ित होना, कष्टग्रस्त होना, असहाय होना कि० १३।६०, मनु० ८।२१ 7. बाधित होना, विघ्न युक्त होना, –मनु० ९।९४ 8. म्लान होना, क्लान्त होना, थका हुआ होना, निढाल होना, अवसन्न होना —सीदति मे हृदयं का०, सीदन्ति मम गात्राणि - भग० १।२८ 9. जाना, प्रेर० (सादयति —ते) 1. बिठाना, आराम कराना इच्छा० (सिषत्सति) बैठने की इच्छा करना, **अव** , 1. निढाल होना, मूर्छित होना, विफल होना, रास्ते से हट जाना —करिणी पङ्कभिवावसीदति कि० २।६, ४।२०, भट्टि० ६।२४ 2. भुगतना, उपेक्षित होना 3. हतोत्साह होना, श्रान्त होना 4. नष्ट होना, क्षीण होना, समाप्त होना - नास्त्युद्यममसो बन्धुः कृत्वायं नावसीदति,—(प्रेर०) 1. अवसन्न करना, हतोत्साह करना, बर्बाद करना—भग० ६।५ 2. दूर करना, हटाना –ओःसुखयमात्मभवसादयति प्रतिष्ठा श० ५।६ 3. नष्ट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, मार डालना, आ—, 1. नीचे बैठना, निकट बैठना 2. घात में रहना 3. पहुँचना, उपगमन करना, पास जाना—हिमालयस्थालयमाससाद—कु० ७।६९, शि० २।२ रघु० ६।४ 4. अकस्मात् मिलना, प्राप्त करना, निर्माण करना रघु० ५।६०, १४।२५ 5. भुग तना—भट्टि० ३।२६ 6. मुठभेड़ होना, आक्रमण करना 7. रखना, (प्रेर०) 1. दुर्घटना होना, पाना, हासिल करना, प्राप्त करना,—अप्रगणनालेख्यभाससाद—रघु० ८।९५ 2. उपगमन करना, पास जाना, पहुँचना, अधिकार में करना नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पंच० ३।४६, मेघ० ३४, भट्टि० ८।३७ 3. पकड़ लेना—अमेन रथवेगेन पूर्वप्रस्थित वैनतेयमध्यासाद-येयम् विक्रम० १ 4. मुठभेड़ होना, आक्रमण करना —भट्टि० ६।९५, उद्—, 1. डूबना (आलं० से भी), बर्बाद होना, क्षीण होना—उत्सीदेयुरिमे लोकाः—भग० ३।२४ 2. छोड़ देना, त्याग देना 3. विद्रोह के लिए उठना; (प्रेर०) 1. नष्ट करना, उन्मूलन करना उत्साद्यन्ते जातिधर्माः - भग० १।४२ मनु० ९।२६७ 2. उलटना 3. मलना, मालिश करना, उप—, 1. निकट बैठना, पहुँचना, पास जाना उपसेदुर्दशग्रीवम् - भट्टि० ९।९२, ६।१३५ 2. सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना आकल्पसाधनैस्तैस्तैरुपसेदुः प्रसाधकाः - रघु० १७।२२, शि० १३।३४ 3. चढ़ाई करना, वि—, 1. नीचे बैठ जाना, लेटना, विश्राम करना - उष्णालुः शिशिरं निषीदति तरोर्मूलालनाले शिखी - विक्रम० २।२३ 2. डूबना, विफल होना, निराश होना, प्र—, 1. प्रसन्न होना, कृपालु होना, मंगलप्रद होना - प्रायः तुमन्त के साथ तमाल-पत्रास्तरणासु रन्तुं प्रसीद शश्वन्मलयस्थलीषु - रघु० ६।६४ 2. आश्वस्त होना, परितुष्ट होना, सन्तुष्ट होना—निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्या-पगमे प्रसीदति - पंच० १।२८३ 3. निर्मल होना, स्वच्छ होना, स्पष्ट होना, चमकना (शा० और आ०) दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः - रघु० ३।१४, प्रससा-दोदयादम्भः कुम्भयोनेर्महौजसः - ४।२१ 4. फल आना, सफल होना, कामयाब होना—क्रिया हि वस्तू-पहिता प्रसीदति —रघु० ३।२९, दे० प्रसन्न, (प्रेर०) 1. राजी करना, अनुग्रह प्राप्त करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्—भग० ११।४४, रघु० १।८८, याज्ञ० ३।२८३ 2. स्पष्ट करना - चेतः प्रसादयति भर्तृ० २।२३, वि—, डूबना, थक जाना, 2. हताश होना, निढाल होना, कष्टग्रस्त होना, खिन्न होना, निराश होना, नाउम्मीद होना—विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम् - गीत० ४, भग० २।१, भट्टि० ७।८९, रघु० ९।७५, प्रेर० 1. निराश करना, हताश करना 2. कष्टग्रस्त करना, पीड़ित करना।

सदः [सद्+अच्] वृक्ष का फल।

सदंशकः [दंशेन सह कप्, ब० स०] केकड़ा।

सदंशवदनः [सदंशं वदनं यस्य ब० स०] लगले का एक भेद, कंक पक्षी।

सदनम् [सद्+ल्युट्] 1. घर, महल, भवन 2. म्लान होना, क्षीण होना, नष्ट होना 3. अवसाद, श्रान्ति, क्लान्ति 4. हानि 5. यज्ञ-भवन 6. यम का आवास स्थान।

सदय (वि०) [सह दयया—ब० स०] कृपालु, सुकुमार, दयापूर्ण, **सदयम्** (अव्य०) कृपा करके, दया करके।

सदस् (नपुं०) [सीदत्यस्मिन्—सद्+असि] 1. आसन, आवास, घर, निवासस्थान 2. सभा—पङ्कैर्विना सरो-भाति सदः खलजनैर्विना—भामि० १।११६, भर्तृ० २।६३। **सदस्०—गत** (वि०) सभा में बैठा हुआ, —रघु० ३६५, **गृहम्** सभा-भवन, परिषत्-कक्षा रघु० ३।६७।

सदस्यः [सदसि साधु वसति वा यत्] 1. सभा का सभासद् या सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का मेम्बर (पंच, जूरी का सदस्य) 2. याजक, यज्ञ में ब्रह्मा या सहायक ऋत्विज् ल० ३।

सदा (अव्य०) [सर्वस्मिन् काले—सर्व+दाच्, सादेशः] हमेशा, सर्वदा, नित्य, सदैव। **सम०—आनन्द** (वि०) सदा प्रसन्न रहने वाला, (दः) शिव का विशेषण, —**गतिः** 1. वायु 2. सूर्य 3. शाश्वत आनन्द, मोक्ष, **-तोया, नीरा** 1. करतोया नदी का नाम 2. वह नदी जिसमें सदैव पानी रहता है, बहती हुई नदी, —**दान** (वि०) सदैव उपहार देने वाला, (वह हाथी) जिसके सदैव मद बहता हो—पंच० २।७९ (—नः) 1. मद बहाने वाला हाथी 2. गन्धद्विप, 3. इन्द्र के हाथी का नाम 4. गणेश, **नतः** एक पक्षी, खंजन —**फल** (वि०) हमेशा फलने वाला, (लः) 1. बेल का पेड़ 2. कठहल का पेड़ 3. गूलर का पेड़ 4. नारियल का पेड़, **योगिन्** (पुं०) कृष्ण का विशेषण, **शिवः** शिव का नाम।

सदृक्ष (स्त्री०—क्षी), **सदृश, सदृश** (स्त्री० शी) (वि०) [समानं दर्शनमस्य - दृश् + क्स, क्विन्, कञ् वा, समानस्य सादेशः] 1. समान, मिलता-जुलता, तुल्य, अनुरूप (सर्व० या अव्यि० के साथ अथवा समास में प्रयुक्त) 2. योग्य, समुचित, उपयुक्त, समानरूप जैसा कि प्रस्तावसदृशं वाक्यम्—हि० २।५१ 3. योग्य, ठीक, शोभाप्रद श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य रघु० १४।६१, १।१५।

सदेश (वि०) [सह देशेन ब० स०] 1. किसी देश का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामी 2 एक ही स्थान में सम्बन्ध रखने वाला 3. आसन्नवर्ती, पड़ोसी ।

सद्मन् (नपु०) [सीदत्यस्मिन् सद् + मनिन्] 1. घर, मकान, आवासस्थान चकितनतनतांङ्गी सद्म सद्यो विवेश -भामि० २।३२ 2. स्थान, जगह 3. मन्दिर 4. वेदी 5. जल ।

सद्यस् (अव्य०) [सिमेऽह्नि -नि०] 1. आज, उसी दिन --गवारीनां पयोऽप्येषु सद्यो वा जायते दधि, पापस्य हि फलं सद्यः सुभा० 2. तुरन्त, तत्काल, फौरन, अकस्मात् चकितनतनतांङ्गी सद्य सद्यो विवेश --भामि० २।३२, कु० ३।२९, मेघ० १६ 3. हाल ही में, कुछ ही समय पीछे, जैसा कि सद्यो हुताग्नेर्न —श० ४ में । सम० -काल: वर्तमान काल, -कालीन (वि०) हाल ही का,—जात (वि०) (सद्योजात) अभी पैदा हुआ, (नः) 1. बछड़ा 2. शिव का विशेषण,—पातिन् (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला, नश्वर मेघ० १०, शुद्धि: - शौचम् तत्काल की हुई शुद्धि ।

सद्यस्क (वि०) [सद्यस् + कन्] 1. नूतन, अभिनव 2. तात्कालिक ।

सद् (वि०) [सद् + सु] 1. विश्राम करने वाला, ठहरने वाला 2. जाने वाला ।

सद्रङ्क (वि०) [सह द्रङ्केन ब० स०] झगड़ालू, कलहप्रिय, विवादपूर्ण ।

सद्वत् (अव्य०) [सद् + वत्, अथच्] गौण ।

सधर्मन् (वि०) [समानो धर्मोऽस्य समासे सभावः -अनिच्, ब० स०] 1. समान गुणों से युक्त 2. एक जैसा धर्मबन्धनों वाला 3. उसी जाति या सम्प्रदाय का 4. समान, मिलता-जुलता । सम० चारिणी वैध स्त्री, शास्त्रीय-रीति से विवाहसूत्र में बद्ध स्त्री ।

सधर्मिणी दे० ऊ० 'सधर्मचारिणी' ।

सधर्मिन् (वि०) (स्त्री० णी) [सद्धर्मोऽस्ति अस्य सधर्म + इनि, ब० स०] दे० 'सधर्मन्' ।

सधिन् (पुं०) [सह + इसिन्, हस्य धः] बैल, सांड ।

सधीची [सध्यच् + ङीष्, अलोपः, दीर्घः] सखी, सहेली, अन्तरंग सहेली भट्टि० ६।७ ।

सधीचीन (वि०) [सध्यच् + ख, अलोपः, दीर्घः] साथ रहने वाला, सहचर ।

सध्र्यञ्च् (वि०) (स्त्री० सध्रीची) [सहाञ्चति सह + अञ्च् + क्विन्, सधि आदेशः] साथ चलने वाला, सहचर, साथी, पु०—सहचर (पति) -शि० ८।४४ ।

सन् (भ्वा० पर०, तना० उभ० सनति, सनोति, सनुते, सात, कर्मवा० सन्यते, सायते, इच्छा० सिसनिषति, सिषासति) 1. प्रेम करना, पसन्द करना 2. पूजा करना, सम्मान करना 3. प्राप्त करना, अधिगत करना 4. अनुग्रह के साथ प्राप्त करना 5. उपहारों से सम्मान करना, देना, प्रदान करना, वितरण करना ।

सनः [सन् + अच्] हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ।

सनत् (पुं०) [सन् + अति] ब्रह्मा का विशेषण—(अव्य०) सदा, नित्य । सम०—कुमारः ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक ।

सनत्सूत्र दे० 'सणसूत्र' ।

सना (अव्य०) [सन् + टाप्] सदा, नि० दस्य नः] हमेशा, नित्य ।

सनात् (अव्य०) [सना + अत् + क्विप्] सदा, हमेशा ।

सनातन (वि०) (स्त्री० -नी) [सदा + ट्युल्, तुट्, नि० दस्य नः] 1. नित्य, निरन्तर, शाश्वत, स्थायी एष धर्मः सनातनः 2. दृढ़, स्थिर, निश्चित --उत्तर० ५।२२ 3. पूर्वकालीन, प्राचीन, नः पुरातन पुरुष, विष्णु- सनातनः पितरमुपागमत् स्वयम् भट्टि० १।१ 2. शिव का नाम 3. ब्रह्मा का नाम, नी 1. लक्ष्मी का नाम 2. दुर्गा या पार्वती का नाम 3. सरस्वती का नाम ।

सनाथ (वि०) [सह नाथेन -ब० स०] 1. स्वामी वाला, प्रभु या पति वाला--त्वया नाथेन वैदेही सनाथा ह्यद्य वर्तते रामा० 2. जिसका कोई अभिभावक या प्ररक्षक हो सनाथा इदानीं धर्मचारिणः --श० १ 3. कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ 4. सम्पन्न, सहित, युक्त, समेत, पूर्ण, प्रायः समास में लतासनाथ इव प्रतिभाति श० १, शिलातलसनाथो लतामण्डपः--विक्रम० ९, मेघ० ९८, कु० ७।९४, रघु० ९।४२, विक्रम० ४।१० ।

सनाभि (वि०) [समाना नाभिर्यस्य ब० स०] 1. एक ही पेट का, सहोदर 2. रिश्तेदार, बंधु 3. समान, मिलता-जुलता—गङ्गावर्तसनाभिर्नाभिः--दश० 4. स्नेहशील, —भिः 1. सगा भाई, नजदीकी रिश्तेदार 2. रिश्तेदार, बंधु कि० १३।११ 3. रिश्तेदार जो सात पीढ़ी के अन्तर्गत हो ।

सनाभ्यः [सनाभि + यत्] सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का रिश्तेदार ।

सनिः [सन् + इन्] 1. पूजा, सेवा 2. उपहार, दान 3. अनुरोध, सादर निवेदन (स्त्री०) भी इस अर्थ में) ।

सनिष्ठीवस्, सनिष्ठेवम् [सह निष्ठी (ठे) वेन ब० स०] वह भाषण जिसमें मुँह से थूक निकले, ऐसी बोली जिसमें थूक उछले ।

सनी [सनि + ङीष्] 1. सादर अनुरोध 2. दिशा 3. हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ।

सनीड (ल) (वि०) [समान नीडमस्यस्य—ब० स०] 1. एक ही घोंसले में रहने वाला, साथ-साथ रहने वाला 2. निकटस्थ, समीपवर्ती ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्तः [सन्+त-] दोनों हाथ जुड़े हुए, अंजलि, संहतांजल ।

सन्तक्षणम् [सम्+तक्ष्+ल्युट्] ताना, व्यंग्य, लगने की बात ।

सन्तत (भू० क० कृ०) [सम्+तन्+क्त] 1. फैलाया हुआ, विस्तारित 2. विच्छेदरहित, अनवरत, अनवच्छिन्न, नियमित 3. टिकाऊ, नित्य 4. बहुत, अनेक,—तम् (अव्य०) सदैव, लगातार, नित्य, निरंतर, शाश्वत ।

सन्ततिः (स्त्री०) [सम्+तन्+क्तिन्] 1. बिछाना, फैलाना 2. फासला, प्रसार, विस्तार—भा० ७।८ 3. अनवच्छिन्न पंक्ति, अविराम प्रवाह, श्रेणी, परास, परम्परा, निरन्तरता—चिंतासन्ततिलग्नेव प्रिया भा० ५।१०, कुसुमसन्ततिसन्तत-सञ्जिभिः—शि० ६।३६ 4. नित्यता, अविच्छिन्न निरंतरता—रघु० ३।१ 5. कुल, वंश, परिवार 6. सन्तान, प्रजा—सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे रघु० १।६९ 7. ढेर, राशि (अलम्) सहसा सन्ततिमहसां विहन्तुम् -किं० ५।१७ ।

सन्तपनम् [सम्+तप्+ल्युट्] 1. गरम करना, प्रज्वलित करना 2. पीड़ित करना ।

सन्तप्त (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+क्त] 1. गर्म किया हुआ, प्रज्वलित, लाल-गरम, चमकता हुआ 2. दुःखी कष्टग्रस्त, पीड़ित मेघ०७ । सम० अयस् (नपुं०) लाल-गरम लोहा,—वक्त्र (नपुं०) जिसे सांस लेने में कठिनाई हो ।

सन्तमस (नपुं०) **सन्तमसम्** [सन्तत तमः प्रा० स०, पक्षे अच्] सर्वव्यापी या विश्वव्यापी अंधकार, घोर अंधकार—निमज्जयत्संततमसे परात्मयम् – नै० ९।९८, शि० ९।२२, भट्टि० ५।२ ।

सन्तर्जनम् [सम्+तर्ज्+ल्युट्] धमकाना, डांटना-डपटना ।

सन्तर्पणम् [सम्+तृप्+ल्युट्] 1. सन्तुष्ट करना, संतृप्त करना 2. खुश करना, प्रसन्न करना 3. जौ खुशी का देने वाला हो 4. एक प्रकार का मिष्टान्न ।

सन्तानः, नम् [सम्+तन्+घञ्] 1. बिछाना, विस्तृत करना, विस्तार, प्रसार, फैलाव 2. नैरन्तर्य, अनवच्छिन्न पंक्ति या प्रवाह, परम्परा, अनवच्छिन्नता अच्छिन्नामलसन्तानाः -कु० ६।६९, संतानवाहीनि दृश्यानि उत्तर० ४।८ 3. परिवार, वंश 4. प्रजा, औलाद, बाल-बच्चा -सन्तानार्थाय विधये रघु० १।२४, संतानकामाय राज्ञे---२।६५, १८५२ 5. इन्द्र के स्वर्गस्थित पांच वृक्षों में से एक ।

सन्तानकः [सन्तान+कन्] इन्द्र के स्वर्गीय पांच वृक्षों में से एक वृक्ष या उसका फूल—कु० ६।४६, ७।३, शि० ६।६ ।

सन्तानिका [सम्+तन्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. फैले झाग 2. मलाई 3. मकड़ी का जाला 4. चाकू या तलवार का फल ।

सन्तापः [सम्+तप्+घञ्] 1. गर्मी, प्रदाह, जलन---मा० ३।४ 2. दुःख, संताप, भुगतना, पीड़ा, वेदना, व्यथा -सन्तापसन्ततिमहाव्यसनाय तस्याभासक्तमेतदनपेक्षित हेतु चेतः - मा० १।२३ इ० ३ 3. आवेश, रोष 4. पश्चात्ताप, पछतावा - पंच० १।१०९ 5. तपस्या, तप की थकान, शरीर की साधना—सन्तापे दिशतु शिवः शिवां प्रसक्तिम् किं० ५।५० ।

सन्तापनम् (स्त्री० नी०) [सम्+तप्+णिच्+ल्युट्] जलन, दाह, मः कामदेव के पाँच बाणों में से एक, नम् 1. जलाना, झुलसना 2. पीड़ा देना, कष्ट देना 3. आवेश उत्तेजित करना, जोश भरना ।

सन्तापित (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+णिच्+क्त] गरम किया हुआ, कष्टग्रस्त, पीड़ित ।

सन्तिः [सन्+क्तिन्] 1. अन्त, विनाश 2. उपहार—तु० सति ।

सन्तुष्टिः (स्त्री०) [सम्+तुष्+क्तिन्] पूर्ण संतोष ।

सन्तोषः [सम्+तुष्+घञ्] 1. शान्ति, परितुष्टि, सबर, सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्-सुभा० 2. प्रसन्नता, खुशी, हर्ष 3. अंगूठा या तर्जनी अंगुली ।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] प्रसन्न करना, परितृप्त करना, आराम पहुंचाना ।

सन्त्यजनम् [सम्+त्यज्+ल्युट्] छोड़ना, त्याग देना ।

सन्त्रासः [सम्--त्रस्+घञ्] डर, भय, आतंक ।

सन्दंशः [सम्+दंश्+अच्] 1. चिमटा, सन्डासी 2. स्वरों (या वर्णों) के उच्चारण में दांतों को भींचना 3. एक नरक का नाम ।

सन्दंशकः [संदंश+कन्] चिमटा, सिंडासी ।

सन्दर्भः [सम्+दृभ्+घञ्] 1. मिलाकर गंथी करना, ग्रथन करना, क्रम में रखना 2. संग्रह, मिलाप, मिश्रण 3. संगति, निरन्तरता, नियमित संबंध, संलग्नता -- सन्दर्भशुद्धिं गिरामू-गीत० १ 4. संरचना 5. निबंध, साहित्यिक कृति - रसगंगाधरनाथा संदर्भोऽयं चिरं जयतु -- रस०, उत्तर० ४ ।

सन्दर्शनम् [सम्+दृश्+ल्युट्] 1. देखना, अवलोकन, नज़र डालना 2. ताकना, टकटकी लगा कर देखना 3. मिलना, एक दूसरे को देखना 4. दृष्टि, दर्शन, निगाह 5. खयाल, ध्यान ।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] 1. रस्सी, डोरी 2. शृंखला, बेड़ी, नः हाथी का गंडस्थल जहां से मद बहता है ।

सन्दानित [वि०] [सन्दान+इतच्] 1. बद्ध, कसा हुआ 2. बेड़ी में जकड़ा हुआ, शृंखलित ।

सन्दानिनी [सन्दानं बन्धनं गवाम् अत्र-सन्दान+इनि+ङीप्] गोष्ठ, गोशाला ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्नाद: [सम्+नु+घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन ।

सन्नाह: [सम्+दह्+घञ्] जलन, उपभोग ।

सन्निग्ध (भू० क० कृ०) [सम्+स्निह्+क्त] 1. सना हुआ, लिप्त किया हुआ 2. भ्रामक, सन्देहात्मक, अनिश्चित -जैसा कि 'संदिग्ध मति-बुद्धि' में 3. भ्रान्त, विह्वल -मा० १।२ 4. संशय, प्रश्नास्पद 5. अव्यवस्थित, अस्पष्ट, दुरूह (जैसे कि वाक्य) 6. खतरनाक, जोखिम से भरा हुआ, असुरक्षित 7. विषाक्त ।

सन्दिष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+दिश्+क्त] 1. संकेतित, इंगित किया हुआ 2. निर्दिष्ट 3. उक्त, वर्णित, सूचित 4. वादा किया हुआ, प्रतिज्ञात, -ष्टः जिसे संदेश पहुंचाने का कार्य सौंपा गया हो, संदेशवाहक, दूत, हरकारा, संदिष्टार्थ, -ष्टम् सूचना, समाचार, खबर ।

सन्दित (वि०) [सम्+दो+क्त] बद्ध, शृंखलित, बेड़ी से जकड़ा हुआ ।

सन्दी [सम्+दो+ड+ङीप्] खटोला, छोटी खाट, शय्याकुश ।

सन्दीपन (वि०) (स्त्री०-नी) [सम्+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला, भड़काने वाला उत्तर० ३ 2. उद्दीपक उत्तर० ४,-नः 1. कामदेव के पांच बाणों में से एक,-नम् 1. सुलगाना, प्रज्वलित करना 2. भड़काना, उद्दीप्त करना अनंगसन्दीपनमाशु कुर्वते -ऋतु० १।१२ ।

सन्दीप्त (भू० क० कृ०) [सम्+दीप्+क्त] 1. सुलगाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ 2. उत्तेजित, उद्दीपित 3. भड़काया हुआ, उकसाया हुआ, प्रणोदित ।

सन्दुष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+दुष्+क्त] 1. कलुषित किया हुआ, मलिन किया हुआ 2. दुष्ट, कमीना ।

सन्दूषणम् [सम्+दूष्+णिच्+ल्युट्] मलिन करना, भ्रष्ट करना, विषाक्त करना, खराब करना ।

सन्देशः [सम्+दिश्+घञ्] 1. सूचना, समाचार, खबर 2. संदेश, संवाद- सन्देश मे हर धनपतिकोधविश्लेषितस्य मेघ० ७, १३, रघु० १२।६३, कु० ६।२ 3. आज्ञा, आदेश --अनुष्ठिता गुरोः संदेशः श० ५। सम० अर्थः संदेश का विषय, वाच् संदेश,--हरः 1. संदेशवाहक, दूत 2. दूत, राजदूत ।

सन्देहः [सम्+दिह्+घञ्] 1. संशय, अनिश्चितता, शंका, —अत्र कः सन्देहः 2. जोखिम, खतरा, डर- जीवितसन्देहदोलामारोपितः-- का०, अर्थार्जने प्रवृत्तिः संसन्देहः -हिं० १ 3. [अलं० शा० में] इस नाम का एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों की घनिष्ठ समानता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु को अन्य वस्तु समझ लिया जाय (इस अलंकार को मम्मट तथा अन्य कुछ विद्वान् 'ससंदेह' नाम से भी पुकारते हैं) ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः--काव्य० १०, उदा० दे० मा० १।२, (पाठान्तर), विक्रम० ३।२ । सम० दोला अनिश्चितता का झूला, शंका की स्थिति, दुविधा, असमंजस ।

सन्दोहः [सम्+दुह्+घञ्] 1. दूध दूहना 2. किसी वस्तु की समष्टि, समुच्चय, ढेर, राशि, संघात कुन्दमाकन्दमधूदिदं सन्दोहदाहिना मारुतेनोन्मथ्यते मा० २. भामि० ४।९ ।

सन्नादः [सम्+नद्+घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन ।

सन्धा [सम्+धा+अङ्+टाप्] 1. मिलाप, साहचर्य 2. घनिष्ठ मेल, प्रगाढ़ संबंध 3. स्थिति, दशा 4. वादा, प्रतिज्ञा अनुबन्ध, अभिदा तत्रार सन्धामिव सत्यसन्धः रघु० १४।९२, महावीर० ७।८ 5. सीमा, हद 6. स्थिरता, स्थैर्य 7. संध्या 8. मद्यसंधान ।

सन्धानम् [सम्+धा+ल्युट्] 1. मिलाना, जोड़ना 2. मेल, संगम, सम्बन्ध-पदवं विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्-श० १।९, कु० ५।२७, रघु० १२।१०१ 3. मिश्रण, (औषधि-आदि का) सम्मिश्रण 4. पुनरुद्धार, जीर्णोद्धार 5. ठीक बैठाना, जमाना (जैसे कि धनुष की डोरी पर बाण का साधना) तत्साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम् श० १।११, शि० २०।८ 6. मैत्री, मेल, दोस्ती, मेल-मिलाप मूर्खदत्वसुखभेवो दुःसन्धानश्च दुर्जनो भवति हि० १।९२ (यहां इसका अर्थ 'मिलाना या जोड़ना' भी है) 7. जोड़, ग्रन्थि पादजङ्घयोः सन्धाने गुल्फः-सुश्रु० 8. अवधान 9. निदेशन 10 संभालना 11. (मदिरा का) आसवन 12. मदिरा या उसका कोई भेद 13. पीने की इच्छा उत्तेजित करने वाली चटपटी चीजें 14. अचार आदि बनाना 15. रक्तस्रावरोधक औषधियों के द्वारा त्वचा की सिकुड़न 16. कांजी ।

सन्धानित (वि०) [सन्धान+इतच्] 1. मिलाया हुआ, साथ साथ नत्थी किया हुआ 2. बांधा हुआ, कसा हुआ ।

सन्धिः [सम्+धा+कि] 1. मेल, संगम, सम्मिश्रण, सम्बन्ध- सन्धये सरला सूची वक्रा छेदाय कर्तरी सुभा०, मेघ० ५८ 2. संविदा, करार 3. मिश्रता, संघटन, मैत्री, मेल-मिलाप, सन्धियत्र सुलहनामा (विदेशनीति में प्रयोज्य छः उपायों में से एक) कति प्रकाराः सन्धीनां भवन्ति—हि० (हि० ४।१०६--१२५ तक कई प्रकारों का वर्णन किया है), धातूणां न हि संदध्यात्मुच्छिन्नेनापि सन्धिना हि० १।८८ 4. जोड़, (शरीर का) सन्धान--नुरगात्रुधावनकाण्डितसन्धेः—श० २ 5. (वस्त्र की) तह 6. छेद, बिवर, दरार 7. विशेषतया सुरंग, या संध जो चोर किसी मकान में घुसने के लिए बनाते हैं —वृक्षवाटिका परिसरे सन्धि कृत्वा प्रविष्टोऽस्मि मध्यम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कम्–मृच्छ० ३, मनु० ९।२७६ 8. पार्थक्य, प्रभाग 9. (व्या० में) संहिता, उच्चारण की सुगमता के लिए ध्वनिपरिवर्तन की प्रवृत्ति, वर्णविकार 10. अन्तराल, विश्राम 11. संकट काल 12. उपयुक्त अवसर 13. युगांत-काल 14. (ना० से) प्रभाग या जोड़ (यह संधियाँ गिनती में पाँच हैं सा० द० ३३०-३३२) कु० ७।९१ 15. भग, स्त्री की जननेन्द्रिय। सम० अक्षरम् संयुक्त स्वर संश्लेषर, (ए, ऐ, ओ, औ), चोरः घर में सेंध लगाने वाला, वह चोर जो घर में पाड़ लगाता है,—छेदः (दीवार आदि में) छिद्र या सूराख करना, जम् मादक मदिरा, -जीवकः जो अधर्म को कमाई से जीवन-निर्वाह करता है (विशेषतया जैसे कि दलाल) अर्थात् स्त्रियों को पुरुषों से मिला कर जीविका अर्जन करने वाला, —दूषणम् संधि या मुलह का भंग कर देना अरिपु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि—कि० १।४५,—बन्धः जोड़ों का ऊतक -श० २,—बन्धनम् स्नायु, कण्डरा, शिरा,—भङ्गः,—मुक्तिः (स्त्री०) किसी जोड़ का संबंध टूट जाना, -विग्रह (पुं०, द्वि० व०) शान्ति और युद्ध °अधिकारः विदेश विभाग का मन्त्रालय, —विक्षणः संधि की बातचीत करने में निपुण,—विद् (पुं०) संधि की बातचीत करने वाला, वेला 1. संध्या-काल 2. कोई भी संधिकाल,—हारकः घर में सेंध लगाने वाला।

सन्धिकः [सन्धि+कन्] एक प्रकार का ज्वर।

सन्धिका [सन्धिक+टाप्] (मदिरा का) आसवन।

सन्धित (वि०) [सन्धा-इतच्] 1. मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ 2. बद्ध, कसा हुआ 3. समाहित, पुनर्मिलित, मित्रता में आबद्ध 4. स्थिर किया हुआ, ठीक बैठाया हुआ 5. आपस में मिलाया हुआ 6. अचार डाला हुआ, प्ररक्षित, तम् 1. अचार 2. मदिरा।

सन्धिनी [सन्धा+इनि+ङीप्] 1. गर्भाई हुई गाय (या तो साड से संयुक्त, या उसके द्वारा गाभिन गाय) 2. असमय दुही जाने वाली गाय।

सन्धिला [सन्धि+ला+क+टाप्] 1. भीत में किया हुआ छिद्र, गड्ढा, विवर 2. नदी 3. मदिरा।

सन्धुक्षणम् [सम्+धुक्ष्+ल्युट्] 1. सुलगना, प्रज्वलित होना 2. उत्तेजित करना, उद्दीपन।

सन्धुक्षित (भू०क०कृ०) [सम्+धुक्ष्+क्त] सुलगा हुआ, प्रज्वलित, भभकाया हुआ।

सन्धेय (वि०) [सम्+धा+यत्] 1. मिलाये जाने या जोड़े जाने के योग्य 2. पुनर्मिलित होने के योग्य—सुजनस्तु कनकघटबद् दुर्भेद्यश्चाशुसन्धेयः—हि० १।९२ 3. जिसके साथ सन्धि की जा सके 4. जिस पर निशाना लगाया जा सके।

सन्ध्या [सन्धि+यत्+टाप्, सम्+ध्यै+अङ्+टाप् वा] 1. मिलाप 2. जोड़, प्रभाग 3. वह या: सायंकाल का संधिवेला, झुटपुटा अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरस्सरः। अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः - काव्य० ७ 4. प्रभात काल 5. सायंकाल, सांझ का समय 6. युग का पूर्ववर्ती समय, दो युगों का मध्यवर्ती काल, मनु० १।६९ 7. प्रातः काल, मध्याह्न काल तथा सायंकाल की ब्राह्मण द्वारा प्रार्थना—मनु० २।६९, ४।९३ 8. प्रतिज्ञा, वादा, 9. हद, सीमा 10 चिन्तन, मनन 11. एक प्रकार का फूल 12. एक नदी का नाम 13 ब्रह्मा की पत्नी का नाम। सम० अभ्रम् 1. सायंकालीन बादल (सूर्य की सुनहली आभा से युक्त) - सन्ध्याभ्रेरेव मुहूर्तरागा पंच० १।१९४ 2. एक प्रकार की लाल खड़िया, गेरु,—काल: 1. संध्या का समय 2. सांझ, वाटिन् (पुं०) शिव का विशेषण, पुष्पी 1. एक प्रकार की चमेली 2. जायफल,—बल: राक्षस, -रागः सिंदूर, रामः (कई विद्वान् यहाँ 'आराम' शब्द को रखते है) ब्रह्मा का विशेषण, —वन्दनम् प्रातःकाल और संध्या काल की प्रार्थना।

सन्न (भू० क० कृ०) [सद्+क्त] 1. बैठा हुआ, आसीन, लेटा हुआ 2. खिन्न, दुःखी, उदास 3. म्लान, विश्रान्त 4. दुर्बल, निश्शक्त, कमजोर 5. क्षीण, छीजा हुआ 6. नष्ट, लुप्त 7. स्थिर, गतिहीन 8. सिकुड़ा हुआ 9. सटा हुआ, निकटस्थ,—म्र: पियाल नामक वृक्ष, चिरौंजी का पेड़, म् थोड़ा सा, अल्पमात्रा।

सन्नक (वि०) [सन्न+कन्] नाटा, छोटेकद का। सम० —द्रुः पियालवृक्ष।

सन्नत (भू० क० कृ०) [सम्+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, नतांग या प्रवण 2. उदास 3. सिकुड़ा हुआ।

सन्नतर (वि०) [सन्न+तरप्] अपेक्षाकृत धीमा, विषण्ण (जैसे कि स्वर)।

सन्नतिः (स्त्री०) [सम्+नम्+क्तिन्] 1. अभिवादन, सादर प्रणाम, सम्मान 2. विनम्रता 3. एक प्रकार का यज्ञ 4. ध्वनि, कोलाहल।

सन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+नह्+क्त] 1. एक साथ मिलाकर कटिबद्ध 2. कवचित, सुसज्जित, वस्तरबंद 3. व्यवस्थित, तैयार, युद्धके लिए उद्यत, शस्त्रास्त्र से पूर्णतः सुसज्जित,—नवजलधरः सन्नद्धोऽयं न दृप्तनिशाचरः विक्रम० ४।१, मेघ० ८ 4. तत्पर, उद्यत, निर्मित, सुव्यवस्थित—कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्—श० १।२१ 6. किसी भी वस्तु से युक्त 7. घातक 8. नितान्त संलग्न, सीमावर्ती, निकटस्थ।

सन्नयः [सम्+नी+अच्] 1. संचय, समुच्चय, परिमाण, संख्या 2. पृष्ठभाग (किसी सेना का) पृष्ठभाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्नहनम् [सम्+नह्+ल्युट्] 1. तैयार होना, **सन्नद्ध** होना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना 2. तैयारी 3. कस कर बांधना 4. उद्योग, प्रयत्न।

सन्नाहः [सम्+नह्+घञ्] 1. आपने आपको शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, युद्ध के लिए तैयार होना, कवच पहनना 2. युद्ध जैसी तैयारी, सुसज्जा 3. कवच, बख्तर अस्सिन्कल्पौ ललोल्लुण्ठदुष्टवाग्बाणधारण। कथं जीवेज्जगत् स्थुः सन्नाहाः सज्जना यदि कीर्ति० १।३६, कि० १६।१२।

सन्नाह्यः [सम्+नह्+ण्यत्] युद्ध का हाथी।

सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1. निकट खींचना, समीप लाना, 2. पड़ोस, सामीप्य, उपस्थिति -उत्कण्ठते च युष्मत्सन्निकर्षस्य-उत्तर०६, ३।७४, रघु० ७।८, ६।१० 3. संबंध, रिश्तेदारी 4. (न्याय० में) इंद्रिय का विषय से संबंध, (वह छः प्रकार का है)।

सन्निकर्षणम् [सम्+नि+कृष्+ल्युट्] 1. निकट लाना 2. पहुँचना, समीप जाना 3. सामीप्य, पड़ोस।

सन्निकृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+नि+कृष्+क्त] 1. समीप आया हुआ 2 समीपवर्ती, सटा हुआ, विकटस्थ, -ष्टम् सामीप्य, पड़ोस।

सन्निचयः [सम्+नि+चि+अच्] संग्रह, संचय।

सन्निधातृ (पुं०) [सम्+नि+धा+तृच्] 1. निकट लाने वाला 2. जमा करने वाला 3. चोरी का माल लेने वाला मनु० ९।२७८ 4. न्यायालय में लोगों का परिचय कराने वाला अधिकारी।

सन्निधानम्, सन्निधिः [सम्+नि+धा+ल्युट्, कि वा] 1. मिलाकर रखना, साथ साथ रखना 2. सामीप्य, पड़ोस, उपस्थिति—नै० २।५३ 3. दृष्टिगोचरता दर्शन 4. आधार 5. ग्रहण करना, कार्य भार लेना, 6. सम्मिश्रण, समष्टि।

सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1. नीचे गिरना, उतरना, नीचे आना 2. एक साथ गिरना, मिलना, —कि० १३।५८ 3. टक्कर, संघर्ष 4. मेल, संगम, सम्मिश्रण, मिश्रण, विविध संचय धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः-मेघ० ५ 5. संघात, संग्रह, समुच्चय, संख्या नानारत्नजन्मौषिणां सन्निपातैः कु० १।३ 6. आना, पहुँचना 7. (वात, पित्त कफ) तीनों दोषों का एक साथ बिगड़ना जिससे कि विषम ज्वर हो जाता है 8. संगीत में एक प्रकार का समय, ताल। सम०—ज्वरः तीनों दोषों के बिगड़ जाने पर उत्पन्न होने वाला भीषण ज्वर।

सन्निबन्धः [सम्+नि+बन्ध्+घञ्] 1. कस कर बांधना 2. संबंध, आसक्ति 3. प्रभावकारिता।

सन्निभ (वि०) [सम्+नि+भा+क] समान, सदृश, (समास के अन्त में प्रयुक्त) कुमा० १।११।

सन्नियोगः [सम्+नि+युज्+घञ्] 1. मेल, अनुराग 2. नियुक्ति।

सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] अड़चन, रुकावट।

सन्निवृत्तिः (स्त्री०) [सम्+नि+वृत्+क्तिन्] 1. वापसी —श० ६।१०, रघु० ८।४९, १०।२७ 2. हटना रुकना 3. निग्रह, सहिष्णुता।

सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] 1. गहरी पैठ, उत्कट भक्ति या अनुराग, संलग्नता 2. संचय, समुच्चय, संघात 3. मेल, मिलाप, व्यवस्था रमणीय —एष वः सुमनसां सन्निवेशः मा० १।९ 4. स्थान, जगह, स्थिति, अवस्था कु० ७।२५, रघु० ६।१९ 5. पड़ौस, सामीप्य 6. रूप, आकृति—उदात्तशरीर सन्निवेशः मा० ३, निर्माणसन्निवेशः—का० 7. झोंपड़ी, रहने की जगह,—रघु० १४।७६ 8. उपयुक्तस्थानों पर आसन देना, बिठाना—क्रियतां समाजसन्निवेशः—उत्तर० ७ 9. बीच में रखना 10. नगर के निकट खुला मैदान जहां लोग मनोरंजन, व्यायाम आदि के लिए एकत्र होते हैं।

सन्निहित (भू० क० कृ०) [सम्+नि+धा+क्त] 1. निकट रक्खा गया, पास पड़ा हुआ, निकटस्थ, सटा हुआ, पड़ौस का -श० ४ 2. निकट, समीप, नजदीक 3. उपस्थित—अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः-श० १, हृदयसन्निहिते —श० ३।२० 4. जमाया हुआ, रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5. उद्यत, तत्पर मुद्रा० १ 6. ठहरा हुआ, अन्तर्वर्ती। सम०—अपाय (वि०) जिसका विनाश निकट ही हो, क्षणभंगुर नश्वर, अस्थायी कायः सन्निहितापायः—पंच० २।१७७।

सन्न्यसनम् [सम्+नि+अस्+ल्युट्] 1. त्याग, (हथियार) डाल देना 2. पूर्णवैराग्य, विरक्ति न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति भग० ३।४ 3. सौंपना, सुपुर्द करना।

सन्न्यस्त (भू० क० कृ०) [सम्+नि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, नीचे रक्खा हुआ 2. जमा किया हुआ 3. सौंपा हुआ, सुपुर्द किया हुआ 4. एक ओर डाला, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] 1. छोड़ना, त्याग करना 2. सांसारिक विषयों तथा अनुरागों से पूर्ण वैराग्य, सांसारिक वासनाओं का परित्याग, भग० ६।२, १८।२, मनु० ११।१४, ५।१०८ 3. धरोहर, निक्षेप 4. खेल में शर्त लगाना 5. शरीर त्यागना, मृत्यु 6. जटामांसी, बालछड़।

सन्न्यासिन् (पुं०) [सम्+नि+अस्+णिनि] 1. जो त्याग देता और जमा कर देता है 2. जो संसार और उसकी आसक्तियों का पूर्णतः त्याग कर देता है,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैरागी, चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण ज्ञेयः स नित्यसन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति भग० ५।३ 3. भोजन का त्याग करने वाला, त्यक्ताहार, -- भट्टि० ७।७६ ।

सप् (भ्वा० पर० सपति) 1. सम्मान करना, पूजा करना 2. संबंध जोड़ना ।

सपक्ष (वि०) [सह पक्षेण—ब० स०] 1. पंखों वाला, डैनों वाला 2. पक्षवाला, दलवाला 3. एक ही पक्ष या दल का 4. बन्धु, समान, सदृश—(आलं०) दलद्-दाक्षातिर्यद्रसभरसपक्षा भणितयः भामि० २।७७ 5. जिसमें अनुमान का पक्ष या साध्य विषय विद्यमान हो, **क्षः** 1. समर्थक, अनुगामी, पक्षपाती, हिमायती 2. सजातीय, रिश्तेदार—मालवि० ४ 3. (तर्क० में) साध्यपक्ष का दृष्टांत, समान उदाहरण—निश्चित-साध्यवान् सपक्षः तर्क० ।

सपत्नः [सह एकार्थे पतति पत्+न, सहस्य सः] शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी—रघु० ९।८ ।

सपत्नी [समानः पतिः यस्याः ब० स० ङीप्, न आदेशः] 1. प्रतिद्वन्द्वी या सहपत्नी, प्रतिद्वन्द्वी गृहिणी, सौत (एक ही पति की दूसरी पत्नी) -दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः रघु० ६।६३, १४।८६ ।

सपत्नीक (वि०) [सपत्नी+कप्] पत्नी सहित ।

सपत्राकरणम् [सह पक्षेण सपत्र +डाच्+कृ+ल्युट्] 1. इस प्रकार बाण मारना जिससे कि बाण का पुंख-दार भाग शरीर में घुस जाय 2. अत्यंत पीड़ाकारक —तु० निष्पत्राकरण ।

सपत्राकृतिः (स्त्री०) [सपत्र+आच्+कृ+क्तिन्] वेदना, पीडा, अत्यंत कष्ट या सन्ताप ।

सपदि (अव्य०) [सह+पद्+इन्, सहस्य सः] तुरन्त, क्षण भर में, फौरन, तत्काल सपदि मदनानलो दहति मम मानसम् गीत० १०, कु० ३।७६, ६।४ ।

सपर्या [सपर्+यक्+अ+टाप्] 1. पूजा, अर्चना, सम्मान --सोऽहं सपर्याविधिभाजनेन - रघु० ५।२२, २।२२, १।३५, १३।४६, शि० १।१४ 2. सेवा, परिचर्या ।

सपाद (वि०) [सह्पादेन ब० स०] 1. पैरों वाला 2. एक चौथाई बढ़ा हुआ ।

सपिण्डः [समानः पिंडो मूलपुरुषों निवापो वा यस्य - ब० स०] समान पितरों को पिंडदान देने वाला, एक समान पितरों को पिण्डदान देने के कारण संबंधी, बन्धु याज्ञ० १।५२, मनु० २।२४७, ५।५९ ।

सपिण्डीकरणम् [सपिण्ड +च्वि+कृ+ल्युट्] समान पितरों के सम्मान में किया जाने वाला विशेष श्राद्ध का अनुष्ठान, (यह श्राद्ध किसी बन्धुबांधव की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् किया जाता है, परन्तु आजकल बहुधा मृत्यु से बारहवें दिन ही किया जाने लगा है) ।

सपीतिः (स्त्री०) [सह एकत्र पीतिः पानम्-पा+क्तिन्] साथ साथ पीना, मिलकर पीना, सहपान ।

सप्तक (वि०) (स्त्री—का. की) [सप्तानां समूहः सप्तन्-कन्] 1. जिसमें सात सम्मिलित हों 2. सात 3. सातवां,—कम् सात वस्तुओं का संग्रह (कविता आदि का) ।

सप्तकी [सप्तभिः स्वरैः इव कायति शब्दायते सप्तन् +कै+क+ङीप्] स्त्री की करधनी या तगड़ी ।

सप्ततिः (स्त्री०) [सप्तगुणिता दशतिः—नि०] सत्तर, -तिम् (वि०) सत्तरवां ।

सप्तधा (अव्य०) [सप्तन्+धाच्] सात गुण, सात प्रकार से ।

सप्तन् (सं० वि०) [सदैव बहुवचनान्त—कर्तृ० न कर्म० सप्त [सप्+तनिन्] सात । सम० अङ्ग (वि०) दे० नी० सप्तप्रकृति, **अर्चिस्** (वि०) 1. सात जिह्वा या लौ वाला 2. बुरी आँख वाला, अशुभ दृष्टि वाला, (पुं०) 1. अग्नि 2. शनि, **अशीतिः** (स्त्री०) सत्तासी, —अभ्रम् सतकोन, **अश्वः** सूर्य, **आहनः** सूर्य,—**अहः** सात दिन अर्थात् एक हफ्ता, **आत्मन्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, **ऋषि** (सप्तर्षि) (पुं० ब० व०) 1. सात ऋषि, अर्थात् मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ 2. सप्तर्षि नामक नक्षत्रपुंज (सात तारों का समूह जो उपर्युक्त सात ऋषि कहे जाते हैं), **चत्वारिंशत्** (स्त्री०) सैंतालिस,-**जिह्व**, --**ज्वाल** आग,--**तन्तु** यज्ञ शि० १४।६, **त्रिंशत्** (स्त्री०) सैंतीस,—**द्वीप** (वि०) सप्तद्वीपा पृथ्वी का विशेषण, **धातु** (पुं० ब० व०) शरीर के संघटक सात मूलतत्त्व अर्थात् अन्नरस, रुधिर, मांस, चर्बी, हड्डी, मज्जा, वीर्य, **नवतिः** (स्त्री०) सत्तानवे, --**नाडीचक्रम्** ज्योतिष का एक रेखाचित्र जिसके द्वारा वर्षाप्रिपयक भविष्यकथन किया जाता है,—**पर्णः** (इसी प्रकार **सप्तच्छदः**, **सप्तपत्रः**) एक वृक्ष का नाम, **पदी** विवाह में सात पग चलना (दूल्हा और दुलहिन विवाह संस्कार के अवसर पर सात पग मिलकर चलते हैं --इसके बाद विवाहसम्बन्ध अटूट हो जाता है), **प्रकृतिः** (स्त्री० ब० व०) राज्य के सात संघटक अंग स्वाम्यमात्य-सुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च अमर०, दे० 'प्रकृति' भी, -**भद्रः** सिरस का पेड़, **भूमिक, भौम** (वि०) सातमंजिल ऊँचा (जैसे कि महल),—**रात्रम्** सात रात का समय, **विंशतिः** (स्त्री०) सत्ताइस, **विध** (वि०) सातगुना, सात प्रकार का,—**शतम्** 1. सात सौ 2. एक सौ सात, (ती) सात सौ श्लोकों का संग्रह,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्तिः सूर्य का विशेषण - सर्वैरुक्षैः सप्तभिस्त्वभिव नृणुर्णर्दीप्यते सप्तसप्तिः मालवि० २।१३ ।

सप्तम (वि०) (स्त्री०—मी) [सप्तानां पूरणः सप्तन् +डट्, मट्] सातवां, मी (स्त्री०) 1. सातवीं विभक्ति (व्या० में) अधिकरण कारक 2. चान्द्रवर्ष के किसी पक्ष का सातवां दिन ।

सप्तला (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली ।

सप्तिः [सप्+ति] 1. जूआ 2. घोड़ा—जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम्- सुभा०—दे० 'सप्तसप्ति' भी ।

सप्रणय(वि०)[सह प्रणयेन ब० स०] स्नेही, मित्रतापूर्ण ।

सप्रत्यय (वि०) [प्रत्ययेन सह ब० स०] 1. विश्वास रखने वाला 2. निश्चित, विश्वस्त ।

सफरः-री [सप्+अरन्, पृषो० पस्य फः] छोटी चमकीली मछली - तु० 'शफर' ।

सफल (वि०) [सहफलेन ब० स०] 1. फलों से पूर्ण, फल देने वाला, उपजाऊ (आलं० से भी) 2. सम्पन्न, पूरा किया गया, कामयाब ।

सबन्धु (वि०) [सह बन्धुना—ब० स०] 1. जिसके साथ निकट सम्बन्ध हो 2. मित्रयुक्त, मित्रता के सूत्र में बंधा हुआ, —धुः रिश्तेदार, बन्धु बांधव ।

सबलिः [सहबलिना ब० स०] सांयकालीन सुटपुटा, गोधूलिबेला ।

सबाध (वि०) [सह बाधया ब० स०] 1. आघातपूर्ण 2. पीड़ादायक ।

सब्रह्मचर्यम् [समानं ब्रह्मचर्यम् सहस्य सः] सहपाठिता, (एक ही गुरु के शिष्य होने के कारण) ।

सब्रह्मचारिन् (पुं०) [समानं ब्रह्म वेदग्रहणकालीनं व्रतं चरति चर्+णिनि, समानस्य सः] 1. सहपाठी (समान अध्ययन या समान साधना करने वाला) 2. सहभोगी, सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति दुःखसब्रह्मचारिणी तरलिका क्व गता का०, हे व्यसनसब्रह्मचारिन् यदि न गुह्यं ततः श्रोतुमिच्छामि—मुद्रा० ६ ।

सभा [सह भान्ति अभीष्टनिश्चयार्थमेकत्र यत्र गृहे] 1. जलसा, परिषद्, गुप्तसभा—पण्डितसभां कारितवान् पंच० १, न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः —हि० १ 2. समिति, समाज, सम्मिलन, बड़ी संख्या 3. परिषद्-कक्ष, या सभा भवन 4. न्यायालय 5. सार्वजनिक जलसा 6. जूआ खाना 7. कोई भी स्थान जहां लोग प्रायः आते जाते हों । सम०

-आस्तारः 1 सभा में सहायक 2. सभासद्, **-पतिः** सभा का अध्यक्ष, सभापति 2. जुए का अड्डा चलाने वाला, —पूजा दर्शकों के प्रति सम्मान प्रदर्शन,—सद् (पुं०) 1. किसी सभा या जलसे में सहायक 2. सभासद्, मेम्बर, 3. अदालत की पंचायत का सदस्य, जूरी का सदस्य ।

सभाज् (चुरा० उभ० सभाजयति—ते) 1. अभिवादन करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना, श्रद्धांजलि अर्पित करना, बधाई देना - स्नेहात्मभाजयिनुमेव, - उत्तर० १।७, शि० १३।१४, श० ५ 2. सम्मान करना, पूजा करना, आदर करना 3. प्रसन्न करना, तृप्त करना 4. सुन्दर बनाना, अलंकृत करना, सजाना —उत्तर० ४।१९ 5. प्रदर्शन करना ।

सभाजनम् [सभाज्+ल्युट्] 1. (क) प्रणाम करना, अभिवादन करना, सम्मानित करना, पूजा करना —शि० १३।१४ (ख) स्वागत करना, बधाई देना - रघु० १३।४३, १४।१८ 2. शिष्टता, शिष्टाचार, विनम्रता 3. सेवा ।

सभावनः [सह भावनेन —ब० स०] शिव का नाम ।

सभि (भी) **कः** [सभा द्यूतं प्रयोजनमस्य—ईक] जुए का अड्डा चलाने वाला, जुआ खेलाने वाला,—अयमस्माकं पूर्वसभिको माथुर इत एवागच्छति मृच्छ० ३, याज्ञ० २।१२९ ।

सभ्य (वि०) [सभायां साधुः—यत्] 1. सभा से संबंध रखने वाला 2. समाज के योग्य 3. संस्कृत, परिष्कृत, विनीत 4. सुशील, विनम्र, शिष्ट—रघु० १।५५, कु० ७।२९ 5. विश्वस्त, विश्वसनीय, ईमानदार,—भ्यः 1. मूल्यनिर्देशक 2. सभासद् 3. संसाधित कुल में उत्पन्न 4. जुआ-खाने का संचालक 5. द्यूतगृह के संचालक का सेवक ।

सभ्यता त्वम् [सभ्य+तल्+टाप्, त्व वा] विनम्रता, सुशीलता, कुलीनता ।

सम् [भ्वा० पर० समति] 1. विक्षुब्ध या अव्यवस्थित होना 2. विक्षुब्ध या अव्यवस्थित न होना ।

सम् (चुरा० उभ० समयति ते) विक्षुब्ध होना ।

सम् (अव्य०) [सो+डम्] धातु या कृदन्त शब्दों से पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका निम्नांकित अर्थ है (क) के साथ मिल कर, साथ साथ यथा संगम, संभाषण, संधा, संयुज् आदि में (ख) कभी कभी यह धातु के अर्थ को प्रकट कर देता है, और इसका अर्थ होता है 1. बहुत, बिल्कुल, खूब, पूर्णतः, अत्यन्त —यथा संतुष्, संतोष, संन्यस्, सन्यास, संतप आदि 2. समास में संज्ञा शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका अर्थ है की भांति, समान, एक जैसा यथा 'समयें' में 3. कभी कभी इसका अर्थ होता है निकट, पूर्व, जैसा कि 'समक्ष' में ।

सम (वि०) [सम्+अच्] 1. वही, समरूप 2. समान, जैसा कि 'समलोष्टकाञ्चनः' में रघु० ८।२१, भग० २।३८ 3. के समान, वैसा ही, मिलता-जुलता, करण० या भंवदंव० के साथ अथवा समास में,—गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः—सुभा०—कु० ३।१३, २३.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. समान, समतल चौरस--समदेशवर्तिनस्ते न दुरासदा भविष्यति श० १ 5. समसंख्या, 6. निष्पक्ष, न्याययुक्त 7. न्यायोचित, ईमानदार, खरा 8. भला, सद्गुण संपन्न 9. सामान्य, मामूली 10 मध्यवर्ती, बीच का 11.सीधा 12. उपयुक्त, सुविधाजनक 13.तटस्थ, अचल, निरावेश 14. सब, प्रत्येक 15. सारा, पूर्ण, समस्त, पूरा,—**समम्** समतल मैदान, चौरस देश - कि० ९।११,—**समम्** (अव्य०) 1. से, के साथ, मिलकर, सहित, (करण० के साथ) आहो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनाभिः- श० १।२७, रघु० २।२५, ८।६३, १६।७२ 2. एक समान--यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् मनु० ९।३११ 3. के समान, इसी प्रकार, इसी रीति से - पंच० १।७८ 4. पूर्णतः 5. युगपत्, एकही साथ, सब मिल कर, उसी समय, साथ साथ--नव पयो यत्र घनैर्मया च त्वद्विप्रयोगाश्रु समं विसृष्टम्--रघु० १३।२६, ४।४, १०।६०, १४।१ ।

सम०—अंशः समान भाग, °**हारित्** (पुं०) सहदयभागी, - **अन्तर** (वि०) समानान्तर,—**आचार** 1. समान या एक जैसा आचरण 2. उचित व्यवहार, — **उदकम्** आधा दही और आधा पानी मिलाकर बनाई गई छाछ, मट्ठा,---**उपमा** उपमा अलंकार का एक भेद, - **कन्या** योग्य या उपयुक्त कन्या (विवाह के योग्य), **कर्णः** ऐसा चतुष्कोण जिसके कर्ण एक समान हों, -- **कालः** वही समय या क्षण, **कम्** (अव्य०) उसी समय, युगपत्, **कालीन** (वि०) समवयस्क, समसामयिक, **कोलः** सर्प, साँप, **क्षेत्रम्** (ज्योतिः० में) नक्षत्रों के एक विशेषक्रम का विशेषण, **खातः** समान खुदाई, समानान्तर चतुर्भुजों से बनी हुई आकृति, **गन्धकः** एक जैसे पदार्थों से बना धूप, **चतुरस्र** (वि०) वर्ग, (**अस्रः**) समभुज चतुष्कोण, **चतुर्भुजः**, —**जम्** विषमकोण समचतुर्भुज, **चित्त** (वि०) 1. समभावक, एक समान, प्रशान्तचित्त 2. उदासीन, --**छेद,—छेदन** (वि०) वह भित्र जिनके हर समान हों,—**जाति** (वि०) समान जाति या वर्ग का,—**त्रयाति,—त्रिभुजः**, - **त्रम्** समभुज त्रिकोण, **दर्शन** —**दर्शिन्** (वि०) समान रूप से देखने वाला, निष्पक्ष, --विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि, शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः—भग० ५।१७, **दुःख** (वि०) दूसरों के दुःख को अपने जैसा दुःख समझने वाला, (दूसरों से) सहानुभूति रखने वाला, दुःख में साथी, कु० ४।४, °**सुख** (वि०) सुख और दुःख का साथी श० ३।१२, **दृश्** दृष्टि (वि०) पक्षपातरहित, --**बुद्धि** (वि०) 1. निष्पक्ष 2. तटस्थ, निःसंग, **भाव** (वि०) एक-सी प्रकृति या गुण रखने वाला, (**वः**) समानता, तुल्यता, —**मण्डलम्** (ज्यो० में) **मुख्य** खड़ी रेखा,—**मय** (वि०) एक समान मूल वाले, - **रंजित** (वि०) हलके रंग वाला, **रंभः** एक प्रकार का रतिबंध, **रेख** (वि०) सीधा, - **प्रकृत्या यद्वक्त्रं तदपि समरेखं नयनयोः**—श० १।९, **लम्बः** —**बम्** विषम चतुर्भुज, **वर्णः** एक ही जाति का, ---**वर्तिन्** (वि०) समभावक, पक्षपातरहित (पुं०) मृत्यु का देवता, यमराज, **वृत्तम्** 1. वह छंद जिसके चारों चरण समान हों 2. दे० 'समभंङ्ग', —**वृष्टि** (वि०) धीर, गंभीर, **वेधः** बीच के दर्जे की गहराई, - **शोधनम्** समीकरण के प्रश्नों में एक सी राशि का दोनों ओर घटाना, **सन्धिः** एक समान शर्तों पर शान्तिस्थापन, **सुप्तिः** (स्त्री०) विश्वनिद्रा (कल्पान्त के अवसर पर समस्त चराचर विश्वनिद्रा में विलीन हो जाते हैं),—**स्थ** (वि०) 1. बराबर, एक रूप का 2. समतल, हमवार 3. समान,--**स्थलम्** समतल भूमि ।

समक्ष (वि०) [अक्ष्णोः समीपम् समक्ष-अच्] आँखों के सामने मौजूद, दर्शनीय, वर्तमान,—**क्षम्** (अव्य०) की उपस्थिति में, देखते देखते, आँखों के सामने —कु० ५।१ ।

समग्र (वि०) [समं सकलं यथा स्यात्तथागृह्णाते—सम्+ग्रह्+ड] सब, पूर्ण, समस्त, पूरा- मालवि० २।१३ ।

समङ्गा [सम्+अञ्ज्+घ+टाप्] मंजिष्ठा, मजीठ ।

समज [सम्+अज्+अप्] 1. पशुओं का झुण्ड, पक्षियों का गोल, लहंडा, रेवड 2. मूर्खों की संख्या, **जम्** जंगल, अरण्य ।

समज्या [सम्+अज्+क्यप्+टाप्] 1. सम्मिलन, सभा 2. ख्याति, यश, कीर्ति ।

समञ्जस [वि०] [सम्यक् अञ्जः औचित्यं यत्र ब० स०] 1. उचित, तर्कसंगत, ठीक, योग्य 2. सही, सच, यथार्थ 3. स्पष्ट, बोधगम्य जैसा कि 'असमञ्जस', सद्गुणसंपन्न, भला, न्यायोचित,—**भूशार्थिरूद्वस्य** समञ्जसं जनम् कि० १०।१२ 5. अभ्यस्त, अनुभूत 6. स्वस्थ, **सम्** 1. औचित्य, योग्यता 2. यथार्थता 3. सच्ची गवाही ।

समता, - **त्वम्** [सम्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. एकसापन, एकरूपता 2. समानता, एक जैसापन 3. बराबरी 4. निष्पक्षता, न्याय्यता, **समतां श्री,** समान व्यवहार करना मनु० ९।२१८ 5. सन्तुलन 6. पूर्णता 7. सामान्यता 8. समानता ।

समतिक्रम [सम्+अति+क्रम्+घञ्] उल्लंघन, भूल ।

समतीत (वि०) [सम्+अति+इ-क्त] बीता हुआ, गया हुआ रघु० ८।७८ ।

समद (वि०) [सह मदेन—ब० स०] 1. नशे में चूर,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीषण 2. मद के कारण मस्त 3. प्रणयोन्मत्त,—उत्तर० २।२०।

समधिक (वि०) [सम्यक् अधिकः—प्रा० स०] 1. अतिशय 2. अत्यंत अधिक, प्रचुर, बहुत अधिक—उत्तर० ४, **कम्** (अव्य०) अत्यंत, अधिकता के साथ।

समधिगमनम् [सम्+अधि+गम्+ल्युट्] आगे बढ़ जाना, पार कर लेना, जीत लेना।

समध्व (वि०) [समानः अध्वा यस्य—ब० स०] साथ यात्रा करने वाला।

समनुज्ञातम् [सम्+अनु+ज्ञा+क्त] 1. हामी भरना, स्वीकृति देना 2. पूर्ण अनुमति, पूरी सहमति।

समन्त (वि०) [सम्यक् अन्तो यत्र ब० स०] 1. हर दिशा में मौजूद, विश्वव्यापी 2. पूर्ण, समस्त, सः मौजा, हद, मर्यादा (**समन्तम्, समन्ततः, समन्तात्** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं 'सब ओर से' 'चहुँओर' 'सब ओर' पूर्णरूप से, 'पूरी तरह से'। सम० **कुधा** धूहर, स्नुही, —**पञ्चकम्** कुरुक्षेत्र या उसके निकट का प्रदेश—वेणी० ६, **भद्रः** बुद्ध भगवान्, **भुज्** (पुं०) आग।

समन्यु (वि०) [सह मन्युना ब० स०] 1. शोकाकुल 2. रोषपूर्ण, रुष्ट।

समन्वयः [सम्+अनु+इ+अच्] 1. नियमित परंपरा या क्रम 2. संबद्ध अनुक्रम, पारस्परिक सम्बन्ध, तात्पर्य, तत्तु समन्वयात्—ब्रह्म० १।१।४, न च तदुपतानां पदानां ब्रह्मस्वरूपविषये निश्चिते समन्वये उपपत्तिरुपपन्ना शारी० 3. संयोग।

समन्वित (भू० क० कृ०) [सम्+अभि+ल्+क्त] 1. संबद्ध, प्राकृतिक क्रम में आबद्ध 2. अनुगत 3. सहित, युक्त, भरा हुआ 4. ग्रस्त।

समभिप्लुत (भू० क० कृ०) [सम्+अभि+प्लु+क्त] 1. बाढ़ग्रस्त 2. ग्रहण ग्रस्त।

समभिव्याहारः [सम्+अभि+वि+आ+हृ+घञ्] 1. मिलाकर उल्लेख करना 2. साहचर्य, साथ 3. शब्द का साहचर्य या सामीप्य, जब कि उस (शब्द) का अर्थ स्पष्ट रूप से निश्चित कर लिया गया हो।

समभिसरणम् [सम्+अभि+सृ+ल्युट्] 1. पहुँचना 2. खोज करना, कामना करना।

समभिहारः [सम्+अभि+हृ+घञ्] 1. साथ-साथ ले जाना 2. आवृत्ति 3. अतिरिक्त, फालतू।

समभ्यर्चनम् [सम्+अभि+अर्च्+ल्युट्] पूजा करना, अर्चना करना।

समभ्याहारः [सम्+अभि+आ+हृ+घञ्] साथ रहना, साहचर्य।

समयः [सम्+इ+अच्] 1. काल 2. अवसर, मौका 3. योग्य काल, उपयुक्त काल, या ऋतु, ठीक वक्त कु० ३।२५ 4. करार, समझौता, संविदा, पहले से किया गया ठहराव मिथः समयात्—रघु० ५ 5. रूढ़ि, प्रथा 6. चालचलन का संस्थापित नियम, संस्कार, लोकप्रचलन कि० १।२८, उत्तर० १ 7. कवियों का अभिसमय (उदा० बादलों के दर्शन से प्रेमी और प्रेमिका का वियोग हो जाता है) 8. नियुक्ति, स्थिरीकरण 9. अनुबंध, शर्त—विक्रम० ५ 10. कानून, नियम, विनियम याज्ञ० ३।१९ 11. निदेश, आदेश, निर्देश, विधि 12. आपत्काल, संकटकाल 13. शपथ 14. संकेत, इंगित, इशारा 15. सीमा, हद 16. प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धांत, मतवाद—बौद्ध,° वैशेषिक° 17. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 18. सफलता, समृद्धि 19. दुष्ट का अन्त। सम०—**अध्युषितम्** ऐसा समय जब कि न सूर्य दिखाई देता है न तारे **अनुवर्तिन्** (वि०) मानी हुई प्रथा का पालन करने वाला,—**अनुसारेण, उचितम्** (अव्य०) अवसर के अनुकूल जैसा मौका हो,—**आचारः** लोकप्रचलित चलन, मानी हुई प्रथा, **क्रिया** करार करना,—**परिरक्षणम्** किसी समझौते का पालन करना, संधि या करार—न समयपरिरक्षणं क्षमं ते—कि० १।४५,—**व्यभिचारः** प्रतिज्ञा तोड़ना, ठेके का उल्लंघन या भंग,—**व्यभिचारिन्** (वि०) प्रतिज्ञा या वचन भंग करने वाला।

समया (अव्य०) [सम्+इ+आ] 1. ठीक, ऋतु के अनुकूल, ठीक समय पर 2. निश्चित समय पर 3. बीच में, के अन्दर, (दो के) बीच में 4. निकट (कर्म० के साथ) समया सौधभित्तिम्—दश०, शि० ६।७३, १५।९, मुद्रा० ४।८।

समरः रम् [सम्+ऋ+अप्] संग्राम, युद्ध, लड़ाई, —कर्णादयोऽपि समरपराङ्मुखीभवन्ति वेणी० ३। सम० **उद्देशः,—भूमिः** रणक्षेत्र, **मूर्धन्** (पुं०) —**शिरस्** (नपुं०) युद्ध का अग्रभाग।

समर्चनम् [सम्+अर्च्+ल्युट्] पूजा, अर्चना, आराधना।

समर्द (वि०) [सम्+अर्द्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, पीड़ित, घायल 2. पृष्ट, निवेदित।

समर्थ (वि०) [सम्+अर्थ्+अच्] 1. मजबूत, शक्तिशाली 2. सक्षम, अभ्यनुज्ञात, पात्र, योग्यताप्राप्त प्रतिग्रहसमर्थोऽपि—मनु० ४।१८६, याज्ञ० १।२१३ 3. योग्य, उपयुक्त, उचित—तद्धनुर्ग्रहणमेव राघवः प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम्—रघु० ११।७९ 4. योग्य या समुचित बनाया हुआ, तैयार किया हुआ 5. स्वार्थी 6. सार्थक 7. समुचित उद्देश्य या बल रखने वाला, अतिबलशाली 8. पास-पास विद्यमान 9. अर्थतः संबद्ध,—**र्थः** 1, (व्या० में) सार्थक शब्द 2. सार्थक वाक्य में मिला कर रक्खे हुए शब्दों की संसक्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समर्थकम् [सम् + अर्थ् + ण्वुल्] अगर की लकड़ी।

समर्थनम् [सम् + अर्थ् + ल्युट्] 1. संस्थापन, पुष्टि करना, दाईद करना 2. रक्षा करना, सहारा देना, न्यायसंगत सिद्ध करना—स्थितेष्वेतत् समर्थनम्—काव्य० ७ 3. वकालत करना, हिमायत करना 4. अनुमान लगाना, विचार करना, चिन्तन करना 5. विचार-विमर्श, निर्धारण, किसी वस्तु के औचित्यानौचित्य का निर्णय करना 6. पर्याप्तता, अचूकता, बल, धारिता 7. ऊर्जा, धैर्य 8. भेदभाव दूर कर फिर समझौता करना, कलह दूर करना 9. आक्षेप।

समर्धक (वि०) [सम् + ऋध् + ण्वुल्] 1. वरदाता 2. समृद्ध करने वाला।

समर्पणम् [सम् + अर्प् + ल्युट्] देना, हस्तांतरण करना, सौंपना, हवाले करना।

समर्पित (वि०) [सह सर्यादया ब० स०] 1. सीमित, बधा हुआ 2. निकटवर्ती, समीपवर्ती 3. शुद्धाचारी, औचित्य की सीमा के अन्दर रहने वाला 4. सम्मान-पूर्ण, विष्ट।

समल (वि०) [मलेन सह ब० स०] 1. मैला, गन्दा, मलिन, अपवित्र 2. पापपूर्ण, क्रम् पुरीष, मल, विष्ठा।

समवकारः [सम् + अव + कृ + घञ्] नाटक का एक भेद (सा० द० ५।५ में निम्नांकित परिभाषा दी गई है वृत्त समवकारे तु ख्याते देवासुराश्रयम्। संश्रयो निर्विमर्शास्तु त्रयोऽङ्काः॥)

समवतारः [सम् + अव + तृ + घञ्] 1. उतार 2. घाट-बहाँ से किसी नदी या पुण्यस्नानतीर्थ में उतरा जाय —समवतारःसमैरसमैस्तटैः—किरा० ५।७।

समवस्था [समा तुल्या अवस्था वा सम् + अव + स्था + अङ + टाप्] 1. निश्चित अवस्था 2. समान दशा या स्थिति श० ४ 3. अवस्था या दशा—रघु० १९।५०, मालवि० ४।७।

समवस्थित (भू० क० कृ०) [सम् + अव + स्था + क्त] 1. स्थिर रहता हुआ 2. स्थिर।

समवाप्तिः (स्त्री०) [सम् + अव + आप् + क्तिन्] प्राप्ति, अभिग्रहण।

समवायः [सम् + अव + इ + अच्] 1. सम्मिश्रण, मिलाप, संयोग, समष्टि, संग्रह—सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः—का०, बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः—सुभा० 2. संख्या, समुच्चय, राशि 3. घनिष्ठ संबंध, संसक्ति 4. (वैशे० में) प्रगाढ़ मिलाप, अविच्छिन्न तथा अविच्छेद्य संयोग, अभेद्य संलग्नता या एक वस्तु का दूसरी में अस्तित्व (जैसे पदार्थ और गुण, अंगी और अंग), वैशेषिकों के सात पदार्थों में से एक।

समवायिन् (वि०) [समवाय + इनि] 1. घनिष्ठ रूप से संबद्ध 2. समुच्चयवाचक, बहुसंख्यक। सम० कारणम् अभेद, कारण, उपादान कारण (वैशेषिक दर्शन में वर्णित तीन कारणों में से एक)।

समवेत (भू० क० कृ०) [सम् + अव + इ + क्त] 1. एकत्र आये हुए, मिले हुए, जुड़े हुए, सम्मिलित 2. घनिष्ठता के साथ संबद्ध, अन्तर्भूत, अभेद्य रूप से संयुक्त 3. बड़ी संख्या में समाविष्ट या सम्मिलित।

समष्टिः (स्त्री०) [सम् + अस् + क्तिन्] समुच्चयात्मक व्याप्ति, एक जैसे अंगों का समूह, अवयवों जो समतत्त्वता से युक्त अवयवों का पुंज है (विप० व्यष्टि) - समष्टिरीशः सर्वेषां स्वात्मतादात्म्यवेदनात्। तदभावात्तदन्ये तु ज्ञायते व्यष्टिसज्ञया॥ पञ्च०।

समसनम् [सम् + अस् + ल्युट्] 1. एक साथ मिलाना, सम्मिश्रण 2. संयुक्त करना, समस्त (समास युक्त) शब्दों का निर्माण 3. संकुचित करना।

समस्त (भू० क० कृ०) [सम् + अस् + क्त] 1. एक जगह डाला हुआ, सम्मिश्रित 2. संयुक्त 3. किसी पदार्थ में पूर्णतः व्याप्त 4. संक्षिप्त, संकुचित, संक्षेपित 5. सारा, पूर्ण, पूरा।

समस्या [सम् + अस् + क्यप् + टाप्] 1. पूर्ण करने के लिए दिया जाने वाला छंद का चरण, कविता का वह भाग जो पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया जाय—कः श्रोतुं-का विषमा समस्या—सुभा०। इस प्रकार 'वागर्थाविव संपृक्तौ' 'शतकोटिप्रविस्तरम्' 'तुरासाहं पुरोधाय' पंक्तियां 'नेमुः सर्वे सुराः शिवौ' से पूर्ण हो जाती हैं) 2. (अतः) अधूरे को पूरा करना—गौरीव पत्या सुभगा कदाचित्कौमार्यपर्यटंतू समस्यामु—नै० ७।८२, (समस्या = संघटनम्)।

समा [सम् + अच् + टाप्] (प्रायः ब० व० में प्रयोग, परन्तु पाणिनि द्वारा एक वचन में भी प्रयुक्त—उदा० समां समाम्-पा० ५।१।११२) वर्ष,—तेनाष्टौ परिगमिताः समाः कथंचित् रघु० ८।९२, तयोश्चतुर्दशैकेन रामः प्रव्राजयत्समाः—१२।६, १९।४, महावीर० ४।४१, अव्य०—से, साथ मिला कर।

समांसमीना [समां समां विजायते प्रसूते— ख प्रत्ययेन नि०] वह गाय जो प्रतिवर्ष ब्याती है और बछड़ा देती है।

समाकर्षिन् (वि०) (स्त्री० णी) [सम् + आ + कृष् + णिनि] 1. आकर्षक 2. दूर तक गंध फैलाने वाला, या प्रसार करने वाला, पुं० प्रसृत गंध, दूर तक फैली गंध।

समाकुल (वि०) [सम्यक् आकुलः—प्रा० स०] 1. भरा हुआ, आकीर्ण, भीड़-भाड़ से युक्त 2. संक्षुब्ध, घबराया हुआ, उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ।

समाख्या [सम् + आ + ख्या + अङ + टाप्] 1. यश, कीर्ति, ख्याति 2. नाम, अभिधान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाख्यात (भू० क० कृ०) [सम्+आ+ख्या+क्त] 1. हिंसित लगाया हुआ, गिना हुआ, जोड़ा हुआ 2. पूर्णतः वर्णित, उद्घोषित, प्रकथित 3. विख्यात, प्रसिद्ध ।

समागत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+गम्+क्त] 1. साथ साथ आया हुआ, मिला हुआ, सम्मिलित, संयुक्त 2. पहुँचा हुआ 3. जो संयुक्त अवस्था में हो ।

समागतिः [सम्+आ+गम्+क्तिन्] 1. साथ साथ आना, मेल, मिलाप 2. पहुँचना, उपगमन 3. समान दशा या प्रगति ।

समागमः [सम्+आ+गम्+घञ्] 1. मेल, मिलन, मुठभेड़, सम्मिश्रण,—अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः—काव्य० उ २ रघु० ८।४, ९२, १९।१६ 2. सहवास, साहचर्य, संगति जैसा कि 'सत्समागम' में 3. उपगमन, पहुँच 4. (ज्योति० में) संयोग ।

समाघातः [सम्+आ+हन्+घञ्] 1. वध, हत्या 2. संग्राम, युद्ध ।

समाचयनम् [सम्+आ+चि+ल्युट्] सञ्चयन, बीनना ।

समाचरणम् [सम्+आ+चर्+ल्युट्] अभ्यास करना, पालन करना, व्यवहार करना ।

समाचार [सम्+आ+चर्+घञ्] 1. प्रगमन, गति 2. अभ्यास, आचरण, व्यवहार 3. सदाचार या अच्छा चालचलन 4. खबर, सूचना, विवरण, वार्ता ।

समाजः [सम्+अज्+घञ्] 1. सभा, मिलन, मजलिस, —विशेषतः सर्वविद्यां समाजे विभूषण मौनमपण्डितानाम् —भर्तृ० २।७ 2. मण्डल, गोष्ठी, समिति या परिषद् 3. संख्या, समुच्चय, संग्रह 4. दल, आमोद-प्रमोद विषयक मिलन 5. हाथी ।

समाजिकः [समाज+ठक्] सभासद् -दे० 'सामाजिक' ।

समाज्ञा [सम्+आ+ज्ञा+अङ्+टाप्] यश, कीर्ति ।

समादानम् [सम्+आ+दा+ल्युट्] 1. पूर्णतः लेना 2. उपयुक्त उपहार लेना 3. जैन सम्प्रदाय का नित्य-कृत्य ।

समादेशः [सम्+आ+दिश्+घञ्] आज्ञा, हुक्म, निदेश, निर्देश ।

समाधा [सम्+आ+धा+अङ्+टाप्] दे० नी० 'समाधान' ।

समाधानम् [सम्+आ+धा+ल्युट्] 1. साथ साथ रखना, मिलाना 2. ब्रह्म के गुणों का मन से चिन्तन करना, 3. भावचिन्तन, गहन मनन 4. एकनिष्ठता 5. स्थैर्य, स्वस्थता, (मन की) शान्ति, सन्तोष चित्तस्य समाधानम्, कुर्वः समाधानम् गंगा० १८ 6. संदेह-निवारण करना, पूर्वपक्ष का उत्तर देना, आक्षेप का उत्तर देना 7. सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 8. (नाट० में) मुख्य घटना जिस पर नाटक की पूर्ण वस्तुकथा अवलम्बित है ।

समाधिः [सम्+आ+धा+कि] 1. संग्रह करना, स्वस्थ करना, (मन को) एकाग्र करना 2. भावचिन्तन, किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करना, ब्रह्म-चिन्तन में पूर्णलीनता अर्थात् (योग की आठवीं और अन्तिम अवस्था) आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्नाः समाधिभेदप्रभवो भवन्ति कु० ३।४०, ५०, मृच्छ० १।१, भर्तृ० ३।५४, रघु० ८।७८, शि० ४।५५ 3. एक निष्ठता, संकेन्द्रण, मनोयोग तस्यां लग्नसमाधि (मानसम्) —गीत० 4. तपस्या, धर्मकृत्य, साधना अस्त्येतदन्यसमाधिभीरुत्वं देवानाम्—श० १, तपः समाधिः—कु० ३।२४, ५।६, १।५९, ५।४५ 5. साथ मिलाना, संकेन्द्रण, सम्मिश्रण, संग्रह तं वेधा विदधे नूनं महाभूत समाधिना -रघु० १।२९ 6. पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना 7. निस्तब्धता 8. अंगीकार, स्वीकृति, प्रतिज्ञा 9. प्रतिदान 10. पूर्ति, सम्पन्नता 11. अत्यन्त कठिनाइयों में धैर्य धारण करना 12. असम्भव बात के लिये प्रयत्न करना 13. (दुर्भिक्ष के अवसर पर) अनाज बचा कर रखना, अन्न संचय करना 14. मकबरा, शव प्रकोष्ठ 15 गरदन का जोड़, गरदन की विशेष अवस्था—कि० १६।२१ 16. (अलं० में) एक अलंकार जिसकी मम्मट ने निम्नांकित परिभाषा की है समाधिः सुकरं कार्यं कारणान्तरयोगतः काव्य० १०, दे० सा० द० ६।१४ 17. शैली के दस गुणों में से एक, दे० काव्या० १।९३ ।

समाध्मात (भू०क०कृ०) [सम्+आ+ध्मा+क्त] 1. फूंक मारा हुआ 2. फुलाया हुआ, प्रफुल्लित, स्फीत, हवा भरा हुआ ।

समान (वि०) [सम्+अन्+अण्] 1. वही, तुल्य, सदृश, एक जैसा समानशीलव्यसनेषु सख्यम् सुभा० 2. एक, एकरूप 3. भला, सद्गुणसम्पन्न, न्याय्य 4. सामान्य, साधारण 5. सम्मानित, नः 1. मित्र, तुल्य 2. पाँच प्राणों में से एक (इसका स्थान नाभि का गर्त है, तथा पाचन शक्ति के लिये परमावश्यक है) समम् (अव्य०) समान रूप से, सदृश (करण० के साथ) जलधरेण समानमुमापतिः--कि० १८।४ । सम०- अधिकरण (वि०) 1. समान आधार वाला 2. उसी वर्ग या पदार्थ में विद्यमान 3. (व्या० में) एक ही कारक की विभक्ति से युक्त होना (शब्द) 1. वही स्थान या परिस्थिति 2. कारक में समान होना, कारक सम्बन्ध 3. वर्ग (जिसमें अनेक सम्मिलित हों), प्रजातीय गुण, अर्थः उसी अर्थ वाला, पर्यायवाची उदकः ऐसा सम्बन्धी जो समान पितरों को जल तर्पण के कारण संबद्ध है (यह सम्बन्ध सातवीं या ग्यारहवीं पीढ़ी से तेरहवीं या कुल के अनुसार चौदहवीं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीड़ी तक जाता है) -समानोदकभावस्तु निवर्तेता-चतुर्दशात् दे० मनु० ५।६० भो, **उदर्य** एक पेट से उत्पन्न, सहोदर भाई, —**उपमा** एक प्रकार की उपमा -दे० काव्या० २।२९, -**काल**—**कालीन**(वि०) एककालिक, समकालीन -**गोत्रः**=सगोत्र, एक ही गोत्र का, **दुःख** (वि०) सहानुभूति रखने वाला, **धर्मन्** (वि०) एक ही प्रकार के गुणों से युक्त, सहानुभूतिदर्शक, गुणों को सराहने वाला -मा० १।६, **यमः** स्वर का वही उच्चग्राम, **रुचि** (वि०) एक सी रुचि वाला।

समानयनम् [सम्+आ+नी+ल्युट्] साथ लाना, संग्रह करना, संचालन।

समायः [समा आयो यस्मिन् ब० स०] देवताओं के प्रति यज्ञ करना या आहुति देना।

समापत्तिः (स्त्री०) [सम्+आ—पद्+क्तिन्] 1. मिलना, मुठभेड़ 2. दुर्घटना, आकस्मिक घटना, अकस्मात् मुठभेड़ -समापत्तिदृष्टेन केशिना दानवेन—विक्रम० १, क्रियासमापत्तिनिवर्तितानि रघु० ७।२३, कु० ७।७५।

समापक (वि०) (स्त्री०-पिका) [सम्+आप्+ण्वुल्] समाप्त करने वाला, सम्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला।

समापनम् [सम्+आप्+ल्युट्] 1. पूर्ति, उपसंहार, समाप्ति करना मनु० ५।८८ 2. अभिग्रहण 3. मार डालना, नष्ट करना 4. अनुभाग, अध्याय 5. गहन मनन।

समापन्न (भू० क० कृ०)[सम्+आ+पद्+क्त] 1. प्राप्त, अवाप्त 2. घटित, हुआ 3. आगत, पहुंचा हुआ 4. समाप्त, पूर्ण, सम्पन्न 5. प्रवीण 6. सम्पन्न 7. दुःखी, कष्टग्रस्त 8. कृत किया हुआ।

समापादनम् [सम्+आ+पद+णिच्+ल्युट्] सम्पन्न करना, मूल रूप देना।

समाप्त (भू० क० कृ०) [सम्+आप्+क्त] 1. पूर्ण किया हुआ, उपसंहृत, पूरा किया हुआ 2. चतुर।

समाप्तालः [समाप्ताय अलति पर्याप्नोति—समाप्त+अल्+अच्] प्रभु, पति।

समाप्तिः (स्त्री०) [सम्+आप्+क्तिन्] 1. अन्त, उपसंहार, पूर्ति, समाप्त करना 2. निष्पन्नता, पूरा करना, पूर्णता 3. पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना, विवाद की समाप्त करना।

समाप्तिक (वि०) [समाप्ति+ठन्] 1. अन्तिम, समापक 2. समाप्तिका 3. जिसने कोई काम पूरा किया है **कः** 1. समापक 2. जिसने वेदाध्ययन का पूर्ण पाठ्यक्रम समाप्त कर लिया है।

समाप्लुत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+प्लु+क्त] 1. बलयस्त, बाढ़ में डूबा हुआ 2. भरा हुआ।

समाभाषणम् [सम्+आ+भाष्+ल्युट्] समालाप, वार्तालाप रघु० ६।१६।

समाम्नानम् [सम्+आ+म्ना+ल्युट्] 1. आवृत्ति, उल्लेख 2. गणना 3. परम्परा प्राप्त पाठ।

समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+घञ्] 1. परम्परागत पाठ, अनुश्रुति 2. परम्परागत (शब्द) संग्रह- -अरुन्धतिं पशुसमाम्नाये पठन्ते -उत्तर० ४ 3. साहित्य परम्परा, अनुश्रुति 4. पाठ, संस्कार पाठ, निर्देशन 5. जोड़, समष्टि, संग्रह अक्षरसमाम्नायम् शिक्षा० ५७, (अर्थात् अ से ह तक की वर्णमाला जो शिव की कृपा से पाणिनि को प्रगट हुई)।

समायः [सम्+आ+इ+अच्] 1. पहुंचना, आना 2. दर्शन करना।

समायत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+यम्+क्त] खींचा हुआ, बढ़ाया हुआ, लंबा किया हुआ।

समायुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+आ+युज्+क्त] 1. साथ जोड़ा हुआ, संबद्ध, संयुक्त 2. कृतसंकल्प, संलग्न 3. तैयार किया गया, उद्यत 4. युक्त, सज्जित, भरा हुआ, सहित, अन्वित 5. जिसको कोई कार्यभार सौंप दिया गया है, नियुक्त किया हुआ।

समायुत (भू० क० कृ०)[सम्+आ+यु+क्त] 1. संयुक्त, सम्बद्ध, साथ मिलाया हुआ 2. संगृहीत, एकत्र किया हुआ 3. सहित, युक्त, सज्जित, अन्वित।

समायोगः [सम्+आ+युज्+घञ्] 1. मेल, सम्बन्ध, संयोग 2. तैयारी 3. धनुष पर (बाण) साधना 4. संग्रह, ढेर, समुच्चय 5. कारण, प्रयोजन, उद्देश्य।

समारम्भः [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1. आरम्भ, शुरू 2. साहसिक कार्य, उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य, काम, कर्म—भव्यमुख्याः समारम्भाः तस्य गुरुं विषेदिरे —रघु० १७।५३, भग० ४।१९ 3. अंगराग।

समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] 1. सन्तुष्ट करने का साधन, प्रसन्न करना, खुशी नाद्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्-मालवि० १।४ 2. सेवा, टहल, -रघु० २।५, १८।१०।

समारोपणम् [सम्+आ+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. अवस्थित करना, रखना 2. सौंप देना, हवाले करना।

समारोपित (भू० क० कृ०) [सम्+आ+रुह्+णिच्+क्त, पुक] 1. चढ़ाया हुआ, सवार किया हुआ 2 (धनुष आदि) ताना हुआ—भवता चापे समारोपिते -काव्य० १० 3. रक्खा गया, पौध लगाई गई, ठहराया गया 4. सौंपा गया, हवाले किया गया।

समारोहः [सम्+आ+रुह्+घञ्] 1. चढ़ना, ऊपर जाना 2. सवारी करना 3. सहमत होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समालम्बनम् [सम्+आ+लम्ब्+ल्युट्] टेक लगाना, सहारा लेना, चिपटे रहना ।

समालम्बिन् (अव्य०) [सम्+आ+लम्ब्+णिनि] लटकने वाला, सहारा लेने वाला,–नी एक प्रकार का घास ।

समालम्भः, समालम्भनम् [सम्+आ+लभ्+घञ्, ल्युट् वा, मुम्] 1. एकड़ना, छीनना 2. यज्ञ में बलि-पशु का अपहरण करना 3. शरीर पर अंगराग व उबटन आदि का लेप करना मङ्गलसमालम्भनं विरचयाद: —श० ४ ।

समावर्तनम् [सम्+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापसी 2. विशेष कर वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर वापिस आना ।

समावायः [सम्+आ+अव+इ+अच्] 1. साहचर्य, संबंध 2. अविच्छेद्य संबंध दे० समवाय 3. समष्टि 4. समुच्चय, संख्या, ढेर ।

समावासः [सम्+आ+वस्+घञ्] निवास स्थान, घर रहने का स्थान ।

समाविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+आ+विश्+क्त] 1. पूर्णतः प्रविष्ट, पूर्णतः अधिकृत, व्याप्त 2. छीना हुआ, पराभूत, एकाधिकृत 3. प्रेताविष्ट 4. सहित 5. निश्चित, स्थिर किया हुआ, बिठाया हुआ 6. सुनिर्दिष्ट ।

समावृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+वृ+क्त] 1. परिवेष्टित, घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, लपेटा हुआ 2. पर्दा पड़ा हुआ, घूंघट से आच्छादित 3. गुप्त, छिपाया हुआ 4. प्रक्षिप्त 5. बंद किया हुआ 6. रोका हुआ ।

समावृत्तः, समावृत्तकः [सम्+आ+वृत्+क्त, पक्षे कत् च] वह ब्रह्मचारी जो अपना वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौट आया है ।

समावेशः [सम्+आ+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना, साथ रहना 2. मिलना, साहचर्य 3. सम्मिलित करना, समझ 4. घुसना 5. प्रेतावेश 6. प्रणयोन्माद, भावोद्रेक ।

समाश्रयः [सम्+आ+श्रि+अच्] 1. प्ररक्षण या पनाह ढूंढना 2. शरण, पनाह, प्ररक्षण 3. शरणगृह, आश्रयस्थान, घर 4. आवासस्थान, निवास ।

समाश्लेषः [सम्+आ+श्लिष्+घञ्] प्रगाढ़ आलिंगन ।

समाश्वासः [सम्+आ+श्वस्+घञ्] 1. जी में जी आना, आराम की सांस लेना 2. साहस, प्रोत्साहन, तसल्ली 3. आस्था, विश्वास, भरोसा ।

समाश्वासनम् [सम्+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] 1. पुनर्जीवित करना, प्रोत्साहन, आराम देना 2. ढाढस बंधाना विक्रम० २ ।

समासः [सम्+अस्+घञ्] 1. समष्टि, मिलाप, सम्मिश्रण 2. शब्दरचना, समाहार, मिलाना (समास के मुख्य चार भेद हैं द्वन्द्व, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव) 3. पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना 4. संग्रह, संघात 5. पूर्णता, समष्टि 6. सिकुड़न, संहृति, संक्षिप्तता, **(समासेन, समासतः** थोड़े में, संक्षेप से, लघुता के साथ—एषा धर्मस्य वो योनिः समासेन प्रकीर्तिता— मनु० २।२५, ३।२०, भग० १३।१८, समासतः श्रूयतां–विक्रम० २) । सम० —**उक्तिः** (स्त्री०) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित दी है—परोक्तिभेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः —काव्य० १० ।

समासक्तिः (स्त्री०), **समासङ्गः** [सम्+आ+सञ्ज्+क्तिन्, घञ् वा] मिलाप, साथ-साथ रहना, अनुरक्ति, आसक्ति ।

समासञ्जनम् [सम्+आ+सञ्ज्+ल्युट्] 1. मिलाना, संयुक्त करना 2. जमाना, रखना 3. संपर्क, सम्मिश्रण, संबंध ।

समासर्जनम् [सम्+आ+सृज्+ल्युट्] 1. पूर्णतः त्याग देना 2. सुपुर्द करना ।

समासादनम् [सम्+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पहुंचना 2. प्राप्त करना, मिलना, अवाप्त करना 3. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना ।

समाहरणम् [सम्+आ+हृ+ल्युट्] संयुक्त करना, संग्रह करना, सम्मिश्रण, संचय करना ।

समाहर्तृ (पुं०) [सम्+आ+हृ+तृच्] 1. जो संग्रह करने में अभ्यस्त हो 2. (कर आदि का) संग्राहक, जमा करने वाला ।

समाहारः [सम्+आ+हृ+घञ्] 1. संग्रह, समष्टि, संघात –मा० ९ 2. शब्दरचना 3. शब्दों या वाक्यों का संयोजन 4. द्विगु और द्वन्द्व समास का समष्टिविधायक एक उपभेद 5. संक्षेपण, संकोचन, संहृति ।

समाहित [भू० क० कृ० [सम्+आ+धा+क्त] 1. मिलाया गया, साथ जोड़ा गया 2. समंजित, तय किया गया 3. इकट्ठा किया गया, संगृहीत, (मन आदि) प्रशांत 4. एकनिष्ठ, लीन, संकेन्द्रित 5. समाप्त 6. सहमत ।

समाहृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+हृ+क्त] 1. मिलाया गया, संगृहीत, संचित 2. पुष्कल, अत्यधिक, बहुत 3. ग्रहण किया गया, स्वीकृत, लिया गया संक्षेप किया गया, कम किया गया ।

समाहृतिः (स्त्री०) [सम्+आ+हृ+क्तिन्] संकलन, संक्षेपण ।

समाह्वः [सम्+आ+ह्वे+घ] चुनौती, ललकार ।

समाह्वयः [सम्+आ+ह्वे+अच्] 1. पुकारना, ललकारना 2. संग्राम, युद्ध 3. मल्लयुद्ध, दो व्यक्तियों में होने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाला युद्ध 4. मनोरंजन के लिए जानवरों को लड़ाना, जानवरों को लड़ाई पर शर्त लगाना—याज्ञ० २।२०३, मनु० ९।२२१ 5. नाम, अभिधान।

समाह्वा [सम्या आह्वा यस्याः ब० स०] नाम, अभिधान, शि० ११।२६।

समाह्वानम् [सम् + आ + ह्वे + ल्युट्] 1. मिलकर बुलाना, सबोधन 2. ललकार, चुनौती।

समिकम् [समि (सम् + इ + डि) + कन्] भाला, बल्लम।

समिति (स्त्री०) [सम् + इ + क्तिच्] संग्राम, युद्ध —समिति पतिनिपातोत्कर्णन , नै० १२।७५।

समिता [सम् + इ + क्त + टाप्] गेहूँ का आटा।

समितिः [सम् + इ + क्तिन्] 1. मिलना, मिलाप, साहचर्य 2. सभा 3. रेवड़, लहंडा—कि० ४।३२ 4. संग्राम, युद्ध—शं० २।१४, कि० ३।१५, शि० १६।१३ 5. सादृश्य, समता 6. मर्यादन।

समितिञ्जय (वि०) [समिति + जि + खच्, मुम्] युद्ध में विजयी।

समिधः [सम् + इ + थक्] 1. संग्राम, युद्ध 2. आग।

समिद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + इन्ध् + क्त] 1. सुलगाया हुआ, जलाया हुआ 2. आग लगाई हुई 3. प्रज्वलित, उत्तेजित।

समिध (स्त्री०) [सम् + इन्ध् + क्विप्] लकड़ी, इंधन, विशेष कर यज्ञाग्नि के लिए समिधाएँ, -समिदाहरणाय -शं० १, कु० १।५७, ५।३३।

समिधः [सम् + इन्ध् + क] आग।

समिन्धनम् [सम् + इन्ध् + ल्युट्] 1. आग सुलगाना 2. इंधन।

समिरः [= समीर, पृषो०] वायु, हवा।

समीकम् [सम् + ईक्] संग्राम, युद्ध,—शि० १५।८३।

समीकरणम् [असमः समः क्रियतेऽत्र्नेन -सम + च्वि + कृ + ल्युट्] 1. पूरी छानबीन 2. दर्शनशास्त्र की सांख्य पद्धति -शि० २।५९।

समीक्षा [सम् + ईक्ष् + अङ् + टाप्] 1. अनुसंधान, खोज 2. विचार 3. भलीभांति निरीक्षण, समालोचना 4. समझ, बुद्धि 5. नैसर्गिक सत्य 6. अनिवार्य सिद्धांत 7. दर्शनशास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीचः [सम् + इ + चट्, कित्, दीर्घः] समुद्र।

समीचक [समीच + कन्] रतिक्रिया, मैथुन।

समीची [समीच + ङीप्] 1. हरिणी 2. प्रशंसा।

समीचीन [सम् + अञ्च् + क्विन् + ख] 1. ठीक, सही 2. सत्य, शुद्ध 3. योग्य, समुचित 4. सुसंगत, - नम् 1. सचाई 2. औचित्य।

समीवः (पुं०) गेहूँ का बारीक मैदा।

समीन (वि०) [समाम् अवीष्टो मृतो भृतो भावी वा—समा + ख] 1. वार्षिक, सालाना 2. एक वर्ष के लिए भाड़े पर लिया हुआ 3. एक वर्ष का।

समीनिका [समां प्राप्य प्रसूते समा + ख + कन् + टाप्, इत्वम्] प्रतिवर्ष ब्याने वाली गाय।

समीप (वि०) [संगता आपो यत्र—अच्, आत इत्वम्] निकट, पास ही, सटा हुआ, नजदीक, पम् सामीप्य, पड़ोस (**समीपम्, समीपतः, समीपे** (क्रि० वि०) निकट, सामने, की उपस्थिति में —अन. समीपे परिणेतुरिष्यते शं० ५।१७।

समीरः [सम् + ईर् + अच्] 1. हवा, वायु, घोर-समीरे यमुनातीरे गीत० ५ 2. शमीवृक्ष, जैंड़ी का पेड़।

समीरणः [सम् + ईर् + ल्युट्] 1. हवा, वायु, -समीरणो नोदयिता प्रवृष्णि व्याहियते केन हुताशनस्य -कु० ३।२१, १।८ 2. सांस, 3. यात्रा 4. एक पौधे का नाम, मरुवक, णम् फेंकना, भेजना।

समीहा [सम् + ईह् + अ + टाप्] प्रबल इच्छा, चाह, प्रबल उद्योग।

समीहित (भू० क० कृ०) [सम् + ईह् + क्त] 1. अभिलषित, इच्छित, अभीष्ट 2. आरब्ध, तम् कामना, अभिलाषा, इच्छा।

समुक्षणम् [सम् + उक्ष् + ल्युट्] छालना, बहाव, प्रसार।

समुच्चय [सम् + उत् + चि + अच्] 1. संग्रह, संघात, समष्टि, राशि, पुंज 2. शब्दों या वाक्यों का संयोग दे० 'च' 3. एक अलंकार का नाम काव्य० १० (११५ से ११६ कारिकाएँ तक)।

समुच्चरः [सम् + उत् + चर् + अच्] 1. चढ़ना 2. चलना, यात्रा करना।

समुच्छेदः [सम् उद् + छिद् + घञ्] पूर्ण विनाश, समूलोन्मूलन, उखाड़ देना।

समुच्छ्रयः [सम् + उद् + श्रि + अच्] 1. उत्तुंगता, ऊंचाई 2. विरोध, शत्रुता।

समुच्छ्रायः [सम् + उद् + श्रि + घञ्] उत्तुंगता, ऊंचाई।

समुच्छ्वासितम्, समुच्छ्वासः [सम् + उद् + श्वस् + क्त, घञ् वा] गहरी सांस लेना, दीर्घ सांस लेना।

समुज्झित (वि०) [सम् + उज्झ् + क्त] 1. त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ 2. जाने दिया गया 3. मुक्त।

समुत्कर्षः [सम् + उत् + कृष् + घञ्] 1 उन्नति 2. अपने आपको ऊपर उठाना, अपनी जाति की अपेक्षा किसी अन्य ऊंची जाति से सम्बन्ध रखना—मनु० ११।५६।

समुत्क्रमः [सम् + उत् + क्रम् + घञ्] 1. ऊपर उठना, चढ़ाई 2. औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना।

समुत्क्रोशः [सम् + उद् + क्रुश् + घञ्] 1. जोर से चिल्लाना 2. भारी कोलाहल 3. कुररी।

समुत्थ (वि०) [सम् + उद् + स्था + क] 1. उठता हुआ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जागता हुआ 2. उगा हुआ, उत्पन्न, जन्मा (समास के अन्त में)–अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः रघु० २।७५, भग० ७।२७ 3. घटित होने वाला, उत्पन्न ।

समुत्थानम् [सम् +उद्+स्था+ल्युट्] 1. उठना, जागना 2. पुनरुज्जीवन 3. पूरी चिकित्सा, पूरा आराम 4. (घाव आदि का) भरना, स्वस्थ होना मनु० ८।२८७, याज्ञ० २।२२२ 5. रोग का चिह्न 6. उद्योग में लगना, परिश्रमयुक्त धन्धा - जैसा कि 'संभव समुत्थानम्', मे– मनु० ८।४ ।

समुत्पतनम् [सम्+उद+पत्+ल्युट्] 1. उड़ना, ऊपर चढ़ना 2. प्रयत्न, चेष्टा ।

समुत्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+उद्+पद्+क्तिन्] 1. पैदावार, जन्म, मूल 2. घटना ।

समुत्पिञ्ज, समुत्पिञ्जल (वि०) [सम्+उद्+पिञ्ज्+अच्, कलच् वा] अत्यन्त उद्विग्न या घबराया हुआ, अव्यवस्थित,—जः, लः 1. अव्यवस्थित सेना 2. भारी अव्यवस्था ।

समुत्लवः [सम्+उद्+लू+अप्] महान् पर्व ।

समुत्सर्गः [सम्+उद्+सृज्+घञ्] 1. परित्याग, छोड़ना 2. ढालना, डालना, प्रदान करना 3. मलत्याग करना, विष्ठा करना- –मनु० ४।५० ।

समुत्सारयम् [सम्+उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. हांक देना 2. पीछा करना, शिकार करना ।

समुत्सुक (वि०) [सम्यक् उत्सुकः—प्रा० स०] 1. अत्यन्त बेचैन, आतुर, अधीर विरौधि समुत्सुकः—विक्रम० ४।२०, रघु० १।३३, कु० ५।७६ 2. उत्कंठित, उत्सुक, शोकातुर 3. शोकपूर्ण, खेदजनक ।

समुत्सेधः [सम्+उद्+सिध् घञ्] 1. ऊँचाई, उन्नति 2. मोटापन, गाढ़ापन ।

समुद्यत (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+अञ्ज्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर खींचा हुआ (जैसा कुएँ से पानी) ।

समुदयः [सम्+उद्+इ+अच्] 1. चढ़ाई, (सूर्य का) उदय होना 2. उगना 3. संग्रह, समुच्चय, संख्या, ढेर,—सामर्थ्यनामिव समुदयः संचयो वा गुणानाम् —उत्तर० ६।९ 4. सम्मिश्रण 5. संपूर्ण 6. राजस्व 7. प्रयत्न, चेष्टा 8. संग्राम युद्ध 9. दिन 10 सेना का पिछला भाग ।

समुदायज्ञः [सम्+उद्+आ+गम्+घञ्] पूर्ण ज्ञान ।

समुदाचारः [सम्+उद्+आ+चर्+घञ्] 1. उचित व्यवहार या प्रचलन 2. संबोधित करने की उपयुक्त रीति 3. प्रयोजन, इरादा, रूपरेखा ।

समुदायः [सम्+उद्+अय्+घञ्] संग्रह, समुच्चय आदि, दे० 'समुदय' ।

समुदाहरणम् [सम्+उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1. उद्घोषणा, उच्चारण करना 2. निदर्शन ।

समुदित (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+इ+क्त] 1. ऊपर गया हुआ, उठा हुआ, चढ़ा हुआ 2. ऊँचा, उन्नत 3. पैदा किया हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 4. संहत किया हुआ, संचित, संयुक्त मङ्गल्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः रत्न० १।६ 5. सहित, सज्जित ।

समुदीरणम् [सम्+उद्+ईर्+ल्युट्] 1. कह डालना, बोलना, उच्चारण करना 2. दुहराना ।

समुद्गम (वि०) [सम्+उद्+गम्+ड] 1. उगने वाला, चढ़ने वाला 2. पूर्णतः व्यापक 3. आवरण या ढक्कन से युक्त 4. फलियों से युक्त,—गमः 1. ढका हुआ संदूक 2. एक प्रकार का कृत्रिम श्लोक—दे० नीचे 'समुद्गक' ।

समुद्गकः [समुद्ग+कन्] 1. एक ढका हुआ संदूक या पेटी –श० ४ 2. एक प्रकार का श्लोक जिसके दो चरणों की ध्वनि समान हों परन्तु अर्थ पृथक्-पृथक् हों–उदा० कि० १५।१६ ।

समुद्गमः [सम्+उद्+गम्+घञ्] 1. उठान, चढ़ाई 2. उगना, निकलना 3. जन्म, पैदायश ।

समुद्गिरणम् [सम्+उद्+गृ+ल्युट्] 1. वमन करना, उगलना 2. जो उगल दिया जाय, उल्टी 2. उठाना, ऊपर करना ।

समुद्गीतम् [सम्+उद्+गै+क्त] ऊँचे स्वर से बोला जाने वाला गीत ।

समुद्देशः [सम्+उद्+दिश्+घञ्] 1. पूर्णतः निर्देश करना 2. पूर्णविवरण, विशिष्टीकरण, निर्देश करना ।

समुद्धृत (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+हृ+क्त] 1. ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उन्नीत 2. उत्तेजित, हड़बड़ाया हुआ 3. घमंड से फूला हुआ, घमंडी, अभिमानी 4. अशिष्ट, असभ्य 5. धृष्ट, ढीठ ।

समुद्धरणम् [सम्+उद्+हृ+ल्युट्] 1. ऊपर उठाना, ऊँचा करना 2. उठाना 3. बाहर खींच लेना 4. उद्धार, मुक्ति 5. निवारण, समूलोच्छेदन 6. (किनारे) से बाहर निकालना 7. डाला हुआ या उगला हुआ भोजन ।

समुद्धर्तृ (पुं०) [सम्+उद्+हृ+तृच्] मोचक, मुक्तिदाता: ।

समुद्भवः [सम्+उद्+भू+अप्] जन्म, उत्पत्ति ।

समुद्यमः [सम्+उद्+यम्+घञ्] 1. ऊपर उठाना 2. बड़ा प्रयत्न, चेष्टा कर्मेवा सह योऽव्यभिचारिसमुद्यमः—भग० १।२२, समुद्यमः कार्यः 3. उपक्रम, समारंभ 4. धावा, चढ़ाई ।

समुद्योगः [सम्+उद्+युज्+घञ्] सक्रिय चेष्टा, ऊर्जा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समुद्रः (वि०) [सह मुद्रया --ब० स०] मुहर बंद, मुहर लगा हुआ, मुद्रांकित—समुद्रो लेखः,—द्रः [सम् + उद् + रा + क] 1. सागर, महासागर 2. शिव का विशेषण 3. 'चार' की संख्या। सम०—अन्तम् 1. समुद्रतट 2. जायफल,—अन्ता 1. कपास का पौधा, —अम्बरा पृथ्वी,—अहः,-आयः 1. मगरमच्छ 2. एक बड़ी विशाल मछली 3. राम का पुल,—कक्षः,-कोलः समुद्रतट, ग (वि०) समुद्र पर घूमने वाला, (गः) 1. समुद्री व्यापार करने वाला 2. समुद्री कार्य करने वाला, समुद्र में घूमने वाला इसी प्रकार 'समुद्रगामिन्,-यायिन् आदि, (गा) नदी, गृहम् गरमी के दिनों के लिए जल में बना हुआ भवन,—चुलुकः अगस्त्य मुनि का विशेषण, नवनीतम् 1. चन्द्रमा 2. अमृत, सुधा, मेखला,-रसना,-वसना पृथ्वी, —यानम् 1. समुद्री यात्रा 2. पोत, जहाज, किश्ती, —यात्रा समुद्र के रास्ते यात्रा, यायिन् (वि०) दे० 'समुद्रग', योषित् (स्त्री०) नदी, वह्निः वडवानल, सुभगा गंगा नदी।

समुद्वहः [सम् + उद् + वह् + अच्] 1. ढोना 2. उठाने वाला।

समुद्वाहः [सम् + उद् + वह् + घञ्] 1. ढोना 2. विवाह।

समुद्वेगः [सम् + उद् + विज् + घञ्] बड़ा डर, आतंक त्रास।

समुन्दनम् [सम् + उन्द् + ल्युट्] 1. आर्द्रता 2. गीलापन, सील, तरी।

समुन्न (वि०) [सम् + उन्द् + क्त] गीला, आर्द्र।

समुन्नत (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + नम् + क्त] 1. ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2. ऊँचाई, उत्तुंगता, (मानसिक भी) ऊँचा उठना—मनसः शिखराणां च सदृशी ते समुन्नतिः कु० ६।६१, रघु० ३।१० 3. प्रमुखता, ऊँचा पद या मर्यादा, उल्लास उत्तमैः सह सङ्गेन को न याति समुन्नतिम्, न जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् सुभा० 4. उन्नति, समृद्धि, वृद्धि, सफलता विनिपातोऽपि समः समुन्नतेः —कि० २।३४, या प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यया —२।२१ 5. घमंड, अभिमान।

समुन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + उद् + नह् + क्त] 1. उन्नत, उच्छ्रित 2. सूजा हुआ 3. पूरा 4. घमंडी, अभिमानी, असहनशील 5. आत्माभिमानी, पण्डित-मन्य 6. बंधनमुक्त।

समुन्नयः [सम् + उद् + नी + अच्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना 2. घटना, बात।

समुन्मूलनम् [सम् + उद् + मूल् + ल्युट्] जड़ से उखाड़ना, समूलोच्छेदन, पूर्ण विनाश।

समुपगमः [सम् + उप + गम् + अप्] पहुँच, संपर्क।

समुपजोषम् (अव्य०) [सम् + उप + जुष् + अम्] 1. बिल्कुल इच्छा के अनुसार 2. प्रसन्नतापूर्वक।

समुपभोगः [सम् + उप + भुज् + घञ्] मैथुन, संभोग।

समुपवेशनम् [सम् + उप + विश् + ल्युट्] 1. भवन, आवास, निवास 2. बिठाना।

समुपस्था, समुपस्थानम् [सम् + उप + स्था + अङ्, ल्युट् वा] 1. पहुँच, समीप जाना 2. सामीप्य, निकटता 3. होना, आ पड़ना, घटना।

समुपस्थितिः = 'समुपस्थानम्' दे०।

समुपार्जनम् [सम् + उप + अर्ज् + ल्युट्] एक साथ प्राप्त करना, एक समय में ही अभिग्रहण।

समुपेत (भू० क० कृ०) [सम् + उप + इ + क्त] 1. मिल कर आये हुए, एकत्रित, इकट्ठे हुए 2. पहुँचा 3. सज्जित, ···सहित, ···युक्त।

समुपोढ (भू० क० कृ०) [सम् + उप + वह् + क्त] 1. ऊपर गया हुआ, उठा हुआ 2. वृद्धि को प्राप्त 3. निकट लाया गया 4. नियंत्रित।

समुल्लासः [सम् + उत् + लस् + घञ्] 1. अत्यंत चमक 2. अति हर्ष, आनन्द।

समूढ (भू० क० कृ०) [सम् + ऊह् (वह्) + क्त] 1. निकट लाया गया, एकत्रित 2. संचित, संगृहीत 3. लपेटा हुआ 4. सहित 5. सशोभात, जो तुरन्त पैदा हुआ हो 6. शांत, वशीकृत, शान्त किया हुआ 7. वक्र, झुका हुआ 8. निर्मल, स्वच्छ 9. साथ ही वहन किया गया 10. नेतृत्व किया गया, संचालित किया गया 11. विवाहित।

समूरः, समूरुः, समूरकः [सगतौ ऊरू यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार का हरिण।

समूल (वि०) [सह मूलेन—ब० स०] जड़ों समेत जैसा 'समूलघातम् —'पूर्णरूप से उखाड़ कर, जड़ समेत शाखाओं को उखाड़ देना।

समूहः [सम् + ऊह् + घञ्] 1. समुच्चय, संग्रह, संघात, समष्टि, संख्या—जनसमूहः, विघ्नसमूहः, पदसमूहः, आदि 2. रेवड़, टोली।

समूहनम् [समूह् + ल्युट्] 1. साथ मिलाना 2. संग्रह, राशि।

समूहनी [सम् + ऊह् + ल्युट् + ङीप्] बुहारी, झाड़ू।

समूहाः [सम् + ऊह् + क्यप्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

समृद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + ऋध् + क्त] 1. समृद्धिशाली, फलता-फूलता हुआ, हरा-भरा 2. प्रसन्न, भाग्यशाली 3. सम्पन्न, दौलतमंद 4. भरा पूरा, विशेषरूप से युक्त या सम्पन्न, खूब बढ़ा चढ़ा 5. फलवान्।

समृद्धिः (स्त्री०) [सम् + ऋध् + क्तिन्] 1. भारी वृद्धि, बढ़ती, फलना-फूलना 2. सम्पन्नता, सम्पत्ति,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐश्वर्य 3. धन, दौलत 4. बाहुल्य, पुष्कलता, प्राचुर्य यथा 'धनधान्यसमृद्धिरस्तु' में 5. शक्ति, सर्वांपरिता ।

समेत (भू० क० कृ०) [सम् + आ + इ + क्त] 1. साथ आया हुआ या मिला हुआ, एकत्रित 2. संयुक्त, सम्मिश्रित 3. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 4. से युक्त 5. सहित, सज्जित, युक्त, के साथ 6. टक्कर खाया हुआ, भिड़ा हुआ 7. सहमत ।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम् + पद् + क्तिन्] 1. समृद्धि, धन की बढ़ती, –संपत्ती च विपत्ती च महतामेकरूपता —सुभा० 2. सफलता, पूर्ति निष्पन्नता 3. पूर्णता, श्रेष्ठता–जैसा कि 'रूपसम्पत्ति' में 4. प्राचुर्य, पुष्कलता, बाहुल्य ।

सम्पद् (स्त्री०) [सम् + पद् + क्विप्] 1. धन, दौलत –नीता विवोत्साहगुणेन सम्पद्–कु० १।२२, आपन्नार्ति प्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्- मेघ० ५३ 2. समृद्धि, ऐश्वर्य, फलना-फूलना (विप० विपद् या आपद्) —ते भूयाः नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च—मुद्रा० १।१५ 3. सौभाग्य, आनन्द, किस्मत 4. सफलता, पूर्ति, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति—श० ७।३० 5. पूर्णता, श्रेष्ठता, जैसा कि 'रूपसंपद' में –वि० ३।३५ 6. धनाढ्यता, पुष्कलता, बाहुल्य, प्राचुर्य, आधिक्य –तुषारवृष्टिक्षतपद्मसम्पदाम्–कु० ५।२७, रघु० १०।५९ 7. कोश 8. लाभ, हित, वरदान 9. सद्गुणों की वृद्धि 10. सजावट 11. सही ढंग 12. मोतियों का हार । सम०—वर, राजा,—विनिमयः हितों या सेवाओं का आदान-प्रदान–रघु० १।२६ ।

सम्पन्न (भू०क०कृ०) [सम् पद् + क्त] 1. समृद्धिशाली, फलता-फूलता, धनाढ्य 2. भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न 3. कार्यान्वित, साधित, निष्पन्न 4. पूरा किया गया, पूर्ण कर दिया गया 5. पूर्ण 6. पूर्णविकसित, परिपक्व 7. प्राप्त किया गया, हासिल किया गया 8. शुद्ध, सही 9. सहित, युक्त 10. हुआ हुआ, घटित, —शः शिव का विशेषण, —म् 1. धन, दौलत 2. स्वादिष्ट भोजन, मधुर और मजेदार भोजन ।

सम्परायः [सम् + परा + इ + अच्] 1. संघर्ष, मुठभेड़, संग्राम, युद्ध 2. संकट, दुर्भाग्य 3. भावी स्थिति, भविष्य 4. पुत्र ।

सम्पराय (वि) कम् [सम्पराय + कन्, ठन् वा] मुठभेड़, संग्राम, युद्ध ।

सम्पर्कः [सम् + पृच् + घञ्] 1. मिश्रण 2. मिलाप, मेल-जोल, स्पर्श -पादेन नापैक्षत सुन्दरीणां सम्पर्कमाशिञ्जितनूपुरेण कु० ३।२६, मेघ० २५, विक्रम० १।१३ 3. मण्डली, समाज, साथ न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि—भर्तृ०—२।१४ 4. मैथुन, संभोग ।

सम्पा [सम्यक् अतीव पतति—सम् + पत् + ड + टाप्] बिजली ।

सम्पाक (वि०) [सम्यक् पाको यस्य यस्मात् वा—प्रा०ब०] 1. सुतार्किक, खूब बहस करने वाला 2. चालाक, चलता पुरजा 3. लम्पट, विलासी 4. थोड़ा, अल्प, —कः 1. परिपक्व होना 2. आरम्भ वक्ष ।

सम्पाटः [सम् + पट् + णिच् + घञ्] 1. भिभुज की बड़ी हुई भुजा से किसी रेखा का मिलना 2. तकुआ ।

सम्पातः [सम् + पत् + घञ्] 1. मिल कर गिरना, सहगमन 2 आपस में मिलना, मुठभेड़ होना 3. टक्कर, भिड़न्त 4. अधःपतन, उतरना भग० १।२० 5 (पक्षी आदि का) उतरना 6. (तीर को) उड़ान 7. जाना, हिलना-डुलना 8. हटाया जाना, हटाना मनु० ६।५६ 9. पक्षियों को उड़ान विशेष तु० डोल 10. (चढ़ावे का) अवशिष्ट अंश, उच्छिष्ट ।

सम्पातिः [सम् + पत् + णिच् + इन्] एक पौराणिक पक्षी, गरुड़ का पुत्र, जटायु का बड़ा भाई ।

सम्पादः [सम् + पद् + णिच् + घञ्] 1. पूर्ति, निष्पन्नता 2. अभिग्रहण ।

सम्पादनम् [सम् + पद् + णिच् + ल्युट्] 1. निष्पादन, कार्यान्वयन, पूरा करना 2. उपार्जन करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना 3. स्वच्छ करना, साफ करना, (भूमि आदि) तैयार करना, मनु० ३।२२५ ।

सम्पिण्डित (भू०क०कृ०) [सम् + पिण्ड् + क्त] 1. राशीकृत 2. सिकुड़ा हुआ ।

सम्पीडः [सम् + पीड् + घञ्] 1. निचोड़ना, भींचना 2. पीड़ा, यातना 3. विक्षोभ, बाधा 4. भेजना, निदेशन, आगे आगे हांकना, प्रणोदन - सम्पीडक्षुभितजलेषु लोयदेषु कि० ७।१२ ।

सम्पीडनम् [सम् + पीड् + ल्युट्] 1. निचोड़ना, मिलाकर दाबना 2. प्रेषण 3. दण्ड, कशाघात 4. झकोलना, क्षुब्ध होना ।

सम्पीतिः (स्त्री०) [सम् + पा + क्तिन्] मिल कर पीना, सहपान ।

सम्पुटः [सम् + पुट् + क] 1. गह्वर—स्वात्यां सागरशुक्तिसम्पुटगतं (पयः) सन्मौक्तिकं जायते भर्तृ० २।६७, (पाठान्तर) काव्या० २।२८८, ऋतु० १।२१ 2. रत्नपेटी, डिब्बा 3. कुरबक फूल ।

सम्पुटकः, सम्पुटिका [सम्पुट + कन्, सम्पुटक + टाप्, इत्वम्] संदूक, रत्नपेटी ।

सम्पूर्ण (वि०) [सम् + पूर् + क्त] 1. भरा हुआ 2. सारे, सारा, दे० पूर्ण, णम् अन्तरिक्ष ।

सम्पृक्त (भू० क० कृ०) [सम् + पृच् + क्त] 1. एकीकृत, मिश्रित 2. संयुक्त, संबद्ध, घनिष्ठ, संबंध से युक्त —वागर्थाविव संपृक्तौ–रघु० १।५ 3. स्पर्श करना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्प्रक्षालनम् [सम्+प्र+क्षाल्+णिच्+ल्युट्] 1. पूर्ण मार्जन 2. स्नान, नहलाई—धुलाई 3. जल-प्रलय।

सम्प्रणेतृ (पुं०) [सम्+प्र+नी+तृच्] शासक, न्यायाधीश।

सम्प्रति (अव्य०) [सम्+प्रति० द्र० स०] अब, हाल में, इस समय अयि सम्प्रति देहि दर्शनम्—कु० ४।८।

सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [सम्+प्रति+पद्+क्तिन्] 1. उपगमन, पहुँच 2. उपस्थिति 3. लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि 4. करार 5. मानना, स्वीकार कर लेना—मुद्रा० ५।१८ 6. किसी तथ्य को मानना, कानून में विशेष प्रकार का उत्तर 7. धावा, आक्रमण 8. घटना 9. सहयोग 10. करना, अनुष्ठान।

सम्प्रतिरोधकः, कम् [सम्+प्रति+रुध्+घञ्+कन्] 1. पूरा अवरोध 2. कैद, जेल।

सम्प्रतीक्षा [सम्+प्रति+ईक्ष्+अङ्+टाप्] आशा लगाना या बाँधना।

सम्प्रतीत (भू० क० कृ०) [सम्+प्रति+इ+क्त] 1. वापिस आया हुआ 2. पूर्णतः विश्वास दिलाया हुआ 3. प्रमाणित, माना हुआ 4. विश्रुत 5. सम्मान पूर्ण।

सम्प्रतीतिः [सम्+प्रति+इ+क्तिन्] 1. पूरा निश्चय 2. कार्यपालन, प्रसिद्धि, ख्याति, कुख्याति कु० ३।४३।

सम्प्रत्ययः [सम्+प्रति+इ+अच्] 1. दृढ़ विश्वास 2. करार।

सम्प्रदानम् [सम्+प्र+दा+ल्युट्] 1. पूरी तरह से दे देना, हवाले कर देना 2. उपहार भेंट, दान 3. विवाह कर देना 4. चतुर्थी विभक्ति द्वारा अभिव्यक्त अर्थ।

सम्प्रदानीयम् [सम् + प्र—दा+अनीयर्] भेंट, दान।

सम्प्रदायः [सम् + प्र + दा+घञ्] 1. परंपरा, परंपरा प्राप्त सिद्धान्त या ज्ञान, परम्परा प्राप्त शिक्षा —उत्तर० ५।१५ 2. धर्म-शिक्षा की विशेष पद्धति, धार्मिक सिद्धान्त जिसके द्वारा किसी देवताविशेष की पूजा बतलाई जाय 3. प्रचलित प्रथा, प्रचलन।

सम्प्रधानम् [सम्+प्र+धा+ल्युट्] निश्चय करना।

सम्प्रधारणम् णा [सम्+प्र+णिच्+ल्युट्] 1. विचार 2. किसी वस्तु का औचित्य या अनौचित्य निर्धारित करना।

सम्प्रपदः [सम्+प्र+पद्+क] पर्यटन, भ्रमण।

सम्प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [सम्+प्र+भिद्+क्त] 1. फटा हुआ, चिरा हुआ 2. मद में मत्त।

सम्प्रमोदः [सम्+प्र] मुद्+घञ्] हर्षातिरेक, उल्लास।

सम्प्रमोषः [सम्+प्र+मुष्+घञ्] हानि, विनाश, पृथक्करण, अलगाव।

सम्प्रयाणम् [सम्+प्र+या+ल्युट्] विदाई।

सम्प्रयोगः [सम्+प्र+युज्+घञ्] 1. संयोग, मिलाप, सम्मिलन, संयोजन, संपर्क—(जलस्य) उष्णत्वमन्यातपसम्प्रयोगात्—रघु० ५।५४, मालवि० ५।३ 3. संयोजक कड़ी, बंधन या जकड़न—एतेन मोचयति भूषणसम्प्रयोगात् मृच्छ० ३।१६ 3. संबंध, निर्भरता 4. पारस्परिक संबन्ध या अनुपात 5. संयुक्त श्रेणी या क्रम 6. मैथुन, संभोग 7. प्रयोग, 8. जादू।

सम्प्रयोगिन् (वि०) [सम्+प्र+युज्+घिनुण्] साथ साथ मिलने वाला, पुं० 1. मेलापक, संयोजक, 2. बाजीगर 3. लम्पट 4. चुल्ली, गाडू।

सम्प्रवृष्टम् [सम्+प्र+वृष्+क्त] अच्छी वर्षा।

संप्रश्नः [सम्यक् प्रश्नः - प्रा०स०] 1. पूरी या शिष्टतापूर्ण पूछ-ताछ 2. पृच्छा, पूछ-ताछ।

सम्प्रसादः [सम्+प्र+सद्+घञ्] 1. प्रसादन, तुष्टीकरण 2. अनुग्रह, कृपा 3. शान्ति, सौम्यता 4. विश्वास, भरोसा 5. आत्मा।

सम्प्रसारणम् [सम्+प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] य्, व्, र्, ल्, के स्थान पर क्रमशः इ, उ, ऋ या ऌ को रखना इत्येषः सम्प्रसारणम्—पा० १।१।४५।

सम्प्रहारः [सम्+प्र+हृ+घञ्] 1. पारस्परिक प्रहार 2. मुठभेड़, संग्राम, युद्ध संघर्ष—उत्तर० ६।७।

सम्प्राप्तिः (स्त्री०) [सम्+प्र+आप्+क्तिन्] निष्पत्ति, अभिग्रहण।

सम्प्रीतिः (स्त्री०) [सम्+प्री+क्तिन्] 1. अनुराग, स्नेह 2. सद्भावना, मैत्रीपूर्ण स्वीकृति 3. हर्ष, उल्लास।

संप्रेक्षणम् [सम्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. अवेक्षण, अवलोकन 2. विचार करना, गवेषणा करना।

सम्प्रेषः [सम्+प्र+इष्+घञ्] 1. भेजना, बर्खास्तगी 2. निदेश, समादेश, आज्ञा।

सम्प्रोक्षणम् [सम्+प्र+उक्ष्+ल्युट्] मार्जन, जल के छींटे देना, अभिमंत्रित जल छिड़कना।

सम्प्लवः [सम्+प्लु+अप्] 1. प्लावन, जलप्रलय 2. लहर 3. बाढ़ 4. बर्बाद हो जाना 5. विध्वंस, तहसनहस।

सम्फालः [सम्यक् फालो गमनं यस्य—प्रा०ब०] मेढ़ा, भेड़।

सम्फेटः (पुं०) क्रोधपूर्ण संघर्ष, दो क्रुद्ध व्यक्तियों की पारस्परिक मुठभेड़ को अभिव्यक्त करने वाली घटना—दे० सा०द० ३७९, ४२०, उदा०—माधव और अघोरघंटके मध्य मुठभेड़—मा० ५।

सम्ब i (भ्वा० पर० सम्बति) जाना, हिलना-जुलना।

ii (चुरा० उभ० सम्बयति-ते) संग्रह करना, संचय करना।

सम्बम् [सम्ब्+अच्] खेत को दूसरी बार जोतना (**सम्बाङ्**) दो बार हल चलना) दे० 'शम्ब' भी।

सम्बद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+बंध्+क्त] 1. संग्रथित,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलाकर बांधा हुआ 2. अनुरक्त 3. संयुक्त, जुड़ा, हुआ, संबंध रखने वाला 4. सहित।

सम्बन्धः [सम्+बन्ध+घञ्] 1. संयोग मिलाप, साहचर्य 2. रिश्ता, रिश्तेदारी 3. छठी विभक्ति या संबंध कारक के अर्थस्वरूप संबंध 4. वैवाहिक संपर्क--कु० ६।२९, ३० 5. मित्रता का संबंध, मैत्री, सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः--रघु० २।५८ 6. योग्यता, औचित्य 7. समृद्धि, सफलता।

सम्बन्धक (वि०) [सम्+बन्ध्+ण्वुल्] 1. रिश्ता रखने वाला, संबंध रखने वाला 2. योग्य, उपयुक्त,--कः 1. मित्र, जन्म या विवाह के कारण बना संबंध, एक प्रकार की शान्ति।

सम्बन्धिन् (वि०) [सम्बन्ध+णिनि] 1. संबंध रखने वाला 2. संयुक्त, जुड़ा हुआ, अन्तर्हित 3. अच्छे गुणों से युक्त--पुं० 1. विवाह के फल स्वरूप बनी बन्धुता --उत्तर० ४।९ 2. रिश्तेदार, बन्धु।

सम्बरः [सम्ब्+अरन्] 1. बाँध, पुल 2. एक हरिण विशेष 3. प्रद्युम्न के द्वारा मारा गया राक्षस देo शम्बर और प्रद्युम्न 4. पहाड़ का नाम,--रम् 1. प्रतिबंध 2. जल। सम०--अरिः,--रिपुः कामदेव।

सम्बलः, लम् [सम्ब्+कलच्] पाथेय, यात्रा के लिए सामग्री, मार्गव्यय, --लम् पानी।

सम्बाध (वि०) [सम्यक् बाधा यत्र--प्रा०ब०] संकुल, भीड़ से युक्त, अवरुद्ध, संकीर्ण--सम्बाधं बृहदपि तद्बभूव वर्त्म--शि० ८।२, व्योम्नि संबाधवर्त्मभिः--रघु० १२।६७,--धः 1. भीड़ का होना 2. दबाव, घिसन, चोट,--स्तनसम्बाधभृरो जघान च--कु० ४।२६ 3. रुकावट, कठिनाई, भय, विघ्न कि० ३।५३ 4. नरक का मार्ग 5. डर भय 6. भग, योनि।

सम्बाधनम् [सं+बाध्+ल्युट्] 1. रोकना, अवरोध 2. भींचना 3. शुल्कद्वार, फाटक ४. योनि, भग 5. सूली, या सूली की नोक 6. द्वारपाल।

सम्बुद्धिः (स्त्री०) [सम्+बुध्+क्तिन्] 1. पूर्ण ज्ञान या प्रत्यक्षज्ञान 2. पूर्ण चेतना 3. पुकारना, बुलाना 4. (व्या० में) संबोधन कारक एङ् ह्रस्वात् संबुद्धेः --पा० ६।१।६९।

सम्बोधः [सम्+बुध्+घञ्] 1. व्याख्या करना, निर्देश देना, सूचित करना 2. पूर्ण या सही प्रत्यक्षज्ञान 3. भेजना, फेंक देना 4. हानि, विनाश।

सम्बोधनम् [सं+बुध्+णिच्+ल्युट्] व्याख्या करना 2. संबोधित करना 3. संबोधन कारक 4. (किसी को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द) विशेषण भामि० ३।१३।

सम्भक्तिः (स्त्री०) [सम्+भज्+क्तिन्] 1. हिस्सा लेना, अधिकार करना 2. वितरण करना।

सम्भग्नः (भू० क० कृ०) [सम्+भञ्ज्+क्त] छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, ग्नः शिव का विशेषण।

सम्भली [सम्+भल्+अच्+ङीष्] दूती, कुटनी देo शम्भली।

सम्भवः [सम्+भू+अप्] 1. जन्म, उत्पत्ति, फूटना, उगना, अस्तित्व प्रियस्य सुहृदो यत्र यस्य तत्रैव संभवो भूयात् मा० ५, मत्तोऽपि कथं वा स्थाद्दृश्य रूपस्य सम्भवः शo १।२६, भग० ३।१८, (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त)--अप्सरःसम्भवैषा --शo १ 2. उत्पादन, पालन-पोषण--मनु० २।२२७ (इस पर कुल्लू० की टीका देखो) 3. कारण, मूल, प्रयोजन 4. मिलाना, मिलाप, सम्मिश्रण 5. संभावना --संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति सम्भवम् सुभा० 6. समकुलता, संगति 7. अनुकूलन, उपयुक्तता 8. करार, पुष्टि 9. चाहना 10. समानता (एक प्रमाण) 11. परिचय 12. हानि, विनाश।

सम्भारः [सम्+भृ+घञ्] 1. एकत्र मिलाना, संग्रह करना 2. तैयारी, सामग्री, आवश्यक वस्तुएँ, अपेक्षित वस्तुएं, उपकरण, किसी कार्य के लिए आवश्यक वस्तुएँ सविशेषमद्य पूजासम्भारो मया संनिधापनीयः --मा० ५, रघु० १२।४, विक्रम० २ 3. अवयव, संघटक, उपादान 4. समुच्चय, ढेर, राशि, संघात, जैसा कि 'शरत्सम्भार' में 5. पूर्णता 6. दौलत, धनाढ्यता 7. संधारण, पालन-पोषण।

सम्भावनम्,--ना [सम्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. विचारना, विचारविमर्श करना रघु० ५।२८ 2. उद्भावना, उत्प्रेक्षा--सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्--काव्य० १० 3. विचार, कल्पना, चिन्तन 4. आदर, सम्मान, मान, प्रतिष्ठा सम्भावनागुणभवेहि तमीश्वराणाम् शo ७।३ 5. शंकायता 6. योग्यता, पर्याप्तता--कि० ३।३९ 7. सक्षमता, योग्यता 8. संदेह 9. स्नेह, प्रेम 10 स्थिति।

सम्भावित [भू० क० कृ०] [सम्+भू+णिच्+क्त] चिन्तित, कल्पित, विचारित--पित्राहं दोषेण सम्भावितः--का० 2. प्रतिष्ठित, सम्मानित, आदरित --भर्तृ० २।३४ 3. उपयुक्त, योग्य, पर्याप्त, युक्त 4. संभव।

सम्भाषः [सम्+भाष्+घञ्] समालाप--मनु० २।१९५, ८।३६४।

सम्भाषा [संभाष+टाप्] 1. प्रयत्न, समालाप 2. अभिवादन 3. आपराधिक संबंध 4. करार, संविदा 5. संकेत--शब्द, युद्धघोष।

सम्भूतिः (स्त्री०) [सम्+भू+क्तिन्] 1. जन्म, उद्भव, उत्पत्ति मनु० २।१४७ 2. सम्मिश्रण, मिलाप 3. योग्यता, उपयुक्तता 4. शक्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्भृत (भू० क० कृ०) [सम्+भृ+क्त] 1. एकत्रित, संगृहीत, संकेन्द्रित 2. उद्यत, तैयार, अन्वित, सज्जित 3. सुसज्जित, संपन्न, युक्त, सहित 4. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5. पूर्ण, पूरा, समस्त 6. लब्ध, अवाप्त 7. ले जाया गया, वहन किया गया 8. पोषित 9. उत्पादित, पैदा किया गया।

सम्भृतिः (स्त्री०) [सम्+भृ+क्तिन्] 1 संग्रह 2. तैयारी, साज-सामान, सामग्री 3. पूर्णता 4. सहारा, संधारण, पोषण।

सम्भेदः [सम्+भिद्+घञ्] 1. टूटना, टुकड़े-टुकड़े करना 2. मिलाप, मिश्रण, सम्मिश्रण—आलोकनिर्झरसम्भेदम्—मा० १०।११, हर्षोद्वेगसम्भेद उच्छ्वसितः—मा० ८ 3. मिलना (जैसे निगाहों का) 4. संगम, (दो नदियों का) मिलन तदुत्तिष्ठ पाराशिसिन्धुसम्भेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशावः, अयमसौ महानद्योः सम्भेदः—मा० ४, मधुमतीसिन्धुसम्भेदपावन ९।

सम्भोगः [सम्+भुज्+घञ्] 1. आनन्द लेना, मजे लेना सस्यसम्भोगफलाः स्त्रियः सुखा० 2. कब्जा, उपयोग, अधिकृति मनु० ८।२०० 3. रति रस, मैथुन, सहवास—सम्भोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानाम् —मेघ० ९५ 4. लम्पट, पांडु 5. शृंगाररस का एक उपभेद, दे० 'शृंगार' के अन्तर्गत।

सम्भ्रमः [सम्+भ्रम्+घञ्] 1. मुड़ना, आवर्तन, चक्कर काटना 2. जल्दबाजी, उतावली 3. अव्यवस्था, विक्षोभ, हड़बड़ी कु० ३।४८ 4. डर, आतंक, भय,—श० १, कि० १५।२ 5. त्रुटि, भूल, अज्ञान 6. उत्साह, क्रियाशीलता 7. आदर, श्रद्धा गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः भर्तृ० २।६३, तव वीर्यवतः कश्चिन्नद्यास्ति मयि सम्भ्रमः—रामा० । सम० **उच्चलित** (वि०) विक्षोभ से उत्तेजित,—**भृत्** (वि०) चढ़ाया हुआ, हड़बड़ाया हुआ।

सम्भ्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+भ्रम्+क्त] 1. आवर्तित 2. हड़बड़ाया हुआ, विक्षुब्ध, विस्मित, व्याकुल।

सम्मत (भू० क० कृ०) [सम्+मन्+क्त] 1. सहमत, स्वीकृत, माना हुआ 2. पसन्द किया हुआ, प्रिय, प्रियतम 3. समान, मिलता-जुलता 4. खयाल किया गया, सोचा गया, विचारा गया 5. अत्यन्त आदृत, सम्मानित, प्रतिष्ठित, **तम्** सहमति, दे० सम्मति।

संमतिः (स्त्री०) [सम्+मन्+क्तिन्] 1. सहमति 2. समर्थन, अनुकूलता, मान्यता, अनुमोदन 3. अभिलाषा, इच्छा 4. आदरज्ञान, आत्मा की जानकारी, सत्यज्ञान 5. सगाई, आदर, प्रतिष्ठा—कथमिव तव सम्मतिर्भवित्री समयनुभिर्मुनिनाबधीरितस्य कि० १०।३६ 6. प्रेम, स्नेह।

सम्मदः [सम्+मद्+अप्] अतिहर्ष, खुशी, प्रसन्नता—शि० १५।७७।

सम्मर्दः [सम्+मृद्+घञ्] 1. आपस में घिसना, घर्षण 2. जमघट, भीड़, जमाव यदयोग्रसत्त्वकल्पोऽभूत्सम्मर्दस्तत्र मज्जताम्—रघु० १५।१०१, मा० १० 3. कुचलना, पैरों से रौंदना 4. संग्राम, युद्ध।

सम्मातुर—**संमातुर** दे० 'सत्' के अन्तर्गत।

सम्मादः [सम्मद्+घञ्] मद, नशा, पागलपन।

सम्मानः [सम्+मन्+घञ्] आदर, प्रतिष्ठा,—**नम्** 1. माप 2. तुलना।

सम्मार्जकः [सम्+मृज्+ण्वुल्] झाड़ने वाला, बुहारी देने वाला, भंगी।

सम्मार्जनम् [सम्+मृज्+ल्युट्] 1. बुहारना, मांजना 2. निर्मल करना, साफ करना, झाड़ना।

सम्मार्जनी [सम्मार्जन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी।

सम्मित (भू० क० कृ०) [सम्+मा+क्त] 1. मापा हुआ, नापा हुआ 2. समान माप, विस्तार या मूल्य का, सम, वैसा ही, बराबर मिलता-जुलता कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे—का० १, रघु० ३।१६ 3. इतना बड़ा जितना कि, पहुँचता हुआ 4. समरूप, समनुकूल, समानुपातिक 5. से युक्त, सुसज्जित।

सम्मिश्र, सम्मिश्रित (वि०) [सम्+मिश्र+अच्, क्त वा] 1. परस्पर मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित।

सम्मिश्रः [—सम्मिश्र, पृषो० रस्य लः] इन्द्रका विशेषण।

सम्मीलनम् [सम्+मील+ल्युट्] (फूल आदि का) बन्द होना, ढकना, लपेटना।

सम्मुख (वि०) [स्त्री०—खा, खी] समुखीन (वि०) [संगतं मुखं यस्य—प्रा० ब०, सर्वस्य मुखस्य दर्शनः—समुख+ख, सम सब्दस्य अत्यलोपः नि०] 1. सामने का, सम्मुख स्थित, आमने सामने, अभिमुखी, सामना करने वाला—कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा—श० १।३१, रघु० १५।१६, शि० १०।८६ 2. मुठभेड़ करने वाला, मुकाबला करने वाला 3. स्वस्थ।

सम्मुखिन् (पु०) [सम्मुखमस्य अस्ति सम्मुख+इनि] दर्पण, शीशा, आईना।

सम्मुर्छनम् [सम्+मुर्छ=ल्युट्] 1. मूर्छा, बेहोशी 2. जमना, गाढ़ा होना 3. गाढ़ा करना, बढ़ाना 4. ऊँचाई 5. विश्वव्याप्ति, सर्वव्याप्ति-विस्तार, पूर्ण व्याप्ति।

सम्मृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+मृज्+क्त]। भली भांति बुहारा गया, मांजा-धोया गया 2. छना हुआ, छाना हुआ।

सम्मेलनम् [सम्+मिल्+ल्युट्] 1. परस्पर मिलना, मिलाप 2. मिश्रण 3. एकत्र करना, संग्रह करना।

सम्मोहः [सम्+मुह+घञ्] 1. घबराहट, अव्यवस्था, प्रेमोन्माद 2. मूर्छा, बेहोशी 3. अज्ञान, मूर्खता 4. आकर्षण।

सम्मोहनम् [सम्+मुह+णिच्+ल्युट्] मन्त्रमुग्ध करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वशीकरण, नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक कु० ३।६६ ।

सम्यच् सम्यञ्च् (वि०) (स्त्री० -समीची) [सम् + अञ्च् + क्विन्, समि आदेशः पक्षे नलोपः] 1. साथ जाने वाला, साथ रहने वाला 2. सही, युक्त, उचित, यथोचित 3. शुद्ध, सत्य, यथार्थ 4. सुहावना, रुचिकर कि च कुलानि कवीनां निसर्ग-सम्यञ्चि रज्जयन्तु-रस० ६, वही, एकरूप 6. सब, पूर्ण, समस्त-(अव्य० -सम्यक्) 1. के साथ, साथ-साथ 2. अच्छा, उचित रूप से, सही ढंग से, शुद्धतापूर्वक, सचमुच सम्य-गियमाह, शं० १, मनु० २।५, १४ 3. यथावत्, यथोचित ढंग से, ठीक-ठीक, सचमुच 4. सम्मान पूर्वक 5. पूरी तरह से, पूर्णतः 6. स्पष्ट रूप से ।

सम्राज् (पुं०) [सम्यक् राजते-सम् + राज् + क्विप्] 1. सर्वोपरि प्रभु, विश्वराट्, विशेषतः वह जो अन्य राजाओं पर शासन करता हो तथा जिसने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान कर लिया है-येनेष्टं राजसूयेन मण्डलरयेश्वरश्च यः। शास्ति यश्चाज्ञया राजः स सम्राट् अमरः, रघु० २।५ ।

सय (स्वा० आ० सयते) जाना, हिलना-जुलना ।

सयूथ्यः [सयूथ + यत्] एक ही वर्ग या जाति का ।

सयोनि (वि०) [समाना योनिर्यस्य ब० स०, समानस्य सादेशः] एक ही कोख का, एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर,-निः 1 सभा या सहोदर भाई 2. सरोता 3. द्वन्द्व का नाम ।

सर (वि०) [सृ + अच्] 1. जाने वाला, गतिशील 2. रेचक, दस्तावर-रः 1. जाना, गति 2. बाण 3. आतंक, दही का चक्का, मलाई 4. समक ई. लड़ी, हार -अयं कण्ठे बाहुः शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः उत्तर० १।३९ २९ 6. जलप्रपात,-रम् 1. जल 2. झील, सरोवर। समः उत्तवः सारस, जम् ताजा मक्खन, नवनीत, नु० शरज ।

सरकः, कम् [सृ + घञ्] 1. सड़क राजमार्ग की अनवरत पंक्ति, 2. मदिरा, उग्र सुरा—चक्रुश्च सह पुरन्ध्रिजनैरयथार्थसिद्धि सरकं महोभृतः—शि० १५। ८०, १०।१२ 3. पीने का बर्तन, शराब पीने का प्याला, कटोरा—शि० १०।२० 5. तेज शराब का वितरण,—कम् 1. जाना, गति 2. तालाब, सरोवर 3. स्वर्ग ।

सरघा [सरं मधुविसेयं हन्ति-सर + हन् + ड स्त्रि०] मधु-मक्खी, -तस्तार सरघाध्याप्तौ स क्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३, शि० १५।२३ ।

सरङ्गः [सृ + अङ्गच्] 1. चतुष्पाद, चौपाया, 2. पक्षी ।

सरजस्,-स्का (स्त्री०), **सरजस्क** [मङ्गरजसा-ब० स०, पक्षे कप् + टाप्] रजस्वला स्त्री ।

सरट् (पुं०) [सृ + अटिः] 1. हवा, वायु 2. बादल 3. छिपकली ४. मधुमक्खी ।

सरटः [सृ + अटच्] 1. वायु 2. छिपकली—हन्या हि सर-टानां च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम्- मनु० १२।५७ ।

सरटिः [सृ + अटिन्] 1. वायु 2. बादल ।

सरट्टः [सृ + अट्ट] छिपकली, गिरगिट ।

सरण (वि०) [सृ + ल्युट] 1. जाने वाला, गतिशील 2. बहने वाला,-णम् 1. प्रगतिशील, जाने वाला, बहनशील 2. लोहे का जंग, मुर्चा ।

सरणिः,-णी (स्त्री०) [सृ + अनि] 1 पथ, मार्ग, सड़क, रास्ता-आनन्द० १८ 2. क्रम, विधि ३. सीधी अनवरत पंक्ति 4. कण्ठरोग ।

सरण्डः [सृ + अण्डच्] 1. पक्षी 2. लम्पट, दुश्चरित्र व्यक्ति 3. छिपकली ४. धूर्त ५. एक प्रकार का अलंकार ।

सरण्युः [सृ + अन्युच्] 1. वायु, हवा 2. बादल 3. जल ४. वसंत ऋतु ५. अग्नि ६. यम का नाम ।

सरत्निः (पुं०, स्त्री०) [सह रत्निना ब० स०] एक हाथ का माप, तु० रत्नि या अरत्नि ।

सरथ (वि०) [समानो रथो यस्य रथेन सह वा-ब० स०] एक ही रथ पर सवार,- थः रथ पर सवार योद्धा ।

सरभस (वि०) [सह रभसेन ब० स०] 1. वेगवान्, फुर्तीला 2. प्रचण्ड, उग्र 3. क्रोधपूर्ण ४. प्रसन्न, -सम् (अव्य०) अत्यंत वेग से ।

सरमा [सृ + अम + टाप्] 1. देवों की कुत्तिया 2. दक्ष की पुत्री का नाम 3. रावण के भाई विभीषण की पत्नी का नाम ।

सरयूः [सृ + अयु] वायु, हवा, यूः-यूः (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है -रघु० ८।९५, १३।६१, ६३, १६।३० ।

सरल (वि०) [सृ + अलच्] 1. सीधा, अनंक 2. ईमानदार, खरा, निष्कपट, निश्छल ४. सौधादादा, भोला भाला, स्वाभाविक-सरले साहसानगं परिहर मा० ६।१०, अयि सरले किमत्र मया भणितया श्रवणम् २,—लः 1. चीड़ का वृक्ष विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम् कु० १।९, मेघ० ५३, रघु० ४।७५ 2 आग। समः अङ्गः सरल वृक्ष का रस, विरोजा, तारपीन, द्रवः सुगंधित धिरोंजा ।

सरव्य दे० शरव्य ।

सरस् (नपुं०) [सृ + असुन्] 1. सरोवर, तालाब, पोखर, पानी का विशाल संग्रह सरस्सामस्मि सागरः-भग० १०।२१ 2. जल। समः जम्,-जन्मन् (नपुं०) -हम् (सरोजम्, सरोजन्मन्, सरोरुहम्) सरसिजम्, सरसिरुहम् कमल-सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम् -श० १।२०, सरोरुहद्युतिमुषः पादांस्तवासेवितुम् -रत्न० १।३०,—जिनी,-वाहिनी 1. कमल का पौधा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रमर कथं वा सरोजिनीं त्यजसि-भामि० १।१०० 2. कमलों से भरा हुआ सरोवर,-रक्षः (सरोरक्षः) तालाब का संरक्षक, रुह (सरोरुह) (नपुं०) कमल, वरः (सरोवरः) ओल ।

सरस (वि०) [रसेन सह ब० स०] 1. रसीला, सजल 2. स्वादु, मधुर 3. आर्द्र शि० ११।५४ 4. पसीने से तर कु० ५।८५ 5. प्रेमपूर्ण, प्रणयोन्मत्त -भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'मधुपूर्ण' भी है) 6. लावण्यमय, प्रिय, रुचिकर, सुन्दर -सरसवसन्त गीत० १ 7. ताजा, नया, सम् 1. ओल, तालाब 2. रसायन विद्या ।

सरसी [सरस्+ङीप्] ओल, पोखर, सरोवर—भामि० २।१४४ । सम० रुह् कमल ।

सरस्वत् (वि०) [सरस्+मतुप्] 1. सजल, जलयुक्त 2. रसीला, मजेदार 3. ललित 4. भावुक, पुं० 1. समुद्र 2. सरोवर 3. नद 4. भैंस 5. वायु का नाम ।

सरस्वती [सरस्वत्+ङीप्] 1. वाणी और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता जिसका वर्णन ब्रह्मा की पत्नी के रूप में किया गया है 2. बोली, स्वर, वचन कु० ४।३९, ४३, रघु० १५।४६ 3. एक नदी का नाम (जो कि मरुस्थल के रेत में लुप्त हो गई है) 4. नदी 5. गाय 6. श्रेष्ठ स्त्री 7. दुर्गा का नाम 8. बौद्धों की एक देवी 9. सोमलता 10. ज्योतिष्मती नामक पौधा ।

सरागः (वि०) [सह रागेण—ब० स०] 1. रंगीन, हलके रंग वाला, रंगदार-(अकारि) सरागमस्या रसनागुणास्पदम्—कु० ५।१० 2. लाल रंग की लाख से रंगा हुआ रघु० १६।१० 3. प्रणयोन्मत्त, प्रेमाविष्ट, मुग्ध -मुनेरपि मनोऽवश्यं सरागं कुरुतेऽङ्गना—मुभा० ।

सराव (वि०) [सह रावेण—ब० स०] 1. शब्द करने वाला, कोलाहल करने वाला, वः 1. ढक्कन, आवरण 2. कसोरा, चाय की तश्तरी, तु० 'शराव' ।

सरिः (स्त्री०) [सृ+इन्] झरना, फौवारा ।

सरित् (स्त्री०) [सृ+इति] 1. नदी अन्या सरितां शतानि हि समुद्रगाः प्रापयन्त्यभिमं -मालवि० ५।१९ 2. धागा, डोरी । सम० नाथः,-पतिः (सरितांपतिः भी), भर्तृ (पुं०) समुद्र, वरा (सरितांवरा) गंगा का नाम, सुतः भीष्म का विशेषण ।

सरित्(री)मत् (पुं०) [सरित्+इमनिच्] 1. गति, सरकना 2. वायु ।

सरिलम् [सृ+इलच्] जल ।

सरीसृपः [कुटिलं सर्पति--सृप्+ईसुक् (लुक्)+डित्यादि +अच्] साँप ।

सरुः [सृ+उन्] तलवार की मूठ ।

सरूप (वि०) [समानं रूपमस्य—ब० स०] 1. समान रूप वाला 2. समान, मिलता-जुलता, वैसे ही -रघु० ६।५९ ।

सरूपता,-त्वम् [सरूप+तल्+टाप्, त्व वा] 1. समानता 2. ब्रह्मरूप हो जाना, मुक्ति के चार प्रकारों में से एक ।

सरोष (वि०) [सह रोषेण ब० स०] 1. क्रुद्ध, रोषपूर्ण 2. कुपित ।

सर्कः [सृ+कः] 1. वायु, हवा 2. मन ।

सर्गः [सृज्+घञ्] 1. छोड़ना, परित्याग 2. सृष्टि अन्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूल्लक्ष्मीस्तु कान्तिप्रदः -विक्रम० १।९ 3. सृष्टिरचना कु० २।६, रघु० ३।२७ 4. प्रकृति, विश्व 5. नैसर्गिक गुण, प्रकृति 6. निर्धारण, संकल्प मुहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते -रघु० ३।५१, १४।४३, शि० १९।३८ 7. स्वीकृति, सहमति 8. अनुभाग, अध्याय, (काव्य आदि का) सर्ग, 9. घाव, हमला, (सेना का) प्रगमन 10. मलत्याग 11. शिव का नाम । सम० क्रमः सृष्टि का क्रम, बन्धः महाकाव्य,-सर्गबन्धो महाकाव्यम्—सा० द० ।

सर्ज् (भ्वा० पर० सर्जति) 1. अवाप्त करना, उपलब्ध करना 2. उपार्जन करना ।

सर्जः [सृज्+अच्] 1. साल का पेड़ 2. साल वृक्ष का चूने वाला रस । सम० निर्यासकः,-मणिः,-रसः विरोजा, लाख ।

सर्जकः [सृज्+ण्वुल्] साल का वृक्ष ।

सर्जनम् [सृज्+ल्युट्] 1. परित्याग, छोड़ना 2. ढीला करना 3. रचना करना 4. मलत्याग 5. सेना का पिछला भाग ।

सर्जिः, सर्जिका, सर्जी (स्त्री०) [सृज्+इन्, सर्जि+कन् +टाप्, सर्जि+ङीष्] सज्जीखार ।

सर्ज्यः, सर्ज्यूः [सृज्+ऊः] व्यापारी-- स्त्री० 1. बिजली 2. हार 3. गमन, अनुसरण ।

सर्पः [सृप्+घञ्] 1. सर्पीली गति, घुमावदार चाल, खिसकना 2. अनुसरण, गमन 3. नाग, साँप । सम० अरातिः, -अरिः 1. नेवला 2. मोर 3. गरुड का विशेषण, अञ्जनः मोर, आवासम्—द्रुमम् चन्दन का वृक्ष, छत्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, लुव, —तृणः नेवला, -द्रुष्टः साँप का विषैला दाँत,-वारकः सपेरा,—भुज् (पुं०) 1. मोर 2. सारस 3. अजगर, —मणिः साँप के फण की मणि, राजः वासुकि ।

सर्पण्यम् [सृप्+ल्युट्] 1. रेंगना, सरकना 2. दक्षगति 3. बाण की भूमि के समानांतर उड़ान ।

सर्पिणी [सृप्+णिनि+ङीप्] 1. साँपिन 2. एक प्रकार की जड़ी बूटी ।

सर्पिन् (वि०) [सृप्+णिनि] 1. रेंगने वाला, सरकने वाला, घुमावदार, टेढ़ी चाल चलने वाला 2. जाने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला, हिलने-जुलने वाला—पूका मन्दविसर्पिणी —पंच० १।२५२।

सर्पिस् (नपुं०) [सृप्+इसि] पिघलाया हुआ घृत, घी (घृत और सर्पिस् के अन्तर को जानने के लिए दे० आज्य)। सम०—**समुद्रः** घृतसागर, सात समुद्रों में से एक।

सर्पिष्मत् (वि०) [सर्पिस्+मतुप्] घी (से प्रसाधित) युक्त।

सर्प् (भ्वा० पर० सर्पति) जाना, हिलना-जुलना।

सर्भः [सृ+भन्] 1. चाल, गति 2. आकाश।

सर्भ् (भ्वा० पर० सर्भति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सर्व (नि० वि०) [सृतमनेन विश्वमिति सर्वम् —कर्तृ० व० व० पुं०, सर्व] 1. सब, प्रत्येक,—उपर्यु परिपश्यतः सर्वं एव दरिद्रति,—हि० २।२, रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय —मेघ० २०।९३ 2. पूर्ण, समस्त, पूरा,—र्वः 1. विष्णु का नाम 2. शिव का नाम। सम०—**अङ्गम्** समस्त शरीर, **अङ्गीण** (वि०) समस्त शरीर में व्याप्त या रोमांचकारी—सर्वाङ्गीणः स्पर्शः सुतस्य किल—विक्रम० ५।११, **अधिकारिन्** (पुं०) -अध्यक्षः अधीक्षक,—**अन्न** सब प्रकार के अन्न को खाने वाला सर्वान्नभोजिन् आदि, **आकारम्** (समास में) सर्वथा, पूर्ण रूप से, पूरी तरह से, **आत्मन्** (पुं०) पूर्ण आत्मा, **सर्वात्मना** सर्वथा, पूरी तरह से, पूर्ण रूप से, **ईश्वरः** सबका स्वामी —ग, **गामिन्** (वि०) विश्वव्यापी, सर्वव्यापक, **जित्** (वि०) सर्वजेता, अजेय, **ज्ञ,—विद्** (वि०) सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञ (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. बुद्ध का विशेषण, **-दमन** (वि०) सब का दमन करने वाला, दुर्निवार, **नामन्** (नपुं०) संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समूह, **-मंगला** पार्वती का विशेषण, **रसः** लाख, बिरोजा, —**लिंगिन्** (पुं०) पाखंडी, छद्मवेशी, ढोंगी, **व्यापिन्** (वि०) सर्वत्र व्यापक रहने वाला,- **वेदस्** (पुं०) सर्वस्व दक्षिणा में देकर यज्ञानुष्ठान करने वाला, —**सहा** (**सर्वंसहा** भी) पृथ्वी, **-स्वम्** 1. प्रत्येक वस्तु, 2. किसी व्यक्ति की समस्त संपत्ति, जैसा कि 'सर्वस्वदंड' में, **°हरणम्** 1. सारी संपत्ति का अपहरण या जब्ती 2. किसी वस्तु का सर्वांश दे० श० १।२४, ६।२, मा० ८।६, भामि० १।६३।

सर्वकषः (वि०) [सर्व+कष—क्त्व, मुम्] 'सब कुछ नष्ट करने वाला', सर्वशक्तिमान्—सर्वकषया भगवती भवितव्यतैव —मा० १।२३, भामि० ४।२,—**वः** दुष्ट, बदमाश।

सर्वतः (अव्य०) [सर्व+तसिल्] 1. प्रत्येक दिशा से, सब ओर से 2. सब ओर, सर्वत्र, चारों ओर 3. पूर्णतः **सर्वथा**। सम०—**गामिन्** (वि०) 1. सर्वत्र पहुँच रखने वाला—कु० ३।१२, —**भद्रः** 1. विष्णु का रथ 2. बाँस 3. एक प्रकार का चित्रकाव्य—उदा० कि० १५।२५ 4. मन्दिर या महल जिसके चारों ओर द्वार हों (इस अर्थ में नपुं० भी) (द्रा) नर्तकी, नटी —**मुख** (वि०) सब प्रकार का, पूर्ण, असीमित—श० ५।२५, (**खः**) 1. शिव का विशेषण 2. ब्रह्मा का विशेषण —कु० २।३, (चारों ओर मुख किये हुए) 3. परमात्मा 4. आत्मा 5. ब्राह्मण. 6. आग 7. स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व+त्रल्] 1. प्रत्येक स्थान पर, सब जगहों पर 2. हर समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व+थाल्] 1. हर प्रकार से, सब तरह से उत्तर० १।५ 1. बिल्कुल, पूर्णतः (प्रायः नकारपरक) 3. पूर्णतः, बिल्कुल, नितान्त 4. सब समय।

सर्वदा (अव्य०) [सर्व+दाच्] सब समय, सदैव, हमेशा।

सर्वरी दे० 'शर्वरी'।

सर्वशः (अव्य०) [सर्व+शस्] 1. पूर्णतः, सर्वथा, पूरी तरह से 2. सर्वत्र 3. सब ओर।

सर्वाणी दे० 'शर्वाणी'।

सर्षपः [सृ+अप, सुक्] 1. सरसों खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति, - सुभा०, मा०—१०।६ 2. एक छोटा बाट 3. एक प्रकार का विष।

सर्ल् (भ्वा० पर० सलति) जाना, हिलना-जुलना।

सलम् [सल्+अच्] जल।

सलज्ज (वि०) [लज्जया सह ब० स०] विनीत, लज्जाशील।

सलिलम् [सलति गच्छति निम्नम् - सल्+इलच्] पानी, सुभगसलिलावगाहाः—श० १।३। सम०- **अर्थिन्** (वि०) प्यासा, **आशयः** तालाब, ताल, पानी की टंकी,—**इन्धनः** बड़वानल,—**उपप्लवः** जलप्लावन, प्रलय. बाढ़,—**क्रिया** 1. अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर श्राद्धदान 2. जलतर्पण, उदककिया,—**जम्** कमल,—**निधिः** समुद्र।

सलील (वि०) [सह लीलया ब० स०] क्रीड़ाशील, स्वेच्छाचारी, शृंगारप्रिय।

सलोकता [समान लोको यस्य—इति सलोकः तस्य भावः तल्+टाप्] एक ही लोक में होना, किसी विशेष देवता के साथ एक ही स्वर्ग में निवास (मुक्ति की चार प्रकार की अवस्थाओं में से एक)।

सल्लकी [शल्+क्वुन्, लुक्, पृषो० शस्य सः] एक प्रकार का पेड़, सलाई का पेड़, दे० 'शल्लकी'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सवः [सु + अच्] 1. सोमरस का निकालना 2. चढ़ावा, तर्पण 3. यज्ञ 4. सूर्य 5. चाद 6. प्रजा, - **वम्** 1. पानी 2. फूलों से लिया गया मधु ।

सवनम् [सु (सू) + ल्युट्] 1. सोम रस का निकालना या पीना 2. यज्ञ—**अथ तं सवनाय दीक्षितः रघु० ८।७५, स० ३।२८ 3. स्नान, शुद्धिपरक स्नान 4. जनन, प्रसव, बच्चे पैदा करना ।

सवयस् [वि०] [समानं वयो यस्य - ब० स०] एक ही आयु का पुं० 2. समवयस्क, समसामयिक 2. एक ही आयु के साथी, स्त्री० सखी, सहेली ।

सवरः [पुं०] 1. शिव का नाम 2. जल ।

सवर्ण [वि०] [समानो वर्णो यस्य ब० स०] 1. एक ही रंग का 2. एक सी सूरत शक्ल का, समान, मिलता-जुलता **दुर्वर्णभित्तिरिह सान्द्रसुधासवर्णा—शि० ४।२८, मेघ० १८, रघु० ९।२१ 3. एक ही जाति का 4. एक ही प्रकार का, एक जैसा 5. एक ही वर्णमाला का, एक ही स्थान से (वागिन्द्रियों द्वारा) उच्चारण किये जाने वाले वर्ण-तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम् पा० १।१।९ ।

सविकल्प, सविकल्पक [वि०] [सह विकल्पेन—ब० स० पक्षे कप्] 1. ऐच्छिक 2. संदिग्ध 3. कर्ता और कर्म के अन्तर को पहचानने वाला, ज्ञाता और ज्ञेय के भेद को जानने वाला (विप० निर्विकल्पक) ।

सविग्रह [वि०] [सह विग्रहेण ब० स०] 1. शरीरधारी, देहधारी 2. सार्थक, अर्थवाला 3. संघर्षरत, झगड़ालू ।

सवितर्क, सविमर्श [वि०] [सह वितर्केण विमर्शेन वा—ब० स०] विचारवान्,—र्कम्,—र्शम् (अव्य०) विचार-पूर्वक ।

सवित् [वि०] (स्त्री० त्री) [सू+तृच्] जनक, उत्पादक, फल देने वाला—सवित्री कामानां यदि जगति जायर्ति भवती गंगा० २३, - पुं० 1. सूर्य उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च—काव्य० ७ 2. शिव 3. इन्द्र 4. मदार का पेड़, अर्क वृक्ष ।

सवित्री [सवितृ + ङीप्] 1. माता कु० १।२४ 2. गाय ।

सविध [वि०] [सह विधया - ब० स०] 1. एक ही प्रकार या ढंग का 2. निकट, सटा हुआ, समीपी भूयो भूयः सविधनगरीरथ्यया पर्यटन्तम्—मा० १।१५, —धम् सामीप्य, पड़ोस—अस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य—काव्य० ९, किमासेव्यं पुंसां सविधमनवद्यं सुचरितैः—१०, नै० २।४७, शि० १४।६९, भामि० २।१८२ ।

सविनय [वि०] [सह विनयेन—ब० स०] विनीत, विनम्र,—यम् (अव्य०) विनयपूर्वक ।

सविभ्रम [वि०] [सह विभ्रमेण ब० स०] क्रीड़ायुक्त, विलासयुक्त ।

सविशेष [वि०] [सह विशेषेण ब० स०] 1. विशिष्ट गुणों से युक्त 2. विशेष, असाधारण 3. विशिष्ट, खास—उत्तर० ४ 4. प्रमुख, श्रेष्ठ, बढ़िया 5. विलक्षण (**सविशेषम्, सविशेषतः** (क्रि० वि०) विशेष कर, खास तौर से, अत्यंत—अनेन धर्मः सविशेषमद्य मे त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भामिनि कु० ५।३८, प्रायः समास में—कु० १।२७, रघु० १६।५३) ।

सविस्तर (वि०) [सह विस्तरेण—ब० स०] विवरण सहित, सूक्ष्म, पूर्ण, - **रम्** (अव्य०) विवरण के साथ, विस्तार पूर्वक ।

सविस्मय (वि०) [सह विस्मयेन— ब० स०] आश्चर्या-न्वित, अचंभे से युक्त, चकित ।

सवृद्धिक (वि०) [सह वृद्धया - ब० स० कप्] जिसका ब्याज मिले, ब्याज से युक्त ।

सवेश (वि०) [सह वेशेन ब० स०] 1. सजा हुआ, अलंकृत, वेशभूषा से युक्त 2. निकट, समीपवर्ती ।

सव्य (वि०) [सू+यत्] 1. बायाँ, बायाँ हाथ 2. दक्षिणी 3. विरोधी, पिछड़ा हुआ, उल्टा 4. सही, - **व्यम्** (अव्य०) जनेऊ का बायें कंधे पर लटकते रहना तु० अपसव्य । सम०—**इतर** (वि०) सही, ठीक, - **साचिन्** (पुं०) अर्जुन का विशेषण - निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्—भग० ११।३३, (महाभारत में नाम की व्याख्या निम्नांकित है - उभौ मे दक्षिणौ पाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे । तेन देवमनुष्येषु सव्य साचीति मां विदु ।।) ।

सव्यपेक्ष (वि०) [व्यपेक्षया सह —ब० स०] संयुक्त, निर्भर-स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चेति विप्रतिषिद्धमेतत् —मा० १, उत्तर० ६ ।

सव्यभिचारः [सह व्यभिचारेण— ब० स०] (तर्क० में) हेत्वाभास के पाँच मुख्य भेदों में से एक, साधारण सव्यपद, व्याप्ता के लिए दे० 'अनैकान्तिक' ।

सव्याज (वि०) [सह व्याजेन—ब० स०] 1. चालबाज 2. बनावटी, दिखावटी, चालाक ।

सव्यापार (वि०) [व्यापारेण सह ब० स०] व्यस्त, व्याप्त, कार्य में नियुक्त ।

सव्रीड (वि०) [व्रीडया सह—ब० स०] 1. लज्जाशील शर्मिन्दा ।

सव्येष्ठ (पुं०), **सव्येष्ठः** [सव्ये तिष्ठति—सव्ये+स्था +ऋन्, क आ, अलुक् स०, षत्वम्] सारथि, रथ हाँकने वाला ।

सशल्य (वि०) [सहशल्येन—ब०स०] 1. काँटेदार 2. नश्तर या काँटों से बिंधा हुआ ।

सशस्य (वि०) [सहशस्येन—ब० स०] सस्य से युक्त, अन्नोत्पादक,—स्या सूर्यमुखी फूल का एक भेद ।

सश्मश्रु (वि०) [सह श्मश्रुणा—ब० स०] दाढ़ी-मूँछ वाला, स्त्री० वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूँछ दिखाई दे ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सश्रीक (वि०) [श्रिया सह—ब० स०, कप्] 1. समृद्धिशाली, सौभाग्यशाली 2. प्रिय, सुन्दर।

सस् (अदा० परः० सस्ति) सोना।

ससत्त्व (वि०) [सह सत्त्वेन ब०स०] 1. जीवन शक्ति से युक्त, ऊर्जस्वी, बलवान्, साहसी 2. गर्भवती, स्त्री गर्भवती स्त्री।

ससन्देह (कि०) [सह सन्देहेन—ब० स०] संदिग्ध,—हः एक अलंकार का नाम दे० 'सन्देह'।

ससनम् [सस्+ल्युट्] पशुमेध, यज्ञीयपशु का वध।

ससन्ध्य (वि०) [सन्ध्यया सह—ब० स०] संध्यासंबंधी, सायंकालीन।

ससाध्वस (वि०) [सह साध्वसेन ब० स०] आतंकित, डरा हुआ, भीरु।

सस्य् दे० सज्ज्।

सस्यम् [सस्+यत्] 1. अनाज, अन्न—(एतानि) सस्यैः पूर्णे जठरपिठरे प्राणिनां संभवन्ति—पञ्च० ५।९७ दे० 'शस्य' भी 2. किसी भी पौधे का फल 3. शस्त्र 4. सद्गुण, खूबी। सम०—इष्टिः (स्त्री०) फसल पक जाने पर नये अन्न से किया जाने वाला यज्ञ,—घ्न (वि०) उपजाऊ,—मारिन् (वि०) अन्न को नष्ट करने वाला, (पुं०) एक प्रकार का चूहा, घूंस,—संवरः साल का पेड़।

सस्यक (वि०) [सस्य+कन्] अच्छे गुणों से युक्त, गुणान्वित, श्लाघ्य, प्रशंसनीय, कः 1. तलवार 2. शस्त्र 3. एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर।

सस्वेद (वि०) [सह स्वेदेन—ब० स०] पसीने से तर, प्रस्विन्न,—दा वह कन्या जिसका हाल में ही कौमार्य-भंग हुआ हो।

सह् i (दिवा० परः० सह्यति) 1. सन्तुष्ट करना 2. प्रसन्न होना 3. सहन करना, झेलना।

ii (स्वा० आ०—सहते, सोढ, नि, परि, वि आदि इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सह् के स् को मूर्धन्य ष् हो जाता है, यदि सह् के ह् को ढ नहीं हुआ) (क) झेलना, सहन करना, भुगतना, गर्भ खाना—खलीलापाः सोढाः—भर्तृ० ८।६, पद्मं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः—कु० ५।४, इसी प्रकार दुःखं, क्लेशं आदि-रघु० १२।६३, ११।५९, भट्टि० १७।५९ (ख) 1. सहन करना, अनुमति देना,—प्रकृतिः सहते सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यथा—कि० २। २१, मेघ० १०५, रघु० १४।६३ 2. क्षमा करना, सहलेना—वारंवारं मयैतस्यापराधः सोढः—हि० ३, भग० ११।४४ 3. प्रतीक्षा करना, सबर करना—द्विजाभ्यहान्यर्हति सोढुमर्हन्—रघु० ५।२५, १५।४५ 4. वहन करना, सहारा देना, ढकेलना श० ३ 5. जीतना, परास्त करना, विरोध करना, मुकाबला करना 6. दबाना, रोकना 7. योग्य होना (तुमुन् के साथ), प्रेर० (साहयति—ते) 1. धारण करवाना, भुगतवाना 2. धारण करने या सहारा देने के योग्य बनना—गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति श० ४।१६, इच्छा० (सिसहिषते) सहन करने की इच्छा करना, उद्—, 1. योग्य होना, शक्ति या ऊर्जा रखना, साहस करना, दिलेरी दिखाना तवानुवृत्तिं न च कर्तुमुत्सहे- कु० ५।६५, "मैं पसंद नहीं करता" आदि भट्टि० ३। ५४, ५।५४, १४।८९, शि० १४।८३ 2. (क) प्रयास करना, प्रणोदित होना कि० १।२६ (ख) हाथ बंधाना, विषण्ण न होना, हिम्मत न हारना भट्टि० १९।१६ 3. आराम में होना कु० ४।३६ 4. आगे बढ़ना प्रयाण करना (इच्छा०) उकसाना, उद्बुद्ध —भट्टि० ९।६९, परि—, सहन करना भट्टि० ९।७३ प्र—, 1. सहन करना, झेलना—न तेजस्तेजस्वी प्रसृतमपरेषां प्रसहते—उत्तर० ६।१४ 2. सामना करना, मुकाबला करना, पछाड़ना—संयुगे सायुगीनं तमुद्यतं प्रसहेत कः—कु० २।५७ 3. चेष्टा करना, प्रयास करना 4. योग्य होना 5. शक्ति या ऊर्जा रखना—दे० 'प्रसह्य' भी, वि—, 1. सहन करना, झेलना रघु० ४।६३, ८।५६ 2. मुकाबला करना, सामना करना, प्रतिरोध करने के योग्य होना—रघु० ४।४९ 3. योग्य होना 4. अनुमति देना 5. इच्छा करना, पसंद करना।

सह (वि०) [सहते—सह्+अच्] 1. सहन करने वाला, झेलने वाला, भुगतने वाला 2. धीर 3. योग्य—दे० 'असह', हः मगसिर का महीना, —हः, हम् शक्ति, सामर्थ्य।

सह (अव्य०) 1. के साथ, मिलकर, साथ-साथ, सहित, से युक्त (करण०)—शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीयते —कु० ४।३३ 2 साथ मिलकर, एक ही समय, युगपत् अस्तोदयौ सहैवासौ कुरुते नृपतिद्विषाम् सुभा०। सम०—अध्यायिन् (पुं०) सहपाठी,—अर्थ (वि०) समानार्थक (थैः) समान या सामान्य उद्देश्य,—उक्तिः (स्त्री०) अलंकारशास्त्र में एक अलंकार का नाम—सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्—काव्य० १०, उदा०—पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः—रघु० ३।६१,—उदकः पर्णकुटी,—उदरः एक ही पेट से उत्पन्न, सगा भाई विक्रमांक० १।२१, —उपमा उपमा का एक भेद, ऊढः, उढजः विवाह के समय गर्भवती स्त्री का पुत्र (हिन्दूधर्मशास्त्रों में वर्णित बारह प्रकार के पुत्रों में से एक),—कार (वि०) 'ह' की ध्वनि से युक्त नल० २।१४, (रः) 1. सहयोग 2. आम का पेड़ क इदानीं सहकारमन्तरेण पल्लवितामतिमुक्तलतां सहते—श० ३,—भक्तिका एक प्रकार का खेल,—कारिन्,—इत्नु (वि०) सहयोग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देने वाला (पुं०) सहप्रशासक, सहकारी, सहकर्मी —कृत (वि०) सहयोग दिया हुआ, से सहायताप्राप्त, —गमनम् 1. साथ जाना 2. किसी स्त्री का अपने मृत पति के शरीर के साथ जलना, विधवा का सती होना —चर (वि०) साथ जाने वाला, साथ रहने वाला उत्तर० ३।८ (रः) 1. साथी, मित्र, सहभागी 2. पति 3. प्रतिभू (स्त्री० री) 1. सहेली 2. पत्नी, सखी, —चारिन् (वि०) साथ रहने वाला, सेवा में उपस्थित रहने वाला, साथ देने वाला, चारः 1. साथ रहना 2. सहमति, सामंजस्य 3. (तर्क० में) हेतु के साथ साध्य का अनिवार्यतः साथ रहना—चारिन् दे० 'सहचर', —ज (वि०) 1. अन्तर्जन्मा, स्वाभाविक, अन्तर्जात 2. आनुवंशिक (जः) 1. सगा भाई 2. नैसर्गिक स्थिति या वृत्ति, °अरिः नैसर्गिक शत्रु, °मित्रम् नैसर्गिक दोस्त, —जात (वि०) प्राकृतिक—दे० 'सहज', —दार (वि०) 1. सपत्नीक 2. विवाहित, —देवः पांडवों का कनिष्ठ भ्राता, नकुल का जुड़वाँ भाई जो अश्विनीकुमारों की कृपा से माद्री के पेट से उत्पन्न हुआ, यह मानव-सौन्दर्य का एक आदर्श माना जाता है, धर्मः समान कर्तव्य, °चारिन्(पुं०)पति, °चारिणी 1. धर्मपत्नी, वैध पत्नी 2. सहकर्मी, पांशुक्रीडिन्, —पांशुक्रिल (पुं०) सखा, बचपन का मित्र, लंगोटिया यार,—भाविन् (पुं०) मित्र, हिमायती, अनुयायी, —भू (वि०) नैसर्गिक, सहजात—रत्न० १।२, —भोजनम् मित्रों के साथ बैठ कर भोजन करना, —मरणम् दे० सहगमन, युध्वन् संगी साथी (युद्ध में साथ देने वाला),—वसतिः, वासः मिलकर रहना —सहवसतिमुपेत्य यैः प्रियाणाः कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः—श० २।३ ।

सहता, ॰त्वम् [सह्+तल्+टाप्, त्व वा] मिलाप, साहचर्य ।

सहन (वि०) [सह्+ल्युट्] सहन करने वाला, झेलने वाला, —नम् 1. सहन करना, झेलना 2. सहिष्णुता, सहनशीलता ।

सहस् (पुं०) [सह्+असि] 1. मंगसिर का महीना 2. शि० ६।४७, १६।४७ 2. जाड़े की ऋतु नपुं० 1. शक्ति, ताकत, सामर्थ्य 2. बल, हिंसा 3. विजय, जीत 4. कान्ति, चमक ।

सहसा [सह्+सो+टा] 1. बलपूर्वक, जबरदस्ती 2. उतावली के साथ, अंधाधुंध, बिना विचारे सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३० 2. अकस्मात्, अचानक मातंग नर्कः सहसोत्पतद्भिः—रघु० १३।११ ।

सहसानः [सह्+असानच्] 1. मोर 2. यज्ञ, आहुति ।

सहस्यः [सहसे बलाय हितः सहस्+यत्] पौष मास, —सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा—कु० ५।२६ ।

सहस्रम् [समानं हसति—हस्+र] हजार । सम०—अंशु, अर्चिः, ॰कर, ॰किरण, ॰दीधिति, ॰धामन्, ॰पाद ॰मरीचि, ॰रश्मि (पुं) सूर्य—श० ७।४, रघु० १३।४४, मुद्रा० ६।१७, ॰अक्ष (वि०) 1. हजार आँखों वाला 2. जागरूक, सजग (क्षः) 1. इन्द्र का विशेषण पुरुष का विशेषण ऋक्० १०।९० 3. विष्णु का विशेषण, —काण्डा सफेद दूब,—हृत्वस् (अव्य०) हजार बार, द (वि०) उदार, दारः विष्णु का चक्र,—पत्रम् कमल—रघु० ७।११,—बाहुः 1. राजा कार्तवीर्य का विशेषण 2. बाण राक्षस का विशेषण 3. शिव का (कुछ के अनुसार विष्णु का) विशेषण, —भुजः,—मूर्धन्, मौलि (पुं०) विष्णु का विशेषण —रोमन् (नपुं०) कंबल,—शीर्षा हींग शिखरः विन्ध्य पर्वत का विशेषण ।

सहस्रधा (अव्य०) [सहस्र+धाच्] हजार भागों में, हजार प्रकार से—दीर्घं किं न सहस्रधाहमथवा रामेण किं दुष्करम् —उत्तर० ६।४० ।

सहस्रशस् (अव्य०) [सहस्र+शस्] हजार-हजार करके ।

सहस्रिन् (वि) [सहस्र+इनि] 1. हजार से युक्त, हजारी, —सहस्री लक्षमीहते—पंच० ५।८२ 2. हजारों से युक्त 3. हजार तक (जुरमाना आदि)—मनु० ८।३७६, पुं० 1. हजार मनुष्यों की टोली 2. हजार सैनिकों का सेनापति ।

सहस्वत् (वि०) [सहस्+मतुप्] समर्थ, शक्तिशाली ।

सहा [सह्+अच्+टाप्] 1. पृथ्वी 2. चौकुंवार का पौधा. केतकी का फूल ।

सहायः [सह एति—सह्+इ+अच्] 1. मित्र, साथी—सहाय-साध्याः प्रदिशन्ति सिद्धयः—कि० १४।४४, कु० ३।२१ 2. अनुयायी, अनुगामी 3. 'सचि' द्वारा बनाया गया मित्र 4. सहायक, अभिभावक 5. चक्रवाक 6. एक प्रकार का गन्धद्रव्य 7. शिव का नाम ।

सहायता,—त्वम् [सहाय+तल्+टाप्, त्व वा] 1. साथियों का समूह 2. साथ, मिलाप, मैत्री 3. सहायता, मदद —कुसुमास्तरणे सहायतां बहुशः सौम्य गतस्त्वभावयोः कु० ४।२५, रघु० ९।१९ ।

सहायवत् (वि०) [सहाय+मतुप्] 1. मित्रों से युक्त 2. मित्रता में आबद्ध, सहायवान्, सहायता प्राप्त ।

सहारः [सह+ऋ+अच्] 1. आम का पेड़ 2. विष्णु का नाम, प्रलय ।

सहित (वि०) [सह्+इतच्, सह्+क्त, हितेन सह वा स+धा+क्त] सहगत या सेवित, साथ-साथ, संयुक्त, से युक्त—पवनाग्निसमागमो ह्ययं सहितं ब्रह्म यदस्त्रतेजसा रघु० ८।४, तम् (अव्य०) साथ-साथ, के साथ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहिष्णु (वि०) [सह्+तृच्] सहन करने वाला, सहनशील सहिष्णु।

सहिष्णु (वि०) [सह्+इष्णुच्] 1. सहन करने के योग्य, झेलने में समर्थ—रविकिरणसहिष्णुःकलेशलेशैरभिन्नम्—शा० २।४ 2. क्षमाशील, तितिक्षु, सहनशील—शूकरस्तरुबत्सहिष्णुना रिपुरुन्मूलयितुं महानपि—कि० २।५०।

सहिष्णुता,—त्वम् [सहिष्णु+तल्+टाप्, त्व वा] 1. सहन करने की शक्ति, सहारा देने की शक्ति 2. क्षमा शीलता, तितिक्षा।

सहुरिः [सह्+उरिन्] सूर्य, स्त्री० पृथ्वी।

सहृदय (वि०) [सह हृदयेन—ब० स०] 1. अच्छे हृदय वाला, कृपालु, करुणाशील 2. निष्कपट, —यः 1. विद्वान् पुरुष 2. (गुणों की) सराहना करने वाला, रसिक, विवेकशील हृदयदेशं कञ्चः सहृदयस्य च करोति—काव्य० १, परिस्फुर्वन्त्यन्ये सहृदयचुरीणाः कतिपये—रस०।

सहृल्लेख (वि०) [हृदयस्य लेखः कालुष्यकरणम्, सह हृल्लेखेन—ब० स०] प्रष्टव्य, संदिग्ध, खम् दूषित आहार।

सहेल (वि०) [सह हेलेन—ब० स०] क्रीडाशील, केलिपरक, विनोदप्रिय।

सहोढः [सह ऊढेन—ब० स०] चुराये गये सामान के साथ पकड़ा गया चोर।

सहोर (वि) [सह्+ओर] अच्छा, श्रेष्ठ,—रः सन्त, महात्मा।

सह्य (वि०) [सह्+यत्] 1. वहन करने के योग्य, सहारा दिये जाने के योग्य, सहन करने योग्य—अपि सह्या ते शिरोवेदना—मुद्रा० ५, मालवि० ३।४ 2. सहन किये जाने योग्य, झेले जाने योग्य कथं तूष्णीं सह्यो निरवधिरिदानीं तु विरहः—उत्तर० ३।४४ 3. सहन करने योग्य 4. सहन करने में समर्थ, सहन करने के योग्य 5. समर्थ, शक्तिशाली,—ह्यः भारत की सात प्रधान पर्वतश्रेणियों में एक, समुद्र से कुछ दूरी पर पश्चिमी घाट का कुछ भाग, सह्याद्रिश्रेणी—रामास्त्रोत्सारितोऽप्यासीत्सह्यालग्न इवार्णवः—रघु० ४।५३, ५२, कि० १८।५, —ह्याः 1. स्वास्थ्य, आरोग्यलाभ 2. सहायता 3. युक्तता, प योग्यता।

सा [सो+ड+टाप्] 1. लक्ष्मी का नाम 2. पार्वती का नाम।

सांयात्रिकः [संयात्रा+ठञ्] समुद्र-व्यापारी, पोतवणिक्, समुद्री व्यापार करने वाला—पंच० १।३१६।

सांयुगीन (वि०) [संयुगे साधुः—ख] युद्धसंबंधी, रणकुशल—रघु० ११।३०, विक्रम० ५, —नः भारी योद्धा, युद्धकुशल सैनिक—कु० २।५७।

सांरावित्यम् [सम्+रु+णिच्=संरावित्+अण्] ऊँची आवाज, भारी कोलाहल—उत्तालाः कटपूतनाप्रभृतयः सांरावित्यं कुर्वते—मा० ५।११, भट्टि० ७।४३।

सांवत्सर (स्त्री०—री), **सांवत्सरिक** (स्त्री०—की) (वि०) [संवत्सर+अण् ठञ् वा] वार्षिक, सालाना, —रः ज्योतिषी, दैवज्ञ।

सांवादिक (वि०) (स्त्री० की) [संवाद+ठञ्] 1. (बोलचाल में) प्रचलित 2. विवादग्रस्त,—कः तार्किक, नैयायिक।

सांवृत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [संवृत्ति+ठक्] भ्रामक, अलौकिक (घटना या तत्त्वविषयक)।

सांशयिक (वि०) (स्त्री० की) [संशय+ठक्] 1. सन्दिग्ध 2. अनिश्चित, अस्थिरमति।

सांसारिक (वि०) (स्त्री०—की) [संसार+ठक्] दुनियावी, लौकिक—सांसारिकेषु च सुखेषु वयं रसज्ञाः—उत्तर० २।२२।

सांसिद्धिक (वि०) [संसिद्धि+ठञ्] 1. प्राकृतिक, स्वतःविद्यमान, सहज, अन्तर्हित 2. स्वभावतः प्रवृत्त, स्वतःस्फूर्त 3. स्वयंभूत 4. अतिप्राकृतिक साधनों से प्रभावित। सम० द्रवः स्वाभाविक तरलता (विप० नैमित्तिक—जनित) केवल जलसम्बंधी।

सांस्थानिकः [संस्थान+ठक्] समानदेशीय, एक ही देश के निवासी।

सांस्रावित्यम् [सम्+स्रु+णिच्+अण्] सामान्य प्रवाह या सरिता।

सांहननिक (वि०) (स्त्री०—की) [संहनन+ठक्] शारीरिक, कायिक।

साकम् (अव्य०) [सह अकति -अक्+अम्, सादेशः] 1. के साथ, साथ मिलकर (करण० के साथ)—यान्तो गुरुजनैः साकं समयमानाः नतांदुजाः भामि० २।१३२, १।४१ 2. उसी समय, युगपत्, एक ही समय।

साकल्यम् [सकल+ष्यञ्] समष्टि, सम्पूर्णता, किसी वस्तु का संपूर्ण या समस्त भाग यावत्साकल्यं—तर्क० ३।१९, (साकल्येन) पूर्णतः, पूरी तरह से, पूर्ण रूप से मनु १२।२५।

साकूत (वि०) [सह आकूतेन ब० स०] 1. साभिप्राय, सार्थक, अर्थवाला साकूतमिदम्—गीत० २, साकूतं वचनम् आदि 2. सप्रयोजन 3. शृंगार प्रिय, स्वेच्छाचारी,—तम् (अव्य०) 1. अर्थतः, सार्थकतापूर्वक जैसा कि 'साकूतं मां निर्वर्ण्य' में 2. सानुराग 3. भावुकता के साथ, मार्मिकतापूर्वक।

साकेतम् [सह आकेतेन—ब० स०] अयोध्या नगरी का नाम -साकेतनाथोऽञ्जलिभिः प्रणम्यः—रघु० १४।१३, १३।७९, १८।३५, अरुणद्यवनः साकेतम्—महा०, —ताः (पुं०, ब० व०) अयोध्या निवासी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साकेतकः [साकेत+कन्] अयोध्या का निवासी।

साक्तुकम् [सक्तूना समाहार सक्तु+ठञ्] भुने हुए अन्न या सत्तू का ढेर, कः जौ।

साक्षात् (अव्य०) [सह+अक्ष+अति] 1 के सामने, आंखों के सामने, दृश्य रूप से, हूबहू, स्पष्ट रूप से 2. व्यक्तिशः, वस्तुतः, मूर्तरूप में साक्षात्त्रियामुपगतामहाय पूर्वम् श० ६।१६, १।६ 3. प्रत्यक्ष, (समास में प्रायः 'शरीरी'—साक्षाद्यमः, या खुला, सीधा—तरसाक्षात्प्रतिषेधः कापाय मा० १।११ (साक्षात्कृ 'अपनी आंखों से देखना, स्वयं जान लेना')। सम०—करणम् 1. दृष्टिगोचर करना 2. इन्द्रियग्राह्य बनाना 3. अन्तर्ज्ञानिमूलक प्रत्यक्षज्ञान,—कारः प्रत्यक्षज्ञान, समझ, जानकारी।

साक्षिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सह अक्षि अस्य, साक्षाद् द्रष्टा साक्षी वा सह+अक्ष+इनि] 1. देखने वाला, अवलोकन करने वाला, सबूत देने वाला, पु० गवाह, अवेक्षक, वक्तमदीद गवाह, आंखों देखी बात बताने वाला, फलं तपः साक्षिषु दृष्टमेतत्तपि कु० ५।६०।

साक्ष्यम् [साक्षिन्+ष्यञ्] 1. गवाही, शहादत—तमेव चाद्याय विवाहसाक्ष्ये रघु० ७।२० 2. अभिप्रमाण, सत्यापन।

साक्षेप (वि०) [सह आक्षेपेण ब० स०] जिसमें आक्षेप या व्यंग्य भरा हो, दुर्वचनयुक्त।

साक्षेप (वि०) (स्त्री० पी) [सत्रि+ठञ्] 1. मित्र-सम्बन्धी 2. मैत्रीपूर्ण, सौहार्दपूर्ण।

साख्यम् [सखि+ष्यञ्] मित्रता, सौहार्द।

सागरः [सगरेण निर्वृत्तः—अण्] 1. समुद्र, उदधि सागरः सागरोपमः (आलं० से भी) दयासागर, विद्यासागर आदि, तु० सगर 2. चार या सात की संख्या 3. एक प्रकार का हरिण। सम०—अनूकूल (वि०) समुद्र के किनारे स्थित, अन्त (वि०) समुद्र की सीमा से युक्त, जिसके अंत और समुद्र छोर हैं, अम्बरा, नेमिः मेखला पृथ्वी, आलयः वरुण का नाम, —उत्थम् समुद्रीनमक,—गा गंगा,—गामिनी नदी।

साग्नि (वि०) [सह अग्निना ब० स०] 1. अग्नि सहित 2. यज्ञाग्नि रखने वाला।

साग्निक (वि०) [सह अग्निना ब० स० कप्] 1. यज्ञाग्नि रखने वाला 2. अग्नि से संबद्ध, कः यज्ञाग्नि रखने वाला गृहस्थ।

साग्र (वि०) [सह अग्रेण—ब० स०] 1. समस्त 2. अतिरिक्त सहित, अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला।

साङ्कर्यम् [सङ्कर+ष्यञ्] मिश्रण, सम्मिश्रण, गड्डमड्ड किया हुआ या मिलाया हुआ घोल।

साङ्कुल (वि०) (स्त्री० ली) [सङ्कुल+ष्यञ्] जोड़ या संकलन से उत्पन्न।

साङ्काश्यम्,—श्या जनक के भ्राता कुशध्वज की राजधानी का नाम।

साङ्केतिक (वि०) (स्त्री० की) [संकेत+ठक्] 1. प्रतीकात्मक, संकेतपरक 2. व्यवहार-सिद्ध, रीत्यनुसार।

साङ्क्षेपिक (वि०) (स्त्री०-की) [संक्षेप+ठक्] संक्षिप्त, संकुचित, छोटा किया हुआ।

साङ्ख्य (वि०) [सङ्ख्या+अण्] 1. संख्या संबंधी 2. आकलन कर्ता, गणक 3. विवेचक 4. विचारक, तार्किक, तर्क कर्ता—त्व गतिः सर्वसाङ्ख्यानां योगिनां त्वं परायणम् —महा०,—ख्यः—ख्यम् छः हिन्दू दर्शनों में से एक जिसके प्रणेता कपिल मुनि माने जाते हैं (इस शास्त्र का नाम 'सांख्य दर्शन' इस लिए पड़ा कि इसमें पच्चीस तत्त्व या सत्य सिद्धांतों का वर्णन किया गया है, इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य पच्चीसवें तत्त्व अर्थात् पुरुष या आत्मा—को अन्य चौबीस तत्त्वों के शुद्ध ज्ञान द्वारा तथा आत्मा की उनसे समुचित भिन्नता दर्शाकर, उसे सांसारिक बंधनों से मुक्त कराना है। सांख्य शास्त्र समस्त विश्व को निर्जीव प्रधान या प्रकृति की विकास मानता है, जब कि पुरुष (आत्मा) सर्वथा निर्लिप्त एक निष्क्रिय दर्शक है। संश्लेषणात्मक होने के कारण वेदान्त से इसकी समानता, तथा विश्लेषणपरक न्याय और वैशेषिक से भिन्नता कही जाती है। परन्तु वेदान्त से भिन्नताकी सब से बड़ी बात यह है कि सांख्य शास्त्र दो (द्वैत) सिद्धान्तों का समर्थक है जिनको वेदान्त नहीं मानता। इसके अतिरिक्त सांख्यशास्त्र परमात्मा को विश्व के स्रष्टा और नियन्त्रक के रूप में नहीं मानता, जिनकी कि वेदान्त पुष्टि करता है), ख्यः सांख्य शास्त्र का अनुयायी भग० ३।५, ५।११। सम० प्रवाहः, —मुख्यः शिव के विशेषण।

साङ्ग (वि०) [सह अङ्गैः—ब० स०] 1. अंगों सहित 2. प्रत्येक भाग से पूर्ण 3. सहायक अंगों से युक्त।

साङ्गतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सङ्गति+ठक्] समाज या संघ से संबंध रखने वाला, साहचर्यशील, कः दर्शक, अतिथि, नवागतुक।

साङ्गम् [सङ्गम+अण्] मिलाप, मिलन तु० संगम्।

साङ्ग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [संग्राम+ठञ्] युद्ध संबंधी, योद्धा, जंगजू, सैनिक, सामरिक—उत्तर० ५।१२, कः सेनाध्यक्ष, सेनापति।

साचि (अव्य०) [सच्+इण्] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, तिर्यक्, वक्रगति से, टेढ़े-टेढ़े,—साचि लोचनयुगं नमयन्ती किं० ९।४४, १०।५७, (साचीकृ मोड़ना, एक ओर झुकाना, टेढ़ा करना—निनाय साचीकृतचारुवक्त्रः रघु० ६।१४, कु० ३ ८, साचीकरोत्याननम् शिशु० ४।१४।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सान्धिव्यम् [सन्धिव+ष्यञ्] 1. मंत्रालय, मन्त्रित्व 2. मन्त्रिमंडल, प्रशासन 3. मैत्री।

सान्नात्यम् [सजाति+ष्यञ्] 1. जाति की समानता, वर्ग, श्रेणी या प्रकार की समानता 2. जाति का समुदाय, समजातीयता।

सान्जनः [सह अञ्जनेन ब० स०] छिपकली।

साद् (चुरा० उभ० साटयति-ते) बतलाना, प्रकट करना।

साद्दृप् (वि०) [सह आदर्पेण—ब० स०] 1. घमंड में भरा या फूला हुआ, अहङ्कारी 2. गौरवशाली, शानदार 3. उभरा हुआ, बढ़ा हुआ (जैसे पानी से) —पच० १,—यम् घमंड के साथ, हेकड़ी के साथ, अकड़ कर, इठला कर, रौब से।

सात् (अव्य०) तद्धित का एक प्रत्यय जो किसी शब्द के साथ इसलिए जोड़ा जाता है कि शब्द से अभिहित वस्तु के साथ किसी वस्तु का पूर्ण परिवर्तन हो जाता है, या वह वस्तु पूर्ण रूप से तदधीन या उसके नियंत्रण में हो जाती है, भस्मसात् भू बिल्कुल राख बन जाना, अग्निसात् कृत्वा मालवि० ५, भस्मसात्कृतवतः पितृद्विषः पात्रसाच्च वसुधां ससागराम्—रघु० ११।८६, विभक्त मेरुर्न पदार्थिसात्कृतः नै० १।१६, इसी प्रकार ब्राह्मणसात्, राजसात् आदि०—शि० १४।३६।

सातत्यम् [सतत+ष्यञ्] निरन्तरता, स्थायित्व।

सातिः (स्त्री०) [सन्+क्तिन्] 1. भेंट, उपहार, दान 2. प्राप्त करना, हासिल करना 3. सहायता 4. विनाश 5. अन्त, उपसंहार 6. तेज या तीव्र वेदना।

सातीनः, सातीनकः [सतीन+अण्, सातीन+कन्] मटर।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०—की) [सत्त्व+ठञ्] 1. वास्तविक, आवश्यक 2. सत्य, असली, प्राकृतिक 3. ईमानदार, निष्कपट, अच्छा 4. सद्गुणी, मिलनसार 5. बलशाली 6. सत्त्वगुण से युक्त 7. सत्त्वगुण से संबद्ध या उत्पन्न—ये च सात्त्विका भावाः—भग० ७।१२, १४।१६ 8. आन्तरिक भावनाओं से उत्पन्न (जैसे प्रेम आदि से) आन्तरिक - तद्भूरिसात्त्विकविकारमपास्तधैर्यमाचार्यं विजयि मान्मथमाविरासीत् भा० १।२६, —कः (आन्तरिक) भावनाओं या संवेगों का बाह्य संकेत, काव्य में भावों का एक प्रकार (भाव आठ हैं : स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः। वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः॥ —सा० द० १९६ 2. ब्राह्मण 3. ब्रह्मा।

सात्यकिः [सत्यक+इञ्] यदुवंशी योद्धा जो कृष्ण का सारथि था तथा जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया।

सात्यवतः, सात्यवतेयः [सत्यवती+अण्, ढक् वा] व्यास मुनि का मातृपरक नाम।

सात्वत् (पुं०) [सातयति सुखयति-सात्+क्विप्, सात् परमेश्वरः, स उपास्त्यत्वेन अस्ति अस्य-सात्+मतुप्, मस्य वः] (कृष्ण आदि का) अनुयायी, उपासक।

सात्वतः (पुं०) 1. विष्णु का नाम 2. बलराम का नाम 3. जाति से बहिष्कृत वैश्य का पुत्र, सः (पुं०, ब० व०) एक जाति का नाम—शि० १६।१४।

सात्वती (स्त्री०) 1. चार प्रकार की नाट्यशैलियों में से एक—दे० सा० द० ४१६ 2. शिशुपाल की माता का नाम—शि० २।११।

सादः [सद्+घञ्] 1. बैठना, बसना 2. क्लान्ति, थकावट उदितोरुसादमतिवेपथुमत्- शि० ९।७७ 3. क्षीणता, दुबला-पतलापन, कृशता—शरीरसादादसमग्रभूषणा रघु० ३।२ 4. ध्वंस, क्षय, लोप, विनाश, विश्रान्ति—गतिविभ्रमसादनीरवा—रघु० ८।५६, नलोद० ३।२४ 5. पीड़ा, संताप 6. स्वच्छता, पवित्रता।

सादनम् [सद्+णिच्+ल्युट्] 1. थकाना, क्लान्त करना 2. नष्ट करना 3. थकावट, क्लान्ति 4. घर, निवासस्थान।

सादिः [सद्—इण्] 1. सारथि, रथवान् 2. योद्धा।

सादिन् (वि०) [सद्+णिच्+णिनि] 1. बैठा हुआ 2. थकाने वाला, नष्ट करने वाला,—पुं० 1. घुड़सवार 2. हाथी पर सवार या रथ में बैठा हुआ।

सादृश्यम् [सदृश+ष्यञ्] 1. समानता, मिलता-जुलतापन, समरूपता सति पुनर्नानाधर्मसादृश्यानि - श० ७, तवाक्षिसादृश्यमिव प्रयुज्यते—कु० ५।३५, ७।१६, रघु० १।४०, १५।६७ 2. प्रतिलिपि, आलोकचित्र, प्रतिमा—मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती —मेघ० ८४।

साद्यस्क (वि०) [सह आद्यन्ताभ्याम्—ब० स०] पूरा, समस्त।

साद्यस्क (वि०) (स्त्री०-स्की) [सद्यस्क+अण्] शीघ्र होने वाला, जिसमें विलंब न हो।

साध् i (स्वा० पर० साध्नोति) 1. पूरा करना, समाप्त करना, संपन्न करना 2. जीतना।

ii (दिवा० पर० साध्यति) पूरा किया जाना, निष्पन्न किया जाना, प्रेर० 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, घटित करना, सम्पन्न करना—अपि साधय साधयेप्सितं नै० २।६२, कु० २।३३, रघु० ५।२५ 2. पूरा करना, समाप्त करना, उपसंहार करना 3. उपलब्ध करना, प्राप्त करना, पाना—रघु० १७।३८, मनु० ६।७५ 4. साबित करना, सिद्ध करना 5. दमन करना, पराजित करना, जीतना (शत्रु आदि का), वध में करना—न हि साम्ना न दानेन न भेदेन च पाण्डवाः, शक्याः साधयितुम् - महा० 6. मार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डालना, नष्ट करना सुप्रीवान्तकमारोदुः सात्यधिष्यास हृत्वरिम् भट्टि० ७।३१ 7. समझना, जानना 8. चिकित्सा करना,स्वस्थ करना 9. जाना, अलग होना, अपने रास्ते लगना, - साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते—रघु० ११।९१, द्र० १।७—प्रार्थने व्यत्तकः साधिर्गमेरर्थे प्रयुज्यते—सा० द० ३।४० 10. (ऋण की भांति) उगाहना 11. पूर्ण कर देना, प्र-(प्रेर०) 1. आगे बढ़ना, उन्नति करना 2. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना 3. उपलब्ध करना, प्राप्त करना 4. पराभूत करना, दबाना 5. वस्त्र धारण करना, सजाना, सम् , 1. सफल होना (आ०) 2. निष्पन्न करना, पूरा करना —मनु० २।१०० 3. सुरक्षित करना, प्राप्त करना 4. वश जाना 5. पुनः प्राप्त करना मनु० ८।५० 6. तय किया जाना या चुकता किया जाना—मनु० ८।९३ 7. नष्ट करना, मार डालना 8. बुझाना।

साधक (वि०) (स्त्री०—धका—धिका) [साध्+ण्वुल्, सिच्+णिच्+ण्वुल् साधादेशः वा] 1. संपन्न करने वाला, पूरा करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, पूर्ण करने वाला 2. दक्ष, प्रभावशाली—कु० २।१२ 3. कुशल, निपुण 4. जादू से कार्य में परिणत करने वाला, ऐन्द्रजालिक 5. सहायक, मददगार।

साधन (वि०) (स्त्री०—नी) [सिध्+णिच् +ल्युट्, साधादेश] निष्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, —नम् 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान करना जैसा कि 'स्वार्थसाधनम्' में 2. पूरा करना, सम्पन्नता किसी पदार्थ की पूर्ण अवाप्ति प्रजार्थसाधने तौ हि पर्यायोद्यतकार्मुकौ रघु० ४।१६ 3. उपाय, तरकीब, किसी कार्य को सम्पन्न करने की तदबीर —शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्, —कु० ५।३३, ५२, रघु० १।९, ३।१२, ४।३६, ६२ 4. उपकरण, अभिकर्ता, कुठारः छिदिक्रियासाधनम् 5. निमित्त-कारण, स्रोत, सामान्य हेतु 6. करण कारक 7. उपकरण, औजार 8. यन्त्र, सामग्री 9. मूल पदार्थ, संघटक तत्त्व 10 सेना या उसका अंग—मनु० ५।१० 11. सहायता, मदद, सहारा 12. प्रमाण, सिद्ध करना, प्रदर्शन करना 13. अनुमान की प्रक्रिया में हेतु, कारण, जो हमें किसी परिणाम पर पहुँचाये—साध्ये निश्चित-मन्वयेन घटित विभ्रत् सपक्षे स्थितिं, व्यावृत्तं च विपक्षतो भवति तत्तत्साधनं सिद्धये मुद्रा० ५।१० 14. दमन करना, जीत लेना 15. जादूमंत्र से वश में करना 16. जादू या मंत्र से किसी कार्य को निष्पन्न करना 17. स्वस्थ करना, चिकित्सा करना 18. वध करना, विनाश करना फलं च तस्य प्रतिसाधनम्-कि० १४।१७ 19. संराधन, प्रसादन, तुष्टीकरण 20. बाहर जाना, कूच करना, प्रस्थान 21. अनुगमन, पीछे चलना 22. साधना, तपस्या 23 मोक्ष प्राप्त करना 24. औषधि निर्माण, भेषज, जड़ी-बूटी 25. (विधि में) ऋण आदि की प्राप्ति के लिए आदेश, जुर्माना करना 26. शरीर का कोई अवयव 27 शिश्न, लिंग 28. औंही, ऐन 29. दौलत 30 मैत्री 31 लाभ, फ़ायदा 32. शव को दाह क्रिया 33. मृतकसंस्कार 34 धातुओं का मारण या जारण। सम०—क्रिया समाप्तिका क्रिया,—पत्रम् लिखित प्रमाण।

साधनता,—त्वम् [साधन+तल्+टाप्, त्व वा] उपायवत्ता, उद्देश्यपूर्ति का जरिया होना -प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता -शि० ९।६।

साधना [सिध्+णिच्+युच्+टाप्, साधादेशः] 1. निष्पन्नता, पूरा करना, पूर्ति 2. पूजा, अर्चा 3. संराधन, प्रसादन।

साधनः [साधु+ष्ठन्, अन्तादेशः] भिक्षुक, भिखारी।

साधर्म्यम् [सधर्म+ष्यञ्] 1. समानता, कर्तव्य की एकता, समानधर्मता—पञ्चमं लोकपालानामूचुः साधर्म्ययोगतः - रघु० १७।७८ 2. प्रकृति की समानता, समान चरित्र, समता, गुणों की समानता - साधर्म्यमुपमा भेदे —काव्य० १०, भग० १४।२, भाषा० १२।

साधारण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [सह धारणया-ब० स० समानस्य+अण्] 1. (दो या दो से अधिक अंकों में) समान, संयुक्त,—साधारणोऽयं प्रणयः-श०३, साधारणो भूषणभूष्यभावः-कु० १।४३,रघु० १६।५, विक्रम० २।१६ 2. मामूली, सामान्य साधारणी न खलु बाधा भवस्य-अश्व० १०, 3. सार्वजनिक, विश्वव्यापी 4. मिश्रित, मिला-जुला समान —उत्कण्ठासाधारणं परितोष-मनुभवामि-श० ४, वीज्यते स हि संसुप्तः दवासासाधारणानिलैः —कु० २।४२ 5. तुल्य, सदृश, समान 6. (तर्क० में) एक से अधिक निदर्शनों से संबद्ध, हेत्वाभास के तीन प्रभागों में से एक, अनैकान्तिक, —णम् 1. सामान्य या सार्वजनिक नियम, सार्वजनिक विधि या नियम 2. जातिगत या निर्विशेष गुण। सम०—धनम् संयुक्त संपत्ति, —स्त्री सामान्य स्त्री, वेश्या, रंडी।

साधारणता, त्वम् [साधारण+तल्+टाप्, त्व वा] 1. सामुदायिकता, विश्वव्यापकता 2. संयुक्त हित।

साधारण्यम् [साधारण+ष्यञ्] समानता—दे० साधारणता।

साधिका [सिध्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, साधादेशः] 1. कुशल या निपुण स्त्री 2. गहरी नींद।

साधित (भू० क० कृ०) [साध्+क्त] 1. निष्पन्न, कार्यान्वित, अवाप्त 2. पूरा किया हुआ, समाप्त 3. सिद्ध, प्रदर्शित 4. प्राप्त, उपलब्ध 5. उन्मुक्त 6. वश में किया हुआ, दमन किया हुआ 7. पूरा किया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ, पुनः प्राप्त 8. दण्डित 9. दापित 10. (दंड या जुर्माना) दिया हुआ।

साधिमन् (पुं०) [साधु+इमनिच्] भद्रता, श्रेष्ठता, उत्तमता।

साधिष्ठ (वि०) [साधु या बाढ की उत्तमावस्था --अतिशयेन साधुः--इष्ठन्] 1. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उचिततम 2. अत्यंत मजबूत, कठोर या दृढ़।

साधीयस् (वि०) [साधु+ईयसुन्, उकारलोपः, साधु या बाढ़ की मध्यमावस्था] 1. अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ --भामि० १।८८ 2. कठोरतर, अपेक्षाकृत मजबूत।

साधु (वि०) (स्त्री० --धु,—ध्वी) [साध्+उन, मध्य० अ० साधीयस्, उत्त० अ० साधिष्ठ] 1. उत्तम, श्रेष्ठ, पूर्ण -यद्यत्साधु न चित्रे स्यात्क्रियते तत्तदन्यथा शि० ६।१३, नागरितोपाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् -१।२ 2. योग्य, उचित, सही जैसा कि 'साधुवृत्त, साधुसमाचार' में 3. गुणी, पुण्यात्मा, सम्माननीय, पवित्रात्मा 4. (क) कृपालु, दयालु—रघु० २।२८, पंच० १।२४७ (ख) शिष्टाचारी (अधि० के साथ) मातरि साधुः—सिद्धा० 5. शुद्ध, पवित्र, गौरव युक्त या श्रेष्ठ (जैसे कि भाषा) 6. सुखकर, रुचिकर, सुहावना —अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा—कि० १।४ 7. भद्र, कुलीन, सत्कुलोद्भव,—धुः 1. भद्रपुरुष, पुण्यात्मा —रघु० १३।५५, २।६२, मेघ० ८० 2. ऋषि, मुनि, संत—साधोः प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् -सुभा० 3. सौदागर -कि० २।७३ 4. जैनसाधु 5. सूदखोर, महाजन (अव्य०) 1. अच्छा, बहुत अच्छा, शाबास, बढ़िया -साधु गीतम् -श० १, साधु रे पिंगलबानर साधु —मालवि० ४ 2. काफी, बस। सम० —धी (वि०) अच्छे स्वभाव का,—वादः 'शाबास' की ध्वनि, 'धन्य' की ध्वनि—शि० १८।५५,--वृत्त (वि०) 1. अच्छे चालचलन का, खरा, सद्गुणी--प्रायेण साधुवृत्तानामस्थाविन्यो विपत्तयः--भर्तृ० २।८५, (यहाँ दूसरा अर्थ भी अभिप्रेत है) 2. खूब गोल-गोल किया हुआ (त्त) सद्गुणी (सद्गुणी (त्तम्) अच्छा आचरण, सद्गुण, पावनता, सचाई, ईमानदारी, इसी प्रकार 'साधु वृत्ति'।

साधुतम् [सह आधुतेन--ब० स०] 1. हाट, दुकान 2. छतरी 3. मोरों का झुंड।

साध्य (वि०) [साध्+णिच्+यत्] 1. कार्यान्वित होने योग्य, निष्पन्न होने योग्य, किया जाने योग्य --साध्ये सिद्धिविधीयतामू हि० २।१५ 2. जो हो सके, जो किया जा सके, प्राप्य 3. सिद्ध किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय -आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वां प्रति का कथा —रघु० १०।२८ 4. स्थापित करने योग्य, पूरा किये जाने योग्य 5. अनुमेय, उपसंहार्य, —अनुमानं तदुक्तं यत्साध्यसाधनयोर्वचः--काव्य० १०, जीते जाने के योग्य, वश्य, जेय—कु० ३।१५ 7. जिसकी चिकित्सा हो सके 8. वध किये जाने योग्य, विनष्ट किये जाने योग्य,—ध्यः दिव्य प्राणियों का एक विशेष वर्ग -तु० मनु० १।२२, ३।१९५ 2. देवता 3. एक मन्त्र का नाम, --ध्यम् 1. निष्पन्नता, पूर्णता 2. वह बात जो अभी सिद्ध की जाती है, प्रमाणित की जाने वाली वस्तु 3. (तर्क० में) प्रस्ताव का विषय, अनुमानप्रक्रिया की बड़ी बात--साध्ये निश्चितमन्वयेन घटितम्·····, यत्साध्यं स्वयमेव तुल्यमुभयोः पक्षे विरुद्धं च यत्--मुद्रा० ५।१०

अभावः मुख्य शर्त या बंधन की कमी,—**सिद्धिः** (स्त्री०) 1. निष्पन्नता 2. उपसंहार।

साध्यता [साध्य+तल्+टाप्] 1. संभावना, शक्यता 2. (रोग का) अच्छा किये जाने की स्थिति में होना। सम०—**अवच्छेदकम्** जिस रूप से किसी के गुणों का पता लगे, लक्षण की जानकारी हो, या मुख्य शर्त का पता चले।

साध्वसम् [साधु+असुन्+अच्] 1. डर, आतंक, भय, त्रास,—कुसुमस्तेयसाध्वसात्—कु० २।३५, ३।५१ 2. जाड्य 3. विक्षोभ, अस्तव्यस्तता।

साध्वी [साधु+ङीप्] 1. सती स्त्री 2. पतिव्रता स्त्री 3. एक प्रकार की जड़।

सानन्द (वि०) [सह आनन्देन ब० स०] प्रसन्न, खुश।

सानसिः [सन्+इण्, असुक्] सोना, सुवर्ण।

सानिका, सानेयिका, सानेयी [सन्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्; सानेयी+कन्+टाप्, ह्रस्वः; सानेय+ङीष्] पीपनी, बाँसुरी।

सानु (पुं०, नपुं०) [सन्+क्नु ण्] 1. चोटी, शिखर, शैल-शिला—सानूनि गन्धः सुरभीकरोति—कु० १।९, मेघ० २, कु० १।६, कि० ५।३६ 2. पहाड़ की चोटी पर समतल भूमि, पठार 3. अंखुवा, अंकुर 4. वन, जंगल 5. सड़क 6. सतह, बिन्दु, किनारा 7. चट्टान 8. हवा का झोंका 9. विद्वान् पुरुष 10. सूर्य।

सानुमत् (पुं०) [सानु+मतुप्] पहाड़,—ती एक अप्सरा का नाम--शं० ६।

सानुक्रोश (वि०) [अनुक्रोशेन सह—ब० स०] दयालु, करुणाकर।

सानुनय (वि०) [सह अनुनयेन -ब० स०] सभ्य, शिष्ट।

सानुबन्ध (वि०) [सह अनुबन्धेन—ब० स०] क्रमबद्ध, अविच्छिन्न।

सानुराग (वि०) [सह अनुरागेण—ब० स०] आसक्त, अनुरक्त, प्रेम में मुग्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सान्तपनम् [सम्+तप्+ल्युट्+अण्] एक कठोर व्रत —नु० मनु० ११।२१२।

सान्तर (वि०) [सह अन्तरेण ब०स०] 1. अन्तर या अवकाशयुक्त 2. झीना।

सान्तानिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्तान+ठक्] 1. फैलने वाला, विस्तारयुक्त (जैसे कि वृक्ष) 2 संतानसंबंधी 3. सन्तान नामक वृक्षसंबंधी,—कः वह ब्राह्मण जो संतान की इच्छा से विवाह करना चाहता है।

सान्त्व् (चुरा० उभ० सान्त्वयति ते) शान्त करना, खुश करना, सुलह करना, ढाढ़स बँधाना, आराम पहुँचाना भट्टि० ३।२३।

सान्त्व, सान्त्वनम्, ना [सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] 1. खुश करना, शान्त करना, ढाढस बँधाना 2. सुलह करना, मृदु या हलका उपाय 3. कृपापूर्ण या ढाढस बँधाने वाले शब्द 4. मृदुता 5. अभिवादन एवं कुशलक्षेम।

सान्दीपनिः [सन्दीपन+इञ्] एक ऋषि का नाम (विष्णुपुराण के अनुसार वह कृष्ण और बलराम के आचार्य थे। गुरुदक्षिणा में उन्होंने अपने पुत्र को जिसे पंचजन नामक राक्षस उठा कर पानी में घुस गया था, वापिस माँगा। श्रीकृष्ण ने पानी में गोता लगाया। वहाँ उस राक्षस को मार डाला, और गुरु के पुत्र को लाकर उनके सुपुर्द कर दिया)।

सान्दृष्टिक (वि०) (स्त्री० की) [सन्दृष्टि+ठक्] देखते ही देखते होने वाला, तात्कालिक,—कम् तात्कालिक परिणाम।

सान्द्र (वि०) [सह अन्द्रेण—ब० स०] 1. पासपास, सटाहुआ, अनन्तराल 2. मोटा, घन, ठोस, गाढ़ा दुर्बंभिर्हि सान्द्रसुशासवर्गा —शि० ४।२८, ६४, ९।१५, रघु० ७।४१, ऋतु० १।२० 3. गुच्छा बना हुआ, संगृहीत 4. हृष्टपुष्ट, मजबूत, हट्टाकट्टा 5. अत्यधिक, विपुल, प्रचुर—सान्द्रानन्दक्षुभितहृदयप्रलवेणेव सिक्तः उत्तर० ६।२९ 6. उग्र, प्रखर, प्रचण्ड—व्याप्तान्तराः सान्द्रकुतूहलानाम् —रघु० ७।११, शि० ९।३७ 7. चिकना, तैलाक्त, स्निग्धिपिण 8. स्निग्ध, मृदु, सौम्य 9. सुखकर, रुचिकर,—द्रः राशि, ढेर।

सान्धिकः [सन्धां सुराच्यावनं शिल्पं वेत्ति—ठक्] कलाल, शराब खींचने वाला।

सान्धिविग्रहिकः [सन्धिविग्रह+ठक्] विदेश मंत्री (राज्य-सचिव) (जो संधि और विग्रह का निर्णय करे)।

सान्ध्य (वि०) (स्त्री०—ध्यी [सन्ध्या+अण्] सायंकालीन, सांझ-संबंधी सान्ध्यं तेजः प्रतिनवजपापुष्परक्तं दधानः मेघ० ३९, कि० ५।८, रघु० ११।६०, शि० ९।१५।

सान्नहनिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्नहन+ठक्] 1. कवचधारी 2. शस्त्र उठाने के लिए कहने वाला, युद्ध के लिए तैयार होने को प्रोत्साहन देने वाला —शि० १५।७२,—कः कवचधारी।

साग्न्यः [सम्+नी+यत्, निo] पीयूक्त कोई पदार्थ जो आहुति के रूप में अग्नि में डाला जाय—शि० ११।४१।

सान्निध्यम् [सन्निधि+ष्यञ्] 1. पड़ोस, सामीप्य—वदनामलेन्दुसान्निध्यतः भा० ३५ 2. उपस्थिति, हाजरी —रघु० ४।६, ७।३, कु० ७।३३।

सान्निपातिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्निपात+ठक्] 1. विविध 2. जटिल 3. कफ, पित्त, वायु तीनों ही दोष जिसके विकृत हो गये हों—कु० २।४८, पंच० १।१२७।

सान्न्यासिक [संन्यासः प्रयोजनमस्य—ठक्] 1. अपने धार्मिक जीवन के चौथे आश्रम में विद्यमान ब्राह्मण देखो सन्न्यासिन् 2. साधु।

सान्वय (वि०) [सह अन्वयेन ब० स०] आनुवंशिक।

सापत्न (वि०) (स्त्री०—त्नी) [सपत्नी+अण्] सौतेली पत्नी से उत्पन्न, त्नाः (पुं० ब० व०) एक ही पति से भिन्न भिन्न पत्नियों के बच्चे।

सापत्न्यम् [सपत्नी+ष्यञ्] 1. सौतेली पत्नी की दशा 2. प्रतिद्वन्द्विता, महत्त्वाकांक्षा, शत्रुता,—न्यः 1. सौतेली पत्नी का पुत्र 2. शत्रु।

सापराध (वि०) [सह अपराधेन—ब० स०] अपराधी, जुर्म करने वाला, मुजरिम।

सापिण्ड्यम् [सपिण्ड+ष्यञ्] समान पितरों को पिंडदान के संबंध, बंधुता, रक्तसम्बन्ध।

सापेक्ष (वि०) [सह अपेक्षया—ब० स०] लिहाज करने वाला, निर्भर।

साप्तपद (वि०) (स्त्री०—दी) **साप्तपदीन** (वि०) [सप्तपद+अण् खञ् वा] सात पग साथ-साथ चलने से बनी हुई (मैत्री)—यतः सतां सप्तपदानि सङ्गतं मनीषिभिः साप्तपदीनमुच्यते—कु० ५।३९ यहाँ द्वितीयार्थ, अधिक अच्छा लगता है, पंच० २।४३, ४।१०३, **दम्, नम्** 1. विवाह के अवसर पर दूल्हा व दुल्हिन द्वारा यज्ञाग्नि की सात प्रदक्षिणाएँ करना (यह विवाहसम्बन्ध को अटूट बना देती है) 2. मित्रता, घनिष्ठता।

साप्तपौरुष (वि०) (स्त्री०—षी) [सप्तपुरुष+अण्] सात पीढ़ियों तक फैला हुआ—मनु० ३।१४६।

साफल्यम् [सफल+ष्यञ्] 1. सफलता, उपयोगिता, उपजाऊपन 2. लाभ, फायदा 3. कामयाबी।

साब्वी (स्त्री०) एक अक्षर का अंगूर।

साभ्यसूय (वि०) [सह अभ्यसूयया—ब० स०] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साम् (चुरा० उभ० सामयति-ते) खुश करना, ढाढस बंधाना, तसल्ली देना।

सामक [सामन्+अण्] मूल ऋण, कः साण. (वह पत्थर जिस पर औजार तेज किये जाते हैं)।

सामग्री [समग्रस्य भावः ष्यञ्, स्त्रीत्वपक्षे ङीषि यलोपः] 1. सामान का संग्रह, या संघात, उपकरण, घर का सामान भर्तृ० ३।१५५ 2. सामान. माल-असबाब।

सामग्र्यम् [समग्र+ष्यञ्] 1. समग्रता, पूर्णता, सम्पादन, समष्टि -प्रायेण सामग्र्यविदौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः- कु० ३।२८ 2. अनुचरवर्ग, नौकर-चाकर 3. उपकरणों का संग्रह, औजारों का भण्डार 4. भण्डार, सामान।

सामञ्जस्यम् [समञ्जस+ष्यञ्] 1. योग्यता, संगति, औचित्य, तु० असमञ्जस 2. यथार्थता, शुद्धता।

सामन् (नपुं०) [सो+मनिन्] 1. खुश करना, शान्त करना, आराम पहुँचाना, तसल्ली देना 2. सुलह करना, शान्ति के उपाय, समझौता-वार्ता करना (राजा के द्वारा अपने शत्रु के प्रति किये जाने वाले चार साधनों में सबसे पहला) -सामदण्डौ प्रशस्यन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये- मनु० ७।१०९ 3. शान्तिदायक या मृदु उपाय, शान्त या ढाढस बंधाने वाला आचरण, मृदुवचन -पंच० ४।२६, ४८ 4. मृदुता, कोमलता 5. छन्दोबद्ध सूक्त या प्रशस्तिमय गान सप्तस्वरोपगीतं स्याम् -रघु० १०।२१, भग० १०।३५ 6. सामवेद का मंत्र 7. सामवेद (सूर्य से उत्पन्न कहा जाता है -तु० मनु० १।२३)। सम०—**उद्भवः** हाथी, **उपचारः**, -**उपायः** मृदु और शान्ति देने वाले उपाय, कोमल या शान्त युक्तियाँ, -**गः** सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाला ब्राह्मण, **ज**, -**जात** (वि०) 1. सामवेद से उत्पन्न 2. शान्ति के उपायों से उद्भूत (-जः,-तः) हाथी--शि० १२।११, १८।३३, **योनिः** 1. ब्राह्मण 2. हाथी, **वादः** कृपावचन, मधुरशब्द,--शि० २।५५, -**वेदः** चारों में से तीसरा वेद।

सामन्त (वि०) [समन्त+अण्] 1. सीमावर्ती, सरहदी. पड़ोसी 2. विश्वव्यापक, -तः 1. पड़ोसी 2. पड़ोस का राजा 3. मांडलिक, कर देने वाला राजा सामन्त-मौलिमणिरञ्जितपादपीठम् -विक्रम० ३।१९, रघु० ५।२८, ६।३२ 4. नेता, नायक, -तम् पड़ोस।

सामयिक (वि०) (स्त्री०-की) [समय+ठक्] 1. प्रथानुसारी, परम्परागत 2. सम्मत, प्रतिज्ञात 3. करार के अनुरूप, नियत समय का पालन करने वाला,--वेवि, सामयिका भवाम: मालवि० १ 4. समय पालक, वक्त का पाबन्द 5. ऋतु के अनुकूल, समय पर होने वाला -किं० २।१० 6. नियत समय पर होने वाला 7. अस्थायी। सम०—**अभाव**; **अस्थायी अनस्तित्व**।

सामर्थ्यम् [समर्थ+ष्यञ्] 1. शक्ति, बल, धारिता, ताकत 2. उद्देश्य की समानता 3. अर्थ की एकता 4. पर्याप्ति, योग्यता 5. शब्दार्थ शक्ति, शब्द की अर्थमूलक शक्ति 6. हित, लाभ 7. दौलत।

सामवायिक (वि०) (स्त्री०-की) [समवाये प्रसृतः ठञ्] 1. किसी संग्रह या संघात से संबद्ध 2. अटूट सम्बन्ध से युक्त, -कः मंत्री, पार्षद।

सामाजिक (वि०) (स्त्री०-की) [समाज:-सभावेशनं प्रयोजनमस्य ठञ्] किसी सभा से सम्बद्ध, कः किसी सभा का सदस्य, सभा में दर्शक तेन हि तत्प्रयोगादेवात्रभवतः सामाजिकानुप्रासमहे मा० १।

सामानाधिकरण्यम् [समानाधिकरण+ष्यञ्] 1. उसी दशा या स्थिति में होना 2. सामान्य पद, कार्य या प्रशासन, समान सम्बन्ध (जैसे कि कारक का) 3. एक ही पदार्थ से संबन्ध होने की स्थिति।

सामान्य (वि०) [समानस्य भावः ष्यञ्] 1. समान, साधारण—सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम्- कु० ७।४४, आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् शुभा०, रघु० १४।३७, कु० २।२६ 2. सदृश, तुल्य, समान 3. मामूली, औसतदर्जे का, बीच का--भर्तृ० २।७४ 4. तुच्छ, नाचीज, नगण्य 5 समस्त, समूचा, -न्यम् 1. समुदाय, साधारणता, विश्वव्यापकता 2. सामान्य या संघटक गुण, साधारणलक्षण 3. समष्टि, समस्तता 4. भेद, प्रकार 5. अनुरूपता 6. समानता, समता 7. सार्वजनिक कार्य 8. साधारण उक्ति उक्तिरर्थान्तरन्यासः श्लाघासामान्यविशेषयो, चन्द्रा० ५।१२० 9. (अलं० में) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित लिखी है—प्रस्तुतस्य यदन्येन गुणसाम्यविवक्षया, एकात्म्यं कथ्यते योगात्सामान्यमिति स्मृतम् काव्य० १०। सम० **ज्ञानम्** लोकविषयक व्यापक बातों का ज्ञान, -**पक्षः** मध्यस्थिति, -**लक्षणम्** व्यापक परिभाषा इति द्रव्यसामान्यलक्षणानि -तर्क०, **वनिता** सामान्य स्त्री, वेश्या, **शास्त्रम्** साधारण नियम।

सामासिक (वि०) (स्त्री०-की) [समास+ठक्] 1. सामूहिक, समस्त को समझने वाला, समुच्चयात्मक 2. संहत, संक्षिप्त 3. समाससंबंधी, -कम् सब प्रकार के समासों का वर्ग द्वन्द्वः सामासिकस्य च भग० १०।३३।

सामि (अव्य०) [साम्+इन्] 1. आधा, अर्थात् अपूर्ण —अभिवीक्ष्य सामिकृतमण्डनं यतीः करुदृष्टसीविगलदंशुकाः स्त्रियः—शि० १३।३१, रघु० १९।१६ 2. कलंकनीय, नीच, निंदनीय।

साभिधेनी [सम्+अभि+धे+ल्युट्, नि०] 1. एक प्रकार के प्रार्थनामंत्र जिनका पाठ यज्ञाग्नि प्रज्वलित करते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समय या समिधाएँ हवन में डालते समय किया जाता है।

सामीची (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति।

सामीप्यम् [समीप+ष्यञ्] पड़ोस, निकटता, आसन्नता, पड़ोसी।

सामुद्र (वि०) (स्त्री० ई) [समुद्र+अण्] समुद्र में उत्पन्न, समुद्रसंबंधी जैसा कि 'सामुद्रं लवणम्' में, —**:** नाविक, समुद्रयात्री, —**म्** 1. समुद्री नमक 2. समुद्रझाग 2. शरीर का चिह्न।

सामुद्रकम् [सामुद्र+कन्] समुद्री नमक।

सामुद्रिक (वि०) (स्त्री—की) [समुद्र+ठक्] 1. समुद्र से उत्पन्न, समुद्रसंबंधी 2. शरीर के चिह्नों से संबद्ध (जो शुभाशुभ फल के सूचक समझे जाते हैं), —**कः** सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता, जो शरीर के लक्षणों को देखकर शुभाशुभ फल का कथन करे,—**कम्** हस्तरेखाओं को देखकर शुभाशुभ फल कहने की विद्या।

साम्पराय (वि०) (स्त्री० यी) [सम्पराय+अण्] 1. युद्धसंबंधी, सामरिक 2. परलोक संबंधी, भावी,—**यः** —**यम्** 1. संघर्ष, झगड़ा 2. भावीजीवन, भवितव्यता 3. परलोक प्राप्ति के उपाय 4. भावी जीवन संबंधी पूछा 5. पूछा, गवेषणा 6. अभिश्चय।

साम्पराधिक (वि०) (स्त्री० की) [सम्पराय+ठक्] 1. सामरिक 2. सैनिक, सामरिक महत्त्व का 3. विपत्तिकारक 4. परलोकसंबंधी, **कम्** युद्ध, लड़ाई, संघर्ष शि० १८।१, **कः** लड़ाई का रथ। सम० **कल्पः** सामरिक महत्त्व का व्यूह।

साम्प्रत (वि०) 1. योग्य, उचित, उपयुक्त—वेणी० ३।३ 2. संगत, **तम्** (अव्य०) 1. अब, इस समय हस्त स्थानं क्रोधस्य साम्प्रतं देव्याः वेणी० १ 2. तत्काल 3. ठीक प्रकार, उचित रीति से, ऋतु के अनुकूल।

साम्प्रतिक (वि०) (स्त्री० की) [सम्प्रति+ठक्] 1. वर्तमान काल संबंधी 2. योग्य, उचित, सही उत्तर० ३।

साम्प्रदायिक (वि०) (स्त्री० की) [सम्प्रदाय+ठक्] परम्पराप्राप्त सिद्धांत से संबद्ध, परम्पराप्राप्त, क्रमागत

साम्बः [सह अम्बया ब० स०] शिव का नाम।

साम्बन्धिक (वि०) (स्त्री० की) [सम्बन्ध+ठक्] संबंध से उत्पन्न, **कम्** संबंध, रिश्तेदारी, मित्रता।

साम्बरी [सम्बर+अण्] छोप] जादूगरनी।

साम्भवी [सम्भव+अण्+ङीप्] 1. लाल लोध्रवृक्ष 2. शक्यता, संभावना।

साम्यम् [सम+ष्यञ्] 1. बराबरी, समता, समतलता —कु० ५।३१ 2. समानता, मिलना-जुलना, सादृश्य —स्पष्टं प्रायत्साम्यमुर्वीधरस्य शि० १८।३८, हि० १।४५, कि० १७।५१ 3. तुल्यता 4. सामंजस्य, 5. अन्तराभाव, निष्पक्षपातिता, ऐकमत्य येषां साम्ये स्थितम् मनः भग० ५।१९।

साम्राज्यम् [सम्राज्+ष्यञ्] 1. विश्व प्रभुता, सार्वभौम-राज्य—साम्राज्यशेषिनो भावाः कुशस्य च लवस्य च —उत्तर० ६।२३, रघु० ४।५ 2. पूर्णाधिपत्य, प्रभुत्व।

सायः [सो+घञ्] 1. अन्त, समाप्ति, अवसान 2. दिन की समाप्ति, संध्या 3. बाण। सम०—**अह्न** (पुं०) (**सायाह्नः**) सांझ, संध्याकाल—भामि० २।१५७।

सायकः [सो+ण्वुल्] बाण तत्साधकुतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम् श० १।११ 2. तलवार। सम०—**पुङ्खः** बाण का पंखीला भाग—**सक्ताङ्गुलिः सायकपुङ्ख एव** रघु० २।३१।

सायनम् [सो+ल्युट्] किसी ग्रह की लंबाई (देशान्तर रेखा) जो वासन्ती-विषवीय बिन्दु से मापी जाती है।

सायन्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [सायम्+टयुल्, तुट्] संध्या-संबंधी, सायंकाल,—**सायन्तनं सवनकर्मणि संप्रवृत्त** —श० ३।२७।

सायम् (अव्य०) [सो+अम्] सायंकाल के समय, प्रयता प्रातरन्वेतु सायं प्रत्युद्व्रजेदपि—रघु० १।९०। सम० —**कालः** संध्या, सांझ, **मज्जनम्** 1. सूर्य का छिपना 2. सूर्य,—**संध्या** 1. सायंकालीन झुटपुटा 2. सायंकालीन प्रार्थना।

सायिन् (पुं०) [साय+इन्] घुड़सवार।

सायुज्यम् [सयुज्+ष्यञ्] 1. घनिष्ठ मेल, समरूपता, लीनता विशेषतः देवता में (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 2. सादृश्य, समानता।

सार (वि०) [सृ+घञ्, सार+अच् वा] 1. आवश्यक 2. सर्वोत्तम, उच्चतम, श्रेष्ठ—मुद्रा० १।१३ 3. वास्तविक, सच्चा, असली 4. मजबूत, बलवान् 5. ठोस, पूर्णतः सिद्ध,—**रः,—रम्**(प्रथम चार अर्थों के अतिरिक्त सर्वत्र पुं०) 1. मत, सत्त्व—स्नेहस्य तत्फलमसौ प्रणयस्य सारः—मा० १।९, असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्, काव्यां वासः सतां सङ्गो गंगाम्भः शंभुसेवनम्—धर्म०१४ 2. निचोड़, रस 3. मज्जा 4. वास्तविक सचाई, मुख्यबिंदु 5. वृक्षों का रस, गोंद जैसा कि खदिरसार या सर्जसार में 6. सारांश, संक्षेप, संक्षिप्त संग्रह 7. सामर्थ्य, बल, शक्ति, ऊर्जा—सारं धरित्रीधरणक्षमं च—कु० १।१७, रघु० २।७४ 8. पराक्रम, शौर्य, साहस रघु० ४।७९ 9. दृढ़ता, कठोरता 10. धन, दौलत—रघु० ५।२६ 11. अमृत 12. ताजा मक्खन 13. हवा, वायु 14. मलाई, दही की मलाई 15. रोग 16. मवाद, पीप 17. मूल्य, श्रेष्ठता, उच्चतम प्रत्यक्षज्ञान 18. शतरंज का मोहरा 19. सोडे का बिना छना अंगारामम्लयुक्त द्रव्य 20. अंग्रेजी के क्लाई-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सैक्स (Climax) नाम अलंकार से मिलता जुलता एक अलंकार - उत्तरोत्तरमुत्कर्षो भवेत्सारः परावधि —काव्य १०, **रम्** 1. जल 2. योग्यता, औचित्य 3. जंगल, झाड़-झंखाड़ 4. इस्पात, लोहा। सम० —**असार** (वि०) मूल्यवान् और निर्मूल्य, मजबूत और दुर्बल, (—**रम्**) 1. मूल्य और निर्मूल्यता 2. मूल-पदार्थ और रिक्तता 3. सामर्थ्य और कमजोर,—**गन्धः** चन्दन की लकड़ी, -**ग्रीवः** शिव जी का नाम, **जम्** ताड़ा मक्खन,—**तरुः** केले का पेड़, **वा** 1. सरस्वती का नाम 2. दुर्गा का नाम,—**द्रुमः** खैर का पेड़, **भङ्गः** बल की हानिः—**भाण्डः** 1. एक प्राकृतिक बर्तन 2. समान का गट्ठा, पण्यसामग्री 3. उपकरण,—**लोहम्** इस्पात।

सारथम् [सरथाभिः निर्वृत्तम्—अण्] मधु, शहद।

सारङ्ग (वि०) (स्त्री०—**गी**) [सृ+अङ्गच्+अण्] चित-कबरा, रंगबिरंगा, **गः** 1. रंगबिरंगा रंग 2. चित्र-मृग, कुरंग—एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा—शं० १।५ 3. हरिण सारङ्गास्ते जलदमयुचः गूढविश्रम्भन्ति मार्गम् मेघ० २० (यहाँ 'हाथी' या 'भ्रमर' के बजाय यही अर्थ लेना ठीक है) 4. सिंह 5. हाथी 6. भौंरा 7. कोयल 8. सारस 9. राजहंस 10 मोर 11. छतरी 12. बादल 13. परिधान 14. बाल 15. दाख 16. शिव का नाम 17 कामदेव 18. कमल, 19. कपूर 20. धनुष 21. चन्दन 22. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 23. आभूषण 24. सोना 25. पृथ्वी 26. रात 17. प्रकाश।

सारङ्गिकः [सारङ्गं हन्ति -ठक्] बहेलिया, चिड़ीमार।

सारङ्गी [सारङ्ग+ङीप्] 1. एक प्रकार का वाद्ययंत्र, सितार, वायलिन 2. चितीदार हरिण।

सारण (वि०) (स्त्री० -**णी**) [सृ+णिच्+ल्युट्] भेजना, बहाना,—**णः** 1. पेचिस 2. पेंदवी बेर,—**णम्** एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

सारणा [सृ+णिच्+युच्—टाप्] धातुओं को विशेष कर पारे को एक प्रकार की प्रक्रिया।

सारणि, णी (स्त्री०) [सृ+णिच्+अनि—पक्षे ङीप्] 1. नहर, नाली, पतनाला, जलमार्ग 2. एक छोटी नदी।

सारण्डः [सृ+णिच्—अण्ड] साँप का अण्डा।

सारतः (अव्य०) [सार—तसिल्] 1. धन के अनुसार 2. बलपूर्वक।

सारथिः [सृ+अथिन् सह रथेन सरथः घोटकः तत्र नियुक्तः इत्—वा] 1. रथवान् स त्रापो न त्वया राजन् न च मारविना श्रुतः—रघु० १।७८, भानलि-सारथिर्यथौ ३।६७ 2. साथी, सहायक रघु० ३। ३७ 3. समुद्र।

सारथ्यम् [सारथि+ष्यञ्] **रथवान् का पद, गाड़ीवान् का पद।**

सारमेयः [सरमा+ढक] कुत्ता,—**यी** [सारमेय—ङीप्] कुतिया।

सारल्यम् [सरल+ष्यञ्] सरलता (आलं० से भी) सीधापन, ईमानदारी, खरापन।

सारवत् (वि०) [सार+मतुप्] 1. तत्त्वयुक्त 2. उप-जाऊ 3. रसीला।

सारस (वि०) (स्त्री०—**सी**) [सरस इदम् अण्] सरोवर संबन्धी, -काव्य० ३।१४, तलोद० २।४०,—**सः** 1. सारस, (कुछ विद्वानों के अनुसार 'हंस') विभि-यमाना त्रिसार सारसानुदस्य तीरेषु तरङ्गसंहतिः कि० ८।३१, शि० ६।७५, १२।४४, मेघ० २१, रघु० १।४१ 2. पक्षी 3. चन्द्रमा,—**सम्** 1. कमल 2. स्त्री की तगड़ी।

सारस (स)नम् [सार+सन्+अच्] 1. तगड़ी, करधनी -सारसनं महानद्दिः—कि० १८।३२ 2. सैनिक पेटी।

सारस्वत (वि०) (स्त्री० **ती**) [सरस्वती देवतास्य, सरस्वत्या इदं वा अण्] 1. सरस्वती देवी से संबद्ध 2. सरस्वती नदी से संबंध रखने वाला कुआँ तासामभिगममपाम् सौम्य सारस्वतीनाम् —मेघ० ४९ 3. वाक्पटु, **तः** 1. सरस्वती नदी के आस पास का प्रदेश 2. ब्राह्मण जाति का एक भेद 3. विन्ध्यदेश, —**ताः** (पुं० ब० व०) सारस्वत देश के निवासी, —**तम्** भाषण, वाक्पटुता, —श्रृङ्गारसारस्वतम् गीत० १२।

सारालः [सार+आ—ला+क] तिल का पौधा।

सारिः,—री (स्त्री०) [सृ+इण्] 1. शतरंज का मोहरा, गोट 2. एक प्रकार की पक्षी। सम०— **फलकः** शत-रंज खेलने की बिसात।

सारिका [सरति गच्छति - सृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का पक्षी, मैना—आलम्बते मुखदोषेण बध्यते शुकसारिकाः—सभा०, सारिका पञ्जरस्थाम् —मेघ० ८५।

सारिन् (वि०) (स्त्री०—**णी**) [सृ—णिनि] 1. जाने वाला, सहारा लेने वाला 2. तत्त्वयुक्त, सारवान्।

सारूप्यम् [सरूप+ष्यञ्] 1. रूप की समता, समा-नता, सादृश्य, सरूपता, मिलना-जुलना मा० ५ 2. देव में लीनता (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 3. (नाटकों में) रूपसादृश्यजन्य भ्रम में किया जाने वाला (श्रोताद्वि) व्यवहार सा० द० ४६४ 4. किसी पदार्थ को या उससे मिलती जुलती सूरत को देख कर आश्चर्य।

सारोष्ट्रिकः [सारः श्रेष्ठः उष्ट्रो यत्र, सारोष्ट्रः देशभेदः तत्र भवः—सारोष्ट्र+ठक्] एक प्रकार का विष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सागंल (वि०) [सह अर्गलेन - ब० स०] 1. रोका हुआ, अवरुद्ध, अड़चन वाला रघु० १।७९ ।

सार्थ (वि०) [सह अर्थेन–ब० स०] 1. अर्थयुक्त, सार्थक 2. सोद्देश्य 3. समानार्थक, समानाशय 2. उपयोगी, कामचलाऊ 5. धनवान्, दौलतमंद, मालदार,—थः 1. धनवान् पुरुष 2. सौदागरों की टोली, व्यापारियों का दल सार्थाः स्वैरं स्वकीयेषु वेश्मसु स्विद्यादिषु --रघु० १७।३४, दे० सार्थवाह 3. दल 4. लहंडा, रेवड़ (एक ही जाति के जानवरों का)—अथ कदाचित्तैरितस्ततो भ्रमद्भिः सार्थाद् भ्रष्टः कथनको नामोष्ट्रो दृष्टः पंच० १ 5. संचय, संग्रह—अभिप्रार्थः-पंच० १, त्वया चन्द्रमसा चातिसन्धीयते कामिजनसार्थः–शि० ३ 6. तीर्थयात्रियों की टोली में से एक । सम० -अ काफले में पला हुआ,—वाहः काफले का नेता, व्यापारी, सौदागर श० ६ ।

सार्थक (वि०) [सह अर्थेन—ब० स० कप्] 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2. उपयोगी, कामचलाऊ, लाभदायक ।

सार्थवत् (वि०) [सार्थ+मतुप्] 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2. बहुत साथियों से युक्त ।

सार्थिकः [सार्थ+ठक्] व्यापारी, सौदागर ।

सार्द्र (वि०) [सह आर्द्रेण—ब० स०] गीला, भीगा, तर, सीला ।

सार्ध (वि०) [सह अर्धेन—ब० स०] जिसमें आधा बढ़ा हुआ हो, जिसमें आधा जुड़ा हुआ हो, जिसमें आधा अधिक हो—'सार्धशतम्' आदि ।

सार्धम् (अव्य०) [सह+ऋध्+अमु] साथ-साथ, के साथ, के साथ में (करण० के साथ)—वनं मया सार्धमसि प्रपन्नः—रघु० १४।६८, मनु० ४।४३, भट्टि० ६।२६, मेघ० ८९ ।

सार्पः (र्प्यः) [सर्पो देवताऽस्य - सर्प+अण्, ष्यञ् वा] आश्लेषा नाम का नक्षत्रपुंज ।

सार्पिष (वि०) (स्त्री०–षी), **सार्पिष्क** (वि०) (स्त्री०—ष्की) [सर्पिस्+अण्, ठक् वा] घी में तला हुआ, घी मिश्रित ।

सार्वकामिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वकाम+ठक्] प्रत्येक इच्छा को शान्त करने वाला, समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला कि० १८।२५ ।

सार्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वकाल+ठक्] नित्य, शाश्वत, सदैव रहने वाला ।

सार्वजनिक (वि०) (स्त्री०—की) **सार्वजनीन** (वि०) (स्त्री०—नी) [सर्वजन+ठक्, खञ् वा] सर्वजन व्यापक, विश्वव्यापी, सर्वत्र धारण संबंधी ।

सार्वज्ञम् [सर्वज्ञ+अण्] सर्वज्ञता, सब कुछ जानना ।

सार्वत्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वत्र+ठक्] प्रत्येक स्थान का, सामान्य, सब स्थानों या परिस्थितियों से संबंध रखने वाला—जैसा कि 'सार्वत्रिको नियमः' में ।

सार्वधातुक (वि०) (स्त्री० की) [सर्वधातु+ठक्] संपूर्ण धातुओं में व्यवहृत होने वाला, गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समस्त रूप में घटने वाला, अर्थात् चार गण और चार लकारों के साथ प्रयुक्त होने वाला, कर्म चार लकारों (लट्, लोट्, लङ, लिङ) के तिआदि प्रत्यय (या लिट् तथा आशीर्लिङ् को छोड़ कर और सभी लकारों के विभक्तिचिह्न और 'श' ध्वनि से प्रकट होने वाले विकरण) ।

सार्वभौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वभूत+ठक्] 1. सभी मूलतत्वों या प्राणियों से संबंध रखने वाला 2. सभी जीवधारी जन्तुओं से युक्त ।

सार्वभौम (वि०) (स्त्री०—भौ) [सर्वभूमि+अण्] समस्त धरती से संबद्ध या युक्त, विश्वव्यापी,- भः 1. सम्राट्, चक्रवर्ती राजा—नाज्ञाभंगं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः मुद्रा० ३।२२ 2. कुबेर की दिशा, उत्तर दिशा का दिक्कुञ्जर ।

सार्वलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वलोक+ठञ्] सब लोकों का ज्ञात, समस्त संसार में व्याप्त, सार्वजनिक, विश्वव्यापी- अनुरागप्रवादस्तु वत्सयोः सार्वलौकिकः मा० १।१३ ।

सार्ववर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्ववर्ण+ठक्] 1. प्रत्येक प्रकार का, हर तरह का 2. प्रत्येक जाति या वर्ण से संबन्ध रखनेवाला ।

सार्वविभक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वविभक्ति+ठञ्] किसी शब्द की सभी विभक्तियों में घटने वाला, सभी विभक्तियों से संबद्ध ।

सार्ववेदसः [सर्ववेदस्+अण्] जो किसी यज्ञ या अन्य पुण्यकार्य में अपना समस्त धन दे देता है ।

सार्ववेद्यः [सर्ववेद+ष्यञ्] सभी वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण ।

सार्षप (वि०) (स्त्री०—पी) [सर्षप+अण्] सरसों का बना हुआ, एम् सरसों का तेल ।

सार्ष्टि (वि०) समान स्थान, दशा, या पद से युक्त समान अधिकार रखने वाला ।

सार्ष्टिता [सार्ष्टि+तल्+टाप्] 1. पद अधिकार व अवस्थाओं में समानता 2. शांति में तथा अन्य विशेषताओं में परमात्मा से समानता, मुक्ति की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था ब्रह्मादो ब्रह्मसार्ष्टितां (प्राप्नोति)- मनु० ४।२३२ ।

सार्ष्टयंम् [सार्ष्टि+ष्यञ्] चौथे दर्जे की मुक्ति ।

सालः [सल्+घञ्] 1. एक वृक्ष का नाम, या उसकी छाल 2. वृक्ष—यथा 'कल्पसाल' 'रसालसाल' में 3. किसी भवन की चारदिवारी या फसील, परकोटा 4. भीत, दीवार 5. एक प्रकार की मछली (समासों के लिए देखो 'शाल' के अन्तर्गत) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सालनः [सल्+णिच्+ल्युट्] साल वृक्ष की राल।

सालः [सालः प्राकारोऽस्ति अस्याः साल+अच्+टाप्] 1. दीवार, फसील 2. घर, मकान दे० शाला। समः—करी 1. घर, में कार्य करने वाला 2. बन्दी (विशेष कर वह जो युद्ध में पकड़ लिया गया हो) वृक्षः दे० 'शालवृक्ष'।

सालारम् [साला+अर्च्+अण्] दीवार में गड़ी खूंटी, ब्रैकेट।

सालूरः [सल्+उरच्, णित्व, वृद्धि] मेंढक, दे० 'शालूर'।

सालोक्यम् [सालोक+ष्यञ्] सीआ, मेथी दे० 'शालेय'।

सालोक्यम् [समानो लोकोऽस्य ब० स० समानस्य सभावः ष्यञ्] 1. उसी लोक या संसार में दूसरे के साथ रहना। 2 उसी स्वर्ग में किसी देवता के साथ रहना।

साल्वः [साल्व+अण्] 1 एक देश का नाम, उसके निवासियों का नाम (इस अर्थ में ब० व०) 2. एक राक्षस का नाम जिसको विष्णु ने मार गिराया था। समः -हन् (पु०) विष्णु का विशेषण।

साल्विकः [साल्व+ठक्] मादा तोता, मैना।

सावः [सु+घञ्] तर्पण।

सावक (वि०) (स्त्री०—विका) [सु+ण्वुल्] उत्पादक, जन्म देने वाला, प्रसवसम्बन्धी, कः जानवर का बच्चा (दे० 'शावक')।

सावकाश (वि०) [सह अवकाशेन ब० स०] जिसको अवकाश हो, अवकाश वाला, खाली, शम् (अव्य०) अवकाश पाकर, अपनी सुविधानुकूल।

सावग्रह (वि०) [अवग्रहेण सह—ब० स०] 'अवग्रह' चिह्न से युक्त।

सावज्ञ (वि०) [सह अवज्ञया ब० स०] घृणा करने वाला, तिरस्कारपूर्ण, असम्मान अनुभव करने वाला।

सावद्यम् [अवद्यन सह—ब० स०] सन्यासी के द्वारा प्राप्य।

सावधान (वि०) [अवधानेन सह ब० स०] 1. ध्यान देने वाला, दत्तचित्त, सचेत, खबरदार 2. चौकस 3. परिश्रमी, नम् (अव्य०) सावधानता से, ध्यान पूर्वक, चौकस होकर।

सावधि (वि०) [सह अवधिना ब० स०] सीमायुक्त, सीमित, समाप्तिका, परिभाषित, सीमाबद्ध—सावधिस्तोयराशिस्ते यशोराशेस्तु नावधिः मुमा०।

सावन (वि०) (स्त्री०—नी) [सवन+अण्] तीनों सवनों से युक्त या सबद्ध,—नः 1. यजमान, जो यज्ञ में पुरोहितों का वरण करता है 2. यज्ञ का उपसंहार, वह संस्कार जिसके द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति दी जाती है 3. वरुण का नाम 4. तीस सौरदिवस का मास 5. सूर्योदय से सूर्यास्त तक का दिन 6. विशेष वर्ष।

सावयव (वि०) [सह अवयवेन ब० स०] भागों या अंगों से बना हुआ—सावयवत्वे चानित्यप्रसङ्गः न ह्यविद्याकल्पितेन रूपभेदेन सावयवं वस्तु संपद्यते शारी०।

सावरः [सवरेण निर्वृत्तः अण्] 1. दोष, अपराध 2. पाप, दुष्टता, जुर्म 3. लोध वृक्ष।

सावरण (वि०) [सह आवरणेन ब० स०] 1. गूढ़, गुप्त, रहस्य 2. ढका हुआ, बन्द।

सावर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी) [सवर्ण+अण्] एक ही रंग का, एक ही जाति का, एक ही रंग या जाति से सबद्ध,—र्णः आठवें मनु का मातृपरक नाम, दे० सावर्णि। समः लक्ष्यम् 1. एक ही रंग या जाति का चिह्न 2 त्वचा, खाल।

सावर्णिः [सवर्णा+इञ्] आठवें मनु का मातृपरक नाम (सूर्य की पत्नी सवर्णा से उत्पन्न)।

सावर्ण्यम् [सवर्ण+ष्यञ्] 1. रंग की एकता 2. किसी श्रेणी या जाति की एकता 3. आठवें मनु द्वारा अधिष्ठित मन्वन्तर।

सावलेप (वि०) [सह अवलेपेन] अभिमानपूर्ण, घमंडी, हेकड़पन, पम् (अव्य०) घमंड से, हेकड़ी के साथ, अहंकारपूर्वक।

सावशेष (वि०) [सह अवशेषेण—ब० स०] 1 अवशिष्ट से युक्त, जिसमें कुछ बाकी बचे 2. अपूर्ण, अधूरा, असमाप्त।

सावष्टम्भ (वि०) [सह अवष्टम्भेन—ब० स०] 1. घमंडी, प्रतिष्ठित, उत्कृष्ट, शानदार 2. साहसी, दृढनिश्चयी 3. दृढ़ता से पूर्ण, भम् (अव्य०) दृढ़निश्चय के साथ, दृढ़तापूर्वक, साहस के साथ।

सावहेल (वि०) [सह अवहेलया ब० स०] तिरस्कारपूर्ण निरादर करने वाला, घृणा करने वाला, लम् (अव्य०) निरादर के साथ, घृणापूर्वक।

सावित्रिका [सु+ण्वुल्—टाप्, इत्वम्] दाई, प्रसव के समय प्रसूता की देखभाल करने वाली।

सावित्र (वि०) (स्त्री० त्री) [सवितृ+अण्] 1 सूर्य संबंधी 2. सूर्य की संतान, सूर्यवंश से संबद्ध, (राजाओं के)—प्रत्यूहिचेदीपितं भूमिपालैः उत्तर० १।४२ 3. गायत्री मंत्र से युक्त, त्रः 1. सूर्य 2. भृगु, गर्ग 3. ब्राह्मण 4. शिव का विशेषण 5. कर्ण का विशेषण, —त्रम् यज्ञोपवीत संस्कार (इसका "सावित्रम्" नाम इसी लिए पड़ा कि इस संस्कार में मुख्यरूप से गायत्री मंत्र का जाप करना पड़ता है, उसी समय यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

सावित्री [सावित्र+ङीप्] 1. प्रकाश की किरण 2. ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र (इसका नाम 'सावित्र' सूर्य को संबोधित करने के कारण पड़ा। इसे गायत्री भी कहते हैं। अधिक जानकारी के लिए दे० 'गायत्री' 3. यज्ञोपवीत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्कार 4. ब्राह्मण की पत्नी 5. पार्वती 6. कश्यप की पत्नी 7. शाल्वदेश के राजा सत्यवान् की पत्नी (सावित्री) राजा अश्वपति की एकमात्र सन्तान थी। वह इतनी सुन्दर थी कि वे सब वर जो उसे पाने की इच्छा से वहाँ आये उसकी अभिराम कान्ति से इतने चकित हुए कि वापिस ही लौट गये। विवाह योग्य अवस्था होने पर सावित्री को वर न मिल सका। अन्त में उसके पिता ने उसे कहा कि अब तुम स्वयं जाओ और अपनी इच्छा के अनुसार वर ढूंढो। सावित्री ने वैसा ही किया, और वर चुन कर वह पिता के पास वापिस आई और कहने लगी कि मैंने शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् को चुन लिया है। राजा द्युमत्सेन उन दिनों अपने राज्य से निकाल दिये गये थे—वे अपनी सहधर्मिणी समेत अन्ध वानप्रस्थ जीवन बिता रहे थे। नारद मुनि भी पधारे हुए उस समय आ गये थे, अब उन्होंने सुना तो राजा अश्वपति तथा सावित्री को कहा कि मुझे इस वर के चुनाव पर खेद है, क्योंकि यद्यपि सत्यवान् सब प्रकार से तुम्हारे योग्य है परन्तु उसकी आयु अब केवल एक वर्ष और, बाकी है, अतः उसको चुनना बीस भर के लिए वैधव्य तथा कष्ट का भार लेना है। उसके मातापिता ने उसके मन को बदलने का घोर प्रयत्न किया परन्तु उस उच्चात्मा सावित्री ने कहा कि मेरा निश्चय अब नहीं बदल सकता। तदनुसार शुभ दिन पर उसका विवाह सत्यवान् से हो गया। विवाह के पश्चात् सावित्री ने अपना सब राजसी ठाठबाट, बहुमूल्य आभूषण तथा वस्त्रादिक उतार दिये और अपने बूढ़े सास ससुर की सेवा करने लगी। यद्यपि बाहर से उसकी मुख-मुद्रा में कुछ प्रकट न होता था, वह प्रसन्न ही रहती थी। परन्तु वह नारद के वचन अभी तक नहीं भूली थी। उसे दिन बीतते देर न लगी। और अन्त में वह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस जिस दिन सत्यवान् का प्राणान्त होना था निकट आ गया। उसने मन में सोचा कि अभी तीन दिन और बाकी है, इन तीनों दिन में कठोर व्रत साधन करूंगी। उसने व्रत किया और चौथे दिन जब सत्यवान् यज्ञ की समिधाएँ लेने के लिए जंगल जाने को तैयार हुआ तो सावित्री भी उसके साथ साथ गई। कुछ समिधाएँ एकत्र करने के पश्चात् सत्यवान् थक कर बैठ गया। और अपना सिर सावित्री की छाती पर रख कर सो गया। उसी समय यमराज आया और सत्यवान् की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर चल दिया। सावित्री ने यह सब देखा और यमराज का पीछा किया। यमराज ने सावित्री को बताया कि सत्यवान् की आयु समाप्त हो चुकी है। परन्तु पतिव्रता सावित्री ने यमराज से ऐसे करुण स्वर में प्रार्थना की कि यमराज ने उसे सत्यवान् के प्राणों को छोड़ कर और कोई वर माँगने के लिए कहा। सावित्री की अनन्य भक्ति एवं पातिव्रत धर्म पर मुग्ध होकर अन्त में यमराज ने सत्यवान् के प्राण भी लौटा दिये। वह प्रसन्न होकर वापिस आई और देखा कि सत्यवान् मानो गहरी निद्रा से जाग गया है। उसने सत्यवान् को सारी घटना बता दी। तथा वे दोनों आश्रम में वापिस आ गये। शीघ्र ही उसके श्वसुर द्युमत्सेन ने यमराज के द्वारा दिये गये वरों का फल पाया। सावित्री पातिव्रत धर्म का उच्चतम आदर्श मानी जाती है। बड़ी बड़ी स्त्रियाँ आज भी विवाहित तरुणी को आशीर्वाद (जन्मसावित्री भव) देती हैं तथा उसके माँगने सावित्री का आदर्श पूरा करने के लिए उसका उदाहरण रखती है) । सम० **पतित-परिभ्रष्ट** पहले तीनों वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जिसका समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, तृ० व्रात्य **व्रतम्** उपेक्ष्यमास के शुक्लपक्ष के अन्तिम तीन दिनों का व्रत जिसे आर्य ललनाएँ विशेष रूप से वैधव्य से बचने के लिए रखती हैं।

सावित्यकः (वि०) [सह आवित्यकारेण—ब० स०] 1 धर्मज्ञ, अहंकार 2. प्रकट।

साशंस (वि०) [सह आशंसया ब० स०] कामना और उत्कण्ठा से पूर्ण, इच्छुक, आशावान्, प्रत्याशी, **-सम्** (अव्य०) कामना पूर्वक, आशा से।

साशङ्क (वि०) [सह आशङ्कया ब० स०] डर अनुभव करने वाला, आशंका करने वाला, डरा हुआ, चकित।

साशपत्नकः (पुं०) एक छोटी छिपकली।

साशूकः (पुं०) गलकंबल, सास्ना।

साश्चर्य (वि०) [सह आश्चर्येण ब० स०] 1. आश्चर्य जनक, विलक्षण 2. आश्चर्यचकित, **यम्** (अव्य०) आश्चर्य के साथ, अद्भुत प्रकार से।

साश्रु (स्त्र) (वि०) [सह अश्रुणा—] 1. कोन या किनारों से युक्त, कोणदार 2. आँसू से भरा हुआ, रोता हुआ।

साश्रुधी [साश्रु धयति साश्रु+धे+क्विप्, संप्रसारण] सास, पति या पत्नी की माता।

साष्टाङ्गम् (अव्य०) [सह अष्टाङ्गैः ब० स०] लंबा दण्डवत् लेट कर (शरीर के आठ अंगों से पृथ्वी को छूकर—दे० 'अष्टन्' के अन्तर्गत 'अष्टांग प्रणाम')

सास (वि०) [सह आसेन] धनुर्धारी—कि० १५।५।

सासूय (वि०) [सह असूयया] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, तिरस्कारपूर्ण, **-यम्** (अव्य०) डाह के साथ, रोषपूर्वक तिरस्कार के साथ—शि० २।२।

सास्ना [सस्+न, णित् वृद्धि] गाय या बैल का गल-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कम्बल,- गः सास्नादिमत्त्वं लक्षणम्-तर्क०, रोमन्थमन्थरचलद्गुरुसास्नमात्रांचक्रे निमीलदलसेक्षणमौक्षकेण शि० ५।६२ ।

साहचर्यम् [सहचर+ष्यञ्]साथ, साथीपना. साथ रहना, साथ साथ बसना, सहवर्तिता कि न स्मरसि यदेकत्र नौ विद्यापरिग्रहाय नानादिग्देशवासिनां साहचर्यमासीत् —मा० १, कु० ३।२१, रघु० १६।८७, वेणी० १।२०, शि० १५।२४ ।

साहनम् [सह्+णिच्+ल्युट्] सहन करना, भुगतना ।

साहसम् [सहसा दलेन निर्वृत्तम् अण्] १. प्रचण्डता, बल, लूटखसोट मनु० ७।४८, ८।९ २. कोई भी घोर अपराध (जैसे कि डाका, बलात्कार, लूट-खसोट आदि महापातक), जघन्य अन्याय, अनधर्षणपरक कार्य ३. क्रूरता, अत्याचार शि० ९।५९ ४. हिम्मत, दिलेरी, उग्र शौर्य—साहसे श्रीः प्रतिवसति—मच्छ० ४ ५. साहसिकता, उद्यमशीलता, औद्धत्य, अविमृष्यकारिता, साहसिक कार्य- तदपि साहसमात्रमिदम् मा० २, किमपरमतो निर्व्यूढं भवत्कार्यसाहसम् ९।१०, कि० १७।४२ ६. सजा, दण्ड ७. जुर्माना (इस अर्थ में पुं० भी), दे० मनु० ८।१३८, याज्ञ० १।१६६, ३६५ ।

सम०—अङ्कुशः १. राजा विक्रमादित्य का विशेषण 2. एक प्रकार का विशेषण ३. एक कौशकार का विशेषण, **अध्यवसायिन्** (वि०) उतावली या जल्दबाजी करने वाला, ऐकरसिक (वि०) निरन्तर प्रचण्डता पर तुला हुआ, भीषण, क्रूर, **कारिन्** (वि०) १. दिलेर, बेधड़क २. जल्दबाज, अविवेकी, स्वाच्छन्द (वि०) जिसमें साहस परिचायक के रूप हो ।

साहसिक (वि०) (स्त्री० की) [साहसे प्रसतः ठक्] 1. बहुत अधिक जोर लगाने वाला, नृशंस, प्रचण्ड, उत्पीडक, क्रूर, लूट-खसोट करने वाला 2. हिम्मती, दिलेर, निर्भीक, विचारशून्य, उद्धत—न साहसिम साहसमसाहिकी शि० ९।५९, केचित्तु साहसिकाश्चित्रालोचनभित्तिः पेटुः कु० ३।४४ पर मल्लि० ३. दण्डमूलक, दण्डात्मक,—कः १. हिम्मतवर, दिलेर, उद्यमी —पंच० ५।३१ २. आततायी, भयंकर, भीषण या बिल विविधशौण्डीपहारप्रियेति साहसिकानां प्रवादः मा० १, साहसिकः खल्वेषः—६ ३. लुटेरा, लूटमार करने वाला, डाकू ।

साहसिन् (वि०) [साहस—इनि] 1. प्रचण्ड, उग्र, भीषण, क्रूर 2. हिम्मती, दिलेर, जल्दबाज, आशुकर्ता ।

साहस्र (वि०) (स्त्री०—स्री) [सहस्र+अण्] 1. हजार से संबंध रखने वाला 2. हजार से युक्त ३. एक हजार में मोल लिया हुआ 4. प्रति हजार दिया हुआ (ब्याज आदि) 5. हजार गुना, - स्रः एक हजार सैनिकों की टुकड़ी, —स्रम् एक हजार का समूह ।

साहस्यकम् [सहाय+वुण्] 1 सहायता, साहाय्य, मदद सकुलोदितमिन्द्रदत्त साहस्यकमुपेयिवान् रघु० १७।५ 2. सहचरत्व, मैत्री, दोस्ती 3. मित्रमंडली ४. सहायक सेना ।

साहायम् [सहाय+ष्यञ्] 1. सहायता, मदद, सहकार 2. सौहार्द, मैत्री ।

साहित्यम् [सहित+ष्यञ्] 1. साहचर्य, भाईचारा, मेल-मिलाप, सहयोगिता 2. साहित्यिक या आलंकारिक रचना—साहित्यक्रीडाकलाविदोनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः भर्तृ० ३।१२ 3. रीतिशास्त्र, काव्यकला—विक्रमांक० १।११, साहित्यदर्पण आदि ४. किसी वस्तु के उत्पादन या सम्पन्नता के लिए सामग्री का संग्रह (संक्रिया अर्थ) ।

साह्यम् [सह+ष्यञ्] 1. संयोजन, मेल, साहचर्य, सहयोग 2. सहायता, मदद । सा० दर्प० (पुं०) साथी ।

साह्वयः [सह आह्वयेन ब० स०] जानवरों को लड़ाई करा कर जुआ खेलना ।

सि (स्या० क्रया० उभ० सिनोति, सिनुते; सिनाति, सिनीते) 1. बांधना, कसना, जकड़ना 2. जाल में फंसाना ।

सिंहः [हिंस्+अच्, पृषो०] 1. शेर (कहा जाता है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति 'हिंस' धातु से हुई है—तु० भवेद्वर्णागमात्क्रमः सिंहो वर्णविपर्ययात् सिद्धा०) न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः—सुभा० 2. सिंह राशि का चिह्न 3. (समास के अन्त में प्रयुक्त) सर्वोत्तम, श्रेष्ठों में प्रमुख, उदा० रघुसिंह, पुरुषसिंह । सम० अवलोकनम् शेर का पीछे मुड़ कर देखना,—न्यायः सिंहावलोकन का न्याय, वस्तु का प्राक् पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती संबंध बतलाने के लिए प्रयुक्त, व्याख्या के लिए 'न्याय' के अन्तर्गत देखिए,—आसनम् राजगद्दी, सम्मान का आसन, (नः) एक प्रकार का रतिबन्ध, —आस्यः हाथों की विशेष स्थिति,—ध्वजः शिव का विशेषण,—तलम् अंजलि, —तुण्डः एक प्रकार की मछली, दण्डः शिव का विशेषण, वर्ष (वि०) शेर की भांति गर्वीला,—ध्वनिः—नादः 1. शेर की दहाड़ कु० १।५६, मृच्छ० ५।२९ 2. युद्ध-ध्वनि, ललकार, द्वारम् मुख्य दरवाजा,—यात्रा रथा पार्वती देवी, लीलः एक प्रकार का संभोग, —वाहनः शिव का विशेषण,—संहनन (वि०) 1. शेर की भांति मजबूत 2. सुन्दर, (नम्) शेर का मार डालना ।

सिंहलम् [सिंहोऽस्त्यस्य लच्] 1. टिन 2. पीतल 3. बल्क, वृक्ष की छाल ४. लङ्काद्वीप (प्राय० ब० व०)—सिंहलेभ्यः प्रायेणच्छत्रा सिंहलेश्वरदुहितुः फलकासादनम्—रत्ना० १, —लाः (पुं० ब० व०) लंका देशवासी लोग ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंहलकम् [सिंहल+कन्] लंका का द्वीप :

सिंहाणम् (नम्) [शिङ्घ+आनच्, पृषो०] 1. लोहे का जंग 2. नाक का मल।

सिंहिका [सिंह+कन्+टाप्, इत्वम्] राहु की माँ। सम०—तनयः, पुत्रः—सुतः—सूनुः राहु के विशेषण।

सिंही [सिंह+ङीष्] 1. शेरनी 2. राहु की माता का नाम।

सिकता [सिक्+अतच्+टाप्] 1. रेतीली जमीन 2. रेत (प्रायः ब० व० में)—लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्—भर्तृ० २।५ 3. बजरी, पथरी (एक रोग)।

सिकतिल (वि०) [सिकता+इलच्] रेतीला,—भर्तृ० ३।३८।

सिक्त (भू० क० कृ०) [सिच्+क्त] 1. छिड़का गया, पानी से गीला किया गया 2. तर किया गया, गीला किया गया, भिगोया गया 3. गर्भित, दे० 'सिच्'।

सिक्थः [सिच्+थक्] 1. उबले हुए चावल 2. भात का पिंड—प्रासोद्गलितसिक्थेन का हानिः करिणो भवेत्—सुभा०, क्थम् 1. मधुमक्खियों से बनाया गया मोम 2. सीसा।

सिक्थम् दे० सिक्थः।

सिक्थ्यः (पुं०) स्फटिक, शीशा।

सिङ्घ (धा) नम् [शिङ्घ+आनच्, पृषो०] 1. नाक का मल 2. लोहे का जंग।

सिङ्घिका [शिङ्घ+णिनि+ङीष्, पृषो०] नाक।

सिच् (तुदा० उभ० सिंचति-ते, सिक्त) (इकारान्त और उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सिच् के स का ष हो जाता है) 1. छिड़कना, छोटी-छोटी बूंदों में बखेरना—भट्टि० १९।२३ 2. सींचना, तर करना, भिगोना, गीला करना मेघ० २६, मनु० ९।२५५ 3. उंडेलना, उत्सर्जन करना, निकालना, ढालना रघु० १६।६६ 4. भरना, बूंद-बूंद टपकाना, डालना जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्—भर्तृ० २।२३ 5. उंडेल देना, प्रस्तुत करना अन्यथा तिलोदकं में सिञ्चतम्—श० ३, प्रेर० (सेचयति-ते) छिड़कवाना, इच्छा० (सिसिक्षति-ते) छिड़कने की इच्छा करना, अभि 1 छिड़कना, उंडेलना, सींचना, गीला करना, बौछार करना (आलं० से भी)—अथ क्षुरभिषेक्तुं तास्तदाम्भोभिरीयुः शि० ७।७५, भट्टि० ६।२१, १५।३ 2. लेप करना, संस्कारित करना, नियत करना (सिर पर जल के छींटे देकर) मुकुट पहनाना, राज्याभिषेक करना, पदासीन करना—अग्निवर्णमभिषिच्य राघवः स्वे पदे रघु० १९।१, १७।१३, विक्रम० ५।२३ (प्रेर०) ताज पहनना, राजगद्दी पर बिठाना, आ—, छिड़कना (प्रेर०) छिड़कवाना, उंडलवाना—तप्तमासेचयेत्तैलं वक्त्रे श्रोत्रे च पार्थिवः मनु० ८।२७२, उद्—, खिन्नकना, उंडेलना, फैलाना (कर्मवा०) 1. तेज प्रवाहित होना, झाग उगलना, ऊपर की ओर फेंका जाना 2. फूल जाना, उन्नत होना, अहंकार युक्त होना न तस्योत्सिषिचे मनः—रघु० १७।४३ 3. बाधित होना—मनु० ८।७२, (प्रेर०) घमंड से भरना, नि—, छिड़कना, उंडेलना, ऊपर डाल देना, अन्दर डालना रघु० ३।२६, श० ४।१३, कु० २।५७ 2. गर्भयुक्त करना—निषिञ्चन्याधवीमेतां लतां कौन्दीं च नर्तयन् विक्रम० २।४, (यहां पहला अर्थ भी अभिप्रेत है), परि—छिड़कना, उंडेलना।

सिञ्चयः [सिच्+अयच्, कित्] वस्त्र, कपड़ा।

सिञ्चिलः [सिच्+इलच्, पृषो०] पीपलामूल।

सिञ्ज्ञा [=शिञ्जा, पृषो०] धातु के बने आभूषणों की झनकार।

सिञ्जित्रम् [=शिञ्जित्र, पृषो०] झनझनाहट, झनकार—आदित्सुभिर्नूपुरसिञ्जितानि—कु० १।३४, विक्रम० ४।१४।

सिट् (भ्वा० पर० सेटति) अवज्ञा करना, घृणा करना।

सित (वि०) [सो (सि)+क्त] 1. सफेद 2. बंधा हुआ, कसा हुआ, जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ 3. चिरा हुआ 4. अवसित, समाप्त, —तः 1. सफेद रंग 2. चन्द्रमास का शुक्ल पक्ष 3. शुक्रग्रह 4. बाण,—तम् 1. चाँदी 2. चन्दन 3. मूली। सम० अग्रः कौंटा, —अपाङ्गः मोर,—अभ्रः,—अभ्रम् कपूर, —अम्बरः श्वेतवस्त्रधारी संन्यासी, —अर्जकः सफेद तुलसी, —अर्जकः अर्जुन का विशेषण, असित बलराम का विशेषण, आदि राव, गुड़, आलिका कोकाला, सितुही, इतर (वि०) जो श्वेत न हो अर्थात् काला,—उद्भवम् सफेद चन्दन, उपलः स्फटिक, उपला मिश्री, चीनी,—करः 1. चन्द्रमा 2. कपूर, धातुः चाक, खड़िया, रश्मिः चाँद, वाजिन् (पुं०) अर्जुन का नाम,—शर्करा चीनी, —शिम्बिकः गेहूँ,—शिवम् सेंधा नमक,—शूकः जौ।

सिता [सित+टाप्] चीनी, शक्कर,—पिलेन दूने रसने सितापि तिक्तायते हंसकुलावतंसः—नै० ३।९४, भामि० ४।१३ 2. ज्योत्स्ना 3. मनोरमा स्त्री 4. मदिरा 5. सफेद दूब 6. चमेली, बेला।

सिति (वि०) [सो+क्तिच्] 1. सफेद 2. काला,—तिः सफेद या काला रंग। सम०—कण्ठ,—वासस् दे० शितिकंठ, शितिवासस्।

सिद्ध (भू० क० कृ०) [सिध्+क्त] 1. सम्पन्न, कार्यान्वित, अनुष्ठित, अवाप्त, पूर्ण 2. प्राप्त, उपलब्ध, अवाप्त 3. काबायाब, सफल 4. बसा हुआ, स्थापित नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि—उत्तर० १।१४ 5. साबित, प्रमाणित तस्मादिन्द्रियं प्रत्यक्षप्रमाणमिति सिद्धम्—तर्क०, मनु० ८।१७८ 6. वैध, न्याय्य (जैसे कि नियम) 7. सच माना हुआ 8. फैसला किया हुआ, निर्णीत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जैसे कि कोई कानूनी अभियोग) 9. दिया गया, भुगताया गया, (ऋण आदि) चुकता किया गया 10. पकाया गया, (भोजन) बनाया गया 11. परिपक्व, पका हुआ 12. सर्वथा तैयार किया गया, मिश्रित, (वनस्पति आदि) एक पकाई गई 13. (रुपया आदि) तैयार 14. वश में किया गया, जीता गया, (जादू के द्वारा) अधीन किया गया 15. वशीभूत किया गया, मंगलप्रद बना हुआ 16. पूर्णतः विज्ञ या दक्ष, प्रवीण जैसा कि 'रससिद्धम्' 17. सम्पादित, (साधना आदि के द्वारा) पवित्रीकृत 18. मुक्त किया हुआ 19. अलौकिक शक्ति से युक्त 20. पावन, पवित्र, पुण्यात्मा 21. दिव्य, अविनश्वर, नित्य 22. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 23. उज्ज्वल, शानदार,—द्धः 1. अर्धदिव्य प्राणी जो अत्यंत पवित्र और पुण्यात्मा माना जाता है विशेष रूप से देवयोनि विशेष जिसमें आठ सिद्धियाँ हों—उद्घिजा वृष्टिभिराश्रयन्ते शुद्धाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः—कु० १।५ 2. अंतर्दृष्टि प्राप्त सन्त ऋषि या महात्मा (जैसे कि व्यास) 3. कोई भी संत, ऋषि या महात्मा—सिद्धादेश —रत्ना० १ 4. जादूगर, ऐन्द्रजालिक 5. कानूनी मुकदमा, अदालती जाँच 6. गुड़, द्धम् समुद्री नमक। सम० अन्तः 1. सर्वसम्मत फल 2. किसी तर्क का प्रदर्शित उपसंहार, किसी प्रश्न का सर्वसम्मत रूप, सही तथा तर्कसंगत उपसंहार (पूर्वपक्ष के निराकरण के पश्चात्) 3. प्रमाणित तथ्य, मानी हुई सचाई, राद्धान्त, मत 4. निर्णायक साक्ष्य के आधार पर अवलंबित कोई माना हुआ मूलपाठ का ग्रन्थ, कोटिः (स्त्री०) युक्तिगत बिन्दु जो तर्कसंगत उपसंहार माना जाता है, पक्षः किसी युक्ति का तर्कसंगत पार्श्व, ...अन्नम् पकाया हुआ भोजन,...अर्थ (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सम्पन्न कर लिया है, सफल (—र्थः) 1. सफेद सरसों 2. शिव का नाम 3. महात्मा बुद्ध का नाम,...आसनम् धर्मसाधना में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति,—गङ्गा, नदी, ...सिन्धुः स्वर्गंगा, आकाशगंगा, ...ग्रहः विशेष प्रकार का पागलपन, मनोविक्षिप्त,—अञ्जम् कांजी, ...धातुः पारा,...पक्षः किसी प्रतिज्ञा का सर्वसम्मत तथा तर्कसंगत पहलू, —प्रयोजनः सफेद सरसों, ...योगिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रस (वि०) खनिज, धातुमय (—सः) 1. पारा 2. रसायनज्ञाता सङ्कल्प (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सिद्ध कर लिया है, सेनः कार्तिकेय का नाम, ...स्थाली ऋषि की बटलोई या पात्र (ऐसा समझा जाता है कि इस बर्तन से इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है और फिर भी यह भोजन से भरपूर रहता है)।

सिद्धता,—त्वम् [सिद्ध+तल्+टाप्, त्व वा] सम्पन्नता, पूर्णता, पूरा करना।

सिद्धिः (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] 1. निष्पन्नता, पूर्णता, संपूर्ति, पूरा होना, (किसी पदार्थ की) पूर्ण अवाप्ति —क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे मुधा० 2. सफलता, समृद्धि, कल्याण, कुशल-क्षेम 3. स्थापना प्रतिष्ठा 4. प्रमाणन, प्रदर्शन, प्रमाण, निर्विवाद परिणाम 5. (किसी नियम या विधि की) वैधता 6. फैसला, निर्णय, व्यवस्था (किसी कानूनी मुकदमे की) 7. निश्चिति, सचाई, यथार्थता, शुद्धता 8. अदागगी, (ऋण का) परिशोध 9. तैयार करना, (औषधि आदि का) पकाना 10. समस्या का समाधान 11. तत्परता 12. नितान्त पवित्रता या विशुद्धता 13. अतिमानव शक्ति—यह गिनती में आठ है—अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा, ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता 14. जादू के द्वारा अतिमानव शक्तियों को प्राप्त करना 15. विलक्षण कुशलता या क्षमता 16. अच्छा प्रभाव या फल 17. मुक्ति, मोक्ष 18. समझ, बुद्धि 19. छिपाना, अन्तर्धान होना, अपने आपको अदृश्य करना 20 जादू की लड़ाई 21. एक प्रकार का योग 22. दुर्गा का नाम। सम० —द (वि०) सफलता या सर्वोपरि आनन्दातिरेक देने वाला (—दः) शिव का विशेषण, दात्री दुर्गा का विशेषण, योगः यहों का विशेष प्रकार का शुभ संयोग।

सिध् (दिवा० पर० सिध्यति, सिद्ध, प्रेर० साधयति या सेधयति—इच्छा० सिषित्सति) 1. सम्पन्न होना, पूरा होना यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः हि० प्र० ३१, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ३६ 2. कामयाब होना, सफलता प्राप्त करना सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः—श० ७।४ 3. गड़बड़ाना, आकुल करना, सहो पड़ना—श० २।५ 4. अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करना 5. सिद्ध होना, प्रमाणित होना जैसे होना यदि वचनमात्रेणैवादिपत्यं सिध्यति हि० ३ 6. व्यवस्थित या अभिनिर्णीत होना 7. सर्वथा तैयार किया हुआ या पकाया हुआ होना 8. विजित या जीता हुआ होना—पंच० २।३६, प्र—, 1. सम्पन्न होना, कार्यान्वित होना, सफल होना —शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः—भग० ३।८, तपसैव प्रसिध्यन्ति मनु० ११।२३१ 2. उपलब्ध या अवाप्त होना 3. विख्यात होना, दे० 'प्रसिद्ध', सम—, 1. पूरा किया जाना 2. सर्वथा सम्पन्न या कियान्वित होना, पूरी तरह अनुष्ठित होना 3. आनन्दातिरेक प्राप्त करना, प्रसन्न होना—जप्येनैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नात्र संशयः—मनु० २।८७।

ii (स्वा० पर० सेधति, सिद्ध, इकारान्त उकारान्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपसर्गों के पश्चात् 'सिध्' के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1. जाना 2. हटाना, दूर करना 3. नियन्त्रण करना, रुकावट डालना, रोकना 4. निषेध करना, प्रतिषेध करना 5. आदेश देना, समावेश देना, निदेश देना 6. शुभ निकलना, मंगलमय होना, अप —, दूर करना, हटाना संवत्सरं प्रवाहारस्तत्पापमपसेधति- मनु० ११।१९९, नि—, 1. परे हटाना, रोकना, नियंत्रण में रखना, पीछे हटाना—न्यषेधि धीषोऽप्यनुधावि वर्णैः रघु० २।४, ३।४२, ५।१८ 2. विरोध करना, प्रतिवाद करना, आक्षेप करना रघु० १४।४३ 3. प्रतिषेध करना, मना करना—निधिद्धो भाषमाणस्तु सुवर्णं दण्डमर्हति—मनु० ८।३६१ 4. पराजित करना, जीतना—रघु० १८।१ 5. हटाना, दूर करना, निवारण करना—न्यषेधत्पावकास्त्रेण रामस्तद्राक्षसास्त्रम्—भट्टि० १७।८७, १।१५, प्रति , 1. रोकना, दूर रखना, नियंत्रित करना मनु० २।२०६, रघु० ८।२३ 2. मना करना प्रतिषेध करना नृपतेः प्रतिषिद्धमेव तत्कृतदान् पक्तिरयो विलम्ब्य यत् रघु० ९।७४, विप्रति , प्रतिवाद करना, विरोध करना—स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चेति विप्रतिषिद्धमेतत् महा० १।

सिध्मम्, सिध्मन् (नपु०) [सिध्+मन्, किच्च] 1. छाला, ददोरा, खुजली 2. कोढ़ 3. कुष्ठ ग्रस्त स्थान।

सिध्मल [सिध्म+लच्] 1. जिसको खुजली हो, कोढ़ के चिह्नों से युक्त, कोढ़ी।

सिध्मा [सिध्म+टाप्] 1. छाला, ददोरा, खुजली, कोढ़ युक्त स्थान 2. कोढ़।

सिध्यः [सिध्+णिच्+यत्] पुष्य नक्षत्र।

सिध्रः [सिध्+रक्] 1. पवित्रात्मा, पुण्यात्मा 2. वृक्ष।

सिध्रकावणम् [सिध्रकप्रधानं वनम्, णत्वम्, दीर्घश्च] दिव्य उद्यानों में से एक उद्यान।

सिनः [सि+नक्] ग्रास, कौर।

सिनी [सिन+ङीप्] गौर वर्ण की स्त्री।

सिनीवाली [सिनी श्वेता चन्द्रकला वलति धारयति, सिनी वल्+अण्+ङीष्] चन्द्रदर्शन से पूर्ववर्ती दिन, प्रतिपदा, (जिस दिन चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है), या पूर्वामावास्या सा सिनीवाली योत्तरा सा कुहूः ऐ० ब्रा०, या—सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः—अमर०।

सिन्धुकः, सिन्धुवारः [स्यन्द्+उ, संप्रसारणं, सिन्धु+वृ+अण्] एक वृक्ष का नाम।

सिन्धूरः [स्यन्द्+उरन् सम्प्रसारणम्] एक प्रकार का वृक्ष, रस् लाल रंग का सुरमा स्वयं सिन्दूरेण द्विपरण-मुदा मुदित इव—गीत० ११, नै० २२।४५।

सिन्धुः [स्यन्द्+उद् संप्रसारणं दस्य धः] 1. समुद्र, सागर 2. सिंधुनदी के चारों ओर का देश 4. मालवा में बहने वाली एक नदी का नाम मेघ० २९ (यहां पर मल्लि० का टिप्पण—सिन्धु नाम नदी तु कुत्रापि नास्ति- निरर्थक है) —मा० ४।९. (उस स्थान पर भांडारकर का नोट देखो) 5. हाथी के सूंड से निकला हुआ पानी 6. हाथी के गण्डस्थलों से बहने वाला दान या मद 7. हाथी (पुं०व०व०) बड़ा दरिया या नदी —गिरयस्सौ पार्श्वयते च सिन्धूः—रघु०१३।९, मेघ० ४६। सम० ज (वि०) 1. नदी से उत्पन्न 2. समुद्र से उत्पन्न 3. सिंध देश में उत्पन्न, (—जः) चन्द्रमा (—जम्) सेंधा नमक,—नाथः सागर।

सिन्धुकः, सिन्धुवारः [सिन्धु+क, —सिन्दुवारः, दस्य धः] एक वृक्ष का नाम।

सिन्धुरः [सिन्धु+र] हाथी।

सिन्द् (म्वा० पर० सिन्दति) गीला करना, भिगोना।

सिप्रः [सिप्+रक्, पृषो०] 1. पसीना, स्वेद 2. चाँद।

सिप्रा [सिप्र+टाप्] 1. स्त्री की करधनी या तगड़ी 2. भैंस 3. उज्जयिनी के निकट एक नदी का नाम, दे० शिप्रा।

सिम्म (वि०) [सि+मन्] प्रत्येक, सब, संपूर्ण, समस्त।

सिम्बा,—बी दे० शिम्बा,—बी।

सिरः [सि+रक्] पीपलामूल की जड़।

सिरा [सिर+टाप्] 1. शरीर की नलिकाकार वाहिका (जैसे कि शिरा, धमनी, नाड़ी आदि) 2. डोलची, पानी उलीचने का बर्तन।

सिव् (दिवा० पर० सीव्यति, स्यूत) 1. सीना, रफू करना, तुरपना, टांका लगाना,—मनोभवः सीव्यति दुर्यशःपटौ—नै० १।८०, मा० ५।१० 2. मिलाना, एकत्र करना स हि स्वेहात्मकस्तन्तुरुत्तमर्माणि सीव्यति —उत्तर० ५।१७, अनु नत्थी करना, मिला कर जोड़ना।

सिवरः [सि+वरप्] हाथी।

सिषाधयिषा [साधयितुमिच्छा—साध+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] संपन्न करने या क्रियान्वयन की इच्छा 2. स्थापित करने की इच्छा, सिद्ध करने की इच्छा, प्रदर्शित करने की इच्छा।

सिसृक्षा [सृज्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] रचना करने की इच्छा।

सिसृक्षुः [सृ+कि=सिः छेदः तं हृणते—सि+हृण्ड्+अण्] मेहंड (खेत की बाड़ में लगने वाला कांटेदार दूधिया पौधा)।

सिह्मः, सिह्मकः [सिह्+लक् पृषो०, सिह्म+कन्] गुग्गुल, गंधद्रव्य।

सिह्मकी, सिह्मी [सिह्मक (सिह्म)+ङीष्] लोबान का वृक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीक् i (स्वा० आ० सीकते) 1. छिड़कना, छोटी छोटी बूंदें करके बखेरना 2. जाना, हिलना-जुलना।
ii (स्वा० पर०, चुरा० उभ० सीकति, सीकयति—ते) 1. उत्साहित होना 2. सहिष्णु होना 3. स्पर्श करना।

सीकरः [सीकयते सिच्यतेऽत्रेन +सीक्+अरन्] 1. फुहार बर्फ, जलकण पड़ना, फुही पड़ना 2. छींटे, पानी की छोटी छोटी बूंदें, दे० शीकर।

सीता [सि+त पृषो० दीर्घः] 1. हल के चलाने से खेत में बनी हुई रेखा, खूड, हल की फाल से खुदी हुई रेखा 2. जुती हुई या खूडवाली भूमि, हल से जोती हुई भूमि—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम् कु० ५।६१ 3. कृषि, खेती जैसा कि 'सीताद्रव्य' में 4. मिथिला के राजा जनक की पुत्री का नाम, राम की पत्नी का नाम [इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि राजा जनक ने इसे हल की फाल द्वारा बने खूंट से प्राप्त किया। बात यह थी कि सन्तान प्राप्ति की इच्छा से राजा ने एक यज्ञ का आरंभ किया था, उसकी तैयारी के समय उसे हल चलाते समय सीता खूड में से मिली। इसीलिए 'अयोनिजा' या 'धरापुत्री' इसके विशेषण हैं। राम के साथ सीता का विवाह हुआ, उनके साथ वह वन में गई। जब रावण उसे वन में से उठा कर ले गया और उसका सतीत्व भंग करने की चेष्टा करने लगा तो सीता ने उसके इस दुष्ट प्रस्ताव को घृणा के साथ ठुकरा दिया। जब राम को इस बात का पता लगा कि सीता लंका में है, तो उसने लंका पर चढ़ाई की, रावण और उसकी सेना को मार कर सीता का उद्धार किया। राम के द्वारा पत्नी के रूप में फिर से स्वीकृत किये जाने से पूर्व सीता को सीक्षण अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा। यद्यपि राम को उसके सतीत्व पर पूरा विश्वास था फिर भी लोकापवाद के कारण उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया। सीता इस समय गर्भवती थी। वाल्मीकि ऋषि के रूप में अपने प्रश्रयक को पा सीता उन्हीं के आश्रम में रहने लगी वहीं कुश और लव नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया वाल्मीकि मुनि ने, बच्चों का पालन पोषण किया। अन्त में वाल्मीकि के द्वारा सीता राम को सौंप दी गई]। 5. एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी 6. उमा का नाम 7. लक्ष्मी का नाम 8. गंगा की चार धाराओं में से एक (पूर्वी धारा) 9. मदिरा। सम०—**-द्रव्यम्** खेती के उपकरण, कृषि के औजार मनु० ९।२९३, —**पतिः** रामचन्द्र का नाम,—**फलः** कुम्हड़े की बेल, (—**लम्**) कुम्हड़ा।

सीतानकः (पुं०) मटर।

सीत्कारः, सीत्कृतिः (स्त्री०) [सीत्+कृ+घञ्, क्तिन्] सांस ऊपर खींचने का शब्द, सिसकारी, (आह भरने या सरदी से ठिठुरने के समय सी-सी करना या अमर्ष ध्वनि)—**मया दृष्टाक्षरं तस्याः सासीत्कार-मिवाननम्**···विक्रम० ४।२१।

सीत्य (वि०) [सीता+यत्] जोते गये या हल की फाल से बने खूंटों से मापा गया, **-धान्यम्** चावल, धान्य, अन्न।

सीत्थम् (नपुं०) आलस्य, शिथिलता, सुस्ती।

सीधुः (पुं०) [सिध्+उ, पृषो०] राब या गुड़ से बनाई हुई शराब, ईख को मदिरा स्फुरदधरसीधवे तव वदन-चन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम् गीत० १०, शि० ९।८७, रघु० १६।५२। सम०—**गन्धः** बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़, **पुष्पः** 1. कदम्ब का वृक्ष 2. मौल-सिरी का पेड़, **रसः** आम का पेड़, **सारः** मौलसिरी का पेड़।

सीधुम् (नपुं०) गुदा, मलद्वार।

सीपः (पुं०) नाव की शक्ल का यज्ञ-पात्र।

सीमन् (स्त्री०) [सि+मनिन्, सि० दीर्घः] 1. सीमा, हद, दे० सीमा 'सीमातमत्यायत्तयोऽयजन्तः' शि० ३।५७, दे० 'निःसीमन्' भी 2. अण्डकोष सीम्नि पुष्कलको हतः सिद्धा०।

सीमन्तः [सीम्नोऽन्तः, टाक० परस्वम्] 1. सीमारेखा, सीमान्त 2. सिर के बालों की विभाजक रेखा, सिर की मांग जिसके दोनों ओर बाल विभक्त हों—**सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्** मेघ० ६५, शि० ८।६९, महावीर० ५।४४। सम०—**-उन्नयनम्** 'बालों का विभाजन' बारह संस्कारों में से एक जिसको स्त्रियाँ गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने में मनाती हैं।

सीमन्तकः [सीमन्त+कन्] विशेष प्रकार के नरक का अधिवासी, **-कम्** सिन्दूर।

सीमन्तयति (ना० धा०, पर०) 1. बालों को अलग-अलग करना 2. मांग निकालना सेना सीमन्तयन्तरे—कीर्ति० ५।४४।

सीमन्तित (वि०) [सीमन्त्+णिच्+क्त] 1. (बाल आदि) विभाजित 2. मांग निकाल कर अलग किये हुए समीरसीमन्तितकेकिकाराः (प्रदेशाः) शि० ३।८०, रघाङ्गसीमन्तितसान्द्रकेशमान् (पक्षः) कि० ४।१८।

सीमन्तिनी [सीमन्त+इनि+ङीप्] स्त्री, महिला **मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम्** हि० २।७, मेघ० ११०, भट्टि० ५।२२।

सीमा [सीमन्+टाप्] 1. हद, मर्यादा, किनारा, छोर, सरहद्द 2. खेत, गांव आदि की सीमा पर सीमा द्योतक टीला या मेंड़ सीमा प्रति समुत्पन्ने विवादे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—मनु० ८।२४५, याज्ञ० २।१५२ 3. चिह्न, सीमान्त 4. किनारा, तीर, समुद्रतट 5. क्षितिज 6. सीवनी, माग (जैसे खोपड़ी की) 7. शिष्टाचार या नीति की सीमा, औचित्य की मर्यादा 8. उच्चतम या अधिकतम सीमा, उच्चतम बिन्दु, चरमसीमा - सीमेव पश्यासन कौशलस्य भट्टि० ११६ 9. खेत 10. ग्रीवा का पृष्ठ भाग 11. अण्डकोष। सम० **अधिपः** पड़ोसी राजा, —**अन्तः** 1. सीमारेखा, छोर, सरहद 2. अधिकतम सीमा, °**पूजनम्** 1. गांव की सीमा का पूजन 2. बरात के आने पर गांव की सीमा पर दूल्हे का सत्कार, —**उल्लङ्घनम्** अतिक्रमण करना, सीमा पार करना, सरहद लांघना, **निश्चयः** सीमान्त या सीमारेखाओं के विषय में कानूनी निर्णय,—**लिङ्गम्** सीमा चिह्न, भू चिह्न,—**वादः** सीमा संबंधी झगड़ा,—**विनिर्णयः** सीमा-रेखाओं के झगड़ों का फैसला, **विवादः** सीमासंबंधी झगड़ा या मुकदमेबाजी, °**धर्मः** सीमाविषयक झगड़ों से संबंध रखने वाला कानून, -**वृक्षः** वह पेड़ जो सीमा-रेखा का काम दे रहा है, —**सन्धिः** दो सीमाओं का मिलन।

सीमिकः [स्यम+किनन्, सम्प्रसारणं, दीर्घश्च] 1. एक वृक्षविशेष 2. बामी 3. चिऊँटी या ऐसा ही छोटा कोई जन्तु।

सीरः [सि+रक, पृषो०] 1. हल सद्यः सीरोत्कर्षण-सुरभि क्षेत्रमारुह्य मालम् -मेघ० 2. सूर्य 3. आक या मदार का पौधा। सम० **ध्वजः** जनक का विशेषण, —**पाणिः**—**भृत्** (पुं०) बलराम के विशेषण, **योगः** हल में पशु को जोतना, या हल में जुती पशु की जोड़ी।

सीरकः [सीर+कन्] दे० 'सीर'।

सीरिन् (पुं०) [सीर+इनि] बलराम के विशेषण शि० २।२।

सीलन्दः धः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

सीवनम् [सिव+ल्युट्, नि० दीर्घः] 1. सीना, तुरपना, टांका लगाना 2. जोड़, सन्धिरेखा (जैसे खोपड़ी की)।

सीवनी [सीवन+ङीष्] 1. सुई 2. लियमणि का सन्धि-पोथ।

सीसम्, सीसकम्, सीसपत्रकम् [सि+क्विप्, पृषो० दीर्घः =सी, सी+क--स, सी+स कर्म० स०; सीस +कन्, सीस+पत्रक] सीसा, -मालवि० ५।१४४, याज्ञ० १।१९०।

सीहुण्डः [=सिहुण्ड, पृषो०] सेंहुड (बाड़ लगाने का एक कांटेदार पौधा)।

सु (i) (स्वा० उभ० सुवति—ते) जाना, हिलना-जुलना।

(ii) (स्वा० अदा० पर० सवति, सौति) शक्ति या सर्वोपरि सत्ता धारण करना।

(iii) (स्वा० उभ० सुनोति, सुनुते, सुत, इकारान्त या उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् धातु के स् को मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1. भीचना, दबा कर रस निकालना 2. अर्क खींचना 3. उंडेलना, छिड़कना, तर्पण करना 4. यज्ञानुष्ठान करना, सोमयज्ञ करना 5. स्नान करना, इच्छा० (सुषूसति—ते)। **अभि—**, 1. सोमरस निकालना 2. मिलाना, मिश्रण करना, गड्डमड्ड करना - यानि चैवाभिषूयन्ते पुष्पमूलफलैः शुभैः-मनु० ५।१० 3. छिड़कना - भट्टि० ९।९०, **उद्**—उत्तेजित करना, विक्षुब्ध करना, प्र—, पैदा करना, जन्म देना।

सु (अव्य०) [सु+डु] एक निपात जो कर्मधारय और बहुव्रीहि समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, विशेषण और क्रियाविशेषणों में भी जुड़ता है। निम्नांकित इसके अर्थ हैं- 1. अच्छा, भला, श्रेष्ठ यथा 'सुगन्धिः' में 2. सुन्दर, मनोहर—यथा 'सुमध्यमा, सुकेशी' आदि में 3. खूब, सर्वथा, पूरी तरह, ठीक प्रकार से—सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः। गुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्—हि० १।२२ 4. आसानी से, तुरन्त यथा 'सुकर और सुलभ' में 5. अधिक, अत्यधिक, बहुत अधिक—यथा 'सुदारुण और सुदीर्घ' आदि। सम० **अक्ष** (वि०) 1. अच्छी आँखों वाला 2. उग्र और तेज अंगों वाला,—**अङ्ग** (वि०) सुडौल, मनोहर, प्रिय,—**अन्त** (वि०) दे० शब्द के नीचे,—**अन्त** (वि०) जिसका अंत भला हो, अच्छी समाप्ति वाला, —**अल्प**, **अल्पक** (वि०) दे० शब्द के नीचे,—**अस्त्र**,—**अस्त्रिक** दे० शब्द के नीचे, —**आकार**,—**आकृति** (वि०) सुनिर्मित, मनोहर, सुन्दर, आगत दे० शब्द के नीचे,—**आभास** (वि०) बड़ा शानदार व प्रसिद्ध कि० १५।२२,—**इष्ट** (वि०) भली भाँति किया गया यज्ञ, °**इष्ट** (पुं०) अग्नि का एक रूप. **उक्त** (वि०) अच्छा बोला हुआ, खूब कहा हुआ—अथवा सूक्तं खलु केनापि—वेणी० ३, (—क्तम्) अच्छी या समझदारी की उक्ति —नेतुं वाञ्छति यः खलान् पथि सतां सूक्तैः सुहास्यन्दिभिः भर्तृ० २।६, रघु० १५।९५ 2. वैदिक भजन या सूक्त यथा 'पुरुषसूक्त' आदि, °**र्षिन्** (पं०) मन्त्रद्रष्टा, वैदिक ऋषि, °**वाच्** (स्त्री०) 1. भजन 2. स्तुति का शब्द, **उक्तिः** (स्त्री०) 1. अच्छा या सौहार्दपूर्ण भाषण 2. अच्छा या चातुर्यपूर्ण कथन 3. शुद्ध वाक्य, **उत्तर** (वि०) 1. अतिश्रेष्ठ 2. उत्तर दिशा की ओर, **उत्थान** (वि०) खूब प्रयत्न करने वाला, अलशाली, फुर्तीला, (—नम्) प्रबल प्रयत्न या उद्योग,—**उन्मद**,—**उन्माद** (वि०) बिल्कुल पागल, दीवाना,—**उपसेवन** (वि०) जिसके पास पहुँचना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आसान हो, **उपस्कर** (वि०) अच्छे उपकरणों से युक्त, **कण्डूः** खुजली,—**कन्दः** 1. प्याज 2. आलू, कचालू, शकरकंद आदि कंद 3. एक प्रकार का घास, —**कन्दकः** प्याज़,—**कर** (वि०) (स्त्री० रा—री) 1. जो आसानी से किया जा सके, क्रियात्मक, कार्य, —**कर्तुं मुकर्, कर्तुं** (अध्यवसितुम्) दुष्करम्—वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 2. जिसका प्रबंध आसानी से किया जा सके, (**रा**) सुशील गौ, (—**रम्**) दान, परोपकार,—**कर्मन्** (वि०) 1. जो अच्छे कार्य करता है, पुण्यात्मा, भला 2. सक्रिय, परिश्रमी, (पुं०) विश्वकर्मा का नाम, **कल** (वि०) (वि० को) उदारता पूर्वक देने तथा सदुपयोग करने में जिसने कीर्ति अर्जित कर ली हो, **कार्णिक** (वि०) 1. सुन्दर बूंदों से युक्त 2. सुंदरता के साथ जुड़ा हुआ, (पु०) भौंरा, **कुन्दकः** प्याज़,—**कुमार** (वि०) 1. मृदु, सुकुमार, कोमल 2. सौंदर्ययुक्त तरुण, (—**रः**) 1. सुन्दर युवक 2. एक प्रकार का गन्ना,—**कुमारकः** 1. सुन्दर तरुण 2. 'शालि' चावल, (**कम्**) तमालपत्र,—**कृत** (वि०) 1. भला करने वाला, उपकारी 2. पवित्रात्मा, गुणसंपन्न, धर्मात्मा 3. बुद्धिमान्, विद्वान् 4. भाग्यशाली, क़िस्मत वाला 5. अच्छे यज्ञ करने वाला, (पुं०) 1. कुशल कर्मकर 2. त्वष्टा का नाम, —**कृत** (वि०) भली-भांति किया हुआ 2. सर्वथा किया हुआ 3. खूब किया हुआ या सुरचित 4. जिसके साथ कृपापूर्वक व्यवहार किया गया हो, सहायता दिया गया, मित्रता के सूत्र में आबद्ध 5. सद्गुणी, धर्मात्मा, पवित्रात्मा 6. भाग्यशाली, क़िस्मत वाला, (**तम्**) कोई भी भला या अच्छा कार्य. कृपा, अनुग्रह, सेवा—नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः भग० ५।१५, मेघ० १७ 2. सद्गुण, नैतिक या धार्मिक गुण - स्वर्गाभिसन्धिसुकृतं वज्रनाभिव मेदिरे· कु० ६।४७, तच्चिन्त्यमानं सुकृतं तवेति—रघु० १४।१६ 3. सौभाग्य, मांगलिकता 4. प्रतिफल, पुरस्कार, **कृतिः** (स्त्री०) 1. कृपा, सद्गुण 2. तपस्या करना, **कृतिन्** (वि०) 1. भलाई करने वाला, कृपापूर्वक व्यवहार करने वाला 2. सद्गुणसम्पन्न, पवित्रात्मा, भला, धर्मात्मा सन्तः सन्तु निरापदः सुकृतिनां कीर्तिश्चिरं वर्धताम् हि० ४।१३२, भग० ७।१६ 3. बुद्धिमान्, विद्वान् 4. परोपकारी 5. भाग्यशाली, क़िस्मत वाला,—**केश** (स) रः गलगल का पेड़, **क्षुः** 1. अग्नि का नाम 2. शिव का नाम 3. इन्द्र का नाम 4. मित्र और वरुण का नाम 5. सूर्य का नाम, **ग** (वि०) 1. सजीली चाल चलने वाला 2. शोभन, ललित 3. सुगम्य -पंच० २।१४१ 4. बोधगम्य, आसानी से समझे जाने योग्य (विप० दुर्ग) (—**गम्**) 1. विष्ठा, मल 2. प्रसन्नता,—**गत** (वि०) 1. भली-भांति किया हुआ 2. भली-भांति प्रदान किया हुआ, (तः) बुद्ध का विशेषण, **गन्धः** 1. खुशबू, अच्छी गंध, गन्धद्रव्य 2. गन्ध 3. व्यापारी, (—**धम्**) 1. चन्दन 2. जीरा 3. नील कमल 4. एक प्रकार का सुगन्धित घास (—**धा**) पवित्र तुलसी, **गन्धकः** 1. गन्धक 2. लाल तुलसी 3. सन्तरा 4. एक प्रकार की लौकी, **गन्धि** (वि०) 1. मधुर गन्ध वाला, खुशबूदार, सुरभित 2. सद्गुणों से युक्त, पवित्रात्मा, (—**न्धिः**) 1. गंधद्रव्य, सुरभि 2. परमात्मा 3. एक प्रकार का मधुगन्ध वाला आम (—नपुं०—**न्धि**) 1. पिप्परामूल 2. एक प्रकार का सुगन्धित घास 3. धनिया, °**त्रिफला** 1. आमफल 2. लौंग,—**गन्धिकः** 1. धूप 2. गन्धक 3. एक प्रकार का (बासमती) चावल, (—**कम्**) सफ़ेद कमल,—**गम्य** (वि०) 1. जहाँ आसानी से पहुँचा जाय, सुलभ 2. आसान 3. सरल, बोधगम्य, गहना यज्ञस्थान को अस्पृश्यादि के संपर्क से बचाने के लिए बनाया गया घेरा, °**वृत्तिः** दे० ऊपर का शब्द, **गृह** (वि०) (स्त्री०—**ही**) सुन्दर घर वाला, भली भांति रहने वाला—सुगृही निर्गृही कृता पंच० १।३९०, **गृहीत** (वि०) 1. भली भांति पकड़ा हुआ, अच्छी तरह समझा हुआ 2. सम्पुचित रूप से या शुभ रीति से प्रयुक्त, °**नामन्** (वि०) 1. वह जिसका नाम मांगलिक रूप से लिया जाय, या जिसका नाम लेना (बलि, युधिष्ठिर आदि) शुभ समझा जाय, प्रातः स्मरणीय, सम्मानपूर्वक नाम लेने की रीति को द्योतन करने वाला शब्द - सुगृहीतनाम्नः भट्टगोपालस्य पौत्रः मा० १, **घोषः** स्वादिष्ट कौर या निवाला -**ग्रीव** (वि०) अच्छी गर्दन वाला, (—**वः**) 1. नायक 2. हंस 3. एक प्रकार का शस्त्र 4. सुग्रीव जो वालि का भाई था (कबन्ध की बात मान कर राम सुग्रीव के पास गये। सुग्रीव ने बतलाया कि किस प्रकार उसके भाई वालि ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। साथ ही अपनी पत्नी का उद्धार करवाने के लिए राम से सहायता मांगी। स्वयं सुग्रीव ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं भी आपकी पत्नी सीता का उद्धार करवाने में आपकी सहायता करूंगा। फलतः राम ने वालि को मार गिराया, सुग्रीव को राजगद्दी पर बिठाया। तब सुग्रीव ने अपनी वानर सेना साथ लेकर राम का साथ दिया जिससे कि राम ने रावण को मार कर सीता का उद्धार किया), °**ईशः** राम का नाम,—**ग्लु** (वि०) बहुत थका हुआ, श्रान्त,- **चक्षुस्** (वि०) अच्छी आंखों वाला, भली भांति देखने वाला, (पुं०) 1. विवेकशील, या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्वान् पुरुष 2. गूलर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का पेड़, **चरित, चरित्र** (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचारयुक्त (**—त्रम्,--त्रम्**) 1. सदाचार, अच्छा चालचलन 2. गुण तत्र सुचरितमङ्गुलीय तूनं प्रतेनु श० ६।११, (**—ता, त्रा**) सदाचारिणी, पतिव्रता, और सती साध्वी स्त्री, **चित्रकः** 1. राम-चिरैया, एक पक्षी 2. चीतल सांप, **चित्रा** एक प्रकार की लोकी, **चिन्ता** गहनचिन्तन, गम्भीर, —**चिरम्** (अव्य०) दीर्घ काल तक, बहुत देर तक, **चिरायुस्** (पुं०) सुर देवता, **जनः** 1. भला पुरुष, सद्गुणी, परोपकारी 2 सज्जन,--**जनता** 1. भलाई, नेकी, परोपकार, सद्गुण—ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता—भर्तृ० २।८२ 2. भले पुरुषों का समूह, **जन्मन्** (वि०) सत्कुलोत्पन्न, कुलीन,—**या** कौमुदी नयनयोर्भवतः सुजन्मा —मा० १।३४, **जल्पः** अच्छी वाणी, —**जात** (वि०) 1. उच्चकुलोत्पन्न 2. सुन्दर, प्रिय मा० १।१६, रघु० ३।८,—**तनु** (वि०) 1. सुन्दर शरीर वाला 2. अत्यन्त सुकुमार, दुबला-पतला 3. कृशकाय, दुर्बल-शरीर, (स्त्री० **नु - नू**) कोमलाङ्गी, सुन्दरशरीर —एताः सुतनु मुखं ते सख्यः पश्यन्ती हेमकूटगताः —विक्रम० १।११, —**तपस्** (वि०) 1. जो घोर तपस्या करता हो 2. अतिशय तापयुक्त (पुं०) 1. संन्यासी, भक्त, साधु, वैरागी 2. सूर्य, (**नपुं०**) कठोर साधना —**तराम्** (अव्य०) 1. अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ ढंग से 2. अत्यंत, अधिक, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—नया वृद्धिरा सुतरां सवित्री स्फुरत्प्रभामण्डलया चकासे कु० १।२४, सुतरां दयालुः रघु० २।५३, ४।९, १८।२४ 3. और अधिक, और भी ज्यादह —मय्यप्यवस्था न ते चेत्त्वयि मम सुतरांपि राजन् गतोऽस्मि -भर्तृ० ३।३०, **तर्दनः** कोयल, —**तलम्** 1. अत्यन्त गहराई भूमि के नीचे सात लोकों में से एक, दे० 'पाताल' 2. किसी बड़े भवन की बुनियाद, **तिलकः** मूंगे का पेड़, **तीक्ष्ण** (वि०) 1. बहुत तेज 2. अत्यंत नोकदार 3. बहुत पीड़ाकारक, (**ण्णः**) 1. सहिजन का पेड़ 2. एक ऋषि का नाम नान्दी सुनीक्ष्णश्चरितेन दान्तः रघु० १३।४१, **दर्शनः** शिव का विशेषण, **तीर्थः** 1. अच्छा गुरु, 2. शिव का नाम, —**तुङ्ग** (वि०) बहुत ऊँचा या लंबा, (**—गः**) नारियल का पेड़, **दक्षिण** (वि०) 1. अत्यन्त निष्कपट व खरा 2. बहुत उदार, यज्ञ में खूब दक्षिणा देने वाला—पंच० १।३०, (**—णा**) दिलीप राजा की पत्नी का नाम, तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा। पत्नी सुदक्षिणेत्यासीत् रघु० १।३१, ३।१, **दन्तः** वैंत, **दत्** (वि०) (स्त्री० **ती**) अच्छे दांतों वाला, **दन्तः** 1. अच्छा दांत 2. अभिनेता, नर्तक, नट, (**ती**) पश्चिमोत्तर दिशा की दिक्करिणी, **दर्शन** (वि०) (स्त्री०—**ना,-नी**) 1. प्रियदर्शन, सुंदर, मनोहर 2. जो आसानी से दिखाई दे (**नः**) 1. विष्णु का चक्र, जैसा कि 'कृष्णोऽप्यसुदर्शनः' का० 2. शिव का नाम 3. गिद्ध, (**—नम्**) जंबू द्वीप का नाम, **दर्शना** 1. सुन्दर स्त्री 2. स्त्री 3. आदेश, आज्ञा 4. एक प्रकार की बूटी, **दा** (वि०) यथेष्ट, **दायन्** (वि०) जो उदारता पूर्वक देता है (पुं०) 1. बादल 2. पहाड़ 3. समुद्र 4. इन्द्र के हाथी का नाम 5. एक दरिद्र ब्राह्मण का नाम जो अपने मित्र कृष्ण से मिलने के लिए भुने चावलों की भेंट लेकर, द्वारकापुरी गया था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने फिर धनधान्य और कीर्ति से सम्पन्न किया,—**दायः** 1. मांगलिक उपहार 2. विशिष्ट अवसरों पर दिया जाने वाला विशेष उपहार,—**दिनम्** 1. आनन्दप्रद शुभ दिवस 2. अच्छा दिन, अच्छा मौसम (विप० दुर्दिन), इसी प्रकार 'सुदिनाहम्' इसी अर्थ में, **दीर्घ** (वि०) बहुत लंबा या विस्तृत (**र्घा**) एक प्रकार की लकड़ी—**दुर्लभ** (वि०) अत्यंत दुष्प्राप्य या विरल, **दूर** (वि०) बहुत दूर स्थित या दूरवर्ती (**सुदूरम्** 1. बहुत दूर 2. बहुत ऊँचाई तक, अत्यधिक, **सुदूरात्** दूर से, फासले से), **दृश्** (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (स्त्री०) सुन्दर स्त्री,—**धन्वन्** (वि०) बढ़िया धनुष को धारण करने वाला, (**पुं०**) 1. अच्छा तीरंदाज या धनुर्धारी 2. विश्वकर्मा का नाम **धर्मन्** (लि०) कर्तव्यपरायण (स्त्री०) देव परिषद्, देवसभा, **धर्मा**, **धर्मा** देवसभा - ययावदीरितालोकः सुधर्मानवमां सभाम्—रघु० १७।२८, **धी** (वि०) अच्छी समझ वाला, बुद्धिमान्, चतुर, प्रतिभाशाली, (**—धीः**) बुद्धिमान् या प्रतिभाशाली पुरुष, विद्वान् पुरुष या पंडित, (स्त्री०) अच्छी समझ, भला ज्ञान, प्रज्ञा, —**उपास्यः** 1. एक विशेष प्रकार का महल 2. कृष्ण के सेवक का नाम, (**श्यम्**) बलराम का मुद्गर, **उपास्या** 1. स्त्री 2. उमा या उसकी कोई सखी 3. एक प्रकार का रंजक, **नन्दा** स्त्री, **नयः** 1. अच्छा चालचलन 2. अच्छी नीति, **नयन** (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (**नः**) हरिण, (--**ना**) 1. सुन्दर आखों वाली स्त्री 2. सामान्य स्त्री, **नाभ** (वि०) सुन्दर नाभि वाला 2. अच्छे नाह या केन्द्र वाला, (**—भः**) 1. पहाड़ 2. मैनाक पहाड़, **निभृत** (वि०) बिल्कुल अकेला, निजी, (अव्य० **तम्**) चुपचाप, छिपे-छिपे, सट कर, निजी रूप से, **निशाकरः** शिव का विशेषण, **नीत** (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचार युक्त 2. नम्र, विनयी (--**तम्**) 1. अच्छा चालचलन, शिष्ट आचरण 2. अच्छी नीति, **दूरदर्शिता नीतिः** (स्त्री०) 1. अच्छा आचरण, शिष्टाचार,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औचित्य 2. अच्छी नीति 3. ध्रुव की माता का नाम, —नीच (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, सद्गुणी, भला, (—चः) 1. ब्राह्मण 2. शिशुपाल का नाम, —नील (वि०) बिल्कुल काला, या नीला, (—लः) अनार का पेड़, (—ला) सामान्य सन का पौधा,—नेत्र (वि०) सुन्दर आंखों वाला,—पक्व (वि०) 1. अच्छा पका हुआ 2. सर्वथा परिपक्व या पका हुआ (—क्वः) एक प्रकार का सुगन्धित आम, पत्नी वह स्त्री जिसका पति भद्रपुरुष हो, पथः 1. अच्छी सड़क 2. सुमार्ग 3. अच्छा चालचलन,—पथिन् (पुं०) (कर्तृ० ए० व०—सुपन्थाः) अच्छी सड़क, —पर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णा,—र्णी) 1. अच्छे पंखों वाला 2. सुन्दर पत्तों वाला, (—र्णः) 1. सूर्य की किरण 2. अर्धदिव्य चरित्र के पक्षियों जैसे प्राणी, देवगन्धर्व 3. अलौकिक पक्षी 4. गरुड़ का विशेषण 5. मुर्गा, —पर्णा, —पर्णी (स्त्री०) 1. कमलों का समूह 2. कमलों से भरा ताल 3. गरुड़ की माता का नाम, —पर्याप्त (वि०) 1. बहुत विस्तार युक्त 2. सुयोग्य —पर्वन् (वि०) अच्छे जोड़ों या संधियों वाला, जिसमें बहुत से जोड़ या ग्रन्थियां हों, (पुं०) 1. बांस 2. बाण 3. सुर, देवता 4. विशेष चान्द्र दिवस (प्रत्येक मास की पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी और चतुर्दशी) 5. धूआं,—पात्रम् 1. अच्छा या उपयुक्त बर्तन, योग्य भाजन 2. योग्य या सक्षम व्यक्ति, किसी पद के समुपयुक्त व्यक्ति, समर्थ व्यक्ति, पाद (स्त्री० पाद्), —पदी) अच्छे या सुन्दर पैरों वाली, पाडः पाकड़ का पेड़, प्लक्ष, पीतम् गाजर, (—तः) पांचवां मुहूर्त, (—पुंसी) वह स्त्री जिसका पति भला व्यक्ति हो, पुष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पा, ष्पी) अच्छे फूल वाला, (ष्पः) मूंगे का पेड़ (ष्पम्) 1. लौंग 2. स्त्रीरज, —प्रकर्षः स्वस्थ विचार,—प्रतिभा मदिरा, प्रतिष्ठ (वि०) 1. भली-भांति खड़ा हुआ 2. बहुत प्रसिद्ध, विश्रुत, कीर्तिशाली, विख्यात, (ष्ठा) 1. अच्छी स्थिति 2. अच्छा मान, प्रसिद्धि, ख्याति 3. स्थापना, निर्माण 4. मूर्ति आदि की स्थापना, अभिषेक, प्रतिष्ठित (वि०) 1. भली-भांति स्थापित, 2. अभिषिक्त 3. विख्यात, (—तः) गूलर का पेड़, —प्रतिज्ञात (वि०) 1. सर्वथा पवित्रीकृत 2. किसी विषय का अच्छा जानकार, प्रतीक (वि०) 1. सुन्दर आकृति वाला, प्रिय, मनोहर 2. सुन्दर स्कन्ध वाला, (कः) 1. कामदेव का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. पश्चिमोत्तर दिशा का दिग्गज,—प्रयाज्यम् अच्छा ताल, - प्रभ (वि०) बड़ा प्रतिभाशाली, यशस्वी, (—भा) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक,—प्रभातम् 1. शुभ प्रभात, मंगलमय प्रातः काल दिष्टया सुप्रभातमद्य यदयं देवो दृष्टः उत्तर० ६ 2. प्रातःकालीन ऊषा, प्रयोगः 1. अच्छा प्रबन्ध, भली-भांति काम में लाया जाना 2. दक्षता,—प्रसाद (वि०) अति करुणामय, कृपानिधि, (दः) शिव का नाम, प्रिय (वि०) अत्यंत प्रिय, रुचिकर, (या) 1. मनोहारिणी स्त्री 2. प्रेयसी, फल (वि०) 1. अत्यन्त फल देने वाला, बहुत उत्पादक 2. बहुत उपजाऊ, (— लः) 1. अनार का पेड़ 2. बेरी का पेड़ 3. एक प्रकार का लोबिया, (—ला) 1. कद्दू, लौकी 2. केले का पेड़ 3. भूरे रंग का अंगूर,—बन्धः तिल,—बल (वि०) अत्यन्त शक्तिशाली, (—लः) शिव का नाम, बोध (वि०) जो आसानी से समझा जाय, (—धः) भला समाचार या उपदेश,—ब्रह्मण्यः 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. यज्ञ में वरण किये गये सोलह पुरोहितों में एक,—भग (वि०) 1. अत्यन्त भाग्यवान् या समृद्धिशाली, प्रसन्न, सौभाग्यशाली, अत्यन्त अनुगृहीत 2. प्रिय, मनोहर, सुन्दर, मनोरम - न तु शीघ्रमस्यैवं सुभगमपराद्ध युवतिषु—श० ३।९, कु० ४।३४, रघु० ११।८० मा० ९ 3. सुहावना, कृतार्थ, रुचिकर, मधुर—श्रवणसुभग —मालवि० ३।४, श० १।३ 4. प्रियतम, इष्ट, स्नेही, प्रिय—सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् गीत० ५ 5. श्रीमान्, (—गः) 1. सुहागा 2. अशोक वृक्ष 3. चम्पक वृक्ष 4. लाल कटसरैया, सदाबहार, (—गम्) अच्छा भाग्य °मानित, सुभगमन्य (वि०) अपने आपको सौभाग्यशाली मानने वाला, सुशील हिनकर--वाचालं मां न खलु सुभगम्मन्यभावः करोति--मेघ० ९४,- भगा 1. पति की प्रियतमा, प्रेयसी 2. सम्मानित मां 3. वनमल्लिका 4. हल्दी 5. तुलसी का पौधा, °सुतः पतिप्रिया पत्नी का पुत्र भद्रः नारियल का पेड़, भद्र (वि०) अत्यानन्दित या सौभाग्यशाली, (—द्रः) विष्णु का नाम (द्रा) बलराम और कृष्ण की बहन का नाम जिसका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था। उससे अभिमन्यु नाम का पुत्र पैदा हुआ,—भाषित (वि०) 1. भली भाँति कहा गया, सुन्दर रूप से कहा गया 2. सुन्दर भाषण करने वाला, वाग्मी, (—तम्) 1. सुन्दर भाषण, वाग्मिता, अधिगम—जीर्णभर्तृः सुभाषितम्—भर्तृ० ३।२ 2. नीतिवाक्य, सूक्ति, समुपयुक्त कथन सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया। मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तोऽथवा पशुः - सुभा० 3. अच्छी उक्ति —बालादपि सुभाषितं (ग्राह्यम्),—भिक्षा 1. अच्छी भिक्षा, सफल याचना 2. अन्न की बहुतायत, अनाज धान्यादिक की प्रचुर राशि, अन्नसंभरण,—भू (वि०) सुन्दर भौंह वाला (स्त्री०—भूः) मनोज्ञ स्त्री (इस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्द का संबोधन-ए० व०--सुभूः बनता है, परन्तु भट्टि, कालिदास और भवभूति जैसे लेखकों ने 'सुभ्रु' का प्रयोग किया है तु० भट्टि० ६।११, कु० ५।४३, मा० ३।८), **-मति** (वि०) बहुत बुद्धिमान् (स्त्री० **-तिः**) 1. अच्छा मन या स्वभाव, कृपा, परोपकार, सौहार्द 2. देवों का अनुग्रह 3. उपहार, आशीर्वाद 4. प्रार्थना, सूक्त 5. कामना, इच्छा 6. सार की पत्नी का नाम जो साठ हजार पुत्रों की माता थी, **-मदनः** आम का वृक्ष, **मध्य,--मध्यम** (वि०) पतली कमर वाला, **-मध्या, -मध्यमा मनोरम स्त्री, -मन** (वि०) बहुत आकर्षक, प्रिय, सुन्दर (**-नः**) 1. गेहूँ 2. धतूरा (**-ना**) फूलों से लदी चमेली, **-मनस्** (वि०) 1 अच्छे मन वाला, अच्छे स्वभाव का, उदार 2. खूब प्रसन्न, संतुष्ट, (पुं०) 1. देव, देवता 2. विद्वान् पुरुष 3. वेद का विद्यार्थी 4. गेहूँ 5. नीम का वृक्ष (स्त्री०, नपुं०--कुछ विद्वानों के अनुसार केवल ब० व० में प्रयोग) फूल--रमणीय एवं वः सुमनसां सन्निवेशः--मा० १, (यहाँ संख्या १ में दिया गया विशेषणपरक अर्थ भी अभिप्रेत है),--कि सेव्यते सुमनसापि गन्धवः कस्तूरिकाजननशक्तिभृता मृगेण - रस०, शि० ६।६६, **°फलः** कैथ, **°फलम्** जायफल, **मित्रा** दशरथ की एक पत्नी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम,--**मुख** (वि०) (स्त्री० **--खा, --खी**) 1. सुन्दर चेहरे वाला, प्रिय 2. सुहावना 3. निर्वर्तित, आतुर कि० ६।४२, (**--खः**) 1. विद्वान् पुरुष 2. गरुड का विशेषण 3. गणेश का विशेषण 4. शिव का विशेषण, (**खम्**) नाखून की खरोंच (**खा खी**) 1. सुन्दर स्त्री 2. दर्पण, **--मूलकम्** गाजर, **-मेधस्** (वि०) अच्छी समझ रखने वाला, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली (पुं०) बुद्धिमान् पुरुष, **--मेरुः** 1. 'सुमेरु' नाम का पवित्र पर्वत 2. शिव का नाम, **यवसम्** सुंदर घास, अच्छी चरागाह, **-योधनः** दुर्योधन का विशेषण, **रक्तकः** 1. गेरु 2. एक प्रकार का आम का पेड़, **रङ्गः** 1. अच्छा रंग 2. संतरा **°धातुः** गेरु,--**रञ्जनः** सुपारी का पेड़, **रत** (वि०) 1. अति प्रमोदी 2. क्रीडाशील 3. अत्यधिक अनुरक्त 4. करुणामय, सुकुमार, (**तम्**) 1. बड़ी प्रसन्नता, अत्यानन्द 2. संभोग, मैथुन, रतिक्रिया सुरतमूर्दिता बालवनिता--भर्तृ० २।४४, **°ताली** 1. दूती, कुट्टनी 2. शिरोभूषण, सिर की माला, **°प्रसंगः** कामकेलि में व्यसन--कु० १।१९,--**रतिः** (स्त्री०) भोग-विलास, आनन्द, मजे,--**रस** (वि०) 1. अच्छे रस वाला, रसीला, मजेदार 2. मधुर 3. ललित (रचना), (**रः, सा**) सिंधुवार पौधा (**सा**) दुर्गा का नाम,--**रूप** (वि०) 1. अच्छा बना हुआ, सुंदर, मनोहर--सुरूपा कन्या 2. बुद्धिमान्, विद्वान् (**पः**) शिव का विशेषण,--**रेभ** (वि०) अच्छी आवाज वाला--कि० १५।१६, (**भम्**) टीन, जस्त,--**लक्षण** (वि०) 1. शुभ व सुन्दर लक्षणों से युक्त 2. भाग्यशाली, (**--णम्**) 1. निरीक्षण, सुपरीक्षण, निर्धारण, निश्चयन 2. अच्छा या शुभ चिह्न, **लभ** (वि०) 1. जो आसानी से मिल सके, सुप्राप्य, प्राप्य, सुकर--न सुलभो सकलेऽद्रिमुखो च सः विक्रम० २।९, इदमसुलभमवस्तु प्रार्थना दुर्निवारम्--२।६ 2. तत्पर, अनुकूल बना हुआ, योग्य, उपयुक्त--निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्--श० ४।५ 3. स्वाभाविक, **समृपयुक्त**--मानुषतासुलभो लघिमा--का०, **°कोप** (वि०) जो शीघ्र क्रुद्ध हो जाय, जो आसानी से भड़काया जा सके,--**लोचन** (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (**--नः**) हरिण, (**--ना**) सुन्दर स्त्री,--**लोहकम्** पीतल,--**लोहित** (वि०) गहरा लाल, (**--ता**) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक,--**वक्त्रम्** 1. सुन्दर चेहरा या मुख 2. शुद्ध उच्चारण, **वचनम्, --वचस्** (नपुं०) वाग्मिता, **--वत्सिकः**, **--का** सज्जी, क्षार,--**वर्ण** दे० शब्द के नीचे, **वह** (वि०) 1. सहनशील, सहिष्णु 2. धैर्यवान्, झेलने वाला 3. जो आसानी से ले जाया जा सके, **--वासिनी** 1. विवाहित या एकाकिनी स्त्री जो अपने पिता के घर रहती है 2. विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित है, **-विक्रान्त** (वि०) बहादुर, साहसी, शूर (**--न्तम्**) शौर्य,--**विद्** (पुं०) विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् व्यक्ति (स्त्री० बुद्धिमती या चतुर स्त्री,--**विष**: अन्तः पुर का सेवक,--**विदन्** (पुं०) राजा,--**विदल्लः** अन्तः पुर का सेवक ('सौविदल्ल' का अशुद्ध रूप) (**--ल्लम्**) अन्तः पुर, रनिवास,--**विवल्ला** विवाहित स्त्री,--**विध** (वि०) अच्छी प्रकार का,--**विधम्** (अव्य०) आसानी से,--**विनीत** (वि०) भली-भाँति प्रशिक्षित, विनयी, (**ता**) सुशील गाय,--**विहित** (वि०) 1. भली भाँति रक्खा हुआ, अच्छी तरह जमा किया हुआ 2. सुव्यवस्थित, सुसंभृत, खाद्यसामग्री से युक्त, भली-भाँति क्रमबद्ध --सुविहितयोगतया आर्यस्य न किमपि परिहास्यते--श० १. कलहंसमकरन्दप्रेक्षावसरे तत् सुविहितम् मा० १, **वी (वी) ज** (वि०) अच्छे बीजों वाला (**--जः**) 1. शिव का नाम 2. खसखस (**--जम्**) अच्छा बीज, **वीरास्त्रम्** कांजी,--**वीर्य** (वि०) 1. अति बलशाली 2. शौर्यबल युक्त, शूरवीर, पराक्रमी, (**र्यम्**) 1. अतिशौर्य 2. शूरवीरों की बहुतायत 3. बेर का फल, (**--र्या**) जंगली कपास, **--वृत्त** (वि०) 1. शिष्टाचार युक्त, सद्गुणी, नेक, भला, **-मयि तस्य सुवृत्तवर्तते लघु-**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्देशपदा सरस्वती —रघु० ८।७७ 2. अच्छा गोल, सुन्दर वर्तुलाकार या गोल— मदुनाति सुवृत्तेन सुमृष्टेनातिहारिणा । मौदकेनापि किं तेन निष्पत्तिर्यस्य सेवया,—या सुबुक्कोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गंगतिकोऽपि च । महतां पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः (यहाँ सभी विशेषण दोहरे अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं) —**शैल** (वि०) 1. शान्त, निश्चल 2. विनम्र, निस्तब्ध (—लः) क्रिकट पर्वत का नाम,—**व्रत** (वि०) धार्मिक व्रतों के पालन में दृढ़, सर्वथा धार्मिक तथा सद्गुणी, (—तः) ब्रह्मचारी (—ता) 1. सुन्दर व्रत वाली साध्वी पत्नी 2. सुशील गाय, सीधी गाय जिसका दूध आसानी से निकाला जा सके,—**शंस** (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, प्रशंसनीय, **शक** (वि०) सुसाध्य, आसान, सरल —**शल्यः** खदिर वृक्ष,—**शाकम्** अदरक,—**शासित** (वि०) भली-भांति नियंत्रण में, सुनियंत्रित,—**शिक्षित** (वि०) सुशिक्षाप्राप्त, प्रशिक्षित, अच्छी तरह सधाया हुआ, —**शिखः अग्नि** (—खा) 1. मोर की शिखा 2. मुर्गे की कलगी,—**शील** (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, मिलनसार (—ला) 1. यम की पत्नी का नाम 2. कृष्ण की आठ प्रेयसियों में से एक, —**श्रुत** (वि०) 1. अच्छी तरह सुना हुआ 2. वैद्य, (—तः) एक आयुर्वेद पद्धति का प्रणेता, जिसकी कृति, चरक की कृति के साथ-साथ आज भी भारतवर्ष में प्राचीनतम आयुर्वेद का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है,—**श्लिष्ट** (वि०) 1. भली-भांति क्रमबद्ध, संयुक्त 2. भली-भांति उपयुक्त - मा० १,—**श्लेषः** आलिंगन या घनिष्ठ मिलाप, —**संदृश्** (वि०) देखने में रुचिकर,—**संत** (वि०) सुनिर्देशित (जैसा कि बाण), —**सह** (वि०) 1. जो आसानी से सहन किया जा सके 2. सहनशील, सहिष्णु (—हः) शिव का विशेषण, —**सार** (वि०) अच्छे रस वाला, रसीला (—रः) 1. अच्छा रस, सत या अर्क 2. सक्षमता 3. लाल फूल का खदिरवृक्ष, **स्थ** (वि०) 1. समुपयुक्त, अच्छे अर्थ में प्रयुक्त 2. अच्छे स्वास्थ्य में, स्वस्थ, सुखी 3. अच्छी या समृद्ध परिस्थितियों में, समृद्धिशाली 4. प्रसन्न, भाग्यशाली, (—**स्थम्**) सुख की स्थिति, कल्याण सुस्थे को वा न पण्डितः—हि० २।२१ (इसी अर्थ में **सुस्थित**)—**स्थिता, स्थितिः** (स्त्री०) 1. अच्छी दशा, कुशल क्षेम, कल्याण, आनन्द 2. स्वास्थ्य, रोगोपशमन, **स्मित** (वि०) प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराने वाला, (—ता) प्रसन्नवदना, हँसमुख स्त्री,—**स्वर** (वि०) 1. सुरीला, सुमधुर स्वर वाला 2. उच्च स्वर, —**हित** (वि०) 1. नितान्त योग्य, या उपयुक्त, समुचित 2. हितकर, श्रेयस्कर 3. सौजादपूर्ण, स्नेही 4. सन्तुष्ट (—तः) अग्नि की सात जिह्वाओं में एक, **हृद्** (वि०) कृपापूर्ण हृदय वाला, हार्दिक, मैत्रीपूर्ण, प्रिय, स्नेही (पुं०) 1. मित्र सुहृद. पश्य वसन्त किं सिषसम्—कु० ४।२७, मन्दाग्नते न खलु सुहृदाम्भ्युपेतार्थकृत्याः मेघ० ४० 2. मित्र, °भेदः मित्रों का वियोग, °**वाक्यम्** सद्भावपूर्ण सम्मति, —**हृदः** मित्र,—**हृद्य** (वि०) 1. सुन्दर हृदय वाला 2. प्रिय, स्नेही, प्रेमी ।

सुख (वि०) [सु+अच्] 1. प्रसन्न, आनन्दित, हर्षपूर्ण, खुश 2. रुचिकर, मधुर, मनोहर, सुहावना — दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः रघु० ३।१४ इसी प्रकार—**सुखस्पर्श** निस्वना—३।१९ 3. सद्गुणी, पुण्यात्मा 4. आनन्द लेने वाला, अनुकूल श० ७।१८ 5. आसान, सुकर—कु० ५।४९ 6. योग्य, उपयुक्त, —**खम्** 1. आनन्द, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता, आराम —यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् विक्रम० ३।२१ 2. समृद्धि अहैतं सुखदुःखयोरनुगुणं सर्वास्ववस्थासु यत् उत्तर० १।३९ 3. कुशल क्षेम, कल्याण, स्वास्थ्य—देवीं सुखं प्रष्टुं गता मालवि० ४ 4. चैन, आराम, (दुःखादिकों का) प्रशमन— (प्रायः समास में प्रयुक्त—यथा **सुखशयन**, सुखोपविष्ट सुखाश्रय आदि) 5. सुविधा, आसानी, सहूलियत 6. स्वर्ग, वैकुण्ठ 7. जल, **-खम्** (अव्य०) 1. प्रसन्नता पूर्वक, हर्ष पूर्वक 2. शकुशल, स्वस्थ - सुखमास्ता भवान् (भगवान् आपको स्वस्थ तथा सकुशल रक्खे) 3. आसानी से, आराम से असञ्जातकिण-स्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गवि:—काव्य० १० 4. अनायास, आराम - **अजः** सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः—भर्तृ० २।३ 5. वस्तुतः, इच्छा पूर्वक 6. चुपचाप, शान्ति पूर्वक । सम०—**आधारः** स्वर्ग, **आप्लव** (वि०) स्नान के लिए उपयुक्त, **आयतः** —**आयनः** खूब सधाया हुआ या सीधा घोड़ा, **आरोह** (वि०) जिस पर चढ़ना आसान हो,—**आलोक** (वि०) सुदर्शन, प्रिय, मनोहर,— **आवह** (वि०) आनन्द की ओर ले जाने वाला, सुहावना सुखकर,—**आशः** वरुण का नाम,—**आशाकः** ककड़ी,—**आस्वाद** (वि०) 1. मधुर स्वादयुक्त, मधुर रसयुक्त 2. रुचिकर, आनन्ददायी (—दः) 1. सुखकर रस 2. (सुख का) उपभोग,—**उत्तम** 1. आनन्द मनाना, खुशी, उत्सव, आनंदोत्सव 2. पति —**उदकम्** गरम पानी **उदयः** आनन्द की अनुभूति या सुख का उदय, **उदर्क** (वि०) फल में सुखदायी **उद्य** (वि०) जिसका उच्चारण रुचि के साथ या सुख से हो सके, · **उपविष्ट** (वि०) आराम से बैठा हुआ, सुख से बैठा हुआ, **एषिन्** (वि०) आनन्द चाहने वाला, सुख की अभिलाषा करने वाला, **कर**, · **कार**, · **दायकः** (वि०) आनन्द देने वाला, सुखकर, सुहावना,—**द** (वि०) सुख देने वाला, (—दा)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्द्र के स्वर्ग की वाटिका, (वम्) विष्णु का आसन, -बोधः 1. सुख संवेदना 2. आसानी से प्राप्य ज्ञान, -भागिन्, भाज् (वि०) प्रसन्न,-श्रव,श्रुति (वि०) कानों को मीठा, कर्णमधुर,-कि० १४।३,-सङ्गिन् सुख का साथी, स्पर्श (वि०) छूने में सुखकर।

सुत (भू० क० कृ०) [सु+क्त] 1. उड़ेला गया 2. निकाला गया, या निचोड़ा गया (जैसे कि सोमरस) 3. जन्म दिया गया, उत्पादित, पैदा किया गया,—तः 1. पुत्र 2. राजा। सम०—आत्मजः पोता, (—जा) पोती —उत्पत्तिः (स्त्री०) पुत्र का जन्म,—निर्विशेषम् (अव्य०) 'जो सीधे पुत्र से प्राप्त न हो' 'पुत्र की भांति'—रघु० ५।६,—वत्सला सात पुत्रों की माता, —स्नेहः पितृप्रेम, वात्सल्य।

सुतवत् (वि०) [सुत+मतुप्] पुत्रों वाला —पुं० पुत्र का पिता।

सुता [सु+टाप्] पुत्री,—तमर्थमिव भारत्या सुतया योक्तुमर्हसि कु० ६।७९।

सुतिः [सु+क्तिन्] सोमरस का निकालना।

सुतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [सुत+इनि] बच्चे वाला या बच्चों वाला, (पुं०) पिता।

सुतिनी [सुतिन्+ङीप्] माता तैनाम्बा यदि सुतिनी स्याद्वद बन्ध्या कीदृशी भवति—सुभा०।

सुतुस् (वि०) अच्छी आवाज वाला।

सुत्या [सु+क्यप्+टाप्, तुक्] 1. सोमरस निकालना, या तैयार करना 2. यज्ञीय आहुति 3. प्रसव।

सुत्रामन् (पुं०) [सुष्ठु त्रायते सु+त्रै+मनिन्, पृषो०] इन्द्र का नाम।

सुत्वन् (पुं०) [सु+क्वनिप्, तुक्] 1. सोमरस को उपहार में देने वाला या पीने वाला 2. वह ब्रह्मचारी जिसने (यज्ञ के आरंभ में या पूर्णाहुति पर) आचमन और मार्जन का अनुष्ठान कर लिया है।

सुदि (अव्य०) [सुष्ठु दीव्यति सु+दिव्+डि] चान्द्रमास के शुक्लपक्ष में तु० 'वदि'।

सुधन्वाचार्यः (पुं०) पतितवैश्य का सवर्णा स्त्री में उत्पन्न पुत्र—तु० मनु० १०।२३।

सुधा [सुष्ठु धीयते, पीयते वा (धा)+क+टाप्] 1. देवों का पेय, पीयूष, अमृत निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि—नै० ११ 2. फूलों का रस या मधु 3. रस 4. जल 5. गंगा का नाम 6. सफेदी, पलस्तर, चूना—कैलासगिरिरिव सुधासितेन प्राकारेण परिगतः—का०, रघु० १६।१८ 7. ईंट 8. बिजली 9. सेंहुड़ा। सम०—अंशुः 1. चांद 2. कपूर, °रत्नम् मोती, अङ्गः,—आकारः, आधारः चांद, —जीविन् (पुं०) पलस्तर करने वाला, ईंट की चिनाई करने वाला, राज, द्रवः अमृत के समान तरलद्रव्य,—धवलित (वि०) पलस्तर किया हुआ, सफेदी किया हुआ, निधिः 1. चांद कपूर,—भवनम् चूने लिपा-पुता मकान, भित्तिः (स्त्री०) 1. पलस्तर की हुई दीवार 2. ईंटों की दीवार 3. पांचवां मुहूर्त या दोपहरवाद,—भुज् (पुं०) सुर, देव,—भूतिः 1. चांद 2. यज्ञ, आहुतिः मयम् ईंट या पत्थरों का बना मकान 2. राजकीय महल, वर्षः अमृतवर्षा,—वपुस् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण,—वासः 1. चांद 2. कपूर, वासा एक प्रकार की ककड़ी,—सित (वि०) 1. चूने जैसा सफेद 2. अमृत जैसा उज्ज्वल 3. अमृत से भरा हुआ जगतीमारणे मुक्तो हरिकान्तः सुधांशितः कि० १५।४५, (यहां पर इस शब्द का प्रथम और द्वितीय अर्थ भी घटता है), सूतिः 1. चांद 2. यज्ञ 3. कमल —स्यन्दिन् (वि०) अमृतमय, अमृत बहाने वाला —भर्तृ० २।६, क्षुधा तालुजिह्वा, कोमल तालु का लटकता हुआ मांसल भाग, हरः गरुड़ का विशेषण, दे० 'गरुड़'।

सुधितिः (पुं०, स्त्री०) [सु+धा+क्तिच्] कुल्हाड़ा।

सुनारः [सुष्ठु नालमस्य—प्रा० ब०, लस्य रः] 1. कुतिया की औड़ी 2. सांप का अण्डा 3. चिड़िया, गौरैया।

सुनासी (शी) रः सुष्ठो नासी (शी) रम् अग्रसैन्यं यस्य प्रा० ब०] इन्द्र का विशेषण।

सुन्दः (पुं०) एक राक्षस, उपसुंद का भाई,—यह दोनों भाई निकुम्भ राक्षस के पुत्र थे (उन्हें ब्रह्मा से एक वर मिला था—कि वे जब तक स्वयं अपना वध न करें, मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे। इस वरदान के कारण वे बड़ा अत्याचार करने लगे। अन्त में इन्द्र को तिलोत्तमा नाम की अप्सरा भेजनी पड़ी—जिसके लिए झगड़ा करते हुए दोनों ने एक दूसरे को मार डाला)।

सुन्दर (वि०) (स्त्री०—री) [सुन्द्+अरः] 1. प्रिय, मनोज्ञ, मनोहर, आकर्षक 2. यथार्थ, रः कामदेव का नाम,—री मनोरम स्त्री, एक भार्या सुन्दरी वा दरी या—भर्तृ० २।११५, विद्याधरसुन्दरीणाम्—कु० १।७।

सुप्त (भू० क० कृ०) [स्वप्+क्त] 1. सोया हुआ, सोता हुआ, निद्राग्रस्त न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः—हि० प्र० ३६ 2. लकवा मारा हुआ, स्तम्भित, सुन्न, बेहोश दे० स्वप्,—प्तम् निद्रा, गहरी निद्रा। सम०- जनः 1. सोता हुआ व्यक्ति 2. मध्यरात्रि, ज्ञानम् स्वप्न, —त्व (वि०) अर्धांग-ग्रस्त, लकवा मारा हुआ।

सुप्तिः (स्त्री०) [स्वप्+क्तिन्] 1. निद्रा, सुस्ती, ऊंघ 2. बेहोशी, लकवा, स्तम्भ, जाड्य 3. विश्वास भरोसा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुसः [सुष्ठु सीयतेऽत्:—सु+सा+क] 1. चांद 2. कपूर 3. आकाश,—**मम्** फूल भाग० १।८४ ।

सुरः [सुष्ठु राति ददात्यभीष्टम्—सु+रा+क] 1. देव, देवता—सुराप्रतिग्रहाद् देवाः सुरा इत्यभिधीयते: राम०, सुधया तर्पयते सुरान् पितृंश्च—विक्रम० ३।७ रघु० ५।१६ 2. ३३ की संख्या 3. सूर्य 4. ऋषि, विद्वान् पुरुष । सम०—**अङ्गना** दिव्यांगना, देवी, अप्सरा—रघु० ८।७९,—**अधिपः** इन्द्र का विशेषण

अरिः 1. देवों का शत्रु, राक्षस 2. झींगुर की **बीवीं, अर्हम्** 1 सोना 2. केसर, ज़ाफरान,—**आचार्यः** बृहस्पति का विशेषण,—**आपगा** 'स्वर्गीय नदी' गङ्गा का विशेषण,—**आलयः** 1. मेरु पर्वत 2. स्वर्ग, बैकुण्ठ, —**इज्यः** बृहस्पति का नाम,—**इष्टा** पवित्र तुलसी, **इन्द्रः, ईशः, ईश्वरः** इन्द्र का नाम,—**उत्तमः** 1. सूर्य 2. इन्द्र,—**उत्तरः** चन्दन की लकड़ी,—**ऋषिः** (**सुर्षिः**) दिव्य ऋषि, देवर्षि,—**कारुः** विश्वकर्मा का विशेषण,—**कार्मुकम् इन्द्रधनुष,—गुरुः** बृहस्पति का विशेषण,—**ग्रामणी** (पुं०) इन्द्र का नाम,—**ज्येष्ठः** ब्रह्मा का विशेषण, **तरुः** स्वर्ग का वृक्ष, कल्पवृक्ष, —**तोयकः** कौस्तुभ नाम की मणि,—**दारु** (नपुं०) देव-दारु वृक्ष,—**दीर्घिका** गंगा का विशेषण,—**द्रुवल्लभी** पवित्र तुलसी, **द्विषः** 1. देवों का हाथी 2. ऐरावत, **द्विष्** (पुं०) राक्षस रघु० १०।१५, **धनुस्** (नपुं०) इन्द्रधनुष,—सुरधनुरिदं दूराकृष्टं न नाम शरासनम् विक्रम० ४।२,—**द्रुपः** तारपीन, राल, **निम्नगा** गंगा का विशेषण,—**पतिः** इन्द्र का विशेषण,—**पथम्** आकाश, स्वर्ग,—**पर्वतः** मेरु पहाड़,—**पादपः** स्वर्ग का वृक्ष, जैसे कि कल्पतरु, **प्रियः** 1. इन्द्र का नाम 2. बृहस्पति का नाम, **भूयम्** देव के साथ अन-न्यरूपता, देवत्वग्रहण, देवत्वारोपण, **भूरुहः** देवदारु वृक्ष,—**युवतिः** (स्त्री०) दिव्य तरुणी, अप्सरा,—**लालिका** मुरली, बांसुरी, **लोकः** स्वर्ग, **वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश, **वल्ली** पवित्र तुलसी,—**विद्विष्,—वैरिन्** —**शत्रु** (पुं०) असुर, दानव, दैत्य, **सद्मन्** (नपुं०) स्वर्ग, बैकुंठ, —**सरित्, सिन्धु** (स्त्री०) गंगा—सुर-सरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमंशुमः—रघु० २।७५, —**सुन्दरी,—स्त्री** दिव्यांगना, अप्सरा विक्रम० १।३ ।

सुरङ्गः, गा [?] 1. सेंध 2. अन्तःकक्ष मार्ग, मकान के नीचे खोदा हुआ मार्ग—ऐकागारिकेण तावती सुरङ्गां कारयित्वा—दश०, सुरङ्गया बहिरपपतेयु: पुरुषासु - मुद्रा० २, ('सुरङ्गा' भी लिखा जाता है) ।

सुरभि (वि०) [सु+रभ्+इन्] 1. मधुर गंध युक्त, खुशबूदार, सुगंध युक्त - पाटलसंसर्गसुरभिवनवातः: श० १।३, मेघ० १६, २०, २२ 2. सुहावना, रुचिकर 3. चमकीला, मनोहर तां सौरभेयीं सुरभि-यशोभिः: 4. प्रियतम, मित्रसदृश 5. विख्यात, प्रसिद्ध 6. बुद्धिमान्, विद्वान् 7. नेक, भला, **भिः** 1. सुगंध, खुशबू, सुवास 2. जायफल 3. साल वृक्ष की राल, या कोई भी राल 4. चम्पक वृक्ष 5. शमी वृक्ष 6. कदंब का पेड़ 7. एक प्रकार की सुगंधित घास 8. वसन्त ऋतु विक्रम० २।२०, (स्त्री०) 1. लोबान का वृक्ष 2. तुलसी 3. मोतिया 4. एक प्रकार की सुगंध, या सुगंधित पौधा 5. मदिरा 6. पृथ्वी 7. गाय 8. समृद्धि देने में प्रसिद्ध गाय· सुतां तदीयां सुरभेः कृत्वा प्रतिनिधिम् रघु० १।८१, ७५ 9. मातृकाओं में से एक, (नपुं०) 1. मधुर गंध, सुवास, खुशबू 2. गंधक 3. सोना । सम० - **द्रुमः** सुगंधित भक्खन, खुशबूदार घी,—**त्रिफला** 1. जायफल 2. लौंग 3. सुपारी, **बाणः** कामदेव का, विशेषण, **मासः** वसंत ऋतु, **मुखम्** वसंत ऋतु का आरम्भ ।

सुरभिका [सुरभि+कन्+टाप्] एक प्रकार का केला ।

सुरभिमत् (पुं०) [सुरभि+मतुप्] अग्नि का नाम ।

सुरा [सु+क्रन्+टाप्] 1. मदिरा, शराब—सुरा वै मलमन्ना-नाम्—मनु० ११।९३, गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा १।४ 2. जल 3. पान-पात्र 4. साँप । सम० - **आकारः** शराब खींचने की भट्ठी, **आजीवः, - आजीविन्** (पुं०) कलाल,— **आलयः** मदिरालय, मधुशाला, **उदः** शराब का समुद्र, **घटः** मदिरा भर कर रक्खा हुआ बर्तन, **चक्रः** शराब की दुकान के बाहर टंगा हुआ झंडा, - **प** (वि०) 1. शराबी, मद्यप 2. सुहावना, रुचिकर 3 बुद्धिमान्, ऋषि, **पाणम्, पानम्** मदिरा या शराब का पीना, **पात्रम्, भाण्डम्** शराब का प्याला, या गिलास - **भागः** खमीर, फेन - **मण्डः** (खमीर पैदा होने के समय) मदिरा के ऊपर जमने वाला फेन,—**सन्धानम्** मदिरा खींचना ।

सुवर्ण (वि०) [सुष्ठु वर्णोऽस्य—प्रा० ब०] 1. अच्छे रंग का, सुन्दर रंग का, चमकीले रंग का, उज्ज्वल, पीला, सुनहरा 2. अच्छी जाति या बिरादरी का 3. अच्छी ख्याति का, यशस्वी, विख्यात,—**र्णः** 1. अच्छा रंग 2. अच्छी जाति या बिरादरी 3. एक प्रकार का **यज्ञ** 4. शिव का विशेषण 5. धतूरा,—**र्णम्** 1. सोना 2. सोने का सिक्का (पुं० भी)—नन्वहं दश सुवर्णान् प्रयच्छामि—मृच्छ० २ 3. सोलह माशे के बराबर सोने का तोल या १७५ ग्रेन के लगभग (पुं० भी) 4. धन, दौलत, ऐश्वर्य 5. एक प्रकार की पीले चन्दन की लकड़ी 6. एक प्रकार का गेरु । सम०—**अभिषेकः** दूल्हा और दुल्हिन पर उस जल के छींटे देने जिसमें सोने का टुकड़ा डाला हुआ हो,—**कदली** केले का एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकार,—**कर्तृ, कार,** -कृत् (पुं०) सुनार,—**गणितम्** गणित में हिसाब लगाने की एक विशेष रीति, —**पुष्पिन्** (वि०) सोने से भरा-पूरा उदा० सुवर्ण-पुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति त्रयो जनाः। शूरश्च कृत-विद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् पंच० १।४५,—**पृष्ठ** (वि०) सोना चढ़ा हुआ, सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ, **माक्षिकम्** खनिज पदार्थ विशेष, सोनामाखी, -**यूथी** पीली जूही,—**रूप्यक** (वि०) सोने और चांदी से भरपूर, -**रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण, —**वर्ण** हल्दी, **सिद्धः** जिसने जादू से सोना प्राप्त कर लिया है,—**स्तेयम्** सोने की चोरी (पांच महापातकों में से एक)।

सुवर्णकम् [सुवर्ण+कन्] 1. पीतल, कांसा 2. सीसा।

सुवर्णवत् (वि०) [सुवर्ण+मतुप्] 1. सुनहरा 2. सुनहरे रंग का, सुन्दर, मनोहर।

सुषम (वि०) [सुष्ठु समं सर्वं परमात् प्रा० ब०] अत्यन्त प्रिय या सुन्दर, बहुत सुखकर,—**मा** परम सौन्दर्य, आत्यधिक आभा या कांति कुरबककुसुमं चपलासुषमं -गीत० ७, सुषमाविषये परीक्षणे किल्लिलं पद्मभाजि तन्मुखात् नै० २।३७, भामि० १। २६, २।१२।

सुषवी [सु+सु+अच्+ङीष्] 1. एक प्रकार की लौकी 2. काला जीरा 3. जीरा।

सुषावः (पुं०) शिव का विशेषण।

सुषिः (स्त्री०) [शुष्+इन्, पृषो० शस्य सः] छिद्र, सूराख, तु० 'शुषिः'।

सुषि (षी) म (वि०) [सु+सुष्+मक्, सम्प्रसारण, पृषो०] 1. शीतल, ठंडा 2. सुखकर, रुचिकर, **मः** 1. शीतलता 2. एक प्रकार का सांप 3. चन्द्रकान्त-मणि।

सुषिर (वि०) [शुष्+किरच्, पृषो० शस्य सः] 1. छिद्रों से पूर्ण, खोखला, सरन्ध्र 2. उच्चारण में मन्द, —**रम्** 1. छिद्र, रन्ध्र, सूराख 2. कोई भी बाजा जो हवा से बजे।

सुषुप्तिः (स्त्री०) [सु+स्वप्+क्तिन्] 1. गहरी या प्रगाढ़ निद्रा, प्रगाढ़ विश्राम 2. भारी बेहोशी, आत्मिक अज्ञान अविद्यात्मिका हि बीजशक्तिरव्यक्तशब्द-निर्देश्या परमेश्वराश्रया मायामयी महासुषुप्तिर्यस्यां स्वरूपप्रतिबोधरहिताः शेरते संसारिणो जीवाः—ब्रह्मसूत्र पर शारी० भाष्य १।४।३।

सुषुम्णः [सुष्+मनिन्+क] सूर्य की प्रधान किरणों में से एक, **म्ना** शरीर की एक विशेष नाड़ी जो इडा तथा पिंगला नाम की वाहिकाओं के मध्य में स्थित है।

सुष्ठु (अव्य०) [सु+स्था+कु] 1. अच्छा, उत्तमता के साथ, सुन्दरता से 2. अत्यंत, बहुत ज्यादह -सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र एतेन विनयमाहात्म्येन उत्तर० १ 3. सचमुच, ठीक,—शब्दः सुष्ठु प्रयुक्तः सर्व०, अथवा सुष्ठु खल्विदमुच्यते।

सुष्मम् [सुष्+मक्, सुक्] रस्सी, डोरी, रज्जु।

सुष्मा (पुं०, ब० व०) एक राष्ट्र का नाम—आत्मा संरक्षितः सुष्मैर्वेत्तिमाध्यित्व वंसलीम्— रघु० ४।३५।

सू I (अदा० दिवा० आ०—सूते, सूयते, सूत) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना (आत्म० से भी) —असूत सा नागवधूपभोग्यम् कु० १।२०, कीर्तिं सूते दुष्कृत या हिनस्ति उत्तर० ५।२१, **प्र**—, उत्पन्न करना पैदा करना, जन्म देना।

II (तुदा० पर० सुवति) 1. उत्तेजित करना, उकसाना, प्रेरित करना 2. (ऋण का) परिशोध करना।

सू (वि०) [सू+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला, फल देने वाला -(स्त्री०) 1. जन्म 2. माता।

सूकः [सू+कन्] 1. बाण 2. हवा, वायु 3. कमल।

सूकरः [सु+कॄ+अप्, कित्] 1. वराह, सूअर—दे० शूकर 2. एक प्रकार का हरिण 3. कुम्हार, -**री** 1. सूअरी 2. एक प्रकार की काई, शैवाल।

सूक्ष्म [सूक्+मन्, सुक् च नेट्] 1. बारीक, महीन, आणविक—जालांतरस्थसूर्यांशौ यत् सूक्ष्मं दृश्यते रजः 2. थोड़ा, छोटा—इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८, रघु० १८।४९ 3. बारीक, पतला, कोमल, बढ़िया 4. उत्तम 5. तेज, तीक्ष्ण, बेधी 6. कलाभिज्ञ, चालबाज, धूर्त, प्रवीण 7. यथार्थ, यथा-तथ्य, बिल्कुल सही, ठीक,—**क्ष्मः** 1. अणु, 2. केतक का पौधा 3. शिव का विशेषण, —**क्ष्मम्** 1. सर्वव्यापक सूक्ष्म तत्त्व, परमात्मा 2. बारीकी 3. सांख्यदर्शनों द्वारा प्राप्य तीन प्रकार की शक्तियों में से एक, तु० सादव्य 4. कलाभिज्ञता, प्रवीणता 5. जालसाजी, धोखा 6. बारीक धागा 7. एक अलंकार का नाम जिसकी परिभाषा मम्मट ने इस प्रकार दी है कूतोऽपि लक्षितः सूक्ष्मोऽप्यर्थोऽन्यस्मै प्रकाश्यते। धर्मेण केनचि-दत्र तत्सूक्ष्मं परिचक्षते ॥ काव्य० १०। **सम०** —**एला** छोटी इलायची, **तण्डुलः** पोस्त, **तण्डुला** 1. पीपल, पीपली 2. एक प्रकार का धान, —**दर्शिता** सूक्ष्मदृष्टि होने का भाव, तीक्ष्णता, अणुदृष्टि, बुद्धि-मानी,—**दर्शिन्, दृष्टि** (वि०) 1. तेज नजर वाला श्येन जैसी दृष्टि वाला 2. बारीक विवेचनकर्ता 3. तीक्ष्ण, तेज मन वाला,—**दारु** (नपुं०) लकड़ी का पतला तख्ता, फलक,—**देहः**,—**शरीरम्** लिंग शरीर जो सूक्ष्म पंच महाभूतों से युक्त है,— **पत्रः** 1. धनिया 2. एक प्रकार का जंगली जीरा 3. एक प्रकार का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाल गन्ना 4. बबूल का पेड़ 5. एक प्रकार की सरसों, —पर्णी एक प्रकार की तुलसी,—पिप्पली वनपीपली —बुद्धि (वि०) तेज बुद्धि वाला, प्रखर, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, (स्त्री०—द्धिः) तेज बुद्धि, सूक्ष्म प्रतिभा, मानसिक प्रगल्भता,—मक्षिकम्,—का मच्छर, डांस, —मानम् यथार्थ माप, सही से गणना (विप० स्थूल-मान —जिसका अर्ध है—खुली माप, मोटी माप) —शर्करा बारीक बजरी, रेत, बालुका,—शालिः एक प्रकार का बारीक चावल, षट्चरणः एक प्रकार की जूं, जमजूं।

सूच् (चुरा० उभ० सूचयति—ते, सूचित) 1. बींधना 2. निर्देश करना, इंगित करना, बतलाना, प्रकट करना, साबित करना—त्वां सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्गवोऽयं (गन्धः) मृच्छ० १।३५, मेघ० २१, श० १।१४ 3. भेद खोलना, प्रकट करना, भण्डाफोड़ करना —स जातु सेव्यमानोऽपि गुप्तद्वारो न सूच्यते रघु० १७।५० 4. हावभाव व्यक्त करना, अभिनय करना, इशारों से सूचित करना वामाक्षिस्पन्दनं सूचयति, रघवंश सूचयति—आदि 5. पता लगाना, गुप्त भेद जानना, निश्चय करना। अभि , दिखलाना, संकेत करना अस्मत्त तलं प्राप्तं कर्मचेष्टाभिसूचितं—महा०, प्र,—सम्, संकेत करना, सूचित करना—संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् - सुभा०।

सूचः [सूच् + अच्] कुशा का नुकीला अंकुर या पत्ता।

सूचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [सूच्+ण्वुल्] 1. संकेत करके, संकेत करने वाला, छिद्र करने वाला, दिखलाने वाला 2. प्रकट करने वाला, सूचित करने वाला,—कः 1. वेधक 2. सूई, छिद्र करने या सीने के लिए कोई उपकरण 3. सूचना देने वाला, कहानी बतलाने वाला, बदनाम करने वाला, भेदिया 4. वर्णन करने वाला, पढ़ाने वाला, सिखाने वाला 5. किसी मण्डली का प्रबन्धक या प्रधान अभिनेता 6. बुद्ध 7. सिद्ध 8. दुष्ट, बदमाश 9. राक्षस, पिशाच 10. कुत्ता 11. कौवा 12. बिलाव 13. एक प्रकार का महीन चावल। सम० वाक्यम् किसी सूचना देने वाले द्वारा दी गई सूचना।

सूचनम्,—ना [सूच् भावे ल्युट्] 1. बींधने या छिद्र करने की क्रिया, सुराख करना, छेदना 2. इशारे से बताना, संकेत करना, सूचित करना 3. विरुद्ध सूचित करना, भेद खोलना, कलंक लगाना, बदनाम करना 4. हावभाव प्रकट करना, उचित चेष्टाओं या चिह्नों से संकेत करना 5. इशारा करना, इंगित 6. सूचना 7. पढ़ाना, दिखाना, वर्णन करना 8. गुप्त भेद जानना, रहस्य का पता लगाना, देखना, निश्चय करना 9. दुष्टता, बदमाशी।

सूचा [सूच्+अ+टाप्] 1. बींधना 2. हावभाव 3. भेद जानना, देखना, दृष्टि।

सूचि:,—**ची** (स्त्री०) [सूच्+इन् वा ङीप्] 1. बींधना, छेद करना 2. सूई 3. तेज नोक, या नुकीली पत्ती (कुशा आदि की) अभिन्नकुशसूच्या परिक्षतं मे चरणम्—श० १, इसी प्रकार 'मुख कुशसूचिविद्धे - श० ४।१४ 4. तेज नोक या किसी वस्तु का सिरा कः करं प्रसारयेत् पद्मरत्नसूचये- कु० ५।४३ 5. कलिका की नोक 6. एक प्रकार का सैनिकव्यूह, स्तंभ या पंक्ति —दण्डव्यूहेन तन्मार्गं यायात्तु शकटेन वा। वराहमकराख्यां वा सूच्या वा गरुडेन वा मनु० ७।१८७ 7. समलंबक के पार्श्वों से निर्मित त्रिकोण 8. शंकु, स्तूप 9. अंगचेष्टाओं से संकेत करना, संकेतों द्वारा बतलाना, हावभाव 10. नृत्यविशेष 11. नाटकीय कर्म 12. विषयानुक्रमणिका, विषयसूची, 13. फहरिस्त, विवरणिका 14. (ज्योति० में) ग्रहण की संगणना के लिए पृथ्वी का गोला। सम० अग्र (वि०) सूई की भांति नोक वाला, सूई के समान तेज नोक रखने वाला, पैना किया हुआ, (ग्रम्) सूई की नोक,—आस्यः चूहा, कटाहन्यायः दे० 'न्याय' के नीचे, क्षारः स्तूप की खुदाई, शंकु, पत्रकम् अनुक्रमणिका, विषयसूचि (—कः) एक प्रकार का शाक, सिंदावर पुष्पः केतक वृक्ष, भिन्न (वि०) कली के किनारों का खिलना —पाण्डुच्छायापवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नैः मेघ० २८, भेद्य (वि०) 1. जो सूई के द्वारा बींधा जा सके 2. मोटा, सघन, घोर, गाढ़ा, बिल्कुल,—च्छाद्यलोकेऽत्र नरपतिपथे सूच्यभेद्यैस्तमोभिः 3. स्पर्शज्ञेय, सहजग्राह्य, मुख (वि०) 1. सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला 2. नुकीला, (—खः) 1. पक्षी 2. सफेद कुशा 3. हाथी की विशेष स्थिति (—खम्) हीरा, रोमन् (पुं०) सुअर, -वदन (वि०) सुई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला, (—नः) 1. डांस, मच्छर 2. नेवला, —शालिः एक प्रकार का बारीक चावल।

सूचिकः [सूचि+कन्] दर्जी।

सूचिका [सूचि+क+टाप्] 1. सूई 2. हाथी की सूंड। सम०—धरः हाथी, -मुख (वि०) नुकीले मुंह वाला, नुकीले सिर वाला, (—खम्) खोल, सीपी, शंख।

सूचित (भू० क० कृ०) [सूच्+क्त] 1. बींधा हुआ, सुराख किया हुआ, छिद्रित 2. इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, सूचना दिया हुआ, संकेतित, इंगित किया हुआ 3. जतलाया गया या हावभावों से संकेतित 4. समाचार दिया गया, उक्त, प्रकट किया गया 5. निश्चय किया गया, ज्ञात।

सूचिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [सूच्+णिनि] 1. बेधने वाला, छिद्र करने वाला 2. इशारा करने वाला,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूचना देने वाला, संकेत करने वाला 3. विरुद्ध सूचित करने वाला 4. रहस्य का पता लगाने वाला (पुं०) भेदिया, सूचना देने वाला।

सूचिनी [सूचिन्+ङीप्] 1. सुई 2. रात।

सूची दे० 'सूचि'।

सूच्य (वि०) [सूच्+ण्यत्] सूचित किये जाने योग्य, जताया जाने योग्य।

सूत (अव्य०) अनुकरणात्मक ध्वनि (जैसे खर्राटे का शब्द)।

सूत (भू० कृ० कृ०) [सू+क्त] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न, जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ 2. प्रेरित, उद्गोर्ण, तः स्यवान् सारथि सूत चोदयाश्वान् पुण्याश्रम-दर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे श० १ 2. ब्राह्मणवर्ण की स्त्री में क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न पुत्र (इसका कार्य रथ हांकने का होता है)—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः मनु० १०।११, सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम् वेणी० २।३३ 3. बंदीजन 4. रथ-कार 5. सूर्य 6. व्यास के एक शिष्य का नाम तः, —तम् पारा। सम०—तनयः कर्ण का विशेषण, -राज् (पुं०) पारा।

सूतकम् [सूत+कन्] 1. जन्म, पैदायश मनु० ४।११२ 2. प्रसव (या गर्भपात) के कारण उत्पन्न अशौच (जननाशौच),—कः,—कम् पारा।

सूतका [सूत+कन्+टाप्] सद्यः प्रसूता, वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जच्चा, —मनु० ५।८५।

सूता [सूत+टाप्] जच्चा स्त्री।

सूतिः (स्त्री०) [सू+क्तिन्] 1. जन्म, पैदायश, प्रसव, जनन, बच्चा पैदा करना 2. सन्तान, प्रजा 3. स्रोत, मूलस्रोत, आदिकारण तपसो मूतिरसूतिरापदाम् —कि० २।५६ 4. वह स्थान जहां सोमरस निकाला जाता है। सम०—अगारम् परिवार में बच्चे के जन्म के कारण अपवित्रता (जो दस दिन तक रहती है), —गृहम् जच्चा घर, प्रसूति-गृह,—मासः (सूती-मासः भी) प्रसव का महीना, गर्भाधान के पश्चात् दसवां महीना।

सूतिका [सूत+कन्+टाप्, इत्वम्] वह स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो, जच्चा। सम०—अगारम्, —गृहम्, —गेहम्,—भवनम् जच्चाखाना, सौरी,—रोगः प्रसव के पश्चात् होने वाला रोग, प्रसवजन्य रोग, —षष्ठी प्रसव के पश्चात् छठे दिन पूजी जाने वाली देवी विशेष का नाम।

सूत्यरम् [सु+उद्+यृ+अप्] मदिरा का खींचना या चुआना।

सूत्या [सू+क्यप्+टाप्, तुक्] दे० 'सुत्या'।

सूत्र (चुरा० उभ० सूत्रयति-ते, सूत्रित) 1. बांधना, कसना धागा डालना, नत्थी करना 2. सूत्र के रूप में या संक्षेप से रचना करना—तथा च सूत्र्यते ह्रि भगवता पिङ्गलेन, जैमिनिरपि इदमपि धर्मलक्षणमसूत्रयत्, आदि 3. योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, ठीक पद्धति में रखना—सन्निपुणं मया निसृष्टार्थदूतीकल्पः सूत्र-यितव्यः—मा० १ 4. शिथिल करना, ढीला करना।

सूत्रम् [सूत्र्+अच्] 1. धागा, डोरी, रेखा, रस्सी—पुष्पमा-लानुषङ्गेण सूत्रं शिरसि धार्यते—सुभा०, मणौ वज्र-समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः—रघु० १।४ 2. रेशा, तन्तु—मुरारिणा कर्षति खण्डितायाःसूत्रं मृणा-लादिव राजहंसी—विक्रम० १।१९, कु० १।४०, ४९ 3. तार 4. बागों को आढी 5. यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो पहले तीन वर्ण धारण करते हैं)—शिलासूत्रवान् ब्राह्मणः तर्क० 6. पुत्तलिका का तार या डोरी 7. संक्षिप्त विधि, गुर सूत्र 8. परिभाषा परक संक्षिप्त वाक्य—परिभाषा—स्वल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतो मुखम्। अस्तोभमनवद्यं च सूत्र सूत्रविदो विदुः॥ 9. सूत्रग्रन्थ उदा० मानवकल्प सूत्र, आपस्तंबसूत्र 10. विधि, धर्म-सूत्र, आज्ञप्ति (विधि में)। सम०—आत्मन् (वि०) डोरी या धागे के स्वभाव वाला, (पुं०) आत्मा, -आली माला, (जो कण्ठ में पहनी जाये, हार,—कण्ठः 1. ब्राह्मण 2. कबूतर, पेंडुकी 3. खंजन पक्षी,—कर्मन् (नपुं०) बढ़ई का काम —कारः, कृत् (पुं०) सूत्र रचने वाला, कोणः, -कोणकः डायस, डुगडुगी, -मण्डिका एक प्रकार की यष्टिका जिसका उपयोग जुलाहे धागे लपेटने में करते हैं,—चरणम् वैदिक विद्यामन्दिर जिनके द्वारा अनेक सूत्रग्रंथों का निर्माण हुआ,—वरिद्ध (वि०) कम धागों वाला वह कपड़ा जिसमें थोड़े धागे लगे हों, झोला —अयं पटः सूत्रवरिद्धतां गतः—मृच्छ० २।९, —धरः, —धारः 1. 'डोरी पकड़ने वाला' रंगमंच का प्रबंधक, वह प्रधान नट जो पात्रों को एकत्र कर उन्हें प्रशिक्षित करता है, तथा जो प्रस्तावना में प्रमुख कार्य करता है—परिभाषा यह है—नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सदीजकम्। रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृतः॥ 2. बढ़ई, दस्तकार 3. सूत्रकार 4. इन्द्र का विशेषण, —पिटकः बुद्धसंबन्धी त्रिपिटक का प्रथम खंड,—पुष्पः कपास का पौधा,—भिद् (पुं०) दर्जी —भृत् (पुं०) सूत्रधार,—यन्त्रम् 1. 'धागा यंत्र' ढरकी 2. जुलाहे की खड्डी, वीणा एक प्रकार की बांसुरी —वेष्टनम् जुलाहे की ढरकी।

सूत्रणम् [सूत्र्+ल्युट्] 1. मिला कर, नत्थी करना, क्रम में रखना, क्रम बद्ध करना 2. सूत्रों के अनुसार क्रम-पूर्वक रखना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्रला [सूत्र+ला+क+टाप्] तकवा, तकली ।

सूत्रामन्=सुत्रामन् दे०

सूत्रिका [सूत्र+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेवई, सीभी ।

सूत्रित (भू० क० कृ०) [सूत्र+क्त] 1. नत्थी किया हुआ, क्रमबद्ध, प्रणालीबद्ध, पद्धतिकृत 2. सूत्रविहित, सूत्रों के रूप में अभिहित ।

सूत्रिन् (वि०) (स्त्री० - णी) [सूत्र+इनि] 1. धागों वाला 2. नियमों वाला, (पुं०) कौवा ।

सूद i (भ्वा० आ० सूदते) 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, मार डालना, नष्ट करना 2. डालना, उंडेलना 3. जमा करना 4. प्रक्षेपण, फेंक देना ।

ii (चुरा० उभ० सूदयति+ते) 1. उकसाना, प्रवलित करना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, प्राण फूंकना 2. आघात करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3. खाना पकाना, रांधना, सिद्धाना, तैयार करना 4. उंडेलना डालना 5. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 6. डालना, फेंकना, नि—, (निषूदयति —ते) मारना ।

सूदः [सूद्+घञ्, अच्, वा] 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. उंडेलना, चुआना 3. कूआं, झरना 4. रसोइया, 5. चटनी, रसा, झोल 6. कोई भी वस्तु सिझायी हुई, तैयार खाना 7. दली हुई मटर 8. कीचड़, दलदल 9. पाप, दोष 10. लोध्र वृक्ष । सम० —कर्मन् रसोइये का काम, —शाला रसोई ।

सूदन (वि०) (स्त्री०—नी) [सूद् ल्युट्] 1. नाश करने वाला, वध करने वाला, विनाशक—दानवसूदन, अरिगणसूदन आदि 2. प्यारा, प्रियतम,—नम् 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. हामी भरना, प्रतिज्ञा करना 3. डाल देना, फेंक देना ।

सून (भू० क० कृ०) [सू+क्त, क्तस्य नः] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, मुकुलित, खुला हुआ, कलिकायुक्त 3. रिक्त, खाली (संभवतः इस अर्थ में शून या शून्य समझा कर),—नम् 1. जन्म देना, प्रसव होना 2. कली, मंजरी 3. फूल ।

सूनरी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।

सूना [सूदाः नः दीर्घश्च] 1. क़साई घर, बुचड़खाना, —मवानपि सूना परिचर इव गृध्र आमिषलोलुपो भीरुकश्च—मा० २ 2. मांस की बिक्री 3. चोट पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना 4. मृदुतालु, काकल 5. करधनी, तगड़ी 6. गलग्रन्थियों को सूजन, हापू 7. प्रकाश की किरण 8. नदी 9. पुत्री,—नाः (स्त्री०, ब० व०) घर में होने वाली पाँच वस्तुएं जिनसे जीव हिंसा होने की संभावना होती है, दे० 'सूना' या 'पंचसूना' के अन्तर्गत ।

सूनिन् (पुं०) [सूना+इनि] 1. क़साई, मांस-विक्रेता 2. शिकारी ।

सूनुः [सू+नुक्] 1. पुत्र—पितुरभिमेवैकः सूनुरभवम्—का० 2. डाल, बच्चा 3. पोता (दौहित्र) 4. छोटा भाई 5. सूर्य 6. मदार का पौधा ।

सूनू (स्त्री०) [सूनु+ऊङ्] पुत्री ।

सूनृत (वि०) [सु+नृत्+क- उपसर्गस्य दीर्घः] 1. सत्य और सुखद, कृपालु और निष्कपट—तत्रसूनृतवागिरश्च सूरयः पुष्पमृग्यजुषमध्यगीयत शि० १४।२१, रघु० ११।३३ 2. कृपालु, सुशील, सज्जन, शिष्ट—तां वाच्यैतां मातरं मङ्गलानां धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः—उत्तर० ५।३१, तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता । एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन—मनु० ३।१०१, रघु० ६।२९ 3. शुभ, सौभाग्यसूचक 4. प्रियतम, प्यारा,—तम् 1. सत्य तथा रोचक भाषण 2. कृपापूर्ण एवं सुखकर प्रवचन, शिष्ट भाषा—रघु० ८।९२ 3. मांगलिकता ।

सूपः [सुखेन पीयते—सु+पा+घञ्यर्थे क, पृषो०] 1. यूष रसा—न स जातिति शास्त्रार्थं दर्वी सूपरसानिव —सुभा०, मनु० ३।२२६ 2. चटनी, मिर्च, मशाला 3. रसोइया 4. कड़ाही, बर्तन 5. बाण । सम० —कारः रसोइया, —पूपनम्,—पूपकम् हींग ।

सूमः [सू+मक्] 1. पानी 2. दूध 3. आकाश, गगन ।

सूर् (दिवा० आ० सूर्यते) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. दृढ़ करना या दृढ़ होना ।

सूर्ण (वि०) [सूर्+क्त, क्तस्य न] चोट पहुंचाया हुआ, क्षतिग्रस्त ।

सूरः [सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकानुदयेन सू+क्रन्] 1. सूर्य 2. मदार का पौधा 3. सोम 4. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 5. नायक, राजा । सम० —चक्षुस् (वि०) सूर्य की भांति चमकीला, —सुतः शनि का विशेषण,—सूतः सूर्य का सारथि, अर्थात् अरुण ।

सूरणः [सूर्+ल्युट्] सूरन, जमीकंद ।

सूरत (वि०) [सु+रम्+क्त, पृषो० दीर्घः] 1. कृपालु, दयालु, कोमल 2. शान्त, धीर ।

सूरिः [सू+किन्] 1. सूर्य 2. विद्वान्, या बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि—अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः —रघु० १।४, शि० १४।२१ 3. पुरोहित 4. पूजा करने वाला, जैन मत के आचार्यों को दिया गया सम्मानसूचक पद, उदा०- मल्लिनाथसूरि 6. कृष्ण का नाम ।

सूरिन् (वि०) (स्त्री० णी) [सूर्+णिनि] बुद्धिमान्, विद्वान् (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, पंडित ।

सूरी [सूरि+ङीष्] 1. सूर्य की पत्नी का नाम 2. कुन्ती का नाम ।

सूर्क् (भ्वा० दिवा० पर० सूर्कति, सूर्क्यति) 1. सम्मान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, आदर करना 2. अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना।

सूर्य (र्ध्य) वि० [सूर्ध् (र्ध्य्)+क्यप्] अनादर, अपमान।

सूर्ख: [सूर्ख्+घञ्] साप, उड़द।

सूर्प दे० सूप।

सूर्मि:-र्मी (स्त्री०) [=शूर्मि, पृषो० शस्य सः, पक्षे ङीष्] 1. लोहे या अन्य किसी धातु की बनी मूर्ति —मनु० ११।१३ 2. घर का स्तंभ 3. आभा, कान्ति 4. ज्वाला।

सूर्य: [सरति आकाशे सूर्यः, यद्वा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति— सू+क्यप्, किं०] 1. सूरज सूर्य तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा - रघु० ५।१३, (पुराणों के अनुसार सूर्य को कश्यप और अदिति का पुत्र माना जाता है—तु० श० ७; उसका वर्णन किया जाता है कि वह अपने सात घोड़ों के रथ में बैठ कर घूमता है, अरुण इस रथ का सारथि है। सूर्य भगवान् रथ में बैठा हुआ सब लोकों को, तथा उनके शुभाशुभ कर्मों को देखता है। संज्ञा (छाया या अश्विनी) उसकी प्रधान पत्नी का नाम है, इसी से यम और यमुना पैदा हुए दो अश्विनीकुमारों तथा शनि का जन्म भी इसी से हुआ। राजाओं के सूर्यवंश का प्रवर्तक विवस्वान् मनु भी सूर्य का ही पुत्र था) 2. मदार का पौधा 3. दोहद की संख्या (सूर्य के बारह रूपों से स्थापना)। समः अपायः सूर्य का छिपना मेघ० ८०,—अर्घ्यम् सूर्य की सेवा में उपहार प्रस्तुत करना,—अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्तमणि, अश्वः सूर्य का घोड़ा, अस्तम् सूर्य का छिपना, आतपः सूर्य की गरमी या चमक, धूप,—आलोकः धूप, आवर्तः एक प्रकार का सुगन्धित फूल, हुलहुल, —आह्व (वि०) सूर्य के नाम पर जिसका नाम है, (ह्वः) मदार का भारी पौधा, आक, (—ह्वम्) तांबा, इन्द्युद्गमः (सूर्यचन्द्रमा का मिलन) अमावस्या —दर्शः सूर्यनुद्गमः अमर०, उत्थानम्, उदयः सूर्य का निकलना, ऊढः 1. सूर्य, द्वारा लाया गया, सायंकाल के समय आने वाला अतिथि—पंच० १, सूर्य छिपने का समय, कांतः आतपशीला, एक स्फटिक मणि श० २।७, कान्तिः (स्त्री०) 1. सूर्य की दीप्ति 2. एक पुष्प विशेष 3. तिल का फूल, - काल दिन का समय, दिन, अनलचक्रम् ज्योतिषशास्त्र में शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र, ग्रहः 1. सूर्य 2. सूर्यग्रहण 3. राहु और केतु का विशेषण 4. घड़े का पैंदा, ग्रहणम् सूर्यग्रहण (चन्द्रमा की छाया पड़ने से सूर्यबिंब का छिप जाना पौराणिक मत में राहु या केतु द्वारा सूर्य का ग्रास), चन्द्रौ (इसी प्रकार—सूर्याचन्द्रमसौ) (पुं०, द्वि० व०) सूर्य और चांद,—जः तनयः, पुत्रः 1. सुग्रीव के विशेषण 2. कर्ण के विशेषण 3. शनिग्रह के विशेषण 4. यम के विशेषण,- जा, तनया यमुना नदी, तेजस् (नपुं०) सूर्य की चमक या गर्मी, नक्षत्रम् वह नक्षत्रपुंज जिसमें सूर्य हो, -पर्वन् (नपुं०) (सूर्य के नई राशि में प्रवेश या सूर्यग्रहण आदि का) पुण्यकाल, सूर्यपर्व, —प्रभव (वि०) सूर्य से उत्पन्न—रघु० १।२, फणिशकम्—सूर्यकालानलचक्रम्, दे० ऊ०, भक्त (वि०) सूर्य का उपासक, (क्तः) धत्तूरकवृक्ष या गुलदुपहरिया या इसका फल, -मणिः सूर्यकांतमणि, मण्डलम् सूर्य का घेरा, परिवेषः,—यन्त्रम् 1. (सूर्योपासना में व्यवहृत) सूर्य का चित्र या प्रतिमा 2. सूर्य के वेध में काम आने वाला एक उपकरण, रश्मिः सूर्य की किरण, सूर्यमयूख या मरीचि,—लोकः सूर्य का लोक, वंशः राजाओं का सूर्यवंश (जो अयोध्या में राज्य करते थे) इक्ष्वाकुवंश, - वर्चस् (वि०) सूर्य के समान तेजोमंडित, विलोकनम् बच्चे को चार महीने का होने पर, बाहर ले जाकर सूर्यदर्शन कराने का संस्कार—तु० उपनिष्क्रमणम्, संक्रमः, संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, संज्ञम् केसर, जाफरान,—सारथिः अरुण का विशेषण,—स्तुतिः (स्त्री०) - स्तोत्रम् सूर्य के प्रति की गई स्तुति,—हृदयम् सूर्य का एक स्तोत्र।

सूर्या [सूर्य+टाप्] सूर्य की पत्नी।

सूय [स्वा० पर० सूयति] फल प्रस्तुत करना, उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना।

सूयणा [सूय+युच्+टाप्] माता।

सूयन्ती (स्त्री०) प्रसवोन्मुखी, आसन्न प्रसवा।

सृ (स्वा० जुहो० पर० सरति, सिसर्ति, धावति भी, सर्त) 1. जाना हिलना-डुलना, प्रगति करना मृगाः प्रदक्षिणं सस्युः भट्टि० १४।१४ 2. पास जाना, पहुँचना—निपात्यते हयः सेतं प्रतीतः ससुवर्णवम् रामा० 3. प्राय बोलना, चढ़ाई करना (तं) सस्मारभिमुखः शूरः शार्दूल इव कुञ्जरम् महा० 4. दौड़ना, वेग चलना, शिखर जाना सरति सहसा यत्रोर्मेण्यं यनाग्रवला सती मालवि० ४।११ 5. (हवा की भांति) तेज चलना,- तं चेद्वायो सरति सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा— मेघ० ५३ 6. बहना प्रेर० (सारयति ते) 1. चलना या घूमना 2. विस्तार करना 3. मलना, (अंगुलियों से) शनैः शनैः छूना —तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचित् मेघ० ८६ 4. पोंछे धकेलना, हटाना सारयन्ती गण्डाभोगात् कठिनविषमामेकवेणीं करेण मेघ० ९२, इच्छा० (सिसर्षति) जाने की इच्छा करना, अनु ,1. अनु-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गमन करना (सभी अर्थों में), पीछे जाना, ध्यान देना, पैरवी करना 2. पहुँचना, (अपने को) पहुँचाना—पूर्वोद्दिष्टमनुसर पुरीम् । मेघ० ३०, तेनोदीचीं दिशमनुसरेः—५७ 3. अनुशीलन करना, पार करना (प्रेर०) 1. अग्रणी होना - वायुरनुसारयतीव माम् रामा० 2. पीछे चलना, अप -, 1. श्लथ होना, निपुण होना, वापिस लेना यदपसरति मेघः कारणं तत्प्रहर्तुम् - पंच० ३।४३ 2. ओझल होना अन्तर्धान होना (प्रेर०) विज्ञाना, पहुँचाना, हटाना, वापिस हटना, दूर हांक देना अपसारय घनसारं —काव्य० ९, मनु० ७।१४९, अभि 1. जाना, पहुँचना—कि० ८।४ 2. मिलने के लिए जाना या आगे बढ़ना (किसी नियत स्थान पर), नियत करके मिलना—सुन्दरीरभिससार--का० ५८, शि० ६।२६ 3. आक्रमण करना, हमला करना, (प्रेर०) नियत करके मिलना, मिलने के लिए आगे बढ़ना वल्लभाभिससारयिषुणाम्—शि० १०।२०, कि० ९।३८, सा० द० ११५, उद् -,(प्रेर०) दूर भगाना, निकाल देना, उप—, 1. पास जाना, पहुँचना,--रघु० १९।१६ 2. सजग रहना, दर्शन देना—कैलासनाथमुपसस्य निवर्तमाना—विक्रम० १।३ 3. चढ़ाई करना, आक्रमण करना 4. आपसी मेल-जोल करना, निस् -, 1. चले जाना, बाहर निकलना, खिसक जाना, निकलना —बाणैः स्वरकार्मुकनिःसृतैः—रामा०, इसी प्रकार —वसुधास्तनिःसृतमिवाहितैः--शि० ९।२५ 2. बिदा होना, कूच करना—मनु० ६।४ 3. बहना, पसीजना, रिसना—यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः—रघु० २।३६ (प्रेर०) हांक कर दूर करना, निष्कासित करना, बाहर निकाल देना, परि-, चारों ओर बहना—वनं सरस्वती परिससार- ऐत०, परिसृप्तरूपः—महा० 2. चक्कर काटना, घूमना प्रदक्षिणं तं परिसृत्य-भाग०, (परिषत्तति- के स्थान पर परिसरति-पाठान्तर) शिखी श्रान्तिमद्धारिसन्नम् —मालवि० २।१३, प्र—, 1. बह जाना, झरना, उदय होना, प्रोद्गत होना—लोहितार्द्रा महानद्यः प्रसस्रुस्तत्र वासकृत्—महा० 2. आगे जाना, आगे बढ़ना - वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गाः—रघु० १३।१९, अन्वेषण- प्रसृते च मित्रगणे—दश० 3. फैलना, चारों ओर फैलना—कृशानुः किं साक्षात्प्रसरति दिशो नैष नियतम् —काव्य० १०, प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन (दवाग्निः)—ऋतु० १।२५ 4. फैलना, छा जाना, व्याप्त होना—प्रसरति परिमाथी कोऽप्ययं देहदाहः —मा० १।४१, जित्वा भित्त्वा प्रसरति बलात्कोऽपि चैतोविकारः—उत्तर० ३।३६ 5. बिखरा जाना, विस्तार करना—न ये हस्तौ प्रसरतः—रा० २ 6. (किसी कार्य को करने के लिए) उन्मुख होना, इच्छुक होना, न मे उचितेषु करणीयेषु हस्तपादं प्रसरति—श० ४, प्रसरति मनः कार्यारम्भे 7. छा जाना, आरम्भ करना, उपक्रम करना प्रससार चोत्सवः कथा० १६।८५ 8. लम्बा होना, दीर्घ होना विक्रम० ३।२२ 9. मजबूत होना, प्रबल होना—प्रसृततरं सख्यम् दश०, 10. (समय) बिताना, (प्रेर०) 1. फैलाना, बिछाना भट्टि० १०।४४ 2. बिछाना, विस्तार करना, (हाथ आदि) फैलाना—कालः सर्वजनान् प्रसारितकरो गृह्णाति दूरादपि पंच० २।२० 3. फैलाना, बिक्री के लिए बिछाना—क्रेतारः क्रीणीयुरिति बुद्धयापणे प्रसारितं क्रय्यम्- सिद्धा०, मनु० ५।१२९ 4. चौड़ा करना, (आँखों की पुतली को) फैलाना 5. प्रकाशित करना, ढिंढोरा पीटना, प्रचारित करना, प्रति -, 1. वापिस जाना, लौटना 2. धावा बोलना, चढ़ आना, आक्रमण करना, हमला करना—दैत्यः प्रत्यसरद्वैवं मत्तो मत्तमिव द्विपम् हरि० (प्रेर०) पीछे की ओर ढकेलना, बदल देना कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते श० ३।१३, वि -,फैलाना, विस्तृत होना, प्रसृत होना- चक्रीवदङ्गरुहधूलरुचो विसस्रुः —शि० ५।८, ९।१९, ३७, कि० १०।५३ (प्रेर०) 1. फैलना, बिछाना 2. व्याप्त होना, सम्—1. फैलना 2. हिलना-डुलना 3. मिलकर जाना या उड़ना 4. जाना, पहुँचना—यावान् संसृत्य संसारान् प्रेष्यतां याति शत्रुषु—मनु० १२।७०, (प्रेर०) 1. ऊपर फैलाना 2. घुमाना, चक्कर देना- जन्मवृद्धिक्षयैर्नित्यं संसार्यते चक्रवत्--मनु० १२।१२४।

सृकः [सृ+कक्] 1. हवा, वायु 2. बाण 3. दक्ष 4. कमल, कैरव।

सृक्कण्डु (स्त्री०) [सृ | विच्, पृषो० लुक् न, सृ+कण्डु क० स०] खुजली।

सृकालः [सृ+कालन्] दे० 'शृगाल'।

सृक्कम्, सृक्कणी, सृक्कन् (नपुं०) सृक्किकी, सृक्किन् (नपुं०), सृक्वम्, सृक्वणी, सृक्वन् (नपुं०), सृक्विणी, सृक्विन् (नपुं०) [सृज्+कन्, कनिन्, क्वनिप् वा] मुंह का किनारा सृक्विणी परिलेलिहन्—पंच० १।

सृगः [सृ+गक्] एक प्रकार का बाण या नेजा, भिदिपाल।

सृगालः [सृ+गालन्] दे० 'शृगाल'।

सृङ्का (स्त्री०) रत्नों या मणियों से बना हार, मणियों की जगमगाती लड़ी।

सृज् i (तुदा० पर० सृजति, सृष्ट] 1. रचना करना, पैदा करना, बनाना, प्रसव करना, जन्म देना—अर्चने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नारी तस्यां स किराजमसृजत् प्रभुः - मनु० १।३२, ३३, ३४, ३६. तन्तुनाभः स्वत एव तन्तून् सृजति —शारी० 2. पहनना, रखना, प्रयोग में लाना 3. जाने देना, ढीला छोड़ना, मुक्त करना 4. उत्सर्जन करना, छितराना, प्रसृत करना, बिखेरना, डालना —अश्राक्षुरस्रं करुणं रुवन्तः - भट्टि० २।१७, आनन्दशीतामिव वाष्पवृष्टिं हिमस्रुतिं हैमवतीं ससर्ज —रघु० १६।४४, ८।३५ 5. कहला भेजना, उच्चारण करना, कु० २।५३ ७।४७ 6. फेंकना, डाल देना 7. छोड़ना, छोड़ कर चले जाना, त्यागना, हटा देना।

ii (दिवा० आ० सृज्यते) ढीला होना, इच्छा० (सिसृक्षति) रचना करने की इच्छा करना। अति—, 1. देना, अर्पण करना—विक्रम० १।१५, रघु० ११। ४८ 2. त्यागना, पदच्युत करना 3. उगलना 4. अनुज्ञा देना, अनुमति देना, अभि , देना, प्रदान करना, अव , 1. डालना, फेंकना, बोना (बीज) बखेरना, अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् --मनु० १।८ 2. डालना, बूंद-बूंद टपकाना—उत्तर० ३।२३ 3. ढीला छोड़ना, उद्—, 1. उडेलना, उगलना, निकाल देना,—व्यलीकनिःश्वासमिवोत्ससर्ज कु० ३।२५, सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः— रघु० १।१८, 'उडेल देना, बाहर फेंक देना या लौटाना 2. (क) छोड़ कर चले जाना, छोड़ देना, परित्याग करना, —रघु० ५।५१, ६।४६, कु० २।३६, (ख) एक ओर फेंकना, स्थगित करना—स चापमुत्सृज्य विबुद्धमन्युः—रघु० ३।५०, ४।५४ 3. ढीला छोड़ना, स्वच्छन्द घूमने देना तुरङ्गमुत्सृष्टमनर्गलं पुनः—रघु० ३।३९ 4. दागना, फेंकना, गोली मारना-- भट्टि० १४।४५ 5. बोना, (बीज) बखेरना 6. उपहार देना, प्रदान करना 7. बिछाना, बिस्तार करना 8. हटाना 9. दूर करना 10. मिटाना, प्रतिबंध लगाना, उप , 1. उडेलना, (जल आदि) प्रस्तुत करना 2. जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना, संसक्त करना, संबद्ध करना —सुखं दुःखोपसृष्टम् 3. व्याकुल करना, अत्याचार करना, सताना—रोगोपसृष्टतनुर्दुर्बलसृतिं मुमुक्षुः—रघु० ८।९४ 4. ग्रहण लगना, ग्रस्त करना,—मनु० ४।३७ याज्ञ० १।२७२ 5. पैदा करना, क्रियान्वित करना 6. नष्ट करना, नि - , 1. स्वतन्त्र करना, बरी करना —न स्वामिना निसृष्टोऽपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते —मनु० ८।४१४ 2. हवाले करना, सौंपना, सुपुर्द करना --तु० निसृष्ट, प्र —, 1. छोड़ना, त्यागना 2. ढीला छोड़ना 3. बोना, बखेरना 4. क्षतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना, वि , 1. त्यागना, छोड़ना, तिलाञ्जलि देना--विसृज सुन्दरि सङ्गमसाध्वसम् —मालवि० ४।१३, पूर्वविधिसृष्टतल्पः रघु० १६।६, भामि० १।७८ 2. जाने देना, ढीला छोड़ना 3. डालना, उडेलना—रघु० १३।२६ 4. भेजना, प्रेषित करना भोजन दूतों रघवे विसृष्टः - रघु० ५।३९ 5. पदच्युत करना, जाने की अनुमति देना, भेजना—रघु० ८।९१, १४।१९ 6. देना—रघु० १३।६७, १८।७ 7. भेज देना, डाल देना, बिसार देना, फेंकना-विसृजति हिमगर्भरंशिमिन्दुर्मगूर्खः—श० ३।२ 8. डालना, गिरने देना, प्रहार करना—विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्—उत्तर० २।१० 9. उच्चारण करना—शि० १५।६२ 10. उतार फेंकना, संबंध-विच्छेद करना,—सम्—, 1. मिलना, मिश्रण करना, संयुक्त करना, संपृक्त करना—संसृज्यते सरसिजैरुणाशुभिन्नैः—रघु० ५।६९, अस्ना रजः संसृजन्त्या,—ऐत० 2. मिलना,—सौमित्रिणा तदनु संससृजे --रघु० १३।७३, कु० ७।७४ 3. रचना करना।

सृजिकाक्षारः [ष० त०] सज्जी का खार, शोरा, रेह।

सृक्वयः (पु० ब० व०) एक राष्ट्र या जनपद का नाम।

सृणिः (स्त्री०) [सृ+निक्] अंकुश, हाथी को हांकने का आंकड़ा—मदान्धकरिणां दर्पोपशान्त्यै सृणिः—हि० २। १६५, शि० ५।५, —णिः 1. शस्त्र 2. चन्द्रमा।

सृणि (णी) का [सृणि+कन् (ईकन्)+टाप्] खार, शोरा।

सृतिः (स्त्री०) [सृ+क्तिन्] 1. जाना, सरकना,—मनु० ६।६३ 2. रास्ता, मार्ग, पथ (आलं० से भी—ततः सृतिं पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन—भग० ८।२७ 3. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना।

सृत्वर (वि०) (स्त्री० री) [सृ+क्वरप्, तुक्] जाने वाला, सरणशील, री 1. नदी, दरिया 2. माता।

सृदरः [सृ+अरक्, दुक्] सांप।

सृदाकुः [सृ+काकु, दुक्च] 1. हवा, वायु 2. अग्नि 3. हरिण 4. इन्द्र का वज्र 5. सूर्यमंडल, - स्त्री० नदी, सरिता।

सृप (स्वा० पर० सर्पति, सृप्त, इच्छा० सिसृप्सति) 1. रेंगना, पेट के बल चलना, शनैः शनैः सरकना 2. जाना, हिलना-डुलना, अनु - , 1. पास जाना, पहुँचना - गिरिमन्वसृपद्राजाः—भट्टि० ६।२७ 2. पीछा करना - भट्टि० १५।५९, अप , 1. चले जाना, पीछे हट जाना, लौट पड़ना—तस्वरितमनेन तरुगहनेनापसर्पत--उत्तर०४ 2. सरक जाना, मन्द मन्द चलना 3. (भेदिये की भांति) छिप कर देखना—उत्तर० १ 4. अलग होना, छोड़ना, उद्—, 1. ऊपर को उड़ना 2. ऊपर जाना, पहुँचना—सरित्प्रवाहस्तटमुत्ससर्प—रघु० ५।४६, उप—, 1. पहुँचना, निकट आना—मालवि० १।१२ 2. हरकत करना, जाना—पंच० १।२३ 3. पहुँचना, प्राप्त करना, भुगतना— दुःखम् सुखम्··· 4. आरंभ करना-- मनु० १०।१०५ 5. आक्रमण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, परि—, 1. चारों ओर घूमना, छा जाना 2. इधर उधर घूमना, प्र—, 1. आगे जाना, बाहर निकलना, आगे आना, प्रगति करना - भट्टि० १४।२० 2. फैलाना, प्रचारित करना, (आत्म० से भी) रुधिरेण प्रस्पर्धता -महा०, आलर्क विधमिव सर्वतः प्रसृप्तम्—उत्तर० १।४७, वि—, 1. जाना, प्रयाण करना, प्रगति करना —यः सुबाहुरिति राक्षसोऽपरस्तत्र तत्र विससर्प मायया -रघु० ११।२९, ४।५२ 2. इधर उधर उड़ना या घूमना 3. फैलाना मनोरागस्तीव्र विषमिव विसर्पत्यविरतम् मा० २।१ 4. साथ साथ बहना, नीचे गिरना -(आप्पीयः) विसर्पन् धारासिर्ल-ठति धरणीं जर्जरकणः -उत्तर० १।२६ 5. लेकर चम्पत होना, चल निकलना 6. छा जाना 7. मुड़ना, घूमना 8. भिन्न भिन्न दिशाओं में जाना सम्—, 1. हिलना-जुलना,—संसर्पन्त्या सपदि भवतः स्रोतसि च्छाययासौ मेघ० ५१ 2. साथ साथ चलना, बहना —मेघ० २९ ।

सृपाटः [सृप्+काटन्] एक प्रकार की माप ।

सृपाटिका [सृपाट+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] पक्षी की चोंच ।

सृपाटी [सृपाट+ङीप्] एक प्रकार की माप ।

सृप्रः [सृप्+क्रन्] चन्द्रमा ।

सृभ्, सृम्भ (भ्वा० पर० सर्भति, सृम्भति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना ।

सृमर (वि०) (स्त्री०री) [सृ+कमरच्] गमन करने वाला, जाने वाला,—रः एक प्रकार का हरिण ।

सृष्ट (भू० क० कृ०) [सृज्+क्त] 1. रचित, उत्पादित 2. उडेला हुआ, उगला हुआ 3. ढीला छोड़ा हुआ 4. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 5. हटाया गया, दूर भेजा गया 6. निश्चय किया गया, निर्धारित 7. संयुक्त, संबद्ध 8. अधिक, प्रचुर, अगंण्य 9. अलंकृत दे० 'सृज्' ।

सृष्टिः (स्त्री०) [सृज्+क्तिन्] 1. रचना, कोई भी रचित वस्तु—कि मानसी सृष्टिः श०४, वा सृष्टिः स्रष्टुराद्या श०१।१, सृष्टिराद्येव धातुः—मेघ० ८२ 2. संसार की रचना 3. प्रकृति, प्राकृतिक संपत्ति 4. ढीला छोड़ना, उद्गार 5. प्रदान करना, भेंट 6. गुणों की विद्यमानता 7. पदार्थ का अभाव । सम०—कर्तृ (पुं०) स्रष्टा, रचयिता ।

सृ (क्रया० पर० सृणाति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना ।

सेक् (भ्वा० आ० सेकते) जाना, हिलना-जुलना ।

सेकः [सिच्+घञ्] छिड़कना, (वृक्षों को) पानी देना, —सेकः सीकरिणा करेण विहितः कामम्—उत्तर० ३।१६, रघु० १।५१, ८।४५, १६।३०, १७।१६ 2. उद्गार, प्रसार 3. वीर्यपात 4. तर्पण, बढ़ावा । सम०—पात्रम् 1. पानी छिड़कने का पात्र, जल-पात्र 2. डोलची, बोका ।

सेकिमम् [सेक+इमन्] मूली ।

सेक्तृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [सिच्+तृच्] सींचने वाला (पुं०) 1. छिड़काव करने वाला 2. पति ।

सेक्त्रम् [सिच्+ष्ट्रन्] डोलची, सींचने का पात्र ।

सेचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [सिच्+ण्वुल्] सींचने वाला, कः बादल ।

सेचनम् [सिच्+ल्युट्] सींचना, (वृक्षों को) पानी देना, —वृक्षसेचने ह्रे धारयसि मे घा० १ 2. स्राव, छिड़काव 3. मन्द-मन्द रिसना, टपकना 4. डोलची । सम०—घटः सींचने का बर्तन ।

सेचनी [सेचन+ङीप्] डोलची ।

सेटुः [सिट्+उन्] 1. तरबूज 2. एक प्रकार की ककड़ी ।

सेतिका (स्त्री०) अयोध्या का नाम ।

सेतुः [सि+तुन्] 1. मिट्टी का टीला, मेंड़, किनारा, ऊँचा मार्ग, बांध—नन्विनौ क्षतसेतुबन्धनदी जलसंघात दवासि विद्युतः कु० ४।६, रघु० १६।२ 2. पुल —वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं मत्पौरुषं फेनिलमम्बुराशिम् रघु० १३।२, सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः ४।३८, १२।७०, कु० ७।५३ 3. सीमाचिह्न, मेंड़ -मनु० ८।२४५ 4. संकुचित मार्ग, दर्रा, संकीर्ण गिरिपथ 5. हद, सीमा 6. जंगला, परिसीमा, किसी प्रकार का अवरोध —दृष्ट्वा सर्ववर्णाश्च भिलेरन् सर्वसेतवः सुभा० 7. निश्चित नियम या विधि, सर्वसम्मत प्रथा 8. 'ओम्' पुनीत अक्षर—भर्त्राणां प्रणवः सेतुस्तत्सेतुः प्रणवः स्मृतः । स्ववस्तनांकृतं पूर्वं परस्तान्च विदीर्यते । कालिका० । सम०—बन्धः 1. पुल का निर्माण, नवारा की रचना वयोगते कि बनितविलासो जले गते किं खलु सेतुबन्धः सुभा०, कु० ६।६ 2. पुल बनाने की कारोमण्डल समुद्रतट की दक्षिणी सीमा से लंका तक फैली हुई है (कहते हैं कि यही वह पुल है जिसे नलनील ने राम के लिए बनाया था) 3. कोई भी पुल या नवारा, भेदिन् (वि०) 1. बन्धनों को तोड़ने वाला 2. रुकावटों को हटाने वाला (पुं०) एक वृक्ष का नाम, दन्ती ।

सेतुकः [सेतु+कन्] 1. समुद्रतट, नवारा, पुल 2. दर्रा ।

सेत्रम् [सि+ष्ट्रन्] बन्धन, हथकड़ी, बेड़ी ।

सेदिवस् (वि०) (स्त्री०—सेदुषी) [सद्+लिट्+क्वसु] बैठा हुआ ।

सेन (वि०) [सह इनेन व० स०] प्रभु वाला, जिसका कोई स्वामी हो, नेता हो ।

सेना [सि+न+टाप्, सह इनेन प्रभुणा वा] 1. फौज —सेनापरिच्छदस्तस्या द्वयमेवार्थसाधनम्—रघु० १।१९

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

2. संग्राम के देवता कार्तिकेय की मूर्ति पत्नी सेना, फौज—तु० देवसेना। समः—अग्रम् सेना का अग्रभाग, °पः सेना का नायक या सेनापति, अङ्गम् सेना का संघटक भाग (यह गिनती में चार हैं- हस्त्यश्वरथ-पादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्),—धरः 1. सैनिक 2. अनुचरवर्ग, निवेशः सेना का शिविर रघु० ५। ४९, नी (पं०) 1. सेना का नायक, सेनापति, सेना-ध्यक्ष सेनानीनामहं स्कन्दः भग० १०।२४, कु० २।५१ 2. कार्तिकेय का नाम अथैनमद्रेस्तनया शुशोच सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः रघु० २।३७, पतिः 1. सेना का नायक 2. कार्तिकेय का नाम परिच्छद (वि०) सेना से घिरा हुआ (रघु० १।१९ में 'सेना-परिच्छदः' कभी कभी एक ही शब्द समझा गया और तदनुकूल ही अर्थ किया गया, परन्तु इनको अलग-अलग दो शब्द समझना ज्यादह अच्छा है), पृष्ठम् सेना का पिछला भाग, भङ्गः सेना का भग्न हो जाना, सर्वधा तितर-बितर होना, अव्यवस्थित रूप से इधर उधर भागना, मुखम् 1. सेना का एक दस्ता या भाग 2. विशेषतः वह दस्ता जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पदाति हों 3. नगर फाटक के बाहर बना मिट्टी का टीला, योगः सेना की मुसज्जा, रक्षः पहरेदार, मन्त्री।

सेफः [सि+फः] पुरुष का लिंग तु० 'शेफ'।

सेमल्ली [सिम्+लि+ङीष्] शाल्मली गुलाब, सेवती।

सेरः (पुं०) एक विशेष माप, सेर का बट्टा, (लीलावती इसकी परिभाषा की है 'षोडानगधानकतुल्यद्रुद्वित्रिकल्प तुल्यैः कथितोऽत्र सेरः')।

सेरहः (पुं०) दुग्ध के समान श्वेत रंग का घोड़ा।

सेवः (वि०) [सि+वः] बाँधने वाला, कसने वाला।

सेल् (भ्वा० पर० सेलति) जाना, हिलना-डुलना।

सेव् (भ्वा० आ० सेवते, सेवित, प्रेर० सेवयति ते, इच्छा० सिसेविषते नि, परि, वि आदि इकारांत उपसर्गों के पश्चात् सेव् का स् बदल कर प्रायः मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सम्मान करना, पूजा करना, आज्ञा मानना —श्रीयो भृत्यारक्षन्ति प्रत्यलिनविभवं स्वामिनं सेवमानाः मुद्रा० ४।२१, या, ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽ धंसः सेवते- १।४ 2. अनुगमन करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3. उपयोग में लाना, उपभोग करना कि सेव्यते सुमनसां मनसापि गन्धः कस्तूरिकाजनन-शक्तिमृता मृगेण -रस० 4. शारीरिक सुखोपभोग करना-भामि० १।१८ 5. अनुराग करना, अनुष्ठान करना मनु० २।१, कु० ५।३८, रघु० १७।४९ 6. सहारा लेना, आश्रित होना, रहना, द्वार-द्वार जाना जाना, बसना,—तप्तं वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डः सेवते-विक्रम० २।२३, पंच० १।९ 7. पहरा देना, रखवाली करना, रक्षा करना, आ—, उपभोग करना यद्वाग्दुरुच्छिष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्न-शिखण्डिबर्हः - कु० १।१५, प्रवातमासेवमानो तिष्ठति - मालवि० १ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3. सहारा लेना, उप - , 1. सेवा करना, पूजा करना, सम्मान करना, मनु० ४।१३३ 2. अभ्यास करना, अनुसरण करना, ध्यान देना, पीछा करना 3. व्यस्त होना, उपभोग करना—भग० १५।९ 4. (किसी स्थान पर) नित्य जाना, बसना 5. मलना, मालिश करना, नि—, पीछा करना, अनुसरण करना, संलग्न करना, अभ्यास करना - -ग० १।२७ 2. उपभोग करना निषेवते प्रशान्तात्मा निषिक्तः, कु० ५।५, कु० ११६ 3. शारीरिक सुखोपभोग करना—यथा यथा नामरसेक्षणं मथा पुनः सरागं नितरां निषेवितं भामि० २।१५५ 4. सहारा लेना, बसना, नित्य आना-जाना—कु० ५। ७६ 5. उपयोग में लाना, काम में लाना - विषतां निषेवितमपथिकस्या समर्पिता सर्वमिति सत्यमदः—शि० ९।६८ 6. सेवा में उपस्थित रहना, हाजरी देना 7. नजदीक जाना, पहुँचना 8. भुगतना, अनुभव करना, परि , 1. सहारा लेना 2. उपभोग करना, लेना।

सेव द० 'सेवन'।

सेवक (वि०) [सेव्+ण्वुल्] 1. सेवा करने वाला, पूजा करने वाला, सम्मान करने वाला 2. व्यवसाय करने वाला, अनुगामी 3. आश्रित, दास,—कः 1. टहलुआ, —आश्रित सेवया धनमिच्छन्ति सेवकैः पशव किं कृतम्। स्वातंत्र्यं यच्छरीरस्य मूढैस्तदपि हारितम्—हि० २।२० 2. भक्त, पूजक 3. सीने वाला, दर्जी 4. बोरा, थैला।

सेवधि (अव्य०) द० 'शेव' के अन्तर्गत 'शेवधि'।

सेवनम् [सेव्+ल्युट्] 1. सेवा करना, सेवा हाजरी में खड़े रहना, पूजा करना—पात्रीकृतात्मा गुरुसेवनेन —रघु० १८।३० 2. अनुगमन करना, अभ्यास करना, काम में लगाना मनु० १२।५२ 3. उपयोग करना, उपभोग करना 4. शारीरिक सुखोपभोग करना —यत्करोत्येकरात्रेण वपुर्ली सेवनाद्विजः—मनु० ११। १७९ 5. सीना, टाँका लगाना 6. बोरा, थैला।

सेवनी [सेवन+ङीष्] 1. सुई 2. सीवन, संधिरेखा 3. संधि या सीवन की भाँति शरीर के अंगों का संधान।

सेवा [सेव्+अङ्+टाप्] 1. परिचर्या, खिदमत, दासता, टहल सेवा लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः—मुद्रा० ३।१४, हीनसेवा न कर्तव्या -हि० ३।११ 2. पूजा, श्रद्धांजलि, सम्मान 3. संलग्नता,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भक्ति, चाव 4. उपयोग, अभ्यास, काम में लगना, प्रयोग 5. बार बार आना—जाना, आश्रय लेना 6. चापलूसी, बहकाना, चिकने चुपड़े शब्द अलं सेवया मध्यस्थां गृहीत्वा भण–(मालवि० ३ ; सम० —आकार (वि०) दासता के रूप में—विक्रम० ३।१, काकुः सेवा में आवाज में परिवर्तन (यह विक्रम० ३।१ में 'सेवाकारा' शब्द का रूपान्तर है), धर्मः 1. सेवा करने का कर्तव्य सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः—पंच० १।२८५ 2. सेवा का दायित्व,—व्यवहारः सेवा की विधि या प्रथा।

सेवि (नपुं०) [सेव्+इन्] 1. बेर 2. सेव।

सेवित (भू० क० कृ०) [सेव्+क्त] 1. सेवा किया गया, जिसकी टहल की गई है, पूजा किया गया 2. अनुगत, अभ्यस्त, पीछा किया गया 3. जहाँ नित्य-प्रति आया जाय, सहारा लिया गया, जहाँ (लोग) बसे हुए हों, जहाँ संगी-साथी हों 4. उपभुक्त, उपयुक्त,—तम् 1. सेव 2. बेर।

सेवितृ (पुं०) [सेव्+तृच्] सेवक, दास।

सेविन् (वि०) [सेव्+णिनि] 1. सेवा करने वाला, पूजा करने वाला 2. अनुगन्ता, अभ्यासी, उपयोक्त 3. बसने वाला, रहने वाला, -(पुं०) सेवक।

सेव्य (वि०) [सेव्+यत्] 1. सेवा किए जाने के योग्य, टहल किए जाने के योग्य 2. उपयोग में लाने के योग्य, काम में लाने के योग्य 3. उपभोग किए जाने के योग्य 4. देख-भाल किए जाने के योग्य, पहरा दिए जाने के योग्य,—व्यः 1. स्वामी (विप० सेवक),—भयं तावत्से-व्यादभिनिविशते सेवकजनम्—मुद्रा० ५।१२, पंच० १।४८ 2. अश्वत्थवृक्ष, व्यम् एक प्रकार की जड़ ; सम०—सेवकौ (पुं०, द्वि० व०) स्वामी और नौकर।

सैं (म्वा० पर०—सायति) बर्बाद होना, क्षीण होना, नष्ट होना।

सैंह (वि०) (स्त्री० ही) [सिंह+अण्] सिंह से संबद्ध, सिंह सम्बन्धी, द्युतिं सैंहीं कि हया घृतकनक-मालोऽधि लभते हि० १।१७५।

सैंहल (वि०) [सिंहल+अण्] लंका सम्बन्धी, लंका में उत्पन्न, या लंका में होने वाला।

सैंहिकः, **—सैंहिकेयः** [सिंहिका+अण्, सिंहिका+ढक्] राहु का मातृ परक नाम।

सैकत (वि०) (स्त्री० ती) [सिकताः सन्त्यत्र अण्] 1. रेत युक्त या रेत से बना हुआ, रेतीला, कंकरीला —तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः—उत्तर० ३।३६ 2. रेतीली भूमि वाला,—तम् रेतीला तट —सुरगज इव गांगं सैकतं सुप्रतीकः रघु० ५।७५, ५।८, १०।६२, १३।१७, ६२, १३।७६, १६।२१, कु० १।२९, श० ६।१७ 2. रेतीले तटों वाला द्वीप 3. किनारा या द्वीप। सम० इष्टम् अदरक।

सैकतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सैकत+ठन्] 1. रेतीले तट से संबन्ध रखने वाला 2. घट-बढ़ होने वाला, तरंगित, सन्देह की अवस्था में रहने वाला, सन्देहजीवी, —कः 1. साधु 2. संन्यासी, कम् मंगलसूत्र जो सौभाग्यशाली वनिता के लिए कलाई में बांधा जाता है या कंठ में पहना जाता है।

सैद्धान्तिक (वि०) (स्त्री० की) [सिद्धान्त+ठक्] किसी सिद्धांत या प्रदर्शित सत्य से सम्बन्ध रखने वाला 2. जो वास्तविक सचाई को जानता है।

सैनापत्यम् [सेनापति+ष्यञ्] किसी सेना का सेना-पतित्व, सेनाध्यक्षता—कु० २।६१।

सैनिक (वि०) (स्त्री०—की) [सेनाया समवैति ठक्] 1. सेनासम्बन्धी 2. फौजी, कः 1. सिपाही—पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः—रघु० ३।६१ 2. पहरेदार, संतरी 3. सामरिक व्यूह में व्यवस्थित सैन्यसमूह —रघु० ३।५७।

सैन्धव (वि०) (स्त्री०—वी) [सिन्धुनदीसमीपे देशे भवः अण्] 1. सिंधु प्रदेश में उत्पन्न या पैदा हुआ 2. सिंधु नदी संबन्धी 3. नदी में उत्पन्न 4. समुद्र संबन्धी, सागर सम्बन्धी, सामुद्रिक,—वः 1. घोड़ा, विशेषतः वह जो सिंधु देश में पला हो—नै० १।७१ 2. एक ऋषि का नाम, वः, वम् एक प्रकार का सेंधा नमक,—वाः (पुं०, ब० व०) सिंधु प्रदेश के अधिवासी। सम०—घनः नमक का ढेला,—शिला एक प्रकार का पहाड़ से निकलने वाला नमक।

सैन्धवक (वि०) (स्त्री०—की) [सैन्धव+कन्] सैन्धव सम्बन्धी, कः सिंधु देश का कोई आपदग्रस्त व्यक्ति जिसकी दशा दयनीय हो।

सैन्धी (स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा (सम्भवतः यह जो ताड़ के रस से तैयार की गई हो) ताड़ी।

सैन्यः [सेनाया समवैति ञ्य] 1. सैनिक, सिपाही—शि० ५।२८ 2. पहरेदार, संतरी, न्यम् सेना, सेना की टुकड़ी—स प्रतस्थेऽरिनाशाय हरिसैन्येरनुद्रुतः—रघु० १२।६७।

सैन्यन्तिकम् [सौमन्त+ठक्] सिंदूर।

सैरन्ध्रः, सैरिन्ध्रः [सीरं हलं धरति—सीर+धृ+क, मुम् —सीरन्ध्रः कृषकः तस्येदं शिल्पकर्म सैरन्ध्र+अण् पक्षे इञ्वम्] 1. घरेलू नौकर, किंकर 2. एक मिश्र जाति, दस्यु जाति के पुरुष तथा अयोगव जाति की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—सैरिन्ध्र वागुरावृत्ति सूते दस्युरयोगवे - मनु० १०।३२।

सैरन्ध्री, सैरिन्ध्री [सैरं (रि) ध्र+ङीष्] 1. दासी या सेविका जो अन्तःपुर में काम करे (सैरंध्र 2. में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्णित मिश्र जाति की स्त्री) 2. स्वतन्त्र स्त्री जो शिल्पकारिणी के रूप में दूसरे के घर जाकर काम करे 3. द्रौपदी का विशेषण (अज्ञात वास में विराट् की पत्नी सुदेष्णा की सेवा करते समय द्रौपदी ने यह नाम रख लिया था)।

सैरिक (वि०) (स्त्री० की) [सीर+ठक्] 1. हल-सम्बन्धी 2. खूंटों से युक्त,—कः 1. हल में चलने वाला बैल 2. हाली, हलवाहा।

सैरिभः [सीरे हले तद्वहने इभ इव शूरत्वात्, अक० पर०, सीर+इभ+अण्] 1. भैंसा—अवमानित इव कुलीनो दीर्घं निःश्वसिति सैरिभः—मृच्छ० ४ 2. इन्द्र का स्वर्ग।

सैवाल दे० 'शैवाल'।

सैसक (वि०) (स्त्री० की) [सीसक+अण्] सीसे का बना हुआ, सीसा सम्बन्धी।

सो (दिवा० पर० स्यति, सित, प्रेर० साययति—ते, इच्छा० सिषासति, कर्मवा० सीयते—इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् 'सो' के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1. वध करना, नष्ट करना 2. समाप्त करना, पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना, अव—, 1. समाप्त करना, पूरा करना—यूपत्वमवसिते क्रियाविधौ—रघु० ११।३७, अवसितमण्डनाङ्गि—शि० ४ 2. नष्ट करना 3. जानना, भट्टि० १९।२९ 4. विफल होना, किनारे पर होना (अक०)—शक्तिर्मेमावसीयते हीनयुद्धे—कि० १६।१७, अध्यव—, 1. संकल्प करना, निर्धारित करना, मन पक्का करना—कथमिदानीं दुर्जनवचनादध्यवसितं देवेन—उत्तर० १, अभिधातुमध्यवसस्यै न गिरा—शि० ९।७६, 2. प्रयास करना, दायित्व लेना, सम्पन्न करना—मा साहसमध्यवस्यः—दश०, वक्तुं मुकरमध्यवसातुं दुष्करम् वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 3. दबोच लेना 4. सोचना, विचार करना, पर्यव—, 1. पूरा करना, समाप्त करना 2. निर्धारित करना, संकल्प करना 3. परिणाम होना, घट जाना, समाप्त हो जाना—एष एव समुच्चयः सद्योगेऽसद्योगे सदसद्योगे च पर्यवस्यतीति न पृथक् लक्ष्यते काव्य० १० 4. नष्ट होना, खो जाना, क्षीण होना 5. प्रयत्न करना, व्यव—1. ज़ोर लगाना, हाथ-पाँव मारना, कोशिश करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, आरम्भ करना—ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—श० १।१८ 2. चिन्तन करना, कामना करना, चाहना—पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या—श० ४।९ 3. लगातार चेष्टा करना, परिश्रमी या उद्योगी होना 4. संकल्प करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, फैसला करना—श० ५।१८ 5. स्वीकार करना, दायित्व लेना कश्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे मेघ० १४ 6. करना, सम्पन्न करना 7. विश्वास करना, विश्वस्त होना, प्रतीत होना 8. विचार-विमर्श करना, व्यव—, निर्णय करना, आदेश देना—मनु० ७।१३।

सोढ (भू० क० कृ०) [सह्+क्त] सहन किया गया, भुगता गया, बर्दाश्त किया गया, झेला गया—आदि दे० 'सह्'।

सोढृ (वि०) (स्त्री०—ढ्री) [सह्+तृच्] 1. सहनशील, बर्दाश्त करने वाला, सहिष्णु 2. शक्तिशाली, समर्थ।

सोत्कं, सोत्कण्ठ (वि०) [सह उत्केन, उत्कण्ठया वा—ब० स०] 1. अत्यन्त उत्सुक, अतीव आतुर, आकुल, यथा—'सोत्कण्ठमालिंगनम्' 2. स्निग्ध 3. शोकाकुल, खिद्यमान, —ठम् (अव्य०) 1. अत्यन्त उत्सुकता के साथ, बड़ी उत्कंठा के साथ,—प्रोद्वीक्षेय बलाकया सरभसं सोत्कण्ठमालिङ्गितः—मृच्छ० ५।२३ 2. खेदपूर्वक, दुःखपूर्वक।

सोत्प्रास (वि०) [सह उत्प्रासेन—ब० स०] 1. अत्यधिक 2. अतिशयोक्तिपूर्ण 3. व्यंग्यात्मक, व्यंगपूर्ण,—सः अट्टहास,—सः,—सम्, व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति, व्यंगोक्ति, व्यंगवाक्य, तु० व्याजस्तुति।

सोत्साह (वि०) [उत्सवेन सह—ब० स०] उत्सवयुक्त, उछाह भरा, हर्षपूर्ण।

सोत्साह (वि०) [सह उत्साहेन—ब० स०] प्रबल, सक्रिय, उत्साही, वीर,—हम् (अव्य०) फुर्ती से, उत्साह पूर्वक, सावधानी से।

सोत्सुक (वि०) 1. स्निग्ध, झल्लाने वाला, आतुर, शोकान्वित 2. उत्कण्ठित, लालायित।

सोत्सेध (वि०) [सह उत्सेधेन—ब० स०] उन्नत, उच्चत, ऊँचा, उत्तुंग—सोत्सेधैः स्कन्धदेशैः—मुद्रा० ४।७।

सोदर (वि०) [समानमुदरं यस्य, समानस्य सः] एक ही पेट से उत्पन्न, सहोदर,—रः सगा भाई,—रा सगी बहन।

सोदर्यः [सोदर+यत्] सहोदर भाई, सगा भाई (आलं० से भी)—भ्रातुः सोदर्यमात्मानिन्नजिद्वधशोभिनः—रघु० १५।२६, अवन्तिसोदर्यं दारिद्र्यम्—दश०।

सोद्योग (वि०) [सह उद्योगेन—ब० स०] प्रबल उद्योग करने वाला, परिश्रमी, सक्रिय, वीर, मेहनती।

सोद्वेग (वि०) [सह उद्वेगेन—ब० स०] 1. आतुर, आशंकालु 2. शोकान्वित,—गम् (अव्य०) आतुरता के साथ, उतावलेपन से, उत्सुकतापूर्वक।

सोन्मद् [सु+उद्+मद्+क्विप्+सो, नह्+क=नद्ध] लहसुन।

सोन्माद (वि०) [सह उन्मादेन—ब० स०] पागल, दीवाना, आपे से बाहर, मदविक्षिप्त।

सोपकरण (वि०) [सह उपकरणेन—ब० स०] सब प्रकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के आवश्यक सामान या उपकरणों से युक्त, समुचित रूप से सुसज्जित, इसी प्रकार 'सोपकार'।

सोपद्रव (वि०) [सह उपद्रवेण—ब०स०] संकट और उपद्रवों से युक्त।

सोपध (वि०) [सह उपधया ब०स०] जालसाजी और धोखे से भरा हुआ, कपटपूर्ण।

सोपधि (वि०) [सह उपधिना ब०स०] जालसाज, अव्य० कपट के साथ, जालसाजी करके अरिष्ट हि विजयाधिनः क्षितीशा विदधति सोपधि मन्धिदूषणानि —कि० १।४५।

सोपप्लव (वि०) [सह उपप्लवेन—ब०स०] 1. संकटग्रस्त 2. शत्रुओं द्वारा आक्रान्त 3. ग्रहणग्रस्त (जैसे कि चन्द्र व सूर्य)।

सोपरोध (वि०) [सह उपरोधेन—ब०स०] 1. अवरुद्ध, बाधायुक्त 2. अनुगृहीत,—धम् (अव्य०) सानुग्रह, सादर।

सोपसर्ग (वि०) [सह उपसर्गेण—ब०स०] 1. संकटग्रस्त, दुर्भाग्यग्रस्त 2. अनिष्टसूचक 3. किसी भूत प्रेत से आविष्ट 4. उपसर्ग से युक्त (व्या० में)।

सोपहास (वि०) [सह उपहासेन ब०स०] व्यंगपूर्ण हंसी से युक्त, उपालंभपूर्ण, व्यंग्यमय, सम् (अव्य०) उपालंभपूर्वक, उलाहने के साथ।

सोपाकः [=श्वपाकः, पृषो०] पतित जाति का पुरुष, चांडाल, दे० मनु० १०।३८।

सोपाधि (वि०) **सौपाधिक** (वि०) (स्त्री०—की) [सह उपाधिना—ब०स०, पक्षे कप्] 1. किसी शर्त या सीमा से प्रतिबद्ध, विशिष्ट लक्षणों से युक्त, सीमित, मर्यादित, विशिष्ट (दर्शन में) 2. विशिष्ट विशेषण से युक्त।

सोपानम् [उप+अन्—घञ्—=उपानः उपरिगतिः सह विद्यमानः उपानः येन—ब०स०] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा, जीना, सीढ़ी—आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् कु० १।३९। सम०—पङ्क्तिः (स्त्री०), **-पथः,—पद्धतिः** (स्त्री०), **परम्परा, मार्गः** सीढ़ी, जीना वापी चास्मिन् मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा मेघ० ७६, समारुरुक्षुर्दिवमायुषः क्षये तताम सोपानपरम्परामिव—रघु० ३।२, ६।३, १६।५६।

सोमः [सू+मन्] 1. एक पौधे का नाम, प्राचीन काल के यज्ञों में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि 2. 'सोम' नामक पौधे का रस—जैसा कि सोमया तथा सोमपीथिन् शब्दों में 3. अमृत, देवताओं का पेय पदार्थ 4. चन्द्रमा (पुराणों में चन्द्रमा को अत्रि ऋषि की आँख से उत्पन्न होने वाला वर्णन किया गया है (तु० रघु० २।७५), ऐसा भी वर्णन मिलता है कि समुद्रमन्थन के अवसर पर चन्द्रमा भी समुद्र से निकला। पुराणों में वर्णित सत्ताईस नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएँ बतलाई गई हैं, चन्द्रमा की पत्नियाँ कही जाती हैं। चन्द्रमा की कलाओं के पाक्षिक क्षय की घटना का भी समाधान यह किया गया है कि चन्द्रमा की अमृतमयी कलाओं को विविध देवताओं ने बारी बारी से पी लिया, इसी प्रसंग में एक और कथा का भी आविष्कार किया गया है जिसमें बतलाया गया है कि चन्द्रमा रोहिणी (दक्ष की २७ कन्याओं में से एक) पर विशेष रूप से अनुरक्त था, अतः उसके श्वसुर दक्ष ने इसे क्षयरोग से ग्रस्त होने का शाप दे दिया, बाद में चन्द्रमा की अन्य पत्नियों के बीच में पड़ने पर यह शाप सीमित कालावधि (पाक्षिक) में बदल दिया गया। यह भी वर्णन मिलता है कि चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण किया उससे चन्द्रमा का बुध नामक एक पुत्र पैदा हुआ। यही बुध बाद में राजाओं के चन्द्रवंश का प्रवर्तक हुआ, (दे० तारा (ख) भी) 5. प्रकाश की किरण 6. कपूर 7. जल 8. वायु, हवा 9. कुबेर 10. शिव 11. यम 12. (समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त) मुख्य, प्रधान, उत्तम (जैसा कि 'तमोम' में,—**मम्** 1. चावलों की कांजी 2. आकाश, गगन। सम० **अभिषवः** सोमरस का छीचना,—**अहः** सोमवार,—**आप्यम्** लाल कमल,—**ईश्वरः** शिव की प्रसिद्ध प्रतिमा 'सोमनाथ', —**उद्भवा** नर्मदा नदी—रघु० ५।४१ (यहाँ मल्लि० ने अमर० का उद्धरण दिया है 'रेवातु नर्मदा सोमोद्भवा'),—**कान्तः** चन्द्रकान्तः मणि,—**क्षयः** चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, **ग्रह** सोमरस रखने का पात्र, —**ज** (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न, (—**जः**) बुधग्रह का विशेषण, (—**जम्**) दूध, **धारा** आकाश, गगन,—**नाथः** प्रसिद्ध शिव छवि या वह स्थान जहाँ यह प्रतिमा स्थापित की गई है (इसी 'प्रतिमा' की अतुल धनराशि व वैभव ने गजनी के मोहम्मद गोरी को आकृष्ट किया, जिसने १०२४ ई० में सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा और उसके खजाने को उठा कर ले गया)—तेषां मार्गे परिचयवतामर्दजितं गुर्जराणां यः सन्तापं शिथिलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य ॥ विक्रमांक० १८।८७, **-प,-पा** (पुं०) 1. सोमपायी 2. सोमयाजी 3. पितरों का विशेष समूह,—**पतिः** इन्द्र का नाम,—**पानम्** सोमरस का पीना, **पायिन्, -पीथिन्** (पुं०) सोमरस को पीने वाला तत्र केचित्.....सोमपीथिन उदुम्बरनामानो ब्रह्मादयिनः प्रतिवसन्ति स्म भा० १, **-पुत्रः,—भूः सुतः** बुध के विशेषण, **-प्रवाकः** सोमयज्ञ के पुरोहितों को वरण करने वाला,—**बन्धुः** कुमुद, **यज्ञः,** मागः सोमयज्ञ, **योनिः** एक प्रकार का पीला और सुगन्धित चन्दमा **-रोगः,** स्त्रियों का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक विशेष रंग. **लता** –वल्लरी 1. सोम का पौधा 2. गोदावरी नदी, **वंशः** वंश द्वारा स्थापित राजाओं का चन्द्रवंश, **वारः, वासरः** सोमवार, **विक्रयिन्** (पुं०) सोमरस विक्रेता, **वृक्षः,–सारः** सफ़ेद खैर का वृक्ष,–**शकला** एक प्रकार की ककड़ी, **संज्ञ** कपूर, **सद्** (पुं०) पितरों का विशेषवर्ग – मनु० ३।१९५,–**सिन्धुः** विष्णु का विशेषण, **सुत्** (पुं०) सोमरस खींचने वाला.–**सुता** नर्मदा नदी तु० सोमोद्भव, **सूत्रम्** पिंड लिंग के स्नान का जल निकलने की नाली, **प्रदक्षिणा** शिवलिंग की इस तरह परिक्रमा करना कि नाली लांघनी न पड़े।

सोमन् (पुं०) [सु+मनिन्] चन्द्रमा।

सोमिन् (वि०) (स्त्री० **नी**) [सोम+इनि] सोमयज्ञ का अनुष्ठान करने वाला,–(पुं०) सोमयज्ञ का अनुष्ठाता।

सोम्य (वि०) [सोम+यत्] 1. सोम के योग्य 2. सोम की आहुति देने वाला 3. आकृति में सोम से मिलता-जुलता 4. मृदु, सुशील, मिलनसार।

सोल्लुण्ठः, सोल्लुण्ठनम् [उल्लुण्ठेन उल्लुण्ठनेन वा सह ब० स०] व्यंग्य, ताना, चुटकी, **ठम्, नम्** (अव्य०) व्यंग्यपूर्वक, ताने के साथ –उत्तर० ५।

सोष्मन् (वि०) [सह ऊष्मणा ब० स०] 1. गरम, तप्त 2. (व्या० में) ऊष्मा युक्त (पुं०) ऊष्मवर्ण।

सौकर (वि०) (स्त्री० **री**) [सूकर+अण्] सूअरसंबंधी, सूअर का कि० १२।५३।

सौकर्यम् [सु (सु)कर+ष्यञ्] 1. सूअरपना 2. आसानी, सुविधा सौकर्यं च कार्यस्यानायासेन सिद्धया सांगसिद्धया च बोध्यम् ३. क्रियात्मकता, सुकरता 4. निपुणता, कुशलता 5. किसी भोज्यपदार्थ या औषधि की सरल तैयारी।

सौकुमार्यम् [सुकुमार+ष्यञ्] 1. सुदृता, सुकुमारता, कोमलता–शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्कः कु० १।४१. 2. जवानी।

सौक्ष्म्यम् [सूक्ष्म+ष्यञ्] बारीकी, महीनपना, सूक्ष्मता।

सौखशायनिकः, सौखशायिकः [सुखशयन पृच्छति –सुखशय (न)–ठक्] वह पुरुष जो किसी पुरुष से उसके सुखपूर्वक सोने की बात पूछे–भृत्यादीननुगृह्णन्तं सौखशायनिकानृषीन् –रघु० १०।१४।

सौखसुप्तिकः [सुखसुप्ति सुखेन शयन पृच्छति–ठञ्] 1. किसी अन्य पुरुष से सुखपूर्वक सोने का हाल पूछने वाला 2. चारण, भाट. बन्दी (इसका कार्य राजा या अत्यंत समृद्धिशाली व्यक्ति की स्तुतिपाठ द्वारा जगाने का होता है)।

सौखिक (वि०) (स्त्री० **की**), **सौखीय** (वि०) (स्त्री० **यी**) [सुख+ठक्, छण् वा] सुखसम्बन्धी, आनन्ददायक, हर्षप्रद।

सौख्यम् [सुख+ष्यञ्] सुख, प्रसन्नता, सन्तोष, सुविधा, आनन्द।

सौगतः [सुगत+अण्] बौद्ध (बुद्ध या सुगत का अनुयायी) (बौद्धों के चार बड़े संप्रदाय हैं– माध्यमिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और वैभाषिक)–सौगतजरत्परिव्राजकायास्तु कामन्दकीयः प्रथमो भूमिका भाव एवाधीते –मा० १।

सौगतिकः [सुगत+ठक्] 1. बौद्ध 2. बौद्धभिक्षु 3. नास्तिक, पाखंडी, अविश्वासी, **कम्** अविश्वास, पाखंडधर्म, नास्तिकता, अनीश्वरवाद।

सौगन्ध (वि०) (स्त्री०–धी) [सुगन्ध+अण्] मधुरगन्धयुक्त, सुगन्धित, **धम्** 1. मधुरगन्धता, सुवास 2. एक प्रकार का सुगन्धित तृण, कत्तृण।

सौगन्धिक (वि०) (स्त्री०–का–की) [सुगन्ध+ठन्] मधुरगन्ध वाला, सुगन्धित, **कः** 1. गन्ध द्रव्यों का विक्रेता, गन्धी 2. गन्धक, **कम्** 1. सफ़ेद कुमुद 2. नील कमल 3. एक प्रकार का सुगन्धित घास, कत्तृण 4. लाल।

सौगन्ध्यम् [सुगन्ध+ष्यञ्] गन्धमाधुर्य, सुगन्ध. सुवास।

सौचिः, सौचिकः [सूचि+इञ्, ठक्] दर्जी मनु ४।२१४ पर कुल्लूक।

सौजन्यम् [सुजन+ष्यञ्] 1. नेकी, कृपालुता, भलाई उत्तर० ३।१३, मुच्छ० ८।३८ 2. महिमा, उदारता 3. कृपा, करुणा, अनुकम्पा 4. मित्रता, सौहार्द, प्रेम।

सौण्डी [शुण्डा तद्व्यापारोऽस्ति अस्याः शुण्डा+अण्+ङीप्, पृषो०] गजपीपल।

सौतिः [सूत+इञ्] कर्ण का नामान्तर।

सौत्यम् [सूत+ष्यञ्] सारथि का पद,—नल० ४।९।

सौत्र (वि०) (स्त्री०–त्री) [सूत्र+अण्] 1. धागे या डोरी से संबंध रखने वाला 2. सूत्रसंबंधी, सूत्र में वर्णित, सूत्र में निर्दिष्ट, **त्रः** 1. ब्राह्मण 2. कृत्रिम धातु जो केवल सूत्रों में वर्णित है, नियमित धातुओं की भांति उसकी रूपरचना नहीं होती, यौगिक शब्दों के निर्माण में ही उसका उपयोग होता है।

सौत्रान्तिकाः (पुं० ब० व०) बौद्धों के चार सम्प्रदायों में से एक, तु० 'सौगत'।

सौत्रामणी (सुत्रामा इन्द्रो देवता अस्याः–सुत्रामन्+अण्+ङीप्] पूर्वदिशा चकोरनयनाङ्गना भवति दिक् च सौत्रामणी विद्ध० ४।१.

सौदर्यम् (नपु०) [सोदर+ष्यञ्] भ्रातृत्व, भाईपना।

सौदामनी) [सुदामा पर्वतभेदः तेन एका दिक्, सुदामन्
सौदामिनी] +अण्–ङीप्, पक्षे पृषो० साधुः] बिजली,

सौदाम्नी]—सौदाम्न्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीम् – मेघ० ३९, सौदामिनीव जलदोदर सन्निलीना · मृच्छ० १।३५।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सौदायिक (वि०) (स्त्री०-की) [सुदाय+ठञ्] स्त्रीधन, कन्या के विवाह के अवसर पर जो धन उसके माता पिता या संबंधियों द्वारा उसे दिया जाता है, और जो उसकी निजी संपत्ति हो जाता है, कम् दाज या दहेजसम्बन्धी।

सौध (वि०) (स्त्री०-धी) [सुधया निर्मितं रक्तं वा अण्] 1. अमृतमय, अमृतसम्बन्धी 2. पलस्तर से युक्त, या चूने से पुता हुआ,—धम् 1. वह भवन जिसमें सफ़ेदी की हुई है, सुधालिप्त, पलस्तरदार 2. विशालभवन, महल, बड़ी हवेली सौधवासमुटजेन विस्मृतः संचिकाय फलनिःस्पृहस्तपः—रघु० १९।२, ७।५, १३।४० 3. चाँदी 4. दूधिया पत्थर। सम०—कारः 1. पलस्तर करने वाला 2. मकान बनाने वाला, वासः महल जैसा भवन।

सौन (वि०) (स्त्री०-नी) [सूना+अण्] क़साईपने या क़साईखाने से सम्बन्ध रखने वाला,—नम् क़साई के घर का मांस। सम० धर्म्यम् घोर शत्रुता की अवस्था।

सौनन्दम् [सुनन्द+अण्] बलराम का मूसल।

सौनन्दिन् (पुं०) [सौनन्द+इनि] बलराम का विशेषण।

सौनिकः [सूना+ठण्] क़साई, तु० 'शौनिकः'।

सौन्दर्यम् [सुन्दर+ष्यञ्] सुन्दरता, मनोहरता, लावण्य, लालित्य-सौन्दर्यसारसमुदायनिकेतनं वा—मा० १।२१, कु० १।४२, ५।४१।

सौपर्णम् [सुपर्ण+अण्] 1. सूखा अदरक, सोंठ 2. मरकत।

सौपर्णेयः [सुपर्णाः विनतायाः अपत्यम् सुपर्णी+ढक्] गरुड़ का विशेषण।

सौप्तिक (वि०) (स्त्री० की) [सुप्ति+ठक्] 1. निद्रासम्बन्धी 2. निद्राजनक, कम् रात का आक्रमण, सोते हुए पर हमला। सम०—पर्वन् (नपुं०) महाभारत का दसवाँ पर्व जिसमें वर्णन किया गया है कि अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृप और कौरवसेना के बचे हुए योद्धाओं ने रात को पांडवशिविर पर आक्रमण कर हजारों सोते हुए सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया,—वधः (उपर्युक्त) पाडवशिविर के सैनिकों का रात में संहार मार्गो ह्येष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना—मुच्छ० ३।११।

सौबलः [सुबल+अण्] शकुनि का नामान्तर।

सौबली, सौबलेयी [सौबल+ङीप्, सुबला+ढक्+ङीप्] धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी।

सौभम् [सुष्ठु सर्वत्र लोके भाति—सु+भा+क+अण्] हरिश्चन्द्र का नगर (कहते हैं कि यह नगर अन्तरिक्ष में लटक रहा है)।

सौभगम् [सुभग+अण्] 1. अच्छा भाग्य, सौभाग्य 2. समृद्धि, धन, दौलत।

सौभद्रः, सौभाद्रेयः [सुभद्रा+अण्, ढक् वा] सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का विशेषण।

सौभागिनेयः [सुभगा+ढक्, इनङ्, द्विपदवृद्धि] सबसे प्रिय पत्नी का पुत्र।

सौभाग्यम् [सुभगस्य भावः—ष्यञ्, द्विपदवृद्धिः] 1. अच्छा भाग्य, अच्छी क़िस्मत, सौभाग्यशालिता (मुख्यतः इसमें पति-पत्नी का पारस्परिक अनुग्रह प्राप्त करना, तथा एक दूसरे के प्रति दृढ़ भक्ति का होना पाया जाता है)—प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता कु० ५।१, सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती—मेघ० २९, (दोनों स्थानों में 'सौभाग्य' शब्द पर मल्लि० के टिप्पण देखें) 2. स्वर्गीय सुख, भाग्योल्लिखिता 3. सौन्दर्य लावण्य, लालित्य; —(यस्य) हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्—कु० १।३, २।५३, ५।४९, रघु० १८।१९, उत्तर० ६।२७ 4. शोभा, उदात्तता 5. अहिवात (विप० वैधव्य) 6. बधाई, मंगलकामना 7. सिंदूर 8. सुहागा। सम०—चिह्नम् 1. अच्छे भाग्य का चिह्न, अच्छी क़िस्मत का चिह्न 2. अहिवात का चिह्न (जैसे कि मस्तक पर सिंदूर का तिलक),—तन्तुः (वह सूत्र जो विवाह में वर द्वारा कन्या के गले में बांधा जाता है और जिसे स्त्री विधवा होने तक पहनती है) विवाहसूत्र, मंगलसूत्र,—तृतीया भाद्रशुक्ल-तृतीया, हरितालिका, तीज, देवता शुभदेवता, या अभिभावक देवता,—दानम् मिष्टान्न का शुभ उपहार या चढ़ावा।

सौभाग्यवत् (वि०) [सौभाग्य+मतुप्] भाग्यशाली, शुभ, —ती विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित है, विवाहित सधवा स्त्री।

सौभिकः [सौभं कामचारिपुरं तन्निर्माणं शीलमस्य—सौभ+ठक्] जादूगर, ऐंद्रजालिक।

सौभ्रात्रम् [सुभ्रातृ+अण्] अच्छा भ्रातृभाव, भाईचारा, बंधुता—सौभ्रात्रमेवं हि कुलानुसारि रघु० १६।१, १०।८१।

सौमनस (वि०) (स्त्री० सा,-सी) [सुमनस+अण्] 1. भावनानुकूल, सुखद 2. फूलसंबंधी, पुष्पीय, सम् 1. कृपालुता, उदारता, कृपा 2. आनन्द, सन्तोष।

सौमनसा [सौमनस+टाप्] जायफल का छिलका।

सौमनस्यम् [सुमनस्+ष्यञ्] 1. मन का संतोष, आनन्द, प्रसन्नता -रघु० १५।१४, १७।४० 2. श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को दिया गया फूलों का उपहार।

सौमनस्यायनी [सौमनस्य+अय+ल्युट्+ङीप्] मालती लता की मंजरी।

सौमापनः [सोम+फक्] बुद्ध का पितृपरक नाम।

सौमिक (वि०) (स्त्री०-की) [सोम+ठक्] 1. सोमरससंबंधी, सोमरस से अनुष्ठित यज्ञ 2 चन्द्रमासम्बन्धी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सौमित्रः, सौमित्रिः [सुमित्रा+अण्, इञ् वा] लक्ष्मण का विशेषण सौमित्रेरपि पत्नित्यागविषये तत्र प्रियं क्वासि मोः उत्तर० ३।४५।

सौमिल्लकः (पुं०) कालिदास का पूर्ववर्ती एक नाटककार भासकविसौमिल्लकविप्रशस्तादीनाम् मालवि० १।

सौमेचकम् (नपुं०) सोना, स्वर्ण।

सौमेधिकः [सुमेधा+ठक्] मुनि, ऋषि, अलौकिक बुद्धि-सम्पन्न।

सौमेरुक (वि०) (स्त्री०-की) [सुमेरु+कञ्] सुमेरु संबंधी, सुमेरु से आया हुआ, या प्राप्त,—कम् - सोना, स्वर्ण।

सौम्य (वि०) (स्त्री०-म्या,—म्यी) [सोमो देवतास्य तस्येदं वा अण्] 1. चंद्र संबंधी, चन्द्रमा के लिए पावन 2. सोम के गुणों से युक्त 3. सुन्दर, सुखद, रुचिकर 4. प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध-संरम्भं मैथिलीहास्यशोभा-क्षणसौम्यां निनाय ताम्-रघु० १२।३६, (इसके संबोधन का रूप 'सौम्य' शब्द 'श्रीमान् जी' 'सम्मान्य' 'भला मानस' अर्थों को प्रकट करता है—प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव—रघु० १४।४९, सौम्येति चाभाष्य यथार्थवादी—१४।४४, मेघ० ४९, कु० ४।३५, मा० ९।२५ 5. शुभ —म्यः 1. बुधग्रह 2. ब्राह्मण को सम्बोधित करने का समुचित विशेषण—आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने मनु० २।१२५ 3. ब्राह्मण 4. गूलर का पेड़ 5. लाल होने से पूर्व की दशा में रुधिर, लसीका, रक्तोदक 6. अन्नरस जो पेट में जाकर जीर्ण होकर बनता है 7. पृथ्वी के नौ खण्डों में से एक, —(पुं० ब० व०) 1. मृगशिरा के पांच नक्षत्रों का पुंज 2. पितृवर्ग विशेष—मनु० ३।१९९। सम०—उपचारः शान्त उपाय, मृदु चिकित्सा,—कृच्छ्रः, छ्रम् एक प्रकार की धर्म साधना -तु० याज्ञ० ३।३२२, —गन्धी सफेद गुलाब, -ग्रहः शान्त और शुभ ग्रह, —धातुः कफ, श्लेष्मा, नामन् (वि०) जिसका नाम श्रुतिमधुर हो, सुखद हो—मनु० ३।१०, वारः, -वासरः बुधवार।

सौर (वि०) (स्त्री०-री) [सूर+अण्] 1. सूरज-सम्बन्धी, सौर्य 2. सूर्य को अर्पित या पावन 3. स्वर्गीय, दिव्य 4. मदिरासम्बन्धी, रः 1. सूर्योपासक 2. शनिग्रह 3. सौर्य मास 4. सौर्य दिन 5. तुम्बुरु नाम का पौधा,—रम् (ऋग्वेद से उद्धृत) सूर्यसम्बन्धी मन्त्रों का समूह। सम० नक्तम् एक विशेष व्रत जो रविवार को किया जाय, मासः सौर्य मास (जिसमें तीस बार सूर्य उदय हो और तीस ही बार अस्त हो), -लोकः सूर्य लोक।

सौरभः [सुरभ+अण्] शूरवीर, योद्धा।

सौरभ (वि०) (स्त्री०-भी) [सुरभि+अण्] सुगन्धित, -भम् 1. सुगन्ध भामि० १।१८, १२१ 2. केसर, जाफरान।

सौरभेय (वि०) (स्त्री०-यी) [सुरभि+ढक्] सुरभि से सम्बद्ध,—यः बैल।

सौरभी, सौरभेयी [सौरभ+ङीष्, सौरभेय+ङीष्] 1. गाय 2. 'सुरभि' नामक गाय की पुत्री—तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः - रघु० २।३।

सौरभ्यम् [सुरभि+ष्यञ्] 1. सुगन्ध, खुशबू, मधुर-गन्ध-सौरभ्यं भुवनत्रयेऽपि विदितम् भामि० १।३८, पुनाना सौरभ्यैः गंगा० ४३, रघु० ५।६९ 2. रोचकता, सौन्दर्य 3. सदाचरण, प्रसिद्धि, कीर्ति, ख्याति।

सौरसेनाः (पुं०, ब० व०) एक प्रदेश और उसके अधिवासियों का नाम, नी दे० शौरसेनी।

सौरसेयः [सुरस+ढक्] स्कन्द का विशेषण।

सौरसैन्धव (वि०) (स्त्री०-वी) [सुरसिन्धु+अण्] आकाशगंगा सम्बन्धी शि० १३।२७, वः सूर्य का घोड़ा।

सौराज्यम् [सुराज्य+ष्यञ्] अच्छा प्रशासन या राज्य - एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान् -रघु० ५।६०।

सौराष्ट्र (वि०) (स्त्री०-ष्ट्री, ष्ट्री) [सुराष्ट्र+अण्] सौराष्ट्र (सूरत) नामक प्रदेश सम्बन्धी या वहाँ से प्राप्त, ष्ट्रः सौराष्ट्र प्रदेश, (पुं० ब० व०) सौराष्ट्र प्रदेश के अधिवासी, ष्ट्रम् पीतल, कांसा।

सौराष्ट्रकः [सौराष्ट्र+कन्] एक प्रकार का कांसा, फूल।

सौराष्ट्रिकम् [सुराष्ट्र+ठक्] 1. एक प्रकार का जहर।

सौरिः [सूरस्यापत्यं पुमान् इञ्] 1. शनिग्रह का नाम 2. असन नामक वृक्ष। सम० रत्नम् एक प्रकार का रत्न, नीलम।

सौरिक (वि०) (स्त्री०-की) [सुर (रा) (सूर)+ठक्] 1. स्वर्गीय, दिव्य 2. मदिरासम्बन्धी, आसवीय 3. मदिरा पर लगा कर, शुल्क, कः 1. शनि 2. स्वर्ग, वैकुण्ठ 3. कलाल, मदिरा बेचने वाला।

सौरी [सौर+ङीष्] सूर्य की पत्नी।

सौरीय (वि०) (स्त्री०-यी) [सूर+छण्] 1. सूर्य सम्बन्धी 2. सूर्य के योग्य, सूर्य के उपयुक्त।

सौर्य (वि०) (स्त्री०-र्यी) [सूर्य+अण्] सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला, सूर्य का।

सौलभ्यम् [सुलभ+ष्यञ्] 1. प्राप्ति की सुविधा 2. सुकरता, सुलभता, सुगमता।

सौल्विकः [सुल्व+ठक्] ताम्रकार, कसेरा।

सौव (वि०) (स्त्री०-वी) [स्व (स्वर्)+अण्] 1. अपनी, निजी सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला 2. स्वर्गीय या स्वर्ग सम्बन्धी,—वम् आदेश, राजशासन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सौवग्रामिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वग्राम+ठक्] अपने निजी गांव से सम्बन्ध रखने वाला।

सौवर (वि०) (स्त्री० री) [स्वर+अण्] 1. किसी ध्वनि या संगीत के स्वर से संबंध रखने वाला 2. स्वरसम्बन्धी।

सौवर्चल (वि०) (स्त्री०-ली) [सुवर्चल+अण्] सुवर्चल नामक देश में प्राप्त,—लम् 1. सोंचर नमक 2. मञ्जी का खार, रेह।

सौवर्ण (वि०) (स्त्री० र्णी) [सुवर्ण+अण्] 1. सुनहरी 2. तोल में एक स्वर्णमुद्रा के बराबर।

सौवस्तिक (वि०) (स्त्री० की) [स्वस्ति+ठक्] आशीर्वादात्मक, -कः कुलपुरोहित, या ब्राह्मण।

सौवाध्यायिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वाध्याय+ठक्] स्वाध्यायसम्बन्धी, स्वाध्यायी।

सौवास्तव (वि०) (स्त्री०-वी) [सुवास्तु+अण्] अच्छे स्थान पर निर्मित, अच्छी वासभूमि से युक्त।

सौविदः, सौविदल्लः [सु+विद्+क+अण्, सुष्ठु विदनूपुरः तं लाति—ला+क+अण्] अन्तःपुर की रखवाली पर नियुक्त व्यक्ति शि० ५।१७।

सौवीरम् [सुवीर+अण्] 1. बेर का फल 2. अंजन, सुरमा 3. कांजी, -रः सुवीर देश या वहां का अधिवासी ('अधिवासी' के अर्थ में ब० व०)। सम०—अञ्जनम् एक प्रकार का अंजन या सुरमा।

सौवीरकः [सौवीर+कन्] 1. बेरी, बेर का पेड़ 2. सुवीर देश का अधिवासी 3. जयद्रथ का नाम, कम् जौ की कांजी।

सौवीर्यम् [सुवीर+ष्यञ्] बड़ी शूरवीरता या विक्रम।

सौशील्यम् [सुशील+ष्यञ्] स्वभाव की श्रेष्ठता, अच्छा नैतिक आचरण, सदाचरण।

सौश्रवसम् [सुश्रवस+अण्] ख्याति, प्रसिद्धि।

सौष्ठवम् [सुष्ठु+अण्] 1. श्रेष्ठता, भलाई, सौन्दर्य, लालित्य, सर्वोपरि सौन्दर्य—सर्वाङ्गसौष्ठवाभिव्यक्तये विरलनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु मालवि० १, शरीर-सौष्ठवम् मा० १।१७, "जिसके शरीर की काटछांट या डीलडौल अच्छी न हो।" 2. परमकौशल, चातुर्य 3. अधिकता 4. लचक, हल्कापन।

सौस्नातिकः [सुस्नात+ठक्] स्नान मंगलकारी होने के सम्बन्ध में पूछने वाला—सौस्नातिको वस्य भवत्यमस्वः—रघु० ६।२१।

सौहार्दः [सुहृद्+अण्] मित्र का पुत्र, दम् हृदय की सरलता, स्नेह, मद्भाव, मैत्री (वैश्वामित्रे) विश्वास्य सौहार्दनिधिः सुहृद्वयः—रघु० १४।१५, सौहार्दहृद्यानि विचेष्टितानि—मा० १।४, मेघ० ११५।

सौहार्दम्, सौहृदम्-दम् [सुहृद्—ष्यञ्, अण् वा, यत् वा] मित्रता, स्नेह यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति—मृच्छ० १।१३, सज्जीजनस्ते किमु स्वदसौहृदः—विक्रम० १।१०, मा० १।

सौहित्यम् [सुहित+ष्यञ्] 1. तृप्ति, संतुष्टि—शि० ५।६२ 2. पूर्णता, पूर्ति 3. कृपालुता, सद्भावना।

स्कन्द् (स्वा० आ० स्कन्दते) 1. कूदना 2. उछलना 3. उड़ेलना, उंडेलना।

स्कन्द् (भ्वा० पर० स्कन्दति, स्कन्न) 1. उछलना, कूदना 2. उठाना, ऊपर की ओर उठना, ऊपर को उछलना 3. गिरना, टपकना भट्टि० २२।११ 4. फट जाना, छलकना 5. नष्ट होना, समाप्त होना—अस्कन्दे तप ऐश्वरम् 6. बिखर जाना, रिसना 7. उंडेलना, ढालना, प्रेर० (स्कन्दयति-ते) 1. उड़ेलना, फैलाना, ढालना, उंडेलना (जैसे वीर्यस्खलन)—एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत् भवचित्—मनु० २।१८०, ९।५० 2. छोड़ देना, अवहेलना करना, पास से निकल जाना, अव-, आक्रमण करना, धावा बोलना, आंधी की भांति गरजना पुरीमवस्कन्द लनीहि नन्दनम् शि०१।५१, आ-, आक्रमण करना, धावा बोलना—आस्कन्दल्लक्ष्मणं यावैरत्यक्रामच्च तं व्रतम्- भट्टि० १७।८२, परि, इधर उधर उछलना—मेघनादः परिस्कन्दन् परिस्कन्दत्तमाश्वारिम्। अवध्वादपरिस्कन्दं ब्रह्मणादीन विष्णुरन् भट्टि० ९।७५, प्र-, 1. आगे को उछलना 2. झपट्टा मारना, आक्रमण करना।

ii (चुरा० उभ० स्कन्दयति-ते) एकत्र करना।

स्कन्दः [स्कन्द्+अच्] 1. उछलना 2. पारा 3. कार्तिकेय का नाम सेनानीनामहं स्कन्दः—भग०१०।२४, रघु० २।३६, ७।१, मेघ० ४३ 4. शिव का नाम 5. शरीर 6. राजा 7. नदीतट 8. चतुर पुरुष। सम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,—षष्ठी (स्त्री०) चैत्र मास के छठे दिन कार्तिकेय के सम्मान में पर्व।

स्कन्दकः [स्कन्द+ण्वुल्] 1. उछलने वाला 2. सैनिक।

स्कन्दनम् [स्कंद्+ल्युट्] 1. क्षरण, बहना 2. रेचन, पेट का चलना, (आंतों को या नलों की) शिथिलता 3. जाना, हिलना-डुलना 4 सूचना 5. ठंडक पहुंचा कर रक्त का जमाना।

स्कन्द्य (चुरा० उभ० स्कन्द्यति-ते) सूक्ष्म करना।

स्कन्धः [स्कन्ध्यते आरुह्यतेऽसौ मुलैस शाखया वा कर्मणि घञ्, पृषो०] 1. कंधा 2. शरीर 3. वृक्ष का तना -तोयाघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः—शि० १।३४, रघु० १।४७, मेघ० ५३ 4. शाखा या बड़ी डाली 5. मानव-ज्ञान की कोई शाखा या विभाग 6. (किसी पुस्तक का) परिच्छेद, अध्याय, खण्ड 7. किसी सेना की टुकड़ी 8. सैनिक समुच्चय, समूह 9. ज्ञानेन्द्रियों के पांच विषय 10. (बौद्ध दर्शन में) जीवन के पांच तत्त्वरूप—सर्वकार्यशरीरेषु मुक्तवाङ्गस्कन्धपञ्चकम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शि० २।२८ 11. संग्राम, लड़ाई 12. राजा 13. करार 14. मार्ग, रास्ता 15. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 16. कंकपक्षी, बगला। सम० आवारः 1. सेना या सेना की टुकड़ी 2. राजा का निवास, राजधानी 3. शिविर, उपानेय (वि०) जो कंधे पर ढोया जाय, शान्ति बनाये रखने के लिए की जाने वाली संधि जिसमें अधीनता के चिह्न स्वरूप कोई फल या भाग उपहार में दिया जाय, चापः बढ़ई, तु० शिंशप। स्कन्धः नारियल का पेड़, देशः कंधा, हृदयुपहित-मूलग्रन्थिना स्कन्धदेशे—शं० १।१८, परिनिर्वाणम् शरीर के स्कंधों (पांचों तत्त्वों) का पूर्ण लोप या नाश (बौद्ध०)। फलः 1. नारियल का पेड़ 2. बेल का वृक्ष 3. मूलक का पेड़, बंधनः एक प्रकार का सोना, मेधी,—मल्लकः कंकपक्षी, बगला,—शृङ्गः भैंसा, वाहः, वाहकः बोझा ढोने के लिए लगाया हुआ बैल, उद्भट बैल, —शाखा पेड़ की मुख्य शाखा जो वृक्ष के तने में निकले,—शृङ्गः भैंसा,—स्कन्धः प्रत्येक कंधा।

स्कन्धस् (नपुं०) [स्कन्द्+अनुस्, पृषो०] 1. कंधा 2. वृक्ष का तना।

स्कन्धिकः [स्कन्ध+ठन्] बोझा ढोने के लिए लगाया हुआ बैल, कृ० 'स्कन्धवाह'।

स्कन्धिन् (वि०) [स्कन्ध+इनि] 1 कंधों वाला 2. डालियों वाला, तने वाला, (पुं०) वृक्ष।

स्कन्न (भू० क० कृ०) [स्कन्द्+क्त] 1. पतित, नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ 2 रिसा हुआ, बूंद बूंद टपका हुआ 3. उगला हुआ, फैलाया हुआ, छिड़का हुआ 4. गया हुआ 5. सूखा हुआ।

स्कम्भ् (भ्वा० आ०, स्वा० क्र्या० स्कम्भते, स्कम्भ्नोति, स्कम्भ्नाति) 1. रचना 2. रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना, थमवाना करना, दबाना, नियन्त्रित करना प्रेर० (स्कम्भयति-ते या स्कम्भति-ते, वि,—बाधा डालना, अवरोध करना।

स्कम्भः [स्कम्भ्+घञ्] 1. सहारा, खूणी, टेक 2. आलंब आधार 3. परमेश्वर।

स्कम्भनम् [स्कम्भ्+ल्युट्] सहारा देने की क्रिया, सहारा, खूणी, टेक।

स्कान्द (वि०) (स्त्री० -न्दी) [स्कन्द+अण्] 1. स्कन्द-सम्बन्धी 2. शिवसम्बन्धी, दम् स्कन्द पुराण।

स्कु (स्वा० क्या० उभ० स्कुनोति, स्कुनुते, स्कुनाति, स्कुनीते) 1. कूद कर चलना, उछलना, चौकड़ी भरना 2. उठाना, उड़ेहन करना 3. ढकना, ऊपर बिछा देना भट्टि० १७।३२ 4. पहुँचना, प्राप्त होना, व्यापना भट्टि० १८।७३।

स्कुन्द् (स्वा० आ० स्कुन्दते) 1. कूदना 2. उड़ेहन करना, उठाना।

स्कोटिका (स्त्री०) पक्षीविशेष।

स्खद् (भ्वा० आ० स्खदते) 1. काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना 2. नष्ट करना 3. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 4. परास्त करना, सर्वथा हरा देना 5. थकाना, श्रांत करना कष्ट देना 6. दृढ़ करना।

स्खदनम् [स्खद्+ल्युट्] 1. काटना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3. कष्ट देना, दुखी करना।

स्खल् (भ्वा० पर० स्खलति) 1. लड़खड़ाना, औंधे मुंह गिरना, नीचे गिरना, फिसलना, डगमगाना - स्खलति चरणं भूमौ न्यस्तं न चाद्रितमा मही- मृच्छ० ९।१३, ५।२४ 2. डगमगाना, लड़खड़ाना, थरथराना, डगमग होना 3. आज्ञा भंग किया जाना, उल्लंघित होना (किसी आदेश का) मुद्रा० ३।२५, रघु० १८।४३ 4. सन्मार्ग से च्युत होना—किं० ९,३७ 5. ग्रस्त होना, उत्तेजित होना - किं० ३।५३, १३।५ 6. भूल करना, बड़ी भूल करना, गलती करना स्खलनो हि करालस्यः मुहूर्त्तसंचिवलेष्टितम् शि० ३।१३४, (यहाँ यह 'प्रथम' अर्थ को भी प्रकट करता है) 7. हकलाना, तुतलाना, रुक-रुक कर बोलना वदन-कमलके शिशोः स्मरगरलं स्खलदंसमञ्जरमञ्जुलिप्तं ते—उत्तर० ४।४, रघु० २।७६, कु० ५।५६ 8. विफल होना, कोई प्रभाव न होना - रघु० ११।८३ 9. बूंद बूंद गिरना, टपकना, चूना 10. जाना, हिलना-जुलना 11. ओझल होना 12. एकत्र करना, इकट्ठा करना —प्रेर० (स्खलयति-ते) 1. लड़खड़ाने का कारण बनना, 2. त्रुटि या भूल कराना, डगमगाने या डावांडोल होने का कारण बनना वचनानि स्खलयन् यदे यदे —कु० ४।१२, स्खलयसि वचनं ते संप्रयत्न्य भ्रमभ्रुम—मा० ३।८, प्र—, धक्कमधक्का होना इधर प्रवस्खल्यु-च्चावधा, भट्टि० १४।२८, वि , गलती करना, बड़ी भूल करना रघु० १९।२४।

स्खलनम् [स्खल्+ल्युट्] 1. लड़खड़ाना, फिसलना, डगमगाना, नीचे गिर पड़ना 2. डगमगाते हुए चलना 3. सन्मार्ग से विचलन 4. भारी भूल, त्रुटि, गलती 5. विफलता, निराशा, असफलता 6. हकलाना, बोलने में भूल या उच्चारण में अशुद्धि, रुक रुक कर बोलना 7. चूना, टपकना 8. ठोकराना, उलझना - उत्तर० २।२०, महावीर० ५।४० 9. आपस में घिसना, रगड़ना।

स्खलित (भू० क० कृ०) [स्खल्—क्त] 1. लड़खड़ाया, फिसला, डगमगाया 2. गिरा, पड़ा 3. थरथराने वाला, लहराने वाला, घटबढ़ होने वाला, अस्थिर 4. नशे में चूर, पियक्कड़ 5. हकलाने वाला, रुक रुक कर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोलने वाला 6. विशुद्ध, बाधित 7. वृष्टि करने वाला, बड़ी भूल करने वाला 8. गिरा हुआ, उद्गीर्ण 9. टपकने वाला, चू कर नीचे गिरने वाला 10. हस्तक्षेप किया गया, रोका हुआ 11. व्याकुल 12. बीता हुआ, तम् 1. लड़खड़ाना, डगमगाना, गिरना 2. सन्मार्ग से विचलन 3. त्रुटि, भूल, गलती, गोत्रस्खलित कु० ४।८ 4. दोष, पाप, अतिक्रमण 5. धोखा, विश्वासघात 6. हांसी, कुटवाल। समः -सुभगम् (अव्य०) आकर्षक रीति से चले चलना—मेघ० २८।

स्खुड् (तुदा० पर० स्खुडति) ढकना।

स्तक् (भ्वा० पर० स्तकति) 1. मुकाबला करना 2. टक्कर लेना, प्रतिरोध करना, पीछे ढकेलना।

स्तन् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्तनति, स्तनयति—ते, स्तनित) 1. आवाज करना, शब्द करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2. कराहना, कठिनाई से सांस लेना, ऊंचा सांस लेना 3. गरजना, दहाड़ना तस्तनुर्जज्वलुर्मलुर्जग्लुर्लुलुठिरे क्षताः भट्टि० १४।३०, णि , 1. शब्द करना 2. आह भरना 3. विलाप करना, वि , दहाड़ना।

स्तनः [स्तन्+अच्] 1. स्त्री की छाती—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशाविस्यूपमितौ—भर्तृ० ३।२०, (दरिद्राणां मनोरथाः) हृदयेष्वेव लीयन्ते विधवास्त्रीस्तनाविव पंच० २।९।१ 2. छाती, किसी भी मादा की ओड़ी या चूचुक—अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दविलुलितकेशरम् शि० ७।१४। समः अंशुकम् स्तन ढकने का कपड़ा, —अग्रः चूची, —अङ्गरागः स्त्री के स्तनों पर लगाया जाने वाला रंग, अन्तरम् 1. हृदय 2. दोनों स्तनों के बीच का स्थान (न) मृणाल सूत्रं रचितं स्तनान्तरे शि० ६।१७, रघु० १०।६२ 3. स्तन का एक चिह्न (जो भावी वैधव्य का सूचक कहा जाता है),—आभोगः 1. स्तनों की पूर्णता या फैलाव 2. चूचियों की गोलाई 3 वह पुरुष जिसके स्त्रियों जैसे बड़े स्तन हों,—तटः, —टम् चूचियों का ढलान, प,—पा, पायक, —पायिन् स्तन पान करने वाला, दुधमुंहा,—पानम् स्तनपान करना, भरः 1. स्तनों की स्थूलता,—पादावस्थित्या मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रताम्—रत्न० १।१ 2. स्त्री जैसे स्तनों वाला पुरुष, भवः एक प्रकार का रतिबन्ध, —मुखम्, वृतम्,—शिखा चूचुक, चूची।

स्तनतम् [स्तन्+ल्युट्] 1. ध्वनन, आवाज, कोलाहल 2. दहाड़ना, गरजना, (बादलों का) गड़गड़ाना 3. कराहना 4. कठिनाई से सांस लेना।

स्तनन्धय (वि०) [स्तनं धयति—धे+खश्, मुम् च] स्तन्यपान करने वाला—यदि बुध्यते हरिशिशुः स्तनन्धयो भविता करेणुपरिशेषिता मही भामि० १।५३, तवाङ्कशायी परिवृत्तभाग्यया मया न दृष्टस्तनयः स्तनन्धयः मा० १०।६, यः शिशु, दुधमुंहा बच्चा रघु० १४।७८, शि० १२।४०।

स्तनयित्नुः [स्तन्+इत्नुच्] 1. गरजना, गड़गड़ाना, बादलों का कड़कड़ाना 2. बादल उत्तर० ३।७, ५।८ 3. बिजली 4. रोग, बीमारी 5. मृत्यु 6. एक प्रकार का घास।

स्तनित (भू० क० कृ०) [स्तन् कर्तरि क्त] 1. ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहलमय मेघ० २८ 2. गरजने वाला, दहाड़ने वाला, तम् 1. बिजली की कड़कड़ाहट, बादलों की गरज . तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मास्म भूविक्लवास्ताः मेघ० ३७ 2. गरज, शोर 3. ताली बजाने की आवाज।

स्तन्यम् [स्तने भवं यत्] मां का दूध, क्षीर—पिब स्तन्यं पोत भामि० १।६०। समः त्यागः मां का दूध छुड़ाना, स्तन्यमोचन स्तन्यत्यागात्प्रभृति सुमुखी दन्तपाञ्चालिकेव मा० १०।५, स्तन्यत्यागं यावत्पुत्रयोरवेक्षस्व उत्तर० ७।

स्तबकः [स्तुञ्+वुन् या स्था+अवक्, पृषो० वयोरभेदः] गुच्छा, गुच्छ कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनाम् भर्तृ० २।१०४, रघु० १३।३२, मेघ० ७५, कु० ३।३९।

स्तब्ध (भू० क० कृ०) [स्तम्भ् कर्मणि कर्तरि वा क्त] 1. रोका हुआ, घेराबन्दी किया हुआ, अवरुद्ध 2. लकवे से ग्रस्त, संज्ञाहीन, सुन्न, जड़ीकृत 3. गतिहीन, स्थावर, अचल 4. स्थिर, दृढ़, कड़ा, घोर, कठोर 5. ढीठ, अड़ियल, कठोरहृदय, निष्ठुर 6. उजड्ड, मोटा। समः कर्ण (वि०) जिसके कान खड़े हों, रोमन् (पु०) सूअर, वराह, लोचन (वि०) जिसकी पलकें न झपकती हों (जैसे देवता)।

स्तब्धता,-त्वम् [स्तब्ध+तल्+टाप्, त्व वा] अनम्यता, दृढ़ता, कड़ाई 2. जाड्य, असंवेदता।

स्तम्भिः (स्त्री०) [स्तम्भ्+क्तिन्] 1. स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अनम्यता 2. दृढ़ता, अचलता 3. जाड्य, असंवेदता, जड़ता 4. धृष्टता।

स्तम्भ दे० 'स्तम्भ्'।

स्तम्भः (पुं०) बकरा, मेढा।

स्तम्भु (नपुं०) = स्तम्भन।

स्तम् (भ्वा० पर० स्तमति) घबरा जाना, व्याकुल होना।

स्तम्बः [स्था+अम्बच् किच्च, पृषो०] 1. घास का पुंज —रघु० ५।१५ 2. अनाज के पौधों की पुली जैसा कि 'स्तम्बकरिता' में 3. झुंड, पुंज, गुच्छा उत्तर० २।२९, रघु० १५।१९ 4. झाड़ी, झुरमुट 5. गुल्म, प्रकांड रहित झाड़ी 6. हाथी बांधने का खूंटा 7. लोभ 8. जड़ता, असंवेदता (इन दो अर्थों में 'स्तम्भ')

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९. पहाड़ । सम०—करि (वि०) पुलियाँ बनाने वाला, भरोटा बनाने वाला, (रिः) अनाज, धान्य, **करिता** पूला या मुट्ठा बनना, प्रचुर या पुष्कल मात्रा में विकास—न शालेः स्तम्बकरिता वप्पुर्गुणमपेक्षते—मुद्रा० १।३, **घनः** 1. खुर्पा (जिससे घास के गुच्छे निराये जांय) 2. (धान्य काटने के लिए) दरांती 3. तिन्नी धान एकत्र करने की टोकरी, **घ्नः** दरांती, खुर्पा ।

स्तम्बेरमः [स्तम्बे वृक्षादीनां काण्डे गुल्मे गुच्छे वा रमते रम् + अच्, अलुक् स०] हाथी—स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते —रघु० ५।८२, शि० ५।३४ ।

स्तम्भ् (म्वा० आ०, स्वा० क्र्या० पर० स्तम्भते, स्तम्भीति, स्तम्भाति, स्तम्भित, स्तब्ध; इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् तथा अव के पश्चात् धातु के स् को ष् हो जाता है) 1. रोकना, बाधा डालना, पकड़ना, दबाना—कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।५ 2. दृढ़ करना, कड़ा करना, अचल बनाना 3. जड़ बनाना, शक्तिहीन करना, अनम्य बनाना प्राणा दर्ध्वसिरे गात्रं तस्तम्भे च हृते प्रिये भट्टि० १४।५५ 4. टेक लगाना, सहारा देना, थामना, संभाले रखना 5. कड़ा होना, सख्त होना, अटल होना 6. घमंडी होना, उन्मत्त होना, सीधी गर्दन वाला होना, (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न रूप दर्शाये गए हैं स्तम्भते पुरुषः प्रायो यौवनेन धनेन च । न स्तम्भाति क्षितीशोऽपि न स्तम्भोति युवाप्यसौ ॥) प्रेर० (स्तम्भयति ते) 1. रोकना, पकड़ना 2. दृढ़ या कड़ा करना 3. गतिहीन करना 4. टेक लगाना, सहारा देना । सम० अव—, 1. झुकना, निर्भर होना प्रकृति स्वामवष्टभ्य—भग० ९।८ 2. अवरुद्ध करना 3. सहारा देना, टेक लगाना 4. थामना, कौली भरना, आलिंगन करना 5. लपेटना, लिफाफे में रखना 6. बाधा डालना, रोकना, पकड़ना, प्रतिबद्ध करना, **उद्**—, 1. रोकना, रुकावट डालना, पकड़ना 2. सहारा देना, टेक लगाना, थामे रखना, **उप** , **नि** , रोकना गिरफ्तार करना, **पर्यव** —, घेरना, पर्यवष्टम्यतामेतत्करालायतनम् —मा० ५, **वि** , 1. रोकना, 2. जमाना, पौधा लगाना, आश्रित होना—अत्युच्छ्रिते मन्त्रिणि पार्थिवे च निष्टम्भ्य पादावुपतिष्ठते श्रीः—मुद्रा० ४।१३, **सम्** , (प्रेर० भी) 1. रोकना, प्रतिबद्ध करना, नियंत्रण करना—प्रयत्नसंस्तम्भितविक्रियाणां कथंचिदीशा मनसां बभूवुः—कु० ३।३४ 2. गतिहीन करना, अनम्य करना कु० ३।७३ 3. हिम्मत बाँधना, साहस करना, प्रसन्न होना, स्वस्थचित्त करना, सचेत होना—देवि संस्तम्भयात्मानम्—उत्तर० ४ 4. दृढ़ या अटल करना, भग० ३।४३, **समव** , 1. सहारा देना, टेक लगाना 2. सान्त्वना देना, प्रोत्साहित करना ।

स्तम्भः [स्तम्भ् + अच्] 1. स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अटलता रम्भा स्तम्भं भजति—विक्रम० १८।२९, गात्रस्तम्भः स्तनमुकुलयोरुद्भवः प्रकम्पः मा० २।५, तत्सरूपोपहितजडिमस्तम्भमभ्येति गात्रम्— १।३५, ४।२ 2. असंवेद्यता, जड़ता, जाड्य, अनम्यता, लकवा 3. रोक, अवरोध, रुकावट—सोऽस्त्यत्रणिधानेन सन्ततेः स्तम्भकारणम्—रघु० १।७९, वाक्स्तम्भ नाट्यति मा० ८ 4. नियंत्रित करना, दमन करना, दबाना —कृतश्चित्तस्तम्भः प्रतिहृतधियामञ्जलिरपि —भर्तृ० ३।६ 5. टेक, सहारा, आलंब 6. स्थूण, खंभा, पौल 7. प्रकांड, (वृक्ष का) तना 8. मूढ़ता, जड़ता 9 भावशून्यता, अनुत्तेजनीयता 10. किसी अलौकिक शक्ति या जादू से भावना या शक्ति का दमन करना । सम०— **उत्कीर्ण** किसी लकड़ी में खोद कर बनाई गई (मूर्ति), **गर** (वि०) 1. गतिहीन करने वाला, जड़ता लाने वाला 2. रोकने वाला, (रः) बाड़, **कारणम्** अवरोध या रुकावट का कारण,—पूजा विवाह आदि के अवसर पर बनाए गए अस्थायी मण्डपों के स्तम्भों की पूजा ।

स्तम्भकिन् (पुं०) चर्ममंडित एक वाद्ययंत्र ।

स्तम्भनम् [स्तम्भ् + ल्युट्] 1. रोकना, अवरोध करना, रुकावट डालना, गिरफ्तार करना, दबाना, नियंत्रित करना लोलैरुल्लोलक्षुभितकरणोज्जृम्भणस्तम्भनार्थम् —उत्तर० ३।२६ 2. गतिहीन होना, अकड़ाहट, जड़ता 3. शान्त होना, स्वस्थचित्तता' पंच० १।२६० 4. दृढ़ या कड़ा करना, दृढ़ता पूर्वक जमाना 5. टेक देना, सहारा देना 6. रुधिर प्रवाह को रोकना 7. कोई भी चीज जो रक्तस्रावरोधक हो 8. (मंत्रादि के द्वारा) किसी की शक्ति कुंठित करना—दे० स्तंभ (१०),—नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

स्तर (वि०) [स्तृ (स्तृ)+घञ्] फैलाने वाला, बिस्तार करने वाला, ढकने वाला, **रः** 1. कोई भी बिछाई हुई चीज, रद्दा, तह, परत 2. शय्या, पलंग ।

स्तरणम् [स्तृ (स्तृ)+ल्युट्] फैलाने की क्रिया, बिखेरना, छितराना आदि ।

स्तरि (री) मन् (पुं०) [तृ+इ (ई) मनिच्] शय्या, पलंग ।

स्तरी [स्तृ कर्मणि ई] 1. घूआँ, वाष्प 2. बछिया 3. बांझ गाय ।

स्तवः [स्तु+अप्] 1. प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना 2. प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र ।

स्तवक (वि०) (स्त्री०—विका) [स्तु+वुन्] प्रशंसक,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तोना,–क: 1. स्तुति करना, प्रशंसा, स्तुति 3. मंजरियों का गुच्छा 4. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, गजरा, दुगुम· स्तवक: 5. किसी पुस्तक का परिच्छेद, या अनुभाग 6. समुच्चय–तु० 'स्तबक' भी ।

स्तवनम् [स्तु+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना, सराहना 2. सूक्त ।

स्तावः [स्तु+घञ्] प्रशंसा, स्तुति ।

स्तावकः [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसक, स्तोता, चापलूस ।

स्तिघ् (स्वा० आ० स्तिघ्नुते) 1. चढना 2. बातें बघारना 3. सिलना ।

स्तिप् (भ्वा० आ० स्तेपते) सिलना, बूद-बूंद टपकना, झरना ।

स्तिभिः [स्तिभ्+इत्, इत्वम्] 1. स्थावर, अचरोग 2. समुद्र, 3. सूखा, गुच्छा, पुंज ।

स्तिम्, स्तीम् (दिवा० परं० स्तिम्यति स्तीम्यति) 1. गीला या तर होना 2. स्थिर या अटल होना, कड़ा होना ।

स्तिमित (वि०) [स्तिम् कर्तरि क्त:] 1. गीला, तर 2. (क) निश्चल, निश्चेष्ट, शान्त धूमितमुत्कलिकातरल भत· पय इव स्तिमितस्य प्रहीदधे:–मा० ३।१७, (ख) जमाया हुआ, कठोर, अटल, गतिहीन, स्थिर–वाच· स्पति सन्नति सोऽष्टमूर्ती स्थाणावचिन्त्यस्तिमितो बभूव कु० ७।८७, ३।५९, मा० १।२७, रघु० २। २५, ३।१७, १३।४८, ७१, उत्तर० ५।२८ 3 पूंदा हुआ, बन्द रघु० १।७३ 4. अवरुद्ध हुआ, लकवाग्रस्त 5 मृदु, कोमल 6. तुला, सन्तुलित । सम० वायुः शान्त पवन.– समाधिः स्थिर सचिन्तन ।

स्तिमितत्वम् [स्तिमित+त्व] स्थिरता, निश्चेष्टता, शान्ति ।

स्तोधिः [स्तु–धिवन्] 1. यज्ञ में स्थानापन्न स्तुतिक 2. घास 3 आकाश, अन्तरिक्ष 4. जल 5. रुधिर 6. इन्द्र का विशेषण ।

स्तु (अदा० उभ० स्तौति–स्तवीति, स्तुते–स्तुवीते, स्तुत, इच्छा० तुष्टूषति–ते, इसमें से उपरोक्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के स् को ष् हो जाता है) 1. प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना, स्तुतिगान करना–, कीर्तिगान करना, ख्याति करना –भामि० १।४१, मुद्रा० ३।१६, ऋतु० ८।९२, १५।६०, २१।३ 2. प्रशंसागान करना, भजन गाना, स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि–, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र–, 1. प्रशंसा करना 2. आरंभ करना, उपक्रम करना, प्रस्तूयताम् विलाद्यतम्तु –मालवि० १ 3. काम्य करना पैदा करना मा० ५।९ सम्, 1. प्रशंसा करना – रघु० १३।६ 2. परिचित होना, जानकर या घनिष्ठ संबंध डाल होना (इस अर्थ में प्राय: 'ज्ञातः' प्रयोग) अनेकशः सम्स्तुतमध्यनल्पा नवं नवं प्रीतिरहो करोति सि० ३।३१, कि० ३।२, दे० 'संस्तुत' भी ।

स्तुकः (पु०) बालों की चोटी, ग्रंथि या मींढी ।

स्तुका | स्तुक+टाप् | 1. बालों की ग्रंथि या मींढी 2. सांड के दोनों सींगों के बीच के घुंघराले बालों का गुच्छा 3. कूल्हा, जंघा ।

स्तुच् (स्वा० आ० स्नौचते) 1 उज्ज्वल होना, चमकना, निर्मल स्वच्छ होना 2. मंगलप्रद या शुभ या सुखद होना ।

स्तुत (भू० क० कृ०) [स्तु+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, प्रशस्त, स्तुति किया गया 2. खुशामद किया गया ।

स्तुतिः (स्त्री०) [स्तु–क्तिन्] 1. प्रशंसा, गुणकीर्तन, सराहना, श्लाघा स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते रघु० १०।३० 2. प्रशंसात्मक सूक्त, स्तोत्र रघु० ४।६ 3. चापलूसी, खुशामद, झूठी प्रशंसा–भूतार्थव्याहृतिः सा हि न: स्तुति. परमोष्ठित· –रघु० १०।३३ 4. दुर्गा का नाम । सम० –गीतम् स्तुतिगान, सूक्त, कीर्तिगान, पदम् प्रशंसा की वस्तु, –पाठकः कीर्तिगायक, प्रशस्तिवाचक, भाट, चारण, संदेशवाहक, वाद: प्रशंसायुक्त भाषण, स्तोत्र, हृत: भाट ।

स्तुत्य (वि०) [स्तु+यत्] श्लाघ्य, प्रशंसनीय, सराहनीय रघु० ४।६ ।

स्तुनकः [स्तु+वनक्] प्रकरण ।

स्तुभ् (भ्वा० पर० स्तोभति) 1. प्रशंसा करना 2. प्रसिद्ध करना, स्तुतिगान करना, पूजा करना ।

ii (स्वा० आ० स्तोभते) 1 रोकना, दबाना 2. ठप करना, सुन्न करना, जड़ीभूत करना ।

स्तुभः [स्तुभ्+क] वक्रता ।

स्तुम्भ् (रुधा० क्रया० पर० स्तुम्भोति, स्तुम्नाति) 1. रोकना 2. सुन्न करना, जड़ीभूत करना 3. निकाल देना ।

स्तूप् (तिरो० पर०, चुरा० उभ० स्तूपयति, स्तूपयति-ते) 1. ढेर लगाना, संचित करना, चढ़ा लगाना, एकत्र करना 2. खड़ा करना, उठाना ।

स्तूपः [स्तूप्+अच्] 1. ढेर, चढ़ा, टीला (मिट्टी का) 2. बौद्ध स्मारकचिह्न, गायन अवशेषों को (जैसे कि बुद्ध के) रखने के लिए एक प्रकार का स्मारकसदृश स्मृतिचिह्न 3. चिता ।

स्तृ । (स्वा० उभय० स्तृणोति, स्तृणुते, स्तृत, कर्मवा० स्तर्यते) 1. फैलाना, बिछाना, ढकना, बिछाना (महीं) तस्तार शरपाद्यातैः स क्षौद्रपटलैरिव रघु० ४।६३, ७।५८ 2 फैलाना, प्रसार करना, बिखेरना करना 3 ढकना, छितराना 4. कपड़े पहनाना, ढांपना, बिछाना, लपेटना 5. मार डालना, प्रेर० (स्तारयति–ते) बिछाना, ढांपना, छितराना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—रक्तेनाविक्षिलदद्भूमि सैन्यैश्चातस्तरद्भतैः—भट्टि० १५।४८, इच्छा० (तितीर्षति—ते)।

ii (स्वा० पर० स्तृणोति) प्रसन्न करना, तृप्त करना।

स्तृ (पुं०) [स्तृ+क्विप्] तारा।

स्तृक्ष (भ्वा० पर० स्तृक्षति) जाना।

स्तृतिः (स्त्री०) [स्तृ+क्तिन्] 1. फैलाना, बिछाना, प्रसार करना 2. ढकना, कपड़े पहनाना।

स्तृह्, स्तृह् (तुदा० पर० स्तृहति, स्तृहति) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्तृ (क्रया० पर० स्तृणाति, स्तृणीते, स्तीर्ण, इच्छा० तित्स्तरि (री) षति—ते, तित्स्तीर्षते—) ढांपना, बखेरना आदि, दे० 'स्तृ'। अव—ढांपना, भरना, बिछा देना—प्रकम्पयन् गात्रलतास्तरे दिशः—कि० १६। २९, आ—ढकना, आच्छादित करना,—रघु० ४।६५, उप—, 1. बखेरना 2. क्रम से रखना, परि—, 1. फैलाना, बिकीर्ण करना, प्रसार करना भट्टि० १४।११ 2. ढांपना (आलं० से भी) अथ नागयूथ-मलिनानि जयत्परितस्त्रमांसि परितस्तरिरे—शि० ९।१८ अभितस्तं पृथासूनुः स्नेहेन परितस्तरे—कि० १३।८ 3. क्रम में रखना, वि—, 1. फैलाना, बिकीर्ण करना 2. ढांपना, प्रेर०—फैलवाना, प्रसार करवाना —जैसा कि 'पयोधरविस्तारयितृकं यौवनम्' श० १ 2. बढ़ना रघु० ७।३९ 3. फैलाना, प्रसार करना, सम्—, 1. फैलाना, बखेरना—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः—श० ४।७ 2. बिछाना।

स्तेन् (चुरा० उभ०—'स्तेन' का नामधातु—स्तेनयति-ते) चुराना, लूटना,—मनु० ८।३३३।

स्तेनः [स्तेन कर्तरि अच्] चोर, लुटेरा—न तं स्तेना न दामिका हरन्ति न च नश्यति—मनु० ७।८३, —नम् चोरी करना, चुराना। सम०—निग्रहः 1. चोरी को दिया जाने वाला दण्ड 2. चोरी को रोकना।

स्तेप् i (स्वा० आ० स्तेपते) रिसना।

ii (चुरा० उभ० स्तेप्यति—ते) भेजना, फेंकना।

स्तेमः [स्तिन्+घञ्] नमी, गीलापन।

स्तेयम् [स्तेनस्य भावः यत् न लोपः] 1. चोरी, लूट—कु० २।३५ 2. चुराई हुई या चुराये जाने के योग्य कोई वस्तु 3. कोई निजी या गुप्त चीज़।

स्तेयिन् (पुं०) [स्तेय+इनि] 1. चोर, लुटेरा 2. सुनार।

स्तै (भ्वा० पर० स्तायति) पहनना, अलंकृत करना।

स्तैन्यम् [स्तेन+अण्] चोरी, लूट।

स्तैन्यम् [स्तेनस्य भावः ष्यञ्] चोरी, लूट,—न्यः चोर।

स्तैमित्यम् [स्तिमित+ष्यञ्] 1. स्थिरता, कठोरता, अटलता 2. जड़ता, सुन्नपना।

स्तोक (वि०) [स्तुच्+घञ्] 1. अल्प, थोड़ा—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्—पंच० १।१५०, स्तोकं महद्वा धनम्—भर्तृ० २।४९ 2. छोटा 3. कुछ 4. अक्षम, नीच कः 1. थोड़ी मात्रा, बूंद 2. चातक पक्षी,—कम् (अव्य०) जरा सा, अपेक्षाकृत कम —पश्योदग्रप्लुतत्वाद्विगणयति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति —श० १।७। सम०—काय (वि०) छोटे शरीर वाला, छोटा, ठिगना, लघु—नम्र, (वि०) जरा झुका हुआ, थोड़ा सा शिथिल या अवसन्न—श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां—मेघ० ८२।

स्तोककः [स्तोकाय जलबिन्दवे कायति शब्दायते—स्तोक+क+क] चातक पक्षी—मनु० १२।६७।

स्तोकशः (अव्य०) [स्तोक+शस्] थोड़ा-थोड़ा करके, कमी के साथ।

स्तोतव्य (वि०) [स्तु+तव्यत्] प्रशंसनीय, श्लाघ्य, तारीफ के लायक—स्तोतव्यगुणसंपन्नः केषां न स्यात्प्रियो जनः।

स्तोतृ (पुं०) [स्तु+तृच्] प्रशंसक, स्तुतिकर्ता।

स्तोत्रम् [स्तु+ष्ट्रन्] 1. प्रशंसा, स्तुति 2. प्रशस्ति, स्तुति-गान।

स्तोत्रियः—या [स्तोत्र+घ, स्त्रियां टाप् च] एक विशेष प्रकार की ऋचा, स्तोत्र का पद्य।

स्तोभः [स्तुभ्+घञ्] 1. रोकना, अवरुद्ध करना 2. विराम, यति 3. निरादर, तिरस्कार 4. सूक्त, प्रशस्ति 5. साम-वेद का एक प्रभाग 6. अन्तर्निविष्ट।

स्तोमः [स्तु+मन्] 1. प्रशस्ति, स्तुति, सूक्त 2. यज्ञ, आहुति जैसा कि ज्योतिष्टोम या अग्निष्टोम में 3. सोम द्वारा तर्पण 4. संग्रह, समुच्चय, संख्या, समूह, संघात उत्तर० १।५० 5. बड़ी मात्रा, ढेर —भस्म-स्तोमपवित्रलाञ्छनभुरो धत्ते त्वचं रौरवीम्—उत्तर० ४।२०, महावीर० १।१८,—नम् 1. सिर 2. धन, दौलत 3. अज्ञान, धान्य 4. लोहे की लोक वाली छड़ी।

स्तोम्य (वि०) [स्तोम+यत्] श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

स्त्यान (वि०) [स्त्यै+क्त] ढेर के रूप में संचित—मा० ५।११, वेणी० १।२१ 2. घनीभूत, स्थूल, ठोस 3. मृदु, स्निग्ध, कोमल, चिकना 4. शब्दायमान, मुखर,—नम् 1. सघनता, ठोसपना, आकार या फैलाव में वृद्धि दधति कुहरभाजाभत्र भल्लूकयूनामनुरक्षित-सूरणि स्त्यानमश्वकृतानि मा० ९।६, उत्तर० २।२१, महावीर० ५।४१ 2. चिकनाई 3. अमृत 4. ढीलापन, आलस्य 4. प्रतिध्वनि, गूंज।

स्त्यायनम् [स्त्यै+ल्युट्] ढेर के रूप में संचित करना, भीड़ लगाना, समष्टि।

स्त्येनः [स्त्यै+इनच्] 1. अमृत 2. चोर।

स्त्य (भ्वा० उभ० स्त्यायति-ते) 1. ढेर के रूप में एकत्र किया जाना, इधर-उधर फैलना, बिकीर्ण होना —शिशिरकृदुदायाः स्त्यायते सरलकीनाम्—मा० ९।६, २।२१, महावीर० ५।४१ 3. प्रतिध्वनि, गूंज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त्री [स्त्यायते शुक्रशोणिते यस्याम् · स्त्यै-+-ड्रप्+ङीप्] 1. नारी, औरत 2. किसी भी जानवर की मादा ·-गज स्त्री, हरिण स्त्री आदि, श० ५।२२ 3. पत्नी —स्त्रीणां भर्ता धर्मदारारुन्ध पुंसाम्-भा० ६।१८. मेघ० २८ 4. स्त्रीलिंग, या स्त्रीलिंग का कोई शब्द आप: स्त्रीभूम्नि-अमर०। सम०-अगारः,-रम् अन्तःपुर, जनानखाना, अध्यक्षः कंचुकी, अभिगमनम् सधीग, ·-आजीवः 1. अपनी स्त्री के सहारे रहने वाला 2. स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराकर जीवनयापन कराने वाला,—कामः 1. स्त्रीसंभोग का इच्छुक, स्त्रियों के प्रति चाव 2. पत्नी की इच्छा,—कार्यम् 1. स्त्रियों का व्यवसाय 2. स्त्रियों की टहल, अन्तःपुर की सेवा, —कुमारम् एक स्त्री और बच्चा,—कुसुमम् रजःस्राव, स्त्रियों में ऋतु-स्राव, क्षीरम् माँ का दूध—मनु० ५।९, ग (वि०) स्त्रियों से संभोग करने वाला, गवी दूध देने वाली गाय,—गुरुः दीक्षा या मन्त्र देने वाली या पुरोहितानी,—गृहम्=स्त्र्यगारम्, दे०,--घोषः पौ फटना, प्रभात, तड़का, घ्नः स्त्रीघाती,—चरितम्, —त्रम् स्त्री के कर्म, चिह्नम् 1. स्त्रीत्व की विशिष्टता का कोई निशान 2. स्त्रीयोनि, भग,···चौरः स्त्री को फुसलाने वाला, लम्पट, जननी केवल कन्याओं को जन्म देने वाली स्त्री, जातिः (स्त्री०) स्त्रीवर्ग, मादा,—जितः स्त्री के वश में रहने वाला, जोरू का गुलाम · स्त्रीजितस्पर्शमात्रेण सर्व पुण्यं विनश्यति—शब्द०, मनु० ४।२१३, -धनम् स्त्री की निजी सम्पत्ति जिस पर उसका स्वतन्त्र अधिकार हो, —धर्मः 1. स्त्री या पत्नी का कर्तव्य 2. स्त्रीसम्बन्धी नियम 3. रजःस्राव,—धर्मिणी रजस्वला स्त्री,—ध्वजः किसी भी जानवर की मादा या स्त्रीत्वलिंग, नाथ (वि०) स्त्री जिसकी स्वामिनी हो, -निबन्धनम् स्त्री का विशेष कार्य क्षेत्र, गृहकर्म, गृहिणी का कार्य —पण्योपजीविन् (पुं०) दे० ऊपर 'स्त्र्याजीव', -परः स्त्रियों से प्रेम करने वाला, कामी, लम्पट, पिशाची राक्षसी जैसी पत्नी,—पुंसौ (पुं०, द्वि० व०) 1. पति और पत्नी 2. स्त्री और पुरुष—कु० २।७, पुंसलक्षणा पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री, मर्दानी स्त्री, प्रत्ययः (व्या० में) स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए शब्द के अन्त में जुड़ने वाला प्रत्यय, -प्रसङ्गः (अत्यधिक) संभोग,--प्रसूः (स्त्री०) पुत्रियों को जन्म देने वाली स्त्री—याज्ञ० १।७३—प्रियः (वि०) जिसको स्त्रियाँ प्यार करें (—यः) आम का पेड़, -बाध्यः स्त्री द्वारा परेशान किया जाने वाला, बुद्धिः (स्त्री०) 1. स्त्री की समझ 2. स्त्री का परामर्श, स्त्री द्वारा दिया गया उपदेश, —भोगः संभोग,···मन्त्रः स्त्रीकौशल, स्त्री की सलाह, -मुखः अशोकवृक्ष,—यन्त्रम् यन्त्र की भाँति स्त्री, स्त्री के रूप में मशीन या यन्त्र ···स्त्रीयन्त्रं केन लोके विषममृतमयं धमनाशाय सृष्टम् पंच० १।१९१, —रत्नजनम् पान, ताम्बूल—,रत्नम् श्रेष्ठ स्त्री स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा पूर्वे तवेयं दशा ··विक्रम० ४।२५,—राज्यम् स्त्रियों द्वारा शासित राज्य या प्रदेश, लिंगम् 1. (व्या० में) स्त्रीआपकता 2. स्त्रीयोनि, -वशः पत्नी के वश में होना, स्त्री की अधीनता, -विधेय (वि०) पत्नी द्वारा शासित, जोरू-भक्त अपनी स्त्री को बेहद चाहने वाला,—रघु० १९।४, ··विवाहः स्त्री के साथ विवाह, संसर्गः स्त्रियों का साथ, -संस्थान (वि०) स्त्री की आकृति वाला—श० ५।३१, संग्रहणम् 1. किसी स्त्री का बलात् आलिंगन 2. व्यभिचार, सतीत्वहरण, सभम् स्त्रियों की सभा, —सम्बन्धः 1. किसी स्त्री के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध 2. वैवाहिक सम्बन्ध 3. स्त्री के साथ सम्बन्ध, -स्वभावः 1. स्त्रियों की प्रकृति 2. हीजड़ा,- हत्या स्त्री का वध या कत्ल,—हरणम् 1. स्त्रियों का बलात् अपहरण 2. बलात् सम्भोग, जबरजिनाह ।

स्त्रीतमा, स्त्रीतरा (स्त्री०) कुलीन स्त्री, उत्तम जाति की सुसंस्कृत स्त्री ।

स्त्रीता, स्त्वम् [स्त्री-+-तल्+टाप्, त्व वा] 1. नारीत्व 2. पत्नीत्व 3. स्त्री होने का भाव, स्त्रैणता ।

स्त्रैण (वि०) (स्त्री०—णी) [स्त्रिया इदम् अञ्] 1. मादा, स्त्रीवाचक 2. स्त्रियोचित या स्त्री संबन्धी 3. स्त्रियों में विद्यमान, णिन् 1. स्त्रीत्व, स्त्रियों की प्रकृति, स्त्रीवाचकता -उत्तर० ४।११ 2. मादा का चिह्न, स्त्रीपना--तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यांतु दिवसाः—भर्तृ० ३।११३, इदं तत्प्रत्युत्पन्नमिति स्त्रैणमिति यदुच्यते ·श० ५, तस्य तृणमिव लघुदृत्ति स्त्रैणमाकलयतः—का० 3 स्त्रियों का समूह ।

स्त्रैणता, स्त्वम् [स्त्रैण+तल्+टाप्, त्व वा] 1. स्त्री वाचकता, स्त्रीपना 2. स्त्रियों के प्रति अत्यधिक रुचि ।

स्थ (वि०) [स्था+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) खड़ा होने वाला, ठहरने वाला, डटा रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, वर्तमान आदि तटस्थ, अंकस्थ, प्रकृतिस्थ, तटस्थ ।

स्थकरम् [—स्थकर, पृषो०] सुपारी ।

स्थग् (क्रया० पर० या प्रेर० स्थगति, स्थगयति) 1. ढांपना, छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना —पराभ्यूहस्यानात्मन्यपि तन्तुराणि स्थगयति--मा० १।१४ 2. ढांपना, व्याप्त होना, भरना रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः ··काव्य० ७ ।

स्थग (वि०) [स्थग्+अच्] 1. ढांपने वाला, छिपाने वाला 2. परित्यक्त, निर्लज्ज, लापरवाह, ग: धूर्त, छली ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थगनम् [स्थग्+ल्युट्] छिपाना, गुप्त रखना।
स्थागरम् [थग् अरन्] सुपारी।
स्थगिका [स्थग्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. वेश्या 2. पान की दूकान 3. एक प्रकार की पट्टी।
स्थगित (वि०) [स्थग्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त रक्खा हुआ।
स्थगी [स्थग्+क+ङीप्] पान की डिबिया।
स्थगुः [स्थग्+उन्] कूबड़, कुब्ज।
स्थण्डिलम् [स्थल्+इलच्, नुक्, लस्य डः] 1. भूखंड (यज्ञ के लिए चौरस व चौकोर किया हुआ), वेदी—निषेदुषी स्थण्डिल एव केवले—कु० ५।१२ 2. बंजर भूमि 5. ढेलों का ढेर 4. सीमा, हद 5. सीमा चिह्न। सम० शायिन् (पुं०) ('स्थण्डिलेशय' भी) वह संन्यासी जो बिना बिस्तर के यज्ञभूमि पर सोता है, —सिलकम् वेदी।
स्थपतिः [स्था+क, तस्य पतिः] 1. राजा, प्रभु 2. वास्तुकार 3 रथकार, बढ़ई 4. सारथि 5. बृहस्पति के प्रति बलि देने वाला, बृहस्पति-यज्ञ करने वाला 6. अन्तःपुर रक्षक 7. कुबेर।
स्थपुट (वि०) [तिष्ठति स्था+क, स्थं पुटं यत्र] 1. संकटग्रस्त, विपन्न 2. ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा। सम० गत (वि०) विषम स्थानों में रहने वाला, कठिनाइयों से ग्रस्त अङ्गुस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि कव्यमव्यग्रभक्ति मा० ५।१६।
स्थल (भ्वा० पर० स्थलति) दृढ़ता पूर्वक स्थिर रहना, अडिग रहना।
स्थलम् [स्थल्+अच्] 1. कठोर या शुष्क भूमि, सूखी जमीन, दृढ़ भू (विप० जल)—भो दुरात्मन् (समुद्र) दीयतां दिट्ठिभाणडानि नो चेत्स्थलतां त्वां नयामि पंच० १, इसी प्रकार स्थलकमलिनी या स्थलचरमंत्र 2. समुद्रतट, समुद्रबेला, बालू-तट 3. पृथ्वी, भूमि, जमीन 4. जगह, स्थान 5. खेत, भूखंड, डिब्बा 6. पड़ाव 7. उभरा हुआ भूखंड, टीला 8. प्रस्ताव, प्रसंग, विषय, विचारणीय बात—विवाद°, विचार° आदि 9. खंड या भाग (जैसे किसी पुस्तक का) 10. तम्बू। सम०—अन्तरम् कोई दूसरी जगह,—आरूढ (वि०) थरा पर उतरा हुआ, अरविन्दम्, —कमलम्, —कमलिनी पृथ्वी पर उगने वाला कमल—मेघ० ९०, कु० १।३३,—चर (वि०) भूचर, (जो जलचर न हो),—च्युत (वि०) स्थान से पतित, अपनी पदवी से हटाया हुआ,—देवता स्थानीय या ग्राम्यदेवी, —पद्मिनी भूकमलिनी,—मार्गः,—वर्त्मन् (नपुं०) भूमि पर बनी हुई सड़क—स्थलवर्त्मना (भूमार्ग से), रघु० ४।६०,—विग्रहः चौरस भूमि पर लड़ा जाने वाला युद्ध,—शुद्धिः (स्त्री०) किसी भी स्थल की शुद्धि भूमि की सफाई।
स्थला [स्थल्+टाप्] ऊँची की हुई सूखी जमीन जहाँ जल के निकास का अच्छा प्रबंध हो (विप० स्थली, दे० नी०)।
स्थली [स्थल+ङीष्] 1. सूखी जमीन, दृढ़ भूमि 2. भूमि का प्राकृतिक स्थल, भूमि या भूखंड (जैसे कि वनस्थल)—विललाप विकीर्णमूर्धजा समदुःखाभिक कुर्वती स्थलीम्... कु० ४।४। सम०—देवता पृथ्वी की देवी, भूमि की अभिष्ठात्री देवी—मेघ० १०६।
स्थलेशय (वि०) [स्थले शेते शी+अच्, अलुक् स०] सूखी जमीन पर सोने वाला,—यः कोई भी जल-स्थलचारी जानवर।
स्थविः [स्था+क्विप्] 1. जुलाहा 2. स्वर्ग।
स्थविर (वि०) [स्था+किरच्, स्थवादेशः] 1. दृढ़, पक्का, स्थिर 2. बूढ़ा, वृद्ध, पुराना,—रः 1. बूढ़ा पुरुष 2. भिक्षुक 3. ब्राह्मण का नाम,—रा बूढ़ी स्त्री - स्थविरे कस्य मयमभवः कस्य नयनानन्दकरः दश०।
स्थविष्ठ (वि०) [अतिशयेन स्थूलः स्थूल+इष्ठन् लस्य लोपः] सबसे बड़ा, बहुत हृष्टपुष्ट, सबसे अधिक विस्तृत ('स्थूल' की उत्तमावस्था)।
स्थवीयस् [स्थूल+ईयसुन्, स्थूलशब्दस्य स्थवादेशः] सबसे बड़ा, अपेक्षाकृत विस्तृत (स्थूल की मध्यमावस्था)।
स्था (भ्वा० पर० कुछ अर्थों में आत्मनेपद में भी —तिष्ठति ते, स्थित, कर्मवा० स्थीयते, इस धातु के पूर्व इकारान्त उकारान्त उपसर्ग आने पर धातु के 'स्' को ष् हो जाता है) 1. खड़ा होना - चरत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् —सुभा० 2. ठहरना, डटे रहना, बसना, रहना—ग्रामे गृहे वा तिष्ठति 3. शेष बचना, बाकी रह जाना—एको गजदन्तस्तिष्ठति —पंच० ४ 4. विलम्ब करना, प्रतीक्षा करना—क्रियमिति स्थीयते श० २ 5. ठहरना, उपरत होना, रुकना, निश्चेष्ट होना —तिष्ठत्येव क्षणमधिपतिर्ज्योतिषां व्योममध्ये विक्रम० २।१ 6. एक ओर रह जाना —तिष्ठतु तावत्पत्रलेखागमनवृत्तान्तः—का० (इस वृत्तान्त का ध्यान न कीजिए) 7. होना, विद्यमान होना, किसी भी स्थिति या अवस्था में होना, (प्रायः कृदन्त के रूप में प्रयोग)—मेरी स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे —कु० १।२, श० १।१, विक्रम० १।१, कालं नयन्तीव तिष्ठतिः—पंच० १, मनु ७।८ 8. डटे रहना, अनुरूप होना, आज्ञा मानना, (अधि० के साथ)—शासने तिष्ठ भर्तुः— विक्रम० ५।१७, रघु०, ११।६५ 9. प्रतिबद्ध होना—यदि ते सुत सदृशेयुरुपायं प्रथमैस्त्रिभिः—मनु० ७।१०८ 10. निकट होना—न विप्र स्वैरु तिष्ठस्तु मूत्रं शूद्रेण नार्यवेत्—मनु० ५।१०४ 11. जीवित रहना, सांस लेना—आः क एष मयि स्थिते चण्डगुप्त-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिभवितुमिच्छति—मुद्रा० १ 12. साथ देना, सहायता करना,—उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः—हि० १।७३ 13. आश्रित होना, निर्भर होना 14. करना, अनुष्ठान करना, अपने आपको व्यस्त करना 15. (आ०) सहारा लेना, (मध्यस्थ मान कर उसके पास) जाना, मार्गदर्शन पाना—संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः—कि० ३।१३ 16. (आ०) (मुरलालिंगन के लिए) प्रस्तुत करना, वेश्या के रूप में उपस्थित होना (सम्प्र० के साथ)—गोपी स्मरात् कृष्णाय तिष्ठते—पा० १।३।३४ पर सिद्धा०,—प्रेर० (स्थापयति—ते) 1. खड़ा करना 2. जमाना, जड़ना, स्थापित करना, रखना, प्रस्थापित करना 4. रोकना 5. पकड़ना रोकना—इच्छा० (तिष्ठासति) खड़े होने की इच्छा करना। अति—, अधिक होना, बढ़ जाना—अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्—अधि—, 1. स्थिर होना, अधिकार करना (कर्म० के साथ)—अधासनं गोत्रभिदोऽधितस्थौ—रघु० ६।७३, भट्टि० १५।३१ 2. अभ्यास करना (साधना का)—कि० १०।११ 3. अन्दर होना, रहना, बसना निवास करना,—पातालमधितिष्ठति—रघु० १।८०, श्रीजयदेवभणितमधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरतम्—गीत० ११ 4. अधिकार करना, जीतना, परास्त करना, पछाड़ना—संग्रामे तानधिष्ठास्यन्—भट्टि० ९।७२, १६।४० 5. प्राप्त करना—कि० २।३१ 6. नेतृत्व करना, संचालन करना, शासन करना, निदेश देना, प्रधानता करना दशरथदारानधिष्ठाय उत्तर० ४ 7. राज्य करना, शासन करना, नियंत्रण करना—भग० ४।६ 8. उपयोग करना, काम में लगाना 9. चढ़ना, स्थापित होना, गद्दी पर बैठना—अचिराधिष्ठितराज्यः शत्रुः—मालवि० १।८, अनु—, 1. करना, संपन्न करना, कार्यान्वित करना, ध्यान देना—अनुतिष्ठस्वात्मनो नियोगम्—मालवि० १ 2. पीछा करना, अभ्यास करना, पालन करना—भग० ३।३१ 3. देना, अनुदान देना, किसी के लिए कुछ करना—(यस्य) शैलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत्—कु० १।१७ 4. निकट खड़े होना, —मनु० ११।११२ 5. राज्य करना, शासन करना 6. नकल करना 7. अपने आपको प्रस्तुत करना, अव—, (प्रायः आ०) 1. रहना, टिकना, डटे रहना—जोषं जोषं जोषमेवावतस्थे—भामि० २।१७ अनीत्वा पङ्क्तीः धूलिमुदकं नावतिष्ठते—शि० २।३४, रघु० २।३१ 2. ठहरना, प्रतीक्षा करना-भट्टि० ८।११ 3. डटे रहना, अनुरूप रहना—भट्टि० ३।१४ 4. जीवित रहना—रघु० ८।८७ 5. निश्चेष्ट रहना, रुकना, ठहरना—भग० १।३० ७. आ पड़ना, मिलना, निर्भर होना—मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा गुप्तास्ववस्थिता—कु० २।२८ 7. अलग खड़े होना, अलग रखना 8. निश्चित या निर्णीत होना (प्रेर०) 1० खड़ा करना, रोकना, पड़ाव डालना 2. प्रस्थापित करना, नींव डालना 3. स्वस्थ होना, सचेत होना, आ—, 1. अधिकार करना 2. चढ़ना, सवार होना—यथा एकस्यन्दनमास्थितौ—रघु० १।३६ में 3. उपयोग करना, अवलंब लेना, सहारा लेना, अनुसरण करना, अभ्यास करना, लेना, धारण करना यथाहि महत्तमाप्तिष्ठत्यनुसूयकः—मनु० १०।१२८, २।१३३, १०।१०१ (यह अर्थ नाना प्रकार से—भला शब्दों के अनुसार जिनके साथ कि शब्द का प्रयोग होता है, बदलता रहता है—दे० कु० ५।२, ८४, मुद्रा० ७।१९, रघु० ६।७२, १५।७९, कु० ६।७२, ७।२९, पंच० ३।२१ आदि) 4. करना, सम्पादन करना, पालन करना 5. अपनाना 6. लक्ष्य बाँधना 7. दायित्व लेना 8. विशिष्ट ढंग से आचरण करना, व्यवहार करना 9. निकट खड़े होना, उद्—, 1. खड़े होना, उठना, उठ कर खड़े होना—उत्तिष्ठेत् प्रथमं चास्य—मनु० २।१९४, बच्चो निःश्वासेत्थितमुत्थितः सन्—रघु० २।६१ 2. त्याग देना, छोड़ना 3. पलट कर आना—रघु० १६।८३ 4. आगे आना, उदय होना, आगे बढ़ना, फूटना, निकलना—उदुतिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तत्फलम्—श० २।१३ 5. उदय होना, उगना, शक्ति में बढ़ना—शि० २।६ 6. सक्रिय होना, उठना, गतिशील होना—क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप—भग० २।३, ३७ 7. चेष्टा करना, कोशिश करना, (आ०) कि० ११।१३, शि० १४।१७ (प्रेर०) 1. उठाना, उन्नत करना 2. काम करने के लिए उकसाना, उत्तेजित करना, उप—, 1. निकट खड़े होना, हिस्से में मिलना,—तादनमुपतिष्ठति—पंच० २।१२३ 2. निकट आना, पहुँचना—कु० २।६४, रघु० १५।७६ 3. प्रतीक्षा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सेवा करना—मनु० २।४८ 4. पूजा करना, प्रार्थना के साथ उपस्थित होना, सेवा करना, प्रणाम करना (आ०)—न व्याख्कादन्यमुपस्थितासौ—भट्टि० १।३, उदितभूधिष्ठ एष भगवांस्तपनस्तमुपतिष्ठे—मा०१, रघु० ४।६, १०।६३, १७।१०, १८।२२ 5. निकट खड़े होना 6. मैथुन के लिए पहुँचना 7. मिलना, संयुक्त होना—गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते—सिद्धा० 8. नेतृत्व करना (आ०) 9. मित्र बनाना (आ०) 10 पहुँचना, निकट खिंचना, आसन्नवर्ती होना 11. द्वेषभावना से पहुँचना 12. उपस्थित होना (आ०) 13. घोटत होना, उत्पन्न होना, परि—, घेरना, चारों ओर खड़े होना, पर्यव—, (प्रेर०) स्वस्थचित्त होना, सचेत होना—पर्यवस्था-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्यात्मानम् विक्रम०१, प्र–, (आ०) 1. कूच करना, विदा होना ···पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना –रघु० ४।६० 2. दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना 3. प्रस्थापित होना 4. पहुँचना, निकट आना (प्रेर०) 1. पीछे हटाना 2. भेजना, तितर-बितर करना तौ दंपती स्वा प्रति राजधानी प्रस्थापयामास वशी वशिष्ठः–रघु० २।७७, प्रति – , 1. दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना, प्रस्थापित होना 2. सहायता किया जाना 3. आश्रित या निर्भर रहना 4. ठहरना, डटे रहना, स्थित रहना, प्रत्यय–, (आ०) विरोध करना, शत्रुवत् व्यवहार करना, आक्षेप करना (किसी तर्क का) अत्र केचित् प्रत्यवतिष्ठन्ते शारी०, भामि० १।७७, (प्रेर०) अपने आपको सचेत या स्वस्थ करना, वि –, (आ०) 1. अलग खड़े होना 2. स्थिर रहना, डटे रहना, बस जाना, अचल रहना 3. फैलना, विकीर्ण होना, विप्र , (आ०) 1. कूच करना 2. फैलना, व्यव , (आ०) 1. अलग-अलग रखा जाना 2. क्रमबद्ध किया जाना 3. निश्चित होना, स्थिर होना, स्थायी होना वचनीयमिदं व्यवस्यिनम्– कु० ४।२१ 4. आश्रित होना, निर्भर होना, (प्रेर०) 1. क्रमबद्ध करना, प्रबंध करना, समंजित करना 2. निश्चित करना, स्थापित करना 3. पृथक् करना, अलग-अलग रखना, सम् , (आ०) 1. बसना, रहना, परस्पर निकटवर्ती होना - तीक्ष्णदुद्विजते मृदौ परिभवत्रासात्न संतिष्ठते - मृदा० ३।५ 2. खड़े होना 3. होना, विद्यमान होना, जीवित होना 4. डटे रहना, आज्ञा मानना, सिद्धान्त का निर्वाह करना—दारिद्र्यघातपुरुषस्य बान्धवजनो वाक्यं न संतिष्ठते मृच्छ० १।३६ 5. पूरा होना सत्राः संतिष्ठते यज्ञस्तथा शौचमिति स्थितिः –मनु० ५।९८ {यज्ञपुण्येन युज्यते–कुल्लू०} 6. समाप्त हो जाना, विच्छिन्न पड़ जाना–भट्टि० ८।११ 7. निश्चेष्ट खड़े रहना, स्थिर हो जाना (परं०) क्षणं न संतिष्ठति जीवलोकः क्षयोदयाभ्यां परिवर्तमानः–हरि० 8. मरना, नष्ट होना (प्रेर०) 1. स्थापित करना, बसाना 2. रखना 3. स्वस्थचित्त होना, सचेत होना देवि संस्थापयात्मानम्–उत्तर० ४ 4. अधीन करना, नियंत्रण में रखना—मनु० ९।२ 5. रोकना, प्रतिबद्ध करना 6. मार डालना, समधि–, प्रधानता करना, शासन करना, प्रशासन करना, अधीक्षण करना, समव ,(आ०) 1. स्थिर रहना, अचल रहना 2. निश्चेष्ट रहना 3. तत्पर रहना (प्रेर०) 1. नींव डालना 2. रोकना,– समा , 1. सहना, अभ्यास करना––तपो महत्समास्थाय 2. व्यस्त करना, सम्पादन करना 3. प्रयोग में लाना, काम में लगाना 4. अनुसरण करना, पालन करना मनु० ४।२, ७।४४, समुद् , 1. खड़ा होना, उठना 2. मिल कर खड़े होना 3. मृत्यु से उठना, फिर जीवित होना, होश में आना 4. उदय होना, फूटना, समुप–1. निकट आना, पास जाना, पहुँचना 2. आक्रमण करना 3. आ पड़ना, घटित होना 4. सट कर खड़े होना, संप्र , (आ०) कूच करना, विदा होना, संप्रति–, 1. लटकना, आश्रित होना, निर्भर होना 2. दृढ़ होना, स्थिर होना।

स्थाणु (वि०) [स्था + नु, पृषो० पत्वम्] 1. दृढ़, अटल, स्थिर, टिकाऊ, अचल, गतिहीन, पुः 1. शिव का विशेषण··· संस्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः विक्रम० १।१ 2. टेक, पोल, स्तम्भ कि स्थाणुरयमत्र पुरुषः 3. खूँटी, कील 4. वृषभध्वजी का शंकु 5. बर्छी, नेज़ा 6. दीमकों का घोंसला, बामी 7. ओषधि या मुगन्ध द्रव्य, जीवक (पुं०, नपुं०) शाखा रहित तना, नंगा ठंठल, मुंडा पेड़, ठूंठ। सम० छेदः वह जो वृक्षों के तने काटता है, जो तनों को छील कर साफ़ करता है—स्थाणुच्छेदस्य केदारमाहुः शस्यवतो मृगम्—मनु० ९।४४, —भ्रमः किसी थूणी या पोल को कुछ और ही समझ लेना।

स्थाण्डिलः [स्थाण्डिल + अण्] 1. वह संन्यासी जो बिना बिस्तर के भूमि पर या यज्ञीय भूखंड पर सोता है 2. साधु या धार्मिक भिक्षु।

स्थानम् [स्था + ल्युट्] 1. खड़ा होना, रहना, ठहरना, नैरन्तर्य, निवास स्थान—उत्तर० ३।३२ 2. स्थिर या अटल होना 3. स्थिति, दशा 4. जगह, स्थल, (भवन आदि के लिए) भूमि, संस्थिति अक्षमालामदत्वास्मात्स्थानात्पदादपमपि न गन्तव्यम्—का० 5. संस्थान, स्थिति, अवस्था 6. संबन्ध, हैसियत 'पितृस्थाने' (पिता के स्थान में या पिता की हैसियत से) 7. आवास, घर निवासस्थान स एव (नक्रः) प्रच्युतः स्थानाच्छ्लाघ्यो परिभूयते –पंच० ३।४६ 8. देश, क्षेत्र, जिला, नगर 9. पद, दर्जा, प्रतिष्ठा—अमात्यस्थाने नियोजितः 10. पदार्थ–गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः–उत्तर० ४।११ 11. अवसर, बात, विषय, कारण परोक्षमुहूस्थानान्यपि तनुतराणि स्मरयति –मा० १।१४, स्थानं जरापरिभवस्य तदेव पुंसाम्–सुभा०,इसी प्रकार कलह,° कोप°, विवाद° आदि 12. उचित या उपयुक्त जगह स्थानेष्वेव नियोज्यन्ते भृत्याश्चाभरणानि च · पंच० १।७२ 13. उचित या योग्य पदार्थ––स्थाने खलु सज्जति दृष्टिः मालवि० १, दे० 'स्थानं' भी 14. अक्षर का उच्चारणस्थान (यह आठ हैं – अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च—शिक्षा० १३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

15. पावन स्थान 16. वेदी 17. नगरस्थ प्रांगण 18. मृत्यु के बाद कर्मानुसार प्राप्त होने वाला लोक 19. (नीति या युद्ध आदि में) दृढ़ता, आक्रमण का मुकाबला करने के लिए दृढ़ता, मनु० ७।१९० 20. पड़ाव, डेरा 21. निश्चेष्ट दशा, उदासीनता, 22. राज्य के मुख्य अंग, किसी राज्य का स्थैर्य - अर्थात् सेना, कोष, नगर और प्रदेश--मनु० ७। ५६ (यहाँ कुल्लू० 'स्थान' का अर्थ करता है "बल-कोषपुरराष्ट्रात्मकं चतुर्विधम्") 23. सादृश्य, समानता 24. किसी ग्रंथ का भाग या खंड, परिच्छेद या अध्याय आदि 25. अभिनेता का चरित्र 26. अन्तराल, अवसर, अवकाश 27. (संगीत० में) गीत, सुर, स्वर के स्पंदन की मात्रा। सम० अध्यक्षः स्थानीय राज्यपाल, स्थान का अधीक्षक, आसन (नपुं०, द्वि० व०) बैठा हुआ,--आसेधः किसी स्थान पर कैद, कारा, बंधन—तु० आसेध,-चिन्तकः सेना के शिविर के लिए स्थान की व्यवस्था करने वाला अधिकारी,—च्युत दे० 'स्थानभ्रष्ट',—पालः रखवाला, पहरेदार, आरक्षी, -भ्रष्ट (वि०) किसी पद से हटाया हुआ, विस्थापित, पदच्युत बेकार, माहात्म्यम् 1. किसी स्थान का गौरव या महत्त्व 2. किसी स्थान में मानी जाने वाली असाधारण पवित्रता या दिव्य गुण, -योगः उपयुक्त स्थान का निर्देशन द्रव्याणां स्थानयोगाच्च क्रय-विक्रयमेव च- मनु० ९।३३२,—स्थ (वि०) एक ही स्थान पर स्थित, अचल।

स्थानकम् [स्थान+स्वार्थे क] 1. अवस्था, स्थिति 2. नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल उदा० पताकास्थानक 3. शहर, नगर 4. आलवाल 5. शराब की सतह पर उठा हुआ फेन 6. सस्वर पाठ की एक रीति 7. यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुवाक या प्रभाग।

स्थानतः (अव्य०) [स्थान+तसिल्] 1. अपनी स्थिति या अवस्था के अनुसार 2. अपने उपयुक्त स्थान से 3. उच्चारण करने के अंग के अनुरूप।

स्थानिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्थान+ठक्] 1. किसी स्थान विशेष से संबंध रखने वाला, स्थानीय 2. (व्या० में) जो किसी अन्य वस्तु के बदले प्रयुक्त हो, या उसका स्थानापन्न हो,—कः 1. कोई पदाधिकारी, स्थानविशेष का रक्षक 2. किसी स्थान का शासक।

स्थानिन् (वि०) [स्थानमस्यास्ति रुग्वत्वेन इनि] 1. स्थानवाला 2. स्थैर्यसम्पन्न, स्थायी 3. वह जिसका कोई स्थानापन्न हो (पुं०) 1. मूलरूप या मौलिक तत्त्व, जिसके लिए कोई दूसरा स्थानापन्न न हो-स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ—पा० १।१।५६ 2. जिसका अपना स्थान हो, अभिहित।

स्थानीय (वि०) [स्थान+छ] 1. स्थानविशेष से संबद्ध, किसी स्थान का 2. किसी स्थान के लिए उपयुक्त, यम् नगर, शहर।

स्थाने (अव्य०) ['स्थान' का अधि० का रूप] 1. ठीक या उपयुक्त स्थान पर, सही ढंग से, उपयुक्त रूप से, ठीक, संभवतः, समुचित रीति से स्थाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः--रघु० ७।१३, स्थाने प्राणाः कामिनां दूरयायिनः मालवि० ३।१४, कु० ६।६७, ७।६५ 2. के स्थान में, की बजाय, के बदले, स्थानापन्न के रूप में-धातोः स्थाने इवादेश सुग्रीवं सन्यवेशयत् रघु० १२।५८ 3. के कारण, के लिए 4. इस प्रकार, भांति।

स्थापक (वि०) [स्थापयति-स्था+णिच्+ण्वुल्] खड़ा करने वाला, जमाने वाला, नींव डालने वाला, स्थापित करने वाला, विनियमित करने वाला,--कः 1. मंच के कार्य का निदेशक, रंगमंच-प्रबंधक, सूत्रधार 2. किसी देवालय का प्रतिष्ठाता, मूर्ति की स्थापना करने वाला।

स्थापत्यः [स्थपति+ष्यञ्] अन्तःपुर का रक्षक, त्यम् वास्तु विद्या, भवननिर्माण कला।

स्थापनम् [स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. खड़ा करने की क्रिया, जमाना, नींव डालना, निदेश देना, स्थापित करना, संस्था बनाना 2. विचारों को जमाना, मन को संकेन्द्रित करना, ध्यान, धारणा 3. निवास, आवास 4. पुंसवन संस्कार (जब गर्भवती स्त्री को गर्भस्थ पिण्ड में जीवसंचार का प्रथम लक्षण ज्ञात हो, उस समय यह संस्कार किया जाता है), दे० पुंसवन।

स्थापना [स्था+णिच्+युच्+टाप्, पुक्] 1. रखना, जमाना, नींव रखना, स्थापित करना 2. अवस्था करना, विनियमन, (नाटक में) रंगमंच का प्रबन्ध।

स्थापित (भू० क० कृ०) [स्था+णिच्+क्त, पुक्] 1. रक्खा हुआ, जमाया हुआ, अवस्थित, धरा हुआ 2. नींव डाली हुई, निविष्ट 3. जड़ा हुआ, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ 4. निर्देशित, विनियमित, आदिष्ट, अधिनियम 5. निर्धारित, तय किया हुआ, निश्चित किया हुआ 6. नियत, जिसको कोई पद या कर्तव्य सौंपा गया हो 7. विवाहित, जिसका विवाह हो चुका हो—मा० १०।५ 8. दृढ़, स्थिर।

स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+ण्यत्, पुकागमः] 1. रक्खे जाने या जमा किये जाने योग्य 2. नींव डाले जाने योग्य, स्थिर या स्थापित किये जाने योग्य, प्यम् धरोहर, अमानत। सम०—अपहरणम् धरोहर की वस्तु हड़प कर जाना, अमानत में खयानत।

स्थामन् (नपुं०) [स्था+मनिन्] 1. सामर्थ्य, शक्ति, स्थैर्य, जैसा कि 'अश्वस्थामन्' में, दे० 'अश्वस्था-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्' के अन्तर्गत महा० का उद्धरण 2. स्थिरता, स्थापित्व।

स्थायिन् (वि०) [स्था+णिनि युक्] 1. खड़ा रहने वाला, टिकने वाला, स्थित रहने वाला (समास के अंत में) 2. सहन करने वाला, निरन्तर चलने वाला, टिकाऊ, टिके रहने वाला शरीरं क्षणविध्वंसि कल्पांतस्थायिनो गुणाः—सुभा०, कतिपय दिवसस्थायिनी यौवनश्रीः भर्तृ० २।८२, महावीर ७।१५ 3. जीने वाला, निवास करने वाला, रहने वाला मेघ० २३ 4. स्थिर, दृढ़, पक्का, अगरिवर्ती, जो न बदले—स्थायी भवति (पक्का हो जाता है) (पुं०) 1. नित्य या अनुक्षण भावना, (दे० भी० 'स्थायिभाव') शि० २।८७. (नपुं०) 1. कोई भी टिकाऊ वस्तु, दृढ़ स्थिति, या दशा। सम० भावः मन की स्थिर दशा, टिकाऊ या सदा रहने वाली भावना, (कहते हैं इन स्थायिभावों में ही काव्यगत विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है, प्रत्येक रस का अपना स्थायिभाव अलग है) स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं —रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा। जुगुप्सा विस्मयश्चेत्यष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च सा० द० ३०६, तु० व्यभिचारिभाव, भाव या विभाव भी।

स्थायक (वि०) (स्त्री०—का, की) [स्था+ण्वुल्, युक्] 1. जो ठहरने वाला हो, या जिसमें ठहरने की प्रवृत्ति हो 2. दृढ़, स्थिर, अचल,—कः गाँव का मुखिया या अधीक्षक।

स्थालम् [स्थलति तिष्ठति अस्मात्र आधारे घञ्] 1. थाल, थाली, तश्तरी 2. कोई भोजनपात्र, पाकयोग्य बर्तन। सम० रूपम् पाकपात्र की आकृति।

स्थाली [स्थाल+ङीष्] 1. मिट्टी का घड़ा या हाँडी, रांधने का बर्तन, कड़ाही, बटलोई—नहि भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते सर्व०, स्थाल्यां वैदेयमध्यां पचन्ति तिलतण्डुलान्—निम्बश्चेच्चन्दनार्द्रः भर्तृ० २।१०० 2. सोम तैयार करने के काम आने वाला विशेष पात्र, पाटलावृक्ष, तुरही के सदृश फूल। सम० पाकः एक वैदिक कृत्य जिसका अनुष्ठान गृहस्थ करते हैं, पुरीषम् पात्र में जमा हुआ मैल या तरौंछ, पुलाकः पाकपात्र में पकाया हुआ चावल, न्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, विलम् पाकपात्र का भीतरी हिस्सा।

स्थावर (वि०) [स्था—वरच्] 1. एक स्थान पर जमा हुआ, अचल, अडिग, अक्षर, जड़ (विप० जंगम) —श्रीराणां स्थावरजङ्गमानां सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव कु० १।२३, ६।६७, ७३ 2. निश्चेष्ट, निष्क्रिय, मन्द 3 नियमित, स्थापित, रः पहाड़—स्थावराणां हिमालयः भग० १०।२५, रम् कोई भी स्थिर या जड़ पदार्थ (जैसे कि मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जो कि ब्रह्मा की सातवीं सृष्टि है - तु० मनु० ४१) —मान्यः स मे स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः रघु० २।४४, कु० ६।५८ 2. धनुष की डोरी 3. अचल संपत्ति, माल असबाब 4. पैतृक या मौरूसी प्राप्त सम्पत्ति। सम० अस्थावरम्, जङ्गमम् 1. चल और अचल संपत्ति 2. चेतन और जड़ पदार्थ।

स्थाविर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [स्थविर+अण्] मोटा, दृढ़, रम् दृढ़ता।

स्थासकः [स्था+स+स्वार्थे क] 1. सुवासित करना, शरीर पर सुगन्धित लेप करना 2. पानी का बुलबुला या कोई तरल पदार्थ—शि० १८।५।

स्थासु (नपुं०) [स्था+सु] शारीरिक बल।

स्थास्नु (वि०) [स्था+स्नु] 1. स्थिर, दृढ़, अचल 2. स्थायी, नित्य टिकाऊ, पायदार—शि० २।९३, कि० २।१९।

स्थित (भू० क० कृ०) [स्था+क्त] 1. खड़ा हुआ, रहा हुआ, ठहरा हुआ 2. खड़ा होने वाला 3. उठकर खड़ा होने वाला, उठा हुआ—स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां ···छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्—रघु० २।६ 4. टिकने वाला, सहारा लेने वाला, जीवित, विद्यमान, मौजूद स्थित—धन्या केयं स्थिता ते धिरसि मुद्रा० ११, मेघ० ७. (प्रायः क्तान्त के साथ विधेयक के रूप में) विक्रम० १।१, श० १।१, कु० १।१ 5. पतित, हुआ हुआ—कु० ४।२७ 6. पकड़ लाया हुआ, अधिकार किया हुआ, नियुक्त किया हुआ - श० ४।१८ 7. क्रियान्वित करने वाला, डटा रहने वाला, समनुरूप रघु० ५।३३ 8. निश्चेष्ट खड़ा हुआ, रुका हुआ, ठहरा हुआ 9. जमा हुआ, दृढ़तापूर्वक लगा हुआ कु० ५।८२ 10. स्थिर, दृढ़ जैसा कि 'स्थितधी' और 'स्थितप्रज्ञ' में 11. निर्धारित, दृढ़ निश्चय किया हुआ —कु० ४।३९ 12. स्थापित, समादिष्ट 13. आचरण में दृढ़, दृढ़मना 14. ईमानदार, धर्मात्मा 15. प्रतिज्ञा या करार का पक्का 16. सहमत, व्यस्त, संविदायस्त 17. तैयार, निकटस्थ, समीप, तम् स्वयं खड़ा हुआ (जैसे कि शब्द) । सम० उपस्थित (वि०) 'स्थित' शब्द से युक्त या रहित (जैसे कि शब्दे), धी (वि०) दृढ़मनस्क, स्थिरमना, शान्त,—पाठ्यम् खड़ी हुई स्त्रीपात्र द्वारा प्राकृत में पाठ,—प्रज्ञ (वि०) निर्णय या समझदारी में दृढ़, सब प्रकार के भ्रमों से मुक्त, सन्तुष्ट—प्रजहाति यदा कामान्सर्वान् पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते भग० २।५५, प्रेमन् (पुं०) पक्का या विश्वासपात्र मित्र।

स्थितिः (स्त्री०) [स्था+क्तिन्] 1. खड़े होना, रहना, टिकना, डट रहना, जीवित होना, ठहरना, निकास-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थान—स्थिति नो रे दध्याः क्षणमपि मदान्धेक्षण सखे - भामि० १।५२, रक्षोगृहे स्थितिर्मूलमग्नि-शुद्धौ स्वनिश्चयः—उत्तर० १।६ 2. रुकना, चुप होकर खड़े होना, एक ही अवस्था में रहना -प्रश्नि-तायां प्रतिष्ठेथाः स्थितायां स्थितिमाचरेः—रघु० १।८९ 3. अडिग रहना, जम जाना, स्थिरता, दृढ़ता, लगे रहना, भक्ति - मम भूयात् परमात्मनि स्थितिः भामि० ४।२३ 4. हालत, अवस्था, परिस्थिति, दशा 5. प्राकृतिक हालत, प्रकृति, स्वभाव —अथवा स्थिति-रियं मन्दमतीनाम् —हि० ४ 6. स्थिरता, स्थायित्व, चिरस्थायित्व, निरन्तरता—वंशस्थितेरर्थिभान्महीत प्रयोदे - विक्रम० ५।१५, कन्यां कुलस्य स्थितये स्थितिज्ञः—कु० १।१८, रघु० ३।२७ 7. आचरण की शुद्धता, कर्तव्यपालन में दृढ़ता, शिष्टता, कर्तव्य, नैतिक सदाचार, औचित्य—रघु० ३।२७, ११।६५, १२।३१, कु० १।१८ 8. अनुशासन का पालन, (किसी राज्य में) सुव्यवस्था की स्थापना—रघु० १।२५, 9. दर्जा, पद, ऊँचा पद या दर्जा 10. निर्वाह, जीवन का बने रहना—मा० ९।३२, रघु० ५।९ 11. जीवन में नैरन्तर्य, रक्षितावस्था (मानव की तीन अवस्थाओं में से एक)—संगंस्थितिप्रत्ययहारहेतुः— रघु० २।४४, कु० २।६ 12. यति, विराम, विरति 13. कुशलक्षेम, कल्याण 14. संगति 15. निश्चित नियम, अध्यादेश, आज्ञप्ति, सिद्धांतवाक्य, नीतिवाक्य 16. निश्चित निर्धारण 17. अवधि, सीमा, हद 18. जड़ता, गति-हीनता 19. ग्रहण की अवधि। सम०—स्थापक (वि०) मूल अवस्था में जमाने वाला, पूर्वावस्था को प्राप्त करने की शक्ति रखने वाला, लचीलेपन को धारण करने वाला, -कः लचीलापन, पूर्वावस्था को पुनः प्राप्त करने की सामर्थ्य।

स्थिर (वि०) [स्था+किरच्, म० अ० स्थेयस्, उ० अ० स्थेष्ठ] 1. दृढ़, स्थिरमति, जमा हुआ भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि—श० ५।२, स स्थाणुः स्थिरभक्ति-योगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः—विक्रम० १।१, कु० १।३०, रघु० ११।१९ 2. अचल, शान्त, गतिहीन—कु० २।३८ 3. दृढ़तापूर्वक जमा उत्तर० १।४० 4. स्थायी, नित्य, शाश्वत मेघ० ५५, मा० १।२५, 5. शान्त, स्वस्थचित्त धीर, गंभीर 6. मौन, अक्षुब्ध 7. आचरण में पक्का, दृढ़ 8. संतत, श्रद्धालु, दृढ़-संकल्प 9. निश्चित, विश्वास योग्य 10 कठोर, ठोस 11. मजबूत, अन्तर्दृढ़ 12. कड़ा, निष्करुण, कठोर-हृदय —कु० ५।४७,—रः देव, सुर 2. वृक्ष, 3. पहाड़ 4. सांड 5. शिव का नाम 6. कार्तिकेय का नाम 7. मोक्ष या निर्वाण 8. शनिग्रह **(स्थिरीकृ** 1. पुष्ट करना, मजबूत करना, समर्थन करना 2. रुकना, दृढ़ करना 3. प्रसन्न करना, तसल्ली देना, आराम पहुँचाना —श० ४, **स्थिरीभू**— 1. स्थिर या दृढ़ होना 2. शान्त या धीर होना)। सम० अनुराग दृढ़ आसक्ति वाला, स्नेहसिक्त,—आत्मन्,—चित्त, चेतस् धी,—बुद्धि, —मति (वि०) 1. दृढ़मना, विचार या संकल्प का पक्का, दृढ़ संकल्प, रघु० ८।२२, शान्त, धीर, अक्षुब्ध, - आयुस्, जीविन् (वि०) दीर्घजीवी, चिरञ्जीवी, —आरम्भ (वि०) दायित्व निर्वाह में दृढ़, धैर्यशाली, —कुटुकः लगातार पीसने वाला 2. (बीजगणित में) समान भाजक, गन्धः चंपक फूल, छदः भोजपत्र का वृक्ष,—छायः 1. यात्रियों को छाया देने वाला 2. वृक्ष, —जिह्वः मछली, जीविता सेमल (शाल्मली) का पेड़,—दंष्ट्रः सांप, पुष्पः 1. चंपक वृक्ष 2. देवदारु वृक्ष, मौलसिरी, -प्रतिज्ञ (वि०) दृढ़प्रतिज्ञ, हठी, आग्रही 2. वचन का पालन करने वाला, प्रतिबन्ध (वि०) विरोध करने में दृढ़, हठी —श०२, - फला कुष्माण्डी, —शीर्णिः बड़ा भारी वृक्ष जो छायां और शरण दे, - यौवन (वि०) सदा जवान रहने वाला, (—वः) 1. विद्याधर, परी 2. चिरस्थायी तारुण्य, श्री (वि०) सदा रहने वाली समृद्धि वाला, संगर (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सच्चा, बात का धनी, —सौहृद (वि०) मित्रता में दृढ़,—स्थायिन् (वि०) दृढ़ या अटल रहने वाला, पूर्णतः शान्त रहने वाला (जैसा कि समाधि में)।

स्थिरता, त्वम् [स्थिर+तल्+टाप्, त्व वा] 1. दृढ़ता, स्थैर्य, टिकाऊपन 2. दृढ़ और बलशाली प्रयत्न, पौरुष श० ४।१४ 3. सातत्य, मन की दृढ़ता 4. अचलता।

स्थिरा [स्थिर+टाप्] पृथ्वी।

स्थुड् (तुदा० पर० स्थुडति) ढकना।

स्थूल [स्थुड्+अच्, पृषो० डस्य लः] एक प्रकार का लंबा तंबू।

स्थूणा [स्था+नक्, उदात्तादेशः, पृषो०] 1. घर का खंबा सतून, स्तंभ 2. पोल या खंबा - स्थूणानिखननन्यायेन —शारी० 3. लोहमूर्ति या प्रतिमा 4. घन। सम० —निखननन्याय 'न्याय' के नीचे देखो।

स्थूलः (पुं०) 1. प्रकाश 2. चन्द्रमा।

स्थूरः [स्था+ऊरन्] 1. सांड 2. मनुष्य।

स्थूल (वि०) [स्थूल+अच् म० अ० स्थवीयस्, उ० अ० स्थविष्ठ] 1. विस्तृत, बड़ा, वृहत्, विशाल, महान् - बहुस्थूलाशि स्थूलेन स्थीयते बहिरन्तश्च शि० २।७८ (यहाँ छठा अर्थ भी घटता है), स्थूलहस्तावलेपान् मेघ०१४, १०६, रघु० ६।२८ 2. मोटा, मांसल, हृष्टपुष्ट 3. मजबूत, शक्तिशाली—स्थूलं स्थूलं श्वसिति—का० 'कठिनाई से सांस लेता है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. बेडौल, भद्दा 5. सम्पूर्ण, साधारण, अनाड़ी (आलं० से भी) जैसा कि 'स्थूलमानस्' में 6. मूर्ख, मूढ़, बुद्धू, नासमझ 7. आलसी, सुस्त, ठग 8. अयथार्थ, —लः कटहल,—लम् 1. ढेर, राशि 2. तंदू 3. पहाड़ की चोटी। सम०—अन्त्रम् बड़ी आंत जो गुदा के पास तक जाती है,—आस्यः साँप, **उच्चयः** 1. पर्वत खंड जो गिर कर ऊबड़-खाबड़ टीले जैसा बन गया हो 2. अपूर्णता, कमी, त्रुटि 3. हाथी की मध्यम गति 4. मुंहासा 5. हाथी के दांत का रंध्र, —**काय** (वि०) मोटा, मांसल,—**क्षीरः**,—**क्षवेडः** बाज, —**गायः** घुनकी,—**तालः** हिताल,—**थी,—शिः** (वि०) मूर्ख, बुद्धू,—**नालः** लम्बी जाति का सरकंडा —**नासः**,—**नासिक** (वि०) मोटी नाक वाला, (—**सः**,—**कः**) सूअर, बराह, **पटः**—**टम्** मोटा कपड़ा,—**पट्टः** कपास,—**पाद** (वि०) मोटे पैर वाला, भूजे पैर वाला, (—**दः**) 1. हाथी 2. श्लीपद रोग से ग्रस्त व्यक्ति, **फलः** सेमल (शाल्मली) का वृक्ष, **मानस्** मोटा हिसाब, मोटा अन्दाज, **लक्ष,**—**क्ष्य** (वि०) 1. दानशील, वदान्य, उदार 2. समझदार, विद्वान् 3. लाभ-हानि दोनों का ध्यान रखने वाला, —**शुण्डा** बड़ी योनि वाली स्त्री,—**शरीरम्** भौतिक और नश्वर शरीर (विप० सूक्ष्म (लिंग) शरीर), —**शाटकः**,—**शाटिः** मोटा कपड़ा,—**शीर्षिका** क्षुद्र-पिप्पलिका, छोटी पिप्पली जिसका सिर, शरीर के अनुपात से बड़ा हो, **सद्पदः** 1. भौंरा 2. भिड़,—**स्कन्धः** लकुच वृक्ष, बड़हल का पेड़ —**हस्तम्** हाथी की सूंड़।

स्थूलक (वि०) [स्थूल+कन्] विस्तृत, बड़ा, महान्, विशाल, —**कः** एक प्रकार की घास या नरकुल (सरकंडा)।

स्थूलता, त्वम् [स्थूल+तल्+टाप्, त्व वा] 1. विस्तार, विशालता, बड़प्पन 2. सुस्ती, जड़ता।

स्थूलयति (ना० धा० पर०) बड़ा होना, हृष्ट-पुष्ट होना, मोटा होना।

स्थूलिन् (पुं०) [स्थूल+इनि] ऊँट।

स्थेमन् (पुं०) [स्था+इमनिच्] दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, अडिगपन—द्राघीयांसः संहृताः स्थेमभाजः —शि० १८।३३, न यत्र स्थेमानं दधुरतिभयभ्रान्तनयनाः—भामि० १।३२।

स्थेय (वि०) [स्था+यत्] जमाये जाने योग्य, रक्खे जाने योग्य, निश्चित या निर्धारित किये जाने योग्य, —**यः** (दो दलों के बीच वर्तमान) 1. झगड़े का फैसला करने के लिए छांटा गया व्यक्ति विवाचक, पंच, निर्णायक 2. पुरोहित।

स्थेयस् (वि०) (स्त्री० सी) [स्थिर+ईयसुन्, स्थादेशः म० अ० 'स्थिर' की] दृढ़तर, अपेक्षाकृत बलवान्।

स्थेष्ठ (वि०) [स्थिर+इष्ठन्, स्थादेशः, उ० अ० 'स्थिर की'] अत्यन्त दृढ़, बलवत्तर।

स्थैर्यम् [स्थिर+ष्यञ्] 1. दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, निश्चलता 2. निरन्तरता 3. धन की दृढ़ता, संकल्प, स्थायित्व - भग० १३।७ 4. सहनशीलता 5. कड़ापन, ठोसपना।

स्थौणेयः, स्थौणेयकः [स्थूणा+ढक्, ढकञ् वा] एक प्रकार का गंधद्रव्य।

स्थौरम् [स्थूर+अण्] 1. दृढ़ता, साभर्थ्य, शक्ति 2. गधे या घोड़े पर लादने का पूरा बोझ।

स्थौरिन् (नपुं०) [स्थौर+इनि] 1. पीठ पर बोझा ढोने वाला घोड़ा, लद्दू घोड़ा 2. मजबूत घोड़ा।

स्थौल्यम् [स्थूल+ष्यञ्] बड़प्पन, विशालता, हृष्ट-पुष्टता।

स्नपनम् [स्नर+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. छिड़कना, नहलाना 2. स्नान करना, पानी में डुबकी लगाना - रेजे जनैः स्नपनसंहृद्यमूर्तिः—शि० ५।५७।

स्नपः [स्नु+अप्] चूना, रिसना, टपकना।

स्नम् [भ्वा० दिवा० पर० स्नसति स्नस्यति] 1. बसना 2. उगलना (जैसे मुंह से), परित्याग करना।

स्ना (अदा० पर० स्नाति, स्नात) 1. स्नान करना, नहाना, पानी में डुबकी लगाना - मृगतृष्णाम्भसि स्नातः 2. गुरुकुल छोड़ते समय स्नान करने के संस्कार का अनुष्ठान करना, प्रेर० (स्नापयति—ते, स्नपयति—ते) नहलाना, गीला करना, तर करना, छिड़कना —(तोयैः) सतृषंमेनां स्नपयांबभूवुः कु० ७। १०, स्मितस्नपितायरा—गीत० १२, उत्तर० ३।२३, कि० ५।४४, ४७, शि० २।७, ८।३, मेघ० ४३, इच्छा० (सिस्नासति) स्नान करने की इच्छा करना, अप,—मृत्यु के कारण शोक मनाने के पश्चात् स्नान करना,नि,—गहरी डुबकी लगाना अर्थात् पारंगत होना, वे० 'निस्नात'।

स्नातकः [स्ना+क्त+क] 1. ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन समाप्त कर अनुष्ठेय स्नान की विधि पूरा करने वाला ब्राह्मण 2. वह ब्राह्मण जो वेदाध्ययन समाप्त कर अभी गुरुकुल से लौटा है और गृहस्थ धर्म में दीक्षित हुआ है 3. वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक विधि को पूरा करने के लिए भिक्षु बना हो मनु० ११।१ 4. पहले तीन वर्णों का कोई पुरुष जो गृहस्थधर्म में दीक्षित हो चुका है।

स्नानम् [स्ना भावे ल्युट्] 1. धोना, मार्जन करना, पानी में डुबकी लगाना - ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः श० ४ 2. स्नान द्वारा शुद्धि, कोई धार्मिक या सांस्कारिक मार्जन 3. मूर्ति का स्नान कराना 4. कोई, वस्तु जो स्नान या मार्जन में काम आवे। सम० **अगारम्** स्नानगृह, **द्रोणी** स्नान करने की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नींद,—यात्रा ज्येष्ठपूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व,—वस्त्र स्नान का वस्त्र—सकृत् कि पीडितं स्नानवस्त्रं मुञ्चेत् दूतं पयः—हि० २।१०६,—विधिः 1. स्नान करने की क्रिया 2. स्नान करने के उचित नियम या रीति।

स्नानीय (वि०) [स्नानाय हितं छ] स्नान के लिए योग्य, मार्जन के लिए उपयुक्त, स्नान के समय पहना हुआ वस्त्र,—स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रार्णं शोषयुज्यते —मालवि० ५।१२, —यम् जल या और कोई पदार्थ (जैसे कि उबटना, या सुवासित चूर्ण आदि) जो स्नान के उपयुक्त हो—रघु० १६।२१।

स्नापकः [स्ना+णिच्+ण्वुल्, पुक्] अपने स्वामी को स्नान कराने वाला या स्नान के लिए सामग्री लाने वाला नौकर।

स्नापनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] स्नान कराना, या स्नानकर्ता की टहल करना—मनु० २।२०६।

स्नायुः [स्नाति शुष्यति दोषोऽनया—स्ना+उण्] 1. कंडरा, पेशी, नस—स्वल्पं स्नायुवसाऽवशेषमलिनं निर्मांसमध्यस्थि गोः—भर्तृ० २।३० 2. धनुष की डोरी। सम०—अर्मन् आँख का एक विशेष रोग।

स्नायुकः [स्नायु+कन्] दे० 'स्नायु'।

स्नायुः, स्नायुन् (पुं०) [स्ना+उनन्, यनिप् वा] कंडरा, पेशी।

स्निग्ध (वि०) [स्निह्+क्त] 1. प्रिय, स्नेही, हितैषी, अनुरक्त, प्रेमी—मा० ५।२० 2. चिकना, तैलाक्त, मसृण, तेल में भीगा हुआ—उत्पश्यामि स्त्रवि तदपते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभं—मेघ० ५९ स्निग्धवेणीतरवर्णं —१८, शि० १२।६३, मा० १०।४ 3. चिपचिपा, लसलसा, लेसदार, लिबलिबा 4. प्रभामान्, चमकीला उज्ज्वल, चमकदार—कनकनिकषस्निग्धा विद्युत् प्रिया न मयोर्वशी—विक्रम० ४।१, मेघ० ३७, उत्तर० १।३३, ६।२१ 5. चिकना, स्निग्धकारी 6. गीला, तर 7. शान्त 8. कृपालु, मृदु, सौम्य, मिलनसार —प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः मेघ० १६ 9. प्रिय, रुचिकर, मोहक, रघु० १।३६, उत्तर० २।१४, ३।२२ 10. मोटा, सघन, सटा हुआ—स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु (चक्रे)—मेघ० १ 11. सूखा हुआ, जमाया हुआ, (दृष्टि की भांति) टकटकी लगाये हुए,—ग्धः 1. मित्र, स्नेही, मित्रसदृश, हितैषी—विज्ञैः स्निग्धैरपकृतमपि द्वेष्यतां याति किंचित् हि० २।१६०, या, स स्निग्धोऽकुशलान्निवारयति यः सुभा०, पंच० २।१६६ 2. लाल एरण्ड का पौधा 3. एक प्रकार का चीड़ का वृक्ष —ग्धम् 1. तेल 2. मोम 3. प्रकाश, आभा 4. मोटापन, खुरदुरापन। सम०—जनः स्नेही व्यक्ति, हितैषी मित्र—स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनं भवति श० ३, तण्डुलः एक प्रकार का चावल जो जल्दी उगता है,—दृष्टि (वि०) टकटकी लगाकर देखने वाला।

स्निग्धता, त्वम् [स्निग्ध+तल्+टाप्, त्व वा] 1. चिकनापन 2. सौम्यता 3. सुकुमारता, स्नेह, प्रेम।

स्निग्धा [स्निग्ध+टाप्] मज्जा, वसा।

स्निह् (दिवा० पर० स्निह्यति, स्निग्ध) 1. स्नेह रखना, स्नेहानुभूति होना, प्रेम करना, प्रिय होना (अधि० के साथ—जिससे प्रेम किया जाय)—कि नु खलु बालेऽस्मिन्नौरस इव पुत्रे स्निह्यति ते मनः—श० ७, स च स्निह्यत्यावयोः—उत्तर० ६ (यहाँ 'आवयोः' सम्बन्ध कारक भी हो सकता है) 2. अनायास ही अनुरक्त होना 3. किसी पर प्रसन्न होना, कृपालु होना 4. चिपचिपा होना, लसलसा या लिबलिबा होना 5. चिकना या सौम्य होना, प्रेर० (स्नेहयति ते) 1. चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना, चिकनाना, चिकने पदार्थ से लेप करना, चिकना करना, तेल लगाना 2. प्रेम कराना 3. विघटित करना, नष्ट करना, मार डालना।

स्नु (अदा० पर० स्नौति, स्नुत) 1. टपकना, स्रवण करना, बूंद-बूंद गिरना, स्रवित होना, पड़ना, रिसना, चूना 2. बहना, धार पड़ना, प्र—, बह निकलना, उंडेल देना —प्रस्नुतस्तनी उत्तर० ३।

स्नु (पुं०, नपुं०) [स्ना+कु] 1. पहाड़ का समतल भूखंड 2. चोटी, सतह (पहले तीन वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से यह 'स्नून्' शब्द के स्थान में प्रयुक्त होता है)।

स्नु (स्त्री०) [स्नु+क्विप्] स्नायु, धनुष्टंकार, पेशी।

स्नुत (वि०) [स्नु+क्त] रिसा हुआ, चूंद-चूंद करके गिरा हुआ, बहा हुआ आदि।

स्नुषा [स्नु+सक्+टाप्] पुत्रवधू समुपास्यत पुत्रभाग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रियः श्रिया—रघु० ८।१४, १५।७९।

स्नुह् (दिवा० पर० स्नुह्यति, स्नुग्ध या स्नूढ) उलटी करना, कै करना।

स्नेहः [स्निह्+घञ्] 1. अनुराग, प्रेम, कृपालुता, सुकुमारता—स्नेहदाक्षिण्ययोर्नाशात् कामीव प्रतिभाति मे विक्रम० २।४ (यहाँ दसमें छठा अर्थ भी घटता है), अस्ति मे सोदरस्नेहोऽपीतेषु च० १ 2. तैलाक्तता, मसृणता, चिकनापन, चिकनाहट (वैशेषिक के अनुसार २४ गुणों में से एक) 3. नमी 4. चर्बी, वसा, कोई भी चिकना पदार्थ 5. तेल त्रिपिष्टविषस्नेहः स दशान्नमुपेयिवान् रघु० १२।१ पंच० १।८७, (यहाँ प्रथम अर्थ भी घटता है) रघु० ४।७५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

6. शरीरगत कोई भी तरल पदार्थ जैसे कि वीर्य। सम०—अक्त तेल में भिगोया हुआ, चिकनाया हुआ, चर्बी से लिप्त, अनुवृत्तिः (स्त्री०) स्निग्ध या मित्रों जैसा मेल-जोल,—आशः दीपक, —छेदः, भङ्गः मित्रता का टूट जाना, पूर्वम् (अव्य०) अनुराग पूर्वक, प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम प्रवाह—ग्रा० ४।१६, -प्रिय (वि०) जिसे तेल अधिक प्यारा हो, (—यः) दीपक, भूः दलदल, -रङ्गः तिल, - वस्तिः (स्त्री०) तेल की गुदे लगाना, तेल का अनीमा करना, गुदा के मार्ग से पिचकारी द्वारा तेल डालना, --विमर्दित (वि०) तेल से मालिश किया गया,-- व्यक्तिः (स्त्री०) प्रेम का प्रकटीकरण, मित्रता का प्रदर्शन, (भवति) स्नेहव्यक्तिश्चिरनिरहजं मुञ्चतो बाष्प-मुष्णम् --मेघ० १२।

स्नेहन् (पुं०) [स्निह्+कनिन्, नि०] 1. मित्र 2. चन्द्रमा 3. एक प्रकार का रोग।

स्नेहन (वि०) [स्निह्+णिच्+ल्युट्] 1. मालिश करने वाला, चिकनाने वाला 2. नष्ट करने वाला, —नम् 1. तेल मालिश, चिकनाना, तेल या उबटना मलना 2. चिकनाहट 3. उबटन, स्निग्धकारी।

स्नेहित (भू० क० कृ०) [स्निह्+णिच्+क्त] 1. प्रेम-पात्र 2. कृपालु, स्नेही 3. लिपा हुआ, चिकनाया हुआ, —तः मित्र, प्यारा।

स्नेहिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्निह्+णिनि] 1. अनुरक्त, स्नेह करने वाला, मित्र सदृश 2. तैलाक्त, चिकना, चर्बी युक्त (पुं०) 1. मित्र 2. मालिश करने वाला, लेप करने वाला 3. चित्रकार।

स्नेहुः [स्निह्+उन्] 1. चन्द्रमा 2. एक प्रकार का रोग।

स्नै (म्वा० पर० स्नायति) पटटी बांधना, लपेटना, सुडौल करना, आवृत्त करना, परिवेष्टित करना।

स्नैग्ध्यम् [स्निग्ध+ष्यञ्] 1. चिकनाहट, स्निग्धता, फिसलन, चिक्कणता 2. सुकुमारता, प्रियता 3. चिकनापन, मृदुता।

स्पन्द् (भ्वा० आ० स्पन्दते, स्पन्दित) 1. धड़कना, धकधक करना अस्पन्दिष्टाक्षि वामं च --भट्टि० १५।२७, १४।८३ 2. हिलना, कांपना, ठिठुरना 3. जाना, गतिशील होना, परि—,धड़कना, कांपना, वि —, इधर-उधर घूमना, संघर्ष करना।

स्पन्दः [स्पन्द्+घञ्] 1. धड़कन, धकधक 2. कंपकंपी, थरथराहट, गति—मनो मन्दस्पन्दं बहिरपि चिरस्यापि विमृशन्—भर्तृ० ३।५१।

स्पन्दनम् [स्पन्द्+ल्युट्] 1. धड़कना, नाड़ी का फड़कना, थरथराहट, कंपकंपी —दामाक्षिस्पंदनं सूचयित्वा —मा० १, इसी प्रकार अधर°, बाहु°, शरीर° आदि 2. थरथरी, धड़कन 3. अर्भक में जीव का स्फुरण।

स्पन्दित (भू० क० कृ०) [स्पन्द्+क्त] 1. थरथरीयुक्त, ठिठुरा हुआ 2. गया हुआ,—तम् नाड़ी का स्फुरण, धड़कन, धकधक।

स्पर्ध् (भ्वा० आ० स्पर्धते) 1. स्पृहा करना, होड़ लगाना, मुकाबला करना, प्रतिद्वन्द्विता करना, प्रतियोगिता करना, अस्पर्धिष्ट च रामेण—भट्टि० १५।६५ कस्तेऽस्पर्धते —भर्तृ० २।१६ 2. ललकारना, चुनौती देना, उपेक्षा करना, प्रति—, वि—, चुनौती देना, ललकारना।

स्पर्धा [स्पर्ध्+अङ्+टाप्] प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता, होड़—आत्मनस्तु बुधैः स्पर्धा शुद्धधीर्बहुमन्यत 2. ईर्ष्या, डाह 3. चुनौती 4. समानता।

स्पर्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्पर्धा+इनि] 1. प्रतिद्वन्द्विता करने वाला, होड़ करने वाला, प्रतियोगिता करने वाला, प्रतिस्पर्धाशील—तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु रघु० १३।१३, १६।६२ 2. प्रतिस्पर्धी, ईर्ष्यालु 3. घमंडी,—(पुं०) प्रतियोगी, समकक्ष व्यक्ति।

स्पर्श् (चुरा० आ० स्पर्शयते) 1. लेना, पकड़ना, छूना 2. मिलना, संयुक्त होना 3. आलिंगन करना, आश्लेषण।

स्पर्शः [स्पर्श् (स्पृश् वा)+घञ्] 1. छूना, संपर्क (सभी अर्थों में—तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्—गो० १।२८, २।७ 2. संयोग (अर्थो० में) 3. संघर्ष, मुठभेड़ 4. भावना, संवेदना, छूने से होने वाला ज्ञान 5. त्वचा का विषय, स्पर्शयोग्यता, स्पर्शगुण - स्पर्शगुणौ वायुः —तर्क० 6. प्रभाव, रोग, बीमारी का दौरा 7. रोग, व्याधि, विकृति, आदि या मनोव्यथा 8. (क् से म् तक) पाँचों वर्गों में कोई सा व्यंजन - कादयो मान्ताः स्पर्शाः 9. उपहार, दान, भेंट 10. हवा, वायु 11. आकाश 12. एक रतिबंध,—शी कुलटा, पुंश्चली। सम० -अक्ष (वि०) स्पर्शज्ञान से रहित, संवेदनशून्य -इन्द्रियम् स्पर्श का ज्ञान, या स्पर्शज्ञान प्राप्त करने वाली इन्द्रिय,—उदय (वि०) जिसके पीछे व्यंजन वर्ण हो, उपलः,—मणिः पारस पत्थर—तन्मात्रम् वह तत्त्व जिसका छूने से ज्ञान हो,— लज्जा छुईमुई का पौधा वेद्य (वि०) स्पर्श के द्वारा जिसका ज्ञान हो—संचारिन् (वि०) संक्रामक, छूत का,—स्नानम् सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण आरम्भ होने पर स्नान,—स्पन्दः, —स्पन्दः मेंढक।

स्पर्शक (वि०) (स्त्री०—की) [स्पर्श् (स्पृश् वा) +ण्वुल्] 1. छूने वाला, हाथ लगाने वाला 2. ध्वस्त करने वाला, प्रभाव डालने वाला,—कः हवा, वायु, नम् 1. छूना, स्पर्श, संपर्क 2. संवेदन, भावना 3. स्पर्शेन्द्रिय या स्पर्शजन्य ज्ञान 4. भेंट, दान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्पर्शनकम् [स्पर्शन+कन्] सांख्यदर्शन में प्रयुक्त 'त्वचा' का पर्यायवाची शब्द।

स्पर्शवत् (वि०) [स्पर्श+मतुप्] 1. स्पर्श किये जाने के योग्य 2. मृदु, छूने में सचिकर या कोमल—कु० १।५५।

स्पर्ध् (स्वा० आ० स्पर्धते) गीला या तर होना।

स्पर्ध् (पुं०) [स्पृश्+तृच्] मनोव्यथा, शरीर में विकार, रोग।

स्पृश् (स्वा० उभ० स्पशति) 1. अवरुद्ध करना 2. दायित्व ग्रहण करना, संपन्न करना 3. नत्थी करना 4. छूना, देखना, निहारना, स्पष्ट दृष्टिगोचर होना, जासूसी करना, भांपना, भेद पाना।

स्पशः [स्पृश्+अच्] 1. भेदिया, गुप्तचर,—स्पर्शे शनैर्गतवति तत्र विक्लिक्लाम शि० १७।२०, दे० 'आपस्पश' भी 2. लड़ाई, संग्राम, युद्ध 3. (पुरस्कार पाने के लिए) जंगली जानवरों से लड़ने वाला, या ऐसी लड़ाई।

स्पष्ट (वि०) [स्पश्+क्त] जो साफ़ साफ़ देखा जा सके, व्यक्त, साफ़ दृष्टिगोचर, साफ़, तरल, प्रकट —स्पष्टे जाते प्रत्यूषे—का० 'जब धूप खिल गई थी' स्पष्टाकृतिः—रघु० १८।३०, स्पष्टार्थः—आदि 2. वास्तविक, सच्चा 3. पूरा खिला हुआ, फूला हुआ 4. साफ़ साफ़ देखने वाला,—ष्टम् (अव्य०) 1. स्पष्ट रूप से, साफ़ तौर पर, साफ़-साफ़ 2. खुल्लमखुल्ला, साहस पूर्वक (स्पष्टीकृ साफ़ करना, प्रकट करना, व्याख्या खोल कर कहना)। सम० गर्भा वह स्त्री जिसके गर्भ के चिह्न साफ़ देख पड़ें, -प्रतिपत्तिः (स्त्री०) स्पष्ट ज्ञान, शुद्ध प्रत्यक्षज्ञान,—भाविन्, —वक्तृ (वि०) साफ़-साफ़ कहने वाला, मुंहफट, खरा, सरल।

स्पृ (स्वा० पर० स्पृणोति) 1. मुक्त करना, उद्धार करना 2. पुरस्कार देना, अनुदान देना, प्रदान करना 3. रक्षा करना 4. जीवित रहना।

स्पृक्का [स्पृ+कक् पृषो० शस्य कः] एक जंगली पौधा।

स्पृश् [तुदा० पर० स्पृशति, स्पृष्ट] 1. छूना—स्पृशन्नपि गजो हन्ति—हि० ३।१४, कर्णे पर स्पृशति हन्ति परं समूलम्—पंच० १।३०४ 2. हाथ रखना, थपथपाना, छूना—कु० ३।२२ 3. जड़ जाना, चिपक जाना, संपृक्त होना 4. पानी से धोना या छिड़काव करना मनु० २।६० 5. जाना, पहुँचना—श० २।१४, रघु० ३।४३ 6. प्राप्त करना, हासिल करना, विशेष स्थिति पर पहुँचना महीक्षता वत्सतरः स्पृशन्निव—रघु० ३।३२ 7. कार्य में परिणत करना, प्रभावित करना, ग्रस्त करना, पसीजना, द्रवीभूत होना मुद्रा० ७।१६, कु० ६।९५ 8. संकेत करना, उल्लेख करना -प्रेर० (स्पर्शयति-ते) 1. छुवाना 2. देना, प्रस्तुत करना —गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः—रघु० २।४९, अप=उपस्पृश्, अभि—, छूना, उप—, 1. छूना 2. शरीर पर पानी के छोटे देना या स्नान करना- मनु० ४। १४३ 3. आचमन करना, पानी देना, कुल्ला करना —स नवाम्बुकणस्पृष्टान्—भट्टि० २।११, मनु० २।५३, ५।६३, अप उपस्पृश्य 4. स्नान करना— रघु० ५।५९, १८।३१, परि , छूना, सम् , 1. छूना 2. पानी से छिड़काव करना- मनु० २।५३ 3. सम्पर्क स्थापित करना।

स्पृश् (वि०) [स्पृश्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जो छूता है, छूने वाला, वस्तु करने वाला, देखने वाला, - मर्मस्पृश्, हृदिस्पृश् आदि।

स्पृष्ट (भू० क० कृ०) [स्पृश्+क्त] 1. छुआ हुआ, हाथ लगाया हुआ 2. सम्पर्क में आया हुआ, स्पर्शी 3. पहुँचने वाला, उपयोग करने वाला, विस्तार पाने वाला—अस्पृष्टपुरुषान्तरम् कु० ६।७५ 4. ग्रस्त, पकड़ा हुआ -मेघ० ६९, अनभस्पृष्टम्—रघु० १०।१९ 5. गन्दा, मलिन -मनु० ८।२०५ 6. जिह्वा के पूर्ण स्पर्श से बना हुआ (पाँचों वर्गों में से कोई सा वर्ण) अचोऽस्पृष्टा धणस्तर्वाक्पलेमस्पृष्टः शलः स्मृताः। शेषाः स्पृष्टा हलः प्रोक्ता निबोधानुप्रदानतः—शिक्षा० ३८।

स्पृष्टिः,—स्पृष्टिका (स्त्री०) [स्पृश्+क्तिन्, स्पृष्टि +कन्+टाप्] छूना, सम्पर्क तद्वस्य अस्पृच्छरीर-स्पृष्टिकया शापितोऽसि—मृच्छ० ३।

स्पृह् (चुरा० उभ० स्पृहयति-ते) कामना करना, लालायित होना, इच्छा करना, उत्सुक होना, चाहना (संप्र० के साथ) स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै श० ७, तपःक्लेशायापि स्पृहयन्ती का०, न मंथिलेयः स्पृहयांबभूव भर्त्रे दिवो नाप्यलकेश्वराय रघु० १६।४२, भर्तृ० २।४५।

स्पृहणम् [स्पृह्+ल्युट्] इच्छा या कामना करने की क्रिया, लालायित होना।

स्पृहणीय (वि०) [स्पृह्+अनीयर्] चाहने के योग्य, अभिलषणीय, स्पृहा के योग्य, वांछनीय अहो बताभि स्पृहणीयवीर्यः—कु० ३।२०, वन्द्या त्वमेव जगतः स्पृहणीयसिद्धिः मा० १०।२१, परस्परेण स्पृहणीयशोभं न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत् रघु० ७।१४, कु० ७।६०, उत्तर० ६।४०।

स्पृहयालु (वि०) [स्पृह्+णिच्+आलुच्] इच्छा करने वाला, लालायित, उत्सुक, उत्कण्ठित (संप्र० या अधि० के साथ) भोगेभ्यः स्पृहयालवो न हि वयम् —भर्तृ० ३।६४, तपोवनेषु स्पृहयालुरेव—रघु० १४।४५।

स्पृहा [स्पृह्+अच्+टाप्] इच्छा, उत्सुकता, प्रबल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामना, लालसा, ईर्ष्या, अभिलाषा -कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम् --वेणी० ३।२९, रघु० ८।३४।

स्पृह्य (वि०) [स्पृह्+णिच्+यत्] वांछनीय, स्पर्धा के योग्य, ह्यः बिजौरा नीबू।

स्पृ (क्रया० पर० स्पृणाति) आघात करना, मार डालना।

स्पृष्ट (पु०) दे० 'स्पर्ट'।

स्फट् (भ्वा० पर० स्फटति) फट पड़ना, फूलना।

स्फटः [स्फट्+अच्] साँप का फैलाया हुआ फण तु० फट-टा।

स्फटा [स्फट+टाप्] 1. साँप का फैलाया हुआ फण 2. फिटकिरी।

स्फटिकः [स्फटि+कै+क] बिल्लौर, काचमणि--अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरप्रभस्तयः सुखं प्रविसरन्त्युपदेशगुणाः--का०। सम०--अचलः मेरु पर्वत, अद्रिः कैलास पहाड़, भिद् (पु०) कपूर अश्मन्, --आत्मन्, --मणि (पु०) शिला बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकारिः, स्फटिकारिका (स्त्री०) फिटकिरी।

स्फटिकी [स्फटिक+ङीप्] फिटकिरी।

स्फण्ट् (भ्वा० पर० स्फण्टति) फूट पड़ना, खिलना, फूलना।

(आ) (चुरा० उभ० स्फण्टयति--ते) मखौल करना, मजाक करना, हंसी उड़ाना।

स्फर् दे० स्फुर्।

स्फरणम् [स्फर्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, फड़कना।

स्फल् (भ्वा० पर० स्फलति) कांपना, थरथराना, फड़कना, लरजना, (चुरा० उभ० या प्रेर० स्फालयति--ते) कंपा देना, हिला देना, आ, 1. कंपाना, फड़फड़ाना, हिलाना, डुलाना 2. आघात करना, प्रपीडित करना, छपछप करना आस्फालितं यत्प्रमदाकराग्रैः -रघु० १६।१३, उत्तर० ५।९ 3. आघात करना, अनुचित लाभ उठाना -शि० १।९ 4. (धनुष को) टंकारना।

स्फाटिक (वि०) (स्त्री०--की) [स्फटिक+अण्] बिल्लौर पत्थर का, क्रम् बिल्लौर पत्थर।

स्फाटित (भू० क० कृ०) [स्फट्+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, फटा हुआ, फूला हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

स्फातिः (स्त्री०) [स्फाय्+क्तिन्, यलोपः] 1. सूजन, शोथ 2. वृद्धि, बढ़ती।

स्फाय् (भ्वा० आ० स्फायते, स्फीत) 1. मोटा होना, बड़ा होना, विस्तारयुक्त होना, विशाल होना 2. सूजना, बढ़ना, फूलना संबुभुजे तयोः कोपः पक्काये शस्त्रलाघवम् भट्टि० १४।१०९--प्रेर० (स्फाययति--ते) बढ़ाना, विकसित करना, विस्तारयुक्त करना, बड़ा करना--तावत्स्फाययतां शक्तीर्बाणांश्चाकिरतां मुहुः --भट्टि० १७।४३, ४।३३, १२।७६, १५।९९।

स्फार (वि०) [स्फाय्+रक्] 1. विस्तृत, बड़ा, बढ़ा हुआ, फूलाया हुआ स्फारफुल्लत्कुणापीठनिर्यत्--आदि--मा० ५।२३, महावीर० ६।३२ 2. अधिक, पुष्कल महावीर० ५।२, भर्तृ० ३।४२ 3. ऊंचा (स्वर), --रः 1. सूजन, वृद्धि, विस्तार, विकास 2. (सोने में पड़ी हुई) फुटकी 3. उभार, गिल्टी 4. धड़कना, थरथरीयुक्त स्पन्दन, धकधक 5. टंकार,--रम् प्रचुरता, आधिक्य, पुष्कलता (स्फारीभू सूज जाना, फूलना, फैलना, बढ़ना, वृद्धि होना -सुस्निग्धा विमुखीभवन्ति मुहुः स्फारीभवन्त्यापदः मृच्छ० १।३६।

स्फारण [स्फुर्+णिच्+ल्युट्, स्फारादेशः] थरथराहट, स्फुरण, कंपकंपी।

स्फाल [स्फाल्+घञ्] थरथराहट, धकधक, धड़कन, कंपकंपी।

स्फालनम् [स्फाल्+ल्युट्] 1. स्पन्दन, धकधक 2. हिलाना-डुलाना 3. रगड़ना, घिसना 4. थपथपाना, सहलाना (घोड़े आदि को), धीरे-धीरे हाथ फेरना।

स्फिक् (स्त्री०) [स्फाय्+डिक्] चूतड़, कूल्हा,--अंसस्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयवमुलभाग्युपूतानि जघ्वा--मा० ५।१६।

स्फिट् (चुरा० उभ० स्फेटयति--ते) 1. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 2. घृणा करना 3. प्रेम करना 4. ढकना।

स्फिड् (चुरा० उभ० स्फिड्डयति--ते) चोट पहुँचाना आदि, दे० ऊपर 'स्फिट्'।

स्फिर (वि०) [स्फाय्+किरच्, म० अ० स्फेयस्, उ० अ० स्फेष्ठ] 1. प्रचुर, प्रभूत, बहुत 2. बहुत से, असंख्य 3. विस्तृत, आमत।

स्फीत (भू० क० कृ०) [स्फाय+क्त, स्फी आदेशः] 1. सूजा हुआ, बढ़ा हुआ--वेणी० ५।४० 2. मोटा, पीन, बड़ा, विस्तृत, विशाल 3. बहुत से, असंख्य, अधिक, पर्याप्त, पुष्कल, प्रचुर 4. पवित्र--भामि० ४।१३. सफल, समृद्ध, फलता-फूलता 6. पैतृक रोग से ग्रस्त (स्फीतीकृत बड़ा करना, विस्तृत करना)।

स्फीतिः [स्फाय्+क्तिन् स्फी आदेशः] 1. वृद्धि, बढ़ती, विस्तार 2. प्राचुर्य, यथेष्टता, पुष्कलता--धनधान्यस्य च स्फीतिः सदा मे वर्तते गृहे 3. समृद्धि।

स्फुट् (तुदा० पर०, भ्वा० उभ० स्फुटति, स्फोटति--ते, स्फुटित) 1. फट जाना, अकस्मात् फूट जाना, टूट जाना, अचानक विदीर्ण होना, दरार पड़ना, भंग होना --हा हा! देवि स्फुटति हृदयं ह्रसते देहबन्धः--उत्तर० ३।३८, स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन गीत० ७, भट्टि० १४।५६ १५।७७ 2. फूलना, खिलना, फूल देना, कुसुमित होना--स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय गीत० ५. पंच० १।१३६ काव्य०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३।१६७ 3. भाग जाना, छलांग लगाना, तितर-बितर करना,—तुरङ्गः पुरुफुदुर्भीताः--भट्टि० १४।६, १०।८ 4. दृष्टिगोचर होना, निगाह में पड़ना, प्रकट होना, स्पष्ट होना।

ii (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) 1. फटना, तरेड़ आना, टूट जाना 2. निगाह में पड़ना,—प्रेर० स्फोटयति—ते, 1. फट कर टुकड़े टुकड़े होना, खंडशः होना, खोल कर फाड़ना, तरेड़ डालना, बांटना 2. प्रकट करना, बतलाना, स्पष्ट करना 3. खोलना. भंडाफोड़ करना 4. चोट पहुँचाना, नष्ट करना, मार डालना 5. पछोड़ना।

स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] 1. फट पड़ा, टूट कर टुकड़े हुआ, टूटा हुआ, खंडित 2. खिला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्लित - स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् –शि० ६।२५ 3. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, स्पष्ट किया हुआ 4. साफ़, स्पष्ट, साफ दिखाई देने वाला या व्यक्त - अत्र स्फुटो न कश्चिदलङ्कारः--काव्य० १. कु० ५।४४, मेघ० ७०. कि० ११।४४ 5. प्रत्यक्ष—उत्तर० ३।४२ 6. श्वेत, उज्ज्वल, शुभ्र—मुक्ताफलं वा स्फुटविडम्बयत्यम् - कु० १।४४ 7. सुविदित. प्रसिद्ध, —स्फुटनृपस्यलीलमभवत्सुतनोः शि० २।७९ (प्रथित) 8. प्रसारित, बिकीर्ण 9. उच्च 10. दृश्यमान, सत्य, —टम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, विशदतया, साफ़ तौर पर, निश्चय ही, प्रकट रूप से। सम० अर्थ (वि०) 1. बोधगम्य, स्पष्ट 2. सार्थक,— तार (वि०) जिसमें तारे रूपी रत्न जड़े हुए हों, उज्ज्वल,—फलम् (ज्या० में) 1. किसी त्रिकोण का यथार्थ क्षेत्रफल 2. किसी गणित का मूलफल, - सारः किसी ग्रह या तारे का वास्तविक आयाम, - सूर्यगतिः (स्त्री०) सूर्य की दृश्यमान या वास्तविक गति।

स्फुटनम् [स्फुट्+ल्युट्] 1. तोड़ कर खोलना, फाड़ देना, फट जाना, फट कर खुल जाना 2. प्रसार होना, खुलना, प्रफुल्लित होन ।

स्फुटिः, -टी (स्त्री०) [स्फुट्+इन्, पक्षे ङीष्] पैरों की खाल का फट जाना, बवाई, पैरों का दुःखना या सूजन।

स्फुटिका [स्फुटि+कन्+टाप्] टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, खंड, फांक।

स्फुटित (भू० क० कृ०) [स्फुट्+क्त] 1. फटा हुआ, टूट कर खुला हुआ, खंड-खंड हुआ, तरेड़ आया हुआ 2. मुकुलित, खिला हुआ, प्रफुल्लित (जैसा कि फूल) 3. स्पष्ट किया गया, प्रकट किया गया, दिखलाया गया 4. फाड़ा हुआ, नष्ट 5. हंसी उड़ाया हुआ। सम०-चरण (वि०) जिसके पैर फैले हों, बाहर को निकले हुए चौड़े जबड़े पैर वाला।

स्फुट् (चुरा० उभ० स्फुटयति–ते) तिरस्कार करना, अपमान करना, निरादर करना।

स्फुड् (तुदा० पर० स्फुडति) ढकना।

स्फुण्ड् i (भ्वा० पर० स्फुण्डति) खोलना, फुलाना।

ii (चुरा० उभ० स्फुण्डयति–ते) मसखरा करना, मज़ाक करना, उपहास करना।

स्फुण्ड् (भ्वा० आ०, चुरा० उभ० स्फुण्डते, स्फुण्डयति–ते) दे० 'स्फुड्'।

स्फुत् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि। करः आग, —कारः 'स्फुत्' ध्वनि, चटचटाने की आवाज़।

स्फुर् (तुदा० पर० स्फुरति, स्फुरित) 1. (क) थरथराना, फरकना (जैसे आंख का) शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य श० १।१५, स्फुरता बाहुकेनापि दाक्षिण्यमवलम्ब्यते मा० १।८ (ख) हिलना, कांपना, लरजना, थरथराना स्फुरदधरासापुटतया उत्तर० १।२९, ६।३३ 2. खसोटना, संघर्ष करना, विशुब्ध होना इतं पृथिव्यां कृष्णं स्फुरन्तम्- रामा० 3. हुल करना, फेंकना, आगे उछलना–पुरःस्फुर्दप्रभाः परम्--भट्टि० १४।६ 4. पीछे की ओर उछलना. पलट कर आना 5. उछलना, फूट निकला, उद्गत होना, उठना—श्वसनैः स्फुरति विमेल यशः 6. दृष्टिगोचर होने लगना, दिखाई देने लगना, प्रकट होने लगना, स्पष्ट दिखाई देना, प्रदर्शित होना मुखात्स्फुरन्ती को हवनिष्ठहुतेः परिभूय दंष्ट्राम् -- मट्टा० १।८, रचितरुधिरभूषा दृष्टिमांसे प्रदोषे स्फुरति निरवसादा कापि राधा जगाम गीत० ११ 7. दमक उठना, जगमगाना, चिंगारी उठना, चमकना, झलकना, टिमटिमाना- स्फुरति कुचकुम्भयोरुरसि मणिमञ्जरी रञ्जयतु तव हृदयदेशम् गीत० १०, (नया) स्फुरत्प्रभामण्डलया रुकामो कु० १।२४, रघु० ३।६०, ५।५१, मेघ० १५।२७ 8. चमकना, विशिष्टता दिखाना, प्रमुख होना पंच० १।२७ 9. अचानक मन में फुरना, अकस्मात् स्मृति में आना 10. थरथराते हुए चलना 11. खरोंचना, नष्ट करना —प्रेर० (स्फारयति–ते, स्फोरयति–ते) 1. थरथराना 2. चमकाना, जगमगाना 3. फेंकना, हाल देना, अप- - चमक उठना, अभि— 1. फैलना, प्रकीर्ण होना, फूलना 2. ज्ञात होना, परि ,धड़कना, फरकना, धकधक करना - तस्याः परिस्फुरितगर्भभरालसायाः उत्तर० ३।२८, प्र—, 1. फरकना, कांपना 2. फैलना, प्रसृत होना—प्रास्फुरन्नयनम्—महा० 3. दूर-दूर तक फैलना, विख्यात होना संस्थितस्य गुणोत्कर्षः प्रायः प्रस्फुरति स्फुटम्- सुभा०, वि—, 1. फरकना, कांपना 2. संघर्ष करना 3. चमकना, दमकना उत्तर० ४ 4. (धनुष को) तानना, टंकारना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(इस अर्थ में प्रैट० रूप प्रयुक्त होता है) एकोऽपि विस्फुरितनखलवालिकः किं सिन्धुराजमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० २।२५, कि० १४।३१ ।

स्फुरः [स्फुर् भावे घञ्] 1. फड़कना, थरथराना, फरकना 2. सूजन 3. डाह ।

स्फुरणम् [स्फुर+ल्युट्] 1. फड़कना, फरकना, थरथराना 2. शरीर के अंगों का (शुभाशुभसूचक) फरकना 3. फूट निकलना, उदित होना, दिखाई देने लगना 4. चमकना, दमकना, जगमगाना, झलकना, टिमटिमाना 5. मन में फुरना, अचानक स्मरण हो आना ।

स्फुरत् (वि०) [स्फुर्+शतृ] फड़कने वाला, चमकने वाला । समः उल्का उल्कापिंड, टूटा तारा ।

स्फुरित (भू० क० कृ०) [स्फुर्+क्त] 1. कंपायमान, फड़कता हुआ 2. हिला-डुला 3. चमकीला, दमकने वाला 4. अस्थिर 5. बृथा हुआ, तम् 1. फड़कना, फरकना, थरथराहट 2. विक्षोभ या मन का संवेग ।

स्फुर्छ् (म्वा० पर० स्फुर्च्छति) 1. फैलना, विस्तृत होना 2. भूल जाना ।

स्फुर्ज् (म्वा० पर० स्फूर्जति) 1. गरजना, गरजनध्वनि, धमाकम होना, विस्फोट होना,—मनु० १।५३ 2. दमकना, चमकना 3. फट पड़ना, फूटना, स्फूर्जत्येष स एव सम्पति मम व्यवहारभिन्नस्थितेः - महावीर० ३।४० वि —, 1. दहाड़ना, गरजना 2. गूंजना 3. चमकना, दमकना, प्रतीत होना अस्त्येवं जडधाराभृतु वर्षति यद्व्योम्नि विस्फूर्जसे काव्य० १० ।

स्फुल् (तुदा० पर० स्फुलति) 1. कांपना, धड़कना, धक-धक करना 2. लांघना, अचानक आ पड़ना 3. स्वस्थचित्त होना 4. मार डालना, नष्ट करना ।

स्फुलम् [स्फुल्+क] तंबू, खेमा ।

स्फुलनम् [स्फुल्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, फरकना ।

स्फुलिङ्गः, -गम्, **स्फुलिङ्गा** [स्फुल्+इङ्गच्] आग की चिनगारी, स्फुलिंगावस्थया वह्निरेषापेक्ष इव स्थितः —श० ७।१५, वेणी० ६।८ ।

स्फूर्ज् [स्फुर्ज+घञ्] 1. बादलों की गड़गड़ाहट 2. द्वन्द्व का दुख 3. अकस्मात् फूट निकलना या उदय होना जैसा कि 'नर्मस्फूर्ज' में 4. नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसके आरंभ में आनन्द और अन्त में भय की आशंका रहती है ।

स्फूर्जथुः [स्फुर्ज्+अथुच्] बिजली की गड़गड़ाहट, गरज ।

स्फूर्तिः (स्त्री०) [स्फुर् (स्फुर्च्छ्) +क्तिन्] 1. धड़कन, स्फुरण, थरथराहट 2. छलांग, चौकड़ी 3. कुसुमित, प्रफुल्लित 4. प्रकटीकरण, प्रदर्शन 5. मन में फुरना 6. काव्य की उद्भावना ।

स्फूर्तिमत् (वि०) [स्फूर्ति+मतुप्] 1. धड़कने वाला, थरथराने वाला, विक्षुब्ध 2. कोमल हृदय ।

स्फेयस् (वि०) अतिशयेन स्फिरः, ईयसुन्, स्फादेशः 'स्फिर' को भ० अ०] प्रचुरतर, अपेक्षाकृत विस्तारयुक्त ।

स्फेष्ठ (वि०) [स्फिर+इष्ठन्, स्फादेशः, 'स्फिर' की उ० अ०] प्रचुरतम, अत्यंत विस्तारयुक्त ।

स्फोटः [स्फुट् करणे घञ्] 1. फूट निकलना, चटक कर खुलना, फट पड़ना 2. भेद खुलना जैसा कि 'नर्मस्फोट' में 3. सूजन, फोड़ा, रसौली 4. शब्द के सुनने पर मन में आने वाला मात्र, शब्द सुन कर मन में उत्पन्न होने वाला विचार—बुधैर्वैयाकरणैः प्रधानभूतस्फोटरूपव्यञ्जकस्य शब्दस्य ध्वनिरिति व्यवहारः कृतः—काव्य० १, सर्व० भी दे० (पाणिनीयदर्शन) 5. मीमांसकों द्वारा माना हुआ नित्य शब्द । समः—जोडकः मिलावाँ ।

स्फोटन (वि०) (स्त्री० नी) [स्फुट्+ल्युट्] फाड़कर अलग-अलग करना, प्रकट करना, भेद खोलना, स्पष्ट करना,— नः परस्पर मिले हुए व्यंजनों का अलग-अलग उच्चारण, नम् फाड़ना, अचानक फट पड़ना, टुकड़े टुकड़े होना, चटकना 2. अनाज फटकना 3. अंगुलियों को ग्रन्थियां चटखाना, अंगुलियां चटकना 4. दो मिले हुए व्यंजनों का अलग करना ।

स्फोटनी [स्फोटन+ङीष्] सूराख करने का औजार, जमीन का बरमा, बरमा ।

स्फोटा [स्फोट+टाप्] सांप का फैलाया हुआ फण ।

स्फोटिका [स्फुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक पक्षीविशेष ।

स्फोरणम् (वै० स्फूरणम्) ।

स्फ्यम् [स्फाय्+यत्, नि० साधुः] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला तलवार के आकार का एक उपकरण—मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८४ । समः—हस्तिः इस उपकरण द्वारा बनाया गया चिह्न (खूंट) ।

स्फ्य दे० स्फ्य ।

स्म (अव्य०) [स्मि+ड] एक प्रकार का निपात जो वर्तमान काल की क्रियाओं के साथ (या वर्तमान कालिक कृदंत शब्दों के साथ) जुड़कर भूतकाल का अर्थ देता है भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म —पंच० कीर्णन्ति स्म प्राणमूर्ध्वंयशांसि—शि० १७।१५, 2. शब्दाधिक्य निपात (बहुधा निषेधात्मक निपात के साथ जोड़ा जाता है —मर्तृप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीर्ष्वं गमः - श० ४।१७, मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम् हि० २।७ ।

स्मयः [स्मि+अच्] 1. आश्चर्य, अचंभा, ताज्जुब 2. अभिमान, घमंड, हेकड़पना, गर्व तस्मै स्मयावेशविवर्जिताय - रघु० ५।१९, भर्तृ० ३।३, ६९ ।

स्मरः [स्मृ भावे अप्] 1. प्रत्यास्मरण, याद 2. प्रेम 3. कामदेव, प्रेम का देवता,—स्मरपर्यंसुक एव माधवः —कु० ४।२८, ४२, ४३, सम०—अङ्कुशः 1. अंगुली का नाखून 2. प्रेमी, कामातुर व्यक्ति,—अगारम्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- कूपकः,-- गृहम् मन्दिरम् स्त्री की योनि, भग, --अन्ध (वि०) कामांध, प्रेममुग्ध,—आतुर - आर्त —उत्सुक (वि०) काम से पीडित, कामतप्त, कामदग्ध,— आसव: सार, · कर्मन् (नपु०) कोई भी कामुकतापूर्ण व्यवहार, स्वैरकृत्य, —गुरुः विष्णु का विशेषण —छद्म भगशिश्निका, वशा शरीर की कामजन्य अवस्था (मह दस हैं), क्षत्रः 1. पुरुषेन्द्रिय 2. पौराणिक मछली 3. एक वाद्ययंत्र, (अम्) भग,(—जा) चाँदनी रात,—प्रिया रति का विशेषण,—भावित (वि०) कामोद्दीप्त, · मोहः कामजन्य संज्ञाहीनता, प्रणयोन्माद, · —लेखनी सारिका पक्षी,—वल्लभः 1. वसंत ऋतु का विशेषण 2. अनिरुद्ध का विशेषण,—वीथिका वेश्या, रंडी,—शासनः शिव का विशेषण, · सखः चन्द्रमा, —स्तम्भः शिश्न, पुरुष का लिंग, · स्मर्यः रासभ, गधा — हरः शिव का विशेषण ।

स्मरणम् [स्मृ+ल्युट्] 1. स्मृति, याद, प्रत्यास्मरण केवल स्मरणनैव पुनासि पुरुषं यतः—रघु० १०।३० 2. चिन्तन करना—यदि हरिस्मरणे सरसं मनः—गीत० १ 3. स्मृति, स्मरणशक्ति 4. परम्परा, परंपरागत विधि · इति भृगुस्मरणात् (विष० श्रुति) 5. किसी देवता के नाम का मन में जाप करना 6. खेद से याद करना, खे दकरना 7. काव्यगत प्रत्यास्मरण जो एक अलंकार माना जाता है, इसकी परिभाषा है—यथानुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशे स्मृतिः स्मरणम्—काव्य० १० । सम०—अनुग्रहः 1. कृपापूर्वक स्मरण करना, 2. स्मरण करने की कृपा - कु० ६।१९,—अपत्यतर्पकः कच्छप, कछुवा, अयौगपद्यम् प्रत्यास्मरणों की समसामयिकता का अभाव, पदवी मृत्यु ।

स्मार (वि०) [स्मर+अण्] कामदेवसंबंधी स्मारं पुष्पमयं चापं बाणाः पुष्पमया अपि । तथाप्यनङ्गस्त्रैलोक्यं करोति वशमात्मनः - -रुद्र [स्मृ+घञ्] प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति ।

स्मारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [स्मृ+णिच्+ण्वुल्, इत्वं यां टाप् इत्वं च] ध्यान दिलाने वाला, फिर याद कराने वाला,—कम् किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित कोई संस्था (आधुनिक प्रयोग) ।

स्मारणम् [स्मृ+णिच्+ल्युट्] मनमें लाना, याद दिलाना, स्मरण कराना ।

स्मार्त (वि०) [स्मृतौ विहितः, स्मृति वेत्त्यधीते वा अण्] 1. स्मृतिसंबंधी, याद किया हुआ, स्मारक 2. स्मृति के भीतर 3. स्मृति पर आधारित, या स्मृति में अभिलिखित, धर्मशास्त्र में विहित—कर्मस्मार्तविवाहाग्नौ कुर्वीत प्रत्यहं गृही—याज्ञ० १।९७, मनु० १। १०८ 4. वैध 5. धर्मशास्त्र को मानने वाला 6. गृह्य (जैसे कि अग्नि), - तः परंपराप्राप्त धर्म का विशेषज्ञ ब्राह्मण 2. परंपराप्राप्त धर्म का अनुयायी 3. (स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक) संप्रदाय ।

स्मि (भ्वा० आ० स्मयते, स्मित) 1. मुस्कराना, हँसना (मंद मंद) काकुत्स्थ ईषत्स्मयमान आस्त—भट्टि० २।११, १५।८, स्मयमानं वदनाम्बुजं स्मरामि भामि० २।२७ 2. खिलना, फूलना पंच० १।१३६,—प्रेर० (स्माययति ते) 1. मुस्कान पैदा करना, मुस्कराहट को जन्म देना 2. हँसना, अपहास करना 3. आश्चर्यान्वित करना (इस अर्थ में-स्माप्यते) इच्छा० (सिस्मयिषते) 1. मुस्कराने की इच्छा करना । उद् , मुस्कराना, हँसना, वि-, 1. आश्चर्य करना, अचंभे में आना - -उभयोर्नेत्रा लोकः प्रावीव्यधेन विसिष्मिये—रघु० १५।६५, भट्टि० ५।५१ 2. सराहना 3. घमंडी, अहमन्य होना —न विस्मयेत तपसा—मनु० ४।२३६, (प्रेर०) भस्कान पैदा करना, आश्चर्यान्वित कराना, आश्चर्य या अचंभे से भरना विस्मापयन् विस्मितमात्मवृत्तौ—रघु० २।३३, भट्टि० ५।५८, ८।४२ ।

स्मिड् (चुरा० उभ० स्मेटयति ते) 1. अपमानित करना, घृणा करना, नफरत करना 2. प्रेम करना 3. जाना ।

स्मित (भू० क० कृ०) [स्मि+क्त] 1. मुस्कानयुक्त, मुसकराता हुआ 2. फूलाया हुआ, खिला हुआ, प्रफुल्लित, · तम् मुस्कान, मंद हँसी, सस्मितम् मुस्कराहट के साथ, सविलक्षस्मितम् आदि । सम०—दृश् (वि०) मुस्कानयुक्त दृष्टि रखने वाला (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, पूर्वम् (अव्य०) मुस्कराहट के साथ, मुस्कान से युक्त, -सप्तदर्शिभिस्तानु स्मितपूर्वमाह - कु० ७।४७ ।

स्मील् (स्वा० पर० स्मीलति) झपकना, आँख से संकेत करना ।

स्मृ i (स्वा० पर० स्मृणोति) 1. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना 2. प्ररक्षा करना, प्रतिरक्षा करना 3. जीवित रहना ।

ii (भ्वा० पर०—महाकाव्यों में आ० भी—स्मरति, स्मृते—कर्मवा० स्मर्यते) 1. (क) याद करना, मन में रखना, प्रत्यास्मरण करना, मन में लाना, विदित होना स्मरसि सुरसनीरं तत्र गोदावरीं वा स्मरसि च तदुपान्तेष्वद्रयोर्वर्तनानि—उत्तर० १।२५, (ख) मन में पुकारना, मन से याद करना, सोचना - स्मरात्मनोऽभीष्टदेवताम् --पंच० १, रघु० १५।४५ 2. किसी देवता के नाम का मन में ध्यान करना या मन में जाप करना, · यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरःशुचिः 3. स्मृति में अंकित करना या अभिलेख करना तथा च स्मरन्ति 4. प्रकथन करना, खयाल करना, सोचना, पंच० १।३० 5. खेद के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथ याद करना, आतुर होना, उत्कंठित होना, अभिलाषा करना (बहुधा संबंध के साथ) स्मर्तुं दिशन्ति न दिवः गुरुसुन्दरीभ्यः किं० ५।२८, कच्चिद्भूर्तुः स्मरसि रसिकेत्वं हि तस्य प्रियेति मेघ० ८५, मुद्रा० ५।१४, प्रेर० (स्मारयति-ते, परन्तु अन्तिम अर्थ को प्रकट करने के लिए स्मरयति-ते) 1. याद करना, फिर ध्यान दिलाना, मन में लाना, सोचना --अनेन मत्प्रियाभियोगेन स्मारयसि में पूर्वशिष्यां सौदामिनीम् मा० १, कभी कभी द्विकर्मक के रूप में प्रयुक्त अपि चन्द्रगुप्तदोषा अतिकाल्पनार्घविगुणात् स्मारयन्ति प्रकृतीः-- मुद्रा० १. य एव दुःस्मरः कालः तमेव स्मारिता वयम् उत्तर० ६।३४ 2. सूचना देना 3. खेद के साथ स्मरण कराना, लालायित करना, अभिलाष पैदा करना शि० ६।५६, श० ६४, इच्छा० (सुस्मूषते) प्रत्यास्मरण करने की इच्छा करना, अनु , याद करना, प्रत्यास्मरण करना, मन में ध्यान करना, अप --, भूल जाना, प्र - , भूल जाना, वि --, भूल जाना--मधुकर विस्मृतोस्यंतां कथम् श० ५।१, (प्रेर०) भुलाना उत्तर० १, सम् , याद करना, चिन्तन करना—भग० १८।७६, मनु० ४।१४९, (प्रेर०) ध्यान दिलाना, मन में रखना, (पातालं) मामद्य संस्मरयतीव भुजगलोकः --रत्न० १।१३ ।

स्मृतिः (स्त्री०) [स्मृ+क्तिन्] 1. याद, प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति अद्यत्वाभा करचूतधनुः कि न वाणः स्मृति ते वेणी० ३।२१, संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः --तर्क०, स्मृत्युपस्थिती इमौ द्वौ श्लोकौ--उत्तर० ६ 2. चिन्तन करना, मन में ध्यान करना 3. मानव-धर्मशास्त्र, परम्पराप्राप्त धर्मशास्त्र, स्मृतिग्रन्थ (नीति और धर्म से संबद्ध) (विप० श्रुति) 4. धर्मसंहिता, स्मृतिग्रन्थ 5. स्मृति का मूलपाठ, धर्मसूत्र, धर्म के नियम---इति स्मृतेः 6. इच्छा, कामना 7. समझ । सम० अन्तरम् दूसरा स्मृतिग्रन्थ,—अपेत (वि०) 1. भूला हुआ 2. शास्त्रविरुद्ध 3. (अतः) अवैध, अन्यायपूर्ण,—उक्त (वि०) धर्मशास्त्र में विहित, धर्मसूत्र में प्रतिपादित, पथः,—विषयः स्मरणशक्ति का पदार्थ, स्मृतिपथं,—विषयं गम् मरना,—भ्रंशः १।३७, ३८, प्रत्यवमर्षः स्मृति की धारणाशक्ति, प्रत्यास्मरण की यथार्थता, प्रबन्धः धर्मशास्त्र की कृति,— भ्रंशः स्मृति का नष्ट हो जाना, याद न रहना, रोधः क्षणिक विस्मरण, स्मृति का नाश—श० ७।३२, —विभ्रमः स्मृति की गड़बड़, स्पष्ट याद न रहना ---विरुद्ध (वि०) अवैध, विरोधः 1. धर्म का वैपरीत्य, अवैधता 2. दो या दो से अधिक स्मृतियों का पारस्परिक विरोध--स्मृतिविरोधं परिहरति-शारी०, —शास्त्रम् 1. धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, धर्मसूत्र 2. धार्मिक विज्ञान, शेष (वि०) उपरत, मृत (कोई व्यक्ति) --शैथिल्यम् स्मरणशक्ति की दुर्बलता,—साध्य (वि०) धर्मशास्त्रसे सिद्ध होने योग्य,—हेतुः प्रत्या-स्मरण का कारण मन पर पड़ी हुई छाप, विचार-साहचर्य ।

स्मेर (वि०) [स्मि+रन्] 1. मुसकराने वाला विलोक्य वृद्धोक्षमधिष्ठितं त्वया महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति कु० ५।७०, भामि० २।४, ३।२, मा० १०।६ 2. खिला हुआ, फूला हुआ, फैलाया हुआ, प्रफुल्लित, अधिकविकसदन्तविस्मयस्मेरतारैः मा० १।२८, 3. घमंडी 4. व्यक्त । सम० विधिकरः भौंरा ।

स्यदः [स्यन्द्+क] चाल, तीव्रगति, तेजी से चलना, वेग ।

स्यन्द् [स्वा० आ० स्यन्दते, स्यन्न, इच्छा०— सिस्यंदिषते, सिस्यंदिषति-ते, इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्यन्द् के स् को ष् हो जाता है)1. रिसना, चूना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, स्रवित होना, अर्क निकालना, बहना —अयि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्द तव किमपि लिह्नो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः भामि० १।५ 2. ढालना, उंडेलना 3. भागना, दौड़ना, अनु--,बहना, अभि—, 1. रिसना, बहना 2. बारिश होना, पानी गिरना अभिस्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा गिरिः उत्तर०२ 3. पिघलना—उत्तर०६, नि ,परि ,बह निकलना, प्र ,बह जाना, वि ,बहना---भट्टि० १।७४ ।

स्यन्दः [स्यन्द भावे घञ्] 1. बहना टपकना 2. तेजी से जाना, चलना 3. गाड़ी, रथ ।

स्यन्दन (वि०) (स्त्री०—ना, नी) [स्यन्द्+ल्युट्] 1. जल्दी से जाने वाला, द्रुतगामी, बहने वाला 2. चुस्त, फुर्तीला, शीघ्रगामी--स्यन्दना नो च तुरगाः---कि० १५। १६,—नः युद्ध-रथ, गाड़ी या रथ—धर्मार्थ्य प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः—श० १।३३ 2. वायु, हवा 3. एक प्रकार का वृक्ष तिनिश, नम् 1. बहना, टपकना, रिसना 2. तेजी से जाना, बहना 3. पानी । सम० आरोहः रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला ।

स्यन्दनिका [स्यन्दन+कोष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] थूक की फुटक ।

स्यन्दिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्यन्द्+णिनि] 1. रिसने वाला, बहने वाला, टपकने वाला 2. वेग से जाने वाला 3. गतिशील ।

स्यन्दिनी [स्यन्दिन्+ङीप्] 1. लार, थूक 2. वह गाय जो दो बच्चों को एक साथ जन्म दे ।

स्यन्न [भू० कृ० कृ०] [स्यन्द+क्त] रिसा हुआ, टपका हुआ, गिरा हुआ ।

स्यम् [भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्यमति, स्यमयति-ते) 1. शब्द करना, ज़ोर से चिल्लाना, चीखना 2. जाना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. विचार करना, विमर्श करना, चिंतन करना (केवल इस अर्थ में आ०)।

स्यमन्तकः [स्यम्+अच्-कन्] एक मूल्यवान् मणि (कहते हैं कि यह मणि प्रतिदिन आठ स्वर्ण भार दिया करती थी, तथा सब प्रकार के संकट और अपशकुनों से रक्षा करती थी), अधिक वृत्तांत जानने के लिए दे० 'सत्राजित्'।

स्यमि (मी) कः [स्यम्+इकक् ईकक्] 1. बादल 2. बाजी 3. एक प्रकार का वृक्ष 4. समय।

स्यामिका [स्यामिक+टाप्] नील।

स्याद् (अव्य०) [अस् धातु का विधिलिङ् में, प्र० पु०, ए० व०] ऐसा हो सकता है, शायद, कदाचित्। सम०—**वादः** संभावना की उक्ति, संशयवाद (दर्शन० में), —**वादिन्** (पुं०) संशयवादी, स्याद्वाद का अनुयायी।

स्यालः दे० 'श्याल'।

स्यूत (भू० क० कृ) [सिव्+क्त] 1. सुई से सीया हुआ, नत्थी किया हुआ, बुना हुआ (आलं० से भी) चिन्ता-सन्ततितन्तुजालनिबिडस्यूतये लग्ना प्रिया—मा० ५।१० 2. बींधा हुआ, —तः बोरा।

स्यूतिः [सिव् भावे क्तिन्] 1. सीना, टांका लगाना 2. सुई का काम 3. थैला 4. वंशावली, कुल 5. संतति।

स्यूमः [सिव्+मक्] 1. प्रकाश की किरण 2. सूर्य 3. थैला, बोरा।

स्यूमः [सिव्+मक्] प्रकाश किरण।

स्यूतः [=स्यूत, पृषो०] बोरा, थैला।

स्योन (वि०) [=स्यून, पृषो०] सुन्दर, सुखद 2. शुभ, मंगलप्रद,—**नः** 1. प्रकाश की किरण 2. सूर्य 3. बोरा, —**नम्** प्रसन्नता, आनन्द।

स्रंस् (भ्वा० आ० स्रंसते, स्रस्त) 1. गिरना, नीचे गिर पड़ना—नास्रसत् करिणां यैव त्रिपदीच्छेदिनामपि—रघु० ४।४८, गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।२९, भट्टि० १४।७२, १५।६१ 2. डूबना, घटना, गिर कर टुकड़े टुकड़े होना—हाहा देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते देहबन्धः—उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 3. नीचे लटकना 4. आना—प्रेर० (स्रंसयति-ते) 1. गिराना, खिसकना, लुढ़काना, बाधा डालना—वातीर्णाः नाम्रसयदंशकानि—रघु० ६।७५ 2. शिथिल करना, ढील देना, वि—, खिसकना, ढीला होना, (प्रेर०) 1. गिरना, गिरने देना,—विस्रसयंती नवकर्णिकारम् कु० ३।६२ 2. ढीला करना, शिथिल करना।

स्रंसः [स्रंस्+घञ्] गिरना, खिसकना।

स्रंसनम् [स्रंस्+णिच् ल्युट्] 1. गिरना 2. गिराना, नीचे पटकना।

स्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्रंस्+णिनि] 1. गिरने वाला, खिसकने वाला, लटकने वाला, ढीला होने वाला, मांग देने वाला—अंसे स्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्धजाः—श० १।२९ 2. निर्भर, लटकता, ढीला लटकने वाला।

स्रंह् (भ्वा० आ० स्रंहते) विश्वास करना, भरोसा करना।

स्रग्विन् (वि०) (स्त्री० णी) [स्रज्+विनि, म० अ० स्रजीयस्, उ० अ० स्रजिष्ठ] हार या गजरा पहने हुए)—आमुक्ताभरणः स्रग्वी हंसचिह्नदुकूलवान् रघु० १७।२५।

स्रज् (स्त्री०) [सृज्यते—सृज्+क्विन्, नि] गजरा, पुष्पमाला (विशेषतः वह जो मस्तक पर धारण की जाय)—स्रजमपि शिरस्यन्धःक्षिप्तां धुनोत्यहिराङ्कुयः—श० ७।२४ 2. माला, हार। सम०—**दामन्** (अदामन्) (नपुं०) माला की ग्रंथि या गांठ, धर (वि०) मालाधारी गीत० १२, (—रा) एक छंद का नाम।

स्रजा [सृज्+टा, नि०] रस्सी, डोरी, सूत्र।

स्रदधू (स्त्री०) अपान वायु।

स्रम्भ् (स्वा० आ० स्रंभते, स्रब्ध) विश्वास करना, दे० 'श्रभ्', **वि** 1. विश्वस्त होना 2. आश्वस्त होना।

स्रवः [स्रु+अप्] 1. चूना, रिसना, बहना 2. बूंद, प्रवाह, सरिता विपुलौ स्तनपत्तनौ सा स्तनौ नेत्रजलस्रवैः—राम० 3. फौवारा, निर्झर।

स्रवणम् [स्रु+ल्युट्] 1. बहना, चूना, रिसना 2. पसीना 2. मूत्र।

स्रवत् (वि०) (स्त्री०—स्रवन्ती) [स्रु+शतृ] बहने वाला, रिसने वाला, चूने वाला। सम०—**गर्भा** वह स्त्री जिसका गर्भ गिर गया हो 2. दुर्घटना के कारण गिरे हुए गर्भ वाली गाय।

स्रवन्ती [स्रवत्+ङीप्] नदी, दरिया—दार्पाण्विव स्रवन्तीषु—रघु० १७।६३।

स्रष्टृ (पुं०) [सृज्+तृच्] 1 बनाने वाला 2. रचने वाला 3. सृष्टिरचयिता, ब्रह्मा का विशेषण—या सृष्टिः स्रष्टुराद्या श० १।१, तत्स्रष्टुरेकान्तरम्—७।२७ 4. शिव का नाम।

स्रस्त (भू० क० कृ०) [स्रंस्+क्त] 1. गिरा हुआ, खिसका हुआ, नीचे पड़ा हुआ—स्रस्तं शरं चापमपि स्वहस्तात्—कु० ३।५१, कनकवलय स्रस्त स्रस्तं मया प्रतिसार्यते श० ३।१३, कि० ५।३३, मेघ० ६३ 2. लुढ़का हुआ, नीचे लटकता हुआ—विपादलस्रस्त-बाहूनां—मृच्छ० ४।८, स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू पटोल्लेपणात् श० १।३० 3. ढीला किया हुआ 4. च्युत, ढीला पड़ा हुआ 5. लंब, नीचे लटकता हुआ 6. अलग किया हुआ। सम० **अङ्ग** (वि०) ढीले अंगों वाला 2. मूर्छित, बेहोश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्रस्तरः [स्रंस्+तरच्] पलंग या सोफा, (विश्राम करने के लिए) बिछौना शिलातले स्रस्तरमास्तीर्य निषसाद का०, मनु० २।२०४।

स्राक् (अव्य०) [सृ+डाक्] फुर्ती से, तेजी से।

स्राव: [स्रु+घञ्] प्रवाह, बहाव, रिसना, बूँद बूँद टपकना।

स्रावक (वि०) (स्त्री० **विका**) [स्रु+ण्वुल्] बहाने वाला, उड़लने वाला, रिस कर बहने वाला, कम काली मिर्च।

स्रिभ् (भ्वा० पर० स्रेभति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्रिम्भ् (भ्वा० पर० स्रिम्भति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्रिव् (दिवा० पर० स्रीव्यति, स्रूत) 1. जाना, 2. सूख जाना।

स्रु (भ्वा० पर० सवति, स्रुत) 1. बहना, धारा निकलना, चूना, रिसना, बूँद बूँद करके गिरना, टपकना स हि निम्बात्स्रवेदौदुम्बरम् राम० 2. उड़लना, डालना, बहने देना अलीकृष्टि च भूपृष्ठे शोणितं वाप्यसृग्स्रुवत् भट्टि० १५।७६, १७।१८ 3. जाना, हिलना-डुलना 4. चूना, खिसक जाना, छीजना, नष्ट होना, कुछ फल न निकलना—सवतो ब्रह्म तस्यापि भिन्नभाण्डात्पयो यथा भाग०, भट्टि० ६।१८, मनु० २।७४ 5. इधर उधर फैलाना, सब दिशाओं में पहुँचाना, प्रकट हो जाना (भेद आदि)—प्रेर० (स्रावयति—ते) बहाना, उड़लना, डालना, बरबस्ना (रक्त आदि) न गात्रास्त्रावयेदसृक्—मनु० ४।१६९ (उपसर्गों से युक्त हो जाने पर धातु के लगभग वही अर्थ रहते हैं)।

स्रुघ्नः (पु०) एक जनपद या जिले का नाम पन्थाः स्रुघ्नमुपतिष्ठेत्—सिद्धा०, (यह स्थान पाटलिपुत्र से कुछ दूरी पर कर्मनाशा नदी के किनारे पर स्थित था) नृ० न हि देवदत्तः स्रुघ्ने सन्निधीयमानस्तदहरेव पाटलिपुत्रे सन्निधीयते युगपदनेकत्र वृत्तावनेकत्वप्रसङ्गात् —शारी०।

स्रुघ्नी [स्रुघ्न+अच्+ङीप्] सब्जी, रेह।

स्रुच् (स्त्री०) [स्रु+क्विप्, चिट् आगमः] लकड़ी का बना एक प्रकार का चमचा जिसके द्वारा यज्ञाग्नि में घी की आहुति दी जाती है, स्रुवा (प्रायः ढाक या खदिर के वृक्षों का बना हुआ)—रघु० ११।२५, मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८३। सम०—**प्रणालिका** चमचे की पनाली।

स्रुत (वि०) [स्रु+क्विप्, तुक्] (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) बहने वाला, गिरने वाला, उड़लने वाला —स्वरेण तस्याममृतस्रुतेव—कु० १।४, ५, वि० ९।६८।

स्रुतिः (स्त्री०) [स्रु+क्तिन्] 1. बहना, रिसना, अर्क निकालना, टपकना, चूना—कीटक्षतिस्रुतिभिरस्रमिवोद्वमन्तः मुद्रा० ६।१३, पद्मं सुधारसस्रुतिधौतरक्तम् —कु० १।५, रघु० १६।४४, कि० ५।४४, १६।२, क्षीरस्रुतिसुरभयः (वाताः) – मेघ० १०७ 'रसक्षयवहण या स्राव' 2. रसस्रवण, राल 3. धारा।

स्रुवः, वा [स्रु+क, स्त्रियां टाप् च] 1. यज्ञ का चमचा 2. निर्झर, झरना या प्रपातिका।

स्रुक् (भ्वा० आ०) जाना, गतिशील होना।

स्रे (भ्वा० पर० स्रायति) 1. उबालना 2. पसीना आना —दे० 'श्रै'।

स्रोतम् [स्रु+तन्] धारा, सरिता। दे० स्रोतस्।

स्रोतस् (नपुं०) [स्रु+तसि] 1. (क) सरिता, धारा प्रवाह, जलप्रवाह—पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरिताम्—उत्तर० २।२७, मनु० ३।१६३ (ख) धार, प्रवाहिणी,—नदव्याकाशगङ्गाद्याः स्रोतस्यूहामदिग्गजे रघु० १।७८, स्रोतसेवोह्यमानस्य प्रक्षौपतरणं हि तत्—विक्रम० २।५ 2. सरिता, नदी, स्रोतसामस्मि जाह्नवी—भग० १०।३१ 3. लहर 4. जल 5. शरीरस्थ पोषण-नलिका 6. ज्ञानेन्द्रिय निगृह्य सर्वस्रोतांसि राम० 7. हाथी की सूंड। सम०—**अञ्जनम्** (स्रोतोऽञ्जनम्) सुरमा,—**ईशः** सागर,—**रन्ध्रम्** हाथी की सूंड का छिद्र, नथुना—स्रोतोरन्ध्रध्वनितसुभगं दन्तिभिः पीयमानः—मेघ० ४२, (दे० इस पर मल्लि०) (स्रोतोरन्ध्रं भी पाठांतर), **वहा** नदी—स्रोतोवहां पयि निकामजलामतीत्य जातः सखे प्रणयवान् मृगतृष्णिकायाम्—श० ६।१५, कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी—६।१६, रघु० ६।५२।

स्रोतस्यः [स्रोतस्+यत्] 1. शिव का नाम 2. चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी [स्रोतस्+मतुप्+(विनि) +ङीप्, वत्वम्] नदी।

स्व (सार्व० वि०) [स्वन्+ड] 1. अपना, निजी, (आत्मपरक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त)—स्वनियोगमशून्यं कुरु—श० २, प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्वयित्वा ५।५, (इस अर्थ में प्रायः समास में प्रयुक्त—स्वपुत्र, स्वकलत्र, स्वद्रव्य) 2. अन्तर्जात, प्राकृतिक, अन्तर्हित, विशेष, अन्तर्जन्मा - सूर्यायाः न खलु कमलं पुष्पयित स्वामभिख्यास्—मेघ० ८०, श० १।१८, स तस्य स्वो भावः प्रकृतिनियतत्वादकृतकः—उत्तर० ६।१४ 3. अपनी जाति से संबंध रखने वाला:, अपनी जाति का—शूद्रैव भार्या शूद्रस्य सा च स्वा च विशः स्मृतेः —मनु० ३।१३, ५।१०४,—**स्वः** 1. रिश्तेदार, बांधव —पंच० २।९६, मनु० २।१०९ 2. आत्मा,—**स्वः**, - **स्वम्** दौलत, सम्पत्ति—जैसा कि 'निःस्व' में। सम०—**अक्षपादः** न्यायदर्शन पद्धति का अनुयायी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अक्षरम् अपना निजी हस्तलेख, **अधिकारः** अपना निजी कर्तव्य या राज्य स्वाधिकारात्प्रमत्तः मेघ० १, स्वाधिकारभूमौ—श० ७, **अधिष्ठानम्** हठयोग में माने हुए छ चक्रों में से एक, **अधीन** (वि०) 1. अपने पर आश्रित, आत्मनिर्भर 2. स्वतंत्र 3. अपने वश में 4. अपनी निजी शक्ति में—स्वाधीना वक्तव्यतापि हि दरं वद्धो न सेवाञ्जलिः मृच्छ० ३।११ [कुशल (वि०) अपनी निजी शक्ति के आधार पर समृद्धिशाली स्वाधीनकुशला सिद्धिमन्तः —श० ४, [पतिका, भर्तृका वह पत्नी जिसका अपने पति पर पूरा नियन्त्रण हो, वह स्त्री जिसका पति पत्नी के वश में हो—अत एव नियंता बाधा राधा स्वाधीनभर्तृका निजगाद रतिरभसान्तं प्रास्तं मण्डनवाञ्छया—गीत० १२, दे० सा० द० ११२, तथा आगे,—**अध्यायः** 1. मन में पाठ करना, मन मन में इसके जप करना 2. वेदों का पढ़ना, वैदिक पाठ, **अनुभूतिः** (स्त्री०) आत्म अनुभव 2. आत्मज्ञान स्वानुभूत्येकसाराय नमः शांताय तेजसे—भर्तृ० २।१, **अन्तम्** 1. मन,—भामि० ४।५, **महावीर** ७।१७ 2. कन्दरा, —**अर्थः** अपना निजी हित, स्वार्थ सर्वः स्वार्थं समीहते हि० २।६५ 2. अपना अर्थ भामि० १।७९ (यहां दोनों अर्थ—अभिप्रेत हैं) **आत्मानम्** निजी अटकल, आगमनात्मक तर्क, अनुमानके दो मुख्य भेदों में से एक, (दूसरा है 'परार्थानुमान') [पण्डित (वि०) 1. अपने निजी कार्यों में चतुर 2. अपना हितसाधन करने में विशेषज्ञ, **परः, परायण** (वि०) अपनी स्वार्थ सिद्धि करने पर तुला हुआ, **स्वार्थी**, [विघातः अपने उद्देश्य की भग्नाशा, [सिद्धिः (स्त्री०) अपना निजी लक्ष्य पूरा करना, **आयत्त** (वि०) अपने अधीन, अपने पर आश्रित भर्तृ० २।७ —**इच्छा** अपनी अभिलाषा, अपनी रुचि, [मृत्युः भीष्म का विशेषण,—**उदयः**, किसी विशेष स्थान पर किसी स्वर्गीय पिंड या दिव्य चिह्न का उदय होना, **उपधिः** अंचल पहू, **कम्पनः** वायु, हवा, —**कविन्** (वि०) स्वार्थी, **कार्यम्** अपना निजी कार्य या स्वार्थ, **-गतम्** (अव्य०) मन में अपने आपको, एक ओर (नाटचभाषा में), **छन्द** (वि०) 1. अपनी इच्छा रखने वाला, अनियंत्रित, **स्वेच्छाचारी** 2. जंगली, (—**दः**) अपनी निजी इच्छा, छांट कल्पना या मर्जी, **स्वतंत्रता**, (—**दम्**) (अव्य०) अपनी इच्छा या मर्जी के अनुसार, स्वेच्छाचारिता के साथ, **स्वेच्छा** से—स्वच्छन्दं दलदरविन्दे मरन्दं बिन्दन्तो बिदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः—भामि० १।५, **-ज** (वि०) **आत्मजात**, (—**जः**) 1. पुत्र, बाल 2. स्वेद, पसीना, (—**जम्**) रुधिर, —**जनः** 1. बंधु, रिश्तेदार—इतः प्रत्यादेशात् स्वजनमनुगन्तुं व्यवसिता श० ६।८, पंच० १।५ 2. अपने निजी पुरुष, बंधुबांधव, अपनी गृहस्थी, तन्त्र (वि०) आत्माश्रित, अनियंत्रित, आत्मनिर्भर, स्वेच्छायुक्त, (—**त्रः**) अपना पुरुष, —**देशः** अपना देश, जन्मभूमि, —**जः** [बन्धु अपने देश का आदमी, **धर्मः** 1. अपना धर्म 2. अपना निजी कर्तव्य मनु० १।८८ - ९१ 3. विशेषता, अपनी निजी संपत्ति, **पक्षः** अपना निजी दल, **परमण्डलम्** अपना और शत्रु का देश, **प्रकाश** (वि०) 1. स्वतः स्पष्ट 2. स्वतः चमकदार, —**प्रयोगात्** (अव्य०) अपने प्रयत्नों के द्वारा, **-भूः** 1. अपना निजी योद्धा 2. शरीर रक्षक, **भावः** 1. अपनी स्थिति 2. अन्तर्हित या मूलगुण, प्राकृतिक संविधान, अन्तर्जात या विशिष्ट स्वभाव, प्रकृति या स्वभाव, जैसा कि 'स्वभावो दुरतिक्रमः' में, इसी प्रकार कुटिल, शुद्ध, भद्दे चाल चलन आदि, [उक्तिः (स्त्री०) 1. स्वतः स्फूर्त प्रकटन 2. (अलं० में) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का यथावत् या बिल्कुल मिलता-जुलता वर्णन होता है स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम् काव्य० १०, या, नानाऽवस्थ पदार्थानां रूप साक्षाद्विवृण्वती—काव्या० २।८ एक सिद्धान्त (यह विश्व, मूलतत्त्वों की अपने अन्तर्जात गुणों के अनुसार, प्राकृतिक तथा आवश्यक क्रिया का परिणाम है और उसी के द्वारा इसकी स्थिति है, इसमें परमात्मा की कोई निमित्तकारणता नहीं), [सिद्धः (वि०) प्राकृतिक, स्वतःस्फूर्त अन्तर्जात,—**भूः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, **योनि** (वि०) मातृपक्ष का संबंधी (पुं०, स्त्री०) उत्पत्तिस्थान, जो स्वयं अपना उत्पत्तिस्थान हो, (स्त्री०) कोई बहन या निकटसंबंध वाली कोई स्त्री, **रसः** 1. प्राकृतिक स्वाद 2. किसी का अपना (अभिप्रेत) रस या काव्यगत रस, आत्मानंद,—**राज्** (पुं०) परमात्मा, **रूप** (वि०) 1. समान, समरूप 2. सुन्दर, सुहावना, प्रिय 3. विद्वान्, समझदार, (—**पम्**) 1. अपनी असली या सुरत, प्राकृतिक स्थिति या दशा 2. स्वाभाविक चरित्र या रूप, यथार्थ विधान 3. प्रकृति 4. विशिष्ट उद्देश्य 5. प्रकार, किस्म, जाति, [असिद्धिः (स्त्री०) तीन प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, **वश** (वि०) 1. स्वनियंत्रित 2. स्वतन्त्र, **वासिनी** विवाहित या अविवाहित स्त्री जो वयस्क होने पर भी अपने पिता के घर ही रहती रहे, **-वृत्ति** (वि०) स्वावलम्बी, अपने प्रयत्नों से ही जीवनयापन करने वाला, **संवृत** आत्मरक्षित, स्वरक्षित,—**संस्थ** अपने विचारों पर डटे रहना 2. आत्मस्थिरता 3. आत्मलीनता,—**स्थ** (वि०) 1. अपने पर डटे रहना 2. स्वाश्रित, स्वावलम्बी, विश्वस्त, दृढ़,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्का 3. स्वतन्त्र 4 अच्छा करने वाला, स्वस्थ, नीरोग, आराम देना, सुखद स्वस्थ एवास्मि—मा० ४. स्वस्थ को वा न पण्डितः पंच० १।१२७, दे० 'अस्वस्थ' भी 5. सन्तुष्ट, प्रसन्न, (—स्थम्) (अव्य०) आराम से, सुख पूर्वक, शान्ति से, स्वात्मन् अपनी जन्मभूमि, अपना निजी आवास स्थल—नकः स्वस्थान-मामाति गजेन्द्रमपि कर्षति पंच० ३।४६,—हस्त अपना निजी हाथ या लिखाई, आत्मलेख, दे० 'हस्त' के अन्तर्गत, हस्तिका कुल्हाड़ी,—हित (वि०) अपने लिए हितकर, (—तम्) अपना निजी लाभ, अपना कल्याण।

स्वक (वि) [स्व+अकच्] अपना निजी, अपना।

स्वकीय (वि०) [स्वस्य इदम्—स्व+छ, कुक् आगमः] 1. अपना निजी, अपना 2. अपने परिवार का।

स्वङ्ग् (स्वा० पर० स्वङ्गति) जाना, हिलना-जुलना।

स्वङ्गः [स्वङ्ग्+घञ्] आलिंगन।

स्वच्छ (वि०) [सुष्ठु अच्छः—प्रा० स०] 1. अत्यन्त साफ, पारदर्शी, विशुद्ध, उज्ज्वल, अल्पाराभासी स्वच्छस्फटिक, स्वच्छे धुक्लाफलम्—आदि 2. सफेद 3. सुन्दर 4. स्वस्थ, —च्छः स्फटिक,—च्छम् मोती। सम०—पत्र तालक, सेलखड़ी,—बालुकम् विशुद्ध खड़िया,—मणिः स्फटिक।

स्वञ्ज् (स्वा० आ० वञ्जते. इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्वञ्ज् के स को ष हो जाता है) 1. आलिंगन करना, झोली भरना—कयाचिदाचुम्ब्य चिराय सस्वजे—भामि० २।१७८, पर्यश्रुरस्वजत मूर्ध्नि चोप-जघ्रौ—रघु० १३।७० 2. घेरना, मरोड़ना, परि—, आलिंगन करना वत्से परिवजस्व मां सखीजनं च प० ४, भामि० २।१७८।

स्वद् I (चुरा० उभ० स्वद (स्वा) यति-ते) 1. जाना 2 समाप्त करना।

स्वतस् (अव्य०) [स्व+तसिल्] अपने आप, स्वयम् (निजवाचक के अर्थ में प्रयुक्त)।

स्वतन्त्र [स्व+तन्त्र] 1. अपनी विद्यमानता 2. स्वामित्व, स्वामित्व के अधिकार।

स्वद् I [स्वा० आ० स्वदते, स्वदित] 1. पसन्द किया जाना, मधुर होना, स्वाद में रुचिकर होना (संप्र० के साथ)—यज्ञदत्तायै स्वदते सूपः—काशिका, अपां हि तृप्ताय न वाग्विधाराः स्वादु सुगन्धि स्वदते तुषारा—नै० ३।९३, सस्वदे मुखसुरं प्रमदाभ्यः शि० १०। २३ 2. स्वाद लेना, रस लेना, खाना 3. प्रसन्न करना 4. मधुर करना।

II (चुरा० उभ० या प्रेर० स्वादयति-ते) 1. चखाना, खाना 2. रस लेना 3. मधुर करना, आ 1. चखना, खाना (अलं० रो भी) —पपावनास्वादितपूर्वमाशुगः—रघु० ३।५४ 2. उपभोग करना —मेघ० ८७।

स्वदनम् [स्वद्+ल्युट्] चखना, खाना।

स्वदित (भू० क० कृ०) [स्वद्+क्त] चखा गया, खाया गया, तम् उदयार विशेष जो श्राद्ध में पितरों को पिण्डदान करने के पश्चात् उच्चारित होता है और जिसका अर्थ है भगवान् करे यह पदार्थ आपको अच्छा लगे, स्वादिष्ट लगे'—मनु० ३।२५१, २५४।

स्वधा [स्वद्+आ, पृषो० दस्य धः] 1. अपना निजी स्वभाव या निश्चय, स्वतः स्फूर्तता 2. मृत पूर्वपुरुषों —पितरों—को प्रस्तुत की गई हवि की आहुति —स्वधासंग्रहतत्परः रघु० १।९६, मनु० ९।१४२, याज्ञ० १।१०२ 3. मृत पितरों को प्रस्तुत किया भोजन 4. अन्न या आहुति 5. माया या सांसारिक भ्रम, अव्य० पितरों के सम्मुख आहुति प्रस्तुत करते समय उच्चरित उद्गार, (संप्र० के साथ) पितृभ्यः स्वधा सिद्धा०। सम० कर (वि०) पितरों के निमित्त आहुति देने वाला, कारः 1. 'स्वधा' शब्द का शब्द—पूतं हि तद्गृहं यत्र स्वधाकारः प्रवर्तते, प्रियः अग्नि, आग,—भुज् (पुं०) 1. मृत या देवत्व को प्राप्त पूर्वपुरुष 2. देवता, देव।

स्वधितिः (पुं०, स्त्री०) **स्वधिती** [स्वधा+इतच्, स्त्रियां ङीप् च] कुल्हाड़ी।

स्वन् (स्वा० पर० स्वनति) 1. शब्द करना, कोलाहल करना,—पूर्णाः पेराश्च सस्वनुः—भट्टि० १४।३, वेणवः कीचकास्ते स्थूर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः अमर० 2. गाना, प्रेर० (स्वनयति-ते) 1. गुंजाना 2. शब्द करना 3. अलंकृत करना (इस अर्थ में 'स्वानयति')।

स्वनः [स्वन्+अप्] शब्द, कोलाहल—शिवाघोरस्वना पश्चाद् बुबुधे विकृतेति ताम्—रघु० १२।३९, शंख-स्वनः आदि। मयः उत्साहः गड़ा।

स्वनिः [स्वन्+इन्] ध्वनि, कोलाहल।

स्वनिक (वि०) [स्वन+ठक्] ध्वनि करने वाला—जैसा कि 'पाणिस्वनिकः' (जो अपने हाथों से तालियाँ बजाता है) में।

स्वनित (भू० क० कृ०) [स्वन्+क्त] ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहल करने वाला, तम् बिजली का शोर, बिजली की गड़गड़ाहट, तु० 'स्तनित'।

स्वप् (अदा० पर० स्वपिति, सुप्त, भावव० सुप्यते, इच्छा० सुषुप्सति) (कभी-कभी भ्वा० उभ० स्वपति-ते) सोना, नींद आ जाना, सोने जाना—असजातकिण-स्कन्धः सुखं स्वपिति गौरहिः—काव्य० १०, इतः स्वपिति केशवः भर्तृ० २।७६ 2. तकिये का सहारा लेना, विश्राम करना, लेटना, आराम करना 3. तल्लीन होना—भामि० ४।१९, प्रेर० (स्वापयति-ते) सुलाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोने के लिए थपथपाना, **अव**—, नि, —ध, —सम् सोना, लेटना -प्रसुप्तलक्षणः मा० ७, कु० २।४२, रघु० ११।४।

स्वप्नः [स्वप्+नक्] 1. सोना, नींद अकाले बोधितो भ्राता प्रियस्वप्नो वृथा भवान्—रघु० १२।८१, ७।६१, १२।७० 2. स्वप्न, ख्वाब, सुपना आना -स्वप्नेन्द्रजालसदृशः खलु जीवलोकः- शान्ति० २।३, **स्वप्नो न माया नु मतिभ्रमो नु—द०** ६।९, रघु० १०।६० 3. शिथिलता, आलस्य, तन्द्रा। सम०—**अवस्था** सुपने की दशा, **उपम** (वि०) 1. सुपने से मिलता जुलता 2. अवास्तविक या (भ्रमात्मक स्वप्न की भांति) —**कर**, —**कृत्** (वि०) निद्रा लाने वाला, निद्राजनक, आस्वापक, **गृहम्**, —**निकेतनम्** सोने का कमरा, शयनकक्ष, —**दोषः** स्वप्नावस्था में होने वाला शुक्रपात, —**भीगम्य** (वि०) निद्रा जैसी अवस्था में केवल बुद्धि द्वारा अनुभूत होने वाला—मनु० १२।१२२,—**प्रपञ्चः** निद्रावस्था में भ्रम, स्वप्न में प्रकट होने वाला संसार, —**विचारः** स्वप्नों की व्याख्या, **शील** (वि०) जिसे नींद आ रही हो, निद्रालु, ऊंघने वाला,- **सृष्टिः** (स्त्री०) स्वप्नों की रचना, निद्रावस्था में भ्रम।

स्वप्नज (वि०) [स्वप्+नजिङ्] निद्रालु, सोने वाला, ऊंघने वाला।

स्वयम् (अव्य०) [सु+अय्+अम्] 1. आप, अपने आप (निजवाचकता के रूप में प्रयुक्त तथा प्रत्येक पुरुष में व्यवहार्य यथा मैं स्वयं, हम स्वयं, वह स्वयं-आदि, कभी कभी बल देने के लिए और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त) विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्—कु० २।५५ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्—सुभा०, रघु० १।१७, २।५६, मनु० ५।३९ 2. आत्मस्फूर्त अपने आप, अनायास, बिना किसी काष्ट या चेष्टा के, स्वयमेवोत्पद्यन्त एवंविधाः कुलपांसवो निःस्नेहाः पशवः —का० । सम०—**अर्जित** (वि०) आत्मार्जित, —**उक्तिः** (स्त्री०) 1. ऐच्छिक प्रकथन 2. सूचना, अभिसाक्ष्य (विधि में), —**ग्रहः** बलात् ग्रहण कर लेना, **ग्राह** (वि०) ऐच्छिक, स्वयं चुन लेने वाला, (—**हः**) स्वयं चुन लेना, आत्मचुनाव -कु० २।७, मा० ६।७, **जात** (वि०) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो, - **दत्त** (वि०) अपने आप दिया हुआ, (—**त्तः**) वह लड़का जिसने अपने आपको दत्तक पुत्र बनने के लिए दत्तक-ग्राही माता पिता को दे दिया, हिन्दू धर्म शास्त्र में वर्णित बारह पुत्रों में से एक,—**भूः** ब्रह्मा का नाम —शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः भर्तृ० ११९, -**भूवः** 1. प्रथम मनु 2. ब्रह्मा का नाम 3. शिव का नाम,—**भू** (वि०) आप ही आप उत्पन्न होने वाला, (—**भूः**) 1. ब्रह्मा का नाम 2. विष्णु का नाम 3. शिव का नाम 4. मूर्त 'काल' का नाम 5. कामदेव का नाम, **वरः** अपनी छांट, (दुलहिन द्वारा अपने वर का) अपने आप चुनाव, **इच्छानुरूप विवाह**,— **वरा** वह कन्या जो अपने पति का आप चुनाव करती है।

स्वर् (चुरा० उभ० स्वरयति-ते) दोष निकालना, कलंक लगाना, बुरा भला कहना, निंदा करना।

स्वर् (अव्य०) [सु+विच्] 1. स्वर्ग, वैकुण्ठ जैसा कि 'स्वर्लोक, स्वर्वेद्या में 2. इन्द्र का स्वर्ग और मृत्यु के पश्चात् पुण्यात्माओं का अस्थायी आवास 3. आकाश, अन्तरिक्ष 4. सूर्य और ध्रुवतारे के बीच का रिक्त स्थान 5. तीनों व्याहृतियों में तीसरी जिसका उच्चारण प्रत्येक ब्राह्मण अपनी दैनिक प्रार्थना में करता है, दे० 'व्याहृति'। सम० **आपगा** गंगा 1. गंगा की स्वर्ग में बहने वाली धारा, मंदाकिनी 2. आकाशगंगा, छायापथ, **गतिः** (स्त्री०) गमनम् 1. स्वर्ग में जाना, भावी आनंद 2. मृत्यु, **तरुः** (स्वर्द्रुः) स्वर्ग का एक वृक्ष, **द्रुम्** (पुं०) 1. इन्द्र का विशेषण 2. अग्नि का विशेषण 3. सोम का विशेषण, —**नदी** (स्वर्णदी) आकाशगंगा, **मणिः** एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर,— **भानुः** राहु का नाम सुधेयेऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्त चिरेण यत्—हिमांशुमाशु ग्रसते तन्नन्दिनः स्फुटं फलम् शि० २।४९, **सूदनः** सूर्य, —**मध्यम्** आकाश का मध्य बिन्दु, ऊर्ध्वबिंदु,—**लोकः** दिव्य जगत्, स्वर्गलोक, **वधूः** (स्त्री०) दिव्य कन्या, अप्सरा, **वापी** गंगा, - **वेश्या** स्वर्ग की गणिका, दिव्य परी, अप्सरा, **वैद्य** (पुं०, द्वि० व०) दो अश्विनीकुमारों का विशेषण, **सा** 1. सोम का विशेषण 2. इन्द्र के वज्र का विशेषण, **सिन्धु**=स्वर्गंगा।

स्वरः [स्वर्+अच्, स्व्+अप् वा] 1. शब्द, कोलाहल 2. आवाज -स्वरेण तस्यामभृतस्येव प्रजल्पितायामभिजातवाचि कु० १।४५ 3. संगीत के सुर, ध्वनि, लय (सुर सात हैं निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः। पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः —अमर०) 4. सात की संख्या 5. स्वर अक्षर 6. स्वराघात (यह विगती में तीन हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित) 7. श्वासवायु 8. खुर्राटे भरना। सम० **अंशः** आधा या चौथाई स्वर (संगीत० में), **अन्तरम्** दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अवकाश, क्रमभंग,—**उदय** (वि०) जिसके बाद स्वर हो, —**उपग** (वि०) जिसके पूर्व स्वर हो, **ग्रामः** सरगम, **स्वरसप्तक**, स्वरों का समूह, —**बद्ध** (वि०) ताल स्वर में बंधा हुआ गाना, **भक्तिः** (स्त्री०) र और ल् के उच्चारण में अन्तर्निविष्ट स्वर की ध्वनि जब इन अक्षरों के पश्चात् कोई ऊष्मवर्ण या कोई अकेला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यञ्जन हो (उदा० वर्ष का उच्चारण 'वरिष' है), भङ्गः 1. उच्चारण का अस्पष्टता, टूटा हुआ उच्चारण, आवाज़ का बैठ जाना, -मण्डलिका एक प्रकार की वीणा, लासिका बांसुरी, मुरली, शून्य (वि०) संगीतसुरों से रहित, बेसुरा, संगीत के ताल सुरों से हीन, संयोगः 1. स्वरों का मिल जाना 2. ध्वनि या स्वरों का मेल अर्थात् आवाज़-अन्य एवंच स्वरसंयोगः-मृच्छ० १।३, उत्तर० ३, पण्डित कौशिकश्च इव स्वरसंयोगः श्रूयते मालवि० ५. सङ्क्रमः 1. सुरों के उतार-चढ़ाव का क्रम तं तस्य स्वरसङ्क्रमं मधुगिरः श्लिष्टं व तन्त्रीस्वनम्-मृच्छ० ३।५ 2. सरगम, सन्धिः स्वरों का मेल, सामन् (पुं०, ब० व०) यज्ञीय सत्र में विशेष दिन के विशेषण।

स्वरवत् (वि०) [स्वर+मतुप्] 1. ध्वनियुक्त, निनादी 2. सुरीला 3. स्वरविषयक 4. स्वरोपघात से युक्त, सस्वर।

स्वरित (वि०) [स्वरो जातोऽस्य इतच्] 1. ध्वनियुक्त 2. ध्वनित, स्वर के रूप में बोला गया 3. उच्चरित 4. स्वरित उच्चारणचिह्न से युक्त,-तः उदात्त (ऊँचे) और अनुदात्त (नीचे) के बीच का स्वर समाहारः स्वरितः पा० १।२।३१, दे० इस पर सिद्धा०।

स्वरुः [स्वृ+उ] 1. धूप 2. यज्ञीयस्तम्भ का एक अंश 3. यज्ञ 4. वज्र 5. बाण।

स्वरुस् (पुं०) [स्वृ+उस्] वज्र।

स्वर्गः [स्वरिष्यते-गै+क, सु+ऋज्+घञ्] वैकुंठ इन्द्र का स्वर्ग, बहिश्चत-अहो स्वर्गादधिकतरं निर्वृतिस्थानम्-श० ७। समः-आपगा स्वर्गीय गंगा, -ओकस् (पुं०) सुर, देव, गिरिः स्वर्गीय पहाड़, सुमेरु, -द, -प्रद (वि०) स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला, -द्वारम् स्वर्ग का दरवाज़ा, वैकुंठ का दरवाज़ा स्वर्ग में प्रवेश स्वर्गद्वारकपाटपाटनपटुर्यौ-सौऽपि नोपाजितः-भर्तृ० ३।१०, -पतिः, भर्तृ (पुं०) इन्द्र, -लोकः 1. दिव्य प्रवेश 2. वैकुंठ,-वधूः, स्त्री (स्त्री०) दिव्य बाला, स्वर्ग की परी, अप्सरा -स्वर्गस्त्रीणां परिष्वङ्गः कथं मर्त्येन लभ्यते,—साधनम् स्वर्ग प्राप्त करने का उपाय।

स्वर्गिन् (पुं०) [स्वर्गोऽस्यास्य भोग्यत्वेन इनि] 1. सुर, देव, अमर, त्वमपि वितनुयाः स्वर्गिणः प्रीयमाणम् श० ७।३४, मेघ० ३० 2. मृतक, मरा हुआ पुरुष।

स्वर्गीय, स्वर्ग्य (वि०) [स्वर्ग+छ, यत् वा] 1. स्वर्ग का, दिव्य, दैवी 2. स्वर्ग को ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला मनु० ४।१३, ५।४८।

स्वर्णम् [सुष्ठु अर्णा वर्णा यस्य] 1. सोना 2. सोने का सिक्का। समः अरिः गंधक,-कणः, -कणिका सोने के दाने, काय (वि०) सुनहरी शरीर वाला, (—यः) गरुड़ का नाम, कारः सुनार,-गैरिकम् गेरु, लाल खड़िया, चूडः 1. नीलकंठ 2. मुर्गा,—जम् रांगा, —दीधितिः अग्नि, पक्षः गरुड़, पाठकः सुहागा, —पुष्पः चम्पक वृक्ष,— बंधः सोना गिरवी रखना, -भृङ्गारः स्वर्णपात्र, माक्षिकम् सोनामक्खी नाम का एक खनिज पदार्थ, -रेखा, लेखा सोने की लकीर, -वणिज् (पुं०) 1. सोने का व्यापारी 2. सर्राफ़, -वर्णा हल्दी।

स्वर्व् (भ्वा० आ० स्वर्वते) चलना, स्वाद लेना।

स्वल् (भ्वा० पर० स्वलति) जाना, हिलना-जुलना।

स्वल्प (वि०) [सुष्ठु अल्पं -प्रा० स०, म० अ० स्वल्पीयस्, तथा उ० अ० स्वल्पिष्ठ] 1. बहुत छोटा या थोड़ा, सूक्ष्म, निरर्थक 2. बहुत कम। समः-आहारः (वि०) बहुत कम खाने वाला, संयमी, मिताहारी, -कङ्कु चौल का एक भेद बल (वि०) अत्यंत दुर्बल या कमज़ोर,—विषयः 1. नगण्य बात 2. छोटा भाग+व्ययः अत्यन्त कम खर्च, दरिद्रता,—वीड (वि०) बहुत कम लज्जा वाला, बेशर्म, निर्लज्ज, शरीर (वि०) बहुत छोटे क़द का, ठिगना।

स्वल्पक (वि०) [स्वल्प+कन्] बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, बहुत कम।

स्वल्पीयस् (वि०) [स्वल्प+ईयसुन् 'स्वल्प' की म० अ०] बहुत कम, अपेक्षाकृत छोटा, अपेक्षाकृत सूक्ष्म।

स्वल्पिष्ठ (वि०) [स्वल्प+इष्ठन्, 'स्वल्प' की उ० अ०] अत्यन्त कम, सबसे छोटा, अत्यन्त सूक्ष्म।

स्वशुरः [=श्वशुरः] अपने पति या पत्नी का पिता, श्वसुर, तु० 'श्वशुर'।

स्वसृ (स्त्री०) [सु+अस्-ऋन्] बहन, भगिनी —स्वसारमादाय विदर्भनाथः पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव -रघु० ७।१,२०।

स्वस्तृ (वि०) [स्व+सु+क्विप्] अपनी इच्छानुसार जाने या चलने-फिरने वाला।

स्वस्क् (भ्वा० आ० स्वस्कते) दे० 'ष्वक्'।

स्वस्ति (अव्य०) [सु+अस्+क्तिच्, या अस्तीति विभक्तिलक्षणम् अव्ययम्, प्रा० स०] अव्यय, इसका अर्थ है 'क्षेम, कल्याण हो' आशीर्वाद, जय जयकार, जाते समय की नमस्ते (संप्र० के साथ) स्वस्ति भवते श० २, स्वस्त्यस्तु ते रघु० ५।१७ (प्रायः अलंकारारम्भ में प्रयुक्त)। समः-अयनम् 1. समृद्धि के दिलाने वाला उपाय 2. मन्त्र पाठ या प्रायश्चित्त द्वारा पाप को हटाना 3. दान स्वीकार करने के बाद ब्राह्मण का धन्यवाद करना प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनं प्रयुज्य—रघु० २।७०, -उक्तिः, -भावः शिव के विशे-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण, ...मुखः 1. पत्र 2. ब्राह्मण 3. बन्दी, स्तुति पाठक, —वाचनम्, वाचनकम्, वाचनिकम् 1. यज्ञ या कोई मांगलिक कार्य आरम्भ करते समय किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य 2. फूलों द्वारा आशीर्वाद या बधाई देने का विशेष कर्म, वाच्यम् बधाई, आशीर्वाद।

स्वस्तिकः [स्वस्ति शुभाय हितं क] 1. एक मंगल चिह्न जो किसी शरीर या पदार्थ पर बनाया जाता है (धूप्) 2. कोई मंगलद्रव्य 3. चार मार्गों का मिलना 4. भुजाओं को व्यत्यस्त रूप से छाती पर रखना जिससे कि एक व्यत्यस्त (×) चिह्न बने ...स्तनविनिहितहस्तस्वस्तिकाभिर्वधूभिः माघ ४।१०, शि० १०।४३ 5. एक विशेष शकल का महल 6. चौराहे से बना हुआ एक त्रिभुजाकार चिह्न 7. एक तरह का पिष्टक 8. त्रिपथी, त्र्यभिचारी 9. लहसुन, ...कः, ...कम् 1. एक जिनेश रूप का मन्दिर या भवन जिसके सामने चबूतरा बना हो 2. एक योगासन।

स्वस्रीयः, स्वस्रेयः [स्वसृ+छ, ढक् वा] भानजा, बहन का पुत्र।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी [स्वस्रीय+टाप्, स्वस्रेय+ङीप्] भानजी, बहन की पुत्री।

स्वागतम् [सु+आ+गम्+क्त] शुभागमन, सुखद अगवानी (मुख्यतः संप्र० में रखे हुए व्यक्ति को अभिवादन करने में प्रयुक्त) स्वागतं देव्यै ...मालवि० १, (तस्मै) प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ...मेघ० ४, स्वागतं स्वानधीकारज्ञ प्रभादेवलम्भ्य वः। युगपद् युगयाहुम्य. प्राप्तेभ्यः प्राज्यविक्रमाः कु० २।१८।

स्वाङ्किकः [स्वाङ्कि+ठक्] ढोल बजाने वाला।

स्वाच्छन्द्यम् [स्वच्छन्दस्य भावः ष्यञ्] अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की शक्ति, स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता —कन्याप्रदानं स्वाच्छन्द्यादासुरो धर्म उच्यते मनु० ३।३१ (स्वाच्छन्द्येन, स्वाच्छन्द्यतः अनायास कर, स्वेच्छा से)।

स्वातन्त्र्यम् [स्वतन्त्र+ष्यञ्] इच्छाशक्ति की स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, —न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति मनु० ९।३, न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रियाः याज्ञ० १।८५।

स्वातिः,—ती (स्त्री०) [स्व+अत्+इन्, पक्षे ङीप्] 1. सूर्य की एक पत्नी 2. तलवार 3. शुभ नक्षत्रपुंज 4. पन्द्रहवां नक्षत्र जो जून माना गया है स्वात्यां सागरवृद्धिरम्भुवर्षं सम्पोषिकं जायते—भर्तृ० २।६७। सम० योगः स्वाती का (चन्द्रमा के साथ) योग।

स्वाद् दे० 'स्वद्'।

स्वादः, स्वादनम् [स्वद् (स्वाद्)+घञ्, ल्युट् वा] 1. मजा, रस 2. चखना, खाना, पीना 3. पसन्द करना, मजे लेना, उपभोग करना 4. मधुर करना।

स्वादिमन् (पुं०) [स्वाद+इमनिच्] सुस्वादुता, माधुर्य।

स्वादिष्ठ (वि०) [स्वादु+इष्ठन्, 'स्वादु' की उ० अ०] अत्यन्त मधुर, सबसे मीठा कि स्वादिष्ठं जगत्यस्मिन् सदा सद्भिः समागमः।

स्वादीयस् (वि०) [स्वादु+ईयसुन्, 'स्वादु' की म० अ०] अपेक्षाकृत अधिक मीठा, बहुत मधुर—काव्यामृतरसास्वादः स्वादीयानमृतादपि।

स्वादु (वि०) (स्त्री०—दु—द्वी) [स्वद्+उण्, म० अ० स्वादीयस्, उ० अ० स्वादिष्ठ] 1. मधुर, सुहावना, चखने में अच्छा, जायकेदार, मजेदार, रुचिकर, मीठा —तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि —भर्तृ० ३।९२, मेघ० २४ 2. सुखद, रुचिकर, सुन्दर, प्रिय, मनोहर (पुं०) मधुररस, स्वाद की मिठास, मजा 2. शीरा, राब, (नपुं०) माधुर्य, मजा, रस ...कवि: करोति काव्यानि स्वादु जानाति पण्डितः —सुभा०,—दुः (स्त्री०) अंगूर। सम० अन्नम् मीठा या चुना हुआ भोजन, स्वादिष्ट खाद्य, पक्वान्न, —अम्लः अनार का पेड़,—खण्डः 1. किसी मीठी चीज का टुकड़ा 2. गुड़, राब, ...फलम् बेर, बदर, मूलम् गाजर, रसा 1. द्राक्षा 2. शतावरी पौधा 3. काकोली मूल 4. मदिरा 5. अंगूर, शुद्धम् 1. सेंधा नमक 2. समुद्री नमक।

स्वादी [स्वादु+ङीष्] द्राक्षा, अंगूर।

स्वानः [स्वन्+घञ्] ध्वनि, कोलाहल।

स्वापः [स्वप्+घञ्] 1. निद्रा, सोना उत्तर० १।३७, 2. सुषुप्ति अवस्था, स्वप्न 3. निद्रालुता, ऊंघना, आलस्य 4. लकवा, कम्पवायु, मूत्र हो जाना 5. किसी एक नाड़ी पर दबाव से अस्थायी या आंशिक असंवेदता, जड़ता।

स्वापतेयम् [स्वापतेरागतं ढक्] धन, दौलत, सम्पत्ति—स्वापतेयकृते मर्त्याः, किं किं नाम न कुर्वते पंच० २।१५६, शि० १४।९।

स्वापदः दे० 'श्वापद'।

स्वाभाविक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वभावादागतः—ठक्] अपनी निजी प्रकृति से संबद्ध, अन्तर्जात, अन्तर्हित, विशेष, प्राकृतिक - स्वाभाविकं विनीतत्वं तेषां दिनयकर्मणाम्। मुमूर्च्छुः सहजं तेजो हविषेव हविर्भुजाम् रघु० १०।७९, ५।६९, कु० ६।७१, कः (पुं०, व० व०) बौद्धों का एक सम्प्रदाय जो सभी वस्तुओं को प्रकृति के नियमानुसार बनी मानते हैं।

स्वामिता,—त्वम् [स्वामि+तल्+टाप्, त्व वा] 1. मालिकपना, प्रभुत्व, मिल्कियत के अधिकार 2. एकायत्तता, प्रभुता।

स्वामिन् (वि०) (स्त्री० नी) [स्व-अस्त्यर्थे-मिनि, दीर्घः] एकायत्त अधिकारों से युक्त —(पुं०) 1. स्वामी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मालिक, 2. प्रभु, स्वत्वाधिकारी --रघुस्वामिनः सच्चरित्र--विक्रमांक० १८।१०७ 3. प्रभु, राजा, नरेश 4. पति 5. गुरु 6. विद्वान् ब्राह्मण, अत्यन्त ऊँचे दर्जे का धार्मिक पुरुष या संन्यासी (इस अर्थ में यह शब्द प्रायः नाम के साथ जुड़ता है) 7. कार्तिकेय का विशेषण 8. विष्णु का विशेषण 9. शिव का विशेषण 10. वात्स्यायन मुनि का विशेषण 11. गरुड़ का विशेषण। सम० उपकारकः घोड़ा, कार्यम् किसी राजा या प्रभु का कार्य, पालः (पुं०, द्वि० व०) (पशुओं का) मालिक और रखवाला—मनु० ८।५, —भावः मालिक या प्रभु की अवस्था, मालिकपना, वात्सल्यम् पति या स्वामी के लिए स्नेह,—सद्भावः 1. मालिक या प्रभु की सत्ता 2. मालिक या प्रभु की अच्छाई, सेवा 1. स्वामी या मालिक की सेवा, टहल 2. पति का आदर, सम्मान।

स्वाम्यम् [स्वामिन्+ष्यञ्] 1. स्वामित्व, प्रभुता, मालिकपना 2. संपत्ति का अधिकार या हक़ 3. राज्य, सर्वोपरिता, शासन।

स्वायंभुव (वि०) (स्त्री०—वी) [स्वयंभू+अण्] 1. ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला—कु० २।१ 2. ब्रह्मा से उत्पन्न, वः प्रथम मनु का विशेषण (क्योंकि वह ब्रह्मा का पुत्र था)।

स्वारसिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वरस+ठक्] अन्तर्वर्ती रस या माधुर्य से ओतप्रोत (काव्यरस)।

स्वारस्यम् [स्वरस+ष्यञ्] 1. स्वाभाविक रस या श्रेष्ठता का रखने वाला 2. लालित्य, योग्यता।

स्वाराज् (पुं०) [स्व+राज्+क्विप्] इन्द्र का विशेषण।

स्वाराज्यम् [स्वाराज+ष्यञ्] 1. स्वर्ग का राज्य, इन्द्र का स्वर्ग 2. स्वप्रकाशमान ब्रह्म से तादात्म्य।

स्वारोचिष, **स्वारोचिस्**[पुं०][स्वरोचिषः अपत्यम् +अण्] द्वितीय मनु का नाम—दे० 'मनु' के अन्तर्गत।

स्वालक्षण्यम् [स्वलक्षण+ष्यञ्] विशेष लक्षण, स्वाभाविक अवस्था, खासियत, मनु ९।१९।

स्वाल्प (वि०) (स्त्री०—ल्पी) [स्वल्प+अण्] 1. थोड़ा, छोटा 2. कुछ, कम, रूपम् 1. थोड़ापन, छुटपन 2. संख्या का छोटापन।

स्वास्थ्यम् [स्वस्थ—ष्यञ्] 1. आत्मनिर्भरता, स्वाश्रयता 2. साहस, कृतसंकल्पता. दिलेरी, दृढ़ता 3. तन्दुरुस्ती, नीरोगता 4. समृद्धि, कुशलक्षेम, सुखचैन 5. आराम, संतोष, हिम्मत : लब्ध्वा मया स्वास्थ्यम् शा० ४।

स्वाहा [सु+आ+हे+डा] 1. सभी देवताओं की दिया किसी विचार के दी जाने वाली आहुति 2. अग्नि की पत्नी का नाम (अव्य०) देवताओं के उद्देश्य से आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द—इन्द्राय स्वाहा अग्नये स्वाहा। सम०—कारः स्वाहा शब्द का उच्चारण करना—स्वाहास्वधाकारविवक्षितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि, पतिः, प्रियः अग्नि,—भुज् (पुं०) सुर, देव।

स्विद् (अव्य०) [स्विद्+क्विप्] प्रश्नवाचक या पूच्छापरक निपात, प्रायः 'सन्देह' 'आश्चर्य' को प्रकट करता है, इसका अर्थ है 'क्या' 'है' 'ए' 'हा, ओ, हो' की ध्वनि 'क्या ऐसा हो सकता है' आदि; इस अर्थ में तथा अनिश्चयार्थ प्रकट करने के लिए इसे प्रश्नवाचक सर्वनाम के साथ जोड़ दिया जाता है कास्विदवगुण्ठनवती नातिपरिस्फुटशरीरलावण्या श० ५।१३, मेघ० १४, कभी कभी यह पृथक् रूप से 'या' और 'अथवा' अर्थ को प्रकट करता है; कभी कभी 'नु' 'उत' और 'वा' के साथ जुड़कर; दे० कि० ८।३५, १२। १५, १३।८, १४।६०, 'आहो' के साथ भी।

स्विद् I (दिवा० पर० स्विद्यति, स्विदित या स्विन्न) स्वेद आना, पसीना आना स्विद्यति कूणति वेल्लति —काव्य० १०, उत्तर० ३।४१, कु० ७।७७, मा० १।३५, स त्वां पश्यति कंपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति गीत० ११।

II (भ्वा० आ० स्वेदते, स्विन्न या स्वेदित) 1. मालिश किया जाना 2. चिकनाया जाना 3. विक्षुब्ध होना —प्रेर० (स्वेदयति ते) 1. पसीना लाना 3. गरम करना।

स्वीकरणम्, स्वीकारः, स्वीकृतिः [स्व+च्वि+कृ+ल्युट् (घञ्), क्तिन् वा] 1. लेना, ग्रहण करना 2. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना, हामी, प्रतिज्ञा 1. दान, पाणिग्रहण, विवाह।

स्वीय (वि०) [स्व+छ] अपना, अपना निजी—लोकालोकविसारिणेव विहिता स्वीयं विशुद्धं यशः—सा० द० ९७।

स्वृ (भ्वा० पर० स्वरति, इच्छा० सिस्वरिषति, सुस्वर्षति) 1. शब्द करना, सस्वर पाठ करना 2. प्रशंसा करना 3. पीड़ा देना या पीड़ित होना 4. जाना, **अभि**—, **प्र**—, शब्द करना **सम्**—, पीड़ा देना (आ०) भट्टि० ९।२८।

स्वृ (ऋधा० प० स्वृणाति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्वेक् (स्वा० आ० स्वेकते) जाना।

स्वेदः [स्विद् भावे घञ्] पसीना, पसेऊ, श्रमबिंदु —अङ्गुलिस्वेदेन दूष्येरक्षराणि—विक्रम० २। सम० उदम्,—उदकम् जलम् पसीना, श्रमकण,—चूषकः शीतल मंद पवन, ठंडी हवा (पसीना सुखाना),—ज (वि०) ताप या भाप से उत्पन्न होने वाला, पसीने से उत्पन्न होने वाला (जूं, खटमल आदि जीव)।

स्वैर (वि०) [स्वयम् ईरयति ईर्+अण् वृद्धिः] 1. मनमाना आचरण करने वाला, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, अनियन्त्रित, निरंकुश—वद्धमिव स्वैरगतिर्जनमिह सुखसंगि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नमर्वामि--श० ५।११, अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः --रघु० २।५ 2. स्वतंत्र, असंकोच, विदबस्त, जैसा कि 'स्वैरालाप' मुद्रा० ४।८ 3. मन्थर, मृदु नक्र मुद्रा० १।२ 4. सुस्त, मंद 5. अपनी मर्जी चलाने वाला, ऐच्छिक, यथाकाम,--रम् स्वच्छंदता, स्वेच्छाचारिता, --रम् (अव्य०) 1. इच्छा के अनुसार, मनपसंद, आराम से - सार्थाः स्वैरं स्वकीयेषु वैरवेश्मसु विश्वास्यिन्--रघु० १७।६४ 2. अपने आप, स्वतः 3. शनैः शनैः, नम्रता पूर्वक, मृदुता के साथ उत्तर० ३।२ 4. आहिस्ता से, धीमी आवाज में, अस्पष्ट (विप० स्पष्ट) --पश्चात्स्वैरं गज इति किल व्याहृतं सत्यवाचा--वेणी० ३।९।

स्वैरता,--त्वम् [स्वैर+तल्+टाप्, त्व वा] स्वेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता।

स्वैरिणी [स्वैरिन्+ङीप्] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी याज्ञ० १।६७।

स्वैरिन् (वि०) [स्वेन ईप्सितं शीलमस्य- स्व+ईर्+णिनि] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, निरंकुश।

स्वैरिभ्री दे० 'स्वैरिणी'।

स्वोरसः (पुं०) तैलीय पदार्थ सिल पर पीसने के बाद उस में लगा हुआ (उस पदार्थ का) अंश या तलछट।

स्वोवसीयम् (नपुं०) आनन्द, समृद्धि (विशेषकर भावी जीवन के विषय में)।

ह

ह (अव्य०) [हा--ड] बलबोधक निपात जो पूर्ववर्ती शब्द पर बल देता है, इसका अर्थ है 'सचमुच' यथार्थ में निश्चय ही आदि, परन्तु कभी कभी इसका उपयोग बिना किसी विशेष अर्थ को प्रकट किये केवल पादपूर्ति के निमित्त भी किया जाता है, विशेष कर वैदिक साहित्य में--तस्य ह जातो जायो बभूवुः, तस्य ह पर्वतनारदौ गृह ऊषतुः आदि--इन, यह कभी कभी संबोधन के लिए भी प्रयुक्त होता है, तिरस्कार या उपहास के लिए विरल प्रयोग---(पुं०) 1. शिव का एक रूप 2. जल 3. आकाश 4. रुधिर।

हंसः [हस्+अच्, पृषो० वर्णागमः, भवेद्वर्णागमात् हंसः -सिद्धा०] 1. राजहंस, मराल, मुर्गाबी, कारंडव-हंसाः संप्रति पाण्डवा इव वनादज्ञातवासार्थं गताः - मृच्छ०५।६, न लोभेन समाभन्ते हंसमध्ये बको यथा-सुभा०, रघु० ३।१०, ५।१२, १७।२५ (इस पक्षी का वर्णन जैसा कि संस्कृत के कवियों ने किया है, अधिकतर काव्यात्मक है, उसे ब्रह्मा का वाहन बताया जाता है, बरसात के आरंभ में उसे मानसरोवर की ओर उड़ता हुआ बताया जाता है नृ० 'मालस'। एक सामान्य कविसमय के अनुसार हंस को दूध और पानी को पृथक्-पृथक् करने वाला विशेष शक्ति संपन्न पक्षी माना जाता है उदा० सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमिश्रात् पंच० १, हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः हि० ६।२७, नीरक्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्। विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः भामि० १।१३, दे० भर्तृ० २।१८ भी 2. परमात्मा, ब्रह्मा 3. आत्मा, जीवात्मा 4. प्राण वायुओं में से एक 5. सूर्य 6. शिव 7. विष्णु 8. कामदेव 9. राजा जो महत्त्वाकांक्षी न हो 10 विशेष संप्रदाय का संन्यासी 11. दीक्षागुरु 12. ईर्ष्या, द्वेष से हीन व्यक्ति 13. पर्वत। सम०--अङ्गिः सिंदूर, अधिरूढा सरस्वती का विशेषण, --अभिख्यम् चाँदी, कांता हंसिनी, कीलकः एक प्रकार का रतिबंध,--गति (वि०) हंस जैसी चाल चलने वाला, राजसी ढंग से इतरा कर चलने वाला -गद्गदा मधुरभाषिणी स्त्री- गामिनी 1. हंस की सी खुशदार गति वाली स्त्री मनु० ३।१० 2. ब्रह्माणी --पूलः, लम् हंस के मुलायम पर, वाहनम् अगर की लकड़ी,--नादः हंस का कलरव, नादिनी मधुरभाषिणी स्त्रियों का भेद (पतली कमर, बड़े नितंब, गज की चाल और कोयल के स्वर वाली) सुंदर स्त्री गजेन्द्रगमना तन्वी कोकिलालापसंयुता, नितंबे गुर्विणी या स्यात्सा स्मृता हंसनादिनी,--माला हंसों की पंक्ति --कु० १।३०, युवन् (पुं०) जवान हंस, रथः, वाहनः ब्रह्मा के विशेषण, राजः हंसों का राजा, बड़ा हंस,--लोभकरम्, कासीस,--लोहकम् पीतल, --श्रेणी हंसों की पंक्ति।

हंसकः [हंस--कन्, हंस+क+क वा] 1. कारंडव, मराल 2. पैरों का आभूषण, नूपुर, पायजेब स्मरित इव सन्निधानपरापतत्पदितहंसकभणया विरेजुः--शि० ७।२३, (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' में भी प्रयुक्त हुआ है, दूसरे अर्थों के लिए देखो ऊ० 'हंस')।

हंसिका, हंसी [हंस+कन्+टाप्, इत्वम्, हंस+ङीप्] हंसनी, मादा हंस।

हंहो (अव्य०) [हम् इत्यव्यक्तं जहाति--हम्+हा+डो] संबोधनात्मक अव्यय जो आवाज देने में प्रयुक्त होता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है जैसे अंग्रेजी का 'हल्लो' (Hallo) शब्द हंहो चित्तमयचित्तचन्द्रमण्यः संदर्धयध्वं रसान् —चन्द्र० १।२ 2. तिरस्कार एवं अभिमानसूचक अव्यय। 3. प्रश्न वाचक अव्यय (नाटकों में इस शब्द का प्रयोग मध्यम पात्रों द्वारा प्रायः संबोधन के रूप में किया जाता है हंहो ब्राह्मण मा कुरुष्व मुद्रा० १)।

हंकः [हंक् इति अव्यक्तं कायति-हंक्+कै+क] हाथियों को बुलाना।

हंजे हंजे [हंज् इति अव्यक्तं जयतेऽत्र हंज्+अच्+टाप् (डे)] संबोधनात्मक अव्यय जो किसी दासी या नौकरानी को बुलाने में प्रयुक्त होता है हंजे कंचनमाले अहम् ईदिसी कडुआसिणी वृत्त० ३।

हट् (भ्वा० पर० हटति, हटित) चमकना, उज्ज्वल होना।

हट्टः [हट्+टट्, टच् वा] बाजार, हाट, मेला। सम०—**चौरकः** वह चोर जो बाजार से चीजें चुराये गंठकठा, **विलासिनी** 1. वारांगना, वेश्या, रंडी 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य।

हठः [हठ्+अच्] 1. प्रचण्डता, बल 2. अत्याचार, लूट-खसोट, (**हठेन, हठात्** (क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त) बलपूर्वक, प्रचंडता से, अचानक, दुराग्रहपूर्वक अम्बालिका च चण्डवर्णणा हठात् परिणेतुमात्मभवनमानीत दश०, वानरान् वारयामास हठेन मधुरेण च रामा०। सम०—**योगः** योग की एक विशेष-रीति या भावचिन्तन व मनन का अभ्यास ('राजयोग' से भिन्नता दिखाने के लिए इसका नाम 'हठयोग' पड़ा; इसका अभ्यास भी कुछ कठिन है, इसके अनुपालन की अनेक रीतियाँ हैं, उदा० एक पैर के बल खड़ा होना, हाथों का ऊपर किये रहना, सिर ऊपर करके धूम्रपान करना आदि),—**विद्या** बलपूर्वक मनन करने का विज्ञान।

हडिः [हड्+इन्, पृषो०] काठ की बेड़ी।

हडि (डु) **कः, हडिकः** [हड्+इकक्, पृषो०, हड्+इन्, पृषो०, कन् वापि] अत्यंत नीच जाति का पुरुष, भंगी आदि।

हडुक्म् [हड्+डु पृषो०] हड्डी। सम० **जम्** मज्जा।

हण्डा (अव्य०) [हन्+डा] संबोधनात्मक अव्य० जो निम्न श्रेणी की स्त्रियों को बुलाने में, या निम्नतम जाति (भंगी आदि) के व्यक्तियों द्वारा आपस में एक दूसरे को संबोधित करने में प्रयुक्त होता है हंडे हंडे हलाहलाने नीचा चेटीं सखीं प्रति अमर०, स्त्री० एक बड़ा मिट्टी का बर्तन।

हण्डिका, हण्डी [हण्डा+कन्+टाप्, इत्वम्, हण्ड+ङीष्] हांडी, मिट्टी का एक बर्तन।

हंडे (अव्य०) [हन्+डे] दे० 'हंडा (अव्य०)'।

हत (भू० कृ० कृ०) [हन्+क्त] 1. मारा गया, वध किया गया 2. चोट पहुँचाई गई, प्रहार किया गया, क्षतिग्रस्त 3. नष्ट, बरबाद 4. वञ्चित, हीन, रहित 5. निराश भग्नाश 6. गुणित—दे० हन्, 'निकृष्ट' 'अभिशप्त' 'दयनीय' 'अधम' अर्थों को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है अनुशयदुःखायदं हतहृदयं संप्रति विवृद्धम् श० ६।६, कुर्यामुपेक्षां हतजीवितेऽस्मिन्—रघु० १४।६५, हतविधिलसितानां हि विचित्रो विपाकः—शि० ११।६४। सम० **आश** (वि०) 1. आशा से रहित, निराश, धनस्ताश 2. दुर्बल, अशक्त 3. क्रूर, निर्दय, 4. बांझ 5. नीच, दुष्ट, पाजी, अभिशप्त, दुर्वृत्त, **कल्मष** (वि०) कांटों से मुक्त, शत्रुओं से रहित, —**चित्त** (वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ,—**तिथ** (वि०) घुंघला —रघु० ३।१५,—**दैव** (वि०) हतभाग्य, भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त,—**प्रभाव** (वि०) वीर्य (वि०) शक्तिहीन, निर्वीर्य, बलहीन,—**बुद्धि** (वि०) ज्ञान से वञ्चित, बेहोश, **भाग, भाग्य** (वि०) भाग्यहीन, बदकिस्मत, —**मूर्ख** बड़ा मूर्ख, बुद्धू, **लक्षण** (वि०) शुभलक्षणों से विरहित, अभागा, **शेष** (वि०) जीवित बचा हुआ,—**श्री,-संपद्** (वि०) जिसका वैभव नष्ट हो गया हो, धन के न रहने पर जो दरिद्र हो गया हो, **साध्वस** (वि०) जिसका भय नष्ट हो गया हो, भयमुक्त, निर्भय।

हतक (वि०) [हत+कन्] दुःखी, दुःशील, दुर्वृत्त नीच, दुष्ट (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त)—न खलु विदितास्ते तत्र नित्रसन्तश्चाणक्यहतकेन मुद्रा० २, दूषितात्मस्थ परिभूतास्थ रामहतकेन उत्तर० १,—**कः** नीच पुरुष, कायर।

हतिः (स्त्री०) [हन्+क्तिन्] 1. हत्या, विनाश 2. प्रहार करना, घायल करना 3. आघात, प्रहार 4. नाश, असफलता 5. वृद्धि, दोष 6. गुणा।

हत्नुः [हन्+क्त्नु] 1. शस्त्र 2. रोग या बीमारी।

हत्या [हन् भावे क्यप्] वध करना, मार डालना, संहार, कतल, जघन्य वध जैसे भ्रूणहत्या, गोहत्या, आदि।

हद् (भ्वा० आ० हदते, हन्न) पुरीषोत्सर्जन, मलत्याग करना, इच्छा० (जिहत्सते)।

हदनम् [हद्+ल्युट्] पुरीषोत्सर्ग, मलत्याग।

हन् (अदा० पर० हन्ति, हत, कर्मवा० हन्यते, प्रेर० घातयति—ते, इच्छा० जिघांसति) 1. मार डालना, वध करना, नाश करना, प्रहार कर देना क्वचश्च हूणगण्डस्थलिमुखानां रणे हताः उत्तर० २।१५, हतमपि च हन्त्येव मदनः—भर्तृ० ३।१८ 2. आघात करना, पीटना —चण्डी चण्डं हन्तुमभ्युद्यता मां विद्युद्दाम्ना मेघराजीव विन्ध्यम्—मालवि० ३।२०, शि० ७।५६ 3. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, संताप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देना जैसा कि 'काभहत' में 4. डाल देना, छोड़ देना, —भर्तृ० २।७७ 5. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —अम्भोजिनीवनविलासविलासमेव हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता—भर्तृ० २।४८ 6. जीतना, पछाड़ देना, पराजित करना, परास्त करना --विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि हन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति सुभा० 7. विघ्न डालना, बाधा डालना 8. नष्ट करना, बिगाड़ना—कि० २।३७ 9. उठाना तुरगखुरहतस्था हि रेणुः भ० १।३२ 10. गुणा करना (गणित में) 11. जाना (काव्य में इसका इस अर्थ में प्रयोग विरल है, और जब कभी प्रयुक्त होता है तो वह काव्य का एक दोष माना जाता है) उदा० कुजे हन्ति कृशोदरी—सा० द० ७, मा. तीर्थान्तरेषु स्नानेन समुपार्जितसत्कृतिः। सुरस्रोतस्विनीमेघं हन्ति संप्रति सादरम्—काव्य० ७, (असमर्थत्व' दोष का उदाहरण), अति - ,अत्यन्त क्षतिग्रस्त करना, अन्तर् बीच में प्रहार करना, अप , 1. हटाना, पीछे धकेलना, नष्ट करना, वध करना 2. दूर करना, हटाना —न तु खलु तपोजनोचितां शक्तिं करोत्यपहन्ति वा —उत्तर० २।४, श० ४।७ 3. आक्रमण करना, बलात् ग्रहण करना, अभि--,1. प्रहार करना, आघात करना (आलं० से भी) पीटना--मा० १।३९, मालवि० ५।३ 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, हत्या करना, नष्ट करना 3. प्रहार करना, पीटना (ढोल आदि) भग०--१।१३ 4. आक्रान्त करना, ग्रस्त कर लेना, परास्त करना. अव—, 1. प्रहार करना, मारना, वध करना 2. नष्ट करना, हटाना 3. (अनाज की भांति) कूटना, आ—, 1. आघात पहुँचाना. प्रहार, करना, पीटना—कुट्टिमाजघान का०, कि० ७।१७ (आ० माना जाता है जब पीटा जाने वाला अपना ही कोई अंग हो—आहते शिरः --सिद्धा०, परन्तु भारवि कहता है 'आजघ्नें विषमविलोचनस्य वक्षः—कि० १७।६३, भट्टि० ८।१५, ५।१०२) रघु० ४।२३, १२।७७, कु० ४।२५, ३०, 2. प्रहार करना, (घंटी आदि) बजाना, (ढोल आदि) पीटना, भट्टि० १।२७ १७।७, मेघ० ६६, रघु० १७।११, उद् , 1. उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना 2. फूलना, घमंडी होना, दे० उद्धत, उप , 1. प्रहार करना, आघात करना 2. बरबाद करना क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, वध करना लक्ष्मी चोपहतियते भट्टि० १६।१२, ५।१२, भग० ३।२४ 3. पीड़ित करना, ग्रस्त करना, परास्त करना, उपकला दारिद्र्योपहत, मूर्खोपहत, कामोपहत आदि कु० ५।७६, भर्तृ० २।२६. नि , मार डालना, नष्ट करना भट्टि० २।३४, ६।१०, रघु० ११।७१, धाज्ञ० ३।२६२ 2. प्रहार करना, आघात करना, --तानेव शामर्पतया निजघ्नुः रघु० ७।४४, मेघ० ७।२७ 3. जीतना, हराना--दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या--पंच० १।३६१ 4. पीटना, (ढोल आदि) बजाना, भट्टि० १४।२ 5. प्रतीकार करना, निष्फल करना, भग्नाश करना रघु० १२।९२ 6. (रोग आदि की) चिकित्सा करना 7. अवहेलना करना, 8. हटाना, दूर करना, कि० ५।३६. परा- , 1. जबाबी वार करना, प्रत्याघात करना, पछाड़ देना, पीछे धकेलना, निवारण करना, परास्त कर देना, खदेड़ देना—दैवं यत्पौरुषपराहतं --राम० 2. आक्रमण करना, धावा बोलना कटाक्षपराहतं वदनपङ्कअम् मा० ७ 3. टक्कर मारना, प्रहार करना, प्र , 1. वध करना, कतल करना, प्राणान्तिक रक्षांसि येनाप्तानि वने मम। न प्रहृतम: कथं पापं वद पूर्वापकारिणम्—भट्टि० ९।१०२ 2. प्रहार करना, पीटना. आघात करना -गदाप्रहततनुः 3. प्रहार करना, पीटना, (ढोल आदि) रघु० १९।१५, मेघ० ६४, प्रति—,वध करना भट्टि० २।३५, प्रति--, जबाबी वार करना, बदले में प्रहार करना (तं) विध्यन्तमुद्धृतशरः प्रतिहन्तुमीषुः --रघु० ९।५०, 2. हटाना, परे करना, रोकना, विरोध करना, मुकाबला करना—तोयस्येवाप्रतिहतरयः मेकलं सेनुमीषुः - उत्तर० ३।२६, प्रतिहतविक्रमाः क्रियाः समवलोक्य - शि० १।१३, मेघ० २०, कु० २।४८, विक्रम० २।१ 3. हटाना, खदेड़ना, ढकेलना 4. दूर करना, नष्ट करना यत्तत् पापं प्रतिजहि जगन्नाथ तन्मम्य - मा० १।३ 5. प्रतीकार करना, उपचार करना, वि--, 1. वध करना, कतल करना, नष्ट करना, विध्वस्त करना, प्रहार करना (अलं) सहसा संहृतिमहसां विहन्तुमः कि० ५।१७. 2. प्रहार करना, जोर से आघात करना 3. अवरोध करना, रुकावट डालना. विरोध करना, मुकाबला करना --विघ्नन्ति रक्षांसि वने क्रतूंश्च - भट्टि० १।१९. रघु० ५।२७ 4. अस्वीकार करना. इंकार करना. क्षय होना रघु० २।५८. ११।२ 5. निराशा करना, हताश करना, सम् , 1. सटा कर मिलाना. आपस में जोड़ना हस्तौ संहत्य --मनु० २।७१ दूत एव हि संधत्ते भिन्नमेव च संहतम्---७।६६ दे० संहत 2. ढेर लगाना. संग्रह करना, संचय करना 3. संकुचित करना, सिकोड़ना 4. संघर्ष होना 5. प्रहार करना. मार डालना, नष्ट करना, समा , प्रहार करना आघात करना, क्षतिग्रस्त करना।

हन् (दि०) [हन्--क्विप्] वध करने वाला, हत्या करने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसा कि वृत्रहन्, पितृहन्, मातृहन्, ब्रह्महन् आदि।

हनः [हन्+अच्] वध, हत्या।

हननम् [हन्+ल्युट्] 1. वध करना, हत्या करना, आघात करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3. गुणा।

हनुः-नू (पु०, स्त्री०) [हन्+उन्, स्त्रीत्वे वा ऊङ्] ठोड़ी। नू (स्त्री०) 1. जीवन पर आघात करने वाली चीज 2. शस्त्र 3. रोग, बीमारी 4. मृत्यु 5. एक प्रकार की औषधि 6. स्वेच्छाचारिणी स्त्री, वेश्या। सम० ग्रहः बन्द जबड़ा, मूलम् जबड़े की जड़।

हनू (नू) मत् (पु०) [हनू(नू)+मनुप्] एक अत्यंत शक्तिशाली वानर का नाम (यह अंजना का पुत्र था, इसके पिता पवन या मरुत् थे, इसी कारण इसे शक्ति कहते हैं। ऐसा वर्णन मिलता है कि उसमें असाधारण शक्ति और पराक्रम था जो उसने अपने हृदयाराध्य राम की ओर से कई अवसरों पर प्रकट किया। जब रावण सीता को अपहरण करके लंका में ले गया तो हनुमान् ने समुद्र पार करके उसका पता लगाया तथा अपने स्वामी राम को सूचित किया। लंका के महायुद्ध में उसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया)।

हन्त (अव्य०) [हन्+तन्] प्रसन्नता, हर्ष, और आकस्मिक हलचल को प्रकट करने वाला अव्यय, हन्त मो लब्ध मया स्वास्थ्यम् श० ४, हन्त प्रवृत्तं संगीतकम् —मालवि० १, २. करुणा, दया—पुत्रक हन्त ते धात्रीकः —गण० 3. शोक, अफसोस—हन्त धिङ् मामन्धम् उत्तर० १।४३, स्मरामि हन्त स्मरामि उत्तर० १, काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया —शा० १।१२, मेघ० १०४ 4. सौभाग्य, आशीर्वाद 5. यह बहुधा आरम्भसूचक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त है—हन्त ते कथयिष्यामि—राम० । सम० उक्तिः (स्त्री०, करुणा, मृदुता आदि शोक, खेद आदि शब्दों का कथन, -कारः 1. 'हन्त' जिसमाशीर्वादीयक अव्य० 2. किसी अतिथि को दी जाने वाली भेंट—निवीती हन्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेदय।

हन्तृ (वि०) (स्त्री० त्री) [हन् तृच्] 1. प्रहारकर्ता, वधकर्ता, मनु० ५।३४, कु० २।२० 2. जो हटाता है, नष्ट करता है, प्रतीकार करता है,—पुं० 1. हत्यारा कातिल 2. चोर, लुटेरा।

हन् (अव्य०) [हा+डन्] 1. क्रोध तथा 2. शिष्टाचार या आदर को प्रकट करने वाला उद्गार।

हम्बा (भा) [हम्+भा+अङ्+टाप्, पक्षे पृषो०] गाय, बैल आदि पशुओं के बोलने का शब्द, रंभाना। सम० -रवः रंभाना।

हय (स्वा० पर० हयति, हयित) 1. जाना 2. पूजा करना 3. शब्द करना 4. थक जाना।

हयः [हय् (हि)+अच्] 1. घोड़ा, भग० १।१४, मनु० ८।२२६ रघु० ९।१० 2. एक विशेष श्रेणी का मनुष्य —दे० 'अश्व' के अन्तर्गत 3. 'सात' की संख्या 4. इन्द्र का नाम। सम०—अध्यक्षः घोड़ों का अधीक्षक आयुर्वेदः अश्वचिकित्साविज्ञान, शालिहोत्रविद्या, आरूढः अश्वारोही, घुड़सवार, आरोहः 1. घुड़सवार 2. घुड़सवारी, -इष्टः जौ,—उत्तमः बढ़िया घोड़ा, कोविदः घोड़ों के प्रबन्ध, प्रशिक्षण तथा चिकित्साविज्ञान से परिचित, ज्ञः घोड़ों का व्यापारी, साईस, पंगेवर, घुड़सवार, -द्विषत् (पु०) भैंसा प्रियः जौ, -प्रिया खजूर का वृक्ष, -मारः,-मारकः गंधयुक्त करवीर, कनेर, -मारणः पावन कनेर,-मेधः अश्वमेध यज्ञ-याज्ञ० १।१८१, -वाहनः कुबेर का विशेषण,—शाला अस्तबल,—शास्त्रम् घोड़ों को संधान या उनका प्रबन्ध करने की कला, संग्रहणम् घोड़ों का लगाम खींच कर रोकना।

हयङ्गवः [हय-ङ्कच्-खच्-मुम्] चालक, रथवान्।

हयी [हय+ङीष्] घोड़ी।

हर (वि०) (स्त्री० रा, -री) [हृ+अच्] 1. ले जाने वाला, हटाने वाला, वञ्चित करने वाला खेदहर, शोकहर 2. लाने वाला, ले जाने वाला, ग्रहण करने वाला आपहरः—कि० ५।५०, रघु० १२।५१ 3. पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला 4. आकर्षक, मनोहर 5. अभ्यर्थी, दावेदार, अधिकारी-मु० २।१९ 6. अधिकार करने वाला, कु० १।५०, 7. बहिने वाला,—रः 1. शिव, कु० १।५०, ३।४०, ६७, मेघ० ७ 2. अग्नि 3. गधा -भाजक 5. भिन्न की नीचे की राशि। सम० गौरी शिव और पार्वती का एक संयुक्त रूप (अर्धनारीनटेश्वर), चूडामणिः शिव की शिखामणि, चन्द्रमा, तेजस् (नपुं०) पारा, नेत्रम् 1. शिव की आंख 2. तीन की संख्या, बीजम् शिव का बीज, पारा, शेखरा शिव की शिखा, गंगा, सूनुः स्कन्द रघु० ११।८३।

हरकः [हर+कन्] 1 चोरी करने वाला, चोर 2. दुष्ट, 3. भाजक।

हरणम् [हृ+ल्युट्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना 2. ले जाना, दूर करना, हटाना, चुराना कन्याहरणम् —मनु० ३।३३, रघु० ११।७४ 3. वञ्चित करना, नष्ट करना, जैसा कि 'प्राणहरणम्' में 4. भाग देना 5. विद्यार्थी को उपहार 6. भुजा 7. वीर्य, शुक्र 8. सोना।

हरि (वि०) [हृ+इन्] 1. हरा, हरा-पीला 2. लाल, लाल के रंग का, लालीयुक्त भूरा, कपिल हरिण्यश्च रथं तस्मै प्राजिघाय पुरन्दरः रघु० १२।१४, ३।४३ 3. पीला, रिः 1. विष्णु का नाम—हरिर्यथैरः पुरु-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योनायः स्मृतः—रघु० ३।४९ 2. इन्द्र का नाम —रघु० ३।५५, ६८, ८।७९ 3. शिव का नाम 4. ब्रह्मा का नाम 5. यम का नाम 6. सूर्य 7. चन्द्रमा 8. मनुष्य 9. प्रकाश की किरण 10. अग्नि 11. पवन 12. सिंह—भामि० १।५०, ५१ 13. घोड़ा 14. इन्द्र का घोड़ा सत्यमतीत्य हरितो हरीश्च वर्तन्ते वाजिनः —श० १, ७७ 15. लंगूर, बन्दर उत्तर० ३।४८, रघु० १२।५७ 16. कोयल 17. मेंढक 18. तोता 19. साँप 20. खाकी या पीला रंग 21. मोर 22. भर्तृहरि कवि का नाम। **सम०—अक्षः** 1. सिंह 2. कुबेर का नाम 3. शिव का नाम, **अश्वः** 1. इन्द्र 2. शिव, **कान्त** (वि०) 1. इन्द्र की प्रिया 2. सिंह के समान सुन्दर, **केलीमः** बंग देश, **गन्धः** एक प्रकार का चन्दन,—**चन्दनः** नम् 1. एक प्रकार का पीला चन्दन (लकड़ी या वृक्ष) रघु० ३।५९, ६।६०, श० ७।२, कु० ५।६९ 2. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक वृक्ष पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः। सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्—अमर०, (—**नम्**) 1. ज्योत्स्ना 2. केसर, जाफ़रान 3. कमल का पराग, **तालः** [कुछ विद्वान् इसे 'हरित' से व्युत्पन्न मानते हैं] पीले रंग का कबूतर, (**लम्**) हरताल हेम० १, शि० ४।२१, कु० ७।२३, १३, (**ली**) दूर्वा घास, दूब, **तालिका** भाद्रशुक्ला चतुर्थी 2. दूर्वा घास, **तुरङ्गमः** इन्द्र का नाम, **दासः** विष्णु का उपासक, **दिनम्** विष्णु पूजा का विशेष दिन, **देवः** श्रवण नक्षत्र,—**द्रवः** हरा रस,—**द्वारम्** एक पुण्यतीर्थस्थान,—**नेत्रम्** 1. विष्णु की आँख 2. सफेद कमल, (**त्रा**) उल्लू, **पत्रम्** वसन्त विषुव, **प्रियः** 1. कदंब का वृक्ष 2. शंख 3. सूर्य 4. पागल मनुष्य 5. शिव, (—**यम्**) एक प्रकार का चंदन, **प्रिया** 1. लक्ष्मी 2. तुलसी का पौधा 3. पृथ्वी 4. द्वादशी,—**भुज्** (पुं०) साँप, —**मन्थः, मन्थकः** मटर, चना,—**लोचनः** 1. केकड़ा 2. उल्लू,—**वल्लभा** 1. लक्ष्मी 2. तुलसी,—**वासरः** विष्णु-दिवस, एकादशी, **वाहनः** 1. गरुड़ 2. इन्द्र, **विद्** (स्त्री०) पूर्वदिशा,—**शरः** शिव का विशेषण (त्रिपुर राक्षस के तीनों नगरों को भस्म करने के लिए शिव ने विष्णु को जलते सरकंडे की भाँति प्रयुक्त किया),—**सखः** एक गंधर्व,—**संकीर्तनम्** विष्णु के नाम का कीर्तन करना, —**सुतः** 1. अर्जुन का नाम, —**हयः** 1. इन्द्र रघु० ९।१८, 2. सूर्य,—**हरः** विष्णु और शिव की एक संयुक्त देवमूर्ति, **हेतिः** (स्त्री०) 1. इन्द्रधनुष कथमवलोक-येयमधुना हरिहेतिमती (ककुभः)—मा० ९।१८ 2. विष्णु का चक्र, **हेतिः** चक्रवाक शि० ९।१५।

हरिकः [हरि संज्ञायां कन्] 1. खाकी या भूरे रंग का घोड़ा 2. चोर 3. जुआरी।

हरिण (वि०) (स्त्री० णी) [हृ+इनन्] 1. फीका, पीला सा 2. लाल या पीला सफेद,—**णः** 1. मृग, बारहसिंगा (यह पाँच प्रकार का बताया गया है,—हरिण-श्चापि विज्ञेयः पंचभेदोऽत्र भैरव। ऋष्यः खड्गी रुरुश्चैव पृषतश्च मृगस्तथा कालिका०)—अपि प्रमत्ते हरिणेषु वै मनः कु० ५।३५ 2. सफेद रंग 3. हंस 4. सूर्य 5. विष्णु 6. शिव। **सम०** अक्ष (वि०) मृगनयन, हरिण जैसी आँखों वाला, (—**क्षी**) मृगनयनी सुन्दर आँखों वाली स्त्री, **अङ्कः** 1. चन्द्रमा 2. कपूर, **कलङ्कः,—धामन्** (पुं०) चन्द्रमा, **नयन, नेत्र लोचन** (वि०) हरिणाक्ष, मृग जैसी आँखों वाला, —**दृश्** (वि०) हरिण जैसे दिल वाला, भीरु।

हरिणकः [हरिण—कन्] छोटा हरिण—क्व नु तत हरिणकानां जीवितं चातिलोलम् श० १।१० ।

हरिणी [हरिण+ङीप्] 1. मृगी, मादा हरिण,—चकित-हरिणीप्रेक्षणा मेघ० ८२, रघु० २।५५, १४।६९ 2. स्त्रियों के चार भेदों में से एक (चित्रिणी भी कहते हैं) 3 पीले फूल की चमेली 4 सुन्दर स्वर्णमूर्ति 5. एक छन्द का नाम। **सम०** दृश् (वि०) हरिण जैसी आँखों वाला (स्त्री०), मृगनयनी—निम्नभवति-पिने हरिणीदृशः उत्तर० ३।२७।

हरित् (वि०) [हृ+इति] 1. हरा, हरियाला 2. पीला, पीला सा 3. हरियाली लिये पीला,—(पुं०) 1. हरा या पीलारंग 2. सूर्य का घोड़ा, लाल के रंग का घोड़ा—गन्ध-मतीत्य हरितो हरीश्च वर्तन्ते वाजिनः श० १, दिशां हरिद्धिर्हरितामिवेश्वरः—रघु० ३।३०, कु० २।४६ 3. तेज घोड़ा 4. बिल्ली 5. सूर्य 6. विष्णु (पुं०, नपुं०) 1. घास 2. दिशा—रघु० ३।३० । **सम०**—**अन्तः** दिशाओं का अन्त, दिगन्त,—**भामि०** १।६०, **अन्तरम्** भिन्न प्रदेश, विविध दिशाएँ भामि० १।१५, **अश्वः** 1. सूर्य, कि० २।४६, रघु० ३।२२, १८।२२, कि० ११।५६ 2. मदार का पौधा, अर्क, **गर्भः** चौड़े पत्तों की हरी हरी कुश्या, **मणिः** (हरिन्मणिः) मरकत मणि, पन्ना शि० ३।४९, **वर्ण** (वि०) हरियाली, हरे रंग का।

हरित (वि०) (स्त्री०—ता, हरिणी) [हृ+इतच्] हरा, हरे रंग का, हरा-भरा—रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः —श० ४।१०, कु० ४।१४, मेघ० २१, कि० ५।३८ 2. खाकी,—**तः** 1. हरा रंग 2. सिंह 3. एक प्रकार का घास। **सम०** अश्वक (पुं०) 1. मरकत मणि, पन्ना 2. तूतिया, नीला थोथा,—**छद** (वि०) हरे हरे पत्तों का।

हरितकम् [हरित+कै+क] 1. साग-भाजी 2. हरा घास शि० ५।५८।

हरिता [हरित+टाप्] 1. दूर्वा घास 2. हल्दी 3. भूरे रंग का अंगूर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरितालं दे० हरि के नीचे ।

हरिद्रा [हरि+दृ+ड+टाप्] 1. हल्दी 2. पिसी हुई हल्दी दे० मेघ० २२।४९ पर मल्लि० । सम०—आभ (वि०) पीले रंग का, **गणपतिः** गणेशः गणेश देव का विशेष रूप, **रागः** रागक (वि०) 1. हल्दी के रंग का 2. अनुराग में अस्थिर, (प्रेम में) चंचलमना हलायुध में इसकी परिभाषा क्षणमात्रानुरागश्च हरिद्रारागः उच्यते) ।

हरियः [हरि+यत्+क] पीले रंग का घोड़ा ।

हरिश्चन्द्रः [हरिः चन्द्र इव, मुडागमः ऋषिदेव] सूर्यवंश का एक राजा (यह त्रिशंकु का पुत्र था. अपनी दानशीलता, धर्मिष्ठता तथा सचाई के लिए अत्यंत प्रसिद्ध था। एक बार इसके कुल-पुरोहित वशिष्ठ ने इसकी प्रशंसा विश्वामित्र की उपस्थिति में की, विश्वामित्र ने विश्वास नहीं किया। इस पर विवाद खड़ा हो गया; अंत में यह निर्णय किया गया कि विश्वामित्र स्वयं इसके सत्य की परीक्षा लें। तदनुसार विश्वामित्र ने इसे अत्यंत कठिन परीक्षण में डाला जिससे कि यह पता लग सके कि क्या अब भी यह अपने वचनों पर दृढ़ रहता है। इतना होने पर भी राजा ने उस परीक्षण में उदाहरणीय साहस का परिचय दिया। यद्यपि इसे इस परीक्षा में अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा, अपने पत्नी और पुत्र को बेचना पड़ा, यहाँ तक कि अन्त में अपने आपको भी एक चाण्डाल के घर बेचना पड़ा। अपने अदम्य साहस और सचाई के लिए हरिश्चन्द्र को अपनी पत्नी को माताओं मान कर मारने के लिए भी तैयार होना पड़ा, तब कहीं विश्वामित्र ने अपनी हार मानी और योग्य राजा को प्रजा समेत स्वर्ग में ऊँचा आसन दिया गया) ।

हरीतकी [हरि पीतवर्णं फलाद्धारा इता प्राप्ता—हरि+इ वत+कन्+ङीष्] हर्र का पेड़ ।

हर्तृ (वि०) (स्त्री० र्त्री) [हृ+तृच्] उठा कर ले जाने वाला, छीनने वाला, लूटने वाला, ग्रहण करने वाला आदि, (पुं०) चोर, लुटेरा भर्तृ० २।१६ 2. सूर्य ।

हर्मन् (नपुं०) [हृ+मनिन्] मुंह फाड़ना, जंभाई लेना ।

हर्मित (भू० क० कृ०) [हर्मन्+इतच्] 1. जिसने मुंह फाड़ा है, जिसने जम्हाई ली है 2. डाल दिया गया, फेंका गया 3. जलाया गया ।

हर्म्यम् [हृ+यत्, मुट् च] 1. प्रासाद, महल, कोई भी विशाल भवन या बड़ी इमारत हर्म्यपृष्ठं समारूढः काकोऽपि गरुडायते—सुभा०, बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ०७, ऋतु० १।२८, मृच्छ० ८।३६, रघु० ६।४७, कु० ६।४२ 2. तंदूर, अंगीठी, चूल्हा 3. आग का कुंड, यंत्रणा-स्थान, नरक । सम० **अङ्गनम्,—अम्** महल का आंगन,—**स्थलम्** महल का कमरा ।

हर्ष [हृष्+घञ्] 1. आनन्द, खुशी, प्रसन्नता, संतोष, एक सुखात्मक भाव, आनन्दातिरेक, उल्लास, आह्लाद, प्रमोद हर्षो हर्षो हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः —प्रसन्न० १।२६, सहोत्थितः सैनिकहर्षनिःस्वनः—रघु० ३।६१ 2. पुलक, रोमांच, रोंगटे खड़े होना—जैसा कि 'रोमहर्ष' में 3. 'हर्ष', ३३ या ३४ संचारिभावों में से एक हर्षस्त्विष्टावाप्तेर्मनः प्रसादोऽपृगद्गदादिकरः साο ३० १९५, या, इष्टप्राप्त्यादिजन्मा सुखविशेषो हर्षः रस० । सम०—**अन्वित** (वि०) आनन्दपूर्ण, प्रसन्न, इसी प्रकार 'हर्षाविष्ट', **उत्कर्षः** प्रसन्नता का आधिक्य, आनंदातिरेक, **उदयः** आनन्द का होना, —**कर** (वि०) तृप्त करने वाला, प्रसन्न करने वाला, —**जड** (वि०) मन्द, मारे खुशी के जड़वत् हो जाने वाला रघु० ३।६८, —**विवर्धन** (वि०) आनंद को बढ़ाने वाला, **स्वनः** आनंद की ध्वनि ।

हर्षक (वि०) (स्त्री०—र्षका, र्षिका) [हृष्+णिच्+ण्वुल्] खुश करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनंदयुक्त, सुखकर ।

हर्षण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [हृष्+णिच्+ल्युट्] खुशी पैदा करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनंद से भरा हुआ, सुखद, **णः** 1. कामदेव के पाँच बाणों में से एक 2. आंख का एक रोग 3. श्राद्ध की एक अधिष्ठात्री देवता, **-णम्** हर्ष, खुशी, प्रसन्नता, आनन्द, उल्लास वृद्धे दामप्रहर्षाय मुद्गरो हर्षणाय च—महा० ।

हर्षयितृ (वि०) [हृष्+णिच्+इत्तृच्] आनन्ददायक, सुखकर, खुश करने वाला, प्रसन्नता देने वाला ।

हर्षुलः [हृष्+उलच्] 1. हरिण 2. प्रेमी ।

हल् (भ्वा० पर० हलति हलित) हल चलाना ।

हलम् [हल् धञ्यें करणे क] लांगल, खेत जोतने का एक प्रधान उपकरण—वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् । हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् या—हल कलयते गीत० १। सम० **आयुधः** बलराम का विशेषण, **धर,—भृत्** (पुं०) 1. हाली, हल चलाने वाला 2. बलराम का नाम केशवधृतहलधररूप जय जगदीश हरे—गीत०, असंस्यस्ते संति हलभृतो मेघके वासलीव मेघ० ५९,—**भूतिः, भृतिः** हल चलाना, कृषिकर्म, किसानी, **हतिः** (स्त्री०) 1 हल के द्वारा प्रहार करना या खूड निकालना 2. जुताई या हल चलाना ।

हलहला अहो, वाह रे आदि आश्चर्यसूचक अव्यय ।

हला [ह इति लीयते ह+ला+क+टाप्] 1. सखी, सहेली 2. पृथ्वी 3. जल 4. मदिरा (अव्य०) नाटकीय भाषा में) किसी सखी या सहेली को संबोधित करना —हला शकुन्तले अत्रैव तावन्मुहूर्तं तिष्ठ—श० १, तु० 'हेला' भी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हलाहल:,–लम् देखो 'हाल (ला) हल'।

हलिः [हल्+इन्] 1. बड़ा हल 2. खड्ग 3. कुंपि।

हलिन् (पुं०) [हल+इनि] 1. हाली, हलवाहा, किसान 2. बलराम। सम० प्रियः कदंब का वृक्ष (–या) मदिरा।

हलिनी [हलिन्+ङीप्] हलों का समूह।

हलीनः [हलाय हितः हल+ख] सागौन का पेड़।

हलीषा [हलस्य ईषा–ष० त०, शक० पररूपम्] हल का दण्ड, हलस।

हल्य (वि०) [हल+यत्] 1. जोतने योग्य, हल चलाये जाने योग्य 2. कुरूप, विकृताकृति।

हल्या [हल्य+टाप्] हलों का समूह।

हल्लकम् [हल्+क्वुल्] लाल कमल।

हल्लनम् [हल्+ल्युट्] लौटना, इधर-उधर करवट बदलना (सोते समय)।

हल्लीशम् (षम्) [हल्+क्विप् लप् (स्)+अन्, पृषो० ईत्वम्, कर्म० स०] 1. अठारह उपरूपकों में से एक (एक प्रकार का एकांकी नाटक जिसमें प्रधानतः गायन और नृत्य होता है, तथा इसमें एक पुरुष और सात या आठ नर्तकियां भाग लेती हैं–सा० द० ५५५ 2. एक प्रकार का वर्तुलाकार नृत्य।

हल्लीशकः [हल्लीश+कन्] घेरा बनाकर नाचना।

हवः [हु+अ, ह्वे+अप्, संप्र०, पृषो० वा] 1. आहुति, यज्ञ 2. आवाहन, प्रार्थना 3. आह्वान, आमन्त्रण 4. आदेश, समादेश 5. बुलाना, बुला भेजना 6. चुनौती, ललकार।

हवनम् [हु+भावे ल्युट्] 1. अग्नि में सामग्री की आहुति देना 2. यज्ञ, आहुति 3. आवाहन 4. बुलावा, आमन्त्रण 5. युद्ध के लिए ललकार। सम० आयुस् (पुं०) अग्नि।

हवनीयम् [हु+अनीयर्] 1. कोई भी वस्तु जो आहुति देने के योग्य हो 2. गरम किया हुआ मक्खन या घी।

हवित्री [हु+इत्रच्+ङीप्] हवनकुण्ड जो भूमि में खोद कर बनाया गया हो, (इसमें आहुतियां दी जाती हैं)।

हविष्मत् (वि०) [हविस्+मतुप्] आहुतिवाला।

हविष्यम् [हविषे हितम् कर्मणि यत्] 1. कोई वस्तु जो आहुति के लिए उपयुक्त हो -मनु० ३।२५६, ११।७७, १०६, याज्ञ० २।२३९ 2. गर्म किया हुआ मक्खन। सम०—अन्नम् व्रत के तथा अन्य पर्वों के अवसर पर खाने योग्य भोज्य पदार्थ, आशिन्–भुज् (पुं०) अग्नि।

हविस् (नपुं०) [हूयते हु कर्मणि असुन्] 1. आहुति या हवनीय द्रव्य–बहुति विधिहुतं या हविः—भ० १।१, मनु० ३।८७, १३२, ५।७, ६।१२ 2. गर्म किया हुआ मक्खन 3. जल। सम० –अशनम् (हविरशनम्) घी या हवनीय द्रव्यों का खाया जाना, (नः) अग्नि, —गन्धा (हविगन्धा) शमीवृक्ष, जैड का पेड़,—गेहम् (हविर्गेहम्) यज्ञगृह जहाँ अग्नि में आहुति दी जाय, भुज् (हविर्भुज्) अग्नि अभ्यासितमनभ्याय स्वाहयेव हविर्भुजम् रघु० १।५६, १०।८०, १३। ४१, कु० ५।२०, शि० १।२, काव्य० २।१६८, –यज्ञः (हविर्यज्ञः) एक प्रकार का यज्ञ, याजिन् (हविर्याजिन्) (पुं०) पुरोहित।

हव्य (वि०) [हु कर्मणि+यत्] आहुति के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ,—व्यम् 1. घी 2. देवों को दी जाने वाली आहुति (विप० कव्य) 3. आहुति। सम० –आशः अग्नि, कव्यम् देवों तथा पितरों की आहुतियाँ–मनु० ११।४, ३।९७. १२८ आगे पीछे,–वाह्, –वाह वाहन (पुं०) आहुतियों को ले जाने वाला, अग्नि।

हस् (स्वा० पर० हसति, हसित) 1. मुसकराना, मन्द हंसी हंसना,–हससि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम्–गीत० १०. भट्टि० ७।६३, १४।९३ 2. हंसी उड़ाना, मखौल करना, उपहास करना (कर्म० के साथ)—यमकाष्य विदर्भभूः प्रभुं हसति यामपि शकभर्तृकाम् मै० २।१६ 3. (अतः) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, दूसरे को पीछे छोड़ देना—यो जहासेव वासुदेवम्– का०, शि० १।७१ 4. मिलना-जुलना श्रिया हसद्भिः कलभानि सस्मितैः –किं० ८।४४ 5. मखौल उड़ाना, दिल्लगी करना 6. खुलना, खिलना, फूलना हसद्बन्धुजीवप्रसूनैः 7. चमकाना, मांजकर साफ करना– भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजाली सुभा०, प्रेर० (हासयति—ते) मंद हंसी हंसना कु० ७।९५, अप—, हंसी उड़ना, तिरस्कार करना, उपहास करना, अव–, 1. तिरस्कार करना, बेइज्जती करना 2. आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना—स्तितावहसयेव पुरं मधोनः भट्टि० १।६, उप–, उपहास करना, तिरस्कार करना, बुरा भला कहना–, तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यसे जनैः का०, घट० १७, परि–, 1. मखौल करना, हंसी उड़ाना 2. उपहास करना, बुरा-भला कहना, (अतः) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना , जनानामानन्दः परिहसति निर्दोषपदवीम् गंगा० ५, प्र , 1. उपहास करना, भुरुकराना ततः प्रहस्यापभयः पुरन्दरम् रघु० ३। ५१ 3. तिरस्कार करना, बुरा-भला कहना, मखौल उड़ाना–हसन्त्यं प्रहसन्त्येता रुदन्तं प्ररुदन्ति च–सुभा० 4. चमकाना, शानदार दिखाई देना, वि –, 1. मुसकराना, मन्द मन्द हंसना किंविहिहस्यार्पति बभाषे —रघु० २।४६ 2. उपहास करना, बुरा भला कहना, अपमान करना—किमिति विषीदसि रोदिषि विकला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहसति युवतिसभा तव विकला—गीत० ९, गौरी-चक्तुभ्रुकुटिरचनां या विहसद्वेर कैनैः—मेघ० ५०।

हस [हस् + अप्] 1. हंसी, ठठाका 2. उपहास 3. आमोद, प्रमोद, खुशी, प्रसन्नता।

हसनम् [हस् + ल्युट्] हंसना, ठठाका, अट्टहास।

हसनी [हसन + ङीप्] उठाऊ चूल्हा, कांगड़ी।

हसली [हस् + क्तु + ङीप्] 1. उठाऊ अंगीठी 2. एक प्रकार की मल्लिका।

हसिका [हस् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्] अट्टहास, उपहास।

हसित [भू० क० कृ०] [हस् + क्त] 1. जिसकी हंसी की गई हो, हंसना 2 विकसित, फूला हुआ, **तम्** 1. अट्टहास 2. मल्लीक, मजरिका 3. कामदेव का धनुष।

हस्तः [हस् + तन्, न इट्] हाथ; **हस्तं गतः** हाथ में पड़ा हुआ या अधिकार में आया हुआ,—गौतमीहस्तं विसर्जयिष्यामि—श० ३, (मैं गौतमी के हाथ (द्वारा) इसे भेज दूंगा) इसी प्रकार 'हस्ते पतितां', 'हस्ते गमिहितां कुरु' आदि, शंभुना दत्तहस्ता मेघ० ६० (शंभु का सहारा लिए हुए), **हस्तं कृ** (हस्तेकृत्य, कृत्वा) हाथ से पकड़ना, ले लेना, हाथ से ले लेना, हाथ में पकड़ लेना, अधिकार कर लेना, लौकौकिक—हस्तकङ्कण कि दर्पणे प्रेक्ष्यते (हाथ कंगन को आरसी क्या) अर्थात् हाथ पर रक्खी वस्तु को देखने के लिए शीशे की आवश्यकता नहीं होती 2. हाथी की सूंड़—कु० १।३६ 3. तेरहवां नक्षत्र जिसमें पांच तारे सम्मिलित हैं हाथभर, एक हस्तपरिमाण, (२४ अंगुल या लगभग १८ इंच की लंबाई, जो कोहनी से मध्य अंगुली की नोक तक होती है) 5. हाथ की लिखाई, हस्ताक्षर

धनीवोषयतं दशात् स्वहस्तपरिचिह्नितम्—याज्ञ० ३।९३, स्वहस्तकालसंपत्रं प्रामाण्यम्—१।३२० (तारीख और हस्ताक्षर सहित), धार्यनामयं प्रियाया. स्वहस्तः—विक्रम० २, (मेरी प्रिया का आत्मलेख), २।२० (अतः आर्ज० से) प्रमाण, संकेत—मुद्रा० ३ 7. सहायता, मदद, सहारा,—वाल्यावधेर्द कृशाङ्गयाः सुचिरमव-यर्वैर्दत्तहस्ता करोति—वेणी० २।२१ 8. राशि, परिमाण, (बालों का) गुच्छा, रचना में 'केश' 'कच' के साथ —पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे अमर०, सति विगलितबर्हे केशहस्ते मुकेश्याः सति कुसुमस्यनाथे कि करोत्येष बर्हा, विक्रम० ४।१०,—**स्तम्** धोकनी।

सम० **अक्षरम्** अपने निजी अक्षर, दस्तखत,—**अग्रम्** अंगुली (क्योंकि हाथ का सिरा यही होती है) —**अंगुलिः** हाथ की कोई सी अंगुलि, **अभ्यस्तः** हाथ से काम करने का अभ्यास, **अवलम्बः**—**आलम्बनम्** हाथ का सहारा दत्तहस्तावलम्बे प्रारम्भे - रत्न० (सहारा दिये जाने पर),—**आमलकम्** 'हाथ में रक्खा आंवले का फल' यह एक वाग्धारा है, और उस समय प्रयुक्त होती है जब कभी ऐसी बात का निर्देश करना हो तो बिल्कुल स्पष्ट और असंदिग्ध बोधगम्य हो; —**आरोहः** हस्तारोहण, हस्तध्यान, (यथाशास्त्रारोहण)—विक्र० ५, श० ६ —**कमलम्** 1. हाथ में खिला हुआ कमल 2. कमल जैसा हाथ, **कौशलम्** हाथ की दक्षता, —**क्रिया** हाथ का काम, दस्तकारी, **गत** गामिन् (वि०) हाथ में आया हुआ, अधिकार में आया हुआ, प्राप्त, गृहीत —**चं** प्रारंभिक हस्तक्षमा मर्मभिः रघु० ७।६७, ८।१, **ग्राहः** हाथ से पकड़ना, **चापल्यम्** हस्तकौशल, —**तलम्** 1. हाथ की हथेली 2. हाथी के मुंह की नोक, —**ताल**ः हथेली बजाना, तालियां बजाना, **दोषः** हाथ से होने वाली त्रुटि, भूल, **धारणम्**—**वारणम्** (हाथ से) आघात को निवारण करना, **पादम्** हाथ और पैर, न मे हस्तपादं प्रसरति श० ४, **पुच्छम्** कलाई से नीचे का भाग, **-पृष्ठम्** हथेली का पृष्ठभाग,

प्राप्त (वि०) 1. हस्तगत 2. उपलब्ध, सुरक्षित, **प्राप्य** (वि०) जहां आसानी से हाथ पहुंच सके, जो हाथ की पहुंच में हो—हस्तप्राप्यस्तवकनमिनी बालसन्तानवृक्षः—मेघ० ७५, **बिम्बम्** शरीर में उबटन आदि गंध द्रव्यों का लेप, **मणिः** कलाई पर पहना जाने वाला रत्नाभूषण,—**लाघवम्** 1. हाथ की तत्परता या कुशलता 2. हाथ की सफाई, बाजीगरी,—**संवाहनम्** हाथ से मलना या मालिश करना—मेघ० ९६,—**सिद्धिः** (स्त्री०) 1. हाथ का श्रम, हाथ से किया जाने वाला काम 2. भाड़ा, पारिश्रमिक, मजदूरी, **सूत्रम्** कलाई में धारण किया हुआ मंगलसूत्र या बलय, कड़ा —कु० ७।२५।

हस्तकः हस्तवत् [हस्त + कन्] 1. हाथ की अवस्थिति।

हस्ताहस्ति (वि०) [हस्त + मतुप्] दक्ष, कुशल, चतुर।

हस्तिकम् (अव्य०) [हस्तेन हस्तेन प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् ष० स०, दीर्घः; इत्वम्, अलग्यत्वं च] हाथा पाई, हस्ताहस्ति जन्यमजनि दशा०।

हस्तिकम् [हस्तिनां समूहः—कन्] हाथियों का समूह।

हस्तिन् (वि०) [हस्त + मतुप्] [हस्त. शुंडादण्डोऽस्यस्य इनि] 1. करभवाला 2. सूंडवाला, —(पुं०) हाथी मनु० ७।९६, १२।४३, (हाथी चार प्रकार के बताये जाते हैं भद्र, मंद्र, मृग और मिश्र) 1. सम० **अध्यक्षः** हाथियों का निरीक्षक, **आयुर्वेदः** हाथियों के रोगों की चिकित्सा से संबद्ध कृति, रचना, **आरोहः** महावत, या हाथी की सवारी करने वाला, **कक्ष्यः** 1. सिंह 2. बाघ —**कर्णः** एरंड का पौधा,—**घ्नः** 1. हाथी को मारने वाला, —**चारिन्** (पुं०) पीलवान,—**दन्तः** 1. हाथी का दांत 2. दीवार में गड़ी हुई खूंटी (—**तम्**) 1. हाथीदांत 2. मूली, - **दन्तकम्** मूली,—**मल्लम्** पुरद्वार पर बना हुआ मिट्टी का कूहा, - **पः** पकः पीलवान, हाथी की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सवारी करने वाला—इति बोधयतीव डिंडिमः करिणो हस्तिपकाहूतः वदणम्—हि० २।८६, मदः मस्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मदरस:,—मल्लः 1. ऐरावत 2. गणेश 3. रस्सा का ढेर 4. धूल की बौछार 5. कुहरा,—यूथ—थम् हाथियों का समूह,—वर्चसम् हाथी की शान, कान्तिः, बाहः 1. पीलवान 2. हाथियों को हांकने का अंकुश, —व्रातम् छः हाथियों का समूह, स्नानम् गजस्नान, हाथी का स्नान अवशेन्द्रिय-चिन्तां हस्तिस्नानमिव क्रिया हि० ३।१८ हस्तः हाथी की सूंड।

हस्तिन (ना) पुरम् [अलुक् समास हस्तिना तदाख्येनपुंण चिह्नितं तत्कृतत्वात्] राजा हस्तिन् द्वारा बसाया गया नगर, (वर्तमान दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तरपूर्व दिशा में, यही वह नगर है जहाँ महाभारत के कुरुवंश का केन्द्रीय दृश्य था, इसके अन्य नाम यह है—गजाह्वय, नागसाह्वय, नागाह्व और हास्तिन)।

हस्तिनी [हस्तिन्+ङीप्] 1. हथिनी 2. एक प्रकार की औषध और गन्धद्रव्य 3. कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार की स्त्रियों में से एक (इस स्त्री के होठ, अंगुलियाँ और कूल्हे मोटे, तथा स्तन भारी होते हैं, इसका रंग काला और कामलिप्सा अधिक होती है, रतिमंजरी में इसका वर्णन इस प्रकार है—स्थूलाधरा स्थूलनितम्बबिम्बा स्थूलाङ्गुलिः स्थूलकुचा सुशीला। कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितान्तभीरुर्नितबलदर्शा —अलु हस्तिनी स्यात्—(करिणी मता सा)।

हस्त्य (वि०) [हस्त+यत्] 1. हाथ से संबंध रखने वाला 2. हाथ से किया गया 3. हाथ से दिया हुआ।

हहङ्कम् [ह+हल्+अङ्] एक प्रकार का घातक विष।

हहा (पुं०) [ह+हा+क्विप्] एक गन्धर्वविशेष—तु० हाहा।

हा (अव्य०) [हा+का] 1. शोक, उदासी, खिन्नता को प्रकट करने वाला अव्यय, आह, हाय, अरे—हा प्रिये आतंकि—उत्तर० ३, हा हा देवि स्फुटति हृदयं—उत्तर० ३।३८, हा पितः श्वसिहि, हे सुभ्रु—भट्टि० ६।११, हा वत्से आकुलति क्वासि—मा० १० आदि (इस अर्थ में 'हा' प्रायः कर्म० के साथ प्रयुक्त होता है—हा कष्टमाश्रितम्—सिद्धा०) 2. आश्चर्य—हा कथं महाराज-दुष्करस्य कर्मणोराः प्रियसखी मे कौसल्या—उत्तर०४ 3. क्रोध या झिड़की।

हा i (जुहो० आ० जिहीते, हान, कर्मवा० हायते, इच्छा० जिहासते) 1. जाना, हिलना-जुलना—जिहीथा शिखाभिः स्फुटमिह भवद्वा-धवरथम्—हंस० २८, कि० १३।२३, नक्षो० १।३८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, उद्—, 1. ऊपर की ओर जाना, (सभी अर्थों में) उठना—यदौ रजः पार्थिवमुज्जिहीते—रघु० १३।६४, आविर्भूतानुरागाः क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानोः मुद्रा० ४।२१, नै० २२।४५, ५५, उज्जिहीर्षे महाराज त्वं प्रशान्तो न किं पुनः भट्टि० १८।२७, 'तुम क्यों नहीं उठते हो' अर्थात् 'जीवित होने हो' कोलाहलो लोकस्योदजिहीत दशः 'लोगों से एक शोर उठा' 2. जुड़ा होना, चले जाना—उज्जिहान-जीवितां वराकीं नानकम्पिथे— मा० १० 3. उठाना—शिरसा यूथमुज्जिहीते—कात्या० 4. चढ़ाना, (भौंहें) उठाना, सिकोड़ना—भट्टि० ३।४७, उप—, नीचे आना, उतरना—निजौजसोज्जासयितुं जगद्दुहामुपाजिहीथा न महीतलं यदि शि० १।२१, सम्—, जाना, पहुँचना, उपभोग करना—जनता ममहास्त मुदम्—नलो० १।५४।

ii (अदा० पर० जहाति, हीन) 1. छोड़ना, त्यागना, परिहार करना,—छोड़ देना, तजना, तिलांजलि देना, पदत्याग करना मुहुर्जहोहि धनागमतृष्णां कुरु तनुबुद्धे मनसि विनश्वरम् मोह० १, सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति— मुद्रा० ४।१३, रघु० ५।७२, ८।५२, १२।२४, १४।६१, ८७, १५।५९, शि० ४।३३, भग० २।५०, भट्टि० ३।५३, ५।९१, १०।७१, २०।१०, मेघ० ४९, ६०, भामि० २।१२९, ऋतु० १।३८ 2. पदत्याग करना, जाने देना 3. गिरने देना 4. भूल जाना, उपेक्षा करना, अवहेलना करना 5. बचना, विदकना—कर्म० (हीयते) 1. छोड़ दिया जाना, कि० १२।१२ 2. निकाल दिया जाना, वञ्चित किया जाना, लुप्त होना (करण० या अपा० के साथ)—विरूपाक्षो जहे प्राणैः—भट्टि० १४।३५, जनयित्र्या सुतं तस्या ब्राह्मण्यादेव हीयते—मनु० ३।१७, ५।१६१, ९।२११ 3. कम होना, थोड़ा हो जाना, प्रायः 'परि' के साथ 4. घटना, कम होना, मुर्झाना, क्षीण होना, आल० से भी) क्षय को प्राप्त होना —प्रबुद्धो हीयते चन्द्रः समुद्रोऽपि तथाविधः—रघु० १७।७१, हि० प्र० ४२ 5. (जैसे मुकदमे में) हार जाना—भूयमप्युपन्यस्तं हीयते व्यवहारतः—याज्ञ० २।१९, 6. छूट जाना, भूल जाना 7. कमजोर होना —प्रेर० (हापयति-ते) 1. छुड़वाना, परित्यक्त कराना 2. अवहेलना करना, भूलना, अनुष्ठान में देर करना—शि० १६।३३, मनु० ३।७१, ४२१, याज्ञ० १।१२१, इच्छा० (जिहासति) छोड़ने की इच्छा करना, अप, छोड़ना, त्यागना, तज देना—विलपाप स बाष्पाद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्—रघु० ८।४३ अधा—, छोड़ना, त्यागना, अव—, छोड़ना, वञ्चित होना, परि—, 1. छोड़ना, त्यागना, छोड़ कर चल देना 2. भूल जाना, अवहेलना करना—यथोक्तान्यपि कर्माणि परिहाय—मनु० १२।९२, (कर्मवा०) 1. अल्प

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होना, कम होना आर्यस्य मुनिहितप्रयोगतया न किमपि परिहास्यते- शा० १ 2. घटिया होना ओजस्विनया न पत्निभीयते मध्याः विक्रम०३, मालवि० २. प्र 1. छोड़ना, त्यागना परित्यक्ता कन्या, तिलाजलि देना प्रजाहानि यदा कामान्- भग० २।५५ ३९, २।७०वी प्रहायेने--राम० 2. जाने देना, फेंकना, डाल देना--प्रजुः शूलपाणिस्तान्--भट्टि० १४।२३, वि--, छोड़ना, परित्यक्त करना, तजना, छोड़ देना विहाय लक्ष्मीविलक्ष्मं कार्मके अवाप्तवान् सन् जुहुधोह पावकम् - किरा० १।४८, रघु० ४१, रघु० २।४०, ५।६७,७३, ६७, १२।१०२, १४।४८, ६९, कु० २१, (प्रेर०) पुरस्कार देना ।

हाङ्कुर [हा विचलाहक पीड़ायें वा अंग राति हा +अङ्क | रा | क] एक बड़ी मछली ।

हाटक (वि०) (स्त्री०--की) [हाटक--अण्] सुनहरी, --कम सोना । गया० सिरिः सुमेरु पर्वत ।

हात्रम् [हा करणे पत्र] पारिश्रमिक, मजदूरी, भाड़ा ।

हानम् [हा | क] 1. छोड़ना, त्यागना, हानि, असफलता 2. धन निकालना 3. पलायन, बल ।

हानिः (स्त्री०) [हा | क्तिन् तस्य निः] 1. परित्याग, तिलांजलि 2. क्षति, असफलता, अनुपस्थिति, अनस्तित्व क्वचित् स्फुटालङ्कारविरहेणैव न काव्यव्यवहानिः । —काव्य० १, 'इसमें काव्य की हानि नहीं' 3. हानि, नुकसान, क्षति-- ग्रामोदुमलिनसिक्थेन का हानिः कृषिणा भवेत् सुधा०, का नो हानिः सर्वत० 4. स्वत्वता, कमी--तथा हानिः क्रमप्राप्ता तथा वृद्धिः क्रमेणा हि०, याज्ञ० २।२७३, २४४ 5. अवहेलना, भूलना, भंग प्रतिज्ञां, कार्य० 6. नष्ट होना, बर्बाद होना, हानि कोलहानिः --रघु० १३।१६ ।

हाफिका (स्त्री०) जमुहाई, जृंभा ।

हायनः, नम् [हा | ल्यु] वर्ष,--नः 1. एक प्रकार का चावल 2. शिखा, ज्वाला ।

हरः [हृ--घञ्] 1. ले जाना, हटाना, पकड़ना 2. पहुँचाना 3. अपकर्षण, अलगाव 4. वाहक, हरकारा 5. मोतियों की माला, हार हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले अमरु० १००, पाण्डवोऽयमंसापितलम्बहारः--रघु० ६।६०, ५।५२, ६।१६, श्वेष० ६७, ऋतु० १।४, २।१८ 6. संग्राम, युद्ध 7. (गणि० में) किसी भिन्न का नीचे का अंश 8. भाजक । सम० - आवलिः- ली (स्त्री०) मोतियों की लड़ी--तरुणीस्तन एव शोभते गणिहारावलिरामणीयकम्--नै० २।४४, हाराकीलतलकाङ्कितकाञ्चिदाम--गीत०११, --यष्टि (स्त्री) का गाना या बजाना या नृत्य करना मालवि० ५।२०, --यष्टिः हार, मोतियों की लड़ी--दर्पातपृथुकुचाभोगभरेणाष्टिः--ऋतु० २।२५, १।८, --हारा एक प्रकार का लालभूरे रंग का अंगूर ।

हारकः [हृ | ण्वुल्] 1. चोर, लुटेरा याज्ञ० ३।२१५ 2. हंस, धूर्त 3. मोतियों की लड़ी 4. (गणि० में) भाजक 5. एक प्रकार की नग्न रचना ।

हारि (वि०) [हृ--णिच् | इन्] आकर्षक, मोहक, सुखकर, मनोहर, रिः (स्त्री०) 1. पराजय 2. खेल में हार 3. मछलियों का समूह, सार्थवाह । सम० - कण्ठः कोयल ।

हारिणिकः [हरिण--ठक्] हरिणों का पकड़ने वाला, शिकारी ।

हारितः (भू० क० कृ०) [हृ + णिच् | क्त] 1. हरण कराया हुआ, पकड़ाया हुआ 2. उपहार स्वरूप दिया गया, प्रस्तुत किया गया 3. आकृष्ट, तः 1. हरा रंग 2. एक प्रकार का कबूतर ।

हारिन् (वि०) (स्त्री० णी) [हारो अस्त्यस्य इनि, हृ | णिनि वा] 1. ले जाने वाला, पहुँचाने वाला, होने वाला 2. लूटने वाला, हरण करने वाला, बाजिकुञ्जराणां च हारिणः याज्ञ० २।७३, ३।२०८ 3. पकड़ लेने वाला, बाधा पहुँचाने वाला, मनु० १२।२८ 4 प्राप्त करने वाला, उपलब्ध करने वाला 5. आकर्षक, मोहक, सुखकर, आह्लादकर, आनन्ददायक - तवागिमं गोत्ररोषेण हारिणा प्रसीद दृष्टया० १।५, शि० १०।१, ६९, शिखरहारिणि दूरे भर्तृ० ३।२५ 6. अच्छे दीखने वाला, अप्रत्यक्ष होने वाला 7. हार धारण करने वाला ।

हारिद्र [हरिद्रा | अण्] 1. पीला रंग 2. करंज का वृक्ष ।

हारीतः [हृ--णिच् | ईतच्] 1. एक प्रकार का कबूतर --रघु० ५।७६ 2. चूहा, हंस 3. एक स्मृतिकार का नाम--याज्ञ० १।४ ।

हार्दम् [हृदयस्य कर्म पूर्वा० अण् हृदादेशः] 1. स्नेह, प्रेम अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न आत्महार्देन न विद्विषादरः किरा० १।३३, शि० ९।६९, विक्रम० ५।१० 2. कृपा, सुकुमारता 3 इच्छाशक्ति 4. अभिप्राय, अर्थ ।

हार्य (वि०) [हृ--ण्यत्] 1. हरण किये जाने योग्य, छीने जाने योग्य 2. सहन किये जाने योग्य, ले जाये जाने योग्य--पूदुधा वारणराजहार्यया--कु० ५।७० 3. अपहरण किये जाने योग्य, छीने जाने योग्य -रघु० ७।६७ 4. विस्थापित होने योग्य, (दूसरों आदि के द्वारा) ले जाये जाने योग्य रघु० १५।४३ 5. (अपने संकल्प से) चलायमान होने योग्य कु० ५।८ 6. उपलब्ध किये जाने योग्य, पाने योग्य, आकर्षक, मोहक [illegible] ७० ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१।३१, कु० ५।५३, मनु० ७।२१७ 7. पकड़े जाने योग्य, लूटे जाने योग्य मनु० ८।४१७,—यः 1. साँप 2. बिभीतक या बहेड़े का वृक्ष 3. (गणि० में) भाज्य।

हालः [हलो अस्त्यस्य अण्, हल एव वा अण्] 1. हल 2. बलराम का नाम 3. शालिवाहन का नाम। सम०—भृत् (पुं०) बलराम का विशेषण।

हालकः [हाल+कन्] पीले भूरे रंग का घोड़ा।

हाल (ला) हलम् [=हलाहल, पृषो०] एक प्रकार का घातक विष जो समुद्रमंथन के परिणाम स्वरूप मिला था। (अत्यन्त विषाक्त होने के कारण यह प्रत्येक वस्तु को भस्म करने लगा, इसलिए इसे शिव जी ने पी लिया) अहमेव गुरुः सुदारुणानामिति हालाहल मास्म तात दृप्यः। ननु सन्ति भवादृशानि भूयो भुवनेऽस्मिन् वचनानि दुर्जनानाम्—सुभा० 2. (अतः) घातक विष, या जहर, दे० भामि० १।९५, २।७३, पंच० १।१८३, ('हलाहल' और 'हालाहल' भी लिखा जाता है)।

हालहली, हाला [हालाहल+ङीप्, हल्+घञ्+टाप्] शराब,—मदिरा—हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचना-क्रुम्—मेघ० ४९, पंच० १।५८, शि० १०।२१।

हालिकः [हलेन खनति हलः प्रहरणमस्य तस्येदं वा ठक् ठञ् वा] 1. हलवाला, किसान 2. जो हल चलाये (जैसे कि हल में जुता बैल) 3. जो हल के द्वारा युद्ध करता है।

हालिनी [हल्+णिनि+ङीप्] एक प्रकार की बड़ी छिपकली।

हाली [हल्+इण्+ङीष्] छोटी साली।

हालुः [हल्+उण्] दाँत।

हावः [हे भावे घञ् नि० संप्र०, हुकरणे घञ् वा] 1. बुलावा, आमन्त्रण 2. स्त्रियों की नखरेबाजी जो पुरुषों की रत्यात्मक भावनाओं को उत्तेजित करती है, (प्रेम की) रंगरेली, मधुरभाषण हावहारि हसितं वचनानां कौशलं दृशि विकारविधेयाः—शि० १०।१३, जगुः सरागं ननृतुः सहाभयम् भट्टि० ३।४१, (उज्ज्वलमणि ने हाव की परिभाषा निम्नांकित की है —यौवारेचकसंयुक्तो भ्रूनेत्रादिविकासकृत्। भावादीषत् प्रकाशो यः स हाव इति कथ्यते॥ दे० सा० द० १२७ भी।

हासः [हस्+घञ्] 1. ठहाका, हंसी, मुस्कराहट—भासो ह्रासः—प्रसन्न० १।२२ 2. हर्ष, खुशी, आमोद 3. हास्य-ध्वनि, हास्यरस,—दे० सा० द० २०७ 4. व्यंग्यपूर्ण हंसी रघु० १२।३६ 5. खुलना, विकसित होना, फूलना (कमल आदि का)—कुलानि सामर्यतयेव तेनुः सरोजलक्ष्मी स्थलपद्महासैः—भट्टि० २।३।

हासिका [हस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. अट्टहास 2. खुशी, आमोद।

हास्य (वि०) [हस्+ण्यत्] हंसने के योग्य, हास्यास्पद, रघु० २।४३,—स्यम् 1. हंसी याज्ञ० १।८४ 2. खुशी, मनोरंजन, क्रीड़ा मनु० ९।२२७ 3. भजाक, मखौल 4. व्यंग्य, दिल्लगी, ठट्ठा,—स्यः काव्य में वर्णित हास्यरस, परिभाषा—विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत्। हास्यो हास्यरसस्थायिभावः ('हासो हास्यस्थायिभावः' के स्थान पर) देवेः प्रथमदेवतः सा० द० २२८। सम० आस्पदम् हंसी की चीज, हंसी उड़ाने की वस्तु, पदवी,—मार्गः खिल्ली, दिल्लगी—कुद्दीर्तिस्त्रिभुवनजयी हास्यमार्गं दशास्यः विक्रम० १८। १०३, रसः हसी या आमोदात्मक रस—दे० ऊपर 'हास्य'।

हास्तिकः [हस्तिन्+ठक्] महावत, या गजारोही, —कम् हाथियों का समूह शि० ५।३०।

हास्तिनम् [हस्तिना नृपेण निर्वृत्तम् नगरम्—हस्तिन्+अण्] हस्तिनापुर नगर का नाम।

हाहा (पुं०) [हा इति शब्दं जहाति—हा+हा+क्विप्] एक गन्धर्व का नाम—(अव्य०) पीड़ा, शोक या आश्चर्य को प्रकट करने वाला उद्गार (यह केवल 'हा' शब्द है, केवल बल देने के लिए इसको 'द्विरुक्त' कर दिया गया है)। सम०—कारः 1. शोक, विलाप, रोना-धोना 2. युद्ध का शोर, रवः 'हा हा' की ध्वनि।

हि (अव्य०) (इसका प्रयोग वाक्य के आरम्भ में कभी नहीं होता) इसके अर्थ निम्नांकित हैं:—1. इसलिए कि, क्योंकि (तर्कसंगत युक्ति का निर्देश करना) —अग्निरिहास्ति धूमो हि दृश्यते—गण०, रघु० ५।१० 2. निस्सन्देह, निश्चय ही—देवप्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गजः—मालवि० ३ 3. उदाहरणस्वरूप, जैसा कि सुविदित है, प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्। सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८ 4. केवल, अकेला (किसी विचार पर बल देने के लिए) मूढो हि मदनेनायास्यते—का० १५५ 5. कभी कभी यह केवल पूरक की भांति ही प्रयुक्त होता है।

हि (स्वा० पर० हिनोति, हित—प्रेर० हाययति, इच्छा० जिघीषति) 1. भेजना, उकसाना 2. डाल देना, फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दागना गदा शक्तिजिघ्ये भट्टि० १४।३६ 3. उत्तेजित करना, भड़काना, उकसाना, 4. उन्नत करना, आगे बढ़ाना 5. तृप्त करना, प्रसन्न करना, उल्लसित करना 6. जाना, प्रगति करना, प्र—, 1. भेज देना, ढकेलना 2. फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दाग देना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—विनाशात्तस्य वृक्षस्य रक्षस्तस्मै महीफलं। प्रजिघाय —रघु० १५।२१, भट्टि० १५।२२१ 3. भेजना, प्रेषित करना, मा० १, रघु० ८।७९, ११। ४९, १२।८६, भट्टि० १५।१०४।

हिंस् (भ्वा० रुधा० पर०, चुरा० उभ० हिंसति, हिनस्ति, हिंसयति ते, हिंसित) 1. प्रहार करना, आघात करना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना 3. कष्ट देना, संताप देना—मा० २।२ 4. मार डालना, हत्या करना, बिल्कुल नष्ट कर देना —कीर्ति सूते दुष्कृत या हिनस्ति उत्तर० ५।३१, रघु० ८।४५, भग० १३।२८, भट्टि० ६।३८, १४।५७, १५।७८।

हिंसक (वि०) [हिंस्+ण्वुल्] हानिकर, अनिष्टकर, क्षतिकर—कः 1. खूंखार जानवर, शिकारी जानवर 2. शत्रु 3. अथर्ववेद में निपुण ब्राह्मण।

हिंसनम्, ना [हिंस्+ल्युट्] प्रहार करना, चोट मारना, वध करना- मनु० २।१७७, १०।४८, याज्ञ० १।३३।

हिंसा [हिंस्+अ+टाप्] 1. क्षति, उत्पात, बुराई, नुकसान, चोट, (यह तीन प्रकार की मानी जाती है —कायिक, वाचिक और मानसिक) अहिंसा परमो धर्मः 2. वध करना, हत्या करना, विध्वंस —रघु० ५।५७, याज्ञ० ३।११३, मनु० १०।६३ 3. लूटना, डाका डालना। सम०—आत्मक (वि०) हानिकर, विनाशकारी,—कर्मन् (नपुं०) 1. कोई भी हानिकर या क्षति पहुँचाने वाला कृत्य 2. शत्रु का नाश करने में प्रयुक्त जादू, अभिचार —प्राणिन् अनिष्टकर जंतु,—रत (वि०) उत्पात में संलग्न, —रुचि उत्पात करने पर तुला हुआ, समुद्भव (वि०) क्षति से उत्पन्न।

हिंसाशः [हिंसा+आश] 1. बाघ, चीता 2. कोई भी अनिष्टकर जन्तु।

हिंसालु (वि०) [हिंसा+आलुच्] 1. हानिकर, उत्पाती, चोट पहुँचाने वाला 2. घातक (पुं०) उत्पाती या जंगली कुत्ता।

हिंसालुक (वि०) [हिंसालु+कन्] उपद्रवी या जंगली कुत्ता।

हिंसीरः [हिंस्+ईरन्] 1. बाघ 2 पक्षी 3. उपद्रवी व्यक्ति।

हिंस्य (वि०) [हिंस्+ण्यत्] जो क्षतिग्रस्त किया जा सके या मारा जा सके—रघु० २।५७, मनु० ५।४१।

हिंस्र (वि०) [हिंस्+रु] 1. हानिकर, अनिष्टकर, उपद्रवी, पीड़ाकर, घातक मनु० ९।८०, १२।५६ 2. भयंकर 3. क्रूर, भीषण, बर्बर - स्रः 1. भीषण जन्तु, शिकारी जानवर,—रघु० २।२७ 2. विनाशक 3. शिव 4. भीम। सम०—पशुः शिकारी जानवर, —यन्त्रम् 1. पिंजरा 2. दुर्भावनापूर्ण अभिप्रायों के लिए प्रयुक्त होने वाला अभिचारमंत्र।

हिक्क् i (भ्वा० उभ० हिक्कति ते, हिक्कित) 1. अस्पष्ट उच्चारण करना 2. हिचकी लेना।
ii (चुरा० आ० हिल्लयते) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

हिक्का [हिक्क्+अ+टाप्] 1. अस्पष्ट ध्वनि 2. हिचकी।

हिक्कारः ['हिम्' इत्यस्य कारः] 1. 'हिम्' की मन्द ध्वनि करना, हुंकार भरना 2. बाघ।

हिङ्गु (पुं०, नपुं०) [हिमं गच्छति—गम्+डु, नि०] 1. हींग का पौधा 2. इस पौधे से तैयार किया गया पदार्थ जो घर में खाद्यपदार्थों में छौंक के लिए प्रयुक्त होता है। सम०—निर्यासः 1. हींग के वृक्ष का गोंद के रूप में रस 2. नीम का पेड़, पत्रः इंगुदी का वृक्ष।

हिङ्गुलः } [हिङ्गु+ला+क (कि, डु वा)]
हिङ्गुलिः } ईंगुर, सिंदूर।

हिङ्गुलु (पुं० नपुं०)

हिङ्गोरः (पुं०) हाथी के पैरों को बाँधने की बेड़ी या रस्सी।

हिडिम्बः (पुं०) वह राक्षस जिसे भीम ने मारा था,—बा हिडिंब की बहन जिसने भीम से विवाह कर लिया था। सम० जित्,—निषूदन्, भिद्,—रिपु (पुं०) भीम के विशेषण।

हिण्ड् (भ्वा० आ० हिण्डते, हिण्डित) जाना, घूमना, इधर उधर फिरना, आ—, घूमना, या इधर-उधर फिरना —श० २।

हिण्डनम् [हिण्ड्+ल्युट्] 1. घूमना, इधर-उधर फिरना 2. सभोग 3. लेखन।

हिण्डिकः [हिण्ड्+इन्—हिण्टि+कन्] ज्योतिषी।

हिण्डि (ड्डी) रः [हिण्ड्+ईरन् (इरच्)] 1. समुद्रझाग 2. पुरुष, मर्द 3. वैगन।

हिण्डी [हिड्+इन्—ङीप्] दुर्गा।

हित (वि०) [धा (हि)+क्त] 1. रखा हुआ, डाला हुआ, पड़ा हुआ 2. थामा हुआ, लिया हुआ 3. उपयुक्त, योग्य, समुचित, अच्छा (संप्र० के साथ)—गोभ्यो हितं गोहितम् 4. उपयोगी, लाभदायक 5. हितकारी, लाभप्रद, संपूर्ण, स्वास्थ्यवर्धक (शब्द या भोजन आदि)—हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—कि० १।४, १४।६३ 6. मित्रवत्, कृपालु, स्नेही, सद्वृत्त (प्रायः अधि० के साथ)—तः मित्र, परोपकारी, मित्र जैसा परामर्शदाता—हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कि० १५९, हि० १।३०,—तम् 1. उपकार, लाभ, फायदा 2 घोड़े और हाथियों का समुचित साज 3. वस्त्राभूषण, कपड़े, लत्ता। हवन—अनुवन्धिन् (वि०) कल्याणप्रद, आवेशिन्, -अधिन् कुशलाभिलाषी, इच्छा करने वाला, मंगलकामना,—उक्तिः आशीर्वाद, वर्धक निपात, सत्परामर्श, नेक सलाह, -उपदेशः शिक्षक उपदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—एषिन् हितेच्छु, अच्छा चाहने वाला, परोपकारी, -कर (वि०) सेवा या कृपापूर्ण कार्य करने वाला मित्रता का व्यवहार करने वाला, अनुकूल, काम (वि०) हितेच्छु, मंगलाकांक्षी, -काम्या दूसरे की मंगलकामना, सदिच्छा, -कारिन्, -कृत् (पु०) परोपकारी, -प्रणी (पु०) गुप्तचर बुद्धि (वि०) मित्र से मत वाला, शुद्धहृदयापूर्ण, -वाक्यम् मैत्रीपूर्ण परामर्श,—वादिन् (पुं०) सत्परामर्श देने वाला।

हितकः [हित+कन्] 1. कुत्ता 2. किसी राजा का शत्रु।

हिन्ताल: [हिन्तालाः सन्त्यत्र—मत्वर्थे अण्] एक प्रकार का वृक्ष।

हिन्दोलः [हिन्दोल्+घञ्, पृषो०] 1. हिंडोला, झूला 2. श्रावण के शुक्ल पक्ष में दोलोत्सव के अवसर पर कृष्ण भगवान् की मूर्तियों को ले जाने वाला हिंडोल, या दोलोत्सव।

हिन्दोलकः, हिन्दोला [हिन्दोल+कन्, टाप् या] झूला, हिंडोला।

हिम (वि०) [हि+मक्] ठंडा, शीतल, सर्द, तुषारयुक्त, ओसीला,—मः 1. जाड़े की मौसम, सर्द ऋतु 2. चंद्रमा 3. हिमालय पर्वत 4. चन्दन का पेड़ 5. कपूर, -मय (वि०) बर्फीला, पाला रघु० १।८६, १।२५, कु० २।१९ 2 ओस, पाला- कु० १।३, ११, रघु० ९।२८, १५। ६५, १६।४८, शि० ७।१२ 3. सर्दी, ठंडक 4. कमल 5. तारा नक्षत्र, 6. मोती 7. शंख 8. चन्दन की लकड़ी। शब्द० अंशु: 1. चन्द्रमा,—भेद० ८९, रघु० ५।१६, ६।४७, १४।८०, शि० २।४९ 2. कपूर -आगमः जाड़े की मौसम या सर्द ऋतु आलयः (वि०) पाले से ठिठुरा हुआ, ठंड से जमा हुआ,—आलयः हिमालय पहाड़—कु० १।१, सुता पार्वती का विशेषण आह्वः—आह्वयः कपूर, उत्थः मोती, करः 1. चांद-लुठति न सा हिमकरकिरणेषु मालि० ७ 2. कपूर, कूटः 1. जाड़े की ऋतु 2. हिमालय पहाड़,—गिरिः हिमालय पहाड़,—गुः चांद, —जः मैनाक पर्वत,—जा 1. सिरस का पेड़ 2. पार्वती, —तैलम् एक प्रकार की कपूर की मलहम, दीधितिः चन्द्रमा शि० १।२१ दुदिनम् अति ठंड से पैदा दायक दिन, ठंड और बरा मौसम,—द्युतिः चन्द्रमा, -द्रुह (पु०) सूर्य,—द्वस्त (वि०) पाले से मारा हुआ, कुम्हला हुआ या नष्ट हुआ, प्रस्थः हिमालय पहाड़, -रश्मि (पुं०) चांद,-वालुका कपूर,—शीतल (वि०) बर्फ की भांति ठंडा, शैलः हिमालय पहाड़,—संहतिः (स्त्री०) बर्फ का ढेर, सरस् बर्फ की झील, ठंडा पानी मा० १।३१, —हासकः दलदल में होने वाला खजूर का पेड़।

हिमवत् (वि०) [हिम+मतुप्] हिममय, बर्फीला, कुहर से युक्त,—(पु०) हिमालय पहाड़—रघु० ४।७७, विक्रम० ५।२२। सप्त० कुक्षिः हिमालय पर्वत की घाटी – पुरम् हिमालय की राजधानी आदिपित्रस्य का नाम, कु० ६।३३,—सुतः मैनाक पर्वत,—सुता 1. पार्वती 2. गंगा।

हिमानी [मत्वर्थे हिमम् हि०] ओस आदि, बर्फ का ढेर हिम का समूह, हिममूर्ति नगमूर्ति हिमानंगोरमासाय जिष्णुः कि० ४।३८, भाग० १।२२।

हिरण्यम् [हृ+क्यप्, नि०] 1. सोना 2. वीर्य 3. कौड़ी। हिरण्मय (वि०) (स्त्री० यी) [हिरण्+मयट् नि०] सोने का बना हुआ, सुनहरी—हिरण्मयी सीतायाः प्रतिकृतिः – उत्तर० २, रघु० १५।९६,—यः ब्रह्मा देवता।

हिरण्यम् [हिरण्यमेव स्वार्थे यत्] 1. सोना,—मनु० ३।९४, ८।१८९ 2. सोने का पात्र मनु० ७।९५ 3. चांदी 4. कोई भी मूल्यवान् धातु 5. दौलत, संपत्ति 6. वीर्य, शुक्र 7. कौड़ी 8. एक विशेष यज्ञ 9. सारांश 10. तत्पुरा 1. सम०—कक्षः (वि०) सुनहरी करधनी पहनने वाला, -कशिपुः राक्षसों के एक प्रसिद्ध राजा का नाम (यह कश्यप और दिति का पुत्र था। यह इतना शक्ति शाली हो गया था कि इसने इन्द्र का राज्य छीन लिया और तीनों लोकों को पीड़ित करने लगा। इसने बड़े-बड़े देवताओं की निन्दा की, और अपने पुत्र प्रह्लाद को, विष्णु को ही परमात्मा मानने के कारण नाना प्रकार के कष्ट दिये, परन्तु बाद में उसे विष्णु ने नरसिंह का अवतार धारण कर यमपुर भेज दिया—दे० प्रह्लाद), कोशः सोना और चांदी (चाहे आभूषण बने हों या बिना गढ़ा सोना चांदी) - गर्भः 1 ब्रह्मा (क्योंकि वह सोने के अंडे से पैदा हुआ) 2. विष्णु का नाम 3. सूक्ष्मशरीर धारण करने वाली आत्मा, द (वि०) सुवर्ण देने वाला—मनु० ४।२३०, (दः) समुद्र, (दा) पृथ्वी, नाभः मैनाक पहाड़,—बाहुः 1. शिव का विशेषण 2. सोन नदी, —रेतस् 1. आग—रघु० १८।२५ 2. सूर्य 3. शिव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4. चित्रक या सदार का पौधा,—वर्णा नदी,—वाह: सोन दरिया ।

हरिण्यय (वि०) (स्त्री०- यी) [हिरण्य+मयट्, नि० मलोप:] सुनहरी ।

हिरुक् (अव्य०) [हि+उकिक्, रुट्] 1. के बिना, के सिवाय 2. में, बीच में 3. निकट 4. नीचे ।

हिल् (तुदा० पर० हिलति) केलिक्रीड़ा करना, स्वेच्छा से रमण करना, प्रेमालिंगन करना, कामेच्छा प्रकट करना ।

हिल्लः [हिल्+लक्] एक प्रकार का पक्षी ।

हिल्लोलः [हिल्लोल्+अच्] 1. लहर, झाल 2. हिंडोल राग 3. धुन, सनक 4. एक रतिबंध ।

हिल्वलाः (स्त्री०, ब० व०) [..हल्वला, पृषो०] मृगशिरा नक्षत्र के सिर के पास के पाँच छोटे तारे ।

ही (अव्य०) [हि+डो] 1. आश्चर्य प्रकट करने वाला अव्यय हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः-शि० ११।६४, या ही चित्रं लक्ष्मणेनोचे—भट्टि० १४। ३९ (इस अर्थ में प्राय: नाटकीय भाषा में इसकी आवृत्ति होती है) 2. थकावट, उदासी, खिन्नता तथा ।

हीन (भू० क० कृ०) [हा+क्त, तस्य न: ईत्वम्] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2. रहित, वञ्चित, वियुक्त, के बिना (करण० या समास में)—गुणैर्हीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः—सुभा०, इसी प्रकार द्रव्य°, मति° और उत्साह° आदि 3. मुझाया हुआ, बर्बाद 4. बुद्धिहीन, सदोष, होनातिरिक्तगात्रो वा तमपयत्नयेत्तत: मनु० ३।२४३ 5. घटाया हुआ 6. कम, निम्नतर मनु० ७।१९४ 7. नीच, अधम, कमीना, दुष्ट, न: 1. सदोष गवाह 2. अपराधी प्रतिवादी (नारद पाँच प्रकार के वक्ताओं में अन्यवादी क्रियाहेषी लोपस्थायी निरुत्तर: । आहूतप्रलापी च हीनः पंचविधः स्मृतः॥) । सम० अङ्ग (वि०) अंगहीन, विकलांग, अपाहज, सदोष -मनु० ४।१४१, याज्ञ० १।२२२, कुल, ज (वि०) ओछे कुल में उत्पन्न, नीच परिवार का,—ऋतु (वि०) जो अपने यज्ञानुष्ठान में अवहेलना करता है, जाति (वि०) 1. नीच जाति का 2. जाति से बहिष्कृत, बिरादरी से खारिज, पतित,—योनि: (स्त्री०) नीची कोटि का जन्मस्थान,—वर्ण (वि०) 1. नीच जाति का 2. घटिया दर्जे का, वादिन् (वि०) 1. सदोष बयान देने वाला 2. अपलापी 3. गूंगा, मूक, सत्सङ्ग नीच व्यक्तियों से मेलजोल, सेवा नीच व्यक्तियों की टहल करना ।

हीनालः [हीनस्+लच्, पृषो०] दलदल में होने वाला खजूर का वृक्ष ।

हीरः [हृ+क, नि०] 1. साँप 2. हार 3. सिंह 4. 'नैषधचरित' काव्य के रचयिता श्री हर्ष के पिता का नाम, —र:,—रम् 1. इन्द्र का वज्र 2. हीरा, (नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अंतिम श्लोक में आने वाला) । सम० —अङ्क: इन्द्र का वज्र ।

हीरकः [हीर+कन्] हीरा ।

हीरा [हीर+टाप्] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. चिऊँटी ।

हीलम् [ही विस्मये लाति ला+क] पौरुषेय वीर्य ।

हीही (अव्य०) [ही+ही] आश्चर्य और प्रमोद को प्रकट करने वाला अव्यय ।

हु (जुहो० पर० जुहोति, हुत—कर्मवा० हूयते, प्रेर० हावयति-ते, इच्छा० जुहूषति) 1. (हवनकुंड में आहुति के रूप में) प्रस्तुत करना, किसी देवता के सम्मान में भेंट देना (कर्म० के साथ), यज्ञ करना— यो मन्मयूतां तनूमध्वरेषु हूयात्—रघु० १३,४५, जटाधरः सन् जुहुयाद्ध पावकम्—कि० १।४४ हविर्जुहुधि पावके—भट्टि० २०।११, मनु० ३।८७, याज्ञ० १।९९ 2. यज्ञ का अनुष्ठान करना 3. खाना ।

हुड् i (म्वा० पर० होडति) जाना ।

ii (तुदा० पर० हुडति) संचय करना ।

हुड: [हुड्+क] 1. मेढ़ा 2. चोरों को दूर रखने के लिए लोहे का काँटा 3. एक प्रकार की बाड़ 4. लोहे का मुद्गर ।

हुडुः [हुड्+कु०] मेंढा—अम्बूकी हुडुयुग्रेन—पंच० १।१६२।

हुडुक्कः [हुड्+उक्क] बाल की घड़ी के आकार का बना एक छोटा ढोल, नै० १५।१७ 2. एक प्रकार का पक्षी, दात्यूह 3. दरवाजे की कुंडी 4. नशे में चूर पुरुष ।

हुडुत् (नपुं०) [हुड्+उति] 1. साँड का रंभाना 2. धमकी का शब्द ।

हुण्डः [हुण्ड्+क] 1. व्याघ्र 2. मेढ़ा 3. बुद्धू 4. ग्रामशूकर 5. राक्षस ।

हुत (भू० क० कृ०) [हु+क्त] 1. आहुति के रूप में आग में डाला हुआ, यज्ञीय भेंट के रूप में होम किया हुआ 2. जिसे आहुति दी जाय—श० ४, रघु० २।७१, ९।३३,—त: शिव का नाम,—तम् आहुति, चढ़ावा । सम०—अग्नि (वि०) जिसने अग्नि में आहुति डाली है—रघु० १।६, -अशन: 1. अग्नि—समीरणो नोदयिता भवेति व्याहियते केन हुताशनस्य—कु० ३।२१, रघु० ४।१ 2. शिव का नाम °हाशः शिव का विशेषण, अशनी फाल्गुन मास की पूर्णिमा, होलिका, -आशः आग—प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशम्—रघु० २।७१,—आतवेदस् (वि०) जिसने अग्नि में आहुति दी है, -भुज् (पुं०) आग—नैशस्यार्चिर्हुतभुज इव च्छिन्नभूयिष्ठधूमा—विक्रम० १।९, उत्तर० ५।९, °प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा,—वह: आग—जगतीर्ण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव—श० ५।१०, शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः गीत० ९, मेघ० ४३, ऋतु० १।२७, —होमः वह ब्राह्मण जिसने आग में आहुति दी है, (मनु) जला हुआ शाकल्य।

हुम् (अव्य०) [हु—डुमि] (मूल रूप से एक अनुकरणात्मक ध्वनि) निम्नांकित अर्थों को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय —1. याद, प्रत्याह्मरण : हुं ज्ञातम्, ... यः ...रामो नाम बभूव हुं तदबला सीतेति हुम् 2. सन्देह—चैत्रो हुं मैत्रो हुम् 3. स्वीकृति—उत्तर० ५।३५ 4. रोष 5. अरुचि 6. भर्त्सना 7. प्रश्नवाचकता (जादू व मंत्रों में 'हुम्' का संप्र० के साथ प्रयोग - उदा० ओं कवचाय हुम्,) (हुंकृ 'हुम्' की ध्वनि करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना, रंभाना यथा अनुहुंकृत 'बदले में 'हुम्' की ध्वनि करना अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी— शि० १६।२५), समः -कारः—कृतिः (स्त्री०) 1. 'हुम्' की ध्वनि करना—पृष्टा पुनः पुनः कान्ता हुंकारेरेव भाषते 2. गर्जना, ललकार : सतर्हुंकारशंसिनः—कु० २।२६, हुंकारेणेव धनुषः स हि विघ्नानमोहति शि० ३।१, रघु० ७।५८, कु० ५।५४ 3. दहाड़ना, रंभाना 4. सूअर का घुर्घुराना 5. धनुष की टंकार।

हुड्ड् (भ्वा० पर० हुड्डति) टेढ़ा होना।

हुड् (भ्वा० पर० होडति) 1. जाना 2. ढांपना, छिपाना।

हुडुहुडी [हुड्—क, द्वित्वम्, ह्रस्वः च] हर्ष के अवसरों पर महिलाओं द्वारा उच्चारण की जाने वाली एक अस्पष्ट हर्षध्वनि।

हुड्डु (हू) (पुं०) [ह्वे + डु, नि०] एक गन्धर्व विशेष।

हुड्डू (भ्वा० आ० हुडते) जाना।

हूणः (नः) [ह्वे + नक्, संप्र०, पक्षे पृषो० णत्वम्] 1. असभ्य, जंगली, विदेशी सर्वाभरणभण्डितमत्तहूणचिबुकप्रस्पर्धि नारंगकम् 2. एक सोने का सिक्का, (संभवतः यह हूणों के देश में प्रचलित था), णाः (पुं०, ब० व०) एक देश या उसके अधिवासियों का नाम—हूणावरोधानां—रघु० ४।६८।

हूत (भू० क० कृ०) [ह्वे + क्त संप्रसारणम्] आमन्त्रित, बुलाया गया, निमन्त्रित दे० 'ह्वे'।

हूतिः (स्त्री०) [ह्वे + क्तिन्, संप्र०] 1. बुलावा, निमंत्रण 2. चुनौती 3. नाम—जैसा कि 'हरिहेतुहूतिः' में।

हूम् दे० हुम्।

हूरवः [हू इति रवो यस्य ब० स०] गीदड़।

हूहू (पुं०) [=हूहू पृषो०] गन्धर्व विशेष।

हृ (भ्वा० उभ० हरति-ते, हृत, कर्मवा० ह्रियते) लेना, छीना, पहुंचाना, आगे आगे चलना (इस अर्थ में बहुधा द्विकर्मक प्रयोग)—अजां ग्रामं हरति सिद्धा०, संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य -मेघ० ७, मनु० ४।७४ 2. उठाकर ले जाना, अपहरण करना, दूरी पर ले जाना, भट्टि० ५।४७ 3. अपहृत करना, लूटना, डाका डालना, चुराना—दुर्वृत्ता जारजन्मानो हरिष्यन्तीति शङ्कया भामि० ४।४५, रघु० ३।३९, कु० २।४७, भट्टि० २।३२, मनु० ७।४३ 4. विवस्त्र करना, वञ्चित करना, छीन लेना, अपहरण करना—वृत्तात्फलश्रुतेर्हारि पुष्पमनोज्ञमहःनाम् रघु० ५।६९, ३।५४, भट्टि० १५।११६, मनु० ८।३३४ 5. ले जाना, प्रतीकार करना, नष्ट करना तथापि हरते तापं लोकानामुन्नतो घनः भामि० १।४९, रघु० १५।२४, मेघ० ३१ 6. आकृष्ट करना, मुग्ध करना, जीत लेना, प्रभाव डालना, अधीन करना, वशीभूत करना—केतो न कस्य हरते गतिरज्ञनायाः : भामि० २।१५७, ये भावा हृदयं हरन्ति ...१।१०३, तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः श० १।५, मृगया ज्वहार चतुरेव कामिनी —रघु० ९।६९, १०।८३, विक्रम० ४।१०, ऋतु० ६।२०, भग० ६।३४, २।६० मनु० ६।५९ 7. उपलब्ध करना, ग्रहण करना, लेना, प्राप्त करना ततो विप्रं नृपो हरेत् मनु० ८।३९१, १५३, स हरेत् सुभगपताकाम्—दश० 8. रखना, अधिकार में करना - भामि० २।१६३ 9. पराभूत करना, ग्रस्त करना —भट्टि० ५।७१, शि० ९।६३ 10. विवाह करना —मनु० ९।९३ 11. बांटना—प्रेर० (हारयति-ते) 1. उडवा देना, हुवाना, पहुँचाना, (कोई चीज) किसी के हाथ भिजवाना (करण० के कर्म के साथ)—भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति—सिद्धा०, जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, मनु० ८।११४ कु० २।३९ 2. अपहृत करवाना, नष्ट करवाना, वञ्चित होना 3. पुरस्कार देना, इच्छा० (जिहीर्षति -ते) लेने की इच्छा करना। अध्या—, न्यूनपद की पूर्ति करना, अनु —, 1. नकल करना, मिलना-जुलना : देहबन्धेन स्वरेण च रामभद्रमनुहरति उत्तर० ४, इसी प्रकार कि० ९।६७ 2. (अपने माता पिता से) मिलना-जुलना (इस अर्थ में आ०) दे० पा० १।३।२१ वार्तिक, अप—, 1. छीन लेना, उड़ा लेना—पश्चात्पुरंदरपदाभरः कल्पते विश्रमाय : विक्रम० ३।१ 2. पराङ्मुख होना, मुड़ना वदनमपहरन्तीं (गौरीम्) कु० ७।९५ 3. लूटना, डाका डालना, चुराना 4. (किसी को) वञ्चित करना, दूर करना, नष्ट करना—त्वं च कीर्तिमपहर्तुमुद्यतः—रघु० ११।७४ 5. आकृष्ट करना, प्रभावित करना, जोर डालना, जीत लेना, वशीभूत करना (न) प्रियतमा यतमानमपहरत् -रघु० ९।७, इसी प्रकार 'अपह्रियेव खमु परिश्रमजनितया निद्रया उत्तर० १, (प्रेर०) (दूसरों से) अपहरण करवाना कि० १।३१, अभि—,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उठाकर ले जाना, हटाना, अभ्यव —,खाना (प्रेर०) खिलाना, भोजन कराना, आ—,1. (क) लाना, ले आना यदेव वज्रं तदपश्यदाहृतम् रघु० ३।९, १४। ७७ (ख) होना, पहुँचाना मनु० ९।५४ 2. निकट लाना, देना—अयाचितादाहृतम्—याज्ञ० १।१२५ 3. प्राप्त करना, लेना, हासिल करना—मनु० २। १८३, ७।८०, ८।१५१ 4. रखना, धारण करना —अजह्नुस्तुल्यश्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविन्दश्रियमव्यवस्थाम् कु० १।३३ 6. (यज्ञ का) अनुष्ठान करना स विश्वजित्माजह्रे यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम् रघु० ४।८६, १४।३७ 7. समूल करना, वापिस लेना 8. कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 9. पहनना, धारण करना 10. आकृष्ट करना 11. हटाना, दूर करना—(प्रेर०) 1. संगवाना 2. दिलवाना 3. एकत्र करना, परस्पर मिलाना, उद्—1. बचाना, मुक्त करना, उद्धार करना, छुड़ाना—मां तावद्धर शुचो दयितप्रवृत्त्या— विक्रम० ४।१५ 2. खींचना, बाहर निकालना (शरम्) उद्धर्तुमैच्छत्प्रसभोद्धतारिः रघु० २।३०, ३।६४ 3. उन्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना, उद्धार करना नमयामास नृपानन्दूरन् रघु० ८।९, ४।६६, त्रिदिवमद्भुतदानवकण्टकम्—शि० ७।३ 4. उठाना, ऊपर को करना, उन्नत करना, (हाथ आदि) फैलाना मनु० ४।६२, पंच० १।३६३ 5. (फूल आदि) तोड़ना 6. अवशोषण करना —शि० ३।७५ 7. घटाना, व्यवकलन करना 8. छांटना, चुनना, उद्धृत करना—इदं पद्यं रामायणादुद्धृतम् —(प्रेर०) बाहर निकलवाना रघु० ९।७४, उदा ,1. वर्णन करना, बयान करना, प्रकथन करना कहना बोलना, उच्चारण करना—उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः—कि० १।२७, मृच्छ० ९।४, चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—मालवि० २, मा० १ 2. पुकारना, नाम लेना—त्वां कामिनो मदनदूतिकामुदाहरन्ति —विक्रम० ४।११, श्रुतान्वितो दशरथ इत्युदाहृतः भट्टि० १।१ 3. साक्षित्व बनाना, सोदाहरण निरूपण करना, उदाहरण या चित्र उद्धृत करना, तमुदाहृित्यस्त्र कथमन्यथा जनैः शि० १५।२९, उप , 1. ले आना, निकट लाना शा० १ 2. प्रस्तुत करना, प्रदान करना, उपहार देना—नीवारभागधेयमस्माकमुपहरन्तु—शा० २, मातृभ्यो बलिमुपहर—मृच्छ० १, महावीर० ६।२२, रघु० १४।१९, १६।८०, १९।१२, शा० ३ 3. (बलि के रूप में) प्रस्तुत करना, उपा—, लाना, ले आना, निस्—, 1. बाहर निकालना, खींचना, उद्धृत करना—रघु० १४।४२ 2. शव को बाहर निकालना मनु० ५।९१, याज्ञ० ३।१५ 3. (दोष की भांति) दूर करना, परि—, 1. बचना, दूर रहना— स्त्रीसन्निकर्षं परिहर्तुमिच्छन्नन्तर्दधे भूतपतिः स भूतः कु० ३।७४, मनु० ८।४००, कु० ३।४३ 2. त्यागना, परित्यक्त करना, छोड़ना, तिलाञ्जलि देना—कति न कथितमिदमनुपदमचिरं मा परिहर हरिमतिशयचतुरम्—गीत० ९ 3. हटाना, नष्ट करना, उत्तर देना, प्रत्याख्यान करना (आक्षेप व आरोप आदि का) ब्रह्मास्य जगतो निमित्तं कारणं प्रकृतिश्चेत्यस्य पक्षस्यापक्षेपः स्मृतिनिमित्तः परिहृतः। तर्कनिमित्त इदानीमाक्षेपः परिहियते—शा० भा०, मेघ० १४, प्र , 1. प्रहार करना, आघात करना, पीटना लत्तया प्रहरति 'लात मारता है' रघु० ५। ६८, कु० ३।७०, भट्टि० ९।७ 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, घायल करना (अधि० के साथ) —आर्तत्राणाय यः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि - श० १। ११, रघु० २।६२, ७।५९, ११।८४, १५।३ 3. आक्रमण करना, हमला करना 4. फेंकना, डालना, प्रक्षेप करना (अधि० या संप्र० के साथ) 5. छापा मारना, वि—, 1. ले जाना, पकड़ कर दूर करना, 2. हटाना, नष्ट करना, 3. गिरने देना, (आँसू आदि) ढालना 4. (समय) बिताना 5. मनोरंजन करना, आमोद-प्रमोद में व्यस्त होना, खेलना विहरति हरिरिह सरसवसन्ते गीत० १, व्यव , 1. व्यवहार करना, व्यवसाय करना 2. करना, आचरण करना, व्यापार करना 3. कानून की शरण जाना, कचहरी में नालिश करना अर्थपतिर्व्यवहर्तुमर्थगौरवादभिशोच्यते—दश०, व्या —, बोलना, कहना, बतलाना, वर्णन करना, प्रकथन करना · कु० २।६२, ६।२, रघु० ११।८३, सम् , 1. लाना, मिला कर खींचना 2. (क) सिकोड़ना, संक्षिप्त करना, भींचना रघु० १०।३२, (ख) गिरा देना संहियतामियम्—का० 3. साथ साथ लाना, एकत्र करना, संचय करना 4. नष्ट करना, संहार करना (विप० 'सृज्') अमुं युगान्तोचितकालनिद्रः संहृत्य लोकान् पुरुषोऽधिशेते रघु० १३।६ 5. वापिस लेना, रोकना, पीछे खींचना —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् श० २।११, ६।४, न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः —हि० १।६१, रघु० ४।१६, १२।१०३, भग० २। २८ 6. दमन करना, नियन्त्रण करना, दबाना क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति कु० ३।७२ 7. बन्द करना, समाप्त करना—समा—, 1. लाना, पहुँचाना, होना सर्व एव समाहारि तदा कौलः सहौषधिः—भट्टि० १५।१०७ 2. संग्रह करना, साथ मिलाना, जोड़ना तत्र स्वयंवर समाहृतराजलोकम्—रघु० ५।६२, भट्टि० ८।६३ 3. खींचना, आकृष्ट करना 4. नष्ट करना, संहार करना—भग० ११।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३२ 5. पूरा करना (यज्ञ आदि) 6. वापिस आना, अपने उचित स्थान को फिर से प्राप्त करना—मनु० ८।३१९ 7. दमन करना, नियन्त्रित करना।

हृ (हि) यीयते (ना० धा० आ०) 1. क्रुद्ध होना, 2. लज्जित होना (करण० या संब० के साथ) —स्वयास्त्र तस्मिन्नधि दण्डधारिणा कथं न पत्या धरणी हृणीयते नै० ११३३, दिवौकसि वज्रायुधभूषणा या हृणीयते वीरवती न भूमि: भट्टि० २।३८।

हृणी (णि) या [हृणी+यङ्—अ+टाप्] 1. निन्दा, भर्त्सना 2. लज्जा 3. करुणा।

हृत् (वि०) [हृ+क्विप्, तुक्] (केवल समास के अन्त में) ले जाने वाला, अपहरण करने वाला, हटाने वाला, उठाकर ले जाने वाला, आकर्षक।

हृत (भू० क० कृ०) [हृ+क्त] 1. ले जाया गया 2. अपहरण किया गया 3. मुग्ध किया गया 4. स्वीकृत 5. विभक्त, दे० 'हृ'। सम० -**अधिकार** (वि०) 1. जिसका अधिकार छीन लिया गया है, बाहर निकाला हुआ 2. अपने उचित अधिकारों से वंचित किया गया, -**उत्तरीय** (वि०) जिसका उत्तरीय वस्त्र (चादर इत्यादि) छीन लिया गया हो द्रव्य, —**धन** (वि०) धन दौलत से वंचित, -**सर्वस्व** (वि०) जिसका सब कुछ छीन लिया गया हो, बिल्कुल बर्बाद हो गया हो।

हृति: (स्त्री०) [हृ+क्तिन्] 1. छीन लेना 2. लूटना, खसोटना 3. विनाश।

हृद् (नपुं०) [—हृत्, पूर्वो० तस्य दः, हृदयस्य हृदादेशो वा] (इस शब्द के सर्वनामस्थान के कोई रूप रहते होने, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'हृदय' के स्थान में यह रूप आदेश हो जाता है) 1. मन, दिल 2. छाती, दिल, सीना —इमां हृदि व्यायतपालमभिशंस् कु० ५।५४। सम० -**आयत:** घोड़े की छाती के बाल, —**कम्प:** दिल की कंपन, धड़कन, -**गत** (वि०) 1. मन में आसीन, सोचा हुआ, अभिकल्पित 2. पाला-पोसा गया,—(**तम्**) अभिकल्पना, अर्थ, आशय, -**देश:** हृदयतल **पिड:**, -**डम्**, दिल, **रोग:** 1. दिल का रोग, दिल की जलन 2. शोक, गम, वेदना 3. प्रेम 4. कुंभराशि, -**लास:** (**हृल्लास:**) 1. हिचकी 2. अशान्ति, शोक, -**लेख:** (**हृल्लेख:**) 1. ज्ञान, तर्कना 2. दिल की पीडा, -**लेखा** (**हृल्लेखा**) शोक, चिन्ता, —**शंकट:** पेट, -**शोक:** हृदय की जलन, वेदना।

हृदयम् [हृ+कयन्, तुक् आगमः] 1. दिल, आत्मा, मन —हृदये दिग्धशरीरवाहृतः कु० ४।२९. इसी प्रकार 'अयोहृदय:—रघु० ९।९, पाषाणहृदय आदि 2. वक्षः स्थल, सीना, छाती —बाणभिन्नहृदया निपेतुषी—रघु० ११।१९ 3. प्रेम, अनुराग 4. किसी चीज का रस या आन्तरिक भाग 5. रहस्य विज्ञान, अथर्व°, अक्ष°। सम०—**आत्मन्** (पुं०) सारस, -**आविध्** (वि०) हृदयविदारक, दिल को बींधने वाला, भट्टि० ६।७३, —**ईश:** ईश्वर: पति, (**शा, री**) 1. पत्नी 2. गृहिणी, **कम्प:** दिल का कांपना, धड़कन, **चोरिन्** (वि०) मनमोहक, **चौर:** जो दिल को या प्रेम को चुराता है **छिद्** (वि०) हृदय-विदारक, हृदय को बींधने वाला,—**विध्**,—**वेधिन्** (वि०) हृदय को बींधने वाला,- **वृत्ति:** (स्त्री०) मन का स्वभाव, -**स्थ** (वि०) हृदय स्थित, मन में विराजमान, - **स्थानम्** छाती, वक्षःस्थल।

हृदयङ्गम (वि०) [हृदय + गम्+खच्, मुम्] 1. हृदय को दहलाने वाला, मर्मस्पर्शी, रोमाञ्चकारी 2. प्रिय, सुन्दर, -मा० १ 3. मधुर, आकर्षक, सुखद, रुचिकर - अहो हृदयङ्गमः परिहासः—मा० ३, वल्लकी च हृदयङ्गमस्वना रघु० १९।१३, कु० २।१६ 4. यंत्रर, गृहीत 5. प्यारा, वल्लभ, आंख का तारा माना हुआ वेदान्त ने हृदयङ्गमः सखा कु० ४।२४।

हृदयालु, हृदयिक, हृदयित (वि०) [हृदय+आलुच्, ठन्, इतच् वा] कोमलहृदय वाला, अच्छे दिल वाला, स्नेही।

हृदि (दी) क: (पुं०) एक यादव राजकुमार।

हृदिस्पृश् (वि०) [हृदि+स्पृश्+क्विन्, अलुक् स०] 1. हृदय को छूने वाला 2. प्रिय, प्यारा 3. रुचिकर, मनोहर, सुन्दर।

हृद्य (वि०) [हृदि स्पृश्यते मनोज्ञत्वात् हृद्+यत्] 1. हार्दिक, दिली, भीतरी 2. जो हृदय को प्रिय लगे, स्निग्ध, प्रिय, अभीष्ट, वल्लभ भामि० १।६९ 3. रुचिकर, सुखकर, मनोहर मा० ४, रघु० ११। ६८। सम० -**गन्ध:** बेल का पेड़, -**गन्धा** फूलों से खूब लदा हुआ मोतिया।

हृष् (भ्वा० दिवा० पर० हर्षति, हृष्यति, हृष्ट या हर्षित) 1. खुश होना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बाग बाग होना, हर्षोन्मत्त होना—अद्वितीय इवात्मानं मत्वा किं नन्द हृष्यसि—भामि० २।१०५, भट्टि० १५।१०४, मनु० २।५४ 2. रोमांचित होना, रोंगटे खड़े होना—हृष्यन्तास्तनूरुहाः—दश०, हृष्यन्ति रोमकूपानि —महा० 3. खड़ा होना (कोई अन्य वस्तु—उदा० लिङ्ग का) प्रेर० (हर्षयति-ते) प्रसन्न करना, खुश करना, प्रसन्नता से भर जाना, प्र—, 1. प्रसन्न होना, हर्षोन्मत्त होना न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य—भग० ५। २०, ११।३६ 2. रोंगटे खड़े होना, (शरीर के बाल) खड़े होना, वि—, हर्षोन्मत्त करना, प्रसन्न होना, खुश होना।

हृष्ट (भू० क० कृ०) [हृष्+क्त] 1. प्रसन्न, खुश,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनन्दित, उल्लसित, आह्लादित, हर्षोन्मत्त 2. पुलकित, रोमाञ्चित 3. आश्चर्यान्वित 4. झुका हुआ, विनत 5. निडर 6. ताज़ा।

हृषीकम् [हृष्+इकन्] ज्ञानेन्द्रिय। सम० **ईशः** विष्णु या कृष्ण का विशेषण-भग० ११।१५ तथा आगे पीछे (हृषीकाणीन्द्रियाण्याहृस्तेषामीशो यतो भवान्। हृषीकेशस्ततो विष्णो ख्यातो देवेषु केशव—महा०)

हृष्ट (भू० क० कृ०) [हृष्+क्त] प्रसन्न, हर्षयुक्त, (=हृषित)। सम०—**चित्त मानस** (वि०) मन से प्रसन्न, हृदय में खुश, आनन्दित, **रोमन्** (वि०) (हर्ष के कारण) रोमांचित, पुलकित, **वदन** (वि०) प्रसन्नमुख,—**संकल्प** (वि०) संतुष्ट, सुखी, **हृदय** (वि०) प्रसन्नमना, प्रफुल्ल, उल्लसित।

हृष्टिः (स्त्री०) [हृष्+क्तिन्] 1. आनन्द, उल्लास, हर्ष, खुशी 2. घमंड।

हे (अव्य०) [हा+डे] 1. संबोधनपरक अव्यय (ओ, अरे)—हे कृष्ण, हे यादव, हे सखिते—भग० ११।४१ हे राजन्स्वजेत युकविश्रेमबन्धे विरोधम्—विक्रम० १८।१०७ 2. ईर्ष्या, द्वेष, डाह प्रकट करने वाला अव्यय।

हेक्का [=हिक्का, पृषो०] हिचकी।

हेठः [हेठ्+घञ्] 1. प्रकोपन 2. बाधा, अवरोध, विरोध रुकावट 3. क्षति, चोट।

हेड i (म्वा० आ० हेडते) अवज्ञा करना, अपमान करना, तिरस्कार करना।

ii (भ्वा० परः हेडति) 1. घेरना 2. वस्त्र पहनना।

हेडः [हेड्+घञ्] अवज्ञा, तिरस्कार। सम० **ज्ञः** क्रोध, अप्रसन्नता।

हेडावडकः (पु०) घोड़ों का व्यापारी।

हेतिः (पुं०, स्त्री०) [हिन् करणे क्तिन्-तिर्] 1. शस्त्र, अस्त्र —समर विजयी हेतिदलितः—भर्तृ० २।४४, रघु० १०।१२ कि० ३।५६, १४।२० 2. आघात, क्षति 3. सूर्य की किरण 4. प्रकाश, आभा 5. ज्वाला।

हेतुः [हि+तुन्] 1. निमित्त, कारण, उद्देश्य, प्रयोजन -इति हेतुस्तदुद्भवे—काव्य० १, मा० १।२३, रघु० १।१०, मेघ० २५, मा० ३।११ 2. स्रोत, मूल—सा पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः—रघु० १।१४, अपने प्राणियों को पैदा करने वाले 3. साधन, उपकरण 4. तर्कयुक्त कारण, अनुमान का कारण, तर्क (पांच अंगों से युक्त अनुमानप्रक्रिया में द्वितीय अंग) 5. तर्क, तर्कशास्त्र 6. कोई भी तर्कयुक्त प्रमाण, या युक्ति 7. साहित्यिक कारण (कुछ विद्वान् इसी को एक अलंकार भी मानते हैं)—हेतोर्हेतुमता सार्धमभेदो हेतुरुच्यते (**हेतुना, हेतोः** कभी कभी **हेतो** भी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—'के कारण' 'के निमित्त' **क्योंकि**', (सर्व० के साथ या समास में प्रयोग शास्त्रविज्ञान-हेतुना, अल्पस्य हेतोर्वैहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७, विस्मृतं कस्य हेतोः—मुद्रा० ११ आदि)। सम० —**अपदेशः** हेतु का उल्लेख (पदार्थों अनुमान के रूप में), **आभासः** वह हेतु जो किसी कार्य का कारण तो न हो, परन्तु हेतु सा आभासिक हो, कुतर्क, (यह पांच प्रकार का होता है सव्यभिचार या **अनैकांतिक**, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष और बाधित), **उपक्षेपः, उपन्यासः** कारण देना, तर्क उपस्थित करना, **वादः** तर्कवितर्क, शास्त्रार्थ,—**शास्त्रम्** तर्कशास्त्र, तर्कयुक्त रचना, स्मृति या श्रुति की प्रामाणिकता पर प्रश्नोत्तर रूप में कृति मनु० २।११, —**हेतुमत्** (पुं०, द्वि० ब०) कारण और कार्य, °**भावः** कार्य और कारण में विद्यमान संबंध।

हेतुक (वि०) [हेतु+कन्] (समास के अन्त में प्रयुक्त —**कः** 1. कारण, तर्क 2. उपकरण 3. नास्तिक।

हेतुता,—त्वम् [हेतु+तल्+टाप्, त्व वा] कारणता, कारण की विद्यमानता।

हेतुमत् (वि०) [हेतु+मतुप्] 1. सकारण 2. कारणयुक्त, तर्कयुक्त, पुं० कार्य।

हेमन् [हि+मनिन्] सोना, **मः** 1. काले या भूरे रंग का घोड़ा 2. सोने का विशेष तोल 3. बुध ग्रह।

हेमन् (नपुं०) [हि+मनिन्] 1. सोना 2. जल 3. बर्फ 4. धतूरा 5. केसर का फूल। सम०—**अङ्ग** (वि०) सुनहरी, (**गः**) 1. गरुड़ 2. सिंह 3. सुमेरु पर्वत 3. ब्रह्मा का नाम 5. विष्णु का नाम 6. चम्पक वृक्ष **अङ्गदम्** सोने का बाजूबन्द, **अद्रिः** सुमेरु पर्वत, **अम्भोजम्** सुनहरी कमल, - हेमाम्भोजप्रसविसलिलं मानसस्यादधानः—मेघ० ६२, **अम्भोरुहम्** सुनहरी कमल—कु० २।४४, - **आह्वः** 1. जंगली चम्पक का पौधा 2. भतूरे का पौधा,—**कन्दलः** प्रवाल, मूंगा,—**करः, कर्तृ,—कारः कारकः** सुनार मनु० १२।६१, याज्ञ० ३।१४९,—**किञ्जल्कम्** नागकेसर का फूल,—**कुम्भः** सुनहरी घड़ा, - **कूटः** एक पहाड़ का नाम श० ७, - **केतकी** केवड़े का पौधा जिसके पीले फूल आते हों, स्वर्ण-केतकी,—**गन्धिनी** रेणुका नामक गन्धद्रव्य, **गिरिः** सुमेरु पर्वत, **गौरः** अशोकवृक्ष, - **छन्न** (वि०) सोने से मढ़ा हुआ, **(म्न)** सोने का ढक्कन, —**ज्वालः** अग्नि, - **तारम्** तूतिया,—**दुग्धः**, **दुग्धकः** गूलर, - **पर्वतः** सुमेरु पर्वत,—**पुष्पः,—पुष्पकः** 1. अशोकवृक्ष 2. लोध्रवृक्ष 3. चम्पक वृक्ष, (नपुं०) 1. अशोक का फूल 2. चीनी सुलाब का फूल,—**ब (व) लम्**, मोती, **मालिन्** (पु०) सूर्य,—**यूथिका** सोनजुही, **स्वर्णयूथिका,—रागिणी** (स्त्री०) हल्दी,—**शंखः** विष्णु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का नाम,—**शृङ्गम्** 1. एक सुनहरी सींग 2. सुनहरी चोटी,– **सारम्** तूतिया,—**सूत्रम्**.–सूत्रकम् एक प्रकार का हार।

हेमन्तः,–तम् [हि+झ, मुट् आगमः] छः ऋतुओं में से एक, जाड़े का मौसम (जो मार्गशीर्ष और पौषमास में आता है) नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः। सीमन्तिनीपक्षः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतः प्रिये—ऋतु० ४।१।

हेमलः [हेम+ला+क] 1 सुनार 2. कसौटी 3. गिरगिट।

हेय (वि०) [हा+यत्] त्याग करने योग्य।

हेरम् [हि+रन्] 1. एक प्रकार का मुकुट या ताज 2. हल्दी।

हेरम्बः [हे शिवे रम्बति रम्ब्+अच्, अलुक् स०] 1. गणेश 2. भैंसा 3. धीरोद्धत नायक। सम०—**जननी** पार्वती (गणेश की माता जी)।

हेरिकः [हि+रक्, षट् आगमः] भेदिया, गुप्तचर।

हेलनं–ना [हिल्+ल्युट्] अवज्ञा करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, अपमान करना।

हेला [हेड् भावे डस्य लः] 1. तिरस्कार, अनादर, अपमान शि० ११।७२ 2. केलि, क्रीडा, प्रेमालिंगन, दे० सा० द० १२८, दश० २।३२ 3. सुरत की बलवती इच्छा—प्रौढेच्छयाऽतिरूढानां नारीणां सुरतोत्सवे। शृङ्गारशास्त्रतत्त्वज्ञैर्हेला सा परिकीर्तिता॥ 4. आराम, सुविधा—शि० १।३४, **हेलया** आसानी से, बिना किसी कष्ट या असुविधा के 5. चंद्रिका।

हेलाधृक्कः (पुं०) घोड़ों का व्यापारी।

हेलिः [हिल्+इन्] सूर्य, स्त्री०, केलिक्रीडा, सुरतक्रीडा, प्रेमालिंगन।

हेवाकः (पुं०) [यह शब्द कदाचित् फ़ारसी या अरबी से लिया गया है, 'लब्ध' शब्द की भांति इसका प्रयोग भी कल्हण बिल्हण आदि पश्चवर्ती साहित्यकारों द्वारा ही हुआ है] उत्कट इच्छा, तीव्र स्पृहा, उत्कण्ठा —अस्मिन्नासीत्तदनु निबिडाश्लेषहेवाकलीलाचेल्लद्बाहुक्वणितवलया सन्ततं राजलक्ष्मीः—विक्रम० १८।१०१, तु० 'हेवाकिन्'।

हेवाकस (वि०) [संभवतः इस शब्द का 'हेवाक' से कोई संबंध नहीं] अत्यंत, तीव्र, उत्कट, प्रचंड हेवाकसस्तु शृङ्गारो हावोक्षिभ्रविकारकृत्– दश० २।३१।

हेवाकिन् (वि०) [हेवाक+इनि] अत्यंत इच्छुक, उत्कंठित (समास में प्रयोग)–जायन्ते महतामहो निरुपमप्रस्थान-हेवाकिनां निःसामान्यमहत्त्वयोगपिशुना दार्ता विपत्तावपि– कल्हण।

हेष् (भ्वा० आ० हेषते, हेषित) घोड़े के भांति हिनहिनाना, रंकना, दहाड़ना।

हेषः, हेषा, हेषितम् [हेष्+घञ्, हेष्+अ+टाप्, हेष् +क्त] हिनहिनाहट, रेंक,– **रणाङ्गसंक्रीडितमश्वहेषाः** – कि० १६।८।

हेषिन् (पुं०) [हेष्+णिनि] घोड़ा।

हेहे (अव्य०) [हे च हे च द्वं० स०] संबोधन परक अव्यय जिसका उपयोग ज़ोर से आवाज़ देने या बुलाने में किया जाता है।

हैं (अव्य०) [हा+कैं] संबोधनात्मक अव्यय।

हैतुक (वि०) (स्त्री० -की) [हेतु, ठक्] 1. कारण परक, कारण मूलक 2. तर्क संबंधी, विवेक परक,–**कः** 1. तर्कयुक्त हेतुवादी, तार्किक 2. मीमांसक 3. तर्कवादी, अनीश्वरवादी, नास्तिक।

हैम (वि०) (स्त्री० -मी) [हिम (हेमन्त)+अण्] 1. शीतल, जाड़े का, जाड़े में होने वाला, ठंडा 2. हिम से उत्पन्न—मृणालिनीं हैममिवोषरागम् रघु० १६। ७ 2. सुनहरी, सोने का बना हुआ–पादेन हैमं विलिलेख पीठम् -रघु० ६।१५, भट्टि० ५।८९, कु० ६।६, —**मम्** पाला, ओस, **मः** शिव का विशेषण। सम० –**मुद्रा,**–**मुद्रिका** सुनहरी सिक्का।

हैमन (वि) (स्त्री० - नी) [हिमस्त एव हेमन्ते भवो वा, प्रज्ञा० तलोपः] 1. जाड़े में होने वाला, ठंडा शि० ६।५५, कि० १७।१२ 2. जाड़े से संबंध रखने वाला अर्थात् लम्बा (जैसे जाड़े की रातें) शि० ६।७७ 3. सर्दी में उगने वाला या जाड़े के उपयुक्त - हैमनैर्निवसनैः सुमध्यमाः – रघु० १९।४१ 4. सुनहरी, सोने का बना हुआ,–**नः** 1. मार्गशीर्ष का महीना 2. जाड़े की ऋतु (=हेमन्त)।

हैमन्तिक (वि०) [हेमन्ते काले भवः ठञ्] 1. जाड़े का, ठंडा 2. सर्दी में उत्पन्न होने वाला,–**कम्** एक प्रकार का चावल।

हैमल दे० 'हेमल'।

हैमवत (वि०) (स्त्री० -ती) [हिमवतो अदूरभवो देशः तस्येदं वा अण्] 1. बर्फीला 2. हिमालय पर्वत से निकल कर बहने वाला रघु० १६।४४ 3. हिमालय पर्वत पर उत्पन्न, पला-पोसा, स्थित विद्यमान या संबंध रखने वाला कु० ३।२३, २।६७, —**तम्** भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

हैमवती [हैमवत+ङीप्] 1. पार्वती का नाम 2. गंगा का नाम 3. एक प्रकार की औषधि 5. सन का पौधा, अलसी 6. भूरे रंग की किंजल्किनी।

हैयङ्गवीनम् [ह्यो गोदोहात् भवं ह्यस्+यो+ख, नि०] 1. पिछले दिन के दूध से बनाया गया घी, ताज़ा घी हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्–रघु० १। ४५, भट्टि० ५।१२ 2. पिछले दिन का मक्खन, ताज़ा मक्खन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैरिकः [हिर+ठक्] चोर।

हैहय (पुं० ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम, यः 1. यदु के प्रपौत्र का नाम 2. अर्जुन कार्तवीर्य (जिसके एक हजार भुजाएँ थीं, और जिसे परशुराम ने मार गिराया था)–धेनुवत्सहरणाच्च हैहयस्यैव च कीर्तिमहर्तुमुद्यतः—रघु० ११।७४।

हो (अव्य०) [हू+डो, नि] किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला संबोधनात्मक अव्यय, (हे, अरे)।

होड् 1 (भ्वा० आ० होडते) उपेक्षा करना, अनादर करना।

ii (भ्वा० पर० होडति) जाना।

होडः [होड्+अच्] बेड़ा, नाव।

होतृ (वि०) (स्त्री० -त्री) [हु+तृच्] यजमान, हवन करने वाला,--बहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री - श० १।१, —(पुं०) 1. ऋत्विज्, विशेषकर वह जो यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है 2. यज्ञकर्ता--रघु० १।६२, ८२, मनु० ११।३६।

होत्रम् [हु-ष्ट्रन्] 1. (घी आदि) कोई भी वस्तु जिसको हवन में आहुति दी जावे 2. हवन में जली हुई सामग्री 3. यज्ञ।

होत्रा [होत्र+टाप्] 1. यज्ञ 2. स्तुति।

होत्रीयः [होत्राय हितं होतुरिदं वा छ] देवों को उद्देश्य करके आहुति देने वाला ऋत्विक्,—यम् यज्ञमंडप।

होमः [हु+मन्] यज्ञाग्नि में घी की आहुति देना, (ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले दैनिक पंच यज्ञों में से एक जिसे **देवयज्ञ** कहते हैं) 2. हवन, यज्ञ। समः—अग्निः होम की आग,—कुण्डम् हवनकुंड, —तुरङ्गः यज्ञ का घोड़ा –रघु० ३।३८,—धान्यम् तिल, धूमः होम की अग्नि का धुआं,—भस्मन् (नपुं०) हवन की राख,—वेला हवन करने का समय श० ४,—शाला यज्ञशाला, यज्ञगृह।

होमकः दे० 'होतृ'।

होमिः [हु+इन्, मुट् च] 1. तापा हुआ मक्खन, घी 2. जल 3. अग्नि।

होमिन् (पुं०) [होमोऽस्त्यस्य इनि] होम करने वाला, यजमान, यज्ञकर्ता।

होमीय, होम्य (वि०) [होम+छ, यत् वा] होम से संबद्ध, आहुति दिए जाने के योग्य, हवन संबन्धी, —म्यम् घी।

होरा [हु+रन्+टाप्] 1. राशि का उदय 2. राशि की अवधि का अंश 3. एक घंटा 4. चिह्न, रेखा।

होलाका [हु+विच्, तं लाति—ला+क+कन्+टाप्] वसन्त ऋतु के आने पर मनाया गया वसन्तोत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा से पूर्व के दस दिन, विशेषतः तीन या चार दिन (इसी पर्व को हम 'होली' कहते हैं) 2. फाल्गुन मास की पूर्णिमा।

होलिका, होली (स्त्री०) होली का त्योहार, दे० 'होलाका'।

हो, होहो (अव्य०) [हू-हो, नि०] संबोधनात्मक अव्यय, हो, अरे, भो।

हौत्रम् [होतुरिदम्, अण्] होता नामक ऋत्विक् का पद।

हौम्यम् [होम, ष्यञ्] तापा हुआ मक्खन, घी।

ह्नु (अदा० आ० ह्नुते, ह्नुत) 1. ले जाना, लूटना, छिपा देना, वञ्चित करना अव्यगीष्टार्थं शास्त्राणि यमस्यालीढ्ट विक्रमम्-- भट्टि० १५।८८ 2. छिपाना, ढकना, रोकना,–मा० १ 3. किसी से छिपाव करना (सम्प्र०के साथ)–गोपी कृष्णाय ह्नुते–सिद्धा०। अप–, 1. छिपाना, दूराना मनु० ८।५३, रत्न० २ 2. मुकरना, स्वामित्व को इंकार करना, किसी से कोई चीज छिपाना गुणाश्चाहपहनुतेऽस्माकम् भट्टि० ५।४४, अपह्नुवानस्य जनाय यन्निजाम् (अधोस्ताम्) नै० १।४९, नि , 1. छिपाना, गुप्त कर देना—भट्टि० १०।२६ 2. किसी से छिपाना, किसी के सामने मुकर जाना (संप्र० के साथ) भट्टि० ८।७४।

ह्यस् (अव्य०) [गते अहनि वि०] बीता हुआ कल। सम०—भव (वि०) जो कल हुआ था।

ह्यस्तन (वि०) (स्त्री० नी) [ह्यस्+ट्युण्, नुट्] बीते कल से संबंध रखने वाला यथा ह्यस्तनी वृत्तिः। सम०—दिनम् बीता कल, पिछला दिन।

ह्यस्त्य (वि०) [ह्यस्+त्यप्] कल से संबद्ध, (बीते हुए) कल का।

ह्रदः [ह्लाद्+अच्, नि०] 1. गहरा सरोवर, जल का विस्तृत और गहरा तालाब नै० २।५३ 2. गहरा छिद्र या बिवर शि० ५।२९ 3. प्रकाश की किरण। सम०—यहः मगरमच्छ।

ह्रदिनी [ह्रद+इनि+ङीप्] 1. नदी 2. बिजली।

ह्रदोगः [यौगिकशब्द से व्युत्पन्न] कुम्भराशि।

ह्रस् (भ्वा० पर० ह्रसति, ह्रसित) 1. शब्द करना 2. छोटा होना।

ह्रसिमन् (पुं०) [ह्रस्व+इमनिच्, ह्रसादेशः] ह्रलकापन, छोटापन, लघुता।

ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+वन्, म० अ० ह्रसीयस्, उ० अ० ह्रसिष्ठ] 1. लघु, अल्प, थोड़ा 2. ठिगना, कद में छोटा 3. लघु (विप० दीर्घ छन्दःशास्त्र में), स्वः बौना। सम०—अङ्ग (वि०) ठिगना, गिट्टा, (गः) बौना, गर्भः कुश नामक घास, दर्भः छोटा या श्वेत कुशनामक घास,—बाहुक (वि०) छोटी भुजाओं वाला, —मूर्ति (वि०) कद में छोटा, ठिगना, बौना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह्राद् (भ्वा० आ० ह्लादते) 1. शब्द करना 2. दहाड़ना।
ह्रादः [ह्राद्+घञ्] शोर, आवाज, दुन्दुभीना ह्रादः किं० १६।८, इसी प्रकार 'अनुह्रादः' आदि।
ह्रादिन् (वि०) [ह्राद्+णिनि] शब्दायमान, दहाड़ने वाला।
ह्रादिनी [ह्राद्+ङीप्] 1. इन्द्र का वज्र 2. बिजली 3. नदी 4. शाल्मली नामक वृक्ष।
ह्रासः [ह्रस्+घञ्] 1. शब्द, कोलाहल 2. घटी, कमी, क्षय, अवनति, पतन मनु० १।८५, याज्ञ० २।२४९ 3. छोटी संख्या।
ह्रिणीयते दे० 'ह्रणीयते' महावीर० १।५१।
ह्रिणीया [ह्रिणी+यङ्+अ+टाप्] 1. भर्त्सना, निन्दा 2. शर्म, लज्जा 3 दया ल्० ह्रणीया।
ह्री (जुहो० पर० जिह्रेषि, ह्रीण, ह्रीत) 1. शर्माना, विनीत होना 2. लज्जित होना (स्वतन्त्र प्रयोग अथवा अपादान सं० के साथ)—जिह्रेष्यायंपुत्रेण सह गुरुसमीपं गन्तुम् श० ७, अन्योऽन्यस्यापि जिह्रीमः किं पुनः सहचारिणाम्—कि० ११।५८, रघु० १५।४४, १७।७३, भट्टि० ३।५३, ५।१०२, ६।१३२—प्रेर० (ह्रेपयति ते) शर्माना करना, (आलं० से भी) सकौस्तुभं ह्रेपयतीव कृष्णम् रघु० ६।४९, ह्रेपिता हि वहवो नरेश्वराः—११।४०, कि वा जाड्या स्वामिनो ह्रेपयति—शि० १८।२३, कि० ११।६४, १३।४१, वेणी० १।१७।
ह्री (स्त्री०) [ह्री+क्विप्] 1. लज्जा—रहेरपि ह्रीपदमादधाना—कुं० ३।५७, दारिद्र्यादप्यियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसः मृच्छ० १।१४, रघु० ४।८० 2. शर्मीलापन, विनय ह्रीमत्रकण्ठी कथमप्यूवाच—कुं० ७।८५। सम० **जित,—मृद** (वि०) लज्जा से अभिभूत या व्याकुल ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः मेघ० ६८, **यन्त्रणा** लज्जा का बंधन—रघु० ७।६३।
ह्रीका [ह्री+कक्+टाप्] 1. शर्मीलापन, लज्जाशीलता, संकोच 2. भीरुता, डर।
ह्रीकु (वि०) [ह्री+उन् कुक् च] 1. शर्मीला, विनीत, संकोचशील 2. भीरु, कुः 1. रोगा 2. लाख।
ह्रीण, ह्रीत (भू० क० कृ०) [ह्री+क्त, पक्षे तस्य नः] 1. लज्जित—वेणी० २।११ 2. शर्मीला, विनीत—वेणी० ३।५३।
ह्रीवेरम्,—लम् [ह्रियं लज्जार्यं वेरम् अङ्गम् अस्य ह्रस्वत्वात्, पृषो० वा रस्य लः] एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।
ह्रेष् (भ्वा० आ० ह्रेषते) 1. घोड़े की भांति हिनहिनाना, रेंकना 2. जाना, सरकना।
ह्रेषा [ह्रेष्+अ+टाप्] हिनहिनाहट।
ह्लग् (भ्वा० पर० ह्लगति) छोड़ना।
ह्लादिः (स्त्री०) [ह्लाद्+क्तिन्, ह्रस्वता] हर्ष, प्रसन्नता।
ह्लस् (भ्वा० पर० ह्लसति) शब्द करना।
ह्लाद् (भ्वा० आ० ह्लादते, ह्लन्न, ह्लादित) 1 प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना 2. शब्द करना, आ—, प्र—, हर्षित होना, प्रसन्न होना, खुश होना।
ह्लादः, ह्लादकः [ह्लाद्+घञ्, ण्वुल् वा] प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास।
ह्लादनम् [ह्लाद्+ल्युट्] हर्षित होने की क्रिया, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता।
ह्लादिन (वि०) [ह्लाद्+णिनि] प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला।
ह्लादिनी दे० 'ह्लादिनी'।
ह्वल् (भ्वा० पर० ह्वलति) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. थरथराना, काँपना—प्रेर० (ह्वलयति—ते, ह्वालयति—ते, परन्तु पहला रूप उपसर्गपूर्वक) हिलाना, कम्पकंपी पैदा करना (विशेषतः 'वि' पूर्वक)।
ह्वानम् [ह्वे+ल्युट्] 1. आमन्त्रण 2. क्रन्दन, शब्द करना।
ह्वृ (भ्वा० पर० ह्वरति) 1. कुटिल होना 2. आचरण में टेढ़ा होना, ठगना, धोखा खाना 3. कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त।
ह्वे (भ्वा० उभ० ह्वयति—ते, हूत, कर्मवा० हूयते, प्रेर० ह्वापयति—ते; इच्छा० जुहूषति—ते) 1. बुलाना तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रियां बन्धुजनो जुहाव—कुं० १।२६ 2. नाम लेकर पुकारना, आवाहन करना, आवाज देना 3. नाम लेना, बुलाना 4. ललकारना 5. प्रतिस्पर्धा करना, होड़ाहोड़ी करना 6 प्रार्थना करना, याचना करना, आ—, 1. बुलाना, निमन्त्रित करना—वत्स! इत एवाह्वयैनम्—उत्तर० ६ 2. ललकारना (आ०)—गतभीराह्वत वेदिराण्मुरारिम्—शि० २०।१, कृष्णश्चाणूरमाह्वयते—सिद्धा०, भट्टि० ८।१८, १५।८९, **उप—**, **उपा—**, बुलाना, भट्टि० ८।१७, **सम्—**, **समा—**, मिलकर बुलाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अक्रूरः [न क्रूरः—न० त०] एक यादव का नाम जो कृष्ण का मित्र और चाचा था। (यही वह यादव था जिसने बलराम और कृष्ण को मथुरा में जाकर कंस को मारने की प्रेरणा दी थी। उसने इन दोनों को अपने आने का आशय बतलाया और कहा कि किस प्रकार अधर्मी कंस ने इनके पिता आनकदुंदुभि, राजकुमारी देवकी तथा स्वयं अपने पिता उग्रसेन को अपमानित किया। कृष्ण ने अपने आने की स्वीकृति दे दी और प्रतिज्ञा की कि मैं उस राक्षस को तीन रात के अन्दर मार डालूंगा। कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति में सफल हुआ) दे० 'सर्वार्जुन' भी।

अगस्तिः, अगस्त्यः [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति, अस्+क्तिच् शक०, या अगं कुम्भः तत्र स्थानात् संहृतः इत्यगस्त्यः] एक प्रसिद्ध ऋषि या मुनि का नाम। ऋग्वेद में अगस्त्य और वसिष्ठ मुनि मित्र और वरुण की सन्तान माने जाते हैं। कहते हैं कि लोपामुद्रा अप्सरा उर्वशी को देखकर इनका वीर्य स्खलित हो गया। उसका कुछ भाग एक घड़े में गिर गया तथा कुछ भाग जल में। घड़े से अगस्त्य का जन्म हुआ इसीलिए इसे कुम्भयोनि, कुम्भजन्मा, घटोद्भव, कलशयोनि आदि भी कहते हैं। वर्णन मिलता है कि इसने विन्ध्याचल पर्वत को जो बराबर बढ़ता जा रहा था तथा सूर्यमण्डल पर अधिकार करने ही वाला था, और जिसने इसके रास्ते को रोक दिया था, नीचे हो जाने के लिए कहा। दे० विन्ध्य० (यह आख्यायिका कई विद्वानों के मतानुसार आर्य जाति की दक्षिण देश में विजय और भारत की सभ्यता के प्रति प्रगति का पूर्वाभास देती है) इसके नाम एक अन्य आख्यायिका के अनुसार समुद्र को पी जाने के कारण पीताब्धि और समुद्रचुलुक आदि भी थे, क्योंकि समुद्र ने अगस्त्य को रुष्ट कर दिया था, और क्योंकि अगस्त्य युद्ध में इन्द्र और देवों की सहायता करना चाहता था जब कि देवों का युद्ध कालेय नामक राक्षसवर्ग से होने लगा था और राक्षस समुद्र में जाकर छिप गये थे और तीनों लोकों को कष्ट देते थे। उसकी पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। वह विन्ध्य के दक्षिण में कुंजर पर्वत पर, एक तपोवन में रहता था। उसने दक्षिण में रहने वाले सभी राक्षसों को निरुत्साहित में रक्खा। एक उपाख्यान में वर्णन मिलता है कि किस प्रकार इसने वातापि नामक राक्षस को खा लिया जिसने मेंढे का रूप धारण कर लिया था, और किस प्रकार उसके भाई को जो अपने भाई का बदला लेने आया था, अपनी एक दृष्टि से भस्म कर दिया। अपने वनवास के समय घूमते हुए भगवान् राम, सीता और लक्ष्मण सहित उनके आश्रम में गये। वहाँ अगस्त्य ने इनका बड़ा आदर-सत्कार किया और राम का मित्र, सलाहकार और अभिरक्षक बन गया। इसने राम को विष्णु का धनुष तथा कुछ और वस्तुएँ दीं (दे० रघु० १५।५५) ज्योतिष में इसे तारा भी माना जाता है सू० रघु० ४।४१ भी।

अग्निः [अङ्क्ते ऊर्ध्वं गच्छति अङ्क्+नि, न लोपश्च] अग्नि का देवता। ब्रह्मा का ज्येष्ठ पुत्र। इसकी पत्नी का नाम स्वाहा है। उससे इसके तीन सन्तान हुईं पावक, पवमान और शुचि। हरिवंश में इसका वर्णन मिलता है कि इसके वस्त्र काले हैं, धुआँ ही इसकी टोपी है, तथा शिखाएँ इसका भाला हैं। इसके रथ में लाल घोड़े जुते हैं। यह मेंढे के साथ या कभी मेंढे पर सवारी करता हुआ वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णन मिलता है कि अग्नि का शौर्य और विक्रम समाप्त हो गया और वह मन्द हो गया, क्योंकि उसने राजा श्वेतकी द्वारा यज्ञों में दी गई आहुतियाँ खा लीं। परन्तु उसने अर्जुन की सहायता से खाण्डववन को निगलकर अपनी शक्ति फिर प्राप्त कर ली। इस सेवा के उपलक्ष्य में ही अर्जुन को गाण्डीव धनुष दिया गया।

अघः [अघ कर्तरि अच्] एक राक्षस का नाम। यह बक और पूतना का भाई था तथा कंस का सेनापति। एक बार कंस ने इसे कृष्ण और बलराम को मारने के लिए गोकुल भेजा। उसने वहाँ एक विशालकाय अजगर का रूप धारण कर लिया जो चार योजन लंबा था। इस रूप में वह ग्वालों के मार्ग में लेट गया तथा अपना मुंह पूरा खोल लिया। ग्वालों ने इसे एक पहाड़ी गुफा समझा, वे इसमें घुस गये, सब गौएँ भी इसी में चली गईं। परन्तु कृष्ण ने इसे समझ लिया। फलतः उसने अन्दर घुसकर अपना शरीर इतना फुलाया कि वह अजगररूपी राक्षस टुकड़े-टुकड़े हो गया तब कहीं इस प्रकार कृष्ण ने अपने साथियों की रक्षा की।

अंगदः [अङ्गं दयति शोधयति भूषयति, अङ्गं द्यति वा. है या दो+क] तारा नाम की पत्नी से उत्पन्न बालि का एक पुत्र। जब राम ने समस्त सेना के साथ लंका को कूच किया तो अंगद को रावण के पास शान्ति के दूत के रूप में भेजा गया जिससे कि समय रहते रावण अपनी जान बचा सके। परन्तु रावण ने घृणापूर्वक उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया, फलतः काल का ग्रास बना। सुग्रीव के पश्चात् किष्किन्धा का राज्य अंगद को मिला। सामान्य बोलचाल में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह व्यक्ति जो दो पक्षों के बीच असफल मध्यस्थता करता है, अंगद नाम से पुकारा जाता है।

अंजना (स्त्री०) मारुति या हनुमान् की माता का नाम। वह कुंजर नामक वानर की कन्या तथा केसरी की पत्नी थी, एक दिन वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठी थी, कि उसका वस्त्र जरा शरीर से हट गया। वायुदेवता उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया, उसने दृश्य शरीर धारण कर अंजना से अपनी इच्छापूर्ति की याचना की। अंजना ने उससे प्रार्थना की कि आप मेरा सतीत्व नष्ट न करें। वायु ने इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु कहा कि तुम्हारे शक्ति और कान्ति में मेरे जैसा पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि मैंने तुम्हारी ओर कामवासना की दृष्टि से देखा है। यह कहकर वायु अन्तर्धान हो गया। यह पुत्र ही मारुति या हनुमान् था।

अत्रि: [अद्+क्त्रि=अत्रि] एक महर्षि का नाम। यह ब्रह्मा की आँख से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों या प्रजापतियों में से एक है। इसकी पत्नी का नाम अनसूया था। उससे तीन पुत्र हुए दत्त, दुर्वासा और सोम। रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और सीता, अत्रि तथा अनसूया के आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने उनका खूब आदर सत्कार किया (दे० अनसूया)। ऋषि के रूप में वह सप्त-ऋषियों में से एक है, ज्योतिष की दृष्टि से वह सप्त-र्षियों में एक तारा है। कहते हैं कि चन्द्रमा इस की आँख से पैदा हुआ -तु० ऋ० १०७५।

अदिति: [न दीयते खण्ड्यते वध्यते बृहत्त्वात्-दो+क्तिच्] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही गई। जिस समय विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया तो उस समय वह विष्णु की माता थी। वह इन्द्र की भी माता कहलाती है जो आदितिनन्दन कहलाते हैं।

अनिरुद्ध [न निरुद्ध इति ब० स०] प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। अनिरुद्ध काम का पुत्र और कृष्ण का पोता था। बाणासुर की पुत्री उषा उसमें प्रेम करने लगी थी। उसने जादू की शक्ति से अनिरुद्ध को अपने पिता की नगरी शोणितपुर के अपने भवन में मंगवा लिया। (दे० उषा या चित्रलेखा)। बाण ने कुछ रक्षक उसे पकड़ने के लिए भेजे परन्तु पराक्रमी अनिरुद्ध ने उन्हें लोहे की गदा से मौत के घाट उतार दिया। अंततः वह जादू की शक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया। जब कृष्ण, बलराम और काम को उसका पता लगा तो वे उसे छुड़ाने गये। वहाँ भारी युद्ध हुआ। बाण की यद्यपि शिव और स्कन्द सहायता करते थे, तो भी वह पराजित हो गया, परन्तु शिव के बीच में पड़ने से उसके प्राण बच गये। अनिरुद्ध को उसकी पत्नी उषा सहित द्वारका में अपने घर लाया गया।

अंधकः [अन्ध+कन्] एक राक्षस का नाम जो कश्यप और दिति का पुत्र था। इसकी शिव ने हत्या कर दी थी। इसके वर्णन मिलता है कि एक हजार भुजाएँ और सिर थे, २००० आँखें और पैर थे। वह अंधों की भाँति चलता था इस लिए लोग उसे अंधक कहते थे, चाहे वह पूर्णतः ठीक ठीक देख सकता था। जब उसने स्वर्ग से पारिजात वृक्ष उठा कर ले जाने का प्रयत्न किया तो शिव ने उसकी हत्या कर दी।

अभिमन्युः (पुं०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम। इसकी माता सुभद्रा थी जो श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहन थी। जब द्रोण की सलाह के अनुसार कौरवों ने 'चक्रव्यूह' नाम की विशिष्ट सैन्यस्थिति बनाई, और वह भी इस आशा से कि आज अर्जुन दूर है, उसके अतिरिक्त और कोई पाण्डव इस व्यूह को तोड़ नहीं सकेगा, तो अभिमन्यु अपने चाचा लोगों को विश्वास दिलाया कि यदि आप लोग मेरी सहायता करें तो मैं अवश्य ही इस व्यूह को तोड़ डालूंगा। तदनुसार वह व्यूह में प्रविष्ट हुआ, कौरवपक्ष के अनेक योद्धाओं को उसने मौत के घाट उतारा। एक बार तो उसने ऐसा घोर पराक्रम दिखाया कि द्रोण, कर्ण दुर्योधन आदि बड़े बड़े महारथी भी उसका मुकाबला न कर सके। परन्तु वह बहुत देर तक इस भीषण युद्ध का सामना न कर सका, अन्त में परास्त हुआ और मारा गया। वह बहुत सुन्दर था। उसकी दो पत्नियाँ थीं बलराम की पुत्री वत्सला, तथा राजा विराट की पुत्री उत्तरा। जिस समय वह मारा गया उस समय उत्तरा गर्भवती थी। उससे परीक्षित का जन्म हुआ। परीक्षित ही बाद में हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठा।

अरुणः [ऋ+उनन्] विनता में कश्यप से उत्पन्न एक पुत्र गरुड़ था। गरुड़ का ज्येष्ठ भ्राता ही अरुण बतलाया जाता है। विनता ने समय से पूर्व ही अंडे से बच्चा निकाला, उसकी अभी जंघाएँ नहीं बनी थीं, इस लिए उसका नाम 'अनूरु' (ऊरुरहित) या 'विपाद' (पैरों से हीन) पड़ गया। अब अरुण सूर्य का सारथि है। उसकी पत्नी श्येनी थी जिससे 'संपाति' और 'जटायु' नामक दो पुत्र पैदा हुए।

अवत्थावान् दे० 'दोण' भी।

अश्विनीकुमार दे० 'संज्ञा'

अष्टावक्रः [अष्टकृत्व अष्टसु भागेषु वा वक्रः] कहोड के एक पुत्र का नाम। कहोड ऋषि इतने अधिक अध्ययन शील थे कि उन्होंने अपनी पत्नी की उपेक्षा की। इस अकेलेपना से क्षुब्ध होकर उसके अजात पुत्र ने जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभी गर्भ में ही था, अपने पिता की भर्त्सना की। इस बात से क्रुद्ध होकर पिता ने शाप दिया कि तुम आठ अंगों से टेढ़े-मेढ़े पैदा होगे। एक बार कहोड ने एक योद्धे से शर्त लगाई और फिर उसमें हार जाने पर कहोड को नदी में डुबा दिया गया। बुद्धा अष्टावक्र ने उस बौद्ध को परास्त किया और अपने पिता को मुक्त कराया। इस बात से प्रसन्न होकर पिता ने समंगा नदी में स्नान करने के लिए कहा। ऐसा कर वह बिल्कुल सरल अंगों वाला हो गया।

न्याय

1. **विषकृमिन्याय** विष में पले कीड़ों का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो दूसरों के लिए घातक होते हुए भी उनके लिए ऐसी नहीं होती जो इसमें जन्मे और पले हैं; क्योंकि वह स्थिति तो उनका स्वभाव बन गया है जैसे कि विषकृमि जो विष से ही जन्मा है। विष चाहे दूसरों के लिए घातक हो परन्तु उनके लिए घातक नहीं होता जो उसी विषैली स्थिति में पले हैं।
2. **विषवृक्षन्याय** -विषवृक्ष का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता जो यद्यपि उत्पातमय या आघातपूर्ण है तो भी उस व्यक्ति के द्वारा जिसने उसे बनाया है, नष्ट किये जाने के योग्य नहीं। जैसे कि एक वृक्ष चाहे वह विष का ही क्यों न हो वह भी लगाने वाले के द्वारा काटा नहीं जाता।
3. **स्थालीपुलाकन्याय** —पकते हुए बर्तन में से एक चावल देखने का नीतिवाक्य। देगची में पड़े हुए सभी चावलों पर गर्म पानी का समान प्रभाव पड़ता है। जब एक चावल पका हुआ होता है तो यह अनुमान लगा लिया जाता है कि अन्य सब चावल भी पक गए हैं। अतः यह नीतिवाक्य उस दशा में प्रयुक्त होता है जब समस्त श्रेणी का अनुमान उसके एक भाग को देख कर लगाया जाय। मराठी में इसे ही कहते हैं "शितावरून भाताची परीक्षा"।

पण्डावत् (वि०) [पण्ड+मतुप्] बुद्धिमान्—अश्व० ६।

प्रकोपः [प्रा० स०] क्रोध, उत्तेजना, आवेश।

प्राकारः (पुं०) 1. चहारदीवारी, बाड़ा, बाड़ 2. चारों ओर घेरा डालने वाली दीवार, फसील—शतमेकोऽपि संयत्ते प्राकारस्थो धनुर्धरः—पंच० १।२२९।

बाली (स्त्री०) एक प्रकार का कान का आभूषण—अश्व० २४।

युधिष्ठिरः [युधि स्थिरः अलुक् स०, मत्वम्] 'युद्ध में अडिग' पांडवों में ज्येष्ठ राजकुमार। इसे 'धर्म' 'धर्मराज' और 'अजातशत्रु' आदि भी कहते हैं। यह धर्म द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था। सैन्यचातुरी की अपेक्षा यह अपनी सचाई और ईमानदारी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। अठारह दिन के महाभारत के पश्चात् इसे हस्तिनापुर की राजगद्दी पर सम्राट् के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उसके पश्चात् इसने बहुत दिनों तक धर्मपूर्वक राज्य किया। इसका अधिक विवरण जानने के लिए दे० 'दुर्योधन')।

वैशम्पायनः (पुं०) व्यास के एक प्रसिद्ध शिष्य का नाम। इसने अपने शिष्य याज्ञवल्क्य को कहा कि वह समस्त यजुर्वेद जो तुमने मुझसे पढ़ा है उगल दो। तदनुसार उगल देने पर वैशम्पायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर वह सम्पूर्ण यजुर्वेद चाट लिया। इसी लिए यजुर्वेद की उस शाखा का नाम 'तैत्तिरीय' पड़ गया। पुराणों का पाठ करने में वैशंपायन अत्यन्त दक्ष और प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उसने समस्त महाभारत का पाठ जनमेजय राजा को सुनाया।

हिरण्याक्षः (पुं०) एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। हिरण्यकशिपु का जुड़वां भाई। ब्रह्मा से वरदान पाकर वह ढीठ और अत्याचारी हो गया, उसने पृथ्वी को समेट लिया और उसे लेकर समुद्र की गहराई में चला गया। अतएव विष्णु ने वराह का अवतार धारण किया, राक्षस को यमलोक पहुंचाया और पृथ्वी का उद्धार किया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय— संस्कृत छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पिंगलऋषिप्रणीत छन्दःशास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रंथ है। अग्निपुराण में भी पिंगलपद्धति पर आधारित छन्दःशास्त्र का पूर्ण विवरण है। और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा रचे गये हैं—उदा० श्रुतबोध, वाणीभूषण, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर, वृत्तकौमुदी और छन्दोमंजरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दो-मंजरी और वृत्तरत्नाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दों को नहीं रक्खा गया है।

संस्कृत की रचना या तो गद्य में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः श्लोकों में होती है। श्लोक या पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें या तो अक्षरों की संख्या से विनियमित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो वृत्त होता है अथवा जाति। **वृत्त** एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। **जाति** एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निश्चित किया जाता है।

वृत्त तीन प्रकारके होते है—(१) **समवृत्त**—जिसमें श्लोक के चारों चरण समान हों। (२) **अर्धसमवृत्त**—जिसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हों। (३) और **विषमवृत्त** जिसके चारों चरण असमान हों।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक साँस में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर, इसके साथ चाहे एक व्यंजन हो, चाहे एक से अधिक और चाहे केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) लघु भी होता है, गुरु भी जैसा कि उसका स्वर हो ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ और औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दःशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उसके आगे अनुस्वार या विसर्ग हो, अथवा कोई संयुक्त व्यंजन हो, जैसे कि 'गन्ध' का 'अ' या 'ग'। (ह्र, ह्व और ह्म इसके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर यद्यपि एक प्रकार की काव्यात्मक छूट के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११, या शि० १०।६०; तथापि यहाँ पर समालोचकों ने छन्द को छन्दःशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुरूप बनाने के लिए संशोधन भी प्रस्तुत किये हैं)। इसी प्रकार पाद का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुरूप लघु या गुरु मात्रा जा सकता है, वह स्वयं चाहे कुछ ही हो।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

मात्राओं की संख्या से निर्धारित होने वाले वृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की संख्या से विनियमित वृत्तों की माप-तोल के लिए, छन्दःशास्त्र के लेखकों ने आठ 'गणों' (अक्षरपाद) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या गुरु होने के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च **न**कारो,
भादिगुरु**र्** पुनरादिलघुर्**यः**।
जो गुरुमध्यगतो **र**लमध्य**ः**,
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्त**ः**॥
आदिमध्यावसानेषु **भ**रता यान्ति लाघवम्।
जलदा गौरवं यान्ति **म**नौ तु गुरुलाघवम्॥

प्रतीकाक्षरों में अभिव्यक्त (गुरु ऽ, लघु।) भिन्न-भिन्न गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं :—

ऽ ऽ ऽ मगण
। ऽ ऽ यगण
ऽ । ऽ रगण
। । ऽ सगण
ऽ ऽ । तगण
। ऽ । जगण
ऽ । । भगण
। । । नगण

इसी प्रकार 'ल' लघु तथा 'ग' गुरु को प्रकट करता है।

विशेष—प्रत्येक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती के अनुसार संस्कृत के छन्दः शास्त्रियों ने वृत्तों का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार के 'समवृत्तों' को छब्बीस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेणियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छब्बीस तक पृथक्-पृथक् हो सकती है। इनमें से प्रत्येक श्रेणी में लघु और गुरु की पृथक्-पृथक् भिन्न-भिन्न स्थिति होने के कारण असंख्य वृत्तों की संभावना हो जाती है। उदाहरणतः छः अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली श्रेणी में, (अक्षर चाहे लघु हों या गुरु) संभावित संख्या २×२×२×२×२×२ या $२^६$=६४ होती है, परन्तु प्रयोग में छः वृत्त भी नहीं आते। यही बात छब्बीस अक्षर वाली श्रेणी की है। वहाँ भी वृत्तों की संभावित संख्या $२^{२६}$ या ८७१०८८६४ होती है। परन्तु यदि हम अर्धसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो संभावित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिंगल, छीलावती और वृत्तरत्नाकर के अंतिम अध्याय में संभावित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी नियमित गणना में किसी एक छंद विशेष की निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिये गए हैं। संभावित वृत्तों के इस विशाल समुदाय की तुलना में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिशिष्ट में नहीं रक्खी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न क्रम में केवल उन्हीं वृत्तों का वर्णन करेंगे जो बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

अनुभाग (क) समवृत्त
अनुभाग (ख) अर्धसमवृत्त
अनुभाग (ग) विषमवृत्त
अनुभाग (घ) जाति आदि

नोट—निम्नांकित परिभाषाओं में गणों का प्रतिनिधित्व करने वाले भ म स और ल ग आदि वर्णों के स्वर का बहुधा वृत्त की अपेक्षा के कारण लोप कर दिया जाता है—उदा० 'अम्न' प्रकट करता है म र भ न को, इसी प्रकार 'म्तों' दर्शाता है म त को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में गणक्रम और यति—विराम अर्थात् श्लोक या चरण का सस्वर पाठ करने में जहाँ रुकना होता है, और जो कि परिभाषा में करणकारक द्वारा संकेतित किया गया है—(प्रकोष्ठ में अंग्रेजी अंकों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकांश माघ, भारवि, कालिदास और दंडी की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रतिष्ठा)

कन्या

परि० स्यौ चेत्कन्या।
गण० य, म
उदा० भास्वत्कन्या सैका धन्या।
यस्याः कूले कृष्णोऽखेलत्॥

पाँच वर्णों के चरण वाले वृत्त

(सुप्रतिष्ठा)

पंक्ति

परि० भूमौ यिति पंक्तिः
गण० भ, र, ग
उदा० कृष्ण सनाथा तर्णकपंक्तिः।
यामुनकच्छे चारु चचार॥

छः वर्णों के चरण वाले वृत्त

गायत्री

(1) तनुमध्यमा

परि० त्यौ चेत्तनुमध्यमा।
गण० त, य।
उदा० मूर्तिर्मूरशत्रोरवदभूतरूपा।
आस्तां मम चित्ते नित्यं तनुमध्या॥

(2) **विद्युल्लेखा** ('वाणी' भी कहते हैं)

परि० विद्युल्लेखा मौ मः।
गण० म, म (३, ३)।
उदा० श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीतिः गीः प्रीती।
एवंते ढे ढे ते ये नेमे देवेशे॥ काव्य० ३।८६।

(3) **शशिवदना**

परि० शशिवदना म्यौ।
गण० म, य।
उदा० शशिवदनानां त्रजतरुणीनाम्।
अधरसुधोर्मि मधुरिपुरेच्छत्]

(4) **सोमराजी**

परि० द्विया सोमराजी।
गण० म, य (2, 4)।
उदा० हरे सोमराजी-समा ते यशः श्रीः।
जगन्मण्डलस्थ छिनत्त्यन्धकारम्॥

सात वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उष्णिक्)

(1) कुमारललिता

परि० कुमारललिता जसगाः।
गण० ज, स, ग (3. 4)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदा० मुरारितनुवल्ली कुमारललिता सा ।
व्रजेनवनानां ततान मुदमुच्चैः ॥

(2) मदलेखा

परि० मगौ स्यान्मदलेखा ।
गण० म, स, ग (3. 4) ।
उदा० रङ्गे बाहुविरुग्णाद् दन्तीन्द्रान्मदलेखा ।
लग्नाभून्मुरशत्रौ कस्तूरीरसचर्चा ।

(3) मधुमती

परि० ननगि मधुमती ।
गण० न, न, ग (5. 2.) ।
उदा० रविदुहितृतटे नवकुसुमतति: ।
व्यधित मधुमती मधुमथनमुदम् ॥

आठ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अनुष्टुभ्)

(1) अनुष्टुभ्

(इसे 'श्लोक' भी कहते हैं)

इस छन्द के अनेक भेद हैं । परन्तु जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है उसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, मात्रायें सबकी भिन्न-भिन्न । इस प्रकार प्रत्येक चरण का पाँचवाँ वर्ण लघु, छठा दीर्घ, तथा सातवाँ वर्ण (प्रथम, तृतीय चरण का) दीर्घ, एवं (द्वितीय तथा चतुर्थचरण का) ह्रस्व होता है ।

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

उदा० वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥रघु० १।१॥

(2) गजगति

परि० नभलगा गजगतिः ।
गण० न, भ, ल, ग (4. 4) ।
उदा० रविसुताधरिसरे विहरतो दृशि हरेः ।
व्रजवधूगजगतिर्मुदमलं व्यतनुत ॥

(3) प्रमाणिका

परि० प्रमाणिका जरौ लगौ ।
गण० ज, र, ल, ग (4. 4) ।
उदा० पुनातु भक्तिरच्युता सदा व्युताद्रिजप्रपय्ययोः ।
श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका भवाम्बुराशितारिका ॥

(4) माणवक

परि० भात्तलगा माणवकम् ।
गण० भ, त, ल, ग, (4. 4) ।
उदा० चपलचूडं चपलैर्वलकुलैः केलिपरम् ।
व्याय सखे स्मेरमुखं नन्दसुतं माणवकम् ॥

(5) विद्युन्माला

परि० मो मो गो गो विद्युन्माला ।
गण० म, म, ग, ग (4. 4) ।
उदा० वासोवल्ली विद्युन्माला वर्हश्रेणी शाक्रचापः ।
यस्मिन्नास्तां तापोच्छित्यै गोपस्यस्यः कृष्णाम्भोदः ।

(6) समानिका

परि० श्लो रजौ समानिका तु ।
गण० ग, ल, र, ज (4. 4)
उदा० यस्य कृष्णपादपद्मस्त्रि हुत्-तदागसक्ष ।
वीः समानिका परेण नोचितात्र मत्सरेण ॥

नौ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(बृहती)

(1) भुजगशिशुभृता

परि० भुजगशिशुभृता नौ मः ।
गण० न, न, म (7. 2.)
उदा० ह्रदतटनिकटक्षोणी भुजगशिशुभृता याऽऽसीत् ।
मुररिपुदलिते नागे व्रजजनसुखदा साऽभूत् ॥

(2) भुजङ्गसङ्गता

परि० सजरैर्भुजङ्गसङ्गता ।
गण० स, ज, र (3. 6)
उदा० तरला तरङ्गरिङ्गितैर्यमुना भुजङ्गसङ्गता ।
कथमेति वत्सचारकदवपटलः सदैव तां हरिः ॥

(3) मणिमध्य

परि० स्यान्मणिमध्य चेद्भूमसाः ।
गण० भ, म, स (5.4)
उदा० कालियभोगाभोगगतस्तन्मणिमध्यस्फीतरुचा ।
चित्रपदाभो नन्दसुतश्चारु ननर्त स्मेरमुखः ॥

दस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(रङ्क्ति)

(1) त्वरितगति

परि० त्वरितगतिश्च नजलगैः ।
गण० न, ज, ल, ग (5. 5.)
उदा० त्वरितगतिव्रजयुवतिस्तरणिसुता विपिनगता ।
मुररिपुणा रतिगुरुणा परिरमिता प्रमदमिता ॥

(2) भक्ता

परि० ज्ञेया भक्ता सभसगगुरुष्टा ।
गण० स, भ, स, ग (4. 6)
उदा० पीत्वा भक्ता मधु मधुपाली
कालिन्दीये तटवनकुञ्जे ।
उद्दीप्यन्तीव्रजजनरामाः
कामासिक्ता मधुजिति चक्रे ॥

(3) रुक्मवती (चम्पकमाला)

परि० रुक्मवती सा यत्र भसगाः ।
गण० भ, स, स, ग (5. 5)
उदा० कायमनोवाक्यैः परिशुद्धैः
यस्य सदा कंसरिपि भक्तिः ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्यपदे हृत्यालिरुदारा
रुक्मवती विभ्रः खलु तस्य ॥

ग्यारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(त्रिष्टुभ्)

(1) इन्द्रवज्रा

परि० स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।
गण० त, त, ज, ग, ग (5. 6)
उदा० गोष्ठं गिरिं सस्मरणेन धृत्वा
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुद्गतदृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलं च गुप्त्यम्
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(2) उपेन्द्रवज्रा

परि० उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा ।
गण० ज, त, ज, ग, ग (5. 6)
उदा० उपेन्द्रवज्रादिमथिच्छटाभि-
र्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते ।
स्मरामि गौरीभिरुपास्यमानम्
सूरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम् ॥

(3) उपजाति

परि० अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥
गण० जब इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा को एक ही श्लोक में मिला देते हैं तो उसे उपजाति वृत्त कहते हैं। इसके चौदह भेद होते हैं।
उदा० अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥ कु० १।१ ।
दे० रघु० २, ५, ६, ७, १३, १४, १६, १८,; कु०३, कु० १७ आदि। जब अन्य वृत्त भी एक ही श्लोक में मिला दिये जाते हैं तो भी उपजाति ही वृत्त होता है। उदा० माघ कवि के निम्नश्लोक में वंशस्थ और इन्द्रवंशा मिला दिए गए हैं।
इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रभो
गणैर्नृपाणामथ तोरणाढ्यैः ।
प्रस्थानकालक्षमयेषकल्पना-
कृतलक्षणक्षेपमुदैक्षताभ्युतम् ॥ शि० १२।१ ।

(4) दोधक

परि० दोधकमिच्छति भक्तिलयादगौ ।
गण० भ, भ, भ, ग, ग, (6. 5.)
उदा० मा न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः
सा रतरागमना मतमानम् ।
तेन सहेह बिभर्ति रहः स्त्री
सार तरामनायतमानम् ॥शि० ४।४५ ।

(5) भ्रमरविलसितम्

परि० भ्मौ लौ गः स्याद् भ्रमरविलसितम् ।
गण० भ, भ, न, ल, ग (4. 7)
उदा० प्रीत्यै यूनां व्यवहितततनाः
प्रौढध्वान्तं दिनमिह जलदाः ।
दोषामन्य विदधति सुरत-
क्रीडायासश्रमशमपटवः ॥ शि० ४।६२ ।

(6) रथोद्धता

परि० रात्परैर्नरलगै रथोद्धता ।
गण० र, न, र, ल, ग (3. 8 या 4. 7)
उदा० कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो
रामभव्वरविघातशान्तये ।
काकपक्षधरमेत्य याचित-
स्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते ॥ रघु० ११।१ ।
दे० कु० ८ भी ।

(7) वातोर्मी

परि० वातोर्मीयं गदिता म्भौ तगौ गः ।
गण० म, भ, त, ग, ग (4. 7)
उदा० ध्याता मूर्तिः क्षणमप्यच्युतस्य
श्रेणी नाम्नां गदिता हेलयाऽपि ।
संसारेऽस्मिन् दुरितं हन्ति पुंसाम्
वातोर्मी पीतमिवाम्भोधिमध्ये ॥

(8) शालिनी

परि० मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।
गण० म, त, त, ग, ग, (4. 7.)
उदा० अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते ।
मुक्तिं दत्ते सर्ववोपास्यमाना
पुंसां श्रद्धा शालिनी विष्णुभक्तिः ॥

(9) स्वागता

परि० स्वागता रनभगैर्गुरुणा च ।
गण० र, न, भ, ग, ग (3. 8)
उदा० यावदागमयतेऽथ नरेन्द्रान् स स्वयंवरसहाय महोत्रः ।
तावदेव ऋषिरिन्द्रविदुषुः नारदस्त्रिदशधाम जगाम ॥
नै० ५।१ ॥
दे० कि०९, शि० १०.

बारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(जगती)

(1) इन्द्रवंशा

परि० तत्त्वेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ ॥
गण० इन्द्रवंशा बिल्कुल वंशस्थविल या वंशस्थ (दे० नी० १३वाँ) के समान है, सिवाय इसके कि इसका प्रथमाक्षर गुरु होता है। त, त, ज, र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदा० दैत्येन्द्रदर्पाग्निरुदीर्णदीधितिः
पीतान्बरोऽसौ जगतां तमोपहः ।
यस्मिन् ममज्जुः शलभा इव स्वयम्
ते कंसचाणूरमुखा मलद्विषः ॥

(2) चन्द्रवर्त्म

परि० चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रनभसैः ।
गण० र, न, भ, स (4, 8)
उदा० चन्द्रवर्त्म पिहितं घनतिमिरैः
राजवर्त्म रहितं जगमनैः ।
इष्टदर्त्म तदलंकुरु सरसे
कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुचुकी ॥

(3) जलधरमाला

परि० अब्धर्यगैः स्याज्जलधरमालाम्भौ स्मौ ।
गण० म, भ, स, म (4.8)
उदा० या भक्तानां कलिदुरितोत्तप्तानां
तापच्छेदे जलधरमाला नव्या ।
भव्याकारा दिनकरपुत्रीकूले
केलीलोला हरितनुरभ्यात् सा वः ॥
दे० कि० ५।२३ ॥

(4) वलोद्धतगति

परि० रसैर्जसजसा जलोद्धतगतिः ।
गण० ज, स, ज, स (6.6)
उदा० समीरशिशिरः शिरस्सु वसताम्
सतां जवनिका निकामसुखिनाम् ।
बिभर्ति जनयन्नयं मुदमपा-
मपायघवला बलाहकततिः ॥ शि० ४।५४ ॥

(5) तामरस

परि० ह्रद वद तामरसं नजजा यः ।
गण० न, ज, ज, य (5.7)
उदा० स्फुटसुषमामकरन्दमनोज्ञम्
व्रजललनानयनालिनिपीतम् ।
तव मुखतामरसं मुरशत्रो
हृदयसदाश विकाशि ममास्तु ॥

(6) तोटक

परि० वद तोटकमब्धिसकारयुतम् ।
गण० स, स, स, स (4.4.4)
उदा० स तथेति विनेतुरुदारमतेः
प्रतिगृह्य वचो विससर्ज मुनिम् ।
तदलब्धपदं हृदि शोकघने
प्रतियातमिवोन्तिकमध्य गुरोः ॥ रघु० ८।९१ ॥
दे० शि० ६।७१ ॥

(7) द्रुतविलम्बित

परि० द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
गण० न, भ, भ, र (4.8 या 4.4.4)
उदा० मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना
मम च मुक्तमिदं तमसा मनः ।
मनसिजेन सखे प्रहरिष्यता
धनुषि चूतशरश्च निवेशितः ॥ शि० ६ ।
दे० रघु० ९, शि० ६ भी ।

(8) प्रभा

परि० स्वरशरविरतिर्ननौ रौ प्रभा ।
गण० न, न, र, र (7.5)
उदा० अतिसुरभिरभाजि पुष्पश्रिया-
मतनुतरतर्षय संततानकः ।
तरुणतरभृतः स्वनं रागिणा-
मतनुतरतये वसन्तानकः ॥ शि० ६।६७ ॥
कि० ५।२१ भी ।

(9) प्रमिताक्षरा

परि० प्रमिताक्षरा सजसलैः कथिता ।
गण० स, ज, स, स (5.7)
उदा० विहगाः कदम्बसुरभावहे गाः
कलयन्त्यनुक्षणमनेकलयम् ।
भ्रमयन्नुपैति मुहुरभ्रमयम्,
पवनश्च धूतनवपल्लवनः ॥ शि० ४।३६ ॥
कि० ९, शि० ९ ।

(10) भुजंगप्रयात

परि० भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः ।
गण० य, य, य, य (6. 6)
उदा० धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ॥

(11) मणिमाला

परि० स्यौ स्यौ मणिमाला क्षिप्ता गुहवक्त्रैः ।
गण० त, य, त, य (6. 6)
उदा० प्रह्वामरमौलौ रत्नोपलकृप्ते
जातप्रतिबिम्बा शोणा मणिमाला ।
गोविन्दपदाब्जे राजी नखराणा-
मास्तां मम चित्ते ध्वान्तं शमयन्ती ॥

(12) मालती ('यमुना' भी कहते हैं)

परि० भवति नजावथ मालती जरौ ।
गण० न, ज, ज, र (5. 7)
उदा० इह कलयाच्युत केलिकानने
मधुरससौरभसारलोलुपः ।
कुसुमकृतस्मितचारु विभ्रमा-
मलिरपि चुम्बति मालतीं मुहुः ॥

(13) वंशस्थविल (वंशस्थ या वंशस्तनित)

परि० वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ ।
गण० ज, त, ज, र (5. 7)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदा० तथा समक्षं दहता मनोभवम्
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती ।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता ॥ कु० ५।१ ।
दे० रघु० ३ भी ।

(14) वंशदेवी

परि० वाणाश्वैश्छिन्ना वंशदेवी मयौ यौ ।
गण० म, म, य, य (5.7)
उदा० अर्चामभ्यर्चयां त्वं त्रिदशवामराणा-
मद्वैतेनैक विष्णुसम्यर्थ्य भक्त्या ।
तत्राशेषात्मन्यर्चिते भाविनी ते
भ्रातः संपन्नाराधना वंशदेवी ॥

(15) स्रग्विणी

परि० कीर्तितेषा चतूरेफिका स्रग्विणी ।
गण० र, र, र, र (6. 6)
उदा० इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता
जातकुम्भद्रवालङ्कृता शोभते ।
नव्यमेघच्छवि: पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी ॥

तेरह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिजगती)

(1) कलहंस (सिंहनाद या कुटजा)

परि० सजसाः सगौ च कथितः कलहंसः ।
गण० स, ज, स, स, ग (7. 6)
उदा० यमुना विहारकुतुके कलहंसो
व्रजकामिनीकमलिनीकुतकेलि ।
जनचित्तहारिकलकण्ठनिनादः
प्रमदं ततोतु तव नन्दतनूजः ॥ दे० शि० ६।७३ ।

(2) प्रभा (चन्द्रिका और उत्पलिनी)

परि० तुरगरसयतिर्नौ ततौ गः क्षमा ।
गण० न, न, त, त, ग (7. 6)
उदा० इह दुरधिगमैः किंचिदेवागमैः
सततमसुतरं दर्शयन्त्यन्तरम् ।
अनुमतिविपिनं वेद दिव्यापिनम्
पुरुषमिव परं पद्मयोनिः परम् ।।कि० ५।१८।

(3) प्रहर्षिणी

परि० प्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।
गण० म, न, ज, र, ग (3. 10)
उदा० ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्न
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम् ।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु
र्मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ।।
रघु० ४।८८, दे० कि० ७, शि० ८ ।

(4) मंजुभाषिणी (सुनन्दिनी, और प्रबोधिता)

परि० सजसा जगौ च यदि मंजुभाषिणी ।
गण० स, ज, स, ज, ग (6. 7)
उदा० यमुनातटीलमथ शुभ्रवानमुम्
तमस्तनूज इति नाथुनोऽभ्यते ।
स यदाऽवलम्बिजपुरादहर्निशम्
नृपतेस्तदादि समचारि वार्तया ।।शि० १३।१।

(5) मत्तमयूरी

परि० वेदैरनध्रौस्तौ यसगा मत्तमयूरम् ।
गण० म, त, य, स, ग (4. 9)
उदा० दृष्ट्वा दृशान्याचरणीयानि विहाय
प्रेक्षाकारी याति पदं मुक्तमपायैः ।
सम्यग्दृष्टिस्तस्य परं पश्यति यस्त्वाम्
यश्चोपास्ते साधु विधेयं स विधत्ते ॥ कि० १८।
२८, शि० ४।४४, ६।७६, रघु० ९।७५ ।

(6) रुचिरा (प्रभावती)

परि० जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्भैः ।
गण० ज, भ, स, ज, ग (4. 9)
उदा० कदा मुखं वरतनु कारणादृते
तवागतं क्षणमपि कोपपावताम् ।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ मालवि० ४।१३ ।
दे० भट्टि० १।१, शि० १७ ।

चौदह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(शक्वरी)

(1) अपराजिता

परि० ननरसलधुगैः स्वरैरपराजिता ।
गण० न, न, र, स, ल, ग (7. 7)
उदा० यदनवधि भुजप्रतापकृतास्पदा
यदुनिचयचमूः परैरपराजिता ।
व्यजयत समरेसमस्तरिपुव्रजम्
स जयति जगतां गतिर्गरुडध्वजः ॥

(2) असंबाधा

परि० म्तौ न्सौ गावक्षग्रहविरतिरसंबाधा ।
गण० म, त, न, स, ग, ग (5. 9)
उदा० वीर्याग्नौ येन ज्वलति रणवशात् क्षिप्रे
दैत्येन्द्रे जाता धरणिरियमसंबाधा ।
धर्मस्थित्यर्थं प्रकटिततनुसम्बन्धः
साधूनां बाधां प्रशमयतु स कंसारिः ।।

(3) पथ्या (मंजरी)

परि० सजसा यलौ च सह गेन पथ्या मता ।
गण० स, ज, स, य, ल, ग (5. 9)
उदा० स्थगयन्त्यमूः शमितघातकातंस्वरा
जलदास्तडित्तुलितकान्तकार्तस्वराः ।
जगतीरुहं स्फुरितचारु चामीकराः
सवितुः क्वचित् कपिशयन्ति चामीकराः ।।
शि० ४।२४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(4) प्रमदा (कुररीरुता)

परि० नजभजला गुरुश्च यदि प्रमदा ।
गण० न, ज, भ, ज, ल, ग (5. 8)
उदा० अनतिचिरोज्झितस्य जलदेन चिर-
स्थितबहुबुद्बुदद्युतय एत्य सरोजनिकृतिम् ।
विरलविकीर्णबद्धशफला सकला-
सिह विदधाति धौतकलधौतमही ॥ शि० ४।४१ ।

(5) प्रहरणकलिका

परि० उनभनलगैर्यति प्रहरणकलिका ।
गण० न, न, भ, न, ल, ग (7. 7)
उदा० व्यथयति कुसुमप्रहरणकलिका
प्रमदवनभवा तव धनुषि तता ।
विरहविधिदि मे शरणमिह ततो
मधुमथनगुणस्मरणमधिरतम् ॥

(6) मध्यक्षामा (हंसश्येनी या कुटिल)

परि० मध्यक्षामायुगदशविरमा म्भौ न्यौ गौ ।
गण० म, भ, न, य, ग, ग (4.10)
उदा० नीतोच्छ्वासं मधुरशिशिरश्वेभरुत्नै-
रानीलाभैर्विरचितपरभागा रत्नैः ।
ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति हंसश्येनी
मध्येऽप्यच्छः स्फटिकरजतभित्तिच्छाया ।।
कि० ५।३१ ।

(7) वसन्ततिलका

(वसन्ततिलक, उद्धर्षिणी या सिंहोन्नता)

परि० उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।
गण० त, भ, ज, ज, ग, ग (8.6)
उदा० यास्यैकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः ।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥ श० ४।१ ।

(8) वासन्ती

परि० मात्तो नो भो गौ यदि गदिता वासन्तीयम् ।
गण० म, त, न, भ, ग, ग (4.6.4)
उदा० आम्यद्भृङ्गी निर्भरमधुरालापोद्गीतैः
श्रीखण्डाद्रेरद्भुतपवनैर्मन्दान्दोला ।
लीलालोला पल्लवविलसद्धस्तोल्लासैः
कंसारातौ नृत्यति सदृशी वासन्तीयम् ।।

पन्द्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिप्रकृति)

(1) तूणक

परि० तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तिमम् ।
गण० र, ज, र, ज, र (4.4.4.3 या 7.8)
उदा० सा सुवर्णकेतकं विकाशि भृङ्गपूरितम्
पञ्चबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम् ।
राधिका वितर्कयँ माधवाद्य मासि माधवे
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे ॥

(2) मालिनी

परि० ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।
गण० न, न, म, य, य (8.7)
उदा० शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्
जलनिधिमनुरूपं जह्नुकन्यावतीर्णा ।
इति समगुणयोगप्रीतयस्तत्र पौराः
श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः ।। रघु० ६।८५ ।

(3) लीलाखेल

परि० एकन्यूनौ विद्युन्मालापादौ खेल्लीलाखेलः ।
गण० म, म, म, म, म
उदा० सा कान्ते पक्षस्यान्ते पर्यंकाशे देशे स्वाप्सीः
कान्तं वक्त्रं वृत्तं पूर्णं चन्द्रं मत्वा रात्रौ चेत् ।
क्षुत्क्षामः प्राटचेतश्चेतो राहुः क्रूरः प्रादात्
तस्मादुच्चान्ते हर्म्यस्यान्ते शय्यैकाते कर्तव्या ।।
सरस्वती०

(4) शशिकला

परि० गुरुनिधनमनुलघुरिह शशिकला ।
गण० न, न, न, न, स (अन्तिम को छोड़ कर सब लघु)
उदा० सलयजलिकसमुदितशशिकला
व्रजयुवतिलसदलिक गगनगता ।
सरसिजनयनहृदयसलिलनिधि
व्यतनुत वितरमसपरितरलम् ॥

सोलह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अष्टि)

(1) चित्र

परि० चित्रसंज्ञमीरितं रजौ रजौ रगौ च वृत्तम् ।
गण० र, ज, र, ज, र, ग (8.8 या 4.4.4.4)
उदा० विद्रुमाग्रधारणोष्ठशोभिवेणुवाद्यहृष्ट-
वल्लवीजनाङ्गसंगजातमन्युकण्टकाङ्क ।
त्वां सदैव वासुदेव पुण्यलभ्यपादं देव
अन्यपुण्यचित्रकेश संस्मरामि गोपवेश ।।

(2) पञ्चचामर

परि० प्रमाणिका पदद्वयं वदन्ति पंचचामरम् ।
(जरौ जरौ ततौ जगौ च पंचचामरं वदेत्)
गण० ज, र, ज, र, ज, ग (8.8 या 4.4.4.4)
उदा० सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
लसद्विताननभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
सुरांगनाभवल्लवीकरप्रपंचचामर—
स्फुरत्समीरवीजितं सदाश्रयुतं भजामि तम् ।।

(3) वाणिनी

परि० नजभजरैर्यदा भवति वाणिनी गयुक्तैः ।
गण० न, ज, भ, ज, र, ग ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदा० स्फुरतु मम माननेऽज्ञ ननु वाणि नीतिरम्यम्
तव चरणप्रसादपरिपाकतः कविरत्नम् ।
भवजलराशिपारकरणक्षमं मुकुन्दम्
सततमहं स्तवैः स्वरचितैः स्तवानि नित्यम् ॥

सत्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अत्यष्टि)

(1) चित्रलेखा (अतिशायिनी)

परि० ससजा भजगा गु दिक्स्वरैर्भवति चित्रलेखा ।
गण० स, स, ज, भ, ज, ग, ग (10. 7)
उदा० इति धौतपुरंधिमत्सरान् सरसि मज्जनेन
श्रियमाप्तवतोऽतिशायिनीमपमलांगभासः ।
अवलोक्य तदैव यादवानपरवारिराशेः
शिशिरेतररोचिषाप्ययां ततिषु मक्नुमीषे ॥
शि० ८।७१ ।

(2) नर्दटक (कोकिलक)

परि० यदि भवतो नजौ भजलका गुरु नर्दटकम् ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ल, ग (8. 9)
उदा० तरुणतमालनीलबहुलोल्लसदम्बुधराः
शिखिरुरुमोरणावधुतनूतनवारिकणाः ।
कथमवलोकयेयमधुना हरिहेतिमती–
मेदकलनीलकंठकलहंमुखराः ककुभः ॥
मा० ९।१८; दे०५।३१ ।

(3) पृथ्वी

परि० जसौ जलयका वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।
गण० ज, स, ज, स, य, ल, ग (8. 9.)
उदा० इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषा–
मितश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते ।
इतोऽपि बडवानलः सह समस्तसंवर्तकै–
रहो विततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ॥
भर्तृ० २।७६ ।

(4) मन्दाक्रान्ता

परि० मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
गण० म, भ, न, त, त, ग, ग (4. 6. 7)
उदा० गोपी भर्तुर्विरहविधुरा काचिदिन्दीवराक्षी
उन्मत्तेव स्खलितकबरी निःश्वसन्ती दिशाळम् ।
अन्वैवास्ते मुररिपुरिति भ्रान्तिदूतीसहाया
रम्यस्था गेहं क्षिति यमुनामञ्जकुञ्जं जगाम ॥
पदांक० १ ।
[समस्त मेघदूत इसी वृत्त में लिखा गया है]

(5) वंशस्थपतित

परि० दिङ्मुनिर्वंशपतितं भरतभनलगैः ।
गण० भ, र, न, भ, न, ल, ग (10. 7)
उदा० दर्पणनिर्मलासु पतिते घनतिमिरमुषि
ज्योतिषि रौप्यमिति पुरः प्रतिफलति मुहुः ।

बोडमसंमुखोऽपि रमणैरपहृतवसनाः
काञ्चनकन्दरासु तरुणीरिह नयति रविः ॥
शि० ४।६७।

(6) शिखरिणी

परि० रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।
गण० य, म, न, स, भ, ल, ग (6. 11)
उदा० दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः
करिण्यः कारुण्यास्पदमसमशोभाः खलु मृगाः ।
इदानीं लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखानां पुनरयम्
नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः ॥
भामि० १।२ ।

(7) हरिणी

परि० नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।
गण० न, स, म, र, स, ल, ग (6. 4. 7)
उदा० सुतनु हृदयादस्मात्पादेशव्यलीकमपैतु ते
किमपि मनसः संमोहो मे तदा बलवानभूत् ।
प्रबलतमसामेवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः
सजलमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तो घनोत्यहिशङ्कया ॥
श० ७।२४ ।

अठारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(धृति)

(1) कुसुमितलतावेल्लिता

परि० स्वादभूतवंश्वैः कुसुमितलतावेल्लिता स्तौ नयौ यौ ।
गण० म, त, न, य, य, य (5. 6. 7.)
उदा० क्रीडत्कालिन्दीलोलितलहरीवारिभिर्दीक्षितार्द्रैः
वातैः खेलद्भिः कुसुमितलतावेल्लिता मन्दमन्दम् ।
भुञ्जालोगीतैः किसलयकरोल्लासितैर्लास्यलक्ष्मीम्
तन्वाना चेतो रभसतरलं चक्रपाणेश्चकार ॥

(2) चित्रलेखा

परि० मन्दाक्रान्ता नपरलघुयुता कीर्तिता चित्रलेखा ।
गण० म, भ, न, य, य, य (4. 7. 7.)
उदा० शङ्कुभुम्भिझर्झ जगति मृगदृशां सारूपं यदासी-
दाकृष्यैदं व्रजयुवति सभा वेधसा सा व्यधायि ।
नैतादृक्चेत् कथमुदधिसुतामन्तरेणाच्युतस्य
प्रीतं तस्या नयनयुगमभूच्चित्रलेखादभुताय्याम् ।

(3) मत्तेभ

परि० मजभजरैस्तु रेफसहितैः शिखैर्हयैर्नतेदनम् ।
गण० न, ज, भ, ज, र, र (11. 7.)
उदा० तरणिसुतातरङ्गपवनैः सलीलमान्दोलितम्
मधुरिपुपादपंकजरजः सुपूतपृथ्वीतलम् ।
मुरहरचित्रचेष्टितकलाकलापसस्मारकम्,
क्षितितलनन्दनं व्रज सखे सुखाय वृन्दावनम् ॥

(4) नाराच

परि० इह मनरचतुष्कसृष्ट तु नाराचमाचक्षते ।
गण० न, न, र र, र, र, (8. 5. 5,)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदा० रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां प्रगृह्य प्रियाम्
प्रियसुहृदि बिभीषणे संगमय्य श्रियं वैरिणः ।
रविसुतसहितेन तेनानुयातः ससौमित्रिणा
भुजविजितविमानरत्नाधिरूढः प्रतस्थे पुरीम् ॥
रघु० १२।१०४।

(5) शार्दूललालित

परि० मः सो जः सतसा दिनेशकृतुभिः शार्दूललालितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, स, (12. 6.)
उदा० हृत्वाकांसमृगे पराक्रमविधिं शार्दूललालितम्
यश्चक्रे क्षितिभारकारिषु दरं चैद्यप्रभृतिषु ।
संतोषं परमं तु देवनिवहे वैलोक्यशरणम्,
श्रेयो नः स तनोत्वपारमहिमा लक्ष्मीप्रियतमः ॥

उन्तीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अतिधृति)

(1) मेघविस्फूर्जिता

परि० रसाःदैर्वर्यैर्मौन्यौ ररगुरुमुतौ मेघविस्फूर्जिता स्यात् ।
गण० य, म, न, स, र, र, ग (6. 6. 7.)
उदा० कदम्बामोदाढ्या विपिनपवनः कैकिन: कान्तकेका
विनिद्राः कन्दल्यो दिशि दिशि मुदा दर्दुरा दृप्तनादाः ।
निधा नृत्यद्विद्युद्विलसितलसन्मेघविस्फूर्जिता चेत्
प्रियः स्वाधीनोऽसौ दनुजदलनो
राज्यमस्मात् किमन्यत् ॥

(2) शार्दूल विक्रीडित

परि० सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, त, ग (12. 7.)
उदा० वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः ।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः ॥
वि० १।१।

(3) सुमुखी

परि० भौ भ्भौ सो नो गुरुश्चेद् हय ऋतुरसैरुक्ता सुमुखी ।।
गण० म, र, भ, न, म, न, ग (7. 6. 6.)
उदा० वेदार्थान् प्राकृतस्त्वं वदसि न च ते जिह्वा निपतिता
मध्याह्ने वीक्षसेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता ।
दीप्तास्ते प्राणिमन्तः क्षिपसि स च ते
दाघो भवति नो
चारित्र्याच्चाऽस्खलितं चलयसि न ते देहं हरति भूः ॥
मृच्छ० ९।२१ ।

(4) सुरसा

परि० भौ भ्नौ यो नो गुरुश्चेत् स्वरमुनिकरणैराह सुरसाम् ।
गण० म, र, भ, न, य, न, ग (7. 7. 5.)
उदा० कामक्रीडासतृष्णो मधुसमयसमारम्भरभसात्
कालिन्दीकूलकुञ्जे विहरणकुतुकाकृष्टहृदयः ।
गोविन्दो वल्लवीनामधररसमुषां प्राप्य सुरसाम्
शङ्के पीयूषपानैः प्रचुरकृतसुखं व्यस्मरत्सर्वं ॥

बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(कृति)

(1) गीतिका

परि० सजजा भरौ सलया यदा कथिता तदा खलु गीतिका ।
गण० स, ज, ज, भ, र, स, ल, ग (5.7.8)
उदा० करतालचञ्चलकङ्कणस्वननिश्चयेन मनोरमा
रमणीयदेणुनिनादरङ्गमसंगमेन सुखावहा ।
बहुलानुरागनिवासरासरसमुद्भवा भवराधिणम्
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनवाह चामरगीतिका ॥

(2) सुवदना

परि० ज्ञेया सप्ताश्वपड्भिर्भरभनययुता भ्लौ गः सुवदना ।
गण० म, र, भ, न, म, भ, ल, ग (7.7.6)
उदा० उत्तुङ्गास्तुङ्गकूलं स्रुतमदसलिलाः प्रस्यन्दिसलिलम्
श्यामा श्यामोपकण्ठद्रुमगतिमुखराः कल्लोलमुखरम् ।
स्रोतः स्रातावसीदत्तटमुदशनैरुत्सादिततटाः
शोणं सिन्दूरशोणा मम गजपतयः पास्यन्ति शतशः ॥
मुद्रा० ४।१६ ।

इकतीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(प्रकृति)

(1) पञ्चचामरावली (सरसी, धृतश्री)

परि० नजभनजा जरौ नरपतेः कथिता भुवि पञ्चचामरावली ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ज, र (7.7.7)
उदा० तुरगखुराकुलस्य परितः परमेकतुरङ्गजन्मनः
प्रथयितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता ।
परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
श्चिरयलितश्रियो जलनिधेश्च तदाऽभवदन्तरं महत् ॥
शि० ३।८२ ॥

(2) स्रग्धरा

परि० म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।
गण० म, र, भ, न, य, य, य (7.7.7)
उदा० या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं
या हविर्या च होत्री ।
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया
प्राणिनः प्राण्यवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥
श० १।१ ।

बाईस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(आकृति)

हंसी

परि० मौ गौ नाश्चत्वारो गो गो
वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गण० म, म, त, न, न, न, त, ग
या (म, भ, त, न, न, न, स, ग) (8.14)
उदा० सार्धं कान्तेनैकान्तेऽस्मो विकचकमलमद्य सुरभि बिभ्रन्ती
कामक्रीडाकूतस्फीतप्रमदरसतरमलघु रसन्ती ।
कालिन्दीये पथ्यारण्ये पवनपतनपरितरलपरागे
कंसारातेः पश्य स्वेच्छं सरभसगतिरिह विलसति हंसी ॥

तेइस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(विकृति)

अश्वितनया

परि० नजभजभाजभौ लघुगुरू वृषेस्तु गदितेयमश्वितनया ।
गण० न, ज, भ, ज, भ, ज, भ, ल, ग (11.12)
उदा० स्मरतरशौर्यपावकशिखापतत्पतङ्गनिभमत्तदुष्टदनुजो
जलधिसुताविलासवसतिः सतां गतिरशेषमान्यमहिमा ।
भुवनहितावतारचतुरश्चराचरधरोऽवतीर्ण इह हि
क्षितिबलयेऽस्ति कंसशमनस्तवेति तमवोचदश्वितनया ॥

चौबीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(संकृति)

तन्वी

परि० भूतमुनीनैर्यतिरिह भतनाः
स्भौ भनयाश्च यदि भवति तन्वी ।
गण० म, त, न, स, भ, भ, न, य (5.7.12)
उदा० माधव मुग्धैर्मधुकरविकृतैः
कोकिलकूजितमलयसमीरैः
कम्पमुपेता मलयजसलिलैः
प्लावनतोऽप्यधिगततनुदाहा ।
पद्मपलाशैर्विरचितशयना
देहजसज्जरभरपरिदूनैः—
निश्वसती सा मुहुरतिपरुषं
ध्यानलये तव निवसति तन्वी ॥

पच्चीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिकृति)

कौञ्चपदा

परि० कौञ्चपदा भ्यौ स्भौ ननना
स्वाविपुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत् ।
गण० म, म, स, भ, न, न, न, न, ग (5.5.8.7)

उदा० कौञ्चपदालीचित्रिततीरा
मदकलरङ्गकुलकलकल रुचिरा
फुल्लसरोजश्रेणिविलासा
मधुमुदितमधुपरवरभसकरी ।
फेनविलासप्रोज्ज्वलहासा
ललितलहरिभरपुलकितसुतनुः
पश्य हरेर्जस्य न चेतो
हरति तरलगतिरिह्मकिरणजा ॥

छब्बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उत्कृति)

भुजंगविजृंभित

परि० वस्वीशाब्दैरंहोदोषैर्यतं ममतननयुगरसलगैर्भुजङ्ग-
विजृम्भितम् ।
गण० म, म, त, न, न, न, र, स, ल, ग (8, 11. 7)
उदा० हेलोद्दण्डच्चन्मञ्चत्पादप्रकटविकट-
नटनभरो रणत्करतालक-
ध्वारुप्रेङ्खज्जुडाबद्धः श्रुतिरलनद-
किङ्किलयस्तरङ्गितहारधृक् ।
भस्यन्नागस्त्रीभिर्भक्त्या मुकु-
लितकरकमलयुगं कृतस्तुतिरभ्युतः
पायाद्वश्छिन्दन् कालिन्दीह्रदकृत-
निजवसतिबृहद्भुजङ्गविजृम्भितम् ॥

दंडक

जिन वृत्तों के प्रत्येक चरण में सत्ताईस या इससे अधिक वर्ण होते हैं उनका एक सामान्य नाम दंडक है। इस वृत्त की जाति के चरण में वर्णों की संख्या अधिक से अधिक ९९९ बताई जाती है। प्रत्येक चरण में सबसे पहले दो नगण या सः लघु अक्षर होते हैं, शेष या तो रगण होते हैं या मगण या सभी चरण सगण होते हैं। दण्डक की जिन श्रेणियों का बहुधा उल्लेख मिलता है वे हैं—चण्डवृष्टिप्रयात, प्रचितक, मत्तमातंग-लीलाकर, सिंहविक्रान्त, कुसुमस्तवक, जनकृशोदर, और संग्राम आदि। अन्तिम प्रकार के दण्डक का उदाहरण भा० ५।२३ है।

अनुभाग (ख)

अर्धसमवृत्त

(1) अपरवक्त्र ('वैतालीय' भी कभी कभी)
परि० अयुजि नयरला गुरुः समे
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ।
गण० न, न, र, ल, ग (विषम चरण)
न, ज, ज, र, (सम चरण)
उदा० स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-
स्तमपरवक्त्रमवैरम माधवम् ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृगयुवतिगणैः समं स्थिता
व्रजयनिता धृतचित्तविभ्रमाः ॥

(2) उपचित्र

परि० विषमे यदि सौ सलौ गले
भौ पुनिमाद् गुरुकाबुपचित्रम् ।
गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)
उदा० मुरवैरिवपुस्तनुतां मुद
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगनं चपलामिलितं यथा
शारदनीरदरेखचित्रम् ॥

(3) पुष्पिताग्रा (औपच्छन्दसिक)

परि० अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।
गण० न, न, र, य (विषम चरण)
न, ज, ज, र, ग (सम चरण)
उदा० अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं
व्यसनकृशा परिपालयाम्बभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥ कु० ४।४६ ।

(4) वियोगिनी (वैतालीय या सुन्दरी)

परि० विषमे ससजा गुरु: समे
सभरा लोऽथ गुरु वियोगिनी ।
गण० स, स, ज, ग (विषम चरण)
स, भ, र, ल, ग (सम चरण)
उदा० सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणम्
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ कि० २।३० ।

(5) वेगवती

परि० सयुगात् सगुरू विषमे वेद्
मार्विह वेगवती युजि भाद्गौ ।
गण० स, स, स, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)
उदा० स्मरवेगवती बजरामा
केशवबंशारवैरतिमूर्छा ।
रभसान्न गुरून् गणयन्ती
केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम ॥

(6) हरिणप्लुता

परि० सयुगात्सलघू विषमे गुरु-
र्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।
गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
न, भ, भ, र (सम चरण)
उदा० स्फुटफेनचया हरिणप्लुता
नालिनगोत्रसटा तरंगः सुता ।
सकलहंसकुलारव शालिनी
विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥

विशे० अपरवक्त्र या औपच्छन्दसिक और वैतालीय या वियोगिनी प्रायः जाति समझे जाते हैं (दे० अनुभाग घ) । परन्तु कभी कभी गणयोजना में उनकी परिभाषा दी जाती है, इसी लिए दे यहाँ वृत्तों के अन्तर्गत दे दिये गये हैं ।

अनुभाग (ग)

विषमवृत्त (असमवृत्त)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उद्गता अत्यंत सामान्य वृत्त कहलाता है ।

परि० प्रथमे सजौ यदि सलौ च
नसजगुरुकाश्चनन्तरम् ।
यद्यथ भनजलगाः स्फुरणो
सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥
गण० स, ज, स, ल (प्रथम चरण)
न, स, ज, ग (द्वितीय चरण)
भ, न, ज, ल, ग (तृतीय चरण)
स, ज, स, ज, ग (चतुर्थ चरण)
उदा० अथ वासवस्य वचनेन
शिखिवदनस्त्रिलोचनम् ।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुम्
विधिवत्तपसि विदधे धनंजयः ॥ कि० १२।१ ।
दे० शि० १५ भी ।

उद्गता का एक और भेद बताया जाता है जिसके तृतीय चरण में भ, न, ज, स, ग के स्थान में भ, न, भ, ग होते हैं । वृत्तों के अन्य भेद जिनमें प्रत्येक चरणों के वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है, 'गाथा' के सामान्यशीर्षक के अन्तर्गत बतलाये हैं । चार से भिन्न चरणों की संख्या वाले वृत्तों के लिए भी यही नाम व्यवहृत होता है । जहाँ तक 'उपजाति' का संबंध है वे किसी भी नियमित वृत्त के दो या दो से अधिक चरणों को मिला कर अर्धसमवृत्त या विषमवृत्त बना लिए जाते हैं ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्ति

(यह छन्द मात्राओं की संख्या से नियमित किये जाते हैं)।

(अ) इस प्रकार के वृत्तों की अत्यन्त सामान्य प्रकार 'आर्या' है। इसके नौ अवान्तर भेद बताये जाते हैं: —

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च।
गीत्युपगीत्युद्गीता आर्यागीतिर्नवैव कार्याः॥

इन नौ भेदों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए इनका उल्लेख किया जाता है।

(1) आर्या

परि० यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या॥ श्रु० ४।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्रायें गिनी जाती हैं)। दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० प्रतिपक्षेणापि पतिं सेवन्ते भर्तृवत्सलाः साध्व्यः।
अन्यसरितां शतानि हि समुद्रगाः प्रापयन्त्यम्बिम्॥
मालवि० ५।१९।

गोवर्धन की समस्त 'आर्यासप्तशती' इसी छन्द में लिखी गई है।

(2) गीति

परि० आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयमपि भवति यत्र हंसगते।
छन्दोविदस्तदानीं गीतिं तामामनन्ति भाषन्ते॥

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० पाटीर तव पटीयान् कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम्।
यत्परिषतामपि नृणां पिण्टोऽपि तनोषि परिमलैः
पुष्टिम्॥ भामि० १।१२।

(3) उपगीति

परि० आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रथमार्धमपि प्रयुक्तं चेत्।
कामिनि तामुपगीतिं प्रतिभाषन्ते महाकवयः॥
श्रु० ६।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और दूसरे तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नवगोपसुन्दरीणां रासोल्लासे मुरारातिम्।
अस्मारयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीतैः॥

(4) उद्गीति

परि० आर्यासकलद्वितयं विपरीतं पुनरिहोद्गीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय चरण में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नारायणस्य सन्ततमुद्गीतिः संस्मृतिर्भक्त्या।
अचिरान्मासक्तिर्दस्तरंसंसारसागरं तरणिः॥

(5) आर्यागीति

परि० आर्या प्राग्दलमन्तेऽधिकगुरु तादृक् परार्धमार्यागीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में बीस मात्राएँ होती हैं।

उदा० सखयूकाः सुखिनोऽस्मिन्नवरतमन्दरागतामरसदृशः।
नासेवन्ते रसवन्नवरतमन्दरागतामरसदृशः॥
शि० ४।५१।

नोट —यह पाँचों भेद कभी कभी गणयोजना में भी परिभाषित किये जाते हैं।

(आ) वैतालीय

परि० षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः।
न समाऽत्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते
रलौ गुरुः॥

यह चार चरण का श्लोक है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में चौदह लघु मात्राओं का समय लगता है, और द्वितीय तथा तृतीय चरण में सोलह मात्राओं का। पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छः मात्राएँ होनी चाहिए। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके पश्चात् रगण (ऽ।ऽ) तथा लघु गुरु (।ऽ) होने चाहिए। आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि सम चरणों में सभी मात्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिएँ, इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम चरण की (अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अगले चरणों (अर्थात् तृतीय, पंचम और सप्तम) से संयुक्त नहीं होनी चाहिए।

उदा० कुशलं खलु तुभ्यमेव तद्
वचनं कृष्ण यदभ्यधामहम्।
उपदेशपराः परेष्वपि
स्वविनाशाभिमुखेषु साधवः॥ शि० १६।४१।

(इ) औपच्छन्दसिक

परि० पर्यन्ते यौ तथैव शेषमौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्।

यह वैतालीय के समान ही है। इसमें प्रत्येक चरण के अन्त में रगण और ल, ग के स्थान में रगण और यगण होने चाहिएँ। दूसरे शब्दों में यह वैतालीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु जोड़ा हुआ है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदा० वपुषा परमेण भूधराणामथ संभाव्यपराक्रमं विभेदे।
मृगमाधु विलोकयांचकार स्थिरदंष्ट्रोग्रमुखं
महेन्द्रसूनुः ॥
कि० १३।१।

इसी प्रकार इसी सर्ग के अगले बावन श्लोकों में। दे० शि० २० भी।

यह बात ध्यान में रखने की है कि वियोगिनी या संदरी तथा अपरवक्त्र, वैतालीय की ही विशेषताएँ हैं, और पुष्पिताग्रा तथा मालभारिणी, औपच्छन्दसिक की। छन्दःशास्त्री वृत्तों की इन दोनों श्रेणियों का प्रतिपादन गणयोजना तथा मात्रा योजना दोनों स्थानों पर करते हैं। इसीलिए यह यहाँ भी दर्शाये गये हैं और अनुभाग (ग) में भी।

(ई) मात्रासमक

मात्रासमक वृत्त में चार चरण होते हैं, और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ। इसके अत्यन्त सामान्य प्रकार में नवाँ वर्ण लघु और आन्तिम वर्ण दीर्घ होता है। इसकी परिभाषा की है:— मात्रासमके नवमो लान्त्यः।

परन्तु मात्राओं के ह्रस्व या दीर्घ होने के कारण इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में, यदि नवाँ तथा बारहवाँ वर्ण लघु हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ है, शेष वर्ण ऐच्छिक हैं, तो वह वृत्त **वानवासिका** कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवाँ ह्रस्व है, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह वृत्त **चित्रा** कहलाता है। यदि पाँचवाँ और आठवाँ वर्ण ह्रस्व है, नवाँ, दसवाँ, पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ दीर्घ है तो वह **उपचित्रा** कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तथा शेष अनिश्चित हैं, तो वह **विश्लोक** कहलाता है। कभी कभी एक ही श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे **पादाकुलक** वृत्त कहते हैं, उसमें कोई विशेष प्रतिबंध भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं का होना आवश्यक है।

उदा० मुञ्च जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् ॥
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥
मोह० १

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का काल आदि

आर्यभट्ट -एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, जन्मकाल ४७६ ई०।

उद्भट—अलंकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक। यह काश्मीर के राजा जयापीड की राज्यसभा का मुख्य पंडित था। इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है।

कैयट—पतंजलिकृत महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक टीका का रचयिता। डाक्टर बुह्लर के मतानुसार यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था।

कल्हण—राजतरंगिणी नामक राजाओं के इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता। यह काश्मीर के राजा जयसिंह का, जिसने ११२९ से ११५० ई० तक राज्य किया, समकालीन था।

कालिदास—अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत और ऋतुसंहार का रचयिता। इसके अतिरिक्त 'नलोदय' तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता। कालिदास का सबसे पहला अधिकृत उल्लेख हमें ६३४ ई० (तदनुसार ५५६ शाके) के शिलालेख में मिलता है। इसमें कालिदास और भारवि दोनों को प्रसिद्ध कवि बतलाया गया है। श्लोक यह है:—

येनायोजि न वेश्म,
स्थिरमर्थविधौ विवेकना जिनवेश्म।
स विजयता रविकीर्तिः
कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥

हर्षचरित के आरंभ में बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि कालिदास बाण से पहले अर्थात् सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से पहले हुआ था। परन्तु सातवीं शताब्दी से कितना पूर्व -इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका। मेघदूत के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए मल्लिनाथ ने निपुण और दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन बताया है। यदि मल्लिनाथ के इस सुझाव को जिसकी सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है, सही मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा। यही काल दिङ्नाग का माना जाता है।

एक बात और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो जाय तो कवि के जन्मकाल का सही ज्ञान हो जाय। यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिभावक के रूप में विक्रम का उल्लेख। यह कौन सा विक्रम है, इस बात का अभी पूरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है। प्रचलित परंपरा के अनुसार वह विक्रम संवत् का जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रवर्तक था। यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास निश्चय ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा। परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जिसे हम विक्रम संवत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) कहते हैं वह कोरूर के महायुद्ध के काल के आधार पर बना है। इस युद्ध में विक्रम ने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था। और उस समय ६०० वर्ष पीछे से जाकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) इसका नामकरण किया। यदि यह मत यथार्थ मान लिया जाय—विद्वान् लोग अभी इस बात पर एकमत दिखाई नहीं देते—तो कालिदास छठी शताब्दी में हुए हैं। अभी इस प्रश्न का पूरा समाधान नहीं हो सका है।

क्षेमेन्द्र—काश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि, समयमातृका तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ।

जगद्धर—एक प्रसिद्ध टीकाकार। इसने मालतीमाधव और वेणीसंहार पर टीकाएँ लिखीं। यह चौदहवीं शताब्दी के बाद हुआ।

जगन्नाथ पंडित—एक प्रसिद्ध आधुनिक लेखक। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ रसगंगाधर है जिसमें 'काव्य' विषय का विवेचन है। उसकी अन्य कृतियाँ हैं—भामिनीविलास, पाँच लहरियाँ (गंगा, पीयूष, सुधा, अमृत,—और करुणा) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ। ऐसा माना जाता है कि यह दिल्ली के सम्राट् शाहजहाँ के काल में हुआ। इसने जहांगीर के राज्य के अन्तिम दिन तथा १६५८ ई० में दारा का अस्थायी राज्य-सिंहासनारोहण देखा होगा। अतः इसका जन्म—और कुछ नहीं तो कार्य काल तो अवश्य—१६२० तथा १६६० ई० के बीच में रहा होगा।

जयदेव—गीतगोविन्द नायक ललित गीतिकाव्य का प्रणेता। यह बंगाल के वीरभूमि ज़िले के किंदुबिल्व नामक गाँव का निवासी था। कहा जाता है कि यह राजा लक्ष्मणसेन के काल में हुआ जिसको एकात्मता डाक्टर बुह्लर ने बंगाल के वैद्य राजा से की है। इसका शिलालेख विक्रम संवत् ११७३ अर्थात् ११११६ ई०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का मिलता है। अतः यह कवि बारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।

दंडिन्—यह दशकुमारचरित और काव्यादर्श का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। भामहाचार्य के मतानुसार यह बाण का समकालीन था।

पतंजलि महाभाष्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

नारायण—(भट्टनारायण) वेणीसंहार का रचयिता। यह नवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अवन्तिवर्मा के राज्यकाल ८५५–८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

बाण—हर्षचरित, कादंबरी और चंडिकाशतक का विख्यात प्रणेता। पार्वतीपरिणय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती है। इसका काल निर्विवाद रूप से इसके अभिभावक कान्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय ह्यून त्सांग ने समस्त भारत में भ्रमण किया उस समय हर्षवर्धन ने ६२९ से ६४५ ई० तक राज्य किया। इसलिए बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का न्यूनातिन्यून उनका जिनका कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है परिज्ञायक है।

बिल्हण—महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित तथा चौरपंचाशिका का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भट्टि यह श्रीस्वामी का पुत्र था। राजा श्रीधरसेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीस्वामी वल्लभी में रहा। लेसन के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५४५ ई० तक था।

भर्तृहरि—शतकत्रय और वाक्यपदीय का रचयिता। तेलंग महाशय के मतानुसार यह ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परंपरा के अनुसार भर्तृहरि, विक्रमराजा का भाई था। और यदि हम इस विक्रम को वही मानें जिसने ५७८ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था, तो हमें समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भवभूति—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था, और कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा के दरबार में रहता था। काश्मीर के राजा ललितादित्य (६९३ से ७२९ ई०) ने इसे परास्त किया था। अतः भवभूति सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अतः यह काल सुसंगत है। कालिदास और भवभूति की समकालीनता के उपाख्यान निरे उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं है।

भारवि—किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता। ६३४ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास—बाण और कालिदास ने इसे अपना पूर्ववर्ती बताया है अतः यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

मम्मट—काव्य प्रकाश का रचयिता। यह १२९४ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १२९४ ई० में तो जयन्त ने काव्यप्रकाश पर 'जयन्ती' नामक टीका लिखी है।

मयूर—यह बाण का श्वसुर था। इसने अपने कुष्ठ से मुक्ति पाने के लिए सूर्यशतक की रचना की। यह बाण का समकालीन था।

मुरारि अनर्घराघव नाटक का रचयिता। रत्नाकर कवि ने (जो नवीं शताब्दी में हुआ) अपने हरविजय ३८।६७ में इसका उल्लेख किया है। अतः इसे नवीं शताब्दी से पूर्व का ही समझना चाहिए।

रत्नाकर—हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अवन्तिवर्मा (८५५-८८४ ई० तक) इस कवि के आश्रयदाता थे।

राजशेखर—बालरामायण, बालभारत और विद्धशालभंजिका का रचयिता। यह भवभूति के पश्चात् दसवीं शताब्दी के अन्त से पूर्व हुआ, अर्थात् यह सातवीं शताब्दी के अन्त और दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

वराहमिहिर—एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, बृहत्संहितानामक पुस्तक का रचयिता।

विक्रम—देखो कालिदास।

विशाखदत्त मुद्राराक्षस का रचयिता। इस नाटक की रचना का काल तेलंग महाशय के अनुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी माना जाता है।

शंकर—वेदान्त दर्शन का प्रसिद्ध आचार्य, तथा शारीरक भाष्य का प्रणेता। इसके अतिरिक्त वेदान्त विषय पर इसकी अनेक रचनाएँ हैं। कहते हैं कि यह ७८८ ई० में उत्पन्न हुआ और ३२ वर्ष की थोड़ी आयु में ही ८२० ई० में परलोकवासी हुआ। परन्तु कुछ विद्वान् लोगों (तेलंग महाशय तथा डाक्टर भंडारकर आदि) ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि वह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ होगा। मुद्राराक्षस की प्रस्तावना देखिये।

श्रीहर्ष—यह नैषधचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इसके अतिरिक्त इसकी अन्य आठ दस रचनाएँ भी मिलती

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं। इसे प्रायः बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। विल्सन कहता है कि १२१३ ई० में अपने पिता कलश के पश्चात् श्रीहर्ष राजगद्दी पर बैठा। अतः रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में १११३ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि दशरूपम में इसके अनेक उद्धरण उपलब्ध हैं। और दशरूप दशवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

सुबन्धु वासवदत्ता का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अतः यह सातवीं शताब्दी के बाद का नहीं। इसने वर्धकीति द्वारा लिखित वौद्धसंगति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी शताब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रकाशित कराया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंग—गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण राज्य। इसकी राजधानी चंपा थी, जो अंगपुरी भी कहलाता था। यह नगर शिलाद्वीप के पश्चिम में लगभग २४ मील की दूरी पर विद्यमान था। इसी लिए यह या तो वर्तमान भागलपुर था, अथवा उसके कहीं अत्यंत निकट स्थित था।

अंध्र—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह वर्तमान तेलंगण ही माना जाता है। गोदावरी का मुहाना अंध्रों के अधिकार में था। परन्तु इसकी सीमाएँ संभवतः पश्चिम में घाट, उत्तर में गोदावरी, तथा दक्षिण में कृष्णा नदी थी। कलिंग देश इसकी एक सीमा था (देखो दश० ७ वाँ उल्लास)। इसकी राजधानी अंध्रनगर संभवतः प्राचीन वेंगी या देवी थी।

अवंति—नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक देश। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी जिसे अवंतिपुरी या अवंति और विशाला (मेघ० ३०) भी कहते थे। यह शिप्रा नदी के तट पर स्थित थी। मालवा देश का पश्चिमी भाग है। महाभारत काल में यह देश दक्षिण में नर्मदातट तक तथा पश्चिम में मही के तटों तक फैला हुआ था। अवंति के उत्तर में एक दूसरा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मण्वती नदी के तट पर स्थित दसपुर थी, यह ही वर्तमान मौलपुर प्रतीत होता है। यह रन्तिदेव की राजधानी थी।

अम्मक—त्रावणकोर का पुराना नाम।

आनर्त—देखो सौराष्ट्र।

इन्द्रप्रस्थ—(हरिप्रस्थ या शक्रप्रस्थ भी कहलाता है) इसी नगर की वर्तमान दिल्ली से एकरूपता मानी जाती है। यह नगर यमुना के बाई ओर बसा हुआ था, जब कि वर्तमान दिल्ली दाई ओर स्थित है।

उत्कल या ओड्र—एक देश का नाम। वर्तमान उड़ीसा जो ताम्रलिप्त के दक्षिण में स्थित है और कपिशा नदी तक फैला हुआ है—तु० रघु ४।३८। इस प्रांत के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं जहाँ कि जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है।

कनखल—हरद्वार के निकट एक ग्राम का नाम है। यह शिवालिक पहाड़ी के दक्षिणी भाग पर गंगा के किनारे बसा हुआ है। वहाँ के आसपास का पहाड़ भी कनखल कहलाता है।

कपिशा दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

कलिंग—एक देश का नाम जो उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और गोदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है। ब्रिटिश-शकाल की उत्तरी सरकार से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है। इसकी राजधानी कलिंग नगर प्राचीन काल में समुद्रतट से (तु० दश० ७ वाँ उल्लास) कुछ दूरी पर संभवतः राजमहेन्द्री में थी। दे० 'अंध्र' भी।

कांची—दे० 'द्रविड' के अन्तर्गत।

कामरूप—एक महत्वपूर्ण राज्य जो करतोया या सदानीरा के तट से लेकर आसाम की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत तक तथा पूर्व में चीन की सीमा तक फैला हुआ होगा, क्योंकि यहाँ के राजा ने किरात और चीन की सेना के साथ दुर्योधन की सहायता की थी। इस राज्य की प्राचीन राजधानी लौहित्य या ब्रह्मपुत्र नदी के दूसरी ओर प्राग्ज्योतिष थी। तु० रघु० ४।८१।

कांबोज—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह हिन्दुकुश पहाड़ के उस प्रदेश पर रहते होंगे जहाँ यह बलख से गिलगित को पृथक् करता है, तथा तिब्बत और लद्दाख तक फैला हुआ है। यह प्रदेश घोड़ों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ पर दकरी आदि जानवरों की ऊन से शाल भी बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त यहाँ अखरोट के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। तु० रघु० ४।६९।

कुंतल—चोल देश के उत्तर में स्थित एक देश। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरुगदे के दक्षिण में कल्याण या कोलियन दुर्ग इस प्रदेश की राजधानी थी। यह देश हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिमी भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

कुरुक्षेत्र—दिल्ली के निकट एक विस्तृत प्रदेश। यहीं कौरव और पांडवों के मध्य महासंग्राम हुआ था। यह थानेश्वर के दक्षिण में इसी नाम के पवित्र सरोवर के निकट एक प्रदेश है जो सरस्वती के दक्षिण से लेकर दृषद्वती के उत्तर तक फैला हुआ है। कभी कभी इस स्थान को 'समंतपंचक' नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है परशुराम द्वारा वध किये गए क्षत्रियों के रक्त के 'पाँच पोखर'।

कुलूत—एक देश का नाम—वर्तमान कुलू प्रदेश। यह प्रदेश जलंधर दोआब से उत्तरपूर्व की ओर शतद्रु (सतलुज) नदी के दाई ओर स्थित है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुशावती या कुशस्थली –यह दक्षिणकोशल प्रदेश की राजधानी है और विंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परन्तु विंध्यपर्वत के दक्षिण में होगा। संभवतः यह वही स्थान है जिसे बुंदेलखंड में हम रामनगर कहते हैं। राजशेखर इस कुशस्थली के स्वामी को मध्यदेशनरेन्द्र अर्थात् मध्यभूमि या बुंदेलखंड का राजा कहते हैं।

केकय सिंधुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

केरल—कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि की लंबी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियां हैं वेत्रवती, सरावती तथा कालीनदी। यह काली नदी ही मुरला नदी समझी जाती है। इसका उल्लेख रघु० ४।५५ तथा उत्तर० ३ में किया गया है, यही केरलप्रदेश की मुख्य नदी है। केरल प्रदेश वर्तमान कानड़ा प्रदेश है जिसके साथ संभवतः मलाबार भी जुड़ा हुआ है और कावेरी से परे तक फैला हुआ है।

कोशल एक प्रदेश का नाम जो रामायण के अनुसार सरयू नदी के तटों के साथ साथ बसा हुआ है। इसके दो भाग हैं—उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल। उत्तर कोशल का नाम 'गन्द' है और यह अयोध्या के उत्तरी प्रदेश को प्रकट करता है जिसमें गन्द तथा बहराइच सम्मिलित हैं। अज, तथा दशरथ आदि राजाओं ने इसी प्रान्त पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने तो विंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित दक्षिणी कोशल की कुशावती राजधानी में राज्य किया, और लव ने उत्तरी कोशल में स्थित श्रावस्ती में रहकर राज्य किया।

कौशांबी वत्स देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इलाहाबाद से लगभग तीस मील की दूरी पर वर्तमान कोसम के निकट स्थित था।

कौशिकी–एक नदी (कुसी) का नाम जो उत्तरी भागल पुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से होती हुई दरभंगा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटों के निकट ऋष्यशृंग ऋषि का आश्रम था।

गौड या पुंड्र—उत्तरी बंगाल। ('पुंड्र मूलरूप से 'पुरी' के वेत्तस प्रदेश को कहते हैं)।

चेदि –एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। चेदियों को दाहल और त्रिपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तट पर बसे हुए थे, यह वही लोग थे जिन्हें हम दशार्ण कहते हैं। एक समय इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग मध्यभारत के वर्तमान बुन्देल खण्ड में रहते थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान चन्दासिल था। जबलपुर से नीचे भेरा घर के आसपास विंध्य और ऋक्ष पर्वतों के मध्य में नर्मदा के किनारे पर स्थित माहिष्मती नगरी में हैहय या कलचुरी लोग राज्य करते थे।

चोल एक देश का नाम जो कावेरी के तट पर बसा हुआ है यह मैसूर प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुलकेशिन् द्वितीय ने इस नदी को पार करके इस देश पर आक्रमण किया था। यही देश बाद में कर्णाटक कहलाने लगा।

जनस्थान—(मानव बस्ति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है। और प्रस्रवण नामक पर्वत के निकट स्थित है। प्रसिद्ध पंचवटी (स्थानीय परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक से लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

जालन्धर– वर्तमान जलन्धर दोआब। शतद्रु और विपाशा (सतलुज और व्यास) से सिंचित प्रदेश।

ताम्रपर्णी– मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। यह वही नदी प्रतीत होती है जिसे आजकल ताम्रवारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान से निकलकर तिन्नेवली जिले में से होती हुई मनार की खाड़ी में गिर जाती है, तु० रघु० ४।४९–५०, और बा० रा० १०।५६।

ताम्रलिप्त– दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

त्रिगर्त प्राचीन काल का एक अत्यन्त जलहीन मरु प्रदेश। यह सतलुज का पूर्ववर्ती मरुस्थल था। सरस्वती और सतलुज का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लुध्याना और पटियाला है तथा मरुस्थल का कुछ भाग दक्षिण में है।

त्रिपुर–री—चेदि देश की राजधानी 'चन्द्रदुहिता अर्थात् नर्मदा की तरंगों से शब्दायमान' अतएव इस नदी के किनारे स्थित। जबलपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान तिवुर की ही त्रिपुर माना जाता है।

दशपुर—दे० 'अवन्ति' के अन्तर्गत।

दशार्ण—एक देश का नाम जिसमें से दशार्ण (दसन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान भिलसा माना जाता है। यह वेत्रवती या बेतवा नदी के तट पर स्थित है, तु० मेघ० २४।२५, और कादंबरी। कालिदास ने भी विदिशा नाम की एक नदी का उल्लेख किया है जो संभवतः वही है जिसे हम आजकल व्यास कहते हैं तथा जो बेतवा में मिल जाती है।

द्रविड– कृष्णा और पोलर नदियों के मध्यवर्ती जंगली भाग के दक्षिण में स्थित कोरोमंडल का समस्त समुद्रीतट इसमें सम्मिलित है। परन्तु यदि सीमित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी कांची थी जिसे आजकल कांजीवरम कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेगवती नदी के किनारे स्थित है।

द्वारका—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

निषध एक देश का नाम जहाँ नल का राज्य था। इस की राजधानी अलका थी जो अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरी भारत का वर्तमान कुमायूं प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक वर्षपर्वत का नाम भी है।

पंचवटी– दे० 'जनस्थान' के अन्तर्गत।

पंचाल एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजशेखर के अनुसार (वा० रा० १०।८६) यह प्रदेश गंगा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसलिए यह गंगा दोआब कहलाता था। द्रुपद के काल में यह प्रदेश चर्मण्वती (चंबल) के तट से लेकर उत्तर में गंगाद्वार तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तर-पंचाल कहलाता था। और इसकी राजधानी अहिच्छत्र थी। इस प्रदेश का दक्षिणीभाग 'दक्षिणपंचाल' कहलाता था जो द्रुपद की मृत्यु के पश्चात् हस्तिनापुर की राजधानी में विलीन हो गया।

पद्मपुर—भवभूति कवि की जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में चन्द्रपुर (वर्तमान चांदा) के निकट कहीं पर बसा हुआ था।

पद्मावती मालवाप्रदेश में सिन्ध् नदी के तट पर स्थित वर्तमान नरवाड़ से इसकी एकरूपता मानी जाती है। इसके आस-पास और दूसरी नदियाँ पारा या पार्वती, लूण, और मधुमती के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियाँ हैं। भवभूति के मालतीमाधव का कथित दृश्य यह नगर है।

पंपा - एक प्रसिद्ध सरोवर का नाम जो आजकल पंम्पासिर कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यमूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी सरोवर से निकली है; विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रदुर्ग के मध्यवर्ती शिलासरोवर से निकला है। यही संभवतः मूल पंपा था, और चन्द्रदुर्ग ही ऋष्यमूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरोवर से नदी में परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पाटलिपुत्र गंगा और शोण नदी के संगम पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्त्वपूर्ण नगर। यह 'कुसुमपुर' या 'पुष्पपुर' भी कहलाता था। संस्कृत के लौकिकसाहित्य में इस नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह नगर एक नदी की बाढ़ की चपेट में आकर नष्ट हो गया।

पांड्य भारत के बिल्कुल दक्षिण में स्थित एक देश जो चोलदेश के दक्षिणपश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और ताम्रपर्णी नदी का स्थान निर्विवाद रूप से निश्चित हो चुका है, तु० रा० २।३१। इस प्रदेश की वर्तमान तिन्नेवली से एकरूपता स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पांड्यदेश की राजधानी का नाम 'नाग-नगर' बताया है जो संभवतः मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान 'नागपत्तन' ही है, तु० रघु० ६।५९-६४।

पारसीक - पर्शिया देश के रहने वाले लोग। संभवतः यह शब्द उन जातियों के लिए भी व्यवहार में आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में सांगावर्ती जिलों में रहते हैं। इनके देश से 'वनायुदेश्य' नाम से घोड़ों के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र —भारत की एक मुख्य पर्वतश्रृंखला। संभवतः यह वही है जिसे हम विंध्याचल पहाड़ कहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में गंगा के दोआब की रक्षा करता है।

प्रतिष्ठान पुरूरवस् की राजधानी। पुरूरवा एक प्राचीन काल का चन्द्रवंशी राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के सामने स्थित था। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिले में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इसे गंगा यमुना के संगम पर स्थित बतलाया है। तु० विक्रम० २।

मगध दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुरानी राजधानी गिरिव्रज (या राजगृह) थी। इसमें पाँच पर्वत - विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि और वैभार (व्याहार) गिरि सम्मिलित थे। इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी। परवर्ती साहित्य में मगध का नाम कीकट भी आता है।

मत्स्य या विराट— जोधपुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पांडव लोग दशार्ण के ऊपर से होसेन तथा रोहितक के भूभाग से होते हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। विराट देश की राजधानी संभवतः बैराठ ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में बैराठ के नाम से विख्यात है।

मलय भारत की सात मुख्य पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। इसको एकरूपता संभवतः मैसूर के दक्षिण में फैले हुए घाट के दक्षिणी भाग से की जाती है जो ट्रावनकोर की पूर्वी सीमा बनाता है। भवभूति के कथनानुसार यह प्रदेश कावेरी से घिरा हुआ है (महावीर० ५।३ तथा रघु० ४।४६)। कहते हैं कि यहाँ इलायची, काली मिर्चे, चंदन और सुपारी के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। रघु० ४।५१ में कालिदास ने बतलाया है कि मलय और दर्दुर यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो वक्षःस्थल हैं। अतः दर्दुर घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिणपूर्वी सीमा बनाता है।

महेन्द्र - भारत की सात मुख्य पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेन्द्रमाले से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है जो कि महानदी की घाटी से गंजम को विभक्त करता है। संभवतः इसमें महानदी और गोदावरी का मध्यवर्ती समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित था।

महोदय (कान्यकुब्ज या गाधिनगर) यह वही प्रदेश है जो गंगा के किनारे वर्तमान कन्नौज नाम से विख्यात है। **सातवीं शताब्दी में यह नगर भारत का अत्यंत प्रसिद्ध स्थान था।** तु० वा० रा० १०।८८-८९।

मानस- एक सरोवर का नाम है जो हाटक में स्थित था, जिसे आज कल लद्दाख कहते हैं। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुरुओं का देश है जिसका नाम हरिवर्ष है। पूर्वकाल में यह सरोवर किन्नरों के आवास के रूप में विख्यात था। कवियों की उक्ति के अनुसार वर्षा ऋतु के आरम्भ में हंस प्रतिवर्ष यहीं आकर शरण लेते थे।

माहिष्मती - दे० 'चेदि' के अन्तर्गत।

मिथिला—दे० 'विदेह' के अन्तर्गत।

मुरल—दे० 'केरल' के अन्तर्गत।

मेकल अपरकल्क नाम का पर्वत जहाँ से नर्मदा नदी निकलती है।

लाट- एक देश का नाम जो नर्मदा के पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें संभवतः बरोच, बड़ौदा और अहमदाबाद सम्मिलित थे। कुछ के मतानुसार खैर भी इसी में सम्मिलित था।

वंग (समतट) पूर्वी बंगाल का एक नाम (उत्तरी बंगाल या गौड़ देश से बिल्कुल भिन्न है) इसमें बंगाल का समुद्रतट भी सम्मिलित है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय त्रिपुरा और चैरो पहाड़ भी इसमें सम्मिलित थे।

वलभी—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

वाह्लीक, वाह्लीक पंजाब में रहने वाली जातियों का सामान्य नाम। इनका देश वर्तमान बलख है। कहते हैं कि वे पंजाब के उस भाग में रहते थे जिसे सिन्धु नदी तथा पंजाब की अन्य पांच नदियां सींचती हैं, परन्तु भारत की मुख्य भूमि से यह बाहर था। यह देश घोड़ों और हींग के कारण प्रसिद्ध है।

विदर्भ वर्तमान बरार देश। प्राचीन काल में कुन्तल के उत्तर में स्थित यह एक बड़ा राज्य था जो कृष्णा के तट से लेकर लगभग नर्मदा के तट तक फैला हुआ था। विशालकाय होने के कारण इसका नाम महाराष्ट्र भी था, तु० वा० रा० १०।७४। कुण्डिनपुर जिसे विदर्भ भी कहते हैं इस देश की प्राचीन राजधानी थी। इसीको संभवतः आजकल बीदर कहते हैं। विदर्भ देश को वरदा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी अमरावती है, तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठान।

विदिशा—दे० 'दशार्ण' के अन्तर्गत।

विदेह - मगध के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मधबनी के उत्तर में नैपाल में जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में विदेह के अन्तर्गत, नैपाल के एक भाग के अतिरिक्त वह सब स्थान जो अब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा तिरहुत के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिमी भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

विराट—दे० 'मत्स्य'।

वृन्दावन 'राधा का वन' आज कल मथुरा से कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बसा हुआ स्थान। यह यमुना के बायें किनारे स्थित है।

शक—एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमांत पर बसी हुई थी। संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है। सिथियंस से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

शुक्तिमत् भारत की सात प्रमुख पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। इसकी सही-स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं हो पाया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नैपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक शाखा है।

श्रावस्ती - उत्तरी कोशल में स्थित एक नगर का नाम जहाँ, कहते हैं कि लव राज्य किया करता था (रघु० १५।९७ में इसीको 'शरावती' का नाम दिया है)। अयोध्या के उत्तर में वर्तमान सहेठ माहेत से इसकी एकरूपता मानी जाती है। यह नगर धर्मपत्तन या धर्मपुरी भी कहलाता था।

सह्य - भारत की सात प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। आज कल इसी का नाम सह्याद्रि है। पश्चिमी घाट जो मलय के उत्तर में नीलगिरि के संगम तक फैला है, ही सह्याद्रि है।

सिंधु—दे० 'पंचनद' के अन्तर्गत।

सिंधुसौवीर वर्तमान सिंध प्रदेश जो सिंधु नदी का ऊपरी भाग है।

सुह्म—एक देश का नाम जो वंग के पश्चिम में स्थित है। इसकी राजधानी ताम्रलिप्त (जिसे तामलिप्त, दामलिप्त, ताम्रलिप्ति तथा तमालिनी भी कहते हैं) की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकरूपता वर्तमान तमलूक से की जाती है। तमलूक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'कपिशा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर समुद्र के अधिक निकट बसा हुआ था। यहाँ पर ही अधिकांश समुद्री व्यापार किया जाता था। सुह्म लोगों को ही कभी कभी राढ़ के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पश्चिमी बंगाल के लोग)।

सौराष्ट्र—(आनर्त) काठियावाड़ का वर्तमान प्रायद्वीप। द्वारका आनर्तनगरी या अब्धिनगरी कहलाती थी। पुरानी द्वारका वर्तमान द्वारका से दक्षिण पूर्व में ९५ मील स्थित मधुपुर नामक नगर के निकट बसी हुई थी। यह स्थान रैवतक पर्वत के निकट था। ऐसा ज्ञात होता है कि यही वह स्थान है जिसे जूनागढ़ का निकटवर्ती गिरिनार पर्वत कहते हैं। इस देश की दूसरी राजधानी वलभी प्रतीत होती है। इस नगर के खंडर भावनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर बिल्खी नामक स्थान पर पाये गये हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध सरोवर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

लाट—पाटलिपुत्र से थोड़ी दूरी पर यह एक नगर तथा जिला था। यमुना के पुराने तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुर' से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

हस्तिनापुर—'हस्तिन्' नाम का भरतवंश में एक प्रतापी राजा था। उसने ही इस प्रसिद्ध नगर को बसाया था। वर्तमान दिल्ली के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर गंगा की एक पुरानी नहर के किनारे बसा हुआ है।

हेमकूट—'स्वर्णशिखर' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत शृंखला में से एक है जो इस महाद्वीप को सात वर्षों (वर्ष पर्वत) में बाँटती है। बहुधा ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में—या हिमालय और मेरु के बीच में स्थित है तथा किन्नरों के प्रदेश (किंपुरुषवर्ष) की सीमा बनाता है। तु० का० १२६। कालिदास इसके विषय में कहता है—"यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में डूबा हुआ है और सुनहरी पानी का स्रोत है" दे० श० ७।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंशः [अंश् + अच्] विशिष्ट संगीत-ध्वनि ।

अंशकम् [अंश + वुल्] सूर्य की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, विवाह का उपयुक्त लग्न—अंशकं वैवाहिकं लग्नं—तै० १५।८ पर भाष्य ।

अंशुकम् [अंशु + कन् स्वार्थे] नेत्रा, दूध छिलोने की क्रिया में प्रयुक्त रस्सी ।

अंशूदकम् (नपुं०) ओस का पानी ।

अकर्मन् [न० त०] 1. कार्य का अभाव, अकरण प्रतिषेधात्मक कर्म मी० सू० १०।८।१० 2. वह कार्य जो विधि से स्वीकृत न हो—अकर्म च दारक्रिया या आधानोत्तरकाले मै० सं० ६।८।१४ पर शा० भा० 3. कार्य करने की उपेक्षा करना—मै०सं० ६।३।३ पर शा० भा० ।

अकलङ्क (वि०) कलंकरहित, निष्कलंक ।

अकल्पनम् [न० त०] अनारोपण ।

अकल्माषः नौवें मनु के पुत्र का नाम ।

अकाण्डताण्डवम् अवांछित हल्लाग्रस्तता (गांडित्य के निरर्थक प्रदर्शन के विषय में व्यंग्योक्ति) ।

अकालज्ञ (वि०) अनुपयुक्त समय पर करने वाला अस्थाङ्गतो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः रघु० १२।३३ ।

अकालिकम् (अ०) अचानक - अकालिकं कुरुवो नाभविष्यन् - महा० ५।३२।३० ।

अकिल्बिष (वि०) [न० ब०] निष्पाप, तु० अकृतकिल्बिष जिसने कोई पाप नहीं किया है ।

अकृतक (वि०) [कृ + क्त, न० त०, स्वार्थे कन्] जो बनाया हुआ न हो, स्वाभाविक -न तस्य स्वो भावः प्रकृतिनियतत्वादकृतकः - उत्तर० ।

अकृत्रिम (वि०) [न० त०] प्राकृतिक, जो मनुष्यकृत न हो ।

अक्षः [अक् + कन्] भंडार-गृह अक्षे वेश्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत् ।

अक्षता (स्त्री०) [अ-क्षत-टाप्] (वेद०) रात ।

अक्षलास्त (वि०) [न० त०] जो थका न हो ।

अक्षलीलम् (अ०) पूर्णतः, सचाई के साथ ।

अक्षः [अक्ष् + घञ्] 1. हिंडोले या पालकी की खिड़की 2. जूआ खेलना । सम० -वेश्मः वह लकड़ी जिसमें धुरी लगी रहती है,- वृक्षकर्मन् अक्षांश ज्ञान करने के लिए गणित की प्रक्रिया,—विद् जूआ खेलने में निपुण,—शलाका पाँसा,-शालिन्,—शालिक जूआ-घर का अधीक्षक ।

अक्षयनीवी (स्त्री०) स्थायी धर्मार्थ दान-निधि (बु०) ।

अक्षयभुज् (पुं०) [क्षि + यत्, न० त०, + भुज् + क्विप्] अग्नि—प्रदहेच्च हितं राजन् कक्षमक्षय्यभुग्यथा—महा० १३।९।२१ ।

अक्षि (नपुं०) [अश् + क्सि] आंख । सम० आमयः आंख का रोग, आँख दुखना, श्रवस् (नपुं०) साँप, तु० नयनश्रवस्, -संवित् चाक्षुष संज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान, -सूत्रम् आंख का रेखाज्ञानतन्तर (प्रतिमाविद्या विषयक), —स्फटनम् आँख का फरकना ।

अक्षौरिकम् [न० त०] वह दिन या नक्षत्र जिसे चूडाकर्म संस्कार या मुंडन के लिए अशुभ माना गया है ।

अक्षण्वा (वेद० अ०) टेढ़े-मेढ़े ढंग से । सम०—रज्जुः (स्त्री०) कर्णरेखा, शु०,—स्तोमेष्टा इष्टका नामक यज्ञ, तै० सं०, श० ।

अक्षतः [न० त०] उत्तम बंध, नित्य ।

अक्षिलिका (वन०) कारवी नामक वनस्पति ।

अगजा [न गच्छन्ति इति अगः, तस्मात् जायते -अग + जन् + ड] पर्वत की पुत्री, पार्वती अगजाननपद्माकं गजाननमहर्निशं, अनेकदं तं भक्तानामेकदन्तमुपास्महे । सम० जानिः शिव ।

अगण्डः [न० ब०] कवच जिसमें हाथ पैर न हों—अगण्डभूतो विधृतो दावदग्ध इव द्रुमः - रा० ६।६८।५ ।

अगतिः [न० त०] दुरा मार्ग, तु० अपथः । ~

अगदः [न० त० गदाभावः] औषधि । सम० —राजः उत्तम औषधि ।

अगर्दभः [न० त०] खच्चर ।

अगाधसत्त्व (वि०) [न० ब०] प्रबल आत्मशक्ति रखने वाला अगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठः—रघु० ६।२१ ।

अगुल्मकम् [अगुल्मीभूतं—न० त०] अस्तव्यस्त, विशृंखलित (सेना) गुल्मीभूतमगुल्मकम् - शुक्र० ४।८७० ।

अगोत्र (वि०) जिसका कोई खोत या उद्गम स्थान न हो—यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रम् मुंड० १।१।६ ।

अग्निः [अङ्गति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग् + नि, डलोपश्च] 1. आग 2. पिंगला नाडी—यत्र सोमः सहाग्निना महा० १४।२०।१० 3. आकाश अग्निर्मूर्धा-मुंड० २।१।४ । सम० कृतः काजू,—चूडः लाल शिखा वाला एक जंगली पक्षी, वर्णम् बारूद, -द्वारम् घर का दरवाजा जो आग्नेय दिशा की ओर है,-यानम् हवाई जहाज - व्योमयानं विमानं स्यादग्नियानं तदेव हि—अ० सं०, वेद्यः 1. एक अध्यापक - महा० 2. बाईसवाँ मुहूर्त,—सावर्णिः एक मनु का नाम,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—सूनुः स्कन्द, तु० अग्निसू सेनानीरग्निभूर्गुहः - अम०,--होत्री (स्त्री०) अग्निहोत्र के लिए उपयुक्त गाय—तामग्निहोत्रीमृषयो जगृहुर्ब्रह्मवादिनः —भाग० ८।८।२ ।

अग्न्या तित्तिर नाम का पक्षी ।

अग्रः [अङ्ग्+रक्, इलोपः] पहाड़ की नोक या अगला भाग अग्रसानुषु नितान्तदिग्धद्रुमेषु—कि० ९।७, **अग्रम्** समय का पूर्ववर्ती भाग नैवेह किंचनाग्र आसीत् —बृ० १।२।१ । सम० **आसनम्** सम्मान का प्रथम पद, - **उत्सर्गः** वस्तु का पहला अंश छोड़ कर उसे ग्रहण करना,—**देवी** पटरानी, **अग्रमहिषी**, - **धान्यम्** अनाज, गल्ला, **निरूपणम्**, **भविष्य** कथन, भविष्य वाणी करना, पूर्ण निर्णय, **प्रदायिन्** जो सबसे पहले देता है—तेषामग्रप्रदायी स्यात् कल्पोत्थायी प्रियंवदः महा० ५।१३५।२५,—**भावः** पूर्ववर्तिता, **वचनम्** शब्दोपयोगी उपकरण,—**हारः** ब्राह्मणों की बस्ती जिसके एक ओर शिव का तथा दूसरी ओर विष्णु का मन्दिर हो, हरेः अयं हारः, हरस्यायं हारः, हारश्च हारश्च हारौ— यस्य सः ।

अग्र्या [अग्रे जातः, अग्र+यत्+टाप्] आंवले का वृक्ष ।

अग्रन (वि०) [न० त०] जो घना या ठोस न हो ।

अङ्कः+अङ्कम् (अङ्कःङ्कम्) [अङ्क् वर्तरि करणे वा अच्, अङ्क मध्ये अङ्कः शतपत्रादि चिह्नानि यस्य —ता०] पानी, जल ।

अङ्कुकारः [अङ्क+कारः] सर्वोत्तम योद्धा,—स्वकाङ्कुकार-विजये तव राम लङ्का या० रा० आठवां अंक, गौरगणेरहकृतिभृतां जैत्राङ्कुकारे नै० १२।६४ ।

अङ्कित (वि०) [अङ्क्+क्त] चिह्नित, छाप लगा हुआ, गणना किया हुआ, क्रमांकित रावणशरा ङ्कितकेतु-यष्टि रघु० १२ ।

अङ्गम् [अम्+गन्] जैन धर्मावलंबियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ । सम०—**क्रमः** वह क्रम या नियमित व्यवस्था जिसके अनुसार कर्मकाण्ड की नाना प्रकार की प्रक्रियायें अपने-अपने महत्त्व के अनुसार सम्पन्न की जाती हैं,—मं० सं० ५।१।१४, **जम्** ऋषिर,-**भङ्गः** शरीर का वह भाग जो गुदा और अंडकोषों का मध्यवर्ती है, - **भूमिः** चाकू या तलवार का फलका —यदङ्गभूमी बभ्नुः—नै० १६।२२, - **वस्त्रोत्था** यूका, जू,- **संहिता** शब्द के अन्तर्गत स्वर और व्यंजनों का उच्चारणविषयक सम्बन्ध,- सं० प्रा०, —**सुप्तिः** शरीर के अङ्गों का सो जाना ।

अङ्गना [अङ्ग+न+टाप्] प्रियंगु नामक पौधा जिससे सुगंधित द्रव्य या अभ्यंजन तैयार किए जाते हैं ।

अङ्गारः-रम् [अङ्ग+आरन्] जलता हुआ कोयला । सम० —**अवक्षेपणम्** कोयलों को बुझाने या इधर से उधर हटाने वाला बेलचा, - **कर्करि** (री) जलते हुए कोयलों पर पकी मोटी रोटी, बाटी, **धारिका** अंगीठी, —**वृक्षः** रक्तकरञ्जवृक्षः, करौंदा ।

अङ्गिकरणिकः [ष० त०] अंगरक्षक अंगिलेखाधिकारी, (आजकल के Oath Commissioner) जैसा पद) पञ्जीकार ।

अङ्गिका [अङ्ग+इनि+कः+टाप्] चोली, अंगिया ।

अङ्गुलीवेष्टः [अङ्गुलि+वेष्ट्+घञ्] अंगूठी ।

अङ्गुषो (अ०) क्रोध या शोकद्योतक अव्यय ।

अङ्गुरि (नपुं०) [अङ्ग्+कुरि] 1. पैर 2. किसी भी वस्तु का चतुर्थांश । सम० **कवचः** जूता,-**जः** नाद,— **पानं** (वि०) पैर का अंगूठा चूसने वाला बच्चा, **सन्धिः** टखना, गिट्टे की हड्डी ।

अङ्ग्रिकवारि (नपुं०) दीपक के मध्य का उभरा हुआ भाग, दीप दण्ड ।

अचिन्त्यः [न० त० चिन्त्+ण्यत्] पारा, पारद ।

अजोदनम् [न० त० चद्+णिच्+ल्युट्] अध्यादेश, निदेशाभिधे—देशकालानामभेदान्न प्रयोगे नित्यसम्बन्धात्—मी० सू० ४।२।२३ ।

अञ्चल (अ०) आकृति के भाव को द्योतन करने वाला अव्यय, अञ्चलशब्दो हि आकृतिमात्रार्थे वर्तते मै० सं० १०।२।९ पर शा० भा० ।

अज्युतजलकिन् (पुं०) अमरकोश के एक टीकाकार का नाम ।

अजवीथिः [अजा वीथी रज्जे र्मिश्री यत्र, त०] सूर्यमंडल के एक पुत्र का नाम, यह ऋ० ५।४३ सूक्त का ऋषि हुआ है ।

अजनयोनिजः वृक्ष प्रजापति—भाग० ४।३०।४८ ।

अजनाभः भारतवर्ष का प्राचीन नाम भाग० ११।२।२४ ।

अजरकः-कम् [न० ब०] अजीर्ण, अपच ।

अजहत्स्वार्थवृत्तिः [न जहत्स्वार्थौ यत्र, हा+शतृ, न० ब०] वह पद जो अपने भाव को सुरक्षित रखता हुआ समस्त पद के अर्थ में कुछ वृद्धि करता है ।

अजाडिः पाणिनि का एक गण ।

अजितकेशकम्बलः पाषण्डी या विधर्मी आचार्यक जिसका बौद्धग्रन्थों में उल्लेख मिलता है ।

अज्ञातस्तुशास्त्रम् पाषण्ड प्रतिपादक शास्त्र ।

अञ्जकः विप्रचित्ति के पुत्र का नाम—वि० पु० ।

अञ्जलिका [अञ्जलि+कै+क+टाप्] मकड़ी से मिलता-जुलता एक कीड़ा । सम० **वेधः** एक प्रकार का युद्धकौशल - जानञ्जलिकावेध नापाक्षमत पाण्डवः —महा० ७।२६।२३ ।

अञ्जिकः यदु के एक पुत्र का नाम ।

अञ्जिजिहीषा [अंहु, का सन्नन्त रूप अंह्+सन्+टाप्] जाने की इच्छा भट्टि० ।

अट्टाल (वि०) [अट्ट+अल्+अच्] ऊँचा, उत्तुंग ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अट्टालः उत्सेध, बुर्ज, · विश्वकर्मचतुरश्रमट्टालकम्—कौ० अ० १।३ ।

अडागमः [अट्—आगमः] भूतकाल द्योतन करने के लिए धातु के पूर्व लगाये जाने वाला 'अ'—शतिक १। ३०।६०।८ ।

अडुकः हरिण निघ० ।

अणुव्रतानि जैनधर्मानुयायी लोगों के लिए बारह सामान्य प्रतिज्ञाएँ ।

अण्वम् वेद० सोमरस को छानने की छलनी का छिद्र ।

अण्वकः [अण्व+क, स्वार्थे कन्] गोलाकार छत या गुम्बज-शोभनैः पत्रवल्लीभिरुद्गतैरुन्नतैर्वितर्पितः—म० पु० २६९।२० ।

अतन्त्रत्वम् [न० त०] बाहुल्य, अतिरिक्त मात्रा ऐदंपरम्पर्य-स्यातन्त्रत्वात्—मी० सू० पर शा० भा० ६।४।२० ।

अतनु (वि०) [न० त०] जो छोटा न हो, बहुत, प्रचुर वीतप्रभावतनुत्वतनुप्रभावः किं० १६।६४ ।

अतसिः (वेद०) [अत् आसिच्] फेरने देने वाला साधु, निपुण—कस्त्वो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः—ऋ० ८।३।१३ ।

अतसिका [अत+असच्+ङीप्+कन्+टाप्] पटसन ।

अतिकल्यम् (अ०) प्रभातकाल, बहुत सवेरे नातिकल्यं नातिमध्याह्नेऽह्नि स्थिते । गच्छेत्'''मनु० ४।१४० ।

अतिकक्ष (वि०) [अतिक्रान्तः कक्षाम्—अव्या० स०] कोढ़े की मार को भी न मानने वाला, उच्छृंखल ।

अतिकामकः [प्रा० स०] कुला ।

अतिकान्ता [अति+क्रम्+क्त+टाप्] हाथी के कामोन्माद की छठी अवस्था अतिक्रान्तावस्थो गजपतिरिह स्थावरवर उपस्मर्वं हन्तुं समभिलषति ऋंधकलुषः—मा० लो० ९।१७ ।

अतिक्रान्तिः [अति+क्रम+क्तिन्] सीमा के बाहर निकल जाना, उल्लंघन ।

अतिगृहकम् [प्रा० स०] चौबारा, मियानी, · भूमीयुपरिहर्म्यस्थं गृहान् गृहातिगृहकानपि—रा० ५।१२।१५ ।

अतिजित (वि०) [प्रा० स०] पूर्णतया पराजित लोकं ह्यतिजितं कृत्वा—रा० ३।७०।५ ।

अतिधेनु (वि०) [अतिरिक्ता धेनवो यस्य ब० स०] जो बढ़िया से बढ़िया गौओं का स्वामी है ।

अतिनामन् (पु०—मा) छठे मन्वन्तर के सप्तर्षि समुदाय के एक ऋषि का नाम ।

अतिपातः [अति+पत्+घञ्] ध्वंस, विनाश ।

अतिपातित [अति+पत्+णिच्+क्त] १. त्यजित, विलम्बित 2. पूर्णतः दबा हुआ ।

अतिपालुक (वि०) अतिक्रमणकारी, बढ़कर खेलक्षिप्रालक्ष्मी करेरतिपानुकैः—नै० १९।५१ ।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक घनिष्ठता—लो० अतिपरिचयादवज्ञा ।

अतिबाहुः [प्रा० स०] १. असाधारण रूप से बड़ी भुजाओं वाला 2. चौदहवें मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम 3. एक गन्धर्व का नाम ।

अतिभङ्गम् [प्रा० स०] प्रतिभा विद्या की दृष्टि से मूर्ति में दो तीन वक्रिमा या मोड़—मानव० ६७।९५-६।

अतियात (वि०) [प्रा० स०] बहुत तेज चलने वाला—महा० ३।२०१।९।

अतिरागः [अत्या० स०] अत्यधिक उत्साह ।

अतिरेकः [अत्या० स०] १. प्राचुर्य 2. बाहुल्य 3. अन्तर—महा० ३।५२।३।

अतिरेचकः एक पौधा जिसका सेवन बहुत दस्तावर होता है ।

अतिरोगः क्षय रोग, तपेदिक ।

अतिवर्तनम् [अत्या० स०] क्षम्य अपराध दशातिवर्तनान्याहुः मनु० ८।२९०।

अतिविष्ठित (वि०) [अत्या० स०] १. बहादुर योद्धा विस्रब्धानतिविष्ठितान् रा० ४।१८।३८ 2. सीमा का उल्लंघन करने वाला महा० ३।२१५।१६ ।

अतिवैशस (वि०) [अत्या० स०] चुभने वाले, दारुण, कठोर आततायिभिरुत्सृष्टा हिंसा वाचोऽतिवैशसाः भाग० ३।१५।२१।

अतिसृष्टिः [अति+सृज्+क्तिन्] उत्कृष्ट रचना ।

अतलः [न० त०] खाली निघ० ।

अत्कः [अत्+कन्] घर का एक कोना, दे० अक्क ।

अत्यन्त+अपह्नवः [अत्यन्त+अप्+हनु+अप्] बिल्कुल मुकर जाना, पूर्ण विरोध या निराकरण ।

अत्यन्त-सहचरित (वि०) निश्चित रूप से साथ आने वाला—पा० ८।१।१५ वार्तिक ।

अत्यन्तीन (वि०) [अत्यन्त+खञ्] १. अत्यन्त गमनशील 2. टिकाऊपन ।

अत्यर्थ-वेदनः [अतिक्रान्तः अर्थम्—विद्+णिच्+ल्युट्] हाथियों का एक भेद जो बहुत ही संवेदनशील होता है जरा से दण्ड को भी नहीं भूलता, प्राजनाङ्कुशदण्डेभ्यो दूरादुद्विजते हि यः, स्पृष्टो वा व्यथतेऽत्यर्थं स गजोऽत्यर्थवेदनः—मातङ्ग० ८।१९।

अत्यस्त (वि०) [अति+अस्+क्त] फेंका हुआ, लुढ़काया हुआ, दूर परे उछाला हुआ—पा० २।१।२४ तरङ्गायस्तः काशिका ।

अत्याश्रमः [अति+आ+श्रम्+घञ्] संन्यास, वैराग्य ।

अत्याहारयमाण (वि०) [अति+आ+हृ+णिच्+शानच्] बलपूर्वक ग्रहण करने वाला लोभादलेऽत्याहारयमाणः कौ० अ० १ ।

आखु (वि०) [न० ब०] टीन का बना हुआ, कलईदार ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्रिजात (वि०) [अद्+त्रिन्+जन्+क्त] तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनुष्य, द्विज ।

अत्री अत्रि की पत्नी । सम०—**जरतः** 1. चन्द्रमा 2. दत्तात्रेय 3. दुर्वासा, भारद्वाजिका अत्रि वंशियों का भारद्वाजवंशियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध ।

अत्वक्क (वि०) [न० ब०] त्वचारहित, जिस पर खाल न हो ।

अथ (अ०) [अर्थ+ड, पृषो० रलोपः] मङ्गल सूचक अव्यय जो प्रायः रचनाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है । सम० अतः (अथातः), **अनन्तरम्** (अथानन्तरम्) इसलिए, अब, इसके पश्चात् अथातो धर्मजिज्ञासा मनु० १।१।१, किम् और कितना, और इतना, - तु परन्तु, इसके विपरीत ।

अदर्शनम् [दृश्+ल्युट्, न० त०] भ्रम, माया, अदृश्यता - अदर्शनादापतितः पुनश्चादर्शनं गतः - महा० ११। २।१२।

अदसीय (वि०) [अदस्+छ] इससे या उससे सम्बन्ध रखने वाला ।

अदुपध (वि०) [अद्+उपध न० ब०] वह शब्द जिसकी उपधा (अन्तिम से पूर्ववर्ती) में अ हो ।

अदृष्टकल्पना किसी अज्ञात पदार्थ या विचार की कल्पना करना ।

अद्भुत (वि०) [अद्+भू+डुतच्] 1. आश्चर्य युक्त 2. ऊँचाई को माप के पाँच अंशों में से एक जहाँ कि ऊँचाई, चौड़ाई से दुगुनी हो - हीने तु द्वयं तद् द्विगुणं जादभुतं कथितम्--मान० ११।२०।२२। सम० **रामायणम्** वाल्मीकि द्वारा रचित एक ग्रन्थ, - **शान्तिः** (स्त्री०) 1. अथर्ववेद का ६७ वाँ परिशिष्ट 2. पुराणों में वर्णित एक व्रत का नाम ।

अद्रिकटकन् [अद्+किन्+कट्+वुन्] पर्वतश्रेणी ।

अद्रेय (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य ।

अद्वारासङ्गः [न० त०] दरवाजे पर अन्दर जाने वालों की पंक्ति का न होना -कार्यार्थिनामद्वारासङ्गं कारयेत् —कौ० अ० १।१९।२६।

अधीव (वि०) [न० ब०] अविभक्त, असम्पत्तिग्रहीत ।

अधम (वि०) [अध्+अम; अवतेः अमः, वस्य पक्षे धः] जो फूंक नहीं मारता, शेखी नहीं बघारता अधमः कुत्सिते म्लेच्छे अधःस्थाधमाधोरपि नानार्थ० ।

अधरकण्टकः एक काँटेदार पौधा, धमासा ।

अधःवेदः (अधोवेदः) एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना ।

अधिकरणम् [अधि+कृ+ल्युट्] 1. वह स्थान जहाँ बहुत लोग एकत्र हों, महा० १२।५९,६८ 2. विभाग महा० १२।५९।५४। सम०—लेखक (वि०) अभिलेखाधिकारी जो क्रयपत्र तथा अन्य दस्तावेज अपनी देखरेख में तैयार कराता है, नाजिर ।

अधिगमः [अधि+गम्+घञ्] जानकारी का समाचार अपतेप्यामि सन्तापं तवाधिगमसंश्रवात्— राम० ५।३५।७७ ।

अधिपुष्पलिका खदिर का वृक्ष, खैर ।

अधिभक्षः [अधि+भक्ष्+घञ्] यज्ञ की अधिष्ठात्री देवता ।

अधिमुक्तकः [अधि+मुच्+क्त] मालती का एक प्रकार, चमेली ।

अधिमुक्तिका [अधि+मुच्+क्तिन्, स्वार्थे कन्] वह सीपी जिसमें मोती रहता है ।

अधिरोपः [अधि+रुह्+घञ्] दोषारोपण करना ।

अधिरूढित (वि०) [अधि+रुह्+क्त] शृंगारवर्णक लेप से अभ्यक्त मुखमधिरूढितपाण्डुगण्डलेखम्—कि० १०।४६ ।

अधिवासः [अधि+वस्+घञ्] जन्मभूमि, जन्मस्थान महा० १२।३६।१९ ।

अधिरोहणम् [अधि+स्था+ल्युट्] 1. अवस्था, आधार 2. नाम अधिष्ठानाभिरोहणाद्वाद् दुर्योधनस्य च महा० ९।६१।१४ । सम० **अधिकरणम्** नगरनिगम, नगरपालिका का कार्यालय ।

अधोनिबन्धः हाथी के कामोन्माद को ऋतु में तीसरी अवस्था मात० १।९।१४ ।

अध्यापनम् [अधि+इ+ल्युट्] शिक्षा देना, अध्यापन करना कृत्स्ना चाध्यापने तेषां शिष्याणां शतमुत्तमम् महा० १२।३१८।१७ ।

अध्यासिन् (वि०) [अध्यास्+णिच्+क्त] बैठा हुआ, बसा हुआ ।

अध्युषित (वि०) [अधि+वस्+क्त] ठहरा हुआ, रहा हुआ, अधिवास किया हुआ ।

अध्यूढः [अधि+वह्+क्त] विवाह से पूर्व गर्भिणी स्त्री का पुत्र अध्यूढश्च तथाजारः — महा० १३।४९।४ ।

अध्वर्युकाण्डम् अध्वर्यु नामक ऋत्विजों के लिए अभिप्रेत मंत्रों का संग्रह ।

अनड्वः (वि०) (वेद०) अन्धा ।

अनध (वि०) [न० ब०] अनघक, बिना पका हुआ—भाग० २।७।३२ । सम० **अष्टमी** एक व्रत का नाम भ० पु० ५५ ।

अनङ्गः [न० ब०] 1. वायु 2. भूत, पिशाच 3. परछाईं, नृ० अनङ्गे मन्मथे वायौ पिशाचच्छाययोरपि ।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अन्तरं व्यवधानं, मध्यः, अवकाशः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्य] सीधा, साक्षात् अथवा अनन्तरकृतं किञ्चिदेव निदर्शनम्--महा० १२।३०५।९ ।

अनन्य (वि०) [नास्ति अन्यः विषयो यस्य] जो किसी और के साथ भाग न ले रहा हो, निर्विरोध – अनन्यां पृथिवीं भुंक्ते सर्वभूतहिते रतः- कौ० अ० ।

अनपगं (वि०) [न० ब०] स्थिर, दृढ़ ।

अनपवृक्त (वि०) जो त्यागा हुआ न हो, अत्यक्त- न ह्युपेतमनपवृत्तं सच्छक्यमुपेतुम्-मै० सं० १२।१।१२ पर शा० भा० ।

अनपार्थ (वि०) [न० ब०] यथार्थ कारण से युक्त, न्याय्य, उचित ।

अनभिप्रायम् [न० त०] 1. अभीप्सित अर्थ का अप्रकाशन 2. व्याकरणसम्मत शब्द जो प्रयोग में न आता हो ।

अनभिवादकः [न० त०] विरोध करने वाला, प्रतिवादी --न खलु भवानस्मत्संकल्पानभिवादकः - अवि० १ ।

अनभ्यन्तर (वि०) [न० ब०] अपरिचित, अनजान, अनभ्यस्त--अनभ्यन्तरे खल्वार्या मदनमनस्य वृत्तान्तस्य —शा० ३ ।

अनराल (वि०) [न० ब०] सीधा, अवक्र यस्नेहादनरालनालललितीपत्रातपत्रं धृतम् उत्त० ३।१६ ।

अनलः [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य, अनात् प्राणात् लाति आत्मलेश वा] क्रोध, कर्णाणं शुदे सनलदानलदाः किं० ५।२५ । सम०— आत्मजः स्कन्द ।

अनवकाशिकः [न० ब०] एक पैर से खड़ा होकर कठोर तपस्या करने वाला गात्रश्रम्या अप्यारुढाश्च तथैवानवकाशिकाः--रा० ३।६।३ ।

अनवक्लृप्तिः (स्त्री०) [अनव + कल्प् + क्तिन्] असंभावना, अविश्वसनीयता ।

अनवगीत (वि०) [न० ब०] निरपराध, निर्दोष-प्रकृत्या कल्याणी मतिरनवगीतः परिजनः उत्त० ३।२ ।

अनवद्याङ्गी (स्त्री०) [न० ब०] वह स्त्री जिसके शरीर के अङ्गों में कोई दोष या त्रुटि न हो, अङ्गों की विशेषण ।

अनवद्यारागः [न० त०] एक प्रकार का रत्न को० अ० २।११ ।

अनवर (वि०) [न० ब०] जो अधम न हो, जो घटिया न हो ।

अनहंयादिन् (वि०) [अन् + लृङ्लादेशः इनि] अनभिमानी, जो गर्व न करता हो ।

अनाक्रन्द (वि०) पीड़ा से घबराहट या अत्यन्त व्याकुलता लोकमनाक्रन्दं मोहयति-कुमार० महा० १२।३३१।३५ ।

अनाघ्रात (वि०) [अन् + आ + घ्रा + क्त] न सूंघा हुआ, जो हाथ से न छुआ गया हो- अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः शा० १ ।

अनावर (वि०) [न० ब०] नंगे सिर वाला, जिसके सिर पर पगड़ी या टोपी कुछ भी न हो ।

अनारम्भः [न० त०] शुरू न करना, आरम्भ न होना ।

अनार्यता [न० त०] अनुपयुक्तता, अयोग्यता ।

अनायप (वि०) जो किसी नई वस्तु का अधिग्रहण नहीं करता है ।

अनायवास (वि०) [न० ब०] जिस पर निर्भर न किया जा सके कर्मण्यस्मिन्नायवासे धूमधूम्रात्मनां भवान् भाग० १।१८।१२ ।

अनायवासम् (अ०) बिना सांस लिए, बिना आराम किये ।

अनास्था (स्त्री०) [अन् + आ + स्था + क + टाप्] 1. असहिष्णुता 2. धैर्य से काम न होना, धैर्य का अभाव - नै० १।८८ पर ना० भा० ।

अनिच (वि०) जो देखा या समझा न जा सके इत्यभिदृश्यं पुरुषं यदुपमन्यि यथा भाग० १०।२।४२ ।

अनिमित्तम् (क्रि० वि०) जो ज्ञान का बोध साधन न हो, अनिमित्तं विद्यमानोपलम्भनात्—मै० सं० १।१।४।

अनियोगः [अ + नि + मिच् + घञ्] रति क्रिया का विशिष्ट प्रकार, मैथुन का विशिष्ट आसन ।

अनिरिण (वि०) [अन् + ईर् + इनच्, ह्रस्व] जहां किसी प्रकार की उथल-पुथल या ऊँच-नीच न हो—तस्मिन् देशे स्थिरिणे तं तु युद्धप्रारोचयन् महा० ७।५५।१८ ।

अनिर्वचनम् [न० त०] चुप रहना, जोर से न बोलना मी० सू० १०।८।५२ पर शा० भा० ।

अनिलभद्रकः एक प्रकार का रथ (आकार की दृष्टि से रथ सात प्रकार—नभस्वत्, प्रभञ्जन, निवात, पवन, परिषद्, इन्द्रक और अनिल के गिनाये गये हैं भाग० ४।३।११२-५ ।

अनिलभ्रमसमाधिः ध्यान का एक विशेष प्रकार --बु० ।

अनिविष्ट (वि०) [अ + नि + विश् + क्त] अविवाहित, -- कालं स्वयमनिविष्टः- अवि० १ ।

अनिष्ठुर (वि०) जो कठोर न हो, या क्रूर न हो ।

अनिपुण (वि०) जो निपुण न हो, कुशल न हो ।

अनिसर्ग (वि०) अप्राकृतिक ।

अनीकस्थानम् [ष० त०] सैनिक चौकी को० अ० १।१६।

अनीप्सित (वि०) [अन् + आप् + सन् + क्त] अवांछित, अनचाहा ।

अनीर्षु (वि०) [अन् + ईर्ष्य् + उष्, ऋलोपः] जो ईर्ष्यालु न हो, जो डाह न करे -भूतपुत्रा भूतामात्या भूतदाराश्चानीर्षवः महा० १२।२२१ ।

अनीह (वि०) [अन् + ईह् + अच्] जो प्रयत्नशील न हो, आलसी ।

अनूकच्छम् [ग० स०] कच्छ या दलदली भूमि के साथ-साथ आविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम् मेघ० १।२१ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुकल्पम् [अनुकल्प्+अच्] 1. घटिया स्थानापत्ति, —श्वभिर्भवेर्णरेन्द्रकल्पैरनोदयत्—नै० १७।१२ 2. समान, एक जैसा दर्शितं क्षमयम्बुधौन् क्षणादनुकल्पाश्रित-चण्डपयोधरम् यादव०।

अनुकूलित (वि०) [अनुकूल+इतच्] जिसका स्वागत सत्कार होता है, सभ्य नित-मन्विणो नैगमाश्चैव यथा-हैमनुकूलिताः- रा० ७।७४।६।

अनुक्रमः [अनु+क्रम् घञ्] दैनिक व्यायाम अश्वान् रक्षत्यनुक्रमः महा० १।१।२६३।

अनुक्षयम् (अ०) हर रात, प्रतिरात्रि।

अनुगीता (स्त्री०) महाभारत के चौदहवें पर्व का एक अंश।

अनुघट्ट (ब्या०) लम्बाई की ओर से छड़काना, रगड़ना।

अनुजनः [अनु+जन्+अच्] सेवक, अनुचर।

अनुज्ञात (वि०) [अनु+ज्ञा+क्त] लिखित, शिक्षाप्राप्त —शिष्याणामखिल कृत्स्नमनुज्ञातं समग्रहम् महा० १२।३१८।२८।

अनुत्कट (वि०) [अन्+उद्+कट्+अच्] छोटा, धीरा।

अनुत्तालः [अन्+उद्+तल्+घञ्] मधुर स्वर, रसीला गान।

अनुदिशम् (अ०) [रा० ७०] प्रत्येक दिशा में।

अनुद्विग्न (वि०) [अनु+उद्+विज्+क्त] हितैषी अनुमुद्यनुद्विग्नदृष्टा सत्कुरुते पुरोहितः रा० २।१००।११।

अनुद्य (वि०) [अन्+उद्+यत्] अनुच्चारणीय —पा० ३।१।१०१ सि०।

अनुधूमित (वि०) (वेद०) धुआंदार से फूला हुआ, उद्धत।

अनुनाथनम् [अनु+नाथ्+ल्युट्] प्रार्थना, याचना, अनुनय युवाभ्यामनुनाथनैः प्रियैः- नै० १६।६४।

अनुनिशीथम् (अ०) आधी रात के समय।

अनुनेय (वि०) [अनु+नी+यत्] अनुसरणीय, अनुकूलनीय।

अनुपस्कृत (वि०) [अन्+उप+कृ+क्त, सुडागमः] जिसकी बुद्धिमत्ता में कोई सन्देह न किया जा सके तस्मात्स्वधर्ममास्थाय सुव्रता रक्ष्यवादिनः। लोकस्य गुरवो राज्ञां ते भवन्त्यनुपस्कृताः—महा० १२।१११।२५ 2. स्वार्थ को दूर रखने वाला देहयात्राऽप्यनुपस्कृता मनु० १०।६२।

अनुपत्यम् [अन्+उप+इ अच्] किसी व्यवस्था का अनुपालन करना, अपने दोषों से अपना कार्य करना।

अनुपालः [अनु+पाल् अच्] (घोड़े आदि पशुओं का) रक्षक, पालक।

अनुप्रकीर्ण (वि०) [अनुप्र+कृ+क्त] पूर्णतः व्याप्त, आच्छादित गोत्रवर्धनमग्र्यैरनुप्रकीर्णम् वि० ७।२।१।

अनुप्रभवः [अनुप्र+भू+अप्] जन्म-मरण का चक्र।

अनुप्रवण (वि०) [अनु+प्र+प्लु+ल्युट्] रुचिकर, सुहावना —कीर्तनानुप्रवणश्चा हर्ष जनयतीव मे—महा० १।१।३।३।

अनुप्रहित (वि०) [अन् प्र+धा+क्त] निहित, निधत धियैवानुप्रहितं शिवेतर-किं० १।३।३।

अनुभाजित (वि०) [अनु+भज्+णिच्+क्त] पूजा किया गया।

अनुभू (भ्वा०) (वेद०) अनुकूल आचरण करना।

अनुभावित (वि०) [अनु+भू+णिच्+क्त] अनुभवशील, प्रशिक्षित।

अनुभर्तृ (पुं०) [अनु+भृ+तृच्] भरण पोषण करने वाला, पालन पोषण करने वाला।

अनुमन्त्रित (वि०) [अनु+मन्त्र+क्त] संस्कार किया गया, विनियुक्त।

अनुमात्रा (स्त्री०) प्रस्ताव, संकल्प।

अनुयुज् (रुध०) प्रार्थना करना, याचना करना—धार्मिष्ठं महाभागं स्वयं समनुयुङ्क्ष्महे महा० ५।७३।१२।

अनुयुञ्जक (वि०) [अनुयुज्+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, डाह करने वाला।

अनुरद्ध (वि०) [अनु+रध्+क्त] सम्पन्न, अवाप्त।

अनुरुद्ध (वि०) [अनु+रुध्+क्त] 1. रोका हुआ। 2. विरुद्ध 3. शान्त किया हुआ, सान्त्वना दिया हुआ।

अनुलोमग (वि०) [अनुगतः लोम, गम्+ड] सीधा जाने वाला, सीधा चलने वाला।

अनुवाकः [अनूच्यते इति, वच्+घञ्, कुत्वम्] ब्राह्मण-ग्रन्थों का एक अध्याय, या प्रभाग।

अनुविधायः [अनु+वि+धा+अच्, षत्वम्] रुचि, स्वभाव।

अनुवृत् (सकर्मक क्रिया के रूप में प्रयुक्त) सेवा करना, पूजा करना सूर्यं वैवाव्यवर्तत—रा० ७।२०।८।

अनुशाला (स्त्री०) उपकक्ष, छोटा कमरा।

अनुशिष्ट (वि०) [अनु+शास्+क्त] 1. सुशिक्षित, तस्मात् पुत्रमनुशिष्टं लोकेऽभाहुः यम १।५।१७ 2. पूछा गया इति तेनानुशिष्टस्तु शार्ङ्गं भरद्वाजीयम्—रा० ६।२०।१४ 3. आज्ञप्त, निर्दिष्ट अनुशिष्टोऽस्म्यहमाज्ञायां गुरुवर्ये महात्मना— रा० १।२६।१३।

अनुशायिन् (वि०) [अनु+शी+णिच्+इनि] साथ-साथ फैला हुआ।

अनुश्रविक (वि०) [अनु+श्रु+अप्+ठन्] शास्त्रों में संग्रह किया हुआ, पा० ४।३।७८।

अनुषत्य (वि०) [प्रा० स०] (वेद०) जो सत्य के अनुरूप हो सके।

अनुसमयः [अनु+सम्+इ+अच्] भिन्न-भिन्न व्यक्ति या प्रसङ्ग के अनुसार भिन्न भिन्न व्यवहार करना। इसके तीन प्रकार हैं- कालानुसमय, आवानुगमन और समुदायानुसमय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुसंधानम् [अनु+सम्+धा+ल्युट्] गवेषणा, खोज।
अनुसंधिः [अनु+सम्+धा+कि] पूछ ताछ—मै० २।१२९।
अनुसंसृतिः [अनु+सम्+सृ+क्तिन्] जन्म मरण की आवृत्ति।
अनुसंस्था (भ्वा०) अनुगमन करना, अनुसरण करना।
अनुसंस्था (स्त्री०) सती प्रथा।
अनुसृत (वि०) [अनु+सृ+क्त] 1. अनुगत 2 चलने वाला, दौड़ता हुआ—गिरने वाला—उच्चारित—अनुवृत्तावयवकण्ठम् रघु० ५।५।२५।
अनूचयम् (केवल०) [अनु+उच समवाये+क] निगालदण्ड, नल, रीड की हड्डी, कलेरुकोल, नेलदण्ड।
अनूपय (भ्वा०) ढाक ला देना, भर देना अनूपयामास विदर्भजाश्रुणो नै० १२।६९।
अनेकपद (वि०) [न० ब०] अनेक संख्याओं से युक्त, बहुत से अवयवों से बना हुआ।
अन्तः [अम्+तन्] अन्तिम अंश, अवशिष्ट अंश तेऽनया कान्यायन्याऽन्तं करवाणीति वृ० २।४।१। सम०—ओष्ठः अधरोष्ठ, निचला होठ, चक्षम् शकुन, तथा भविष्यसूचक भाव का जानना कौ० अ०, —परिच्छदः बर्तन के ऊपर कपड़े आदि की परत रखना।
अन्तरात् (पं०) [अन्तर् यतुर् मयप् पञ्चम्य०] दिशाओं का स्वामी (दिग्लोकपालसंज्ञकः) महा० ३।१९७।५।
अन्तर् (अ०) [अम्+अन्तर्, नुडागमश्च] (इसका प्रयोग धातुओं के साथ उपसर्ग की भांति होता है, और इसे गति माना जाता है) अन्दर, में, भीतर। सम०—अङ्गम् (अन्तरङ्गम्) जो अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है या जिससे ऊपरी संबंध न होकर घनिष्ठ संबंध रहता है अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्गं बलीयः—मै० सू० १।३।२९ पर शा० भा०,—गर्भिणीज्ञायः इस न्याय के अनुसार जब एक बात के भीतर दूसरी बात छिपी रहती है जैसे गर्भाशय में गर्भ, तब इसका प्रयोग होता है—मी० सू० १०।३।६२ पर शा० भा०, जानुगतः जो अपने हाथों को घुटनों के बीच में रख कर सोता है—अन्तर्जानुलयो यस्तु भुञ्जते सकृतं नरः—महा० ३।५००।७५, —दृष्टि (वि०) जिसकी दृष्टि अन्दर की ओर होती है—अन्तर्मुखाः सततमात्मविदो महान्तः—विक्र० १२९, वंशिकः अन्तःपुर का अधिकारी—समुदयपुरुषकरणमन्तर्वंशिक हस्तादादाय परिहरेयुः कौ० अ० १।२१।
अन्तरम् [अन्तं रान्ति ददाति-रा+क] स्तम्भतल का अङ्गभूत (आधार) से सम्बन्ध करना।
अन्तारः [अन्त+ऋ+अण्] गडरिया, गोपाल - शं० चि०।
अन्धः [अन्ध+अच्] 1. जिसे आँखों से दिखाई न दे, अंधा—अन्धः क्षुधान्धोप्यसौ—विक्र० १०१ 2. अस्पष्ट, धुंधला 3. निःसारतत्त्व इत्यादिशब्देभ्यो न प्रकाशते रा० ३।६।१३।
अन्धभट्ट तर्कसंग्रह नामक पुस्तक के रचयिता का नाम।
अन्धाद (वि०) [अन्धमत्तीति अद्+अच्] अन्धे के खाने वाला अहश्शाद० नै० १।७।
अन्य (वि०) [अन्य अन्यतरादि० द्वारा] दूसरा, और, भिन्न। सम०—अन्य (वि०) आगामी, परलोकगत देव अन्योन्य, अपदेशः किसी बात के बहाने उल्लेख उक्ति।
अन्वन्तः [अन्+अन्त] संख्या, सीमा, मत्र, ऊँचा आसन मानः १६।४३।
अन्वयनामन् [अन्+अर्थ में मनिन्] जिसका नाम उसके अपने चरित्र के अनुसार यथार्थ है, यथा—नाम तथा गुण वाला।
अन्वारभ [अनु+आ+रभ्] (भ्वा० आ०) (विद०) अनुरंजन करना, अनुकूल करना, प्रसन्न करना—अभिसन्धारणाग्रहे।
अन्वाहार्य (वि०) [अनु+आ+हृ+णिच्+यत्] जो क्रिया बाद में की जाय।
अन्वयवर्जितः [ष० त०] नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति, दास, अनुचर लक्षणं प्रायेणान्वयवर्जितः रा०।
अन्वयिन् (वि०) अपत्य वंशज, सन्तान।
अन्वित (वि०) [अन्+इ+क्त] युक्त, योग्य—लक्ष्मा चास्मिंतो वेषः रा० ५।३३।१३।
अन्वीक्षिक (वि०) [अ० ई+ठक्] हिंसैषी, बरा भला देखने वाला प्रत्यक्षानीक्षिकया बुद्ध्या श्रेयो हृदय्य विचिन्तयन् रा० ७।३।८।
अप्रियतम् (अपास्यतम्) देखिए, आगे।
अप (उप०) [आप्नोति पश्यति यतनार्थ पा०] इ धातुओं से पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है—अर्थ होता है, ह्रास, कमी विकृति, निरोध, अलाभ आदि। सम०—अङ्गः अन्त, समाप्ति, अस्त (वि०) परित्यक्त, दूर फेंका हुआ,—आकीर्ण (वि०) दूर फेंका हुआ, अस्वीकृत,—कीर्तिः बदनामी, कलङ्क, कोष (वि०) आच्छादन रहित, स्थान से पृथक् की हुई कोई वस्तु, —टीक (वि०) 1. जिसे किसी भाष्य या टीका की सहायता प्राप्त न हो 2 (अ+टीक) जिस पर कोई टीका या पदार्थ न हो,—दंश (वि०) झालर या मगजी न लगा हुआ (वस्त्र)—स्था स्थानभ्रंश धार्य न चापदस्थमेव च महा० १३।१०८।८६,—दानम् [अप+दै+ल्युट्] वह आख्यायिका जिसमें भूत और भावी जन्मों का वर्णन हो,—देशः भय, खतरा —अपदेशः पदे लक्ष्ये स्यात्प्रसिद्धनिमित्तयोः। औदार्यधैर्येषु निःसीमव्यपदेशयोः—नाना०,—द्रुतम् झुक कर भागना, दौड़ना—रा० ६।४०।२५, नयः अनै-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिकता, दुष्टाचरण,—न्यायः अन्याय, अनुचित व्यवहार—शृणु राजन् स्थिरो भूत्वा तवाग्रेऽन्यायो महान्—महा० ६।४९।२२, श्री (श्वा०) दुर्व्यवहार करना—शत्रो हि साहसं यत्तत्किमिवाऽन्यायमीयते रा० ६।६४।१०, —लीन (वि०) गुप्त, छिपा हुआ औपसातमभयाद्-एलीनम्—किं० ९।११.—वत्स (वि०) बिना बछड़े का, वत्सप्य (ना० धा०) ऐसा व्यवहार करना जैसा कि बिना बछड़े वाले के साथ किया जाता है, (न बहुत प्यार, न निर्दयता),—वरः अन्दर का कमरा, सुरक्षित कक्ष नै० १८।१८, गह० १२।१२९—४०, —वर्गः अवसान, अन्त, वलम्बित (वि०) निलम्बित, लटकाया हुआ, शूद्रः जो शूद्र न हो, द्विज,—शून्य (वि०) [अप+स्था+क्त] गलत, त्रुटिपूर्ण अपशून्य पठतः पाठ्यमभिगोष्ठि शतस्य ते नै० १७।९६, —सृज् (तुदा०) छोड़ना, त्यागना,—स्थानः अज्ञातवास, आश्रयः, हारः संग्रह, अपहरण।

अपरस् (अ०) 1. के सामने 2. पश्चिम की ओर।

अपरान्तः [न० व०] हीप वासी।

अपरापरम् (अ०) [अपर+अपर] आगे और आगे, फिर।

अपाठ्य (वि०) [न० त०] जो पढ़ा न जा सके।

अपाणिग्रहणम् [न० त०] ब्रह्मचर्य।

अपादानम् [अप+आ+दा+ल्युट्] स्रोत, कारण नै० २२।१४१।

अपारवार (वि०) [न० ब०] असीम, अपारवारमक्षोभ्यं गाम्भीर्यस्तिमितोपमम् रा० ५।३८।४०।

अपिनद्ध (वि०) [अपि+नह्+क्त] बन्द, ढका हुआ, गुप्त।

अपिपरिक्लिष्ट (वि०) [अपि परि+क्लिश्+क्त] अत्यन्त उत्पीड़ित, तंग किया हुआ।

अपिस्वित् (अ०) प्रश्नसूचक अव्यय।

अपीत (वि०) [अपि+इ+क्त] 1. विलीन, अन्तर्भूत —लोकानपीतान्दृशे स्वदेहे—भाग० ३।८।१२ 2. मृत।

अपूर्तिः (स्त्री०) [अ+पृ+क्तिन्] कार्य का पूरा न करना।

अपूर्विन् (वि०) (पुं वीं) जिसने विवाहित जीवन का अपनी पत्नी के साथ इससे पहले उपभोग न किया हो —अपूर्वी भार्यया चार्थी वरुणः—रा० ३।१८।४।

अपृथक्त्विन् (वि०) जो पुरुष और प्रकृति के भेद को नहीं समझता। 'पृथक्त्वं पृथक्त्वोर्विवेकः, तदस्यास्तीति पृथक्त्वी, तदन्यस्य" नील०; वर्णाश्रमपृथक्त्वे च दण्डोऽर्थस्यापृथक्त्विनः महा० १२।३०८।१७७।

अपेहि (अप+एहि/ड लोट्, म० ए०) दूर हो, जाओ —अम्बष्ठ्यापेहि मार्गात्—नाग०।

अपोहित (वि०) [अप+उह्+णिच्+क्त] 1. हटा हुआ, दूर किया हुआ—न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्—कि० २।२७ 2. वादविवाद में निराकृत।

अप्रकट (वि०) [न० ब०] जो प्रकट या व्यक्त न हो, जो स्पष्ट या प्रदर्शित न हो।

अप्रख्याता [न० त०] बदनामी, अपकीर्ति—महा० १२। १५८।५।

अप्रणोदित (वि०) [अ+प्र+नुद्+णिच्+क्त] जिसे अभिप्रेरणा या प्रोत्साहन न मिला हो, अनादिष्ट।

अप्रज्ञात (वि०) [अ+प्र+ज्ञा+क्त] अज्ञात, जो समझ में न आया हो आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् —मनु० १।५।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त,—तस्मात्त्वया समारब्धं कर्म स्वप्रतिमं परैः रा० ६।१२।३५।

अप्रतिषेधः [न० त०] वह आदेश जो विश्वासोत्पादक न हो, अवैध निराकरण।

अप्रतिहतः देवताओं का एक प्रकार अपराजित-अप्रतिहत-जयन्त-वैजयन्त-कोष्ठकान्...पुरुमध्ये वास्तोष्पतेः सौ० अ० २।४.

अप्रवृत्त (वि०) [अ+प्र+वृत्+क्त] 1. जो किसी कार्य में व्यस्त न हो 2. जो संस्थित या प्रतिष्ठापित न हो 3. अनुपयुक्त।

अप्रसहिष्णु (वि०) [अप्र+सह्+इष्णुच्] जो सहन न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवम् (चक्रम्)—कु० १।५४।

अप्राज्ञ (वि०) [न० त०] जो जानकार न हो अज्ञानी।

अप्रातिष्टिक (वि०) [न० ब०] 1. जो कोई सुझाव न दे सके 2. किसी प्रदेशविशेष से सम्बन्ध न रखता हो।

अप्राधान्य (वि०) [न० ब०] जिसका कोई महत्त्व न हो, गौण।

अप्रोक्षित (वि०) [न० ब०] जहाँ छिड़का न हुआ हो, जो पवित्र न किया गया हो।

अप्रोटः एक पक्षिविशेष, कुकुडकुंभी।

अप्सुयोनिः [अलुक् समास] जो जल में पैदा हुआ हो, घोड़ा।

अबद्धवत् (वि०) [अ+बन्ध्+क्तवतु] अर्थहीन, जो व्याकरणसम्मत न हो —यस्मिन्प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि भाग० १।५।११।

अबला (स्त्री०) किसी विशेष की आधार रेखा का छिन्न अंश या खण्ड।

अबाधित (वि०) [न० ब०] बाधारहित, निर्दोष, अनियन्त्रित, अनिराकृत।

अबीज (वि०) [न० ब०] 1. नपुंसक, निर्वीर्य 2. अकारण,—जः (न० त०) मन पर नियन्त्रण, जो एक प्रकार के अंकुर, —जम् अनुत्पादक बीज।

अभय (वि०) [न० ब०] प्रतिमा के हाथ की मुद्रा जो भक्त को रक्षा सूचित करती है। सम०—करः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्षण और वर के देने वाला—स्वदत्यः पाणिमभयवरदो दैवतगणः—सौ०।

अभवत् (वि०) [अ+भू+शतृ] अविद्यमान। सम०—सतयोगः—संयोगः, (काव्य) रचना का दोष—इसके अनुसार शब्द और अर्थ का अभिप्रेत संबंध अपेक्षित रहता है जैसे ईक्षसे यत्कटाक्षेण तदा धन्वी मनोभवः में 'यत्' और 'तदा' का संबन्ध। अन्य उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ५७५ पृष्ठ।

अभवनिः जन्म का न होना—इरि० ७।

अभाजिन् (वि०) [न० ब०] 1. अनभ्यस्त—सहते यातनामेतामनर्थानामभाजिनी - रा० ५।१६।२१ 2. जिसका कोई भाग न हो।

अभिकर्षणम् [अभि+कृष्+ल्युट्] कृषि का एक उपकरण।

अभिगुप्त (वि०) प्रबल लालसा से युक्त, इच्छुक।

अभिजित् (पुं०) [अभि+जि+क्विप्] पुनर्वसु का पुत्र हरि०, पुनर्वसु के पिता का नाम वि० पु०।

अभिज्ञात (वि०) [अभि+ज्ञा+क्त] जानकार, ज्ञाता, जानने वाला।

अभित्वरज्ञानकः [अभि+त्वर्+शानच्, कन्] दूत, संदेशहर।

अभिदेवनम् [अभि+दिव्+ल्युट्] पासे से खेलने की बिसात - महा०।

अभिदुग्ध (वि०) [अभिदुह्+क्त] आहत, सताया हुआ।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] गीत, गायन—षट्पादतन्त्रीमधुराभिधानम् - रा० ४।२८।३६। सम०—विप्रतिपत्तिः शब्द और अर्थ का बेतुकापन, असंगति—मी० सू० ९।३।१३ पर शा० भा०।

अभिनन्दः (पुं०) 1. अमरकोश के एक टीकाकार का नाम 2. योगवासिष्ठसार के रचयिता का नाम।

अभिनवकालिदासः आधुनिक कालिदास, यह पद किसी उत्तम कवि को दिया जाता है; माधवीय शंकर विजय का नाम।

अभिनवगुप्तः नाट्यशास्त्र और ध्वन्यालोक का प्रसिद्ध भाष्यकार।

अभिनिष्यन्दः [अभि नि+स्यन्द्+घञ्] टपकना, चूना।

अभिनुन्न (वि०) [अभि+नुद्+क्त] आहत, क्षुब्ध। —खिन्नदण्डकाष्ठाभिनुन्नाङ्गी—महा० १४।५८।२९।

अभिपन्न (वि०) [अभि+पद्+क्त] 1. स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (अथवा उपपन्न) 2. प्रेरित महा० १।९०।२०।

अभिपातः [अभिपत्+णिच्+घञ्] 1. उन्नत होना, उछलना विषयेष्वभिपातलाघवेन 2. पतन, विनाश।

अभिपूर्णम् [अभि+पृ+क्त] जो पूर्णतः सम्पन्न हो चुका है—अष० ९।५।१३।

अभिप्लुत (वि०) [अभि+प्लु+क्त] 1. (भावनाधिक्य से) अभिभूत, व्याकुल 2. स्वीकृत।

अभिमन्यमान (वि०) [अभिमन्+शानच्] किसी वस्तु पर अवैध अधिकार का इच्छुक—ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानः —कौ० अ० १।६।

अभिमन्युः (पुं०) साक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम।

अभिरम्भित (वि०) [अभिरम्+क्त] पकड़ा हुआ, जकड़ा हुआ -कक्षमलं महद्भिरभिरम्भितः - भाग० ५।८।१५।

अभिराधनम् [अभिराध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, अनुकूल करना—महा० ३।३०३।१४।

अभिलम्भनम् [अभिलम्भ्+ल्युट्] अधिग्रहण करना --शंसंस पित्रे तत्सर्वं वयोरूपाभिलम्भनम्—भाग० ९।३।२३।

अभिवक्त् (वि०) [अभिवच्+तृच्] जो अभिमानपूर्वक या हेकड़ी के साथ बोलता है—महा० १२।१८०।४८।

अभिशीत (—श्यात) (वि०) [अभि+श्यै+क्त—पा० ६।१।२६] शीतल, ठण्डा।

अभिश्रुत (वि०) [अभिश्रु+क्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध।

अभिश्वर्यम् (वि०) [अभितः स्वैरं शुद्धचारित्र्यादिर्यस्य —न० ब०] विशुद्ध चरित्र वाला, सदाचारी।

अभिषक्त (वि०) [अभि+सञ्ज्+क्त] 1. भूत प्रेतादि से आविष्ट 2. अपमानित, पराभूत 3. तिरस्कृत, अभिशप्त।

अभिषङ्गः [अभिसञ्ज्+घञ्] मानसिक क्षोभ की स्थिति —उच्चारितं मे मनसोऽभिषङ्गात्—महा० ५।३०।१।

अभिषिक्त (वि०) [अभिषिच्+क्त] राजसिंहासन पर बिठाया हुआ, अभिमन्त्रित जलों से स्नान, राजगद्दी पर आसीन कराया गया।

अभिषेचनम् [अभिषिच्+ल्युट्] राजतिलक करने की तैयारी—रा० २।१८।३६।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अच्] स्तुति—राजाभिष्टव संयुक्तः—रा० २।६।१६।

अभिष्टुत (वि०) [अभि+स्तु+क्त] 1. जिसकी स्तुति की गई हो, जिसका कीर्तिगान किया गया हो 2. जिसका राज्याभिषेक कर दिया गया हो—ओङ्कराभिष्टुतं सोमसलिलं पावनं पिबेत्—याज्ञ० ३।३०६।

अभिसंहरणम् [अभि+सम्+हृ+ल्युट्] क्षतिपूर्ति—कौ० अ० ५।

अभिसंहित (वि०) [अभि+सम्+धा+क्त] सम्मिलित, सम्बद्ध रा० ७।८०।११।

अभिसमापन्न (वि०) [अभिसम्+आ+पद्+क्त] आमने सामने होने वाला, सामने होकर मुकाबला करने वाला—तुदत्यभिसमापन्नमङ्गुल्यग्रेण लीलया—रा० ३।१९।३।

अभिसरी (स्त्री०) 1. पीछा करना—असुरपुरवधे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गच्छन्त्यभिसरीम् प्रति० २।७ 2. सहायता के लिए जाना।

अभिहारः [अभि+हृ+घञ्] निकट लाना अभिहारोऽभियोगे च०।

अभूयः संनिवृत्तिः (स्त्री०) फिर वापिस न आना, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा—गतिस्तेषां वीतक्लमानामभूयः संनिवृत्तये—रघु० १०।२७।

अभ्यपद्य (दिवा० आ०) स्वीकार करना तत्तदनाभ्यपद्यकृतकाणि शैलवनगणान्—स्वप्न०।

अभ्यवमन् (दिवा० आ०) तिरस्कार करना, धिक्कार करना।

अभ्यवसन्ता [अभ्यव+सद्+तृच्] आक्रमण करने वाला।

अभ्यवहारः [अभ्यव+हृ+घञ्] खाने के योग्य, खाद्य पदार्थ मृणालान्यम्बुहारीणि मूलानि च फलानि च—मनु० ४।५०।३५।

अभ्यसनीय (वि०) [अभ्यस्+अनीयर्] अभ्यास करने के योग्य, अभ्यास किये जाने के लिये।

अभ्यस्य [आभ्यस्+यत्] आवृत्ति करने के योग्य, अभ्यास करने के लायक, अभ्यास किये जाने के लिये।

अभ्याकाशम् (वि०) [प्रा० स०] आकाश के नीचे खिला किसी आड़ या के—अहासु सततं निष्टेदभ्याकाशाश्रिता इवान्—मृच्छ० १।१३५।३८।

अभ्याचक्ष् (भ्वा० प०) 1. बखान देना 2. बोलना।

अभ्युपपन्न (वि०) [अभि+उप+पद्+क्त] 1. पहुँचा हुआ, पास गया हुआ 2. अन्य के आश्रय के हेतु निकट गया हुआ अभ्युपपन्नास्तरुं खलु सत्त्व बलवानवलम्बन्ते दल इति भूतये—मृच्छ० ७।

अभ्रमुः (स्त्री०) ऐरावत हाथी की प्रिया हथिनी प्रेमास्त्रभ्रमुः हर० २।१२९, अभ्रमुकुलकलभः नै० १।१०८।

अभ्रयन्ती (स्त्री०) [अभ्र+यङ्+शतृ+ङीप्] 1. बादलों से युक्त होना 2. चमकना या हिलना या डोलना 3. छुटकारा पाना।

अम् (वि०) (भ्वा० पर०) अपकृर होना, भयंकर होना वयाद्दम्भित एभ्यवम् ऋ० ८।७३।१०।

अमण्डित (वि०) [न० स०] अलंकृत, न सजा हुआ।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्षा न करे, जो घृणा न करे, जो निरीह हो वयदीक्षते विद्वेषमत्सरदृग्भादमत्सरः—मनु० ३।२३१, अमत्सरैकवत्सलस्यात्सरहरणु भान्तम्—तारा० २१।५।

अमर (वि०) [मृ+अच्] [न० त०] जो मृत्यु को प्राप्त न हो, अनश्वर,—रः (पुं०) देव, सुर। सम०—गुरुः बृहस्पति, बृहस्पति नामक ग्रह, चरितः 'बालभारत' का रचयिता,—राजः इन्द्र, देवों का स्वामी।

अमरी (स्त्री०) स्वर्गीय स्त्री, देवी —अमरीकरगीभाग्भ्रमरीमुखरीकृतम्—कुव० १।

अमर्दित (वि०) [मृद्+क्त, न० त०] जो रगड़ा न गया हो, जो दबाया न गया हो।

अमर्मवेधिता (स्त्री०) मर्मस्थानों पर न आघात करने का गुण, दूसरों की भावनाओं को अपने वाग्बाणों से छेदना (तीर्थंकर के ३५ वाग्गुणों में से एक)।

अमा [न० मा+क] अमावस्या। सम०—वसुः पुरुरवा के वंश का एक राजा,—सोमवारः वह सोमवार जिस दिन अमावस्या हो,—व्रतम् अमावस्या वाले सोमवार को रक्खा जाने वाला व्रत, हृदः एक सर्परक्षस का नाम—महा०।

अमित्रकर्म [न० त०] 1. शत्रुतापूर्ण कार्य, राजानमिममात्यास्त्र मुह्यन्त्यित्रकर्मणि रा० ६।६५।७।

अमुद्र (वि०) [न० ब०] सौभाग्यशाली, अमुद्राश्चन्द्रिकाभमुद्रमाया —नै० ९।६५।

अमूर्तरजस् (पुं०) कुल का एक भेद। इसकी सत्ता का नाम वैदर्भी था।

अमृज (वि०) [न० ब०] जिसने स्नान नहीं किया है पतिरिच्छदृतकामनोमृजां रमयत्यविशङ्क्य रा० ६। ८६।२०।

अमृत (वि०) [न+मृ+क्त] 1. जो मरा हुआ नहीं है 2. जो अजर है। सम० अंशुः एक प्रकार का रत्न—की० अ० २।११, अक्षम् डाई का पांसा, कुण्डी धात्री, रसनालम्बः एरिड वृक्ष—शि० २०। ४३, ईक्षः (अमृतेक्षः) शिव का नाम—उत्तरणम् अमृत समान औषध खाने से पूर्व आचमन करने का पानी, करः, किरणः अमृत की किरणों वाला, चन्द्रमा, नन्दनः मरुत्त्व जिसने ५८ स्तम्भ लगे हों म० पु० १३०।८, बालोपनिषद् एक छोटी उपनिषद् का नाम,—बिन्दूपनिषद् अथर्व वेद की एक छोटी उपनिषद्, मूर्तिः चन्द्रमा—आत्मायत्यस्मो लब्ध्वा ब्रह्मात्मनमृतिम्—भाग० ४।१६।२।

अमृतोद्भव [ष० त०] मूल्य उचित, महि० १।५७।

अमोघ (वि०) [न० त०] 1. अचूक, अव्यर्थ। सम०—अस्त्री (स्त्री०) (अमोघाक्षी) दाक्षायणी का नाम,—लक्ष्मिनी सिद्धा की एक पुस्तक का मन्त्रपाठ,—वर्ष भास्वत्कुलवंशी एक राजा का नाम।

अम्बराधिकारिन् [अम्बराधिकार+णिनि] राजदरबार का एक कर्मचारी।

अम्बरीषकः [अम्ब्+अरीषन्+क] (वि० दीर्घ) अन्तर्निहित या गूढ़ आग उद्गमनः कुसुमेषुः सर्वेषाम्बरीषकः —रुद्रा० १।१५।१९।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब्+उण्] जल, पानी। सम० कन्दः एक जलीय पौधा, पिप्पाडा, कुक्कुटी जलीय मुर्गी, —देवत्—देवतम् पूर्वाषाढ़ नक्षत्र,—नाथः समुद्र,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—पतिः वरुण, वेगः पानीका बहाव, बाढ़ - यथा नदीनां बहुबीऽम्बुवेगा—भग० ११।२८।

अम्बुजिनी (स्त्री०) [अम्बुज+णिनि+ङीप्] कमल की बेल। सम० कुटुम्बिन् (पुं०) सूर्य।

अम्मय (अप्; मय) (वि०) जलयुक्त, जलमय न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः —भाग०।

अयन (वि०) [अय्+ल्युट्] जाने वाला, (अर्थात् प्रायः समस्त पदों में)। सम०—कलाः ग्रहणविषयक विचलन के लिए (मिनटों में) शोधन—सू० सि०, ग्रहः किसी ग्रह की देशान्तररेखा जब कि वह ग्रहण विषयक विचलन के लिए संयुक्त की गई हो, —सू० सि०, परिवृत्तिः अयन का बदलना अयन-परिवृत्तिर्यस्तशब्देनोच्यते—मी० सू० ६।५।३७ पर शा० भा०।

अयत्नसाध्य (वि०) जो बिना किसी कठिनाई के सम्पन्न हो जाय।

अयत्नोपास्त (वि०) [अयत्न+उपास्त] जो बिना यत्न के प्राप्त हो जाय।

अयथाभिप्रेताख्यानम् (नपुं०) बुरे समाचार को ऊँचे स्वर से उच्चारण करना या अच्छे समाचार का मन्दस्वर में कहना अयथाभिप्रेताख्यानं नामाप्रियस्योच्चैः, प्रियस्य च नीचैः कथनम्—सि०।

अयस् (वि०) [इ+असुन्] जाने वाला, स्पन्दनशील। सम० कणपम् एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे की बनी गोलियों को बौछार करता है अयःकणपचक्राश्च भुशुण्ड्यश्चतबाहवः—महा० १।२२७।२५।, —पिण्डः लोह का गोला।

अयोगः [न+युज्+घञ्] योगाभ्यास से विचलन, दलस्खलोगाद्भ योगनाथः भाग० ६।८।१६।

अयोनि (वि०) [न० ब०] अज्ञात यात्रा-पिता की सन्तान अयोनि व वियोनि च न गच्छेत विचक्षणः—महा० १३।१०३।३३।

अरकः [ऋति गच्छत्यनेन ऋ+अच्+स्वार्थे कन्] पहिए का आरा।

अरडा (स्त्री०) एक देवी का नाम गो०।

अरण्यपर्वन् (नपुं०) महाभारत के एक अध्याय का नाम।

अरन्ध्र (वि०) [न० ब०] जिसमें छिद्र न हों—पवन पवा-मुच इवारन्ध्राः—कि० १५।४०।

अरव (वि०) [न० ब०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।

अरस (वि०) [नञ् ब०] 1. अरसिक, जो ललित कला को न समझ सके—किमस्या नाम स्यादरगपुरुषाना-दरशतैः। नै० 2. जिसमें कोई सत्त्व न हो, तेज न हो अरसो व्याधिजराविनाशधर्मा—बु० च० ५।१२।

अरात् (अ०) तुरन्त, तत्काल—वर्तन्ति यदनीत्या ते तेन साकं पतन्त्यराद् शुक्र० ४।१२।६६।

अराम (वि०) [न० ब०] अधिकार, दुःखद।

अरिकेलिः [ऋ+इन्+केल+इन्] शत्रुलीला, स्त्रीरमण —अरिकेलिः शत्रुलीला स्त्रीरत्योश्चापि कीर्तितः —नाना०।

अरित्रम् [ऋ+इत्र+अरि+त्र, वा] कवच, जो शत्रुओं से रक्षा करे (अरिभ्यः त्रायते) नै० १२।७१।

अरीण (वि०) पूर्ण, भरा हुआ- स्वरमध्वरीणतलक्ष्यः —नै० ६।६५।

अरुज (वि०) [न० ब०] 1. जो रोग को नष्ट करे, रोग नाशक त्रिपेभ्यः खलु सर्वेभ्यः कणिकामरुजां स्थिरम् —सु० 2. नीरोग, पीड़ारहित।

अरुणकेतुब्राह्मणम् (नपुं०) अरुण और केतुओं के ब्राह्मण का नाम।

अरुणपराशराः (पुं०) एक वैदिक शाखा के अनुयायी —अरुणपराशरा नाम शालिनः—मै० सं० ७।१।८ पर शा० भा०।

अरुद्ध (वि०) [न+रुध्+क्त] निर्बाध, जिसे रोका न गया हो, निर्विघ्न।

अरुन्धतीदर्शनम् (नपुं०) विवाह संस्कार के अवसर पर की जाने वाली एक प्रक्रिया जिसके अनुसार दुल्हन को अरुन्धती तारा दिखलाया जाता है।

अरुन्धतीदर्शनन्यायः यह एक न्याय है, इसके अनुसार 'ज्ञात से अज्ञात की भाँति क्रमिक शिक्षा ग्रहण की ओर संकेत किया गया है जैसे अरुन्धती को दिखलाने के लिए पहले किसी और ज्ञात तारे की ओर संकेत किया जाय।

अरूप (वि०) (न० ब०) वह यज्ञ जिसमें रूप (द्रव्य और देवता) का अभाव हो।

अरूपिन् (वि०) [न+रूप+णिनि] आकाररहित, बिना किसी रूप का—बाधायामुसैन्यानामप्रमेयानरूपिणः रा० १।२१।१६।

अरोगत्वम् [न० त०] रोग से मुक्त होने की स्थिति।

अर्क: [अर्च्+घञ्, कुत्वम्] 1. सूर्य 2. सूर्यकान्त मणि अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके—नै०। सम०—ग्रहः सूर्य-ग्रहण,—ग्रीवः इस नाम का एक 'साम'—पुत्रोत्तरम् इस नाम का एक 'साम',—रेतोजः सूर्य का पुत्र रेवत, —लक्षणम् यवक्षार।

अर्घः [अर्घ+घञ्] मूल्य, कीमत। सम०—अपक्षयः मूल्य कम हो जाना, कीमत गिर जाना,—ईश्वरः शिव, —निर्णयः मूल्य निर्धारण।

अर्चनानसः (पुं०) अत्रिकुल से संबंध रखने वाला एक ऋषि।

अर्जित (वि०) [अर्ज्+क्त] अवाप्त, उपार्जित—न मे पित्रा-र्जितं किञ्चिन्न मया किञ्चिदर्जितम्। अस्ति मे हस्तिशैलाग्रे वस्तु पैतामहं धनम्—दे० दे०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्जुनवदरः अर्जुन नामक पौधे का रेशा, तन्तु ।
अर्जुनसखिः [ब० स०] कृष्ण ।
अर्णस् (नपुं०) [ऋ+असुन्, नुट्] 1. पानी, जल 2. रंग —श्रीह्रीविभूत्यामलदद्भुतार्णसं भाग० २।६।४४ । सम०—जः (अर्णोजः) कमल न्यर्णोदर्णीजनाभः, —**वहम्** कमल, पद्म—वरगिरमुपकर्ण्यार्णवर्णोरुहाक्षी —उत्त० ७।९२ ।
अर्थः [ऋ+थन्] विषय, पदार्थ, उद्देश्य, इच्छा, अभिप्राय । सम०—**अतिदेशः** (शब्दों के मुकाबले में) पदार्थों के विषय में लिङ्ग, वचन आदि का विस्तार अर्थात् एक विषय को ऐसा समझना मानों वे संख्या में बहुत हों, स्त्री को ऐसा समझना मानों वह पुरुष हो—त० वा०, —**अनुपपत्तिः** (स्त्री०) किसी विशेष अर्थ को निकालने या समझाने में कठिनाई,—**अनुबन्धि** भौतिक कुशलक्षेम से युक्त तत्त्विकालहितवाक्यं धर्म्यमर्थानुबन्धि च —रा० ५।५११।२१,—**अभिधानम्** अभीष्ट अर्थ का प्रकट करना त० वा० ३।१।२।५,—**अभिधानम्** (वि०) जिसका नाम प्रयुक्त अर्थ से संबद्ध हो —**अर्थाभिधानं प्रयोजनसम्बद्धमभिधानं यस्य**, यथा पुरोडाशकपालमिति —मैं० सं० ४।१।२६ पर शा० भा०,—**आतुरः** जो लोभी होने के कारण सदैव धन एकत्र करने के लिए दुःखी रहता हो अर्थातुराणां न गुरुर्न बन्धुः,—**आशिन्** (वि०) जो उपादेय दिखाई दे (परन्तु वस्तुतः वैसा न हो),—**आश्रयम्** धनसंबंधी कठिनाई - **निर्वर्तयंजातकपार्थकार्थमभिन्तयित्वा**—रघु० ५।२१,—**इच्छिन्** (वि०) रुपये पैसे के विषय में बेईमान व्यक्ति,—**कोविद** (वि०) जो राजनीति के विषय में विशेषज्ञ हो, अतएव ही -उवाच रामो धर्मात्मा पुनरप्यर्थकोविदः—रा० ६।४।८, —**क्रिया** 1. सार्थक कार्य, अर्थात् जो कार्य सचमुच किया ही जाता है (विप० शब्दोक्त क्रिया)—असति शब्दोक्ते अर्थक्रिया भवति मैं० सं० १२।१।१२ पर शा० भा० 2. साभिप्राय क्रिया अर्थात् मुख्य कार्य, —**गतिः** अर्थ या प्रयोजन को समझ लेना, अर्थावगम, —**गुणाः** किसी उक्ति के अभिप्राय की खूबियाँ, —**गृहम्** कोश, खजाना—हरि०, **चिन्तम्** अर्थों पर आधारित एक अर्थालंकार,—**दर्शकः** अधिनियामक, —**दृश्** (स्त्री०) सत्यता तथा तथ्यों का ध्यान रखना —**क्षेमं त्रिलोकानुरूपार्थदृशं च यच्छत**—भाग० १०।८६। २१,—**द्वयविधानम्**, एँगी विधि जिसके दो अर्थ निकलते हों -विधाने चार्थद्वयविधाने दोषः—मैं० सं० १०।८।७० पर शा० भा०,—**पदम्** पाणिनि पर एक वार्तिक **सप्तम्यवस्त्यर्थपदं महार्थम्** —रा० ७।३६।४५, —**भावनम्** किसी विषय पर विचारविमर्श, —**लक्षण** (वि०) जैसा कि आवश्यकता या प्रयोजन के अनुसार निर्धारित हो (विप० शब्दलक्षण), **विद्या** सांसारिक पदार्थों का ज्ञान,- **विपत्तिः** उद्देश्य की विफलता **समीक्ष्यतामर्थविपत्तिमार्यताम्** रा० २।२१।४०, - **विप्रकर्षः** अभिप्रेत अर्थ को समझने में कठिनाई, —**विभावक** (वि०) धन का देखे वाला - **विप्रेम्यार्थविभावकः**—महा० ३।३३।८४,—**शालिन्** (वि०) धनी पुरुष, धनवान्, - **संग्रहः** लौगाक्षिभास्कर कृत मीमांसा के एक प्रकरण का नाम, - **सतत्वम्** सच्चाई, — कि पुनरत्रार्थसतत्वम्—पा० ७।३।७२ पर म० भा०, धन का उपार्जन करना 2. उद्देश्य में सफलता, **हानिः** (स्त्री०) धन का नाश, **हारिन्** (वि०) धन के चुराने वाला, जो धन चुराता है ।
अर्थात् (अ०) [अर्थ का अपादान में ए० व०] सच तो यह है कि, तत्त्वतः । सम०—**अधिगतम्** (अर्थादधिगतम्) संकेत द्वारा समझा हुआ, **कृतम्** सचमुच किया हुआ —न चार्थात्कृतं दोषकः प्रापयति सी० सू० ५।२।८ पर शा० भा० ।
अर्थ्य (वि०) [अर्थ+व्यत्] 1. सच्चा, वास्तविक अर्थ्य विज्ञापयतेव रा० ६।१२७।२५ 2. धन प्राप्त करने में चतुर- तमर्थमर्थशास्त्रज्ञाः प्राहुरर्थ्यां सुलक्षणम रा० ३।४३।३३ ।
अर्ध (वि०) [ऋध्+घिन्+अच्] आधा ।
अर्धः [ऋध्+घञ्] 1. वृद्धि 2. भाग, अंश, पक्ष । सम० —**असिः** एक धार की तलवार, छोटी तलवार —अर्धासिभिस्तथा खड्गैः—महा० ७।१३७।१५, **कर्णः** अर्धव्यास, **आधी चौड़ाई**, **चित्र** (वि०) अर्धपारदर्शी, एक प्रकार का अंशतः पारदर्शी पत्थर, **जीविका**, —ज्या, त्राण को एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलाने वाली लम्बरेखा,—**पञ्चक** (वि०) साढ़े चार, **प्राणम्** दो भागों का ऐसा संधान करना जैसा कि हृदय के दो टुकड़ों का - मूलाग्रे कीलकं गुदतरार्धप्राणमिति स्मृतम् - मान० १७।९९,—**मागधी** प्राचीन जैन ग्रन्थों में प्रयुक्त प्राकृत बोली, - **वायुः** आंशिक पक्षाघात, एकांगी लकवा,—**वृद्धिः** किसी राशि पर देय ब्याज का आधा भाग, **श्लोक** 1. पद्यांश 2. डेढ़ गो मैं सं० ८।२६७, **समस्या** श्लोक जिसका पूर्वार्ध एक व्यक्ति बोले, तथा उत्तरार्ध दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरा किया जाय - नैं० ४।१०१, **सहः** उल्लू ।
अर्ध्य (वि०) [अर्ध+यत्] अनुग्र, जो अभी पूरा किया जाना है—अर्धा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः—ऋ० १।१५६।१ ।
अर्पित (वि०) [ऋ+णिच्+क्त] 1. लगाया गया, जड़ा गया —द्रुमाणां विविधैः पुष्पैः परिस्तोमामिवार्पितम् —रा० ४।१।८, रघु० ८।८८ 2. उंडेली गई हस्तापितैर्नयनादारिभिरेव (जलाशयः) रघु० ९।७८ 3. परि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्तित, सौंपा गया—चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे - कु० ३।४२ 4. प्रति पूर्वक=वापिस सौंपा गया प्रत्यर्पित-न्यास इव - श० ।

अर्शः,—र्मस् [क+मन्] 1. आँख का एक रोग 2. कब्रिस्तान ।

अर्शः (ष० ब०) खंडहर, कब्रिस्तान ।

अर्शहाः (पुं०) [ऋ+वनिप्-अर्वन्+वह्+घञ्, न० ब०] घुड़सवार आगच्छन् गुरुत्तरगर्वमर्वाहः —शिव० २४।६४ ।

अर्वावतन (वि०) (अर्वाच्+तन) न पहुँचने वाला, पश्चवर्ती, प्रकृतिपुरुषयोरर्वावतनाभिमरूपाभी रूप निरूपणम्—भाग० ५।२।४ ।

अर्ह (वि०) [अर्ह्+अच्] योग्य समर्थ न स्वां कुमि दशग्रीव भस्मार्हतेजसा —रघु० ५।२२।२० ।

अर्हा [अर्ह्+घञ्+टाप्] सौंना निश्च० ।

अलबतकाङ्क (वि०) [अलक्त+अङ्क] अलक्ता से चिह्नित हैं अङ्क जिसके - अलक्तकाङ्कानि पदानि पादयो: —कु० ५ ।

अलक्षण (वि०) [न० त०] जो समझ में न आवे—सर्वं विष्णोर्संज्ञामात्राऽवयवाऽलक्षणा यथा भाग० १२।६।२९ ।

अलक्षण् (वि०) अशुभ लक्षणों से युक्त—अपसर्वं ग्रहाश्चक्रुलक्षमाणं दिवाकरम्—महा० ६।१०२।२१ ।

अलङ्कारसभ्यः [ष० स०] शृंगार कक्ष, वह स्थान जहाँ मन्दिर की मूर्तियों का शृंगार किया जाता है ।

अलमकः (पुं०) मेंढक, दे० 'अलिमक' ।

अलवण (वि०) [न० ब०] लवणरहित, बिना नमक की महा० १३।११४।१४ ।

अलसगामिनी (स्त्री०) मनोज्ञ गति से चलने वाली महिला ।

अलसिका (स्त्री०) अधिक बार मल त्यागने के कारण उत्पन्न आलस्य या थकान ।

अलाञ्छन (प्र) [न० ब०] निष्कलंक ।

अलातशान्तिः (स्त्री०) माण्डूक्यकारिकाएँ पर गौडपाद की टीका का चतुर्थ पाद ।

अलाबुवीणा (स्त्री०) तुम्बी के आकार की बनी वीणा ।

अलीकम् [अल्+वीकन्] चिन्ता, शोक—अलीकं मानसं त्वेकं रा० २।१९।६ ।

अलुप्तमहिमन् (वि०) [न० ब०] जिसकी अक्षुण्ण कीर्ति बनी हुई है ।

अलुप्तयशस् (वि०) [न० ब०] जिसकी ख्याति लुप्त नहीं हुई है, यशस्वी ।

अलोकव्रतम् [न० त०] आध्यात्मिक मुक्ति के लिए अभिप्रेत व्रत जैसे ब्रह्मचर्य पालन, (इस व्रत की भावना भौतिक सुखों के विरुद्ध है) अलक्ष्यलोकव्रतरक्षणं वने भाग० ८।३।७ ।

अलोमक, अलोमिक (वि०) [न० ब०] जिसके बाल न उगते हों, बिना बालों का ।

अलोलः (पुं) चौदह मात्राओं का एक छन्द ।

अल्प (वि०) [अल्+प] थोड़ा, मामूली, नगण्य (विप० महत्, गुरु) । सम०—अक्षतरम् वह शब्द जिसमें अपेक्षाकृत दूसरे शब्द से कम वर्ण या मात्राएँ हों - पा० २।२।३४, - गोधूमः एक प्रकार का गेहूँ जो जरा छोटा होता है,—नासिकः एक छोटी दहलीज या दालान, मान० ३४।१०६,- पुण्य (वि०) जिसमें धार्मिक मूल्य नगण्य हो,—सत्त्व (वि०) दुर्बल, बलहीन, - सार (वि०) जिसका फल नहीं के बराबर हो ।

अल्लकम् (नपुं०) धनिये का बीज ।

अल्लकी (स्त्री०) धनिये का पौधा ।

अवतरम् (अ०) और आगे, आगे दूर--ऋ० १।१२९।६ ।

अवकीलकः [अव+कील+कन्] अच्छर, खूँटी जो अन्दर ठोकी गई है—क्षत्रियासावकीलकम्-महा० १८।४५।३ ।

अवकुत (वि०) [अव+कु+क्त] नीचे की ओर बढ़ा हुआ, नीचे की ओर झुका हुआ ।

अवकीर्ण (वि०) [अवकृ+क्त] अल्पवस्त्रित, अपर्याप्तवस्त्रापेक्ष —दृष्ट्वा तथावकीर्णं तु रामदुम् महा० ९।४१।१६ ।

अवगल् (भ्वा० पर०) नीचे गिर जाना, फिसल जाना सौवर्णवलयभ्रवागलत्करणात् शि० ८।३४ ।

अवग्रहौ (पुं०) [न० ब०] दुराग्रही, हठी-- कर्मण्यवधियो भागवन्दिदाम:- भाग० ४।७।२७ ।

अवघाटकम् (नपुं०) एक प्रकार की माला जो आकार में छोटी होती चली जाय—कौ०, अ० २।११ ।

अवघात (वि०) दे० 'अवहत' के नीचे ।

अवघुष्ट (वि०) [अव+घुष्+क्त] घोषणा किया गया, अवमानना पूर्वक मुनादी की गई ।

अवघ्रात (वि०) [अवघ्रा+क्त] सूँघा हुआ, चूमा गया —अवघ्रातश्च मूर्धनि रा० २।२०।१ ।

अवघ्राषणम् [अव+घ्रा+णिच्+ल्युट्] सुंघवाना ।

अवचरः [अव+चर+अच्] साईस--तुरंगावचरं स बोधयित्वा--दश० च० ५।६८ ।

अवचि (स्त्री० पर०) परम्परा, चुनना, छाँटना ।

अवचिन्तोक्षा [अव+चि+सन्+टाप्] संग्रह करने की इच्छा प्रमदया कुसुमावचिंक्षया शि० ६।१० ।

अवचूरिः, अवचूरिका वृत्ति, टीका, भाष्य, टिप्पणी ।

अवच्छटा विनोदपरक चातुर्य, लीलायुक्त गति—अवच्छटा कापि कटाक्षस्य नै० १६।६४ ।

अवच्छेद्य (वि०) [अव+छिद्+णिच्+यत्] अलग किये जाने के योग्य, पृथक् किये जाने के लायक ।

अवतानः [अव+तनु+घञ्] तन्तु, सूत—वितावतानतः महा० २।२४।२६ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवतृ (भ्वा० पर०) पार करना—त्वयाऽवतीर्णोऽणं उताप्तकामः—भाग० ३।२४।३४।

अवतरणअङ्गलक (नपुं०) हार्दिक स्वागत।

अवतरणिका (स्त्री०) संक्षिप्त विवरण।

अवतारहस्यम् (नपुं०) अवतार लेने का भेद।

अवतारोद्देशः [अवतार+उद्देशः] अवतार लेने का प्रयोजन।

अवतारणम् [अव+तृ+णिच्+ल्युट्] उतार, अवतार —पौर्यं पौलोममास्तीकमादिरेशावतारणम्—महा० १।२।४२।

अवद्यत् (वि०) [अवदो+शतृ] तोड़ने वाला, शतशो विशिखानवद्यते—कि० १५।४८।

अवधिः [अव+धा+कि] शासनादेश, अधिदेश, - यथं तु भरतदेशाऽवधिं कृत्वा हरीश्वरः—रा० ४।८।२५। सम० —ज्ञानम् जैन शब्दावली में ज्ञान की तीसरी अवस्था जिसमें इन्द्रियातीत विषयों का ज्ञान भी मनुष्य को हो जाता है।

अवहित (वि०) (वेद) [अव+धा+क्त] मग्न, पतित, —त्रितः कूपेऽवहितो देवान् हवत—ऋ० १।१०५।१७।

अवधारणम् [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] (नाम को) उच्चारण करना—न त्वां देवीमहं मन्ये राज्ञः संज्ञावधारणात् रा० ५।३३।१०।

अवधृत (वि०) [अव+धृ+क्त] 1. समझा हुआ, जाना हुआ 2. (व० व०) इन्द्रियाँ (सांख्य में)।

अवधूर्व (भ्वा० पर०) तिरस्कार करना—सोऽवधावतः सुरैरेवम्—भाग० ३।१२।६।

अवध्यानम् [अव+धृ+ल्युट्] तिरस्कार—यथा तरेसदवध्यानमहः—भाग० ५।१०।२४।

अवनिः (स्त्री०) [अव्+अनि] 1. भूमि, पृथ्वी 2. नदी। सम० —जः मंगल ग्रह,—जा सीता, - भृत् राजा, पहाड़,—सारा केले का पौधा।

अवनिष्ठीव् (दिवा० पर०) किसी पर थूकना अवनिष्ठीवतो दर्पाद् द्वावोष्ठौ छेदयेन्नृपः मनु० ८।२८२।

अवनेय (वि०) [अव+नी+यत्] अनुसरण कराये जाने योग्य - अरण्येमुनिभिर्जुष्टे अवनेया भविष्यसि—रा० ७।४६।१९।

अवन्तिसुन्दरीकथा (स्त्री०) एक रचना जो दण्डी कवि की कृति बताई जाती है।

अवन्तिका (स्त्री०) 1. वर्तमान उज्जैन नगर 2. उज्जैन वासियों की बोली।

अवन्ध्यकोप (त्रि०) [न० ब०] जिसका क्रोध प्रभाव रखने वाला है अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदाम् कि० १।

अवपतित (वि०) [अवपत्+क्त] नीचे गिरा हुआ फलीवृंत्ताऽवपतितैः रा० २।२८।१२।

अवपानम् (वेद०) [अवपा+ल्युट्] पीना मापस्थानं महिषेवावपानात्—ऋ० १०।१०६।२।

अवपोथिका (स्त्री०) (पत्थर आदि कोई) वस्तु जो नगर की दीवार से नगर पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं पर फेंकी जाय महा०।

अवप्लु (भ्वा० आ०) नीचे छलांग लगानी—स्वनियमयमपहाय मत्प्रतिज्ञां ऋतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः भाग० १।९।३७।

अवबोधित (वि०) [अवबुध्+णिच्+क्त] जगाया हुआ —रामो रामाऽवबोधितः रघु० १२।२३।

अवभञ्जः (वि०) [अवभञ्ज्+घञ्] टूटा हुआ, जिसकी हड्डी टूट गयी हो,—क्षः 1. तोड़ देना 2. (नाक या कान का) बींधना।

अवमर्दः [अव+मृद्+घञ्] 1. संघर्ष, हलचल—न त्वां समासाद्य रणावमर्दे - रा० ५।४८।६ 2. एक प्रकार का ग्रहण।

अवमर्दिन् (वि०) [अवमर्द+णिनि] हत्यारा,—महात्मनस्तस्य रणावमर्दिनः - रघु० ५।२७।६५।

अवमार्शित (वि०) [अवमृश्+णिच्+क्त] 1. बिगड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ—इति दक्षः कविर्यज्ञं भद्रख्याववमार्शितम्—भाग० ४।७।४८।

अवमूत्रयत् (वि०) [अवमूत्र+शतृ] मूत्र करके भूमि को गन्दा करने वाला - अवमूत्रयतो मेढ्रम् - मनु० ८।२८२।

अवमेहः [अवमिह्+घञ्] विष्ठा, मल कामं प्रयाहि जहि विश्रवसोऽवमेहम्—भाग० ९।१०।१५।

अवयवप्रसिद्धिः (स्त्री०) (शब्द के) खण्डों का निर्देशन, व्युत्पत्तिपरक सार्थकता - न चावयवप्रसिद्धया समुदायप्रसिद्धिर्बाध्यते—मी० सू० ६।८।४१ पर शा० भा०।

अवयुत्यनुवादः (पुं०) किसी वस्तु का अंशों में उल्लेख करना एवं वृणीत इत्यवयुत्यनुवादोऽयं त्र्यणामेव मैं० सं० ६।१।४३ पर शा० भा०।

अवरशनो [अवरश्+ल्युट्+ङीप्] घोड़े को बाँधने की रस्सी—हरि०।

अवरोह [अवर+च्वि+कृ-तना० उ०] निकट लाना अवादवरीकृतदूरदृक्पथः नै० १६।२६।

अवरुदित (वि०) [अवरुद्+क्त] जो आँसुओं के गिरने से अपवित्र हो गया हो अवक्षुताऽवरुदितं तथा श्राद्धे च वर्जयेत् महा० १३।९१।४१।

अवरुद्ध (वि०) [अवरुध्+क्त] अत्यन्त व्याकुल—प्रहर्षणावरुद्धा सा रा० ६।११३।१४।

अवरोधः [अवरुध्+घञ्] बाधा करने वाली शक्ति —प्रजानन्दावरोधेन गृहेषु लोक नियमयत् - भाग० ५।४।१४। सम०—गृहः अन्तःपुर,—जनः अन्तःपुर की महिलाएँ।

अवरोपितः [अवरूप्+णिच्+क्त] 1. सिंहासन से उतारा हुआ, निष्कासित—पुराद् यादिना राम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्यात्स्वादवरोपितः—रा० ४।८।३२ 2. घटाया हुआ, अनीकृत इतरेत्रागमाद्धर्मः पादशस्त्ववरोपितः—मनु० १।८२।

अवर्णसंयोगः [न० स०] 1. दो भिन्न ध्वनियों का मेल 2. किसी भी वर्ण से संबंध का अभाव।

अवर्तमान (वि०) [न० ब०] जो चालू समय से कोई सम्बन्ध न रखे।

अवलम्बित (वि०) [अवलम्ब् + क्त] चिपका हुआ, पकड़ा हुआ, आश्रित—समभिभृत्य म्लादवलम्बितः —शि० ६।१०।

अवलेह्य (वि०) [अवलिह् + ण्यत्] चाटने के योग्य।

अवलेखा [अवलिख् + अ, स्त्रियां टाप्] रेखा खींचना, रेखाचित्र बनाना, रेखाकृति।

अवलोकलयः [न० स०] दृष्टि, कटाक्ष।

अवशप्त (वि०) [अवशप् + क्त] अभिशप्त—महा० १३।

अवशु (क्या० पर०) 1. टूटना 2. चारों ओर बिखर जाना—स्त तस्या महिमा दृष्ट्वा समस्तादवशीर्यत —रा० १।३७।१३।

अवशीर्ण (वि०) [अव + शृ + क्त] टूटा हुआ, चूर-चूर किया हुआ।

अवषट्कार (वि०) जिसमें 'वषट्' शब्द का उच्चारण न हो, जिसमें वेद के सांकेतिक मन्त्रों के उच्चारण की प्रक्रिया न हो।

अवसन्न (वि०) [अवसद् + क्त] बैठा हुआ, उपरत, मृत तत्तस्त्रेष्ववसन्नेषु सेनापतिषु पञ्चसु रा० ५।४६।३८।

अवसरप्रतीक्षिन् (वि०) [त० स०] जो किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो।

अवसरान्वेषिन् (वि०) [त० स०] जो किसी अवसर की ताक में हो।

अवसायः [अव + सो + घञ्] जो समाप्त करता है—अवसायो मदिष्यामि दुःखस्यास्य कदा त्वहम् भट्टि०६।८१।

अवसायक (वि०) [अव + सो + ण्वुल्] विनाशात्मक—अवसादयिणः शब्दाः सावयैरवसायिः—कैकि० १५।३६।

अवस्कन्दः [अव + स्कन्द् + घञ्] (विधि में) दोषारोपण, इलजाम।

अवस्कन्न (वि०) [अव + स्कन्द् + क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ 2. आक्रान्त।

अवस्कारः [अव + स्कृ + घञ्] हाथी के चेहरे का आगे को और उभरा हुआ भाग मात० ५।८।१२।

अवस्थानम् [अव + स्था + ल्युट्] 1. सहारा योऽवस्थानमनुग्रहः भाग० ३।२७।१६ 2. स्थैर्य, स्थिरता—अलब्धावस्थानः परिक्रामति नाग० ५।२६।१७।

अवस्नात (वि०) [अव + स्ना + क्त] जिसमें किसी ने स्नानकर लिया है, (जल)।

अवस्फूर्ज् (म्वा० पर०) खुरटिं भरना, 'खुर्राटा' करना —महा० ६।७।

अवहारः [अव + हृ + घञ्] जो उड़ा कर ले जाता है न जीवस्यावहारो मां करोति सुखिनं यमः भट्टि० ६।८१।

अवह्वे (म्वा० पर०) (वेद०) पुकारना, बुलाना विशो अद्य मरुतामवह्वये ऋ० ५।५६।१।

अवाछिद् (रुधा० पर०) फाड़ देना, छिन्न-भिन्न कर देना।

अवाञ्चित (वि०) [अवाञ्च् + क्त] नीचे की ओर झुका हुआ।

अवाचीन (वि०) [अवाच् + ख] 1. जो नीची निगाह से देखता है दुर्योधनमवाचीनं राज्यकामुकमातुरम् महा० ८।८।१७ 2. नीच, पापी—बुद्धि तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति महा० ५।३४।८१।

अवातस (वि०) जो वानप्रस्थ न हो —सु०।

अवान्तरवाक्यम् (नपुं०) मूल कथन के कुछ अंशों को त्याग कर, चयन की हुई उक्ति न च महावाक्ये अवान्तरवाक्यं प्रमाणं भवति मे० सं० ६।४।२५ पर शा० भा०।

अवारित (वि०) [अ + वृ + णिच् + क्त] जिसे रोका न गया हो,—तम् (अ०) बिना किसी रुकावट के। सम०—कवाटद्वार (वि०) नहीं रोका हुआ अर्थात् खुला हुआ है द्वार जिसके लिए।

अवार्ह्य (वि०) [अव + वह् + णिच् + ण्यत्] जो ले जाये जाने के योग्य न हो।

अविकच (वि०) [न० ब०] जो खिला न हो, अर्थात् बन्द (कमल)।

अविकारिन् (वि०) [न + विकार + णिनि] 1. जिसमें परिवर्तन न हो 2. स्वामिभक्त —स्थाने युद्धे च कुशलानभीरुत्वविकारिणः मनु० ७।१९०।

अविकार्य (वि०) [न० त०] अपरिवर्त्य अविकार्योऽयमुच्यते भग० २।२५।

अविक्रियात्मक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वभाव अपरिवर्त्य हो, जिसकी प्रकृति न बदले।

अविक्षोभ्य (वि०) [न० त०] 1. जिसमें कोई हलचल न हो 2. जो जीते न जा सकें अविक्षोभ्यगणि रक्षांसि - रा० ६।५।१७।

अविलम्बित (वि०) [न० त०] अविभक्त, अविरल।

अविगान (क्रि०) [न० ब०] अपस्वर रहित (गायन)।

अविगीत (वि०) [न० त०] विकल करने वाले स्वर जिस में न हों।

अविचक्षण (वि०) [न० त०] 1. अकुशल, जो चतुर न हो, 2. अनजान, अज्ञानी।

अविचिन्त्य (वि०) [न + वि + चिन्त् + ण्यत्] जो समझा न जा सके, जो समझ से बाहर हो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अविच्छिन्न (व०) [न० त०] साधारण, सामान्य न विशेषेण गन्तव्यमविच्छिन्नेन वा पुनः—महा० १२।१५२।२२।

अवितर्कित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, जिसके लिए पहले कभी तर्कना न की हो।

अवितर्क्य (वि०) [न० त०] जिसका अनुमान न लगाया जा सके।

अवितृ (वि०) [अव्+णिच्+तृच्] प्रेरक, —यातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रम् मै० ना० २०।३।

अविद (अ०) विस्मयादिद्योतक अव्यय—अर्थ है हन्त, ओह —मुच्छ० १।

अविद् (वि०) [न+विद्+क्विप्] अनजान, अज्ञानी —अविदो भूरितमसो भाग० ३।१०।२०।

अविदूषक (वि०) [न० त०] निरीह, भोलाभाला —अहिंसां यापि पुरुषं न हिंस्यूरविदूषकम् —भा० १।७।११।

अविदूसम् (नपु०) [अवि+दूस पा० ३।२।३६ वा०] भेड़ का दूध।

अविद्धनस्, —नास् (वि०) [न० ब०] (वह बैल) जिसके नाक में नकेल न डाली गई हो।

अविधायक (वि०) [न+विधा+ण्वुल्] जिसमें विधि या आदेश की शक्ति न हो —नहि विधायकाविधायकयोरेकवाक्यत्वं भवति —मी० सू० १०।८।२० पर शा० भा०।

अविनेय (वि०) [न० त०] 1. जो नियंत्रण में न आ सके 2. जो शिष्य न बन सके।

अविनाशिन् (वि०) [न० त०] जिसका कभी नाश न हो, आत्मा।

अविनिर्णयः [न+विनिर्+नी+अच्] अनिर्णय, निर्णय का अभाव।

अविनीत (वि०) निष्कपट, निर्दोष।

अविपर्ययः [न० त०] विरोध का अभाव, संशय का अभाव, असन्दिग्ध स्थिति अविपर्ययाद्विशुद्धम्—सां० का० ६४।

अविप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [न०त०] मतभिन्नता का अभाव —शब्दस्पर्शरूपरसगन्धेष्वविप्रपत्तिः इन्द्रियजयः—कौ० अ० १।६।

अविप्रवासः [न० त०] एकत्र रहना, घनिष्ठ मिलन।

अविप्रहृत (वि०) [न० त०] (वह जंगल या मार्ग) जहाँ किसी के पैर न पड़े हों।

अविप्लुत (वि०) [न० त०] अन्यूनीकृत, अविकृत।

अविभाजित (वि०) [न० त०] जो हिसाब किताब में न लिया गया हो।

अविरल (वि०) [न० त०] विशाल, स्थूलकाय —अविरलवपुषः सुरेन्द्रगोपः किं० १०।२७।

अविरविकन्यायः (पुं०) व्याकरण का एक न्याय जिसके आधार पर 'अवि' को 'अविक' हो जाता है।

अविरहित (वि०) [न० त०] अवियुक्त, जो कभी पृथक् न किया गया हो—अविरहितमलेकेनाङ्गभाजा फलेन किं० ५।५२।

अविलक्ष्य (वि०) [न० त०] गुप्त, जिसका मुकाबला न किया जा सके, जिसको रोका न जा सके—अविलक्ष्यमस्त्रमपरम् किं० ६।४०।

अविवक्षितवचनता (स्त्री०) उन शब्दों की स्थिति जो अपना शाब्दिक अर्थ प्रकट करने के लिए अभिप्रेत नहीं होते।

अविवक्षितवाच्य (वि०) [न० ब०] ध्वनि काव्य का एक भेद जिसमें शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं है।

अविवेचक (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु के विवेचन की बुद्धि नहीं रखता।

अविवेचना [नञ+विच्+युच्+टाप्] विवेक बुद्धि का अभाव।

अविशयः [अव+शी+अच्] संदेह का अभाव यदि वा अविशये नियमः मी० सू० ८।३।३१।

अविशेषवचन (वि०) वह कथन जिसमें कोई विशेष विवरण न दिया गया हो—अविशेषितवचनः शब्दो न विशेषेऽवस्थापितो भविष्यति—मी० सू० ४।३।१५।

अविश्रम्भः [न० त०] विश्वास का अभाव, अविश्वास, अप्रत्यय।

अविश्वस्त (वि०) [न० ब०] निरवरोध, अनियन्त्रित, जिस पर कोई प्रतिबन्ध न हो तुभ्यं नमस्तेस्त्वविषक्तदृष्टये भाग० १०।४०।१२, अविषक्तवेषः कि० १३।२४।

अविसह्य (वि०) [न० ब०] 1. जिसका निर्णय करना कठिन हो—सोमायामविषह्यायाम्—मनु० ८।२६५ 2. जो सहा न जा सके अविसह्यव्यसनेन घूर्णिताम् —कि० ४।३० 3. जहाँ पर पहुँचना कठिन हो —चक्षुषामविषह्याम् महा० १४।२०।१३।

अविसंवादः [न० त०] विरोध न प्रकट करना, अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन करना।

अविहस्त (वि०) [न० ब०] अनुद्विग्न, साहसी अथ भृशमविहस्तस्तत्र कान्तारगर्भे—शिव० ३६।

अविहा (अ०) हन्त! अहो!।

अविहित (वि०) [न+वि+धा+क्त] जो नियत न किया गया हो, जिसका विधान न किया गया हो।

अवी (स्त्री०) [अवस्थात्मानं लज्जया अव्+ई] रजस्वला स्त्री—उणादि० ३।१५८।

अवीचिसंज्ञोपधः [अवीचि+सम्+ज्ञप्+णिच्+ल्युट्] समाधि का विशेष प्रकार।

अवृष्टिसंरम्भ (वि०) [न० ब०] बारिश के तैयारी किये बिना आरम्भ करने वाला—अवृष्टिसंरम्भमिवाम्बुवाहम्—कु०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवेक्षमाण (वि०) [अव+ईक्ष्+शानच्] सम्मान देखने वाला अवेक्षमाणश्च महीं सर्वतोमन्धवेक्षत—भा० ५।

अवेदविद् (नि०) [अवेद+विद्+क्विप्] वेदों का न जानने वाला।

अवेदविहित (वि०) [अवेद+वि+धा+क्त] जिसका वेद में विधान न हो।

अवेदना [न+विद्+युच्] पीड़ा का अभाव।

सर्वयाएयम् (नपुं०) लज्जाशून्य, लज्जा का भावना रखना।

अवैशेषिक (वि०) [न+विशेष+ठक्] जो किसी विशेष परिणाम को दर्शाने वाला न हो, जिसका कोई फल न निकले—अवैशेषिकफलो हेतुः—मी० सू० ११।१।१२ पर शा० भा०।

अव्यङ्ग्य (वि०) [न० व०] 1. निरपराध 2. जिसमें ध्वनि या अव्यञ्जना का अभाव हो (काव्य में)।

अव्यतिरेकः [न० त०] अपार्थक्य, निरपवाद, (वि०) [न० व०] जो भूलने वाला न हो, जो कोई त्रुटि न करे।

अव्यपदेश्य (वि०) [अव्यपदिश्+ण्यत्] जिसकी परिभाषा न की जा सके।

अव्यर्थोह्य (वि०) [अव्यर्थ]+ऊह्+ण्यत्] जिसको अलंघ्य न जा सके, जिससे इंकार न किया जा सके।

अव्ययम् [न० त०] कुशलक्षेम, हित, कल्याण—युधिष्ठिर-मयाप्रष्टश्चसर्वस्य सुहृदोऽव्ययम् —भाग० १०।८३।१।

अव्यवच्छिन्न (वि०) [अव्यव+छिद्+क्त] न टूटा हुआ, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा हो, निर्बाध।

अव्यवसायः [अव्यव+सो+घञ्] निर्णायक शक्ति या संकल्प का अभाव।

अव्यवसायिन् (वि०) [अव्यवसा+णिनि] आलसी, जो निर्णायक बुद्धि से रहित हैं—व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह व्यवसायिनाम् भग० २।४१।

अव्यवस्थितव्याघ्रः (पुं०) तृ० त० 'अविरविकन्यायः', यद्यपि 'अवि' का ही 'अविका' बनता है, परन्तु 'अविका' से 'अविका' (भेड़ी का मांस) जैसा कोई दूसरा शब्द 'अवि' से नहीं बनता।

अव्यवस्तेः [न+वि+आ+स्था+क्तिन्] अनियमितता या आरम्भिक कठिनाई का अभाव—अव्यवस्तेरो भवि-ष्यन्तः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम् रघु० १०।६।

अव्याजकरुणा (स्त्री०) निष्कपट दया, स्वाभाविक सहानु-भूति अव्याजकरुणार्द्रैः रलि०।

अव्याहृतम् (नपुं०) [अव्या हृ+क्त] मूक रहना, न बोलना—अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहुः—महा० ५।३६।१२।

अशितम् (नपुं०) [अश्+क्त] 1. जो खाया जाय, खाद्य पदार्थ प्राहुरन्नक्षणं विप्रास्तदशितं नाशितं च यत्—भाग० ९।४।४० 2. वह स्थान जहाँ पर कोई खाया जाता है—अधिकरणवाचिनश्च—पा० २।३।६८।

अशकुनः, नम् [न० त०] अशुभ शकुन, बुरा शकुन कल-यन्नपि सत्यप्रीतस्तेऽशकुनेन स्खलितः किलेतरोऽपि शि० ९।८३।

अशठ (वि०) [न+शठ्+अच्] जो ढीठ न हो, आज्ञा-कारी—अजिह्मस्याशठस्य च दासवर्गस्य भागधेयम् —मनु० ३।२४६, इदं ते नातपस्काय नाशठाय भग०।

अशब्दार्थः (अशब्द+अर्थः) 1. शब्द द्वारा अनभिप्रेत अर्थ 2. वह अर्थ जो प्रत्यक्ष रूप से वाक्य से प्रतीत (अभि-हित) न होता हो अशब्दार्थोऽपि हि प्रतीयते—मै० सं० ४।१।१४ पर शा० भा०।

अशब्द (वि०) [न+शब्द+अण्] जो शब्दों से प्रतीत न होता हो मै० सं० ५।१।५।

अशिथिल (वि०) [न० व०] 1. जो ढीला न हो, कसा हुआ 2. प्रभावशाली।

अशिशिर (वि०) [न० व०] गर्म। समः करः, —किरणः, रश्मिः सूर्य—नीतोऽयं मुहूर्तमशिशिरर-श्मेरस्तैः—कि० ५।३१।

अशीतल (वि०) [न० व०] गर्म—दधत्युरोजद्वयमुर्वशीत-लम् —शि० ९।८६।

अशीतिद्वयम् (नपुं०) नवासी प्रश्न जो कृष्णयजुर्वेद के सात काण्डों में विभक्त है।

अशुभसंसनम् [अशुभ+शंस्+ल्युट्] बुरा समाचार देना।

अशुभोदयः [अशुभ+उदयः] [अशुभ+उद्+इ+अच्] अशुभ सूचक शकुन।

अशुक्लजा (स्त्री०) एक प्रकार का चावल।

अशोकजः (वि०) जो दुःख या शोक से पैदा न हुआ हो, हर्ष या खुशी से उत्पन्न—अशोकजैः अश्रुबिन्दुभिः —रा० ६।१२५।४२।

अशोभनम् [न+शुभ्+ल्युट्] अपराध, त्रुटि, दोष—रामेण यदि ते पापे किञ्चित्कृतमशोभनम्—रा० २।३८।७।

अश्मवर्षः [ष० त०] 1. ओले पड़ना 2. (शत्रु पर) पत्थर फेंकना।

अश्मगन्धम् [न—धर्य—क्त] अगुरु का एक प्रकार जो जमा हुआ न हो—कौ० अ० २।११।

अश्री [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत।

अश्रीकरम् (नपुं०) [अश्री+कृ+अच्] अशुभ।

अश्वः [अश्नुते अध्वानं व्याप्नोति महाशनो वा भवति अश्+क्वन्] घोड़ा। समः घासकाध्यक्षः (पुं०) घोड़ों के लिए घास का संभरण करने वाला संविदाकार, चर्या घोड़े की देख-रेख करने वाला तस्याश्वचर्यां कार्त्स्न्येन दृढधन्वा महा-रथः (अंशुमानकरोत्) रा० १।३९।६७, जीवनः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चना,—**अनुरा अस्तबल**, - **रिपुः भैंसा**—भा० प्र०, -- **सप्तमंत्र** घोड़ों की भांति आचरण करने वाला · अश्वसदृशमणी हि मनुष्याः—कौ० अ० २।९, **सूत्रम्** 'घोड़ों को पालने' के विषय पर एक पुस्तक।

अश्वतरीरथः [रथतेऽनेन- रम्+कथन्] खच्चरी द्वारा खींचा जाने वाला रथ।

अश्वत्थः [न श्वः तिष्ठति इति अश्व+स्था+क]पीपल का पेड़। सम०—**नारायणः** भगवान् विष्णु जिनकी पीपल के वृक्ष के रूप में पूजा की जाती है,—**पूजा** 'सभी देवता पीपल में रहते हैं' ऐसा समझ उसकी पूजा करना—मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे, अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः, -- **प्रदक्षिणम्** धार्मिक संस्क्रिया के रूप में पीपल की परिक्रमा करना।

अश्वदृश (वि०) [न+षट्+अक्षि] दे० 'अषडक्षीण'। 'ईन' प्रत्यय स्वार्थ को ही प्रकट करता है। अतः 'अषडक्ष' और 'अषडक्षीण' दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है।

अश्वदृक्षीण (वि०) [न+षट्+अक्षि+ईन] जो छः आँखों से न देखा गया, अर्थात् केवल दो ही व्यक्तियों के द्वारा निर्धारित तथा उन दो को ही ज्ञात (जिसमें तीसरा व्यक्ति सम्मिलित न हो),— **गुप्त** (नपुं०) रहस्य, गुप्त बात।

अष्टन् (वि०) [अश् व्याप्तौ कनिन् तुट् च] आठ, (समस्त शब्दों में 'अष्टन्' के न का लोप हो जाता है)। सम० **अङ्गम्** (अष्टांग) 1. आयुर्वेद पद्धति जिसमें निम्नांकित आठ अंग होते हैं - द्रव्याभिधान, गदनिश्चय, कायसौख्य, शल्यकर्म, भूतनिग्रह, विषनिग्रह, बालवंद्य और रसायन 2. बुद्धि की आठ क्रियायें - शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारणा, चिन्तन, ऊहापोह, अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान 3. योगाभ्यास के आठ अंग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि,—**अधिकाराः** सामाजिक व्यवस्था में शक्ति की आठ स्थितियाँ—अन्न, स्थल, ग्राम, कुल, लेखन, ब्रह्मासन, दण्डनिनियोग और पौरोहित्य, -- **अध्यायी** (अष्टाध्यायी) 1. पाणिनि का व्याकरण 2. शतपथ ब्राह्मण, **अन्नानि** भोजन के आठ प्रकार - भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य, खाद्य, वर्ज्य, निषेय, और भक्ष्य,—**आपाद्य** (वि०) आठगुणा अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्बिषम् मनु० ८।३३७, - **उपद्वीपानि** छोटे-छोटे आठ द्वीप--स्वर्णप्रस्थ, चन्द्राशुक्ल, आवर्तन, रमणक, मन्दरहरिण, पाञ्चजन्य, सिंहल और लङ्का, **कुलाचलाः** आठ मुख्य पर्वत--मेरु, निषध, गन्धमादन, हेमकूट और हिमालय, - **मर्यादागिरयः** आठ मुख्य पहाड़, दे० ऊपर,—**गन्धाः** मन्दिरों में प्रस्तर मूर्ति की स्थापना के लिए लेई या गारा बनाने में प्रयुक्त आठ सुगन्धित द्रव्य-चन्दन, अगरु, देवदार, कोलिजन, कुसुम, चौलज, जटामांसी और गोरोचन,

ताल्यम् मूर्तिकला में प्रयुक्त होने वाला गज जिसकी लम्बाई उस मूर्ति के समान होती है जो अपने मुख से आठ गुणा होती है,—**देहाः** स्थूल और सूक्ष्म शरीर जो गिनती में आठ होते हैं - स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, विराट्, हिरण्य, अव्याकृत और मूलप्रकृति, —**नागाः** 1. आठ साँप—अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, शंख, कुलिक, पद्म और महापद्म 2. आठ दिग्गज—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वभौम और सुप्रतीक, - **पक्ष** (वि०) (ऐसा कमरा या घर जिसमें) एक ही ओर आठ स्तम्भ लगे हुए हों, **प्रकृतयः** पांच महाभूत (अग्नि, जल, पृथ्वी, आकाश, वायु), मन, बुद्धि और अहंकार, —**प्रधानाः** राज्य के आठ प्रधान अधिकारी--चैद्य, उपाध्याय, सचिव, मन्त्री, प्रतिनिधि, राजाध्यक्ष, प्रधान और अमात्य, - **भैरवाः** शिव के आठ गण असिताङ्ग, संहार, रुरु, काल, क्रोध, ताम्रचूड, चन्द्रचूड, और महाभैरव, **भोगाः** सुखमय जीवन के आठ तत्त्व, --अन्न, उदक, ताम्बूल, पुष्प, चन्दन, वसन, शय्या और अलंकार,—**मङ्गलधृतम्** आयुर्वेद की आठ औषधियाँ मिला कर तैयार हुआ घी -- **प्रश्नः** ज्योतिष में प्रश्न विचार प्रणाली के लिए अपनाया गया एक ढंग,--**मधु** आठ प्रकार का शहद-माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौतिक, छात्रक, अर्घ्य, औद्दाल और दाल, **महारसाः** आयुर्वेद पद्धति के आठ रस --वैक्रान्तमणि, हिंगुल, पारा, हलाहल, कान्तलोह, अभ्रक, स्वर्णमाक्षी और रौप्यमाक्षी, **रोगाः** आयुर्वेद में वर्णित आठ प्रधान रोग--वातव्याधि, अश्मरी, कुष्ठ, मेह, उदक, भगन्दर, अर्श और संग्रहणी, —**मातृकाः** पराशक्ति के आठ अवतार- ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, कौबेरी और चामुण्डा, **मूर्तयः** आठ प्रकार की मूर्तियाँ-धातुमयी, दारुमयी, लोही, लेप्या, लेख्या, सैकती, मनोमयी और मणिमयी, **योगिन्यः** आठ योगिनियाँ जो पार्वती की सहेलियाँ थीं-मङ्गला, पिङ्गला, धन्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा, - **वर्णाः** एक प्रकार का रेखाचित्र जो किसी विशेष समय पर ग्रहों की यथार्थ स्थिति दर्शाता है,— **सिद्धयः** दे० अष्टमहासिद्धयः--अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता और प्राकाम्य।

अष्टमराशिः [ष० त०] किसी व्यक्ति के लक्षत्र की राशि से आठवीं राशि जो प्रायः अशुभ मानी जाती है।

अष्टाश्व (वि०) [ब० स०] (गाड़ी) जिसमें आठ बैल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जुते हों, अष्टतः कपाले हविषि, गवि च युक्ते—पा० ६।३।४६ वा०।

अष्टागवम् [अष्टानां गवां समाहारः] आठ गौवों का समूह।

अष्टावश (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह। सम० —तत्त्वानि अठारह प्रधान तत्त्व जिनमें महत्, अहङ्कार, मन, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ गिनी जाती हैं, पाठ्यम् अठारह प्रकार का अंश है—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुकुलत्थकाः, माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः दयामसर्षपाः। गदेक्षुकाण्डनीवारा ओडवयोऽथ सतीनकाः, षण्डकाश्चैव काश्चैव धान्यान्यष्टादशैव तु, पर्वाणि महाभारत के अठारह खण्ड आदि, सभा, वन, विराट्, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासि, मौसल, महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहण।

अस् (दिवा० परं०) युद्ध करना युयोध बलिरिन्द्रेण तारकेण गुहोऽस्यत -भाग० ८।१०।२८।

अस्तः [अस्+आधारे क्त, अस्यन्ते सूर्यं किरणा यत्र] 1. छिपना, पश्चिमाद्रि 2. सूर्य का छिपना। सम० —नियम (वि०) अस्ताचल के पीछे छिपा हुआ —विश्वम्भरायस्तनिगमसूर्यम्—रघु० १६।११,—मस्तकः —शिखरः, अस्ताचल की चोटी, समयः सूर्य छिपने का समय, मृत्यु का समय—करजालमस्तसमयेऽपि सताम्—शि० ९।५।

अस्तिक्षीर (वि०) [अस्तिक्षीरं यस्य—पा० २।२।२४ वा०] जिसके पास दूध हो, दूध रखने वाला।

असङ्कालः [न+सम्+कल्+घञ्+क्त] अधिमास, मलमास, लौंद का महीना।

असंयाज्य (वि०) [न+सं+यज्+ण्यत्] जिसके साथ मिलकर किसी को यज्ञ करने की अनुमति न हो —मनु०।

असंयोगः [न+सम्+युज्+घञ्] 1. संबंध का अभाव 2. जो संयुक्त अक्षर न हो पा० १।२।५।

असंरम्भः [न+सम्+रभ्+घञ्] निर्भयता, निडरता —महा० १४।३८।२।

असंरोधः [न+सम्+रुध्+घञ्] अनाघात।

असंवर (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके, दुर्निवार —असंवरैः शरवरैरिवाकिरे—नै० १।५३।

असंहार्य (वि०) [न+सम्+हृ+ण्यत्] 1. अजेय, जिसका मुकाबला न किया जा सके विधिर्नूनमसंहार्यः प्राणिनां प्लवगोत्तम रा० ५।३७।४ 2. जिसे मार्गभ्रष्ट न किया जा सके।

असकृत्कथनम् [असकृत्+कथ्+ल्युट्] आवृत्ति, दोहराना।

असकृद्भूयः [असकृत्+भू+अप्] बात बृ० सं०।

असकौ (असौ) [अदस्+सु, पा० ५।३।७१, कादेशः] 1. यह या वह 2. यह दुष्ट—भार्यार्थे तमवज्ञाय तस्थौ सौमित्रयेऽसकौ—भट्टि० ४।१५।

असक्तिः (स्त्री०) [न+सञ्ज्+क्तिन्] सामान्य सांसारिक बातों की ओर मन का लगाव न होना असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु - भग० १३।९।

असङ्करः [न+सम्+कृ+अप्] मिलावट (विशेषकर जातियों में) का अनुभव।

असङ्कल्पित (वि०) [न+सम्+कल्प्+क्त] जो कभी कल्पना न किया हो असङ्कल्पितमेवेह यदकस्मात् प्रवर्तते रा० २।२२।२४।

असङ्गत (वि०) [न+सम्+गम्+क्त] निर्बाध, अनवरुद्ध —शक्तिं क्षिप्तामसङ्गतां—रा० ६।७०।१३४।

असदाश्रयः [असत्+आ+श्रि+अच्] अयोग्य व्यक्ति से सम्मिलन।

असद्वस्तु (नपुं०) [क० स०] अविद्यमान चीज़।

असद्वादिन् (वि०) [असत्+वाद+णिनि] जो व्यक्ति किसी वस्तु या बात की असत्ता को स्थापित करना चाहता है।

असन्तुष्ट (वि०) [न+सम्+तुष्+क्त] अतृप्त, अप्रसन्न —असन्तुष्टो द्विजो नष्टः—नीति०।

असन्तोषः [न+सम्+तुष्+घञ्] अतृप्ति, अप्रसन्नता।

असन्धानम् [न+सम्+धा+ल्युट्] 1. निरुद्देश्यता 2. विलगता, पार्थक्य।

असभागः [क० स०] जो समान रूप से नहीं बाँटा हुआ है।

असमायुक्त (वि०) [नञ्+सम्+आ+युज्+क्त] जो भलीभाँति प्रशिक्षित न किया गया हो।

असमिध्य (अ०) [न+सम्+इध्+ल्यप्] न जला कर।

असमीक्षिन् (वि०) [न+सम्+अञ्च्+क्विन्+क] जो सही न हो, त्रुटिपूर्ण।

असमृद्धिः (स्त्री०) [न+सम्+ऋध्+क्ति] सफलता का अभाव, किसी भी वस्तु की कमी होना—नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः—मनु० ४।१३७।

असमेत (वि०) [न+सम्+आ+इ+क्त] जो अभी पहुँचा न हो, अनागत, अनुपस्थित—क्वचिदसमेतपरिच्छदः—मनु० ९।७०।

असम्पात (वि०) [न० ब०] अनुपस्थित, जो निकट न हो।

असम्पातः [न+सम्+पत्+घञ्] निष्क्रियता, निठल्लापन, कार्य का रुक जाना असम्पातं करिष्यामि हृद्य त्रैलोक्यचारिणाम्—रा० ३।६४।५९।

असम्बद्धार्थव्यवधानः (वि०) जिसने असंगत बात को बीच में आकर रोक दिया है—तस्माद्यासम्बद्धार्थव्यवधानकारकत्वता—गो० सू० ३।१।२१ पर शा० भा०।

असम्बोधः [न+सम्+बुध्+घञ्] समझ का अभाव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असम्भवत् (वि०)[न+सम्+भू+शतृ] असंभाव्य, अघटनीय।

असम्भावना [न+सम्+भू+णिच्+युच्+टाप्] सम्मान का अभाव।

असम्भावित (वि०) [न+सम्+भू+णिच्+क्त] अयोग्य। सम०—**उपमा** ऐसी समानता बतलाना जो असंभव हो।

असम्भाव्य (वि०) [न+सम्+भाष्+ण्यत्] जिससे बात करना उचित न हो।

असम्भोज्य (वि०) [न+सम्+भुज्+णिच्+ण्यत्] जो सहभोज में सम्मिलित होने के योग्य न हो- मनु० ९।२३८।

असम्मोहः [न+सम्+मुह्+घञ्] 1. माया या भ्रम से मुक्ति 2. आत्मसंवरण 3. सत्य ज्ञान।

असम्यक् प्रयोगः [असम्यञ्च्+प्र+युज्+घञ्] अशुद्ध व्यवहार, गलत परिपाटी।

असव्य (वि०) [न० त०] दक्षिण पार्श्व।

असान्निध्यम् [न+सन्निधि+ष्यञ्] असामीप्य, अनुपस्थिति – असान्निध्यं कथं कृष्ण तवासीद्दृष्णिनन्दन - महा० ३।१४।१।

असाम्प्रतम् [न+समञ्जस+ष्यञ्] 1. अशुद्धि 2. अनौचित्य।

साम्प्रतिकता (स्त्री०)[न+संप्रति+ठक्+ता] अनुचित व्यवहार करने की अवस्था।

असांप्रदायिक (वि०) [न+सम्प्रदाय+ठक्] जो लोकसम्मत न हो, जो परम्परा के विरुद्ध हो।

असाहचार्य (वि०) [न+सह+अच्+घा+ण्यत्] उपेक्षा करने वाला, प्रमादी, लापरवाह।

असाहसिक (वि०) [न+साहस+ठक्] जो साहस के साथ काम न कर सके या जो बिना विचारे न करे—न साहसमि साहसमसाहसिकी - शि० ९।५९।

असिचर्या [असि+चर्य+टाप्] शस्त्रास्त्र चलाने का अभ्यास।

असिल्ता (स्त्री०) तलवार का फल ददृशुरुल्लसितासिलतासिताः—शि० ६।५१।

असिहस्तः [न० ब०] जो दाहिने हाथ के तलवार से वार करता हो महा० ६।९०।४ पर नीलक०।

असिताञ्जनी (स्त्री०) काली कपास का पौधा।

असिद्ध (वि०) [न+सिध्+क्त] (आ० में) अक्रियात्मक प्रतिरक्षा अर्थात् रद्द, प्रभावशून्य पूर्वत्रासिद्धम्—पा० ८।२।१।

असिद्धान्तः [न० त०] गलत नियम, त्रुटिपूर्ण सिद्धान्त।

असिद्धार्थ (वि०) [न० ब०] जिसने अपने उद्देश्य में सफलता न पाई हो।

असुतृप् (वि०) [असु+तृप्+क्विप्] जो अपने ही सुखोपभोग में मस्त हो, सांसारिक विषय वासनाओं में मग्न —धन्ति ह्यसुतृपो लुब्धाः भाग० १०।१६७।

असुगन्ध (वि०) [न० ब०] जिसमें खुशबू न आती हो।

असुतर (वि०) [न० त०] जो आसानी से पार न किया जाय, जिसमें अनायास साफल्य प्राप्त न हो।

असुन्दर (वि०) [न० त०] जो खूबसूरत न हो।

असुरः [असु+र, असुरताः स्थानेषु न सुष्ठुरताः, बगला इत्यर्थः] राक्षस। सम०—**असृक्** राक्षसों का रुधिर —असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते—दे० मा० ११,— **गुरु** 1. शुक्राचार्य 2. शुक्र नाम का ग्रह,—**द्रुह्** राक्षसों का शत्रु अर्थात् देव पुरः क्लिश्नन्ति सोमं हि सैंहिकेया-ऽसुरद्रुहाम् - शि० २।३५।

असुषिर (वि०) [न+शुष्+किरच्, शस्य सः] जिसमें कोई छिद्र न हो, जो दोषी या कपटी न हो।

असूतजरती [असूत+जरती पा० ६।२।४२] वह स्त्री जो बिना किसी बच्चे को जन्म दिये ही बूढ़ी हो गई है।

असूर्त (वि०) [न० ब०] 1. अन्धकारयुक्त 2. अज्ञात, दूरवर्ती। सम०— **रजसः** वे लोग जो सर्वथा अलग-अलग रहते हैं असूर्तरजसो नाम बभ्रवोऽथ महामतिः रा० १।३२।७।

असृज् (नपुं०) [न+सृज्+क्विन्] 1. रुधिर 2. मंगलग्रह 3. जाफरान। सम० **ग्रहः** मंगलग्रह,—**विघ्न** (वि०) खून से लथपथ।

असेचा [न० त०] अभ्यास का अभाव - न तथैतानि शक्यन्ते संनियन्तुमसेवया- मनु० २।९६।

असंत्रस्त (वि०) [न० त०] 1. चुस्त 2. जो घमंडी न हो, हठी न हो—महा० ५।१२।

असंलोक (वि०) [न० त०] जो थोड़ा न हो, बहुत अधिक।

असंलोभ (वि०) [न+स्तुभ्+घञ्] बिना किसी अवांछित शब्द के अस्तोभमन्वग्वं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः, बिना किसी रोक टोक के।

अस्त्रम् [अस्यते क्षिप्यते-अस्+ष्ट्रन्] 1. फेंक कर मार करने वाला हथियार 2. तीर, तलवार 3. धनुष। सम०— **पातिन्** (वि०) गोली मारने वाला- अस्त्रपातिभिराकृतम् - शुक्र० ४।१०२७,—**भृत्** जो तीर ले जाता है, तीर धारण करने वाला, **यन्त्रम्** धनुष, एक प्रकार का संयन्त्र जिसके द्वारा तीरों की मार की जाय—महा० ९।५७।१८।

अस्थानम् [न+त०] असाधारण स्थान या प्रदेश—अस्थानोपगतयमुनासङ्गमेवाभिरामा—मेघ०।

अस्थास्नु (वि०) [न+स्था+स्नु] चंचल, अधीर।

अस्थि (नपुं०) [अस्+कथिन्] 1 हड्डी 2. गुठली, या किसी फल की गिरी। सम० **कुम्भम्** एक नरक का नाम,—**बन्धनम्** स्नायु, कंडरा,—**भेदिन्** (वि०) जो हड्डी को बींध दे, अत्यन्त कठोर वाचस्तीक्ष्णास्ति-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भदिनः—महा० ३।३१२।३, -यज्ञः औध्वदैहिक क्रिया का एक भाग,—विलयः किसी पवित्र नदी में किसी मृतक की अस्थियों को प्रवाहित करना,—सारः, स्नेहः वसा, मज्जा।

अस्नात (वि०) [न० त०] जिसने स्नान न किया हो।

अस्पृष्ट (वि०) [न-+स्पृश्+क्त] जो (किसी कथन से) आवृत न हो, (उसके) अंतर्गत न हो -अस्पृष्टपुरुषान्तरं (शब्दम्) - कु० ६।७५।

अस्पृष्टमैथुना (वि०) [न० ब०] कुमारी, अक्षतयोनि।

अस्पृह (वि०) [न० ब०] निरीह, निरिच्छ, जिसे इच्छा न हो।

अस्फुट (वि०) [न० त०] जो पूर्ण विकसित न हो—अस्फुटाव्यक्तभेदमुन्दरम् नाग०।

अस्मिमानः [न० स०] स्वाभिमान, अहंकार।

अस्मृत (वि०) [न० त०] 1. याद न किया हुआ 2. जिसका प्रामाणिक ग्रन्थों में उल्लेख न हो।

अस्वाधीन (वि०) [न० त०] जो स्वतन्त्र न हो अस्वाधीनं नरादित्यं दर्शयन्ति नरा दूरात्—रा० ३।३३।५।

अस्विन्न (वि०) [न० त०] जिसे भली भांति उबाला न गया हो।

अस्वेद्य (वि०) [न-+स्विद्+णिच्+यत्] जिसे पसीना लाने के उपयुक्त न समझा जाय।

अहत (वि० [न-+हन्+क्त] जो बजाया न गया हो—अहतायां प्रयाणभेर्याम्—का०।

अहम् (सर्व०) [अस्मद् का कर्तृकारक एक वचन] मैं। समा० जड़ (पु०) अहंकारी, जो केवल, अपना ही चिन्तन करे,—स्तम्भः अहंकार, घमंड।

अहिछत्रम् [ष० त०] ज्योतिषियों का एक आरेख।

अहिविषप्रहा (स्त्री०) [अहिविष-+अप्+हा+अङ्+टाप्] एक पौधे का नाम जिसके सेवन से विष दूर हो जाता है।

अहोलाभकर (वि०) [अल्पेऽपि, अहोलाभो जात इति विस्मयं कुर्वाणः] थोड़े लाभ से ही संतुष्ट होने वाला व्यक्ति।

आ

आंहस्पत्य (वि०) [अंहस्पति+यञ्] अलमास संबंधी।

आकण्ठम् (अव्य०) गले तक। समा०- तृप्त (वि०) स्वादिष्ट भोजनों से गले तक छिका हुआ।

आकलना [आ+कल्+युच् ; टाप्] गिनना, समझ, अनुमान, मूल्य आंकना।

आकल्पम् } (अव्य०) चार युगों के चक्र की अवधि तक,
आकल्पान्तम् } जब तक संसार है तब तक।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अच्+टाप्] अपेक्षा, आशा —असत्यामाकाङ्क्षायां सन्निधानमकारणम् —मै० सं० ६।४।२३ पर शा० भा०।

आकाशः,-शम् [आकाशते सूर्यादयोऽत्र—आकाश्+घञ्] 1. आस्मान 2. अन्तरिक्ष 3. मुक्त स्थान। समा० —पथिकः सूर्य, बहुदृष्टिः, बद्धलक्ष, जो बिना उद्देश्य से इधर-उधर देखता है, मुखिकः (ब० व०) शैव सम्प्रदाय के लोग, जो अपना मुंह आकाश की ओर रखते हैं, -मुष्टिहननम् मूर्खता का कार्य जैसे आकाश को और घूंसा उठाना, व्यर्थ कार्य,—शयनम् खुली हवा में सोना।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] एक प्रकार का युद्ध-कौशल—सुक्र० ४।११००।

आकूतम् [आ+कू+क्त] (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) प्रस्तुतीकरण—तु० धर्माकूतम्।

आकूतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] शतरूपा और मनु की एक कन्या का नाम।

आकूपारम् (नपुं०) कुछ साम-मन्त्रों के नाम।

आकरकर्म (नपुं०) [ष० त०] खनिकार्य—कौ० अ० २।

आकरग्रन्थः [ष० त०] मूलग्रन्थ, आदिग्रन्थ।

आकरजम् [ष० त०] रत्न, जड़ाऊ गहना।

आकारवर्ण (वि०) [न० ब०] रंग और आकार में कमनीय।

आकृत (वि०) [आ—कृ+क्त] निर्मित, बना हुआ -यद्वा समृद्धे अध्याकृते गृहे ऋ० ८।१।१।

आकृतिः (स्त्री०) [आ—कृ+क्तिन्] 1. छन्द 2. (गणित) बाईस की संख्या।

आकृतियोगः [ष० त०] नक्षत्रपुंज।

आकर्षः [आ+कृष्+घञ्] 1. धनुष आकर्षः शारिफलके ज्ञातेऽपि कार्मुकेऽपि च—हेम० 2 विधवत्त पौधा —महा० ५।४०।९।

आकृष्ट (वि०) [आ+कृष्+क्त] खींचा हुआ, आकर्षित किया हुआ, ऐंचा हुआ।

आकोपः [आ+कुप+घञ्] विड़चिड़ापन, मुंहफोथ।

आकौशलम् (नपुं०) [आ+कुशल+अण्] विशेषता का अभाव, नैपुण्य की कमी विवर्धतुमथात्मनो गुणान् भूशमाकौशलमार्यचेतसाम्- शि० १६।३०।

आक्रमः [आ+क्रम+घञ्] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा क्रमेण यजमानः स्वर्गं लोकमाक्रमते तु० ३।१।६।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आक्रान्त (वि०) [आ+क्रम्+क्त] 1. अलंकृत, सजा हुआ,—न खलु नरके हारोक्रान्तं घनस्तनमण्डलम् —मर्तृ० १।६७ 2. आरूढ, चढ़ा हुआ—निर्यत्पुच्छ-रथाक्रान्ता रा० ६।१२७।१३। सम०—मति (वि०) मन से पराजित, अत्यन्त प्रभावित।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] आक्रमण, लूटखसोट की भूतानि धनाकाम्क्षया बधात्क्लेशाच्च रक्षति—महा० १२।९७।८।

आक्रीडगिरिः, (पर्वतः) [त० स०] आमोद गिरि, आमोद प्रमोद के लिए पहाड़—आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिताः स्त्रेषु वेश्मसु—कु० २।४३।

आक्लिन्न (वि०) [आ+क्लिद्+क्त] 1. स्विन्न 2. दया से पसीजा हुआ।

आक्षपटलिकः [त० स०] 1. पुरातत्त्व और अभिलेखाधिकारी 2. लेखाधिकारी कौ० अ० २।

आक्षरः [अक्षर+अण्] वर्णमाला संबंधी।

आक्षिप्त [आ+क्षिप्+क्त] प्रक्षिप्त, ठूंसा हुआ।

आक्षेपः [आ+क्षिप्+घञ्] परास, (तीर की) पहुँच —सोऽयं प्राप्तस्तवाक्षेपम्—महा० ७।१०२।६। सम०—क्षमम् उपमा अलंकार का वह रूप जिसमें केवल उपमान ही संकेतित हो।

आखण्डलः [आखण्डयति भेदयति पर्वतान्—खण्ड्+डलच्] इन्द्र। सम०—चापः,—धनुः इन्द्रधनुष, सूनुः इन्द्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन—अनुस्मृतास्वप्नदलसूनुविक्रमः —किं० १।२४।

आखुविद्याला [ष० त०] दस्तकार या शिल्पी का कारखाना।

आखुवाहनः [ष० त०] गणेश का नाम।

आखेटोपवनम् [त० स०] शिकार या मृगया के लिए राजकीय जंगल।

आख्या (स्त्री) [आख्यायतेऽनया, आ+ख्या+अङ्+टाप] 1. सूरत, शक्ल—न हि तस्य विकल्पाख्या या च मद्दीक्षया हता—भाग० ११।१८।३७ 2. सौन्दर्य, मनोज्ञता—वृत्तीषु रुचिं राख्यासु—रा० ७।६०।१२।

आख्यात (वि०) [आ+ख्या+क्त] पुकारा गया,—देवा इवावृत्तिराख्यातः—मनु० ४।९।

आख्यातव्य [आ+ख्या+क्त] आरम्भ करने का शुभ शकुन।

आगतत्वम् (नपुं०) [आगत+त्व] उद्गम, मूल, जन्मस्थान।

आगतसाध्वस (वि०) [त० व०] डरा हुआ, भीत।

आगमः [आ+गम्+घञ्] 1. जो बाद में आने वाला है—आगमवन्तश्चोपः स्यात्—मी० सू० १०।५।१ 2. पूजा की एक रीति—लक्षधातुगृहं आचार्यास्तेन सन्दर्शितागमः—भाग० ११।३।४८ 3. यात्रा—आगमास्ते शिवास्सन्तु रा० २।२५।२१। सम०—अपायिन् (वि०) जिसका स्वभाव उत्पन्न होने और फिर नाश हो जाने का हो, जिसका जन्ममरण होता है—आगमापायिनोऽनित्याः भग० २।१४, —शास्त्रम् (नपुं०) 1. 'आगम' से संबंध रखने वाला शास्त्र 2. माण्डूक्य का परिशिष्ट, श्रुतिः (स्त्री०) परम्परा।

आगमित (वि०) [आगम्+णिच्+क्त] 1. सीखा हुआ, (किसी से) शिक्षा प्राप्त प्रकृतिस्थमेव निपुणागमितम् शि० ९।७९ 2. पठित, जिसने पढ़ लिया है 3. निश्चय किया हुआ।

आगूहकम् (नपुं०) जूता—हर्ष०।

अग्निहोत्रिक [अग्निहोत्र+ठक्] अग्निहोत्र से सम्बन्ध रखने वाला।

आग्रयणेष्टिः (स्त्री०) [ष० त०] ऋतु के प्रथम फल की आहुति।

आङ्किकः [अङ्क+ठक्] घुटनों से नीचे तक पहुँचने वाला कोट।

आङ्गारिकः [अङ्गार+ठक्] कोयले को जलाने वाला महा० १२।७१।२०।

आङ्गिरस (वि०) [अङ्गिरस्+अण्] विशिष्टता से युक्त वर्ष का नाम आङ्गिरस्वत्सरभेदे मुनिभेदे तदीयस्तेम् —नानो०।

आचन्द्रतारकम् (अ०) जब तक संसार में चाँद और तारे हैं, अर्थात् सदा के लिए।

आचपराद्य (वि०) [आ+अञ्च्+क्विप्+परापूर्वक +अण्] इधर उधर घूमने वाला।

आचमनपात्रिन् (पुं०) [आचमन+पात्र+इनि] पानी निकालने वाला, पानी खींच कर निकालने वाला, पनिहारा।

आचान्तिः (स्त्री०) [आ+चम्+क्तिन्] मुखशुद्धि के लिए आचमन करना।

आचरित (वि०) [आचर्+क्त] बसाया हुआ, बसा हुआ —देशगुल्सारस्यत्येनमनल्याचरितं शुभम् रा० १।२५।१४।

आचारचक्रिणः [आचार+चक्र+इनि] वैष्णव संप्रदाय के सदस्य।

आचारपुष्पाञ्जलिः (स्त्री०) [प्रवेश करते समय घर के द्वार पर हो] धार्मिक प्रथा के रूप में पुष्पों का उपहार भेंट करना।

आचार्यवेशीय (वि०) [आचार्यवेश+छ] आचार्य से कुछ निम्न पद का (भाष्यकर्ताओं ने इस उपाधि को उन विद्वानों के नामों के साथ जोड़ा है जिनकी रुचि 'सत्य' के एक अंश को ही प्रकट करती है)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्यसवः [आचार्य+सु+अच्] एकाह--अर्थात् एक दिन तक रहने वाला यज्ञ का नाम।

आचार्यकम् [आचार्य+क] 1. आचार्य का पद--ताण्डवाचार्यकं कुर्वन्निव क्रीडाशिखण्डिनाम्—भा० १।११०६ 2. आचार्य का सम्मान करना चकारार्चायकं तत्र कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः महा० ७।१४७।६ 3. भाष्यकर्ता या व्याख्याकार का कर्तव्य -श्रुत्यर्थबलाचार्यकम् -विश्व० २८९।

आचेष्टित (वि०) [आ+चेष्ट्+क्त] उपक्रान्त, वचन दिया हुआ, - तम् कार्य, कृत्य, कार्यकलाप।

आच्छन्न (वि०) [आ+छद्+क्त] आवृत, ढका हुआ।

आच्छादनम् [आ+छद्+णिच्+ल्युट्] बिस्तरे की चादर।

आजात (वि०) [आ+जन्+क्त] उच्च कुल में उत्पन्न, यो वै कश्चिदिहाजातः क्षत्रियः क्षत्रकर्मवित्--महा० ५।१३४।३८।

आजातिक (वि०) [आ+जाया (जाति) स्वार्थे कन्] अन्तर्जात, नैसर्गिक आजातिकरागभृषिता--नै० १५।५४, अ० श० ५।

आजपादम् (नपुं०) पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र।

आजिमुखम् [ष० त०] युद्ध का अग्रभाग।

आजीवितान्तम् (अ०) मरने तक, मृत्युपर्यंत।

आज्यग्रहः [ष० त०] घी का कटोरा।

आज्यभागः [ष० त०] घी की आहुति का हिस्सा।

आञ्जनाभ्यञ्जने (नपुं० कर्तृ० द्वि० व०) आँखों का अंजन और पैरों का उबटन।

आञ्जलिकः [अञ्जलि+ठक्] अर्धचन्द्र के आकार का एक तीर।

आटविकः [अटव्यां चरति भवो वा ठक्] जंगली जनजाति का चौधरी--कौ० अ० १।१०।

आड्ढयरोगः [आ+ध्यै क पृषो०+रुज्+घञ्] गठिया, सन्धिवात।

आण्डकोशः [अण्ड+अण्+कोशः] अंडे का खोल।

आतङ्कम् [आ+तञ्च्+घञ्, कुत्वम्] भरणी नक्षत्र।

आतप्त (वि०) [आ+तप्+क्त] गर्म किया हुआ, आग में तपाया हुआ।

आतिशायिक (वि०) [अतिशय+ठक्] अतिप्रचुर, बहुत अधिक।

आतिष्ठद्गु (अ०) [तिष्ठन्ति गावः यस्मिन्काले दोहाय] उस समय तक जब तक कि गौएँ दुहे जाने के लिए ठहरती हैं (सायंकाल के बाद एक डेढ़ घंटा तक) —आतिष्ठद्गु जपन् सन्ध्याम् - भट्टि० ४।१४।

आत्मन् (पुं०) [अत्+मनिन्] मानसिक गुण—भावशुद्धिर्वया सत्यं संयमश्चात्मसंभवः—महा० १२।१६७।५। (समस्त शब्दों में आत्मन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम०—**आलब्धः** आत्मा को प्राप्त होने वाला परम सुख, परमानन्द, --**औपम्यम्** स्वसादृश्य, अपनी समानता-आत्मोपम्यन सर्वत्र भग० ६।३२,—**कर्मन्** (नपुं०) अपना कर्तव्य, **ज्योतिः** (नपुं०) आत्मा की प्रभा, तेज **तृप्त** (वि०) अपने में संतुष्ट—आत्मतृप्तश्च मानवः—भग० ३।१७, **प्रत्ययिक** (वि०) अपने अनुभव से जानकारी प्राप्त करने वाला--आत्मप्रत्ययिकं शास्त्रम् - महा० १२।२४६।१३, - **भू** कामदेव,—**वर्ग्य** (वि०) अपने दल या समुदाय से संबंध रखने वाला, उद्बाहुना जुहुविरे मुहुरात्मवर्ग्याः --शि० ५।१५, - **संस्थ** (वि०) अपने पर ही दृष्टि जमाये हुए—आत्मसंस्थं मनः कृत्वा - भग० ६।२५, - **सत्त्वम्** दे० आत्मतत्त्वम्,—**स्थ** (वि०) जो अपने अधिकार में हो—आत्मस्थं कुरु शासनम्—रा० २।२१।८।

आत्ययिक (वि०) [अत्यय+ठक्] विलम्बित, जिसमें पहले ही देर हो गई हो—कृत्यमात्ययिकं स्मरन्—रा० ५।५८।४६।

आत्ययिकम् [अत्यय+ठक्] 1. कठिनाई, संकट 2. अनिवार्य कर्तव्य।

आत्रेयी [अत्रेरपत्यं ढक्, स्त्रियां ङीप्] गर्भिणी स्त्री महा० १२।१६५।५४, आत्रेयीमापन्नगर्भामिहुः—मी० सू० ६।१।७ पर शा० भा०।

आथर्वणम् [अथर्वन्+अण्] जारण मारण टोना, जादू।

आदष्ट (वि०) [आ+दश्+क्त] कुतरा हुआ, चोंच मारा हुआ, डसा हुआ।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] पराभूत करना, पराजित करना —अथवा मन्त्रवद् ब्रूयुरात्मादानाय दुष्कृतम् - महा० १२।२१२।

आदानसमितिः (स्त्री०) जैनियों के पाँच सिद्धान्तों में से एक जिसमें वस्तु को इस प्रकार ग्रहण किया जाता है जिससे कि कोई जीवहत्या न हो।

आदात्म्यम् निर्भरता—महा० १२।१२०।५।

आदिः [आ+दा+कि] 1. प्रथम, प्रारम्भिक 2. साम के सात भेदों में से एक—अथ सप्तविधस्य साम्नो सप्तविधं सामोपासीत·····यदेति स आदिः - छा० २।८।१। सम०—**दीपकम्** दीपकालंकार का एक भेद (जहाँ क्रिया वाक्य के आरम्भ में हो),—**विपुला** आर्या छन्द का एक भेद, **वृक्षः** एक प्रकार का पौधा।

आदित्यदर्शनम् [ष० त०] एक संस्कार जिसमें चार मास के बच्चे को सूर्य दर्शन कराया जाता है।

आदित्यपुराणम् एक उपपुराण का नाम।

आदीनवदर्शी (वि०) [आ+दी+क्त+वा+क, दृश्+णिच्] पासे के खेल में अपने साथी खिलाड़ी के प्रति दुर्भावना रखने वाला।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] किसी कार्य को करने का संकल्प, व्रत—उद्भूतं मे स्वयं तोयं व्रतादेशं करिष्यति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—रा० २।२२।२८। सम०—कृत् जो आज्ञा का पालन करता हूँ त्वादेशकृतोऽभियान्तु—रा० ५।५२।

आदेशिकः [आदेश+ठक्] भविष्यवक्ता, ज्योतिषी—पुरः भद्रादिकैरादेशिकैरादिष्टा स्वप्न० १।

आद्यकालिक (वि०) [आद्यौ भवः यत्+काल+ठक्] केवल वर्तमान को देखने वाला—आद्यकालिकया बुद्ध्या दूरे ध्रुव इति निर्भयाः—सह० १२।३२१।१४।

आधमर्णिकः [अधम+ऋणिकः] कर्जदार, मूलात्तु द्विगुणा वृद्धिं गृहीता चाधमर्णिकात्—शुक्र० ४।८८०।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] मैथुन—तवापि मृत्युराधानादकृतप्रज्ञ दर्शितः—भाग० ९।९३६।

आधिः [आ+धा+कि] दण्ड, एनमापि दापयिष्येऽहमस्मात्तेन भय क्वचित्—शुक्र० ४।६४१।

आधिमासिक (वि०) [अधिमास+ठक्] अधिमास या मलमास से संबंध रखने वाला—करणाधिष्ठितमाधिमासिकम्—कौ० अ० २।७।

आधिरथिः [अधिरथ+इञ्] अधिरथ का पुत्र, कर्ण—हतं भीष्ममाधिरथिविद्वित्वा—सह० ७।२।१।

आधूत (वि०) [आ+धू+क्त] हिलाया हुआ, क्षुब्ध—पवनाधूतलतासु विभ्रमः—रघु० ६।

आधारः [आ+धृ+घञ्] किरण,—आधार आलवालेऽम्बुबन्धे च किरणेऽपि च—नाना०। सम०—चक्रम् रहस्यमय या अलौकिक चक्र जो शरीर के पश्चवर्ती भाग पैर स्थित है—सम्यगाधारचक्रे तरुणमरुणगात्रं वारणास्यं त्रिनेत्रम् गणेश०।

आधारिकः [आ+नम्+क्त+कृ+अच्] उपहार, पारितोषिक।

आनद्धः [आ+नह्+क्त] ढोल या थपकी—अमानमानद्धमियत्तयाध्वनीत्—नै० १५।१६।

आनन्दकरः [आनन्द+कृ+अच्] चन्द्रमा,—काष्ठा यथानन्दकरं मनस्तः भाग० १०।२।१८।

आनन्दतीर्थः द्वैतसंप्रदाय का संस्थापक श्री माधवाचार्य।

आनन्दभैरवी संगीत का एक भेद।

आनर्तः,—तम् [आ+नृत्+घञ्] नाच।

आनुजौम्यम् [अनुजीवि+ष्यञ्] सेवक के प्रति नम्रता का व्यवहार—पशुपकुलनिवासादानुजौम्यानभिज्ञः—दूत० १।३९।

आनुपथ्य (वि०) [अनुपथ+ष्यञ्] सड़क के साथ-साथ चलने वाला।

आनुपूर्व्यवत् (वि०) [अनुपूर्व+ष्यञ्,+मतुप्] निश्चित, नियत क्रम को रखने वाला।

अनुयात्रम् [अनुयात्रा+अण्] दे० अनुयात्रिक।

अनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठक्] अनुचर, सेवक।

आनुवङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग+ठक्] 1. गौण कार्य 2. टिकाऊ।

आनृत् (दिवा० पर०) नाचना, उछालना—आनृत्यतः शिखण्डिनो—अप० ४।३७।७।

आनृशंस्यम् [अनृशंस+ष्यञ्] प्रत्यक्ष की आतुरता स्त्री प्रपाद्यैति कारुण्याद्याश्रितेत्यानृशंस्यतः—रा० ५।१५।५०।

आन्तःपुरिक (वि०) [अन्तःपुर+ठक्] अन्तःपुर से संबंध रखने वाला।

आन्तःपुरी [अन्तःपुरे भवः अण्, स्त्रियां ङीप्] अन्तःपुर की सेविका, नौकरानी—नै० १९।६५ पर नारायण।

आन्तरागारिकः [अन्तरागार+ठक्] कञ्चुकी।

आन्तर्वेदिक (वि०) [अन्तर्वेद+ठञ्] यज्ञवेदी के अन्दर वर्तमान।

आन्यतरेय (वि०) [अन्यतरा+ढक्] किसी अन्य विचारधारा या संप्रदाय से संबंध रखने वाला।

आपद्भिक (वि०) कठिनाइयों को पार करने वाला।

आपणः [आपण्+घञ्] व्यापारिक क्रियाकलाप, वाणिज्य —पिहितापणोदया—रा० २।४८।३७। सम०—वीथिका बाजार, —वेदिका क्रिक्थफलक।

आपदेवः वरुण का नाम, एक मीमांसक का नाम।

आपरपक्षीय (वि०) [अपरपक्ष+छ] कृष्णपक्ष से संबन्ध रखने वाला।

आपातमात्र (वि०) क्षणस्थायी, क्षणमात्र रहने वाला।

आपात्य (वि०) आक्रमण की इच्छा से आगे बढ़ता हुआ, (किसी शत्रु पर) टूट पड़ने वाला आपात्यसैनिकनिराकरणाकुलेन—शि० ५।१५।

आपृष्ट (वि०) [आ पृच्छ्+क्त] 1. सत्कृत 2. पूछा गया नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयात्।

आप्रोशनः [ष० त०] एक प्रकार के प्रार्थना मंत्र जो भोजन से पूर्व और भोजन के पश्चात् आचमन करते समय बोले जाते हैं नै० १९।२८।

आप्त (वि०) [आप्+क्त] लाभप्रद, उपयोगी—अधिष्ठितं हयज्ञेन सूतेनाप्तोपदेशिना—रा० ६।९०।१०। सम० अधीन (आप्ताधीन) (वि०) विश्वसनीय व्यक्ति पर निर्भर रहने वाला, —आगमः (आप्तागमः) विश्वसनीय वैदिक साक्ष्य परोक्षमाप्तागमात् सिद्धम् सां० का० ६,—उक्तिः (स्त्री०) (आप्तोक्तिः) 1. आगम 2. अनुयोगी 3. सामान्य कथन जो प्रयोगतः मान लिया गया हो, उपदेशः (आप्तोपदेशः) किसी विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा दी गई नसीहत,—आप्तोर्यामः एक प्रकार का यज्ञ।

आप्य (वि०)[आपां इदं अण्, स्वार्थे ष्यञ्] पनबोड़ा, एक प्रकार का घोड़ा जो पानी में ही उत्पन्न होता है।

आप्यम् (नपुं०) (वेद०) जल, पानी—पृथिव्याप्यतेजोनिलखानि—श्वेत० २।१२।

आप्यायः [आप्+घञ्] पूरा होना, फूलना, मोटा होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आप्याय्य (वि०) [आप्य+ण्यत्] सन्तुष्ट होने के योग्य, प्रसन्न होने के योग्य।

आप्रवण (वि०) [आ+प्रु+ल्युट्] ईषत्प्रवण, कुछ ढालीन, थोड़ा झिटा।

आप्लुत (वि०) [आप्लु+क्त] ग्रहणग्रस्त—अवाङ्मुखमथो दीनं दृष्ट्वा सोममिवाप्लुतम् रा० ७।१०६।१।

आप्लुष्ट (वि०) [आप्लुष्+क्त] ईषद्दग्ध, झुलसा हुआ —दिवाकरपरिष्वष्टविभूषागात्रवदनम्—कु० ५।४८।

आफलकः [आ+फल+कन्] घेरा, बाड़ा यावत्फलिकपर्यन्तं पिबन्तिभुसतीं नदीम् - रा० १।३०।३।

आफोनम् (नपुं०) अफीम।

आबद्धमण्डल (वि०) [न० ब०] गोलाकार चक्र बनाने वाला।

आबद्धवलय

आबन्धुर (वि०) [आबन्ध्+उरच्] थोड़ा गहरा।

आबालम् (अ०) बच्चे तक, बच्चे से लेकर। सम० गोपालम् (अ०) बच्चों और ग्वालों समेत। —वृद्धम् (अ०) बच्चों से लेकर बूढ़ों तक।

आब्रह्म (अ०) ब्रह्मा तक।

आभङ्गम् (नपुं०) किसी मूर्ति की झुकी हुई मुद्रा।

आभात (वि०) [आभा+क्त] 1. चमकीला, देदीप्यमान 2. प्रतीयमान।

आभासः [आभास्+घञ्] 1. मूर्ति डालने के नौ पदार्थों में से एक 2. एक प्रकार का भवन 3. पूजा की एक अप्राधाणिक रीति विशेषः परधर्मस्य चाभास उपमा छल, अधर्मशाखाः पञ्चेमा धर्मज्ञोऽधर्मवर्जयेत् भाग० ७।१५।१२।

आभास्वरः (पुं०) निम्नांकित बारह विषयों का एक संग्रह नु०—आत्मा ज्ञाता दमो दान्तः शान्तिर्ज्ञानं समस्तपः, कामः क्रोधो मदो मोहो द्वादशा भास्वरा इमे - तारा०

आभिप्रायिक (वि०) [अभिप्राय+ठक्] ऐच्छिक, इच्छानुगामी।

आभिमन्यवः [अभिमन्यु+अण्] अभिमन्यु का पुत्र, परीक्षित।

आभियोगिक (वि०) [अभियोग+ठक्] दक्षता से किया गया, चतुराई से युक्त।

आभृत (वि०) [आ+भृ+क्त] 1. उपजाया हुआ, पैदा किया हुआ भाग० ३।२६।६ 2. भरा पूरा, स्थिर - आभृतात्मा मुनिः भाग० ४।८।५६।

आभ्यागारिक (वि०) [अभ्यागार+ठक्] घर में रखने के योग्य।

आभ्र (वि०) [अभ्र+अण्] अभ्रक से निर्मित चन्द्राभोभ्र सिन्दूरं दधानाः—नै० ६।६२।

आमपेशाः [ष० त०] कच्ची अवस्था में पीसा गया अन्न।

आमन्त्रित (वि०) [आ+मन्त्र्+क्त] मन्त्र बोल कर पवित्र किया गया -नराणामामन्त्रितानाम् - महा० ३।२०।२६। सम० वचनम् संबोधन अर्थ में प्रयुक्त शब्द, विभक्तिः संबोधन अर्थ को प्रकट करने वाली विभक्ति।

आमन्त्रितम् (नपुं०) [आमन्त्र+क्त] 1. सम्बोधित करना 2. संलाप 3. संबोधन की विभक्ति।

आमालकः (पुं०) पहाड़ी स्थान।

आमिक्षार्थी (वि०) [अम् टिषच् दीर्घश्च तमर्थयति इनि] मांस चाहनेवाला, मांस के लिए निवेदन करने वाला।

आमुकुलित (वि०) [आमुकुल+इतच्] थोड़ा सा खुला हुआ।

आमुक्तम् [आमुच्+क्त] कवच।

आमृषः (पुं०) कांटेदार बाँस।

आमोगः (पुं०) कवि की रचना की अंतिम पंक्ति जिसमें कवि का नाम बताया गया हो यत्रैव कविनामस्यात्स आमोग इतीरितः—संगीत दामोदर।

आम्रः [अम्यतेऽयादिषु रन्दीर्घश्च] आम का वृक्ष। सम० - अस्थि आम की गुठली, आम का बीज,- पञ्चमः संगीत का एक विशेष राग, -फलप्रथाष्टकम् आमों के रस से तैयार किया हुआ एक शीतल पेय।

आम्लपञ्चकम् [आम्लपञ्च+कन्] इमली आदि पाँच (बेर, अनार, करौंदा, इमली और कमरख) फलों के रस से तैयार किया गया एक आयुर्वेदिक पदार्थ।

आयः [आ+इ+अच्, अय घञ् वा] आमदनी का स्रोत —मार्गस्यावशतेरर्थान्—महा० १३।१६३।५। सम० दर्शिन् (वि०) राजस्व-समाहर्ता,—मुखम् राजस्व के रूप को० अ० २।६. शरीरम् आय का शरीर -को० अ० २।६।

आयधापूर्यम्,—पूर्व्यम् (नपुं०) ऐसी स्थिति या अवस्था का होना जैसी पहले नहीं थी।

आयत (वि०) [आयम्+क्त] सुप्त, सोया हुआ,—तं नायतं बोधयेदित्याहुः बृ० ४।३।१६।

आयतिः (स्त्री०) [आ+या+क्तिन्] वंश परंपरा, वंश-विस्तरण पौड़ी-दरध्वनि समरे योधा शलभानामिवायतीः —महा० ७।१५९।७१।

आयत्नम् [आ+यम्+क्त] महान् प्रयत्न, शक्ति का विस्तार न मे गतिमायत्नं सहिष्यति दुरात्मवान् रा० ४।१६।९।

आयनम् [आ+या+ल्युट्] घोड़े का आभूषण।

आयुष्यमन्त्रः (पुं०) ऋग्वेद का मन्त्र जो "यो ब्रह्मणा ब्रह्मण उपहारः..." से आरंभ होता है।

आयुष्यहोमः [आयुः प्रयोजनमस्य यत्, हु+मन्] यज्ञ विशेष जिसके अनुष्ठान से मनुष्य दीर्घजीवी हो सकता है।

आयोजनम् (अ०) एक योजन की दूरी तक।

आयोधः (पुं०) अयोध का पुत्र मुनि धौम्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरङ्गरः (पुं०) मधुमक्खी (वेद०) आरङ्गरेव मध्वेरयथ ऋ० १०।१०६।१०।

आरण्यकसामन् (नपुं०) सामदेव का एक सूक्त।

आरम्भः [आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1. शुरू 2. पहला अङ्क। सम०—आत्मत्वम् क्रियाशीलता के द्वारा ही उत्पादन की स्थिति—मी० सू० १।१।२०, -रुचिः किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को शुरू करने में रुचि, -शूरः जो व्यक्ति शुरू शुरू में बहुत अधिक उत्साह दिखलाता है।

आरवडिण्डिमः [ष० त०] एक प्रकार का ढोल—रुचिरेतरशनारवडिडिमगर्भमिसर सरसमलज्जम् -गीत० ११।६।

आरासः [आ+रास्+घञ्] घोर शब्द।

आरीण (वि०) [आ+री+क्त] बिल्कुल सूखा हुआ —आरीण लवणजलं -भट्टि० १३।४।

आरुतम् [आ+रु+क्त] क्रन्दन, विलाप, रोना-धोना —निपेदुः शतशस्तत्र दारुणा दारुणारुताः- रा० ६। १०६।३१।

आरुणेयः [आरुणि+ढक्] आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु।

आरोग्यम् [अरोगस्य भावः—ष्यञ्] रोग से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य। सम०- अम्बु (नपुं०) स्वास्थ्यप्रद जल, —चिन्तामणिः आयुर्वेद के एक ग्रन्थ का नाम - प्रतिपदव्रतम् स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए एक व्रत।

आरोपयितृ (वि०) [आ+रूप्+णिच्+तृच्] धारण करने वाला।

आर्कम् (अ०) [आ+अर्कम्] सूर्य तक आकल्पमार्कमर्हन् भगवन्नमस्ते--भाग० १०।१४।४०।

आर्चायण (वि०) [न० ब०] ऋचाओं में विद्यमान।

आर्चीकम् [अर्चा अस्त्यस्य अण्, स्वार्थे कन्] ऋग्वेद के मंत्रों से युक्त, सामवेद।

आर्जवम् [ऋजोर्भावः अण्] सम्मुख भाग, (अधि० आर्जवे =सम्मुख भाग में सीधा) देवदत्तस्यार्जवे-- मै० सं० १।१।१५ पर शा० भा०।

आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] असुविधाजनक—आर्तो यस्मिन् काले भवन्ति स आर्तः कालः- मै सं० ५।५। ३७ पर शा० भा०। सम०- त्राणम् जो कठिनाईयों में ग्रस्त हैं उनको बचाना।

आर्तवम् [ऋतुरस्य प्राप्त इति अण्] मासिक ऋतुस्राव, - गिरिकायाः प्रयच्छाशु ह्रस्वा आर्तवमद्य वै -महा० १।६३।५५।

आर्द्र (वि०) [आ+अर्द्+रक्, दीर्घश्च] गीला, तर। सम०- एधांसि आग जो गीली लकड़ियों द्वारा सुरक्षित रखी जाती है -यथैवार्द्रैधासनैः पृथग्धूमा निस्सरन्ति शनैः,- कपोलितः उन्मादक काल की दूसरी अवस्था में हाथी जब कि उसका गंडस्थल अपने मद से गीला हो जाता है,—यत्नकः बांस, -भावः 1. गीलापन 2. कृपा, मृदुता -धनुर्भूतोऽप्यस्य दयार्द्रभावम्—रघु० २।११।

आर्द्रिका (स्त्री०) हरा या गीला अदरक।

आर्द्रीयु [ऋध+अण्] प्रचुरता, बाहुल्य।

आर्धनारीश्वरम् [अर्धनारीश्वर+अण्] भगवान् शिव के अर्धनारीश्वर रूप से सम्बद्ध।

आर्ये (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्यावर्त का निवासी 2. योग्य, आदरणीय, सम्मानयोग्य। सम०—आगमः (आर्यां+आगमः) आर्य जाति की महिला के पास संभोग की इच्छा से पहुँचना- अन्यस्यार्यागमे वधः याज्ञ० २।२९४, -जुष्ट (वि०) आर्यजनों के द्वारा अनुमोदित तथा अनुगत, -मतिः जिसकी बुद्धि बहुत अच्छी है, -वाक् (वि०) आर्य जाति की भाषा बोलने वाला, -शीलः उत्तम चरित्र से युक्त, अच्छे शील वाला,—सिद्धान्तः आर्यभटकृत ग्रन्थ, स्त्री आर्यमहिला।

आर्षिवयम् [ऋषेरिदं अण्, आर्षं+ठक्, ततः ष्यञ्] आर्षेयम्, वह धर्म जिसकी ऋषियों ने स्थापना की है।

आलकन्दकम् (नपुं०) एक प्रकार का मूंगा, प्रवाल—को० अ० २।११।

आलग्न (वि०) [आलग्+क्त] पालन करता हुआ, चिपका हुआ, अनुषक्त।

आलम्बनम् [आलम्ब+ल्युट्] मन के अनुरूप धर्म।

आलानम् [आलीयतेऽत्र आली+ल्युट्] लगाव या स्थिरता का बिन्दु, (पोल, खूंटा या रस्सी आदि) -उलूखलं वा यमिनां मनो वा गोपाङ्गनानां कुचकुड्मलं वा मुरारिनाम्नः कलभस्य नूनमालानमासीत् त्रयमेव भूमौ—कृष्ण०।

आलापा [आलप्+घञ्, टाप्] संगीत की एक मधुर ध्वनि।

आलापनम् [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] संगीत शास्त्र के किसी एक राग की विशेषताओं का वर्णन।

आलिक्रमः [आ+अल्+इन्—क्रम्+घञ्] एक प्रकार की संगीतरचना, संगीतनिबन्ध।

आलिजनः [आलि+जनः] सहेलियां।

आलेख्यगत (समासिक) (वि०) [आलेख्ये गतः—स० त०] चित्र में लिखित, चित्रित- निशीथदोषाः सहसा हृतत्विषो बभूवुरालेख्यसमर्पिता इव -रघु० ३।१५॥

आलिङ्गय (वि०) [आलिङ्ग्+ण्यत्] आलिङ्गन करने के योग्य मै० ७।६६।

आलयः [आलीयतेऽस्मिन्—आली+अच्] ग्राम, आवास, —मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिता केचिदालयाः—रा० ४।४०।२५।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलोन (वि०) [आली+क्त] बन्द, गुप्त—भ्रमरालीनपङ्कजम् ।

आलीढा [आ+लिह्+क्त+टाप्] ऋतुमती स्त्री—आलीढया परिहृतं भक्षयंतं कदाचन - महा० १८।१०४।९०।

आलुलित (वि०) [आलुल्+क्त] क्षुब्ध, ईषदुद्विग्न, जरा सा घबराया हुआ ।

आलेपनम् [आलिप्+णिच्+ल्युट्] 1. पानी मिला हुआ आटा जिससे घर का द्वार सजाया जाता है, विशेषतः दक्षिण भारत में—बिचुमालेपनपाण्डुरम्—नै० २।२६ 2. रंगना या सफेदी लीपना आलेपनदानपण्डिता—नै० १५।१२ ।

आलोकः [आलोक्+घञ्] 1. केवल दर्शन आलोकमपि रामस्य न यदयन्ति स्म दुःखिताः—रा० २।४७।२ ।

आलोककः [आलोक्+ण्वुल्] दर्शक, देखने वाला ।

आवपनम् [आवप्+ल्युट्] 1. उद्गमस्थान—यस्य छन्दोमयं ब्रह्म देहं आवपनं विभो. भाग० १०।८०।४५ 2. पटसन से निर्मित कपड़ा ।

आवापः [आवप्+घञ्] तान्त्रिकों के मतानुसार मन्त्र को बार-बार आवृत्ति जिससे अनेक कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है वस्तु आवृत्या उपकरोति स आवापः मै० सं० ११।१ पर शा० भा० ।

आवरणम् [आवृ+ल्युट्] 1. कवच कि० १७।५९ 2. भ्रम, भ्रान्ति ।

आवरीवस् (वि०) [आवृ—यङ् वस्] छादन, चादर, ढकना—अनश्ना० २३ ।

आवर्जक (वि०) [आवृज्+ण्वुल्] आकर्षक ।

आवर्तनम् [आवृत्+ल्युट्] अंश, आवर्तनानि चत्वारि - मनो० १२।१०३।२५ ।

आवास्य (वि०) [आवस्+णिच्+यत्] बसा हुआ, व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ ईशावास्य सिद्धं—ईश० १ ।

आवास् (चुरा० पर०) (आ पूर्वक वास्) सम्पन्न करना, वास बसना करना -अध्यासयन्ना गन्धेन—रा० २।१०३।४१ ।

आविः (स्त्री०) [अवीरेव स्वार्थे अण्] पीडा, कष्ट, प्रसववेदना ।

आवितृ (तना० आ०) व्याप्त होना,- त्रैलोक्यानाविवेशान्तरात्मा भाग० ३।२०।३७ ।

आवित्त (वि०) [आविद्+क्त] विद्यमान ।

आविद्ध (वि०) [आ+व्यध्+क्त] पास-पास रक्खा हुआ, छिदवाया हुआ स पाण्डुरांशुस्थिमानमालिनीम् रा० ५।२५।१३ ।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टिं स्तृणाति विल् स्तृणोक] धुंधला, अस्पष्ट, जो देख न सके ।

आविर्भूत (वि०) [आविस्+भू+क्त] प्रकट हुआ हुआ, आविर्भूतप्रथमकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्—मेघ० ।

आविर्मण्डल (वि०) [न० ब०] जो वृत्त के रूप में दिखाई दे - विधुवति धनुराविर्मण्डलं पाण्डुसूनौ—कि० १४।६५ ।

आविर्हित (वि०) [आविस्+धा+क्त] जो दृश्य बना दिया गया हो ।

आवृत्तम् [आवृत्+क्त] बार-बार प्रार्थना या गीत से देवों को सम्बोधित करना ।

आवृद्धबालकम् (अ०) बूढ़ों से लेकर बच्चों तक ।

आव्यक्त (वि०) [आवि+अञ्च्+क्त] स्पष्ट, सुबोध, तद्वाक्यमाव्यक्तपदं निशम्य रा० ७।८८।२० ।

आशास् (वेद०) (अदा० आ०)दमन करना—ऋ० २।२८।९ ।

आशावासस् (वि०) [न० ब०] नंगा, नग्न ।

आशिक्षा [आशिक्ष्+अङ्+टाप्] सीखने की इच्छा, वाज० ३०।१० ।

आशुकविः [क० स०] जो तुरन्त ही (बिना पहले से सोचे) काव्य रचना कर सके ।

आश्रमपरिग्रहः [ष० त०] सन्यास (चौथा आश्रम) ग्रहण करना ।

आश्रयवासिपर्वन् [ष० त०] महाभारत के पन्द्रहवें पर्व का प्रथम अनुभाग ।

आश्रवः [आश्रु+अच्] सांसारिक कष्ट, -सवितर्कविचारसबाह्यं प्रथमं ध्यानमनाश्रवप्रकारम् यो० प० ५।१० ।

आश्लेषणम् [आश्लिष्+ल्युट्] आसक्ति, अनुरक्ति ।

आश्वासिक (वि०) [आश्वास+ठक्] विश्वसनीय, विश्वासपात्र ।

आश्विनचिह्नितम् (नपुं०) शारदीय विषुव ।

आस् (आः) (अ०) उदासीनता द्योतक अव्यय ननु आस्ते इत्यनवेदाने भवति । नावश्यमनवेदने एव, औदासीन्येपि दृश्यते । मी० सू० ३।६।२४ पर शा० भा० ।

आसक्त (वि०) [आसञ्ज्+क्त] अवरुद्ध, बन्द -कार्तवीर्यभुजासक्तं तज्जलं प्राप्य निर्मलम्—रा० उ।३०।५ ।

आसंशित (वि०) [आसंज्ञा+इतच्] जिसके साथ कोई संज्ञा या संकेत दी गया है, सम्मिलित ।

आसद् (प्रेर०) धारण करना, पहनना -आसाद्य कवचं दिव्यं रा० ७।६।६४ ।

आसत्तिः (स्त्री०) [आसद्+क्तिन्] उल्लंघन, घबराहट —न च ते वर्धिष्यन्ति सत्तिर्वृद्धेः प्रादुर्भविष्यति—महा० १२।५२।१७ ।

आसनम् [आस्+ल्युट्] 1. हौदा, हाथी की ग्रीवा और पीठ का मध्यवर्ती भाग जहां हस्त्यारोही बैठता है 2. लटस्थता—कौ० अ० ७।१ 3. पासे के खेल में प्रमुख मोहरा । सम० मधूदकम् वीर्य ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आसन्न (वि०) [आसद्+क्त] अभ्यर्थित, प्रार्थित—आसन्नो रासभां सोऽपि मात्रं तत्तद्—रा० ५।६३।३३। सम०—चर (वि०) आसपास ही घूमने वाला।

आसमुद्रात्तम् (अ०) समुद्र के किनारे तक।

आसुरायणः [आसुरि+फक्] 1. आसुरि की सन्तान 2. एक वैदिक संप्रदाय।

आसेचनक (वि०) [आसिच्+ल्युट्+कन्] अत्यंत मनोहर जो असीम संतोष के देने वाला हो (उदाहरणतः नेत्रासेचनकम्) दे० नैषध० (हिन्दी का संस्करण) पृष्ठ ५५९।

आस्तरकः [आ+स्तृ+ण्वुल्] बिस्तर बिछाने वाला—कौ० अ० १।१२।

आस्तारकः [आस्तृ+घञ्, स्वार्थे कन्] अंगीठी में लगाने वाली जाली, जंगला।

आस्तीर्ण (वि०) [आस्तृ+क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ 2. ढका हुआ।

आस्थानभद्र-पद्मम् [आस्थान+षट्+क्त] सिंहासन, राजगद्दी—दे० १०।५७।

आस्थेय (वि०) [आस्था+ण्यत्] 1. श्रद्धेय, जिसके पास पहुँच की जाय, जिससे प्रार्थना की जाय 2. आदरणीय।

आस्फुद् (स्वा० पर०) आन्दोलन करना, हिलाना।

आस्फोटितम् [आस्फुद्+क्त] तालियाँ बजाना, शस्त्रास्त्र से प्रहार करना—आस्फोटितनिनादांश्च—रा० ५।४३।१२, तस्यास्फोटित शब्देन—रा० ५।४।७।

आस्यवत् (वि०) [आ+सिव्+क्त] मिला कर सीया हुआ।

आस्रु (वि०) [आस्रु+क्विप्] खूब बहने वाला, धारा प्रवाह से रिसने वाला।

आस्रुपयस् (वि०) [न० ब०] खूब दूध देने वाली गाय —अगाद्धेनुर्ती रास्रुपया जवेन—भाग० १०।१३।३०।

आस्वादित (वि०) [आ+स्वद्+णिच्+क्त] जिसने स्वाद ले लिया हो, अनुभवी—मधु नवमनास्वादितरसम् धा०।

आहत्य (अ०) [आहन्+ल्यप्] प्रहार करके, मार कर, पीट कर। सम० अक्षनम् ललकारने वाला वक्तव्य।

आहारसेजस् (नपुं०) पारा, पारद।

आहार्यशोभा (स्त्री०) बनाया हुआ सौन्दर्य (विप० नैसर्गिक शोभा)।

आहितकः [आ+धा+क्त, स्वार्थे कन्] भाड़े का—कौ० अ० २।१।

आहृत (वि०) [आ+हृ+क्त] कृत्रिम, बनावटी —अहृता हि विषयैकतानता ज्ञानधौतमनसं न लिम्पति —नै० १८।२।

इ

इक्षुः [इष्+क्सु] एक प्रकार का बाँस—मौक्तिकैरिक्षुकुक्षिजैः—नै० २०।२१(नारा० भाष्य० इक्ष्वंशविशेषैः)।

इक्षुमती (स्त्री०) [इक्षु+मतुप्+ङीप्] कुरुक्षेत्र प्रदेश में बहने वाली एक नदी।

इक्ष्वारि(रि)कः [इक्षु+अल्+ण्वुल्] नरकुल, सरकंडा।

इङ्गालकः [इङ्गाल+आलच्] कोयला—वितेनुरिङ्गालमिवाग्रयशः परे—शि० सं०, इङ्गालः कारिकानिविट् वैजं०।

इडा } [इल्+अच्, लस्य डत्वं वा] सामगान में प्रयुक्त
इला } स्तोभ नामक संगीत।

इडाजातः [पं० त०] गुग्गुल।

इत्थीकः (पुं०) खलभ बनने वाला चाकू।

इतिः (स्त्री०) [इ+क्तिन्] 1. ज्ञान 2. चाल, गति —रा० वि०।

इतिक (वि०) [इति+कन्] गतियुक्त, चाल रखने वाला।

इतिहासकथोद्भूतम् [त० स०] किसी पौराणिक आख्यान या महाकाव्य से ली गई कथावस्तु—इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं, काव्यं कल्पान्तरस्थायि —काव्य०।

इत्कः (पुं०) एक प्रकार का बाज।

इदम्बरम् (नपुं०) नीलकमल—निघ०।

इद्धा (अ०) विशद, प्रकट, स्पष्ट।

इन्दका [इन्द्+ण्वुल्+टाप्] मृगशीर्ष नक्षत्र पुंज में ऊपर रहने वाला तारा।

इन्दिरारमणः [इन्द्+किरच्+टाप्+रम्+ल्युट्] विष्णु —अन्तरा सकलसुन्दरीयुगलमिन्दिरारमणसंचरन् —नारा० १५।

इन्धुः [उन्द्+उ, ओदितश्च] 1. चन्द्रमा 2. अनुस्वार की परिभाषा। सम०—मुखी कमल बेल,—वल्ली सोम का पौधा, —शेखरिन् एक पौधे का नाम,—सुतः, —सूनुः बुधनामक ग्रह।

इन्धुकः [इन्धु+कन्] दे० 'इन्धुशेखरिन्'।

इन्द्रः [इन्दतीति इन्द्+रन्] 1. देवों का स्वामी 2. ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय। सम०—आयुधम् 1. इन्द्रधनुष 2. हीरा, —कान्तः चारमंजिले भवन का एक प्रकार —नाग०—२१।६०।१८,—ध्वजः (इन्द्रध्वजः) मोतियों की माला, —ऊः बालि, कर्ण, —जुषः [नपुं०] मिलाजीत, —द्रुति चन्दन, —प्रमतिः वैदिक ऋषि, पैल आचार्य का शिष्य, —बल्मिनी दाक्षायणी, —यज्ञः इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला यज्ञ—ध्वजः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्माकं मोक्षस्योचित इन्द्रियाणां संयोगः भविष्यति —माल०१,— आलक्तम् हीरे का एक प्रकार, कौ० अ० २।११, - सावर्णिः चौदहवां मनु ।

इन्द्रियः [इन्द्र+घ—इय] 1. शक्ति 2. ज्ञानेन्द्रिय । सम०—आरामः ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण, —प्रसङ्गः विषयासक्ति, संप्रयोगः विषयों से संबद्ध ज्ञानेन्द्रियों की क्रिया ।

इन्धनम् [इन्ध्+णिच्+ल्युट्] इच्छावशेष, वासना—ये तु इन्धनवन्तो लोके पुण्यपापविवर्जिताः—महा० १२। ३४८।२ ।

इभकर्णकः (पुं०) 1. एक पौधा, ताड़का एरंड 2. गणेश ।

इरिजम् (वेद०) [ऋ+इनच्, किच्च्य] चौसर खेलने की विसात—प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः—ऋ० १०।३४।१।

इरिम्बिठिः (पुं०) कण्वकुल के एक ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई सूक्तों का द्रष्टा है ।

इलिनी (स्त्री०) मेषातिथि की पुत्री ।

इल्वः (पुं०) परलोक में होने वाला एक काल्पनिक वृक्ष - स आगच्छतील्व्य वृक्षम् - कौषी० १।५ ।

इवोपमा उपमा अलंकार जहाँ रचना में 'इव' शब्द का प्रयोग हुआ हो ।

इक्षीका हाथी की आँख की एक पुतली ।

इष् (तुदा० पर०) किसी काम को बहुधा करते रहना, बार-बार सम्पन्न करना ।

इच्छामात्रम् (अ०) केवल इच्छा द्वारा रचित—इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टिः ।

इच्छारूपम् (नपुं०) 1. मानवीकृत इच्छा 2. इच्छानुरूप माना हुआ शरीर 3. दिव्य शक्ति की प्रथम अभिव्यक्ति ।

इष्टभागिन् (वि०) [इष्ट+भाग+णिनि] जिसकी महत्त्वाकांक्षा पूरी हो गई है—अपूजयत्सार्धवसिष्टभागिनम् —रा० ६।६७।१७५ ।

इष्टिः (स्त्री०) [इष्+क्तिन्] कविता के रूप में एक परिसंवाद, सप्तसहस्रोक ऋ० १।१६१।१४ पर भाष्य । सम०—आद्धम् एक विशेष और्ध्वदैहिक क्रिया ।

इषिका, इषीका [इष् गत्यादौ क्वुन्, अत इत्वम्] एक काँटेदार पौधा—सैनिकर्षाविधीकाभिर्मोचिता परमाद्भुतात् - रा० २।८।३० ।

इषुपुच्छा नील का पौधा ।

इषूपति (वेद०) प्रयत्न करना ।

इष्टकाचाता ईंटों का आकार प्रकार ।

ई

ईक्षाभवस् (पुं०) [ब० स०] सांप-एषा नो नैष्ठिकी बुद्धिः सर्वतोमोक्षणभवः—महा० १।३७।२९ ।

ईरः [ईर्+अच्] वायु, हवा । सम०—ज,-सुतः हनुमान् ।

ईलिनः (पुं०) तंसु के पुत्र और दुष्यन्त के पिता का नाम ।

ईशः [ईश्+क] परमेश्वर, परमात्मा । सम०—आधारत्वम् (ईशावास्यम्) ईशोपनिषद् (अपने प्रथमाक्षर के आधार पर)—गीता (स्त्री०) कूर्मपुराण का एक अनुभाग, —दण्डः रथ के धुरे की लकड़ी ।

ईशानकल्पः चार युगों का एक चक्र ।

ईशितव्य (वि०) [ईश्+तव्य] शासन किये जाने के योग्य, नियन्त्रण में रखने के योग्य—ईशितव्यैः किमस्माभिः —भाग० १०।२३।४५ ।

ईश्वरकान्तम् (नपुं०) एक भूखण्ड जिसका समस्त क्षेत्रफल ९६१ वर्ग में विभक्त हो जाता है—माल० ७।४६।४८ ।

ईश्वरकृष्णः (पुं०) सांख्यकारिका का कर्ता ।

ईषत्कार्य (वि०) [ईषत्+कृ+ण्यत्] जो थोड़े से प्रयत्न से सम्पन्न हो सके ईषत्कार्यो दधस्तस्य—महा० ५।७४।२६ ।

ईषल्लभ (वि०) [ईषत्+लभ्+अच्] आसानी से उपलब्ध होने वाला - नै० १२।९३ ।

ईषद्वीर्यः [न० ब०] बदाम का वृक्ष ।

ईसराफः (पुं०) फलित्तज्योतिष में चौथा योग ।

ईहः (वेद०) [ईह्+अच्] स्तुति ।

उ

उका (स्त्री०) अवशेष, बचाखुचा ।

उच्चक्रम् (नपुं०) [वच्+अक] 1. जीवन, प्राण—उच्चक्रेन रहितो ह्येष मृतकः प्रोच्यते यथा—भाग० ११।१५।६ 2. उपादान कारण—एतद्वेद्यामुच्चक्रमयो हि इवाणि नानान्युत्तिष्ठन्ति—बृ० १।५।१ ।

उच्चथः (पुं०) [वच्+अक] अग्नि - उच्चथो नाम महाभाग त्रिभिरङ्गैरभिष्टुतः—महा० ३।२१९।२५ ।

उच्चारलक्षणम् (नपुं०) शतपथब्राह्मण का छठा अध्याय ।

उच्चयः (पुं०) [उत्तायां संस्कृतः] एक क्रीमाकरम का नाम ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तरम् (नपुं०) खारी सीमें से निकाला हुआ नमक, सांभर नमक।

उग्र (वि०) [उद्+रन्, गश्चान्तादेशः] 1. भीषण, क्रूर, दारुण, घोर, प्रचण्ड। सम०—**काली** दुर्गा का एक रूप, —**नृसिंहः** नृसिंह का एक रूप,—**पीठम्** एक भूपरिकल्पना जिसमें क्षेत्रफल ३६ सम भागों में विभक्त होता है—मान० ७।७, —**वीर्यः** हींग,—**श्रवस्** रोमहर्षण के पुत्र का नाम।

उचित (वि०) [उच्+क्त] अन्तर्जात, नैसर्गिक उचितं च महाबाहुः न जहौ हर्षमात्मवान्–(उचितः=स्वभावसिद्धम्)—रा० २।९।३७। सम० —**ज्ञ** (वि०) जो औचित्य को समझता है।

उच्च+अवच (उच्चावच) (वि०) [उत्कृष्टं च अपकृष्टं च] ऊँचा-नीचा, छोटा-बड़ा।

उच्चध्वजः शाक्यमुनि का नाम।

उच्चटम् (नपुं०) टीन, रांगा, कलई।

उच्चक् (स्था० पर०) टकटकी लगा कर देखना, निडर होकर देखना—भाग० ६।१६।४८।

उच्चयापचयौ [उच्चयः अपचयश्च, द्व० स०] समृद्धि और क्षय, उत्थान और पतन।

उच्चाटित (वि०) [उद्+चट्+णिच्+क्त] उखाड़ा गया, दूर फैंक दिया गया दशकन्धरो···उच्चाटितः —भाग० ९।२४।२३।

उच्चारप्रस्रावस्थानम् (नपुं०) शौचालय, मण्डल।

उच्चार्यमाण (वि०) [उद्+चर्+णिच्, कर्मणि शानच्] जो बोला जा रहा है।

उच्चुम्ब् (स्था० पर०) मुख ऊपर उठाकर चुम्बन करना।

उच्छिखण्ड (वि०) [ब० स०] (मोर के) पंख अपने परों को ऊँचा किये हुए।

उच्छिष्ट (वि०) [उत्+शिष्+क्त] जूठा, अपवित्र, अशुद्ध उच्छिष्टमपि चामेध्यम् आहारं तामसप्रियम् भाग०।

उच्छिष्टभोजनम् (नपुं०) सोम।

उच्छ्रिखित (वि०) [उद्+श्रि+इतच्] जिसने अपने सींग ऊपर को सीधे खड़े किए हुए हैं।

उच्छ्रयः [उद्+श्रि+अच्] एक प्रकार का कलात्मक स्तम्भ (रुद्रदामन का गिरनारस्थित शिलालेख —एप० इंडि० तृतीय० भाग)।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. ज्ञाग (जैसे कि समुद्र में)–सिन्धोरुच्छ्वासैः पतप्यन्तमुडुपम् कि० ९। ८६।४३ 2. बढ़ना, उभार होना।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उद्+श्वास+णिनि] वियुक्त, विभक्त।

उज्जागरः [उद्+जागृ+घञ्] उत्तेजना, उलटफेर।

उज्जूटित (वि०) [उद्+जूट्+क्त] जिसने अपने सिर के जाल जटा के रूप में शिखा बाँधकर रक्खे हुए हैं।

उज्झटा (स्त्री०) एक प्रकार की साड़ी।

उज्झित (वि०) [उज्झ्+क्त] 1. परित्यक्त–चिरोज्झितालक्तकपाटलेन ते कु० ५ 2. निष्कासित, उंडेला हुआ—अविरतोज्झितवारि—कि० ५।६।

उडुकुलम् [उडु+टक्कु+स्युट्] 1. छाप लगाना, या अक्षर खोदना 2. आधुनिक टाइप करने की क्रिया।

उडुगणाधिपः [त० स०] चन्द्रमा।

उडुगणाधिम् (नपुं०) मुक्तोपरि नक्षत्रपुंज।

उड्डामरिन् (वि०) [उद्–डामर+णिनि] जो असाधारण रूप से बहुत कोलाहल करता है।

उद्दियानम् (नपुं०) अंगुलियों की विशिष्टमुद्रा।

उद्दम् (नपुं०) 1. जपा, गुडहल 2. पानी।

उत (वि०) [वे+क्त] बुना हुआ, सीया हुआ।

उत्कम्पति (ना० धा० पर०) बेचैन या आतुर बना देता है–मनस्विनीरुत्कयितुं पटीयसा–शि० १।५९।

उत्कच (वि०) [उत्+कच] जिसके बाल सीधे ऊपर को खड़े हों।

उत्कर्तक (वि०) [प्रा० स०] जो कूंची अपने हाथ में लेकर ऊपर को उठाये हुए है।

उत्कूलनिकूल (वि०) [उत्कोन्तः निर्गतश्च कूलात्] किनारे से कभी नीचे कभी ऊपर होकर बहने वाला।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1. ऊपर को खींचना 2. छील देना। उखाड़ देना।

उत्कर्षणी [उत्कर्षण+ङीप्] एक 'शक्ति' का नाम।

उत्कृष्ट (वि०) [उद्–कृष्+क्त] 1. खींचा हुआ–ऐरावतविषाणाग्रमुत्कृष्टकिणलक्षणम् रा० ६।४०।५ 2. तोड़ा हुआ उत्कृष्टपर्णकमला—रा० ५।१९।१५ (उत्कृष्टानि=चुटितानि) 3. सींचा हुआ—महा० १४।५९।१०।

उत्कोचः [उद्+कुच्+अच्] 1. रिश्वत, घूस–उत्कोचैर्वञ्चनाभिश्च कार्याण्यनुविहन्ति च महा० १२।५६। ५१ 2. दण्ड।

उत्कोचिन् (वि०) [उत्कोच+णिनि] जिसे रिश्वत दी जा सके, भ्रष्टाचार में ग्रस्त–उत्कोचिनां मृगोक्तीनां वञ्चकानां च या गतिः महा० ७।७३।३२।

उत्कोठः (पुं०) [उत्कुट्+घञ्] कोढ़, कुष्ठ का एक प्रकार।

उत्क्वथ् (स्था० पर०) उबाल कर सत्त्व निकालना, कर्म० उबाला जाना, (प्रेम से) उपभुक्त किया जाना।

उत्तान (वि०) [उत्+तनु+घञ्] विस्तारयुक्त, फैला हुआ। सम० —**अर्थ** (वि०) ऊपरी, निस्सार, उथला, **पट्टम्** फर्श **पट्टं** चोलानपट्टं –(आबू शिलालेख —इंडि० एंटी० भाग ९), **हृदय** (वि०) उत्तम हृदय वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उल्मपनः [उत्+तप्+ल्युट्] देदीप्यमान आग ।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] बढ़िया, श्रेष्ठ,—मः (पुं०) ध्रुव का सौतेला भाई । सम०—इतालम्ब मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की पूर्ण ऊँचाई के १२० सम प्रमाणों को इंगित करने के लिए प्रयुक्त होता है —व्यसन् जीवन की अन्तिम अवस्था—शत० १२। ९।१।८, व्रता पतिव्रता स्त्री हृदयस्थेव शोकाग्नि-संतप्तस्योत्तमव्रताम् भट्टि० ९।८७,—श्रुत: उच्चतम शिक्षा प्राप्त ।

उत्तमर (वि) श्रेष्ठ ।

उत्तम्भः [उद्+स्तम्भ्+घञ्] आयताकार संरचना —गरुड० ४७।२१ ।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1. उत्तर दिशा 2. ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा 3. बाद का 4. आयताकार साँचा मान० १३।६७ 5. आगे की कार्यवाही, अगली प्रक्रिया उत्तरं कर्म यत्कार्यं—रा० ५।३ 6. आच्छादन, आवरण—महा० ६।६०।९ । सम० —अगारम् । (उत्तरागारम्) ऊपर का कमरा, अभिमुख (वि०) उत्तर दिशा की ओर मुंह है मुंह जिसका, —तापनीयम् नृसिंहतापनीय उपनिषद् का उत्तर भाग, —नारायणः पुरुषसूक्त का उत्तर खण्ड,—षोधिः (स्त्री०) उत्तरीय मंडल ।

उत्तावल (वि०) उतावला, आतुर ।

उत्त्रस्त (वि०) [उद्+त्रस्+क्त] डरा हुआ, भयभीत ।

उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1. मठ, विहार 2. युद्ध करने के लिए तैयार सेना की स्थिति युद्धानुकूल-व्यापार उत्थानमिति कीर्तितम् (शुक्र० १।३२५ । सम० शील: कर्मशील व्यक्ति, शीलिन् (वि०) सक्रिय, परिश्रमी ।

उत्पचविपचा (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पच+निपच' (अर्थात् पूरी तरह से और भलीभाँति पकाओ) कहा जाय ।

उत्पाटयोगः [त० स०] फलित ज्योतिष का एक योग ।

उत्पतनिपता (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पत (ऊपर को उड़ो)+निपत (नीचे उड़ो)' शब्दों को बार-बार कहा जाय ।

उत्पातप्रतीकारः (शान्तिः) [ष० त०] अशुभ शकुनों से बचने के लिए शान्ति के उपायों का अवलम्बन, —कौ० अ० २।७ ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) (वेद०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. यज्ञ —उत्पत्तिरिति यज्ञं ब्रूमः मी०सू० ७।१।३—७ पर शा० भा० 2. मूल विधि, वेद में आधारभूत अध्यादेश, इसे उत्पत्तिभूति और उत्पत्तिविधि भी कहते हैं मनु० ४।३ ।

उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्] एक जड़ी बूटी का नाम ।

उत्पादित (वि०)[उद्+पद्+णिच्+क्त]पैदा किया गया ।

उत्पाद्य (वि०) [उद्+पद्+णिच्+ण्यत्] जो अभी पैदा किया जाना है—लोपाय उत्पाद्य इवास्य पालः -- कु० १।३५ ।

उत्पलिनी [उत्पल+णिनि, स्त्रियां ङीष्] एक शब्दकोश का नाम ।

उत्प्रेक्षावयवः [ष० त०] एक प्रकार की उपमा ।

उत्प्रेक्षावल्लभः एक कवि का नाम ।

उत्प्रेक्षित (वि०) तुलना की गई (जैसा कि उपमा में की जाती है) ।

उत्प्रेक्षितोपमा उपमा अलंकार का एक भेद ।

उत्प्लुत (वि०) [उद्+प्लु+क्त] कूदा हुआ, ऊपर को उछला हुआ ।

उत्फुल्ल (वि०) [उद्+फुल्+क्त] उद्धत ढीठ, गुस्ताख ।

उत्फुल्लिङ्ग (वि०) [उद्+स्फुल्लिङ्ग+इङ्गच्] जिसमें स्फुलिङ्ग निकले, चिंगारियाँ उगलने वाला ।

उत्सङ्गकः [उद्+सञ्ज्+घञ्, स्वार्थे कन्] हाथ की विशेष मुद्रा ।

उत्सक्त (वि०) [उद्+सञ्ज्+क्त] संबंधीभाव—उत्सक्ता पाण्डवा नित्यम् - महा० १।१४०।३ ।

उत्सक्तिः (स्त्री०) [उद्+सञ्ज्+क्तिन्] नाश, विनाश, क्षय ।

उत्सन्नकुलधर्मन् (वि०) [ब० स०] जिसकी कुल परम्पराएँ छिन्न-भिन्न हो गई हों—उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन, नरके नियतं वासः—भग० १।४६ ।

उत्सवोदयम् (नपुं०) मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की ऊँचाई के अनुसार उसके मान को इंगित करे—मान० ६।९१-९३ ।

उत्सवविग्रहः [त० स०] जलूस के रूप में निकाली जाने वाली प्रतिमा, मूर्ति (विप० मूलविग्रह) ।

उत्साहः [उद्+सह +घञ्] अक्षिष्टता, उजड्डपन ।

उत्साहयोगः [त० स०] अपनी सामर्थ्य या शक्ति का उपयोग करना—चारेणोत्साहयोगेन— मनु० १।२९८ ।

उत्सेकः [उद्+सिच्+घञ्] उत्साह,—मामकस्यास्य सैन्यस्य हतोत्सेकस्य सञ्जय—महा० ८।७।१ ।

उत्सूर्यशायिन् (वि०) [उद्+सूर्य+शी+णिच्+इनि] जो सूर्य निकल जाने पर भी सोता रहता है,—महा० १२।२२८।६४ ।

उत्सृतिः (उच्छृतिः) (स्त्री०) [उद्+सृ (श्रृ)+क्तिन्] उच्चतर जाति—मनु० ५।४० ।

उत्सृज् (तुदा० पर०) व्यवस्थित करना, जमाना, निश्चित करना—आत्मानं यूपमुत्सृज्य स यज्ञो ऽन्तादक्षिणः—महा० १२।९७।१० ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1. राशि, ढेर—अक्षस्य सुबहून् राजन् उत्सर्गान् पर्वतोपमान् - महा० १४।८५ ।१८ 2. (पुरोहितों की) सेवाएँ उपलब्ध करना—उत्सर्गे तु प्रमादस्यात् --मी० सू० ३।७।१९ (उत्सर्गः परिक्रयः—शा० भा०)।

उत्सर्गसमितिः (स्त्री०) जैनमत का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार मलमूत्रोत्सर्ग करते समय ऐसी सावधानी बरतना, जिससे कि किसी जीव जन्तु की हत्या न हो।

उत्सर्तृकामः, (—मम्नः) (वि०) [उत्सर्तृ+सुप्+काम, मनो वा] उत्सर्ग करने की (जाने की दो, रहने की दो) इच्छा रखना।

उत्सर्पिन् (वि०) [उत्+सर्प्+णिनि] 1. किनारों के बाहर होकर बहने वाला,—उत्सर्पिणी न किल तस्य तरङ्गिणी या—नै० ११।७७ 2. बढ़ाने वाला, उठाने वाला।

उत्स्नात (वि०) [उद्+स्ना+क्त] जो स्नान करके बाहर निकल आया है।

उत्स्नेहथम् [उद्+स्निह्+णिच्+क्यु] पिसरना, फिसलना, विचलित होना।

उत्स्मितम् [उद्+स्मि+क्त] मुस्कराहट।

उत्स्रोतस् (वि०) [उद्+स्रु+असि] (जीवन में) ऊपर की ओर रुझान रखने वाला।

उत्स्वापमिरः (ब० व०) नींद में बोले गये शब्द—नै० १२।२५।

उदम् [उन्द्+अच्, नलोपः] पानी, जल।

उदकम् [उन्द्+क्वुल्, नलोपः] पानी, जल। सम०—अञ्जलिः 1. चुल्लूभर पानी 2. तर्पण करने के निमित्त जल,—क्रीडिका जलक्रीडा जिसमें परस्पर एक दूसरे पर जल छिड़का जाता है,—प्रवेशः जलसमाधि, जलप्रवाह,—भूमिः जलयुक्त या गीली भूमि, अब्जरी (स्त्री०) आयुर्वेद का एक ग्रन्थ, - वाद्यम् जलतरंग नामक एक वाद्ययंत्र जिसमें जल से भरे हुए प्यालों की छड़ी से खूब आते हैं।

उदग्रभूतत्वम् [उद्गतमग्रं यस्य+प्लु+क्त, तस्य भावः] तेज़ गति के कारण सलगें लगाना —पश्योदग्रप्लुतत्वात् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति— मा० १।७।

उदग्रनख (वि०) [ब० ब०] हस्ताञ्जलि बाँधे हुए कायेन विनयोपेता मूर्ध्नोदग्रनखेन च—महा० ७।५४।६।

उदञ्जित (वि०) [उद्+अञ्च्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, सदञ्चितमुदञ्चितनिकुञ्चितपदम्—पं० तं० स्तु० १।

उदण्ड (वि०) [उद्+अण्ड+अच्] बहुत से अंडे देने वाला।

उदक (नपुं०) [उन्द्+कनिन्] पानी, जल। सम०—आशयः झील, सरोवर—शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा—भाग० १०।३१।२, —कोष्ठः जलपात्र, जल कलश,—जम्बु कमल—शार्ङ्गयोऽहत्प्रयुयुजमध्वनुतास्त्रं ते—भाग० १०।१४।१३, —प्लवः पानी की बाढ़।

उदक्षात् (उद्+अप्+असु—दिवा० पर०) फेंक देना, परित्याग कर देना—ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव —भाग० १०।१४।३।

उदराग्निः [ष० त०] जठराग्नि, पाचक अग्नि।

उदराजः [उदर+अद्+घञ्—ब० स०] एक प्रकार का कीड़ा जो पेट के बल रेंगता है।

उदर्कः [उद्+ऋच्+घञ्] वृद्धि—सर्वार्द्धपुष्पयोदर्कम् —भाव० ३।२३।१३।

उदवस्य (वि०) [उद्+अव+सो+अच्] अन्तिम, आखिरी—भाग० ४।७।५।६।

उदवसयति [उद्+अव+वस्+णिच्+ल्युट्] रुकावट।

उदवस्त (वि०) [उद्+अस्+क्त] बाहर निकला हुआ —परिभ्रमद्भ्रपात्र उदवस्तलोचनः—भाग० ३।१९।२६।

उदवस्तात् (अ०) [उद्+अस्तात्] ऊपर—विभूतयस्त्रोजस हरेरवस्तरत्रेयाति चक्रं नृप शौणुसारम्—भाग० २।२। २४।

उदात्तनायकः (पुं०) महाकाव्य के उपयुक्त नायक का एक भेद—चतुर्वर्गफलोपेतं चतुरोदात्तनायकम्—काव्य० १।

उदात्तराघवः एक नाटक का नाम।

उदात्यूहः (पुं०) एक प्रकार का जल काक।

उदायती (स्त्री० आ०) उठाना, उन्नत करना।

उदारबीर्य (वि०) विपुलशक्तिसम्पन्न, महाबलशाली।

उदारवृत्तार्थपद (वि०) [ब० स०] जिस (रचना) में शब्द, अर्थ और छन्द सभी उत्तम हों।

उदारसत्त्वाभिजन (वि०) [ब० स०] जिसका उत्तम कुल में जन्म हो तथा जिसका चरित्र भी अत्युत्तम हो —उदारसत्त्वाभिजनौ हनूमान्—रा० ४।४७।१४।

उदावसुः जनक का एक पुत्र।

उदयः [उद्+इ+अच्] 1. उठना, उगना, ऊपर जाना 2. आरम्भ—अभिगम्योदयं तस्य कार्यस्य प्रत्यवेदयत् --महा० ३।२८२।२२ 3. अचूकपना, अमोघता —पर्याप्तः परवीरभयशस्यस्ते बलोदयः रा० ५। ५६।११ 4. आयुष्यकर्म, दीर्घजीवी होने का यत्न —हस्ते गृहीत्वा सह रामभद्रयुतं नीत्वा स्ववारं कृतोदयोद्यमम् भाग० १०।११।२० 5. पूर्वी दिशा, प्रथम चान्द्रभवन,—इन्द्रः इन्द्रप्रस्थ नगर पुरे कुरूणामुदये-नुनाम्नि—महा० ७।२३।२९,—उन्मुख (वि०) उन्नति के द्वार पर, समृद्धि की देहली पर, भास्करः एक प्रकार का कपूर—नै० १८।१०३,—राशिः नवम-पुंज जिसमें कि एक ग्रह क्षितिज में उगता है।

उदित (वि०) [उद्+इ+क्त] 1. विख्यात, विस्थात --चित्रयोधी सम्मतश्चातो जमूवातिरथोदितः --महा०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१।१३९।१९ 2. आरब्ध, शुरू किया गया—प्रभुभिरुदित आर्ये—विक्र० २६ 3. उद्बुद्ध, जागा हुआ —तां रात्रिमुषितं रामं सुखोदितमरिन्दमम्—रा० ६। १२१।१ ।

उदित्वर (वि०) 1. ऊपर जाने वाला, ऊपर उठने वाला अविदितगतिर्ददेहेकादुदित्वरविक्रमः—शिव० १४। १०६ 2. आगे बढ़ने वाला—गोप्तुं क्षौरिरिवित्वरत्वर उदैद् ग्राहग्रहार्त गजम्—विक्र० १८ ।

उदे (उद्+आ+इ—अव० पर०) ऊपर जाना, उठना, उन्नत होना ।

उदेयिवस् (वि०) [उद्+आ+इ (ईयिवस्)] उगा हुआ, उदभूत, जात- सख उदेयिवान् सरस्वता कुले —आश्व० १०।३११।४।

उद्गण्डिका (स्त्री०) सुबकियाँ लेना—का० ।

उद्गल (वि०) [न० ब०] गर्दन ऊपर उठाये हुए ।

उद्गारकलक्षणिः [उद्+गृ+ण्वुल्+मत्+इन्] प्रवाल, मूँगा ।

उद्गारः [उद्गृ+घञ्] (समूही) झाग । —पतिश्चमेन तु तं दृष्ट्वा सागरोद्गारसन्निभम्—रा० ७।३२।९ ।

उद्गारचूडः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी ।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गृ+क्त] 1. बान्त, वमन किया हुआ,—निष्ठ्यूतोत्सृष्टगीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यधाश्रयम् । काव्या० 2. बाहर निकाला हुआ, निष्कासित 3. प्रेरित, कराया हुआ—काकलीकलकलेष्वुद्गीर्णकर्णज्वरः—गीत० १।३६ 4. उठता हुआ, किनारे से बहता हुआ —उद्गीर्ण इवार्णवौघः—नै० १७।३६ ।

उद्गीथम् [उद्+गै+क्थ्] सामवेद के उच्चारण में एक विशेष अवस्था ।

उद्गीतक (वि०) [उद्+गै+क्त+कन्] जो ऊँचे स्वर से गायन करता है ।

उद्ग्रथनम् [उद्+ग्रथ्+ल्युट्] बालों को संयुक्त करने के लिए पिन—सा भिर्वीक्ष्य दिशः सर्वा देव्युद्ग्रथनोत्तमम् रा० ५।६७।३० ।

उद्ग्रीवकः [उद्+ग्रीवा+इनि+कन्+टाप्] पंजों पर खड़े होना—उद्ग्रीविकादानमिवान्वभूवन् (रोमाणि) —नै० १४।५३, कामिभियुवनिधुवनलीला दर्शनार्थमिवोद्ग्रीविकाशतदानत्विग्भिः प्रदीपेषु—वास० ।

उद्ग्रहणम् [उद्+ग्रह्+ल्युट्] (अत्याचार का) आरंभ ।

उद्ग्रीव (वि०) [ब० स०] सूअर की भाँति जिसके नथुने ऊपर को हों—स्फुरदुद्ग्रीववदनः—शिव० २२।१३ ।

उद्घट्टित (वि०) [उद्+घट्ट्+क्त] उठाया हुआ, मथा हुआ - कथा० ।

उद्घटशास्त्रिन् पन्द्रहवीं शताब्दी का तमिलदेशवासी एक महान् विद्वान् ।

उद्घटन (वि०) [उद्+घट्ट्+ल्युट्] फाड़ देने वाला ।

उद्घाटनायनः [उद्घाटक+फक्] उद्घाटक की सन्तान ।

उद्घाटित (वि०) [उद्+घट्+क्त] फटा हुआ ।

उद्घोषकः [उद्+घोष्+ण्वुल्] पक्षिविशेष ।

उद्घोषका [उद्+घोष्+ण्वुल्+टाप्] एक प्रकार की चिऊँटी ।

उद्घृत्य (अ०) [उद्+घृष्+क्त्वा (ल्यप्)] आर्थऊनिक रूप से बदनाम करके या दोषारोपण करके - शि० २।११३ ।

उद्देशतः (अ०) [उद्देश+तसिल्] संकेत करके, विशेषरूप से, मुख्य रूप से, स्पष्टरूप से—एष तूद्देशतः शोक्तः —भग० १०।४० ।

उद्देशपदम् [त० स०] वह शब्द जो कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त है - ये यजमानाः इत्यूद्देशपदम्—मी० सू० ६।६।२० पर शा० भा० ।

उद्देश्यक (वि०) [उद्+दिश्+णिच्+ण्यत्] सङ्केत करता हुआ, इंगित से दर्शाता हुआ ।

उद्धत (वि०) [उद्+हन्+क्त] 1. भरपूर, भरा हुआ, समृद्ध—ततस्तु चारोद्धतमेघकल्पं—रा० ६।९७।१४२ 2. चमकीला, जगमग होता हुआ,—अन्योन्यं रजसा तेन काञ्चीयोद्धतपाण्डुना—रा० ६।५५।१९ ।

उद्धर्ष (वि०) [ब० स०] अधिकता, प्राचुर्य—आपूर्यत बलोद्धर्षवर्षैर्देवैरिवार्णवः—रा० ६।७४।३५ ।

उद्धत (वि०) [उद्+धूञ्+क्त] 1. फेंका हुआ, उछाला हुआ,—उद्धूतमिव सागरम्—महा० ५।१९३।४ 2. अव्यवस्थित, बिखरा हुआ—आसीद्वनमिवोद्धूतं स्त्रीवनं रावणस्य तत्—रा० ५।९।६६ 3. ऊँचा, उन्नत - देवदारुभिरुद्धूतैरूर्ध्ववायुमिव स्थितम्—रा० ५।५६।२९ ।

उद्धृ (=उद्+हृ) विकृत करना, भ्रष्ट करना—एव त्वां सजनामात्यमुद्धरामि स्थिरो भव—महा० ५।१८९।२३ ।

उद्धर्षित (वि०) [उद्+हृष्+क्त] हर्ष के कारण जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों ।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] प्रतीक्षा करना, आशा करना —अपि ते ब्राह्मणा भुक्त्वा गताः सोद्धरणान् गृहान् —महा० १३।६०।१४ ।

उद्धारकविधिः (पुं०) [उद्+हृ+णिच्+ण्वुल्+वि +धा+कि] देने की या भुगतान करने की रीति —तत्कथय कथमस्योद्धारकविधिर्भविष्यति—पंच० २ ।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. संकलन 2. (खाने के पश्चात्) जो थालियों में बच जाय, उच्छिष्ट । सम० —कोशः एक ग्रन्थ का नाम,—विभागः अंशों के प्रभाग, विभाजन ।

उद्धारित (वि०) [उद्+हृ+णिच्+क्त] निष्कासित मुक्त, छुड़ाया हुआ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्बद्ध (वि०) [उद् + बन्ध् + क्त] 1. बांधा हुआ 2. बाधित 3. दृढ़, संहत, कसा हुआ।

उद्बर्हण (वि०) [उद् + बृह् + ल्युट्] बढ़ाने वाला, समर्थ करने वाला, सामर्थ्य देने वाला।

उद्भञ्जनः [उद् + भञ्ज् + घञ्] तोड़ कर पृथक् कर देना, वियुक्त कर देना।

उद्भू (भ्वा० पर०, प्रेर०) विचार करना, सोचना विक्रम० ९।१९।

उद्यतायुध(शस्त्र) (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र हाथ में ले लिया है।

उद्यन्धा (स्त्री०) जंगल में या सूखी लकड़ी में रहने वाली एक काली चिऊँटी, दलोही।

उद्यामित (वि०) [उद् + यम् + णिच् + क्त] काम करने के लिए जिसे प्रेरित किया गया है आत्मनो मधुमदोद्यमितानाम्—कि० ९।६६।

उद्यापनिका [उद् + या + णिच् + युक् + ल्युट् + कन् + टाप्] यात्रा से वापिस घर आना।

उद्योजित (वि०) [उद् + युज् + णिच् + क्त] उठाया हुआ, एक चित्र (जैसे कि बादल)।

उद्योतः (पुं०) [उत् + द्युत् + घञ्] 1. चमक, उद्दीप्ति, उज्ज्वलता, 2. इस नाम का भाष्य जो रत्नावली, काव्यप्रकाश और महाभाष्यप्रदीप पर उपलब्ध है।

उद्योतकरः (पुं०) महाभाष्यप्रदीप के भाष्यकार का नाम।

उद्योतनम् [उद् + द्युत् + णिच् + ल्युट्] चमकने या प्रकाशित होने की क्रिया।

उद्रिक्तिः [उद् + रिच् + क्तिन्] आधिक्य—शिवमहिम्न स्तोत्र—३०।

उद्रेचक (वि०) [उद् + रिच् + ण्वुल्] बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उद्वामिन् (वि०) [उद् + वम् + णिनि] उलटी करने वाला।

उद्वहः [उद् + वह् + अच्] कुल या वंश में प्रधान व्यक्ति, पुत्र (जैसा कि 'रघूद्वह' में)।

उद्वाहकर्मन् (उद्वाह—ऋक्थम्) [त० स०] विवाह के लिए शुभ नक्षत्र। उद्वाहर्क्षं च निजाय रुक्मिण्या मधुसूदनः—भाग० १०।५३।

उद्वृत्ति (वि०) [ब० स०] चिनगारियाँ या अग्निकण बरसाने वाला (जैसे कि आँख)—उद्वृत्तिलोचनम् शि० ४।२८।

उद्वाश विलाप करते हुए नाम लेना, शोकाधिक्य के कारण रोने में नाम ले लेकर क्रन्दन करना उद्वाश्यमानः पितरं सरामम्—भट्टि० ३।३२।

उद्विज (पानी छिड़क कर) मनुष्य को होश में लाना।

उद्वेगः [उद् + विज् + घञ्] सुपारी—नै० ७।४६।

उद्वेगकर } (वि०) [उद्वेग + कृ + अच्, ण्वुल्, णिनि
उद्वेगकारक } वा] चिन्ताजनक, क्षोभ करने वाला, कष्ट कर या दुःखदायी।

उद्वेगकारिन्

उद्विहर्हणम् [उद् + वि + बृह् + ल्युट्] दबाना, निकालना, उठाना रसां गतायां भुवं उद्विहर्हणम्—भाग० ३।१३।४३।

उद्वेतः [उद् + वृत् + घञ्] प्रलयकाल—रा० ६।४४।१८।

उद्वृत्त (वि०) [उद् + वृत् + क्त] उलटा हुआ, उद्घाटित, प्रसारित।

उद्वृत्तः (पुं०) नाचते समय हाथों की मुद्रा।

उद्वेष्टनीय (वि०) [उद् + वेष्ट् + अनीय] खोलने के योग्य, बन्धनमुक्त करने के लायक—आधे बढ़ा विरह दिवसे या शिलादाम हित्वा, शापस्यान्ते विगलितभुजा तां मयोद्वेष्टनीयम् मेघ० ९३।

उद्व्यूढ (उद् + वि + उद् + ऊह् भ्वा० पर०) पूर्णतः छोड़ देना, त्याग देना।

उन्नादः [उद् + नद् + घञ्] कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

उन्नत (वि०) [उद् + नम् + क्त] ओजस्वी, उल्लासपूर्ण, समाधाय समुद्यताः कर्मसिद्धिभिरुन्नताः—रा० ५। ६१।५। सम० कालः छाया को माप कर समय निर्धारित करने की प्रणाली,—कोकिलः एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

उन्नतिः [उद् + नम् + क्तिन्] दक्ष की पुत्री जिसका विवाह धर्म के साथ किया गया था।

उन्नहन (वि०) [उत् + नह् + ल्युट्] अशृंखल, खुला, मुक्त, बन्धन रहित—मत्सश्चयस्य विभवोन्नहनस्य नित्यम् - भाग० ११।१।४।

उन्नाहः [उद् + नह् + घञ्] धृष्टता, हेकड़ी, औद्धत्य, अहंकार।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्मात् ब० स०] 1. तेजस्वी, देदीप्यमान (जैसे कि चन्द्रमा)—नीत्वा निर्ममन्मथोन्निद्रसैरन्ध्रिवृन्दा क्षपाः—कवि० 2. (बालों की भांति) सीधा खड़ा होने वाला, फैला हुआ।

उन्निद्रकम् } उद् + निद्रा + कन्, ता वा] जागरूकता,
उन्निद्रता } जागते रहना।

उन्मेय (वि०) [उद् + मी + यत्] सादृश्य के आधार पर जो अनुमान करने या निर्णय करने के योग्य हो, —लि० भ० १७।

उन्मणिः (पुं०) [उत्क्रान्तो मणिम्—अत्या० स०] सतह पर पड़ा हुआ रत्न—गिरयो बिभ्रदुन्मणीन्—भाग० १०।२७।२६।

उन्मथनम् [उद् + मथ् + ल्युट्] बिलो देना, कूर्म घृतोद्धिरमृतोन्मथने स्वपृष्ठे—भाग० ११।४।१८।

उन्मत्त (वि०) [उद् + मद् + क्त] 1. बहुत बड़ा, असा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धान्य उन्मत्तवेगाः प्लवमानाः—रा० ५।६२।१२, —त्तम् (नपुं०) धतूरे का फूल उन्मत्तमासाद्य हरः स्मरञ्च नै० ३।९८ (भा०)।

उन्मनीभू (भ्वा० पर०) उत्तेजित होना, क्षुब्ध होना।

उन्मुखता [उन्मुख+ता] आशा या प्रत्याशा की स्थिति।

उन्मुग्ध (वि०) [उद्+मुह्+क्त] 1. उद्विग्न, संभ्रान्त 2. मूर्ख, मूढ़।

उन्मृद् (क्रया० पर०) मसलना, मालिश करना।

उपकर्मन् (नपुं०) उपनयन संस्कार की एक प्रक्रिया जिसमें बालक का सिर मूंघा जाता है।

उपकल्पः [उप+कृप्+अच्, घञ्, वा] आभूषण—तपनीयोपकल्पम्—भाग० ३।१८।९।

उपकीचकः [उप+कीच्+वुन् आद्यन्तविपर्यय] बांस के वृक्षों की उपशाखा—विराटनगरे राजन् कीचकाद्युपकीचकम् (यहाँ 'विराट' में 'विः+राट्' श्लेष भी हो सकता है)।

उपक्रमः [उप+क्रम्+घञ्] 1. शौर्य 2. उड़ान 3. व्यवहार प्रतिक्रिया।

उपक्लप्त (वि०) [उप+क्लृप्+क्त] 1. आरब्ध 2. अधिगत 3. अवहृत।

उपक्षेपक (वि०) [उप+क्षिप्+ण्वुल्] संकेत देने वाला, सुझाव देने वाला।

उपक्षिप्तम् (नपुं०) परिशिष्ट का भी परिशिष्ट।

उपगम् (भ्वा० पर०) पूजा करना सहपत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत् —रा० २।६।१।

उपगायनम् [उप—गम्+ल्युट्] घोषणा, स्वीकृति—अप्राप्तरूपं हि प्रार्थनमुपगायनम् - मी० सू० १२।१।२१ पर शा० भा०

उपजिगमिषु (वि०) [उप+गम्+सन्+उ] पास जाने का इच्छुक, नीचैर्वक्तिव्युपजिगमिषोः भेघ० ४४।

उपगूढ (वि०) [उप+गुह्+क्त] 1. ग्रस्त, उत्पीडित - कन्यामुपगूढो नष्टश्रीः कृपणो वृद्धप्रायस्कः—भाग० ४।२८।६ 2. आच्छादित, ढका हुआ लताभिः पुष्पितायाभिरुपगूढानि सर्वतः —रा० ४।१।९।

उपगानम् [उपगै+ल्युट्] सहगामी संगीत।

उपगेयम् [उपगै+यत्] गायन, गीत।

उपगृह् (भ्वा० पर०) निगलना, हड़प करना, ग्रहणग्रस्त होना।

उपघ्रा (भ्वा० पर०) सूंघना पर्यश्रुरस्वजत मूर्धनि चोपजघ्रौ रघु० १३।७०।

उपचतुर (वि०) लगभग चार, चार के आसपास।

उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना।

उपचरितम् (नपुं०) सन्धि का विशेष नियम।

उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1. सेवा, पूजा 2. शिष्टता, सौजन्य। सम० **छद्मन्** आलंकारिक रूप से प्रयुक्त किसी उक्ति के शब्दार्थ का उल्लेख करके एक प्रकार का निराकरणीय आभासी अनुमान, **पदम्** शिष्टता का शब्द, औपचारिक उच्चारण।

उपच्छन्न (वि०) [उप+छद्+क्त] गुप्त, छिपा हुआ।

उपच्छल (पर०) क्षीण होना, पकड़ खोना।

उपजानु (वि०) [उप—जन्+डानुङ्] घुटने के निकट।

उपतल्पः [उप+तल्+घ] 1. ऊपर की मंजिल का कमरा 2. एक प्रकार की लकड़ी का चौकी या स्टूल।

उपतीर्थम् [उप+तृ+थक्] 1. सरोवर या नदी का तट 2. निकटवर्ती प्रदेश—महा० ५।१५२।७।

उपत्यका [उप+त्यकन्+टाप्] पर्वत की तलहटी का निम्नदेश गिरेरुपत्यकारण्यवासिनं संप्रापदा० ५०।५।

उपदंशनम् [उप+दंश्+ल्युट्] प्रकरण, प्रसंग— मी० सू० ६।८।३५ पर शा० भा०।

उपदर्शितम् [उपदृश्+क्त] प्रकरण बताते हुए उल्लेख करना।

उपदातृ (वि०) [उप+दा+तृच्] देने वाला।

उपदेहः [उप+दिह्+घञ्] लपेटना, लेप करना, चित्रित करना - देहोपदेहात्किरणैर्मेणीनाम् - नै० १०।९७।

उपदेहिका [उपदेह्+कन्+टाप्] दीमक।

उपद्रवः [उपद्रु+घञ्] 1. सप्ताहक याग का छठा भाग। छा० २।८।२ 2. हानि, क्षोभ अवस्थोपद्रवं पश्य मृतो हि किमशिष्यति रा० २।१०८।१४।

उपद्वारम् [अव्य० स०] पार्श्वद्वार।

उपधा (जुहो० उभ०) धोखा देना।

उपधालोपः [ष० त०] अन्तिम से पूर्व का लोप।

उपधानम् [उपधा+ल्युट्] तनाव बताने के लिए वाद्ययंत्र में के तारों के अंदर रखे हुए लकड़ी के टुकड़े - पार्श्वोपधानात् श्यानत्वम् महा० ४।३५।१६।

उपधानीयम् [उप+धा+अनीयर्] 1. तकिया, गद्देदार बिछावन 2. गद्दादान।

उपध्या (भ्वा० उभ०) पूजा करना।

उपनतिः [उप+नम्+क्तिन्] 1. झुकाव 2. देय।

उपनम्र (वि०) [उप+नम्+र] आनेवाला, उपस्थित होने वाला।

उपनिबद्ध (वि०) [उप्+नि+बन्ध्+क्त] 1. रचित 2. विभ्रष्ट किंचिदुपनिबद्ध उत्तर० ७।

उपनिषेद् (भ्वा० पर० आ०) प्रसन्न करना।

उपनिर्गमः [उप+निर्+गम्+घञ्] मुख्य सड़क, प्रधान मार्ग।

उपनिर्गमनम् [उप+निर्+गम्+ल्युट्] द्वार, दरवाजा।

उपनिर्हारः [उप+निर्+हृ+घञ्] आक्रमण, हमला —तेदानीमुपनिर्हारे रावणो हातुमर्हति रा० ६।७५।२।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपनिविष्ट (वि०) [उप+नि+विश्+क्त] 1. मेरा डालने वाला रखने वाला, अधिकार करने वाला।

उपनिवेशः [उप्+नि+विश्+घञ्] 1. बेहात, उपनगर 2. स्थापना।

उपनिषद् [उपनि+षद्+क्विप्] संकेतन—शब्देन विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा—छा० १।१।१०।

उपनिषेव् (भ्वा० आ०) अपने आपको संलग्न करना।

उपनयः [उप+नी+अच्] (किसी भी शास्त्र में) दीक्षा।

उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] नियोजन, नियुक्ति, अनु प्रयोग।

उपनीत (वि०) [उप+नी+क्त] 1. विवाहित 2. ब्रह्मचर्य आश्रम में दीक्षित।

उपनुन्न (वि०) [उप+नुद्+क्त] उड़ा हुआ, लहरों में बहा हुआ—द्रुतमथनुपनुन्नैः—शि० ४।६८।

उपनेत्रम् [उप+नी+ष्ट्रन्] ऐनक, चश्मा।

उपन्यस्तम् [उप+नि+अस्+क्त] मल्लयुद्ध के समय हाथों की विशिष्ट मुद्रा—रा० ६।४०।२६।

उपपतित (वि०) [उप+पत्+क्त] उपपातक या किसी सामान्य पाप का अपराधी, नगण्य पाप का दोषी।

उपपत्तिः [उप+पद्+क्तिन्] 1. दुर्घटना, संपात—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव—महा० १२।२८८। ११ 2. उपयुक्त, तर्कसंगत—उपपत्तिमद्भिर्वचनाश्रयं नृपमूचे वचनं बकोदरः—कि० २।१।

उपपत्तिपरिष्कृत (वि०) [त० स०] अनिवार्य, अप्रमाणित।

उपपत्तिसमः [त० स०] न्यायशास्त्र में वर्णित विरोध जहाँ दोनों विरुद्ध उक्तियाँ सिद्ध की जा सकती हैं।

उपपद्म (वि०) [उप+पद्+क्त] इच्छानुकूल, रुचिकर —उपपद्मेषु शरेषु पुत्रेषु च विशेषते—रा० २।१०१।१८।

उपपाद्य (वि०) [उप+पद्+ण्यत्] 1 अनुपालन्य 2. प्रमाण-सापेक्ष 3. सत्ता में आने वाला।

उपपर्वन् (नपुं०) [प्रा० स०] चन्द्रमा के परिवर्तन से पूर्व का दिन।

उपपाशः [उप+पद्+णिच्+घञ्] अतिरिक्त, स्तम्भ।

उपप्लवः [उप+प्लु+अप्] हानि, विफलता—मायया विश्रमक्रियतो न वेद स्मृत्युपप्लवात्—भाग० १०।८४।२५।

उपप्लाव्यम् (नपुं०) मत्स्यदेश की राजधानी का नाम।

उपप्लुत (वि०) [उप+प्लु+क्त] दबाया हुआ, भींचा हुआ—कि० ८।३९।

उपभृ (जुहो० उभ०) धारण करना, वहन करना।

उपभृत (वि०) [उप+भृ+क्त] संगृहीत, निकट लाया गया—शिष्यायोपभृतं तेजो—भाग० ८।१५।२९।

उपभेदः [उप+भिद्+घञ्] उप प्रभाग।

उपमन्यवस् (वि०) (वेद०) [ब० स०] प्रशस्त—यशः स्थापितकवि कवीनामुपमश्रवस्तमम्—ऋ० २।२३।१।

उपमन्त्रिन् (पुं०) [उपमन्त्र+इनि] 1. अवरपरामर्शदाता, या मन्त्री 2. संदेशवाहक· स्मरेज्ज उपमन्त्रिन् भक्ष्यलाभव्यवार्ता · भाग० १०।७१।२९।

उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] कर्मविरुद्ध सिद्धान्त—विधर्मः परधर्मश्च आभास उपमा छलः—भाग० ७।१५।१२।

उपमाव्यतिरेकः (पुं०) तुलना और वैषम्य का संयोग।

उपमर्दनम् [उप+मृद्+ल्युट्] निग्रह, निरोध।

उपमेखलम् (अ०) [प्रा० स०] (पर्वत के) ढलान पर।

उपयापनम् [उप+या णिच्+ल्युट्] 1 निकट पहुँचाना 2. विवाह

उपयुक्तः [प्रा० स०] अधीनस्थ अधिकारी—कौ० अ० २।५।

उपयोगवत् [उपयोग+मतुप्, मस्य वत्वम्] उपयोगी, काम का।

उपयोगशून्य (वि०) [त० स०] व्यर्थ, निरर्थक।

उपयोज्य (वि०) [उप+युज्+ण्यत्] कार्य में लाने के योग्य।

उपरञ्ज्य (अ०) [उप+रञ्ज्+क्त (ल्यप्)] काला कर के, मिटा कर।

उपरञ्जक (वि०) [उप+रञ्ज्+ण्वुल्] 1. रंगने वाला 2. प्रभावशाली।

उपरतप्रोषिता (वि०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो चुका है।

उपरम्भ (स्वा० पर०) प्रतिध्वनि करना, गुंजाना।

उपरि (अ०) [ऊर्ध्व+रिल, उप आदेशः] ऊपर, उपरांत· बाद। सम०—काण्डम् मैत्रायणी संहिता का तीसरा खण्ड, —तलम् सतह, —बृहती बृहती छंद का एक भेद, —स्थ (स्थ) ऊपर रक्खा हुआ।

उपरुद्ध [उप+रुध्+क्त] कैदी, रोका हुआ।

उपरोधः [उप+रुध्+घञ्] उच्छेद, लोप, निकालदेना आनर्थक्याद्धि प्राकृतस्योपरोधः स्यात्—भी० सू० ८।४।१५। सम०—कारिन् (वि०) विघ्नकारी, रुकावट डालने वाला।

उपलः [उप+ला+क] नकली बन्दूक द्वारा फेंकी गई गोली। सम०—प्रक्षिन् (वि०) चक्की पर अनाज पीसने वाला,—वृष्टिः ओलों की वर्षा।

उपलब्धिसमः [उप+लभ्+क्तिन्+सम्+अच्] न्याय शास्त्र का शब्द जो किसी तर्क का कुतर्क पूर्ण निराकरण दर्शाता है—न्या० व०।

उपलम्भः [उप+लभ्+घञ्, मुम् च] देखना, दर्शन करना।

उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] मन्दता, कुण्ठता।

उपलेखः [उप+लिख्+घञ्] प्रतिशाखों से संबद्ध व्याकरण की एक रचना।

उपलोहम् (नपुं०) [प्रा० स०] गौण धातु, छोटी धातु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपवञ्चनम् [उप+वञ्च्+ल्युट्] दुबकना, नीचे झुक कर चलना, लेटकर घिसरना।

उपवञ्चित (वि०) [उप+वञ्च्+क्त] धोखा दिया गया, ठगा गया, निराश

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] देश- स्वभौममेतदुपवर्तनमात्मनैव नै० ११।२८।

उपवसनम् [उप+वस्+ल्युट्] उपवास करना।

उपोषित (वि०) [उप+वस्+क्त] जिसने उपवास रख लिया है।

उपोषितम् (नपुं०) [उप+वस्+क्त] उपवास रखना।

उपोढा [उप+वह+क्त+टाप्] छोटी पत्नी जो पति को अधिक प्रिय हो।

उपविद् (वि०) [उप+विद्+क्विप्] 1. ज्ञान उठाने वाला, प्राप्त करने वाला 2. जानने वाला,- (स्त्री०) 1. अधिग्रहण 2. पूछना।

उपविष्ट (वि०) [उप+विश्+क्त]। आसीन, अधिकृत।

उपविष्टक (वि०) [उप+विश्+क्त+कन्] जो अवधि पूर्ण होने पर भी अपने स्थान पर बुढ़ता से जमा हुआ है (जैसे कि गर्भाशय में भ्रूण)।

उपवीक्ष् (उप+वि+दृश्) (आ०) 1. देखना 2. उचित या उपयुक्त समझना।

उपवेशम् (अ०) [प्रा० स०] ग्वालों की बस्ती के पास।

उपशक् (दिवा० उभ०) 1. यत्न करना, सहायता करना 2. जानना, पूछताछ करना 3. (स्वा० पर०) समर्थ या योग्य होना।

उपशमः [उप+शम्+घञ्] ज्योतिष में बीसवाँ मुहूर्त। सम०—क्षयः (जैन०) मूक रहकर कर्म नाश, कर्म न करना।

उपशायस्थ (वि०) [उपशाय+स्था+क] घात में लगा हुआ।

उपशौर्यकम् [उपशौर्य+कन्] 1. प्रसस्तिक रोग 2. नीतियों का हार।

उपशूरम् (अ०) [प्रा० स०] शौर्य की कमी से।

उपशूर (वि०) [प्रा० स०] जिसमें शौर्य की कमी हो।

उपश्रुतिः [उप+श्रु+क्तिन्] 1. अनश्रुति, अफवाह —नोपश्रुति कटुकान् महा० ५।३०।५ 2. अन्तर्निविष्ट, समावेशन—यथा त्रयाणां वर्णानां संख्यातोपश्रुतिः पुरा- महा० १२।१४।६ 3. एक देवी का नाम—महा० १२।३४२।४८।

उपश्लोकः [उप+श्लोक्+अच्] दसवें मनु के पिता का नाम।

उपष्टम्भक (वि०) [उप+स्तम्भ्+अच्+कन्] सामर्थ्य देने वाला, पुनर्बलन देने वाला।

उपसंवत (वि०) [उप+सम्+यम्+क्त] संयुक्त, पक्का जुड़ा हुआ।

उपसंसद् (भ्वा० पर०) अन्दर कदम रखना। घुसना, प्रविष्ट होना।

उपसंसृष्ट (वि०) [उप+सम्+सृज्+क्त] 1. संयुक्त सम्मिलित 2. कष्टग्रस्त, अभिशप्त, निन्दित—ब्रह्मज्ञापोपसंसृष्टे स्वकुले -भाग० ११।३०।२।

उपसंस्कृत (वि०) [उप+सम्+कृ+क्त] 1. निष्पन्न, पक्व, तैयार किया हुआ 2. अलंकृत, भरा हुआ— अमृतोपमतोयाभिः शिवाभिरुपसंस्कृताः—रा० ५।१४।२५।

उपसंहृतिः [उप+सम्+हृ+क्तिन्] 1. उपसंहार, अन्त 2. विपत्ति।

उपसंक्लृप्त (वि०) [उप+सम्+क्लृप्+क्त] ऊपर जमाया हुआ—भाग० ४।९।५५।

उपसंग्रहः [उप+सम्+ग्रह+अच्] तकिया।

उपसक्त (सुदा० आ०) सलग्न होना—अथापि नोपसज्जेत स्त्रीषु स्त्रैणेषु कार्यवित्—भाग० ११।२६।२२।

उपसदनम् [उपसद्+ल्युट्] आवास, स्थान (जैसा कि 'यज्ञोपसदन' में)।

उपसादनम् [उपसद्+णिच्+ल्युट्] नम्रता पूर्वक किसी के निकट जाना।

उपसन्ध्यम् (अ०) [प्रा० स०] संध्या के निकट—उपसन्ध्यमास्त तनु सानुमतः—शि० ९।५।

उपसाध् (प्रेर० पर०) 1. दमन करना 2. संवारना, व्यवस्थित करना।

उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] बाधा ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः- योग० ३।३९।

उपसर्जनीकृत (वि०) [उपसर्जन+च्वि+कृ+क्त] दमन किया हुआ, दबाया हुआ, गौण बनाया हुआ -यशर्यः शब्दो वातमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थोऽभिधत्ते- ध्वन्या०।

उपसर्जित (वि०) [उप+सृज्+क्त] व्यस्त, लीन, विदा किया हुआ- तक्षकादात्मनो मृत्युं द्विजपुत्रोपसर्जितात् भाग० १।१२।२७।

उपसृष्ट (वि०) [उप+सृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ -अहतवाङ्मनोपसृष्टेन ब्रह्मशीर्ष्णोरुतेजसा - भाग० १।१२।१ 2. बरबाद, ध्वस्त—कालोपसृष्टनिगमावन भाग १०।८३।४।

उपसृरः [उपसृप्+घञ्] तीन वर्ष का हाथी।

उपस्कन्न (वि०) [उप+स्कन्द्+क्त] संगतिक, कष्टग्रस्त, पसीजा हुआ—स्नेहोपस्कन्नहृदया—रा० ६। १११।८७।

उपस्करः [उप+कृ+घञ्] अचार, चटनी, मिर्च-मसाला।

उपस्तीर्ण [उप+स्तृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ, छितराया हुआ 2. वस्त्रावेष्टित, आच्छादित, ढका हुआ 3. उंडेला हुआ।

उपस्थ (वि०) [उप+स्था+क] 1. निकटवर्ती,—स्थः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(पुं०) आसन एवमुत्वार्जुनः सख्ये स्थोणस्य उपादिशत्—भग० १।४७ 2. सतह—त शयान धरोपस्थे —भाग० ७।१३।१२ ।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] न्यायालय का कक्ष —उपस्थानगतः कार्यार्थिनामद्वारासङ्गं कारयेत्—कौ० अ० १।१४ ।

उपस्थापना [उप+स्था+णिच्+युच्+टाप्] जैनसाधु की दीक्षा से संबद्ध संस्कार ।

उपस्थितवक्तृ (पुं०) [उपस्थित+वच्+तृच्] आशुवक्ता ।

उपस्तुत (वि०) [उप+स्तु+क्त] बहती हुई, प्रवहणशील —स्वयं प्रवृद्धेऽस्य गुणैरुपस्तुता किं० ११।८ ।

उपस्पर्शनम् [उप+स्पृश्+ल्युट्] उपहार ।

उपहासकम् [उपहस्+घञ्+कन्] खिल्ली, हास्यपूर्ण उक्ति ।

उपहर्तृ (वि०) [उप+हृ+तृच्] उपहार प्रदान करने वाला, आतिथेयी ।

उपहा (जुहो० आ०) उतरना, नीचे आना· उपाजिहीथा न महीतलं यदि—शि० १।३७ ।

उपहार्यम् } [उप+हृ+ण्यत्, ण्वुल्, स्त्रियां टाप् च]
उपहारः } उपहार, भेंट ।
उपहारिका }

उपहितिः (स्त्री०) [उप+धा+क्तिन्] निष्ठा, श्रद्धा ।

उपहूत (वि०) [उप+ह्वे+क्त] आमन्त्रित, बुलाया गया, आवाहन किया गया ।

उपांशु (अ०) [उपगता भंशवो यत्र द० स०] 1. मन्द आवाज में, कान में कहना । सम० जपः मन ही मन में मन्त्रों का जप करना, ग्रहः यज्ञ में निचोड़ कर निकाले हुए सोमरस का परेयण, दण्डः निजी रूप से दिया गया दण्ड,—वधः गुप्त हत्या ।

उपाकृत (वि०) [उप+आ+कृ+क्त] 1. अभिप्रमित 2. उपयोग में लाया गया—यज्ञोपाकृतं वित्तं महा० १२।२६८।२२ ।

उपाक्रम (स्वा० पर०) टूट पड़ना, हमला बोलना ।

उपाघ्रा (स्वा० पर०) 1. सूंघना 2. चूमना (जैसा कि मूर्ध्न्युपाघ्राय में) ।

उपाङ्गः [प्रा० स०] जैनियों के धार्मिक ग्रंथों का समूह ।

उपाचारिन् [ब० स०] जिसने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली है—उपाचारिणो गुरुदक्षिणार्थी रघु० ५।१ ।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] सांख्य शास्त्र में वर्णित चार अन्तर्वस्तुओं में से एक प्रकृत्युपादानकालभागाख्याः—सां० का० ५० ।

उपाधा (जुहो० उभ०) (किसी स्त्री को सतीत्वसमर्पण के लिए) फुसलाना, चरित्रभ्रष्ट करना ।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1. किसी क्रिया का गौण उत्पादन, आनुषंगिक प्रयोजन 2. स्थानापत्ति, प्रतिपत्र —उपाधिर्न मया कार्यो वनवासे जुगुप्सितः · रा० २।१११।२९ ।

उपाध्वर्युः [प्रा० स०] अध्वर्यु का सहायक ।

उपारमः [उप+आ+रम्+अच्] समाप्ति, अन्त ।

उपारुद् (उदा० पर०) किसी बात के लिए रोना ।

उपार्जित (वि०) [उप+अर्ज्+क्त] 1. उपलब्ध किया हुआ अवाप्त ।

उपालभ् (स्वा० आ०) (बलि पशु के रूप में) मारने के लिए पकड़ना ।

उपावृत (वि०) [उप+आ+वृ+क्त] ढका हुआ, गुप्त ।

उपाश्लिष्ट (वि०) [उप+आ+श्लिष्+क्त] जिसके आलिङ्गन किया है, या जिसने पकड़ लिया है ।

उपासीन (वि०) [उप+आस्+शानच्, ईत्व] 1. निकटस्थ, आसपास विद्यमान, उपासना करने वाला ।

उपस्थित (वि०) [उप+स्था+क्त] 1. सवार, खड़ा हुआ, 2. घटित, प्रस्तुत, आटपका जैसे कि 'व्यसनं समुपस्थितं' में ।

उपायः [उप+अय+घञ्] दीक्षा, यज्ञोपवीत संस्कार —उपायेन प्रवतरन् उपनयनेन सह प्रवतरन्—मै० सं० पर शा० भा० । सम०—विकल्पः वैकल्पिक तरकीब ।

उपेयिवस् (वि०) [उप+इण्+क्वसु-पा० ३।२।१०९] निकट जाने वाला शि० २।११४ ।

उपेक्ष्णीय (वि०) [उप+ईक्ष्+अनीयर्] उपेक्षा करने के योग्य, नजर अन्दाज करने के लायक, परवाह न करने योग्य ।

उपेड़कीय [ना० धा० पर०—उप+एडक+क्यच्—] ऐसा व्यवहार करना जैसा कि भेड के साथ किया जाता है—पा० ६।१।९४ पर काशिका ।

उपेन्द्र+अपत्यम् [ष० त०] कामदेव ।

उपात्त (त्रि०) [उप+आ+दा+क्त] अवाप्त, अर्जित —उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी—रघु० ५।१ ।

उभय (वि०) [उभ्+अवट्] दोनों । सम०—अन्वयिन् (वि०) जो दोनों अवस्थाओं में लागू हो सके, —अलङ्कारः एक अलंकार जिसमें अर्थ और ध्वनि दोनों घट सकें, छलना दोनों प्रकार की पहेलिकाओं को दर्शाने वाला अलंकार, —पदिन् (वि०) जिसमें परस्मै-आत्मने दोनों पद विद्यमान हों, विपुला एक छन्द का नाम,—विभ्रष्ट (वि०) जो न यहाँ का रहे न वहाँ का, दोनों जगह से असफल,—कच्चिनोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति—भग० ६।३८, स्नातक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और ब्रह्मचर्यव्रत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—मनु० ४।३१ पर कुल्लूक ।

उभयतः (अ) [उभय+तसिल्] दोनों ओर से । सम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याश (वि०) जिसके दांतों और जाल बिछा हो, पुच्छ (वि०) जिसके दोनों ओर पूंछ हो प्रज्ञ (वि०) जो बाहर और भीतर दोनों ओर देख सके।

उमामहेश्वरव्रतम् (नपुं०) शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष प्रकार का एक धार्मिक व्रत।

उरगशयनः [ब० स०] शेषनाग पर सोने वाला विष्णु।

उरस् (नपुं०) [वह+असुन्, उत्वं रपरश्च] छाती। सम० —कपाटः चौड़ी सबल छाती, —क्षयः तपेदिक, छाती का रोग, —स्तम्भः दमा।

उरुपराक्रम (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली।

उरुधा (अ०) [उरु+धा] नाना प्रकार से—पश्यतं मामयोरुधा भाग० १।१३।४७।

उर्वशीशापः [ष० त०] उर्वशी का अर्जुन को शाप, जिसके फल-स्वरूप वह हिजड़ा बन गया और वह स्थिति अज्ञातवास में बहुत उपयुक्त रही। (वह उक्ति उस अवस्था में प्रयुक्त होती है जब प्रतीयमान हानिकर घटना लाभदायक सिद्ध हो जाती है)।

उलड् (चुरा० पर०—उल्लण्डयति) बाहर फेंक देना, प्रक्षेपण (धातुपाठ)।

उलिः, उल्ली (स्त्री०) सफ़ेद प्याज।

उलूकः [वल्+ऊक, संप्रसारण] एक ऋषि जिसे वैशेषिक का कर्ता कणाद समझा जाता है।

उलूकजित् (पुं०) कौवा।

उलूलि] (वि०) 1. ज़ोर से क्रन्दन करने वाला, कोला-

उलूलु] हलमय विवाहादि शुभ अवसरों पर मधुर समवेत गान, विशेषतः स्त्रियों का,—नै० १४।५१, अनर्घ० ३।५५।

उल्वण (वि०) [उल्+वन् (व) णु+अच्, पृषो० साधुः] 1. भयानक 2. पापमय। सम०—रसः घौर्य।

उल्लकः [उद्+लक्+अच्] एक प्रकार की शराब।

उल्लस् (स्वा० पर० प्रेर०) हिलाना, लहराना—जिह्वालतान्युल्लासयन्वज्रसम्—कि० १६।३७।

उल्लसत् (वि०) [उद्+लस्+शतृ] चमकता हुआ।

उल्लाघ (वि०) [उद्+ला+हन्+क] चतुर, प्रसन्न, —घः (पुं०) काली मिर्च।

उव्वटः (पुं०) ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा यजुर्वेद का भाष्यकर्ता।

उशत् (वि०) [वश्+शतृ] 1. सुन्दर 2. प्रिय, प्यारा 3. पवित्र, निष्पाप 4. अश्लील—उशद्वेदुशतीं वाचम् महा० १३।४२५।१०।

उशिजः (पुं०) कक्षीवान् के पिता का नाम।

उष्णगु: [ब० स०] सूर्य।

उष्णोरण (वि०) [उष्ण+ऊरण] अत्यन्त गर्म—उष्णोरणशीकरसृजः—शि० ५।४५।

उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] प्रभात, भोर। सम० करः चंद्रि, —कालः मुर्गा,—पतिः अनिरुद्ध, पुष्य पौषमास में प्रातः काल की जाने वाली उषा की विशेष पूजा।

उष्ट्रनिषदनम् (नपुं०) योग का एक आसन।

उष्ट्रप्रपाणः (पुं०) आठ पैर का 'शलभ' नामक एक जन्तु।

उष्ट्राक्षः [ब० स०] ऊंट जैसी आंखों वाला (घोड़ा), शालि०।

उष्णीषः [उष्णमीषते हिनस्ति ईष्+क] 1. पगड़ी 2. किसी भवन की चोटी।

उहारः (पुं०) कछुवा।

ऊ

ऊखराः (ब० व०) शैव सम्प्रदाय।

ऊखरजम् (नपुं०) 1. लवणयुक्त भूमि से तैयार किया गया नमक 2. यवक्षार, कलमीशोरा।

ऊतिः (स्त्री०) [अव्—क्तिन्] ऊतक, तांत।

ऊन् (चुरा० पर०) घटना, घटाना।

ऊनातिरिक्त (वि०) अत्यधिक या अतिन्यून।

ऊनाब्दिकम् (नपुं०) [ऊनाब्द+ठक्] वर्ष से पूर्व ही मनाया जाने वाला श्राद्ध।

ऊनमासिक (वि०) [ऊनमास+ठक्] नियमित मासिक संक्रियाओं के अतिरिक्त जो प्रतिमास श्राद्ध किये जांय तथा जो दिनों की संख्या गिनकर एक वर्ष के भीतर ही भीतर मनाये जांय।

ऊरु+अङ्कुम् (ऊर्ङ्कुम्) (नपुं०) खुम्भ, खुदरी, छत्रक।

ऊर्जमासः (पुं०) कार्तिक महीना।

ऊर्जमेध (वि०) [ब० स०] असाधारण बुद्धि से युक्त।

ऊर्ध्व (वि०) [उद्+हा+ड, पृषो० ऊर् आदेशः] सीधा, उन्नत, उच्च, —ध्वम् (नपुं०) ऊंचाई, ऊपर। सम०—गमः (पुं०) अग्नि; —तिलकः मस्तक पर जातिसूचक खड़ा तिलक—सूर्यस्पधिकिरीटमूर्ध्वतिलकप्रोद्भासि फालान्तरम्—नारायण० २।१। —पुण्ड्र (पुं०) ककड़ी, केकड़ा, —प्रमाणम् शीर्षलम्बे, उन्नतांश, वालम् चमरी हरिण की पूंछ, —शोधनः रीठे का वृक्ष।

ऊर्मिका [ऋ—मि अर्तेरुच्च, स्वार्थे कन् टाप् च] चिन्ता।

ऊर्ध्वम् (नपुं०) अपराह्न भोजन।

ऊर्ध्वायणम् [ब० स०] ग्रीष्म ऋतु।

ऊहगानम् (नपुं०) सामवेद के तीन प्रभागों में से एक।

ऊहच्छला (स्त्री०) गायत्रेदच्छला का तीसरा अध्याय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋ

ऋक्ष (स्वा० पर०) जाल से मार देना।

ऋक्षः [ऋक्ष्+स किच्च] एक प्रकार का हरिण --रोहिदभूतां सोऽन्वधावद्दक्षरूपी हतत्रयः—भाग० ३।३१।३६। सम० **दृष्टिः** (ऋक्षेष्टि) ग्रहमख, तारों के निमित्त यज्ञ, **निह्नुम्** एक प्रकार का कीड़ा, **नायकः** एक प्रकार की गोलाकार संरचना या निर्माण। अ० तु० १०४,--**प्रियः** बैल,—**विबन्धिन्** (पुं०) धोखा देने वाला ज्योतिषी।

ऋग्ब्राह्मणम् (ऋच्+ब्राह्मणम्) ऐतरेय ब्राह्मण।

ऋणकार्यः कश्यप मुनि।

ऋजुलेखा सरलरेखा, सीधी लाइन।

ऋण् (तना० पर०) जाना।

ऋणच्छेदः [ऋण+छिद्+घञ्] ऋण का परिशोध।

ऋणनिर्णयपत्रम् (ऋणपत्रम्) (नपुं०) ऋण का स्वीकृति सूचक पत्र, रुक्का।

ऋणप्रदातृ [ऋण+प्र+दा+तृ] साहूकार, रुपया उधार देने वाला।

ऋतसामन् (नपुं०) एक साम का नाम

ऋतम्भरा [ऋ+क्त+भृ+अच्, मुमागमः] बुद्धि, प्रज्ञा योग० १।४७।

ऋतुः [ऋ+तु किच्च] मौसम। सम० **चर्या** (जीवधारियों का) ऋतु के अनुकूल व्यवहार,—**जुष्** (स्त्री०) प्रजनन के उपयुक्त समय पर मैथुन में रत महिला,-- **दत्तः** ऋतु के अनुकूल यज्ञ में बलि दिये जाने वाला पशु।

ऋद्धम् [ऋध्+क्त] गाहने के पश्चात् अनाज का संग्रह करना।

ऋद्धिल (वि०) [ऋद्ध+इलच्] समृद्ध बनाया गया—राजसूयजितांल्लोकान् स्वयमेवासि ऋद्धितान्—महा० १८।३।२५।

ऋश्यमूकः एक पर्वत का नाम।

ऋषभाचलः (पुं०) शंकराचार्य के जीवन से संबद्ध केरल में एक पर्वत पर स्थित मन्दिर।

ऋषिऋणम् (नपुं०) ऋषियों के प्रति जनसाधारण का कर्तव्य, जन समाज पर ऋषियों का ऋण।

ऋषिका (स्त्री०) ऋषि-स्त्री की द्योतक एक स्त्री।

ऋष्टिः (स्त्री०) [ऋष्+क्तिन्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र --शतालवीणामृजर्ष्टिवेणुभिः—भाग० ३।१५।२१।

ए

एकः [इ+कन्] प्रजापति एक इति च प्रजापतेरभिधानमिति - मै० सं० १०।३।१३ पर शा० भा०, **कम्** 1. मन-- एकं विनियें स जुगोप सप्त - ब्० च० २।४१ 2. एकता। सम० **अक्षरम्** (एकाक्षरम्) पुनीत प्रणव, 'ओम्',—**अग्नि** (वि०) जो केवल एक ही अग्नि को रखता है, -- **अङ्कम्** वह नाटक जिसमें एक ही अङ्क हो,—**अङ्की** अपूर्ण, अधूरा,—°**रूपक** (अधूरा रूपक या उपमा), **अपवयः**—अपायः जिसमें एक अवयव कम हो,—**आहार्य** (वि०) एक सा भोजन करने वाला, जो प्रतिषिद्ध और अनुमत भोजन में विवेक न करे,—**एकश्यम्** अलग-अलग एक एक करके,—**ग्रामीण** (वि०) एक ही गांव का रहने वाला,—**चरः** तपस्वी, संन्यासी-- नाराज के जनपदे चरत्येकचरो वशी— रा० २।६७।२३,—**च्छत्र** (वि०) जो केवल एक ही छत्र से शासित हो, जहाँ एक ही राजा का राज्य हो,- **-जीववादः** (दर्शन० में) केवल जीवात्मा का सिद्धान्त,—**दण्डिन्** (पुं०) संन्यासियों की एक श्रेणी, **धुरीण** (वि०) एक ही भार को उठाने वाला— तत्कण्टनालैकधुरीणग्रीव—नै० ६।६५,—**नयनः** शुक्रग्रह, असुरों का गुरु शुक्राचार्य --(कहते हैं कि वामन ने इनकी एक आँख में तिनका चुभो दिया था), **निपातः** एक अव्यय जो अकेला ही एक शब्द है, **पादिका** एक ही पैर का सहारा लेकर खड़े होना—अपायवत्व्य क्षणमेकपादिकाम् नै० १।१२१,—**पार्थिवः** एकमात्र शासक, सम्राट् --न केवलं तद् गुरवेकपार्थिवः रघु० ३।३१,—**वाक्यम्** वाक्यरचना की दृष्टि से युक्तिसंगत वाक्य, **वाचक** (वि०) एकार्थवाची,—**वासस्** (वि०) एक ही वस्त्र से आच्छादित, --**विंशक** (वि०) इक्कीसवाँ, **विजयः** पूरी जीत - कौ० अ० १२, **वीरः** 1. प्रमुख योद्धा 2. स्कन्द के नौ सहायकों में से एक, **-व्यवहारिकाः** बौद्धों की एक शाखा,-- **शंपः** एक ही जड़ का वृक्ष।

एकक्षतम् (नपुं०) एक प्रतिशत।

एकलव्यः (पुं०) द्रोणाचार्य के एक शिष्य का नाम जिसने अपनी गुरुभक्ति के कारण धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त की।

एकाष्टका (स्त्री०) माघ मास का आठवाँ दिन।

एकाष्ठी (स्त्री०) कपास का बीज, बिनौला।

एजत् (वि०) [एज्+शतृ] काँपता हुआ, हिलता हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एणशिशुः (–शावकः) [ष० त०] हरिण का बच्चा, छौना।
एणाक्षः [ब० स०] चन्द्रमा।
एणाङ्कद्विषः [ब० स०] शिव जी।
एतत्पर (वि०) इस पर तुला हुआ, इसमें लीन।
एतनः [आ+इ+तन] 1. निःश्वास, साँस 2. एक प्रकार की मछली।
एतावन्मात्र (वि०) [एतद्+वतुप्+मात्रच्] इस स्थान तक, इस माप का, इस अंश तक, ऐसा।
एलादि (वि०) [ब० स०] कुछ आयुर्वेदिक औषधियों का पुञ्ज-जो इलायची से आरम्भ होती हैं।
एलासुगन्धि (वि०) इलायची की सुगन्ध से युक्त।
एव (अ०) [इ+वन्] पुनः, फिर—एवशब्दश्च पुनरित्यर्थे भविष्यति—मी० सू० १०-८-३६ पर शा० भा०।
एष् (स्वा० उभ०) जानना,—एषितुं प्रेषितो यातो—भट्टि० ५।८२।
एषिका [एष्+ण्वुल्+टाप्] लोहे का शहतीर जिसमें कोई छल्ला या टोपी न हो।
एष्टव्य (वि०) [एष्+तव्य] जिनके लिए प्रयत्न किया जाय, जिनकी लालसा हो, जिनके लिए लालायित हुआ जाय।

ऐ

ऐककर्म्यम् [एककर्म+ष्यञ्] 1. कार्य की एकता 2. एक ही फल में अंशभागी होने की स्थिति मी० सू० ११। १।१ पर शा० भा०।
ऐकगुण्यम् [एकगुण+ष्यञ्] एक इकाई का मूल्य।
ऐकमुख्यम् [एकमुख+ष्यञ्] 1. पूरा अधिकार 2. अधीनता।
ऐकान्त्यम् [एकान्त+ष्यञ्] 1. एकान्तता, निरपेक्षता, एकान्तवास 2. मित्रता।
ऐकारीयः [ष० त०] समीकरण।
ऐतशप्रलापः [ष० त०] अथर्ववेद का एक अनुभाग जिसका द्रष्टा ऐतश ऋषि था (यह भाग कुन्ताप सूक्तों के पश्चात् आता है।
ऐन (वि०) [इनः सूर्यः, तस्य, इदम्—अण्] सूर्य संबंधी
निर्वण्यं वर्णने समानमैनं—रा० च० ६।२५।
ऐन्दव (वि०) [इन्दु+अण्] चाँद का उपासक नै० ११।७६। सम०—किशोरः डूब का चाँद—ऐन्दवकिशोर शेखर ऐश्वर्यं चकास्ति निगमानाम्—मुरा०।
ऐरम् [इरा+अण्] राशि, ढेर।
ऐश्वर्यम् [ईश्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, सर्वोच्चता।
ऐश्य (वि०) [ईश्+ष्यत्] ईश संबंधी।
ऐश्वरकारणिकः [ईश्वर+अण्+करण+ठक्] एक नैयायिक का नाम।
ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] सर्वशक्तिमत्ता, तथा सर्वव्यापकता की शक्ति महा० १२।१८४।४०।

ओ

ओकस (वि०) [उच्+क, नि० चस्य कः, तस्मिन् जायते —जन्+ड] घर में उत्पन्न या पले (गौ आदि पशु)।
ओकसी [ओ+कण्+अच्+ङीप्] सीमावर्ती जंगल।
ओघः [उच्+घञ्, पृषो० ह्रस्व०] तीन वाद्य विधियों में से एक—नारदी० १०।१४।
ओजस् [उक्ष्+असुन्, बलोपः, गुण] वेग, गति—एष क्षतिबलः सैन्ये रमेन पवनौजसा—रा० ७।२९।१२।
ओजायितम् [ना० धा० ओज+य+क्त] साहसपूर्ण पग, हिम्मत से युक्त व्यवहार।
ओषधाः (बे०ब०) तकिया, सहारा, अवलम्बन।
ओलङ्क् [स्वा० पर०] फेंक देना, उछाल देना।
ओषधिः [ओष+धा+कि] 1. सोम का पौधा 2. कपूर।
ओष्ठः [उष्+थन्] होठ। सम०—अवलोप्य (वि०) जो होठों से खाया जा सके,—घातः सरदी के कारण होठों का फटना।
ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] ओष्ठ संबंधी, जो होठों पर रहे। सम०—योनि (वि०) जो ओष्ठध्वनि से उत्पन्न हो, स्थान (वि०) जो होठों से उच्चरित हों।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औ

औग्रसेनः [उग्रसेन+अण्] उग्रसेन का पुत्र कंस।

औच्चैय्यम् [उच्च+ष्यञ्] देशान्तर, (यह की) दूरी।

औतथ्य (वि०) [उतथ्य+अण्] उतथ्य कुल से संबद्ध, उतथ्य कुल में उत्पन्न।

औत्तमर्णिकम् [उत्तमर्ण+ठक्] कर्ज, ऋण।

औत्थितासनिकः [उत्थितासन+ठक्] बैठने के लिए आसनों का प्रबंध करने वाला अधिकारी—बं० शि० १४९।

औत्पत्तिकम् [उत्पत्ति+ठक्] लक्षण, स्वभाव—औत्पत्तिकेनैव सहननबलीयोनाः—भाग० ५।२।२१।

औदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तरी देश से संबंध रखने वाला।

औदुम्बरायणः [उदुम्बर+फक्] एक वैयाकरण का नाम।

औद्गात्रिकः [उद्गात्र+ठञ्] 'उद्गंग' अर्थात् कर का संग्राहक—घोषाल० २१०।

औपकुर्वाणक (वि०) [उपकुर्वाण+कन्] किसी नियत अवधि के ब्रह्मचारी 'उपकुर्वाण' से संबद्ध।

औपधाभिः (पुं०) उद्धव—भाग० ३।४।२७।

औपपत्यम् [उपपति+ष्यञ्] उपपति या जार से प्राप्त होने वाला हर्ष।

औपसन्ध्य (वि०) [उपसन्ध्या+अण्] संध्या आरंभ होने से जरा पूर्ववर्ती समय से संबद्ध रश्मिभिरौपसन्ध्यैः—नै० २२।५६।

औपस्थितिकः [उपस्थिति+ठक्] सेवक—एष भर्तृपादमूलोपस्थितिकां हंसः प्रतिज्ञाम्।

औमः (वि०) [उमा+अण्] उमा संबंधी।

औरसः (वि०) [उरसा निर्मितः अण्] 1. शारीरिक न ह्यस्यस्पौरसं वक्त्रम् महा० ३।११।३१ 2 नैसर्गिक—शिक्षौरसकृतं वक्त्रम्—महा० ७।३७।२०।

और्णस्थानिकः [ऊर्णस्थान+ठक्] ऊन विभाग का अधिकारी।

औषधम् [औषधि+अण्] गोरक्षाम, मुकाबला, अधिकृत्य नियधमनीषधं जनः शि० १७।७।

औषधिप्रतिनिधिः (पुं०) किसी औषधि के स्थान में प्रयुक्त होने वाली जड़ी-बूटी।

औष्ट्रिक (वि०) [उष्ट्र+ठक्] ऊंट संबंधी।

औष्ट्रिकः [उष्ट्र+ठक्] 1. ऊंट से प्राप्त (दुग्धादिक) 2. तेली—महा० ८।४५।२५।

क

कम् [कै+ड] 1. बाल, केश 2. महिला का कृत्य 3. बालों का गुच्छा 4. दूध 5. विपत्ति 6. जहर 7. भय।

कंशः [कं जलं शेते अत्र] जलपात्र।

कंसकृषः [कंस+कृष्+अच्] श्रीकृष्ण का विशेषण—निषदिवान् कंसकृषः स विष्टरे—शि० १।१६।

ककुदिन् (वि०) [ककुद्+इनि] नेता, स्वामी—आस्यं विवृत्य ककुदी—महा० १२।२८९।१९।

कक्ष्यम् [कक्ष+यत्] सूखे घास की चरागाह—प्रवक्ष्यति यथा कक्ष्यं चित्रभानुर्हिमात्यये—रा० २।२४।८।

कक्ष्या [कक्ष्+यत्+टाप्] 1. सेना का घेरा 2. प्रतिबुद्धिता 3. प्रतिज्ञा 4. शेष, अवशिष्ट।

ककुभवासस् (पुं०) [ब० स०] बाण—असंपातं करिष्यन्ति चरन्तः ककुभवाससः—रा० ५।२१।२६।

ककुभेरी (स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।

ककुभोधारणम् [ष० त०] किसी बड़े यज्ञ का उपक्रम सूचक मुख्य पुरोहित या यजमान की कलाई में सूत्र-बन्धन या कड़ा पहनाना।

ककुभेलिः (पुं०) वृक्षविशेष जिसमें शरदृतु में फूल आते हैं—पशूनामीशानः प्रमदवनककुभेलितरवे—सौ०।

ककुभेसिका (स्त्री०) केवल सिर भिगोना, सिर का स्नान।

कक्षकः [क+क्षो+क] घनी बसी हुई बस्ती।

कज्जलिका (स्त्री०) पारे का बना चूर्ण।

कञ्चुकोयः [कञ्चुक+छ] कञ्चुकी, अन्तःपुराध्यक्ष।

कञ्जिनी [कञ्ज+इनि+ङीप्] बेड़ा।

कटः [कट्+अच्] 1. चटाई 2. कुल्हा 3 बांस 4 लम्बी का तख्ता 5. हाथी की कनपटी। सम० कुटिः (पुं०) [ब० स०] फूस की छत वाली झोंपड़ी, —कृत् (पुं०) तिनकों की चटाई बुनने वाला, —पूणः हाथी जो अपनी मस्ती या कामोन्माद की पहली अवस्था में हो, —भूः हाथी की कनपटी का प्रदेश, —स्थालम् शव, लाश, —ह्वः (पुं०) जनसमुदाय-विशेष—लोके गोपालकमानय कटह्वकमानयेति चर्म्यथा संज्ञा भवति स आनीयते महा० १।१।३, फलः घुस, रिश्वत—उत्कोचेऽस्त्री कटफलः—नाना०।

कटारिका (स्त्री०) एक छोटी कटार, छुरी।

कटिनी (पुं०) हस्तिनी।

कटुभङ्गः सूखा अदरक, सोंठ।

कटुभद्रः

कट्ट् (चुरा० पर०) एकत्र करना, मिट्टी से ढकना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कटंटारिका (स्त्री०) कसाई की छुरी।

कठः [कठ्—अच्] एक ऋषि का नाम जो वैशम्पायन के शिष्य थे। सम०—उपनिषद् एक उपनिषद् का नाम, - कालापाः कठ और कालाप की शाखाएँ —रा० २।४।३ पर महाभाष्य –ये च मे कठकालापा – रा० २।३२।१८, धूर्तः यजुर्वेद की कठ शाखा में प्रवीण ब्राह्मण।

कठिनम् [कठ इनच्] 1. कुदाल—प्लवे कठिनकाजं च —रा० २।५५।१७ 2. मिट्टी का बर्तन —महा० ३।२९७।१, 3. कंधे पर जमाया हुआ फीता या बाँस जिससे बोझा ढोया जाय - पा० ४।४।७२।

कठिवल्लः (पुं०) एक प्रकार का सेव।

कठुर (वि०) [कठ् + उरच्] कठोर, क्रूर।

कठोरित (वि०) [कठोर+इतच्] कड़ा किया गया, सबल बनाया गया।

कडुली (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल।

कडेर: एक देश का नाम।

कणः [कण्+अच्] मगरमच्छ।

कणवीरकः (पुं०) एक प्रकार का संखिया।

कण्टकः [कण्ट्+ण्वुल्] मन दुखाने वाला भावण।

कण्टकिलः [कण्टक+इलच्] बाँस।

कण्टाफलः [कण्टा ; फल् ; अच्] सेमल का फल, सेमल का पेड़।

कण्ठः [कण्ठ्+अच्] गला, कण्ठ। सम०—त्रः हार, शुक्लकेयूरकण्ठत्राः महा० ५।१४३।३९, —नालम् कण्ठ की नाली, ग्रीवाप्रदेश, माला, एक रोग का नाम जो प्रायः गले में होता है, —रोधम् आवाज को कम करना।

कण्ठला (स्त्री०) बेंत से निर्मित एक टोकरी।

कण्ठिल (वि०) [कण्ठ् + इलच्] 1. पीए हुए, शराबी, 2. नंबल, उच्छृङ्खल कण्ठिलल्लडुका मे प्रतिष्ठाः प्रतिज्ञा० ३।

कण्ठोपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।

कत्ताशब्दः (पुं०) पासे फेंकने का शब्द - अरे कत्ताशब्दो निर्माणकस्य हरति हृदयं मृच्छ० २।५।

कथ् (चुरा० उभ०) स्तुतिगान करना।

कथकटीका (स्त्री०) रामायण पर टीका।

कथन्ता [कथम्+तल्] अवर्णनीय बेचैनी।

कथामात्र (वि०) जो केवल कथा में ही रह गया हो, मृत।

कदम्बः [कद्+अम्बच्] 1. धूल 2. सुगन्धि – कदम्बः पुंसि वीपे स्यात्तिनिशे वरुणद्रुमे। धूल्यां समूहे गन्धे च -- नाना०। सम० —युद्धम् एक प्रकार शृंगाररस का नाटक—वात्स्या०।

कदली [कदल+ङीष्] केला। सम० —जटा 1. एक प्रकार की ककड़ी 2. एक सुन्दर महिला, -- गर्भः केले का गूदा।

कनकम् [कन+वुन्] सोना, – कः (पुं०) 1. पलाश वृक्ष 2. धतूरे का पौधा। सम० कदली एक प्रकार का केला जिस के पत्ते भूरे होते हैं - क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः मेघ० ७९,—कारः सुनार, —पट्टम् कपड़ा जिस पर सोने या जरी का काम हुआ हो - पीतं कनकपट्टाभं वस्त्रं तद्वसतं शुभम् रा० ५।१५।४५, - पर्वतः मेरु पहाड़।

कनपः [कनो दीप्तिर्गतिः शोभा वा पाति सः] एक प्रकार का अस्त्र - महा० ३।२०।३४।

कनिष्कः एक राजा जो पहली शताब्दी में हुआ।

कनिष्ठा [अतिशयेन युवा युवन्+इष्ठन् कनादेशः] छोटी पत्नी।

कनीनिकम् [कनीन+कन्, ह्रस्वम्] कुछ सामगन्त्रों का समूह।

कनीयस् (पुं०) [युवन्+ईयसुन्, कनादेशः] छोटा भाई —कलत्रवानहं नाले कनीयांस भजस्व मे रघु० १२ 2. कामोन्मत्त, प्रेमी।

कन्तुः [कम्+तु] प्रेमी।

कन्दरालः [कन्दर+आलच्] अखरोट का वृक्ष।

कन्दर्पः [क कुत्सितो दर्पो यस्मात् – ब० स०] काम देव। सम० दर्पः कामदेव की शक्ति, - वह्निः कामातुरता के कारण होने वाली गर्मी।

कन्दाशः [ब० स०] जो कन्द अर्थात् जड़ें खाकर जीवित रहता है।

कन्दुकघातः [ष० त०] गेंद को उछालना—आरामसीमनि च कन्दुकघातलीलालोलायमाननयनाम्—नारा०।

कन्यका [कन्या+कन्, ह्रस्वता] दुर्गा।

कन्यका परमेश्वरी कन्या कुमारी की अधिष्ठात्री देवता।

कन्यस् (वि०) 1. छोटा 2. निम्नतर, नीचे का।

कन्यसः (पुं०) सबसे छोटा भाई, सा (स्त्री०) सबसे छोटी अँगुली,—सी सबसे छोटी बहन।

कन्या [कन्+यक्+टाप्] 1. अविवाहित लड़की या पुत्री 2. कुमारी 3. दुर्गा। सम०—दूषकः जो कुमारी कन्या से हठसंभोग या जबरजिनाह करता है, —भैक्ष्यम् लड़की को उपहार के रूप में माँगना, —व्रतस्था मासिकधर्म वाली स्त्री–मयि कन्याव्रतस्थायां —कथा०।

कपाटबन्धनम् [ष० त०] दरवाजा बन्द करना।

कपाटिका (स्त्री०) दरवाजा।

कपालभोगः [ष० त०] निर्वाण होने पर संन्यासी की कपालक्रिया जो उसके उन्नत जीवन का सूचक है।

कपिमुष्टिः (सी०) बन्दर की बँधी मुट्ठी, या तना हुआ घूसा, (आल०) वृद्ध रक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कपित्वम् (नपुं०) बन्दर की विशेषता—कपित्वमनवस्थितम्—रा० ५।

कपिलवस्तु उस नगर का नाम जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था।

कपिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कावेरी में मिलती है।

कपोतवृत्तिः (स्त्री०) [ब० स०] अपव्ययी स्वभाव होना, अपने भोजन का कुछ भी प्रबन्ध न करना महा० ३।२६०।५।

कपोलताडनम् (नपुं०) अपनी त्रुटि को स्वीकार करने के चिह्न-स्वरूप अपने गालों को थपथपाना।

कपोलपत्रम् (नपुं०) एसे से मिलता-जुलता एक चिह्न गालों पर अंकित करना।

कपोलपालिः (—ली) (स्त्री०) गाल का एक पार्श्व।

कबलः [क+वल् (बल्)+अच्] दे० 'कवलः'।

कबलम् (नपुं०) हाथियों का एक प्रकार का प्राकृतिक चारा।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] प्रेमी, पति—उदयाचलमूर्द्धन्यं सङ्गतं कमलिन्याः कमनं व्यभावयत्—साहेन्द्र २।१०१।

कमला [कमल+अच्+टाप्] नारंगी, संतरा।

कमलाक्षः [ब० स०] 1. कमल का बीज 2. कमल जैसी आँखों वाला 3. विष्णु।

कमलीका (स्त्री०) छोटा कमल।

कम्बलः [कम्ब्+कलच्] हाथी की झूल, गजप्रावरणे चदनानां०।

कम्र (वि०) 1. जलयुक्त 2. प्रसन्न।

करः [कृ+अप्, अच् वा] 1. हाथ 2. टैक्स, शुल्क। सम०—**कण्डूपिका** (स्त्री०) योग की एक मुद्रा जिसमें हाथ कछुए से मिलते-जुलते हो जाते हैं—**कृतात्मन्** (वि०) दरिद्र, जिसका कठिनाई से निर्वाह हो—**तलीकृ** हथेली में रखना, चुल्लू की भाँति अञ्जलि में रखना—**ततः** करतलीकृत्य व्याप्ति हालाहलं विषम्—भाग० ८।७।४३, —**पात्री** 1. चमड़े का बना हुआ प्याला 2. जो भिक्षा अपने हाथ में ग्रहण करता है—**भर्तृ**, —**भर्मी**, —**भर्तृकः** एक पौधे का नाम।

करकतारि [ष० त०] ओलों का पानी—कौ० अ० १।२०।

करटामुखम् (नपुं०) हाथी की कनपटी पर एक छिद्र जिसमें से हाथी की मदोन्मत्तता के समय तरल पदार्थ बहता है।

करणम् (नपुं०) [कृ+ल्युट्] ग्रहों की गति के विषय में वराहमिहिर की एक कृति। सम०—**व्यूहम्** ज्योतिषशास्त्र का एक ग्रन्थ, **विभक्तिः** तृतीया विभक्तिः—सूक्तवाकानेव करणविभक्तिसंयोगात्—मी० सू० ३।२।१२ पर शा० भा०।

करभः [कृ+अभच्] श्रोणि, कूल्हा।

करम्भ (वि०) [क+रम्भ्+घञ्] भुना हुआ, तला हुआ—कामोऽयिस्त्वयि रचिता न परमारोहन्ति यथा करभबीजानि भाग० ६।१६।३९।

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] जिसके दाँत बाहर को निकले हुए हों।

करालित (वि०) [कराल+इतच्] 1. सताया हुआ 2. आवर्धित, प्रखर किया हुआ।

करिन् (पुं०) [कर+इनि] 1. हाथी 2. 'आठ' की संख्या। सम०—**मुक्ता** मोती,—**रतम्** संभोग के समय का विशेष आसन, रतिबन्ध—कि० ५।२३ पर टीका,—**सुन्दरिका** पनसाल, पानी का चिह्न।

करीषः(—ष) (स्त्री०) 1. खीर 2. हाथी के दाँत की जड़।

करुणाकरः [करुणा+कृ+अच्] दयालु, करुणा करने वाला।

करूषः (पुं०) गर्दा, गंदगी, मैल, पाप—निर्मलो निष्करूषश्च शुद्ध इन्दुरिवाभवत्—रा० १।२४।२१।

करूषाः [ब० व०] एक देश का नाम रा० १।२४।

कर्क (वि०) [कृ+क] 1. रत्न, मणि 2. नारियल के खोल से बनाया गया पात्र 3. कंजूस।

कर्का (स्त्री०) सफ़ेद घोड़ी।

कर्कन्धुः (—न्धूः) (स्त्री०) [कर्कं कण्टकं दधाति-धा+कु] दस दिन का भ्रूण—दशाहेन तु कर्कन्धूः—भाग० ३।३१।२।

कर्कन्धुः (पुं०) बिना पानी का कुआँ उणादि० १।२८ पर भाष्य।

कर्करेटम् (नपुं०) गर्दन से पकड़ना।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1. रूखा, निष्ठुर 2. दुर्व्यसनी,—शः (पुं०) काले रंग का गधा।

कर्णः [कर्ण्+अप्] 1. वृत्त की व्यास 2. अन्तर्वर्ती प्रदेश, उपदिशा। सम०—**अञ्जलः** (—लम्) कर्णपालि, —**कटु** (वि०), —**कठोर** (वि०), सुनने में कष्टप्रद, **कषायः** कान की मवाद—आपीयतां कर्णकषायमेतान्—भाग० २।६।४६, —**पूलिका** कानों की बाली, —**पूरम्** कान का विवर, **मलम्** कान की मैल, घूथ,—विष्णुकर्णमलोद्भूतौ—दे० म०,—**मुकुरः** कर्णाभूषण, —**स्रोतस्** (नपुं०) कान बहने पर कान से निकलने वाला मल,—**हृर्म्यस्थ** पार्श्वस्थ बुर्जी।

कर्णेजपः (कर्णे+जप्+अच् अलुक्समासः] 1. कानाफूसी करना 2. संवाददाता संसूचक तत्वापर्णे कर्णे जपनयन-पैशून्यचकिताः स्त्रीः।

कर्तरी (स्त्री०) नृत्य का एक भेद।

कर्तृपदम् (नपुं०) 'कर्ता' को दर्शाने वाला शब्द।

कर्तृनिष्ठ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से संबद्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्परी कर्परिका [कृप्+अरन् ङीप्, स्त्रियां कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] एक प्रकार का अंजन, सुरमा।

कर्पूरमञ्जरी (स्त्री०) राजशेखरकृत एक नाटक।

कर्पूरस्तवः [कर्पूर+स्तु+अप्] तन्त्रशास्त्र में वर्णित स्तुति-गान।

कर्मन् (नपुं०) [कृ+मनिन्] 1. कार्य करने की इन्द्रिय —कर्मणि कर्मभि. कुर्वन्—भाग० ११।३।६ 2. प्रशिक्षण, अभ्यास कौ० अ० २।२। सम०—अन्तः (कर्मान्तः) कार्यकर्ता कच्चिन्न सर्वे कर्मान्ताः रा० २।१००। ५२, अन्तरम् (कर्मान्तरम्) दूसरा कार्य,—अपनुत्तिः कर्मापनुत्तिः) (स्त्री) कर्म का नाश,—आख्या (कर्माख्या) कर्म के आधार पर नामकरण, आशयः (कर्माशयः) अच्छे बुरे कर्मों के फलों का संचयस्थान, —गतिः पूर्वकृत कर्मों की दशा—सुखासुखी कर्मगति-प्रवृत्ती—सुभाष०, च्छेदः कर्तव्यकर्म पर उपस्थित न रहने के फलस्वरूप हानि—कौ० अ० २।७, दैवः जिसने अपने धर्मपूर्ण कृत्यों के द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया है, नामधेयम् कुछ कारणों के आधार पर नाम रखना यूंही अपनी इच्छा से नहीं,—निश्चयः किसी कार्य का निर्णय,—श्रुतिः कार्य का आख्यान करने वाली वैदिक उक्ति कर्मश्रुतेः परार्थत्वात्- मै० सं० ११।२।६।

कर्पूरकः (पुं०) अदरक जैसा एक सुगन्धित पदार्थ जो औषधियों तथा सुगन्ध द्रव्यों के निर्माण में प्रयुक्त होता है, कचोरा।

कल (वि०) [कल्+घञ्] 1. प्रबल 2. (समासान्त में प्रयुक्त) पूर्ण, भरा हुआ--दीनस्य तात्राश्रुकलस्य राज्ञः—रा० २।१३।२४। सम०—व्याघ्रः तेंदुआ और मादा चीता से उत्पन्न संकर नस्ल का जानवर, बाघ।

कलङ्कः (पुं०) [कल्+क्विप्, कल चासौ अङ्कश्च कर्म० स०] सम्प्रदायद्योतक मस्तक पर तिलक—कलङ्कः तिलकेऽपि च नाना०।

कलङ्कन्यायः (पुं०) न्याय जिसके अनुसार किसी से संबद्ध निषेध उस कार्य को करने का प्रतिषेध करता है।

कलमगोपवधू } (स्त्री०) चावलों के खेत
(--गोपी), (गोपालिका) } की रखवाली के लिए नियुक्त स्त्री,- शि० ६।४९, जानकी० ११।

कलहनाशनः एक पौधा, करञ्ज।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1. हाथी की पूंछ के पास मांसल गद्दी 2. स्वरूप लीलया दर्शतः कलाः—भाग० १।१।१७ 3. नाशकारी शक्ति सहृत्य कालकलया—भाग० ११। ९।१६। सम०—कारः ललितकलाविद्, कलाविज्ञ।

कलावती (स्त्री०) [कला+मतुप्+ङीप्] एक प्रकार की वीणा।

कल्किकारकः (पुं०) 1. करञ्ज वृक्ष 2. पक्षिविशेष।

कल्किका [कलि+कन्+टाप्] सर्वोत्तम कवि के लिए सम्मानसूचक उपाधि।

कलिल (वि०) [कल+इलच्] 1. विकृत, संदूषित 2. सन्दिग्ध, अनिश्चित—एतस्मात्कारणाच्छ्रेयः कलिलं प्रतिभाति मे---महा० १२।२८७।११।

कलुष (वि०) [कल्+उषच्] 1. गंदा, मैला। सम० मानस (वि०) जहरीला, दृष्टि (वि०) बुरी दृष्टि से देखने वाला।

कल्किपुराणम् (नपुं०) एक पुराण का नाम।

कल्पः [क्लृप्+घञ्, आस्था, विश्वास—लौकिके समयाचारे कृतकल्पो विशारदः रा० २।१।२२। सम० वृक्षः --तरुः कोई व्यक्ति या पदार्थ जो प्रचुर मात्रा में भलाई करे—निगमकल्पतरोर्गलितं फलं—भाग० १। १।३,—स्थानम् 1. औषधियों के निर्माण की कला 2. विषविज्ञान, अगदविज्ञान---सुश्रुत।

कल्पकः [क्लृप्+ण्वुल्] 1. वृक्षविशेष, कचोरा 2. (वि०) मानकस्वरूप, निश्चित नियमानुकूल—याज्ञवल्क्यस्मैधैस्तं भिषिक्तमकल्पकैः भाग० १।८।६।

कल्पनाशक्तिः (स्त्री०) [ष० त०] विचार बनाने की सामर्थ्य, विचारों की मौलिकता, भावनाशक्ति।

कल्प्य (वि०) [कला+यत्] ललित कलाओं में दक्ष।

कल्याण (वि०) [कल्य+अण्+ल्युट्] यथार्थ, प्रमाणित, युक्तियुक्त— करुयाणी बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे रा० ५।३४।६। सम०—पञ्चकः वह घोड़ा जिसका मुख और पैर सफेद हों।

कल्हणः (पुं०) राजतरंगिणी का रचयिता।

कवि (वि०) [कु+इ] 1. सर्वज्ञ 2. बुद्धिमान्—विः (पुं०) 1. विचारक, कविता करने वाला 2. वाल्मीकि 3. ब्रह्मा। सम० कल्पितम् कवि की कल्पना, परंपरा कवियों का अनुक्रम अतिविचित्रकविपरम्परावाहिनि संसारे धन्या० १, हृदयम् कवि का वास्तविक आशय।

कवित्वम् [कवि+त्व] 1. (देव) बुद्धिमत्ता 2. कवि कौशल।

कषः [कष्+अच्] चर्बी— कषशब्दो मेदसि प्रसिद्धः मै० सं० ९।४।२२ पर भा० भा०।

कषाणः [कष्+ल्युट् पृषो० आत्वम्] मक्खनला, रगड़ पैदा करने वाला निःक्षणोऽद्रिपरिवर्तकषाणकण्डूः—भाग० २।७।१३।

कषायवसनम् [ष० त०] संन्यासियों की पीले से खाकी रंग की वेशभूषा।

कष्टमातुलः (पुं०) सौतेली मां से उत्पन्न भाई।

कसनः [कस्+ल्युट्] खांसी। सम० उत्पाटनः (पुं०) एक पौधा जिसके रस के सेवन से खांसी दूर हो जाती है।

का (स्त्री०) 1. पृथ्वी, धरती 2. दुर्गा देवी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कांस्यम् [कंस+छ (ईय)+यञ् लोपः] कांसी का बना हुआ, पीतल का बना जल पीने का जलपात्र, गिलास। सम०—उपदोह (वि०) बर्तन भर कर दूध देने वाला —दोह (वि०), —दोहन (वि०) दे० 'कांस्योपदोह' --नीलम्,—नीली तुत्थांजन, कासीस।

काकः [कै+कन्] 1. कौवा 2. पानी में केवल सिर डुबोकर नहाना। सम० अण्डी गुञ्जा का पौधा, —उदुम्बरः, उदुम्बरिका अंजीर का पेड़, गूलर, —जम्बुः गुलाब-जामुन का पेड़,—तुण्डम् विशेष रूप से बनाई हुई बाण की नोक,—तिक्ता, तुण्डिका,—नासा,—नासिका वृक्षों के विभिन्न प्रकार,—चर्या (स्त्री०) जो कुछ उपलब्ध हो उसी को पीकर रहने की कौवे की आदत का अनुसरण करना और केवल निरी आवश्यकता पूरी करना एवं योगीगकाकचर्यया यजन्—भाग० ५।५।३४, मैथुनम् कौओं की रति क्रिया जिसको देखने पर प्रायश्चित्त करना पड़ता है,—स्नानम् कौवे की भांति स्नान करना, स्पर्धाः 1. कौवे को न्यूना जिससे कि फिर स्नान करना पड़ता है 2. मृत्यु के पश्चात् इसवां दिन जब चावल का पिण्ड कौवों को दिया जाता है।

काकिणिक (वि०) [काकिणी+ठक्] कौड़ी के मूल्य का निकम्मा, अनुपयोगी।

काकोलीः (पुं०) एक वृक्ष का नाम, शोभाञ्जन, सहिजना।

काक्षः [कक्ष+यञ्, कुत्वाभावः] वह मकान जिसमें दक्षिण और उत्तर की ओर कमरे बने हों ब० सं० ५३।४०। सम०—कामलम् आँख का एक रोग, काच बिन्दु।

काक्षिणः (पुं०) एक पवित्र वृक्ष (जो मन्दिर के पास उगा हो)।

काक्षपः [कक्षप+अण्] कछुवे से सम्बन्ध रखने वाला।

काक्षिक (वि०) सुगंधपूर्ण द्रव्यों का निर्माता।

काजम् (नपुं०) लकड़ी की मोगरी।

काञ्चीगुणः [ष० त०] 1. लगड़ी की डोर 2. काञ्ची नामक नगरी की समृद्धि --काञ्चीगुणार्कचित्तसार्थलोका दिग्दक्षिणा कर्कशयत्नभोग्या—जानकी० १।१६।

काठक (वि०) [कठ+वुञ्] कृष्ण यजुर्वेद की कठ संहिता से संबंध रखने वाला।

काञ्चनपुष्पम् (नपुं०) 'कुन्द' फूल।

काञ्चनायनः (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

काञ्चनोत्तमयः (पुं०) पहले एक वस्तु, व्यक्ति या देवता से सम्बद्ध समस्त प्रक्रिया पूरा करना, फिर दूसरे से संबद्ध, फिर तीसरे से, इसी प्रकार चलते रहना।

काण्डेरी (स्त्री०) हल्दी का पौधा, मञ्जिष्ठा का पौधा।

काण्डायनसूत्रम् (नपुं०) कात्यायन का श्रौतसूत्र।

काण्डवरी वाण प्रणीत एक गद्य काव्य (उपन्यास)।

काण्डिताभः [क वादि+क्त—अन्त] व्यञ्जन (क् से लेकर ह् की समाप्ति तक जो अक्षर आयं) कादि क्षान्तसमस्तवर्णजननी अम्र०।

कानिष्ठ्यम् [कनिष्ठ+ष्यञ्] सबसे छोटा होने की स्थिति।

कान्तनायकम् (नपुं०) चमड़े का एक भेद कौ० अ० २।११।

कान्तिः [कम्+क्तिन्] लक्ष्मी--इदो कान्तिः शुभा लक्ष्म—भाग० १०।६५।२९।

कान्दिग्ध (वि०) [काम् दिशम्] भगाया गया, (युद्धादिमें डर कर) भागने वाला, दौड़ने वाला।

कापुरुषः [कुत्सितः पुरुषः कोः कदादेशः] नीच व्यक्ति, कायर, ओछा आदमी।

काप्येयम् [कपेर्भावः कर्म वा कपि+ढक्] बन्दर का व्यवहार या आदत।

काबन्ध्यम् [कबन्ध+ष्यञ्] बिना सिर के धड़ का होना।

कामः [कम्+घञ्] 1. इच्छा, चाह 2. स्नेह, प्रेम 3. जीवन का एक उद्देश्य (पुरुषार्थ)। सम०—आश्रयः वह आश्रम जहाँ कामदेव ने तपस्या की थी,—ईश्वरी कामाक्षी जिसने शिव में कामोत्तेजना जगाने के लिए कामदेव का रूप धारण किया, —कारः कार्य करने की स्वतंत्रता, अपनी इच्छा के अनुसार काम करना—तन्त्रमनः कामकारो अस्ति पुरुषोऽयमनीश्वरः—रा०२।१०१।१८,—कोटिः (स्त्री०) 1. इच्छाओं की चरम सीमा 2. अभिलाषाओं की पराकाष्ठा 3. दक्षिण में काञ्चीपुरी में शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित आध्यात्मिक संस्था,—तन्त्रम् एक रचना, कृति, दहनम् फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला एक पर्व जिसमें शिव के द्वारा काम को फुसला कर भस्म कर दिया जाता है,—दानम् 1. इच्छित पदार्थ का उपहार 2. वेश्याओं द्वारा मनाया जाने वाला एक पर्व,—धर्मः शृङ्गारसिक्त चेष्टा या व्यवहार,—भाक् विषय भोगों में भाग लेने वाला —कामानां त्वा कामभाजं—करोमि कः १-२४।

कामठकः [कमठ+अण्, स्वार्थेकन्] 1. धृतराष्ट्र का नाम 2. एक साँप का नाम जो 'सर्पसत्र' में भस्म हो गया था।

कामन्दकिः (पुं०) कामन्दकीय नीति के प्रणेता।

कामला [कम्+णिच्+कलच्+टाप्] केले का पौधा।

कामिकागमः (पुं०) आगम शास्त्र का एक ग्रन्थ।

कामिनी (स्त्री०) [काम+इनि+ङीप्] मादक शराब।

कामीलः (पुं०) एक प्रकार का सुपारी का वृक्ष।

काम्बलिकः [कम्बल+ठक्] दलिया, जौ की लपसी।

काम्बोजः [कम्बोज+अण्] 1. घोड़ 2. पुन्नाग नामक वृक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काल्यकः (पुं०) महाभारत में वर्णित एक जंगल का नाम।
कावि्न् (वि०) [काय+इनि] बड़े आकार प्रकार का, —समूलशाखान् पश्यामि निहतान् कावि्नो द्रुमान् महा० १२।११३।४।
काव्यायवः [कव्याधु+अण्] कव्याधु का पुत्र, प्रह्लाद।
कारकम् [कृ+ण्वुल्] 1. इन्द्रिय, अंग 2. (व्या० में) वाक्य में संज्ञा और समापिका क्रिया का मध्यवर्ती संबंध। सम०—**विभक्तिः** संज्ञा और क्रिया के मध्य संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया।
कारणम् [कृ+णिच्+ल्युट्] हेतु, निमित्त पूर्व जन्म से आई हुई वृत्ति, पूर्ववासना महा० १२।२११।६। सम०—**कारितम्** (अ०) फलस्वरूप—यदि प्रव्राजितो रामो लोभकारणकारितम् रा० २।५८।२८—**अन्तरम्** (कारणान्तरम्) 1. भिन्न प्रसंग, परिवर्तन शील हेतु 2. कारण परक हेतु।
कारणता [कारण+तल्+टाप्] कारणपना, हेतुत्व —प्रलयस्थितिसर्गाणामेकः कारणतां गतः—कु० २।६।
कारापकः [कार+आपक, त० स०] भवन के निर्माण कार्य का अधीक्षक, काम की देखभाल करने वाला।
काल्वाः (व०व०) 1. एक देश का नाम 2. अन्तर्वर्ती जाति का (पिता व्रात्यवैश्य तथा माता वैश्य) पुरुष।
काल्यम् (नपुं०) मल या पाप रा० १।२४।२०।
कार्कोत्स्यम् [कृकलास+ष्यञ्] छिपकली की स्थिति।
कार्णाट भाषा (स्त्री०) कन्नड़ भाषा।
कार्तिकः [कृत्तिका+अण्] स्कन्द का विशेषण।
कार्पटिकः [कर्पट+ठक्] कपटी, धोखेबाज, ठग।
कार्पासतन्तुः (सूत्रम्) [कर्पासी+अण्=कार्पासस्तस्य तन्तुः ष० त०] कपड़े का धागा।
कार्मणत्वम् [कर्मन्+अण्, तस्य भावः त्वम्] जादू, टोना कार्मणत्वमगमन् रमणेषु—शि० १०।३७।
कार्मान्तिकः (पुं०) उद्योग धन्धे और निर्माणकार्यों का अधीक्षक—कौ० अ० १।१२।
कार्मारिकः [कर्मार+ठक्] बढ़ई—कौ० अ० २।३।
कार्यम् [कृ+ण्यत्] शरीर—कार्यश्रियिणश्च कललाद्याः (कार्यशरीरे)—सां० का० ४३। सम०—**अपेक्षिन्** (वि०) किसी विशेष कार्य को करने वाला, —**आश्रयिन्** (वि०) शरीर का सहारा लेने वाला का० ४३, **व्यसनम्** कार्य में विफलता,—**वशात्** (अ०) किसी प्रयोजन से, किसी काम से।
कालः [कलयति आयुः कल्+णिच्+अच्] 1. सांख्य कारिका में बताये चार पदार्थों में से एक प्रकृत्युपादानकालभागाख्याः—सां० का० ५० 2. समय का कोई भाग। सम०—**अष्टकम्** 1. आषाढ़ मास कृष्णपक्ष के पहले आठदिन 2. काल भैरव का स्तोत्र जिससे शंकर की स्तुति की गई है,—**आदिकः** चैत्रमास —**आम्रः** 1. आम का एक भेद, 2. एक टापू का नाम,—**कञ्जम्** नील कमल,—**कण्ठी** कालकण्ठ की पत्नी, पार्वती,—**कल्कः** पतियाला साँप, **जीवकः** जो समय पर मिले पत्तले भोजन से ही संतुष्ट है, —**बद्धः** जिसे मौत ने उस लिया है,—**भीतम्** (कालभीतम्) चाँदी या सोना,—**मर्यादः** देरी, विलम्ब, वक्तुमर्हसि सुग्रीव व्यतीतं कालमर्यादं, **पुरुषः** यमराज का सेवक, —**रुद्रः** संसार का नष्ट करने के अपने भयंकर रूप में विद्यमान रुद्र, **वृत्तः** कुलत्थ, एक प्रकार की दाल, —**संकर्षिणी** मन्त्रविद्या, जिससे समय की अवधि कम की जा सके, **सङ्घः** देरी, विलम्ब, —**कार्यस्य च कालसङ्घः**—रा० ४।३३।५३,—**समन्वित**, (—समायुक्त), मृत मरा हुआ।
कालकूटः (क्षालमर्दः), खांसी को भगाने वाली औषध।
कालन (वि०) [कल्+णिच्+ल्युट्] नाश करने वाला।
कालिका (स्त्री०) [काल+टन्] 1. एक प्रकार की शाक भाजी 2. तेलन, तेली की स्त्री 3. हुरहुर घुंघ।
कालित (वि०) [काल+इतच्] मृत, मरा हुआ -नाधुना सन्ति कालिताः- भाग० १०।५१।१८।
कालिदासः (पुं०) 1. एक यशस्वी कवि और नाटककार का नाम 2. नलोदय और श्रुतबोध के प्रणेताओं की भाँति अन्य कवि।
कालिय (वि०) [काल+घ] 1. समय से संबद्ध 2. एक साँप का नाम जिसका कृष्ण ने दमन किया था।
कालीन (वि०) [काल+ख] किसी विशेष कालभाग से संबद्ध।
कालेयाः (पुं०, ब० व०) [काली+ढक्] कृष्णयजुर्वेद की शाखा या संप्रदाय।
कालोलः (पुं०) कौवा।
काशिक (वि०) [काशी+ठक्] काशी में बना हुआ, रेशमी वस्त्र, बनारसी कपड़ा।
काशिकाभिषः (पुं०) धन्वन्तरि।
काशेय (वि०) [काशी+ढक्] काशी का, काशी से संबंध रखने वाला।
काश्मकराद्यक (वि०) हीरों का एक भेद—कौ० अ० २।११।
काश्यपेय (वि०) [कश्यपा (अदिति)+ढक्] सूर्य, गरुड़ और बारह आदित्यों का विशेषण, —**यः** (पुं०) दारुक, कृष्ण का सारथि।
काषण (वि०) कच्चा, जो पका न हो।
काषायवसना [ब० स०] विधवा।
काष्ठम् [काश्+क्थन्] लकड़ी। सम० —**अधिरोहणम्** चिता में बैठना,—**भूतकः** लकड़ियों का गट्ठा,—**भारः** लकड़ियों का बोझ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काष्ठा (स्त्री०) 1. पीला रंग 2. शारीरिक रूप या मुद्रा —काष्ठां भगवतो ध्यायेत् —भाग० ३।२८।१२ ।

कासनाशिनी [ष० त०] खांसी या दमे का नाश करने वाली औषधि का पौधा ।

काहन् (नपुं०) [क+अहन्] ब्रह्मा का एक दिन (=१००० युग) ।

काहारकः (पुं०) एक जाति का नाम जिसके लोग पालकियों में सवारियों को ढोते हैं ।

किं (अ० हो० पर०) चिकेति, जानना ।

किंकिरिः (स्त्री०) [किं किरतीति —कृ+क, स्त्रियां—ङी] कोयल ।

किंचनत्वम् [किञ्चन+ष्यञ्] संपत्ति—किञ्चन्ये नास्ति बन्धनम् —महा० १२।३२०।५० ।

किंदिनम् (नपुं०) मैला पानी ।

किम् [कु+डिमु वा०] समासान्त शब्दों में प्रायः 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है, और 'तुच्छता', 'घटियापन' दोष या ह्रास का अर्थ प्रकट करता है । सम० —कथिका (स्त्री०) संदेह, संकोच, कृते (अ०) किसलिए, —ज्ञ (वि०) जो कहीं उत्पन्न हुआ हो, जिसका नीचकुल में जन्म हुआ हो, - तुल्यः 'करण' नामक काल के ग्यारह भागों में से एक, नु (अ०) परन्तु फिर भी, तो भी—किन्तु चित्तं मनुष्याणामनित्यमिति मे मतम् रा० २।४।२७, —पाक (वि०) अपरिपक्व, अज्ञानी, - पाकः आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित एक जड़ी बूटी, —पुरुषः 1. अधंदेव 2. घटिया मनुष्य, —राजन बुरा राजा, विवक्षा निन्दा, बुराई ।

किंबरः (पुं०) मगरमच्छ, घड़ियाल ।

किंमीय (वि०) [किम्+छ] किसका, किससे संबंध रखने वाला ।

कियत् (वि०) [किमिदंभ्यां वोघः] (पुं० —कियान्, स्त्री० - कियती, नपुं० - कियत्) 1. कितना अधिक, कितना बड़ा, कितना 2. कुछ, थोड़ा सा । सम० एतद् किस महत्त्व का, अर्थात् तुच्छ, अतिसामान्य, —मात्रः नगण्य, तुच्छ बात ।

किराटः (पुं०) बेईमान सौदागर, निर्लज्ज व्यापारी—भाग० १२।३।३५ ।

किरातकः [किरं पर्यन्तभूमिं अतति गच्छतीति,स्वार्थे कन्] किरात जाति का मनुष्य ।

किर्मीरत्वच् [ब० स०] सत्तरे का पेड़ ।

किलकिलितम् (नपुं०) हर्षसूचक ध्वनियाँ ।

किलाटः (पुं०) जमा हुआ दूध ।

किलातः (पुं०) बौना, क़द में छोटा ।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, वुक्] 1. संकट, पाप - पितेव पुत्रं धर्माद्धि त्रातुमर्हसि किल्बिषात्— रा० १।१२।७ 2. धोखा, जालसाजी ।

किशोरः [किम्+शु+ओरन्, किमोन्त्यलोपः, धातोष्टिलोपः] किसी जानवर का बच्चा, शिशु, शावक ।

कीकट (वि०) [की+कट्+अच्] 1. निर्धन, बेचारा कंजूस, लालची ।

कीकसास्थि (नपुं०) [की+कस्+अच्-ष० त०] कशेरुका, मेरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी ।

कीचकः [चीक्+वुन्, आशन्तविषयंयश्च] बांस जो हवा भर जाने पर शब्द करता है -कीचका वेणवस्ते स्युः ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः केवल 'बांस' के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त—स कीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैः कु० १।८, रघु० २।१२ ।

कीचकवधः [ष० त० कीचकः+हन्+अप्, वधादेशः] 1. भीम के द्वारा कीचक की हत्या 2. एक नाटक का नाम ।

कीटः [कीट्+अच्] 1. कीड़ा । सम०—अवपन्न (वि०) कीड़े वस्तु जिसमें कीड़ा लग गया हो, कीड़े से खाई हुई,—उत्करः वमी, —तत्र कीटोत्करार्णे -कथा० १०१।२९०।११, - नाशा, पादकः,—पादी,—नाता (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।

कीनाश (वि०) [कीलम्-कन्, ईत्वं, लस्य लोपो नामागमश्च] 1. धरती जोतने वाला 2. निर्धन, दरिद्र 3. गुप्त हत्या—उपांशुघातिनि—नाना० 4. क्रूर ।

कीरिभारा (स्त्री०) जूँ ।

कीर्तनीय, कीर्तन्य (वि०) [कृत्+अनीय, ष्यत् वा] स्तुति किये जाने के योग्य, जिसके यश या कीर्ति का गान किया जाय

कीर्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1. यश, ख्याति 2. कृपा, प्रसाद । सम० मात्रशेषः जो केवल ख्याति या यश के संसार में ही जीवित है, मृत,—स्तम्भः यश या ख्याति के कृत्य का खम्बा ।

कीर्तितव्य (वि०) [कृत्+तव्य] जिसकी स्तुति की जाती है ।

कीरः [कीर्+घञ्] 1. जुआरी 2. मूठ, दग्ला ।

कीलप्रतिकीलन्यायः (पुं०) एक न्याय जिसके अनुसार क्रिया एक में रहती है तो प्रतिक्रिया दूसरों में रहती है - पा० २।२।६ पर म० भा० ।

कीलालिन् [कीलाल+इनि] छिपकिली, गिरगिट ।

कीशपर्णः, (- र्णिन्) [ब० स०] अपामार्ग नाम का पौधा ।

कु (अ०) [कु+डु] बुराई, ह्रास, अवमूल्य, पाप, ओछापन और कमी को प्रकट करने वाला अव्यय । सम०—चरः घूमने वाला,—जः,—पुत्रः मंगल,—वस्त्रम् मण्डल,—वाच् (पुं०) गीदड़,—शीलम् शरारत से भरा प्रश्न, तपः 1. एक प्रकार का कम्बल जो पहाड़ी बकरियों के बालों से बनता है 2. दिन का आठवाँ मुहूर्त 3. दोहता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या भानजा 4. सूर्य, द्वारम् पिछला दरवाजा, नखम् बुरा नाखून, भोंड़े या मैले नाखून,—नीलः गलत राय —पटः, पटम् चीथड़ा, चिथड़ा,—पात्रम् अयोग्य व्यक्ति,—नेत्रः दक्षिणी ध्रुवबिन्दु,—लक्षण (वि०) खोटे चिह्नों से युक्त, विक्रमः अस्थानप्रयुक्त शूरवीरता, वेषः (पुं०) बुरी आदत।

कुकूलाग्निः (पुं०) भूसी या बुरादे से निर्मित आग, कथा० ११७।९२।

कुक्कुटः [कुक्+विवप्, केन कुटति - कुट्+क] 1. मुर्गा, आग की चिंगारी। सम०—अण्डम् मुर्गी का अण्डा,—आभः,—अहिः एक प्रकार का साँप,—आसनम् योग का एक आसन।

कुक्षिगत (वि०) [कुक्ष्यां गत इति त० स०] गर्भस्थ, दिष्टचाम्ब से कुक्षिगतः पुमान्—भाग० १०।

कुचः [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूचो। सम०—कुम्भः तरुण युवती के स्तन,—कुड्मलम् कली के आकार का स्तन—गोपाङ्गनानां कुचकुड्मल आ—कृष्ण०, कुङ्कुमम् स्तन पर रोली या केसर का लेप।

कुजाष्टमः [ब० स०] यहाँ की विशेष स्थिति जब कि मंगल लग्न से आठवें घर में हो।

कुञ्जरः [कुञ्ज+र] 1. हाथी 2. सिर 3. आभूषण 4. आठ की संख्या। सम०—अरिः सिंह, आरोहः महावत,—च्छायाः (गजच्छायाः) ज्योतिष का एक योग जिसमें चन्द्रमा मघा नक्षत्र में और सूर्य हस्त नक्षत्र में विराजमान होता है।

कुटिल (वि०) [कुट्+कलच्] कपटी, वक्र, टेढ़ा, बेईमान। सम०—अलकम् कुन्तलम् टेढ़ी अलकें, टेढ़ी जुल्फें कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां —भाग० १०।३५, -चित्तम् कपटपूर्णमन, टेढ़ा मन —कुलोद्भवनिवेशिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम्—नव रत्न०।

कुटी (स्त्री०) [कुटि+ङीष्] झोंपड़ी।

कुटुम्बिनी [कुटुम्ब+इन्—ङीष्] 1. गृहिणी 2. घर की सेविका या नौकरानी।

कुटुम्बिता, त्वम् [कुटुम्बिन्+तल्+टाप्, त्व] 1. गृहस्थ होने की स्थिति 2. पारिवारिक एकता या सम्बन्ध 3. एक परिवार की भाँति रहना।

कुट्टनम् [कुट्+ल्युट्] 1. काटना 2. पीसना 3. मुक्का बंद करके मस्तक के दोनों ओर थपथपाना, यह गणेश को प्रसन्न करने का चिह्न है।

कुड्दालः कुदाल, मिट्टी खोदने की कुदाली।

कुणपाशन (वि०) [कुणप+अश्+ल्युट्] मुर्दों को खाने वाला।

कुणपी [कुण्+कपन्+ङीए] एक छोटा पक्षी।

कुणालः (पुं०) एक देश का नाम,—अयं कुणालो बहुसागर प्रिये विराजते नैकविजातिमण्डनः—जानकी० २०।

कुण्डः [कुण्+ड] पानी का बर्तन, पानी का कटवा। सम०—पायसः [कुण्डेन पीयते अत्र ऋतौ] एक यज्ञ का नाम, भेदिन (वि०) अनाड़ी, भद्दा, फूहड़।

कुण्डकः [कुण्ड+कन्] बर्तन—कथा० ४।४७।

कुण्डलिका (स्त्री०) कुण्डली, वृत्त।

कुण्डलिन् (वि०) [कुण्डल+इनि] गोलाकार,—ली (पुं०) सुनहरा पहाड़।

कुण्डलिनी (स्त्री०) [कुण्डलिन्+ङीष्] योग शास्त्र में एक नाड़ी का नाम।

कुण्डिका (स्त्री०) [कुण्ड+कन्+टाप्] एक छोटा जोहड़, पोखर—नदा कण्डिका पा० १।१।४४ पर म० भा०।

कुतपसप्तकम् [ष० त०] सात वस्तुएँ जो श्राद्ध के अवसर पर मृतक के सम्मानार्थ दान की जायँ—यथा भृङ्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्यपात्र, कुशतृण, सवत्सा धेनु, अपराह्णकाल, और कृष्णतिल।

कुतपाष्टकम् [ष० त०] आठ वस्तुएँ जो श्राद्ध के लिए शुभ मानी जाती हैं यथा मध्याह्न, भृङ्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्य, दर्भ, सवत्सा धेनु, तिल और दौहित्र।

कुतुकित, (- क्किन्) (वि०) [कुतुक+इतच्, इनि वा] उत्सुक, जिज्ञासु।

कुतृणम् (नपुं०) पनीला पौधा।

कुतोनिमित्त (वि०) किस कारण या हेतु को लिये हुए —कुतोनिमित्तः शोकस्ते —रा० २।७४।२०।

कुत्सला (स्त्री०) नील का पौधा।

कुथकः [कुथ्+अच्, स्वार्थे कन्] रंग-बिरंगा कपड़ा।

कुधिः (पुं०) उल्लू।

कुन्द्र (चुरा० पर०) झूठ बोलना।

कुन्दवस्त्र (वि०) [ब० स०] जिसके दाँत कुन्द फूल की भाँति श्वेत तथा चमकीले हों।

कुपित (वि०) [कुप्+क्त] क्रोध दिलाया हुआ, क्रुद्ध, नाराज, क्रोधी।

कुप्यधौतम् [गुप् - कप्य्, कुत्वं] चाँदी।

कुबेर (वि०) [कुत्सितं बेरं शरीरं यस्य, ब० स०] 1. भद्दा, भद्दे अङ्गों वाला।

कुभ्राभि (वि०) प्रकाशपरावर्ती कौ० अ० २।११।

कुमार (चुरा० पर०) आग से खेलना।

कुमारः [कम्+आरन्, उत उपधायाः] एक धर्मशास्त्र का प्रणेता, एम् (नपुं०) विशुद्ध सोना। सम०—दासः, 'जानकीहरण' का प्रणेता, एक कवि का नाम, ललिता (स्त्री०) 1. रंगरेली, मृदु कामक्रीडा 2. एक छन्द का नाम जिसके एक चरण में सात मात्राएँ होती हैं,—संभवम् कालिदासकृत एक काव्य का नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुमारिकापुरम् (नपुं०) कन्याओं की व्यायामशाला महा० ४।११।१२, दश० २।

कुमालकः (पुं०) मालवदेश के एक प्रदेश का नाम।

कुमुदः,-दम् [को मोदते इति कुमुदम्] 1. सफेद कमल जो चन्द्रोदय होने पर खिलता कहा जाता है 2. लाल कमल 3. विष्णु का विशेषण 4. कपूर। सम०—आनन्द (वि०) चन्द्रमा, -गन्ध्या कमल की सुगन्ध से युक्त महिला।

कुम्भः (पुं०) लूजा, जिसके हाथ विकृत हों।

कुम्भकुरीरः (पुं०) स्त्रियों के लिए सिर पर पहनने का वस्त्र।

कुम्भः [कु+उम्भ्+अच्] घड़ा, जलपात्र। सम०—उदरः शिव का एक भूतगण, सेवक—रघु० २।३५। —उलूकः उल्लू का एक भेद,—महा० १३।१११। १०१, पञ्जरः आला, ताक।

कुम्भिन् (वि०) [कुम्भ+इनि] आठ की संख्या।

कुम्भिनी (स्त्री०) [कुम्भिन्+ङीप्] 1. पृथ्वी 2. जमाल गोटे का पौधा।

कुम्भीनसी (स्त्री०) लवणासुर की माता, रावण की बहन।

कुम्भीमुखम् (नपुं०) एक प्रकार का घाव, व्रण।

कुरङ्गनाभिः [ब० स०] चन्द्रमा।

कुरण्टवासाः (ब० व०) एक देश का नाम।

कुरविन्दः (पुं०) लालमणि, पद्मरागमणि।

कुलम् [कुल्+क] 1. वंश, परिवार 2. समूह 3. रेवड़। सम० अन्तस्था देवी का विशेषण,—आख्या, पारिवारिक नाम, वंशद्योतक नाम,—आपोडः,—शेखरः परिवार की कीर्ति या यश,—करणिः आनुवंशिक लेखपाल या अधिकारी,—कलङ्कः परिवार के लिए अपयश, -कुण्डालया कौल वृत्त में स्थित, देवी का एक नाम, गरिमा (पुं०) कुल का गौरव या मर्यादा, जाया उच्चकुल में उत्पन्न महिला,—दूषक (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, नाशन (वि०) परिवार को नष्ट करने वाला, पांसनः जो अपने कुल को कलङ्कित करता है, -पालकम् सन्तरा, नारङ्गी, भरः (कुलम्भरः) परिवार का पालनपोषण करने वाला,—भोजः शिल्पी संघ का मुखिया, -मार्गः कौलों का सिद्धान्त, सन्निधिः (पुं०) आदरणीय साक्षी की उपस्थिति—मी० सू० ८।१९४।२०१।

कुलमितिका (स्त्री०) एक प्रकार की दरियाँ—कौ० अ० २।११।

कुलिकः (पुं०) [कुल+ठन्] 1. एक काँटेदार पौधा 'भान्दि' 2. शिकारी—कुलिकस्तमिवाशा कृष्णवर्त्मेव हरिण्यः भाग० १०।४७।१९।

कुली (स्त्री०) परिवारों का समूह।

कुला (स्त्री०) लाल रंग का संखिया, मनशिल।

कुलाटः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

कुलालचक्रम् [ष० त०] कुम्हार का चाक।

कुलिङ्गः [कु+लिङ्ग्+अच्] 1. साँप—महा० १२। १०१।७ 2. हाथी—कुलिङ्गो भूमिकूष्माण्डे मतङ्गज-भुजङ्गयोः—मेदिनी।

कुल्फः (वेद०) दबना,—ऋ० ७।५०।२। सम०—दक्ष (वि०) दबने तक गहरा—शत० १२।

कुल्माषः [कुल्+विषप्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० स०] 1. खिचड़ी जिसमें आधे उबले चावल और दाल हो 2. एक प्रकार का रोग।

कुल्लूकः (पुं०) मनुस्मृति का एक टीकाकार।

कुशी [कुश+ङीष्] गूलर की लकड़ी का टुकड़ा जो स्तोत्र के अन्तर्गत साम मन्त्रों की संख्या गिनने के काम आता है - छन्दोगास्तोत्रगणनाशङ्कुभु—सायण।

कुशमुष्टिः [ष० त०] मुट्ठी भर 'कुश' घास।

कुशिकाः (ब० व०) कुशिक मुनि की सन्तान।

कुशेशयनिवेशिनी (स्त्री०) लक्ष्मी देवी।

कुण्डः [कुण्+कथन्] कूल्हे में पड़ा गड्ढा।

कूष्माण्डहोमः (पुं) किसी भी बड़े धार्मिक आयोजन से पूर्व किया जाने वाला हवन।

कुसुमम् [कुस्+उम] 1. फूल 2. फल। सम०—अञ्जलिः उदयनाचार्य की एक रचना,—द्रुमः फूलों से भरपूर वृक्ष,—मयः (कुसुमन्मयः) मधुमक्खी—उदलसदलसत्कुसुमन्मयैः रा० च०।

कुसुमयति (कुसुम—ना० धा०, लट्) फूल उत्पन्न करता है, या फूलों से सजाता है।

कुसुम्भवरी (स्त्री०) एक पौधे का नाम।

कुहकवृत्तिः (स्त्री०) धूर्तता, चालाकी।

कुहरः [कुह--रा+क] भीतरी खिड़की।

कुहूकालः [ष० त०] चान्द्रमास का अन्तिम दिन जबकि चन्द्रमा अदृश्य होता है।

कुहूमुखः [ब० स०] 1. भारतीय कोयल 2. संकट।

कुहूमुखम् [ष० त०] नया चाँद।

कुहूनादम् [कु+हूँ+ल्युट्] अमंगल ध्वनि।

कूटम् [कूट्+अच्] खोटा सिक्का - कूटं हि निषादानामेव उपकारकं नार्यणाम् मी० सू० ६।१।५२ पर शा० भा०। सम० रचना चाल, दाव पेंच, लेखः बनावटी या जाली दस्तावेज, —सङ्क्रान्तिः आधीगत बोतने पर जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि पर संक्रमण करता है, - हेमन् खोटा सोना।

कूपः [कु+पक् दीर्घश्च] 1. कुआँ 2. छिद्र यथा रोम-कूप, 3. जड़। सम० कारः, खनकः कुआँ खोदने वाला, चक्रम् पानी का चक्र या पहिया,- दण्डः मस्तूल—क्षोणीनीकूपदण्डः दश० १।१ स्थानम् कुएं का स्थान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूबरस्थानम् [त० स०] गाड़ी में बैठने का स्थान ।

कूर्मः [कौ जले ऊर्मिवेगोऽस्य—पृषो०] कछुवा । सम० —आसनम् योग की एक विशेष मुद्रा, - द्वादशी पौषमास के शुक्लपक्ष का ग्यारहवाँ दिन,—पुराणम् एक पुराण का नाम ।

कूर्मक (वि०) कछुवे जैसा बना हुआ ।

कूर्मिका [कूर्म+कन् स्त्रियां टाप्, उपधाया इत्वम्] एक वाद्ययन्त्र ।

कूलिका [कूल+कन्+टाप्, इत्वम्] वीणा का निचला भाग ।

कृ (तना० उभ०) एकत्र करना, लेना—आदाने करोति शब्दः—मी० सू० ४।२।६ ।

कृकरक्षुद्रः [ब० स०] आरा ।

कृकलः (पुं०) 1. एक प्रकार का तीतर 2. पाँच प्राणों में से एक ।

कृच्छ्र (वि०) [कृच्छ्र+रक्] 1. कष्टप्रद, दुःखदायी । सम०— अर्धः केवल छः दिन तक रहने वाली तपश्चर्या,—कृत् (वि०) तपस्वी,—सन्तपनम् एक प्रकार का प्रायश्चित्तपरक व्रत ।

कृतम् [कृ+क्त] जादू, टोना । सम०— अर्थ (वि०) कृतार्थ [ब० स०] जिसने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया है, अतः अब और कुछ करने में असमर्थ है —सकृत्कृत्वा कृतार्थः सन्दः—मी० सू० ६।२।२७ पर शा० भा०, —कर (वि०),—कारिन् (वि०) किए हुए कार्य को करने वाला, निरर्थक कृतकरो हि विधिरित्यर्थकः स्यात्—मी० सू० १०।५।५८ पर शा० भा०,—शीर्ष (वि०) जिसने सुगम या आसान बना दिया, —दार (वि०) विवाहित,—द्वेषम् किये हुए का खराब करना,—धन्वन् (वि०) क्रूर, नाराज, - मालः चितकबरा, बारहसिंगा, कृष्णहरिण,—विद् (वि०) कृतज्ञ,—तत्पापवन्मर्षणं तव पादमूले विस्मर्मते कृतविदः—भाग० ४।९।८,— श्मश्रुः जिसने मूछें भी साफ़ करा ली हैं,—संस्कारः 1. जिसने शोधनात्मक सब प्रक्रियाएँ पूरी कर ली हैं 2. सज्जित, तैयार ।

कृतवत् (वि०) [कृत+मतुप्] जिसने कार्य करा लिया है—कृतवानस्मि विप्रियं न मे- कु० ४।७ ।

कृतिः (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1. वर्गसंज्ञक संख्या, 2. किया 3. चाकू, 4. जादूगरनी । सम० साध्यत्वम् प्रयत्न करके संपन्न होने की स्थिति ।

कृत्यम् [कृ+क्यप्] 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य 2. कार्य 3. प्रयोजन । सम० —अकृत्यम् कर्तव्य अकर्तव्य में (विवेक करना),—विधिः (पुं०) नियम, उपदेश,—शेष (वि०) जिसने अपना कार्य पूरा नहीं किया है ।

कृत्यम् [कृत्+यत्] वास्तुकार का एक उपकरण—महा० १।१९४।६ ।

कृत्यवत् (वि०) [कृत्य+मतुप्] 1. जिसके पास करने के लिए कार्य है 2. जिससे कोई प्रार्थना की गई है 3. चाहने वाला, प्रबल इच्छुक रा० ७।९२।१५ ।

कृन्तनिका [कृन्त्+ल्युट्=कृन्तनं, स्वार्थे कन्, इत्वम्] एक छोटा चाकू ।

कृत्वा-चिन्ता (लोकोक्तिः) प्राक्कल्पनापरक बात पर विचारविमर्श करना—मै० सं० १०।२। ४९ और ६।८।४२ पर शा० भा० ।

कृपा+आकरः, सागरः,—सिन्धुः (पुं०) अत्यन्त कृपालु ।

कृश (वि०) [कृश+क्त, नि०] 1. दुर्बल, बलहीन 2. नगण्य 3. निर्धन 4. तुच्छ । सम० अतिथि (वि०) जो अपने अतिथियों को भूखा रखता है महा० १२।८।२४,—गवः जिसकी गौवें भूखी रहती हैं,—भृत्यः जिसके नौकर भूखे रहते हैं ।

कृशानुपत्रम् (नपुं०) तोप ।

कृष् (तुदा० पर०) खुरचना, विरेखण करना ।

कृष्णिरिष्टः एक प्रकार का चिड़ा ।

कृषिपाराशरः,-संग्रहः (पुं०) कृषि शास्त्र पर एक संग्रह ग्रंथ ।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक्] 1. काला 2. दुष्ट 3. शूद्र 4. भलावाँ (रीठा) जिससे धोबी कपड़ों पर चिह्न लगाता है महा० १२।२९१।१० । सम०—पक्षकः काले पंख,—च्छविः (स्त्री०) 1. बारहसिंगा की खाल 2. काला बादल - कृष्णच्छविसमा कृष्णा महा० ४।६।९,—तालुः एक प्रकार का घोड़ा जिसका तालु काला होता है, - द्वादशी आषाढ़ के कृष्णपक्ष में बारहवाँ दिन, - बीजम् तरबूज, भस्मन् पारद शुल्बीय,—मृत्तिका 1. काली मिट्टी 2. बालूद ।

कृष्णा (स्त्री०) यमुना नदी ।

कृष्ण् (प्रेर०) ग्रहण करना, स्वीकार करना—नातो ह्यन्यमकल्पयन्—रा० २।९१।६५ ।

केतुमालः,-लम् जम्बू द्वीप का पश्चिमी भाग ।

केदारः [केन जलेन दारोऽस्य ब० स०] संगीत शास्त्र में एक राग का नाम ।

केदारकः [केदार+स्वार्थे कन्] चावलों का खेत ।

केन्द्रम् (नपुं०) जन्म कुण्डली में पहला, चौथा, सातवाँ एवं दसवाँ स्थान ।

केरलजातकम्, केरलतन्त्रम्, केरल आहारव्यय्, केरलसिद्धान्तः } ग्रन्थों के नाम ।

केलिः (पुं० स्त्री०) [केल्+इन्] हँसीमजाक, दिल्लगी, रंगरेली । सम० कलहः हँसी मजाक में झगड़ा, —पल्वलम् आमोद सरोवर,—श्मश्रु प्रमोदन ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवलव्यतिरेकिन् (पुं०) न्याय सिद्धान्त के अनुसार अनुमान के केवल एक प्रकार से संबन्ध रखने वाला।

केवलार्द्रतम् (नपुं०) दर्शन शास्त्र की एक शाखा।

केवलिन् (वि०) [केवल+इनि] (जैन०) जिसने उच्चतम ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केशः [किलश्+अन् लो लोपश्च] 1. बालक 2. सिर के बाल। सम०—**आकर्षणम्** चुटिया पकड़ कर किसी महिला को खींचना एवं उसका अपमान करना, —**कारम्** एक प्रकार का गन्ना, **कारिन्** (वि०) जो बालों को संवारता है, **ग्रन्थिः** चुटिया बेणी, —**धारणम्** बाल रखना—**लुञ्चकः** एक जैन साधु का नाम, **वपनम्** बाल कटवाना, मुण्डन कराना —**व्यारोपणम्** अपमान के चिह्नस्वरूप किसी दूसरे की चुटिया पकड़ना—रघु० ३।५६।

केशवस्वामिन् (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

केश्य (वि०) [केश+य] 1. बालों को वृद्धि के अनुकूल 2. बालों में लगाया हुआ, **श्यम्** (नपुं०) सार्वजनिक निन्दा, बदनामी, लोकापवाद।

केसराल (वि०) [केसर+आलच्] अयाल से समृद्ध, तन्तुवाहुल्य से युक्त।

केसरिणी [केसर+इनि, स्त्रियां ङीप्] सिंहिनी, शेरनी।

कैमर्थक्यम् (नपुं०) [किमर्थक+ष्यञ्] प्रयोजन का अभाव—**कैमर्थक्याश्रियमो भवति**—पा० १।४।२ पर म० भा०।

कैमर्थ्यम् [किमर्थ+ष्यञ्] कारण, प्रयोजन।

कैयटः (पुं०) पतंजलिकृत महाभाष्य के टीकाकार वैयाकरण का नाम।

कैलातकम् (नपुं०) एक प्रकार का शहद, शराब।

कैशोरखवत्स (वि०) [ब० स०] कुमार, किशोरावस्था का बालक।

कोकटः (पुं०) भारतीय लोमड़।

कोकयः (पुं०) वनकपोत, जंगली कबूतर।

कोकनदिनी [कोकनद+इनि+ङीप्] लाल कमल—न भेकः कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः—कथा० ३०।७८।

कोकिलकः (पुं०) एक छन्द का नाम।

कोटपः, -पालः (पुं०) किले का संरक्षक, गढ़नायक।

कोटिः (स्त्री०) [कुट्+इन्] असंख्य, अगणित, —**कोटिप्रतस्ते सुभृतास्च योधाः**—रा० ५।५१। सम०—**होमः** एक प्रकार का यज्ञीय अनुष्ठान।

कोणवृत्तम् (नपुं०) उत्तरपूर्व से लेकर दक्षिण पश्चिम तक फैला हुआ शीर्षवंश या इसके विपरीत।

कोन्वशिरः (पुं०) वह क्षत्रिय जिसको ब्राह्मण ने शूद्र हो जाने का शाप दे दिया है।

कोपजन्मन् (वि०) [ब० स०] क्रोध से उत्पन्न।

कोपारुण (वि०) [ब० स०] क्रोध के कारण लाल कोपारुणमुनिचारायदक्षिकोणम् मील०।

कोमल (वि०) [कु०+कलच्, मुट्, नि० गुणः] मृदु, मुलायम नरम, **लम्** (नपुं०) रेशम।

कोमला (स्त्री०) एक प्रकार का छुआरा।

कोरकित (वि०) [कोरक+इतच्] कलियों से आच्छादित मै० उ०१।२१।

कोलकम् [कुल्+अच्, स्वार्थे कन्] 1. एक प्रकार का गांव मान० ९।४८६ 2. एक प्रकार का गढ़ मान० १०।४१ 3. वे फलादिक जो नींव के गर्त में प्रयुक्त होते हैं।

कोशः [कुश्+घञ्, अच् वा] 1. कमल का परिच्छद 2. मांस का टुकड़ा 3. वह प्याला जिसमें युद्धविराम के सन्धिपत्र को सत्यांकित करने के चिह्न स्वरूप पेय पदार्थ उड़ेला जाता है—देखो **कोशपानपात्रम्**—राज० ७।८। सम०—**वेडमन्** कोशागार—भाष्ये च स्थापयामास तदेवं कोशवेडमनि कथा० २४।१३३।

कोशातकः [कोश+अत्+क्वुन्] बाल।

कोष्ठीकृ (तना० उभ०) घेरना, घेरा डालना—कोष्ठीकृत्य च तं वीरम् महा० ६।१०१।३२।

कोहल (वि०) [को हलति स्पर्शते अच् पृषो०] अस्पष्ट बोलनेवाला, —लः (पुं०) एक प्राकृत भाषा के वैयाकरण का नाम।

कौचवक (वि०) एक प्रकार की दरी—कौ० अ० २।११।

कौज (वि०) [कुज+ठक्] कुज अर्थात् मंगल से संबंध रखने वाला।

कौटुन्यम् [कुटुनी+ष्यञ्] कुटुनी के द्वारा युवतियों को दुराचरण में प्रवृत्त कराना।

कौण्डिन्यः [कुण्डिन+ष्यञ्] एक ऋषि का नाम।

कौतुकवत् (अ०) [कुतुक+अण्, मतुप्] जिज्ञासा के रूप में।

कौथुमः 1. सामवेद की एक शाखा का नाम 2. इस शाखा का अनुयायी ब्राह्मण।

कौमार (वि०) [कुमार+अण्] 1. मुख्य सृष्टि, मुख्य अवतार स एव प्रथमं देवः कौमारं सर्गमाश्रितः भाग० १।३।६। सम०—**तन्त्रम्** आयुर्वेद शास्त्र का एक अनुभाग जिसमें बच्चों के पालनपोषण का वर्णन है,—**व्रतम्** ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना।

कौर्णयः (पुं०) 1. राक्षस 2. वायु 3. शिव 4. अग्नि 5. तपस्या में संलग्न।

कौलमार्ग [कुल+अण्+मृग+घञ्, ष० त०] कौलों का सिद्धान्त।

कौलालः [कुलाल+अण् स्वार्थे] कुम्हार।

कौविन्दी [कुविन्द+अण्, स्त्रियां ङीप्] जुलाहे की स्त्री।

कौशिकः [कुश+ठञ्] गोंद गुग्गुल, बैरोजा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौशीतकी (स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी।
कौषीतकम् } (नपुं०) एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम।
कौषीतकि }
कौस्तुभः [कुस्तुभ+अण्] घोड़े की गर्दन पर बालों का गुच्छा, अयाल।
ककरटः (पुं०) लवा, बंदूक (पक्षी)।
कर्त्वर्थः [त० स०] यज्ञ के प्रयोजन को पूरा करने के लिए साधनभूत सामग्री—मी० सू० ४।१।२ पर शा० भा०।
क्रतुफलम् [ष० त०] यज्ञ का फल।
क्रन्द् (भ्वा० आ०) 1. चकरा जाना 2. दुःखी होना।
क्रप् (चुरा० पर० कार्पयति) स्पष्ट रूप से बोलना।
क्रमः [क्रम्+घञ्] 1. पग, कदम 2. पैर 3. गति, चाल। सम०—**भाविन्** (वि०) उत्तरोत्तर, क्रमिक, —**माला**,—**रेखा**,—**शिखा** वेद पाठ करने की नाना प्रणालियाँ, **योगेन** (अ०) नियमित ढंग से।
क्रियमाणकम् [कृ+कर्मणि यक्+शानच्, स्वार्थे कन्] साहित्यिक निबन्ध बृ० स० १।५।
क्रिया [कृ+श, रिङ् आदेशः, इयङ्] संरचना, कर्म। सम०—**अर्थ** (वि०) 1. वैदिक निर्देश जिसके द्वारा किसी कर्तव्य में लगाने का निर्देश किया जाता है 2. किसी कार्य के लिए उपयोगी अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम् कु० ५।३३,—**आरम्भः** पकाना, —**तन्त्रम्** चार तन्त्रों में से एक।
क्रयविक्रयिन् (वि०) [क्रयविक्रय+इनि] जो कम मूल्य पर वस्तु खरीद कर अधिक मूल्य पर बेच देता है; सौदा करने वाला।
क्रीडनकतया (अ०) [क्रीड्+ल्युट्, स्वार्थे कन्, तस्य भावः, तल्] किसी बात को खेल की वस्तु की भाँति ग्रहण करना भाग० ५।८।३२।
क्रीडा [क्रीड्+अ+टाप्] 1. संगीत में एक प्रकार की मात्रा 2. खेल का मैदान। सम०—**परिच्छदः** खिलौना।
क्रीडितम् [क्रीड्+क्त] खेल।
क्रोधः [क्रुध्+घञ्] 1. रहस्यपूर्ण अक्षर 'हुम्' या 'हुं फट्' 2. संवत्सरचक्र में ५९ वाँ वर्ष ('क्रोधन' भी)।
क्षणः [क्षण्+घञ्] ४८ मिनट का समय।
क्षुर (वि०) [क्षृत+रक, धातोः क्षुः] 1. कठोर, कड़ा 2. निर्दय 3. कर्कशध्वनि-क्रूरक्वणत्कङ्कणानि—मा०वी० १।३५ —**रस** (नपुं०) उग्रता के साथ। सम०—**चरित** (वि०) दारुण, भयानक।
क्षोडक्षान्ता (स्त्री०) पृथ्वी, धरती।
क्षोडीकृ [क्षोड+च्वि+कृ] 1. गले लगाना, आलिङ्गन करना।
क्षौड (वि०) [क्षोड+अण्] 1. सूअर से संबंध रखने वाला 2. वराह अवतार से सम्बन्ध रखने वाला।
क्लान्तमनस् (वि०) [ब० स०] निढाल, स्फूर्तिहीन।
क्लेदित (वि०) [क्लिद्+णिच्—क्त] मलिन, दूषित।
क्लिश्नत् (वि०) [क्लिश्+ना+शतृ] हटाता हुआ, दूर करता हुआ—मुद्रा० ३।२०।
क्लिष्ट (वि०) [क्लिश्+क्त] दुःखदायी, कष्टकर।
क्लिष्टा (स्त्री०) पातञ्जल योगशास्त्र में बताई हुई चित्त-वृत्ति का एक भेद।
क्वाणः [क्वण्+घञ्] ध्वनि, स्वन।
क्वथित (वि०) [क्वथ्+क्त] 1. उबाला हुआ 2. गर्म, —**तम्** (नपुं०) मादक शराब।
क्षणः,-णम् [क्षण्+अच्] निर्णय, संकल्प गन्तुं भूमिं कृतक्षणाः—महा० १।६४।५१। सम०—**अर्धम्** आधा मिनट,—**भङ्गुरवादः** बौद्धों का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु लगातार क्षीण होती रहती है, —**योगम्** शुभ समय।
क्षणेपाकः [अलुक् समास] एक मिनट में पकी हुई वस्तु।
क्षतास्रवम् [ष० त०] रुधिर, शोणित।
क्षतिः (स्त्री०) [क्षण्+क्तिन्] मृत्यु, निधन।
क्षत्तृ (पुं०) [क्षद्+तृच्] रक्षक।
क्षत्रविद्या, (-वेदः) युद्धकला, युद्धशास्त्र।
क्षमापनम् [क्षमा—ना० धा०, णिच्+ल्युट्] क्षमा माँगना। सम०—**स्तोत्रम्** क्षमा माँगते समय स्तुति-गान।
क्षम्य (वि०) [क्षमा+य] पृथ्वी में होने वाला, भौमिक, पार्थिव (वेद०)।
क्षारक्षत (वि०) [त० स०] यवक्षार से दूषणभावित।
क्षाराष्टकम् (नपुं०) आयुर्वेदिक आठ द्रव्यों का संग्रह। इसी प्रकार (क्षारषट्क, तथा क्षारपञ्चक)।
क्षा (स्त्री०) 1. पृथ्वी, धरती 2. निद्रा, नींद।
क्षाणम् (नपुं०) जलना, जला हुआ स्थान।
क्षामेष्टिन्याय: (पुं०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार निमित्त को दर्शाने वाले हेतूत्कारण की रचना इस प्रकार की जाय जिससे कि इसमें नित्य या अनि-वार्य परिस्थिति को दूर रक्खा जा सके—मी० सू० ६।४।१७-२१ पर शा० भा०।
क्षयतिथिः, (अहः) सूर्योदय से न आरम्भ होने वाला चान्द्र दिवस।
क्षयमासः [ष० त०] ('मलमासः' भी) वह मास जिसमें दो संक्रान्तियाँ आ पड़ें, और जो किसी मंगल या धार्मिक काल के लिए शुभ न माना जाता हो।
क्षयोद्यमः (पुं०) [त० स०] सक्रिय रहने या होने की इच्छा को सर्वथा नष्ट करने की जैनियों की संकल्पना।
क्षितिः [क्षि+क्तिन्] समृद्धि—क्षिते रोहः प्रबन्धः शाश्वदेव—महा० १३।७६।१०। सम०—**क्षमा** धरती की भाँति सहनशील—**क्षितिक्षमा पुष्करसन्निभाक्षी**—रा०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५,—स्पर्शः धरती छूना (जैसे कि सद्यःप्रसूत बच्चे ने जन्म लेकर धरती छुई),—स्पृश् पृथ्वी या धरती का वासी, भूमि पर रहने वाला।

क्षीणता [क्षि + क्त—तल् स्त्रियां टाप्] क्षय, कृशता तथा बलहीनता की दशा।

क्षिप् (तु० उभ०) 1. शीघ्रता से चलना 2. मर जाना 3. (गणित०) जोड़ना।

क्षिप्त (वि०) [क्षिप्+क्त] 1. फेंका गया, बखेरा गया 2. परित्यक्त 3. उपेक्षित। सम०—उत्तरम् ऐसा भाषण जो उत्तर के योग्य न हो,—योनिः नीच जाति में उत्पन्न।

क्षिप्तिः [क्षिप् + क्तिन्] रहस्य का भंडाफोड़ (नाटक में)।

क्षिप्रनिश्चय (वि०) [ब० स०] जो शीघ्र ही निश्चय कर लेता है आपत्स्यां गुणदोषज्ञस्तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः —मनु० ७।१७९।

क्षिप्रसन्धिः (पुं०) एक प्रकार की संधि जो दो सहवर्ती स्वरों में से पहले को अर्धस्वर में बदल कर हो सकती है।

क्षेपणिक [क्षेपण + ठञ्] मल्लाह, नाविक।

क्षीरः,(—रम्) [क्षर्+ईरन्, उपधालोपः यस्य ककारः पत्वं च] 1. दूध 2. रस 3. पानी। सम०—उत्तरा जमाया हुआ दूध,—त्वम् ताजा मक्खन,—कुण्डलम् दुग्धपात्र—कथा० ६३।१८८,—व्रतम् प्रतिज्ञा के फल-स्वरूप केवल दूध पीकर निर्वाह करना।

क्षीरस्यति (ना० धा० पर०) दूध की इच्छा करना —क्षीरस्यति माणवकः—पा० ७।१।५१ पर म०भा०।

क्षु (कथा० उभ०) कूदना, उछलना (स्वा० पर० भी) —क्षुणाति च क्षुणीते च क्षुणोत्यप्लवनेऽपि च। छन्दते क्षन्दतें चापि षडाप्लवनवाचिनः इति भट्टमल्लः।

क्षुद्र (वि०) [क्षुद्+रक्] 1. छोटा 2. साधारण 3. तुच्छ 4. क्रूर 5. गरीब। सम०—तातः पिता का भ्राता, चाचा,—पदम् लम्बाई नापने का एक गज,—शार्दूलः चीता।

क्षुद्रकः [क्षुद्र+कन्] 1. जो तिरस्कार करता है 2. एक प्रकार का बाण।

क्षोदः [क्षुद्+घञ्] 1. बूंद 2. लौंदा, टुकड़ा 3. गौण।

क्षुधाशान्तिः } भूख शान्त करना।
क्षुद्शान्तिः }

क्षुन्द् (स्वा० आ०) कूदना (दे० 'क्षु' भी)।

क्षुरनक्षत्रम् (नपुं०) जो क्षौरकर्म, या हजामत बनवाने के लिए शुभनक्षत्र हो।

क्षेत्रलिप्ता (स्त्री०) [ष० त०] क्रान्तिवृत्त की कला।

क्षेत्रांशः [ष० त०] क्रान्तिवृत्त का अंश या घात।

क्षेमेन्द्रः (पुं०) बृहत्कथामंजरी का प्रणेता एक कश्मीरी कवि।

क्षौद्रपथ्यम् [क्षुद्रक+पथ्य्] सूक्ष्मता।

क्षौरपथ्यम् (नपुं०) मजबूती से बनाया गया भवन।

क्ष्मावलयः [ष० त०] क्षितिज।

ख

खसूचिः (पुं०, स्त्री०) 1. तिरस्कारसूचक अभिरूपा (समासान्त में) जैसा कि 'वैयाकरणखसूचिः' (बुरा वैयाकरण—जो अपने ज्ञान को भूल गया)।

खजिका (स्त्री०) भूख लगाने वाली औषधि।

खट्टकः (पुं०) [खट्ट+अच्, स्वार्थे कन्] खाट, आसन।

खड्गः [खड्+गन्] तलवार। सम०—धारा तलवार का फला,—धारातलम् अत्यन्त कठिन कार्य,—विद्या तलवार चलाने की कला।

खण्ड (वि०) [खण्ड्+घञ्] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ 2. दूषित ण्डः,—ण्डम् महाद्वीप, महादेश। सम०—इन्दुः दूज का चांद—खण्डेन्दुकृतशेखरम् (शिवम्) —वेदपाठः, तालः संगीत शास्त्र में माप।

खण्डनखण्डखाद्यम् (नपुं०) हर्षकृत एक वेदान्त शास्त्र का ग्रन्थ।

खण्डिकोपाध्यायः (पुं०) क्षुब्ध अध्यापक, उत्तेजित अध्यापक —खण्डिकोपाध्यायः शिष्याय चपेटिकां ददाति—पा० १।१।११ पर म० भा०।

खण्डितव्रत (वि०) [ब० स०] जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है।

खण्डिन् (वि०) [खण्ड+इनि] एक प्रकार की दाल, पीले मूंग।

खण्डोरः (पुं०) दे० खण्डिन्।

खतमालः (पुं०) 1. धूआं 2. बादल।

खनिका [खन्+इन्, स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप्] पौलर, ताल।

खरः [ख+रा+क] 1. गधा, खच्चर 2. उदय, कठोर 3. तीक्ष्ण, तेज 4. सघन 5. क्रूर 6. ६० वर्ष के चक्र में पच्चीसवां वर्ष। सम०—कण्डूयनम्, बुराई की ओर अधिक करना,—गेहम् गधा,—तम्बूः—चर्मा (वि०) मगरमच्छ, वृषभ (वि०) गधा, जड़बुद्धि,—सारम् लोहा,—स्पर्श (वि०) गर्म, प्रचण्ड (आंधी, झक्कड़) —वायुर्वाति खरस्पर्शः—भाग० १।१४।१६।

खरक (वि०) जिसकी सतह खुरदरी हो ऐसा (मोती) —कौ० अ० २।११।

खरोष्ठी (स्त्री०) एक प्रकार की वर्णमाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खर्जूरिका (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
खर्परम् (नपुं०) नारियल की गिरी, गोला, खोपा।
खर्परम् (नपुं०) 1. रेशम 2. शौर्य 3. कठोरता।
खर्वटः [खर्व+अटन्] एक इस प्रकार की बस्ती जो पर्वत की तलहटी या नदी के किनारे बसी हो और जिसके निवासियों का व्यवसाय प्रायः वणिज्व्यापार हो। यह गांव और नगर के बीच की बस्ती के लक्षणों से युक्त होती है।
खर्वाट दे० 'खल्वाट' भीमसेन प्रभृतिताडुर्योधनवरूथिनी, शिखा खर्वाटकस्येव कर्णमूलमुपागता नाग०।
खर्वित (वि०) [खर्व+इतच्] जो बौना बन गया हो।
खर्वेतर (वि०) [त० स०] जो नगण्य न हो, जो छोटा न हो।
खलिन् (वि०) [खल+इनि] खल से युक्त, तलछट वाला, लो (पुं०) शिव।
खलीकृत (वि०) [खल+च्वि+कृ+क्त] अपमानित —ब्राह्मणस्त्वया खलीकृतः- नाग० ३।
खल्लिशः } एक प्रकार की मछली।
खल्लिशः }
खल्वः (पुं०) फली, बाल।
खा [खन्+ड+टाप्] 1. पार्वती 2. धरती 3. लक्ष्मी 4. वक्तृता -खोमा दमा कमला च गीः—एकार्थ०।
खानपानम् (नपुं०) खाना पीना।
खानोदकः (पुं०) नारियल का पेड़।
खुरशालः (पुं०) खुरशाल देश में उत्पन्न एक उत्तम नस्ल का घोड़ा--शालि० ११।७।
खेखोरकः (पुं०) खोखला बांस।
खेचरी (स्त्री०) एक प्रकार की योगसिद्धि जिसके द्वारा योगी आकाश में उड़ सके --एवं खेचरीभिरवतार्हं खेचरीसिद्धिलीलृपा कथा० २०।१०५।
खेटः [खिट्+अच्, खे अटति - अट्+अच्] ग्राम, गांव।
खोरकः (पुं०) किसी जानवर के खुर में होने वाला विशेष रोग।
ख्यातिः (स्त्री०) [ख्या+क्तिन्] दर्शनशास्त्र का एक सिद्धान्त—विकल्पः ख्यातिलोडिनाम्--भाग० ११। १६।२४।

ग

गः [गै+क] 1. शिव 2. विष्णु—गः प्रीतार्थवः श्रीपतिरुत्तमः— एकार्थ०
गगनम् [गच्छत्यस्मिन् गम्+ल्युट्, ग आदेशः] 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. शून्य 3. स्वर्ग। सम० **रोमन्थः** असङ्गति, व्यर्थ पदार्थ, **लिह्** (वि०) आकाश तक पहुँचने वाला —दे० अभ्रंलिह्।
गङ्गासप्तमी (स्त्री०) वैशाख मास के शुक्ल पक्ष का सातवाँ दिन।
गजः [गज्+अच्] 1. हाथी 2. आठ की संख्या 3. लम्बाई नापने का गज 4. एक राक्षस जिसे शिव जी ने मार दिया था। सम० **शिक्षा** हथिनी जिसका प्रयोग जंगली हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता है स्वतनुवितरणेन तं प्रलोभ्य द्विपमिव वन्यमिहोपनेतुकामा सखि गजगणिकेव चेष्टितासि—जानकी० १६।५२, —**गौरीव्रतम्** भाद्रपद मास में स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला व्रत, **निमीलिका** किसी वस्तु की ओर झूठ-मूठ देखना, जानबूझ कर न देखना,—**पुष्पी** एक लता का नाम— गजपुष्पीभिमां फुल्लामुत्पाटय शुभलक्षणाम् - रा० ४।१२।३९,- **बन्धः** 1. बूटी जिससे हाथी बांधा जाता है 3. एक प्रकार की संभोग मुद्रा 3. जंगली हाथी को पकड़ने की प्रक्रिया - नाना०।
गजिन् (वि०) [गज+इनि] गजारोही, हाथी की सवारी करने वाला।
गडुकः [गड्+उकञ्, पृषो०] 1. तकिया 2. एक प्रकार का जलपात्र।
गणः [गण्+अच्] 1. समूह, संग्रह, समुदाय, रेवड़, लहंडा 2. श्रेणी 3. शिव के अनुचर, जिनका अधीक्षक गणेश है, उपदेव 4. समाज 5. मण्डल 6. जाति। सम० —**रत्नमहोदधिः** व्याकरणगत गणों पर वर्धमान कृत एक ग्रन्थ,—**वल्लभः** सेनापति--रा० २।८१।१२।
गणनपत्रिका संगणक, जिसमें विशेष प्रकार के शोधित अङ्कों की सारणी दी हुई होती है—राजे० ६।३६।
गणितम् [गण्+क्त] व्यवहार- वेत्तुमर्हति राजेन्द्र स्वाध्यायगणितं महत् महा० १२।१६२।९।
गण्यमानम् [गण्+यक्+शानच्] किसी रचना या निर्माण की सापेक्ष ऊँचाई।
गण्डः [गण्ड्+अच्] 1. गाल 2. हाथी की कनपटी 3. बुलबुला 4. फोड़ा, रसौली 5. जोड़, गाँठ। सम०—**कृच्छः** पहाड़ की सतह, अधित्यका, —**भेदः** चोर—गण्डभेददास्याः शीलं जानन्नपि—अवि० २।
गण्डूचः [गण्ड्+ऊचन्] एक प्रकार की शराब।
गत (वि०) [गम्+क्त] 1. गया हुआ, बीता हुआ 2. मृत,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. ज्ञाता । सम० आगतम् (गतागतम्) [द्व० स०] भूत और भविष्यत् (का वर्णन) —वंशस्यास्य गतागतम् ... रा० ७।५१।२३,—मनस्क (वि०) मग्न, लीन, ध्यान; (वि०) जो अपनी थकावट का प्रदर्शन नहीं करता है ।

गतिमत् (वि०) [गति+मतुप्] उपायज्ञ, तरकीब या रीति का जानकार महा० १२।२८६।७।

गत्वर (वि०) [गम्+क्वरप्, अनुनासिकलोपः, तुक् च] तेज चलने वाला, --त्वरः (पु०) एक प्रकार का घोड़ा ।

गदः [गद्+अच्] 1. कृष्ण के भाई का नाम 2. कुबेर, 3. शस्त्रास्त्र, हथियार --आयुधे बलदे रोगे पुंसि कृष्णानुजेऽपि च नानाव० ।

गदिः (स्त्री०) [गद्+इ] व्याख्यान, वक्तृता एवं गदिः कर्मगतिनिसर्गः भाग० ११।१२।१९।

गन्धः [गन्ध्+अच्] 1. गुणों में समानता, सम्बन्ध, द्वन्द्वता 2. गन्धक 3. चन्दन चूरा 4. पड़ौसी । सम०—हस्तिन् हाथी जिसकी मधुर गन्ध इधर-उधर फैलती है, वह गुणों में उत्तम हाथी माना जाता है ।

गन्धकर्पेटिका (वि०) [ष० त०] सेविका जो गन्ध द्रव्य और चन्दन पीस कर तैयार करती है ।

गन्धि (वि०) [गन्ध्+इ] केवल नाममात्रो, बहाना करने वाला सांप्रति त्वया हतस्तस्ति रिपुणा भ्रातृगन्धिना —रा० ७।२४।२९।

गन्धर्वतैलम् (नपु०) [वि० स०] एरण्ड का तेल ।

ग (गा) न्धारः (पु०) 1. संगीत में तीसरा स्वर, एक विशेष प्रकार का राग ।

गमनम् [गम्+ल्युट्] जानना, समझना नाऽन्तः स्वरूपगमने प्रभवन्ति भूम्नः --भाग० ८।७।३४।

गर्गसंहिता (स्त्री०) गर्ग द्वारा प्रणीत एक ज्योतिष का ग्रन्थ ।

गर्जरम् (नपु०) एक प्रकार का घास ।

गर्भः [गृ+भन्] 1. गर्भाशय, पेट 2. भ्रूण, कलल 3. अग्नि 4. आहार । सम०—आहिका (स्त्री०) धात्री, दाई कथा० ३४, —न्यासः आधार रखना, नींव डालना भाजनम् नींव का गड्ढा, --संभवः गर्भाशय से जन्म होना ।

गर्भिका (स्त्री०) किसी प्रकार के मल या संदूषण अन्तःप्रवेश ।

गर्भेवृत्तः] (वि०) [सप्तमी अलुक् समास] कायर, मन्द-**गर्भेवृद्धः**] बुद्धि, जड ।

गलः [गल्+अच्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार की घास ।

गलूः (पु०) [गल्+ऊण्] एक प्रकार का रत्न ।

गवाभ्यः (पु०) एक वर्ष तक रहने वाला सत्रयाग ।

गव्य (वि०) [गो+यत्] गाय से मिलने वाला पदार्थ, घी, दूध आदि,—**ध्यम्** (नपु०) गवामयनम् नाम का एक श्रौत यज्ञ--'गवामयन' द्रष्टः—मै० सं० ८।१।१८ पर शा० भा० ।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1. गहरा, सघन, घिनका 2. समझने में कठिन 3. ऐसा स्थान जो पार न किया जा सके ।

गह्वरी [गह्वर+ङीष्] पृथ्वी ।

गह्वरित (वि०) [गह्वर+इतच्] लीन, मग्न—यावत्सेन्या वचः श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत्—महा० २। ६८।४५।

गाङ्गेय (वि०) [गङ्गा+ढक्] गङ्गा में, गङ्गा पर, या गङ्गा से उत्पन्न होने वाला,--यः भीष्म,--यम् 1. सोना 2. मोथा घास ।

गाढतरम् (अ०) 1. अधिक कस कर, सटा कर 2. अपेक्षाकृत अधिक गहनता से ।

गाढपक्षम् (पुं०) [ब० स०] मेंढक ।

गाढवटी (स्त्री०) एक प्रकार की भारतीय शतरंज ।

गाणनिक्यम् [गणनिक+ष्यञ्] लेखाकार का कार्य --अश्मापटले गाणनिक्याधिकारः—कौ० अ० २।७ ।

गाण्डी (स्त्री०) गंडा ।

गात्रसंवेदनम् (नपु०) आकर्षी संवेदन ।

गात्रिका (स्त्री०) चोली ।

गान्धर्वकला,-विद्या,] संगीत की ललित कला, संगीत का **-वेदः,-शास्त्रम्**] सिद्धान्त, संगीतविज्ञान ।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यं स्त्री] 1. एक प्रकार का वादक द्रव्य 2. बाईं आँख की शिरा ।

गान्धारीग्रामः (पुं०) एक प्रकार का संगीतमान ।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1. मर्यादा 2. उदारता 3. संतुलन ।

गार्जरः (पु०) गाजर ।

गार्हस्थकर्मधिकाः [गृहस्थकर्मन्+ठक्] गृहस्थ के धर्म, गृहस्थ के कर्तव्य ।

गिर् (गिरा) (स्त्री०) [गृ+क्विप् टाप् वा] 1. बुद्धि -देo गिर्धीः एकार्थः 2. सुना हुआ ज्ञान गिरा वाङ्मात्रसामि तपसा ह्वानन्ती—महा० १।३।५७ (टीका) ।

गिरा [गृ+क्विप् टाप् वा] स्तुति (वेद०) ।

गिरित्रः [गिरि+त्रल्] शिव--भाग० ८।६।१५ ।

गिरिधातुः (पुं०) गेरू ।

गिलत् (वि०) [गिल्+शतृ] निगलने वाला—गिलन्य इव चाङ्गानि—भाग० १०।१३।३१ ।

गीतगोविन्दम् (नपु०) जयदेव निर्मित एक गीतिकाव्य ।

गीतबन्धनम् (नपु०) संगीत के सस्वर पाठ के उपयुक्त एक महाकाव्य ।

गीतमोहिन् (पुं०) किन्नर ।

गीतिः [गै+क्तिन्] एक गेय साम ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुटिकास्त्रम् (नपुं०) 'Y' के आकार की एक यष्टिका जिसके साथ एक डोरी बंधी होती है, इससे पक्षियों पर पत्थर के टुकड़े फेंके जाते हैं इसका नाम है "गोफिया"।

गुटिकायन्त्रम् (नपुं०) बन्दूक, नलिका।

गुडः [गुड्+अच्] गोली, बटिका—शाङ्ग० १३।१।

गुणः [गुण्+अच्] 1. किसी वस्तु की विशेषता चाहे अच्छी हो या बुरी 3. धागा, डोरी 3. शरीर के (सत्त्व, रज तथा तम) धर्म। सम० **कल्पना** किसी वाक्य का अर्थ करते समय आलङ्कारिक भावना को सङ्कुत करना,—**कारः** (गणित०) गुणक, गणा करने वाला,—**गौरी** अपने उत्तम गुणों से देदीप्यमान महिला अनुत्तमैर्गुणगौरि मा कृथा मानु—शि०, **भावः** किसी अन्य वस्तु की तुलना में गौण पद —परार्थता हि गुणभावः—मै० सं० ४।३।१ पर शा० भा०,—**वादः** 1. गौण अर्थ को सूचित करने वाली उक्ति 2. अन्य लोगों का विरोध करने वाली उक्ति, —**विभाग** (वि०) [ब० स०] पदार्थ के अन्य पहलुओं में से किसी विशेषता को पृथक् करके दर्शाने वाला, विशेष: विशेष लक्षण, भिन्न प्रकार की विशेषता. **विशेषाः** बाहरी ज्ञानेन्द्रियां, मन और अहंकार गुणविशेषाः बाह्येन्द्रियमनोऽहङ्कारांश्च —सा० का० ३६, **संग्रहः** अच्छे गुणों का एकत्रीकरण।

गुदनिर्गमः [ष० त०] अर्शादि रोग के कारण कांच बाहर निकल आना।

गुप्तगृहम् (नपुं०) शयनकक्ष, शयनागार।

गुप्तधनम् (नपुं०) [कर्म० स०] छिपा हुआ धन।

गुर्वटी (स्त्री०) अवगुण्ठनवती महिला, बुर्के वाली स्त्री।

गुरु (वि०) [गृ+कु, उरच्] 1. भारी (विप० लघु) 2. बड़ा 3. लम्बा 4. कठिन 5. आदरणीय 6. शक्तिशाली,—**रुः** (पुं०) 1. पिता, प्रपिता, पितामह, पूर्वज 2. सम्माननीय महापुरुष 3. शिक्षक, अध्यापक 4. स्वामी 5. बृहस्पति। सम०—**उपदेशः** 1. अध्यापक द्वारा दीक्षा 2. शिक्षकों या बड़ों द्वारा दी गई नसीहत, **कक्षः** मोर, **कुलम्** 1. गुरु का वासस्थान सावास विद्यापीठ जहां अध्यापक और छात्र मिल कर रहें, **कुलवासः** गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करना, —**गृहम्** 1. शिक्षक का घर 2. बृहस्पति का घर (जन्मपत्रिका में),—**आत्मः** महत्व, गुरुत्व, —**उच्चैस्त्वम्** नीचू, गलगल.—**वर्तिता** बड़ों के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित करना **निवेद्य गुरवे राज्यं भजिष्ये गुरुवर्तिताम्**—रा० २।११५।१६, —**श्रुतिः** गायत्रीमन्त्र—जपमानो गुरुश्रुतिम् महा० १३।३६।६,—**स्वम्** शिक्षक का धन, संपत्ति।

गुलिकः (पुं०) 1. एक उपग्रह (शनि का पुत्र) जो केरल देश में माना जाता है 2. विष से बुझा तीर 3. दिग्गज —गुलिको मन्दतनयः रसबद्धास्त्रदेशयोः, विद्धत्यागे —नाना०। सम०—**कालः** प्रतिदिन का वह समय जो अशुभ माना जाता है।

गुलिका (स्त्री०) गोली—एकाऽपि गुलिका तत्र नलिका यन्त्रनिर्गता— शिव०।

गुल्मः [गुड्+मक्, इत्व ल:] 1. युद्धशिविर 2. सैनिक-तंबू। सम०—**कुष्ठम्** एक प्रकार का कोढ़।

गुह्य (वि०) [गुह्+यत्] 1. छिपाने के योग्य 2. रहस्य, **ह्यम्** (नपुं०) गुप्त स्थान—मैथुनं सततं धर्म्यं गुह्ये चैव समाचरेत्—महा० १२।१९३।१७। सम० —**विद्या** गुप्त रूप से और लोगों से गुप्त रख कर —गुरुमंत्र को दीक्षा देना अथवा अभ्यास कराना।

गूढ (वि०) [गुह्+क्त] 1. गुप्त, छिपा हुआ 2. आच्छादित 3. अदृश्य 4. रहस्य, **ढम्** (नपुं०) एक शब्दालंकार। सम० **अर्थ** (वि०) आन्तर अर्थ रखने वाला, **आलेख्यम्** कूटलेख,—कौ० अ० १।१२।

गृत्समदः (पुं०) एक वैदिक ऋषि का नाम (इसका पुराणों में भी उल्लेख है)।

गृद्ध (वि०) [गृध्+क्त] इच्छुक, लालायित, उत्सुक, किसी वस्तु को अत्यन्त चाहने वाला—गृद्धा वाससि संभ्रान्तौ महा० १।७२।६।

गृध्निन् (वि०) [गृध्+इनि] दे० 'गृद्ध'।

गृद्धय (वि०) [गृध्+यत्] जिसे उत्सुकता पूर्वक बहुत चाहा जाय, जिसके लिए प्रबल लालसा की जाय।

गृह् (क्रया० आ०) स्वीकार करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, लेना, मिलाना, लीन करना।

गृहम् [गृह्+क] 1. घर, आवास, भवन 2. पत्नी 3. गृहस्थ जीवन 4. जन्मकुंडली का घर 5. (शतरंज आदि खेल का) घर। सम० **आरम्भः** घर का निर्माण,—**ईश्वरी** घर की स्वामिनी, गृहिणी, **चेतस्** —**सक्त** (वि०) अपने घर की याद करने वाला, जिसका मन अपने घर की ओर ही लगा हो,—**दाहः** (नपुं०) घर में लगा खम्बा, स्तम्भ—नरपतिवले पार्श्वयोर्ते स्थित गृहदारुवत् महा० ४।३, —**पतिः** 1. घर का स्वामी 2. गृहस्थ 3. गांव का मुखिया —मूच्छ० २, —**पिण्डी** भौंरा, भृगर्भ,—**पोषकः** भवन बनाने के लिए संकेतित स्थान,—**पोषणम्** गृहस्थ का निर्वाह,—**मार्जनी** 1. घर को झाड़ू से साफ़ करने वाली 2. बुहारी की मूठ,—**मणिः** (पुं०) कबूतर।

गृहकम् [गृह्+कन्] घर का बगीचा, वाटिका।

गृह्य (वि०) [गृह्+क्यप्] 1. घरेलू 2. पालतू 3. प्रसंलक्ष्य, प्रत्यक्षक्षेम—एवेता० १।१३, **ह्यम्** (नपुं०) घरेलू काम, गृहस्थ का यज्ञीय अनुष्ठान। सम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—सूत्रम् सूत्रों का संकलन जिसमें गृह्य यज्ञों के विधान का वर्णन है जैसे कि आपस्तम्बगृह्यसूत्र या बौधायन गृह्यसूत्र ।

गातुः [गै+तुन्] 1. गीत 2. गायक 3. मधुमक्खी ।

गायः (वेद०) गीत (समास में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ है 'स्तुति के योग्य' 'स्तुत्य' जैसा कि 'उरु-गाय' में) ।

गो (पुं०, स्त्री०) [गम्+डो] 1. पशु 2. गौ 3. कोई भी पदार्थ जो गौ से प्राप्त हो 4. आकाश 5. इन्द्र का वज्र 6. प्रकाश, किरण 7. हीरा 8. स्वर्ग 9. बाण । समः० **ग्रहणम्** गौएँ पकड़ना, गौएँ चुराना,—चर्या पशु की भांति केवल अपना भौतिक सुख खोजना —**जिह्विका** काकलक, काग,—**जीव** (वि०) गोदुग्ध का व्यवसाय करने वाला, घोसी,—**पथः** अथर्ववेद का एक ब्राह्मण,—**पदम्** उस पहाड़ का नाम जहाँ पाणिनि ने तपस्या की थी अष्टा०, वृत्त० २।६८, —**मण्डीरः** एक जल पक्षी,—**मध्यमध्य** (वि०) छरहरा, पतली कमर वाला,—**मूत्रकः** वैदूर्य नामक मणि, —**मूत्रकम्** गदायुद्ध में पैंतरा बदल चाल—महा० ९।५८।२३,—**लोभिका** सफ़ेद दूब,—**वरम्** गाय के गोबर का चूरा,—**विषाणिकः** गाय के सींग से निर्मित एक संगीत उपकरण (इसे 'शृंग' भी कहते हैं) —महा० ६।४४।४,—**सावित्री** गायत्रीमंत्र,—**हरणम्** दे० 'गोग्रहणम्' ।

गोम् (चुरा० पर०) गोबर से लीपना, गोबरी फेरना ।

गोमत् (वेद०) [गो+मतुप्] गौओं से समृद्ध स्थान ।

गोमयपायसीयन्यायः (पुं०) एक ही स्रोत से उत्पन्न दो वस्तुओं के गुणों की भिन्नता—जैसे, दूध और गोबर ।

गोमिन् [गो+णिनि] वैश्य—गोमिनः कार्यस्तेकरम् —महा० १२।८७।३५ ।

गोजिकाणः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा ('गोजिकरण' नामक स्थान में पैदा होने के कारण यह नाम पड़ा) ।

गोरो (स्त्री०) नासापट, नासिका के बीच का पर्दा ।

गोणः [गुण+घञ्] बैल ।

गोणी [गोण+ङीप्] गाय ।

गोलक्रीडा (स्त्री०) गेंद से खेलना, गेंद का खेल ।

गोलबीथिका ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम ।

गोलशास्त्रम् (नपुं०) 1. भूगोल 2. गणित ज्योतिष ।

गोष्पदः मैनाक पर्वत ।

गौडपादः 'अद्वैतवाद' पर लिखने वाला प्रसिद्ध लेखक ।

गौडमालवः (पुं०) संगीतशास्त्र के एक राग का नाम ।

गौधारः,-धेयः,-धेरः (पुं०) गोह (जो प्रायः वृक्षों की दरारों में पाई जाती है) ।

गौरङ्गः [ब० स०] 1. शिव 2. श्री चैतन्य देव, सन्त और गायक ।

गौरी [गौर+ङीप्] 1. एक नागकन्या 2. एक नदी का नाम 3. रात 4. पार्वती । समः० **पूजा** माघ मास के शुक्लपक्ष के चौथे दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

गौह्यकः (वि०) [गुह्यक+अण्] गुह्यकों से संबंध रखने वाला ।

ग्रन्थिः [ग्रन्थ्+इन्] 1. पुस्तक का कठिन स्थल—ग्रन्थ-ग्रन्थिं तदा चक्रे मुनिर्मूढं कुतूहलात्—महा० १।१।८० 2. घण्टी, जंग-कथा० ६५।१३५ । समः० **उक्कः** एक प्रकार का फौलाद, इस्पात ।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि+कै+क] बाँस का अंकुर ।

ग्रन्थिकम् (नपुं०) 1. पीपलामूल 2. गुग्गुल ।

ग्रासप्रमाणम् [ग्रस+घञ्—ग्रासस्य प्रमाणम् -ष० त०] एक ग्रास का माप ।

ग्रहः [ग्रह्+अच्] 1. युद्ध की तैयारी 2. अतिथि-यथा सिद्धस्य चाग्रस्य ग्रहायाग्रं प्रदीयते—महा १३।१००। ६ । समः०—**अधीशः** चन्द्रमा, **कुण्डलिका,** -**चक्रम्,** -**स्थितिः** जन्मकुण्डली, किसी भी समय ग्रहों की बताई हुई दशा,—**गणितम्** फलित ज्योतिष का गणित भाग,—**ग्रामणी** सूर्य,—**चारनिबन्धः** ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम, -**लाघवम्** ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम,—**स्वरः** संगीत गान का पहला स्वर ।

ग्रहणीकपाटः [ष० त०] अतिसार की औषधि ।

ग्राहः [ग्रह्+घञ्] 1. मुठ 2. लकवा ।

ग्राह्यम् [ग्रह्+ण्यत्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा संकल्पना का विषय ।

ग्राह्यः [ग्रह+ण्यत्] एक ग्रस्त ग्रह ।

ग्रामः [ग्रस्+मन्, आदन्तादेशः] 1. गाँव, पल्ली 2. वंश, समुदाय 1. समुच्चय, संग्रह । समः०—**कायस्थः** ग्रामीण लिपिक, **गृह्यकः** गांव का बढ़ई,—**णीः** (पुं०) सूर्य के अनुचरों का नेता, उपदेवता,—**धर्मः** गाँव की प्रथा,रीतिरिवाज,—**धान्यम्** गाँव में उत्पन्न अन्न, **पुरुषः** गांव का मुखिया, **विशेषः** संगीत का विशिष्ट स्वर--स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्छना—शि०, —**वृद्धः** गांव का बड़ा बूढ़ा - प्राप्याधस्तीनुदधनकथा-कोविदग्रामवृद्धान् - मेघ० ३० ।

ग्राम्यवादिन् (पुं०) गाँव का आदमी, गांव की ओर से बोलने वाला -तें सं० २।३।१।२ ।

ग्रामेरुकम् (नपुं०) चन्दन का एक भेद ।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रस्+मलिन्] गर्म, उष्ण । **ग्रीष्मः** (पुं०) ग्रीष्म ऋतु । समः०—**वनम्** उपवन या वाटिका जो ग्रीष्म ऋतु का विश्राम स्थल हो—कथा० १२२।६५,—**हासम्** गुरुकमय बीज जो ग्रीष्मर्तु में हवा में इधर उधर उड़ते हैं ।

ग्लपनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट्,पुक् ह्रस्वश्च] 1. मुर्झाना कुम्हलाना 2. विश्राम करना—सान्द्रोद्यानद्रुमाग्र्यग्लपन-पिशुनितात्यन्तलीलाभिताप:—रत्ना० ४।१४ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्खलित (वि०) [स्खल्+णिच्+क्त, पुक्, ह्रस्वश्च] 1. क्लान्त, झुलसा हुआ, छितराया हुआ—कि० १४ ५४, रघु० १६।३८ 2. टुकड़े टुकड़े किया हुआ —लाङ्गलस्खलितप्रोवाः—रा० ७।७।४७ ।

ष

षट्: [षट्+अच्] 1. सिर—समाधिभेदे ना शिरः कूट-कटेषु च—मेदिनी०, महा० १।१५५।३८ 2. मिट्टी का जलपात्र 3. कुम्भराशि । सम० उदरः गणेश का नाम,—कञ्चुकि (नपुं०) तान्त्रिक और शाक्तों की एक रस्म (इसमें विभिन्न महिलाओं की चोलियाँ एक घड़े में डाल दी जाती हैं और फिर उपस्थित महानुभावों में से प्रत्येक एक एक चोली निकालता है, तथा जिस महिला की वह चोली होती है, उसके साथ उस पुरुष को संभोग करने की अनुमति है)—योनिः, —भवः, जन्मा अगस्त्य मुनि ।

षट्टा [षट् भावे अङ्, स्त्रियां टाप्] लोहे की प्लेट जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है ।

षट्टिकाध्वजम् (नपुं०) विद्युद्वृत्त ।

षट्टिकायन्त्रम् (नपुं०) घंटा ।

षट्टीयन्त्रम् (नपुं०) 1. रहट, पानी निकालने का यन्त्र 2. अतिभार—भाव० ७।१६।२४ ।

षड्दित (वि०) [षट्+क्त] 1. मण्डयुक्त, कलफदार —पञ्च० ६।३ 2. दबाया हुआ, भींचा हुआ, पीसा हुआ ।

षण्टार्कः (पुं०) 1. शिव का एक गण 2 एक राक्षस का नाम ।

षण्टारवः (पुं०) [ष० त०] 1. घण्टे की आवाज को-दण्डघण्टारव'—हनु० 2. शंख की एक जाति -घण्टा-रवः शंखभेदे घण्टानादे''''''नाना० ।

षण्टिका (स्त्री०) [षण्ट्+ष्वुल्, इत्वम्] काग, काकल, उपजिह्वा ।

षण्ढालः [षण्ढ्+आलच्] हाथी सूक्ति० २।१६ ।

षण्ढिलः [षण्ढ+ठक्] बढ़िया, नगरमच्छ ।

षत (वि०) [हन् मूर्तौ अप्, षनादेशश्च] 1. सघन, बद्ध, ठोस 2. मोटा, घना हुआ 3. पूर्ण विकसित 4. गहरा 5. निर्वाध 6. स्थायी 7. पूर्ण,—षतः (पुं०) 1. बादल 2. लोहे की गदा 3. शरीर 4. समुच्चय 5. वेद का स्वर पाठविशेष, षतम् (नपुं०) 1. घंटा, डंका 2. लोहा 3. खाल, चमड़ा । सम०—अङ्ग (वि०) मोटी जंघाओं से युक्त महिला—कुर घनोरु पदानि शनैः शनैः—वेणी० २।२०, —अस्र (वि०) हथौड़े के आघात के उपयुक्त—भाव० ६।२६।५३, —आनम् किसी रचना या निर्माण का बाहरी भाग,—कर्तृता कड़ी गोपनीयता ।

षनता, त्व [घन+तल्+त्व] 1. सघनता, सटा होना 2. दृढ़ता, ठोसपना ।

षपेटः (पुं०) [षप्+यङ्—लुक्+अच्] मन्दिर का एक विशेष प्रकार का निर्माण ।

षर्म (वि०) [घृ+मक्, नि० गुणः] गर्म,—र्मः (पुं०) 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. पसीना 4. प्रवर्ग्य संस्कार 5. एक देवता का नाम—घर्मः स्यादातपे क्लीबे प्रवर्ग्ये देवतान्तरे । सम०—जातिः पसीने से उत्पन्न जीव, दे० 'स्वेदज' ।

षर्षणालः [षर्षण+आलच्] पीसने वाला, बट्टा, लोढ़ी ।

षाटयम् [षट्+णिच्+ल्युट्] चटनी, कुड़ा ।

षातः [हन्+णिच्+घञ्] हथौड़ा लगाना कोषाधिष्ठि-तस्य कोषावच्छेदे षातः—कौ० अ० २।५ । सम० —कुष्ठम् (नपुं०) एक प्रकार का मूत्ररोग, दिवसः अशुभ दिन, जन्मलग्न से सातवाँ नक्षत्र ।

षुधक्षत [षुध+क=षुध+क्षण (अद्) (भुज्)+क्त] षुधाक्ष, कोढ़ से खाया हुआ, व्रण लगा हुआ—श्रीनिमित षुधभुक्त] प्राप्तव्रणक्षतकवर्णोपमाद्याक्ष्मलं ममार्ज—शि० ३।५८ ।

षुधभुक्ति (वि०) [षुधभुक्+इतच्] मुगन्धित, सुरभित, सुगंधूदार ।

षुधाक्षम् (नपुं०) हिंडोरा पीट कर सबको अग्रदान करना मनु० ४।२०९ ।

षुत (वि०) [क्षु+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. चमकीला, —तम् (नपुं०) 1. घी 2. मक्खन 3. शराब षघु-व्यतां घृतपक्वता महा० १।९२।१५ । सम०-अक्त (वि०) घी से चुपड़ा हुआ, घी से युक्त,—गन्धः गोंद का एक भेद जिसमें घी की सुगन्ध आती है, —प्राश, प्राशनम् घी पीना प्लुत (वि०) घी से चुपड़ा हुआ,—हेतुः मक्खन ।

षृणा [घृ+नक्] घर्म की याचना ।

षृणिन् [घृण+इनि] लज्जालु, शर्मीला ।

षोणा [घृण+अच्+टाप्] 1. (उल्लू की) चोंच 2. (रथ में) पहिये की नाभि ।

षोषः [घृष्+घञ्] 1. स्वर पाठ, मन्त्रोच्चारण—शुश्राव षड्जमध्यादिस्वरसंस्थानम् २।० ५। सम० —यात्राः सामूहिक रूप से गोशालों के स्थान पर जाना, सामूहिक तीर्थ यात्रा, वर्ण घोष प्रयत्न वाला अक्षर, स्वन युक्त या निनादी अक्षरः, वृद्धः धामीस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्वाले—हैयङ्गवीनमादाय योषभूद्वानुपस्थितान्—रघु० १।४५ ।

ह्रंस्, ह्रंसः (वेद०) [ह्रंस्+क्विप्, अच् वा] सूर्य की गर्मी, चिलचिलाती धूप ।

ह्राद (वि०) [ह्रा+क्त] सूखा हुआ, -दः,-दम् 1. गन्ध 2. गन्ध आना 3. शाक । सम०—मूलः लवुता, —स्कन्धः शाक बेचना, सिलकना ।

ह्व

ह्वकोरक्षुस्,—क्षस् (वि०) [ह्व० स०] चकोर जैसी आँखों वाला, सुन्दर आँखों वाला—अनुकार चकोरक्षुरा यतः—शि० ६।४८।

ह्वक्कम् [ह्वक्यते अनेन, ह्वक्+कर्मणि क, नि० इत्वम्] 1. गाड़ी का पहिया 2. कुम्हार का चाक 3. गोल तीक्ष्ण अस्त्र 4. तेल का कोल्हू 5. वृत्त । सम०—अरः,—अरम् पहिये का अरा, —अश्मन् एक प्रकार का पत्थर फेंकने का यंत्र,—ईश्वरी जैनियों की विद्या देवी, सरस्वती, —घनः गरजता हुआ बादल,—वर्मन् कश्मीर के एक राजा का नाम—राज० ५।२८७।

ह्वक्ष्यम् [ह्वक्ष्+यत्] आँखों के लिए मल्हम ।

ह्वक्ष्यायण (वि०) अशिष्टता पूर्वक अंगविक्षेप करने वाला, अश्लील इंगित करने वाला—भट्टि० ४।१९।

ह्वटकामुखः [ब० स०] एक विशेष प्रकार का बाण ।

ह्वडुल्य (ना० धा० पर०) इधर-उधर घूमना—ह्वड्यपुटं चटुलयन्ति चिरं चकोराः—भामि० ८९।९९।

ह्वतुर्, (सं० वि०) [ह्वत्+उरच्] (रचना में 'चतुर्' का 'र्' बदल कर विसर्ग, श्, ष, स हो जाता है) चार । सम०-अङ्गिकः (चतुरङ्गिकः) एक घोड़ा जिसके मस्तक पर बालों के चार भूँवर लहराते हों, —काष्ठम् (चतुष्काष्ठम्) (अ०) चारों दिशाओं में, —चित्यः (चतुश्चित्यः) उभरी हुई वर्गाकार दस चौतरी—महा० १४।८४।३२,—पाद्य (चतुष्पाद्य) मनुविज्ञान जिसमें चार (ग्रहण, धारण, प्रयोग और प्रतिकार) भाग होते हैं, मेधः (चतुर्मेधः) जिसने चार बड़े यज्ञों - अश्वमेध, पुरुषमेध, पितृमेध और सर्वमेध का अनुष्ठान सम्पन्न कर लिया है,—सनः (चतुस्सनः) सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नाम के चारों रूप धारण करने वाला विष्णु ।

ह्वतुष्क (वि०) [चतुरवयवं चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1. चार की संख्या से युक्त, -कम् चार पायों वाला स्टूल, चौकी ।

ह्वन्दनपङ्कः [ब० त०] चन्दन का लेप—तुलाघनश्चन्दन-पङ्कशीतलः—भोज० ।

ह्वन्द्र (वि०) [चन्द्र+क्विप्+रक्] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. सुन्दर,—द्रः (पुं०) 1. चन्द्रमा, चाँद 2. कपूर 3. मोर की पूँछ का चन्दा 4. पानी । सम०—कला एक प्रकार का ढोल,—कुल्या एक नदी का नाम,—प्रज्ञप्तिः (स्त्री०) जैनियों का छठा उपाङ्ग, —प्रासादः चतुरा, खुली छत ।

ह्वन्द्रटः (पुं०) आयुर्वेद विषय पर प्राचीन ग्रन्थकर्ता —सुश्रुत भूमिका ।

ह्वन्द्रा (स्त्री०) गाय भी० सू० १०।३।४९ पर हा० भा० ।

ह्वपेटी (स्त्री०) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का छठा दिन ।

ह्वमकसूक्तम् (नपुं०) वेद का एक सूक्त जिसके प्रत्येक मन्त्र में 'च मे' की आवृत्ति की जाती है ।

ह्वमसोद्भेदः (पुं०) एक तीर्थस्थान जहाँ से सरस्वती नदी निकलती है ।

ह्वम्पा (स्त्री०) अङ्गदेश की राजधानी (वर्तमान भागलपुर) ।

ह्वयाहूः (पुं०) वप्र, बुर्ज—चयाहूमस्तकन्यस्तनालायन्त्रसु-दुर्गमे—शिव० ९।५१ ।

ह्वरः [चर्+अच्] वायु, हवा—ह्वयाहं समोमहद्दृङ्क-चराग्निवार्भूसवेष्टिताण्डघटसप्तविस्तिकायः—भाग० १०।१४।११ । सम०—गृहम् मेघ, कर्क, तुला और मकर के घर ।

ह्वरकः (पुं०) भारतीय आयुर्वेद का एक प्रवर्तक तथा चरकसंहिता का लेखक ।

ह्वरणम् [चर्+ल्युट्] 1. ब्रह्मचर्य के कड़े नियमों का पालन करने वाला अध्येता-महा० ५।३०।७ 2. पर । सम०—उपवेशनम् पायखाना,—व्यूहः एक ग्रन्थ जिसमें वेद की शाखाओं का वर्णन है ।

ह्वर्चुस् (नपुं०) दाँतों के कटकटाने का शब्द—निर्घ ग्रहणचर्चुरशब्दमघवः—शि० ५।५८ ।

ह्वर्पटः [चृप्+अटन्] चीवर, चिथड़ा ।

ह्वर्मन्वत् (पुं०) (वेद०) चमड़े का कवच धारण करनेवाला योद्धा चर्मन्वता समिथे जनाः—ऋक्० ८।५।३८ ।

ह्वर्मण्वतीः (पुं० ह० व०) सप्त भारत की एक जाति —बृ० सं० १४ ।

ह्वलदङ्गः [चलत्+अङ्ग] एक प्रकार की मछली ।

ह्वलपिकः (पुं०) कोकिला, भारतीय कोयल ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाक्षुष्यम् [चाक्षुष+यत्] एक प्रकार का आँखों का अंजन ।

चातुरः [चतुर् एव, स्वार्थे अण्] एक छोटा गावदुम तकिया ।

चातुरन्त (वि०) [चतुरन्त+अण्] चारों समुद्रों तक समस्त पृथ्वी को अधिकार में करने वाला ।

चातुरीकः [चातुरी+कप्] 1. हंस 2. एक प्रकार की बत्तख —कलहंसे च कारण्डे चातुरीकः पुमानयम् —नाना० ।

चारः [चर एव, अण्] 1. गति, चाल, भ्रमण 2. पैदल सैर करना 3. कारागार 4. हथकड़ी बेड़ी 5. पीपलो का वृक्ष, प्रियाल का पेड़ ।

चार्या (स्त्री०) 1. पथ, मार्ग, आठ हाथ चौड़ी सड़क —कौ० अ० १।३ ।

चार्वाकः [चारः लोकसंमतं वाकोवाक्यं यस्य—पृषो०] दर्शनशास्त्र की चार्वाक शाखा का अनुयायी ।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ, स्त्रियां टाप्] दण्ड—प्रमत्तस्य ते करोमि चिकित्सा दण्डपाणिरिव जनतायाः —भाग० ५।१०।७ ।

चिकित्सु (वि०) [कित्+सन्+उ] बुद्धिमान् चालाक अथ० १०।२।१ ।

चिक्काम्लम् [ष० त०] इमली से तैयार किया गया जूष या शोल ।

चित्तम् [चित्+क्त] 1. हृदय, मन 2. ज्ञान—चित्तं चिताद्रुपागम्य मुनिरात्मीक्षत संयतः । यच्चित्तं तन्मयो वव्रे गुह्यमेतत्सनातनम् - महा० १४।५१।२७ । सम० —अर्पित (वि०) दिल में प्रस्थित चित्तार्पितनैषधेश्वरा—नैषध० ९।३१,—नाथः हृदय का स्वामी —चित्तनाथमभिशङ्कितवत्या -शि० १०।२८ ।

चित्तिः (स्त्री०) [चित्+क्तिन्] 1. मानसिक अवस्था —आकूतानां च चित्तीनां प्रवर्तक नतास्मि ते—महा० ३।२६३।१० 2. ज्ञानेन्द्रिय या चेतिकानामन्तःचित्तय उच्चक्रन्ति· भाग० ६।१६।४८ 3. संध्यान, मनन ·चित्तिः स्रुक् चित्तमाज्यम्—तै० आ० ३।१ ।

चित्य (वि०) [चिता+यत्] चिता से संबंध रखने वाला—चित्यमाल्याङ्गरागश्च आयसाभरणोऽभवत्—रा० ६।५८।११ ।

चित्रम् [चित्र्+अच्, चि+ट्रन् वा] कमल का फूल —मङ्गले तिलके हेम्नि पद्मे नपुंसकम् · नाना० ।

चिन्ताम्णिः (पु०) एक प्रकार का छोटा जिसकी गर्दन पर बालों का बड़ा घूघर हो ।

चीचीकूची (स्त्री०) अनुकरणमूलक शब्द जो पक्षियों के कलरव को प्रकट करता है ।

चीनवाः (पु०) दारचीनी ।

चीरल्लिः (पु०) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

चीरी (स्त्री०) [चीरि+ङीष्] छोगुर, ('चोरीवाक्' भी) इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

चोदना [चुद्+युच्+टाप्] (पूर्वमीमासा में) 'अपूर्व' नामक श्रेणी—चोदनेत्यपूर्वं यूपः मी० सू० ७।१।७ पर शा० भा० ।

चुम्बुकायनम् [नपुं०] किसी घाव में खुजलाहट होना सुश्रुत० १।४२।११ ।

चुरुटिः (पुं०) एक राक्षस का नाम ।

चेरिका जुलाहों की एक उपजातीरी—तदेव चेरिका प्रोक्ता नागरी तन्तुवायभूः—ब्र०वैवकाण्ड २०।१५।६६, भान० १०।८५—८८ ।

चैत्याग्निः [ष० त०] घृनात अग्नि, यज्ञीय अग्नि—पञ्च० १।६ ।

चौर्चेय (वि०) [चूर्णा+ढक्] केरल प्रदेश के पास 'चूर्णा' नामक नदी से प्राप्त मोती - कौ० अ० २।११ ।

च्यवनः (पुं०) [च्यु+णिच्+ल्युट्] एक ऋषि का नाम ।

छ

छत्रीकृ (छत्र+च्वि+तना० उप०) छत्री की भाँति प्रयत्न करना ।

छन्दस् (नपुं०) [छन्दयति—छन्द्+असुन्] एक पर्व, त्योहार —वेदे वाक्ये वृत्तभेदे उत्सवेऽपि नपुंसकम् —नाना० ।

छम्बट्कार (अ०) बिल्कुल कराने के लिए, जिससे कि सफलता न मिले —कथा० १२।४ ।

छम्बट्कार (वि०) [छम्बट्+कृ+अच्] नष्ट भ्रष्ट करने वाला, —करी (स्त्री०)—एक औरतना सन्ध्या लोक-

छम्ब (स्फ) दुगरी प्रभो —भाग० ३।१८।२६ ।

छम्बट्कारः [छम्बट्+कृ+घञ्] नाश, ध्वंस, विनाश ।

छल्क [छल्+अच्] एक प्रकार का झगड़ा जिसमें असंगत तर्कों का प्रयोग किया जाय ।

छाया [छो+य+टाप्] प्राकृत मूल पाठ का संस्कृत भाषान्तर ।

छिद्रम् [छिद्+रक्] 1. प्रभाव —भूमिच्छिद्रविधानम् —कौ० अ० २।२ 2. स्थान—भाग० ६।२६।३४ 3. आकाश, अन्तरिक्ष—भाग० १२।४।३० ।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] आयुर्वेद में एक प्रकार की शल्य-प्रक्रिया ।

छुच्छुः (पुं०) एक प्रकार का जन्तु—वृ० सं० ८६।३७ ।

छुरितम् [क्षुर्+क्त] काट, खरौंच ।

छुरिका (स्त्री०) बाँझ गाय ।

छेला (छेल्ला) भवन के आधारवर्त में बना बजरीकोट या तहखाना—काश्यिकायम० ३१।७४ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज

जगद्गुरुः [ष० त०] श्री शंकराचार्य का नाम ।

जगच्चन्द्रिका (स्त्री०) ब्रह्मसंहिता पर भट्टोत्पलकृत एक टीका ।

जगज्जित्रम् (नपुं०) विश्व का एक आश्चर्य पल्यंकानीं जगज्जित्रम्—रा० उ३।४।९ ।

जगतीपतिः [ष० त०] शासक, राजा त्रिःसप्तकृत्वो जगतीपतीनाम् किं० २।१८ ।

जङ्घापथः (पुं०) पगडण्डी ।

जङ्घाबलम् [ष० त०] दूत दवा कर भागना ।

जटापाठः (पुं०) वेद मन्त्रों के मूलपाठ को सस्वर पढ़ने की एक रीति ।

जटाबहुलभः (पुं०) 'जटापाठ' की प्रणाली से वेदपाठ करने में प्रवीण विद्वान् पुरुष ।

जनः [जन्+अच्] 1. प्राणधारी, जीव 2. मनुष्य 3. एक व्यक्ति 4. राष्ट्र, जाति । समः—आश्रयः विष्णुकुण्डी वंश के राजा की उपाधि, जिसे ज्ञानाश्रयी छन्दोविचिति का प्रणेता समझा जाता है, —जल्पः लोकोक्ति, कहावत, किंवदन्ती, मार महामारी ।

जनंसह (वि०) लोगों का दमन करने वाला—नत्रासाहो जनमथो जनंसह—ऋक्० ७।२१।३ ।

जप्त (वि०) [जप्+क्त] सन्यासी (साधारणतः 'जपता वरः' प्रयोग प्रचलित) ।

जम्बमालिन् (पुं०) रावण की सेना के एक राक्षस का नाम ।

जम्भसाधक (वि०) आयुर्वेद का ज्ञान रखने वाला—ब्रुवन्ति ते कथयन्ति स्म ब्राह्मणा जम्भसाधकाः—महा० ५।६८।२० ।

जम्भकः [जम्भ्+घञ्, नुम्] 1. ठोढ़ी, विश्रामधानी साधु भो जम्भक साधु- दूत० 2 औषधोपचार ५।६८।१६ ।

जयन्तिः (स्त्री०) नराज की छड़ी ।

जर्भरि (वि०) (वेद०) सहारा देने वाला सृण्येव जर्भरी तुर्फरी तु ऋक्० १०।१०६।६ ।

जलम् [जल्+अच्] 1. पानी 2 सुगंधयुक्त औषध का पौधा 3. गाय का झूण । समः—आगमः वर्षा ऋतु, —प्रयातः झरना, शर्करा ओला, करका,—स्रावः आँख का एक रोग ।

जलाधभेषज (वि०) [ब० स०] उपचारक औषधियाँ रखने वाला—वह जलाधभेषजम् ऋक्० १।४३।४ ।

जवस् (नपुं०) [जव्+असुन्] (वेद०) गति, चाल, शीघ्रता, पयोभिर्जन्ये अपां जवांसि—ऋक्० ४।२१।८ ।

जातकचक्रम् (नपुं०) जन्मकुंडली, जन्मपत्रिका ।

जातिक्षयः [ष० त०] जन्म का अन्त, जन्म से मुक्ति —मु० च० १।७४ ।

जातिगुद्धिः (स्त्री०) [जाति+शुध्+क्तिन्] जन्म लेना —जातिशुद्धाभिधाः - महा० ५।६०।९ ।

जातुधर्मन् (वेद०) (वि०) सदैव पोषण करने वाला—स जातुधर्मा श्रद्दधान ओजः—ऋक्० १।१०३।२ ।

जानराज्यम् [जनराज+ष्यञ्] प्रभुसत्ता—राज० १।४० ।

जानश्रुतिः (पुं०) छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित एक राजा का नाम ।

जामदग्न्यः [जमदग्नि+अण्] परशुराम ।

जामातृबन्धकम् (नपुं०) श्वशुरगृह, दहेज ।

जारणम् [जृ+णिच्+ल्युट्] 1. क्षीण करना 2. धातुओं पर जारण की पर्त चढ़ाना ।

जारण्य (वि०) 1 स्तुति के योग्य निरर्गलान् सजाक्ष्यान् महा० ९।४६।३ 2. जिसमें तीन बार दक्षिणा दी जाय जारण्यान् त्रिगुणदक्षिणानित्यर्जुनमिश्रः - महा० ३।२९।१७० पर टीका 3. अग्निपोपहार में समृद्ध ।

जालकम् (नपुं०) एक प्रकार का वृक्ष—भाग० ८।२।१९ ।

जालोरः (पुं०) कश्मीर में एक अग्रहार—विहारमग्रहारं च जालोराख्यं च निर्ममे राज० १।९८ ।

जयः [जि+अच्] 1. महाभारत का एक विशेषण—देवी सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत्—महा० १।१।१ 2. जयजयकारों से पूर्ण विजय जयेन वर्धयित्वा च रा० उ३।२।३ । समः (अजय)—अधाक्षी (—अपजयौ) जीत तथा हार, शील (वि०) जीतने वाला, विजयी उक्तविधरीतलक्षणसंपन्नो जयशील इति विनिर्दिष्टः बृ० सं० १७।१० ।

जितहस्त (वि०) [ब० स०] जिसने अपने हाथ को अभ्यस्त कर लिया है ।

जित्यः [जि+क्यप्] एक उपकरण जिसके द्वारा जुते हुए खेत को समतल किया जाता है ।

जिह्मिलिकाः (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम—महा० ६। ९।५९ ।

जिह्मोत्तर (वि०) [न० स०] जो आलसी न हो - जिह्मोत्तरैर्बन्धुभिः तदप्यवाप्यम् नै० ३।६३ ।

जिह्मित (वि०) [जिह्म+इतच्] 1. व्याकुल - परिश्रम जिह्मितेऽणम् - कि० १०।१० 2. टेढ़ा बनाया हुआ, झुका हुआ (जैसा कि 'जिह्मगति' में) ।

जीमूतप्रभः [ब० स०] एक प्रकार का रत्न—गौ० भ० २।११ ।

जीवकोशः (पुं०) सूक्ष्म शरीर, लिङ्गशरीर भाग० १०।८२।४८ ।

जीवन्तिका (स्त्री०) [जीव्+शतृ+कीप्, कन् ह्रस्वश्च] 1. सद्योजात शिशुओं की देखभाल करने वाली देवी 2. एक पौधे का नाम ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओविका (स्त्री०) [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] जिन्दगी कृपणा वतिष्यामि कथं कृपणजीविका—रा० २। २०।४७।

अुकुटस् (नपुं०) सफ़ेद बैंगन का पौधा।

अुगुप्तिस् [गुप्+सन्+क्त] घृणित कार्य, अहंकार कृत्य—कर्मजुगुप्सितेन—भाग० १।७।४२।

अूर्व (वेद०) (वि०) [ऊ+य] पुराना—ऋक्० ६।२।७।

अोत्यवाकः (पुं०) निरर्थक बात करना—जोल्याक वदतः—ऋक्० ६।५१।४।

अूतिः (स्त्री०) [ऊ+क्तिन्] मन का संकेन्द्रीकरण—ऐत० उ० ५।२।

अैमिनिः (पुं०) एक प्रसिद्ध मुनि जो दर्शन शास्त्र की पूर्वमीमांसा के प्रवर्तक थे। सम०—भागवतम् भागवत का आधुनिक संस्करण, भारतम् महाभारत का आधुनिक संस्करण, —शाखा सामवेद की एक शाखा,—सूत्रम् एक ग्रन्थ का नाम।

अैमिनीय (वि०) [अैमिनि+छ] अैमिनी द्वारा रचित, या उनसे संबद्ध।

अैवदः (पुं०) कैयट के पिता का नाम।

ओल्लाका (स्त्री०) जौ।

ओव्यम् (अ०) [ऊयृ+घञ्] चुपचाप, जैसा कि 'ओव्यमास्व'—चुप रहो) में।

ओव्य (वि) [ऊयृ+ण्यत्] प्रिय, स्नेहार्ह।

अंशस्य (वि०) अपने आप को बहिमान् समझने वाला।

अंशाव्ययः (पुं०) प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न होने वाला पुत्र।

अंशिचेलम् (नपुं०) नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति विभिन्न-कर्मशियवाक् कुले नो वा अंशिचेलं भुवि कस्यचित् भूत्—भट्टि० १२।७८।

अंशिप्राश्यः (पुं०) संबन्धियों के लिए आहार, अंशिभोजन —प्रक्षाल्य हस्तावाचम्य अंशिप्राश्यं प्रकल्पयेत्—मनु० ३।२६४।

अंशनम् [अंश+ल्युट्] जानकारी का साधन—मैं० सं० १।१।५ 2. सम्मति, बलदेवस्य वाक्यं तु भ्रम जाने न पूज्यते—भट्टा० ५।८।१। सम०—अंशिः ज्ञान की आग अंशाग्नि, सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरतेऽर्जुन भग० ४।३७,—घनः (पुं०) शुद्धज्ञान, केवलज्ञान निर्विशेषाद् साक्ष्याच्च तमो ज्ञानघनस्य न भाग० ८।३।१२,—पूर्व (वि०) खूब सोचा हुआ, पहले से पूरी जानकारी प्राप्त किए हुए, वृद्ध (वि०) ज्ञान या जानकारी में बड़ा-बूढ़ा।

अंशिन (वि०) [ज्ञान+इनि] बुद्धिमान्, समझदार, —(पुं०) बुध ग्रह—अंशी सर्वज्ञसौम्ययोः—नाना०।

अंमन् (वै०) पृथ्वी पर, धरती पर (केवल अधि० में प्रयोग) अधिक्षेत्रेऽन्न भूरधत्तमन्—ऋक्० ७।२१।६।

अंस्या [अंस+अञ्+टाप्] 1. एक प्रकार की लकड़ी की सोटी 2. सेना का पृष्ठभाग—अंस्या भूमिमोर्ध्वां शाम्यायां शाहिन्याः पृष्ठभागके नाना०।

अंष्ठः [वृद्ध (प्रशस्य)+इष्ठन्, ज्यादेशः] 1. सबसे बड़ा 2. सर्वोत्तम 3. उच्चतम,—(पुं०) एक चांद मास का नाम। सम०—राज् (पुं०) प्रभुसत्ता संपन्न राजा—अंष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतिं—ऋक्० २।२३।१, साम्नम् एक विशेष साम।

अंष्ठा (स्त्री०) 1. लक्ष्मी देवी की बड़ी बहन वारुणी 2. एक देवी का नाम।

अंष्ठ् (अ०) (वेद०) चिरकाल तक, दीर्घ समय तक —अंष्ठ्यू च सूर्य दृशे—ऋक्० १।२३।२१।

अंष्ठ्यजीवनम् (नपुं०) दीर्घकाल तक जीना, लम्बी आयु होना।

अंष्ठ्यौतिम् (नपुं०) [द्यु+डुमुन्, आद्यैदंश्च ज.] 1. प्रकाश, कान्ति, आभा, चमक 2. बिजली 3 गाय—सी० मु० १।३।४२ पर शा० भा०।

अंवरः [अंवर्+अ] 1. ताप, बुखार 2. मानसिक ताप। सम०—प्रशमकः शिव का विशेष रूप,—अरिः ज्वर नाशक औषधि, हर (वि०) ज्वरप्रशामक, ज्वर नाशक।

अंवलाश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

अंवाला [अंवल्+ण+टाप्] 1. आग की लपट, अग्नि-शिखा 2. दग्धान्न। सम०—मालिन् (पुं०) शिव देवता, मालिनी (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप —अंवालामालिनीकालिप्लवह्निप्राकारमध्यगा—ललिता०, मुखी (स्त्री०) दुर्गा का एक विशेष रूप—अंवालामुखी नखज्वाला अर्चेशा सर्वसन्निधु—वाराह पुराण में देवीकवच०, राक्षसकाश्यः वा०, दनु।

अः

अंश्रसालिः (पुं०) ओलों की बौछार, आँधी के साथ ओलों का पड़ना।

अंस् [अंस्+प, स्त्रियां टाप्] 1. उछल-कूद 2 पक्षपात। सम०—अंशिन् (पुं०) पक्षपाती, पक्षपात करने वाला,—शालः एक प्रकार की संगीत की ताल, गायन की माप,—सूत्रम् एक प्रकार का नाच।

अंस्फालः (अलंकारः) (पुं०) (आभूषणों की) झंझनाहट वाली चमक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झषराजः [ष० त०] मगरमच्छ।
झाङ्कारिन् (वि०) [झाङ्कार+इनि] 'झङ्कार' ध्वनि को करने वाला।
झिः 1. चन्द्रमा की कला 2. बन्दर।
झिल्लिन् (पुं०) एक वृक्ष का नाम।
झी: (पुं०) हाथी।

झु: 1. ध्रुव तारा 2. समूह 3. अरुण देव।
झी: कर्ण का नाम।
झीः स्वर्ग।
झोलिकम् (नपुं०) 1. पान आदि रखने का बक्स, पानदान 2. झोला, थैला।

ञ

ञः (पुं०) 1. गायक 2. 'गरगर' का शब्द 3. सांड़ 4. शुक्र 5. पाँच की संख्या।

ट

टङ्कः [टङ्क्+घञ्, वा] 1. टखना—टङ्कोऽस्त्री टङ्कपैगुल्फे—ना० 2. (संगीत में) एक प्रकार का माप, 3. टकसाल। सम०—अधिः टकसालाध्यक्ष,—शाला टकसाल।
टङ्कित (वि०) [टङ्क+क्त+क्त] बांधा हुआ—नाकृष्टं न च टङ्कितं—हनु०।
टङ्कृतम् [टङ्क्+क्त] टङ्कार, टनटन।
टोपरः (पुं०) छोटा थैला।

ठ

ठक्कः (पुं०) सौदागर, व्यापारी।
ठिक्का (स्त्री०) जुआघर—कुद्धः स सम्यष्ठिक्कायां क्षिप्तवान् स्वानभाषत कथा० ९२।१२१।

ड

डमरिन् (पुं०) [डमर+इनि] एक प्रकार का ढोल।
डम्बरः [डम्ब्+अरन्] उच्चस्वर का घोष।
डिब्बा (स्त्री०) एक बहुत छोटा पंखदार कीड़ा (जैसे कि पिस्सू)।
डिम्भः [डिम्ब्+घञ्] 1. गुंजायमान शिखर, कोलाहल-मय चोटी—नै० २२।५३ 2. शरीर—छोटा डिम्भ व्यक्तवद्—शि० १८।७७ 3. बुद्धू, जड़—राज० ७।१०७२।
डिम्भः [डिम्ब्+अच्] पौधे का अंकुर, अंकुवा—नै० ८।२।
डेरिका (स्त्री०) छछूंदर।

ढ

ढक्कनम् [ढक्क्+ल्युट्] द्वार बन्द करना।
ढक्कारी (स्त्री०) दुर्गा की मूर्ति की तांत्रिक पूजा।
ढौकित (वि०) [ढौक्+क्त] निकट लाया हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तक्कम् [तक्+रक्] छाछ, मट्ठा। सम०—कूर्चिका राबड़ी, उबाली हुई छाछ, **चिण्डः** छाछ (को कपड़े में से छानने के पश्चात् रहा अवशेष), पपड़ी।

तटः [तट्+अच्] 1. ढलान, कगार, किनारा 2. क्षितिज। सम०—**द्रुमः** नदी किनारे का वृक्ष, पातः किनारे का तोड़ कर गिराना, **भूः** किनारे की धरती।

तटिनीपतिः [ष० त०] नदियों का स्वामी, समुद्र।

तन्द्रालुः [तन्द्रा+लच्] कीड़ा, कृमि, कीट।

तन्त्रन्यायाः (पुं०) मीमांसा शास्त्र का एक नियम जिसके अनुसार किसी यज्ञ का नाम उसकी अभिव्यक्ति के अनुकूल रक्खा जाता है।

तन्त्वम् (नपुं०) शरीर महा० १२।२६७।९। सम०—**अभ्यासः** वास्तविकता को बार बार अध्ययन एवं तत्त्वाभ्यासात्—सां० का० ६४, **दर्शिन्** (वि०) असलियत को जानने वाला, **भावः** प्रकृति, वास्तविक सत्ता,—**संख्यानम्** सांख्य सिद्धान्त का विशेषण —भाग० ३।२४।१०।

तत्त्वावादिन् (वि०) [तत्त्वा+वाद+इनि] वैसा होने का दावा करने वाला

तद् (सर्व० वि०) 1. किसी अनुपस्थित वस्तु या व्यक्ति का उल्लेख करने वाला सर्वनाम। सम० **अन्य** (वि०) उसको छोड़ कर कोई दूसरा, **अपेक्ष** (वि०) उसका लिहाज करने वाला,—**कालीन** (वि०) उसी काल से सम्बन्ध रखने वाला,—**देश्य** (वि०) उसी देश से सम्बन्ध रखने वाला, **धर्म्य** (वि०) उसी गुण में भाग लेने वाला,—**भव** (वि०) उसी संस्कृत से जन्म लेने वाला, प्राकृत का एक भेद—**तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकः** प्राकृतक्रमः—काव्या० १,—**रूपः** (वि०) उसी प्रकार के रूप वाला,—**लिङ्गः** उसका ज्ञाता, किसी विशेष क्षेत्र में प्रामाणिकता रखने वाला, —**संख्यक** (वि०) उस अंक के समान।

तदाविदत्वन्न्यायः (पुं०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार उत्कर्ष की उक्ति में आरम्भ से लेकर वह सब विवरण सम्मिलित होता है जिसके लिए वह दिया जाता है और साथ ही अपकर्ष की उक्ति अन्त तक उस सभी विवरण पर लागू है जिसके लिए वह दिया जाता है।

तदुपदेशन्यायः (पुं०) ऊपर बताये गये 'तत्प्रख्यन्याय' के समान।

ततत्वम् (नपुं०) संगीत में आवाज को लम्बा करना, संगीत की गति धीमी करना।

तनु (वि०) [तन्+उ] 1. पतला, दुबला, कृश 2. सुकुमार 3. बढ़िया, नाजुक 4. थोड़ा, छोटा, स्वल्प,—(स्त्री०) 1. शरीर, व्यक्ति 2. प्रकृति 3. त्वचा, खाल। सम०—**उच्छ्वास** पंज,—**करणम्** (तनूकरणम्) पतला करना,—**वी** ओछे मन वाला।

तनूकरणम् (नपुं०) कातना, तार निकालना।

तन्तुकार्यम् (नपुं०) जाला।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1. खड़की 2. धागा 3. सतत श्रेणी 4. रस्म, व्यवस्था, संस्कार आदि धार्मिक कार्यों का नियमित आदेश 5. मुख्य बात 6. प्रधान सिद्धान्त, नियत 7. ऐसे कृत्यों का समूह जो अनेक प्रधान कार्यों में समान हो—यत्सकृत्कृतं बहूनामुपकरोति तत्तन्त्रमित्युच्यते—मै० सं० ११।१।१ पर शा० भा० 2. विकट की व्यवस्था यतः प्रवर्तते तन्त्रम् महा० १४।२·१।४, **अः** विसंयत्र,—**युक्तिः** किसी एक संधि का आयोजन कौ० अ० १५।

तन्त्रिभाण्डम् (नपुं०) [ष० त०] भारतीय वीणा।

तन्त्रिल (वि०) [तन्त्र+इलच्] प्रशासनकार्य में कुशल त्वं तन्त्रिलः सेनापतौ राज्ञः प्रत्ययितः—मृच्छ० ६।१६।१७।

तपर्तुः (तप+ऋतुः) ग्रीष्म ऋतु—तपर्तुमूर्तावपि सेवसा भरा—नै० १।४१।

तपस् (नपुं०) [तप्+असुन्] 1. गर्मी, आग, प्रकाश 2. पीड़ा, कष्ट 3. तपस्या 4 दण्ड। सम० —**आधीय** (वि०) तपश्चरण के लिए अभिप्रेत—तपोऽर्थीं बाह्मणो यत्तं गर्भम्—महा० १।१२६।५,—**कृश** (वि०) तपश्चरण के कारण दुर्बल,—**मूल** (वि०) तपस्या से उत्पन्न,—**वृद्ध** (वि०) कठोर तपस्या के फलस्वरूप बूढ़ा।

तप्त (वि०) [तप्+क्त] 1. गर्म किया हुआ, जला हुआ 2. पिघला हुआ 3. पीड़ित, कष्टग्रस्त 4. अभ्यस्त। सम०—**कुम्भः**,—**कूपः** एक नरक का नाम, —**तप्त** (वि०) बार बार उबाला हुआ, बार बार गरम किया हुआ,—**मुद्रा** किसी गर्म धातु की छाप से शरीर पर किसी विशेष शास्त्र के रूप में अधिकार चिह्न अंकित करना,—**रूपम्**,—**रूपकम्** शुद्ध की हुई चाँदी, —**वालुकाः** बालू के गर्म कण।

तापिन् (वि०) [ताप+इनि] पीड़ा पहुँचाने वाला —कि० ७।४२।

तरङ्गमालिन् (पुं०) समुद्र।

तरङ्गवती नदी, दरिया।

तरलकरण (वि०) [ब० स०] चञ्चल तथा दुर्बल ज्ञानेन्द्रियों वाला।

तरुकोटरम् (नपुं०) [ष० त०] वृक्ष की कोटर या खोखर।

तरुतूलिका | चमगीदड़।

तरुचूलिका |

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तक्ता (स्त्री०) ताज़गी, ताज़ापन।
तर्काटः (पुं०) भिखारी, माँगने वाला।
तर्कमुद्रा (स्त्री०) हाथ की विशेष स्थिति।
तलोदरी (स्त्री०) गृहिणी, पत्नी।
तलवः (पुं०) अपनी हथेली से वाद्ययन्त्र को बजाने वाला संगीतकार। सम०—कारः सामवेद की एक शाखा।
तलित (वि०) [तल्+क्त] 1. तला हुआ 2. तलीदार।
तलिन (वि०) [तल्+इनन्] दुबला हुआ—विक्रमांक० १४।६१। सम०—उदरी पतली कमर वाली महिला।
तवकः (पुं०) धोखा, जालसाज़ी तवकः कपटेऽपि च. —नाना०।
तसरिका (स्त्री०) बुनना, बुनावट।
तस्वी (स्त्री०) (ज्योतिष शास्त्र का शब्द) षट् कोण।
ताजिकः (पुं०) 1. मध्यवर्ती एशिया में रहने वाली एक जाति 2. एक उत्तम प्रकार के घोड़े की नस्ल।
ताण्डब्रह्मणम् (नपुं०) सामवेद के एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम।
तात्कर्म्यम् (नपुं०) [तत्कर्म+ष्यञ्] अध्यवसाय की समानता।
तात्पर्यार्थः (पुं०) किसी उक्ति का सही अर्थ।
तादात्विकः (पुं०) अव्ययी, यो यद् यद् उत्पद्यते तत्तद् भजयति स तादात्विकः कौ० अ० २।९।
ताद्धर्म्यम् (नपुं०) [तद्धर्म+ष्यञ्] गुणों में समानता।
ताद्रूप्यम् (नपुं०) [तद्रूप+ष्यञ्] रूप की समानता।
तापसकः [तापस+क] (=कुतापसः) आचारभ्रष्ट संन्यासी।
तामसः (पुं०) चौथे मनु का नाम।
तार (वि०) [तृ+णिच्+अच्] 1. ऊँचा 2. प्रबल 3. चमकीला 4. उत्तम,—रः (पुं०) बाण, तीर।
तारक्षेयः [तारणा+ढक्] कन्या से उत्पन्न, कानीन, कर्ण 2. सूर्य का भक्त।
तारा [तार+टाप्] 1. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक 2. संगीत के एक राग का नाम।
तारिका (स्त्री०) [तृ+णिच्+ण्वुल्] एक प्रकार की शराब।
तार्णाजम् (नपुं०) एक प्रकार का चन्दन जिसका रंग तोते के पंखों जैसा होता है—कौ० अ० २।११।
तालः [तल् एव अण्] 1. ताड़ का वृक्ष 2. ताल्यां बजाना 3. फट-फट करना 4. हाथ की हथेली 5. तलवार की मूठ 6. ताला, चटखनी। सम०—ज्ञः जो संगीतशास्त्र की ताल को जानता है, नायकः नर्तक, नाचने वाला,—दशमी भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का दसवाँ दिन,—फलम् ताड़ के वृक्ष का फल,—भङ्गः संगीत में गान की ताल व लय के मान को सुरक्षित रखने में त्रुटि, ताल का टूट जाना।
तावत्फल (वि०) [ब० स०] उतना सा ही फल भोगने वाला।
तिग्मांशुः [ब० स०] सूर्य।
तिथिलिम् (नपुं०) 1. ज्योतिषशास्त्र में एक करण 2. तिलों का चिउड़ा, चौले।
तिथिः [अत्+इथिन्, पृषो०] 1. चान्द्रदिवस 2. पन्द्रह की संख्या। सम०—अर्धः (तिथ्यर्धः) एक करण (आधी तिथि), प्रलयाः (ब० व०) किसी भी निर्दिष्ट अवधि में सौर और चान्द्र दिवसों का अन्तर।
तिमिः [तिम्+इन्] 1. समुद्र 2. मीन राशि। सम० —अशिन् (वि०) मछलियाँ पकड़ने वाला, मालिन् समुद्र।
तिमिला (स्त्री०) संगीत का एक उपकरण, तबला।
तिरस्कारिन् (वि०) [तिरस्कार+इनि] ज्ञात करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला,—देवि स्वन्मुखपङ्कजेन शशिनः शोभातिरस्कारिणा रत्न० १।२४।
तिर्यञ्च, तिर्यञ्च (वि०) 1. टेढ़ा, तिरछा, वक्र 2. घुमावदार 3. अन्तर्वर्ती,—(पुं०),—(नपुं०) 1. जानवर, जन्तु (टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, लेट कर चलने वाला - सीधे खड़े होकर चलने वाले मनुष्य से भिन्न) 2. पक्षी 3. पौधे। सम०—ज (वि०) किसी जानवर से उत्पन्न, जैसे टेढ़ी ज्या।
तिलः [तिल्+क] तिल का पौधा। सम०—कटः तिलकुट,—मयूरः मोर की एक जाति।
तिलृन् (पुं०) 1. रोग 2. दाबल, वात्य 3. धनुष 4. भलाई।
तीक्ष्णकण्टकः [ब० स०] तेज़ काँटेदार पौधा।
तीक्ष्णधारः [ब० स०] तलवार—सासूग्राजिस्तीक्ष्णधारस्य मार्गः—शि० १८।२०।
तीर्थचर्या (स्त्री०) [ष० त०] तीर्थ यात्रा।
तीव्रद्युतिः [ब० स०] सूर्य, सूरज।
तीव्रा (स्त्री०) 1. काली सरसों 2. संगीत का एक स्वर।
तु (अ०) निस्सन्देह—तु शब्दः संशयव्यावृत्यर्थः—मैं० सं० १०।३।७४ पर शा० भा०।
तुङ्ग (वि०) 1. ऊँचा 2. लम्बा 3. मुख्य 4. प्रबल,—ङ्गः (पुं०) पुन्नाग वृक्ष - नाना०।
तुङ्गिमन् (पुं०) [तुङ्ग+इमनिच्] ऊँचाई—कृतविच्छायितो वन्द्यास्तुङ्गिमा नोपभुज्यते—पंच० २।१४६।
तुच्छबय (वि०) [ब० स०] दयारहित, निर्दय।
तुच्छग्राह (वि०) [ब० स०] नगण्य।
तुरुज् (म्वा० पर०) निकालना, भींचकर निकालना, रस निकालना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुल्यः [तुल्+अच्] दबाव।
तोदः [तुद्+घञ्] दबाव—मात० १।५१।
तुन्दिलित (वि०) [तुन्दिल+इतच्] जिसकी तोंद फूल गई है, मोटे पेट वाला।
तुम्बारम् (नपुं०) तुम्बा।
तुर्ययन्त्रम् (नपुं०) (दोषनापने का) पादयन्त्र।
तुला [तुल्+अङ्] 1. घर की छत के नीचे की ओर झूलता लगा हुआ शहतीर 2. तराजू की डंडी। सम०—**अधिरोहणम्** मिलता-जुलता, **अनुमानम्** सादृश्य, सादृश्य पर आधारित अनुमान,—**धारणम्** तराजू पर रखना अर्थात् तौलना।
तुल्य (वि०) [तुलया संमितं यत्] 1. उसी प्रकार का, वैसा ही, मिलता-जुलता 2. उपयुक्त 3. अधिक, बहुत—**त्यम्** (अ०) 1. एक साथ 2. समान रूप से। सम०—**कक्ष** (वि०) समान, बराबर,—**नक्तंदिन** (वि०) 1. जब रात और दिन दोनों समान हों 2. रात और दिन में कोई भेद न करने वाला,—**निन्दास्तुति** (वि०) अपनी प्रशंसा या अपयश दोनों की ओर से उदासीन, **मूल्य** (वि०) समान मूल्य का, एक सी कीमत का,—**योनिः** उसी वंश का, उसी कुल में उत्पन्न,—**वयस्** (वि०) समान आयु का, बराबर की उम्र का, **संख्य** (वि०) समान संख्या का।
तुल्यक्षः (अ०) समान भागों में, बराबर बराबर।
तुलसि दे० तुलसी, (कविता में 'तुलसी' को 'तुलसि' भी लिख देते हैं)।
तुष (तुदा० पर०) चोट पहुंचाना, तंग करना, कष्ट देना, पीड़ित करना।
तूली (स्त्री०) नील का पौधा।
तूतकम् (नपुं०) नीला थोथा।
तूलपीठी,-पीठिका (स्त्री०) तकुवा, कातते समय जिस पर लपेटा जाता है।
तूष्णींदण्डः (पुं०) गुप्त रूप से दिया गया दण्ड—मनु० अ० २।११।
तृचः,-चम् [त्रि+ऋच्] ऋग्वेद के तीन मन्त्रों का समूह।
तृणम् [तृह्+क्त, हलोपश्च] 1. घास 2. तिनका 3. तिनकों की बनी (चटाई आदि) कोई वस्तु। सम० **गणना** तिनके की भांति तुच्छ समझना—**तृण गणना गुणराशिषां धनेषु—विक्रमांक० ६।२,—धूलिकः** मानवी गर्भस्राव चरक० ४।४।२,—**भुज्** (वि०) घास खाने वाला, तृण भक्षी, **लाजः** सुपारी का पेड़, **वह्निः** एक प्रकार की भिर्र।
तृणता [तृण+तल्] 1. तिनके का गुण, निकम्मापन 2. धनुष—शि० १९।६१।
तृण्ण (वि०) (वैद०) [तृद्+क्त] कटा हुआ, फाड़ा हुआ।
तृप्तता [तृप्त+तल्] सन्तोष, तृप्ति।
तरपतिः [ष० त०] तरणी या नावों का अधीक्षक।
तरणितनया [ष० त०] यमुना नदी।
तारकम् [तृ+णिच्+ण्वुल्] तारा—**शान्तर्यद्वत्तारकम्**—भाग० ९३।३१।
तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1. ओज 2. सूर्य। सम० **पुञ्जः** प्रभापुञ्ज, कान्ति का संग्रह।
तैजस (वि०) [तेजस्+अण्] राजस गुणों से युक्त, —**वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा** भाग० ३।५।३०।
तैजसम् (नपुं०) 1. ज्ञानेन्द्रियों का समूह 2. चेतन सृष्टि।
तैमित्यम् (नपुं०) मन्दता, जड़ता, जड़ता।
तैर्यग्योन (वि०) [ष० स०] जीव जन्तुओं की सृष्टि से सम्बन्ध रखने वाला।
तैलम् [तिलस्य तत्पदार्थस्य वा विकारः अण्] 1. तेल 2. लोबान। सम०—**अम्लुका** तेलकट्टा नामक कीड़ा, —**किट्टस्** खली, **पक्वः, पायिकः** तेल पीने वाला कीड़ा, तेलचट्टा,—**पूर** (वि०) जो तेल से भरा हुआ हो **अलिंपूराः सुरतप्रदीपाः**—कु० ३।१०।
तोडक (वि०) [तोड+कन्] झगड़ालू,—**कः** (पुं०) शंकर का शिष्य,—**कर्म** (तोटकम्) एक छन्द का नाम।
तोयम् [तु+यत् वि०] 1. पानी 2. पूर्वाषाढा नक्षत्रपुंज। सम० **अग्निः** अलक्ष्मी आग, बाडवानल,—**अञ्जलिः** देवों और पितरों को संतृप्त करने के निमित्त अञ्जलि भर जल से तर्पण करना।
तोरणम् [तुर्+ल्युट्, आधारे ल्युट्] 1. डाटदार द्वार 2. बाहरी दरवाजा 3. अस्थायी अलङ्कृत द्वार 4. तराजू को लटकाने के लिए एक त्रिकोणीय कांटा।
तौल्लक्यम् [तुच्छ+ष्यञ्] तुच्छता, नगण्यता।
तौरङ्गिक (वि०) [तुरङ्ग+ठक्] घुड़सवार।
तौरुष्किक (वि०) [तुरुष्क+ठक्] तुर्की जाति से सम्बद्ध।
त्यक्तत्रिधि (वि०) [ष० स०] शिकारों का उत्सर्जन करने वाला।
त्यद् (सर्व० त्रि०) (कर्ता० ए० व० **स्यः** (पुं०) (पेटा०) उद्देश्य संज्ञा तत्तच्छब्दभवत्—तै० उ०।
त्यागजित (वि०) [त्यज्+णिच्+क्त] 1. वञ्चित —**धृणोष्मणा त्यागजितामवाप्तवान्**—कु० ७।१४ 2. निष्कासित।
त्रयी (स्त्री०) [त्रय+ङीप्] 1. वेदत्रयी (ऋग्यजुःसाम) 2 गिनती 3. विवाहित स्त्री (साता) जिसका पति और बच्चे जीवित हैं। सम०—**स्थ** (वि०) जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीनों (वेदों) से युक्त एकक है, **त्रिद्य** (वि०) जो ...नों वेदों में निष्णात है,—**त्रेद्य** (वि०) जो तीनों वेदों के द्वारा जाना जा सकता है—**त्रयीवेद्य हुत** त्रिपुरहरमार्ग त्रिनयनम् आनन्द० २,—**संवरणम्** छिपाने या गुप्त रखने की तीन बातें (स्वरन्ध्रगोपन, परस्वरन्ध्रान्वेषणगोपन और मन्त्रगोपन) अर्थात् अपनी दुर्बलता, शत्रु की दुर्बलता और अपनी नीति।

त्रि (सं० वि०) [तु+ड्रि] तीन। सम०—**अङ्गुलम्** तीन अंगुल चौड़ाई की माप,—**आर्षेयाः** (ब० व०) 1. तीन पुत्र बहरा, गूंगा और अंधा 2. तीन ऋषियों से युक्त प्रवर,—**कटु** (-कटुकम्) सोंठ पीपर और मिर्च का समाहार,—**करणम्** मन, वचन और कर्म से युक्त कार्यकलाप,—**करणी** और से त्रिगुना लंबा किसी वर्ग का पार्श्व,—**काण्डम्** अमर कोश नामक ग्रन्थ, **पुणाकृतम्** तीन बार हल से कृष्ट, त्रिभिर्वै तीन बार हल चल चुका है, **जातम्** तीन मसालों (जायफल, इलायची, दारचीनी) का मिश्रण,—**गेहि** (वि०) जिसमें तीन पृथ्वियां लगी हों भाग० ३।८।२०,—**नेत्रफलः** नारियल,—**पिटकम्** बौद्धों के तीन धार्मिक पुस्तकों के संग्रह,—**भङ्गम्** शरीर की ऐसी मुद्रा जिसमें तीन झुकाव हो,—**मदः** तिगुना अहंकार,—**मलम्** मल मूत्र और कफ तीनों मल,—**यव** (वि०) तोल में तीन जौ के बराबर, —**लोहकम्** सोना, चाँदी और ताँबा तीन धातुएँ, —**वली** (स्त्री०) (किसी महिला) के पेट की तीन दलियां,—**वल्ली** गुंडा,—**वृत्तिः** यज्ञ, भिक्षा और अध्ययन के द्वारा जीविका,—**शर्करा** तीन प्रकार की शक्कर,—**सवनम्** (सवणम्) त्रैकालिक यज्ञ, सोम मिला कर उबाले हुए, घृत, तिल और चावल **साम** (वि०) तीन प्रकार के सामन जिसे प्राप्त है, **सामग** (वि०) ऊह, रहस्य और प्रकृति नाम के तीनों साभों को गाने वाला,—**सुपर्णः**,—**सुपर्वन्** तीन ऋचाएँ -ऋक्० १०।११४।३-५।

त्रिकत्रयम् (नपुं०) त्रिफला, त्रिकटु और त्रिमद का समिश्रण।

त्रैराशिक (वि०) [त्रिराशि+ठक्] तीन राशियों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैवेदिक (वि०) [त्रिवेद+ठक्] तीनों वेदों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्वच् (स्वा० पर०) 1. जाना 2. भिकुड़ना।

त्वरता [त्वर+तल्] शीघ्रता।

त्वरम् (अ०) [त्वर्+अच्] जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक।

त्वष्टिः [त्वक्ष्+क्तिन्] बढ़ईगिरी।

त्वाष्ट्र (वि०) [त्वष्ट्+अण्] त्वष्टा से संबंध रखने वाला।

त्वाष्ट्री [त्वष्टृ+ङीप्] 'चित्रा' नक्षत्र पुंज।

थ

थुड् (तुदा० पर०) 1. ढकना, पर्दा डालना 2. छिपाना, गुप्त रखना।

थोडनम् [थुड्+ल्युट्] 1. ढकना 2. लपेटना।

द

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] किसी विषय में अस्त —दंशितो भव कर्मणि—महा० १२।२२।९।

दंस् (चुरा० आ०) 1. डंक मारना 2. देखना।

दक्ष् (स्वा० प्रेर०) 1. प्रसन्न करना 2. सम्मान बनाना —दक्षयन्निजगणानपूपत—शि० १४।३५।

दक्षता [दक्ष्+अच्, भावे तल्] कुशलता, नैपुण्य।

दक्षिण (वि०) [दक्ष+इनच्] अनुकूल।

दक्षिणाम्नायः (पुं०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाली तांत्रिक संप्रदाय का दुर्गा पीठ।

दक्षिणा (अ०) [दक्षिण+टाप्] 1. दक्षिण की ओर, दाईं ओर 2. दक्षिणदेश से,—**या** (स्त्री०) (यज्ञादि धार्मिक कृत्यों की समाप्ति पर) ब्राह्मणवर्ग को दी जाने वाली भेंट। सम०—**पथिक** (वि०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाला,—**प्रतीची** दक्षिण-पश्चिम,—**प्रत्यच्** (वि०) दक्षिण-पश्चिमी,—**मूर्तिः** (पुं०) शिव का एक रूप।

दण्डः [दम्ड्+अच्] 1. डंडा, लाठी, मुद्गर, गदा 2. हाथी की सूंड 3. छतरी की मूठ 4. जुरमाना 5. वृक्ष 6. राज्यतंत्र—कौ० अ० १।५ 7. आघात, चोट —न्यासो दण्डस्य भूतेषु—भाग० ७।१५।८। सम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—आघातः डंडे की चोट,—असनम् एक प्रकार का आसन, भूमि पर लम्बा लेट जाना, उद्यमः दण्डित करने की धमकी देना,—कल्पित्रम् मापने के गज की भांति बार-बार आवृत्ति करना—भी० सू० १०।५। ८३ पर शा० भा०,—कल्पः दण्डधरत्व करना, दण्ड देना कौ० अ० ४,—निधानम् क्षमा करना, —लेखम् थोड़ा सा दण्ड मनु० ८।५१, वाधिक (वि०) वास्तविक या काल्पनिक (प्रहार), वारित (वि०) दण्डित होने के डर से कोई काम न करने वाला, दण्ड के डर से रुका हुआ।

दण्डिन् (वि०) छोटे, साहसी, गुस्ताख सुधीजो निनदन् दण्डिक—भट्टि० ६।११७।

दण्ड्यः (पुं०) यम का विशेषण।

दन्तः [दम्+तन्] 1. दांत 2. हाथी का दांत 3. घास की नोक 4. पहाड़ की चोटी 5. बत्तीस की संख्या। सम०—उच्छिष्टम् दांतों में लगा हुआ भोजन का अंश, पत्रिका कंघी,—बीजः अनार, (दन्तबीजः भी) व्यापारः हाथी के दांत का कार्य।

दन्तम्भराण (वि०) [द्रम्+यङ्+शानच्] भिन्न-भिन्न दिशाओं में चक्कर काटता हुआ—कठ० १।२।५।

दमघोषः (पुं०) एक राजा का नाम, शिशुपाल का पिता।

दमनकः (पुं०) पञ्चतन्त्र की कहानियों में एक गीदड़ का नाम।

दम्भचर्या (स्त्री०) [ष० त०] धोखा, छल, कपट का आचरण।

दरम् [दृ+अप्] 1. विवर, कन्दरा 2. त्रास, (श०) जरा सा कुछ। सम०—ईषित (वि०) जरा सा खुला हुआ, दृशा प्राधीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा। —सौन्दर्य०,—मन्थर (वि०) ईषन्मन्द, जरा धीमा।

दर्भस्तम्बम् [ष० त०] घास काटने का यंत्र।

दर्विका (स्त्री०) आंखों का अंजन।

दशन् [सं० वि०] दस। सम०—अहर (वि०) जिसमें दस भाग दूध हो,—अर्धः कष्ट, विपत्ति, योजनम् दस योजन की दूरी।

दशा (स्त्री०) [दंश+अङ्, नि० टाप्] 1. किसी कपड़े की किनारी, गोट, मगजी 2. लैम्प की बत्ती 3. आयु 4. अवस्था 5. हालत 6. ग्रहों की स्थिति। सम० अंशः,-भागः बुरा समय—रा० ३।७२।८, फलम् जन्म पत्री में निर्दिष्ट किसी विशेष समय का फल।

दग्ध (वि०) [दह्+क्त] 1. जला हुआ 2. शोकग्रस्त, दुःखी 3. अमंगल 4. सूखा। सम०—जठरम् जला पेट, भूखा पेट, गरीबी से मारा हुआ,—क्षणः जल जाने से होने वाला घाव।

दत्त (वि०) [दा+क्त] दिया हुआ। सम०—क्षण (वि०) जिसे कोई अवसर दिया गया है,—दृष्टि (वि०) जिसने ध्यान लगाया हुआ है, जो देख रहा है।

दत्तकचन्द्रिका (स्त्री०) धर्मशास्त्र का एक ग्रन्थ।

दत्तिः (पुं०) स्वामित्व का परिवर्तन—अथ दत्तिः क्रियालक्षणकः इति-भी० सू० ४।२।२८ पर शा० भा०।

दहनलक्षम् (दहन+लक्षम्) (नपुं०) कृत्तिका नक्षत्रपुंज।

दानम् [दा+ल्युट्] 1. देना 2. सौंपना 3. उपहार 4. दान 5. हाथी के गंडस्थल से बहने वाला रस। सम०—परिमिता उदारता, दानशीलता की सीमा, —वर्षिन् (वि०) मदोन्मत्त हाथी।

देय (वि०) [दा+यत्] समर्पण करने योग्य (भार्या) पत्या देयो वरस्य. मनु० २।१३८।

दाक्षिकन्या (स्त्री०) बाह्लीक देश में स्थित एक स्थान का नाम।

दाडिमबीजः (पुं०) [ष० त०] अनार का बीज।

दाम्नी (स्त्री०) माला।

दायः [दा+घञ्] 1. उपहार 2. वैवाहिक उपहार 3. भाग 4. बपौती, वरासत 5. सम्बन्धी, रिश्तेदार। सम० विभागः संपत्ति का बटवारा।

दारपिण्डसम्बन्ध [ष० त०] विवाह।

दारुमस्त्याङ्गुष्ठः (पुं०) गोह।

दारुहारः (पुं०) लकड़हारा।

दारुणम् [दृ+णिच्+उलच्] 1. करुता, भीषणता 2. कठोर प्रतिकूल नक्षत्र मृग, पुष्य, ज्येष्ठा और मूल।

दारीदर (वि०) जूए से संबंध, जूआ विषयक।

दार्विका (स्त्री०) एक प्रकार का आंखों का अंजन।

दार्वी (स्त्री०) [दारु+अण्+ङीप्] 1. दारुहल्दी 2. हल्दी का पौधा।

दार्वीय (वि०) (दो स्त्री०) [दृषद्+अण्] 1. पथरीला 2. जो पन्द्रह पर पीसा जाय।

दार्ष्टान्ति (वि०) [दृष्टान्त+अण्] सादृश्य की सहायता से व्याख्या किया गया, उदाहरण देकर समझाया गया।

दार्ष्टान्तिक (वि०) [दृष्टान्त+ठक्] जो उपमा देकर किसी बात को समझाता है।

दार्वीः (पुं०) एक प्रकार का विष।

दाशक्यः (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

दाशरथ (वि०) [दशरथ+अण्] 1. यज्ञ से सम्बन्ध रखने वाला—महा० १२।८।३७ पर टीका।

दाशराज्ञ (वि०) [दशराजन्+अण्] दस राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला।

दासभीयः (पुं०) [दासं गृहयुद्धं मिमते मानयन्ति मैथुना-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्वस्ताः दासस्य. तत्पु.] उच्च वर्ण की स्त्री में शूद्र पिता के द्वारा उत्पादित पुत्र ।

दिनकृत्यम् (नपुं०) [ष. त.] नित्य का कार्यक्रम ।

दिनस्पृश् (नपुं०) [दिनस्पृश्+क्विप्] आनन्दित जो सप्ताह के तीन दिनों के साथ मेल खाता है ।

दिवसालसानम् (नपुं०) संख्याकाल ।

दिवसीकृ (तना० उभ०) रात को दिन में परिणत करना निशां दिवसीकुरुते मृच्छ० ४।३ ।

दिवानक्तम् (अ०) [द्व. स०] दिन रात ।

दिव्यावदानम् (नपुं०) बौद्धधर्म का एक ग्रन्थ ।

दिव्यधुनी (स्त्री०) गंगा नदी ।

दिगवस्थानम् [दिक्+अवस्थानम्] अन्तरिक्ष ।

दिग्भ्रमः [दिश्+भ्रमः] दिशा की भ्रान्ति होना ।

दिक्शूलम् [दिश्+शूलम्] दिशाशूल, यात्रियों को किन्हीं विशिष्ट दिनों में विशेष दिशाओं में जाने का प्रतिषेधक योग ।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1. संकेतित, दर्शाया हुआ 2 वर्णित, उल्लिखित 3. निश्चित, नियत,—ष्टः (पुं०) समय. ष्टम् (नपुं०) 1. नियतन 2. भाग्य । सम० गतिः मृत्यु, दृश् त्र्यंबकारी परमात्मा यस्य तृष्यति दिष्टदृक् भाग० ४।२१।२३, —भाज् (पुं०) परमात्मा,—भुक् (वि०) जो अपने कर्मों का फल भोगता है ।

दिष्टिवृद्धिः (स्त्री०) [ष० त०] बधाई, अभिनन्दन, साधुवाद ।

देशना (स्त्री०) [दिश्+युच्+टाप्] निर्देश, अध्यादेश —कैकयीव देशनासु ग्रकैव धर्मदानपेक्षसे—वी० स० १०।१।१ पर टी० भा० ।

दौलता (स्त्री०) [दीन+तल्+टाप्] दुर्बलता, बलहीनता ।

दौक्ष् (भ्वा० प्रेर० आ०) प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना—तत्खलमस्तमर्दिक्षतक्षण नै० १८।१२० ।

दौक्षणीयेष्टिः उपनयन संस्कार से पूर्व अनुष्ठेय यज्ञ ।

दौक्षाश्रमः (पुं०) वानप्रस्थाश्रम ।

दौक्षायणः (पुं०) [त० स०] यज्ञ की स्थापना ।

दीपः [दीप्+घञ्] लैम्प, दीपक । सम० अङ्कुरः लैम्प की लौ, दीपे हो लौ, उच्छिष्टम् दीपे की स्याही, दण्डः दीवट, दीपक रखने की यष्टि ।

दीप्त (वि०) [दीप्+क्त] 1. जला हुआ, प्रकाशित, सुलगाया हुआ 2. उत्तेजित, प्रदीप्त 3. उज्ज्वल,—प्तः (पुं०) 1. सिंह 2. नीम का पेड़,—प्तम् (नपुं०) सोना । सम० आत्मन् सांप. निर्णयः निश्चित एवं वास्तविक परिणाम, निर्णय (वि०) जिसने अपना पक्का निर्णय कर लिया है ।

दीप्यकम् [दीप्+यत्+कन्] 1. मोर की शिखा 2. 'दीपक' नाम का एक अलंकार, इसी का दूसरा नाम ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ् आ०] 1. लम्बा, दूरगामी 2. देर तक रहने वाला, चिरकाल 3. गहरा 4. ऊंचा । सम० अपाङ्ग (वि०) लंबे कटाक्षों से युक्त (मृग) अक्षीक्षिन् (वि०) दिखाई देने वाला, संकेत, साक्षात्,—चतुरस्रः दीर्घचतुरस्र,—तमस् (पुं०) एक ऋषि का नाम, दर्शिन् (वि०) जो देर तक वैर-विरोध रखता है, पत्रकः 1. गन्ना 2. एक प्रकार का लहसुन,—पृष्ठः सांप, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, वक्षिका, वक्षिपाल, मगरमच्छ ।

दुःखम् [दुस्+अच्] 1. अप्रसन्नता, कष्ट, पीड़ा 2. कठिनाई, असुविधा । सम० आत्मन् विपत्ति, संकट, जीवित (वि०) कष्ट में जीवन व्यतीत करने वाला,—त्रयम् तीन प्रकार का दुःख आधिभौतिक, आधिदैविक, और आध्यात्मिक, दुःखम् (अ०) बड़ी कठिनाई के साथ,—दुःखित् (वि०) 1. जिसे दुःख पर दुःख उठाने पड़े 2. जो दूसरों के दुःख से दुःखी हो,—साध्य (वि०) जो कठिनाई से काटा जा सके ।

दुःखाकृत (वि०) [दुःख+आ+कृ+क्त] आहत, दलित, परेशान नै० २२।१३८ ।

दुकूलपट्टः (पुं०) रेशमी पट्टा या सिर की पट्टी ।

दुन्दुभिः (पुं० स्त्री०) [दुन्दु+भण्+ड+ङीष्] 1. एक प्रकार का बड़ा ढोल 2. विष्णु 3. कृष्ण 4. एक प्रकार का विष 5. संवत्सर चक्र में २६ वां वर्ष ।

दुर् (अ०) [दुस् का पर्याय बाद में उपसर्ग जुड़ने पर] यह उपसर्ग बुरा, कठोर या कठिन के अर्थ को प्रकट करने के लिए नाम पद तथा क्रिया पदों के पूर्व जोड़ा जाता है । सम० अक्षरम् अश्लील सूचक शब्द,—अपवादः पिशुनवाक्य, लोकापवाद, अवगम्य (वि०) जिसका गुप्त रखना कठिन है,- अजित (वि०) सीमारहित, अगाध, जो मापा न जा सके, —आढ्य (वि०) निर्धन, धनहीन,- आधिः (पुं०) 1. कष्ट, मानसिक चिन्ता 2. क्लेश, आपूर (वि०) जिसका भरना कठिन हो, जिसको सन्तुष्ट न किया जा सके,- आलोकः दुर्दर्शन, संकोच,—आसद (वि०) जिसे विश्वास न दिलाया जा सके, जो किसी प्रकार अपने सतानफल न दिया जा सके, —आसव (वि०) 1. जिसे प्राप्त करना कठिन हो 2. अजेय, जिसपर आक्रमण न किया जा सके 3. जिसका सहन करना कठिन हो,—उदय (वि०) जो आसानी से प्रकट न हो सके, उदर्क (वि०) जिसका बुरा परिणाम हो, जिसका कोई फल न निकले, उपसदिन् (वि०) जो असावधानता पूर्वक पहुँच रहा है, जो सावधानी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से पास नहीं आता हूं,—गुणितम् (नपुं०) जिसका भलीप्रकार अध्ययन नहीं किया गया—शास्त्रं दुर्गुणितं यथा –अवि० २।४, गोष्ठी कुसंगति, एडयंत्र, –नयः 1. बुरी रणनीति 2. अनैतिकता 3. धृष्टता —नृपः बुरा राजा,–ध्वस्त (वि०) दुर्व्यवस्थित, बाह (वि०) प्रतिबंधरहित, बुध (वि०) दुर्मना, दुष्ट मन वाला, भियज्यम् (नपुं०) अविच्छिन्नता, असाध्यता—वृ० उ० ५।१।८, मङ्कु (वि०) ढीठ, आज्ञा न मानने वाला, मरण (नपुं०) कठिन मृत्यु, अप्राकृतिक मरण,—यंत्रित (वि०) उकसाया हुआ, भड़काया हुआ,–मंत्र मंत्रु, बैरी, ग्रामः ब्राह्मणों (अग्रहारधारियों) की बस्ती के पास बना हुआ गाँव, –विद्ध (वि०) जिसमें छिद्र ठीक प्रकार न हुआ हो (मोती), विनश्यं (वि०) जिसकी परीक्षा करना कठिन हो,–विवाहः अनियमित विवाह, व्यवहृतिः (स्त्री०) मिथ्या अभियोग, झूठा आरोप।

दुरोणम् (वेद०) आवास, अतिथिगृह राजसद् ऋक् ४।४०।५।

दूषक (वि०) [दुष्+णिच्+ण्वुल्] अधार्मिक, धर्महीन।

दूषणः [दुष्+घञ्] 1. अपराध, त्रुटि, निन्दा, भूल 2. पाप, जुर्म 3. अवगुण, दुःस्वभाव 4. वात पित्त कफ का विकार। सम०- अक्षरम् दोषारोपण, दोषारोप का मंत्र आविष्कारणम् दोषों को प्रकट करना, –निरूपणम् त्रुटियों का संकेत करना।

दुस् [दु+सुच्] संज्ञा शब्दों के साथ, जब इनमें क्रियाशब्दों के साथ भी, लगने वाला उपसर्ग, इसका अर्थ है 'बुरा' 'दुष्ट' 'घटिया' 'कठिन' आदि ('दुस्' का 'स्' स्वरों तथा हशु वर्गों से पूर्व 'द्' में; छ से पूर्व 'श्' में तथा रू पू से पूर्व 'ष्' में बदल जाता है)। सम०—उपक्षाल (वि०) अगम्य, पहुँच के बाहर, —कुलम् अधम कुल –स्त्रीसहस्रं दुष्कुलादपि स्मृति० २।२३८,—कृष्ट (वि०) पाखण्डी, दम्भी० बुद्ध २।२८, —क्रीत (वि०) जो उचित कीमत से न खरीदा गया हो, —चिक्यम् ज्योतिष शास्त्र में लग्न से तीसरी राशि,—प्रक्रिया नगण्य अधिकार—राज० ८।४, प्रतीक्ष (वि०) पहचानने में कठिन–प्रद (वि०) दुःखदायी, पीड़ाकर—अयं भ्राता: पलायन्तु बुध्यादास्ते दिशो दश—रा० २।२०६।२६,—मरम् असामयिक और दुःखद मृत्यु,—सधः 1. कुत्ता 2. मूर्ख,—संस्थित (वि०) देखने में कुरूप, निन्द्य, कलङ्कयुक्त,—स्थम् (अ०)बुरा, अस्वस्थ—दुःस्थं तिष्ठसि यत्र्च पथ्यमधुना कर्तास्मि तच्छोभ्यसि – अमरु०।

दुस्कूपिका (स्त्री०) एक प्रकार की रोटी।

दुस्पाकः (पुं०) एक प्रकार का मूल्यवान् मणि।

दुहिलिका (स्त्री०) एक प्रकार की जानवरों की खाल जिस पर बाल बहुत लगे होते हैं—कौ० अ० २।११।

दूतः [दु+क्त, दीर्घः] 1. हरकारा 2. एलची, राजदूत। सम० काव्यम् 'दूतसम्प्रेषण' है विषय पर काव्य, जैसे मेघदूत अथः (–अव्य०) दूत की तरह काम करना दूतवध्या विगर्हिता–रा० ६।५३।१,–संप्रेषणम् दूत भेजना।

दूत्यम् [दूत–ष्यञ्] दूत का काम।

दूर [वि०] [दूर्–इण्–रक्, आर्तोसार्व०] 1. फासले पर, दूरी पर, दूर 2. अत्यन्त, बहुत अधिक। सम० –अंत (वि०) प्रकाश से बाहर, अप्रासंगिक, असंगत, आगत । वि०) दूरी से आये हुए, उत्सारित (वि०) दूर भगाया हुआ, गामिन् (पुं०) बाण, पात, पातिन् (वि०) जो दूर से निशाना लगा सकता है –शास्त्रविद्भिरनाधृष्या दूरपाती दृढ़व्रतः महा० ५।१६५।२५, पातनम् दूर तक निशाना लगाना, श्रवणम्–श्रुतिः दूर से सुनना (एक 'सिद्धि' का भेद), –श्रवस् (वि०) दूर-दूर तक विख्यात।

दूरता,–त्वम् [दूर+तल्, त्व] दूरी, फासला।

दूषकः (पुं०) रसों में लोद कर बनाया हुआ सुरमा।

दृढ (वि०) [दृह्–क्त, नि० लोपः] 1. स्थिर, मजबूत, अटल, अडिग, अथक 2. ठोस 3. पुष्टीकृत 4. धैर्यवान् 5. सटा हुआ। सम०. भक्ति (वि०) दृढ़ निश्चय, साहसी, नाभः अस्त्र का प्रभाव रोकने वाला मंत्र रा० ६।८।१५, पृष्ठकः कछुवा,–भूमिः यौगिक अभ्यास में जिसने मन को केन्द्रित कर लिया है,–भक्ति, वेधिन् (पुं०) अच्छा तीरन्दाज, –मनस् (वि०) प्रचण्ड क्रोधी—भार्गवाय दृढ़मन्यवे पुनः रघु० ११।९४ वृक्षः नारियल का पेड़।

दृतिः (पुं०, स्त्री०) [दृ+क्तिन् ह्रस्वः] पिचकारी या नल का वा देवनात्त सर्वोसिरिपुदृतीभिः—भाग० १०।७५।१७।

दर्पोपशान्तिः (स्त्री०) घमंड चूर-चूर करना।

दर्शदर्शम् (अ०) हर दृष्टि में, प्रत्येक दृष्टि में।

दर्शपूर्णमासन्यायः (पुं०) ऐसा नियम जिसके आधार पर वह कार्य जो अनेक फलों का उत्पादक है, एक समय में केवल एक ही फल उत्पन्न कर सकता है, अनेक नहीं—मी० सू० ४।३।१५-२८।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] 1. देखना 2. प्रकट करना 3. जानना 4. दृष्टि 5. निश्चयात्मक ज्ञान, उचित –दर्शनादशनश्रेष्ठं दर्शनं प्रमाणम् मै० सं० १०।७। ३६ पर शा० भा०।

दर्शनीयतम (वि०) [दृश्+अनीयर्+तमप्] जो देखने में अत्यन्त सुन्दर है—दर्शनीयतमं शास्त्रम् भाग०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दर्शनीयमानिन् (वि०) [दर्शनीयमान+इनि] जो अपने सौन्दर्य का अभिमान करता है, घमंडी।

दिदृक्षा (स्त्री०) [दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा।

दिदृक्षु (वि०) [दृश्+सन्+उ] जो देखने का इच्छुक है।

दृश् (स्त्री०) [दृश् + क्विप्] 1. दृष्टि 2. आंख। सम०—**अञ्चलः** (दृगञ्चलः) कटाक्ष, कनखी,—**छदम्** (दृक्छदम्) पलक,—**निमीलनम्** (दृङ्निमीलनम्) आंख मिचौनी, बच्चों का एक खेल,—**प्रसादा** (दृक्-प्रसादा) एक नीला पत्थर जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है, **संगमः** दृष्टिमिलन, नजर मिलना।

दृशालुः (पुं०) [दृश्+आलुच्] सूर्य।

दृश्यम् [दृश्+क्यप्] 1. देखे जाने योग्य 2. सुन्दर 3. काव्य का एक भेद जो देखने के उपयुक्त है (विप० श्रव्य)। सम०—**क्षर** (वि०) जो दिखाई न दे,—**स्थानित** (वि०) आकर्षक रीति से रक्खा हुआ जिससे सभी उसको देख सकें **दृश्यस्थापितमृद्भ-भिक्षाभाण्डमृगाजिनाम्**—कथा० २४।९२।

दृष्टसार (वि०) [ष० त०] जिसका बल या सामर्थ्य प्रमाणित हो चुका है—**दृष्टसारमथ** रुदकार्मुकं रघु० ११।

दृष्टिः (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1. नजर, देखना 2. मानसिक रूप से देखना 3. जानना 4. आंख ५. सिद्धान्त (वै० दर्शन)। सम०—**प्रसादः** दृष्टि की कृपा, दर्शन का अनुग्रह,—**मण्डलम्** 1. आंख की पुतली 2. दृष्टि-क्षेत्र,—**रागः** आंख द्वारा प्रेम,—**विषयः** दृष्टि की पहुंच,—**संक्षेपः** पारस्परिक अवलोकन—**त्वयापि न निरूपिता अनयोर्दृष्टिसंक्षेपः**—महा० ७।

दृषदश्मन् (पुं०) चक्की का ऊपर का पाट।

दृषत्सारम् [ष० त०] लोहा—**दृषत्सारस्त्वत्वामृतमपि**—म० वी० ६।५२।

देव (वि०) [दिव्+अच्] 1. दिव्य, स्वर्गीय 2. उज्ज्वल 3. पूजनीय, माननीय, वः (पुं०) 1. देवता 2. वर्षा का देवता 3. दिव्य मनुष्य, ब्राह्मण—दे० भूदेव 4. देवर, पति का भाई, **वम्** (नपुं०) ज्ञानेन्द्रिय। सम०—**अर्पणम्** 1. देवों के प्रति उपहार 2. वेद—महा० १३।८६।१७ पर टीका, **कुसुमम्** इलायची,—**ज्ञातम्**, **ज्ञातकम्** 1. पहाड़ की कन्दरा 2. सरोवर 3. मन्दिर का निकटवर्ती तालाब,—**गान्धारी** संगीतशास्त्र में एक राग का नाम, **ग्रहः** भूत-प्रेतों की श्रेणी जो उन्माद पैदा करती है, **-तर्पणम्** जल के उपहार से देवों को तृप्त करना,—**दैवत्य** (वि०) जो देवताओं का भविष्य हो, उनके भाग्य से लिखा हो,—**द्विज्यम्** देवों का रथ, विमान,—**नक्षत्रम्** दक्षिणी दिशा में पहले चौदह नक्षत्रों का नाम,—**निन्दा** नास्तिकता, —**निर्माल्यम्** देवताओं को उपहार देने में प्रयुक्त (फूल, माला आदि),—**पुरोहितः** 1. देवों का अपना पुरोहित 2. बृहस्पति ग्रह,—**प्रसूतः** (वि०) प्रकृति से उत्पन्न (जल आदि), **भोगः** स्वर्गीय भोग, स्वर्गीय सुख, **-माया** विश्व भ्रम—ता देवमायामिव वीरमोहिनीम् भाग० १०, **मार्गः** 1. वायु, अन्तरिक्ष 2. गुदा देवमार्गाश्च दक्षिणम् रा० ५।९६२, **रातः** परीक्षित् का विशेषण,—**लक्ष्मम्** ब्राह्मणत्व का चिह्न, यज्ञोपवीत, **सद्मम्** दिव्य सचाई,—**हूः** बायां कान—भाग० ४।२५।५१।

देवितव्य (वि०) [दिव्+तव्यत्] जुए में दांव पर लगाने योग्य।

देवीपुराणम् (नपुं०) एक उपपुराण का नाम।

देवीभागवतम् (नपुं०) एक महापुराण का नाम।

देवीमाहात्म्यम् (नपुं०) मार्कण्डेय पुराण का एक भाग जिसे सप्तशती कहते हैं।

देशः [दिश्+अच्] 1. स्थान 2. प्रदेश 3. क्षेत्र 4. प्रान्त 5. विभाग 6. सस्थान 7. अध्यादेश। सम०—**अटनम्** किसी देश में भ्रमण करना,—**ज्ञः** सामाजिक बुराई, देश की प्रगति में बाधक, **कालज्ञ** (वि०) जो व्यक्ति कार्य करने के सही स्थान और समय को जानता है, **बिद्ध** (वि०) ठीक तरह से विंधा हुआ (मोती) दर्शक की सापेक्ष स्थिति के आधार पर बना गोल घेरा।

देशकः [दिश्+ण्वुल्] संकेतक, ज्ञापक, अनुबोधक। सम० **पटुम्** (नपुं०) छत्रक, खुम्भी।

देशिकरूपिणी (स्त्री०) अध्यापिका के रूप में देवी, ललिता का विशेषण।

देश्यम् (वि०) [दिश्+तव्यत्] इंगित या संकेतित किये जाने के योग्य।

देहः-हम् [दिह्+घञ्] 1. काया, शरीर 2. व्यक्ति 3. रूप। सम० **आत्मजः** पुत्र,—**-धृत्** 1. पांच तत्त्व 2. पिता—अनरण्यस्य देहकृत्—भाग० ९।७।४, —**तन्त्र** (वि०) शरीर धारी, मूर्त्तरूप धारण करने वाला, **पातः** मृत्यु,—**भेदः** मृत्यु,—**यात्रम्** शरीर का पालन पोषण करना,—**विसर्जनम्** मृत्यु,—**वृत्तम्** नाभि,—**सारः** मज्जा।

देहिका (स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा।

दैक्ष (वि०) [दीक्षा+अण्] 'अग्नीषोम' यज्ञ की दीक्षा लेने वाला।

दैप (वि०) [दीप+अण्] दीपक से सम्बन्ध रखने वाला।

दैव (वि०) [देव+अण्] 1. देवताओं से सम्बन्ध रखने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला 2. दिव्य, स्वर्गीय 3. भाग्य पर निर्भर। सम०—इज्य (वि०) बृहस्पति के लिए पुनीत, ऊढा 'देव' विवाह की रीति के अनुसार विवाहित स्त्री, चिन्ता भाग्यवाद,—रक्षित (वि०) अन्तर्जात, नैसर्गिक,—रक्षित (वि०) देवों से जिसकी रक्षा की गई है—अरक्षित तिष्ठति दैवरक्षित—सुभाष०, -विद् (पुं०) ज्योतिषी, -हत (वि०) जिससे देव घृणा करते हों, भाग्य का मारा।

दैवतरिस् (स्त्री०) गंगा नदी।

दैवसिक (वि०) [दिवस+ठक्] एक दिन में जो घटित हो।

दैवाकरिः (पुं०) 1. शनि ग्रह 2. यम 3. यमुना नदी।

दैशिक (वि०) [देश+ठञ्] गुरु के द्वारा शिक्षा प्राप्त।

दोधकम् (नपुं०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु को मिला कर दस वर्ण हों।

दोलाचलचित्तवृत्ति (वि०) जिसका मन हिंडोले की भाँति इधर उधर झूल रहा है।

दोलायन्त्रम् (नपुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कुछ औषधियाँ तैयार की जाती हैं।

दोलालोल (वि०) अनिश्चित।

दोस् (पुं०, नपुं०) [दम्यतेऽनेन दम् दोऽसि अर्धर्चा०] ('दोषन्' शब्द को विकल्प से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन के पश्चात् 'दोस्' आदेश हो जाता है) 1. भुजा 2. किसी वर्ग या त्रिकोण की भुजा 3. अठारह हँच की माप—मात० १०।१४।

दोहदवतीःसखीलक्षा (स्त्री०) गर्भावस्था का बोझा—उपेत्य सा दोहदवतीःसखीलताम्—रघु० ३।६।

दौदभरी (स्त्री०) बृहस्पति और शुक्र ग्रह का चन्द्रमा के साथ संयोग—जातकों के लिए अत्यन्त मङ्गलमय-समझा जाता है।

दौर्जन्य (वि०) [दुर्जन+ष्यञ्] दुष्ट पुरुष से सम्बन्ध।

दौर्भिक्षम् (नपुं०) [दुर्भिक्ष+अण्] अकाल पड़ना, दुर्भिक्ष होना।

दौर्मेधस्यम् (नपुं०) [दुर्मेधस्+ष्यञ्] आज्ञा न मानना।

दौस्थ्यम् (नपुं०) [दुस्थ+ष्यञ्] दुःखद स्थिति।

दौहृदिकः [दोहद+ठक्] प्राकृतिक दृश्यों का माली नै० ६।६१।

द्रुपथः [द्रु० त०] हवाई मार्ग।

द्रुसरनम् (नपुं०) सूर्य।

द्रुसूनवः (पुं०) इन्द्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा।

द्यूत-म् [दिव्+क्त, ऊठ् अर्धर्चा०] 1. जूआ खेलना, पासों से खेलना 2. युद्ध, संग्राम 3. जीता हुआ पारितोषिक। सम०—कर्मन् जूआ खेलने के नियम, —मण्डलम् जूआघर,- लेखकः जो जूए के खेल का प्रमाणक लिखता है।

द्योकरः (पुं०) स्थपति, वास्तुकार, सौधशिल्पी।

द्वारकः-का नगर, पुरी—राज०।

द्रवत् (वि०) [द्रु+शतृ] 1. दौड़ता हुआ, बहता हुआ 2. चूता हुआ, टपकता हुआ, बूंद बूंद गिरता हुआ।

द्रविः (पुं०) (वेद०) धातुओं को गलाने वाला।

द्रविडशिशुः (पुं०) द्रविड देश का पुत्र, शैवसंप्रदाय का एक सन्त—दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्—सौन्दर्य०।

द्रविणोदः (पुं०) अग्नि, आग।

द्रविणोदयः [ष० त०] धन की प्राप्ति।

द्रव्यम् [द्रु+यत्] ऋग्वेद का मन्त्र जो साम के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—द्रव्यशब्दस्तु छन्दोगैः ऋक्षु आचरितः—मै० ब्रा० ३।२।१४ पर शा० भा०। सम०-शुद्धिः धर्म कार्य के लिए प्रयुक्त पदार्थ की पवित्रता।

द्रष्टुकाम (वि०) दर्शन अभिलाषी, देखने का इच्छुक (पाणिनि के अनुसार 'काम और मनस्' के पूर्व 'तुम्' के 'म्' का लोप हो जाता है)।

द्रष्टुमनस् (वि०) दे० 'द्रष्टुकाम'।

द्राघकेन्द्रम् (नपुं०) अपने अधिकतम वेग के बिन्दु से ग्रह की दूरी।

द्राक्षापाकः (पुं०) काव्यशैली का एक प्रकार जिसमें रचना सरल और मधुर हो (विप० नारिकेलपाकः)।

द्राक्षासवः अंगूरों की शराब जो पुष्टिवर्धक के रूप में प्रयुक्त होती है।

द्राघिष्ठ (वि०) [दीर्घ+इष्ठन्] सबसे लम्बा, अत्यन्त लम्बा,-ष्ठः (पुं०) रीछ।

द्राह्यायणः सामवेदियों के सम्प्रदाय के लिए लिखित श्रौतसूत्र के कर्ता का नाम।

द्रुपाद (वि०) लम्बे पैर वाला।

द्रुसगति (वि०) [ब० स०] द्रुत गति से जाने वाला।

द्रुतमध्या दे० द्रुतविलम्बित।

द्रुमः [द्रु+शाखास्त्यस्य, मः] 1. वृक्ष 2. कल्पवृक्ष 3. कुबेर का विशेषण। सम०—अञ्जनम् कर्णिकार वृक्ष, कनियर का पौधा,—अम्बुः,- वल्कः वृक्षों की वाटिका, कुंज, —निर्यासः वृक्ष का रस, गोंद, -वासिन् (पुं०) बन्दर।

द्रेक्काणः } (पुं) राशि की अवधि का तीसरा भाग।
द्रेक्काणकः }

द्रोणकम् (नपुं०) [द्रुण्+अच्, कन्] समुद्र के किनारे का नगर जिसमें किलाबन्दी की गई हो।

द्रोणमुख (वि०) आतिथ्य सत्कार करने में उदार।

द्रोणेयम् (नपुं०) एक प्रकार का नमक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वौहिक (वि०) [द्रोह+ठक्] सदैव घृणा का पात्र।

द्वन्द्वम् [द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्तौ-द्विशब्दस्य द्वित्वं पूर्वपदस्य अम्भावः, उत्तरपदस्य नपुंसकत्वं—नि०] एक ओर, एकान्त स्थान, द्वन्द्वे ह्येतत् वक्तव्यम् रा० ७। १०३।१३,—आलापः दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप, —गर्भ (वि०) बहुव्रीहि समास जिसके मध्य द्वन्द्व निहित हो,- दुःखम् हर्ष और शोक आदि की परस्पर विरोधी भावनाओं से उत्पन्न दुःख।

द्वार् (वि०) [द्वार्+ग] दरवाजे पर खड़ा हुआ।

द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1. दरवाजा 2. प्रवेश द्वार 3. शरीर के नौ द्वार। सम०—बाहुः (पुं०) चौखट, —अरटिः किवाड़ का पट या पल्ला, वंशः सरदल।

द्वि (सं वि०) [द्वृ+डि] दो। सम० अन्तर (वि०) दो घटकों द्वारा अन्तरित, अवर (वि०) न्यूनातिन्यून दो,—आम्नात (वि०) दो बार वर्णित,- आह्निक (वि०) हर तीसरे दिन होने वाला (बुखार) —एकान्तरम् एक अंश या दो अंश से वियुक्त द्वयेकान्तरासु जातानां धर्म्यं विद्यादिमं विधिम्—मनु० १०।७,—कर (वि०) दो प्रयोजन पूरा करने वाला, —कार्षापणिक (वि०) दो कार्षापण के मूल्य का, —चक्षुस् (वि०) दो आँख में खराबी के कारण दो चन्द्रदर्शन की भ्रान्ति,—ज: ब्रह्मचारी, जातिः जिसके दो पत्नियां हों, कालबद्धः 1. दो ओर बँटे बाल 2. जिसने अपने बालों को कंघी करके दो भागों में बाँट दिया हो, बाहुः मनुष्य कथा० ५२।९४, —भाषम् संध्या समय,—मुनि (अ०) दो मुनि —पाणिनि और कात्यायन, वक्त्रः दो मुँह वाला साँप, वर्णः प्रकृति और पुरुष का जोड़ा, व्याम (वि०) बारह फुट लम्बा (व्याम=६ फुट),- स्थ, (—स्थ) (वि०) दो अर्थ प्रकट करने वाला—भवन्ति च द्विस्थानि वाक्यानि मी० भू० ४।३।४ पर शा० भा०।

द्विक (वि०) [द्वि+क] 1. दोहरा, दो तह का 2. दूसरा 3. दूसरी बार घटित होने वाला,—कः 1. कौवा 2. चक्रवाक पक्षी। सम०—पृष्ठ दो कूब वाला ऊँट।

द्वितीयगामिन् (वि०) जो दूसरे पदार्थ पर घटता हो द्वितीयगामी न हि शब्द एष नः रघु० ३।४९।

द्वेष्य (वि०) घृणा करने वाला।

द्वीपवासिन् (वि०) टापू पर रहने वाला,—ज,सौ (पुं०) खञ्जरीट पक्षी।

द्वैधीकरणम् (नपुं०) दो भाग करना।

द्वैहिकत्वम् [वि० सद्यःकालता, ऐहिकत्व] दो दिन तक अनुष्ठान चलते रहने की विशेषता।

—

ध

धगिति (अ०) एक क्षण में, अकस्मात्।

धन्य [धन्+अच्] 1. सम्पत्ति, दौलत, कोष, रुपया पैसा 2. कोई भी मूल्यवान् सामान, प्रियतम कोष 3. लूटमार का धन 4. पारितोषिक 5. धनिष्ठा नक्षत्र 6. जमा का चिह्न (विप० ऋण)। सम०—आदानम् धन ग्रहण करना,—आशा (स्त्री०) धन की इच्छा, —धान्यम् रुपया पैसा तथा अनाज,—भूः (पुं०) द्विजावी पूँछ वाला किरीला नामक पक्षी, भूः (स्त्री०) वह माता जिसके कन्याएँ ही हों।

धनिन् (वि०) [धन+इनि] वैश्य जाति- ऊहजा धनिनो राजन्—महा० १२।२९६।६।

धनुरासनम् (नपुं०) योगशास्त्र में वर्णित एक कायिक मुद्रा।

धनुर्ग्रहम् (नपुं०) एक माप, २७ अंगुल की माप, एक हस्तपरिमाण की माप।

धन्वनम् [धन्व्+ल्युट्] 1. धनुष 2. इन्द्रधनुष 3. धनु राशि।

धमधमाय् (ना० धा०) जगमगाना, निर्मल जाना।

धरः [धृ+अच्] तलवार। सम०—रम् (नपुं०) विष, जहर।

धरणीतलम् [ष० त०] धरती की सतह।

धरणीविडौजः (पुं०) [ष० त०] राजा।

धरा [धृ+अच्+टाप्] पृथ्वी, धरती। सम०—उपरथः (पुं०) पृथ्वीतल, धरती की सतह।

धरित्रीभृत् (पुं०) [धरित्री+भृ+क्विप्] राजा।

धर्म [धृ+मन्] 1. किसी जाति के परम्परागत अनुष्ठान, 2. विधि, व्यवहार, प्रथा 3. नैतिक गुण 4. गुण, सचाई 5. चार पुरुषार्थों में से एक 6. कर्तव्य 7. न्याय। सम०- अक्षरम् पवित्र मंत्र, आस्था का नियम, अपदेशः धर्मानुष्ठान का बहाना धर्मापदेशात् त्यजतश्च राज्यम्...रा० ५।२८, आगमः विधि का क्रम, अहन् (नपुं०) कल जो बीत चुका, आकूतम् रामायण की एक टीका का नाम,- ईप्सु (वि०) धर्मलाभ प्राप्त करने का इच्छुक,- उपयाचित (वि०) धर्मबद्ध, कायिक,—च्छलः धर्म का कपटपूर्ण उल्लङ्घन, दक्षिणा धर्मशिक्षा का शुल्क, परिणाहः हृदय में सदाचरण का उदबोधन, - प्रतिरूपकः कपटधर्म, छद्म धर्म,—प्रधान (वि०) पवित्राचरण में मुख्य, प्रेक्ष्य (वि०) धार्मिक, गुणी, बाह्य (वि०) धर्म से पराङ्मुख, धर्म विरोधी,—शुद्धिः आचरण की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्षणम् [धृष्+ल्युट्] 1. साहस, धृष्टता 2. हरजाना, पराजय —धर्षणं यत्र न प्राप्तो रावणो राक्षसेश्वरः—रा० ७।३१।३ ।

धातुः [धा+तुन्] 1. घटक, अवयव 2. तत्व, प्राथमिक द्रव्य 3. रस, अर्क । सम० गर्भः,—स्तूपः भस्म रखने का पात्र,—सूर्णम् पिसा हुआ खनिज पदार्थ,—प्रसक्त (वि०) रसायन कार्य में व्यस्त ।

धातुकः,-कम् शिलाजीत ।

धात्र (पुं०) [धा+तृच्] भाग्य, किस्मत ।

धात्रीपुष्पिका (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम ।

धान्यम् [धान+यत्] अनाज, अन्न । सम० क्षलः खलिहान,—क्षौरः अन्न चुराने वाला, मुष्टिः मुट्ठी भर अनाज ।

धामभानिन् (वि०) [धामन्+मान+इनि, नलोपः] भौतिक सत्ता में विश्वास रखने वाला—नैवेशितु प्रभुर्भूम्न ईश्वरो धामभानिनां भाग० ३।११।३८ ।

धामवत् (वि०) [धाम+मतुप्] शक्तिशाली, मजबूत पुरस्सरा धामवतां यशोधनाः कि० १।४३ ।

धाम्या (स्त्री०) [सामिधेनी ऋग् या समिदाधाने पठ्यते] 1. यज्ञाग्नि को सुलगाते समय गाया जाने वाला प्रार्थना मंत्र 2. इन्धन · कोधाग्नौ निजतातनिग्रहकथा-धाय्यासमुद्दीपिते—राम० २।६, नै० १।५६ ।

धारणम् [धृ+णिच्+ल्युट्] पीड़ा को शान्त करने के लिए मंत्र । सम० मन्त्रम् एक प्रकार का तावीज ।

धारणा [धृ+णिच्+युच्+टाप्] योग का एक अङ्ग । सम० आत्मक (वि०) जो अपने आपको आसानी से स्वस्थचित्त या प्रशान्त कर लेता है ।

धारयिष्णुता [धृ+णिच्+इष्णुच्+तल्] सहनशक्ति, सहिष्णुता ।

धारा (स्त्री०) मालवा देश की एक नगरी ।

धारा [धृ+णिच्+अङ्+टाप्] 1. पानी की धार, गिरते हुए किसी तरल पदार्थ की पंक्ति 2. बौछार 3. लगातार पंक्ति 4. घड़े में छिद्र 5. किसी वस्तु का किनारा । सम०—आवर्तः भंवर, फिरकी,—ईश्वरः राजा भोज, संपातः लगातार बौछार,—शीत (वि०) धारोष्ण दूध ठंडा किया हुआ ।

धार्मिकः [धर्म+ठक्] 1. न्यायकर्ता 2. धर्मात्मा, कट्टरपन्थी 3. बाजीगर ।

धाविन् (पुं०) [धाव्+तृच्] दौड़ने वाला गौर्वोढारं धाविनारं तुरङ्गी—महा० ११।२६।५ ।

धित (वि०) [धा+क्त] 1. रक्खा गया, अर्पण किया गया 2. संतुष्ट, प्रसन्न ।

धिग्वादः [धिक्+वद्+घञ्] भर्त्सनापूर्ण उक्ति, निन्दा ।

धिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त, दे० धिष्ठानं] 1. सुस्थापित 2. खाई में सुरक्षित - शाल्वो वैहायसं चापि तत्पुरं व्यूह्याधिष्ठितः—महा० ३।१५।३ 3. ठहरा हुआ, निश्चित ।

धीः [ध्यै भावे क्विप् संप्रसारणं च] 1. बुद्धि 2. मन, 3. विचार 4. कल्पना 5. प्रार्थना 6. यज्ञ 7. (जन्मकुंडली में) लग्न से पाँचवाँ घर । सम० विभ्रमः दृष्टिभ्रम ।

धुन्धुकम् (नपुं०) 1. लकड़ी में विशेष प्रकार का दोष 2. वृक्ष के तने में छिद्र जो उसके क्षय का चिह्न है ।

धुन्धुरिः,-री (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र, संगीत-उपकरण ।

धुर्यवाहः (पुं०) बोझा ढोने वाला जानवर ।

धूर्तता [धूर्त वहति यत्, तस्य भावः, तल्] नेतृत्व ।

धूपाकः (पुं०) लोबान ।

धूतगुणः जिसने तीनों गुणों को पार कर लिया है, जो अब भौतिक सुखों से परे पहुँच गया है, संन्यासी ।

धूपः [धूप+अच्] 1. सुगन्ध 2. सुगन्धयुक्त वाष्प या धूआँ । सम०—गन्धम् धूमनलिका, हुक्के की नली,- वर्तिः एक प्रकार की सिगरेट ।

धूमः [धू+मक्] 1. धुआँ 2. वाष्प 3. कुहरा, धुंध । सम० उपहत (वि०) धुएँ के कारण अंधा हुआ, —निर्गमनम् चिमनी जिसमें से धूआँ निकलता है, सहिषी धुंध, कुहरा,-मोचिः बादल ।

धूमरी (स्त्री०) धुंध, कुहरा ।

धूम्र [धूम तद्वर्णं राति रा+क] 1. धुएँ के रंग का 2. भूरा —भ्रः ऊँट ।

धूलिधूसरित (वि०) मिट्टी में लोटने से भूरा हुआ—गोधूलिधूसरितकोमलकुन्तलायम् कृष्ण० ।

धू (भ्वा०; तुदा० आ०) इरादा करना, मन करना ।

धृत [धृ+क्त] संकल्प किया हुआ, दृढ़,—रिपुनिग्रहे धृतः —रा० ४।२७।४७ । सम०—उत्सेक (वि०) घमण्डी, —एकवेणि (वि०) एक चोटी धारी—शि० ७।२१, —गर्भ (वि०) गर्भिणी,—मानस पक्के इरादे वाला, दृढ़मना ।

धृतिः [धृ+क्तिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. अठारह की संख्या ।

धृष्टकेतुः (पुं०) धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम ।

धृष्टवादिन् (वि०) निर्भीक होकर बोलने वाला ।

धेनुः [धयति सुतान्—धे+नु, इच्छ] 1. गाय 2. दूध देने वाली गौ 3. पृथ्वी 4. घोड़ी मी० सू० ७।४।७ पर शा० भा० ।

धेनुका (स्त्री०) 1. हथिनी 2. दुधारू गाय 3. उपहार 4. खड्ग 5. पार्वती ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धेय (वि०) [धे+यत्] कार्य में परिणेय, प्रयोज्य, —अव्याकुलं प्रकृतमुत्तरधेयं कर्म - शि० ५।६०।

धैर्यम् [धीरस्य भावः—ष्यञ्] 1. दृढ़ता, सामर्थ्य, टिकाऊपन 2. स्वस्थचित्तता, प्रशान्ति 3. साहस। सम०—**कलित** (वि०) धीर, अक्षुब्ध, **च्युतिः** धीरज से पूर्ण आचरण।

धौत (वि०) [धाव्+क्त] 1. धोया हुआ, प्रक्षालित, स्वच्छ किया हुआ 2. उज्वल किया हुआ, चमकाया हुआ 3. उज्वल, चमकीला। सम०—**अपाङ्ग** (वि०) जिसकी कनखियाँ चमकीली हों, **आत्मन्** (वि०) पवित्र हृदय वाला।

धौतेयम् [धौत+ढक्] सैन्धव, पहाड़ी नमक, लाहौरी नमक।

धौम्यः (पुं०) एक ऋषि का नाम।

ध्यानधिष्ण्य (वि०) ध्यान का अभ्यास करने के योग्य।

ध्यानमुद्रा [ष० त०] ध्यान या चिन्तन करने की विशेष स्थिति या मुद्रा।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] स्थिर, अचल, स्थायी, अनिवार्य, —वः (पुं०) 1. खूटी नाना० 2. ज्योतिष का एक योग 3. मूलबिन्दु 4. ध्रुव तारा,—वम् (नपुं०) निश्चित किया बिन्दु, -वा (स्त्री०) धनुष की डोरी। सम०—**केतुः** एक प्रकार की उल्का, टूटा हुआ तारा, —**गतिः** निश्चित मार्ग,—**मण्डलम्** ध्रुवीय क्षेत्र,—**यष्टिः** ध्रुवों की धारा, **शील** (वि०) जिसका आवास निश्चित है।

ध्वंसः [ध्वंस्+घञ्] 1. अधःपतन, डूबना 2. लुप्त होना, ओझल होना 3. नाश, विनाश, खंडहर। सम०—**अभावः** पदार्थ के विनाश से उत्पन्न अभाव या सत्ताहीनता,—**कारिन्** (वि०) 1. नाश करने वाला 2. उल्लंघन करने वाला।

ध्वस्ताक्ष (वि०) [ब० स०] जिसकी आँखें डूब गई हों (जैसी कि मृत्यु के समय) प्रकीर्णकेश ध्वस्ताक्षम् - भाग० ७।२।३०।

ध्वजः [ध्वज्+अच्] 1. खड्ग का एक भाग 2. झंडा, 3. पूज्य व्यक्ति 4. ध्वजा की यष्टि 5. चिह्न, प्रतीक। सम०—**आरोहणम्** झंडा फहराना, **आरोहः** झंडे पर एक प्रकार की सजावट, **उच्छ्रयः** धूर्तता, पाखंड।

ध्वजिन् (वि०) [ध्वज+इनि] धूर्त, पाखंडी—माल० १२।१५८।१८।

ध्वनिनाला (स्त्री०) 1. वीणा 2. एक प्रकार का लम्बोतरा ढोल, तासा।

ध्वान्तजालम् रात्रि का आवरण, अंधकार का समूह।

न

नंष्टृ (वि०) [नंश्+तृच्] हानिकारक, विनाशक।

नंहसः [हसन्ति दिक्षन्ति ते हंसाः - हसन्तो हंसा यंषां ते नंहसाः] अपने भक्तों पर कृपा करने वाला महा० १।१७०।१५ पर टीका।

नकुलः [नास्ति कुलं यस्य, समासे नञो नलोपः प्रकृतिभावात्] नीच कुल में उत्पन्न—नकुलः पाण्डुतनयः सर्पभुक्कुलहीनयोः नाना०। सम०—**ईशः** तान्त्रिक पूजा की एक रीति,—**द्वेषी** साँप—नकुलद्वेषी तथा विष्णुः - वास०।

नक्तन्तन (वि०) [नक्तं+तन] रात्रि से संबंध रखने वाला रात का।

नक्रकेतनः [ब० स०] कामदेव।

नक्रसखिका (स्त्री०) [ष० त०] जल की मक्खी।

नक्षत्रम् [नक्षरति नक्ष्+अत्रन्] 1. तारा 2. तारापुंज, 3. मोती 4. सत्ताइस मोतियों की माला। सम०—**इष्टिः** एक यज्ञ का नाम, **-उपजीविन्** (पुं०) ज्योतिषी,—**भोगः** नक्षत्र की कालावधि,—**लोकः** तारों का प्रदेश।

नखन्यासः [ष० त०] नाखून अन्तर्विष्ट करना, पंजा घुसेड़ देना।

नगापगा } (स्त्री०) पहाड़ी नदी।
नगनदी }

नगरमण्डना (स्त्री०) वेश्या।

नगरिन् (पुं०) [नगर+इनि] नगरपाल।

नग्नहु (नपुं०) आसव तैयार करने के लिए उठाया गया खमीर, किण्वन।

नग्नचर्या (स्त्री०) नग्न रहने की प्रतिज्ञा।

नग्नाचार्यः (पुं०) चारण, भाट, स्तुति पाठक।

नटनारायणः (पुं०) संगीत शास्त्र में वर्णित एक राग।

नटवत् (वि०) [नट+मतुप्] नाटक के पात्र की भाँति व्यवहार करने वाला।

नडमीनः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

नतनाभि (वि०) [ब० स०] सुकुमार, तन्वी—तस्याः प्रविष्टा नतनाभिरन्ध्रं रराज तन्वी नवलोमराजिः - कु० १।३८।

नत्यूहः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी—रा० २।५६।९।

नत्रम् (नपुं०) एक प्रकार का नाच।

नदीकूलम् [ष० त०] नदी का किनारा, नदी तट।

नदीतर (वि०) [नदीं तरतीति - तृ+अच्] नदी को पार करने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नदीमार्गः [ष० त०] नदी का जलमार्ग ।

नदीमुखम् [ष० त०] नदी का मुहाना, जहाँ से नदी निकलती है, नदी का उद्गम-स्थान ।

ननान्दृपतिः [ष० त०] ननदोई, पति की बहन का पति ।

नन्दकः [नन्द्+ण्वुल्] एक रत्न का नाम कौ० अ० २।११ ।

नन्दन (वि०) [नन्द्+ल्युट्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला, **नः** (पुं०) 1. पुत्र 2. सेंहड़क,—**ना** (स्त्री) पुत्री, **नम्** इन्द्र का नन्दन वन । सम० **जम्** पीली चन्दन की लकड़ी,—**द्रुमः** नन्दन वन का वृक्ष, पारिजातवृक्ष, कल्पवृक्ष,—**वनम्** दिव्य वाटिका, इन्द्र का उपवन ।

नन्दि: (पु०, स्त्री०) [नन्द्+इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, —**दिः** (पुं०) 1. विष्णु 2. शिव 3. शिव का गण 4. (नाटक में) नान्दी का पाठ करने वाला । सम० **देवी** हिमालय की एक चोटी,—**नागरी** एक लिपि (लिपिभेद) का नाम, **पुराणम्** एक उपपुराण, —**वर्धनः** मित्र ।

नन्दिसुतः [नन्दिन् + सुतः, नलोपः] व्याडि मुनि ।

नन्दी (स्त्री०) [नन्दि+ङीप्] दुर्गा देवी ।

नभिः [नभ्+इन्] पहिया ।

नभोरूप (वि०) [नह्+असुन् भस्यान्तादेशः—ब० स०] अन्धकारयुक्त, काला ।

नभोवीथी [नभस्+वीथी] सूर्य का मार्ग, हवाई मार्ग ।

नभश्चमसः (पुं०) [नभस्+चमसः] 1. एक प्रकार का यज्ञपात्र 2. चन्द्रमा ।

नम्रनासिक (वि०) [ब० स०] चपटी और मोटी नाक वाला ।

नयनम् [नी+ल्युट्] 1. नेतृत्व करना 2. निकट ले जाना 3. आँख । सम० **अञ्चलः** 1. आँख का कोना 2. कटाक्ष, कनखी, **चरितम्** 1. कटाक्ष, कनखी 2. दृक्पात, दृष्टिपात, **जम्** आँसू, **बुद्बुदम्** आँख का गोलक ।

नरः [नृ+अच्] 1. मनुष्य 2. व्यक्ति । सम०—**चिह्नम्** मूँछें, **देवः** राजा ।

नरकचतुर्दशी दीपावली का दिन ।

नरकवासः (पुं०) नरक में रहना ।

नराचः (पुं०) एक छन्द का नाम ।

नर्तटकः (पुं०) एक छन्द का नाम ।

नर्मस्फोटः [नर्मन्+स्फोटः, नलोपः] 1. प्रेम के आदि-चिह्न 2. मुहासा ।

नर्मालापः [नर्मन्+आलापः, नलोपः] प्रेम वार्ता, आमोद-प्रमोद की बातचीत ।

नर्मोक्तिः (स्त्री०) [नर्मन्+उक्तिः, नलोपः] हास्यपरक अभिव्यक्ति ।

नर्मय् (ना० धा०) रिझाना, दिल बहलाना ।

नर्मोयिलम् [नर्मय् + क्त] खेल, क्रीडा ।

नलः (पुं०) [नल—अच्] 1. संवत्सर 2. लम्बाई की माप जो चार हाथ के बराबर होती है । सम०—**तूलम्** एक प्रकार का जलीय जन्तु, **पाकः** राजा नल द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ ।

नलिका (स्त्री०) नली ।

नलिनी (स्त्री०) [नल्+णिनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा 2. कमलों से सुशोभित सरोवर 3. धूप 4. नथनी 5. इन्द्र पुरी, (शक्रपुरी) । सम०—**दलम्,—पत्रम्** कमल का पत्ता ।

नवद्वीपः (पुं०) एक टापू का नाम । यह गङ्गा और जलङ्गी के संगम पर बंगाल में एक स्थान है जिसे आजकल 'नदिया' कहते हैं ।

नवश्राद्धम् (नपुं०) मृत्यु के पश्चात् विषम दिनों में अनुष्ठित श्राद्ध ।

नवीभावः [नव+च्वि+भू+घञ्] नया होना ।

नवन् (सं० वि०) [नु+कनिन्, ब० गुणः] (ब० व०) नौ, नौ की संख्या । सम०—**कपालः** नौ कपाल जैसे ठीकरों में पकाए हुए पिण्ड का उपहार, **घ** (वि०) नौगुणा, नौ तह का, **चण्डिका** (स्त्री०) दुर्गादेवी के नौ रूप (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, महागौरी, कालरात्रि और सिद्धिदा), **धातुः** (पुं०) नौ धातु (हेमताराराजतं सस्यं ताम्ररङ्गे च तीक्ष्णकम् । कांस्यकं कान्तलोहं च धातवो नव कीर्तिताः), **पञ्चमम्** विवाह के विषय में जन्मकुण्डली में एक अमंगल योग जब कि दुल्हन की जन्मराशि दूल्हे की जन्मराशि से पाँचवें या नवें हों ।

नष्ट (वि०) [नश्+क्त] 1. खोया हुआ, अन्तर्हित, ओझल 2. मृत, ध्वस्त 3. विकृत, बिगड़ा हुआ 4. वञ्चित 5. भ्रष्ट,—**ष्टम्** (नपुं०) 1. नाश 2. अन्तर्धान । सम० **चन्द्रः** भाद्रपद मास की चतुर्थी तिथि जब कि चन्द्रमा का देखना निषिद्ध है, **दृष्टि** (वि०) अन्धा,—**धी** (वि०) भूल जाने वाला, ध्यान न देने वाला, **बोज** (वि०) नपुंसक, पुत्रहीन, **रूप** (वि०) अदृश्य ।

नशाकः (पुं०) एक प्रकार का कौवा ।

नाकः [न कम् अकं दुःखम्, तन्नास्ति यत्र] 1. स्वर्ग 2. अन्तरिक्ष 3. सूर्य । सम०—**नदी** स्वर्गीय नदी, स्वर्गंगा, **नारी** अप्सरा,—**लोकः** स्वर्गलोक, दिव्यलोक ।

नाकुः (पुं०) वाल्मीकि मुनि ।

नागः [न गच्छति इति अगः, न अगः इति नागः] 1. साँप 2. हाथी 3. बादल 4. बिगुल,—**गम्** 1. टीन 2. जस्ता 3. रांगा 4. एक प्रकार का रतिबन्ध । सम०—**आह्व**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(वि०) हाथी पर सवार, **केतुः** कर्ण का विशेषण, —**द्वीपम्** भारत वर्ष का एक द्वीप, **नासोरु** (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सुन्दर जंघाएँ आकार प्रकार में हाथी की सूंड से मिलती जुलती हैं, **पर्णी** पान का पौधा, **ब्रह्म** एक प्रकार का नाग, **रिपुः** गरुड़ ।

नागरकः [नगर+अण्, स्वार्थे कन्] नगर पिता ।

नागरकाः परस्पर विरोधी ग्रह ।

नागरवृत्तिः [ष० त०] नागरिकों की शिष्टता, शिष्टाचार, शालीनता ।

नागार्जुनः (पुं०) एक बौद्ध शिक्षक का नाम ।

नागोजीभट्टः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम ।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1. दृश्य काव्य 2. नाट्यरचना के मुख्य दस भेदों में प्रथम भेद । सम० **प्रकल्पः** नाटक करने की व्यवस्था, **प्रयोगः** नाटक का अभिनय करना, **रङ्गः** नाटक का रङ्गमञ्च, **लक्षणम्**, नाट्यरचना विषयक विविध नियम ।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1. नाच 2. नाटक प्रस्तुत करना, अभिनय करना 3. नृत्यकला 4. नाटक के पात्र की वेशभूषा । सम०—**अङ्गानि** नृत्य के दस भाग, **-आगारम्** नृत्यकक्ष, नाचघर, **-रासकम्** एक प्रकार का एकाङ्की नाटक, **—वेदः** नाट्यशास्त्र या नाट्यकला का विज्ञान ।

नाडी [नड्+णिच्+इन्=नाडि+ङीष्] 1. पौधे का नलिकामय डण्ठल 2. कमल का खोखला काण्ड 3. शरीर का नलिकायुक्त अंग (जैसे कि शिरा या धमनी) । सम० **चक्रम्** मूलाधार आदि शरीर के स्नायुओं के तन्त्री केन्द्रों का समूह, **पात्रम्** जलघड़ी, **—ग्रन्थः** ज्योतिष की नाड़ी शाखा पर एक पुस्तक ।

नाणकम् (नपुं०) सिक्का, मुद्राङ्कित कोई वस्तु । सम० **—परीक्षा** सिक्के को परखना, **परीक्षिन्** (वि०) सिक्कों का पारखी, परीक्षक ।

नाथितम् [नाथ्+क्त] माँग, प्रार्थना ।

नानर्दमान (वि०) [नर्द्+यङ्+शानच्] उच्च स्वर से शब्द करने वाला ।

नाना (अ०) [न+नाञ्] 1. भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न रीति से, विविध प्रकार से 2. स्पष्ट रूप से, पृथक् रूप से 3. बिना 4. (समस्त विशेषणों में प्रयुक्त) बहुत से । सम०— **आश्रय** (वि०) जिसके बहुत से आवास या घर हैं,— **गोत्र** (वि०) विविध गोत्रों से सम्बन्ध रखने वाला, **धर्मन्** (वि०) भिन्न रीति-रिवाजों वाला,—**भाज** (वि०) भिन्न प्रकृति वाला ।

नानात्वम् (नपुं०) विविधता की स्थिति ।

नान्दन (वि०) [नन्दन+अण्] सुखद, हर्षप्रद—सैषा विदुतिर्नाम द्वास्तदेतन्नान्दनम्—ऐत० उप० ३।१९ ।

नाभस्वत (वि०) [नभस्वत्+अण्] वायु से संबन्ध रखने वाला ।

नाभागः (पुं०) एक राजा का नाम, वैवस्वत मनु का पुत्र, अम्बरीष का पिता ।

नाभिः,-भी (पुं० स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तादेशः] 1. सूंडी 2. सूंडी के समान कोई भी गहराई—पुं० 1. पहिए की नाह 2. केन्द्र, मुख्य बिन्दु 3. क्षेत्र । सम० **गन्धः** कस्तूरी की बू या गन्ध,—**वर्षम्** जम्बू द्वीप के नौ वर्षों में से एक ।

नाभोगः [न+आभोगः] 1. देवता 2. साँप—**नाभोगभोज्यो हरिणाधिरूढः सोऽयं गरुत्मानिव राजतीन्द्रः**—रा० च० ६।८४ ।

नामावशेष (वि०) [ब० स०] जिसका केवल नाम ही रह गया है, मृतक ।

नायकायते (ना० धा० आ०) 1. नायक का अभिनय करना 2. मोतियों के हार में केन्द्रीय रत्न या मणि का काम देना ।

नाराचः [नरान् आचायति—आ+चम्+ड, स्वार्थे अण्, नारम् आचामति वा] 1. पूर्वदिशा को जाने वाली सड़क 2. मूर्ति को उसके स्थान पर जमाने के लिए धातु की बनी चटसनी या कील ।

नारायणास्त्रम् (नपुं०) एक अस्त्र का नाम ।

नारायणसूक्तम् (नपुं०) ऋग्वेद का पुरुष सूक्त ।

नारीनाथ (वि०) [ष० स०] जिसके स्वामित्व अधिकार किसी स्त्री के पास हैं ।

नारीमणिः (स्त्री०) [स० त०] स्त्रीरत्न ।

नालायन्त्रम् 1. तोप 2. निगल, नाली ।

नासत्यौ (पुं०, द्वि० व०) [नास्ति असत्यं ययोः, न० ब०, नासाः प्रकृतिबन्धुत्वात्] दोनों अश्विनीकुमार ।

नासान्तिक (वि०) [नासा+अन्तिक] नाक तक पहुँचने वाला (लकड़ी आदि) ।

नासाभेदः (पुं०) [ष० त०] नाक का बींधना, नासिकावेध संस्कार ।

नासिकः (पुं०) महाराष्ट्र प्रान्त में स्थित एक पुण्यस्थान ।

नाहलः (पुं०) जातिच्युत समुदाय का व्यक्ति, जातिबहिष्कृत ।

निःक्षत्र (वि०) [ब० स०] क्षत्रिय रहित ।

निःशङ्कु (वि०) [ब० स०] निडर, निर्भय, संकोचहीन ।

निःशब्द (वि०) [ब० स०] शब्द रहित, जहाँ कोलाहल न हो ।

निःशस्त्र (वि०) [ब० स०] शस्त्रहीन, जिसके पास कोई हथियार नहीं ।

निःश्रेयसम् (नपुं०) [निश्चितं श्रेयः नि०] 1. मुक्ति, मोक्ष 2. आनन्द 3. आस्था, विश्वास ।

निःसंशय (वि०) [ब० स०] निःसन्दिग्ध, निश्चित ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निःसंग (वि०) [ब० स०] 1. अनासक्त 2. मुक्त 3. स्वार्थरहित।

निःसत्त्व (वि०) [ब० स०] 1. असार 2. बलहीन 3. नगण्य।

निःसीमन् (वि०) [ब० स०] सीमा रहित।

निःस्नेह (वि०) [ब० स०] 1. रूखा 2. भावशून्य।

निःस्पन्द (वि०) [ब० स०] निश्चल, गतिहीन।

निःस्पृह (वि०) [ब० स०] 1. इच्छारहित 2. सन्तुष्ट।

निःस्व (वि०) [ब० स०] अर्थहीन, निर्धन।

निःस्वन (वि०) [ब० स०] निश्शब्द, शब्द रहित।

निःस्वनः (पुं०) [निः+स्वन्+अच्] शब्द, ध्वनि।

निकटवर्तिन् (वि०) [निकट+वृत्+णिनि] निकटस्थ, जो पास हो विद्यमान हो।

निकषः [नि+कष्+ल्युट्] दे० 'निकषः' कसौटी।

निकषायित (वि०) [निकष+क्यङ+णिच्+क्त] जो किसी बात के लिए प्रमाण या कसौटी मान लिया गया हो (उदा०—वैदूष्यनिकषायितेयं सभा)।

निकाशः [नि+काश्+घञ्] 1. प्रकाश 2. रहस्य—निकाशस्तु प्रकाशे स्यात्सदृशे रहसि स्मृतः नाना०।

निकृष्टकर्मन् (वि०) [ब० स०] जो निन्द्य कार्यों के करने में व्यस्त है।

निक्वन्नित (वि०) [नि+क्वन्द्+क्त] जिसने खूब क्रन्दन किया हो, शोर मचाया हो (दूषित स्वर से पाठ किया हो)।

निक्षिप्त (वि०) [नि+क्षिप्+क्त] नियुक्त।

निक्षिलेन (अ०) पूर्णतः, सब मिलाकर।

निगदः [नि+गद्+घञ्] सस्वर पाठ।

निगमः [नि+गम्+अच्] 1. प्रतिज्ञा स्वनिगमसमपहाय मत्प्रतिज्ञां ऋतमधिकर्तुमवप्लुतो—भाग० १।९।३७ 2. प्राप्ति—पन्था मन्निगमः स्मृतः—भाग० ११।१९।४२।

निगमनसूत्रम् (नपुं०) वह सूत्र जो किसी अनुमान वाक्य का उपसंहार करता है।

निगमात् (अ०) सारांशतः, संक्षेप से—भाग० १०।१३।३९।

निगुह् (भ्वा० पर०) छिपाना, गुप्त रखना।

निगूढचारिन् (वि०) [क० स०] अज्ञात होकर घूमने वाला।

निगोत्रकः (पुं०) विच्छू।

निग्रहः [नि+ग्रह्+अच्] अतिक्रमण—निग्रहाद्ग्रंथशास्त्राणां महा० १२।२४।१३।

निग्रहणम् [नि+ग्रह्+ल्युट्] युद्ध, लड़ाई।

निघ्नान (वि०) [नि+हन्+शानच्] नाशकर्ता, जो नष्ट करता है।

निचित [नि+चि+क्त] बद्धकोष्ठ, मलावरुद्ध।

निचुलः [नि+चुल्+क] 1. कमल 2. नारियल का पेड़—नाना०।

निचुलय् (चुरा० उभ०) बक्स में बन्द करना, ढकना—निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृताम्—सौन्दर्य०।

निलम्बः [निभृतं लम्बते कामुकैः नि+लम्ब्+अच्] 1. कूल्हा 2. वीणा का स्वनशील फलक 3. ढलान 4. चट्टान।

निलान्तकठिन (वि०) बहुत कठोर, अत्यन्त कड़ा।

नित्य (वि०) [नियमेन भवं नि+त्यप्] 1. अनवरत, लगातार, शाश्वत 2. अनश्वर 3. नियमित, स्थिर 4. आवश्यक 5. सामान्य (विप० नैमित्तिक)। सम०—अनुबद्ध (वि०) सदैव संबद्ध,—अनुवाकः तथ्य की नग्नोक्ति—मै० स० ४।१।४५, अभियुक्त (वि०) लगातार किसी न किसी कार्य में लीन, कालम् (अ०) सदैव, हर समय,—जात (वि०) लगातार उत्पन्न अथ चेन्नित्यजातं भग० २।२६, बुद्धि (वि०) सभी बातों को सतत या निरन्तर मानने वाला, भावः शाश्वतता, नैरन्तर्य, सम एक विचार कि सभी वस्तुएँ सदैव एक समान रहती हैं।

निदाघः [नि+दह्+घञ् कुत्वम्] आन्तरिक गर्मी। सम० भानुः (पुं०) सूर्य निदाघभानमिवाधिदीधितम् शि० १।२४।

निदर्शित (वि०) [नि+दृश्+णिच्+क्त] प्रदर्शित, चित्रित, प्रमाणित।

निदर्शिन् (वि०) [नि+दृश्+णिच्+णिनि] पथप्रदर्शक, उदाहरण प्रस्तुत करने वाला सता बुद्धि पुरस्कृत्य सर्वलोकनिदर्शिनीम् रा० २।१०८।१८।

निदादरिद्र (वि०) [ब० स०] अनिद्रा रोग से ग्रस्त।

निधनम् (नपुं०) [निवृत्तं धनं यस्मात्—दुधाञ्+क्यु] जन्मकुंडली में लग्न से छठी राशि।

निधानम् [नि+धा+ल्युट्] धरोहर।

निन्दनोपमा (स्त्री०) निन्दोपलक्षित उपमा, ऐसी तुलना जिसमें निन्दा प्रकट हो।

निपत् (भ्वा० पर०) विफल होना, अपरिपक्व अवस्था में ही नष्ट हो जाना (जैसे गर्भपात)।

निपाकः [नि+पच्+घञ्] 1. पसीना 2. (कच्चे फल को) पकाना।

निपातः [नि+पत्+घञ्] मिलकर आना, समागम—यासामेव निपातेन कलत्रं नाम जायते—महा० १२।३२०।११५।

निफेनम् (नपुं०) अफ़ीम।

निबर्हित (वि०) [नि+बर्ह्+क्त] नष्ट किया गया, दूर किया गया कृतः कृतार्थोऽस्मि निबर्हितोऽसि—वि० १।२९।

निबिडित (वि०) [नि+वि (बि) ड्+क्त] 1. गुरुकृत,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारी बनाया हुआ, भीड़ से युक्त, मोटा, 2. दाबकर सटाया हुआ, भींचा हुआ – लङ्घाभर्तुर्निविडित--वा० रा० ५।१९ ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1. भरा हुआ 2. गुप्त 3. मूक 4. विनीत 5. दृढ़ 6. एकाकी 7. निष्क्रिय, आलसी । सम०—आचार (वि०) दृढ़ आचरण का व्यक्ति,—स्थित (वि०) गुप्तरूप से विद्यमान ।

निमः (पुं०) लकड़ी की खूंटी, मेख ।

निमित (वि०) [नि+मा+क्त] 1. दे० 'निमित': उत्पादित 2. मापा गया ।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1. ज्ञान का साधन—तस्य निमित्तपरीष्टः—भी० सू० १।१।३ 2. कार्य, उत्सव —एतान्येव निमित्तानि मुनीनामूर्ध्वरेतसाम् – महा० १२।६१।६ । सम० ज्ञः (पुं०) शकुन के आधार पर भविष्यवाणी करने वाला ज्योतिषी, – नैमित्तिकम् कार्य और कारण, मात्रम् केवल उपकरण स्वरूप कारण--भाग० ११।३३ ।

निमेषान्तरम् [ष० त०] एक क्षण का अन्तराल ।

निम्न (वि०) [नि+म्ना+क] 1. गहरा, नीचा 2. अधम कार्य—निम्नेष्वीहां करिष्यन्ति - महा० ३।१९०।२६ । सम०--अभिमुख (वि०) निम्नतर स्तर की ओर बहने वाला कु० ५।५ ।

निम्नित (वि०) [निम्न+इतच्] गहरा, डूबा हुआ ।

निम्बपञ्चकम् (नपुं०) नीम वृक्ष से उत्पन्न पांच पदार्थ —पत्ते, फूल, छिलका, फल और जड ।

निम्बूकपञ्चकम् (नपुं०) नींबू के पाँच भेद (सन्तरा, मुसम्बी, नारंगी, खट्टा या गलगल, कागजी नींबू) ।

नियत (वि०) [नि+यम्+क्त] 1. रोका हुआ, बांधा हुआ 2. आश्रित 3. (व्या० में) अनुदात्त सहित उच्चरित ।

नियमः [नि+यम्+अप्] 1. गुप्त रखना—मन्त्रस्य नियमं कुर्यात् महा० ५।१४१।२० 2. प्रयत्न महा० २।४६।२० । सम० हेतुः विनियमन का कारण, नियमित रखने का कारण ।

नियुक्त (वि०) [नि+युज्+क्त] उपयोग में लाया गया, काम पर लगाया गया ।

नियोक्तव्य (वि०) [नि+युज्+तव्यत्] 1. जिसको कोई कार्य सौंपा जाय 2. नियुक्त किये जाने योग्य 3. जिस पर अभियोग चलाया जाय--मनु० ८।१८१ ।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1. अपरिवर्त्य नियम – न चैष नियोगो दृष्टिपथे नित्यः समास इति भी० सू० १०।६।५ पर शा० भा० 2. सही, यथार्थ –कि० १०।१६ ।

निरङ्क (क) (वि०) [निर्+अङ्क (क)] जो राशि बिना कुछ शेष रहे, पूरी पूरी बँट सके ।

निरधिष्ठान (वि०) [ब० स०] 1. असहाय 2. स्वतंत्र

निरनुग्रह (वि०) [ब० स०] निर्दय, कृपाशून्य, अकृपालु ।

निरनुनासिक (वि०) जो वर्ण नाक से निरपेक्ष हो, जिसमें नाक की सहायता की आवश्यकता न हो ।

निरनुनासिकम् (नपुं०) नारायण भट्ट की एक रचना जिसमें कोई अनुनासिक वर्ण प्रयुक्त नहीं हुआ ।

निरन्धस् (वि०) [ब० स०] भूखा, निराहार ।

निरपवाद (वि०) [ब० स०] 1. कलङ्करहित 2. जिसमें कोई अपवाद न हो ।

निरलंकृतिः (स्त्री०) (काव्य में) अलंकार का अभाव, सरलता ।

निरवसाद (वि०) [ब० स०] प्रसन्न, खुश ।

निरावधि (वि०) [ब० स०] जिसका अन्त दूर नहीं है - नियता लघुता निरायतेः-- कि० २।१४ ।

निरारम्भ (वि०) [ब० स०] सब प्रकार का कार्य करने से मुक्त (अच्छी भावना से), निष्क्रिय ।

निरावर्ण (वि०) [ब० स०] स्फुट, स्पष्ट, प्रकट ।

निरुपभोग (वि०) [ब० स०] उपभोग शून्य ।

निरुपाधिक (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई शर्त न हो, निरपेक्ष ।

निर्दाक्षिण्य (वि०) [ब० स०] जिसमें शिष्टता या शालीनता न हो, अभद्र ।

निर्धौत (वि०) [निर्+धाव्+क्त] धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ–निर्धौतदानामलगण्डभित्तिः रघु० २।४३ ।

निर्नायक (वि०) [ब० स०] जिसका कोई नेता न हो ।

निर्लोज (वि०) [ब० स०] नपुंसक, नामर्द, निश्शक्त ।

निर्मन्तु (वि०) [ब० स०] निष्कलंक, निरोह ।

निर्मान (वि०) [ब० स०] 1. आत्मविश्वास से हीन 2. जिसमें स्वाभिमान न हो ।

निर्लक्ष्य (वि०) [ब० स०] अदृश्य, जो दिखाई न दे ।

निर्लून (वि०) [ब० स०] पूरी तरह कटा हुआ ।

निर्वत्सल (वि०) [ब० स०] स्नेहहीन, जिसमें वात्सल्य का अभाव हो ।

निर्विसङ्ग (वि०) [ब० स०] अनासक्त, उदासीन ।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) निष्पन्नता, निष्पत्ति ।

निर्व्रीलक्ष्य (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म ।

निर्व्यवधान (वि०) [ब० स०] व्यवधानरहित, मुक्त, अनाच्छादित, खुला (स्थान) ।

निर्व्यवस्थ (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई व्यवस्था न रहे, इधर उधर भटकने वाला, असंगत गतियुक्त ।

निर्व्यावृत्ति (वि०) [ब० स०] जिससे कुछ प्राप्ति न हो ।

निर्व्रीड (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निलयः [निर्+इ+अच्] वि० 'लिलयः'—आवासनिरयाद्दीरो निरयादिव सानुजः—रा० च० २। सम०—वर्त्मन् (नपु०) भौतिक अस्तित्व—यासां गृहे निरयवर्त्मनि वर्तता वः—भाग० १०।८२।३१।

निरस्तसंख्य (वि०) [ब० स०] अनन्त, असख्य, अनगिनत।

निराकृत (वि०) [ब० स०] 1. निराकरण किया गया 2. तिरस्कृत।

निरुद्ध (वि०) [नि+रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध 2. भरा पूरा, पूर्ण। सम०—वृत्ति (वि०) कार्य करने में जिसकी गति अवरुद्ध हो गई है वाग्यनिरुद्धवृत्तिकण्ठम्।

निरोधः [नि+रुध्+घञ्] लय, बुझ जाना।

निरूपक (वि०) [नि+रूप्+ण्वुल्] 1. निरूपण करने वाला, पर्यवेक्षक 2. निश्चय करने वाला, घटक।

निरूपित (वि०) [नि+रूप्+क्त] 1. चिह्नित, अंकित 2. नियुक्त 3. निशाना बनाया गया, इंगित।

निर्ऋतिः (स्त्री०) [निर्+ऋ+क्तिन्] 1. मूल नक्षत्र 2. आठ वसुओं में से एक 3. ग्यारह रुद्रों में से एक।

निर्गलित (वि०) [निर्+गल्+क्त] 1. बहा हुआ 2. घुला हुआ, पिघला हुआ।

निर्गयोपमा (स्त्री०) अनुमान पर आश्रित उपमा—काव्या० २।२७।

निर्णिक्त (वि०) [निर्णिज्+क्त] 1. धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. प्रायश्चित्त किया हुआ। सम०—बाहुवलय (वि०) जिसके कडे या चूड़ियाँ स्वच्छ करके चमका दी गई हों,—मनस् (वि०) स्वच्छहृदय, निर्मल मन वाला।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] करार, प्रतिज्ञा—महा० १३।२३।७०।

निर्देश्य (वि०) [निर्+दिश्+यत्] 1. संकेत किये जाने के योग्य 2. निश्चित किये जाने योग्य 3. उद्दोष्य 4. जिसमें पवित्रता होनी चाहिए सुरायाश्च ब्रह्महत्या ·····अनिर्देश्यानि मन्यन्ते महा० १२।१६५।३४।

निर्धूनम् [निर्+धूञ्+ल्युट्] दीर्घ निःश्वास, लहरों को भाँति उठना गिरना।

निर्बन्धपृष्ट (वि०) [त० स०] जिससे आग्रह पूर्वक कोई बात पूछी गई है।

निर्बन्धिन् (वि०) [निर्बन्ध+इनि] आग्रह करने वाला।

निर्भर्त्सनम् [निर्+भर्त्स्+ल्युट्] धमकी देना, अपशब्द कहना, झिड़की देना।

निर्मथिन् (वि०) [निर्मथ+इनि] कुचलने वाला, बिलोने वाला, पीस डालने वाला।

निर्मा [निर्+मा+अङ्] मूल्य, माप, सम।।

निर्माणम् [निर्+मा+ल्युट्] बनना, जन्म होना—पूर्वनिर्माणदग्धा हि कालस्य गतिरीदृशी—रा० ७। १६०।२।

निर्यत् (वि०) [निर्+या+शतृ] बाहर जाता हुआ, निकलता हुआ।

निर्याणम् [निर्+या+ल्युट्] नगर से बाहर जाने का मार्ग।

निर्याणिक (वि०) [निर्याण+ठक्] मोक्ष की ओर ले जाने वाला।

निर्यामकः [निर्+यम्+णिच्+ण्वुल्] सहायक।

निर्योगः [निर्+युज्+घञ्] 1. पूरा करना, सम्पन्न करना, बनाव शृंगार करना—निर्योगात् भूषणान्माल्यात् सर्वस्मादेवं प्रदाय मे—प्रति० १।२६ 2. गाय को खूँटे से बाँधने का रस्सा—भाग० १०।२१।१९।

निर्लोक्य (अ०) [निर्+लुच्+ल्यप्] सोचविचार कर।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] स्तुति—महा० १। १०९।२३।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] प्रदान करना, अर्पण करना।

निर्वापित (वि०) [निर्+वप्+णिच्+क्त] बुझाया हुआ।

निर्वासित (वि०) [निर्+वस्+णिच्+क्त] बहिष्कृत, निष्कासित।

निर्वास्य (वि०) [निर्+वस्+णिच्+यत्] बहिष्कार्य, देश से निकालने के योग्य।

निर्विश् (तुदा० पर०) 1. घर में बस जाना 2. प्रविष्ट होना 3. आगे जाना 4. ऋण परिशोध करना—निर्वेष्टव्यं मया तत्र महा० ५।१४६।१५ 5. किसी के साथ रहना शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विवक्षताम् भाग० १।५।२३।

निर्विष्ट (वि०) [निर्+विश्+क्त] 1. घुसा हुआ, चिपका रहा, जुड़ा रहा 2. शिविर में वर्तमान, डेरा डाले हुए।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना—आत्मनिर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमुलूखलम्- भाग० १०।१०।२६ 2. बदला लेना- भाग० १०।४४।३९।

निर्वारित (वि०) [निर्+वृ+णिच्+क्त] हटाया हुआ, रोका हुआ।

निर्वृत्तमात्र (वि०) जो अभी-अभी समाप्त किया हो।

निर्व्यञ्जक (वि०) [निर्+व्यञ्ज्+ण्वुल्] संकेत करता हुआ, दिग्दर्शन करता हुआ—स्नेहस्य निर्व्यञ्जकः —महावी० ५।६२।

निर्व्यूढ (वि०) [निर्+व्यूह्+क्त] 1. घायल 2. वियुक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्जवः [निर् +व्यध्+घञ्] 1. अन्दर घुस जाना 2. अन्तर्दृष्टि ।

निर्ज्वलित (वि०) [निर् +वि+वस्+क्त] व्यय किया गया, बीत गया, अतीत ।

निर्व्यूढ (वि०) [निर्वि+ऊह्+क्त] 1. समरव्यूह में व्यवस्थित 2. सफल 3. बाहर धकेला गया ।

निर्व्यूहः [निर्वि+ऊह्+क्तिन्] उच्चतम बिन्दु या अंश ।

निर्व्यूहः [निर्वि+ऊह्+अच्] खूंटी—महा० ३।१६०।३९ ।

निर्हरणम् [निर् +हृ+ल्युट्] विषहर, विषनाशक ।

निर्हरिः [निर् +हृ+घञ्] हटाना ।

निर्हारिन् (वि०) [निर्हार+इनि] 1. फैलाने वाला 2. एक प्रकार की सुगन्ध जो और सब सुगन्धों से बढ़िया हो ।

निर्ह्रासः [निर् +ह्रस्+घञ्] छोटा करना, संकुचित करना ।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] घर, आवास, निवास ।

निलायनम् [नि+ली+णिच्+ल्युट्] आँखमिचौनी का खेल खेलना—भाग० १०।११।५९ ।

निवहः [नि+वह्+अच्] हत्या, वध ।

निवातकवचाः (पु०) (ब० व०) एक जनजाति का नाम ।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1. बीज, अन्न के दाने 2. श्राद्ध के अवसर पर पितृतर्पण 3. उपहार । सम० —अञ्जलिः तर्पण के लिए दोनों हाथों की अञ्जलि में लिया हुआ पानी,—अन्नम् यज्ञीय आहार ।

निवारकः [नि+वृ+णिच्+ण्वुल्] प्रतिरक्षक ।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1. घर, मकान, आवास । सम०—भूमिः रहने का स्थान, रचना भवन, मन्दिर, —स्थानम् रहने की जगह ।

निविश् (तुदा० आ०) 1. फेंकना, बन्दूक का निशाना बनाना 2. (मन को) प्रभावित करना ।

निविष्ट (वि०) [नि+विश्+क्त] क्रुष्ट, आवर्षित (देश)।

निवृत् (भ्वा० आ०) 1. वापिस आना 2. भाग जाना 3. बच निकलना 4. समाप्त होना 5. सम्पन्न होना, प्रेर० बाल छोटे कराना ।

निवृत्त (वि०) [नि+वृत्+क्त] जमा हुआ, व्यवस्थित, विनियमित (जैसे कि सूर्य) । सम०—यौवन (वि०) जिसे फिर जवानी दी गई हो, जिसकी जवानी लौट आई हो ।

निशारत्नम् [ष० त०] 1. चन्द्रमा 2. कपूर ।

निशिताशरः [सप्तम्यलुक् समास] निशाचर, राक्षस, पिशाच ।

निश्चायः [निः+चि+घञ्] समाज, सत्संग ।

निश्चारकम् [निः+चर्+ण्वुल्] 1. पुरीत्सर्जन 2. वायु, हवा 3. धृष्टता, दुराग्रह, हठ ।

निश्चिन्तार्थ (वि०) [ब० स०] 1. जिसने अपना मत पक्का कर लिया है 2. यथार्थ न्याय करने वाला ।

निश्चायः [निः+चि+घञ्] सान, सिल्ली, शाणप्रस्तर ।

निश्चायकपतिन्यायः (पुं०) एक नियम जिसके आधार पर कर्मधारय और तत्पुरुष दोनों समासों की प्राप्ति होने पर, पूर्ववर्ती अर्थात् कर्मधारय ही बलीयान् होता है ।

निश्चेकः [नि+चिच्+घञ्] आसुत, सत्व, अर्क ।

निश्चेक्तृ (पुं०) [नि+चिच्+तृच्] पिता, जनक ।

निश्चेचिन् (वि०) [निश्चेक+इनि] 1. प्रत्याख्यान करने वाला, वर्जन करने वाला 2. आगे बढ़ने वाला ।

निश्चम् [निश्च्+अच्] विदाई, प्रस्थान, जानगी ।

निश्चल (वि०) [निश्चल्+अच्] (संगीत० में) अनुच्चरित या अव्यक्त (वाणी) ।

निश्चालनम् [निश्चल्+णिच्+ल्युट्] दूर भगाना, हटाना ।

निश्कृतिः [निः+कृ+क्तिन्] भर्त्सना, झिड़की क्रियास्तवापचारिण्या निश्कृतिः स्यादबूधिका—महा० १२। ३४।३० ।

निश्कर्तृम् [निः+कृष्+अच्] टैक्स लेने के लिए प्रजा का उत्पीड़न ।

निश्क्रान्त (वि०) [निः+क्रम्+क्त] 1. बाहर निकला हुआ 2. आगे आया हुआ—अर्धनिश्क्रान्त एवासौ—दु० स० ३।३४ ।

निश्टनः [निः+तनु+अच्] कराहना, आह भरना— रा० ७।२१।१२ ।

निश्ठापित (वि०) [निः+स्था+णिच्+क्त] सम्पन्न, पूरा किया गया—माल० ६ ।

निश्ठानित (वि०) [निश्ठान+इतच्] मिर्च मसाले के छौंक से युक्त, अचार चटनी आदि सहित ।

निश्ठित (वि०) [नि+श्ठिव्+क्त] जिसके ऊपर थूका गया हो भाग० ११।२२।५९ ।

निश्पतः [निः+पत्+घञ्] धड़कन, कम्पन ।

निश्पन्द (वि०) [नि+स्पन्द्+अच्] गतिहीन, अचल, स्थिर, न्दः (पुं०) मित्रता का बन्धन—आर्योऽयं देवि निश्पन्दः—रा० ३।५५।३५ ।

निश्भूतम् [निः+भू+क्त] धर्मशाला, धर्मार्थ बना विश्रामभवन ।

निश्कोश (वि०) [ब० स०] बिना म्यान का ।

निश्चक्रिक (वि०) [ब० स०] बिना किसी चालाकी के, ईमानदार, सच्चा ।

निश्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] भली-भाँति पकाया हुआ ।

निश्परायण (वि०) [ब० स०] जिसे कोई उपदेश न मिला हो, असहाय ।

निश्पुराण (वि०) [ब० स०] अभूतपूर्व, नया, नूतन ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निरवग्रहः (वि०) [ब० स०] जो दान ग्रहण नहीं करता है, उपहार नहीं लेता है।
निराशयाशः (वि०) [ब० स०] निराश, हताश।
निरुपधिः (वि०) [ब० स०] जो खड़ी से अभी आया है, नया (कपड़ा)।
निःशर्करः (वि०) [ब० स०] जिसमें कंकड़ न हों, रोड़े आदियों से मुक्त।
निःसहः (वि०) [ब० स०] 1. क्लान्त 2. असहिष्णु।
निःसूत्रः (वि०) [ब० स०] असहाय, साहाय्यहीन।
निःस्वनः (वि०) [ब० स०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।
निःस्पर्शः (वि०) [ब० स०] कठोर, कड़ा, रूखा।
निसर्गनिपुणः (वि०) [ष० त०] स्वभावतः चतुर।
निसृष्टः (वि०) [नि+सृज्+क्त] सुलझाया हुआ (जैसे आग)।
निस्तुषत्वम् [ब० स०] तुषों का न होना, दोषराहित्य, दोषों का अभाव।
निस्तोदः [निः+तुद्+घञ्] शूल जाना, चुभ जाना, डंक मारना।
निहित (वि०) [नि+धा+क्त] (सेना की भाँति) कैम्प लगाए हुए, शिविरस्थ। सम०—हृदय (वि०) कोमल हृदय, कृपालु।
निह्नवः [नि+हनु+अप्] 1. मुकर जाना 2. वचन-विरोध, विरोधोक्ति।
नीचगामिन् (वि०) अधम मार्ग का अनुसरण करने वाला।
नीतिशास्त्रकम् (नपुं०) भर्तृहरिकृत नीतिविषयक सौ श्लोकों का संग्रह।
नीरचर (वि०) [तृ० स०] जल में रहने वाला, जल में घूमने वाला।
नीरजूती (स्त्री०) हल्दी।
नीराजित (वि०) [निर्+राज्+क्त] देवताओं के दीप तथा ज्योति से सुसज्जित, प्रभासित।
नीलधिटः (पुं०) राजकीय प्रशस्तियों तथा समाचारों का संग्रह।
नीलस्नेहः (पुं०) अतिशय प्रेम।
नीवि:-वी (स्त्री०) [नि+व्ये+इञ्, य लोप. पूर्वस्य दीर्घः] कारागार--नीवी स्याद्बन्धनागारे धने स्त्री-वस्त्रबन्धने नाना०।
नुत्तिः [नुद्+क्तिन्] हटाना, दूर करना।
नूनभावः (पुं०) सम्भाव्यता, प्रायिकता।
नूनभावात् (अ०) कदाचित्, सम्भवतः।
नृ [नी+ऋन् डिच्च] (पुं० कर्तृ० ए० ब० ना) 1. मनुष्य, व्यक्ति (चाहे पुरुष हो या स्त्री) 2. मनुष्य जाति 3. पुंल्लिंग शब्द 4. नेता। सम०—कार्यः मनुष्योचित कार्य, शौर्य,—क्षम (वि०) मनुष्यमात्री —पात्रम् बड़ा भवन, बड़ी कमरा,—वाह्यम् पालकी।
नृत्तम् (नपुं०) [नृत्+क्त, क्यप् वा] नाच, अभिनय। **नृत्यम्**] सम०— हस्तः नाचते समय हाथों की स्थिति।
नेती (स्त्री०) योग की एक क्रिया—नाक में डोरी डाल कर मुंह में से निकालना।
नेत्रम् [नी+ष्ट्रन्] 1. खटमल—नाना० 2. बल्कल, वृक्ष की छाल—नाना० 3. आँख। सम०— कार्मणम् आँखों के लिए एक जादू, चपल (वि०) जिसकी आँखें अधिक झपकती हों, आँखें झपकाने वाला,—पाकः आँखों की सूजन,—क्षेप: 1. आँख मिचौनी खेलना 2. आँखों में धूल झोंकना, धोखा देना।
नेत्र्यम् (नपुं०) आँखों के लिए उपयुक्त।
नेदीयोमरणम् (वि०) [ब० स०] जिसकी मृत्यु निकट ही है, मरणासन्न—राज० ४।३१।
नेदिष्ठम् (वि०) शब्दायमान, कोलाहल करने वाला।
नेपथ्यगृहम् (नपुं०) शृंगार भवन, प्रसाधनकक्ष।
नेभिनुन्नवारम् (नपुं०) पहिए का घेरा और नाभि।
नेय (वि०) [नी+यत्] 1. ले जाये जाने के योग्य 2. शिक्षा दिये जाने के योग्य—अनेयः शिक्षयितुमयोग्यः—महा० ५।७४।४ पर टीका।
नैककोटिद्वारः (पुं०) करोड़पति, कोट्यधीश।
नैगमः [निगम+अण्] यास्ककृत निरुक्त का एक काण्ड। सम०— काण्डः देः 'नैगम'।
नैद्रं (वि०) [निद्रा+अण्] 1. शयालु, निद्रालु 2. बन्द (फूल जिसकी पंखड़ी अभी बन्द हो)।
नैमित्तिक (वि०) [निमित्त+ठक्] 1. किसी कारण से संबद्ध 2. असाधारण। सम०—कर्मन् (नपुं०) किसी विशेष कारण से होने वाला संस्कार (विप० नित्य-कर्म),—लयः ब्रह्म में लीन हो जाना, ब्राह्मलय (यह लय चार हजार वर्ष के उपरान्त होता है)।
नैर्ऋत्य (वि०) [निर्ऋति+अण्] दक्षिण-पश्चिम दिशाओं से संबंध रखने वाला।
नैश्चिन्त्यम् [निश्चिन्त+ष्यञ्] चिन्ता से मुक्त होना।
नैष्कर्तृक (वि०) [निष्कर्तृ+ठञ्] लकड़ी काटने वाला।
नैष्कर्म्यम् [निष्कर्म+ष्यञ्] भौतिक सुखों के प्रति उदासीनता (बुद्ध०)।
नैष्ठिक (वि०) [निष्ठा+ठक्] 1. अन्तिम, उपसंहार परक 2. निश्चित 3. उच्चतम, पूर्ण 4. आचार्य, अनिवार्य—महा० १२।६३।२३। सम० ब्रह्मचारिन् (वि०) जीवनपर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाला।
नैहारः [नीहार+अण्] कुहरा या धुंध से संबन्ध रखने वाला।
नौघट्टः [ष० त०] किश्तियों से बनाया गया पुल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यस्तः [नि+अस्त] 1. सामीप्य, सन्निकटता 2. पश्चिमी पार्श्व—शि० २।६८।१२ ।

न्यग्रहः [नि+अव+ग्रह्+अच्] समस्त शब्द के प्रथम खण्ड का अन्तिम स्वर जिस पर स्वराघात नहीं किया गया है ।

न्यस्त (वि०) [नि+अस्+क्त] 1. धारण किया हुआ, वस्त्र पहने हुए 2. (स्वर की भाँति) मन्दस्वर से युक्त । सम० **अस्त्रास्य** (वि०) रख दिए जाने के योग्य, स्थिर किये जाने योग्य,—**चिह्न** (वि०) बाह्य चिह्न से मुक्त ।

न्यासः [नि+अस्+घञ्] लिखित पाठ्य या साहित्यिक मूल पाठ ।

न्यायः [नि+इ+घञ्] 1. प्रणाली, रीति, नियम, व्यवस्था 2. औचित्य 3. विधि 4. धर्म 5. न्यायालय द्वारा उद्घोषित निर्णय 6. नीति 7. अच्छा प्रशासन 8. सादृश्य 9. विश्वव्यापी नियम । सम०—**आगत** (वि०) ईमानदारी से प्राप्त,—**आभासः** मिथ्यातर्क जिसमें सत्य की झलक आती हो, एक रूपता का आभास, —**उपेत** (वि०) न्यायानुमत, न्याय्य, अनुमति-प्राप्त, सही ढंग से माना हुआ,—**निर्णयन** (वि०) यथार्थ न्याय करने वाला,—**विद्या,-शास्त्रम्** तर्कविद्या, तर्कशास्त्र,—**संवद्ध** (वि०) युक्तियुक्त, तर्कसंगत ।

न्यूनपञ्चाशद्भावः (पुं०) ऐसा मूर्ख व्यक्ति जिसमें मानवता के गुण पचास प्रतिशत से भी कम हों ।

न्यूनता (स्त्री०) 1. कमी, हीनता 2. घटियापन, अधूरापन ।

प

पंश्,-स् (भ्वा० चुरा० पर०) नष्ट करना ।

पक्तिः [पच्+क्तिन्] पवित्रीकरण,—शरीरपक्तिः कर्मणि—महा० १२।२७०।३८ ।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1. पका हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ 2. पूर्णविकसित । सम०—**कषाय** (वि०) जिसके मनोवेग और विषय वासनाएँ शान्त हो गई हैं,—**गात्र** (वि०) पके गात वाला, दुर्बल शरीर, क्षीणकाय ।

पङ्क्ति [पञ्च्+क्तिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. लाइन, श्रेणी । सम० **क्रमः** आनुपूर्व्य, परम्परा, क्रमिक अनुगमन ।

पङ्क्तिशः (अ०) पंक्तिवार, लाइनों में ।

पङ्क्तिवासरः (पुं०) शनिवार ।

पक्ष्मन् [पक्ष्+मनिन्] 1. गलमच्छ· सिंहस्य पक्ष्माणि मुखाल्लूनासि—महा० ३।२६८।६ 2. (हरिण के) बाल · निसर्गचित्रोज्ज्वलसूक्ष्मपक्ष्मणा—शि० १।८ ।

पक्ष्मलदृश् (स्त्री०) [पक्ष्मल+दृश्+क्विप्] जिस स्त्री की पलकें लम्बी हों ।

पचमानक (वि०) [पच्+शानच्, स्वार्थे कन्] अपना भोजन स्वयं पकाने वाला ।

पञ्चनिका (स्त्री०) हल का एक भाग ।

पञ्चन् (सं० वि०—सर्वेद ब० व०) [पञ्च्+कनिन्] (समास में 'पञ्चन्' के अन्तिम 'न्' का लोप हो जाता है) पाँच । सम० **आनन**ः,—**आस्य**ः 1. सिंह 2. किसी भी एक विषय में अन्यतम जैसे कि 'वैद्य पञ्चानन', —**आयतनम्**,—**आयतनी** पञ्च देवताओं (सूर्य, अम्बिका, विष्णु, गणपति और शङ्कर) का समूह जो दैनिक पूजा में सम्मिलित है,—**उपचारः** पूजा के पाँच पदार्थ (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य),—**कृत्यम्** दिव्य शक्तियों के पांच कार्य-सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और अनुग्रह,—**क्षारम्** एक छन्द का नाम,—**धारणक** पाँचों तत्त्वों की सहायता से स्थिर या जीवित, —**पादिका** शंकर के ब्रह्म सूत्रभाष्य पर पद्मपादाचार्य रचित टीका,—**शत्रम्** (नपुं०) 1. भासकृत एक नाटक का नाम, दर्शन शास्त्र पर नारद द्वारा रचित एक ग्रंथ, **शीलम्** सामाजिक आचरण के पाँच नियम जिन का प्रचार बुद्ध ने किया था,—**शुक्लम्** उत्तरायण, शुक्लपक्ष, दिन, हरिवंशर और सिद्ध क्षेत्र का संयोग,—**सिद्धान्तो** (स्त्री०) ज्योतिष के पांच सिद्धान्त ।

पञ्चम (वि०) [पञ्चन्+डट्+मट्] पाँचवाँ । सम० —**आस्यः** कोयल,—**स्वरम्** संगीत के स्वर का नाम ।

पञ्जिका (स्त्री०) रजिस्टर या अभिलेख पुस्तिका ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चीकरणम् [पञ्च+च्वि+कृ+ल्युट्] पाँचों तत्त्वों का मेल जिससे फिर नाना प्रकार के पदार्थों का निर्माण होता है।

पटः-टम् [पट्+क] कपड़ा, वस्त्र। सम० अञ्चलः वस्त्र की गोट, झालर,—उत्तरीयम् चुन्नी, चादर, ओढ़ने का वस्त्र,—वाद्यम् मजीरा, करताल, झांझ, —वासकः सुगन्धित चूर्ण।

पटलकः,—कम् [पट्+कलच्, स्वार्थे कन् च] 1. पर्दा, घूंघट 2. फाटक।

पटलिका (स्त्री०) राशि, समुच्चय जैसा कि 'धूलिपटलिका' में।

पटहवेला [ष० त०] वह समय जब कि ढोल बजाया जाता है।

पटुकरण (वि०) [ब० स०] जिसके अंग स्वस्थ हैं —सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः —मेघ० ५।

पट्ट:,—ट्टम् [पट्+क्त, डत्वभावः] 1. (लिखने के लिए) तख्ती 2. राजकीय प्रशस्ति 3. रेशम। सम० —अंशुकः रेशमी वस्त्र, —बन्धः, बन्धनम् सिर पर पगड़ी बांधना, या मुकुट बांधना।

पट्टकिलः [पट्ट+कन्+इलच्] एक भृत्यवर्ग को किराये पर जोतने वाला, पट्टेदार।

पणः [पण्+अप्] 1. पासे से खेलना, दाँव लगाकर खेलना 2. दाव लगा कर, या होड़ बद कर खेलना 3. दाँव पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त 5. पैसा। सम०—अयः लाभ ग्रहण करना,—क्रिया 1. दाँव पर रखना 2. संघर्ष करना, मुकाबला करना।

पण्य (वि०) [पण्+यत्] 1. बेचने के योग्य, विक्रयार्थ पदार्थ 2. व्यापार, वाणिज्य 3. मूल्य। सम० —अजः व्यापारी,—वासी भाड़े की सेविका, परिणीता रखैल स्त्री,—संस्था बर्तनों की दुकान।

पण्यफलम् (नपुं०) जन्मकुंडली में लग्न से दूसरा, आठवाँ, पाँचवाँ और ग्यारहवाँ स्थान।

पण्डिती (स्त्री०) विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता।

पण्ड्रः,—कः (पुं०) हीजड़ा, क्लीव।

पतंगः [पतन् गच्छतीति गम्+ड नि०] 1. घोड़ा 2. सूर्य 3. गेंद 4. पारा 5. टिड्डा। सम० शावः पक्षी का बच्चा।

पतङ्गिका [पतङ्ग+कन्+टाप्, इत्वम्] (स्त्री०) 1. धनुष की डोरी 2. छोटा पक्षी 3. मधुमक्षिका।

पतत्प्रकर्ष (वि०) 1. जो तर्कसंगत न हो 2. काव्य सौन्दर्य से रहित।

पतात्रः [पत्+आक] बाण का निशाना लगाते समय अंगुलियों की विशेष मुद्रा।

पताका [पत्+आक+टाप्] प्रचार, प्रसार—रम्या इति प्राप्तवतीः पताकाः शि० ३।५३। सम० —दण्डः ध्वजयष्टिका, झंडे का डंडा।

पताकिन् (वि०) [पताक+इनि] झंडाधारी, पुं० रथ।

पतितगर्भा (स्त्री०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका गर्भ-पात हो गया हो।

पतितवृत्त (वि०) [ब० स०] लम्पटता का जीवन बिताने वाला, अय्याश।

पत्काविन् (पुं०) पदाति, पैदल सिपाही।

पत्त्यध्यक्षः [पत्ति+अध्यक्ष] पैदल सेना का दलनायक, ब्रिगेडियर, उपचमूपति।

पत्रम् [पत्+ष्ट्रन्] 1. पत्ता (वृक्ष का) 2. (फूल की) पत्ती 3. पत्र, चिट्ठी 4. पक्षी का बाजू 5. तलवार या चाकू का फल। सम०—तण्डुला स्त्री, महिला, —वारकः आरा, लकड़ी आदि चीरने का यन्त्र, —स्नायः बाण में तीर लगाना,—पिशाचिका परों की बनी टोपी।

पत्रल (वि०) [पत्र+लच्] पत्तों से समृद्ध।

पथिकः [पथिन्+कन्] मार्ग चलने वाला, यात्री। सम०—जनः एक यात्री, या यात्रियों का समूह।

पथिन् (पुं०) [पथ्+इनि] 1. मार्ग 2. यात्रा 3. पराग सम० अशनम् मार्ग में खाने के लिए भोज्य पदार्थ।

पदम् [पद्+अच्] 1. पैर 2. पग 3. पदचिह्न 4. सिक्का अष्टापद पदस्थाने दक्षमूर्देव लक्ष्यते महा० १२। ९९८।४०। सम०—कमलम् चरण कमल, पैर रूपी कमल, जातम् शब्द समूह, रचना 1. साहित्यिक कृति 2. शब्द विन्यास, सन्धिः शब्दों का श्रुति-मधुर मेल।

पदातिलघ (वि०) अतिनम्र, अत्यन्त विनीत।

पदोद्धृ (तना० उभ०) वर्णमूल निकालना।

पद्मम् [पद्+मन्] 1. कमल 2. शरीर की विशेषस्थिति, पद्मासन लगा कर बैठना 3. इन्द्रजाल से संबद्ध आठ प्रकार के कोषों में से 'पद्मिनी' नामक कोष। सम० प्रिया 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. अरस्कार की पत्नी मनसा देवी, मुद्रा तन्त्रशास्त्र का प्रतीक।

पद्माशः [अ०] [पद्म+शस्] अरबों की संख्या में।

परिनीलकण्टकः (पुं०) एक प्रकार का कोढ़।

पद्धः (पुं०) [पद्+रक्] ग्राम मार्ग।

पनस्यु (वि०) प्रशंसा के योग्य बात प्रकट करने वाला, यशस्वी।

पपी (पुं०) [पा+ई, हित्वं किच्च] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा।

पयोरयः [ष० त०] नदी की धारा।

पर (वि०) [पृ+अप्, अच् वा] 1. दूसरा 2. दूर का 3. इसके बाद का 4. उच्चतर श्रेष्ठ 5. उच्चतम,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमुख 6. विदेशी 7. प्रतिकूल 8. अन्तिम,-रः (पुं०) 1. दूसरा 2. शत्रु 3. सर्वशक्तिमान्, -रम् (नपुं०) 1. उच्चतम बिन्दु 2. परमात्मा 3. मोक्ष 4. शब्द का गौण अर्थ 5. भावी लोक, इससे परे की दुनिया। सम०—अयनम् (परायणम्) 1. उच्चतम पदार्थ 2. सारांश 3. दृढ़ भक्ति, 4. धार्मिक आश्रम,—अर्थः 1. मुक्ति-महा० १२।२८८।९, 2. दूसरों के लिए उपयोगी पदार्थ--संघात-परार्थत्वात्--सां० का० १७,—अर्थ (वि०) दिअ०— असाढाटीत् संख्ये पराध्यैवत्—भट्टि० ९।६४,—अवसथशायिन् (वि०) दूसरे के घर सोने वाला, आहित (वि०) दूसरों के द्वारा पालित पोषित, दास,—उद्वृत्तः कोयल,—उपसर्पणम् दूसरों के निकट आना,--कल (वि०) भावी समय से संबंध रखने वाला,—तर्कः भिक्षाटो, भिक्षुक,

तल्पगामिन् (वि०) दूसरे की पत्नी के साथ सोने वाला,—परिग्रहः दूसरों की संपत्ति (जैसे कि 'पत्नी') ग० ५, परिभवः दूसरों से अपमान या तिरस्कार प्राप्त करना, पाकनिवृत्त (वि०) जो दूसरों के यहाँ भोजन नहीं करता,—पाकरत (वि०) जो अपने पालन पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर करता है,—पाकवृत्तिः दूसरों के घर पके भोजन की चाह करना।

परः (अ०) [पर+अल्] अन्यथा, वरना चोल० ५।५।

परम (वि०) [परं परस्त्वं माति-क] 1. अत्यन्त दूर का, अन्तिम 2. उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम 3. मूल्य, प्रमुख, प्रधान,—मम् (अ०) 1. अच्छा, बहुत अच्छा, हां 2. अत्यन्त। सम० अक्षरम् पूनीत अक्षर 'ॐ',—आयुधम् चक्र नामक शस्त्र--रा० ६।५८।१२, —काष्ठः मङ्गलमय क्षण,—गहन (वि०) अत्यन्त रहस्ययुक्त,—पुंस् परमात्मा, परमपूरुष,—परम (वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ, राजः सर्वोपरि राजा,--समुदय (वि०) अत्यन्त सफल,--सम्मत (वि०) परमादरणीय, अत्यन्त माननीय।

परम्परयात (वि०) [त० स०] परम्परा प्राप्त, क्रमानुसार प्राप्त।

परम्परसम्बन्धः (पुं०) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध।

परम्परित (वि०) [परम्परा+इतच्] शृंखला के रूप में, श्रेणीबद्ध।

परशुमुद्रा (स्त्री०) [त० स०] तंत्रशास्त्र में वर्णित अंगस्थिति।

परस्परविलक्षण (वि०) आपस में एक दूसरे का विरोध करने वाला।

परस्परव्यावृत्तिः (स्त्री०) आपसी निराकरण, पारस्परिक बहिष्करण।

पराक् दे० 'पराच्'।

पराकृष्ट (वि०) [परा+कृष्+क्त] तिरस्कृत, अप्रतिष्ठित, निरादृत।

पराक्षिप्त (वि०) [परा+क्षिप्+क्त] उथलपुथल, बलात् दूर किया गया।

परागः [परा+गम्+ड] सुगन्धित चूर्ण, पुष्परज।

पराच् (वि०) [परा+अञ्च्+क्विन्] अनावृत्त, जो दोहराया न गया हो—अनभ्यासे पराक् शब्दस्य तादर्थ्यात्--मैं० सं० १०।५।४५ पर शा० भा०। सम०—दृश् (वि०) बहिर्मुखी, जिसने अपनी आंख बाहरी संसार की ओर लगाई हुई है।

पराचीन (वि०) [पराच्+ख] 1. अनुपयुक्त 2. बाहरी।

पराटीनम् [परा+ङी+ल्युट्] पीछे की ओर उड़ना - पक्षवाद्गतिः पराटीनम्—महा० ८।४१।२७।

पराभवः (पुं०) [परा+भू+अप्] ६० वर्ष के संवत्सर चक्र में चालीसवाँ वर्ष।

परालिखत (वि०) [परा+सिच्+क्त] फेंका हुआ, दूर डाला हुआ।

परासेधः (पुं०) बन्दी बनाना, कारागार में डालना।

परिकल्पित (वि०) [परि+कल्पृ+ल्युट्] विभक्त, बँटा हुआ।

परिक्रमः [परि+क्रम्+घञ्] नदी के प्रवाह का अनुसरण करना। सम०—शङ्कः बकरी।

परिक्रिया (स्त्री०) [प्रा० स०] व्यायाम करना।

परिक्षत (वि०) [परि+क्षण्+क्त] घायल, आहत।

परिक्षिप् (तुदा० पर०) बुरा भला कहना--प्रणयाच्चाभिमानाच्च परिक्षेपे रावणम्--रा० २।३०।२।

परिगढ (वि०) [परि+गाह+क्त] बहुत अधिक, अत्यन्त।

परिगणित (वि०) [परि+गुण्+क्त] 1. जोड़ कर या गणा करके परिवर्धित 2. पुनरुक्त, पुनरावृत्त।

परिग्रहः [परि+ग्रह्+अप्] 1. शरीर 2. प्रशासन। सम०—पत्नियों की बड़ी संख्या—परिग्रहबहुत्वेपि द्वे प्रतिष्ठे--या० ३।

परिघट्टा (वि०) [परि+ग्रह्+णिच्+ण्यत्] नम्रता तथा शिष्टता पूर्वक सम्बोधित किये जाने के योग्य।

परिघृष्ट (वि०) [क० स०] लोहे की भाँति भारी।

परिघ्वस्तम्भः (पुं०) चौखट, दरवाजे की बाजू।

परिज्ञा (जुहो० पर०) सर्वत्र चुम्बन करना।

परिज्वरणतन्त्रम् (नपुं०) श्राद्ध के अनुष्ठान की विशेष रीति।

परिज्ञारिका [परि+चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] सेविका दासी, सेवा करने वाली नौकरानी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिहारिसम् [परि+हर्+णिच्+क्त] आमोद, प्रमोद।

परिह्यपनम् [परि+ह्यु+ल्युट्] 1. पतित होना, गिर जाना 2. विचलित होना, भटकना।

परिह्वीर्ण (वि०) [परि+ह्वृ+क्त] 1. घिसा हुआ, मुरझाया हुआ 2. पचाया हुआ।

परिणामः [परि+नम्+घञ्] 1. परिवर्तन, रूपान्तरण 2. पचाना 3. फल 4. पकना, पूर्णतः विकसित होना 5. अन्त, समाप्ति 6. बुढ़ापा। सम० -जम् अपच के कारण उत्पन्न उदर पीडा, —मय (वि०) लगभग समाप्त होने को,—वादः विकासवाद का सांख्य सिद्धान्त।

परिणीतिः (स्त्री०) [परि+नी+क्तिन्] विवाह।

परिणेतव्य (वि०) [परि+नी+तव्यत्] 1. जिसका अभी विवाह होना है 2. जिसका विनिमय होना है।

परितापिन् (वि०) [परिताप+णिनि] तङ्ग करने वाला, उत्पीडक, कष्ट देने वाला।

परितृप्तिः [परि+तृप्+क्तिन्] पूर्ण सन्तोष।

परितृषित (वि०) [परि+तृष्+क्त] लालायित, उत्सुक, आतुरतापूर्वक प्रबल इच्छा रखने वाला।

परित्यज् (स्वा० पर०) किश्ती से उतरना।

परित्याज्य (वि०) [परि+त्यज्+णिच्+यत्] भुलाये जाने योग्य, त्याग दिए जाने के योग्य।

परिविष्ट (वि०) [परि+विश्+क्त] जतलाया गया, ध्यान दिलाया गया।

परिधिः [परि+धा+कि] 1. दीवार बाड़ 2. चन्द्र या सूर्य के चारों ओर धुन्धला आभास 3. क्षितिज, दिशा। सम०—उपान्त (वि०) समुद्र ही जिसकी सीमा है।

परिधारणा (स्त्री०) संतोष, धैर्य।

परिधीर (वि०) [प्रा० स०] बहुत गहरा (जैसे स्वर या शब्द)।

परिध्वंसः [परि+ध्वंस+घञ्] 1. वर्ण संकरता 2. ग्रहण।

परिनिष्ठित (वि०) [परि+नि+स्था+क्त] 1. नितान्त पूर्ण 2. सम्पन्न परिनिष्ठितकार्यो हि —महा० १२। २३८।१३।

परिपिच्छम् (नपुं०) मोर का पंख, चन्दा; चन्दे को सजावट की दृष्टि से लगाना—गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय—भाग० १०।१४।१।

परिपृच्छिक (वि०) [परिपृच्छा+ठक्] जिसे कोई वस्तु माँगने पर ही मिलती है।

परिप्लोढः [परिप्लुव्+घञ्] आन्तरिक गर्भी।

परिबर्हः [परिबृह्+घञ्] सजावट का सामान, चंवर आदि राजचिह्न—भाग० ४।३।९।

परिबोधः [परिबुध्+घञ्] तर्क, युक्ति, कारण।

परिभाष्यम् [परिभण्+ण+ण्यत्] गृहस्थ की आवश्यकताएँ।

परिभू (स्वा० पर०) 1. आगे बढ़ जाना 2. सूखा देना, संतृप्त करना—एवमेवेन्द्रियग्रामं शनैः संपरिभावयेत् —महा० १२।१९५।१९।

परिभवनिधानम् [ष० त०] घृणा का पदार्थ, घृणा का पात्र।

परिभावना [परि भू+णिच्+युच्] 1. घृणा 2. (नाटक०) जिज्ञासा को जगाने वाले शब्द।

परिभूत (वि०) [परि भू+क्त] 1. पराजित, हराया हुआ 2. अपमानित।

परिभृष्ट (वि०) [परि+भ्रस्ज्+क्त] तला हुआ, भुना हुआ।

परिमण्डित (वि०) [परि+मण्ड्+क्त] अलंकृत, सुभूषित, सजाया हुआ।

परिमितवयस् (वि०) [ब० स०] बाल्य अवस्था का, बच्चा, थोड़ी उम्र का।

परिमोटनम् [परिमुट्+ल्युट्] घटकाना, फोड़ना, तोड़ना।

परियन्त्रणा [परि+यन्त्र्+युच्+टाप्] प्रतिबन्ध, रोक।

परिरब्ध (वि०) [परि+रभ्+क्त] आलिङ्गित।

परिलङ्घनम् (नपुं०) [परि+लङ्घ्+ल्युट्] 1. ऊपर से फांदना 2. अतिक्रमण करना।

परिलीढ (वि०) [परि+लिह्+क्त] चारों ओर से चाटा हुआ।

परिलोलित (वि०) [परिलुल्+णिच्+क्त] उछाला हुआ।

परिवत्सः (पुं०) बछड़ा, गाय का बच्चा।

परि (री) वादकथा [ष० त०] निन्दनीय बात चीत, बदनामी की बातें।

परि (री) वादकरः (पुं०) [अपवाद, मिथ्यानिन्दा, कलंक।

परिवर्जित (वि०) [परि+वृज्+णिच्+क्त] लपेटा हुआ, फुण्डलित किया हुआ, लच्छा बनाया हुआ। सम० -संख्य (वि०) असंख्य, अनगिनत।

परिविंशत् (वि०) पूरे बीस कम से कम बीस।

परिविष्ट (वि०) [परि+विश्+क्त] 1. घेरा हुआ 2. वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए 3. उपहृत (जैसे कि भोजन)।

परि (री) वृतः [परिवृत्+घञ्] अव्यवस्था, व्यतिक्रम।

परिवर्तित (वि०) [परिवृत्+क्त] 1. एक ओर किया हुआ, हटाया हुआ 2. पूरी तरह खोज किया गया।

परिवृक्ण (वि०) [परि+व्रश्च्+क्त] विकृति, कटा-छंटा, खण्डित।

परिवे (स्वा० उभ०) 1. अन्तर्ग्रथित करना, जोड़ना 2. बांधना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिवेल्लित (वि०) [परिवेल्ल्+क्त] घिरा हुआ --भामि० २।१८।

परिशङ्कः [परिशङ्क्+अ+टाप्] 1. संशय, आशंका 2. आशा, प्रत्याशा।

परिशङ्कित (वि०) [परिशङ्क्+क्त] सन्देहित, वर्जित।

परिशुश्रूषा [परिशुश्रूष्+सन्+टाप्, ह्रस्वः] बिना विचार आज्ञापालन।

परिष्प (स्प) न्दः [परिस्पन्द्+घञ्] शौर्य, पराक्रम।

परिसंक्षय् (अदा० आ०) 1. पूर्णतः करना, निकाल देना मै० सं० १।१।६१ पर शा० भा० 2. गिनना।

परिसाधन् (नपुं०) सामग्रीयुक्त जिसकी विरल आवृत्ति होती है।

परिसरः [परि+सृ+घ] शिरा, धमनी, वाहिनी।

परिस्कन्धः [परि+स्कन्द्+घञ्] संग्रह, समुच्चय।

परिस्तोमः [परि+स्तोम्+अच्] 1. रंगीन कपड़ा जो हाथी पर डाला जाता है 2. यज्ञपात्र।

परिस्रुत (वि०) [परि+स्रु+क्त] बहा हुआ, बूंद-बूंद करके टपका हुआ।

परिहूत (वि०) [परि+हूय+क्त] आमंत्रित, बुलाया हुआ।

परिष्टु (भ्वा० पर०) 1. निराकरण करना 2. आवृत्ति करना 3. पोषण करना।

परिहारः [परि+हृ+घञ्] 1. त्यागना, छोड़ना 2. हटाना, दूर करना 3. निराकरण करना 4. टालना 5. शुल्क से मुक्ति। सम०--विशुद्धिः (स्त्री०) लपश्चरण द्वारा पवित्रीकरण (जैन०),—सू वह गाय जो बहुत अधिक दिनों के पश्चात् बछड़ा सूती है।

परीष्ट (वि०) [परि+इष्+क्त] वाञ्छनीय, उत्तम, बढ़िया--अन्ते परीष्टगतये हरये नमस्ते भाग० ६।९।४५।

पलघाक्षेपः [क० स०] कठोर शब्दों में व्यक्त किया गया आक्षेप, ऐतराज़।

परेतकल्पः (पुं०) मृतप्राय: मरे हुए के समान।

परेतकालः (पुं०) मृत्यु का समय।

परोक्षजित् (वि०) [परोक्ष+जि+क्विप्] जो विजय प्राप्त करता हुआ किसी से देखा नहीं जाता है, अदृष्ट-विजयी।

परोक्षबुद्धि (वि०) [ब० स०] तटस्थ, उदासीन।

पलनालः (पुं०) पत्ते के रूप में डंठल।

पर्णालिः [पर्ण+आलच्] 1. किसी 2. एकाकी संघर्ष।

पर्पटौदनः [द्व० स०] पर्पटमिश्रित चावल।

पर्यङ्कशय (वि०) [त० स०] पीठासन पर विराजमान।

पर्यन्तस्थित (वि०) [त० स०] सीमा पर विद्यमान।

पर्ययः [परि+इ+अच्] हानि, नाश--स्कन्धपर्ययः -- महा० १३।१५।२६।

पर्यवस्थित (वि०) [परि+अव+स्था+क्त] 1. पड़ाव डाला हुआ 2. अधिकृत 3. स्वस्थ, शान्त।

पर्यादानम् [परि+आ+दा+ल्युट्] अन्त, समाप्ति।

पर्याप्तकाम (वि०) [ब० स०] जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हों।

पर्यापतत (वि०) [परि+आ+पत्+शतृ] शीघ्रता करता हुआ, तेजी के साथ दौड़ता हुआ।

पर्याम्नात (वि०) [परि+आ+म्ना+क्त] विख्यात, प्रसिद्ध।

पर्यायः [परि+इ+घञ्] 1. अन्त—पर्यायकाले घर्षस्य प्राप्ते कलिरजायत - महा० ५।७४।१२ 2. एक अलंकार का नाम - काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, सा० द० ७३३। सम० -क्रमः परम्परा का सिलसिला।

पर्यायत (वि०) [परि+आ+यम्+क्त] अत्यन्त लम्बा।

पर्यासित (वि०) [परि+अस्+णिच्+क्त] रद्दी किया गया, नष्ट किया गया --परैरपर्यासितवीर्यसंपदाम् —कि० १।४१।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] 'नञ्' के प्रयोग द्वारा निषेधात्मकशैली--(अन्याख्यम् आनय)—दे० मै० सं० १०।८।१-४ पर शा० भा०।

पर्युपासीन (वि०) [परि+उप+आस्+शानच्, ईत्वम्] 1. बैठा हुआ 2. घिरा हुआ।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+णिच्+क्त] जिसके ऊपर से रात बीत गई हो, बासी, जो ताज़ा न हो (जैसे रात का रक्खा भोजन)। सम० -वाक्यम् वह वचन जिसका पालन न किया गया हो, टूटी हुई प्रतिज्ञा।

पर्युष्ट (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी।

पर्वतः [पर्व+अतच्] 1. पहाड़ 2. एक ऋषि का नाम। सम०--उपत्यका पहाड़ की तलहटी में स्थित समतल भूमि,--रोधस् (नपुं०) पहाड़ी ढलान।

पर्वन् (नपुं०) [पृ+वनिप्] 1. गाँठ, जोड़ 2. पोरी, अंश 3. अंग 4. अनुभाग। सम०—आस्फोटः अँगुलियाँ चटखाना (अभिशाप का चिह्न समझा जाता है), **विपत्** चन्द्रमा।

पलः [पल्+अच्] भूसी, छिलका,—**लम्** 1. मांस 2. ४ कर्ष का बट्टा 3. समय की माप 4. एक छोटी तोल। सम०—**अन्नम्** मांस से मिले चावल।

पलालः [पल+आलच्] भूसी, तुष, तिनके। सम० —**भारकः** तिनकों का बोझ, भूसी का भार।

पलिः (स्त्री०) [पल्+इञ्] हाथों के मस्तक से ठीक ऊपर का भाग।

पलित (वि०) [पल्+क्त] बूढ़ा, जिसके बाल पक गये हों, जिसके सिर के बाल सफ़ेद हो गये हों,—**तम्** 1. सफ़ेद बाल 2. बैंगन पाक। सम०—**छदन्** सफ़ेद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बालों के बहाने कैकेयी का दुर्वेवाह पलितछद्मना जरा रघु० १२।२,—**दर्शनम्** सफ़ेद बालों का दिखाई देना।

पल्यशनः (पुं०) बिल्ली।

पल्लवः [पल्+क्विप्, लू+अप्, पल् वासौ लवश्च, क० स०] 1. अङ्कुर, 2. कली 3. विस्तार 4. अंजित 5. धान की पत्ती 6. कङ्कण 7. वस्त्र का किनारा 8. प्रेम 9. कामकेलि 10. कहानी, कथा।

पल्लवनम् [पल्+क्विप्, लू+ल्युट्, पल् वासौ लवश्च, क० स०] निरर्थक बकवाद।

पवनम् [पू+ल्युट्] 1. पवित्र करना 2. पिछोड़ना 3. छलना 4. पानी 5. कुम्हार का आंवा। सम०—**चक्रम्** बवंडर, अंधड़ी,—**पदवी** आकाश का प्रदेश।

पवमानसखः [ब० स०] अग्नि।

पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1. पावन, निष्पाप 2. मन को शुद्ध करने का साधन 3. गोमरस को छानने का वस्त्र, छलना या पोना।

पवित्रीकरणम् [पवित्र—च्वि—कृ—ल्युट्] 1. पवित्र करना 2. पवित्र करने का साधन।

पशु (अ०) [दृश्+कु, पशादेशः] देखो! कितना अच्छा!—**शुः** (पुं०) पालतू जानवर, मवेशी। सम०—**एकवध्यायः** मीमांसा का नियम जिसके आधार पर वाक्य का मुख्यार्थ क्रिया के द्वारा संयुक्त होकर अभिप्रेत वचन को अभिव्यक्त करता है, मै० सं० ४।१।११।१६ पर शा० भा०, **-तन्त्रम्** सिद्धान्त सिद्धान्त,—**समाम्नायः** प्राणिजात के नामों का संग्रह।

पश्चाद्हः (अ०) [पश्चात्+अह्न्] तीसरा पहर।

पश्चाद्वृत्तिः (स्त्री०) [पश्चात्+उत्तिः] आवृत्ति, दोहराना।

पश्चिमोत्तर (वि०) [ब० स०] उत्तरपश्चिमी।

पश्चिमसन्ध्या (स्त्री०) सायंकालीन झुटपुटा।

पश्य (वि०) [दृश्+अच् पश्यादेशः] जो केवल देखता रहता है—**श्यः** पश्यामिव...पुरम्—नै० १६।१२२।

पष्ठौही (स्त्री०) बछिया—महा० १३।९३।३२।

पात्रत्व (वि०) [पा+तव्यत्] 1. पीने के योग्य, पेय 2. रक्षा किये जाने के योग्य।

पांसुः [पंस्+कु, दीर्घः] चूर्ण, धूल। सम०—**कीडनम्** धूल में खेलना, **धूसरित** (वि०) धूल से भरा हुआ, **लवणम्** एक प्रकार का नमक।

पांसक (वि०) [पंस्+णिच्+ण्वुल्] आटा करने वाला, पिसाने वाला।

पांसवः (पुं०) विकलांग।

पाकः [पच्+घञ्] शौच, सृजन। सम०—**क्रिया** पकाने की क्रिया।

पार्श्वस्थम् (नपुं०) 1. जानवर का पेट 2. पार्श्व भाग।

पाञ्चरात्रम् (नपुं०) 1. एक वैष्णव सम्प्रदाय तथा उसके सिद्धान्त, भक्तिमार्ग 2. पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के शास्त्र, आगम।

पाञ्चालेयः [पाञ्चाली+ढक्] पाञ्चाली का पुत्र।

पाटलकोटः (पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।

पाट्युपकरः [पाटी+उपकरः] मुख्य लेखाधिकारी।

पाठक्रमः (पुं०) [ष० त०] मूलपाठ के अनुक्रम के अनुसार निर्धारित पाठ।

पाठभेदः [ष० त०] मूलपाठ के रूपान्तर, अवान्तर पाठ।

पाठ्यपुस्तकम् (नपुं०) किसी श्रेणी के लिए निर्धारित पुस्तक।

पाणिः [पण्+इन्, आयभावः] हाथ। सम०—**कच्छपिका** (स्त्री०) एक प्रकार की मुद्रा, **गत** (वि०) निकट हो,—**दार्ढ्यम्** हाथ की सफ़ाई, **वादः** 1. ताळियां बजाना 2. ढोल बजाना 3. केरल प्रदेश के ढोलकियों का समुदाय।

पाण्डवप्रियः [ब० स०] कृष्ण का विशेषण।

पाण्डिमन् (पुं०) [पाण्डु+इमनिच्] सफ़ेदी।

पाण्डुलोहम् (नपुं०) चांदी।

पातः [पत्+घञ्] (मल्हम, चाकू आदि का) प्रयोग।

पातालमूलम् (नपुं०) पाताल लोक की निम्न सतह।

पात्र (वि०) [पातात् त्रायते इति] पापों से छुटकारा दिलाने वाला सर्वेगुणोपेत पात्रत्राणां परपात्रं महेश्वरः—ना० पा०।

पात्रम् [पा—ष्ट्रन्] 1. प्याला, कटोरा 2. बर्तन 3. आशय 4. योग्य व्यक्ति 5. नाटक में अभिनेता 6. राजा का मंत्री 7. दरिया का पाट 8. योग्यता औचित्य। सम०—**उपकरणम्** अलङ्करण के बर्तन, सजावट के पात्र जैसे चौरी आदि,—**प्रवेशः** (नाट० में) रङ्गभंच पर अभिनेता का आगमन,—**मेलनम्** भिन्न-भिन्न प्रकार का अभिनय कराने के लिए अभिनेताओं का एकत्रीकरण,—**शोधनम्** किसी उपहार को ग्रहण करने के योग्य व्यक्ति की योग्यता की परीक्षा करना,—**संस्कारः** किसी पात्र या बर्तन को पवित्र करना।

पात्रकरणम् (नपुं०) विवाह-मंडप पात्रीकरणेऽग्नि-साक्षिक—नै० ९।९८।

पावः [पव्+घञ्] मशक की तली में छिद्र—तेनास्य क्षरति प्रज्ञा वृतेः पादादिवोदकम्—मनु० २।९९। सम०—**कृच्छ्रम्** एक प्रकार का व्रत जिसमें हर तीसरे दिन उपवास रखना पड़ता है, **निकेतः** पादपीठ, मूंढा, स्टूल,—**पद्धतिः** (स्त्री०) पदचिह्न, —**परिचारकः** चरण सेवक, विनीत सेवक,—**भटः** पदाति, पैदल सिपाही,—**लग्नः** पैर में चिपका हुआ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संहिता कविता के चरणों का जोड़, हीनजलम् वह पानी जिसका कुछ अंश उबाला हुआ हो।

पाषाकुलकम् (नपुं०) एक छन्द का नाम।

पाषीयषष्ठजा (स्त्री०) मोथा नाम का घास जो पानी के किनारे उगता है।

पाप्यदुर्गा (स्त्री०) [ष० त०] सर्वव्यापिनी देवी आलिङ्गय नोत्थाकृत पाप्य दुर्गाम् नैं० २४।३७।

पाप (वि०) [पा+प] 1. बुरा, दुष्ट 2. अभिशप्त, विनाशकारी, शरारत से भरा हुआ 3. नीच, अधम। सम० **वंश** (वि०) नीच कुल में उत्पन्न, **विनिग्रहः** दुष्टता को रोकना,—**शमन** (वि०) पाप कर्म को रोकने वाला।

पामसण्डिडारकः (पुं०) खीर खाने वाला।

पायितम् (नपुं०) उदकदान, उपहार में दिया गया जल।

पारः [पृ+घञ्] 1. नदी का दूसरा किनारा 2. पार कर लेना 3. सम्पन्न करना 4. पारा 5. अन्त, किनारा 6. संरक्षक तस्माद् भयाद् येन स नोऽस्तु पारः—भाग० ६।९ २४ 2. अन्त महिम्नः पारं ते —म० स्त०। सम०—**नेतृ** (वि०) जो किसी व्यक्ति को किसी कार्य में दक्ष बना देता है।

पारतल्पिकम् [परतल्प+ठक्] व्यभिचार।

पारमार्थिकसत्ता (स्त्री०) परम सत्य का अस्तित्व।

पारमिता [पारम् इतः प्राप्तः—पारमित-अलुक् स०—स्त्रियां टाप्] संपूर्ण निष्पत्ति, पूर्णता।

पारमेश्वर (वि०) [परमेश्वर+अण्] परमेश्वर से संबद्ध।

पारम्पर्यक्रमः [परम्परा+ष्यञ्] परम्परा-प्राप्त अनुक्रम।

पारषदम् (नपुं०) सदस्यता, किसी सभा का सदस्य बनना। भाग० १।१६।१७।

पारावतघ्नी (स्त्री०) सरस्वती नदी।

पारिणामिक (वि०) [परिणाम+ठक्] 1. पचने के योग्य, जो हजम हो सके 2. जिसमें विकार हो सके, परिवर्त्य।

पारिपन्थिकः [परिपन्था+ठक्] चलती सड़क पर लूटने वाला, डाकू।

पारिप्लवदृष्टि (वि०) [ब० स०] चंचल आँखों वाला।

पारिप्लवमति (वि०) [ब० स०] चंचल मन वाला।

पारुषिक (वि०) [परुष+ठक्] कठोर, दारुण।

पार्यवसानिक (वि०) [पर्यवसान+ठक्] समाप्ति के निकट आने वाला।

पार्श्वः (पुं०) [पर्श्व+अण्] 1. एक ऋषि, जैनियों के २३ वें तीर्थंकर का विशेषण 2. पार्श्वभाग। सम०—**अवबाहु** (वि०) एक ओर को झुका हुआ (हीरे का एक दोष), **अस्थि** शरीर के पार्श्वभाग में पीड़ा, **उपपार्श्वम्** (अ०) (इतना हंसना कि जिससे) पार्श्वभाग दुखने लगे,—**वक्त्रः** शिव का एक विशेषण।

पार्ष्णिग्राहः [ष० त०] सेना के पिछले ओर आक्रमण करना।

पालनम् [पाल+ल्युट्] (शस्त्रों को शाण पर रख कर) तीक्ष्ण-तेज करना।

पालाशविधिः [पलाश+अण् तस्य विधिः] ढाक की लकड़ियों से मृतक का दाह संस्कार करना।

पालिध्वरः (पुं०) एक प्रकार का बुखार।

पाल्लविक (वि०) [पल्लव+ठक्] बिसारी, विस्मरणशील, विस्मृत।

पावकमणिः (पुं०) [ष० त०] सूर्यकान्त मणि।

पावकशिखः [ष० स०] जाफरान, अग्निशिख, केसर।

पावकार्चिः (स्त्री०) [ष० त०] अग्नि की ज्वाला।

पावित (वि०) [पू+णिच्+क्त] पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।

पाव्य (वि०) [पू+णिच्+ण्यत्] पवित्र किये जाने योग्य।

पाशिन् (पुं०) [पाश+इनि] रस्सी, बेड़ी पाशोत्कल्पमायत्तामाचक्षते शि० १८।५७।

पाशुपतव्रतम् (नपुं०) पाशुपत सिद्धान्तों के लिए किया गया उपवास, व्रत।

पिककूजनम् (ष० त०) कोयल की कूक।

पिङ्गमूलः [ब० स०] गाजर।

पिङ्गलम् (नपुं०) गाजर।

पिच्छाश्रावः (पुं०) पिचपिचा थूक।

पिञ्जरिकम् (नपुं०) एक प्रकार का संगीत-उपकरण।

पिटक्लाशः (पुं०) एक प्रकार की छोटी मछली।

पिठरपाकः (पुं०) कार्यकारण का मेल।

पिठरी (स्त्री०) कड़ाही, जिसमें कुछ उबाला जाय।

पिण्ड (वि०) [पिण्ड+अच्] 1. ठोस 2. सटा हुआ, सघन। सम० **अक्षर** (वि०) संयुक्त व्यञ्जनों से युक्त शब्द, **निवृत्ति** सपिण्ड बन्धुता की समाप्ति, **पितृयज्ञः** अमावस्या को संध्यासमय पितरों के प्रति आहुति देना, **विधमः** (पुं०) अपहरण की रीति, गबन का तरीका कौ० अ० २।८।२६।

पितृपचिः (पुं०) भोजन-प्रदाता (श्राद्ध का विशेषण)।

पितृप्रयम् [ष० त०] पिता, पितामह तथा प्रपितामह।

पितृप्रासरपर्वन् (नपुं०) पितरों की पूजा का शुभ समय।

पित्तम् [अपि+दो+क्त, अपेः अकारलोपः] एक तरल पदार्थ जो शरीर के भीतर यकृत में बनता है। सम०—**धर** (वि०) पित्त प्रकृति का व्यक्ति, —**धरा** (स्त्री०) शरीर में पित्ताशय।

पिधातव्य (वि०) [अपि+धा+तव्यत्, अपेः अलोपः] बन्द किए जाने के योग्य।

पिन्धू (अ०) पहन कर।

पिन्यासः (पुं०) हींग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिप्पलः (पुं०) 1. पिप्पल नाम का वृक्ष 2. कर्मजन्य फल, कर्म का फल मुण्ड० २।१।१। सम०- अदः 1. एक मुनि का नाम 'पिप्पलाद' 2. पिप्पल के बरबटे खाने वाला 3. विषयवासना में लिप्त।

पिब (वि०) [पा+अन्, विभावेशः] पीने वाला शब्दोच्चारणेऽपि दृष्टिः—नै० ६।३४।

पिशितम् [पिश्+क्त] 1. मांस 2. अल्पांश। सम०--विष्कः 1. मांस का टुकड़ा 2. तिरस्कारसूचक शब्द जो शरीर को इंगित करे, - प्ररोहः मांस का उभार, स्थौली।

पिशुनित (वि०) [पिशुन+इतच्] प्रकट किया गया, प्रदर्शित।

पिष्ट (वि०) [पिष्+क्त] 1. पीसा हुआ 2. गूंधा हुआ। सम० अद (वि०) आटा खाने वाला,—पाकः पकाया हुआ आटा (रोटी, पूरी आदि)।

पिष्टातः [पिष्ट+अत् | अण्] सुगन्धित चूर्ण, अबीर जो होली के अवसर पर एक दूसरे पर छिड़क दिया जाता है।

पिप्सु (वि०) [स्पृश+सन्+उ] 1. छूने की इच्छा वाला 2. आचमन करने का इच्छुक।

पीठाधिकारः (पुं०) [ष० त०] किसी पद पर नियुक्ति।

पीड् (चुरा० उभ०) शब्द करना—श्रुतिसमधिकमुच्चैः पञ्चम पीडयन्तः शि० ११।१

पीडास्थानम् [ष० त०] (फ० ज्यो० में) यह की किसी अशुभ स्थान पर स्थिति।

पीत (वि०) [पा+क्त] 1. पीया हुआ 2. भिगोया हुआ 3. व्याप्तोक्त 4. छिड़का हुआ। सम०—उदका वह गाय जो पानी पी चुकी है पीतोदका जग्धतृणा कठ०,—निद्र (वि०) नींद में डूबा हुआ, मांसदः एक प्रकार का साँप,—स्फोटः खुजली।

पीयूषभानुः,—भास्मन् (पुं०) [ब० स०] चन्द्रमा।

पुंस् (पुं०) [पा+डुमसुन्] 1. जीवित प्राणी 2 एक प्रकार का नरक—अपत्यमस्मिं ते पुंसस्त्रायात् महा० १४।९०।६३। सम०- लक्षणम् मानवीरूप, मानवी सूरत।

पुच्छकः (पुं०) द्वितीय वर्ष में चल रहा हाथी - मात० ५।३।

पुञ्जिक (का) स्त्री० एक स्वर्गीय अप्सरा का नाम।

पुटः,-टम् [पुट्+क] 1. तह 2. अंजलि 3. दोना। सम०—अञ्जलिः दोनों हथेलियों को मिला कर प्याले की भाँति बना लेना,—धेनुः बछड़े वाली गौ जिसका अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है।

पुटनम् [पुट्+ल्युट्] आच्छादित करना, ढकना।

पुण्डरीकम् [पुण्ड्+ईकन्, रक् नि०] एक यज्ञ का नाम।

पुण्य (वि०) [पू+यत् गुणादमः, ह्रस्वः] 1. पवित्र, पुनीत 2. अच्छा गुणयुक्त 3. मंगलमय, शुभ 4. सुन्दर, मनोज्ञ, रोचक 5. मधुर- ण्यम् (नपुं०) 1. जन्मलग्न से नौवाँ घर 2. मंत्र, कर्क, तुला और मकर का संयोग। सम०— निबह (वि०) गुणयुक्त, गुणी, शाला धर्मार्थ भवन, दान-घर, संचयः धार्मिक गुणों का संग्रह।

पुत्रप्रवरः [ष० त०] ज्येष्ठ पुत्र।

पुत्रसूः (स्त्री०) [ष० त०] पुत्र की माँ।

पोथित (वि०) [पुथ्+णिच्+क्त] आघात पहुँचाया हुआ, मारा हुआ, नष्ट किया हुआ।

पुनर् (अ०) [पन् | अर्, उत्वम्] फिर, दोबारा, नये सिरे से। सम० अन्वयः वापसी, लौटना कि वा गतोऽस्य पुनरन्वयमन्यलोकम्—भाग० ६।१४।५७ आगमः दोबारा चले जाना, उत्पादनम् फिर उपजाना, पैदा करना,- क्रिया आवृत्ति करना, दोहराना,—नवा एक प्रकार का शाक जिसकी पत्तियाँ गोल लाल रंग की होती हैं।—स्नानम् दोबारा नहाना।

पुपूषा [पू+स्+अ, धातोर्द्वित्वम्] पवित्र करने की इच्छा।

पुरनारी (स्त्री०) [ष० त०] नगरवेश्या।

पुरंदिका (स्त्री०) [पुर्+धृ+अच्, स्वार्थे कन्] पत्नी।

पुरस्कारः [पुरस्+कृ+घञ्] 1. प्रस्तुत करना, परिचय देना 2. अपने आपको प्रकट करना कर्महेतुपुरस्कारं भूतेषु परिवर्तते - महा० १२।१९।१९।

पुरस्कृत्य (अ०) [पुरस्+कृ+ल्यप्] कृते, के विषय में उल्लेख करके, के कारण।

पुरोभगतका (स्त्री०) प्रातराश, नाश्ता।

पुराण (वि०) [पुरा नवम्—नि०] 1. पुराना 2. बूढ़ा 3. घिसा पिटा, - णम् 1. बीती हुई घटना 2. विख्यात धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं, तथा व्यास द्वारा रचित मानी जाती हैं। सम०- अन्तरम् दूसरा पुराण। प्रोक्त (वि०) 1. पुराणों में कहा हुआ 2. प्राचीनों द्वारा बतलाया हुआ, विद्या, वेदः पुराणों का ज्ञान, पुराणों में वर्णित पाण्डित्य।

पुराषाह् (वेद०) असुरों का विजेता, वसुओं को हरानेवाला।

पुरोवर्भेदः [पुर्+दृण्, किच्च,+भिद्+घञ्] अतिसार, दस्त लगना, संग्रहणी।

पुरुकृत्, पुरुकृत्वन् } (वि०) अचूक, प्रभावशाली।

पुरुषः [पुरि देहे शेते शी+ड पृषो०] 1. नर, मनुष्य (विप० स्त्री) 2. आत्मा। सम० मानिन् (वि०) अपने आपको साहसी प्रकट करने वाला,—शोधकः एक प्रकार का शस्त्र जिसका प्रयोग चोर सेंध लगाने में करते हैं,—सारः श्रेष्ठतम नर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुल्कः [पुल्+क्वुल्] गुच्छा, झुंड ।
पुलिंदः (पुं०) शिकारी, (ब० व०) एक जंगली जाति ।
पुल्कसः (पुं०) एक मिश्रित जाति का नाम भाग० ९।२१।१० ।
पुष्ट (वि०) [पुष्+क्त] 1. पाला पोसा 2. फलता फूलता 3. समृद्ध 4. पूर्ण । सम० अङ्ग (वि०) मोटे अंगों वाला, जिसे अच्छे पदार्थ भोजन में मिलते रहे हैं अर्थ (वि०) जो अर्थ की दृष्टि से पूर्णतः स्पष्ट हो ।
पुष्टिः [पुष्+क्तिन्] बहुत से अनुष्ठानों के नाम जो कल्याण की दृष्टि से किये जाते हैं, पुष्टिकर्म । सम० मार्गः वल्लभाचार्य द्वारा माने गये सिद्धान्तों का समुच्चय ।
पुष्करम् [पुष्क पुष्टि रात्रि-रा+क] 1. नीला कमल 2. हाथी के सूँड का किनारा –मात० २।२ । सम० —विष्टरः ब्रह्मा, परमेश्वर, विष्टरा लक्ष्मी देवी —पुष्टि कृपीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः कनक० ।
पुष्पम् [पुष्प्+अच्] 1. फूल 2. पुष्परागमणि 3. कुबेर का रथ । सम० अम्बु फूलों का गुच्छा, - आस्तरकः, —आस्तरणम् फूलों से सजावट करने की कला, पत्री कपाटिका, - यज्ञकम् अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।
पुष्पकः (पुं०) जाति से बहिष्कृत महिला में ब्राह्मण द्वारा उत्पादित संतान ।
पुष्परागः [ष० त०] एक प्रकार की मणि—कौ० अ० २।११।२९ ।
पुस्तम् [पुस्+अच्] 1. कोई वस्तु जो मिट्टी, लकड़ी या धातु की बनी हो 2. पुस्तक, हस्तलिखित, पांडुलिपि । सम०—पालः भू-अभिलेखों की सुरक्षा पूर्वक रखने वाला ।
पुस्तकः,-कम् [पुस्त+कन्] 1. पाण्डुलिपि 2. एक उभरा हुआ आभूषण । सम० आगारम् पुस्तकालय, —आस्तरणम् बस्ता, वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें बाँधी जाती हैं, - मुद्रा एक प्रकार की तांत्रिक मुद्रा ।
पूतक्रतुः [ब० स०] इन्द्र का विशेषण ।
पूती (स्त्री०) सुपारी का पेड़ ।
पूजा [पूज्+अ] आदर, सम्मान, पूजा । सम० उपकरणम् पूजा करने का सामान,—गृहम् गाह्यं पूजा का स्थान ।
पूयः [पूय्+अच्] मवाद, किसी फोड़े या फुंसी से निकलने वाला, पीप । सम० - उदः, वहः, एक प्रकार का नरक ।
पूरक (वि०) [पूर्+ण्वुल्] 1. भरने वाला, पूरा करने वाला,—कः (पुं०) बाढ़, जलप्लावन—मिश्चाद्भ नस्त्वदधरामृतपूरकेण- भाग० १०।२९।३५ ।
पूर्ण (वि०) [पुर्+क्त] सर्वव्यापक, सर्वत्र उपस्थित । सम० अभिषेकः एक प्रकार का धार्मिक स्नान जिसका कोलतंत्र में विधान निर्दिष्ट है । उत्सङ्गा (वि०) ऐसी गर्भवती जिसके थोड़े ही दिनों में बच्चा होने वाला है, आसन्नप्रसवा,—प्रज्ञः (पुं०) 1. जिसका ज्ञान पूर्णतः विकसित हो चुका हो 2 ईश संप्रदाय के प्रवर्तक माधव का विशेषण ।
पूर्व (वि०) [पूर्व+अच्] 1. पहला, प्रथम 2. पूर्वी, पूर्वदेश 3. प्राचीन, पहला । सम० अवसायिन् (वि०) जो बात पहले घटती है -पूर्वावसायिन्यश्च वलीयांसो अधन्यावसायिभ्यः मै० सं० १२।२।३४ पर भा० भा० । -निमित्तम् शकुन, निविष्ट (वि०) जो पहले ही रचा हुआ है—मनु० ९।२८१, —पश्चात्, पश्चिम (अ०) पूर्व से लेकर पश्चिम तक, भारिन् (वि०) पति (या पत्नी) से पहले मरने वाला, विद् (वि०) जो मृतकाल की बात जानता है, विप्रतिषेधः पहली उक्ति का विरोध करने वाला कथन, विहित (वि०) जो पहले ही निर्णीत हो चुका हो ।
पूषानुजः [पूषन्+अनुजः] वृष्टि का देवता- प्रासृद् द्रोणसुतो वाणान् वृष्टिं पूषानुजो यथा महा० ८। २०।२९ ।
पूषाका (स्त्री०) किसी जानवर का मादा-बच्चा ।
पृतनापतिः (पुं०) [ष० त०] सेनापति ।
पृथक् (अ०) [प्रथ्+अज्, कित्, संप्रसारणम्] 1 अलग 2. अलग-अलग 3. के बिना, के सिवाय । सम० -कार्यम् अलग काम, धर्मिन् (वि०) जो ईश सिद्धान्त को मानने वाला है,-बीजः सिलावा, योगकरणम् एक व्याकरणनियम का दो भागों में जुदा जुदा करना ।
पृथक्त्वनिवेशः (पुं०) जुदाई पर डटे रहना संख्याश्चाश्च पृथक्त्वनिवेशात्- मी० सू० १०।५।१७ ।
पृथिवीभृत् (पुं०) [पृथिवीं बिभर्त्तीति भृ+क्विप्] पर्वत, पहाड़ ।
पृथु (वि०) [प्रथ्-कु, संप्रसारणम्] 1. विशाल, विस्तृत 2. प्रचुर पुष्कल 3. बड़ा, 4. असंख्य । सम०—कीर्ति (वि०) दूर-दूर तक विख्यात,—दर्शिन् (वि०) दूरदर्शी, दीर्घदृष्टि ।
पृथिन (वि०) [स्पृश् नि० किच्च पृषो० सलोपः] 1. छिनाल 2. सुकुमार 3. चितकबरा,—निः (स्त्री०) 1. चितकबरी गाय 2. पृथ्वी ।
पृथुकः [पृथ्+अति=पृथ्+कन्] 1. गोल धब्बा 2. चाप की शरज्या ।
पृष्ठम् [पृष्-(स्पृश्)+थक् नि०] 1. पीठ 2. पुस्तक के पत्र का एक पार्श्व 3. दीप । सम० आश्रयः पीठ में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बड़ी तीव्र पीड़ा,--गामिन् (वि०) स्वामिभक्त, अनुचर, --तापः मध्याह्न, दोपहर, --भङ्गः युद्ध में लड़ने की एक रीति ।

पृष्ठ्यम् [पृष्ठ+यत्] 1. मेरुखण्ड 2. सामसंग्रह ।

पेचकः [पच्+वुन्, इत्वम्] मार्ग में बना यात्रियों के लिए शरणगृह मानें० ।

पेटालः,-लम् } टोकरी, पेटी ।
पेट्टालकः,-कम् }

पेथः (पुं०) मार्ग, रास्ता ।

पेलिनी [पेल+इनि, स्त्रियां ङीप्] गांठगोभी, पातयोभी ।

पेशस् (नपुं०) [पेश+असिच्] 1. रूप 2. सोना 3. आभा 4. सजावट । सम० कारिन् 1. शिरं 2. सुनार, --कृत् (पुं०) 1. हाथ 2. शिरं भाग० ७।१।२८ ।

पेशिः (स्त्री०) [पिश् + इन्] छाछ, तक्र ।

पेषीक् (तना० उभ०) कुचलना, पीस देना ।

पैङ्गलः [पिङ्गल+अण्] पिंगल का पुत्र या शिष्य ।

पैङ्गलम् [पिङ्गल +अण्] पिङ्गल मुनि कृत पुस्तिका ।

पैतापुत्रीय (वि०) [पितापुत्र+छ] पिता और पुत्र से संबंध रखने वाला ।

पैप्पलादः [पिप्पलाद+अण्] अथर्ववेद की एक शाखा ।

पैशुनिक (वि०) [पिशुन+ठक्] मिथ्यानिन्दात्मक, अपवाद परक ।

पोतायितम् (नपुं०) [पुत्+तन्+पोत+क्यच्+क्त] 1. शिशु की भांति आचरण करना 2. होठ और तालु की सहायता से उच्चरित हाथी की चिंघाड़ ।

पोत्रिप्रवरः [पू+त्र=पोत्र+इनि=पोत्रिन्, तत्पु प्रवरः] विष्णु भगवान् वाराहावतार हिरण्याक्षे पोत्रिप्रवरवपुषा देव भवता - नारायणीय० ।

पोप्लूयमान (वि०) [प्लु यङ्+शानच्, द्वित्वम्] बार बार तैरता हुआ लगातार तैरने वाला या बहने वाला ।

पौण्ड्रवर्धनः (पुं०) बिहार प्रदेश का नाम ।

पौत्रबीजिकम् (नपुं०) पुत्र जीव पौधे के बीजों से बना ताबीज ।

पौरन्ध्र (वि०) [पुरन्ध्र+अण्] स्त्रीवाची, नारीजातीय ।

पौषधः (पुं०) उपवास का दिन ।

प्रउगम् (नपुं०) त्रिकोण ।

प्रकच (वि०) [ब० स०] जिसके बाल सीधे खड़े हों ।

प्रकाङ्क्षा [प्र+काङ्क्ष+अङ्] भूख, बुभुक्षा ।

प्रकाशः [प्र+काश्+घञ्] नाम । सम० करः प्रकट करने वाला, व्यक्त करने वाला ।

प्रकृ (तना० उभ०) विवेक करना, भेद करना- मोहात् प्रकुरुते भवान्--महा० ५।१६८।१८ ।

प्रकरः [प्र+कृ+अच्] धोना, मांजना, साफ करना अन्नामत्रप्रकरकरणे दर्वितोऽभो नियुक्तिः--विद्व० १५४ ।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] प्रसंग । सम०--समः समान औचित्य और समान बल के दो तर्क ।

प्रकर्म (नपुं०) मैथुन, संभोग (जैसा कि को० अ० में कन्याप्रकर्मे) ।

प्रकृतिः [प्र+कृ+क्तिन्] परम पुरुष परमात्मा के आठ रूप--भग० ७।४ । सम०- आम्रः सामान्य आम, --कल्याण (वि०) नैसर्गिक सौन्दर्य से युक्त, स्वाभाविक सुन्दर, --भोजनम् यथाप्रकृति आहार, यथावत् भोजन ।

प्रकृतिमत् (वि०) [प्रकृति+मतुप्] 1. नैसर्गिक, सामान्य 2. सात्त्विक वृत्ति का महानुभाव रघु० १७।२१ ।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श] (आत्म० में) योग, नुस्खा ।

प्रकृष् (तुदा० पर०) वेग से खींचना ।

प्रकर्षः [प्र+कृष्+घञ्] विश्वजनीन ।

प्रकृष्ट (वि०) [प्र+कृष्+क्त] फैलाया हुआ, बाहर निकाला हुआ ।

प्रकाम [प्र+कम्+घञ्] चर्चा के बिन्दु पर पहुँचना । सम० निरुद्ध (वि०) आरंभ में ही रुका हुआ ।

प्रक्षपणम् [प्र+क्षि+णिच्+ल्युट्, प्रयागमः] विनाश, राज० ।

प्रक्ष्या [प्र+क्ष्या+अङ्+टाप्] उज्ज्वलता, आभा, कान्ति ।

प्रगुणीभू [प्रगुण+च्वि+भू भ्वा० पर०] अपने आपको योग्य बनाना, पात्रता प्राप्त करना ।

प्रग्रहः [प्र+ग्रह्+अप्] 1. राजसभासदों को उपहार --कौ० अ० २।३।२५ 2. जाड़े के रखना 3. घृष्टता ।

प्रचकित (वि०) [प्र+चक्+क्त] भय के कारण थर-थर कांपता हुआ ।

प्रचण्ड (वि०) [प्रा० स०] प्रखर, अत्यन्त तीव्र । सम० प्रतापः शक्तिशाली तेज,--भैरवः एक नाटक का नाम ।

प्रचर्या [प्र+चर्+यत्+टाप्] प्रक्रिया ।

प्रचारः [प्र+चर्+घञ्] सरकारी घोषणा, सार्वजनिक उद्घोष ।

प्रचलित (वि०) [प्र+चल्+क्त] घबराया हुआ । तम् (नपुं०) विदाई, विसर्जन ।

प्रचला (स्त्री०) [प्र--चल्+अच्+टाप्] गिरगिट ।

प्रचुरपरिभवः [क० स०] भारी अपमान, बड़ा तिरस्कार ।

प्रच्छन्नबौद्धः (पुं०) वेदान्ती के वेश में छिपा हुआ बौद्ध ।

प्रच्यावुक (वि०) [प्र+च्यु--उकञ्] क्षणभंगुर, सहज में टूट जाने वाला, भिदुर ।

प्रजननकुशल (वि०) प्रसूति कार्य में दक्ष ।

प्रजा [प्र--जन्+ड+टाप्] संवत्सर बुद्ध० ।

प्रजागरणम् [प्र+जागृ+ल्युट्] जागते रहना ।

प्रजृम्भ् (भ्वा० आ०) जम्हाई लेना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रज्ञप्त (वि०) [प्र+ज्ञा+णिच्+क्त] 1. आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ 2. व्यवस्थित—बुद्ध०।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अङ्+टाप्] प्रकृष्ट बुद्धि, बुद्ध०। सम० **अस्त्रम्** 1. एक अस्त्र का नाम 2. बुद्धि रूपी शस्त्र, —**अतः** केवल बुद्धि (जैसे **चिद्घन**), **पारमिता** पारदर्शी गुण बुद्ध०; —**मात्रा** ज्ञानेन्द्रिय।

प्रणमित (वि०) [प्र+नम्+णिच्+क्त] झुकाया हुआ, नमस्कार करने के लिए जिसका सिर झुकाया गया है।

प्रणाय्य (वि०) [प्र+नी+ण्यत्] योग्य, उपयुक्त (वेद०)।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] हाथी को हांकने की रीति —मात० १२।६।८।

प्रणियेयम् [प्र+नि+धा+यत्] 1. गुप्तचर भेजना 2. काम पर लगाना, उपयोग में लाना।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1. विवाह 2. मैत्री 3. अनुग्रह 4. विनय। सम० **मानः** प्रेम के कारण ईर्ष्या, **विमुख** (वि०) 1. प्रेम के विपरीत 2. मैत्री करने में अनुत्सुक।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1. (दण्ड) देना 2. (संप्रदाय) स्थापित करना।

प्रणीत (वि०) [प्र+नी+क्त] 1. प्रस्तुत किया हुआ 2. कार्यान्वित किया हुआ 3. सिखलाया हुआ 4. लिखा हुआ, रचा हुआ। सम० **अग्निः** यज्ञ के निमित्त अभिमन्त्रित की गई आग, **आपः** (ब० व०) पवित्र जल।

प्रतन (वि०) [प्र+तन्यु, तुट्] पुराना, प्राचीन। सम० **-हविस्** (नपुं०) आहुति देने के लिए अभिप्रेत पुराना घी।

प्रतानः [प्र+तन्+घञ्] प्रसार, विस्तार, फैलाव।

प्रतापः [प्र+तप्+अच्] सूर्य की गर्मी, धूप।

प्रतापः [प्र+तप्+घञ्] [अन्तिम चेतावनी देना] कौ० अ० १।१६।

प्रतमाम् (अ०) विशेष रूप से, खास तौर से।

प्रति (अ०) [प्रथ्+डति] 1. धातु के उपसर्ग होकर इसका अर्थ है (क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, बदले में, फिर (ग) के विरुद्ध, के प्रतिकूल (घ) ऊपर 2. शब्दों के पूर्व लग कर इसका अर्थ होता है (क) समानता, (ख) विरुद्ध, विरोध में तथा (ग) प्रतिद्वन्द्विता। सम० **अनुप्रासः** अनुप्रास का एक भेद,—**अरिः** मुकाबले का प्रतिपक्षी,—**अर्कः** झूठ-मूठ का सूर्य, बनावटी सूर्य,—**आढ्य** (वि०) बिल्कुल ताजा, आसन्नः संयोग, सबंध, **आत्मनः** गूंज, प्रतिध्वनि, **कर्मन्** (नपुं०) व्रत और उपवास,—**कारः** नकल करना—रा० २।३७।३७ पर टीका कृत्रिम (वि०) विरोधी,—**क्रिया** व्यवहार, आचरण न हि युक्तं तवैतस्य रूपस्यैवं प्रतिक्रिया—रा० ७।१७।४ **चक्रम्** शत्रु की सेना,—**दूतः** बदले में भेजा गया दूत या संदेशवाहक, **विषम्** विषहर, विष को दूर करने वाली औषध, —**वृषः** विरोधी सांड।

प्रतिगद् (ब्वा० पर०) उत्तर देना।

प्रतिगरः [प्रतिगृ+अच्] ललकार का उत्तर देना —ओमित्यप्रत्यवृ: प्रतिगरं प्रतिगृह्णाति—नै० उ० १।८।१।

प्रतिघातः [प्रतिहन्+णिच्+अप्] 1. सवन कौ० अ० २।८।२६ 2. नाश, अवमान—भाग० ५।९।३।

प्रतिचारः [प्रतिचर्+घञ्] व्यक्तिगत बनाव शृंगार।

प्रतिज्ञा [प्रति+ज्ञा+अङ्+टाप्] निश्चित समझना, कौलेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति भग० ९।३१। सम० **परिपालनम्**,-**पालनम्** अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना,—**पारणम्** अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना।

प्रतिदुह् (नपुं०) ताजा दूध।

प्रतिदूषित (वि०) [प्रतिदुष्+णिच्+क्त] कलुषित, भ्रष्ट, मिलावटी।

प्रतिनियमः [प्रतिनि+यम्+अच्] पृथक् निश्चतीकरण —सां० का० १८।

प्रतिनिष्क्रयः [प्रतिनिस्+की+अच्] प्रतिहिंसा, बदला लेना।

प्रतिनिष्पूत (वि०) [प्रतिनिस्+पू+क्त] साफ़ किया हुआ, पछोड़ा हुआ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रतिपद्+क्तिन्] 1. प्राप्ति, अवाप्ति 2. प्रत्यक्षीकरण, अवेक्षण 3. यथार्थ ज्ञान 4. स्वीकृति 5. आरम्भ 6. सङ्कल्प 7. समाचार 8. उपाय 9. बुद्धि 10. उन्नति 11. प्रयोग 12. प्रसिद्धि 13. विश्वासी सम० **पराङ्मुख** (वि०) ढीठ, न दबने वाला, —**प्रवानम्** उन्नत पद अर्पण करना।

प्रतिपत्पाठः (पुं०) प्रतिपदा वाले अनध्याय दिन के पढ़ना —प्रतिपत्पाठशीलस्य विशेष तनुतां गता—रा० ५।

प्रतिपादित (वि०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] प्रकट किया गया।

प्रतिपाद्य (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+ण्यत्] चर्चा करने के योग्य, व्यवहार में लाने के योग्य।

प्रतिपद्यमान (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+य+शानच्] 1. दिया जाता हुआ, उपहृत किया जाता हुआ 2. व्यवहृत किया जाता हुआ 3. चर्चा के अन्तर्गत।

प्रतिपानम् [प्रतिपा+ल्युट्] पीने का पात्री।

प्रतिपूर्ण (वि०) [प्रति पृ+क्त] प्रसारित, फैलाया हुआ, प्रशस्त।

प्रतिबन्ध(ब)न्दी (स्त्री०) प्रत्याख्यान, प्रत्युत्तर हृदाभिनन्द प्रतिबन्धनुत्तरः नै० ९।१७।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिभू (अदा० पर०) 1. उत्तर देना, 2. (आ०) डरकर जाना।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] उद्भावना, ध्यानापकर्षण निद्रा च प्रतिभा चैव ज्ञानाभ्यासेन तत्त्ववित् -महा० १२।२७४।७।

प्रतिभोजनम् [प्रतिभुज्+ल्युट्] विहित पथ्य, नियत किया हुआ आहार।

प्रतिमागृहम् [ष० त०] मूर्तियों का घर।

प्रतियातनिद्र [(बि०) ब० स०] जागा हुआ, जागरूक।

प्रतियातबुद्धि (वि०) [ब० स०] जिसे (पिछली भूली बातें) याद आ गई हों।

प्रतियोगः [प्रति युज्+घञ्] प्रत्युत्तर, प्रत्युक्तिवचन —बृ०उ० ४।४१।

प्रतियोद्धृ [प्रति+युध्+तृच्] युद्ध में प्रतिपक्षी।

प्रतिरुद्ध (वि०) [प्रति+रुध्+क्त] 1. प्रविष्ट, अधिकृत 2. स्थापित—भाग० १०।३०।३।

प्रतिवक्तव्य (वि०) [प्रति+वच्+तव्यत्] 1. उत्तर दिये जाने के योग्य 2. वादविवाद किये जाने के योग्य।

प्रतिविधातव्यम् (भाव० कि०) ध्यान (सावधानी) रखना चाहिए।

प्रतिविशेषः [प्रा० स०] विशेषता, विलक्षणता।

प्रतिव्याहारः [प्रति वि+आ+हृ+घञ्] उत्तर, जवाब।

प्रतिशीर्षकम् [प्रा० स०] निष्कृतिधन, बन्दी मोचन धन। रा० २।५५ पर मल्लि०।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] आश्रम, मठ (जहां सदाव्रत लगा रहता है)।

प्रतिषेधः [प्रति+सिध्+घञ्] 1. निषेधात्मकता का ध्यान दिलाना 2. बाधा।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] व्रत की पूर्ति।

प्रतिष्ठापनम् [प्रति+स्था+णिच्+ल्युट्] समर्थन।

प्रतिष्ठासु (वि०) [प्रति+स्था+सन्+उ] कहीं पर बस जाने की इच्छुक।

प्रतिष्ठित (वि०) [प्रति+स्था+णिच्+क्त] पूरा किया हुआ महा० ३।८५।११४।

प्रतिसंघात (वि०) [प्रतिसम्+हन्+क्त] आक्रमणकारी, हमला करने वाला।

प्रतिसंरुद्ध (वि०) [प्रतिसम्+रुध+क्त] संकुचित किया हुआ।

प्रतिसंक्रमः [प्रतिसम्+क्रम्+अच्] विच्छेद विघटन।

प्रतिसंदधानम् [प्रतिसम्+धा+ल्युट्] 1. किसी बात का शान्तिपूर्वक विचार करना 2. सांख्य दर्शन।

प्रतिसंधानम् [प्रतिसम्+धा+ल्युट्] 1. स्मृति, याद 2. उपचार, चिकित्सा।

प्रतिसम्मानित (वि०) [प्रतिसम्मान+इतच्] समीकृत, बराबर किया हुआ।

प्रतिसरबन्धः [ष० त०] किसी भी मंगलमय कार्य के आरंभ के अवसर पर हाथ की कलाई में राखी या पहुंची (पुनीत कलावा) बाँधना।

प्रतिसर्वम् (अ०) एक-एक करके, एकैकशः।

प्रतिहत (वि०) [प्रति+हन्+क्त] 1. चौंधियायी हुई (आँखें) 2. कुण्ठित, कुंठा।

प्रतिहारः [प्रति+हृ+घञ्] आगमन की सूचना देना —रा० ७।२।७।

प्रतौ (प्रति+इ अदा० पर०) (अन्न का) मूल्यवत्ता करना, - संसेन्यानहं तांस्त्र प्रतीयां रणमूर्धनि महा० ५।१७२।१३।

प्रतोतात्मन् [प्रति+इत+आत्मन्] विश्वस्त, दृढ़।

प्रतोषम् [प्रति+तुष्+कन्+नि० दीर्घः] 1. चिह्न 2. प्रतिलिपि। समः दर्शनम् चिह्नपरक संकल्पना।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च+ख, अलोपः, नलोपः, दीर्घश्च] अन्तर्मुखी, अन्दर की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतीपदीपकम् (नपुं०) दीपक अलंकार का एक भेद।

प्रतुलिका (स्त्री०) एक प्रकार की शय्या।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्णः प्रति] 1. आँखों को जो दिखाई दे, दर्शनीय 2. नयनगोचर, 3. स्पष्ट, साफ़। समः—पर (वि०) प्रत्यक्ष को ही उच्चतम प्रमाण मानने वाला, —विधानम् स्पष्ट विधि, स्पष्ट आदेश, विषयीभू दृष्टिपरास के अन्तर्गत आना।

प्रत्यक्षरम् (अ०) प्रत्येक अक्षर पर प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रपञ्च वासव०।

प्रत्यक्प्रवण (प्रत्यञ्च+प्रवण) (वि०) आत्मोन्मुख, एक आत्मा का भक्त।

प्रत्यभिज्ञादर्शनम् (नपुं०) शैवदर्शन पर लिखा गया एक ग्रन्थ।

प्रत्यभिनन्द् (भ्वा० चुरा० पर०) 1. बदले में नमस्कार करना 2. स्वागत करना।

प्रत्यभ्युत्थानम् (नपुं०) [प्रति+अभि+उद्+स्था+ल्युट्] अतिथि का स्वागत करने के लिए अपने आसन से उठना।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] इन्द्रियों का कार्य—सर्वेन्द्रियगुणद्रष्टे सर्वप्रत्ययहेतवे भाग० ८।३।१४।

प्रत्यर्चनम् [प्रति+अर्च्+ल्युट्] बदले में नमस्कार करना।

प्रत्यवकर्शन (वि०) [प्रति+अव+कृश्+ल्युट्] विफलकर, संहारकारी।

प्रत्यवस्थापनम् [प्रति+अव+स्था+णिच्+ल्युट्] सुखद, विश्रान्तिदायक, स्फूर्तिजनक।

प्रत्यवेक्षणा (स्त्री०) [प्रति+अव+ईक्ष्+युच्+टाप्] पाँच प्रकार के ज्ञानों में से एक (बुद्ध० में)।

प्रत्यस्त (वि०) [प्रति+अस्+क्त] फेंका हुआ, छोड़ा हुआ—प्रत्यस्तव्यसने माल० १०।२३।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्याचक्षाणक (वि०) [प्रति+आ+चक्ष्+शानच्, स्वार्थे कन्] निराकरण करने की इच्छा वाला, आक्षेप करने का इच्छुक।

प्रत्यापन्न (वि०) [प्रति+आ+पद्+क्त] 1. वापिस आया हुआ, फिर से एकत्र किया हुआ 2. बहकाया हुआ, बदले हुए मन वाला, विपरीत दृष्टिकोण वाला। —महा० १२।२९१।८।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] प्रसन्नता हर्षोत्फुल्लता।

प्रत्याहारः [प्रति+आ+हृ+घञ्] प्रस्तावना या आमुख, का विशेष भाग (नाटच०)।

प्रत्युत्पन्नजातिः (स्त्री०) गुणसहित समीकरण।

प्रत्युपस्थित (वि०) [प्रति+उप+स्था+क्त] 1. समुद्यत 2. एकत्र होना, दबाव होना (जैसे मूत्रोत्सर्ग का) 3. विमुख, विपरीत हुआ—श्रेयसि प्रत्युपस्थिते महा० १२।२८, ७।५७।

प्रत्यूढ (वि०) [प्रति+वह्+क्त] 1. प्रत्याख्यात, अस्वीकृत 2. उपेक्षित 3. मार दिया हुआ।

प्रथमकविः (पुं०) वाल्मीकि का विशेषण।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] चतुर, दक्ष, निपुण—तानुवाच विनीतात्मा भूतपुत्रः प्रदक्षिणः—रा० २।१६।५।

प्रदा (जुहो० उभ०) ऋण परिशोध करना।

प्रदानम् [प्र+दो+ल्युट्] खण्डन करना, निराकरण करना अमदेव हि धर्मस्य प्रदानं धर्म आसुरः—महा० १३।४५।८।

प्रदानकृपण (वि०) [प्र+दा+ल्युट्, प्रदाने कृपणः स० स०] दरिद्र, उपहारादि समर्पण में न देने वाला।

प्रदेशः (पुं०) [प्र+दिश्+घञ्] स्वातंत्र्य के क्षेत्र में एक बाधा (जैन०)।

प्रदेहनम् [प्र+दिह्+ल्युट्] लीपना, पोतना।

प्रधनाङ्गणम् [ष० त०] युद्ध का अग्रभाग।

प्रधानकारणवादः (पुं०) सांख्य का सिद्धान्त कि प्रधान ही मूल कारण है।

प्रधानवादिन् (वि०) जो व्यक्ति सांख्य के प्रधानकारण को मानने वाला है।

प्रधावितिका (स्त्री०) बच कर निकल भागने का मार्ग।

प्रपञ्चः [प्र+पञ्च्+घञ्] हास्यास्पद वार्तालाप (नाटच०)।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] आक्रमण, धावा।

प्रपुराण (वि०) [प्रा० स०] अधिक पुराना।

प्रपूरणम् [प्र+पृ+ल्युट्] धनुष को डोरी को झुकाना, और खींच देना।

प्रबुद्धता [प्र+बुध्+क्त+टाप्] प्रज्ञा, बुद्धि।

प्रभग्न (वि०) [प्र+भञ्+क्त] टूट कर टुकड़े-टुकड़े हुआ, कुचला हुआ, हराया हुआ।

प्रभङ्गक (वि०) अत्यन्त सुन्दर।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] समृद्धि,—प्रभावार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्—महा० १२।१०९।१०।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] पद्मरागमणि। सम०—भिद् (वि०) उज्ज्वल किं० १६।५८।

प्रभातकरणीयम् [स० त०] प्रातः काल अनुष्ठेय।

भावन (वि०) [प्र+भू+णिच्+ल्युट्] 1. प्रमुख, प्रभावशाली 2. सृजनात्मक शक्ति, 3. मूल 4. लौटने वाला तदस्त्रं तस्य वीरस्य स्वर्गभागप्रभावनम्—रा० ४।१७।८।

प्रभाषित (वि०) [प्र+भाष्+क्त] कथित, उद्घोषित।

प्रभुसम्मित (वि०) स्वामी के समान—वद्वेदाप्रभुसम्मितात्—सा० द०।

प्रभुस्वाक्षेपः (पुं०) [ष० त०] आदेश के वचन द्वारा उठाया गया आक्षेप—का० २।१३८।

प्रभवः [प्र+भिद्+घञ्] उद्गम स्थान (जैसे नदी का)।

प्रभाधिन् (वि०) [प्र+मथ्+इनि] नाड़ियों में से रसों का उत्पादक।

प्रमद्वरा (स्त्री०) रुरु नामक मुनि की पत्नी।

प्रमहस् (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली, प्रतापी, तेजस्वी।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] एक प्रकार की माप (संगीत०)। जैसे द्रुतप्रमाण।

प्रमाणानुरूप (वि०) किसी व्यक्ति की शारीरिक शक्ति और डीलडौल के अनुरूप।

प्रमाणतः (अ०) [प्रमाण+तसिल्] माप या तोल के अनुसार।

प्रमात्वम् (नपुं०) निर्विकल्प प्रत्यक्ष ज्ञान की यथार्थता।

प्रमितिः [प्र+मा+क्तिन्] प्रकटीकरण, अभिव्यक्ति।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] 1. गुणी पुरुष का हर्ष, उल्लास (जैन०) 2. एक वर्ष का नाम।

प्रयत्नगौरवम् [ष० त०] प्रयत्नों की गहनता, परिश्रम की गहराई।

प्रयतात्मन् (वि०) पुनीत मन वाला, जिसने अपने मन को संयत कर लिया है। भग० ९।२६।

प्रयतपाणि (वि०) [ब० स०] सम्मान में हाथ जोड़े हुए।

प्रयन्तृ (पुं०) चालक, उकसाने वाला, भड़काने वाला प्रेरक।

प्रया (अदा० पर०) प्रस्त होना, अपने ऊपर लेना, उठाना।

प्रयुक्त (वि०) [प्रयुज्+क्त] 1. प्रकल्पित, उपाय द्वारा काम चलाया हुआ 2. खींची हुई (जैसे तलवार)।

प्रयुक्तसत्कार (वि०) [ब० स०] जिसका स्वागत सत्कार किया गया है प्रयुक्तसत्कारविशेषमात्मना न मां परं संप्रतिपत्तुमर्हसि—कु० ५।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रयोक्तृ (पु०) [प्र+युज्+तृच्] प्रापक, समाहर्ता ।

प्रयोगः [प्र+युज्+घञ्] 1. उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम 2. यथावत् रूप, सामान्य उपयोग 3. फेंकना, फेंक कर मार करना, (विप० संहार) 4. प्रदर्शन, अनुष्ठान 5. अभ्यास, परीक्षणात्मक उपयोग 6. प्रक्रिया 7. कार्य 8. सस्वर पाठ 9. आरम्भ 10. योजना, तरकीब 11. साधन, उपाय । सम० —**ग्रहणम्** व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करना, चतुर (वि०), **निपुण** (वि०) व्यवहार में प्रयुक्त करने में दक्ष, स्वयं अभ्यास करने में होशियार,—**शास्त्रम्** कल्पसूत्र, **विद्** (वि०) जो किसी वस्तु के व्यवहार को जानता है ।

प्रलम्बबाहु } (वि०) [ब० स०] जिसकी भुजाएँ
प्रलम्बभुज } लम्बी हैं ।

प्रलयः [प्र+ली+अच्] 1. आध्यात्मिक लय 2. मूर्छा, बेहोशी ।

प्रलापिता [प्रलाप+इनि+तल्+टाप्] प्रेम संबंधी बातचीत ।

प्रलुप्त (वि०) [प्र+लुप्+क्त] लूटा हुआ ।

प्रलुब्ध (वि०) [प्र+लुभ्+क्त] 1. ठग, वञ्चक 2. लोभ में फंसाया हुआ ।

प्रलोपः [प्र+लुप्+घञ्] नाश, संहार ।

प्रवणम् [प्रु+ल्युट्] पहुँच, पैठ ।

प्रवणायितम् [प्रवण+क्यच्+क्त] इच्छा, झुकाव ।

प्रवादः [प्र+वद्+घञ्] झूठा आरोप सि० १। ४४ ।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1. मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम 2. सबसे बड़ा, —रः (पुं०) 1. बुलावा 2. अग्निहोत्र के अवसर पर ब्राह्मण द्वारा अग्नि का विशेष आवाहन 3. पूर्वज 4. कुल, वंश 5. गोत्र प्रवर्तक ऋषि 6. सन्तति 7. चादर,—रा (स्त्री०) गोदावरी में गिरने वाली एक नदी,—रम् (नपुं०) अगर की लकड़ी, चंदन । सम०—**धातुः** मूल्यवान् धातु, **ललितम्** एक छन्द का नाम ।

प्रवासपर (वि०) परदेश में रहने का व्यसनी ।

प्रवास्य (वि०) [प्र+वस्+णिच्+ण्यत्] निर्वासित किये जाने के योग्य ।

प्रवातशयनम् (नपुं०) ऐसे स्थान पर सोना जहाँ खिड़की या वातायनों के द्वारा हवा खूब आती जाती हो ।

प्रविचारः [प्र+वि+चर्+घञ्] विवेक, प्रभाग, श्रांति, प्रकार ।

प्रविचारित (वि०) [प्रविचार+इतच्] परीक्षित, सावधानतापूर्वक विचार किया गया ।

प्रविरत (वि०) [प्र+वि+रम्+क्त] जो किसी बात से पराङ्मुख हो गया हो, दूर रहने वाला ।

प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1. रीति, विन्यास 2. रोजगार जैसा कि (मूलप्रवेशः) में ।

प्रविषयः (पुं०) क्षेत्र, परास, पहुँच ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र+वृ+क्त] 1. बहने वाला—**प्रवृत्तमुदकं** वायु महा० १४।४६।१२ 2. आघात करने वाला, चोट पहुँचाने वाला 3. परिचारित, घुमाया हुआ । सम०—**चक्रता** (स्त्री०) प्रभुसत्ता—माझ० १।२६६।

प्रवृत्तिः [प्र+वृत्+क्तिन्] 1. गुणक (गणित०) 2. उदय, उद्गम 3. प्रकट होना 4. आरम्भ 5. आचरण 6. काम, रोजगार 7. प्रयोग 8. सार्थकता, अर्थ 9. समाचार 10. भाग्य, किस्मत 11. प्रत्यक्ष ज्ञान । सम०—**पुरुषः** समाचारों का अभिकर्ता, **लेखः** अध्यादेश, **विज्ञानम्** बाहरी संसार का ज्ञान ।

प्रव्याहरणम् [प्र+वि+आ+हृ+ल्युट्] वाक्शक्ति ।

प्रव्रज्यायोगः [ष० त०] ज्योतिष का एक योग जो संन्यास लेने का निर्देश करता है ।

प्रशंस् (भ्वा० आ०) भविष्यवाणी करना ।

प्रशंसालापः [ष० त०] अभिनन्दन, जयघोष ।

प्रशस्तिः [प्र+शंस्+क्तिन्] प्रचार, विज्ञापन ।

प्रशमनम् [प्र+शम्+ल्युट्] शान्ति की स्थापना (किसी राजनीतिक संकट के पश्चात्) ।

प्रशून (वि०) [प्र+शू+क्त, तस्य नत्वम्] सूजा हुआ ।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1. सवाल, पृच्छा, पूछताछ 2. न्यायिक पूछताछ 3. विवादास्पद बिन्दु 4. समस्या 5. किसी पुस्तक का छोटा अध्याय । सम०—**कथा** पूछताछ पर समाप्त होने वाली कहानी,—**वादिन्** ज्योतिषी, आगे होने वाली बात बताने वाला, —**विचारः** भविष्यकथन विषयक ज्योतिष की एक शाखा ।

प्रसक्त (वि०) [प्र+सञ्ज्+क्त] अत्यन्त आसक्त, किसी बात से चिपका हुआ ।

प्रसङ्गः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1. बढ़ाया हुआ प्रयोग अन्यत्र कृतस्यान्यत्रासक्तिः प्रसङ्गः मी० सू० १२।१।१ पर शा० भा० 2. गौण घटना या कथावस्तु । सम०—**समः** तर्कसंगत हेत्वाभास जहाँ स्वयं 'प्रमाण' भी सिद्ध किया जाता है ।

प्रसञ्जित (वि०) [प्र+सञ्ज्+णिच्+क्त] सत्ताप्राप्त, अस्तित्व में आया हुआ—प्रसह्य **वर्षासु** ऋतौ प्रसञ्जिते नै० ९।९६ ।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] भोजन पचने के पश्चात् उसका पोषक रस ।

प्रसेदिवस् (वि०) [प्र+सद्+वस्] जो प्रसन्न हो चुका है ।

प्रसन्दानम् [प्र+सम्+दो+ल्युट्] रज्जु, रस्सी, बेड़ी ।

प्रसह्य (अ०) [प्र+सह्+ल्यप्] 1. जीत कर 2. अवश्य ही, निश्चित रूप से । सम०—**कारिन्** (वि०) भीषण कार्य करने वाला प्रबल वेग से क्रियाशील ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसवकालः [ष० त०] प्रसूतिकाल, बच्चा जनने का समय।
प्रसूतिः [प्र—सू+क्तिन्] उद्भव, उत्पत्ति, कारण-कि० ४।३२।
प्रसृ (म्वा० पर०) 1. विगण होना (जैसा कि शरीर के तीनों दोषों का) 2. अनुसरण करना 3. संप्रसारण अर्थात् अर्धस्वरों का उसके संबंधी स्वर में बदलना।
प्रसरः [प्र+सृ+अप्] परास (जैसा कि 'दृष्टिप्रसर' में)।
प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1. व्यापारी की दुकान 2. (चूल्हे) उड़ाना 3. फैलाव।
प्रसारितमात्र (वि०) [ब० स०] जिसके अंग बहुत फैले हुए हों।
प्रसृप् (म्वा० पर०) छा जाना, फैल जाना (जैसे कि अन्धकार)।
प्रस्कन्न (वि०) [प्र+स्कन्द्+क्त] आक्रान्त, जिसके ऊपर धावा बोला गया हो।
प्रस्तरप्रहरणन्यायः [ष० त०] मीमांसा का व्याख्याविषयक एक सिद्धान्त जिसके अनुसार करण द्वारा प्रतिपादित विषयवस्तु की अपेक्षा कर्म द्वारा विहित वर्णन अधिक प्रबल होता है।
प्रस्तावः [प्र+स्तु+घञ्] 1. व्याख्यान का विषय, शीर्षक 2. नाटक की प्रस्तावना 3. साम के परिचायक शब्द।
प्रस्तोतृ (पुं०) [प्र+स्तु+तृच्] उद्गाता की सहायता करने वाला यज्ञीय पुरोहित, ऋत्विज।
प्रस्तोभः [प्र+स्तुभ्+घञ्] संदर्भ, उल्लेख—भाग० २।१०।२६।
प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1. दर्शनशास्त्र की एक शाखा 2. धार्मिक शिक्षापद्धति, प्रदेशाः - संप्रस्थानाः क्षावधर्माः सिद्धिमिष्टाः महा० १२।६४।२२। सम० **मङ्गलम्** यात्रा आरंभ करते समय मांगलिक प्रक्रियाएं।
प्रस्नवः [प्र+स्नु+अप्] 1. धारा (जैसे कि दूध की) 2. [ब० व०] आंसू 3. मूत्र।
प्रस्पर्धिन् (वि०) [प्र+स्पर्ध+इनि] होड़ करने वाला, बराबरी करने वाला।
प्रस्फार (वि०) [प्र+स्फर्+घञ्] सूजा हुआ, फूला हुआ।
प्रहतमुरज (वि०) [ब० स०] जहाँ पर ढोल बजते हों —संगीतिप्रहतमुरजाः मेघ०।
प्रहतिः [प्र+हन्+क्तिन्] आघात, चोट, थप्पड़।
प्रहा (जुहो० पर०) छोड़ देना, हार जाना।
प्रहि (म्वा० पर०) भूलना, उन्मुख होना।
प्रहितगमन (वि०) संदेश लेकर जाने वाला।
प्रहरणकलिका (स्त्री०) एक छन्द का नाम।
प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1. युद्ध 2. हार (बाजी में पहनने का)।
प्रांशुः [ब० स०] लम्बे कद का व्यक्ति, कद्दावर - प्रांशुलभ्ये रघु० १।१। सम०- **प्राकार** (वि०) जिसकी ऊँची दीवारें हों।
प्राकारधरणी [स० त०] दीवार के ऊपर बना चबूतरा।
प्राकारस्थ (वि०) [स० त०] जो फसील पर खड़ा हो।
प्राकृतधानुषः [क० स०] साधारण मनुष्य।
प्राक्तन (वि०) [प्राक्+तन] 1. पुराना, पिछला, भूत काल का 2. अतीत समय का, पहला, पहले जन्म का, नम् भाग्य। सम० **कर्मन्** (नपुं०) पूर्वजन्म में किया गया कार्य, भाग्य,—**जन्मन्** (नपुं०) पूर्व जन्म।
प्रागल्भ्यं [प्रगल्भ+ष्यञ्] 1. साहस 2. दृढ़ता।
प्रागल्भ्यम् (नपुं०) [प्रगल्भ+ष्यञ्] प्रगल्भता, वीरता चतुरता। सम० **बुद्धिः** (स्त्री०) निर्णय करने का साहस, स्थाने-साहस।
प्रागुण्यम् [प्रगुण+ष्यञ्] सही स्थिति, यथार्थ दशा, दिशा, अनुदेश।
प्राघूर्णिका (स्त्री०) अतिथि सत्कार, पाहुनों का स्वागत।
प्राच् (वि०) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1. सामने का, आगे का 2. पूर्वी 3. पहला। सम० **उत्पत्तिः** (किसी रोग का) पहला दर्शन, **वचनम्** प्राचीन उक्ति, पहले का कथन।
प्राचार (वि०) सामान्य प्रथाओं के विरुद्ध, साधारण अनुष्ठान और संस्थानों के विपरीत।
प्राचार्यः (पुं०) [प्रकृष्टः आचार्यः] 1 अध्यापक का अध्यापक 2. सेवानिवृत्त अध्यापक।
प्राचीनमूल (वि०) [ब० स०] जिसकी जड़ें पूर्व दिशा की ओर मुड़ी हुई हों।
प्राजापत्यम् [प्रजापति+ष्यञ्] 1. प्रजननात्मक शक्ति 2. एक यज्ञ का नाम।
प्राज्ञ (वि०) [प्रज्ञा एव—स्वार्थे अण्] 1. बुद्धिमान् 2. समझदार, विद्वान्, ज्ञः (पुं०) 1. बुद्धिमान् या विद्वान् 2. एक प्रकार का तोता 3. व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता 4. परमेश्वर।
प्राज्ञता, **प्राज्ञत्वम्** [प्राज्ञ+तल्, त्व, वा] बुद्धिमत्ता।
प्राणः [प्र+अन्+घञ्] 1. जीवन, जान 2. आहार, अन्न। सम० **कर्मन्** (नपुं०) जीवन कार्य, **परित्राण** (वि०) जिसके जीवन का अन्त निकट है, **परित्राणम्** किसी के जीवन की रक्षा करना, बचाना, **वल्लभा** प्राणप्रिया, **विद्या** प्राणायाम की विद्या।
प्रातः (अ०) [प्र+अत्+अन्] 1. पौ फटने पर, प्रभात वेला में, तड़के, सवेरे 2. कल सवेरे। सम० **अनुवाकः**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह सूक्त जिससे प्रातः पवन का उपक्रम होता है, **चन्द्रः** प्रभातकाल का चन्द्रमा ।

प्रातिकामिन् (पुं०) सेवक या दूत ।

प्रातिनिधिकः [प्रतिनिधि+ठक्] 1. स्थानापन्न 2. प्रतिनिधिकार, प्रतिनिधित्व ।

प्रातीप्यम् [प्रतीप+ष्यञ्] प्रत्यूला, विरोध ।

प्रात्यक्षिक (वि०) [प्रत्यक्ष+ठक्] आंखों को दिखाई देने वाला ।

प्रादेशमात्र (वि०) [प्रदेशमात्र+अण्] जरा सा, विचार मात्र देने के लिए, **म्** (नपुं०) एक बालिश्त की माप, पूरी अंगुलियों को फैलाकर अंगूठे के किनारे से तर्जनी अंगुली के किनारे तक की माप· उपदिश्य दर्शयेत् प्रादेशमात्रं प्रच्छिन्नवत्ति न तस्येव खादिरगृह्यसू० २।२।

प्राप्य (वि०) [प्रकृष्टोऽवः अच् समासः] 1. यात्रा पर गया हुआ 2. पूर्वोदाहरण, निर्देशन 3. बन्धन ।

प्रान्तः [प्रकृष्टोऽन्तः] 1. किनारा, गोट 2. कोण (आँख ओष्ठ आदि का) 3. सीमा 4. अन्तिम किनारा । समः **निवासिन्** सीमान्त प्रदेश का रहने वाला ···**भूमी** (अ०) अन्त में, आखिर कार ।

प्रायणम् [प्र+आय्+ल्युट्] व्याख्या, विवरण, निरूपण ।

प्रापिपयिषु (वि०) [प्र+आप्+णिच्+सन्+उ] पहुँचाने की इच्छा वाला ।

प्राप्त (वि०) [प्र+आप्+क्त] किसी पूर्वोदाहरण के अनुसार या पूर्वतर्क का अनुगामी । समः **काम** (वि०) प्रीत्य, उपयुक्त, **भाव** (वि०) 1. बुद्धिमान् 2. सुन्दर ।

प्राप्तिः (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1. किसी वस्तु का निरीक्षण करने पर लगाया गया अनुमान 2. (ज्योतिः में) ग्यारहवां चन्द्रघर ।

प्राप्य (अ०) [प्र+आप्+ल्यप्] प्राप्त करके, उपलब्ध करके । समः **कारिन्** (वि०) कार्य में नियुक्त होकर ही **प्रभाव**शाली, **रूप** (वि०) अनायास ही प्राप्त होने वाला ।

प्रायणम् [प्र+अय्+ल्युट्] दूर के लिए तैयार किया हुआ भोजन ।

प्रायत्यम् [प्रयत+ष्यञ्] पवित्रता, स्वच्छता ।

प्रायुस् (नपुं०) बढ़ी हुई जीवन शक्ति, दीर्घतर जीवन ।

प्रारब्ध (वि०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ । समः—**कर्मन्**, **कार्य** (वि०) जिसने अपना कार्य आरंभ कर दिया है, **कर्मन्** (नपुं०) वह कार्य जो फल देने लगा है ।

प्रार्जयित् (वि०) [प्र+अर्ज्+णिच्+तृच्] जो अनुदान देता है ।

प्रार्थ (चुरा० आ०) आश्रय लेना, सहारा लेना ।

प्रार्घ्य (वि०) [प्र+अर्घ्+ण्यत्] 1. चाहने योग्य 2. वाञ्छनीय ।

प्रालेयम् [प्रलय+अण्] प्रलय से सम्बन्ध रखने वाला ।

प्रावर्तिक (वि०) [प्रवृत्+ठक्] वह क्रम जो किसी कार्य पद्धति में सर्व प्रथम अपनाया जाकर बाद में परवर्ती सभी कार्यों में अपनाया जाय, जिससे कि कार्य में पद्धति की एकता बनी रहे ।

प्रावाडुकः [प्र+वद्+उकञ्] वाद-विवाद में रति रखने वाला ।

प्रासादः [प्र+सद्+घञ्] 1. महल, भवन 2. राज भवन 3. मन्दिर 4. चबूतरा 5. वेदिका । समः—**गर्भः** महल का आन्तरिक कमरा,—**शिखरः** महल की चोटी ।

प्राहवनीय (वि०) [प्र+आ+ह्वे+अनीय] अतिथि की भाँति स्वागत किये जाने के योग्य ।

प्राहुणः [प्र+आ+घृण्+क] अतिथि, पाहुना ।

प्रिय (वि०) [प्री+क] 1. प्यारा, अनुकूल 2. सुखद, 3. अभिलषित 4. भक्त, अनुरक्त, **यः** (पुं०) 1. प्रेमी, पति 2. हरिण 3. जामाता, **या** (स्त्री०) 1. पत्नी 2. महिला 3. छोटी इलायची, **-वम्** (नपुं०) 1. प्रेम 2. कृपा, प्रसाद 3. सुखद समाचार । समः ··**आलापिन्** (वि०) मिष्टभाषी, मीठा बोलने वाला, **आसु** (वि०) जिसे अपनी जान बहुत प्यारी हो, जीवन को चाहने वाला, **कलह** (वि०) झगड़ालू,—**जीवितः** प्राणों का प्रेम,—**संप्रहार** (वि०) मुकाबले बाजी को पसंद करने वाला ।

प्रियंवद (वि०) [प्रिय ददाति··दा+श] अभीष्ट और सुखद वस्तु का दाता ।

प्रीतिः [प्री+क्तिच्] 1. प्रबल इच्छा 2. संगीत की श्रुति । समः **संयोगः** मैत्री संबन्ध, संगतिः मित्रों का सम्मिलन ।

प्रेतः [प्र+इ+क्त] 1. नरक में रहने वाला 2. इस संसार से गया हुआ, मृत 3. पितर । समः··**अयनः** एक विशेष नरक, **पात्रम्** और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला बर्तन ।

प्रेक्षणालम्भम् (नपुं०) (स्त्रियों की ओर) देखना या (उन्हें) स्पर्श करना ।

प्रेक्षा [प्र+ईक्ष्+अ+टाप्] कान्ति, आभा प्रेक्षा क्षिप्तैर्हरितोपलाद्रेः भाग० ३।८।२४ । समः··**पूर्वम्** (अ०) देखभाल कर, जान बूझ कर, **प्रपञ्चः** रंगमञ्च पर खेला जाने वाला नाटक ।

प्रेमार्द्र (वि०) [तृ० त० स०] प्रेम से पसीजा हुआ ।

प्रेयस्कम् (नपुं०) एक प्रकार का चमड़ा कौ० अ० २।११।२९ ।

प्रेरूपकम् (नपुं०) सौन्दर्य, लावण्य नै० ५।९६ ।

प्रोच्चल् (भ्वा० प० अ०) यात्रा पर प्रस्थान करने वाला ।

प्रोच्चाटना [प्र+उत्+चट्+णिच्+युच्+टाप्] 1. (भूतप्रेतादि को) भगाना 2. विनाश ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रोतधन (वि०) [ब० स०] बादलों में डूबा हुआ।
प्रोतशूल (वि०) [ब० स०] शलाका पर रक्खा हुआ।
प्रोसार (वि०) [प्र+उत्+वञ्] फैलाया हुआ।
प्रोशाल (वि०) [प्रकर्षेणोत्तालः--प्रा० स०] ऊँचे स्वर से बोलने वाला।
प्रोदर (वि०) [ब० स०] बड़े पेट वाला।
प्रोद्दीधि (वि०) [प्रा० स०] लहराता हुआ, चटकदार होता हुआ।
प्रोन्मथित (वि०) [प्र+उत्+नम्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, उभारा हुआ।
प्रोर्णु (अदा० उभ०) अच्छी तरह ढक लेना, चादर लपेट लेना।
प्रौढ (वि०) [प्र+ऊढ-वह्+क्त] 1. विशाल, बड़ा 2. व्यस्त, घिरा हुआ। सम०--प्रियः साहसी और विश्वास पात्र स्त्री, --मनोरमा सिद्धान्त कौमुदी पर एक टीका।
प्रौढिः [प्र+वह्+क्तिन्] औत्सुक्य, उत्कटता, (चरित्र की) गहराई।
प्रौक्त (वि०) अर्थ सम्पन्न, अर्थ युक्त।
प्लक्ष द्वारम् (नपुं०) पार्श्वद्वार, भवन के पक्ष का द्वार। --म०पु० २६४।१५।
प्लवः [प्लु+अच्] 1. एक जलचर 2. एक संवत्सर का नाम। सम०--कुम्भः तैराक की सहायता के लिए घड़े जैसा बर्तन।
प्लावयितृ (वि०) [प्लु+णिच्+तृच्] मल्लाह, नाविक।
प्लुतभेदः (पुं०) एक प्रकार का संगीत भाव।

फ

फणभरः [फणं बिभर्तीति-भृ+अच्] साँप।
फणितल्पगः (पुं०) विष्णु का विशेषण।
फणिजंकः (पुं०) तुलसी का एक भेद, सफेद मरुवा।
फलण्डः (पुं०) हरी प्याज।
फलम् [फल्+अच्] 1. क्षतिपूर्ति, प्रतिपूर्ति 2. स्कन्धास्थि, असफलक 3. उपज 4. फल 5. परिणाम 6. कृत्य 7. उद्देश्य, प्रयोजन 8. उपयोग, लाभ 9. सन्तान, 10 (तलवार का) फलक 11. तीर की नोक। सम०--अधिकारः परिश्रम का दावा,--अपूर्वम् यज्ञ का अदृष्ट परिणाम,--उपयोगः फल का आनन्द लेना, --ग्रहः 'ग्रहों का मानवकुल पर प्रभाव' विषयक ज्योतिष का एक ग्रन्थ,--भावना परिणाम का अभिग्रहण,--मुज् (पुं०) बन्दर, --मूलम् (नपुं०) फल और जड़ें,--वर्तिः (स्त्री०) कपड़े की बनी बत्ती जिसे चिकना करके अनीमा के लिए गुदा में रक्खा जाता है,--स्थायनम् 'सोमलतोत्रयन' नामक संस्कार।
फलकम् [फल+कन्] 1. तख्ता, फट्टा 2. टिकिया 3. कूल्हा 4. हाथ की हथेली 5. लाभ 6. बाण का मुंह 7. आर्तव, ऋतुस्राव 8. लकड़ी का पटड़ा 9. (कपड़ा बुनने के लिए) वृक्ष की छाल सन आदि। सम०--परिधानम् वस्त्रों के रूप में वृक्षछाल धारण करना।
फलिः (पुं०) [फल्+इ] एक प्रकार की मछली।
फल्गुवाक् मिथ्याभाषण, झूठपना।
फालिका (स्त्री०) घास, टुकड़ा--मृदुश्यञ्जनमांसफालिकाम् - नै० १६।८२।
फाल्गुनेयः [फाल्गुनी+ढक] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।
फिट्सूत्रम् व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसके रचयिता शान्तनवाचार्य थे।
फुट्टिका (स्त्री०) एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा।
फूत्कृतिः (स्त्री०) [फूत्कृ+क्तिन्] फूंक मारना, 'सीत्' शब्द करना।
फुप्फिञ्जः (पुं०) [ओ० फिरङ्ग] उपदंश, गर्मी का रोग।
फुल्लवदन (वि०) [ब० स०] प्रसन्नमुख, खुश दिखाई देने वाला।
फेरुजंकः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी।
फेनधर्मन् (वि०) झागभंगुर, क्षणस्थायी, बुलबुले की भांति अस्थिर--महा० ३।३५।२।
फेनायितम् [ना० धा० फेन+क्यच्+क्त] मुख के पार्श्ववर्ती भाग से की गई हाथी की कडकयुक्त गर्जन, चिंघाड़ मालवि० २।१३।
फेलुकः अंडकोष, फोता, मुष्क।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरः [वह्+अच्, पृषो०] खान से धातुओं तथा अन्य खनिज पदार्थों को निकालने का एक उपकरण। सम०—**छिप्पचका,—छिप्पी** एक प्रकार की मछली।

बकाची (स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

बटुकः [बट्+कन्] 1. लड़का, बच्चा 2. मन्दबुद्धि बालक। सम०—**भैरवः** भैरव का एक रूप।

बडिशम् (नपुं०) शल्योपयोगी उपकरण।

बत (अ०) **यथार्थतः** उक्त, ठीक कहा हुआ कल्याणी बत गाथेयम् - रा० ५।३४।६।

बहुम् बड़ी संख्या (सायण के मत से सौ करोड़ की संख्या, और के मत से एक हजार करोड़)।

बन्दिः [बन्द्+इ] 1. बन्धन, कैद 2. बन्दी, कैदी। सम०—**ग्रहः** बन्दी बनाना, **ग्राहः** सेंध लगाने वाला, - **ग्राहम्** (अ०) बन्दी के रूप में ग्रहण करना, - **पालः** कारारक्षक, - **शृंखला** वारांगना, वेश्या।

बद्ध (वि०) [बन्ध्+क्त] 1. परिरक्षित 2. बन्धा हुआ, 3. शृंखलित 4. प्रतिबद्ध 5. संहित 6. दृढ़ 7. जड़ा हुआ 8. रचित 9. संकुचित। सम०—**अवस्थिति** (वि०) सतत, अनवरत, **आदर** (वि०) व्यसनग्रस्त - बद्धादरोऽपि परदारपरिग्रहे त्वम् रा० च० ५, —**मण्डल** (वि०) वर्तुलाकार, मंडली में अवस्थित, - **मूत्र** (वि०) जिसने मूत्र रोक लिया है।

बन्धः [बन्ध्+घञ्] 1. बन्धन 2. केशबन्ध, चोटिला 3. शृंखला, बेड़ी। सम०—**कर्तृ** (पुं०) बाँधने वाला, - **मुद्रा** बेड़ी की छाप।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] सांसारिकबन्धन (विप० मोक्ष)। सम० **रक्षिन्** (वि०) कारारक्षक।

बन्धनिकः [बन्धन+ठन्] कारारक्षक।

बन्धुः [बन्ध्+उ] 1. रिश्तेदार, सम्बन्धी 2. एक दूसरे से सम्बद्ध, भाई 3. मित्र 4. नियंत्रक, शासक 5. ज्योतिष की दृष्टि से तीसरा घर। सम०—**दायादः** रिश्तेदार, उत्तराधिकारी,—**प्रिय** (वि०) सम्बन्धियों का प्यारा।

बन्धुरित (वि०) [बन्धुर+इतच्] प्रवृत्त, मुड़ा हुआ।

बन्धूक (तना० उभ०) मित्र बनाना।

बन्धूर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1. नतोन्नत, लहरियादार 2. सुन्दर, प्रसन्नता देने वाला।

बभ्रुकः [भृ+कु, द्वित्वं, बभ्रु+उ वा, स्वार्थे कन् च] एक नक्षत्रपुंज।

बर्बरः (पुं०) 1. वह हाथी जिसने दाँतों पर पदार्पण कर लिया है मालवि० ५।५ 2. घुंघराला। सम०—**अलका** (स्त्री) वह स्त्री जिसके मस्तक के घुंघराले बाल हैं।

बर्बरीकम् (नपुं०) 1. घुंघराले बाल 2. सफ़ेद चन्दन की लकड़ी।

बर्हः,-र्हम् [बर्ह्+अच्] 1. मोर का पंख 2. पक्षी की पूंछ 3. मोर की पूंछ 4. पत्ता 5. वृन्द। सम०—**अवतंस** (वि०) जिसने सिर को पंख लगाकर अलंकृत किया हुआ है,—**नेत्रम्** मोर की पूंछ पर बना आँख जैसा चिह्न।

बर्हिण्यायः (पुं०) मीमांसा का व्याख्याविषयक एक नियम जिसके आधार पर गौण अर्थ की अपेक्षा प्राथमिक अर्थ को प्रधानता दी जाती है—मी० सू० ३।२।१-२।

बर्हिणवाससः (नपुं०) पक्षों से बना बाण, वह तीर जिसमें पर लगा है।

बलम् [बल्+अच्] 1. शक्ति, सामर्थ्य 2. सेना 3. मोटापा 4. शरीर, आकृति 5. वीर्य 6. रुधिर 7. अङ्कुर 8. शक्ति का देवता 9. हाथ, - **क्षये** विष्णुबले शक्रः —महा० १२।३३९।८ 10. प्रयत्न। सम०—**अर्थिन्** (वि०) शक्ति या सामर्थ्य का इच्छुक,—**उद्धारणम्** सेना में भर्ती होना—कौ० अ०,—**तापनः** इन्द्र का विशेषण,—**पुच्छकः** कौवा, **पृष्ठकः** हरिण विशेष, —**मुख्यः** सेनापति,—**वर्जित** (वि०) बलहीन, दुर्बल, —**समुत्थानम्** सशस्त्र सेना की भर्ती करना।

बलकः (पुं०) स्वप्न।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1. बलवान्, शक्ति संपन्न, प्रबल 2. सघन, मोटा 3. अधिक महत्त्वपूर्ण 4. सशक्त (पुं०) 1. आठवाँ मुहूर्त 2. श्लेष्मा, कफ, बलगम —**ही** (स्त्री०) छोटी इलायची।

बलासः (पुं०) 1. एक प्रकार का रोग 2. क्षय, तपेदिक।

बलाहकः [बल+आ+हा+कन्] 1. बादल 2. एक पर्वत 3. विष्णु का एक घोड़ा 4. सांप की एक प्रकार।

बलिः [बल्+इन्] 1. यज्ञ में आहुति, उपहार 2. भूत यज्ञ 3. पूजा, अर्चना 4. उच्छिष्ट भोजन 5. देवता पर चढ़ाया गया उपहार 6. शुल्क, कर 7. चँवर का दस्ता 8. एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। सम०—**क्रिया** मस्तक पर एक रेखा,—**बन्धनम्** एक नाटक का नाम जो पाणिनि द्वारा रचित समझा जाता है,—**बन्धनः** (पुं०) विष्णु का विशेषण, **विधानम्** उपहार रूप में बलि देना,—**षड्भागः** आय का छठा भाग जो राजा को कर के रूप में दिया जाता है - अरक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिणम् मनु० ८।३०८,—**होमः** अग्नि में आहुति देना।

बलीशः (पुं०) 1. कौवा 2. चालाक, धूर्त, मक्कार।

बस्तमारम् (अ०) बकरे की हत्या के ढंग पर।

बस्तिः [वस्त+इ, ववयोरभेदः] 1. मूत्राशय 2. सांभर झील से उत्पन्न नमक।

बस्तिकः (पुं०) एक प्रकार का बाण जिसकी नोक शरीर से खींचते समय उसी में रह जाती है—महा० ७। १८९।११ पर भाष्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहिस् (अ०) [वह्+इसुन्] 1. के बाहर, बाहर 2. घर के बाहर 3. बाह्यरूप से 4. पृथक् रूप से 5. सिवाय। सम०—अङ्ग (वि०) बाहरी, दूर से संबन्ध रखने वाला—अन्तरङ्गबहिरङ्गवारन्तरङ्गं बलीयः मै० सं० १२।२।२९ पर शा० भा०, —वृक्ष (बहिर्दृश) (अ०) अतिरिक्त या फालतू दिखाई देने वाला, —षष्ठ्यामम् (अ०) जिसकी योग्यता बाह्य पदार्थों की हो, **मनस्** (वि०) जो मन से बाहर हो,—**मनस्क** (वि०) जो मानस क्षेत्र की बात न हो,—**यूति** (वि०) जो बाहर बँधा हुआ या रखा हुआ हो,—**वसिन्** (वि०) बाहर रहने वाला,—**व्यसनिन्** (वि०) लंपट, कामुक, इन्द्रियपरायण, —**स्थ**,—**स्थित** (वि०) बाहरी, बाहर का, **कार्य** (वि०) निकाल बाहर फेंकने के योग्य।

बहु (वि०) [बंह्+कु, नलोपः] (**बर्हिष्ठ**, **भूयिष्ठ**) 1. बहुत, पुष्कल, प्रचुर 2. बहुत से, असंख्य 3. बड़ा, विशाल। सम०—**उपयुक्त** (वि०) जो कई प्रकार से काम का हो,—**क्षीरम्** सावन,—**क्षीरा** अधिक दूध देने वाली गाय, **गुरुः** जिसने अध्ययन बहुत कुछ किया है परन्तु भली प्रकार नहीं, **दोहना** दे० बहुक्षीरा, बहुत दूध देने वाली गाय, **नाडिकः** शरीर, काया, **प्रकृति** (वि०) जिसमें क्रियापरक तत्त्व बहुत हों (जैसे समस्त शब्द), —**प्रज्ञ** (वि०) बहुत बुद्धिमान्, बड़ा समझदार, **प्रत्यर्थिक** (वि०) जिसके प्रतिपक्षी और प्रतिद्वन्द्वी अनेक हों, **प्रत्यवाय** (वि०) जिसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हों, **रजस्** (वि०) बहुत धूल से भरा हुआ,—**वादिन्** (वि०) बहुत बोलने वाला, **शस्त** (वि०) बहुत उत्तम, **संख्यक** (वि०) अनगिनत, **सत्त्व** (वि०) जिसके पास बहुत से पशु हों, **साहस्र** (वि०) हजारों की संख्या में।

बहुल (वि०) [बंह्+कुलच्, नलोपः] (म०—**बंहीयस्**, उ०—**बंहिष्ठ**) 1. मोटा, सघन, सटा हुआ 2. चौड़ा, पुष्कल 3. प्रचुर, यथेष्ट 4. असंख्य, अनगिनत 5. समृद्ध 6. काला, कृष्ण। सम०—**अश्वः** एक राजा का नाम,—**एकादशिनिम्न** कृष्णपक्ष का अंधकार —**कूटयुग** बहुलपक्षतिथिन्नि सीम्ना—नै० २१।१२४।

बाण: [वण्+घञ्] 1. तीर 2. निशाना 3. बाण की नोक 4. ऐन, औड़ी (गाय की) 5. शरीर 6. एक राक्षस, बलि का पुत्र 7. एक कवि का नाम जिसने कादम्बरी और हर्षचरित लिखे हैं 8. अग्नि 9. पाँच की संख्या का प्रतीक 10. चाप की डोरी। सम० —**क्षिप्त** (वि०) बाण से बिंधा हुआ, **पत्रः** (पुं०) एक पक्षी, —**लिङ्गम्** नर्मदा नदी पर उपलब्ध एक श्वेत पत्थर जिसे शिवलिङ्ग के रूप में पूजा जाता है।

बादरिः (पुं०) एक दार्शनिक का नाम।

बाधानिर्मुक्तिः (स्त्री०) [पं० त०] भूत प्रेत की पीड़ा से मुक्ति।

बाधक (वि०) [बाध्+ण्वुल्] पीड़ादायक, छेड़छाड़ करने वाला।

बाधयितृ (पुं०) [बाध्+णिच्+तृच्] बाधा पहुँचाने वाला, हानि पहुँचाने वाला।

बाध्यबाधकता (स्त्री०) अत्याचारग्रस्त और अत्याचारी की अन्योन्यक्रिया, पीड़ित और पीड़क का पारस्परिक प्रभाव।

बान्धवः [बन्धु+अण्] हितैषी—**पैतृष्वस्रेयप्रोत्यर्थं तदुशीत्र-स्यातद्बान्धवः**, भाग० १।१९।३५।

बार्हस्पत्याः [बृहस्पति—यक्] राजनीति पर लिखने वालों की शाखा जिसका उल्लेख कौटिल्य ने किया है—कौ० प्र० १।१५।

बाल (वि०) [बल्+ण, बाल्+घञ्] 1. बालक, बच्चा 2. अविकसित (पुरुष या वस्तु) 3. नवोदित (जैसा कि सूर्य या उसकी किरणें) 4. अज्ञान, रः (पुं०) 1. बच्चा 2. अवयस्क 3. मूर्ख 4. भोलाभाला 5. पाँच वर्ष का हाथी 6. नारियल। सम०—**अरिष्टः** बच्चों को दाँत निकलने का कष्ट, **आमयः** बच्चों की बीमारी, बालरोग, **चिकित्सा** बच्चों के रोगों का इलाज, **तुम्बालः** मछली, **द्रुतः** आम का पौधा, —**मनोरमा** सिद्धान्तकौमुदी पर लिखी गई टीका —**मरणम्** मूर्ख की मृत्यु,—**यतिः** बालसंन्यासी,—**व्रतः** सञ्जुघोष (बौद्धश्रमण) का विशेषण।

बालकः [बाल+कन्] 1. बालक, बच्चा 2. आवश्यक 3. बुद्धू 4. कड़ा 5. हाथी या घोड़े की पूँछ 6. बाल 7. पाँच वर्ष का हाथी—शि० ५।४७।

बाला [बाल+टाप्] दुर्गा का विशिष्ट रूप। सम०—**मन्त्रः** बालादेवी का पुनीत मंत्र।

बालिशमति (वि०) बच्चों जैसी छोटी बुद्धि वाला, बालबुद्धि।

बालेयशाकः एक प्रकार का शाक।

बाष्कलः एक अध्यापक, पैल ऋषि का शिष्य, ऋग्वेदशाखा का संस्थापक।

बाष्पविक्लव (वि०) आँसुओं से अभिभूत।

बास्तिकम् [बास्त+ठक्] बकरियों का झुंड—रा० २।७७।२।

बाहिरिकः विदेशी, दूसरे देश का न च बाहिरिकान् कुर्यात् पुरराष्ट्रोपघातकान्—कौ० अ० ९।४।२२।

बाहुः [बाध्+कु, हकारादेशः] 1. भुजा 2. चौखट का बाजू 3. पशु का अगला पाँव 4. (ज्या० में) समकोण त्रिकोण की आधार रेखा 5. रथ का पहिया 6. सूर्य घड़ी पर शंकु की छाया 7. बारह अंगुल की नाप, एक हाथ की नाप 8. धनुष का अवयव। सम०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—अन्तरम् छाती - बाह्वन्तरे मनुजितः श्रितकौस्तुभे या—कनक०, **तरणम्** भुजाओं से तैर कर नदी पार करना,—**नि:सृतम्** युद्ध की एक विधा जिसके अनुसार शत्रु के हाथ की तलवार नीचे गिरवा दी जाती है, **प्रचालकम्** (अ०) भुजाएँ हिलाना, **लोहम्** घण्टी बनाने के काम आने वाला धातु, —**विधृतम्, विधृतिम्** मल्लयुद्ध की एक विशेष मुद्रा।

बाह्य (वि०) [बहिर्भवः—ष्यञ्] 1. बाहर का, बाहरी 2. जाति बहिष्कृत 3. सार्वजनिक, **ह्यः** (पुं०) 1. विदेशी 2. बिरादरी से निष्कासित 3. प्रतिलोम संबंध से उत्पन्न सन्तान। सम०—**अर्थः** शब्द का अतिरिक्त, फालतू अर्थ, **-कक्षः** बाहर की ओर का कमरा, —**करणम्** बाहरी ज्ञानेन्द्रिय,—**प्रयत्नः** ध्वनियों के उच्चारण के समय बाह्य प्रयत्न।

बिठकम् (नपुं०) आकाश निरु० ९।३०।

बिडालव्रतिक (वि०) [ब० स०] पाखण्डी, कपटी, धूर्त।

बिन्दुः [बिन्द्+उ] 1. बूंद, कण 2. गोल चिह्न 3. हाथी के शरीर पर रंगीन निशान 4. शून्य, सिफर 5. (ज्यो० में) ऐसा चिह्न जिसकी लम्बाई, चौड़ाई कुछ भी न हो 6. पानी की एक बूंद 7. अक्षर के ऊपर लगा बिन्दु जो अनुस्वार का कार्य करता है 8. पाण्डुलिपियों में लिखित गये शब्द के ऊपर शून्य चिह्न (जो प्रकट करता है कि वह शब्द मिटाया नहीं जाना चाहिए था) 9. (नाटक० में) विशिष्ट चिह्न जो किसी गौण घटना का आकस्मिक विकास प्रकट करता है 10. (दर्शन० में) चिच्छक्ति की विशिष्ट अवस्था। सम०—**च्युतकः** एक प्रकार की शब्दक्रीड़ा —दे० ९।१०४,—**प्रतिष्ठामय** (वि०) अनुस्वार पर आधारित,—**माधवः** विष्णु का रूप।

बिम्बः [बी—क्वन्, नि०] 1. सूर्य या चन्द्र का मंडल 2. कोई भी थाली की भाँति गोल तश्तरी वस्तु 3. प्रतिमा, छाया, अक्स 4. दर्पण 5. मर्तबान 6. तुलित पदार्थ (विप० प्रतिबिम्ब) 7. मूर्ति, आकृति 8. साँचा, उभरा हुआ चित्र।

बिम्बिनी [बिम्ब्+इन्+ङीप्] आँख की पुतली।

बिम्बिसारः मगध के एक राजा का नाम जो गौतमबुद्ध का समसामयिक था।

बिरुदः 1. एक पदक या उपाधि जो श्रेष्ठता का द्योतक है 2. स्तुतिपाद, प्रशस्ति।

बिलायनम् [ष० त०] अन्तर्भौमिक गुफा।

बिसम् [बिस्+क] 1. कमलतन्तु 2. कमल का तन्तुमय काण्ड 3. कमल का पौधा। सम०—**ऊर्णा** कमलतन्तु की ऊन, **गुणः** कमलतन्तुओं से बनी रस्सी, **प्रसूनम्** कमल फूल, **-वल्लिः** कमलतन्तु से बनी बत्ती।

बिसिनीपत्रम् कमल का पत्ता।

बीजम् [वि—जन्+ड, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बीज, बीज का दाना 2. बीजाणु, सत्त्व 3. मूल, स्रोत 4. वीर्य 5. कथावस्तु का बीज 6. बीजगणित 7. सट्टा 8. आशय 9. प्राथमिक जनन्नाणु का सकलय 10. विश्लेषण 11. जन्म के समय शिशु के हाथों की मुद्रा। सम०—**अंकुरः** ऊँट,—**अर्थ** (वि०) प्रजननार्थी, **निर्वापणम्** बीज बोना, **प्ररोहिन्** (वि०) बीज से उगने वाला, **—वापः** बीज बोना, **स्नेहः** ढाक का वृक्ष।

बीजाकृष्ट (वि०) (खेत) जिसमें बोने के पश्चात् हल चला दिया जाय।

बुद्ध (वि०) [बुध्+क्त] 1. ज्ञात 2. जागरित 3. प्रकाशित 4. विकसित,—**द्धः** (पुं०) 1. विद्वान् पुरुष 2. (बुद्ध मतानुसार) वह व्यक्ति जिसने सत्य ज्ञान जान लिया है तथा जो मृत्य निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व संसार को मोक्ष का मार्ग बतलाता है 3. परमात्मा।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1. प्रत्यवीकरण, समझ 2. प्रज्ञा, मति, मेधा 3. सूचना, जानकारी 4. विवेक 5. मन 6. मति, विश्वास, विचार 7. इरादा, प्रयोजन, अभिकल्प 8. होश में आना, सुधबुध प्राप्त करना 9. सांख्य के २५ पदार्थों में दूसरा 10. प्रकृति 11. उपाय 12. ज्योतिष की दृष्टि से पाँचवाँ घर। सम०—**अधिक** (वि०) श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त, **कृताया** बुद्धि की आज्ञा पर प्रतिदर्श किया,—**प्रागल्भी** समझ की स्वरक्षता, **मोहः** विचार मूर्खता, **लाघवम्** निर्णयविषयक हलकापन, **व्यामर्दिमा**, नासमझी, —**वर्जित** (वि०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, **वैभवम्** बुद्धि की शक्ति, बुद्धि का ऐश्वर्य।

बुभुत्सु (वि०) [भू+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] 1. समृद्ध होने का इच्छुक 2. कल्याण चाहने वाला।

बुसकः (पुं०) टोकरी बनाने वाला।

बुसा (स्त्री०) [बुस्+अच्+टाप्] (नाटक० में) छोटी बहन।

बृसय (वि०) (वेद०) प्रबल, बलशाली, बड़ा—**बृसयशन्दो** बृहच्छब्दार्थं समयति मी० सू० १०।१।३२ पर शा० भा०।

बृहत् (वि०) [बृह्+अति] 1. बड़ा, विशाल 2. चौड़ा, प्रशस्त विस्तृत 3. पुष्कल 4. प्रबल, शक्तिशाली 5. लंबा, ऊँचा 6. पूर्ण विकसित 7. संपन्न, सदा हुआ 8. प्राचीनतम, सबसे पुराना 9. उज्ज्वल 10. स्पष्ट; (पुं०) विष्णु;—**ती** (स्त्री०) 1. बड़ी वीणा 2. नारद की वीणा 3. छत्तीस की संख्या का प्रतीक 4. पीठ और छाती के बीच का भाग 5. आशय 6. दाणी 7. सफेद अंडाकार बैंगन (नपुं०) 1. वेद 2. ब्रह्मा 3. नैष्ठिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्रह्मचर्य सावित्र प्राजापत्य ये ग्राह्य चाय बृहत्तया —भाग० ३।१२।४२। सम० **उपरतापिनी** एक उपनिषद् का नाम, -**तेजस्** (पुं०) बृहस्पति ग्रह, —**देवता** वैदिक देवता विषयक एक ग्रंथ, —**नारदीयम्** एक उपनिषद् का नाम, —**संहिता** वराहमिहिर रचित ज्योतिष का एक ग्रंथ, —**साम्न्** सामदेव का एक मंत्र —भग० १०।३५।

बृहस्पतिचक्रम् (नपुं०) साठ वर्षों (संवत्सरों) का काल।

बिल (वि०) [बिल+अण्] बिलों में रहने वाला।

बोक्काणः (पुं०) घोड़े की नाक पर लटकता हुआ थैला जिसमें उसका खाद्य पदार्थ रक्खा रहता है।

बोधायनः (पुं०) एक सूत्रकार का नाम।

बोधिः (दुध+इन्] 1. पूर्ण ज्ञान या प्रकाश 2. बौद्ध श्रमण की उज्ज्वल बुद्धि 3. पुनीत वटवृक्ष 4. मृगी 5. बुद्ध का विशेषण। सम०—**अङ्गम्** पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपेक्षित वस्तु।

बौद्धावतारः (पुं०) बुद्ध के रूप में भगवान् का अवतार।

ब्रध्नः (पुं०) 1. सूर्य 2. वृक्षमूल 3. दिन 4. अंक या अदद का पौधा 5. सीसा 6. घोड़ा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण 8. तीर की नोक 9. एक रोग का नाम। सम०—**बिम्बम्**, —**मण्डलम्**, **सूर्यमण्डल**।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बृंह्+मनिन्, नकारस्याकारे ऋतोरत्वम्] 1. परमपुरुष, परमात्मा 2. अथर्ववादपरक सूक्त 3. पुनीत पाठ 4. वेद 5. पुनीत अक्षर ॐ—एकाक्षरं पर ब्रह्म मनु० २।८३ 6. ब्राह्मणजाति 7. ब्राह्मण की शक्ति 8. धार्मिक तपश्चरण 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्व 10. मोक्ष 11. वेद का ब्राह्मणभाग 12. धन 13. आहार 14. सचाई 15. ब्राह्मण 16. ब्राह्मणत्व 17. आत्मा। सम०—**क्षित्रियम्** ब्राह्मणों के प्रति किया गया अपराध, —**कटः** बड़ा विद्वान्, —**गीता** (स्त्री०) ब्रह्मा का उपदेश जैसा कि महा० के अनुशासनपर्व में दिया गया है, —**जिज्ञासा** परमात्मा को जानने की इच्छा, —**तन्त्रम्** वेद की शिक्षा, -**दूषक** (वि०) वेद के मूलपाठ को दूषित करने वाला, **पारः** सब प्रकार के पुनीत ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य, -**बलम्** ब्रह्मविषयक शक्ति, —**बिन्दुः** वेदपाठ करते समय मुख से निकली थूक की बूंद, **भूमिजा** एक प्रकार की मिर्च, —**मूहूर्तः** दिन का आरंभिक भाग, ब्राह्मवेला, —**रात्रः** उषःकाल, **वादः** परमात्मा से संबंध रखने वाला व्याख्यान, **श्री** एक सामसज्ञ का नाम।

ब्रह्मन्वत् (पुं०) [ब्रह्मन्+मतुप्] अग्नि का विशेषण।

ब्रह्मीभूतः (पुं०) 1. जिसने ब्रह्मा के साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया है (यह संन्यासियों के विषय में कहा गया है जो इस शरीर को त्याग देते हैं) 2. शङ्कराचार्य।

ब्राह्मनिधिः (पुं०) ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा याजकों के लिए बनाई गई निधि।

ब्राह्मण (वि०) [ब्रह्म वेत्त्यधीते वा ब्रह्म+अण्] 1. ब्राह्मण विषयक 2. ब्राह्मण के योग्य 3. ब्राह्मण द्वारा दिया गया, 4. धर्म पूजा विषयक 5. ब्रह्म को जानने वाला —**णः** 1. चारों वर्णों में से पहले वर्ण से संबद्ध 2. (पुरुष के मुख से उत्पन्न) ब्राह्मण 3. पुरोहित 4. अग्नि का विशेषण 5. अट्ठाईसवाँ नक्षत्र, -**णम्** 1. ब्राह्मणसमाज 2. वेद का वह भाग जिसमें विभिन्न यज्ञों के अवसर पर सूक्तों के प्रयोग का विधान विहित है, यह मन्त्रभाग से बिल्कुल पृथक् है। सम० -- **अवर्धनम्** ब्राह्मण भाग में विहित निर्देश का अभाव —मनु० १०।४३, **प्रसङ्गः** 'ब्राह्मण' नाम, —**प्रातिवेश्यः** पड़ोसी ब्राह्मण, —**भावः** ब्राह्मण होने की स्थिति।

भ

भक्तम् [भज्+क्त] 1. भाग, अंश 2. आहार 3. भात, उबले हुए चावल 4. अनाज 5. पानी में उबाला हुआ अन्न 6. पूजा, अर्चा 7. वेतन, पारिश्रमिक 8. एक दिन का भोजन —**त्रयं त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृत्तये** —मनु० ११।७। सम०—**अदः**, **अग्रम्** उपाहारशाला, जलपानगृह, **कृत्यम्** भोजन की तैयारी —**साधनम्** दाल की तश्तरी, **लिक्थम्** भात का मांड।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1. विभाजन 2. गौण अर्थ, आलंकारिक अर्थ 3. (किसी रोग के प्रति) शरीर की उन्मुखता। सम०—**गम्य** (वि०) जो भक्ति के द्वारा प्राप्त किया जा सके, जहाँ श्रद्धा और भक्ति से पहुँचा जाय, —**गन्धि** (वि०) जिसमें भक्ति की गन्धमात्र हो अर्थात् थोड़ी भक्ति वाला व्यक्ति, -**वश्य** (वि०) जो भक्ति के द्वारा वश में किया जा सके।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लिए उपयुक्त, -**क्यम्** (नपुं०) 1. खाने का पदार्थ, आहार, —**भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम्**—हि० १।५५ 2. जल। सम०—**अभक्ष्यम्** अनुमत और निषिद्ध भोजन, —**भोज्यम्** सब प्रकार के भोजन से युक्त।

भग:,-**गम्** [भज्+घ] 1. सूर्य 2. चाँद ३. शिव का रूप 4. सौभाग्य, प्रसन्नता 5. समृद्धि 6. यश, कीर्ति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

7. सौन्दर्य 8. श्रेष्ठता 9. प्रेम, प्यार 10. कामकेलि, 11. योनि 12. गुण, धर्म 13. प्रयत्न 14. अरुचि, विराग 15. मोक्ष 16. गाम्भीर्य 17. सर्वशक्तिमत्ता 18. प्रेम और विवाह की अधिष्ठात्री देवता आदित्य 19. ज्ञान 20. इच्छा 21. अणिमा। सम० ईतः भाग्य की देवता, काम (वि०) संभोग के आनंद का इच्छुक, वृत्तिः (स्त्री०) वेश्यावृत्ति, वृत्ति (वि०) वेश्यावृत्ति से निर्वाह करने वाला।

भगवत्पादः आदि शंकराचार्य की सम्मान सूचक उपाधि।

भग्न (वि०) [भञ्ज्-+क्त] 1. टूटा हुआ 2. हताश, विफल 3. अवरुद्ध, स्खलित 4. नष्ट 5. ध्वस्त 6. हारा हुआ। सम० अस्थि (वि०) जिसकी हड्डियां टूट गई हैं,—कूबर (वि०) जिसका ऊपर का ढांचा टूट गया है (जैसे रथ),—ताल: (संगीत०) एक प्रकार की ताल,—परिणाम (वि०) पूरा करने से रोकने वाला।

भङ्गः [भञ्ज्+घञ्] 1. (बुद्ध०) विश्व में निरन्तर होने वाला क्षय 2. (जैन०) 'स्यात्' से आरम्भ होने वाला तार्किक सूत्र।

भङ्गिः [भञ्ज्+इन्, कुत्वम्; स्त्रियां ङीप्] 1. टूटना 2. हिलना 3. झुकना 4. तरंग 5. बाढ़ 6. विशिष्ट प्रथा, ढंग नानाश्रमस्तापपृथग्भङ्गीरचित्रकुन्तलाम् भारत०। सम० भाणिका, भाणिकम् कूटनीति से युक्त भाषण, विकारः अपनी मुखमुद्रा को विकृत करना।

भङ्गिनी [भङ्गिन्+ङीप्] नदी, दरिया—आत्ममौलिमणिकान्तिभङ्गिनीम् मै० १८।१३७।

भञ्जना [भञ्ज्+युच्+टाप्] व्याख्या।

भट्टनारायणः 'वेणीसंहार' नाटक का प्रणेता।

भट्टिः 'भट्टि काव्य' का रचयिता।

भट्टोजिः एक वैयाकरण का नाम।

भण्डुकः एक प्रकार की मछली।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नलोपः] 1. अच्छा, प्रसन्न, समृद्ध 2. शुभ, मांगलिक 3. श्रेष्ठ, प्रमुख 4. कृपालु 5. सुखद 6. सुन्दर 7. वाञ्छनीय 8. प्रिय 9. दक्ष। सम०—कल्पः बौद्धों के अनुसार वर्तमान युग,—निधिः उपहार के लिए बने पात्र, वाच् (स्त्री०) शुभ वक्तृता, विराज एक छन्द का नाम।

भद्रक [भद्र+कन्] 1. सुन्दर 2. शुभ 3. सज्जन—कम् (नपुं०) 1. बैठने का विशिष्ट आसन 2. अन्तःपुर।

भद्राकरणम् मुण्डन, समस्त सिर मुंडवाना।

भयालु वि० [भय+आलुच्] भीरु कायर।

भरः [भृ+अप्] पराक्रम, श्रेष्ठता, प्रमुखता न खलु वयसा जात्यैवायं स्वकार्यसहो भरः—वि० ५।१८।

भरतशास्त्रम् नाटकला।

भर्गस् (नपुं०) [भृज्+असुन्] आभा, कान्ति, चमक।

भर्तव्य (वि०) [भृ—तव्य] 1. सहन करने या होने योग्य 2. भाड़े के योग्य, पालन पोषण किये जाने के योग्य।

भर्तृ (पुं०) [भृ+तृच्] 1. पति, 2. स्वामी 3. नेता, सेनापति 4. पालक पोषक, रक्षक 5. सृष्टिकर्ता 6. विष्णु। सम० चित्त (वि०) पति के विषय में सोचनेवाली, देवता पति की देवता मानना, लोकः पति का संसार, हार्यधन (वि०) जिसकी संपत्ति उसके स्वामी द्वारा जब्त की जा सके, हीना पति द्वारा परित्यक्ता।

भवः [भू+अप्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2. जन्म, उपज 3. स्रोत, उद्गम 4. सांसारिक सत्ता, सांसारिक जीवन 5. स्वास्थ्य, समृद्धि 6. देवता 7. शिव 8. अधिग्रहण, प्राप्ति 9. श्रेष्ठता। सम० अग्रम् संसार का सबसे अधिक दूरवर्ती किनारा, भङ्गः जन्म मरण से मुक्ति, —भावन (वि०) कल्याणकारी, भीरु (वि०) संसार के अस्तित्व से डरने वाला,—भोगः सांसारिक सुखों का आनन्द लेना, शेखरः चन्द्रमा,—संभिन् (वि०) भौतिक संसार में अनुरक्त,—संततिः (स्त्री०) जन्म मरण का तांता।

भवद्वसु (वि०) [ब० स०] धनवान्, दौलतमंद।

भवतम् [भू+क्यङ्] जन्माङ्ग, जन्मकुंडली, जन्म-नक्षत्र।

भव्यमनस् (वि०) अच्छे सद्गुणों वाला।

भावदक (वि०) [भवत्+कन्] आप से संबंध रखने वाला भावदकैरिव सवलंयैरुपास्यते हैः रा० च० ७।२।

भवी (स्त्री०) कुतिया, भौंकने वाली।

भस्मन् (नपुं०) [भस्+मनिन्] 1. राख 2. शरीर पर लगाई जाने वाली भभूत, राख। सम०—अङ्गः एक प्रकार का कबूतर, अङ्गरागः शरीर पर भस्म रमाना, —अवलेपः शरीर पर भस्म लीपना—अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में बच गया है, —गुण्ठनम् शरीर पर भस्म पोतना,—शात्रः कामदेव, शयः राख का ढेर।

भा (अदा० पर०) 1. चमकना 2. फूंक मारना।

बभौ (भा धातु, लिट् लकार, प्र० पु०, ए० व०) 1. चमका 2. प्रसन्न हुआ 3. हुआ 4. हवा चली —बभौ मरुत्वान् विकृतः स-मुद्रो, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रः, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रः। (सभी अर्थों में प्रयुक्त) —भट्टि० १०।१९।

भागः [भज्+घञ्] 1. शुल्क—कौ० अ० २।६।६४ 2. चार आध्यात्मिकों में से एक (सांख्य०) सां० का० ५० 3. ग्यारह की संख्या 4. भाग, अंश 5. भाग्य, किस्मत 6. चौथाई भाग। सम०—अप-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हारिन् जो अपना भाग ले लेता है,—भवन कोष, —पत्रम्—लेख्यम् विभाजन का दस्तावेज ।

भागिन् (वि०) [भाग+इनि] अत्यन्त उपयोगी ।

भागुरिः एक विख्यात वैयाकरण और स्मृतिकार का नाम ।

भाग्य (वि०) [भज्+ण्यत्, कुत्वम्] 1. बाँटे जाने के योग्य 2. हिस्से का अधिकारी 3. भाग्यशाली, किस्मत-वाला,—ग्यम् (नपुं०) 1. भाग्य, किस्मत 2. अच्छी किस्मत, सौभाग्य 3. समृद्धि 4. कल्याण, सुख । सम०—संक्षयः बुरी किस्मत, उन्नतिः भाग्य का उदय होना, -ऋक्षम् पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र ।

भाङ्गकः चीथड़ा ।

भाजक् (अ०) जल्दी से, तेजी से ।

भाजनविपत्तिः गलत उपायों के द्वारा गबन करना—कौ० अ० २।८।२१ ।

भाण्डम् [भाण्ड्+अच्] 1 सामान 2. पूंजी, मूलधन 3. बर्तन । सम० गोपकः बर्तन रखने वाला ।

भानतः (अ०) प्रतीति के परिणामस्वरूप ।

भानव (वि०) [भानु+अण्] सूर्यसंबंधी ।

भानुभूः यमुना नदी का विशेषण ।

भानुः अलंकारशास्त्र का एक विख्यात लेखक ।

भारः [भृ+घञ्] 1. बोझा 2. आधिक्य 3. परिश्रम 4. बड़ी राशि 5. किसी पर डाला गया कार्यभार । सम०—अवतरणम् बोझा कम करना,—आक्रान्तः एक छन्द का नाम,—उद्धरणम् बोझा उठाना, ऊढिः (स्त्री०) भारवहन करना, बोझ उठाना,—गः खच्चर ।

भारिका राशि, ढेर ।

भारती 1. वक्तृता, शब्द, वाक्पटुता 2. वाणी की देवता 3. नाटककला 4. किसी पात्र की संस्कृत वक्तृता 5. संन्यासियों के दस भेदों में एक—गोस्वामिन् ।

भारत (वि०) [भरतस्येदम् -अण्] भरतवंशी,—तः 1. भरतकुल में उत्पन्न (जैसे विदुर, धृतराष्ट्र, अर्जुन) 2. भारतवर्ष का निवासी 3. अग्नि,—तम् (नपुं०) 1. भारतवर्ष देश 2. संस्कृत का एक महान् काव्य (इसके लेखक व्यास या कृष्णद्वैपायन माने जाते हैं) 3. संगीतशास्त्र तथा नाटककला । सम०—आख्यानम्, इतिहासः, कथा भरतकुल के राजाओं की कहानी, महाभारत काव्य,—सावित्री एक स्तोत्र का नाम —इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत् - महा० १८।५।६४ ।

भारद्वाजः [भरद्वाज+अण्] 1. भरद्वाज गोत्र से संबंध रखने वाला 2. राजनीति का एक लेखक जिसका कौटिल्य ने उल्लेख किया है ।

भारविः किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता ।

भारवः 1. अविवाहित वैश्य कन्या में वैश्यपति के द्वारा उत्पादित पुत्र 2. शक्ति की पूजा करने वाला ।

भार्गवः [भृगु+अण्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता—भार्गवो शुक्रदेवज्ञौ वैजं० ।

भार्यापतित्वम् दाम्पत्य संबन्ध ।

भाल्लविः सामवेद की एक शाखा ।

भावः [भू+घञ्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2 कल्याण -भाव-मिच्छति सर्वस्य—महा० ५।३६।१६ 3. प्रत्यक्षण-द्रोणभावाय तदादे तु—महा० ७।२५।६४ 4. भाग्य 5. वासना, अतीत संकल्पनाओं की सुध 6. छः अवस्था अस्ति, जायते, विपरिणमति आदि । सम० कर्तृकः भावबोधक क्रिया, गतिः (स्त्री) मानवी भावनाओं को प्रकट करने की शक्ति- भावगतिराकृतीनाम् प्रतिमा० ३,—चेष्टितम् प्रेमद्योतक संकेत या चेष्टाएँ, निर्वृत्तिः भौतिक सृष्टि सां का० ५२, —नेरिः एक प्रकार का नाच, शबलत्वम् नाना प्रकार की भावनाओं का मिश्रण ।

भावंगम् (वि०) मनोहर, सुहावना ।

भावयितृ (वि०) [भू+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, प्रेम्नायक कोऽयं भार्यायता पुनः—महा० ३।२९।१ ।

भावित (वि०) [भू+णिच्+क्त] 1. अभिनिर्दिष्ट, स्थिर किया हुआ, गठाया हुआ 2. अधिकार में किया हुआ, गृही, पकड़ा हुआ—दुर्दृढः पशुभावितः —भाग० ४।१८।१३ 3. निमग्न, लीन, पूर्ण—त्वाङ्ग-पाणेरनुभावभावितम्- भाग० १२।१०।४२ 4. प्रसन्न, तुष्ट । सम० भावज्ञ (वि०) स्वयं को आगे बढ़ाने वाला, तथा औरों को सहायता करने वाला ।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1. भावी 2. जो सम्पन्न हो सके 3. सिद्ध दोष होना व्यवहारे साक्षिभिर्भाव्यो नृपवाङ्मोनसम्भिधी मनु० ८।६० ।

भाषापत्रम् आवेदन पत्र—शुक्र० २।३०९ ।

भाषासमितिः वाणी का नियन्त्रण (जैन०) ।

भाषिन् (वि०) [भाष्+णिच्] बोलने वाला, बातें करने वाला ।

भाष्यभूत (वि०) टीका या भाष्य का काम देने वाला -भाष्यभूता भवन्तु मे - शि० २।२४ ।

भासः एक प्रसिद्ध नाटककार, स्वप्नवासवदत्तम् आदि नाटकों का प्रणेता ।

भिक्षा [भिक्ष्+अ] 1. जीवन निर्वाह का एक साधन 2. मांगना । सम०— भुज् (वि०) भिक्षावृत्ति से निर्वाह करने वाला ।

भिक्षु [भिक्ष्+उन्] 1. भिखारी 2. साधु 3. संन्यासी 4. श्रमण । सम०—भावः श्रमणता, साधुता ।

भिक्षुकी कम्बल का एक भेद—कौ० अ० २।११।२९ ।

भिद् (रुधा० पर०) 1. टुकड़े टुकड़े करना, काटना 2. व्याख्या करना—वक्षोभि योगशयितानि साधो न नः क्षमन्ते मनसापि भेत्तुम्—भाग० ५।१०।८ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिन्नपतम् तुड़वाना, कुचलवाना।

भिन्न (वि०) [भिद्+क्त] 1. टूटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ 2. पृथक् किया हुआ, बांटा हुआ 3. विपाकत-भिन्नवृत्तिता - मनु० १२।३३ 4. रोमाञ्चित (जैसे रोंगटे खड़े हुए)—रा० ६।१०।१८ 5. जिसे घूस दी गई है। **सम०—कर्ण** (वि०) 1.जिसने कानों को बांट दिया है 2. जिसके कान बींध दिये गये हैं, **कुम्भः** जिसने अपने अनिवार्य कर्तव्य (नित्य कर्म आदि) सम्पन्न कर लिए हैं, —**वृत्तिः** (स्त्री०) भिन्न राशियों का भाग।

भीत (वि०) [भी+क्त] 1. डरा हुआ, आतंकित 2. डरपोक, कायर 3. भयग्रस्त। सम०—**गायनः** लज्जाशील गायक, शर्मीला गाने वाला,—**चारिन्** (वि०) कातरभाव से व्यवहार करने वाला, **चित्त** (वि०) मन में डरने वाला।

भीतिः [भी+क्तिन्] 1. डर, आशङ्का, त्रास 2. खतरा जोखिम 3. कंपकंपी। सम० **कृत्** (वि०) डर पैदा करने वाला, छिद् (वि०) डर दूर करने वाला।

भीम (वि०) [भी+मक्] भयानक, डरावना, भयपूर्ण, -- मः (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. परमपुरुष 3. भयानक रस 4. दूसरा पांडव, **भम्** (नपुं०) भय, त्रास। सम०—**अञ्जस्** (वि०) भीषण शक्ति वाला, **पाकः** पूरी तरह पका हुआ भोजन, **रथः** 1. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 2. श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

भीष्म (वि०) [भी+ष्कन्+सुक्+मक्] डरावना, भयानक, भयपूर्ण,-- **ष्मः** 1. भयानक रस 2. राक्षस, पिशाच, भूतप्रेत 3. शिव का विशेषण 4. शन्तनु के द्वारा गंगा में उत्पादित पुत्र। सम० **पर्वन्** महाभारत का छठा पर्व (अध्याय), —**स्तवराजः** महाभारत में शान्तिपर्व के ४७वें अध्याय में निहित भीष्म की प्रार्थना।

भुक्तमात्रे (अ०) खाते के तुरन्त पश्चात्।

भुग्न (वि०) [भुज+क्त] 1. विनीत, नत 2. वक्रीकृत, मुड़ा हुआ 3. टूटा हुआ 4. हताश, विनष्टीकृत।

भुजः [भुज्+क] 1. बाहु, भुजा 2. हाथ 3. हाथी की सूंड 4. गणित में आकृति का एक पार्श्व जैसे त्रिभुज में 5. त्रिकोण का आधार 6. वृक्ष की शाखा। सम० —**अङ्कः** आलिङ्गन,—**अर्पणम्** निर्वाह के अनुदान, —**आकम्बुः** शंख, **छाया** किसी की भुजाओं द्वारा दिया गया प्रश्रय,—**बीर्य** (वि०) प्रबल भुजाओं वाला।

भुजगः [भुज्+क=भुज+गम्+ड] सांप, सर्प, गो आश्लेषा नक्षत्र। सम० **वलयः** कड़े की भांति कलाई में गोलाकार लिपटा हुआ सांप,—**शायिन्** विष्णु का विशेषण।

भुजंगः [भुज+गम्+खच्, मुम्] 1. सांप 2. जार, प्रेमी 3. पति, स्वामी 4. आश्लेषा नक्षत्र 5. हलकी ७. राजा का बदचलन मित्र। सम०—**प्रयातम्** एक छन्द का नाम, **संगता** एक छन्द का नाम, **शिशु** एक छन्द का नाम।

भुजा [भुज—टाप्] ज्यामिति की आकृति का पार्श्व।

भुजाभुजि (अ०) हाथापाई, हाथों की (लड़ाई)।

भुवनम् [भू+क्युन्] 1. संसार, (संसार की संख्या तीन है या चौदह) त्रिभुवन, चतुर्दशभुवनानि 2. धरती 3. स्वर्ग 4. जन्तु, प्राणी 5. मानव। सम०— **ईश्वरी** पार्वती का रूप, — **तलम्** धरती की सतह,—**भावनः** — **मल्लि** का कर्ता।

भू (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1. पृथ्वी 2. विश्व 3. धरती। सम० **छाया, छायम्** धरती की छाया,—**तुम्बी** एक प्रकार की ककड़ी, **पलः** एक प्रकार का चूहा, --भा पृथ्वी की छाया, ग्रहण,—**लिङ्गशकुनः** पक्षियों की एक जाति—महा० १२।१६९।१०,-**शय्या** भूमि पर सोना,—**स्फोटः** कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी।

भूत [भू+क्त] 1. होने वाला, वर्तमान 2. उत्पादित, निर्मित 3. वस्तुतः होने वाला, सत्य 4. सही, उचित, उपयुक्त 5. अतीत, बीता हुआ 6. प्राप्त 7. मिश्रित 8. समान। सम० **अनुवादः** बीती हुई बात, या निश्चित तथ्य का उल्लेख करना,—**अभिशङ्कः**—**आवेशः** भूतप्रेत का किसी पर चढ़ना,—**मालिन्** (पुं०) जो सबकी अवमानना करता है, सबसे घृणा करने वाला, - **कोटिः** निरपेक्ष शून्यता, - **गत्या** सदाई के साथ, **गुणः** तन्त्रों का गुण, - **जननी** सब प्राणियों की माता,—**तन्मात्रम्** सूक्ष्मतत्व,—**पालः** जीवित प्राणधारियों का संरक्षक,—**भव** (वि०) सभी प्राणियों में रहने वाला, **भृत्** (वि०) जन्तुओं या तत्त्वों का पालनपोषण करने वाला,—**मातृका** पृथ्वी,—**सूक्** (पुं०) कङ्का का विशेषण।

भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2. जन्म, उपज 3. कल्याण, कुशलमंगल, समृद्धि 4. सफलता 5. धन, दौलत 6. शान, आभा, कान्ति 7. राख। सम० **अर्थम्** (अ०) समृद्धि के लिए, **सूक्** (वि०) कल्याणोत्पादक।

भूमिः (स्त्री०) [भू+मि] 1. ज्यामिति की आकृतियों की आधाररेखा 2. किसी चित्र का रेखाचित्र 3. धरती, पृथ्वी। सम०—**अनृतम्** भूमि के विषय में झूठी गवाही,—**अर्जुरिका** खजूर वृक्ष का एक प्रकार, —**छत्रम्** कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी, **तनयः** मंगलग्रह,—**परिमाणम्** वर्गमाप,—**रुचिकः** भूमि पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रथ हाँकने वाला,—**समीकृत** (वि०) भूमि जैसा बराबर किया हुआ, फर्श के साथ मिलाया हुआ, —**संभवः**, ...**सुतः** 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर ।

भूयस् (वि०) [बहु+ईयसुन्] 1. अपेक्षाकृत अधिक 2. अधिक बड़ा 3. अधिक आवश्यक । सम०—**काम** (वि०) बहुत अधिक इच्छुक, - **भाव** वृद्धि, विकास, - **भाज्यम्** अधिकतर अधिकांश ।

भूरि (वि०) [भू+क्रिन्] बहुत, पुष्कल, असंख्य, पुष्काल । सम०—**कालम्** (अ०) बहुत समय तक, —**कृत्वस्** (अ०) बहुत बार, बार-बार, **गुण** (वि०) 1. बहुत अधिक बढ़ता हुआ 2. भांति-भांति के फल देनेवाला, —**फेना** पौधों की एक जाति, —**भोज** (वि०) नानाप्रकार से सुखोपभोग करने वाला ।

भूरिशः (अ०) [भूरि | शस्] विविध प्रकार से, नाना प्रकार से ।

भूषणवासांसि (नपुं० ब० व०) वस्त्र और आभूषण ।

भृ (जुहो० पर०) संतुलित रखना, समसंतुलन करना ।

भृतक (वि०) [भृत+कन्] 1. पालन पोषण किया हुआ 2. किराये का, —**कः** (पुं०) भाड़े का सेवक । सम० —**अध्यापनम्** वैतनिक अध्यापक द्वारा दिया गया शिक्षण —**भृतिः** मजदूरी, पारिश्रमिक, किराया ।

भृतिः [भृ+क्तिन्] 1. सहन करना, सहारना, सहारा देना 2. भरणपोषण 3. आहार 4. ले जाना, तैतूल करना 5. मूलधन 6. पारिश्रमिक । सम० **अर्थम्** निर्वाह के निमित्त, जीविका के लिए ।

भृगुः (पुं०) 1. एक मुनि का नाम 2. जमदग्नि का नाम 3. शुक्र का विशेषण 4. शुक्र नामक ग्रह 5. चट्टान 6. पठार 7. शिव का विशेषण 8. शुक्रवार । सम० —**कच्छः** -**कच्छम्** नर्मदा नदी पर एक तीर्थस्थान, —**पतनम्** चट्टान से गिरना,—**पातः** चट्टान से कूदना, छलांग लगाना, **भृङ्गः** एक प्रकार का संगीत का मान,—**अभीष्टः** आम का वृक्ष ।

भृशदण्ड (वि०) कठोर दण्ड देने वाला ।

भेदः [भिद्+घञ्] 1. दारुण पीड़ा 2. ग्रहों का योग 3. पक्षाघात 4. सिकुड़ना 5. समभुज त्रिकोण की कर्ण रेखा ।

भेदक (वि०) [भिद+ण्वुल्] 1. वियोजक, विभाजक, तोड़ने वाला 2. नाशक 3. विवेचक 4. रेचक 5. (स्रोतों को) मोड़ने वाला 6. पथभ्रष्ट करने वाला ।

भेदन (वि०) [भिद्+णिच्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, विभाजक 2. रेचक,—**नम्** (किसी पशु का) नासा-छेदन करना ।

भेदनम् (नपुं०) तैरना ।

भेषज (वि०) [भेषं रोगभयं जयति-जि+ड] स्वस्थ करने वाला, चिकित्सा किये जाने योग्य, —**जम्** (नपुं०) 1. औषधि 2. उपचार 3. रोगनाशक मंत्र । सम० —**करणम्** औषधियों का तैयार करना, **कृत** (वि०) स्वस्थ किया हुआ. **तोयम्** औषधियों की स्वास्थ्यकर शक्ति ।

भोगः [भुज्+घञ्] 1. खाना, खा लेना 2 सुखोपभोग 3. वस्तु 4. उपयोगिता, उपयोग 5. शासन करना 6. उपयोग, प्रयोग 7. सहन करना 8. अनुभव करना, संकल्पना 9. स्त्रीसंभोग 10 आनन्द लेना 11 आहार 12. लाभ 13. आय 14. धन । सम०—**नाथः** पोषक, भरणपोषण करने वाला, —**पत्रम्** किराये का दस्ता-वेज, —**भुज्** (वि०) सुखोपभोग करनेवाला ।

भोगिराजः [ष० त०] शेषनाग ।

भोग्यवस्तु विलास की सामग्री ।

भोज (वि०) [भुज्+अच्] 1. सुखोपभोग देने वाला 2. उदार, दानशील,—**जः** (पुं०) 1. एक प्रसिद्ध राजा का नाम 2. विदर्भदेश का राजा । सम० —**चम्पू** भोज द्वारा रचित रामायण चम्पू. **प्रबन्धः** बल्लाल की भोजविषयक कृति ।

भोजः वैद्य द्वारा नदी में उत्पादित सूत्र ।

भौजिष्यम् (नपुं०) दासता, सेवकत्व ।

भौत (वि०) [भूत+अण्] 1. प्राणिसंबन्धी 2. भौतिक 3. पागल, —**तः** 1. भूत पिशाचों की पूजा करने वाला 2. भूतयज्ञ । सम० **प्रिय** (वि०) मूढ, दुर्बुद्धि ।

भौमम् [भूमि+अण्] 1. तत्त्वविषयक वस्तु 2. फर्श 3. भवन की ऊपर की मंजिलें - सप्तभौमाष्टभौमैश्च रा० ५।२।५० ।

भौमी [भौम+ङीप्] सीता का विशेषण ।

भ्रंशः [भ्रंश्+घञ्] 1. गिरना, फिसल जाना, अधः-पतन 2. ह्रास, मुर्झाना 3. नाश, ध्वंस 4. दूर भाग जाना 5. ओझल होना 6. (नाटक० में) उत्तेजना के कारण स्खलन ।

भ्रष्ट (वि०) [भ्रंश+क्त] 1. गिरा हुआ, पतित 2. मुर्झाया हुआ 3. भागकर जो बच गया । सम०—**अधिकार** (वि०) जिससे अधिकार छीन लिये गये हों, पदच्युत, - **क्रिय** (वि०) जो विहित कर्म करने में असफल रहा, —**योग** (वि०) जो भक्ति से पतित हो गया हो ।

भ्रम् (भ्वा०, दिवा० पर०) लड़खड़ाना, घबड़ाना ।

भ्रमय् (प्रेर०) 1 ढिंढोरा पीटना 2. अव्यवस्थित करना ।

भ्रमः [भ्रम्+घञ्] 1. छाता, छतरी 2. वृत्त ।

भ्रमरः [भ्रम्+करन्] 1. मधुमक्खी 2. प्रेमी 3. कुम्हार का चाक 4. जवान 5. लट्टू । सम०—**निकरः** मधु-मक्खियों का छत्ता,—**पदम्** एक छन्द ।

भ्रमरित (वि०) [भ्रमर+इतच्[जो नीला हो गया है —यदतिविमलनीलवेश्मरश्मिभ्रमरितभाः—नै० २।१०३ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] मूर्छा, बेहोशी।
भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1. इधर-उधर घूमा हुआ 2. चक्कर खाया हुआ 3. भूला भटका 4. घबड़ाया हुआ। सम० - **चित्त** (वि०) मन में घबराया हुआ।
भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+डू] भौं, आंख की भौं। सम० - **वक्षित्तम्** चुपके-चुपके झांकना, छिपकर देखना, **विजृम्भः** भौंहों को मोड़ना, भौंहे चढ़ाना।

म

मकरः [मं विषं किरति-कृ+अच्] 1. मगरमच्छ 2. मकर-राशि 3. मकर की आकृति का कुण्डल। सम० **आसनम्** एक प्रकार का योग का आसन,—**वाहनः** वरुण।
मकरन्दः [मकर+दो+क, मुमादेशः] 1. पुष्परस, मधु 2. चमेली का फूल 3. कोयल 4. सुगन्धयुक्त आम का वृक्ष 5. (संगीत० में) एक प्रकार का माप।
मकरन्दिका एक छन्द का नाम।
मकूलकः (पुं०) 1. कली 2. दन्ती नाम का वृक्ष।
मकृमृगध्वजः (पुं०) शिव का विशेषण।
मगन्दः (पुं०) कुसीदक, सूदखोर।
मगधवेशः (पुं०) मगध नाम का देश।
मङ्कुकः (पुं०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।
मङ्गल (वि०) [मङ्ग्+अलच्] 1. शुभ, सौभाग्यशाली 2. समृद्ध 3. वीर,— **लम्** (नपुं०) 1. माङ्गलिकता, प्रसन्नता, कल्याण 2. शुभ शकुन 3. आशीर्वाद 4. माङ्गलिक संस्कार (जैसे कि विवाह) 5. हल्दी, —**लः** (पुं०) 1. मङ्गलग्रह 2. अग्नि। सम० —**आवह** (वि०) शुभ,—**ध्वनिः** माङ्गलिक स्वर, - **भेरी** माङ्गलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल।
मङ्गल्यकः [मङ्ग्+ल्युट्] आठ वर्ष का हाथी—मात० ५।९।
मङ्गल्यत्रयम् एक प्रकार का नाच।
मङ्गल्यनादः मधुर ध्वनि **मञ्जीरं मञ्जुनादैरिव पदमजनं श्रेय इत्यालपन्तम्**—नारा० १००।९।
मङ्गल्यभद्रः एक जिन का नाम।
मङ्गल्यौः एक बोधिसत्त्व का नाम।
मठाधिपतिः [ष० त०] 1. किसी धर्मसंघ का प्रधान 2. मठ का अधीक्षक।
मठाम्नायः [ष० त०] विविध आध्यात्मिक श्रेणियों से संबद्ध कोई रचना।
मणिः [मण्+इन्] 1. रत्न, जवाहर 2. आभूषण 3. सर्वोत्तम पदार्थ 4. चुम्बक 5. कलाई 6. अयस्कान्त मणि 7. स्फटिक। सम०—**काञ्चनयोगः** उपयुक्त वस्तुओं का विरल मेल,—**तुलाकोटिः** जहाज पायजेब,—**प्रभा** एक छन्द का नाम,—**विग्रह** (वि०) रत्नजटित।
मण्डजातम् (नपुं०) जमा हुआ दूध, दही।
मण्डपीठिका परकोटे के दो चतुर्भाग।
मण्डनकालः शृंगार (प्रसाधन) समय—मामक्षमं मण्डन-कालहानेः रघु० १३।
मण्डनप्रियः (वि०) अलंकारप्रिय, आभूषणों का शौकीन।
मण्डलम् [मण्ड्+कलच्] 1. गोलाकार वस्तु, पहिया, अंगूठी, परिधि 2. सूर्य परिवेश, चन्द्र परिवेश 3. समुदाय, संग्रह, सेना 4. समाज 5. वर्तुलाकार गति 6. धूत पट्ट। सम०—**आसन** (वि०) वृत्त में बैठा हुआ, - **कविः** कठ कवि, तुकबंद कवि,—**नाभिः** वृत्त का केन्द्र, **गाडः** मंडवा, प्रवाला,—**वाटः** उद्यान।
मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1. बाण विद्या में वर्णित एक विशेष मुद्रा 2. जादू की शक्तियों से युक्त एक वृत्त।
मण्डूकम् ढाल की मूठ।
मण्डूकपर्णी ब्राह्मी की जाति का एक पौधा।
मण्डूकपर्णिका दे० 'मण्डूकपर्णी'।
मण्डूकपर्ण्यौ दे० 'मण्डूकपर्णी'।
मतभेदः [स० त०] मतों में अन्तर, सम्मतियों की भिन्नता।
मतिः [मन्+क्तिन्] 1. बुद्धि, समझ, ज्ञान, निर्णयशक्ति 2. मन, हृदय 3. विचार, विश्वास, सम्मति, दृष्टिकोण 4. इरादा, प्रयोजन 5. प्रस्ताव, संकल्प 6. आदर, सम्मान 7. इच्छा 8. उपदेश 9. स्मृति 10. भक्ति, प्रार्थना। सम० **कर्मन्** बौद्धिक कार्य, **गतिः** (स्त्री०) चिन्तन क्रम, - **दर्शनम्** विचारों का अध्ययन।
मत्ताक्रीडा एक छन्द का नाम।
मत्तवारणः,—णम् 1. किसी भवन की चहारदिवारी 2. खूंटी या ब्रैकेट 3. चारपाई, पलंग।
मत्स्यः [मद्+स्यन्] 1. मछली 2. मत्स्य देश का राजा। सम०—**उद्वर्तनम्** एक प्रकार का नाच,—**आजीवः** मछियारा, मछली का व्यापार करने वाला,—**सन्तानिकः** पकी हुई मछली चटनी के साथ।
मथ्य (वि०) [मथ्+क्यत्] मन्थन क्रिया के द्वारा प्राप्य, मथकर निकाला जाने वाला।
मदः [मद्+अच्] 1. सौन्दर्य 2. जन्मकुंडली में सातवां घर 3. अभिमान 4. पागलपन 5. अत्यन्त आवेश 6. हाथी के मस्तक से चूने वाला रस 7. प्रेम, मस्ती 8. सुरा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शराब, 9. मधु 10. वीर्य 11. सोम 12. नद। सम० —भङ्गः घमंड का टूट जाना, —सत्ता एक छन्द का नाम।

मदनम् [मद्+ल्युट्] 1. नशा करना 2. उल्लास, हर्षातिरेक, **नः** 1. जन्मकुंडली में सातवां घर 2. एक प्रकार की संगीतमाप। सम०—अत्ययः नशे का आधिक्य, महातिरेक।

मदिराप्रहान्ध (वि०) शराब पीकर धुत, आपत्ति नशे में।

मद्यकुम्भः शराब की सुराही, सुरा पात्र।

मद्यबीजम् खमीर उठाने के लिए औषधि।

मद्यदेशः मद्रों का देश।

मद्यनाभः एक संकर जाति।

मधु (नपुं०) [मद्+उ, नलोपः धः] 1. शहद 2. फूलों का रस 3. मधुमक्खियों का छत्ता 2. सोम। सम०—**फाकं** तरबूज, **पात्रम्** सुरापात्र, **मांसम्** शराब और मांस, —**वल्ली** 1. एक प्रकार का अंगूर 2. मीठा नीबू।

मधुकाश्वयम् सोम।

मधुमती [मधु+मतुप् | ङीप्] 1. एक नदी का नाम 2. एक बेल का नाम 3. 'मधु वाता ऋतायते' से आरंभ होने वाली तीन ऋचाएं।

मधुरस्वनः [ब० स०] शंख।

मधुराङ्कः कषाय स्वाद, तीखा स्वाद।

मध्यमणिन्यायः एक नियम जिसके आधार पर मुख्य वस्तु दोनों पार्श्वों के बीच में रहे जैसे कि हार में मणि।

मध्यकम् सामान्य संपत्ति।

मध्यम (वि०) [मध्ये भवः म] 1. बीच का, केन्द्रीय 2. अन्तर्वर्ती 3. मध्यवर्ती, —**मः** 1. नितान्त बीच का पुत्र 2. राज्यपाल 3. भीम का विशेषण (मध्यमव्यायोग), **मम्** (क्रि०) 1. जो अतिप्रशमनीय न हो 2. ग्रहण का मध्यवर्ती बिन्दु। सम० **गतिः** किसी ग्रह की औसत चाल, **ग्रामः** (संगीत० में) मध्यवर्ती लय, **व्यायोगः** भासकृत एक नाटक।

मध्यमीय (वि०) [मध्यम—छ] बीच का, केन्द्रीय।

मध्योदात्त (वि०) ऐसा शब्द जिसके मध्यवर्ती अक्षर पर उदात्त स्वर हो।

मन् (दिवा० तना० आ०) स्वीकार करना, सहमत होना।

मनस् (नपुं०) [मन्+असुन्] 1. मन, हृदय, समझ, बुद्धि 2. (दर्शन० में) संज्ञान व प्रज्ञान का एक अन्तर्वर्ती अंग, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के विषय आत्मा को प्रभावित करते हैं 3. अन्तःकरण 4. अभिकल्प 5. संकल्प। सम०—**ग्राह्य** (वि०) मन से ग्रहण किये जाने के योग्य, —**ग्लानिः** मन का अवसाद, —**धारणम्** अनुग्रह की संराधना करना —**पर्यायः** सत्य के प्रत्यक्षीकरण में अन्तिम के पूर्व की स्थिति (जैन०), —**रागः** हृदयानुराग, प्रेम, —**समृद्धिः** मन का उल्लास, —**संवरः** मन का दमन।

मनुः [मन्+उ] मानसिक शक्तियां देहोऽसवोऽक्षा मनवो भूतमात्रा—भाग० ६।४।२५।

मनुस्मृति मनुसंहिता, मनु द्वारा प्रणीत धर्मशास्त्र।

मनुष्ययानम् [ष० त०] पालकी, शिविका।

मनुष्यसंकल्पः मानव की इच्छा।

मनोन्मनी दुर्गा का एक रूप।

मन्त्रः [मन्त्र्+अच्] 1. विष्णु का नाम, शिव का नाम 2. जन्मकुंडली में पांचवां घर 3. वैदिक सूक्त 4. वेद का वह अंश जिसमें संहिता सम्मिलित है 5. प्रार्थना 6. गुप्त योजना 7. नय, नीति। सम० **कर्कश** (वि०) दुरूनीति का समर्थक, **जागरः** रात के जागरण के अवसर पर मन्त्रों का सस्वर पाठ, **रक्षा** किसी नीति, विचार या रहस्य को गुप्त रखना, —**संवरणम्** किसी रहस्य, मन्त्रणा या नीति को गुप्त रखना, —**स्तम्भः** स्थान करने के स्थान पर 'अघमर्षण' मन्त्रों का सस्वर पाठ करना।

मन्थ् (क्रया० कथा० पर०) मिश्रित करना, मिला देना।

मन्थः [मन्थ्+घञ्] 1. मथना, बिलोना, हिलाना 2. मार डालना, नाश करना 3. मिश्रित पेय 4. रई, हिलाने का उपकरण, मन्थनदण्ड 5. सूर्य 6. आंखों के रोड़े 7. पेय तैयार करने के लिए आयुर्वेद का एक योग। सम० **त्रिकाष्ठः** मन्थनदण्ड।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1. ढीला, शिथिल, निष्क्रियात्मक, अलस 2. शीतल, उदासीन 3. मूढ, दुर्बुद्धि, मूर्ख 4. नीचा, गहरा, खोखला 5. मृदु, सुकुमार 6. छोटा 7. दुर्बल, **न्दः** (पुं०) 1. शनिग्रह 2. यम का विशेषण। सम०—**आरम्भ** संकोच, शिथिल, **कर्मन्** (वि०) कार्य करने में शिथिल, —**ज्वरः** (वि०) धीरे धीरे बढ़ा होने वाला, **पुण्य** (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, बदकिस्मत।

मन्दाकिणी पानी भरने का बड़ा घड़ा।

मन्दिरम् [मन्द्+किरच्] 1. भवन 2. आवास 3. नगर 4. शिविर 5. देवालय 6. काया, शरीर।

मन्दुरा [मन्द्+उरच्] 1. अश्वशाला, अस्तबल, तबेला 2. शय्या, चटाई। सम० **पतिः**,—**पालः** अश्वशाला का प्रबन्धकर्ता, **भुजगम्** बन्दरों की एक जाति।

मन्युसूक्तम् [नपुं०] मन्यु नामक सूक्त जो ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ८३ व ८४वें सूक्त हैं।

ममतायुक्त (वि०) 1. अहंमन्य 2. कंजूस।

ममताशून्य (वि०) 1. अहशून्य 2. अनासक्त।

मयिवसु (वि०) मेरे प्रति शुभ।

मयूखमालिन् (पुं०) सूर्य, सूरज।

मयूरः [मी ऊरन्] 1. मोर 2. एक प्रकार का फल 3. एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कवि का नाम (सूर्यशतक का प्रणेता) 1. सम० नृत्यम् मोर का नाच, पिच्छम् मोर का चंदा।

मयूरिका (स्त्री०) 1. नख, नाक का छल्ला 2 एक जहरीला जंतु।

मरकतश्याम (वि०) पन्ने जैसा काला, ऐसा काला जैसा कि मरकतमणि माता मरकतश्यामा मातर्ङ्गी मदशालिनी --श्याम०।

मरणम् [मृ+ल्युट्] 1. मरना मृत्यु 2. एक प्रकार का विष 3. अवसान 4. जन्मकुंडली में आठवाँ घर 5. शरण, शरणालय। सम०- दशा मृत्यु का समय, —शील (वि०) मर्त्य, मरणधर्मा।

मरीचिः [मृ+ईचि] 1. प्रकाश की किरण 2 प्रकाशकण 3. प्रकाश 4. मृगतृष्णा 5. आग की चिंगारी। सम० —पाः (मरीचिपाः) ऋषिवर्ग जो सूर्य की किरणें पीकर जीवित रहते हैं—रा० ३।६।२।

मरुः [मृ+उ] 1. रेगिस्तान, निर्जल प्रदेश 2. पहाड़, चट्टान 3. कुरबक नाम का पौधा 4. मद्यपान का त्याग। सम०—प्रपतनम् पहाड़ से छलांग लगाना।

मरुत् (पुं०) [मृ+उति] 1. वायु, हवा, समीर 2. प्राण वायु 3. वायु का देवता 4. देवता 5. मरुबक नाम का पौधा 6. सोना 7. सौन्दर्य। सम० वृद्धा, वृधा काबेरी नदी।

मर्जः (पुं०) [मृज्+ऊ] 1. बाँदी 2 पीठमर्द, (स्त्री०) सफाई, पवित्रता।

मर्मन् (नपुं०) [मृ+मनिन्] 1. शरीर का महत्त्वपूर्ण भाग (शरीर का दुर्बल या सुकुमार अंग) 2. त्रुटि, विफलता 3. हृदय 4. गूढ़ अर्थ 5. रहस्य 6. सत्यता। सम०—घातः मर्मस्थान पर आघात करना, -भेद स्थिर।

मर्यादा [मर्या (सीमा)+दा+क] 1. सीमा 2. अन्त 3. किनारा, तट 4. चिह्न 5. नैतिकता की सीमा प्रचलित नियम, प्रचलन 6. औचित्य का सिद्धान्त 7. करार। सम० बन्धः सीमा के अन्दर रहना, --वचनम् सीमाविषयक वक्तव्य, —व्यतिक्रमः सीमा का उल्लंघन।

मल (वि०) [मृज्+कल, टिलोपः] 1. मैला, गन्दा 2. लालची 3. दुष्ट,- लः लम् 1. मैल, गन्दगी, धूल अपवित्रता 2. विष्ठा, बीट 3. धातुओं का मोर्चा 4. शरीर के मल 5. कपूर 6. कषाया हुआ चमड़ा 7. वात, पित्त तथा कफ नामक दोष। सम०—अपहा एक नदी का नाम,—पङ्किन् (वि०) धूल या गन्दगी से भरा हुआ।

मल्लनालः (संगीत०) एक प्रकार की ताल।

महत् (वि०) (म० महीयस्, उ० महिष्ठ) [मह्+अति] 1. बड़ा, विशाल, विस्तृत 2. पुष्कल, असंख्य 3. दीर्घ, विस्तृत 4. प्रबल, बलशाली 5. महत्त्वपूर्ण, आवश्यक 6. ऊँचा, प्रमुख, पूज्य। सम०—आयुधम् महान् शस्त्र, बड़ा भारी हथियार,—औषधिः (स्त्री०) एक आकर्षक जनक बूटी, कुलम् उत्तम घराना, दुग्धः सैनिक, जत्था,—फलः बेल का वृक्ष,—व्यतिक्रमः 1 भारी अतिक्रमण 2. महान् पुरुष का अनादर।

महा (कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के आरंभ में 'महत्' शब्द का स्थानापन्न —इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं)। सम० अनिलः बवंडर महानिलेनेव निदाघजं रजः --कि० १४।५९, आरम्भः महान् कार्य, विशाल पैमाने पर कार्य का आरंभ करना, आलयः देवालय, मन्दिर, तीर्थ स्थान आत्मावस्था वह अवावस्था जिससे महालयपक्षः आरंभ होता है,—आलयपक्षः माघ और पौष मास का पुनीत पितृपक्ष, आलयश्राद्धः महालय पक्ष में श्राद्ध करना, ऊर्मिन् (पुं०) समुद्र,—ओघ (वि०) प्रबल धाराओं से युक्त,—कल्पः ब्रह्मा के सौ वर्ष,—चक्रम् शक्ति की पूजा में रहस्यमय चक्र, जङ्घः ऊँट,—त्रयः बारहसिंगा हरिण,—दंष्ट्रः बड़े व्याघ्र की एक जाति,—दुर्गम् महान् संकट, - पराकः एक प्रकार की तपस्या, —पुराणम् अठारह पुराणों में एक पुराण, प्रश्नः एक जटिल सवाल, बिल्वी एक प्रकार की जमड़ा,—भाष्यम् मुख्य कोष, मृत्युंजयः 1. मृत्यु के विजेता शिव को प्रसन्न करने का मन्त्र 2. एक औषधि का नाम,—यानम् एक बड़ी सवारी (पश्चवर्ती बौद्ध शिक्षण), रजः मेंढक, रजः (वि०) अत्यन्त पोड़ाकर,—लक्ष्मः 1. महा प्रलय 2. परमपुरुष जिसमें सब महाभूत लीन हो जाते हैं,—विषुवा एक प्रकार का छन्द,—शिवरात्रिः फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष का चौदहवाँ दिन, शिवपूजा का माङ्गलिक दिवस, श्लक्ष्णा रेत, बालू,—सप्तिः (पुं०) एक प्रकार का संगीत माप,—सुधा चाँदी।

महिमन् (नपुं०) प्रभुसत्ता, उपनिवेश।

महिमन् (पुं०) [महत्+इमनिच्] आठ सिद्धियों में से एक।

महिषमर्दिनी दुर्गादेवी।

मही [मह+अच्+ङीष्] 1. पृथ्वी, धरती, भूमि 2. भूमिपति, जायदाद 3. देश, राजधानी 4. खम्बात की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी 5. (ज्या० में) किसी आकृति की आधाररेखा 6. विशाल सेना 7. गाय। सम० ओजा क्षितिज, - पृष्ठम् धरतीतल, भूमि की सतह, —करोति बड़ा बनाता है, प्रोन्नत करता है।

मांसम् [मन्+स, दीर्घश्च] 1. गोश्त, 2. मछली का मांस 3. फल का मांसल भाग,-सः 1. कीड़ा 2. शंकर जाति, जो मांस बेचती है। सम०—कामः मांस का शौकीन, - कोलः रसोली, चक्षुः नंगी आँख,—परिवर्जनम् मांस-भक्षण का त्याग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांसीयते (ना० धा० पर०) मांस के लिए लालायित रहना।
माक्षिकधातुः एक प्रकार का खनिज धातु।
मागधः [मगध+अण्] 1. मगध देश का राजा 2. साहित्य क्षेत्र में काव्यशैली का एक प्रकार।
मातङ्गलीला हस्तिविज्ञान पर एक कृति।
मातुलाङ्गः एक प्रकार का साँप
मातृ (स्त्री०) [मान्+तृच्, नलोपः] 1. माता, जननी 2. स्त्रियों के प्रति आदर या सम्मान सूचक संबोधन 3. गाय 4. लक्ष्मी या दुर्गा का विशेषण 5. धरती माता। सम०—दोषः माता का दोष, भक्तिः माता के प्रति आदर सम्मान, -शासितः मूर्खव्यक्ति, सीधा सादा, भोंदू।
मातृका ग्रीवा की ८ नाड़ियाँ, शिराएँ।
मातृतः (अ०) मातृपरक पक्ष की ओर।
मात्र (वि०) [मा+ष्ट्रन्] आरम्भिक विषय।
मात्रा [मात्र+टाप्] 1. परिमाण 2. क्षण 3 अणु 4. अंश 5. वृत्त, विचार 6. धन 7. तत्त्व 8. भौतिक संसार 9. नागरी अक्षरों में स्वरों का चिह्न 10. कान की बाली 11. आभूषण 12. इन्द्रियों का कार्य 13. विकार। सम० अङ्गुलम् लगभग एक इंच की माप।
मात्स्यन्यायः एक सिद्धान्त जिसमें बड़ा छोटे को दबाता है, हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।
माधवनिदानम् आयुर्वेद की एक कृति।
माधवी पशुओं की बहुतायत।
मानः [मन्+घञ्] 1. आदर, सम्मान 2. घमंड, अभिमान, अहंकार 3. आत्माभिमान, आत्मगौरव,—मम् 1. माप 2. निश्चित मापदण्ड 3. आयाम। सम० —क्षय (वि०) घमंड के कारण अंधा,—र्ह (वि०) सम्मान के योग्य, आदर का अधिकारी,—अवभङ्गः प्रतिष्ठा भङ्ग होना, क्रोध का नाश,—विक्रयः खोटे बाँटों से तोलकर या मिथ्या मापकर गबन करना, ठगना—कौ० अ० २।८।२६, सारः अभिमान की बड़ी मात्रा।
मानसपूजा मानसिक पूजा।
मानुषम् [मनोरयम्—अण् सुक् च] 1. मानवता, मनुष्यत्व 2. मनुष्य की परिपक्वावस्था, पूर्ण पुरुषत्व। सम० —अधमः नीच पुरुष, ओछा मनुष्य।
मन्त्र्याजः [ष० त०] रोग का बहाना।
माया 1. दुर्गा का नाम 2. दक्षता, कला।

य

यकृत् [यं संयमं करोति कृ+क्विप् तुक् च] जिगर। सम० -वेरिन् (पुं०) औषध का एक पौधा, रक्त-रोहड़ा।
यक्षः [यक्ष्+घञ्] 1. देवयोनि विशेष, जो कुबेर के सेवक हैं 2. भूतप्रेत 3. इन्द्र का महल 4. कुबेर 5. पूजा 6. कुआ। सम०—धूपः गुग्गल, लोबान।
यज्ञ [यज्+न] 1. यज्ञ, यज्ञीय संस्कार 2. पूजा की प्रक्रिया 3. अग्नि 4. विष्णु। सम० -आयुधम् यज्ञ में प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण, -गृहाः कुण्ड, —पत्नी यजमान की पत्नी,—शिष्टम् यज्ञ का अवशिष्ट अंश—यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः —भग० ३।१३, -संस्तरः यज्ञ की वेदी की स्थापना तथा इष्टकाचयन।
यज्ञायज्ञीयम् 1. सामसूक्त 2. गरुड के दोनों पंखों का प्रतीकात्मक नाम।
यत्नवत् (वि०) क्रियाशील, परिश्रमी, प्रयत्न करने वाला।
यतगिर (वि०) [ब० स०] चुप रहने वाला, जिसने अपनी वाणी को नियन्त्रित रक्खा है।
यतमैथुन (वि०) [ब० स०] जिसने मैथुन त्याग दिया है।
यतिचान्द्रायणम् विशेष प्रकार का तपश्चरण।
यत्रकामम् (अ०) जहां किसी का मन चाहे, इच्छानुसार।
यत्रकामावसायः योग की एक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य अपने आपको जहाँ चाहे ले जा सकता है।
यत्रसायंग्रह (वि०) जहाँ सन्ध्या हो जाय या सूर्यास्त हो जाय वहीं ठहर जाने वाला व्यक्ति।
यथा (अ०) [यद् प्रकारे थाल्] जिस ढंग, जिस रीति से, जैसे, जिस प्रकार। सम०—अनुशम् (अ०) जैसा कि बतलाया गया है, या निर्देश किया गया है—मया यथानूक्तमदादि से हरेः ···चेष्टितम् · भाग० ३।१९। ३२,—आचारम् (अ०) आचार के अनुसार—सां० का० ४१, उद्गत (वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख, —उद्गमनम् (अ०) आरोह अनुपात के अनुसार, —उपचारम् (अ०) औचित्य के अनुरूप, शिष्टाचार-सापेक्ष, उपदिष्ट (वि०) जैसा निर्देश दिया गया हो, या जैसा परामर्श दिया गया हो,—कारम् (अ०) जिस किसी रीति से,—पा० ३।४।२८, वत्प्रति (अ०) समुचित रीति से, क्षिप्रम् (अ०) जितनी जल्दी हो सके,—चित्तम् (अ०) अपनी इच्छा के अनुसार, तथ्यम् (अ०) सचमुच, वास्तव में, ···नाम्नाम् (अ०) जैसा कि विधान है, जैसा कि मूल पाठ में है,—न्यूप्त (वि०) जैसा कि धरती में डाला गया है,—पण्यम् (अ०) विक्रेय वस्तु के मूल्य के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुसार, **प्रत्यर्हम्** (अ०) योग्यता के अनुसार --**प्रदिष्टम्** (अ०) जैसा अनुकूल हो, जैसा कि उपयुक्त हो,--**प्रस्तावम्** (अ०) सबसे पहले उपयुक्त अवसर पर, **प्रस्तुतम्** (अ०) 1. अन्त में 2. प्रस्तुत विषय के अनुरूप,--**भूयस्** (अ०) वरीयता के अनुकूल,--**मूल्यम्** (अ०) मूल्य के अनुसार, --**रसम्** (अ०) रस या स्वाद के अनुकूल, **लब्धम्** (वि०) जैसा कि वस्तुतः प्राप्त हो चुका है, **विनियोगम्** (अ०)निर्दिष्ट प्राथमिकता के अनुसार,--**व्युत्पत्ति** (अ०) ज्ञान की गहराई के अनुकूल,--**शब्दार्थम्** शब्द के अर्थों के अनुसार--यथाशब्दार्थ प्रवृत्तिः, मै० सं० ११।१।२६ पर भाष्य,--**संस्थम्** (अ०) परिस्थिति के अनुकूल,--**सवनम्** ऋतु के अनुकूल, **सारम्** गुण के अनुसार, **स्थूलम्** (अ०) जैसा कि अतिरंजित रीति से कहा गया है, **स्व** (वि०) अपने अपने आसन या स्थान के अनुसार।

यदवधि (अ०) जिस समय से।

यदात्मक (वि०) जिस सत्ता परक।

यदृच् (वि०) इच्छानुसार बोलने वाला।

यदीय (वि०) [यद्+छ] जिसका, जिससे संबद्ध।

यन्त्रम् [यन्त्र्+अच्] 1 जो रोकता, या बांधता है 2. सहारा, खूंटी 3. बेड़ी, हथकड़ी 4. शल्य क्रिया का उपकरण (शस्त्र) 5. मशीन, संयत्र 6. कुंडी, ताला, चाबी 7. प्रतिबन्ध, शक्ति 8. ताबीज 9. छिद्र करने की मशीन। समः--**आरूढ** (वि०) घूमने वाली मशीन पर चढ़ा हुआ, **भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया-भग०,--कोविदः** यन्त्रकार, मशीन पर कार्य करने वाला--रा० २।८०।२, **गृहम्** यन्त्रागार, जहां किसी को यन्त्रणा दी जाती है, --**धारागृहम्** वह स्थान जहां फौवारा लगा हुआ हो, --**मृत्रम्** गुड़िया या पुत्तलिका को रंगमंच पर हिलाने वाली डोरी।

यन्त्रकम् [यन्त्र+कन्] 1. हाथ से चलायी जाने वाली मशीन, खेराद 2. सामान का बंडल निर्धीयमाने भरभाजि यन्त्रके--कि० १२।९।

यन्त्रिका [यन्त्र्+ण्वुल्] छोटी साली, पत्नी की छोटी बहन।

यन्त्रित (वि०) [यन्त्र्+क्त] 1. भड़काया हुआ 2. नियमों से नियन्त्रित या प्रतिबद्ध 3. सनाज को बढ़ाने के लिये निकाला हुआ 4. आकृष्ट अथवा मदभिस्नेहाद्भवत्यौ यन्त्रिताशया भाग० १०।२९।२३।

यम (वि०) [यम्+घञ्] 1. यमल, जोड़ुआ 2. दोहरा, --मः 1. प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, दमन 2. आत्मसंयम 3. कोई नैतिक कर्तव्य (विप० नियम) 4. योग के आठ अङ्गों में से एक 5. मृत्यु का देवता 6. शनि 7. कौवा 8. 'दो' की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 9. लगाम 10 चालक, रथवान,--मम् 1. जोड़ा 2. संयुक्त व्यंजन,--मी यमुना नदी,-- मौ (पुं०द्वि० व०) 1. युगल, जोड़ुआ--धृति संयमौ यमौ --कि० १।३६ 2. अश्विनीकुमार। सम० **अनुजा** यमुना नदी, **यष्टः** ज्योतिष का एक अशुभ योग, --**द्रुमः** सप्तपर्ण वृक्ष, पटः, **पट्टिका** कपड़े की एक पट्टी जिस पर यम, यम के अनुचर तथा नारकीय यातनाओं का चित्रण अंकित रहता है **याज्ञदेतद् गृहं प्रविश्य यमपटं दर्शयन् गीतानि गायति** --मुद्रा० १।१८,--**व्रतम्** 1. यम को प्रसन्न करने के लिए व्रत रखना 2. निष्ठुर दण्ड विधान--मनु० ९।३०७,--**शासनः** शिव, **यमशासनालयजनाचरस्यवेनमाचार सः**--रा० च० २।१२,--**स्थानम्** यम का वासस्थान।

यमकाव्यम् यमक-प्रधान कविता, वह काव्य जिसमें यमक अलंकार की बहुतायत हो।

यमलार्जुनौ दो अर्जुन के वृक्ष (जिनको कृष्ण ने बचपन में उखाड़ दिया था)।

यमिका एक प्रकार की सूखी खांसी।

यमेरका एक प्रकार का घण्टा जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

यवः [यु+अच्] 1. जौ 2. महीने का पहला पक्ष 3. गति, चाल 4. ज्योतिष का एक योग 5. जव, वेग 6. तुलना उन्मत्तोदर शीक्षा 7. एक टापू का नाम। सम०--**द्वीपः** वर्तमान जावा टापू,--**लोलः** एक प्रकार का खाद्य पौधा।

यवनाचार्यः ज्योतिष के 'ताजिक' नाम की कृति का विख्यात प्रणेता।

यवनिका--**यवनी** पर्दा।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातोः स्वुट् च] 1. कीर्ति ख्याति, प्रसिद्धि 2. पुण्य व्यक्ति 3. प्रसाद 4. धन 5. आहार 6. जल 7. विरल गुणों का एकत्र संग्रह 8. परीक्षा कीर्ति--छा० उ० ३।१८।४। सम० --**धा** कीर्ति प्रदान करने वाला।

यष्टिः (स्त्री०) [यज्+क्तिन् नि० न संप्रसारणम्] 1. लकड़ी 2. गदा 3. स्तम्भ 4. सहारा, टेक 5. ध्वजदंड 6. डोरी, धागा 7. हार, लड़ी। सम०--**आधातः** डंडे की मार,-- **उत्थानम्** लकड़ी की सहायता से उठना,--**यन्त्रम्** समय को मापने के लिए ज्योतिष का एक साधन।

यस्मात् (अ०) 1. जिससे, जब से, जिस बात से 2. ताकि, जिससे कि।

या (अदा० पर०) विदा करना।

यागः [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1. यज्ञ, आहुति 2. उपस्थान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपहार, प्रदान। सम० कण्टक 1. बुरा यजमान 2. जो यज्ञ को बिगाड़ता है,--संप्रदानम् यज्ञीय पदार्थ को लेने वाला--पा० ४।२।२४ पर काशिका, सूत्रम् यज्ञीय दक्षोपवीत, जनेऊ।

याच्ञा [याच्+नङ्+टाप्] 1. माँगना। 2. साधना 3. प्रार्थना सम०—जीविका,—जीवनम् भिक्षावृत्ति पर जीने वाला,—भङ्गः प्रार्थना को ठुकरा देना।

याजकः यजमान, यज्ञ करने वाला।

याज्ञसेनः } शिखण्डी का पैतृक नाम।

याज्ञसेनिः } महा० ७।१४।४४

याज्या [यज्+णिच्+यत्+टाप्] आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला यज्ञीय नियम।

यातिकः [यात+ठक्] यात्री।

यातुनारी राक्षसी, पिशाचिनी वक्राम त्रिजगती या तु यातुनारी—रा० च० ७।१०।

यात्य नरक में रहने वाला।

यात्राकर (वि०) जीवन का सहारा देने वाला (साधन)

यात्रावासः यात्रा पर जाते समय दिया गया उपहार।

यायातव्यम् [ययातेर्भावः-ष्यञ्] वास्तविक स्वभाव या प्रयोजन।

यानम् [या+ल्युट्] 1. जलयान, पोत 2. जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का उपाय तु० महायान, हीनयान 3. वायवी रथ, हवाई गाड़ी। सम०--आस्तरणम् गाड़ी की गद्दी, बैठने का आसन—गृह०,--स्वामिन् गाड़ी का मालिक।

याम (वि०) (स्त्री०—मी) [यम+अण्] यम से संबन्ध रखने वाला—यामिभिश्चरं यातनाः—मुकुन्द० १०, मः (पुं०) देवों का समुदाय—यामैः परिवृतो देवैः—भाग० ८।१।१८। सम० नादिन् मुर्गा,-पालः समय पालक, भद्रः मंच।

यामिकाचरः } 1. राक्षस 2. उल्लू।

यामिनीचरः }

यामलम् तन्त्रग्रन्थ।

यामिः,-मी, [या+मि, ङीप् वा] 1. दक्षिणी दिशा 2. भरणी नामक नक्षत्र।

यावकः-कम् [यव+अण्, स्वार्थे कन्] एक व्रत जिस में जौ खाकर रहना पड़ता है।

यावद्व्ययनम् (अ०) पढ़ने के समय, विद्यार्थी अवस्था में।

यावत्संपातम् (अ०) जहाँ तक संभव हो।

यावतिथ (वि०) जहाँ तक, जिस बिन्दु तक, जिस अंश तक।

यावनीप्रिया पान की बेल।

यावसिकः [यवस+ठक्] घसियारा, घास काटने वाला।

युक्त (वि०) [युज्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ बाँधा हुआ 2. जुए में जोड़ा हुआ 3. व्यवस्थित 4. समवेत 5. संपन्न, भरा हुआ 6. स्थिर किया हुआ, जमाया हुआ 7. संबद्ध 8. सिद्ध, अनुमित 9. सक्रिय, परिश्रमी 10. (ज्यो०) समयुक्त, मिला हुआ। सम० --चेष्ट (वि०) उचित कार्य में संलग्न,—बादिन् (वि०) उपयुक्त बात कहने वाला।

युक्तकम् [युक्त+कन्] जोड़ा।

युगम् [युज्+घञ्, कुत्व, न गुणः] 1. जूआ 2. जोड़ा 3. चन्द्रमा की सापेक्ष स्थिति। सम० धुर् (स्त्री०) जूए की कील, मात्रम् जूए की लंबाई के बराबर माप अर्थात् चार हाथ की लम्बाई,—वरत्रम् जूए का फीता या तस्मा।

युगन्धरः,-रम् गाड़ी की वह लकड़ी जिसमें जूआ लगा रहता है।

युगन्धरा एक देवी योगिनी योगेश्वा योगानन्दा युगन्धरा—ललिता०।

युगी (स्त्री०) बहुतायत योषयुग्या शूरसमृद्ध्या युजे रौणादिकः किः कुत्वमार्षम्—महाभाष्य ५।६३।३ पर टीका।

युग्म (वि०) [युज्+मक्] सम, दो से भाग होने वाली संख्या, ग्मम् 1. जोड़ा 2. संघ, जंक्शन 3. संगम 4. युगल 5. विषुन राशि। सम०—चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में घूमने वाला—विपुला एक छंद का नाम,—शुक्लम् आँखों में दो सफेदी के बिन्दु।

युङ्क्ष्व्, युञ्ज्व् } (स्वा० पर०) छोड़ देना, त्याग देना।

युञ्जिन् (पु०) [युञ्ज्+इनि] एक संकर जाति।

युट्ट्, युण्ट्ट् (स्वा० पर०) 1. भूल करना, भटक जाना 2. विद्वा होना, चले जाना।

युद्धम् [युध्+क्त] 1. लड़ाई, संग्राम, झड़प, संघर्ष, समर 2. ग्रहों का विरोध या संघर्ष। सम० अवहारिकम् युद्ध में जीतने पर प्राप्त सामग्री, संपत्ति, गान्धर्व—कम् रणभेरी, युद्ध का गीत, तन्त्रम् युद्ध विज्ञान, सैनिक शिक्षा, ध्वानः युद्ध का आक्रन्द, योजक (वि०) युद्ध भड़काने वाला,—व्यतिक्रमः युद्ध कला के नियमों का उल्लंघन।

युद्धकम् [युद्ध+कन्] संग्राम, रण, समर, लड़ाई।

युधिक (वि०) [युध्+ठन्] लड़ाकू, योद्धा, लड़ने वाला।

योद्धृ (पुं०) [युध+तृच्] योद्धा, सिपाही।

युयुत्सुरः चीता या भेड़िये की जाति का जन्तु, क्षुद्र व्याघ्र, बिज्जू।

युवन् (वि०) [यु+कनिन्] 1. जवान 2. हृष्ट-पुष्ट 3. उत्तम, श्रेष्ठ (पुं० युवा) 4. साठ वर्ष का हाथी 5. एक संवत्सर। सम० जानिः वह पुरुष जिसकी पत्नी जवान है, युवजानिर्धनुष्याणिः भट्टि० ५।१३, --पलित (वि०) समय से पूर्व जिसके बाल पक गये हैं,—पा० २।१।६७ पर भाष्य,—हन् शिशु हत्या।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युवक: [युवन् +कन्, नलोपः] जवान,तरुण ।

युवानक (वि०) [युवन्+आनक न लोपः] तरुण, जवान ।

युवति: [युवन्+ति] जवान स्त्री, तरुणी । सम०—**इष्टा** पीले रंग की चमेली,—**जन:** तरुणी स्त्रियाँ ।

युष्मदर्थम् (अ०) आपके लिए, आपकी खातिर ।

युष्मदायत्त (वि०) जो कुछ आपके अधीन है, आपके नियन्त्रण में है ।

युष्मद्दाय्यम् (आ०) मध्यम पुरुष ।

युष्मद्विध (वि०) आप जैसा, आपकी तरह का ।

युष्मत्क (वि०) आपका, आपसे संबंध रखने वाला ।

यूकालिक्षम् 1. जूँ और उसका अंडा (लीक) 2. लीक ।

यूथम् [यु+थक्, पृषो० दीर्घः] रेवड़, लहंडा, समूह, समुदाय । सम० —**चारिन्** (वि०) जो सामूहिक रूप से (हाथियों की भाँति) घूमता है, किसी रेवड़ में या लहंडे में,—**परिभ्रष्ट** (वि०) अपने समूह से भटका हुआ, **बन्धः** रेवड़, लहंडा ।

यूथशः (अ०) [यूथ+शस्] रेवड़ में, लहंडे में, पंक्ति में ।

यूप: [यु+पक्, पृषो० दीर्घः] 1. यज्ञीय स्तम्भ (जो प्रायः बाँस या खैर की लकड़ी की होती है) जिससे यज्ञीय पशु बाँध दिया जाता है 2. विजयस्तम्भ । सम० —**कर्मन्याय:** वह नियम जिसके अनुसार विकृति से संबद्ध किसी विवरण का उत्कर्ष या अपकर्ष केवल उसी विवरण तक लागू रहेगा जिसमें कि तदादितदन्त न्याय का उपयोग न हो सके—मै० सं० ५।१।२७ पर शा० भा० ।

योग: [युज्+घञ्, कुत्वम्] 1. आक्रमण योगमाज्ञापयामास शिवस्य विषयं प्रति-शिव० १३।७, 2. सतत संसक्ति, लगातार मिलाना—मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी भग० १३।१० 3. समता, साम्य—समत्वं योग उच्यते—भग० २।४८ 4. दुःख के 'जो से छुटकारा—दुःखसंयोगवियोग योगसंज्ञितम् भग० 5. मिलाना, जोड़ना 6. संपर्क 7. उपयोग 8. परिणाम 9. जूआ । सम०—**अभ्यासिन्** (वि०) जो योग का अभ्यास करता है, —**आख्या** केवल आकस्मिक संपर्क के कारण व्युत्पन्न नाम—एषा योगाख्या योगमात्रापेक्षा न भूतवर्तमानभविष्यत्संबन्धापेक्षा मी० सू० १।३।२१ पर शा० भा० -**आपत्ति:** प्रचलन में परिवर्तन,—**क्षेम:** 1. समृद्धि, सुरक्षा 2. कल्याण, भलाई 3. धार्मिक कार्यों के निमित्त कल्पित संपत्ति—मनु० ९।२१९, —**दण्ड:** योग की शक्ति से युक्त छड़ी जादू की छड़ी,—**नाविक:**,—नाविक, एक प्रकार की मछली, —**पट्ट** स्वसंकेन्द्रण की स्थिति,—**पानम्** मूर्छा लाने वाले पदार्थों से युक्तशराब, पीनक, -**पीठम्** योग का अभ्यास करते समय बैठने की विशेष मुद्रा, —**पुरुष:** गुप्तचर,—यथा योगपुरुषैरन्यान् राजाधितिष्ठति—कौ० अ० १।२१,—**भ्रष्ट** (वि०) जो योग के मार्ग से पतित हो गया है—शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते-भग०,—**यात्रा** परमेश्वर से सायुज्य प्राप्त करने का मार्ग,—**युक्त** (वि०) योगमार्ग में संलग्न—योगयुक्तो भवार्जुन-भग० ८।२७, -**वाहनम्** गुप्त उपाय,कूटयुक्ति, कपटयोजना, कौ० अ०,—**वाहक** (वि०) विघटनकारी (रसायन०),—**विद्या** योगशास्त्र,—**संसिद्धि:** योगाभ्यास में पूर्णसाफल्य प्राप्त करना,—**सिद्धिन्याय:** एक न्याय जिसके अनुसार नाना प्रकार के फलों को देने वाली एक विशिष्ट प्रक्रिया एक समय में केवल एक ही फल दे सकती है, दूसरा फल प्राप्त करने के लिए उस प्रक्रिया को पृथक् रूप से दूसरा प्रयोग करना पड़ेगा मी० सू० ४।३।२७-२८ पर शा० भा० ।

यौगिक (वि०) [योग+ठक्] अभ्यास के लिए अयुक्त (जैसा कि 'यौगिक बाण' तीरन्दाजी अभ्यास प्राप्त करने के लिए धनुष) ।

योग्य (वि०) [युज्+ण्यत्, योग+यत् वा] 1. उपयुक्त, समुचित 2. पात्र 3. उपयोगी, कामचलाऊ—**ग्य:** (पुं०) 1. पुष्य नक्षत्र 2. भारवाही पशु,—**ग्यम्** 1. सवारी, गाड़ी 2. चन्दन 3 रोटी 4. दूध ।

योग्या [योग्य+टाप्] 1. एक देवी का नाम—योगिनी योगदा योग्या ललिता० 2. पृथ्वी 3. सूर्य की पत्नी का नाम ।

योजनम् [युज्+ल्युट्] 1. जोड़ना, मिलाना 2. तत्परता व्यवस्था 3. परमात्मा 4. अंगुली 5. चार कोस की दूरी ।

योजित (वि०) [युज्+णिच्+क्त] 1. जूए में जोता हुआ 2. प्रयुक्त, काम में लिया गया 3. मिला, संयुक्त 4. सम्पन्न ।

योधेय: [योधा+ढक्] 1. योद्धा, एक वंश का नाम ।

योन (वि०) [योनि+अण्] वंश या कुल से संबन्ध रखने वाला ।

योनि: [यु+नि] 1. ऋग्वेद की वह आधारभूत ऋचा जिस पर 'साम' का निर्माण हुआ 2. तांबा 3. मूल कारण 4. समझ का स्रोत—योनिर्ज्ञप्तिकारणं 'वेदोऽखिलो धर्ममूल'मित्यादिनोक्तमित्यर्थः—मी० सू० २।२५ पर शा० भा० 5. इच्छा —योनिपातालदुस्तराम्—महा० १२।२५०।१५ । सम०—**गुण:** गर्भाशय या मूलस्थान से व्युत्पन्न गुण,—**दोष:** 1. योनिसंबन्धी विकार 2. स्त्री की जननेन्द्रिय में कोई दोष,—**मुक्त** (वि०) जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पाये हुए,—**मुद्रा** अंगुलियों द्वारा ऐसी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशिष्ट आकृति बनाना जो स्त्री की योनि से मिलती जुलती हो,—संवरणम्,—संवृतिः योनि या भग को सिकोड़ना,—संकटम् पुनर्जन्म।

योवाग्राहः] विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मृतक
योविद्ग्राहः] व्यक्ति की पत्नी को ग्रहण करने वाला।

यौगपद्यम् दे० यौगपद्यम्।

यौगपद्यम् [युगपद्+य] भिन्न भिन्न स्थानों से एक ही साथ एक वस्तु को देखना—आदित्यचन्द्रौगपद्यम् मी० सू० १।१।५।

यौन (वि०) [योनि+अण्] (समास में) 1. मूल स्थान, उद्गमस्थान—यत्रामियौनाश्च वसन्ति लोकाः—महा० १३।१०२।२५ 2. गर्भाधानसंस्कार। सम०—अनुबन्धः रक्तसम्बन्ध,—यौनानुबन्धं च समीक्ष्य कार्ये—की० अ० २।१०,—सम्बन्धः दे० यौनानुबन्ध।

यौनिकः [योनि+ठक्] मध्यम वायु, सुहावनी हवा।

यौवनम् [युवन्+अण्] जवानी, वयस्कता। सम०—आरम्भ (वि०) किशोर, वयस्क,—उद्भेदः 1. जवानी के आवेश का भावक उत्साह 2. यौन प्रेम, काम वासना 3. जवानी की कली का खिलना 4. वयस्कता प्राप्त करना—कण्टकः, —लण्टकम्,—पिडिका यौवनारम्भ का संकेत करने वाली चेहरे पर छोटी-छोटी फिंसियाँ, प्रान्तः जवानी के किनारे पर,—श्रीः जवानी का सौन्दर्य।

यौवनीय (वि०) युवक, तरुण।

यवागूली चावलों का मांड, यवागू।

र

रकसा (स्त्री०) कोढ़ का एक भेद।

रक्त (वि०) [रञ्ज्+क्त] 1. रङ्गा हुआ, रंगीन 2. लाल 3. प्रिय, प्यारा 4. सुन्दर, सुहावना 5. अनुस्वार युक्त (स्वर),—क्तः (पुं०) 1. लाल रंग 2. मंगल ग्रह 3. शिव,—क्तम् (नपुं०) 1. रुधिर, खून 2. ताँबा 3. ज़ाफ़रान 4. सिन्दूर 5. आँखों का एक रोग 6. लाल चन्दन,—क्ता (स्त्री०) 1 लाख 2. गुञ्जा 3. आग की सात लपटों में से एक। सम०—कुमुदम् लाल कमलिनी,—च्छद (वि०) लाल पत्तों वाला,—पद्मम् लाल कमल,—बीज: 1. एक राक्षस जिसको दुर्गा देवी ने मारा था 2. अनार का वृक्ष,—विकारः रुधिर का ह्रास,—ष्ठीवी रुधिर थूकने वाला,—स्रावः शरीर के अन्दर नस फट जाने से रक्त बहना।

रक्ष् (भ्वा० पर०) सावधान होना, जागरूक होना।

रक्षा [रक्ष्+अ+टाप्] 1. बचाना, रखना 2. सावधानी, सुरक्षा 3. चौकीदारी 4. रक्षा तावीज 5. भस्म 6. रक्षाबन्धन, पहुँची 7. लाख। सम०—प्रतिसरः कलाई पर तावीज की भाँति बाँधी जाने वाली पहुँची, रक्षाबन्धन,—महौषधिः रक्षा करने की श्रेष्ठतम औषधि।

रक्षितकम् [रक्ष्+क्त, स्वार्थे कन्] सुरक्षा।

रघुः सूर्यवंश का एक प्रतापी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता। सम०—उद्वहः रघुवंश में सर्वोत्तम, राम,—कारः 'रघुवंश' नामक काव्य का प्रणेता कालिदास।

रङ्ग् (भ्वा० पर०) जाना।

रङ्गः [रञ्ज्+घञ्] 1. रंग, वर्ण 2. मंच, क्रीडागार, आमोद का सार्वजनिक स्थान 3. श्रोतृवर्ग 4. रणक्षेत्र 5. नाचना, गाना, अभिनय करना। सम०—क्षारः सुहागा,—ताल: एक प्रकार का सङ्गीत का माप,—वः सुहागा,—नाथः, राजः, स्वामिन्—शायिन् विष्णु के विशेषण (मद्रास राज्य के श्रीरङ्गम् स्थान पर स्थित मन्दिर), प्रवेशः रङ्गमञ्च पर पधारना, वेदी पर उपस्थित होना, मङ्गलम् वेदी पर 'आवाहन' उत्सव मनाना।

रचनम् [रच्+ल्युट्] 1. योजना, उपाय 2. बाण में पंख जमाना।

रचित (वि०) [रच्+क्त] आविष्कृत, निर्मित। सम०—पूर्व (वि०) जो पहले ही बन चुका है।

रजयित्री [रञ्ज्+तृच्+ङीप्] स्त्री चित्रकार।

रजस् (नपुं०) [रञ्ज्+असुन्, नलोपः] 1. धूल, गर्दा 2. पुष्प की धूल, पराग 3. अन्धेरा 4. आवेश, नैतिक अन्धकार 5. तीनों गुणों में दूसरा 6. भाप 7. बादल या वर्षा का पानी 8. पाप—प्रायश्चित्तं च कुर्वन्ति तेन तच्छाम्यते रजः—रा० ४।८।३४। सम०—गुण (वि०) रजोगुण से युक्त, मेघः धूल का बादल, —विप्लव (वि०) धूल से भूरे रङ्ग का हुआ—युधि तुरगरजो विधूम्रविष्वक्—भाग० १।९।३४।

रण: णम् [रण्+अप्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. युद्धक्षेत्र। सम०—अतिथिः युद्ध चाहने वाला अतिथि—श्लाघ्यः प्राप्तो रणातिथिः पञ्च० २।१३,—मार्गः युद्धक्षेत्र में लड़ने की रीति,—रणायित (वि०) 'रण-रण' शब्द करता हुआ,—रसिक (वि०) लड़ाई का इच्छुक, —शूरः, शौण्डः युद्ध कला में प्रवीण।

रण्डाश्मिन् (वि०) जो पैंतालीस वर्ष की आयु के पश्चात् विधुर हो जाता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रतोत्सवः कामकेलि शृंगार परक क्रीडा ।

रतप्रैपरीत्यम् सम्भोग या मैथुन की प्रक्रिया जिसमें स्त्री पुरुष की भाँति आचरण करती है ।

रतिः [रम्+क्तिन्] 1. हर्ष, आह्लाद 2. आसक्ति, अनुराग 3. यौनसुख 4. सम्भोग, मैथुन 5. कामदेव की पत्नी 6. चन्द्रमा की छठी कला । सम०- **क्रीडः** मैथुन करने से उत्पन्न थकावट, पाशः,—**बन्धः** मैथुन करने की विशिष्ट रीति,—**रहस्यम्** कोक्कोक पंडित द्वारा प्रणीत 'कामशास्त्र',—**सुन्दरः** एक—प्रकार का रतिबंध ।

रतुः (स्त्री०) 1. दिव्यनदी, स्वर्गगा 2. सत्य से युक्त शब्द या भाषण **रतूस्यात् सत्यभाषकः** कोश० ।

रत्नम् [रम्+न, तान्तादेशः] 1. रत्न, जवाहर, मूल्यवान् पत्थर 2. कोई भी अमूल्य पदार्थ 3. कोई भी उत्तम या श्रेष्ठ वस्तु 4. जल 5 चुम्बक । सम०—**अङ्कुरः** मूंगा,—**अचलः** आख्यानों में वर्णित लंका में स्थित एक पहाड़,—**कुम्भः** रत्नों से भरा हुआ घड़ा, **कूटः** एक पहाड़ का नाम, **गर्भः** 1. कुबेर 2. समुद्र, —**गर्भगणपतिः** गणपति की एक विशेष मूर्ति,—**च्छाया** रत्नों की कान्ति रत्नच्छायाव्यतिकरभिव प्रेक्ष्यमेतत् पुरस्तात् -मेघ०,—**धेनुः** रत्नों के ढेर में (दान के लिए) दी जाने वाली प्रतीकात्मक गाय, **पञ्चकम्** पाँच रत्न—सोना, चाँदी, मोती, हीरा, और मूंगा, -**वरम्** सोना ।

रथः [रम्+कथन्] 1. गाड़ी, बहली 2. पैर 3. अंग, भाग, 4. शरीर 5. हर्ष, आह्लाद । सम० **आरोहः** जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है, **उडुपः**,-**उडुपम्** रथ का ढांचा,--**घोषः** रथ के चलने का 'घरघर' शब्द,—**बारकः** क्षुद्र द्वारा संरम्भी में उत्पन्न पुत्र, --**विज्ञानम्**, --**विद्या** रथ हाँकने की कला ।

रथन्तरम् एक साम का नाम ।

रथिन् (वि०) [रथ+इनि] 1. रथ में सवार 2. रथ का स्वामी,---(पुं०) 1. क्षत्रिय जाति का पुरुष 2. रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा ।

रथ्या [रथ+यत्+टाप्] 1. सड़क 2. सड़कों का संगम स्थान 3. बहुत से रथ या गाड़ियाँ । सम०—**मृगः** गली का कुत्ता ।

रदनः [रद्+ल्युट्] दाँत ।

रदनम् [रद्+ल्युट्] फाड़ना, कुतरना, खुरचना ।

रन्ता (स्त्री०) गाय ।

रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागमः] 1. छिद्र 2. जन्मकुंडली में लग्न से आठवाँ घर । सम०—**गुप्तिः** दोषों या त्रुटियों का छिपाना ।

रभसः [रभ्+असच्] विष, जहर ।

रमणकः [रम्+ल्युट्, कन्] एक द्वीप का नाम ।

रम्या [रम्+यत्+टाप्] (संगीत०) श्रुति का एक भेद ।

रवः [रु+घञ्] 1. ऊंट 2. कोयल 3. मधुमक्खी 4. ध्वनि 5. एक बड़ा खीरा ।

रविः [रु+अच् (इ)] 1. सूर्य 2. पर्वत 3. मदार का पौधा 4. बारह की संख्या । सम० **इष्टः** नारंगी, संतरा, —**ध्वजः** दिन,—**बिम्बः** सूर्यमंडल,—**सारथिः** 1. अरुण 2. उषःकाल ।

रशना [अश्+युच्, रशादेशः] 1. रस्सी 2. लगाम 3. तगड़ी । सम० —**पदम्** कूल्हा,— **ग्राहः** रथवान, भालिन् सूर्य ।

रसः [रस्+अच्] 1. (वृक्षों का) रस 2. तरल पदार्थ 3. सुरा, पेय 4. घूंट, (दवा की) मात्रा 5. स्वाद, रस 6. प्रेम 7. प्रेम, अनुराग 8. हर्ष, आमोद 9. (साहित्यिक) रस 10. सत, अर्क 11. वीर्य 12. पारा 13. विष 14. गन्ने का रस 15. पिघला हुआ मक्खन 16. अमृत 17. रसा (शाक भाजी का) 18. हरा प्याज 19. सोना 20. छः की संख्या का प्रतीक 21 रसग्रहण करने का अंग जिह्वा - भाग०८।२०।२७ 22. पिघली हुई धातु । सम०-- **इन्द्रः** गन्धक,—**उत्पत्तिः** (अल०) 1. रस की निष्पत्ति 2. संजीवन रस की उपज,—**घन** (वि०) रस से भरा हुआ,—**ज्ञानम्** भैषज्यविज्ञान,-- **तन्मात्रम्** रस या स्वाद का सूक्ष्म तत्त्व,—**निवृत्तिः** स्वाद का न होना, रसहीनता, —**भेदः** पारे का निर्माण ।

रसना [रस्+युच्] जिह्वा । सम० **अग्रम्** जिह्वा का अग्रभाग, - **मूलम्** जिह्वा की जड़ ।

रसवत्ता [रस+मतुप्+तल्+टाप्] कला की परख-ता रसवत्ता विहता -वासव० ।

रसातलम् [ष० त०] 1. सात लोकों में से एक, पृथ्वी के नीचे का लोक, पाताल 2. लग्न से (जन्मकुंडली में) चौथा घर ।

रस्या [रस्+यत्+टाप्] एक देवी का नाम ।

रहस्यत्रयम् विशिष्ट द्वैत शाखा के तीन मुख्य सिद्धान्त (ईश्वर, चित् और अचित्) ।

रहितात्मन् [ब० स०] जिसके आत्मा न हो (अर्थात् जो अपने आत्मा की बात का आदर न करता हो) ।

राक्षसः [रक्षस्+अण्] 1. भूत प्रेत, पिशाच 2. हिन्दुओं में आठ प्रकार के विवाहों में से एक 3. एक संवत्सर का नाम ।

रागः [रञ्ज्+घञ्] 1. प्रज्वलन 2. मिर्चमसाला 3. प्रेम, आवेश, यौनभावना 4. लालिमा । सम०—**वर्धनः** एक प्रकार का (संगीत का) माप ।

राघवायणम् रामायण ।

राघवीयम् राघव की एक रचना, कृति ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजन् [राज्+कनिन्] सोम का पौधा—ऐन्द्रश्च विधिवद्दत्तो राजा चाभियुतोऽनघः—रा० १।१४।६। सम०—**उपसेवा**, राजा की सेवा करना,—**गुह्यम्** ऊँचे दर्जे का रहस्य,—**देयम्** (**भागम्**) राजकीय दावा, —**पट्टिका** (स्त्री०) चातकपक्षी,—**पिण्डः** राजा से आजीविका,—**प्रसादः** राजा का अनुग्रह, **महिषी** पटरानी, **मातंगः** 1. (संगीत०) एक प्रकार की माप 2. इस नाम का एक ग्रन्थ,—**राज्यम्** कुबेर का राज्य,—**लिङ्गम्** एक राजचिह्न, **वर्त्मन्** शाही मर्यादा, —**वल्लभः** राजा का प्रिय व्यक्ति, **वृत्तम्** राजा का आचरण,—**स्थानीयः** राजा का प्रतिनिधि, वाइसराय।

राजन्य (वि०) [राजन्+यत्] राजकीय, शाही, न्यः क्षत्रिय जाति का पुरुष। सम० **बन्धुः** क्षत्रिय।

राज्यम् [राजन्+यत्, नलोपः] 1. राजकीय अधिकार, प्रभुसत्ता 2. राजधानी, देश, साम्राज्य 3. प्रशासन 4. सरकार। सम०—**अधिदेवता** राज्य की प्रधानता करने वाली देवता, अभिभावकदेव, **परिक्रिया** प्रशासन, **लक्ष्मी**:—**श्रीः**, प्रभुसत्ता की कीर्ति, —**स्थितिः** सरकार।

राजिः—**जी** } (स्त्री०) [राज्+इन्, ङीप् वा] 1. पंक्ति } 2. काली सरसों 3. धारीदार साँप 4. खेत 5. ताल चिल्ली, काकल। सम० **फला** एक प्रकार की ककड़ी।

राजायनीयः 1. एक आचार्य का नाम 2. वैदिक शाखा का प्रवर्तक।

रात (वि०) प्रदत्त, अनुदत्त।

रात्रिः,-त्री [रा+त्रिप्, ङीप् वा] 1. रात 2. रात का अंधकार 3. हल्दी 4. ब्रह्मा के चार रूपों में से एक 5. दिन रात—मैं० स० ८।१।१६ पर शा० भा०। सम०—**आगमः** रात का आना, **द्विषः** सूर्य,—**नाथः** चन्द्रमा —**भूजङ्घः**—**मणिः** चन्द्रमा,—**मन्त्रन्यायः** मीमांसा का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार अर्थवाद में वर्णित फल ही ग्रहण किया जाता है जब कि विधि में कर्मफल का वर्णन न किया गया हो।

राधा [राध्+अच्+टाप्] 1. वैशाख महीने की पूर्णिमा 2. भक्तिमत्ता।

राम (वि०) [रम्+घञ् ण वा] 1. आह्लादमय, सुखद, सुहावना 2. सुन्दर, लावण्यमय 3. श्वेत, मः तीन ख्याति प्राप्त व्यक्ति (क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जिसका भाई कृष्ण था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र, सीताराम। सम० **काण्डः** गन्ने का एक भेद, **तापन**, —**तापनी**, **तापनीय उपनिषद्** एक उपनिषद् का नाम,—**लीला** उत्तरभारत में नवरात्र के दिनों में 'रामायण' का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण।

रमणीयता [रम्+अनीय+तल्] सौन्दर्य, चारुता।

रामण्यकम् सौन्दर्य, मनोज्ञता।

रामा (स्त्री०) एक छन्द का नाम।

रावितम् [रु+णिच्+क्त] ध्वनि, स्वन—स्यन्दनेभ्यश्च्युता वीरा शङ्खरावितदुर्बलाः रा० ७।७।१२।

राशिः [अश्+इञ्, धातोरुडागमश्च] 1. ढेर, संग्रह, समुच्चय 2. संख्या (गणित में) 3. ज्योतिष का घर जिसमें २½ नक्षत्र सम्मिलित होते हैं। सम० **-गत** (वि०) बीजगणित विषयक, **-पः** ज्योतिष के एक घर का स्वामी, दे० राश्यधिप।

राष्ट्रकः [राष्ट्र+कन्] दे० राष्ट्रिक।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1. किसी देश का निवासी 2. राज्य की शासक 3. राज्यपाल।

रासः [रास्+घञ्] 1. कोलाहल 2. शोर 3. वक्ता 4. एक प्रकार का नृत्य 5. शृंखला 6. खेल, नाटक। सम० —**केलिः** वर्तुलाकार नाच जिसमें कृष्ण और गोपिकाएँ सम्मिलित होती हैं।

रासायन (वि०) [रसायन+अण्] रसायनसंबंधी।

रासायनिक (वि० [रसायन+ठक्] रसायन संबंधी।

रिक्तीकृ (तना० पर०) 1. रिक्त करना, खाली करना 2. ले जाना, चुरा लेना 2. चले जाना।

रिक्थजातम् (नपुं०) (किसी मृतक व्यक्ति की) समस्त संपत्ति संपूर्ण आस्ति।

रिष्टः [रिष्+क्त] तलवार, कृपाण।

रीतिः [री+क्तिन्] नैसर्गिक संपत्ति, स्वाभाविक गुण।

रुक्म (वि०) [रुच्+मन्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वल, चमकदार 2. सुनहरी,—**क्मः** 1. स्वर्णाभूषण 2. धतूरा। सम०—**आभ** (वि०) सोने की भाँति चमकीला—**पाखी** सुनहरी तश्तरी, **पुङ्ख** (वि०) 1. स्वर्णशर से युक्त सुनहरी बाण वाला 2. सुनहरी मूठ वाला।

रुचिप्रद (वि०) स्वादिष्ट, भूख लगाने वाला।

रुचिर (वि०) [रुच्+किरच्] सुहावना, सुखद अथ वासवस्य वचनेन रुचिरदर्शनस्त्रिलोचनम् कि० १२।१। सम०—**अङ्गजः** विष्णु का नाम।

रुचिष्य (वि०) [रुच्+किप्यन्] भूखवर्धक, भूख लगाने वाला।

रुण्डः [रुण्ड्+अच्] घोड़ी और खच्चर के मेल से उत्पन्न।

रुद्र (वि०) [रुद्+रक्] 1. भयानक, भयंकर 2. विशाल —द्रः 1. ग्यारह देवगण, जो शिव का ही अपकृष्ट रूप हैं, शिव उनमें मुख्य हैं 2. अग्नि 3. ग्यारह की संख्या 4. यजुर्वेद का सूक्त जिसमें रुद्र को संबोधित किया गया है। सम० **प्रयागः** एक तीर्थकेन्द्र का नाम,—**यामलम्** एक तन्त्र ग्रन्थ का नाम, **-वीणा** एक प्रकार की वीणा।

रुद्रटः अलंकार शास्त्र के एक लेखक का नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुद्धा [रुध्+क्त+टाप्] घेरा डालना।

रुद्धमूत्र (वि०) [ब० स०] मूत्रावरोध से ग्रस्त व्यक्ति।

रुधिर:,-रम् [रुध्+किरच्] 1. लाल रंग 2. मंगल ग्रह 3. खून, रक्त 4. जाफ़रान। सम० प्लावित (वि०) खून में भीगा हुआ।

रुरुत्सा [रुध्+सन्+टाप् शार्ङ्गधरोक्तम्] अवरोध करने की इच्छा।

रुवथ: [रु+अथ:, कित्] कुत्ता।

रूढ (वि०) [रुह्+क्त] 1. चढ़ा हुआ, सवार, लदा हुआ 2. दूर-दूर तक विख्यात- आसक्तता धूरियं रूढा- -कि० ११।७।७। सम० वंश (वि०) उच्च कुल का,—व्रण (वि०) जिसके घाव भर गये हों।

रूढि: [रुह्+क्तिन्] 1. वृद्धि, विकास 2. जन्म 3. निर्णय 4. प्रथा, रिवाज 5. प्रचलित अर्थ।

रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1. कठोर, रूखा 2. लोखा, चटपटा 3. चिकनाई से रहित (जैसे भोजन) - क्ष: 1. वृक्ष 2. कठोरता, रूखापन, -क्षम् 1. दही की मोटी तह 2. काली मिर्च। सम० भाव: रूखा भाव, अभिन्नत्व का स्वभाव,—वालुकम् मधु मक्खियों से प्राप्त शहद।

रूक्षित (वि०) [रूक्ष्+क्त] कंपाविष्ट, क्रुद्ध।

रूप् (चुरा० उभ०) वर्णन करना सविस्मय रूपायतो नमश्चरान्—कि० ८।२९।

रूपम् [रूप्+क, अच् वा] 1. सूरत, आकृति 2. रंग का भेद (काला, पीला आदि) 3. कोई भी दृश्य पदार्थ 4 नैसर्गिक स्थिति, प्राकृतिक दशा 5. सिक्का (जैसे कि रुपया)। सम०- उपजीवनम् सुन्दर या मोहक रूप के द्वारा जीविका लाभ करना महा० १२। २९४।५,—ध्येयम् सौन्दर्य, खूब सूरती—परिकल्पना रूप भरना, रूप धारण करना,--भाग्यवशात् किसी इकाई को भिन्नों में परिवर्तित करना, विभाग: किसी पूर्णांक को भिन्न राशियों में विभक्त करना ---नृत्यम् एक प्रकार का नाच।

रूप्यम् [रूप्+यत्] 1. चाँदी 2. मुद्राङ्कित सिक्का 3. नेत्रांजन। सम० भौतम् चाँदी।

रूव (वि०) [रुव्+अच्] कड़वा।

रेखामात्रम् (अ०) पंक्ति से भी, रेखा द्वारा भी।

रेणु (पुं० स्त्री०) [रीयते: णु:] 1. धूल, धूल कण, रेत 2. फूलों की रज 3. एक विशेष माप-तोल। सम० —उत्पात: धूल का उठना,—गर्भ: एक घंटे तक चलने वाली बालू की घड़ी।

रेणुकातनय: [ष० त०] परशुराम का विशेषण।

रेणुकासुत:

रेतस् (नपुं०) [री+असुन्, तुट् च] 1. वीर्य, बीज 2. धारा, प्रवाह 3. प्रजा, सन्तान 4. पारा 5. पाप। सम० सेक: मैथुन, सभोग,—स्खलनम् वीर्य का गिर जाना।

रेफ: 1. 'रकार' शब्द 2. 'र्' अक्षर 3. शब्द कण्ठे च सामानि रामस्तेरफात् -भाग० ८।२०।२५। सम० --विपुला एक छन्द का नाम, संधि: 'र्' का श्रुति-मधुर मेल।

रैवत: [रेवतो+अण्] 1. बादल 2. पाँचवें मनु का नाम।

रोध्यम् [रोध+यत्] रुधिर, खून।

रोग: [रुज्+घञ्] 1. बीमारी, कष्ट 2. व्रण स्थान। सम० उल्बणता रोगों का फूटना, ज्ञ: डाक्टर, रोगियों का चिकित्सक,- ज्ञानम् रोग का निदान, प्रेष्ठ: बुखार,-- शम. रोग का दूर हो जाना।

रोचक: [रुच्+ण्वुल्] शीशे का काम करने वाला या कृत्रिम आभूषणों का निर्माता, --रा० २।८३।१३।

रोध्रम् (नपुं०) [रुध्+असुन्] 1. तट, किनारा 2. पहाड़ का ढलान (जैसा कि 'पर्वतरोधस्' में)।

रोप: [रुह्+णिच्, ह्रस्व प, कर्मणि अच्] 1. रोपण करना, पौध लगाना 2. स्थापित करना 3. बाण, तीर। सम० शिखी वाणों से उत्पन्न अग्नि—वै० ४।८७।

रोपित (वि०) [रुह्+णिच्+क्त] 1. पौध लगाई हुई 2. जड़ा हुआ रत्न 3. निशाना बांधा हुआ (बाण)।

रोमन् (नपुं०) [रु+मनिन्] 1. शरीर के बाल 2. पक्षियों के पंख 3. मछलियों की खचा। सम०---सूची बालों में लगाने की सूई।

रोमश (वि०) [रोम+श] 1. बालों वाला, ऊनी 2. स्वरों के अशुद्ध उच्चारण से युक्त।

रोमशी [रोमश+ङीप्] गिलहरी।

रोषणता [रोषण+तल्] क्रोध, गुस्सा।

रोह: [रुह्+अच्] 1. ऊँचाई 2. वृद्धि, विकास 3. कली, अंकुर 4. जननात्मक कारण।

रोहिणी [रोह+इनि+ङीप्] 1. लाल रंग की गाय 2. पाँच तारों का पुंज—रोहिणी नक्षत्र 3. वसुदेव की पत्नी और बलराम की माँ 4. बिजली 5. एक प्रकार का इस्पात। सम०—तनय: बलराम, —योग: रोहिणी का चन्द्रमा के साथ संयोग।

रौद्र (वि०) [रुद्र+अण्] 1. रुद्र की भाँति प्रचण्ड 2. भीषण भयंकर 3. रुद्र विषयक, रुद्र संबंधी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्षम् [लक्ष+अच्] 1. एक लाख 2. चिह्न, निशान 3. दिखावा, बहाना, धोखा। सम०—**अर्चनम्** एक लाख फूलों के उपहार से पूजा करना,—**दीपः** मन्दिर में एक लाख दीपक एक साथ जलाना।

लक्षणम् [लक्ष्+ल्युट्] 1. चिह्न, संकेतक, टोकन 2. परिभाषा 3. शरीर पर सौभाग्यशाली चिह्न 4. नाम 5. उद्देश्य 6. मैथुनेन्द्रिय। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) परिभाषा।

लक्ष्मणा 1. दुर्योधन की पुत्री का नाम 2. तीन शब्दशक्तियों में से एक।

लक्षितलक्षणा संकेत द्योतक इंगित, गौण संकेत, एक ऐसा संकेत जिससे कोई अन्य संकेत मिले मैं० स० १०। ५।५८ पर शा० भा०।

लक्ष्मन् (नपुं०) [लक्ष+मनिन्] 1. चिह्न 2. घण्टा 3. परिभाषा 4. मुख्य, प्रधान 5. मोती।

लक्ष्मी [लक्ष+ई, मुट् च] 1. दौलत, समृद्धि, धन 2. सौभाग्य, खुशकिस्मती 3. सौन्दर्य, आभा, कान्ति 4. धन की देवता। सम०—**कटाक्षः** धन की देवता का आशीर्वाद, अनुग्रह, **नारायणः** विष्णु का विशेषण, **विवर्तः** भाग्य का फेर, **सनाथ** (वि०) सौन्दर्य से युक्त, सौभाग्यशाली।

लक्ष्यम् [लक्ष+यत्] 1. ध्येय, उद्देश्य 2. चिह्न, टोकन 3. वह वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है 4. गौण अर्थ, अप्रत्यक्ष अर्थ। सम० **अभिहरणम्** पारितोषिक, ले उड़ना, **ग्रहः** निशाना बाँधना,—**सिद्धिः**, अपने उद्देश्य में सफलता।

लग्न (वि०) [लग्+क्त] शुभ, मांगलिक, —**नम्** 1. वह बिन्दु जहाँ ग्रहपथ मिलते हैं 2. क्रान्तिवृत्त का बिन्दु जो किसी दत्त काल में क्षितिज या याम्योत्तर रेखा पर होता है। सम०—**पत्रिका** जन्म समय या विवाह संस्कार के मुहूर्तादिक विवरण से युक्त एक मांगलिक पत्रिका, जन्मपत्रिका, या विवाह पत्रिका।

लगण्डः पलकों का एक विशेष रोग।

लगुडहस्तः [ब० स०] दण्डधारी।

लघु (वि०) [लङ्घ्+कु, नलोपः] 1. हल्का 2. छोटा 3. थोड़ा, संक्षिप्त 4. मामूली 5. ओछा, अधम, 6. दुर्बल 7. चुस्त, फुर्तीला 8. द्रुत 9. आसान 10. मृदु 11. सुखद 12. प्रिय, सुन्दर 13. सब प्रकार के भारों से मुक्त अनोकशायी लघुरूपप्रचारः—महा० १। ९१।५। सम० **कोष्ठ** (वि०) हल्के पेट वाला —**कौमुदी** व्याकरण की एक पुस्तक,—**तालः** संगीत की माप का एक भेद,—**नालिका** छोटी नली, —**पाक** (वि०) आसानी से पचने योग्य,—**प्रमाण** (वि०) आकार प्रकार में छोटा सा **योगवासिष्ठम्** योग-वासिष्ठ का सारसंग्रह, **शेखर** संगीत की एक माप।

लघूक (तना० उभ०) 1. हल्का करना, दोष घटाना 2. छोटा करना, घटाना।

लघ्वी (स्त्री०) [लघु+ङीप्] छोटी, थोड़ी, कम लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।

लङ्गनी [लङ्ग्+ल्युट्+ङीप्] लकड़ी या रस्सी जिस पर कपड़े सुखाने के लिए लटका दिये जाँय।

लङ्गिमन् [लङ्ग्+इमनिच्] 1. सौन्दर्य 2. संघ, एकता।

लङ्घनम् [लङ्घ्+ल्युट्] 1. अतिक्रमण 2. उपवास करना 3. मैथुन, गर्भाधान।

लज्जाकृतिः (स्त्री०) लज्जा का झूठ मूठ प्रदर्शन।

लतारदः (पुं०) हाथी।

लब्ध (वि०) [लभ्+क्त] 1. प्राप्त, अर्जित 2. गृहीत 3. प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त, समझा गया 4. (भाग करने के फलस्वरूप) प्राप्त, उपलब्ध। सम०—**अनुज्ञ** (वि०) जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है, **तीर्थ** (वि०) जिसने अवसर से लाभ उठा लिया है, —**प्रतिष्ठ** (वि०) जिसने कीर्ति प्राप्त कर ली है, जिसने अपनी साख जमा ली है, सम्मानित, —**प्रसर** (वि०) स्वतन्त्रतापूर्वक इधर-उधर घूमने वाला, **प्रसाद** (वि०) अनुग्रह-प्राप्त, प्रिय,—**श्रुत** (वि०) विद्वान्, **संज्ञ** (वि०) जिसने सुधबुध प्राप्त कर ली है, जो होश में आ गया है।

लब्धवस्त्रा एक प्रकार की मिर्च।

लम्बरा कम्बल का एक भेद।

लम्भा एक प्रकार का बाड़ा, घेर।

लयज्ञ (वि०) (संगीत०) वह गाना जिसकी लय और ताल सही हो, जिसमें सामंजस्य हो।

ललन्तिका मस्तक के ऊपर पहना जाने वाला एक आभूषण झूमर, शृंगारपट्टी—ललन्तिकालसत्फाला—(ललिता त्रिशती स्तोत्र)।

ललामन् [लल्+इमनिच्] 1. आभूषण, अलंकार 2. एक छन्द का नाम।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1. मनोरम, सुन्दर 2. सुखद, सुहावना। सम०—**त्रियः** (संगीत०) एक गान की लय या माप,—**वनिता** सुन्दर स्त्री, **विस्तरः** बुद्ध के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, **विस्तारः** एक छन्द का नाम।

ललिता संगीत की एक लय।

ललिताम्बिका } ललिता देवी।
ललितावेषी }

ललितासहस्रनामन् ललिता के हजार नाम।

लवः [लू+अप्] 1. तोड़ना, काटना 2. खेती काटना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लावनी करना। **सम०—हृष्यु** (वि०) खेती काटने का इच्छुक।

लवङ्ग: [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा, **-ङ्गम्** लौंग। सम० **-कालिका** लौंग।

लवण: [लू+ल्युट्, पृषो० णत्वम्] 1. नमकीन स्वाद 2. एक राक्षस का नाम 3. एक नरक का नाम, **-णम्** 1. नमक 2. कृत्रिम नमक। सम०—**-पाटलिका** नमक की थैली, **शाकम्** नमकीन सब्जी।

लवणित (वि०) [लवण+इतच्] नमकीन, लवणयुक्त।

लवदंशु (वि०) [ब० स०] जिसकी किरणें चमकती हैं।

लवारस: महाबर या अलक्त का रस—लाक्षारससवर्णाभा—ललिता त्रिशती स्तोत्र।

लाङ्गलम् [लङ्ग्+कलच् पृषो० वृद्धिः] 1. हल 2. हलकी शक्ल का घहतीर 3. ताड़ का वृक्ष 4. वृक्ष से फल एकत्र करने का बांस 5. एक फूल का नाम।

लाङ्गला नारियल का पेड़।

लाङ्गली केवांच का वृक्ष, गजपीपल—निवृत्तगृहमङ्गुलिभ्रमत एव तन्व्यास्तवस्तनद्वयमियद्वपुः पथिक जातमूलौ-वनं इतीव वदति स्फुटं कुसुमहस्तमुद्वम्य सा भ्रमद्-भ्रमरमण्डलक्वणितपेशला लाङ्गली—जानकी० ११। ९५।

लाङ्गूलचालनम् } पूंछ हिलाना।
लाङ्गूलविधूनम् }

लाजपेया: चावल का मांड।

लाभ: [लभ्+घञ्] 1. गड़ा हुआ धन—मनु० १०। ११५ 2. फायदा, आय। सम० **-विद्** (वि०) जो यह समझता है कि लाभ क्या चीज है लेभे लाभ विदां वरः रा० ६०।

लालाध: अपस्मार, मिर्गी।

लाव: लवा नामक पक्षी, बटेर।

लावाणक: एक द्वीप का नाम।

लासनम् पकड़ना, ग्रहण करना—तौमराङ्कुशलासनैः—महा० ७।१४२।४५।

लासिक (वि०) [लस+ठक्] नाचने वाला—शि० १३।६६।

लिखित (पुं०) [लिख्+क्त] चित्रकार।

लिगु: [लिग्+कु:] 1. हरिण 2. मूर्ख, बुद्धू 3. ऋषि, मुनि।

लिङ्गम् [लिङ्ग+अच्] 1. चिह्न, निशान 2. प्रतीक, विशिष्टता 3. रोग का लक्षण 4. शारीरिक सत्ता—यौगेन वृत्युगमसत्त्वयुक्तो लिङ्गं व्यपोहेत् कुशलो-ऽहमाख्यम्—भाग० ५।५।१३। सम० **आगमः** वीर शैवों का संप्रदाय,—**पीठम्** 'शिवलिङ्ग' मूर्ति जिस पर विराजमान है वह चौकी,—**शास्त्रम्** लिङ्ग ज्ञान पर व्याकरण का एक ग्रन्थ।

लिङ्गालिका चुहिया, छोटी मूसी।

लिपि: [लिप्+इक्] 1. लेप 2. लेख 3. अक्षर, वर्णमाला 4. बाहरी सूरत। सम० **-कर्मन्** (नपुं०) आलेख, चित्रण,—**संनाह:** कलाई पर पहनी जाने वाली पहुंची, रक्षाबन्धन।

लिप्तम् [लिप्+क्त] 1. लिपा हुआ, सना हुआ, 2. खाया हुआ, 3. बलगम, कफ। सम०—**वासित** लिपी हुई सुगन्ध से सुगन्धित, **हस्त** (वि०) सने हुए हाथों वाला।

लुञ्चितकेश: जिसने अपने बाल छंटवा कर छोटे करा लिए हैं।

लुठ् (चुरा० उभ०) बोलना, चमकना।

लुण्ठनम् [लुण्ठ्+ल्युट्] 1. लूटना 2. विरोध करना, बाधा डालना।

लुप् (व्या० में) लुप्त होना, मिटना, भूलचूक होना।

लुम्बिनी बुद्ध का जन्मस्थान।

लुलितम् धनुष का किनारा।

लूतातः चींटा, मकौड़ा।

लून (वि०) [लू+क्त] 1. कटा हुआ 2. तोड़ा हुआ 3. (फूल आदि) एकत्र किये हुए। सम० **-पाप:,** —**पुष्कृत:** जिसका पापों से छुटकारा हो चुका है, —**विष** (वि०) जिसकी पूंछ में विष लगा हो।

लेख: [लिख्+घञ्] 1. लेख, लिखित दस्तावेज 2. परमात्मा, देवता 3. ओरौंदा। सम०—**अनुजीविन्** भगवान् का सेवक,—**प्रभु:** इन्द्र—लब्धं न लेखप्रभुणापि पातुं मे० २२।११८, **-स्खलितम्** लिपिकार से की गई अशुद्धि।

लेखिका थोड़ा आघात, सहलाना।

लेखित (वि०) [लिख्+णिच्+क्त] लिखाया गया।

लेला (केवल करण कारक—लेलया के रूप में प्रयुक्त) कांपना, हिलना।

लेलिहक: गंधक।

लैङ्ग (वि०) [लिङ्ग+अण्] शब्द के लिङ्ग से संबंध रखने वाला, **-ङ्गम्** अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम। सम० **-धूम:** अज्ञानी पुरोहित।

लोक: [लोक्+घञ्] 1. संसार, विश्व का एक भाग 2. पृथ्वी, भूलोक 3. मनुष्य जाति 4. प्रजा 5. समूह 6. क्षेत्र 7. दृष्टि 8. वास्तविक स्थिति, प्रकाश —इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तत्स्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्—भाग० ८।३।२५ 9. विषय, भोग्य-वस्तु—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव—महा० १२।२८८।११। सम०—**अनुग्रह:** मनुष्य जाति की समृद्धि,—**अनुवृत्तम्** लोकमत के अनुसार, जनसाधारण की आज्ञाकारिता,—**अभिलषित** (वि०) जिसे जनता चाहे, जनप्रिय,—**उपकोशम्** लोगों में बुरी अफ़...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फैलाना···दश० २।२,—द्रुभक (वि०) समाज को धोखा देने वाला, सामाजिक ठग, धर्मः सांसारिक कर्तव्य, नाथः सूर्य,—पक्षीय (वि०) संसार में छिपा हुआ, - प्रत्ययः सबका विश्वास, विश्व का प्रामाण्य,-भर्तृ (वि०) जनसाधारण का पालक पोषक, - यत्नः संसार के प्रति भला रहने की इच्छा लोकैषणा—महा० १०।१८।५ पर शा० भा०,—रावण (वि०) संसार को कष्ट देने वाला—रा० ३।३३।१, ··वर्तनम् लोकव्यवहार जिससे संसार की स्थिति बनी रहे,···विरुद्ध (वि०) लोकमत के विपरीत, —विसर्गः 1. संसार का अन्त 2. गौण सृष्टि, —संघातः जनसमुदाय,—सुन्दर (वि०) जिसके सौन्दर्य की सब लोग प्रशंसा करें।

लोकसात् (अ०) लोगों की भलाई के लिए।

लोचनम् [लोच्+ल्युट्] 1. दर्शन, दृष्टि, ईक्षण 2. आँख। सम०—अञ्चलः आँख की कोर, आपातः झांकी, —आहरणम् पलक,—पक्ष्म (वि०) देखने में विकराल।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1. लालच, लालसा 2. इच्छा, प्रबल चाह 3. विस्मय, घबराहट, उलझन। सम० —अभिपातिन् (वि०) जो लालसा के कारण मारता है,—मोहित (वि०) लालच से अन्धा।

लोमटकः लोमड़।

लोमविष (वि०) [ब० स०] जिसके बालों में जहर भरा हो।

लोमशाकर्णः बिल में रहने वाले जन्तुओं की एक जाति।

लोलकर्ण (वि०) प्रत्येक को सुनने वाला।

लोलम्बः भौंरा, भ्रमर।

लोष्टगुटिका मिट्टी की गोली।

लोष्टायते (ना०० धा० आ०) ढेले के समान समझना।

लोहः [लूयतेऽनेन-लू+ह] 1. लोहा 2. इस्पात 3. तांबा 4. सोना 5. अगर की लकड़ी। सम०—अग्रम् लोहे की नोक,—उच्छिष्टम् —उत्थम् किट्टम् मलम् लोहे का जंग, - कुम्भी लोहे की घड़िया,—चर्मवत् धातु की तश्तरी से ढका हुआ मात्रः वर्णी।

लोहित (वि०) [रुह+इतन्, रस्य लः] 1. आँख की पलकों का एक रोग 2 एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

लोहित्यम् पीतल।

लौकिक (वि०) [लोक+ठक्] 1. सांसारिक 2. सामान्य 3. दैनिक जीवन संबंधी। सम०—अग्निः सामान्य आग जो यज्ञ कार्यों में प्रयुक्त न होती हो, - न्यायः सामान्यतः माना हुआ न्याय।

लौहशास्त्रम् धातुविज्ञान, धातुशोधन विद्या।

व

वंशः [वम्+श] 1. संगीत का एक विशेष स्वर 2. बाँस 3. अहंकार, अभिमान 4. कुल। सम०—कर्मन् बाँस की दस्तकारी, - दृत्यम् बंसरी बजाना, धरः किसी कुल में उत्पन्न,—पक्षपतितम् सत्रह मात्राओं का एक छन्द,-पात्रम् बांस की बनी टोकरी, --वाद्यः कुल से निष्कासित,—ब्राह्मणम् सामवेद ब्राह्मण का मूल पाठ, लून (वि०) संसार में अकेला —वनम् बाँसों का जंगल, वर्धनः पुत्र,—विस्तरः वंशावली—स्थविलम् एक छन्द का नाम।

वंश्यः बन्धु, संबंधी, अपने कुल का।

वक्तुकाम (वि०) बोलने की इच्छा वाला,

वक्तुमनस् (वि०) बोलने का इच्छुक।

वक्तृप्रयोक्तृ (वि०) सिद्धान्तिक और प्रायोगिक (राजनीतिज्ञ)।

वक्र (वि०) [वक्क्+रन् पृषो० नलोपः] 1. टेढ़ा, मुड़ा हुआ 2. गोलमोल, अप्रत्यक्ष 3. घुंघराले 4. बेईमान, कपटी, जालसाज़, क्रः—1. मंगलग्रह 2. शनिग्रह, क्रम् 1. (ग्रह की) टेढ़ी चाल 2. नदी का मोड़। सम० आस्यम् ठोढ़ी, जस्त,—इतर (वि०) सीधा, कोलः अंकुश,—गुल्फः ऊँट,—तालम् एक विशेष वातोपकरण, रेखा टेढ़ी लाइन।

वक्रिका, वक्री] चंगेरी, बाँस आदि की बनी टोकरी।

वक्त्रम् [वच्+ष्ट्रन्] 1. बोलने की क्रिया 2. वक्तृता 3. पाठ करना 4. उपदेश, धार्मिक पुस्तक का अंश 5. आज्ञा, आदेश 6. परामर्श, अनुदेश। सम० अवक्षेपः अपशब्दों से मुक्त बात, उपन्यासः सुझावात्मक वक्तृता, क्रिया आज्ञाकारिता, गोचर (वि०) बात चीत का विषय बनाने वाला, गौरवम् शब्दों का आदर करना - पितुर्धनगौरवात्—रा० १,—व्यक्तिः किसी उक्ति की यथार्थ सार्थकता।

वचोहरः दूत, राजदूत।

वचस्विन् (वि०) वाक्पटु, बोलने में चतुर—इतीरिते वचसि वचस्विनामुना - शि० १७।१।

वचनव्ययम् (अ०) सिवाय उसके जो कह दिया है।

उक्तिः [वच्+क्तिन्] 1. न्याय, कहावत 2. वाक्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. वक्तृता, वक्तव्य, अभिव्यक्ति 3. शब्द की वाचक शक्ति ।

वज्रः [वज्+रन्] 1. बिजली, इन्द्र का शस्त्र 2. रत्न की सूई 3. रत्न, जवाहर 4. एक प्रकार का कुश घास 5. एक प्रकार का सैन्य व्यूह । सम० **अंशुकम्** धारी दार कपड़ा, **अङ्कित** (वि०) वज्रायुध के चिह्न से मुद्रित,—**आकार** (वि०), **आकृति** (वि०) **वज्र** की शक्ल वाला—**कीटः** एक प्रकार का कीड़ा, **-पञ्जरः** सुरक्षित आश्रयगृह, **मूल्यः** 1. एक प्रकार का कीड़ा 2. एक प्रकार की समाधि ।

वज्रकम् [वज्र+कन्] हीरा, जवाहर ।

वटः [वट्+अच्] 1. बड़ का पेड़ 2. गंधक 3. शतरंज की गोट । सम० **दलः,-पत्रम्,-पुटम्** बड़ का पत्ता ।

वडवा [बल+धा+क+टाप्] 1. घोड़ी 2. एक नक्षत्र-पुंज जिसे 'घोड़ी के सिर' के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है ।

वणिज् (पुं०) [पण्+इजि, पस्य वः] 1. व्यापारी, सौदागर 2. तुला राशि । सम० **कटकः** काफ़ला, —**वहः** ऊँट, **वीथी** बाजार ।

वत् ['मतुप्'] अधिकरण अर्थ में तथा 'योग्य' अर्थ में लगने वाला सत्वर्थीय प्रत्यय—मैं० सं० १६।२।५१ पर शा० भा० ।

वतु (अ०) विस्मयादि द्योतक अव्यय । 'सुनो' 'बस' 'चुप' अर्थ को प्रकट करता है ।

वत्सः [वद्+सः] 1. बछड़ा 2. लड़का, पुत्र 3. सन्तान, बच्चा 4. वर्ष, 5. एक देश का नाम । सम०—**अनुसारिणी** लघु और दीर्घ मात्रा का मध्यवर्ती क्रम भंग या अन्तर, **पदम्** तीर्थ, घाट, उतार ।

वत्सायितः [वत्स+क्यच्+णिच्+क्त] बछड़े के रूप में संवर्तित वत्सायितस्त्वमथ गोपयमानायितस्त्वम् —नारा० ।

वदनम् [वद्+ल्युट्] 1. चेहरा 2. मुख 3. सूरत 4. सामने का पक्ष 5. पहेली राशि 6 त्रिकोण का शिखर । सम० **आधोवभ्रदिरा** मुख में मधुरराग से युक्त सुरा,—**उदरम्** जबड़ा, **पङ्कजम्** मुखारविन्द, कमल जैसा मुख, **-पवनः** श्वास, साँस ।

वधः [हन्+अप्, वधादेशः] 1. भग्नाशा 2. (बीज० में) गुणनफल 3. हत्या, कतल । सम० **राशिः** जन्माङ्ग में छठा घर ।

वधिकः,-कम् कस्तूरी, मुश्क ।

वधूकालः वह समय जब कि कन्या दुल्हिन बनती है ।

वधूवरम् नवविवाहित दम्पति ।

वध्यवासस् [ष० त०] लालरंग के वस्त्र जो प्राणदण्ड प्राप्त पुरुष को फाँसी देने के समय पहिनाये जाते हैं ।

वनम् [वन्+अच्] 1. जंगल 2. वृक्षों का झुंड 3. घर 4. फव्वारा 5. जल 6. लकड़ी का पात्र 7. प्रकाश की किरण 8. पर्वत । सम०—**आश** (वि०) केवल जल पीकर जीने वाला, **उपलः** गोबर के उपल, गोंहे,—**ओषधिः** जंगली जड़ी बूटी, **भूचणो** कोयल, **-हासः** काश नाम का घास ।

वन्दनकम् सम्मानपूर्ण अभिवादन ।

वन्य (वि०) [वन+यत्] 1. जंगली 2. लकड़ी का बना हुआ, **-न्यः** (पुं०) बन्दर—जघ्नुर्वन्यांश्च नैर्ऋताः—रा० ३।२८।२९ । सम०—**वृत्ति** (वि०) जंगली उपज पर ही रहने वाला ।

वपनम् [वप्+ल्युट्] 1. बीज बोना 2. हजामत करना 3. वीर्य 4. क्षुर, उस्तरा 5. करोने से रखना, व्यवस्थित करना ।

वपा [वप्+अच्+टाप्] 1. चर्बी 2. बिल, बिवर 3. दीमकों द्वारा बनी नमी 4. उभरी हुई मांसल नाभि ।

वपुष्मत् (वि०) [वपुस्+मत्] 1. शरीर धारी 2.हृष्ट-पुष्ट 3. क्षतविक्षत, खण्डित ।

वप्रः-प्रम् [वप्+रन्] 1. फसील, परिवार, परकोटा 2. ढलान 3. समुच्चय 4. भवन की नींव ।

वप्रा वाटिका की क्यारी ।

वप्रयः [वप्+अयच्] झाँसी ।

वमनः [वम्+ल्युट्] 1. रूई का छींजन 2. सन, सुतली, पटुआ ।

वयोबाल (वि०) अवयस्क बालक, थोड़ी आयु का बालक ।

वयुनम् [वय्+वनन्] (वेद०) कर्म, कार्य—विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्—ईश० १८ ।

वर (वि०) [वृ+अप्] उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, अनमोल, —**रः** 1. वरदान 2. उपहार, पारितोषिक 3. इच्छा 4. प्रार्थना 5. दान 6. दूल्हा 7. जामाता । सम० **अरणिः** माता—रा० ७।२३।२२, —**आहः** बैल, —**इण्डी** पुराना गौड देश,—**प्रेषणम्** विवाह संस्कार का एक भाग जिसके अनुसार दुल्हे के मित्र किसी विशेष परिवार में दुलहन की खोज के लिए जाते हैं —**पुरुषाः** श्रेष्ठजन, **लक्षणम्** विवाह में संस्कार की बातें ।

वरासिः [ब० स०] खड्गधारी, तलवार रखने वाला ।

वराहपुराणम् अठारह पुराणों में से एक ।

वरिवसित् (वि०) [वृ+असुन्=वरिवस्+तृच्] पूजा करने वाला—न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि —शिव०

वरिवस्यति (ना० धा० पर०) अनुग्रह करना, कृपा करना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वदान्यमेरुः [ष० त०] जमदग्नि ऋषि का नाम ।

वरेण्यः गणेशमाहात्म्य में वर्णित एक राजा का नाम ।

वर्गाष्टकम् [ष० त०] व्यंजनों के आठ समूह ।

वर्गोत्तमम् 1. अनुनासिक वर्ण 2. ज्योतिष में किसी ग्रह विशेष की उच्चता को प्रकट करने वाला शब्द ।

वर्गीकृत (वि०) [वर्ग+च्वि+कृ+क्त] श्रेणियों में विभक्त जिसके समुदाय बने हुए हों ।

वर्णः [वर्ण+अच्] 1. रंग 2. सूरत, शक्ल 3. मनुष्यों की जाति 4. अक्षर, ध्वनि 5. शब्द, मात्रा 6. यश 7. प्रशंसा 8. चोंगा 9. गीतक्रम । सम० अनुप्रासः अक्षरों का अनुप्रास अलंकार,—अन्तरम् 1. भिन्न जाति 2. स्थानापन्न अक्षर,—अवकृष्टः शूद्र--अवर (वि०) जाति की दृष्टि से अधम ओछा,—तर्कः ऊंची कल्पना,—परिचयः संगीत में दक्षता, भेदिनी मोटा अनाज, (बाजरा, कोदों), विक्रिया 1. अक्षरों में परिवर्तन 2. जाति में परिवर्तन ।

वर्णकः [वर्ण+ण्वुल्] 1. वक्ता, वर्णन करने वाला 2. आदर्श, नमूना ।

वर्णिः [वर्ण्+इन्] 1. सोना 2. सुगन्ध ।

वर्तनम् [वृत्+ल्युट्] 1. होना, रहना 2. ठहरना, बसना 3. कर्म, गति 4. जीविका 5. जीवित रहने का साधन 6. आचरण, व्यवहार 7. मजदूरी, वेतन 8. तकवा 9. जिससे रंगा जाय निहितमलकतवर्तनाभिताम्रम् —कि० १०।४२ 10. बार बार दोहराया गया शब्द 11. काढ़ा बनाना । सम०—विनियोगः मजदूरी बाँटना ।

वर्तमानम् [वृत्+शानच्] विद्यमान काल, मौजूदा समय । सम०—आक्षेपः वर्तमान का विरोध,—कालः मौजूदा समय ।

वर्तिः [वृत्+इन्] अस्थिभङ्ग के कारक सूजन ।

वर्तिका [वृत्+तिकन्] यष्टिका, लाठी---पलाशवर्तिकामेकां बहुलः संहतान् पथि - महा० १।३१।८ ।

वर्तित [वृत्+क्त] 1. मुड़ा हुआ, लुढ़का हुआ 2. उत्पादित निष्पन्न 4. खर्च किया हुआ, बीता हुआ ।

वर्तिन् (वि०) [वृत्+णिनि] आज्ञा मानने वाला ।

वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] 1. पथ, मार्ग, रास्ता 2. कमरा, कक्ष 3. पलक 4. किनारा । सम० —आयासः यात्रा के परिणामस्वरूप थकान । —पातम् ताक में रहना, ताड़ में रखना ।

वर्त्मयातृ (वि०) [वृत्+स्य+शतृ] होने वाला, प्रगति करने के लिए तत्पर ।

वर्धः [वर्ध्+अच्] चमड़े का तस्मा या फीता ।

वर्धकी नेपथ्या, व्यभिचारिणी स्त्री ।

वर्धनम् (वि०) [वृध्+णिच्+ल्युट्, स्वार्थे कन्] आह्लादकर, हर्षप्रद, आनन्ददायक ।

वर्धमानः [वृध्+शानच्] 1. जैनियों का २४ वाँ तीर्थंकर 2. पूर्व दिशा का दिक्पाल हाथी । सम० गृहम् आमोद घर ग० २।१७।१८ ।

वर्धमानकः [वर्धमान+कन्] हाथों में दीपक लेकर नाचने वालों की मण्डली ।

वर्धापनिकम् 1. बधाई 2. बधाई के चिह्नस्वरूप उपहार ।

वर्धापिका परिचारिका, नर्स ।

वर्ध्रः हर्णिया रोग ।

वर्षः [वृष्+घञ्] 1. वर्षा होना 2. छिड़काव 3. वर्ष (केवल नपुं० में) 4. महाद्वीप 5. बादल 6. दिन —रा० उ७३।५ पर टीका 7. वासस्थान । सम० -कालः बरसात की ऋतु, गणः वर्षों की लम्बी शृंखला,—पद्मम् पत्रा, कुलेण्डर, रात्रः बरसा का मौसम ।

वर्षा [वर्ष्+अच्+टाप्] (स्त्रीलिंग व० व० में प्रयुक्त) बरसात, वर्षा ऋतु । सम० -अधोषः बड़ा मेंढक, -भू (पुं०) 1. मेंढक 2. इन्द्रवधू नामक कीड़ा वीरबहूटी, मदः मोर ।

वर्षीयस् (वि०) [वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादेशः] बहुत बूढ़ा या पुराना ।

वर्षीयस् (वि०) [वृष्+ईयसुन्] बौछार करने वाला, —तपः कृशा देवमीढा आसीद्गरीयसी मही --भाग० १०।२०।७ ।

वर्ष्मवीर्यम् [ष० त०] शरीर का बल ।

वलना [वल्+युच्] घुमाव, फिराव ।

वलितम् [वल्+क्त] काली मिर्च ।

वलजः अन्न का संग्रह -कर्षकेण वलजान् पूपूरता --शि० १४।७ ।

वलम्बः [अव+लम्ब्+अच्, भागुरिमते अकारलोपः] लम्ब रेखा ।

वलम्बिनिवेशः [स० त०] ऊपर का कमरा ।

वलयम् [वल्+अयन्] समुदाय ।

वलिः [वल्+इन्] 1. तह, झुर्री (खाल पर) 2. पेट के ऊपर के भाग में तह 3. चोरी की मूठ रत्नच्छायाखचितबलिभिश्चामरैः कलान्तहस्ता मेघ० ३७ । सम०—वलितम् झुर्रियाँ और सफ़ेद बाल (जो बुढ़ापे का चिह्न है), —शालः बादल--नैष० १।१० ।

वल्कः [वल्+क] 1. वृक्ष की छाल, वल्कल 2. मछली की खाल 3. वस्त्र । सम० फलः अनार का पेड़, वासस् (नपुं०) वल्कल की बनी हुई पोशाक ।

वल्कलिन् (वि०) [वल्कल+णिनि] 1. वल्कल देने वाला (वृक्ष) 2. वल्कल से आच्छादित ।

वल्गकः [वल्ग्+अच्, स्वार्थे कन्] कूदने वाला, नाचने वाला ।

वल्मीकः [वल्+ईक, मुट् च] 1. बमी, दीमकों से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बनाया गया मिट्टी का ढेर 2. शरीर के कुछ भागों में सूजन 3. वाल्मीकि महाकवि । सम०—ज,—जन्मा ऋषि वाल्मीकि का विशेषण, - भीमभ्,—राशिः वमी ।

वल्मभगिणिः कोशकार ।

वल्लभजनः स्त्रीजिनी, प्रिया ।

वल्लाः घोड़ा, टट्टनी --अल्पवल्गुलं भुवनाङ्किवपेन्द्रमहीन्द्र-भोगैरधिगोत्रबन्धाम्-- भाग० ३।८।२९ ।

वशालोभः चालाक हथिनी को उपयोग में लाकर जंगली हाथी को पकड़ने की रीति भाग० १०।७ ।

वशीकृत (वि०) [वश+च्वि+कृ+क्त] 1. अभिभूत 2. वश में किया हुआ ।

वशीभूत (वि०) [वश+च्वि ; भू+क्त] आज्ञाकारी, वश में हुआ ।

वश्यम् [वश्+यत्] 1. जो वश में किया जा सके 2. लौंग ।

वशना [वश्+युच्+टाप्] एक प्रकार का कंठाभूषण, हार ।

वषट्कृत (वि०) अग्नि में उपहृत--आज्यमाज्यमसकृद्वष-ट्कृतम् शि० १४।२९ ।

वसनम् [वस्+ल्युट्] 1. घेरा 2. दालचीनी के वृक्ष का पत्ता 3. नगड़ी (स्त्रियों का एक आभूषण) 4 रहना, निवास करना । सम०—सदान् तम्बू, टैंट ।

वसनमूती कोयल ।

वसामेहः [ष० त०] एक प्रकार का मधुमेह ।

वसुः [वस्+उन्] 1. घी, घृत (जैसा कि 'वसोर्धारा में), 2. धन, दौलत, रत्न, जवाहर 3. सोना 4. जल । सम० उत्पः भीष्म,—धारिणी धरा, पृथ्वी, पालः राजा, - भम् पलिहा नक्षत्र, - रोचिस् अग्नि ।

वसोर्धारा रुद्र के निमित्त किए जाने वाले घृत के अन्त में उपहृत हवि की अनवरत धारा ।

वस्तिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+तिः] 1. बमना, रहना 2. मूत्राशय 3. श्रोणि, पेडू । सम०--कर्मन् (नपुं०) अनीमा करना, कोशः मूत्राशय,—छिद्रम् मूत्राशय का बिदर, छिद्र, रन्ध्र ।

वस्तु (नपुं०) [वस्+तुन्] 1. वास्तविकता 2. चीज 3. धन-धान्य 4. सामग्री (जिससे कोई वस्तु बनाई जाय 5. अभिकल्पना, योजना । सम० क्षणात् (अ०) ठीक समय पर, तत्त्व (वि०) वस्तुनिष्ठ, विषयपरक, निर्देशः 1. विषय सूची 2. एक प्रकार की नान्दी,—पुरुषः नायक --अथवा सद्वस्तु पुरुष बहु-मानात् विक्रम० १।२.—भावः वास्तविकता, - भूत (वि०) सारभूत, तथ्यपूर्ण, वस्तुतः, —विनिमयः अदल-बदल का व्यापार, -शक्तितस् (अ०) परि-स्थितियों के कारण,--शून्य (वि०) अवास्तविक, —स्थिति वास्तविकता ।

वस्यस् (वि०) 1. अत्यन्त धन 2. अपेक्षाकृत धनवान्, 3. श्रेयान्, अधिक समृद्ध(वेद०) श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा तै० उ० ।

वहा [वह्+अच्+टाप्] नदी, दरिया ।

वहनभङ्गः [ष० त०] जहाज का टूट जाना ।

वहित्रम् [वह्+इत्र] 1. किश्ती, पोत 2. चौकोर रथ, बगीकार या जनुरकोश रथ ।

वह्निः [वह्+नि] 1. अग्नि 2. जठराग्नि 3. पाचक अग्नि 4. सवारी 5. बजमात 6. भारवाही जन्तु 7. तीन की संख्या । सम०— उत्पातः अग्निमय उल्का,—कोणः दक्षिणपूर्वी दिशा—कोपः, दावाग्नि, पतनम् स्वयं अग्नि की चिता में बैठ कर आत्माहुति करना—बीजम् सोना,— वारकम् पानी, जल, शेखरम् केसर, कुंकुम, जाफरान, संस्कारः दाहसंस्कार, अन्त्येष्टि क्रिया, साक्षिकम् अग्नि का साक्षी करके ।

वह्निसातकृ आग लगा देना, अग्नि में जला देना ।

वा (स्वा० अदा० पर०) सूँघना ।

वाक्पेवाक्यम् दो व्यक्तियों की बातचीत, वक्तृता और उत्तर ।

वाक्पेवाक्यम् तर्क शास्त्र, न्यायशास्त्र ।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1. वक्तव्य 2. उक्ति 3. आदेश 4. सगाई । सम०—आडम्बरः बड़े-बड़े शब्दों से युक्त भाषा,—गूहः जिह्वा में लुकने का रोग, —परिसमाप्तिः (स्त्री०) वक्तव्य की संपूर्ति, विश्लेखः लेखाधिकारी, हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी, सारथिः अधिवक्ता, किसी की ओर से बोलने वाला ।

वाग्मिन् (वि०) [वाच्+ग्मिन् चस्य कः तस्य लोपः] 1. वाकपटु 2. शब्दों से पूर्ण (पुं०) 1. वक्ता, बोलने वाला 2. बृहस्पति 3. विष्णु 4. तोता ।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप्, दीर्घः] 1. वाणी की देवता सरस्वती । सम०— अंधेत (वि०) गूँगा,—आभ्रणी 1. सरस्वती के प्रसाद को प्राप्त कराने वाले ऋग् मन्त्रों का समूह 2. एक वैदिक ऋषि का नाम, उत्तरम् वक्तव्य की समाप्ति या उपसंहार,—केलि, —केली बुद्धि की चतुराई के युक्त वार्तालाप,—गुप्तः कोरी बातचीत,—जीवनः विदूषक, ठिठोलिया, - निमित्तम् किसी उक्ति से प्रबोधन या चेतावनी—तज्ज्ञाकर्ण्य वाङ्निमित्तज्ञः पितरि सुतरां जीविताशां शिथिलोऽकार हर्ष० ५,—पथः वाणी का परास,—पाटवम् वाणी की चतुराई, पारीणः अभिप्रयुक्त के परास को पार कर जाने वाला व्यक्ति, वाणी में पारङ्गत, भटः (वास्भटः) 1. आयुर्वेद विषय का प्रसिद्ध लेखक 2. अलंकार शास्त्र का एक प्रणेता, विद् (वि०) तर्क और युक्तियाँ देने में प्रवीण, - विनिःसृत उक्तियाँ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के द्वारा प्रस्तुत,—**विस्तरः** वाग्विस्तार, वाक्प्रपंच, बहुभाषिता, **सप्तलक्षणम्** सोपालंभ उक्ति, व्यग्यवाक्य, —**सङ्गः** शतरंजी वक्तृता, बहुविध भाषण, **स्तब्ध** (वि०) जिसकी वाणी रुक गई है, जो बोल नहीं सकता।

वाचयितृ (वि०) [वच्+णिच्+तृच्] जो सस्वर पाठ की व्यवस्था करता है।

वाचस्पतिः [षष्ठी अलुक् समास] 1. वाणी का स्वामी 2. वेद—महा० १४।२१।९ 3. एक कोशकार का नाम।

वाचस्पतिमिश्रः तन्त्रवार्तिक के प्रणेता का नाम।

वाच्य (वि०) [वच्+ण्यत्] 1. कहे जाने योग्य 2. अभिधा द्वारा प्रकट अर्थ 3. निन्दनीय। सम० लिङ्ग (वि०) विशेषणपरक,- **वाजितम्** कूटोक्ति, अभिधा शक्ति के द्वारा दुर्बोध उक्ति, **वाचकभावः** शब्द और अर्थ की स्थिति।

वाजित (वि०) [वाज+इतच्] पंखयुक्त (जैसे कि बाण)।

वाजिन् (वि०) [वाज+इनि] 1. पक्षी प्राणिवाजिनिधेवितान्—महा० ७।१४।१६ 2. सात की संख्या। सम०—**गन्धः** एक वृक्ष का नाम,- **विष्ठा** बड़ का वृक्ष, गूलर।

वाट (वि०) [वट+अण्] बड़ का वृक्ष। ः टः (पुं०) जिला। सम० **शुङ्गला** बाड़।

वाडवहरणम् साँड़ घोड़े को दिया जाने वाला चारा।

वाडवहारकः समुद्री दानव।

वाणः [वण्+घञ्] ध्वनन—**वार्णवर्णिः** समासक्तम्—किं० १५।१०। सम०—**शब्दः** बंसरी की आवाज।

वात (वि०) [वा+क्त] 1. हवा से उड़ाया हुआ 2. इच्छित, अभिलषित, **तः** 1. वायु 2. वायु की अधिष्ठात्री देवता 3. शरीर के तीन दोषों में से एक 4. गठिया 5. जोड़ों की सूजन 6. वायु सरना, शरीर से वायु का निकलना। सम०— **अरिः** अदाम का पेड़, **अशनः** साँप—वाताशनोऽहमिति किं विनतासुतस्य त्वामाभिलाष भुजगः स्पृहयालुलालुः—रा० च० ५, —**आक्रम्य** ऐसा भवन जिसमें दो कमरे हों एक का मुँह दक्षिण की ओर दूसरे का पूर्व की ओर,—**आहार** (वि०) जो वायु के ही सहारे जीवित रहता है,-**क्षोभः** शरीर में वायुप्रकोप के कारण हुआ रोग **चक्रम्** परकार से गोलाकार चिह्न लगाना **पटः** जहाज का पाल, **पुरीषः** केरल में गुरुवयूर नामक स्थान पर देवता, **रथः** बादल, **सञ्चारः** सूखी खांसी।

वातन्धय (वि०) [द्वितीया अलुक्] फूंक मारने वाला।

वातासह (वि०) गठिया रोग से ग्रस्त।

वातिक (वि०) [वात+ठक्] 1. मोटापा या बादी से ग्रस्त 2. खुशामदी 3. बाजीगर 4. वातक पक्षी।

वादनक्षत्रमाला मीमांसकों के आक्रमण का उत्तर देने वाला वेदान्त का ग्रन्थ।

वादित्रम् [वद्+णित्र] वाद्ययन्त्र, संगीत का उपकरण। सम० **लगुडः** ढोलक बजाने की लकड़ी।

वाद्यकम् [वाद्य+कन्] संगीत का उपकरण।

वाद्गलम् होंठ।

वाधूलम् तैत्तिरीय शाखा का श्रौतसूत्र।

वानचित्रम् विविध रंग का कम्बल।

वानदण्डः जुलाहे की खड्डी।

वान्त (वि०) [वम्+क्त] 1. उगला हुआ, थूका हुआ 2. उद्गमन किया हुआ 3. गिराया हुआ। सम० **प्रः** कुत्ता,—**आशिन्** (पुं०) 1. राक्षस जो विष्ठा पर निर्वाह करता है 2. वह व्यक्ति जो भोजन के लिए अपना गोत्र या वंशावली का उद्धरण देता है, **वृष्टि** (वि०) वह बादल जो पानी बरसा चुका है मेघ०।

वापी [वप्+इञ्, ङीप्] बावड़ी, बड़ा कुआँ। सम० **जलम्** सरोवर का पानी।

वाम (वि०) [वम्+ण अथवा वा+मन्] 1. बाँया 2. उल्टा, विपरीत, विरोधी 3. क्रूर, कठोर 4. दुष्ट 5. मनोरम,—**मः** 1. कामदेव 2. साँप 3. छाती, ऐन, ओड़ी 4. निषिद्ध कार्य (जैसे सुरापान), **मम्** 1. संपत्ति, दौलत 2. दुर्भाग्य, विपत्ति 3. कमनीय वस्तु। सम० **अक्षी** (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, कामिनी, —**इतर** (वि०) दायाँ,—**कुक्षिः** बाईं कोख,—**नयना** (स्त्री०) मनोहर आँखों वाली स्त्री, **स्वभाव** (वि०) उत्तम चरित्रयुक्त व्यक्ति—निरीक्ष्य कृष्णाप्रकृतं गुरोस्सुतं वामस्वभावा कृपया ननाम च—भाग० १।७।४२,- **हस्तः** बकरी के गले का निरर्थक स्तन।

वामदेव्यम् साममंत्र समूह जिसका नाम उसके प्रवर्तक ऋषि वामदेव के नाम पर पड़ गया।

वामनीकृत (वि०) [वामन+च्वि+कृ+क्त] बौना बना हुआ, क़द में छोटा बनाया हुआ।

वायसविद्या शकुन की विद्या जो कौवों के निरीक्षण से जानी जाती है।

वायुकुम्भः हाथी के चेहरे का एक भाग—मातं० १०।१।

वायुभक्षः 1. जो वायु खाकर जीवित रहता है 2. साँप।

वायुकन्धः वायुप्रदेश।

वार्धटीयन्त्रम् रहट, पानी निकालने का यन्त्र।

वार्धनी पानी की सुराही।

वारण (वि०) [वृ+णिच्+ल्युट्] हटाने वाली,—**णम्** 1. हटाना, रोकना 2. विघ्न, बाधा 3. दरवाजा, किवाड़,—**णः** 1. हाथी 2. कवच 3. हाथी की सूँड 4. अंकुश। सम० **कृष्णः** एक वृत का नाम, —**पुष्पः** पौधे की एक जाति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वारांशिः [वार्+राशिः] समुद्र ।

वारि (नपुं०) [वृ+इञ्] 1. पानी 2. तरल या पिघला हुआ या बहने वाला पदार्थ । सम०—कूटः गाँव के चारों ओर की खाई, परिखा, **पिण्डः** चट्टान का मेंढक,— **भवः** शंख, साम्यम् दूध ।

वारुणी [वरुण+अण्] शराब का विशेष प्रकार, वारुणी मदिरां पीत्वा—भाग० १।१५।२३ ।

वारुधः 1. समुद्रतट, समुद्रवेला 2. अग्नि 3. किवाड़ का दल ।

वार्तानुकर्षकः
वार्ताजिनः } 1. चर 2. दूत 3. वृत्तदाहक ।

वार्ताकर्मन् (नपुं०) खेती और मुर्गी पालन का व्यवसाय ।

वार्तापतिः नियोजक, काम देने वाला, स्वामी ।

वार्त्रघ्नीन्यायः मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार विघरण यदि मुख्य सामग्री के साथ उपयुक्त न लगे तो उसे सहायक सामग्री के साथ जोड़ दिया जाय—मी० सू० ३।१।२३ पर शा० भा० ।

वार्दरम् 1. रेशम 2. जल 3. दक्षिणावर्त शंख ।

वार्दलम् बरसात का दिन ।

वार्धयम् एक प्रकार का नमक ।

वार्ध्राणसः 1. एक पक्षी 2. बूढ़ी बकरी ।

वालुकायन्त्रम् रेत से स्नान करना, शरीर पर रेत मलना ।

वासात (वि०) प्रिय, प्रीतिभाजन, स्नेहभाजन ।

वासः [वस्+घञ्] 1. सुगन्ध 2. रहना 3. आवास 4. एक दिन की यात्रा 5. वासना 6. स्वरूप, आकृति । सम०—पर्ययः आवासस्थान का परिवर्तन,—प्रासादः महल ।

वासना [वास्+युच्+टाप्] (गणित०) प्रमाण, प्रदर्शन ।

वासनाभाव्य (वि०) भाव तथा भावनाओं से युक्त ।

वासित (वि०) [वास्+क्त] पवित्रीकृत, शिक्षित, उन्नीत, सुधारा गया । नै० २१।११९ ।

वासरः,—रम् [वास्+अरच्] दिन, रः 1. समय, बारी 2. एक नाग का नाम । सम०—जन्यका रात, —प्रभुः, मणिः सूर्य ।

वासविः 1. इन्द्र का पुत्र जयन्त 2. अर्जुन 3. बालि ।

वासवेयः [वासवी+ढक्] व्यास का नाम—महा० १।१।५९ ।

वासस् [वस्+णिच्+असुन्] 1. वस्त्र 2. कफन 3. पर्दा । सम०—उत्कम् वस्त्र को निचोड़ने पर उससे निकला हुआ पानी जो प्रेतात्माओं को उपहृत किया जाता है—वृक्षः आश्रयपादप, शरण प्रदान करने वाला पेड़ ।

वासिष्ठम् रक्त, रुधिर, खून ।

वासिष्ठरामायणम् एक ग्रन्थ का नाम (यह ज्ञानवासिष्ठ के नाम से भी प्रसिद्ध है) ।

वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुन्] 1. भवन बनाने के निमित्त नियत भूमिखण्ड 2. आवास 3. समाभवन सम०—कर्मन् (नपुं०) 1. भवन निर्माण करना, भवन निर्माण का प्रारूप,—ज्ञानम् वास्तु कला, भवन निर्माण का प्रारूप या अभिकल्प, **देवता** भवन की अधिष्ठात्री देवता,—**विद्या** स्थापत्य कला, भवन-निर्माण विज्ञान,—**निधानम्** भवन संरचना ।

वास्तुक (वि०) यज्ञ भूमि पर अवशिष्ट रही सामग्री - उवाचोत्तरतोऽग्नेस्य समेदं वास्तुकं वसु—भाग० १।४।१६ ।

वास्र दिवस, दिन ।

वाहः [वह्+घञ्] 1. ले जाने वाला 2. कुली 3. भार-वाहक 4. घोड़ा 5. बैल 6. भैंसा 7. सवारी । सम० - **दारः** घुड़सवार, **रिपुः** भैंसा, **वाहुः** रथवान, रथ को हाँकने वाला—स्ववाहवाहोचितवेषधारकः —नै० १।६६,—**वाहनम्** चप्पू - रा० २।५२।६, **वाहम्** (पुं०) अग्नि ।

विराज पक्षियों का राजा, बाज पक्षी ।

विक (वि०) [व० स०] 1. जलहीन 2. अप्रसन्न ।

विकच (वि०) [विकच्+अच्] 1. खिला हुआ, खुला हुआ 2. फैला हुआ, बखेरा हुआ 3. केशजूट, 4. चमकीला, देदीप्यमान—चन्द्रांशुविकचप्रख्यम्—रा० २।१५।९। सम०—**श्री** (वि०) उज्ज्वल सौ से युक्त, अनिन्द्य लावण्य से सम्पन्न ।

विकचित (वि०) [विकच+इतच्] खुला हुआ, खिला हुआ ।

विकटः गणेश,—टम् 1. रसौली 2. चन्दन, 3. सफेद संखिया ।

विकथा असंगत बातें ।

विकर्तृ (वि०) [वि+कृ+तृच्] बाधा डालने वाला —राक्षसाः ये विकर्तारः—रा० १।११।१० ।

विकवच (वि०) [ब० स०] कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो ।

विकाङ्क्षा [वि+काङ्क्ष्+अङ्+टाप्] 1. मिथ्या उक्ति 2. इच्छा न होना 3. संकोच ।

विकार्यः [वि+कृ+ण्यत्] अहं, अहंकार, अभिमान ।

विकाशः [वि+काश्+अच्] उज्ज्वलता ।

विकुक्षि (वि०) बड़े पेट वाला, उभरी हुई तोंद वाला ।

विकूबर (वि०) जिसमें कोई लम्बी लकड़ी न लगी हो ।

विकृ (तना० उभ०) बदनाम करना, कलङ्क लगाना अनार्य इति मायार्याः ''''''विकरिष्यन्ति—रा० २।१२।७८ ।

विकृत (वि०) [वि+कृ+क्त] 1. परिवर्तित, बदला हुआ 2. अपूर्ण, अधूरा 3. अस्वाकृतिक 4. आश्चर्य-जनक 5. विरक्त, -तम् (नपुं०) 1. परिवर्तन 2. रोग 3. अरुचि 4. गर्भस्राव—मनु० १।२४७ 5. दुष्कृत्य—रा०—७।६५।३४ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकटनितम्बा 1. एक कवयित्री का नाम 2. डा० राघवन रचित 'एकांकी'।

विकृतिः [वि+कृ+क्तिन्] 1. शत्रुता 2. आभास 3. गर्भस्राव 4. व्युत्पन्न (व्या० में)।

विकर्षणम् [वि+कर्ष्+ल्युट्] 1. भोजन से विरक्ति 2. अन्वेषण।

विकृष्टसीमान्त (वि०) जिसकी सीमाएँ वर्धित की गई हैं।

विकू (तुदा० पर०) 1. उडेलना 2. (ठंडी साँस) आह भरना।

विकिरः [वि+कृ+अच्] कुछ गौण पितरों को प्रसन्न करने के लिए बखेरा गया चावल।

विकिरणम् दे० 'विकिरः'।

विकत्थ् (भ्वा० आ०) 1. दुविधा का वर्णन करना 2. विचार करना।

विकल्पः [विकल्प्+घञ्] 1. उत्पत्ति—भा० ११।२५। २७ 2. मान लेना, उक्ति 3. उत्प्रेक्षा, कल्पना।

विकल्पित (वि०) [विकल्प्+क्त] 1. तत्पर, व्यवस्थित 2. संदिग्ध, कल्पित 3. विभक्त।

विकेशारका धूमकेतु, पुच्छलतारा।

विक्रम् (भ्वा० आ०) पराक्रम दिखाना।

विक्रमः [विक्रम्+घञ्] 1. गुरु स्वर, उदात्त स्वराघात 2. जन्म कुण्डली में लग्न से तीसरा घर।

विक्रमितम् [विक्रम+णिच्+क्त] पराक्रम, शौर्य।

विक्रिया [विकृ+श+टाप्] 1. चोट, आघात, हानि 2. लोप।

विक्रयः [वि+क्री+अच्] 1. बिक्री 2. विक्रयमल्य 3. मण्डी। सम० पत्रम् बिक्री की दस्तावेज · वीथिः बाजार।

विक्रीडः [वि+क्रीड्+अच्] 1. खेल का मैदान 2. खिलौना।

विक्रोष्टृ (पुं०) [विक्रुश्+तृच् [जो सहायता को पुकार करता है।

विक्लवम् [वि+क्लु+अच्] क्षोभ—रा० २।४४।२५।

विक्लवता [विक्लव+तल्+टाप्] भीरुता, कायरता भवति हि विक्लवता गुणोऽङ्गनानाम् · शि० ७।४३।

विक्षिप् (तुदा० पर०) 1. दबाना 2. उछालना 3. (धनुष) झुकाना।

विक्षिप्त (वि०) [विक्षिप्+क्त] विस्तारित, प्रसारित फैलाया गया।

विक्षेपः [विक्षिप्+घञ्] 1. अवहेलना (जैसा कि 'समय विक्षेप' में 2. विस्तार।

विगतक्लम (वि०) [ब० स०] जिसकी थकान दूर हो गई है।

विगतासु (वि०) [ब० स०] निष्प्राण, मृतक।

विगद (वि०) [ब० स०] रोग से मुक्त।

विगर्हिताचार (वि०) [ब० स०] जिसका आचरण निंद्य है, वर्णित आचरण से युक्त।

विग्रहग्रहणम् [ष० त०] रूप धारण करना, शरीर या मूर्ति धारण करना।

विग्रहेच्छुः [ष० त०] लड़ाई का इच्छुक।

विग्रहिन् (पुं०) [विग्रह+इनि] युद्ध मंत्री।

विघसम् [वि+अद्+अप्, घसादेशः] 1. भोग 2. अपचता कौर। सम०—आशः (पुं०) जो खाने से बचे हुए उच्छिष्ट भोजन को करता है, कौवा।

विघ्नोपशान्तिः बाधाओं को हटाना।

विचक्ष (अदा० आ०) 1. कहना, घोषणा करना 2. प्रकट करना 3. सोचना, अटकल लगाना।

विचटनम् [विचट्+ल्युट्] तोड़ना।

विचन्द्र (वि०) [ब० स०] चन्द्रहीन, चन्द्रमा से रहित।

विचर् (भ्वा० पर०) 1. चरना, घास खाना 2 भूल हो जाना, गलती करना—हविषि व्यचरत्तेन वपट्कारं गृणन् द्विजः—भाग० ९।१।१५।

विचर (वि०) [विचर्+अच्] भ्रान्त, विचलित—न स्वं धर्मं विचरं सञ्जयेह—महा० ५।२९।१४।

विचारमूढ (वि०) 1. मूर्ख, 2. निर्णय करने में अज्ञानी।

विचर्मन् (वि०) कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो।

विचलित (वि०) [विचल्+क्त] 1. पथभ्रष्ट, सद्गीमार्ग से भटका हुआ 2. अवलुप्त, अच्छा किया हुआ।

विचालिन् (वि०) [विचाल+इनि] अस्थिर, परिवर्त्य, अस्फुट,- विचाली हि भवत्यशब्दः · मो० सू० ६। ७।३८ पर शा० भा०।

विचिकित्सित (वि०) संदिग्ध, संदेह पूर्ण।

विचित्रित (वि०) [विचित्र+इतच्] रंगा हुआ, सजाया हुआ, रंगबिरंगा।

विचिन्तनम् [विचिन्त्+ल्युट्] 1. विचार, चिन्तनम् 2. देख-भाल, चिन्ता, फ़िक्र।

विचिन्ता [विचिन्त्+अच्+टाप्] दे० 'विचिन्तनम्'।

विचेयम् [विचि+यत्] गवेषणीय।

विचेष्टनम् [विचेष्ट्+ल्युट्] हाथ पैर हिलाना, प्रयास करना।

विचेष्टा [विचेष्ट्+अङ्+टाप्] 1. प्रयत्न 2. गति 3. सञ्चरण।

विच्छिन्न (वि०) [विच्छिद्+क्त] 1. चीरा हुआ, फाड़ा हुआ 2. तोड़ा हुआ, बांटा हुआ 3. चितकबरा 4. समाप्त किया हुआ 5. गुना 6. उबटन आदि लेप किया हुआ। सम० -आहुतिः आहुति देना—भङ्ग करके, ओपासनम् नित्य सन्ध्योपासना करना जिसका नैरन्तर्य भङ्ग हो गया हो—अर्थात् कभी करना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कभी न करना, —प्रसर (वि०) जिसकी प्रगति में बाधा पड़ गई है, मद्य (वि०) जिसने सुरापान छोड़ दिया है।

विच्छेद: [विच्छिद्+घञ्] भेद, प्रकार।

विच्छुरणम् [विच्छुर्+ल्युट्] बिखेरना, छिटकाना, बुरकना।

विजड्घ (वि०) [ब० स०] जिसके पहिये न हों, चक्रहीन (रथ)।

विजन्या (वि०) गर्भिणी।

विजल (वि०) [ब० स०] जलहीन, जहाँ पानी न हो।

विजर्जर (वि०) 1. जीर्णशीर्ण, टूटा-फूटा 2. विध्वस्त, उच्छिन्न।

विजयः [विजि+अच्] 1. जीत, फ़तह 2. एक विशिष्ट मुहूर्त 3. तीसरा महीना 4. एक प्रकार का सैन्यव्यूह। सम०—ऊर्जित (वि०) जीत (फ़तह) से प्रोत्साहित, —वण्डः सेना की एक विशेष टुकड़ी।

विजिघित्सु (वि०) [ब० स०] जिसकी भूख नष्ट हो गई हो।

विजिह्मीर्षा [वि+हृ+सन्+अ+टाप्] इधर-उधर घूमने या खेलने की इच्छा।

विजृम्भिका 1. साँस लेने के लिए मुँह खोलना 2. जम्हाई लेना।

विजृम्भिन [विजृम्भ्+क्त] 1. जो जम्हाई ले चुका है 2. जम्हाई लेने वाला।

विज्जिका एक कवयित्री का नाम नीलोत्पलदलश्यामां विज्जिकां मामजानता। वयँव दण्डिना प्रोक्ता सर्वशुक्ला सरस्वती ॥ (उस कवयित्री का अब तक यही एक श्लोक उपलब्ध हुआ है)।

विज्ञानम् [विज्ञा+ल्युट्] 1. ज्ञान का अंग या वृद्धि 2. इन्द्रियातीत ज्ञान।

विज्ञानभिक्षु एक वेदान्त लेखक का नाम।

विज्ञानस्कन्धः बौद्ध दर्शन के पाँच स्कन्धों में से एक।

विज्ञेय (वि०) [वि ज्ञा+ण्यत्] 1. जानने के योग्य संज्ञेय 2. जिसकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए 3. जिसका ध्यान रक्खा जाय।

विज्य (वि०) [ब० स०] जिसमें डोरी या ज्या न हो (धनुष)।

विटकान्ता 1. हल्दी, हरिद्रा 2. हल्दी का पौधा।

विटङ्कः (वि०) उत्तम, सुन्दर, मनोरम °कोपरुकुण्डलकिरीटविटङ्कटोपैर्या भाग० ३।१५।२७।

विटपः [विट+पा+क] लता, बेल (जैसा कि 'भ्रूविटप' में)।

विडम्बक (वि०) [वि+डम्ब्+ण्वुल्] नकल करने वाला —परमम्बुदकदम्बकविडम्बकरालम् —पतंजलि का ताण्डवस्तोत्र।

विडम्बनम् [विडम्ब्+ल्युट्] दिल्लगी की चीज़, उपहास की वस्तु।

वितर्कः [वितर्क+अच्] 1. मिथ्या अनुमान 2. इरादा। सम०—पदवी अनुमान के क्षेत्र के अन्तर्गत।

वितानः-नम् [वितन+घञ्] 1. शामियाना, चंदोवा 2. राशि, ढेर 3. बहुतायत 4. अनुष्ठान 5. निष्पत्ति।

वितानकः [वितान+कन्] राशि, ढेर।

वितार (वि०) [प्रा० ब०] 1. जिसमें तारे न हों (आकाश) 2. धूमकेतु के शीर्षभाग से रहित।

वितृप्त (वि०) [वितृप्+क्त] संतुष्ट, संतृप्त।

वित्तविभाजनम् मूल्यवान उपहारों का वितरण।

विदत् (वि०) [विद्+शतृ] 1. जानने वाला 2. समझदार।

विदितात्मन् (वि०) [ब० स०] 1. जो अपने आपको जानता है 2. प्रसिद्ध।

विदुरः [विद्+कुरच्] वेत्ता, ज्ञाता।

विदुषः दे० 'विदुर'।

विदुषी जानने वाली, समझदार स्त्री।

विदग्ध (वि०) [विदह्+क्त] 1. परिपक्व 2. दक्ष 3. भूरा, ईषद्रक्त, कुछ-कुछ लाल 4. जला हुआ, भस्मीभूत 5. पचा हुआ। सम०—परिषद् (स्त्री०) चतुर पुरुषों का समाज, —मुखमण्डनम् एक ग्रन्थ का नाम, वचस् (वि०) वाग्मी, वाक्पटु।

विदण्डः दरवाजे की कुंजी।

विदश (वि०) [ब० स०] जिसके मगज़ी या झालर अथवा किनारी न लगी हो, (वस्त्र)।

विदायः [फ़ारसी का शब्द] 1. विदा करना 2. प्रभाग।

विदुरनीतिः } महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ से ४०
विदुरप्रजागरः } तक अध्याय। यहाँ धृतराष्ट्र ने नीति पर व्याख्यान दिया है।

विदूर संश्रव (वि०) जो दूर से सुनाई दे।

विदृतिः (स्त्री०) खोपड़ी की सन्धि या सीवन।

विदेशज (वि०) विदेश में उत्पन्न।

विदेहमुक्तिः (स्त्री०) मोक्ष के कारण जन्म मरण से अर्थात् शरीर से छुटकारा।

विदोहः [विदुह्+घञ्] अतिरिक्त लाभ।

विद्धसालभञ्जिका हर्षदेवकृत एक नाटक।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1. दुर्गा देवी 2. सरस्वती देवी 3 ज्ञान, शिक्षा। सम०—आतुर (वि०) जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए उतावला हो —विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा नीति० —ईशः शिव का नाम, —कोशगृहम्, —कोशसंग्रह, —कोशसमाश्रयः, पुस्तकालय, —बलम् जादू की शक्ति, —भाज् (वि०) शिक्षित, पढ़ालिखा, —वंशः अध्ययन की किसी विशिष्टशाखा के अध्यापकों की कालक्रमानुसार सूची।

विद्युत्तमप्तातम् (अ०) एक क्षण में, बिजली जैसी तेजी से।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्योत (वि०) [विद्युत+घञ्] चकाचौंध करने वाला, चमचमाने वाला।

विद्रुतिः [वि+द्रु+तिन्] दौड़ जाना, भाग जाना।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त, नस्य णत्वम्] 1. जागरूक, निद्रारहित 2. निराश, उदास —द्रविण-विद्राणवणिजि—हर्ष० ७।

विद्वद्गोष्ठी } विद्वान् पुरुषों की सभा विद्वन्मण्डली।
विद्वत्सदस् }
विद्वत्सभा }

विधन (वि०) [प्रा० ब०] निर्धन, धनहीन।

विधर्म (वि०) 1. अधर्मी, अन्यायी 2. अधर्मकार्य जो अच्छे आशय से किया गया हो।

विधर्मिन् (वि०) [विधर्म+इनि] 1. भिन्न वर्ग से संबंध रखने वाला (विप० सधर्मिन्) 2. अधर्मी।

विधा (जुहो० उभ०) लीन करना, उपभोग करना।

विधा [वि+धा+क्विप्] उच्चारण।

विधातृ (पुं०) [वि+धा+तृच्] माया, भ्रान्ति।

विधानम् [विधा+ल्युट्] 1. प्रयत्न, प्रयास 2. उपचार 3. भाग्य, नियति 4. विधि 5. (नाटक०) विभिन्न रसों का संघर्ष।

विधिः [वि+धा+कि] 1. उपयोग, प्रयोग 2. अनुष्ठान, अभ्यास 3. प्रणाली, रीति, ढंग 4. नियम 5. कानून (विप० अर्थवाद) 6. धर्मकृत्य 7. व्यवहार 8. आचरण 9. सृष्टि 10. निर्माण 11. भाग्य 12. हाथी का आहार 13. वैद्य 14. उपाय, तरकीब। सम० अन्तः विधिपरक मूल पाठ का उपसंहारात्मक भाग, - अर्थः विधि का आशय, कर (वि०) विधान को कार्य में परिणत करने वाला,—यज्ञः विधिविधान के अनुसार अनुष्ठित यज्ञ, लक्षणम् विधि का स्वरूप, लोपः विधान का अतिक्रमण,-विपर्ययः, विपर्यासः दुर्भाग्य, —विभक्तिः (स्त्री०) विधिलिङ् के प्रत्यय -वशात् (अ०) भाग्य से, -विधिवशादूरबन्धुगतोहम् मेघ० ६।

विधुः [व्यध्+कु] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3 राक्षस 4. प्रायश्चित्ताहुति। सम० परिवेषः चन्द्रग्रहण, मण्डलम् चन्द्रमा का परिवेश,—मासः चान्द्र महीना।

विधुर (वि०) [विगता धूर्यस्य अच समा०] 1. विवश, असहाय-प्रतिक्रियायै विधुरः-किं० १७।४१ 2. अशक्त, अवसन्न - दृष्ट्यैव विधुरश्रीवः--महा० ७।१४६।२५।

विधुरित (वि०) [विधुर+इतच्] विवर्ण, कान्तिहीन।

विधूम (वि०) [प्रा० ब०] धूएँ से रहित।

विधारणम् [विधृ+णिच्+ल्युट्] गिरफ्तार करना, रोकना।

विध्र (वि०) [विगतं+ध्रक्, नलोपश्च] निष्कलंक, कलंकरहित।

विनग्न (वि०) [वि+नज्+क्त] बिलकुल नंगा, विवस्त्र।

विनर्दिन् (वि०) [विनर्द+णिनि] गरजने वाला (साम मन्त्रों के पाठ करने की एक रीति।

विनयः [वि+नी+अप्] 1. दण्ड - शोलवृत्तमविद्याय शास्यामि विनयं परम् महा० ३।३०६।१९ 2. कार्यालय।

विनयकर्मन् (नपुं०) [ष० त०] निर्देश, शिक्षण।

विनाशकालः [ष० त०] विपत्ति का समय।

विनाशहेतु (वि०) [ब० स०] जो नाश का कारण हो।

विनाकृत (वि०) [विना+कृ+क्त] 1. वञ्चित, रहित, मुक्त 2. वियुक्त, एकाकी।

विनाभावः वियोग—व्यक्तं दैवादहं मन्ये राघवस्य विनाभवम् रा० ७।५०।४।

विनायकः [वि+नी+ण्वुल्] नेता, अगुणी।

विनिकृत (वि०) [वि+नि+कृ+क्त] दुर्व्यवहारग्रस्त, आहत, विकलीकृत।

विनिगमना [वि+नि+गम्+युच्+टाप्] संकल्प, निश्चित उपसंहार, कुछ स्वीकार करके शेष को निकाल देना —मी० सं० १०।५।५९ पर शा० भा०।

विनिबर्हण (वि०) [नि+नि+बर्ह्+ल्युट्] परास्त करने वाला, हराने वाला।

विनियुज् (रुधा० उभ०) (वाण) छोड़ना, (वाण) मारना।

विनियोक्तृ (वि०) [वि+नि+युज्+तृच्] काम देने वाला, स्वामी।

विनियोगः [वि+नि युज्+घञ्] 1. प्रयोग, उपयोग 2. सहसम्बन्ध।

विनिर्वृत्त (वि०) [वि निर्+वृत्+क्त] 1. गैदा हुआ, निकल आया 2. संपूर्ण हुआ, पूरा हुआ।

विनिवेशनम् [विनि+विश्+णिच्+ल्युट्] ठहराव, निर्माण।

विनिहित (वि०) [विनि+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, पड़ा हुआ 2. नियुक्त 3. जड़ा हुआ।

विनिह्नुत (वि०) [विनि+ह्नु+क्त] 1. मुकरा हुआ, ने अपनाया हुआ 2. छिपा हुआ, छिपाया हुआ।

विनो (भ्वा० पर०) दूर रहना, दूर करना —विनीय भयमात्मनः--महा० ९।२१।२९।

विनीत (वि०) [विनी+क्त] फैलाया हुआ।

विनीतवेषः सामान्य वेशभूषा।

विनेयः [वि+नी+ण्यत्] शिष्य, छात्र विनीतविनेयभृङ्गाः।

विनोदपरः } क्रीडाशील, मनोरंजन में व्यस्त, आमोद-
विनोदरसिकः } प्रिय।

विनोदस्थानम् मनोरंजन का स्थान, वन विहार।

विन्यसनम् [विनि+अस्+ल्युट्] रखना, धरना।

विन्यासः [विनि+अस्+घञ्] 1. (शस्त्र) धारण करना 2. बीच में घुसेड़ना 3. गति, (अंगों की) स्थिति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विपक्षः [ब्रा० ब०] 1. निष्पक्षता, तटस्थता 2. वह दिन जब कि चन्द्रमा एक पक्ष से दूसरे पक्ष में संक्रमण करता है।

विपाटः[विपट्+घञ्]एक प्रकार का बाण, तीर विपाट-पञ्जरेण—शि० २०।१७।

विपाटित (वि०) [विपट्+णिच् क्त] फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विपणः [वि+पण्+अच्] कार्यभार ग्रहण, व्यापार, व्यवसाय—न तत्र विपणः कार्यः खरकण्डूयनं हि तत्—महा० ३।३३।६६।

विपणिजीविका [ष० त०] क्रयविक्रय या व्यापार के द्वारा जीवननिर्वाह करना।

विपणिवीथी [ष० त०] मण्डी, बाज़ार।

विपद्यु (वि०) 1. जिसने व्यवसाय छोड़ दिया है 2. तटस्थ, उदासीन।

विपत्तिः [विपद्+क्तिन्] अवसान, समाप्ति।

विपत्तिकालः [ष० त०] विपत्ति का समय।

विपन्नदीधिति (वि०) [ब० स०] कान्तिहीन, निष्प्रभ।

विपरिक्रान्त (वि०) साहसी, बलशाली।

विपर्ययः [वि०+परि+इ+अच्] मिथ्याबोध, गलतफ़हमी —ईशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः—भाग० ११।२।३७।

विपर्यासः [विपरि+अस्+घञ्] 1. ह्रास 2. मृत्यु। सम० उपमा, उल्टी उपमा।

विपाकः [वि०+पच्+घञ्] कुम्हलाना, मुरझाना। सम० दारुण (वि०) परिणाम में भयंकर,—दोषः अग्निमांद्य, अजीर्ण।

विपिनौकस् (पुं०) [ब० स०] 1. लंगूर 2. जंगली जन्तु।

विपुंसक (वि०)[प्रा० ब०] पुंस्त्वहीन, जिसमें पौरुष न हो।

विपुलश्रोण (वि०) [ब० स०] लम्बी गर्दन वाला।

विपुष्ट (वि०) [वि+पुष्+क्त] जिसे पूरा आहार न मिला हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो।

विपूयकम् [वि+पू+क्यप्, स्वार्थे कन् च] सड़ांध, दुर्गंध।

विप्रः [वप्+रन्, अत इत्वम्] भाद्रपद का महीना। सम० —ब्राह्मण माता पिता की जारज सन्तान।

विप्रह् (तना० उभ०) नियत करना, (साक्षी के रूप में) स्वीकार करना।

विप्रकारः [विप्र+कृ+घञ्] 1. विविधरीति 2. दुष्कृत्य, गलत तरीका।

विप्रकृतिः [वि+प्र+कृ+क्तिन्] परिवर्तन।

विप्रकर्षः [विप्र+कृष्+घञ्] 1. खींचकर दूर करना 2. (व्या० में) से व्यञ्जनों के बीच में कोई स्वर जो उन दोनों की भिन्नता दर्शावे।

विप्रतिपद (दिवा० आ०) मिथ्या उत्तर देना।

विप्रतिपत्तिः [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] 1. विरोधी भावना 2. गलती, त्रुटि।

विप्रतिपन्न (वि०) [विप्रति+पद्+क्त] परस्पर संयुक्त, आपस में मिले हुए। सम०—बुद्धि (वि०) मिथ्या विचार या धारणा रखने वाला।

विप्रत्ययः [वि+प्रति+इ+अच्] अविश्वास,—यदि विप्रत्ययो होत—महा० १२।१११।५५।

विप्रथित (वि०) [वि+प्रथ्+क्त] प्रसिद्ध, यशस्वी।

विप्रथ्यः [विप्र+धृष्+घञ्] तंग करना, सताना।

विप्रलम्भित (वि०) [विप्र+लम्भ्+क्त] 1. अपमानित 2. अतिक्रान्त।

विप्रलीन (वि०) [विप्र+ली+क्त] तितर-बितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न किया हुआ।

विप्रलुम्पक (वि०) [विप्र+लुप्+ण्वुल्, मुमागमः] लुटेरा, डाकू।

विप्रलोकः [विप्र+लोक्+घञ्] बहेलिया, चिड़ीमार।

विप्रवादः [विप्र+वद्+घञ्] असहमति, प्रतिभिन्नता।

विप्रवसित (वि०) [विप्र+वस्+णिच्+क्त] प्रवास के लिए गया हुआ, जो परदेश में चला गया है।

विप्रहृत (वि०) [विप्र+हृ+क्त] 1. पटक दिया हुआ, गिराया हुआ 2. कुचला हुआ, रौंदा हुआ।

विप्रहीण (वि०) [विप्र+हि+क्त] वञ्चित, विरहित।

विप्रुष् (स्त्री०) बोलते समय मुंह से निकले थूक के कण।

विप्लवः [वि+प्लु+अप्] पोतभंग, जहाज का विनाश।

विप्लुतप्रावृत् (वि०) असंगत बोलने वाला, हकलाने वाला।

विप्लुतिः [वि+प्लु+क्तिन्] विनाश, ध्वंस।

विबन्धु (वि०) [ब० स०] बन्धुहीन, जिसका कोई सगा-सम्बन्धी न हो—भ्रातुर्विछिन्नस्य सुतान् विबन्धून्—भाग० ३।१।६।

विबुधः [वि+बुध्+क] 1. बुद्धिमान्, विद्वान् पुरुष 2. देवता 3. चन्द्रमा। सम०—अनुचरः दिव्य सेवक, —आवासः देवमन्दिर,—इतरः राक्षस।

विबुभूषा [वि+भू+सन्+अङ्+टाप्] अपने आप को प्रकट करने की इच्छा।

विभज् (भ्वा० उभ०) 1. अलग कर देना, दूर भगा देना —विभक्तरक्षः संबाधम्—रा० ५।५३।७३ 2. खोलना 3. बांटना।

विभङ्गः [वि+भञ्ज्+घञ्] लहर।

विभङ्गुर (वि०) [वि+भञ्ज्+उरच्] अस्थिर, चंचल।

विभवः [वि+भू+अच्] प्रभुता, वैभव—नियन्ता जन्तूनां निखिलजगदुत्पादविभवप्रतिक्षेपैः—विश्व०।

विभानुगा [विभा+अनुगा] छाया।

विभागरेखा [ष० त०] विभाजन रेखा।

विभावर (वि०) [विभा+वनिप्, र आदेशः] उज्वल चमकदार, चमत्कीला—विभावरीं सर्वभूतप्रतिष्ठां गङ्गां गता—महा० १३।२६।८६।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभिद् (रुधा० उभ०) अतिक्रमण करना, उल्लङ्घन करना।

विभेद: [विभिद्+घञ्] सिकुड़न, (भौंहें) सिकोड़ना।

विभी (वि०) निर्भय, निडर।

विभीषण: एक राक्षस का नाम, रावण का भाई।

विभुता सर्वोपरि सत्ता, यश, कीर्ति।

विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] मुड़ा हुआ, झुका हुआ, दमन किया हुआ।

विभावनम् [वि+भू+णिच्+ल्युट्] 1. विकास 2. परीक्षा 3. दृष्टि, दर्शन।

विभाव्य [विभू+णिच्+ण्यत्] चिन्तनीय, विचारणीय।

विभूति: [वि+भू+क्तिन्] 1. लक्ष्मी 2. योग्यताएँ—क्षेत्रज्ञ एता मनसो विभूती:—भाग० ५।११।१२।

विभ्रंश: [वि+भ्रंश्+घञ्] 1. अतिसार, बार-बार दस्त आना 2. उलटफेर, अस्तव्यस्तता।

विभ्रष्ट (वि०) [प्रा० ब०] मद्यपान से मुक्त।

विमर्दनम् [वि+मृद्+ल्युट्] 1. सुगन्ध, खुशबू 2. परिघर्षण, चबाना, पीसना 3. संघर्ष।

विमर्षिन् (वि०) [विमृष्+णिनि] असहिष्णु, अनिच्छुक, विमनस्क।

विमात्रा (वि०) मापतोल में बराबर।

विमान: [वि+मा+ल्युट्] 1. खुली पालकी 2. जहाज में रहने वाली किरती। सम० वाह: पालकी उठाने वाला।

विमार्गदृष्टि (वि०) बुरी राह पर आँख रखने वाला, बुरे रास्ते को देखने वाला।

विमुक्ति (वि०) [वि+मुच्+क्त] आवेगरहित, शान्तचित्त, निरपेक्ष।

विमुक्तमौनम् (अ०) मौनभंग करके।

विमुक्तशाप (वि०) [प्रा० ब०] शाप के प्रभाव से मुक्त।

विमुखस्थ (वि०) [ब० स०] घबराया हुआ, बेहोश।

विमुद्गात्मन् (वि०) [ब० स०] घबराया हुआ, बेहोश।

विमूर्छित (वि०) [वि+मूर्छ्—क्त] 1. पूर्ण, सब मिला हुआ 2. जमा हुआ, मूर्छा में ग्रस्त।

विमृश: [वि+मृश्+अच्] अनुचिन्तन, सोचविचार, —भाग० ३।२।२१।

विमोघ (वि०) बिल्कुल फल रहित, निष्फल।

विद्युत्पताका [ष० त०] बिजली।

विद्युत्पथ: [ष० त०] अन्तरिक्ष।

विद्युतम् (अ०) अन्तराल पर अवकाश देकर।

विद्युत् (वि०) [वि+द्युत्+क्विप्] चालकरहित, जिसमें चालक न हो।

विद्युद् (रुधा० आ०) 1. (प्रतिज्ञा) भंग करना 2. लूटना 3. घटाना।

विमृज्य [वियुज्+ल्यप्] वियुक्त होकर, पृथक् एक एक करके व्यक्तिश:।

वियोजनम् [वियुज्+ल्युट्] 1. वियोग 2. घटाना।

वियोनि: भिन्न जाति की स्त्री—महा० १३।१४५।५२।

वियोनि (वि०) [प्रा० ब०] 1 नीच कुल में उत्पन्न 2. भगरहित।

वियोनिज: पक्षी, परिंदा।

विरजा एक नदी का नाम।

विरक्तप्रकृति (वि०) [ब० स०] जिसकी प्रजा उदासीन हो, निर्लिप्त हो।

विरध्य (वि०) विस्तृत, विस्तारयुक्त, दूरतक फैला हुआ।

विरथ्या 1. बुरा मार्ग 2. उपमार्ग, छोटी गली।

विरतप्रसंग: वह बात या विषय जिसकी चर्चा बन्द हो गई हो

विरलभक्षिन् (वि०) नीरस, उकता देने वाला।

विराज् [विराज्+क्विप्] ब्रह्माण्ड, विश्व। सम० —सुत: (विराट्सुत:) स्वर्गीय पितरों की एक श्रेणी।

विराव:, वम् [प्रा० ब०] रात का तीसरा पहर—शुश्राव ब्राह्मे पांचजन्यं विराव्यं ब्रह्मरात्रिसाम्—रा० २।२६।

विरावण (वि०) [वि+रु+णिच्—ल्युट्] शोर-गुल कराने वाला, हल्लागुल्ला मचवाने वाला।

विरिक्त (वि०) [वि+रिच्+क्त] जिसे दस्त करा दिये गये हों, खाली कराया हुआ।

विरिक्ति: [विरिच्—क्तिन्] विरेचन, दस्त करवाना।

विरुज् (स्त्री०) [वि+रुज्+क्विप्] दरार, फाड़।

विरुज् (वि०) नीरोग, स्वस्थ।

विरुद्धरूपकम् एक अलङ्कार जहाँ उपमेय बिल्कुल समान न हो।

विरोध: [वि—रुध्—घञ्] 1. वैपरीत्य, बाधा, विघ्न 2. प्रतिबन्ध 3. शत्रुता 4. कलह 5. असहमति 6. संकट। सम० आभास: वह अलङ्कार जहाँ विरोध प्रतीत होता हो, परन्तु वस्तुत: कोई विरोध न हो, -उपमा वैपरीत्य पर आधारित उपमा, —परिहार: 1. विरोध का दूर होना, भावसंबन्ध स्थापित होना 2. प्रतीयमान विरोध की व्याख्या।

विरोल: एक प्रकार का साँप।

विरूढ (वि०) [वि—रुह्+क्त] (घाव) भरा हुआ, स्वस्थ 2. अंकुरित 3. चढ़ा हुआ। सम० बोध (वि०) जिसकी बुद्धि परिपक्व हो गई हो।

विरोचनम् [वि+रुच्+ल्युट्] प्रकाश, चमक, दीप्ति।

विरोचिष्ण् [वि+रुच्—इष्णुच्] चमकीला, उज्ज्वल।

विलक्ष (वि०) [प्रा० ब०] 1. जिसका कोई विशेष चिह्न या लक्ष्य न हो 2. (तीर) जिसका निशाना चूक गया हो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलम्ब (वि०) [विलम्ब्+क्त] 1. लटकता हुआ 2. पिंजरबद्ध (पक्षी)।
विलापनम् [वि+लप्+णिच्+ल्युट्] रुलाने वाला, विलाप का कारण।
विलम्ब (म्वा० आ०) सहारा लेना, निर्भर करना।
विलासः [विलस्+घञ्] 1. सजीवता, हावभाव 2. कामुकता, लंपटता।
विलायः } [वि+ली+णिच्+घञ् ल्युट् वा]
विलायनम् } घोल देना, मिलादेना, (चीनी की भांति) मिला, देना।
विलिङ्ग (वि०) [प्रा० ब०] भिन्न लिङ्ग का।
विलिम्पित (वि०) [विलिम्प्+क्त] सना हुआ, लिपा हुआ, लेपा हुआ।
विलेपिन् (वि०) लसदार, चिपका हुआ।
विलीन (वि०) [विली+क्त] मन में बैठाया हुआ।
विलोप्तृ (पुं०) [विलुप्+णिच्+तृच्] डाकू, लुटेरा।
विलोभनीय (वि०) [वि+लुभ्+अनीय] ललचाने वाला, मुग्ध करने वाला।
विलोचनपथः दृष्टि क्षेत्र, दृष्टि का प्रसार।
विलोमपाठः विपरीत क्रम से सस्वर पाठ।
विलोमविधिः किसी कार्य के विपरीत अनुष्ठान का विधान करने वाला नियम।
विवक्षितान्यतरवाक्यम् एक प्रकार का व्यङ्ग्यवाक्य।
विवदनम् [वि+वद्+ल्युट्] कलह झगड़ा, मुकदमेबाजी।
विवधा [प्रा० स०] 1. जूआ 2. हथकड़ी, बेड़ी।
विवरम् [वि+वृ+अच्] पाताल लोक।
विवर्णित (वि०) [विवर्ण+इतच्] अननुमोदित, अस्वीकृत।
विवल्ग (भ्वा० पर०) कूदना, उछलना, फांदना।
विवस्वती (स्त्री०) [विवस्वत्+ङीप्] सूर्य देव की नगरी।
विवाहवेषध्यम् दुलहिन की वेशभूषा।
विविक्त (वि०) [विविच्+क्त] जिसने समझ लिया, या सही अनुमान लगा लिया विविक्त परस्परयो —भाग० ५।२६।१७।
विवित्सा [विद्+सन्+अङ्+टाप्] जानने की इच्छा।
विवीताध्वक्षः चरभूमि का अधीक्षक।
विवृ (स्वा० क्रया० उभ०) 1. म्यान से तलवार निकालना 2. कंधे से (बालों की) मांग फाड़ना।
विवृतम् [विवृ+क्त] अनाहृत, जिसके घाव नहीं हुआ।
विवृतपौरुष (वि०) अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने वाला।
विवर्जित (वि०) [विवृज्+क्त] वह जिससे कोई वस्तु ले ली जाय, वञ्चित, विरहित।
विवृत् (भ्वा० आ०) रूपान्तर करना - उभे सह विवर्तेते -महा० १२।१७४।२२।
विवर्तनम् [विवृत्+ल्युट्] रूपान्तरण।
विवृत्सुः [ब० स०] मुर्गा।
विवेकमन्थरता निर्णय करने में अनवधानता।
विवेकविरहः अज्ञान, ज्ञान का अभाव।
विश् (तुदा० पर०) 1. रंगमंच पर प्रकट होना 2. संयुक्त होना 3. आ पड़ना 4. (किसी कार्य में) व्यस्त हो जाना।
विश् (पुं०) [विश्+क्विप्] 1. बस्ती 2. संपत्ति, दौलत।
विशङ्कनीय (वि०) [वि+शङ्क्+अनीय] प्रष्टव्य, पूछने के योग्य, शङ्का किये जाने के योग्य, जिस पर शङ्का की जा सके।
विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] 1. सुकुमार, मृदु 2. दक्ष।
विशल्यकरणी शस्त्रों के लगाने से उत्पन्न घावों को स्वस्थ करने की विशेष जड़ी-बूटी।
विशसनम् [विशस्+ल्युट्] 1. युद्ध 2. काटना 3. वध करना, हत्या करना।
विशारद (वि०) [विशाल+दा+क] 1. प्रवीण 2. बुद्धिमान्, 3. प्रसिद्ध 4. साहसी 5. सौन्दर्योपपन्न शरद् ऋतु सम्बन्धी 6. अकृत्व शक्ति से रहित।
विशालकुलम् उत्तम परिवार, प्रसिद्ध वंश।
विशिखा [विशिख+टाप्] रुग्णालय।
विशोधकरणम् उन्नति, सुधार।
विशोधर्मः विशेष कर्तव्य, विशिष्ट धर्मकृत्य या यज्ञ-अनुष्ठान।
विशेषणासिद्धः एक प्रकार का हेत्वाभास।
विशेषणपदम् 1. विशेषता द्योतक शब्द 2. सम्मान सूचक उपाधि।
विशेषतः (अ०) अनुपात की दृष्टि से निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो दातं विद्या विशेषतः -मनु० ११।२।
विशुद्धधी निर्मल मन या उज्ज्वल बुद्धि वाला।
विशुद्धसत्त्व (त्रि०) सच्चरित्र, सदाचारी।
विशुद्धिः [विशुद्+क्तिन्] 1. ऋण परिशोध करना 2. प्रायश्चित्त।
विश्रृंखला 'देवी' का विशेषण।
विशीर्ण (वि०) [विश्+क्त] 1. रगड़ा हुआ 2. विफलीभूत 3. गिरा हुआ (गर्भ आदि)।
विश्रान्तकथ (वि०) [ब० स०] 1. वक्तृत्व शक्तिहीन, मूक 2 मृत।
विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] आराम करने का स्थान।
विश्रब्धप्रलापिन् (वि०) विश्वस्त या गुप्त बातें करने वाला।
विश्रब्धालापिन् वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्वम्भरसुप्त (वि०) शान्ति पूर्वक सोने वाला।
विश्रि: [विश्+क्विन्] मृत्यु।
विश्वगोचर (वि०) सबके लिए सुगम, जहाँ सबकी पहुँच हो।
विश्वजीव: विश्वात्मा, ईश्वर।
विश्वाधार: विश्व का सहारा, ईश्वर।
विश्वेदेवा: पितरों की एक श्रेणी, देववर्ग।
विट्कृमि: अँतड़ियों में पड़ने वाला कीड़ा।
विड्घात: मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रावरोध।
विड्भङ्ग: अतीसार, दस्तों का लगना।
विड्भुज् (वि०) मल खाकर रहने वाला, सुअरैला।
विड्वर: भैंसा।
विषतन्त्रम् विषविज्ञान, (सर्पादि विषैले जन्तुओं का विष दूर करने की प्रक्रिया।
विषक्त (वि०) [वि+षञ्ज्+क्त] 1. व्यस्त, चिपका हुआ 2. अतिविस्तारित।
विषाक्तनम् [वि+षद्+णिच्+ल्युट्] कष्ट देना, सताना।
विषम (वि०) [प्रा० ब०] 1. जो पूरा न बँट सके 2. अनुपयुक्त। सम०—**बाण:** कामदेव,—**नेत्रम्** शिव की तीसरी आँख,—**मेत्र:** शिव का एक विशेषण, **-वृत्तम्** छंद जिसके चरण सम न हों।
विषय: [वि+सि+अच्, षत्वम्] 1. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गृहीत होने वाला पदार्थ 2. भौतिक पदार्थ 3. इन्द्रियजन्य आनन्द। सम०—**निह्नुति:** किसी बात को मुकर जाना,—**पराङ्मुख:** भौतिक विषय सुखों से विमुख।
विषयीकरणम् [विषय+च्वि+कृ+ल्युट्] किसी वस्तु को चिन्तन का विषय बनाना।
विषह्य (वि०) [वि+सह्+यत्] जीतने के योग्य।
विषाण: [विष्+कानच्] 1. चोटी 2. चूची 3. अपनी प्रकार का उत्तमोत्तम।
विषुवसमय: वह समय जब दिन रात का मान बराबर होता है।
विष्टम्भ (स्वा० क्र्या० पर०) 1. समर्थन करना, प्रबल बनाना 2. व्याप्त होना, छा जाना।
विष्टिकर: दासों का स्वामी, बेगार में पकड़े मजदूरों का स्वामी।
विष्टिकारिन् बेगार में पकड़ा गया मजदूर जिसे कोई पारिश्रमिक भी नहीं दिया जाता है।
विष्ठाशिन् [विष्ठा+आशिन्] सूअर, जो मल खाता है।
विष्णु: [विष्+नुक्] 1. त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) में दूसरा 2. अग्नि 3. पावन पुरुष 4. स्मृतिकार 5. एक वसु 6. श्रवण नक्षत्रपुंज (इसका अधिष्ठात्री देवता विष्णु है) 7. चैत्र का महीना। सम० —**कान्ता** विभिन्न पौधों के नाम,—**दत्त:** परीक्षित राजा का नाम,—**धर्मोत्तरपुराणम्** एक उपपुराण का नाम, **प्रिया** 1. तुलसी का पौधा 2. लक्ष्मी का नाम —**लिङ्गी** बंदर।
विष्वग्गति (वि०) [विष्वच्+गति] सर्वत्र जाने वाला प्रत्येक विषय में प्रविष्ट होने वाला।
विष्वग्लोप: [विष्वच्+लोप:] घबराहट, बाधा, विघ्न।
विसदृश (वि०) असमान, असमरूप।
विसंस्थुड् (वि०) नितांत घबराया हुआ।
विसा कमल नाल (=बिसा)
विसृज् (तुदा० पर०) (आ० भी) (प्रेर०) प्रकट करना, भेद खोलना, (समाचार) प्रकाशित करना।
विसृज्यम् [विसृज्+यत्] जो मुक्त किये जाने के योग्य हैं, सृष्टि, संसार का रचना—काली वशीकृत-विसृज्य विसर्गशक्तिः भाग० ७।९।२२।
विसर्ग: [विसृज्+घञ्] विनाश, सृष्टि का लोप।
विसृप (भ्वा० पर०) फैलाना, प्रसारित करना।
विसर्पिन् [विसृप्+णिनि] 1. रेंगने वाला 2. फूट कर निकलने वाला 3. सरकने वाला 4. फैलने वाला (बेल की भाँति)।
विस्पन्द: [विस्पन्द्+घञ्] बूंद, कण।
विस्फूर्ज: [विस्फूर्ज्+घञ्] दहाड़ना चिघाड़ना, गरजना।
विस्फोटक: [विस्फुट्+ण्वुल्] 1. फोड़ा, फुंसी 2. एक प्रकार का कोढ़।
विस्मयपदम् आश्चर्य का विषय।
विस्रगन्ध: कच्चे मांस की गन्ध।
विहति (स्त्री०) [वि+हन्+क्तिन्] प्रतिघात, अपसारण, विफलता, भग्नाशा, मनोभिः सोढैर्गः प्रणय--विहतिध्वस्तरुचयः किं० १०।६३।
विहाय (अ०) [वि+हा+ल्यप्] 1. से अधिक, के अतिरिक्त 2. होते हुए भी 3. सिवाय, छोड़ कर।
विहित प्रतिषिद्ध (वि०) जिसका विधान और निषेध दोनों किये गये हों।
विहरणम् [वि+हृ—ल्युट्] खोलना, फैलाना।
विहार: [वि+हृ+घञ्] (मीमांसा) अग्नित्रय, (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण)।
विहारभूमि: गोचरभूमि, चरागाह।
विह्वलचेतस् (वि०) [ब० स०] उदास, खिन्नमना जिसका मन बहुत व्याकुल हो।
वीचिक्षोभ लहरों का उठना, तरंगों से उत्पन्न हलचल।
वीणापाणि: नारदमुनि।
वीतमत्सर (वि०) ईर्ष्या द्वेषादि से मुक्त।
वीरकाम (वि०) पुत्रैषी, पुत्र का इच्छुक।
वीरपत्नी [ष० त०] शूरवीर की पत्नी, नायिका।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीरवादः [ष० त०] शक्ति का दावा, वीरता जन्य कीर्ति।

वीरव्रत (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर अटल, दृढ संकल्प वाला।

वीरक [वीर+कन्] 1. 'करवीर' नाम का पौधा 2. नायक 3. एक शिवगण का नाम।

वीर्यम् [वीर्+यत्] 1. वियं 2. सोका 3. पुंस्त्व, जनन -शक्ति 4. बीज, धातु। सम० -आधानम्, गर्भाधान,—शुल्क (वि०) चुनौती देकर युद्ध, शक्ति के बल पर क्रीत।

वृतिद्रुमः [ष० त०] सीमावर्ती वृक्ष।

वृतिमार्गः [ष० त०] ऐसी सड़क जिसके दोनों ओर बाड़ लगी हो।

वृकः [वृ+कन्] 1. भेड़िया 2. सूर्य।

वृकघूतकः 1. रीछ 2. गीदड़।

वृक्षाम्लः [ष० त०] लाल, रेजन (वेन्जा)।

वृत्तम् [वृत्+क्त] 1. रूपान्तरण 2. अधिचक्र।

वृत्तबन्धः छन्दोबद्ध रचना।

वृत्तयुक्त (वि०) गुणों से सम्पन्न।

वृत्त्यर्थम् (अ०) जीविका के लिए।

वृत्तिमूलम् जीविका की व्यवस्था, जीविका का आधार।

वृथान्नम् [वृथा+अन्नम्] केवल एक व्यक्ति के अपने उपभोग के लिए आहार।

वृथार्तवा [वृथा+आर्तवा] बांझ स्त्री।

वृद्धयुवतिः (स्त्री०) 1. कुट्टिनी 2. दाई, धात्री।

वृद्धिः (स्त्री०) [वृध्+क्तिन्] 1. आघात, चोट (वृध् हिंसायाम्) 2. भूमि का ऊँचा करना 3. लम्बा करना।

वृन्दम् [वृ+दन्, नुम्] गुच्छा, झुंड।

वृषः [वृष्+क] 1. जल 2. भवननिर्माण के लिए भूखंड 3. नरखच्चर 4. साँड। सम० -लक्षणा मरदानी स्त्री, -सविवन् (पु०) भिड़।

वृषभयानम् बैल गाड़ी।

वृषलः [वृष्+कलच्] 1. नाचने वाला 2. बैल।

वृषलीफेनः [ष० त०] ओष्ठ का आईता।

वृष्णिपालः ग्वाला, गडरिया।

वेऽधरः सौन्दर्य का अभिमान।

वेणिः [वेण्+इन्] 1. फिर संयुक्त की गई संपत्ति जो पहले से बंटी हुई थी 2. जल प्रवाह, झरना।

वेणुदलम् बांस का फट्टा।

वेणुयवः बांस का जंगल, बांसबीज।

वेतालपञ्चविंशतिः पच्चीस कहानियों की एक कृति।

वेदः [विद्+अच्, घञ् वा] 1. ज्ञान 2. हिन्दुओं की पुनीत धर्म पुस्तक -ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद 3. 'कुश' का गुच्छा 4. विष्णु। सम० -अनध्ययनम् वह अवकाश का दिन जिस दिन वेद का पढ़ना निषिद्ध हो, बाह्य (वि०) 1. वेद के विपरीत 2. वेदाध्ययन के क्षेत्र से बाहर, बाह्यः वेदों के विषय में होने वाली धर्मान्ध व्यक्तियों की बहस वेदबाह्यता: पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः—भग०, भूतिः ईश्वरीय ज्ञान का दैवी संदेश।

वेदिमेखला वेदी के चारों ओर की सीमा को बाँधने वाली रस्सी।

वेधः (पुं०) [विध+असुन्, गुणः] ज्योतिष का पारिभाषिक शब्द जिसका अर्थ है ग्रहों की स्थिति का निर्धारण।

वेलातिक्रमः [ष० त०] सीमा का उल्लंघन।

वेलातिग (वि०) किनारे से बाहर रहने वाला।

वेश्यापतिः [ष० त०] जार, वेश्या का पति।

वेश्यापुत्रः [ष० त०] वेश्या का पुत्र, अवैध पुत्र, हरामी।

वेष्टनम् [वेष्ट्—ल्युट्] त्रिआम, एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सारा फैलाव।

वैकारिक (वि०) [विकार+ठक्] 1. परिवर्तनीय 2. सत्त्व से संबद्ध वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा—भाग० ३।५।३०।

वैकार्यम् विकार, परिवर्तन।

वैकृतम् [विकृत+अण्] कपट, धोखा।

वैजन्यम् [विजन+ष्यञ्] निर्जनता, एकान्त।

वैडूर्यम् एक प्रकार का रत्न।

वैतानसूत्रम् यज्ञविषयक कुछ सूत्र।

वैदुरिकम् [विदुर+ठक्] विदुर का सिद्धांत।

वैद्यविद्या [ष० त०] आयुर्वेद शास्त्र।

वैधर्म्यसमः असमानता के कोणों पर आधारित तर्कसंगत भ्रान्ति, हेत्वाभास।

वैभावर (वि०) [विभावर+अण्] रात परक।

वैयवहारिक (वि०) [व्यवहार+ठक्] व्यवहारसिद्ध, रूढ़, प्रचलित।

वैयाकरणखसूचिः केवल वैयाकरण का विडम्बनाद्योतक शब्द।

वैरायितम् [वैर+क्यच्+क्त] शत्रुता, द्वेष, विरोध।

वैरागम् [विराग+ष्यञ्] वर्ण या रंग का लोप।

वैराग्यशतकम् भर्तृहरिकृत एक काव्यरचना।

वैवस्वतमन्वन्तरम् सातवाँ मन्वन्तर, वर्तमान समय।

वैशसम् [विशस+अण्] हिंसा भाग० ५।९।१५।

वैश्वस्त्यम् [विश्वस्त+ष्यञ्] विश्वासघात।

वैष्टिकः बेगार करने वाला, जिसे कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़े।

वैष्णवस्थानकम् (नाटक०) रंगमंचपर लम्बे-लम्बे डग भर कर इधर-उधर टहलना।

वोलकः आवर्त, भँवर, बवंडर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यक्षः विषुवद् रेखा, भूमध्यरेखा ।
व्यङ्कुश (वि०) अनियंत्रित, निरंकुश ।
व्यङ्गः [प्रा० व०] इस्पात ।
व्यजनक्रिया पंखा झलना ।
व्यञ्जनः शुद्ध उच्चारण, स्पष्ट उच्चारण—हीनव्यञ्जनया प्रेषयः—रा० २।६२।११ ।
व्यतिकरः 1. उत्तेजना, उकसाहट भाग० २।५।२२ 2. विनाश—भाग० १।७।३२ ।
व्यतिक्रमः [वि+अति+क्रम्+घञ्] उल्लंघन, अतिक्रमण -तयोर्व्यतिक्रमं दृष्ट्वा महा० ३।१२।३९ ।
व्यतिषङ्गः [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1. प्रतियुद्ध, शत्रु से भिड़त 2. विनिमय ।
व्यथित (वि०) [व्यथ्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, पीड़ित 2. क्षुब्ध, डरा हुआ ।
व्यपायनम् [वि+अप+आ+इ+ल्युट्] अपगमन, पलायन, पीछे हटना ।
व्यपवर्गः [वि+अप+वृज्+घञ्] 1. प्रभाव 2. समाप्ति ।
व्यपाश्रयः [वि+अप+आ+श्रि+अच्] आश्रयस्थान, सहारा ।
व्यपोह् (भ्वा० पर०) 1. प्रायश्चित करना 2. स्वस्थ होना 3. दूर भगाना ।
व्यभिचारकृत् (वि०) अनुचित यौन संबंध करने वाला ।
व्यभिचारिन् (वि०) [वि+अभि+चर्+णिच्+णिनि] 1. कुमार्गगामी, दुश्चरित्र 2. अस्थायी ।
व्ययः [वि+इ+अच्] (व्या० में) रूपान्तर, शब्द या धातु का विभक्ति में प्रत्यय लगा कर रूप बनाना ।
व्ययशेषः खर्च काट कर बची हुई राशि, निवलशेष ।
व्यवच्छेदः [वि+अव+छिद्+घञ्] विनाश ।
व्यवधानम् [वि+अव+धा+ल्युट्] (मीमांसा) दूरस्थ रचना, क्लिष्ट रचना ।
व्यवहित (वि०) [वि+अव+धा+क्त] दूर पार का, दूरवर्ती । सम०—कल्पना शब्दों की एक रचना प्रणाली जिसमें एक दूसरे से वियुक्त शब्दों को मिला कर एक वाक्य बनाया जाय ।
व्यवसर्गः [वि+अव+सृज्+घञ्] परित्याग ।
व्यवसायात्मक (वि०) उत्साह से पूर्ण ।
व्यवसायात्मिका (स्त्री०) दृढ़संकल्प से युक्त ।
व्यवस्थानम् [वि+अव+स्था+ल्युट्] निश्चित सीमा ।
व्यवस्थितविकल्पः निश्चित विकल्प ।
व्यवहारः [वि+अव+हृ+घञ्] 1. संविदा 2. गणित के घात या बल 3. व्यापार 4. मुकदमा 5. प्रथा, रीतिरिवाज । सम०—अर्थिन् (वि०) वादी, मुद्दई, —वादिन् (वि०) जो प्रचलन के आधार पर तर्क करता है ।
व्यवहृतम् [वि+अव+हृ+क्त] व्यापारिक लेन-देन ।
व्यवायः [वि+अव+अय्+घञ्] 1. दूरी, पार्थक्य 2. प्रवेश, घुसना ।
व्यसनसहाचारिन् (वि०) साथ-साथ दुःख भोगने वाला ।
व्यसनाधः विपत्ति का घर ।
व्यालपुच्छ (वि०) फैलाई हुई पूँछ वाला ।
व्यष्टिका (अ०) बाहों को फैलाकर तथा पैरों को चौड़ा करके (खड़ा होना) ।
व्याकृ (नना० उभ०) भविष्यवाणी करना (वृद्ध०) ।
व्याकरणम् [वि+आ+कृ+ल्युट्] 1. भेद, अन्तर 2. भविष्यवाणी ।
व्याकोच (वि०) (फूल की भाँति) खिला हुआ, पूर्ण विकसित ।
व्याकोपः [वि+आ+कुप्+घञ्] विरोध, खंडन ।
व्याक्रोशः [वि+आ+क्रुश्+घञ्] चिल्ला-चिल्ला कर गालियाँ देना, भर्त्सना करना ।
व्याघारित (वि०) जिस पर घी (या तेल) का छींटा दिया गया हो (इसी अर्थ में **अभिघारित** भी) ।
व्याघूर्णित (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+क्त] लुढ़का हुआ, चक्कर खाता हुआ व्याघूर्णजगदण्डकुण्डकुहरो घः —नारा० ।
व्याघूर्णत् (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+शतृ] लुढ़कता हुआ, चक्कर खाता हुआ ।
व्याजनिद्रा झूठमूठ की नींद, दंड मार कर सोना ।
व्याजव्यवहारः कौशलपूर्ण व्यवहार ।
व्याजिह्म (वि०) [वि+हा+मन्, द्वित्वादि नि०] कुटिल, तोड़ा-मरोड़ा हुआ, झुका हुआ धूमपटलव्याजिह्म-रत्नखिषः—नाम० ५।१७ ।
व्याधिनिग्रहः रोग की नियंत्रित करना ।
व्याधिस्थानम् शरीर ।
व्याप्तिवादः विश्वव्यापकता का सिद्धान्त ।
व्यापारक (वि०) [वि+आ+पृ+णिच्+ण्वुल्] आपाततः व्यस्त व्यवसाय में लगा हुआ ।
व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र्+अच्] 1. असंगत 2. मिला-जुला 3. संदिग्ध, भ्रामक—व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे—भग० ३।२ ।
व्यामिश्रकम् [वि+आ+मिश्र्+ण्वुल्] नाटकीय संभाषण जिसमें विभिन्न श्रेणीय भाषाओं का प्रयोग हुआ हो —रा० २।१।३७ पर टीका ।
व्यायामः [वि+आ+यम्+घञ्] सैनिक अभ्यास, फौज की कवायद ।
व्यावर्जित (वि०) [वि+आ+वृज्+क्त] झुका हुआ ।
व्यावहारिकसत्ता भौतिक अस्तित्व ।
व्यावृत्त (वि०) [वि+आ+वृत्+क्त] परिवर्तित—महा० १२।१४१।१५ ।
व्यासपीठम् पुराणों के व्याख्याता का पद या गद्दी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यासपूजा गुरु और व्यास की पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमा को होती है।
व्याससमासौ (द्वि० व०) वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से।
व्युत्क्रान्तजीवित (वि०) मृत, निर्जीव।
व्युत्था (स्त्री० आ०) 1. जीत लेना 2. दूर करना।
व्युपरत (वि०) [वि+उप+रम्+क्त] विश्रान्त, समाप्त, मृत।
व्यूहविभागः सेना को भिन्न-भिन्न व्यूहों में बाँटना।
व्यूह (वि०) जिसमें एक कम हो।
व्योमरत्नम् सूर्य।
व्योमसंभवा चित्रकबरी गाय।
व्रजभाषा मथुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।
व्रतः—तम् [वज्+घ, जस्य तः] मानसिक क्रिया कलाप बतलाति च मानस कर्म उच्यते—भी० सू० ६।२।२० पर शा० भा०। सम०—**धारणम्** व्रत का धारण करना।
व्रात्यकाण्डः अथर्ववेद का एक काण्ड।
व्रात्यचर्या आह्निकक या अवचूत का जीवन।
व्रीडादानम् संकोच एवं नम्रतापूर्वक दिया गया उपहार।
व्रीहिवापम् चावल की पौधा लगाना।
व्लेल्कः पाश, जाल।

श

शंस् (भ्वा० पर०) उच्च ऋचाओं में स्तुति गान करना जो याग्यन के लिए निर्धारित नहीं किये गये—अप्रगीतेषु शंसति—मै० सं० ७।२।१७ पर शा० भा०।
शंसित (वि०) [शंस्+क्त] ध्यान दिया गया या मान लिया गया—जैसा कि 'शंसितव्रतः' में।
शंस्य (वि०) [शंस्+ण्यत्] 1. प्रशंसा के योग्य 2. ऊँचे स्वर से पठित।
शकटव्यूहः एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह।
शकुलादनी 1. भूकीट, केंचुआ 2. एक जड़ीबूटी (कटफी)।
शक्तिध्वजः कार्तिकेय।
शक्य (वि०) [शक्+ण्यत्] श्रुतिमधुर—शक्यः प्रियंवदः प्रोक्तः—इति हलायुधः—दश० २।५।
शक्रकाष्ठा पूर्व दिशा।
शङ्कुभियोगः दोषारोपण करना या संदेह करना।
शङ्कुराचार्यः वेदान्तदर्शन का महत्तम आचार्य, अद्वैतवाद का प्रवर्तक जिसने ब्राह्मण धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए षण्मत की स्थापना की।
शङ्कुपुच्छम् (मधुमक्खी या भींड़ आदि) कीड़ों का डंक।
शङ्कुफला शमी वृक्ष, जैंडी का वृक्ष।
शङ्खः [शम्+ख] शंख का बना कंकण। सम०—**आकृतिः** शंख का ढाँचा या गोलाई का मोड़, शंखाकार, —**वलयः** शंख से निर्मित कड़ा, **वेला** शंखध्वनि के द्वारा संकेतित समय।
शतम् (नपुं०) 1. सौ 2. कोई बड़ी संख्या। सम०—**अन्धः** तलवार या ढाल जो सौ चन्द्राङ्कनों से सुसज्जित हो, —**वरणा** शतवदी, कनखजूरा,—**पोनः** कनखजूरा, —**मूलः** चन्द्रमा,—**लोचनः** इन्द्र का विशेषण।
शत्रुः [शद्+त्रुन्] 1. दुश्मन, रिपु 2. विजेता, हराने वाला। सम०—**निबर्हण** (वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला, —**कुलम्** रिपु का घर,—**लाव** (वि०) शत्रुओं को मारने वाला।
शनिचक्रम् 'शनि की स्थिति से' शुभाशुभ जानने का एक आलेख, चित्र।
शपित (वि०) [शप्+क्त] शाप दिया हुआ।
शपथकरणम् शपथ उठाना।
शपथपूर्वकम् (अ०) शपथ उठाकर (कहना या करना)।
शफरकः पेटी, भर्तन—हर्ष० ४।
शब्दः [शब्द्+घञ्] 1. आवाज (श्रुति विषय और आकाश का गुण) 2. ध्वनि, रव (पक्षियों या विभिन्न प्राणियों का) 3. पद, सार्थक शब्द 4. व्याकरण 5. ख्याति लब्धवशब्देन कौसल्ये—रा० २।६३।११ 6. पुनीत प्रणव (ओम्)। सम०—**अक्षरम्** पुनीत प्रणव,—**इन्द्रियम्** कान, —**गोचरः** 1. वाणी का विषय 2. श्रव्य, —**लक्षणम्** शाब्दिक भिन्नता, —**संज्ञा** व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द,—पा० १।१।६८,—**स्मृतिः** (स्त्री०) भाषा विज्ञान।
शब्दात्मक (वि०) शान्त, स्वभाव से शान्तिप्रिय।
शब्दोपन्यासः शान्ति के लिए बोलने वाला, शान्ति की वकालत करने वाला।
शमनीय (वि०) [शम्+अनीय] शान्ति देने योग्य, मन को शान्ति प्रदान करने योग्य।
शमीकुणः वह समय जब कि शमी वृक्ष के फल आता है।
शम्भूतेजस् 1. शिव की आभा 2. स्कन्द का विशेषण।
शम्या [शम्+यत्+टाप्] 1. लकड़ी या चौखट 2. जूए की कील 3. एक प्रकार की वीणा 4. यज्ञपात्र 5. एक प्रकार का शल्यचिकित्सापरक उपकरण। सम०—**क्षेपः**,—**पातः** दूरी जहाँ तक कोई लकड़ी फेंकी जा सके।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शयनम् [शी+ल्युट्] 1. सोना, लेटना 2. बिस्तरा, खाट 3. संहवास, यौनसंबंध। सम०-**पालिका** सेविका जो राजा की शय्या बिछाती है,—**भूमिः** शयन कक्ष, सोने का कमरा।

शरक्षेपः बाण फेंकने की दूरी का परास।

शरण्य [शृ+ल्युट्] 1. प्ररक्षण, सहायता 2. शरणागार, शरणाश्रम 3. आवास, घर 4. विश्रामस्थल 5. आहूत करना, हत्या करना। सम०—**आगतिः** प्ररक्षणार्थ पहुँचना,-**आलयः** शरणगृह,—**द** (वि०),—**प्रद** (वि०) शरण देने वाला।

शरज्ज्योत्स्ना [शरद्+ज्योत्स्ना] शरदृतु की चाँदनी, —शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमकुटाम्—सौन्दर्य लहरी।

शरीरचिन्ता शरीर की देखभाल।

शरीरधातुः बुद्ध के शरीर की अवशिष्ट भस्म।

शरीराकारः, शरीरकृतिः } शारीरिक दर्शन, देह का आकार-प्रकार, मूरत, शक्ल, शरीर का डीलडौल।

शर्करा [शृ+करन्, कस्य नेत्वम्] 1. गन्ने से निर्मित शक्कर 2. कङ्कड़ 3. पत्थरों के टुकड़ों से बहुल भूमि 4. रेत 5. ठीकरा 6. सुनहरी भूमि—स्तिमितजलो मणिशङ्खशर्करः—रघु० २।८।१६।

शर्करिल (वि०) [शर्करा+अलच्] कङ्कड़ के कणों से युक्त (जैसे कि रेतीले तट की हवा)।

शर्मण्य (वि०) [शर्मन्+य] शरण देने वाला, प्ररक्षण देने वाला।

शलाका [शल्+आकः] 1. सूई, कील 2. अंगुली—शलाकानल्यपातैश्च—महा० ४।१३।२९। सम०-**परीक्षा** विद्यार्थी की परीक्षा लेने की रीति जिसके अनुसार पुस्तक में कहीं भी शलाका से संकेत किया जा सकता है,—**पुरुषाः** ६३ दिव्य जीव,—**यन्त्रम्** शल्य चिकित्सा से संबद्ध एक उपकरण,—**कर्तृ** (पुं०) जर्राह, शल्य-चिकित्सक,—**क्रिया** शरीर में घुसे हुए काँटे आदि किसी पदार्थ को बाहर निकालना, **पर्वन्** महाभारत का नवाँ खण्ड (पर्व)।

शवशयनम् कब्रिस्तान।

शवशिबिका अर्थी, शव को ले जाने वाली पालकी।

शवशकुली एक प्रकार की मछली।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1. हथियार 2. लोहा 3. इस्पात 4. स्तोत्र। सम०—**कर्मन्** शल्यक्रिया,—**निपातनम्** शल्यक्रिया,—**व्यवहारः** हथियार चलाने का अभ्यास।

शाकलशकः लशुन, प्याज जैसी एक गाँठदार कन्द।

शाकपात्रम् सब्जी की तश्तरी।

शाखा परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी विशेष शाखा द्वारा अनुसृत वेद पाठ जैसे शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि। सम०—**अध्येतृ** वेद की किसी विशेष शाखा के पाठ का पढ़ने वाला विद्यार्थी, —**वातः** वायु के कारण अंगों में पीड़ा।

शाङ्करपीठः शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित पाँच आध्यात्मिक केन्द्रों में से कोई सा एक।

शाङ्खायनः वेद का एक अध्यापक।

शाण्डिल्यस्मृतिः शाण्डिल्य द्वारा प्रणीत एक धर्मग्रन्थ या विधि की पुस्तक।

शातक्रतव (वि०) [शतक्रतु+अण्] इन्द्र संबन्धी।

शातनम् [शो+णिच्, तङ्+ल्युट्] पैनाना, तेज करना, चमकाना।

शान्त (वि०) [शम्+क्त] प्रभावहीन किया हुआ, ठंडा किया हुआ। सम०—**गुण** (वि०) उपरत, मृत नूने शान्तगुणे जाते-रा० २।६५।२४,-**रजस्** (वि०) 1. धूल रहित 2. निरावेश।

शान्तिः (स्त्री०) [शम्+क्तिन्] विनाश, अन्त। सम०—**कर्मन्** पाप को दूर करने का कोई धार्मिक अनुष्ठान, —**वाचनम्** ऐसे वेद मंत्रों का सस्वर पाठ जो पाप को दूर करने वाले समझे जाते हैं।

शापग्रस्त (वि०) शाप के दुष्प्रभाव से जकड़ा हुआ।

शापाम्बु } शाप का उच्चारण करते समय दिये जाने

शापोदकम् } वाले पानी के छींटे।

शाबरभाष्यम् मीमांसा सूत्रों पर किया गया भाष्य।

शामित्रम् [शम्+णिच्+इत्र] पशु बलि देने का स्थान।

शाम्बरिकः [शम्बर+ठक्] बाजीगर।

शारद (वि०) [शरद्+अण्] चतुर, निपुण।

शारद्वतः 'कृप' का नाम।

शारिपुत्रकेलि एक प्रकार का गेम, शतरंज खेलने की गोट।

शार्व (वि०) [शर्व+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला।

शालङ्कायनः एक ऋषि का नाम।

शालङ्किः पाणिनि का नाम।

शाश (वि०) [शश+अण्] खरगोश से प्राप्त, खरगोश सम्बन्धी।

शासनम् [शास्+ल्युट्] 1. धार्मिक सिद्धान्त 2. संदेश। सम०-**वृक्ष** (वि०) आदेश का पालन न करने वाला,-**लङ्घनम्** आज्ञा का उल्लंघन करना।

शास्त्रम् [शास्+ष्ट्रन्] 1. आदेश, आज्ञा 2. पावन, शिक्षण, वेद का आदेश 3. ज्ञान का कोई विभाग 4. किसी विषय का सैद्धान्तिक पहलू- इमं मा व शास्त्रे च विमृशतु—मालवि० १। सम०-**अन्वित** (वि०) शास्त्रीय नियमों के अनुकूल, -**वक्तृ** (पुं०) शास्त्रीय पुस्तकों का व्याख्याता,—**वर्जित** (वि०) सब प्रकार के नियम या विधि से मुक्त,—**वादः** शास्त्र के आधार पर दिया गया तर्क।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिक्यपाशः छीका लटकाने के लिए रस्सी।

शिक्षा [शिक्ष्+अ+टाप्] 1. दण्ड 2. गुरु के निकट विद्याध्ययन 3. उपदेश 4. सलाह। सम०—**आचार** (वि०) (गुरु के) उपदेशों के अनुसार आचरण करने वाला।

शिक्षण्डकः [शिक्षण्ड+कन्] 1. कूल्हे के नीचे शरीर का मांसल भाग 2. शैववाद में मुक्ति की एक विशेष अवस्था।

शिखाबन्धः सिर के बालों का गुच्छा, चोटी बाँधना।

शिखिन् (वि०) [शिखा+इनि] 1. लोकदार 2. चोटीधारी 3. जार की चोटी पर पहुँचा हुआ 4 अभिमानी (पुं०) 1. मोर 2. अग्नि। सम० **कपः** आग की चिनगारी, **—भूः** स्कन्द का नाम, **मृत्युः** कामदेव।

शिलाक्षरम् 1. प्रस्तरमुद्रण, पत्थर के द्वारा छापने की प्रक्रिया 2. शिलालेख, पत्थर पर खुदवाया हुआ अनुशासन।

शिलानिर्यासः शिलाजतु, शीलाजीत।

शिलालिखित (वि०) पत्थर पर बनाया हुआ।

शिलीपदः पादस्फीति, फील पाँव रोग।

शिल्पगेहम् शिल्पकार का कारखाना, कारीगर के काम करने का स्थान।

शिल्पजीविन् (वि०) कारीगरी का काम करके जीविकोपार्जन करने वाला व्यक्ति, शिल्पी।

शिव (वि०) [शी+वन् पृषो०] 1. शुभ, मंगलमय, सौभाग्यपूर्वक 2. स्वस्थ, प्रसन्न, भाग्यशाली, (पुं०) 1. हिन्दुओं के त्रिदेव में से तीसरा 2. पारा 3. सुरा, स्पिरिट 4. समय 5. तक्र, छाछ। सम० **अद्वैतः** शैववाद का दर्शनशास्त्र, **अर्कमणिदीपिका** अप्पयदीक्षित द्वारा रचित शैववाद पर एक ग्रन्थ,—**कान्तसुन्दरी** पार्वती का विशेषण, **पदम्** मोक्ष, मुक्ति, **बीजम्** पारा।

शिशयिषा [शी+सन्+अङ्+टाप् धातोर्द्वित्वम्] सोने की इच्छा।

शिशिरमथित (वि०) सर्दी से ठिठुरा हुआ।

शिशुः [शो+कु, धातोर्द्वित्वम्] 1. बच्चा, बाल 2. किसी भी जन्तु का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, बिल्लौना आदि) 3. छह वर्ष में हाथी। सम० **—मातृ** (पुं०) ऊँट।

शिशुम्भर (वि०) विषयी, कामलोलुप।

शिष्टविगर्हणम् बुद्धिमान् व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली निन्दा।

शिष्टसम्मत (वि०) विद्वान् पुरुषों द्वारा माना हुआ।

शीघ्रकेन्द्रम् ग्रहमंयोग से दूरी, फासला।

शीघ्रपरिधिः (पुं०) ग्रहमयोग का अधिचक्र।

शीकर (वि०) 1. मनोरम, रमणीय 2. आनन्दप्रद, सुखमय।

शीर्षछेदिक] (वि०) फाँसी पर चढ़ाये जाने के योग्य,
शीर्षच्छेद्य] —शीर्षच्छेद्यः स ते राम तं हत्वा जीवय द्विजम् उत्तर० २।२८।

शीर्षत्राणम् शिरस्त्राण, टोप।

शीर्षपट्टकः पगड़ी, साफा।

शुकसप्ततिः एक तोते के द्वारा अपनी स्वामिनी को सुनाई गई सत्तर कहानियों का संग्रह।

शुक्रम् [शुच्+रक्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. सोना दौलत 3. वीर्य 4. किसी चीज का सत् 5. पुंस्त्वशक्ति, स्त्रीत्वशक्ति। सम०—**कृच्छ्रम्** मूत्रकृच्छ्र रोग, **—दोषः** वीर्य का दोष।

शुक्लम् [शुच्+लुक्, कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. श्वेत धब्बा 3. चाँदी 4. आँख की सफेदी का रोग। सम०—**जीवः** एक प्रकार का पौधा, **—देह**(वि०)पवित्र शरीर वाला।

शुचियन्त्रम् एक मशीन जिसके द्वारा आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाता है।

शुचिश्रवस् (पुं०) विष्णु का नाम।

शुचिषद् (वि०) सन्मार्ग पर चलने वाला।

शुण्डमूषिका छछून्दर।

शुण्डादण्डः हाथी का सूंड।

शुद्ध (वि०) [शुध्+क्त] 1. जांचा हुआ, आजमाया हुआ, परीक्षित 2. पवित्र, निष्कलंक 3. ईमानदार, धर्मनिष्ठ 4. विशुद्ध, खालिस जिसमें कुछ मिलावट न हो (विप० मिश्र)। सम० **अद्वैतम्** अद्वैत की वह स्थिति जहाँ कि जीव और ईश्वर का सायुज्य मायारहित माना जाता है **—बोध** (वि०) (वेदान्त०) विशुद्ध ज्ञान से युक्त, **भाव** (वि०) पवित्र मन वाला, **विष्कम्भकः** नाटक का वह भाग जहाँ केवल संस्कृत बोलने वाले पात्र ही दिखाई दें।

शुद्धिः [शुध्+क्तिन्] (गणित० में) शेष न छोड़ना।

शुभप्रभूतम् सौभाग्य, कल्याण, अभ्युदय।

शुल्काध्यक्षः चुंगी का अध्यक्ष।

शुल्बसूत्रम् सूत्रग्रन्थ जिसमें श्रौत यज्ञक्रियों की विविध गणनप्रक्रिया समाविष्ट है।

शुष्ककासः सूखी खाँसी।

शुष्करुदितम् ऐसा रोना जिसमें आँसू न आयें।

शूकः [शिव+कक्, संप्रसारणम्] 1. प्रकिण्व, सुरामण्ड 2. खमीर।

शूद्रः [शुच्+रक्, पृषो० चस्य दः दीर्घश्च] हिन्दू समाज में चौथे वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह पुरुष के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्भ्यां शूद्रोऽजायत—ऋ० १०।९०।१२।)। सम०—**अन्नम्** शूद्र द्वारा दिया गया या परोसा गया भोजन,—**घ्न** (वि०) शूद्र की हत्या करने वाला,—**वृत्तिः** शूद्र का व्यवसाय, **संस्पर्शः** शूद्र से छू जाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शूरः [शूर्+अच्] 1. नायक, योद्धा 2. शेर 3. रीछ 4. सूर्य 5. साल का वृक्ष 6. मदार का पौधा 7. चित्रक वृक्ष 8. कुत्ता 9. मुर्गा। सम०—बाहः बौद्धों का अनस्तित्व सिद्धांत।

शूलः [शूल्+क] 1. त्रिशूल 2. बेचने योग्य पदार्थ 3. तोकदार हथियार 4. लोहे की सलाख (जिस पर रख कर मांस भूना जाता है) 5. किसी भी प्रकार का दर्द 6. मृत्यु। सम०—अजुः शिव का विशेषण ° ये समाराध्य शूलाजुं—महा० १०।७।४७,—अवतं स्थित (वि०) सलाख पर लटकाया हुआ, सूली पर चढ़ाया हुआ, आरोपः सूली पर चढ़ाना।

शूल्यमांसम् भुना हुआ मांस।

शूद (वि०) [शूद्+अच्] 1. गुंजायमान 2. साहसी।

शृङ्गम् [शृ+गन् मुम् ह्रस्वश्च] 1. सींग 2. पर्वत की चोटी 3. ऊँचाई 4. स्त्री का स्तन 5. एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह। सम०—आहिका 1. प्रत्यक्ष रीति 2. (तर्क० में) एक पक्ष लेना।

शृङ्गिन् (वि०) [शृङ्ग+इनि] सींगों वाला जानवर (पुं०) बैल।

शृतपाक (वि०) पूर्णतः पका हुआ।

शृतशीत (वि०) उबाल कर ठंडा किया हुआ।

शेवः [शिव्+अच्] 1. अङ्गभूत वस्तु 2. प्रसाद, कृपा।

शेवाचलः } तिरुपति की पहाड़ियाँ।
शेषाद्रिः }

शैक्यः [शिक्य+अण्] 1. एक प्रकार का गोपिया 2. लटकाया हुआ बर्तन।

शैथिल्यम् [शिथिल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता 2. शिथिलता, सुस्ती 3. (दृष्टि की) धूम्यता 4. अवहेलना।

शैलगुरु (वि०) पहाड़ जैसा भारी।

शैलजेजम् शिलाजीत।

शैलूषी [शिलूष+अण्+ङीष] नटी, नर्तकी।

शोकार्तिहृत } (वि०) शोकपीड़ित, गम का मारा।
शोकहृत }

शोणः [शोण्+अच्] लाल।

शोणितप (वि०) [शोणित+पा+क] रुधिर पीने वाला।

शोणितपित्तम् रुधिरस्राव।

शोधः [शुध्+घञ्] शुद्धि, सफ़ाई, विरेचन।

शोधनम् [शुध्+णिच्+ल्युट] 1. मार्जन, परिष्करण 2. पाप अपराधादि से शुद्धि।

शोभनाचारितम् सुन्दर आचरण, सदाचरण।

शोरी वनहरिद्रा, पीली हल्दी।

शोषयित्नुः [शुष्+णिच्+ल्युट्] सूर्य।

शौक्लेयः 1. गरुड़ 2. बाज, श्येन।

शौचम् [शुचि+अण्] (तर्पण के लिए) जल।

शौण्डीर्यम् [शौण्डीर+ष्यञ्] 1. शूरवीरता, पराक्रम 2. अभिमान, घमंड।

शौर्यकर्म (नपुं०) शूरवीरता का कार्य।

शौव (वि०) [श्वन्+अण्, टिलोपः] आगामी कल से संबंध रखने वाला।

श्मश्रुकरः नाई, हजामत बनाने वाला।

श्मश्रुकेशरः नारियल का पेड़।

श्यामः [श्यै+मक्] तमाल का पेड़।

श्यामवल्ली काली मिर्च।

श्यामा दुर्गादेवी का तान्त्रिक रूप।

श्येनकपोतीय (वि०) आकस्मिक संकट।

श्येनपातः बाज का झपट्टा।

श्रद्धाजाड्यम् अंध विश्वास।

श्रद्धेय (वि०) [श्रत्+धा+क्यत्] विश्वासपात्र,—श्रद्धेयाः विप्रलब्धारः --कि० ११।३५।

श्रम् (प्रेर०—श्रम-श्रामयति) 1. थकाना 2. जीतना, हराना।

श्रमविनोदः क्लांति दूर करना, विश्राम करना।

श्रमार्त (वि०) थक कर चूर-चूर, थकान से पीड़ित।

श्रवपत्रम् कान की बाली।

श्रवणम्,-णः [श्रु+ल्युट्] 1. कान 2. त्रिकोण की एक रेखा 3. सुनने की क्रिया। सम०—पुटकः कर्णविवर, ° पूरकः कान की बाली, कर्णफूल,—प्राघुणिकः श्रवण गोचर वस्तु, कानों में आना,—भूत (वि०) कहा गया।

श्राद्धमित्रः श्राद्ध के द्वारा बनाया गया मित्र।

श्राद्धार्ह } (वि०) श्राद्ध के लिए उपयुक्त।
श्राद्धेय }

श्रावकः [श्रु+ण्वुल्] वह ध्वनि जो दूर से सुनी जाय।

श्रितक्षम (वि०) स्वस्थ, शान्त।

श्रितसत्त्व (वि०) जिसने साहस का आश्रय लिया है, साहसी, दिलेर।

श्री [श्रि+क्विप्, नि० दीर्घः] वेदत्रयी, तीनों वेद।

श्रीमुकुटम् सोना, स्वर्ण।

श्रीमत् (पुं०) 1. तोता 2. साँड।

श्रुतिः [श्रु+क्तिन्] 1. वाणी 2. कीर्ति 3. उपयोग, लाभ 4. विद्वत्ता, पांडित्य। सम० अर्थः वैदिक अर्थसूचन, —जातिः नाना प्रकार के दिक्स्वर, दूषक (वि०) कानों को कष्ट देने वाला,—वेधः कान बींधना—शिरस् उपनिषदें - श्रुतिशिरस्सीमन्तमुक्तामणिम् --प्रताप० १।१।

श्रेयोभिकांक्षिन् (वि०) कल्याण चाहने वाला।

श्रेष्ठकस्तूरिका कस्तूरी।

श्रेष्ठान्वयः (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न।

श्रोणिबिम्बम् गोल नितम्ब --श्रोणिबिम्बचलदम्बरं भजत रासकेलिरसडम्बरम्—नारा०।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्मार्तसम्बन्ध (द्वि० व०) वेद और स्मृति से संबंध रखने वाला।

श्लथसन्धनम् 1. पुट्ठों का विश्राम देना 2. ढीली गांठ।

श्लाघाविपर्ययः शेखी बघारने का अभाव, प्रशंसा या चाटलूसी का न होना।

श्लिष्टरूपकम् श्लेषयुक्त रूपक अलंकार, जिस रूपक के एक से अधिक अर्थ होते हों।

श्लेषः [श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, मैथुन 2. व्याकरण विषयक आगम संयोग 3. एक शब्दालंकार जहाँ एक शब्द के कई अर्थों द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है।

श्लेषोपमा उपमा अलंकार जिसके दो अर्थ होते हों।

श्लेष्मकटाहः थूकदान।

श्लोक्य (वि०) [श्लोक्+ष्यत्] प्रशंसनीय।

श्वजीविका कुत्ते का जीवन, दासता।

श्वदंष्ट्रा 1. कुत्ते की दाढ़ 2. गोखरू का पौधा।

श्वयोनिः [श्वयतेः चित्] चन्द्रमा।

श्वसुरगृहम् श्वसुरालय।

श्वसनमनोग (वि०) वायु और मन की भांति चंचल।

श्वसनरन्ध्रम् (नाक का) नथना।

श्वसनसमीरणम् श्वास, सांस।

श्वासः [श्वस्+घञ्] व्यञ्जनों के उच्चारण में महाप्राणता।

श्वस्प्रभृति (अ०) आगामी कल से लेकर।

श्वेतवसीयस (वि०) प्रसन्न, शुभ, मङ्गलमय।

श्वेतः [श्वित्+अच्, घञ्, वा] 1. सफेद बकरी 2. धूमकेतु, पुच्छलतारा 3. चांदी का सिक्का 4. जीरे का बीज 5. शंख 6. सफेद रंग 7. शुक्र तारा। सम० **अंशुः** चन्द्रमा, **अश्वः** अर्जुन, **कपोतः** 1. एक प्रकार का चूहा 2. एक प्रकार का साँप, **क्षारः** यवक्षार, शोरा, **रसः** छाछ और पानी बराबर-बराबर मिले हुए **वाराहः** कल्प का नाम जो आजकल बीत रहा है।

ष

षडंशः छठा भाग।

षडष्टकम् फलित ज्योतिष का एक योग।

षड्ऊर्मिः अस्तित्व की छः लहरें।

षट्पदः 1. मधुमक्खी, भौंरा 2. गीति छन्द।

षड्ऋतुः (पु०, ब० व०) छः ऋतुएँ।

षड्भावत्वादः 'द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय' इन छः द्रव्यों की स्वीकृति पर आधारित सिद्धान्त।

षाडवः 1. रसराग की एक जाति जिसमें केवल छः स्वर जाते हैं 2. मिठाई, हलवाई का काम।

षोडशाहः शान्तिशास्त्र का एक चक्र।

स

संयत् (स्त्री०) [सम्+यत्+क्विप्] युद्ध, लड़ाई, संग्राम। सम० **-वाम** (वि०) उस सारथी को एकत्र करने वाला जो सुलझा है।

संयन्त्रित (वि०) [संयन्त्र+इतच्] रोका हुआ, बन्दी किया हुआ।

संयम् (भ्वा० प० २०) 1. रोकना, दमन करना, दबाना 2. सटाना, भींचना।

संयतमैथुन (वि०) जिसने मैथुन करना त्याग दिया है।

संयतिः [सम्+यम्+क्तिन्] तपश्चर्या, निरोध, संयमन।

संयमः [सम्+यम्+अप्] प्रयत्न, उद्योग।

संयोगः [सम्+युज्+घञ्] 1. (दर्शन०) भौतिक संपर्क 2. शारीरिक संपर्क 3. योगफल। सम०—**विधिः** 1. सम्मिश्रण की प्रणाली 2. जीव और ईश्वर के सायुज्य को दर्शानेवाली वेदान्त की उक्ति।

संयुतिः [सम्+यु+क्तिन्] (गणित०) दो या दो से अधिक संख्याओं का योगफल।

संरभ् (स्वा० आ०) इरभते रभते प्रयुतं रज इव्येद तन्न संरभ्य चिन्तयेत्—महा० १२।१९४।३२।

संरब्धनेत्र (वि०) जिसकी आँखें सूज गई हों।

संरब्धमान (वि०) जिसके अभिमान को आघात लग चुका है।

संरम्भः [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1. घृणा, द्वेष—संरम्भयोगेन बिन्दते तत्त्वरूपताम् भाग० ७।१।२८ 2. (युद्ध का) वेग, आक्रमण की प्रचण्डता।

संराद्धिः [सम्+राध्+क्तिन्] निष्पत्ति, सफलता।

संरुद्ध (वि०) [सम्+रुध्+क्त] 1. बाधायुक्त (गति) —फाल्गुनो गात्रसंरुद्धो देवदेवेन भारत—महा० ३। ३९।६२ 2. कारावरुद्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] बंधन, क़ैद।
संलग्न (वि०) [सम्+लग्+क्त] जो गहराई तक घुसा हुआ हो--ततो मामतिविश्वस्तं संलग्नशरविक्षतम् — महा० ३।१७४।१।
संवत्सरनिरोधः एक वर्ष की क़ैद।
संवद् (भ्वा० पर०) परस्पर मिलाना।
संवदनम् [संवद्+ल्युट्] संदेश।
संवादः [सम्+वद्+घञ्] अभियोग, मुक़दमा।
संवर्गविद्या (दर्शन०) अवशोषण या विश्लेषण का शास्त्र।
संवासः [सम्+वस्+घञ्] सहवास।
संवाहनम् [सम्+वह्+ल्युट्] 1. मार्गदर्शन करना, नेतृत्व करना 2. प्रदर्शन करना, दिखलाना।
संविग्न (वि०) [सम्+विज्+क्त] 1. क्षुब्ध, उत्तेजित 2. भयभीत, डरा हुआ 3. इधर-उधर चक्कर लगाता हुआ।
संविज्ञानम् [सम्+वि+ज्ञा+ल्युट्] 1. सहमति, अनुमोदन 3. सम्यक् ज्ञान 4. प्रत्यक्ष ज्ञान।
संविद् [सम्+विद्+विक्प] 1. मतैक्य—स्तुतोरुलभमानानां संविदं वेद निश्चितान् महा० १२।६५।१६ 2. मित्रता—संविदा देयम्--ते० उ० १।११।१३।
संविध् (स्त्री०) [सम्+वि+धा+क्विप्] व्यवस्था--रावणः संविधं चक्रे महा० ३।२८४।२।
संविभक्त (वि०) [सम्+वि+भज्+क्त] बाँटा हुआ, विभाजित, पृथक् किया हुआ।
संवेशः [सम्+विश्+घञ्] कुर्सी।
संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] सोना, नींद लेना संवेशनोत्थापनयोः—प्रतिमा०।
संवारः सम्+वृ+घञ्] बाधा, विघ्न।
संवृतसंवार्य (वि०) जो गोपनीय बातों को गुप्त रखता है।
संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] सिकोड़ना, सिकुड़न,—पर्यासु क्षणदुष्टनष्टकुभः संवर्तविस्तारयोः मा० वी० ५।१।
संवर्तित (वि०) [सम्+वृत्+क्त] 1. लिपटा हुआ, लपेटा हुआ 2. बराबर आया हुआ।
संवृद्धिः [सम्+वृध्+क्तिन्] पूर्णवृद्धि, अभ्युदय, शक्ति।
संव्यस् (दिवा० पर०) व्यवस्थित करना, एकत्र करना।
संव्यूहः [सम्+वि+ऊह्+घञ्] व्यवस्था, क्रमस्थापन।
संशित (वि०) [सम्+शो+क्त] अपने संकल्प को दृढ़ता पूर्वक निभाने वाला (जैसा कि 'संशितव्रत' कड़ाई के साथ अपना व्रत पूरा करने वाला)।
संशयापोहः एक अलंकार जिसमें संदेह का निवारण समाविष्ट होता है।
संशयोपमा संदेह के रूप में न्यस्त तुलना।
संशुध् (दिवा० पर०) शुद्ध करना, सुरक्षित रखना (आक्रमण से)—संशोध्य त्रिविधं मार्गं—मनु० ७।१८५।
संश्लि (भ्वा० उभ०) संभोगसुख के लिए पहुँचना।
संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] 1. आसक्ति 2. किसी पदार्थ का कोई अंश।
संश्रवस् (नपुं०) [सम्+श्रु+असुन्] पूरी कीर्ति या ख्याति।
संश्लिष्ट (वि०) [सम्+श्लिष्+क्त] मिश्रित, अन्तर्वस्थित,--ष्टम् (नपुं०) राशि, ढेर।
संसक्त (वि०) [सम्+सञ्ज्+क्त] 1. विषयासक्त 2. अनुरक्त।
संसज्जमान (वि०) [सम्+सञ्ज्+शानच्] 1. साथ लगने वाला 2. संकोच करने वाला, झिझकने वाला, --वाङ्मात्रेण न भावेन वाचा संसज्जमानया रा० २।२५।३९।
संसरणम् [सम्+सृ+ल्युट्] खिन्नता, अवसाद।
संसिद्धिः [सम्+सिध्+क्तिन्] 1. अन्तिम परिणाम 2. अन्तिम शब्द।
संसृ (भ्वा० पर०) 1. स्थगित करना, उठा रखना 2. काम में लगाना।
संसारसागरः } जन्म मरण का समुद्र।
संसाराब्धिः }
संसारार्णवः }
संसारपङ्कः संसार रूपी कीचड़।
संसारवृक्षः सांसारिक जीवन रूपी वृक्ष।
संसेव् (भ्वा० आ०) 1. सम्मिलन करना 2. सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना 3. व्यस्ती होना।
संसेवा [सम्+सेव्+अङ्+टाप्] 1. (किसी सभा, समाज में) नित्यप्रति जाना 2. उपयोग, काम में लगाना 3. आदर सत्कार, पूजा अर्चना।
संस्कृ (तना० उभ०) 1. सत्य करना--ये पक्षापरपक्षदोषसंहिताः पापानि सस्कुर्वते—मृच्छ० ९।४ 2. यथार्थता पर पहुँचना (गणित०)।
संस्कारवती (स्त्री) जिसे चमका कर उज्ज्वल कर दिया गया है —संस्कारवत्येव गिरा मनीषी—कु० १।२८।
संस्कारवस्त्रम् प्रमार्जन, परिष्कार—कि० १७।६।
संस्कृतात्मन् (वि०) आध्यात्मिक अनुशासन, या धर्मकृत्यों के द्वारा जिसने अपने आपको पवित्र कर लिया है।
संस्कृतिः [सम्+कृ+क्तिन्] 1. परिष्कार 2. तैयारी 3. पूर्णता 4. मनोविकास।
संस्तम्भनम् [सम्+स्तम्भ्+ल्युट्] रोकना, बंधन में डालना, पकड़लेना।
संस्तीर्ण (वि०) [सम्+स्तृ+क्त] छितराया हुआ, बखेरा हुआ—समिद्धन्तः प्रान्त संस्तीर्णदर्भाः—श०४।८।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्था (स्त्री० आ०–प्रेर०) 1. (नगर) निर्माण करना 2. पुनः स्थापित करना 3 दाह संस्कार करना, (जैसे अस्थिस्थापनम्) अस्थि प्रवाहित करना, या जल समाधि देना।

संस्था [सम्+स्था+अङ+टाप्] 1. सहमति हतां संस्थामतिक्रान्ताः—रा० ४।५७।१८ 2. दाह संस्कार 3. सिपाही, गुप्तचर।

संस्थावृक्षः गमले में लगा पौधा को० अ० १।२०।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1. सरकार की संस्थित रखने का कार्य—को० अ० २।७ 2. भाग, प्रभाग, खंड 3. सौन्दर्य, कीर्ति।

संस्थित (वि०) [सम्+स्था+क्त] सुव्यवस्थित संस्थितदोषिणाः—रा० ३।३१।४६।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्] 1. एक ही अवस्था में पंक्ति बद्ध रहना 2. महत्त्व देना 3. रूप, शक्ल 4. सातत्य, नैरन्तर्य।

संहत (वि०) [सम्+हन्+क्त] 1. सुदृढ़ अंगों वाला 2. मारा गया।

संहतहस्त (वि०) एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए।

संहतिः [सम्+हन्+क्तिन्] 1. संधि, (कपड़े की) सीवन 2. मोटा होना, सूजन।

संहृ (स्वा० पर०) विषयगामी करना, भटकाना, भ्रष्ट करना—शुरान् भक्तानसंहार्यान्—महा० १२।५७।२३ पर भाष्य।

संहारदेवः संहार करने वाला रुद्र देवता।

सकर (वि०) 1. कर युक्त, हाथों वाला 2. कर लगाने योग्य 3. किरणों से युक्त।

सकीलः वह पुरुष जो इतना पुंस्त्वहीन है कि स्वयं संभोग करने के पूर्व अपनी स्त्री को परपुरुष के पास भेजता है।

सकृत्स्नायिन् (वि०) केवल एक बार स्नान करने वाला—मनु० ११।२१४।

सकृद्वाहृत (वि०) जो राशि एक किस्तों में न चुकाकर एकमुश्त चुकाई गई हो।

सकृद्गतिः संभावनामात्र, केवल एक ही विकल्प।

सकृद्विभात (वि०) जो तुरन्त प्रकट हो गया है।

सगतिक (वि०) संबंधबोधक अव्यय से जुड़ा हुआ।

सङ्कटहरचतुर्थी गणेश की पूजा करने का शुभ दिन माघ कृष्ण या भाद्रकृष्ण चतुर्थी।

सङ्कलनम् [सम्+कल्+णिच्+ल्युट्] दाहसंस्कार।

सङ्कल्पजः [सम्+कृप्+ल्युट्] अहंकार।

सङ्करः [सम्+कृ+अच्] गोबर।

सङ्करज } (वि०) जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न जाति
सङ्करजात } के हों, मिश्र माता-पिता की सन्तान।

सङ्करीकरणम् जातियों का मिश्रण।

सङ्कल्पय् (स्वा० आ०) और्ध्वदेहिक कृत्य करना। अन्त्येष्टि करना।

सङ्कल्पप्रभव (वि०) इच्छा से ही उत्पन्न, मानस—संकल्पप्रभवान् कामान् भग०।

सङ्कल्पमूल (वि०) किसी इच्छा पर आधारित।

सङ्कन्दः[सम्+क्रन्द्+घञ्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. विलाप।

सङ्क्रमणम् [सम्+क्रम्+ल्युट्] मृत्यु—रा० २।१३।१२।

सङ्क्रोशः [सम्+क्रुश्+घञ्] ऊँचे स्वर से विलाप करना।

सङ्क्लिष्ट (वि०) [सम्+क्लिश्+क्त] 1. जिस पर खरोंच आ गई हो 2. जिस पर धब्बा आदि पड़ गया हो, धूमिल, मलिन।

सङ्क्षयः [सम्+क्षि+अच्] 1. शरणागार, घर 2. मृत्यु।

सङ्क्षेपः [सम्–क्षिप्+घञ्] विनाश।

सङ्क्षोभणम् [सन्+क्षुभ्+ल्युट्] शोक का प्रबल आघात, धक्का।

सङ्ख्या [सम्–ख्या+अङ+टाप्] 1. युद्ध लड़ाई 2. नाम 3. ज्यामितिपरक शंकु।

सङ्ख्यापदम् अंक।

सङ्गम् (स्वा० आ० प्रेर०) 1. दे देना, सौंप देना 2. हत्या करना।

सङ्गतगात्र (वि०) जिसके शरीर में झुर्रियाँ पड़ गई हैं, या सिकुड़ गया है।

सङ्गतिः [सम्+गम्+क्तिन्] (मीमांसा०) अधिकरण के पाँच अंगों में से एक।

सङ्गोपिः [सम्+गुप्+क्तिन्] 1. प्ररक्षण 2. गोपन, गुप्त रखना।

सङ्गोपनम् [सम्+गुप्+ल्युट्] सर्वथा गुप्त रखना।

सङ्ग्रहः [सम्+ग्रह्+अप्] छोड़े हुए शस्त्रास्त्रों को वापिस ग्रहण करना।

सङ्ग्रामकर्मन् (नपुं०) युद्ध करना, लड़ाई लड़ना।

सङ्ग्रामभूमिः (पुं०) युद्ध का अग्रिम क्षेत्र।

सङ्घवृत्तम् निगम आदि संकायों का मिलकर कार्य करने का ढंग (आचरण) को० अ० ११।

सङ्घातः [सम्+हन्+घञ्] 1. बहाव- यस्य शोणितसंघाताः—महा० १२।९८।३१ 2. कठोर भाग 3. युद्ध 4.हड्डी 5. गहनता 6. समूह।

सङ्घातचारिन् (वि०) समूह में मिलकर चलने वाला।

सङ्घातमृत्युः सबकी एकदम मृत्यु।

सङ्घातशिला कड़ा पत्थर जिसपर (नारियल जैसी) वस्तुएँ तोड़ी जाती हैं, पत्थर जैसा कठिन पदार्थ।

सङ्घर्षः [सम्+घृष्+घञ्] 1. शत्रुता 2. कामोत्तेजना।

सङ्घृता तरल लाख।

सचराचर (वि०) चल तथा अचल वस्तुओं समेत।

सजागर (वि०) जागरूक, सावधान, सतर्क।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सज्ज (वि०) [सज्ज्+अच्] 1. सूत में पिरोया हुआ 2. धनुष की डोरी पर तना हुआ।

सञ्चक: [सम्+चि+ड, स्वार्थेकन्] सांचा (जैसा कि ईंट पाथने वाले प्रयुक्त करते हैं)।

सञ्चार: [सम्+चर्+णिच्+घञ्] 1. भ्रमण करना —संचार: श्रवणदर्शनाभ्यां परमोहनम्—महा० १२।५९।४८ पर भाष्य 2. (जंगली जानवरों के) पदचिह्न।

सञ्चयकारयितृ (वि०) शौचसंबंधी धर्मकृत्यों का अनुष्ठान कराने का इच्छुक।

सञ्जनन (वि०) [सम्+जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला, उत्पादक।

सञ्जातनिर्वेद (वि०) खिन्न, अवसन्न, उदास।

सञ्जातविश्रम्भ (वि० विश्वस्त, भरोसे वाला।

सञ्ज्ञप् (भ्वा० पर०) प्रतिवेदन देना, वक्तव्य देना।

संज्ञिहान (वि०) [सम्+हा+शानच् धातोर्द्वित्वम्] त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

संज्ञप्त (वि०) [संज्ञ+क्त] नाश करने वाला—कदा दयं करिष्यामः संन्यासं दुःखसंज्ञकम्—महा० १२।२७९।३।

संज्ञपित (वि०) [सम्+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] बलि दिया गया, नष्ट किया गया—भाग० ४।२८।२६।

संज्ञा [सम्+ज्ञा+क] 1. पगडंडी, पदचिह्न 2. दिशा 3. पारिभाषिक शब्द।

संज्ञासूत्रम् वह सूत्र जिसके आधार पर किसी पारिभाषिक शब्द का निर्माण होता है।

सटाक्षेपः अयाल (केसर) का लहराना—सटाक्षेपक्षिप्त-नक्षत्रसंहतिः—दुर्गा० ७।

सतोद (वि०) पीड़ित, चुभन जैसी पीड़ा से ग्रस्त।

सत्क्रिया समारोह, अनुष्ठान।

सत्तम (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ (समस्त शब्दों के अन्त में प्रयुक्त जैसे आचार्यसत्तमः)।

सत्त्रम् [सद्+ष्ट्रन्] बनावटी रूप, छद्मवेष।

सत्त्रिन् (पुं०) [सत्त्र+इनि] सहपाठी कौ० अ० १।११ 2. विदेशस्थ राजदूत।

सत्त्वम् [सत्+त्व] 1. बुद्धि 2. सूक्ष्म शरीर।

सत्त्वतनुः विष्णु का विशेषण।

सत्त्वयोगः 1. मर्यादा 2. जीवन-प्रकाशन, प्राण प्रदान —चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा—श० २।१०।

सत्यम् [सत्+यत्] 1. मोक्ष 2. सचाई 3. निष्कपटता 4. पवित्रता 5. प्रतिज्ञा 6. जल 7. ईश्वर। सम०—आश्रमः संन्यास,—क्रिया, शपथ ग्रहण करना, —भेदिन् (वि०) प्रतिज्ञा भंग करने वाला,—मानम् वास्तविक माप,—लौकिकम् आध्यात्मिक और भौतिक विषय,—वादिन् (वि०) सच बोलने वाला, —संधः सच्ची प्रतिज्ञा,—सङ्कल्प (वि०) जिसका प्रयोजन या धारणा सत्य है।

सत्रन्यायः मीमांसा का एक नियम जिसके आधार पर एक से अधिक स्वामियों द्वारा अनुष्ठान होने पर यज्ञ में एक ही स्वामी को प्रतिनिधित्व दिया जाता है—मी० सू० ६।३।२२ पर शा० भा०।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र+इनि] सहयोगी, सहपाठी।

सदर्थः मुख्य विषय या प्रकरण।

सद् [सद्+क्विप्] सभा—भाग० ७।१।२१।

सदोविरम् [सदस्+अजिरम्] दालान, दहलीज।

सदस्पतिः [अलुक् समास] सभापति।

सदोरथायिन् (वि०) सदैव सक्रिय।

सदाभव (वि०) सदा रहने वाला, शाश्वत।

सदृक्षविनिवय (वि०) समान विषयों में भूल करने वाला।

सद्धर्मः वास्तविक कर्तव्य।

सद्यस्कार (वि०) तुरन्त ही अनुष्ठित होने वाला।

सद्यस्प्रज्ञालक (वि०) जिसके पास केवल एक ही दिन की भोजन सामग्री विद्यमान है—सद्यः प्रज्ञालको वा स्यान्नामसंधयिकोपि वा—मनु० ६।१८।

सनःसुजातः ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में एक।

सनत्सुजीयम् महाभारत का एक अध्याय जिसमें सनत्सुजात का दार्शनिक व्याख्यान निहित है।

सनातनधर्मः वेदों में प्रतिपादित अत्यन्त प्राचीन धर्म।

सनिकारः (वि०) अपमानजनक।

सन्तानकः [सम्+तन्+घञ्+कन्] 1. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक, कल्पतरु या उसका फूल 2. लोक-विशेष।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] सुख देना, प्रसन्नता देना, संतुष्ट करना।

सन्नद्ध (वि०) [सम्+तृद्+क्त] सन्नद्ध, मिलाकर बांधा हुआ।

सन्तारः [सम्+तृ+घञ्] 1. पार करना 2. तीर्थ, घाट।

सन्दंशः [सम्+दंश्+अच्] 1. पुस्तक का एक अनुभाग 2. गांव का एक किनारा।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] हाथी के गण्डस्थल का वह भाग जहां से दान झरता है।

सन्देशपदानि संदेश के शब्द।

सन्दिग्धपुनरुक्तत्वम् (अलं०) अनिश्चयता के कारण दोबारा कहना।

सन्देहालङ्कारः अलंकार विशेष जिसमें संदेह बना रहता है।

सन्देह्य (वि०) [सम्+दिह्+ण्यत्] संदिग्ध, संदेह से पूर्ण।

सन्दृब्ध (वि०) [सम्+दृभ्+क्त] मिलाकर गूंथा हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्दर्शः [सम्+दृश्+घञ्] प्रतीति, दृष्टि ।
सन्दर्शनम् [सम्+दृश्+ल्युट्] काम, उपयोग ।
सन्धिः [सम्+धा+कि] भूखंड जो मन्दिर के लिए धर्मार्थ दिया गया हो चोल० १ में डा० राघवन की टिप्पणी वृत्तिसन्धिप्रतिपादनः ।
सन्धिन् (पुं०) [सम् ' धा+इनि] संधि इत्यादि का काम करने वाला मन्त्री ।
सन्ध्यापयोदः संध्याकालीन बादल ।
सन्नजिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा बंधी हुई है, जो चुप है ।
सन्नधी (वि०) हतोत्साह, उत्साहहीन ।
सन्नध्वान (वि०) निराश ।
सन्नवाच् (वि०) मन्द स्वर से बोलने वाला ।
सन्नावः [सम्+नद्+घञ्] शोरगुल, हुल्लड़ ।
सन्नत (वि०) [सम्+नम्+क्त] पूर्ण, भरा हुआ —परमानन्दसन्नतो मन्त्री दश० १।३ ।
सन्नतगात्री झुके हुए शरीर वाली महिला ।
सन्नतभ्रू (वि०) भृकुटिविलासयुक्त, त्यौरी चढ़ाए हुए ।
सन्नद्धयोध (वि०) जिसकी सेना लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है ।
सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1. आधुनिक विषय या विचार वेदार्थके सन्निकर्ष पुरुषास्या—मी० सू० १।१।२७ ।
सन्निपत्य (अ०) [सम्+नि+पत्+य (क्त्वा)], तुरन्त, प्रत्यक्ष, सीधे ।
सन्निपत्योपकारिन् (वि०) भाग या अङ्ग जो सीधा प्रधान का काम दे—मी० सू० १२।१।१९ पर शा० भा० ।
सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1. मैथुन 2. युद्ध 3. ग्रहों का विशेष संयोग ।
सन्निपातिन् (वि०) [सन्निपात+इनि] ऐसा अंग जो प्रधान का कार्य करे—मन्त्राच्च सन्निपातित्वात्—मी० सू० १२।१।१९ ।
सन्निभृत (वि०) [सम्+नि+भृ+क्त] 1. गुप्त 2. चतुर, शिष्ट ।
सन्निरुद्ध (वि०) [सम्+नि+रुध्+क्त] 1. नियन्त्रित, रोका हुआ 2. पूर्ण, भरा हुआ ।
सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] 1. क़ैद 2. संकीर्णता ।
सन्निवायः [सम्+नि+वे+घञ्] सम्मिश्रण, समुच्चय ।
सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] डेरा डालना, शिविर स्थापित करना (जैसा कि "सेनासन्निवेशः") ।
सन्निसर्गः [सम्+नि+सृज्+घञ्] अच्छा स्वभाव, भलमनसाहत, उदाराशयता ।
सन्नी (भ्वा० पर०) भरना, पूर्ण करना ।
सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] ठहराव, करार ।
सपत्राकृत (वि०) अत्यन्त घायल ।
सपरिच्छद् (वि०) आवश्यक वस्तुओं से सुसज्जित, दलबल के साथ ।
सपरिहारम् (अ०) आरक्षण सहित ।
सपर्यापर्यायः पूजाकृत्यों की माला—सकलमिदमारम्भार्पणपूर्वया सपर्यापर्यायस्तव जननि यत्नो विलसितम् सौन्दर्य० ।
सप्तकोण (वि०) सात कोनों वाला ।
सप्तपातालम् सात पातालों का समूह ।
सप्तमन्त्रः }
सप्तर्चिः } अग्नि, आग ।
सप्तस्वरः संगीत के सात स्वर (अर्थात्—सा, रि, ग, म, प, ध, नी) ।
सप्ताङ्ग (वि०) सात कोनों वाला ।
सप्रज्ञातम् दे० 'सम्प्रज्ञातम्' ।
सप्रतीक्षम् (अ०) दृढ़ प्रतीक्षा के पश्चात् ।
सप्रमाण (वि०) 1. साधिकारिक 2. समान आकार-प्रकार का ।
सप्रेष्य (वि०) अनुकरों द्वारा सेवित ।
सभक्षः एक ही भोजनशाला में भोजन करने वाला, सहभोजी ।
सभा [सह+भा+क+टाप्, सहस्य सः] 1. यात्रियों के लिए अतिथिशाला 2. भोजनशाला ।
सभागृहम् }
सभासद्मन् } सभा भवन ।
सभामध्ये (अ०) सभा में ।
सभायोग्य (वि०) सभा के लिए उपयुक्त ।
सभाजित (वि०) [सभाज्+क्त] सम्मानित ।
सभोद्देशः (सभा+उद्देशः) सभाभवन के आसपास का स्थान ।
सम (वि०) [सम्+अच्] 1. नियमित, सामान्य 2. सरल, मुविधाजनक 3. बराबर, वैसा ही । सम०—**अङ्गिन्** (वि०) समान रूप से पैरों पर खड़ा हुआ,—**अक्षिन्** (वि०) समानता चाहने वाला,—**आत्मक** (वि०) समान से युक्त,—**कक्ष** (वि०) समान भार वाला, जिनके उत्तरदायित्व एक से हों,—**गतिः** वायु, सर्वत्र समान रूप से गति करने वाला—मृत्युश्चापरिहार्यान् समगतिः कालेन—महा० १२।२९८।१५,—**धर्म** (वि०) एक से स्वभाव वाला,—**भाज** (वि०) एक से डीलडौल का, एक सी मापतौल का,—**वर्तिन्** (वि०) 1. निष्पक्ष 2. समान दूरी पर होने वाला, —**विभक्त** (वि०) समान रूप से बँटा हुआ, —**विषमम्** ऊबड़खाबड़, कहीं से नीचा तो कहीं से ऊँचा, **श्रेति** (वि०) समान अन्तराल से युक्त (संगीत०),—**श्रेणिः** सीधी पंक्ति, —**अग्रणी** सब से आगे रहने वाला, **अतिक्रान्त** (वि०) 1. संपूर्ण में से घूमा हुआ 2. जो व्यतीत हो गया, गुजरा हुआ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

3. उल्लंघन किया हुआ,—अधिगमः पूरी समझ, —अनुवर्तिन् (वि०) आज्ञाकारी,—अभिद्रुत (वि०) पिल पड़ने वाला, —अभ्यासः निकटता, उपस्थिति ।

समयच्युतिः ठीक समय का चूकना ।

समयज्ञः 1. उपयुक्त समय का ज्ञाता 2. जो अपने मूल वचनों को याद रखता है ।

समयविद्या ज्योतिष, भविष्यज्ञान ।

समरागमः लड़ाई का फूट पड़ना ।

समर्थक (वि०) [समर्थ्+ण्वुल्] 1. समर्थन करने वाला, प्रमाणित करने वाला 2. सक्षम, योग्य,—कम् (नपुं०) अगर काष्ठ, चन्दन की लकड़ी ।

समर्थनम् [समर्थ्+ल्युट्] किसी हानि या अपराध की क्षति पूर्ति करना ।

समर्थम् (अ०) निश्चय से, यथार्थ रूप से ।

समवस्कन्दः [सम्+अव+स्कन्द्+घञ्] दुर्गप्राचीर, परकोटा ।

समवहारः [सम्+अव+हृ+घञ्] मिश्रण, संग्रह ।

समवेक्षणम् [सम्+अव+ईक्ष्+ल्युट्] निरीक्षण, मुआयना ।

समवेतार्थ (वि०) सार्थक, शिक्षाप्रद, बोधगम्य ।

समस्यापूरणम् } किसी ऐसे श्लोक को पूर्ति करना जिसका

समस्यापूर्तिः } पहला चरण दिया गया हो ।

समातीत (वि०) एक वर्ष से अधिक आयु का, जो एक वर्ष पूरा कर चुका है ।

समाक्रान्त (वि०) [सम्+आ+क्रम+क्त] 1. रौंदा हुआ, कुचला हुआ 2. जिस पर आक्रमण कर दिया गया है ।

समाक्षिक (वि०) शहद मिला हुआ पदार्थ ।

समाख्या [सम्+आ+ख्या+अङ्+टाप्] व्याख्या ।

समाचेष्टितम् [सम्+आ+चेष्ट्+क्त] 1. व्यवहार 2. प्रक्रिया ।

समाजः [सम्+आ+अज्+घञ्] समागम, समुदाय, —भाग० १०।६०।३८ ।

समाततं (वि०) [सम्+आ+तनु+क्त] 1. विस्तारित फैलाया हुआ 2. लगातार ।

समादिष्ट [सम+दिश्+क्त] निर्धारित, आदिष्ट ।

समाधा (जुहो० पर०) 1. (वस्त्र) पहनना 2. रूप भरना 3. प्रदर्शित करना 4. स्वीकार करना ।

समाधानम् [समा+धा+ल्युट्] 1. (किसी उक्ति का) प्रमाण 2. समझौता कर लेना, समस्या का हल कर लेना ।

समाधानरूपकम् रूपक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी उक्ति का औचित्य सम्मिलित होता है ।

समाधिभूत (पुं०) ध्यान में लीन, समाधि में स्थित ।

समाधियोगः ध्यान-मग्न का अभ्यास ।

समाधूत (वि०) [समा+धूञ्+क्त] बखेरा हुआ ।

समान (वि०) [सम+अन्+अण्] 1. साधारण 2. समस्त (संख्या०) 3. बराबर का, वैसा ही । सम० —करण (वि०) उच्चारण की समान इन्द्रिय वाला, एक ही उच्चारण स्थान वाला (स्वर) ।

समानप्रतिपत्ति (वि०) 1. समान अनुराग वाला 2. व्यवहार कुशल, बुद्धिमान् ।

समानमान (वि०) समान रूप से सम्मानित ।

समानरुचि (वि०) एक सी रुचि वाला ।

समाधिका शब्द खण्ड का वह भाग जो वाक्य की पूर्ति करता है ।

समाप्तिः [सम्+आप्+क्तिन्] (शरीर का) वियटन, मृत्यु मनु० २।२४४ ।

समापत्तिः [सम्+आ+पद्+क्तिन्] 1. मूल रूप को धारण करना 2. संपूर्ति ।

समाम्नात (वि०) [सम्+आ+म्ना+क्त] 1. दोहराया गया, साथ ही वर्णन किया गया 2. परम्परा से प्राप्त ।

समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+घञ्] 1. सामान्यतः वेदपाठ 2. परंपरा से प्राप्त शास्त्रीय वचनों का संग्रह ।

समारम्भः [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] साहसिक कार्य की भावना, साहसपूर्ण कार्य ।

समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, आराधना ।

समारूढ (वि०) [सम्+आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ ।

समारोपितकार्मुक (वि०) जिसने धनुष तान लिया है ।

समार्ष (वि०) एक ही प्रवर से संबद्ध, समान प्रवर वाला ।

समालोकनम् [सम्+आ+लोक्+ल्युट्] 1. निरीक्षण 2. सविचार, मनन ।

समाविद्ध (वि०) [सम्+आ+व्यध्+क्त, संप्रसारणम्] 1. कम्पित, क्षुब्ध 2. ग्रहीत, आघात प्राप्त ।

समाविष्ट (वि०) [सम्+आ+विश्+क्त] भरा हुआ, युक्त (जैसाकि कौतूहलसमाविष्ट') ।

समाश्वस्त (वि०) [सम्+आ+श्वस्+क्त] 1. ढाढस बंधाया हुआ, सान्त्वना दी हुई 2. विश्वास करने वाला ।

समाहृत (वि०) [सम्+आ+हृ+क्त] खींचा हुआ (जैसे धनुष की डोरी') ।

समाहृत्य (अ०) [सम्+आ+हृ+य (क्त्वा)] सब एक दम मिल कर ।

समाहित (वि०) [सम्+आ+धा+क्त] 1. समान, साधारण 2. मिलता जुलता 3. प्रेषित ।

समिति [सम्+इ+क्तिन्] सदाचरण का नियम (जैन०) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समिधाधानम् 1. यज्ञाग्नि पर समिधाएं रखना 2. ब्रह्मचारी के लिए विहित दैनिक अग्निहोत्र ।

समीक्षा [सम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. देखने की इच्छा, दिदृक्षा 2. आध्यात्मिक ज्ञान ।

समीरणः [सम्+ईर्+णिच्+ल्युट्] पाँच की संख्या ।

समुच्चयालङ्कारः एक अलंकार का नाम ।

समुच्चयोपमा समुच्चयालंकार से बनी उपमा ।

समुच्छ्रयः [सम्+उत्+श्रि+अच्] 1. संचय 2. युद्ध, लड़ाई 3. वृद्धि, विकास ।

समुच्छ्रित (वि०) [सम्+उत्+श्रि+क्त] 1. खूब उठाया हुआ 2. हिलोरें लेता हुआ ।

समुत्कट (वि०) ऊँचा, समुन्नत ।

समुत्थानम् [सम्+उत्+स्था+ल्युट्] 1. उद्योग --महा० १२।२३।१० 2. (अंडा) लहराना 3. (पेट की) सूजन ।

समुदायवाचक (वि०) वस्तुओं के संग्रह को प्रकट करने वाला (शब्द) ।

समुदायशब्दः 'संग्रह' की अभिव्यक्ति करने वाला शब्द ।

समुद्धत (वि०) [सम्+उत्+हन्+क्त] गहन, प्रचण्ड,

समुद्यत (वि०) [सम्+उत्+यम्+क्त] 1. उठाया हुआ, समुन्नत 2. तैयार, तत्पर 3. निष्पन्न ।

समुद्रः अत्यन्त ऊँची संख्या ।

समुद्रदयिता } नदी, दरिया ;
समुद्र पत्नी }
समुद्र योषित् }

समुपष्टम्भः [सम्+उप+स्तभ्+घञ्] सहारा, ४२३ टेक ।

सम्पातः [सम्+पत्+घञ्] संप्रेषण (जैसा कि 'द्यूत-सम्पात' में) ।

सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] अधिग्रहण ।

सम्पन्नम् [सम्+पद्+क्त] पर्याप्त (श्राद्ध के पश्चात् संतोष का चिह्न) ।

सम्परेत (वि०) [सम्+पर+इ+क्त] मृत ।

सम्पुटः [सम्+पुट्+क] गोताखोर ।

सम्पूर्णकाम (वि०) जिसकी कामना पूरी हो गई हो ।

सम्पूर्णफलभाज् (वि०) पूरा फल पाने वाला ।

सम्पर्कः [सम्+पृच्+घञ्] योगफल ।

सम्पृक्त (वि०) [सम्+पृच्+क्त] मित्र बना हुआ ।

सम्प्रज्ञातः [सम्+प्र+ज्ञा+क्त] योग की एक समाधि जिसमें मनन का विषय स्पष्ट रहता है (विप०) असंप्रज्ञात) ।

सम्प्रतिपत्तिः [सम्+प्र+पद्+क्तिन्] प्रत्युत्पन्नमतित्व ।

सम्प्रदायप्रद्योतकः वैदिक परम्परा को दर्शाने वाला- सम्प्रदायप्रद्योतको अनुग्राहकश्चेति पातञ्जलाः ।

सम्प्रदायविगमः परम्परा का लोप ।

सम्प्रयुक्त (वि०) [सम्+प्र+युज्+क्त] प्रेरित, प्रोत्साहित ।

सम्प्रयोगः (वि०) [सम्+प्र+युज्+घञ्] (ज्योति०) चन्द्रमा और नक्षत्रों का संयोग ।

सम्प्रसादः [सम्+प्र+सद्+घञ्] मानसिक शान्ति ।

सम्प्राप्त (वि०) [सम्+प्र+आप्+क्त] पहुँचा हुआ, प्रकट हुआ, अधिगत ।

सम्प्लवः [सम्+प्लु+अप्] 1. अव्यवस्था 2. अवनति 3 तुमुल 4. अन्त, समाप्ति ।

सम्भिन्न (वि०) [सम्+भिद्+क्त] 1. ठोस, भरा हुआ 2. द्रोही, देशद्रोही ।

सम्भेदः [सम्+भिद्+घञ्] 1. मुट्ठी भींचना, घूसा तानना 2. विद्रोह 3. बगावत, देशद्रोह ।

सम्भोगवेश्मन् रखैल का घर ।

सम्भवः [सम्+भू+अप्] 1. शक्य बात 2. संपत्ति, धन --महा० १३।६४।११ 3. ज्ञान ईश्वीय० १३ ।

सम्भविष्णु (वि०)[सम्+भू+इष्णुच्] उत्पादक रक्षयिता ।

सम्भावित (वि०) [सम्+भू--णिच्+क्त] जिसके घटने की आशा हो—स्वधि सम्भावितवृत्ति पौरुषम् कि० २।७ ।

संभावितम् अनुमान ।

सम्भ् (जुहो० उभ०) उठाना—दक्षिणं दक्षिणः काले सम्भृत्य स्वभुजं तदा--महा० ६।९७।८२ ।

सम्भृत (वि०) [सम्+भृ+क्त] 1. सम्मानित 2. ऊँची (ध्वनि) ।

सम्भृतधृत (वि०) ज्ञान से युक्त ।

सम्भृतसंभार (वि०) सर्वथा उद्यत, पूरी तरह तैयार ।

सम्भृतस्नेह (वि०) अनुराग से युक्त, अनुरक्त ।

सम्भ्रान्तमनस् (वि०) घबराये हुए मन वाला ।

सम्मतिः [सम्+मन्+क्तिन्] सम्मान देना ।

सम्मतिपत्रकम् न्यायाधिकरण का निर्णय--शुक्र०२।३०४ ।

सम्मित (वि०) [सम्+मा+क्त] 1. समान महत्त्व का --पुराणं ब्रह्मसम्मितम्--भाग० १।३।४० 2. भाग्यलेख —महा० ५।६८।१ ।

सम्मुखीन (वि०) [सम्मुख+खञ्] योग्य, उपयुक्त ।

सम्यक्छन्नम् [सम्+मृच्छ्+ल्युट्] मिश्रण ।

सम्मर्दः [सम्+मृद्+घञ्] (लहरों को) टक्कर ।

सम्यग्ज्ञानम् सही ज्ञान, सच्ची जानकारी ।

सम्यग्दृष्टिः अन्तर्दृष्टि, अन्तरवलोकन ।

सरः [सृ+अच्] (काव्य०) ह्रस्व स्वर ।

सरस (वि०) काव्यरस से परिपूर्ण- कल्याणिनी सरस-चित्रपदा गुणाढ्याम्- शिवानन्द० १०० ।

सर्गः [सृज्+घञ्] 1. शास्त्रशास्त्रों का उत्पादन,— सर्गाणां चान्ववेक्षणम् महा० १२।५९।४४ 2. शब्द के अन्त में महाप्राणता (विसर्ग भी) ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्पगतिः [ष० त०] साँप की चाल, (कुश्ती या मल्लयुद्ध में गति)।

सर्पबन्धः कौशल, विधि, सूक्ष्मयुक्ति।

सर्व (सर्व० वि०) [सृतमनेन विश्वम्—सृ+व] 1. सब, प्रत्येक 2. समस्त, सब मिल कर। सम०—**अभावः** सब का अनास्तित्व, सब की विफलता, **अर्थसिद्धिकरः** महाप्रशासक,—**अशिन्** (वि०) सब कुछ खा जाने वाला,—**अस्तिवादः** एक सिद्धान्त जिसके आधार पर सभी वस्तुएँ वास्तविक मानी जाती हैं,—**काम्यः** जिससे सब प्रेम करें, **चक्षुस्** (वि०) सब कुछ देखने वाला, —**प्रथमम्** (अ०) सबसे पहले,—**वेदिन्** (पुं०) नट, नाटक का पात्र,—**संस्थ** (वि०) सर्वव्यापक,—**सखः** ऋषि-शान्तो यथैक उत सर्वसखेश्चरामि—भाग० १०। ८५।४५. सम्पातः वह सब जो अवशिष्ट बचा है, **स्वारः** एक वैदिक याग जिसमें असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए आत्मबलिदान का विधान है।

सर्वत्रगत (वि०) सर्वव्यापक, विश्वव्यापी।

सर्वथा (अ०) [सर्व+थाल्] सब प्रकार से।

सर्वलिङ्गकर्मन् (नपुं०) जल से तर्पण।

सर्वलिङ्गियः सूअर।

सर्वलिङ्गयः [ष० त०] जल के प्रवाह की शक्ति।

सर्वम् [सृ—सुट्+अच्] (वेद०) आदेश, आज्ञा।

सर्वतकर्मन् (नपुं०) नित्य होने वाला पुनीत वैदिक धर्मकृत्य—अग्निहोत्रादिक।

सर्वर्ण (वि०) समान हार वाली भिन्नराशि।

सर्विकार (वि०) 1. अपनी अन्य उपजसमेत 2. सड़ने वाला, जो सड़ गल रहा हो।

सर्वितृनतयः [ष० त०] शनि ग्रह।

सर्वितृपूर्वतम् हस्त नक्षत्र।

सर्विसूलक्षणम् (अ०) लज्जा के साथ, घबराहट या उलझन के साथ।

सर्व्य (वि०) [सृ+यत्] अनभिभूत, जिस पर घी न छिड़का गया हो, शुष्क—मी० सू० ४।१।३६ पर शा० भा०।

सर्व्यापसर्व्य (वि०) 1. बायाँ और दायाँ 2. तान्त्रिक पूजा की स्मार्त तथा कौल रीतियाँ—सव्यापसव्य-मार्गस्थः—लक्षि०।

सशूकः ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला।

सस्यपालः खेत का रखवाला।

सस्यमञ्जरी अनाज की बाल।

सस्यवेदः कृषिविज्ञान।

सस्यशूकम् अनाज (गेहूँ जौ आदि) का दंड, अनाज की बाल।

सह (वि०) [सह्+अच्] 1. धीर 2. सशक्त, हः (पुं०) मार्गशीर्ष का महीना, हम (नपुं०) एक प्रकार का नमक (अ०) के साथ, सहित। सम० —**अपवाद** (वि०) असहमत होने वाला, **आलापः** समालाप, मिल कर बातचीत करना,—**उत्थायिन्** (वि०) विद्रोही, षड्यन्त्रकारी, **कर्तृ** (पुं०) सहकारी —**खट्वासनम्** एक ही खाट पर मिलकर बैठना,—**भावः** 1. साहचर्य 2. सहानुभूतिता,—**संसर्गः** शारीरिक संपर्क।

सहसावृष्टः गोद लिया हुआ पुत्र।

सहस्रम् [समानं हसति—हस्+र] 1. हजार 2. बड़ी संख्या। सम०—**अरः, अरम्** सिर की चोटी में उलटे कमल के समान गर्त जो आत्मा का आसन माना जाता है, **गुः** इन्द्र का विशेषण, सूर्य का विशेषण,—**दलम्** कमल का फूल,—**भोजनम्** विष्णु के हजार नामों के पाठ करने के समान एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराना (प्रायश्चित्त कर्म)। —**भिद्** (पुं०) कस्तूरी,—**वेधिन्** (पुं०) कस्तूरी

सहायार्थम् (अ०) साथ के लिए, सहायता के लिए।

सांवर्तक (वि०) प्रलय काल से संबंध रखने वाला।

सांसर्गिक (वि०) [संसर्ग+ठक्] संसर्ग से उत्पन्न छूत के (रोग)।

सांस्कारिक (वि०) [संस्कार+ठञ्] 1. संस्कारों से संबन्ध रखने वाला 2. (आधुनिक बोल चाल में) सांस्कृतिक।

साकमेधीयन्यायः मीमांसा का एक नियम जब कि विकृति में उसकी अपनी प्रकृति के गुण या धर्म नहीं पाये जाते—मी० सू० ५।१।१९-२२ पर शा० भा०।

साकूतस्मितम् सार्थक मुस्कराहट।

साक्षात्क्रिया अन्तर्ज्ञान पर्यन्त प्रत्यक्षज्ञान।

साक्षिपरीक्षा साक्षी का परीक्षण।

साक्षिवादः साक्षिसिद्धान्त।

सागरमेखला पृथ्वी, धरती।

सागरसुता लक्ष्मी।

सागरावर्तः समुद्र की खाड़ी।

साङ्केत्यम् [संकेत+ष्यञ्] 1. सहमति 2. दत्तकार्य 3. चिह्न, या उपनाम—साङ्केत्यं परिहास्यं वा..... वैकुण्ठनामग्रहणम् भाग०६।२।१४।

सङ्ख्यकारिका सांख्यदर्शन पर ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित एक ग्रन्थ।

साङ्गोपाङ्ग (वि०) अपने मुख्य तथा सहायक अंगों सहित (वेद०)।

साञ्जिव्याक्षेपः (अलं०) स्वीकृति के बहाने एक आक्षेपी।

सातिशय (वि०) अत्यधिक, श्रेष्ठतम।

सात्म्य (वि०) स्वास्थ्यकर, प्रकृति के अनुकूल।

सात्म्यः 1. आदत, स्वभाव 2. प्रकृति के अनुकूल होने का भाव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारम्यम् समता, बराबरी।
सार्विकः [सर्व+ठञ्] शरद् ऋतु की रात्रि।
सात्वतः 1. भक्त 2. पांचरात्र शाखा से संबंध रखने वाला, सात्वतधर्मः कृष्ण का विशेषण।
सात्वक (वि०) [साध्+ण्वुल्] उपसंहारात्मक, उपसंहार परक।
साधनम् [साध्+ल्युट्] 1. उपकरण, अभिकरण 2. तैयारी 3. संगणना।
साधनीभू (स्वा० पर०) सधना होना, उपाय होना।
साधनीय (वि०) [साध्+अनीय] 1. सिद्ध करने योग्य, कार्य को संपन्न करने के लिए उपयोगी 2. प्राप्त करने योग्य।
साधितव्यापक (वि०) सिद्ध करने योग्य वस्तु में अन्तर्हित तत्त्व के लिए तर्कशास्त्र का पारिभाषिक शब्द।
साधर्म्यसमः झूठमूठ का आक्षेप (तर्क०)।
साधारणः न्याय में एक नियम जो मध्यवर्ती हो और सर्वत्र समान रूप से लागू हो।
साधारणपक्षः समान घटक, मध्यवर्ती तथ्य।
साधारणीभू (स्वा० पर०) समान होना।
साधु (वि०) [साध्+उन्] 1. अच्छा, उत्तम 2. योग्य, उचित 3. भला, गुणी 4. सही 5. सुखद। सम०—कृत (वि०) उचित रूप में किया हुआ,—देवी सास, —मत (वि०) सुविचारित, शील (वि०) धर्मात्मा, —संमत (वि०) भले व्यक्तियों को मान्य।
सान्तराल (वि०) [अ० स०] अन्तराल या अवकाश सहित।
सान्तानिक [सन्तान+ठञ्] सन्तान की इच्छुक—नाहं त्वा भस्मसात् कुर्यां स्त्रियं सान्तानिकं सति भाग० ९।१४।१।
सान्द्रस्पर्श (वि०) जो छूने में भद्दा हो, चिकित्सित हो।
सान्द्रानन्दः अध्यात्मिक सुख—सान्द्रानन्दावबोधात्मकमनुपमितभं नाराः १।१।
सामग्र्यम् [समग्र-ष्यञ्] कल्याण, कुशलक्षेम—श्रयि लक्ष्मण सीतायाः सामग्र्यं प्रतिपन्नाऽहे—रा० ३।५७।२०।
सामन् (नपुं०) [श्रो+मनिन्] आवाज, शब्द, ध्वनि स्वरः सामशब्देन लोके अभिधीयते—मी० सू० ७।३।७ पर शा० भा०। सम० कलम् मित्र के स्वर में, —प्रधान (वि०) पूर्णतः झुकाव या मित्रसदृश, —विधानम् 1. एक ब्राह्मण का मूल पाठ 2. साम का प्रयोग।
सामन्तचक्रम् अधीनस्थ राजाओं का मण्डल।
सामन्तवासिन् (वि०) पड़ोसी।
सामयिकम् [समय+ठन्] 1. समझौता 2. संधि विषयक लेखपत्र।
सामान्यम् [समान+ष्यञ्] 1 सामान्य बकाया 2. एक अर्थालंकार 3. सार्वजनिक कार्य 4. साधारण लक्षण 5. पहचान। सम० —धर्मः (अलं०) (उपमान और उपमेय) का समान गुण,—वादिन् (वि०) समानता को कहने वाला,—शासनम् वह आज्ञा जो सब पर लागू हो।
सामिष (वि०) मांसयुक्त।
साम्बयात्रिक (वि०) [समुदाय+ठक्] समूह से संबंध रखने वाला, सामूहिक।
साम्परायः 1. सहायक 2. आवश्यकता, 3. संकट।
साम्परायिक (वि०) [संपराय+ठक्] 1. पारलौकिक, 2. दाहकर्म संबंधी—रा० ४।३।४०।
साम्यम् [सम+ष्यञ्] 1. माप 2. समय।
सायः [सो+घञ्] 1. समाप्ति, अन्त 2. संध्या 3. बाण। सम०—अशनम् सायंकाल का भोजन,—धूतः 1. शठ 2. चन्द्रमा,—मण्डनम् सूर्यास्त।
सायंप्रातः (अ०) सवेरे शाम।
सायंसवनम् सायंकालीन धर्मानुष्ठान।
सायुध (वि०) सशस्त्र।
सारः रम् [सृ+घञ्, अच् वा] 1. क्रम, गति 2. मुख्यअंश 3. गोबर 4. मवाद, पस। सम०—गात्र (वि०) सबल अंगों वाला,—गुणः प्रधानगुण या धर्म गुरु (वि०) बोझल, बोझ के कारण भारी,—फल्गु (वि०) बढ़िया और घटिया, उपयोगी और व्यर्थ, —मार्गणम् गूदे या वसा का ढूंढना।
सारङ्गी संगीत का एक विशेष राग।
सारणिकत्वम् लूटपाट, डाकू।
सारथिः [सृ+अथिन्, सह रथेन सारथः (घोटकः तत्र नियुक्तः) इत्र, वा] 1. रथवान् 2. पथप्रदर्शक।
सारसाक्षम् एक प्रकार का लाल।
सारसाक्षी कमल जैसी सुन्दर आंखों वाली महिला, पद्मलोचना।
सारसन्नभ वक्षस्त्राण, कवच।
सारहीन (वि०) समूह से छूटा हुआ, यूथभ्रष्ट।
सार्धवार्षिक (वि०) डेढ़ वर्ष तक रहने वाला।
सार्धवत्सरम् डेढ़ वर्ष।
सालङ्कार (वि०) सुभूषित, अलंकारों से युक्त।
सावधारण (वि०) संमित, नियन्त्रित।
सावशेषजीवित (वि०) जिसका जीवन अभी शेष है, जिसने अभी और जीना है।
साष्टम्भवास्तु वह भवन, जिसके दोनों ओर दो खुली पार्श्वबीथियां (खुले दालान) हों।
साहित्यसूत्रम् यज्ञोपवीत।
साहचर्यवर्य (वि०) आचर्यायुक्त आचरण वाला।
साहि (वि०) [सह+क्विप्] 1. सहनशील 2. जो प्रतिपक्षी का मुकाबला कर सके 3. जीतने वाला।
साहित्य (वि०) हृष्टियों से युक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सास्थिस्वानम् (अ०) हड्डियों की चटखने की ध्वनि के साथ।
साहसकरणम् प्रचण्ड कार्य, अंधाधुंध काम करना।
साहसिक्यम् उतावलापन।
साहस्र (वि०) [सहस्र+अञ्] हजारों, असंख्य, अनगिनत।
साहाय्यकर (वि०) सहायता करने वाला।
साहाय्यदानम् सहायता देना।
सिंहः [हिंस्+अच्, पृषो०] एक प्रकार की संगीत ध्वनि।
सिंहमलम् एक प्रकार का पीतल।
सिच् (तुदा० उभ०) भिगोना, तुबकी लेना।
सिञ्जिनी [शिञ्जा+इनि, पृषो०] धनुष की ज्या या डोरी।
सिता [सि+क्त, स्त्रियां टाप्] 1. चीनी, खांड 2. गंगा।
सितासित (वि०) श्वेत और काला मिला हुआ।
सितकण्ठः सफेद गरदन वाला, चातक पक्षी, अलकुकुट।
सितछदः राजहंस, मराल, हंसनी।
सितपक्षः हंस, मराल, हंसनी।
सितवारणः सफेदहाथी, सितकुञ्जर।
सितालण्डः एक प्रकार की खांड, मिश्री का डला।
सिद्ध (वि०) [सिध्+क्त] 1. निश्चित, अपरिवर्तनीय 2. विशिष्ट पक्का 3. सफल,—द्धः (पु०) जिसे इसी जीवन में सिद्धि प्राप्त हो गई है। सम०-शब्जनम् एक प्रकार का अंजन (कहते हैं, इसके प्रयोग से भूगर्भ की वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं),—अर्थकः सफेद सरसों, आदेशः 1. ऋषि की भविष्य वाणी 2. भविष्य वक्ता, ज्योतिषी,—औषधम् विशिष्ट औषधोपचार, काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं,—पथः आकाश—सिद्ध पूर्णतः अचूक, —हेमन् शुद्ध स्वर्ण जरा सोना।
सिद्धिः (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] अचूकता, पर्याप्ति।
सिद्धिविनायकः गणेश का एक रूप।
सिन्दूरगणपतिः गणेश की मूर्ति।
सिन्धुमन्मथः सेंधा नमक।
सिन्धुसौवीरः सिन्धु नदी के आसपास के प्रदेश में रहने वाले।
सिरापत्रः पीपल का वृक्ष।
सिरामूलम् नाभि।
सिराल (वि०) [सिरा+आलच्] अनन्त नसों वाला, नसनाड़ियों के जाल से युक्त।
सिस्नासु (वि०) [स्ना+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] स्नान करने की इच्छा वाला।
सिसिक्षा [सिच्+सन्+आ, धातोर्द्वित्वम्] छिड़कने की इच्छा।
सीताध्यक्षः कृषिका अध्यक्ष।
सीधुपानम् मद्यपान, शराब पीना।
सीमाज्ञानम् [सीमा+अज्ञानम्] सीमा की जानकारी न होना।
सीमाकृषाण (वि०) सीमाचिह्न के किनारे हल चलाने वाला।
सीमासेतुः पर्वतशृंखला या बांध आदि जो सीमा का काम दे।
सीरवाहकः हलवाहा, कृषक, खेतिहर।
सुकच्छः खजली।
सुकल्प (वि०) दक्ष, सुयोग्य।
सुकल्पित (वि०) सुसज्जित, हथियारों से लैस।
सुक्थ्यः अच्छा सौदा।
सुक्षेत्र (वि०) अच्छे कोख से उत्पन्न।
सुघोष (वि०) मधुरध्वनि से युक्त, मीठी आवाज वाला।
सुचर्मन् भूर्ज वृक्ष, भोजपत्र।
सुतप्त (वि०) 1. अत्यन्त पीड़ित 2. कष्टग्रस्त 3. अत्यन्त कठोर (तपश्चरण)।
सुतान (वि०) सुरीला, मधुरस्वर से युक्त।
सुतार (वि०) 1. अत्यंत उज्ज्वल 2. बहुत ऊँचे स्वर वाला 3. जिसकी आँखों की पुतलियाँ अत्यंत सुन्दर हैं।
सुतारा मांगल्यीकृति के नौ भेदों में से एक (सांख्य०)।
सुदक्षिण (वि०) 1. अत्यंत कुशल 2. अविचिनम्र।
सुदुश्चर (वि०) सुदुष्कर, जो बड़ी कठिनाई से किया जा सके।
सुदुर्दिकित्स (वि०) असाध्य रोग से ग्रस्त, जिसके रोग की प्रायः चिकित्सा न हो सके।
सुदेशिक अच्छा पथप्रदर्शक या अध्यापक।
सुनन्दम् बलराम की गदा।
सुनिश्चित (वि०) भली प्रकार चमकाया हुआ।
सुपठ (वि०) सुपाठ्य, जो पढ़ा जा सके।
सुपर्णः पक्षी, चिड़िया।
सुपेशस् (वि०) सुन्दर, सुकुमार।
सुप्रमाण (वि०) बहुत बड़े आकार का।
सुबभ्रु (वि०) गहरा भूरा, धूसर।
सुभगा 1. सुहागिन 2. कस्तूरी।
सुभोक्तृकम् चाँदी।
सुभूतिः [सु+भू+क्तिन्] 1. मंगल समृद्धि 2. तीतर पक्षी।
सुमन्दाज्ञ (वि०) अत्यंत दुष्बुद्धिपूर्ण।
सुमर्षण (वि०) [सु+मृष्+ल्युट्] सहनशील।
सुमृत (वि०) बिल्कुल ठण्डा, बिल्कुल मुर्दा।
सुलग्नः शुभ मुहूर्त।
सुवर्तुलः तरबूज।
सुविचक्षण (वि०) अत्यन्त चतुर।
सुविरुद (वि०) पूर्ण शिक्षित।
सुविरिक्त (वि०) 1. अकेला 2. निर्धन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुसंवृतिः (स्त्री०) [सु+सम्+वृ+क्तिन्] भली प्रकार छिपाना ।
सुसङ्ग्य (वि०) अपने मन का पालन करने वाला ।
सुसन्नत (वि०) ठीक निशाने पर लगा (तीर आदि) ।
सुसेव्य (वि०) सेवा किए जाने योग्य, जिसका आसानी से अनुसरण किया जा सके ।
सुस्थानियम् आनन्द का स्थान ।
सुस्थाभियोज्य (वि०) जिस पर आसानी से चढ़ाई की जा सके ।
सुस्थाराध्य (वि०) जिसकी सेवा आसानी से की जा सके, जो आसानी से प्रसन्न किया जा सके ।
सुस्वप्रश्नः कुशलक्षेम पूछना ।
सुस्वबद्ध (वि०) मनोरम, प्रिय, प्यारा ।
सुस्वेदनम् आनन्द की अनुभूति ।
सुस्वेद्य (वि०) देo 'सुसेव्य' सुकरम' ।
सुधाकण्डः कीचड़ ।
सुधाकारः सफ़ेदी (चूना) करने वाला ।
सुधाक्षालित (वि०) सफ़ेदी किया हुआ ।
सुधायोनिः चन्द्रमा ।
सुधाशर्करः चूने का पत्थर ।
सुनक्त ज्योतिषशास्त्र का एक योग ।
सुनीथ (वि०) [सु+नी+क्थन्] विवेकपूर्ण व्यवहार से युक्त, दूरदर्शी, मनीषी ।
सुन्दरकाण्डम् रामायण का पाँचवाँ काण्ड ।
सुप्तघ्न:-**घातकः** सोते हुए को मारने वाला, भीरुआज, हत्यारा ।
सुपार्श्वः } मेरु पर्वत, सुमेरु पहाड़ ।
सुपर्वतः }
सुपेभः (सु+इभ) ऐरावत हाथी ।
सुपेष्टः (सु+इष्ट) माल का वज़न ।
सुपीपम (वि०) (सु+उदक) देवसमान ।
सुपुराणः एक प्रकार का फोड़ा, छिद्रार्बुद, जहरबाद ।
सुपुरतटिनी-**तरङ्गिणी**,-**धुनी**,-**नदी**,-**सरित्**,-**आपगा** (स्त्री०) गंगानदी ।
सुपूपदः कल्पवृक्ष ।
सुपूरिलासिनी अप्सरा ।
सुपूर्णता छिपकली ।
सुपूरिभिगोत्रम् पशु, गौएँ, बैल ।
सुपूराजीवित् (वि०) शराब बेचने वाला, कलाल ।
सुपूराभाण्डः खमीर ।
सुपूर्णचोरिका सोने की चोरी ।
सुपूर्णधेनुः स्वर्ण निर्मित गाय जो उपहार में दी जाय ।
सुपूर्णभाण्डम् रत्नमंजूषा ।
सुपूर्णरोमन् (पु०) सुनहरी रोमों वाला मेष ।
सुपूर्णशानुः मेरु पर्वत ।
सुषः (स्त्री०) छिद्र, सूराख ('सुषिर' का वैदिक रूप)
सुषुप्सा [स्वप्+सन्+अ—टाप् धातोर्द्वित्वम्] सोने की इच्छा ।
सूक्ष्मम् [सूच्—मन् सुट् च नेट्] 1. दाँत का खोखलापन 2. बेसन, चबाँ 3. कण । सम०—दलः सरसों,—भूतम् सूक्ष्म तत्त्व, मति (वि०) तीक्ष्णबुद्धिवाला, —शरीरम् सूक्ष्म शरीर (विप० स्थूल शरीर), स्फोटः एक प्रकार का फोड़ा ।
सूचनी स्त्रियों की तालिका या सूचि ।
सूची [सूच्—ङीप्] (दर्ज़ी की) चटसाली ।
सूचीकर्मन् (नपुं०) सिलाई का कार्य ।
सूचीरदनः नेवला ।
सूचीशिखा सुई की नोक ।
सूचीकर्णः सूई का छिद्र ।
सूच्यैसूत्रम् सीने के लिए धागा ।
सूतः सारथि ।
सूतपौराणिकः पुराणों में वर्णित भारत (कहते हैं कि उसने ही समस्त शास्त्रों और पुराण सुनाए थे) ।
सूतिजागरः प्रसव वेदना ।
सूत्रम् [सूत्र्+अच्] 1 सेवला 2. रेखाचित्र, आरेख 3. संकेत शब्दसूत्र 4. धागा, डोरा 5. रेशा । सम० —अध्यक्षः वस्त्रनिरीक्षक, बुनाई का अधीक्षक, क्रीडा रस्सियों का खेल, (६४ कलाओं में से एक) —ग्रन्थः सूत्रों की पुस्तक, धृक् (पु०) 1. सूत्रधार शिल्पी 2. रंगमंच का प्रबंधक पातः 1. गाए जाने वाले सूत्र से मापने का कार्य करना 2. कार्य का आरंभ, —स्थानम् आयुर्वेद के एक ग्रंथ का प्रथम खण्ड ।
सूदाध्यक्षः प्रधान रसोइया ।
सूदशास्त्रम् पाक विज्ञान ।
सूनसायक:-**शूरः** कामदेव—सूनसायकनिर्देशविश्रमैरपहृतीत-चरणेदनीयम् नै० १८।१२२ ('सूनसायक' पाठ भी मिलता है) ।
सूनाध्यक्षः (सूना+अध्यक्ष) बूचड़खाने का अधीक्षक ।
सूपधेष्टः मूंग, मूंग की फली ।
सूपायः (सु+उपाय) अच्छा साधन, तरकीब ।
सूरिः [सू+क्रिन्] बृहस्पति ।
सूर्यद्वारम् उत्तरायण मार्ग ।
सूर्यवारः रविवार, आदित्यवार ।
सूर्याणी सूर्य की पत्नी ।
सृ (म्वा०, ज्यो० पर०) पार करना, आर-पार जाना, पैर० प्रकट करना, व्यक्त करना ।
सृका [सृ+कक्+टाप्] 1. गोदड़ 2. सारस ।
सृक्वी (स्त्री०) 1. ज्ञान-ज्ञान करती हुई रत्नों की लड़ी 2. मार्ग, पथ ।
सृतिः [सृ+क्तिन्] 1. जन्म-मरण का चक्र—स्यान्मे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तवाङ्घ्रिशरणं सृतिभिर्भ्रमन्त्या—भाग० १०।६०।४३ 2. सृष्टि।

सेकः [सिच्+घञ्] नहाने के लिए फ़ौवारा।

सेचनम् [सिच्+ल्युट्] 1. निगमन, उद्गार 2. अभिषेक।

सेतुः [सि+तुन्] 1. जलाशय, सरोवर 2. व्याख्या-परक भाष्य।

सेतुसामन् सामविशेष।

सेनापत्यम् सेना पति का पद।

सेनाबाहः सेनाधीश, सेनाध्यक्ष।

सेनास्थः सैनिक, सिपाही।

सेवती 1. सूई 2. सीवन, टांका 3. सिर की दो हड्डियों का जोड़।

सेविन् [वि०] [सेव्+णिनि] व्यसनी, उपासक, आराधक।

सेश्वर (वि०) ईश्वर की सत्ता मानने वाला।

सेश्वरवादः ईश्वर की सत्ता के समर्थन में तर्क।

सेश्वरसाङ्ख्यम् सांख्य की एक शाखा जो ईश्वर की सत्ता को मानती है।

सैकतिनी [सिकता+इन्+ङीप्] रेत से भरी हुई।

सैन्यम् [सेना+ष्यञ्] शिविर।

सैन्यक्षोभः सेना का विद्रोह।

सोत्प्रेक्षम् (अ०) असावधानी से, उदासीनता के साथ।

सोत्सेक (वि०) अभिमानी, घमंडी।

सोदय (वि०) 1. उदय से संबंध रखने वाला 2. सूद सहित, ब्याज के साथ।

सोपग्रहम् (अ०) गंभीरपूर्ण ढंग से।

सोपस्कर (वि०) सहायक वस्तुओं से युक्त।

सोपादान (वि०) सामग्री से युक्त।

सोमः [सू+मन्] 1. लंगर 2. एक पितर 3. लोभनीय।

सोमप्रवाकः सोमयज्ञ के लिए पुरोहितों को नियत करने के अधिकारों से सम्पन्न व्यक्ति।

सोमसद (पुं०) पितरों की एक विशेष श्रेणी।

सोर्णभ्रू [वि०] जिसकी दोनों भौंहों के बीच में बालों का एक गुच्छा है।

सौक्षरात्रिक (वि०) [सुखरात्रि+ठक्] जो दूसरे व्यक्ति को पूछता है कि तुम रात को तो सुख से सोये हो।

सौत्रिकः [सूत्र+ठन्] 1. जुलाहा 2. बुना हुआ कपड़ा।

सौधोत्सङ्गः [ष० त०] महल की उभरी हुई खुली छत।

सौभपतिः शाल्वों का राजा।

सौभद्रुत्यम् [सुभद्रुल--ष्यञ्] सौभाग्य की मंगलमय स्थिति, कल्याण, समृद्धि।

सौम्य (वि०) [सोम--अण्] उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला।

सौम्यः [सोम+अण्] 1. ब्राह्मण को संबोधित करने का उपयुक्त विशेषण—आयुष्मन् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने—मनु० २।१२५ 2. शुभ ग्रह 3. विलेपित छत्र 4. बायां हाथ 5. मार्गशीर्ष का महीना।

सौरमानम् [ष० त०] सूर्य की गति पर आधारित ज्योतिष की संगणना।

सौरत (वि०) [सुरत+अण्] संभोग संबंधी।

सौस्वर्यम् [सुस्वर+ष्यञ्] सुस्वरता, स्वरमाधुर्य, स्वरयोजना।

स्कन्दः [स्कन्द्+अच्] 1. क्षरण 2. ध्वंस।

स्कन्दजननी पार्वती।

स्कन्दपुत्रः स्कन्द का बेटा (चोर के लिए प्रयुक्त शिष्ट नाम)।

स्कन्धः [स्कन्ध्+घञ्] 1. कथा 2. खंड, अंश, भाग 3. गेंड़ का तना 4. ग्रन्थ का अध्याय 5. सेना का कोई भाग 6. पांचों ज्ञानेन्द्रियों के विषय।

स्कन्धघनः संज्ञान मी० सू० १।१।५ पर शा० भा०।

स्खलनम् [स्खल्+ल्युट्] वीर्यपात।

स्खलित [वि०] [स्खल्+क्त] 1. घायल 2. अपूर्ण अधूरा।

स्खलितम् (नपुं०) हानि, विनाश।

स्तोक- बूंद, कण, तैलस्य घृतस्य वा स्तोकाः—मी० सू० ९।२।२७ पर शा० भा०।

स्तनकुड्मलम् स्त्री के उठते हुए स्तन।

स्तनचूचुकम् चूची, डेपनी।

स्तनदयः चूची, डेपनी।

स्तनमध्यम् दोनों स्तनों के बीच का अन्तराल।

स्तनाभुज (वि०) अपने स्तनों से दूध पिलाने वाला गाय (गाय)।

स्तनितकुमारः (जैन०) देवताओं की एक श्रेणी।

स्तनितसुभगम् (अ०) सुखद गर्जनध्वनि के साथ।

स्तब्धय (वि०) स्तब्ध पैदा करने वाला, दुष्पचीं बच्चा।

स्तब्धपाद (वि०) जिसके पैर गतिहीन हो गये हों, अकड़ गये हों।

स्तब्धकर,—बाहु (वि०) जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों।

स्तब्धमति (वि०) जिसकी बुद्धि कुंठित हो गई हो, मंदबुद्धि।

स्तम्भ् (स्तम्भ् आ०) अधिकार करना, फैलाना, प्रेर० दबाना, रोकना।

स्तम्भः [स्तम्भ्+घञ्] 1. अकड़ाहट, निश्चेष्टता 2. भराव, भरती।

स्तम्भितबाष्पवृत्ति (वि०) जिसने अश्रुपात रोक लिया, आंसू रोकने वाला।

स्तम्भितान्तर्जलोघः हालत जिसने समस्त पानी को अपने अन्दर रोक लिया है—मेघ०।

स्तम्भेरमः [स्तम्भेरम+अण्] हाथी से संबंध रखने वाला।

स्तिमितनयन (वि०) टकटकी लगा कर दृष्टि जमाये हुए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तिमितप्रवाह (वि०) बहुत धीमी गति से बहने वाला।
स्तीविः [स्तृ+क्विन्] भय, डर।
स्तेन् (चुरा० उभ०) असत्य भाषण से वाणी को अपवित्र करना --तां तु यः स्तेनयेद्वाचम् मनु० ४।२५६।
स्तोकतमस् (वि०) कुछ काला, जिसमें थोड़ा अंधेरा हो।
स्तोकायुस् (वि०) थोड़ी आयु वाला।
स्तोभः 'साम' के रूप में गाये जाने वाले ऋग् मन्त्रों की साम की अपेक्षा विविक्तध्वनि —य ऋगक्षरेभ्योऽधिको न च तैः सवर्णः स स्तोभो नाम मी० सू० ९।२।३९ पर शा० भा०।
स्तोमशार साधुन।
स्त्री [स्तृ+ङट्+ङीप्] दीमक, सफेद चींटी।
स्त्रीकितवः स्त्रियों को फुसला कर छलने वाला।
स्त्रीविषयः मैथुन।
स्थपत्यः कञ्चुकी —स्थपत्यशुद्धान्त जनः परीता--जानकी० ७।१।
स्थलकमलः (पुं०) स्थलपद्म, (लाङ्गली) भूकमल, स्थल पर उगने वाला कमल पुष्प।
स्थलशायिन् (वि०) बिना कुछ बिछाये (खोरड़े) भूमि पर सोने वाला।
स्थविरवृति (वि०) बूढ़ों की मर्यादा रखने वाला।
स्थाणुः [स्था+नु, पृषो० णत्वम्] 1. तना, पेड़ का ठूंठ 2. बैठने की एक विशेष मुद्रा।
स्थाणुभूत (वि०) जो पेड़ के ठूंठ की तरह गति हीन हो गया हो।
स्थानम् [स्था+ल्युट्] 1. जीवन क्रम 2. जीवित रहना 3. युद्ध में आक्रमण की एक रीति 4. ज्ञानेन्द्रिय।
स्थानकुटिकासनम् घर छोड़कर झोंपड़ी में रहना शिरसो मुण्डनाद्यापि न स्थानकुटिकासनात्—महा० ३।२००। १०४।
स्थानेपतित (वि०) [अलुक्समास] दूसरे के स्थान पर अधिकार करने वाला।
स्थापनम् [स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. बाँधना 2. दीर्घायु होना 3. भाण्डार।
स्थापना [स्थापन+टाप्] 1. नाटक की प्रस्तावना या आमुख 2. भण्डार भरना।
स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+ण्यत्] 1. बंद किये जाने या कैद किये जाने योग्य 2. (शोक में) डूब जाने योग्य।
स्थायिता 1. नैरन्तर्य 2. ठिकाऊपन।
स्थालीपुरीषम् पाकपात्र की तली में जमी तरौंछ या मैल।
स्थितलिङ्ग (वि०) वह पुरुष जिसका लिङ्ग उत्तेजनावस्था में है।
स्थितसंक्रुत, --संविद (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला।
स्थितज्ञ (वि०) नैतिकता की सीमा को जानने वाला।
स्थितिभिद् (वि०) सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाला।
स्थिर (वि०) [स्था+किरच्] 1. दृढ़, जमा हुआ 2. अचल, निश्चेष्ट 3. स्थायी 4. निरावेश 5. कठोर सख्त 6. ठोस 7. मजबूत। सम० अध्याय (वि०) क्षमाशील, जिसका निरन्तर ह्रास हो रहा है, **आयति** (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला,—**वाच्** (वि०) जिसकी बात का विश्वास किया जाय,—**विक्रम** (वि०) दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाने वाला।
स्थूणाकर्णः 1. एक प्रकार का सैन्यव्यूह 2. रुद्र का एक रूप 3. शिव का एक अनुचर।
स्थूरीपृष्ठः वह घोड़ा जो अभी सवारी करने के काम न आया हो--शि० १८।२२।
स्थूल (वि०) [स्थूल+अच्] जो बारीकी या ब्यौरे (व्याख्या या विवरण) के साथ न देकर मोटे तौर पर दिया गया हो, भौतिक। सम० **इच्छ** (वि०) जिसकी इच्छाएँ बहुत बढ़ी हुई हों,—**काष्ठाग्निः** स्कंधाग्नि, पेड़ के जलते हुए तने की आग,—**प्रपञ्चः** भौतिक संसार।
स्थैर्यम् [स्थिर+ष्यञ्] इन्द्रियों का दमन या नियन्त्रण।
स्नानकलशः, कुम्भः नहाने के लिये जल का घड़ा।
स्नानतीर्थम् नहाने के लिए पुण्यस्थान, घाट।
स्नानशारी नहाने का जाँघिया, अधोवस्त्र।
स्नायुबन्धः धनुष की डोरी, ज्या।
स्नायुस्पन्दः नाड़ी।
स्नेहकुम्भः तेल रखने का बर्तन।
स्नेहकेसरिन् (पुं०) एरंड।
स्नेहविमर्दित (वि०) जिसके शरीर में तेल मला गया हो।
स्पन्द् (भ्वा० आ०) अकस्मात् फिर जान आ जाना, नाड़ी चलने लगना।
स्पर्शानुकूल (वि०) छूने पर अच्छा लगने वाला।
स्पर्शाक्लिष्ट,—क्षर (वि०) छूने में रूखा या पीड़ा कर।
स्पर्शगुणः [ष० त०] छूने का गुण (जैसे कि वायु का।
स्पष्टाक्षर (वि०) स्पष्टरूप से बोला गया।
स्पृष्टपूर्व (वि०) जिसे पहले छू चुके हैं।
स्पृष्टमात्र (वि०) जिसे केवल छूआ ही गया है।
स्फीत (वि०) [स्फाय्+क्त, स्फीभावः] बड़ा हुआ, फूला हुआ।
स्फीतानन्द (वि०) अत्यन्त प्रसन्न, परम आनन्दित।
स्फुट् (स्वा० तुदा० पर०) 1. फूट पड़ना, फटना, टूटना 2. खिलना, फूलना 3. (रोग) शान्त होना।
स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] अद्भुत असाधारण।
स्फुरणम् [स्फुर्+ल्युट्] फूलना, बढ़ना, विस्तृत होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्फूर्तिः (स्त्री०) [स्फुर्+क्तिन्] आत्मश्लाघा करना, डींग मारना, शेखी बघारना।
स्मरोद्दीपन (वि०) कामोद्दीपक, प्रेम का जगाने वाला।
स्मरकथा प्रणयालाप, प्रेमालाप।
स्मरशास्त्रम् कामशास्त्र।
स्मार्तविधिः, प्रयोगः स्मृतियों में विहित प्रक्रिया।
स्मयदानम् दिखावटी दान।
स्मयमुत्तिः गर्व चूर करना।
स्मरमान (वि०) जो आश्चर्य करता है।
स्मृ (भ्वा० पर०) शिक्षा देना।
स्मृतम् [स्मृ+क्त] स्मरण, याद।
स्मृतमात्र (वि०) जिसको केवल स्मरण ही किया हो, ज्योंही सोचा त्योंही।
स्मृतितन्त्रम् विधिग्रन्थ।
स्मृतिविनयः अपने कर्तव्य का ध्यान दिलाने के लिए अभिप्रेत डांट फटकार।
स्यन्दः [स्यन्द्+घञ्] 1. बूंद-बूंद टपकना, पसीना 2. आंख का रोग विशेष 3. चन्द्रमा।
स्रंस् (भ्वा० आ०) नष्ट होना ठहरना।
स्रस्तहस्त (वि०) जिसने पकड़ ढीली कर दी हो।
स्रवन्मध्यः मूल्यवान् रत्न जिसके बीच से पानी झरता दिखाई देता है।
स्रुग्जिह्वः अग्नि, आग।
स्रोतस् (नपुं०) 1. शरीर के रक्त (जो पुरुषों में ९ तथा स्त्रियों में ११ होते हैं) 2. वंश परम्परा।
स्वार्जित (वि०) अपना कमाया हुआ।
स्वानन्दः अपने आप में आनन्द।
स्वकर्मस्थ (वि०) अपने कर्म में लीन, अपने काम में व्यस्त।
स्वकृतम् अपना किया हुआ कार्य।
स्वगोचर (वि०) अपने कार्य तक ही सीमित।
स्वजीवः आत्मा।
स्वमतीदः अपना मत या विचार।
स्वयुतिः आधाररेखा जो कर्ण तथा लम्ब रेखा के सिरों को मिलाती है।
स्वतन्त्रता 1. स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता 2. मौलिकता।
स्वप्नान्तिकम् स्वप्नकालिक चेतना।
स्वप्नज (वि०) नींद में उत्पन्न।
स्वयमधिगत (वि०) 1. खुद प्राप्त किया हुआ 2. स्वयं पढ़ा हुआ।
स्वयमीश्वरः वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो, परमेश्वर।
स्वयमुद्यत (वि०) स्वेच्छा से तैयार।
स्वरतिक्रमः स्वर्ग को लांघकर वैकुण्ठ पहुंचना।
स्वर्मणि सूर्य।
स्वर्यानम् मृत्यु।
स्वर्योषित् अप्सरा।
स्वराङ्कः एक प्रकार की संगीत रचना।
स्वरोपघातः स्वरभंग।
स्वरकम्पः स्वर का हिलना।
स्वरलिप्रम् बांसुरी का स्वरवाला छेद।
स्वरब्रह्मन् नादब्रह्म।
स्वरविभक्तिः स्वरों का पृथक्करण।
स्वरशास्त्रम् ध्वनिविज्ञान, स्वरविज्ञान।
स्वरित (वि०) [स्वर+इतच्] 1. यत्नत, मिश्रित 2. उच्चरित, ध्वनित 3. उदात्त अनुदात्त के बीच का स्वर, मध्यमस्वर।
स्वर्गगतिः—गमनम् मृत्यु, स्वर्ग चले जाना।
स्वर्गमार्गः 1. स्वर्ग जाने का मार्ग 2. स्वर्गंगा।
स्वर्चरेतस् (पुं०) सूर्य।
स्वल्पाङ्गुलिः कनिष्ठिका, कनिष्ठा अंगुलि।
स्वल्पदृश् (वि०) अदूरदर्शी
स्वल्पस्मृति (वि०) जिसे बहुत कम याद रहे।
स्वस्तिकर्मन् (नपुं०) कल्याण करना।
स्वस्तिकारः स्वस्ति का उच्चारण करने वाला बंदी, चारण।
स्वस्तिकः स्वस्तिपाठ करने वाला, चारण।
स्वागतप्रश्नः मिलने पर स्वास्थ्यादि के संबंध में पूछना, कुशल क्षेम की पूच्छा।
स्वादः (काव्य के श्रवण या पठन से) रसानुभव।
स्वादुपिण्डः पिंडखजूर।
स्वादुलुङ्गी मीठा नीबू।
स्वापक्ष्वेलनम् निद्रालुता।
स्वामिन् (पुं०) 1. यज्ञ का यजमान 2. मन्दिर में स्थापित देवमूर्ति।
स्वाम्यम् (शरीर और आत्मा की) स्वस्थ स्थिति।
स्वायत्त (वि०) जो अपने ही अधिन हो, अपने ही अधिकार में हो।
स्विन्नित (वि०) 1. जिसे पसीना निकल आया हो, पसीने से तर 2. पिघला हुआ पसीजा हुआ।
स्विष्ट (वि०) आंकित, प्रिय, सुपूजित।
स्वेदनयन्त्रम् जिससे अफारा दिया जाय, पसीना लाने वाला यंत्र।
स्वैरकथा अबाधित वार्तालाप।
स्वैरविहारिन् इच्छानुसार भ्रमण करने वाला।
स्वैरिणी चयगादद।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंसः [हस्+अच्, पृषो० वर्णागमः] 1. घोड़ा 2. उत्तम, श्रेष्ठ (अंत समासान्त में प्रयुक्त हो) 3. चाँदी 4. बड़ी बड़ी झीलों में रहने वाला एक जलपक्षी 5. आत्मा, जीवात्मा। सम०—उदकम् एक प्रकार की पुष्टिदायक मदिरा,—कच्छपम् सोंठ,—हारम् मानस झील के पास की एक घाटी हंसद्वार मृगपतियशोवर्मः यत्कौञ्चरन्ध्रम्—मेघ०,—संदेशः वेदान्तदेशिक द्वारा रचित एक गीतिकाव्य।

हक्काहक्कः चुनौती, ललकार।

हट्टः [हट्ट+ट, टस्य लत्वम्] मंडी, बाजार, मेला। सम० अध्यक्षः मंडी का अधीक्षक,—वाहिनी बाजार में बनी हुई पानी निकलने की नाली, वेश्यावाटी बाजार की गली।

हठयोगी 1. मोथा 2. शैवाल।

हठवादिन् (पुं०) जो हिंसा का प्रचार करता है।

हन् (अदा० पर०) दूर करना, नष्ट करना।

हत (वि०) [हन्+क्त] 1. पीड़ित, घायल 2. बलात्कार किया हुआ, भ्रष्ट किया हुआ 3. सदोष 4. शापग्रस्त, विपदग्रस्त। सम०—उत्तर (वि०) निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके,—किल्बिष (वि०) जिसके पाप नष्ट हो गये हों,—त्रप (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म, विधि (वि०) जिसमें शिष्टता न हो, देखिए।

हनुभेदः 1. जबड़े का खुलना 2. एक प्रकार का ग्रहण

हनुस्वनः जबड़े से निकलनेवाला स्वर।

हनुमज्जयन्ती चैत्रशुक्ला पूर्णा जो हनुमान् जी का मांगलिक दिवस है।

हयः [हय्+अच्] 1. धनराशि 2. घोड़ा। सम०—अङ्गः धनराशि,—आलयः,—शाला घुड़साल, अस्तबल अश्वशाला,—च्छेदा अश्वदल, शीर्षः मुखः वदनः 1. विष्णु का एक रूप 2. एक राक्षस का नाम।

हरिः (पुं०) [हय्+इन्] कामना, इच्छा, अभिलाषा।

हरः [हृ+अच्] 1. शिव 2. आँख 3. गधा 4. भाजक 5. पकड़ना, लेना। सम०—अद्रिः कैलाश पर्वत, वल्लभः चतुरे का फल,—सखः कुबेर।

हरि [हृ+इन] 1. विष्णु 2. इन्द्र 3. सूर्य 4. अग्नि 4. वायु 6. सिंह 7. घोड़ा 8. बन्दर 9. कोयल 10. साँप 11 मोर 12. सिंह राशि। सम०—आपः इन्द्रधनुष,—कोशम् हरताल, मेघः (पुं०) विष्णु।

हरिणलाञ्छनः चन्द्रमा।

हरित्पतिः दिशा का स्वामी।

हरितकपिश (वि०) पीलापन लिये हुए भूरा।

हरितोपलः मरकतमणि।

हरिद्राभूः हरिताल पक्षी, एक प्रकार का कबूतर।

हर्षुलः 1. सूर्य 2. कछुवा।

हर्म्यतलम्,-पृष्ठम्,-वलभी चौबारा, मकान की ऊपर की मंजिल।

हर्षः [हृष्+घञ्] 1. जननेन्द्रिय की उत्तेजना 2. प्रबल इच्छा 3. प्रसन्नता। सम० जम् वीर्य,-संभूतः एक प्रकार का रतिबंध,-स्वनः आनन्द ध्वनि।

हलम् [हल्+क] 1. हल 2. कुरूपता 3. बाधा 4. कलह सम०—कुद् (स्त्री०) हल का वह भाग जिस निचले भाग में फाली लगी होती है,—दण्डः हलस, हल की लम्बी लकड़ी जिसमें जूआ लगाते हैं,—मार्गः जुताई से बनी लकीर, सूड, मुखम् फाल।

हविष्मती कामधेनु का विशेषण।

हसन्ती 1. दोवट 2. एक प्रकार की परी।

हस्तः [हस्+तन्] 1. हाथ 2. हाथी का सूँड 3. हस्त नक्षत्र 4. भुजा। सम०—भ्रष्टः (वि०) जो हाथ निकला हो,—रोधम् (अ०) हाथों में,—वाम (वि०) बाईं ओर स्थित, विन्यासः हाथों की स्थिति —स्वस्तिक हाथों को स्वस्तिक की शक्ल में रखना।

हस्त्यारोहः पीलवान, हस्तिव्यवसायी।

हस्तिनासा हाथी की सूँड।

हस्तिमुखः—वक्त्रः, वदनः गणेश।

हाहारः विस्मयादिद्योतक 'हा' ध्वनि।

हात (वि०) [हा+क्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

हानम् [हा+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्यागना 2. हानि, विफलता 3. अभाव, कमी 4. पराक्रमल, बल 5. विश्रान्ति, विराम, अवसान।

हाटकहाटिका मिट्टी का बर्तन।

हारित (वि०) [हृ+णिच्+क्त] 1. खोया गया, चुराया हुआ 2. मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ।

हारिद्रः एक दानपत्रिक विष।

हार्य (वि०) [हृ+ण्यत्] 1. हटाये जाने योग्य 2. मनोहर, आकर्षक।

हासनिकः खेल का साथी, सह क्रीडक।

हिंसनीय (वि०) [हिंस+अनीय] मार डाले जाने योग्य, हिंसा से पीड़ित किये जाने योग्य।

हिंसास्पदम् प्रहार्य, आक्रमणीय।

हिंसाप्राय (वि०) बहुधा हानिकारक।

हिंस्रः [हिंस्+र] दूसरों के उत्पीड़न में आनन्द मानने वाला व्यक्ति।

हिक्किकः, हिक्कितम्, हिक्का } हिचकी का रोग।

हिताशंसा 1. भला चाहना 2. अभिनन्दन, बधाई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हितप्रयुक्त (वि०) भलाई में लगा हुआ।
हितवाद: मैत्रीपूर्ण परामर्श, सत्परामर्श, भलाई की बात।
हिन्दुधर्म: हिन्द (भारत) देश में रहने वालों का धर्म।
हिमम् [हि+मक्] 1. पाला, कुहरा 2. ठंड 3 कमल 4. ताजा मक्खन 5. मोती 6. रात 7. चंदन। सम०—**अंश:** कपूर, **ऋतु:** जाड़े का मौसम, **खण्डम्** ओला, **द्युतिस्** चन्द्रमा,—**द्रुति:** घुंघ, कोहरा, —**शर्करा** एक प्रकार की खांड।
हिरण्यकर्तृ,—कार: स्वर्णकार, सुनार।
हिरण्यवर्चस् [वि०] सुनहरी आभा से युक्त।
हीन (वि०) [हा+क्त, तस्य न:, ईत्व च] 1. जो मुकदमा हार गया है 2. यूथभ्रष्ट 3. परित्यक्त, भुलाया हुआ 4. क्षीण। सम० **पक्ष** (वि०) अरक्षित पृ० दलील की दृष्टि से कमजोर पक्ष,—**सामन्त:** गद्दी से उतारा हुआ अधीनस्थ राजा, **सन्धि:** अधम राजा के साथ की गई सन्धि।
हुतशेषम् यज्ञशेष, हवन का बचा हुआ अन्न।
हुण्ड: (पु०) (स्त्री०) [हुण्ड्+इन्] पिंडित ओदन।
हृद् (नपु०) [हृद्, पृषो० तस्य द:] (इस शब्द के पहले पांच रूप नहीं होते, शेष वचनों में यह विकल्प से 'हृदय' के स्थान में आदेश होता है) 1. मन, दिल 2. आत्मा 3. किसी भी वस्तु का सत् 4. छाती। सम०—**आमय:** हृदय का रोग,—**रोतन** (वि०) दिल को तोड़ने वाला, —**सार:** साहस, हिम्मत; **स्तम्भ:** हृदय को लकवा मार जाना, **स्फोट:** हृदय का विदीर्ण होना।
हृदयम् [हृ+कयन, दुकागम:] 1. मन, दिल, आत्मा 2. छाती 3. प्रेम, अनुराग 3. दिव्य ज्ञान 4. वस्तु का सत् 5. इच्छा, प्रयोजन। सम० **उद्बन्धक:** आह भरना, —**उद्वेष्टनम्** दिल का सिकुड़ना, **क्षोभ:** दिल की धड़कन, **ज्ञ:** पुत्र, **ज्ञ:** जो दिल की बात जानता है, **दौर्बल्यम्** दिल की कमजोरी, **शैथिल्यम्** विषण्णता, अवसाद।
हृद्य (वि०) [हृद्+यत्] स्वादिष्ट, रुचिकर।
हृषित (वि०) [हृष्+क्त, धा० इट्] कुंठित, ठूंठा।
हेति: (पु०) (स्त्री०) [हन्+क्तिन्, नि०] नया अंकुर।
हेतु: [हि+तुन्] 1. प्रेरणादायक क्रिया का अभिकर्ता—या० १।४।५५ 2. प्राथमिक कारण (बृह०) 3. बाह्य संसार और उसके विषय (पाशुपत०) 4. मूल्य, क्रीमत —**धान्यखारीकये हेतु:**—राज० ५।७१ 5. कारण। सम० **अवधारणम्** तर्क करना (नाटक), **उपमा** तर्क युक्त उपमा अलंकार, तर्क संगत तुलना, —**दृष्टि:** कारण की परीक्षा, **रूपकम्** एक प्रकार का रूपकालंकार,—**विशेषोक्ति:** एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों का अंतर तर्क देकर बतलाया जाता है काव्य० १०।२८-९।
हेतुनिगद: वेद के मूल पाठ का लेखांश जिसके साथ प्रयोजन भी दिया गया हो मी० सू० ४।३।१४ पर शा० भा०।
हेमन् (नपु०) [हि+मनिन्] 1. स्वर्ण, सोना 2. जल 3. बर्फ 4. धतूरा 5. केसर का फूल 6. वृषपर्व 7. जाड़े की ऋतु। सम० —**कलश:** सोने की कलसी, स्वर्ण निर्मित शृंगकलश, —**गर्भ** (वि०) जिसके अंदर सोना हो, —**जम्** सीसा, —**त्वी** हल्दी, **माक्षिकम्** सोना-माखी (एक उपधातु), —**व्याकरणम्** हेमचन्द्र प्रणीत व्याकरण का एक ग्रन्थ।
हैडिम्ब: } [हिडिम्बा+अण्, इञ् वा] हिडिम्बा का पुत्र,
हैडिम्बि: } घटोत्कच।
होत्रकर्मन् यज्ञ में होता का कार्य।
होत्रप्रवर: होता का वरण करना।
होत्रम्(त्र)वनम् होता का आसन।
होलाकाधिकरणन्यायः पीमांसा का एक नियम। इसके अनुसार यदि स्मृति या कल्पसूत्र की कोई उक्ति श्रुति द्वारा समर्थन नहीं प्राप्त कर सकी, तो उसके समर्थन में वेद का कोई अन्य सामान्य मंत्र, अनुमान के आधार पर ढूंढना चाहिए—मी० सू० २।३।२५ २८।
ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+क्वन्] जो महत्त्वपूर्ण न हो, अनावश्यक, नगण्य।
ह्रास: [ह्रस्+घञ्] 1. ध्वनि, आवाज 2. क्षय, क्षीणता, अभाव, कमी 3. छोटी संख्या।
ह्रीका [ह्री+कक्] 1. लज्जा 2. भय,—**क:** (पु०) 1. पिता 2. नेवला।
ह्रीपदम् लज्जा का कारण।

———

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

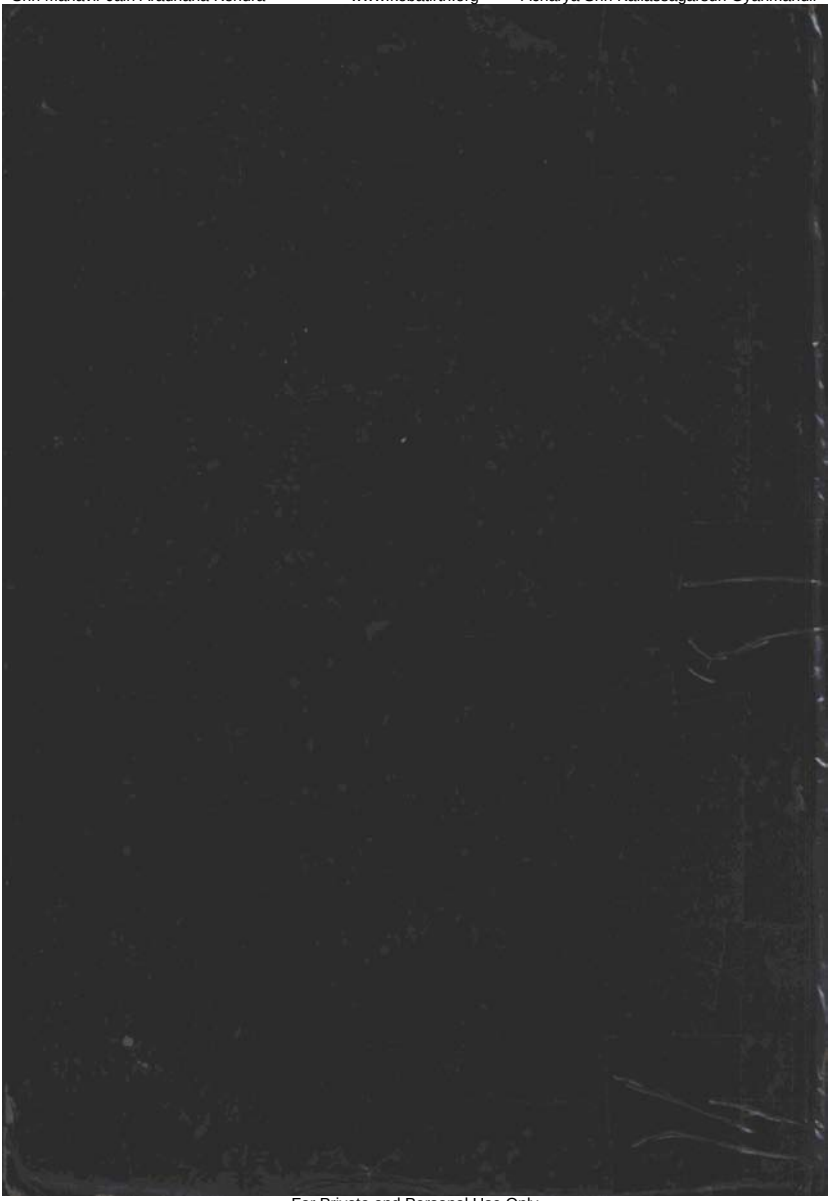

For Private and Personal Use Only